प्रधान पुरुषो! **(यज्ञस्य)** अहिंसारूप यज्ञ के **(केतुम्)** पताका के सदृश जाननेवाले **(प्रथमम्)** प्रसिद्ध **(सुशेवम्)** सुन्दर द्रव्यपात्र के सदृश अग्नि को **(पुरस्तात्)** प्रथम से उत्पन्न करें॥५॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य मथ कर अग्नि को उत्पन्न करके कार्य्यों को सिद्ध करने की इच्छा करते हैं, वे सम्पूर्ण ऐश्वर्य्ययुक्त होते हैं॥५॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहा है॥

**यदी॒ मन्थ॑न्ति बा॒हुभि॒र्वि रोच॒तेऽश्वो॒ न वा॒ज्य॑रु॒षो वने॒ष्वा।**

**चि॒त्रो न याम॑न्न॒श्विनो॒रनि॑वृ॒तः परि॑ वृण॒क्त्यश्म॑न॒स्तृणा॒ दह॑न्॥६॥**

**यदि॑। मन्थ॑न्ति। बा॒हुऽभिः॑। वि। रो॒च॒ते। अश्वः॑। न। वा॒जी। अ॒रु॒षः। वने॑षु। आ। चि॒त्रः। न। याम॑न्। अ॒श्विनोः॑। अनि॑ऽवृतः। परि॑। वृ॒ण॒क्ति॒। अश्म॑नः। तृणा॑। दह॑न्॥६॥**

**पदार्थः**-**(यदि)**। अत्र **निपातस्य चे**ति दीर्घः। **(मन्थन्ति)** विलोडयन्ति **(बाहुभिः) (वि) (रोचते)** विशेषेण प्रकाशते **(अश्वः)** उत्तमस्तुरङ्गः **(न)** इव **(वाजी)** वेगवान् **(अरुषः)** मर्मसु स्थितः **(वनेषु)** किरणेषु **(आ) (चित्रः)** अद्भुतः **(न)** इव **(यामन्)** यामनि **(अश्विनोः)** सूर्य्याचन्द्रमसोः **(अनिवृतः)** निरन्तरः **(परि)** सर्वतः **(वृणक्ति)** छिनत्ति **(अश्मनः)** पाषाणस्य मेघस्य वा **(तृणा)** तृणानि घासविशेषान् **(दहन्)** भस्मीकुर्वन्॥६॥

**अन्वयः**-ये मनुष्या बाहुभिर्यद्यग्निं मन्थन्ति तर्हि स वनेष्वरुषो वाज्यश्वो न व्यारोचतेऽश्विनोरनिवृतस्सन् यामँश्चित्रो न तृणा दहन्नश्मनः परि वृणक्ति तमित्थं सर्व उद्घाटयन्तु॥६॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। घर्षणेन जातबलोऽग्निः काष्ठादीनि दहन्नश्ववद्वेगवान् भवन्नद्भुतानि कार्य्याणि साध्नोतीति वेद्यम्॥६॥

**पदार्थः**-जो मनुष्य **(बाहुभिः)** बाहुओं से **(यदि)** यदि अग्नि को **(मन्थन्ति)** मन्थते हैं तो वह **(वनेषु)** किरणों में **(अरुषः)** मर्मस्थलों में वर्त्तमान **(वाजी)** वेगयुक्त **(अश्वः)** उत्तम घोड़े के **(न)** सदृश **(वि) (आ) (रोचते)** विशेष भाव से प्रकाशित होता है **(अश्विनोः)** सूर्य्य-चन्द्रमा के मध्य में **(अनिवृतः)** निरन्तर प्राप्त [होता हुआ] **(यामन्)** रात्रि में **(चित्रः)** अद्भुत के **(न)** तुल्य **(तृणा)** घास विशेषों को **(दहन्)** भस्म करता हुआ **(अश्मनः)** पत्थर वा मेघ का **(परि)** सब प्रकार **(वृणक्ति)** छेदन करता है, उसको इस प्रकार सब लोग प्रकट करें॥६॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। घिसने से बलयुक्त हुआ अग्नि काष्ठ आदि को जलाता और घोड़े के तुल्य वेगवान् होता हुआ अद्भुत कार्य्यों को सिद्ध करता है, यह जानना चाहिये॥६॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहा है॥



www.9009.co.in

**जा॒तो अ॒ग्नी रो॑चते॒ चेकि॑तानो वा॒जी विप्र॑: कविश॒स्तः सु॒दानु॑:।**

**यं दे॒वास॒ ईड्यं॑ वि॒श्व॒विदं॑ हव्य॒वाह॒मद॑धुरध्व॒रेषु॑॥७॥**

**जा॒त:। अ॒ग्नि:। रो॒च॒ते॒। चेकि॑तानः। वा॒जी। विप्र॑:। क॒वि॒ऽश॒स्त:। सु॒ऽदानु॑:। यम्। दे॒वास॑:। ईड्य॑म्। वि॒श्व॒ऽविद॑म्। ह॒व्य॒ऽवाह॑म्। अद॑धु:। अ॒ध्व॒रेषु॑॥७॥**

**पदार्थः**-(**जातः**) प्रकटः सन् (**अग्निः**) पावकः (**रोचते**) प्रदीप्यते (**चेकितानः**) प्रज्ञापकः (**वाजी**) वेगवान् (**विप्रः**) मेधावी (**कविशस्तः**) कविभिः प्रशंसितः (**सुदानुः**) सुष्ठुदाता (**यम्**) (**देवासः**) विद्वांसः (**ईड्यम्**) स्तोतुं योग्यम् (**विश्वविदम्**) यः समग्रं विन्दति तम् (**हव्यवाहम्**) हव्यानां वोढारम् (**अदधुः**) दधीरन् (**अध्वरेषु**) सङ्गतिमयेषु व्यवहारेषु॥७॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! देवासोऽध्वरेषु यमीड्यं विश्वविदं हव्यवाहमग्निमदधुः स चेकितानः सुदानुः कविशस्तो विप्र इव जातो वाज्यग्नी रोचते॥७॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यदि विद्युद्विद्यां साध्नुयुस्तर्हीयमाप्तविद्वद्वत्सत्यानि योग्यानि कार्य्याणि साध्नुयात्॥७॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! (**देवासः**) विद्वान् लोग (**अध्वरेषु**) मेल करने रूप व्यवहारों में (**यम्**) जिस (**ईड्यम्**) स्तुति करने योग्य (**विश्वविदम्**) सम्पूर्ण वस्तुओं के ज्ञाता (**हव्यवाहम्**) हवन करने योग्य पदार्थों के धारणकर्त्ता अग्नि को (**अदधुः**) धारण करें वह (**चेकितानः**) उत्तम कार्य्यों को जताने (**सुदानुः**) उत्तम प्रकार देनेवाला और (**कविशस्तः**) उत्तम पुरुषों से प्रशंसित हुए (**विप्रः**) बुद्धिमान् के सदृश (**जातः**) प्रकटता को प्राप्त (**वाजी**) वेगयुक्त (**अग्निः**) अग्नि (**रोचते**) प्रकाशित होता है॥७॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो बिजुली सम्बन्धी विद्या को सिद्ध करें तो यह विद्या यथार्थवक्ता विद्वान् पुरुष के तुल्य सत्य और योग्य कार्य्यों को सिद्ध करे॥७॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहा है॥

**सीद॑ होत॒: स्व उ॑ लो॒के चि॑कि॒त्वान्त्सा॒दया॑ य॒ज्ञं सु॑कृ॒तस्य॒ योनौ॑।**

**दे॒वा॒वीर्दे॒वान् ह॒विषा॑ यजा॒स्यग्ने॑ बृ॒हद्यज॑माने॒ वयो॑ धाः॥८॥**

**सीद॑। हो॒त॒रिति॑। स्वे। ऊ॒म् इति॑। लो॒के। चि॒कि॒त्वान्। सा॒दय॑। य॒ज्ञम्। सु॒ऽकृ॒तस्य॑। योनौ॑। दे॒व॒ऽअ॒वीः। दे॒वान्। ह॒विषा॑। य॒जा॒सि॒। अग्ने॑। बृ॒हत्। यज॑माने। वय॑:। धाः॥८॥**

**पदार्थः**-(**सीद**) आस्व (**होतः**) सुखप्रदातः (**स्वे**) स्वकीये (उ) वितर्के (**लोके**) दर्शने (**चिकित्वान्**) ज्ञानवान् (**सादय**) स्थापय। **संहितायामिति** दीर्घः। (**यज्ञम्**) धर्म्यव्यवहारम् (**सुकृतस्य**) सुष्ठु निष्पादितस्य (**योनौ**) कारणे गृहे वा (**देवावीः**) यो देवानवति सः (**देवान्**) दिव्यान् गुणान् विदुषो वा



www.9009.co.in

**(हविषा)** दानेन **(यजासि)** यजे: **(अग्ने)** पावकवद्वर्त्तमान **(बृहत्)** महत् **(यजमाने)** सङ्गन्तधर्म्यव्यवहारकर्त्तरि **(वय:)** जीवनं धनादिकं वा **(धा:)** धेहि॥८॥

**अन्वय:**-हे होतरग्नेऽग्निरिव त्वं स्वे लोके सीद चिकित्वान् सन् सुकृतस्य योनौ यज्ञं सादय देवावी: सन् हविषा देवान् यजास्यु यजमाने बृहद्वयो धा:॥८॥

**भावार्थ:**-यथाऽग्निहोत्रादिशिल्पादिसङ्गन्तव्ये व्यवहारे संप्रयुक्तोऽग्निर्दिव्यान् गुणान् प्रकटयति तथैव विदुषा धर्म्यै: कर्मभि: संप्रयुज्य दिव्यानि सुखानि जगति प्रसारणीयानि॥८॥

**पदार्थ:**-हे **(होत:)** सुख देनेवाले **(अग्ने)** अग्नि के सदृश तेजस्वी पुरुष! आप **(स्वे)** अपने **(लोके)** दर्शन में **(सीद)** वर्त्तमान हो **(चिकित्वान्)** ज्ञानयुक्त होकर **(सुकृतस्य)** पुण्य कर्म के **(योनौ)** कारण वा स्थान में **(यज्ञम्)** धर्मसम्बन्धी व्यवहार को **(सादय)** स्थित करो **(देवावी:)** विद्वानों की रक्षाकर्त्ता **(हविषा)** दान से **(देवान्)** उत्तम गुण वा विद्वान् पुरुषों को **(यजासि)** यज्ञ करें वा स्वीकार करें **(उ)** यह तर्क है कि **(यजमाने)** योग्य धर्मसम्बन्धी व्यवहार के कर्त्ता पुरुष में **(बृहत्)** बड़े **(वय:)** जीवन वा धर्म आदि को **(धा:)** धारण करें॥८॥

**भावार्थ:**-जैसे अग्निहोत्र आदि वा शिल्प आदि सङ्गति के योग्य व्यवहार में संयुक्त किया गया अग्नि उत्तम गुणों को प्रकट करता है, वैसे ही विद्वान् पुरुष को चाहिये कि धर्मसम्बन्धी कर्मों से युक्त करके उत्तम सुखों को संसार में फैलावे॥८॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहा है॥

**कृणोत॑ धूमं वृष॑णं सखा॒योऽस्रे॑धन्त इतन॒ वाज॒मच्छ॑।**

**अ॒यम॒ग्निः पृ॑तना॒षाट् सु॒वीरो॒ येन॑ दे॒वासो॒ अस॑हन्त॒ दस्यू॑न्॥ ९॥**

**कृ॒णोत॑। धू॒मम्। वृष॑णम्। स॒खा॒य॒:। अस्रे॑धन्त:। इ॒त॒न॒। वाज॑म्। अच्छ॑। अ॒यम्। अ॒ग्नि:। पृ॒त॒ना॒षाट्। सु॒ऽवीर॑:। येन॑। दे॒वास॑:। अस॑हन्त। दस्यू॑न्॥ ९॥**

**पदार्थ:**-**(कृणोत)** कुरुत **(धूमम्)** वाष्पाख्यम् **(वृषणम्)** जलेन सुसिक्तम् **(सखाय:)** सुहृद: सन्त: **(अस्रेधन्त:)** अक्षीणोत्साहा: **(इतन)** प्राप्नुत **(वाजम्)** अन्नवेगविज्ञानादिकम् **(अच्छ)** सम्यक् **(अयम्)** **(अग्नि:)** विद्युदिव **(पृतनाषाट्)** य: पृतना: सेना: सहते **(सुवीर:)** शोभना वीरा यस्य **(येन)** सह **(देवास:)** विद्वांस: शूरा: **(असहन्त)** सहन्ते **(दस्यून्)** अतिदुष्टकर्मकारिण:॥९॥

**अन्वय:**-हे विद्वांसो! यूयमस्रेधन्त: सखाय: सन्तो वृषणं धूमं कृणोत वाजमच्छेतन योऽयमग्निरिव पृतनाषाट् सुवीरोऽस्ति येन सह देवासो दस्यूनसहन्त तमितन॥९॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-हे विद्वांसः! काष्ठाग्निजलसंयोगजेन धूमेनाऽनेकानि कार्य्याणि परस्परं सुहृदो भूत्वा साध्नुत यथा धार्मिका विद्वांसः शूरा दस्यून् हत्वा राजानो भवन्ति तथैवायमग्निः संप्रयुक्तः सन् दारिद्र्यादीन् हत्वाऽसंख्यं धनं निष्पादयतीति॥९॥

**पदार्थः**-हे विद्वान् जनो! आप लोग **(अस्रेधन्तः)** उत्साह से पूरित **(सखायः)** मित्र हुए **(वृषणम्)** जल से अच्छे प्रकार सींचे गये **(धूमम्)** भाफ को **(कृणोत)** करो **(वाजम्)** अन्न, वेग और विज्ञान आदि को **(अच्छ)** उत्तम प्रकार **(इतन)** प्राप्त होओ तो **(अयम्)** यह **(अग्निः)** बिजुली के सदृश तेजस्वी **(पृतनाषाट्)** सेनाओं के सहित वर्त्तमान **(सुवीरः)** श्रेष्ठ वीरों से युक्त और **(येन)** जिस पुरुष के साथ **(देवासः)** विद्वान् वा शूर लोग **(दस्यून्)** अति दुष्ट कर्म करनेवाले जनों को **(असहन्त)** सहते हैं, उसको प्राप्त होइये॥९॥

**भावार्थः**-हे विद्वान् जनो! काष्ठ, अग्नि और जल के संयाग से उत्पन्न हुए धूम से अनेक कार्य्यों को परस्पर मित्रभाव के साथ सिद्ध करो जैसे धर्मपूर्वक वर्त्ताव रखनेवाले विद्यायुक्त शूरवीर पुरुष दुष्टकर्मकारियों को नाश करके राजा होते हैं, वैसे ही यह अग्नि उत्तम प्रकार यन्त्र आदि से युक्त किया गया दारिद्र्य आदि को नाश करके अनगिनत धन को उत्पन्न करता है॥९॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहा है॥

**अयं ते योनिर्ऋत्वियो यतो जातो अरोचथाः।**

**तं जानन्नग्न आ सीदाथा नो वर्धया गिरः॥१०॥३३॥**

**अयम्। ते। योनिः। ऋत्वियः। यतः। जातः। अरोचथाः। तम्। जानन्। अग्ने। आ। सीद। अथ। नः। वर्धय। गिरः॥१०॥**

**पदार्थः**-**(अयम्)** अग्न्यादिपदार्थविद्याविज्ञानाधिष्ठानम् **(ते)** तव **(योनिः)** सुखगृहम् **(ऋत्वियः)** य ऋतूनर्हति सः **(यतः)** **(जातः)** प्रकटः सन् **(अरोचथाः)** रोचस्व **(तम्)** **(जानन्)** **(अग्ने)** पावक इव **(आ)** **(सीद)** स्थिरो भव **(अथ)** आनन्तर्य्ये। अत्र **निपातस्य चे**ति दीर्घः। **(नः)** अस्माकम् **(वर्धय)** उन्नय। अत्र **संहितायामि**ति दीर्घः। **(गिरः)** विद्यासुशिक्षायुक्ता वाचः॥१०॥

**अन्वयः**-हे अग्ने विद्वन्! यस्तेऽयमृत्वियो योनिरस्ति यतो जातः सन्नरोचथास्तं जानन्नत्राऽऽसीद। अथ नो गिरो वर्धय॥१०॥

**भावार्थः**-मनुष्यैर्येन येन कर्मणा शरीरात्मैश्वर्य्याणां वृद्धिः स्यात्तत्तत्कर्म सदाचरणीयम्॥१०॥

**पदार्थः**-हे **(अग्ने)** अग्नि के सदृश तेजस्वी विद्वान् पुरुष! जो **(ते)** आपका **(अयम्)** यह अग्नि आदि पदार्थ विद्या के ज्ञान का आधार **(ऋत्वियः)** समयों के योग्य **(योनिः)** सुख का घर है **(यतः)** जहाँ से **(जातः)** प्रकट हुआ **(अरोचथाः)** प्रकाशित हो **(तम्)** उसको **(जानन्)** जानते हुए यहाँ **(आ)** **(सीद)**



www.9009.co.in

स्थिर होइये और **(अथ)** इसके अनन्तर **(नः)** हम लोगों की **(गिरः)** विद्या और उत्तम शिक्षायुक्त वाणियों की **(वर्धय)** उन्नति कीजिये॥१०॥

**भावार्थः**-मनुष्यों को उचित है कि जिस-जिस कर्म से शरीर, आत्मा और ऐश्वर्य्यों की वृद्धि हो, वह-वह कर्म सब काल में करें॥१०॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहा है॥

**तनूनपादुच्यते गर्भ आसुरो नराशंसो भवति यद्विजायते।**

**मातरिश्वा यदमिमीत मातरि वातस्य सर्गो अभवत्सरीमणि॥११॥**

**तनूऽइनपात्। उच्यते। गर्भः। आसुरः। नराशंसः। भवति। यत्। विऽजायते। मातरिश्वा। यत्। अमिमीत। मातरि। वातस्य। सर्गः। अभवत्। सरीमणि॥११॥**

**पदार्थः**-**(तनूनपात्)** यस्य तनूर्व्याप्तिर्न पतति **(उच्यते)** **(गर्भः)** अन्तःस्थः **(आसुरः)** असुरे प्रकाशरूपरहिते वायौ भवः **(नराशंसः)** यं नरा आशंसन्ति **(भवति)** **(यत्)** यः **(विजायते)** विशेषेणोत्पद्यते **(मातरिश्वा)** यो वायौ श्वसिति सः **(यत्)** यः **(अमिमीत)** निर्मीयते **(मातरि)** आकाशे **(वातस्य)** वायोः **(सर्गः)** उत्पत्तिः **(अभवत्)** भवेत् **(सरीमणि)** गमनाख्ये व्यवहारे॥११॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यद्यस्तनूनपादुच्यते आसुरो गर्भो नराशंसो भवति मातरिश्वा विजायते यद्यो वातस्य मातरि सर्गोऽमिमीत सरीमण्यभवत्सोऽग्निस्सर्वैर्वेदितव्यः॥११॥

**भावार्थः**-ये मनुष्या वाय्वग्नीभ्यां कार्य्याणि सृजन्ति ते सुखैः संसृष्टा भवन्ति॥११॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(यत्)** जो **(तनूनपात्)** सर्वत्र व्यापक **(उच्यते)** कहा जाता है **(आसुरः)** प्रकटरूप से रहित वायु से उत्पन्न **(गर्भः)** मध्य में वर्त्तमान **(नराशंसः)** मनुष्यों से प्रशंसित **(भवति)** होता है, **(मातरिश्वा)** वायु में श्वास लेनेवाला **(विजायते)** विशेषभाव से उत्पन्न होता है और **(यत्)** जो **(वातस्य)** वायु सम्बन्धी **(मातरि)** आकाश में **(सर्गः)** उत्पत्ति **(अमिमीत)** रची जाती है **(सरीमणि)** गमनरूप व्यवहार में **(अभवत्)** होवे, वह अग्नि सम्पूर्ण जनों से जानने योग्य है॥११॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य वायु और अग्नि से कार्य्यों को सिद्ध करते हैं, वे सुखों से संयुक्त होते हैं॥११॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहा है॥

**सुनिर्मथा निर्मथितः सुनिधा निहितः कविः।**

**अग्ने स्वध्वरा कृणु देवान् देवयते यज॥१२॥**



www.9009.co.in

सुनि॒ःऽमथा॑। निःऽम॑थितः। सु॒ऽनि॒धा। निऽहि॑तः। क॒विः। अग्ने॑। सु॒ऽअ॒ध्व॒रा। कृ॒णु॒। दे॒वान्। दे॒व॒ऽय॒ते। य॒ज॒॥ १२॥

**पदार्थः**-(**सुनिर्मथा**) शोभनेन मन्थनेन (**निर्मथितः**) नितरां विलोडितः (**सुनिधा**) शोभने निधाने। अत्र डेराकारादेशः। (**निहितः**) धृतः (**कविः**) क्रान्तदर्शनः (**अग्ने**) पावक इव विद्वन् (**स्वध्वरा**) शोभनान्यहिंसादीनि कर्माणि येषु व्यवहारेषु (**कृणु**) (**देवान्**) दिव्यगुणान् (**देवयते**) देवान् कामयमानाय (**यज**) देहि॥ १२॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! यथा सुनिर्मथा निर्मथितः सुनिधा निहितः कविरग्निर्बहूनि कार्य्याणि सङ्गमयति तथैव स्वध्वरा देवान् कृणु एतान् देवयते यज॥ १२॥

**भावार्थः**-यथा विद्यया निर्मितेषु कलायन्त्रेषु स्थापितोऽग्निर्निर्मन्थनेन घर्षणेन च वेगादिगुणान् जनयित्वा बहूनि कार्य्याणि साध्नोति तथैवोत्तमानि कर्माणि कृत्वा दिव्यान् भोगान् प्राप्नुवन्तु॥ १२॥

**पदार्थः**-हे (**अग्ने**) अग्नि के समान तेजस्वी विद्वान् पुरुष! जैसे (**सुनिर्मथा**) सुन्दर मथने की वस्तु से (**निर्मथितः**) अत्यन्त मथा (**सुनिधा**) उत्तम आधार वस्तु में (**निहितः**) धरा गया (**कविः**) और सर्वत्र दीख पड़ने वाला अग्नि बहुत से कार्य्यों को सिद्ध करता है, वैसे ही (**स्वध्वरा**) उत्तम अहिंसा आदि कर्मों से युक्त (**देवान्**) उत्तम गुणों को (**कृणु**) धारण करो और इन (**देवयते**) उत्तम गुणों की कामना करते हुए पुरुष के लिये उन गुणों को (**यज**) दीजिए॥ १२॥

**भावार्थः**-जैसे विद्या से रचे हुए कलायन्त्रों में रक्खा गया अग्नि अत्यन्त मथने और घिसने से वेग आदि गुणों को उत्पन्न कर बहुत से कार्य्यों को सिद्ध करता है, वैसे ही उत्तम कर्म्मों को करके श्रेष्ठ गुणों को प्राप्त होओ॥ १२॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहा है॥

**अजी॑जनन्न॒मृतं॒ मर्त्या॑सोऽस्रे॒माणं॑ त॒रणिं॑ वी॒ळुज॑म्भम्।**

**दश॒ स्वसा॑रो अ॒ग्रुवः॑ समी॒चीः पुमां॑सं जा॒तम॒भि सं र॑भन्ते॥ १३॥**

**अजी॑जनन्। अ॒मृत॑म्। मर्त्या॑सः। अ॒स्रे॒माण॑म्। त॒रणि॑म्। वी॒ळुऽज॑म्भम्। दश॑। स्वसा॑रः। अ॒ग्रुवः॑। स॒म्ऽई॒चीः। पुमां॑सम्। जा॒तम्। अ॒भि। सम्। र॒भ॒न्ते॒॥ १३॥**

**पदार्थः**-(**अजीजनन्**) जनयन्ति (**अमृतम्**) नाशरहितम् (**मर्त्यासः**) मनुष्याः (**अस्रेमाणम्**) अक्षयम् (**तरणिम्**) अध्वनां तारकम् (**वीळुजम्भम्**) वीळु बलवज्जम्भो मुखमिव ज्वाला यस्य तम् (**दश**) (**स्वसारः**) भगिन्य इव वर्त्तमाना अङ्गुलयः। **स्वसार इत्यङ्गुलिनामसु पठितम्।** (निघं० २.५) (**अग्रुवः**) या अग्रे गच्छन्ति ताः (**समीचीः**) याः सम्यगञ्चन्ति ताः (**पुमांसम्**) पुरुषार्थयुक्तं नरम् (**जातम्**) प्रसिद्धम् (**अभि**) आभिमुख्ये (**सम्**) सम्यक् (**रभन्ते**) प्रवर्त्तयन्ति॥ १३॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-यथा अग्रुवः समीचीर्दश स्वसारो जातं पुमांसमभि सं रभन्ते तथा मर्त्यासो वीळुजम्भं तरणिमस्त्रेमाणममृतमग्निमजीजनन्॥१३॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यथा कराऽङ्गुलयः परस्परं संहिता देहधारिणं मनुष्यं कर्मसु प्रवर्त्तयन्ति तथैव विद्वांसो वह्निं क्रियासु नियोजयन्ति॥१३॥

**पदार्थः**-जैसे **(अग्रुवः)** आगे चलनेवाली **(समीचीः)** उत्तम प्रकार मिली हुई **(दश)** दश संख्या परिमित **(स्वसारः)** बहिनों के समान वर्त्तमान अंगुलियाँ **(जातम्)** प्रसिद्ध **(पुमांसम्)** पुरुषार्थ से युक्त मनुष्य को **(अभि)** सम्मुख **(सम्)** उत्तम प्रकार **(रभन्ते)** प्रवृत्त करती हैं, वैसे **(मर्त्यासः)** मनुष्य **(वीळुजम्भम्)** मुख के सदृश ज्वाला से शोभित **(तरणिम्)** भागों से यत्न द्वारा इष्ट स्थान में पहुँचानेवाला **(अस्त्रेमाणम्)** नाशरहित **(अमृतम्)** नित्य अग्नि को **(अजीजनन्)** उत्पन्न करते हैं॥१३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे हाथों की अंगुलियाँ परस्पर मिली हुईं शरीरधारी मनुष्य को कार्य्यों में प्रवृत्त करती हैं, वैसे ही विद्वान् पुरुष अग्नि को क्रिया में लगाते अर्थात् उसके द्वारा कार्य्य सिद्ध करते हैं॥१३॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहा है॥

**प्र स॒प्तहो॑ता सन॒कादरो॑चत मा॒तुरु॒पस्थे॒ यदशो॑च॒दूध॑नि।**

**न नि मि॑षति सु॒रणो॑ दि॒वेदि॑वे॒ यदसु॑रस्य ज॒ठरा॒दजा॑यत॥१४॥**

**प्र। स॒प्तऽहो॑ता। स॒न॒कात्। अ॒रो॒च॒त॒। मा॒तुः। उ॒पऽस्थे॑। यत्। अशो॑चत्। ऊध॑नि। न। नि। मि॒ष॒ति॒। सु॒ऽरणः॑। दि॒वेऽदि॑वे। यत्। असु॑रस्य। ज॒ठरा॑त्। अजा॑यत॥१४॥**

**पदार्थः**- **(प्र) (सप्तहोता)** सप्त प्राणा होतार आदातारो यस्य **(सनकात्)** सनातनात्कारणात् **(अरोचत)** प्रकाशते **(मातुः)** वायोः **(उपस्थे)** समीपे **(यत्)** यः **(अशोचत्)** दीप्यते **(ऊधनि)** रात्रौ। अत्र वर्णव्यत्ययेन सस्य नः। **ऊध इति रात्रिनामसु पठितम्।** (निघं०१.७) **(न) (नि)** नितराम् **(मिषति)** सिञ्चति **(सुरणः)** शोभनो रणः संग्रामो यस्मात्सः **(दिवेदिवे)** प्रतिदिनम् **(यत्)** यस्मात् **(असुरस्य)** रूपरहितस्य वायोः **(जठरात्)** मध्यात् **(अजायत)** जायते॥१४॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यः सप्तहोताग्निः सनकाज्जातो मातुरुपस्थे प्रारोचत यद्य ऊधन्यशोचद् यः सुरणो दिवेदिवे न नि मिषति यद्योऽसुरस्य जठरादजायत तं यथावद्विजानीत॥१४॥

**भावार्थः**-योऽग्निः शोषको वायुनिमित्तः प्रकृत्याख्यात् कारणाज्जातोऽस्ति तं विज्ञाय बहून् व्यवहारान् सर्वे प्रकाशयन्तु॥१४॥

**पदार्थः**-हे मनुष्या! जो **(सप्तहोता)** सात प्राणों से ग्रहण करने योग्य अग्नि **(सनकात्)** अनादि परम्परा से सिद्ध कारण से उत्पन्न हुआ **(मातुः)** वायु के **(उपस्थे)** समीप में **(प्रारोचत)** प्रकाशित होता है



www.9009.co.in

(**यत्**) जो (**ऊधनि**) रात्रि में (**अशोचत्**) प्रकाशित होता है और जो (**सुरणः**) श्रेष्ठ युद्ध का साधन (**दिवेदिवे**) प्रतिदिन (**न**) नहीं (**नि**) अत्यन्त (**मिषति**) सींचता है (**यत्**) जो (**असुरस्य**) रूप से रहित वायु के (**जठरात्**) मध्य से (**अजायत**) उत्पन्न होता है, उसको अच्छे प्रकार जानो॥१४॥

**भावार्थः**-जो अग्नि अन्न आदि को शुष्क करनेवाला वायु रूप कारण से प्रसिद्ध प्रकृति नामक कारण से उत्पन्न हुआ है, उसको जान कर बहुत से व्यवहारों को सकल जन प्रसिद्ध करें॥१४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहा है॥

**अमित्रायुधो मरुतामिव प्रयाः प्रथमजा ब्रह्मणो विश्वमिद्विदुः।**

**द्युम्नवद् ब्रह्म कुशिकास एरिर एकएको दमे अग्निं समीधिरे॥१५॥**

**अमित्रऽयुधः। मरुताम्ऽइव। प्रऽयाः। प्रथमऽजाः। ब्रह्मणः। विश्वम्। इत्। विदुः। द्युम्नऽवत्। ब्रह्म। कुशिकासः। आ। ईरिरे। एकःऽएकः। दमे। अग्निम्। सम्। ईधिरे॥१५॥**

**पदार्थः**-(**अमित्रायुधः**) अमित्रेषु शत्रुषु प्रक्षिप्तान्यायुधानि यैस्ते (**मरुतामिव**) मनुष्याणामिव (**प्रयाः**) ये सद्यः प्रयान्ति ते (**प्रथमजाः**) प्रथमात्कारणाज्जातः (**ब्रह्मणः**) परमात्मनः (**विश्वम्**) सर्वं जगत् (**इत्**) एव (**विदुः**) (**द्युम्नवत्**) प्रशस्तकीर्तिमत् (**ब्रह्म**) बृहद्धनम् (**कुशिकासः**) उत्कर्षं प्राप्ताः (**आ**) (**ईरिरे**) प्राप्नुवन्ति (**एकएकः**) जनः (**दमे**) गृहे (**अग्निम्**) (**सम्**) (**ईधिरे**) प्रदीपयेयुः॥१५॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! ये मरुतामिवाऽमित्रायुधः प्रयाः प्रथमजाः कुशिकास एकएको दमेऽग्निं समीधिरे ये च ब्रह्मणो विश्वं विदुस्त इदेव द्युम्नवद् ब्रह्मैरिरे॥१५॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। यथा वायवः सर्वत्र विजयिनोऽग्न्यादिप्रदीपका विश्वव्यापिनः सर्वान् जीवयित्वाऽऽनन्दयन्ति तथैवाग्न्यादिपदार्थविद्यायुक्ताः सर्वानानन्दयन्ति॥१५॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो (**मरुतामिव**) मनुष्यों के सदृश (**अमित्रायुधः**) शत्रुओं के ऊपर शस्त्र चलाने (**प्रयाः**) शीघ्र चलनेवाले (**प्रथमजाः**) प्रथम कारण से उत्पन्न (**कुशिकासः**) उच्च पदवी को प्राप्त (**एकएकः**) प्रत्येक जन (**दमे**) गृह में (**अग्निम्**) अग्नि को (**सम्**) (**ईधिरे**) प्रज्वलित करें और जो (**ब्रह्मणः**) परमात्मा के (**विश्वम्**) सम्पूर्ण जगत् को (**विदुः**) जानते हैं, वे (**इत्**) ही (**द्युम्नवत्**) उत्तम यशयुक्त (**ब्रह्म**) बहुत धन को (**आ, ईरिरे**) प्राप्त होते हैं॥१५॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जैसे पवन सम्पूर्ण स्थानों में प्रबलता से प्राप्त होने, अग्नि आदि पदार्थों को प्रज्वलित करने और संसार में व्यापक होनेवाले सम्पूर्ण जीवों के प्राणों की रक्षा करके आनन्द देते हैं, वैसे ही अग्नि आदि पदार्थों की विद्यायुक्त पुरुष सम्पूर्ण जनों के लिये आनन्द देते हैं॥१५॥



www.9009.co.in

**अथ केषां निश्चलमैश्वर्यं जायत इत्याह॥**

अब किन पुरुषों को निश्चल ऐश्वर्य प्राप्त होता, इस विषय को अगले मन्त्र में कहा है॥

**यदुद्य त्वा प्रयुति युज्ञे अुस्मिन् होतश्चिकित्वोऽवृणीमहीह।**

**ध्रुवमया ध्रुवमुताशमिष्ठाः प्रजानन् विद्वाँ उप याहि सोमम्॥ १६॥ ३४॥ २॥ १॥**

**यत्। अद्य। त्वा। प्रऽयति। युज्ञे। अस्मिन्। होतुरिति। चिकित्वः। अवृणीमहि। इह। ध्रुवम्। अयाः। ध्रुवम्। उत। अशमिष्ठाः। प्रऽजानन्। विद्वान्। उप। याहि। सोमम्॥ १६॥**

**पदार्थः**-(**यत्**) ये (**अद्य**) इदानीम् (**त्वा**) त्वाम् (**प्रयति**) प्रयत्नसाध्ये (**यज्ञे**) सङ्गन्तव्ये व्यवहारे (**अस्मिन्**) (**होतः**) साधनोपसाधनानामादातः (**चिकित्वः**) विज्ञानवन् (**अवृणीमहि**) वृणुयाम (**इह**) अस्मिन् संसारे (**ध्रुवम्**) निश्चलम् (**अयाः**) यजेः। अत्र लङ् मध्यमैकवचने शपो लुक् श्वेतवाहादित्वात्पदान्ते डस्। (**ध्रुवम्**) (**उत**) अपि (**अशमिष्ठाः**) शमयेः (**प्रजानन्**) विद्वान् (**उप**) (**याहि**) प्राप्नुहि (**सोमम्**) ऐश्वर्य्यम्॥ १६॥

**अन्वयः**-हे चिकित्वो होतो यद्ये वयमद्यास्मिन् प्रयति यज्ञे यं त्वाऽवृणीमहि स त्वमिह ध्रुवमशमिष्ठा उताऽपि प्रजानन् ध्रुवमयाः विद्वांत्संस्त्वं सोममुपयाहि॥ १६॥

**भावार्थः**-येऽस्मिन् संसारे प्रयत्नेन सृष्टिपदार्थविद्याक्रमं जानन्ति ते सततमुपयोगं ग्रहीतुं शक्नुवन्ति तेषां ध्रुवमैश्वर्यं भवतीति॥ १६॥

अत्राग्निवायुविद्वद्गुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति तृतीयाष्टके प्रथमोध्यायश्चतुस्त्रिंशत्तमो वर्गश्च तृतीयमण्डले द्वितीयोऽनुवाक एकोनत्रिंशत्तमं सूक्तं च समाप्तम्॥**

**पदार्थः**-हे (**चिकित्वः**) विज्ञानयुक्त (**होतः**) साधन जो मुख्य कारण उपसाधन अर्थात् सहायि कारणों के ग्रहणकर्त्ता! (**यत्**) जो हम लोग (**अद्य**) इस समय (**अस्मिन्**) इस (**प्रयति**) प्रयत्न से सिद्ध और (**यज्ञे**) ऐकमत्य होने योग्य व्यवहार में जिन (**त्वा**) आपको (**अवृणीमहि**) स्वीकार करें वह आप (**इह**) इस संसार में (**ध्रुवम्**) दृढ़ स्थिर (**अशमिष्ठाः**) शान्ति करो (**उत**) और भी (**प्रजानन्**) विज्ञानयुक्त हुए (**ध्रुवम्**) निश्चल धर्म को (**अयाः**) सङ्गत कीजिये (**विद्वान्**) विद्वान् पुरुष [होकर] आप (**सोमम्**) ऐश्वर्य्य को (**उप**) (**याहि**) प्राप्त होइये॥ १६॥

**भावार्थः**-जो लोग इस संसार में प्रयत्न से सृष्टि के पदार्थों के विद्या-क्रम को जानते हैं, वे निरन्तर उन पदार्थों से उपकार ग्रहण कर सकते हैं, उनके निश्चय से ऐश्वर्य होता है॥ १६॥

इस सूक्त में अग्नि, वायु और विद्वान् के गुणों का वर्णन होने से इस सूक्त में कहे अर्थ की पूर्व सूक्तार्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह उनतीसवां सूक्त द्वितीय अनुवाक और चौतीसवां वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्याणां श्रीपरमविदुषां विरजानन्दसरस्वतीस्वामिनां शिष्येण परमहंसपरिव्राजकाचार्येण श्रीमद्दयानन्दसरस्वतीस्वामिना निर्मिते संस्कृतार्यभाषाभ्यां विभूषिते सुप्रमाणयुक्त ऋग्वेदभाष्ये तृतीयाष्टकस्य प्रथमाध्यायः समाप्तः॥

॥ओ३म्॥

अथ तृतीयाष्टके द्वितीयाऽध्यायारम्भः॥

**ओं विश्वा॑नि देव सवितर्दुरि॒तानि॒ परा॑ सुव। यद्भ॒द्रं तन्न॒ आ सु॑व॥ ऋ० ५.८२.५॥**

**अथ द्वाविंशर्चस्य त्रिंशत्तमस्य सूक्तस्य विश्वामित्र ऋषिः। इन्द्रो देवता। १, २, ९-११, १४, १७, २० निचृत्त्रिष्टुप्। ५, ६, ८, १३, १९, २१, २२ त्रिष्टुप्। १२, १५ विराट् त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः। ३, ४, ७, १६, १८ भुरिक् पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः॥**

***अथ विदुषः कृत्यमुपदिश्यते॥***

अब तृतीयाष्टक के द्वितीय अध्याय और तीसरे मण्डल में बाईस ऋचावाले तीसवें सूक्त का प्रारम्भ है, उसके पहिले मन्त्र से विद्वान् के कर्त्तव्य का उपदेश करते हैं॥

**इ॒च्छन्ति॑ त्वा सो॒म्यास॒ः सखा॑यः सु॒न्वन्ति॒ सोम॒ं दध॑ति॒ प्रयां॑सि।**

**तिति॑क्षन्ते अ॒भिश॑स्तिं॒ जना॑ना॒मिन्द्र॒ त्वदा कश्च॒न हि प्र॑के॒तः॥ १॥**

**इ॒च्छन्ति॑। त्वा॒। सो॒म्यास॑ः। सखा॑यः। सु॒न्वन्ति॑। सोम॑म्। दध॑ति। प्रयां॑सि। तिति॑क्षन्ते। अ॒भिऽश॑स्तिम्। जना॑नाम्। इन्द्र॑। त्वत्। आ। कः। च॒न। हि। प्र॒ऽके॒तः॥ १॥**

**पदार्थः**-(**इच्छन्ति**) (**त्वा**) त्वाम् (**सोम्यासः**) (**सखायः**) (**सुन्वन्ति**) निष्पादयन्ति (**सोमम्**) परमैश्वर्य्यम् (**दधति**) (**प्रयांसि**) कमनीयानि वस्तूनि (**तितिक्षन्ते**) सहन्ते (**अभिशस्तिम्**) अभितो हिंसाम् (**जनानाम्**) मनुष्याणाम् (**इन्द्र**) परमैश्वर्यप्रद (**त्वत्**) तव सकाशात् (**आ**) (**कः**) (**चन**) कश्चिदपि (**हि**) यतः (**प्रकेतः**) प्रकृष्टा केतः प्रज्ञा यस्य सः॥ १॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! ये सोम्यासः सखायस्त्वेच्छन्ति ते सोमं सुन्वति प्रयांसि दधति जनानामभिशस्तिमा तितिक्षन्ते हि यतस्त्वदन्यः कश्चन प्रकेतो नास्ति तस्मादेतान्सर्वदा रक्ष॥ १॥

**भावार्थः**-ये सुहृदो भूत्वा प्रयत्नेनैश्वर्य्यमिच्छन्ति ते सुखदुःखनिन्दादिकं सोढ्वा विद्वत्सङ्गं कृत्वाऽऽनन्दं वर्धयेयुः॥ १॥

**पदार्थः**-हे (**इन्द्र**) परम ऐश्वर्य के दाता! जो (**सोम्यासः**) परस्पर स्नेह रस के वर्द्धक (**सखायः**) मित्रभाव से वर्त्तमान (**त्वा**) आपकी (**इच्छन्ति**) इच्छा करते हैं, वे (**सोमम्**) परम ऐश्वर्य को (**सुन्वन्ति**) सिद्ध करते, (**प्रयांसि**) कामना करने योग्य वस्तुओं को (**दधति**) धारण करते और (**जनानाम्**) मनुष्य लोगों को (**अभिशस्तिम्**) चारों ओर से हिंसा को (**आ**) (**तितिक्षन्ते**) सहते हैं (**हि**) जिससे (**त्वत्**) आपसे



www.9009.co.in

अन्य **(कः)** **(चन)** कोई भी पुरुष **(प्रकेतः)** उत्तम बुद्धिवाला नहीं है, इससे इन मनुष्यों की सर्वदा रक्षा कीजिये॥१॥

**भावार्थः**-जो लोग परस्पर मित्रभाव से वर्त्ताव करते हुए प्रयत्न के साथ ऐश्वर्य की इच्छा करते हैं, वे सुख, दुःख, निन्दा आदि को सह और विद्वानों का सङ्ग करके आनन्द को बढ़ावें॥१॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहा है॥

**न ते॑ दू॒रे प॑र॒मा चि॒द्रजां॒स्या तु प्र या॑हि हरिवो॒ हरि॑भ्याम्।**

**स्थि॒राय॒ वृष्णे॒ सव॑ना कृ॒तेमा यु॒क्ता ग्रावा॑णः समिधा॒ने अ॒ग्नौ॥२॥**

**न। ते॒। दू॒रे। प॒र॒मा। चि॒त्। रजां॑सि। आ। तु। प्र। या॒हि॒। ह॒रि॒ऽव॒ः। हरि॑ऽभ्याम्। स्थि॒राय॑। वृष्णे॑। सव॑ना। कृ॒ता। इ॒मा। यु॒क्ताः। ग्रावा॑णः। स॒म्ऽइ॒धा॒ने। अ॒ग्नौ॥२॥**

**पदार्थः**-**(न)** निषेधे **(ते)** तव **(दूरे)** **(परमा)** परमाण्युत्कृष्टानि **(चित्)** अपि **(रजांसि)** लोकस्थानानि **(आ)** **(तु)** **(प्र)** **(याहि)** **(हरिवः)** प्रशस्ताऽश्वयानयुक्त **(हरिभ्याम्)** अश्वाभ्याम् **(स्थिराय)** **(वृष्णे)** बलाय **(सवना)** ऐश्वर्यसाधकानि कर्माणि **(कृता)** कृतानि **(इमा)** इमानि **(युक्ताः)** उद्युक्ताः **(ग्रावाणः)** मेघाः। **ग्रावाण इति मेघनामसु पठितम्।** (निघं०१.१०) **(समिधाने)** प्रदीप्यमाने **(अग्नौ)** वह्नौ॥२॥

**अन्वयः**-हे हरिवस्त्वं हरिभ्यां प्रयाह्येवं कृते परमा रजांसि ते दूरे न भविष्यन्ति यदि समिधानेऽग्नौ स्थिराय वृष्णे कृतेमा सवना कुर्य्यास्तदा तु युक्ता ग्रावाणश्चिद् बहवो भवेयुः॥२॥

**भावार्थः**-यदि मनुष्याः शीघ्रगाम्यश्वैर्देशान्तरं जिगमिषेयुस्तर्हि सर्वं सनीडमेवास्ति। यदि नियमेन वह्निं प्रज्वाल्य तत्र हविर्जुहुयुस्तर्हि वर्षापि सुगमैवास्तीति ज्ञेयम्॥२॥

**पदार्थः**-हे **(हरिवः)** उत्तम घोड़ों के वाहनों से युक्त! आप **(हरिभ्याम्)** घोड़ों से **(प्र)** **(आ, याहि)** आइये, ऐसा करने से **(परमा)** उत्तम **(रजांसि)** लोकों के स्थान **(ते)** आपके **(दूरे)** दूर **(न)** नहीं होंगे, जो **(समिधाने)** हवन करने योग्य प्रदीप्त किये जाते हुए **(अग्नौ)** अग्नि में **(स्थिराय)** दृढ़ **(वृष्णे)** बलवान् के लिये **(कृता)** किये गये **(इमा)** इन **(सवना)** ऐश्वर्य-वृद्धि के साधक कर्मों को करो **(तु)** तो **(युक्ताः)** उद्यत **(ग्रावाणः)** मेघ **(चित्)** भी बहुत से होवें॥२॥

**भावार्थः**-मनुष्य यदि शीघ्र चलनेवाले घोड़ों से देशान्तर जाने की इच्छा करें तो सब समीप ही है। यदि नियम से अग्नि को प्रज्वलित कर उसमें होम करें तो वर्षा होना सुगम ही जानो॥२॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहा है॥

**इन्द्रः॑ सु॒शिप्रो॑ म॒घवा॒ तरु॑त्रो म॒हाव्रा॑तस्तुविकू॒र्मिर्ऋघा॑वान्।**



www.9009.co.in

**यदुग्रो धा बाधितो मर्त्येषु क्व१ त्या ते वृषभ वीर्याणि॥३॥**

**इन्द्रः। सुऽशिप्रः। मघऽवा। तरुत्रः। महाऽव्रातः। तुविऽकूर्मिः। ऋघावान्। यत्। उग्रः। धाः। बाधितः। मर्त्येषु। क्व। त्या। ते। वृषभ। वीर्याणि॥३॥**

**पदार्थः**-(**इन्द्रः**) परमैश्वर्य्ययुक्तः (**सुशिप्रः**) शोभनहनुनासिकः (**मघवा**) परमपूजितधनयुक्तः (**तरुत्रः**) दुःखेभ्यस्तारकः (**महाव्रातः**) महान्तो व्राताः व्रतेषु कुशला जनाः सखायो यस्य सः (**तुविकूर्मिः**) तुविर्बहुविधः कूर्मिः कर्मयोगो यस्य सः (**ऋघावान्**) य ऋघन् शत्रून् घ्नन्ति ते वा बहवः शूरा विद्यन्ते यस्य। अत्र हनधातोर्वर्णव्यत्ययेन हस्य घो नलोपश्च। (**यत्**) यानि (**उग्रः**) तेजस्विस्वभावः (**धाः**) धेहि (**बाधितः**) विलोडितः (**मर्त्येषु**) (**क्व**) कस्मिन् (**त्या**) तानि (**ते**) तव (**वृषभ**) बलिष्ठ (**वीर्याणि**) वीरेषु साधूनि बलानि॥३॥

**अन्वयः**-हे वृषभ! मर्त्येषु बाधितः उग्रः सन् यद्यानि दुःखनिवारणानि धास्ते तव त्या वीर्याणि क्व सन्ति। एवं सुशिप्रो मघवा तरुत्रो महाव्रातस्तुविकूर्मिर्ऋघावानिन्द्रस्त्वं भवेः॥३॥

**भावार्थः**-यदा मनुष्यस्यानेकविधा बाधाः समुत्थिताः स्युस्तदाऽनेकानुपायान् युञ्जीत। एवं पुरुषार्थेन विघ्नानि निवार्य श्रीबले सततं वर्धनीये॥३॥

**पदार्थः**-हे (**वृषभ**) बलिष्ठ! (**मर्त्येषु**) मनुष्यो में (**बाधितः**) पीड़ित (**उग्रः**) तेजस्वी स्वभाव से युक्त (**यत्**) जो दुःख दूर करनेवाले हैं, उनको (**धाः**) धारण करो (**ते**) आपके (**त्या**) वे (**वीर्याणि**) वीर पुरुषों में हुए योग्य बल (**क्व**) किसमें हैं, इस प्रकार (**सुशिप्रः**) सुन्दर ठोढ़ी और नासिकायुक्त (**मघवा**) अत्यन्त श्रेष्ठ धन से युक्त (**तरुत्रः**) दुःखों से छुड़ानेवाला (**महाव्रातः**) सत्य आदि व्रतों में श्रद्धालु पुरुषों का मित्र (**तुविकूर्मिः**) बहुत प्रकार के कर्मों के आरम्भ में उत्साही (**ऋघावान्**) शत्रुओं के नाशकर्त्ता बहुत से शूरवीरों के सहित वर्त्तमान (**इन्द्रः**) अत्यन्त ऐश्वर्य्य से युक्त आप होवें॥३॥

**भावार्थः**-जब मनुष्य के अनेक प्रकार की पीड़ायें प्रकट हों, तब बहुत से उपायों को युक्त करें, इस प्रकार पुरुषार्थ से विघ्नों को दूर करके शोभा और बल निरन्तर बढ़ाने योग्य हैं॥३॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहा है॥

**त्वं हि ष्मा च्यावयन्नच्युतान्येको वृत्रा चरसि जिघ्नमानः।**

**तव द्यावापृथिवी पर्वतासोऽनु व्रताय निमितेव तस्थुः॥४॥**

**त्वम्। हि। स्म। च्यवयन्। अच्युतानि। एकः। वृत्रा। चरसि। जिघ्नमानः। तव। द्यावापृथिवी इति। पर्वतासः। अनु। व्रताय। निमिताऽइव। तस्थुः॥४॥**

**पदार्थः**-(**त्वम्**) राजन् (**हि**) (**स्म**) एव। अत्र **निपातस्य चे**ति दीर्घः। (**च्यावयन्**) प्रचालयन् निपातयन् (**अच्युतानि**) अक्षीणानि शत्रुसैन्यानि (**एकः**) असहायः (**वृत्रा**) मेघावयवरूपाणि घनानि



www.9009.co.in

**(चरसि)** **(जिघ्नमानः)** हनन् सन् **(तव)** **(द्यावापृथिवी)** प्रकाशभूमी **(पर्वतासः)** पर्वताकारा मेघाः **(अनु)** **(व्रताय)** सत्यभाषणादिकर्मणे तच्छीलाय वा **(निमितेव)** नितरां मितानीव **(तस्थुः)** तिष्ठन्ति॥४॥

**अन्वयः**-हे राजन्! त्वमेको ह्यच्युतानि च्यावयन् स्म चरसि यथा सूर्य्यस्य सम्बन्धे द्यावापृथिवी पर्वतासो वृत्रा निमितेव तस्थुस्तथैवानुव्रताय शत्रून् जिघ्नमानो भवेत्तर्हि ते तव ध्रुवो विजयः स्यात्॥४॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। यथा सूर्य्यो नियमेन वर्त्तित्वा निवारणीयानि निवार्य्य रक्षणीयानि रक्षति तथैव भवान् प्रतिषेद्धव्यान् शत्रून् प्रतिषेध्य प्रजाः सततं रक्षेत्॥४॥

**पदार्थः**-हे राजन्! **(त्वम्)** आप **(एकः)** सहाय के विना स्वयं बलवान् **(हि)** जिससे **(अच्युतानि)** प्रबल शत्रुओं की सेनाओं को **(च्यावयन्)** भय से गिराते हुए **(स्म)** ही वर्त्तमान हैं, जैसे सूर्य के सम्बन्ध में **(द्यावापृथिवी)** प्रकाश और भूमि **(पर्वतासः)** पर्वत के सदृश बड़े-बड़े मेघ और **(वृत्रा)** मेघों के टुकड़े रूप बादल **(निमितेव)** जैसे निरन्तर प्रमाण किये हुए पदार्थ वैसे **(तस्थुः)** स्थिर होते हैं, वैसे ही **(अनु)** **(व्रताय)** सत्यभाषण आदि कर्म वा उत्तम स्वभाव के लिये शत्रुओं का **(जिघ्नमानः)** नाशकर्त्ता होओ तो **(ते)** आपका निश्चय से विजय होवे॥४॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जैसे सूर्य नियमपूर्वक वर्त्तमान होके निवारण करने योग्य पदार्थों का निवारण करके रक्षा करने योग्य पदार्थों की रक्षा करता है, वैसे ही आप वर्जने योग्य शत्रुओं का वर्जन करके प्रजाओं की निरन्तर रक्षा कीजिये॥४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहा है॥

**उ॒ताभ॑ये पुरुहूत॒ श्रवो॑भि॒रेको॑ दृ॒ळ्हम॑वदो वृ॒त्रहा सन्।**

**इ॒मे चि॑दिन्द्र॒ रोद॑सी अपा॒रे यत्सं॑गृ॒भ्णा म॑घवन्का॒शिरित्ते॑॥५॥१॥**

**उ॒त। अभ॑ये। पु॒रु॒ऽहू॒त। श्रव॑ःऽभिः। एक॑ः। दृ॒ळ्हम्। अ॒व॒दः॒। वृ॒त्र॒ऽहा। सन्। इ॒मे इति॑। चि॒त्। इ॒न्द्र॒। रोद॑सी॒ इति॑। अ॒पा॒रे इति॑। यत्। स॒म्ऽगृ॒भ्णाः। म॒घ॒ऽव॒न्। का॒शिः। इत्। ते॒॥५॥**

**पदार्थः**-**(उत)** अपि **(अभये)** भयरहिते व्यवहारे **(पुरुहूत)** बहुभिः प्रशंसित **(श्रवोभिः)** अनेकविधैः श्रवणैः **(एकः)** असहायः **(दृढम्)** **(अवदः)** वदेः **(वृत्रहा)** सूर्यवत् **(सन्)** **(इमे)** **(चित्)** अपि **(इन्द्र)** सूर्य्यवद्वर्त्तमान **(रोदसी)** द्यावापृथिवी **(अपारे)** अविद्यमानाऽवधी **(यत्)** या **(सङ्गृभ्णाः)** सङ्गृह्णीयाः **(मघवन्)** बहुधनयुक्त **(काशिः)** न्यायविनयादिशुभगुणप्रदीप्तिः **(इत्)** एव **(ते)** तव॥५॥

**अन्वयः**-हे पुरुहूत मघवन्निन्द्र! त्वमेकस्सन्नभये श्रवोभिः सह दृढमवद उतापि यथा वृत्रहा सूर्य्यश्चिदिमे अपारे रोदसी सङ्गृह्णाति तथाभूतः सन् यद्या ते काशिरस्ति तामित्सङ्गृभ्णाः॥५॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। राजपुरुषैरनेकोपायैः प्रजासु निर्भयता सम्पादनीया सूर्य्यवन् न्यायविद्या प्रकाशनीया॥५॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-हे **(पुरुहूत)** बहुत जनों से प्रशंसित **(मघवन्)** बहुत धन से युक्त **(इन्द्र)** सूर्य्य के तुल्य प्रकाशमान! आप **(एकः)** विना सहाय स्वयं बलवान् **(सन्)** हुए **(अभये)** भय से रहित व्यवहार में **(श्रवोभिः)** अनेक प्रकार के सुनने योग्य वचनों के सहित **(दृढम्)** निश्चय **(अवदः)** बोलें **(उत)** और भी जैसे **(वृत्रहा)** सूर्य्य **(चित्)** भी **(इमे)** इन **(अपारे)** अवधि रहित **(रोदसी)** अन्तरिक्ष और पृथिवी को प्राप्त होता है, वैसे होकर **(यत्)** जो **(ते)** आपके **(काशिः)** न्याय विनय आदि उत्तम गुणों का प्रकाश है, उसको **(इत्)** ही **(संगृभ्णाः)** ग्रहण करें॥५॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। राजा के पुरुषों को चाहिये कि अनेक प्रकार के उपायों से प्रजाओं में उपद्रवों से भय का नाश और सूर्य के तुल्य न्यायविद्या का प्रकाश करें॥५॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहा है॥

**प्र सू त॑ इन्द्र प्रवता हरि॑भ्यां प्र ते वज्रः॑ प्रमृणन्नै॑तु शत्रू॑न्।**

**जहि प्रती॑चो अ॑नूचः परा॑चो विश्वं॑ सत्यं कृ॑णुहि विष्टम॑स्तु॥६॥**

**प्र। सु। ते। इन्द्र। प्रऽवता॑। हरि॑ऽभ्याम्। प्र। ते। वज्रः॑। प्रऽमृणन्। एतु। शत्रू॑न्। जहि। प्रतीचः॑। अनूचः॑। परा॑चः। विश्व॑म्। सत्यम्। कृणुहि। विष्टम्। अस्तु॥६॥**

**पदार्थः**-**(प्र)** **(सु)** **(ते)** तव **(इन्द्र)** सूर्य्यइव वर्त्तमान **(प्रवता)** अर्वाचीनेन मार्गेण **(हरिभ्याम्)** सुशिक्षिताभ्यामश्वाभ्याम् **(प्र)** **(ते)** तव **(वज्रः)** किरण इव शस्त्रसमूहः **(प्रमृणन्)** प्रकर्षेण हिंसन् **(एतु)** प्राप्नोतु **(शत्रून्)** दुष्टकर्मकर्तॄन् **(जहि)** हिंधि **(प्रतीचः)** पश्चात् स्थितान् **(अनूचः)** कपटेनानुकूलान् **(पराचः)** पराग्भूतान् दूरस्थान् **(विश्वम्)** **(सत्यम्)** **(कृणुहि)** **(विष्टम्)** व्याप्तम् **(अस्तु)**॥६॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! हरिभ्यां युक्ते रथे प्रवता मार्गेण भवान् वज्र इव शत्रून् प्रमृणन् प्रैतु। एवं ते विजयो भवति त्वं प्रतीचोऽनूचः पराचः शत्रून् प्र जहि विश्वं सत्यं सु कृणुहि यतो विष्टं चास्तु एवं ते सत्कीर्त्तिः प्रवर्त्तेत॥६॥

**भावार्थः**-ये मनुष्या दुष्टाचारिणो मनुष्यादिप्राणिनो निरुध्य सत्यं प्रवर्त्तयेयुस्ते सुखेनानन्दमाप्नुयुः॥६॥

**पदार्थः**-हे **(इन्द्र)** सूर्य के सदृश प्रकाशमान! **(हरिभ्याम्)** उत्तम प्रकार शिक्षायुक्त घोड़ों से युक्त रथ में **(प्रवता)** उत्तम मार्ग से आप जैसे **(वज्रः)** किरणों के सदृश शस्त्रों का समूह और **(शत्रून्)** दुष्ट कर्म करनेवालों को **(प्रमृणन्)** अत्यन्त नाश करते हुए **(प्र, एतु)** प्राप्त हूजिये। इस प्रकार **(ते)** आपका विजय होता है आप **(प्रतीचः)** पीछे वर्त्तमान **(अनूचः)** और कपट से अनुकूल अर्थात् [निकटस्थ और] **(पराचः)** दूर स्थल में विराजमान शत्रुओं की **(प्र)** **(जहि)** हिंसा करो तथा **(विश्वम्)** सम्पूर्ण **(सत्यम्)** सत्य को **(सु, कृणुहि)** अच्छे प्रकार बढ़ाओ जिससे वह **(विष्टम्)** व्याप्त **(अस्तु)** हो॥६॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-जो मनुष्य दुष्ट आचरण करनेवाले मनुष्य आदि प्राणियों का निवारण करके सत्य का प्रचार करें, वे सुख से आनन्द भोगते हैं॥६॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहा है॥

**यस्मै धायुरदधा मर्त्यायाभक्तं चिद्भजते गेह्यं१ सः।**

**भद्रा त इन्द्र सुमतिर्घृताची सहस्रदाना पुरुहूत रातिः॥७॥**

**यस्मै। धायुः। अदधाः। मर्त्याय। अभक्तम्। चित्। भजते। गेह्यम्। सः। भद्रा। ते। इन्द्र। सुऽमतिः। घृताची। सहस्रऽदाना। पुरुऽहूत। रातिः॥७॥**

**पदार्थः**-**(यस्मै)** **(धायुः)** यो दधाति सः **(अदधाः)** दध्याः **(मर्त्याय)** मनुष्याय **(अभक्तम्)** विभागरहितम् **(चित्)** अपि **(भजते)** सेवते **(गेह्यम्)** गृहेषु गृहेषु भवम् **(सः)** **(भद्रा)** कल्याणकारी **(ते)** तव **(इन्द्र)** सुखप्रदातः **(सुमतिः)** शोभना प्रज्ञा **(घृताची)** सुखप्रदा रात्रीव **(सहस्रदाना)** असंख्यप्रदाना **(पुरुहूत)** बहुभिः सेवित **(रातिः)** दानक्रिया॥७॥

**अन्वयः**-हे पुरुहूतेन्द्र! भवान् यस्मै मर्त्यायाऽभक्तं गेह्यं भजते यस्मै धायुश्चिदपि सुखमदधास्तस्य ते या घृताचीव भद्रा सुमतिः सहस्रदाना रातिरस्ति तां स कुर्य्यात्॥७॥

**भावार्थः**-ये मनुष्या पितृपैतामहं धनादिकभक्तं सेवेरन् अन्योऽन्यस्य दोषाँस्त्यक्त्वा गुणान् गृह्णीयुस्ते कल्याणभाजो भवेयुः॥७॥

**पदार्थः**-**(पुरुहूत)** **(इन्द्र)** सुख के दाता आप **(यस्मै)** जिस **(मर्त्याय)** मनुष्य के लिये **(अभक्तम्)** विभाग से रहित **(गेह्यम्)** गृह-गृह में उत्पन्न हुए धन की **(भजते)** सेवा करते हैं, जिसके लिये **(धायुः)** उत्तम पदार्थों के धारणकर्त्ता **(चित्)** भी आप सुख को **(अदधाः)** धारण करें उन **(ते)** आपकी जो **(घृताची)** सुख देनेवाली रात्रि के सदृश **(भद्रा)** कल्याण करनेवाली **(सुमतिः)** उत्तम बुद्धि और **(सहस्रदाना)** अनगिनती दान जिसमें दिये जाते हों, ऐसी **(रातिः)** दान सम्बन्धिनी क्रिया है, उसको **(सः)** वह स्वीकार करे॥७॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य पिता और पितामह का धन आदि जो कि नहीं बटा हुआ उसकी रक्षा वा सेवा करें और परस्पर दोषों को त्याग के गुणों का ग्रहण करें, वे कल्याण के भागी होवें॥७॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहा है॥

**सहदानुं पुरुहूत क्षियन्तमहस्तमिन्द्र सं पिणक्कुणारुम्।**

**अभि वृत्रं वर्धमानं पियारुमपादमिन्द्र तवसा जघन्थ॥८॥**

सहऽदानुम्। पुरुऽहूत। क्षियन्तम्। अहस्तम्। इन्द्र। सम्। पिणक्। कुणारुम्। अभि। वृत्रम्। वर्धमानम्। पियारुम्। अपादम्। इन्द्र। तवसा। जघन्थ॥८॥

**पदार्थः**-(**सहदानुम्**) दानेन सह वर्त्तमानम् (**पुरुहूत**) बहुभिः प्रशंसित (**क्षियन्तम्**) निवसन्तम् (**अहस्तम्**) अविद्यमानम् (**इन्द्र**) सूर्य्यवद्वर्त्तमान (**सम्**) सम्यक् (**पिणक्**) पिंष्याः (**कुणारुम्**) शब्दायमानम् (**अभि**) आभिमुख्ये (**वृत्रम्**) मेघम् (**वर्धमानम्**) (**पियारुम्**) पीयमानम् (**अपादम्**) पादरहितम् (**इन्द्र**) दुष्टानां विदारक (**तवसा**) बलेन (**जघन्थ**) जह्याः॥८॥

**अन्वयः**-हे पुरुहूतेन्द्र! यथा सूर्य्यः सहदानुं क्षियन्तमहस्तं कुणारुं वर्धमानं पियारुमपादं वृत्रं मेघमभिपिनष्टि तथा शत्रून् भवान् संपिणक्। हे इन्द्र! त्वं तवसा दुष्टान् जघन्थ॥८॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यथा सूर्य्यो मेघाकर्षणवर्षणाभ्यां सर्वं जगत्पाति तथैव दुष्टानां घातेन श्रेष्ठानां धारणेन च सर्वा प्रजाः पालनीयाः॥८॥

**पदार्थः**-हे (**पुरुहूत**) बहुत जनों से प्रशंसित अर्थात् यश को प्राप्त (**इन्द्र**) सूर्य्य के सदृश तेजस्वी! जैसे [सूर्य] (**सुहदानुम्**) दान से युक्त (**क्षियन्तम्**) रहते हुए (**अहस्तम्**) अविद्यमान (**कुणारुम्**) शब्द करते और (**वर्धमानम्**) बढ़ते हुए (**पियारुम्**) पिये गये (**अपादम्**) पादों से हीन (**वृत्रम्**) मेघ को (**अभि**) सम्मुख पीसता है, वैसे शत्रुओं का आप (**सम्, पिणक्**) नाश करो और (**इन्द्र**) हे दुष्टों को विदीर्ण करनेवाले! आप (**तवसा**) बल से दुष्ट पुरुषों का (**जघन्थ**) नाश करें॥८॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे सूर्य्य मेघों के आकर्षण और वर्षाने से सम्पूर्ण जगत् को पालता है, वैसे ही दुष्टों के नाश करने और श्रेष्ठ पुरुषों के धारण करने से राजा को सम्पूर्ण प्रजाओं की पालना करनी चाहिये॥८॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहा है॥

**नि सामनामिषिरामिन्द्र भूमिं महीमपारां सदने ससत्थ।**
**अस्तभ्नाद् द्यां वृषभो अन्तरिक्षमर्षन्त्वापस्त्वयेह प्रसूताः॥९॥**

नि। सामनाम्। इषिराम्। इन्द्र। भूमिम्। महीम्। अपाराम्। सदने। ससत्थ। अस्तभ्नात्। द्याम्। वृषभः। अन्तरिक्षम्। अर्षन्तु। आपः। त्वया। इह। प्रऽसूताः॥९॥

**पदार्थः**-(**नि**) (**सामनाम्**) प्रशस्तानि सामानि विद्यन्ते यस्यां ताम् (**इषिराम्**) बहुपदार्थप्रापिकाम् (**इन्द्र**) सवितेव राजन् (**भूमिम्**) बहवः पदार्था भवन्ति यस्यां ताम् (**महीम्**) परिमाणेन महतीम् (**अपाराम्**) पाररहिताम् (**सदने**) स्थाने (**ससत्थ**) सीद (**अस्तभ्नात्**) स्तभ्नाति (**द्याम्**) (**वृषभः**) वर्षकः (**अन्तरिक्षम्**) आकाशं वा (**अर्षन्तु**) प्राप्नुवन्तु (**आपः**) जलानि (**त्वया**) (**इह**) प्रसूताः॥९॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे इन्द्र राजँस्त्वं यथा वृषभो द्यामस्तभ्नात्तथा सामनामिषिरां महीमपारां भूमिं प्राप्येह सदने नि ससत्थ त्वया प्रसूता आपोऽन्तरिक्षमर्षन्तु॥९॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यथा सूर्यो नियमेन प्रकाशं भूमिं च धरति तथैव न्यायेन राज्यं राजा धरेत्। सदैव प्रजासु बलानि वर्धयेत्॥९॥

**पदार्थः**-हे **(इन्द्र)** सूर्य्य के तुल्य प्रकाश से युक्त राजन्! आप जैसे **(वृषभः)** वृष्टिकर्त्ता सूर्य **(द्याम्)** अन्तरिक्ष को **(अस्तभ्नात्)** पुष्टता से धारण करता है, वैसे **(सामनाम्)** उत्तम उपमाओं से युक्त **(इषिराम्)** बहुत पदार्थों की प्राप्ति करानेवाली **(महीम्)** बड़े परिमाण से युक्त **(अपाराम्)** जिसका पार नहीं **(भूमिम्)** जिसमें बहुत पदार्थ होते हैं, उस भूमि को प्राप्त होकर **(इह)** इस **(सदने)** स्थान में **(नि, ससत्थ)** बैठो **(त्वया)** आपसे **(प्रसूताः)** प्रेरित हुए **(आपः)** जल **(अन्तरिक्षम्)** आकाश को **(अर्षन्तु)** प्राप्त होवें॥९॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे सूर्य्य नियमपूर्वक प्रकाश और भूमि को धारण करता है, वैसे ही न्याय से राजा राज्य को धारण करे और सब काल में प्रजाओं में ही बल बढ़ाया करे॥९॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहा है॥

**अ॒ला॒तृ॒णो व॒ल इन्द्र॑ व्र॒जो गोः पु॒रा हन्तो॒र्भय॑मानो॒ व्या॑र।**

**सु॒गान् प॒थो अ॑कृणोन्नि॒रजे॒ गाः प्राव॒न् वाणी॑: पुरुहू॒तं धम॑न्तीः॥१०॥२॥**

**अ॒ला॒तृ॒णः। व॒लः। इन्द्र॑। व्र॒जः। गोः। पु॒रा। हन्तोः॑। भय॑मानः। वि। आ॒र॒। सु॒ऽगान्। प॒थः। अ॒कृ॒णो॒त्। नि॒ःऽअजे॑। गाः। प्र। आ॒व॒न्। वाणीः॑। पु॒रु॒हू॒तम्। धम॑न्तीः॥१०॥**

**पदार्थः**-**(अलातृणः)** योऽलं तृणाति सः **(बलः)** बलवान् **(इन्द्र)** परमैश्वर्य्यप्रापक **(व्रजः)** यो व्रजति गच्छेत् सः **(गोः)** पृथिव्याः **(पुरा)** **(हन्तोः)** हन्तुम् **(भयमानः)** भयं प्राप्तः। अत्र व्यत्ययेन शानच्। **(वि, आर)** विशेषेण गच्छति **(सुगान्)** सुखेन गच्छति येषु तान् **(पथः)** मार्गान् **(अकृणोत्)** कुर्य्यात् **(निरजे)** नितरां गमनाय **(गाः)** या गच्छन्ति ताः **(प्र)** **(आवन्)** प्रकर्षेण रक्षन्ति **(वाणीः)** सुशिक्षिता वाचः **(पुरुहूतम्)** बहुभिः प्रशंसितम् **(धमन्तीः)** शब्दयन्त्यः॥१०॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! अलातृणो बलो व्रजो भयमानो भवान् सुगान् पथो व्यार यः पुरा गोर्हन्तोरकृणोद्या पुरुहूतं धमन्तीर्वाणीर्गाः प्रावन् तं ताश्च निरजे व्यार॥१०॥

**भावार्थः**-मनुष्यैः सदैवाऽधर्माचरणाद्भीत्वा धर्म्यं प्रवर्तितव्यं दुर्व्यसनानि हत्वा धर्म्यमार्गेण गन्तव्यम्॥१०॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-हे **(इन्द्र)** श्रेष्ठ ऐश्वर्य्य के दाता! **(अलातृणः)** सम्पूर्ण संसार के प्रलयकर्त्ता **(बलः)** बलयुक्त **(व्रजः)** चलनेवाले **(भयमानः)** भय को प्राप्त होते हुए आप **(सुगान्)** सुख से जिनमें मनुष्य आदि चलें ऐसे **(पथः)** मार्गों को **(वि) (आर)** विशेष करके प्राप्त होइये जो **(पुरा)** प्रथम **(गोः)** पृथिवी का **(हन्तोः)** नाश करने को **(अकृणोत्)** क्रिया करे वा जो **(पुरुहूतम्)** बहुतों से प्रशंसायुक्त **(धमन्तीः)** शब्द करती हुईं **(वाणीः)** उत्तम प्रकार शिक्षायुक्त **(गाः)** चलनेवाली वाणी **(प्र) (आवन्)** अतिशय रक्षा करती हैं, उसको और उनको **(निरजे)** अत्यन्त चलने के लिये विशेष करके प्राप्त होइये॥१०॥

**भावार्थः**-मनुष्यों को चाहिये कि सदा ही अधर्म के आचरण से डरके धर्म में प्रवृत्त हों और बुरे व्यसनों को त्याग के धर्मयुक्त मार्ग से चलें॥१०॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहा है॥

**एको द्वे वसुमती समीची इन्द्र आ पप्रौ पृथिवीमुत द्याम्।**

**उतान्तरिक्षादभि नः समीक इषो रथीः सयुजः शूर वाजान्॥११॥**

**एकः। द्वे इति। वसुमती इति वसुऽमती। समीची इति सम्ऽईची। इन्द्रः। आ। पप्रौ। पृथिवीम्। उत। द्याम्। उत। अन्तरिक्षात्। अभि। नः। सम्ऽईके। इषः। रथीः। सऽयुजः। शूर। वाजान्॥११॥**

**पदार्थः**-**(एकः)** असहायः **(द्वे) (वसुमती)** बहवो वसवो विद्यन्ते ययोस्ते **(समीची)** ये सम्यगञ्चतः समानं प्राप्नुतस्ते **(इन्द्रः)** विद्युत् **(आ) (पप्रौ)** प्राति **(पृथिवीम्)** अन्तरिक्षं भूमिं वा **(उत)** अपि **(द्याम्)** प्रकाशम् **(उत)** अपि **(अन्तरिक्षात्)** मध्यस्थादवकाशात् **(अभि)** आभिमुख्ये **(नः)** अस्मभ्यम् **(समीके)** समीपे **(इषः)** इच्छाः **(रथीः)** प्रशस्तरथयुक्तः **(सयुजः)** ये समानं युञ्जते ते **(शूर)** दुष्टानां हिंसक **(वाजान्)** अन्नादीन्॥११॥

**अन्वयः**-हे शूर! यथैको रथीरिन्द्रो द्वे समीची वसुमती पृथिवीमुत द्यां चा पप्रौ समीकेऽन्तरिक्षात् सयुजो नोऽस्मभ्यमिष उत वाजानभि पप्रुः ते सर्वैः सत्कर्त्तव्याः॥११॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। ये भूमिवत्प्रजाधारका विद्युद्वत्परमैश्वर्यप्रदाः प्रजाजनाः स्युस्ते सर्वं राज्यं रक्षितुं शक्नुयुः॥११॥

**पदार्थः**-हे **(शूर)** दुष्टजनों के नाशकारक! जैसे **(एकः)** सहायरहित अकिल्ली **(रथीः)** प्रशंसनीय रथरूप वाहन के सहित **(इन्द्रः)** बिजुली **(द्वे)** दो **(समीची)** समानता को प्राप्त **(वसुमती)** बहुत धनों से युक्त **(पृथिवीम्)** अन्तरिक्ष वा भूमि को **(उत)** और भी **(द्याम्)** प्रकाश को **(आ) (पप्रौ)** पूर्ण करती **(समीके)** समीप में **(अन्तरिक्षात्)** मध्य में वर्त्तमान अवकाश से **(सयुजः)** तुल्यता के साथ परस्पर मिले हुए मित्र जन **(नः)** हम लोगों के लिये **(इषः)** इच्छाओं को **(उत)** और **(वाजान्)** अन्न आदि वस्तुओं को **(अभि)** सब ओर से पूर्ण करते, वे सम्पूर्ण जनों से सत्कार करने योग्य हैं॥११॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो भूमि के सदृश प्रजाओं के धारण करने और बिजुली के सदृश अति उत्तम ऐश्वर्य्य के देनेवाले प्रजाजन हों, वे सम्पूर्ण राज्य की रक्षा कर सकें॥११॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहा है॥

**दिशः सूर्यो न मिनाति प्रदिष्टा दिवेदिवे हर्यश्वप्रसूताः।**

**सं यदानळध्वन आदिदश्वैर्विमोचनं कृणुते तत्त्वस्य॥१२॥**

**दिशः। सूर्यः। न। मिनाति। प्रऽदिष्टाः। दिवेऽदिवे। हर्यश्वऽप्रसूताः। सम्। यत्। आनट्। अध्वनः। आत्। इत्। अश्वैः। विऽमोचनम्। कृणुते। तत्। तु। अस्य॥१२॥**

**पदार्थः**-(**दिशः**) पूर्वाद्याः (**सूर्यः**) सविता (**न**) इव (**मिनाति**) (**प्रदिष्टाः**) याः प्रदिश्यन्ते ताः (**दिवेदिवे**) प्रतिदिनम् (**हर्यश्वप्रसूताः**) हरयो हरणशीलाः अश्वाः किरणा यस्य तेन प्रसूता जनिताः (**सम्**) (**यत्**) (**आनट्**) व्याप्नोति (**अध्वनः**) मार्गान् (**आत्**) आनन्तर्य्ये (**इत्**) एव (**अश्वैः**) तुरङ्गैः (**विमोचनम्**) (**कृणुते**) करोति (**तत्**) (**तु**) (**अस्य**)॥१२॥

**अन्वयः**-यः सूर्यो न दिवेदिवे हर्यश्वप्रसूताः प्रदिष्टा दिशो मिनाति। आद्यद्योऽश्वैरध्वनः समानट् विमोचनं कृणुते तदित्त्वस्य भूषणमिति वेद्यम्॥१२॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। यन्मनुष्या अविद्याकुसंस्कारदुःखानि विमोच्य सूर्य्योऽन्धकारमिवाऽन्यायं निवर्त्य सर्वासु दिक्षु कीर्तिं प्रसारयन्ति तदेवैषां कर्त्तव्यं कर्माऽस्ति॥१२॥

**पदार्थः**-जो (**सूर्यः**) सूर्य्य के (**न**) तुल्य (**दिवेदिवे**) प्रतिदिन (**हर्यश्वप्रसूताः**) हरणशील किरणों वाले से उत्पन्न (**प्रदिष्टाः**) सूचना से दिखाई गई (**दिशः**) दिशाओं को (**मिनाति**) अलग-अलग करता है (**आत्**) अनन्तर (**यत्**) जो (**अश्वैः**) घोड़ों से (**अध्वनः**) मार्गों को (**सम्**) (**आनट्**) व्याप्त होता तथा (**विमोचनम्**) त्याग (**कृणुते**) करता है (**तत्, इत्**) वही (**तु**) तो (**अस्य**) इसका भूषण है, ऐसा जानना चाहिये॥१२॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जो पुरुष अविद्या, दुष्ट संस्कार और दुःखों को त्याग के जैसे सूर्य्य अन्धकार को दूर करता है, वैसे अन्याय को दूर करके सम्पूर्ण दिशाओं में यश को फैलाते हैं, यही इनका कर्त्तव्य कर्म है॥१२॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहा है॥

**दिदृक्षन्त उषसो यामन्नक्तोर्विवस्वत्या महि चित्रमनीकम्।**

**विश्वे जानन्ति महिना यदागादिन्द्रस्य कर्म सुकृता पुरूणि॥१३॥**



www.9009.co.in

**दि॒दृ॑क्षन्ते। उ॒षस॑ः। याम॑न्। अ॒क्तोः। वि॒वस्व॑त्याः। महि॑। चि॒त्रम्। अनी॑कम्। विश्वे॑। जा॒न॒न्ति॒। म॒हि॒ना। यत्। आ। अगा॑त्। इन्द्र॑स्य। कर्म॑। सु॒ऽकृ॑ता। पु॒रूणि॑॥१३॥**

**पदार्थः**-(**दिदृक्षन्ते**) द्रष्टुमिच्छन्ति (**उषसः**) प्रभातान् (**यामन्**) यामनि मार्गे (**अक्तोः**) रात्रेः (**विवस्वत्याः**) यः विवस्वति साध्व्यः (**महि**) महत् (**चित्रम्**) अद्भुतम् (**अनीकम्**) सैन्यम् (**विश्वे**) सर्वे (**जानन्ति**) (**महिना**) महिम्ना। अत्र **छान्दसो वर्णलोपो वे**ति न लोपः। (**यत्**) ये (**आ**) समन्तात् (**अगात्**) प्राप्नुयात् (**इन्द्रस्य**) विद्युतः (**कर्म**) कर्माणि (**सुकृता**) सुष्ठुकृतानि (**पुरूणि**) बहूनि॥१३॥

**अन्वयः**-यद्ये विश्वे मनुष्या विवस्वत्या उषसोऽक्तोर्यामन् दिदृक्षन्ते महिना महि चित्रमनीकं जानन्तीन्द्रस्य पुरूणि सुकृता कर्म दिदृक्षन्ते तान् य आगात् स सुखी स्यात्॥१३॥

**भावार्थः**-ये परीक्षकाः प्रातरुत्थाय प्रयत्नेन व्यवहारान् साध्नुवन्ति तेऽत्र ज्ञानविशेषा पूज्यन्ते बलं च लभन्ते॥१३॥

**पदार्थः**-(**यत्**) जो (**विश्वे**) सम्पूर्ण मनुष्य (**विवस्वत्याः**) सूर्य मण्डल के निमित्त व्यवहारवाली (**उषसः**) प्रभात वेलाओं को (**अक्तोः**) रात्रि के (**यामन्**) मार्ग में (**दिदृक्षन्ते**) देखने की इच्छा करते हैं, (**महिना**) महिमा से (**महि**) बड़ी (**चित्रम्**) अद्भुत (**अनीकम्**) सेना को (**जानन्ति**) जानते हैं, (**इन्द्रस्य**) बिजुली के (**पुरूणि**) बहुत (**सुकृता**) उत्तम प्रकार किये गये (**कर्म**) कर्मों को देखने की इच्छा करते हैं, उनको जो (**आ, अगात्**) प्राप्त हो वह सुखी होवे॥१३॥

**भावार्थः**-जो परीक्षक लोग प्रातःकाल उठ के प्रयत्न से व्यवहारों को सिद्ध करते हैं, वे इस संसार में ज्ञानविशेष से प्रतिष्ठा को प्राप्त और बल से युक्त होते हैं॥१३॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहा है॥

**महि॒ ज्योति॒र्निहि॑तं व॒क्षणा॑स्वा॒मा प॒क्वं च॑रति॒ बिभ्र॑ती॒ गौः।**
**विश्वं॒ स्वाद्म॒ संभृ॑तमु॒स्रिया॑यां॒ यत्सी॒मिन्द्रो॒ अद॑धा॒द्भोज॑नाय॥१४॥**

**महि॑। ज्योति॑ः। निऽहि॑तम्। व॒क्षणा॑सु। आ॒मा। प॒क्वम्। च॒र॒ति॒। बिभ्र॑ती। गौः। विश्व॑म्। स्वाद्म॑। सम्ऽभृ॑तम्। उ॒स्रिया॑याम्। यत्। सी॒म्। इन्द्र॑ः। अद॑धात्। भोज॑नाय॥१४॥**

**पदार्थः**-(**महि**) महत् (**ज्योतिः**) तेजः (**निहितम्**) स्थितम् (**वक्षणासु**) वहमानासु नदीषु। **वक्षणा इति नदीनामसु पठितम्।** (निघं०१.१३) (**आमा**) आमानि (**पक्वम्**) (**चरति**) गच्छति (**बिभ्रती**) धरन्ती (**गौः**) या गच्छति सा (**विश्वम्**) सर्वम् (**स्वाद्म**) अतिस्वादुमत् (**सम्भृतम्**) सम्यग्धृतं पोषितं वा (**उस्रियायाम्**) पृथिव्याम् (**यत्**) या (**सीम्**) सर्वतः (**इन्द्रः**) विद्युत् (**अदधात्**) दधाति (**भोजनाय**) पालनायाऽभ्यवहरणाय वा॥१४॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-यद्या गौर्वक्षणास्वामा पक्वं बिभ्रती चरति यदत्र महि निहितं ज्योतिरुस्रियायां विश्वं स्वाद्म सम्भृतं चरति स इन्द्रो भोजनाय सर्वं सीमदधादिति सर्वैर्वेद्यम्॥१४॥

**भावार्थः**-या विद्युद्भूम्यब्वाय्वन्तरिक्षेषु तद्विकारेषु पदार्थेषु च व्याप्य सर्वं धृत्वा पालयति तस्या विद्यां सर्वे स्वीकुर्वन्तु॥१४॥

**पदार्थः**-**(यत्)** जो **(गौः)** चलनेवाली **(वक्षणासु)** बहती हुई नदियों में **(आमा)** कच्चे वा **(पक्वम्)** पके हुए को **(बिभ्रती)** धारण करती हुई **(चरति)** चलती है, जो इस संसार में **(महि)** बड़ा **(निहितम्)** स्थित **(ज्योतिः)** तेज वा **(उस्रियायाम्)** पृथिवी में **(विश्वम्)** सम्पूर्ण **(स्वाद्म)** अति स्वादुवाले **(सम्भृतम्)** उत्तम प्रकार, धारण वा पोषण किये हुए पदार्थ को प्राप्त होती है, वह **(इन्द्रः)** बिजुली **(भोजनाय)** पालन वा भोजन के लिये सबको **(सीम्)** सब ओर से **(अदधात्)** धारण करती है, यह सब जनों को जानना चाहिये॥१४॥

**भावार्थः**-जो बिजुली भूमि, जल, वायु और अन्तरिक्ष तथा उनके विकारों और पदार्थों में व्यापक हो और सबको धारण कर पालन करती है, उसकी विद्या को सब लोग धारण वा स्वीकार करें॥१४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहा है॥

**इन्द्र दृह्य यामकोशा अभूवन् यज्ञाय शिक्ष गृणते सखिभ्यः।**
**दुर्मायवो दुरेवा मर्त्यासो निषङ्गिणो रिपवो हन्त्वासः॥१५॥३॥**

**इन्द्र। दृह्य। यामऽकोशाः। अभूवन्। यज्ञाय। शिक्ष। गृणते। सखिऽभ्यः। दुःऽमायवः। दुःऽएवाः। मर्त्यासः। निषङ्गिणः। रिपवः। हन्त्वासः॥१५॥**

**पदार्थः**-**(इन्द्र)** विद्यैश्वर्यप्रद **(दृह्य)** वर्द्धस्व। अत्र विकरणव्यत्ययेन श्यन्। **(यामकोशाः)** यान्ति येषु ते यामा मार्गास्तेषां कोशा यामकोशाः **(अभूवन्)** भवन्ति **(यज्ञाय)** सङ्गतिविज्ञानाय **(शिक्ष)** विद्यां धेहि **(गृणते)** स्तुवते **(सखिभ्यः)** मित्रेभ्यः **(दुर्मायवः)** दुष्टो मायुः प्रक्षेपो येषान्ते **(दुरेवाः)** ये दुष्टं यन्ति ते **(मर्त्यासः)** मनुष्याः **(निषङ्गिणः)** बहवो निषङ्गाः शस्त्रविशेषा विद्यन्ते येषान्ते **(रिपवः)** शत्रवः **(हन्त्वासः)** हन्तुं योग्याः॥१५॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! ये यामकोशा अभूवन् तेभ्यः सखिभ्यो यज्ञाय गृणते च त्वं शिक्ष ये दुर्मायवो दुरेवा हन्त्वासो निषङ्गिणो रिपवो मर्त्यासः स्युस्तान् हत्वा दृह्य॥१५॥

**भावार्थः**-मनुष्यैः सर्वदा सर्वथा श्रेष्ठानां रक्षणं विद्यासुशिक्षादानं दुष्टाचाराणां हननं च कृत्वा सदैव वर्द्धनीयम्॥१५॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-हे **(इन्द्र)** विद्या और ऐश्वर्य के दाता! जो **(यामकोशाः)** मार्गों के रोकनेवाले **(अभूवन्)** होते हैं, उन **(सखिभ्यः)** मित्रों तथा **(यज्ञाय)** सङ्गतिजन्य विशेष ज्ञान और **(गृणते)** स्तुति करनेवाले के अर्थ आप **(शिक्ष)** विद्या दान कीजिये, जो **(दुर्मायवः)** बुरे प्रकार फेंकने वा **(दुरेवाः)** दुष्ट कर्म को पहुँचानेवाले **(हन्त्वासः)** मारने के योग्य **(निषङ्गिणः)** बहुत विशेष शस्त्रोंवाले **(रिपवः)** शत्रु **(मर्त्यासः)** मनुष्य हों, उनका नाश करके **(वृद्ध)** बढ़िये॥१५॥

**भावार्थः**-मनुष्यों को चाहिये कि सर्वदा सब प्रकार श्रेष्ठ पुरुषों की रक्षा, विद्या और शिक्षा का दान और दुष्ट आचरणवालों का नाश करके सदैव बढ़ें॥१५॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहा है॥

**सं घोषः शृण्वेऽवमैरमित्रैर्जही न्येष्वशनिं तपिष्ठाम्।**

**वृश्चेमधस्ताद्वि रुजा सहस्व जहि रक्षो मघवन् रन्धयस्व॥१६॥**

**सम्। घोषः। शृण्वे। अवमैः। अमित्रैः। जहि। नि। एषु। अशनिम्। तपिष्ठाम्। वृश्च। ईम्। अधस्तात्। वि। रुज। सहस्व। जहि। रक्षः। मघऽवन्। रन्धयस्व॥१६॥**

**पदार्थः**-**(सम्)** सम्यक् **(घोषः)** वाणीः। **घोष इति वाङ्नामसु पठितम्।** (निघं०१.११) **(शृण्वे)** **(अवमैः)** अधमैः **(अमित्रैः)** शत्रुभिः **(जहि)**। अत्र **द्व्यचोऽतस्तिङ** इति दीर्घः। **(नि)** **(एषु)** **(अशनिम्)** वज्रम् **(तपिष्ठाम्)** अतिशयेन तप्ताम् **(वृश्च)** छिन्धि **(ईम्)** सततम् **(अधस्तात्)** अधो निपात्य **(वि)** **(रुज)** रुग्णान् कुरु। अत्र **द्व्यचोऽतस्तिङ** इति दीर्घः। **(सहस्व)** **(जहि)** **(रक्षः)** दुष्टस्वभावं प्राणिनम् **(मघवन्)** बहुधनयुक्त **(रन्धयस्व)** ताडयस्व॥१६॥

**अन्वयः**-हे मघवन्नहमवमैरमित्रः यः घोषस्तं सं शृण्वे ताँस्त्वं जहि। एषु तपिष्ठामशनिं प्रक्षिप्यैतान् निवृश्च। एतानधस्तात्कृत्वें वि रुज दुःखं सहस्व रक्षो जहि पापिनो रन्धयस्व॥१६॥

**भावार्थः**-हे वीरा! या वाणी शत्रुभिः क्रियेत तां श्रुत्वाऽभीत्वैतेषामुपरि शस्त्राणि प्रक्षिप्य विच्छिन्नान् कुरुत अनेनैश्वर्यवन्तो भवत॥१६॥

**पदार्थः**-हे **(मघवन्)** बहुत धनों से युक्त मैं **(अवमैः)** नीच **(अमित्रैः)** शत्रुओं के साथ जो **(घोषः)** घोर वाणी उसको **(सम्)** बहुत **(शृण्वे)** सुनता हूँ, इससे इनको आप **(जहि)** मारिये और **(एषु)** इन शत्रुओं में **(तपिष्ठाम्)** अतिशय तपते हुए **(अशनिम्)** वज्र को फेंक के इनको **(नि, वृश्च)** उत्तम प्रकार विनाश कीजिये और इनको **(अधस्तात्)** नीचे गिराय के **(ईम्)** निरन्तर **(वि)** **(रुज)** रोगग्रस्त कीजिये और दुःख को **(सहस्व)** सहिये **(रक्षः)** दुष्ट स्वभाववाले प्राणी का **(जहि)** नाश कीजिये और पापी लोगों को **(रन्धयस्व)** ताड़िये॥१६॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-हे वीर पुरुषो! जो वाणी शत्रुओं से उच्चारण की जाये, उसको सुन उनके सम्मुख जा और उनके ऊपर शस्त्रों का प्रहार करके उन्हें छिन्न-भिन्न करो, इससे ऐश्वर्यवाले होओ॥१६॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहा है॥

**उद्वृ॑ह रक्षः॑ स॒हमू॑लमिन्द्र वृ॒श्चा मध्यं॒ प्रत्यग्रं॑ शृणीहि।**

**आ कीव॑तः सल॒लूकं॑ चकर्थ ब्रह्मद्विषे॒ तपु॑षिं हे॒तिम॑स्य॥१७॥**

**उत्। वृ॒ह॒। रक्षः॑। स॒हऽमू॑लम्। इ॒न्द्र॒। वृ॒श्च॒। मध्य॑म्। प्रति॑। अग्र॑म्। शृ॒णी॒हि॒। आ। कीव॑तः। स॒ल॒लूक॑म्। च॒क॒र्थ॒। ब्र॒ह्म॒ऽद्विषे॑। तपु॑षिम्। हे॒तिम्। अ॒स्य॒॥१७॥**

**पदार्थः**-(**उत्**) उत्कृष्टे (**वृह**) वर्धस्व (**रक्षः**) दुष्टाचारम् (**सहमूलम्**) मूलेन सह वर्तमानम् (**इन्द्र**) दुष्टानां विदारक (**वृश्च**) छिन्धि। अत्र **द्व्यचोऽतस्तिङ** इति दीर्घः। (**मध्यम्**) मध्ये भवम् (**प्रति**) (**अग्रम्**) अग्रभागम् (**शृणीहि**) हिन्धि (**आ**) (**कीवतः**) कियतः। अत्र वर्णव्यत्ययेन यस्य स्थाने वः। (**सललूकम्**) सम्यक् लुब्धम् (**चकर्थ**) कृन्त (**ब्रह्मद्विषे**) यो ब्रह्म परमात्मानं वेदं वा द्वेष्टि तस्मै (**तपुषिम्**) प्रतापयुक्तम् (**हेतिम्**) वज्रम् (**अस्य**) एतस्योपरि॥१७॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! त्वमुद्वृह सहमूलं रक्षो वृश्चास्योपरि तपुषिं हेतिं प्रक्षिप्यास्य मध्यमग्रं च प्रति शृणीहि ब्रह्मद्विषे वर्त्तमानं सललूकं कीवतश्चाऽऽचकर्थ॥१७॥

**भावार्थः**-मनुष्यैः कदाचिदपि धार्मिकाणामुपरि शस्त्रप्रहारो नैव कार्यो न च शस्त्रैर्हननेन विना दुष्टास्त्यक्तव्याः। एवं कृते सति सर्वतो सुखस्य वृद्धिः स्यात्॥१७॥

**पदार्थः**-हे (**इन्द्र**) दुष्ट पुरुषों के नाशकर्त्ता! आप (**उत्**) उत्तमता के साथ (**वृह**) सुख वृद्धि करो (**सहमूलम्**) जड़सहित (**रक्षः**) बुरे आचार को (**वृश्च**) तोड़ो (**अस्य**) इसके ऊपर (**तपुषिम्**) प्रतापयुक्त (**हेतिम्**) वज्र को फेंक के इसके (**मध्यम्**) मध्य में उत्पन्न हुए और (**अग्रम्**) अग्रभाग के (**प्रति**) प्रति (**शृणीहि**) नाश करो तथा (**ब्रह्मद्विषे**) ब्रह्म परमात्मा वा वेद के निन्दक के लिये वर्त्तमान (**सललूकम्**) अच्छी तरह लोभी (**कीवतः**) कितनों को (**आ**) (**चकर्थ**) सब प्रकार काटो॥१७॥

**भावार्थः**-मनुष्यों को चाहिये कि कभी भी धार्मिक पुरुषों के ऊपर शस्त्रों का प्रहार न करें और दुष्ट पुरुषों को शस्त्रों से मारे विना न छोड़ें, ऐसा करने से सब प्रकार सुख की वृद्धि होवे॥१७॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहा है॥

**स्व॒स्तये॑ वा॒जिभि॑श्च प्रणेत॒ः संयन्म॒हीरिष॒ आसत्सि॑ पू॒र्वीः।**

**रा॒यो व॒न्तारो॑ बृह॒तः स्या॑मा॒ऽस्मे अ॑स्तु॒ भग॑ इन्द्र प्र॒जावा॑न्॥१८॥**



www.9009.co.in

**स्वस्तये। वाजिऽभिः। च। प्रनेतरिति प्रऽनेतः। सम्। यत्। महीः। इषः। आऽसत्सि। पूर्वीः। रायः। वन्तारः। बृहतः। स्याम। अस्मे इति। अस्तु। भर्गः। इन्द्र। प्रजाऽवान्॥ १८॥**

**पदार्थः**-(**स्वस्तये**) सुखाय (**वाजिभिः**) तुरङ्गैरिव वेगवद्भिरग्न्यादिभिः (**च**) (**प्रणेतः**) यः सत्याऽसत्ये प्रणयति तत्सम्बुद्धौ (**सम्**) (**यत्**) यः (**महीः**) महतीः (**इषः**) इच्छाः (**आसत्सि**) समन्तात्सीदसि। अत्र **बहुलं छन्दसी**ति शपो लुक्। (**पूर्वीः**) पूर्वैः प्राप्ताः (**रायः**) धनानि (**वन्तारः**) विभाजकाः (**बृहतः**) महतः (**स्याम**) भवेम (**अस्मे**) अस्माकम् (**अस्तु**) भवतु (**भगः**) ऐश्वर्य्यम् (**इन्द्र**) परमैश्वर्य्ययुक्त (**प्रजावान्**) बह्व्यः प्रजा विद्यन्ते यस्मिन् सः॥ १८॥

**अन्वयः**-हे प्रणेतरिन्द्र! यद्यस्त्वं वाजिभिरन्यैः साधनैश्च पूर्वीर्महीरिषः समासत्सि ये बृहतो वन्तारो रायः सन्ति तेऽस्मे स्वस्तये सन्तु। प्रजावान् भगश्च तानि प्राप्य वयं सुखिनः स्याम॥ १८॥

**भावार्थः**-ये मनुष्याः सुखाय बहूनि साधनानि समादधति ते ऐश्वर्यं प्राप्य मोदन्ते॥ १८॥

**पदार्थः**-हे (**प्रणेतः**) सत्य और असत्य के निश्चयकारक (**इन्द्र**) अत्यन्त ऐश्वर्य से युक्त! (**यत्**) जो आप (**वाजिभिः**) घोड़ों के सदृश वेगयुक्त अग्नि आदि पदार्थों तथा और साधनों से (**पूर्वीः**) पूर्व जनों से प्राप्त (**महीः**) बड़ी (**इषः**) इच्छाओं से (**सम्**) (**आसत्सि**) सब प्रकार वर्त्तमान हैं [जो] (**बृहतः**) बड़े (**वन्तारः**) विभाग करनेवाले (**रायः**) धन हैं वे (**अस्मे**) हम लोगों के (**स्वस्तये**) सुख के लिये (**अस्तु**) होवें (**प्रजावान्**) बहुत प्रजाओं से युक्त (**भगः**) ऐश्वर्य और उनको प्राप्त होकर हम लोग सुखी (**स्याम**) होवें॥ १८॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य लोग सुख के लिये बहुत से साधनों को एकत्र करते, वे ऐश्वर्य को प्राप्त होके आनन्द को प्राप्त होते हैं॥ १८॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहा है॥

**आ नो भर भर्गमिन्द्र द्युमन्तं नि ते देष्णस्य धीमहि प्ररेके।**

**ऊर्वइव पप्रथे कामो अस्मे तमा पृण वसुपते वसूनाम्॥ १९॥**

**आ। नः। भर। भर्गम्। इन्द्र। द्युऽमन्तम्। नि। ते। देष्णस्य। धीमहि। प्रऽरेके। ऊर्वःऽइव। पप्रथे। कामः। अस्मे इति। तम्। आ। पृण। वसुऽपते। वसूनाम्॥ १९॥**

**पदार्थः**-(**आ**) समन्तात् (**नः**) अस्मभ्यम् (**भर**) धर (**भगम्**) सेवनीयमैश्वर्य्यम् (**इन्द्र**) सुखप्रदातः (**द्युमन्तम्**) प्रशस्ता द्यौः प्रकाशो विद्यते यस्मिँस्तम् (**नि**) (**ते**) तव (**देष्णस्य**) दातुः (**धीमहि**) धरेम (**प्ररेके**) प्रकृष्टा रेका शङ्का यस्मिँस्तस्मिन् व्यवहारे (**ऊर्वइव**) प्राप्तेन्धनोऽग्निरिव (**पप्रथे**) प्रथताम् (**कामः**) इच्छा (**अस्मे**) अस्मभ्यम् (**तम्**) (**आ**) (**पृण**) पूर्णं कुरु (**वसुपते**) धनानां पालक (**वसूनाम्**) धनानाम्॥ १९॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे वसूनां वसुपत इन्द्र! यस्य देष्णस्य ते प्ररेके वयं निधीमहि स त्वं नो द्युमन्तं भगमाभर। योऽस्मे काम ऊर्वइव पप्रथे तमापृण॥१९॥

**भावार्थः**-स एव मनुष्य आप्तोऽस्ति यस्य सर्वस्वं परोपकाराय भवति नात्र शङ्कास्ति॥१९॥

**पदार्थः**-हे **(वसूनाम्)** जनों के **(वसुपते)** धनपालक **(इन्द्र)** सुख के दाता! जिस **(देष्णस्य)** देनेवाले **(ते)** आपके **(प्ररेके)** उत्तम शङ्कायुक्त व्यवहार में हम लोग **(नि)** **(धीमहि)** धारण करें वह आप **(नः)** हम लोगों के लिये **(द्युमन्तम्)** उत्तम प्रकाशयुक्त **(भगम्)** सेवन करने योग्य ऐश्वर्य्य को **(आ)** सब प्रकार **(भर)** धारण करो और जो **(अस्मे)** हम लोगों के लिये **(कामः)** इच्छा **(ऊर्वइव)** इन्धन युक्त अग्नि के सदृश **(पप्रथे)** वृद्धि को प्राप्त होवे **(तम्)** उसको **(आ)** **(पृण)** पूर्ण करो॥१९॥

**भावार्थः**-वही मनुष्य यथार्थवक्ता है जिसका सर्वस्व दूसरे पुरुषादि के उपकार के लिये होता है, इस विषय में कोई शङ्का नहीं है॥१९॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहा है॥

**इमं कामं मन्दया गोभिरश्वैश्चन्द्रवता राधसा पप्रथश्च।**

**स्वर्यवो मतिभिस्तुभ्यं विप्रा इन्द्राय वाहः कुशिकासो अक्रन्॥२०॥**

**इमम्। कामम्। मन्दय। गोभिः। अश्वैः। चन्द्रऽवता। राधसा। पप्रथः। च। स्वःऽयवः। मतिऽभिः। तुभ्यम्। विप्राः। इन्द्राय। वाहः। कुशिकासः। अक्रन्॥२०॥**

**पदार्थः**-**(इमम्)** प्रत्यक्षतया वर्त्तमानम् **(कामम्)** अभिलाषाम् **(मन्दय)** हर्षय। अत्र **संहितायामिति** दीर्घः। **(गोभिः)** धेनुभिः **(अश्वैः)** तुरङ्गैः **(चन्द्रवता)** बहूनि चन्द्राणि सुवर्णादीनि धनानि विद्यन्ते यस्मिंस्तेन **(राधसा)** धनेन **(पप्रथः)** प्रख्यापय **(च)** **(स्वर्य्यवः)** य आत्मनः स्वः सुखं कामयन्ते ते **(मतिभिः)** मननशीलैर्मनुष्यैः सह **(तुभ्यम्)** **(विप्राः)** मेधाविनः **(इन्द्राय)** ऐश्वर्य्याय **(वाहः)** ये वहन्ति ते **(कुशिकासः)** शब्दायमानाः **(अक्रन्)** कुर्युः॥२०॥

**अन्वयः**-हे विद्वन्स्त्वं गोभिरश्वैश्चन्द्रवता राधसा च पप्रथः। इमं कामं पूरय यथा स्वर्यवो वाहः कुशिकासो विप्रा मतिभिः सह तुभ्यमिन्द्रायैनं काममक्रंस्तांस्त्वं मन्दय॥२०॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! ये युष्मानभिलाषापूरकत्वेनानन्दयेयुस्तान् भवन्तोऽप्यानन्दयन्तु॥२०॥

**पदार्थः**-हे विद्वान् पुरुष! आप **(गोभिः)** गौओं **(अश्वैः)** घोड़ों **(च)** और **(चन्द्रवता)** बहुत सुवर्ण आदि धन जिसमें हैं ऐसे **(राधसा)** धन से **(पप्रथः)** प्रसिद्ध करो **(इमम्)** प्रत्यक्ष भाव से वर्त्तमान इस **(कामम्)** अभिलाषा को पूर्ण करो, जैसे **(स्वर्य्यवः)** अपने सुख की कामना करनेवाले **(वाहः)** स्तुतियों के धारणकर्त्ता **(कुशिकासः)** शब्द करते हुए **(विप्राः)** बुद्धिमान् लोग **(मतिभिः)** विचारशील मनुष्यों के



www.9009.co.in

साथ **(तुभ्यम्)** आपके तथा **(इन्द्राय)** ऐश्वर्य्य के लिये उक्त अभिलाषा को **(अक्रन्)** करें उनको आप **(मन्दय)** आनन्दित कीजिये॥२०॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जो लोग आप लोगों को अभिलाषा पूर्ण करने में आनन्द देवें, उनको आप लोग भी आनन्द देवें॥२०॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहा है॥

**आ नो गोत्रा दर्दृहि गोपते गाः सम॒स्मभ्यं॑ स॒नयो॑ यन्तु वाजाः॑।**

**दि॒वक्षा॑ असि वृषभ स॒त्यशु॑ष्मो॒ऽस्मभ्यं॒ सु म॑घवन् बोधि गो॒दाः॥२१॥**

**आ। नः॒। गो॒त्रा। दु॒र्दृहि॒। गो॒ऽप॒ते॒। गाः। सम्। अ॒स्मभ्य॑म्। स॒नयः॑। य॒न्तु॒। वाजाः॑। दि॒वक्षाः॑। अ॒सि॒। वृ॒ष॒भ॒। स॒त्यऽशु॑ष्मः। अ॒स्मभ्य॑म्। सु। म॒घ॒ऽव॒न्। बो॒धि॒। गो॒ऽदाः॥२१॥**

**पदार्थः**-**(आ)** समन्तात् **(नः)** अस्माकम् **(गोत्रा)** गोत्राणि कुलानि **(दर्दृहि)** अत्यन्तं वर्धय **(गोपते)** भूपते **(गाः)** पृथिवीः **(सम्)** **(अस्मभ्यम्)** **(सनयः)** सम्भक्तयः **(यन्तु)** प्राप्नुवन्तु **(वाजाः)** विज्ञानान्नादिप्रदा व्यवहाराः **(दिवक्षाः)** ये दिवं विज्ञानप्रकाशादिकमक्षन्ति व्याप्नुवन्ति **(असि)** **(वृषभ)** बलिष्ठ **(सत्यशुष्मः)** सत्यबलः **(अस्मभ्यम्)** **(सु)** **(मघवन्)** बहुपूजितधनयुक्त **(बोधि)** **(गोदाः)** यो गा वाण्यादीन् ददाति सः॥२१॥

**अन्वयः**-हे वृषभ मघवन्! यतस्त्वं गोदाः सत्यशुष्मोऽसि तस्मादस्मभ्यं सुबोधि। हे गोपते! यथाऽस्मभ्यं सनयो दिवक्षा वाजाः संयन्तु तथैव त्वं नो गोत्रा गाश्चा दर्दृहि॥२१॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यदि सत्याचारसुशीला विद्वांसो मनुष्याणामुपदेष्टारः स्युस्तर्हि तेषां किमपि सुखमप्राप्तमरक्षणीयं न स्यात्॥२१॥

**पदार्थः**-हे **(वृषभ)** बलवान् **(मघवन्)** बहुत श्रेष्ठ धन से युक्त! जिससे आप **(गोदाः)** वाणी आदि के दाता **(सत्यशुष्मः)** सत्य बलवाले **(असि)** हैं इससे **(अस्मभ्यम्)** हम लोगों के लिये **(सु)** **(बोधि)** आनन्ददायक हूजिये, हे **(गोपते)** भूमि के स्वामी! जैसे **(अस्मभ्यम्)** हम लोगों के लिये **(सनयः)** संविभाग करने के योग्य **(दिवक्षाः)** विज्ञानरूप प्रकाश आदि से पूरित **(वाजाः)** विज्ञान और अन्न आदि के प्राप्त करानेवाले व्यवहार **(सम्)** **(यन्तु)** प्राप्त होवें, वैसे ही आप **(नः)** हम लोगों के **(गोत्रा)** कुलों और **(गाः)** पृथिवियों को **(आ)** सब प्रकार **(दर्दृहि)** अत्यन्त वृद्धि कीजिये॥२१॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो सत्य आचरण करनेवाले विद्वान् लोग मनुष्यों के उपदेशकारक होवें तो उन जनों का कुछ भी सुख अप्राप्त और अरक्ष्य न होवे॥२१॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहा है॥



www.9009.co.in

**शुनं हुवेम मघवानमिन्द्रमस्मिन्भरे नृतमं वाजसातौ।**

**शृण्वन्तमुग्रमूतये समत्सु घ्नन्तं वृत्राणि संजितं धनानाम्॥ २२॥ ४॥**

**शुनम्। हुवेम। मघऽवानम्। इन्द्रम्। अस्मिन्। भरे। नृऽतमम्। वाजऽसातौ। शृण्वन्तम्। उग्रम्। ऊतये। समत्ऽसु। घ्नन्तम्। वृत्राणि। सम्ऽजितम्। धनानाम्॥ २२॥**

**पदार्थः**-(**शुनम्**) ज्ञानवृद्धम् (**हुवेम**) प्रशंसेम (**मघवानम्**) बहुधनवन्तम् (**इन्द्रम्**) दातारम् (**अस्मिन्**) (**भरे**) बिभ्रति धनानि यस्मिंस्तस्मिन् (**नृतमम्**) अतिशयेन नृषूत्तमम् (**वाजसातौ**) वाजान् धनाद्यान् पदार्थान् सनन्ति विभजन्ति यस्मिंस्तस्मिन् संग्रामे। **वाजसाताविति संग्रामनामसु पठितम्।** (निघं०२.१७) (**शृण्वन्तम्**) न्यायप्रदानार्थमर्थिप्रत्यर्थिवचनश्रोतारम् (**उग्रम्**) तेजस्विस्वभावम् (**ऊतये**) रक्षणाद्याय (**समत्सु**) संग्रामेषु (**घ्नन्तम्**) हिंसन्तम् (**वृत्राणि**) आवरका घना इव शत्रुसैन्यानि (**संजितम्**) सम्यग्जयशीलम् (**धनानाम्**) श्रियाम्॥ २२॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यमस्मिन् भरे वाजसातौ शुनं मघवानं नृतमं शृण्वन्तमुग्रं समत्सु वृत्राणि घ्नन्तं धनानां संजितमिन्द्रं वयं हुवेम तं यूयमूतय आह्वयत॥ २२॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यूयं शरीरात्मबलाभ्यां प्रवृद्धमसंख्यधनप्रदं नरोत्तमं शत्रूणां विजेतारं धर्मिष्ठे साधुं दुष्टेष्वत्युग्रं पालकं स्वामिनं स्वोपरि मत्वा सततं सुखयतेति॥ २२॥

अत्रेन्द्रविद्वत्कृत्यवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति त्रिंशत्तमं सूक्तं चतुर्थो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जिसको (**अस्मिन्**) इस (**भरे**) संग्राम में कि जिसमें धनों को धारण करते और (**वाजसातौ**) धन आदि पदार्थों का विभाग करते हैं (**शुनम्**) ज्ञान से वृद्ध (**मघवानम्**) बहुत धन से युक्त (**नृतमम्**) अत्यन्त ही मनुष्यों में उत्तम (**शृण्वन्तम्**) सम्पूर्ण अर्थी अर्थात् मुद्दई और प्रत्यर्थी अर्थात् मुद्दाले के न्याय करने के लिये वचनों के श्रोता (**उग्रम्**) तेज:स्वभाववाले पुरुष को (**समत्सु**) संग्रामों में (**वृत्राणि**) घेरनेवाली मेघों के सदृश शत्रुओं की सेनाओं के (**घ्नन्तम्**) नाशकर्त्ता और (**धनानाम्**) लक्ष्मियों के (**संजितम्**) उत्तम प्रकार जीतने वा (**इन्द्रम्**) देनेवाले की हम लोग (**हुवेम**) प्रशंसा करें, उसका आप लोग भी (**ऊतये**) रक्षा आदि के लिये आह्वान करें॥ २२॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! आप लोग शरीर और आत्मबल से बड़े असंख्य धन के देने और मनुष्यों में उत्तम शत्रुओं के जीतनेवाले धर्मिष्ठ पुरुष में नम्र स्वभाव और दुष्ट पुरुषों में तीव्र स्वभावयुक्त पालनकर्त्ता स्वामी को अपने ऊपर नियत करके निरन्तर सुख को प्राप्त हूजिये॥ २२॥

इस सूक्त में इन्द्र और विद्वान् के कृत्य का वर्णन होने से इस सूक्त में कहे अर्थ की पूर्व सूक्तार्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥



www.9009.co.in

यह तीसवां सूक्त और चौथा वर्ग समाप्त हुआ।।



www.9009.co.in

**अथ द्वाविंशत्यृचस्यैकाऽधिकत्रिंशत्तमस्य सूक्तस्य विश्वामित्रः कुशिको वा ऋषिः। इन्द्रो देवता। १, १४, १६ विराट् पङ्क्तिः। ३, ६ भुरिक् पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः। २, ५, ९, १५, १७-२० निचृत्त्रिष्टुप्। ४, ७, ८, १०, १२, २१, २२ त्रिष्टुप्। ११, १३ स्वराट् त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः॥**

***अथ वह्निविषयमाह॥***

अब तृतीय मण्डल में बाईस ऋचावाले ३१ वें सूक्त का प्रारम्भ है। उसके पहिले मन्त्र में अग्नि के गुणों का विषय कहा है॥

**शासद्वह्निर्दुहितुर्नप्त्यं गाद् विद्वाँ ऋतस्य दीधितिं सपर्यन्।**
**पिता यत्र दुहितुः सेकमृञ्जन्त्सं शग्म्येन मनसा दधन्वे॥ १॥**

**शासत्। वह्निः। दुहितुः। नप्त्यम्। गात्। विद्वान्। ऋतस्य। दीधितिम्। सपर्यन्। पिता। यत्र। दुहितुः। सेकम्। ऋञ्जन्। सम्। शग्म्येन। मनसा। दधन्वे॥ १॥**

**पदार्थः**-(**शासत्**) शिष्यात् (**वह्निः**) वोढा (**दुहितुः**) कन्यायाः (**नप्त्यम्**) नप्तरि भवम्। अत्र **छान्दसो वर्णलोपो वे**ति रलोपः। (**गात्**) प्राप्नुयात् (**विद्वान्**) यो वेदितव्यं वेत्ति (**ऋतस्य**) सत्यस्य (**दीधितिम्**) धर्त्तारम् (**सपर्यन्**) सेवमानः (**पिता**) जनकः (**यत्र**) यस्मिन् व्यवहारे (**दुहितुः**) दूरे हितायाः कन्यायाः (**सेकम्**) सेचनम् (**ऋञ्जन्**) संसाध्नुवन् (**सम्**) (**शग्म्येन**) शग्मेषु सुखेषु भवेन। **शग्ममिति सुखनामसु पठितम्।** (निघं०३.६) (**मनसा**) अन्तःकरणेन (**दधन्वे**) प्रीणाति॥ १॥

**अन्वयः**-हे विद्वन्! यत्र पिता वह्निर्दुहितुः सेकमृञ्जन् गात्तत्र विद्वानृतस्य दीधितिं सपर्यन् दुहितुर्नप्त्यं शासदतः शग्म्येन मनसा सं दधन्वे॥ १॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यथा पितुः सकाशात् कन्योत्पद्यते तथैव सूर्य्यादुषा उत्पद्यते यथा पतिर्भार्यायां गर्भं दधाति तथैव कन्यावद्वर्त्तमानायामुषसि सूर्यः किरणाख्यं वीर्य्यं दधाति तेन दिवसरूपमपत्यमुत्पद्यते॥ १॥

**पदार्थः**-हे विद्वान् पुरुष! (**यत्र**) जिस व्यवहार में (**पिता**) उत्पन्नकर्त्ता (**वह्निः**) वाहन करने अर्थात् व्यवहार में चलानेवाला (**दुहितुः**) कन्या के (**सेकम्**) सेचन को (**ऋञ्जन्**) सिद्ध करता हुआ (**गात्**) प्राप्त होवे, उस व्यवहार में (**विद्वान्**) जानने योग्य व्यवहार का ज्ञाता (**ऋतस्य**) सत्य के (**दीधितिम्**) धारणकर्त्ता की (**सपर्यन्**) सेवा करता हुआ (**दुहितुः**) दूर में हितकारिणी कन्या के (**नप्त्यम्**) नाती में उत्पन्न हुए को (**शासत्**) शिक्षा देवे, इससे (**शग्म्येन**) सुखों में वर्त्तमान (**मनसा**) अन्तःकरण से (**सम्, दधन्वे**) सम्यक् प्रसन्न होता है॥ १॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे पिता के समीप से कन्या उत्पन्न होती है, वैसे ही सूर्य्य से प्रातःकाल की वेला प्रकट होती है। जैसे पति अपनी स्त्री में गर्भ को धारण करता है, वैसे कन्या के सदृश वर्त्तमान



www.9009.co.in

प्रात:काल की वेला में सूर्य्य किरणरूप वीर्य्य को धारण करता है, उससे दिवसरूप पुत्र उत्पन्न होता है॥१॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहा है॥

**न जामये तान्वो रिक्थमारैक् चकार गर्भं सनितुर्निधानम्।**

**यदी मातरो जनयन्त वह्निमन्यः कर्ता सुकृतोरन्य ऋन्धन्॥ २॥**

**न। जामये। तान्वः। रिक्थम्। अरैक्। चकार। गर्भम्। सनितुः। निऽधानम्। यदि। मातरः। जनयन्त। वह्निम्। अन्यः। कर्ता। सुऽकृतोः। अन्यः। ऋन्धन्॥ २॥**

**पदार्थः**-(**न**) (**जामये**) जामात्रे (**तान्वः**) तन्वः। अत्रा**न्येषामपी**त्याद्यचो दीर्घः। (**रिक्थम्**) धनम्। **रिक्थमिति धननामसु पठितम्।** (निघं०२.१०) (**आरैक्**) ऋणक्ति (**चकार**) (**गर्भम्**) (**सनितुः**) विभाजकस्य (**निधानम्**) नितरां दधाति यस्मिँस्तम् (**यदि**)। अत्र **निपातस्य चे**ति दीर्घः। (**मातरः**) मान्यस्य कर्त्र्यः (**जनयन्त**) जनयन्ति (**वह्निम्**) प्रापकम् (**अन्यः**) (**कर्त्ता**) (**सुकृतोः**) यौ शोभनं कुरुतस्तयोः (**अन्यः**) (**ऋन्धन्**) साध्नुवन्॥ २॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यो जामये तान्वो रिक्थं नारैक् सनितुर्निधानं गर्भं चकार अन्यो वह्निमिव यद्यन्य ऋन्धन्त्सुकृतोः कर्त्ता भवेत्तं मातरो जनयन्त॥ २॥

**भावार्थः**-यथा माताऽपत्यानि जनयित्वा वर्धयति तथैव वह्निं जनयित्वा वर्धयेत् तथैव जायापत्यानि वर्धयेत्॥ २॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो (**जामये**) जामाता के लिये (**तान्वः**) सूक्ष्म (**रिक्थम्**) धन को (**न**) नहीं (**आरैक्**) देता जिसने (**सनितुः**) विभागकर्त्ता के (**निधानम्**) निरन्तर धारण करता है, उस (**गर्भम्**) गर्भ को (**चकार**) किया (**अन्यः**) अन्य जन (**वह्निम्**) पहुँचानेवाले को जैसे वैसे (**यदि**) जो (**अन्यः**) अन्य (**ऋन्धन्**) सिद्ध करता हुआ (**सुकृतोः**) उत्तम कर्मकारियों का (**कर्त्ता**) कर्त्ता पुरुष है, उसको (**मातरः**) आदर की करनेवाली (**जनयन्त**) उत्पन्न करती है॥ २॥

**भावार्थः**-जैसे माता सन्तानों को उत्पन्न कर उनकी वृद्धि करती है, वैसे ही अग्नि को उत्पन्न करके उसकी वृद्धि करे और वैसे ही प्रत्येक स्त्री सन्तानों की वृद्धि करे॥ २॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहा है॥

**अग्निर्जज्ञे जुह्वा३ रेजमानो महस्पुत्राँ अरुषस्य प्रयक्षे।**

**महान् गर्भो मह्या जातमेषां मही प्रवृद्धर्यश्वस्य यज्ञैः॥ ३॥**



www.9009.co.in

अ॒ग्निः। ज॒ज्ञे। जु॒ह्वा᳚। रेज॑मानः। म॒हः। पु॒त्रान्। अ॒रु॒षस्य॑। प्र॒ऽय॒क्षे᳚। म॒हान्। गर्भः॑। महि॑। आ। जा॒तम्। ए॒षा॒म्। म॒ही। प्र॒ऽवृत्। हरि॑ऽअश्वस्य। य॒ज्ञैः॥३॥

**पदार्थः**-(**अग्निः**) (**जज्ञे**) जायते (**जुह्वा**) साधनोपसाधनयुक्तया क्रियया (**रेजमानः**) कम्पमानः (**महः**) महतः (**पुत्रान्**) सन्तानान् (**अरुषस्य**) अहिंसकस्य (**प्रयक्षे**) प्रकर्षेण यष्टुं सङ्गन्तुम् (**महान्**) महागुणविशिष्टः (**गर्भः**) स्तोतुमर्हः (**महि**) महान्तम् (**आ**) समन्तात् (**जातम्**) (**एषाम्**) (**मही**) महती वाक् (**प्रवृत्**) यः प्रवर्त्तते सः (**हर्यश्वस्य**) हरयो हरणशीला अश्वा यस्य (**यज्ञैः**) सङ्गतैः कर्मभिः॥३॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथेन्धनेन जुह्वाऽग्निर्जज्ञे तथा रेजमानो महान् गर्भो जायते। अरुषस्य महः पुत्रान् प्रयक्षे जज्ञे प्रवृत्सन् हर्यश्वस्य यज्ञैर्महीर्जज्ञ एषां मह्या जातं यूयं विजानीत॥३॥

**भावार्थः**-यथा शमीगर्भाद्वह्निः प्रादुर्भवन् महान्ति कार्य्याणि करोति तथैव सत्पुत्राः सर्वाण्युत्तमानि कर्माणि कुर्वन्ति तस्माद् ब्रह्मचर्यादिसंस्कारेणैव सन्तानाः सत्कर्त्तव्याः॥३॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे इन्धन और (**जुह्वा**) साधन और उपसाधनों से युक्त क्रिया से (**अग्निः**) अग्नि (**जज्ञे**) उत्पन्न होता है, वैसे (**रेजमानः**) कंपता हुआ (**महान्**) बड़े उत्तम गुणों से युक्त (**गर्भः**) स्तुति करने योग्य पदार्थ उत्पन्न होता है और (**अरुषस्य**) नहीं हिंसा करनेवाले के (**महः**) श्रेष्ठ (**पुत्रान्**) सन्तानों के (**प्रयक्षे**) अत्यन्त यजन अर्थात् सङ्गम करने को उत्पन्न होता है (**प्रवृत्**) प्रवृत्त होनेवाला (**हर्यश्वस्य**) जिसके हरणशील घोड़े उसके (**यज्ञैः**) योग्य कर्मों से (**मही**) श्रेष्ठ वाणी उत्पन्न होती है (**एषाम्**) इन सबों के (**महि**) बड़े (**आ, जातम्**) अच्छे प्रकार उत्पन्न कर्म को तुम जानो॥३॥

**भावार्थः**-जैसे शमी नामक काष्ठ के मध्य से अग्नि प्रकट होकर बड़े-बड़े कार्य्यों को सिद्ध करता है, वैसे ही सुपात्र पुत्र सम्पूर्ण उत्तम कर्मों को करते हैं, इससे ब्रह्मचर्य्य आदि संस्कारों के ही द्वारा सन्तानों को श्रेष्ठ बनाना चाहिये॥३॥

**पुनः सूर्यरूपोऽग्निः कीदृश इत्याह॥**

फिर सूर्यरूप अग्नि कैसा है, इस विषय को अगले मन्त्र में कहा है॥

**अ॒भि जैत्री॑रसचन्त स्पृधा॒नं महि॒ ज्योति॒स्तम॑सो॒ निर॑जानन्।**

**तं जा॑न॒तीः प्रत्युदा॑यन्नु॒षासः॒ पति॒र्गवा॑मभव॒देक॒ इन्द्रः॑॥४॥**

अ॒भि। जैत्रीः॑। अ॒स॒च॒न्त॒। स्पृ॒धा॒नम्। महि॑। ज्योतिः॑। तम॑सः। निः। अ॒जा॒न॒न्। तम्। जा॒न॒तीः। प्रति॑। उत्। आ॒य॒न्। उ॒षसः॑। पतिः॑। गवा॑म्। अ॒भ॒व॒त्। एकः॑। इन्द्रः॑॥४॥

**पदार्थः**-(**अभि**) आभिमुख्ये (**जैत्रीः**) जयशीलाः (**असचन्त**) समवयन्ति (**स्पृधानम्**) स्पर्द्धमानम् (**महि**) महत् (**ज्योतिः**) प्रकाशः (**तमसः**) अन्धकारस्य (**निः**) नितराम् (**अजानन्**) जानीयुः (**तम्**) (**जानतीः**) ज्ञानवत्यः (**प्रति**) (**उत्**) (**आयन्**) आयान्त्युद्यन्ति प्रति यन्ति वा (**उषासः**) प्रभातान् (**पतिः**) स्वामी (**गवाम्**) किरणानाम् (**अभवत्**) भवेत् (**एकः**) असहायः (**इन्द्रः**)॥४॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-ये जैत्रीरभ्यसचन्त तमसो महि ज्योतिः स्पृधानं निरजानन् तं जानतीरुषास इव प्रत्युदायन् य एक इन्द्रो गवां पतिरभवत्तमभ्यसचन्त॥४॥

**भावार्थः**-यथाऽन्धकाराज्ज्योतिः पृथग्भूत्वाऽन्धकारं निवर्त्तयति तथा विद्याऽविद्यां हन्ति यथैकः सूर्य्यः सर्वेषां किरणानां समत्वेन पालकोऽस्ति तथैव समभावमाश्रित्य राजा प्रजाः पालयेत्॥४॥

**पदार्थः**-जो **(जैत्रीः)** जोंतनेवाले **(अभि)** सम्मुख **(असचन्त)** अनुसार चलते हैं **(तमसः)** अन्धकार के **(महि)** बड़े **(ज्योतिः)** प्रकाशरूप **(स्पृधानम्)** पदार्थों के साथ किरणों के सङ्घर्ष करनेवाले सूर्य को **(निः)** निरन्तर **(अजानन्)** जानें **(तम्)** उसको **(जानतीः)** जाननेवाली **(उषासः)** प्रातःकाल की वेलाओं के तुल्य **(प्रति)** **(उत्)** **(आयन्)** उद्योग करें वा प्राप्त हों जो **(एकः)** सहायरहित **(इन्द्रः)** सूर्य्य **(गवाम्)** किरणों का **(पतिः)** स्वामी **(अभवत्)** होवे, उसके अनुसार चलते हैं॥४॥

**भावार्थः**-जैसे अन्धकार से ज्योति पृथक् होकर अन्धकार को दूर करती है, वैसे ही अविद्या से पृथक् हुई विद्या अविद्या का नाश करती है; और जैसे एक सूर्य्य सम्पूर्ण किरणों का एक साथ ही पालन करता है, वैसे ही समभाव का आश्रय करके राजा प्रजाओं का पालन करे॥४॥

**अथ विद्वत्सङ्गेन किं जायत इत्याह॥**

अब विद्वान् के सङ्ग से क्या होता है, इस विषय को अगले मन्त्र में कहा है॥

**वीळौ सतीरभि धीरा अतृन्दन् प्राचाहिन्वन् मनसा सप्त विप्राः।**

**विश्वामविन्दन् पथ्यामृतस्य प्रजानन्नित्ता नमसा विवेश॥५॥५॥**

**वीळौ। सतीः। अभि। धीराः। अतृन्दन्। प्राचा। अहिन्वन्। मनसा। सप्त। विप्राः। विश्वाम्। अविन्दन्। पथ्याम्। ऋतस्य। प्रऽजानन्। इत्। ता। नमसा। आ। विवेश॥५॥**

**पदार्थः**-**(वीळौ)** प्रशंसनीये बले **(सतीः)** विद्यमानाः प्रकृतीः **(अभि)** **(धीराः)** ध्यानवन्तः **(अतृन्दन्)** हिंस्युः **(प्राचा)** प्राक्तनेन **(अहिन्वन्)** वर्धयन्ति **(मनसा)** अन्तःकरणेन **(सप्त)** पञ्च प्राणा बुद्धिर्मनश्च **(विप्राः)** मेधाविनः **(विश्वाम्)** सर्वाम् **(अविन्दन्)** लभन्ते **(पथ्याम्)** पथि साध्वीं क्रियाम् **(ऋतस्य)** सत्यस्य **(प्रजानन्)** **(इत्)** एव **(तानि)** **(नमसा)** **(आ)** **(विवेश)** आविश॥५॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथा धीरा विप्राः प्राचा मनसा सप्त सतीरभ्यहिन्वननृतमतृन्दन्नृतस्य वीळौ विश्वां पथ्यामविन्दन् तथा त्वं ता नमसा प्रजानन्निदा विवेश॥५॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यथा युक्त्या सेवितानि प्राणान्तःकरणानि दुःखत्यागाय सुखलाभाय च प्रभवन्ति तथैव विद्वत्सङ्गादीनि कर्म्माणि दुःखानि निर्वार्य सुखानि जनयन्ति॥५॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे **(धीराः)** उत्तम विचारयुक्त **(विप्राः)** बुद्धिमान् लोग **(प्राचा)** प्राचीन **(मनसा)** अन्तःकरण से **(सप्त)** पाँच प्राण, बुद्धि और मन तथा **(सतीः)** वर्त्तमान प्रकृतियों को **(अभि)** **(अहिन्वन्)** बढ़ाते हैं और मिथ्या का **(अतृन्दन्)** नाश करें तथा **(ऋतस्य)** सत्य के **(वीळौ)** प्रशंसनीय



www.9009.co.in

बल में **(विश्वाम्)** सम्पूर्ण **(पथ्याम्)** मर्य्यादा के योग्य क्रिया को **(अविन्दन्)** प्राप्त होते हैं, वैसे आप **(ताः)** उनको **(नमसा)** स्तुति से **(प्रजानन्)** जानते हुए **(इत्)** ही **(आ)** **(विवेश)** शुभ कर्म में प्रवेश कीजिये॥५॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे युक्ति से सेवन किये हुए प्राण और अन्तःकरण दुःख के त्याग और सुख के लाभ के लिये समर्थ होते हैं, वैसे ही विद्वानों के सङ्ग आदि कर्म दुःखों को निवृत्त करा के सुखों को उत्पन्न कराते हैं॥५॥

**का स्त्री सुखदात्री भवतीत्याह॥**

कौन स्त्री सुख देनेवाली होती है, इस विषय को अगले मन्त्र में कहा है॥

**विदद्यदी सरमा रुग्णमद्रेर्महि पाथः पूर्व्यं सध्र्यक्कः।**

**अग्रं नयत्सुपद्यक्षराणामच्छा रवं प्रथमा जानती गात्॥६॥**

**विदत्। यदि। सरमा। रुग्णम्। अद्रेः। महि। पाथः। पूर्व्यम्। सध्र्यक्। करिति कः। अग्रम्। नयत्। सुऽपदी। अक्षराणाम्। अच्छ। रवम्। प्रथमा। जानती। गात्॥६॥**

**पदार्थः**-**(विदत्)** लभेत **(यदि)**। अत्र **निपातस्य चे**ति दीर्घः। **(सरमा)** या सरान् गतिमतः पदार्थान् मिनोति सा **(रुग्णम्)** रोगाविष्टम् **(अद्रेः)** मेघस्य **(महि)** महत् **(पाथः)** अन्नमुदकं वा **(पूर्व्यम्)** पूर्वैः कृतं निष्पादितम् **(सध्र्यक्)** यत्सहाञ्चति **(कः)** करोति **(अग्रम्)** **(नयत्)** नयति **(सुपदी)** शोभनाः पादा यस्याः सा सुपदी **(अक्षराणाम्)** वर्णानाम् **(अच्छ)** सम्यक्। अत्र **निपातस्य चे**ति दीर्घः। **(रवम्)** शब्दम् **(प्रथमा)** आदिमा **(जानती)** **(गात्)** प्राप्नुयात्॥६॥

**अन्वयः**-हे विदुषि स्त्रि! यदि सुपदी भवती सरमा सत्यद्रेः सध्र्यक् पूर्व्यं महि पाथो विदद्रुग्णमौषधेन रोगं कोऽक्षराणामग्रं रवमच्छ नयत्प्रथमा जानती गात्तर्हि सर्वं सुखं प्राप्नुयात्॥६॥

**भावार्थः**-या स्त्री विद्युद्वद्व्याप्तविद्या संस्कारोपस्करादिकर्मसु विचक्षणा सुभाषिणी सरलस्वभावा स्यात् सा वृष्टिरिव सुखप्रदा भवति॥६॥

**पदार्थः**-हे बुद्धिमती स्त्री! **(यदि)** जो **(सुपदी)** उत्तम पादोंवाली आप **(सरमा)** चलनेवाले पदार्थों के नापनेवाली हुई **(अद्रेः)** मेघ के **(सध्र्यक्)** एक साथ प्रकट **(पूर्व्यम्)** प्राचीन जनों से किये गये **(महि)** बड़े **(पाथः)** अन्न वा जल को **(विदत्)** प्राप्त होवें **(रुग्णम्)** रोगों से घिरे हुए को औषध से रोगरहित **(कः)** करती **(अक्षराणाम्)** अक्षरों के **(अग्रम्)** श्रेष्ठ **(रवम्)** शब्द को **(अच्छ)** उत्तम प्रकार **(नयत्)** प्राप्त करती है **(प्रथमा)** पहिली **(जानती)** जानती हुई **(गात्)** प्राप्त होवे तो सम्पूर्ण सुख को प्राप्त होवे॥६॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-जो स्त्री बिजुली के सदृश विद्याओं में व्याप्त संस्कार और उपस्कार अर्थात् उद्योग आदि कर्म्मों में चतुर, उत्तम रीति से बोलने तथा नम्र स्वभाव रखनेवाली होवे, वह वृष्टि के सदृश सुख देनेवाली होती है॥६॥

**पुनः कः पुमान् सुखदो भवतीत्याह॥**

फिर कौन पुरुष सुख देनेवाला होता है, इस विषय को अगले मन्त्र में कहा है॥

**अग॑च्छदु॒ विप्र॑तमः सखी॒यन्नसू॑दयत्सु॒कृते॒ गर्भ॒मद्रिः॑।**

**सु॒सान॒ मर्यो॒ युव॑भिर्मख॒स्यन्नथा॑भवदङ्गि॑राः स॒द्यो अर्च॑न्॥७॥**

**अग॑च्छत्। ऊ॒म् इति॑। विप्र॑ऽतमः। स॒खि॒ऽयन्। अस॑ूदयत्। सु॒ऽकृते॑। गर्भ॑म्। अद्रिः॑। स॒सान॑। मर्यः॑। युव॑ऽभिः। म॒ख॒स्यन्। अथ॑। अ॒भ॒व॒त्। अङ्गि॑राः। स॒द्यः। अर्च॑न्॥७॥**

**पदार्थः**-**(अगच्छत्)** प्राप्नुयात् **(उ)** वितर्के **(विप्रतमः)** अतिशयेन मेधावी **(सखीयन्)** आत्मनः सखायमिच्छन् **(असूदयत्)** सूदयत् क्षरयेत् **(सुकृते)** सुष्ठु कृतेऽनुष्ठिते **(गर्भम्)** गर्भमिव वर्त्तमानं जलसमुदायम् **(अद्रिः)** मेघः **(ससान)** सनति विभजति **(मर्यः)** मनुष्यः **(युवभिः)** प्राप्तयुवाऽवस्थैः **(मखस्यन्)** आत्मनो मखं यज्ञमिच्छन् **(अथ)** आनन्तर्ये **(अभवत्)** भवेत् **(अङ्गिराः)** अङ्गेषु रसवद्वर्त्तमानः **(सद्यः)** शीघ्रम् **(अर्चन्)** सत्कुर्वन्॥७॥

**अन्वयः**-यो मर्यो युवभिः सह वर्त्तमानो सखीयन् मखस्यन्नथाङ्गिराः सद्योऽर्चन् विप्रतमस्तां भार्य्यामगच्छत् सोऽद्रिर्गर्भमिव सुकृतेऽभवत् सत्याऽसत्ये ससान उ दुष्कृतमसूदयत्॥७॥

**भावार्थः**-यो ब्रह्मचर्येण विद्यासुशिक्षे सङ्गृह्य युवा सन् स्वतुल्यया कन्यया सह सुहृद्भावं प्रीतिं प्राप्य तां सत्कुर्वन्नुपयच्छेत् स मेघाज्जगदिव सर्वाणि सुखानि प्राप्नुयात्॥७॥

**पदार्थः**-जो **(मर्यः)** मनुष्य **(युवभिः)** युवावस्थापन्न पुरुषों के सहित वर्त्तमान **(सखीयन्)** मित्र को चाहता वा **(मखस्यन्)** आत्मसम्बन्धी यज्ञ करने की इच्छा करता हुआ **(अथ)** उसके अनन्तर **(अङ्गिराः)** शरीरों में रस के सदृश वर्त्तमान **(सद्यः)** शीघ्र **(अर्चन्)** सत्कार करता हुआ **(विप्रतमः)** अत्यन्त बुद्धिमान् पुरुष उस स्त्री के समीप **(अगच्छत्)** प्राप्त होवे, वह पुरुष **(अद्रिः)** मेघ जैसे **(गर्भम्)** गर्भ को वैसे **(सुकृते)** उत्तम कर्म के करने में उद्यत **(अभवत्)** होवे तथा सत्यासत्य का **(ससान)** विभाग करता है **(उ)** और भी निकृष्ट कर्म को **(असूदयत्)** नाश करे॥७॥

**भावार्थः**-जो ब्रह्मचर्य्य से विद्या और उत्तम शिक्षा को ग्रहण करके युवा पुरुष अपने तुल्य कन्या के साथ सुहृद्भाव और प्रीति को प्राप्त होके उसको सत्कार करता हुआ विवाहे, वह पुरुष जैसे मेघ से संसार सुख को प्राप्त होता है, वैसे सुख को प्राप्त होवे॥७॥

**पुनः के सुखिनो भवन्तीत्याह॥**

फिर कौन सुखी होते हैं, विषय को अगले मन्त्र में कहा है॥



www.9009.co.in

**स॒तःस॑तः प्रति॒मानं॑ पुरो॒भूर्विश्वा॑ वेद॒ जनि॑मा॒ हन्ति॒ शुष्ण॑म्।**

**प्र णो दि॒वः प॑दवीर्ग॒व्युरर्च॒न्त्सखा॒ सखीँ॑रमुञ्चन्निर॑व॒द्यात्॥८॥**

**स॒तःऽस॑तः। प्रति॒ऽमान॑म्। पु॒रःऽभूः। विश्वा॑। वे॒द॒। जनि॑म। ह॒न्ति॑। शुष्ण॑म्। प्र। न॒ः। दि॒वः। प॒द॒ऽवीः। ग॒व्युः। अर्च॑न्। सखा॑। सखी॑न्। अ॒मु॒ञ्च॒त्। निः। अ॒व॒द्यात्॥८॥**

**पदार्थः**-(**सतःसतः**) विद्यमानस्य विद्यमानस्य (**प्रतिमानम्**) परिमाणसाधकम् (**पुरोभूः**) यः पुरस्ताद्भावयति सः (**विश्वा**) सर्वाणि (**वेद**) जानाति (**जनिमा**) जन्मानि (**हन्ति**) (**शुष्णम्**) शोककरं दुःखम् (**प्र**) (**नः**) अस्माकम् (**दिवः**) प्रकाशस्य (**पदवीः**) प्रतिष्ठाः (**गव्युः**) आत्मनो गां वाणीमिच्छुः (**अर्चन्**) सत्कुर्वन् (**सखा**) सुहृत्सन् (**सखीन्**) सुहृदः (**अमुञ्चत्**) मुच्यात् (**निः**) (**अवद्यात्**) निन्द्यादधर्म्यादाचरणात्॥८॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यः पुरोभूः सतःसतः प्रतिमानं विश्वा जनिमा वेद शुष्णं हन्ति स गव्युर्नो दिवः पदवीः प्र यच्छेत् सखीनर्चन् सखा सन्नवद्यान्निरमुञ्चत् सोऽतुलं सुखमाप्नुयात्॥८॥

**भावार्थः**-त एव मनुष्या सुखिनो भवन्ति ये कार्य्यकारणरूपां सृष्टिं विदित्वा सर्वेषां सखायो भूत्वा सर्वान् पापाचरणात् पृथक्कृत्य धर्माचरणे प्रवर्त्तयेयुः। त एव सत्यसुहृदः सन्तीति॥८॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो पुरुष (**पुरोभूः**) पहिले से चिताता (**सतःसतः**) विद्यमान विद्यमान के (**प्रतिमानम्**) परिमाण के साधक को वा (**विश्वा**) सम्पूर्ण (**जनिमा**) उत्पन्न हुए पदार्थों को (**वेद**) जानता और (**शुष्णम्**) शोककारक दुःख को (**हन्ति**) नाश करता है वह (**गव्युः**) अपने को विद्या चाहनेवाला (**नः**) हम लोगों के (**दिवः**) प्रकाश की (**पदवीः**) प्रतिष्ठाओं को (**प्र**) प्राप्त करे (**सखीन्**) मित्रों का (**अर्चन्**) सत्कार करता हुआ (**सखा**) मित्र होकर (**अवद्यात्**) धर्मरहित आचरण से (**निः**) निरन्तर (**अमुञ्चत्**) पृथक् करे, वह अत्यन्त सुख को प्राप्त हो॥८॥

**भावार्थः**-वे ही मनुष्य सुखी होते हैं जो कार्य्यकारणरूप सृष्टि को जान और सम्पूर्ण जनों के मित्र हो सम्पूर्ण जनों को पाप के आचरण से पृथक् करके धर्म के आचरण में प्रवृत्त करें, वे ही सत्य मित्र हैं॥८॥

**अथ मोक्षमिच्छुभिः किं कार्यमित्याह॥**

अब मोक्ष की इच्छा करनेवालों को क्या करना चाहिये, इस विषय को

अगले मन्त्र में कहा है॥

**नि ग॑व्य॒ता मन॑सा सेदुर॒र्कैः कृ॑ण्वा॒नासो॑ अमृत॒त्वाय॑ गा॒तुम्।**

**इ॒दं चि॒न्नु सद॑नं॒ भूर्ये॑षां॒ येन॒ मासाँ॒ असि॑षासन्नृ॒तेन॑॥९॥**



www.9009.co.in

नि। गव्यता। मनसा। सेदुः। अर्कैः। कृण्वानासः। अमृतऽत्वाय। गातुम्। इदम्। चित्। नु। सदनम्। भूरि। एषाम्। येन। मासान्। असिसासन्। ऋतेन॥९॥

**पदार्थः**-(**नि**) नित्यम् (**गव्यता**) आत्मनो गौरिवाचरता (**मनसा**) अन्तःकरणेन (**सेदुः**) प्राप्नुयुः (**अर्कैः**) अर्चनीयैर्विद्वद्भिः सह (**कृण्वानासः**) कुर्वन्तः (**अमृतत्वाय**) अमृतस्य मोक्षस्य भावाय (**गातुम्**) प्रशंसितां भूमिम्। **गातुरिति पृथिवीनामसु पठितम्।** (निघं०१.१) (**इदम्**) (**चित्**) अपि (**नु**) सद्यः (**सदनम्**) सीदन्ति यत्र तत् (**भूरि**) बहु (**एषाम्**) वर्त्तमानानाम् (**येन**) (**मासान्**) चैत्रादीन् (**असिषासन्**) विभक्तुमिच्छन्तु (**ऋतेन**) सत्याचरणेन॥९॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथा कृण्वानासो गव्यता मनसार्कैः सहाऽमृतत्वाय गातुं नि सेदुरिदं चिद्भूरि सदनं सेदुर्येनर्त्तेन मासानसिषासँस्तेनैषां कल्याणं नु जायते॥९॥

**भावार्थः**-यदि मनुष्या मोक्षमिच्छेयुस्तर्हि तैर्विद्वत्सङ्गधर्माऽनुष्ठानं कृत्वाऽधर्मत्यागं विधाय सद्योऽन्तःकरणात्मशुद्धिः सम्पादनीया॥९॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे (**कृण्वानासः**) करते हुए जन (**गव्यता**) अपनी वाणी के सदृश (**मनसा**) अन्तःकरण से (**अर्कैः**) सत्कार करने योग्य विद्वानों के साथ (**अमृतत्वाय**) मोक्ष के होने के लिये (**गातुम्**) प्रशंसायुक्त भूमि को (**नि, सेदुः**) प्राप्त होवें तथा (**इदम्**) इस (**चित्**) भी (**भूरि**) बहुत (**सदनम्**) प्राप्त होने योग्य स्थान को प्राप्त होवें (**येन**) जिस (**ऋतेन**) सत्य आचरण से (**मासान्**) चैत्र आदि महीनों के (**असिषासन्**) विभाग करने की इच्छा करें, उससे (**एषाम्**) इन पुरुषों का कल्याण (**नु**) शीघ्र होता है॥९॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य लोग मोक्ष की इच्छा करें तो विद्वानों का सङ्ग, धर्म का अनुष्ठान और अधर्म का त्याग करके शीघ्र ही अन्तःकरण और आत्मा की शुद्धि करें॥९॥

**पुनर्विद्वांसः किं कुर्युरित्याह॥**

फिर विद्वान् लोग क्या करें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहा है॥

**संपश्यमाना अमदन्नभि स्वं पयः प्रत्नस्य रेतसो दुघानाः।**

**वि रोदसी अतपद्घोष एषां जाते निःष्ठामदधुर्गोषु वीरान्॥१०॥६॥**

सम्ऽपश्यमानाः। अमदन्। अभि। स्वम्। पयः। प्रत्नस्य। रेतसः। दुघानाः। वि। रोदसी इति। अतपत्। घोषः। एषाम्। जाते। निःऽस्थाम्। अदधुः। गोषु। वीरान्॥१०॥

**पदार्थः**-(**संपश्यमानाः**) सम्यक् प्रेक्षमाणाः (**अमदन्**) आनन्दन्ति (**अभि**) आभिमुख्ये (**स्वम्**) स्वकीयम् (**पयः**) दुग्धम् (**प्रत्नस्य**) प्राक्तनस्य (**रेतसः**) वीर्यस्य (**दुघानाः**) प्रपूरयन्तः (**वि**) (**रोदसी**) द्यावापृथिव्यौ (**अतपत्**) तपति (**घोषः**) वाणी (**एषाम्**) विदुषाम् (**जाते**) (**निःष्ठाम्**) नितरां स्थितानाम् (**अदधुः**) दधीरन् (**गोषु**) पृथिव्यादिषु (**वीरान्**) प्राप्तशुभगुणान्॥१०॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-ये स्वं संपश्यमानाः प्रत्नस्य रेतसः पयो दुघाना अभ्यमदन्नेषां निःष्ठां घोषः सूर्यो रोदसी इव दुष्टान् व्यतपत् ते जातेऽस्मिञ्जगति गोषु वीरानदधुः॥१०॥

**भावार्थः**-ये विचारशीला धार्मिका विद्वांसः स्वकीयं सनातनमात्मसामर्थ्यं वर्धयेयुः सर्वेभ्यः सत्याऽसत्ये उपदिश्य दुष्टतां निवार्य्य श्रेष्ठतां धारयेयुस्त एव शूरवीराः सन्तीति वेद्यम्॥१०॥

**पदार्थः**-जो लोग **(स्वम्)** अपने को **(संपश्यमानाः)** उत्तम प्रकार देखते और **(प्रत्नस्य)** प्राचीन **(रेतसः)** वीर्य के **(पयः)** दुग्ध को **(दुघानाः)** पूर्ण करते हुए **(अभि)** सम्मुख **(अमदन्)** आनन्द करते हैं **(एषाम्)** इन **(निःष्ठाम्)** उत्तम प्रकार स्थित विद्वानों की **(घोषः)** वाणी सूर्य्य जैसे **(रोदसी)** अन्तरिक्ष-पृथिवी को वैसे दुष्ट पुरुषों को **(वि)** **(अतपत्)** तपाती हैं, वे पुरुष **(जाते)** उत्पन्न हुए इस संसार में **(गोषु)** पृथिवी आदिकों में **(वीरान्)** उत्तम गुणों से युक्त पुरुषों को **(अदधुः)** धारण किया करें॥१०॥

**भावार्थः**-जो उत्तम विचार करनेवाले धार्मिक विद्वान् पुरुष अपने अनादि काल सिद्ध सामर्थ्य को बढ़ावें, सब लोगों के लिये सत्य और असत्य का उपदेश कर दुष्टता को दूर कर और श्रेष्ठता का धारण करें, वे ही शूरवीर होते हैं, यह जानना चाहिये॥१०॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहा है॥

**स जातेभिर्वृत्रहा सेदु हव्यैरुदुस्रिया असृजदिन्द्रो अर्कैः।**

**उरूच्यस्मै घृतवद्भरन्ती मधु स्वाद्म दुदुहे जेन्या गौः॥११॥**

**सः। जातेभिः। वृत्रऽहा। सः। इत्। ऊम् इति। हव्यैः। उत्। उस्रियाः। असृजत्। इन्द्रः। अर्कैः। उरूची। अस्मै। घृतऽवत्। भरन्ती। मधु। स्वाद्म। दुदुहे। जेन्या। गौः॥११॥**

**पदार्थः**-**(सः)** **(जातेभिः)** उत्पन्नैः सह **(वृत्रहा)** मेघस्य हन्ता सूर्य्य इव **(सः)** **(इत्)** एव **(उ)** **(हव्यैः)** आदातुमर्हैः **(उत्)** **(उस्रियाः)** गावः किरणाः **(असृजत्)** सृजति **(इन्द्रः)** परमैश्वर्य्यहेतुः **(अर्कैः)** अर्चनीयैर्मनुष्यैः सह **(उरूची)** योरूणि बहून्यञ्चति सा **(अस्मै)** **(घृतवत्)** घृतमाज्यमुदकं वा प्रशस्तं विद्यते यस्मिँस्तत् **(भरन्ती)** धरन्ती **(मधु)** मधुरगुणोपेतम् **(स्वाद्म)** स्वादिष्ठम् **(दुदुहे)** दुह्यते **(जेन्या)** जेतुं योग्या **(गौः)** पृथिवी॥११॥

**अन्वयः**-यो वृत्रहेन्द्र उस्रिया उदसृजदिवार्कैर्हव्यैर्जातेभिः सह पदार्थानसृजत् स इत्सुखमाप्नोति। या उरूची घृतवत्स्वाद्म मधु भरन्ती जेन्या गौरस्मै दुदुहे तां स उ विद्यात्॥११॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यथा सूर्य्यः स्वप्रकाशेन सर्वानुत्पन्नान् सृष्टिपदार्थान् प्रकाशयति तथैव विद्वान् विज्ञानेन सर्वान् विदित्वा सर्वत्र प्रकाशयेत्॥११॥

**पदार्थः**-जो **(वृत्रहा)** मेघ के नाशकर्त्ता सूर्य्य के सदृश **(इन्द्रः)** अति श्रेष्ठ ऐश्वर्य्य का कारण **(उस्रियाः)** वाणियों को किरणों के सदृश **(उत्, असृजत्)** उत्पन्न करता है, **(अर्कैः)** आदर करने योग्य



www.9009.co.in

मनुष्यों **(हव्यैः)** ग्रहण करने के योग्य पदार्थों और **(जातेभिः)** उत्पन्न हुए व्यवहारों के साथ पदार्थों को **(असृजत्)** उत्पन्न करता है **(स, इत्)** वही सुख को प्राप्त होता है, जो **(उरूची)** बहुतों का सत्कार करती **(घृतवत्)** घृत वा जल उत्तमतायुक्त **(स्वाद्म)** स्वादिष्ठ **(मधु)** मीठे गुण से युक्त पदार्थ को **(भरन्ती)** धारण करती हुई **(जेन्या)** जीतने योग्य **(गौः)** पृथिवी **(अस्मै)** उस ऐश्वर्य्य के लिये **(दुदुहे)** दुही जाती है, उसको वह पुरुष **(उ)** ही जानें॥११॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे सूर्य्य अपने प्रकाश से सम्पूर्ण उत्पन्न हुए सृष्टि के पदार्थों को प्रकाश करता है, वैसे ही विद्वान् पुरुष विज्ञान से सम्पूर्ण पदार्थों को जान कर उसका सर्वत्र प्रकाश करे॥११॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहा है॥

**पित्रे चिच्चक्रुः सदनं सममस्मै महि त्विषीमत्सुकृतो वि हि ख्यन्।**

**विष्कभ्नन्तः स्कम्भनेना जनित्री आसीना ऊर्ध्वं रभसं वि मिन्वन्॥१२॥**

**पित्रे। चित्। चक्रुः। सदनम्। सम्। अस्मै। महि। त्विषिऽमत्। सुऽकृतः। वि। हि। ख्यन्। विऽस्कभ्नन्तः। स्कम्भनेन। जनित्री इति। आसीनाः। ऊर्ध्वम्। रभसम्। वि। मिन्वन्॥१२॥**

**पदार्थः**-**(पित्रे)** पालकाय **(चित्)** अपि **(चक्रुः)** कुर्य्युः **(सदनम्)** स्थानम् **(सम्)** **(अस्मै)** **(महि)** महत् **(त्विषीमत्)** बह्व्यस्त्विषयो दीप्तयो विद्यन्ते यस्मिँस्तत्। अत्राऽ**न्येषामपी**ति दीर्घः। **(सुकृतः)** ये शोभनानि धर्म्याणि कर्माणि कुर्वन्ति ते **(वि)** **(हि)** यतः **(ख्यन्)** प्रकाशयन्ति **(विष्कभ्नन्तः)** ये विशेषेण स्कभ्नन्ति धरन्ति ते **(स्कम्भनेन)** धारणेन। अत्र **संहितायामिति** दीर्घः। **(जनित्री)** मातृवत्सर्वेषां महत्तत्त्वादीनामुत्पादिका **(आसीनाः)** स्थिराः **(ऊर्ध्वम्)** **(रभसम्)** वेगम् **(वि)** **(मिन्वन्)** विशेषेण प्रक्षिपन्ति॥१२॥

**अन्वयः**-हे सुकृतो विष्कभ्नन्तो महत्तत्वादीनां जनित्री प्रकृतिरिवासीनाः स्कम्भनेनोर्ध्वं रभसं वि मिन्वन् विद्यां विख्यन् हि चिदप्यस्मै पित्रे त्विषीमन्महि सदनं संश्चक्रुस्ते कृतकृत्या विद्वांसः स्युः॥१२॥

**भावार्थः**-यथा विभ्व्याः प्रकृतेः सकाशान्महत्तत्त्वादीनि निर्म्माय जगत्सर्वं जगदीश्वरो विदधाति तथैव विद्वांसः पितृवद्वर्त्तमानाः सन्तः सर्वार्थं सुखं विदधति पदार्थविद्यां साक्षात् कृत्योपदिशन्ति च॥१२॥

**पदार्थः**-जो **(सुकृतः)** उत्तम धर्म सम्बन्धी कर्म करने और **(विष्कभ्नन्तः)** विशेष करके धारण करनेवाले महत्तत्त्व अर्थात् बुद्धि आदि की **(जनित्री)** उत्पन्न करनेवाली प्रकृति के सदृश **(आसीनाः)** स्थिर **(स्कम्भनेन)** धारण करने से **(ऊर्ध्वम्)** ऊँचे **(रभसम्)** वेग को **(वि)** **(मिन्वन्)** विशेष करके फेंकते और विद्या को **(वि)** **(ख्यन्)** प्रकाश करते वा **(हि)** जिस कारण **(चित्)** ही **(अस्मै)** इस **(पित्रे)** पालन



www.9009.co.in

करनेवाले के लिये **(त्विषीमत्)** बहुत कान्तियों से युक्त **(महि)** बड़े **(सदनम्)** स्थान को **(सम्)** **(चक्रुः)** सम्पन्न करें, वे कृतकृत्य विद्वान् होवें॥१२॥

**भावार्थः**-जैसे व्यापक प्रकृति के द्वारा महत्तत्त्व आदि को रचकर सम्पूर्ण जगत् को ईश्वर रचता है, वैसे ही विद्वान् जन पिता के सदृश वर्त्तमान होकर सम्पूर्ण जनों के लिये सुख धारण करते और पदार्थविद्या का प्रत्यक्ष अभ्यास करके शिक्षा देते हैं॥१२॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहा है॥

**मही यदि धिषणा शिश्नथे धात् सद्योवृधं विभ्वं रोदस्योः।**

**गिरो यस्मिन्ननवद्याः समीचीर्विश्वा इन्द्राय तविषीरनुत्ताः॥१३॥**

**मही। यदि। धिषणा। शिश्नथे। धात्। सद्यःऽवृधम्। विऽभ्वम्। रोदस्योः। गिरः। यस्मिन्। अनवद्याः। सम्ऽईचीः। विश्वाः। इन्द्राय। तविषीः। अनुत्ताः॥१३॥**

**पदार्थः**-**(मही)** अतीव सत्कर्त्तव्या **(यदि)** **(धिषणा)** प्रगल्भा वाक् **(शिश्नथे)** श्नथति हिनस्ति। अत्र व्यत्ययेनात्मनेपदम्। **(धात्)** दधाति **(सद्योवृधम्)** यः सद्यो वर्धयति तम् **(विभ्वम्)** व्यापकम् **(रोदस्योः)** द्यावापृथिव्योः **(गिरः)** वाण्यः **(यस्मिन्)** **(अनवद्याः)** अनिन्द्याः **(समीचीः)** याः समानं सत्यमञ्चन्ति ताः **(विश्वाः)** अखिलाः **(इन्द्राय)** परमैश्वर्य्याय **(तविषीः)** बलयुक्ताः **(अनुत्ताः)** आनुकूल्येन धृताः॥१३॥

**अन्वयः**-हे विद्वांसो! भवद्भिर्यदि मही धिषणा वाग्रोदस्योर्मध्ये सद्योवृधं विभ्वं धात्तर्हीयमविद्यां शिश्नथे सा संग्राह्या यस्मिन्ननवद्याः समीचीस्तविषीरनुत्ता विश्वा गिर इन्द्राय प्रभवेयुस्स व्यवहारः सदा सेवनीयः॥१३॥

**भावार्थः**-हे विद्वांसो! विविधविद्यायुक्ता वाचो धृत्वा विभुं परमात्मान ज्ञातुमिच्छेयुस्ते परमैश्वर्य्यं लभेरन्॥१३॥

**पदार्थः**-हे विद्वान जनो! आप लोगों से **(यदि)** जो **(मही)** अत्यन्त सत्कार करने योग्य **(धिषणा)** प्रगल्भ अर्थात् नहीं रुकनेवाली वाणी **(रोदस्योः)** अन्तरिक्ष और पृथिवी के मध्य में **(सद्योवृधम्)** शीघ्र वृद्धिकारक **(विभ्वम्)** व्यापक को **(धात्)** धारण करती है तो इस अविद्या का **(शिश्नथे)** नाश करती है [वह ग्रहण करने योग्य है।] **(यस्मिन्)** जिसमें **(अनवद्याः)** निन्दारहित **(समीचीः)** सत्य को धारण करनेवाली **(तविषीः)** बलयुक्त **(अनुत्ताः)** अनुकूलता से धारण की गई **(विश्वाः)** सम्पूर्ण **(गिरः)** वाणियाँ **(इन्द्राय)** परम ऐश्वर्य के लिये समर्थ होवें, वह व्यवहार सदा सेवन करने योग्य है॥१३॥

**भावार्थः**-जो विद्वान् लोग अनेक प्रकार की विद्याओं से युक्त वाणियों को धारण करके व्यापक परमात्मा के जानने की इच्छा करें, वे बड़े ऐश्वर्य को प्राप्त होवें॥१३॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**



www.9009.co.in

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहा है॥

**मह्या ते सुख्यं वश्मि शक्तीरा वृत्रघ्ने नियुतो यन्ति पूर्वीः।**

**महि स्तोत्रमव आगन्म सूरेरस्माकं सु मघवन्बोधि गोपाः॥ १४॥**

**महि। आ। ते। सुख्यम्। वश्मि। शक्तीः। आ। वृत्रऽघ्ने। निऽयुतः। यन्ति। पूर्वीः। महि। स्तोत्रम्। अवः। आ। अगन्म। सूरेः। अस्माकम्। सु। मघऽवन्। बोधि। गोपाः॥ १४॥**

**पदार्थः**-(**महि**) महत्पूजनीयम् (**आ**) (**ते**) तव (**सख्यम्**) मित्रस्य भावम् (**वश्मि**) कामये (**शक्तीः**) सामर्थ्यानि (**आ**) (**वृत्रघ्ने**) यः सूर्य्यो मेघं वृत्रं हन्ति तद्वद्वर्त्तमानाय (**नियुतः**) निश्चिताः (**यन्ति**) प्राप्नुवन्ति (**पूर्वीः**) प्राचीनाः सनातन्यः (**महि**) महत् (**स्तोत्रम्**) स्तोतुमर्हम् (**अवः**) रक्षणादिकम् (**आ**) (**अगन्म**) प्राप्नुयाम (**सूरेः**) परमविदुषः (**अस्माकम्**) [अस्माकं] मध्ये वर्त्तमानस्य (**सु**) शोभने (**मघवन्**) परमपूजितधनयुक्त (**बोधि**) बुध्यस्व (**गोपाः**) रक्षकः॥ १४॥

**अन्वयः**-हे मघवन्नहं ते महि सख्यमा वश्मि विद्वांसो यस्मै वृत्रघ्न इव वर्त्तमानाय तुभ्यं पूर्वीर्नियुतः शक्तीरा यन्ति तस्यास्माकं मध्ये वर्त्तमानस्य सूरेस्तव सकाशान्महि स्तोत्रमवो वयमागन्म त्वमस्माकं गोपाः सन् सु बोधि॥ १४॥

**भावार्थः**-मनुष्यैर्विद्वद्भिः सह मैत्रीं विधाय सामर्थ्यं पूर्णं कृत्वा न्यायेन सर्वान् संरक्ष्य सूर्य्यस्य प्रकाश इव जगति विद्याबोधः प्रकाशनीयः॥ १४॥

**पदार्थः**-हे (**मघवन्**) अत्यन्त श्रेष्ठ धनयुक्त पुरुष! मैं (**ते**) आपके (**महि**) अति आदर करने योग्य (**सख्यम्**) मित्रभाव की (**आ, वश्मि**) अच्छी कामना करता हूँ, विद्वान् जन जिस (**वृत्रघ्ने**) मेघ के नाशकर्त्ता सूर्य्य के तुल्य वर्त्तमान आपके लिये (**पूर्वीः**) अनादि काल से सिद्ध (**नियुतः**) निश्चित (**शक्तीः**) सामर्थ्यों को (**आ**) (**यन्ति**) प्राप्त होते हैं उस (**अस्माकम्**) हम लोगों के मध्य में वर्त्तमान (**सूरेः**) परमोत्तम विद्वान् आपके समीप से (**महि**) बड़े (**स्तोत्रम्**) स्तुति करने योग्य (**अवः**) रक्षा आदि को हम लोग (**आ, अगन्म**) प्राप्त होवें। आप हम लोगों की (**गोपाः**) रक्षा करते हुए (**सु**) (**बोधि**) जानिये॥ १४॥

**भावार्थः**-मनुष्य लोगों को चाहिये कि विद्वान् जनों के साथ मित्रता कर, सामर्थ्य पूर्ण कर और न्याय से सम्पूर्ण जनों की रक्षा करके सूर्य्य के प्रकाश के सदृश संसार में विद्या के बोध का प्रकाश करें॥ १४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहा है॥

**महि क्षेत्रं पुरु श्चन्द्रं विविद्वानादित् सखिभ्यश्चरथं समैरत्।**

**इन्द्रो नृभिरजनद् दीद्यानः साकं सूर्यमुषसं गातुमग्निम्॥ १५॥ ७॥**



www.9009.co.in

महि। क्षेत्रम्। पुरु। चन्द्रम्। विऽविद्वान्। आत्। इत्। सखिऽभ्यः। चरथम्। सम्। ऐरत्। इन्द्रः। नृऽभिः। अजनत्। दीद्यानः। साकम्। सूर्यम्। उषसम्। गातुम्। अग्निम्॥ १५॥

**पदार्थः**-(**महि**) महत् (**क्षेत्रम्**) क्षियन्ति निवसन्ति पदार्था यस्मिंस्तत् (**पुरु**) बहु (**चन्द्रम्**) सुवर्णम्। अत्र **ह्रस्वाच्चन्द्रोत्तरपदे मन्त्र** इति सुडागमः। (**विविद्वान्**) वेत्ता (**आत्**) (**इत्**) एव (**सखिभ्यः**) मित्रेभ्यः (**चरथम्**) अगमनं[75] विज्ञानं वा (**सम्**) सम्यक् (**ऐरत्**) प्रेरयेत्। अत्र व्यत्ययेन परस्मैपदं **बहुलं छन्दसी**ति शपो लुङ् न। (**इन्द्रः**) विद्युदिव सुखप्रदो दुःखविदारकः (**नृभिः**) नायकैः (**अजनत्**) जनयेत् (**दीद्यानः**) देदीप्यमानः (**साकम्**) सह (**सूर्य्यम्**) सवितारम् (**उषसम्**) प्रभातम् (**गातुम्**) वाणीं भूमिं वा (**अग्निम्**) भौमं पावकम्॥ १५॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यो विविद्वान् दीद्यान इन्द्र इव सखिभ्य इन्महि पुरुश्चन्द्रं क्षेत्रं चरथं च समैरदान्नृभिः साकं सूर्य्यमुषसं गातुमग्निमजनत्तं सदा सत्कुरुत॥ १५॥

**भावार्थः**-यथा विद्यया सुसंप्रयुक्ता विद्युत्सूर्य्यभूमिपावकाः प्रातरादिसमय ऐश्वर्य्यं जनयित्वा सखीन् सुखयन्ति तथैव विद्वांसो मनुष्यादीन् प्राणिनः सुखयन्तु॥ १५॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो (**विविद्वान्**) ज्ञाता और (**दीद्यानः**) प्रकाशमान (**इन्द्रः**) बिजुली के सदृश सुख का वर्द्धक और दुःख का नाशक (**सखिभ्यः**) मित्रों के लिये (**इत्**) ही (**महि**) बड़ा (**पुरु**) बहुत (**चन्द्रम्**) सुवर्ण (**क्षेत्रम्**) पदार्थों का आधार (**चरथम्**) गमन वा विज्ञान की (**सम्**) (**ऐरत्**) प्रेरणा करे (**आत्**) उसके अनन्तर (**नृभिः**) प्रधान जनों के (**साकम्**) साथ (**सूर्य्यम्**) सूर्य्य (**उषसम्**) प्रातःकाल (**गातुम्**) वाणी वा भूमि और (**अग्निम्**) अग्नि को (**अजनत्**) उत्पन्न करे, उसका सदा सत्कार करो॥ १५॥

**भावार्थः**-जैसे विद्या से युक्त बिजुली, सूर्य्य, भूमि और अग्नि प्रातःकालादि समय में ऐश्वर्य को उत्पन्न कर मित्रों को सुख देते हैं, वैसे ही विद्वान् लोग मनुष्य आदि प्राणियों को सुख देवें॥ १५॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहा है॥

**अपश्चिदेष विभ्वो३ दमूनाः प्र सध्रीचीरसृजद्विश्वश्चन्द्राः।**
**मध्वः पुनानाः कविभिः पवित्रैर्द्युभिर्हिन्वन्त्यक्तुभिर्धनुत्रीः॥ १६॥**

**अपः। चित्। एषः। विऽभ्वः। दमूनाः। प्र। सध्रीचीः। असृजत्। विश्वऽचन्द्राः। मध्वः। पुनानाः। कविऽभिः। पवित्रैः। द्युऽभिः। हिन्वन्ति। अक्तुऽभिः। धनुत्रीः॥ १६॥**

७५. गमनं॥ सं०॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**अपः**) जलानीव व्याप्तविद्याः (**चित्**) अपि (**एषः**) (**विभ्वः**) विभूः (**दमूनाः**) जितेन्द्रियमनस्काः (**प्र**) (**सध्रीचीः**) सहैवाञ्चन्तीः (**असृजत्**) सृजति (**विश्वश्चन्द्राः**) विश्वानि समग्राणि चन्द्राणि सुवर्णादीनि येषान्ते। अत्रापि **ह्रस्वाच्चन्द्रोत्तरपदे मन्त्र** इति सुडागमः। (**मध्वः**) मधुरस्वभावान् जनान् (**पुनानाः**) पवित्रयन्तः (**कविभिः**) विद्वद्भिः (**पवित्रैः**) शुद्धैर्व्यवहारैः (**द्युभिः**) दिनैः (**हिन्वन्ति**) वर्धयन्ति वर्धन्ते वा। अत्र पक्षेऽन्तर्भावितो ण्यर्थः। (**अक्तुभिः**) रात्रिभिः (**धनुत्रीः**) धनधान्यादियुक्ताः॥१६॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! ये कविभिः सहिताः पवित्रैर्द्युभिरक्तुभिर्मध्वः पुनाना जना धनुत्रीर्हिन्वन्ति यश्चिदेष विभ्वो दमूनाः सध्रीचीर्विश्वश्चन्द्रा अपः प्रासृजत्ताँस्तं च सर्वे सङ्गच्छन्ताम्॥१६॥

**भावार्थः**-ये विद्वांसो बह्वैश्वर्य्यजनकान् पदार्थान् कार्यसिद्धये प्रयुञ्जते विद्वद्भिः सह पवित्राचरणं कृत्वा सुखैश्वर्य्यमहर्निशं वर्धयन्ति ते भाग्यशालिनः सन्ति॥१६॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो लोग (**कविभिः**) विद्वान् जनों के सहित (**पवित्रैः**) उत्तम व्यवहारों तथा (**द्युभिः**) दिनों और (**अक्तुभिः**) रात्रियों से (**मध्वः**) कोमल स्वभाववाले मनुष्यों को (**पुनानाः**) पवित्र करते हुए जन (**धनुत्रीः**) धन और धान्य आदिकों से युक्त (**हिन्वन्ति**) बढ़ाते वा बढ़ते हैं जो (**चित्**) भी (**एषः**) यह (**विभ्वः**) व्यापक (**दमूनाः**) जितेन्द्रिय मनयुक्त (**सध्रीचीः**) एक साथ मिले हुए (**विश्वश्चन्द्राः**) सम्पूर्ण सुवर्ण आदिकों से युक्त (**अपः**) जलों के सदृश व्याप्त विद्याओं को (**प्र**) (**असृजत्**) उत्पन्न करता है, उन और उसका सर्व जन सङ्गम करें॥१६॥

**भावार्थः**-जो विद्वान् लोग बहुत ऐश्वर्य्यों के जनक पदार्थों को कार्यसिद्धि के लिये उपयोग में लाते तथा विद्वान् जनों के साथ शुद्ध आचरणों को करके सुख और ऐश्वर्य दिन-रात्रि बढ़ाते, वे भाग्यशाली हैं॥१६॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहा है॥

**अनु॑ कृ॒ष्णे वसु॑धिती जिहाते उ॒भे सूर्य॑स्य मं॒हना॒ यज॑त्रे।**

**परि॒ यत्ते॑ महि॒मानं॑ वृ॒जध्यै॒ सखा॑य इन्द्र॒ काम्या॑ ऋजि॒प्याः॥ १७॥**

**अनु॑। कृ॒ष्णे इति॑। वसुधिती॒ इति॒ वसु॑ऽधिती। जि॒हा॒ते॒ इति॑। उ॒भे इति॑। सूर्य॑स्य। मं॒हना॑। यज॑त्रे॒ इति॑। परि॑। यत्। ते॒। म॒हि॒मान॑म्। वृ॒जध्यै॑। सखा॑यः। इ॒न्द्र॒। काम्या॑ः। ऋ॒जि॒प्याः॥१७॥**

**पदार्थः**-(**अनु**) (**कृष्णे**) कर्षिते (**वसुधिती**) वसूनां पदार्थानां धर्त्र्यौ द्यावापृथिव्यौ (**जिहाते**) गच्छतः (**उभे**) (**सूर्य्यस्य**) (**मंहना**) महत्त्वेन (**यजत्रे**) सङ्गते (**परि**) (**यत्**) ये (**ते**) तव (**महिमानम्**) (**वृजध्यै**) वर्जितुम् (**सखायः**) सुहृदः सन्तः (**इन्द्र**) परमैश्वर्य्ययुक्त राजन् (**काम्याः**) कमनीयाः (**ऋजिप्याः**) ऋजीन् सरलान् व्यवहारान् प्यायन्ते वर्धयन्ति ते॥१७॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे इन्द्र! यद्ये ते काम्या ऋजिप्याः सखायो महिमानमनुकृष्णे उभे यजत्रे वसुधिती सूर्यस्य मंहना वृजध्यै परि जिहाते इव स्तस्ते वर्धयन्ति ते त्वया सत्कर्त्तव्याः॥१७॥

**भावार्थः**-यथा सूर्यः स्वमहिम्ना भूमिप्रकाशावनुकृष्य धरति यथा भूमिप्रकाशौ सर्वान् धरतस्तथोत्तमपुरुषेण स्वमहिमानं धृत्वा दुर्व्यसनानि वर्जित्वा सखायः सत्कर्त्तव्याः॥१७॥

**पदार्थः**-हे **(इन्द्र)** अत्यन्त ऐश्वर्य से युक्त राजन्! **(यत्)** जो **(ते)** आपके **(काम्याः)** कामना करने योग्य **(ऋजिप्याः)** सरल व्यवहारों के वर्द्धक **(सखायः)** मित्र हुए **(महिमानम्)** महिमा को **(अनु)** **(कृष्णे)** खींची गयीं **(उभे)** दोनों **(यजत्रे)** परस्पर मिली हुई **(वसुधिती)** अन्तरिक्ष और पृथिवी **(सूर्यस्य)** सूर्य के **(मंहना)** महत्त्व से **(वृजध्यै)** रोकने को **(परि)** **(जिहाते)** प्राप्त होते हैं, उनको बढ़ाते हैं, वे आप से सत्कार पाने योग्य हैं॥१७॥

**भावार्थः**-जैसे सूर्य अपने प्रताप से भूमि और प्रकाश का आकर्षण करके धारण करता है और जैसे भूमि तथा प्रकाश सम्पूर्ण पदार्थों को धारण करते हैं, वैसे उत्तम पुरुष को चाहिये कि महिमा को धारण और दुर्व्यसनों को त्याग करके मित्रों का सत्कार करें॥१७॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहा है॥

**पतिर्भव वृत्रहन्त्सूनृतानां गिरां विश्वायुर्वृषभो वयोधाः।**

**आ नो गहि सख्येभिः शिवेभिर्महान् महीभिरूतीभिः सरण्यन्॥१८॥**

**पतिः। भव। वृत्रऽहन्। सूनृतानाम्। गिराम्। विश्वऽआयुः। वृषभः। वयःऽधाः। आ। नः। गहि। सख्येभिः। शिवेभिः। महान्। महीभिः। ऊतिऽभिः। सरण्यन्॥१८॥**

**पदार्थः**-**(पतिः)** पालकः स्वामी **(भव)** **(वृत्रहन्)** मेघहन्ता सूर्य इव वर्तमान **(सूनृतानाम्)** सुष्ठु ऋतानि सत्यानि यासु तासाम् **(गिराम्)** वाचाम् **(विश्वायुः)** पूर्णायुः **(वृषभः)** सुखवर्षकः **(वयोधाः)** यो वयो जीवनं दधाति सः **(आ)** **(नः)** अस्मान् **(गहि)** आगच्छ प्राप्नुहि **(सख्येभिः)** सखीनां कर्मभिः **(शिवेभिः)** मङ्गलकारिभिः **(महान्)** पूज्यतमः **(महीभिः)** महतीभिः **(ऊतिभिः)** रक्षणादिभिः **(सरण्यन्)** आत्मनः सरणं गमनं विज्ञानं वेच्छन्॥१८॥

**अन्वयः**-हे वृत्रहन्निन्द्र राजँस्त्वं महान् विश्वायुर्वृषभो वयोधाः शिवेभिः सख्येभिर्महीभिरूतिभिः सह सरण्यन् सन् सूनृतानां गिरां पतिर्भव नोऽस्मानागहि॥१८॥

**भावार्थः**-ये मनुष्याः सत्यवाचोऽजातशत्रवः स्वात्मवत्सर्वेषां पालकाः सूर्य्यवद्विद्याधर्मविनयप्रकाशका विद्वांसः स्वामिनस्स्युस्ते महान्तो भवेयुः॥१८॥

**पदार्थः**-हे **(वृत्रहन्)** मेघ के नाशकारक सूर्य्य के सदृश तेजधारी राजन्! आप **(महान्)** प्रतिष्ठित **(विश्वायुः)** पूर्ण आयु से युक्त **(वृषभः)** सुखों की वृष्टि और **(वयोधाः)** जीवन के धारण करनेवाले



www.9009.co.in

(**शिवेभिः**) मङ्गलकारक (**सख्येभिः**) मित्रों के कर्मों से (**महीभिः**) बड़ी (**ऊतिभिः**) रक्षाओं आदि से युक्त (**सरण्यन्**) अपने चलन वा विज्ञान की इच्छा करते हुए (**सूनृतानाम्**) उत्तम सत्य से युक्त (**गिराम्**) वाणियों के (**पतिः**) पालनकर्त्ता (**भव**) हूजिये और (**नः**) हम लोगों को (**आ, गहि**) प्राप्त हूजिये॥१८॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य सत्य बोलने, शत्रुता को त्यागने, अपने प्राण के तुल्य सम्पूर्ण जनों के पालन करने और सूर्य्य के सदृश विद्या, धर्म और नम्रता के प्रकाश करनेवाले विद्वान् स्वामी हों, वे श्रेष्ठ होवें॥१८॥

**पुना राजप्रजाविषयमाह॥**

फिर राजा और प्रजा के विषय को कहते हैं॥

**तम॑ङ्गिर॒स्वन्नम॑सा सप॒र्यन् नव्यं॑ कृणोमि॒ सन्य॑से पु॒रा॒जाम्।**

**द्रुहो॒ वि या॑हि बहु॒ला अदे॑वी॒: स्व॑श्च नो मघवन्त्सा॒तये॑ धाः॥१९॥**

**तम्। अ॒ङ्गि॒र॒स्वत्। नम॑सा। स॒प॒र्यन्। नव्य॑म्। कृ॒णो॒मि॒। सन्य॑से। पु॒रा॒ऽजाम्। द्रु॒हः॑। वि। या॒हि॒। ब॒हु॒लाः। अदे॑वीः। स्व॒र्ऽरिति॒ स्व॑ः। च॒। न॒ः। म॒घ॒ऽव॒न्। सा॒तये॑। धा॒ः॥१९॥**

**पदार्थः**-(**तम्**) पूर्वोक्तं राजानम् (**अङ्गिरस्वत्**) अङ्गिरसो विद्वांसो विद्यन्ते यस्य तत्सम्बुद्धौ (**नमसा**) सत्कारेणान्नेन वा (**सपर्यन्**) सेवमानः (**नव्यम्**) नवमिव वर्त्तमानम् (**कृणोमि**) (**सन्यसे**) सनां विभजतां मध्ये प्रयत्नाय (**पुराजाम्**) पुराजातम् (**द्रुहः**) द्रोग्धीः (**वि**) (**याहि**) प्राप्नुहि (**बहुलाः**) (**अदेवीः**) अविदुषीः स्त्रियः (**स्वः**) सुखम् (**च**) (**नः**) अस्माकम् (**मघवन्**) पूजनीयवित्त (**सातये**) संविभागाय (**धाः**) धेहि॥१९॥

**अन्वयः**-हे अङ्गिरस्वन्मघवन् राजन्! पुराजां नव्यं तं त्वामहं सन्यसे नमसा सपर्यन् कृणोमि त्वं बहुला द्रुहोऽदेवीर्वियाहि दूरीकुरु नः सातये स्वश्च धाः॥१९॥

**भावार्थः**-प्रजास्थैर्जनैर्न्यायविनयादिशुभगुणान्विता राजादयो जनाः सदैव सत्कर्त्तव्या राजादिपुरुषैश्च प्रजाः सदा पितृवत्पालनीयाः स्त्रियश्च विदुष्यः सम्पादनीया अनेन बहुविधं सुखमुन्नेयम्॥१९॥

**पदार्थः**-हे (**अङ्गिरस्वत्**) विद्वानों के सहित विराजमान (**मघवन्**) श्रेष्ठ धनयुक्त राजन्! (**पुराजाम्**) पहिले उत्पन्न और (**नव्यम्**) नवीन के सदृश वर्त्तमान (**तम्**) प्रथम कहे हुए आपकी मैं (**सन्यसे**) अलग-अलग बँटे हुए पदार्थों में प्रयत्न करते हुए के लिये (**नमसा**) सत्कारपूर्वक (**सपर्यन्**) सेवा करता हुआ (**कृणोमि**) प्रसिद्ध करता हूँ आप (**बहुलाः**) बहुत (**द्रुहः**) शत्रुतायुक्त (**अदेवीः**) विद्यारहित स्त्रियों को (**वि, याहि**) दूर कीजिये (**नः**) हम लोगों के (**सातये**) संविभाग के लिये (**स्वः**) सुख को (**च**) भी (**धाः**) धारण कीजिये॥१९॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-प्रजारूप जनों को चाहिये कि न्याय, विनय आदि शुभ गुणों से युक्त राजा आदि जनों का सदा ही सत्कार करें और राजा आदि पुरुषों को चाहिये कि प्रजाजनों का सदा पिता के तुल्य पालन करें और स्त्रियों को विद्यायुक्त करें, इससे अनेक प्रकार [की सुख] की वृद्धि करें॥१९॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहा है॥

**मिहः पावकाः प्रतताः अभूवन्त्स्वस्ति नः पिपृहि पारमासाम्।**

**इन्द्र त्वं रथिरः पाहि नो रिषो मक्षूमक्षू कृणुहि गोजितो नः॥२०॥**

**मिहः। पावकाः। प्रऽतताः। अभूवन्। स्वस्ति। नः। पिपृहि। पारम्। आसाम्। इन्द्र। त्वम्। रथिरः। पाहि। नः। रिषः। मक्षुऽमक्षु। कृणुहि। गोऽजितः। नः॥२०॥**

**पदार्थः**-(**मिहः**) सेचकाः (**पावकाः**) पवित्राः पवित्रकराः (**प्रतताः**) विस्तीर्णाः स्वरूपगुणाः (**अभूवन्**) भवन्ति (**स्वस्ति**) सुखम् (**नः**) अस्मभ्यम् (**पिपृहि**) पूर्णं कुरु (**पारम्**) (**आसाम्**) (**इन्द्र**) सूर्य्य इव राजन् (**त्वम्**) (**रथिरः**) रथादियुक्तः (**पाहि**) (**नः**) अस्मान् (**रिषः**) हिंसकात् (**मक्षूमक्षू**) शीघ्रम् शीघ्रम्। अत्र **निपातस्य चेति** दीर्घः। **मक्ष्विति क्षिप्रनामसु पठितम्।** (निघं०२.१५) (**कृणुहि**) (**गोजितः**) गौर्भूमिर्जिता यैस्तान् (**नः**) अस्माकम्॥२०॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र रथिरस्त्वं नो रिषः पाहि नोऽस्मान् गोजितो मक्षूमक्षू कृणुहि। आसां शत्रुसेनानां पारं नय या मिहः प्रतताः पावका अभूवन् तैर्नः स्वस्ति पिपृहि॥२०॥

**भावार्थः**-प्रजासेनापुरुषैः स्वेऽध्यक्षा एवं याचनीया यूयमस्माभिः शत्रून् विजयित्वा सुखं जनयत यथा विद्युदादयो वृष्टिद्वारा क्षुधादिदोषात् पृथक्कृत्यानन्दयन्ति तथैव हिंसकेभ्यः प्राणिभ्यः सद्यः पृथक्कृत्य रक्षित्वा सततमानन्दयत॥२०॥

**पदार्थः**-हे (**इन्द्र**) सूर्य्य के सदृश तेजस्वी राजन्! (**रथिरः**) रथ आदि वस्तुओं से युक्त (**त्वम्**) आप (**नः**) हम लोगों की (**रिषः**) हिंसाकारक जन से (**पाहि**) रक्षा कीजिये (**नः**) हम लोगों को (**गोजितः**) पृथिवी के जीतनेवाले (**मक्षूमक्षू**) शीघ्र शीघ्र (**कृणुहि**) करिये (**आसाम्**) इन शत्रुओं की सेनाओं के (**पारम्**) पार पहुँचाइये जो (**मिहः**) सींचनेवाले (**प्रतताः**) विस्तारस्वरूप और गुणों से युक्त (**पावकाः**) पवित्र और दूसरों को पवित्र करनेवाले (**अभूवन्**) होते हैं, उन लोगों से (**नः**) हम लोगों के (**स्वस्ति**) सुख को (**पिपृहि**) पूरा कीजिये॥२०॥

**भावार्थः**-प्रजा और सेना के पुरुषों को चाहिये कि अपने प्रधान पुरुषों से इस प्रकार की याचना करें कि आप लोग हम लोगों से शत्रुओं को जीत कर सुख उत्पन्न करो। जैसे बिजुली आदि पदार्थ वृष्टि के द्वारा क्षुधा आदि दोष से दूर करके आनन्द देते हैं, वैसे ही हिंसा करनेवाले प्राणियों से शीघ्र दूर कर और रक्षा करके निरन्तर आनन्द दीजिये॥२०॥



www.9009.co.in

**अथ के गुरवो भवितुमर्हन्तीत्याह॥**

अब कौन गुरु होने के योग्य हैं, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अदेदिष्ट वृत्रहा गोपतिर्गा अन्तः कृष्णाँ अरुषैर्धामभिर्गात्।**

**प्र सूनृता दिशमान ऋतेन दुरश्च विश्वा अवृणोदप स्वाः॥ २१॥**

**अदेदिष्ट। वृत्रऽहा। गोऽपतिः। गाः। अन्तरिति। कृष्णान्। अरुषैः। धामऽभिः। गात्। प्र। सूनृताः। दिशमानः। ऋतेन। दुरः। च। विश्वाः। अवृणोत्। अप। स्वाः॥ २१॥**

**पदार्थः**-(**अदेदिष्ट**) भृशमुपदिशत (**वृत्रहा**) मेघहा सूर्य्य इव (**गोपतिः**) गवां पालकः (**गाः**) धेनुः (**अन्तः**) मध्ये (**कृष्णान्**) कृष्णवर्णान् (**अरुषैः**) रक्तगुणविशिष्टैरश्वैः। **अरुष इत्यश्वनामसु पठितम्।** (निघं०१.१४) (**धामभिः**) स्थानविशेषैः (**गात्**) प्राप्नुयात् (**प्र**) (**सूनृताः**) सत्यादिलक्षणान्विता वाचः (**दिशमानः**) उपदिशन्। अत्र व्यत्ययेनात्मनेपदम्। (**ऋतेन**) सत्येनेव जलेन (**दुरः**) द्वाराणि (**च**) (**विश्वाः**) समग्राः (**अवृणोत्**) वृणुयात् (**अप**) दूरीकरणे (**स्वाः**) स्वकीयाः॥ २१॥

**अन्वयः**-हे विद्वन्! यथा वृत्रहा सूर्य्यः किरणैर्जगत्पाति यथा गोपतिर्गा रक्षत्यरुषैर्धामभिः सह कृष्णानन्तर्गाद् दुरश्चाऽपावृणोत् तथर्त्तेन सहिता विश्वाः स्वाः सूनृता वाचः प्र दिशमानोऽदेदिष्ट॥ २१॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। ये सूर्य्यवद्गोपतिवत् पितृवत्सर्वान् रक्षन्ति त एव गुरवो भवितुमर्हन्ति॥ २१॥

**पदार्थः**-हे विद्वान् पुरुष! जैसे (**वृत्रहा**) मेघ का नाशक सूर्य्य अपनी किरणों से संसार की रक्षा करता है और जैसे (**गोपतिः**) गौओं का पालनकर्त्ता (**गाः**) गौओं की रक्षा करता तथा (**अरुषैः**) लाल गुण विशिष्ट घोड़ों और (**धामभिः**) स्थान विशेषों के साथ (**कृष्णान्**) काले वर्णों को (**अन्तः**) मध्य में (**गात्**) प्राप्त होवे (**दुरः, च**) और द्वारों को (**अप, अवृणोत्**) खोले, वैसे (**ऋतेन**) सत्य के सदृश जल के सहित (**विश्वाः**) सम्पूर्ण (**स्वाः**) अपनी (**सूनृताः**) सत्य आदि लक्षणों से युक्त वाणियों के (**प्र, दिशमानः**) अच्छे प्रकार उपदेशक (**अदेदिष्ट**) आप अत्यन्त उपदेश कीजिये॥ २१॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो लोग सूर्य्य, गौओं के पालक और पिता के सदृश सबकी रक्षा करते हैं, वे ही गुरुजन होने योग्य हैं॥ २१॥

**अथ के विजयिनो भवन्तीत्याह॥**

अब कौन विजयी होते हैं, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**शुनं हुवेम मघवानमिन्द्रमस्मिन् भरे नृतमं वाजसातौ।**

**शृण्वन्तमुग्रमूतये समत्सु घ्नन्तं वृत्राणि संजितं धनानाम्॥ २२॥ ८॥**



www.9009.co.in

शुनम्। हुवेम। मघऽवानम्। इन्द्रम्। अस्मिन्। भरे। नृऽतमम्। वाजऽसातौ। शृण्वन्तम्। उग्रम्। ऊतये। समत्सु। घ्नन्तम्। वृत्राणि। सम्ऽजितम्। धनानाम्॥ २२॥

**पदार्थः**-(**शुनम्**) वर्धकम् (**हुवेम**) स्वीकुर्याम प्रशंसेम (**मघवानम्**) परमधनयुक्तम् (**इन्द्रम्**) शत्रूणां विदारितारम् (**अस्मिन्**) वर्त्तमाने (**भरे**) भरणीये (**नृतमम्**) अतिशयेन नायकम् (**वाजसातौ**) अन्नादिविभाजके संग्रामे (**शृण्वन्तम्**) (**उग्रम्**) तेजस्विनम् (**ऊतये**) रक्षणाद्याय (**समत्सु**) संग्रामेषु (**घ्नन्तम्**) नाशयन्तम् (**वृत्राणि**) मेघावयवानिव (**सञ्जितम्**) सम्यग्जयशीलम् (**धनानाम्**)॥ २२॥

**अन्वयः**-हे वीरा! यथा वयमूतये सूर्य्यो वृत्राणीवाऽस्मिन् भरे वाजसातौ धनानां सञ्जितं नृतमं समत्सु घ्नन्तं शृण्वन्तमुग्रं शुनं मघवानमिन्द्रं हुवेम तथैतं यूयमप्याह्वयत॥ २॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। तेषामेव ध्रुवो विजयो येषां पुष्कलधनबलाः सर्वेषां कथनश्रोतारो नरोत्तमा युद्धेषु शत्रूणां हन्तारो विजयमानाः स्युरिति॥ २२॥

अत्र वह्निविद्वद्राजसेनावागुपदेशकप्रजागुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इत्येकाधिकत्रिंशत्तमं सूक्तमष्टमो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे वीर पुरुषो! जैसे हम लोग (**ऊतये**) रक्षा आदि के लिये (**वृत्राणि**) मेघों के अवयवों को सूर्य्य के समान (**अस्मिन्**) इस वर्त्तमान (**भरे**) पुष्ट करने योग्य (**वाजसातौ**) अन्न आदि के विभागकारक संग्राम में (**धनानाम्**) धनों के (**सञ्जितम्**) उत्तम प्रकार जीतनेवाले (**नृतमम्**) अति प्रधान (**समत्सु**) संग्रामों में (**घ्नन्तम्**) नाश करते और (**शृण्वन्तम्**) सुनते हुए (**उग्रम्**) तेजस्वी (**शुनम्**) वृद्धिकर्त्ता (**मघवानम्**) अत्यन्त धन से युक्त (**इन्द्रम्**) शत्रुओं के विदारनेवाले का (**हुवेम**) स्वीकार वा प्रशंसा करें, वैसे इस पुरुष का आप लोग भी आह्वान करें॥ २२॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। उन्हीं लोगों की निश्चय विजय होती है कि जिनके अत्यन्त धन, बलयुक्त और सब वचनों के सुननेवाले श्रेष्ठ पुरुष जो कि संग्रामों में शत्रुओं के मारने, जीतनेवाले हों॥ २२॥

इस मन्त्र [=सूक्त] में अग्नि, विद्वान्, राजा की सेना, मित्र,[76] वाणी, उपदेशकर्त्ता और प्रजा के गुणों का वर्णन होने से इस सूक्त के अर्थ की पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह इकत्तीसवां सूक्त और आठवां वर्ग समाप्त हुआ॥**

७६. संस्कृत में 'मित्र' पद नहीं दिया गया है, हिन्दी में यह अधिक है।



www.9009.co.in

**अथ सप्तदशर्चस्य द्वात्रिंशत्तमस्य सूक्तस्य विश्वामित्र ऋषिः। इन्द्रो देवता। १-३। ७-९, १७ त्रिष्टुप्। ११-१५ निचृत्त्रिष्टुप्। १६ विराट् त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः। ४, १० भुरिक् पङ्क्तिः। ५ निचृत्पङ्क्तिः। ६ विराट् पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः॥**

***अथ नित्यकर्मविधिरुच्यते॥***

अब सत्रह ऋचावाले बत्तीसवें सूक्त का प्रारम्भ है। उसके पहिले मन्त्र में नित्यकर्म का विधान कहते हैं॥

**इन्द्र सोमं सोमपते पिबेमं माध्यंदिनं सवनं चारु यत्ते।**

**प्रप्रुथ्या शिप्रे मघवन्नृजीषिन् विमुच्या हरी इह मादयस्व॥ १॥**

**इन्द्र। सोमम्। सोमऽपते। पिब। इमम्। माध्यंदिनम्। सवनम्। चारु। यत्। ते। प्रऽप्रुथ्य। शिप्रे इति। मघऽवन्। ऋजीषिन्। विऽमुच्य। हरी इति। इह। मादयस्व॥ १॥**

**पदार्थः**-(**इन्द्र**) ऐश्वर्य्योत्पादक (**सोमम्**) ऐश्वर्यकारकं सोमाद्योषधिमयम् (**सोमपते**) ऐश्वर्यस्य पालक (**पिब**) (**इमम्**) (**माध्यन्दिनम्**) मध्ये भवम्। अत्र **मध्योमध्यं दिनण् चा**स्मादिति वार्तिकेन मध्यशब्दो मध्यमिति मान्तत्वमापद्यते भवेऽर्थे दिनण् च प्रत्ययः। (**सवनम्**) भोजनं होमादिकं वा (**चारु**) सुन्दरं भोक्तव्यम् (**यत्**) ये (**ते**) तव (**प्रप्रुथ्या**) प्रपूर्य्य (**शिप्रे**) मुखावयवाविव (**मघवन्**) परमपूजितधनयुक्त (**ऋजीषिन्**) शोधक (**विमुच्य**) त्यक्त्वा। अत्र **निपातस्य चे**ति दीर्घः। (**हरी**) अश्वाविव धारणाऽकर्षणे (**इह**) (**मादयस्व**) आनन्दय॥ १॥

**अन्वयः**-हे मघवन्त्सोमपत इन्द्र! त्वमिमं सोमं पिब चारु माध्यन्दिनं सवनं कुरु। हे ऋजीषिंस्ते यच्छिप्रे स्तस्ते प्रप्रुथ्या दुर्व्यसनानि विमुच्य हरी प्रयोज्य त्वमिह मादयस्व॥ १॥

**भावार्थः**-मनुष्यैः प्रथमं भोजनं मध्यन्दिनस्य निकटे कर्त्तव्यमग्निहोत्रादिव्यवहारेषु भोजनसमये बलिवैश्वदेवं विधाय दूषितं वायुं निःसार्य्याऽऽनन्दितव्यम्॥ १॥

**पदार्थः**-हे (**मघवन्**) अत्यन्त श्रेष्ठ धनयुक्त (**सोमपते**) ऐश्वर्य्य के पालने और (**इन्द्र**) ऐश्वर्य्य की उत्पत्ति करनेवाले! आप (**इमम्**) इस (**सोमम्**) ऐश्वर्यकारक सोम आदि ओषधि स्वरूप को (**पिब**) पीओ, (**चारु**) सुन्दर भोजन करने योग्य (**माध्यन्दिनम्**) बीच में होनेवाले (**सवनम्**) भोजन वा होम आदि को सिद्ध करो। हे (**ऋजीषिन्**) शुद्धिकर्त्ता! (**ते**) आपके (**यत्**) जो (**शिप्रे**) मुख के अवयवों के सदृश ऐहिक और पारलौकिक व्यवहार हैं, उनको (**प्रप्रुथ्या**) पूर्ण कर और दुर्व्यसनों को (**विमुच्य**) त्याग के (**हरी**) घोड़ों के सदृश धारण और खींचने का प्रयोग करके आप (**इह**) इस संसार में (**मादयस्व**) आनन्द दीजिये॥ १॥

**भावार्थः**-मनुष्यों को चाहिये प्रथम भोजन मध्य दिन के समीप में करें और अग्निहोत्र आदि व्यवहारों में भोजन के समय बलिवैश्वदेव को कर और दूषित वायु को निकाल के आनन्दित हों॥ १॥



www.9009.co.in

**के श्रीमन्तो भवन्तीत्याह॥**

कौन लोग श्रीमान् होते हैं, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**गवाशिरं मन्थिनमिन्द्र शुक्रं पिबा सोमं ररिमा ते मदाय।**

**ब्रह्मकृता मारुतेना गणेन सजोषा रुद्रैस्तृपदा वृषस्व॥ २॥**

**गोऽआशिरम्। मन्थिनम्। इन्द्र। शुक्रम्। पिब। सोमम्। ररिम। ते। मदाय। ब्रह्मऽकृता। मारुतेन। गणेन। सऽजोषाः। रुद्रैः। तृपत्। आ। वृषस्व॥ २॥**

**पदार्थः**-(**गवाशिरम्**) गावः किरणा इन्द्रियाणि वाऽश्नन्ति यस्मिँस्तम् (**मन्थिनम्**) मन्थितुं शीलं यस्य तम् (**इन्द्र**) दुःखविदारक (**शुक्रम्**) आशु सुखकरं शुद्धम् (**पिब**)। अत्र **द्व्यचोऽतस्तिङ** इति दीर्घः। (**सोमम्**) ऐश्वर्यकारकं पेयम् (**ररिम**) दद्याम। अत्र **संहितायामि**ति दीर्घः। (**ते**) तव (**मदाय**) आनन्दाय (**ब्रह्मकृता**) ब्रह्म धनमन्नं वा करोति यस्तेन (**मारुतेन**) मारुतेन हिरण्यादिसम्बन्धेन। अत्र **संहितायामि**ति दीर्घः। **मरुदिति हिरण्यनामसु पठितम्।** (निघं०१.२) (**गणेन**) गणनीयेन सङ्ख्यातेन समूहेन (**सजोषाः**) आत्मसमानप्रीतिं सेवमानः सन् (**रुद्रैः**) प्राणैरिव मध्यमैर्विद्वद्भिः सह (**तृपत्**) तृप्तः सन् (**आ**) समन्तात् (**वृषस्व**) वृष इव बलिष्ठो भव॥ २॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! वयं ते मदाय यं गवाशिरं शुक्रं मन्थिनं सोमं ररिम तं त्वं पिब ब्रह्मकृता मारुतेन गणेन रुद्रैः सह सजोषास्तृपत्सन्ना वृषस्व॥ २॥

**भावार्थः**-ये मनुष्या अन्येषु स्वात्मवद्वर्त्तित्वा तैः सह सुखादानं कृत्वा सुवर्णादिधनमुन्नीय तृप्ताः सन्तो बलिष्ठा जायन्ते, त एव श्रीमन्तो भवन्ति॥ २॥

**पदार्थः**-हे (**इन्द्र**) दुःख के नाश करनेवाले! हम लोग (**ते**) आपके (**मदाय**) आनन्द के अर्थ जिस (**गवाशिरम्**) किरणों वा इन्द्रियों से मिले हुए (**शुक्रम्**) शीघ्र सुख पवित्र करने वा (**मन्थिनम्**) मथने का स्वभाव रखने और (**सोमम्**) ऐश्वर्य के करनेवाले पान करने योग्य वस्तु को (**ररिम**) देवें उसको आप (**पिब**) पान करिये और (**ब्रह्मकृता**) धन वा अन्न को करनेवाले (**मारुतेन**) सुवर्ण आदि के सम्बन्धी (**गणेन**) गणना करने योग्य गिने हुए समूह से (**रुद्रैः**) प्राणों के सदृश मध्यम विद्वानों के साथ (**सजोषाः**) अपने तुल्य प्रीति का सेवन करनेवाले (**तृपत्**) तृप्त होते हुए (**आ**) सब प्रकार (**वृषस्व**) वृषभ के तुल्य बलिष्ठ हूजिये॥ २॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य अन्य जनों में अपने तुल्य वर्त्तमान होकर उन लोगों के साथ सुख का ग्रहण और सुवर्ण आदि धन की वृद्धि करके तृप्त हुए बलिष्ठ होते, वे ही श्रीमान् होते हैं॥ २॥

**पुना राजधर्ममाह॥**

फिर राजधर्म विषय को अगले मन्त्र में कहा है॥

**ये ते शुष्मं ये तविषीमवर्धन्नर्चन्त इन्द्र मरुतस्त ओजः।**



www.9009.co.in

**माध्यंदिने सवने वज्रहस्त पिबा रुद्रेभिः सगणः सुशिप्र॥ ३॥**

**ये। ते। शुष्मम्। ये। तविषीम्। अवर्धन्। अर्चन्तः। इन्द्र। मरुतः। ते। ओजः। माध्यंदिने। सवने। वज्रऽहस्त। पिब। रुद्रेऽभिः। सऽगणः। सुऽशिप्र॥ ३॥**

**पदार्थः**-(**ये**) (**ते**) तव सकाशात् (**शुष्मम्**) बलम् (**ये**) (**तविषीम्**) बलवतीं सेनाम् (**अवर्धन्**) वर्धयेयुः (**अर्चन्तः**) सत्कुर्वन्तः (**इन्द्र**) दुष्टबलविदारक (**मरुतः**) वायव इव वीराः (**ते**) तव (**ओजः**) पराक्रमः (**माध्यन्दिने**) मध्यदिने भवे (**सवने**) प्रेरणे (**वज्रहस्त**) वज्रादीनि शस्त्राणि हस्ते यस्य तत्सम्बुद्धौ (**पिब**)। अत्र **द्व्यचोऽतस्तिङ** इति दीर्घः। (**रुद्रेभिः**) दुष्टान् रोदयद्भिर्वीरैः (**सगणः**) गणेन सह वर्त्तमानः (**सुशिप्र**) शोभने शिप्रे हनुनासिके यस्य॥ ३॥

**अन्वयः**-हे सुशिप्र वज्रहस्तेन्द्र! ये त्वामर्चन्तो मरुतस्ते तव शुष्ममवर्धन् ये ते तविषीं चावर्धंस्तविषीमोजश्चावर्धंस्तै रुद्रेभिः सह सगणः सन्माध्यन्दिने सवने सूर्य्य इव सोमं पिब॥ ३॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे राजन्! ये ते सचिवाः सेनां विजयं धनं राज्यं सुशिक्षां विद्यां धर्मं च वर्धयेयुस्ताँस्त्वं सततं सत्कुर्य्यास्तैः सह राज्यसुखं सदा भुङ्क्ष्व॥ ३॥

**पदार्थः**-(**सुशिप्र**) सुन्दर ठोढ़ी और नासिका जिनकी (**वज्रहस्त**) वा वज्र आदि शस्त्र हाथों में जिनके वह हे (**इन्द्र**) दुष्ट पुरुषों के समूहनाशक! (**ये**) जो आपका (**अर्चन्तः**) सत्कार करनेवाले (**मरुतः**) वायु के सदृश वीर पुरुष (**ते**) आपके समीप से (**शुष्मम्**) बल को (**अवर्धन्**) बढ़ावें (**ये**) वा जो लोग (**ते**) आपकी (**तविषीम्**) सेना और (**ओजः**) पराक्रम को बढ़ावें उन (**रुद्रेभिः**) दुष्टों के रुलानेवाले वीर पुरुषों के साथ (**सगणः**) समूह के सहित वर्त्तमान आप (**माध्यन्दिने**) मध्य दिन में होनेवाले (**सवने**) प्रेरणा करने में सूर्य्य के सदृश सोमलतादि ओषधि का पान करो॥ ३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे राजन्! जो आपके मन्त्री लोग सेना, विजय, धन, राज्य, उत्तम शिक्षा, विद्या और धर्म को बढ़ावें, उनका आप निरन्तर सत्कार कर उनके साथ राज्य के सुख का सदा भोग करो॥ ३॥

**पुनः के विद्वांसो भवन्तीत्याह॥**

फिर कौन लोग विद्वान् होते हैं, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**त इन्न्वस्य मधुमद्विविप्र इन्द्रस्य शर्धो मरुतो य आसन्।**
**येभिर्वृत्रस्येषितो विवेदामर्मणो मन्यमानस्य मर्म॥ ४॥**

**ते। इत्। नु। अस्य। मधुऽमत्। विविप्रे। इन्द्रस्य। शर्धः। मरुतः। ये। आसन्। येभिः। वृत्रस्य। इषितः। विवेद। अमर्मणः। मन्यमानस्य। मर्म॥ ४॥**

**पदार्थः**-(**ते**) पूर्वोक्ताः (**इत्**) एव (**नु**) सद्यः (**अस्य**) वर्त्तमानस्य (**मधुमत्**) बहूनि मधुरादि गुणयुक्तानि वस्तूनि विद्यन्ते यस्मिंस्तत् (**विविप्रे**) क्षिपन्ति (**इन्द्रस्य**) परमैश्वर्य्ययुक्तस्य (**शर्धः**) बलम्



www.9009.co.in

**(मरुत:)** वायव इव वेगबलयुक्ताः **(ये)** **(आसन्)** आस्ये **(येभि:)** यैः **(वृत्रस्य)** मेघस्येव शत्रोः **(इषित:)** प्रेरितः **(विवेद)** विजानीयात् **(अमर्मण:)** अविद्यमानं मर्म यस्मिंस्तस्य **(मन्यमानस्य)** विज्ञातुः **(मर्म)** यस्मिन् प्रहते म्रियते तत्॥४॥

**अन्वय:**-ये मरुतोऽस्येन्द्रस्य शर्धो विविप्रे आसन्मधुमदिद्विविप्रे यो येभिरिषितो वृत्रस्येवाऽमर्मणो मर्म मन्यमानस्य विवेद ते स च नु स्वाभीष्टं प्राप्नुवन्ति॥४॥

**भावार्थ:**-ये धनादिनैश्वर्य्येण सर्वस्य सुखं वर्धयित्वा दुःखानि निवार्य सर्वान् प्रसादयन्ति त एव धार्मिका विद्वांसो मन्तव्याः॥४॥

**पदार्थ:**-**(ये)** जो **(मरुत:)** पवनों से सदृश वेग और बल से युक्त पुरुष **(अस्य)** इस वर्त्तमान **(इन्द्रस्य)** अत्यन्त ऐश्वर्य्य से युक्त पुरुष के **(शर्ध:)** बल को **(विविप्रे)** फेंकते हैं **(आसन्)** मुख में **(मधुमत्)** बहुत मधुर आदि गुणों से युक्त वस्तुओं से पूर्ण पदार्थ को **(इत्)** ही रखते हैं जो **(येभि:)** जिन्हों से **(इषित:)** प्रेरित हुआ **(वृत्रस्य)** मेघ के सदृश शत्रु वा **(अमर्मण:)** मर्म से रहित **(मर्म)** प्रहार करने से नाश होनेवाले स्थान को **(मन्यमानस्य)** जाननेवाले को **(विवेद)** जाने **(ते)** वे पूर्व कहे हुए और वह पुरुष **(नु)** निश्चय अपने वाञ्छित बल को प्राप्त होते हैं॥४॥

**भावार्थ:**-जो लोग धन आदि ऐश्वर्य्य से सबके सुख की वृद्धि और दुःखों का निवारण करके सब लोगों को प्रसन्न करते हैं, उनको ही धार्मिक विद्वान् मानना चाहिये॥४॥

**पुनर्विद्वांसः किं कुर्युरित्याह॥**

फिर विद्वान् जन क्या करें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**मनुष्वदिन्द्र सवनं जुषाणः पिबा सोमं शश्वते वीर्याय।**

**स आ ववृत्स्व हर्यश्व यज्ञैः सरण्युभिरपो अर्णा सिसर्षि॥५॥९॥**

**मनुष्वत्। इन्द्र। सवनम्। जुषाणः। पिब। सोमम्। शश्वते। वीर्याय। सः। आ। ववृत्स्व। हरिऽअश्व। यज्ञैः। सरण्युऽभिः। अपः। अर्णा। सिसर्षि॥५॥**

**पदार्थ:**-**(मनुष्वत्)** मननशीलेन विदुषा तुल्यः **(इन्द्र)** परमैश्वर्यप्रद **(सवनम्)** ऐश्वर्यम् **(जुषाण:)** सेवमानः **(पिब)** अत्र **द्व्यचोऽतस्तिङ** इति दीर्घः। **(सोमम्)** शरीरात्मबलविज्ञानवर्धकं महौषध्यादिरसम् **(शश्वते)** निरन्तरायाऽनादिभूताय **(वीर्याय)** बलाय **(स:)** **(आ)** **(ववृत्स्व)** वर्त्तते **(हर्यश्व)** हरणशीला हरिता वा अश्वा व्यापनस्वभावा यस्य तत्सम्बुद्धौ अश्वाइव अग्न्यादयो विदिता येन तत्सम्बुद्धौ वा **(यज्ञै:)** विद्वत्सत्कारशिल्पक्रियाविद्यादिदानाख्यैर्व्यवहारैः **(सरण्युभि:)** आत्मनः सरणं गमनमिच्छुभिः **(अप:)** अन्तरिक्षं प्रति **(अर्णा)** अर्णांसि जलानि। अत्र **सुपां सुलुगिति** विभक्तेराकारादेशः **छान्दसो वर्णलोप** इति सलोपः। **(सिसर्षि)** गमयसि। अत्र **बहुलं छन्दसी**त्यभ्यासस्येत्वम्॥५॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे हर्य्यश्वेन्द्र! यतस्त्वं सरण्युभिर्यज्ञैरर्णा अपः सिसर्षि तस्मात्स त्वं सवनं जुषाणः शश्वते वीर्याय सोमं पिब। मनुष्वत्सवनं जुषाणः सन्त्सोमं पिब आ ववृत्स्व॥५॥

**भावार्थः**-ये मनुष्या ब्रह्मचर्यविद्यासुशिक्षायुक्ताहारविहारसत्पुरुषसङ्गधर्मसेवनेन सनातनं परमात्मात्मयोगजं बलं वर्धयन्ति ते सर्वत उन्नता भवन्ति यथा सूर्यो जलमन्तरिक्षं प्रति वायुना सह क्षिपति तथैव विद्वांसः सर्वानुन्नतिं प्रति नयन्ति॥५॥

**पदार्थः**-(**हर्य्यश्व**) हरणकर्त्ता वा हरे रङ्ग और व्यापन स्वभाववाले घोड़ों के समान अग्नि आदि पदार्थ जिन्होंने जाने वह हे (**इन्द्र**) अत्यन्त ऐश्वर्य्य के दाता! जिससे आप (**सरण्युभिः**) अपने शरण प्राप्त होने की इच्छायुक्त पुरुषों और (**यज्ञैः**) विद्वानों का सत्कार शिल्पक्रिया और विद्या आदि के दानरूप व्यवहारों से (**अर्णा**) जलों को (**अपः**) अन्तरिक्ष के प्रति (**सिसर्षि**) पहुंचाते हैं इससे (**सः**) वह आप (**सवनम्**) ऐश्वर्य्य के (**जुषाणः**) सेवनेवाले (**शश्वते**) निरन्तर अनादि सिद्ध (**वीर्याय**) बल के लिये (**सोमम्**) शरीर और आत्मा के बल तथा विज्ञान के बढ़ानेवाले महौषधि आदि के रस को (**पिब**) पीवो और (**मनुष्वत्**) विचार करनेवाले विद्वान् पुरुष के तुल्य ऐश्वर्य्य का सेवनेवाले शरीर और आत्मा के बल और विज्ञान के बढ़ानेवाले महौषधि आदि के रस को पीजिये तथा (**आ**) (**ववृत्स्व**) अच्छे प्रकार वर्त्ताव कीजिये॥५॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य ब्रह्मचर्य, विद्या उत्तम शिक्षायुक्त, भोजन, विहार, सत्पुरुष का सङ्ग और धर्म के सेवन करने में उत्तम आत्मा और परमात्मा के योग से उत्पन्न हुए बल को बढ़ाते हैं, वे लोग सब प्रकार उन्नत होते हैं। जैसे सूर्य जल को अन्तरिक्ष के प्रति वायु के साथ ऊपर ले जाता है, वैसे ही विद्वान् लोग सम्पूर्ण जनों को प्रतिष्ठा के साथ उन्नति पर पहुँचाते हैं॥५॥

**पुना राजजनाः किं कुर्य्युरित्याह॥**

फिर राजपुरुष क्या करें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहा है॥

**त्वमपो यद्ध वृत्रं जघन्वाँ अत्याँइव प्रासृजः सर्तवाजौ।**

**शयानमिन्द्र चरता वधेन वव्रिवांसं परि देवीरदेवम्॥६॥**

**त्वम्। अपः। यत्। ह। वृत्रम्। जघन्वान्। अत्यान्ऽइव। प्र। असृजः। सर्तवै। आजौ। शयानम्। इन्द्र। चरता। वधेन। वव्रिऽवांसम्। परि। देवीः। अदेवम्॥६॥**

**पदार्थः**-(**त्वम्**) (**अपः**) जलानि (**यत्**) यः (**ह**) किल (**वृत्रम्**) (**जघन्वान्**) हतवान् (**अत्यानिव**) अश्वानिव (**प्र, असृजः**) प्रासृज (**सर्तवै**) सर्तव्ये गन्तव्ये (**आजौ**) युद्धे। **आजाविति संग्रामनामसु पठितम्।** (निघं०२.१७) (**शयानम्**) शयानमिव वर्त्तमानम् (**इन्द्र**) शत्रुविदारक (**चरता**) प्राप्तेन (**वधेन**) (**वव्रिवांसम्**) व्रियमाणम् (**परि**) सर्वतः (**देवीः**) दिव्याः किरणाः (**अदेवम्**) प्रकाशरहितमविद्वांसं दुष्टं वा॥६॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे इन्द्र! यद्यस्त्वं यथा सूर्य्योऽत्यानिवाऽदेवं वृत्रं जघन्वांश्चरता वधेन शयानं वव्रिवांसं देवीरपो ह प्रसृजति तथैव सर्त्तवा आजौ परि प्राऽसृजः सोऽस्माभिः सत्कर्त्तव्योऽसि॥६॥

**भावार्थः**-अत्रोपमावाचकलुप्तोपमालङ्कारौ। ये राजादयो वीराः सूर्य्यो मेघमिव संग्रामे प्रसृष्टैः शस्त्रास्त्रैः शत्रून् विजयन्ते त एव प्रतापवन्तो जायन्ते॥६॥

**पदार्थः**-हे **(इन्द्र)** शत्रुओं के नाशक! **(यत्)** जो **(त्वम्)** आपने जैसे **(अत्यानिव)** घोड़ों को सूर्य के समान **(अदेवम्)** विद्या प्रकाश से रहित अविद्वान् वा **(वृत्रम्)** दुष्ट को **(जघन्वान्)** नाश किया वा सूर्य **(चरता)** प्राप्त **(वधेन)** नाश से **(शयानम्)** सोते हुए से वर्त्तमान **(वव्रिवांसम्)** ढपे हुए को **(देवीः)** उत्तम किरणों और **(अपः)** जलों को **(ह)** निश्चय से उत्पन्न करता है, उसी प्रकार से **(सर्त्तवै)** जानने योग्य **(आजौ)** युद्ध में **(परि)** चारों ओर से **(प्र, असृजः)** उत्पन्न करते हो, वे आप हम लोगों से सत्कार पाने योग्य हैं॥६॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमा और वाचकलुप्तोपमालङ्कार हैं। जो राजा आदि वीर पुरुष जैसे सूर्य मेघ को वैसे संग्राम में चलाये शस्त्र और अस्त्रों से शत्रुओं को जीतते हैं, वे ही प्रतापयुक्त होते हैं॥८॥

**पुनः किं भूतस्येश्वरस्योपासना कार्येत्युच्यते॥**

फिर कैसे ईश्वर की उपासना करनी चाहिये, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**यजा॑म॒ इन्नम॑सा वृ॒द्धमिन्द्रं॑ बृ॒हन्त॑मृ॒ष्वम॒जरं॒ युवा॑नम्।**

**यस्य॑ प्रि॒ये म॒मतु॑र्य॒ज्ञिय॑स्य॒ न रोद॑सी महि॒मानं॑ म॒माते॑॥७॥**

**यजा॑मः। इत्। नम॑सा। वृ॒द्धम्। इन्द्र॑म्। बृ॒हन्त॑म्। ऋ॒ष्वम्। अ॒जर॑म्। युवा॑नम्। यस्य॑। प्रि॒ये इति॑। म॒मतुः॑। य॒ज्ञिय॑स्य। न। रोद॑सी॒ इति॑। म॒हि॒मान॑म्। म॒माते॒ इति॑॥७॥**

**पदार्थः**-**(यजामः)** पूजयामः **(इत्)** एव **(नमसा)** सत्कारेण **(वृद्धम्)** भुक्ताऽऽयुष्कं विद्यया महान्तं वा **(इन्द्रम्)** परमैश्वर्यकारकम् **(बृहन्तम्)** **(ऋष्वम्)** महान्तम्। **ऋष्व इति महन्नामसु पठितम्।** (निघं०३.३) **(अजरम्)** जरारहितम् **(युवानम्)** सर्वस्य जगतः संयोजकं विभाजकं च **(यस्य)** **(प्रिये)** कमनीये प्रीतिकारके **(ममतुः)** परिमीयेते **(यज्ञियस्य)** पूजनाऽर्हस्य **(न)** निषेधे **(रोदसी)** द्यावापृथिव्यौ **(महिमानम्)** महत्त्वम् **(ममाते)** मिमाते परिछिन्तः। अत्र **बहुलं छन्दसी**त्यभ्यासेत्त्वप्रतिषेधः॥७॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! वयं यस्य यज्ञियस्य परमेश्वरस्य महिमानं रोदसी न ममाते प्रिये ऐहिकपारलौकिकसुखे च न ममतुस्तमिद्युवानमजरमृष्वं बृहन्तं वृद्धमिन्द्रं नमसा यजामस्तं यूयमपि पूजयत॥७॥

**भावार्थः**-यस्य परमेश्वरस्य कश्चित्पदार्थस्तुल्योऽधिको वा न विद्यते यः सर्वेषां गुरुर्व्यापकोऽविनाशी पूज्यो वर्त्तते तमेव परमात्मनं वयं सततमुपासीमहि॥७॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! हम लोग **(यस्य)** जिस **(यज्ञियस्य)** पूजा अर्थात् प्रीति करने योग्य परमेश्वर के **(महिमानम्)** महत्तत्त्व को **(रोदसी)** अन्तरिक्ष और पृथिवी **(न)** नहीं **(ममाते)** नाप सकते और **(प्रिये)**



www.9009.co.in

प्रीति करानेवाले इस लोक और परलोक के सुखों ने नहीं **(ममतुः)** नापे हैं **(इत्)** उसी **(युवानम्)** सम्पूर्ण संसार के संयोग और विभाग के करनेवाले **(अजरम्)** बुढ़ापे से रहित **(ऋष्वम्)** श्रेष्ठ **(बृहन्तम्)** बड़े **(वृद्धम्)** आयु को भोगे हुए वा विद्या से श्रेष्ठ **(इन्द्रम्)** परम ऐश्वर्य्य करनेवाले परमेश्वर की **(नमसा)** सत्कार से **(यजामः)** पूजा करते हैं, उसकी तुम लोग भी पूजा करो॥७॥

**भावार्थः**-जिस परमेश्वर की अपेक्षा कोई पदार्थ तुल्य वा अधिक नहीं, जो सबसे श्रेष्ठ, व्यापक, विनाशरहित और पूज्य है, उसी परमात्मा की हम लोग निरन्तर उपासना करें॥७॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहा है॥

**इन्द्रस्य कर्म सुकृता पुरूणि व्रतानि देवा न मिनन्ति विश्वे।**

**दाधार यः पृथिवीं द्यामुतेमां जजान सूर्यमुषसं सुदंसाः॥८॥**

**इन्द्रस्य। कर्म। सुऽकृता। पुरूणि। व्रतानि। देवाः। न। मिनन्ति। विश्वे। दाधार। यः। पृथिवीम्। द्याम्। उत। इमाम्। जजान। सूर्यम्। उषसम्। सुऽदंसाः॥८॥**

**पदार्थः**-**(इन्द्रस्य)** परमात्मनः **(कर्म)** कर्माणि **(सुकृता)** सुकृतानि **(पुरूणि)** **(व्रतानि)** सत्याचरणानि **(देवाः)** पृथिव्यादयो विद्वांसो वा **(न)** निषेधे **(मिनन्ति)** हिंसन्ति **(विश्वे)** सर्वे **(दाधार)** धरति पुष्णाति वा **(यः)** **(पृथिवीम्)** भूमिम् **(द्याम्)** प्रकाशात्मकलोकादिकम् **(उत)** अपि **(इमाम्)** प्रत्यक्षाम् **(जजान)** जनयति **(सूर्य्यम्)** सवितारम् **(उषसम्)** दिनम् **(सुदंसाः)** शोभनानि धर्म्याणि दंसांसि कर्माणि यस्य सः॥८॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यः सुदंसाः परमेश्वर इमां पृथिवीं द्यां सूर्य्यमुतोषसं जजान दाधार यस्येन्द्रस्य विश्वे देवा व्रतानि सुकृता पुरूणि कर्म न मिनन्ति तमेव यूयं वयं चोपासीमहि॥८॥

**भावार्थः**-परमेश्वरस्य पवित्रत्वात् सर्वशक्तिमतः सर्वस्य जनकस्य धातुः स्वरूपपरिमितं सामर्थ्यं कर्म वा कोऽपि हिंसितुं न शक्नोति य त्वं सत्यभावेनोपासते तेऽपि पवित्राः सन्तः समर्था जायन्ते॥८॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(यः)** जो **(सुदंसाः)** सुन्दर धर्म सम्बन्धी कर्मों से युक्त परमेश्वर **(इमाम्)** इस **(पृथिवीम्)** भूमि और **(द्याम्)** प्रकाशस्वरूप आदि लोक को तथा **(सूर्यम्)** सूर्य लोक को **(उत)** और भी **(उषसम्)** दिन को **(जजान)** उत्पन्न करता **(दाधार)** धारण करता वा पुष्ट करता है, जिस **(इन्द्रस्य)** परमात्मा के **(विश्वे)** सम्पूर्ण **(देवाः)** पृथिवी आदि वा विद्वान् लोग **(व्रतानि)** सत्य विचारों को **(सुकृता)** उत्तम **(पुरूणि)** बहुत **(कर्म)** कामों को **(न)** नहीं **(मिनन्ति)** नाश करते हैं, उसकी आप और हम लोग उपासना करें॥८॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-परमेश्वर के पवित्र होने से सम्पूर्ण सामर्थ्ययुक्त सबके उत्पन्न वा धारणकर्त्ता परमेश्वर के स्वरूपपरिमित सामर्थ्य वा कर्म को कोई भी नाश नहीं कर सकता है और जो लोग इस परमेश्वर की सत्यभावना से उपासना करते हैं, वे भी पवित्र होकर सामर्थ्ययुक्त होते हैं॥८॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहा है॥

**अद्रो॑घ स॒त्यं तव॒ तन्म॑हि॒त्वं स॒द्यो य॒ज्जा॒तो अपि॑बो ह॒ सोम॑म्।**

**न द्याव॑ इन्द्र त॒वस॑स्त॒ ओजो॒ नाहा॒ न मासा॑: श॒रदो॑ वरन्त॥९॥**

**अद्रो॑घ। स॒त्यम्। तव॑। तत्। म॒हि॒ऽत्वम्। स॒द्यः। यत्। जा॒तः। अपि॑बः। ह॒। सोम॑म्। न। द्याव॑ः। इ॒न्द्र॒। त॒वस॑ः। ते॒। ओज॑ः। न। अहा॑। न। मासा॑ः। श॒रद॑ः। व॒र॒न्त॒॥९॥**

**पदार्थः**-**(अद्रोघ)** द्रोहरहित **(सत्यम्)** सत्यभाषणादिक्रियोज्ज्वलम् **(तव)** **(तत्)** सः **(महित्वम्)** महिमानम् **(सद्यः)** **(यत्)** यः **(जातः)** प्रकटः **(अपिबः)** पिबति **(ह)** किल **(सोमम्)** सर्वस्माज्जगतो रसम् **(न)** **(द्यावः)** प्रकाशमया लोकाः **(इन्द्र)** परमैश्वर्य्यप्रद **(तवसः)** बलस्य **(ते)** तव **(ओजः)** पराक्रमम् **(न)** **(अहा)** अहानि दिनानि **(न)** निषेधे **(मासाः)** चैत्रादयः **(शरदः)** वसन्तादयः **(वरन्त)** वारयन्ति॥९॥

**अन्वयः**-हे अद्रोघेन्द्र जगदीश्वर! यद्यः सद्यो जातः सूर्यः सोममपिबस्तद्यस्य तव सत्यं महित्वं नोल्लङ्घयति ते तवस ओजो न द्यावो नाहा न मासाः शरदश्च वरन्त तं ह भवन्तं वयं निरन्तरं सेवेमहि॥९॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यथा परमेश्वरः कञ्चिन्न दुह्यति तथा यूयमपि भवत यस्य सृष्टौ सूर्य्यादयो महान्तः पदार्था विद्यन्ते यस्य स्वरूपस्य प्रभावस्य वान्तं कोऽपि न गच्छति स एवाऽस्माकमिष्ट-देवोऽस्ति॥९॥

**पदार्थः**-हे **(अद्रोघ)** द्रोह से रहित **(इन्द्र)** अत्यन्त ऐश्वर्य के दाता जगदीश्वर! **(यत्)** जो **(सद्यः)** तत्काल **(जातः)** प्रकट हुआ सूर्य **(सोमम्)** सब जगत् से रस को **(अपिबः)** पीता-खींचता है **(तत्)** वह जिन **(तव)** आपके **(सत्यम्)** सत्य **(महित्वम्)** महिमा को **(न)** नहीं उल्लङ्घन कर सकता है **(ते)** आपके **(तवसः)** बल के **(ओजः)** प्रभाव को न **(द्यावः)** प्रकाशस्वरूप लोक **(न)** न **(अहा)** दिन **(न)** न **(मासाः)** चैत्र आदि महीने और न **(शरदः)** वसन्त आदि ऋतुएँ **(वरन्त)** वारण करती हैं **(ह)** उन्हीं आपकी हम लोग निरन्तर सेवा करें॥९॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे परमेश्वर किसी से द्रोह नहीं करता है, वैसे आप लोग भी हूजिये। जिस परमेश्वर की सृष्टि में सूर्य्य आदि बड़े-बड़े पदार्थ विद्यमान हैं और जिसके स्वरूप वा प्रभाव के अन्त को कोई भी नहीं प्राप्त होता है, वही हम लोगों का इष्टदेव है॥९॥

**कथं जन्मनः साफल्यं स्यादित्याह॥**



www.9009.co.in

किस प्रकार जन्म की सफलता हो, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**त्वं स॒द्यो अ॑पिबो जा॒त इ॑न्द्र॒ मदा॑य॒ सोमं॑ पर॒मे व्यो॑मन्।**

**यद्ध॒ द्यावा॑पृथि॒वी आवि॑वेशी॒रथा॑भवः पू॒र्व्यः का॒रुधा॑याः॥१०॥१०॥**

**त्वम्। स॒द्यः। अ॒पि॒बः। जा॒तः। इ॒न्द्र॒। मदा॑य। सोम॑म्। प॒र॒मे। विऽओ॑मन्। यत्। ह। द्यावा॑पृथि॒वी इति॑। आ। अवि॑वेशीः। अथ॑। अ॒भ॒वः। पू॒र्व्यः। का॒रुऽधा॑याः॥१०॥**

**पदार्थः**-(**त्वम्**) (**सद्यः**) शीघ्रम् (**अपिबः**) पिबसि (**जातः**) उत्पन्नः सन् (**इन्द्र**) इन्द्रियाऽधिष्ठातर्जीव (**मदाय**) आनन्दाय (**सोमम्**) बलबुद्धिवर्धकं रसम् (**परमे**) सर्वोत्कृष्टे (**व्योमन्**) व्यापके (**यत्**) यः (**ह**) किल (**द्यावापृथिवी**) प्रकाशभूमी (**आ**) समन्तात् (**अविवेशीः**) पुनः पुनराविश (**अथ**) आनन्तर्ये (**अभवः**) भवेः (**पूर्व्यः**) पूर्वैः कृतः (**कारुधायाः**) यः कारून् शिल्पीन् दधाति सः॥१०॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! त्वं परमे व्योमन् सद्यो जातः सन् मदाय सोमममपिबोऽथ यद्यः पूर्व्यः कारुधाया अभवः स त्वं ह द्यावापृथिवी आविवेशीः॥१०॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! ब्रह्मचर्येण शीघ्रं विद्वांसो भूत्वा युक्ताऽऽहारविहारणोऽरोगाः सन्तः परमात्मन्यासीनाः सृष्टिपदार्थविद्यासु सर्वे प्रविशन्तु येन जन्मसाफल्यं स्यात्॥१०॥

**पदार्थः**-हे (**इन्द्र**) इन्द्रियों के अधिष्ठाता जीव! (**त्वम्**) आप (**परमे**) उत्तम (**व्योमन्**) आकाशवत् व्यापक आत्मज्ञान में (**सद्यः**) शीघ्र (**जातः**) प्रकट वा प्रसिद्ध हुए (**मदाय**) आनन्द के लिये (**सोमम्**) बल और बुद्धि को बढ़ानेवाले रस को (**अपिबः**) पीते हैं (**अथ**) इसके अनन्तर (**यत्**) जो (**पूर्व्यः**) पूर्व लोगों में श्रेष्ठ (**कारुधायाः**) शिल्पी जनों का धारणकर्त्ता (**अभवः**) हो वह आप (**ह**) निश्चय से (**द्यावापृथिवी**) प्रकाश और भूमि में (**आ**) सब ओर से (**आविवेशीः**) बारम्बार प्रवेश कीजिये॥१०॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! ब्रह्मचर्य्य से शीघ्र विद्वान् और नियमित आहार-विहार से रोगरहित होके परमात्मा की आराधना करते हुए सृष्टि और पदार्थ विद्याओं में आप सब प्रवेश करें, जिससे जन्म की सफलता हो॥१०॥

**पुना राजपुरुषाः किं कुर्य्युरित्याह॥**

फिर राजपुरुष क्या करें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहा है॥

**अह॒न्नहिं॒ परि॒शया॑नमर्ण॑ ओजा॒यमा॑नं तुविजात॒ तव्या॑न्।**

**न ते॑ महि॒त्वमनु॑ भूदध॒ द्यौर्यद॒न्यया॑ स्फि॒ग्या॒३॑ क्षामव॑स्थाः॥११॥**

**अह॑न्। अहि॑म्। परि॒ऽशया॑नम्। अर्णः। ओ॒जा॒यमा॑नम्। तु॒वि॒ऽजा॒त॒। तव्या॑न्। न। ते॒। म॒हि॒ऽत्वम्। अनु॑। भू॒त्। अध॑। द्यौः। यत्। अ॒न्यया॑। स्फिग्या॑। क्षाम्। अव॑स्थाः॥११॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**अहन्**) हन्ति (**अहिम्**) मेघम् (**परिशयानम्**) सर्वत आकाशे शयानमिव वर्त्तमानम् (**अर्णः**) उदकम् (**ओजायमानम्**) बलयन्तम् (**तुविजात**) बहुषु प्रसिद्ध (**तव्यान्**) अतिशयेन बलवान्। अत्रेयसुन् ईकारलोपः। (**न**) (**ते**) तव (**महित्वम्**) महत्त्वम् (**अनु**) (**भूत्**) भवेत् (**अध**) अथ (**द्यौः**) प्रकाशः (**यत्**) यः (**अन्यया**) (**स्फिग्या**) मध्यस्थावयवरूपया (**क्षाम्**) पृथिवीम् (**अवस्थाः**) वस्ते॥११॥

**अन्वयः**-हे तुविजात! तव्यान् यद्यस्त्वं यथा द्यौरोजायमानं परिशयानमहिमहन्नर्णो निपातयति यथा सूर्य्यस्य महित्वमनुभूद्यथाऽयं मेघोऽधान्यया स्फिग्या क्षामाच्छादयति तथा त्वं शत्रूनवस्था यतस्ते महित्वं न छिन्द्युः॥११॥

**भावार्थः**-हे राजपुरुषा! यथा सूर्योऽन्तरिक्षगतं बलायमानं हत्वा भूमौ निपात्य तज्जलेन प्राणिनः पोषयति तथैवाऽधर्मिष्ठं शत्रुं हत्वा तद्वैभवेन राज्यं पालयत॥११॥

**पदार्थः**-हे (**तुविजात**) बहुत लोगों में प्रसिद्ध (**तव्यान्**) अत्यन्त बलयुक्त! (**यत्**) जो आप जैसे (**द्यौः**) सूर्यप्रकाश (**ओजायमानम्**) बल को प्राप्त होते हुए (**परिशयानम्**) सब ओर से आकाश में सोते जैसे वर्त्तमान (**अहिम्**) मेघ को (**अहन्**) नाश करता है (**अर्णः**) जल को गिराता है और जैसे सूर्य्य का (**महित्वम्**) बड़ापन (**अनु**) (**भूत्**) हो वा जैसे यह मेघ (**अध**) तदनन्तर (**अन्यया**) दूसरी (**स्फिग्या**) मध्य के अवयवरूप से (**क्षाम्**) पृथिवी को ढांपता है, वैसे आप शत्रुओं को (**अवस्थाः**) घेर के वर्त्तमान हूजिये जिससे (**ते**) वे आपकी महिमा को (**न**) नहीं काटें॥११॥

**भावार्थः**-हे राजपुरुषो! जैसे सूर्य्य अन्तरिक्ष में वर्त्तमान बलवान् मेघ का नाश और भूमि में गिरा कर उसके जल से प्राणियों का पोषण करता है, वैसे ही अधर्म में वर्त्तमान शत्रु का नाश करके उसके ऐश्वर्य्य से राज्य का पालन करो॥११॥

**पुनर्मनुष्याः किं कुर्युरित्याह॥**

फिर मनुष्य क्या करें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**य॒ज्ञो हि त॑ इन्द्र॒ वर्ध॑नो भूदु॒त प्रि॒यः सु॒तसो॑मो मि॒येधः॑।**

**य॒ज्ञेन॑ य॒ज्ञम॑व य॒ज्ञियः॒ सन् य॒ज्ञस्ते॒ वज्र॑महि॒हत्य॑ आवत्॥१२॥**

**य॒ज्ञः। हि। ते॒। इ॒न्द्र॒। वर्ध॑नः। भूत्। उ॒त। प्रि॒यः। सु॒तऽसो॑मः। मि॒येधः॑। य॒ज्ञेन॑। य॒ज्ञम्। अ॒व॒। य॒ज्ञियः॑। सन्। य॒ज्ञः। ते॒। वज्र॑म्। अ॒हि॒ऽहत्ये॑। आ॒व॒त्॥१२॥**

**पदार्थः**-(**यज्ञः**) सङ्गन्तव्यो व्यवहारः (**हि**) यतः (**ते**) तव (**इन्द्र**) परमैश्वर्य्यप्रापक (**वर्धनः**) उन्नेता (**भूत्**) भवति (**उत**) अपि (**प्रियः**) प्रीतिसम्पादकः (**सुतसोमः**) सुतं निष्पन्नं सोम ऐश्वर्य्यं यस्मात्सः (**मियेधः**) येन मिनोति दुःखं प्रक्षिपति सः। अत्र बहुलकादौणादिक एध प्रत्ययः। (**यज्ञेन**) सङ्गतेन कर्मणा (**यज्ञम्**) सङ्गन्तव्यं व्यवहारम् (**अव**) रक्ष (**यज्ञियः**) यज्ञेषु कुशलः (**सन्**) (**यज्ञः**) सङ्गतो व्यवहारः (**ते**) तव (**वज्रम्**) शस्त्रविशेषम् (**अहिहत्ये**) अहेर्मेघस्य हत्या हननं पतनं येन तस्मिन्। निमित्तार्थेऽत्र सप्तमी। (**आवत्**) रक्षेत्॥१२॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे इन्द्र! हि यतस्तेऽहिहत्ये वर्षकर्मनिमित्तो यज्ञो वर्धनः सुतसोमो मियेध उत प्रियो भूत्। यस्य ते यज्ञो वज्रमावत् स यज्ञियः संस्त्वं यज्ञेन यज्ञमव॥१२॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यूयं यदि सत्क्रियया सत्क्रिया वर्धयेत् तर्हि यूयं रक्षिताः सन्तोऽन्यानपि रक्षितुमर्हत॥१२॥

**पदार्थः**-हे **(इन्द्र)** अत्यन्त ऐश्वर्य्य के प्राप्त करानेवाले **(हि)** जिससे कि **(ते)** आपका **(अहिहत्ये)** वर्षा का निमित्त **(यज्ञः)** पदार्थों का संयोग करना रूप व्यवहार **(वर्धनः)** उन्नतिकर्त्ता **(सुतसोमः)** ऐश्वर्य्य की उत्पत्तिकर्त्ता **(मियेधः)** दुःख का नाशकर्त्ता **(उत)** और भी **(प्रियः)** प्रीति का उत्पत्ति करनेवाला **(भूत्)** होता है जिन **(ते)** आपका **(यज्ञः)** पदार्थों का मेल करना रूप व्यवहार **(वज्रम्)** शस्त्र विशेष की **(आवत्)** रक्षा करे वह **(यज्ञियः)** यज्ञों में चतुर **(सन्)** हुए आप **(यज्ञेन)** सङ्गत कर्म से **(यज्ञम्)** सङ्गत व्यवहार की **(अव)** रक्षा करो॥१२॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! आप लोग जो उत्तम क्रिया से उत्तम क्रियाओं को बढ़ावें तो आप लोग रक्षित हुए अन्य जनों की भी रक्षा करने के योग्य होवें॥१२॥

**अथ कीदृशा जनाः सुखमाप्तुमर्हन्तीत्याह॥**

अब कैसे मनुष्य सुख को प्राप्त हो सकते हैं, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**यज्ञेनेन्द्रमवसा चक्रे अर्वागैनं सुम्नाय नव्यसे ववृत्याम्।**

**यः स्तोमेभिर्वावृधे पूर्व्येभिर्यो मध्यमेभिरुत नूतनेभिः॥१३॥**

**यज्ञेन। इन्द्रम्। अवसा। आ। चक्रे। अर्वाक्। आ। एनम्। सुम्नाय। नव्यसे। ववृत्याम्। यः। स्तोमेभिः। ववृधे। पूर्व्येभिः। यः। मध्यमेभिः। उत। नूतनेभिः॥१३॥**

**पदार्थः**-**(यज्ञेन)** युक्तेन व्यवहारेण **(इन्द्रम्)** परमैश्वर्य्यम् **(अवसा)** रक्षणाद्येन **(आ)** **(चक्रे)** समन्तात् करोति **(अर्वाक्)** पश्चात् **(आ)** **(एनम्)** **(सुम्नाय)** सुखाय **(नव्यसे)** अतिशयेन नवीनाय **(ववृत्याम्)** वर्त्तयेयम्। अत्र व्यत्ययेन परस्मैपदं **बहुलं छन्दसी**ति शपः श्लुः। **(यः)** **(स्तोमेभिः)** प्रशंसितैः कर्मभिः **(वावृधे)** वर्धते। अत्र**ान्येषामपी**त्यभ्यासदीर्घः। **(पूर्व्येभिः)** पूर्वेषु साधुभिः **(यः)** **(मध्यमेभिः)** मध्ये भवैः **(उत)** **(नूतनेभिः)** नवीनैः॥१३॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथाऽहं यः पूर्व्येभिर्मध्यमेभिरुत नूतनेभिः स्तोमेभिर्वावृधे यो नव्यसे सुम्नाय यज्ञेनावसेन्द्रमा चक्रे। अर्वागेनं रक्षति तमाववृत्यां तथा भवन्तोऽप्येतत्कर्माऽनुतिष्ठन्तु॥१३॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! अतीतव्यवहारशेषज्ञतया मध्यमानां रक्षणेन नूतनेन प्रयत्नेन वर्धन्ते तेऽग्रे नवीनं नवीनं सुखं सम्पत्तुमर्हन्ति नेतरेऽलसा मूढाः॥१३॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे मैं **(यः)** जो **(पूर्व्येभिः)** प्राचीनों में कुशल और **(मध्यमेभिः)** बीच में हुए **(उत)** और भी **(नूतनेभिः)** नवीन **(स्तोमेभिः)** प्रशंसायुक्त कर्मों से **(वावृधे)** बढ़ता है **(यः)** जो



www.9009.co.in

**(नव्यसे)** नवीन **(सुम्नाय)** सुख के लिये **(यज्ञेन)** युक्त व्यवहार **(अवसा)** रक्षा आदि से **(इन्द्रम्)** अत्यन्त ऐश्वर्य्य को **(आ चक्रे)** अच्छा करता है **(अर्वाक्)** पीछे **(एनम्)** इसकी रक्षा करता है, उसके समीप **(आ)** **(ववृत्याम्)** प्राप्त होऊं, वैसे आप लोग भी इस कर्म को करें॥१२॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो मनुष्य व्यतीत हुए व्यवहार के शेष मर्म को जानने, मध्यम पुरुषों की रक्षा करने और नवीन प्रयत्न से वृद्धि को प्राप्त होते हैं, वे लोग उससे अनन्तर नवीन-नवीन सुख को प्राप्त होने योग्य होते हैं, न कि अन्य आलस्ययुक्त और मूर्ख पुरुष॥१३॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहा है॥

**विवेष यन्मा धिषणा जजान स्तवै पुरा पार्यादिन्द्रमह्नः।**

**अंहसो यत्र पीपरद्यथा नो नावेव यान्तमुभये हवन्ते॥१४॥**

**विवेष। यत्। मा। धिषणा। जजान। स्तवै। पुरा। पार्यात्। इन्द्रम्। अह्नः। अंहसः। यत्र। पीपरत्। यथा। नः। नावाऽइव। यान्तम्। उभये। हवन्ते॥१४॥**

**पदार्थः**-**(विवेष)** व्याप्नोति **(यत्)** या **(मा)** माम् **(धिषणा)** वाणी **(जजान)** जनयति **(स्तवै)** प्रशंसानि **(पुरा)** **(पार्यात्)** पारं गमयेत् **(इन्द्रम्)** ऐश्वर्य्यम् **(अह्नः)** दिवसात् **(अंहसः)** अपराधात् **(यत्र)** यस्मिन् व्यवहारे **(पीपरत्)** पारयेत् **(यथा)** येन प्रकारेण **(नः)** अस्मभ्यम् **(नावेव)** नौवत् **(यान्तम्)** गच्छन्तम् **(उभये)** दूरसमीपस्था जनाः **(हवन्ते)** आह्वयन्ते॥१४॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यद्या धिषणा मा विवेष जजान तामहं स्तवै याह्न इन्द्रं पुरा पार्याद् यत्रांऽहसो मां पीपरद्यथा नो यान्तमुभये नावेव हवन्ते तथा नोऽस्मान् सर्व आह्वयन्तु॥१४॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। मनुष्यैः सा वाणी प्रज्ञा च संग्राह्या या सर्वदा दुष्टाचारात् पृथग्रक्ष्य दुःखान्नौवत् पारं नयेत्॥१४॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(यत्)** जो **(धिषणा)** वाणी **(मा)** मुझको **(विवेष)** व्याप्त होती और **(जजान)** उत्पन्न करती है, उसकी मैं **(स्तवै)** प्रशंसा करूं जो **(अह्नः)** दिन से **(इन्द्रम्)** ऐश्वर्य को **(पुरा)** प्रथम **(पार्यात्)** पार पहुँचावे वा **(यत्र)** जिस व्यवहार में **(अंहसः)** अपराध से मुझको **(पीपरत्)** पार लगावे वा **(यथा)** जिस प्रकार से **(नः)** हम लोगों के अर्थ **(यान्तम्)** जाते हुए को **(उभये)** दूर और समीप में वर्त्तमान लोग **(नावेव)** नौका के सदृश **(हवन्ते)** पुकारते हैं, वैसे हम लोगों को सब लोग पुकारें॥१४॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। मनुष्यों को चाहिये कि उस वाणी और बुद्धि को ग्रहण करें जो सब समय में दुष्ट आचारण से पृथक् रख के दुःख से नौका के सदृश पार उतारे॥१४॥



www.9009.co.in

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**आपूर्णो अस्य कलशः स्वाहा सेक्तेव कोशं सिसिचे पिबध्यै।**

**समु प्रिया आववृत्रन् मदाय प्रदक्षिणिदभि सोमास इन्द्रम्॥ १५॥**

**आऽपूर्णः। अस्य। कलशः। स्वाहा। सेक्ताऽइव। कोशम्। सिसिचे। पिबध्यै। सम्। ऊम् इति। प्रियाः। आ। अववृत्रन्। मदाय। प्रऽदक्षिणित्। अभि। सोमासः। इन्द्रम्॥ १५॥**

**पदार्थः**-(**आपूर्णः**) समन्तात् पूरितः (**अस्य**) (**कलशः**) कुम्भः (**स्वाहा**) सत्यया क्रियया (**सेक्तेव**) पूरकवत् (**कोशम्**) मेघम्। **कोश इति मेघनामसु पठितम्।** (निघं०१.१०) (**सिसिचे**) सिञ्चति (**पिबध्यै**) पातुम् (**सम्**) (उ) (**प्रियाः**) कमनीयाः (**आ**) समन्तात् (**अववृत्रन्**) आवृण्वन्ति (**मदाय**) आनन्दाय (**प्रदक्षिणित्**) यः प्रदक्षिणमेति सः। अत्र **शकन्ध्वादे**राकृतिगणत्वात् पररूप-मेकादेशः। (**अभि**) आभिमुख्ये (**सोमासः**) ऐश्वर्य्ययुक्ताः (**इन्द्रम्**) सूर्य्यम्॥ १५॥

**अन्वयः**-ये सोमासः प्रिया मदायेन्द्रमभ्याववृत्रन् त उ अस्य जगतो मध्ये पिबध्यै सेक्तेव कोशं सं सिसिचे स्वाहा आपूर्णः कलशः प्रदक्षिणिदापूर्णः कलश इव सुखकरो जायते॥ १५॥

**भावार्थः**-ये धनादिकं प्राप्यान्येभ्यो यथा सुपात्रं सद्व्यवहारं च विज्ञाय ददति ते सेक्ता कुम्भमिव सर्वान् पूर्णसुखान् कुर्वन्ति॥ १५॥

**पदार्थः**-जो (**सोमासः**) ऐश्वर्य्य से युक्त (**प्रियाः**) कामना करने योग्य (**मदाय**) आनन्द के लिये (**इन्द्रम्**) सूर्य्य को (**अभि**) सम्मुख (**आ**) चारों ओर से (**अववृत्रन्**) घेरते हैं वे (उ) (**अस्य**) इस संसार के मध्य में (**पिबध्यै**) पान करने के लिये (**सेक्तेव**) पूर्ण करनेवाले के तुल्य (**कोशम्**) मेघ को (**सम्**) (**सिसिचे**) सींचते हैं (**स्वाहा**) सत्य क्रिया से (**आपूर्णः**) चारों ओर से भरा हुआ (**कलशः**) घड़ा (**प्रदक्षिणित्**) दाहिनी ओर चलनेवाला पूर्ण घड़े के तुल्य सुखकारक होता है॥ १५॥

**भावार्थः**-जो लोग धन आदि को प्राप्त होके औरों के लिये सुपात्र और उत्तम व्यवहार करनेवाले को जान के देते हैं, वे लोग सींचनेवाला घड़े को जैसे वैसे सम्पूर्ण जनों को पूर्ण सुखयुक्त करते हैं॥ १५॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहा है॥

**न त्वा गभीरः पुरुहूत सिन्धुर्नाद्रयः परि षन्तो वरन्त।**

**इत्था सखिभ्य इषितो यदिन्द्रा दृळहं चिदरुजो गव्यमूर्वम्॥ १६॥**



www.9009.co.in

न। त्वा। गभीरः। पुरुऽहूत। सिन्धुः। न। अद्रयः। परि। सन्तः। वरन्त। इत्था। सखिऽभ्यः। इषितः। यत्। इन्द्र। आ। दृळ्हम्। चित्। अरुजः। गव्यम्। ऊर्वम्॥ १६॥

**पदार्थः**-(**न**) निषेधे (**त्वा**) त्वाम् (**गभीरः**) गाम्भीर्यगुणोपेतः (**पुरुहूत**) बहुभिः प्रशंसित (**सिन्धुः**) समुद्रः (**न**) (**अद्रयः**) मेघाः पर्वता वा (**परि**) सर्वतः (**सन्तः**) (**वरन्त**) वारयन्ति (**इत्था**) अनेन प्रकारेण (**सखिभ्यः**) मित्रेभ्यः (**इषितः**) प्रेरितः (**यत्**) यः (**इन्द्र**) परमैश्वर्यप्रद (**आ**) समन्तात् (**दृढम्**) स्थिरम् (**चित्**) (**अरुजः**) रुजति (**गव्यम्**) गवामिदम् (**ऊर्वम्**) निरोधस्थानम्॥ १६॥

**अन्वयः**-हे पुरुहूतेन्द्र राजन्! यं त्वा गभीरः सिन्धुर्न परि वरन्ताऽद्रयः सन्तो न परि वरन्त यद्यश्चिद् दृढं गव्यमूर्वमारुजः स सखिभ्य इषितस्त्वमित्था केनासत्कर्त्तव्यो भवेः॥ १६॥

**भावार्थः**-हे विद्वांसो! यथा समुद्राः पर्वताश्च सूर्य्यं निवारयितुं न शक्नुवन्ति तथैव बहुमित्राः शत्रुभिर्निरोद्धुमशक्या जायन्ते॥ १६॥

**पदार्थः**-हे (**पुरुहूत**) बहुतों से प्रशंसा किये गये (**इन्द्र**) अत्यन्त ऐश्वर्य्य के दाता राजन्! जिन (**त्वा**) आपको (**गभीरः**) गाम्भीर्य गुणों से युक्त (**सिन्धुः**) समुद्र (**न**) नहीं (**परि**) सब ओर से (**वरन्त**) वारण करते हैं, (**अद्रयः**) मेघ वा पर्वत (**सन्तः**) वर्त्तमान होते हुए (**न**) नहीं सब ओर से वारण करते हैं, (**यत्**) जो (**दृढम्**) स्थिर (**चित्**) भी (**गव्यम्**) गौओं का (**ऊर्वम्**) निरोधस्थान का (**आ, अरुजः**) भङ्ग करते हो, वह (**सखिभ्यः**) मित्रों के लिये (**इषितः**) प्रेरित हुए आप (**इत्था**) इस प्रकार किस जन से सत्कार नहीं करने योग्य होवें॥ १६॥

**भावार्थः**-हे विद्वान् लोगो! जैसे समुद्र और पर्वत सूर्य्य को निवारण नहीं कर सकते, वैसे ही बहुत मित्रोंवाले जन शत्रुओं से निवारण करने के शक्य नहीं होते हैं॥ १६॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**शुनं हुवेम मघवानमिन्द्रमस्मिन् भरे नृतमं वाजसातौ।**

**शृण्वन्तमुग्रमूतये समत्सु घ्नन्तं वृत्राणि संजितं धनानाम्॥ १७॥ ११॥**

**शुनम्। हुवेम। मघऽवानम्। इन्द्रम्। अस्मिन्। भरे। नृऽतमम्। वाजऽसातौ। शृण्वन्तम्। उग्रम्। ऊतये। समत्ऽसु। घ्नन्तम्। वृत्राणि। सम्ऽजितम्। धनानाम्॥ १७॥**

**पदार्थः**-(**शुनम्**) सुखम्। **शुनमिति सुखनामसु पठितम्।** (निघं० ३.६) (**हुवेम**) आह्वयेम (**मघवानम्**) परमधनवन्तम् (**इन्द्रम्**) दुष्टविदारकम् (**अस्मिन्**) (**भरे**) संग्रामे (**नृतमम्**) शुभैर्गुणैः सर्वोत्कृष्टम् (**वाजसातौ**) धनान्नादिविभाजके (**शृण्वन्तम्**) (**उग्रम्**) तेजस्वभावम् (**ऊतये**) रक्षणाद्याय (**समत्सु**) संग्रामेषु (**घ्नन्तम्**) हन्तारम् (**वृत्राणि**) सुवर्णादीनि धनानि। **वृत्रमिति धननामसु पठितम्।** (निघं० २.१०) (**सञ्जितम्**) सम्यग्जिताः शत्रवो येन तम् (**धनानाम्**) द्रव्याणाम्॥ १७॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथा वयमूतये समत्सु घ्नन्तमुग्रं धनानां सञ्जितं वृत्राणि शृण्वन्तमस्मिन् वाजसातौ भरे नृतमं मघवानमिन्द्रं हुवेम तत्सङ्गेन शुनं प्राप्नुयाम तथैतं स्तुत्वा यूयमप्येतत्प्राप्नुत॥१७॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यदि राजादयोऽध्यक्षा राजविद्याकुशलान् योद्धॄन् न्यायाधीशान् प्राड्विवाकान् सेवकाँश्च सत्कृत्य संगृह्णीयुस्तर्हि तेषां सदैव विजयः कीर्तिरैश्वर्य्यं च जायत इति॥१७॥

अत्र सोममनुष्येश्वरविद्वद्गुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति द्वात्रिंशत्तमं सूक्तमेकादशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे हम लोग **(ऊतये)** रक्षा आदि के लिये **(समत्सु)** संग्रामों में **(घ्नन्तम्)** नाश करनेवाले **(उग्रम्)** तेजस्वभावयुक्त **(धनानाम्)** द्रव्यों के **(सञ्जितम्)** और उत्तम प्रकार शत्रुओ को जीतनेवाले **(वृत्राणि)** सुवर्ण आदि धनों को **(शृण्वन्तम्)** सुनते हुए को **(अस्मिन्)** इस **(वाजसातौ)** धन और अन्न आदि के विभाग करनेवाले **(भरे)** संग्राम में **(नृतमम्)** उत्तम गुणों से सर्वोत्तम **(मघवानम्)** परम धनवान् और **(इन्द्रम्)** दुष्ट जनों के नाशकर्त्ता को **(हुवेम)** पुकारें और उसके सङ्ग से **(शुनम्)** सुख को प्राप्त होवें, वैसे इसकी स्तुति करके आप लोग भी इसको प्राप्त हों॥१७॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो राजा आदि प्रधान पुरुष, राजविद्या में चतुर, योद्धा, न्यायाधीश पुरुषों, प्राड्विवाकों (वकीलों) और सेवक पुरुषों का सत्कार करके ग्रहण करें तो उन राजाओं का सदैव विजय, यश, कीर्त्ति और ऐश्वर्य्य होता है॥१७॥

इस मन्त्र [=सूक्त] में सोम, मनुष्य, ईश्वर और बिजुली के गुण वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह बत्तीसवां सूक्त और ग्यारहवां वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

**अथ त्रयोदशर्चस्य त्रयस्त्रिंशत्तमस्य सूक्तस्य विश्वामित्र ऋषिः। नद्यो देवताः। १ भुरिक् पङ्क्तिः। ५ स्वराट् पङ्क्तिः। ७ पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः। २, १० विराट् त्रिष्टुप्। ३, ८, ११, १२ त्रिष्टुप्। ४, ६, ९ निचृत् त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः। १३ उष्णिक् छन्दः। ऋषभः स्वरः॥**

***अथ नदीदृष्टान्तेन स्त्रीवर्णनमाह॥***

अब तेरह ऋचावाले तैंतीसवे सूक्त का आरम्भ है। उसके पहिले मन्त्र में नदी के दृष्टान्त से स्त्री का वर्णन करते हैं॥

**प्र पर्वतानामुशती उपस्थादश्वेइव विषिते हासमाने।**

**गावेव शुभ्रे मातरा रिहाणे विपाट्छुतुद्री पयसा जवेते॥१॥**

**प्र। पर्वतानाम्। उशती इति। उपऽस्थात्। अश्वे इवेत्यश्वेऽइव। विसिते इति विऽसिते। हासमाने इति। गावाऽइव। शुभ्रे इति। मातरा। रिहाणे इति। विऽपाट्। शुतुद्री। पयसा। जवेते इति॥१॥**

**पदार्थः**-(**प्र**) (**पर्वतानाम्**) मेघानाम् (**उशती**) कामयमाने (**उपस्थात्**) समीपात् (**अश्वेइव**) अश्ववडवाविव (**विषिते**) विद्याशुभगुणकर्मव्याप्ते (**हासमाने**) (**गावेव**) यथा धेनुवृषभौ (**शुभ्रे**) श्वेते शुभगुणयुक्ते (**मातरा**) मान्यप्रदे (**रिहाणे**) आस्वदित्र्यौ। अत्र वर्णव्यत्ययेन लस्य स्थाने रः। (**विपाट्**) या विविधं पटति गच्छति विपाटयति वा सा (**शुतुद्री**) शु शीघ्रं तुदति व्यथयति सा (**पयसा**) जलेन। **पय इत्युदकनामसु पठितम्।** (निघं०१.१२) (**जवेते**) गच्छतः॥१॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! ये अध्यापिकोपदेशिके मातरेव कन्यानां शिक्षामुशती पर्वतानामुपस्थादश्वेइव विषिते अश्वेइव हासमाने रिहाणे शुभ्रे गावेव पयसा विपाट्छुतुद्री प्रजवेते इव वर्त्तमाने भवेतां ते कन्यास्त्रीणामध्ययनोपदेशव्यवहारे नियोजयत॥१॥

**भावार्थः**-अत्रोपमावाचकलुप्तोपमालङ्कारौ। यथा पर्वतानां मध्ये वर्त्तमाना नद्योऽश्वा इव धावन्ति गाव इव शब्दायन्ते तथैव प्रसन्नाः शुभगुणकर्मस्वभावाः विद्योन्नतिं कामयमानाः स्त्रियः कन्याः स्त्रियश्च सततं सुशिक्षरेन्॥१॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो पढ़ाने और उपदेश देनेवाली (**मातरा**) मान्य देनेवालियों सी कन्याओं की शिक्षा को (**उशती**) कामना करनेवाली (**पर्वतानाम्**) मेघों के (**उपस्थात्**) समीप से (**अश्वेइव**) घोड़े और घोड़ी के सदृश (**विषिते**) विद्या और शुभ गुणयुक्त कर्मों से व्याप्त वा घोड़े और घोड़ी के सदृश (**हासमाने**) परस्पर प्रेम करती (**रिहाणे**) प्रीति से एक-दूसरे को सूंघती हुई (**शुभ्रे**) उत्तम गुणों से युक्त (**गावेव**) गौ और बैल के सदृश (**पयसा**) जल से (**विपाट्**) कई प्रकार चलने वा ढांपनेवाली (**शुतुद्री**) शीघ्र दुःखदायक (**प्र**) (**जवेते**) चलती हैं, वैसे वर्त्तमान होवें, उन अध्यापिका और उपदेशिका को कन्या और स्त्रियों के पढ़ाने और उपदेश करने में नियुक्त करो॥१॥



www.9009.co.in

**भावार्थ:**-इस मन्त्र में उपमा और वाचकलुप्तोपमालङ्कार हैं। जैसे पर्वतों के मध्य में वर्त्तमान नदियां घोड़ों के सदृश दौड़ती और गौओं के सदृश शब्द करती हैं, वैसे ही प्रसन्न और उत्तम गुण, कर्म, स्वभावयुक्त विद्या की उन्नति की कामना करनेवाली स्त्रियाँ कन्याओं और स्त्रियों को निरन्तर शिक्षा देवें॥१॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**इन्द्रेषिते प्रसवं भिक्षमाणे अच्छा समुद्रं रथ्येव याथ:।**

**समाराणे ऊर्मिभि: पिन्वमाने अन्या वामन्यामप्येति शुभ्रे॥२॥**

**इन्द्रेषिते इतीन्द्रऽइषिते। प्रऽसवम्। भिक्षमाणे इति। अच्छ। समुद्रम्। रथ्याऽइव। याथ:। समाराणे इति सम्ऽआराणे। ऊर्मिऽभि:। पिन्वमाने इति। अन्या। वाम्। अन्याम्। अपि। एति। शुभ्रे इति॥२॥**

**पदार्थ:**-**(इन्द्रेषिते)** इन्द्रेण सूर्य्येण वर्षाद्वारा प्रेरिते **(प्रसवम्)** प्रकृष्टमैश्वर्य्यम् **(भिक्षमाणे)** **(अच्छ)** सम्यक्। अत्र **निपातस्य चे**ति दीर्घ:। **(समुद्रम्)** समुद्द्रवन्त्यापो यस्मिँस्तं मेघं सागरं वा। **समुद्र इति मेघनामसु पठितम्।** (निघं०१.१०)[77] **(रथ्येव)** रथेषु साधू अश्वा इव **(याथ:)** गच्छथ: **(समाराणे)** सम्यक् समन्ताद्राणं दानं ययोस्ते **(ऊर्मिभि:)** तरङ्गै: **(पिन्वमाने)** सेक्त्र्यौ **(अन्या)** भिन्ना **(वाम्)** युवयो: **(अन्याम्)** **(अपि)** **(एति)** **(शुभ्रे)** शोभायमाने॥२॥

**अन्वय:**-हे मनुष्या! ये इन्द्रेषिते पिन्वमाने ऊर्मिभि: समुद्रं रथ्येव नद्याविव प्रसवं भिक्षमाणे समाराणे शुभ्रे अध्यापिकोपदेशिके अच्छ याथ:। अन्या अन्यामप्येतीव हे अध्यापिकोपदेशिके! वामध्येतुं श्रोतुं वा प्राप्नुयुस्ता युवाभ्यां विद्याव्यवहारे नियोजनीया अध्यापनीयाश्च॥२॥

**भावार्थ:**-अत्रोपमावाचकलुप्तोपमालङ्कारौ। यथा युवतयो यून: पतीन् प्राप्य प्रसवमिच्छन्ति नद्य: समुद्रं गच्छन्त्यश्वा मार्गे रथं नयन्ति तथैवाऽध्यापिकोपदेशिकाभिर्विद्यासुशिक्षादानेन सर्वा: स्त्रिय: शुभगुणकर्मस्वभावा: सम्पादनीया:॥२॥

**पदार्थ:**-हे मनुष्यो! जो **(इन्द्रेषिते)** सूर्य्य से वृष्टि के द्वारा प्रेरित की गईं **(पिन्वमाने)** सींचनेवाली **(उर्मिभि:)** तरङ्गों से **(समुद्रम्)** बहनेवाले जलों से युक्त मेघ वा सागर को **(रथ्येव)** रथों में चलने योग्य घोड़ों वा नदियों के सदृश **(प्रसवम्)** उत्तम ऐश्वर्य्य की **(भिक्षमाणे)** याचना करती हुई **(समाराणे)** उत्तम प्रकार सब तरह दान देनेवाली **(शुभ्रे)** शोभायुक्त होकर पढ़ाने और उपदेश करनेवाली स्त्रियाँ **(अच्छ)** अच्छे प्रकार **(याथ:)** जावें **(अन्या)** कोई एक स्त्री **(अन्याम्)** दूसरी स्त्री को **(अपि)** **(एति)** प्रीति से

७७. मेघवाचकनामसु समुद्र: पदं न दृश्यते, परन्तु अन्तरिक्षनामसु उपलभ्यते। सं०



www.9009.co.in

मिलाती है वा हे पढ़ाने और उपदेश देनेवालियो! **(वाम्)** तुम दोनों के सम्बन्ध से जो स्त्रियाँ पढ़ने वा सुनने को प्राप्त हों, वे स्त्रियाँ तुमको विद्यासम्बन्धी व्यवहार में नियुक्त करनी तथा पढ़ानी चाहियें॥२॥

**भावार्थ:**-इस मन्त्र में उपमा और वाचकलुप्तोपमालङ्कार हैं। जैसे जवान स्त्रियाँ जवान पतियों को प्राप्त होके गर्भोत्पत्ति की इच्छा करती हैं और नदियां समुद्र के प्रति जाती हैं और घोड़े मार्ग में रथ को ले चलते हैं, वैसे ही पढ़ने और उपदेश देनेवालियों को चाहिये कि विद्या और उत्तम शिक्षा के दान से सम्पूर्ण स्त्रियों को उत्तम गुण, कर्म, स्वभावयुक्त करें॥२॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अच्छा सिन्धुं मातृतमामयासं विपाशमुर्वीं सुभगामगन्म।**

**वत्समिव मातरा संरिहाणे समानं योनिमनु सञ्चरन्ती॥३॥**

**अच्छ। सिन्धुम्। मातृऽतमाम्। अयासम्। विऽपाशम्। उर्वीम्। सुऽभगाम्। अगन्म। वत्सम्ऽइव। मातरा। संरिहाणे इति सम्ऽरिहाणे। समानम्। योनिम्। अनु। सञ्चरन्ती इति सम्ऽचरन्ती॥३॥**

**पदार्थ:**-**(अच्छ)** उत्तमरीत्या। अत्र **निपातस्य चे**ति दीर्घः। **(सिन्धुम्)** समुद्रम् **(मातृतमाम्)** अतिशयेन मातरो मातृवत्पालिका नद्यः। **मातर इति नदीनामसु पठितम्।** (निघं०१.१३) अत्र सुपां व्यत्ययः। **(अयासम्)** अयासिषं प्राप्नुयाम। अत्र **वाच्छन्दसी**तीडभावः। **(विपाशम्)** विगता पाट् बन्धनं यस्यान्ताम् **(उर्वीम्)** महतीम् **(सुभगाम्)** सौभाग्ययुक्ताम् **(अगन्म)** प्राप्नुयाम **(वत्समिव)** यथा गौर्वत्सम् **(मातरा)** मातृवद्वर्त्तमाने **(संरिहाणे)** सम्यगास्वादकर्त्र्यौ **(समानम्)** **(योनिम्)** गृहम् **(अनु)** **(सञ्चरन्ती)** सम्यग्गच्छन्त्यौ जानन्त्यौ॥३॥

**अन्वय:**-यथा मातृतमां सिन्धुं प्राप्नुवन्ति तथैव वयं विपाशमुर्वीं सुभगामध्यापिकामुपदेशिकामगन्म। यथा संरिहाणे समानं योनिमनुसञ्चरन्ती मातरा वत्समिव मामध्यापनशिक्षार्थं प्राप्नुयातस्ते अहमच्छायासम्॥३॥

**भावार्थ:**-अत्रोपमावाचकलुप्तोपमालङ्कारौ। यथा समुद्रं नद्यो वत्सान् गावो दम्पती समानं गृहं च प्राप्नुतस्तथैवाध्यापिकोपदेशिका अस्मान् प्राप्नुवन्तु वयं च याः कन्याः सौभाग्यवत्यश्च ताः प्राप्नुयाम॥३॥

**पदार्थ:**-जैसे **(मातृतमाम्)** अत्यन्त माता के सदृश पालने करनेवाली नदियां **(सिन्धुम्)** समुद्र के प्रति प्राप्त होती हैं, वैसे ही हम **(विपाशम्)** बन्धनरहित **(उर्वीम्)** बड़ी **(सुभगाम्)** सौभाग्य से युक्त पढ़ाने और उपदेश देनेवाली स्त्री को **(अगन्म)** प्राप्त हों और जैसे **(संरिहाणे)** उत्तम प्रकार आस्वाद करनेवाली स्त्रियाँ **(समानम्)** तुल्य **(योनिम्)** गृह को **(अनु)** **(सञ्चरन्ती)** अनुकूलता से उत्तम प्रकार चलतीं और जानती हुईं **(मातरा)** माता के सदृश वर्त्तमान **(वत्समिव)** जैसे गौ बछड़े को वैसे मुझको पढ़ाने और शिक्षा देने के लिये प्राप्त होवें, उनको मैं **(अच्छ)** अच्छे प्रकार **(अयासम्)** प्राप्त होऊं॥३॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमा [और] वाचकलुप्तोपमालङ्कार हैं। जैसे समुद्र को नदियां और बछड़ों को गौवें और स्त्री-पुरुष एक गृह को प्राप्त होते हैं, वैसे ही पढ़ाने और उपदेश देनेवाली स्त्रियाँ हम लोगों को प्राप्त हों और हम लोग जो कन्या और सौभाग्यवाली स्त्रियाँ हों, उनको प्राप्त हों॥३॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**एना वयं पयसा पिन्वमाना अनु योनिं देवकृतं चरन्तीः।**

**न वर्तवे प्रसवः सर्गतक्तः किंयुर्विप्रो नद्यो जोहवीति॥४॥**

**एना। वयम्। पयसा। पिन्वमानाः। अनु। योनिम्। देवऽकृतम्। चरन्तीः। न। वर्तवे। प्रऽसवः। सर्गऽतक्तः। किम्ऽयुः। विप्रः। नद्यः। जोहवीति॥४॥**

**पदार्थः**-(**एना**) एनेन (**वयम्**) (**पयसा**) उदकेन (**पिन्वमानाः**) सिञ्चमानाः (**अनु**) (**योनिम्**) उदकम्। **योनिरित्युदकनामसु पठितम्।** (निघं०१.१२) (**देवकृतम्**) देवैर्विद्वद्भिः कृतं निष्पादितं शास्त्रम् (**चरन्तीः**) प्राप्नुवन्त्यः (**न**) (**वर्त्तवे**) वरितुं स्वीकर्त्तुम् (**प्रसवः**) सन्तानः (**सर्गतक्तः**) यः सर्ग उत्पत्तौ तक्तो हसितः। अत्र **वाच्छन्दसी**तीडभावः। (**किंयुः**) आत्मनः किमिच्छुः। अत्र **वाच्छन्दसी**ति क्यच् प्रतिषेधो न। (**विप्रः**) मेधावी (**नद्यः**) सरितः (**जोहवीति**) भृशं शब्दयति॥४॥

**अन्वयः**-या एना पयसा पिन्वमाना देवकृतं योनिमनु सञ्चरन्तीर्नद्यो वर्त्तवे न भवन्ति न निवर्त्तन्ते ता वयं प्राप्नुयाम। यः सर्गतक्तः प्रसवः किंयुर्विप्रो जोहवीति सोऽस्मान् प्राप्नुयात्॥४॥

**भावार्थः**-यथा सोदका नद्यः सर्वोपकारका भवन्ति कदाचिज्जलहीनां न भवन्ति तथैव यः कृतब्रह्मचर्य्ययोः स्त्रीपुरुषयोः सन्तानो भूत्वा धर्म्येण ब्रह्मचर्य्येणाऽखिला विद्याः प्राप्य विद्वान् जायते स एव सर्वानुपकर्त्तुं शक्नोति॥४॥

**पदार्थः**-जो (**एना**) इस (**पयसा**) जल से (**पिन्वमानाः**) सींचती हुई (**देवकृतम्**) विद्वानों ने किये शास्त्र और (**योनिम्**) जल को (**अनु, चरन्तीः**) अनुकूल प्राप्त होनेवाली (**नद्यः**) नदियां (**वर्त्तवे**) स्वीकार करने को (**न**) नहीं निवृत्त होती हैं, उनको (**वयम्**) हम लोग प्राप्त होवें जो (**सर्गतक्तः**) उत्पत्ति में प्रसन्न (**प्रसवः**) सन्तान (**किंयुः**) अपने को क्या इच्छा करनेवाला (**विप्रः**) बुद्धिमान् पुरुष (**जोहवीति**) बारम्बार शब्द करता है, वह हम लोगों को प्राप्त होवे॥४॥

**भावार्थः**-जैसे जल सहित नदियां सबकी उपकार करनेवाली होतीं और कभी जल से हीन नहीं होती हैं, वैसे जो ब्रह्मचर्य से युक्त स्त्री और पुरुष का सन्तान उत्पन्न हो और धर्मसम्बन्धी ब्रह्मचर्य्य से सम्पूर्ण विद्याओं को प्राप्त होकर विद्वान् होता है, वही सबका उपकार कर सकता है॥४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥



www.9009.co.in

**रम॑ध्वं मे॒ वच॑से सो॒म्याय॒ ऋता॑वरी॒रुप॑ मुहू॒र्तमेवैः॑।**

**प्र सिन्धु॒मच्छा॑ बृह॒ती म॑नी॒षाऽव॒स्युर॑ह्वे कुशि॒कस्य॑ सू॒नुः॥५॥१२॥**

**रम॑ध्वम्। मे॒। वच॑से। सो॒म्याय॑। ऋत॑ऽवरीः। उप॑। मु॒हू॒र्तम्। एवैः॑। प्र। सिन्धु॑म्। अच्छ॑। बृ॒ह॒ती। म॒नी॒षा। अ॒व॒स्युः। अ॒ह्वे॒। कु॒शि॒कस्य॑। सू॒नुः॥५॥**

**पदार्थः**-(**रमध्वम्**) क्रीडध्वम् (**मे**) मम (**वचसे**) वचनाय (**सोम्याय**) सोम इव शान्तिगुणयुक्ताय (**ऋतावरीः**) ऋतं पुष्कलमुदकं विद्यते यासु ताः (**उप**) (**मुहूर्त्तम्**) कालावयवम् (**एवैः**) प्रापकैर्गुणैः (**प्र**) (**सिन्धुम्**) समुद्रम् (**अच्छ**) सम्यक्। अत्र **निपातस्य चे**ति दीर्घः। (**बृहती**) महती (**मनीषा**) प्रज्ञा (**अवस्युः**) आत्मनोऽव इच्छुः (**अह्वे**) प्रशंसामि (**कुशिकस्य**) विद्यानिष्कर्षप्राप्तस्य। अत्र वर्णव्यत्ययेन मूर्द्धन्यस्य तालव्यः। (**सूनुः**) अपत्यमिव वर्त्तमानः॥५॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यूयं यथा ऋतावरीः सिन्धुमुपगच्छन्ति स्थिरा भवन्ति तथैवैवैर्मुहूर्त्तं मे सोम्याय वचसे रमध्वं तथैव कुशिकस्य सूनुरवस्युरहं यो बृहती मनीषा तामच्छ प्राह्वे॥५॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यथा नद्यः समुद्राऽभिमुखं गच्छन्ति तथैव मनुष्या विद्याधर्म्यव्यवहारं प्रत्यभिगच्छन्तु येन सुखेन समयो गच्छेत्॥५॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! आप लोग जैसे (**ऋतावरीः**) बहुत जलों से युक्त नदी (**सिन्धुम्**) समुद्र को (**उप**) प्राप्त और स्थिर होती हैं, वैसे ही (**एवैः**) प्राप्त करानेवाले गुणों से (**मुहूर्त्तम्**) दो-दो घड़ी (**मे**) मेरे (**सोम्याय**) चन्द्रमा के तुल्य शान्तिगुणयुक्त (**वचसे**) वचन के लिये (**रमध्वम्**) क्रीड़ा करो, वैसे ही (**कुशिकस्य**) विद्या के निचोड़ को प्राप्त हुए सज्जन के (**सूनुः**) पुत्र के सदृश वर्त्तमान (**अवस्युः**) अपने को रक्षा चाहनेवाला मैं जो (**बृहती**) बड़ी (**मनीषाः**) बुद्धि उसकी (**अच्छ**) उत्तम प्रकार (**प्र**) (**अह्वे**) प्रशंसा करता हूं॥५॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे नदियां समुद्र के सम्मुख जाती हैं, वैसे ही मनुष्य लोग विद्या और धर्मसम्बन्धी व्यवहार को प्राप्त हों, जिससे सुखपूर्वक समय व्यतीत होवे॥५॥

**अथ सूर्यदृष्टान्तेन मनुष्यकर्त्तव्यमाह॥**

अब सूर्य के दृष्टान्त से मनुष्य के कर्त्तव्य को कहते हैं॥

**इन्द्रो॑ अ॒स्माँ अ॑रद॒द् वज्र॑बाहु॒रपा॑हन् वृ॒त्रं प॑रि॒धिं न॒दीना॑म्।**

**दे॒वो॑ऽनयत् सवि॒ता सु॑पा॒णिस्तस्य॑ व॒यं प्र॑स॒वे या॑म उ॒र्वीः॥६॥**

**इन्द्रः॑। अ॒स्मान्। अ॒र॒द॒त्। वज्र॑ऽबाहुः। अप॑। अ॒ह॒न्। वृ॒त्रम्। प॒रि॒ऽधिम्। न॒दीना॑म्। दे॒वः। अ॒न॒य॒त्। स॒वि॒ता। सु॒ऽपा॒णिः। तस्य॑। व॒यम्। प्र॒ऽस॒वे। या॒म॒ः। उ॒र्वीः॥६॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**इन्द्रः**) परमैश्वर्य्यवान् राजा (**अस्मान्**) (**अरदत्**) विलिखेत् (**वज्रबाहुः**) शस्त्रभुजः (**अप**) (**अहन्**) हन्ति (**वृत्रम्**) आवरकं मेघम् (**परिधिम्**) सर्वतो धीयन्ते नद्यो यस्मिँस्तम् (**नदीनाम्**) (**देवः**) दिव्यगुणस्वभावः (**अनयत्**) नयति (**सविता**) सूर्यः (**सुपाणिः**) शोभनहस्तः (**तस्य**) (**वयम्**) (**प्रसवे**) ऐश्वर्य्ये (**यामः**) प्राप्नुयामः (**उर्वीः**) बहुसुखप्रदाः प्रजाः॥६॥

**अन्वयः**-हे राजन्निन्द्रस्त्वं यथा सविता देवो नदीनां परिधिं वृत्रमपाहन् तदवयवानरदज्जलं भूमिं चानयत्तथा वज्रबाहुः सन्नस्मान् संरक्ष्य ससेवकांश्छत्रून् हन्यात् यः सुपाणिर्देवस्त्वमुर्वी रक्षेस्तस्य प्रसवे वयमानन्दं यामः॥६॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यथा सूर्यो भूम्यादीनाकर्षणेन व्यवस्थाप्य वर्षाः कृत्वैश्वर्य्यं जनयति तथैव वयं सद्गुणानाकृष्याऽरीन् विजित्य राज्यश्रियं जनयेम॥

**पदार्थः**-हे राजन् (**इन्द्रः**) अत्यन्त ऐश्वर्य्यवान्! आप जैसे (**सविता**) सूर्य (**देवः**) उत्तम गुण, कर्म और स्वभावयुक्त (**नदीनाम्**) नदियों के (**परिधिम्**) चारों ओर वर्त्तमान (**वृत्रम्**) ढांपनेवाले मेघ को (**अप**) (**अहन्**) नाश करता है, उसके अवयवों को (**अरदत्**) खोदे और जल, भूमि को (**अनयत्**) प्राप्त करता, वैसे (**वज्रबाहुः**) शस्त्रधारी हो (**अस्मान्**) हम लोगों की रक्षा करके सेवकों के सहित शत्रुओं का नाश करें, जो (**सुपाणिः**) उत्तम हाथों से और उत्तम गुण, कर्म, स्वभाव से युक्त आप (**उर्वीः**) बहुत सुख की देनेवाली प्रजाओं की रक्षा करें (**तस्य**) उसके (**प्रसवे**) ऐश्वर्य्य में (**वयम्**) हम लोग आनन्द को (**यामः**) प्राप्त होवें॥६॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे सूर्य, भूमि आदि पदार्थों को आकर्षण से यथास्थान ठहरा और वृष्टि करके ऐश्वर्य को उत्पन्न करता है, वैसे ही हम लोग उत्तम गुणों का आकर्षण और शत्रुओं को जीत करके राज्य की शोभा को प्राप्त करें॥६॥

**पुनर्मनुष्यः किं कुर्यादित्याह॥**

फिर मनुष्य क्या करे, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**प्रवाच्यं शश्वधा वीर्यं१ तदिन्द्रस्य कर्म यदहिं विवृश्चत्।**

**वि वज्रेण परिषदो जघानायन्नापोऽयनमिच्छमानाः॥७॥**

**प्रऽवाच्यम्। शश्वधा। वीर्यम्। तत्। इन्द्रस्य। कर्म। यत्। अहिम्। विऽवृश्चत्। वि। वज्रेण। परिऽसदः। जघान। आयन्। आपः। अयनम्। इच्छमानाः॥७॥**

**पदार्थः**-(**प्रवाच्यम्**) प्रवक्तुं योग्यम् (**शश्वधा**) शश्वदेव (**वीर्य्यम्**) बलम् (**तत्**) (**इन्द्रस्य**) सूर्य्यस्य (**कर्म**) (**यत्**) (**अहिम्**) (**विवृश्चत्**) छिनत्ति (**वि**) (**वज्रेण**) किरणेन (**परिषदः**) परिषीदन्ति यासु ताः सभाः (**जघान**) हन्ति (**आयन्**) प्राप्नुयुः (**आपः**) (**अयनम्**) भूमिस्थानम् (**इच्छमानः**) अभिलषन्तः॥७॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यः सूर्य्योऽहिं विवृश्चद्यदिन्द्रस्य वीर्य्यं कर्मास्ति तच्छश्वधा प्रवाच्यं यथा वज्रेण हता मेघस्याऽऽपोऽयनमायन् मेघं विजघान तथैवेच्छमानाः परिषदः कुर्य्युः॥७॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यो धर्म्यं कर्म कृत्वा दुष्टनिवारणाय स्वबलं दर्शयेत् तस्य तत्कर्मप्रशंसनं सदैव कार्य्यं ये परिषदि सभ्याः स्युस्ते न्यायेन सर्वोन्नतिं चिकीर्षेयुः॥७॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो सूर्य्य **(अहिम्)** मेघ को **(विवृश्चत्)** काटता है **(यत्)** जो **(इन्द्रस्य)** सूर्य्य का **(वीर्य्यम्)** बलरूप **(कर्म)** कर्म है **(तत्)** वह **(शश्वधा)** निरन्तर हो **(प्रवाच्यम्)** कहने योग्य, और जैसे **(वज्रेण)** किरण से विदीर्ण किये गये मेघ के **(आपः)** जल **(अयनम्)** भूमि स्थान को **(आयन्)** प्राप्त होवें मेघ को **(विजघान)** नाश करता है, वैसे ही **(इच्छमानाः)** इच्छा करते हुए जन **(परिषदः)** जिनमें बैठें, उन सभा को करें॥७॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जो धर्मसम्बन्धी काम करके दुष्ट पुरुषों के निवारण के लिये अपना पराक्रम दिखावे उसके उस कर्म की प्रशंसा सब काल में करनी चाहिये। जो लोग सभा में श्रेष्ठ होवें, वे न्याय से सब लोगों की उन्नति करने की इच्छा करें॥७॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**एतद्वचो जरितर्मापि मृष्ठा आ यत्ते घोषानुत्तरा युगानि।**

**उक्थेषु कारो प्रति नो जुषस्व मा नो नि कः पुरुषत्रा नमस्ते॥८॥**

**एतत्। वचः। जरितः। मा। अपि। मृष्ठाः। आ। यत्। ते। घोषान्। उत्ऽतरा। युगानि। उक्थेषु। कारो इति। प्रति। नः। जुषस्व। मा। नः। नि। करिति कः। पुरुषऽत्रा। नमः। ते॥८॥**

**पदार्थः**-**(एतत्)** **(वचः)** **(जरितः)** प्रशंसक **(मा)** निषेधे **(अपि)** **(मृष्ठाः)** सहेः। अत्र व्यत्ययेनात्मनेपदम्। **(आ)** **(यत्)** यानि **(ते)** तव **(घोषान्)** वाक्प्रयोगान् **(उत्तरा)** उत्तराणि युगानि वर्षाणि **(उक्थेषु)** प्रशंसनीयेषु व्यवहारेषु **(कारो)** यः करोति तत्सम्बुद्धौ **(प्रति)** **(नः)** अस्मान् **(जुषस्व)** सेवस्व **(मा)** **(नः)** अस्मान् **(नि)** **(कः)** निकुर्य्याः **(पुरुषत्रा)** पुरुषान् **(नमः)** **(ते)** तुभ्यम्॥८॥

**अन्वयः**-हे जरितस्त्वमेतद्वचो माऽपि मृष्ठास्ते यद्यान्युत्तरा युगानि घोषान् प्राप्नुयुस्तान्युक्थेषु नोऽस्मान् प्राप्नुवन्तु। हे कारो! तैर्नोऽस्मान् प्रत्याजुषस्व पुरुषत्रा नो मा नि कोऽतस्ते नमोऽस्तु॥८॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यावान् भूतकालो गतस्तत्रत्यानां कर्मणां शिष्टं कार्य्यं कर्त्तव्यं विज्ञाय वर्त्तमाने भविष्यति च यथोन्नतिर्भूत्वा विघ्नानि निवर्त्तेरँस्तथैवाऽनुतिष्ठत॥८॥

**पदार्थः**-हे **(जरितः)** प्रशंसा करनेवाले! आप **(एतत्)** इस **(वचः)** वचन को **(मा)** नहीं **(अपि मृष्ठाः)** सहो **(ते)** आपके **(यत्)** जो **(उत्तरा)** आगे के **(युगानि)** वर्ष **(घोषान्)** वाणी के प्रयोगों को प्राप्त होवे, वह **(उक्थेषु)** प्रशंसा करने योग्य व्यवहारों में **(नः)** हम लोगों को प्राप्त होवें। हे **(कारो)** हे कर्त्ता



www.9009.co.in

पुरुष! उनसे **(नः)** हम लोगों की **(प्रति, आ, जुषस्व)** सेवा करो हम **(पुरुषत्रा)** पुरुषों का **(मा, नि, कः)** अपकार मत करो इससे **(ते)** आपके लिये **(नमः)** नमस्कार हो॥८॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जितना भूतकाल गया उसमें व्यतीत हुए कर्मों के शेष करने योग्य कार्य्य को जान के वर्त्तमान और भविष्यत् काल में जिस प्रकार उन्नति हो के विघ्न निवृत्त होवें, वैसे ही करो॥८॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**ओ षु स्व॑सारः का॒रवे॑ शृणोत य॒यौ वो॑ दू॒राद॑न॒सा॒ रथे॑न।**

**नि षू न॑मध्वं॒ भव॑ता सुपा॒रा अ॑धोअ॒क्षाः सिन्ध॑वः स्रो॒त्याभिः॑॥९॥**

**ओ इति॑। सु। स्व॒सा॒रः॒। का॒रवे॑। शृ॒णो॒त॒। य॒यौ। व॒ः। दू॒रात्। अन॑सा। रथे॑न। नि। सु। न॒म॒ध्व॒म्। भव॑त। सु॒ऽपा॒रा॒ः। अ॒ध॒ःऽअ॒क्षाः। सि॒न्ध॒व॒ः। स्रो॒त्याभिः॑॥९॥**

**पदार्थः**-**(ओ)** सम्बोधने **(सु)** **(स्वसारः)** भगिनीवद्वर्त्तमानाः अङ्गुलयः **(कारवे)** शिल्पिने **(शृणोत)** **(ययौ)** प्राप्नोति **(वः)** युष्मान् **(दूरात्)** **(अनसा)** शकटेन **(रथेन)** **(नि)** नितराम् **(सु)** **(नमध्वम्)** **(भवत)**। अत्र **संहितायामिति** दीर्घः। **(सुपाराः)** शोभनः पारः पालनादिकर्म येषान्ते **(अधोअक्षाः)** अधोऽर्वाचीना अक्षाः इन्द्रियाणि येषान्ते। **अक्षा इति पदनामसु पठितम्।** (निघं०५.३) **(सिन्धवः)** नद्यः **(स्रोत्याभिः)** स्रोतःसु भवाभिर्गतिभिः॥९॥

**अन्वयः**-ओ विद्वांसो यूयं कारवे स्वसार इव स्रोत्याभिः सिन्धव इव अधोअक्षाः सुपाराः सुभवत योऽनसा रथेन दूराद्वो ययौ तं सुशृणोत तत्र निनमध्वम्॥९॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। ये परस्मिन् परस्मिन् प्रीता बहुश्रुता अन्यरचितानि शीघ्रगामीनि यानानि दृष्ट्वा तादृशानि निर्माय पाराऽवारौ गच्छन्तो नम्राः स्युस्तान् स्रोतांसि नदीरिवैश्वर्य्यगुणाः प्राप्नुवन्ति॥९॥

**पदार्थः**-**(ओ)** हे विद्वान् पुरुषो! आप लोग **(कारवे)** शिल्पीजन के लिये **(स्वसारः)** भगिनी के तुल्य वर्त्तमान अङ्गुलियों **(स्रोत्याभिः)** वा स्रोतों में होनेवाली गतियों से **(सिन्धवः)** नदियों के समान **(अधोअक्षाः)** नीचे को प्राप्त होती हुईं इन्द्रियों से युक्त **(सुपाराः)** सुन्दर पालन आदि कर्म करनेवाले **(सु)** **(भवत)** उत्तम प्रकार से हूजिये जो **(अनसा)** शकट और **(रथेन)** रथ से **(दूरात्)** दूर **(वः)** आप लोगों को **(ययौ)** प्राप्त होता है, उसको **(सु, शृणोत)** उत्तम प्रकार सुनिये उसमें **(नि)** अत्यन्त **(नमध्वम्)** नम्र हूजिये॥९॥



www.9009.co.in

**भावार्थ:**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो लोग दूसरे-दूसरे में प्रसन्न, बहुत बातों को सुने हुए पुरुष, औरों से बनाए हुए शीघ्र चलनेवाले वाहनों को देख और वैसे ही बनाय के जलाशयों के आर-पार जाते हुए नम्र होवें, उनको जैसे स्रोता नदियों को वैसे ऐश्वर्य्य गुण प्राप्त होते हैं॥९॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**आ ते॑ कारो शृणवामा॒ वचां॑सि य॒याथ॑ दू॒राद॑न॑सा॒ रथे॑न।**

**नि ते॑ नंसै पीप्या॒नेव॒ योषा॒ मर्या॑येव क॒न्या॑ शश्व॒चै ते॑॥१०॥१३॥**

**आ। ते॒। का॒रो॒ इति॑। शृ॒ण॒वा॒म॒। वचां॑सि। य॒याथ॑। दू॒रात्। अन॑सा। रथे॑न। नि। ते॒। नं॒सै॒। पी॒प्या॒नाऽइ॑व। योषा॑। मर्या॑यऽइव। क॒न्या॑। श॒श्व॒चै। त॒ इति॑ ते॥१०॥**

**पदार्थ:**-(**आ**) समन्तात् (**ते**) तव (**कारो**) शिल्पविद्यासु कुशल (**शृणवाम**)। अत्र **संहितायामिति** दीर्घः। (**वचांसि**) विद्याप्रज्ञापकानि वचनानि (**ययाथ**) प्राप्नुयाः (**दूरात्**) (**अनसा**) (**रथेन**) (**नि**) (**ते**) तव (**नंसै**) नमेः (**पीप्यानेव**) विद्यावृद्धाविव (**योषा**) (**मर्यायेव**) यथा पुरुषाय (**कन्या**) (**शश्वचै**) परिष्वङ्गाय (**ते**) तुभ्यम्॥१०॥

**अन्वयः**-हे कारो! ते तव वचांस्यानसा रथेन दूरादागत्य वयमाशृणवाम यथा त्वमस्मान् ययाथ तथा वयं त्वां प्राप्नुयाम। यस्त्वं पीप्यानेव नि नंसै ते तुभ्यं वयमपि नमाम योषा मर्यायेव कन्या शश्वचै इव ते तुभ्यं वयमभिलषेम॥१०॥

**भावार्थ:**-अत्रोपमावाचकलुप्तोपमालङ्कारौ। ये दूरादागत्य विदुषां सकाशाद्विविधा विद्याः प्राप्य नम्रा भवन्ति ते विद्यावृद्धाः सन्तः पतिव्रता स्त्री पतिमिव कन्याऽभीष्टं वरमिव विद्यां प्राप्याऽऽनन्दन्ति॥१०॥

**पदार्थ:**-हे (**कारो**) शिल्पविद्याओं में चतुर! (**ते**) आपके (**वचांसि**) विद्या के प्राप्त करानेवाले वचनों को (**अनसा**) शकट और (**रथेन**) रथ से (**दूरात्**) दूर से आय के हम लोग (**आ**) सब प्रकार (**शृणवाम**) सुनें और जैसे आप हम लोगों को (**ययाथ**) प्राप्त होवें, वैसे हम लोग आपको प्राप्त होवें। जो आप (**पीप्यानेव**) विद्या के वृद्ध दो पुरुषों के सदृश (**नि, नंसै**) नमस्कार करें (**ते**) आपके लिये हम लोग भी नम्र होवें (**योषा**) स्त्री (**मर्यायेव**) जैसे पुरुष के लिये और (**कन्या**) कन्या (**शश्वचै**) प्रीति से मिलने के लिये वैसे (**ते**) आपके लिये हम लोग अभिलाषा करें॥१०॥

**भावार्थ:**-इस मन्त्र में [उपमा और] वाचकलुप्तोपमालङ्कार हैं। जो लोग दूर से आय के विद्वानों के समीप से अनेक प्रकार की विद्याओं को प्राप्त करके नम्र होते हैं, वे विद्यावृद्ध होकर जैसे पतिव्रता स्त्री पति और कन्या अभीष्ट वर को वैसे विद्या को प्राप्त होके आनन्दित होते हैं॥१०॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥



www.9009.co.in

यद॒ङ्ग त्वा॑ भर॒ताः सं॒तरे॑यु॒र्ग॒व्यन् ग्राम॑ इषि॒त इन्द्र॑जू॒तः।
अ॒र्षा॒दह॑ प्रस॒वः सर्ग॑तक्त॒ आ वो॑ वृणे सुम॒तिं य॒ज्ञिया॑नाम्॥ ११॥

यत्। अ॒ङ्ग। त्वा। भ॒रताः। स॒म्ऽतरे॑युः। ग॒व्यन्। ग्राम॑ः। इ॒षि॒तः। इन्द्र॑ऽजू॒तः। अर्षा॑त्। अह॑। प्र॒ऽस॒वः। सर्ग॑ऽतक्तः। आ। व॒ः। वृ॒णे। सु॒ऽम॒तिम्। य॒ज्ञिया॑नाम्॥ ११॥

**पदार्थः**-(**यत्**) यम् (**अङ्ग**) मित्र (**त्वा**) त्वाम् (**भरताः**) सर्वेषां धर्त्तारः पोषकाः (**सन्तरेयुः**) (**गव्यन्**) गौरिवाचरन् (**ग्रामः**) मनुष्यसमूह इव (**इषितः**) प्रेरितः (**इन्द्रजूतः**) इन्द्रो विद्युदिव प्रतापयुक्तः (**अर्षात्**) प्राप्नुयात् (**अह**) विनिग्रहे (**प्रसवः**) प्रकृष्टैश्वर्य्यः (**सर्गतक्तः**) जलस्य संकोचकः। अत्र **सर्ग इत्युदकनामसु पठितम्।** (निघं०१.१२) (**आ**) समन्तात् (**वः**) युष्माकम् (**वृणे**) स्वीकुर्वे (**सुमतिम्**) शोभनां प्रज्ञाम् (**यज्ञियानाम्**) यज्ञस्य साधकानाम्॥ ११॥

**अन्वयः**-हे अङ्ग! यद्यं त्वा भरताः सन्तरेयुः स ग्राम इषित इन्द्रजूतः प्रसवः सर्गतक्तो गव्यन् भवानहार्षात्। हे विद्वांसो! यथाहं यज्ञियानां वः सुमतिमावृणे तथा यूयं मम प्रज्ञां स्वीकुरुत॥ ११॥

**भावार्थः**-यथा विद्वांसो विद्यापारं गत्वा प्राज्ञा जायन्ते तथेतरे मनुष्या अपि भवन्तु एवं कृते सर्वे दुःखान्तं गत्वा सुखिनः स्युः॥ ११॥

**पदार्थः**-हे (**अङ्ग**) मित्र! (**यत्**) जिस (**त्वा**) आपको (**भरताः**) सबके धारण वा पोषण करनेवाले (**सन्तरेयुः**) संतरे अर्थात् आपके स्वभाव से पार हो वह (**ग्रामः**) मनुष्यों के समूह के समान (**इषितः**) प्रेरणा को प्राप्त (**इन्दजूतः**) बिजुली के सदृश प्रताप और (**प्रसवः**) अत्यन्त ऐश्वर्य्ययुक्त (**सर्गतक्तः**) जल के संकोच करनेवाले (**गव्यन्**) गौ के तुल्य आचरण करते हुए आप (**अह**) ग्रहण करने में (**अर्षात्**) प्राप्त होवें वा हे विद्वानो! जैसे मैं (**यज्ञियानाम्**) यज्ञ के सिद्ध करनेवाले (**वः**) आप लोगों की (**सुमतिम्**) उत्तम बुद्धि को (**आ**) सब प्रकार (**वृणे**) स्वीकार करता हूँ, वैसे आप लोग मेरी बुद्धि को स्वीकार करिये॥ ११॥

**भावार्थः**-जैसे विद्वान् लोग विद्या के पार जाय अर्थात् सम्पूर्ण विद्याओं को पढ़ के बुद्धिमान् होते हैं, वैसे और लोग भी हों। ऐसा करने से सम्पूर्ण जन दुःख के पार जाय अर्थात् दुःख को उल्लङ्घन करके सुखी होवें॥ ११॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

अता॑रिषु॒र्भ॒रता ग॒व्यव॒ः सम॑भक्त॒ विप्र॑ः सुम॒तिं न॒दीना॑म्।
प्र पि॑न्वध्वमि॒षय॑न्तीः सु॒राधा॒ आ व॒क्षणा॑ः पृ॒णध्वं॑ या॒त शीभ॑म्॥ १२॥



www.9009.co.in

**अतारिषुः। भरता। गव्यवः। सम्। अभक्त। विप्रः। सुऽमतिम्। नदीनाम्। प्र। पिन्वध्वम्। इषयन्तीः। सुऽराधाः। आ। वक्षणाः। पृणध्वम्। यात। शीभम्॥ १२॥**

**पदार्थः**-(**अतारिषुः**) तरन्तु (**भरताः**) धारकपोषकाः (**गव्यवः**) आत्मनो गां सुशिक्षितां वाचमिच्छवः (**सम्**) (**अभक्त**) सम्यग्भजेत (**विप्रः**) मेधावी (**सुमतिम्**) श्रेष्ठां बुद्धिम् (**नदीनाम्**) सरितामिव वर्त्तमानानां विदुषीणाम् (**प्र**) (**पिन्वध्वम्**) सेवध्वम् (**इषयन्तीः**) इषमन्नं कुर्वन्त्यः (**सुराधः**) शोभनं राधो यस्य सः (**आ**) (**वक्षणाः**) वहमाना नद्यः (**पृणध्वम्**) पालयध्वम् (**यात**) प्राप्नुत (**शीभम्**) क्षिप्रम्। **शीभमिति क्षिप्रनामसु पठितम्।** (निघं०२.१५)॥१२॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथा गव्यवो भरता नौकादिना नदीनां प्रवाहानतारिषुर्यथा सुराधा विप्रः सुमतिं समभक्त यथा वक्षणा वहन्ति तथेषयन्तीः प्र पिन्वध्वं सर्वानापृणध्वं शुभगुणान् शीभं यात॥१२॥

**भावार्थः**-मनुष्या नदीसमुद्रादीन् जलाशयान् विद्वद्वत्प्रतीर्य्य सुखं सद्यः सेवन्ताम्॥१२॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे (**गव्यवः**) अपनी उत्तम शिक्षायुक्त वाणी की इच्छा करने तथा (**भरताः**) धारण और पोषण करनेवाले नौका आदि से (**नदीनाम्**) नदियों के सदृश वर्त्तमान पढ़ी हुई स्त्रियों के ज्ञानप्रवाहों को (**अतरिषुः**) तरें, जैसे (**सुराधाः**) उत्तम धनयुक्त (**विप्रः**) बुद्धिमान् पुरुष (**सुमतिम्**) उत्तम बुद्धि को (**सम्, अभक्त**) अच्छे प्रकार सेवन करे और जैसे (**वक्षणाः**) बहती हुई नदियां और बहती हैं, वैसे (**इषयन्तीः**) अन्न को सिद्ध करनेवाली स्त्रियों को (**प्र, पिन्वध्वम्**) सेवन करो, सबका (**आ**) (**पृणध्वम्**) पालन करो और उत्तम गुणों को (**शीभम्**) शीघ्र (**यात**) प्राप्त होओ॥१२॥

**भावार्थः**-मनुष्यों को चाहिये कि नदी और समुद्र आदि जलाशयों को विद्वानों के सदृश पार होके सुख का शीघ्र सेवन करें॥१२॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फि उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**उद्व ऊर्मिः शम्या हन्त्वापो योक्त्राणि मुञ्चत।**
**मादुष्कृतौ व्येनसाऽघ्न्यौ शूनमारताम्॥ १३॥ १४॥**

**उत्। वः। ऊर्मिः। शम्याः। हन्तु। आपः। योक्त्राणि। मुञ्चत। मा। अदुःऽकृतौ। विऽएनसा। अघ्न्यौ। शूनम्। आ। अरताम्॥ १३॥**

**पदार्थः**-(**उत्**) उत्कृष्टे (**वः**) युष्मान् (**ऊर्मिः**) तरङ्ग इवोत्साहः (**शम्याः**) शम्यां कर्मणि भवाः (**हन्तु**) दूरीकुर्वन्तु (**आपः**) जलानीव (**योक्त्राणि**) योजनानि (**मुञ्चत**) त्यजत (**मा**) निषेधे (**अदुष्कृतौ**)



www.9009.co.in

अदुष्टाचारिणौ **(व्येनसा)** विनष्टपापाचरणेन **(अघ्न्यौ)** हन्तुमनर्हे **(शूनम्)** सुखम्। अत्रा**न्येषामपी**ति दीर्घः। **(आ)** **(अरताम्)** प्राप्नुताम्॥१३॥

**अन्वयः**-हे स्त्रियो! भवन्त्यः शम्या आप इव दुःखं हन्तु यो व ऊर्मिरिवोत्साहेन योक्त्राणि यूयं मुञ्चत। हे स्त्रीपुरुषौ! युवामदुष्कृतौ दुष्टं मारतां व्येनसाघ्न्यौ सत्यौ पतिः पत्नी च द्वौ शूनं सुखमुदारतां प्राप्नुताम्॥१३॥

**भावार्थः**-यौ स्त्रीपुरुषौ दुःखबन्धनानि च्छित्वा दुष्टाचारं विहाय विद्योन्नतिं कुर्य्यातां तौ सततं सुखमाप्नुयातामिति॥१३॥

अत्र मेघनदीविद्वत्सखिशिल्पनौकादिस्त्रीपुरुषकृत्यवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति त्रयस्त्रिंशत्तमं सूक्तं चतुर्दशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे स्त्रियो! आप **(शम्याः)** कर्म में उत्पन्न **(आपः)** जलों के सदृश दुःख को **(हन्तु)** दूर करें और **(वः)** आपका जो **(ऊर्मिः)** तरङ्ग के सदृश उत्साह उससे **(योक्त्राणि)** जोड़नों को तुम **(मुञ्चत)** त्याग करो। हे स्त्री और पुरुष! तुम दोनों **(अदुष्कृतौ)** दुष्टाचरण से रहित हुए दुष्ट कर्म को **(मा)** नहीं प्राप्त होओ **(व्येनसा)** पाप का आचरण नष्ट होने से **(अघ्न्यौ)** नहीं मारने योग्य होते हुए पति और स्त्री दोनों **(शूनम्)** सुख को **(उत्)** उत्तम प्रकार **(आ)** **(अरताम्)** प्राप्त होवें॥१३॥

**भावार्थः**-जो स्त्री और पुरुष दुःख के बन्धनों को काट और दुष्ट आचरण को त्याग के विद्या की उन्नति करें तो वे निरन्तर सुख को प्राप्त होवें॥१३॥

इस सूक्त में मेघ, नदी, विद्वान्, मित्र, शिल्पी, नौका आदि और स्त्री-पुरुष का कृत्य वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह तेंतीसवां सूक्त और चौदहवां वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

**अथैकादशर्चस्य चतुस्त्रिंशत्तमस्य सूक्तस्य विश्वामित्र ऋषिः। इन्द्रो देवता। १, २, ११ त्रिष्टुप्। ४, ५, ७, १० निचृत्त्रिष्टुप्। ९ विराट् त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः। ३, ६, ८ भुरिक्पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः॥**

***अथ सूर्यगुणा उपदिश्यन्ते॥***

अब ग्यारह ऋचावाले ३४ चौतीसवें सूक्त का प्रारम्भ है। उसके प्रथम मन्त्र से सूर्य के गुणों का उपदेश करते हैं॥

**इन्द्रः पूर्भिदातिरद् दासमर्कैर्विदद्वसुर्दयमानो वि शत्रून्।**

**ब्रह्मजूतस्तन्वा वावृधानो भूरिदात्र आपृणद्रोदसी उभे॥ १॥**

**इन्द्रः। पूःऽभित्। आ। अतिरत्। दासम्। अर्कैः। विदत्ऽवसुः। दयमानः। वि। शत्रून्। ब्रह्मऽजूतः। तन्वा। ववृधानः। भूरिऽदात्रः। आ। अपृणत्। रोदसी इति। उभे इति॥ १॥**

**पदार्थः**-(**इन्द्रः**) परमैश्वर्यवान् (**पूर्भित्**) पुरां भेत्ता (**आ**) (**अतिरत्**) उल्लङ्घयतु (**दासम्**) दातुं योग्यम् (**अर्कैः**) अर्चनीयैर्मन्त्रैर्विचारैः (**विदद्वसुः**) विदन्ति वसूनि येन सः (**दयमानः**) कृपालुः सन् (**वि**) (**शत्रून्**) (**ब्रह्मजूतः**) धनानि प्राप्तः (**तन्वा**) शरीरेण (**वावृधानः**) वर्धमानः (**भूरिदात्रः**) भूरि बहुविधं दात्रं दानं यस्य सः (**आ**) (**अपृणत्**) प्रपूरयेत् (**रोदसी**) द्यावापृथिव्याविव विद्याविनयौ (**उभे**)॥ १॥

**अन्वयः**-हे राजपुरुष! यथा सूर्य उभे रोदसी आपृणत्तथा विदद्वसुर्ब्रह्मजूतो दासं दयमानस्तन्वा वावृधानो भूरिदात्रः पूर्भिदिन्द्रो भवानर्कैः शत्रून् व्यातिरत्॥ १॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यथा सूर्य्यः स्वकीयैः किरणैर्भूम्यन्तरिक्षे पूर्त्वाऽन्धकारं जयति तथैवाप्तैः सह कृतैर्विचारैः शत्रून् जयेत्सर्वदा शरीरात्मबलं वर्धयित्वा श्रेष्ठान् सत्कृत्य दुष्टान् पराभवेत्॥ १॥

**पदार्थः**-हे राजपुरुष! जैसे सूर्य्य (**उभे**) दोनों (**रोदसी**) अन्तरिक्ष और पृथिवी के तुल्य विद्या और विनय को (**आ**) (**अपृणत्**) पूर्ण करे, वैसे (**विदद्वसुः**) धनों से संपन्न (**ब्रह्मजूतः**) धनों को प्राप्त (**दासम्**) देने योग्य पर (**दयमानः**) कृपालु (**तन्वा**) शरीर से (**वावृधानः**) वृद्धि को प्राप्त होते हुए (**भूरिदात्रः**) अनेक प्रकार के दान देने (**पूर्भित्**) शत्रुओं के नगरों को तोड़ने और (**इन्द्रः**) अत्यन्त ऐश्वर्य के रखनेवाले आप (**अर्कैः**) आदर करने योग्य विचारों से (**शत्रून्**) शत्रुओं का (**वि, आ, अतिरत्**) उल्लङ्घन करो॥ १॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे सूर्य्य अपने किरणों से भूमि और अन्तरिक्ष को पूर्ण करके अन्धकार को जीतता है, वैसे ही श्रेष्ठ और ऐक्यमतयुक्त विचारों से शत्रुओं को जीते तथा सब काल में शरीर और आत्मा के बल को बढ़ाये और श्रेष्ठ पुरुषों को सत्कार करके दुष्ट जनों का अपमान करे॥ १॥



www.9009.co.in

**अथ राजप्रजाविषयमाह॥**

अब राजा-प्रजा सम्बन्धी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**मखस्य॑ ते तवि॒षस्य॒ प्र जू॒तिमिय॑र्मि॒ वाच॑म॒मृता॑य॒ भूष॑न्।**

**इन्द्र॑ क्षिती॒नाम॑सि॒ मानु॑षीणां वि॒शां दैवी॑नामु॒त पू॑र्व॒यावा॑॥२॥**

**म॒खस्य॑। ते॑। त॒वि॒षस्य॑। प्र। जू॒तिम्। इय॑र्मि। वाच॑म्। अ॒मृता॑य। भूष॑न्। इन्द्र॑। क्षि॒ती॒नाम्। अ॒सि॒। मानु॑षीणाम्। वि॒शाम्। दैवी॑नाम्। उ॒त। पू॒र्व॒ऽयावा॑॥२॥**

**पदार्थः**-(**मखस्य**) प्राप्तस्य सङ्गतस्य व्यवहारस्य (**ते**) तव (**तविषस्य**) बलस्य (**प्र**) (**जूतिम्**) वेगम् (**इयर्मि**) प्राप्नोमि (**वाचम्**) सत्यामादिष्टां वाणीम् (**अमृताय**) अविनाशिसुखाय (**भूषन्**) अलङ्कुर्वन् (**इन्द्र**) परमैश्वर्य्यप्रद (**क्षितीनाम्**) स्वराज्ये निवसन्तीनाम् (**असि**) (**मानुषीणाम्**) मनुषसम्बन्धिनीम् (**विशाम्**) प्रजानाम् (**दैवीनाम्**) दिव्यगुणयुक्तानाम् (**उत**) (**पूर्वयावा**) प्राचीनराजनीतिं प्राप्तः॥२॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! ते मखस्य तविषस्य जूतिममृताय वाचं भूषन् सन् प्रेयर्मि यतस्त्वं दैवीनां क्षितीनां मानुषीणां विशां पूर्वयावा असि उत वा स्वयं विद्याविनययुक्तोऽसि तस्माच्छ्रेष्ठैः सत्कर्त्तव्योऽसि॥२॥

**भावार्थः**-सर्वैः प्रजाराजजनैः सर्वाधीशस्याऽऽज्ञा नैवोल्लङ्घनीया सर्वाधीशेन धर्म्येण कर्मणा सततं प्रजाः पालनीयाः॥२॥

**पदार्थः**-हे (**इन्द्र**) अत्यन्त ऐश्वर्य के देनेवाले! (**ते**) आपके (**मखस्य**) मेल करने रूप व्यवहार और (**तविषस्य**) बल के (**जूतिम्**) वेग और (**अमृताय**) अविनाशि सुख के लिये (**वाचम्**) कही हुई सत्य वाणी को (**भूषन्**) शोभित करता हुआ मैं (**प्र, इयर्मि**) प्राप्त होता हूँ, जिससे आप (**दैवीनाम्**) उत्तम गुणों से युक्त (**क्षितीनाम्**) अपने राज्य में बसनेवाली (**मानुषीणाम्**) मनुष्यरूप (**विशाम्**) प्रजाओं की (**पूर्वयावा**) प्राचीन राजनीति को प्राप्त (**उत**) अथवा अपने ही से विद्या और विनय से युक्त हो, इससे श्रेष्ठ पुरुषों से सत्कार करने योग्य (**असि**) हो॥२॥

**भावार्थः**-सम्पूर्ण प्रजा और राजजनों को चाहिये कि सब लोगों के स्वामी की आज्ञा का उल्लङ्घन न करें और सब लोगों के स्वामी को चाहिये कि धर्मयुक्त कर्मों से निरन्तर प्रजाओं का पालन करें॥२॥

**अथ सूर्यदृष्टान्तेन राजधर्मविषयमाह॥**

फिर सूर्य के दृष्टान्त से राजधर्म विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**इन्द्रो॑ वृ॒त्रम॑वृणो॒च्छर्ध॑नीतिः॒ प्र मा॒यिना॑मभिना॒द्वर्प॑णीतिः।**

**अह॒न् व्यं॑समु॒शध॒ग्वने॑ष्वा॒विर्धेना॑ अकृणोद्रा॒म्याणा॑म्॥३॥**



www.9009.co.in

**इन्द्रः। वृत्रम्। अवृणोत्। शर्धऽनीतिः। प्र। मायिनाम्। अमिनात्। वर्पऽनीतिः। अहन्। विऽअंसम्। उशधक्। वनेषु। आविः। धेनाः। अकृणोत्। राम्याणाम्॥ ३॥**

**पदार्थः**-**(इन्द्रः)** सूर्य्य इव प्रतापवान् राजा **(वृत्रम्)** मेघमिव शत्रुम् **(अवृणोत्)** वृणुयात् **(शर्धनीतिः)** बलस्य सैन्यस्य नीतिर्नायकः **(प्र)** **(मायिनाम्)** कुत्सिता माया प्रज्ञा विद्यते येषां तेषाम् **(अमिनात्)** हिंसेत् **(वर्पणीतिः)** वर्पस्य रूपस्य नीतिर्नायकः। अत्रोभयत्र नीतौ कर्त्तरि क्तिच्। **(अहन्)** हन्ति **(व्यंसम्)** विगता अंसा यस्य तम् **(उशधक्)** य उशान् युद्धं कामयमानान् दहति सः **(वनेषु)** जङ्गलेषु **(आविः)** प्राकट्ये **(धेनाः)** वाचः। **धेनेति वाङ्नामसु पठितम्।** (निघं०१.११) **(अकृणोत्)** कुर्यात् **(राम्याणाम्)** रमणीयानाम्॥ ३॥

**अन्वयः**-हे राजन्! यथा सूर्य्यो वृत्रं व्यंसमहन् तथा शर्धनीतिर्वर्पणीतिरिन्द्रो भवान् मायिनां मायां प्रमिनात्। उशधक् वनेषु धेना अवृणोद् राम्याणां धेना आविरकृणोत्॥ ३॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यथा सूर्य्यो मेघं हन्ति तथैव दुष्टाचारान् हत्वा विद्यावाचः प्रचार्य सर्वैः सेना शिक्षा च वर्धनीया॥ ३॥

**पदार्थः**-हे राजन्! जैसे सूर्य्य **(वृत्रम्)** मेघ को **(व्यंसम्)** कटे बाहु जिसके उस पुरुष के समान **(अहन्)** नाश करता है, वैसे **(शर्धनीतिः)** सेना का नायक **(वर्पणीतिः)** रूप को प्राप्त करानेवाले **(इन्द्रः)** सूर्यवत् प्रतापी राजा आप **(मायिनाम्)** बुरी बुद्धि से युक्त पुरुषों की माया का **(प्र, अमिनात्)** नाश करें **(उशधक्)** और युद्ध करनेवालों का नाशकर्त्ता पुरुष **(वनेषु)** जङ्गलों में **(धेनाः)** वाणियों को **(अवृणोत्)** घेरे **(राम्याणाम्)** सुन्दरों की वाणियों को **(आविः)** प्रकट **(अकृणोत्)** करे॥ ३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे सूर्य्य मेघ का नाश करता है, वैसे ही दुष्ट आचरणवाले जनों का नाश और विद्या सम्बन्धी वाणियों का प्रचार करके सब लोगों को सेना और शिक्षा की वृद्धि करनी चाहिये॥ ३॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**इन्द्रः स्वर्षा जनयन्नहानि जिगायोशिग्भिः पृतना अभिष्टिः।**

**प्रारोचयन् मनवे केतुमह्नामविन्दज्ज्योतिर्बृहते रणाय॥ ४॥**

**इन्द्रः। स्वःऽसाः। जनयन्। अहानि। जिगाय। उशिक्ऽभिः। पृतनाः। अभिष्टिः। प्र। अरोचयत्। मनवे। केतुम्। अह्नाम्। अविन्दत्। ज्योतिः। बृहते। रणाय॥ ४॥**

**पदार्थः**-**(इन्द्रः)** सूर्य इव तेजस्वी **(स्वर्षाः)** यः स्वः सुखं सनति विभजति सः **(जनयन्)** प्रकटयन् **(अहानि)** दिनानि **(जिगाय)** जयेत् **(उशिग्भिः)** कामयमानैर्वीरैः **(पृतनाः)** वीरसेनाः **(अभिष्टिः)** अभिमुखा इष्टिः सङ्गतिर्यस्य सः **(प्र, अरोचयत्)** रोचयेत् **(मनवे)** मननशीलाय मनुष्याय **(केतुम्)** प्रज्ञाम्



www.9009.co.in

**(अह्नाम्)** दिनानाम् **(अविन्दत्)** विन्देत् प्राप्नुयात् **(ज्योतिः)** युद्धविद्याप्रकाशम् **(बृहते)** महते **(रणाय)** संग्रामाय॥४॥

**अन्वयः**-यः स्वर्षा अभिष्टिरिन्द्रः पृतना अहानि सूर्य्य इव जनयन्नुशिग्भिः शत्रून् जिगाय बृहते रणायाऽह्नां ज्योतिरिव मनवे केतुमविन्दत् संग्रामं प्रारोचयत् स एव विजयविभूषितः स्यात्॥४॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। ये राजानः सर्वेभ्योऽधिकं प्रयत्नं युद्धविद्यायां कुर्युस्ते सुहर्षितैर्युद्धाय रुचिं प्रदर्शितैर्वीरैः सह शत्रून् जित्वा सूर्य्यस्येव विजयप्रकाशं प्रथयेरन्॥४॥

**पदार्थः**-जो **(स्वर्षाः)** सुख के विभाग करने **(अभिष्टिः)** सम्मुख मेल करनेवाले **(इन्द्रः)** सूर्य्य के सदृश तेजस्वी **(पृतनाः)** वीर पुरुषों को सेनाओं और **(अहानि)** दिनों को सूर्य्य के सदृश **(जनयन्)** प्रकट करनेवाला पुरुष **(उशिग्भिः)** युद्ध की इच्छा रखते हुए वीरों के साथ शत्रुओं को **(जिगाय)** जीते **(बृहते)** बड़े **(रणाय)** संग्राम के लिये **(अह्नाम्)** दिनों के **(ज्योतिः)** युद्ध की विद्या के प्रकाश को **(मनवे)** और मनन करनेवाले मनुष्य के लिये **(केतुम्)** बुद्धि को **(अविन्दत्)** प्राप्त होवे और संग्राम का **(प्र)** **(अरोचयत्)** उत्तम प्रकार प्रकाश करे, वही पुरुष विजयरूप आभूषण से शोभित होवे॥४॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो राजा लोग सम्पूर्ण जनों से अधिक प्रयत्न युद्धविद्या में करें, वे उत्तम प्रकार प्रसन्नतायुक्त, जो कि युद्ध के लिये पारितोषिक आदि से रुचि दिखाये गये वीर लोग, उनके साथ शत्रुओं को जीत कर सूर्य्य के सदृश विजय के प्रकाश को प्रकट करें॥४॥

**कीदृशो जनो राज्येऽधिकृतः स्यादित्याह॥**

कैसा मनुष्य राज्य में अधिकारी हो, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**इन्द्रस्तुजो बर्हणा आ विवेश नृवद्दधानो नर्या पुरूणि।**

**अचेतयद्धिय इमा जरित्रे प्रेमं वर्णमतिरच्छुक्रमासाम्॥५॥१५॥**

**इन्द्रः। तुजः। बर्हणाः। आ। विवेश। नृऽवत्। दधानः। नर्या। पुरूणि। अचेतयत्। धियः। इमाः। जरित्रे। प्र। इमम्। वर्णम्। अतिरत्। शुक्रम्। आसाम्॥५॥**

**पदार्थः**-**(इन्द्रः)** राजा **(तुजः)** शत्रुहिंसकबलादियुक्ताः सेनाः **(बर्हणाः)** वर्धमानाः **(आ, विवेश)** आविशेत् **(नृवत्)** नायकवत् **(दधानः)** **(नर्या)** नृभ्यो हितानि सैन्यानि **(पुरूणि)** बहूनि **(अचेतयत्)** चेतयेत् सञ्ज्ञापयेत् **(धियः)** प्रज्ञा **(इमाः)** वर्त्तमाने प्राप्ताः **(जरित्रे)** स्तावकाय **(प्र)** **(इमम्)** **(वर्णम्)** स्वीकारम् **(अतिरत्)** सन्तरेत् **(शुक्रम्)** क्षिप्रं कार्यकरम् **(आसाम्)** प्रजानाम्॥५॥

**अन्वयः**-य इन्द्रो आसां प्रजानां पुरूणि नर्या नृवद्दधानो बर्हणास्तुज आविवेश जरित्रे इमा धियः प्राचेतयत् स इमं शुक्रं वर्णमतिरत्॥५॥

**भावार्थः**-स एव राज्ये प्रवेष्टुं शक्नोति यो बुद्धिमतो धार्मिकान् जनान् सर्वेष्वधिकारेषु नियोज्य सेनोन्नतिं विधाय पितृवत्प्रजाः पालयितुमर्हेत्॥५॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-जो **(इन्द्रः)** राजा **(आसाम्)** इन प्रजाओं की **(पुरूणि)** बहुत **(नर्या)** मनुष्यों के लिये हितकारिणी सेनाओं को **(नृवत्)** प्रधान पुरुष के सदृश **(दधानः)** धारण करनेवाला **(बर्हणाः)** वृद्धि को प्राप्त **(तुजः)** शत्रुओं के नाश करनेवाले बल आदि से युक्त सेनाओं को **(आ)** **(विवेश)** प्राप्त होवें **(जरित्रे)** स्तुति करनेवाले के लिये **(इमाः)** इन वर्त्तमान में पाई हुईं **(धियः)** बुद्धियों को **(प्र)** **(अचेतयत्)** बोध सहित करे, वह पुरुष **(इमम्)** इस **(शुक्रम्)** शीघ्र कार्य्य करनेवाले **(वर्णम्)** स्वीकार के **(अतिरत्)** पार उतरे॥५॥

**भावार्थः**-वही पुरुष राज्य में प्रविष्ट हो सकता है कि जो बुद्धियुक्त धार्मिक पुरुषों को सब अधिकारों में नियुक्त कर और सेना की उन्नति करके पिता के सदृश प्रजाओं का पालन कर सके॥५॥

**पुना राजप्रजापुरुषैरनुष्ठेयमाह॥**

फिर राजा तथा प्रजाजनों के कर्त्तव्य विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**म॒हो म॒हानि॑ पनयन्त्य॒स्येन्द्र॑स्य॒ कर्म॑ सुकृ॑ता पु॒रूणि॑।**

**वृ॒जने॑न वृजि॒नान्त्सं पि॑पेष मा॒याभि॒र्दस्यूँ॑रभिभू॒त्योजाः॥६॥**

**म॒हः। म॒हानि॑। प॒न॒य॒न्ति॒। अ॒स्य॒। इन्द्र॑स्य। कर्म॑। सु॒ऽकृ॑ता। पु॒रूणि॑। वृ॒जने॑न। वृ॒जि॒नान्। सम्। पि॒पे॒ष॒। मा॒याभिः॑। दस्यू॑न्। अ॒भिभू॑तिऽओजाः॥६॥**

**पदार्थः**-**(महः)** महतः **(महानि)** महान्ति **(पनयन्ति)** पनायन्ति प्रशंसन्ति। अत्र **वाच्छन्दसी**ति ह्रस्वः। **(अस्य)** वर्त्तमानस्य **(इन्द्रस्य)** सकलैश्वर्ययुक्तस्य **(कर्म)** कर्माणि **(सुकृता)** शोभनेन धर्मयोगेन कृतानि **(पुरूणि)** बहूनि **(वृजनेन)** बलेन **(वृजिनान्)** पापान् **(सम्)** **(पिपेष)** पिष्यात् **(मायाभिः)** प्रज्ञाभिः **(दस्यून्)** साहसेन उत्कोचकान् चोरान् **(अभिभूत्योजाः)** अभिभूतिः पराजयकरमोजो बलं यस्य सः॥६॥

**अन्वयः**-योऽभिभूत्योजा वृजनेन मायाभिर्वृजिनान् दस्यून् संपिपेष यान्यस्य मह इन्द्रस्य पुरूणि महानि सुकृता कर्म पनयन्ति तानि सङ्गृह्णीयात् स एव राजाऽमात्यतामर्हेत्॥६॥

**भावार्थः**-यथा राजप्रजाजनैः सर्वाधीशस्य धर्म्याणि कर्माणि स्वीकर्त्तव्यानि सन्ति तथैव सर्वाऽधिष्ठात्रा राज्ञा सर्वेषामुत्तमान्याचरणानि स्वीकर्त्तव्यानि नेतराणि केनचित्॥६॥

**पदार्थः**-जो **(अभिभूत्योजाः)** शत्रुपराजय करनेवाले बल से युक्त राजपुरुष **(वृजनेन)** बल और **(मायाभिः)** बुद्धियों से **(वृजिनान्)** पापी **(दस्यून्)** साहसी चोरों को **(सम्)** **(पिपेष)** पीसे और जो **(अस्य)** इस **(महः)** श्रेष्ठ **(इन्द्रस्य)** सम्पूर्ण ऐश्वर्ययुक्त पुरुष के **(पुरूणि)** बहुत **(महानि)** बड़े **(सुकृता)** उत्तम धर्म के योग से किये गये **(कर्म)** कार्य्यों की **(पनयन्ति)** प्रशंसा करते हैं, उनका ग्रहण करे, वही पुरुष राजा का मन्त्री होने योग्य होवे॥६॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-जैसे राजा और प्रजाजनों को सब लोगों के स्वामी के धर्मयुक्त कर्म स्वीकार करने योग्य हैं, वैसे ही सबके स्वामी राजा को चाहिये कि सब लोगों के उत्तम आचरणों को स्वीकार करे और अनिष्ट आचरणों का स्वीकार कोई न करे॥६॥

**पुनर्विद्वद्राजपुरुषविषयमाह॥**

फिर विद्वान् तथा राजपुरुष के विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**युधेन्द्रो मह्ना वरिवश्चकार देवेभ्यः सत्पतिश्चर्षणिप्राः।**

**विवस्वतः सदने अस्य तानि विप्रा उक्थेभिः कवयो गृणन्ति॥७॥**

**युधा। इन्द्रः। मह्ना। वरिवः। चकार। देवेभ्यः। सत्ऽपतिः। चर्षणिऽप्राः। विवस्वतः। सदने। अस्य। तानि। विप्राः। उक्थेभिः। कवयः। गृणन्ति॥७॥**

**पदार्थः**-(**युधा**) संग्रामेण (**इन्द्रः**) ऐश्वर्ययुक्तः (**मह्ना**) महता (**वरिवः**) सेवनम् (**चकार**) कुर्यात् (**देवेभ्यः**) विद्वद्भ्यः (**सत्पतिः**) सतां पालकः (**चर्षणिप्राः**) यः चर्षणीन् मनुष्यान् सत्यविद्याशिक्षासुशीलैः प्राति प्रपूर्ति सः (**विवस्वतः**) सवितुः (**सदने**) मण्डले (**अस्य**) (**तानि**) (**विप्राः**) मेधाविनः (**उक्थेभिः**) प्रशंसावचनैः (**कवयः**) विद्वांसः (**गृणन्ति**) स्तुवन्ति॥७॥

**अन्वयः**-यो देवेभ्यः शिक्षां प्राप्य सत्पतिश्चर्षणिप्रा इन्द्रो मह्ना युधा येषां कर्मणां वरिवश्चकार तस्याऽस्य तानि विवस्वतः सदने कवयो विप्रा उक्थेभिर्गृणन्ति॥७॥

**भावार्थः**-त एव विद्वांसो धार्मिका विज्ञेया ये राजादीनां मिथ्यास्तुतिं विहाय धर्म्याणि कर्माणि प्रशंसन्ति त एव राजानो भवितुमर्हन्ति ये धर्म्याणि कर्माण्याचरन्ति॥७॥

**पदार्थः**-जो (**देवेभ्यः**) विद्वानों से शिक्षा पाके (**सत्पतिः**) श्रेष्ठ पुरुषों का पालन करने (**चर्षणिप्राः**) मनुष्यों को सत्य विद्या, शिक्षा और उत्तम स्वभाव से पूर्ण करनेवाला (**इन्द्रः**) राज्य के ऐश्वर्य से युक्त (**मह्ना**) बड़े (**युधा**) संग्राम से जिन कर्मों का (**वरिवः**) सेवन (**चकार**) करे उस (**अस्य**) इस राजपुरुष के (**तानि**) उन कर्मों की (**विवस्वतः**) सूर्य्य के (**सदने**) मण्डल में (**कवयः**) विद्यायुक्त (**विप्राः**) बुद्धिमान् लोग (**उक्थेभिः**) प्रशंसा के वचनों से (**गृणन्ति**) स्तुति करते हैं॥७॥

**भावार्थः**-उन्हीं लोगों को विद्वान् और धार्मिक जानना चाहिये कि जो राजा आदिकों की झूठी स्तुति को त्याग के धर्मसम्बन्धी कर्मों की प्रशंसा करते हैं और वे ही राजा होने के योग्य हैं कि जो धर्मयुक्त आचरणों को करते हैं॥७॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**सत्रासाहं वरेण्यं सहोदां ससवांसं स्वरपश्च देवीः।**



www.9009.co.in

**सुसान य: पृथिवीं द्यामुतेमामिन्द्रं मदन्त्यनु धीरणास:॥८॥**

**सुत्राऽसहम्। वरेण्यम्। सहःऽदाम्। ससऽवांसम्। स्वः। अपः। च। देवीः। ससान। यः। पृथिवीम्। द्याम्। उत। इमाम्। इन्द्रम्। मदन्ति। अनु। धीऽरणासः॥८॥**

**पदार्थ:**-(**सत्रासाहम्**) य: सत्रा सत्यानि सहते स तम् (**वरेण्यम्**) स्वीकर्तुं योग्यम् (**सहोदाम्**) बलप्रदम् (**ससवांसम्**) पापपुण्ययोर्विभक्तारम् (**स्व:**) सुखम् (**अप:**) प्राणान् (**च**) (**देवी:**) दिव्या: (**ससान**) विभजेत् (**य:**) (**पृथिवीम्**) अन्तरिक्षं भूमिं वा (**द्याम्**) विद्युतम् (**उत**) (**इमाम्**) वर्त्तमानम् (**इन्द्रम्**) (**मदन्ति**) आनन्दन्ति (**अनु**) (**धीरणास:**) धी: प्रशस्ता प्रज्ञा रण: संग्रामो येषान्ते॥८॥

**अन्वय:**-य: सत्रासाहं वरेण्यं सहोदां ससवांसं स्वर्देवीरपश्चेमां पृथिवीमुतेमां द्यां ससान तमिन्द्रं धीरणासो मदन्ति सताननुमदेदानन्देत्॥८॥

**भावार्थ:**-योऽसत्यत्यागी सत्यग्राही बलवर्धक: प्रजासुखेच्छुर्विद्युत्पृथिव्यादिगुणान् विद्यया विभाजक: स्यात् तमेव परीक्षकं धीमन्तो वीरा: प्राप्याऽऽनन्दन्ति तेऽपीदृशादेवानन्दं प्राप्तुमर्हन्ति॥८॥

**पदार्थ:**-(**य:**) जो (**सत्रासाहम्**) सत्यों के सहनेवाले (**वरेण्यम्**) स्वीकार करने योग्य (**सहोदाम्**) बल के देने तथा (**ससवांसम्**) पाप और पुण्य का विभाग करनेवाले (**स्व:**) सुख (**च**) और (**देवी:**) उत्तम (**अप:**) प्राणों को (**इमाम्**) प्रत्यक्ष वर्त्तमान इस (**पृथिवीम्**) अन्तरिक्ष वा पृथिवी (**उत**) और इस (**द्याम्**) बिजुली को (**ससान**) अलग-अलग करे, उस (**इन्द्रम्**) तेजस्वी पुरुष को (**धीरणास:**) उत्तम बुद्धि और संग्राम से युक्त लोग (**मदन्ति**) आनन्दित करते हैं, वह उनके (**अनु**) पीछे आनन्द को प्राप्त होवे॥८॥

**भावार्थ:**-जो असत्य का त्याग और सत्य का ग्रहण करने, बल को बढ़ाने और प्रजा के सुख की इच्छा करनेवाला पुरुष बिजुली और पृथिवी आदि के गुणों का विद्या से विभागकर्त्ता हो, उसी परीक्षा करनेवाले जन को बुद्धिमान् वीर लोग प्राप्त होके आनन्द करते हैं और वे भी ऐसे ही पुरुष से आनन्द को प्राप्त हो सकते हैं॥८॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**ससानात्याँ उत सूर्यं ससानेन्द्र: ससान पुरुभोजसं गाम्।**

**हिरण्ययमुत भोगं ससान हत्वी दस्यून् प्रार्यं वर्णमावत्॥९॥**

**ससान। अत्यान्। उत। सूर्यम्। ससान। इन्द्रः। ससान। पुरुऽभोजसम्। गाम्। हिरण्ययम्। उत। भोगम्। ससान। हत्वी। दस्यून्। प्र। आर्यम्। वर्णम्। आवत्॥९॥**

**पदार्थ:**-(**ससान**) विभजेत् (**अत्यान्**) सुशिक्षयाऽश्वान् (**उत**) (**सूर्य्यम्**) सूर्य्यमिव वर्त्तमानं प्राज्ञम् (**ससान**) (**इन्द्र:**) सकलैश्वर्ययुक्त: सर्वाधिपति: (**ससान**) (**पुरुभोजसम्**) बहूनां पालकं बह्वन्नभोक्तारं वा



www.9009.co.in

**(गाम्)** वाणीं भूमिं वा **(हिरण्ययम्)** सुवर्णादिप्रचुरं धनम् **(उत)** **(भोगम्)** **(ससान)** **(हत्वी)** **(दस्यून्)** **(प्र)** **(आर्यम्)** उत्तमगुणकर्मस्वभावं धार्मिकम् **(वर्णम्)** स्वीकर्त्तव्यम् **(आवत्)** रक्षेत्॥९॥

**अन्वयः**-स इन्द्रो राजा अमात्यसमूहो वाऽत्यान् ससान सूर्य्यं ससान पुरुभोजसं गामुत हिरण्ययं ससानोत भोगं ससान दस्यून् हत्व्यार्यं वर्णं प्रावत्॥९॥

**भावार्थः**-ये सुपरीक्ष्य श्रेष्ठाश्रेष्ठानश्वान् वीरान् न्यायाधीशान् श्रियं भोगं च विभक्तुं शक्नुयुस्त एव दुष्टान् हत्वा श्रेष्ठान् रक्षितुं शक्नुयुः॥९॥

**पदार्थः**-वह **(इन्द्रः)** सम्पूर्ण ऐश्वर्य से युक्त राजा वा मन्त्रियों का समूह **(अत्यान्)** उत्तम शिक्षा से घोड़ों के **(ससान)** विभाग को और **(सूर्यम्)** सूर्य के सदृश प्रतापयुक्त वीर पुरुष को **(ससान)** अलग करे, **(पुरुभोजसम्)** बहुतों का पालन वा बहुतों को नहीं भोजन देनेवाले पुरुष की **(गाम्)** वाणी वा भूमि का **(उत)** और **(हिरण्ययम्)** सुवर्ण आदि पदार्थों का **(ससान)** विभाग करे **(उत)** और **(भोगम्)** उत्तम भोजन आदि के पदार्थों का **(ससान)** विभाग करे, वह पुरुष **(दस्यून्)** साहस कर्म करनेवाले चोर आदि का **(हत्वी)** नाश करके **(आर्यम्)** उत्तम गुण, कर्म, स्वभावयुक्त धार्मिक **(वर्णम्)** स्वीकार करने योग्य पुरुष की **(प्र)** **(आवत्)** रक्षा करे॥९॥

**भावार्थः**-जो लोग उत्तम प्रकार परीक्षा करके भले और बुरे घोड़े, वीर पुरुष, न्यायाधीश, लक्ष्मी और उत्तम भोग का विभाग कर सकें, वे ही पुरुष दुष्ट पुरुषों का नाश कर श्रेष्ठ पुरुषों की रक्षा कर सकें॥९॥

**पुना राजादिजनैः किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

फिर राजादि जनों को क्या करना चाहिये, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**इन्द्र॒ ओष॑धीरसनो॒दहा॑नि॒ वन॒स्पतीँ॑रसनोद॒न्तरि॑क्षम्।**

**बि॒भेद॑ ब॒लं नु॑नु॒दे विवा॒चोऽथा॑भवद्द॒मि॒ताभि॒क्र॑तूनाम्॥ १०॥**

**इन्द्रः॑। ओष॑धीः। अ॒स॒नो॒त्। अहा॑नि। वन॒स्पती॑न्। अ॒स॒नो॒त्। अ॒न्तरि॑क्षम्। बि॒भेद॑। ब॒लम्। नु॒नु॒दे। विऽवा॑चः। अथ॑। अ॒भ॒व॒त्। द॒मि॒ता। अ॒भिऽक्र॑तूनाम्॥ १०॥**

**पदार्थः**-**(इन्द्रः)** ऐश्वर्य्यप्रदः **(ओषधीः)** सोमाद्याः **(असनोत्)** सुनुयात् **(अहानि)** दिनानि **(वनस्पतीन्)** अश्वत्थादीन् **(असनोत्)** सुनुयात् **(अन्तरिक्षम्)** उदकम्। **अन्तरिक्षमित्युदकनामसु पठितम्।** (निघं०१.१२)[78] **(बिभेद)** भिन्द्यात् **(बलम्)** **(नुनुदे)** प्ररेयेत् **(विवाचः)** विविधा वाणीः **(अथ)** **(अभवत्)** भवेत् **(दमिता)** नियन्ता **(अभिक्रतूनाम्)** आभिमुख्येन क्रतुः कर्म येषां तेषां बलीयसां शत्रूणाम्॥१०॥

७८. अन्तरिक्षपदमुदकनामसु नोपलभ्यते। तत्र त्वेतत्पदम् अन्तरिक्षनामसु (निघ०१.३.६) दृश्यते। सं०



www.9009.co.in

**अन्वयः**-स राजेन्द्रोऽहानि नित्यमोषधीरसनोद् वनस्पतीनसनोदन्तरिक्षं बलं च बिभेद विवाचो नुनुदेऽथाभिक्रतूनां दमिताऽभवत्॥१०॥

**भावार्थः**-राजादिजनैः प्रत्यहमोषधिरसं निर्माय तद्रसपानं विद्यावाक्प्रचारणं सर्वेषां प्रज्ञानां स्वप्रज्ञाधिक्येन दमनं च कर्त्तव्यं यत आरोग्यं विद्याप्रभावाश्च प्रतिदिनं वर्धेरन्॥१०॥

**पदार्थः**-वह **(इन्द्रः)** ऐश्वर्य देनेवाला राजा **(अहानि)** दिनों दिन **(ओषधीः)** सोम आदि ओषधियों को **(असनोत्)** देवे, **(वनस्पतीन्)** पीपल आदि वनस्पतियों को **(असनोत्)** देवे, **(अन्तरिक्षम्)** जल और **(बलम्)** बल का **(बिभेद)** भेदन करे, **(विवाचः)** अनेक प्रकार की वाणियों की **(नुनुदे)** प्रेरणा करे **(अथ)** और भी **(अभिक्रतूनाम्)** सहसा शीघ्र कर्म करनेवाले शत्रुओं को **(दमिता)** दमन करनेवाला **(अभवत्)** होवे॥१०॥

**भावार्थः**-राजा आदि श्रेष्ठ जनों को चाहिये कि प्रतिदिन ओषधियों के रसादि उत्पन्न कर उनके रस का पान, विद्या सम्बन्धी वाणी का प्रचार और सब जनों की बुद्धियों का अपनी बुद्धि से भी अधिकता के सहित दमन अर्थात् विषयों से निवृत्ति करें, जिससे आरोग्य और विद्याओं के प्रभाव प्रतिदिन बढ़ें॥१०॥

**मनुष्यैः कीदृशो राजा सेव्य इत्याह॥**

मनुष्यों को कैसे राजा का सेवन करना चाहिये, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**शुनं हुवेम मघवानमिन्द्रमस्मिन् भरे नृतमं वाजसातौ।**

**शृणवन्तमुग्रमूतये समत्सु घ्नन्तं वृत्राणि संजितं धनानाम्॥११॥१६॥**

**शुनम्। हुवेम। मघऽवानम्। इन्द्रम्। अस्मिन्। भरे। नृऽतमम्। वाजऽसातौ। शृण्वन्तम्। उग्रम्। ऊतये। समत्ऽसु। घ्नन्तम्। वृत्राणि। सम्ऽजितम्। धनानाम्॥११॥**

**पदार्थः**-**(शुनम्)** सुखप्रदम् **(हुवेम)** प्रशंसेम **(मघवानम्)** पुष्कलधनम् **(इन्द्रम्)** दुष्टानां विदारकम् **(अस्मिन्)** वर्त्तमाने **(भरे)** मूर्खविद्वद्ज्ञानज्ञानविषयविरोधरूपे युद्धे **(नृतमम्)** अतिशयेन सत्याऽसत्ययोर्नेतारम् **(वाजसातौ)** विज्ञानाऽविज्ञानसत्यासत्यविभाजके **(शृण्वन्तम्)** अर्थिप्रत्यर्थिनोः श्रवणाऽनन्तरं न्यायस्य कर्त्तारम् **(उग्रम्)** दुष्टानामुपरि कठिनस्वभावं श्रेष्ठेषु शान्तम् **(ऊतये)** रक्षणाद्याय **(समत्सु)** संग्रामेषु **(घ्नन्तम्)** **(वृत्राणि)** मेघावयवानिव शत्रुसैन्यानि **(सञ्जितम्)** सम्यगुत्कर्षप्राप्तम् **(धनानाम्)** विज्ञानादिपदार्थानां मध्ये॥११॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यं शुनं मघवानमस्मिन् वाजसातौ भरे नृतममिन्द्रमूतये शृण्वन्तमुग्रं समत्सु वृत्राणि घ्नन्तं धनानां सञ्जितं राजानं हुवेम तं यूयमप्याह्वयत॥११॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-मनुष्या दुष्टश्रेष्ठानां परीक्षितारं वादिप्रतिवादिनोर्वचांसि श्रुत्वा न्यायकर्त्तारं पण्डितमूर्खसत्काराऽसत्कारविधातारं पक्षपातरहितं सर्वेषां सुहृदं राजानं स्वीकृत्याऽऽनन्दन्त्विति॥११॥

अत्र सूर्यविद्युद्वीरराज्यराजसेनाप्रजागुणवर्णानादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति चतुस्त्रिंशत्तमं सूक्तं षोडशो वर्गश्च समाप्त॥**

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जिस **(शुनम्)** सुख देनेवाले **(मघवानम्)** बहुत धन से युक्त **(अस्मिन्)** इस वर्त्तमान **(वाजसातौ)** विज्ञान-अविज्ञान, सत्य और असत्य के विभागकारक **(भरे)** मूर्ख और विद्वान् के अज्ञान और ज्ञान के विषय के विरोध रूप युद्ध में **(नृतमम्)** अत्यन्त सत्य और असत्य के निर्णय करने **(इन्द्रम्)** और दुष्ट जनों के नाश करनेवाले पुरुष की **(ऊतये)** रक्षा आदि के लिये **(शृण्वन्तम्)** अर्थी-प्रत्यर्थी अर्थात् मुद्दई-मुद्दाले के वचन सुनने के पीछे न्याय करने, **(उग्रम्)** दुष्ट पुरुषों पर कठोर स्वभाव और श्रेष्ठ पुरुषों में शान्त स्वभाव रखने, **(समत्सु)** संग्रामों में **(वृत्राणि)** मेघों के अवयवों के सदृश शत्रुओं की सेनाओं के **(घ्नन्तम्)** नाश करने और **(धनानाम्)** विज्ञान आदि पदार्थों के मध्य में **(सञ्जितम्)** उत्तम प्रकार श्रेष्ठता को प्राप्त होनेवाले राजा की **(हुवेम)** प्रशंसा करें, उसकी आप लोग भी प्रशंसा करो॥११॥

**भावार्थः**-मनुष्य लोग दुष्ट और श्रेष्ठ पुरुषों की परीक्षा करने, वादी और प्रतिवादी के वचनों को सुनके न्याय करने, पण्डित और मूर्ख जन का आदर और निरादर करने, पक्षपात से अलग रहने और सम्पूर्ण जनों के सुख देनेवाले पुरुष को राजा मान के आनन्द करें॥११॥

इस सूक्त में सूर्य्य, बिजुली, वीर, राज्य, राजा की सेना और प्रजा के गुणवर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह चौतीसवां सूक्त और सोलहवां वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

**अथैकादशर्चस्य पञ्चत्रिंशत्तमस्य सूक्तस्य विश्वामित्र ऋषिः। इन्द्रो देवता। १, ७, १०, ११ त्रिष्टुप्। २, ३, ६, ८ निचृत्त्रिष्टुप्। ९ विराट् त्रिष्टुप्छन्दः। धैवतः स्वरः। ४ भुरिक् पङ्क्तिः। ५ स्वराट् पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः॥**

***अथ मनुष्यैः किं कर्त्तव्यमित्याह॥***

अब ग्यारह ऋचावाले पैंतीसवें सूक्त का प्रारम्भ है। उसके प्रथम मन्त्र से मनुष्यों को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**तिष्ठा॒ हरी॒ रथ॒ आ यु॒ज्यमा॑ना या॒हि वा॒युर्न नि॒युतो॑ नो॒ अच्छ॑।**

**पिबा॒स्यन्धो॑ अ॒भिसृ॑ष्टो अ॒स्मे इन्द्र॒ स्वाहा॑ ररि॒मा ते॒ मदा॑य॥ १॥**

**तिष्ठ॑। हरी॒ इति॑। रथे॑। आ। यु॒ज्यमा॑ना। या॒हि। वा॒युः। न। नि॒ऽयुतः॑। नः॒। अच्छ॑। पिबा॑सि। अन्धः॑। अ॒भिऽसृ॑ष्टः। अ॒स्मे इति॑। इन्द्र॑। स्वाहा॑। र॒रि॒म। ते॒। मदा॑य॥ १॥**

**पदार्थः**-(**तिष्ठ**)। अत्र **द्व्यचोऽतस्तिङ** इति दीर्घः। (**हरी**) अश्वौ (**रथे**) (**आ**) समन्तात् (**युज्यमाना**) संयुक्तौ (**याहि**) गच्छ (**वायुः**) पवनः (**न**) इव (**नियुतः**) श्रेष्ठैर्मिश्रितान् दुष्टैर्वियुक्तान् (**नः**) अस्मान् (**अच्छ**) सम्यक् (**पिबासि**) पिबेः (**अन्धः**) सुसंस्कृतमन्नम् (**अभिसृष्टः**) आभिमुख्येन प्रेरितः (**अस्मे**) अस्मासु (**इन्द्र**) परमैश्वर्य्ययुक्त (**स्वाहा**) सत्यया वाचा (**ररिम**) दद्याम। अत्र **संहितायामिति** दीर्घः। (**ते**) तुभ्यम् (**मदाय**) आनन्दाय॥ १॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र राजँस्त्वं यस्मिन् रथे युज्यमाना हरी इव जलाग्नी वर्त्तेते तस्मिन्नातिष्ठ तेन वायुर्न नियुतो नोऽस्मानच्छ याहि। अभिसृष्टः सँस्तेऽस्मे यदन्धो मदाय ररिम तत्स्वाहा पिबासि॥ १॥

**भावार्थः**-ये मनुष्या अग्न्यादिपदार्थचालिरथे स्थित्वा देशान्तरं वायुवद् गच्छन्ति ते पुष्कलानि भक्ष्यभोज्यपेयचूष्यानि प्राप्नुवन्ति॥ १॥

**पदार्थः**-हे (**इन्द्र**) अत्यन्त ऐश्वर्य्य से युक्त राजन्! आप जिस (**रथे**) रथ में (**युज्यमाना**) जुड़े हुए (**हरी**) घोड़ों के सदृश जल और अग्नि वर्त्तमान हैं, उस रथ में (**आ**) सब प्रकार (**तिष्ठ**) वर्त्तमान हूजिये, इससे (**वायुः**) पवन के (**न**) तुल्य (**नियुतः**) श्रेष्ठ पुरुषों के साथ मिले और दुष्ट पुरुषों से अनमिले (**नः**) हम लोगों को (**अच्छ**) अच्छे प्रकार (**याहि**) प्राप्त हूजिये और (**अभिसृष्टः**) सम्मुख प्रेरित हुआ जन (**ते**) आपके लिये (**अस्मे**) हमारे निकट से (**अन्धः**) उत्तम प्रकार संस्कार किये हुए अन्न को (**मदाय**) आनन्द के अर्थ (**ररिम**) देवें, उसका (**स्वाहा**) सत्य वाणी से (**पिबासि**) पान कीजिये॥ १॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य अग्नि आदि पदार्थों से चलनेवाले रथ पर चढ़ के अन्य अन्य देशों को वायु के सदृश जाते हैं, वे बहुत भक्षण, भोजन करने, पीने और चूषने योग्य पदार्थों को प्राप्त होते हैं॥ १॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥



www.9009.co.in

**उपा॑जि॒रा पु॑रुहू॒ताय॒ सप्ती॒ हरी॒ रथ॑स्य धू॒र्ष्वा यु॑नज्मि।**

**द्र॒वद्य॑था॒ संभृ॑तं वि॒श्वत॑श्चि॒दुपे॒मं य॒ज्ञमा व॑हात॒ इन्द्र॑म्॥ २॥**

**उप॑। अ॒जि॒रा। पु॒रु॒ऽहू॒ताय॑। सप्ती॒ इति॑। हरी॒ इति॑। रथ॑स्य। धू॒ःऽसु। आ। यु॒न॒ज्मि॒। द्र॒वत्। यथा॑। सम्ऽभृ॑तम्। वि॒श्वत॑ः। चि॒त्। उप॑। इ॒मम्। य॒ज्ञम्। आ। व॒हा॒त॒ः। इन्द्र॑म्॥ २॥**

**पदार्थः**-(**उप**) सामीप्ये (**अजिरा**) यानानां प्रक्षेप्तारौ (**पुरुहूताय**) बहुभिराहूताय (**सप्ती**) सद्यः सर्पन्तौ। अत्र **वाच्छन्दसी**ति गुण कृते रेफलोपः। (**हरी**) हरणशीलौ (**रथस्य**) यानस्य (**धूर्षु**) रथाधारावयवेषु (**आ**) समन्तात् (**युनज्मि**) (**द्रवत्**) द्रवं प्राप्नुवत् (**यथा**) (**सम्भृतम्**) सम्यग्धृतम् (**विश्वतः**) सर्वतः (**चित्**) अपि (**उप**) (**इमम्**) प्रत्यक्षम् (**यज्ञम्**) शिल्पविद्यासाध्यम् (**आ**) (**वहातः**) वहेताम् (**इन्द्रम्**) परमैश्वर्य्यम्॥ २॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथाऽहं याविमं यज्ञमिन्द्रमावहातो विश्वतो द्रवत् सम्भृतं चिदप्युपावहातस्तौ पुरुहूताय वर्त्तमानावजिरा सप्ती हरी रथस्य धूर्षु युनज्मि तौ यूयमपि युङ्ग्ध्वम्॥ २॥

**भावार्थः**-ये यानेषु विद्युदादिपदार्थान् संयोज्य चालयन्ति ते कं कं देशं न गच्छेयु? तेषां किमैश्वर्य्यमप्राप्तं स्यात्?॥ २॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! (**यथा**) जैसे मैं जो (**इमम्**) इस प्रत्यक्ष (**यज्ञम्**) शिल्प विद्या से होने योग्य (**इन्द्रम्**) अत्यन्त ऐश्वर्य्यवान् काम को सब प्रकार चलाते (**विश्वतः**) वा सब ओर से (**द्रवत्**) पिघलने को प्राप्त होते हुए (**सम्भृतम्**) उत्तम प्रकार धारण किये गये पदार्थ को (**चित्**) भी (**उप**) समीप में (**आ, वहातः**) वहाते उन (**पुरुहूताय**) बहुतों ने बुलाये गये के लिये वर्त्तमान (**अजिरा**) वाहनों के फेंकने (**सप्ती**) शीघ्र चलने (**हरी**) और यान को ले जानेवाले का (**रथस्य**) वाहन की (**धूर्षु**) धुरियों में जिनको (**उप, आ, युनज्मि**) जोड़ता हूँ, उनको आप लोग भी जोड़िये॥ २॥

**भावार्थः**-जो लोग वाहनों में बिजुली आदि पदार्थों को संयुक्त करके चलाते हैं, वे किस-किस देश को न जा सकें? और उनको कौन सा ऐश्वर्य्य है, जो न प्राप्त होवे?॥ २॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**उपो॑ नयस्व॒ वृष॑णा तपु॒ष्पोतेम॑व॒ त्वं वृ॑षभ स्वधावः।**

**ग्रसे॑ता॒मश्वा॒ वि मु॑चे॒ह शोणा॑ दि॒वेऽदि॑वे स॒दृशी॑रद्धि धा॒नाः॥ ३॥**

**उपो॒ इति॑। न॒यस्व॒। वृष॑णा। त॒पु॒ःऽपा। उ॒त। ई॒म्। अ॒व॒। त्वम्। वृ॒ष॒भ॒। स्व॒धा॒ऽव॒ः। ग्रसे॑ताम्। अश्वा॑। वि। मु॒च॒। इ॒ह। शोणा॑। दि॒वेऽदि॑वे। स॒ऽदृशी॑ः। अ॒द्धि॒। धा॒नाः॥ ३॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**उपो**) सामीप्ये (**नयस्व**) (**वृषणा**) बलिष्ठौ (**तपुष्पा**) यौ तपूंषि पातो रक्षतस्तौ (**उत**) (**ईम्**) उदकम्। **ईमित्युदकनामसु पठितम्।** (निघं०१.१२) (**अव**) प्रवेशय (**त्वम्**) (**वृषभ**) बलिष्ठ (**स्वधावः**) पुष्कलान्नयुक्त (**ग्रसेताम्**) (**अश्वा**) सद्योगामिनौ (**वि**) (**मुच**) त्यज (**इह**) अस्मिन् याने (**शोणा**) रक्तगुणविशिष्टौ (**दिवेदिवे**) नित्यम् (**सदृशीः**) समाना गतीः (**अद्धि**) भुङ्क्ष्व (**धानाः**) अग्निसंस्कृतान्नविशेषान्॥३॥

**अन्वयः**-हे वृषभ स्वधावस्त्वमिह यौ तपुष्पा वृषणा शोणाऽश्वेन्धनानि ग्रसेतां तत्र कला विमुचेमुपो नयस्व। उत दिवेदिवे सदृशीर्धाना अद्धि तत्र सम्भारानव॥३॥

**भावार्थः**-ये शिल्पिनो मनुष्या अग्निजलादीन् पदार्थान् सुकलायुक्तेषु यानेषु संयुज्य चालयन्ति ते दारिद्र्यं विमुच्य धनधान्यमाप्नुवन्ति॥३॥

**पदार्थः**-हे (**वृषभ**) बलवान् (**स्वधावः**) अत्यन्त अन्नयुक्त! (**त्वम्**) आप (**इह**) इस वाहन में जो (**तपुष्पा**) तपते हुए पदार्थों को रखनेवाले (**वृषणा**) बल और (**शोणा**) लाल रङ्गयुक्त (**अश्वा**) शीघ्रगामी अग्नि आदि इन्धनों को (**ग्रसेताम्**) भक्षण करे, उनमें कलाओं को (**वि, मुच**) छोड़ो (**ईम्**) जल को (**उपो**) उनके समीप में (**नयस्व**) पहुँचाओ (**उत**) और (**दिवेदिवे**) नित्य (**सदृशीः**) तुल्य परिणामवाले (**धानाः**) अग्नि से संस्कार किये अन्नविशेषों को (**अद्धि**) भक्षण करो, उनमें बोझों को (**अव**) पेश करो॥३॥

**भावार्थः**-जो शिल्पी जन अग्नि, जल आदि पदार्थों को उत्तम कलाओं से युक्त वाहनों में संयुक्त करके चलाते हैं, वे दारिद्र्य को छोड़ के धन और धान्य को प्राप्त होते हैं॥३॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहा है॥

**ब्रह्म॑णा ते ब्रह्म॒युजा॑ युनज्मि॒ हरी॒ सखा॑या सध॒माद॑ आ॒शू।**

**स्थि॒रं रथं॑ सु॒खमि॑न्द्राधि॒तिष्ठ॑न् प्रजा॒नन् वि॒द्वाँ उप॑ याहि॒ सोम॑म्॥४॥**

**ब्रह्म॑णा। ते॒। ब्र॒ह्म॒ऽयुजा॑। यु॒नज्मि॒। हरी॒ इति॑। सखा॑या। स॒ध॒ऽमादे॑। आ॒शू इति॑। स्थि॒रम्। रथ॑म्। सु॒ऽखम्। इ॒न्द्र॒। अ॒धि॒ऽतिष्ठ॑न्। प्र॒ऽजा॒नन्। वि॒द्वान्। उप॑। या॒हि॒। सोम॑म्॥४॥**

**पदार्थः**-(**ब्रह्मणा**) अन्नादिना (**ते**) तव (**ब्रह्मयुजा**) यौ ब्रह्म धनं योजयतस्तौ (**युनज्मि**) (**हरी**) जलाग्नी (**सखाया**) सुहृदाविव (**सधमादे**) समानस्थाने (**आशू**) शीघ्रं गमयितारौ (**स्थिरम्**) ध्रुवम् (**रथम्**) यानम् (**सुखम्**) सुहितं खेभ्यस्तम् (**इन्द्र**) शिल्पविद्यैश्वर्य्ययुक्त (**अधितिष्ठन्**) उपरि स्थितः सन् (**प्रजानन्**) प्रकृष्टतया बुद्ध्यमानः (**विद्वान्**) साङ्गोपाङ्गामेतद्विद्यां विदन् (**उप**) (**याहि**) (**सोमम्**) ऐश्वर्य्यम्॥४॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! अहं ते तव यस्मिन् याने ब्रह्मणा सह वर्त्तमानौ ब्रह्मयुजा आशू हरी सखाया इव सधमादे युनज्मि तं सुखं स्थिरं रथमधितिष्ठन् विद्वान् सन्नेतद्विद्यां प्रजानन् सोममुपयाहि॥४॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। येऽग्निजलादिप्रयुक्ते याने स्थित्वा यथावद्विद्यया प्रचालयन्तो देशान्तरं गत्वागत्यैश्वर्य्यं प्राप्य सखीन् सत्कुर्युस्त एव विद्याधर्मावुन्नेतुं शक्नुयुः॥४॥

**पदार्थः**-हे **(इन्द्र)** शिल्पविद्यारूप ऐश्वर्य्य से युक्त पुरुष! मैं **(ते)** आपके जिस वाहन में **(ब्रह्मणा)** अन्न आदि के सहित विद्यमान **(ब्रह्मयुजा)** धन के संग्रह कराने और **(आशू)** शीघ्र ले चलनेवाले **(हरी)** जल और अग्नि को **(सखाया)** मित्रों के तुल्य **(सधमादे)** बरोबर के स्थान में **(युनज्मि)** संयुक्त करता हूँ, उस **(सुखम्)** आकाश मार्गियों के लिये हित करनेवाले **(स्थिरम्)** दृढ़ **(रथम्)** वाहन **(अधि, तिष्ठन्)** पर स्थिर हों तो **(विद्वान्)** इस विद्या को अङ्ग और उपाङ्गों के सहित जानते और **(प्रजानन्)** उत्तम प्रकार ज्ञान को प्राप्त होते हुए आप **(सोमम्)** ऐश्वर्य्य को **(उप, याहि)** प्राप्त हूजिये॥४॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो लोग अग्नि और जल आदि पदार्थों से चलाये गये वाहन पर बैठ अच्छे प्रकार विद्या द्वारा उसको चलाते हुए देशदेशान्तरों में जाय-आय और ऐश्वर्य को पाय मित्रों का सत्कार करें, वे ही विद्या और धर्म की वृद्धि कर सकें॥४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**मा ते हरी वृषणा वीतपृष्ठा नि रीरमन् यजमानासो अन्ये।**

**अत्यायाहि शश्वतो वयं तेऽरं सुतेभिः कृणवाम सोमैः॥५॥१७॥**

**मा। ते। हरी इति। वृषणा। वीतऽपृष्ठा। नि। रीरमन्। यजमानासः। अन्ये। अतिऽआयाहि। शश्वतः। वयम्। ते। अरम्। सुतेभिः। कृणवाम। सोमैः॥५॥**

**पदार्थः**-**(मा)** निषेधे **(ते)** तव **(हरी)** यानहारकौ **(वृषणा)** बलिष्ठौ **(वीतपृष्ठा)** वीते व्याप्तिशीले पृष्ठे ययोस्तौ **(नि)** **(रीरमन्)** रमयेयुः **(यजमानासः)** विद्यासङ्गतिविदः **(अन्ये)** एतद्भिन्नाः **(अत्यायाहि)** अतिवेगेनागच्छोल्लङ्घ्य वा **(शश्वतः)** सनातनाः **(वयम्)** **(ते)** तव **(अरम्)** अलम् **(सुतेभिः)** निष्पन्नैः **(कृणवाम)** कुर्य्याम **(सोमैः)** ऐश्वर्य्यैः॥५॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! येऽन्ये यजमानासस्ते तव वीतपृष्ठा वृषणा हरी मा नि रीरमन् ताँस्त्वमत्यायाहि। शश्वत आगच्छ यस्य ते सुतेभिः सोमैररं कामं वयं कृणवाम स त्वमस्माकमलं कामं कुरु॥५॥

**भावार्थः**-येऽग्न्यादिपदार्थविद्यामविदित्वैतद्विद्याविदो जनान्नोत्साहयन्ति तानुल्लङ्घ्यानादि-विद्याविदां विदुषां शरणं गत्वा शिल्पविद्यानिष्पन्नैः कार्य्यैः पूर्णकामा वयं भवेमेषित्वा नित्यं प्रयतेरन्॥५॥

**पदार्थः**-हे प्रतापयुक्त पुरुष! जो **(अन्ये)** इससे और **(यजमानासः)** विद्या की सङ्गति के जाननेवाले **(ते)** आपके **(वीतपृष्ठा)** चौड़ी पीठों से युक्त **(वृषणा)** बलिष्ठ **(हरी)** वाहनों के ले चलनेवालों को **(मा)** नहीं **(नि, रीरमन्)** रमावें उनको आप **(अत्यायाहि)** बड़े वेग से प्राप्त हूजिये वा छोड़िये और



www.9009.co.in

**(शश्वत:)** अनादि काल से सिद्ध विद्यायुक्त पुरुषों को प्राप्त हूजिये जिस **(ते)** आपके **(सुतेभि:)** उत्पन्न **(सोमै:)** ऐश्वर्य्यों से **(अरम्)** पूरे काम को **(वयम्)** हम लोग **(कृणवाम)** करें, वह आप हमारे पूरे काम को करो॥५॥

**भावार्थ:**-जो लोग अग्नि आदि पदार्थों की विद्या को जाने विना इस विद्या के जाननेवाले जनों का उत्साह नहीं बढ़ाते, उनका उल्लङ्घन कर अनादि काल से सिद्ध विद्या के जाननेवाले विद्वानों की शरण जाके शिल्पविद्या से उत्पन्न कार्यों से पूर्ण मनोरथवाले हम लोग होवें, इस प्रकार इच्छा करके नित्य प्रयत्न करें॥५॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**तवायं सोमस्त्वमेह्यर्वाङ् शश्वत्तमं सुमना अस्य पाहि।**

**अस्मिन् यज्ञे बर्हिष्या निषद्या दधिष्वेमं जठर इन्दुमिन्द्र॥६॥**

**तव। अयम्। सोम:। त्वम्। आ। इहि। अर्वाङ्। शश्वत्ऽतमम्। सुऽमना:। अस्य। पाहि। अस्मिन्। यज्ञे। बर्हिषि। आ। निऽसद्य। दधिष्व। इमम्। जठरे। इन्दुम्। इन्द्र॥६॥**

**पदार्थ:**-**(तव)** **(अयम्)** **(सोम:)** ऐश्वर्य्ययोग: **(त्वम्)** **(आ)** **(इहि)** प्राप्नुहि **(अर्वाङ्)** अधस्ताद्वर्त्तमान: **(शश्वत्तमम्)** अतिशयेनाऽनादिभूतम् **(सुमना:)** प्रसन्नचित्त: **(अस्य)** बोधस्य **(पाहि)** **(अस्मिन्)** **(यज्ञे)** शिल्पसम्पाद्ये व्यवहारे **(बर्हिषि)** अत्युत्तमे **(आ)** समन्तात् **(निषद्य)** नितरां स्थित्वा। अत्र **संहितायामि**ति दीर्घ:। **(दधिष्व)** धेहि **(इमम्)** **(जठरे)** उदरे **(इन्दुम्)** सार्द्रपदार्थम् **(इन्द्र)** परमैश्वर्य्यमिच्छुक॥६॥

**अन्वय:**-हे इन्द्र! तव वोऽयमर्वाङ् सोमस्तं शश्वत्तमं त्वमेहि। अस्मिन् बर्हिषि यज्ञे निषद्य सुमना: सन्निमं पाहि। अस्य सकाशात् प्राप्तमिन्दुं जठर आ दधिष्व॥६॥

**भावार्थ:**-हे मनुष्या! अस्मिन्त्सर्वोत्तमे शिल्पसाध्ये व्यवहारे निपुणा भूत्वाऽनादिभूतं पूर्वैर्विद्वद्भि: प्राप्तमैश्वर्य्यं विधाय सर्वस्यास्य जगतो रक्षणे निधाय युक्ताहारविहारेणाऽनन्दं भुङ्क्त॥६॥

**पदार्थ:**-हे **(इन्द्र)** अत्यन्त ऐश्वर्य्य की इच्छा करनेवाले! **(तव)** आपका जो **(अयम्)** यह **(अर्वाङ्)** अधोभाग में विद्यमान **(सोम:)** ऐश्वर्य्य का संयोग उस **(शश्वत्तमम्)** अत्यन्त अनादि काल से सिद्ध ऐश्वर्य्य संयोग को **(त्वम्)** आप **(आ)** **(इहि)** प्राप्त हूजिये **(अस्मिन्)** इस **(बर्हिषि)** अति उत्तम **(यज्ञे)** शिल्पविद्या से होने योग्य व्यवहार में **(निषद्य)** निरन्तर स्थिर होकर **(सुमना:)** प्रसन्नचित्त हुए **(इमम्)** इसकी **(पाहि)** रक्षा करो और **(अस्य)** इस ज्ञान की उत्तेजना से प्राप्त **(इन्दुम्)** गीले पदार्थ को **(जठरे)** उदर में **(आ)** सब प्रकार **(दधिष्व)** धारण कीजिये॥६॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! इस सबसे उत्तम शिल्पविद्या से साध्य व्यवहार में चतुर होके अनादि काल से उत्पन्न और प्राचीन विद्वानों से प्राप्त ऐश्वर्य्य को सिद्ध कर इस संसार की रक्षा के लिये स्थित करके योग्य आहार और विहार से आनन्द भोगो॥६॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**स्तीर्णं ते बर्हिः सुत इन्द्र सोमः कृता धाना अत्तवे ते हरिभ्याम्।**

**तदोकसे पुरुशाकाय वृष्णे मरुत्वते तुभ्यं राता हवींषि॥७॥**

**स्तीर्णम्। ते। बर्हिः। सुतः। इन्द्र। सोमः। कृताः। धानाः। अत्तवे। ते। हरिऽभ्याम्। तत्ऽओकसे। पुरुऽशाकाय। वृष्णे। मरुत्वते। तुभ्यम्। राता। हवींषि॥७॥**

**पदार्थः**-(**स्तीर्णम्**) आच्छादितम् (**ते**) तव (**बर्हिः**) वृद्धमुदकम्। **बर्हिरित्युदकनामसु पठितम्।** (निघं०१.१२) (**सुतः**) निष्पादितः (**इन्द्र**) दारिद्र्यविदारक (**सोमः**) ऐश्वर्य्ययोगः (**कृताः**) निष्पन्नाः (**धानाः**) पक्वान्नविशेषाः (**अत्तवे**) अत्तुम् (**ते**) (**हरिभ्याम्**) (**तदोकसे**) तद्यानमोकः स्थानं यस्य तस्मै (**पुरुशाकाय**) बहुशक्तये (**वृष्णे**) वर्षणशीलाय (**मरुत्वते**) मरुतो बहवो मनुष्याः कार्य्यसाधका विद्यन्ते यस्य तस्मै (**तुभ्यम्**) (**राता**) दत्तानि (**हवींषि**) अत्तुमर्हाण्यन्नादीनि॥७॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! ते स्तीर्णं बर्हिस्सुतस्सोमः कृता धाना हरिभ्यां युक्ते याने स्थिता यत्ते तदोकसे पुरुशाकाय वृष्णे मरुत्वते तुभ्यमत्तवे यानि हवींषि राता सन्ति तानि भुङ्क्ष्व॥७॥

**भावार्थः**-सर्वे मनुष्या निमृष्टपदार्थभोक्तारस्स्युर्नैवाऽन्यायेनोपार्जितं किञ्चिदपि भुञ्जीरन्नेवं वर्त्तमाने कृते धनशक्तिविद्याऽऽयूंषि वर्धन्ते॥७॥

**पदार्थः**-हे (**इन्द्र**) दरिद्रता के नाश करनेवाले! (**ते**) आपका (**स्तीर्णम्**) ढंपा और (**बर्हिः**) बढ़ा हुआ जल वा (**सुतः**) उत्पन्न किया गया (**सोमः**) ऐश्वर्य्य का संयोग वा (**कृताः**) सिद्ध किये गये (**धानाः**) पके हुए अन्न विशेष वा (**हरिभ्याम्**) घोड़ों से संयुक्त वाहन पर बैठे हुए जो (**ते**) आपके जन और (**तदोकसे**) वाहनरूप स्थानवाले (**पुरुशाकाय**) अनेक प्रकार की शक्ति से (**वृष्णे**) वृष्टि करानेवाले (**मरुत्वते**) कार्य्य करानेवाले बहुत मनुष्यों के सहित विराजमान (**तुभ्यम्**) आपके लिये (**अत्तवे**) भोजन करने को जो (**हवींषि**) भोजन करने के योग्य अन्न आदि (**राता**) वर्त्तमान उनको भोगो॥७॥

**भावार्थः**-सम्पूर्ण जन उत्तम पदार्थों के भोजन करनेवाले हों और अन्याय से इकट्ठे किये हुए किसी भी पदार्थ का भोग न करें। इस प्रकार वर्त्ताव करने पर धन, सामर्थ्य, विद्या और आयु बढ़ते हैं॥७॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥



www.9009.co.in

**इ॒मं न॒रः॑ पर्व॑ता॒स्तुभ्य॒माप॑ः समि॑न्द्र गोभि॒र्मधु॑मन्तमक्रन्।**

**तस्या॒गत्या॑ सु॒मना॑ ऋष्व पाहि प्रजा॒नन् वि॒द्वान् प॒थ्या॒३॑ अनु स्वाः॥८॥**

**इ॒मम्। नर॑ः। पर्व॑ताः। तु॒भ्य॑म्। आप॑ः। सम्। इ॒न्द्र। गोभि॑ः। मधु॑ऽमन्तम्। अ॒क्र॒न्। तस्य॑। आ॒ऽगत्य॑। सु॒ऽमना॑ः। ऋ॒ष्व॒। पा॒हि॒। प्र॒ऽजा॒नन्। वि॒द्वान्। प॒थ्या॑ः। अनु॑। स्वाः॥८॥**

**पदार्थः**-(**इमम्**) (**नरः**) नायकाः (**पर्वताः**) मेघाः (**तुभ्यम्**) (**आपः**) जलानि (**सम्**) (**इन्द्र**) परमैश्वर्य्यप्रापक (**गोभिः**) पृथिव्यादिभिस्सह (**मधुमन्तम्**) मधुरादिबहुरसयुक्तम् (**अक्रन्**) कुर्युः (**तस्य**) (**आगत्य**)। अत्र **संहितायामि**ति दीर्घः। (**सुमनाः**) शोभनं निरीर्ष्यकं मनो यस्य सः (**ऋष्व**) प्राप्तविद्य (**पाहि**) (**प्रजानन्**) (**विद्वान्**) (**पथ्याः**) पथोऽपेताः (**अनु**) (**स्वाः**) स्वकीया गतीः॥८॥

**अन्वयः**-हे ऋष्वेन्द्र! ये नरस्तुभ्यं पर्वता आपश्चेव गोभिरिमं मधुमन्तं समक्रंस्तान् पाहि। सुमनाः प्रजानन् विद्वाँस्तस्य स्वाः पथ्या आगत्य सर्वाननुपाहि॥८॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यथा वर्षाभिः सर्वेषां पालनं जायते तथैव विमानादेर्यानस्य निर्मातारो जगत्यां सर्वेषां रक्षका भवन्ति॥८॥

**पदार्थः**-हे (**ऋष्व**) विद्या से पूर्ण (**इन्द्र**) अत्यन्त ऐश्वर्य की प्राप्ति करानेवाले! जो (**नरः**) प्रधान पुरुष (**तुभ्यम्**) आपके लिये (**पर्वताः**) मेघ और (**आपः**) जल के समान (**गोभिः**) पृथिवी आदि पदार्थों के सहित (**इमम्**) इस वर्त्तमान (**मधुमन्तम्**) मधुर आदि बहुत रसों से युक्त पदार्थ को (**सम्, अक्रन्**) अच्छे प्रकार करें उनका (**पाहि**) पालन करो (**सुमनाः**) और ईर्ष्यारहित मनवाले आप (**प्रजानन्**) जानते और (**विद्वान्**) विद्वान् होते हुए (**तस्य**) उस काम की (**स्वाः, पथ्याः**) मार्ग से निज चालियों को (**आगत्य**) प्राप्त होकर सबका (**अनु**) पालन करो॥८॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे वृष्टियों से सबका पालन होता है, वैसे ही विमान आदि वाहन बनानेवाले जन संसार में सबके रक्षा करनेवाले होते हैं॥८॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**याँ आभ॑जो म॒रुत॑ इन्द्र॒ सोमे॒ ये त्वामव॑र्ध॒न्नभ॑वन् ग॒णस्ते॑।**

**तेभि॑रे॒तं स॒जोषा॑ वावश॒ानो॒३॑ग्नेः पि॑ब जि॒ह्वया॒ सोम॑मिन्द्र॥९॥**

**यान्। आ। अभ॑जः। म॒रुत॑ः। इ॒न्द्र॒। सोमे॑। ये। त्वाम्। अव॑र्धन्। अभ॑वन्। ग॒णः। ते॒। तेभि॑ः। ए॒तम्। स॒ऽजोषा॑ः। वा॒व॒श॒ानः। अ॒ग्नेः। पि॒ब॒। जि॒ह्वया॑। सोम॑म्। इ॒न्द्र॒॥९॥**

**पदार्थः**-(**यान्**) विदुषः (**आ**) (**अभजः**) सेवेथाः (**मरुतः**) प्राणानिव प्रियानाप्तान् (**इन्द्र**) सकलैश्वर्यप्रद (**सोमे**) ऐश्वर्य्ये (**ये**) (**त्वाम्**) (**अवर्धन्**) वर्धयेयुः (**अभवन्**) भवेयुः (**गणः**) समूहः (**ते**)



www.9009.co.in

तव **(तेभिः)** तैस्सह **(एतम्)** **(सजोषाः)** समानप्रीतिसेवी **(वावशानः)** भृशं कामयमानः **(अग्नेः)** पावकस्य **(पिब)** **(जिह्वया)** ज्वालेव वर्त्तमानया **(सोमम्)** रसम् **(इन्द्र)** दुःखविदारक॥९॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! त्वं सोमे यान् विदुषो मरुता इवाभजो ये सोमे त्वामवर्धन् यस्ते गणस्तं प्राप्याऽऽनन्दिता अभवँस्तेभिः सह हे इन्द्र! सजोषा वावशानः सन्नग्नेर्जिह्वयैतं सोमं पिब॥९॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यदि प्राणानिव प्रियानाप्तान् विदुषो मनुष्याः सेवेरन् तर्ह्येतांस्ते सर्वतो वर्धयेयुर्यथाऽग्निर्ज्वालया सर्वान् रसान् पिबति तथैव तीव्रक्षुधा सह वर्त्तमानोऽन्नं भुञ्जीत पेयं पिबेच्च॥९॥

**पदार्थः**-हे **(इन्द्र)** सम्पूर्ण ऐश्वर्य्य के देनेवाले! आप ऐश्वर्य्य में **(यान्)** जिन विद्वानों को **(मरुतः)** प्राणों के सदृश प्रिय और श्रेष्ठ जान के **(आ, अभजः)** सेवन करो **(ये)** जो लोग **(सोमे)** ऐश्वर्य में **(त्वाम्)** आपकी **(अवर्धन्)** वृद्धि करें जो **(ते)** आपका **(गणः)** समूह उसको प्राप्त होके आनन्दित **(अभवन्)** होवें **(तेभिः)** उन लोगों के साथ **(इन्द्र)** हे दुःख के नाश करनेवाले! **(सजोषाः)** तुल्य प्रीति के सेवनकर्त्ता **(वावशानः)** अत्यन्त कामना करते हुए आप **(अग्नेः)** अग्नि की **(जिह्वया)** ज्वाला के सदृश वर्त्तमान गुण से **(एतम्)** इस **(सोमम्)** सोम रस का **(पिब)** पान करो॥९॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो प्राण के सदृश प्रिय और श्रेष्ठ विद्वान् जनों की मनुष्य लोग सेवा करें तो इन मनुष्यों की वे विद्वान् लोग सब प्रकार वृद्धि करें और जैसे अग्नि ज्वाला से सम्पूर्ण रसों का पान करता है, वैसे ही तीक्ष्ण क्षुधा के सहित वर्त्तमान पुरुष अन्न का भोजन करे और पान करने योग्य वस्तु का पान करे॥९॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहा है॥

**इन्द्र पिब स्वधया चित्सुतस्याग्नेर्वा पाहि जिह्वया यजत्र।**

**अध्वर्योर्वा प्रयतं शक्र हस्ताद्धोतुर्वा यज्ञं हविषो जुषस्व॥१०॥**

**इन्द्र। पिब। स्वधया। चित्। सुतस्य। अग्नेः। वा। पाहि। जिह्वया। यजत्र। अध्वर्योः। वा। प्रऽयतम्। शक्र। हस्तात्। होतुः। वा। यज्ञम्। हविषः। जुषस्व॥१०॥**

**पदार्थः**-**(इन्द्र)** ऐश्वर्य्यवन् **(पिब)** **(स्वधया)** अन्नेन **(चित्)** अपि **(सुतस्य)** निष्पन्नस्य **(अग्नेः)** पावकस्य **(वा)** **(पाहि)** **(जिह्वया)** ज्वालेव वर्त्तमानया **(यजत्र)** पूजनीय **(अध्वर्योः)** य आत्मनोऽध्वरमिच्छति तस्य **(वा)** **(प्रयतम्)** प्रयत्नेन सिद्धम् **(शक्र)** शक्तिमन् **(हस्तात्)** **(होतुः)** दातुः **(वा)** **(यज्ञम्)** **(हविषः)** साकल्यात् **(जुषस्व)** सेवस्व॥१०॥

**अन्वयः**-हे यजत्र शक्रेन्द्र! त्वमग्नेर्ज्वालेव जिह्वया स्वधया वा चित्सुतस्य रसं पिब अध्वर्योर्वा प्रयतं यज्ञं पाहि। होतुर्हस्ताद्धविषो वा यज्ञं जुषस्व॥१०॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यैर्मनुष्यैः सुसाधितस्याऽन्नस्य भोजनं रसस्य पानं कृत्वाऽरोगा भूत्वा विद्वद्भिः सह सङ्गत्य यज्ञः सेव्येत ते सदा सुखिनः स्युः॥१०॥

**पदार्थः**-हे **(यजत्र)** आदर करने योग्य **(शक्र)** शक्तिमान् **(इन्द्र)** ऐश्वर्यवाले! आप **(अग्नेः)** अग्नि की **(जिह्वया)** ज्वाला के सदृश वर्त्तमान लपट से **(वा)** वा **(स्वधया)** अन्न से **(चित्)** भी **(सुतस्य)** सिद्ध हुए रस का **(पिब)** पान करिये **(अध्वर्योः)** आत्मसम्बन्धी यज्ञ की इच्छा करते हुए पुरुष के **(वा)** अथवा **(प्रयतम्)** प्रयत्न से सिद्ध **(यज्ञम्)** यज्ञ का **(पाहि)** पालन करो **(होतुः)** देनेवाले के **(हस्तात्)** हाथ और **(हविषः)** हवन की सामग्री से **(वा)** अथवा यज्ञ का **(जुषस्व)** सेवन करो॥१०॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जिन मनुष्यों से उत्तम प्रकार सिद्ध किये हुए अन्न का भोजन और रस का पान कर रोगरहित हो और विद्वानों के साथ मेल करके यज्ञ का सेवन किया जाये, वे सदा सुखी होवें॥१०॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहा है॥

**शुनं हुवेम मघवानमिन्द्रमस्मिन् भरे नृतमं वाजसातौ।**

**शृण्वन्तमुग्रमूतये समत्सु घ्नन्तं वृत्राणि संजितं धनानाम्॥११॥१८॥**

**शुनम्। हुवेम। मघऽवानम्। इन्द्रम्। अस्मिन्। भरे। नृऽतमम्। वाजऽसातौ। शृण्वन्तम्। उग्रम्। ऊतये। समत्ऽसु। घ्नन्तम्। वृत्राणि। सम्ऽजितम्। धनानाम्॥११॥**

**पदार्थः**-**(शुनम्)** सुखकरम् **(हुवेम)** **(मघवानम्)** बहुधनयुक्तम् **(इन्द्रम्)** परमैश्वर्यम् **(अस्मिन्)** शिल्पव्यवहारे **(भरे)** संग्रामे **(नृतमम्)** पुरुषोत्तमम् **(वाजसातौ)** अन्नानां विभागे **(शृण्वन्तम्)** सत्पुरुषवचनानां श्रोतारम् **(उग्रम्)** तेजस्विनम् **(ऊतये)** रक्षणाद्याय **(समत्सु)** संग्रामेषु **(घ्नन्तम्)** नाशयन्तम् **(वृत्राणि)** अस्मद्बलाऽऽवरकाणि शत्रुसैन्यानि **(सञ्जितम्)** **(धनानाम्)** विद्यासुवर्णादीनाम्॥११॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथा वयमूतये समत्सु वृत्राणि सूर्य इव शत्रून् घ्नन्तमुग्रं शृण्वन्तं धनानां सञ्जितमस्मिन् भरे वाजसातौ नृतमं शुनं मघवानमिन्द्रं हुवेम तथाऽप्येतं यूयमपि प्रशंसत॥११॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! येषां निष्फलं कर्म नास्ति तान् सर्वस्य रक्षणाय यूयं वृणुतेति॥११॥

अत्राग्न्यादीनां पदार्थानां तुरङ्गदृष्टान्तेनोपदेशादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति पञ्चत्रिंशत्तमं सूक्तमष्टादशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे हम लोग **(ऊतये)** रक्षा आदि के लिये **(समत्सु)** संग्रामों में **(वृत्राणि)** हम लोगों के बल को घेरनेवाली शत्रु की सेनाओं को सूर्य्य के सदृश शत्रुओं के **(घ्नन्तम्)** नाशकारक **(उग्रम्)** तेजस्वी **(शृण्वन्तम्)** सत्पुरुष के वचनों के सुनने **(धनानाम्)** विद्या और सुवर्ण आदिकों के



www.9009.co.in

**(सञ्जितम्)** उत्तम प्रकार जीतनेवाले **(अस्मिन्)** इस शिल्प व्यवहार, **(वाजसातौ)** अन्नों के विभाग और **(भरे)** युद्ध में **(नृतमम्)** पुरुषोत्तम **(शुनम्)** सुखकारक **(मघवानम्)** बहुत धनयुक्त **(इन्द्रम्)** परम ऐश्वर्यवाले जन को **(हुवेम)** प्रशंसा से पुकारें, वैसे इसकी आप लोग भी प्रशंसा करें॥११॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जिन लोगों का निष्फल कर्म नहीं है, उनको सबकी रक्षा के लिये आप लोग स्वीकार करें॥११॥

इस सूक्त में अग्नि आदि पदार्थों और घोड़े के दृष्टान्त से उपदेश करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह पैंतीसवां सूक्त और अठारहवां वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

**अथैकादशर्चस्य षट्त्रिंशत्तमस्य सूक्तस्य १-९, ११ विश्वामित्रः। १० घोर आङ्गिरस ऋषिः। इन्द्रो देवता। १, ७, १०, ११ त्रिष्टुप्। २, ३, ६, ८ निचृत्त्रिष्टुप्। ९ विराट् त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः। ४ भुरिक् पङ्क्तिः। ५ स्वराट् पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः॥**

***अथ मनुष्याः केनाचरणेन सुखमाप्नुयुरित्याह॥***

अब ग्यारह ऋचावाले छत्तीसवें सूक्त का प्रारम्भ है। उसके पहिले मन्त्र से मनुष्य किस प्रकार के आचरण से सुख को प्राप्त हों, इस विषय को कहते हैं॥

**इ॒माम् ॒ षु प्रभृ॑तिं सा॒तये॑ धाः॒ शश्व॑च्छश्वदू॒तिभि॒र्याद॑मानः।**
**सु॒तेसु॑ते वावृधे॒ वर्ध॑नेभि॒र्यः कर्म॑भिर्म॒हद्भिः॒ सुश्रु॑तो॒ भूत्॥ १॥**

**इ॒माम्। ऊ॒म् इति॑। सु। प्रऽभृ॑तिम्। सा॒तये॑। धाः॒। शश्व॑त्ऽशश्वत्। ऊ॒तिऽभिः॑। याद॑मानः। सु॒तेऽसु॑ते। व॒वृ॒धे। वर्ध॑नेऽभिः। यः। कर्म॑ऽभिः। म॒हत्ऽभिः॑। सुऽश्रु॑तः। भूत्॥ १॥**

**पदार्थः**-(**इमाम्**) (उ) वितर्के (**सु**) शोभने (**प्रभृतिम्**) प्रकृष्टां धारणाम् (**सातये**) संविभागाय (**धाः**) दध्याः (**शश्वच्छश्वत्**) व्यापकं व्यापकं वस्तु (**ऊतिभिः**) रक्षणादिभिः (**यादमानः**) याचमानः। अत्र वर्णव्यत्ययेन चस्य दः। (**सुतेसुते**) निष्पन्ने निष्पन्ने पदार्थे (**वावृधे**) वर्धेत (**वर्धनेभिः**) वर्धकैः साधनैः (**यः**) (**कर्मभिः**) कर्त्तुरीप्सिततमैः (**महद्भिः**) (**सुश्रुतः**) शोभनं श्रुतं यस्य सः (**भूत्**) भवेत्। अत्राडभावः॥१॥

**अन्वयः**-हे विद्वन्! यो विद्यां यादमानस्त्वमूतिभिः सातय इमां प्रभृतिं शश्वच्छश्वद्वस्तु च सु धा वर्धनेभिर्महद्भिः कर्मभिः सुतेसुते वावृधे स उ सुश्रुतो भूत्॥१॥

**भावार्थः**-ये मनुष्या कार्य्यविज्ञानमारभ्य परस्परं सूक्ष्मकारणपर्य्यन्तं विभुं पदार्थं विज्ञाय उपयुञ्जीरन् तेऽत्र जगति वर्धेरन्। ये विद्वद्भ्यो विद्यामेव याचन्ते ते बहुश्रुतो जायन्ते॥१॥

**पदार्थः**-हे विद्वान् पुरुष! (**यः**) जो विद्या की (**यादमानः**) याचना करते हुए आप (**ऊतिभिः**) रक्षण आदिकों से (**सातये**) संविभाग के लिये (**इमाम्**) इस (**प्रभृतिम्**) उत्तम धारणा और (**शश्वच्छश्वत्**) व्यापक व्यापक वस्तु को (**सु**) उत्तम प्रकार (**धाः**) धारण करें, (**वर्धनेभिः**) वृद्धि के साधनों और (**महद्भिः**) बड़े (**कर्मभिः**) करनेवाले के अतीव चाहे हुए व्यवहारों से (**सुतेसुते**) उत्पन्न उत्पन्न हुए पदार्थ में (**वावृधे**) बढ़े (**उ**) वही (**सुश्रतः**) उत्तम प्रकार श्रोता (**भूत्**) होवे॥१॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य कार्य्य के विज्ञान का प्रारम्भ करके पर पर अर्थात् बड़े से छोटे, उससे और छोटे, उससे भी छोटे इत्यादि सूक्ष्म कारण पर्य्यन्त व्यापक परमाणुरूप पदार्थ को जान कर उपयोग करें, कार्य में लावें, वे इस संसार में अत्यन्त वृद्धि को प्राप्त होवें और जो लोग विद्वान् जनों से केवल विद्या की ही याचना करते हैं, वे बहुश्रुत होते हैं॥१॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**



www.9009.co.in

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहा है॥

**इन्द्रा॑य॒ सोमा॑: प्र॒दिवो॒ विदा॑ना ऋ॒भुर्येभि॒र्वृष॑पर्वा॒ विहा॑याः।**

**प्र॒य॒म्यमा॑नान् प्रति॒ षू गृ॑भा॒येन्द्र॒ पिब॒ वृष॑धूतस्य॒ वृष्ण॑:॥ २॥**

**इन्द्रा॑य। सोमा॑:। प्र॒ऽदिव॑:। विदा॑नाः। ऋ॒भुः। येभि॑:। वृष॑ऽपर्वा। वि॒ऽहा॑याः। प्र॒ऽय॒म्यमा॑नान्। प्रति॑। सु। गृ॒भा॒य॒। इन्द्र॑। पिब॑। वृष॑ऽधूतस्य। वृष्ण॑:॥ २॥**

**पदार्थः**-(**इन्द्राय**) परमैश्वर्याय (**सोमाः**) ये सुन्वन्ति सूयन्ते वा ते पदार्थाः (**प्रदिवः**) प्रकृष्टा द्यौः प्रकाशमाना विद्या येषान्ते (**विदानाः**) लभमानाः (**ऋभुः**) मेधावी। **ऋभुरिति मेधाविनामसु पठितम्।** (निघं०३.१५) (**येभिः**) यैः (**वृषपर्वा**) वृषाणि समर्थानि पर्वाणि पालनानि यस्य सः। (**विहायाः**) योऽनर्थान् विजहाति सः (**प्रयम्यमानान्**) प्रकर्षेण प्रापितनियमान् (**प्रति**) (**सु**) (**गृभाय**) गृहाण (**इन्द्र**) ऐश्वर्य्ययुक्त (**पिब**) (**वृषधूतस्य**) वृषैः सेचनैर्यो धूतो विलोडितस्तस्य (**वृष्णः**) वर्धकस्य॥ २॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथा वृषपर्वा विहाया ऋभुर्येभिः प्रयम्यमानान् जानाति तथेन्द्राय सोमाः प्रदिवो विदानाः सन्त्यैतान् यूयं विजानीत। हे इन्द्र! त्वमेतान् प्रति सुगृभाय वृषधूतस्य वृष्णो रसं पिब॥ २॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! इह संसारे यथाऽऽप्ता दुष्टं व्यवहारं त्यक्त्वा श्रेष्ठमाचर्य्य युक्ताहारविहारेणारोगा दीर्घायुषो भवन्ति तथैव यूयमपि भवत॥ २॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे (**वृषपर्वा**) समर्थ पालनोंवाला (**विहायाः**) अनर्थों का नाशकारी (**ऋभुः**) बुद्धिमान् जन (**येभिः**) जिन लोगों से (**प्रयम्यमानान्**) अत्यन्त नियमयुक्तों को जानता है, वैसे (**इन्द्राय**) अत्यन्त ऐश्वर्य्य के लिये (**सोमाः**) उत्पन्न करनेवाले वा उत्पन्न किये गये पदार्थ (**प्रदिवः**) प्रकाशित विद्यायुक्त (**विदानाः**) प्राप्त हुए हों, इनको आप लोग जानिये (**इन्द्र**) हे ऐश्वर्य्य से युक्त पुरुष! आप इन लोगों को (**प्रति, सु, गृभाय**) अच्छे प्रकार ग्रहण कीजिये और (**वृषधूतस्य**) सेचनों से मथे हुए (**वृष्णः**) बढ़ानेवाले रस का (**पिब**) पान कीजिये॥ २॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! इस संसार में जैसे श्रेष्ठ यथार्थवक्ता पुरुष दुष्ट व्यवहार का त्याग और श्रेष्ठ आचरण का ग्रहण करके नियमित आहार-विहार से रोगरहित और अधिक अवस्थावाले होते हैं, वैसे ही आप लोग भी हूजिये॥ २॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**पिबा॒ वर्ध॑स्व॒ तव॑ घा सु॒तास॒ इन्द्र॒ सोमा॑सः प्रथ॒मा उ॒तेमे।**

**यथापि॑बः पू॒र्व्याँ इ॑न्द्र॒ सोमाँ॑ ए॒वा पा॑हि॒ पन्यो॒ अ॒द्या नवी॑यान्॥ ३॥**



www.9009.co.in

**पिब। वर्धस्व। तव। घ। सुतासः। इन्द्र। सोमासः। प्रथमाः। उत। इमे। यथा। अपिबः। पूर्व्यान्। इन्द्र। सोमान्। एव। पाहि। पन्यः। अद्य। नवीयान्॥ ३॥**

**पदार्थः**-(**पिब**)। अत्र **द्व्यचोऽतस्तिङ** इति दीर्घः। (**वर्धस्व**) (**तव**) (**घा**) एव। अत्र **निपातस्य चेति** दीर्घः। (**सुतासः**) निष्पन्नाः (**इन्द्र**) ऐश्वर्य्यमिच्छो (**सोमासः**) ऐश्वर्य्यकराः पदार्थाः (**प्रथमाः**) आदिमाः (**उत**) (**इमे**) (**यथा**) (**अपिबः**) पिबति (**पूर्व्यान्**) पूर्वैनिष्पादितान् (**इन्द्र**) (**सोमान्**) उत्तमान् सोमरसैश्वर्य्यादियुक्तान् (**एव**) निश्चये (**पाहि**) (**पन्यः**) स्तुत्यः (**अद्य**) इदानीम्। अत्र **संहितायामि**ति दीर्घः। (**नवीयान्**) नूतनः॥ ३॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! यथा पन्यो नवीयाँस्त्वमद्य पूर्व्यान् सोमानपिबस्तथैतान् पाहि। हे इन्द्र! तव य इमे प्रथमाः सुतासः सोमासो घ सन्ति तान् पाहि उतोत्तमान् रसान् पिब तैरेव वर्धस्व॥ ३॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। ये मनुष्याः सुसंस्कृतान् रसान् पिबेयुस्ते वर्धेरन्। ये वृद्धा भूत्वा धर्ममाचरेयुस्ते सर्वैश्वर्य्यमाप्नुयुः॥ ३॥

**पदार्थः**-हे (**इन्द्र**) ऐश्वर्य की इच्छा करनेवाले! (**यथा**) जैसे (**पन्यः**) स्तुति करने योग्य (**नवीयान्**) नवीन आप (**अद्य**) इस समय (**पूर्व्यान्**) पूर्व हुए जनों से उत्पन्न (**सोमान्**) श्रेष्ठ सोमलता रसरूप ऐश्वर्य आदि से युक्त पदार्थों का (**अपिबः**) पान करते हैं, वैसे ही उनका (**पाहि**) पालन करो। (**इन्द्र**) हे तेजस्वी उन (**तव**) आपके जो (**इमे**) ये (**प्रथमाः**) पहिले (**सुतासः**) उत्पन्न हुए (**सोमासः**) ऐश्वर्य करनेवाले पदार्थ (**घ**) ही हैं, उनका पालन करो (**उत**) और उत्तम रसों का (**पिब**) पान करो उनसे (**एव**) ही (**वर्धस्व**) वृद्धि को प्राप्त होओ॥ ३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जो मनुष्य उत्तम प्रकार संस्कारयुक्त रसों का पान करें, उनकी वृद्धि होवे और जो वृद्धि को प्राप्त होकर धर्म का आचरण करें, वे सम्पूर्ण ऐश्वर्य को प्राप्त होवें॥ ३॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहा है॥

**महाँ अमत्रो वृजने विरप्श्युग्रं शवः पत्यते धृष्णवोजः।**
**नाह विव्याच पृथिवी चनैनं यत्सोमासो हर्यश्वममन्दन्॥ ४॥**

**महान्। अमत्रः। वृजने। विऽरप्शी। उग्रम्। शवः। पत्यते। धृष्णु। ओजः। न। अह। विव्याच। पृथिवी। चन। एनम्। यत्। सोमासः। हरिऽअश्वम्। अमन्दन्॥ ४॥**

**पदार्थः**-(**महान्**) (**अमत्रः**) ज्ञानवान् (**वृजने**) बले (**विरप्शी**) विविधा विरप्शा प्रसिद्धा उपदेशा विद्यन्ते यस्य सः (**उग्रम्**) कठिनं दृढम् (**शवः**) बलम् (**पत्यते**) प्राप्नोति (**धृष्णु**) प्रगल्भम् (**ओजः**)



www.9009.co.in

पराक्रमः **(न)** निषेधे **(अह)** विनिग्रहे **(विव्याच)** छलयति **(पृथिवी)** भूमिः **(चन)** **(एनम्)** **(यत्)** ये **(सोमासः)** ऐश्वर्ययुक्ताः **(हर्यश्वम्)** हरयो हरणशीला अश्वा यस्य तम् **(अमन्दन्)** आनन्दयेयुः॥४॥

**अन्वयः**-योऽमत्रो विरप्शी महान् वृजने उग्रं शवो धृष्णवोजः पत्यते। एनं कश्चन न विव्याचाह एनं पृथिवी प्राप्नुयात् यद्यं हर्यश्वं सोमासोऽमन्दन्त्स तान् सततं हर्षयेत्॥४॥

**भावार्थः**-मनुष्येषु स एव महान् भवति यः शरीरात्मसेनामित्रबलाऽरोग्यधर्मविद्या वर्धयति स छलादिदोषांस्त्यक्त्वा सर्वोपकारं करोति॥४॥

**पदार्थः**-जो **(अमत्रः)** ज्ञानी **(विरप्शी)** अनेक प्रकार के प्रसिद्ध उपदेशों से पूर्ण **(महान्)** श्रेष्ठ **(वृजने)** बल में **(उग्रम्)** कठिन दृढ़ **(शवः)** बल और **(धृष्णु)** प्रचण्ड **(ओजः)** पराक्रम **(पत्यते)** प्राप्त होता है **(एनम्)** इसको कोई पुरुष **(चन)** कुछ **(न)** नहीं **(विव्याच)** छलता है, **(अह)** हा! इसको **(पृथिवी)** भूमि प्राप्त होवे **(यत्)** जिस **(हर्यश्वम्)** ले चलनेवाले घोड़ोंयुक्त जन को **(सोमासः)** ऐश्वर्य से युक्त पुरुष **(अमन्दन्)** पसन्द करें, वह उनको निरन्तर प्रसन्न करे॥४॥

**भावार्थः**-मनुष्यों में वही पुरुष श्रेष्ठ होता है जो शरीर, आत्मा, सेना, मित्र, बल, आरोग्य, धर्म और विद्या की वृद्धि करता है, वह छल आदि दोषों का त्याग करके सबका उपकार करता है॥४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहा है॥

**म॒हाँ उ॒ग्रो वा॑वृधे वी॒र्या॑य स॒माच॑क्रे वृष॒भः काव्ये॑न।**

**इन्द्रो॒ भगो॑ वाज॒दा अ॒स्य॒ गाव॒: प्र जा॑यन्ते॒ दक्षि॑णा अस्य पू॒र्वीः॥५॥१९॥**

**म॒हान्। उ॒ग्रः। व॒वृ॒धे। वी॒र्या॑य। स॒म्ऽआच॑क्रे। वृ॒ष॒भः। काव्ये॑न। इन्द्रः॑। भगः॑। वा॒ज॒ऽदाः। अ॒स्य॒। गावः॑। प्र। जा॒य॒न्ते॒। दक्षि॑णाः। अ॒स्य॒। पू॒र्वीः॥५॥**

**पदार्थः**-**(महान्)** पूज्यतमो महाशयः **(उग्रः)** तीव्रभाग्योदयः **(वावृधे)** वर्धते **(वीर्याय)** बलाय **(समाचक्रे)** समाकरोति **(वृषभः)** बलिष्ठः **(काव्येन)** कविना मेधाविना निर्मितेन शास्त्रेण **(इन्द्रः)** ऐश्वर्यवान् **(भगः)** भजनीयः **(वाजदाः)** यो वाजमन्नादिकं ददाति सः **(अस्य)** **(गावः)** धेनवः **(प्र)** **(जायन्ते)** उत्पद्यन्ते **(दक्षिणाः)** दानानि **(अस्य)** **(पूर्वीः)** पूर्णाः॥५॥

**अन्वयः**-यो वाजदा भगो वृषभ उग्रो महानिन्द्रः काव्येन वीर्याय वावृधे समाचक्रेऽस्य गावोऽस्य दक्षिणाः पूर्वीः प्रजायन्ते॥५॥

**भावार्थः**-यो विद्वान् सुपात्रकुपात्रौ सुपरीक्ष्य सत्काराऽपकारौ करोति तस्यैव सर्वे पशव आनन्दाश्चोपकृता भवन्ति॥५॥

**पदार्थः**-जो **(वाजदाः)** अन्न आदि का देनेवाला **(भगः)** सेवा करने योग्य **(वृषभः)** बलयुक्त **(उग्रः)** उत्तम भाग्योदय विशिष्ट **(महान्)** अति आदर करने योग्य महाशय **(इन्द्रः)** ऐश्वर्य्यवाला **(काव्येन)**



www.9009.co.in

बुद्धिमान पुरुष ने बनाये हुए शास्त्र से **(वीर्याय)** बल के लिये **(वावृधे)** बढ़ता और **(समाचक्रे)** संयुक्त करता है **(अस्य)** इस पुरुष की **(गाव:)** गौवें और **(अस्य)** इसकी **(दक्षिणा:)** दान कर्म **(पूर्वी:)** पूर्ण रूप से सिद्ध **(प्र, जायन्ते)** होते हैं॥५॥

**भावार्थ:**-जो विद्यावान् पुरुष श्रेष्ठ और अश्रेष्ठ सुपात्र-कुपात्रों की उत्तम प्रकार परीक्षा करके सत्कार और अपकार यथायोग्य करता है, उसी पुरुष के सम्पूर्ण पशु और आनन्द उपकारयुक्त होते हैं॥५॥

**अथ विद्वद्गुणानाह॥**

अब विद्वान् के गुणों को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**प्र यत्सिन्धवः प्रसवं यथायन्नापः समुद्रं रथ्येव जग्मुः।**

**अतश्चिदिन्द्रः सदसो वरीयान् यदीं सोमः पृणति दुग्धो अंशुः॥६॥**

**प्र। यत्। सिन्धवः। प्रऽसवम्। यथा। आयन्। आपः। समुद्रम्। रथ्याऽइव। जग्मुः। अतः। चित्। इन्द्रः। सदसः। वरीयान्। यत्। ईम्। सोमः। पृणति। दुग्धः। अंशुः॥६॥**

**पदार्थ:**-**(प्र)** **(यत्)** ये **(सिन्धवः)** नद्यः **(प्रसवम्)** प्रसूयन्ते यस्मात्तं मेघम् **(यथा)** **(आयन्)** गच्छन्ति **(आपः)** जलानि **(समुद्रम्)** अन्तरिक्षम् **(रथ्येव)** रथेषु साध्वी गतिरिव **(जग्मुः)** **(अतः)** **(चित्)** अपि **(इन्द्रः)** राजा **(सदसः)** सभाः **(वरीयान्)** **(यत्)** यः **(ईम्)** जलम् **(सोमः)** ओषधिगणः **(पृणति)** सुखयति **(दुग्धः)** प्रपूर्णः **(अंशुः)** ओषधिसारः॥६॥

**अन्वय:**-यथा सिन्धवः प्रसवमापः समुद्रमायँस्तथा यद्ये शुभान् गुणानीयू रथ्येव सर्वत्र प्रजग्मुस्तैः सह चिद्यदिन्द्रो वरीयान् सन् सदसो गच्छदतः स दुग्धोंऽशुः सोम ईं प्राप्त इव सर्वान् पृणति॥६॥

**भावार्थ:**-अत्रोपमावाचकलुप्तोपमालङ्कारौ। ये मनुष्या निर्वैरा भूत्वा सर्वेषामुपकारं कर्त्तुमिच्छेयुस्तान् प्रति नद्यः समुद्रमिव जलान्यन्तरिक्षमिवाऽऽभिमुख्यं गच्छन्ति तेभ्यः सुशिक्षां प्राप्य सुषिक्त ओषधिगण इव सर्वान् सुखयितुं प्रभवन्ति॥६॥

**पदार्थ:**-**(यथा)** जैसे **(सिन्धवः)** नदियां **(प्रसवम्)** मेघ को वा **(आपः)** जल **(समुद्रम्)** अन्तरिक्ष को **(आयन्)** प्राप्त होते हैं, जैसे **(यत्)** जो उत्तम गुणों को प्राप्त होवें वा **(रथ्येव)** रथों में जो उत्तम चाल उसके सदृश सब स्थानों में **(प्र, जग्मुः)** प्राप्त हुए उनके साथ **(चित्)** भी **(यत्)** जो **(इन्द्रः)** राजा **(वरीयान्)** श्रेष्ठ पुरुष होता हुआ **(सदसः)** सभाओं को प्राप्त होवे **(अतः)** इससे वह **(दुग्धः)** गुणों से पूर्ण **(अंशुः)** ओषधियों का सार भाग और **(सोमः)** ओषधियों का समूह **(ईम्)** जल को जैसे प्राप्त हो, वैसे सम्पूर्ण प्राणियों को **(पृणति)** सुख देता है॥६॥

**भावार्थ:**-इस मन्त्र में उपमा और वाचकलुप्तोपमालङ्कार हैं। जो मनुष्य वैर को त्याग के सम्पूर्ण प्राणियों के उपकार करने की इच्छा करें उनके प्रति जैसे नदियां समुद्र को और जल अन्तरिक्ष के सम्मुख



www.9009.co.in

को प्राप्त होते हैं, वैसे सम्मुख जाते हैं, उनसे उत्तम शिक्षा को प्राप्त उत्तम प्रकार से सींचे गये औषधियों के समूह के सदृश सम्पूर्ण प्राणियों के सुख देने को समर्थ होते हैं॥६॥

**अथ राजप्रजागुणानाह॥**

अब राजा और प्रजा के गुणों को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**स॒मु॒द्रेण॒ सिन्ध॑वो॒ याद॑माना॒ इन्द्रा॑य॒ सोमं॒ सुषु॑तं॒ भर॑न्तः।**

**अं॒शुं दु॑हन्ति ह॒स्तिनो॑ भ॒रित्रै॒र्मध्वः॑ पुनन्ति॒ धार॑या प॒वित्रैः॑॥७॥**

**स॒मु॒द्रेण॑। सिन्ध॑वः। याद॑मानाः। इन्द्रा॑य। सोम॑म्। सु॒ऽसु॑तम्। भर॑न्तः। अं॒शुम्। दु॒ह॒न्ति॒। ह॒स्तिनः॑। भ॒रित्रैः॑। मध्वः॑। पु॒न॒न्ति॒। धार॑या। प॒वित्रैः॑॥७॥**

**पदार्थः**-(**समुद्रेण**) सागरेण सह (**सिन्धवः**) नद्य इव (**यादमानाः**) याचमानाः (**इन्द्राय**) ऐश्वर्य्याय (**सोमम्**) पदार्थसमूहम् (**सुषुतम्**) सुष्ठु निष्पादितम् (**भरन्तः**) धरन्तः पुष्णन्तः (**अंशुम्**) सारम् (**दुहन्ति**) पिपुरति (**हस्तिनः**) प्रशस्ता हस्ता विद्यन्ते येषान्ते (**भरित्रैः**) धृतैः पोषितैः साधनैः (**मध्वः**) मधुरस्य (**पुनन्ति**) (**धारया**) (**पवित्रैः**) शुद्धैः॥७॥

**अन्वयः**-ये समुद्रेण सिन्धव इव विदुषः सङ्गत्येन्द्राय विद्यां यादमानाः सुषुतमंशुं सोमं भरन्तो हस्तिनो मध्वः पवित्रैर्भरित्रैर्धारया पुनन्ति ते कामं दुहन्ति॥७॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यथा सर्वतो जलादिकं हृत्वा नद्यो वेगेन गत्वा समुद्रं प्राप्य रत्नवत्यः सत्यः शुद्धजला भवन्ति तथैव ब्रह्मचर्य्येण विद्या धृत्वा तीव्रसंवेगेनालंज्ञाना भूत्वा पवित्रोपचिताः परमेश्वरं प्राप्य सिद्धिमन्तो भूत्वा शुद्धाऽऽनन्दा मनुष्या जायन्ते॥७॥

**पदार्थः**-जो (**समुद्रेण**) सागर के साथ (**सिन्धवः**) नदियां जैसे वैसे विद्वानों के साथ मेल करके (**इन्द्राय**) ऐश्वर्य्य के लिये विद्या की (**यादमानाः**) याचना करते हुए (**सुषुतम्**) उत्तम प्रकार उत्पन्न (**अंशुम्**) सारभाग और (**सोमम्**) पदार्थों के समूह को (**भरन्तः**) धारण और पुष्ट करते हुए (**हस्तिनः**) उत्तम हाथों से युक्त पुरुष (**मध्वः**) मधुरगुण सम्बन्धी (**पवित्रैः**) उत्तम शुद्ध (**भरित्रैः**) धारण और पोषण किये गये धनों के साथ (**धारया**) तीक्ष्ण धार से (**पुनन्ति**) पवित्र करते हैं, वे काम को (**दुहन्ति**) पूर्ण करते हैं॥७॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे सब ओर से जल आदि का ग्रहण कर नदियां वेग से समुद्र का प्राप्त हो रत्नवाली और शुद्ध जलयुक्त होती हैं, वैसे ही ब्रह्मचर्य्य से विद्याओं को धारण करके तीक्ष्ण बुद्धि से पूर्ण ज्ञानवाले हो पवित्र हुए और परमेश्वर को प्राप्त होकर सिद्धियों से परिपूर्ण शुद्ध आनन्दी मनुष्य होते हैं॥७॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥



www.9009.co.in

**हृदाइव कुक्षयः सोमधानाः समी विव्याच सवना पुरूणि।**

**अन्ना यदिन्द्रः प्रथमा व्याश वृत्रं जघन्वाँ अवृणीत सोमम्॥८॥**

**हृदाःऽईव। कुक्षयः। सोमऽधानाः। सम्। ईमिति। विव्याच। सवना। पुरूणि। अन्ना। यत्। इन्द्रः। प्रथमा। वि। आश। वृत्रम्। जघन्वान्। अवृणीत। सोमम्॥८॥**

**पदार्थः**-(**हृदाइव**) यथा गम्भीरा जलाशयास्तथा (**कुक्षयः**) उभयत उदरावयवाः (**सोमधानाः**) सोमानां धानाः येषु ते (**सम्**) (**ईम्**) जलम् (**विव्याच**) छलयति (**सवना**) सुन्वन्ति येषु तानि (**पुरूणि**) बहूनि (**अन्ना**) अन्नानि (**यत्**) यः (**इन्द्रः**) सूर्य्य इव महाप्रकाशः (**प्रथमा**) प्रख्यातानि (**वि**) (**आश**) अश्नाति (**वृत्रम्**) मेघम् (**जघन्वान्**) हतवान् (**अवृणीत**) स्वीकरोति (**सोमम्**) ओषधिगणम्॥८॥

**अन्वयः**-यस्य कुक्षयः सोमधाना हृदाइव सन्ति यद्यः पुरूणि सवना प्रथमा अन्ना ईं संविव्याच स इन्द्रो वृत्रं जघन्वान् सूर्य्य इव सोममवृणीत स्वादिष्ठान् भोगान् व्याश॥८॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। ये गम्भीराशयाः सूर्य्यवत्प्रतापवन्तो धृतैश्वर्य्याः स्वपरदोषान् हत्वा गुणैरैश्वर्य्यं स्वीकुर्वन्ति त एव प्रसन्नात्मानो भवन्ति॥८॥

**पदार्थः**-जिस पुरुष के (**कुक्षयः**) दोनों ओर के उदर के अवयव (**सोमधानाः**) सोमरूप ओषधियों के बीजों से युक्त (**हृदाइव**) गम्भीर जलाशयों के सदृश वर्त्तमान हैं (**यत्**) तथा जो (**पुरूणि**) बहुत (**सवना**) ओषधियों के उत्पन्न रसों से युक्त (**प्रथमा**) प्रसिद्ध (**अन्ना**) अन्न और (**ईम्**) जल को (**सम्, विव्याच**) छलता है वह (**इन्द्रः**) सूर्य्य के समान महाप्रकाशमान (**वृत्रम्**) मेघ के (**जघन्वान्**) नाश करनेवाले सूर्य्य के समान (**सोमम्**) ओषधियों के समूह को (**अवृणीत**) स्वीकार करता तथा स्वादुयुक्त पदार्थों का (**वि, आश**) स्वीकार करता है॥८॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जो पुरुष गम्भीर अभिप्राय से युक्त, सूर्य्य के सदृश प्रतापी, ऐश्वर्य्य के धारण करनेवाले, अपने और दूसरों के दोषों को नाश करके ऐश्वर्य्य को स्वीकार करते हैं, वे ही प्रसन्नात्मा होते हैं॥८॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**आ तू भर माकिरेतत्परि ष्ठाद् विद्मा हि त्वा वसुपतिं वसूनाम्।**

**इन्द्र यत्ते माहिनं दत्रमस्त्यस्मभ्यं तद्धर्यश्व प्र यन्धि॥९॥**

**आ। तु। भर। माकिः। एतत्। परि। स्थात्। विद्म। हि। त्वा। वसुऽपतिम्। वसूनाम्। इन्द्र। यत्। ते। माहिनम्। दत्रम्। अस्ति। अस्मभ्यम्। तत्। हरिऽअश्व। प्र। यन्धि॥९॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**आ**) समन्तात् (**तु**) पुनः। अत्र **ऋचीत्**यादिना दीर्घः। (**भर**) धर (**माकिः**) निषेधे (**एतत्**) (**परि**) सर्वतः (**स्थात्**) तिष्ठेत् (**विद्म**) जानीयाम्। अत्र **द्व्यचोऽतस्तिङ** इति दीर्घः। (**हि**) यतः (**त्वा**) त्वाम् (**वसुपतिम्**) धनस्वामिनम् (**वसूनाम्**) धनानाम् (**इन्द्र**) ऐश्वर्यप्रद (**यत्**) (**ते**) तव (**माहिनम्**) महत्तमम् (**दत्रम्**) दानम् (**अस्ति**) (**अस्मभ्यम्**) (**तत्**) (**हर्य्यश्व**) हरयो वेगवन्तोऽश्वा यस्य तत्सम्बुद्धौ (**प्र**) (**यन्धि**) प्रयच्छ॥९॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! यत्ते माहिनं दत्रमस्ति तदस्मभ्यं त्वं प्रयन्धि। हे हर्य्यश्व! भवानेतन्माकिः परिष्ठाद्धि वसूनां वसुपतिं त्वा वयं विद्म तु त्वमेतत्सर्वमाभर॥९॥

**भावार्थः**-विद्वद्भिः सर्वान् प्रत्येवमुपदेष्टव्यं भवन्तो दोषान् विहाय गुणान् धृत्वा धनैश्वर्य्यं प्राप्यान्येभ्यः सुपात्रेभ्यो देयम्॥९॥

**पदार्थः**-हे (**इन्द्र**) ऐश्वर्य के देनेवाले (**यत्**) जो (**ते**) आपका (**माहिनम्**) अति श्रेष्ठ (**दत्रम्**) दान (**अस्ति**) है (**तत्**) उसे (**अस्मभ्यम्**) हम लोगों के लिये आप (**प्र, यन्धि**) अच्छे प्रकार दीजिये और (**हर्यश्व**) हे वेगयुक्त घोड़ोंवाले! आप (**एतत्**) इसको (**माकिः**) न (**परि, ष्ठात्**) सब ओर से रोकिये (**हि**) जिससे (**वसूनाम्**) धनों के (**वसुपतिम्**) स्वामी (**त्वा**) आपको हम लोग (**विद्म**) जानें, इससे (**तु**) शीघ्र फिर आप इस सबको (**आ**) सब ओर से (**भर**) धारण करो॥९॥

**भावार्थः**-विद्वान् जनों को चाहिये कि सम्पूर्ण जनों के प्रति ऐसा उपदेश देवें कि आप लोग दोषों को त्याग, गुणों को धारण और धन तथा ऐश्वर्य्य को प्राप्त होके अन्य सुपात्र पुरुषों के लिये देवें॥९॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अ॒स्मे प्र य॑न्धि मघवन्नृजीषि॒न्निन्द्र॑ रा॒यो वि॒श्ववा॑रस्य॒ भूरेः॑।**

**अ॒स्मे श॒तं श॒रदो॑ जी॒वसे॑ धा अ॒स्मे वी॒राञ्छश्व॑त इन्द्र शिप्रिन्॥१०॥**

**अ॒स्मे इति॑। प्र। य॒न्धि॒। म॒घ॒ऽव॒न्। ऋ॒जी॒षि॒न्। इन्द्र॑। रा॒यः। वि॒श्वऽवा॑रस्य। भूरेः॑। अ॒स्मे इति॑। श॒तम्। श॒रदः॑। जी॒वसे॑। धाः॒। अ॒स्मे इति॑। वी॒रान्। शश्व॑तः। इ॒न्द्र॒। शि॒प्रि॒न्॥१०॥**

**पदार्थः**-(**अस्मे**) अस्मभ्यम् (**प्र**) (**यन्धि**) प्रयच्छ (**मघवन्**) बहुसत्कृतधनयुक्त (**ऋजीषिन्**) सरलस्वभाव (**इन्द्र**) सुखदातः (**रायः**) धनस्य (**विश्ववारस्य**) समग्रं सुखं स्वीकृतं यस्मात्तस्य (**भूरेः**) बहुविधस्य (**अस्मे**) अस्मान् (**शतम्**) (**शरदः**) शतं वर्षाणि (**जीवसे**) जीवितुम् (**धाः**) धेहि (**अस्मे**) अस्माकम् (**वीरान्**) विक्रान्तान् जनान् (**शश्वतः**) निरन्तरान् (**इन्द्र**) सूर्य इव प्रभावयुक्त (**शिप्रिन्**) शोभनहनुनासिक॥१०॥

**अन्वयः**-हे शिप्रिन्निन्द्र! त्वमस्मे शश्वतो वीरान् धाः। हे मघवन्नृजीषिन्निन्द्र! त्वमस्मे विश्ववारस्य भूरे रायो भागं प्रयन्धि। अस्मे जीवसे शतं शरदो धाः॥१०॥



www.9009.co.in

**भावार्थ:**-त एव सरलस्वभावा आप्ता विद्वांसः सन्ति ये श्रियं विभज्य भुञ्जते ब्रह्मचर्य्योपदेशेन शतायुषः कृत्वा सर्वेषु कर्म्मसूत्साहितान्निर्भयान् पुरुषार्थिनः कुर्वन्ति॥१०॥

**पदार्थ:**-हे **(शिप्रिन्)** सुन्दर नासिका और ठोढ़ीवाले **(इन्द्र)** सुख के दाता! आप **(अस्मे)** हम लोगों के लिये **(शश्वतः)** निरन्तर वर्त्तमान **(वीरान्)** पराक्रमी मनुष्यों को धारण करो, **(मघवन्)** हे बहुत सत्कारयुक्त धन से परिपूर्ण **(ऋजीषिन्)** सरल स्वभाववाले **(इन्द्र)** सूर्य के सदृश प्रतापी! आप **(अस्मे)** हम लोगों का **(विश्ववारस्य)** सम्पूर्ण सुख स्वीकार किया जाता है जिससे उस **(भूरेः)** अनेक प्रकार **(रायः)** धन के भाग को **(प्र, यन्धि)** दीजिये, **(अस्मे)** हम लोगों को **(जीवसे)** जीवन के लिये **(शतम्)** सौ **(शरदः)** वर्षों को **(धाः)** धारण कीजिये॥१०॥

**भावार्थ:**-वे ही उत्तम स्वभाववाले यथार्थवक्ता विद्वान् लोग हैं कि जो लक्ष्मी का विभाग करके अर्थात् अन्य जनों को बाँट के फिर आप भोजन करते हैं और मनुष्यों को ब्रह्मचर्य्य के उपदेश से सौ वर्ष की अवस्थावाले करके सम्पूर्ण कर्मों में उत्साही, भयरहित और पुरुषार्थी करते हैं॥१०॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**शुनं हुवेम मघवानमिन्द्रमस्मिन् भरे नृतमं वाजसातौ।**

**शृण्वन्तमुग्रमूतये समत्सु घ्नन्तं वृत्राणि संजितं धनानाम्॥११॥२०॥**

**शुनम्। हुवेम। मघवानम्। इन्द्रम्। अस्मिन्। भरे। नृऽतमम्। वाजऽसातौ। शृण्वन्तम्। उग्रम्। ऊतये। समत्ऽसु। घ्नन्तम्। वृत्राणि। सम्ऽजितम्। धनानाम्॥११॥**

**पदार्थ:**-**(शुनम्)** सर्वेषां सुखकरम् **(हुवेम)** स्वीकुर्याम **(मघवानम्)** बहुविद्याधनम् **(इन्द्रम्)** दुष्टविदारकं राजानम् **(अस्मिन्)** **(भरे)** पोषणे **(नृतमम्)** अतिशयेन नायकम् **(वाजसातौ)** वाजानामन्नादीनां विभागो यस्मिंस्तस्मिन् **(शृण्वन्तम्)** सकलशास्त्रश्रोतारम् **(उग्रम्)** तेजस्विनम् **(ऊतये)** रक्षणाद्याय **(समत्सु)** संग्रामेषु **(घ्नन्तम्)** **(वृत्राणि)** मेघावयवान् सूर्य इव शत्रून् **(सञ्जितम्)** सम्यग् जयशीलम् **(धनानाम्)**॥११॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथा वयमस्मिन् वाजसातौ भरे शुनं मघवानं नृतममूतये शृण्वन्तमुग्रं समत्सु वृत्राणि घ्नन्तं धनानां सञ्जितमिद्रं हुवेम तथैतं यूयमपि स्वीकुरुत॥११॥

**भावार्थ:**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः योऽखिलविद्याशुभगुणः सर्वेषां सुखप्रदः प्रजापालनतत्परः शत्रुविनाशने रतो धार्मिको नरोत्तमो भवेत्तं राज्येऽधिकृत्य तच्छासने वर्त्तित्वा सर्वेऽतुलं सुखं भुञ्जतामिति॥११॥

अत्रेन्द्रविद्वद्राजप्रजागुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति षट्त्रिंशत्तमं सूक्तं विंशतितमो वर्गश्च समाप्तः॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे हम लोग **(अस्मिन्)** इस **(वाजसातौ)** अन्न आदि का विभाग जिसमें ऐसे **(भरे)** पालन में **(शुनम्)** सब प्राणियों के सुखकारक **(मघवानम्)** बहुत विद्या और धनयुक्त **(नृतमम्)** अतिशय पुरुषों में अग्रणी **(ऊतये)** रक्षा आदि के लिये **(शृण्वन्तम्)** सकल शास्त्र सुननेवाले **(उग्रम्)** तेजधारी **(समत्सु)** संग्रामों में **(वृत्राणि)** मेघों के अवयवों को जैसे सूर्य वैसे शत्रुओं को **(सञ्जितम्)** उत्तम प्रकार जीतनेवाले **(इन्द्रम्)** दुष्ट जनों के नाशकर्त्ता राजा को **(हुवेम)** स्वीकार करें, वैसे इसको आप लोग भी स्वीकार करें॥११॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो सम्पूर्ण विद्याविशिष्ट, शुभ गुणी, सबको सुख देनेवाला, प्रजाओं के पालन में तत्पर, शत्रुओं के नाश करने में उद्यत, धर्मी और पुरुषों में श्रेष्ठ पुरुष हो, उसके लिये राज्य में अधिकार दे और उसकी आज्ञा में वर्त्तमान होकर सब लोग अत्यन्त सुख भोग करो॥११॥

इस सूक्त में इन्द्र, विद्वान्, राजा और प्रजा के गुण-वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह छत्तीसवां सूक्त और बीसवां वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

**अथैकादशर्चस्य सप्तत्रिंशत्तमस्य सूक्तस्य विश्वामित्र ऋषिः। इन्द्रो देवता। १, ३, ७ निचृद्गायत्री। २, ४-६, ८-१० गायत्री छन्दः। षड्जः स्वरः। ११ निचृदनुष्टुप् छन्दः। ऋषभः स्वरः॥**

***अथ राजगुणानाह॥***

अब ग्यारह ऋचावाले सैंतीसवें सूक्त का प्रारम्भ है। उसके प्रथम मन्त्र में राजा के गुणों को कहते हैं॥

**वार्त्रहत्याय शवसे पृतनाषाह्याय च। इन्द्र त्वा वर्तयामसि॥१॥**

**वार्त्रऽहत्याय। शवसे। पृतनाऽसह्याय। च। इन्द्र। त्वा। आ। वर्तयामसि॥१॥**

**पदार्थः**-(**वार्त्रहत्याय**) वृत्रहत्याया इदं तस्मै (**शवसे**) बलाय (**पृतनाषाह्याय**) पृतना सह्या येन तस्मै (**च**) (**इन्द्र**) सेनाधीश (**त्वा**) त्वाम् (**आ**) (**वर्त्तयामसि**) वर्त्तयामः॥१॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! यथा वयं वार्त्रहत्याय सूर्यमिव पृतनाषाह्याय शवसे त्वा वर्त्तयामसि तथा त्वं चास्मानेतस्मै वर्त्तय॥१॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। युद्धविद्याशिक्षकैः सेनाध्यक्षाभृत्याश्च सम्यक् शिक्षणीया यतो ध्रुवो विजयः स्यात्॥१॥

**पदार्थः**-हे (**इन्द्र**) सेना के अधीश! जैसे हम लोग (**वार्त्रहत्याय**) मेघ के नाश करने के लिये जो बल उसके लिये सूर्य के समान (**पृतनाषाह्याय**) संग्राम के सहनेवाले (**शवसे**) बल के लिये (**त्वा**) आपका (**वर्त्तयामसि**) आश्रय करते हैं, वैसे आप (**च**) भी हम लोगों को इस बल के लिये वर्त्तो॥१॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। युद्ध करने की विद्या के शिक्षकों को चाहिये कि सेनाओं के अध्यक्ष और नौकरों को उत्तम प्रकार शिक्षा देवें, जिससे निश्चय विजय होवे॥१॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अर्वाचीनं सु ते मन उत चक्षुः शतक्रतो। इन्द्र कृण्वन्तु वाघतः॥२॥**

**अर्वाचीनम्। सु। ते। मनः। उत। चक्षुः। शतक्रतो इति शतऽक्रतो। इन्द्र। कृण्वन्तु। वाघतः॥२॥**

**पदार्थः**-(**अर्वाचीनम्**) इदानीं सुशिक्षितम् (**सु**) (**ते**) तव (**मनः**) अन्तःकरणम् (**उत**) (**चक्षुः**) चक्षुरादीन्द्रियम् (**शतक्रतो**) शतमसङ्ख्यः क्रतुः प्रज्ञा यस्य तत्सम्बुद्धौ (**इन्द्र**) दुष्टानां विदारक (**कृण्वन्तु**) निष्पादयन्तु (**वाघतः**) ये वाचा दोषान् घ्नन्ति ते मेधाविनः। **वाघत इति मेधाविनामसु पठितम्।** (निघं०३.१५)॥२॥

**अन्वयः**-हे शतक्रतो इन्द्र! यथा वाघतस्तेऽर्वाचीनं मन उत चक्षुश्च शुभगुणान्वितं सुकृण्वन्तु तथैव भवानाचरतु॥२॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। राजादयो जनाः सदाऽऽप्तशिक्षायां वर्त्तित्वा धर्मार्थकाममोक्षान् साध्नुवन्तु॥२॥

**पदार्थः**-हे **(शतक्रतो)** असंख्य बुद्धियुक्त **(इन्द्र)** दुष्ट पुरुषों के नाश करनेवाले! जैसे **(वाघतः)** वाणी से दोषों के नाश करनेवाले बुद्धिमान् लोग **(ते)** आपके **(अर्वाचीनम्)** इस समय उत्तम शिक्षायुक्त **(मनः)** अन्तःकरण **(उत)** और **(चक्षुः)** नेत्र आदि इन्द्रिय को उत्तम गुणों से युक्त **(सु, कृण्वन्तु)** सिद्ध करें, वैसे ही आप आचरण करें॥२॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। राजा आदि जन सदा यथार्थवक्ता पुरुष की शिक्षा में वर्त्तमान होके धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को सिद्ध करें॥२॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**नामा॑नि ते शतक्रतो॒ विश्वा॑भिर्गी॒र्भिरी॑महे। इन्द्रा॑भिमाति॒षाह्ये॑॥३॥**

**नामा॑नि। ते॒। श॒त॒क्र॒तो॒ इति॑ शतऽक्रतो। विश्वा॑भिः। गीःऽभिः। ई॒म॒हे॒। इन्द्र॑। अ॒भि॒मा॒ति॒ऽसह्ये॑॥३॥**

**पदार्थः**-**(नामानि)** संज्ञाः **(ते)** तव **(शतक्रतो)** बहुप्रज्ञान **(विश्वाभिः)** सर्वाभिः **(गीर्भिः)** विद्यासुशिक्षाधर्मयुक्ताभिर्वाग्भिः **(ईमहे)** याचामहे **(इन्द्र)** परमैश्वर्य्यहेतो राजन् **(अभिमातिषाह्ये)** अभिमातयोऽभिमानयुक्ताः शत्रुवत्सह्या यस्मिन् संग्रामे तस्मिन्॥३॥

**अन्वयः**-हे शतक्रतो इन्द्र! यथा वयं विश्वाभिर्गीर्भिर्यस्य ते नामानि सार्थकानीमहे स त्वमस्मभ्यमभिमातिषाह्ये साहाय्यं देहि॥३॥

**भावार्थः**-राजते विद्याविनयाभ्यां प्रकाशते स राजा, यो नॄन् पाति स नृपो यो भुवं पाति स भूमिप इत्यादीनि सर्वाणि राज्ञो नामानि सार्थकानि सन्तु। यदा शत्रुभिः सह संग्रामो भवेत्तदा सर्वप्रकारेण रक्षको राजा भवेत्। एवं सति ध्रुवो विजयोऽन्यथा विपर्य्ययः॥३॥

**पदार्थः**-हे **(शतक्रतो)** बहुत बुद्धिमान् **(इन्द्र)** अत्यन्त ऐश्वर्य्य के कारण से राजन्! जैसे हम लोग **(विश्वाभिः)** सम्पूर्ण **(गीर्भिः)** विद्या, उत्तम शिक्षा और धर्म से युक्त वाणियों से जिन **(ते)** आपके **(नामानि)** संज्ञाओं को अर्थयुक्त होने की **(ईमहे)** याचना करते हैं, वह आप हम लोगों के लिये **(अभिमातिषाह्ये)** अभिमानयुक्त शत्रु लोग सहने योग्य हैं, जिनमें ऐसे संग्राम में सहायता दीजिये॥३॥

**भावार्थः**-राजमान, विद्या और विनयों से प्रकाशमान वह राजा; मनुष्यों की पालना करता वह नृप; और भूमि का पालन करता है, वह भूमिप इत्यादि सब राजा के नाम सार्थक हों और जब शत्रुओं के साथ संग्राम होवे तो सब प्रकार से रक्षा करनेवाला राजा होवे। ऐसा होने से निश्चित विजय होता, नहीं तो नहीं होता है॥३॥

**अथ प्रजागुणानाह॥**



www.9009.co.in

अब प्रजा के गुणों को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**पुरुष्टुतस्य धामभिः शतेन महयामसि। इन्द्रस्य चर्षणीधृतः॥४॥**

**पुरुऽस्तुतस्य। धामऽभिः। शतेन। महयामसि। इन्द्रस्य। चर्षणिऽधृतः॥४॥**

**पदार्थः**-(**पुरुष्टुतस्य**) बहुभिः प्रशंसितस्य (**धामभिः**) जन्मस्थाननामभिः (**शतेन**) असंख्येन (**महयामसि**) पूजयाम (**इन्द्रस्य**) परमैश्वर्ययुक्तस्य राज्ञः (**चर्षणीधृतः**) यश्चर्षणीन् मनुष्यान्धरति तस्य॥४॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथा वयं पुरुष्टुतस्य चर्षणीधृत इन्द्रस्य शतेन धामभिर्महयामसि। तथैतस्य सत्कारं यूयमपि कुरुत॥४॥

**भावार्थः**-मनुष्यै राजादिन्यायकारिणां सर्वथा सत्कारः कर्त्तव्यो राजादयोऽपि प्रजास्थान् सदा सत्कुर्युरेवंकृते सत्युभयेषां मङ्गलोन्नतिर्भवति॥४॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे हम लोग (**पुरुष्टुतस्य**) बहुतों से प्रशंसा पाये हुए और (**चर्षणीधृतः**) मनुष्यों को धारण करनेवाले (**इन्द्रस्य**) अत्यन्त ऐश्वर्य्य से युक्त राजा का (**शतेन**) असंख्य (**धामभिः**) जन्म, स्थान और नामों से (**महयामसि**) पूजन करें, वैसे उस प्रशंसित का सत्कार आप लोग भी करो॥४॥

**भावार्थः**-मनुष्यों को चाहिये कि राजा आदि न्यायकारी जनों का सब प्रकार सत्कार करें और राजा आदि भी प्रजाजनों का सदा सत्कार करें। ऐसा करने पर राजा और प्रजा इन दोनों के मङ्गल की उन्नति होती है॥४॥

**पुना राजविषयमाह॥**

फिर राजविषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**इन्द्रं वृत्राय हन्तवे पुरुहूतमुप ब्रुवे। भरेषु वाजसातये॥५॥२१॥**

**इन्द्रम्। वृत्राय। हन्तवे। पुरुहूतम्। उप। ब्रुवे। भरेषु। वाजऽसातये॥५॥**

**पदार्थः**-(**इन्द्रम्**) परमैश्वर्य्यप्रदम् (**वृत्राय**) मेघ इव न्यायावरकाय शत्रवे (**हन्तवे**) हन्तुम् (**पुरुहूतम्**) बहुभिराहूतं प्रशंसितं वा (**उप**) समीपे (**ब्रुवे**) कथयामि (**भरेषु**) संग्रामेषु (**वाजसातये**) धनादिसंविभागाय॥५॥

**अन्वयः**-हे सेनास्थवीरा! यथा सेनाधीशोऽहं वृत्राय हन्तवे भरेषु वाजसातये पुरुहूतमिन्द्रमुपब्रुवे तथा यूयमप्येतमुपब्रुवन्तु॥५॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यदा संग्रामः प्रवर्त्तेत तदा योद्धॄन् प्रत्यध्यक्षैर्यथा विजयः स्यात्तथोपदेष्टव्यम्। योद्धारश्चाधिष्ठातॄणामाज्ञायां सर्वथा वर्त्तेरन्नेवं सति कुतः पराजयः?॥५॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-हे सेना में वर्त्तमान वीर पुरुषो! जिस प्रकार सेना का अधीश मैं **(वृत्राय)** न्याय के आवरण करनेवाले शत्रु के **(हन्तवे)** नाश के लिये तथा **(भरेषु)** संग्रामों में **(वाजसातये)** धन आदि को बांटने के लिये **(पुरुहूतम्)** बहुतों से पुकारे वा प्रशंसा किये गये **(इन्द्रम्)** अत्यन्त ऐश्वर्य्य के देनेवाले राजा को **(उप)** समीप में **(ब्रुवे)** कहता हूँ, वैसे आप लोग भी इसके समीप कहो॥५॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जब संग्राम में प्रवृत्त होवे तो योद्धाओं के प्रति अध्यक्ष पुरुषों को चाहिये कि जिस प्रकार विजय हो वैसा उपदेश दें और योद्धा लोग अधिष्ठाता पुरुषों की आज्ञा में सब प्रकार वर्त्तमान होवें, ऐसा करने से कैसे पराजय हो?॥५॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**वाजेषु सासहिर्भव त्वामीमहे शतक्रतो। इन्द्र वृत्राय हन्तवे॥६॥**

**वाजेषु। ससहिः। भव। त्वाम्। ईमहे। शतक्रतो इति शतऽक्रतो। इन्द्र। वृत्राय। हन्तवे॥६॥**

**पदार्थः**-**(वाजेषु)** बह्वन्नविज्ञानादिसामग्र्यपेक्षेषु संग्रामेषु **(सासहिः)** भृशं सोढा **(भव)** **(त्वम्)** **(ईमहे)** युद्धोपकरणैर्याचामहे **(शतक्रतो)** अमितप्रज्ञ **(इन्द्र)** दुष्टदलविदारक **(वृत्राय)** मेघमिव शत्रुम् **(हन्तवे)** हन्तुम्॥६॥

**अन्वयः**-हे शतक्रतो इन्द्र! वयं यं त्वां वृत्राय हन्तव ईमहे स त्वं वाजेषु सासहिर्भव॥६॥

**भावार्थः**-यस्मिन् कर्मणि यस्य स्थापनं सभा कुर्यात् स तमधिकारं यथावदुन्नयेत् यस्याऽधिकारे यस्य नियोजनं स्यात्तदाज्ञां स कदाचिन्नोल्लङ्घयेत्॥६॥

**पदार्थः**-हे **(शतक्रतो)** अति सूक्ष्म बुद्धियुक्त **(इन्द्र)** दुष्ट पुरुषों के दल के नाश करनेवाले! हम लोग जिन **(त्वाम्)** आपको **(वृत्राय)** मेघ के सदृश शत्रु के **(हन्तवे)** नाश करने को **(ईमहे)** युद्ध के उपकारक वस्तुओं के साथ याचना करते हैं, वह आप **(वाजेषु)** जिनमें बहुत अन्न और विज्ञान आदि सामग्री अपेक्षित हैं, ऐसे संग्रामों में **(सासहिः)** अत्यन्त सहनेवाले **(भव)** हूजिये॥६॥

**भावार्थः**-जिस कर्म में जिसका स्थापन सभा करे, वह पुरुष उस अधिकार की यथायोग्य उन्नति करे और जिस अधिकार में जिसका नियोग होवे, वहाँ जो आज्ञा उसका वह कदाचित् उल्लङ्घन न करे॥६॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**द्युम्नेषु पृतनाज्ये पृत्सुतूर्षु श्रवःसु च। इन्द्र साक्ष्वाभिमातिषु॥७॥**

**द्युम्नेषु। पृतनाज्ये। पृत्सुतूर्षु। श्रवःऽसु। च। इन्द्र। साक्ष्व। अभिऽमातिषु॥७॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**द्युम्नेषु**) यशस्विषु धनप्रापकेषु वा (**पृतनाज्ये**) पृतनायाः सेनायाः संग्रामे (**पृत्सुतूर्षु**) पृत्नासु सेनासु त्वरमाणेषु हिंसकेषु (**श्रवःसु**) श्रवणेष्वन्नादिषु वा (**च**) (**इन्द्र**) (**साक्ष्व**) सहस्व (**अभिमातिषु**) अभिमानयुक्तेषु योद्धृषु॥७॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! त्वं पृत्सुतूर्षु श्रवःसु द्युम्नेष्वभिमातिषु च सत्सु पृतनाज्ये साक्ष्व॥७॥

**भावार्थः**-ये विद्यमानेषु धनादिषु वीरसेनासु व्याख्यातृषु युद्धाऽभिमानिषु स्वप्रियेषु हृष्टपुष्टेषु सत्सु च शत्रुभिः सह संग्रामं कुर्वन्ति त एव ध्रुवं विजयं लभन्ते॥७॥

**पदार्थः**-हे (**इन्द्र**) तेजस्वी पुरुष! आप (**पृत्सुतूर्षु**) सेनाओं में शीघ्रता के नाश करनेवाले जनों वा (**श्रवःसु**) श्रवण वा अन्न आदि पदार्थों (**द्युम्नेषु**) वा यशस्वी वा धन की प्राप्ति करानेवाले विषयों में वा (**पृतनाज्ये**) सेना सम्बन्धी संग्राम में (**साक्ष्व**) सहन करो॥७॥

**भावार्थः**-जो विद्यमान धन आदि पदार्थ वीर सेनाओं में व्याख्यान देनेवाले और युद्ध के अभिमानी अपने प्रिय आनन्दित और पुष्ट पुरुषों के होने पर शत्रुओं के साथ संग्राम करते हैं, वे ही पुरुष निश्चित विजय को प्राप्त होते हैं॥७॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**शुष्मिन्तमं न ऊतये द्युम्निनं पाहि जागृविम्। इन्द्र सोमं शतक्रतो॥८॥**

**शुष्मिन्ऽतमम्। नः। ऊतये। द्युम्निनम्। पाहि। जागृविम्। इन्द्र। सोमम्। शतक्रतो इति शतऽक्रतो॥८॥**

**पदार्थः**-(**शुष्मिन्तमम्**) प्रशंसितं बहुविधं वा बलं विद्यते यस्य तमतिशयितम् (**नः**) अस्माकम् (**ऊतये**) रक्षणाद्याय (**द्युम्निनम्**) यशस्विनं श्रीमन्तम् (**पाहि**) (**जागृविम्**) जागरूकम् (**इन्द्र**) सर्वाभिरक्षक राजन् (**सोमम्**) ऐश्वर्यम् (**शतक्रतो**) बहुप्रज्ञ बहुकर्मन् वा॥८॥

**अन्वयः**-हे शतक्रतो इन्द्र! त्वं न ऊतये शुष्मिन्तमं द्युम्निनं जागृविं सोमं च पाहि॥८॥

**भावार्थः**-सर्वैः प्रजाराजजनैः सर्वाधीशं राजानमन्यानध्यक्षान् प्रति चैवं वाच्यं भवन्तोऽस्माकं रक्षकाणामैश्वर्य्यस्य च रक्षायामनलसा उद्यता भवन्तु॥८॥

**पदार्थः**-हे (**शतक्रतो**) बहुत बुद्धि वा बहुत कर्मयुक्त (**इन्द्र**) सबके रक्षक राजन्! आप (**नः**) हम लोगों की (**ऊतये**) रक्षा आदि के लिये (**शुष्मिन्तमम्**) प्रशंसित वा बहुत प्रकार का बल जिसके उस अतीव (**द्युम्निनम्**) यशस्वी लक्ष्मीवान् और (**जागृविम्**) जागनेवाले जन और (**सोमम्**) ऐश्वर्य्य की (**पाहि**) रक्षा करो॥८॥

**भावार्थः**-सब प्रजा और राजजनों को चाहिये कि सबके अधीश राजा और अन्य अध्यक्षों के प्रति ऐसा कहें कि आप लोग हम लोगों के रक्षक पुरुषों की और ऐश्वर्य्य की रक्षा में निरालस और उद्यत होवें॥८॥



www.9009.co.in

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**इन्द्रियाणि शतक्रतो या ते जनेषु पञ्चसु। इन्द्र तानि त आ वृणे॥९॥**

**इन्द्रियाणि। शतक्रतो इति शतऽक्रतो। या। ते। जनेषु। पञ्चऽसु। इन्द्र। तानि। ते। आ। वृणे॥९॥**

**पदार्थः**-(**इन्द्रियाणि**) इन्द्रस्य जीवस्य लिङ्गानि (**शतक्रतो**) अमितबुद्धे (**या**) यानि (**ते**) तव (**जनेषु**) प्रसिद्धेष्वध्यक्षेषु (**पञ्चसु**) राज्यसेनाकोशदूतत्वप्राड्विवाकत्वसंपन्नेष्वधिकारिषु (**इन्द्र**) ऐश्वर्ययोजक (**तानि**) (**ते**) तव (**आ**) (**वृणे**) शुभगुणैराच्छादयामि॥९॥

**अन्वयः**-हे शतक्रतो इन्द्र! पञ्चसु जनेषु या त इन्द्रियाणि सन्ति तानि तेऽहमावृणे॥९॥

**भावार्थः**-स एव राज्यं कर्त्तुमर्हति योऽमात्यानां चरित्राणि चक्षुषा रूपमिव प्रत्यक्षीकरोति तथा शरीरेन्द्रियगोलकसम्बन्धेन जीवस्य सर्वाणि कार्याणि सिध्यन्ति तथैव राजाऽमात्यसेनायोगेन राजकार्याणि साद्धुं शक्नोति॥९॥

**पदार्थः**-हे (**शतक्रतो**) अपार बुद्धियुक्त (**इन्द्र**) ऐश्वर्य्य को योग करनेवाले! (**पञ्चसु**) पाँच राज्य, सेना, कोश, दूतत्व, प्राड्विवाकत्व आदि पदवियों से युक्त अधिकारी और (**जनेषु**) प्रत्यक्ष अध्यक्षों में (**या**) जो (**ते**) आपके (**इन्द्रियाणि**) जीने के चिह्न हैं (**तानि**) उन (**ते**) आपके चिह्नों को मैं (**आ**) (**वृणे**) उत्तम गुणों से आच्छादन करता हूँ॥९॥

**भावार्थः**-वही पुरुष राज्य करने के योग्य है [कि] जो मन्त्रियों के चरित्रों को नेत्र से रूप के सदृश प्रत्यक्ष करता है। जैसे शरीर के इन्द्रिय के गोलक अर्थात् काले तारेवाले नेत्र के सम्बन्ध से जीव के सम्पूर्ण कार्य्य सिद्ध होते हैं, वैसे राजा मन्त्री और सेना के योग से राजकार्यों को सिद्ध कर सकता है॥९॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अगन्निन्द्र श्रवो बृहद् द्युम्नं दधिष्व दुष्टरम्। उत्ते शुष्मं तिरामसि॥१०॥**

**अगन्। इन्द्र। श्रवः। बृहत्। द्युम्नम्। दधिष्व। दुस्तरम्। उत्। ते। शुष्मम्। तिरामसि॥१०॥**

**पदार्थः**-(**अगन्**) प्राप्नुवन्ति (**इन्द्र**) परमैश्वर्ययुक्त (**श्रवः**) अन्नं श्रवणं वा (**बृहत्**) महत् (**द्युम्नम्**) यशो धनं वा (**दधिष्व**) धर (**दुष्टरम्**) शत्रुभिर्दुःखेन तरितुमुल्लङ्घयितुं योग्यम् (**उत्**) उत्कृष्टे (**ते**) तव (**शुष्मम्**) बलम् (**तिरामसि**) तराम॥१०॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! यद् बृहद् दुष्टरं श्रवो द्युम्नं शुष्मं विद्वांसोऽगन् यत्ते वयमुत्तिरामसि तत्सर्वं त्वं दधिष्व॥१०॥

**भावार्थः**-तावदैश्वर्य्यं राजा धर्त्तव्यं यावत्सेनायै प्रजापालनायाऽमात्यरक्षणायाऽलं स्यादेवं जाते सति महद्यशो वर्धेत॥१०॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-हे **(इन्द्र)** अत्यन्त ऐश्वर्य से युक्त! जिस **(बृहत्)** बड़े **(दुष्टरम्)** शत्रुओं से दुःख से उल्लङ्घन करने योग्य **(श्रवः)** अन्न वा श्रवण **(द्युम्नम्)** यश वा धन और **(शुष्मम्)** बल को विद्वान् लोग **(अगन्)** प्राप्त होते हैं वा जिस **(ते)** आपके पूर्वोक्त अन्न, श्रवण, यश, धन और बल को हम लोग **(उत्)** उत्तम प्रकार **(तिरामसि)** तरें उल्लङ्घें अर्थात् उससे अधिक सम्पादन करें, उस सबको आप **(दधिष्व)** धारण करो॥१०॥

**भावार्थः**-उतना ही ऐश्वर्य राजा को धारण करना चाहिये कि जितना सेना और प्रजा के पालन के और मन्त्रियों की रक्षा के लिये पूरा होवे, ऐसा करने से बड़ा यश बढ़े॥१०॥

**अथ राजप्रजाजनविषयं परस्परेणाह॥**

अब राजा और प्रजा विषय को परस्पर सम्बन्ध से कहते हैं॥

**अर्वावतो न आ गह्यथो शक्र परावतः।**

**उ लोको यस्ते अद्रिव इन्द्रेह तत आ गहि॥११॥२२॥**

**अर्वाऽवतः। नः। आ। गहि। अथो इति। शक्र। पराऽवतः। ऊम् इति। लोकः। यः। ते। अद्रिऽवः। इन्द्र। इह। ततः। आ। गहि॥११॥**

**पदार्थः**-**(अर्वावतः)** अर्वाचीनात् **(नः)** अस्मान् **(आ)** **(गहि)** आगच्छ प्राप्नुहि **(अथो)** आनन्तर्ये **(शक्र)** शक्तिमन् **(परावतः)** दूरात् (उ) **(लोकः)** निवासस्थानम् **(यः)** **(ते)** तव **(अद्रिवः)** अद्रयो बहवो मेघा विद्यन्ते यस्य सूर्यस्य तद्वद्वर्त्तमान **(इन्द्र)** ऐश्वर्येण सुखप्रद **(इह)** अस्मिन् संसारे **(ततः)** तस्मात् **(आ)** **(गहि)**॥११॥

**अन्वयः**-हे अद्रिवः शक्रेन्द्र! इह यस्ते लोकोऽस्ति तस्मादर्वावतो न आ गह्यथो परावतो न आ गहि तत उ अन्यत्र गच्छ॥११॥

**भावार्थः**-यथा मनुष्याः प्रीत्या राजानमाह्वयेयुस्तत्सामीप्यं स स्वदेशादागच्छेत् तस्मादन्यत्र गच्छेदेवं राजप्रजाजनाः परस्परेषु स्नेहवर्धनाय कर्माणि सततं कुर्युरिति॥११॥

अत्र राजप्रजाकृत्यवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति सप्तत्रिंशत्तमं सूक्तं द्वाविंशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे **(अद्रिवः)** बहुत मेघों से युक्त सूर्य के सदृश वर्त्तमान **(शक्र)** सामर्थ्यवान् **(इन्द्र)** ऐश्वर्य से सुख के दाता! **(इह)** इस संसार में **(यः)** जो **(ते)** आपका **(लोकः)** निवासस्थान है, **[(अर्वावतः)]** इस स्थान से **(नः)** हम लोगों को **(आ, गहि)** प्राप्त हूजिये **(अथो)** इसके अनन्तर **(परावतः)** दूर से भी हम लोगों को प्राप्त हूजिये **(ततः)** और इससे **(आगहि)** उत्तम प्रकार अन्य स्थान में जाइये॥११॥



www.9009.co.in

**भावार्थ:**-जैसे मनुष्य लोग प्रीति से राजा को बुलावे और वह राजा उन प्रजाजनों के समीप अपने देश को प्राप्त हो और उस देश से अन्य देश में भी जाये, इस प्रकार राजा और प्रजा जन परस्पर स्नेह की वृद्धि के लिये कर्मों को निरन्तर करें॥११॥

इस सूक्त में राजा और प्रजा के कामों का वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इस सूक्त से पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह सैंतीसवां सूक्त और बाईसवां वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

**अथ दशर्चस्याष्टत्रिंशत्तमस्य सूक्तस्य प्रजापतिर्ऋषिः। इन्द्रो देवता। १, ६, १० त्रिष्टुप्। २-५, ८, ९ निचृत्त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः। ७ भुरिक् पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः॥**

***अथ विद्वद्विषयमाह॥***

अब दश ऋचावाले अड़तीसवें सूक्त का प्रारम्भ है। उसके प्रथम मन्त्र में विद्वान् के विषय को कहते हैं॥

**अभि तष्टेव दीधया मनीषामत्यो न वाजी सुधुरो जिहानः।**
**अभि प्रियाणि मर्मृशत्पराणि कवीँरिच्छामि संदृशे सुमेधाः॥१॥**

**अभि। तष्टाऽइव। दीधय। मनीषाम्। अत्यः। न। वाजी। सुऽधुरः। जिहानः। अभि। प्रियाणि। मर्मृशत्। पराणि। कवीन्। इच्छामि। सम्ऽदृशे। सुऽमेधाः॥१॥**

**पदार्थः**-(**अभि**) आभिमुख्ये (**तष्टेव**) यथा काष्ठानां सूक्ष्मत्वस्य कर्त्ता (**दीधय**) प्रकाशय। अत्र **संहितायामि**ति दीर्घः। (**मनीषाम्**) प्रज्ञाम् (**अत्यः**) सततं गन्ता (**न**) इव (**वाजी**) वेगवान् (**सुधुरः**) शोभना धूर्यस्य सः (**जिहानः**) प्राप्नुवन् (**अभि**) (**प्रियाणि**) कमनीयानि सेवनानि सुखानि (**मर्मृशत्**) भृशं विचारयन् (**पराणि**) उत्कृष्टानि (**कवीन्**) धार्मिकान् विदुषः (**इच्छामि**) (**संदृशे**) सम्यग्दर्शनाय (**सुमेधाः**) शोभनप्रज्ञः॥१॥

**अन्वयः**-हे विद्वन्! यथाऽहं संदृशे कवीनभीच्छामि तथा सुमेधा जिहानः पराणि प्रियाण्यभिमर्मृशत् सन् सुधुरोऽत्यो वाजी न मनीषां तष्टेवाऽभि दीधय॥१॥

**भावार्थः**-अत्रोपमावाचकलुप्तोपमालङ्कारौ। यथा धुरन्धरा सुशिक्षितास्तुरङ्गा अभीष्टानि कार्य्याणि साध्नुवन्ति तथैव साधारणा जना विदुषः प्रज्ञां प्राप्य तक्षेव व्यसनानि छिन्द्युः॥१॥

**पदार्थः**-हे विद्वान् पुरुष! जैसे मैं (**संदृशे**) उत्तम प्रकार दर्शन के लिये (**कवीन्**) धार्मिक विद्वानों की (**इच्छामि**) इच्छा करता हूँ, वैसे (**सुमेधाः**) उत्तम बुद्धिवाले (**जिहानः**) प्राप्त होते और (**पराणि**) परम उत्तम (**प्रियाणि**) कामना और आदर करने योग्य सुखों को (**अभि, मर्मृशत्**) अत्यन्त विचारते हुए (**सुधुरः**) सुन्दर धुरा को धारण किये हुए (**अत्यः**) निरन्तर चलनेवाले (**वाजी**) वेगयुक्त घोड़े के (**न**) समान (**मनीषाम्**) बुद्धि को (**तष्टेव**) काष्ठों के सूक्ष्मत्व अर्थात् छीलने से पतले करनेवाले बढ़ई के सदृश आप (**अभि**) सम्मुख (**दीधय**) प्रकाश करो॥१॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमा और वाचकलुप्तोपमालङ्कार हैं। जैसे धुरियों के धारण करनेवाले उत्तम प्रकार शिक्षित घोड़े वाञ्छित कर्मों को सिद्ध करते हैं, वैसे ही साधरण जन विद्वानों की उत्तम बुद्धि को ग्रहण करके बढ़ई के सदृश व्यसनों का छेदन करें॥१॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥



www.9009.co.in

**इनोत पृच्छ जनिमा कवीनां मनोधृतः सुकृतस्तक्षत द्याम्।**

**इमा उ ते प्रण्यो३ वर्धमाना मनोवाता अध नु धर्मणि ग्मन्॥ २॥**

**इना। उत। पृच्छ। जनिम। कवीनाम्। मनःऽधृतः। सुऽकृतः। तक्षत। द्याम्। इमाः। ऊम् इति। ते। प्रऽन्यः। वर्धमानाः। मनःऽवाताः। अध। नु। धर्मणि। ग्मन्॥ २॥**

**पदार्थः**-(**इना**) इनान् प्रभून् समर्थान् (**उत**) अपि (**पृच्छ**) (**जनिमा**) जन्मानि (**कवीनाम्**) मेधाविनाम् (**मनोधृतः**) मनो विज्ञानं धृतं यैस्ते (**सुकृतः**) ये शोभनं कर्म कुर्वन्ति ते (**तक्षत**) सूक्ष्मान् कुरुत (**द्याम्**) विद्युतम् (**इमाः**) वर्त्तमानाः (**उ**) (**ते**) तव (**प्रण्यः**) प्रकृष्टा नीतिर्यासां ताः (**वर्धमानाः**) वृद्धिशीलाः (**मनोवाताः**) मन इव वातो वेगो यासां ताः (**अध**) अथ (**नु**) सद्यः (**धर्मणि**) (**ग्मन्**) प्राप्नुयुः॥ २॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! या कवीनां मनोधृतः सुकृत उ इमा प्रण्यो वर्धमाना मनोवाता धर्मणि नु ग्मन् अध या द्यां प्राप्नुयुर्ये ते जनिमा ग्मन् ता उत तानिना त्वं पृच्छ, यूयमविद्यां तक्षत॥ २॥

**भावार्थः**-ये पुरुषाः स्त्रियश्च धर्मानुष्ठानपुरःसरं मेधाविलक्षणानि धृत्वा प्रश्नोत्तराणि विधायान्तःकरणं संशोध्य समर्था जायन्ते ते ताश्चैव सर्वतोऽधिवर्धन्ते॥ २॥

**पदार्थः**-हे विद्वान् वा साधारण मनुष्यो! जो (**कवीनाम्**) बुद्धिमान् लोगों के (**मनोधृतः**) विज्ञान के धारण करने और (**सुकृतः**) उत्तम कर्म करनेवाले पुरुष (**उ**) और (**इमाः**) ये वर्त्तमान (**प्रण्यः**) उत्तम नीतियुक्त (**वर्धमानाः**) बढ़ती हुई (**मनोवाताः**) मन के सदृश वेगवाली स्त्रियाँ (**धर्मणि**) धर्मव्यवहार में (**नु**) शीघ्र (**ग्मन्**) प्राप्त हों, (**अध**) इसके अनन्तर जो (**द्याम्**) बिजुली को प्राप्त हों और जो लोग (**ते**) तुम्हारे (**जनिमा**) जन्मों को प्राप्त हों, उन स्त्रियों (**उत**) वा उन (**इना**) समर्थ पुरुषों को आप (**पृच्छ**) पूछिये और आप लोग भी अविद्या को (**तक्षत**) काटिये॥ २॥

**भावार्थः**-जो पुरुष और स्त्रियाँ धर्म के अनुष्ठानपूर्वक बुद्धिमान् लोगों के लक्षणों को धारण कर प्रश्नोत्तर और अन्तःकरण को शुद्ध करके समर्थ होते हैं, वे पुरुष और वैसी स्त्रियाँ सब प्रकार वृद्धि को प्राप्त होती हैं॥ २॥

**अथ भूमिविषयमाह॥**

अब भूमि विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**नि षीमिदत्र गुह्या दधाना उत क्षत्राय रोदसी समञ्जन्।**

**सं मात्राभिर्ममिरे येमुरुर्वी अन्तर्मही समृते धायसे धुः॥ ३॥**

**नि। सीम्। इत्। अत्र। गुह्या। दधानाः। उत। क्षत्राय। रोदसी इति। सम्। अञ्जन्। सम्। मात्राभिः। ममिरे। येमुः। उर्वी इति। अन्तरिति। मही इति। समृते इति सम्ऽऋते। धायसे। धुरिति धुः॥ ३॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**नि**) नितराम् (**सीम्**) सर्वतः (**इत्**) एव (**अत्र**) अस्मिन् संसारे (**गुह्या**) गूढानि विज्ञानानि (**दधानाः**) (**उत**) अपि (**क्षत्राय**) राज्याय (**रोदसी**) भूमिविद्याप्रकाशौ (**सम्**) (**अञ्जन्**) प्रकटीकुर्य्युः (**सम्**) (**मात्राभिः**) सूक्ष्माऽवयवैः (**ममिरे**) निर्मिमीरन् (**येमुः**) यच्छेयुः (**ऊर्वी**) महती (**अन्तः**) मध्ये (**मही**) (**समृते**) सम्यक् सत्ये व्यवहारे (**धायसे**) धातुम् (**धुः**) धरेयुः॥३॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! याः स्त्रियोऽत्र गुह्या दधानाः सत्यः क्षत्राय रोदसी सीं समञ्जन्नुत मात्राभिर्निर्ममिरे उर्वी मही समृते धायसेऽन्तः सं येमुस्ता इदेव सुखं धुः॥३॥

**भावार्थः**-या स्त्रियो ब्रह्मचर्य्येण विद्याविज्ञानानि प्राप्य पृथिव्यादिपदार्थानां सकाशादुपकारं ग्रहीतुं शक्नुयुस्ता राज्ञ्यो भवितुमर्हन्ति॥३॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो स्त्रियाँ (**अत्र**) इस संसार में (**गुह्या**) गूढ़ विज्ञानों को (**दधानाः**) धारण किये हुईं (**क्षत्राय**) राज्य के लिये (**रोदसी**) भूमि और विद्या के प्रकाश को (**सीम्**) सब प्रकार (**सम्, अञ्जन्**) प्रकट करें (**उत**) और (**मात्राभिः**) सूक्ष्म अवयवों से (**नि**) निरन्तर पदार्थों को (**ममिरे**) मापें और (**उर्वी**) बड़ी (**मही**) पृथ्वी को (**समृते**) अच्छे प्रकार सत्य व्यवहार में (**धायसे**) धारण करने को अपने अन्तःकरण के (**अन्तः**) मध्य में (**सम्, येमुः**) संयुक्त करें वे (**इत्**) ही सुख को (**धुः**) धारण करें॥३॥

**भावार्थः**-जो स्त्रियाँ ब्रह्मचर्य्य से विद्या के विज्ञानों को प्राप्त होकर पृथिवी आदि पदार्थों से उपकार का ग्रहण कर सकें, वे रानी होने के योग्य होती हैं॥३॥

**अथ सूर्यविषयमाह॥**

अब सूर्य्य के विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**आतिष्ठ॑न्तं॒ परि॒ विश्वे॑ अभूष॒ञ्छ्रियो॒ वसा॑नश्चरति॒ स्वरो॑चिः।**

**म॒हत्तद्वृष्णो॒ असु॑रस्य॒ नामा वि॒श्वरू॑पो अ॒मृता॑नि तस्थौ॥४॥**

**आ॒ऽतिष्ठ॑न्तम्। परि॑। विश्वे॑। अ॒भू॒ष॒न्। श्रियः॑। वसा॑नः। च॒र॒ति॒। स्वऽरो॑चिः। म॒हत्। तत्। वृ॒ष्णः॑। असु॑रस्य। नाम॑। आ। वि॒श्वऽरू॑पः। अ॒मृता॑नि। त॒स्थौ॒॥४॥**

**पदार्थः**-(**आतिष्ठन्तम्**) समन्तात् स्थितम् (**परि**) सर्वतः (**विश्वे**) सर्वे (**अभूषन्**) अलंकुर्वन् (**श्रियः**) लक्ष्मीः (**वसानः**) आच्छादयन् गृह्णन् (**चरति**) गच्छति (**स्वरोचिः**) स्वकीयं रोचिर्दीपनं यस्य सः (**महत्**) (**तत्**) (**वृष्णः**) वर्षकस्य (**असुरस्य**) योऽस्यति दोषान् प्राणेषु रममाणो वा तस्य (**नामा**) उदकानि। **नामेत्युदकनामसु पठितम्।** (निघं०१.१२) (**विश्वरूपः**) विश्वानि रूपाणि यस्मात् सः (**अमृतानि**) अमृतात्मकानि (**तस्थौ**) तिष्ठति॥४॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! विश्वरूपः श्रियो वसानः स्वरोचिः सूर्यो वृष्णोऽसुरस्य वायोरमृतानि नामा तस्थाविव यन्महत्तच्चरति तमातिष्ठन्तं विश्वे विद्वांसो पर्य्यभूषन्॥४॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-हे मनुष्या! वाय्वाधारे स्थिताः सूर्य्यादयो लोका जलवर्षणादिद्वारा सर्वानानन्दयन्ति तथैव श्रीकरः पुरुषः सर्वान् विभूषयति॥४॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(विश्वरूपः)** सम्पूर्ण रूप हैं जिससे वा जो **(श्रियः)** धनों वा पदार्थों की शोभाओं को **(वसानः)** ढांपता वा ग्रहण करता हुआ और **(स्वरोचिः)** अपना प्रकाश जिसमें विद्यमान वह सूर्य्य **(वृष्णः)** वृष्टिकारक **(असुरस्य)** दोषों को दूर करने वा प्राणों में रमनवाले वायु सम्बन्धी **(अमृतानि)** अमृतस्वरूप **(नामा)** जलों को व्याप्त होकर **(आ, तस्थौ)** स्थित होता वा उसके समान जो **(महत्)** बड़ा है **(तत्)** उसको **(चरति)** प्राप्त होता है, उस **(आतिष्ठन्तम्)** चारों ओर से स्थिर हुए को **(विश्वे)** सम्पूर्ण विद्वान् लोग **(परि)** सब प्रकार **(अभूषन्)** शोभित करें॥४॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! वायुरूप आधार में वर्त्तमान सूर्य्य आदि लोक जल वृष्टि आदि के द्वारा सब लोगों को आनन्द देते हैं, वैसे ही लक्ष्मी उत्पादन करनेवाला पुरुष सबको शोभित करता है॥४॥

**अथ राजविषयमाह॥**

अब राजा के विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**असू॑त पूर्वो॑ वृष॒भो ज्याया॑नि॒मा अ॒स्य शु॒रुध॑: सन्ति पू॒र्वीः।**

**दिवो॑ नपाता वि॒दथ॑स्य धी॒भिः क्ष॒त्रं रा॑जाना प्र॒दिवो॑ दधाथे॥५॥२३॥**

**असू॑त। पूर्व॑ः। वृ॒ष॒भः। ज्याया॑न्। इ॒माः। अ॒स्य। शु॒रुध॑ः। स॒न्ति। पू॒र्वीः। दिव॑ः। न॒पा॒ता॒। वि॒दथ॑स्य। धी॒भिः। क्ष॒त्रम्। रा॒जा॒ना॒। प्र॒ऽदिव॑ः। द॒धा॒थे॒ इति॑॥५॥२३॥**

**पदार्थः**-**(असूत)** सूते **(पूर्वः)** पालकः प्रथमः **(वृषभः)** वर्षकः **(ज्यायान्)** महान् वृद्धः **(इमाः)** **(अस्य)** **(शुरुधः)** याः शु शीघ्रं रुध्नन्ति ताः **(सन्ति)** **(पूर्वीः)** प्राचीनाः **(दिवः)** अन्तरिक्षात् **(नपाता)** यौ न पततो विनश्यतस्तत्सम्बुद्धौ **(विदथस्य)** विज्ञानकरस्य **(धीभिः)** प्रज्ञाभिः कर्मभिर्वा **(क्षत्रम्)** रक्षितव्यं राज्यम् **(राजाना)** सूर्यविद्युताविव प्रकाशमानौ राजन्यायेशौ **(प्रदिवः)** प्रकृष्टान् विद्याविनयप्रकाशान् **(दधाते)** धरथः॥५॥

**अन्वयः**-हे नपाता राजाना! युवां यथा पूर्वो वृषभो ज्यायानिमाः पूर्वीः शुरुधोऽसूताऽस्य सकाशाद् वृष्टिकाः सन्ति तथैव दिवो विदथस्य प्रदिवो धीभिः क्षत्रं दधाथे॥५॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यथाऽनुक्रमेण सूर्यो जलधारणवर्षणाभ्यामस्य जगतो हितं करोति तथैव शुभगुणन्यायैः सह वर्त्तमानाः सन्तो राजादयः सुरक्षितं राज्यं पान्तु॥५॥

**पदार्थः**-हे **(नपाता)** नाशरहित **(राजाना)** सूर्य्य और बिजुली के सदृश प्रकाशयुक्त राजा और न्यायधीश! आप दोनों जैसे **(पूर्वः)** पालन करनेवाला प्रथम **(वृषभः)** वृष्टिकर्त्ता **(ज्यायान्)** बड़ा वृद्ध **(इमाः)** इन **(पूर्वीः)** प्राचीन **(शुरुधः)** शीघ्र रुचिकारकों को **(असूत)** उत्पन्न करता है और **(अस्य)** इसके समीप से वृष्टिका वर्षायें हैं, वैसे ही **(दिवः)** अन्तरिक्ष से **(विदथस्य)** विज्ञान करनेवाले के



www.9009.co.in

**(प्रदिवः)** विद्या और विनय के प्रकाशों को तथा **(धीभिः)** बुद्धि वा कर्मों से **(क्षत्रम्)** रक्षा करने योग्य राज्य को **(दधाथे)** धारण करते हो॥५॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे क्रम से सूर्य जल के धारण और वृष्टि से इस संसार का हित करता है, वैसे ही उत्तम गुण और न्यायों के सहित वर्त्तमान हुए राजा आदि लोग उत्तम प्रकार रक्षित राज्य का पालन करें॥५॥

**अथ सभाकार्य्यमुपदिश्यते॥**

अब सभा के कार्य्य का उपदेश अगले मन्त्र में किया है॥

**त्रीणि राजाना विदथे पुरूणि परि विश्वानि भूषथः सदांसि।**

**अपश्यमत्र मनसा जगन्वान् व्रते गन्धर्वां अपि वायुकेशान्॥६॥**

**त्रीणि। राजाना। विदथे। पुरूणि। परि। विश्वानि। भूषथः। सदांसि। अपश्यम्। अत्र। मनसा। जगन्वान्। व्रते। गन्धर्वान्। अपि। वायुऽकेशान्॥६॥**

**पदार्थः**-**(त्रीणि)** **(राजाना)** विद्यादिशुभगुणैः प्रकाशमानौ राजप्रजाजनौ **(विदथे)** विज्ञानप्रापके व्यवहारे **(पुरूणि)** बहूनि **(परि)** सर्वतः **(विश्वानि)** अखिलानि **(भूषथः)** अलंकुरुथः **(सदांसि)** सभाः **(अपश्यम्)** पश्यामि **(अत्र)** अस्मिन् राजव्यवहारे **(मनसा)** विज्ञानेन **(जगन्वान्)** गन्ता **(व्रते)** सत्यभाषणादिव्यवहारे **(गन्धर्वान्)** ये गां सुशिक्षितां वाचं पृथिवीं वा धरन्ति तान् **(अपि)** **(वायुकेशान्)** वायुरिव केशाः प्रकाशा येषां तान्॥६॥

**अन्वयः**-हे राजानाऽहमत्र स्थितान् यान् व्रते गन्धर्वान् वायुकेशानन्यानपि शिष्टान् मनसा जगन्वान् सन्नपश्यं तैस्त्रीणि सदांसि निर्माय विदथे पुरूणि विश्वानि यतः परिभूषथस्तस्मात् सकलकार्य्यसिद्धिकरौ भवथः॥६॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! युष्माभिरुत्तमगुणकर्मस्वभावानामाप्तानां विदुषां राजविद्याधर्मसभाः संस्थाप्य सर्वाणि राजकार्य्याणि यथावत्संसाध्य सर्वाः प्रजाः सततं सुखयेत॥६॥

**पदार्थः**-हे **(राजाना)** राजा और प्रजाजनो! मैं इस संसार में वर्त्तमान जिन **(व्रते)** सत्यभाषणादि व्यवहार में **(गन्धर्वान्)** उत्तम प्रकार शिक्षित वाणी वा पृथिवी को धारण करने और **(वायुकेशान्)** वायु के सदृश प्रकाशवाले तथा अन्य भी शिष्ट अर्थात् उत्तम पुरुषों को **(मनसा)** विज्ञान से **(जगन्वान्)** प्राप्त हुआ **(अपश्यम्)** देखता हूँ, उन लोगों से **(त्रीणि)** तीन **(सदांसि)** सभायें नियत कराके **(विदथे)** विज्ञान को प्राप्त करानेवाले व्यवहार में **(पुरूणि)** बहुत **(विश्वानि)** सम्पूर्ण व्यवहारों को **(परि)** सब प्रकार **(भूषथः)** शोभित करते हो, इससे सम्पूर्ण कार्यों के सिद्ध करनेवाले होते हो॥६॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! आप लोग उत्तम गुण, कर्म और स्वभाववाले यथार्थवक्ता विद्वान् पुरुषों की राजसभा, विद्यासभा और धर्मसभा नियत कर और सम्पूर्ण राज्यसम्बन्धी कर्मों को यथायोग्य सिद्ध कर सकल प्रजा को निरन्तर सुख दीजिये॥६॥



www.9009.co.in

**अथ राजविषयमाह॥**

अब राजविषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**तदिन्न्वस्य वृषभस्य धेनोरा नामभिर्ममिरे सक्म्यं गोः।**

**अन्यदन्यदसुर्यं वसाना नि मायिनो ममिरे रूपमस्मिन्॥७॥**

**तत्। इत्। नु। अस्य। वृषभस्य। धेनोः। आ। नामऽभिः। ममिरे। सक्म्यम्। गोः। अन्यत्ऽअन्यत्। असुर्यम्। वसानाः। नि। मायिनः। ममिरे। रूपम्। अस्मिन्॥७॥**

**पदार्थः**-(**तत्**) (**इत्**) एव (**नु**) सद्यः (**अस्य**) (**वृषभस्य**) बलिष्ठस्य (**धेनोः**) वाण्याः (**आ**) समन्तात् (**नामभिः**) संज्ञाभिः (**ममिरे**) (**सक्म्यम्**) सचति संयुनक्ति यस्मिँस्तत्र भवम् (**गोः**) वाण्याः (**अन्यदन्यत्**) पृथक्पृथग्वर्त्तमानम् (**असुर्यम्**) असुरस्य मेघस्य स्वम् (**वसानाः**) आच्छादयन्तः (**नि**) (**मायिनः**) प्रशस्ता माया प्रज्ञा विद्यते येषान्ते (**ममिरे**) सृजन्ति (**रूपम्**) (**अस्मिन्**) राज्ये॥७॥

**अन्वयः**-ये मनुष्या अस्य वृषभस्य धेनोर्नामभिर्नु यदा ममिरे तत्सक्म्यं गोरन्यदन्यदसुर्यं वसाना मायिनोऽस्मिन् रूपं नि ममिरे त इदेव राज्यं कर्त्तुं शक्नुयुः॥७॥

**भावार्थः**-ये मनुष्या अस्य राज्यस्य कोमलवचनैः पालनं विदधति ते मेघाज्जलमिव बहुविधमैश्वर्य्यं लभन्ते॥७॥

**पदार्थः**-जो मनुष्य (**अस्य**) इस (**वृषभस्य**) बलिष्ठ की (**धेनोः**) वाणी के (**नामभिः**) नामों से (**नु**) शीघ्र जिसको (**आ, ममिरे**) सब ओर से नापते हैं (**तत्**) उस (**सक्म्यम्**) संयोग जिस पदार्थ में करता है, उसमें उत्पन्न (**गोः**) वाणी से (**अन्यदन्यत्**) पृथक्-पृथक् वर्त्तमान (**असुर्यम्**) मेघपन को (**वसानाः**) ढांपते हुए (**मायिनः**) उत्तम बुद्धिवाले (**अस्मिन्**) इस राज्य में (**रूपम्**) रूप को (**नि, ममिरे**) उत्पन्न करते हैं वे (**इत्**) ही राज्य कर सकते हैं॥७॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य इस राज्य का कोमल वचनों से पालन करते हैं, वे मेघ से जल के सदृश अनेक प्रकार के ऐश्वर्य को प्राप्त होते हैं॥७॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**तदिन्न्वस्य सवितुर्नकिर्मे हिरण्ययीममतिं यामशिश्रेत्।**

**आ सुष्टुती रोदसी विश्वमिन्वे अपीव योषा जनिमानि वव्रे॥८॥**

**तत्। इत्। नु। अस्य। सवितुः। नकिः। मे। हिरण्ययीम्। अमतिम्। याम्। अशिश्रेत्। आ। सुऽस्तुती। रोदसी इति। विश्वमिन्वे इति विश्वम्ऽइन्वे। अपिऽइव। योषा। जनिमानि। वव्रे॥८॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**तत्**) (**इत्**) (**नु**) (**अस्य**) (**सवितुः**) सूर्य्यस्येव (**नकिः**) निषेधे (**मे**) मम (**हिरण्ययीम्**) हिरण्यादिबहुधनयुक्ताम् (**अमतिम्**) सुरूपां लक्ष्मीम् (**याम्**) (**अशिश्रेत्**) आश्रयेत् (**आ**) (**सुष्टुती**) सुष्ठु प्रशंसया (**रोदसी**) द्यावापृथिव्याविव राजप्रजाव्यवहारौ (**विश्वमिन्वे**) विश्वव्यापिके (**अपीव**) समुच्चिता इव (**योषा**) भार्या (**जनिमानि**) जन्मानि (**वव्रे**) वृणोति॥८॥

**अन्वयः**-योऽस्य सवितुः सकाशाद्दीप्तिमिव यां हिरण्ययीममतिं योषापीव जनिमानि वव्रे सुष्टुती विश्वमिन्वे रोदसी न्वाशिश्रेत्तदिन्मे नकिर्मा भूत्॥८॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। यथा चन्द्रादयो लोकाः सूर्य्यप्रकाशमाश्रित्य सुशोभिता दृश्यन्ते यथा स्त्री हृद्यं स्वप्रियं शुभलक्षणान्वितं पतिं प्राप्य सन्तानान् जनयित्वाऽनन्दति तथैव पृथिवीराज्यं प्राप्य नष्टदुःखाः सन्तो राजानः सततमानन्देयुः॥८॥

**पदार्थः**-जो (**अस्य**) इस (**सवितुः**) सूर्य्य की प्रकटता से उत्पन्न हुए प्रकाश के सदृश (**याम्**) जिस (**हिरण्ययीम्**) सुवर्ण आदि बहुत रत्नों से युक्त (**अमतिम्**) उत्तम शोभायुक्त लक्ष्मी को (**योषा**) स्त्री (**अपीव**) इकट्ठा की गई सी (**जनिमानि**) जन्मों को (**वव्रे**) स्वीकार करती और (**सुष्टुती**) उत्तम प्रशंसा से (**विश्वमिन्वे**) सर्वत्र व्यापक (**रोदसी**) प्रकाश और पृथिवी के सदृश राजा और प्रजा के व्यवहारों का (**नु**) निश्चय (**आ, अशिश्रेत्**) आश्रय करें (**तत्**) वह (**इत्**) ही (**मे**) मेरे (**नकिः**) नहीं हुई॥८॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जैसे चन्द्र आदि लोक सूर्य के प्रकाश का आश्रय करके उत्तम शोभित देख पड़ते हैं और जैसे स्त्री स्नेहपात्र अपने प्रिय और उत्तम लक्षणों से युक्त पति को प्राप्त होकर सन्तानों को उत्पन्न करके आनन्द करती है, वैसे ही पृथिवी के राज्य को प्राप्त होकर दुःखों से रहित हुए राजजन निरन्तर आनन्द करें॥८॥

**अथ परस्परेण राजप्रजाविषयमाह॥**

अथ परस्परभाव से राजा-प्रजा विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**युवं प्रत्नस्य साधथो महो यद् दैवी स्वस्तिः परि णः स्यातम्।**
**गोपाजिह्वस्य तस्थुषो विरूपा विश्वे पश्यन्ति मायिनः कृतानि॥९॥**

**युवम्। प्रत्नस्य। साधथः। महः। यत्। दैवी। स्वस्तिः। परि। नः। स्यातम्। गोपाजिह्वस्य। तस्थुषः। विऽरूपा। विश्वे। पश्यन्ति। मायिनः। कृतानि॥९॥**

**पदार्थः**-(**युवम्**) युवाम् (**प्रत्नस्य**) पुरातनस्य (**साधथः**) (**महः**) महती (**यत्**) या (**दैवी**) देवानामियम् (**स्वस्तिः**) स्वास्थ्यम् (**परि**) (**नः**) अस्मभ्यम् (**स्यातम्**) (**गोपाजिह्वस्य**) गोरक्षका जिह्वा यस्य तस्य (**तस्थुषः**) स्थिरस्य (**विरूपा**) विविधानि रूपाणि येषु तानि (**विश्वे**) सर्वे (**पश्यन्ति**) (**मायिनः**) प्रशस्तप्रज्ञाः (**कृतानि**) निष्पन्नानि॥९॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे राजप्रजाजनौ! युवं यथा विश्वे मायिनस्तस्थुषः कृतानि विरूपा पश्यन्ति तथा प्रत्नस्य गोपाजिह्वस्य यन्महो दैवी स्वस्तिरस्ति ता नः परिसाधथः [तथा] सर्वेषां सुखकरौ स्यातम्॥९॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यथा विपश्चितः शिल्पिनो विविधरूपाणि वस्तूनि निर्माय सर्वान् सुभूषयन्ति तथैव राजादयो जनाः प्रजायां स्वास्थ्यं संस्थाप्य सर्वेषां कार्याणि साध्नुवन्तु॥९॥

**पदार्थः**-हे राजा और प्रजा जनो! **(युवम्)** आप दोनों जैसे **(विश्वे)** सम्पूर्ण **(मायिनः)** उत्तम बुद्धिवाले **(तस्थुषः)** स्थिर पुरुष के **(कृतानि)** उत्पन्न किये हुए **(विरूपा)** अनेक प्रकार के रूपों से युक्त पदार्थों को **(पश्यन्ति)** देखते हैं, वैसे **(प्रत्नस्य)** प्राचीन **(गोपाजिह्वस्य)** रक्षा करनेवाली जिह्वावाले पुरुष का **(यत्)** जो **(महः)** बड़ी **(दैवी)** देवताओं की **(स्वस्तिः)** स्वस्थता अर्थात् शान्ति है उसको **(नः)** हम लोगों के लिये **(परि, साधथः)** सब प्रकार सिद्ध करते हैं, वैसे सबके सुखकारक हूजिये॥९॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे बुद्धिमान् शिल्पीजन अनेक प्रकार की वस्तुओं को रच के सबको शोभित करते हैं, वैसे ही राजा आदि जन प्रजा में स्वस्थता को स्थिर करके सबके कार्यों को सिद्ध करें॥९॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**शुनं हुवेम मघवानमिन्द्रमस्मिन् भरे नृतमं वाजसातौ।**

**शृण्वन्तमुग्रमूतये समत्सु घ्नन्तं वृत्राणि संजितं धनानाम्॥१०॥२४॥३॥**

**शुनम्। हुवेम। मघऽवानम्। इन्द्रम्। अस्मिन्। भरे। नृऽतमम्। वाजऽसातौ। शृण्वन्तम्। उग्रम्। ऊतये। समत्ऽसु। घ्नन्तम्। वृत्राणि। संऽजितम्। धनानाम्॥१०॥**

**पदार्थः**-**(शुनम्)** राजप्रजाजनितं सुखम् **(हुवेम)** गृह्णीयाम **(मघवानम्)** बहुधनवन्तं वैश्यम् **(इन्द्रम्)** परमैश्वर्य्यं राजानम् **(अस्मिन्)** **(भरे)** पालनीये राज्ये **(नृतमम्)** प्रशस्तनायकम् **(वाजसातौ)** सत्यासत्यविभागे **(शृण्वन्तम्)** **(उग्रम्)** पापनाशाय तेजस्विनम् **(ऊतये)** रक्षणाद्याय **(समत्सु)** संग्रामेषु **(घ्नन्तम्)** **(वृत्राणि)** धनानि। **वृत्रमिति धननामसु पठितम्।** (निघं०२.१०) **(सञ्जितम्)** सम्यग्जयशीलं शूरवीरम् **(धनानाम्)**॥१०॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथा वयमूतयेऽस्मिन् वाजसातौ भरे शुनं मघवानं शृण्वन्तं नृतममुग्रं समत्सु घ्नन्तं वृत्राणि ददतं धनानां सञ्जितमिन्द्रं हुवेम तथैतं यूयमप्याह्वयत॥१०॥

**भावार्थः**-ये राजप्रजाजनाः परस्परं प्रीता अन्योऽन्यस्य सुखदुःखवार्त्ताः शृण्वन्तो दुष्टान् ताडयन्तः सत्पुरुषान् सत्कुर्वन्तोऽन्योऽन्येषां सत्कर्माणि प्रशंसेयुस्ते परमैश्वर्य्यं लब्ध्वा सुखिनः स्युरिति॥१०॥

अस्मिन्सूक्ते विद्वच्छिल्पिसभाराजप्रजासूर्य्यभूम्यादिगुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥



www.9009.co.in

**इति ३८ सूक्तं २४ वर्गः ३ मण्डले ३ अनुवाकश्च समाप्तः॥**

**[इत्यष्टात्रिंशत्तमं सूक्तं चतुर्विंशो वर्गस्तृतीये मण्डले द्वितीयोऽनुवाकश्च समाप्तः॥]**

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे हम लोग **(ऊतये)** रक्षा आदि के लिये **(अस्मिन्)** इस **(वाजसातौ)** सत्य और असत्य के विभाग और **(भरे)** पालन करने योग्य राज्य में **(शुनम्)** राजप्रजाजनित अर्थात् राजा प्रजा से उत्पन्न हुए सुख **(मघवानम्)** बहुत धन से युक्त वैश्य **(शृण्वन्तम्)** सुनते हुए **(नृतमम्)** उत्तम नायक **(उग्रम्)** पाप के नाश के लिये प्रतापी **(समत्सु)** संग्रामों में **(घ्नन्तम्)** शत्रुओं के नाश करने **(वृत्राणि)** धनों को देने और **(धनानाम्)** धनों को **(सञ्जितम्)** उत्तम प्रकार जीतनेवाले **(इन्द्रम्)** परमैश्वर्यवान् राजा को **(हुवेम)** ग्रहण करें, वैसे इसको आप लोग भी ग्रहण करो॥१०॥

**भावार्थः**-जो राजा और प्रजाजन परस्पर प्रसन्न, परस्पर के सुख और दुःख की वार्त्ताओं को सुनते, दुष्ट पुरुषों को ताड़न करते और सत्पुरुषों का सत्कार करते हुए परस्पर के उत्तम कर्मों की प्रशंसा करें, वे अत्यन्त ऐश्वर्य को प्राप्त होकर सुखी होवें॥१०॥

इस सूक्त में विद्वान्, शिल्पी, सभा, राजा, प्रजा, सूर्य और भूमि आदि के गुणों का वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्तार्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह [अड़तीसवाँ] ३८वाँ सूक्त [चौबीसवाँ] २४वाँ वर्ग और [तीसरे] ३ मण्डल में [तीसरा] ३ अनुवाक समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

**अथ नवर्चस्यैकोनचत्वारिंशत्तमस्य सूक्तस्य विश्वामित्र ऋषिः। इन्द्रो देवता। १, ९ विराट् त्रिष्टुप्। ३-७ निचृत् त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः। २, ८ भुरिक् पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः॥**

***अथ विद्वद्विषयमाह॥***

अब नव ऋचावाले तीसरे मण्डल में उनतालीसवें सूक्त का आरम्भ है। उसके प्रथम मन्त्र में विद्वान् के विषय को कहते हैं॥

**इन्द्रं॑ म॒तिर्हृ॒द आ व॒च्यमा॑ना॒च्छा॒ पतिं॒ स्तोम॑तष्टा जिगाति।**

**या जागृ॑विर्वि॒दथे॑ श॒स्यमा॒नेन्द्र॒ यत्ते॒ जाय॑ते वि॒द्धि तस्य॑॥१॥**

**इन्द्र॑म्। म॒तिः। हृ॒दः। आ। व॒च्यमा॑ना। अच्छ॑। पति॑म्। स्तोम॑ऽतष्टा। जि॒गा॒ति। या। जागृ॑विः। वि॒दथे॑। श॒स्यमा॑ना। इन्द्र॑। यत्। ते॒। जाय॑ते। वि॒द्धि। तस्य॑॥१॥**

**पदार्थः**-(**इन्द्रम्**) परमसुखप्रदम् (**मतिः**) प्रज्ञा (**हृदः**) हृदयात् (**आ**) समन्तात् (**वच्यमाना**) उच्यमाना। अत्र **वाच्छन्दसी**ति सम्प्रसारणाऽभावः। (**अच्छ**) सम्यक्। अत्र **निपातस्य चे**ति दीर्घः। (**पतिम्**) पालकं स्वामिनम् (**स्तोमतष्टा**) स्तोमैः स्तुतिभिस्तष्टा विस्तृता (**जिगाति**) स्तौति (**या**) (**जागृविः**) जागरूका: (**विदथे**) विज्ञाने (**शस्यमाना**) स्तूयमाना (**इन्द्र**) परमैश्वर्य्ययुक्त (**यत्**) या (**ते**) तव (**जायते**) (**विद्धि**) (**तस्य**)॥१॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र विद्वन्! या वच्यमाना विदथे जागृविः शस्यमाना स्तोमतष्टा मतिर्हृद इन्द्रं पतिमच्छा जिगाति यद्या प्रज्ञा ते जायते तथा तस्य शुभगुणकर्मस्वभावान् विद्धि॥१॥

**भावार्थः**-येषां हृदये प्रमोत्पद्यते सर्वेषां ते गुणदोषान् विज्ञाय गुणान् गृहीत्वा दोषांश्च त्यक्त्वा गुणप्रशंसां दोषनिन्दां कृत्वोत्तमानि कर्माणि कुर्य्युस्सत्येवं तेऽत्र प्रशंसिताः स्युः॥१॥

**पदार्थः**-हे (**इन्द्र**) अत्यन्त ऐश्वर्य्ययुक्त विद्वान् पुरुष! (**या**) जो (**वच्यमाना**) कही गई (**विदथे**) विज्ञाने में (**जागृविः**) जागनेवाली और विज्ञान में (**शस्यमाना**) स्तुति से युक्त हुई (**स्तोमतष्टा**) स्तुतियों से विस्तारयुक्त (**मतिः**) बुद्धि (**हृदः**) हृदय से (**इन्द्रम्**) अत्यन्त सुख देने (**पतिम्**) और पालनेवाले स्वामी की (**अच्छ**) उत्तम प्रकार (**आ**) सब ओर से (**जिगाति**) स्तुति करती है (**यत्**) जो बुद्धि (**ते**) आपकी (**जायते**) उत्पन्न होती है, उस बुद्धि से (**तस्य**) उस पालनेवाले के उत्तम गुण, कर्म और स्वभावों को (**विद्धि**) जानो॥१॥

**भावार्थः**-जिनके हृदय में यथार्थ ज्ञान उत्पन्न होता है, वे सब लोगों के गुण और दोषों को जान, गुणों का ग्रहण, दोषों का त्याग, गुणों की प्रशंसा और दोषों की निन्दा करके उत्तम कर्मों को करें, ऐसा होने से वे इस संसार में प्रशंसायुक्त होवें॥१॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥



www.9009.co.in

**दि॒वश्चि॒दा पू॒र्व्या जाय॑माना॒ वि जा॒गृवि॑र्वि॒दथे॑ श॒स्यमा॑ना।**

**भ॒द्रा वस्त्रा॒ण्यर्जु॑ना॒ वसा॑ना॒ सेय॑म॒स्मे स॑न॒जा पित्र्या॒ धीः॥ २॥**

**दि॒वः। चि॒त्। आ। पू॒र्व्या। जाय॑माना। वि। जा॒गृविः॑। वि॒दथे॑। श॒स्यमा॑ना। भ॒द्रा। वस्त्रा॑णि। अर्जु॑ना। वसा॑ना। सा। इ॒यम्। अ॒स्मे इति॑। स॒न॒ऽजा। पित्र्या॑। धीः॥ २॥**

**पदार्थः**-(**दिवः**) विज्ञानप्रकाशात् (**चित्**) अपि (**आ**) (**पूर्व्या**) पूर्वैविद्वद्भिर्निष्पादिता (**जायमाना**) (**वि**) (**जागृविः**) जागरूका: (**विदथे**) विज्ञानवर्द्धके व्यवहारे (**शस्यमाना**) स्तूयमाना (**भद्रा**) सेवनीयानि कल्याणकराणि (**वस्त्राणि**) (**अर्जुना**) सुरूपाणि। **अर्जुनमिति रूपनामसु पठितम्।** (निघं०३.७) (**वसाना**) धारयन्ती (**सा**) (**इयम्**) (**अस्मे**) अस्मासु (**सनजा**) सनेन विभागेन जाता (**पित्र्या**) पितृषु भवा (**धीः**) प्रज्ञा॥ २॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! याऽस्मे दिवो जायमाना पूर्व्या विदथे जागृविः शस्यमाना भद्राऽर्जुना वस्त्राणि वसाना सुन्दरी स्त्रीव सनजा पित्र्या धीर्विजायते सेयं यष्मासु चिदा जायताम्॥ २॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। त एवाप्ताः पुरुषा ये स्वात्मवत्सर्वेषु बुद्ध्यादिपदार्थान् जनयितुमुद्यताः स्युः॥ २॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो (**अस्मे**) हम लोगों में (**दिवः**) विज्ञान के प्रकाश से (**जायमाना**) उत्पन्न हुई (**पूर्व्या**) प्राचीन विद्वानों से सिद्ध की गई (**विदथे**) विज्ञान के बढ़ानेवाले व्यवहार में (**जागृविः**) जागनेवाली (**शस्यमाना**) स्तुति की जाती और (**भद्रा**) धारण करने योग्य और कल्याणकारक (**अर्जुना**) सुन्दररूपयुक्त (**वस्त्राणि**) वस्त्रों को (**वसाना**) ओढ़ती हुई सुन्दर स्त्री के तुल्य (**सनजा**) विभाग से प्रसिद्ध (**पित्र्या**) वा पितरों में प्रकट हुई (**धीः**) उत्तम बुद्धि (**वि**) विशेषता से उत्पन्न होती (**सा, इयम्**) सो यह आप लोगों में (**चित्, आ**) भी सब ओर से उत्पन्न होवे॥ २॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। वे ही श्रेष्ठ पुरुष हैं जो कि अपने आत्मा के तुल्य सम्पूर्ण जनों में बुद्धि आदि पदार्थों को उत्पन्न कराने को उद्यत होवें॥ २॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**य॒मा चि॒दत्र॑ य॒म॒सूर॑सूत जि॒ह्वाया॒ अग्रं॒ पत॒दा ह्यस्था॑त्।**

**वपूं॑षि जा॒ता मि॑थु॒ना स॑चेते तमो॒हना॒ तपु॑षो बु॒ध्न एता॑॥ ३॥**

**य॒मा। चि॒त्। अत्र॑। य॒म॒ऽसूः। अ॒सू॒त॒। जि॒ह्वायाः॑। अग्र॑म्। पत॑त्। आ। हि। अस्था॑त्। वपूं॑षि। जा॒ता। मि॒थु॒ना। स॒चे॒ते इति॑। त॒म॒ःऽहना॑। तपु॑षः। बु॒ध्ने। आऽइ॑ता॥ ३॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**यमा**) यमावुपरतौ (**चित्**) अपि (**अत्र**) (**यमसूः**) या यमं सूर्य्यं सूते सा विद्युत् (**असूत**) सूते जनयति (**जिह्वायाः**) (**अग्रम्**) (**पतत्**) पतति गच्छति प्राप्नोति वा (**आ**) समन्तात् (**हि**) यतः (**अस्थात्**) तिष्ठति (**वपूंषि**) रूपाणि (**जाता**) उत्पन्नानि (**मिथुना**) मिथुनौ परस्परसङ्गतौ (**सचेते**) सम्बध्नीतः (**तमोहना**) यौ तमोहतस्तौ (**तपुषः**) तपत्यस्मिन् सूर्य्यस्तस्य दिनस्य मध्ये (**बुध्ने**) बध्नन्त्यापो यस्मिँस्तस्मिन्नन्तरिक्षे (**एता**) एतौ वर्त्तमानौ॥३॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यो यमसूश्चिदत्र यमा मिथुना तमोहना तपुषो बुध्न एता सूर्य्याचन्द्रमसावसूत जिह्वाया अग्रं हि पतज्जाता वपूंष्यास्थाद्यौ तमोहना मिथुनैता सूर्य्याचन्द्रमसौ तपुषो बुध्ने सचेते ताँस्तौ विद्धि विजानीत॥३॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यथा विद्युत्सूर्यं सूर्यश्चन्द्रादिकं प्रकाशयति तमो हन्ति तथैव परस्परस्यानुकूला भूत्वा सद्व्यवहारे सचन्ताम्॥३॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो (**यमसूः**) सूर्य्य को उत्पन्न करानेवाली बिजुली (**चित्**) अथवा (**अत्र**) इस संसार में (**यमा**) सहचारी (**मिथुना**) परस्पर मिले हुए (**तमोहना**) अन्धकार का नाश करनेवाले (**तपुषः**) जिसमें सूर्य्य तपता है, उस दिन के बीच वा (**बुध्ने**) बंधते अर्थात् इकट्ठे होते जल जिसमें उस अन्तरिक्ष में (**एता**) वर्त्तमान इन सूर्य्य और चन्द्रमा को (**असूत**) उत्पन्न करती है (**जिह्वायाः**) तथा जिह्वा के (**अग्रम्**) अग्रभाग को (**हि**) जिस कारण (**पतत्**) जाती वा प्राप्त होती है और (**जाता**) उत्पन्न हुए (**वपूंषि**) रूपों को प्राप्त हो (**आ, अस्थात्**) स्थिर होती है, जो अन्धकार के नाश करनेवाले परस्पर मिले हुए सूर्य्य और चन्द्रमा सूर्य्यमण्डल जिसमें तपता है, उस दिन के बीच और जल जिसमें इकट्ठें हों उस अन्तरिक्ष में (**सचेते**) सम्बन्ध करते हैं, उनको (**विद्धि**) जानिये॥३॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! आप जैसे बिजुली सूर्य का और सूर्य चन्द्रादिक का प्रकाश और अन्धकार का नाश करता है, वैसे ही परस्पर अनुकूल होकर उत्तम व्यवहार में तत्पर होओ॥३॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**नकिरेषां निन्दिता मर्त्येषु ये अस्माकं पितरो गोषु योधाः।**

**इन्द्र एषां दृंहिता माहिनावानुद्गोत्राणि ससृजे दंसनावान्॥४॥**

**नकिः। एषाम्। निन्दिता। मर्त्येषु। ये। अस्माकम्। पितरः। गोषु। योधाः। इन्द्रः। एषाम्। दृंहिता। माहिनऽवान्। उत्। गोत्राणि। ससृजे। दंसनाऽवान्॥४॥**

**पदार्थः**-(**नकिः**) (**एषाम्**) (**निन्दिता**) गुणेषु दोषारोपको दोषेषु गुणारोपकश्च (**मर्त्येषु**) मनुष्येषु (**ये**) (**अस्माकम्**) (**पितरः**) पालकाः (**गोषु**) पृथिवीषु (**योधाः**) योद्धारः (**इन्द्रः**) सूर्य इव वर्त्तमानः (**एषाम्**) (**दृंहिता**) वर्द्धकः (**माहिनावान्**) प्रशस्तानि माहिनानि पूजनानि विद्यन्ते यस्य (**उत्**) (**गोत्राणि**) वंशान् (**ससृजे**) (**दंसनावान्**) प्रशस्तकर्मयुक्तः॥४॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे मनुष्या! य इन्द्रो येऽस्माकं गोषु मर्त्येषु च योधाः पितरः सन्त्येषां दृंहिता माहिनावान् दंसनावान् गोत्राण्युत्ससृजे तं भजत यत एषां निन्दिता नकिर्भवेत्॥४॥

**भावार्थः**-मनुष्यैस्तथा प्रयतितव्यं यथा मनुष्येषु निन्दितारो न स्युः प्रशंसका भवेयुर्यथा सूर्य्यः सर्वं जगत् पाति तथा रक्षकाः पितरः संसेवनीयाः॥४॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो **(इन्द्रः)** सूर्य्य के सदृश वर्त्तमान **(ये)** वा जो **(अस्माकम्)** हम लोगों के **(गोषु)** पृथिवियों और **(मर्त्येषु)** मनुष्यों में **(योधाः)** योद्धा लोग और **(पितरः)** पालन करनेवाले हैं **(एषाम्)** इन लोगों का **(दृंहिता)** बढ़ानेवाला **(माहिनावान्)** प्रशंसित पूजन हैं जिसके वह और **(दंसनावान्)** जो उत्तम कर्मों से युक्त है वह **(गोत्राणि)** वंशों को **(उत्, ससृजे)** उत्पन्न करता है, उसकी सेवा करो, जिससे **(एषाम्)** इन लोगों का **(निन्दिता)** गुणों में दोषों का आरोपक और दोषों में गुणों का आरोपक **(नकिः)** नहीं होवे॥४॥

**भावार्थः**-मनुष्यों को चाहिये कि ऐसा प्रयत्न करें कि जिससे निन्दित न हों और आप दूसरों की स्तुति करनेवाले हों और जैसे सूर्य्य सम्पूर्ण जगत् का पालन करता है, वैसे रक्षा करनेवाले पितरों की सेवा करनी चाहिये॥४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**सखा॑ ह॒ यत्र॒ सखि॑भि॒र्नव॑ग्वैरभि॒ज्ञ्वा सत्व॑भि॒र्गा अ॑नु॒ग्मन्।**

**स॒त्यं तदिन्द्रो॑ द॒शभि॒र्दश॑ग्वैः सूर्यं॑ विवेद॒ तम॑सि क्षि॒यन्त॑म्॥५॥२५॥**

**सखा॑। ह॒। यत्र॑। सखि॑ऽभिः। नव॑ऽग्वैः। अ॒भि॒ऽज्ञु। आ। सत्व॑ऽभिः। गाः। अ॒नु॒ऽग्मन्। स॒त्यम्। तत्। इन्द्रः॑। द॒शऽभिः॑। दश॑ऽग्वैः। सूर्य॑म्। वि॒वेद॒। तम॑सि। क्षि॒यन्त॑म्॥५॥**

**पदार्थः**-**(सखा)** **(ह)** खलु **(यत्र)** **(सखिभिः)** **(नवग्वैः)** नवीनगतिभिः **(अभिज्ञु)** आभिमुख्ये जानुनी यस्य सः **(आ)** समन्तात् **(सत्त्वभिः)** पदार्थैः सह **(गाः)** सुशिक्षिता वाचो भूमिर्वा **(अनुग्मन्)** अनुकूलं गच्छन् **(सत्यम्)** सत्सु साधु **(तत्)** तम् **(इन्द्रः)** विद्युत् **(दशभिः)** दशविधैर्वायुभिः **(दशग्वैः)** दशविधा गतयो येषान्तैः **(सूर्य्यम्)** **(विवेद)** विन्दति **(तमसि)** अन्धकारे रात्रौ **(क्षियन्तम्)** निवसन्तम्॥५॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यत्र नवग्वैः सखिभिः सहाऽभिज्ञु सखा सत्त्वभिर्ह गा आनुग्मन् यत्सत्यं दशग्वैर्दशभिः सहेन्द्रो तमसि क्षियन्तं सूर्य्यं विवेद तद्विवेद तदनुकरणं सर्वे कुर्वन्तु॥५॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यथा सखिवद्वर्त्तमानेन वायुना विद्युदाख्योऽग्निरन्धकारे सूर्य्यपरिणामं प्राप्य सर्वान् प्रकाश्याऽऽनन्दति तथैव धार्मिकैर्मित्रैः सहितो सुहृद्विद्वान् शुद्धान्तःकरणतया विद्यया च प्रकटीभूत्वा सर्वेषामात्मनः प्रकाश्याऽऽनन्दति॥५॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(यत्र)** जिस स्थल में **(नवग्वैः)** नवीन गतियों और **(सखिभिः)** मित्रों के साथ **(अभिज्ञु)** सम्मुख जाङ्घों से युक्त **(सखा)** मित्र **(सत्त्वभिः)** पदार्थों के साथ **(ह)** निश्चय **(गाः)** उत्तम प्रकार शिक्षित वाणी वा भूमियों के **(आ, अनुग्मन्)** अनुकूल प्राप्त होता हुआ जो **(सत्यम्)** श्रेष्ठ व्यवहारों में उत्तम अर्थात् सच्चापन जैसे हो, वैसे **(दशग्वैः)** दश प्रकार की गतियों से युक्त **(दशभिः)** दश प्रकार के पवनों के साथ **(इन्द्रः)** बिजुली **(तमसि)** रात्रि में **(क्षियन्तम्)** निवास करते अर्थात् अपना काम प्रकाश न करते हुए **(सूर्य्यम्)** सूर्य को **(विवेद)** प्राप्त होती है **(तत्)** उसको जो जानता है, उसका अनुकरण सब लोग करो॥५॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे मित्र के तुल्य वर्त्तमान वायु से बिजुली नामक अग्नि अन्धकार में सूर्य के परिणाम को प्राप्त हो और सबको प्रकाशित कर आनन्द देती है, वैसे ही धार्मिक मित्रों के सहित मित्र विद्वान् शुद्धान्तकरणता तथा विद्या से प्रकट होकर सबके आत्माओं का प्रकाश करके आनन्द देता है॥५॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**इन्द्रो मधु संभृतमुस्रियायां पद्वद्विवेद शफवन्नमे गोः।**

**गुहा हितं गुह्यं गूळहमप्सु हस्ते दधे दक्षिणे दक्षिणावान्॥६॥**

**इन्द्रः। मधु। सम्ऽभृतम्। उस्रियायाम् पत्ऽवत्। विवेद। शफऽवत्। नमे। गोः। गुहा। हितम्। गुह्यम्। गूळहम्। अप्ऽसु। हस्ते। दधे। दक्षिणे। दक्षिणऽवान्॥६॥**

**पदार्थः**-**(इन्द्रः)** विद्युदिव नरः **(मधु)** मधुरादिकं रसम् **(सम्भृतम्)** सम्यग्धृतम् **(उस्रियायाम्)** भूमौ **(पद्वत्)** पद्भ्यां तुल्यम् **(विवेद)** **(शफवत्)** शफा विद्यन्ते यस्मिन् पदे तत् **(नमे)** नमेत् **(गोः)** वाचः **(गुहा)** गुहायां बुद्धौ **(हितम्)** स्थितम् **(गुह्यम्)** गुप्तम् **(गूढम्)** **(अप्सु)** प्राणेषु जलेषु वा **(हस्ते)** **(दधे)** दध्यात् **(दक्षिणे)** **(दक्षिणावान्)** दक्षिणा विद्यते यस्य स इव॥६॥

**अन्वयः**-य इन्द्रो उस्रियायां पद्वच्छफवन्न मधु सम्भृतं नमे विवेद गोर्गुहा हितमप्सु गुह्यं गूढं दक्षिणावानिव दक्षिणे हस्ते दधे तं सर्वे जानन्तु॥६॥

**भावार्थः**-अत्रोपमावाचकलुप्तोपमालङ्कारौ। यथा मनुष्याः पद्भ्यां पशवः शफैर्गमनं कृत्वा देशान्तरं साक्षात्कुर्वन्ति तथैव बाह्याभ्यन्तरस्थां विद्युतं विद्वानेव हस्तगतदक्षिणावद्विदित्वाऽऽभ्यन्तरं स्वात्मानं परमात्मानं च बाह्यं सूर्यादिकं विजानात्येतत्सहायेन धर्मार्थकाममोक्षान् सर्वे साध्नुवन्तु॥६॥

**पदार्थः**-जो **(इन्द्रः)** बिजुली के समान मनुष्य **(उस्रियायाम्)** भूमि में **(पद्वत्)** पैरों के और **(शफवत्)** खुरों के सदृश **(मधु)** मधुर आदि रस **(सम्भृतम्)** जो कि उत्तम धारण किया गया उसे **(नमे)** नमें स्वीकार करे **(विवेद)** जाने **(गोः)** वाणी और **(गुहा)** बुद्धि में **(हितम्)** स्थित **(अप्सु)** प्राणों वा जलों



www.9009.co.in

में **(गुह्यम्)** गुप्त और **(गूढम्)** ढपे हुए व्यवहार को **(दक्षिणावान्)** दक्षिणा को धारण किये हुए के समान **(दक्षिणे)** दाहिने **(हस्ते)** हाथ में **(दधे)** धारण करे, उसको सब लोग जानो॥६॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमा और वाचकलुप्तोपमालङ्कार हैं। जैसे मनुष्य पैरों और पशु खुरों से गमन करके दूसरे स्थान को प्रत्यक्ष करते हैं, वैसे ही बाहर-भीतर वर्त्तमान बिजुली को विद्वान् पुरुष हस्तप्राप्त दक्षिणा के सदृश जानकर और हृदय में वर्त्तमान अपने आत्मा और परमात्मा तथा बाह्य सूर्य आदि को जानता है, इसके सहाय से धर्म, अर्थ, काम और मोक्षों को सब सिद्ध करें॥६॥

**अथ विद्वद्विषयमाह॥**

अब विद्वान् के विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**ज्योतिर्वृणीत तमसो विजानन्नारे स्याम दुरितादभीके।**

**इमा गिरः सोमपाः सोमवृद्ध जुषस्वेन्द्र पुरुतमस्य कारोः॥७॥**

**ज्योतिः। वृणीत। तमसः। विऽजानन्। आरे। स्याम। दुःऽइतात्। अभीके। इमाः। गिरः। सोमऽपाः। सोमऽवृद्ध। जुषस्व। इन्द्र। पुरुऽतमस्य। कारोः॥७॥**

**पदार्थः**-**(ज्योतिः)** प्रकाशमिव विद्याम् **(वृणीत)** स्वीकुर्य्यात् **(तमसः)** अन्धकारादविद्याया इव **(विजानन्)** विशेषेण विदन् **(आरे)** दूरे **(स्याम)** **(दुरितात्)** दुष्टाचाराच्छ्रेष्ठाचारात् **(अभीके)** समीपे **(इमाः)** **(गिरः)** वाचः **(सोमपाः)** सोममैश्वर्यं पाति। अत्र कर्त्तरि क्विप्। **(सोमवृद्ध)** सोमेन विश्वैश्वर्येण वृद्धस्तत्सम्बुद्धौ **(जुषस्व)** सेवस्व **(इन्द्र)** परमैश्वर्ययुक्त **(पुरुतमस्य)** अतिशयेन बहुविद्यायुक्तस्य **(कारोः)** कारकस्य शिल्पिनः॥७॥

**अन्वयः**-हे सोमवृद्धेन्द्र सोमपा! त्वं पुरुतमस्य कारो इमाः गिर जुषस्व यथा विजानञ्ज्योतिरस्माकमारेऽभीके दुरितात् पृथग् भूत्वा तमसो ज्योतिर्वृणीत तथैतस्यैताः सेवित्वा वयं विद्वांसः स्याम॥७॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यथा वयं पापाचरणात् पृथग् भूत्वा धर्माचरणमविद्यायाः पृथग् भूत्वा विद्या वरित्वाऽऽत्मबोधं शिल्पक्रियाकौशलं च जुषामहे तथैव यूयमपि भवत सर्वे वयं दूरे समीपे च स्थिता अपि मैत्रीं न जह्याम॥७॥

**पदार्थः**-हे **(सोमवृद्ध)** विद्यारूपी ऐश्वर्य से वृद्ध और **(इन्द्र)** अत्यन्त ऐश्वर्ययुक्त **(सोमपाः)** ऐश्वर्य्य की रक्षा करनेवाले! आप **(पुरुतमस्य)** अत्यन्त बहुत विद्या से युक्त **(कारोः)** शिल्पीजन की जो **(इमाः)** उन **(गिरः)** वाणियों का **(जुषस्व)** सेवन करो और जैसे **(विजानन्)** विशेष प्रकार से जानते हुए आप हम लोगों से **(आरे)** दूरस्थल और **(अभीके)** समीप स्थल में **(दुरितात्)** दुष्ट आचरण से पृथक् होकर श्रेष्ठ आचरण और **(तमसः)** अविद्या से पृथक् होकर विद्या और **(ज्योतिः)** प्रकाश के समान विद्या का **(वृणीत)** स्वीकार करें, वैसे इन आपकी उन वाणियों का सेवन करके हम लोग विद्वान् होवें॥७॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे हम लोग पाप के आचरण से पृथक् होकर धर्म के आचरण, और अविद्या से पृथक् होकर विद्या का ग्रहण करके आत्मसम्बन्धी ज्ञान और शिल्प-क्रिया-कौशल का सेवन करते हैं, वैसे ही आप लोग भी सेवन करनेवाले हूजिये और हम सब लोग दूर और समीप में वर्त्तमान हुए भी मित्रता का त्याग नहीं करें॥७॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**ज्योतिर्यज्ञाय रोदसी अनु ष्यादारे स्याम दुरितस्य भूरेः।**

**भूरि चिद्धि तुजतो मर्त्यस्य सुपारासो वसवो बर्हणावत्॥८॥**

**ज्योतिः। यज्ञाय। रोदसी इति। अनु। स्यात्। आरे। स्याम। दुःऽइतस्य। भूरेः। भूरि। चित्। हि। तुजतः। मर्त्यस्य। सुऽपारासः। वसवः। बर्हणाऽवत्॥८॥**

**पदार्थः**-(**ज्योतिः**) सूर्य्यप्रकाश इव विज्ञानदीप्तिः (**यज्ञाय**) विद्वत्सत्काराद्यनुष्ठानाय (**रोदसी**) भूमिप्रकाशाविव विद्यानयौ (**अनु**) पश्चात् (**स्यात्**) भवेत् (**आरे**) दूरे समीपे वा (**स्याम**) (**दुरितस्य**) दुःखेनेतस्य प्राप्तस्य (**भूरेः**) बहोः (**भूरि**) बहु (**चित्**) अपि (**हि**) यतः (**तुजतः**) बलवतः (**मर्त्यस्य**) मनुष्यस्य (**सुपारासः**) शोभनो विद्यायाः पारो येषान्ते (**वसवः**) ये विद्यासु वसन्त्यन्यान् वासयन्ति ते (**बर्हणावत्**) बर्हणं वृद्धिकारकं विज्ञानं धनं वा विद्यते यस्मिंस्तत्॥८॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथा सुपारासो वसवो वयं यज्ञाय रोदसी इवारे दुरितस्य भूरेर्भूरि चित्तुजतो मर्त्यस्य बर्हणावज्ज्योतिः स्यादिति कामयमाना अनु ष्याम तथाहि भवन्तो भवन्तु॥८॥

**भावार्थः**-त एवाप्ता ये दूरस्थेषु समीपस्थेषु च कृपामनुसंधाय विद्योपदेशौ प्रचार्य्यातिकठिनस्य बोधस्य सुगमतां सम्पादयेयुस्त एव सर्वैः सत्कर्त्तव्या भवन्तु॥८॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे (**सुपारासः**) सुन्दर विद्या का पार है जिनका और (**वसवः**) विद्याओं में स्वयं वसते वा अन्य जनों को वसाते वह हम लोग (**यज्ञाय**) विद्वानों के सत्कार आदि अनुष्ठान के लिये (**रोदसी**) भूमि और प्रकाश के सदृश विद्या और नीति को (**आरे**) दूर वा समीप में (**दुरितस्य**) दुःख से प्राप्त हुए (**भूरेः**) बहुत का (**भूरि**) बहुत (**चित्**) भी (**तुजतः**) बलवान् (**मर्त्यस्य**) मनुष्य का (**बर्हणावत्**) वृद्धिकारक विज्ञान वा धन जिसमें विद्यमान ऐसा (**ज्योतिः**) सूर्य के प्रकाश के सदृश विज्ञान का प्रकाश (**स्यात्**) होवे, ऐसी कामना करते हुए (**अनु**) पीछे (**स्याम**) होवें, वैसे (**हि**) ही आप हूजिये॥८॥

**भावार्थः**-वे ही श्रेष्ठ पुरुष हैं जो लोग दूर और समीप में वर्त्तमान पुरुषों में कृपा का अनुसन्धान विद्या और उपदेश का प्रचार करके कड़े कठिन बोध की सरलता को उत्पन्न करें, वे ही सब लोगों का सत्कार करने योग्य होवें॥८॥



www.9009.co.in

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**शुनं हुवेम मघवानमिन्द्रमस्मिन् भरे नृतमं वाजसातौ।**

**शृण्वन्तमुग्रमूतये समत्सु घ्नन्तं वृत्राणि संजितं धनानाम्॥९॥२६॥२॥**

**शुनम्। हुवेम। मघऽवानम्। इन्द्रम्। अस्मिन्। भरे। नृऽतमम्। वाजऽसातौ। शृण्वन्तम्। उग्रम्। ऊतये। समत्ऽसु। घ्नन्तम्। वृत्राणि। सम्ऽजितम्। धनानाम्॥९॥**

**पदार्थः**-(**शुनम्**) सुखकारकं विज्ञानम् (**हुवेम**) स्वीकुर्याम (**मघवानम्**) बहुधनप्रदानकरम् (**इन्द्रम्**) विद्युतम् (**अस्मिन्**) (**भरे**) भरणीये संसारे (**नृतमम्**) अतिशयेन नायकम् (**वाजसातौ**) पदार्थानां विभागविद्यायाम् (**शृण्वन्तम्**) श्रोतारं न्यायाधीशं दण्डप्रदमिव (**उग्रम्**) तेजस्विस्वभावम् (**ऊतये**) व्यवहारसिद्धिप्रवेशाय (**समत्सु**) संग्रामेषु (**घ्नन्तम्**) विद्यावन्तं शूरवीरमिव (**वृत्राणि**) धनानि (**सञ्जितम्**) सम्यक् जयति येन (**धनानाम्**) श्रियाम्॥९॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यं वयमूतयेऽस्मिन् भरे नृतमं मघवानं वाजसातौ शृण्वन्तमिवोग्रं समत्सु घ्नन्तमिव धनानां सञ्जितमिन्द्र विज्ञाय वृत्राणि शुनं च हुवेम तथैतं विज्ञाय सर्वमेतद्यूयं प्राप्नुत॥९॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। आप्ता विद्वांसो भूगर्भविद्युद्भूगोलखगोलसृष्टिस्थानां पदार्थानां विद्योपदेशेन पदार्थविद्याः प्रापय्य सर्वान्त्सततमुन्नयेयुरिति॥९॥

अत्र विद्वद्गुणवर्णनं निन्दितजननिवारणं मैत्रीभावनमज्ञानं विज्ञाय विद्याप्राप्तीच्छाकरणमत एतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इत्यृग् संहितायां तृतीयाष्टके द्वितीयोऽध्यायः षड्विंशो वर्गस्तृतीये मण्डल एकोनचत्वारिंशत्तमं सूक्तञ्च समाप्तम्॥**

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जिसको हम लोग (**ऊतये**) व्यवहार-सिद्धिप्रवेश के लिये (**अस्मिन्**) इस (**भरे**) पालन करने योग्य संसार में (**नृतमम्**) अत्यन्त नायक (**मघवानम्**) बहुत धन के दान करने और (**वाजसातौ**) पदार्थों की विभाग विद्या में (**शृण्वन्तम्**) सुननेवाले न्यायाधीश दण्ड देनेवाले के सदृश (**उग्रम्**) तेजस्वीरूप और (**समत्सु**) संग्रामों (**घ्नन्तम्**) विद्यावान् शूरवीर के सदृश (**धनानाम्**) लक्ष्मियों को (**सञ्जितम्**) शीघ्र जीतता है जिससे उस (**इन्द्रम्**) बिजुली रूप अग्नि को जान कर (**वृत्राणि**) धनों को और (**शुनम्**) सुखकारक विज्ञान को (**हुवेम**) स्वीकार करें, वैसे इसको जानकर आप लोग प्राप्त हूजिये॥९॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। यथार्थवक्ता विद्वान् लोग भूगर्भ, बिजुली, भूगोल, खगोल और सृष्टिस्थ पदार्थों की विद्या के उपदेश से पदार्थ-विद्याओं को प्राप्त करा के सबकी निरन्तर वृद्धि करें॥९॥



www.9009.co.in

इस सूक्त में विद्वानों के गुणों का वर्णन, निन्दित जनों का निवारण, मित्रता करना, अज्ञान का त्याग कर, विद्या की प्राप्ति की इच्छा करना इत्यादि विषय वर्णन होने से इस सूक्त के अर्थ की पिछले सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति है, यह समझना चाहिये॥

**यह ऋग्वेद संहिता में तृतीय अष्टक में दूसरा अध्याय छब्बीसवां वर्ग और तृतीय मण्डल में उन्तालीसवां सूक्त समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

**अथ ऋक्संहितायां तृतीयाष्टके तृतीयाऽध्यायारम्भः॥**

**ओं विश्वा॑नि देव सवितर्दुरि॒तानि॒ परा॑ सुव। यद्भ॒द्रं तन्न॒ आ सु॑व॥ ऋ०५.८२.५॥**

**अथ नवर्चस्य चत्वारिंशत्तमस्य सूक्तस्य विश्वामित्र ऋषिः। इन्द्रो देवता। १-४। ६-९ गायत्री। ५ निचृद्गायत्री छन्दः। षड्जः स्वरः॥**

***अथ राजप्रजाविषयमाह॥***

अथ तृतीयाष्टक के तृतीयाध्याय का आरम्भ तथा तृतीय मण्डल में नव ऋचावाले चालीसवें सूक्त का आरम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में राजा-प्रजा के विषय को कहते हैं॥

**इन्द्र॑ त्वा वृष॒भं व॒यं सु॒ते सोमे॑ हवामहे। स पा॑हि॒ मध्वो॒ अन्ध॑सः॥ १॥**

**इन्द्र॑। त्वा॒। वृ॒ष॒भम्। व॒यम्। सु॒ते। सोमे॑। ह॒वा॒म॒हे॒। सः। पा॒हि॒। मध्व॑ः। अन्ध॑सः॥ १॥**

**पदार्थः**- **(इन्द्र)** परमैश्वर्य्यप्रद! **(त्वा)** त्वाम् **(वृषभम्)** बलिष्ठम् **(वयम्)** **(सुते)** निष्पन्ने **(सोमे)** ऐश्वर्य्य ओषधिगणे वा **(हवामहे)** **(सः)** **(पाहि)** रक्ष **(मध्वः)** मधुरादिगुणयुक्तस्य **(अन्धसः)** अन्नादेः॥ १॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! वयं मध्वोऽन्धसः सुते सोमे यं वृषभं त्वा हवामहे स त्वमस्मान् पाहि॥ १॥

**भावार्थः**-ये प्रजाजना राजानं हृदयेन सत्कृत्याऽस्मा ऐश्वर्य्यं प्रयच्छेयुस्तान् राजा स्वात्मवद्वैद्य ओषधै रोगिणमिव रक्षेत्॥ १॥

**पदार्थः**-हे **(इन्द्र)** अत्यन्त ऐश्वर्य्य के देनेवाले! **(वयम्)** हम लोग **(मध्वः)** मधुर आदि गुणों से युक्त **(अन्धसः)** अन्न आदि के **(सुते)** उत्पन्न **(सोमे)** ऐश्वर्य्य वा ओषधियों के समूह में जिस **(वृषभम्)** बलिष्ठ **(त्वा)** आपको **(हवामहे)** पुकारें **(सः)** वह आप हम लोगों की **(पाहि)** रक्षा कीजिये॥ १॥

**भावार्थः**-जो प्रजाजन राजा का हृदय से सत्कार करके इस राजा के लिये ऐश्वर्य्य देवें, उनकी राजा अपने आत्मा के सदृश वा जैसे वैद्यजन ओषधियों से रोगी की रक्षा करता है, वैसे रक्षा करे॥ १॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**इन्द्र॑ क्रतु॒विदं॑ सु॒तं सोमं॑ हर्य पुरुष्टुत। पिबा वृ॑षस्व॒ तातृ॑पिम्॥ २॥**

**इन्द्र॑। क्र॒तु॒ऽविद॑म्। सु॒तम्। सोम॑म्। ह॒र्य॒। पु॒रु॒ऽस्तु॒त॒। पिब॑। आ। वृ॒ष॒स्व॒। तत॑ृपिम्॥ २॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**इन्द्र**) विद्यैश्वर्य्यमिच्छुक! (**क्रतुविदम्**) क्रतुः प्रज्ञा तां विन्दति येन तम् (**सुतम्**) सुसंस्कारैर्निष्पादितम् (**सोमम्**) ओषधिगणम् (**हर्य्य**) कामयस्व (**पुरुष्टुत**) बहुभिः प्रशंसित (**पिब**) (**आ**) (**वृषस्व**) वृष इव बलिष्ठो भव (**तातृपिम्**) अतिशयेन तृप्तिकरम्॥२॥

**अन्वयः**-हे पुरुष्टुतेन्द्र! त्वं तातृपिं क्रतुविदं सुतं सोमं हर्य्य पिब तेनाऽऽवृषस्व॥२॥

**भावार्थः**-हे राजन्! भवान् प्रज्ञावर्द्धकं भोजनं पानं च कृत्वा तृप्तो भूत्वा बलारोग्यबुद्धिविनयान् वर्द्धय॥२॥

**पदार्थः**-(**पुरुष्टुत**) बहुतों से प्रशंसित (**इन्द्र**) विद्या और ऐश्वर्य की इच्छा करनेवाले! आप (**तातृपिम्**) अत्यन्त तृप्ति करने और (**क्रतुविदम्**) यज्ञ के सिद्ध करनेवाले और (**सुतम्**) उत्तम संस्कारों से उत्पन्न (**सोमम्**) ओषधियों के समूह की (**हर्य्य**) कामना और (**पिब**) पान करो, उनसे (**आ, वृषस्व**) बल के सदृश बलिष्ठ होओ॥२॥

**भावार्थः**-हे राजन्! आप बुद्धि के बढ़ानेवाले खाने तथा पीने योग्य वस्तु का भोजन और पान कर तृप्त होकर बल, आरोग्य, बुद्धि और नम्रता को बढ़ाइये॥२॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**इन्द्र॒ प्र णो॑ धि॒ताना॑नं य॒ज्ञं विश्वे॑भिर्दे॒वेभिः॑। ति॒र स्त॑वान विश्पते॥३॥**

**इन्द्र॑। प्र। नः॒। धि॒तऽवा॑नम्। य॒ज्ञम्। विश्वे॑भिः। दे॒वेभिः॑। ति॒र। स्त॒वा॒न॒। वि॒श्प॒ते॒॥३॥**

**पदार्थः**-(**इन्द्र**) दुष्टानां विदारक (**प्र**) (**नः**) अस्माकम् (**धितावानम्**) धितो धृतो वानः संविभागो येन तम् (**यज्ञम्**) विद्याविनयाभ्यां सङ्गतं पालनाख्यम् (**विश्वेभिः**) सर्वैः (**देवेभिः**) धार्मिकैः सभ्यैर्विद्वद्भिः सह (**तिर**) प्लवदुःखात्पारं गच्छ (**स्तवान**) यः सत्यं स्तौति तत्सम्बुद्धौ (**विश्पते**) प्रजापालक॥३॥

**अन्वयः**-हे विश्पते स्तवानेन्द्र! त्वं विश्वेभिर्देवेभिः सह नो धितावानं यज्ञं प्र तिर॥३॥

**भावार्थः**-प्रजाजनै राजैवमुपदेष्टव्यो भवान् नोऽस्माकं रक्षको भवैवमाज्ञापय भवतः सर्वे श्रेष्ठमध्यमकनिष्ठा भृत्याधर्मेणाऽस्मान् सततं रक्षन्त्विति॥३॥

**पदार्थः**-हे (**विश्पते**) प्रजा का पालन (**स्तवान**) सत्य की स्तुति और (**इन्द्र**) दुष्टों का नाश करनेवाले! आप (**विश्वेभिः**) सम्पूर्ण (**देवेभिः**) धार्मिक श्रेष्ठ विद्वानों के साथ (**नः**) हम लोगों के (**धितावानम्**) धारण किया है विभाग जिससे उस (**यज्ञम्**) विद्या और विनय से सङ्गत पालन करने रूप कर्म को (**प्र, तिर**) पार हो समाप्त करो अर्थात् उक्त कर्म से दुःख से पार पहुँचो॥३॥

**भावार्थः**-प्रजाजनों को चाहिये कि राजा को इस प्रकार का उपदेश देवें कि आप हम लोगों के रक्षक हूजिये और ऐसी आज्ञा दीजिये कि आपके सब श्रेष्ठ, मध्यम, कनिष्ठ कर्मचारी लोग धर्मपूर्वक हम लोगों की निरन्तर रक्षा करें॥३॥



www.9009.co.in

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**इन्द्र॒ सोमाः॑ सु॒ता इ॒मे तव॒ प्र य॑न्ति सत्पते। क्षयं॑ च॒न्द्रास॑ इन्द॑वः॥४॥**

**इन्द्र॑। सोमाः॑। सु॒ताः। इ॒मे। तव॑। प्र। य॒न्ति॒। स॒त्ऽप॒ते॒। क्षय॑म्। च॒न्द्रासः॑। इन्द॑वः॥४॥**

**पदार्थः**-(**इन्द्र**) सकलौषधिविद्यावित् (**सोमाः**) ओषध्यादयः पदार्थाः (**सुताः**) सुविचारेणाऽभिसंस्कृताः (**इमे**) (**तव**) (**प्र**) (**यन्ति**) प्राप्नुवन्ति (**सत्पते**) सतां रक्षक (**क्षयम्**) निवासस्थानम् (**चन्द्रासः**) आह्लादकराः (**इन्दवः**) सार्द्राः॥४॥

**अन्वयः**-हे सत्पते इन्द्र राजन्! य इमे चन्द्रास इन्दवः सुताः सोमास्तव क्षयं प्र यन्ति ताँस्त्वं सेवस्व॥४॥

**भावार्थः**-हे राजन्! यावान् राज्यादंशो भवता गृहीतव्यस्तावन्तं गृहीत्वा भुङ्क्ष्व नाऽधिकं न न्यूनमेवं कृतेन न कदाचिद्भवतः क्षतिर्भविष्यति॥४॥

**पदार्थः**-हे (**सत्पते**) सत्पुरुषों के रक्षा करने और (**इन्द्र**) सम्पूर्ण ओषधियों की विद्या के जाननेवाले राजन्! जो (**इमे**) ये (**चन्द्रासः**) आनन्दकारक (**इन्दवः**) गीले (**सुताः**) उत्तम प्रकार से पाक आदि संस्कार से युक्त (**सोमाः**) ओषधी आदि पदार्थ (**तव**) आपके (**क्षयम्**) रहने के स्थान को (**प्र, यन्ति**) प्राप्त होते हैं, उनका आप सेवन करो॥४॥

**भावार्थः**-हे राजन्! जितना आपको राज्य का भाग लेना चाहिये उतना ही ग्रहण कर भोग करिये, न अधिक न न्यून, ऐसा करने से कभी नहीं आपकी हानि होगी॥४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**द॒धि॒ष्वा ज॒ठरे॑ सु॒तं सोम॑मिन्द्र॒ वरे॑ण्यम्। तव॑ द्यु॒क्षास॒ इन्द॑वः॥५॥१॥**

**द॒धि॒ष्व। ज॒ठरे॑। सु॒तम्। सोम॑म्। इ॒न्द्र॒। वरे॑ण्यम्। तव॑। द्यु॒क्षासः॑। इन्द॑वः॥५॥**

**पदार्थः**-(**दधिष्व**) धरस्व। अत्र **संहितायामि**ति दीर्घः। (**जठरे**) जायते सुखं यस्मात्तस्मिन्नुदरे (**सुतम्**) सुसंस्कृतम् (**सोमम्**) महौषधिविशिष्टमन्नम् (**इन्द्र**) पूर्णायुःकामुक (**वरेण्यम्**) स्वीकर्त्तुं भोक्तुमर्हम् (**तव**) (**द्युक्षासः**) दिवि प्रकाशे क्षियन्ति निवासयन्ति ते (**इन्दवः**) सस्नेहाः॥५॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! ये तव द्युक्षासः इन्दवः स्युस्तेषां सकाशाद्वरेण्यं सुतं सोमं जठरे त्वं दधिष्व॥५॥

**भावार्थः**-राजादिभिर्मनुष्यैः सर्वेषां पदार्थानां मध्यात्त एव पदार्था भोक्तव्याः पेयाश्च ये प्रज्ञायुर्बलानि वर्धयेयुः॥५॥

**पदार्थः**-हे (**इन्द्र**) पूर्ण अवस्था की कामना करनेवाले! जो (**तव**) आपके (**द्युक्षासः**) प्रकाश में रहने (**इन्दवः**) और स्नेह करनेवाले होवें उनके समीप से (**वरेण्यम्**) भोग करने योग्य (**सुतम्**) उत्तम



www.9009.co.in

प्रकार बनाया **(सोमम्)** श्रेष्ठ औषधियों से युक्त अन्न को **(जठरे)** उत्पन्न हो सुख जिसमें उस पेट में आप **(दधिष्व)** धरो॥५॥

**भावार्थः**-राजा आदि मनुष्यों को सम्पूर्ण पदार्थों के मध्य से उन्हीं पदार्थों का खान और पान करना चाहिये कि जो बुद्धि, अवस्था और बल को निरन्तर बढ़ावें॥५॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**गिर्वणः पाहि नः सुतं मधोर्धाराभिरज्यसे। इन्द्र त्वादातमिद्यशः॥६॥**

**गिर्वणः। पाहि। नः। सुतम्। मधोः। धाराभिः। अज्यसे। इन्द्र। त्वाऽदातम्। इत्। यशः॥६॥**

**पदार्थः**-**(गिर्वणः)** यो गीर्भिर्वन्यते याच्यते तत्सम्बुद्धौ **(पाहि)** **(नः)** अस्मान् **(सुतम्)** **(मधोः)** मधुरादिगुणयुक्तस्य **(धाराभिः)** प्रवाहैः **(अज्यसे)** प्राप्यसे **(इन्द्र)** **(त्वादातम्)** त्वया गृहीतम् **(इत्)** एव **(यशः)** आरोग्यप्रदमुदकमन्नं धनं वा। **यश इति उदकनामसु पठितम्।** (निघं०१.१२) **अन्ननामसु च।** २.७॥**धननामसु च।** (निघं०२.१०)॥६॥

**अन्वयः**-हे गिर्वण इन्द्र! यत्त्वादातं यशोऽस्ति तेन मधोर्धाराभिश्च सह सुतं सोमं प्राप्तोऽस्माभिरज्यसे स त्वमस्मान् पाहि॥६॥

**भावार्थः**-हे राजन्! यावत्पेयमन्नं धनं चास्मद्भवता स्वीकृतं तेन स्वस्याऽस्माकं च रक्षा विधेहि॥६॥

**पदार्थः**-हे **(गिर्वणः)** वाणियों से याचना किये जाते **(इन्द्र)** तेजस्विन्! जो **(त्वादातम्)** आपसे ग्रहण किया हुआ **(इत्)** ही **(यशः)** रोगनाशक जल, अन्न वा धन है, उससे और **(मधोः)** मधुर आदि गुणों से युक्त वस्तु के **(धाराभिः)** प्रवाहों के साथ **(सुतम्)** उत्पन्न हुए **(सोमम्)** ओषधि आदि पदार्थों को पाये हुए हम लोगों से जाने जाते हो वह आप **(नः)** हमारी **(पाहि)** रक्षा कीजिये॥६॥

**भावार्थः**-हे राजन्! जितना पीने योग्य वस्तु अन्न और धन हम लोगों का आपने स्वीकार किया है, उससे अपनी और हम लोगों की रक्षा कीजिये॥६॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अभि द्युम्नानि वनिन इन्द्रं सचन्ते अक्षिता। पीत्वी सोमस्य वावृधे॥७॥**

**अभि। द्युम्नानि। वनिनः। इन्द्रम्। सचन्ते। अक्षिता। पीत्वी। सोमस्य। ववृधे॥७॥**

**पदार्थः**-**(अभि)** आभिमुख्ये **(द्युम्नानि)** यशांसि जलान्यन्नानि धनानि वा **(वनिनः)** याच्ञावन्तः **(इन्द्रम्)** ऐश्वर्य्यकरम् **(सचन्ते)** सम्बध्नन्ति **(अक्षिता)** क्षयरहितानि **(पीत्वी)** **(सोमस्य)** ओषध्यैश्वर्य्यस्य योगेन **(वावृधे)** वर्धते॥७॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-ये राजन्! यथा वनिनोऽक्षिता द्युम्नान्यभीन्द्रं सचन्ते यथाऽहं सोमस्य पीत्वी वावृधे तथा त्वमाचर॥७॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। सर्वैर्मनुष्यैर्धर्मयुक्तेन परमपुरुषार्थेनाऽक्षयमैश्वर्यं प्राप्य युक्ताऽऽहारविहारेणाऽऽरोग्यं सम्पाद्य च जगति सुकीर्त्तिर्विस्तारणीया॥७॥

**पदार्थः**-हे राजन्! जैसे **(वनिनः)** मांगनेवाले जन **(अक्षिता)** नाश से रहित **(द्युम्नानि)** यशों के **(अभि)** सम्मुख **(इन्द्रम्)** ऐश्वर्य करनेवाले का **(सचन्ते)** सम्बन्ध होते हैं और जैसे मैं **(सोमस्य)** ओषधिरूप ऐश्वर्य्य के योग से **(पीत्वी)** पान करके **(वावृधे)** वृद्धि करूं, वैसे आप करो॥७॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। सब मनुष्यों को चाहिये कि धर्म्मयुक्त अत्यन्त पुरुषार्थ से नहीं नाश होने योग्य ऐश्वर्य्य को प्राप्त होकर नियमित भोजन और विहार से आरोग्य को उत्पन्न करके संसार में उत्तम कीर्ति का विस्तार करें॥७॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अर्वावतो न आ गहि परावतश्च वृत्रहन्। इमा जुषस्व नो गिरः॥८॥**

**अर्वाऽवतः। नः। आ। गहि। पराऽवतः। च। वृत्रऽहन्। इमाः। जुषस्व। नः। गिरः॥८॥**

**पदार्थः**-**(अर्वावतः)** प्रशस्ता अश्वा विद्यन्ते येषाम् **(नः)** अस्मान् **(आ)** समन्तात् **(गहि)** प्राप्नुहि **(परावतः)** दूरदेशात् **(च)** समीपात् **(वृत्रहन्)** यो वृत्रं धनं हन्ति प्राप्नोति तत्सम्बुद्धौ **(इमाः)** **(जुषस्व)** **(नः)** अस्माकम् **(गिरः)** वाचः॥८॥

**अन्वयः**-हे वृत्रहँस्त्वमर्वावतो नोऽस्मान् परावतश्चागहि न इमा गिरो जुषस्व॥८॥

**भावार्थः**-हे राजन्! दूरे समीपे वा स्थिता सेनाङ्गयुक्ता वीरा वयं यदा भवन्तमाह्वयेम तदैव श्रीमताऽऽगन्तव्यमस्माकं वचनानि श्रोतव्यानि च यथार्थो न्यायश्च कर्त्तव्यः॥८॥

**पदार्थः**-हे **(वृत्रहन्)** धन को प्राप्त होनेवाले! आप **(अर्वावतः)** प्रशंसा करने योग्य घोड़ों से युक्त **(नः)** हम लोगों को **(परावतः)** दूर देश से **(च)** और समीप से **(आ)** सब ओर से **(गहि)** प्राप्त हूजिये और **(नः)** हम लोगों की **(इमाः)** इन **(गिरः)** वाणियों का **(जुषस्व)** सेवन करो॥८॥

**भावार्थः**-हे राजन्! दूर वा समीप में स्थित सेना के अङ्ग शस्त्र आदि से युक्त वीर हम लोग जब आपको पुकारें, उसी समय आपको आना चाहिये तथा हम लोगों के वचना सुनना और यथार्थ न्याय करना चाहिये॥८॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**यदन्तरा परावतमर्वावतं च हूयसे। इन्द्रेह तत आ गहि॥९॥२॥**



www.9009.co.in

**यत्। अन्तरा। पराऽवतम्। अर्वाऽवतम्। च। हूयसे। इन्द्र। इह। ततः। आ। गहि॥९॥**

**पदार्थः**-**(यत्)** यः **(अन्तरा)** व्यवधाने **(परावतम्)** दूरदेशस्थम् **(अर्वावतम्)** प्राप्तसामीप्यम् **(च)** **(हूयसे)** स्तूयसे **(इन्द्र)** परमैश्वर्य्यप्रद **(इह)** अस्मिन् राज्ये **(ततः)** **(आ)** **(गहि)** आगच्छ॥९॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! त्वमिह यद्यमन्तरा परावतमर्वावतं चाह्वयति तैश्च हूयसे ततोऽस्मानागहि॥९॥

**भावार्थः**-राजा दूरदेशे प्रजासेनाऽमात्यजनोऽन्यत्रापि वर्त्तेत तथापि भृत्यद्वारा सर्वैः सह समीपस्थो भवेदिति॥९॥

अत्र राजाप्रजागुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति चत्वारिंशत्तमं सूक्तं द्वितीयो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे **(इन्द्र)** अत्यन्त ऐश्वर्य्य के दाता! आप **(इह)** इस राज्य में **(यत्)** जो **(अन्तरा)** व्यवधान अर्थात् मध्य में **(परावतम्)** दूर देश और **(अर्वावतम्)** समीप में वर्त्तमान को **(च)** और पुकारते हैं, उन लोगों से **(हूयसे)** पुकारे जाते हो **(ततः)** इससे हम लोगों को **(आ, गहि)** प्राप्त हूजिये॥९॥

**भावार्थः**-राजा दूर देश में हो और प्रजा, सेना और मन्त्री जन अन्यत्र भी वर्त्तमान हों, तथापि दूतों के द्वारा सब लोगों के साथ में समीप वर्त्तमान हो सके॥९॥

इस सूक्त में राजा और प्रजा के गुण वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की पिछले सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह चालीसवां सूक्त और दूसरा वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

**अथ नवर्चस्यैकाधिकचत्वारिंशत्तमस्य सूक्तस्य विश्वामित्र ऋषिः। इन्द्रो देवता। १ यवमध्या गायत्री। २, ३, ५, ९ गायत्री। ४, ७, ८ निचृत् गायत्री। ६ विराट् गायत्री छन्दः। षड्जः स्वरः॥**

*अथाग्निविषयमाह॥*

अब नव ऋचावाले एकतालीसवें सूक्त का आरम्भ है। उसके प्रथम मन्त्र में अग्नि के विषय को कहते हैं॥

**आ तू न॑ इन्द्र म॒द्र्य॑ग्घुवा॒नः सोम॑पीतये। हरि॑भ्यां या॒ह्यद्रिवः॥ १॥**

**आ। तु। न॒ः। इ॒न्द्र॒। म॒द्र्य॑क्। हु॒वा॒नः। सोम॑ऽपीतये। हरि॑ऽभ्याम्। या॒हि। अ॒द्रि॒ऽव॒ः॥ १॥**

**पदार्थः**-(**आ**) समन्तात् (**तु**)। अत्र **ऋचि तुनुघेति** दीर्घः। (**नः**) अस्मान् (**इन्द्र**) ऐश्वर्य्यकारक (**मद्र्यक्**) मामञ्चतीति मद्र्यक् (**हुवानः**) आहूतः (**सोमपीतये**) सोमः पीतो यस्मिंस्तस्मै (**हरिभ्याम्**) अश्वाभ्याम् (**याहि**) (**अद्रिवः**) मेघवान् सूर्य्य इव वर्त्तमान॥ १॥

**अन्वयः**-हे अद्रिव इन्द्र! त्वं सोमपीतये मद्र्यग्धुवानो हरिभ्यां नोऽस्मानायाहि वयन्तु भवन्तमायाम॥ १॥

**भावार्थः**-मनुष्यैरुत्सवेषु परस्परेषामाह्वानं कृत्वाऽन्नपानादिभिः सत्कारः कर्त्तव्यः॥ १॥

**पदार्थः**-हे (**अद्रिवः**) मेघों से युक्त सूर्य्य के तुल्य वर्त्तमान (**इन्द्र**) ऐश्वर्य्य के करनेवाले! आप (**सोमपीतये**) सोमलतारूप औषध का रस पीया जाये जिस कर्म में उसके लिये (**मद्र्यक्**) मेरी पूजा अर्थात् उपासना करनेवाला (**हुवानः**) पुकारा गया जन (**हरिभ्याम्**) घोड़ों से (**नः**) हम लोगों को (**आ**) सब प्रकार (**याहि**) प्राप्त हो और हम लोग (**तु**) शीघ्र आपको प्राप्त होवें॥ १॥

**भावार्थः**-मनुष्यों को चाहिये कि शुभ कार्य्य आदि के उत्सवों में परस्पर एक-दूसरे का आह्वान करके अन्न और जल आदिकों से सत्कार करें॥ १॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**स॒त्तो होता॑ न ऋ॒त्विय॑स्तिस्ति॒रे ब॒र्हिरा॑नु॒षक्। अयु॑ज्रन् प्रा॒तरद्र॑यः॥ २॥**

**स॒त्तः। होता॑। न॒ः। ऋ॒त्विय॑ः। ति॒स्ति॒रे। ब॒र्हिः। आ॒नु॒षक्। अयु॑ज्रन्। प्रा॒तः। अद्र॑यः॥ २॥**

**पदार्थः**-(**सत्तः**) निषण्णः (**होता**) आदाता (**नः**) अस्मान् (**ऋत्वियः**) य ऋतुमर्हति सः (**तिस्तिरे**) स्तृणात्याच्छादयति (**बर्हिः**) उत्तममासनं वस्तु वा (**आनुषक्**) य आनुकूल्यं सचति समवैति सः (**अयुज्रन्**) युञ्जन्ति (**प्रातः**) (**अद्रयः**) मेघाः॥ २॥

**अन्वयः**-यः सत्तो होतर्त्विय आनुषक सन्नोऽस्मान् बर्हिरद्रयः प्रातरयुज्रन्निव तिस्तिरे ते क्रियायज्ञं कर्त्तुमर्हन्ति॥ २॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यथा प्रभातकालीना मेघाः सूर्य्यप्रकाशमाच्छाद्य छायां जनयन्ति तथैव क्रियाविदो जना वस्त्रादिपदार्थैः शरीराण्याच्छाद्याऽऽनुकूल्येन सुखं जनयन्ति॥२॥

**पदार्थः**-जो **(सत्तः)** बैठा हुआ **(होता)** ग्रहण करनेवाला और **(ऋत्वियः)** जो ऋतु को योग्य होता वा **(आनुषक्)** अनुकूलता के साथ मिलता ये **(नः)** हम लोगों के लिये **(बर्हिः)** उत्तम आसन वा वस्तु को **(अद्रयः)** मेघों के सदृश **(प्रातः)** प्रातःकाल में **(अयुज्रन्)** युक्त करते हैं और **(तिस्तिरे)** वस्त्रों से आच्छादन करते हैं, वे क्रियारूप यज्ञ करने को योग्य हैं॥२॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे प्रभातकाल के मेघ सूर्य्य के प्रकाश का आच्छादन करके छाया को उत्पन्न करते हैं, वैसे ही क्रियाओं को जाननेवाले लोग वस्त्र आदि पदार्थों से शरीरों को ढाँप के अनुकूलता से सुख को उत्पन्न करते हैं॥२॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**इमा ब्रह्म ब्रह्मवाहः क्रियन्त आ बर्हिः सीद। वीहि शूर पुरोळाशम्॥३॥**

**इमा। ब्रह्म। ब्रह्मऽवाहः। क्रियन्ते। आ। बर्हिः। सीद। वीहि। शूर। पुरोळाशम्॥३॥**

**पदार्थः**-**(इमा)** **(ब्रह्म)** धनम् **(ब्रह्मवाहः)** धनप्रापिकाः **(क्रियन्ते)** **(आ)** **(बर्हिः)** अन्तरिक्षम् **(सीद)** **(वीहि)** प्राप्नुहि **(शूर)** दुष्टानां हिंसक **(पुरोडाशम्)** विशेषसंस्कृतमन्नम्॥३॥

**अन्वयः**-हे शूर! या इमा ब्रह्मवाहः क्रियाः क्रियन्ते ताभिर्ब्रह्म वीहि बर्हिरासीद पुरोडाशं वीहि॥३॥

**भावार्थः**-मनुष्यैर्निष्फलाः क्रियाः कदाचिन्नैव कर्त्तव्याः। यया यया धर्मार्थकाममोक्षसिद्धिः स्यात्तां तां प्रयत्नेनानुतिष्ठन्तु॥३॥

**पदार्थः**-हे **(शूर)** दुष्टों के नाश करनेवाले! जो **(इमा)** ये **(ब्रह्मवाहः)** धनों को प्राप्त करानेवाली क्रियायें **(क्रियन्ते)** की जाती हैं उनसे **(ब्रह्म)** धन को **(वीहि)** प्राप्त **(बर्हिः)** अन्तरिक्ष में **(आ, सीद)** वर्त्तमान और **(पुरोडाशम्)** उत्तम प्रकार संस्कारयुक्त अन्न को प्राप्त हो॥३॥

**भावार्थः**-मनुष्यों को चाहिये कि निष्फल क्रियाओं को कभी न करें। जिस-जिस क्रिया से धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की सिद्धि हो, उस उसको प्रयत्न से करो॥३॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**रारन्धि सवनेषु ण एषु स्तोमेषु वृत्रहन्। उक्थेष्विन्द्र गिर्वणः॥४॥**

**ररन्धि। सवनेषु। नः। एषु। स्तोमेषु। वृत्रऽहन्। उक्थेषु। इन्द्र। गिर्वणः॥४॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**रारन्धि**) रमस्व रमय वा (**सवनेषु**) ऐश्वर्येषु (**नः**) अस्मान् (**एषु**) (**स्तोमेषु**) प्रशंसनीयेषु (**वृत्रहन्**) प्राप्तधन (**उक्थेषु**) वक्तुमर्हेषु (**इन्द्र**) परमैश्वर्य्यप्रद (**गिर्वणः**) यो गीर्भिर्वन्यते याच्यते तत्सम्बुद्धौ॥४॥

**अन्वयः**-हे गिर्वणो वृत्रहन्निन्द्र! त्वं स्तोमेषूक्थेषु सवनेषु नोऽस्मान् रारन्धि॥४॥

**भावार्थः**-दरिद्रैर्धनाढया: सदैव याचनीया यतस्ते सुखमाप्नुयु:॥४॥

**पदार्थः**-हे (**गिर्वणः**) वाणियों से जिससे याचना करें वह (**वृत्रहन्**) धनों से युक्त (**इन्द्र**) अत्यन्त ऐश्वर्य के देनेवाले! आप (**स्तोमेषु**) प्रशंसा करने और (**उक्थेषु**) कहने के योग्य (**सवनेषु**) ऐश्वर्य्यों में (**नः**) हम लोगों को (**रारन्धि**) रमाओ॥४॥

**भावार्थः**-दरिद्र लोगों को चाहिये कि धनयुक्त पुरुषों से सदा याचना करें, जिससे कि वे दरिद्र लोग सुख को प्राप्त होवें॥४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**मतयः सोमपामुरुं रिहन्ति शवसस्पतिम्। इन्द्रं वत्सं न मातरः॥५॥३॥**

**मतयः। सोमऽपाम्। उरुम्। रिहन्ति। शवसः। पतिम्। इन्द्रम्। वत्सम्। न। मातरः॥५॥३।**

**पदार्थः**-(**मतयः**) प्रज्ञायुक्ता मनुष्याः (**सोमपाम्**) ऐश्वर्य्यरक्षकम् (**उरुम्**) बह्वैश्वर्य्यम् (**रिहन्ति**) लिहन्ति (**शवसः**) बलस्य (**पतिम्**) पालकम् (**इन्द्रम्**) ऐश्वर्य्ययुक्तम् (**वत्सम्**) (**न**) इव (**मातरः**) गावः॥५॥

**अन्वयः**-ये मतयः शवसस्पतिमुरुं सोमपामिन्द्रं मातरो वत्सं न रिहन्ति ते सुखं लभन्ते॥५॥

**भावार्थः**-यथा गावो वात्सल्यभावमाश्रित्य वत्सेषूत्तमं प्रेम दधति तथैव राजादयोऽध्यक्षाः सेनाः वात्सल्यभावेन रक्षन्तु॥५॥

**पदार्थः**-जो (**मतयः**) उत्तम बुद्धि से युक्त मनुष्य लोग (**शवसः**) बल के (**पतिम्**) पालन करनेवाले (**उरुम्**) बहुत ऐश्वर्य से पूर्ण (**सोमपाम्**) ऐश्वर्य्य के रक्षक (**इन्द्रम्**) ऐश्वर्य्य से युक्त पुरुष (**मातरः**) गौवें (**वत्सम्**) बछड़े को (**न**) जैसे (**रिहन्ति**) चाटती वैसे मिलते हैं, वे सुख को प्राप्त होते हैं॥५॥

**भावार्थः**-जैसे गौवें प्रेमभाव का आश्रयण करके बछड़ों में प्रेम धारण करती हैं, वैसे ही राजा आदि अध्यक्ष पुरुष सेनाओं की प्रजाओं के प्रेमभाव से रक्षा करें॥५॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**स मन्दस्वा ह्यन्धसो राधसे तन्वा महे। न स्तोतारं निदे करः॥६॥**



www.9009.co.in

**सः। मन्दस्व। हि। अन्धसः। राधसे। तन्वा। महे। न। स्तोतारम्। निदे। करः॥६॥**

**पदार्थः**-**(सः)** **(मन्दस्व)** आनन्द। अत्र **संहितायामि**ति दीर्घः। **(हि)** यतः **(अन्धसः)** अन्नादेः **(राधसे)** संसिद्धिकराय धनाय **(तन्वा)** शरीरेण **(महे)** महते **(न)** निषेधे **(स्तोतारम्)** विद्वांसम् **(निदे)** निन्दनाय **(करः)** कुर्यात्॥६॥

**अन्वयः**-हे विद्वन्! हि यतस्त्वं स्तोतारं निदे न करस्तस्मात् स त्वं तन्वाऽन्धसो महे राधस मन्दस्व॥६॥

**भावार्थः**-ये मनुष्या स्तुत्यर्हान् निन्दितान् न कुर्वन्ति ते महदैश्वर्य्यं प्राप्य शरीरेणात्मना च सदैव सुखयन्ति॥६॥

**पदार्थः**-हे विद्वान् पुरुष! **(हि)** जिससे आप **(स्तोतारम्)** विद्वान् पुरुष की **(निदे)** निन्दा करने के लिये **(न)** नहीं **(करः)** करें इससे **(सः)** वह आप **(तन्वा)** शरीर से **(अन्धसः)** अन्न आदि की **(महे)** बड़ी **(राधसे)** सिद्धि करनेवाले धन के लिये **(मन्दस्व)** आनन्द करो॥६॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य स्तुति करने योग्य पुरुषों की निन्दा नहीं करते, वे बड़े ऐश्वर्य को प्राप्त होकर शरीर और आत्मा से सदा ही सुखी होते हैं॥६॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**वयमिन्द्र त्वायवो हविष्मन्तो जरामहे। उत त्वमस्मयुर्वसो॥७॥**

**वयम्। इन्द्र। त्वाऽयवः। हविष्मन्तः। जरामहे। उत। त्वम्। अस्मऽयुः। वसो इति॥७॥**

**पदार्थः**-**(वयम्)** **(इन्द्र)** ऐश्वर्य्ययुक्त **(त्वायवः)** त्वत्कामयमानाः **(हविष्मन्तः)** बहूनि हवींषि दातव्यानि वस्तूनि विद्यन्ते येषान्ते **(जरामहे)** प्रशंसेम **(उत)** अपि **(त्वम्)** **(अस्मयुः)** अस्मान् कामयमानः **(वसो)** वासहेतो॥७॥

**अन्वयः**-हे वसो इन्द्र! हविष्मन्तो त्वायवो वयं त्वां जरामहे उतापि त्वमस्मयुः सन्नस्मान् स्तुहि॥

**भावार्थः**-ये मनुष्याः सर्वेषां गुणानां प्रशंसां दोषाणां निन्दां कुर्य्युस्ते विवेकिनो भूत्वा गुणान् ग्रहीतुं दोषांस्त्यक्तुं समर्था भवन्ति॥७॥

**पदार्थः**-हे **(वसो)** निवास के कारण **(इन्द्र)** ऐश्वर्य से और **(हविष्मन्तः)** बहुत देने योग्य वस्तुओं से युक्त! **(त्वायवः)** आपकी कामना करते हुए **(वयम्)** हम लोग आपकी **(जरामहे)** प्रशंसा करें **(उत)** और भी **(त्वम्)** आप **(अस्मयुः)** हम लोगों की कामना करते हुए हम लोगों की प्रशंसा करो॥७॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य सब लोगों के गुणों की प्रशंसा और दोषों की निन्दा करें, वे विवेकी अर्थात् विचारशील होके गुणों के ग्रहण करने और दोषों के त्याग करने को समर्थ होते हैं॥७॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥



www.9009.co.in

**मारे अस्मद्वि मुमुचो हरिप्रियार्वाङ् याहि। इन्द्र स्वधावो मत्स्वेह॥८॥**

**मा। आरे। अस्मत्। वि। मुमुचः। हरिऽप्रिय। अर्वाङ्। याहि। इन्द्र। स्वधाऽवः। मत्स्व। इह॥८॥**

**पदार्थः**-(**मा**) निषेधे (**आरे**) समीपे दूरे वा (**अस्मत्**) (**वि**) (**मुमुचः**) मोचयेः (**हरिप्रिय**) यो हरीन् हरणशीलान् प्रीणाति तत्सम्बुद्धौ (**अर्वाङ्**) अर्वाचीनं देशं गच्छन् (**याहि**) गच्छ (**इन्द्र**) ऐश्वर्य्ययुक्त (**स्वधावः**) बह्वन्नादिप्राप्त (**मत्स्व**) आनन्द (**इह**) अस्मिञ्जगति॥८॥

**अन्वयः**-हे हरिप्रियेन्द्र स्वधावस्त्वमस्मदारे मा वि मुमुचोऽर्वाङ् याहीह मत्स्व॥८॥

**भावार्थः**-हे मित्रजना! यूयमस्मद्दूरे समीपे वा स्थिताः सन्तोऽस्माकं प्रियमाचरत प्रीतिं मा त्यजत वयमपि युष्मासु तथा वर्त्तेम ह्येवं परस्परं वर्त्तमानं कृत्वेह सुखिनो भवेम॥८॥

**पदार्थः**-हे (**हरिप्रिय**) हरनेवालों को प्रसन्न करनेवाले (**इन्द्र**) ऐश्वर्य्य से युक्त (**स्वधावः**) बहुत अन्नादि वस्तुओं से पूर्ण! आप (**अस्मत्**) हम लोगों से (**आरे**) समीप वा दूर देश में (**मा**) मत (**वि, मुमुचः**) त्याग करिये (**अर्वाङ्**) नीचे के स्थान को जाते हुए (**याहि**) जाइये और (**इह**) इस संसार में (**मत्स्व**) आनन्द करिये॥८॥

**भावार्थः**-हे मित्र जनो! आप लोग हम लोगों से दूर वा समीप स्थान में वर्त्तमान हुए हम लोगों का कल्याण करो और प्रीति का त्याग मत करो और हम लोग भी आप लोगों में ऐसे ही वर्त्ताव करें, इस प्रकार परस्पर वर्त्ताव करके इस संसार में सुखी होवें॥८॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अर्वाञ्चं त्वा सुखे रथे वहतामिन्द्र केशिना। घृतस्नू बर्हिरासदे॥९॥४॥**

**अर्वाञ्चम्। त्वा। सुऽखे। रथे। वहताम्। इन्द्र। केशिना। घृतस्नू इति घृतऽस्नू। बर्हिः। आऽसदे॥९॥४॥**

**पदार्थः**-(**अर्वाञ्चम्**) योऽर्वागधोऽञ्चति गच्छति तम् (**त्वा**) त्वाम् (**सुखे**) सुखकारके (**रथे**) रमणीये याने (**वहताम्**) (**इन्द्र**) ऐश्वर्य्ययुक्त (**केशिना**) बहवः केशा विद्यन्ते ययोस्तौ (**घृतस्नू**) यौ घृतमुदकं स्नातः शोधयतस्तौ (**बर्हिः**) अन्तरिक्षे (**आसदे**) आसादनीयाय॥९॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! यौ घृतस्नू केशिनाऽर्वाञ्चं त्वा सुखे रथे बर्हिरासदे वहतां तौ त्वं जानीहि॥९॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! द्वाभ्यामग्निभ्यां चालितेषु यानेषु स्थित्वाऽध ऊर्ध्वं तिर्य्यग्देशं च गत्वाऽऽगच्छत॥९॥

अत्र विद्वन्मनुष्यगुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिरस्तीति वेद्यम्॥

**इत्येकाधिकचत्वारिंशत्तमं सूक्तं [चतुर्थो] ४ वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे (**इन्द्र**) ऐश्वर्य्य से युक्त! जो (**घृतस्नू**) घृत अर्थात् जल को पवित्र करनेवाले (**केशिना**) बहुत केशों से युक्त (**अर्वाञ्चम्**) नीचे जानेवाले (**त्वा**) आपको (**सुखे**) सुख करानेवाले (**रथे**)



www.9009.co.in

सुन्दर वाहन और **(बर्हिः)** अन्तरिक्ष में **(आसदे)** वर्त्तमान होने के लिये **(वहताम्)** पहुँचावें, उनको आप जानिये॥९॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! दो अग्नियों से चलाये हुए वाहनों पर स्थित होकर नीचे, ऊपर और तिरछे देश में जाकर आइये॥९॥

इस सूक्त में विद्वान्-मनुष्यों के गुण वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की पिछले सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति है, ऐसा जानना चाहिये॥

**यह इकतालीसवां सूक्त और चौथा वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

**अथ उप नः सुतमित्यस्य नवर्चस्य द्विचत्वारिंशत्तमस्य सूक्तस्य विश्वामित्र ऋषिः। इन्द्रो देवता। १, ४-७ गायत्री। २, ३, ८, ९ निचृद्गायत्रीच्छन्दः। षड्जः स्वरः॥**

***अथ विद्वद्विषयमाह॥***

अब नव ऋचावाले बयालीसवें सूक्त का आरम्भ है। इसके प्रथम मन्त्र में विद्वान् के गुणों को कहते हैं॥

**उप॑ नः सु॒तमा ग॑हि॒ सोम॑मिन्द्र॒ गवा॑शिरम्। हरि॑भ्यां॒ यस्ते॑ अस्म॒युः॥ १॥**

**उप॑। नः॒। सु॒तम्। आ। ग॒हि॒। सोम॑म्। इ॒न्द्र॒। गोऽआ॑शिरम्। हरि॑ऽभ्याम्। यः। ते॒। अ॒स्म॒ऽयुः॥ १॥**

**पदार्थः**-(**उप**) (**नः**) अस्माकम् (**सुतम्**) सुसाधितम् (**आ**) (**गहि**) समन्तात् प्राप्नुहि (**सोमम्**) ओषधिगणमिवैश्वर्य्यम् (**इन्द्र**) बह्वैश्वर्य्ययुक्त (**गवाशिरम्**) गावोऽश्नन्ति यं तम् (**हरिभ्याम्**) अश्वाभ्यां युक्तेन रथेन (**यः**) (**ते**) तव (**अस्मयुः**) आत्मनोऽस्मानिच्छुरिव॥ १॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! त्वं हरिभ्यां युक्तेन रथेन यस्ते रथोऽस्मयुर्वर्त्तते तेन हरिभ्यां युक्तेन नः सुतं [गवाशिरम्] सोममुपागहि॥ १॥

**भावार्थः**-त एव सर्वेषां सुहृदः सन्ति ये स्वैश्वर्येण सर्वानामन्त्र्य सत्कुर्वन्ति॥ १॥

**पदार्थः**-हे (**इन्द्र**) अत्यन्त ऐश्वर्य्ययुक्त! आप (**हरिभ्याम्**) घोड़ों से युक्त रथ से (**यः**) जो (**ते**) आपका वाहन (**अस्मयुः**) अपने को हम लोगों की इच्छा करता हुआ सा वर्त्तमान है, घोड़ों से युक्त उस रथ से (**नः**) हम लोगों के (**सुतम्**) उत्तम प्रकार सिद्ध (**गवाशिरम्**) किरणों से सेवन करने योग्य (**सोमम्**) ओषधिगणों के सदृश ऐश्वर्य्य को (**उप, आ, गहि**) समीप में सब प्रकार प्राप्त हूजिये॥ १॥

**भावार्थः**-वे लोग ही सब लोगों के मित्र हैं कि जो लोग अपने ऐश्वर्य्य से सब लोगों को बुला कर सत्कार करते हैं॥ १॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**तमि॑न्द्र॒ मद॒मा ग॑हि बर्हि॒ष्ठां ग्राव॑भिः सु॒तम्। कु॒विन्न्व॑स्य तृ॒ण्णव॑ः॥ २॥**

**तम्। इ॒न्द्र॒। मद॑म्। आ। ग॒हि॒। ब॒र्हिः॒ऽस्थाम्। ग्राव॑ऽभिः। सु॒तम्। कु॒वित्। नु। अ॒स्य॒। तृ॒ण्णव॑ः॥ २॥**

**पदार्थः**-(**तम्**) पूर्वोक्तम् (**इन्द्र**) ऐश्वर्य्यमिच्छो (**मदम्**) आनन्दकरम् (**आ**) (**गहि**) सर्वतः प्राप्नुहि (**बर्हिष्ठाम्**) यो बर्हिष्यन्तरिक्षे तिष्ठति तम् (**ग्रावभिः**) मेघैः (**सुतम्**) निष्पन्नम् (**कुवित्**) महान् सन् (**नु**) सद्यः (**अस्य**) सोमस्य (**तृण्णवः**) ये तृप्यन्ति ते॥ २॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! येऽस्य तृण्णवः सन्ति तैः कुवित्सन् तं ग्रावभिः सुतं मदं बर्हिष्ठां सोमं न्वागहि॥ २॥

**भावार्थः**-ये सोमलतादयो वर्षाभिरुत्पद्यन्ते रोगविनाशकत्वेन तृप्तिकरा भवन्ति सूक्ष्मांशैरन्तरिक्षं प्राप्य सर्वत्र प्रसरन्ति तान् युक्त्या संसेव्य सदाऽऽनन्दो भोक्तव्यः॥ २॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-हे **(इन्द्र)** ऐश्वर्य्य की इच्छा करनेवाले! जो **(अस्य)** इस सोमलता की **(तृण्णवः)** तृप्ति करनेवाले हैं, उनसे **(कुवित्)** श्रेष्ठ होकर **(तम्)** उस पूर्वोक्त को **(ग्रावभिः)** मेघों से **(सुतम्)** उत्पन्न **(मदम्)** आनन्दकारक **(बर्हिष्ठाम्)** अन्तरिक्ष में वर्त्तमान होनेवाले ओषधिगणों के सदृश वर्त्तमान ऐश्वर्य को **(नु)** शीघ्र **(आ, गहि)** सब प्रकार प्राप्त हूजिये॥२॥

**भावार्थः**-जो सोमलता आदि ओषधियां वृष्टियों से उत्पन्न होतीं, रोगविनाशक होने से तृप्तिकारक होती और सूक्ष्म अवयवों के द्वारा अन्तरिक्ष को प्राप्त होके सब स्थानों में फैलती हैं, उनका युक्ति से सेवन करके सदा आनन्द का भोग करना चाहिये॥२॥

**अथ विद्वत्सत्कारविषयमाह॥**

अब विद्वानों के सत्कार विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**इन्द्रमित्था गिरो ममाच्छागुरिषिता इतः। आवृते सोमपीतये॥३॥**

**इन्द्रम्। इत्था। गिरः। मम। अच्छ। अगुः। इषिताः। इतः। आऽवृते। सोमऽपीतये॥३॥**

**पदार्थः**-**(इन्द्रम्)** परमैश्वर्य्यवन्तम् **(इत्था)** अनेन प्रकारेण **(गिरः)** सुशिक्षिता वाचः **(मम)** **(अच्छ)** **(अगुः)** प्राप्नुवन्तु **(इषिताः)** प्रेरिताः **(इतः)** अस्मात् **(आवृते)** सर्वत आच्छादिते स्थानविशेषे **(सोमपीतये)** सोमस्य पानाय॥३॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथाऽऽवृते सोमपीतये ममेषिता गिर इत इन्द्रमच्छागुरित्था युष्माकमप्येनं प्राप्नुवन्तु॥३॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। विद्वांसोऽन्यान् प्रत्येवमुपदिशेयुर्वयं यानाहूय सत्कुर्य्याम यूयमपि तानेव सत्कुरुत॥३॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे **(आवृते)** सब ओर से ढांपे हुए स्थान विशेष में **(सोमपीतये)** सोमलता के रस के पान करने के लिये **(मम)** मेरी **(इषिताः)** प्रेरणा की गई **(गिरः)** उत्तम प्रकार शिक्षित वाणियां **(इतः)** इससे **(इन्द्रम्)** अत्यन्त ऐश्वर्यवाले को **(अच्छ)** अच्छे प्रकार **(अगुः)** प्राप्त हों **(इत्था)** इस प्रकार से आप लोगों की भी वाणियां इसको प्राप्त हों॥३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। विद्वान् लोग अन्य जनों के प्रति इस प्रकार से उपदेश देवें कि हम लोग जिनको बुला कर सत्कार करें, आप लोग भी उन्हीं का सत्कार करें॥३॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**इन्द्रं सोमस्य पीतये स्तोमैरिह हवामहे। उक्थेभिः कुविदागमत्॥४॥**

**इन्द्रम्। सोमस्य। पीतये। स्तोमैः। इह। हवामहे। उक्थेभिः। कुवित्। आऽगमत्॥४॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**इन्द्रम्**) परमविद्यैश्वर्य्यम् (**सोमस्य**) सुसाधितमहौषधिरसस्य (**पीतये**) पानाय (**स्तोमैः**) प्रशंसावचनैः (**इह**) अस्मिन् संसारे (**हवामहे**) आह्वयामहे (**उक्थेभिः**) वक्तुमर्हैः (**कुवित्**) बहुवारम्। **कुविदिति बहुनामसु पठितम्।** (निघं०३.१) (**आगमत्**) आगच्छतु॥४॥

**अन्वयः**-हे विद्वन्! वयं स्तोमैरुक्थेभिः सोमस्य पीतये यमिन्द्रमिह हवामहे सोऽस्माकं समीपं कुविदागमत्॥४॥

**भावार्थः**-यद्यविद्वांसः प्रीत्या विदुष आह्वयेयुस्तदा ते तत्सन्निधिं बहुवारं गच्छन्तु॥४॥

**पदार्थः**-हे विद्वज्जन! हम लोग (**स्तोमैः**) प्रशंसा के वचन जो (**उक्थेभिः**) कहने के योग्य उनसे (**सोमस्य**) उत्तम प्रकार निकाले हुए बड़ी ओषधि के रस के (**पीतये**) पान करने के लिये जिस (**इन्द्रम्**) अत्यन्त विद्या और ऐश्वर्य्यवाले को (**इह**) इस संसार में (**हवामहे**) पुकारें, वह हम लोगों के समीप (**कुवित्**) बहुत वार (**आगमत्**) आवे॥४॥

**भावार्थः**-जो अविद्वान् लोग प्रीति से विद्वान् लोगों को बुलावें तो वे उनके समीप बहुत वार जावें॥४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**इन्द्र॒ सोमाः॑ सु॒ता इ॒मे तान् द॑धिष्व शतक्रतो। ज॒ठरे॑ वाजिनीवसो॥५॥५॥**

**इन्द्र॑। सोमाः॑। सु॒ताः। इ॒मे। तान्। द॒धि॒ष्व॒। श॒त॒क्र॒तो॒ इति॑ शत॒ऽक्रतो। ज॒ठरे॑। वा॒जि॒नी॒व॒सो॒ इति॑ वाजिनीऽवसो॥५॥**

**पदार्थः**-(**इन्द्र**) परमैश्वर्यभोक्तः (**सोमाः**) पदार्थाः (**सुताः**) निष्पन्नाः (**इमे**) (**तान्**) (**दधिष्व**) (**शतक्रतो**) बहुकर्मप्रज्ञ (**जठरे**) जातेऽस्मिन् जगति (**वाजिनीवसो**) यो वाजिनीमुषसं वासयति तत्सम्बुद्धौ। **वाजिनीत्युषसो नामसु पठितम्।** (निघं०१.८)॥५॥

**अन्वयः**-हे वाजिनीवसो शतक्रतो इन्द्र! य इमे जठरे सोमाः सुतास्तान् दधिष्व॥५॥

**भावार्थः**-तदैव मनुष्याः पूर्णविद्यैश्वर्य्याः स्युर्यदा सृष्टिस्थपदार्थविद्यां विजानन्तु॥५॥

**पदार्थः**-हे (**वाजिनीवसो**) रात्रि को वसानेवाले (**शतक्रतो**) बहुत कर्मों में कुशल (**इन्द्र**) अत्यन्त ऐश्वर्य के भोक्ता! जो (**इमे**) ये (**जठरे**) प्रसिद्ध हुए इस संसार में (**सोमाः**) पदार्थ (**सुताः**) उत्पन्न हुए हैं, उनको (**दधिष्व**) धारण करो॥५॥

**भावार्थः**-तभी मनुष्य पूर्ण विद्या और ऐश्वर्यवाले होवें कि जब सृष्टि में वर्त्तमान पदार्थों की विद्या को जानें॥५॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥



www.9009.co.in

**वि॒द्मा हि त्वा॑ धनंज॒यं वाजे॑षु दधृ॒षं क॑वे। अधा॑ ते सु॒म्नमी॑महे॥६॥**

**वि॒द्म। हि। त्वा॒। ध॒न॒म्ऽज॒यम्। वाजे॑षु। द॒धृ॒षम्। क॒वे॒। अध॑। ते॒। सु॒म्नम्। ई॒म॒हे॒॥६॥**

**पदार्थः**-(**विद्म**) विजानीयाम। अत्र **द्व्यचोऽतस्तिङ** इति दीर्घः। (**हि**) यतः (**त्वा**) त्वाम् (**धनञ्जयम्**) यो धनं जयति तम् (**वाजेषु**) संग्रामेषु (**दधृषम्**) प्रगल्भम् (**कवे**) विद्वन्! (**अध**) अथ। अत्र **निपातस्य चे**ति दीर्घः। (**ते**) तव सकाशात् (**सुम्नम्**) सुखम् (**ईमहे**) याञ्चामहे॥६॥

**अन्वयः**-हे कवे! वयं वाजेषु दधृषं धनञ्जयं त्वा विद्म। अध हि ते सुम्नमीमहे॥६॥

**भावार्थः**-मनुष्या यं सुखप्रदानेषु योग्यं शूरवीरं न्यायाधीशं विजानीयुस्तस्मादेव सुखाऽलङ्कृतिः कार्य्या॥६॥

**पदार्थः**-हे (**कवे**) विद्वान् पुरुष! हम लोग (**वाजेषु**) संग्रामों में (**दधृषम्**) प्रचण्ड (**धनञ्जयम्**) धनों के जीतनेवाले (**त्वा**) आपको (**विद्म**) जानें (**अध**) इसके अनन्तर (**हि**) जिससे (**ते**) आपके समीप से (**सुम्नम्**) सुख की (**ईमहे**) याचना करते हैं॥६॥

**भावार्थः**-मनुष्य जिसको सुखों के प्रदानों में योग्य, शूरवीर, न्यायाधीश जानें, उसी से सुखों की पूर्ति करनी चाहिये॥६॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**इ॒ममि॑न्द्र॒ गवा॑शिरं॒ यवा॑शिरं च नः पिब। आ॒गत्या॒ वृष॑भिः सु॒तम्॥७॥**

**इ॒मम्। इ॒न्द्र॒। गोऽआ॑शिरम्। यव॑ऽआशिरम्। च॒। नः॒। पि॒ब॒। आ॒ऽगत्य॑। वृष॑ऽभिः। सु॒तम्॥७॥**

**पदार्थः**-(**इमम्**) (**इन्द्र**) ऐश्वर्य्यप्रद (**गवाशिरम्**) गावः किरणा अश्नन्ति यं तम् (**यवाशिरम्**) यवा अस्यन्ते यस्मिँस्तम् (**च**) (**नः**) अस्माकम् (**पिब**) (**आगत्य**)। अत्र **संहितायामि**ति दीर्घः। (**वृषभिः**) वर्षकैर्मेघैः (**सुतम्**) उत्पादितम्॥७॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! त्वमागत्य नो वृषभिः सुतं गवाशिरं यवाशिरं चेमं सोमं पिब॥७॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यं किरणा वायवश्च पिबन्ति तमेव रसं यूयं पीत्वा बलिष्ठा भवत॥७॥

**पदार्थः**-हे (**इन्द्र**) ऐश्वर्य्य के देनेवाले! आप (**आगत्य**) आय के (**नः**) हम लोगों के (**वृषभिः**) वृष्टिकर्त्ता मेघों से (**सुतम्**) उत्पन्न किये गये (**गवाशिरम्**) किरणें जिसको पीती हैं उस और (**यवाशिरम्**) यव अन्न का भोजन किया जाये जिसमें उस (**च**) और (**इमम्**) इस पदार्थ को (**पिब**) पान करो॥७॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जिसको सूर्य की किरणें और पवनें पीती हैं, उसी रस का आप लोग पान करके बलिष्ठ होइये॥७॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**



www.9009.co.in

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**तुभ्येदि॑न्द्र॒ स्व ओ॒क्ये॒३॒॑ सोमं॑ चोदामि पी॒तये॑। ए॒ष रा॑रन्तु ते हृ॒दि॥८॥**

**तुभ्य॑। इत्। इ॒न्द्र॒। स्वे। ओ॒क्ये॑। सोम॑म्। चो॒दा॒मि॒। पी॒तये॑। ए॒षः। र॒र॒न्तु॒। ते॒। हृ॒दि॥८॥**

**पदार्थः**-(**तुभ्य**) तुभ्यम्। अत्र **सुपां सुलुगि**ति विभक्तेर्लुक्। (**इत्**) एव (**इन्द्र**) ऐश्वर्ययुक्त (**स्वे**) स्वकीये (**ओक्ये**) गृहे (**सोमम्**) रसम् (**चोदामि**) प्रेरयामि (**पीतये**) (**एषः**) (**रारन्तु**) भृशं रमताम् (**ते**) तव (**हृदि**) हृदये॥८॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! य एष ते हृदि रारन्तु तं सोमं स्व ओक्ये पीतये तुभ्येच्चोदामि॥८॥

**भावार्थः**-प्राणिभिर्यद्भुज्यते पीयते च तत्सर्वं रुधिरादिकं भूत्वा हृदि संसृत्य मस्तकद्वारा सर्वत्र प्रसरति॥८॥

**पदार्थः**-हे (**इन्द्र**) ऐश्वर्ययुक्त जन! जो (**एषः**) यह (**ते**) आपके (**हृदि**) हृदय में (**रारन्तु**) अत्यन्त रमे उस (**सोमम्**) रस को (**स्वे**) अपने (**ओक्ये**) गृह में (**पीतये**) पीने को (**तुभ्य**) आपके लिये (**इत्**) ही (**चोदामि**) प्रेरणा करता हूँ॥८॥

**भावार्थः**-प्राणी लोग जो खाते और पीते हैं, वह सब पदार्थ रुधिर आदि हो और हृदय में फैल कर मस्तक के द्वारा सर्वत्र फैलता है॥८॥

**अथ विद्वद्विषयमाह॥**

अब विद्वान् के विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**त्वां सु॒तस्य॑ पी॒तये॑ प्र॒त्नमि॑न्द्र हवामहे। कु॒शि॒कासो॑ अव॒स्यव॑ः॥९॥६॥**

**त्वाम्। सु॒तस्य॑। पी॒तये॑। प्र॒त्नम्। इ॒न्द्र॒। ह॒वा॒म॒हे॒। कु॒शि॒कास॑ः। अ॒व॒स्यव॑ः॥९॥**

**पदार्थः**-(**त्वाम्**) (**सुतस्य**) सुसंस्कृतस्य रसस्य (**पीतये**) (**प्रत्नम्**) प्राक्तनम् (**इन्द्र**) सुखप्रद (**हवामहे**) दद्याम (**कुशिकासः**) विद्याविनयादिभिराप्ता निष्पन्नाः (**अवस्यवः**) य आत्मनो रक्षणादिकमिच्छवः॥९॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! कुशिकासोऽवस्यवो वयं [सुतस्य] पीतये यं प्रत्नं त्वां हवामहे स त्वमस्मानाह्वयः॥९॥

**भावार्थः**-नूतनेभ्यो विद्वद्भ्यः प्राक्तना विद्वांसः श्रेष्ठाः सन्तीति निश्चेतव्यमिति॥९॥

अत्रेन्द्रविद्वत्सोमगुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति द्विचत्वारिंशत्तमं सूक्तं षष्ठो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे (**इन्द्र**) सुख के दाता! (**कुशिकासः**) विद्या और विनय आदिकों से श्रेष्ठ हुए (**अवस्यवः**) आप लोगों के आत्माओं की रक्षा की इच्छा करनेवाले हम लोग (**सुतस्य**) उत्तम प्रकार संस्कारयुक्त रस के (**पीतये**) पान करने के लिये जिस (**प्रत्नम्**) प्राचीन काल से सिद्ध (**त्वाम्**) आपको (**हवामहे**) देवें, वह आप हम लोगों को बुलाइये॥९॥



www.9009.co.in

**भावार्थ:**-नवीन विद्वानों से प्राचीन विद्वान् श्रेष्ठ हैं, ऐसा निश्चय करना चाहिये॥९॥

इस मन्त्र में इन्द्र, विद्वान् और सोम के गुणवर्णन होने से इस सूक्त के अर्थ की पिछले सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह वैयालीसवां सूक्त और छठा वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

**अथाष्टर्चस्य त्रिचत्वारिंशत्तमस्य सूक्तस्य विश्वामित्र ऋषिः। इन्द्रो देवता। १, ३ विराट् पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः। २, ४, ६ निचृत् त्रिष्टुप्। ५ भुरिक् त्रिष्टुप्। ७, ८ त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः॥**

***अथ विद्वद्विषयमाह॥***

अब आठ ऋचावाले तैंतालीसवे सूक्त का आरम्भ है। उसके प्रथम मन्त्र में विद्वानों के विषय को कहते हैं॥

**आ याह्यर्वाङुप वन्धुरेष्ठास्तवेदनु प्रदिवः सोमपेयम्।**

**प्रिया सखाया वि मुचोप बर्हिस्त्वामिमे हव्यवाहो हवन्ते॥ १॥**

**आ। याहि। अर्वाङ्। उप। वन्धुरेऽस्थाः। तव। इत्। अनु। प्रऽदिवः। सोमऽपेयम्। प्रिया। सखाया। वि। मुच। उप। बर्हिः। त्वाम्। इमे। हव्यऽवाहः। हवन्ते॥ १॥**

**पदार्थः**- **(आ)** **(याहि)** आगच्छ **(अर्वाङ्)** अर्वाचीनः **(उप)** **(वन्धुरेष्ठाः)** यो वन्धुरे बन्धने तिष्ठति सः **(तव)** **(इत्)** एव **(अनु)** पश्चात् **(प्रदिवः)** प्रकृष्टो द्यौः प्रकाशो येषान्ते **(सोमपेयम्)** सोमश्चासौ पेयश्च तम् **(प्रिया)** प्रसन्नताकरौ **(सखाया)** सखायौ अध्यापकोपदेशकौ **(वि)** **(मुच)** त्यज **(उप)** समीपे **(बर्हिः)** अन्तरिक्षे **(त्वाम्)** **(इमे)** **(हव्यवाहः)** ये हव्यं वहन्ति ते **(हवन्ते)** गृह्णन्ति॥ १॥

**अन्वयः**-हे विद्वंस्त्वमर्वाङ् सन् यस्तव वन्धुरेष्ठाः रथोऽस्ति तेन प्रदिवः सोमपेयमुपा याहि यौ प्रिया सखायाऽध्यापकोपदेशकौ तावुपायाहि। यद्बर्हिस्त्वामन्विमे तद्विमुच यान् हव्यवाह उप हवन्ते तैस्सहेद् दुःखं विमुच॥ १॥

**भावार्थः**-ये विद्याप्रकाशं प्राप्य विमानादीनि यानानि निर्माय तत्राऽग्न्यादिकं प्रयुज्यान्तरिक्षे गच्छन्ति ते प्रियाचारान् सखीन् प्राप्येव दारिद्र्यमुच्छिन्दन्ति॥ १॥

**पदार्थः**-हे विद्वज्जन! आप **(अर्वाङ्)** नीचे के स्थल में वर्त्तमान होकर जो **(तव)** आपके **(वन्धुरेष्ठाः)** बन्धन में वर्त्तमान रथ है उससे **(प्रदिवः)** उत्तम प्रकाशवाले **(सोमपेयम्)** पीने योग्य सोमलता के रस के **(उप, आ, याहि)** समीप आइये और जो **(प्रिया)** प्रसन्नता के करनेवाले **(सखाया)** मित्र, अध्यापक और उपदेशक हैं, उनके समीप प्राप्त हूजिये। जो **(बर्हिः)** अन्तरिक्ष में **(त्वाम्)** आपके **(अनु)** पीछे **(इमे)** ये हैं उनका **(वि, मुच)** त्याग कीजिये, जिनको **(हव्यवाहः)** हवनसामग्री धारण करनेवाले **(उप, हवन्ते)** ग्रहण करते हैं, उनके साथ **(इत्)** ही दुःख का त्याग कीजिये॥ १॥

**भावार्थः**-जो लोग विद्या के प्रकाश को प्राप्त हो विमानादि वाहनों के निर्माण और उसमें अग्नि आदि का प्रयोग करके अन्तरिक्ष में जाते हैं, वे प्रिय आचरण करनेवाले मित्रों को प्राप्त होकर दारिद्र्य का नाश करते हैं॥ १॥

**अथ मित्रतागुणविषयमाह॥**

अब मित्रता के गुण के विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥



www.9009.co.in

**आ या॑हि पू॒र्वीरति॑ चर्ष॒णीराँ अ॒र्य आ॒शिष॒ उप॑ नो॒ हरि॑भ्याम्।**

**इ॒मा हि त्वा॑ म॒तय॑: स्तोम॑तष्टा॒ इन्द्र॒ हव॑न्ते स॒ख्यं जु॑षा॒णा:॥२॥**

**आ। या॒हि॒। पू॒र्वीः। अति॑। च॒र्ष॒णीः। आ। अ॒र्यः। आ॒ऽशिष॑:। उप॑। न॒:। हरि॑ऽभ्याम्। इ॒माः। हि। त्वा॒। म॒तय॑:। स्तोम॑ऽतष्टाः। इन्द्र॑। हव॑न्ते। स॒ख्यम्। जु॒षा॒णाः॥२॥**

**पदार्थ:**-**(आ)** समन्तात् **(याहि)** गच्छ **(पूर्वीः)** पूर्वं भूताः **(अति)** **(चर्षणीः)** मनुष्यादिप्रजाः **(आ)** **(अर्य्यः)** स्वामी **(आशिषः)** आशीर्वादान् **(उप)** **(नः)** अस्मान् **(हरिभ्याम्)** वाय्वग्निभ्याम् **(इमाः)** वर्त्तमानाः **(हि)** यतः **(त्वा)** त्वाम् **(मतयः)** प्रज्ञाः **(स्तोमतष्टाः)** विस्तृतस्तुतयः **(इन्द्र)** बह्वैश्वर्यप्रद **(हवन्ते)** आददति **(सख्यम्)** मित्रत्वम् **(जुषाणाः)** सेवमानाः॥२॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! या इमाः स्तोमतष्टाः सख्यं जुषाणा मतयस्त्वाऽऽहवन्ते ताभिः सह नोऽस्माना याहि। यथार्य्यश्चर्षणीः प्राप्याऽऽशिष उपलभते तथा ताः पूर्वीर्हि हरिभ्यामत्यायाहि॥२॥

**भावार्थ:**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यथा प्रज्ञया सर्वैः सह मित्रता स्यात्तमा युक्ताः सन्तः सर्वाशिषः प्राप्य सुखं सततं प्राप्नुत॥२॥

**पदार्थ:**-हे **(इन्द्र)** बहुत ऐश्वर्य्यों के देनेवाले! जो **(इमाः)** इन वर्त्तमान **(स्तोमतष्टाः)** विस्तारयुक्त स्तुतियों से विशिष्ट और **(सख्यम्)** मित्रता का **(जुषाणाः)** सेवन करती हुई **(मतयः)** बुद्धियां **(त्वा)** आपको **(आ, हवन्ते)** ग्रहण करती हैं, उनके साथ **(नः)** हम लोगों को **(आ)** सब प्रकार **(याहि)** प्राप्त हूजिये, जिस प्रकार **(अर्य्यः)** स्वामी **(चर्षणीः)** मनुष्य आदि प्रजाओं को प्राप्त होकर **(आशिषः)** आशीर्वादों को प्राप्त होता है, वैसे उन **(पूर्वीः)** प्राचीन काल में उत्पन्न हुई आशिषों को **(हि)** ही **(हरिभ्याम्)** वायु और अग्नि से **(अति, आ)** सब ओर से अत्यन्त प्राप्त हूजिये॥२॥

**भावार्थ:**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जिस बुद्धि से सब लोगों के साथ मित्रता हो, उससे युक्त हुए सबके आशीर्वादों को प्राप्त होकर सुख को निरन्तर प्राप्त होइये॥२॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**आ नो॑ य॒ज्ञं न॑मो॒वृधं॑ स॒जोषा॒ इन्द्र॑ देव॒ हरि॑भिर्याहि॒ तूय॑म्।**

**अ॒हं हि त्वा॑ म॒तिभि॒र्जोह॑वीमि घृ॒तप्र॑याः सध॒मादे॒ मधू॑नाम्॥३॥**

**आ। न॒:। य॒ज्ञम्। न॒म॒:ऽवृध॑म्। स॒ऽजोषा॑:। इन्द्र॑। दे॒व॒। हरि॑ऽभिः। या॒हि॒। तूय॑म्। अ॒हम्। हि। त्वा॒। म॒तिऽभि॑:। जोह॑वीमि। घृ॒तऽप्र॑याः। स॒ध॒ऽमादे॑। मधू॑नाम्॥३॥**

**पदार्थ:**-**(आ)** समन्तात् **(नः)** अस्माकम् **(यज्ञम्)** प्रयत्नसाध्यम् **(नमोवृधम्)** अन्नाद्यैश्वर्य्यवर्धकम् **(सजोषाः)** समानप्रीतिसेवनाः **(इन्द्र)** ऐश्वर्य्ययोजक **(देव)** विद्वन्! **(हरिभिः)** अश्वैरिव



www.9009.co.in

वह्न्यादिभिः **(याहि)** गच्छ **(तूयम्)** तूर्णम् **(अहम्)** **(हि)** **(त्वा)** त्वाम् **(मतिभिः)** प्रज्ञाभिः **(जोहवीमि)** भृशं प्रशंसाम्याह्वयामि वा **(घृतप्रयाः)** यो घृतेन प्रीणाति सः **(सधमादे)** समानस्थाने **(मधूनाम्)** मधुरादिगुणयुक्तानां पदार्थानाम्॥ ३॥

**अन्वयः**-हे देवेन्द्र! घृतप्रया अहं मतिभिर्मधूनां सधमादे हि त्वा जोहवीमि तस्मात् सजोषास्त्वं हरिभिर्नो नमोवृधं यज्ञं तूयमायाहि॥ ३॥

**भावार्थः**-मनुष्यैस्तेषामेव प्रशंसा कार्य्या ये सर्वेषां सुखं वर्द्धयेयुः॥ ३॥

**पदार्थः**-हे **(देव)** विद्वन् **(इन्द्र)** ऐश्वर्य से युक्त करनेवाले! **(घृतप्रयाः)** घृत से प्रसन्न होनेवाला **(अहम्)** मैं **(मतिभिः)** बुद्धियों से **(मधूनाम्)** और मधुर आदि गुणों से युक्त पदार्थों के **(सधमादे)** तुल्य स्थान में **(हि)** जिससे कि **(त्वा)** आपकी **(जोहवीमि)** प्रशंसा करता वा बुलाता हूँ इससे **(सजोषाः)** तुल्य प्रीति के सेवनेवाले आप **(हरिभिः)** घोड़ों के सदृश अग्नि आदिकों से **(नः)** हम लोगों के **(नमोवृधम्)** अन्न आदि ऐश्वर्य्य के बढ़ानेवाले **(यज्ञम्)** प्रयत्न से सिद्ध होने योग्य सङ्गत व्यवहार के प्रति **(तूयम्)** शीघ्र **(आ)** सब प्रकार **(याहि)** प्राप्त हूजिये॥ ३॥

**भावार्थः**-मनुष्यों को उन लोगों की ही प्रशंसा करनी चाहिये कि जो सबके सुखों की वृद्धि करें॥ ३॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**आ च॒ त्वामे॒ता वृष॑णा॒ वहा॑तो॒ हरी॒ सखा॑या सु॒धुरा॒ स्वङ्गा॑।**

**धा॒नाव॒दिन्द्रः॒ सव॑नं जुषा॒णः सखा॒ सख्यु॑ः शृणव॒द्वन्द॑नानि॥ ४॥**

**आ। च॒। त्वाम्। ए॒ता। वृष॑णा। वहा॑तः। हरी॒ इति॑। सखा॑या। सु॒ऽधुरा॑। सु॒ऽअङ्गा॑। धा॒नाऽव॑त्। इन्द्रः॑। सव॑नम्। जु॒षा॒णः। सखा॑। सख्यु॑ः। शृ॒ण॒व॒त्। वन्द॑नानि॥ ४॥**

**पदार्थः**-**(आ)** **(च)** **(त्वाम्)** **(एता)** प्राप्तौ **(वृषणा)** वृष्टिकरौ वायुविद्युतौ **(वहातः)** प्राप्नुतः **(हरी)** हरणशीलावश्वाविव **(सखाया)** सुहृदाविव वर्त्तमानौ **(सुधुरा)** शोभना धुरो ययोस्तौ **(स्वङ्गा)** शोभनान्यङ्गानि ययोस्तौ **(धानावत्)** परिपक्वा धाना विद्यन्ते यस्मिँस्तत् **(इन्द्रः)** परमैश्वर्यप्रदः **(सवनम्)** ऐश्वर्यम् **(जुषाणः)** सेवमानः **(सखा)** सुहृत् **(सख्युः)** मित्रस्य **(शृणवत्)** शृणुयात् **(वन्दनानि)** अभिवादनानि स्तवनानि वा॥ ४॥

**अन्वयः**-हे विद्वन्! यथा धानावत्सवनं जुषाण इन्द्रस्सखा सख्युर्वन्दनानि शृणवत्स्वङ्गा सखाया इव सुधुरा वृषणा त्वामेता हरी सर्वानावहातश्च तथा त्वं सर्वेषां वचांसि शृणु प्रियाणि कार्य्याणि साध्नुहि॥ ४॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। त एव सखायो भवितुमर्हन्ति ये महद्दुःखमपि प्राप्य सखीन् न जहति यथा द्वावनेका वाऽश्वाः सङ्गता भूत्वाऽभीष्टानि स्थानानि गमयन्ति तथैव स्वात्मवत्प्रिया जना इच्छासिद्धिं प्राप्नुवन्ति॥४॥

**पदार्थः**-हे विद्वन्! पुरुष! जैसे **(धानावत्)** पकाये हुए यवों से युक्त **(सवनम्)** ऐश्वर्य्य का **(जुषाणः)** सेवन करता हुआ **(इन्द्रः)** अत्यन्त ऐश्वर्य्य का देनेवाला **(सखा)** मित्र पुरुष **(सख्युः)** मित्र के अभिवादन आदि वा स्तुतियों को **(शृणवत्)** सुने और **(स्वङ्गा)** सुन्दर अङ्गों से विशिष्ट **(सखाया)** मित्रों के तुल्य वर्त्तमान तथा **(सुधुरा)** उत्तम धुरों से युक्त **(वृषणा)** वृष्टि करनेवाले वायु और बिजुली **(त्वाम्)** आपको **(एता)** प्राप्त हुए **(हरी)** ले चलनेवाले घोड़ों के सदृश सबको **(आ, वहातः)** प्राप्त होते हैं, वैसे आप लोगों के वचनों को सुनिये और प्रिय कार्य्यों को सिद्ध कीजिये॥४॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। वे लोग ही मित्र होने योग्य हैं कि जो बड़े दुःख को प्राप्त होकर भी मित्रों का त्याग नहीं करते और जैसे दो वा बहुत घोड़े इकट्ठे होकर यथेष्ट स्थानों में पहुँचाते हैं, वैसे अपने आत्मा के सदृश प्रिय जन इच्छा की सिद्धि को प्राप्त होते हैं॥४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**कुविन्मा गोपां करसे जनस्य कुविद्राजानं मघवन्नृजीषिन्।**

**कुविन्म ऋषिं पपिवांसं सुतस्य कुविन्मे वस्वो अमृतस्य शिक्षाः॥५॥**

**कुवित्। मा। गोपाम्। करसे। जनस्य। कुवित्। राजानम्। मघऽवन्। ऋजीषिन्। कुवित्। मा। ऋषिम्। पपिऽवांसम्। सुतस्य। कुवित्। मे। वस्वः। अमृतस्य। शिक्षाः॥५॥**

**पदार्थः**-**(कुवित्)** महान्तम् **(मा)** माम् **(गोपाम्)** धार्मिकाणां रक्षकम् **(करसे)** कुर्य्याः **(जनस्य)** **(कुवित्)** महान्तम् **(राजानम्)** **(मघवन्)** परमपूजितधनयुक्त **(ऋजीषिन्)** ऋजुभावमिच्छन् **(कुवित्)** महान्तम् **(मा)** माम्। अत्र **ऋत्यक** इति ह्रस्वो भूत्वा प्रकृतिभावः। **(ऋषिम्)** सकलवेदमन्त्रार्थवेत्तारम् **(पपिवांसम्)** पीतवन्तम् **(सुतस्य)** निष्पादितस्य सोमस्य रसम् **(कुवित्)** महतः **(मे)** मम **(वस्वः)** धनस्य **(अमृतस्य)** नाशरहितस्य **(शिक्षाः)** शिक्षस्व। अत्र व्यत्ययेन परस्मैपदम्॥५॥

**अन्वयः**-हे विद्वन्! यस्त्वं जनस्य कुविद् गोपां मा करसे। हे मघवन्नृजीषिन्! यस्त्वं जनस्य कुविद्राजानं करसे सुतस्य पपिवांसं कुविदृषिं मा शिक्षाः कुविदमृतस्य मे वस्वः करसे तं त्वां वयं भजामहे॥५॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! ये युष्मान् विद्याविनयसुशिक्षादानेन महतो राज्ञः कुर्वन्ति वेदार्थं विज्ञाप्य मोक्षं साधयन्ति तान् यूयं स्वात्मवत्प्रीणीत॥५॥

**पदार्थः**-हे विद्वज्जन! जो आप **(जनस्य)** सब लोगों के **(कुवित्)** श्रेष्ठ **(गोपाम्)** धार्मिक पुरुषों के रक्षा करनेवाले **(मा)** मुझको **(करसे)** करें। हे **(मघवन्)** परम प्रशंसनीय धनयुक्त **(ऋजीषिन्)**



www.9009.co.in

कोमलपन को चाहनेवाले! जो आप जनसमूह का [(**कुवित्**) श्रेष्ठ] (**राजानम्**) राजा करें, वह (**सुतस्य**) उत्पन्न किये हुए सोम के रस को (**पपिवांसम्**) पीते हुए (**कुवित्**) श्रेष्ठ (**ऋषिम्**) सम्पूर्ण वेदों के अर्थ के जाननेवाले होने की (**मा**) मुझ को (**शिक्षाः**) शिक्षा दीजिये और आप (**कुवित्**) श्रेष्ठ (**अमृतस्य**) नाश से रहित (**मे**) मेरे (**वस्वः**) धन को करें, उन आपकी हम लोग सेवा करें॥५॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो लोग आप लोगों को विद्या, विनय और उत्तम शिक्षादान से बड़े राजा करते और वेद के अर्थों को समझा के मोक्ष सिद्ध करते हैं, उनको आप अपने आत्मा के सदृश प्रसन्न करें॥५॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**आ त्वा बृहन्तो हरयो युजाना अर्वागिन्द्र सधमादो वहन्तु।**
**प्र ये द्विता दिव ऋञ्जन्त्याताः सुसंमृष्टासो वृषभस्य मूराः॥६॥**

**आ। त्वा। बृहन्तः। हरयः। युजानाः। अर्वाक्। इन्द्र। सधऽमादः। वहन्तु। प्र। ये। द्विता। दिवः। ऋञ्जन्ति। आताः। सुऽसंमृष्टासः। वृषभस्य। मूराः॥६॥**

**पदार्थः**-(**आ**) समन्तात् (**त्वा**) त्वाम् (**बृहन्तः**) महान्तः (**हरयः**) सुशिक्षितास्तुरङ्गा इवाऽग्न्यादयः (**युजानाः**) समादधानाः (**अर्वाक्**) योऽर्वागञ्चति (**इन्द्र**) परमपूजनीय (**सधमादः**) समानस्थानाः (**वहन्तु**) प्राप्नुवन्तु (**प्र**) (**ये**) (**द्विता**) द्वयोर्भावः (**दिवः**) विद्याप्रकाशमानान् (**ऋञ्जन्ति**) साध्नुवन्ति (**आताः**) व्याप्ता दिशः। **आता इति दिङ्नामसु पठितम्।** (निघं १.६) (**सुसंमृष्टासः**) श्रेष्ठरीत्या सम्यक् शुद्धः (**वृषभस्य**) बलिष्ठस्य (**मूराः**) मूढाः॥६॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! ये बृहन्तो युजाना सधमादो हरय इव त्वाऽऽवहन्तु द्विता दिव ऋञ्जन्ति सुसंमृष्टास आता इव वृषभस्य वेगं प्र वहन्तु तैर्ये मूरा मूढाः स्युस्तानर्वाक् त्वमावह॥६॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। ये विद्वांसोऽश्वा इवाऽभीष्टस्थाने मूढान् प्रापयन्ति ते समग्रमृद्धिं साद्धुं शक्नुवन्ति॥६॥

**पदार्थः**-हे (**इन्द्र**) अत्यन्त सेवा करने योग्य विद्वान्! (**ये**) जो (**बृहन्तः**) बड़े (**युजानाः**) समाधान देते हुए (**सधमादः**) समान स्थानवाले (**हरयः**) उत्तम प्रकार शिक्षित घोड़ों के सदृश अग्नि आदि पदार्थ (**त्वा**) आपको (**आ**) सब प्रकार (**वहन्तु**) एक स्थान से दूसरे स्थान को पहुँचावे और वे तथा (**द्विता**) दो-दो पदार्थों का होना जैसे वैसे विद्वान् (**दिवः**) विद्याओं से प्रकाशमानों को (**ऋञ्जन्ति**) सिद्ध करते हैं (**सुसंमृष्टासः**) वा श्रेष्ठ रीति से उत्तम प्रकार शुद्ध किये हुए (**आताः**) व्याप्त हुईं दिशाओं के सदृश (**वृषभस्य**) बलवान् पदार्थ के वेग को (**प्र, वहन्तु**) प्राप्त हों उनसे जो (**मूराः**) मूढ़ होवें, उन पुरुषों को (**अर्वाक्**) नीचे के स्थल में आप पहुँचाइये॥६॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलप्तोपमालङ्कार है। जो विद्वान् लोग घोड़ों के सदृश अभीष्ट स्थान में मूढ़ों को पहुँचाते हैं, वे सम्पूर्ण समृद्धि सिद्ध कर सकते हैं॥६॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**इन्द्र पिब वृषधूतस्य वृष्ण आ यं ते श्येन उशते जभार।**

**यस्य मदे च्यावयसि प्र कृष्टीर्यस्य मदे अप गोत्रा ववर्थ॥७॥**

**इन्द्र। पिब। वृषऽधूतस्य। वृष्णः। आ। यम्। ते। श्येनः। उशते। जभार। यस्य। मदे। च्यवयसि। प्र। कृष्टीः। यस्य। मदे। अप। गोत्रा। ववर्थ॥७॥**

**पदार्थः**-(**इन्द्र**) विशेषैश्वर्य्यप्रद! (**पिब**) (**वृषधूतस्य**) वृषा बलिष्ठाः पदार्था धूताः कम्पिता येन तस्य (**वृष्णः**) बलिष्ठस्य (**आ**) (**यम्**) (**ते**) तुभ्यम् (**श्येनः**) एतत् पक्षीव (**उशते**) कामयमानाय (**जभार**) धरति (**यस्य**) (**मदे**) आनन्दे (**च्यावयसि**) प्रापयसि (**प्र**) (**कृष्टीः**) मनुष्यान् (**यस्य**) (**मदे**) आनन्दे (**अप**) (**गोत्रा**) पृथिवी (**ववर्थ**) वर्त्तते॥७॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! त्वं वृषधूतस्य वृष्णो रसं पिब श्येन इव यमुशते [ते] तुभ्यं यमा जभार यस्य मदे त्वं कृष्टीः प्र च्यावयसि। यस्य मदे गोत्रा अप ववर्थ तं स्वात्मवत्सेवस्व॥७॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! ये श्येनवत्सद्योगामिनः सर्वस्य सुखं कामयमाना मनुष्यान् सुखयन्ति तेषां सन्निधौ स्थित्वा विद्याव्यवहाराऽऽनन्दं प्राप्नुत॥७॥

**पदार्थः**-हे (**इन्द्रः**) विशेष ऐश्वर्य के देनेवाले! आप (**वृषधूतस्य**) बलिष्ठ पदार्थों के कंपानेवाले (**वृष्णः**) बलिष्ठ पदार्थ के रस का (**पिब**) पान करो (**श्येनः**) वाज पक्षी के सदृश (**यम्**) जिसकी (**उशते**) कामना करनेवाले (**ते**) आपके लिये जिसको (**आ, जभार**) धारण करता है (**यस्य**) जिसके (**मदे**) आनन्द में आप (**कृष्टीः**) मनुष्यों को (**प्र, च्यावयसि**) प्राप्त कराते हैं और (**यस्य**) जिसके (**मदे**) आनन्द के निमित्त (**गोत्रा**) पृथिवी (**अप, ववर्थ**) वर्त्तमान है, उसकी अपने तुल्य सेवा करो॥७॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जो श्येन पक्षी के सदृश शीघ्र चलने और सबके सुख की कामना करनेवाले पुरुष मनुष्यों को सुख देते हैं, उन लोगों के समीप वर्त्तमान होकर विद्यासम्बन्धी व्यवहार के आनन्द को प्राप्त होओ॥७॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**शुनं हुवेम मघवानमिन्द्रमस्मिन् भरे नृतमं वाजसातौ।**

**शृण्वन्तमुग्रमूतये समत्सु घ्नन्तं वृत्राणि संजितं धनानाम्॥८॥७॥**



www.9009.co.in

**शु॒नम्। हु॒वे॒म॒। म॒घऽवा॑नम्। इन्द्र॑म्। अ॒स्मिन्। भरे॑। नृऽत॑मम्। वाज॑ऽसातौ। शृ॒ण्वन्त॑म्। उ॒ग्रम्। ऊ॒तये॑। स॒मत्ऽसु॑। घ्नन्त॑म्। वृ॒त्राणि॑। स॒म्ऽजित॑म्। धना॑नाम्॥८॥**

**पदार्थः**-(**शुनम्**) महौषधिसेवनजन्यं सुखम् (**हुवेम**) आदद्याम (**मघवानम्**) सकलविद्या-जनितारम् (**इन्द्रम्**) अविद्यादिक्लेशविदर्त्तारम् (**अस्मिन्**) (**भरे**) देवासुरविद्वदविद्वत्संग्रामे (**नृतमम्**) अतिशयेन विद्यायाः प्रापकम् (**वाजसातौ**) ज्ञानाऽज्ञानयोर्विभागे (**शृण्वन्तम्**) सम्यक् परीक्षां कुर्वन्तम् (**उग्रम्**) उत्कृष्टस्वभावम् (**ऊतये**) विद्यादिशुभगुणप्रवेशाय (**समत्सु**) धार्मिकाऽधार्मिकविरोधाख्येषु युद्धेषु (**घ्नन्तम्**) विरोधं विनाशयन्तम् (**वृत्राणि**) धनानि (**सञ्जितम्**) जयशीलम् (**धनानाम्**) ऐश्वर्य्याणाम्॥८॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथाऽस्मिन् वाजसातौ भर ऊतये समत्सु घ्नन्तं धनानां सञ्जितं वृत्राणि शृण्वन्तमुग्रं मघवानं नृतममिन्द्रं प्राप्य शुनं हुवेम तथैतं प्राप्याऽऽनन्दं लभध्वम्॥८॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। मनुष्यैर्विद्वच्छरणं प्राप्यऽविद्यादारिद्र्ये हत्वा विद्याश्रियौ जनयित्वा सततमानन्दो वर्द्धनीय इति॥८॥

अथेन्द्रविद्वत्सखिसोमपानादिगुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति त्रिचत्वारिंशत्तमं सूक्तं सप्तमो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे (**अस्मिन्**) इस (**वाजसातौ**) ज्ञान और अज्ञान के विभाग और (**भरे**) विद्वान् और अविद्वान् के संग्राम में (**ऊतये**) विद्या आदि उत्तम गुणों में प्रवेश होने के लिये (**समत्सु**) धार्मिक और अधार्मिकों के विरोधनामक युद्धों में (**घ्नन्तम्**) विरोध का नाश करते हुए (**धनानाम्**) ऐश्वर्य्यों के (**सञ्जितम्**) जीतने का स्वभाव रखनेवाले (**वृत्राणि**) धनों की (**शृण्वन्तम्**) उत्तम प्रकार परीक्षा करते हुए (**उग्रम्**) उत्तम स्वभावयुक्त (**मघवानम्**) सम्पूर्ण विद्याओं के उत्पन्न करने (**नृतमम्**) अतिशय करके विद्या के प्राप्त कराने और (**इन्द्रम्**) अविद्या आदि क्लेशों के नाश करनेवाले को प्राप्त होकर (**शुनम्**) महौषधियों के सेवन से उत्पन्न हुए सुख को (**हुवेम**) ग्रहण करें, वैसे इसको प्राप्त होकर आनन्द को प्राप्त हूजिये॥८॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। मनुष्यों को चाहिये कि विद्वानों के शरण को पहुँच कर अविद्या और दारिद्र्य का नाश तथा विद्या और लक्ष्मी को उत्पन्न कर निरन्तर आनन्द बढ़ावें॥८॥

इस सूक्त में विद्वान्, सखि और सोमपानादिकों के गुणवर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की पिछले सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह तेंतालीसवां सूक्त और सातवां वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

**अथ पञ्चर्चस्य चतुश्चत्वारिंशत्तमस्य सूक्तस्य विश्वामित्र ऋषिः। इन्द्रो देवता। १, २ निचृद्बृहती। ३, ५ बृहती छन्दः। मध्यमः स्वरः। ४ स्वराडनुष्टुप् छन्दः। गान्धारः स्वरः॥**

***अथ सूर्य्यविषयमाह॥***

अब पाँच ऋचावाले चवालीसवें सूक्त का आरम्भ है। इसके प्रथम मन्त्र में सूर्य्य के विषय को कहते हैं॥

**अयं ते अस्तु हर्यतः सोम आ हरिभिः सुतः।**

**जुषाण इन्द्र हरिभिर्न आ गह्या तिष्ठ हरितं रथम्॥१॥**

**अयम्। ते। अस्तु। हर्यतः। सोमः। आ। हरिऽभिः। सुतः। जुषाणः। इन्द्र। हरिऽभिः। नः। आ। गहि। आ। तिष्ठ। हरितम्। रथम्॥१॥**

**पदार्थः**-(**अयम्**) (**ते**) तव (**अस्तु**) (**हर्यतः**) कामयमानस्य (**सोमः**) ऐश्वर्य्यवृन्दः (**आ**) (**हरिभिः**) अश्वैरिव साधनैः (**सुतः**) प्राप्तः (**जुषाणः**) सेवमानः (**इन्द्र**) परमैश्वर्य्यमिच्छो (**हरिभिः**) हरणशीलैरश्वैः (**नः**) अस्मान् (**आ**) (**गहि**) आगच्छ (**आ**) (**तिष्ठ**) (**हरितम्**) अग्न्यादिभिर्वाहितम् (**रथम्**) रमणीयं यानम्॥१॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! हर्यतस्ते हरिभिर्योऽयं सोमः सुतोऽस्तु तं जुषाणः सन् हरिभिर्हरितं रथमातिष्ठानेन नोऽस्मानागहि॥१॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। त एव दयालवः सन्ति येऽन्येषामैश्वर्यवृद्धिमिच्छेयुरैश्वर्यवत आगतान् दृष्ट्वा प्रसन्ना भवेयुः॥१॥

**पदार्थः**-हे (**इन्द्र**) परम ऐश्वर्य की इच्छा करनेवाले! (**हर्यतः**) कामना करते हुए (**ते**) आपके (**हरिभिः**) घोड़ों के सदृश साधनों से जो (**अयम्**) यह (**सोमः**) ऐश्वर्यों का समूह (**सुतः**) प्राप्त हुआ (**अस्तु**) हो उसका (**जुषाणः**) सेवन करता हुआ (**हरिभिः**) ले चलनेवाले घोड़ों से (**हरितम्**) अग्नि आदिको से चलाये गये (**रथम्**) मनोहर यान पर (**आ, तिष्ठ**) स्थिर हूजिये इससे (**नः**) हम लोगों को (**आ, गहि**) प्राप्त हूजिये॥१॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। वे ही लोग दयालु हैं कि जो अन्य जनों के ऐश्वर्य की वृद्धि की इच्छा करें और ऐश्वर्यवालों को आते हुए देख के प्रसन्न होवें॥१॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**हर्यन्नुषसमर्चयः सूर्यं हर्यन्नरोचयः।**

**विद्वाँश्चिकित्वान् हर्यश्व वर्द्धस इन्द्र विश्वा अभि श्रियः॥२॥**



www.9009.co.in

**हर्यन्। उषसम्। अर्चय:। सूर्यम्। हर्यन्। अरोचय:। विद्वान्। चिकित्वान्। हरिऽअश्व। वर्धसे। इन्द्र। विश्वाः। अभि। श्रियः॥२॥**

**पदार्थ:**-(**हर्यन्**) कामयमान: (**उषसम्**) प्रत्यूषकालमिव सत्पुरुषान् (**अर्चय:**) सत्कुरु (**सूर्यम्**) सवितारमिव न्यायम् (**हर्यन्**) प्राप्नुवन् प्रापयन् (**अरोचय:**) रोचय (**विद्वान्**) (**चिकित्वान्**) ज्ञानवान् (**हर्य्यश्व**) हर्या: कामयमाना अश्वा आशुगामिनोऽग्न्यादयस्तुरङ्गा वा यस्य तत्सम्बुद्धौ (**वर्धसे**) (**इन्द्र**) धनमिच्छुक (**विश्वा:**) सर्वा: (**अभि**) आभिमुख्ये (**श्रिय:**) शोभा: सम्पत्तय:॥२॥

**अन्वय:**-हे हर्यन्नुषसं सूर्य्य इव सत्पुरुषांस्त्वमर्चय:। हे हर्यन्! सूर्य्यं विद्युदिव न्यायमरोचय:। हे हर्य्यश्वेन्द्र! यतश्चिकित्वान् [विद्वान्]त्सन् विश्वा अभिश्रिय: प्राप्तुमिच्छसि तस्माद्वर्धसे॥२॥

**भावार्थ:**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कार:। ये मनुष्या उषर्वद्विद्याप्रकाशाभिमुखा: सूर्यवद्धर्माचरणं कामयमाना: सन्त: प्रयत्नेनैश्वर्य्यमिच्छेयुस्ते सर्वथा श्रीमन्तो भूत्वा सततं वर्धन्ते॥२॥

**पदार्थ:**-हे (**हर्यन्**) कामना करनेवाले! (**उषसम्**) प्रात:काल को सूर्य के सदृश सत्पुरुषों का आप (**अर्चय:**) सत्कार करिये और हे (**हर्यन्**) अनेक पदार्थों को प्राप्त होने वा प्राप्त करानेवाले! (**सूर्यम्**) सूर्य को बिजुली जैसे वैसे न्याय का (**अरोचय:**) प्रकाश करो और हे (**हर्यश्व**) कामना करते हुए शीघ्र चलनेवाले अश्व वा अग्नि आदि पदार्थों से युक्त (**इन्द्र**) धन की इच्छा करनेवाले! जिससे (**चिकित्वान्**) ज्ञानवान् (**विद्वान्**) विद्वान् होते हुए (**विश्वा:**) सम्पूर्ण (**अभि**) सम्मुख वर्त्तमान (**श्रिय:**) सुन्दर सम्पत्तियों को प्राप्त होने की इच्छा करते हो इससे (**वर्धसे**) वृद्धि को प्राप्त होते हो॥२॥

**भावार्थ:**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो मनुष्य प्रात:काल के सदृश विद्याओं के प्रकाश में तत्पर और सूर्य के सदृश धर्माचरण की कामना करते हुए प्रयत्न से ऐश्वर्य्य की इच्छा करें, वे सब प्रकार लक्ष्मीयुक्त होकर निरन्तर वृद्धि को प्राप्त होते हैं॥२॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**द्यामिन्द्रो हरिधायसं पृथिवीं हरिवर्पसम्।**

**अधारयद्धरितोर्भूरि भोजनं ययोरन्तर्हरिश्चरत्॥३॥**

**द्याम्। इन्द्र:। हरिऽधायसम्। पृथिवीम्। हरिऽवर्पसम्। अधारयत्। हरितो:। भूरि। भोजनम्। ययो:। अन्त:। हरि:। चरत्॥३॥**

**पदार्थ:**-(**द्याम्**) प्रकाशम् (**इन्द्र:**) विद्युत् सूर्य्यो वा (**हरिधायसम्**) या हरीन् किरणान् दधाति ताम् (**पृथिवीम्**) भूमिम् (**हरिवर्पसम्**) हरय: किरणा वर्पसो रूपस्य प्रकाशका यस्यास्ताम् (**अधारयत्**) धारयति (**हरितो:**) हरणशीलयोर्गुणयो: (**भूरि**) बहु (**भोजनम्**) पालनं भक्षणं वा (**ययो:**) (**अन्त:**) मध्ये (**हरि:**) हरणशीलो वायु: (**चरत्**) चरति॥३॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे विद्वन्! यथेन्द्रो हरिधायसं द्यां हरिवर्पसं पृथिवीमधारयद् यथा हरिर्वायुर्ययो- र्हरितोरन्तर्वर्त्तमानः सन् भूरि भोजनं चरत्तथा त्वं भव॥३॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। ये सूर्यवन्नियमेन धर्म्यकार्याणि साध्नुवन्ति वायुरिव सततं प्रयत्नं कुर्वन्ति ते बह्वैश्वर्यं लब्ध्वाऽऽनन्दन्ति॥३॥

**पदार्थः**-हे विद्वन् पुरुष! जैसे **(इन्द्रः)** बिजुली वा सूर्य **(हरिधायसम्)** किरणों को धारण करने वा **(द्याम्)** प्रकाश लोक और **(हरिवर्पसम्)** जिसके रूप का प्रकाश करनेवाली किरणें विद्यमान उस **(पृथिवीम्)** पृथिवी को **(अधारयत्)** धारण करता है और जैसे **(हरिः)** हरनेवाला वायु **(ययोः)** जिन **(हरितोः)** हरनेवाले गुणों के **(अन्तः)** मध्य में वर्त्तमान हुआ **(भूरि)** बहुत **(भोजनम्)** पालन वा भक्षण का **(चरत्)** आचरण करता है, वैसे आप हूजिये॥३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो लोग सूर्य के सदृश नियमपूर्वक धर्मयुक्त कर्मों को सिद्ध करते और वायु के सदृश निरन्तर प्रयत्न करते हैं, वे बहुत ऐश्वर्य को प्राप्त होकर आनन्दित होते हैं॥३॥

**अथविद्वद्विषयमाह॥**

अब विद्वान् के विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**ज॒ज्ञा॒नो हरि॑तो॒ वृषा॒ विश्व॒मा भा॑ति रोच॒नम्।**

**हर्य॑श्वो॒ हरि॑तं॒ धत्त॒ आयु॑ध॒मा वज्रं॑ बा॒ह्वोर्हरि॑म्॥४॥**

**ज॒ज्ञा॒नः। हरि॑तः। वृषा॑। विश्व॑म्। आ। भा॒ति॒। रो॒च॒नम्। हरि॑ऽअश्वः। हरि॑तम्। ध॒त्ते॒। आयु॑धम्। आ। वज्र॑म्। बा॒ह्वोः। हरि॑म्॥४॥**

**पदार्थः**-**(जज्ञानः)** जायमानः **(हरितः)** हरितादिवर्णः **(वृषा)** वृष्टिकरः **(विश्वम्)** **(आ)** **(भाति)** **(रोचनम्)** रोचन्ते यस्मिँस्तत् **(हर्यश्वः)** हर्याः कामयमाना आशुगामिनो गुणा यस्य विद्युद्रूपस्य सः **(हरितम्)** कमनीयम् **(धत्ते)** धरति **(आयुधम्)** समन्तात् युध्यन्ति येन तत् **(आ)** **(वज्रम्)** शस्त्रमिव किरणसमूहम् **(बाह्वोः)** भुजयोः **(हरिम्)** हरणशीलम्॥४॥

**अन्वयः**-हे विद्वांसो! यो जज्ञानो हरितो हर्यश्वो वृषा हरितं रोचनं विश्वं बाह्वोर्हरितं वज्रमायुधमिवाऽऽधत्त आ भाति तं विज्ञायोपयुञ्जत॥४॥

**भावार्थः**-विद्वांसो यथा प्रसिद्धः सूर्यः सर्वं जगत् प्रकाश्य रोचयति तथैव सद्विद्योपदेशेन धर्मं रोचयन्तु॥४॥

**पदार्थः**-हे विद्वान् लोगो! जो **(जज्ञानः)** उत्पन्न होता हुआ **(हरितः)** हरित आदि वर्णों से युक्त **(हर्यश्वः)** कामना करते हुए शीघ्र चलनेवाले गुण हैं जिस बिजुली रूप के वह **(वृषा)** वृष्टिकारक **(हरितम्)** कामना करने योग्य **(रोचनम्)** और सब ओर से जिसमें प्रीति करते हैं ऐसे **(विश्वम्)** सम्पूर्ण



www.9009.co.in

लोक को **(बाह्वोः)** भुजाओं के **(हरितम्)** हरनेवाले **(वज्रम्)** शस्त्रों के सदृश किरणों के समूह को **(आ, धत्ते)** धारण करता और **(आ, भाति)** प्रकाशित होता है, उसको जान कर उपयोग करो॥४॥

**भावार्थः**-विद्वान् लोग जैसे प्रसिद्ध सूर्य्य सम्पूर्ण जगत् को प्रकाशित करके आप प्रकाशित होता है, वैसे ही सद्विद्या के उपदेश से धर्म का प्रकाश करावें॥४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**इन्द्रो॑ ह॒र्यन्त॒मर्जु॑नं॒ वज्रं॑ शु॒क्रैर॒भीवृ॑तम्।**

**अपा॑वृणो॒द्धरि॑भि॒रद्रि॑भिः सु॒तमुद्गा हरि॑भिराजत॥५॥८॥**

**इन्द्रः॑। ह॒र्यन्त॑म्। अर्जु॑नम्। वज्र॑म्। शु॒क्रैः। अ॒भिऽवृ॑तम्। अप॑। अ॒वृ॒णो॒त्। हरि॑ऽभिः। अद्रि॑ऽभिः। सु॒तम्। उत्। गाः। हरि॑ऽभिः। आ॒ज॒त॒॥५॥**

**पदार्थः**-**(इन्द्रः)** सूर्य्यः **(हर्यन्तम्)** कामयन्तम् **(अर्जुनम्)** रूपम्। **अर्जुनमिति रूपनामसु पठितम्।** (निघं०३.७) **(वज्रम्)** किरणसमूहम् **(शुक्रैः)** आशुकरैर्गुणैः **(अभीवृतम्)** अभितो वृतं युक्तम् **(अप) (अवृणोत्)** दूरीकरोति **(हरिभिः)** हरणशीलैः किरणैः **(अद्रिभिः)** मेघैः **(सुतम्)** सिद्धम् **(उत्) (गाः)** पृथिवी **(हरिभिः)** मनुष्यैः सह राजा। **हरय इति मनुष्यनामसु पठितम्।** (निघं०२.३) **(आजत)** प्रक्षिपति॥५॥

**अन्वयः**-हे विद्वांसो! यथेन्द्रः शुक्रैरभीवृतमर्जुनं वज्रं हर्यन्तं हरिभिरद्रिभिः सुतमपावृणोत् तथा हरिभिः सह राजा गा इवोदाजत॥५॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। ये सूर्य्यवद्विद्याविनयसेनाधनादिकं प्रकाश्याऽविद्यादि निवर्त्य सुसहायेन राज्ञा सहाऽऽमन्त्र्य राज्यं पालयन्ति ते पूर्णकामा भवन्तीति॥५॥

अत्र सूर्य्यविद्युद्वायुविद्वद्गुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति चतुश्चत्वारिंशत्तमं सूक्तमष्टमो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे विद्वान् लोगो! जैसे **(इन्द्रः)** सूर्य्य **(शुक्रैः)** शीघ्रता करनेवाले गुणों से **(अभीवृतम्)** सब ओर से युक्त **(अर्जुनम्)** रूप और **(वज्रम्)** किरणों के समूह की **(हर्यन्तम्)** कामना करते हुए **(हरिभिः)** हरनेवाली किरणों और **(अद्रिभिः)** मेघों से **(सुतम्)** सिद्ध हुए पदार्थ को **(अप, अवृणोत्)** दूर करता है, वैसे **(हरिभिः)** मनुष्यों के साथ राजा **(गाः)** पृथिवियों के तुल्य और पदार्थों को **(उत् आजत)** फेंकता है॥५॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो लोग सूर्य्य के सदृश विद्या, नम्रता, सेना और धन आदि का प्रकाश और अविद्या आदि की निवृत्ति कर जिसका उत्तम सहाय उस राजा के साथ सलाह करके राज्य का पालन करते हैं, वे पूर्ण मनोरथवाले होते हैं॥५॥



www.9009.co.in

इस सूक्त में सूर्य्य, बिजुली, वायु और विद्वान् के गुणों का वर्णन होने से इस सूक्त के अर्थ की पिछले सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह चवालीसवां सूक्त और आठवां वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

**अथ पञ्चर्चस्य पञ्चचत्वारिंशत्तमस्य सूक्तस्य विश्वामित्र ऋषिः। इन्द्रो देवता। १, २ निचृद्बृहती। ३, ५ बृहती छन्दः। मध्यमः स्वरः। ४ स्वराडनुष्टुप् छन्दः। गान्धारः स्वरः॥**

***अथ विद्वद्विषयमाह॥***

अब पाँच ऋचावाले पैंतीलीसवें सूक्त का आरम्भ है। उसके प्रथम मन्त्र में विद्वान् के विषय को कहते हैं॥

**आ मन्द्रैरिन्द्र हरिभिर्याहि मयूररोमभिः।**

**मा त्वा केचिन्नि यमन् विं न पाशिनोऽति धन्वेव ताँ इहि॥ १॥**

**आ। मन्द्रैः। इन्द्र। हरिऽभिः। याहि। मयूररोमऽभिः। मा। त्वा। के। चित्। नि। यमन्। विम्। न। पाशिनः। अति। धन्वऽइव। तान्। इहि॥ १॥**

**पदार्थः**-(**आ**) (**मन्द्रैः**) आनन्दप्रदैः (**इन्द्र**) परमैश्वर्य्ययुक्त (**हरिभिः**) प्रयत्नवद्भिर्मनुष्यैरिवाऽश्वैः किरणैर्वा (**याहि**) आगच्छ (**मयूररोमभिः**) मयूराणां लोमानीव लोमानि येषान्तैः (**मा**) निषेधे (**त्वा**) त्वाम् (**के**) (**चित्**) अपि (**नि**) नितराम् (**यमन्**) यच्छन्तु (**विम्**) पक्षिणम् (**न**) इव (**पाशिनः**) पाशवन्तो बन्धनाय प्रवृत्ताः (**अति**) (**धन्वेव**) यथा शस्त्रविशेषः (**तान्**) (**इहि**) गच्छ॥ १॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! त्वं मयूररोमभिर्मन्द्रैर्हरिभिरायाहि यतः केचित्वा पाशिनो विं न मा नि यमन् धन्वेव तानतीहि॥ १॥

**भावार्थः**-अत्रोपमावाचकलुप्तोपमालङ्कारौ। राजपुरुषैस्तादृश्या सेनया तादृशैर्यानैर्युद्धादि-व्यवहारसिद्धये गन्तुमतिचातुर्य्येण संग्रामं कृत्वा विजयो लब्धव्यो येन केचित्तान्न निगृह्णीयुस्तथाऽनुष्ठातव्यम्॥ १॥

**पदार्थः**-हे (**इन्द्र**) अत्यन्त ऐश्वर्य से युक्त! आप (**मयूररोमभिः**) मयूरों के रोमों के सदृश रोम हैं जिनके उन (**मन्द्रैः**) आनन्द को देनेवाले (**हरिभिः**) प्रयत्नवान् मनुष्यों के सदृश घोड़ों वा किरणों से (**आ, याहि**) आओ जिससे (**के, चित्**) कोई लोग (**त्वा**) आपको (**पाशिनः**) बन्धन के लिये प्रवृत्त हुए (**विम्**) पक्षी को (**न**) तुल्य (**मा**) नहीं (**नि**) अत्यन्त (**यमन्**) निग्रह क्लेश देवें, किन्तु (**धन्वेव**) शस्त्र विशेष धनुष् के तुल्य (**तान्**) उनको (**अति, इहि**) अतिक्रमण कर प्राप्त हूजिये॥ १॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमा और वाचकलुप्तोपमालङ्कार हैं। राजपुरुषों को चाहिये कि ऐसी सेना, ऐसे रथ आदि कि जिनसे युद्धादि व्यवहारसिद्धि के लिये जाने को अति चतुराई के साथ संग्राम करके विजय पावें और जिससे और जन उनको ग्रहण न करें, ऐसा उपाय करें॥ १॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**वृत्रखादो वलंरुजः पुरां दर्मो अपामजः।**



www.9009.co.in

**स्थाता रथस्य हर्योरभिस्वर इन्द्रो दृळहा चिदारुजः॥२॥**

**वृत्रऽखादः। वलम्ऽरुजः। पुराम्। दर्मः। अपाम्। अजः। स्थाता। रथस्य। हर्योः। अभिऽस्वरे। इन्द्रः। दृळहा। चित्। आऽरुजः॥२॥**

**पदार्थः**-(**वृत्रखादः**) यो वृत्रं मेघं खादति किरणो वायुर्वा (**वलंरुजः**) यो वलं मेघं रुजति (**पुराम्**) शत्रूणां नगराणाम् (**दर्मः**) दृणुयास्म (**अपाम्**) जलानाम् (**अजः**) प्रेरकः (**स्थाता**) (**रथस्य**) [रथस्य] मध्ये (**हर्योः**) अश्वयोः (**अभिस्वरे**) योऽभितः स्वरति शब्दयति तस्मिन् (**इन्द्रः**) सूर्यः (**दृढा**) दृढानि (**चित्**) अपि (**आरुजः**) यः समन्तादुजति भनक्ति॥२॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथा वृत्रखादो वलंरुजोऽपामज आरुज इन्द्रो दृढा दृणाति तथैव वयं चिच्छत्रूणां पुरा मध्ये स्थितान् वीरान् दर्मः। यथा हर्योरभिस्वरे स्थितस्य रथस्य मध्ये स्थाता वीरान् जयति तथैव वयं जयेम॥२॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यथा विद्युत्सूर्यवायवो मेघाऽवयवाञ्छिन्दन्ति तथैव धार्मिका राजादयश्शत्रून् विछिन्द्युः॥२॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे (**वृत्रखादः**) मेघों को भक्षण करनेवाला किरण वा वायु (**वलंरुजः**) मेघ का नाश करने और (**अपाम्**) जलों को (**अजः**) प्रेरणा करने तथा (**आरुजः**) चारों ओर से तोड़नेवाला (**इन्द्रः**) सूर्य्य (**दृढा**) दृढ़ भङ्ग करता है, वैसे हम लोग (**चित्**) भी (**पुराम्**) शत्रुओं के नगरों के मध्य में वर्त्तमान वीरों को (**दर्मः**) नाश करें और जैसे (**हर्योः**) दो घोड़ों के (**अभिस्वरे**) चारों ओर शब्द करनेवाले में वर्त्तमान (**रथस्य**) रथ के मध्य में (**स्थाता**) वर्त्तमान होनेवाला पुरुष वीर पुरुषों को जीतता है, वैसे ही हम लोग भी जीतें॥२॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे बिजुली, सूर्य और पवन मेघों के अवयवों का काटते हैं, वैसे ही धार्मिक राजा आदि लोग शत्रुओं को काटें॥२॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**गम्भीराँ उदधीँरिव क्रतुं पुष्यसि गा इव।**

**प्र सुगोपा यवसं धेनवो यथा ह्रदं कुल्याइवाशत॥३॥**

**गम्भीरान्। उदधीन्ऽइव। क्रतुम्। पुष्यसि। गाःऽइव। प्र। सुऽगोपाः। यवसम्। धेनवः। यथा। ह्रदम्। कुल्याःऽइव। आशत॥३॥**

**पदार्थः**-(**गम्भीरान्**) अगाधान् (**उदधीनिव**) उदकानि धीयन्ते येषु तानिव (**क्रतुम्**) प्रज्ञाम् (**पुष्यसि**) (**गाइव**) पृथिव्य इव (**प्र**) (**सुगोपाः**) यः सुष्ठु रक्षति सः (**यवसम्**) धान्यपलादिकम् (**धेनवः**) गावः (**यथा**) (**ह्रदम्**) जलाशयम् (**कुल्याइव**) वाटिकादिषु जलचालनमार्गा इव (**आशत**) व्याप्नुत॥३॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे विद्वन्! यतस्त्वं गम्भीरानुदधीनिव गाइव क्रतुं सुगोपाः सन् पुष्यसि यथा धेनवो यवसं ह्रदं कुल्याइव ये प्राशत तस्मात्तथा च त्वमेते सर्वाणि सुखानि लभन्ते॥३॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। येषां समुद्रवदक्षोभ्या प्रज्ञा पृथिवीवत् क्षमा पालनशक्तिर्धेनुवद्दानं कुल्यावद्वर्धनं वर्त्तते त एव सर्वसुखा जायन्ते॥३॥

**पदार्थः**-हे विद्वन् पुरुष! जिससे आप **(गम्भीरान्)** अथाह **(उदधीनिव)** जल जिसमें रहें, उन समुद्रों के सदृश और **(गाइव)** पृथिवियों के सदृश **(क्रतुम्)** बुद्धि को **(पुष्यसि)** पूर्ण करते हो, **(सुगोपाः)** उत्तम प्रकार रक्षा करनेवाले होकर **(यथा)** जैसे **(धेनवः)** गौयें **(यवसम्)** धान्य तृण आदि **(ह्रदम्)** और जल के स्थान को **(कुल्याइव)** वाटिका आदि में जल चलाने के मार्गों के तुल्य जो **(प्र, आशत)** प्राप्त हों, इससे और वैसे आप और ये लोग सम्पूर्ण सुखों को प्राप्त होते हैं॥३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जिन लोगों की समुद्र के सदृश अचल गम्भीर बुद्धि, पृथिवी के सदृश क्षमा और पालने का सामर्थ्य, गौ के सदृश दान और नदी के सदृश वृद्धि है, वे ही सम्पूर्ण सुखों से युक्त होते हैं॥३॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**आ नस्तुजं रयिं भरांशं न प्रतिजानते।**

**वृक्षं पक्वं फलमङ्कीव धूनुहीन्द्र संपारणं वसु॥४॥**

**आ। नः। तुजम्। रयिम्। भर। अंशम्। न। प्रतिऽजानते। वृक्षम्। पक्वम्। फलम्। अङ्कीऽइव। धूनुहि। इन्द्र। सम्ऽपारणम्। वसु॥४॥**

**पदार्थः**-**(आ)** **(नः)** अस्मभ्यम् **(तुजम्)** आदातव्यम् **(रयिम्)** धनम् **(भर)** धेहि **(अंशम्)** भागम् **(न)** इव **(प्रतिजानते)** प्रतिज्ञया व्यवहारस्य साधकाय **(वृक्षम्)** **(पक्वम्)** **(फलम्)** **(अङ्कीव)** यथाङ्कुशो तथा **(धूनुहि)** कम्पय **(इन्द्र)** धनप्रद **(संपारणम्)** सम्यग् दुःखस्य पारं गच्छति येन तत् **(वसु)** धनम्॥४॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! त्वमंशं न नोऽस्मभ्यं प्रतिजानते च तुजं रयिमाभर। वृक्षं पक्वं फलमङ्कीव संपारणं वसु धूनुहि॥४॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। त एव धार्मिका ये परसुखाय श्रियं धृत्वा परदुःखभञ्जनाः स्युः॥४॥

**पदार्थः**-हे **(इन्द्र)** धन के दाता! आप **(अंशम्)** भाग के **(न)** तुल्य **(नः)** हम लोगों के लिये **(प्रतिजानते)** प्रतिज्ञा से व्यवहार के सिद्ध करनेवाले के लिये और **(तुजम्)** ग्रहण करने के योग्य **(रयिम्)** धन को **(आ)** सब ओर से **(भर)** दीजिये **(वृक्षम्)** वृक्ष को और **(पक्वम्)** पाकयुक्त **(फलम्)** फल को



www.9009.co.in

**(अङ्कीव)** अंकुश धारण किये हुए के सदृश **(संपारणम्)** उत्तम प्रकार दुःख के पार जाता है जिससे ऐसे **(वसु)** धन को **(धूनुहि)** कंपाइये अर्थात् भेजिये॥४॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। वे ही धार्मिक पुरुष हैं जो अन्य लोगों के सुख के लिये लक्ष्मी धारण करके औरों के दुःख नाश करनेवाले होवें॥४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**स्वयुरिन्द्र स्वराळसि स्मद्दिष्टिः स्वयशस्तरः।**

**स वावृधान ओजसा पुरुष्टुत भवा नः सुश्रवस्तमः॥५॥९॥**

**स्वऽयुः। इन्द्र। स्वऽराट्। असि। स्मत्ऽदिष्टिः। स्वयशःऽतरः। सः। ववृधानः। ओजसा। पुरुऽस्तुत। भव। नः। सुश्रवःऽतमः॥५॥९।**

**पदार्थः**-**(स्वयुः)** यः स्वं धनं याति सः **(इन्द्र)** परमैश्वर्यवन् **(स्वराट्)** यः स्वेनैव राजते **(असि)** **(स्मद्दिष्टिः)** कल्याणोपदेष्टा **(स्वयशस्तरः)** स्वकीयं यशो धनं प्रशंसनं वा यस्य सोऽतिशयितः **(सः)** **(वावृधानः)** वर्द्धमानः **(ओजसा)** पराक्रमेण **(पुरुष्टुत)** बहुभिः प्रशंसित **(भव)**। अत्र **द्व्यचोऽतस्तिङ** इति दीर्घः। **(नः)** अस्मभ्यम् **(सुश्रवस्तमः)** सुष्ठु धनः श्रवणयुक्तः सोऽतिशयितः॥५॥

**अन्वयः**-हे पुरुष्टुतेन्द्र! यस्त्वं स्वयुः स्वराट् स्मद्दिष्टिः स्वयशस्तरोऽसि स त्वमोजसा वावृधानः सुश्रवस्तमो नोऽस्मभ्यं भव॥५॥

**भावार्थः**-स एव सम्राट् भवितुं योग्यो जायते योऽतिशयेन प्रशंसितगुणकर्मस्वभावो भवति स एव सम्राट् सर्वेषां वर्द्धको भवतीति॥५॥

अत्र सूर्य्यविद्वद्राजगुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति पञ्चचत्वारिंशत्तमं सूक्तं नवमो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे **(पुरुष्टुत)** बहुतों से प्रशंसित **(इन्द्र)** अत्यन्त ऐश्वर्यवाले! जो आप **(स्वयुः)** धन को प्राप्त **(स्वराट्)** स्वतन्त्र राज्यकर्त्ता **(स्मद्दिष्टिः)** कल्याण कर्म का उपदेश देनेवाले और **(स्वयशस्तरः)** अपने यश, धन और प्रशंसा से गम्भीर **(असि)** हैं **(सः)** वह **(ओजसा)** पराक्रम से **(वावृधानः)** वृद्धि को प्राप्त **(सुश्रवस्तमः)** श्रेष्ठ धन से युक्त बातचीत के अत्यन्त सुननेवाले **(नः)** हम लोगों के लिये **(भव)** होइये॥५॥

**भावार्थः**-वही चक्रवर्ती राजा होने के योग्य होता है कि जो अत्यन्त प्रशंसायुक्त गुण, कर्म और स्वभाववाला है और वही राजा सबका वृद्धिकारक होता है॥५॥

इस सूक्त में सूर्य, विद्वान् और राजा के गुणवर्णन होने से इस सूक्त के अर्थ की पिछले सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥



www.9009.co.in

यह पैंतालीसवां सूक्त और नववां वर्ग समाप्त हुआ।।



www.9009.co.in

**अथ पञ्चर्चस्य षट्चत्वारिंशत्तमस्य सूक्तस्य विश्वामित्र ऋषिः। इन्द्रो देवता। १ विराट् त्रिष्टुप्। २, ५ निचृत् त्रिष्टुप्। ३, ४ त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः॥**

***अथ राजा कीदृशो भवेदित्याह॥***

अब पाँच ऋचावाले छियालीसवें सूक्त का आरम्भ है। उसके प्रथम मन्त्र में राजा कैसा हो, इस विषय को कहते हैं॥

**युध्मस्य॑ ते वृष॒भस्य॑ स्व॒राज॑ उ॒ग्रस्य॒ यून॒: स्थवि॑रस्य॒ घृष्वे॑:।**
**अजू॑र्यतो व॒ज्रिणो॑ वी॒र्या॒३॑णीन्द्र॑ श्रु॒तस्य॑ मह॒तो म॒हानि॑॥ १॥**

**युध्मस्य॑। ते॒। वृ॒ष॒भस्य॑। स्व॒ऽराज॑:। उ॒ग्रस्य॑। यून॑:। स्थवि॑रस्य। घृष्वे॑:। अजू॑र्यत:। व॒ज्रिण॑:। वी॒र्या॑णि। इन्द्र॑। श्रु॒तस्य॑। म॒ह॒त:। म॒हानि॑॥ १॥**

**पदार्थः**-(**युध्मस्य**) योद्धुं शीलस्य (**ते**) तव (**वृषभस्य**) बलिष्ठस्य (**स्वराजः**) यः स्वेन राजते तस्य (**उग्रस्य**) तेजस्विस्वभावस्य (**यूनः**) यौवनावस्थां प्राप्तस्य (**स्थविरस्य**) वृद्धस्य (**घृष्वेः**) शत्रूणां घर्षकस्य (**अजूर्यतः**) अजीर्णस्य (**वज्रिणः**) वज्रं बहुविधं शस्त्रं विद्यते यस्य तस्य (**वीर्य्याणि**) वीरस्य कर्माणि (**इन्द्र**) परमैश्वर्य्ययोजक (**श्रुतस्य**) प्रसिद्धस्य (**महतः**) पूज्यस्य (**महानि**)॥ १॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! यस्य युध्मस्य स्वराजो वृषभस्योग्रस्य यूनः स्थविरस्य घृष्वेरजूर्यतो वज्रिणो महतः श्रुतस्य ते तव यानि महानि वीर्य्याणि सन्ति, तैर्युक्तस्त्वमस्माभिः सत्कर्त्तव्योऽसि॥ १॥

**भावार्थः**-यदि सर्वलक्षणसम्पन्नो युवा वा वृद्धोऽपि राजा स्यात्तथैव प्रयत्नेन स्वसामर्थ्यवर्द्धको भवेत्॥ १॥

**पदार्थः**-हे (**इन्द्र**) अत्यन्त ऐश्वर्य्य के दाता! जिस (**युध्मस्य**) युद्ध करने और (**स्वराजः**) अपने से प्रकाशित (**वृषभस्य**) बलवाले (**उग्रस्य**) तेजस्वी स्वभाव और (**यूनः**) यौवन अवस्था को प्राप्त पुरुष तथा (**स्थविरस्य**) वृद्धावस्थायुक्त पुरुष के और (**घृष्वेः**) शत्रुओं को घसीटनेवाले (**अजूर्यतः**) शरीर की शिथिलता से रहित और (**वज्रिणः**) बहुत प्रकार के शस्त्रों से युक्त (**महतः**) सेवा करने योग्य (**श्रुतस्य**) प्रसिद्ध (**ते**) आपके जो (**महानि**) श्रेष्ठ (**वीर्य्याणि**) वीर पुरुषों के कर्म हैं, उनसे युक्त आप हम लोगों से सत्कार पाने योग्य हैं॥ १॥

**भावार्थः**-जो सम्पूर्ण लक्षणों से युक्त युवा वा वृद्ध भी राजा हो, वैसे ही अपने प्रयत्न से अपने सामर्थ्य का बढ़ानेवाला होवे॥ १॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**म॒हाँ अ॑सि महिष॒ वृष्ण्ये॑भिर्धन॒स्पृदु॑ग्र॒ सह॑मानो अ॒न्यान्।**



www.9009.co.in

**एको॒ विश्व॑स्य॒ भुव॑नस्य॒ राजा॒ स यो॒धया॑ च क्ष॒यया॑ च॒ जना॑न्॥ २॥**

**म॒हान्। अ॒सि॒। म॒हि॒ष॒। वृष्ण्ये॑भिः। ध॒न॒ऽस्पृत्। उ॒ग्र॒। सह॑मानः। अ॒न्यान्। एकः॑। विश्व॑स्य। भुव॑नस्य। राजा॑। सः। यो॒धय॑। च॒। क्ष॒यय॑। च॒। जना॑न्॥ २॥**

**पदार्थः**-(**महान्**) महागुणविशिष्टः (**असि**) (**महिष**) पूजनीयतम (**वृष्ण्येभिः**) वृषेषु बलिष्ठेषु भवैर्गुणैः (**धनस्पृत्**) यो धनं स्पृणोति सेवते सः (**उग्र**) बलादियुक्त (**सहमानः**) (**अन्यान्**) शत्रून् (**एकः**) असहायः (**विश्वस्य**) समग्रस्य (**भुवनस्य**) भूताधिकरणस्य (**राजा**) प्रकाशमानः (**सः**) (**योधय**)। अत्र **संहितायामि**ति दीर्घः। (**च**) (**क्षयय**) क्षायय निवासय पराजयं प्रापय वा। अत्रापि **संहितायामि**ति दीर्घः। (**च**) (**जनान्**) प्रसिद्धान् वीरान्॥ २॥

**अन्वयः**-हे महिषोग्र राजन्! यतस्त्वं वृष्ण्येभिः सह महान् धनस्पृदेकोऽन्यान् सहमानो विश्वस्य भुवनस्य महान् राजासि स त्वं जनान् योधय च क्षयय शत्रून् पराजयं प्रापय सज्जनान् निवासय॥ २॥

**भावार्थः**-ये शरीरात्मनोः पूर्णं बलं कृत्वा शत्रून् निवारयन्ति सज्जनान् सत्कृत्याऽऽनन्दन्ति ते महान्तो भवन्ति॥ २॥

**पदार्थः**-हे (**महिष**) अत्यन्त आदर करने योग्य! (**उग्र**) बल आदिकों से युक्त और (**राजन्**) प्रकाशित जिससे आप (**वृष्ण्येभिः**) बलवान् पुरुषों में उत्पन्न गुणों के साथ (**महान्**) श्रेष्ठ गुणों से युक्त और (**धनस्पृत्**) धन के सेवक (**एकः**) सहायरहित (**अन्यान्**) शत्रुओं को (**सहमानः**) सहते हुए (**विश्वस्य**) सम्पूर्ण (**भुवनस्य**) प्राणियों के निवास के स्थान के श्रेष्ठ गुणों से युक्त (**राजा**) [प्रकाशमान] (**असि**) हैं (**सः**) वह आप (**जनान्**) प्रसिद्ध वीरों को (**योधय**) लड़ाइये, शत्रुओं को (**क्षयय**) पराजय को पहुँचाइये (**च**) और सज्जनों को अपने देश में बसाइये॥ २॥

**भावार्थः**-जो लोग शरीर और आत्मा का पूर्ण बल करके शत्रुओं को निवारण करते और सज्जनों का सत्कार करके आनन्द देते हैं, वे श्रेष्ठ होते हैं॥ २॥

**अथ विद्युद्विषयमाह॥**

अब बिजुली के विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**प्र मात्रा॑भी रिरिचे॒ रोच॑मानः॒ प्र दे॒वेभि॑र्वि॒श्वतो॒ अप्र॑तीतः।**

**प्र म॒ज्मना॑ दि॒व इन्द्रः॑ पृथि॒व्याः प्रोरोर्म॒हो अ॒न्तरि॑क्षादृजी॒षी॥ ३॥**

**प्र। मात्रा॑भिः। रि॒रि॒चे॒। रोच॑मानः। प्र। दे॒वेभिः॑। वि॒श्वतः॑। अप्र॑तिऽइतः। प्र। म॒ज्मना॑। दि॒वः। इन्द्रः॑। पृ॒थि॒व्याः। प्र। उ॒रोः। म॒हः। अ॒न्तरि॑क्षात्। ऋ॒जी॒षी॥ ३॥**

**पदार्थः**-(**प्र**) (**मात्राभिः**) शब्दादिभिः सूक्ष्मैर्व्यवहाराऽवयवैर्वा (**रिरिचे**) अतिरिच्यते (**रोचमानः**) रुचिं कुर्वन् (**प्र**) (**देवेभिः**) विद्वद्भिः सह (**विश्वतः**) सर्वतः (**अप्रतीतः**) प्रसिद्धिमप्राप्तः (**प्र**) (**मज्मना**)



www.9009.co.in

बलेन **(दिवः)** प्रकाशात् **(इन्द्रः)** पराक्रमवान् सूर्य्य इव तेजस्वी **(पृथिव्याः)** भूमेः **(प्र)** **(उरोः)** बहुविधगुणयुक्तात् **(महः)** महतः **(अन्तरिक्षात्)** आकाशात् **(ऋजीषी)** सरलस्वभावः॥३॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथा रोचमानो विश्वतोऽप्रतीत ऋजीषी इन्द्रो विद्युद्रूपोऽग्निर्मात्राभिः प्र रिरिचे देवेभिः सह प्र रिरिचे मज्मना दिवः पृथिव्या उरोर्महोऽन्तरिक्षात् प्ररिरिचे तथाऽऽचरन्तो यूयं प्रतिष्ठां प्रलभध्वम्॥३॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यथाऽविकृता विद्युद्गन्धकादिष्वपि स्थिता न विरुणद्धि तथैव सर्वैः सह मैत्रीं कृत्वा विरोधं विजहत॥३॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे **(रोचमानः)** प्रीति करता हुआ **(विश्वतः)** सर्वत्र **(अप्रतीतः)** प्रसिद्धि को नहीं प्राप्त **(ऋजीषी)** सीधे स्वभाववाला **(इन्द्रः)** और पराक्रम से युक्त सूर्य्य के सदृश तेजस्वी बिजुलीरूप अग्नि **(मात्राभिः)** शब्द आदि वा सूक्ष्म व्यवहारों के अवयवों से **(प्र, रिरिचे)** अधिक होता है और **(देवेभिः)** विद्वानों के साथ **(प्र)** वृद्धि को प्राप्त होता है **(मज्मना)** बल से **(दिवः)** प्रकाश से **(पृथिव्याः)** भूमि **(उरोः)** अनेक प्रकार गुणों के समूह से युक्त **(महः)** बड़े **(अन्तरिक्षात्)** आकाश से **(प्र)** अधिक होता है, वैसा आचरण करते हुए आप लोग प्रतिष्ठा को **(प्र)** अच्छे प्रकार प्राप्त हूजिये॥३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जैसे विकार को नहीं प्राप्त हुई बिजुली गन्धक आदिकों में वर्त्तमान हुई भी कुछ हानि नहीं करती, वैसे ही सब लोगों के साथ मित्रता करके विरोध का त्याग करो॥३॥

**अथ विद्वद्विषयमाह॥**

अब विद्वान् के विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**उरुं गभीरं जनुषाभ्युग्रं विश्वव्यचसमवतं मतीनाम्।**

**इन्द्रं सोमासः प्रदिवि सुतासः समुद्रं न स्रवत आ विशन्ति॥४॥**

**उरुम्। गभीरम्। जनुषा। अभि। उग्रम्। विश्वऽव्यचसम्। अवतम्। मतीनाम्। इन्द्रम्। सोमासः। प्रऽदिवि। सुतासः। समुद्रम्। न। स्रवतः। आ। विशन्ति॥४॥**

**पदार्थः**-**(उरुम्)** बहुविधगुणम् **(गभीरम्)** गूढाशयम् **(जनुषा)** जन्मना **(अभि)** आभिमुख्ये **(उग्रम्)** सर्वैः सह समवेतम् **(विश्वव्यचसम्)** विश्वव्यापकम् **(अवतम्)** रक्षकम् **(मतीनाम्)** मनुष्याणाम् **(इन्द्रम्)** विद्युतम् **(सोमासः)** ऐश्वर्य्यवन्तः **(प्रदिवि)** प्रकृष्टप्रकाशे **(सुतासः)** विद्याविनयाभ्यां निष्पन्नाः **(समुद्रम्)** **(न)** इव **(स्रवतः)** चलन्त्यः सरितः। अत्र **वाच्छन्दसी**ति वर्णलोपो वेतीकाराऽभावे नुमोऽप्यभावः। **(आ)** **(विशन्ति)** प्रविशन्ति॥४॥

**अन्वयः**-ये प्रदिवि सुतासः सोमासो विद्वांसो जनुषोरुं गभीरमुग्रं विश्वव्यचसं मतीनामवतमिन्द्रं स्रवतः समुद्रं नाभ्याविशन्ति तथैव ये सर्वत्र प्रविशन्ति तेऽक्षयैश्वर्या भवन्ति॥४॥

**भावार्थः**-ये विद्युद्विद्यां विज्ञायोपकारं ग्रहीतुं शक्नुवन्ति ते समग्राः श्रिय उपलभन्ते॥४॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-जो लोग **(प्रदिवि)** उत्तम प्रकाश में **(सुतासः)** विद्या और विनय से प्रसिद्ध **(सोमासः)** ऐश्वर्य्यवाले विद्वान् लोग **(जनुषा)** जन्म से **(उरुम्)** अनेक प्रकार के गुणों से युक्त **(गभीरम्)** गूढ़ अभिप्रायवाले **(उग्रम्)** सबके साथ मिले हुए **(विश्वव्यचसम्)** सर्वत्र व्यापक **(मतीनाम्)** मनुष्यों के **(अवतम्)** रक्षा करनेवाले **(इन्द्रम्)** बिजुली रूप अग्नि को **(स्रवतः)** बहती हुई नदियां **(समुद्रम्)** समुद्र को **(न)** जैसे **(अभि, आ, विशन्ति)** सब ओर से प्रविष्ट होती हैं, वैसे जो सब ओर से प्रवेश करते अर्थात् उसमें चित्त देते हैं, वे उस ऐश्वर्यवाले होते हैं, जो ऐश्वर्य कभी नष्ट नहीं होता है॥४॥

**भावार्थः**-जो लोग बिजुली सम्बन्धी विद्या को जान कर उसके द्वारा उपकार ग्रहण कर सकते हैं, वे अनेक प्रकार की लक्ष्मियों को प्राप्त होते हैं॥४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर भी उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**यं सोम॑मिन्द्र पृथिवीद्यावा गर्भं न माता बि॑भृतस्त्वाया।**
**तं ते॑ हिन्वन्ति तमु॑ ते मृजन्त्यध्वर्यवो॑ वृषभ पात॒वा उ॑॥५॥१०॥**

**यम्। सोम॑म्। इ॒न्द्र॒। पृ॒थि॒वीद्यावा॑। गर्भ॑म्। न। मा॒ता। बि॒भृतः॑। त्वा॒ऽया। तम्। ते॒। हि॒न्व॒न्ति॒। तम्। ऊ॒म् इति॑। ते॒। मृ॒ज॒न्ति॒। अ॒ध्व॒र्यवः॑। वृ॒ष॒भ॒। पात॒वै। ऊ॒म् इति॑॥५॥**

**पदार्थः**-**(यम्)** **(सोमम्)** ऐश्वर्यम् **(इन्द्र)** ऐश्वर्ययोजक **(पृथिवीद्यावा)** भूमिविद्युतौ **(गर्भम्)** **(न)** इव **(माता)** **(बिभृतः)** धरतः **(त्वाया)** त्वां प्राप्ते **(तम्)** **(ते)** तुभ्यम् **(हिन्वन्ति)** वर्द्धयन्ति **(तम्)** **(उ)** **(ते)** तुभ्यम् **(मृजन्ति)** शुन्धन्ति **(अध्वर्यवः)** आत्मनोऽध्वरमहिंसां कामयमानाः **(वृषभ)** बलिष्ठ **(पातवै)** पातुं रक्षितुम् **(उ)**॥५॥

**अन्वयः**-हे वृषभेन्द्र! ये त्वाया पृथिवीद्यावा माता गर्भं न यं सोमं बिभृतस्तं ते ये हिन्वन्ति तमु ते येऽध्वर्यवो हिन्वन्त्यु ते ये मृजन्ति तानु पातवै त्वमुद्युक्तो भव॥५॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। ये विद्वांसो पृथिवीवत्सूर्यवत् सर्वान् विद्याबलाभ्यां वर्धयन्ति सुशिक्षया शुन्धन्ति ते मातृवत्पालकाः सन्तीति मत्वा सर्वैः सत्कर्त्तव्या इति॥५॥

यत्र राजविद्युत्पृथिव्यादिगुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति षट्चत्वारिंशत्तमं सूक्तं दशमो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे **(वृषभ)** बलिष्ठ **(इन्द्र)** ऐश्वर्य से युक्त करनेवाले! जो **(त्वाया)** आपको प्राप्त हुई **(पृथिवीद्यावा)** भूमि और बिजुली **(माता)** माता **(गर्भम्)** गर्भ को **(न)** जैसे वैसे **(यम्)** जिस **(सोमम्)** ऐश्वर्य को **(बिभृतः)** धारण करते हैं **(तम्)** उसको **(ते)** तुम्हारे लिये जो **(हिन्वन्ति)** वृद्धि करते हैं **(तम्, उ)** उसी को **(ते)** आपके लिये जो **(अध्वर्यवः)** अपनी हिंसा नहीं चाहते हुए बढ़ाते हैं वा तुम्हारे लिये



www.9009.co.in

उसी को जो लोग **(मृजन्ति)** शुद्ध करते हैं उनकी **(उ)** ही **(पातवै)** रक्षा के लिये आप उद्युक्त होइये॥५॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जो विद्वान् लोग पृथिवी और सूर्य्य के सदृश सबको विद्या और बल से बढ़ाते और उत्तम शिक्षा से पवित्र करते वे माता के सदृश पालन करनेवाले हैं। ऐसा जान कर वे सब लोगों से सत्कार करने योग्य हैं॥५॥

इस सूक्त में राजा, बिजुली और पृथिवी आदिकों के गुणवर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की पिछले सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह छयालीसवां सूक्त और दशवां वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

अथ पञ्चर्चस्य सप्तचत्वारिंशत्तमस्य सूक्तस्य विश्वामित्र ऋषिः। इन्द्रो देवता। १-३ निचृत् त्रिष्टुप्। ४ त्रिष्टुप्। ५ विराट् त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः॥

*अथ राजविषयमाह॥*

अब पाँच ऋचावाले सैंतालीसवें सूक्त का आरम्भ है। इसके प्रथम मन्त्र में राजा के विषय को कहते हैं॥

**मरुत्वाँ इन्द्र वृषभो रणाय पिबा सोममनुष्वधं मदाय।**

**आ सिञ्चस्व जठरे मध्व ऊर्मिं त्वं राजासि प्रदिवः सुतानाम्॥ १॥**

**मरुत्वान्। इन्द्र। वृषभः। रणाय। पिब। सोमम्। अनुऽस्वधम्। मदाय। आ। सिञ्चस्व। जठरे। मध्वः। ऊर्मिम्। त्वम्। राजा। असि। प्रऽदिवः। सुतानाम्॥ १॥**

**पदार्थः**-(**मरुत्वान्**) मरुतः प्रशस्ता मनुष्या विद्यन्ते यस्य सः (**इन्द्र**) परमैश्वर्ययुक्त! (**वृषभः**) बलिष्ठः (**रणाय**) संग्रामाय (**पिब**)। अत्र **द्व्यचोऽतस्तिङ** इति दीर्घः। (**सोमम्**) महौषधिरसम् (**अनुष्वधम्**) अनुकूलं स्वधान्नं विद्यते यस्मिँस्तम् (**मदाय**) आनन्दाय (**आ**) (**सिञ्चस्व**) (**जठरे**) उदरे (**मध्वः**) मधुरस्य (**ऊर्मिम्**) तरङ्गम् (**त्वम्**) (**राजा**) प्रकाशमानः (**असि**) (**प्रदिवः**) प्रकर्षेण विद्याविनयप्रकाशस्य (**सुतानाम्**) उत्पन्नानामैश्वर्यादीनाम्॥ १॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र मरुत्वान् वृषभस्त्वं रणाय मदायानुष्वधं सोमं पिब। जठरे मध्व ऊर्मिमासिञ्चस्व [येन त्वं] प्रदिवः सुतानां राजाऽसि तस्मादेतदाचर॥ १॥

**भावार्थः**-हे राजन्! भवान् यदि विजयमारोग्यं बलं दीर्घमायुश्चेच्छेत्तर्हि ब्रह्मचर्य्यं धनुर्वेदविद्यां जितेन्द्रियत्वं युक्ताऽऽहारविहारञ्च करोतु॥ १॥

**पदार्थः**-हे (**इन्द्र**) अत्यन्त ऐश्वर्य से युक्त (**मरुत्वान्**) श्रेष्ठ मनुष्यों से युक्त (**वृषभः**) बलवान्! आप (**रणाय**) संग्राम के और (**मदाय**) आनन्द के लिये (**अनुष्वधम्**) अनुकूल स्वधा अन्न वर्त्तमान जिसमें ऐसे (**सोमम्**) श्रेष्ठ ओषधी के रस का (**पिब**) पान करो और (**जठरे**) पेट में (**मध्वः**) मधुर की (**ऊर्मिम्**) लहर को (**आ, सिञ्चस्व**) सेचन करो जिससे (**त्वम्**) आप (**प्रदिवः**) अत्यन्त विद्या और विनय से प्रकाशित के (**सुतानाम्**) उत्पन्न हुए ऐश्वर्य आदिकों के (**राजा**) प्रकाशकर्त्ता (**असि**) हैं, इससे ऐसा आचरण करो॥ १॥

**भावार्थः**-हे राजन्! आप जो विजय, आरोग्य, बल और अधिक अवस्था की इच्छा करें तो ब्रह्मचर्य, धनुर्वेदविद्या, जितेन्द्रियत्व और नियमित आहार-विहार को करिये॥ १॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**सजोषा इन्द्र सगणो मरुद्भिः सोमं पिब वृत्रहा शूर विद्वान्।**



www.9009.co.in

**जहि शत्रूँरप मृधो नुदस्वाथाभयं कृणुहि विश्वतो नः॥२॥**

**सऽजोषाः। इन्द्र। सऽगणः। मरुत्ऽभिः। सोमम्। पिब। वृत्रऽहा। शूर। विद्वान्। जहि। शत्रून्। अप। मृधः। नुदस्व। अथ। अभयम्। कृणुहि। विश्वतः। नः॥२॥**

**पदार्थः**-(**सजोषाः**) समानप्रीतिसेवनः (**इन्द्र**) ऐश्वर्य्यप्रयोजक (**सगणः**) गणैः सह वर्त्तमानः (**मरुद्भिः**) वायुभिरिव वीरैः सह (**सोमम्**) (**पिब**) (**वृत्रहा**) मेघस्य हन्ता सूर्य्य इव (**शूर**) शत्रूणां हिंसक (**विद्वान्**) सकलविद्यावित् (**जहि**) नाशय (**शत्रून्**) (**अप**) दूरीकरणे (**मृधः**) संग्रामान् (**नुदस्व**) प्रेरस्व (**अथ**) (**अभयम्**) (**कृणुहि**) (**विश्वतः**) सर्वतः (**नः**) अस्मान्॥२॥

**अन्वयः**-हे शूरेन्द्र राजन्! मरुद्भिः सगणो वृत्रहा सूर्य्य इव सजोषाः सगणो मरुद्भिः सह विद्वान् सोमं पिब शत्रूनपजहि मृधो नुदस्वाथ विश्वतो नोऽभयं कृणुहि॥२॥

**भावार्थः**-ये राजादयो मनुष्याः परस्परेषु सुहृदो भूत्वा युक्ताहारविहारब्रह्मचर्यजितेन्द्रियत्वादिभिः पूर्णशरीरात्मबलाः सन्तः शत्रून् हत्वा संग्रामान् जित्वा प्रजासु सर्वथाऽभयं स्थापयन्ति त एव सर्वत्राऽभयं सुखं प्राप्नुवन्ति॥२॥

**पदार्थः**-हे (**शूर**) शत्रुओं के नाशकर्त्ता (**इन्द्र**) ऐश्वर्य्य से युक्त करनेवाले! (**मरुद्भिः**) पवनों के सदृश वीर पुरुषों के और (**सगणः**) गणों के सहित वर्त्तमान (**वृत्रहा**) मेघ का नाशकर्त्ता सूर्य्य जैसे वैसे (**सजोषाः**) तुल्य प्रीति का सेवन करनेवाला गणों के सहित वर्त्तमान होकर और पवनों के सदृश वीर पुरुषों के सहित (**विद्वान्**) सकल विद्याओं का जाननेवाला पुरुष (**सोमम्**) सोमलता के रस को (**पिब**) पीजिये और (**शत्रून्**) शत्रुओं को (**अप, जहि**) देश से बाहर करके नष्ट करिये, (**मृधः**) संग्रामों की (**नुदस्व**) प्रेरणा अर्थात् प्रवृत्ति का उत्साह दीजिये, (**अथ**) उसके अनन्तर (**विश्वतः**) सब ओर से (**नः**) हम लोगों को (**अभयम्**) भयरहित (**कृणुहि**) कीजिये॥२॥

**भावार्थः**-जो राजा आदि मनुष्य परस्पर मित्र होकर नियमित भोजन, विहार, ब्रह्मचर्य्य, जितेन्द्रिय होने आदि से पूर्ण शरीर आत्मा के बलवाले हो शत्रुओं को नाश कर और संग्रामों को जीत कर प्रजाओं में सब प्रकार भयरहित करते हैं, वे ही सर्वत्र भयरहित सुख को प्राप्त होते हैं॥२॥

**अथ सूर्य्यविषयमाह॥**

अब सूर्य्य के विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**उत ऋतुभिर्ऋतुपाः पाहि सोममिन्द्र देवेभिः सखिभिः सुतं नः।**

**याँ आभजो मरुतो ये त्वान्वहन् वृत्रमदधुस्तुभ्यमोजः॥३॥**

**उत। ऋतुऽभिः। ऋतुऽपाः। पाहि। सोमम्। इन्द्र। देवेभिः। सखिऽभिः। सुतम्। नः। यान्। आ। अभजः। मरुतः। ये। त्वा। अनु। अहन्। वृत्रम्। अदधुः। तुभ्यम्। ओजः॥३॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**उत**) अपि (**ऋतुभिः**) वसन्तादिभिः (**ऋतुपाः**) य ऋतून् पाति रक्षति स सूर्य्यः (**पाहि**) रक्ष (**सोमम्**) सूयन्ते यस्मिँस्तं संसारम् (**इन्द्र**) दुःखविदारक (**देवेभिः**) विद्वद्भिः (**सखिभिः**) सुहृद्भिः (**सुतम्**) निष्पन्नम् (**नः**) अस्मान् (**यान्**) (**आ**) समन्तात् (**अभजः**) सेवस्व (**मरुतः**) मरणधर्ममनुष्यान् (**ये**) (**त्वा**) त्वाम् (**अनु**) (**अहन्**) हन्ति (**वृत्रम्**) सर्वसुखकरं धनम् (**अदधुः**) दध्युः (**तुभ्यम्**) (**ओजः**) बलम्॥३॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! त्वमृतुभिस्सहर्त्तुपाः सूर्य इव देवेभिः सखिभिः सह सुतं सोमं पाहि यान् मरुतो नोऽस्माँस्त्वमाभजो ये तुभ्यमोजो वृत्रं त्वा त्वां चान्वदधुस्तांस्त्वं पाहि उतापि यथा सूर्यो वृत्रमहँस्तथा शत्रून् हिन्धि॥३॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे राजादयो मनुष्या यथा सूर्य्यो वसन्तादिभिः सर्वं जगद्रक्षति जलादिकमाकृष्य वर्षित्वा पाति तथैव विद्वद्भिर्मित्रैः सह विचार्य विजयपुरुषार्थाभ्यां सर्वान् रक्षन्तु॥३॥

**पदार्थः**-हे (**इन्द्र**) दुःख के नाशकर्त्ता पुरुष! आप (**ऋतुभिः**) वसन्त आदि ऋतुओं के साथ (**ऋतुपाः**) ऋतुओं की रक्षा करनेवाले सूर्य के सदृश (**देवेभिः**) विद्वान् (**सखिभिः**) मित्रों के साथ (**सुतम्**) उत्पन्न (**सोमम्**) संसार की (**पाहि**) रक्षा करो और (**यान्**) जिन (**मरुतः**) मरणधर्मवाले मनुष्य (**नः**) हम लोगों का आप (**आ**) सब प्रकार (**अभजः**) सेवन करें (**ये**) जो लोग (**तुभ्यम्**) आपके लिये (**ओजः**) पराक्रम और (**वृत्रम्**) सब सुखों के कर्त्ता धन को (**त्वा**) और आपको (**अनु, अदधुः**) अनूकूलता से धारण करें, उनकी आप रक्षा कीजिये (**उत**) और भी जैसे सूर्य मेघ का (**अहन्**) नाश करता है, वैसे शत्रुओं का नाश करिये॥३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे राजा आदि मनुष्यो! जैसे सूर्य्य वसन्त आदि ऋतुओं से सम्पूर्ण जगत् की रक्षा करता, जलादि रसों का आकर्षण और पुनः वृष्टि करके पालन करता है, वैसे ही विद्वान् मित्रों के साथ विचार करके विजय और पुरुषार्थ से सबकी रक्षा कीजिये॥३॥

**पुनाराजविषयमाह॥**

फिर राजा के विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**ये त्वाहिहत्ये मघवन्नवर्धन् ये शाम्बरे हरिवो ये गविष्टौ।**

**ये त्वा नूनमनुमदन्ति विप्राः पिबेन्द्र सोमं सगणो मरुद्भिः॥४॥**

**ये। त्वा। अहिऽहत्ये। मघऽवन्। अवर्धन्। ये। शाम्बरे। हरिऽवः। ये। गोऽइष्टौ। ये। त्वा। नूनम्। अनुऽमदन्ति। विप्राः। पिब। इन्द्र। सोमम्। सऽगणः। मरुत्ऽभिः॥४॥**

**पदार्थः**-(**ये**) (**त्वा**) त्वाम् (**अहिहत्ये**) अहेर्मेघस्य हत्या हननं यस्मिँस्तस्मिन् (**मघवन्**) पूजितपुष्कलधनयुक्त (**अवर्धन्**) वर्धयेयुः (**ये**) (**शाम्बरे**) शम्बरस्याऽयं संग्रामस्तस्मिन् (**हरिवः**) प्रशस्ता हरयो विद्यन्ते यस्य तत्सम्बुद्धौ (**ये**) (**गविष्टौ**) गवां किरणानां सङ्गमने (**ये**) (**त्वा**) त्वाम् (**नूनम्**)



www.9009.co.in

निश्चितम् (**अनुमदन्ति**) आनुकूल्येनाऽऽनन्दयन्ति (**विप्राः**) मेधाविनः (**पिब**) (**इन्द्र**) ऐश्वर्यकारक (**सोमम्**) ओषधिजन्यं घृतदुग्धादिकं रसम् (**सगणः**) गणेन वीरसमूहेन सहितः (**मरुद्भिः**) वायुभिरिव स्वमित्रैः सह॥४॥

**अन्वयः**-हे हरिवो मघवन्निन्द्र! ये विप्रास्त्वा त्वां मरुद्भिः सह सूर्योऽहिहत्ये शाम्बर इवाऽवर्द्धन् ये गविष्टौ त्वा त्वामवर्धन् ये युद्धे नूनमनुमदन्ति ये च सर्वान् रक्षन्त्यानन्दयन्ति तैः सह सगणः सन् सोमं पिब॥४॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यथाऽनुन्मदं मेघं सूर्यो वर्द्धयित्वोन्मदं हन्ति तथैव धार्मिका राजादयो धार्मिकाञ्छान्तान् रक्षित्वा दुष्टान् हत्वा स्वयं प्रसन्ना भूत्वा प्रजा अनुमदन्तु॥४॥

**पदार्थः**-हे (**हरिवः**) उत्तम घोड़ों से युक्त (**मघवन्**) श्रेष्ठ बहुत धनोंवाले (**इन्द्र**) ऐश्वर्य के कर्त्ता! (**ये**) जो (**विप्राः**) बुद्धिमान् लोग (**त्वाम्**) आपको (**मरुद्भिः**) पवनों के सदृश अपने मित्रों के साथ सूर्य (**अहिहत्ये**) मेघ का नाश हो जिसमें ऐसे (**शाम्बरे**) मेघसम्बन्धी संग्राम में जैसे वैसे (**अवर्धन्**) वृद्धि करें और (**ये**) जो (**गविष्टौ**) किरणों के समूह में आपकी वृद्धि करें (**ये**) जो युद्ध में (**नूनम्**) निश्चित (**अनु, मदन्ति**) अनुकूलता से आनन्द देते हैं, उन पवनों के सदृश मित्रों के[79] और (**सगणः**) वीर पुरुषों के सहित (**सोमम्**) ओषधियों से उत्पन्न हुए घृत, दुग्ध आदि रसों का (**पिब**) पान कीजिये॥४॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे नहीं बढ़े हुए मेघ को सूर्य बढ़ाय के और बढ़े हुए का नाश करता है, वैसे ही धार्मिक राजा आदि पुरुष धार्मिक शान्त पुरुषों की रक्षा और दुष्ट पुरुषों का नाश कर स्वयं प्रसन्न होकर प्रजाओं को प्रसन्न करें॥४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**मरुत्वन्तं वृषभं वावृधानमकवारिं दिव्यं शासमिन्द्रम्।**

**विश्वासाहमवसे नूतनायोग्रं सहोदामिह तं हुवेम॥५॥११॥**

**मरुत्वन्तम्। वृषभम्। ववृधानम्। अकवऽअरिम्। दिव्यम्। शासम्। इन्द्रम्। विश्वऽसहम्। अवसे। नूतनाय। उग्रम्। सहःऽदाम्। इह। तम्। हुवेम॥५॥**

**पदार्थः**-(**मरुत्वन्तम्**) प्रशस्ता मरुतो मनुष्या विद्यन्ते यस्य तम् (**वृषभम्**) बलिष्ठम् (**वावृधानम्**) वर्द्धमानं वर्द्धयितारं वा (**अकवारिम्**) अविद्यमानशत्रुम् (**दिव्यम्**) शुद्धगुणकर्मस्वभावम् (**शासम्**) प्रशासितारम् (**इन्द्रम्**) परमैश्वर्य्यवन्तम् (**विश्वासाहम्**) सर्वसहम् (**अवसे**) रक्षणाद्याय (**नूतनाय**) नवीनाय

७९. अन्वय के अनुसार 'उन पवनों के सदृश मित्रों के' इस वाक्य के स्थान पर 'जो सबकी रक्षा करते हैं, आनन्द देते हैं, उन' यह वाक्यांश होना चाहिये। सं०



www.9009.co.in

**(उग्रम्)** दुष्टानां दमयितारम् **(सहोदाम्)** बलप्रदम् **(इह)** अस्मिन् राज्यव्यवहारे **(तम्)** **(हुवेम)** प्रशंसेम॥५॥

**अन्वयः**-हे विद्वांसो! यूयमिह नूतनायावसे यं मरुत्वन्तं वृषभं वावृधानमकवारिं दिव्यं विश्वासाहमुग्रं सहोदामिन्द्रं शासन्नूतनायावसे प्रशंसत तं वयं हुवेम॥५॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। मनुष्यैः स एव स्वकीयो राजा कर्त्तव्यो यस्मिन् सर्वे राजधर्माः साङ्गोपाङ्गा वर्त्तन्ते॥५॥

अत्र राजसूर्य्यगुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिरस्तीति वेदितव्यम्॥

**इति सप्तचत्वारिंशत्तमं सूक्तमेकादशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे विद्वान् पुरुषो! आप लोग **(इह)** इस राज्यव्यवहार में **(नूतनाय)** नवीन **(अवसे)** रक्षण आदि के लिये जिस **(मरुत्वन्तम्)** प्रशंसा करने योग्य मनुष्य हों जिसके उस और **(वृषभम्)** बलवाले और **(वावृधानम्)** बढ़ने वा बढ़ानेवाले **(अकवारिम्)** शत्रुओं से रहित **(दिव्यम्)** शुद्ध गुण, कर्म और स्वभाव से युक्त **(विश्वासाहम्)** सबको सहने और **(उग्रम्)** दुष्टों के नाश करने **(सहोदाम्)** बल के देने और **(इन्द्रम्)** अत्यन्त ऐश्वर्य्यवाले **(शासम्)** शासन करनेवाले की [नवीन रक्षण आदि के लिये] प्रशंसा करो **(तम्)** उसकी हम लोग **(हुवेम)** प्रशंसा करें॥५॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। मनुष्यों को चाहिये कि उसी को अपना राजा करें कि जिसमें सम्पूर्ण राजा के धर्म अङ्ग और उपाङ्ग सहित वर्त्तमान हैं॥५॥

इस सूक्त में राजा और सूर्य्य के गुणवर्णन होने से इस सूक्त के अर्थ की पिछले सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति है, यह जानना चाहिये॥

**यह सैंतालीसवां सूक्त और ग्यारहवां वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

**अथ पञ्चर्चस्याष्टचत्वारिंशत्तमस्य सूक्तस्य विश्वामित्र ऋषिः। इन्द्रो देवता। १, २ निचृत् त्रिष्टुप्। ३, ४ त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः। ५ भुरिक् पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः॥**

*अथ राज्ञो विषयमाह॥*

अब पाँच ऋचावाले अड़तालीसवें सूक्त का आरम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में राजा के विषय को कहते हैं॥

**स॒द्यो ह॑ जा॒तो वृ॑ष॒भः क॒नीन॒ः प्रभ॑र्तु॒माव॒दन्ध॑सः सु॒तस्य॑।**

**सा॒धोः पि॑ब प्रतिका॒मं यथा॑ ते॒ रसा॑शिरः प्र॒थ॒मं सो॒म्यस्य॑॥ १॥**

**स॒द्यः। ह॒। जा॒तः। वृ॒ष॒भः। क॒नीन॑ः। प्रऽभ॑र्तु॒म्। आ॒व॒त्। अन्ध॑सः। सु॒तस्य॑। सा॒धोः। पि॒ब॒। प्र॒ति॒ऽका॒म॒म्। यथा॑। ते॒। रस॑ऽआशिरः। प्र॒थ॒मम्। सो॒म्यस्य॑॥ १॥**

**पदार्थः**-(**सद्यः**) (**ह**) खलु (**जातः**) उत्पन्नः (**वृषभः**) वर्षकः (**कनीनः**) दीप्तिमान् (**प्रभर्त्तुम्**) प्रकर्षेण धर्त्तुम् (**आवत्**) रक्षेत् (**अन्धसः**) अन्नस्य (**सुतस्य**) सुसंस्कृतस्य (**साधोः**) सन्मार्गे स्थितस्य (**पिब**) (**प्रतिकामम्**) कामं कामं प्रति (**यथा**) (**ते**) तव (**रसाशिरः**) यो रसानश्नाति सः (**प्रथमम्**) (**सोम्यस्य**) सोम ऐश्वर्ये भवस्य॥ १॥

**अन्वयः**-हे राजन्! यथा सद्यो जातो वृषभः कनीनो रसाशिरः सूर्योऽन्धसः सुतस्य सोम्यस्य प्रथममावत् तथाभूतस्त्वं प्रतिकामं सोमं पिबैवं भूतस्य साधोस्ते ह प्रजाः प्रभर्त्तुं शक्तिर्जायेत॥ १॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। हे राजादयो मनुष्या! यथा सूर्यादयः पदार्थाः स्वप्रभावैरीश्वरनियोगेन सर्वान् पदार्थान् रक्षित्वा दोषान् घ्नन्ति तथैव साधून् रक्षित्वा दुष्टान् हन्युः॥ १॥

**पदार्थः**-हे राजन्! (**यथा**) जैसे (**सद्यः**) शीघ्र (**जातः**) उत्पन्न हुआ (**वृषभः**) वृष्टि करनेवाला (**कनीनः**) प्रकाशवान् (**रसाशिरः**) रसों का भोजन करनेवाला सूर्य्य (**अन्धसः**) अन्न के (**सुतस्य**) उत्तम प्रकार संस्कारयुक्त (**सोम्यस्य**) ऐश्वर्य में उत्पन्न का (**प्रथमम्**) प्रथम (**आवत्**) रक्षा करे, उस प्रकार के आप (**प्रतिकामम्**) कामना-कामना के प्रति ओषधियों के रस को (**पिब**) पान करो और इस प्रकार के (**साधोः**) उत्तम मार्गों में वर्त्तमान (**ते**) आपका (**ह**) निश्चय से प्रजाओं को (**प्रभर्त्तुम्**) प्रकर्षता से धारण करने का सामर्थ्य होवे॥ १॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे राजा आदि मनुष्यो! जैसे सूर्य्य आदि पदार्थ अपने प्रतापों और ईश्वर के नियोग से सब पदार्थों की रक्षा करके दोषों का नाश करते हैं, वैसे ही साधु पुरुषों की रक्षा करके दुष्ट पुरुषों का नाश करें॥ १॥

**अथ सन्तानोत्पत्तिविषयमाह॥**

अब सन्तान की उत्पत्ति के विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**यज्जाय॑था॒स्तदह॑रस्य॒ कामे॒ऽशोः पी॒यूष॑मपिबो गिरि॒ष्ठाम्।**



www.9009.co.in

**तं ते॑ मा॒ता परि॒ योषा॒ जनि॑त्री म॒हः पि॒तुर्दम॒ आसि॑ञ्च॒दग्रे॑॥ २॥**

**यत्। जाय॑थाः। तत्। अहः॑। अ॒स्य॒। कामे॑। अं॒शोः। पी॒यूष॑म्। अ॒पि॒बः॒। गि॒रि॒ऽस्थाम्। तम्। ते॒। मा॒ता। परि॑। योषा॑। जनि॑त्री। म॒हः। पि॒तुः। दमे॑। आ। अ॒सि॒ञ्च॒त्। अग्रे॑॥ २॥**

**पदार्थः**-(**यत्**) (**जायथाः**) (**तत्**) (**अहः**) दिने (**अस्य**) (**कामे**) (**अंशोः**) प्राप्तस्य (**पीयूषम्**) अमृतात्मकं रसम् (**अपिबः**) पिब (**गिरिष्ठाम्**) यो गिरौ मेघे तिष्ठति (**तम्**) (**ते**) तव (**माता**) (**परि**) सर्वतः (**योषा**) (**जनित्री**) (**महः**) महत् (**पितुः**) पालकस्य जनकस्य (**दमे**) गृहे। **दम इति गृहनामसु पठितम्।** (निघं०३.४) (**आ**) (**असिञ्चत्**) समन्तात् सिञ्चति (**अग्रे**) प्रथमतः॥ २॥

**अन्वयः**-हे राजँस्त्वं यदहर्जायथास्तदहः कामेऽस्यांशोर्गिरिष्ठां पीयूषं ते तव पिताऽपिबस्तं तव पितुर्योषा तव जनित्री माताऽग्रे दमे महः पर्य्यासिञ्चत्॥ २॥

**भावार्थः**-यदा स्त्रीपुरुषौ गर्भमादधेयातां तदा दुष्टान्नपानादिसेवनं विहाय श्रेष्ठान्नपानं कृत्वा गर्भमाधाय सन्तानमुत्पाद्य पुनस्तस्याप्येवमेव पालनं वर्धनं कुर्य्याद्यो राजा भवितुमर्हेत्॥ २॥

**पदार्थः**-हे राजन्! आप (**यत्**) जिस (**अहः**) दिन (**जायथाः**) उत्पन्न हुए (**तत्**) उस दिन की (**कामे**) कामना में (**अस्य**) इस (**अंशोः**) प्राप्त हुए भाग के (**गिरिष्ठाम्**) मेघ में विद्यमान (**पीयूषम्**) अमृतरूप रस को (**ते**) आपके पिता (**अपिबः**) पान करें (**तम्**) उसको आपके (**पितुः**) पालक और उत्पादक पिता की (**योषा**) स्त्री आपकी (**जनित्री**) उत्पन्न करनेवाली (**माता**) माता (**अग्रे**) पहिले (**दमे**) घर में (**महः**) बड़े को (**परि, आ, असिञ्चत्**) चारों ओर से सींचता है॥ २॥

**भावार्थः**-जब स्त्री और पुरुष गर्भ को धारण करें तब दुष्ट अन्न-पान आदि के सेवन [का] त्याग, श्रेष्ठ अन्न-पान, गर्भधारण और सन्तान उत्पन्न करके फिर उसको भी इसी प्रकार पालन और वृद्धि करे, जो कि राजा होने को योग्य हो॥ २॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**उ॒प॒स्थाय॑ मा॒तर॒मन्न॑मैट्ट ति॒ग्मम॑पश्यद॒भि सोम॒मूधः॑।**

**प्र॒या॒वय॑न्नचर॒द् गृत्सो॑ अ॒न्यान् म॒हानि॑ चक्रे पु॒रु॒धप्र॑तीकः॥ ३॥**

**उ॒प॒ऽस्थाय॑। मा॒तर॑म्। अन्न॑म्। ऐ॒ट्ट॒। ति॒ग्मम्। अ॒प॒श्य॒त्। अ॒भि। सोम॑म्। ऊधः॑। प्र॒ऽय॒वय॑न्। अ॒च॒र॒त्। गृत्सः॑। अ॒न्यान्। म॒हानि॑। च॒क्रे॒। पु॒रु॒धऽप्र॑तीकः॥ ३॥**

**पदार्थः**-(**उपस्थाय**) सामीप्यं प्राप्य (**मातरम्**) जननीम् (**अन्नम्**) अत्तुं योग्यम् (**ऐट्ट**) प्रशंसेत (**तिग्मम्**) तीव्रम् (**अपश्यत्**) पश्येत् (**अभि**) आभिमुख्ये (**सोमम्**) ऐश्वर्य्यम् (**ऊधः**) यथोषाः (**प्रयावयन्**) संयोजयन् विभाजयन् वा (**अचरत्**) आचरेत् (**गृत्सः**) मेधावी (**अन्यान्**) (**महानि**) महान्त्यपत्यानि (**चक्रे**) कुर्य्यात् (**पुरुधप्रतीकः**) पुरुन् बहून् दधति ते पुरुधा यः पुरुधान् प्रत्यायेति सः॥ ३॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-यो गृत्सः पुरुधप्रतीकः सूर्य्य ऊधइव मातरमुपस्थायान्नमैट्ट प्रयावयन् सन् तिग्मं सोममभ्यपश्यदन्यानचरन्महानि चक्रे स एव राजा भवितुमर्हेत्॥३॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यथा सूर्य्य उषसं प्राप्य दिनं जनयति तथैवाऽपत्यमातरं सन्तानपितोपस्थाय गर्भमादधेत तथैव संस्कारान्मातापितरौ विदधेयातां यथाऽपत्यानि शुभगुणकर्मलक्षणस्वभावानि राजकर्माणि कर्त्तुमर्हेयुः॥३॥

**पदार्थः**-जो **(गृत्सः)** बुद्धिमान् **(पुरुधप्रतीकः)** बहुतों को धारण करनेवालों के प्रति प्राप्त होनेवाला सूर्य्य **(ऊधः)** प्रातःकाल की रात्रि को जैसे वैसे **(मातरम्)** पुत्र की माता को **(उपस्थाय)** समीप प्राप्त होकर **(अन्नम्)** खाने योग्य पदार्थ की **(ऐट्ट)** प्रशंसा करे और **(प्रयावयन्)** संयोग वा विभाग करता हुआ **[(तिग्मम्)** तीव्र**]** **(सोमम्)** ऐश्वर्य को **(अभि)** चारों ओर से **(अपश्यत्)** देखे और **(अन्यान्)** औरों को **(अचरत्)** आचरण करे, **(महानि)** बड़े सन्तानों को **(चक्रे)** उत्पन्न करे, वही राजा होने योग्य है॥३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे सूर्य प्रातःकाल की रात्रि को प्राप्त होकर दिन को उत्पन्न करता है, वैसे ही सन्तान की माता को सन्तान का पिता प्राप्त होकर गर्भस्थिति करे और वैसे ही संस्कारों को माता और पिता करें कि जैसे सन्तान उत्तम गुण, कर्म, लक्षण, स्वभावों से युक्त राजकर्मों को करने योग्य होवें॥३॥

**अथ प्रजापालनविषयमाह॥**

अब प्रजा के पालन का विषय अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**उग्रस्तुराषाळभिभूत्योजा यथावशं तन्वं चक्र एषः।**

**त्वष्टारमिन्द्रो जनुषाभिभूयामुष्या सोममपिबच्चमूषु॥४॥**

**उग्रः। तुराषाट्। अभिभूतिऽओजाः। यथाऽवशम्। तन्वम्। चक्रे। एषः। त्वष्टारम्। इन्द्रः। जनुषा। अभिऽभूय। आऽमुष्य। सोमम्। अपिबत्। चमूषु॥४॥**

**पदार्थः**-**(उग्रः)** तेजस्वी **(तुराषाट्)** यस्तुरा त्वरिताञ्छीघ्रकारिणः सहते सः **(अभिभूत्योजाः)** शत्रूणामभिभवकरः पराक्रमो यस्य सः **(यथावशम्)** वशमनतिक्रम्य वर्त्तते तत् **(तन्वम्)** शरीरम् **(चक्रे)** करोति **(एषः)** **(त्वष्टारम्)** तेजस्विनम् **(इन्द्रः)** परमैश्वर्यवान् **(जनुषा)** जन्मना **(अभिभूय)** शत्रून् तिरस्कृत्य **(आमुष्य)** चोरयित्वा। अत्र **संहितायामि**ति दीर्घः। **(सोमम्)** ओषधिरसम् **(अपिबत्)** पिबेत् **(चमूषु)** भक्षयित्रीषु सेनासु॥४॥

**अन्वयः**-य एषश्चमूषु सोममामुष्याऽपिबत् तं त्वष्टारमभिभूय जनुषोग्रस्तुराषाडभिभूत्योजा इन्द्रो यथावशं तन्वं चक्रे स राज्यं कर्त्तुमर्हेत्॥४॥

**भावार्थः**-ये विद्वांसो धार्मिका राजजनास्ते स्तेनादीन् दुष्टाँस्तिरस्कृत्य मादकद्रव्यसेविनो दण्डयित्वा स्वयमव्यसनिनो भूत्वा प्रजाः पालयितुं क्षमाः स्युस्त एव राज्यमुन्नेतुमर्हेयुः॥४॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-जो **(एषः)** यह **(चमूषु)** भक्षण करनेवाली सेनाओं में **(सोमम्)** ओषधियों के रस की **(आमुष्य)** चोरी करके **(अपिबत्)** पीवे उस **(त्वष्टारम्)** तेजस्वी और शत्रुओं का **(अभिभूय)** तिरस्कार करके **(जनुषा)** जन्म से **(उग्रः)** तेजस्वी **(तुराषाट्)** शीघ्रकारियों को सहनेवाला **(अभिभूत्योजाः)** शत्रुओं के तिरस्कार करनेवाले पराक्रम से युक्त **(इन्द्रः)** अत्यन्त ऐश्वर्यवाला पुरुष **(यथावशम्)** यथासामर्थ्य **(तन्वम्)** शरीर को **(चक्रे)** करता है, वह राज्य करने के योग्य होवे॥४॥

**भावार्थः**-जो विद्वान् धार्मिक राजा जन हैं, वे चोर आदि दुष्ट जनों का तिरस्कार और मादक द्रव्य अर्थात् उन्मत्तता करनेवाले द्रव्यों के सेवनकर्त्ताओं का दण्ड करके और अपने आप अव्यसनी होकर प्रजाओं के पालन करने को समर्थ होवें, वे ही राज्य की वृद्धि करने के योग्य होवें॥४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**शुनं हुवेम मघवानमिन्द्रमस्मिन् भरे नृतमं वाजसातौ।**

**शृण्वन्तमुग्रमूतये समत्सु घ्नन्तं वृत्राणि संजितं धनानाम्॥५॥१२॥**

**शुनम्। हुवेम। मघऽवानम्। इन्द्रम्। अस्मिन्। भरे। नृऽतमम्। वाजऽसातौ। शृण्वन्तम्। उग्रम्। ऊतये। समत्ऽसु। घ्नन्तम्। वृत्राणि। संऽजितम्। धनानाम्॥५॥**

**पदार्थः**-**(शुनम्)** राजधर्मजं सुखम् **(हुवेम)** आह्वयेम **(मघवानम्)** न्यायोपार्जितबहुधन- सत्कृतम् **(इन्द्रम्)** राजानम् **(अस्मिन्)** **(भरे)** भर्त्तव्ये राज्ये **(नृतमम्)** नरोत्तमम् **(वाजसातौ)** सत्यासत्यव्यवहारविभाजके **(शृण्वन्तम्)** सत्याऽसत्ये निश्चित्याज्ञापयन्तम् **(उग्रम्)** दुष्टेषु कठिनस्वभावं श्रेष्ठेषु सरलम् **(ऊतये)** रक्षणाद्याय **(समत्सु)** धर्म्यसंग्रामेषु **(घ्नन्तम्)** दुष्टान् विनाशयन्तम् **(वृत्राणि)** धनानि **(सञ्जितम्)** पालकं दातारं वा **(धनानाम्)**॥५॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! वयमस्मिन् वाजसातौ भर ऊतये मघवानं नृतमं शृण्वन्तमुग्रं समत्सु घ्नन्तं धनानां सञ्जितं वृत्राणि प्राप्तमिन्द्रं प्राप्य शुनं हुवेम तथैव तादृशं राजानं प्राप्य यूयमप्येतदाह्वयत॥५॥

**भावार्थः**-सर्वैः सभ्यैर्विद्वज्जनैरवश्यं सकलशास्त्रविशारदं शुभगुणकर्मस्वभावं राजधर्मकोविदं कुलीनं परमैश्वर्य्यवन्तं सर्वाधीशं कृत्वा राष्ट्रस्य सततं रक्षाञ्च विधाय दस्यवः परिहन्तव्या इति॥५॥

अत्र राजधर्मसन्तानोत्पत्तिराज्यपालनादिगुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इत्यष्टचत्वारिंशत्तमं सूक्तं द्वादशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! हम लोग **(अस्मिन्)** इस **(वाजसातौ)** सत्य और असत्य व्यवहार के विभाग करनेवाले **(भरे)** पोषण करने योग्य राज्य में **(ऊतये)** रक्षण आदि के लिये **(मघवानम्)** न्याय से इकट्ठे किये गये बहुत धन से सत्कृत **(नृतमम्)** मनुष्यो में उत्तम मनुष्य **(शृण्वन्तम्)** सत्य और असत्य का निश्चय करके आज्ञा देते हुए **(उग्रम्)** दुष्ट जनों में कठिन और श्रेष्ठ पुरुषों में सरल स्वभाववाले **(समत्सु)**



www.9009.co.in

धर्मयुक्त संग्रामों में **(घ्नन्तम्)** दुष्ट पुरुषों के नाशकर्त्ता **(धनानाम्)** धनों के **(सञ्जितम्)** पालन करने वा देनेवाले **(वृत्राणि)** धनों को प्राप्त **(इन्द्रम्)** राजा को प्राप्त होकर **(शुनम्)** राजाओं के धर्म से उत्पन्न हुए सुख को **(हुवेम)** ग्रहण करें, वैसे ही ऐसे राजा को प्राप्त होकर आप लोग भी इसका ग्रहण करो॥५॥

**भावार्थः**-सम्पूर्ण श्रेष्ठ सभासद् विद्वज्जनों को चाहिये कि अवश्य सम्पूर्ण शास्त्रों में निपुण, उत्तम गुण, कर्म और स्वभाववाले राजधर्म में चतुर व उत्तम कुलयुक्त, अत्यन्त ऐश्वर्य्यवान् पुरुष को सबका अधीश करके और राज्य की निरन्तर रक्षा करके चौरादिकों का नाश करें॥५॥

इस सूक्त में राजधर्म, सन्तानोत्पत्ति और राज्यपालन आदि के गुणों का वर्णन होने से इस सूक्त के अर्थ की पिछले सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह अड़तालीसवां सूक्त और बारहवां वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

**अथ पञ्चर्चस्यैकोनपञ्चाशत्तमस्य सूक्तस्य विश्वामित्र ऋषिः। इन्द्रो देवता। १, ४ निचृत्त्रिष्टुप्। २, ५ त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः। ३ भुरिक् पङ्क्तिः छन्दः। पञ्चमः स्वरः॥**

***अथ प्रजाविषयमाह॥***

अब पाँच ऋचावाले उञ्चासवें सूक्त का आरम्भ है। उसके प्रथम मन्त्र में प्रजा के विषय को कहते हैं॥

**शंसा॑ म॒हामिन्द्रं॒ यस्मि॒न् विश्वा॒ आ कृ॒ष्टय॑ः सोम॒पाः काम॒मव्य॑न्।**

**यं सु॒क्रतुं॑ धि॒षणे॒ विभ्व॒त॒ष्टं घ॒नं वृ॒त्राणां॑ ज॒नय॑न्त दे॒वाः॥ १॥**

**शंस। म॒हाम्। इन्द्र॑म्। यस्मि॑न्। विश्वाः॑। आ। कृ॒ष्टय॑ः। सो॒म॒ऽपाः। काम॑म्। अव्य॑न्। यम्। सु॒ऽक्रतु॑म्। धि॒षणे॒ इति॑। वि॒भ्व॒ऽत॒ष्टम्। घ॒नम्। वृ॒त्राणा॑म्। ज॒नय॑न्त। दे॒वाः॥ १॥**

**पदार्थः**-**(शंस)** स्तुहि। अत्र **द्व्यचोऽतस्तिङ** इति दीर्घः। **(महाम्)** महान्तं पूजनीयम् **(इन्द्रम्)** राजानम् **(यस्मिन्)** **(विश्वाः)** समग्राः **(आ)** समन्तात् **(कृष्टयः)** मनुष्याः **(सोमपाः)** ऐश्वर्य्यपालकाः **(कामम्)** अभिलाषम् **(अव्यन्)** कामयन्ताम् **(यम्)** **(सुक्रतुम्)** शोभनकर्मकर्त्तृप्रज्ञम् **(धिषणे)** द्यावापृथिव्याविव विद्यानीती **(विभ्वतष्टम्)** विभुना जगदीश्वरेण निर्मितम् **(घनम्)** घनीभूतम् **(वृत्राणाम्)** मेघानाम् **(जनयन्त)** जनयन्ति **(देवाः)** विद्वांसः॥ १॥

**अन्वयः**-हे विद्वन्! यस्मिन् विश्वाः सोमपाः कृष्टयः काममाव्यन् वृत्राणां घनं विभ्वतष्टं महामिन्द्रं धिषणे प्रकाशवन्तं सूर्य्यमिव विद्यानीती प्रकाश्य यं सुक्रतुं देवा जनयन्त तं राजानं त्वं शंस॥ १॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे विद्वांसो! यथा महानेकः सूर्य्यः प्रत्येकभूगोले स्थितान् मेघान् हन्ति प्राणिनां सुखं जनयति तथैव राजा दुष्टान् हत्वा श्रेष्ठानामिच्छां प्रपूर्य्याऽऽनन्दयति॥ १॥

**पदार्थः**-हे विद्वन्! **(यस्मिन्)** जिसमें **(विश्वाः)** सम्पूर्ण **(सोमपाः)** ऐश्वर्य्य के पालन करनेवाले **(कृष्टयः)** मनुष्य **(कामम्)** अभिलाषा की **(आ)** सब प्रकार **(अव्यन्)** इच्छा करें, **(वृत्राणाम्)** मेघों के **(घनम्)** समूह को **(विभ्वतष्टम्)** व्यापक परमेश्वर ने रचा, **(महाम्)** श्रेष्ठ और सेवा करने योग्य **(इन्द्रम्)** राजा को **(धिषणे)** अन्तरिक्ष और पृथिवी को प्रकाशित करते हुए सूर्य्य के सदृश विद्या और नीति को प्रकाशित करते हुए **(यम्)** जिस **(सुक्रतुम्)** उत्तम कर्म करनेवाली बुद्धि से युक्त पुरुष को **(देवाः)** विद्वान् लोग **(जनयन्त)** उत्पन्न करते हैं, उस राजा की आप **(शंस)** स्तुति करिये॥ १॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे विद्वान् लोगो! जैसे बड़ा एक सूर्य्य प्रत्येक भूगोल में वर्त्तमान मेघों को नाश करता और प्राणियों के सुख को उत्पन्न करता है, वैसे ही राजा जन दुष्ट पुरुषों का नाश और श्रेष्ठ पुरुषों की इच्छा पूर्ण करके आनन्द देता है॥ १॥

**अथ राजविषयमाह॥**

अब राजा के विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥



www.9009.co.in

**यं नु नकिः पृतनासु स्वराजं द्विता तरति नृतमं हरिष्ठाम्।**

**इनतमः सत्वभिर्यो ह शूषैः पृथुज्रया अमिनादायुर्दस्योः॥ २॥**

**यम्। नु। नकिः। पृतनासु। स्वऽराजम्। द्विता। तरति। नृऽतमम्। हरिऽस्थाम्। इनऽतमः। सत्वऽभिः। यः। ह। शूषैः। पृथुऽज्रयाः। अमिनात्। आयुः। दस्योः॥ २॥**

**पदार्थः**-(**यम्**) (**नु**) सद्यः (**नकिः**) निषेधे (**पृतनासु**) वीरसेनासु (**स्वराजम्**) यः स्वेन सूर्य्य इव राजते तम् (**द्विता**) द्वयोर्भावः (**तरति**) उल्लङ्घने (**नृतमम्**) अतिशयेन नायकम् (**हरिष्ठाम्**) हरयो मनुष्यास्तिष्ठन्ति यस्मिन् स तम् (**इनतमः**) अतिशयेनेश्वरः समर्थः (**सत्वभिः**) शत्रून् सीदयद्भिर्वीरैः सह (**यः**) (**ह**) किल (**शूषैः**) बलयुक्तैः (**पृथुज्रयाः**) पृथुस्तीव्रो ज्रयो वेगो यस्य सः (**अमिनात्**) हिंस्यात् (**आयुः**) (**दस्योः**) दुष्टस्य॥ २॥

**अन्वयः**-हे विद्वांसो! यं हरिष्ठां नृतमं स्वराजं पृतनासु द्विता नकिस्तरति यः पृथुज्रया इनतमो ह शूषैः सत्वभिः सह दस्योरायुर्न्वमिनात् तं सर्वाऽधीशं कुरुत॥ २॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यं शत्रोर्द्विगुणमपि बलं जेतुं न शक्नोति य उत्कृष्टसामर्थ्यो दुष्टान् सततं हन्ति तमेव सर्वबलाध्यक्षं कृत्वा सदैव विजयः कर्त्तव्यः॥ २॥

**पदार्थः**-हे विद्वान् लोगो! (**यम्**) जिस (**हरिष्ठाम्**) मनुष्य वर्त्तमान हों जिसमें उस (**नृतमम्**) अतिशय करके नायक (**स्वराजम्**) अपने से सूर्य्य के सदृश प्रकाशमान (**पृतनासु**) वीरों की सेनाओं में (**द्विता**) दोपन का (**नकिः**) नहीं (**तरति**) उल्लङ्घन करता है और (**यः**) जो (**पृथुज्रयाः**) तीव्र वेग से युक्त (**इनतमः**) अत्यन्त समर्थ (**ह**) निश्चय से (**शूषैः**) बलयुक्त (**सत्वभिः**) शत्रुओं को दुःख देनेवाले वीरों के साथ (**दस्योः**) दुष्ट पुरुष के (**आयुः**) अवस्था का (**नु**) शीघ्र (**अमिनात्**) नाश करे, उसको सबका स्वामी करो॥ २॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जिस पुरुष को शत्रु का द्विगुना भी बल जीत नहीं सकता और जो अधिक सामर्थ्ययुक्त पुरुष दुष्ट पुरुषों का निरन्तर नाश करता है, उसी को सब सेना का अध्यक्ष करके सदैव विजय करना चाहिये॥ २॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**सहावा पृत्सु तरणिर्नार्वा व्यानशी रोदसी मेहनावान्।**

**भगो न कारे हव्यो मतीनां पितेव चारुः सुहवो वयोधाः॥ ३॥**

**सहऽवा। पृत्ऽसु। तरणिः। न। अर्वा। विऽआनशिः। रोदसी इति। मेहनाऽवान्। भगः। न। कारे। हव्यः। मतीनाम्। पिताऽइव। चारुः। सुऽहवः। वयःऽधाः॥ ३॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**सहावा**) सोढा। अत्राऽ**न्येषामपी**ति दीर्घः। (**पृत्सु**) स्पर्द्धमानेषु संग्रामेषु (**तरणिः**) सद्यो गन्ता (**न**) इव (**अर्वा**) अश्वः (**व्यानशिः**) व्याप्तः (**रोदसी**) द्यावाभूमी (**मेहनावान्**) मेहनानि सेचनानि बहूनि विद्यन्ते यस्य सः (**भगः**) ऐश्वर्य्ययोगः (**न**) इव (**कारे**) कर्त्तव्ये व्यवहारे (**हव्यः**) आदातुमर्हः (**मतीनाम्**) मननशीलानां मनुष्याणाम् (**पितेव**) यथा जनकः (**चारुः**) सुन्दरः (**सुहवः**) शोभनाऽऽह्वानस्तुतिः (**वयोधाः**) यो वयो जीवनं दधाति सः॥३॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यः पृत्सु तरणिरर्वा न सहावा रोदसी इव मेहनावान् कारे व्यानशिर्हव्यो भगो न मतीनां वयोधाः सुहवश्चारुः पितेव वर्त्तते तमेव यूयं भूपतिं कुरुत॥३॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। योऽश्ववद्वेगवान् बलिष्ठो योद्धा सूर्य्यभूमीवत् सर्वेषां सुखद ऐश्वर्य्यवत्कार्य्यसिद्धिकरः पितृवत्सर्वेषां पालको भवेत् स एव राज्याऽभिषेकमर्हेत्॥३॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो (**पृत्सु**) स्पर्द्धा करते हुए संग्रामों में (**तरणिः**) शीघ्र चलनेवाले (**अर्वा**) घोड़े के (**न**) तुल्य (**सहावा**) सहनेवाला (**रोदसी**) अन्तरिक्ष और भूमि के सदृश (**मेहनावान्**) सेचन बहुत विद्यमान हैं, जिसके वह (**कारे**) करने योग्य व्यवहार में (**व्यानशिः**) व्याप्त (**हव्यः**) ग्रहण करने के योग्य (**भगः**) ऐश्वर्य्य के योग के (**न**) तुल्य (**मतीनाम्**) मनन करनेवाले मनुष्यों के (**वयोधाः**) जीवन को धारण करनेवाला (**सुहवः**) उत्तम पुकारने की स्तुतियुक्त (**चारुः**) सुन्दर (**पितेव**) पिता के सदृश वर्त्तमान है, उसी को आप लोग राजा करिये॥३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जो घोड़े के सदृश वेग और बलयुक्त, योद्धा, सूर्य्य और भूमि के सदृश सबको सुख देने और ऐश्वर्य्य सदृश कार्य्य की सिद्धि करनेवाला पिता के सदृश सबका पालनकर्त्ता होवे, वही राज्याऽभिषेक करने के योग्य होवे॥३॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**धर्ता दिवो रजसस्पृष्ट ऊर्ध्वो रथो न वायुर्वसुभिर्नियुत्वान्।**

**क्षपां वस्ता जनिता सूर्यस्य विभक्ता भागं धिषणेव वाजम्॥४॥**

**धर्ता। दिवः। रजसः। पृष्टः। ऊर्ध्वः। रथः। न। वायुः। वसुऽभिः। नियुत्वान्। क्षपाम्। वस्ता। जनिता। सूर्यस्य। विऽभक्ता। भागम्। धिषणाऽइव। वाजम्॥४॥**

**पदार्थः**-(**धर्त्ता**) धाता (**दिवः**) प्रकाशमयस्य (**रजसः**) लोकसमूहस्य (**पृष्टः**) पृष्टुं योग्यः (**ऊर्ध्वः**) उत्कृष्टः (**रथः**) रमणीयं यानम् (**न**) इव (**वायुः**) पवन इव बलवान् (**वसुभिः**) सर्वैर्लोकैः सह (**नियुत्वान्**) नियमकर्त्ता। **नियुत्वानितीश्वरनामसु पठितम्।** (निघं०२.२१) (**क्षपाम्**) रात्रिम् (**वस्ता**) आच्छादयिता (**जनिता**) उत्पादकः (**सूर्यस्य**) सवितृमण्डलस्य (**विभक्ता**) विभागकर्त्ता (**भागम्**) अंशम् (**धिषणेव**) द्यावापृथिव्याविव (**वाजम्**) अन्नादिकम्॥४॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे विद्वांसो! यो दिवः सूर्यस्य रजसश्च जनिता धर्त्ता पृष्ट ऊर्ध्वो रथो न वसुभिर्वायुरिव क्षपां वस्ता धिषणेव वाजं भागं विभक्ता नियुत्वानस्ति तं परमात्मानमिव राजानं मन्यध्वम्॥४॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यो राजा परमेश्वरवत्प्रजासु वर्त्तते तमेव सततं सेवध्वम्॥४॥

**पदार्थः**-हे विद्वान् जनो! जो **(दिवः)** प्रकाशस्वरूप **(सूर्यस्य)** सूर्य **(रजसः)** लोकों के समूह का **(जनिता)** उत्पन्न करने **(धर्त्ता)** धारण करनेवाला **(पृष्टः)** पूछने योग्य **(ऊर्ध्वः)** उत्तम **(रथः)** सुन्दर वाहन के **(न)** तुल्य **(वसुभिः)** सम्पूर्ण लोकों से **(वायुः)** पवन के सदृश बलवान् **(क्षपाम्)** रात्रि को **(वस्ता)** आच्छादन करनेवाला और **(धिषणेव)** अन्तरिक्ष और भूमि के सदृश **(वाजम्)** घोड़े आदि **(भागम्)** अंश का **(विभक्ता)** विभाग करने और **(नियुत्वान्)** नियम करनेवाला है, उसको परमात्मा के सदृश राजा मानो॥४॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो राजा परमेश्वर के सदृश प्रजाओं में वर्त्तमान है, उसी की निरन्तर सेवा करो॥४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**शुनं हुवेम मघवानमिन्द्रमस्मिन् भरे नृतमं वाजसातौ।**

**शृण्वन्तमुग्रमूतये समत्सु घ्नन्तं वृत्राणि सञ्जितं धनानाम्॥५॥१३॥**

**शुनम्। हुवेम। मघऽवानम्। इन्द्रम्। अस्मिन्। भरे। नृऽतमम्। वाजऽसातौ। शृण्वन्तम्। उग्रम्। ऊतये। समत्ऽसु। घ्नन्तम्। वृत्राणि। सम्ऽजितम्। धनानाम्॥५॥**

**पदार्थः**-**(शुनम्)** सुखम् **(हुवेम)** स्वीकुर्याम **(मघवानम्)** बह्वैश्वर्यम् **(इन्द्रम्)** परमेश्वरवद्वर्त्तमानं राजानम् **(अस्मिन्)** **(भरे)** पालनीये जगति **(नृतमम्)** अतिशयेन न्यायकारिणम् **(वाजसातौ)** स्वस्य स्वस्यांशस्य दानमये व्यवहारे **(शृण्वन्तम्)** यथावच्छ्रोतारम् **(उग्रम्)** दुष्टानां दुःखप्रदम् **(ऊतये)** रक्षणाद्याय **(समत्सु)** संग्रामेषु **(घ्नन्तम्)** हन्तारम् **(वृत्राणि)** धनानि **(सञ्जितम्)** जयशीलम् **(धनानाम्)** ऐश्वर्य्याणाम्॥५॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! वयं यमिन्द्रमिव वर्त्तमानं राजानं धनानामूतयेऽस्मिन् भरे वाजसातौ नृतमं मघवानं समत्सु शत्रून् घ्नन्तं वृत्राणि शृण्वन्तमुग्रं सञ्जितं राजानं समागत्य शुनं हुवेम तं यूयमपि स्वीकुरुत॥५॥

**भावार्थः**-राजभिः प्रजासु पितृवदीश्वरवद्वर्त्तित्वा सर्वस्याः प्रजायाः पालनं कर्त्तव्यमित्युपदिशन्तु॥५॥

अत्र प्रजाराजधर्मवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इत्येकोनपञ्चाशत्तमं सूक्तं त्रयोदशो वर्गश्च समाप्तः॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! हम लोग जिस **(इन्द्रम्)** परमेश्वर के सदृश वर्त्तमान राजा को **(धनानाम्)** ऐश्वर्य्यों के **(ऊतये)** रक्षण आदि के लिये **(अस्मिन्)** इस **(भरे)** पालन करने योग्य संसार और **(वाजसातौ)** अपने-अपने अंश के दानस्वरूप व्यवहार में **(नृतमम्)** अत्यन्त न्यायकारी **(मघवानम्)** बहुत ऐश्वर्य्यवाले **(समत्सु)** संग्रामों में शत्रुओं के **(घ्नन्तम्)** नाशकर्त्ता **(वृत्राणि)** धनों को **(शृण्वन्तम्)** यथावत् सुनते हुए **(उग्रम्)** दुष्टों के दुःख देने और **(सञ्जितम्)** जीतनेवाले राजा को प्राप्त होकर **(शुनम्)** सुख का **(हुवेम)** स्वीकार करे, उसको आप लोग भी स्वीकार करो॥५॥

**भावार्थः**-राजाओं को चाहिये कि प्रजाओं में पिता के और ईश्वर के तुल्य वर्त्तमान होकर सम्पूर्ण प्रजाओं का पालन करें, ऐसा उपदेश दीजिये॥५॥

इस सूक्त में प्रजा और राजा के गुणों का वर्णन होने से इस सूक्त के अर्थ की पिछले सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह उनचासवां सूक्त और तेरहवां वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

**अथ पञ्चर्चस्य पञ्चाशत्तमस्य सूक्तस्य विश्वामित्र ऋषिः। इन्द्रो देवता। १, २, ४ निचृत् त्रिष्टुप्। ३, ५ त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः॥**

***अथ राजविषयमाह॥***

अब पाँच ऋचावाले पचासवें सूक्त का आरम्भ है। उसके प्रथम मन्त्र में राजा के विषय को कहते हैं॥

**इन्द्रः स्वाहा॑ पिबतु॒ यस्य॒ सोम॑ आ॒गत्या॒ तुम्रो॑ वृष॒भो म॒रुत्वा॑न्।**

**ओरु॒व्यचा॑ः पृणतामे॒भिरन्नै॒रास्य॑ ह॒विस्त॒न्व१॒ः काम॑मृध्याः॥ १॥**

**इन्द्र॑ः। स्वाहा॑। पि॒ब॒तु॒। यस्य॑। सोम॑ः। आ॒ऽगत्य॑। तुम्र॑ः। वृ॒ष॒भः। म॒रुत्वा॑न्। आ। उ॒रु॒ऽव्यचा॑ः। पृ॒ण॒ता॒म्। ए॒भिः। अन्नै॑ः। आ। अ॒स्य॒। ह॒विः। त॒न्व॑ः। काम॑म्। ऋ॒ध्याः॒॥ १॥**

**पदार्थः**-(**इन्द्रः**) ऐश्वर्य्यकर्त्ता (**स्वाहा**) सत्यया क्रियया (**पिबतु**) (**यस्य**) (**सोमः**) ऐश्वर्य्यसमूहः (**आगत्य**)। अत्र **संहितायामि**ति दीर्घः। (**तुम्रः**) आहन्ता (**वृषभः**) बलिष्ठः (**मरुत्वान्**) प्रशस्तपुरुषयुक्तः (**आ**) (**उरुव्यचाः**) बहुशुभगुणव्याप्तः (**पृणताम्**) सुखयतु (**एभिः**) वर्त्तमानैः (**अन्नैः**) यवादिभिः (**आ**) (**अस्य**) (**हविः**) आदातव्यम् (**तन्वः**) शरीरस्य (**कामम्**) (**ऋध्याः**) साध्नुयाः॥१॥

**अन्वयः**-हे विद्वन्! यस्[सोमस्]तुम्रो वृषभो मरुत्वानुरुव्यचा इन्द्रः स्वाहा यस्य सोमस्तस्यास्यैभिरन्नैरागत्य हविः पिबतु तन्वः काममापृणतां तं त्वमाध्र्याः॥१॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यः सत्यन्यायेन स्वांऽशं भुक्त्वा प्रजायाः सुखवर्द्धनायाऽन्यायं दुष्टांश्च हन्ति स समृद्धो भवति॥१॥

**पदार्थः**-हे विद्वान्! जो (**सोमः**) ऐश्वर्यों का समूह (**तुम्रः**) विघ्नकारियों का हिंसक (**वृषभः**) बलिष्ठ (**मरुत्वान्**) उत्तम पुरुषों से युक्त (**उरुव्यचाः**) बहुत श्रेष्ठ गुणों से व्याप्त (**इन्द्रः**) ऐश्वर्य्यों का कर्त्ता (**स्वाहा**) सत्यक्रिया से (**यस्य**) जिसका (**सोमः**) ऐश्वर्य्यों का समूह उस (**अस्य**) इसके (**एभिः**) इन वर्तमान (**अन्नैः**) यव आदि अन्नों से (**आगत्य**) प्राप्त होकर (**हविः**) ग्रहण करने योग्य वस्तु का (**पिबतु**) पान कीजिये और (**तन्वः**) शरीर के (**कामम्**) मनोरथ को (**आ**) (**पृणताम्**) सब प्रकार पूर्ण करके सुख दीजिये और उसको आप (**आ, ऋध्याः**) सिद्ध कीजिये॥१॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो सत्य न्याय से अपने अंश का भोग करके प्रजा के सुख बढ़ाने के लिये अन्याय और दुष्ट पुरुषों का नाश करता है, वह पुरुष समृद्धियुक्त होता है॥१॥

**अथ प्रीतिविषयमाह॥**

अब प्रीति के विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**आ ते॑ सप॒र्यू ज॒वसे॑ युनज्मि॒ ययो॒रनु॑ प्र॒दिव॑ः श्रु॒ष्टिमाव॑ः।**



www.9009.co.in

**इह त्वा धेयुर्हरयः सुशिप्र पिबा त्वश्स्य सुषुतस्य चारोः॥२॥**

**आ। ते। सपर्यू इति। जवसे। युनज्मि। ययोः। अनु। प्रऽदिवः। श्रुष्टिम्। आवः। इह। त्वा। धेयुः। हरयः। सुऽशिप्र। पिब। तु। अस्य। सुऽसुतस्य। चारोः॥२॥**

**पदार्थः**-(**आ**) समन्तात् (**ते**) तव (**सपर्य्यू**) सेवकौ (**जवसे**) वेगाय (**युनज्मि**) (**ययोः**) (**अनु**) (**प्रदिवः**) प्रकृष्टप्रकाशान् (**श्रुष्टिम्**) शीघ्रम् (**आवः**) रक्षेः (**इह**) (**त्वा**) त्वाम् (**धेयुः**) दध्युः। अत्र **छन्दस्युभयथे**ति सार्वधातुकमाश्रित्य सलोपः। (**हरयः**) पुरुषार्थिनो मनुष्याः (**सुशिप्र**) सुवदन (**पिब**)। अत्र **द्व्यचोऽतस्तिङ** इति दीर्घः। (**तु**) (**अस्य**) (**सुषुतस्य**) सुष्ठु संस्कृतस्य (**चारोः**) अत्युत्तमस्य॥२॥

**अन्वयः**-हे सुशिप्र! त्वं ययोरनु प्रदिवः श्रुष्टिमावस्ताविह सपर्य्यू ते जवस आ युनज्मि। ये हरयस्त्वा धेयुस्तैः सह त्वस्य सुषुतस्य चारोः सोमस्यांशं पिब॥२॥

**भावार्थः**-अस्मिन् संसारे ये येषां सेवकास्तैस्ते पोषणीयाः सर्वैः परस्परं प्रीत्या सुखोन्नतिः कार्य्या॥२॥

**पदार्थः**-हे (**सुशिप्र**) सुन्दर मुखवाले! आप (**ययोः**) जिनके (**अनु, प्रदिवः**) उत्तम प्रकाशों को (**श्रुष्टिम्**) शीघ्र (**आवः**) रक्षा करें वे (**इह**) इस संसार में (**सपर्य्यू**) सेवा करनेवाले (**ते**) आपके (**जवसे**) वेग के लिये (**आ, युनज्मि**) संयुक्त करता हूँ। और जो (**हरयः**) पुरुषार्थी मनुष्य (**त्वा**) आपको (**धेयुः**) धारण करें, उनके साथ (**तु**) शीघ्र (**अस्य**) इस (**सुषुतस्य**) उत्तम प्रकार संस्कारयुक्त (**चारोः**) अतिश्रेष्ठ इस सोमलतारूप ओषधियों के अंश का (**पिब**) पान कीजिये॥२॥

**भावार्थः**-इस संसार में जो लोग जिनके सेवक उन स्वामियों को चाहिये कि उन सेवकों का पोषण करें और सब लोग परस्पर प्रीति से सुख की उन्नति करें॥२॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**गोभिर्मिमिक्षुं दधिरे सुपारमिन्द्रं ज्यैष्ठ्याय धायसे गृणानाः।**

**मन्दानः सोमं पपिवाँ ऋजीषिन्त्समस्मभ्यं पुरुधा गा इषण्य॥३॥**

**गोभिः। मिमिक्षुम्। दधिरे। सुऽपारम्। इन्द्रम्। ज्यैष्ठ्याय। धायसे। गृणानाः। मन्दानः। सोमम्। पपिऽवान्। ऋजीषिन्। सम्। अस्मभ्यम्। पुरुधा। गाः। इषण्य॥३॥**

**पदार्थः**-(**गोभिः**) किरणैः (**मिमिक्षुम्**) सेक्तुमिच्छुम् (**दधिरे**) धरन्तु (**सुपारम्**) सुखेन पारं गन्तुं योग्यम् (**इन्द्रम्**) विद्यैश्वर्य्यवन्तम् (**ज्यैष्ठ्याय**) वृद्धस्य भावाय (**धायसे**) धातुम् (**गृणानाः**) स्तुवन्तः (**मन्दानः**) आनन्दन् (**सोमम्**) (**पपिवान्**) पीतवान् (**ऋजीषिन्**) सरलस्वभावः (**सम्**) (**अस्मभ्यम्**) (**पुरुधा**) बहुभिः प्रकारैः (**गाः**) पृथिव्याद्याः (**इषण्य**) प्रेरय॥३॥

**अन्वयः**-हे ऋजीषिन्! ये गृणाना गोभिर्धायसे ज्यैष्ठ्याय मिमिक्षुं सुपारमिन्द्रं त्वा दधिरे यश्च सोमं पपिवान् मन्दानः सन्नस्मभ्यमिषण्य प्रेरय सोमं पुरुधा गाश्च संदधति ताँस्त्वं ते त्वां च सत्कुर्वन्तु॥३॥

**भावार्थः**-यथा सूर्य्यः किरणैर्वृष्टिं कृत्वा सर्वान् पुष्णाति तथैव विद्वांसोऽध्यापनोपदेशाभ्यां विद्यासत्ये वर्षित्वा सर्वान् मनुष्यान् पुष्णन्तु॥३॥

**पदार्थः**-हे **(ऋजीषिन्)** नम्र स्वभाव और **(गृणानाः)** स्तुति करते हुए! **(गोभिः)** किरणों से **(धायसे)** धारण करने को **(ज्यैष्ठ्याय)** वृद्ध होने के लिये **(मिमिक्षुम्)** सेचन करने की इच्छा करनेवाले को **(सुपारम्)** सुख से पार जाने के योग्य **(इन्द्रम्)** विद्या और ऐश्वर्यवान् आपको **(दधिरे)** धारण करो और जिसने **(सोमम्)** सोमलता के रस को **(पपिवान्)** पीया **(मन्दानः)** आनन्द करते हुए **(अस्मभ्यम्)** हम लोगों के **(इषण्य)** प्रेरणा करिये **(सोमम्)** सोम ओषधि के रस को और **(पुरुधा)** अनेक प्रकारों से **(गाः)** पृथिवी आदि को धारण करता है, उनका आप और वे आपका सत्कार करें॥३॥

**भावार्थः**-जैसे सूर्य अपने किरणों से वृष्टि करके सबकी पुष्टि करता है, वैसे ही विद्वान् लोग पढ़ाने और उपदेश से विद्या और सत्य की वृष्टि करके सब मनुष्यों की पुष्टि करें॥३॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**इमं कामं मन्दया गोभिरश्वैश्चन्द्रवता राधसा पप्रथश्च।**

**स्वर्यवो मतिभिस्तुभ्यं विप्रा इन्द्राय वाहः कुशिकासो अक्रन्॥४॥**

**इमम्। कामम्। मन्दय। गोभिः। अश्वैः। चन्द्रऽवता। राधसा। पप्रथः। च। स्वःऽयवः। मतिऽभिः। तुभ्यम्। विप्राः। इन्द्राय। वाहः। कुशिकासः। अक्रन्॥४॥**

**पदार्थः**-**(इमम्)** प्रत्यक्षम् **(कामम्)** **(मन्दय)** प्रापय। अत्र **संहितायामिति** दीर्घः। **(गोभिः)** धेन्वादिभिः **(अश्वैः)** तुरङ्गादिभिः **(चन्द्रवता)** पुष्कलं चन्द्रं सुवर्णं विद्यते यस्मिँस्तेन। **चन्द्र इति हिरण्यनामसु पठितम्।** (निघं०१.२) **(राधसा)** धनेन **(पप्रथः)** प्रख्यातो भव **(च)** अन्यान् प्रख्यापय **(स्वर्य्यवः)** ये सुखं यावयन्ति मिश्रयन्ति ते **(मतिभिः)** मनुष्यैः **(तुभ्यम्)** **(विप्राः)** पूर्णविद्या मेधाविनः **(इन्द्राय)** परमैश्वर्याय **(वाहः)** प्रापकाः **(कुशिकासः)** सर्वशास्त्रसिद्धान्तवेत्तारः **(अक्रन्)** कुर्युः॥४॥

**अन्वयः**-हे राजन्! ये स्वर्य्यवः कुशिकासो वाहो विप्रा मतिभिरिन्द्राय तुभ्यमिमं काममक्रँस्तेषामिमं कामं गोभिरश्वैश्चन्द्रवता राधसा त्वं पप्रथश्चैतान् मन्दय॥४॥

**भावार्थः**-यदि सत्पुरुषैः सहाऽऽनुकूल्येन वर्त्तित्वा परस्पराऽनुभूत्या पशुधनादिभिरिच्छामलं-कुर्य्युस्ते सदा सुखिनः स्युः॥४॥

**पदार्थः**-हे राजन्! जो **(स्वर्यवः)** सुख को प्राप्त कराने **(कुशिकासः)** सम्पूर्ण शास्त्रों के सिद्धान्त जानने और **(वाहः)** प्राप्त करानेवाले **(विप्राः)** पूर्ण विद्या से युक्त बुद्धिमान् लोग **(मतिभिः)**



www.9009.co.in

मनुष्यों से **(इन्द्राय)** अत्यन्त धन से युक्त **(तुभ्यम्)** आपके लिये **(इमम्)** इस प्रत्यक्ष **(कामम्)** मनोरथ को **(अक्रन्)** करें, उन लोगों के इस मनोरथ को **(गोभिः)** गौ आदि और **(अश्वैः)** घोड़े आदि और **(चन्द्रवता)** प्रसिद्ध बहुत सुवर्ण विद्यमान है जिसमें उस **(राधसा)** धन से आप **(पप्रथः)** प्रसिद्ध होइये **(च)** और इनको **(मन्दय)** पहुँचाइये॥४॥

**भावार्थः**-जो श्रेष्ठ पुरुषों के साथ अनुकूलता से वर्त्तमान होकर परस्पर ऐश्वर्य्य से और पशु आदि धन आदिकों से इच्छा को पूर्ण करें, वे सदा सुखी होवें॥४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**शुनं हुवेम मघवानमिन्द्रमस्मिन् भरे नृतमं वाजसातौ।**

**शृण्वन्तमुग्रमूतये समत्सु घ्नन्तं वृत्राणि संजितं धनानाम्॥५॥१४॥**

**शुनम्। हुवेम। मघऽवानम्। इन्द्रम्। अस्मिन्। भरे। नृऽतमम्। वाजऽसातौ। शृण्वन्तम्। उग्रम्। ऊतये। समत्ऽसु। घ्नन्तम्। वृत्राणि। सम्ऽजितम्। धनानाम्॥५॥**

**पदार्थः**-**(शुनम्)** परस्परमेलजन्यं सुखम् **(हुवेम)** **(मघवानम्)** पूजितधनवन्तम् **(इन्द्रम्)** विरोधविदारकम् **(अस्मिन्)** **(भरे)** प्रेम्णा पालनीये व्यवहारे **(नृतमम्)** अतिशयेन प्रीतेर्नेतारं प्रापकम् **(वाजसातौ)** विज्ञानसेवने **(शृण्वन्तम्)** **(उग्रम्)** द्वेषविनाशकम् **(ऊतये)** ऐक्यभावप्रवेशाय **(समत्सु)** विरोधव्यवहारेषु **(घ्नन्तम्)** विनाशयन्तम् **(वृत्राणि)** प्रेमास्पदवस्तूनि **(सञ्जितम्)** सम्यग् जयशीलम् **(धनानाम्)** द्रव्याणाम्॥५॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! वयमस्मिन् वाजसातौ भरे ऊतये मघवानं नृतमं वृत्राणि शृण्वन्तं समत्सु वर्त्तमानानि निमित्तानि घ्नन्तमुग्रं धनानां सञ्जितमिन्द्रं शुनमिव हुवेम तं यूयमपि सेवध्वम्॥५॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। त एव धन्या मनुष्या ये विरोधं परिहाय सहाऽनुभूतिं जनयन्तीति॥५॥

अत्र परस्परेषां प्रीतिवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति पञ्चाशत्तमं सूक्तं चतुर्दशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! हम लोग **(अस्मिन्)** इस **(वाजसातौ)** विज्ञान के सेवन करने और **(भरे)** प्रेम से पालन करने योग्य व्यवहार में **(ऊतये)** ऐक्यभाव में प्रवेश होने के लिये **(मघवानम्)** श्रेष्ठ धनवाले और **(नृतमम्)** अत्यन्त प्रीति के प्राप्त करानेवाले और **(वृत्राणि)** प्रेम के स्थानभूत वस्तुओं को **(शृण्वन्तम्)** सुननेवाले **(समत्सु)** विरोध के व्यवहारों में वर्त्तमान कारणों को **(घ्नन्तम्)** नाश करते हुए **(उग्रम्)** द्वेष के विनाशकर्त्ता **(धनानाम्)** द्रव्यों को **(सञ्जितम्)** उत्तम प्रकार जीतने और **(इन्द्रम्)** विरोध के



www.9009.co.in

नाश करनेवाले को **(शुनम्)** परस्पर मेल से उत्पन्न सुख को जैसे वैसे **(हुवेम)** ग्रहण करें, उसका आप लोग भी सेवन करें॥५॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। वे ही धन्य मनुष्य कि जो विरोध का त्याग करके एक साथ ऐश्वर्य उत्पन्न करते हैं॥५॥

इस सूक्त में परस्पर की प्रीति वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह पचासवां सूक्त और चौदहवां वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

**अथ द्वादशर्चस्यैकाधिकपञ्चाशत्तमस्य सूक्तस्य विश्वामित्र ऋषिः। इन्द्रो देवता। ४, ७-९ त्रिष्टुप्। ५, ६ निचृत् त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः। १-३ निचृज्जगती छन्दः। निषादः स्वरः। १०, ११ यवमध्या गायत्री। १२ विराट् गायत्री छन्दः। षड्जः स्वरः॥**

***अथ राजविषयमाह॥***

अब बारह ऋचावाले इक्कावनवें सूक्त का आरम्भ है। उसके प्रथम मन्त्र में राजा के विषय को कहते हैं॥

**च॒र्ष॒णी॒धृतं॑ म॒घवा॑नमु॒क्थ्य१॒॑मिन्द्रं॒ गिरो॑ बृह॒तीर॒भ्य॑नूषत।**

**वा॒वृ॒धा॒नं पु॑रुहू॒तं सु॑वृ॒क्तिभि॒रम॑र्त्यं॒ जर॑माणं दि॒वेदि॑वे॥ १॥**

**च॒र्ष॒णि॒ऽधृत॑म्। म॒घऽवा॑नम्। उ॒क्थ्य॑म्। इन्द्र॑म्। गिर॑ः। बृ॒ह॒तीः। अ॒भि। अ॒नू॒ष॒त॒। व॒वृ॒धा॒नम्। पु॒रु॒ऽहू॒तम्। सु॒वृ॒क्तिऽभिः॑। अम॑र्त्यम्। जर॑माणम्। दि॒वेऽदि॑वे॥ १॥**

**पदार्थः**-(**चर्षणीधृतम्**) मनुष्याणां धर्त्तारम् (**मघवानम्**) बहुधनयुक्तम् (**उक्थ्यम्**) प्रशंसनीयम् (**इन्द्रम्**) राजानम् (**गिरः**) विदुषां वाचः (**बृहतीः**) बृहद्विषयाः (**अभि, अनूषत**) प्रशंसेयुः (**वावृधानम्**) वर्द्धमानम् (**पुरुहूतम्**) बहुभिः सत्कृतम् (**सुवृक्तिभिः**) सुष्ठु संविभागैः (**अमर्त्यम्**) मरणधर्मरहितम् (**जरमाणम्**) स्तुवन्तम् (**दिवेदिवे**) प्रतिदिनम्॥ १॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! बृहतीर्गिरो दिवेदिवे सुवृक्तिभिर्यं चर्षणीधृतं मघवानमुक्थ्यं वावृधानं पुरुहूतममर्त्यं जरमाणमिन्द्रमभ्यनूषत तं यूयमाश्रयत॥ १॥

**भावार्थः**-हे राजपुरुषा! बहुभिः सत्कृतं प्रजाधारणक्षमं राजानं विद्वांसः प्रशंसेयुस्तस्यैव यूयं शरणं गच्छत॥ १॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! (**बृहतीः**) बड़े विषय अर्थात् तात्पर्यवाली (**गिरः**) विद्वानों की वाणियों को (**दिवेदिवे**) प्रतिदिन (**सुवृक्तिभिः**) उत्तम संविभागों से जिस (**चर्षणीधृतम्**) मनुष्यों के धारण करनेवाले (**मघवानम्**) बढ़े हुए धन से युक्त (**उक्थ्यम्**) प्रशंसा करने योग्य (**वावृधानम्**) बढ़े हुए (**पुरुहूतम्**) बहुतों से सत्कार किये गये (**अमर्त्यम्**) मरणधर्म से रहित (**जरमाणम्**) स्तुति करते हुए (**इन्द्रम्**) राजा की (**अभ्यनूषत**) प्रशंसा करें, उसका आप लोग भी आश्रयण करो॥ १॥

**भावार्थः**-हे राजपुरुषो! बहुत जनों से सत्कृत प्रजाओं के धारण करने में समर्थ जिस राजा की विद्वान् लोग प्रशंसा करें, उसी के आप लोग शरण जाओ॥ १॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**श॒तक्र॑तुमर्ण॒वं शा॒किनं॒ नरं॒ गिरो॑ म॒ इन्द्र॒मुप॑ यन्ति वि॒श्वतः॑।**



www.9009.co.in

**वाजसनिं पूर्भिदं तूर्णिमप्तुरं धामसाचमभिषाचं स्वर्विदम्॥ २॥**

**शतऽक्रतुम्। अर्णवम्। शाकिनम्। नरम्। गिरः। मे। इन्द्रम्। उप। यन्ति। विश्वतः। वाजऽसनिम्। पूःऽभिदम्। तूर्णिम्। अप्ऽतुरम्। धामऽसाचम्। अभिऽसाचम्। स्वःऽविदम्॥ २॥**

**पदार्थः**-(**शतक्रतुम्**) अमितप्रज्ञम् (**अर्णवम्**) समुद्रमिव गम्भीरम् (**शाकिनम्**) शक्तिमन्तम् (**नरम्**) नायकम् (**गिरः**) वाण्याः (**मे**) मम (**इन्द्रम्**) परमैश्वर्य्यप्रदम् (**उप**) (**यन्ति**) प्राप्नुवन्ति (**विश्वतः**) सर्वतः (**वाजसनिम्**) अन्नविज्ञानविभाजकम् (**पूर्भिदम्**) शत्रूणां नगराभिदारकम् (**तूर्णिम्**) शीघ्रकारिणम् (**अप्तुरम्**) प्राणप्रेरकम् (**धामसाचम्**) समवयन्तम् (**अभिषाचम्**) आभिमुख्ये सचन्तम् (**स्वर्विदम्**) सुखप्राप्तम्॥ २॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! मे गिरोऽर्णवमिव शतक्रतुं शाकिनं नरं वाजसनिं पूर्भिदं तूर्णिमप्तुरं धामसाचमभिषाचं स्वर्विदमिन्द्रं विश्वत उ यन्ति तस्यैव शरणमुपगच्छत॥ २॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यदि मनुष्या अखिलविद्यासु निपुणं शक्तिमन्तं सत्यसन्धिं दुष्टताडकं राजानमुपगच्छेयुस्तर्हि तेषां कुतश्चिदपि भयं न जायते॥ २॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! (**मे**) मेरी (**गिरः**) वाणियों को (**अर्णवम्**) समुद्र के सदृश गम्भीर (**शतक्रतुम्**) नापरहित बुद्धि और (**शाकिनम्**) शक्तियुक्त (**नरम्**) नायक (**वाजसनिम्**) अन्न और विज्ञान के विभागकर्त्ता (**पूर्भिदम्**) शत्रुओं के नगर के भेदन करने और (**तूर्णिम्**) शीघ्रता करनेवाले (**अप्तुरम्**) प्राणों के प्रेरणकर्त्ता (**धामसाचम्**) रक्षा करते हुए (**अभिषाचम्**) सम्मुख भाव और (**स्वर्विदम्**) सुख को प्राप्त (**इन्द्रम्**) अत्यन्त ऐश्वर्य्य के देनेवाले को (**विश्वतः**) सब प्रकार (**उप, यन्ति**) प्राप्त होते हैं, उस ही के शरण जाओ॥ २॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो मनुष्य लोग सम्पूर्ण विद्याओं में कुशल सामर्थ्ययुक्त सत्यधारणकर्त्ता दुष्ट पुरुषों के ताड़न करनेवाले राजा के समीप जावें तो उसका किसी से भी भय नहीं होता है॥ २॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**आकरे वसोर्जरिता पनस्यतेऽनेहसः स्तुभ इन्द्रो दुवस्यति।**

**विवस्वतः सदन आ हि पिप्रिये सत्रासाहमभिमातिहनं स्तुहि॥ ३॥**

**आऽकरे। वसोः। जरिता। पनस्यते। अनेहसः। स्तुभः। इन्द्रः। दुवस्यति। विवस्वतः। सदने। आ। हि। पिप्रिये। सत्राऽसहम्। अभिमातिऽहनम्। स्तुहि॥ ३॥**

**पदार्थः**-(**आकरे**) समूहे (**वसोः**) धनस्य (**जरिता**) स्तोता (**पनस्यते**) व्यवहरति (**अनेहसः**) अहन्तव्यस्य (**स्तुभः**) यः स्तोभते सः (**इन्द्रः**) विद्युदिव सर्वाधीशो राजा (**दुवस्यति**) परिचरति

**(विवस्वतः)** सूर्यस्य **(सदने)** स्थाने **(आ)** समन्तात् **(हि)** खलु **(पिप्रिये)** प्रीणाति **(सत्रासाहम्)** सत्यसहम् **(अभिमातिहनम्)** योऽभिमानयुक्तं शत्रुं हन्ति तम् **(स्तुहि)**॥३॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यः स्तुभो जरिता अनेहसो वसोराकरे विवस्वतः सदन इन्द्र इव पनस्यते विदुषो धर्मं च दुवस्यति सत्रासाहमभिमातिहनमा पिप्रिये तं हि स्तुहि॥३॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यथेश्वरेण विद्युत उत्पादितः सूर्य एकत्र वर्त्तमानः सन् सर्वत्र सन्निहितं सर्वं प्रकाशते तथैवैकस्मिन् देशे स्थितो राजा अमात्यदूतचारसेनादिप्रबन्धेन सर्वं राज्यं विद्याविनयाभ्यामुज्ज्वल्यैश्वर्यसमूहेन धर्मोन्नतये व्यवहरेत्॥३॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो **(स्तुभः)** फलों को प्राप्त होने **(जरिता)** स्तुति करनेवाला **(अनेहसः)** नहीं नाश करने योग्य **(वसोः)** धन के **(आकरे)** समूह में **(विवस्वतः)** सूर्य के **(सदने)** स्थान में **(इन्द्रः)** बिजुली के सदृश सबका स्वामी राजा **(पनस्यते)** व्यवहार करता है और विद्वान् के धर्म का **(दुवस्यति)** सेवन करता और **(सत्रासाहम्)** सत्य के सहनेवाले **(अभिमातिहनम्)** अभिमानयुक्त शत्रु के नाश करनेवाले को **(आ, पिप्रिये)** प्रसन्न करता है, उसकी **(हि)** निश्चय **(स्तुहि)** स्तुति करो॥३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे ईश्वर से बिजुली द्वारा उत्पन्न किया गया सूर्य एकत्र वर्त्तमान हुआ सर्वत्र विद्यमान सब वस्तुओं को प्रकाशित करता है, वैसे ही एक स्थान में वर्त्तमान राजा, मन्त्री, दूत, पियादे और सेनादि के प्रबन्ध से सम्पूर्ण राज्य को विद्या और विनय से प्रकाशित करके ऐश्वर्य के समूह से धर्म की उन्नति के लिये व्यवहार करे॥३॥

**अथ प्रजाप्रशंसाविषयमाह॥**

अब प्रजा के प्रशंसा के विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**नृणामु त्वा नृतमं गीर्भिरुक्थैरभि प्र वीरमर्चता सबाधः।**
**सं सहसे पुरुमायो जिहीते नमो अस्य प्रदिव एक ईशे॥४॥**

**नृणाम्। ऊम् इति। त्वा। नृऽतमम्। गीःऽभिः। उक्थैः। अभि। प्र। वीरम्। अर्चत। सऽबाधः। सम्। सहसे। पुरुऽमायः। जिहीते। नमः। अस्य। प्रऽदिवः। एकः। ईशे॥४॥**

**पदार्थः**-**(नृणाम्)** नायकानां मनुष्याणाम् **(उ)** **(त्वा)** त्वाम् **(नृतमम्)** अतिशयेन नायकम् **(गीर्भिः)** वाग्भिः **(उक्थैः)** प्रशंसावचनैः **(अभि)** **(प्र)** **(वीरम्)** व्याप्तराजविद्याबलम् **(अर्चत)** सत्कुरुत। अत्र **संहितायामिति** दीर्घः। **(सबाधः)** बाधेन सह वर्त्तमानः **(सम्)** **(सहसे)** बलाय **(पुरुमायः)** यः पुरून् बहून् मिनोति **(जिहीते)** प्राप्नोति **(नमः)** अन्नं संस्कारं वा **(यस्य)** **(प्रदिवः)** प्रकृष्टप्रकाशस्य **(एकः)** असहायः **(ईशे)** ईष्टे। **आत्मनेपदेष्विति** तलोपः॥४॥

**अन्वयः**-हे विद्वांसो! यूयं यः सबाधः पुरुमाय एकः सेनेशोऽस्य प्रदिव ईशे सहसे नमः सं जिहीते तं वीरं प्रार्चत। हे राजन्! ये गीर्भिरुक्थैर्नृणां नृतमं त्वा सत्कुर्युस्तानु त्वमभ्यर्च॥४॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-विद्वद्भिस्तस्यैव प्रशंसा कार्या यः प्रशंसाऽर्हाणि कर्माणि कुर्यात्॥४॥

**पदार्थः**-हे विद्वान् जनो! आप लोग जो **(सबाधः)** बाध के सहित वर्त्तमान **(पुरुमायः)** बहुत कार्यों का कर्त्ता **(एकः)** सहायरहित सेनाधिपति पुरुष **(अस्य)** इस **(प्रदिवः)** उत्तम प्रकाश का **(ईशे)** स्वामी है **(सहसे)** बल के लिये **(नमः)** अन्न वा सत्कार को **(सम्, जिहीते)** प्राप्त होता है, उस **(वीरम्)** राजविद्या और बल से व्याप्त पुरुष का **(प्र, अर्चत)** सत्कार करिये। और हे राजन्! जो **(गीर्भिः)** वाणियों और **(उक्थैः)** प्रशंसा के वचनों से **(नृणाम्)** अग्रणी मनुष्यों के **(नृतमम्)** अत्यन्त नायक **(त्वा)** आपका सत्कार करें उनका **(उ)** ही आप सत्कार करिये॥४॥

**भावार्थः**-विद्वानों को चाहिये कि उस ही की प्रशंसा करें कि जो प्रशंसा योग्य कर्मों को करे॥४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**पू॒र्वीर॑स्य नि॒ष्षिधो॒ मर्त्ये॑षु पु॒रू वसू॑नि पृथि॒वी बि॑भर्ति।**

**इन्द्रा॑य॒ द्याव॒ ओष॑धीरु॒तापो॑ र॒यिं र॑क्षन्ति जी॒रयो॒ वना॑नि॥५॥१५॥**

**पू॒र्वीः। अ॒स्य॒। नि॒ःऽसिध॑ः। मर्त्ये॑षु। पु॒रु। वसू॑नि। पृ॒थि॒वी। बि॒भ॒र्ति॒। इन्द्रा॑य। द्याव॑ः। ओष॑धीः। उ॒त। आप॑ः। र॒यिम्। र॒क्ष॒न्ति॒। जी॒रय॑ः। वना॑नि॥५॥**

**पदार्थः**-**(पूर्वीः)** सनातनीः **(अस्य)** राज्ञः **(निष्षिधः)** नितरां साधिकाः **(मर्त्येषु)** मनुष्येषु **(पुरू)** पुरूणि बहूनि **(वसूनि)** द्रव्याणि **(पृथिवी)** **(बिभर्त्ति)** **(इन्द्राय)** ऐश्वर्याय **(द्यावः)** सूर्यादिप्रकाशः **(ओषधीः)** सोमाद्याः **(उत)** अपि **(आपः)** प्राणा जलानि **(रयिम्)** श्रियम् **(रक्षन्ति)** **(जीरयः)** ये जीर्यन्ते ते मनुष्याः **(वनानि)** वनन्ति सम्भजन्ति सुखानि यैस्तानि॥५॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! ये जीरयोऽस्य मर्त्येषु पूर्वीर्निष्षधो रक्षन्ति पुरू वसूनि पृथिवीव यो बिभर्त्ति द्याव इन्द्राय रयिं वनानि च उताप्याप ओषधी रक्षन्तीव राज्यं बिभर्त्ति स एव राजा भवितुमर्हति॥५॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। ये मर्त्येषु धनानि विज्ञानं भैषज्यं धरन्ति त एव राजकर्मचारिणो भवितुमर्हन्ति॥५॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो **(जीरयः)** वृद्ध होनेवाले मनुष्य **(अस्य)** इस राजा के **(मर्त्येषु)** मनुष्यों में **(पूर्वीः)** अनादि काल से सिद्ध **(निष्षिधः)** अत्यन्त सिद्ध करनेवालियों की **(रक्षन्ति)** रक्षा करते हैं और **(पुरू)** बहुत **(वसूनि)** द्रव्यों को **(पृथिवी)** भूमि के सदृश जो पुरुष **(बिभर्त्ति)** धारण करता है **(द्यावः)** सूर्य्य आदि के प्रकाश **(इन्द्राय)** ऐश्वर्य्य के लिये **(रयिम्)** लक्ष्मी और **(वनानि)** सम्मुख हों सुख जिनसे उनको **(उत)** भी **(आपः)** प्राण वा जल जैसे **(ओषधीः)** सोमलता और ओषधियों की रक्षा करते हैं, वैसे राज्य का **(बिभर्त्ति)** पोषण करता है, वही राजा होने के योग्य हो॥५॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो मनुष्यों में धन, विज्ञान और ओषधि धारण करते, वे ही राजाओं के कर्मचारी होने के योग्य हैं॥५॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**तुभ्यं ब्रह्माणि गिर इन्द्र तुभ्यं सत्रा दधिरे हरिवो जुषस्व।**

**बोध्या३पिरवसो नूतनस्य सखे वसो जरितृभ्यो वयो धाः॥६॥**

**तुभ्यम्। ब्रह्माणि। गिरः। इन्द्र। तुभ्यम्। सत्रा। दधिरे। हरिऽवः। जुषस्व। बोधि। आपिः। अवसः। नूतनस्य। सखे। वसो इति। जरितृऽभ्यः। वयः। धाः॥६॥**

**पदार्थः**-(**तुभ्यम्**) (**ब्रह्माणि**) धनानि (**गिरः**) वाचः (**इन्द्र**) ऐश्वर्य्यधारक (**तुभ्यम्**) (**सत्रा**) सत्यम् (**दधिरे**) धरेयुः (**हरिवः**) प्रशस्ताऽश्वादियुक्त (**जुषस्व**) सेवस्व (**बोधि**) बुध्यस्व (**आपिः**) व्याप्तः सन् (**अवसः**) रक्षणादेः (**नूतनस्य**) नवीनस्य (**सखे**) मित्र (**वसो**) प्राप्तधन (**जरितृभ्यः**) स्तावकेभ्यो विद्वद्भ्यः (**वयः**) जीवनम् (**धाः**) धेहि॥६॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! या गिरस्तुभ्यं ब्रह्माणि, हे हरिवो! या वाचस्तुभ्यं सत्रा दधिरे तास्त्वं जुषस्व। हे सखे! नूतनस्याऽवस आपिस्सँस्ता बोधि। हे वसो! त्वं जरितृभ्यो वयो धाः॥६॥

**भावार्थः**-मनुष्यैस्तादृशी वाग् ग्राह्या श्राव्या यादृश्या धनं जायते सत्यं रक्ष्यते जीवनं वर्द्धयते॥६॥

**पदार्थः**-हे (**इन्द्र**) ऐश्वर्य्य के धारणकर्त्ता! जो (**गिरः**) वाणियां (**तुभ्यम्**) आपके लिये (**ब्रह्माणि**) धनों को और हे (**हरिवः**) उत्तम घोड़े आदि से युक्त! जो वाणियां (**तुभ्यम्**) आपके लिये (**सत्रा**) सत्य को (**दधिरे**) धारण करें, उनका आप (**जुषस्व**) सेवन करो। हे (**सखे**) मित्र! (**नूतनस्य**) नवीन (**अवसः**) रक्षणादि के (**आपिः**) व्याप्त हुए आप उनको (**बोधि**) जानिये, हे (**वसो**) धन को प्राप्त! आप (**जरितृभ्यः**) स्तुतिकर्त्ता विद्वानों के लिये (**वयः**) जीवन को (**धाः**) धारण कीजिये॥६॥

**भावार्थः**-मनुष्यों को चाहिये कि ऐसी वाणी ग्रहण करें और सुनें कि जिससे धनसंग्रह होता है, सत्य की रक्षा की जाती और जीवन बढ़ता है॥६॥

**अथ राजविषयमाह॥**

अब राजा के विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**इन्द्र मरुत्व इह पाहि सोमं यथा शार्याते अपिबः सुतस्य।**

**तव प्रणीती तव शूर शर्मन्ना विवासन्ति कवयः सुयज्ञाः॥७॥**



www.9009.co.in

इन्द्र॑। म॒रु॒त्वः॒। इ॒ह। पा॒हि॒। सोम॑म्। यथा॑। शा॒र्या॒ते। अपि॑बः। सु॒तस्य॑। तव॑। प्रऽनी॑ती। तव॑। शू॒र॒। शर्म॑न्। आ। वि॒वा॒स॒न्ति॒। क॒वयः॑। सु॒ऽय॒ज्ञाः॥७॥

**पदार्थः**-(**इन्द्र**) ऐश्वर्य्यधारक (**मरुत्वः**) प्रशंसितधनयुक्त (**इह**) अस्मिन् संसारे (**पाहि**) रक्ष (**सोमम्**) ऐश्वर्य्यकारकम् (**यथा**) (**शार्याते**) यः शरीरे हिंसकान् याति प्राप्नोति तस्यास्मिन् व्यवहारे (**अपिबः**) पिब (**सुतस्य**) निष्पन्नस्य (**तव**) (**प्रणीती**) प्रकृष्टया नीत्या (**तव**) (**शूर**) दुष्टानां हिंसक (**शर्मन्**) सुखकारके गृहे (**आ**) (**विवासन्ति**) परिचरन्ति (**कवयः**) विद्वांसः (**सुयज्ञाः**) शोभना यज्ञाः सङ्गताः क्रिया येषान्ते॥७॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! त्वमिह सोमं पाहि। हे मरुत्वो! यथा शार्याते सुतस्य त्वमपिबः। हे शूर! ये सुयज्ञाः कवयस्तव प्रणीती तव शर्मन्त्सोममाविवासन्ति ताँस्त्वं पाहि॥७॥

**भावार्थः**-हे राजन्! यथा भवान् स्वं राष्ट्रमैश्वर्य्यं न्यायं धर्मं च रक्षति तथा येऽमात्यभृत्याः स्युस्तेषां सत्कारस्त्वया सदैव कर्त्तव्यः॥७॥

**पदार्थः**-हे (**इन्द्र**) ऐश्वर्य्य के धारण करनेवाले! आप (**इह**) इस संसार में (**सोमम्**) ऐश्वर्य्य करनेवाले की (**पाहि**) रक्षा कीजिये। और हे (**मरुत्वः**) उत्तम धनों से युक्त! (**यथा**) जिस प्रकार (**शार्याते**) हिंसा करनेवालों को प्राप्त होनेवालों के इस व्यवहार में (**सुतस्य**) उत्पन्न को आप (**अपिबः**) पान कीजिये। हे (**शूर**) दुष्टों के नाशकर्त्ता! जो (**सुयज्ञाः**) श्रेष्ठ संयुक्त क्रियायें जिनकी वे (**कवयः**) विद्वान् लोग (**तव**) आपकी (**प्रणीती**) उत्तम नीति से और (**तव**) आपके (**शर्मन्**) सुखकारक गृह में ऐश्वर्य्यकर्त्ता को (**आ, विवासन्ति**) प्राप्त होते हैं, उनकी आप रक्षा कीजिये॥७॥

**भावार्थः**-हे राजन्! जैसे आप अपने राज्य, ऐश्वर्य्य, न्याय और धर्म की रक्षा करते हैं, उसी प्रकार के आपके मन्त्री और नौकर आदि होवें, उनका सत्कार आपको सदा ही करना चाहिये॥७॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**स वा॑वशा॒न इ॒ह पा॑हि॒ सोमं॑ म॒रुद्भि॑रिन्द्र॒ सखि॑भिः सु॒तं नः॑।**

**जा॒तं यत्त्वा॒ परि॑ दे॒वा अभू॑षन् म॒हे भरा॑य पुरुहू॒त विश्वे॑॥८॥**

सः। वा॒व॒शा॒नः। इ॒ह। पा॒हि॒। सोम॑म्। म॒रुत्ऽभिः॑। इ॒न्द्र॒। सखि॑ऽभिः। सु॒तम्। नः॒। जा॒तम्। यत्। त्वा॒। परि॑। दे॒वाः। अभू॑षन्। म॒हे। भ॒रा॑य। पु॒रु॒ऽहू॒त॒। विश्वे॑॥८॥

**पदार्थः**-(**सः**) (**वावशानः**) कामयमानः (**इह**) अस्मिन् राज्यव्यवहारे (**पाहि**) (**सोमम्**) ऐश्वर्यम् (**मरुद्भिः**) वायुभिः सूर्य इव (**इन्द्र**) सकलैश्वर्यसम्पन्न (**सखिभिः**) सुहृद्भिः (**सुतम्**) उत्पन्नम् (**नः**) अस्माकम् (**जातम्**) प्रकटम् (**यत्**) येन (**त्वा**) त्वाम् (**परि**) सर्वतः (**देवाः**) विद्वांसः (**अभूषन्**) अलङ्कुर्युः (**महे**) महते (**भराय**) भरणीयाय संग्रामाय (**पुरुहूत**) बहुभिः प्रशंसित (**विश्वे**) सर्वे॥८॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे इन्द्र! इह स वावशानस्त्वं मरुद्भिः सूर्यइव सखिभिः सह नो जातं सुतं सोमं पाहि। हे पुरुहूत! विश्वे देवा यद्येन महे भराय त्वा पर्यभूषंस्तेन त्वमस्मान्त्सर्वतोऽलङ्कुरु॥८॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यथा सूर्यो वायुसहायेन सर्वं रक्षति तथैवाप्तैर्मित्रैः सह राजा सर्वं राष्ट्रं रक्षेद्येऽमात्यभृत्या राज्यहितकारिणः स्युस्तान् सर्वदा सत्कुर्यात्॥८॥

**पदार्थः**-हे **(इन्द्र)** सम्पूर्ण ऐश्वर्यों से युक्त! **(इह)** इस राज्य के व्यवहार में **(सः)** वह **(वावशानः)** कामना करते हुए आप **(मरुद्भिः)** पवनों से सूर्य के सदृश **(सखिभिः)** मित्रों के साथ **(नः)** हम लोगों के **(जातम्)** प्रकट और **(सुतम्)** उत्पन्न **(सोमम्)** ऐश्वर्य की **(पाहि)** रक्षा कीजिये और हे **(पुरुहूत)** बहुतों से प्रशंसित! **(विश्वे)** सम्पूर्ण **(देवाः)** विद्वान् लोग **(यत्)** जिससे **(महे)** बड़े **(भराय)** पोषण करने योग्य संग्राम के लिये **(त्वा)** आपको **(परि)** सब प्रकार **(अभूषन्)** शोभित करें, जिससे आप हम लोगों को सब प्रकार शोभित करें॥८॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे सूर्य्य वायुरूप सहाय से सबकी रक्षा करता है, वैसे ही यथार्थवक्ता मित्रों के साथ राजा सम्पूर्ण राज्य की रक्षा करे और जो मन्त्री और नौकर राज्य के हितकारी होवें, उनका सब काल में सत्कार करें॥८॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अप्तूर्ये मरुत आपिरेषोऽमन्दन्निन्द्रमनु दातिवाराः।**

**तेभिः साकं पिबतु वृत्रखादः सुतं सोमं दाशुषः स्वे सधस्थे॥९॥**

**अप्ऽतूर्ये। मरुतः। आपिः। एषः। अमन्दन्। इन्द्रम्। अनु। दातिऽवाराः। तेभिः। साकम्। पिबतु। वृत्रऽखादः। सुतम्। सोमम्। दाशुषः। स्वे। सधऽस्थे॥९॥**

**पदार्थः**-**(अप्तूर्य्ये)** अपोभिः कर्मभिः प्रेरयितव्ये **(मरुतः)** मनुष्याः **(आपिः)** यः समन्तात् पिबति शुभगुणव्याप्तो वा **(एषः)** **(अमन्दन्)** आनन्दयेयुः **(इन्द्रम्)** राजानम् **(अनु)** **(दातिवाराः)** ये दातिं लवनं छेदनं वृण्वन्ति **(तेभिः)** **(साकम्)** सह **(पिबतु)** **(वृत्रखादः)** यो वृत्रं खादति स्थिरीकरोति सः **(सुतम्)** सिद्धम् **(सोमम्)** ऐश्वर्यम् **(दाशुषः)** दातुः **(स्वे)** स्वकीये **(सधस्थे)** समानस्थाने॥९॥

**अन्वयः**-ये दातिवारा मरुतोऽप्तूर्य्ये इन्द्रममन्दँस्तेभिस्साकमेष आपिर्वृत्रखादो दाशुषस्स्वे सधस्थे सुतं सोममनु पिबतु ताँस्तञ्च राजा सततं हर्षयेत्॥९॥

**भावार्थः**-ये नराः सत्याचारं प्रति प्रेरित्वा दुष्टाचारान् निषेध्य सर्वान् धार्मिकान् कृत्वाऽऽनन्देयुस्तैः सह राजाऽन्वानन्देत्॥९॥

**पदार्थः**-जो **(दातिवाराः)** छेदन करनेवाले **(मरुतः)** मनुष्य **(अप्तूर्य्ये)** कर्मों से प्रेरणा करने योग्य **(इन्द्रम्)** राजा को **(अमन्दन्)** आनन्द देवें **(तेभिः)** उनके **(साकम्)** साथ **(एषः)** यह **(आपिः)** सब



www.9009.co.in

प्रकार पीनेवाला वा शुभ गुणों से व्याप्त **(वृत्रखादः)** मेघ को स्थिर करनेवाला **(दाशुषः)** दान करनेवाले के **(स्वे)** अपने **(सधस्थे)** तुल्य स्थान में **(सुतम्)** सिद्ध **(सोमम्)** ऐश्वर्य्य को **(अनु, पिबतु)** पीछे पान करे, उसको आप राजा निरन्तर प्रसन्न करें॥९॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य सत्य आचरण की प्रेरणा और दुष्ट आचरणों का निषेध और सबको धार्मिक करके आनन्द देवें, उनके साथ राजा आनन्द करे॥९॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**इदं ह्यन्वोजसा सुतं राधानां पते। पिबा त्व१स्य गिर्वणः॥१०॥**

**इदम्। हि। अनु। ओजसा। सुतम्। राधानाम्। पते। पिब। तु। अस्य। गिर्वणः॥१०॥**

**पदार्थः**-**(इदम्)** **(हि)** खलु **(अनु)** **(ओजसा)** बलेन **(सुतम्)** साधितम् **(राधानाम्)** धनानाम् **(पते)** पालक **(पिब)**। अत्र **द्व्यचोतस्तिङ** इति दीर्घः। **(तु)** **(अस्य)** **(गिर्वणः)** यौ गीर्यते याच्यते तत्सम्बुद्धौ॥१०॥

**अन्वयः**-हे गिर्वणो राधानां पते! त्वमोजसाऽस्येदं सुतं तु पिब हि अनु पिपासयेदं पिब॥१०॥

**भावार्थः**-हे राजँस्त्वं हि सदैव धनैश्वर्य्यं रक्षित्वा प्राप्तं राज्यमन्वेक्षणेन वर्द्धयित्वा सुखी भव॥१०॥

**पदार्थः**-हे **(गिर्वणः)** प्रार्थित हुए **(राधानाम्)** धनों के **(पते)** पालन करनेवाले! आप **(ओजसा)** बल से **(अस्य)** इसके **(इदम्)** इस **(सुतम्)** सिद्ध किये गये सोमलतारूप रस का **(पिब)** पान कीजिये **(हि)** निश्चय से और पान करने की इच्छा से इस सोमलता का पान करो॥१०॥

**भावार्थः**-हे राजन्! आप निश्चय सब काल में धन और ऐश्वर्य्य की रक्षा करके और जो प्राप्त राज्य उसकी देख-भाल से वृद्धि करके सुखी होइये॥१०॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**यस्ते अनु स्वधामसत् सुते नि यच्छ तन्वम्। स त्वा ममत्तु सोम्यम्॥११॥**

**यः। ते। अनु। स्वधाम्। असत्। सुते। नि। यच्छ। तन्वम्। सः। त्वा। ममत्तु। सोम्यम्॥११॥**

**पदार्थः**-**(यः)** विद्वान् **(ते)** तव **(अनु)** **(स्वधाम्)** अन्नम् **(असत्)** भवेत् **(सुते)** **(नि)** **(यच्छ)** निगृह्णीहि **(तन्वम्)** शरीरम् **(सः)** **(त्वा)** त्वाम् **(ममत्तु)** आनन्दतु **(सोम्यम्)** सोमे भवम्॥११॥

**अन्वयः**-हे राजन्! यस्ते सुते स्वधामन्वसत् स त्वा ममत्तु त्वं तन्वं नियच्छ सोम्यमाचर॥११॥

**भावार्थः**-हे राजन्! यो भवदनुकूलो भूत्वा धर्मात्मा सन् प्रजा आनन्दयेत् स श्रीमत ऐश्वर्यं प्राप्नुयात् त्वं जितेन्द्रियो भूत्वा प्रजाः साधिः॥११॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-हे राजन्! **(यः)** जो **(ते)** आपके **(सुते)** उत्पन्न सोमलता के रस में **(स्वधाम्)** अन्न **(अनु, असत्)** पीछे होवे **(सः)** वह **(त्वा)** आपको **(ममत्तु)** आनन्द देवे और आप **(तन्वम्)** शरीर को **(नियच्छ)** ग्रहण कीजिये **(सोम्यम्)** सोमलता में उत्पन्न का पान आदि आचरण कीजिये॥११॥

**भावार्थः**-हे राजन्! जो आपके अनुकूल और धर्मात्मा होकर प्रजाजनों को आनन्दित करे, वह लक्ष्मीवान् से ऐश्वर्य को प्राप्त होवे और आप इन्द्रियजित् होकर प्रजाओं को सिद्ध कीजिये॥११॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**प्र ते॑ अश्नोतु कु॒क्ष्योः प्रेन्द्र ब्रह्म॑णा॒ शिर॑ः। प्र बा॒हू शू॑र॒ राध॑से॥१२॥१६॥**

**प्र। ते॒। अ॒श्नो॒तु॒। कु॒क्ष्योः॑। प्र। इ॒न्द्र॒। ब्रह्म॑णा। शिर॑ः। प्र। बा॒हू इति॑। शू॒र॒। राध॑से॥१२॥**

**पदार्थः**-**(प्र)** **(ते)** तव **(अश्नोतु)** प्राप्नोतु। अत्र व्यत्ययेन परस्मैपदम्। **(कुक्ष्योः)** उदरपार्श्वयोः **(प्र)** **(इन्द्र)** राजवर **(ब्रह्मणा)** धनेन **(शिरः)** उत्तमाङ्गम् **(प्र)** **(बाहू)** भुजौ **(शूर)** **(राधसे)** धनाय॥१२॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! यस्ते कुक्ष्योर्ब्रह्मणा सह रसः प्राश्नोतु। हे शूर! तव शिरो बाहू राधसे प्राश्नोतु तं त्वं पालय॥१२॥

**भावार्थः**-हे राजँस्तदेव त्वयाऽऽशितव्यं पातव्यं च यदुदरं प्राप्य विकृतं सद्रोगानुत्पाद्य बुद्धिं न हिंस्याद् येन सततं त्वयि प्रज्ञा वर्द्धित्वा राज्यमैश्वर्यं च वर्धेतेति॥१२॥

अत्र राजप्रजाधर्मवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इत्येकाऽधिकपञ्चाशत्तमं सूक्तं षोडशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे **(इन्द्र)** राजाओं में श्रेष्ठ जो **(ते)** आपके **(कुक्ष्योः)** पेट के आस-पास के भागों में **(ब्रह्मणा)** धन के साथ रस को **(प्र)** **(अश्नोतु)** प्राप्त होवे और हे **(शूर)** वीर पुरुष! **(ते)** आपके **(शिरः)** श्रेष्ठ अङ्ग मस्तक को **(बाहू)** भुजाओं को **(राधसे)** धन के लिये प्राप्त होवे, उसका आप पालन करिये॥१२॥

**भावार्थः**-हे राजन्! वही वस्तु आपको खाना तथा पीना चाहिये कि जो पेट में प्राप्त हो तथा विकृत हो रोगों को उत्पन्न करके बुद्धि का न नाश करे और जिससे आप में बुद्धि बढ़ कर राज्य और ऐश्वर्य बढ़े॥१२॥

इस सूक्त में राजा और प्रजा के धर्म [का] वर्णन होने से इस सूक्त के अर्थ की पिछले सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह इक्यावनवां सूक्त और सोलहवां वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

**अथाऽष्टर्चस्य द्विपञ्चाशत्तमस्य सूक्तस्य विश्वामित्र ऋषिः। इन्द्रो देवता। १, ३, ४ गायत्री। २ निचृद्गायत्री छन्दः। षड्जः स्वरः। ६ जगती छन्दः। निषादः स्वरः। ५, ७ निचृत् त्रिष्टुप्। ८ त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः॥**

***अथ राजविषयमाह॥***

अब आठ ऋचावाले बावनवें सूक्त का आरम्भ है। उसके प्रथम मन्त्र में राजा के विषय को कहते हैं॥

**धानावन्तं करम्भिणमपूपवन्तमुक्थिनम्। इन्द्र प्रातर्जुषस्व नः॥ १॥**

**धानाऽवन्तम्। करम्भिणम्। अपूपऽवन्तम्। उक्थिनम्। इन्द्र। प्रातः। जुषस्व। नः॥ १॥**

**पदार्थः**-(**धानावन्तम्**) बह्व्यो धाना विद्यन्ते यस्य तम् (**करम्भिणम्**) बहवः करम्भा पुरुषार्थेन संशोधिता दध्यादयः पदार्था विद्यन्ते यस्य तम् (**अपूपवन्तम्**) प्रशस्ता अपूपा विद्यन्ते यस्य तम् (**उक्थिनम्**) बहून्युक्थानि वक्तुं योग्यानि वेदस्तोत्राणि विद्यन्ते यस्य तम् (**इन्द्र**) ऐश्वर्यधारक (**प्रातः**) प्रातःकाले (**जुषस्व**) सेवस्व (**नः**) अस्मान्॥ १॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! त्वं यथा प्रातर्धानावन्तं करम्भिणमपूपवन्तमुक्थिनं प्रातर्जुषस्व तथा नोऽस्मान् जुषस्व॥ १॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यथाऽर्थ्यैश्वर्यवन्तं याचते तथैव राजा राजधर्मबोधायाऽऽप्तान् विदुषो याचेत॥ १॥

**पदार्थः**-हे (**इन्द्र**) ऐश्वर्य के धारण करनेवाले! आप जैसे (**प्रातः**) प्रातःकाल में (**धानावन्तम्**) बहुत भूंजे हुए यव विद्यमान जिसके उस (**करम्भिणम्**) बहुत पुरुषार्थ अर्थात् परिश्रम से शुद्ध किये गये दधि आदि पदार्थों से युक्त (**अपूपवन्तम्**) उत्तम पूवा विद्यमान जिसके उस (**उक्थिनम्**) बहुत कहने योग्य वेद के स्तोत्र विद्यमान जिसके उसका (**प्रातः**) प्रातःकाल सेवन करते हो, वैसे (**नः**) हम लोगों का (**जुषस्व**) सेवन करो॥ १॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे अर्थी जन ऐश्वर्यवाले से याचना करता है, वैसे ही राजा जन राजधर्म जानने के लिये श्रेष्ठ यथार्थवक्ता विद्वानों से याचना करे॥ १॥

**पुनः राजधर्मविषयमाह॥**

फिर राजधर्म विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**पुरोळाशं पचत्यं जुषस्वेन्द्रा गुरस्व च। तुभ्यं हव्यानि सिस्रते॥ १॥**

**पुरोळाशम्। पचत्यम्। जुषस्व। इन्द्र। आ। गुरस्व। च। तुभ्यम्। हव्यानि। सिस्रते॥ २॥**

**पदार्थः**-(**पुरोळाशम्**) सुसंस्कारैर्निष्पादितमन्नविशेषम् (**पचत्यम्**) पचने साधुम् (**जुषस्व**) सेवस्व (**इन्द्र**) भोक्तः (**आ**) (**गुरस्व**) उद्यमं कुरुष्व। अत्र व्यत्ययेनात्मनेपदम्। (**च**) (**तुभ्यम्**) (**हव्यानि**) (**सिस्रते**) प्राप्नुवन्तु॥ २॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे इन्द्र! त्वं पचत्यं पुरोळाशं जुषस्व तदा गुरस्व च यतस्तुभ्यं हव्यानि सिस्रते॥२॥

**भावार्थः**-हे राजँस्त्वं रोगनाशकं बुद्धिवर्द्धकमन्नपानं भुक्त्वाऽरोगो भूत्वा सततमुद्यमं कुरु येन भवन्तं सर्वाणि सुखानि प्राप्नुयुः॥२॥

**पदार्थः**-हे **(इन्द्र)** ऐश्वर्य्यों के भोगनेवाले! आप **(पचत्यम्)** उत्तम प्रकार पाकयुक्त **(पुरोळाशम्)** उत्तम संस्कारों से उत्पन्न किये गये अन्न विशेष का **(जुषस्व)** सेवन करिये तब **(गुरस्व)** उद्यम करो और जिससे **(तुभ्यम्)** आपके लिये **(हव्यानि)** हवन करने योग्य पदार्थों को **(सिस्रते)** प्राप्त हों॥२॥

**भावार्थः**-हे राजन्! आप रोगनाशक और बुद्धि के बढ़ानेवाले अन्नपान का भोग कर तथा रोगरहित होकर निरन्तर उद्यम को करो, जिससे आपको सम्पूर्ण सुख प्राप्त होवें॥२॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**पु॒रो॒ळाशं॑ च नो॒ घसो॑ जो॒षया॑से॒ गिर॑श्च नः। व॒धू॒युरि॑व॒ योष॑णाम्॥३॥**

**पु॒रो॒ळाश॑म्। च॒। न॒ः। घस॑ः। जो॒षया॑से। गिर॑ः। च॒। न॒ः। व॒धू॒युः॒ऽइ॑व। योष॑णाम्॥३॥**

**पदार्थः**-**(पुरोळाशम्)** पुरस्ताद्दातुं योग्यम् **(च)** **(नः)** अस्माकम् **(घसः)** भक्षय **(जोषयासे)** सेवयस्व **(गिरः)** वाचः **(च)** **(नः)** अस्माकम् **(वधूयुरिव)** यथाऽऽत्मनो वधूमिच्छुः **(योषणाम्)** स्वस्त्रियम्॥३॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! राजँस्त्वं नः पुरोळाशं घसोऽस्मान् भोजय च। योषणां वधूयुरिव नो जोषयासे वयं तव च गिरो जोषयेम॥३॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। राजप्रजाजनाः परस्परैश्वर्य्यं स्वकीयमेव मन्येरन्। यथा स्त्रीकामः प्रियां भार्य्यां प्राप्याऽऽनन्दति तथैव राजा धार्मिकीः प्रजा लब्ध्वा सततं हर्षेत्॥३॥

**पदार्थः**-हे राजन्! आप **(नः)** हम लोगों के **(पुरोडाशम्)** प्रथम देने के योग्य को **(घसः)** भक्षण करो और हम लोगों के लिये भक्षण कराओ **(च)** और **(योषणाम्)** अपनी स्त्री को **(वधूयुरिव)** अपनी स्त्रीविषयिणी इच्छा करनेवाले के सदृश **(नः)** हम लोगों की **(जोषयासे)** सेवा करो **(च)** और हम लोग आपकी **(गिरः)** वाणियों का **(जोषयेम)** सेवन करें॥३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। राजा और प्रजाजन आपस के ऐश्वर्य्य को अपना ही समझें और जैसे स्त्री की कामना करनेवाला पुरुष प्रिया स्त्री को प्राप्त होकर आनन्दित होता है, वैसे ही राजा धर्म करनेवाली प्रजाओं को प्राप्त कर निरन्तर प्रसन्न होवे॥३॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**पु॒रो॒ळाशं॑ सनश्रुत प्रातःसा॒वे जु॑षस्व नः। इन्द्र॒ क्रतु॒र्हि ते॑ बृ॒हन्॥४॥**



www.9009.co.in

**पुरोळाशम्। सनऽश्रुत। प्रातःऽसावे। जुषस्व। नः। इन्द्र। क्रतुः। हि। ते। बृहन्॥४॥**

**पदार्थः**-(**पुरोळाशम्**) सुसंस्कृतमन्नविशेषम् (**सनश्रुत**) सत्याऽसत्यविवेकिनां सकाशाच्छ्रुतं येन यद्वा सनं सत्यासत्यविभाजकं वचनं श्रुतं येन तत्सम्बुद्धौ (**प्रातःसावे**) यः प्रातः सूयते निष्पद्यते तस्मिन् (**जुषस्व**) सेवस्व (**नः**) अस्माकम् (**इन्द्र**) विद्यैश्वर्ययुक्त (**क्रतुः**) प्रज्ञा कर्म वा (**हि**) यतः (**ते**) तव (**बृहन्**) महान्॥४॥

**अन्वयः**-हे सनश्रुतेन्द्र! हि यतस्ते क्रतुर्बृहन्नस्ति तस्मात्त्वं प्रातःसावे नः पुरोळाशं जुषस्व॥४॥

**भावार्थः**-मनुष्यैर्येषु यादृशी विद्या शीलता भवेत् तादृश्येव तेषु सत्कृपा कार्या॥४॥

**पदार्थः**-हे (**सनश्रुत**) सत्य और असत्य के विचारकर्त्ताओं से उत्तम कृत्य सुना जिसने ऐसे (**इन्द्र**) विद्या और ऐश्वर्य से युक्त (**हि**) जिससे (**ते**) आपकी (**क्रतुः**) बुद्धि वा कर्म्म (**बृहन्**) बड़ा है तिससे आप (**प्रातःसावे**) जो प्रातःकाल में किया जाय उसमें (**नः**) हम लोगों के (**पुरोळाशम्**) उत्तम प्रकार संस्कारयुक्त अन्न विशेष का (**जुषस्व**) सेवन करो॥४॥

**भावार्थः**-मनुष्यों को चाहिये कि जिन पुरुषों में जैसी विद्या और शीलता होवे, वैसी ही उन पर उत्तम कृपा करें॥४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**माध्यंदिनस्य सवनस्य धानाः पुरोळाशमिन्द्र कृष्वेह चारुम्।**

**प्र यत् स्तोता जरिता तूर्ण्यर्थो वृषायमाण उप गीर्भिरीट्टे॥५॥१७॥**

**माध्यंदिनस्य। सवनस्य। धानाः। पुरोळाशम्। इन्द्र। कृष्व। इह। चारुम्। प्र। यत्। स्तोता। जरिता। तूर्णिऽअर्थः। वृषऽयमाणः। उप। गीःऽभिः। ईट्टे॥५॥**

**पदार्थः**-(**माध्यन्दिनस्य**) मध्यन्दिने भवस्य (**सवनस्य**) कर्मविशेषस्य (**धानाः**) भृष्टान्नानि (**पुरोळाशम्**) (**इन्द्र**) (**कृष्व**) कुरुष्व (**इह**) (**चारुम्**) भक्षणीयं सुन्दरम् (**प्र**) (**यत्**) यः (**स्तोता**) प्रशंसकः (**जरिता**) भवतः सेवकः (**तूर्ण्यर्थः**) तूर्णिः सद्योऽर्थो यस्य सः (**वृषायमाणः**) वृषं बलं कुर्वाणः (**उप**) (**गीर्भिः**) (**ईट्टे**) ऐश्वर्यवान् भवेत्॥५॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! त्वं माध्यन्दिनस्य सवनस्य मध्ये या धानाश्चारुं पुरोळाशं त्वमिह कृष्व। यद्यो वृषायमाणस्तूर्ण्यर्थो जरिता स्तोता गीर्भिः प्रोपेट्टे स तव सत्कर्त्तव्यो भवेत्॥५॥

**भावार्थः**-ये राजजना ऋत्विग्वद्राज्यं वर्धयेयुस्तान् राजा सत्कारेण हर्षयेत्॥५॥

**पदार्थः**-हे (**इन्द्र**) प्रतापयुक्त! आप (**माध्यन्दिनस्य**) मध्य दिन में होनेवाले (**सवनस्य**) कर्म विशेष के मध्य में जो (**धानाः**) भूंजे हुए अन्न और (**चारुम्**) भक्षण करने योग्य सुन्दर (**पुरोळाशम्**) अन्न विशेष का आप (**इह**) इस उत्तम कर्म में (**कृष्व**) संग्रह कीजिये और (**यत्**) जो (**वृषायमाणः**) जल को



www.9009.co.in

करनेवाला (**तूर्ण्यर्थः**) शीघ्र है प्रयोजन जिसका वह (**जरिता**) आपका सेवाकारी और (**स्तोता**) प्रशंसा करनेवाला (**प्र, उप**) समीप में (**गीर्भिः**) वाणियों से (**ईट्टे**) ऐश्वर्य्यवान् हो, वह आपके सत्कार करने योग्य होवे॥५॥

**भावार्थः**-जो राजा के जन ऋत्विजों के सदृश राज्य की वृद्धि करें, उनको राजा सत्कार से प्रसन्न करे॥५॥

**अथाऽध्यापकविषयमाह॥**

अब अध्यापक के विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**तृतीये धाना: सवने पुरुष्टुत पुरोळाशमाहुतं मामहस्व नः।**

**ऋभुमन्तं वाजवन्तं त्वा कवे प्रयस्वन्त उप शिक्षेम धीतिभिः॥६॥**

**तृतीये। धानाः। सवने। पुरुऽस्तुत। पुरोळाशम्। आऽहुतम्। ममहस्व। नः। ऋभुऽमन्तम्। वाजऽवन्तम्। त्वा। कवे। प्रयस्वन्तः। उप। शिक्षेम। धीतिऽभिः॥६॥**

**पदार्थः**-(**तृतीये**) त्रयाणां पूरके (**धानाः**) अग्निना भृष्टाऽन्नविशेषाः (**सवने**) सायंकाले कर्त्तव्ये कर्मणि (**पुरुष्टुत**) बहुभिः प्रशंसित (**पुरोळाशम्**) सुसंस्कृतान्नविशेषम् (**आहुतम्**) कृताऽऽह्वानम् (**मामहस्व**) भृशं सत्कुरु (**नः**) अस्मान् (**ऋभुमन्तम्**) प्रशस्ता ऋभवो मेधाविनो विद्यन्ते यस्य तम् (**वाजवन्तम्**) वाजाः शुष्कान्नविशेषा विद्यन्ते यस्य तम् (**त्वा**) त्वाम् (**कवे**) विद्वन्! (**प्रयस्वन्तः**) प्रयतमानाः (**उप**) (**शिक्षेम**) (**धीतिभिः**) अङ्गुलीभिर्निर्दिष्टैर्वचनार्थैः॥६॥

**अन्वयः**-हे पुरुष्टुत कवे! प्रयस्वन्तो वयं धीतिभिस्तृतीये सवने पुरोळाशं धाना ऋभुमन्तं वाजवन्तमाहुतं त्वोपशिक्षेम स त्वं नो मामहस्व॥६॥

**भावार्थः**-यथा विद्वांस ऋत्विजो यजमानादिभ्यो यज्ञकृत्यं शिक्षन्ति तथैव सर्वा विद्या हस्तादिक्रियया प्रत्यक्षीकृत्याऽन्यान् प्रत्यध्यापकाः साक्षात्कारयन्तु॥६॥

**पदार्थः**-हे (**पुरुष्टुत**) बहुतों से प्रशंसित (**कवे**) विद्वान् पुरुष! (**प्रयस्वन्तः**) प्रयत्न करते हुए हम लोग (**धीतिभिः**) अंगुलियों से दिखाये गये वचनार्थों से (**तृतीये**) तीन की पूर्त्ति करनेवाले (**सवने**) सायंकाल में करने योग्य कर्म में (**पुरोळाशम्**) उत्तम संस्कारयुक्त अन्नविशेष और (**धानाः**) अग्नि से भूंजे गये अन्न विशेषों के तुल्य (**ऋभुमन्तम्**) श्रेष्ठ बुद्धिमानों से युक्त (**वाजवन्तम्**) शुष्क अन्नविशेष विद्यमान जिसके उस (**आहुतम्**) पुकारे गये (**त्वा**) आपको (**उप, शिक्षेम**) शिक्षा देवें वह आप (**नः**) हम लोगों का (**मामहस्व**) अत्यन्त सत्कार करिये॥६॥

**भावार्थः**-जैसे विद्वान् यज्ञ करनेवाले यजमानों के लिये यज्ञकृत्य की शिक्षा देते हैं, वैसे ही सम्पूर्ण विद्याओं का हस्त आदि क्रियाओं से प्रत्यक्ष अर्थात् अभ्यास करके अन्य जनों के लिये अध्यापक लोग प्रत्यक्ष करावें॥६॥



www.9009.co.in

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**पूषण्वते ते चकृमा करम्भं हरिवते हर्यश्वाय धानाः।**

**अपूपमद्धि सगणो मरुद्भिः सोमं पिब वृत्रहा शूर विद्वान्॥७॥**

**पूषण्ऽवते। ते। चकृम। करम्भम्। हरिऽवते। हरिऽअश्वाय। धानाः। अपूपम्। अद्धि। सऽगणः। मरुत्ऽभिः। सोमम्। पिब। वृत्रऽहा। शूर। विद्वान्॥७॥**

**पदार्थः**-(**पूषण्वते**) बहवः पूषणः पुष्टिकरा विद्यन्ते यस्य तस्मै (**ते**) तुभ्यम् (**चकृम**) कुर्य्याम। अत्र **संहितायामिति** दीर्घः। (**करम्भम्**) दध्यादियुक्तं भक्ष्यविशेषम् (**हरिवते**) प्रशस्ताऽश्वादियुक्ताय (**हर्य्यश्वाय**) हरणशीला आशुगमिनोऽश्वास्तुरङ्गा अग्न्यादयो वा विद्यन्ते यस्य तस्मै (**धानाः**) (**अपूपम्**) (**अद्धि**) भक्ष (**सगणः**) गणेन सह वर्त्तमानः (**मरुद्भिः**) उत्तमैर्मनुष्यैः सह (**सोमम्**) उत्तमौषधिरसम् (**पिब**) (**वृत्रहा**) प्राप्तधनः (**शूरः**) दुष्टानां हिंसक (**विद्वान्**)॥७॥

**अन्वयः**-हे शूर! यथा वृत्रहा विद्वान् पूषण्वते हरिवते हर्य्यश्वाय ते करम्भं धाना अपूपं दद्यात् तं सगणस्त्वं मरुद्भिः सहाऽद्धि सोमं पिब। तथैव वयं त्वदर्थं चकृम॥७॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। ये विद्याविनयसंपन्नास्तेऽर्हाय राज्ञ उत्तमान् पदार्थान् दत्वैनं सततं सत्कुर्य्युस्ते राज्ञाऽपि सर्वदा सत्कर्त्तव्याः॥७॥

**पदार्थः**-हे (**शूर**) दुष्ट पुरुष के नाशकर्त्ता! जैसे (**वृत्रहा**) धन से युक्त विद्वान् पुरुष (**पूषण्वते**) पुष्टि करनेवाले विद्यमान हैं जिसके उस (**हरिवते**) उत्तम घोड़े आदि से युक्त के तथा (**हर्य्यश्वाय**) हरणशील और शीघ्र चालवाले घोड़े वा अग्नि आदि विद्यमान हैं जिसके उस (**ते**) आपके लिये (**करम्भम्**) दधि आदि से युक्त भोजन करने के पदार्थविशेष और (**धानाः**) भूंजे हुए अन्न तथा (**अपूपम्**) पुआ को देवे उसको (**सगणः**) समूह के सहित वर्त्तमान आप (**मरुद्भिः**) उत्तम मनुष्यों के पास (**अद्धि**) भक्षण कीजिये और (**सोमम्**) उत्तम ओषधि के रस को (**पिब**) पान कीजिये और वैसे ही हम लोग आपके लिये (**चकृम**) करें॥७॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो विद्या और नम्रता से युक्त हैं, वे श्रेष्ठ राजा के लिये उत्तम पदार्थों को देकर इसका निरन्तर सत्कार करें और वे राजा से भी सर्वदा सत्कार के योग्य हैं॥७॥

**अथ यज्ञान्नसञ्चयनविषयमाह॥**

अब यज्ञ के अन्न के इकट्ठे करने के विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**प्रति धाना भरत तूयमस्मै पुरोळाशं वीरतमाय नृणाम्।**



www.9009.co.in

**दि॒वेदि॑वे स॒दृशी॑रिन्द्र॒ तुभ्यं॒ वर्ध॑न्तु त्वा सोम॒पेया॑य धृष्णो॥८॥१८॥**

**प्रति॑। धा॒नाः॥ भ॒र॒त॒। तूय॑म्। अ॒स्मै॒। पु॒रो॒ळाश॑म्। वी॒रऽत॑माय। नृ॒णाम्। दि॒वेऽदि॑वे। स॒ऽदृशीः॑। इ॒न्द्र॒। तुभ्य॑म्। वर्ध॑न्तु। त्वा॒। सो॒म॒ऽपेया॑य। धृ॒ष्णो॒ इति॑॥८॥**

**पदार्थः**-(**प्रति**) (**धानाः**) (**भरत**) (**तूयम्**) तूर्णं सुखकरम् (**अस्मै**) (**पुरोळाशम्**) (**वीरतमाय**) अत्युत्तमाय वीराय (**नृणाम्**) नायकानां मध्ये (**दिवेदिवे**) प्रतिदिनम् (**सदृशीः**) समानस्वरूपाः सेनाः (**इन्द्र**) दुष्टदलविदारक (**तुभ्यम्**) (**वर्द्धन्तु**) वर्धन्ताम्। अत्र व्यत्ययेन परस्मैपदम्। (**त्वा**) त्वाम् (**सोमपेयाय**) पेयः सोमो येन तस्मै (**धृष्णो**) प्रगल्भ॥८॥

**अन्वयः**-हे धृष्णो इन्द्र! याः सदृशीः सेना दिवेदिवे नृणां वीरतमाय सोमपेयाय तुभ्यं वर्द्धन्तु। ये विद्वांसस्त्वा वर्द्धयन्तु ताँस्त्वं वर्धयस्व। हे विद्वांसो! यूयमस्मै धानाः पुरोळाशं च तूयं प्रति भरत॥८॥

**भावार्थः**-सर्वे राजजनाः प्रजाजना राज्योन्नतये सर्वान् सम्भारान् सञ्चिन्वतु तैः सुपरीक्षिता वीरसेनाः सम्पाद्य दुष्टानां पराजयं श्रेष्ठानां विजयं कृत्वा प्रतिदिनमानन्दयितव्यमिति॥८॥

अत्र राजप्रजायज्ञाऽन्नसंस्कारादिवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिरस्तीति वेद्यम्॥

**इति द्विपञ्चाशत्तमं सूक्तं अष्टादशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे (**धृष्णो**) वाणी में चतुर (**इन्द्र**) दुष्टों के समूह के नाश करनेवाले! जो (**सदृशीः**) तुल्य स्वरूपवाली सेना (**दिवेदिवे**) प्रतिदिन (**नृणाम्**) अग्रणी पुरुषों के मध्य में (**वीरतमाय**) अत्यन्त श्रेष्ठ वीर पुरुष (**सोमपेयाय**) पान किया सोम के रस का जिसने उन आप के लिये (**वर्द्धन्तु**) वृद्धि को प्राप्त हों और जो विद्वान् लोग (**त्वा**) आपके लिये वृद्धि करें, उनकी आप वृद्धि करो और हे विद्वानो! आप लोग (**अस्मै**) इसके लिये (**धानाः**) भूंजे हुए अन्न और (**पुरोळाशम्**) उत्तम प्रकार संस्कारयुक्त अन्न विशेष और जो कि (**तूयम्**) शीघ्र सुखकारक उसको (**प्रति भरत**) पूर्ण कीजिये॥८॥

**भावार्थः**-सम्पूर्ण राजजन और प्रजा के जन राज्य की वृद्धि के लिये सम्पूर्ण पदार्थों को इकट्ठे करें, उनसे उत्तम प्रकार परीक्षित वीर सेनाओं को करके और दुष्ट पुरुषों का पराजय और श्रेष्ठ पुरुषों का विजय करके प्रतिदिन आनन्द करना चाहिये॥८॥

इस सूक्त में राजा, प्रजा और यज्ञान्नसंस्कारादि के गुणों का वर्णन होने से इस सूक्त के अर्थ की पिछले सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति है, यह जानना चाहिये॥

**यह बावनवां सूक्त और अठारहवां वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

अथ चतुर्विंशत्यृचस्य त्रिपञ्चाशत्तमस्य सूक्तस्य विश्वामित्र ऋषिः। १ इन्द्रापर्वतौ। २-१४, २१-२४ इन्द्रः। १५, १६ वाक्। १७-२० रथाङ्गानि देवताः। १, ५, ९, २१ निचृत् त्रिष्टुप्। २, ६, ७, १४, १७, १९, २३, २४ त्रिष्टुप्। ३, ४, ८, १५ स्वराट् त्रिष्टुप्। ११ भुरिक् त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः। १२, २२ अनुष्टुप्। २० भुरिगनुष्टुप् छन्दः। गान्धारः स्वरः। १०, १६ निचृज्जगती छन्दः। निषादः स्वरः। १३ निचृद्गायत्री छन्दः। षड्जः स्वरः। १८ निचृद्बृहती छन्दः। मध्यमः स्वरः॥

*अथ राजसेनाविषयमाह॥*

अब चौबीस ऋचावाले तिरेपनवें सूक्त का आरम्भ है। उसके प्रथम मन्त्र में राजा की सेना के विषय को कहते हैं॥

**इन्द्रापर्वता बृहता रथेन वामीरिष आ वहतं सुवीराः।**

**वीतं हव्यान्यध्वरेषु देवा वर्धेथां गीर्भिरिळया मदन्ता॥ १॥**

**इन्द्रापर्वता बृहता। रथेन। वामीः। इषः। आ। वहतम्। सुऽवीराः। वीतम्। हव्यानि। अध्वरेषु। देवा। वर्धेथाम्। गीःऽभिः। इळया। मदन्ता॥ १॥**

**पदार्थः**-(**इन्द्रापर्वता**) विद्युन्मेघामिव राज्यसेनाधीशौ (**बृहता**) महता (**रथेन**) (**वामीः**) प्रशस्ताः (**इषः**) अन्नाद्याः (**आ**) (**वहतम्**) प्राप्नुतम् (**सुवीराः**) शोभना वीरा याभ्यस्ताः (**वीतम्**) व्याप्नुतम् (**हव्यानि**) दातुमादातुमर्हाणि (**अध्वरेषु**) अहिंसनीयेषु यज्ञेषु (**देवा**) दिव्यसुखप्रदौ (**वर्धेथाम्**) (**गीर्भिः**) सुशिक्षिताभिर्वाग्भिः (**इळया**) सर्वशास्त्रप्रकाशिकया वाचा। **इळेति वाङ्नामसु पठितम्।** (निघं०१.११) (**मदन्ता**) का[म]यमानौ विद्वांसौ॥ १॥

**अन्वयः**-हे सभासेनेशौ! युवामिन्द्रापर्वतेव बृहता रथेन सुवीरा वामीरिष आ वहतमध्वरेषु हव्यानि वीतमिळया मदन्ता देवा सन्तौ गीर्भिर्वर्धेथाम्॥ १॥

**भावार्थः**-हे राजसेनाजना! यथा मेघः सर्वान् जलाशयानोषधीश्च पाति तथैव सेनापालका पुष्कलाभिः सामग्रीभिः सर्वाः सेना अलंभोगाः कुर्य्युः सेनाश्च विद्युद्वच्छत्रून् दहन्तु सर्वेषु सर्वे युद्धराजविद्यावृद्धा भूत्वा सर्वान् कामान् प्राप्नुवन्तु॥ १॥

**पदार्थः**-हे सभा और सेना के ईश! आप दोनों (**इन्द्रापर्वता**) बिजुली और मेघ के सदृश राज्य सेना के अधीश (**बृहता**) बड़े (**रथेन**) वाहन से (**सुवीराः**) सुन्दर वीर जिनसे उन (**वामीः**) श्रेष्ठ (**इषः**) अन्न आदि को (**आ, वहतम्**) प्राप्त होइये और (**अध्वरेषु**) नहीं हिंसा करने योग्य यज्ञों में (**हव्यानि**) देने और ग्रहण करने योग्यों को (**वीतम्**) प्राप्त होइये और (**इळया**) सम्पूर्ण शास्त्रों को प्रकाश करनेवाली वाणी से (**मदन्ता**) कामना करते हुए विद्वान् लोग (**देवा**) उत्तम सुख देनेवाले होकर (**गीर्भिः**) उत्तम प्रकार शिक्षायुक्त वाणियों से (**वर्धेथाम्**) बढ़ें॥ १॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-हे राजसेनाओं के जन! जैसे मेघ सम्पूर्ण जलाशय और ओषधियों की रक्षा करता है, वैसे ही सेना के पालन करनेवाले पुरुष बहुतसी सामग्रियों से सम्पूर्ण सेनाओं को भोग से परिपूर्ण करिये और सेना बिजुलियों के सदृश शत्रुओं का नाश करें और सबमें सब युद्ध और राजविद्या में परिपूर्ण होकर सम्पूर्ण मनोरथों को प्राप्त हों॥१॥

**अथ राजविषयमाह॥**

अब राजा के विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**तिष्ठा सु कं मघवन्मा परा गाः सोमस्य नु त्वा सुषुतस्य यक्षि।**

**पितुर्न पुत्रः सिचमा रभे त इन्द्र स्वादिष्ठया गिरा शचीवः॥२॥**

**तिष्ठ। सु। कम्। मघऽवन्। मा। परा। गाः। सोमस्य। नु। त्वा। सुऽसुतस्य। यक्षि। पितुः। न। पुत्रः। सिचम्। आ। रभे। ते। इन्द्र। स्वादिष्ठया। गिरा। शचीऽवः॥२॥**

**पदार्थः**-**(तिष्ठ)**। अत्र **द्व्यचोऽतस्तिङ** इति दीर्घः। **(सु)** **(कम्)** सुखम् **(मघवन्)** पुष्कलधनवन् **(मा)** निषेधे **(परा)** **(गाः)** दूरं गच्छेः **(सोमस्य)** महौषधिगणस्यैश्वर्यस्य **(नु)** सद्यः **(त्वा)** त्वाम् **(सुषुतस्य)** यथावत्सिद्धस्य **(यक्षि)** सङ्गच्छस्व **(पितुः)** जनकस्य **(न)** इव **(पुत्रः)** **(सिचम्)** **(आ)** **(रभे)** **(ते)** तव **(इन्द्र)** ऐश्वर्यकारक **(स्वादिष्ठया)** अतिशयेन मधुरादिरसयुक्तया **(गिरा)** वाण्या **(शचीवः)** प्रशस्ताः शचीः प्रजा विद्यन्ते यस्य तत्सम्बुद्धौ॥२॥

**अन्वयः**-हे मघवन्निन्द्र! त्वं सुषुतस्य सोमस्य सकाशात् कं सुतिष्ठ। हे शचीवो! यथा ते स्वादिष्ठया गिरा सिचमा रभे त्वा नु पुत्रः पितुर्नाऽऽरभे स त्वमस्मान् यक्ष्यस्मन्मा परा गाः॥२॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे राजन्! यथा पुत्रः पितरं सेवते तथैव वृद्धान् विदुषः सेवस्व। कदाचिद्धर्मात्पृथग् न भवेरन्यान् सुखिनः कृत्वा सुखी भव॥२॥

**पदार्थः**-हे **(मघवन्)** बहुत धनयुक्त **(इन्द्र)** ऐश्वर्य के करनेवाले! आप **(सुषुतस्य)** उत्तम प्रकार सिद्ध **(सोमस्य)** बड़ी ओषधियों के समूहरूप ऐश्वर्य्य के समीप के **(कम्)** सुख को **(सु, तिष्ठ)** करिये। और हे **(शचीवः)** उत्तम प्रजाओं से युक्त! जैसे **(ते)** आपकी **(स्वादिष्ठया)** अत्यन्त मधुर आदि रस से युक्त **(गिरा)** वाणी से **(सिचम्)** सिंचन का **(आ, रभे)** प्रारम्भ करें **(त्वा)** आपको **(नु)** शीघ्र **(पुत्रः)** पुत्र **(पितुः)** पिता से **(न)** नहीं **(आ, रभे)** प्रारम्भ करते हैं, वह आप हम लोगों को **(यक्षि)** प्राप्त होइये और हम लोगों से **(मा)** नहीं **(परा, गाः)** दूर जाइये॥२॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे राजन्! जैसे पुत्र पिता की सेवा करता है, वैसे ही विद्वानों की सेवा करो और कभी धर्म से पृथक् न होओ, अन्य जनों को सुखी करके सुखी होओ॥२॥

**अथ प्रजाविषयमाह॥**



www.9009.co.in

अब प्रजा के विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**शंसावाध्वर्यो प्रति मे गृणीहीन्द्राय वाहः कृणवाव जुष्टम्।**

**एदं बर्हिर्यजमानस्य सीदाऽथा च भूदुक्थमिन्द्राय शस्तम्॥ ३॥**

**शंसाव। अध्वर्यो इति। प्रति। मे। गृणीहि। इन्द्राय। वाहः। कृणवाव। जुष्टम्। आ। इदम्। बर्हिः। यजमानस्य। सीद। अथ। च। भूत्। उक्थम्। इन्द्राय। शस्तम्॥ ३॥**

**पदार्थः**-(**शंसाव**) प्रशंसेव (**अध्वर्यो**) अहिंसक (**प्रति**) (**मे**) मह्यम् (**गृणीहि**) स्तुहि (**इन्द्राय**) परमैश्वर्य्ययुक्ताय (**वाहः**) प्राप्तान् (**कृणवाव**) (**जुष्टम्**) सेवितम् (**आ**) (**इदम्**) (**बर्हिः**) उत्तमं स्थानम् (**यजमानस्य**) सङ्गन्तुः (**सीद**) (**अथ**) आनन्तर्ये (**च**) (**भूत्**) भवेत् (**उक्थम्**) वक्तुमर्हम् (**इन्द्राय**) ऐश्वर्य्याय (**शस्तम्**) प्रशंसितम्॥ ३॥

**अन्वयः**-हे अध्वर्यो! त्वमिन्द्राय यदुक्थं शस्तं जुष्टमिदं बर्हिर्यजमानस्य भूत्तदासीद। अथ चाऽन्यानासीदावाप्नोमि इन्द्राय या वाहः शंसाव सिद्धीः कृणवाव तांस्त्वं मे प्रति गृणीहि॥ ३॥

**भावार्थः**-सर्वैः राजप्रजाजनैर्यैः कर्मभिरैश्वर्य्यवृद्धिः स्यात्तानि सेवनीयानि राजाज्ञायां वर्त्तित्वा प्रशंसा च प्रापणीया॥ ३॥

**पदार्थः**-हे (**अध्वर्यो**) नहीं हिंसा करनेवाले! आप (**इन्द्राय**) अत्यन्त ऐश्वर्य्य से युक्त पुरुष के लिये जो (**उक्थम्**) कहने योग्य (**शस्तम्**) प्रशंसा किये गये और (**जुष्टम्**) सेवित (**इदम्**) इस (**बर्हिः**) उत्तम स्थान को (**यजमानस्य**) प्राप्त हुए आपको (**भूत्**) प्रशंसित होवे, उसके ऊपर (**आ, सीद**) विराजो। (**अथ**) अनन्तर (**च**) और अन्यों को प्राप्त होइये और मैं भी प्राप्त होऊं, ऐश्वर्य्य से युक्त पुरुष के लिये जो (**वाहः**) प्राप्त हुओं की (**शंसाव**) प्रशंसा करें और सिद्धि (**कृणवाव**) करें उनकी आप (**मे**) मेरे लिये (**प्रति, गृणीहि**) स्तुति करिये॥ ३॥

**भावार्थः**-सब राजा और प्रजा के जनों को चाहिये कि जिन कर्मों से ऐश्वर्य की वृद्धि हो, उन कर्मों का सेवन करें। और राजा की आज्ञा में वर्त्तमान होकर प्रशंसा को प्राप्त होवें॥ ३॥

**अथ विद्वद्विषयमाह॥**

अब विद्वान् के विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**जायेदस्तं मघवन्त्सेदु योनिस्तदित्त्वा युक्ता हरयो वहन्तु।**

**यदा कदा च सुनवाम सोममग्निष्ट्वा दूतो धन्वात्यच्छ॥ ४॥**

**जाया। इत्। अस्तम्। मघऽवन्। सा। इत्। ऊम् इति। योनिः। तत्। इत्। त्वा। युक्ताः। हरयः। वहन्तु। यदा। कदा। च। सुनवाम। सोमम्। अग्निः। त्वा। दूतः। धन्वाति। अच्छ॥ ४॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**जाया**) पत्नी (**इत्**) एव (**अस्तम्**) गृहम् (**मघवन्**) ऐश्वर्ययुक्त (**सा**) (**इत्**) (**उ**) (**योनिः**) सन्ताननिमित्ता (**तत्**) ताम् (**इत्**) एव (**त्वा**) त्वाम् (**युक्ताः**) योजिताः (**हरयः**) अश्वाः (**वहन्तु**) (**यदा**) (**कदा**) (**च**) (**सुनवाम**) निष्पादयेम (**सोमम्**) (**अग्निः**) विद्युदिव (**त्वा**) (**दूतः**) यो दुनोति परितापयति शत्रून् सः (**धन्वाति**) प्राप्नुयात् (**अच्छ**)॥४॥

**अन्वयः**-हे मघवन्! या ते जायाऽस्तं प्राप्नुयात् सेत् उ सन्तानस्य योनिर्भूयात् तत्तां त्वा चिदेव युक्ता हरयो सोमं वहन्तु। यदा कदा च वयं सोमं सुनवाम तं त्वं दूतोऽग्निश्च धन्वातीव त्वेदच्छाऽऽप्नोतु॥४॥

**भावार्थः**-यथोत्तमौ द्वावश्वौ वोढेन रथेन सुखेन रथस्य स्वामिनं स्थानान्तरं प्रापयतस्तथैव परस्परस्मिन् प्रीतौ योग्यौ विद्वांसौ गृहाश्रममलङ्कर्त्तुं शक्नुयाताम्॥४॥

**पदार्थः**-हे (**मघवन्**) ऐश्वर्य से युक्त! जो (**ते**) आपकी (**जाया**) स्त्री (**अस्तम्**) गृह को प्राप्त होवे (**सा**) वह (**इत्**) ही (**उ**) भी सन्तान का (**योनिः**) कारण होवे (**तत्**) उसको और (**त्वा**) आपको (**च, इत्**) ही (**युक्ताः**) संयुक्त (**हरयः**) घोड़े (**सोमम्**) सोमलता के रस को (**वहन्तु**) धारण करें। और (**यदा**) जब (**कदा**) कब हम लोग सोमलता के रस को (**सुनवाम**) सञ्चित करें, उसको आप (**दूतः**) शत्रुओं के सन्ताप देनेवाले (**अग्निः**) बिजुली के समान (**धन्वाति**) प्राप्त होवें (**त्वा**) आपको ही (**अच्छ**) उत्तम प्रकार प्राप्त हो॥४॥

**भावार्थः**-जैसे श्रेष्ठ दो घोड़े ले चलनेवाले वाहन से सुखपूर्वक रथ के स्वामी को एक स्थान से दूसरे स्थान को प्राप्त कराते हैं, वैसे ही परस्पर में प्रसन्न और योग्य दो विद्वान् गृहाश्रम को शोभित करने को समर्थ हों॥४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**परा॑ याहि मघवन्ना च॑ याहीन्द्र॑ भ्रातरुभयत्रा॑ ते अर्थ॑म्।**

**यत्रा॒ रथ॑स्य बृहतो नि॒धानं॑ वि॒मोच॑नं वा॒जिनो॒ रास॑भस्य॥५॥१९॥**

**परा॑। या॒हि॒। म॒घ॒ऽव॒न्। आ। च॒। या॒हि॒। इन्द्र॑। भ्रा॒त॒रिति॑। उ॒भ॒यत्र॑। ते॒। अर्थ॑म्। यत्र॑। रथ॑स्य। बृ॒ह॒तः। नि॒ऽधान॑म्। वि॒ऽमोच॑नम्। वा॒जिन॑ः। रास॑भस्य॥५॥**

**पदार्थः**-(**परा**) (**याहि**) दूरं गच्छ (**मघवन्**) (**आ**) (**च**) (**याहि**) आगच्छ (**इन्द्र**) मृदूग्रस्वभाव (**भ्रातः**) बन्धो (**उभयत्र**) गमनाऽऽगमनयोः। अत्र **ऋचि तुनुघे**ति दीर्घः। (**ते**) तव (**अर्थम्**) (**यत्र**)। अत्रापि **ऋचि तुनुघे**ति दीर्घः। (**रथस्य**) रमणीययानस्य (**बृहतः**) महतः (**निधानम्**) स्थापनम् (**विमोचनम्**) पृथक्करणम् (**वाजिनः**) वेगवतः (**रासभस्य**) विद्युदादिसम्बन्धिन इव॥५॥

**अन्वयः**-हे मघवन्निन्द्र! त्वमितः परा याहि। हे भ्रातस्त्वं तस्मादायाहि यत्र बृहतो रथस्य रासभस्येव वाजिनो निधानं च विमोचनं स्यात्तत्रोभयत्र तेऽर्थं वयं प्राप्नुयाम॥५॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-मनुष्यैः सर्वत्र भ्रमणं कार्य्यसिद्धये कर्त्तव्यं न सदा भ्रमणमेव, किन्तु गृहेऽपि स्थित्वा सर्वैर्बन्धुभिः सह सङ्गत्य पुनरप्यैश्वर्य्यप्राप्तये देशान्तरे गन्तव्यमागन्तव्यञ्च॥५॥

**पदार्थः**-हे **(मघवन्)** धनयुक्त और **(इन्द्र)** सज्जनों के प्रति कोमल और दुष्टों के प्रति उग्र स्वभाववाले! आप यहाँ से **(परा)** **(याहि)** दूर जाइये। हे **(भ्रातः)** बन्धु जन! आप उससे प्राप्त होइये **(यत्र)** जहाँ **(बृहतः)** बड़े **(रथस्य)** सुन्दर वाहन के **(रासभस्य)** बिजुली आदि के सम्बन्धी के सदृश **(वाजिनः)** वेगयुक्त के **(निधानम्)** स्थापन **(च)** और **(विमोचनम्)** पृथक् करना होवे **(यत्र)** जहाँ **(उभयत्र)** गमन और आगमन में **(ते)** आपके **(अर्थम्)** प्रयोजन को हम लोग प्राप्त होवें॥५॥

**भावार्थः**-मनुष्यों को चाहिये कि सर्वत्र भ्रमण, कार्य्यसिद्धि के लिये करें। और नहीं सदा भ्रमण ही करना, किन्तु गृह में स्थित हो सम्पूर्ण बन्धुओं के साथ मेल करके फिर भी ऐश्वर्य्य की प्राप्ति के लिये एक देश से दूसरे देश में जावें और आवें॥५॥

**अथ राजविषयमाह॥**

अब राजा के विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अपाः सोममस्तमिन्द्र प्र याहि कल्याणीर्जाया सुरणं गृहे ते।**

**यत्रा रथस्य बृहतो निधानं विमोचनं वाजिनो दक्षिणावत्॥६॥**

**अपाः। सोमम्। अस्तम्। इन्द्र। प्र। याहि। कल्याणीः। जाया। सुऽरणम्। गृहे। ते। यत्र। रथस्य। बृहतः। निऽधानम्। विऽमोचनम्। वाजिनः। दक्षिणाऽवत्॥६॥**

**पदार्थः**-**(अपाः)** पिब **(सोमम्)** सर्वरोगनाशकं महौषधिरसम् **(अस्तम्)** गृहम् **(इन्द्र)** ऐश्वर्ययुक्त स्वामिन् **(प्र)** **(याहि)** गच्छ **(कल्याणीः)**। अत्र **सुपां सुलुगिति** सुरादेशः। **(जाया)** जायन्ते यस्या अपत्यानि सा **(सुरणम्)** सुष्ठु रणः संग्रामो यस्मात्तत् **(गृहे)** **(ते)** तव **(यत्र)** यस्मिन् **(रथस्य)** विमानादेर्यानस्य **(बृहतः)** महतः **(निधानम्)** स्थापनम् **(विमोचनम्)** पृथक्करणम् **(वाजिनः)** अग्न्यादेः पदार्थस्य **(दक्षिणावत्)** दक्षिणाभिस्तुल्यम्॥६॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! यत्र बृहतो रथस्य वाजिनो निधानं विमोचनं दक्षिणावत् कार्यं तत्र स्थित्वा या ते गृहे कल्याणीर्जाया वर्त्तते तया सह तत्र रथे स्थित्वाऽस्तं प्र याहि सोममपाः पीत्वा च सुरणं गच्छ॥६॥

**भावार्थः**-राजादयो विमानादीनि यानानि निर्माय यत्र कलायन्त्राणि रचयित्वाग्न्यादीन् संस्थाप्य विमोच्य सपत्नीका गृहमागच्छेयुर्देशान्तरं च गच्छेयुः यदि पत्नी शूरवीरा स्यात्तर्हि तया सह संग्रामविजयाय गच्छेयुः॥६॥

**पदार्थः**-हे **(इन्द्र)** ऐश्वर्य से युक्त स्वामिन्! **(यत्र)** जिसमें **(बृहतः)** बड़े **(रथस्य)** विमान आदि वाहन के **(वाजिनः)** अग्नि आदि पदार्थ के **(निधानम्)** स्थापन और **(विमोचनम्)** अलग करने को **(दक्षिणावत्)** दक्षिणाओं के तुल्य करें और वहाँ स्थित होकर जो आपके **(गृहे)** गृह में **(जाया)** स्त्री



www.9009.co.in

वर्त्तमान है, उसके साथ उस वाहन के ऊपर विराज कर **(अस्तम्)** गृह को **(प्र, याहि)** आइये **(सोमम्)** सम्पूर्ण रोगों के नाश करनेवाले महौषधि के रस का **(अपाः)** पान करिये और पीकर **(सुरणम्)** श्रेष्ठ संग्राम जिससे उसको प्राप्त होइये॥६॥

**भावार्थः**-राजा आदि विमान आदि वाहनों का निर्माण कर और उसमें कलायन्त्रों को रच के तथा अग्नि आदि पदार्थों को स्थित तथा अलग करके अपनी स्त्रियों के सहित गृह में आवें और देशान्तर को जावें, जो स्त्री शूरवीरा हो तो उसके साथ संग्राम के विजय के लिये जावें॥६॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**इमे भोजा अङ्गिरसो विरूपा दिवस्पुत्रासो असुरस्य वीराः।**

**विश्वामित्राय ददतो मघानि सहस्रसावे प्र तिरन्त आयुः॥७॥**

**इमे। भोजाः। अङ्गिरसः। विऽरूपाः। दिवः। पुत्रासः। असुरस्य। वीराः। विश्वामित्राय। ददतः। मघानि। सहस्रऽसावे। प्र। तिरन्ते। आयुः॥७॥**

**पदार्थः**-**(इमे)** **(भोजाः)** भोक्तारः प्रजापालकाः **(अङ्गिरसः)** प्राणा इव बलिष्ठाः **(विरूपाः)** विविधरूपा विकृतरूपा वा **(दिवः)** प्रकाशस्वरूपस्य **(पुत्रासः)** वायुरिव बलिष्ठाः **(असुरस्य)** शत्रूणां प्रक्षेपकस्य **(वीराः)** व्याप्तयुद्धविद्याः **(विश्वामित्राय)** विश्वं सर्वं जगन्मित्रं यस्य तस्मै **(ददतः)** **(मघानि)** अत्युत्तमानि धनानि **(सहस्रसावे)** सहस्रस्याऽसंख्यस्य धनस्य सावः प्रसवो यस्मिन् संग्रामे **(प्र)** **(तिरन्ते)** उल्लङ्घन्ते **(आयुः)** जीवनम्॥७॥

**अन्वयः**-हे राजन्! य इमेऽङ्गिरस इव भोजा विरूपा दिवोऽसुरस्य पुत्रासो वीराः सहस्रसावे विश्वामित्राय मघानि ददतः सन्त आयुः प्र तिरन्ते त एव भवता सत्कृत्य रक्षणीयाः॥७॥

**भावार्थः**-हे राजन्! भवानीदृशैर्वीरैः सहितां हृष्टां पुष्टां युद्धविद्यायां कुशलां सेनामुन्नीय सर्वदा विजयस्व॥७॥

**पदार्थः**-हे राजन्! जो **(इमे)** ये **(अङ्गिरसः)** प्राणों के सदृश बलयुक्त **(भोजाः)** भोजन करने तथा प्रजा के पालन करनेवाले **(विरूपाः)** अनेक प्रकार के रूप वा विकारयुक्त रूपवाले और **(दिवः)** प्रकाशस्वरूप **(असुरस्य)** शत्रुओं के फेंकनेवाले के **(पुत्रासः)** वायु के समान बलिष्ठ **(वीराः)** युद्धविद्या में परिपूर्ण **(सहस्रसावे)** संख्यारहित धन की उत्पत्ति जिसमें उस संग्राम में **(विश्वामित्राय)** सम्पूर्ण संसार मित्र है जिसका उसके लिये **(मघानि)** अतिश्रेष्ठ धनों को **(ददतः)** देते हुए जन **(आयुः)** जीवन का **(प्र, तिरन्ते)** उल्लङ्घन करते हैं, वे ही लोग आपसे सत्कारपूर्वक रक्षा करने योग्य हैं॥७॥

**भावार्थः**-हे राजन्! आप ऐसे वीरों के सहित प्रसन्न, पुष्ट और युद्धविद्या से कुशल सेना की वृद्धि करके सर्वदा विजय को प्राप्त होइये॥७॥



www.9009.co.in

**अथ विद्वद्विषयमाह॥**

अब विद्वानों के विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**रूपंरूपं मघवा बोभवीति मायाः कृण्वानस्तन्वं१ परि स्वाम्।**

**त्रिर्यद्दिवः परि मुहूर्तमागात् स्वैर्मन्त्रैरनृतुपा ऋतावा॥८॥**

**रूपम्ऽरूपम्। मघऽवा। बोभवीति। मायाः। कृण्वानः। तन्वम्। परि। स्वाम्। त्रिः। यत्। दिवः। परि। मुहूर्तम्। आ। अगात्। स्वैः। मन्त्रैः। अनृतुऽपाः। ऋतऽवा॥८॥**

**पदार्थः**-(**रूपंरूपम्**) प्रतिरूपम् (**मघवा**) बहुधनवान् (**बोभवीति**) भृशं भवति (**मायाः**) प्रज्ञाः (**कृण्वानः**) (**तन्वम्**) शरीरम् (**परि**) सर्वतः (**स्वाम्**) स्वकीयाम् (**त्रिः**) त्रिवारम् (**यत्**) यः (**दिवः**) प्रकाशान् (**परि**) (**मुहूर्त्तम्**) घटिकाद्वयम् (**आ**) (**अगात्**) प्राप्नुयात् (**स्वैः**) स्वकीयैः (**मन्त्रैः**) विचारैः (**अनृतुपाः**) य ऋतून् पाति स ऋतुपा न ऋतुपा अनृतुपाः (**ऋतावा**) सत्यवान्॥८॥

**अन्वयः**-यद्य ऋतावा मघवा सूर्य्यो दिवो मुहूर्त्तमिव स्वैर्मन्त्रैरनृतुपाः सन् स्वां तन्वं त्रिः पर्य्यागाद् रूपंरूपं प्रति मायाः कृण्वानः सन् परि बोभवीति तमध्यापकमुपदेष्टारञ्च कुर्य्युः॥८॥

**भावार्थः**-ये परमेश्वरमारभ्य पृथिवीपर्य्यन्तानां पदार्थानां स्वरूपविदः सद्योऽन्येभ्यो विज्ञानप्रदाः सूर्य्य इव सुशिक्षासभ्यताविनयप्रकाशकाः स्युस्ते विद्याधर्मराजमन्त्रवर्द्धने नियोजनीयाः॥८॥

**पदार्थः**-(**यत्**) जो (**ऋतावा**) सत्य से युक्त (**मघवा**) बहुत धन से युक्त (**सूर्य्यः**) सूर्य्य (**दिवः**) प्रकाशों को (**मुहूर्त्तम्**) दो घड़ी (**स्वैः**) अपने (**मन्त्रैः**) विचारों से (**अनृतुपाः**) नहीं ऋतुओं का पालन करनेवाला होकर (**स्वाम्**) अपने (**तन्वम्**) शरीर को (**त्रिः**) तीन वार (**परि, आ**) सब प्रकार (**अगात्**) प्राप्त होवें और (**रूपंरूपम्**) रूप-रूप के प्रति (**मायाः**) बुद्धियों को (**कृण्वानः**) करते हुए (**परि, बोभवीति**) अत्यन्त होता है, उसको अध्यापक और उपदेश देनेवाला करें॥८॥

**भावार्थः**-जो परमेश्वर को ले के पृथिवी पर्यन्त पदार्थों के स्वरूप जानने और शीघ्र अन्य जनों के लिये विज्ञान देने और सूर्य्य के सदृश उत्तम शिक्षा, सभ्यता और विनय के प्रकाश करनेवाले होवें, वे विद्या, धर्म और राजधर्म के मन्त्र बढ़ाने में नियत करने के योग्य हैं॥८॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**महाँ ऋषिर्देवजा देवजूतोऽस्तभ्नात्सिन्धुमर्णवं नृचक्षाः।**

**विश्वामित्रो यदवहत्सुदासमप्रियायत कुशिकेभिरिन्द्रः॥९॥**

**महान्। ऋषिः। देवऽजाः। देवऽजूतः। अस्तभ्नात्। सिन्धुम्। अर्णवम्। नृऽचक्षाः। विश्वामित्रः। यत्। अवहत्। सुऽदासम्। अप्रियायत। कुशिकेभिः। इन्द्रः॥९॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**महान्**) महत्वपरिमाणतः सर्वेभ्योऽधिकः (**ऋषिः**) मन्त्रार्थवेत्ता (**देवजाः**) यो देवेषु विद्वत्सु जातः (**देवजूतः**) देवैः प्रेरितः (**अस्तभ्नात्**) स्तभ्नाति धरति (**सिन्धुम्**) नदीम् (**अर्णवम्**) समुद्रम् (**नृचक्षाः**) नृणां द्रष्टा (**विश्वामित्रः**) सर्वेषां सुहृत् (**यत्**) यः (**अवहत्**) प्राप्नोति (**सुदासम्**) शोभनदानम् (**अप्रियायत**) प्रिय इवाचरति (**कुशिकेभिः**) कार्यसिद्धान्तविद्भिः (**इन्द्रः**) परमैश्वर्यकरः॥९॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यद्यो महानृषिर्देवजा देवजूतो नृचक्षा विश्वामित्र इन्द्रः कुशिकेभिः यथा सूर्यो भूमिं सिन्धुमर्णवं चास्तभ्नात् यथा दिव राज्यं धरेच्छ्रियमवहत् सुदासमप्रियायत तं सर्वे सत्कुरुत॥९॥

**भावार्थः**-यथा सूर्यः सर्वेभ्यो लोकेभ्यो महान्त्सर्वस्य धर्त्ता प्रकाशकोऽस्ति तथैव वेदविद आप्ता वर्त्तन्त इति वेद्यम्॥९॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! (**यत्**) जो (**महान्**) बड़प्पन रूप परिमाण से सब पदार्थों से बड़ा (**ऋषिः**) मन्त्रों के अर्थों का जाननेवाला (**देवजाः**) विद्वानों में उत्पन्न (**देवजूतः**) विद्वानों से प्रेरित (**नृचक्षाः**) मनुष्यों का देखनेवाला (**विश्वामित्रः**) सबका मित्र (**इन्द्रः**) अत्यन्त ऐश्वर्य का करनेवाला (**कुशिकेभिः**) कार्यों के सिद्धान्तों को जाननेवालों से जैसे सूर्य, पृथिवी (**सिन्धुम्**) नदी और (**अर्णवम्**) समुद्र को (**अस्तभ्नात्**) धारण करता है, जैसे [द्युलोक के] राज्य को धारण करे तो लक्ष्मी को (**अवहत्**) प्राप्त होता है (**सुदासम्**) उत्तम दान को (**अप्रियायत**) प्रिय के सदृश करता है, उसका सब लोग सत्कार करें॥९॥

**भावार्थः**-जैसे सूर्य सब लोकों से बड़ा और सबका धारणकर्त्ता तथा प्रकाश करनेवाला है, वैसे ही सबके जाननेवाले यथार्थवक्ता पुरुष हैं, ऐसा जानना चाहिये॥९॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**हुंसाइव कृणुथ श्लोकमद्रिभिर्मदन्तो गीर्भिरध्वरे सुते सचा।**
**देवेभिर्विप्रा ऋषयो नृचक्षसो वि पिबध्वं कुशिकाः सोम्यं मधु॥१०॥२०॥**

**हुंसाःऽइव। कृणुथ। श्लोकम्। अद्रिऽभिः। मदन्तः। गीःऽभिः। अध्वरे। सुते। सचा। देवेभिः। विप्राः। ऋषयः। नृऽचक्षसः। वि। पिबध्वम्। कुशिकाः। सोम्यम्। मधु॥१०॥**

**पदार्थः**-(**हंसाइव**) (**कृणुथ**) (**श्लोकम्**) सुलक्षणां वाचम्। **श्लोक इति वाङ्नामसु पठितम्।** (निघं०१.११) (**अद्रिभिः**) मेघैः (**मदन्तः**) प्राप्तानन्दाः (**गीर्भिः**) सुशिक्षिताभिर्वाग्भिः (**अध्वरे**) अहिंसनीयेऽध्ययनाऽध्यापनीये व्यवहारे (**सुते**) निष्पन्ने (**सचा**) समूहे (**देवेभिः**) विद्वद्भिः (**विप्राः**) मेधाविनः (**ऋषयः**) मन्त्रार्थवेत्तारः (**नृचक्षसः**) मनुष्याणां विद्यादृष्ट्या परीक्षकाः (**वि**) (**पिबध्वम्**) (**कुशिकाः**) विद्यासिद्धान्तनिष्कर्षकाः (**सोम्यम्**) सोम ऐश्वर्ये साधु (**मधु**) मधुरादिगुणं द्रव्यम्॥१०॥

**अन्वयः**-हे कुशिका नृचक्षस ऋषयो विप्रा! यूयं सुतेऽध्वरेऽद्रिभिर्मदन्तः सन्तो देवेभिः सह श्लोकं हंसाइव कृणुथ सत्यस्य सचा वर्त्तध्वं सोम्यं मधु वि पिबध्वम्॥१०॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-परमविद्वांसो विदुषः प्रति जितेन्द्रियतां धर्मात्मतां सुशीलतां सभ्यतां च ग्राहयेयुर्यतस्तेऽप्याप्ता भूत्वा जगत्कल्याणं कुर्युः॥१०॥

**पदार्थः**-हे **(कुशिकाः)** विद्याओं के सिद्धान्तों के जानने **(नृचक्षसः)** मनुष्यों की विद्यादृष्टि से परीक्षा करने और **(ऋषयः)** मन्त्रों के अर्थों को जाननेवाले **(विप्राः)** बुद्धिमान्! आप लोग **(सुते)** उत्पन्न **(अध्वरे)** नहीं हिंसा करने योग्य पढ़ने और पढ़ाने रूप व्यवहार में **(अद्रिभिः)** मेघों से **(मदन्तः)** आनन्द को प्राप्त होते हुए **(देवेभिः)** विद्वानों के साथ **(श्लोकम्)** उत्तम स्वरूप वाणी को **(कृणुथ)** करो और सत्य के **(सचा)** समूह में वर्त्तमान **(सोम्यम्)** ऐश्वर्य्य में श्रेष्ठ **(मधु)** मधुर आदि गुणयुक्त द्रव्य का **(वि, पिबध्वम्)** पान कीजिये॥१०॥

**भावार्थः**-अत्यन्त विद्वान् जन विद्वानों के प्रति जितेन्द्रियता, धर्मात्मता, सुशीलता और सभ्यता को ग्रहण करावें कि जिससे वे भी श्रेष्ठ होकर संसार के कल्याण को करें॥१०॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**उप प्रेत कुशिकाश्चेतयध्वमश्वं राये प्र मुञ्चता सुदासः।**

**राजा वृत्रं जङ्घनत् प्रागपागुदगथा यजाते वर आ पृथिव्याः॥११॥**

**उप। प्र। इत। कुशिकाः। चेतयध्वम्। अश्वम्। राये। प्र। मुञ्चत। सुऽदासः। राजा। वृत्रम्। जङ्घनत्। प्राक्। अपाक्। उदक्। अथ। यजाते। वरे। आ। पृथिव्याः॥११॥**

**पदार्थः**-**(उप)** **(प्र)** **(इत)** प्राप्नुत **(कुशिकाः)** ये कुर्वन्त्युपदिशन्ति ते कुशाः प्रशस्ताः कुशा विद्यन्ते येषु ते कुशिकाः **(चेतयध्वम्)** ज्ञापयध्वम् **(अश्वम्)** तुरङ्गमिवाऽऽशुगामिनीं विद्युतम् **(राये)** श्रिये **(प्र)** **(मुञ्चत)** त्यजत। अत्र **संहितायामिति** दीर्घः। **(सुदासः)** शोभनदानः **(राजा)** प्रकाशमानः **(वृत्रम्)** मेघमिव शत्रुम् **(जङ्घनत्)** भृशं हन्यात् **(प्राक्)** पूर्वम् **(अपाक्)** पश्चिमतः **(उदक्)** उत्तरतः **(अथ)**। अत्र **निपातस्य चे**ति दीर्घः। **(यजाते)** यजेत **(वरे)** उत्तमे देशे **(आ)** **(पृथिव्याः)**॥११॥

**अन्वयः**-हे कुशिका! यः सुदासो राजा प्रागपागुदग्वृत्रं जङ्घनदथ पृथिव्या वरे आ यजाते तस्य राये प्र मुञ्चताश्वञ्च चेतयध्वमुप प्रेत॥११॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे विद्वांसो! ये वीराः शत्रून् हन्युस्तेभ्यः पुष्कलं धनं प्रतिष्ठां च दद्युः। येन सर्वासु दिक्षु विजयः प्रकाशेत॥११॥

**पदार्थः**-हे **(कुशिकाः)** जो करते और उपदेश देते वे कुश वे श्रेष्ठ विद्यमान हैं जिनमें वे कुशिक और जो **(सुदासः)** उत्तम दान देनेवाला **(राजा)** प्रकाशमान **(प्राक्)** प्रथम **(अपाक्)** पश्चिम और **(उदक्)** उत्तर से **(वृत्रम्)** मेघ के सदृश शत्रु का **(जङ्घनत्)** अत्यन्त नाश करे **(अथ)** इसके अनन्तर **(पृथिव्याः)** पृथिवी के **(वरे)** उत्तम स्थान में **(आ, यजाते)** यज्ञ करे उसका **(राये)** लक्ष्मी के लिये **(प्र)** **(मुञ्चत)**



www.9009.co.in

त्याग करो और उस **(अश्वम्)** घोड़े के सदृश शीघ्र चलनेवाली बिजुली को **(चेतयध्वम्)** जनाओ और **(उप, प्र इत)** प्राप्त होओ॥११॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे विद्वानो! जो वीर लोग शत्रुओं का नाश करें उनके लिये बहुत धन और प्रतिष्ठा को देवें। जिससे सम्पूर्ण दिशाओं में विजय प्रकाशित होवे॥११॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**य इमे रोदसी उभे अहमिन्द्रमतुष्टवम्।**

**विश्वामित्रस्य रक्षति ब्रह्मेदं भारतं जनम्॥१२॥**

**यः। इमे इति। रोदसी इति। उभे इति। अहम्। इन्द्रम्। अतुस्तवम्। विश्वामित्रस्य। रक्षति। ब्रह्म। इदम्। भारतम्। जनम्॥१२॥**

**पदार्थः**-**(यः)** **(इमे)** **(रोदसी)** द्यावापृथिव्यौ **(उभे)** **(अहम्)** **(इन्द्रम्)** परमात्मानम् **(अतुष्टवम्)** प्रशंसेयम् **(विश्वामित्रस्य)** सर्वस्य सुहृदः **(रक्षति)** **(ब्रह्म)** धनं ब्रह्माण्डं वा **(इदम्)** वर्त्तमानम् **(भारतम्)** भारत्या वाचोऽयं वेत्ता धर्त्ता वा तम् **(जनम्)** प्रसिद्धं मनुष्यादिकं प्राणिमयम्॥१२॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! य इमे उभे रोदसी ब्रह्मेदं भारतं जनं रक्षति यमिन्द्रमहमतुष्टवं तस्य विश्वामित्रस्यैवोपासनां यूयं कुरुत॥१२॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! येनेश्वरेण सर्वं जगत्सृष्ट्वा रक्ष्यते तस्यैव स्तुतिप्रार्थनोपासनाः सततं कुरुत॥१२॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(यः)** जो **(इमे)** ये **(उभे)** दोनों **(रोदसी)** अन्तरिक्ष और पृथिवी **(ब्रह्म)** धन वा ब्रह्माण्ड **(इदम्)** इस वर्त्तमान **(भारतम्)** वाणी के जानने वा धारण करनेवाले उस **(जनम्)** प्रसिद्ध मनुष्य आदि प्राणिस्वरूप की **(रक्षति)** रक्षा करता है, जिस **(इन्द्रम्)** परमात्मा की हम **(अतुष्टवम्)** प्रशंसा करें, उस **(विश्वामित्रस्य)** सबके मित्र की ही उपासना आप लोग करें॥१२॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जिस परमेश्वर से सम्पूर्ण संसार रच कर रक्षित है, उसकी ही स्तुति, प्रार्थना और उपासना निरन्तर करो॥१२॥

**अथ प्रजाविषयमाह॥**

अब प्रजा के विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**विश्वामित्रा अरासत ब्रह्मेन्द्राय वज्रिणे। करदिन्नः सुराधसः॥१३॥**

**विश्वामित्राः। अरासत। ब्रह्म। इन्द्राय। वज्रिणे। करत्। इत्। नः। सुऽराधसः॥१३॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**विश्वामित्राः**) सर्वस्य सुहृदः (**अरासत**) रासन्ताम् (**ब्रह्म**) धनम् (**इन्द्राय**) राज्ञे (**वज्रिणे**) धनुर्वेदविदे (**करत्**) कुर्य्यात् (**इत्**) एव (**नः**) अस्मान् (**सुराधसः**) उत्तमधनयुक्तान्॥१३॥

**अन्वयः**-हे विश्वामित्रा! भवन्तो यो नः सुराधसः करत्तस्मै इद्वज्रिण इन्द्राय ब्रह्मारासत॥१३॥

**भावार्थः**-यो राजा सर्वाः प्रजाः सुखसम्पन्नाः कुर्य्यात्तमेव प्रजाः परमैश्वर्य्ययुक्तं कुर्य्युः॥१३॥

**पदार्थः**-हे (**विश्वामित्राः**) सबके मित्रो! आप लोग जो (**नः**) हम लोगों को (**सुराधसः**) उत्तम धन से युक्त (**करत्**) करे उस (**इत्**) ही (**वज्रिणे**) धनुर्वेद के जाननेवाले (**इन्द्राय**) राजा के लिये (**ब्रह्म**) धन की (**अरासत**) वृद्धि करें॥१३॥

**भावार्थः**-जो राजा सम्पूर्ण प्रजाओं को सुखयुक्त करे, उस ही को प्रजा अत्यन्त ऐश्वर्य्य से युक्त करें॥१३॥

**अथ विद्वद्विषयमाह॥**

अब विद्वान् के विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**किं ते कृण्वन्ति कीकटेषु गावो नाशिरं दुह्रे न तपन्ति घर्मम्।**

**आ नो भर प्रमगन्दस्य वेदो नैचाशाखं मघवन् रन्धया नः॥१४॥**

**किम्। ते। कृण्वन्ति। कीकटेषु। गावः। न। आऽशिरम्। दुह्रे। न। तपन्ति। घर्मम्। आ। नः। भर। प्रऽमगन्दस्य। वेदः। नैचाऽशाखम्। मघऽवन्। रन्धय। नः॥१४॥**

**पदार्थः**-(**किम्**) (**ते**) तव (**कृण्वन्ति**) (**कीकटेषु**) अनार्य्यदेशनिवासिषु म्लेच्छेषु (**गावः**) धेनूः (**न**) (**आशिरम्**) यदस्य ते तत् क्षीरादिकम् (**दुह्रे**) दुहन्ति (**न**) (**तपन्ति**) (**घर्मम्**) दिनम्। **घर्म इत्यहर्नामसु पठितम्।** (निघं०१.९) (**आ**) समन्तात् (**नः**) अस्मभ्यम् (**भर**) धर (**प्रमगन्दस्य**) यः कुलीनो मां गच्छति स तस्य (**वेदः**) धनम् (**नैचाशाखम्**) नीचा शाखा शक्तिर्यस्मिँस्तम् (**मघवन्**) पूजितधनयुक्त (**रन्धय**) निवारय (**नः**) अस्माकम्॥१४॥

**अन्वयः**-हे विद्वन्! ते कीकटेषु गावो नाऽऽशिरं दुह्रे घर्मं न तपन्ति ते किं कृण्वन्ति त्वं नः प्रमगन्दस्य वेद आ भर। हे मघवँस्त्वं नो नैचाशाखं रन्धय॥१४॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। यथा म्लेच्छेषु गावो न वर्द्धन्ते नास्तिकेषु धर्मादयो गुणाश्च, तथैव विद्वत्स्वनीश्वरवादिनः प्रबला न जायन्ते तस्माद्विद्वद्भिर्मनुष्येषु नास्तिकत्वं सर्वथा निवारणीयम्॥१४॥

**पदार्थः**-हे विद्वान्! (**ते**) आपके (**कीकटेषु**) अनार्य देशों में वसनेवालो में (**गावः**) गावों से (**न**) नहीं (**आशिरम्**) दुग्ध आदि को (**दुह्रे**) दुहते हैं (**घर्मम्**) दिन को (**न**) नहीं (**तपन्ति**) तपाते हैं, वे (**किम्**) क्या (**कृण्वन्ति**) करते वा करेंगे और आप (**नः**) हम लोगों के लिये (**प्रमगन्दस्य**) जो कुलीन मुझको प्राप्त होता है, उसके (**वेदः**) धन को (**आ**) सब प्रकार से (**भर**) धारण करिये और हे (**मघवन्**) श्रेष्ठ धन



www.9009.co.in

से युक्त! आप **(नः)** हम लोगों के **(नैचाशाखम्)** नीची शक्ति जिसमें उसकी **(रन्धय)** निवृत्ति करो॥१४॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जैसे म्लेच्छ जनों में गौओं की, नास्तिक पुरुषों में धर्म आदि गुणों की वृद्धि नहीं होती और वैसे ही विद्वानों में ईश्वर को नहीं माननेवाले प्रबल न होवें, इससे चाहिये कि **[**विद्वज्जन**]** मनुष्यों में नास्तिकत्व का सर्वथा निवारण करें॥१४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**स॒स॒र्प॒रीरम॑तिं॒ बाध॑माना बृ॒हन्मि॑माय ज॒मद॑ग्निदत्ता।**

**आ सूर्य॑स्य दुहि॒ता त॑तान॒ श्रवो॑ दे॒वेष्व॒मृत॑मजु॒र्यम्॥१५॥२१॥**

**स॒स॒र्प॒रीः। अम॑तिम्। बाध॑माना। बृ॒हत्। मि॒मा॒य॒। ज॒मद॑ग्निऽदत्ता। आ। सूर्य॑स्य। दु॒हि॒ता। त॒ता॒न॒। श्रवः॑। दे॒वेषु॑। अ॒मृत॑म्। अ॒जु॒र्यम्॥१५॥**

**पदार्थः**-**(ससर्परीः)** भृशं सर्पणशीला **(अमतिम्)** रूपम् **(बाधमाना)** निवारयन्ती **(बृहत्)** **(मिमाय)** मिमीते **(जमदग्निदत्ता)** चक्षुषा प्रत्यक्षेण दत्ता। **चक्षुर्वै जमदग्निर्ऋषिः।** [शत०८.१.२.३] **(आ)** **(सूर्य्यस्य)** **(दुहिता)** दुहितेव वर्त्तमानोषा **(ततान)** तनुते विस्तृणोति **(श्रवः)** श्रवणम् **(देवेषु)** विद्वत्सु **(अमृतम्)** अमृतात्मकम् **(अजुर्य्यम्)** हानिरहितम्॥१५॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! या जमदग्निदत्ता ससर्परीर्वागजुर्य्यं सूर्य्यस्य दुहिता तमो बाधमानोषा इव बृहदमतिं मिमाय देवेष्वजुर्य्यममृतं श्रव आ ततान तां वाचं सर्वथोन्नयत॥१५॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यदि ब्रह्मचर्य्यधर्मानुष्ठानपुरुषार्थैराप्तानां सकाशाद् विद्यासुशिक्षे मनुष्या गृह्णीयुस्तर्हि तेषां किमपि सुखमप्राप्तं न स्यात्॥१५॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो **(जमदग्निदत्ता)** नेत्र से प्रत्यक्ष दी गई **(ससर्परीः)** अत्यन्त चलनेवाली वाणी **(अजुर्य्यम्)** हानि से रहित **(सूर्य्यस्य)** सूर्य्य की **(दुहिता)** कन्या सदृश वर्त्तमान अन्धकार को नाश करते हुए प्रातःकाल के सदृश **(बृहत्)** बड़े **(अमतिम्)** रूप को **(मिमाय)** नापती है और **(देवेषु)** विद्वानों में हानिरहित **(अमृतम्)** अमृतस्वरूप **(श्रवः)** सुनने का **(आ, ततान)** विस्तार करती है, उस वाणी की सब प्रकार वृद्धि करो॥१५॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो ब्रह्मचर्य धर्म का अनुष्ठान और पुरुषार्थों से श्रेष्ठ पुरुषों के समीप से विद्या और उत्तम शिक्षा को मनुष्य ग्रहण करें तो उनको कुछ भी सुख अप्राप्त न होवे॥१५॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥



www.9009.co.in

**ससर्परीरभरत् तूयमेभ्योऽधि श्रवः पाञ्चजन्यासु कृष्टिषु।**

**सा पक्ष्या३ नव्यमायुर्दधाना यां मे पलस्तिजमदग्नयो ददुः॥१६॥**

**ससर्परीः। अभरत्। तूयम्। एभ्यः। अधि। श्रवः। पाञ्चऽजन्यासु। कृष्टिषु। सा। पक्ष्या। नव्यम्। आयुः। दधाना। याम्। मे। पलस्तिऽजमदग्नयः। ददुः॥१६॥**

**पदार्थः**-(**ससर्परीः**) सुखस्य प्रापिका (**अभरत्**) (**तूयम्**) शीघ्रम् (**एभ्यः**) जिज्ञासुभ्यः (**अधि**) उपरिभावे (**श्रवः**) अन्नम् (**पाञ्चजन्यासु**) पञ्चसु दिनेषु प्राणेषु भवासु (**कृष्टिषु**) मनुष्यादिप्रजासु (**सा**) (**पक्ष्या**) पक्षेषु साध्वी (**नव्यम्**) नवीनमेव (**आयुः**) अन्नं जीवनं वा। **आयुरित्यन्ननामसु पठितम्।** (निघं०२.७) (**दधाना**) (**याम्**) (**मे**) मम (**पलस्तिजमदग्नयः**) प्रजमिता विदिता अग्नयः पलस्तयो वयोज्ञानवृद्धाश्च जमदग्नयो यैस्ते (**ददुः**) दद्युः॥१६॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! पलस्तिजमदग्नयो मे यां ददुः सा पक्ष्या पाञ्चजन्यासु कृष्टिषु नव्यमायुर्दधाना एभ्य श्रवोऽधि तूयं ददुः ससर्परीरभरत्॥१६॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! या कार्यसिद्ध्यैश्वर्योत्पादिका आयुर्वर्धिका सत्यादिलक्षणोज्ज्वला वाणी नवीनं विज्ञानं जीवनं च दधाति तां नित्यं बिभृत॥१६॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! (**पलस्तिजमदग्नयः**) जाना है प्राजापत्य आदि अग्नियों को जिन्होंने वे और अवस्था और ज्ञान में वृद्ध पुरुष [मेरे लिये] (**याम्**) जिसको (**ददुः**) देवें (**सा**) वह (**पक्ष्या**) पक्षों में साध्वी (**पाञ्चजन्यासु**) पाँच दिनों तथा प्राणों में उत्पन्न (**कृष्टिषु**) मनुष्य आदि प्रजाओं में (**नव्यम्**) नवीन ही (**आयुः**) अन्न वा जीवन को (**दधाना**) धारण करती हुई (**एभ्यः**) इन जानने की इच्छा करनेवालों के लिये (**श्रवः**) अन्न को (**अधि**) उपरि भाग में (**तूयम्**) शीघ्र (**ददुः**) देवें (**ससर्परीः**) सुख की बढ़ानेवाली (**अभरत्**) प्राप्त कराइये॥१६॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो कार्य की सिद्धि और ऐश्वर्य की उत्पन्न करने और अवस्था की बढ़ानेवाली सत्य लक्षणों से स्पष्ट वाणी नवीन-नवीन विज्ञान और जीवन धारण करती है, उसको नित्य धारण करो॥१६॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**स्थिरौ गावौ भवतां वीळुरक्षो मेषा वि वर्हि मा युगं वि शारि।**

**इन्द्रः पातल्ये ददतां शरीतोररिष्टनेमे अभि नः सचस्व॥१७॥**

**स्थिरौ। गावौ। भवताम्। वीळुः। अक्षः। मा। ईषा। वि। वर्हि। मा। युगम्। वि। शारि। इन्द्रः। पातल्ये३ इति। ददताम्। शरीतोः। अरिष्टऽनेमे। अभि। नः। सचस्व॥१७॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**स्थिरौ**) निश्चलौ (**गावौ**) वृषभौ (**भवताम्**) (**वीळुः**) प्रशंसितः (**अक्षः**) इन्द्रियछिद्रम् (**मा**) निषेधे (**ईषा**) हिंसकः (**वि**) (**वर्हि**) उत्सन्नाभूत् (**मा**) (**युगम्**) वर्षम् (**वि**) (**शारि**) हिंस्यात् (**इन्द्रः**) ऐश्वर्य्यवान् (**पातल्ये**) पतनशीले (**ददताम्**) (**शरीतोः**) शरीतुं दुष्टस्वभावं हिंसितुं शक्नोति (**अरिष्टनेमे**) योऽरिष्टान्यहिंसितानि कर्माणि नयति तत्सम्बुद्धौ (**अभि**) (**नः**) अस्मान् (**सचस्व**)॥१७॥

**अन्वयः**-हे अरिष्टनेमे! भवानिन्द्रः शरीतोः सन् पातल्ये ददतां वीळुरक्ष ईषा सन् स्थिरौ गावौ मा वि शारि युगं मा वि वर्हि यतः स्थिरौ गावौ भवतां तस्मात्त्वं नोऽभि सचस्व॥१७॥

**भावार्थः**-मनुष्यैर्महोपकारका गवादयः पशवः कदाचिन्नो हिंसनीयाः। व्यर्थः समयश्च न गमनीयः सद्भिः सह सदैव सन्धी रक्षणीयः॥१७॥

**पदार्थः**-हे (**अरिष्टनेमे**) नहीं नाश होनेवाले कर्मों को प्राप्त करानेवाले! आप (**इन्द्रः**) ऐश्वर्यवाले (**शरीतोः**) दुष्ट स्वभाव से युक्त के नाश करने में समर्थ हुए (**पातल्ये**) गिरनेवाले में (**ददताम्**) दीजिये और (**वीळुः**) प्रशंसायुक्त (**अक्षः**) इन्द्रिय के छिद्र को (**ईषा**) नाश करनेवाला हुआ (**स्थिरौ**) निश्चल (**गावौ**) बैलों का (**मा**) नहीं (**वि, शारि**) नाश करे (**युगम्**) वर्ष को (**मा**) नहीं (**वि, वर्हि**) वन्ध्या हो जिससे कि निश्चल बैल (**भवताम्**) होवें, तिससे आप (**नः**) हम लोगों से (**अभि, सचस्व**) सब प्रकार मिलो॥१७॥

**भावार्थः**-मनुष्यों को चाहिये कि बड़े उपकार करनेवाले गौ आदि पशुओं का कभी नाश नहीं करें और व्यर्थ समय न बितावें, श्रेष्ठ पुरुषों के साथ सदा ही मेल [=सम्बन्ध] की रक्षा करें॥१७॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**बलं॑ धेहि त॒नूषु॑ नो॒ बल॑मिन्द्रान॒ळुत्सु॑ नः।**

**बलं॑ तो॒काय॒ तन॑याय जी॒वसे॒ त्वं हि ब॑ल॒दा असि॑॥१८॥**

**बल॑म्। धे॒हि॒। त॒नूषु॑। नः॒। बल॑म्। इ॒न्द्र॒। अ॒न॒ळुत्ऽसु॑। नः॒। बल॑म्। तो॒काय॑। तन॑याय। जी॒वसे॑। त्वम्। हि। ब॒ल॒ऽदाः। असि॑॥१८॥**

**पदार्थः**-(**बलम्**) पराक्रमम् (**धेहि**) (**तनूषु**) शरीरेषु (**नः**) अस्मान् (**बलम्**) (**इन्द्र**) परमैश्वर्यप्रद (**अनळुत्सु**) गवादिषु (**नः**) अस्माकम् (**बलम्**) (**तोकाय**) ह्रस्वाय बालकाय (**तनयाय**) प्राप्तकौमारयौवनाऽवस्थाय (**जीवसे**) जीवितुम् (**त्वम्**) (**हि**) यतः (**बलदाः**) (**असि**)॥१८॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! हि यतस्त्वं बलदा असि तस्मान्नस्तनूषु बलं धेहि। नोऽनळुत्सु बलं धेहि नो जीवसे तोकाय तनयाय बलं धेहि॥१८॥

**भावार्थः**-हे आचार्य! भवान् यस्माच्छरीरात्मबलवानस्ति तस्मादस्मासु पूर्णं शरीरात्मबलं निधेहि॥१८॥



www.9009.co.in

**पदार्थ:**-हे **(इन्द्र)** अत्यन्त ऐश्वर्य्य के देनेवाले! **(हि)** जिससे आप **(बलदाः)** बल के देनेवाले **(असि)** हैं, इससे **(नः)** हम लोगों के **(तनूषु)** शरीरों में **(बलम्)** बल को **(धेहि)** धारण करो और **(नः)** हम लोगों के **(अनळुत्सु)** गौ आदिकों में **(बलम्)** बल को धारण करो, हम लोगों के **(जीवसे)** जीवन और **(तोकाय)** छोटे बालक तथा **(तनयाय)** कौमार अवस्था को प्राप्त पुरुष के लिये **(बलम्)** पराक्रम को धारण करो॥१८॥

**भावार्थ:**-हे आचार्य्य! आप जिससे कि शरीर और आत्मा के बल से युक्त हो, इससे हम लोगों में पूर्ण शरीर और आत्मा के बल को धारण करो॥१८॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अभि व्ययस्व खदिरस्य सारमोजो धेहि स्पन्दने शिंशपायाम्।**

**अक्ष वीळो वीळित वीळयस्व मा यामादस्मादव जीहिपो नः॥१९॥**

**अभि। व्ययस्व। खदिरस्य। सारम्। ओजः। धेहि। स्पन्दने। शिंशपायाम्। अक्ष। वीळो इति। वीळित। वीळयस्व। मा। यामात्। अस्मात्। अव। जीहिपः। नः॥१९॥**

**पदार्थ:**-**(अभि)** सर्वतः **(व्ययस्व)** व्ययं कुरु **(खदिरस्य)** एतत्काष्ठस्य **(सारम्)** दृढभागमिव **(ओजः)** बलम् **(धेहि)** **(स्पन्दने)** किञ्चिच्चलने **(शिंशपायाम्)** एतत्काष्ठे वृक्षविशेषे **(अक्ष)** व्याप्तविद्य **(वीळो)** बलवन् प्रशंसितस्वभाव **(वीळित)** बहुभिः प्रशंसित **(वीळयस्व)** प्रेरयस्व **(मा)** निषेधे **(यामात्)** प्रहरात् **(अस्मात्)** **(अव)** **(जीहिपः)** त्याजयेः **(नः)** अस्मान्॥१९॥

**अन्वय:**-हे अक्ष! त्वमस्मासु खदिरस्य सारमिवोजो धेहि शिंशपायां स्पन्दन इवाऽभिव्ययस्व। हे वीळो वीळित! नोऽस्मान् वीळयस्वाऽस्माद् यामादस्मान्माव जीहिपः॥१९॥

**भावार्थ:**-हे आचार्य्य! अस्मासु दृढं बलं धेहि सत्कर्मेष्वस्मान् प्रेरय कदाचिन्मा त्यजेः॥१९॥

**पदार्थ:**-हे **(अक्ष)** विद्याओं से व्याप्त! आप हम लोगों में **(खदिरस्य)** इस काष्ठ के **(सारम्)** दृढ भाग के सदृश **(ओजः)** बल को **(धेहि)** धारण कीजिये **(शिंशपायाम्)** इस काष्ठ को वृक्षविशेष **(स्पन्दने)** कुछ चलने में **(अभि)** सब प्रकार **(व्ययस्व)** खर्च करो। और हे **(वीळो)** बलयुक्त और **(वीळित)** बहुतों में प्रशंसित पुरुष! **(नः)** हम लोगों को **(वीळयस्व)** प्रेरणा करो **(अस्मात्)** इस **(यामात्)** प्रहर से [हम लोगों को] **(मा)** नहीं **(अव, जीहिपः)** त्यागिये॥१९॥

**भावार्थ:**-हे आचार्य्य! हम लोगों में दृढ़ बल को धारण करो, श्रेष्ठ कर्मों में हम लोगों को प्रेरणा करो और कभी मत त्याग करो॥१९॥

**अथ राजपुरुषविषयमाह॥**

अब राजा के पुरुष के विषय को कहते हैं॥



www.9009.co.in

**अ॒यम॒स्मान्वन॒स्पति॒र्मा च॒ हा मा च॑ रीरिषत्।**

**स्व॒स्त्या गृ॒हेभ्य॒ आव॒सा आ वि॒मोच॑नात्॥२०॥२२॥**

**अ॒यम्। अ॒स्मान्। व॒न॒स्पति॑ः। मा। च॒। हाः। मा। च॒। रि॒रि॒ष॒त्। स्व॒स्ति। आ। गृ॒हेभ्य॑ः। आ। अ॒व॒ऽसै। आ। वि॒ऽमोच॑नात्॥२०॥**

**पदार्थः**-(**अयम्**) (**अस्मान्**) (**वनस्पतिः**) वनस्य पालकः (**मा**) (**च**) (**हाः**) त्यजेः (**मा**) (**च**) (**रीरिषत्**) हिंस्यात् (**स्वस्ति**) सुखम् (**आ**) (**गृहेभ्यः**) (**आ**) (**अवसै**) निश्चयाय। अत्र षो धातोः क्विप् **वाच्छन्दसी**त्याकारलोपाभावः। (**आ**) (**विमोचनात्**) विमोचनामारभ्य॥२०॥

**अन्वयः**-हे राजन्! यथाऽयं वनस्पतिरस्मान्न त्यजति तथाऽस्मान्मा हा यथा सूर्य्यश्चाऽस्मान्न हिनस्ति तथैव भवान् मा च रीरिषत्। आवसै आ गृहेभ्यः स्वस्त्या विमोचनात् सुखमागच्छतु॥२०॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यथाऽन्नादीनि वस्तूनि सर्वेषां रक्षकाणि स्युस्तथा राजपुरुषाश्च सर्वेषां पालकाः सन्तु न्यायं विहायाऽन्यायं कदाचिन्मा कुर्युः॥२०॥

**पदार्थः**-हे राजन्! जैसे (**अयम्**) यह (**वनस्पतिः**) वन का पालन करनेवाला (**अस्मान्**) हम लोगों का त्याग नहीं करता है, वैसे हम लोगों का (**मा**) मत (**हाः**) त्याग करिये (**च**) और जैसे सूर्य्य हम लोगों की हिंसा नहीं करता है, वैसे ही आप (**मा, च**) नहीं (**रीरिषत्**) नाश कीजिये। और (**आ, अवसै**) अच्छे निश्चय के लिये (**आ, गृहेभ्यः**) सब प्रकार गृहों से (**स्वस्ति**) सुख हो (**आ, विमोचनात्**) त्याग तक सुख प्राप्त होवे॥२०॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे अन्न आदि वस्तु सबके रक्षक होवें, वैसे राजा के पुरुष सबके पालनकर्त्ता हों और न्याय का त्याग करके अन्याय कभी न करें॥२०॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**इन्द्रो॒तिभि॑र्बहु॒लाभि॑र्नो अ॒द्य या॑च्छ्रे॒ष्ठाभि॑र्मघवञ्छूर जिन्व।**

**यो नो॒ द्वेष्ट्यध॑र॒ः सस्प॑दीष्ट॒ यमु॑ द्वि॒ष्मस्तमु॑ प्रा॒णो ज॑हातु॥२१॥**

**इन्द्र॑। ऊ॒तिऽभि॑ः। ब॒हु॒लाभि॑ः। न॒ः। अ॒द्य। या॒त्ऽश्रे॒ष्ठाभि॑ः। म॒घ॒ऽव॒न्। शू॒र॒। जि॒न्व॒। यः। न॒ः। द्वेष्टि॑। अध॑रः। सः। प॒दी॒ष्ट॒। यम्। ऊ॒म् इति॑। द्वि॒ष्मः। तम्। ऊ॒म् इति॑। प्रा॒णः। ज॒हा॒तु॒॥२१॥**

**पदार्थः**-(**इन्द्र**) परमैश्वर्य्ययुक्त (**ऊतिभिः**) रक्षादिभिः (**बहुलाभिः**) (**नः**) अस्मान् (**अद्य**) (**याच्छ्रेष्ठाभिः**) शत्रुवधकर्म्मण्युत्तमाभिः (**मघवन्**) बहुपूजितधनयुक्त (**शूर**) दुष्टानां हिंसक (**जिन्व**) प्रसादय (**यः**) (**नः**) अस्मान् (**द्वेष्टि**) वैरयति (**अधरः**) नीचः (**सः**) (**पदीष्ट**) प्राप्नुयात् (**यम्**) (**उ**) (**द्विष्मः**) (**तम्**) (**उ**) (**प्राणः**) (**जहातु**) त्यजतु॥२१॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे इन्द्र! योऽधरो नो द्वेष्टि स दुःखं पदीष्ट यमु वयं द्विष्मस्तमु प्राणो जहातु। हे मघवन्त्शूर! भवान् बहुलाभिः याच्छ्रेऽष्ठाभिर्नोऽस्मान् अद्य जिन्व॥२१॥

**भावार्थः**-विदुषां दुष्टकर्मैव द्वेष्यो धर्मात्मा सत्कर्त्तव्यो भवति यावन्ति प्रजारक्षायां दुष्टनिवारणे च साधनान्यपेक्षितानि स्युस्तावन्त्यादाय श्रेष्ठपालनं दुष्टनिवारणं राजादयः सततं कुर्युः॥२१॥

**पदार्थः**-हे **(इन्द्र)** अत्यन्त ऐश्वर्य से युक्त! **(यः)** जो **(अधरः)** नीच **(नः)** हम लोगों से **(द्वेष्टि)** वैर करता है **(सः)** वह दुःख को **(पदीष्ट)** प्राप्त होवे **(यम्)** जिसको **(उ)** और हम लोग **(द्विष्मः)** द्वेष करें **(तम्)** उसका **(उ)** भी **(प्राणः)** हृदयस्थ वायु **(जहातु)** त्याग करे। और हे **(मघवन्)** श्रेष्ठ धन से युक्त **(शूर)** दुष्टों के नाशकर्त्ता! आप **(बहुलाभिः)** बहुत **(श्रेष्ठाभिः)**[80] उत्तम **(ऊतिभिः)** रक्षा आदिकों से **(नः)** हम लोगों को **(यात्)** प्राप्त होवे **(अप, जिन्व)** प्रसन्न कीजिये॥२१॥

**भावार्थः**-विद्वान् लोगों को दुष्ट कर्म करनेवाला पुरुष द्वेष करने योग्य और धर्मात्मा सत्कार करने योग्य है। जितने प्रजा की रक्षा करने और दुष्ट पुरुषों के निवारण करने में साधन अपेक्षित होवें, उनको ग्रहण करके श्रेष्ठ पुरुषों का पालन और दुष्टों का निवारण राजा आदि निरन्तर करें॥२१॥

**अथ राजविषयमाह॥**

अब राजा के विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**परशुं चिद्वि तपति शिम्बलं चिद्वि वृश्चति।**

**उखा चिदिन्द्र येषन्ती प्रयस्ता फेनमस्यति॥२२॥**

**परशुम्। चित्। वि। तपति। शिम्बलम्। चित्। वि। वृश्चति। उखा। चित्। इन्द्र। येषन्ती। प्रऽयस्ता। फेनम्। अस्यति॥२२॥**

**पदार्थः**-**(परशुम्)** कुठारम् **(चित्)** इव **(वि)** **(तपति)** विशेषेण सन्तापयति **(शिम्बलम्)** शल्मलीपुष्पं पत्रं वा **(चित्)** इव **(वि)** विशेषेण **(वृश्चति)** छिनत्ति **(उखा)** पाकस्थाली **(चित्)** इव **(इन्द्र)** परमैश्वर्ययुक्त **(येषन्ती)** स्रवन्ती **(प्रयस्ता)** प्रेरिता **(फेनम्)** **(अस्यति)** प्रक्षिपति॥२२॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! या ते सेना अयस्कारः परशुं चिच्छत्रून् वि तपति शिम्बलं चिद्वि वृश्चति प्रयस्ता येषन्त्युखा चित् फेनमिव शत्रूनस्यति सा त्वया सदैव सत्कर्त्तव्या॥२२॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। ये राजानः प्रशस्तां वीरसेनां रक्षन्ति त एव विजयं प्राप्य विराजन्ते॥२२॥

८०. **(याच्छ्रेष्ठाभिः)** शत्रु का वध करने में उत्तम **(ऊतिभिः)** रक्षा आदिकों से **(नः)** हम लोगों को **(अप, जिन्व)** प्रसन्न कीजिये॥ सं०



www.9009.co.in

**पदार्थ:**-हे **(इन्द्र)** अत्यन्त ऐश्वर्य से युक्त! जो आपकी सेना लोहार **(परशुम्)** परशारूप शस्त्र को **(चित्)** जैसे वैसे शत्रुओं को **(वि, तपति)** विशेष करके सन्ताप देती है **(शिम्बलम्)** शेमर [सेमल] वृक्ष के पुष्प वा पत्र को **(चित्)** जैसे **(वि, वृश्चति)** विशेष करके काटता है **(प्रयस्ता)** प्रेरित हुई **(येषन्ती)** वहता तथा प्राप्त हुआ **(उखा)** पाक करने का पात्र **(चित्)** जैसे **(फेनम्)** फेने को वैसे शत्रुओं को **(अस्यति)** फेंकती है, उसका [=वह] आपसे सदा सत्कार करने योग्य है॥२२॥

**भावार्थ:**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जो राजा लोग श्रेष्ठ वीरों की सेना की रक्षा करते हैं, वे ही विजय को प्राप्त होकर शोभित होते हैं॥२२॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**न सायकस्य चिकिते जनासो लोधं नयन्ति पशु मन्यमानाः।**

**नावाजिनं वाजिना हासयन्ति न गर्दभं पुरो अश्वान्नयन्ति॥२३॥**

**न। सायकस्य। चिकिते। जनासः। लोधम्। नयन्ति। पशु। मन्यमानाः। न। अवाजिनम्। वाजिना। हासयन्ति। न। गर्दभम्। पुरः। अश्वात्। नयन्ति॥२३॥**

**पदार्थ:**-**(न)** निषेधे **(सायकस्य)** शस्त्रसमूहस्य **(चिकिते)** जानातु **(जनासः)** वीराः **(लोधम्)** लोब्धारम्। अत्र वर्णव्यत्ययेन भस्य धः। **(नयन्ति)** प्राप्नुवन्ति **(पशु)** पशुमिव। अत्र **सुपां सुलुगिति** विभक्तेर्लुक्। **(मन्यमानाः)** विजानन्तः **(न)** निषेधे **(अवाजिनम्)** अविद्यमाना वाजिनो यत्र संग्रामे तम् **(वाजिना)** अश्वेन **(हासयन्ति)** **(न)** **(गर्दभम्)** लम्बकर्णं खरम् **(पुरः)** **(अश्वात्)** **(नयन्ति)**॥२३॥

**अन्वयः**-हे राजन्! ये ते जनासो लोधं न नयन्ति पशु मन्यमाना वाजिना अवाजिनं न हासयन्ति। अश्वात्पुरो गर्दभं न नयन्ति ता सायकस्य दानेन युक्तान् कर्तुं भवान् चिकिते॥२३॥

**भावार्थ:**-त एव राज्ञो वीरा वराः स्युर्ये युद्धविद्यां विज्ञाय सेनाङ्गानि यथावद्रक्षितुं संस्थापयितुं योधयितुं जानन्ति॥२३॥

**पदार्थ:**-हे राजन्! जो वे **(जनासः)** वीरपुरुष **(लोधम्)** प्राप्त होनेवाले को **(न)** नहीं **(नयन्ति)** प्राप्त होते हैं **(पशु)** पशु के सदृश **(मन्यमानाः)** जानते हुए **(वाजिना)** घोड़े से **(अवाजिनम्)** घोड़े जिसमें नहीं ऐसे संग्राम को **(न)** नहीं **(हासयन्ति)** हराते हैं और **(अश्वात्)** घोड़े से **(पुरः)** प्रथम **(गर्दभम्)** लम्बे कानवाले गदहे को **(न)** नहीं **(नयन्ति)** प्राप्त कराते हैं, उनको **(सायकस्य)** शस्त्रसमूह के दान से युक्त करने को आप **(चिकिते)** जानिये॥२३॥

**भावार्थ:**-वे ही राजा के वीर श्रेष्ठ होवें कि जो युद्धविद्या को जान के सेनाओं के अङ्गों की यथावत् रक्षा, स्थिर करने और युद्ध कराने को जानते हैं॥२३॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**



www.9009.co.in

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**इ॒मे इ॑न्द्र भर॒तस्य॑ पु॒त्रा अ॑पपि॒त्वं चि॑कितु॒र्न प्र॑पि॒त्वम्।**

**हि॒न्वन्त्यश्व॒मर॑णं॒ न नित्यं॒ ज्या॑वाजं॒ परि॑ णयन्त्या॒जौ॥ २४॥ २३॥ ४॥**

**इ॒मे। इ॒न्द्र॒। भ॒र॒तस्य॑। पु॒त्राः। अ॒प॒ऽपि॒त्वम्। चि॒कि॒तुः। न। प्र॒ऽपि॒त्वम्। हि॒न्वन्ति॑। अश्व॑म्। अर॑णम्। न। नित्य॑म्। ज्या॑ऽवाजम्। परि॑। न॒य॒न्ति॒। आ॒जौ॥ २४॥**

**पदार्थः**-(**इमे**) (**इन्द्र**) परमैश्वर्ययोजक (**भरतस्य**) सेनाया धर्त्तू रक्षकस्य (**पुत्राः**) सुशिक्षितास्तनया इव भृत्याः (**अपपित्वम्**) अपचयम् (**चिकितुः**) विज्ञातुः (**न**) इव (**प्रपित्वम्**) प्रकृष्टं प्रापणम् (**हिन्वन्ति**) वर्धयन्ति (**अश्वम्**) तुरङ्गम् (**अरणम्**) प्रेरितम् (**न**) इव (**नित्यम्**) (**ज्यावाजम्**) ज्यायाः शब्दम् (**परि**) सर्वतः (**नयन्ति**) (**आजौ**) संग्रामे॥ २४॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! तव सेनाया भरतस्य चिकितुर्न य इमे पुत्रा इवाऽपपित्वं प्रपित्वमश्वमरणं न हिन्वन्त्याजौ ज्यावाजं नित्यं परि णयन्ति ताँश्च त्वं स्वात्मवद्रक्ष॥ २४॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। ये राजादयः स्वह्रासवृद्धी जानन्ति सेनास्थान् साध्यक्षान् भृत्यान् युद्धकर्मणि कुशलाननुरक्तान् पुत्रवत्पालयन्ति तेषां सदैव वृद्धिर्भवति पराजयः कुतो भवेदिति॥ २४॥

अत्र विद्युन्मेघविद्वद्राजप्रजासेनाकर्मवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति त्रिपञ्चाशत्तमं सूक्तं त्रयोविंशो वर्गस्तृतीये मण्डले चतुर्थोऽनुवाकश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे (**इन्द्र**) अत्यन्त ऐश्वर्य्य से युक्त करनेवाले! आपकी सेना के (**भरतस्य**) रक्षा करने और (**चिकितुः**) जाननेवाले के (**न**) तुल्य [जो] (**इमे**) ये मेरे (**पुत्राः**) उत्तम प्रकार शिक्षा को प्राप्त सन्तानों के सदृश सेवक लोग (**अपपित्वम्**) नाश और (**प्रपित्वम्**) उत्तम प्रकार प्राप्त कराने को (**अश्वम्**) घोड़े को (**अरणम्**) प्रेरणा किये हुए के (**न**) तुल्य (**हिन्वन्ति**) बढ़ाते हैं और (**आजौ**) संग्राम में (**ज्यावाजम्**) धनुष् की तांत के शब्द को (**नित्यम्**) नित्य (**परि**) सब प्रकार (**नयन्ति**) प्राप्त करते हैं, उसकी और उनकी आप अपने आत्मा के सदृश रक्षा करो॥ २४॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जो राजा आदि अपने नाश और वृद्धि को जानते हैं, सेना में वर्त्तमान साध्यक्ष सेवकों को युद्ध कर्म में चतुर और अनुरक्तों का पुत्र के सदृश पालन करते हैं, उनकी सदा ही वृद्धि होती है, पराजय कहां से होवे॥ २४॥

इस सूक्त में बिजुली, मेघ, विद्वान्, राजा, प्रजा और सेना के कर्मों का वर्णन होने से इस सूक्त के अर्थ की पिछले सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह तिरेपनवां सूक्त और तेईसवां वर्ग तीसरे मण्डल में चौथा अनुवाक् समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

**अथ द्वाविंशत्यृचस्य चतु:पञ्चाशत्तमस्य सूक्तस्य प्रजापतिर्वैश्वामित्रो वाच्यो वा ऋषि:। विश्वेदेवा देवता:। १ निचृत्पङ्क्ति:। ९ भुरिक् पङ्क्ति:। १२ स्वराट् पङ्क्तिश्छन्द:। पञ्चम: स्वर:। २, ३, ६, ८, १०, ११, १३, १४ त्रिष्टुप्। ४, ७, १५, १६, १८, २०, २१ निचृत् त्रिष्टुप्। ५ स्वराट् त्रिष्टुप्। १७ भुरिक् त्रिष्टुप्। १९, २२ विराट् त्रिष्टुप् छन्द:। धैवत: स्वर:॥**

***अथ राजविषयमाह॥***

अब बाईस ऋचावाले चौवनवें सूक्त का प्रारम्भ है। उसके प्रथम मन्त्र में राजा के विषय को कहते हैं॥

**इमं महे विदथ्याय शूषं शश्वत्कृत्व ईड्याय प्र जभ्रु:।**
**शृणोतु नो दम्येभिरनीकै: शृणोत्वग्निर्दिव्यैरजस्र:॥ १॥**

**इमम्। महे। विदथ्याय। शूषम्। शश्वत्। कृत्व:। ईड्याय। प्र। जभ्रु:। शृणोतु। न:। दम्येभि:। अनीकै:। शृणोतु। अग्नि:। दिव्यै:। अजस्र:॥ १॥**

**पदार्थ:**-(**इमम्**) (**महे**) महते (**विदथ्याय**) विदथेषु संग्रामेषु भवाय (**शूषम्**) बलम् (**शश्वत्**) निरन्तरम् (**कृत्व:**) बहव: कर्त्तारो विद्यन्ते यस्य तत्सम्बुद्धौ (**ईड्याय**) स्तोतुमर्हाय (**प्र**) (**जभ्रु:**) धरन्तु (**शृणोतु**) (**न:**) अस्माकम् (**दम्येभि:**) दातुं योग्यै: (**अनीकै:**) सैन्यै: (**शृणोतु**) (**अग्नि:**) विद्वान् (**दिव्यै:**) (**अजस्र:**) निरन्तर:॥ १॥

**अन्वय:**-हे कृत्वो! भवान्महे ईड्याय विदथ्यायेमं शश्वच्छूषं प्र जभ्रु: तान्नोऽस्मान् भवान् दम्येभिरनीकै: सह शृणोतु। अजस्रोऽग्निर्भवान् दिव्यै: कर्मभि: सहाऽस्माञ्छृणोतु॥ १॥

**भावार्थ:**-ये युद्धाय पूर्णां विद्यां महद्बलं धरेयुस्तान् राजान: श्रुत्वा सततं सत्कुर्युस्तत्कृत्यं सततमुन्नयेयुर्यतो हृष्टा: सन्तस्ते विजयेन राजानं सदाऽलङ्कुर्यु:॥ १॥

**पदार्थ:**-हे (**कृत्व:**) बहुत कार्य करनेवाले! जिसके वह आप (**महे**) बड़े (**ईड्याय**) स्तुति करने के योग्य (**विदथ्याय**) संग्राम में उत्पन्न हुए के लिये (**इमम्**) इस (**शश्वत्**) निरन्तर (**शूषम्**) बल को (**प्र, जभ्रु:**) अच्छे प्रकार धारण करते हैं, उन (**न:**) हम लोगों को आप (**दम्येभि:**) देने के योग्य (**अनीकै:**) सेना में वर्त्तमान जनों के साथ (**शृणोतु**) सुनिये (**अजस्र:**) निरन्तर वर्त्तमान (**अग्नि:**) विद्वान् आप (**दिव्यै:**) श्रेष्ठ कर्मों के साथ हम लोगों का (**शृणोतु**) श्रवण करो॥ १॥

**भावार्थ:**-जो लोग युद्ध के लिये पूर्ण विद्या और बड़े बल को धारण करें, उनको राजजन सुनके निरन्तर सत्कार करें और उनके कृत्य की निरन्तर उन्नति करें, जिससे कि प्रसन्न हुए वे विजय से राजा को सदा शोभित करें॥ १॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥



www.9009.co.in

**महिं मुहे दिवे अर्चा पृथिव्यै कामों म इच्छञ्चरति प्रजानन्।**

**ययोर्ह स्तोमें विदर्थेषु देवाः संपर्यवों मादयन्ते सचायोः॥ २॥**

**महिं। मुहे। दिवे। अर्च। पृथिव्यै। कामः। मे। इच्छन्। चरति। प्रऽजानन्। ययोः। ह। स्तोमें। विदर्थेषु। देवाः। सपर्यवः। मादयन्ते। सचा। आयोः॥ २॥**

**पदार्थः**-(**महि**) महान् (**महे**) महते (**दिवे**) प्रकाशमानाय (**अर्च**) सत्कुरु। अत्र **द्व्यचोऽतस्तिङ** इति दीर्घः। (**पृथिव्यै**) भूमिराज्यप्राप्तये (**कामः**) अभिलाषा (**मे**) मम (**इच्छन्**) (**चरति**) गच्छति (**प्रजानन्**) विदन् सन् (**ययोः**) विद्याराज्ययोः (**ह**) (**स्तोमे**) प्रशंसिते विजये (**विदथेषु**) संग्रामेषु (**देवाः**) विद्वांसः (**सपर्यवः**) सेवकाः (**मादयन्ते**) हर्षयन्ति (**सचा**) सम्बन्धेन (**आयोः**) जीवस्य॥ २॥

**अन्वयः**-यो युद्धविद्यां प्रजानन् विजयन् राज्यमिच्छन्महे दिवे पृथिव्यै चरति तं यो मे महि कामोऽस्ति तमलङ्कर्तुमिच्छन् विजयते तमर्च। ययोः स्तोमे विदथेषु सपर्यवो देवा हाऽऽयोः सचा मादयन्ते तौ युवां तानानन्दयेतम्॥ २॥

**भावार्थः**-ये विद्याराज्यवृद्धिकामा दीर्घायुषो युद्धविद्याकुशला राजामात्याञ्छ्रीविजयाभ्यां सत्कुर्य्युस्तान् राजाऽमात्या अपि सदैव सुखयन्तु॥ २॥

**पदार्थः**-जो युद्धविद्या को (**प्रजानन्**) जानता और विजय करता और राज्य की (**इच्छन्**) इच्छा करता हुआ (**महे**) बड़े (**दिवे**) प्रकाशमान के और (**पृथिव्यै**) भूमि के राज्य की प्राप्ति के लिये (**चरति**) चलता है, उसको जो (**मे**) मेरी (**महि**) बड़ी (**कामः**) अभिलाषा है, उसको शोभित करने की इच्छा करता हुआ विजय को प्राप्त होता है, उसका (**अर्च**) सत्कार करो। और (**ययोः**) जिन विद्या और राज्य के (**स्तोमे**) प्रशंसा करने योग्य विजय और (**विदथेषु**) संग्रामों में (**सपर्यवः**) सेवक (**देवाः**) विद्वान् लोग (**ह**) निश्चय (**आयोः**) जीव के (**सचा**) सम्बन्ध से (**मादयन्ते**) प्रसन्न करते हैं, वे दोनों आप उन लोगों को आनन्द दीजिये॥ २॥

**भावार्थः**-जो विद्या और राज्य की वृद्धि की कामना करने और अधिक अवस्थावाले युद्धविद्या में निपुण जन, राजा और मन्त्रियों का लक्ष्मी और विजय से सत्कार करें, उन जनों को राजा और मन्त्री भी सदा ही सुखित करें॥ २॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**युवोर्ऋतं रोदसी सत्यमस्तु मुहे षु णः सुविताय प्र भूतम्।**

**इदं दिवे नमों अग्ने पृथिव्यै संपर्यामि प्रयसा यामि रत्नम्॥ ३॥**



www.9009.co.in

युवोः। ऋतम्। रोदसी इति। सत्यम्। अस्तु। महे। सु। नः। सुविताय। प्र। भूतम्॥ इदम्। दिवे। नमः। अग्ने। पृथिव्यै। सपर्यामि। प्रयसा। यामि। रत्नम्॥३॥

**पदार्थः**-(**युवोः**) स्वामिसेवकयोः (**ऋतम्**) प्राप्तुं योग्यं कारणम् (**रोदसी**) द्यावापृथिव्यौ (**सत्यम्**) अव्यभिचारि (**अस्तु**) (**महे**) महते (**सु**) (**नः**) (**सुविताय**) ऐश्वर्याय (**प्र**) (**भूतम्**) पुष्कलम् (**इदम्**) (**दिवे**) प्रकाशमानाय (**नमः**) अन्नादिकम् (**अग्ने**) विद्वन्! (**पृथिव्यै**) भूम्यै (**सपर्यामि**) सेवामि (**प्रयसा**) प्रयत्नेन (**यामि**) प्राप्नोमि (**रत्नम्**) सुवर्णहीरकादिकम्॥३॥

**अन्वयः**-हे अग्ने राजन्! युवोर्युवयोः स्वामिसेवकयोः रोदसी इव महे सुवितायेदं प्र भूतमृतं सत्यं रत्नं नः स्वस्तु। यथाऽहं पृथिव्यै दिवे नमः सपर्यामि प्रयसा विजयं यामि तथा युवां वर्त्तेयाथाम्॥३॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यथा भूमिसूर्यौ सर्वं जगद्व्यवहारयित्वा श्रीमदन्नवच्च करोति तथैव राजादिभिः पुरुषैः प्रयत्नेन सुकर्माणि सेवित्वा पुष्कलमैश्वर्यं प्राप्तव्यम्॥३॥

**पदार्थः**-हे (**अग्ने**) विद्वन् पुरुष राजन्! (**युवोः**) आप दोनों स्वामी-सेवक के (**रोदसी**) अन्तरिक्ष और पृथिवी के सदृश (**महे**) बड़े (**सुविताय**) ऐश्वर्य के लिये (**इदम्**) यह (**प्र, भूतम्**) अत्यन्त (**ऋतम्**) प्राप्त होने योग्य कारण (**सत्यम्**) व्यभिचाररहित अर्थात् नहीं विपरीत होनेवाला (**रत्नम्**) सुवर्ण और हीरा आदि (**नः**) हम लोगों का (**सु, अस्तु**) श्रेष्ठ हो और जैसे मैं (**पृथिव्यै**) भूमि और (**दिवे**) प्रकाशमान के लिये (**नमः**) अन्न आदि का (**सपर्यामि**) सेवन करता और (**प्रयसा**) प्रयत्न से विजय को (**यामि**) प्राप्त होता हूँ, वैसे आप दोनों वर्त्ताव कीजिये॥३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे भूमि और सूर्य सम्पूर्ण संसार का व्यवहार चलाय के लक्ष्मी और अन्न से युक्त करता है, वैसे ही राजा आदि पुरुषों को चाहिये कि प्रयत्न से उत्तम कर्मों का सेवन करके अत्यन्त ऐश्वर्य को प्राप्त होवें॥३॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**उतो हि वां पूर्व्या आविविद्र ऋतावरी रोदसी सत्यवाचः।**

**नरश्चिद्वां समिथे शूरसातौ ववन्दिरे पृथिवि वेविदानाः॥४॥**

उतो इति। हि। वाम्। पूर्व्याः। आऽविविद्रे। ऋतवरी इत्यृतऽवरी। रोदसी इति। सत्यऽवाचः। नरः। चित्। वाम्। सम्ऽइथे। शूरऽसातौ। ववन्दिरे। पृथिवि। वेविदानाः॥४॥

**पदार्थः**-(**उतो**) अपि (**हि**) (**वाम्**) युवाम् (**पूर्व्याः**) पूर्वेषु कुशलाः (**आविविद्रे**) समन्ताल्लभन्ते (**ऋतावरी**) सत्यप्रापिकोषा (**रोदसी**) द्यावापृथिव्याविव (**सत्यवाचः**) सत्या यथार्था वाग्येषान्ते (**नरः**) नायकाः (**चित्**) इव (**वाम्**) युवाम् (**समिथे**) संग्रामे (**शूरसातौ**) शूराणां विभागे (**ववन्दिरे**) आनन्दन्तु (**पृथिवि**) भूमिवत्क्षमाशीले (**वेविदानाः**) भृशं प्रतिजानन्तः॥४॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे पृथिविवद्वर्त्तमाने राज्ञि! ये सत्यवाचो वेविदानास्त्वां ववन्दिरे त्वा तव पतिं च वां शूरसातौ समिथे नरश्चिदिव ववन्दिरे उतो ऋतावरी रोदसीव पूर्व्या वां ह्या विविद्रे सा त्वं तांस्तञ्च सत्कुरु॥४॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। त एव राज्यं कर्त्तुमर्हन्ति ये सत्यमानाः सत्याचाराः सत्यवाचो जितेन्द्रिया विद्वांसः स्युस्ता एव राज्ञो भवितुमर्हन्ति याः पतिसदृश्यः स्युः॥४॥

**पदार्थः**-हे (**पृथिवी**) भूमि के सदृश क्षमायुक्त राज्ञि! जो (**सत्यवाचः**) यथार्थ वाणी वाले (**वेविदानाः**) अत्यन्त जानते हुए आपको (**ववन्दिरे**) प्रणाम करें और आप आपके स्वामी को (**वाम्**) आप दोनों (**शूरसातौ**) शूरवीर पुरुषों के विभाग और (**समिथे**) संग्राम में (**नरः**) अग्रणी पुरुषों के (**चित्**) सदृश प्रणाम करो और (**उतो**) भी (**ऋतावरी**) सत्य को प्राप्त करानेवाली स्त्री (**रोदसी**) अन्तरिक्ष और पृथिवी के सदृश (**पूर्व्याः**) प्राचीन जनों में चतुर पुरुष आप दोनों को (**हि**) और (**आ, विविद्रे**) सब प्रकार प्राप्त होते हैं, वह स्त्री और आप उनका और उसका सत्कार करो॥४॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। वे ही लोग राज्य करने के योग्य हैं कि जो सत्य मानने, सत्य आचरण करने, सत्य वाणी बोलने और इन्द्रियों के जीतनेवाले विद्वान् जन होवें और वे ही रानी योग्य स्त्रियाँ हैं कि जो उक्त प्रकार के पति के सदृश होवें॥४॥

**अथ विद्वद्विषयमाह॥**

अब विद्वान् के विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**को अद्धा वेद क इह प्र वोचद् देवाँ अच्छा पथ्या३ का समेति।**

**ददृश्र एषामवमा सदांसि परेषु या गुह्येषु व्रतेषु॥५॥२४॥**

**कः। अद्धा। वेद। कः। इह। प्र। वोचत्। देवान्। अच्छ। पथ्या। का। सम्। एति। ददृश्रे। एषाम्। अवमा। सदांसि। परेषु। या। गुह्येषु। व्रतेषु॥५॥**

**पदार्थः**-(**कः**) (**अद्धा**) साक्षात् (**वेद**) जानीयात् (**कः**) (**इह**) अस्मिन् विज्ञाने (**प्र**) (**वोचत्**) उपदिशेत् (**देवान्**) विदुषः (**अच्छ**) सम्यक्। अत्र **संहितायामिति** दीर्घः। (**पथ्या**) पथोनपेता (**का**) (**सम्**) (**एति**) प्राप्नोति (**ददृश्रे**) पश्येयुः (**एषाम्**) (**अवमा**) अर्वाचीनानि (**सदांसि**) वस्तूनि (**परेषु**) सूक्ष्मेषु (**या**) यानि (**गुह्येषु**) गुप्तेषु रक्षितव्येषु (**व्रतेषु**) सत्यभाषणादिनियमेषु॥५॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! इह परमात्मानं धर्मञ्चाद्धा को वेद को देवानच्छ प्र वोचत् का पथ्या देवान्त्समेति य एषां परेष्ववमा सदांसि गुह्येषु व्रतेषु या ज्ञानसत्यभाषणादीनि ददृश्रे ते पूर्वोक्तं सर्वं विजानीयुः॥५॥

**भावार्थः**-अस्मिञ्जगति विरल एव मनुष्यो भवति यः परमात्मानं विदित्वा तदाज्ञानुकूलमाचरणं स्वीकृत्य सत्यमुपदिशति कश्चिदेव विद्वान् योऽत्र पराऽवरज्ञः स्यात्॥५॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! (**इह**) इस विज्ञान में परमात्मा और धर्म को (**अद्धा**) साक्षात् (**कः**) कौन (**वेद**) जाने और (**कः**) कौन पुरुष (**देवान्**) विद्वानों को (**अच्छ**) उत्तम प्रकार (**प्र, वोचत्**) उपदेश देवे



www.9009.co.in

(**का**) कौन (**पथ्या**) उत्तम मार्ग से युक्त (**देवान्**) विद्वानों को (**सम्, एति**) प्राप्त होती है और (**एषाम्**) इन विद्वानों के (**परेषु**) सूक्ष्मों को (**अवमा**) नीचे भाग में वर्त्तमान (**सदांसि**) वस्तुएँ (**गुह्येषु**) गुप्त अर्थात् रक्षा करने योग्य (**व्रतेषु**) सत्यभाषण आदि नियमों में (**या**) जो ज्ञान और सत्यभाषण आदिकों को (**ददृश्रे**) देखें, वे पूर्वोक्त सम्पूर्ण को जानें॥५॥

**भावार्थ:**-इस संसार में विरला ही ऐसा मनुष्य होता है कि जो परमात्मा को जान और उसकी आज्ञा के अनुकूल आचरण स्वीकार करके सत्य का उपदेश देता है, ऐसा कोई विद्वान् जो इस संसार में इस लोक और परलोक का ज्ञाता होवे॥५॥

**अथ ईश्वरविषयमाह॥**

अब ईश्वर के विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**कविर्नृचक्षा अभि षीमचष्ट ऋतस्य योना विघृते मदन्ती।**

**नाना चक्राते सदनं यथा वेः समानेन क्रतुना संविदाने॥६॥**

**कविः। नृऽचक्षाः। अभि। सीम्। अचष्ट। ऋतस्य। योना। विघृते इति विऽघृते। मदन्ती इति। नाना। चक्राते इति। सदनम्। यथा। वेः। समानेन। क्रतुना। संविदाने इति सम्ऽविदाने॥६॥**

**पदार्थ:**-(**कविः**) सर्वज्ञः (**नृचक्षाः**) नृणां द्रष्टा (**अभि**) (**सीम्**) सर्वतः (**अचष्ट**) प्रकाशितवान् (**ऋतस्य**) सत्यस्य कारणस्य (**योना**) योनौ गृहे (**विघृते**) विशेषेण प्रकाशिते (**मदन्ती**) आनन्दन्त्यौ (**नाना**) अनेकविधम् (**चक्राते**) कुरुतः (**सदनम्**) स्थानम् (**यथा**) (**वेः**) पक्षिणः (**समानेन**) तुल्येन (**क्रतुना**) कर्मणा (**संविदाने**) कृतप्रतिज्ञ इव॥६॥

**अन्वयः**-हे स्त्रीपुरुषौ! यथा कविर्नृचक्षाः परमेश्वर ऋतस्य योना विघृते नाना सदनं चक्राते मदन्ती वेः समानेन क्रतुना संविदाने स्त्रियाविव वर्त्तमाने द्यावापृथिव्यौ सीमभ्यचष्ट तं सर्व उपासीरन्॥६॥

**भावार्थ:**-हे मनुष्या! येन परमेश्वरेणाऽनेकविधाः प्रकाशाऽप्रकाशयुक्ता लोका निर्मिताः स एव सर्वज्ञः सर्वद्रष्टा परमात्मा सततमुपासनीयः॥६॥

**पदार्थ:**-हे स्त्री और पुरुष! (**यथा**) जैसे (**कविः**) सम्पूर्ण विषयों के जानने (**नृचक्षाः**) मनुष्यों के देखनेवाले परमेश्वर (**ऋतस्य**) सत्य कारण के (**योना**) गृह में (**विघृते**) विशेष करके प्रकाशित में (**नाना**) अनेक प्रकार के (**सदनम्**) स्थान को (**चक्राते**) करते हैं (**मदन्ती**) आनन्द करती हुईं (**वेः**) पक्षी के (**समानेन**) तुल्य (**क्रतुना**) कर्म से (**संविदाने**) की है प्रतिज्ञा जिन्होंने उन स्त्रियों के सदृश वर्त्तमान अन्तरिक्ष और पृथिवी को (**सीम्**) सब ओर (**अभि, अचष्ट**) प्रकाशित किया, उसकी सब लोग उपासना करें॥६॥

**भावार्थ:**-हे मनुष्यो! जिस परमेश्वर ने अनेक प्रकार के प्रकाश और अप्रकाश से युक्त लोक रचे, वही सबको जानने और सबको देखनेवाला परमात्मा निरन्तर उपासना करने योग्य है॥६॥



www.9009.co.in

**अथ शिष्यविषयमाह॥**

अब शिष्य के विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**स॒मा॒न्या वियु॑ते दू॒रे अ॑न्ते ध्रु॒वे प॒दे त॑स्थतु॒र्जा॒ग॒रूके॑।**

**उ॒त स्वसा॑रा यु॒व॒ती भव॑न्ती॒ आदु॑ ब्रुवाते मिथु॒नानि॒ नाम॑॥७॥**

**स॒मा॒न्या। वियु॑ते इति॒ वि॒ऽयु॑ते। दू॒रेअ॑न्ते॒ इति॑ दू॒रेऽअ॑न्ते। ध्रु॒वे। प॒दे। त॒स्थ॒तु॒ः। जा॒ग॒रूके॒ इति॑॥ उ॒त। स्वसा॑रा। यु॒व॒ती इति॑। भव॑न्ती॒ इति॑। आत्। ऊम् इति॑। ब्रु॒वा॒ते॒ इति॑। मि॒थु॒नानि॑। नाम॑॥७॥**

**पदार्थः**-**(समान्या)** समानस्वभावे **(वियुते)** मिश्रिताऽमिश्रिते **(दूरेअन्ते)** विप्रकृष्टे समीपे च **(ध्रुवे)** दृढे **(पदे)** प्रापणीये **(तस्थतुः)** तिष्ठतः **(जागरूके)** प्रसिद्धे **(उत)** अपि **(स्वसारा)** भगिन्यौ **(युवती)** प्राप्तयौवनावस्थे **(भवन्ती)** वर्त्तमाने **(आत्)** आनन्तर्ये **(उ)** **(ब्रुवाते)** वदतः **(मिथुनानि)** युग्मानि **(नाम)** सञ्ज्ञा॥७॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! ये युवती स्वसारा भवन्ती मिथुनानि नाम ब्रुवाते इव समान्या वियुते दूरेअन्ते ध्रुवे पदे उतापि जागरूके द्यावापृथिव्यौ तस्थतुस्ते उ विदित्वादैश्वर्य्यं लब्धव्यम्॥७॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यथा प्रेमयुक्ता स्वसारोऽभीष्टानि वचनानि ब्रुवन्ते मिथुनानि वर्त्तन्ते तथैव दूरसमीपस्थाः प्रकाशाऽप्रकाशयुक्ता लोका अस्मिन् जगति वर्त्तन्ते॥७॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो **(युवती)** यौवन अवस्था को प्राप्त हुई **(स्वसारा)** भगिनी **(भवन्ती)** वर्त्तमान **(मिथुनानि)** जोड़ों को **(नाम)** सञ्ज्ञा को **(ब्रुवाते)** कहती हैं **(समान्या)** तुल्य स्वभाववाली **(वियुते)** मिली और नहीं मिली हुई **(दूरेअन्ते)** दूर और समीप में **(ध्रुवे)** दृढ़ **(पदे)** प्राप्त होने योग्य **(उत)** भी **(जागरूके)** प्रसिद्ध अन्तरिक्ष और पृथिवी **(तस्थतुः)** स्थित हैं, उनको **(उ)** और जानने के **(आत्)** अनन्तर ऐश्वर्य को प्राप्त होना चाहिये॥७॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे प्रेम से युक्त भगिनीजन मनोवाञ्छित वचनों को कहती हैं और जोड़े वर्त्तमान हैं, वैसे ही दूर और समीप में वर्त्तमान प्रकाश और अप्रकाश से युक्त लोक इस संसार में वर्त्तमान हैं॥७॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**विश्वेदे॒ते जनि॑मा॒ सं वि॑विक्तो म॒हो दे॒वान् बिभ्र॑ती॒ न व्य॑थेते।**

**एज॑द् ध्रु॒वं प॑त्यते॒ विश्व॒मेकं॒ चर॑त् पत॒त्रि विषु॑णं॒ वि जा॒तम्॥८॥**

**विश्वा॑। इत्। ए॒ते इति॑। जनि॑म। सम्। वि॒वि॒क्त॒ः। म॒हः। दे॒वान्। बिभ्र॑ती॒ इति॑। न। व्य॒थे॒ते इति॑। एज॑त्। ध्रु॒वम्। प॒त्य॒ते॒। विश्व॑म्। एक॑म्। चर॑त्। प॒त॒त्रि। विषु॑णम्। वि। जा॒तम्॥८॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**विश्वा**) सर्वाणि (**इत्**) एव (**एते**) द्यावापृथिव्यौ (**जनिमा**) जन्मानि (**सम्**) (**विविक्तः**) पृथक् कुर्वतः (**महः**) महतः (**देवान्**) दिव्यान् पदार्थान् (**बिभ्रती**) (**न**) निषेधे (**व्यथेते**) स्वस्वपरिधेरितस्ततो न चलतः (**एजत्**) चलत् (**ध्रुवम्**) अन्तरिक्षम् (**पत्यते**) पतिरिवाचरति (**विश्वम्**) सर्वं जगत् (**एकम्**) असहायम् (**चरत्**) प्राप्नुवत् (**पतत्रि**) पतनशीलम् (**विषुणम्**) विष्वग्गच्छति (**वि**) (**जातम्**) निष्पन्नम्॥८॥

**अन्वयः**-हे विद्वांस! य एते महो देवान् बिभ्रती विश्वा जनिमा सं विविक्तो न व्यथेते यत्रेदेव ध्रुवमेजदेकं विषुणं जातं पतत्रि चरद्विश्वं वि पत्यते ते यूयं विजानीत॥८॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! इह पृथिवीसूर्यादिरूपाऽधिकरणेऽन्तरिक्षे च सर्वे पदार्था जीवाश्च वसन्ति जायन्ते म्रियन्ते नश्यन्तीति विदन्तु॥८॥

**पदार्थः**-हे विद्वानो! जो (**एते**) ये अन्तरिक्ष और पृथिवी (**महः**) बड़े अर्थात् श्रेष्ठ (**देवान्**) उत्तम पदार्थों को (**बिभ्रती**) धारण करती हुईं (**विश्वा**) सब (**जनिमा**) जन्मों को (**सम्, विविक्तः**) पृथक् करती हैं और (**न**) नहीं (**व्यथेते**) अपने परिधि अर्थात् मण्डल में इधर-उधर नहीं हिलते हैं और (**यत्र**) जिसमें (**इत्**) ही (**ध्रुवम्**) अन्तरिक्ष (**एजत्**) चलता हुआ (**एकम्**) सहायरहित अकेला (**विषुणम्**) नीचे को प्राप्त है (**जातम्**) उत्पन्न (**पतत्रि**) गिरनेवाला (**चरत्**) प्राप्त होता हुआ (**विश्वम्**) सम्पूर्ण संसार के (**वि, पत्यते**) स्वामी के सदृश वर्त्तमान उसको आप लोग जानें॥८॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! इन पृथिवी, सूर्य्यरूप अधिकरण और अन्तरिक्ष में सम्पूर्ण पदार्थ वसते और उत्पन्न होते, मरते और नाश को प्राप्त होते हैं, ऐसा जानो॥८॥

**अथ ईश्वरविषयमाह॥**

अब ईश्वर के विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**सना॑ पु॒रा॒णमध्ये॑म्या॒रान्म॒हः पि॒तुर्ज॑नि॒तुर्जा॒मि तन्नः॑।**

**दे॒वासो॒ यत्र॑ पनि॒तार॒ एवै॑रु॒रौ प॒थि व्यु॑ते त॒स्थुर॒न्तः॥९॥**

**सना॑। पु॒रा॒णम्। अधि॑। ए॒मि॒। आ॒रात्। म॒हः। पि॒तुः। ज॒नि॒तुः। जा॒मि। तत्। न॒ः। दे॒वासः॑। यत्र॑। प॒नि॒तारः॑। एवैः॑। उ॒रौ। प॒थि। वि॒ऽउ॒॑ते। त॒स्थुः। अ॒न्तरिति॑॥९॥**

**पदार्थः**-(**सना**) सनातनम् (**पुराणम्**) पुरानवम् (**अधि**) (**एमि**) सर्वतः स्मरामि (**आरात्**) दूरात् समीपाद्वा (**महः**) महतः पूजनीयस्य (**पितुः**) पालकस्य (**जनितुः**) जनकस्य (**जामि**) जातम् (**तत्**) (**नः**) अस्मानस्माकं वा (**देवासः**) विद्वांसः (**यत्र**) (**पनितारः**) व्यवहर्त्तारः स्तावकाः (**एवैः**) प्रापकैः (**उरौ**) महति (**पथि**) मार्गे (**व्युते**) विगतावरणे प्रसिद्धे (**तस्थुः**) तिष्ठन्ति (**अन्तः**) मध्ये॥९॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यत्र पनितारो देवास एवैरुरौ व्युते पथि अन्तस्तस्थुस्तत्पितुर्जनितुर्महो जामि आरादनुविदितं भवतु तत्र आरात् सना पुराणमध्येमि तस्यान्तो भवन्तोऽपि सन्ति॥९॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यत्र सर्वं जगत्तिष्ठति येन प्रोक्तेन मार्गेण गच्छन्ति तत्सर्वस्य पालकं जनितृ सर्वेभ्यो महदनादिभूतं ब्रह्मोपासनीयं यदि तज्जानीयात् तर्हि समीपस्थं न जानीयाच्चेदतिदूरस्थं भवति॥९॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(यत्र)** जिसमें **(पनितारः)** व्यवहार करने अर्थात् स्तुति करनेवाले **(देवासः)** विद्वान् लोग **(एवैः)** प्राप्त करनेवालों से **(उरौ)** बड़े **(व्युते)** आवरण अर्थात् दूसरे करके ढांपने से रहित इस प्रकार प्रसिद्ध **(पथि)** मार्ग में **(अन्तः)** मध्य में **(तस्थुः)** वर्त्तमान हैं **(तत्)** वह **(पितुः)** पालन करने और **(जनितुः)** उत्पन्न करनेवाले **(महः)** श्रेष्ठ पूजा करने योग्य से **(जामि)** उत्पन्न हुआ **(आरात्)** दूर वा समीप से जाना जाय और वह **(नः)** हम लोगों के दूर वा समीप से **(सना)** प्राचीन काल से सिद्ध और **(पुराणम्)** प्रथम नवीन को **(अधि, एमि)** स्मरण करता हूँ, उसके मध्य में आप लोग भी हैं॥९॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जिसमें सम्पूर्ण संसार स्थित है और जिसकी कही हुई मर्य्यादा से चलते हैं, वह सबका पालक, उत्पन्न करनेवाला, सब पदार्थों से बड़ा, अनादि से सिद्ध ब्रह्म उपासना करने योग्य है, जो उसको जाने तो समीप में वर्त्तमान और न जाने तो अत्यन्त दूर वर्त्तमान होता है॥९॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**इमं स्तोमं रोदसी प्र ब्रवीम्यृदूदराः शृणवन्नग्निजिह्वाः।**

**मित्रः सम्राजो वरुणो युवान आदित्यासः कवयः पप्रथानाः॥१०॥२५॥**

**इमम्। स्तोमम्। रोदसी इति। प्र। ब्रवीमि। ऋदूदराः। शृणवन्। अग्निऽजिह्वाः। मित्रः। सम्ऽराजः। वरुणः। युवानः। आदित्यासः। कवयः। पप्रथानाः॥१०॥**

**पदार्थः**-**(इमम्)** परमात्मानम् **(स्तोमम्)** प्रशंसनीयम् **(रोदसी)** द्यावापृथिव्याविव सकलविद्यावेद्यं प्रकाशकं सर्वस्य धर्त्तारम् **(प्र)** **(ब्रवीमि)** उपदिशामि **(ऋदूदराः)** ऋत्सत्यमुदरे येषान्ते **(शृणवन्)** शृण्वन्तु **(अग्निजिह्वाः)** अग्निरिव प्रकाशमाना सत्योपदेशा जिह्वा येषान्ते **(मित्रः)** सर्वस्य सखा **(सम्राजः)** सम्यग्राजमानाः **(वरुणः)** श्रेष्ठः **(युवानः)** प्राप्तयुवावस्थाः **(आदित्यासः)** सूर्य इव पूर्णविद्याप्रकाशाः **(कवयः)** विक्रान्तप्रज्ञा मेधाविनः **(पप्रथानाः)** प्रख्याताः॥१०॥

**अन्वयः**-यमिमं स्तोमं रोदसी इव मित्रो वरुणोऽहं प्रब्रवीमि तमृदूदरा सम्राजोऽग्निजिह्वा युवान आदित्यासः कवयः पप्रथानाः शृणवन्॥१०॥

**भावार्थः**-यथा चक्रवर्त्ती राजा स्वाज्ञया सर्वन्यायं प्रकाशितं करोति तथैवाऽऽप्ता विद्वांसोऽध्यापनोपदेशाभ्यां परमात्मानं तस्याज्ञां च प्रसिद्धां कुर्वन्ति। येऽष्टाचत्वारिंषद्वर्षपर्यन्तं ब्रह्मचर्यं कृत्वाऽखिलविद्या जायन्ते त एवैतद्वक्तुं श्रोतुं निश्चेतुमभ्यसितुं साक्षात् कर्त्तुं च शक्नुवन्ति॥१०॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-जिस **(इमम्)** इस परमेश्वर **(स्तोमम्)** प्रशंसा करने योग्य और **(रोदसी)** अन्तरिक्ष और पृथिवी के सदृश सम्पूर्ण विद्याओं से जानने योग्य प्रकाश और धारण करनेवाले का **(मित्रः)** सबका मित्र **(वरुणः)** श्रेष्ठ हम **(प्र, ब्रवीमि)** उपदेश देते हैं उसको **(ऋदूदराः)** सत्य है हृदय में जिनके वे **(सम्राजः)** अच्छे प्रकार प्रकाशमान **(अग्निजिह्वाः)** अग्नि के सदृश प्रकाशमान सत्य के उपदेश देनेवाली जिह्वा हैं जिनकी वे **(युवानः)** युवा अवस्था को प्राप्त **(आदित्यासः)** सूर्य के सदृश पूर्ण विद्या से प्रकाशित **(कवयः)** तीव्र बुद्धि से युक्त **(पप्रथानाः)** प्रख्यात बुद्धिमान् लोग **(शृणवन्)** सुनो॥१०॥

**भावार्थः**-जैसे चक्रवर्ती राजा अपनी आज्ञा से सम्पूर्ण न्याय को प्रकाशित करता है, वैसे ही यथार्थवक्ता विद्वान् लोग अध्यापन और उपदेश से परमेश्वर और उसकी आज्ञा को प्रसिद्ध करते हैं, और जो लोग अड़तालीस वर्ष पर्यन्त ब्रह्मचर्य करके पूर्णविद्या युक्त हैं वे ही इसके कहने, सुनने, निश्चय और अभ्यास करने और प्रत्यक्ष करने को समर्थ होते हैं॥१०॥

**अथ विद्वद्विषयमाह॥**

अब विद्वान् के विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**हिर॑ण्यपाणिः सवि॒ता सु॒जि॒ह्वस्त्रिरा दि॒वो वि॒दथे॒ पत्य॑मानः।**

**दे॒वेषु॑ च सवितः श्लोक॒मश्रे॒राद॒स्मभ्य॒मा सु॑व स॒र्वता॑तिम्॥११॥**

**हिर॑ण्यऽपाणिः। स॒वि॒ता। सु॒ऽजि॒ह्वः। त्रिः। आ। दि॒वः। वि॒दथे॑। पत्य॑मानः। दे॒वेषु॑। च॒। स॒वि॒त॒रिति॑। श्लोक॑म्। अश्रे॑ः। आत्। अ॒स्मभ्य॑म्। आ। सु॒व॒। स॒र्वऽता॑तिम्॥११॥**

**पदार्थः**-**(हिरण्यपाणिः)** पाणिरिव हिरण्यं तेजो यस्य सः **(सविता)** सूर्य्यः **(सुजिह्वः)** शोभना जिह्वा यस्य सः **(त्रिः)** त्रिवारम् **(आ)** समन्तात् **(दिवः)** विद्युतादेः **(विदथे)** विज्ञाने **(पत्यमानः)** पतिरिवाचरन् **(देवेषु)** पृथिव्यादिषु **(च)** विद्वत्सु **(सवितः)** परमैश्वर्यप्रद **(श्लोकम्)** वाचम् **(अश्रेः)** आश्रय **(आत्)** आनन्तर्ये **(अस्मभ्यम्)** **(आ)** **(सुव)** जनय **(सर्वतातिम्)** सर्वमेव॥११॥

**अन्वयः**-हे सवितस्सुजिह्वः पत्यमानस्त्वं दिवो विदथे देवेषु हिरण्यपाणिः सवितेवाऽस्मभ्यं यं सर्वतातिं श्लोकमश्रेस्तं चादा त्रिरा सुव॥११॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यथा सूर्य्यो लोकानामधिष्ठाता वर्त्तते तथैव विद्वान् सर्वेषामध्यक्षो भवेत्॥११॥

**पदार्थः**-हे **(सवितः)** अत्यन्त ऐश्वर्य्य के दाता **(सुजिह्वः)** सुन्दर जिह्वायुक्त **(पत्यमानः)** पति के सदृश आचरण करते हुए! आप **(दिवः)** बिजुली आदि के **(विदथे)** विज्ञान और **(देवेषु)** पृथिवी आदिकों में **(हिरण्यपाणिः)** हस्त के सदृश तेज से युक्त **(सविता)** सूर्य्य के सदृश **(अस्मभ्यम्)** हम लोगों के लिये जिस **(सर्वतातिम्)** सम्पूर्ण ही **(श्लोकम्)** वाणी का **(अश्रेः)** आश्रय करिये उसको **(च)** और **(आत्)** अनन्तर **(आ)** सब ओर से **(त्रिः)** तीन वार **(आ, सुव)** उत्पन्न करो॥११॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे सूर्य्य लोकों का अधिष्ठाता है, वैसे ही विद्वान् सबका अध्यक्ष होवे॥११॥

**अथ शिष्यविषयमाह॥**

अब शिष्य के विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**सुकृत्सुपाणिः स्ववाँ ऋतावा देवस्त्वष्टावसे तानि नो धात्।**

**पूषण्वन्त ऋभवो मादयध्वमूर्ध्वग्रावाणो अध्वरमतष्ट॥१२॥**

**सुऽकृत्। सुऽपाणिः। स्वऽवान्। ऋतऽवा। देवः। त्वष्टा। अवसे। तानि। नः। धात्। पूषण्ऽवन्तः। ऋभवः। मादयध्वम्। ऊर्ध्वऽग्रावाणः। अध्वरम्। अतष्ट॥१२॥**

**पदार्थः**-(**सुकृत्**) यः शोभनं धर्म्यं कर्म करोति (**सुपाणिः**) शोभनौ पाणी हस्तौ यस्य सः (**स्ववान्**) बहवः स्वे विद्यन्ते यस्य सः (**ऋतावा**) सत्यप्रकाशकः (**देवः**) विद्वान् (**त्वष्टा**) प्रकाशकः (**अवसे**) रक्षणाद्याय (**तानि**) (**नः**) अस्मभ्यम् (**धात्**) दधातु (**पूषण्वन्तः**) बहवः पूषणो विद्यन्ते येषान्ते (**ऋभवः**) मेधाविनः (**मादयध्वम्**) आनन्दयत (**ऊर्ध्वग्रावाणः**) मेघाः (**अध्वरम्**) पालकं व्यवहारम् (**अतष्ट**) तनूकुरुत॥१२॥

**अन्वयः**-हे पूषण्वन्त ऋभवो! यूयं यथा सुकृत् सुपाणिः स्ववानृतावा त्वष्टा देवो नोऽवसे तानि धादूर्ध्वग्रावाण इवाऽध्वरमतष्ट तथाऽस्मान् मादयध्वम्॥१२॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यथा धार्मिका विद्वांसो मेघा इव सर्वानानन्दयन्ति तथैव सर्वे विदुष आनन्दयन्तु॥१२॥

**पदार्थः**-हे (**पूषण्वन्तः**) बहुत पुष्टिकर्त्ता विद्यमान हैं जिनके वे (**ऋभवः**) बुद्धिमान्! आप लोग जैसे (**सुकृत्**) सुन्दर धर्मयुक्त कर्मकर्त्ता (**सुपाणिः**) सुन्दर हस्तयुक्त (**स्ववान्**) बहुत आत्मजन हैं जिसके वह (**ऋतावा**) सत्य का प्रकाश करनेवाला (**त्वष्टा**) प्रकाशकर्त्ता (**देवः**) विद्वान् (**नः**) हम लोगों को (**अवसे**) रक्षण आदि के लिए (**तानि**) उन अपेक्षित पदार्थों को (**धात्**) धारण करे और (**[ऊर्ध्व]ग्रावाणः**) मेघों के सदृश (**अध्वरम्**) पालन करनेवाले व्यवहार को (**अतष्ट**) सूक्ष्म करता है, वैसे ही हम लोगों के लिए (**मादयध्वम्**) आनन्द दीजिए॥१२॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे धार्मिक विद्वान् लोग मेघों के सदृश सबको आनन्द देते हैं, वैसे ही सब लोग विद्वानों को आनन्द देवें॥१२॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**विद्युद्रथा मरुत ऋष्टिमन्तो दिवो मर्या ऋतजाता अयासः।**



www.9009.co.in

**सर॑स्वती शृणवन् य॒ज्ञिया॑सो॒ धाता॑ र॒यिं स॒हवी॑रं तुरासः॥ १३॥**

**वि॒द्युत्ऽर॑थाः। म॒रुत॑ः। ऋ॒ष्टि॒ऽमन्त॑ः। दि॒वः। मर्या॑ः। ऋ॒तऽजा॑ताः। अ॒यास॑ः। सर॑स्वती। शृ॒ण॒व॒न्। य॒ज्ञिया॑सः। धात॑। र॒यिम्। स॒हऽवी॑रम्। तु॒रा॒सः॥ १३॥**

**पदार्थः**-(**विद्युद्रथाः**) विद्युद्युक्ता रथा यानानि येषान्ते (**मरुतः**) मरणधर्माणः (**ऋष्टिमन्तः**) बह्व्य ऋष्टयो गतयो विद्यन्ते येषान्ते (**दिवः**) कामयमानस्य (**मर्याः**) मनुष्याः (**ऋतजाताः**) ऋतेन सत्येन प्रसिद्धाः (**अयासः**) प्राप्तविद्याः (**सरस्वती**) सकलविद्यायुक्ता वाणी (**शृणवन्**) शृण्वन्तु (**यज्ञियासः**) शिल्पव्यवहारकर्त्तारः (**धात**)। अत्र **द्व्यचोऽतस्तिङ** इति दीर्घः। (**रयिम्**) धनम् (**सहवीरम्**) वीरैः सह वर्त्तमानम् (**तुरासः**) सद्यः कर्त्तारः॥ १३॥

**अन्वयः**-सरस्वती विदुषी स्त्री यं सहवीरं रयिं विद्युद्रथा मरुत ऋष्टिमन्तो दिवो मर्य्या ऋतजाता अयासो यज्ञियासस्तुरासो विद्वांसः शृणवन् धात तथैतं शृणुयाद्दध्याच्च॥ १३॥

**भावार्थः**-यथा पुरुषा विद्याभ्यासं कुर्य्युस्तथैव स्त्रियोऽपि कृत्वा श्रीमत्यो भवन्तु। उभये आलस्यं विहाय शिल्पविषयाणि सर्वाणि कर्माणि साध्नुवन्तु॥ १३॥

**पदार्थः**-(**सरस्वती**) विद्यायुक्त स्त्री जिस (**सहवीरम्**) वीर पुरुषों के सहित वर्त्तमान (**रयिम्**) धन को (**विद्युद्रथाः**) बिजुली से युक्त हैं वाहन जिनके वे (**मरुतः**) मरण धर्मवाले (**ऋष्टिमन्तः**) बहुत गतियों से युक्त (**दिवः**) कामना करते हुए के सम्बन्धी (**मर्य्याः**) मनुष्य (**ऋतजाताः**) सत्य से प्रसिद्ध (**अयासः**) विद्याओं को प्राप्त (**यज्ञियासः**) शिल्प-व्यवहार के करनेवाले (**तुरासः**) शीघ्रकर्त्ता विद्वान् लोग (**शृणवन्**) सुनो और (**धात**) धारण करो, वैसे इसको सुने और धारण करे॥ १३॥

**भावार्थः**-जैसे पुरुष लोग विद्या का अभ्यास करें, वैसे ही स्त्रियाँ भी करके लक्ष्मीयुक्त हों। दोनों स्त्री और पुरुष आलस्य का त्याग करके शिल्पविषयक सम्पूर्ण कर्मों को सिद्ध करो॥ १३॥

**अथ वक्तृविषयमाह॥**

अब वक्ता के विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**विष्णुं॒ स्तोमा॑सः पुरुद॒स्मम॒र्का भग॑स्येव का॒रिणो॒ याम॑नि ग्मन्।**

**उ॒रु॒क्र॒मः क॑कु॒हो यस्य॑ पू॒र्वीर्न म॑र्धन्ति यु॒व॒तयो॒ जनि॑त्रीः॥ १४॥**

**विष्णु॑म्। स्तोमा॑सः। पु॒रु॒ऽद॒स्मम्। अ॒र्काः। भग॑स्यऽइव। का॒रिण॑ः। याम॑नि। ग्मन्। उ॒रु॒ऽक्र॒मः। क॒कु॒हः। यस्य॑। पू॒र्वीः। न। म॒र्धन्ति॒। यु॒व॒तय॑ः। जनि॑त्रीः॥ १४॥**

**पदार्थः**-(**विष्णुम्**) व्यापकम् (**स्तोमासः**) स्तावकाः (**पुरुदस्मम्**) पुरूणि बहूनि दुःखानि दस्मान्युपक्षीणानि यस्मात्तम् (**अर्काः**) पूजनीयाः (**भगस्येव**) ऐश्वर्यस्येव (**कारिणः**) कर्त्तुं शीलाः (**यामनि**) प्रापणीये मार्गे (**ग्मन्**) गच्छन्ति (**उरुक्रमः**) बहुपुरुषार्थः (**ककुहः**) महतीः। **ककुह इति**



www.9009.co.in

**महन्नामसु पठितम्।** (निघं०३.३) **(यस्य)** **(पूर्वीः)** **(न)** निषेधे **(मर्धन्ति)** हिंसन्ति **(युवतयः)** प्राप्तयौवनाः **(जनित्रीः)** मातः॥१४॥

**अन्वयः**-हे विद्वन्नुरुक्रमस्त्वं यथास्तोमासोऽर्का भगस्येव कारिणो विद्वांसो यामनि पुरुदस्मं विष्णुं ग्मन्। यस्य युवतयो ककुहः पूर्वीर्जनित्रीर्न मर्धन्ति तथा त्वं वर्त्तस्व॥१४॥

**भावार्थः**-अत्रोपमावाचकलुप्तोपमालङ्कारौ। ये भगवदुपासका ईश्वराज्ञानुकूलवर्त्तमाना भगवन्तो भूत्वाऽहिंसामहतीर्भगवतीः प्राप्य दुःखान्तं गत्वा महत्सुखं प्राप्नुवन्ति॥१४॥

**पदार्थः**-हे विद्वन्! **(उरुक्रमः)** बहुत पुरुषार्थवाले! आप जैसे **(स्तोमासः)** स्तुति करनेवाले **(अर्काः)** पूजा करने योग्य **(भगस्येव)** ऐश्वर्य्य के तुल्य **(कारिणः)** करनेवाले विद्वान् लोग **(यामनि)** प्राप्त होने योग्य मार्ग में **(पुरुदस्मम्)** बहुत दुःख नाश हुए जिससे उस **(विष्णुम्)** व्यापक को **(ग्मन्)** प्राप्त होते हैं और **(यस्य)** जिसकी **(युवतयः)** युवावस्था को प्राप्त **(ककुहः)** बड़ी **(पूर्वीः)** प्राचीन काल में वर्त्तमान **(जनित्रीः)** माताओं का **(न)** नहीं **(मर्धन्ति)** नाश करते हैं, वैसे आप वर्त्ताव करो॥१४॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमा और वाचकलुप्तोपमालङ्कार हैं। जो लोग भगवान् की उपासना करनेवाले ईश्वर की आज्ञा के अनुकूल वर्त्तमान ऐश्वर्ययुक्त होकर, नहीं नाश होनेवाली बड़ी लक्ष्मियों को प्राप्त हो दुःख के पार जाकर बड़े सुख को प्राप्त होते हैं॥१४॥

**अथ राजविषयमाह॥**

अब राजा के विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**इन्द्रो विश्वैर्वीर्यैः३ पत्यमान उभे आ पप्रौ रोदसी महित्वा।**

**पुरंदरो वृत्रहा धृष्णुषेणः संगृभ्या न आ भरा भूरि पश्वः॥१५॥२६॥**

**इन्द्रः। विश्वैः। वीर्यैः। पत्यमानः। उभे इति। आ। पप्रौ। रोदसी इति। महिऽत्वा। पुरम्ऽदरः। वृत्रऽहा। धृष्णुऽसेनः। सम्ऽगृभ्य। नः। आ। भर। भूरि। पश्वः॥१५॥**

**पदार्थः**-**(इन्द्रः)** परमैश्वर्यो राजा **(विश्वैः)** अखिलैः **(वीर्यैः)** पराक्रमैः **(पत्यमानः)** पतिः स्वामीवाचरन् **(उभे)** **(आ)** **(पप्रौ)** व्याप्नोति **(रोदसी)** न्यायभूमिराज्ये **(महित्वा)** महिम्ना **(पुरन्दरः)** शत्रूणां नगराणां हन्ता **(वृत्रहा)** मेघहन्ता सूर्येव **(धृष्णुसेनः)** धृष्णुः प्रगल्भा दृढा सेना यस्य सः **(सङ्गृभ्य)** सम्यग् गृहीत्वा। अत्र **संहितायामिति** दीर्घः। **(नः)** अस्मान् **(आ)** **(भर)** धर। अत्र **द्व्यचोऽतस्तिङ** इति दीर्घः। **(भूरि)** बहु **(पश्वः)** पशून्॥१५॥

**अन्वयः**-हे राजन्! यो वृत्रहेव पुरन्दरः पत्यमानो धृष्णुसेन इन्द्रो भवान् विश्वैर्वीर्यैर्महित्वोभे रोदसी आ पप्रौ स त्वं भूरि नोऽस्मान् पश्वश्च सङ्गृभ्या भर॥१५॥

**भावार्थः**-यथा भूमिसूर्यौ सर्वान् धृत्वा संपोष्य वर्द्धयतस्तथैव राजादयोऽध्यक्षाः सर्वाञ्छुभगुणान् धृत्वा प्रजां पोषयित्वा सेनामुन्नीय शत्रून् हत्वा प्रजामुन्नयन्तु॥१५॥



www.9009.co.in

**पदार्थ:**-हे राजन्! जो **(वृत्रहा)** मेघ का नाश करनेवाले सूर्य के सदृश **(पुरन्दरः)** शत्रुओं के नगरों का नाश करनेवाला **(पत्यमानः)** स्वामी के सदृश आचरण करता हुआ **(धृष्णुसेनः)** दृढ़ सेना और **(इन्द्रः)** अत्यन्त ऐश्वर्ययुक्त राजा आप **(विश्वैः)** सम्पूर्ण **(वीर्यैः)** पराक्रमों से **(महित्वा)** महिमा से **(उभे)** दोनों **(रोदसी)** न्याय और भूमि के राज्य को **(आ, पप्रौ)** व्याप्त करते हैं, वह आप **(भूरि)** बहुत **(नः)** हम लोगों और **(पश्वः)** पशुओं को **(संगृभ्य)** उत्तम प्रकार ग्रहण करके **(आ, भर)** सब प्रकार पोषण कीजिये॥१५॥

**भावार्थ:**-जैसे भूमि और सूर्य सब पदार्थों को धारण और उत्तम प्रकार पोषण करके बढ़ाते हैं, वैसे ही राजा आदि अध्यक्ष सब उत्तम गुणों को धारण, प्रजा का पोषण, सेना की वृद्धि और शत्रुओं का नाश करके प्रजा की वृद्धि करें॥१५॥

**अथ विद्वद्विषयमाह॥**

अब विद्वान् के विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**नासत्या मे पितरा बन्धुपृच्छा सजात्यमश्विनोश्चारु नाम।**

**युवं हि स्थो रयिदौ नो रयीणां दात्रं रक्षेथे अकवैरदब्धा॥१६॥**

**नासत्या। मे। पितरा। बन्धुऽपृच्छा। सऽजात्यम्। अश्विनोः। चारु। नाम। युवम्। हि। स्थः। रयिदौ। नः। रयीणाम्। दात्रम्। रक्षेथे इति। अकवैः। अदब्धा॥१६॥**

**पदार्थ:**-**(नासत्या)** न विद्यतेऽसत्यं ययोस्तौ **(मे)** मम **(पितरा)** पालकौ **(बन्धुपृच्छा)** यौ बन्धून् पृच्छतस्तौ **(सजात्यम्)** समानजातौ भवम् **(अश्विनोः)** सूर्य्याचन्द्रमसोरिव **(चारु)** सुन्दरम् **(नाम)** **(युवम्)** **(हि)** यतः **(स्थः)** भवथः **(रयिदौ)** श्रीप्रदौ **(नः)** अस्माकम् **(रयीणाम्)** धनानाम् **(दात्रम्)** दानम् **(रक्षेथे)** **(अकवैः)** अकुत्सितैः कर्मभिः **(अदब्धा)** अहिंसितौ॥१६॥

**अन्वयः**-हे सभासेनेशौ! युवं हि नो रयिदौ रयीणां दात्रं रक्षेथे अकवैरदब्धा स्थो ययोरश्विनोरिव चारु नामास्ति तौ बन्धुपृच्छा नासत्या मे पितरेव सजात्यं चारु नाम रक्षतम्॥१६॥

**भावार्थ:**-ये विद्वांसो मातापितृवत्सर्वेभ्यो विद्याधनप्रदा धर्माचारिणः सन्तः सजात्यानन्याँश्च रक्षन्ति ते सर्वेषां पूज्या भवन्ति॥१६॥

**पदार्थ:**-हे सभा और सेना के स्वामी! **(युवम्)** आप दोनों **(हि)** जिससे कि **(नः)** हम लोगों के लिये **(रयिदौ)** लक्ष्मी देनेवाले **(रयीणाम्)** धनों के **(दात्रम्)** दान की **(रक्षेथे)** रक्षा करते हैं **(अकवैः)** कुत्सित भिन्न अर्थात् उत्तम कर्मों से **(अदब्धा)** नहीं हिंसित हुए **(स्थः)** होते हैं और जिनकी **(अश्विनोः)** सूर्य-चन्द्रमा के तुल्य **(चारु)** सुन्दर **(नाम)** सञ्ज्ञा है उन **(बन्धुपृच्छा)** बन्धुओं का कुशलादि पूछनेवाले **(नासत्या)** असत्य के त्यागी **(मे)** मेरे **(पितरा)** पालन करनेवालों के सदृश **(सजात्यम्)** समान जातिवाले सुन्दर नाम की रक्षा करो॥१६॥

**भावार्थ:**-जो विद्वान् लोग माता और पिता के सदृश सबके लिये विद्या और धन देनेवाले, धर्मपूर्वक आचरण करते हुए अपने समान जातिवाले तथा अन्य जनों की रक्षा करते हैं, वे सबके पूजा करने योग्य होते हैं॥१६॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**महत्तद्वः कवयश्चारु नाम यद्ध देवा भवथ विश्व इन्द्रे।**

**सखा ऋभुभिः पुरुहूत प्रियेभिरिमां धियं सातये तक्षता नः॥१७॥**

**महत्। तत्। वः। कवयः। चारु। नाम। यत्। ह। देवाः। भवथ। विश्वे। इन्द्रे। सखा। ऋभुऽभिः। पुरुऽहूत। प्रियेभिः। इमाम्। धियम्। सातये। तक्षत। नः॥१७॥**

**पदार्थः**-(**महत्**) महान् (**तत्**) (**वः**) युष्माकम् (**कवयः**) विपश्चितः (**चारु**) सुन्दरम् (**नाम**) (**यत्**) (**ह**) किल (**देवाः**) विद्वांसः (**भवथ**) (**विश्वे**) (**इन्द्रे**) परमैश्वर्ये राज्ञि वा (**सखा**) सुहृत् (**ऋभुभिः**) मेधाविभिः सह (**पुरुहूत**) बहुभिः प्रशंसित (**प्रियेभिः**) स्वात्मवत् प्रियैः (**इमाम्**) प्रत्यक्षाम् (**धियम्**) प्रज्ञाम् (**सातये**) सत्याऽसत्ययोर्विवेकाय (**तक्षत**) रक्षत। अत्र **संहितायामिति** दीर्घः। (**नः**) अस्माकम्॥१७॥

**अन्वयः**-हे कवयो! वो यन्महच्चारु नाम नामास्ति तत्तेन युक्ता विश्वे देवा ह यूयं भवथ। प्रियेभिर्ऋभुभिः सहेन्द्रे सातये न इमां धियं तक्षत। हे पुरुहूत राजेन्द्र! त्वमेतैः सह सखा सन्नेतां प्रज्ञां प्राप्नुहि॥१७॥

**भावार्थः**-तेषामेव नामानि प्रशंसितानि प्रसिद्धानि स्युर्ये विद्वत्स्वविद्वत्सु मैत्रीमासाद्य धर्माऽधर्मविवेकाय शुद्धां प्रज्ञां सर्वेभ्यः प्रयच्छन्ति॥१७॥

**पदार्थ:**-हे (**कवयः**) विद्वानो! (**वः**) आप लोगों का (**यत्**) जो (**महत्**) बड़ा (**चारु**) सुन्दर (**नाम**) नाम है (**तत्**) वह और उससे युक्त (**विश्वे**) सम्पूर्ण (**देवाः**) विद्वान् और (**ह**) निश्चय आप लोग (**भवथ**) होओ (**प्रियेभिः**) अपने सदृश प्रिय (**ऋभुभिः**) बुद्धिमानों के साथ (**इन्द्रे**) अत्यन्त ऐश्वर्य्य वा राजा में (**सातये**) सत्य और असत्य के विचार के लिये (**नः**) हम लोगों की (**इमाम्**) इस (**धियम्**) बुद्धि की (**तक्षत**) रक्षा करो। और हे (**पुरुहूत**) बहुतों से प्रशंसित हुए राजेन्द्र! आप इनके साथ (**सखा**) मित्र हुए इस बुद्धि को प्राप्त होओ॥१७॥

**भावार्थ:**-उन लोगों के ही नाम प्रशंसा करने योग्य और प्रसिद्ध होवें कि जो विद्वान् और अविद्वानों में मित्रता को प्राप्त होकर धर्म और अधर्म के विचार के लिये उत्तम बुद्धि सबके लिये देते हैं॥१७॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥



www.9009.co.in

**अ॒र्य॒मा णो॒ अदि॑तिर्य॒ज्ञिया॒सोऽद॑ब्धानि॒ वरु॑णस्य व्र॒तानि॑।**

**यु॒योत॑ नो अनप॒त्यानि॒ गन्तो॑ः प्र॒जावा॑न्नः पशु॒माँ अ॑स्तु गा॒तुः॥ १८॥**

**अ॒र्य॒मा। न॒ः। अदि॑तिः। य॒ज्ञिया॑सः। अद॑ब्धानि। वरु॑णस्य। व्र॒तानि॑। यु॒योत॑। न॒ः। अ॒न॒प॒त्यानि॑। गन्तो॑ः। प्र॒जाऽवा॑न्। न॒ः। प॒शु॒ऽमान्। अ॒स्तु॒। गा॒तुः॥ १८॥**

**पदार्थः**-(**अर्य्यमा**) न्यायाधीशः (**नः**) अस्माकम् (**अदितिः**) मातेव (**यज्ञियासः**) अहिंसायज्ञस्याऽनुष्ठातारः (**अदब्धानि**) अहिंसितानि (**वरुणस्य**) श्रेष्ठस्य (**व्रतानि**) सत्यभाषणादीनि (**युयोत**) प्रापयत त्याजयत (**नः**) अस्माकम् (**अनपत्यानि**) अविद्यमानान्यपत्यानि येषु तानि (**गन्तोः**) गन्तव्यानि (**प्रजावान्**) सन्तानवान् (**नः**) अस्मान् (**पशुमान्**) बहुपशुयुक्तः (**अस्तु**) (**गातुः**) भूमिः। **गातुरिति पृथिवीनामसु पठितम्।** (निघं०१.१)॥१८॥

**अन्वयः**-हे विद्वांसोऽदितिरिवार्य्यमा यज्ञियासो यूयं! नो वरुणस्याऽदब्धानि व्रतानि युयोत। नो गन्तोरनपत्यानि युयोत येन नो गातुः प्रजावान् पशुमानस्तु॥१८॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे विद्वांसो! भवन्तोऽस्मान् न्यायाधीशवन्मातृवद-न्यायाचरणात् पृथक्कृत्य सत्यानि धर्म्याणि कर्माणि प्रापय्य भूगोलं बहुप्रजासमसंख्यधनं कुरुत॥१८॥

**पदार्थः**-हे विद्वानो! (**अदितिः**) माता के सदृश (**अर्य्यमा**) न्यायाधीश (**यज्ञियासः**) जिसमें हिंसा न हो ऐसे यज्ञ के करनेवाले आप लोगो! (**नः**) हम लोगों के (**वरुणस्य**) श्रेष्ठ के (**अदब्धानि**) हिंसाभिन्न (**व्रतानि**) सत्य बोलने आदि व्रतों को (**युयोत**) प्राप्त कराइये (**नः**) हम लोगों के (**गन्तोः**) प्राप्त होने योग्य व्यवहार से (**अनपत्यानि**) नहीं विद्यमान हैं सन्तान जिनमें उनको प्राप्त कराइये जिससे (**नः**) हम लोगों की (**गातुः**) पृथिवी (**प्रजावान्**) सन्तानयुक्त और (**पशुमान्**) बहुत पशुयुक्त (**अस्तु**) हो॥१८॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे विद्वानो! आप लोग हम लोगों को न्यायाधीश और माता के सदृश अन्यायाचरण से अलग करके और सत्य धर्मयुक्त कर्मों को प्राप्त कराके सम्पूर्ण पृथिवी को बहुत प्रजा और असंख्य धनयुक्त करो॥१८॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**दे॒वानां॑ दू॒तः पु॑रु॒ध प्रसू॒तोऽना॑गान्नो वोचतु स॒र्वता॑ता।**

**शृ॒णोतु॑ नः पृथि॒वी द्यौरु॒ताप॒ः सूर्यो॒ नक्ष॑त्रैरु॒र्व१॒॑न्तरि॑क्षम्॥ १९॥**

**दे॒वाना॑म्। दू॒तः। पु॒रु॒ध। प्र॒ऽसू॒तः। अना॑गान्। न॒ः। वो॒च॒तु॒। स॒र्वऽता॑ता। शृ॒णोतु॑। न॒ः। पृ॒थि॒वी। द्यौः। उ॒त। आप॑ः। सूर्य॑ः। नक्ष॑त्रैः। उ॒रु। अ॒न्तरि॑क्षम्॥ १९॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**देवानाम्**) विदुषाम् (**दूतः**) सत्याऽसत्यसमाचारदाता (**पुरुध**) यः पुरून् दधाति तत्सम्बुद्धौ (**प्रसूतः**) उत्पन्नः (**अनागान्**) अनपराधिनः (**नः**) अस्मान् (**वोचतु**) उपदिशतु (**सर्वताता**) सर्वानेव (**शृणोतु**) (**नः**) अस्मान् (**पृथिवी**) भूमिरिव क्षमा (**द्यौः**) विद्युदिव विद्या (**उत**) (**आपः**) जलानीव शान्तिः (**सूर्य्यः**) सवितेव विद्याप्रकाशः (**नक्षत्रैः**) कारणरूपेणाविनश्वरैः (**उरु**) व्यापकम् (**अन्तरिक्षम्**) आकाशमिवाऽक्षोभता॥१९॥

**अन्वयः**-हे पुरुध! देवानां दूतः प्रसूतो भवान्त्सर्वतातानागान्नः पृथिव्यादिविद्या वोचतु। नक्षत्रैस्सहोर्वन्तरिक्षं सूर्य्यः पृथिवी द्यौरुतापो नः प्राप्नोतु अस्माकं वचांसि शृणोतु॥१९॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। ये धर्मसभाऽधिकृतानां प्रेष्या उपदेशका सर्वान्त्सत्याऽसत्ये उपदिश्य धर्मात्मनः सम्पादयन्तु तेषां प्रश्नाञ्छ्रुत्वा समादधतु पृथिव्यादीनां सकाशात् क्षमादिगुणान् गृहीत्वाऽन्यान् ग्राहयित्वा पाखण्डं विनाश्य धर्मं प्रापय्य सर्वाञ्छिष्टान् कुर्वन्तु॥१९॥

**पदार्थः**-हे (**पुरुध**) बहुतों को धारण करनेवाले! (**देवानाम्**) विद्वानों के (**दूतः**) सत्य और असत्य समाचार के देनेवाले (**प्रसूतः**) उत्पन्न आप (**सर्वताता**) सबको ही (**अनागान्**) अपराध से रहित (**नः**) हम लोगों को भूमि आदि की विद्याओं का (**वोचतु**) उपदेश दीजिये। और (**नक्षत्रैः**) कारण रूप से नहीं नाश होनेवालों के साथ (**उरु**) व्यापक (**अन्तरिक्षम्**) आकाश के सदृश नहीं हिलना (**सूर्य्यः**) सूर्य्य के समान विद्या का प्रकाश (**पृथिवी**) भूमि के सदृश क्षमा और (**द्यौः**) बिजुली के सदृश विद्या (**उत**) और (**आपः**) जलों के सदृश शान्ति (**नः**) हम लोगों को प्राप्त हो और हम लोगों के वचनों को (**शृणोतु**) सुनो॥१९॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। धर्म्मसभा के अधिकृत लोगों के आधीन में वर्त्तमान उपदेश देनेवाले सबको सत्य और असत्य का उपदेश देकर धर्मात्मा करें और उनके प्रश्नों को सुन के समाधान करें और पृथिवी आदिकों के समीप से क्षमा आदि गुणों का ग्रहण करके अन्यों को ग्रहण करा पाखण्ड का नाश और धर्म को प्राप्त कराके सबको श्रेष्ठ करें॥१९॥

**शृण्वन्तु नो वृषणः पर्वतासो ध्रुवक्षेमास इळया मदन्तः।**

**आदित्यैर्नो अदितिः शृणोतु यच्छन्तु नो मरुतः शर्म भद्रम्॥२०॥**

**शृण्वन्तु। नः। वृषणः। पर्वतासः। ध्रुवऽक्षेमासः। इळया। मदन्तः। आदित्यैः। नः। अदितिः। शृणोतु। यच्छन्तु। नः। मरुतः। शर्म। भद्रम्॥२०॥**

**पदार्थः**-(**शृण्वन्तु**) (**नः**) अस्मान् कीर्त्तिमतः (**वृषणः**) वृष्टिकराः (**पर्वतासः**) मेघा इव (**ध्रुवक्षेमासः**) ध्रुवं निश्चितं क्षेमं रक्षणं येभ्यस्ते (**इळया**) प्रशंसितया वाचा (**मदन्तः**) हर्षन्तः (**आदित्यैः**) पूर्णविद्यैस्सह (**नः**) अस्मान् (**अदितिः**) माता (**शृणोतु**) (**यच्छन्तु**) ददतु (**नः**) अस्मभ्यम् (**मरुतः**) मानवाः (**शर्म**) उत्तमं गृहमिव सुखम् (**भद्रम्**) कल्याणकरम्॥२०॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे विद्वांसो! भवन्त इळया सह वर्त्तमानान्नोऽस्माञ्छृण्वन्तु वृषणो ध्रुवक्षेमासः पर्वतास इवाऽस्मान् मदन्त उन्नयन्तु। आदित्यैः सहादितिर्नः शृणोतु मरुतो नो भद्रं शर्म यच्छन्तु॥२०॥

**भावार्थः**-मनुष्यैः सर्वाभ्यः प्राप्तिभ्य आदौ सुशिक्षा ततो विद्या पुनः सत्सङ्गकल्याणाऽऽचरणं श्रवणमुपदेशनञ्च कृत्वा सर्वेषां योगक्षेमौ संसाधनीयौ॥२०॥

**पदार्थः**-हे विद्वानो! आप लोग **(इळया)** प्रशंसित वाणी के सहित वर्त्तमान **(नः)** हम लोगों कीर्त्तिमानों को **(शृण्वन्तु)** सुनो **(वृषणः)** वृष्टि करनेवाले **(ध्रुवक्षेमासः)** निश्चित रक्षा है जिनसे वे **(पर्वतासः)** मेघ जैसे वैसे हम लोगों की **(मदन्तः)** प्रसन्न हुए वृद्धि करो। और **(आदित्यैः)** पूर्ण विद्वानों के साथ **(अदितिः)** माता **(नः)** हम लोगों को **(शृणोतु)** सुने **(मरुतः)** मनुष्य लोग **(नः)** हम लोगों के लिये **(भद्रम्)** कल्याण करनेवाले **(शर्म)** श्रेष्ठ गृह के सदृश सुख को **(यच्छन्तु)** देवें॥२०॥

**भावार्थः**-मनुष्यों को चाहिये कि सब प्राप्तियों से प्रथम उत्तम शिक्षा, तदनन्तर विद्या, पुनः सत्सङ्ग से कल्याणकारक आचरण, उत्तम बातों का श्रवण और उपदेश करके सबके योग**[**क्षेम**]** अर्थात् भोजन-आच्छादन के निर्वाह और कल्याण को सिद्ध करें॥२०॥

**सदा॑ सु॒गः पि॑तु॒माँ अ॑स्तु॒ पन्था॒ मध्वा॑ देवा॒ ओष॑धीः सं पि॑पृक्त।**
**भगो॑ मे अग्ने स॒ख्ये न मृ॑ध्या॒ उद्रा॒यो अ॑श्यां॒ सद॑नं पु॒रु॒क्षोः॥२१॥**

**सदा॑। सु॒ऽगः। पि॒तु॒मान्। अ॒स्तु॒। पन्था॑ः। मध्वा॑। दे॒वा॒ः। ओष॑धीः। सम्। पि॒पृ॒क्त॒। भग॑ः। मे॒। अ॒ग्ने॒। स॒ख्ये। न। मृ॒ध्या॒ः। उत्। रा॒यः। अ॒श्या॒म्। सद॑नम्। पु॒रु॒ऽक्षोः॥२१॥**

**पदार्थः**-**(सदा)** सर्वदा **(सुगः)** सुखेन गच्छन्ति यस्मिन् **(पितुमान्)** बहूनि पितवोऽन्नादीनि विद्यन्ते यस्मिन् **(अस्तु)** **(पन्थाः)** मार्गः **(मध्वा)** मधुरादिगुणयुक्ताः **(देवाः)** विद्वांसः **(ओषधीः)** सोमलताद्याः **(सम्)** **(पिपृक्त)** सम्यक् प्राप्नुतः **(भगः)** ऐश्वर्य्यम् **(मे)** मम **(अग्ने)** विद्वन्! **(सख्ये)** सख्युर्भावे कर्मणि वा **(न)** **(मृध्याः)** हिंस्याः **(उत्)** **(रायः)** धनानि **(अश्याम्)** प्राप्नुयाम् **(सदनम्)** गृहम् **(पुरुक्षोः)** बह्वन्नस्य॥२१॥

**अन्वयः**-हे देवा विद्वांसो! यूयं मध्वोषधीः सम्पिपृक्त येनाऽस्माकं सुगः पितुमान् पन्थाः सहास्तु। हे अग्ने! मे सख्ये त्वं न मृध्या मे भगो तेऽस्तु यथाऽहं पुरुक्षोः सदनं रायश्चोदश्यां तथा भवानप्येतत्प्राप्नोतु॥२१॥

**भावार्थः**-ये विद्वांसो वैद्या भूत्वा सदोषधीभी रोगान्निवार्य्य सर्वानरोगान् कुर्य्युस्सदैव मैत्रीं भावयित्वा राज्ञा निष्कण्टका निर्भयाः सरलाः पन्थानो निर्मातव्याः येषु गत्वाऽऽगत्य प्रजाः पुष्कलधना भवेयुः॥२१॥

**पदार्थः**-हे **(देवाः)** विद्वानो! आप लोग **(मध्वा)** मधुर आदि गुणों से युक्त **(ओषधीः)** सोमलता आदि ओषधियों को **(सम्)** **(पिपृक्त)** उत्तम प्रकार प्राप्त हों जिससे हम लोगों का **(सुगः)** सुखपूर्वक चलते हैं जिसमें और **(पितुमान्)** बहुत अन्न आदि विद्यमान हैं जिसमें ऐसा **(पन्थाः)** मार्ग सदा सब काल



www.9009.co.in

में **(अस्तु)** हो और हे **(अग्ने)** विद्वन्! **(मे)** मेरे **(सख्ये)** मित्र के भाव अर्थात् मित्रपन वा धर्म में आप **(न)** नहीं **(मृध्या:)** नाश करो, मेरा **(भग:)** ऐश्वर्य्य आपका हो और जैसे मैं **(पुरुक्षो:)** बहुत अन्नवाले के **(सदनम्)** गृह और **(राय:)** धनों को **(उत्, अश्याम्)** प्राप्त होऊँ, वैसे आप भी इन गृह, धनादि वस्तुओं को प्राप्त होइये॥२१॥

**भावार्थ:**-जो विद्वान् लोग वैद्य होकर सर्वदा ओषधियों से रोगों का निवारण करके सबको रोगरहित करें और सदैव मित्रता करके राजा को चाहिये कि दुष्ट डाकू रूप कण्टकों से तथा सबसे रहित सरल मार्ग बनावें कि जिन मार्गों में जाकर तथा आकर प्रजायें बहुत धनवाली होवें॥२१॥

**स्वदस्व हव्या समिषो दिदीह्यस्मद्र्य१क् सं मिमीहि श्रवांसि।**

**विश्वाँ अग्ने पृत्सु ताञ्जेषि शत्रूनहा विश्वा सुमना दीदिही नः॥२२॥२७॥**

**स्वदस्व। हव्या। सम्। इषः। दिदीहि। अस्मद्र्यक्। सम्। मिमीहि। श्रवांसि। विश्वान्। अग्ने। पृत्ऽसु। तान्। जेषि। शत्रून्। अहा। विश्वा। सुऽमनाः। दीदिहि। नः॥२२॥**

**पदार्थ:**-**(स्वदस्व)** भुङ्क्ष्व **(हव्या)** अत्तुमर्हाणि **(सम्)** **(इष:)** विज्ञानानि **(दिदीहि)** प्रकाशय **(अस्मद्र्यक्)** योऽस्मानञ्चति स: **(सम्)** **(मिमीहि)** संमिमीष्व **(श्रवांसि)** अन्नानि श्रवणानि वा **(विश्वान्)** सर्वान् **(अग्ने)** पावक इव वर्त्तमान **(पृत्सु)** संग्रामेषु **(तान्)** **(जेषि)** जयसि **(शत्रून्)** **(अहा)** दिनानि **(विश्वा)** सर्वाणि **(सुमना:)** प्रसन्नचित्त: **(दीदिहि)** प्रकाशस्व प्रकाशय वा। अत्र **संहितायामि**ति दीर्घ:। **(न:)** अस्मान्॥२२॥

**अन्वय:**-हे अग्ने! त्वमस्मद्र्यक् सन् हव्या श्रवांसि स्वदस्वेष: सं दिदीहि। श्रवांसि सं मिमीहि यतस्त्वं पृत्सु तान् विश्वाञ्छत्रूञ्जेषि तस्माद्विश्वाहा सुमना: सन् दीदिहि। नोऽस्माँश्च दीदिहि॥२२॥

**भावार्थ:**-राजादिपुरुषैर्बुद्धिविनाशकान्नादित्यागमुक्त्वा विज्ञानं वर्द्धयित्वा लोकतो वार्त्ता: श्रुत्वा सेना उन्नीय शत्रूञ्जित्वा सर्वदा हर्षशोकरहितैर्भवितव्यं धर्म्येण प्रजा: संपाल्य विषयासक्तिं विहायाऽऽनन्दितव्यमिति॥२२॥

अत्र राजविद्वत्प्रजाऽध्यापकशिष्येश्वरश्रोतृवक्तृशूरवीरकर्मगुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति चतु:पञ्चाशत्तमं सूक्तं सप्तविंशो वर्गश्च समाप्त:॥**

**पदार्थ:**-हे **(अग्ने)** अग्नि के सदृश वर्त्तमान! आप **(अस्मद्र्यक्)** जो हम लोगों को ज्ञान, गमन, प्राप्ति और सत्कार देता है वह **(हव्या)** भोजन करने योग्य **(श्रवांसि)** अन्न वा श्रवणों को **(स्वदस्व)** भोग करें **(इष:)** विज्ञानों को **(सम्, दिदीहि)** प्रकाश करो। और अन्न वा श्रवणों को **(सम्, मिमीहि)** तोलो और सुनो जिससे कि आप **(पृत्सु)** संग्रामों में **(तान्)** उनको **(विश्वान्)** सम्पूर्ण **(शत्रून्)** शत्रुओं को



www.9009.co.in

**(जेषि)** जीतते हो तिससे **(विश्वा)** सब **(अहा)** दिनों को **(सुमनाः)** प्रसन्नचित्त होते हुए **(दीदिहि)** प्रकाशित होइये और **(नः)** हम लोगों को प्रकाशित कीजिये॥२२॥

**भावार्थः**-राजा आदि पुरुषों को चाहिये कि बुद्धि के नाश करनेवाले अन्न आदि का त्याग करना कहके, विज्ञान बढ़ाय के, लोक से वार्त्ताओं को सुन के, सेनाओं की वृद्धि करके और शत्रुओं को जीत कर सब काल में आनन्द और शोक का त्याग करें और धर्म से प्रजाओं का पालन करके विषयों में आसक्ति का त्याग करके आनन्द करना चाहिये॥२२॥

इस सूक्त में राजा, विद्वान्, प्रजा, अध्यापक, शिष्य, ईश्वर, श्रोता, वक्ता और शूरवीर के कर्म्म और गुणवर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की पिछले सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह चौवनवाँ सूक्त और सत्ताईसवाँ वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

**अथ द्वाविंशत्यृचस्य पञ्चपञ्चाशत्तमस्य सूक्तस्य प्रजापतिर्वैश्वामित्रो वाच्यो वा ऋषयः। विश्वेदेवाः। १ उषाः। २-१० अग्निः। ११ अहोरात्रौ। १२-१४ रोदसी। १५ रोदसी द्युनिशौ वा। १६ दिशः। १७-२२ इन्द्रः पर्जन्यात्मा त्वष्टा वाग्निश्च देवताः। १, २, ६, ७, ९-१२, १९, २२ निचृत्त्रिष्टुप्। ४, ८, १३, १६, २१ त्रिष्टुप्। १४, १५, १८ विराट् त्रिष्टुप्। १७ भुरिक् त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः। ३ भुरिक् पङ्क्तिः। ५, २० स्वराट् पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः॥**

अब बाईस ऋचा वाले पचपनवें सूक्त का आरम्भ है॥

**उषसः पूर्वा अध यद्व्यूषुर्महद्वि जज्ञे अक्षरं पदे गोः।**
**व्रता देवनामुप नु प्रभूषन् महद्देवानामसुरत्वमेकम्॥१॥**

**उषसः। पूर्वाः। अध। यत्। विऽऊषुः। महत्। वि। जज्ञे। अक्षरम्। पदे। गोः। व्रता। देवानाम्। उप। नु। प्रऽभूषन्। महत्। देवानाम्। असुरऽत्वम्। एकम्॥१॥**

**पदार्थः**-(**उषसः**) प्रभातात् (**पूर्वाः**) (**अध**) अथ (**यत्**) (**व्यूषुः**) विवसन्ति (**महत्**) (**वि**) (**जज्ञे**) जातम् (**अक्षरम्**) (**पदे**) स्थाने (**गोः**) पृथिव्याः (**व्रता**) नियमाः (**देवानाम्**) विदुषाम् (**उप**) समीपे (**नु**) सद्यः (**प्रभूषन्**) अलङ्कुर्वन् (**महत्**) (**देवानाम्**) पृथिव्यादीनाम् (**असुरत्वम्**) यदसुषु प्राणेषु रमते तत् (**एकम्**) अद्वितीयमसहायम्॥१॥

**अन्वयः**-यदुषसः पूर्वा व्यूषुस्तन्महदक्षरं महत्तत्वाख्यं गोः पदे वि जज्ञे यदेकं देवानां महदसुरत्वं प्रभूषन्नध देवानां व्रतोप नु जज्ञे तद्यूयं विजानीत॥१॥

**भावार्थः**-यद्विद्युदाख्यमुषसः सेवन्ते तद्वद्वर्त्तमानमेकमद्वितीयं ब्रह्म प्रकृत्यादिषु व्याप्तं तत्सर्वं धरति तदेव सर्वैरुपास्यमस्ति॥१॥

**पदार्थः**-(**यत्**) जो (**उषसः**) प्रातःकाल से (**पूर्वाः**) प्रथम हुए (**व्यूषुः**) विशेष करके वसते हैं वह (**महत्**) बड़ा (**अक्षरम्**) नहीं नाश होनेवाला (**महत्**) बड़ा तत्त्वनामक (**गोः**) पृथिवी के (**पदे**) स्थान में (**वि, जज्ञे**) उत्पन्न हुआ जो (**एकम्**) अद्वितीय और सहायरहित (**देवानाम्**) पृथिवी आदिकों में बड़े (**असुरत्वम्**) प्राणों में रमनेवाले को (**प्र, भूषन्**) शोभित करता हुआ (**अध**) उसके अनन्तर (**देवानाम्**) विद्वानों के (**व्रता**) नियम (**उप**) समीप में (**नु**) शीघ्र उत्पन्न हुए उसको आप लोग जानिये॥१॥

**भावार्थः**-जो बिजुली नामक वस्तु को प्रातःकालः से सेवन करते हैं, उनके सदृश वर्त्तमान एक द्वितीयरहित ब्रह्म प्रकृति आदि पदार्थों में व्याप्त हुआ वह सबको धारण करता है, वही सब करके [=से] उपासना करने योग्य है॥१॥

**मो षू णो अत्र जुहुरन्त देवा मा पूर्वे अग्ने पितरः पदज्ञाः।**



www.9009.co.in

**पुराण्योः सद्मनोः केतुरन्तर्महद्देवानामसुरत्वमेकम्॥ २॥**

**मो इति। सु। नः। अत्र। जुहुरन्त। देवाः। मा। पूर्वे। अग्ने। पितरः। पदऽज्ञाः। पुराण्योः। सद्मनोः। केतुः। अन्तः। महत्। देवानाम्। असुरऽत्वम्। एकम्॥ २॥**

**पदार्थः**-(**मो**) निषेधे (**सु**) (**नः**) अस्मान् (**अत्र**) अस्मिन् ब्रह्मणि विज्ञानव्यवहारे वा (**जुहुरन्त**) प्रसहन्ताम् (**देवाः**) विद्वांसः (**मा**) निषेधे (**पूर्वे**) प्रथमजाः (**अग्ने**) विद्वन्! (**पितरः**) विज्ञानवन्तः (**पदज्ञाः**) ये पदं प्राप्तव्यं जानन्ति ते (**पुराण्योः**) सनातन्योर्विद्युदाकाशरूपयोः प्रकृत्योः (**सद्मनोः**) सर्वेषां निवासस्थानयोः (**केतुः**) ज्ञानस्वरूपम् (**अन्तः**) मध्ये व्याप्तम् (**महत्**) (**देवानाम्**) पृथिव्यादीनां जीवानां वा (**असुरत्वम्**) प्राणेषु क्रीडमानम् (**एकम्**) अद्वितीयं ब्रह्म॥ २॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! यत्पुराण्योः सद्मनोर्देवानामन्तः केतुर्महदेकमसुरत्वमस्त्यत्र नो अस्मान् पदज्ञाः पूर्वे पितरो मो जुहुरन्त देवा अत्रास्मान् मा सु जुहुरन्तैवं त्वमप्येतद्विज्ञाय त्वामेते मा जुहुरन्त॥ २॥

**भावार्थः**-त एवाऽस्मिञ्जगति विद्वांसो जनका इव भवेयुर्ये प्रकृत्यादिषु व्याप्तं सर्वान्तर्य्यामि ब्रह्म सम्यग् विज्ञाय विज्ञापयेयुः॥ २॥

**पदार्थः**-हे (**अग्ने**) विद्वन्! जो (**पुराण्योः**) अनादि काल से सिद्ध बिजुली और आकाश रूप प्रकृतियों (**सद्मनोः**) सबके रहने के स्थानों और (**देवानाम्**) पृथिवी आदि वा जीवों के (**अन्तः**) मध्य में (**केतुः**) ज्ञानस्वरूप (**महत्**) बड़ा (**एकम्**) अपने सदृश द्वितीय पदार्थरहित ब्रह्म (**असुरत्वम्**) प्राणों में क्रीड़ा करता हुआ है (**अत्र**) इस ब्रह्म वा विज्ञान के व्यवहार में (**नः**) हम लोगों को (**पदज्ञाः**) प्राप्त होने योग्य के जाननेवाले (**पूर्वे**) प्रथम उत्पन्न हुए (**पितरः**) विज्ञानवाले (**मो**) नहीं (**जुहुरन्त**) प्रसहन करें और (**देवाः**) विद्वान् लोग इस विज्ञानरूप व्यवहार में हम लोगों को (**मा**) नहीं (**सु**) उत्तम प्रकार सहें, इस प्रकार आप भी यह जान के आपको ये लोग न सहें॥ २॥

**भावार्थः**-वे ही इस संसार में विद्वान् जन पिता के सदृश होवें कि जो प्रकृति आदि पदार्थों में व्याप्त सर्वान्तर्य्यामी ब्रह्म को उत्तम प्रकार जान के अन्यों को जनावें॥ २॥

**वि मे पुरुत्रा पतयन्ति कामाः शम्यच्छा दीद्ये पूर्व्याणि।**
**समिद्धे अग्नावृतमिद्वदेम महद्देवानामसुरत्वमेकम्॥ ३॥**

**वि। मे। पुरुऽत्रा। पतयन्ति। कामाः। शमि। अच्छ। दीद्ये। पूर्व्याणि। सम्ऽइद्धे। अग्नौ। ऋतम्। इत्। वदेम। महत्। देवानाम्। असुरऽत्वम्। एकम्॥ ३॥**

**पदार्थः**-(**वि**) विशेषे (**मे**) मम (**पुरुत्रा**) बहूनि (**पतयन्ति**) पतिमाचक्षन्ते (**कामाः**) अभिलाषाः (**शमि**) कर्माणि। **शमीति कर्मनामसु पठितम्।** (निघं० २.१) (**अच्छ**)। अत्र **संहितायामिति** दीर्घः। (**दीद्ये**) प्रकाशयेयम्। **दीदयतीति ज्वलतिकर्मा।** (निघं० १.१६) (**पूर्व्याणि**) पूर्वैः साधितानि (**समिद्धे**) प्रदीप्ते



www.9009.co.in

**(अग्नौ)** **(ऋतम्)** सत्यम् **(इत्)** एव **(वदेम)** **(महत्)** **(देवानाम्)** दिव्यानां पदार्थानां मध्ये **(असुरत्वम्)** प्राणाधारम् **(एकम्)** असहायम्॥३॥

**अन्वयः**-यैर्मे पुरुत्रा कामाः पतयन्ति तानि पूर्व्याणि शम्यहमच्छ वि दीद्ये समिद्धेऽग्नाविव देवानां महदेकमसुरत्वमृतं वदेम तदिदेव सर्वे वदन्तु॥३॥

**भावार्थः**-मनुष्या आलस्यं विहाय पूर्वैराप्तैराचरितानि कर्माणि सेवित्वा देवानां देवं सर्वाधारं सत्यस्वरूपं दीपेन घटादिकमिवान्तर्व्याप्तं परमात्मानं साक्षाद् दृष्ट्वाऽन्यान् प्रत्युपदिशन्तु॥३॥

**पदार्थः**-जिनसे **(मे)** मेरी **(पुरुत्रा)** बहुत **(कामाः)** अभिलाषायें **(पतयन्ति)** स्वामी को स्पष्ट कहने की इच्छा करती हैं, उन **(पूर्व्याणि)** पूर्व जनों से सिद्ध किये गये **(शमि)** कर्मों को मैं **(अच्छा)** उत्तम प्रकार **(वि)** विशेष करके **(दीद्ये)** प्रकाश करूं, **(समिद्धे)** प्रदीप्त **(अग्नौ)** अग्नि में जैसे **(देवानाम्)** उत्तम पदार्थों के मध्य में **(महत्)** बड़े **(एकम्)** सहायरहित **(असुरत्वम्)** प्राणों के आधार **(ऋतम्)** सत्य को **(वदेम)** कहे, उसको **(इत्)** ही सब लोग कहें॥३॥

**भावार्थः**-मनुष्य लोग आलस्य को त्याग के पूर्व पुरुषों करके [=द्वारा] किये हुये कर्मों का सेवन करके देवों के देव सबके आधार सत्यस्वरूप और दीपक से घट आदि के सदृश भीतर व्याप्त परमात्मा को साक्षात् देख के अन्य जनों के प्रति उपदेश देवें॥३॥

**स॒मा॒नो राजा॒ विभृ॑तः पुरु॒त्रा शये॑ श॒यासु॒ प्रयु॑तो॒ वनानु॑।**

**अ॒न्या व॒त्सं भर॑ति॒ क्षेति॑ मा॒ता म॒हद्दे॒वाना॑मसु॒र॒त्वमेक॑म्॥४॥**

**स॒मा॒नः। राजा॑। विऽभृ॑तः। पु॒रु॒ऽत्रा। शये॑। श॒यासु॑। प्रऽयु॑तः। वना॑। अनु॑। अ॒न्या। व॒त्सम्। भर॑ति। क्षेति॑। मा॒ता। म॒हत्। दे॒वाना॑म्। अ॒सु॒र॒ऽत्वम्। एक॑म्॥४॥**

**पदार्थः**-**(समानः)** एकः **(राजा)** प्रकाशमानः **(विभृतः)** विशेषेण धृतः **(पुरुत्रा)** पूर्वासु **(शये)** **(शयासु)** शेरते यासु विद्युदादयः पदार्थाः तासु **(प्रयुतः)** विभक्तः सन् मिलितः **(वना)** किरणान् **(अनु)** सद्यः **(अन्या)** भिन्ना त्रिगुणात्मिका प्रकृतिः **(वत्सम्)** महत्तत्त्वादिकम् **(भरति)** धरति **(क्षेति)** निवासयति **(माता)** जननीव **(महत्)** पूजनीयम् **(देवानाम्)** सूर्य्यादीनां विदुषां वा मध्ये **(असुरत्वम्)** अस्यति प्रक्षिपति दूरीकरोति सर्वाणि दुःखानि तस्य भावम् **(एकम्)** अद्वितीयम्॥४॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यत्र पुरुत्रा शयासु प्रयुतो विभृतस्समानो राजा सूर्य्यः शये शेते वना सेवतेऽन्या माता वत्सं भरति सर्वं क्षेति तद्देवानां महदेकमसुरत्वं यूयमनु विजानीत॥४॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! येन प्रकाशिताः सूर्य्यादयः प्रकाशन्ते योऽव्यक्ते सर्वमुत्पाद्य धृत्वा मातृवद्रक्षति यदाप्तानां विदुषां सत्कर्त्तव्यमस्ति तद्ब्रह्म यूयमुपाध्वम्॥४॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जिन **(पुरुत्रा)** प्राचीन काल से प्रसिद्ध **(शयासु)** शयन करें जिनमें बिजुली आदि पदार्थ उनमें **(प्रयुतः)** विभक्त हुआ फिर मिल गया **(विभृतः)** विशेष करके धारण किया गया



www.9009.co.in

(**समानः**) एक (**राजा**) प्रकाशमान सूर्य्य (**शये**) शयन करता है (**वना**) किरणों को सेवन करता है (**अन्या**) भिन्न त्रिगुण स्वरूप प्रकृति (**माता**) माता (**वत्सम्**) पुत्र को [(**भरति**)]धारण करती है और सबको (**क्षेति**) वसाती है वह (**देवानाम्**) सूर्य्यादिक वा विद्वानों के मध्य में (**महत्**) सत्कार करने योग्य (**एकम्**) द्वितीयरहित (**असुरत्वम्**) दूर करता है दुःखों को जो उसका होना उसको आप लोग (**अनु**) शीघ्र जानिये॥४॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जिस करके [=के द्वारा] प्रकाशित हुए सूर्य्य आदि प्रकाशित होते हैं, जो अव्यक्त अर्थात् प्रकृति में सबको उत्पन्न करके तथा धारण करके माता के सदृश रक्षा करता है और जो यथार्थवक्ता विद्वानों करके [=के द्वारा] सत्कार करने योग्य है, उस ब्रह्म की आप लोग उपासना करो॥४॥

**आ॒क्षित्पूर्वा॒स्वप॑रा अनू॒रुत्स॒द्यो जा॒तासु॑ तरु॑णीष्व॒न्तः।**

**अ॒न्तर्व॑ती: सुवते॒ अप्र॑वीता म॒हद्दे॒वाना॑मसु॒र॒त्वमेक॑म्॥५॥२८॥**

**आ॒ऽक्षित्। पूर्वा॑सु। अप॑राः। अ॒नू॒रुत्। स॒द्यः। जा॒तासु॑। तरु॑णीषु। अ॒न्तरिति॑। अ॒न्तःऽव॑तीः। सु॒व॒ते। अप्र॑ऽवीताः। म॒हत्। दे॒वाना॑म्। अ॒सु॒र॒ऽत्वम्। एक॑म्॥५॥**

**पदार्थः**-(**आक्षित्**) यः समन्तात् क्षियति सर्वत्र वसति सः (**पूर्वासु**) प्राचीनासु सनातनीषु प्रजासु (**अपराः**) या जनिष्यन्ते (**अनुरुत्**) योऽनुरौत्युपदिशति (**सद्यः**) समानेऽहनि (**जातासु**) उत्पन्नासु प्रजासु (**तरुणीषु**) युवतय इव वर्त्तमानासु (**अन्तः**) (**मध्ये**) (**अन्तर्वतीः**) अन्तर्मध्ये कारणं विद्यते यासु ताः (**सुवते**) उत्पद्यन्ते (**अप्रवीताः**) अव्याप्ताः परिच्छिन्नाः (**महत्**) सर्वेभ्यो बृहत् (**देवानाम्**) दिव्यगुणानां सूर्यादीनां सकाशात् (**असुरत्वम्**) सर्वेषां प्रक्षेप्तारम् (**एकम्**) चेतनमात्रस्वरूपम्॥५॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यः पूर्वासु सद्यो जातासु च तरुणीषु प्रजास्वन्तराक्षिदनूरुद्वर्त्तते यस्योत्पादनेनाऽपरा अन्तर्वतीरप्रवीताः प्रजाः सुवते तदेव देवानाम्महदसुरत्वमेकं परमात्मानं यूयं भजत॥५॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! य उत्पन्नासूत्पद्यमानासूत्पस्त्यमानासु प्रजासु व्याप्तो धर्ताऽन्तर्यामी वर्त्तते तं परमात्मानं सेवन्ताम्॥५॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो (**पूर्वासु**) प्राचीन काल में विद्यमान और (**सद्यः**) समान दिन में (**जातासु**) उत्पन्न और (**तरुणीषु**) युवावस्थावालियों के सदृश वर्त्तमान प्रजाओं के (**अन्तः**) मध्य में (**आक्षित्**) जो चारों ओर सर्वत्र वसता है वह (**अनूरुत्**) उपदेश देनेवाला वर्त्तमान है और जिसके उत्पन्न करने से (**अपराः**) उत्पन्न की जातीं (**अन्तर्वतीः**) मध्य में कारण विद्यमान है जिनमें उन (**अप्रवीताः**) नहीं व्याप्त अर्थात् गणना से नाप सकने योग्य प्रजा (**सुवते**) उत्पन्न होती हैं, वही (**देवानाम्**) उत्तम गुणवाले सूर्य्य आदिकों के मध्य में (**महत्**) सबसे बड़े (**असुरत्वम्**) सबसे फेंकनेवाले और (**एकम्**) चेतनमात्र स्वरूप परमात्मा की आप लोग सेवा करो॥५॥



www.9009.co.in

**भावार्थ:**-हे मनुष्यो! जो उत्पन्न, उत्पन्न हो गई और उत्पन्न होनेवाली प्रजाओं में व्याप्त धारण करनेवाला अन्तर्यामी वर्त्तमान है, उस परमात्मा की सेवा करो॥५॥

**शयुः पुरस्तादध नु द्विमाताऽबन्धनश्चरति वत्स एकः।**

**मित्रस्य ता वरुणस्य व्रतानि महद्देवानामसुरत्वमेकम्॥६॥**

**शयुः। पुरस्तात्। अध। नु। द्विऽमाता। अबन्धनः। चरति। वत्सः। एकः। मित्रस्य। ता। वरुणस्य। व्रतानि। महत्। देवानाम्। असुरऽत्वम्। एकम्॥६॥**

**पदार्थ:**-(**शयुः**) योऽभिव्याप्य शेते (**परस्तात्**) परस्मिन् देशे (**अध**) अथ (**नु**) (**द्विमाता**) द्वे वाय्वाकाशौ मातरौ यस्याऽग्नेः सः (**अबन्धनः**) यो बध्नाति तद्भिन्नः (**चरति**) गच्छति (**वत्सः**) पुत्रइव वर्त्तमानः (**एकः**) असहायः (**मित्रस्य**) सुहृदः (**ता**) तानि (**वरुणस्य**) सर्वोत्तमस्य जगत्प्रबन्धकस्य (**व्रतानि**) सत्यभाषणादीनि कर्माणि। **व्रतमिति कर्मनामसु पठितम्।** (निघं०२.१) (**महत्**) (**देवानाम्**) विदुषाम् (**असुरत्वम्**) प्रक्षेप्तृत्वम् (**एकम्**) असहायं तेजः॥६॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यः परस्ताच्छयुर्द्विमाताऽबन्धनो वत्स इवैको नु चरत्यध यद्देवानान्महदेकमसुरत्वं चरति ता व्रतानि मित्रस्य वरुणस्य परमात्मनः सन्तीति वेद्यम्॥६॥

**भावार्थ:**-हे मनुष्या! यत्किञ्चिदत्र जगति सूर्य्यादिवस्तु, या अत्र विविधा रचनाः सन्ति, यच्च विचित्ररूपं स्वादादिकं वर्त्तते सर्वे स्वस्वपरिधौ भ्रमन्ति प्रलयात् प्राक् न विनश्यन्ति तानीमानि परमात्मनः कर्माणि सन्तीति वेदितव्यम्॥६॥

**पदार्थ:**-हे मनुष्यो! जो (**परस्तात्**) दूसरे देश में (**शयुः**) व्याप्त होकर शयन करनेवाला (**द्विमाता**) दो वायु और आकाश माता हैं जिस अग्नि के वह (**अबन्धनः**) जो बन्धनरहित वह (**वत्सः**) पुत्र के सदृश वर्त्तमान (**एकः**) सहायरहित (**नु**) शीघ्र (**चरति**) चलता है (**अध**) इसके अनन्तर जो (**देवानाम्**) विद्वानों का (**महत्**) बड़ा (**एकम्**) सहायरहित तेज (**असुरत्वम्**) फेंकनापन (**ता**) वे (**व्रतानि**) सत्यभाषण आदि कर्म (**मित्रस्य**) मित्र और (**वरुणस्य**) सब में उत्तम और संसार के प्रबन्ध करनेवाले परमात्मा के हैं, ऐसा जानना चाहिये॥६॥

**भावार्थ:**-हे मनुष्यो! जो कुछ इस संसार में सूर्य्य आदि वस्तु और जो इस संसार में अनेक प्रकार की रचना हैं और जो विचित्ररूप स्वाद आदि वर्त्तमान हैं और सब अपने-अपने मण्डल में घूमते हैं, प्रलय से प्रथम नहीं नष्ट होते हैं, वे ये परमात्मा के कर्म हैं, यह जानना चाहिये॥६॥

**द्विमाता होता विदथेषु सम्राळन्वग्रं चरति क्षेति बुध्नः।**

**प्र रण्यानि रण्यवाचो भरन्ते महद्देवानामसुरत्वमेकम्॥७॥**



www.9009.co.in

**द्विऽमा॒ता। होता॑। वि॒दथे॑षु। स॒म्ऽरा॒ट्। अनु॑। अग्र॑म्। चर॑ति। क्षेति॑। बु॒ध्नः। प्र। रण्या॑नि। र॒ण्य॒ऽवाचः॑। भ॒र॒न्ते॒। म॒हत्। दे॒वाना॑म्। अ॒सु॒र॒ऽत्वम्। एक॑म्॥७॥**

**पदार्थः**-(**द्विमाता**) द्वे वाय्वाकाशौ मातरौ यस्य सूर्य्यस्य सः (**होता**) आदाता दाता च (**विदथेषु**) विज्ञातव्येषु पृथिव्यादिषु (**सम्राट्**) यः सम्यग् राजते (**अनु**) (**अग्रम्**) सर्वेषां मध्यं केन्द्रं स्थानमुपरिस्थम् (**चरति**) गच्छति (**क्षेति**) निवसति निवासयति वा (**बुध्नः**) बुध्नमन्तरिक्षं निवासस्थानं विद्यते यस्य सः। अत्रार्शादित्वादच्। (**प्र**) (**रण्यानि**) रमणीयानि लोकजातानि (**रण्यवाचः**) रमणीयभाषाः (**भरन्ते**) धरन्ति पुष्णन्ति वा (**महत्**) (**देवानाम्**) (**असुरत्वम्**) (**एकम्**)॥७॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! येन निर्मितो द्विमाता होता बुध्नो विदथेषु सम्राडग्रमनुचरति क्षेति रण्यानि प्र क्षेति यद्देवानां महदेकमसुरत्वं रण्यवाचो भरन्ते तदेव ब्रह्म यूयं सेवध्वम्॥७॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यो जगदीश्वरस्सूर्य्यादि जगन्निर्माय धृत्वा प्रकाश्य पालयति। यः सर्वत्र वसन्त्सन्त्सर्वान्त्स्वस्मिन् वासयति यमेकमेवाप्ता विद्वांसः सेवन्ते तमेव सर्व उपासन्ताम्॥७॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जिस करके निर्माण किया गया (**द्विमाता**) दो वायु और आकाश हैं, माता जिस सूर्य्य के वह (**होता**) लेने और देनेवाला (**बुध्नः**) अन्तरिक्ष निवास का स्थान विद्यमान है जिसका वह (**विदथेषु**) जानने योग्य पृथिवी आदिकों में (**सम्राट्**) जो उत्तम प्रकार प्रकाशमान है (**अग्रम्**) सबके मध्य केन्द्र स्थान जो कि ऊपर वर्त्तमान उसको (**अनु, चरति**) प्राप्त होता है, वसता वा वसाता (**रण्यानि**) सुन्दर और लोकों में उत्पन्न हुओं को (**प्र, क्षेति**) वसता वा वसाता और जो (**देवानाम्**) विद्वानों में (**महत्**) बड़े (**एकम्**) सहायरहित (**असुरत्वम्**) प्राणों में रमनेवाले को (**रण्यवाचः**) रमणीय भाषाएँ (**भरन्ते**) धारण वा पोषण करती हैं, उस ही ब्रह्म की आप लोग सेवा करो॥७॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो जगदीश्वर सूर्य्य आदि जगत् को निर्माण, धारण और प्रकाश करके पालन करता है और जो सर्वत्र वसता हुआ सबको अपने में वसाता है, जिस एक ही को यथार्थ बोलनेवाले विद्वान् लोग सेवते हैं, उस ही की सब लोग उपासना करो॥७॥

**शूर॑स्येव॒ युध्य॑तो अन्त॒मस्य॑ प्रती॒चीनं॑ ददृशे॒ विश्व॑मा॒यत्।**

**अ॒न्तर्म॒तिश्च॑रति नि॒ष्षिधं॒ गोर्म॒हद्दे॒वाना॑मसु॒र॒त्वमेक॑म्॥८॥**

**शूर॑स्यऽइव। युध्य॑तः। अ॒न्त॒मस्य॑। प्र॒ती॒चीन॑म्। द॒दृ॒शे॒। विश्व॑म्। आ॒ऽयत्। अ॒न्तः। म॒तिः। च॒र॒ति॒। नि॒ःऽसिध॑म्। गोः। म॒हत्। दे॒वाना॑म्। अ॒सु॒र॒ऽत्वम्। एक॑म्॥८॥**

**पदार्थः**-(**शूरस्येव**) यथा शत्रून् हिंसतः (**युध्यतः**) प्रहरतः। अत्र व्यत्ययेन परस्मैपदम्। (**अन्तमस्य**) समीपस्थस्य (**प्रतीचीनम्**) पश्चाद्भूतम् (**ददृशे**) दृश्यते (**विश्वम्**) सर्वञ्जगत् (**आयत्**) प्राप्नुवत् (**अन्तः**) मध्ये (**मतिः**) मेधावी। **मतय इति मेधाविनामसु पठितम्।** (निघं०३.१५) (**चरति**) गच्छति (**निष्षिधम्**) यन्नितरां सेधति शास्ति तत् (**गोः**) वाण्याः (**महत्**) (**देवानाम्**) (**असुरत्वम्**) (**एकम्**)॥८॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे मनुष्या! अन्तमस्य युध्यतः शूरस्येव यत्र प्रतीचीनमायद्विश्वमन्तर्ददृशे गोर्महन्निष्षिधं देवानामेकमसुरत्वं मतिश्चरति तदेव ब्रह्म यूयं विजानीत॥८॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यथा युध्यमानस्य समीपस्थस्य शूरस्य समीपे कातरो जनस्तिरस्कृतवद् दृश्यते तथैव सर्वशक्तिमतोऽनन्तस्य परमात्मनस्सन्निधौ सूर्य्यादिकं जगत् क्षुद्रं तिरस्कृतं वर्त्तते यो जगदीश्वरो विद्याकोशं वेदचतुष्टयं वाण्याऽऽभूषणं शास्ति तदेवेष्टं यूयं मन्यध्वम्॥८॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(अन्तमस्य)** समीप के वर्त्तमान **(युध्यतः)** प्रहार करते हुए **(शूरस्येव)** शत्रुओं के मारनेवाले के सदृश जहाँ **(प्रतीचीनम्)** पीछे से हुए **(आयत्)** प्राप्त होते हुए **(विश्वम्)** सम्पूर्ण संसार **(अन्तः)** मध्य में **(ददृशे)** देख पड़ता है और **(गोः)** वाणी का **(महत्)** बड़ा **(निष्षिधम्)** अत्यन्त शासन करनेवाला **(देवानाम्)** विद्वानों में **(एकम्)** सहायरहित **(असुरत्वम्)** प्राणों में रमनेवाला **(मतिः)** बुद्धिमान् **(चरति)** प्राप्त होता है, उस ही को ब्रह्म आप लोग जानें॥८॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे युद्ध करते हुए समीप में वर्त्तमान और शत्रु के नाशक वीर पुरुष के समीप में कायर मनुष्य तिरस्कृत हुए पुरुष के सदृश देखा जाता है, वैसे ही सम्पूर्ण शक्तिवाले अनन्त परमात्मा के समीप में सूर्य्य आदिक जगत् क्षुद्र और तिरस्कृत है और जो जगदीश्वर विद्या के खजाने रूप चारों वेदों वाणी के आभूषण हुओं का शासन करता है, उस ही को इष्ट आप लोग मानो॥८॥

**नि वे॑वेति पलि॒तो दू॒त आ॑स्व॒न्तर्म॒हांश्च॑रति रोच॒नेन॑।**

**वपूं॑षि बिभ्र॑द॒भि नो॒ वि च॑ष्टे म॒हद्दे॒वाना॑मसुर॒त्वमेक॑म्॥ ९॥**

**नि। वे॒वे॒ति॒। प॒लि॒तः। दू॒तः। आ॒सु॒। अ॒न्तः। म॒हान्। च॒र॒ति॒। रो॒च॒नेन॑। वपूं॑षि। बिभ्र॑त्। अ॒भि। न॒ः। वि। च॒ष्टे॒। म॒हत्। दे॒वाना॑म्। अ॒सु॒र॒ऽत्वम्। एक॑म्॥९॥**

**पदार्थः**-**(नि)** **(वेवेति)** भृशं व्याप्नोति। अत्र **वाच्छन्दसी**तीडभावः। **(पलितः)** श्वेतकेशः **(दूतः)** समाचारदातेव **(आसु)** प्रजासु **(अन्तः)** आभ्यन्तरे **(महान्)** व्याप्तः सन् **(चरति)** प्राप्तोऽस्ति **(रोचनेन)** स्वप्रकाशेन **(वपूंषि)** रूपाणि **(बिभ्रत्)** धरत् सन् **(अभि)** आभिमुख्ये **(नः)** अस्मान् **(वि)** **(चष्टे)** विशेषेणोपदिशति **(महत्)** **(देवानाम्)** विदुषामस्माकम् **(असुरत्वम्)** दोषाणां प्रक्षेप्तृत्वम् **(एकम्)** अद्वितीयम्॥९॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! य आस्वन्तर्नि वेवेति पलितो दूत इव महान् रोचनेन चरति वपूंषि बिभ्रन्नोऽस्मानभि विचष्टे तदेव देवानामस्माकमेकमसुरत्वं महत्पूज्यमस्तीति यूयमप्येतं पूजयत॥९॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यो जगदीश्वरो योगिनो वायुद्वारा वृद्धो दूत इव दूरस्थं समाचारं पदार्थं वा ज्ञापयति। अन्तर्यामी सन्त्स्वप्रकाशेन सर्वं प्रकाश्य जीवानां कर्माणि विदित्वा फलानि प्रयच्छति आत्मस्थस्सन्न्याय्यमन्याय्यं कर्त्तुमकर्त्तुं चेतयति तदेवास्माकं पूज्यतमं ब्रह्म वस्त्वस्तीति भवन्तोऽप्येवं विजानन्तु॥९॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो **(आसु)** इन प्रजाओं में **(अन्तः)** भीतर **(नि, वेवेति)** अत्यन्त व्याप्त है **(पलितः)** श्वेत केशों से युक्त **(दूतः)** समाचार देनेवाले के सदृश **(महान्)** व्याप्त हुआ **(रोचनेन)** अपने प्रकाश से **(चरति)** प्राप्त है **(वपूंषि)** रूपों को **(बिभ्रत्)** धारण करता हुआ **(नः)** हम लोगों को **(अभि)** सम्मुख **(वि, चष्टे)** विशेष करके उपदेश देता है, वही **(देवानाम्)** विद्वान् हम लोगों का **(एकम्)** द्वितीय से रहित **(असुरत्वम्)** दोषों का फेंकना **(महत्)** बड़ा पूज्य है, आप लोग भी इनकी पूजा करो॥९॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जो जगदीश्वर योगियों को वायु के द्वारा वृद्ध दूत के सदृश दूर देश में वर्त्तमान समाचार वा पदार्थ को जनाता है और अन्तर्यामी हुआ अपने प्रकाश से सबको प्रकाशित और जीवों के कर्मों को जान कर फलों को देता है, अन्तःकरण में वर्त्तमान हुआ न्याय्य और अन्याय्य करने और न करने को चिताता है, वही हम लोगों को अतिशय पूजा करने योग्य ब्रह्म वस्तु है, आप लोग भी ऐसा जानो॥९॥

**विष्णुर्गोपाः परमं पाति पाथः प्रिया धामान्यमृता दधानः।**

**अग्निष्टा विश्वा भुवनानि वेद महद्देवानामसुरत्वमेकम्॥१०॥२९॥**

**विष्णुः। गोपाः। परमम्। पाति। पाथः। प्रिया। धामानि। अमृता। दधानः। अग्निः। ता। विश्वा। भुवनानि। वेद। महत्। देवानाम्। असुरऽत्वम्। एकम्॥१०॥**

**पदार्थः**-**(विष्णुः)** वेवेष्टि व्याप्नोति चराचरं जगत् स परमात्मा **(गोपाः)** सर्वस्य रक्षकः **(परमम्)** प्रकृष्टम् **(पाति)** रक्षति **(पाथः)** पृथिव्याद्यन्नम् **(प्रिया)** प्रियाणि कमनीयानि सेवितुमर्हाणि **(धामानि)** जन्मस्थाननामानि **(अमृता)** नाशरहितानि प्रकृत्यादीनि **(दधानः)** धरन् पुष्यन्त्सन् **(अग्निः)** पावको विद्युदिव स्वप्रकाशः **(ता)** तानि **(विश्वा)** सर्वाणि **(भुवनानि)** निवासस्थानानि **(वेद)** जानाति **(महत्)** व्यापकं सत् **(देवानाम्)** पृथिव्यादीनां मध्ये **(असुरत्वम्)** सर्वेषां प्रक्षेप्तारम् **(एकम्)** अद्वितीयं ब्रह्म॥१०॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! योऽग्निरिव विष्णुर्गोपा यानि परमं पाथः प्रिया अमृता धामानि दधानः पाति ता तानि विश्वा भुवनानि वेद तद्देवानां महदेकमसुरत्वं यूयं वित्त॥१०॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! योऽस्य जगत उत्पादको धाता पालको विनाशकोऽस्ति सर्वेषां जीवानां हिताय विविधान् पदार्थान्निर्मिमीते तमेव यूयं सेवध्वम्॥१०॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो **(अग्निः)** अग्निरूप बिजुली के सदृश स्वयं प्रकाशित **(विष्णुः)** चर और अचर संसार में व्यापक परमात्मा **(गोपाः)** सबकी रक्षा करनेवाला परमेश्वर जिन **(परमम्)** उत्तम **(पाथः)** पृथिवी आदि अन्न और **(प्रिया)** कामना करने और सेवा करने योग्य **(अमृता)** नाश से रहित प्रकृति आदि और **(धामानि)** जन्म, स्थान और नाम को **(दधानः)** धारण और पुष्ट करता हुआ **(पाति)** रक्षा करता है, **(ता)** उन **(विश्वा)** सम्पूर्ण **(भुवनानि)** निवासस्थानों को **(वेद)** जानता है, उस **(देवानाम्)** पृथिवी



www.9009.co.in

आदिकों के मध्य में **(महत्)** व्यापक हुए **(एकम्)** द्वितीयरहित ब्रह्म **(असुरत्वम्)** सबके फेंकनेवाले को आप लोग जानो॥१०॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जो इस संसार का उत्पन्न, धारण, पालन और नाश करनेवाला है और सब जीवों के हित के लिये अनेक प्रकार के पदार्थों का निर्माण करता है, उस ही की आप लोग सेवा करो॥१०॥

**नाना चक्राते यम्या३ वपूंषि तयोरन्यद्रोचते कृष्णमन्यत्।**

**श्यावी च यदरुषी च स्वसारौ महद्देवानामसुरत्वमेकम्॥ ११॥**

**नाना। चक्राते इति। यम्या। वपूंषि। तयोः। अन्यत्। रोचते। कृष्णम्। अन्यत्। श्यावी। च। यत्। अरुषी। च। स्वसारौ। महत्। देवानाम्। असुरऽत्वम्। एकम्॥ ११॥**

**पदार्थः**-**(नाना)** अनेकानि **(चक्राते)** कुरुतः **(यम्या)** या सर्वान् प्राणिनो निद्रया नियच्छति सा रात्रिः। **यम्येति रात्रिनामसु पठितम्।** (निघं०१.७) **(वपूंषि)** रूपाणि। **वपुरिति रूपनामसु पठितम्।** (निघं०३.७) **(तयोः)** **(अन्यत्)** **(रोचते)** प्रकाशते **(कृष्णम्)** निकृष्टवर्णं तमः **(अन्यत्)** द्वितीयमावृणोति **(श्यावी)** अन्धकाररूपा **(च)** **(यत्)** या **(अरुषी)** प्रकाशरूपोषा **(च)** **(स्वसारौ)** भगिन्याविव वर्त्तमाने **(महत्)** बृहत् **(देवानाम्)** पृथिव्यादीनां सकाशात् **(असुरत्वम्)** **(एकम्)**॥ ११॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यद्देवानां महदेकमसुरत्वमस्ति तेन व्यवस्थापिते यत् या श्यावी यम्या चाऽरुषी स्वसाराविव वर्त्तमाने सत्यौ नाना वपूंषि चक्राते तयोरन्यदुषोरूपं रोचते च कृष्णमन्यद्रात्रिरूपमावृणोति तद् ब्रह्म विजानीत॥ ११॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यदि परमेश्वरो भूमेः सूर्य्यस्य च भ्रमणस्य व्यवस्थां न कुर्य्यात्तर्हि रात्रिदिने कथं सम्भवेतां येन जगदीश्वरेण पुरुषार्थाय दिनं शयनाय शर्वरी निर्मिता तमीश्वरं हृदि सर्वे ध्यायन्तु॥ ११॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो **(देवानाम्)** पृथिवी आदिकों के समीप से **(महत्)** बड़ा **(एकम्)** द्वितीयरहित **(असुरत्वम्)** दोषों को फेंकनेवाला है, उससे व्यवस्थापित **(यत्)** जो **(श्यावी)** अन्धकाररूप **(यम्या)** जो सम्पूर्ण प्राणियों को निद्रा से युक्त करती है, वह रात्रि **(च)** और **(अरुषी)** प्रकाशरूप प्रातःकाल **(स्वसारौ)** भगिनी के सदृश वर्त्तमान हुए **(नाना)** अनेक प्रकार के **(वपूंषि)** रूपों को **(चक्राते)** करते हैं **(तयोः)** उनका **(अन्यत्)** अन्य प्रातःकाल रूप **(रोचते)** प्रकाशित होता है **(च)** और **(कृष्णम्)** काला बे काम **(अन्यत्)** दूसरा वर्ण रात्रिरूप जो आवरण करता है, वह जिससे प्रसिद्ध उसको ब्रह्म जानो॥ ११॥



www.9009.co.in

**भावार्थ:**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो परमेश्वर पृथिवी और सूर्य्य के घूमने की व्यवस्था को न करे तो रात्रि और दिन कैसे होवें और जिस जगदीश्वर ने पुरुषार्थ के लिये दिन और शयन करने के लिये रात्रि रची उस ईश्वर का हृदय में सब ध्यान करो॥११॥

**माता च यत्र दुहिता च धेनू सबर्दुघे धापयेते समीची।**

**ऋतस्य ते सदसीळे अन्तर्महद्देवानामसुरत्वमेकम्॥१२॥**

**माता। च। यत्र। दुहिता। च। धेनू इति। सबर्दुघे इति सबःऽदुघे। धापयेते इति। समीची इति सम्ऽईची। ऋतस्य। ते इति। सदसि। ईळे। अन्तः। महत्। देवानाम्। असुरऽत्वम्। एकम्॥१२॥**

**पदार्थ:**-**(माता)** मान्यप्रदा जननीव रात्रिः **(च)** **(यत्र)** यस्मिन्त्समये **(दुहिता)** दुहितेवोषा **(च)** **(धेनू)** धेनुवद्रसप्रदे **(सबर्दुघे)** सबः पालकस्य दुग्धादेरिव रसस्य प्रपूरिके **(धापयेते)** पाययतः **(समीची)** सम्यक् प्राप्नुवत्यौ **(ऋतस्य)** जलस्येव सत्यस्य **(ते)** तव **(सदसि)** सभायाम् **(ईळे)** स्तौमि **(अन्तः)** मध्ये **(महत्)** **(देवानाम्)** सभ्यानां विदुषाम् **(असुरत्वम्)** **(एकम्)**॥१२॥

**अन्वयः**-हे राजन्नहं ते सदसि यथा यत्र माता च दुहिता च समीची सबर्दुघे धेनू ऋतस्य सम्बन्धेन धापयेते तथैव ते सदस्यन्तः स्थितस्सन्नृतस्य देवानाम्महदेकमसुरत्वमीळे॥१२॥

**भावार्थ:**-ये सभ्या जना परमेश्वराद्भीत्वा तदाज्ञाऽनुसारेण यथा रात्रिदिवसौ सर्वस्य जगतो नियमेन पालकौ भवतस्तथैव सभायां धर्मस्य विजयेनाऽधर्मस्य पराजयेन प्रजा आनन्दयन्तु॥१२॥

**पदार्थ:**-हे राजन्! मैं **(ते)** आपकी **(सदसि)** सभा में जैसे **(यत्र)** जिस समय **(माता)** मान को देनेवाली माता के सदृश रात्रि **(च)** और **(दुहिता)** कन्या के सदृश प्रातःकाल **(च)** और **(समीची)** उत्तम प्रकार प्राप्त होती हुई **(सबर्दुघे)** पालन करनेवाले दुग्ध आदि के सदृश रस की पूर्ति करने और **(धेनू)** धेनु के सदृश रस को देनेवाली **(ऋतस्य)** जल के सदृश सत्य के सम्बन्ध से **(धापयेते)** पिलाती हैं, वैसे ही सभा के **(अन्तः)** मध्य में वर्त्तमान हुआ **(ऋतस्य)** जल के सदृश सत्य का **(देवानाम्)** श्रेष्ठ विद्वानों में **(महत्)** बड़े **(एकम्)** द्वितीयरहित **(असुरत्वम्)** दोषों को दूर करनेवाले की **(ईळे)** स्तुति करता हूँ॥१२॥

**भावार्थ:**-जो सभ्य जन परमेश्वर से डरके उसकी आज्ञा के अनुसार जैसे रात्रि और दिन सम्पूर्ण संसार के नियमपूर्वक पालनकर्त्ता होते हैं, वैसे ही सभा में धर्म के विजय और अधर्म के पराजय से प्रजाओं को आनन्दित करें॥१२॥

**अन्यस्या वत्सं रिहती मिमाय कया भुवा नि दधे धेनुरूधः।**

**ऋतस्य सा पयसापिन्वतेळा महद्देवानामसुरत्वमेकम्॥१३॥**

**अन्यस्याः। वत्सम्। रिहती। मिमाय। कया। भुवा। नि। दधे। धेनुः। ऊधः। ऋतस्य। सा। पयसा। अपिन्वत। इळा। महत्। देवानाम्। असुरऽत्वम्। एकम्॥१३॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**अन्यस्याः**) द्वयोर्मध्य एकतरस्याः (**वत्सम्**) वत्सवत्पालनीयम् (**रिहती**) घ्नन्ती (**मिमाय**) मिमीते (**कया**) (**भुवा**) पृथिव्या (**नि**) (**दधे**) निदधाति (**धेनुः**) गोवद्वर्त्तमाना (**ऊधः**) उषा (**ऋतस्य**) सत्यस्य (**सा**) (**पयसा**) दुग्धेनेव जलेन (**अपिन्वत**) सिञ्चति सेवते वा (**इळा**) पृथिवी। **इळेति पृथिवीनामसु पठितम्।** (निघं०१.१) (**महत्**) (**देवानाम्**) दिव्यानां पृथिव्यादीनाम् (**असुरत्वम्**) (**एकम्**)॥१३॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! देवानां मध्ये यन्महदेकमसुरत्वं वर्त्तते तेन नियुक्ता धेनुरिव रात्रिरूधश्चाऽन्यस्या वत्सं रिहती कया भुवा सह मिमाय या निदधे सर्त्तस्य पयसा सहेळापिन्वत॥१३॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यः परमात्मा रात्रिदिनाभ्यां पृथिवीस्थान् पदार्थाञ्शयनजागरणार्थाभ्यां प्रकाशाऽन्धकाराभ्यां वृष्ट्या च धेनुवद्रक्षति तमेवार्चत॥१३॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! (**देवानाम्**) उत्तम पृथिवी आदिकों के मध्य में जो (**महत्**) बड़ा (**एकम्**) द्वितीयरहित (**असुरत्वम्**) दोषों को दूर करनेवाला वर्त्तमान है, उससे युक्त (**धेनुः**) गौ के सदृश वर्त्तमान रात्रि और (**ऊधः**) प्रातःकाल (**अन्यस्याः**) दोनों के मध्य में किसी के (**वत्सम्**) बछड़े के सदृश पालन करने योग्य को (**रिहती**) नाश करती हुई (**कया**) किस (**भुवा**) पृथिवी के साथ (**मिमाय**) नापती है जो (**नि, दधे**) धारण करती है (**सा**) वह (**ऋतस्य**) सत्य के (**पयसा**) दुग्ध के सदृश जल के साथ (**इळा**) पृथिवी (**अपिन्वत**) सींचती वा सेवन करती है॥१३॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो परमात्मा रात्रि और दिन से पृथिवी में वर्त्तमान पदार्थों को शयन और जागरण प्रयोजन जिनका उन प्रकाश और अन्धकार तथा वृष्टि से गौ के सदृश रक्षा करता है, उस ही की पूजा करो॥१३॥

**पद्या वस्ते पुरुरूपा वपूंष्यूर्ध्वा तस्थौ त्र्यविं रेरिहाणा।**

**ऋतस्य सद्म वि चरामि विद्वान्महद्देवानामसुरत्वमेकम्॥१४॥**

**पद्या। वस्ते। पुरुऽरूपा। वपूंषि। ऊर्ध्वा। तस्थौ। त्रिऽअविम्। रेरिहाणा। ऋतस्य। सद्म। वि। चरामि। विद्वान्। महत्। देवानाम्। असुरऽत्वम्। एकम्॥१४॥**

**पदार्थः**-(**पद्या**) पादेष्वंशेषु भवा (**वस्ते**) आच्छादयति (**पुरुरूपा**) बहुरूपा (**वपूंषि**) रूपाणि (**ऊर्ध्वा**) उत्कृष्टा (**तस्थौ**) तिष्ठति (**त्र्यविम्**) कार्य्यकारणजीवाख्यानि त्रीणि वस्तूनि यो रक्षति तम् (**रेरिहाणा**) भृशं लिहन्ती (**ऋतस्य**) सत्यस्य (**सद्म**) गृहम् (**वि**) (**चरामि**) (**विद्वान्**) (**महत्**) (**देवानाम्**) (**असुरत्वम्**) (**एकम्**)॥१४॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! विद्वानहं यदृतस्य देवानां च महदेकं सद्मासुरत्वं वि चरामि तेन नियामिता पद्या रात्रिः सर्वान् वस्ते। अन्या त्र्यविं वपूंषि रेरिहाणोर्ध्वा पुरुरूपोषा तस्थौ तं ते यूयञ्च विजानीत॥१४॥



www.9009.co.in

**भावार्थ:**-हे मनुष्या! यथा दिनं विचित्राणि दर्शयति तथैव रात्रिः सर्वाण्याच्छादयति इम एव सत्यकारणादुत्पद्यमानजन्ये विदित्वा सर्वस्य निर्मातारमीशं च सुखेन विचरन्तु **[**=विजानन्तु**]**॥१४॥

**पदार्थ:**-हे मनुष्यो! **(विद्वान्)** विद्यायुक्त मैं जो **(ऋतस्य)** सत्य और **(देवानाम्)** विद्वानों में **(महत्)** बड़े **(एकम्)** द्वितीयरहित **(सद्म)** स्थान और **(असुरत्वम्)** दोषों के दूर करनेवाले को **(वि, चरामि)** प्राप्त होता हूँ, उससे नियमित **(पद्या)** अंशों में होनेवाली रात्रि सब को **(वस्ते)** आच्छादित करती घेरती है **(अन्या)** **(त्र्यविम्)** कार्य्य, कारण और जीवनामात्मक तीन वस्तुओं की रक्षा करनेवाले और **(वपूंषि)** रूपों को **(रेरिहाणा)** अत्यन्त चाटती हुई **(ऊर्ध्वा)** उत्तम **(पुरुरूपा)** बहुत रूपयुक्त प्रात:काल **(तस्थौ)** स्थित है, उसको वे और आप लोग जानें॥१४॥

**भावार्थ:**-हे मनुष्यो! जैसे दिन अनेक रूपों को दिखाता है, वैसे ही रात्रि सबको घेरती है, ये ही सत्य के कारण से उत्पन्न हुए और उत्पन्न होनेवाले को जानकर सबके बनानेवाले परमेश्वर को सुखपूर्वक जानो॥१४॥

**पदे इव निहिते दस्मे अन्तस्तयोरन्यद् गुह्यमाविरन्यत्।**

**सध्रीचीना पथ्या३ सा विषूची महद्देवानामसुरत्वमेकम्॥ १५॥ ३०॥**

**पदेइवेति पदेऽइव। निहिते इति निऽहिते। दस्मे। अन्तरिति। तयोः। अन्यत्। गुह्यम्। आविः। अन्यत्। सध्रीचीना। पथ्या। सा। विषूची। महत्। देवानाम्। असुरऽत्वम्। एकम्॥ १५॥**

**पदार्थ:**-**(पदेइव)** यथा पादौ तथा **(निहिते)** धृते **(दस्मे)** उपक्षयित्र्यौ **(अन्तः)** मध्ये **(तयोः)** **(अन्यत्)** **(गुह्यम्)** गुप्तम् **(आविः)** रक्षकम् **(अन्यत्)** **(सध्रीचीना)** सहाञ्चन्ती **(पथ्या)** पथोऽनपेता स्वकक्षां विहायाऽन्यत्रागन्त्री **(सा)** **(विषूची)** या विषून् व्याप्तानञ्चति सा **(महत्)** **(देवानाम्)** **(असुरत्वम्)** **(एकम्)**॥१५॥

**अन्वय:**-हे मनुष्या! देवानां यन्महदेकमसुरत्वमस्ति येन दस्मे पदेइव निहिते रात्रिदिने वर्त्तेते यान्या सध्रीचीना पथ्या सा विषूची वर्त्तेते तयोरन्तरन्यद्गुह्यमन्यच्चाविरस्ति तत्सर्वं विजानीत॥१५॥

**भावार्थ:**-अत्रोपमालङ्कारः। यथा मनुष्या द्वाभ्यां पादाभ्यां गच्छन्ति तथैव रात्रिदिने गच्छतः। यथा दिनं पथ्यमस्ति तथा रात्रिः पथ्या न भवति। एवं सर्वान्तर्य्यामि ब्रह्म विहायान्यदुपासितं पथ्यं न जायते॥१५॥

**पदार्थ:**-हे मनुष्यो! **(देवानाम्)** विद्वानों का जो **(महत्)** बड़ा **(एकम्)** द्वितीयरहित **(असुरत्वम्)** दोषों को दूर करनेवाला है और जिससे **(दस्मे)** नाश होनेवाले **(पदेइव)** पैरों के सदृश **(निहिते)** धारण किये गये रात्रि और दिन वर्त्तमान हैं, जो अन्य **(सध्रीचीना)** एक साथ सेवन करती हुई **(पथ्या)** अपनी कक्षा को त्याग के अन्यत्र नहीं जानेवाली **(सा)** वह **(विषूची)** व्याप्त पदार्थों का सेवन करती है **(तयोः)**



www.9009.co.in

उनके **(अन्तः)** मध्य में **(अन्यत्)** दूसरा **(गुह्यम्)** गुप्त **(अन्यत्)** अन्य **(आविः)** रक्षा करनेवाला है, उस सबको जानो॥१५॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे मनुष्य लोग दो पैरों से चलते हैं, वैसे ही रात्रि और दिन चलते हैं और जैसे दिन पथ्य है, वैसे रात्रि पथ्य नहीं होती है। इसी प्रकार सर्वान्तर्यामी ब्रह्म को त्याग करके अन्य उपासित हुआ पथ्य नहीं होता है॥१५॥

**आ धेनवो धुनयन्तामशिश्वीः सबर्दुघाः शशया अप्रदुग्धाः।**

**नव्यानव्या युवतयो भवन्तीर्महद्देवानामसुरत्वमेकम्॥१६॥**

**आ। धेनवः। धुनयन्ताम्। अशिश्वीः। सबःऽदुघाः। शशयाः। अप्रऽदुग्धाः। नव्याःऽनव्याः। युवतयः। भवन्तीः। महत्। देवानाम्। असुरऽत्वम्। एकम्॥१६॥**

**पदार्थः**-**(आ)** समन्तात् **(धेनवः)** वाचः **(धुनयन्ताम्)** कम्पन्ताम् **(अशिश्वीः)** अबालाः **(सबर्दुघाः)** सर्वान् कामान् प्रपूरिकाः **(शशयाः)** शयाना इव **(अप्रदुग्धाः)** न केनापि प्रकर्षतया दुग्धाः **(नव्यानव्याः)** नवीनानवीनाः **(युवतयः)** प्राप्तयौवनावस्था ब्रह्मचारिण्यः **(भवन्तीः)** भवन्त्यः **(महत्)** **(देवानाम्)** **(असुरत्वम्)** **(एकम्)**॥१६॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! युष्माकं सबर्दुघाः शशया अप्रदुग्धा धेनवो अशिश्वीर्नव्यानव्या भवन्ती-र्युवतय इव देवानां महदेकमसुरत्वमाधुनयन्ताम्॥१६॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यथा प्रथमे वयसि वर्त्तमाना अधीतविद्या अबाला ब्रह्मचारिण्यः स्वसदृशान् पतीनुपनीयाऽऽनन्दन्ति तथैव सर्वविद्यायुक्ता वाचो प्राप्य विद्वांसः सुखयन्ति॥१६॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! आप लोगों के **(सबर्दुघाः)** सब मनोरथों को पूर्ण करनेवाली **(शशयाः)** शयन करती सी हुईं **(अप्रदुग्धाः)** नहीं किसी करके भी बहुत दुही गईं **(धेनवः)** वाणियां **(अशिश्वीः)** बालाओं से भिन्न **(नव्यानव्याः)** नवीन-नवीन **(भवन्तीः)** होती हुईं **(युवतयः)** यौवनावस्था को प्राप्त ब्रह्मचारिणी स्त्रियाँ जैसे वैसे **(देवानाम्)** विद्वानों में **(महत्)** बड़े **(एकम्)** द्वितीयरहित **(असुरत्वम्)** दोषों के दूर करनेवाले को **(आ, धुनयन्ताम्)** अच्छे प्रकार कंपाइये॥१६॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे प्रथम अवस्था में वर्त्तमान विद्या पढ़ी हुई बालाभिन्न ब्रह्मचारिणी स्त्रियाँ अपने सदृश पतियों को प्राप्त होकर आनन्दित होती हैं, वैसे ही सर्व विद्याओं से युक्त वाणियों को प्राप्त होकर विद्वान् लोग सुखी होते हैं॥१६॥

**यदन्यासु वृषभो रोरवीति सो अन्यस्मिन् यूथे नि दधाति रेतः।**

**स हि क्षपावान्त्स भगः स राजा महद्देवानामसुरत्वमेकम्॥१७॥**



www.9009.co.in

**यत्। अ॒न्यासु॑। वृ॒ष॒भः। रोर॑वीति। सः। अ॒न्यस्मि॑न्। यू॒थे। नि। द॒धा॒ति॒। रेतः॑। सः। हि। क्ष॒पाऽ॑वान्। सः। भगः॑। सः। राजा॑। म॒हत्। दे॒वाना॑म्। अ॒सु॒र॒ऽत्वम्। एक॑म्॥ १७॥**

**पदार्थः**-(**यत्**) यः (**अन्यासु**) रात्रिषूषःसु च (**वृषभः**) बलिष्ठः (**रोरवीति**) भृशं शब्दयति (**सः**) (**अन्यस्मिन्**) (**यूथे**) समूहे (**नि**) (**दधाति**) (**रेतः**) वीर्य्यम् (**सः**) (**हि**) यतः (**क्षपावान्**) क्षपा रात्रिः सम्बन्धिनी यस्य सः चन्द्रः (**सः**) (**भगः**) ऐश्वर्य्यप्रदः सूर्य्यः (**सः**) (**राजा**) प्रकाशमानः (**महत्**) (**देवानाम्**) (**असुरत्वम्**) (**एकम्**)॥ १७॥

**अन्वयः**-यद्यो वृषभः सूर्य्योऽन्यासु रात्रिषूषःसु च रोरवीति सोऽन्यस्मिन् यूथे चन्द्रादिषु रेतो निदधाति हि यतस्स क्षपावान्तसस्सभगस्स राजा देवानां महदेकमसुरत्वं प्राप्यं भवति॥ १७॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यः सूर्य्यो रात्र्यन्ते दिनादौ सर्वान् प्राणिनो जजागरित्वा संशब्द्य व्यवहार्य्य श्रीः प्रापयति रात्रौ च चन्द्रादिषु किरणान् प्रक्षिप्य प्रकाशयति सोऽयं प्रकाशमानो जगदीश्वरेणोत्पादित इति वेद्यम्॥ १७॥

**पदार्थः**-(**यत्**) जो (**वृषभः**) बलयुक्त सूर्य्य (**अन्यासु**) रात्रि और प्रातःकालों में (**रोरवीति**) अत्यन्त शब्द करता है (**सः**) वह (**अन्यस्मिन्**) अन्य (**यूथे**) समूह में चन्द्र आदिकों में (**रेतः**) पराक्रम का (**निदधाति**) स्थापना करता है। (**हि**) जिससे कि (**सः**) वह (**क्षपावान्**) रात्रिवान् अर्थात् रात्रि जिसकी सम्बन्धिनी होती और (**सः**) वह (**भगः**) ऐश्वर्य्यों का दाता सूर्य्य तथा (**सः**) वह (**राजा**) प्रकाशमान होता (**देवानाम्**) विद्वानों में (**महत्**) बड़ा (**एकम्**) एक यह (**असुरत्वम्**) दोषों को दूर करनेवाला प्राप्त होने योग्य गुण होता है॥ १७॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो सूर्य्य रात्रि के अन्त और दिन के आदि में सब प्राणियों को निरन्तर जगाय के शब्द कराय और व्यवहार कराय के लक्ष्मियों को प्राप्त कराता है और रात्रि में चन्द्र आदिकों में किरणों को रख के प्रकाश कराता सो यह प्रकाशमान जगदीश्वर से उत्पन्न किया गया, ऐसा जानना चाहिये॥ १७॥

**अथेश्वरगुणानाह॥**

अब ईश्वर के गुणों का वर्णन अगले मन्त्र में करते हैं॥

**वी॒रस्य॒ नु स्वश्व्यं॑ जनासः॒ प्र नु वो॑चाम वि॒दुर॑स्य दे॒वाः।**

**षोळ्हा यु॒क्ताः पञ्च॑पञ्चा व॑हन्ति म॒हद्दे॒वाना॑मसु॒र॒त्वमेक॑म्॥ १८॥**

**वी॒रस्य॑। नु। सु॒ऽअश्व्य॑म्। ज॒ना॒सः॒। प्र। नु। वो॒चा॒म॒। वि॒दुः। अ॒स्य॒। दे॒वाः। षो॒ळ्हा। यु॒क्ताः। पञ्च॑ऽपञ्च। आ। व॒ह॒न्ति॒। म॒हत्। दे॒वाना॑म्। अ॒सु॒र॒ऽत्वम्। एक॑म्॥ १८॥**

**पदार्थः**-(**वीरस्य**) प्राप्तशौर्य्यादिगुणस्य (**नु**) सद्यः (**स्वश्व्यम्**) शोभनेष्वश्वेषु साधु वचः (**जनासः**) विद्यासु प्रादुर्भूताः (**प्र**) (**नु**) (**वोचाम**) उपदिशाम (**विदुः**) जानन्ति (**अस्य**) (**देवाः**) विद्वांसः



www.9009.co.in

**(षोढा)** षट् प्रकारा: **(युक्ता:)** **(पञ्चपञ्च)** **(आ)** **(वहन्ति)** प्राप्नुवन्ति **(महत्)** **(देवानाम्)** **(असुरत्वम्)** **(एकम्)**॥१८॥

**अन्वय:**-हे जनासो वयमस्य वीरस्य स्वश्व्यं नु प्रवोचाम ये युक्ता: देवा देवानां महदेकमसुरत्वं विदुर्ये षोढा युक्ता: पञ्चपञ्च यदा वहन्ति तद्विदुस्तान् प्रति वयमेतद् ब्रह्म नु वोचाम॥१८॥

**भावार्थ:**-हे मनुष्या! यस्य प्राप्तौ पञ्च प्राणा निमित्तं यं सर्वे योगिन: समाधिना जानन्ति तस्यैवोपासनं भृत्यानां वीरत्वजनकमस्तीति वयमुपदिशेम॥१८॥

**पदार्थ:**-हे **(जनास:)** विद्याओं में प्रकट हुए मनुष्यो! हम **(अस्य)** इस **(वीरस्य)** शौर्य्य आदि गुणों को प्राप्त हुए शूर को **(स्वश्व्यम्)** अति उत्तम अश्वविषयक अच्छे वचन का **(नु)** शीघ्र **(प्र, वोचाम)** उपदेश देवें जो **(युक्ता!)** संयुक्त हुए **(देवा:)** विद्वान् जन **(देवानाम्)** विद्वानों में **(महत्)** बड़े **(एकम्)** एक **(असुरत्वम्)** दोषों को दूर करने को **(विदु:)** जानते और जो **(षोढा)** छ: प्रकार की संयुक्त इन्द्रियां और **(पञ्चपञ्च)** पाँच-पाँच प्राण जिस विषय को **(आ, वहन्ति)** प्राप्त होते हैं, उसको जानते हैं, उनके प्रति हम लोग इस ब्रह्म का **(नु)** शीघ्र उपदेश देवें॥१८॥

**भावार्थ:**-हे मनुष्यो! जिसकी प्राप्ति में पाँच प्राण निमित्त और जिसको सब योगी लोग समाधि से जानते हैं, उसी की उपासना भृत्यों के वीरपन को उत्पन्न करनेवाली है, ऐसा हम लोग उपदेश देवें॥१८॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**देवस्त्वष्टा सविता विश्वरूप: पुपोष प्रजा: पुरुधा जजान।**

**इमा च विश्वा भुवनान्यस्य महद्देवानामसुरत्वमेकम्॥१९॥**

**देव:। त्वष्टा। सविता। विश्वऽरूप:। पुपोष। प्रऽजा:। पुरुधा। जजान। इमा। च। विश्वा। भुवनानि। अस्य। महत्। देवानाम्। असुरऽत्वम्। एकम्॥१९॥**

**पदार्थ:**-**(देव:)** देदीप्यमान: **(त्वष्टा)** प्रकाशक: **(सविता)** प्रेरक: **(विश्वरूप:)** विश्वानि रूपाणि यस्मात् स: **(पुपोष)** पुष्यति **(प्रजा:)** प्रजाता: **(पुरुधा)** बहुधा **(जजान)** जनयति **(इमा)** इमानि **(च)** **(विश्वा)** सर्वाणि **(भुवनानि)** लोकजातानि **(अस्य)** परमेश्वरस्य **(महत्)** **(देवानाम्)** **(असुरत्वम्)** **(एकम्)**॥१९॥

**अन्वय:**-हे मनुष्या! यस्त्वष्टा परमेश्वरो देवो विश्वरूप: सवितेव प्रजा: पुपोष इमा विश्वा भुवनानि च पुरुधा जजानास्येदमेव देवानां महदेकमसुरत्वमस्तीति वेद्यम्॥१९॥

**भावार्थ:**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कार:। यथा सूर्य्य: सर्वं जगत्पालयति तथैव जगदीश्वर: सूर्य्यादिकं बहुविधं जगन्निर्माय रक्षति। इदमेव परमात्मनो महदाश्चर्य्यं कर्माऽस्तीति बोध्यम्॥१९॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो **(त्वष्टा)** प्रकाश करनेवाला परमेश्वर **(देवः)** प्रकाशमान **(विश्वरूपः)** जिससे सम्पूर्ण रूप हैं ऐसे **(सविता)** प्रेरणा करनेवाले सूर्यमण्डल के सदृश **(प्रजाः)** उत्पन्न हुए प्राणी-अप्राणी को **(पुपोष)** पुष्ट करता है और **(इमा)** इन **(विश्वा)** सम्पूर्ण **(भुवनानि)** लोकों को **(च)** भी **(पुरुधा)** बहुत प्रकार से **(जजान)** उत्पन्न करता है **(अस्य)** इस परमेश्वर का यही **(देवानाम्)** विद्वानों के बीच **(महत्)** बड़ा **(एकम्)** एक **(असुरत्वम्)** दोषों को दूर करनेवाला गुण है, ऐसा जानना चाहिये॥१९॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे सूर्य्य जगत् का पालन करता है, वैसे ही जगदीश्वर सूर्य्य आदि अनेक प्रकार संसार को बनाय करके रक्षा करता है। यही परमात्मा का बड़ा आश्चर्य्य कर्म है, ऐसा जानना चाहिये॥१९॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**म॒ही समै॑रच्च॒म्वा॑ समी॒ची उ॒भे ते अ॒स्य॒ वसु॑ना॒ न्यृ॑ष्टे।**

**शृ॒ण्वे वी॒रो वि॒न्दमा॑नो॒ वसू॑नि म॒हद्दे॒वाना॑मसुर॒त्वमेक॑म्॥२०॥**

**म॒ही इति॑। सम्। ऐ॒र॒त्। च॒म्वा॑। स॒मी॒ची इति॑ स॒म्ऽई॒ची। उ॒भे इति॑। ते इति॑। अ॒स्य॒। वसु॑ना। न्यृ॑ष्टे इति॒ निऽऋ॑ष्टे। शृ॒ण्वे। वी॒रः। वि॒न्दमा॑नः। वसू॑नि। म॒हत्। दे॒वाना॑म्। अ॒सु॒र॒ऽत्वम्। एक॑म्॥२०॥**

**पदार्थः**-**(मही)** महत्यौ **(सम्)** **(ऐरत्)** प्रेरयति **(चम्वा)** सनयेव **(समीची)** सम्यक् प्राप्ते **(उभे)** **(ते)** **(अस्य)** **(वसुना)** द्रव्यैस्सह **(न्यृष्टे)** निश्चितं स्वरूपं प्राप्ते **(शृण्वे)** **(वीरः)** विद्यमानबलः **(विन्दमानः)** प्राप्नुवन् **(वसूनि)** धनानि **(महत्)** **(देवानाम्)** **(असुरत्वम्)** **(एकम्)**॥२०॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यो जगदीश्वरस्त उभे मही समीची द्यावापृथिव्यौ चम्वेव समैरदस्य वसुना सह न्यृष्टे स्तस्तद्देवानां महदेकमसुरत्वं वसूनि च विन्दमानो वीरोऽहं ब्रह्म नित्यं शृण्वे तद्यूयमपि सततं श्रुत्वैतानि प्राप्नुत॥२०॥

**भावार्थः**-नहि कश्चिदपि परमेश्वराज्ञापालनेन विना महदैश्वर्यं लभते न चाप्तेभ्यः श्रवणादिना विना परमात्मनो बोधः कश्चिदाप्नोति तत्सर्वैः परमेश्वराज्ञां पालयित्वैश्वर्य्यवद्भिर्भवितव्यम्॥२०॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो जगदीश्वर **(ते)** उन **(उभे)** दोनों **(मही)** बड़ी **(समीची)** उत्तम प्रकार प्राप्त अन्तरिक्ष और पृथिवी को **(चम्वा)** सेना से जैसे वैसे **(सम्, ऐरत्)** प्रेरणा करता है, वह दोनों **(अस्य)** इसके **(वसुना)** द्रव्यों के साथ **(न्यृष्टे)** निश्चित स्वरूप को प्राप्त हुई हैं **(देवानाम्)** विद्वानों के उस **(महत्)** बड़े **(एकम्)** एक **(असुरत्वम्)** दोषों के दूर करनेवाले को और **(वसूनि)** धनों को **(विन्दमानः)** प्राप्त होता हुआ **(वीरः)** बल से युक्त मैं ब्रह्म का नित्य **(शृण्वे)** श्रवण करूं, उसको आप लोग भी निरन्तर सुनके उन सबों को प्राप्त हूजिये॥२०॥



www.9009.co.in

**भावार्थ:**-कोई भी पुरुष परमेश्वर की आज्ञापालन के विना बड़े ऐश्वर्य्य को नहीं प्राप्त होता है और यथार्थवक्ता पुरुषों से सुने विना परमात्मा का बोध किसी को भी नहीं प्राप्त होता है, तिससे सब लोगों को चाहिये कि परमेश्वर की आज्ञा का पालन करके ऐश्वर्य्यवान् होवें॥२०॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**इमां च नः पृथिवीं विश्वधाया उप क्षेति हितमित्रो न राजा।**

**पुरः सदः शर्मसदो न वीरा महद्देवानामसुरत्वमेकम्॥२१॥**

**इमाम्। च। नः। पृथिवीम्। विश्वऽधायाः। उप। क्षेति। हितऽमित्रः। न। राजा। पुरःऽसदः। शर्मऽसदः। न। वीराः। महत्। देवानाम्। असुरऽत्वम्। एकम्॥२१॥**

**पदार्थ:**-(**इमाम्**) (**च**) (**नः**) अस्मान् (**पृथिवीम्**) (**विश्वधायाः**) या विश्वं दधाति तस्याः (**उप**) (**क्षेति**) उपवसति (**हितमित्रः**) हितानि धृतानि मित्राणि येन सः (**न**) इव (**राजा**) विद्याविनयाभ्यां प्रकाशमानः (**पुरःसदः**) ये पुरः सीदन्ति ते (**शर्मसदः**) ये शर्मणि गृहे सीदन्ति ते (**न**) इव (**वीराः**) क्षात्रधर्मयुक्ताः (**महत्**) (**देवानाम्**) देदीप्यमानानां राज्ञाम् (**असुरत्वम्**) शत्रूणां प्रक्षेप्तृत्वम् (**एकम्**) असहायम्॥२१॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यो न इमां द्यां पृथिवीं च विश्वधाया हितमित्रो राजा न उप क्षेति पुरःसदः शर्मसदो वीरा न विजयं ददाति तदेव देवानां महदेकमसुरत्वमस्माभिरुपासनीयमस्ति॥२१॥

**भावार्थ:**-अत्रोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यो धर्मात्मराजवज्जगति निवासयति धनुर्वेदविद्वीरवद्विजयं दापयति तदेव ब्रह्माऽस्माकमुपास्यमस्तीति॥२१॥

**पदार्थ:**-हे मनुष्यो! जो (**नः**) हम लोगों के (**इमाम्**) इस अन्तरिक्ष (**च**) और (**पृथिवीम्**) भूमि को समीप (**विश्वधायाः**) सम्पूर्ण को धारण करनेवाली पृथिवी उसके (**हितमित्रः**) मित्रों को धारण करनेवाले (**राजा**) विद्या और विनय से प्रकाशमान अधिपति से (**न**) सदृश (**उप, क्षेति**) वसता है और (**पुरःसद**) आगे चलने और (**शर्मसदः**) गृह में ठहरनेवाले (**वीराः**) क्षात्रधर्म से युक्त शूरों के (**न**) तुल्य विजय देता है, वही (**देवानाम्**) प्रकाशमान राजा लोगों में (**महत्**) बड़ा (**एकम्**) सहायरहित (**असुरत्वम्**) शत्रुओं को दूर करनेवाला हम लोगों से उपासना करने योग्य है॥२१॥

**भावार्थ:**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जो धर्मात्मा राजा के सदृश संसार में निवास कराता और धनुर्वेद के जाननेवाले वीर के सदृश विजय दिलाता है, वही ब्रह्म हम लोगों को उपासना करने योग्य है॥२१॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥



www.9009.co.in

**नि॒ष्षिध्व॑रीस्त॒ ओष॑धीरु॒तापो॑ र॒यिं त॑ इन्द्र पृथि॒वी बि॑भर्ति।**

**सखा॑यस्ते वा॒म॒भाज॑: स्याम म॒हद्दे॒वाना॑मसुर॒त्वमेक॑म्॥ २२॥ ३१॥ ३॥**

**नि॒ःऽसिध्व॑रीः। ते॒। ओष॑धीः। उ॒त। आप॑ः। र॒यिम्। ते॒। इ॒न्द्र॒। पृ॒थि॒वी। बि॒भ॒र्ति॒। सखा॑यः। ते॒। वा॒म॒ऽभाज॑ः। स्या॒म॒। म॒हत्। दे॒वाना॑म्। अ॒सु॒र॒ऽत्वम्। एक॑म्॥ २२॥**

**पदार्थ:**-(**निष्षिध्वरीः**) नितरां मङ्गलकारिणीः (**ते**) तव (**ओषधीः**) सोमाद्याः (**उत**) अपि (**आपः**) जलानि (**रयिम्**) श्रियम् (**ते**) तव (**इन्द्र**) परमैश्वर्य्यप्रदेश्वर (**पृथिवी**) (**बिभर्ति**) धरति पुष्यति वा (**सखायः**) सुहृदः सन्तः (**ते**) तव (**वामभाजः**) प्रशस्तकर्मसेविनश्श्रेष्ठभोगा वा (**स्याम**) (**महत्**) सर्वेभ्यो बृहत् (**देवानाम्**) सूर्य्यादीनाम् (**असुरत्वम्**) (**एकम्**) अद्वितीयम्॥ २२॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! यथा ते सृष्टौ पृथिवी निष्षिध्वरी ओषधीर्बिभर्ति। उतापि त आपो रयिं बिभर्ति तदेव देवानाम्महदेकमसुरत्वं प्राप्य ते वामभाजः सखायो वयं स्याम॥ २२॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे जगदीश्वर! येन भवताऽस्माकं सुखाय सृष्ट्यां विविधा ओषधय आपो निर्मितास्तस्य ते वयमुपासका भवेम। भवन्तं विहायाऽन्यस्योपासनं कदाचिन्न कुर्य्यामेति॥ २२॥

अत्राऽहर्निशविद्वद्द्यावापृथिवीराजधर्मेश्वरगुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इत्यृक् संहितायां तृतीयाष्टके तृतीयोऽध्याय एकत्रिंशो वर्गस्तृतीये मण्डले पञ्चपञ्चाशत्तमं सूक्तञ्च समाप्तम्॥**

**पदार्थ:**-हे (**इन्द्र**) अत्यन्त ऐश्वर्य्य के देनेवाले ईश्वर! जैसे (**ते**) आपकी सृष्टि में (**पृथिवी**) भूमि (**निष्षिध्वरीः**) अत्यन्त मङ्गल करनेवाली (**ओषधीः**) सोमलता आदि ओषधियों को (**बिभर्ति**) धारण वा पोषण करती है (**उत**) और (**ते**) आपके (**आपः**) जल (**रयिम्**) लक्ष्मी को धारण करते हैं उसी (**देवानाम्**) सूर्य्य आदिकों में (**महत्**) सबसे बड़े (**एकम्**) द्वितीयरहित (**असुरत्वम्**) शत्रुओं के नाश करनेवाले को प्राप्त होकर (**ते**) आपके (**वामभाजः**) उत्तम कर्मों के सेवन करने वा श्रेष्ठ भोग भोगनेवाले (**सखायः**) मित्र हम लोग (**स्याम**) होवें॥ २२॥

**भावार्थ:**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे जगदीश्वर! जिन आपने हम लोगों के सुख के लिये सृष्टि में अनेक प्रकार की ओषधियां और जल रचे उन आपके हम लोग उपासना करनेवाले होवें और आपको छोड़ के दूसरे की उपासना कभी न करें॥ २२॥

इस सूक्त में दिन, रात्रि, विद्वान्, अन्तरिक्ष, पृथिवी, राजधर्म और ईश्वर के गुणवर्णन होने से इस सूक्त के अर्थ की पिछले सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह ऋग्वेद की संहिता के तीसरे अष्टक में तीसरा अध्याय इकतीसवां वर्ग और तीसरे मण्डल में पचपनवां सूक्त समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

**अथ तृतीयाऽष्टके चतुर्थाऽध्यायाऽऽरम्भः॥**

**अब तृतीयाष्टक में चौथे अध्याय का आरम्भ है॥**

**ओं विश्वा॑नि देव सवितर्दुरि॒तानि॒ परा॑ सुव। यद्भ॒द्रं तन्न॒ आ सु॑व॥ ऋ०५.८२.५॥**

**अथाऽष्टर्चस्य षट्पञ्चाशत्तमस्य सूक्तस्य प्रजापतिर्वैश्वामित्रो वाच्यो वा ऋषयः। विश्वे देवा देवताः। १, ६, ८ निचृत्त्रिष्टुप्। ३,४ विराट् त्रिष्टुप्। ५, ७ त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः। २ भुरिक् पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः॥**

***अथेश्वरगुणानाह॥***

अब छप्पनवें सूक्त का आरम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में ईश्वर के गुणों को कहते हैं॥

**न ता मि॑नन्ति मा॒यिनो॒ न धीरा॑ व्र॒ता दे॒वाना॑ प्रथ॒मा ध्रु॒वाणि॑।**

**न रोद॑सी अ॒द्रुहा॑ वे॒द्याभि॒र्न पर्व॑ता नि॒नमे॑ तस्थि॒वांस॑ः॥ १॥**

न। ता। मि॒नन्ति॒। मा॒यिन॑ः। न। धीरा॑ः। व्र॒ता। दे॒वाना॑म्। प्र॒थ॒मा। ध्रु॒वाणि॑। न। रोद॑सी॒ इति॑। अ॒द्रुहा॑। वे॒द्याभि॑ः। न। पर्व॑ताः। नि॒ऽनमे॑। त॒स्थि॒ऽवांस॑ः॥ १॥

**पदार्थः**-(**न**) (**ता**) तानि (**मिनन्ति**) हिंसन्ति (**मायिनः**) निन्दिता माया प्रज्ञा येषान्ते (**न**) (**धीराः**) ध्यानवन्तः श्रेष्ठाः (**व्रता**) उत्तमानि कर्माणि (**देवानाम्**) आप्तानां विदुषाम् (**प्रथमा**) आदिमानि (**ध्रुवाणि**) अखण्डितानि (**न**) (**रोदसी**) द्यावापृथिव्यौ (**अद्रुहा**) द्रोहरहितावध्यापकोपदेशकौ (**वेद्याभिः**) वेत्तुं योग्याभिः प्रजाभिः (**न**) निषेधे (**पर्वताः**) शैलाः (**निनमे**) नमनीये स्थाने (**तस्थिवांसः**) तिष्ठन्तः॥ १॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! ईश्वरेण देवानां यानि प्रथमा ध्रुवाणि व्रतोपदिष्टानि निर्मितानि वा ता मायिनो न मिनन्ति धीरा न मिनन्ति रोदसी न मिनुतोऽद्रुहा न मिनुतो वेद्याभिस्सह निनमे वर्त्तमानास्तस्थिवांसः पर्वताश्च न मिनन्ति तानि यूयं विदित्वाचरत॥ १॥

**भावार्थः**-नहि कस्यापि शक्तिरस्ति य ईश्वरकृतान्नियमानुल्लङ्घेत यस्य निर्भ्रमानि शन्तमाणि कर्माणि सन्ति तमेव दयानिधिं परमेश्वरं सर्व उपासीरन्॥ १॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! ईश्वर ने (**देवानाम्**) यथार्थवादी विद्वानों के जो (**प्रथमा**) आदि में वर्त्तमान (**ध्रुवाणि**) अखण्डित (**व्रता**) उत्तम कर्म उपदेश किये गये वा रचे गये (**ता**) उनका (**मायिनः**) निन्दित बुद्धिवाले (**न**) नहीं (**मिनन्ति**) नाश करते हैं (**धीराः**) ध्यान करनेवाले श्रेष्ठ पुरुष नहीं नाश करते हैं (**रोदसी**) अन्तरिक्ष और पृथिवी (**न**) नहीं नाश करते हैं (**अद्रुहा**) द्रोह से रहित अध्यापक और उपदेशक (**न**) नहीं नाश करते हैं (**वेद्याभिः**) जानने के योग्य प्रजाओं के साथ (**निनमे**) नवने के योग्य स्थान में



www.9009.co.in

**(तस्थिवांसः)** स्थित होते हुए **(पर्वताः)** पर्वत **(न)** नहीं नाश करते हैं, उनको आप जानके आचरण करो॥१॥

**भावार्थः**-किसी का भी सामर्थ्य नहीं है कि जो ईश्वर के किये हुए नियमों का उल्लङ्घन करे और जिस परमेश्वर के भ्रमरहित सुखरूप कर्म हैं, उसी दयानिधि परमेश्वर की सब लोग उपासना करो॥१॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**षड्भाराँ एको अचरन् बिभर्त्यृतं वर्षिष्ठमुप गाव आगुः।**

**तिस्रो महीरुपरास्तस्थुरत्या गुहा द्वे निहिते दर्श्येका॥२॥**

**षट्। भारान्। एकः। अचरन्। बिभर्ति। ऋतम्। वर्षिष्ठम्। उप। गावः। आ। अगुः। तिस्रः। महीः। उपराः। तस्थुः। अत्याः। गुहा। द्वे इति। निहिते इति निऽहिते। दर्शि। एका॥२॥**

**पदार्थः**-**(षट्)** **(भारान्)** पञ्चतत्त्वानि महत्तत्वञ्च **(एकः)** स्थिरः **(अचरन्)** **(बिभर्ति)** धरति पुष्यति वा **(ऋतम्)** सत्यं कारणम् **(वर्षिष्ठम्)** अतिशयेन वृद्धम् **(उप)** **(गावः)** किरणाः **(आ)** **(अगुः)** आगच्छन्ति **(तिस्रः)** स्थूला मध्या सूक्ष्मा च **(महीः)** भूमीः **(उपराः)** मेघाः **(तस्थुः)** तिष्ठन्ति **(अत्याः)** अतन्ति सर्वत्र व्याप्नुवन्ति त आकाशादयः **(गुहा)** गुहायां महत्तत्त्वाख्यायां समष्टिबुद्धौ **(द्वे)** कार्य्यकारणे **(निहिते)** संधृते **(दर्शि)** दृश्यते **(एका)** कार्याख्या॥२॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! येन जगदीश्वरेण संसारे द्वे निहिते तयोरेका दर्श्यत्या गुहा उपराश्च तस्थुरुपराश्च तिस्रो महीर्गाव उपागुस्तान् षड् भारानचरन्त्सन्नेक असहाय ईश्वर वर्षिष्ठमृतं च बिभर्ति तमेव सततं ध्यायत॥२॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! येन परमेश्वरेण प्रकृत्यादिभूम्यन्तं जगन्निर्माय धृत्वा संपाल्य व्यवस्थाप्यते स एव पूज्योऽस्तीति मन्यध्वम्॥२॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जिस जगदीश्वर ने इस संसार में **(द्वे)** दो कार्य और कारण **(निहिते)** धारण किये, उन दोनों के मध्य में **(एका)** एक कार्य नामक **(दर्शि)** देख पड़ता है **(अत्याः)** सर्वत्र व्यापक होने वाले आकाशादि वा **(गुहा)** महत्तत्त्वनामक सम्पूर्ण बुद्धि में **(उपराः)** मेघ **(तस्थुः)** स्थित होते और मेघ **(तिस्रः)** स्थूल, मध्य और सूक्ष्म **(महीः)** भूमियों को और **(गावः)** किरणें **(उप, आ, अगुः)** प्राप्त होते हैं, उन **(षट्)** छः **(भारान्)** पञ्चतत्त्व और महत्तत्त्व अर्थात् बुद्धि को **(अचरन्)** न कंपाता हुआ **(एकः)** सहायरहित ईश्वर **(वर्षिष्ठम्)** अतीव बढ़े हुए **(ऋतम्)** सत्य कारण का **(बिभर्ति)** धारण वा पोषण करता है, उसी का निरन्तर ध्यान करो॥२॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जिस परमेश्वर ने प्रकृति आदि भूमि पर्य्यन्त संसार रच, धारण कर और उत्तम प्रकार पालन करके व्यवस्थापित अर्थात् ढंग पर चलाया जाता है, वही पूज्य है, ऐसा मानो॥२॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**



www.9009.co.in

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**त्रिपाजस्यो वृषभो विश्वरूप उत त्र्युधा पुरुध प्रजावान्।**

**त्र्यनीकः पत्यते माहिनावान्त्स रेतोधा वृषभः शश्वतीनाम्॥ ३॥**

**त्रिऽपाजस्यः। वृषभः। विश्वऽरूपः। उत। त्रिऽउधा। पुरुध। प्रजाऽवान्। त्रिऽअनीकः। पत्यते। माहिनऽवान्। सः। रेतःऽधाः। वृषभः। शश्वतीनाम्॥ ३॥**

**पदार्थः**-(**त्रिपाजस्यः**) त्रिषु शरीरात्मसम्बन्धिबलेषु साधुः (**वृषभः**) वर्षकः (**विश्वरूपः**) विश्वमखिलं रूपं यस्मिन् यस्माद्वा सः (**उत**) अपि (**त्र्युधा**) त्रीणि कारणसूक्ष्मस्थूलान्यूधांसि यस्मिन् सः। अत्र वर्णव्यत्ययेन ह्रस्वः। (**पुरुध**) यः पुरून् बहून् दधाति तत्सम्बुद्धौ (**प्रजावान्**) बह्व्यः प्रजा विद्यन्ते यस्य सः (**त्र्यनीकः**) त्रीणि त्रिगुणान्यनीकानि सैन्यानि यस्य सः (**पत्यते**) पतिरिवाचरति (**माहिनावान्**) बहूनि माहिनानि सत्करणानि विद्यन्ते यस्य सः (**सः**) (**रेतोधाः**) यो रेत उदकमिव वीर्यं दधाति सः (**वृषभः**) अनन्तबलः (**शश्वतीनाम्**) अनादिभूतानां प्रकृतिजीवाख्यानां प्रजानाम्॥ ३॥

**अन्वयः**-हे पुरुध विद्वन्! यस्त्रिपाजस्यो वृषभस्त्र्युधा विश्वरूपो विद्युदिव उतापि प्रजावाँस्त्र्यनीक इव माहिनावान् पत्यते स वृषभश्शश्वतीनां रेतोधाः सूर्यइव वीर्यप्रदोऽस्तीति विजानीहि॥ ३॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यो जगदीश्वरो विद्युद्वत्सर्वत्राऽभिव्याप्य प्रकाशको धर्त्ता उतापि न्यायाधीशस्स्वाम्यनन्तमहिमयुक्तोऽनादिभूतानां न्यायाधीशो वर्त्तते तस्माद् भीत्वा पापानि त्यक्त्वा प्रीत्या धर्ममाचर्य तमेव स्वान्ते सर्वे समादधीरन्॥ ३॥

**पदार्थः**-हे (**पुरुध**) बहुतों को धारण करनेवाले विद्वान् पुरुध! जो (**त्रिपाजस्यः**) तीन- शरीर आत्मा और सम्बन्धियों के बलों में निपुण (**वृषभः**) वृष्टिकर्त्ता (**त्र्युधा**) जिसमें तीन अर्थात् कारण, सूक्ष्म और स्थूल बढ़े हुए जीव शरीर और (**विश्वरूपः**) अन्य सम्पूर्ण रूप जिसमें विद्यमान जो बिजुली के सदृश (**उत**) और (**प्रजावान्**) बहुत प्रजाजन (**त्र्यनीकः**) तथा त्रिगुणित सेनायुक्त के समान (**माहिनावान्**) बहुत सत्कारवान् है वा (**पत्यते**) जो स्वामी के सदृश आचरण करता (**सः**) वह (**वृषभः**) अत्यन्त बलयुक्त (**शश्वतीनाम्**) अनादिकाल से हुई प्रकृति और जीव नामक प्रजाओं का (**रेतोधाः**) जल के सदृश वीर्य को धारण करनेवाले सूर्य के सदृश वीर्य को देनेवाला जगदीश्वर है, ऐसा जानो॥ ३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो जगदीश्वर बिजुली के सदृश सब जगह व्यापक होके प्रकाशकर्त्ता, धारणकर्त्ता फिर भी न्यायाधीश, स्वामी, अनन्त महिमा से युक्त और अनादि जीवों का न्यायाधीश वर्त्तमान है, उससे डर के और पापों का त्याग करके प्रीति से धर्म का आचरण कर अपने अन्तःकरण में सब लोग उसी का ध्यान करें॥ ३॥

**पुनरीश्वरगुणानाह॥**

फिर भी ईश्वर के गुणों का उपदेश अगले मन्त्र में कहते हैं॥



www.9009.co.in

**अभीक आसां पदवीरबोध्यादित्यानामह्वे चारु नाम।**

**आपश्चिदस्मा अरमन्त देवीः पृथग्व्रजन्तीः परि षीमवृञ्जन्॥४॥**

**अभीके। आसाम्। पदऽवीः। अबोधि। आदित्यनाम्। अह्वे। चारु। नाम। आपः। चित्। अस्मै। अरमन्त। देवीः। पृथक्। व्रजन्तीः। परि। सीम्। अवृञ्जन्॥४॥**

**पदार्थः**-(**अभीके**) कमितरि (**आसाम्**) सनातनीनां प्रजानाम् (**पदवीः**) यः पदानि वेत्ति व्याप्नोति (**अबोधि**) बुध्यताम् (**आदित्यानाम्**) सूर्यादीनां मासानां वा (**अह्वे**) आह्वयेयम् (**चारु**) श्रेष्ठम् (**नाम**) संज्ञा (**आपः**) प्राणाः (**चित्**) अपि (**अस्मै**) (**अरमन्त**) रमन्ते (**देवीः**) देदीप्यमानाः (**पृथक्**) (**व्रजन्तीः**) गच्छन्तीः (**परि**) (**सीम्**) परिग्रहे (**अवृञ्जन्**) वृञ्जन्ति॥४॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! येन जगदीश्वरेणासामादित्यानां च पदवीरबोधि यस्य चारु नाम यस्मिँश्चिद् व्रजन्तीर्देवीरापः सीम् पृथगरमन्त पर्यवृञ्जन्नस्मा अभीके स्थितोऽहमिममह्वे तमेव यूयमप्याह्वयत॥४॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यः सर्वेषां सुखं कामयते यस्मिन्त्सर्वे जीवा लोकादयश्च पदार्थाः पृथक् पृथक् क्रीडन्ति गृह्णन्ति त्यजन्ति च तं विहायाऽन्यं कञ्चिदपि मोपाध्वम्॥४॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जिस जगदीश्वर ने (**आसाम्**) इन अनादि काल से सिद्ध प्रजाओं और (**आदित्यानाम्**) सूर्य्यादिकों वा मास आदि समयविभागों के (**पदवीः**) पदों को जो व्याप्त होता वह (**अबोधि**) जाना हुआ है और जिसका (**चारु**) अत्यन्त श्रेष्ठ (**नाम**) नाम जिसमें (**चित्**) निश्चित (**व्रजन्तीः**) जाते हुए (**देवीः**) प्रकाशमान (**आपः**) प्राण (**सीम्**) परिग्रह करने में (**पृथक्**) अलग-अलग (**परि, अरमन्त**) सब ओर से रमते और (**अवृञ्जन्**) त्याग करते हैं (**अस्मै**) इसके लिये (**अभीके**) कामना करनेवाले में वर्त्तमान मैं इस ईश्वर को (**अह्वे**) बुलाता हूँ, उसी को आप लोग भी बुलाओ॥४॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो सबके सुख की कामना करता है, जिसमें सब जीव और लोकादि पदार्थ पृथक्-पृथक् क्रीड़ा करते, ग्रहण करते और त्याग करते हैं, उसको छोड़ के अन्य किसी की भी मत उपासना करो॥४॥

**अथेश्वरेण सर्वेषां निवासाय जगद्रचितमित्याह॥**

अब सबके निवास के लिये ईश्वर ने जगत् बनाया, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**त्री षधस्था सिन्धवस्त्रिः कवीनामुत त्रिमाता विदथेषु सम्राट्।**

**ऋतावरीर्योषणास्तिस्रो अप्यास्त्रिरा दिवो विदथे पत्यमानाः॥५॥**

**त्री। सधऽस्था। सिन्धवः। त्रिः। कवीनाम्। उत। त्रिऽमाता। विदथेषु। सम्ऽराट्। ऋतऽवरीः। योषणाः। तिस्रः। अप्याः। त्रिः। आ। दिवः। विदथे। पत्यमानाः॥५॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**त्री**) त्रीणि (**सधस्था**) सहस्थानानि (**सिन्धवः**) नद्यः (**त्रिः**) (**कवीनाम्**) विदुषाम् (**उत**) (**त्रिमाता**) त्रयाणां जन्मस्थाननाम्नां माता जनकः (**विदथेषु**) संग्रामादिषु विज्ञातव्येषु व्यवहारेषु (**सम्राट्**) यः सम्यग्राजते भूमौ (**ऋतावरीः**) ऋतं सत्यं विद्यते यासु ताः (**योषणाः**) योषाइव वर्त्तमानाः (**तिस्रः**) स्थूलसूक्ष्मकारणाख्याः (**अप्याः**) अप्स्वन्तरिक्षे भवाः (**त्रिः**) त्रिवारम् (**आ**) (**दिवः**) ज्योतींषि (**विदथे**) संग्रामे (**पत्यमानाः**) पतिरिवाचरन्तीः॥५॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यो जगदीश्वरस्त्री सधस्था सिन्धव उतापि कवीनां त्रिस्त्रिमाता विदथेषु सम्राडिवर्त्तावरीर्योषणा इव तिस्रोऽप्या विदथे पत्यमानास्त्रिदिवो निर्मिमीते स एव सर्वाऽधीशोऽस्ति॥५॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे मनुष्याः! येन परमात्मना सर्वेषां प्राण्यप्राणिनां निवासाय जलस्थलान्तरिक्षाणि निर्मितानि तं पतिं पतिव्रतेव सततं सेवध्वम्॥५॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो जगदीश्वर (**त्री**) तीन (**सधस्था**) साथ के स्थान (**सिन्धवः**) नदियां (**उत**) और (**कवीनाम्**) विद्वानों के (**त्रिः**) तीन वार (**त्रिमाता**) जन्म, स्थान और नाम इन तीनों को उत्पन्न करनेवाला (**विदथेषु**) वा जो संग्रामों और जानने योग्य व्यवहारों में (**सम्राट्**) उत्तम प्रकार भूमि में प्रकाशित है, ऐसे पुरुष के सदृश (**ऋतावरीः**) जिनमें सत्य विद्यमान (**योषणाः**) जो स्त्रियों के सदृश वर्त्तमान (**तिस्रः**) स्थूल, सूक्ष्म और कारण नामक (**अप्याः**) अन्तरिक्ष में होनेवाली सृष्टियां (**विदथे**) संग्राम में (**पत्यमानाः**) पति के सदृश आचरण करती हुई हैं, उनको (**त्रिः**) तीन वार और (**दिवः**) तारागणों को रचता है, वही सबका स्वामी है॥५॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जिस परमात्मा ने सब प्राणी और प्राणीभिन्नों के निवास के लिये जल, स्थल और अन्तरिक्ष रचे, उस स्वामी की पतिव्रता स्त्री के सदृश निरन्तर सेवा करो॥५॥

**अथेश्वरप्रार्थनया जगद्विषयमाह॥**

अब ईश्वर की प्रार्थना के साथ जगद्विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**त्रिरा दिवः सवितुर्वार्याणि दिवेदिव आ सुव त्रिर्नो अह्नः।**

**त्रिधातु राय आ सुवा वसूनि भग त्रातर्धिषणे सातये धाः॥६॥**

**त्रिः। आ। दिवः। सवितरिति। वार्याणि। दिवेऽदिवे। आ। सुव। त्रिः। नः। अह्नः। त्रिऽधातु। रायः। आ। सुव। वसूनि। भग। त्रातः। धिषणे। सातये। धाः॥६॥**

**पदार्थः**-(**त्रिः**) त्रिवारम् (**आ**) समन्तात् (**दिवः**) कमनीयाः (**सवितः**) ऐश्वर्यप्रद (**वार्याणि**) वरितुं योग्यान्यैश्वर्याणि (**दिवेदिवे**) प्रतिदिनम् (**आ**) (**सुव**) जनय (**त्रिः**) त्रिवारम् (**नः**) अस्मभ्यम् (**अह्नः**) दिवसस्य मध्ये (**त्रिधातु**) त्रीणि सुवर्णरजताऽयसादयो धातवो येषु तानि (**रायः**) (**आ**) (**सुवा**)।



www.9009.co.in

अत्र **द्व्यचोऽतस्तिङ** इति दीर्घः। **(वसूनि)** धनानि **(भग)** भजनीयतम **(त्रातः)** रक्षक **(धिषणे)** द्यावापृथिव्यौ **(सातये)** संविभागाय **(धाः)** धेहि॥६॥

**अन्वयः**-हे सवितस्त्वं दिवेदिवे नोऽस्मभ्यं दिवो वार्याणि त्रिरासुव। हे भग! अह्नो मध्ये रायस्त्रिरा सुव। हे त्रातस्सातये त्रिधातु वसूनि धिषणे आ धाः॥६॥

**भावार्थः**-हे जगदीश्वर! भवान् कृपयाऽस्मान् धर्मेण पुरुषार्थयित्वा प्रतिदिनमैश्वर्य्यं प्रापय सततं रक्षित्वा सर्वेषां सुखाय विभागान् कारय॥६॥

**पदार्थः**-हे **(सवितः)** ऐश्वर्य के देनेवाले! आप **(दिवेदिवे)** प्रतिदिन **(नः)** हम लोगों के लिये **(दिवः)** कामना करने योग्य क्रियाओं को **(वार्याणि)** ग्रहण करने योग्य ऐश्वर्यों को **(त्रिः)** तीन वार **(आसुव)** उत्पन्न करो। हे **(भग)** अत्यन्त भजने योग्य! **(अह्नः)** दिन के मध्य में **(रायः)** धनों को **(त्रिः)** तीन वार **(आ सुव)** उत्पन्न करो और **(त्रातः)** हे रक्षा करनेवाले! **(सातये)** उत्तम प्रकार विभाग के लिये **(त्रिधातु)** सुवर्ण, चांदी और लोहा आदि धातु जिनमें ऐसे **(वसूनि)** धनों और **(धिषणे)** अन्तरिक्ष और पृथिवी को **(आ, धाः)** सब प्रकार धारण करो॥६॥

**भावार्थः**-हे जगदीश्वर! आप कृपा से हम लोगों को धर्म से पुरुषार्थयुक्त करके प्रतिदिन ऐश्वर्य प्राप्त कराओ और निरन्तर रक्षा करके सबके सुख के लिये विभागों को कराओ॥६॥

**अथ राजप्रस्तावेन विद्वद्विषयमाह॥**

अब राजप्रस्ताव से विद्वानों के विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**त्रिरा दिवः सविता सोषवीति राजाना मित्रावरुणा सुपाणी।**

**आपश्चिदस्य रोदसी चिदुर्वी रत्नं भिक्षन्त सवितुः सवाय॥७॥**

**त्रिः। आ। दिवः। सविता। सोसवीति। राजाना। मित्रावरुणा। सुपाणी इति सुऽपाणी। आपः। चित्। अस्य। रोदसी इति। चित्। उर्वी इति। रत्नम्। भिक्षन्त। सवितुः। सवाय॥७॥**

**पदार्थः**-**(त्रिः)** **(आ)** अभिविधौ **(दिवः)** प्रकाशात् **(सविता)** प्रेरकोऽन्तर्य्यामी **(सोषवीति)** भृशं सुवति **(राजाना)** विद्याविनयाभ्यां प्रकाशमानः **(मित्रावरुणा)** प्राणोदानवत्सर्वेषां सुहृदौ **(सुपाणी)** शोभनौ पाणी ययोस्तौ **(आपः)** प्राणा इव **(चित्)** इव **(अस्य)** जगदीश्वरस्य **(रोदसी)** प्रकाशाप्रकाशे जगती **(चित्)** अपि **(उर्वी)** बहुले **(रत्नम्)** रमणीयं धनम् **(भिक्षन्त)** याचन्ते **(सवितुः)** सकलैश्वर्य्यसम्पन्नस्य सकाशात् **(सवाय)** ऐश्वर्य्याय॥७॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यस्सविता मित्रावरुणा सुपाणी राजानेव दिवस्त्रिरा सोषवीत्यस्य सवितुः सकाशात् सवायाऽऽपश्चिदुर्वी रोदसी रत्नं चित् सर्वे भिक्षन्त॥७॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। ये राजानः परमेश्वरवद्गुणकर्मस्वभावास्सन्तः प्रजासु वर्त्तन्ते त एव साम्राज्यमसंख्यं धनञ्च लभन्ते॥७॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो **(सविता)** प्रेरणा करनेवाला अन्तर्यामी **(मित्रावरुणा)** प्राण और उदान वायु के सदृश सबके मित्र **(सुपाणी)** और सुन्दर जिनके हाथ ऐसे **(राजाना)** विद्या और विनय से प्रकाशमान नरों के समान **(दिवः)** प्रकाश से **(त्रिः)** तीन वार **(आ, सोषवीति)** सब ओर से निरन्तर प्रेरणा देता है **(अस्य)** इस **(सवितुः)** सम्पूर्ण ऐश्वर्य्ययुक्त जगदीश्वर के समीप से **(सवाय)** ऐश्वर्य्य के लिये **(आपः)** प्राणों के **(चित्)** सदृश **(उर्वी)** बहुत **(रोदसी)** प्रकाशित और अप्रकाशित जगत् और **(रत्नम्)** सुन्दर धन को **(चित्)** भी सब लोग **(भिक्षन्त)** याचना करते हैं॥७॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जो राजा लोग परमेश्वर के सदृश गुण, कर्म और स्वभावयुक्त हुए प्रजाओं में वर्त्तमान हैं, वे ही चक्रवर्त्ति राज्य और असंख्य धन को प्राप्त होते हैं॥७॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**त्रिरु॒त्त॒मा दू॒णशा॑ रोच॒नानि॒ त्रयो॑ राज॒न्त्यसु॑रस्य वी॒राः।**

**ऋ॒तावा॑न इषि॒रा दू॒ळभा॑स॒स्त्रिरा दि॒वो वि॒दथे॑ सन्तु दे॒वाः॥८॥१॥**

**त्रिः। उ॒त्ऽत॒मा। दुः॒ऽनशा॑। रो॒च॒नानि॑। त्रयः॑। रा॒ज॒न्ति॒। असु॑रस्य। वी॒राः। ऋ॒तऽवा॑नः। इ॒षि॒राः। दुः॒ऽदभा॑सः। त्रिः। आ। दि॒वः। वि॒दथे॑। स॒न्तु॒। दे॒वाः॥८॥**

**पदार्थः**-**(त्रिः)** त्रिवारम् **(उत्तमा)** उत्तमानि **(दूणशा)** दुःखेन नशो नाशो येषान्तानि **(रोचनानि)** प्रकाशमानानि **(त्रयः)** विद्युत्प्रसिद्धसूर्य्याः **(राजन्ति)** **(असुरस्य)** दुष्टान् दोषान् प्रक्षेप्तुः **(वीराः)** व्याप्तविद्याशौर्यबलाः **(ऋतावानः)** प्रशंसितमृतं सत्यं विद्यते येषु ते **(इषिराः)** गन्तारः **(दूळभासः)** दुर्गतो दभो हिंसा येभ्यस्ते **(त्रिः)** **(आ)** **(दिवः)** कामयमानाः **(विदथे)** संग्रामादिव्यवहारे **(सन्तु)** **(देवाः)** विद्वांसः॥८॥

**अन्वयः**-ये ब्रह्मभक्तास्त्रय इवाऽसुरस्येषिरा ऋतावानो वीरा दूळभास आ दिवो देवा विदथे त्रिस्सन्तु ते दूणशोत्तमा रोचनानि त्री राजन्ति॥८॥

**भावार्थः**-ये जगदीश्वरं प्राणवत्प्रियं राजवदादेष्टारं न्यायाधीशवन्नेतारं सूर्य्यवत्स्वप्रकाशं सर्वप्रकाशकं सततं भजन्ते त एव शत्रुभिर्दुर्जयाः सत्याचारा अन्येषां सुखं कामयमानाश्चक्रवर्त्तिराज्यं प्राप्य सूर्य्यवद्विराजन्ते त एवात्र रक्षाधिकृता भवन्त्विति॥८॥

अत्रेश्वरजगद्विद्वद्गुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति षट्पञ्चाशत्तमं सूक्तं प्रथमो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-जो ब्रह्म के भक्त **(त्रयः)** बिजुली, प्रसिद्ध अग्नि और सूर्य्याग्नि के सदृश **(असुरस्य)** दुष्ट और दोषों के दूर करनेवाले के सम्बन्ध में **(इषिराः)** जानेवाले **(ऋतावानः)** प्रशंसित सत्य जिनमें विद्यमान तथा **(वीराः)** विद्या, शूरता और बल से परिपूरित वे **(दूळभासः)** हिंसा से रहित **(आ)** सब



www.9009.co.in

प्रकार **(दिवः)** कामना करते हुए **(देवाः)** विद्वान् लोग **(विदथे)** संग्राम आदि व्यवहार में **(त्रिः)** तीन वार **(सन्तु)** प्रसिद्ध हों और **(दूणशा)** दुःख से जिनका नाश होता है वे **(उत्तमा)** श्रेष्ठ **(रोचनानि)** प्रकाशमान **(त्रिः)** तीन वार **(राजन्ति)** शोभित होते हैं॥८॥

**भावार्थः**-जो लोग जगदीश्वर को प्राणों के सदृश प्रिय, राजा के सदृश उपदेशदाता, न्यायाधीश के सदृश नायक, सूर्य के सदृश अपने से प्रकाशमान और सबका प्रकाशकर्त्ता मान निरन्तर भजते हैं, वे ही शत्रुओं के दुःख से जीतने योग्य, सत्य के आचरण करने और अन्यों के सुख चाहनेवाले हैं। वे चक्रवर्ती राज्य को प्राप्त होकर सूर्य्य के सदृश शोभित होते हैं, और वे ही इसी संसार में रक्षा के अधिकारी हों॥८॥

इस सूक्त में ईश्वर, जगत् और विद्वानों के गुणों का वर्णन होने से इस सूक्त के अर्थ की पिछले सूक्तार्थ के साथ सङ्गति समझनी चाहिये॥

**[यह छप्पनवाँ सूक्त और प्रथम वर्ग समाप्त हुआ॥]**



www.9009.co.in

**अथ षड्ऋचस्य सप्तपञ्चाशत्तमस्य सूक्तस्य विश्वामित्र ऋषिः। विश्वेदेवा देवताः। १, ३, ४ त्रिष्टुप्। २, ५, ६ निचृत्त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः॥**

***अथ वाणीविषयमाह॥***

अब छः ऋचावाले सत्तावनवें सूक्त का आरम्भ है। उसके प्रथम मन्त्र में वाणी के विषय को कहते हैं॥

**प्र मे॑ विवि॒क्वाँ अ॑विदन्मनी॒षां धे॒नुं चर॑न्तीं॒ प्रयु॑ता॒मगो॑पाम्।**

**स॒द्यश्चि॒द्या दु॑दु॒हे भूरि॑ धा॒सेरिन्द्र॒स्तद॒ग्निः प॑नि॒तारो॑ अस्याः॥१॥**

**प्र। मे॒। वि॒वि॒क्वान्। अ॒वि॒द॒त्। म॒नी॒षाम्। धे॒नुम्। चर॑न्तीम्। प्र॒ऽयु॑ताम्। अगो॑पाम्। स॒द्यः। चि॒त्। या। दु॒दु॒हे। भूरि॑। धा॒सेः। इन्द्रः॑। तत्। अ॒ग्निः। प॒नि॒तारः॑। अ॒स्याः॥१॥**

**पदार्थः**-(**प्र**) (**मे**) मम (**विविक्वान्**) विविक्तः (**अविदत्**) प्राप्नुयात् (**मनीषाम्**) प्रज्ञाम् (**धेनुम्**) वत्सस्य पालिकां गामिव वाचम् (**चरन्तीम्**) प्राप्नुवन्तीम् (**प्रयुताम्**) असंख्यबोधाम् (**अगोपाम्**) अरक्षिताम् (**सद्यः**) (**चित्**) (**या**) (**दुदुहे**) प्राति (**भूरि**) बहु (**धासेः**) प्राणधारकस्यान्नस्य। **धासिरित्यन्ननाम।** (निघं०२.७) (**इन्द्रः**) विद्युत् (**तत्**) अन्नम् (**अग्निः**) पावक इव वर्त्तमान (**पनितारः**) स्तोतारो व्यवहर्त्तारो वा (**अस्याः**) वाचः॥१॥

**अन्वयः**-यो विविक्वान् मनुष्यो मे मनीषां चरन्तीं प्रयुतां धेनुं प्राविदत् या धासेरिन्द्र इवाऽगोपां भूरि सद्यश्चिद् दुदुहे तदग्निरिव पुरुषः प्राप्नुयादस्याः पनितार उपदिशेयुस्तां वाचं सर्वे प्राप्नुवन्तु॥१॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। येऽधर्माचरणाद्विरहितां विद्यां जिघृक्षवः सुवाचं प्रयुञ्जानास्सत्यं धर्ममाचरन्तः सर्वेषामिच्छां दुहन्ति ते भूरि सत्कर्त्तव्यास्स्युः॥१॥

**पदार्थः**-जो (**विविक्वान्**) प्रकट मनुष्य (**मे**) मेरी (**मनीषाम्**) बुद्धि को (**चरन्तीम्**) प्राप्त होती हुई (**प्रयुताम्**) संख्यारहित बोधों से युक्त (**धेनुम्**) बछड़े को पालन करनेवाली गौ के सदृश वाणी को (**प्र, अविदत्**) प्राप्त हो और (**या**) जो (**धासेः**) प्राणों को धारण करनेवाले अन्न की (**इन्द्रः**) बिजुली के सदृश (**अगोपाम्**) अरक्षित को (**भूरि**) बहुत (**सद्यः**) शीघ्र (**चित्**) ही (**दुदुहे**) पूर्ण करता है (**तत्**) उस अन्न को (**अग्निः**) अग्नि के सदृश वर्त्तमान पुरुष प्राप्त होवे (**अस्याः**) इस वाणी का (**पनितारः**) स्तुति वा व्यवहार करनेवाले उपदेश देवें, उस वाणी को सब लोग प्राप्त हों॥१॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो लोग अधर्म के आचरण से रहित, विद्या को ग्रहण करने की इच्छा पूरी करनेवाले, उत्तम वाणी का प्रयोग करने और सत्य धर्म का आचरण करते हुए सबकी इच्छा को पूरी करते हैं, वे अत्यन्त सत्कार करने योग्य होवें॥१॥

**अथ बुद्धिविषयमाह॥**

अब बुद्धि विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥



www.9009.co.in

**इन्द्रः सु पूषा वृषणा सुहस्ता दिवो न प्रीता शशयं दुदुह्रे।**
**विश्वे यदस्यां रणयन्त देवाः प्र वोऽत्र वसवः सुम्नमश्याम्॥ २॥**

**इन्द्रः। सु। पूषा। वृषणा। सुऽहस्ता। दिवः। न। प्रीताः। शशयम्। दुदुह्रे। विश्वे। यत्। अस्याम्। रणयन्त। देवाः। प्र। वः। अत्र। वसवः। सुम्नम्। अश्याम्॥ २॥**

**पदार्थः**-(**इन्द्रः**) विद्युत् (**सु**) (**पूषा**) पोषकः प्राणः (**वृषणा**) बलकरौ (**सुहस्ता**) शोभनौ हस्तौ ययोस्तद्वत् (**दिवः**) प्रकाशाः किरणाः कमनीयाः (**न**) इव (**प्रीताः**) प्रसन्नाः (**शशयम्**) खशयं मेघम्। अत्र वर्णव्यत्ययेन खस्य शः। (**दुदुह्रे**) दुहन्ति (**विश्वे**) सर्वे (**यत्**) ये (**अस्याम्**) प्रज्ञायुक्तायां वाचि (**रणयन्त**) रणः संग्राम इवाचरन्ति (**देवाः**) विद्वांसः (**प्र**) (**वः**) युष्माकम् (**अत्र**) अस्मिन् व्यवहारे (**वसवः**) विद्यां जिज्ञासवः (**सुम्नम्**) सुखम् (**अश्याम्**) प्राप्नुयाम्॥ २॥

**अन्वयः**-हे वसवो! यदत्र विश्वे देवा अस्यां शशयमिव सुम्नं प्र दुदुह्रे रणयन्त ते दिवो न प्रीता जायन्ते ये सुहस्तैवं याविन्द्रः पूषा वृषणा दुदुह्रे ते सु प्रीता भवन्ति यथा सत्सङ्गेन वस्सकाशात् सुम्नमहमश्यां तथा यूयं प्रयतत॥ २॥

**भावार्थः**-अत्रोपमावाचकलुप्तोपमालङ्कारौ। ये शरीरात्मबलं कामयन्ते त एव विद्वांसो भूत्वा शास्त्रेश्वरबोधान्वितायां वाचि रममाणाः सन्तो विद्युदादिविद्यां प्रसिद्धीकृत्य विजयमानाभूत्वाऽतुलमानन्दं प्राप्याऽन्यान् पूर्णाऽऽनन्दाञ्जनयन्ति त एव जगत्पूज्याः सर्वगुरवो भवन्ति॥ २॥

**पदार्थः**-हे (**वसवः**) विद्या की जिज्ञासा करनेवाले! (**यत्**) जो (**अत्र**) इस व्यवहार में (**विश्वे**) सम्पूर्ण (**देवाः**) विद्वान् लोग (**अस्याम्**) बुद्धि से युक्त वाणी में (**शशयम्**) मेघ के सदृश (**सुम्नम्**) सुख को (**प्र, दुदुह्रे**) दुहते हैं और (**रणयन्त**) संग्राम के सदृश आचरण करते हैं वे (**दिवः**) कामना करने योग्य प्रकाशकिरणों के (**न**) सदृश (**प्रीताः**) प्रसन्न होते हैं और जो (**सुहस्ता**) सुन्दर हाथोंवाले दो पुरुषों के समान जो (**इन्द्रः**) बिजुली और (**पूषा**) पुष्टिकर्त्ता प्राण (**वृषणा**) बल करनेवाले हैं, उनको पूरा करते हैं वे (**सु, प्रीताः**) उत्तम प्रकार प्रसन्न होते हैं और जैसे सत्सङ्ग से (**वः**) तुम लोगों के समीप से (**सुम्नम्**) सुख को मैं (**अश्याम्**) प्राप्त होऊं, वैसे आप लोग प्रयत्न करिये॥ २॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमा **[और]** वाचकलुप्तोपमालङ्कार हैं। जो शरीर और आत्मा के बल की कामना करते हैं, वे ही विद्वान् हो शास्त्र और ईश्वर के बोध से युक्त वाणी में रमते हुए बिजुली आदि की विद्या को प्रसिद्ध कर और विजयमान हो अतुल आनन्द को पाय अन्य जनों को पूर्ण आनन्द उत्पन्न करते, वे ही जगत् के पूज्य सबके गुरु होते हैं॥ २॥

**अथ गृहाश्रमकृत्यमाह॥**

अब गृहाश्रम के कृत्य को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**या जामयो वृष्ण इच्छन्ति शक्तिं नमस्यन्तीर्जानते गर्भमस्मिन्।**



www.9009.co.in

**अच्छा॑ पु॒त्रं धे॒नवो॑ वावशा॒ना म॒हश्च॑रन्ति॒ बिभ्र॑तं॒ वपूं॑षि॥३॥**

**याः। जा॒मयः॑। वृष्णे॑। इ॒च्छन्ति॑। श॒क्तिम्। न॒म॒स्यन्तीः॑। जा॒न॒ते॒। गर्भ॑म्। अ॒स्मि॒न्। अच्छ॑। पु॒त्रम्। धे॒नवः॑। वा॒व॒शा॒नाः। म॒हः। च॒र॒न्ति॒। बिभ्र॑तम्। वपूं॑षि॥३॥**

**पदार्थः**-(**याः**) (**जामयः**) प्राप्तचतुर्विंशतिवर्षा युवतयः (**वृष्णे**) वीर्यसेचनसमर्थाय प्राप्तचत्वारिंशद्वर्षाय ब्रह्मचारिणे (**इच्छन्ति**) (**शक्तिम्**) सामर्थ्यम् (**नमस्यन्तीः**) सत्कारं कुर्वन्त्यः (**जानते**) जानन्ति (**गर्भम्**) (**अस्मिन्**) संसारे (**अच्छ**) श्रैष्ठ्ये। अत्र **संहितायामि**ति दीर्घः। (**पुत्रम्**) (**धेनवः**) विद्यासुशिक्षायुक्ता वाच इव वर्त्तमानाः (**वावशानाः**) पतीन् कामयमानाः (**महः**) महान्ति पूज्यानि (**चरन्ति**) प्राप्नुवन्ति (**बिभ्रतम्**) धारकं पोषकम् (**वपूंषि**) रूपवन्ति शरीराणि॥३॥

**अन्वयः**-या नमस्यन्तीर्ब्रह्मचारिण्यो जामयो वृष्णे शक्तिमिच्छन्त्यस्मिन् गर्भं धर्तुं जानते ताः पतीन् वावशानाः धेनवो वृषभानिव महर्वपूंषि बिभ्रतमच्छ पुत्रं चरन्ति॥३॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। ता एव कन्याः सुखं प्राप्नुवन्ति याः स्वाभ्यो द्विगुणविद्याशरीरबलान् पतीनभिरूपान् हृद्यान् सुपरीक्ष्य स्वीकुर्वन्ति तथैव पुरुषा अपि हृद्या भार्या उपयच्छन्ति त एव परस्परेण प्रीत्यानुकूलव्यवहारेण वीर्य्यस्थापनाऽऽकर्षणविद्यां बुध्वा गर्भं धृत्वा सुपाल्य सर्वान् संस्कारान् कृत्वा महाभाग्यान्यपत्यानि जनयित्वाऽतुलमानन्दं विजयञ्च प्राप्नुवन्ति नातोऽन्यथा व्यवहारेण॥३॥

**पदार्थः**-(**याः**) जो (**नमस्यन्तीः**) सत्कार करती हुईं (**जामयः**) चौबीस वर्ष की अवस्था को प्राप्त युवती ब्रह्मचारिणी (**वृष्णे**) वीर्यसेचन में समर्थ चालीस वर्ष की आयु को प्राप्त ब्रह्मचारी के लिये (**शक्तिम्**) सामर्थ्य की (**इच्छन्ति**) इच्छा करती और (**अस्मिन्**) इस संसार में (**गर्भम्**) गर्भ के धारण करने को (**जानते**) जानती हैं, वे पतियों की (**वावशानाः**) कामना करती हुईं (**धेनवः**) विद्या और उत्तम शिक्षायुक्त वाणियों के सदृश वर्त्तमान गौवें जैसे वृषभों को वैसे (**महः**) बड़े पूज्य (**वपूंषि**) रूप वाले शरीरों को (**बिभ्रतम्**) धारण और पोषण करनेवाले (**अच्छ**) श्रेष्ठ (**पुत्रम्**) पुत्र को (**चरन्ति**) ग्रहण करती हैं॥३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। वे ही कन्यायें सुख को प्राप्त होती हैं कि जो अपने से दुगने विद्या और शरीर बलवाले अपने सदृश प्रेमी पतियों की उत्तम प्रकार परीक्षा करके स्वीकार करती हैं, वैसे ही पुरुष लोग भी प्रेमपात्र स्त्रियों को ग्रहण करते हैं, वे ही परस्पर प्रीतिपूर्वक अनुकूल व्यवहार से वीर्यस्थापन और आकर्षण विद्या को जान गर्भ को धारण, उसका उत्तम प्रकार पालन, सब संस्कारों को करके बड़े भाग्यवाले पुत्रों को उत्पन्न कर, अतुल आनन्द और विजय को प्राप्त होते हैं, इससे विपरीत व्यवहार से नहीं॥३॥

**अथ स्त्रीपुरुषयोः कृत्यमाह॥**



www.9009.co.in

अब स्त्रीपुरुषों के कृत्य का अगले मन्त्र में उपदेश करते हैं॥

**अच्छा विवक्मि रोदसी सुमेके ग्राव्णो युजानो अध्वरे मनीषा।**

**इमा उ ते मनवे भूरिवारा ऊर्ध्वा भवन्ति दर्शता यजत्राः॥४॥**

**अच्छ। विवक्मि। रोदसी इति। सुमेके इति सुऽमेके। ग्राव्णः। युजानः। अध्वरे। मनीषा। इमाः। ऊम् इति। ते। मनवे। भूरिऽवाराः। ऊर्ध्वाः। भवन्ति। दर्शताः। यजत्राः॥४॥**

**पदार्थः-(अच्छ)**। अत्र **संहितायामिति** दीर्घः। **(विवक्मि)** विशेषेणोपदिशामि **(रोदसी)** द्यावापृथिव्याविव **(सुमेके)** सुष्ठ्वेकीभूते **(ग्राव्णः)** मेघात् **(युजानः)** **(अध्वरे)** सङ्गन्तव्ये व्यवहारे **(मनीषा)** प्रज्ञया **(इमाः)** प्रजाः **(उ)** आश्चर्य्यम् **(ते)** तुभ्यम् **(मनवे)** मनुष्याय **(भूरिवाराः)** भूरि बहुविधं सुखं वृण्वन्ति **(ऊर्ध्वाः)** उत्कृष्टाः **(भवन्ति)** **(दर्शताः)** द्रष्टुं योग्याः **(यजत्राः)** सङ्गन्तुं पूजितुमर्हाः॥४॥

**अन्वयः**-हे विद्वांसोऽस्मिन्नध्वरे या इमा मनीषा सह वर्त्तमाना भूरिवारा दर्शता यजत्रा ऊर्ध्वा भवन्ति ता युजानो भवन्तो ग्राव्ण इव संयोगात् सुखिनो भवन्ति यौ स्त्रीपुरुषौ सुमेके रोदसी इव ते मनवे वर्त्तेते तौ तान् प्रत्यु अहमच्छ विवक्मि॥४॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यौ स्त्रीपुरुषौ भूमिसूर्य्याविव संयुक्तौ वर्त्तते तौ भाग्यशालिनौ भवतः ये स्त्रीपुरुषाः सम्यक् परीक्ष्य स्वयंवरं विवाहं कुर्युस्ते मेघवदुत्तमान्यपत्यान्युत्पाद्य सर्वदा सुखिनो जायन्ते॥४॥

**पदार्थः**-हे विद्वानो! इस **(अध्वरे)** मेल करने योग्य व्यवहार में जो **(इमाः)** ये प्रजायें **(मनीषा)** बुद्धि के सहित वर्त्तमान **(भूरिवाराः)** अनेक प्रकार के सुख को प्राप्त होनेवाली **(दर्शताः)** देखने तथा **(यजत्राः)** मेल और सत्कार करने योग्य **(ऊर्ध्वाः)** उत्तम **(भवन्ति)** होती हैं, उनको **(युजानः)** प्राप्त होते हुए आप लोग **(ग्राव्णः)** मेघ के सदृश संयोग से सुखी होते हैं और जो स्त्री-पुरुष **(सुमेके)** उत्तम प्रकार एक हुए **(रोदसी)** अन्तरिक्ष और पृथिवी के तुल्य **(ते)** आप **(मनवे)** मनुष्य के लिये वर्त्तमान हैं, उन दोनों और उन आप लोगों के प्रति **(उ)** आश्चर्य के साथ मैं **(अच्छ)** उत्तम प्रकार **(विवक्मि)** विशेष करके उपदेश देता हूँ॥४॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो स्त्री और पुरुष पृथिवी और सूर्य के सदृश संयुक्त हुए वर्त्तमान हैं, वे भाग्यशाली होते हैं। जो स्त्री और पुरुष उत्तम प्रकार परीक्षा करके स्वयंवर विवाह को करें, वे मेघ के सदृश उत्तम सन्तानों को उत्पन्न करके सब काल में सुखी होते हैं॥४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**या ते जिह्वा मधुमती सुमेधा अग्ने देवेषूच्यत उरूची।**

**तयेह विश्वाँ अवसे यजत्राना सादय पायया चा मधूनि॥५॥**



www.9009.co.in

**या। ते। जि॒ह्वा। मधु॑ऽमती। सु॒ऽमे॒धाः। अग्ने॑। दे॒वेषु॑। उ॒च्यते॑। उ॒रू॒ची। तया॑। इ॒ह। विश्वा॑न्। अव॑से। यज॑त्रान्। आ। सा॒द॒य॒। पा॒यय॑। च॒। मधू॑नि॥५॥**

**पदार्थः**- **(या)** **(ते)** तव **(जिह्वा)** वाणी। **जिह्वेति वाङ्नामसु पठितम्।** (निघं०१.११) **(मधुमती)** बहूनि मधूनि सत्यभाषणानि विद्यन्ते यस्यां सा **(सुमेधाः)** शोभना मेधा यस्यां सा **(अग्ने)** विद्वन् विदुषि वा **(देवेषु)** विद्वत्सु **(उच्यते)** कथ्यते **(उरूची)** या उर्वीर्बह्वीर्विद्या अञ्चति प्राप्नोति सा **(तया)** **(इह)** अस्मिन् गृहाश्रमे **(विश्वान्)** समग्रान् **(अवसे)** रक्षणाद्याय **(यजत्रान्)** सङ्गतान् पूज्यान् तनयान् **(आ)** **(सादय)** प्रापय **(पायय)**। अत्र **संहितायामि**ति दीर्घः। **(च)**। अत्र **निपातस्य चे**ति दीर्घः। **(मधूनि)** मधुयुक्तानि रसविशेषाणि पेयानि॥५॥

**अन्वयः**-हे अग्ने स्त्रि पुरुष वा! ते तव या देवेषु मधुमती सुमेधा उरूची जिह्वोच्यते तयेह विश्वान् यजत्राना सादयैषामवसे च मधूनि पायय॥५॥

**भावार्थः**-यदि स्त्रीपुरुषौ प्रसन्नतया कृतविवाहौ विद्याप्रज्ञासुवाणीयुक्तौ भूत्वेह गृहाश्रमे स्थित्वा प्रेमजान्यपत्यान्युत्पाद्य पालयित्वा सुशिक्षायुक्तानि कृत्वा स्वयंवरं विवाहं कारयित्वा निवासयन्ति त एवाऽत्र गृहाश्रमे मोक्षमिव सुखमनुभवन्ति॥५॥

**पदार्थः**-हे **(अग्ने)** विद्वान् पुरुष वा विदुषि स्त्री! **(ते)** तुम्हारी **(या)** जो **(देवेषु)** विद्वानों में **(मधुमती)** बहुत सत्यभाषणोंवाली **(सुमेधाः)** जिसमें उत्तम बुद्धि विद्यमान वह **(उरूची)** बहुत विद्याओं को प्राप्त होती हुई **(जिह्वा)** वाणी **(उच्यते)** कही जाती है **(तया)** उस से **(इह)** इस गृहाश्रम में **(विश्वान्)** सम्पूर्ण **(यजत्रान्)** मिले हुए श्रेष्ठ पुत्रों को **(आ, सादय)** प्राप्त कराओ **(च)** और इनकी **(अवसे)** रक्षा आदि के लिये **(मधूनि)** मधुरता से युक्त पीने के योग्य विशेष रसों का **(पायय)** पान कराओ॥५॥

**भावार्थः**-जो स्त्री और पुरुष प्रसन्नता से विवाह किये हुए विद्या, बुद्धि और उत्तम वाणी से युक्त इस संसार में गृहाश्रम में वर्त्तमान होकर प्रेम से उत्पन्न होनेवाले पुत्रों को उत्पन्न, पालन और उत्तम शिक्षायुक्त करके तथा स्वयंवर विवाह कराके निवास कराते हैं वे ही गृहाश्रम में मोक्ष के सदृश सुख का अनुभव करते हैं॥५॥

**पुनः स्त्रीपुरुषयोः कृत्यमाह॥**

फिर स्त्री-पुरुष के कृत्य को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**या ते॑ अग्ने॒ पर्व॑तस्येव॒ धारास॑श्चन्ती पी॒पय॑द्देव चि॒त्रा।**

**ता॒म॒स्मभ्यं॒ प्रम॑तिं जातवेदो॒ वसो॒ रास्व॑ सुम॒तिं वि॒श्वज॑न्याम्॥६॥२॥**

**या। ते॒। अ॒ग्ने॒। पर्व॑तस्यऽइव। धारा॑। अस॑श्चन्ती। पी॒पय॑त्। दे॒व॒। चि॒त्रा। ताम्। अ॒स्मभ्य॑म्। प्रऽम॑तिम्। जा॒त॒ऽवे॒द॒ः। वसो॒ इति॑। रास्व॑। सु॒ऽम॒तिम्। वि॒श्वऽज॑न्याम्॥६॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**या**) (**ते**) तव (**अग्ने**) स्त्रि पुरुष वा (**पर्वतस्येव**) मेघस्येव (**धारा**) प्रवाहवद्वाणी। **धारेति वाङ्नामसु पठितम्।** (निघं०१.११) (**असश्चन्ती**) असमवयन्ती (**पीपयत्**) पिबति (**देव**) दिव्यगुणसम्पन्न (**चित्रा**) अद्भुता (**ताम्**) (**अस्मभ्यम्**) (**प्रमतिम्**) प्रकृष्टां प्रज्ञाम् (**जातवेदः**) जातेषु विद्यमानेश्वर (**वसो**) सर्वत्र वसन् (**रास्व**) देहि। अत्र व्यत्ययेनात्मनेपदम्। (**सुमतिम्**) शोभनप्रज्ञां स्त्रियमुत्तमप्रज्ञं पुरुषं वा (**विश्वजन्याम्**) विश्वं समग्रमपत्यं जायते यस्यास्ताम्॥६॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! ते यासश्चन्ती चित्रा पर्वतस्येव धारा पीपयत्तां प्रमतिं विश्वजन्यां सुमतिं त्वं रास्व। हे देव वसो जातवेदो भगवँस्त्वं दम्पतीभ्योऽस्मभ्यमेतां विद्यां प्रज्ञां वाचमीदृशीं स्त्रियमीदृशं पतिं च कृपया देहि यतो वयं सर्वदा सुखिनो भवेम॥६॥

**भावार्थः**-स्त्रीपुरुषैर्ब्रह्मचर्य्येण विद्यासुशिक्षाः प्राप्य युवावस्थायां तुल्यगुणकर्म-स्वभावान्त्सुपरीक्ष्य द्विगुणबलायुष्कं पतिं हृद्यां च प्राप्य गृहाश्रमे सुखेन निवसनीयमिति॥६॥

अत्र वाक्प्रज्ञागृहाश्रमस्त्रीपुरुषविवाहकृत्यवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति सप्तपञ्चाशत्तमं सूक्तं द्वितीयो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे (**अग्ने**) स्त्रि या पुरुष! (**ते**) आपकी (**या**) जो (**असश्चन्ती**) असम्बन्ध रखती हुई (**चित्रा**) अद्भुत (**पर्वतस्येव**) मेघ के (**धारा**) प्रवाह के सदृश वाणी बुद्धि को (**पीपयत्**) पीती है (**ताम्**) उस (**प्रमतिम्**) उत्तम बुद्धि को और (**विश्वजन्याम्**) जिससे सम्पूर्ण सन्तान उत्पन्न होता है, उस (**सुमतिम्**) उत्तम बुद्धिवाली स्त्री वा उत्तम बुद्धिवाले पुरुष को आप (**रास्व**) दीजिये। हे (**देव**) उत्तम गुणों से युक्त (**वसो**) सर्वत्र वसते हुए (**जातवेदः**) उत्पन्न हुए पदार्थों में विद्यमान भगवन्! ईश्वर आप (**अस्मभ्यम्**) हम लोगों के लिये ऐसी विद्या, बुद्धि, वाणी और ऐसी स्त्री तथा ऐसे पति को कृपा से दीजिये, जिससे कि हम लोग सदा सुखी होवें॥६॥

**भावार्थः**-स्त्री और पुरुषों को चाहिये कि ब्रह्मचर्य से विद्या और उत्तम शिक्षाओं को प्राप्त होकर युवावस्था में तुल्य गुण, कर्म और स्वभावों की परीक्षा करके द्विगुण बल और अवस्थावाले पति और प्रेमपात्र स्त्री को प्राप्त होकर गृहाश्रम में सुख से रहें॥६॥

इस सूक्त में वाणी, बुद्धि, गृहाश्रम और स्त्री-पुरुषों के कृत्य का वर्णन होने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह सत्तावनवां सूक्त और दूसरा वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

**अथ नवर्चस्याष्टपञ्चाशत्तमस्य सूक्तस्य विश्वामित्र ऋषिः। अश्विनौ देवते। १, ८, ९ त्रिष्टुप्। २-५, ७ निचृत्त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः। ६ भुरिक् पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः॥**

***अथ शिल्पिजनकृत्यमाह॥***

अब नव ऋचावाले अट्ठावनवें सूक्त का आरम्भ है। उसके प्रथम मन्त्र में शिल्पिजन के काम को कहते हैं॥

**धेनुः प्रत्नस्य काम्यं दुहानान्तः पुत्रश्चरति दक्षिणायाः।**

**आ द्योतनिं वहति शुभ्रयामोषसः स्तोमो अश्विनावजीगः॥१॥**

**धेनुः। प्रत्नस्य। काम्यम्। दुहाना। अन्तरिति। पुत्रः। चरति। दक्षिणायाः। आ। द्योतनिम्। वहति। शुभ्रऽयामा। उषसः। स्तोमः। अश्विनौ। अजीगरिति॥१॥**

**पदार्थः-(धेनुः)** गौरिव वाक् **(प्रत्नस्य)** पुरातनस्य **(काम्यम्)** कमनीयं बोधम् **(दुहाना)** प्रपूरयन्ती **(अन्तः)** आभ्यन्तरे **(पुत्रः)** तस्या जातो बोधः **(चरति)** विलसति **(दक्षिणायाः)** ज्ञानप्रापिकायाः **(आ)** **(द्योतनिम्)** प्रकाशरूपां विद्याम् **(वहति)** प्राप्नोति प्रापयति वा **(शुभ्रयामा)** शुभ्राश्शुद्धा यामा दिवसा यया सा **(उषसः)** प्रभातान् **(स्तोमः)** श्लाघनीयः **(अश्विनौ)** आप्तावध्यापकोपदेशकौ **(अजीगः)** प्राप्नोति॥१॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! शुभ्रयामा या प्रत्नस्य काम्यं दुहाना धेनुरस्ति तस्या दक्षिणायाः पुत्रोऽन्तश्चरति द्योतनिमश्विनौ उषस इवाऽऽवहति यया स्तोमोऽश्विनावजीगस्तां यूयं प्राप्नुत॥१॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यथा सूर्य उषसो जनयति तथैवात्मनि जातो बोधः पूर्णं कामं जनयित्वा सत्याऽऽसत्ये प्रकाशयति। या विद्याधर्मयुक्ता श्लक्ष्णा वा वाग् यमाप्नोति तं सनातनस्य ब्रह्मणो बोधोऽप्याप्नोति॥१॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(शुभ्रयामा)** शुद्ध दिन जिससे होते वा जो **(प्रत्नस्य)** प्राचीन के **(काम्यम्)** कामना योग्य बोध को **(दुहाना)** पूर्ण करती हुई **(धेनुः)** गौ के सदृश वाणी है, उस **(दक्षिणायाः)** ज्ञान को प्राप्त करानेवाली वाणी का **(पुत्रः)** पुत्र अर्थात् उससे उत्पन्न बोध **(अन्तः)** मध्य में **(चरति)** विलसता अर्थात् रहता है **(द्योतनिम्)** और प्रकाशरूप विद्या को **(अश्विनौ)** तथा यथार्थवक्ता अध्यापक और उपदेशक को **(उषसः)** प्रातःकालों के सदृश **(आ, वहति)** प्राप्त होता वा प्राप्त कराता है और जिससे **(स्तोमः)** प्रशंसा करने योग्य यथार्थवक्ता अध्यापक और उपदेशक **(अजीगः)** प्राप्त होता है, उसको आप लोग भी प्राप्त होओ॥१॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे सूर्य्य प्रातःकालों को उत्पन्न करता है, वैसे ही आत्मा में उत्पन्न हुआ बोध पूर्ण मनोरथ को उत्पन्न कर सत्य और असत्य का प्रकाश करता है। जो विद्याधर्म से युक्त वा श्रेष्ठ वाणी जिसको प्राप्त होती है उसको सनातन ब्रह्म का बोध भी प्राप्त होता है॥१॥



www.9009.co.in

**अथोर्ध्वाध:स्थानविषयकं शिल्पिजनकृत्यमाह॥**

अब ऊर्ध्व और अध:स्थानविषयक शिल्पिजनों के कृत्य को कहते हैं॥

**सुयुग्वहन्ति प्रति वामृतेनोर्ध्वा भवन्ति पितरेव मेधाः।**

**जरेथामस्मद्वि पणेर्मनीषां युवोरवश्चकृमा यातमर्वाक्॥ २॥**

**सुऽयुक्। वहन्ति। प्रति। वाम्। ऋतेन। ऊर्ध्वाः। भवन्ति। पितराऽइव। मेधाः। जरेथाम्। अस्मत्। वि। पणेः। मनीषाम्। युवोः। अवः। चकृम। आ। यातम्। अर्वाक्॥ २॥**

**पदार्थः**-(**सुयुक्**) ये सुष्ठु युञ्जन्ति ते (**वहन्ति**) प्राप्नुवन्ति (**प्रति**) (**वाम्**) युवाम् (**ऋतेन**) सत्येन (**ऊर्ध्वाः**) ऊर्ध्वगमयित्र्यः (**भवन्ति**) (**पितरेव**) जननीजनकाविव (**मेधाः**) प्रज्ञाः (**जरेथाम्**) स्तुयातम् (**अस्मत्**) (**वि**) (**पणेः**) व्यवहारस्य (**मनीषाम्**) मनस ईषिणीम् (**युवोः**) युवयोः (**अवः**) रक्षणम् (**चकृम**) कुर्य्याम (**आ**) समन्तात् (**यातम्**) प्राप्नुतम् (**अर्वाक्**) अधः॥ २॥

**अन्वयः**-हे अश्विनावध्यापकोपदेशकौ! सुयुग् या ऊर्ध्वा मेधा ऋतेन वां वहन्ति ता अस्मान् प्रति वाहय याः पितरेव पालिका भवन्ति ता युवां जरेथाम्। अस्मद्विपणेर्मनीषामा यातमर्वाग् युवोरवो वयं चकृम॥ २॥

**भावार्थः**-यथा वायुकिरणाः सूर्य्यादिकं वहन्ति तथैवोत्तमप्रज्ञावद्वर्त्तमानाः स्त्रियो सुखं प्रतिवहन्ति। ये विद्वांसो नृषु पितृवद्वर्त्तन्ते तान् प्रति सर्वैः पुत्रवद्वर्त्तित्वा सर्वं व्यवहारं विज्ञाय यथावदनुष्ठातव्यम्॥ २॥

**पदार्थः**-हे अध्यापक और उपदेशक! (**सुयुक्**) उत्तम कृत्य के योगकर्त्ताजन जिन (**ऊर्ध्वाः**) ऊपर को पहुंचानेवाली (**मेधाः**) बुद्धियों और (**ऋतेन**) सत्य से (**वाम्**) आप दोनों को (**वहन्ति**) प्राप्त होते हैं, उनको हम लोगों के (**प्रति**) प्रति पहुंचाओ, जो (**पितरेव**) माता और पिता के सदृश पालन करनेवाली (**भवन्ति**) होती हैं, [उनको] आप दोनों (**जरेथाम्**) उनकी स्तुति करो। (**अस्मत्**) हमारे लिये (**वि, पणेः**) व्यवहार की (**मनीषाम्**) बुद्धि को (**आ**) सब प्रकार (**यातम्**) प्राप्त होओ (**अर्वाक्**) नीचे स्थानों में (**युवोः**) आप दोनों की (**अवः**) रक्षा हम लोग (**चकृम**) करें॥ २॥

**भावार्थः**-जैसे वायु और किरणें सूर्य्य आदि को पहुँचाती हैं, वैसे ही उत्तम बुद्धि के सदृश वर्त्तमान स्त्रियाँ सुख को पहुँचाती हैं। और जो विद्वान् लोग मनुष्यों में पिता के सदृश वर्त्तमान हैं, उनके प्रति सबको चाहिये कि पुत्र के सदृश वर्त्ताव कर और सब व्यवहार को जान के यथावत् करें॥ २॥

**अथाग्न्यादिपदार्थचालितयानविषयकं शिल्पिकृत्यमाह॥**

अब अग्नि आदि पदार्थ चालितयान विषयक शिल्पिकृत्य को कहते हैं॥

**सुयुग्भिरश्वैः सुवृता रथेन दस्राविमं शृणुतं श्लोकमद्रेः।**

**किमङ्ग वां प्रत्यवर्तिं गमिष्ठाहुर्विप्रासो अश्विना पुराजाः॥ ३॥**



www.9009.co.in

सुयुक्ऽभिः। अश्वैः। सुऽवृता। रथेन। दस्रौ। इमम्। शृणुतम्। श्लोकम्। अद्रेः। किम्। अङ्ग। वाम्। प्रति। अवर्त्तिम्। गमिष्ठा। आहुः। विप्रासः। अश्विना। पुराऽजाः॥३॥

**पदार्थः-(सुयुग्भिः)** सुष्ठु योजितैः **(अश्वैः)** अग्न्यादिभिः पदार्थैः **(सुवृता)** यः सुष्ठु वर्त्तते तेन **(रथेन)** विमानादियानेन **(दस्रौ)** दुःखानामुपक्षेतारौ **(इमम्) (शृणुतम्) (श्लोकम्)** वाचम् **(अद्रेः)** मेघस्येव **(किम्) (अङ्ग) (वाम्) (प्रति) (अवर्त्तिम्)** अवर्त्तमानाम् **(गमिष्ठा)** अतिशयेन गन्तारौ **(आहुः)** कथयन्ति **(विप्रासः)** मेधाविनो विपश्चितः **(अश्विना)** सूर्य्याचन्द्रमसाविव वर्त्तमानावध्यापकोपदेशकौ **(पुराजाः)** पूर्वं जाताः॥३॥

**अन्वयः**-हे दस्रावश्विना! युवां सुयुग्भिरश्वैर्युक्तेन सुवृता रथेनागत्याऽद्रेरिवास्माकमिमं श्लोकं शृणुतम्। अङ्ग! यौ वां गमिष्ठा पुराजा विप्रास आहुस्तौ युवां प्रत्यवर्त्तिं किं न गच्छेतम्, किन्तु प्राप्नुयातमेव॥३॥

**भावार्थः**-ये विद्वांसोऽन्यादिविद्यया चालितैर्यानैर्व्यवहरेयुस्ते किं किमैश्वर्य्यं न लभेरन्॥३॥

**पदार्थः**-हे **(दस्रौ)** दुःखों को नाश करनेवाले **(अश्विना)** सूर्य्य और चन्द्रमा के सदृश वर्त्तमान अध्यापक और उपदेशक! आप दोनों **(सुयुग्भिः)** उत्तम प्रकार जोड़े गये **(अश्वैः)** अग्नि आदि पदार्थों से युक्त **(सुवृता)** उत्तम **(रथेन)** विमान आदि वाहन से [आकर] **(अद्रेः)** मेघ के सदृश हम लोगों की **(इमम्)** इस **(श्लोकम्)** वाणी को **(शृणुतम्)** सुनो और **(अङ्ग)** हे पूर्वोक्त अध्यापक उपदेशको! जो **(वाम्)** तुम दोनों को **(गमिष्ठा)** अत्यन्त चलनेवाले **(पुराजाः)** प्रथम उत्पन्न हुए **(विप्रासः)** बुद्धिमान् विद्वान् लोग **(आहुः)** कहते हैं, वे आप दोनों **(प्रति, अवर्त्तिम्)** अवर्त्तमान अर्थात् अलभ्य पदार्थ को **(किम्)** क्यों नहीं प्राप्त हों, किन्तु प्राप्त ही होवें॥३॥

**भावार्थः**-जो विद्वान् लोग अग्नि आदि विद्या से चलाये वाहनों से व्यवहार करें, वे किस-किस ऐश्वर्य्य को न प्राप्त होवें॥३॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**आ मन्येथामा गतं कच्चिदेवैर्विश्वे जनासो अश्विना हवन्ते।**

**इमा हि वां गोऋजीका मधूनि प्र मित्रासो न ददुरुस्रो अग्रे॥४॥**

आ। मन्येथाम्। आ। गतम्। कत्। चित्। एवैः। विश्वे। जनासः। अश्विना। हवन्ते। इमा। हि। वाम्। गोऽऋजीका। मधूनि। प्र। मित्रासः। न। ददुः। उस्रः। अग्रे॥४॥

**पदार्थः-(आ)** समन्तात् **(मन्येथाम्)** विजानीतम् **(आ) (गतम्)** आगच्छतम् **(कत्)** कदा **(चित्)** अपि **(एवैः)** सद्यः प्रापकैर्विद्युदादिचालितैर्यानैः **(विश्वे)** सर्वे **(जनासः)** प्रसिद्धा मनुष्याः **(अश्विना)** वायुविद्युतौ **(हवन्ते)** आददति **(इमा)** इमानि **(हि)** यतः **(वाम्) (गोऋजीका)** गवां दुग्धादिना मिश्रितानि



www.9009.co.in

**(मधूनि)** **(प्र)** **(मित्रासः)** सखायः **(न)** इव **(ददुः)** दद्युः **(उस्रः)** गाः। **उस्रेति गोनामसु पठितम्।** (निघं०२.११)। **(अग्रे)** पूर्वम्॥४॥

**अन्वयः**- हे अश्विनावध्यापकोपदेशकौ यौ युवां विश्वे जनासो हवन्तेऽग्रे हीमा गोऋजीका मधूनि मित्रासो न प्रददुस्तानुस्रो वामेवैः कदाऽऽगतं चिदपि तानामन्येथाम्॥४॥

**भावार्थः**-विदुषां योग्यतास्ति ये प्रीत्या धार्मिकाः सुसेवका विद्यार्थिनश्श्रोतारो वा समीपमागच्छेयुस्तेभ्यः प्रशस्तानि विज्ञानादीनि दद्युः। हि यतो सर्वे मनुष्याः सर्वैः सह मित्रवद्वर्त्तेरन्॥४॥

**पदार्थः**-हे **(अश्विना)** अध्यापक और उपदेशक जन! [जो] आप दोनों को **(विश्वे)** सम्पूर्ण **(जनासः)** प्रसिद्ध मनुष्य **(हवन्ते)** ग्रहण करते हैं **(अग्रे)** और प्रथम **(हि)** कि जिससे **(इमा)** इन **(गोऋजीका)** गौवों के दुग्ध आदि से मिले हुए **(मधूनि)** सोमलतारूप औषधियों के रसों को **(मित्रासः)** मित्र लोगों के **(न)** सदृश **(प्र, ददुः)** देवें, उनका तथा **(उस्रः)** गौओं को **(वाम्)** आप दोनों **(एवैः)** शीघ्र पहुँचानेवाले बिजुली आदि से चलाये गये वाहनों से **(कत्)** कब **(आ, गतम्)** प्राप्त हुए **(चित्)** भी [उनको] **(आ)** सब प्रकार **(मन्येथाम्)** जानिये॥४॥

**भावार्थः**-विद्वानों की योग्यता है कि जो प्रीति से धार्मिक उत्तम सेवक विद्यार्थी वा श्रोताजन समीप आवें, उनको उत्तम विज्ञान आदि देवें। जिससे सब मनुष्य सबके साथ मित्रों के सदृश वर्त्ताव करें॥४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**तिरः पुरू चिदश्विना रजांस्याङ्गूषो वां मघवाना जनेषु।**

**एह यातं पथिभिर्देवयानैर्दस्राविमे वां निधयो मधूनाम्॥५॥३॥**

**तिरः। पुरु। चित्। अश्विना। रजांसि। आङ्गूषः। वाम्। मघऽवाना। जनेषु। आ। इह। यातम्। पथिऽभिः। देवऽयानैः। दस्रौ। इमे। वाम्। निऽधयः। मधूनाम्॥५॥**

**पदार्थः**-**(तिरः)** तिर्यक् **(पुरू)** बहूनि **(चित्)** अपि **(अश्विना)** शिल्पविद्याविदा-वध्यापकोपदेशकौ **(रजांसि)** लोकान् **(आङ्गूषः)** विद्वान् **(वाम्)** युवाम् **(मघवाना)** परमोत्तमधनयुक्तौ **(जनेषु)** मनुष्येषु **(आ)** **(इह)** **(यातम्)** **(पथिभिः)** मार्गैः **(देवयानैः)** देवा विद्वांसो यान्ति यैस्तैः **(दस्रौ)** क्लेशविनाशकौ **(इमे)** **(वाम्)** **(निधयः)** धनसमूहाः **(मधूनाम्)** माधुर्य्यगुणयुक्तानां पदार्थानाम्॥५॥

**अन्वयः**-हे दस्रौ मघवाना अश्विना! यदि वां देवयानैः पथिभिः पुरू रजांसि तिर आ यातं तर्हीह वां जनेष्विमे मधूनां निधयः प्राप्नुयुः। आङ्गुषश्चिदपि प्राप्नुयात्॥५॥

**भावार्थः**-ये विद्वद्गतैर्मार्गैः पदार्थविद्या अन्विच्छेयुस्ते सकलविद्याः प्राप्य जलस्थलान्तरिक्षेषु गत्वागत्य श्रीमन्तो भूत्वा दारिद्र्यं तिरस्कृत्य निधिमन्तः सन्तोऽन्यानप्येवं कुर्य्युः॥५॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-हे **(दस्रौ)** क्लेश के नाशकर्त्ता **(मघवाना)** अत्यन्त उत्तम धनयुक्त **(अश्विना)** शिल्पविद्या के जाननेवाले अध्यापक और उपदेशको! जो **(वाम्)** आप दोनों **(देवयानैः)** विद्वान् लोग जिनसे चलते उन **(पथिभिः)** मार्गों से **(पुरू)** बहुत **(रजांसि)** लोकों को **(तिरः)** तिर्छे मार्ग से **(आ, यातम्)** प्राप्त होवें तो **(इह)** यहाँ **(वाम्)** तुम दोनों को **(जनेषु)** मनुष्यों में **(इमे)** ये **(मधूनाम्)** माधुर्य गुणों से युक्त पदार्थसम्बन्धी **(निधयः)** धनों के समूह प्राप्त होवें और **(आङ्गूषः)** विद्वान् **(चित्)** भी प्राप्त होवें॥५॥

**भावार्थः**-जो लोग विद्वानों के मार्गों से पदार्थविद्याओं का खोज करें, वे सम्पूर्ण विद्याओं को प्राप्त हों तथा जल, स्थल और अन्तरिक्षों में जा-आ और लक्ष्मीवान् हो दारिद्र्य का तिरस्कार करके धनवान् होते हुए अन्य जनों को भी ऐसे ही करें॥५॥

**यदि शिल्पिविद्वद्भिरन्ये परस्परं मैत्रीं कुर्य्युस्तर्हि किं प्राप्नुयुरित्याह॥**

जो शिल्पी विद्वानों के साथ और लोग परस्पर मित्रता करें तो क्या पावें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**पुराणमोकः सख्यं शिवं वां युवोर्नरा द्रविणं जह्नाव्याम्।**

**पुनः कृण्वानाः सख्या शिवानि मध्वा मदेम सह नू समानाः॥६॥**

**पुराणम्। ओकः। सख्यम्। शिवम्। वाम्। युवोः। नरा। द्रविणम्। जह्नाव्याम्। पुनरिति। कृण्वानाः। सख्या। शिवानि। मध्वा। मदेम। सह। नु। समानाः॥६॥**

**पदार्थः**-**(पुराणम्)** पुरातनम् **(ओकः)** सर्वर्त्तुसुखप्रदं स्थानमिव **(सख्यम्)** सख्युः कर्म मित्रत्वम् **(शिवम्)** कल्याणकरम् **(वाम्)** **(युवोः)** **(नरा)** नायकौ **(द्रविणम्)** धनम् **(जह्नाव्याम्)** जह्नोस्त्यक्तुरियं नीतिस्तस्याम्। अत्राकाराऽकारयोर्व्यत्ययः। **(पुनः)** **(कृण्वानाः)** कुर्वन्तः **(सख्या)** सुहृदः कर्माणि **(शिवानि)** सुखकराणि **(मध्वा)** मधुरभावेन **(मदेम)** आनन्देम **(सह)** **(नु)** सद्यः। अत्र **ऋचि तुनुघेति** दीर्घः। **(समानाः)** तुल्योत्तमगुणकर्मस्वभावाः॥३॥

**अन्वयः**-हे नरा नायकौ सभासेनेशौ! वां पुराणमोक इव शिवं सख्यमाप्नोतु। जह्नाव्यां युवोर्द्रविणं मिलतु पुनः शिवानि सख्या कृण्वानाः समाना वयं मध्वा सह नु मदेम॥३॥

**भावार्थः**-यदि विद्वांसोऽविद्वांसश्च परस्परं मैत्रीं कुर्युस्ते सनातनं शिवं ब्रह्मैश्वर्यं विज्ञानञ्च प्राप्य धार्मिकास्सन्तो दुष्टानि व्यसनानि विहाय सदैव सुखिनः स्युः॥६॥

**पदार्थः**-हे **(नरा)** नायक सभा और सेना के ईशो! **(वाम्)** आप दोनों **(पुराणम्)** प्राचीन काल से सिद्ध **(ओकः)** सब ऋतुओं में सुख देनेवाले स्थान के तुल्य **(शिवम्)** कल्याण करनेवाले **(सख्यम्)** मित्र के कर्म को प्राप्त हूजिये। और **(जह्नाव्याम्)** त्याग करनेवाले की नीति में **(युवोः)** तुम दोनों को **(द्रविणम्)** धन प्राप्त हो **(पुनः)** फिर **(शिवानि)** सुख करनेवाले **(सख्या)** मित्र के कर्मों को **(कृण्वानाः)**



www.9009.co.in

करते हुए (**समानाः**) तुल्य गुण और उत्तम कर्म, स्वभाववाले हम लोग (**मध्वा**) मधुरभाव के (**सह**) साथ (**नु**) शीघ्र (**मदेम**) आनन्द करें॥६॥

**भावार्थः**-जो विद्वान् और अविद्वान् लोग परस्पर मैत्री करें; वे अनादिसिद्ध, कल्याणकारक ब्रह्म, ऐश्वर्य और विज्ञान को प्राप्त होकर धार्मिक होते हुए दुष्ट व्यसनों का त्याग करके सदा ही सुखी होवें॥६॥

**अथ शिल्पविद्योपदेशार्थाज्ञाविषयमाह॥**

अब शिल्पविद्या उपदेशार्थ आज्ञा विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अश्विना वायुना युवं सुदक्षा नियुद्भिश्च सजोषसा युवाना।**

**नासत्या तिरोअह्न्यं जुषाणा सोमं पिबतमस्रिधा सुदानू॥७॥**

**अश्विना। वायुना। युवम्। सुऽदक्षा। नियुत्ऽभिः। च। सऽजोषसा। युवाना। नासत्या। तिरःऽअह्न्यम्। जुषाणा। सोमम्। पिबतम्। अस्रिधा। सुदानू इति सुऽदानू॥७॥**

**पदार्थः**-(**अश्विना**) शिल्पविद्याध्यापकाऽध्येतारौ स्वामिसेवकौ वा (**वायुना**) पवनेन (**युवम्**) युवाम् (**सुदक्षा**) सुष्ठु चतुरौ (**नियुद्भिः**) नियुक्तैः (**च**) (**सजोषसा**) समानप्रीतिसेविनौ (**युवाना**) प्राप्तयौवनौ (**नासत्या**) अविद्यमानाऽसत्याचारौ (**तिरोअह्न्यम्**) तिरश्चीनेष्वहस्सु साधुम् (**जुषाणा**) सेवमानौ (**सोमम्**) महौषधिरसम् (**पिबतम्**) (**अस्रिधा**) अहिंसकौ (**सुदानू**) उत्तमपदार्थदातारौ॥७॥

**अन्वयः**-हे युवाना नासत्या सुदक्षा सजोषसा तिरोअह्न्यं जुषाणा अस्रिधा सुदानू अश्विना! युवं वायुना नियुद्भिश्च युक्ते याने स्थित्वाऽऽगत्य सोमं पिबतम्॥७॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! भवन्तो हिंसाद्यधर्मव्यवहारं विहाय वायुविद्युदादिपदार्थविद्या विज्ञायाऽन्येभ्यो विद्यादि दत्वा पूर्णं ब्रह्मचर्य्यं सेवित्वा चिरञ्जीवन्तु॥७॥

**पदार्थः**-हे (**युवाना**) यौवनावस्था को प्राप्त (**नासत्या**) असत्य आचार से रहित (**सुदक्षा**) उत्तम प्रकार चतुर (**सजोषसा**) तुल्य प्रीति के सेवनेवाले (**तिरोअह्न्यम्**) तिर्छे दिनों में उत्तम की (**जुषाणा**) सेवा करते हुए (**अस्रिधा**) अहिंसक (**सुदानू**) उत्तम पदार्थ के देने (**अश्विना**) शिल्पविद्या के पढ़ाने और पढ़नेवाले स्वामी और सेवको! (**युवम्**) आप दोनों (**वायुना**) पवन से (**नियुद्भिः**) नियत किये हुए भी वाहनों में स्थित हो (**च**) और आकर (**सोमम्**) बड़ी औषधि के रस का (**पिबतम्**) पान कीजिये॥७॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! आप हिंसा आदि अधर्म व्यवहार को त्याग के वायु, बिजुली आदि पदार्थविद्याओं को जान अन्य जनों के लिये विद्या आदि दे और पूर्ण ब्रह्मचर्य का सेवन करके अतिकाल जीओ॥७॥

**अथ शिल्पविद्यासिद्धयानेन गमनागमनविषयमाह॥**

अब शिल्पविद्यासिद्ध यान से जाने-आने के विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥



www.9009.co.in

**अश्विना परि वामिषः पुरूचीरीयुर्गीर्भिर्यतमाना अमृध्राः।**

**रथो ह वामृतजा अद्रिजूतः परि द्यावापृथिवी याति सद्यः॥८॥**

**अश्विना। परि। वाम्। इषः। पुरूचीः। ईयुः। गीःऽभिः। यतमानाः। अमृध्राः। रथः। ह। वाम्। ऋतऽजाः। अद्रिऽजूतः। परि। द्यावापृथिवी इति। याति। सद्यः॥८॥**

**पदार्थः**-(**अश्विना**) सकलविद्याव्याप्तौ (**परि**) सर्वतः (**वाम्**) युवाम् (**इषः**) इच्छासिद्धीः (**पुरूचीः**) पुरूणि सुखान्यञ्चन्तीः (**ईयुः**) प्राप्नुयुः (**गीर्भिः**) वाग्भिः (**यतमानाः**) (**अमृध्राः**) अध्यापकोपदेशकाः (**रथः**) (**ह**) किल (**वाम्**) युवयोः (**ऋतजाः**) ऋतात् सत्याज्जातः (**अद्रिजूतः**) योऽद्रौ मेघे जवति सद्यो गच्छति (**परि**) सर्वतः (**द्यावापृथिवी**) भूमिप्रकाशौ (**याति**) गच्छति (**सद्यः**) शीघ्रम्॥८॥

**अन्वयः**-हे अश्विना यदि वामृतजा अद्रिजूतो रथो द्यावापृथिवी सद्यः परि याति तर्हि तेन वां ह गीर्भिरमृध्रा यतमाना अध्यापकोपदेशका इव पुरूचीरिष परीयुः॥८॥

**भावार्थः**-ये विमानादियानाद्यग्न्यादिभिर्निर्मिते तेऽभीष्टानि सुखानि प्राप्य यत्रेच्छा तत्र सद्यो गन्तुं शक्नुवन्ति॥८॥

**पदार्थः**-हे (**अश्विना**) सम्पूर्ण विद्याओं में व्याप्त रमते हुए यदि (**वाम्**) आप दोनों को (**ऋतजाः**) सत्य से उत्पन्न (**अद्रिजूतः**) मेघ में शीघ्र जानेवाला (**रथः**) वाहन (**द्यावापृथिवी**) भूमि और प्रकाश को (**सद्यः**) शीघ्र (**परि, याति**) सब ओर पहुँचाता है तो उससे (**वाम्**) आप दोनों को (**ह**) निश्चय कर (**गीर्भिः**) वाणियों से जैसे (**अमृध्राः**) अध्यापक और उपदेशक (**यतमानाः**) प्रयत्न करते प्राप्त हों, वैसे (**पुरूचीः**) सुखों को पहुंचानेवाली (**इषः**) इच्छासिद्धियों को (**परि, ईयुः**) सब ओर प्राप्त होवें॥९॥

**भावार्थः**-जो लोग विमान आदि यानों को अग्नि आदि से रचते हैं, वे अभीष्ट सुखों को प्राप्त होकर जहाँ इच्छा हो शीघ्र जा सकते हैं॥८॥

**अथ शिल्पविद्याफलमाह॥**

अब शिल्पविद्या के फल को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अश्विना मधुषुत्तमो युवाकुः सोमस्तं पातमा गतं दुरोणे।**

**रथो ह वां भूरि वर्पः करिक्रत् सुतावतो निष्कृतमागमिष्ठः॥९॥४॥**

**अश्विना। मधुसुत्ऽतमः। युवाकुः। सोमः। तम्। पातम्। आ। गतम्। दुरोणे। रथः। ह। वाम्। भूरि। वर्पः। करिक्रत्। सुतऽवतः। निःऽकृतम्। आऽगमिष्ठः॥९॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**अश्विना**) सर्वाधीशसेनाधीशौ (**मधुषुत्तमः**) यो मधूनि सुनोति सोऽतिशयितः (**युवाकुः**) मिश्रिताऽमिश्रितः (**सोमः**) ऐश्वर्यलाभः (**तम्**) (**पातम्**) रक्षतम् (**आ**) (**गतम्**) आगच्छतम् (**दुरोणे**) गृहे (**रथः**) (**ह**) किल (**वाम्**) युवयोः (**भूरि**) बहु (**वर्पः**) रूपयुक्तः (**करिक्रत्**) भृशं करोति (**सुतावतः**) निष्पन्नैश्वर्यकोशस्य (**निष्कृतम्**) निष्पन्नम् (**आगमिष्ठः**) अतिशयेनाऽऽगन्ता॥९॥

**अन्वयः**-हे अश्विना! यो ह वां रथो भूरि वर्पः सुतावतो निष्कृतमागमिष्ठः करिक्रदस्ति तेन यो मधुषुत्तमो युवाकुस्सोमोऽस्ति तं दुरोणे पातं परदेशात् स्वदेशमागतम्॥९॥

**भावार्थः**-ये मनुष्या शिल्पविद्ययाऽनेकानि कलायन्त्राणि निर्माय यानादीनि निर्मिमते ते स्वगृहकुलदेशे पूर्णमैश्वर्यं कर्त्तुं शक्नुवन्ति॥९॥

अत्राश्विशिल्पकृत्यवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इत्यष्टपञ्चाशत्तमं सूक्तं चतुर्थो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे (**अश्विना**) सबके अधीश और सेना के अधीश! जो (**ह**) निश्चय (**वाम्**) आप दोनों का (**रथः**) [वाहन] (**भूरि**) बड़े (**वर्पः**) रूप से युक्त (**सुतावतः**) उत्पन्न ऐश्वर्य कोश के (**निष्कृतम्**) सिद्ध हुए विषय को (**आगमिष्ठः**) अतिशय करके प्राप्त होनेवाला (**करिक्रत्**) निरन्तरकारी है, उससे जो (**मधुषुत्तमः**) मीठे रसों को निचोड़नेवाला (**युवाकुः**) मिला और अनमिला (**सोमः**) ऐश्वर्य का लाभ है (**तम्**) इसकी (**दुरोणे**) गृह में (**पातम्**) रक्षा कीजिये और अन्य देश से अपने देश में (**आ, गतम्**) आइए॥९॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य शिल्पविद्या से अनेक कलायन्त्रों का निर्माण कर के वाहन आदि को रचते हैं, वे अपने गृह, कुल और देश में पूर्ण ऐश्वर्य कर सकते हैं॥७॥

इस सूक्त में अश्वि शब्द से शिल्पीजनों का कृत्य वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह अट्ठावनवां सूक्त और चौथा वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

**अथ नवर्चस्यैकोनषष्टितमस्य सूक्तस्य विश्वामित्र ऋषिः। मित्रो देवता। १, २, ५ त्रिष्टुप्। ३ निचृत्त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः। ४ भुरिक् पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः। ६, ९ निचृद्गायत्री। ७, ८ गायत्री छन्दः। षड्जः स्वरः॥**

***अथ मित्रगुणानाह॥***

अब नव ऋचावाले उनसठवें सूक्त का प्रारम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में मित्रगुणों का उपदेश करते हैं॥

**मित्रो जनान् यातयति ब्रुवाणो मित्रो दाधार पृथिवीमुत द्याम्।**
**मित्रः कृष्टीरनिमिषाभि चष्टे मित्राय हव्यं घृतवज्जुहोत॥ १॥**

**मित्रः। जनान्। यातयति। ब्रुवाणः। मित्रः। दाधार। पृथिवीम्। उत। द्याम्। मित्रः। कृष्टीः। अनिऽमिषा। अभि। चष्टे। मित्राय। हव्यम्। घृतऽवत्। जुहोत॥ १॥**

**पदार्थः**-(**मित्रः**) सखा (**जनान्**) (**यातयति**) पुरुषार्थयति (**ब्रुवाणः**) उपदेशेन प्रेरयन् (**मित्रः**) सूर्य इव परमात्मा (**दाधार**) धरति (**पृथिवीम्**) भूमिम् (**उत**) अपि (**द्याम्**) सूर्यलोकम् (**मित्रः**) सर्वस्य सुहृद्राजा (**कृष्टीः**) कर्षिका मनुष्यप्रजाः (**अनिमिषा**) अहर्निशजन्यया क्रियया (**अभि**) (**चष्टे**) अभितः ख्याति (**मित्राय**) वह्नये (**हव्यम्**) होतुमर्हम् (**घृतवत्**) बहुघृतादियुक्तं हविः (**जुहोत**) दत्त॥ १॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यो ब्रुवाणो मित्रो जनाननिमिषा यातयति यो मित्रः पृथिवीमुत द्यामनिमिषा दाधार। यो मित्रः कृष्टीरनिमिषाऽभि चष्टे तस्मै मित्राय घृतवद्धव्यं जुहोत॥ १॥

**भावार्थः**-ये मनुष्या सत्योपदेशकं सत्यविद्याप्रदं सखायं सर्वाधारकं परमात्मानं सर्वव्यवस्थापकं राजानं सत्कुर्वन्ति त एव सर्वस्य सुहृदः सन्ति॥ १॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो (**ब्रुवाणः**) उपदेश से प्रेरणा करता हुआ (**मित्रः**) सबका मित्रजन (**जनान्**) मनुष्यों को (**अनिमिषा**) दिन और रात्रि में होनेवाली क्रिया से (**यातयति**) पुरुषार्थ कराता जो (**मित्रः**) सूर्य के समान परमात्मा मित्र (**पृथिवीम्**) भूमि (**उत**) और (**द्याम्**) सूर्यलोक को दिन और रात्रि में होनेवाली क्रिया से (**दाधार**) धारण करता और जो (**मित्रः**) सबका मित्र (**कृष्टीः**) खींचने व जोतनेवाली मनुष्य रूप प्रजाओं को दिन और रात्रि में होनेवाली क्रिया से (**अभि, चष्टे**) सब प्रकार उपदेश देता है उस (**मित्राय**) उक्त सर्व व्यवहार को चलानेवाले मित्र के लिये (**घृतवत्**) बहुत घृत आदि से युक्त (**हव्यम्**) हविष्यान्न (**जुहोत**) दीजिये॥ १॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य लोग सत्य का उपदेश करने, सत्य विद्या देने, मित्रता रखने, सबको धारण करनेवाले परमात्मा और सबके व्यवस्थापक राजा का सत्कार करते हैं, वे ही सबके मित्र हैं॥ १॥

**अथेश्वराप्तमित्रतामाह॥**

अब ईश्वर और आप्त विद्वान् के मित्रपन को अगले मन्त्र में कहते हैं॥



www.9009.co.in

**प्र स मि॑त्र॒ मर्तो॑ अस्तु॒ प्रय॑स्वा॒न् यस्त॑ आदित्य॒ शिक्ष॑ति व्र॒तेन॑।**

**न ह॑न्यते॒ न जी॑यते॒ त्वोतो॒ नैन॒मंहो॑ अश्नो॒त्यन्ति॑तो॒ न दू॒रात्॥ २॥**

**प्र। सः। मि॒त्र॒। मर्तः॑। अ॒स्तु॒। प्रय॑स्वान्। यः। ते॒। आ॒दि॒त्य॒। शिक्ष॑ति। व्र॒तेन॑। न। ह॒न्य॒ते॒। न। जी॒य॒ते॒। त्वाऽऊ॑तः। न। ए॒न॒म्। अंहः॑। अ॒श्नो॒ति॒। अन्ति॑तः। न। दू॒रात्॥ २॥**

**पदार्थः**-(**प्र**) (**सः**) (**मित्र**) सखे (**मर्त्तः**) मनुष्यः (**अस्तु**) भवतु (**प्रयस्वान्**) प्रयत्नवान् (**यः**) (**ते**) तव (**आदित्य**) अविनाशिस्वरूप (**शिक्षति**) विद्यां गृह्णाति ग्राहयति वा। अत्र व्यत्ययेन परस्मैपदम्। (**व्रतेन**) कर्मणेव (**न**) (**हन्यते**) (**न**) (**जीयते**) जेतुं शक्यते (**त्वोतः**) त्वया रक्षितः (**न**) (**एनम्**) (**अंहः**) पापम् (**अश्नोति**) प्राप्नोति (**अन्तितः**) समीपात् (**न**) (**दूरात्**)॥ २॥

**अन्वयः**-हे मित्र आप्त विद्वज्जगदीश्वर वा! यो मर्त्तः प्रयस्वानस्तु हे आदित्य! यो मनुष्यस्ते व्रतेनेवाऽन्यान् प्रशिक्षति स त्वोतोऽन्यैर्न हन्यते न जीयते। एनमन्तितोंऽहो नाऽश्नोति नैनं दूरादंहोऽश्नोति॥ २॥

**भावार्थः**-ये मनुष्या आप्तेश्वरयोर्गुणकर्मस्वभाववत्स्वगुणकर्मस्वभावान् कृत्वा सत्यन्यायेन सर्वाञ्छिक्षन्ते ते निष्पापा धर्मात्मानो भूत्वाऽऽप्तेश्वराभ्यां रक्षिताः सन्तो दुष्टैर्हन्तुं पराजेतुं च न शक्यन्ते। नैव ते दूरात् समीपाद्वा पक्षपातेन पापं भजन्ते॥ २॥

**पदार्थः**-हे (**मित्र**) मित्र यथार्थवक्ता विद्वान् वा जगदीश्वर! (**यः**) जो (**मर्त्तः**) मनुष्य (**प्रयस्वान्**) प्रयत्नवाला (**अस्तु**) हो। और हे (**आदित्य**) अविनाशिस्वरूप! जो मनुष्य (**ते**) आपके (**व्रतेन**) कर्म से जैसे वैसे अन्य जनों को (**प्र, शिक्षति**) विद्या ग्रहण कराता वा आप ग्रहण करता है (**सः**) वह (**त्वोतः**) आपसे रक्षित अन्य जनों से (**न**) न (**हन्यते**) मारा जाता (**न**) और न (**जीयते**) जीता जाता है। (**एनम्**) इसको (**अन्तितः**) समीप से (**अंहः**) पाप (**न**) नहीं (**अश्नोति**) प्राप्त होता और (**न**) न इसको (**दूरात्**) दूर से पाप प्राप्त होता है॥ २॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य यथार्थवक्ता और स्वामी के गुण, कर्म और स्वभाव के सदृश अपने गुण, कर्म और स्वभावों को करके सत्य न्याय से सबको शिक्षा करते हैं, वे पापरहित धर्मात्मा होकर यथार्थवक्ता और स्वामी से रक्षित हुए दुष्टों से नाश तथा पराजय को प्राप्त नहीं हो सकते और न वे दूर वा समीप से पक्षपात से पाप का सेवन करते हैं॥ २॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अ॒न॒मी॒वास॒ इळ॑या॒ मद॑न्तो मि॒तज्ञ॑वो॒ वरि॑म॒न्ना पृ॑थि॒व्याः।**

**आ॒दि॒त्यस्य॑ व्र॒तमु॑पक्षि॒यन्तो॑ व॒यं मि॒त्रस्य॑ सुम॒तौ स्या॑म॥ ३॥**



www.9009.co.in

**अनमीवासः। इळया। मदन्तः। मितऽज्ञवः। वरिमन्। आ। पृथिव्याः। आदित्यस्य। व्रतम्। उपऽक्षियन्तः। वयम्। मित्रस्य। सुऽमतौ। स्याम॥ ३॥**

**पदार्थः-(अनमीवासः)** शरीरात्मरोगरहिताः **(इळया)** सुशिक्षितया वाचा पृथिवीराज्येन वा **(मदन्तः)** आनन्दन्तः **(मितज्ञवः)** मितानि जानूनि येषान्ते **(वरिमन्)** बहुशीलसत्ययुक्तम् **(आ)** **(पृथिव्याः)** भूमेः **(आदित्यस्य)** सूर्य्यस्य **(व्रतम्)** क्षमां न्यायप्रकाशं वा कर्म **(उपक्षियन्तः)** उपनिवसन्तः **(वयम्)** **(मित्रस्य)** सर्वस्य सुहृद ईश्वरस्याऽऽप्तस्य वा **(सुमतौ)** उत्तमाज्ञायां प्रज्ञायां वा **(स्याम)** भवेम॥ ३॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथा ब्रह्मचर्य्येणऽनमीवास इळया मदन्तो मितज्ञवः पृथिव्या आदित्यस्य वरिमन् व्रतमोपक्षियन्तो वयं मित्रस्य सुमतौ स्याम तथा भवन्तोऽपि भवन्तु॥ ३॥

**भावार्थः**-ये परमेश्वरेणाऽऽप्तैस्सह सौहार्दं कृत्वा क्षमादिविद्यान्यायप्रकाशादिगुणान् स्वीकृत्य धर्म्ये पथि वर्तन्ते त एव परमेश्वरस्याप्तानां च प्रिया जायन्ते॥ ३॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे ब्रह्मचर्य्य से **(अनमीवासः)** शरीर और आत्मा के रोग से रहित **(इळया)** उत्तम प्रकार शिक्षित वाणी वा पृथिवी के राज्य से **(मदन्तः)** आनन्दित होते **(मितज्ञवः)** और नपी जङ्घाओंवाले **(पृथिव्याः)** भूमि और **(आदित्यस्य)** सूर्य्य के **(वरिमन्)** बहुत शील और सत्य से युक्त **(व्रतम्)** क्षमा वा न्यायप्रकाश करनेवाले कर्म को **(आ, उपक्षियन्तः)** प्राप्त होते हुए **(वयम्)** हम लोग **(मित्रस्य)** सबके मित्र ईश्वर वा यथार्थवक्ता पुरुष की **(सुमतौ)** श्रेष्ठ आज्ञा वा बुद्धि में **(स्याम)** होवें, वैसे आप भी होओ॥ ३॥

**भावार्थः**-जो लोग परमेश्वर और यथार्थवक्ता पुरुषों के साथ मित्रता कर और क्षमा आदि, विद्या, न्याय के प्रकाश आदि गुणों को स्वीकार करके धर्मयुक्त मार्ग में वर्तमान हैं, वे ही परमेश्वर और यथार्थवक्ता पुरुषों के प्रिय होते हैं॥ ३॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अयं मित्रो नमस्यः सुशेवो राजा सुक्षत्रो अजनिष्ट वेधाः।**

**तस्य वयं सुमतौ यज्ञियस्यापि भद्रे सौमनसे स्याम॥ ४॥**

**अयम्। मित्रः। नमस्यः। सुऽशेवः। राजा। सुऽक्षत्रः। अजनिष्ट। वेधाः। तस्य। वयम्। सुऽमतौ। यज्ञियस्य। अपि। भद्रे। सौमनसे। स्याम॥ ४॥**

**पदार्थः-(अयम्)** परमात्माऽऽप्तो राजा वा **(मित्रः)** सखा **(नमस्यः)** परिचरितुं सत्कर्तुं योग्यः **(सुशेवः)** सुष्ठु सुखप्रदः **(राजा)** भूमिपः **(सुक्षत्रः)** सुष्ठु सुखि क्षत्रं राष्ट्रं यस्य सः **(अजनिष्ट)** जायते



www.9009.co.in

**(वेधाः)** मेधावी **(तस्य)** **(वयम्)** **(सुमतौ)** आज्ञायां प्रज्ञायां वा **(यज्ञियस्य)** न्यायव्यवहारसम्पादकस्य **(अपि)** **(भद्रे)** कल्याणकरे **(सौमनसे)** सुमनसि भवे व्यवहारे **(स्याम)**॥४॥

**अन्वयः**-सर्वैर्योऽयं मित्रो सुशेवः सुक्षत्रो राजा वेधा नमस्योऽस्ति यस्य राष्ट्रं सुख्यजनिष्ट तस्य यज्ञियस्य सुमतौ सौमनसे भद्रेऽपि वयं स्याम तथैव सर्वे भवन्तु॥४॥

**भावार्थः**-यथेश्वर आप्ताश्च धर्मे वर्त्तमाना नमस्या भवन्ति तथैव न्यायविनयाभ्यां राष्ट्रपालका राजानः सत्कर्त्तव्याः स्युः। यथा शिष्टाः परमेश्वरस्याऽऽप्तानां च कर्मसु वर्त्तन्ते तथैवाऽस्माभिस्सदैव वर्त्तितव्यम्॥४॥

**पदार्थः**-सबको जो **(अयम्)** यह परमात्मा वा यथार्थवक्ता राजा **(मित्रः)** मित्र **(सुशेवः)** उत्तम सुख का दाता **(सुक्षत्रः)** वा जिसका राज्य देश उत्तम प्रकार सुखी **(राजा)** जो पृथिवी का पालनकर्त्ता **(वेधाः)** बुद्धिमान् **(नमस्यः)** और सत्कार करने योग्य है तथा जिसका राज्य देश सुखी **(अजनिष्ट)** होता है **(तस्य)** उस **(यज्ञियस्य)** सत्य व्यवहार के उत्पन्न करनेवाले की **(सुमतौ)** आज्ञा वा बुद्धि में तथा **(सौमनसे)** श्रेष्ठ मानस व्यवहार और **(भद्रे)** कल्याण करनेवाले व्यवहार में **(अपि)** भी **(वयम्)** हम लोग **(स्याम)** प्रसिद्ध होवें, वैसे ही सब लोग हों॥४॥

**भावार्थः**-जैसे ईश्वर और यथार्थवक्ता पुरुष धर्म में वर्त्तमान हुए नमस्कार करने के योग्य होते हैं, वैसे ही न्याय और विनय से राज्य के पालनकर्त्ता राजा लोग सत्कार करने योग्य होवें और सज्जन लोग परमेश्वर और यथार्थवक्ताओं के कर्मों में वर्त्तमान हैं, वैसे ही हम लोगों को चाहिये कि वर्ताव करें॥४॥

**अथ मित्राय प्रियपदार्थान् दातुमाह॥**

अब मित्र के लिये प्रिय पदार्थ देने को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**म॒हाँ आ॑दि॒त्यो नम॑सोप॒सद्यो॑ यात॒यज्ज॑नो गृण॒ते सु॒शेवः॑।**

**तस्मा॑ ए॒तत्पन्य॑तमाय॒ जुष्ट॑म॒ग्नौ मि॒त्राय॑ ह॒विरा जु॑होत॥५॥५॥**

**म॒हान्। आ॒दि॒त्यः। नम॑सा। उ॒प॒ऽसद्यः॑। या॒त॒यत्ऽज॑नः। गृ॒ण॒ते। सु॒ऽशेवः॑। तस्मै॑। ए॒तत्। पन्य॑ऽतमाय। जुष्ट॑म्। अ॒ग्नौ। मि॒त्राय॑। ह॒विः। आ। जु॒हो॒त॒॥५॥**

**पदार्थः**-**(महान्)** महागुणविशिष्टः **(आदित्यः)** सूर्य्यइव शुभगुणप्रकाशकः **(नमसा)** सत्कारेण **(उपसद्यः)** प्राप्तुं योग्यः **(यातज्जनः)** प्रेरयन् **(गृणते)** स्तुवन्ति **(सुशेवः)** सुसुखः **(तस्मै)** **(एतत्)** **(पन्यतमाय)** अतिशयेन प्रशंसिताय **(जुष्टम्)** प्रीतम् **(अग्नौ)** **(मित्राय)** प्राणवद्वर्त्तमानाय **(हविः)** होतव्यमत्तव्यम् **(आ)** **(जुहोत)** दद्युः॥५॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! य आदित्य इव महान् सुशेवो यातयज्जनो नमसोपसद्यो भवेद्यं सर्वे गृणते तस्मै पन्यतमाय मित्रायाऽग्नौ हविरिवैतज्जुष्टं हविरा जुहोत॥५॥



www.9009.co.in

**भावार्थ:**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। त एव पूज्यास्सूर्य्यवद्विद्याधर्मप्रकाशका आप्ता विद्वांसो ये शुभगुणकर्मसु सर्वान् प्रेरयेयुर्यथर्त्विजोऽग्नौ सुसंस्कृतं हविर्हुत्वा जगत्प्रसादयन्ति तथैव शुभगुणयुक्तेषु विद्यार्थिषु विद्याधर्मौ संस्थाप्य सर्वान् मनुष्यादीन् सुखिनः कुर्वन्ति॥५॥

**पदार्थ:**-हे मनुष्यो! जो **(आदित्यः)** सूर्य्य के सदृश अच्छे गुणों का प्रकाश करनेवाला **(महान्)** बड़े-बड़े गुणों से युक्त **(सुशेवः)** जिसका उत्तम सुख **(यातयज्जनः)** जो प्रेरणा करता हुआ जन **(नमसा)** सत्कार से **(उपसद्यः)** प्राप्त होने योग्य हो और जिसकी सब लोग **(गृणते)** स्तुति करते हैं। **(तस्मै)** उस **(पन्यतमाय)** अत्यन्त प्रशंसायुक्त **(मित्राय)** प्राणों के सदृश वर्त्तमान पुरुष के लिये **(अग्नौ)** अग्नि में **(हविः)** हवन करने तथा खाने योग्य पदार्थ के सदृश **(एतत्)** इस **(जुष्टम्)** प्रिय पदार्थ को **(आ, जुहोत)** देओ॥५॥

**भावार्थ:**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। वे ही पूज्य सूर्य्य के सदृश विद्या और धर्म के प्रकाश करनेवाले यथार्थवक्ता विद्वान् लोग हैं कि जो उत्तम गुण और कर्मों में सब को प्रेरणा करें जैसे ऋत्विक् अर्थात् ऋतु-ऋतु में हवन करनेवाले लोग अग्नि में अच्छे बनाए हुए हवि अर्थात् होम करने योग्य पदार्थ को होम के संसार को प्रसन्न करते हैं, वैसे ही उत्तम गुणों से युक्त विद्यार्थी जनों में विद्या और धर्म को अच्छे प्रकार स्थापन करके सब मनुष्य आदि प्राणियों को सुखी करते हैं॥५॥

**अथ प्रजामित्रराजगुणानाह॥**

अब प्रजा मित्र राजा के गुणों को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**मित्रस्य॑ चर्षणीधृतोऽवो॑ दे॒वस्य॑ सान॒सि। द्यु॒म्नं चि॒त्रश्र॑वस्तमम्॥६॥**

**मि॒त्रस्य॑। च॒र्ष॒णि॒ऽधृत॑:। अव॑:। दे॒वस्य॑। सा॒न॒सि। द्यु॒म्नम्। चि॒त्रऽश्र॑वःऽतमम्॥६॥**

**पदार्थ:**-**(मित्रस्य)** सर्वस्य सुहृदः **(चर्षणीधृतः)** मनुष्याणां धर्तुः **(अवः)** रक्षणादिकम् **(देवस्य)** विदुषो राज्ञः **(सानसि)** पुरातनम् **(द्युम्नम्)** यशःकरं धनं विज्ञानं वा **(चित्रश्रवस्तमम्)** चित्राण्यद्भुतानि श्रवांसि श्रवणान्यन्नानि वा येन तदतिशायितम्॥६॥

**अन्वय:**-हे मनुष्या! यस्य चर्षणीधृतो मित्रस्य देवस्य सानस्यवश्चित्रश्रवस्तमं द्युम्नं चास्ति स एव प्रजा रक्षितुं शक्नोति॥६॥

**भावार्थ:**-ये सनातनं विद्याधनं गृहीत्वा सर्वाः प्रजा रक्षन्ति तेऽत्राऽमुत्र च सुखं लभन्ते॥६॥

**पदार्थ:**-हे मनुष्यो! जिस **(चर्षणीधृतः)** मनुष्यों के धारण करनेवाले **(मित्रस्य)** सबके मित्र **(देवस्य)** विद्वान् राजा का **(सानसि)** प्राचीन **(अवः)** रक्षा आदि **(चित्रश्रवस्तमम्)** जिसके अत्यन्त होने से अद्भुत श्रवण वा अन्न सिद्ध होते **(द्युम्नम्)** और जो यश करनेवाला धन वा विज्ञान है, वही प्रजाओं की रक्षा कर सकता है॥६॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-जो लोग अनादि काल से सिद्ध विद्याधन का ग्रहण करके सम्पूर्ण प्रजाओं की रक्षा करते हैं, वे इस लोक और परलोक में सुख को प्राप्त होते हैं॥६॥

**अथ मित्रत्वेनेश्वरस्य पदार्थरचनं तत्सेवनं चाह॥**

अब मित्रपन से ईश्वर के पदार्थरचन और ईश्वरसेवन को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अ॒भि यो म॑हि॒ना दिवं॑ मि॒त्रो ब॒भूव॑ स॒प्रथाः॑। अ॒भि श्रवो॑भिः पृथि॒वीम्॥७॥**

**अ॒भि। यः। म॒हि॒ना। दिव॑म्। मि॒त्रः। ब॒भूव॑। स॒ऽप्रथाः॑। अ॒भि। श्रव॑ःऽभिः। पृ॒थि॒वीम्॥७॥**

**पदार्थः**-(**अभि**) आभिमुख्ये (**यः**) (**महिना**) महिम्ना (**दिवम्**) प्रकाशमयं सूर्य्यम् (**मित्रः**) सखेव वर्त्तमानः (**बभूव**) भवति (**सप्रथाः**) प्रथसा विस्तृतेन जगता सह वर्त्तमानः (**अभि**) (**श्रवोभिः**) अन्नादिभिस्सह (**पृथिवीम्**) भूमिम्॥७॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यस्सप्रथा मित्रो जगदीश्वरः स्वस्य महिना दिवं निर्मायाऽभि बभूव श्रवोभिः पृथिवीं रचयित्वाऽभि बभूव तं नित्यं सेवध्वम्॥७॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यो महासामर्थ्येन सूर्य्यपृथिव्यादिकं सविस्तरं जगन्निर्मायान्तर्यामिरूपेण सर्वं विज्ञाय धृत्वा नियमयति स एवोपासितुं योग्यः॥७॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! (**यः**) जो (**सप्रथाः**) विस्तारयुक्त जगत् के साथ वर्त्तमान वा (**मित्रः**) मित्र के सदृश वर्त्तमान जगदीश्वर अपनी (**महिना**) महिमा से (**दिवम्**) प्रकाशमय सूर्य को रच के (**अभि**) सम्मुख (**बभूव**) होता वा (**श्रवोभिः**) अन्न आदि पदार्थों के साथ (**पृथिवीम्**) भूमि को रच के (**अभि**) सम्मुख होता है, उसकी नित्य सेवा करो॥७॥

**भावार्थः**- हे मनुष्यो! जो बड़े सामर्थ्य से सूर्य्य और पृथिवी आदि विस्तार सहित संसार को रच और अन्तर्य्यामिरूप से सबको जान और धारण करके नियम में लाता है, वही उपासना करने के योग्य है॥७॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**मि॒त्राय॒ पञ्च॑ येमिरे॒ जना॑ अ॒भिष्टि॑शवसे। स दे॒वान् विश्वा॑न् बिभर्ति॥८॥**

**मि॒त्राय॑। पञ्च॑। ये॒मि॒रे॒। जना॑ः। अ॒भिष्टि॑ऽशवसे। सः। दे॒वान्। विश्वा॑न्। बि॒भ॒र्ति॒॥८॥**

**पदार्थः**-(**मित्राय**) सखेव सर्वेषां सुखप्रदाय (**पञ्च**) प्राणादयः (**येमिरे**) यच्छन्ति (**जनाः**) विद्वांसः (**अभिष्टिशवसे**) अभीष्टबलाय (**सः**) (**देवान्**) सूर्य्यादीन् (**विश्वान्**) सर्वान् (**बिभर्ति**) धरति पुष्णाति॥८॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! इमे पञ्च प्राणा इव जना यस्मा अभिष्टिशवसे मित्राय येमिरे स विश्वान् देवान् बिभर्तीति विजानीत॥८॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यथा निगृहीताः प्राणा इन्द्रियाणि निगृह्णन्ति तथैव योगिनो जना समाधिना परमात्मानं प्राप्नुवन्ति॥८॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! ये **(पञ्च)** पाँच प्राण आदि के सदृश **(जनाः)** विद्वान् लोग जिस **(अभिष्टिशवसे)** अपेक्षित बलयुक्त **(मित्राय)** मित्र के सदृश सबको सुख देनेवाले परमात्मा के लिये **(येमिरे)** यमादि साधन साधते हैं। **(सः)** वह **(विश्वान्)** समस्त **(देवान्)** सूर्य्य आदिकों को **(बिभर्ति)** धारण तथा पोषण करता है, ऐसा जानो॥८॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे रोके गये प्राणवायु इन्द्रियों को रोकते हैं, वैसे ही योगीजन समाधि से परमात्मा को प्राप्त होते हैं॥८॥

**अथ मित्रत्वेनेश्वरोपासनविषयमाह॥**

अब मित्रत्व से ईश्वरोपासना विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**मि॒त्रो दे॒वेष्वा॒युषु॒ जना॑य वृ॒क्तब॑र्हिषे। इष॑ इ॒ष्टव्र॑ता अकः॥९॥६॥**

**मि॒त्रः। दे॒वेषु॑। आ॒युषु॑। जना॑य। वृ॒क्तऽब॑र्हिषे। इष॑ः। इ॒ष्टऽव्र॑ताः। अ॒क॒रित्य॑कः॥९॥**

**पदार्थः**-**(मित्रः)** सखा **(देवेषु)** दिव्येषु **(आयुषु)** जीवनेषु **(जनाय)** मनुष्याद्याय **(वृक्तबर्हिषे)** वृक्तं बर्हिरुदकं येन तस्मै **(इषः)** इच्छाः **(इष्टव्रताः)** इष्टकर्माणः **(अकः)** करोति॥९॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यो मित्र ईश्वरो वृक्तबर्हिषे जनाय देवेष्वायुष्विष्टव्रता इषोऽकस्तं सर्वे भजध्वम्॥९॥

**भावार्थः**-यः परमात्माऽन्यायवर्जितान् भक्तान् मनुष्यान्त्सिद्धेच्छान् करोति स एव सर्वैर्ध्यातव्य इति॥९॥

अत्र मित्रादिगुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इत्येकोनषष्टितमं सूक्तं षष्ठो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो **(मित्रः)** ईश्वर **(वृक्तबर्हिषे)** छोड़ा है जल जिसने उस **(जनाय)** मनुष्य आदि के लिये **(देवेषु)** उत्तम **(आयुषु)** जीवनों में **(इष्टव्रताः)** चाहे हुए काम जिनसे होते उनकी **(इषः)** इच्छाओं को **(अकः)** पूर्ण करता है, उसकी सब लोग सेवा करो॥९॥

**भावार्थः**-जो परमात्मा अन्याय से रहित भक्त मनुष्यों को सिद्ध इच्छावाले करता है, वही सब लोगों को ध्यान करने योग्य है॥९॥



www.9009.co.in

[यह उनसठवां सूक्त और छठा वर्ग समाप्त हुआ।।]



www.9009.co.in

**अथ सप्तर्चस्य षष्टितमस्य सूक्तस्य विश्वामित्र ऋषिः। ऋभवो देवताः। १-३ जगती। ४, ५ निचृज्जगती। ६ विराड्जगती। ७ भुरिग्जगती छन्दः। निषादः स्वरः॥**

*अथ राजविषयमाह॥*

अब सात ऋचावाले साठवें सूक्त का आरम्भ है। उसके प्रथम मन्त्र में राजविषय का उपदेश करते हैं॥

**इहेह वो मनसा बन्धुता नर उशिजो जग्मुरभि तानि वेदसा।**

**याभिर्मायाभिः प्रतिजूतिवर्पसः सौधन्वना यज्ञियं भागमानश॥ १॥**

**इहऽइह। वः। मनसा। बन्धुता। नरः। उशिजः। जग्मुः। अभि। तानि। वेदसा। याभिः। मायाभिः। प्रतिजूतिऽवर्पसः। सौधन्वनाः। यज्ञियम्। भागम्। आनश॥ १॥**

**पदार्थः-(इहेह)** अस्मिन्नस्मिन् व्यवहारे **(वः)** युष्माकम् **(मनसा)** चित्तेन **(बन्धुता)** बन्धूनां भावः **(नरः)** नायकाः **(उशिजः)** कामयमानाः **(जग्मुः)** **(अभि)** **(तानि)** मित्रत्वयुक्तानि कर्माणि **(वेदसा)** वित्तेन **(याभिः)** **(मायाभिः)** प्रज्ञाभिः **(प्रतिजूतिवर्पसः)** प्रतीतं जूतिर्वेगवद्वर्पो रूपं येषान्ते **(सौधन्वनाः)** शोभनं धन्वमन्तरिक्षं यस्य तदपत्यानि तस्य पुत्राः **(यज्ञियम्)** यज्ञाऽर्हम् **(भागम्)** **(आनश)** आनशिरे व्याप्नुवन्ति। अत्र व्यत्ययेन परस्मैपदम् पुरुषव्यत्ययश्च॥ १॥

**अन्वयः**-हे नरो! या उशिजो मनसेहेह वो या बन्धुता तया तान्यभिजग्मुर्याभिर्मायाभिः प्रतिजूतिवर्पसो वेदसा सौधन्वनाः सन्तो यज्ञियं भागमानश ते भाग्यशालिनो भवन्ति॥ १॥

**भावार्थः**-ये मनुष्या इह जगति सर्वैस्सह भ्रातृत्वं कृत्वा बुद्ध्या धनेन च सुखं वर्द्धयन्ति तेऽलङ्कामा जायन्ते॥ १॥

**पदार्थः**-हे **(नरः)** नायक लोगो! जो **(उशिजः)** कामना करते हुए **(मनसा)** चित्त से **(इहेह)** इस-इस व्यवहार में **(वः)** आप लोगों का जो **(बन्धुता)** बन्धुपन उससे **(तानि)** उन मित्रपने से युक्त कामों को **(अभि, जग्मुः)** प्राप्त होते हैं और **(याभिः)** जिन **(मायाभिः)** बुद्धियों से **(प्रतिजूतिवर्पसः)** प्रतीत हुआ वेगयुक्त रूप जिनका वे **(वेदसा)** धन से **(सौधन्वनाः)** उत्तम अन्तरिक्ष जिसका उसके पुत्र होते हुए **(यज्ञियम्)** यज्ञ के योग्य **(भागम्)** अंश को **(आनश)** व्याप्त होते, और [वे] भाग्यशाली होते हैं॥ १॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य इस संसार में सबके साथ भाईपन करके बुद्धि और धन से सुख बढ़ाते, वे पूर्ण मनोरथवाले होते हैं॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी राजशिक्षा विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**याभिः शचीभिश्चमसाँ अपिंशत यया धिया गामरिणीत चर्मणः।**



www.9009.co.in

**येन हरी मनसा निरतक्षत तेन देवत्वमृभवः समानश॥२॥**

**याभिः। शचीभिः। चमसान्। अपिंशत। यया। धिया। गाम्। अरिणीत। चर्मणः। येन। हरी इति। मनसा। निःऽअतक्षत। तेन। देवऽत्वम्। ऋभवः। सम्। आनश॥२॥**

**पदार्थः-(याभिः) (शचीभिः)** प्रज्ञाभिः कर्मभिर्वा **(चमसान्)** मेघान् **(अपिंशत)** अवयवयन्ति। अत्र **बहुलं छन्दसी**ति शब्विकरणोऽपि। **(यया) (धिया)** प्रज्ञया **(गाम्)** धेनुम् **(अरिणीत)** प्राप्नुवन्ति **(चर्मणः)** चर्मप्राप्तेः **(येन) (हरी)** धारणाकर्षणौ **(मनसा)** विज्ञानेन **(निरतक्षत)** नितरां विस्तृणन्ति **(तेन) (देवत्वम्)** विद्वत्वम् **(ऋभवः)** मेधाविनः **(सम्) (आनश)** सम्यग्व्याप्नुत॥२॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! ऋभवो याभिः शचीभिश्चमसानपिंशत यया धिया चर्मणो गामरिणीत येन मनसा हरी निरतक्षत तेन यूयं देवत्वं समानश॥२॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यथा मेधाविनोऽत्र वर्त्तेयुस्तथैव वर्त्तित्वा विद्वांसो भवत॥२॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(ऋभवः)** बुद्धिमान् लोग **(याभिः)** जिन **(शचीभिः)** बुद्धियों वा कर्मों से **(चमसान्)** मेघों को **(अपिंशत)** अवयवोंवाले करते हैं **(यया)** जिस **(धिया)** बुद्धि के साथ **(चर्मणः)** चर्म की प्राप्ति से **(गाम्)** धेनु को **(अरिणीत)** प्राप्त होते हैं **(येन)** जिस **(मनसा)** विज्ञान से **(हरी)** साथ धारण और आकर्षण का **(निरतक्षत)** निरन्तर विस्तार करते हैं **(तेन)** उससे आप लोग **(देवत्वम्)** विद्वान् पने को **(सम्, आनश)** उत्तम प्रकार व्याप्त होओ॥२॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे बुद्धिमान् लोग यहाँ वर्त्ताव करें, वैसे ही वर्त्ताव करके विद्वान् होओ॥२॥

**अथ सर्वाधीशस्य परमात्मनः सखित्वफलमाह॥**

अब सर्वाधीश परमात्मा की मित्रता का फल अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**इन्द्रस्य सख्यमृभवः समानशुर्मनोर्नपातो अपसो दधन्विरे।**
**सौधन्वनासो अमृतत्वमेरिरे विष्ट्वी शमीभिः सुकृतः सुकृत्यया॥३॥**

**इन्द्रस्य। सख्यम्। ऋभवः। सम्। आनशुः। मनोः। नपातः। अपसः। दधन्विरे। सौधन्वनासः। अमृतऽत्वम्। आ। ईरिरे। विष्ट्वी। शमीभिः। सुऽकृतः। सुऽकृत्यया॥३॥**

**पदार्थः-(इन्द्रस्य)** परमैश्वर्ययुक्तस्य परमात्मनः **(सख्यम्)** मित्रत्वम् **(ऋभवः)** मेधाविनः **(सम्) (आनशुः)** सम्यक् प्राप्नुयुः। अत्राऽपि व्यत्ययेन परस्मैपदम्। **(मनोः)** मननशीलस्य **(नपातः)** न विद्यते पातो यस्य **(अपसः)** कर्माणि **(दधन्विरे)** दधति **(सौधन्वनासः)** शोभनज्ञानस्य पुत्राः **(अमृतत्वम्) (आ) (ईरिरे)** प्राप्नुवन्ति **(विष्ट्वी)** कर्म **(शमीभिः)** कर्मभिः **(सुकृतः)** ये सुष्ठु कुर्वन्ति ते **(सुकृत्यया)** धर्मक्रियया॥३॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-य ऋभव इन्द्रस्य सख्यं समानशुर्यस्य मनोर्नपातोऽस्मा अपसो दधन्विरे ते सौधन्वनासः शमीभिर्विष्ट्वी कृत्वा सुकृत्यया सुकृतः सन्तोऽमृतत्वमेरिरे॥३॥

**भावार्थः**-ये परमेश्वरे प्रीतिं तदाज्ञाभङ्गाद्भयं धर्म्यकर्माचरणं कुर्वन्ति त एव मोक्षमाऽऽप्नुवन्ति॥३॥

**पदार्थः**-जो **(ऋभवः)** बुद्धिमान् लोग **(इन्द्रस्य)** अत्यन्त ऐश्वर्य से युक्त परमात्मा की **(सख्यम्)** मित्रता को **(सम्, आनशुः)** उत्तम प्रकार प्राप्त होवें तथा जिस **(मनोः)** मनन करनेवाले का **(नपातः)** नहीं गिरना होता उसके लिये **(अपसः)** कर्मों को **(दधन्विरे)** धारण करते हैं वे **(सौधन्वनासः)** उत्तम ज्ञान से युक्त करनेवाले **(शमीभिः)** कर्मों के साथ **(विष्ट्वी)** कर्म को करके **(सुकृत्यया)** धर्म की क्रिया से **(सुकृतः)** उत्तम कर्म करनेवाले होते हुए **(अमृतत्वम्)** मोक्षपदवी को **(आ, ईरिरे)** प्राप्त होते हैं॥३॥

**भावार्थः**-जो लोग परमेश्वर में प्रीति और उसकी आज्ञा के भङ्ग होने से भय तथा धर्म का आचरण करते हैं, वे ही मोक्षपदवी को प्राप्त होते हैं॥३॥

**पुना राज्यविषयमाह॥**

फिर राज्य विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**इन्द्रेण याथ सरथं सुते सचाँ अथो वशानां भवथा सह श्रिया।**

**न वः प्रतिमै सुकृतानि वाघतः सौधन्वना ऋभवो वीर्याणि च॥४॥**

**इन्द्रेण। याथ। सऽरथम्। सुते। सचा। अथो इति। वशानाम्। भवथ। सह। श्रिया। न। वः। प्रतिऽमै। सुऽकृतानि। वाघतः। सौधन्वनाः। ऋभवः। वीर्याणि। च॥४॥**

**पदार्थः**-**(इन्द्रेण)** परमैश्वर्येण **(याथ)** गच्छथ **(सरथम्)** रथेन सह वर्त्तमानं सैन्यम् **(सुते)** निष्पन्ने राज्ये **(सचा)** विज्ञानेन **(अथो)** आनन्तर्ये **(वशानाम्)** कमनीयानाम् **(भवथ)**। अत्र **संहितायामिति** दीर्घः। **(सह)** **(श्रिया)** **(न)** **(वः)** **(प्रतिमै)** प्रतिमातुम् **(सुकृतानि)** धर्म्याणि कर्माणि **(वाघतः)** विपश्चितः **(सौधन्वनाः)** आप्तस्य पुत्राः **(ऋभवः)** मेधाविनः **(वीर्याणि)** बलानि **(च)**॥४॥

**अन्वयः**-हे सौधन्वना! वाघत ऋभवो यूयं सुते सचेन्द्रेण स सरथं याथ। अथो वशानां श्रिया सह भवथ। येन वः सुकृतानि वीर्याणि च प्रतिमै न भवेयुः॥४॥

**भावार्थः**-ये विद्वांसो भूत्वा धर्म्येण प्रयतन्ते ते श्रीमन्तो भूत्वाऽतुलानि धनानि प्राप्य वीर्याणि वर्धयन्ति॥४॥

**पदार्थः**-हे **(सौधन्वनाः)** यथार्थवक्ता पुरुष के पुत्रो! **(वाघतः)** विद्वान् **(ऋभवः)** बुद्धिमान् आप लोग **(सुते)** उत्पन्न हुए राज्य में **(सचा)** विज्ञान और **(इन्द्रेण)** अत्यन्त ऐश्वर्य्य से **(सरथम्)** रथ के साथ वर्त्तमान सेना को **(याथ)** प्राप्त हूजिये, **(अथो)** इसके अनन्तर **(वशानाम्)** कामना करने योग्यों की



www.9009.co.in

**(श्रिया)** लक्ष्मी के **(सह)** साथ **(भवथ)** हूजिये जिससे **(वः)** आप लोगों के **(सुकृतानि)** धर्मयुक्त कर्म्म **(वीर्याणि, च)** और पराक्रम **(प्रतिमै)** समान **(न)** नहीं होवें॥४॥

**भावार्थः**-जो विद्वान् होकर धर्मयुक्त आचरण से प्रयत्न करते हैं, वे लक्ष्मीवान् और अतुल धनों को प्राप्त होकर पराक्रमों को बढ़ाते हैं॥४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**इन्द्र॑ ऋ॒भुभि॑र्वा॒जव॑द्भिः॒ सम॑ुक्षितं सु॒तं सोम॒मा वृ॑षस्वा॒ गभ॑स्त्योः।**

**धि॒येषि॒तो म॑घवन् दा॒शुषो॑ गृ॒हे सौ॑धन्व॒नेभि॑ः स॒ह म॑त्स्वा नृ॒भि॑ः॥५॥**

**इन्द्र॑। ऋ॒भुऽभि॑ः। वा॒जव॑त्ऽभिः। सम्ऽउ॑क्षितम्। सु॒तम्। सोम॑म्। आ। वृ॒ष॒स्व॒। गभ॑स्त्योः। धि॒या। इ॒षि॒तः। म॒घ॒ऽव॒न्। दा॒शुष॑ः। गृ॒हे। सौ॒ध॒न्व॒नेभि॑ः। स॒ह। म॒त्स्व॒। नृ॒ऽभि॑ः॥५॥**

**पदार्थः**-**(इन्द्र)** परमैश्वर्यवन् राजन्! **(ऋभुभिः)** मेधाविभिः **(वाजवद्भिः)** प्रशस्तान्नाद्यैश्वर्य-युक्तैः सह **(समुक्षितम्)** सम्यक्सिक्तम् **(सुतम्)** निष्पादितम् **(सोमम्)** ऐश्वर्यम् **(आ)** **(वृषस्व)** बलिष्ठो भव। अत्र **संहितायामिति** दीर्घः। **(गभस्त्योः)** हस्तयोः **(धिया)** प्रज्ञया **(इषितः)** प्रेरितः **(मघवन्)** प्रशंसितधनयुक्त **(दाशुषः)** दातुः। **(गृहे)** **(सौधन्वनेभिः)** मेधाविपुत्रैः **(सह)** **(मत्स्व)** आनन्द। अत्र **द्व्यचोऽतस्तिङ** इति दीर्घः। **(नृभिः)** विद्यादिव्यवहारेषु नायकैः॥५॥

**अन्वयः**-हे मघवन्निन्द्र! धियेषितस्त्वं वाजवद्भिर्ऋभुभिस्सह समुक्षितं सुतं सोमं गभस्त्योर्बलेना वृषस्व। सौधन्वनेभिर्नृभिस्सह दाशुषो गृहे मत्स्व॥५॥

**भावार्थः**-राजा प्राज्ञैर्जनैस्सहितेन प्रजाः संरक्ष्य न्यायेनैश्वर्यमुन्नीय राजकरदातॄनानन्द्य नायकैः सह प्रजाः सदैव रञ्जनीयाः॥५॥

**पदार्थः**-हे **(मघवन्)** प्रशंसितधनयुक्त **(इन्द्र)** अत्यन्त ऐश्वर्यवाले **(धिया)** बुद्धि से **(इषितः)** प्रेरित आप **(वाजवद्भिः)** प्रशंसनीय अन्न आदि ऐश्वर्यों से युक्त **(ऋभुभिः)** बुद्धिमानों के साथ **(समुक्षितम्)** उत्तम प्रकार सींचे **(सुतम्)** उत्पन्न किये गये **(सोमम्)** ऐश्वर्य को **(गभस्त्योः)** हाथों के बल से **(आ, वृषस्व)** सब प्रकार पुष्टि कीजिये, **(सौधन्वनेभिः)** बुद्धिमानों के पुत्रों और **(नृभिः)** विद्या आदि व्यवहारों में अग्रगन्ता जनों के **(सह)** साथ **(दाशुषः)** देनेवाले के **(गृह)** घर में **(मत्स्व)** आनन्दित हूजिये॥५॥

**भावार्थः**-राजा को चाहिये कि बुद्धिमान् जनों के सहित प्रजाओं की रक्षा और न्याय से ऐश्वर्य की वृद्धि करके तथा राज्य के कर देनेवालों को आनन्दित करके नायकों के साथ प्रजाओं को सदैव आनन्दित करें॥५॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**



www.9009.co.in

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**इन्द्र॑ ऋभुमान् वाज॑वान् मत्स्वे॒ह नो॒ऽस्मिन्त्सव॑ने॒ शच्या॑ पुरुष्टुत।**

**इ॒मानि॒ तुभ्यं॒ स्वस॑राणि येमिरे व्र॒ता दे॒वानां॒ मनु॑षश्च॒ धर्म॑भिः॥ ६॥**

**इन्द्र॑। ऋ॒भु॒ऽमान्। वाज॑ऽवान्। म॒त्स्व॒। इ॒ह। नः॒। अ॒स्मिन्। सव॑ने। शच्या॑। पु॒रु॒ऽस्तु॒त॒। इ॒मानि॑। तुभ्य॑म्। स्वस॑राणि। ये॒मि॒रे॒। व्र॒ता। दे॒वाना॑म्। मनु॑षः। च॒। धर्म॑ऽभिः॥ ६॥**

**पदार्थः-(इन्द्र)** परमैश्वर्यवन् राजन् **(ऋभुमान्)** बहव ऋभवो मेधाविनो विद्यन्ते यस्य सः **(वाजवान्)** बहवो वाजा अन्नाद्यैश्वर्ययोगा विद्यन्ते यस्य सः **(मत्स्व)** आनन्द **(इह)** अस्मिन् राज्ये **(नः)** अस्माकम् **(अस्मिन्)** **(सवने)** ऐश्वर्ययुक्ते राज्ये **(शच्या)** प्रज्ञया वाण्या वा **(पुरुष्टुत)** बहुभिः प्रशंसित **(इमानि)** वर्त्तमानानि **(तुभ्यम्)** **(स्वसराणि)** दिनानि **(येमिरे)** यच्छन्तु **(व्रता)** सुशीलानि कर्माणि **(देवानाम्)** विदुषाम् **(मनुषः)** मनुष्यान् **(च)** **(धर्मभिः)** धर्मैः॥ ६॥

**अन्वयः**-हे शच्या पुरुष्टुतेन्द्र! त्वमिह ऋभुमान् वाजवान् सन्नोऽस्मिन् सवने मत्स्व यस्मै तुभ्यमिमानि स्वसराणि येमिरे स त्वं देवानां धर्मभिस्सहितानि व्रता गृहीत्वा मनुषश्चानन्दय॥ ६॥

**भावार्थः**-हे राजंस्त्वं सदा धर्मात्मप्रज्ञसङ्गी मूर्खासङ्गी भूत्वैकं क्षणमपि व्यर्थं मा नय। यथाप्ताः पक्षपातं विहाय सर्वैस्सह निष्कपटत्वेन वर्त्तन्ते तथैव वर्त्तस्व॥ ६॥

**पदार्थः**-हे **(शच्या)** बुद्धि वा वाणी से **(पुरुष्टुत)** बहुतों से प्रशंसा किये गये **(इन्द्र)** अत्यन्त ऐश्वर्यवान् राजन्! आप **(इह)** इस राज्य में **(ऋभुमान्)** बहुत बुद्धिमान् और **(वाजवान्)** बहुत अन्न आदि ऐश्वर्ययुक्त होते हुए **(नः)** हम लोगों के **(अस्मिन्)** इस **(सुवने)** ऐश्वर्ययुक्त राज्य में **(मत्स्व)** आनन्दित होओ जिन **(तुभ्यम्)** आपके लिये **(इमानि)** यह वर्त्तमान **(स्वसराणि)** दिन **(येमिरे)** नियत होते हैं, वह आप **(देवानाम्)** विद्वानों के **(धर्मभिः)** धर्मों के सहित **(व्रता)** सुशील कर्मों को ग्रहण करके **(मनुषः)** मनुष्यों को **(च)** भी आनन्दित करो॥ ६॥

**भावार्थः**-हे राजन्! आप सदा धर्मात्मा और बुद्धिमानों के सङ्गी और मूर्खों के सङ्ग के त्यागी होकर एक क्षण भी व्यर्थ न व्यतीत करो और जैसे यथार्थवक्ता पुरुष पक्षपात का त्याग करके सबके साथ कपटरहित वर्त्ताव करते हैं, वैसा ही वर्त्ताव करो॥ ६॥

**अथ राजप्रसंगेनामात्यप्रजाकर्माण्याह॥**

अब राजप्रसङ्ग से अमात्य और प्रजाकृत्य को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**इन्द्र॑ ऋ॒भुभि॑र्वा॒जिभि॑र्वा॒जय॑न्नि॒ह स्तोमं॑ जरि॒तुरुप॑ याहि य॒ज्ञिय॑म्।**

**श॒तं केते॑भिरिषि॒रेभि॑रा॒यवे॑ स॒हस्र॑णीथो अध्व॒रस्य॒ होम॑नि॥ ७॥ ७॥**



www.9009.co.in

**इन्द्र॑। ऋ॒भुऽभिः॑। वा॒जिऽभिः॑। वा॒जय॑न्। इ॒ह। स्तोम॑म्। ज॒रि॒तुः। उप॑। या॒हि॒। य॒ज्ञिय॑म्। श॒तम्। केतै॑भिः। इ॒षि॒रेभिः॑। आ॒यवे॑। स॒हस्र॑ऽनीथः। अ॒ध्व॒रस्य॑। होम॑नि॥७॥**

**पदार्थः**-(**इन्द्र**) परमैश्वर्यप्रद नरेश (**ऋभुभिः**) प्राज्ञैः (**वाजिभिः**) वेगादिगुणयुक्तैः (**वाजयन्**) प्रापयन् (**इह**) अस्मिन् संसारे (**स्तोमम्**) स्तुतिम् (**जरितुः**) स्तावकस्य विदुषः (**उप**) (**याहि**) उपाऽऽगच्छ (**यज्ञियम्**) राज्यव्यवहारनिष्पादकम् (**शतम्**) असंख्यम् (**केतेभिः**) प्रज्ञाभिः (**इषिरेभिः**) इष्टैः (**आयवे**) मनुष्याय (**सहस्रणीथः**) सहस्रैरसंख्यैर्धार्मिकैर्नीथः प्राप्तः (**अध्वरस्य**) न्यायव्यवहारस्य (**होमनि**) आदातव्ये व्यवहारे॥७॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! त्वमिह वाजिभिर्ऋभुभिस्सह वाजयन्त्सन् जरितुः स्तोममुपयाह्यायव इषिरेभिः केतेभिः सहस्रणीथः सन्नध्वरस्य होमनि शतं यज्ञियमुपयाहि॥७॥

**भावार्थः**-हे राजँस्त्वमत्र राष्ट्रे मनुष्याणां हितायाऽसंख्यानि शुभानि कर्माणि कृत्वा धार्मिकैरमात्यैरध्यापकोपदेशकैः सहाऽऽप्तैः कृतां प्रशंसां प्राप्य परजन्मन्यपि मोक्षं प्राप्नुहीति॥७॥

अत्र राजामात्यप्रजाकृत्यवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति षष्टितमं सूक्तं सप्तमो वर्गश्च समाप्तः**

**पदार्थः**-हे (**इन्द्र**) अत्यन्त ऐश्वर्य के देनेवाले मनुष्यों के स्वामिन्! आप (**इह**) इस संसार में (**वाजिभिः**) वेग आदि गुणों से युक्त (**ऋभुभिः**) बुद्धिमानों के साथ (**वाजयन्**) प्राप्त कराये हुए (**जरितुः**) स्तुति करनेवाले विद्वान् की (**स्तोमम्**) स्तुति को (**उप, याहि**) प्राप्त हूजिये। और (**आयवे**) मनुष्य के लिये (**इषिरेभिः**) इष्ट (**केतेभिः**) बुद्धियों से (**सहस्रणीथः**) असंख्य धार्मिकों से प्राप्त होते हुए (**अध्वरस्य**) न्यायव्यवहार के (**होमनि**) ग्रहण करने योग्य व्यवहार में (**शतम्**) असंख्य (**यज्ञियम्**) राज्यव्यवहार के उत्पन्न करनेवाले के समीप प्राप्त हूजिये॥७॥

**भावार्थः**-हे राजन्! आप इस राज्य में मनुष्यों के हित के लिये असंख्य उत्तम कर्मों को करके धार्मिक मन्त्री जन और उपदेशकों के साथ यथार्थवक्ता पुरुषों से की हुई प्रशंसा को प्राप्त होकर अगले जन्म में भी मोक्ष को प्राप्त हूजिये॥७॥

इस सूक्त में राजा, मन्त्री और प्रजा के कृत्य वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्तार्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह साठवां सूक्त और सातवां वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

**अथ सप्तर्चस्यैकाधिकषष्टितमस्य सूक्तस्य विश्वामित्र ऋषिः। उषा देवता। १, ५, ७ त्रिष्टुप्। २ विराट् त्रिष्टुप्। ६ निचृत्त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः। ३, ४ भुरिक् पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः॥**

*अथ प्रातर्वेलोपमया स्त्रीगुणानाह॥*

अब सात ऋचावाले एकसठवें सूक्त का आरम्भ है। उसके प्रथम मन्त्र में प्रात:काल की वेला की उपमा से स्त्री के गुणों को कहते हैं॥

**उषो वाजेन वाजिनि प्रचेताः स्तोमं जुषस्व गृणतो मघोनि।**

**पुराणी देवि युवतिः पुरंधिरनु व्रतं चरसि विश्ववारे॥१॥**

**उषः। वाजेन। वाजिनि। प्रऽचेताः। स्तोमम्। जुषस्व। गृणतः। मघोनि। पुराणी। देवि। युवतिः। पुरम्ऽधिः। अनु। व्रतम्। चरसि। विश्वऽवारे॥१॥**

**पदार्थः**-(**उष**) उषर्वद्वर्त्तमाने (**वाजेन**) विज्ञानेन (**वाजिनि**) विज्ञानवती (**प्रचेताः**) प्रकृष्टतया सदर्थज्ञापिका (**स्तोमम्**) श्लाघाम् (**जुषस्व**) (**गृणतः**) स्तोतुः (**मघोनि**) परमधनयुक्ते (**पुराणी**) पुरा नवीना (**देवि**) कमनीये (**युवतिः**) पूर्णचतुर्विंशतिवर्षा (**पुरन्धिः**) या बहूञ्छुभगुणान् धरति (**अनु**) आनुकूल्ये (**व्रतम्**) कर्म (**चरसि**) (**विश्ववारे**) सर्वतो वरणीये॥१॥

**अन्वयः**-हे वाजिनि मघोनि देवि विश्ववारे स्त्रि! त्वमुष इव वाजेन प्रचेताः सती गृणतो मम स्तोमं जुषस्व यतः पुराणी पुरन्धिर्युवतिस्सती व्रतमनु चरसि तस्माद्धृद्यासि॥१॥

**भावार्थः**-हे स्त्रियो! यथोषसः सर्वान् प्राणिनः प्रबोध्य कार्य्येषु प्रवर्त्तयन्ति तथैव पतिव्रता भूत्वा पतिभिस्सहाऽऽनुकूल्येन वर्त्तित्वा प्रशंसिता भवत॥१॥

**पदार्थः**-हे (**वाजिनि**) विज्ञानवाली (**मघोनि**) अत्यन्त धन से युक्त (**देवि**) सुन्दर (**विश्ववारे**) सब प्रकार वरने योग्य स्त्री! तुम (**उषः**) प्रातर्वेला के सदृश वर्त्तमान (**वाजेन**) विज्ञान के साथ (**प्रचेताः**) उत्तमता से सत्य अर्थ की जनानेवाली होती हुई (**गृणतः**) मुझ स्तुति करनेवाले की (**स्तोमम्**) प्रशंसा का (**जुषस्व**) सेवन करो, जिससे कि (**पुराणी**) प्रथम नवीन (**पुरन्धिः**) बहुत उत्तम गुणों को धारण करनेवाली (**युवतिः**) पूर्ण चौबीस वर्षवाली हुई (**व्रतम्**) कर्म को (**अनु**) अनुकूलता में (**चरसि**) करती हो, इससे हृदयप्रिय हो॥१॥

**भावार्थः**-हे स्त्रियो! जैसे प्रातर्वेला सम्पूर्ण प्राणियों को जगाय कार्य्यों में प्रवृत्त करती है, वैसे ही पतिव्रता होकर पतियों के साथ अनुकूलता से वर्ति [कर] प्रशंसित होओ॥१॥

**पुनस्तमेव विषयं प्रकारान्तरेणाह॥**

फिर उसी विषय को प्रकारान्तर से अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**उषो देव्यमर्त्या वि भाहि चन्द्ररथा सूनृता ईरयन्ती।**



www.9009.co.in

**आ त्वा वहन्तु सुयमासो अश्वा हिरण्यवर्णां पृथुपाजसो ये॥२॥**

**उषः। देवि। अमर्त्या। वि। भाहि। चन्द्रऽरथा। सूनृताः। ईरयन्ती। आ। त्वा। वहन्तु। सुऽयमासः। अश्वाः। हिरण्यऽवर्णाम्। पृथुऽपाजसः। ये॥२॥**

**पदार्थः**-(**उषः**) उषर्वद्वर्त्तमाने (**देवि**) सुशोभिते (**अमर्त्या**) मरणधर्मरहिता (**वि**) (**भाहि**) (**चन्द्ररथा**) चन्द्र इव रथो यस्याः (**सूनृता**) सुष्ठु सत्याः क्रियाः (**ईरयन्ती**) प्रेरयन्ती (**आ**) (**त्वा**) त्वाम् (**वहन्तु**) (**सुयमासः**) सुष्ठुनियामकाः (**अश्वाः**) व्याप्ताः किरणाः (**हिरण्यवर्णाम्**) तेजोमयीम् (**पृथुपाजसः**) बहुबलाः (**ये**)॥२॥

**अन्वयः**-हे देव्युषर्वत्सूनृताः प्रेरयन्ती चन्द्ररथा अमर्त्या सती विभाहि। ये पृथुपाजसः सुयमासो हिरण्यवर्णामश्वा इव त्वाऽऽवहन्तु तान् सुखेन त्वं विभाहि॥२॥

**भावार्थः**-यथा चन्द्रयानोषास्तेजोमयी भूत्वा सर्वाञ्जागरयति तथैवोत्तमा विदुष्यस्स्त्रियः स्वकीयं पतिं सेवाविनयाभ्यां सुशीलं सम्पादयन्ति॥२॥

**पदार्थः**-हे (**देवि**) उत्तम प्रकार शोभित! (**उषः**) प्रातवेला के सदृश वर्त्तमान (**सूनृताः**) उत्तम प्रकार सत्य क्रियाओं की (**ईरयन्ती**) प्रेरणा करती हुई (**चन्द्ररथा**) चन्द्रमा के सदृश रथ जिसका ऐसी (**अमर्त्या**) मरण धर्म से रहित हुई (**वि भाहि**) शोभित होओ। और (**ये**) जो (**पृथुपाजसः**) बहुत बलयुक्त (**सुयमासः**) उत्तम प्रकार नियम करनेवाले (**हिरण्यवर्णाम्**) तेजोमयी कान्ति को (**अश्वाः**) व्याप्त किरणों के सदृश (**त्वा**) आपको (**आ, वहन्तु**) प्राप्त हों, उनको सुखपूर्वक आप शोभित करिये॥२॥

**भावार्थः**-जैसे चन्द्रमारूप रथवाली प्रातःकाल की वेला तेजस्वरूप होकर सबको जगाती है, वैसे ही उत्तम पण्डिता स्त्रियाँ अपने-अपने पति को सेवा और विनय से सुशील करती हैं॥२॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**उषः प्रतीची भुवनानि विश्वोर्ध्वा तिष्ठस्यमृतस्य केतुः।**
**समानमर्थं चरणीयमाना चक्रमिव नव्यस्या ववृत्स्व॥३॥**

**उषः। प्रतीची। भुवनानि। विश्वा। ऊर्ध्वा। तिष्ठसि। अमृतस्य। केतुः। समानम्। अर्थम्। चरणीयमाना। चक्रम्ऽइव। नव्यसि। आ। ववृत्स्व॥३॥**

**पदार्थः**-(**उषः**) उषाः (**प्रतीची**) प्रत्यञ्चति प्राप्नोति सा (**भुवनानि**) लोकजातानि (**विश्वा**) सर्वाणि (**ऊर्ध्वा**) ऊर्ध्वं स्थिता (**तिष्ठसि**) तिष्ठति। अत्र पुरुषव्यत्ययः। (**अमृतस्य**) अमृतात्मकस्य रसस्य (**केतुः**) प्रज्ञापिका (**समानम्**) (**अर्थम्**) वस्तु (**चरणीयमाना**) प्राप्नुवती (**चक्रमिव**) यथा चक्रं गच्छति तथा (**नव्यसि**) अतिशयेन नवीना (**आ**) (**ववृत्स्व**) आवर्त्तस्व॥३॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे स्त्रि! यथा विश्वा भुवनानि प्रतीच्यमृतस्य केतुरूर्ध्वा चक्रमिव समानमर्थं चरणीयमाना नव्यस्युष आ वर्त्तते तिष्ठसि तथैव त्वमाववृत्स्व॥३॥

**भावार्थः**-हे सत्स्त्रियो यथोषसः सर्वाणि भुवनानि प्रकाशयन्ति तथैव सद्व्यवहारान् प्रकाशयत॥३॥

**पदार्थः**-हे स्त्रि! जैसे **(विश्वा)** सम्पूर्ण **(भुवनानि)** उत्पन्न हुए लोकों को **(प्रतीची)** प्राप्त होने और **(अमृतस्य)** अमृतस्वरूप रस की **(केतुः)** जनानेवाली **(ऊर्ध्वा)** ऊपर को वर्त्तमान **(चक्रमिव)** पहिये के सदृश चलनेवाले **(समानम्)** तुल्य **(अर्थम्)** वस्तु को **(चरणीयमाना)** प्राप्त होती हुई **(नव्यसि)** अत्यन्त नवीन **(उषः)** प्रातःकाल की वेला वर्त्तमान और **(तिष्ठसि)** स्थिर होती है, वैसे ही आप **(आ, ववृत्स्व)** वर्त्ताव करिये॥३॥

**भावार्थः**-हे उत्तम स्त्रियो! जैसे प्रातःकाल सम्पूर्ण भुवनों के खण्डों को प्रकाशित करते हैं, वैसे ही उत्तम व्यवहारों को प्रकाशित करो॥३॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अव स्यूमेव चिन्वती मघोन्युषा याति स्वसरस्य पत्नी।**

**स्वर्जनन्ती सुभगा सुदंसा आन्ताद्दिवः पप्रथ आ पृथिव्याः॥४॥**

**अव। स्यूमऽइव। चिन्वती। मघोनी। उषाः। याति। स्वसरस्य। पत्नी। स्वः। जनन्ती। सुऽभगा। सुऽदंसाः। आ। अन्तात्। दिवः। पप्रथे। आ। पृथिव्याः॥४॥**

**पदार्थः**-**(अव)** **(स्यूमेव)** तन्तुवद्व्याप्ता **(चिन्वती)** चयनं कुर्वती **(मघोनी)** परमधनयुक्ता **(उषाः)** प्रभातवेला **(याति)** गच्छति **(स्वसरस्य)** दिनस्य **(पत्नी)** पत्नीवद्वर्त्तमाना **(स्वः)** सूर्य्यं सुखं वा **(जनन्ती)** जनयन्ती **(सुभगा)** सौभाग्यकारिणी **(सुदंसाः)** शोभनानि दंसांसि यस्यां सा **(आ)** **(अन्तात्)** समीपात् **(दिवः)** प्रकाशमानात् सूर्य्यात् **(पप्रथे)** प्रथते **(आ)** **(पृथिव्याः)**॥४॥

**अन्वयः**-हे स्त्रियो! या स्यूमेव चिन्वती मघोनी स्वसरस्य पत्नीव स्वर्जनन्ती सुभगा सुदंसा उषा आ अन्ताद्दिव आ अन्तात्पृथिव्या पप्रथेऽव याति प्राप्नोति तथैव यूयं वर्त्तध्वम्॥४॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। हे स्त्रियो! यथा दिनस्य सम्बन्धिन्युषा अस्ति तथैव छायावत्स्वस्वपत्या सहाऽनुकूलाः सत्यो वर्त्तन्ताम्। यथायं प्रकाशः पृथिव्या योगेन जायते तथा पतिपत्निसम्बन्धादपत्यानि जायन्ते॥४॥

**पदार्थः**-हे स्त्रियो! जो **(स्यूमेव)** डोरों के सदृश व्याप्त **(चिन्वती)** बटोरती हुई **(मघोनी)** अत्यन्त धन से युक्त **(स्वसरस्य)** दिन की **(पत्नी)** स्त्री के सदृश वर्त्तमान **(स्वः)** सूर्य्य वा सुख को **(जनन्ती)** उत्पन्न करती हुई **(सुभगा)** सौभाग्य की करनेवाली **(सुदंसाः)** उत्तम कर्म जिस में विद्यमान



www.9009.co.in

ऐसी **(उषा:)** प्रात:काल की वेला **(आ, अन्तात्)** सब प्रकार समीप से **(दिव:)** प्रकाशमान सूर्य्य और **(आ)** सब प्रकार समीप **(पृथिव्या:)** पृथिवी के योग से **(पप्रथे)** प्रख्यात होती है **(अव, याति)** और प्राप्त होती है, वैसे ही आप लोग भी वर्त्ताव करो॥४॥

**भावार्थ:**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे स्त्रियो! जैसे दिन का सम्बन्धी प्रात:काल है, वैसे ही छाया के सदृश अपने-अपने पति के साथ अनुकूल होकर वर्त्ताव करो और जैसे यह प्रकाश पृथिवी के योग से होता है, वैसे पति और पत्नी के सम्बन्ध से सन्तान होते हैं॥४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अच्छा॑ वो दे॒वीमु॒षसं॑ विभा॒तीं प्र वो॑ भरध्वं॒ नम॑सा सुवृ॒क्तिम्।**

**ऊ॒र्ध्वं म॑धु॒धा दि॒वि पाजो॑ अश्रे॒त् प्र रो॑च॒ना रु॑रुचे र॒ण्वसं॑दृक्॥५॥**

**अच्छ॑। व॒:। दे॒वीम्। उ॒षस॑म्। वि॒ऽभा॒तीम्। प्र। व॒:। भ॒र॒ध्व॒म्। नम॑सा। सु॒ऽवृ॒क्तिम्। ऊ॒र्ध्वम्। म॒धु॒धा। दि॒वि। पाज॑:। अ॒श्रे॒त्। प्र। रो॒च॒ना। रु॒रु॒चे॒। र॒ण्वऽसं॑दृक्॥५॥**

**पदार्थ:**-**(अच्छ)**। अत्र **संहितायामि**ति दीर्घ:। **(व:)** युष्मान् **(देवीम्)** देदीप्यमानाम् **(उषसम्)** प्रातर्वेलाम् **(विभातीम्)** विविधान् पदार्थान् प्रकाशयन्तीम् **(प्र)** **(व:)** युष्माकम् **(भरध्वम्)** **(नमसा)** वज्रेण विद्युता सह **(सुवृक्तिम्)** सुष्ठु वर्त्तमानाम् **(ऊर्ध्वम्)** उत्कृष्टम् **(मधुधा)** या मधूनि दधाति **(दिवि)** प्रकाशे **(पाज:)** बलम् **(अश्रेत्)** श्रयति **(प्र)** **(रोचना)** रुचिकरी **(रुरुचे)** रोचते **(रण्वसंदृक्)** या रण्वान् रमणीयान् पदार्थान् सन्दर्शयति सा॥५॥

**अन्वय:**-हे मनुष्या! या रण्वसन्दृग्रोचना मधुधा दिवि वो युष्मान् प्र रुरुचे। यया वो युष्माकमूर्ध्वं पाजोऽश्रेत् तां देवीं युष्मान् विभातीं सुवृक्तिमुषसं नमसा यूयमच्छ प्र भरध्वम्॥५॥

**भावार्थ:**-यथा प्रातर्वेलां सेवमाना जना उत्कृष्टं बलं प्राप्नुवन्ति तथैव हृद्यां पतिव्रतां भार्यां प्राप्य पुरुष: शरीरात्मबलाऽऽरोग्यानि प्राप्नोति यतो द्वयो: सदृशयो: सत्योर्रुचिर्वर्धेत॥५॥

**पदार्थ:**-हे मनुष्यो! जो **(रण्वसन्दृक्)** सुन्दर पदार्थों के दिखाने **(रोचना)** रुचि करने और **(मधुधा)** मधुर पदार्थों को धारण करनेवाली **(दिवि)** प्रकाश में **(व:)** आप लोगों को **(प्र, रुरुचे)** अच्छी लगती है। और जिससे **(व:)** आप लोगों के **(ऊर्ध्वम्)** उत्तम **(पाज:)** बल का **(अश्रेत्)** श्रयण करती है उस **(देवीम्)** प्रकाशमान और आप लोगों और **(विभातीम्)** अनेक पदार्थों को प्रकाशित करती हुई **(सुवृक्तिम्)** उत्तम प्रकार वर्त्तमान **(उषसम्)** प्रभात वेला को **(नमसा)** वज्र अर्थात् बिजुली के साथ आप लोग **(अच्छ)** उत्तम प्रकार **(प्र, भरध्वम्)** पुष्ट कीजिये॥५॥



www.9009.co.in

**भावार्थ:**-जैसे प्रात:काल को सेवन करते हुए लोग उत्तम बल को प्राप्त होते हैं, वैसे ही स्नेहपात्र पतिव्रता स्त्री को प्राप्त होकर पुरुष शरीर, आत्मबल और आरोग्यपन को प्राप्त होते हैं, जिससे दोनों के सदृश होने पर प्रेम बढ़े॥५॥

**अथ प्रातर्वेलाया एव गुणानाह।**

अब प्रातर्वेला ही के गुणों को कहते हैं॥

**ऋतावरी दिवो अर्कैरबोध्या रेवती रोदसी चित्रमस्थात्।**

**आयतीमग्न उषसं विभातीं वाममेषि द्रविणं भिक्षमाण:॥६॥**

**ऋतऽवरी। दिव:। अर्कै:। अबोधि। आ। रेवती। रोदसी इति। चित्रम्। अस्थात्। आऽयतीम्। अग्ने। उषसम्। विऽभातीम्। वामम्। एषि। द्रविणम्। भिक्षमाण:॥६॥**

**पदार्थ:-(ऋतावरी)** ऋतं सत्यं विद्यते यस्यां सा **(दिव:)** प्रकाशात् **(अर्कै:)** सूर्यैः **(अबोधि)** बुध्यते **(आ) (रेवती)** प्रशस्तधनकारिणी **(रोदसी)** द्यावापृथिव्यौ **(चित्रम्)** अद्भुतम् **(अस्थात्)** तिष्ठति **(आयतीम्)** आगच्छन्तीम् **(अग्ने)** विद्वन् **(उषसम्) (विभातीम्)** प्रकाशयन्तीम् **(वामम्)** प्रशस्तम् **(एषि)** प्राप्नोति **(द्रविणम्)** धनम् **(भिक्षमाण:)** याचमान:॥६॥

**अन्वय:**-हे अग्ने विद्वन्! या रेवती ऋतावरी दिवो जातोषा अर्कैरबोधि रोदसी आस्थात् तामायतीं विभातीमुषसं प्राप्य समाधिना जगदीश्वरं भिक्षमाणस्त्वं चित्रं वामं द्रविणमेषि॥४॥

**भावार्थ:**-ये जना! रात्रेश्चतुर्थे यामे प्रबुध्येश्वरस्य स्तुतिप्रार्थनोपासना: कृत्वा शुभान् गुणानैश्वर्य्यं च याचन्ते ते पुरुषार्थेनाऽवश्यमेतत्प्राप्नुवन्ति॥६॥

**पदार्थ:**-हे **(अग्ने)** विद्वान् जन! जो **(रेवती)** उत्तम धन करनेवाली **(ऋतावरी)** जिसमें सत्य विद्यमान ऐसी **(दिव:)** प्रकाश से उत्पन्न हुई वेला **(अर्कै:)** सूर्य्यों से **(अबोधि)** जानी जाती है, **(रोदसी)** अन्तरिक्ष और पृथिवी को **(आ, अस्थात्)** अच्छे प्रकार स्थित करती है, उस **(आयतीम्)** आती और **(विभातीम्)** प्रकाशित करती हुई **(उषसम्)** प्रभात वेला को प्राप्त होकर समाधि से जगदीश्वर की **(भिक्षमाण:)** याचना करते हुए आप **(चित्रम्)** अद्भुत **(वामम्)** उत्तम प्रशंसा योग्य **(द्रविणम्)** धन को **(एषि)** प्राप्त होते हो॥६॥

**भावार्थ:**-जो लोग रात्रि के चौथे प्रहर में जाग के ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना और उपासना करके उत्तम गुणों और ऐश्वर्य्य को मांगते हैं, वे पुरुषार्थ से अवश्य इसको प्राप्त होते हैं॥६॥

**अथ विद्वच्छिल्पिगुणानाह॥**

अब बिजुली और शिल्पियों के गुणों को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**ऋतस्य बुध्न उषसामिषण्यन् वृषा मही रोदसी आ विवेश।**



www.9009.co.in

**म॒ही मि॒त्रस्य॒ वरु॑णस्य मा॒या च॒न्द्रेव॑ भा॒नुं वि द॑धे पुरु॒त्रा॥७॥८॥**

**ऋ॒तस्य॑। बु॒ध्ने। उ॒षसा॑म्। इ॒ष॒ण्यन्। वृषा॑। म॒ही इति॑। रोद॑सी॒ इति॑। आ। वि॒वे॒श॒। म॒ही। मि॒त्रस्य॑। वरु॑णस्य। मा॒या। च॒न्द्राऽइ॑व। भा॒नुम्। वि। द॒धे॒। पु॒रु॒ऽत्रा॥७॥**

**पदार्थः-(ऋतस्य)** सत्यस्य **(बुध्ने)** अन्तरिक्षे **(उषसाम्)** प्रभातवेलानाम् **(इषण्यन्)** आत्मन इषणं प्रेरणमिच्छन्निव **(वृषा)** वृष्टिहेतुः **(मही)** महत्यौ **(रोदसी)** द्यावापृथिव्यौ **(आ) (विवेश)** आविशति **(मही)** महती पूज्या **(मित्रस्य)** सुहृदः **(वरुणस्य)** श्रेष्ठस्य **(माया)** प्रज्ञा **(चन्द्रेव)** सुवर्णानीव। **चन्द्रमिति हिरण्यनामसु पठितम्।** (निघं०१.२) **(भानुम्)** सूर्य्यम् **(विदधे)** विदधाति **(पुरुत्रा)** पुरुरूपम्॥७॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यो विद्युद्रूपोऽग्निः बुध्न उषसामृतस्येषण्यन्निव वृषा मही रोदसी आ विवेश मित्रस्य वरुणस्य मही माया चन्द्रेव पुरुत्रा भानुं विदधे अतस्तं विज्ञाय कार्य्याणि साध्नुत॥७॥

**भावार्थः**-यथा विदुषां वाणी प्रज्ञा चैश्वर्य्यप्रदा भूत्वा विद्यासु प्रविश्य सुखानि प्रयच्छति तथैव सर्वत्र प्रविष्टा विद्युद् विज्ञाता कार्य्येषु प्रयुक्ता सत्यैश्वर्य्यं जनयतीति॥७॥

अत्रोषःस्त्रीविद्युच्छिल्पिगुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इत्येकाधिकषष्टितमं सूक्तमष्टमो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो बिजुलीरूप अग्नि **(बुध्ने)** अन्तरिक्ष में **(उषसाम्)** प्रातःकालों और **(ऋतस्य)** सत्य के सम्बन्ध में **(इषण्यन्)** अपनी प्रेरणा की इच्छा करता हुआ सा **(वृषा)** वृष्टि का हेतु **(मही)** बड़ी **(रोदसी)** अन्तरिक्ष और पृथिवी को **(आ, विवेश)** प्रविष्ट होता है और **(मित्रस्य)** मित्र **(वरुणस्य)** श्रेष्ठ पुरुष की **(मही)** बड़ी पूज्य **(माया)** बुद्धि **(चन्द्रेव)** सुवर्णों के सदृश **(पुरुत्रा)** बहुत रूपयुक्त **(भानुम्)** सूर्य्य को **(विदधे)** धारण करता है, इससे उस को जान के कार्यों को सिद्ध करो॥७॥

**भावार्थः**-जैसे विद्वानों की वाणी और बुद्धि ऐश्वर्य्य को देनेवाली हो और विद्याओं में प्रवेश करके सुखों को देती है, वैसे ही सर्वत्र प्रविष्ट हुई बिजुली जानी हुई कार्यों में प्रयुक्त होकर ऐश्वर्य्य को उत्पन्न करती है॥७॥

इस सूक्त में प्रातःकाल, स्त्री, बिजुली और शिल्पीजनों के गुणों का वर्णन करने से इसके अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह इकसठवां सूक्त और अष्टम वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

**अथाष्टादशर्चस्य द्विषष्टितमस्य सूक्तस्य विश्वामित्र ऋषिः। १६-१८ विश्वामित्रो जमदग्निर्वा। १-३ इन्द्रावरुणौ। ४-६ बृहस्पतिः। ७-९ पूषा। १०-१२ सविता। १३-१५ सोमः। १६-१८ मित्रावरुणौ देवताः। १ विराट्त्रिष्टुप्। २ त्रिष्टुप्। ३ निचृत्त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः। ४, ५, १०, ११, १६ निचृद्गायत्री। ६ त्रिपाद्गायत्री। ७-९, १२-१५, १७, १८ गायत्री छन्दः। षड्जः स्वरः॥**

***अथ मित्राध्यापकोपदेशकविषयमाह॥***

अब अठारह ऋचावाले बासठवें सूक्त का प्रारम्भ है। उसके प्रथम मन्त्र में मित्र, अध्यापक और उपदेशकों के विषय को कहते हैं॥

**इमा उ वां भृमयो मन्यमाना युवावते न तुज्या अभूवन्।**
**क्व१त्यदिन्द्रावरुणा यशो वां येन स्मा सिनं भरथः सखिभ्यः॥१॥**

**इमाः। ऊम् इति। वाम्। भृमयः। मन्यमानाः। युवाऽवते। न। तुज्याः। अभूवन्। क्व। त्यत्। इन्द्रावरुणा। यशः। वाम्। येन। स्म। सिनम्। भरथः। सखिऽभ्यः॥१॥**

**पदार्थः**-(**इमाः**) (**उ**) (**वाम्**) युवयोः (**भृमयः**) भ्रमणानि (**मन्यमानाः**) (**युवावते**) त्वां रक्षते (**न**) निषेधे (**तुज्याः**) हिंसनीयाः (**अभूवन्**) भवेयुः (**क्व**) कस्मिन् (**त्यत्**) तत् (**इन्द्रावरुणा**) विद्युद्वायू इव वर्त्तमानौ (**यशः**) कीर्त्तिः (**वाम्**) युवयोः (**येन**) (**स्म**) एव। अत्र **निपातस्य चे**ति दीर्घः। (**सिनम्**) अन्नादिकम्। **सिनमित्यन्ननामसु पठितम्।** (निघं०२.७) (**भरथः**) (**सखिभ्यः**) मित्रेभ्यः॥१॥

**अन्वयः**-हे अध्यापकोपदेशकौ! या वामिमा मन्यमाना भृमयो युवावते तुज्या नाभूवन् तथा कुरुतम्। हे इन्द्रावरुणा! येन वां सखिभ्यः सिनं स्म भरथस्त्यद्यशो वामु क्वास्ति॥१॥

**भावार्थः**-येऽध्यापकोपदेशका वायुविद्युद्वदुपकारकाः कीर्त्तिमन्तः प्रियाचरणाः स्युस्तेभ्यः स्नेहेनाऽन्नादिकं देयम्। तैस्सह सर्वैर्मित्रता च रक्षणीया॥१॥

**पदार्थः**-हे अध्यापक और उपदेशक! जो (**वाम्**) आप दोनों के (**इमाः**) ये वर्त्तमान (**मन्यमानाः**) आदर किये गये (**भृमयः**) घूमने आदि (**युवावते**) आप की रक्षा करनेवाले के लिये (**तुज्याः**) हिंसा करने के योग्य (**न**) नहीं (**अभूवन्**) होवें, वैसे करिये और हे (**इन्द्रावरुणा**) बिजुली और वायु के सदृश वर्त्तमान! (**येन**) जिस यश से (**वाम्**) आप दोनों के (**सखिभ्यः**) मित्रों के लिये (**सिनम्**) अन्न आदि को (**स्म**) ही (**भरथः**) धारण करते हो (**त्यत्**) वह (**यशः**) यश (**उ**) ही (**क्व**) कहां है॥१॥

**भावार्थः**-जो अध्यापक और उपदेशक लोग वायु और बिजुली के सदृश उपकार करनेवाले, कीर्त्ति से युक्त और प्रिय आचरण करनेवाले होवें, उनके लिये स्नेह से अन्न आदि देना और उनके साथ सदा ही मित्रता की रक्षा करनी चाहिये॥१॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**



www.9009.co.in

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अयमु वां पुरुतमो रयीयञ्छश्वत्तममवसे जोहवीति।**

**सजोषाविन्द्रावरुणा मरुद्भिर्दिवा पृथिव्या शृणुतं हवं मे॥ २॥**

**अयम्। ऊम् इति। वाम्। पुरुऽतमः। रयिऽयन्। शश्वत्ऽतमम्। अवसे। जोहवीति। सऽजोषौ। इन्द्रावरुणा। मरुत्ऽभिः। दिवा। पृथिव्या। शृणुतम्। हवम्। मे॥ २॥**

**पदार्थः**-(**अयम्**) राजा (उ) वितर्के (**वाम्**) युवयोः (**पुरुतमः**) अतिशयेन बहुः (**रयीयन्**) आत्मनो रयिमिच्छन् (**शश्वत्तमम्**) अनादिभूतम् (**अवसे**) रक्षणाद्याय (**जोहवीति**) भृशं ददाति (**सजोषौ**) समानप्रीतिसेवनौ (**इन्द्रावरुणा**) विद्युज्जले इव वर्त्तमानौ (**मरुद्भिः**) वायुभिरिव श्रोत्रिभिः (**दिवा**) सूर्य्येण (**पृथिव्या**) भूम्या (**शृणुतम्**) (**हवम्**) स्तवनम् (**मे**) मम॥ २॥

**अन्वयः**-हे इन्द्रावरुणा! यथा विद्युज्जले मरुद्भिर्दिवा पृथिव्या सह वर्त्तित्वा सुखं प्रयच्छतो यथाऽयमु पुरुतमो रयीयन् वामवसे शश्वत्तमं जोहवीति तथा सजोषौ युवां मे हवं शृणुतम्॥ २॥

**भावार्थः**-यथा राजाऽध्यापकोपदेशकाश्च सर्वेषां रक्षावृद्धिविद्याप्रवेशाय शिक्षां कुर्वन्ति तथैव परस्परेषां प्रशंसया पृथिव्यादिष्वैश्वर्य्याणि प्रयत्नेन प्राप्य परस्परेषु प्रीतिमन्तः सर्वे मनुष्यास्सन्तु॥ २॥

**पदार्थः**-हे (**इन्द्रावरुणा**) बिजुली और जल के सदृश वर्त्तमान! (**मरुद्भिः**) पवनों के सदृश सुननेवाले जनों से (**दिवा**) सूर्य और (**पृथिव्या**) भूमि के साथ वर्त्तमान होकर आप सुख देते हैं और जैसे (**अयम्**) यह राजा (उ) क्या (**पुरुतमः**) अतिशय करके बहुत (**रयीयन्**) अपने धन की इच्छा करता हुआ (**वाम्**) आप दोनों की (**अवसे**) रक्षा आदि के लिये (**शश्वत्तमम्**) अनादि काल से सिद्ध पदार्थ को (**जोहवीति**) वारंवार देता है, वैसे (**सजोषौ**) तुल्य प्रीति के सेवन करनेवाले आप दोनों (**मे**) मेरी (**हवम्**) स्तुति को (**शृणुतम्**) सुनिये॥ ६॥

**भावार्थः**-जैसे राजा, अध्यापक और उपदेशक लोग सबके रक्षा, वृद्धि और विद्या में प्रवेश होने के लिये शिक्षा करते हैं, वैसे ही परस्पर की प्रशंसा से पृथिवी आदिकों में ऐश्वर्यों को प्रयत्न से प्राप्त करके परस्पर में प्रीतिवाले सब मनुष्य होओ॥ २॥

**अध्यापकविषयमाह॥**

अब अगले मन्त्र में अध्यापक के विषय को कहते हैं॥

**अस्मे तदिन्द्रावरुणा वसु ष्यादस्मे रयिर्मरुतः सर्ववीरः।**

**अस्मान् वरूत्रीः शरणैरवन्त्वस्मान् होत्रा भारती दक्षिणाभिः॥ ३॥**

**अस्मे इति। तत्। इन्द्रावरुणा। वसु। स्यात्। अस्मे इति। रयिः। मरुतः। सर्वऽवीरः। अस्मान्। वरूत्रीः। शरणैः। अवन्तु। अस्मान्। होत्रा। भारती। दक्षिणाभिः॥ ३॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**अस्मे**) अस्मासु (**तत्**) (**इन्द्रावरुणा**) वायुविद्युद्वद्वर्त्तमानौ (**वसु**) (**स्यात्**) (**अस्मे**) अस्मासु (**रयिः**) श्रीः (**मरुतः**) मनुष्याः (**सर्ववीरः**) सर्वे वीरा यस्मात् (**अस्मान्**) (**वरूत्रीः**) अत्यन्तं वराः (**शरणैः**) दुःखादीनां हिंसनैः (**अवन्तु**) (**अस्मान्**) (**होत्रा**) आदातुं योग्या (**भारती**) सकलविद्यां भरन्ती वाणी (**दक्षिणाभिः**) दानैः॥३॥

**अन्वयः**-हे इन्द्रावरुणा! यथाऽस्मे तद्वसु स्यादस्मे सर्ववीरो रयिः स्यात्। हे मरुतो! यथाऽस्मान् वरूत्रीर्होत्रा भारती च शरणैर्दक्षिणाभिश्चाऽस्मानवन्तु तथैव प्रयतध्वम्॥३॥

**भावार्थः**-हे अध्यापकोपदेशका राजानश्च! यथा वयं वसुमन्तः श्रीमन्तो विद्वांसो भवेम तथैवाऽस्मान् प्रेर्ध्वम्॥३॥

**पदार्थः**-हे (**इन्द्रावरुणा**) पवन और बिजुली के सदृश वर्त्तमान! जैसे (**अस्मे**) हम लोगों में (**तत्**) वह (**वसु**) धन (**स्यात्**) होवे और (**अस्मे**) हम लोगों में (**सर्ववीरः**) सब वीर जिस से ऐसी (**रयिः**) लक्ष्मी होवे और हे (**मरुतः**) मनुष्यो! जैसे (**अस्मान्**) हम लोगों को (**वरूत्रीः**) अत्यन्त श्रेष्ठ विद्या (**होत्रा**) ग्रहण करने योग्य क्रिया और (**भारती**) सम्पूर्ण विद्याओं को पूर्ण करती हुई वाणी (**शरणैः**) दुःख आदिकों के नाश करनेवाले (**दक्षिणाभिः**) दानों से (**अस्मान्**) हम लोगों की (**अवन्तु**) रक्षा करें वैसा ही प्रयत्न करो॥३॥

**भावार्थः**-हे अध्यापक, उपदेशक और राजा लोगो! जैसे हम लोग धनी, लक्ष्मीवान् और विद्वान् होवें, वैसे ही हम लोगों को प्रेरणा करो॥३॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उस ही विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**बृह॑स्पते जु॒षस्व॑ नो ह॒व्यानि॑ विश्वदेव्य। रास्व॒ रत्ना॑नि दा॒शुषे॑॥४॥**

**बृह॑स्पते। जु॒षस्व॑। न॒ः। ह॒व्यानि॑। वि॒श्व॒ऽदे॒व्य॒। रास्व॑। रत्ना॑नि। दा॒शुषे॑॥४॥**

**पदार्थः**-(**बृहस्पते**) बृहत्या वाचः पालक (**जुषस्व**) सेवस्व (**नः**) अस्मभ्यम् (**हव्यानि**) दातुमर्हाणि (**विश्वदेव्य**) विश्वेषु देवेषु साधो (**रास्व**) देहि (**रत्नानि**) रमणीयानि धनानि (**दाशुषे**) दात्रे॥४॥

**अन्वयः**-हे विश्वदेव्य बृहस्पते विद्वंस्त्वं नो हव्यानि जुषस्व दाशुषे रत्नानि रास्व॥४॥

**भावार्थः**-हे अध्यापक! त्वमस्मदर्थं विद्याः सेवस्व हि राजंस्त्वं विद्यादात्रे उत्तमं धनं देहि॥४॥

**पदार्थः**-हे (**विश्वदेव्य**) सम्पूर्ण विद्वानों में उत्तम (**बृहस्पते**) बड़ी वाणी के पालनकर्त्ता विद्वान् पुरुष! आप (**नः**) हम लोगों के लिये (**हव्यानि**) देने के योग्य पदार्थों का (**जुषस्व**) सेवन करो और (**दाशुषे**) देनेवाले के लिये (**रत्नानि**) सुन्दर धनों को (**रास्व**) दीजिये॥४॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-हे अध्यापक! आप हम लोगों के लिये विद्याओं का सेवन करो। और हे राजन्! आप विद्या देनेवाले के लिये उत्तम धन दीजिये॥४॥

**अथ मित्रविषयमाह॥**

अब इस अगले मन्त्र में मित्र के विषय को कहते हैं॥

**शुचिमर्कैर्बृहस्पतिमध्वरेषु नमस्यत। अनाम्योज आ चके॥५॥९॥**

**शुचिम्। अर्कैः। बृहस्पतिम्। अध्वरेषु। नमस्यत। अनामि। ओजः। आ। चके॥५॥**

**पदार्थः**-(**शुचिम्**) पवित्रम् (**अर्कैः**) सत्कर्त्तव्यैर्मन्त्रैर्विचारैः (**बृहस्पतिम्**) वाग्विद्यारक्षकम् (**अध्वरेषु**) अहिंसनीयेषु विद्याप्राप्तिकर्मसु (**नमस्यत**) सत्कुरुत (**अनामि**) नम्यते (**ओजः**) पराक्रमः (**आ**) (**चके**) कामये॥५॥

**अन्वयः**-हे विद्याप्रिया जना! यूयमध्वरेष्वर्कैर्वर्त्तमानं शुचिं बृहस्पतिं नमस्यत यदोजोऽनामि यदहमा चके तद्यूयं कामयध्वम्॥५॥

**भावार्थः**-ये मनुष्या वेदार्थविदोऽध्यापकानुपदेशकांश्च नमस्यन्ति सत्कुर्वन्ति ते पवित्रा विद्वांसः सन्तो बलमाप्नुवन्ति॥५॥

**पदार्थः**-हे विद्या के प्रेमी जनो! आप लोग (**अध्वरेषु**) जिन में हिंसा नहीं होती ऐसे विद्या की प्राप्ति के कर्मों में (**अर्कैः**) सत्कार करने योग्य विचारों से वर्त्तमान (**शुचिम्**) पवित्र (**बृहस्पतिम्**) वाणीरूप विद्या की रक्षा करनेवाले का (**नमस्यत**) सत्कार करो। और जो (**ओजः**) पराक्रम (**अनामि**) नहीं नम्र होनेवाला और जिसकी मैं (**आ, चके**) कामना करता हूँ, उसकी आप लोग कामना करो॥५॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य वेदार्थ के जाननेवाले अध्यापक और उपदेशकों का नमस्कार और सत्कार करते हैं, वे पवित्र विद्वान् हुए बल को प्राप्त होते हैं॥५॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**वृषभं चर्षणीनां विश्वरूपमदाभ्यम्। बृहस्पतिं वरेण्यम्॥६॥**

**वृषभम्। चर्षणीनाम्। विश्वऽरूपम्। अदाभ्यम्। बृहस्पतिम्। वरेण्यम्॥६॥**

**पदार्थः**-(**वृषभम्**) अत्युत्तमम् (**चर्षणीनाम्**) विद्याप्रकाशवतां मनुष्याणां मध्ये (**विश्वरूपम्**) विश्वानि कर्माणि वस्तूनि वा रूपयन्तम् (**अदाभ्यम्**) अहिंसनीयं सत्कर्त्तव्यम् (**बृहस्पतिम्**) बृहतां पालकं राजानम् (**वरेण्यम्**) अतिश्रेष्ठम्॥६॥

**अन्वयः**-हे मनुष्याश्चर्षणीनां मध्ये वृषभं विश्वरूपमदाभ्यं वरेण्यं बृहस्पतिं यूयं नमस्यताऽतः पराक्रमं कामयध्वम्॥६॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-यथा राजानं सत्कृत्य प्रजाजना ऐश्वर्यवन्तो जायन्ते तथैव राजानः प्रजाः सत्कृत्य कीर्त्तिमन्तो भवन्ति॥६॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(चर्षणीनाम्)** विद्याप्रकाश से युक्त मनुष्यों के मध्य में **(वृषभम्)** अत्यन्त उत्तम **(विश्वरूपम्)** कर्मों वा वस्तुओं को रूपित करते हुए अर्थात् उनको यथार्थभाव से प्रकट करते हुए **(अदाभ्यम्)** नहीं हिंसा करने और सत्कार करने योग्य **(वरेण्यम्)** अत्यन्त श्रेष्ठ **(बृहस्पतिम्)** बड़ों के पालन करनेवाले राजा का आप लोग आदर करो इससे पराक्रम की कामना करो॥६॥

**भावार्थः**-जैसे राजा का सत्कार करके प्रजाजन ऐश्वर्यवान् होते हैं, वैसे ही राजा लोग प्रजाओं का सत्कार करके कीर्त्तियुक्त होते हैं॥६॥

**विद्वद्विषयमाह॥**

अब अगले मन्त्र में विद्वान् के विषय को कहते हैं॥

**इयं ते पूषन्नाघृणे सुष्टुतिर्देव नव्यसी। अस्माभिस्तुभ्यं शस्यते॥७॥**

**इयम्। ते। पूषन्। आघृणे। सुऽस्तुतिः। देव। नव्यसी। अस्माभिः। तुभ्यम्। शस्यते॥७॥**

**पदार्थः**-**(इयम्)** **(ते)** तव **(पूषन्)** पुष्टिकर्त्तः **(आघृणे)** समन्तात् प्रकाशितः **(सुष्टुतिः)** शोभना प्रशंसा **(देव)** दिव्यगुणसम्पन्न **(नव्यसी)** अतिशयेन नवीना **(अस्माभिः)** **(तुभ्यम्)** **(शस्यते)**॥७॥

**अन्वयः**-हे पूषन्नाघृणे देव विद्वन् राजन् वा! ते येयं नव्यसी सुष्टुतिर्वर्त्तते सा तुभ्यमस्माभिः शस्यते॥७॥

**भावार्थः**-ये मनुष्या धर्म्यकर्माऽनुष्ठानेन कीर्त्तिमन्तो भवेयुस्ताञ्छ्रुत्वा दृष्ट्वा सर्वे प्रसन्ना भवन्तु॥८॥

**पदार्थः**-हे **(पूषन्)** पुष्टि करनेवाले **(आघृणे)** सब प्रकार प्रकाशित **(देव)** उत्तम गुणों से युक्त विद्वान् पुरुष वा राजन्! **(ते)** आपकी जो **(इयम्)** यह **(नव्यसी)** अत्यन्त नवीन **(सुष्टुतिः)** उत्तम प्रशंसा वर्त्तमान है, वह **(तुभ्यम्)** आपके लिये **(अस्माभिः)** हम लोगों से **(शस्यते)** उच्चारण की जाती है॥७॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य धर्मसम्बन्धी कर्मों के करने से यशस्वी हैं, उनको सुन और देखके सब लोग प्रसन्न होओ॥७॥

**अथाध्ययनविषयमाह॥**

अब अगले मन्त्र में पठन विषय को कहते हैं॥

**तां जुषस्व गिरं मम वाजयन्तीमवा धियम्। वधूयुरिव योषणाम्॥८॥**

**ताम्। जुषस्व। गिरम्। मम। वाजऽयन्तीम्। अव। धियम्। वधूयुःऽइव। योषणाम्॥८॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-**(ताम्)** **(जुषस्व)** सेवस्व **(गिरम्)** सत्यभाषणशास्त्रविज्ञानयुक्तां वाचम् **(मम)** **(वाजयन्तीम्)** सत्याऽसत्यविज्ञापयन्तीम् **(अव)** रक्ष। अत्र **द्व्यचोऽतस्तिङ** इति दीर्घः। **(धियम्)** प्रज्ञाम् **(वधूयुरिव)** आत्मनो वधूमिच्छन्निव **(योषणाम्)** स्वपत्नीम्॥८॥

**अन्वयः**-हे देव विद्वन् राजन् वा! त्वं तां वाजयन्तीं मम गिरं योषणां वधूयुरिव जुषस्व धियञ्चाव॥८॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। मनुष्या यथा स्त्रीकामाः स्वां स्वां हृद्यां प्रियां पत्नीं रक्षन्ति सेवन्ते च तथैव शास्त्रान्वितां वाचं सेवित्वा प्रज्ञां सततं रक्षन्तु॥८॥

**पदार्थः**-हे देव विद्वन् वा राजन्! आप **(ताम्)** उस **(वाजयन्तीम्)** सत्य और असत्य के जाननेवाली **(मम)** मेरी **(गिरम्)** सत्यभाषण और शास्त्र के विज्ञान से युक्त वाणी का जैसे **(योषणाम्)** निज स्त्री को **(वधूयुरिव)** अपनी स्त्री की इच्छा करनेवाला वैसे **(जुषस्व)** सेवन और **(धियम्)** बुद्धि की **(अव)** रक्षा करो॥८॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। मनुष्य लोग, जैसे स्त्री की कामना करनेवाले अपनी अपनी प्रेमपात्र पत्नी की रक्षा और सेवा करते हैं, वैसे ही शास्त्र से युक्त वाणी का सेवन करके बुद्धि की निरन्तर सेवा करें॥८॥

**अथ परमात्मविषयमाह॥**

अब इस अगले मन्त्र में परमात्मा के विषय को कहते हैं॥

**यो विश्वाभि विपश्यति भुवना सं च पश्यति। स नः पूषाविता भुवत्॥९॥**

**यः। विश्वा। अभि। विऽपश्यति। भुवना। सम्। च। पश्यति। सः। नः। पूषा। अविता। भुवत्॥९॥**

**पदार्थः**-**(यः)** परमात्मा **(विश्वा)** सर्वाणि **(अभि)** आभिमुख्ये **(विपश्यति)** विविधतया प्रेक्षते **(भुवना)** सर्वाणि भूतानि लोकान् वस्तूनि वा **(सम्)** **(च)** **(पश्यति)** **(सः)** **(नः)** अस्माकम् **(पूषा)** पुष्टिकरः **(अविता)** रक्षिता **(भुवत्)** भूयात्॥९॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यो जगदीश्वरो विश्वा भुवनानि विपश्यति सं पश्यति स नः पूषाऽविता भुवत्। येन च वयं सततं वर्धेमहि॥९॥

**भावार्थः**-यः सर्वस्य विधाता द्रष्टा कर्मणां फलप्रदाता न्यायाधीश ईश्वरोऽस्ति स एवाऽस्माकं रक्षको भूयादिति सर्वे वयमभिलषेम॥९॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(यः)** जो जगदीश्वर **(विश्वा)** सम्पूर्ण **(भुवना)** जीव, लोक वा वस्तुओं को **(अभि)** सम्मुख **(विपश्यति)** अनेक प्रकार से देखता है **(सम्, पश्यति)** मिले हुए देखता है **(सः)** वह **(नः)** हम लोगों का **(पूषा)** पुष्टिकर्त्ता **(अविता)** रक्षक **(भुवत्)** होवे **(च)** और जिससे हम लोग निरन्तर वृद्धि को प्राप्त होवें॥९॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-जो सबका रचने, देखने और कर्मों के फल देनेवाला न्यायाधीश ईश्वर है, वही हम लोगों की रक्षा करने और वृद्धि करनेवाला होवे, ऐसी हम सब लोग अभिलाषा करें॥९॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**तत्स॑वि॒तुर्वरे॑ण्यं॒ भर्गो॑ दे॒वस्य॑ धीमहि। धि॒यो यो नः॑ प्रचो॒दया॑त्॥१०॥१०॥**

**तत्। स॒वि॒तुः। वरे॑ण्यम्। भर्गः॑। दे॒वस्य॑। धी॒म॒हि॒। धियः॑। यः। नः॒। प्र॒ऽचो॒दया॑त्॥१०॥**

**पदार्थः-(तत्) (सवितुः)** सकलजगदुत्पादकस्य समग्रैश्वर्य्ययुक्तस्येश्वरस्य **(वरेण्यम्)** सर्वेभ्य उत्कृष्टं प्राप्तुं योग्यम् **(भर्गः)** भृज्जन्ति पापानि दुःखमूलानि येन तत् **(देवस्य)** सकलैश्वर्यप्रदातुः प्रकाशमानस्य सर्वप्रकाशकस्य सर्वत्र व्याप्तस्याऽन्तर्यामिणः **(धीमहि)** दधीमहि **(धियः)** प्रज्ञाः **(यः)** **(नः)** अस्माकम् **(प्रचोदयात्)** सद्गुणकर्मस्वभावेषु प्रेरयतु॥१०॥

**अन्वयः**-हे मनुष्याः! सर्वे वयं यो नो धियः प्रचोदयात् तस्य सवितुर्देवस्य तद्वरेण्यं भर्गो धीमहि॥१०॥

**भावार्थः**-ये मनुष्याः सर्वसाक्षिणं पितृवद्वर्त्तमानं न्यायेशं दयालुं शुद्धं सनातनं सर्वात्मसाक्षिकं परमात्मानमेव स्तुत्वा प्रार्थयित्वोपासते तान् कृपानिधिः परमगुरुर्दुष्टाचारान्निवर्त्य श्रेष्ठाचारे प्रवर्त्तयित्वा शुद्धान् सम्पाद्य पुरुषार्थयित्वा धर्मार्थकाममोक्षान् प्रापयति॥१०॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! सब हम लोग **(यः)** जो **(नः)** हम लोगों की **(धियः)** बुद्धियों को **(प्रचोदयात्)** उत्तम गुण, कर्म और स्वभावों में प्रेरित करे, उस **(सवितुः)** सम्पूर्ण संसार से [=के] उत्पन्न करनेवाले और सम्पूर्ण ऐश्वर्य से युक्त स्वामी और **(देवस्य)** सम्पूर्ण ऐश्वर्य के दाता प्रकाशमान सबके प्रकाश करनेवाले सर्वत्र व्यापक अन्तर्यामी के **(तत्)** उस **(वरेण्यम्)** सबसे उत्तम प्राप्त होने योग्य **(भर्गः)** पापरूप दुःखों के मूल को नष्ट करनेवाले प्रभाव को **(धीमहि)** धारण करें॥१०॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य सबके साक्षी, पिता के सदृश वर्त्तमान, न्यायेश, दयालु, शुद्ध, सनातन, सबके आत्माओं के साक्षी परमात्मा की ही स्तुति और प्रार्थना करके उपासना करते हैं; उनको कृपा का समुद्र, सबसे श्रेष्ठ परमेश्वर, दुष्ट आचरण से पृथक् करके, श्रेष्ठ आचरण में प्रवृत्त करा और पवित्र तथा पुरुषार्थयुक्त करके धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को प्राप्त कराता है॥१०॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**दे॒वस्य॑ सवि॒तुर्व॒यं वा॑ज॒यन्तः॑ पुरं॑ध्या। भग॑स्य रा॒तिमी॑महे॥११॥**

**दे॒वस्य॑। स॒वि॒तुः। व॒यम्। वा॒ज॒ऽयन्तः॑। पुर॑म्ऽध्या। भग॑स्य। रा॒तिम्। ई॒म॒हे॒॥११॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**देवस्य**) कमनीयस्य (**सवितुः**) प्रेरकस्याऽन्तर्यामिणः (**वयम्**) (**वाजयन्तः**) विज्ञापयन्तः (**पुरन्ध्या**) यया प्रज्ञया बहून् बोधान् दधाति तया (**भगस्य**) ऐश्वर्य्यप्रदस्य (**रातिम्**) दानम् (**ईमहे**) याचामहे॥११॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथा पुरन्ध्या वाजयन्तो वयं सवितुर्देवस्य भगस्य रातिमीमहे तथा यूयमप्येतां याचध्वम्॥११॥

**भावार्थः**-मनुष्यैर्य्यदि प्रज्ञां वर्धयित्वा पुरुषार्थेन धर्ममनुष्ठाय परमेश्वराऽऽज्ञाऽऽनुकूल्येन वर्त्तित्वा स्वात्मशुद्धये प्रार्थना क्रियेत तर्हीश्वरस्तान्त्सद्यः पवित्राञ्छुद्धाचारान् करोति॥११॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे (**पुरन्ध्या**) जिस बुद्धि से बहुत बोधों को धारण करता उससे (**वाजयन्तः**) जनाते हुए (**वयम्**) हम लोग (**सवितुः**) प्रेरणा करनेवाले अन्तर्य्यामी (**देवस्य**) कामना करने के योग्य (**भगस्य**) ऐश्वर्य देनेवाले के (**रातिम्**) दान की (**ईमहे**) याचना करते हैं, वैसे आप लोग भी उस बुद्धि की याचना करो॥११॥

**भावार्थः**-मनुष्य लोग जो बुद्धि को बढ़ाय, पुरुषार्थ से धर्म का अनुष्ठान कर और परमेश्वर की आज्ञा के अनुकूल वर्त्ताव करके अपनी बुद्धि के लिये प्रार्थना करें तो ईश्वर उनको शीघ्र पवित्र और शुद्ध आचरणयुक्त करता है॥११॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**दे॒वं नर॑ः सवि॒तारं॒ विप्रा॑ य॒ज्ञैः सु॑वृ॒क्तिभि॑ः। न॒म॒स्यन्ति॑ धि॒येषि॒ताः॥१२॥**

**दे॒वम्। नर॑ः। स॒वि॒तार॑म्। विप्रा॑ः। य॒ज्ञैः। सु॒वृ॒क्तिऽभि॑ः। न॒म॒स्यन्ति॑। धि॒या। इ॒षि॒ताः॥१२॥**

**पदार्थः**-(**देवम्**) सुखस्य दातारम् (**नरः**) योगेनेन्द्रियान्तःकरणस्य नेतारः (**सवितारम्**) सकलजगदुत्पादकम् (**विप्राः**) मेधाविनः (**यज्ञैः**) शास्त्राऽभ्याससत्सङ्गयोगाभ्यासैः (**सुवृक्तिभिः**) सुष्ठु वृक्तिर्दोषाणां छेदनं येषु तैः (**नमस्यन्ति**) (**धिया**) प्रज्ञया कर्मणा वा (**इषिताः**) प्रेरिताः॥१२॥

**अन्वयः**-ये धियेषिता नरो विप्राः सुवृक्तिभिर्यज्ञैः सवितारं देवं नमस्यन्ति तेऽभीष्टसिद्धसुखा जायन्ते॥११॥

**भावार्थः**-ये संयमिनो विद्वांसः प्रेम्णा सत्यभाषणादिलक्षणेन धर्म्येण परमेश्वरमुपासते ते सुखाढ्या जायन्ते॥११॥

**पदार्थः**-जो (**धिया**) बुद्धि वा कर्म से (**इषिताः**) प्रेरणा किये गये (**नरः**) योग से इन्द्रिय और अन्तःकरण के प्राप्त करानेवाले (**विप्राः**) बुद्धिमान् लोग (**सुवृक्तिभिः**) उत्तम प्रकार दोषों का काटना जिनमें उन (**यज्ञैः**) शास्त्र का अभ्यास, सत्सङ्ग और योगाभ्यासों से (**सवितारम्**) सम्पूर्ण संसार के उत्पन्न करने और (**देवम्**) सुख देनेवाले को (**नमस्यन्ति**) नमस्कार करते हैं, वे अभीष्ट सुखों से सम्पन्न होते हैं॥१२॥



www.9009.co.in

**भावार्थ:**-जो इन्द्रियों को वश में करनेवाले विद्वान् लोग प्रेम और सत्यभाषणादिस्वरूप धर्म से परमेश्वर की उपासना करते हैं, वे सुख से युक्त होते हैं॥१२॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**सोमो॑ जिगाति गातु॒विद्दे॒वाना॑मेति निष्कृ॒तम्। ऋ॒तस्य॒ योनि॑मा॒सद॑म्॥१३॥**

**सोम॑:। जि॒गा॒ति॒। गा॒तु॒ऽवित्। दे॒वाना॑म्। ए॒ति॒। नि॒:ऽकृ॒तम्। ऋ॒तस्य॑। योनि॑म्। आ॒ऽसद॑म्॥१३॥**

**पदार्थ:**-(**सोम:**) ऐश्वर्ययुक्त: (**जिगाति**) स्तौति (**गातुवित्**) प्रशंसावित् (**देवानाम्**) विदुषाम् (**एति**) प्राप्नोति (**निष्कृतम्**) नितरां विज्ञातम् (**ऋतस्य**) सत्यस्य (**योनिम्**) कारणम् (**आसदम्**) आसीदन्ति सर्वे यस्मिंस्तम्॥१३॥

**अन्वय:**-यो गातुवित्सोमो देवानामृतस्य निष्कृतमासदं योनिं जिगाति सोऽभीष्टसुखमेति॥१३॥

**भावार्थ:**-यो विद्वानस्य विविधाकृतेर्विश्वस्य कारणमव्यक्तं जानाति। एतन्निर्मातारं परमात्मानं प्रशंसति स एवैश्वर्यसम्पन्नो भवति॥१३॥

**पदार्थ:**-जो (**गातुवित्**) प्रशंसा जाननेवाले (**सोम:**) ऐश्वर्य्य से युक्त (**देवानाम्**) विद्वानों और (**ऋतस्य**) सत्य के (**निष्कृतम्**) निरन्तर जाने गये (**आसदम्**) और जिसमें सब वर्त्तमान होते हैं, उस (**योनिम्**) कारण की (**जिगाति**) स्तुति करता है, वह अपेक्षित सुख को (**एति**) प्राप्त होता है॥१३॥

**भावार्थ:**-जो विद्वान् इस अनेक प्रकार के स्वरूपवाले संसार के कारण अव्यक्त को जानता है और इस संसार के रचनेवाले परमात्मा की प्रशंसा करता है, वही ऐश्वर्य से युक्त होता है॥१३॥

**अथ विद्वद्विषयमाह॥**

अब इस अगले मन्त्र में विद्वान् के विषय को कहते हैं॥

**सोमो॑ अ॒स्मभ्यं॑ द्वि॒पदे॒ चतु॑ष्पदे च प॒शवे॑। अ॒न॒मी॒वा इष॑स्करत्॥१४॥**

**सोम॑:। अ॒स्मभ्य॑म्। द्वि॒ऽपदे॑। चतु॑:ऽपदे। च॒। प॒शवे॑। अ॒न॒मी॒वा॑:। इष॑:। क॒र॒त्॥१४॥**

**पदार्थ:**-(**सोम:**) चन्द्र: (**अस्मभ्यम्**) (**द्विपदे**) मनुष्याद्याय (**चतुष्पदे**) गवाद्याय (**च**) (**पशवे**) (**अनमीवा:**) नीरोगा: (**इष:**) अन्नाद्योषधिगणान् (**करत्**) कुर्य्यात्॥१४॥

**अन्वय:**-हे मनुष्या! यस्सोमो द्विपदेऽस्मभ्यं चतुष्पदे गवे च पशवेऽनमीवा इषस्करत्तं सर्वदा सत्कुरुत॥१४॥

**भावार्थ:**-ये वैद्या: सर्वान् द्विपदश्चतुष्पदोऽरोगान् कुर्य्युस्ते सर्वैर्माननीया: स्यु:॥१४॥

**पदार्थ:**-हे मनुष्यो! जो (**सोम:**) चन्द्रमा (**द्विपदे**) मनुष्य आदि (**अस्मभ्यम्**) हम लोगों के (**चतुष्पदे**) गौ आदि के (**च**) और [गौ आदि] (**पशवे**) अन्य पशु के लिए (**अनमीवा:**) रोग निवर्त्तक (**इष:**) अन्न आदि ओषधिसमूहों को (**करत्**) करे, उसका सब काल में सत्कार करो॥१४॥



www.9009.co.in

**भावार्थ:**-जो वैद्य लोग सब दो पैरवाले अर्थात् मनुष्य आदि और चौपाये गौ आदिकों को रोगरहित करें, वे सब लोगों को मान करने योग्य होवें॥१४॥

**अथ मित्रताविषयमाह॥**

अब इस अगले मन्त्र में मित्रता के विषय को कहते हैं॥

**अस्माकमायुर्वर्धयन्नभिमातीः सहमानः। सोमः सधस्थमासदत्॥१५॥**

**अस्माकम्। आयुः। वर्धयन्। अभिऽमातीः। सहमानः। सोमः। सधऽस्थम्। आ। असदत्॥१५॥**

**पदार्थ:**-(**अस्माकम्**) (**आयुः**) जीवनम् (**वर्धयन्**) उन्नयन् (**अभिमातीः**) शत्रूनिव रोगान् (**सहमानः**) (**सोमः**) सुपथ्ये युक्ते व्यवहारे प्रेरयन् (**सधस्थम्**) सहस्थानम् (**आ**) (**असदत्**) आसीदतु॥१५॥

**अन्वय:**-हे मनुष्या! यः सोमोऽभिमातीः सहमान इवाऽस्माकमायुर्वर्धयन् सधस्थमासदत् सोऽस्माकं सखा वयं च तस्य सखायः स्याम॥१५॥

**भावार्थ:**-ये धार्मिकाः शूरवीराश्शत्रून् विनाश्य सखीन् रक्षित्वा सर्वान्त्सज्जनानायुर्विजयाभ्यां वर्धयन्ति तैः सह सदैव मैत्री सर्वैं रक्षणीया॥१५॥

**पदार्थ:**-हे मनुष्यो! जो (**सोमः**) सुन्दर पथ्य और व्यवहार में प्रेरणा करता हुआ (**अभिमातीः**) शत्रुओं के सदृश रोगों को (**सहमानः**) सहन करता हुआ सा (**अस्माकम्**) हम लोगों के (**आयुः**) जीवन को (**वर्धयन्**) बढ़ाता हुआ (**सधस्थम्**) साथ स्थान को (**आ, असदत्**) स्थित हो, वह हम लोगों का मित्र और हम लोग उसके मित्र होवें॥१५॥

**भावार्थ:**-जो धार्मिक, शूरवीर पुरुष शत्रुओं का नाश और मित्रों की रक्षा करके सब सज्जनों को जीवन और विजय से वृद्धि करते हैं, उनके साथ सदैव मैत्री की सब लोगों को रक्षा करनी चाहिये॥१५॥

**अध्यापकोपदेशकविषयमाह॥**

अब अगले मन्त्र में अध्यापक और उपदेशक के विषय को कहते हैं॥

**आ नो मित्रावरुणा घृतैर्गव्यूतिमुक्षतम्। मध्वा रजांसि सुक्रतू॥१६॥**

**आ। नः। मित्रावरुणा। घृतैः। गव्यूतिम्। उक्षतम्। मध्वा। रजांसि। सुक्रतू इति सुऽक्रतू॥१६॥**

**पदार्थ:**-(**आ**) (**नः**) अस्मभ्यम् (**मित्रावरुणा**) प्राणोदानवदध्यापकोपदेशकौ (**घृतैः**) उदकादिभिः (**गव्यूतिम्**) क्रोशद्वयम् (**उक्षतम्**) सिञ्चतम् (**मध्वा**) माधुर्येण (**रजांसि**) लोकान् (**सुक्रतू**) उत्तमप्रज्ञौ सत्कर्माणौ वा॥१६॥

**अन्वय:**-यौ सुक्रतू मित्रावरुणा! घृतैर्गव्यूतिं रजांसि सिञ्चत इव मध्वा नोऽस्मानोक्षतं तौ वयं प्राणवत्प्रियौ मन्यामहे॥१६॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-यावध्यापकोपदेशकोपदिष्टप्राणविद्यां विज्ञाय लोकलोकान्तरव्यवहारेण सर्वदेशेषु गमनागमनौ संसाधयतस्तौ जलवन्निर्मलान्त:करणौ विज्ञातव्यौ॥१६॥

**पदार्थः**-जो **(सुक्रतू)** उत्तम बुद्धि वा श्रेष्ठ कर्मवाले **(मित्रावरुणा)** प्राण और उदान वायु के सदृश अध्यापक और उपदेशक! **(घृतैः)** जल आदिकों से **(गव्यूतिम्)** दो कोस **(रजांसि)** लोकों को सिंचनेवाले के सदृश **(मध्वा)** मधुरता से **(नः)** हम लोगों के लिए **(आ, उक्षतम्)** सींचनेवाले हैं, उन दोनों को हम लोग प्राणों के सदृश प्रिय मानते हैं॥१६॥

**भावार्थः**-जो पढ़ाने और उपदेश देनेवालें से उपदेश की गई प्राण अर्थात् पवनसम्बन्धी विद्या को जानकर लोकलोकान्तर अर्थात् एक देश से दूसरे देश के व्यवहार से सम्पूर्ण देशों में जाना-आना सिद्ध करते हैं, वे जल के सदृश शुद्ध अन्त:करणवाले जानने योग्य हैं॥१६॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**उरुशंसा नमोवृधा मह्ना दक्षस्य राजथः। द्राघिष्ठाभिः शुचिव्रता॥१७॥**

**उरुऽशंसा। नमःऽवृधा। मह्ना। दक्षस्य। राजथः। द्राघिष्ठाभिः। शुचिऽव्रता॥१७॥**

**पदार्थः**-**(उरुशंसा)** बहुप्रस्तुती **(नमोवृधा)** नमसोऽन्नादेर्वर्धकौ **(मह्ना)** महत्त्वेन **(दक्षस्य)** बलस्य **(राजथः)** **(द्राघिष्ठाभिः)** अत्यन्तं दीर्घाभिः पुरुषार्थयुक्ताभिः क्रियाभिः **(शुचिव्रता)** पवित्रकर्माणौ॥१७॥

**अन्वयः**-हे शुचिव्रतोरुशंसा नमोवृधा मित्रावरुणा! यतो युवां प्राणोदानाविव दक्षस्य मह्ना द्राघिष्ठाभी राजथस्तस्मात् सत्कर्त्तव्यौ भवथः॥१७॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! ये पवित्रोपचिता यशस्विनो बलैश्वर्य्यान्नादीनां वृद्ध्या महतीभिः सत्क्रियाभिर्लोकेषु प्रकाशन्ते तानेव सेवध्वं सत्कुरुत॥१७॥

**पदार्थः**-हे **(शुचिव्रता)** उत्तम कर्म करनेवाले **(उरुशंसा)** बहुत स्तुतियों से युक्त **(नमोवृधा)** अन्न आदि के बढ़ानेवाले अध्यापक और उपदेशक लोगो! जिससे कि आप दोनों प्राण और उदान वायु के सदृश **(दक्षस्य)** बल के **(मह्ना)** महत्त्व से **(द्राघिष्ठाभिः)** बहुत बड़ी और पुरुषार्थ से युक्त क्रियाओं से **(राजथः)** प्रकाशित होते हैं, इस कारण सत्कार करने योग्य हैं॥१७॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो पवित्रता से युक्त यशस्वी जन बल, ऐश्वर्य और अन्न आदि की वृद्धि और बड़े श्रेष्ठ कर्म्मों से लोकों में प्रकाशित होते हैं, उनकी ही सेवा और सत्कार करो॥१७॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥



www.9009.co.in

**गृणाना जमदग्निना योनावृतस्य सीदतम्। पातं सोममृतावृधा॥१८॥११॥५॥३॥**

**गृणाना। जमत्ऽअग्निना। यौनौ। ऋतस्य। सीदतम्। पातम्। सोमम्। ऋतऽवृधा॥१८॥**

**पदार्थः**-(**गृणाना**) स्तुवन्तौ (**जमदग्निना**) चक्षुषा प्रत्यक्षेण (**योनौ**) गृहे (**ऋतस्य**) सत्याचारस्य (**सीदतम्**) वसतम् (**पातम्**) रक्षतम् (**सोमम्**) ऐश्वर्यम् (**ऋतावृधा**) सत्यवर्द्धकौ॥१८॥

**अन्वयः**-हे ऋतावृधा गृणाना मित्रावरुणौ! युवां जमदग्निना ऋतस्य योनौ सततं सीदतं सोमं पातम्॥१८॥

**भावार्थः**-त एवाऽध्यापकोपदेशका भवितुमर्हन्ति ये प्रत्यक्षादिभिः प्रमाणैः पृथिवीमारभ्य परमेश्वरपर्य्यन्तान् पदार्थान्त्साक्षात्कृत्वा सत्यविद्याचरणवृद्धिप्रिया धर्म्येण पथा गच्छेयुस्ते सत्कर्त्तुमर्हाः स्युरिति॥१८॥

अत्र मित्राऽध्यापकाऽध्येतृश्रोत्रुपदेशकपरमात्मविद्वत्प्राणोदानादिगुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिरस्तीति वेद्यम्॥

**इति तृतीये मण्डले द्विषष्टितमं सूक्तं पञ्चमोऽनुवाकस्तृतीयाष्टक एकादशो वर्गस्तृतीयञ्च मण्डलं समाप्तम्॥**

**पदार्थः**-हे (**ऋतावृधा**) सत्य के बढ़ानेवाले (**गृणाना**) स्तुति करते हुए अध्यापक और उपदेशक! आप दोनों (**जमदग्निना**) नेत्र अर्थात् प्रत्यक्ष से (**ऋतस्य**) सत्य आचरण के (**योनौ**) स्थान में निरन्तर (**सीदतम्**) वसो और (**सोमम्**) ऐश्वर्य्य की (**पातम्**) रक्षा करो॥१८॥

**भावार्थः**-वे ही अध्यापक और उपदेशक होने के योग्य हैं कि जो प्रत्यक्ष आदि प्रमाणों से पृथिवी को [=से] लेकर परमेश्वरपर्य्यन्त पदार्थों का साक्षात्कार करके, सत्यविद्या के आचरण की वृद्धि जिनको प्रिय, जो धर्मयुक्त मार्ग में जावें, वे सत्कार करने के योग्य होवें॥१८॥

इस सूक्त में मित्र, अध्यापक, पढ़नेवाले, श्रोता, उपदेशक, परमात्मा, विद्वान्, प्राण और उदान आदि के गुणवर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति है, ऐसा जानना चाहिये॥

**यह तीसरे मण्डल में बासठवां सूक्त पांचवां अनुवाक, तीसरे अष्टक में ग्यारहवां वर्ग और तृतीय मण्डल समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

## ॥ओ३म्॥

## अथ चतुर्थमण्डलारम्भः॥

**विश्वा॑नि देव सवितर्दुरि॒तानि॒ परा॑ सुव। यद्भ॒द्रं तन्न॒ आ सु॑व॥ ऋ०५.८२.५॥**

**अथ चतुर्थमण्डले विंशत्यृचस्य प्रथमस्य सूक्तस्य वामदेव ऋषिः। १, ५, २० अग्निः। २-४ अग्निर्वा वरुणश्च देवता। १ स्वराडतिशक्वरी छन्दः। पञ्चमः स्वरः। २ अतिजगती छन्दः। निषादः स्वरः। ३ अष्टिश्छन्दः। मध्यमः स्वरः। ४, ६ भुरिक्पङ्क्तिः। पञ्चमः स्वरः। ५, १८, २० स्वराट्पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः। ७, ९, १५, १७, १९ विराट् त्रिष्टुप्। ८, १०, ११, १२, १६ निचृत्त्रिष्टुप्। १३, १४ त्रिष्टुप्छन्दः। धैवतः स्वरः॥**

***अथ वाणीविषयमाह॥***

अब चतुर्थ मण्डल में बीस ऋचा वाले प्रथम सूक्त का आरम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में वाणी विषय को कहते हैं॥

**त्वां ह्य॑ग्ने॒ सद॒मित्स॑म॒न्यवो॑ दे॒वासो॑ दे॒वम॑र॒तिं न्ये॑रि॒र इति॒ क्रत्वा॑ न्ये॑रि॒रे।**
**अम॑र्त्यं यजत॒ मर्त्ये॒ष्वा दे॒वमादे॑वं जनत॒ प्रचे॑तसं॒ विश्व॒मादे॑वं जनत॒ प्रचे॑तसम्॥ १॥**

त्वाम्। हि। अ॒ग्ने॒। सद॑म्। इत्। स॒ऽम॒न्यव॑ः। दे॒वास॑ः। दे॒वम्। अ॒र॒तिम्। नि॒ऽए॒रि॒रे। इति॑। क्रत्वा॑। नि॒ऽए॒रि॒रे। अम॑र्त्यम्। य॒ज॒त॒। मर्त्ये॑षु। आ। दे॒वम्। आऽदे॑वम्। ज॒न॒त॒। प्रऽचे॑तसम्। विश्व॑म्। आऽदे॑वम्। ज॒न॒त॒। प्रऽचे॑तसम्॥ १॥

**पदार्थः**-(**त्वाम्**) (**हि**) यतः (**अग्ने**) विद्वन् (**सदम्**) गृहमिव स्थितिपदम् (**इत्**) एव (**समन्यवः**) मन्युना क्रोधेन सह वर्त्तमानाः (**देवासः**) विद्वांसः (**देवम्**) दिव्यगुणप्रदम् (**अरतिम्**) प्रापणीयम् (**न्येरिरे**) निश्चयेन प्राप्नुयुः (**इति**) अनेन प्रकारेण (**क्रत्वा**) (**न्येरिरे**) प्रेरयन्ति (**अमर्त्यम्**) मरणधर्मरहितम् (**यजत**) पूजयत (**मर्त्येषु**) मरणधर्मेषु (**आ**) समन्तात् (**देवम्**) देदीप्यमानम् (**आदेवम्**) समन्तात् प्रकाशकम् (**जनत**) प्रसिद्ध्या प्रकाशयत (**प्रचेतसम्**) प्रकृष्टप्रज्ञायुक्तम् (**विश्वम्**) सर्वम् (**आदेवम्**) समन्ताद्विद्याप्रकाशयुक्तम् (**जनत**) उत्पादयत (**प्रचेतसम्**) विविधप्रज्ञानयुक्तम्॥ १॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! ये समन्यवो देवासो ह्यरतिं देवं सदं त्वामिन्येरिरे तस्मादिति क्रत्वा माञ्च न्येरिरे तम्मर्त्येष्वमर्त्यं यजत। आदेवमादेवं प्रचेतसं जनत इति क्रत्वा विश्वमा देवं प्रचेतसमाजनत॥ १॥

**भावार्थः**-यद्यदध्यापको राजा च भ्रुकुटीं कुटिलां कृत्वा विद्यार्थिनोऽमात्यप्रजाजनाँश्च प्रेरयेत्तर्हि ते सुसभ्या विद्वांसो धार्मिकाश्च जायन्ते। ये मरणधर्म्येष्वमरणधर्माणं स्वप्रकाशरूपं परमात्मानमुपास्य सर्वान् मनुष्यान् प्राज्ञान् विदुषो जनयन्ति त एव सर्वदा सत्कर्त्तव्याः सुखिनश्च भवन्ति॥ १॥



www.9009.co.in

**पदार्थ:**-हे **(अग्ने)** विद्वान् पुरुष! जो **(समन्यव:)** क्रोध के सहित वर्त्तमान **(देवास:)** विद्वान् लोग **(हि)** जिससे कि **(अरतिम्)** पहुंचाने योग्य **(देवम्)** उत्तम गुणों के और **(सदम्)** गृह के तुल्य स्थिति के देनेवाले **(त्वाम्)** आपकी **(इत्)** ही **(न्येरिरे)** प्रेरणा करते हैं, इससे **(इति)** इस प्रकार **(क्रत्वा)** करके **(न्येरिरे)** मुझे भी निश्चयकर प्राप्त होवें और उस **(मर्त्येषु)** मरणधर्मवालों में **(अमर्त्यम्)** मरणधर्म से रहित परमात्मा की **(यजत)** पूजा करो और **(आदेवम्)** सब प्रकार विद्या आदि के प्रकाश से युक्त **(आदेवम्)** सब प्रकार देदीप्यमान **(प्रचेतसम्)** उत्तम ज्ञान से युक्त **(जनत)** उत्पन्न करो, ऐसा करके **(विश्वम्)** सब के **(आदेवम्)** सब प्रकार प्रकाश और **(प्रचेतसम्)** उत्तम ज्ञानयुक्त **(जनत)** उत्पन्न करो॥१॥

**भावार्थ:**-जो अध्यापक और राजा भौंहें टेढ़ी करके विद्यार्थी मन्त्री और प्रजाजनों को प्रेरणा करें तो उत्तम श्रेष्ठ विद्वान् और धार्मिक होते हैं। जो मरणधर्म वालों में मरणधर्मरहित अपने प्रकाशस्वरूप परमात्मा की उपासना करके सब मनुष्यों को बुद्धिमान् विद्वान् करते हैं, वे ही सब काल में सत्कार करने योग्य और सुखी होते हैं॥१॥

**वाणीविषयमाह**

अब इस अगले मन्त्र में वाणी के विषय को कहते हैं॥

**स भ्रातरं वरुणमग्न आ ववृत्स्व देवाँ अच्छा सुमती यज्ञवनसं ज्येष्ठं यज्ञवनसम्।**
**ऋतावानमादित्यं चर्षणीधृतं राजानं चर्षणीधृतम्॥२॥**

**स:। भ्रातरम्। वरुणम्। अग्ने। आ। ववृत्स्व। देवान्। अच्छ। सुऽमती। यज्ञऽवनसम्। ज्येष्ठम्। यज्ञऽवनसम्। ऋतऽवानम्। आदित्यम्। चर्षणिऽधृतम्। राजानम्। चर्षणिऽधृतम्॥२॥**

**पदार्थ:**-**(स:)** **(भ्रातरम्)** प्रियं बन्धुमिव **(वरुणम्)** श्रेष्ठं जनम् **(अग्ने)** **(आ)** **(ववृत्स्व)** समन्तात् वर्त्तस्व **(देवान्)** धार्मिकान् विदुष: **(अच्छ)** सम्यक् **(सुमती)** शोभनया प्रज्ञया **(यज्ञवनसम्)** यज्ञस्य विद्याव्यवहारस्य विभाजकम् **(ज्येष्ठम्)** विद्यावृद्धम् **(यज्ञवनसम्)** राज्यव्यवहारस्य विभक्तारम् **(ऋतावानम्)** सत्यस्य सम्भक्तारम् **(आदित्यम्)** सूर्यमिव वर्त्तमानम् **(चर्षणीधृतम्)** मनुष्याणां धर्त्तारं विद्वद्भिर्धृतं वा **(राजानम्)** प्रकाशमानं नरेशम् **(चर्षणीधृतम्)** चर्षणीनां सत्याऽसत्यविवेचकानां धर्त्तारम्॥२॥

**अन्वय:**-हे अग्ने! स त्वं भ्रातरमिव वरुणं सुमती यज्ञवनसं ज्येष्ठमध्यापकं यज्ञवनसं राजानं यज्ञवनसं चर्षणीधृतमादित्यमिव ऋतावानं राजानं चर्षणीधृतमध्यापकमुपदेशकं वा देवानच्छा ववृत्स्व॥२॥

**भावार्थ:**-हे अध्यापक राजन् वा! त्वं श्रेष्ठाञ्छ्रोत्रीनमात्यान् वा सुमत्या सत्याचरणेन संयोज्य सङ्गतानि कर्माणि जोषय सूर्य्यवद्विद्यान्यायप्रकाशं च सततं कुरु॥२॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-हे **(अग्ने)** विद्वन्! **(सः)** वह आप **(भ्रातरम्)** प्रियबन्धु के सदृश **(वरुणम्)** श्रेष्ठजन को **(सुमती)** श्रेष्ठ बुद्धि से **(यज्ञवनसम्)** विद्याव्यवहार के विभाग करनेवाले **(ज्येष्ठम्)** विद्या से वृद्ध अध्यापक **(यज्ञवनसम्)** राज्यव्यवहार के विभाग करनेवाले **(राजानम्)** प्रकाशमान नरेश विद्याव्यवहार के विभाग करने वाले **(चर्षणीधृतम्)** मनुष्यों के धारणकर्त्ता वा विद्वानों से धारण किये गए **(आदित्यम्)** सूर्य के सदृश वर्त्तमान **(ऋतावानम्)** सत्य के विभागकर्त्ता प्रकाशमान [राजा] **(चर्षणीधृतम्)** सत्यासत्य की विवेचना करनेवालों के धारण करने वाले अध्यापक वा उपदेशक **(देवान्)** और धार्मिक विद्वानों को **(अच्छ)** अच्छे प्रकार **(आ, ववृत्स्व)** सब ओर से वर्त्तिये अर्थात् उनके अनुकूल वर्त्तमान कीजिये॥२॥

**भावार्थः**-हे अध्यापक वा राजन्! आप श्रेष्ठ श्रोतृजन वा मन्त्रियों को उत्तम मति और सत्य आचरण से संयुक्त करके संगत कर्मों का सेवन कराओ और सूर्य्य के सदृश विद्या न्याय का प्रकाश निरन्तर करो॥२॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उस ही विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**सखे॑ सखा॑यम॒भ्या व॑वृत्स्वा॒शुं न च॒क्रं रथ्ये॑व॒ रंह्या॒स्मभ्यं॑ दस्म॒ रंह्या॑।**

**अग्ने॑ मृळी॒कं वरु॑णे॒ सचा॑ विदो म॒रुत्सु॑ वि॒श्वभा॑नुषु।**

**तो॒काय॑ तु॒जे शु॑शुचान॒ शं कृ॑ध्य॒स्मभ्यं॑ दस्म॒ शं कृ॑धि॥३॥**

**सखे॑। सखा॑यम्। अ॒भि। आ। व॒वृ॒त्स्व॒। आ॒शुम्। न। च॒क्रम्। रथ्या॑ऽइव। रंह्या॑। अ॒स्मभ्य॑म्। द॒स्म॒। रंह्या॑। अग्ने॑। मृ॒ळी॒कम्। वरु॑णे। सचा॑। वि॒दः॒। म॒रुत्ऽसु॑। वि॒श्वऽभा॑नुषु। तो॒का॑य। तु॒जे। शु॒शु॒चा॒न॒। शम्। कृ॒धि। अ॒स्मभ्य॑म्। द॒स्म॒। शम्। कृ॒धि॥३॥**

**पदार्थः**-**(सखे)** मित्र **(सखायम्)** सुहृदम् **(अभि)** **(आ)** **(ववृत्स्व)** आवर्त्तय **(आशुम्)** शीघ्रगामिनमश्वम् **(न)** इव **(चक्रम्)** **(रथ्येव)** रथेषु साधूनीव **(रंह्या)** गमनीयानि **(अस्मभ्यम्)** **(दस्म)** दुःखोपनाशक **(रंह्या)** गमनीयानि **(अग्ने)** वह्निरिव प्रकाशमान **(मृळीकम्)** सुखकरम् **(वरुणे)** **(सचा)** सत्यसंयोगेन **(विदः)** प्राप्नुयाः **(मरुत्सु)** मनुष्येषु **(विश्वभानुषु)** विश्वस्मिन् भानुषु भानुषु सूर्य्येष्विव प्रकाशकेषु **(तोकाय)** अपत्याय **(तुजे)** विद्याबलमिच्छुकाय **(शुशुचान)** पवित्रकारक **(शम्)** सुखम् **(कृधि)** **(अस्मभ्यम्)** **(दस्म)** अविद्यानाशक **(शम्)** सुखम् **(कृधि)** कुरु॥३॥

**अन्वयः**-हे सखे! चक्रमाशुं न सखायमभ्याववृत्स्व। हे दस्म! रंह्या रथ्येवाऽस्मभ्यं रंह्याभ्याववृत्स्व। हे अग्ने! त्वं सचा वरुणे मृळीकं विदः। हे शुशुचान! विश्व भानुषु मरुत्सु तुजे तोकाय शं कृधि। हे दस्म! त्वमस्मभ्यं शं कृधि॥३॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यूयं सर्वैः सह सखायो भूत्वाश्वा रथमिव सखीन्त्सत्कर्मसु सद्यः प्रवर्त्तयत। श्रेष्ठमार्ग इवाऽस्मान्त्सरले व्यवहारे गमय। येऽत्र जगति सूर्य्यवच्छुभगुणान्विताः सर्वात्मनः प्रकाश्य सुखं जनयेयुस्तेऽस्माभिः सत्कर्तव्याः स्युः॥३॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-हे **(सखे)** मित्र! **(चक्रम्)** पहिये के और **(आशुम्)** शीघ्र चलने वाले घोड़े के **(न)** सदृश **(सखायम्)** स्नेहीजन को **(अभि, आ, ववृत्स्व)** समीप वर्त्ताइये और **(दस्म)** हे दु:ख के नाशकर्त्ता! **(रंह्या)** प्राप्त होने योग्य **(रथ्येव)** वाहनों के निमित्त उत्तम स्थानों को जैसे, वैसे **(अस्मभ्यम्)** हम लोगों के लिये **(रंह्या)** प्राप्त होने योग्यों के सब प्रकार समीप प्राप्त होइये और **(अग्ने)** हे अग्नि के सदृश प्रकाशमान! आप **(सचा)** सत्य के संयोग से **(वरुणे)** उपदेश देनेवाले के विषय में **(मृळीकम्)** सुखकर्त्ता को **(विदः)** प्राप्त होवें और **(शुशुचान)** हे पवित्र करनेवाले! **(विश्वभानुषु)** सब में सूर्य के सदृश प्रकाश करने वाले **(मरुत्सु)** मनुष्यों में **(तुजे)** विद्या और बल की इच्छा करने वाले **(तोकाय)** पुत्रादि के लिये **(शम्)** सुख को **(कृधि)** करो और **(दस्म)** हे अविद्या के नाश करने वाले! आप **(अस्मभ्यम्)** हम लोगों के लिये **(शम्)** सुख **(कृधि)** करिये॥३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! आप लोग सब लोगों के साथ मित्र होकर जैसे घोड़े रथ को ले चलते हैं, वैसे मित्रों को उत्तम कर्म्मों में प्रवृत्त करो। और श्रेष्ठमार्ग के सदृश हम लोगों को सरल मर्य्यादा में पहुँचाइये। जो लोग इस संसार में सूर्य्य के सदृश उत्तम गुणों से युक्त हुए सब के आत्माओं को प्रकाशित करके सुख को उत्पन्न करें, वे हम लोगों से सत्कार करने योग्य होवें॥३॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**त्वं नो॑ अग्ने॒ वरु॑णस्य वि॒द्वान्दे॒वस्य॒ हेळोऽव॑ यासिसीष्ठाः।**

**यजि॑ष्ठो॒ वह्नि॑तमः॒ शोशु॑चानो॒ विश्वा॒ द्वेषां॑सि॒ प्र मु॑मुग्ध्य॒स्मत्॥४॥**

**त्वम्। न॒ः। अ॒ग्ने। वरु॑णस्य। वि॒द्वान्। दे॒वस्य॑। हेळ॑ः। अव॑। या॒सि॒सी॒ष्ठाः। यजि॑ष्ठः। वह्नि॑ऽतमः। शोशु॑चानः। विश्वा॑। द्वेषां॑सि। प्र। मु॒मु॒ग्धि। अ॒स्मत्॥४॥**

**पदार्थः**-**(त्वम्)** **(नः)** अस्मान् **(अग्ने)** अग्निरिव विद्वन् **(वरुणस्य)** श्रेष्ठस्य **(विद्वान्)** **(देवस्य)** विद्याप्रकाशकस्य **(हेळः)** हेळन्तेऽनादृता भवन्ति यस्मिन् सः **(अव)** निवारणे **(यासिसीष्ठाः)** प्रेरयेथाः। अत्र **वा च्छन्दसी**ति मूर्द्धन्यादेशाभावः **(यजिष्ठः)** अतिशयेनेष्टा **(वह्नितमः)** अतिशयेन वोढा **(शोशुचानः)** भृशं प्रकाशमानः **(विश्वा)** विश्वानि सर्वाणि **(द्वेषांसि)** द्वेषयुक्तानि कर्माणि **(प्र)** **(मुमुग्धि)** मुञ्च पृथक्कुरु **(अस्मत्)** अस्माकं सकाशात्॥४॥

**अन्वयः**-हे अग्ने विद्वांस्त्वं वरुणस्य देवस्य हेळः सन्नव यासिसीष्ठा यजिष्ठो वह्नितमो नोऽस्माञ्छोशुचानः सन् विश्वा द्वेषांस्यस्मत्प्र मुमुग्धि॥४॥

**भावार्थः**-त एव विद्वांसः सन्ति ये श्रेष्ठस्य विदुषोऽनादरं न कुर्वन्ति त एवाध्यापकोपदेशकाः श्रेयांसो योऽस्माकं दोषान् दूरीकृत्य पवित्रयन्ति त एवाऽस्माभिः सत्कर्त्तव्यास्सन्ति॥४॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-हे **(अग्ने)** अग्नि के सदृश विद्वान् पुरुष **(विद्वान्)** विद्यायुक्त **(त्वम्)** आप **(वरुणस्य)** श्रेष्ठ **(देवस्य)** विद्या के प्रकाश करनेवाले के **(हेळः)** आदररहित होते हैं जिसमें उसके **(अव)** निवारण में **(यासिसीष्ठाः)** प्रेरणा करो और **(यजिष्ठः)** अत्यन्त यज्ञ करने और **(वह्नितमः)** अत्यन्त पहुंचाने वाले **(नः)** हम लोगों के प्रति **(शोशुचानः)** अत्यन्त प्रकाशमान हुए आप **(विश्वा)** सब **(द्वेषांसि)** द्वेषयुक्त कर्म्मों को **(अस्मत्)** हम लोगों के समीप से **(प्र,मुमुग्धि)** अलग कीजिये॥४॥

**भावार्थः**-वे ही विद्वान् जन हैं कि जो श्रेष्ठ विद्वान् पुरुष का अनादर नहीं करते हैं और वे ही अध्यापक और उपदेशक कल्याणकारी होते हैं, जो हम लोगों के दोषों को दूर करके पवित्र करते हैं, वे ही हम लोगों से सत्कार करने योग्य हैं॥४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**स त्वं नो॑ अग्नेऽव॒मो भ॑वो॒ती नेदि॑ष्ठो अ॒स्या उ॒षसो॒ व्यु॑ष्टौ।**

**अव॑ यक्ष्व नो॒ वरु॑णं॒ ररा॑णो वी॒हि मृ॑ळी॒कं सु॒हवो॑ न एधि॥५॥१२॥**

**सः। त्वम्। नः॒। अ॒ग्ने॒। अ॒व॒मः। भ॒व॒। ऊ॒ती। नेदि॑ष्ठः। अ॒स्याः। उ॒षसः॑। वि॒ऽउ॑ष्टौ। अव॑। य॒क्ष्व॒। नः॒। वरु॑णम्। ररा॑णः। वी॒हि। मृ॒ळी॒कम्। सु॒ऽहवः॑। नः॒। ए॒धि॒॥५॥**

**पदार्थः**-**(सः)** **(त्वम्)** **(नः)** अस्माकम् **(अग्ने)** पावक इव विद्वन् **(अवमः)** रक्षकः **(भव)** **(ऊती)** ऊत्या रक्षणाद्यया क्रियया **(नेदिष्ठः)** अतिशयेन समीपस्थः **(अस्याः)** **(उषसः)** प्रातःकालस्य **(व्युष्टौ)** विशेषेण दाहे **(अव)** **(यक्ष्व)** सङ्गच्छस्व **(नः)** अस्मभ्यम् **(वरुणम्)** श्रेष्ठमध्यापकमुपदेशकं वा **(रराणः)** ददन् **(वीहि)** व्याप्नुहि **(मृळीकम्)** सुखकरम् **(सुहवः)** शोभनाऽऽह्वानः **(नः)** अस्मान् **(एधि)** प्राप्तो भव॥५॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! स त्वमस्या उषसो व्युष्टौ नेदिष्ठः सन्नूती नोऽवमो भव। वरुणं रराणः सन्नोऽव यक्ष्व सुहवः सन्नो मृळीकं वीहि न एधि॥५॥

**भावार्थः**-स एवाऽध्यापको राजा श्रेष्ठोऽस्ति यः सुशिक्षयाऽस्मानुषाइव रक्षेद् दुष्टाचारात् पृथक्कृत्य श्रेष्ठाचारं कारयेत्॥५॥

**पदार्थः**-हे **(अग्ने)** अग्नि के सदृश तेजस्वी विद्वन् पुरुष **(सः)** वह **(त्वम्)** आप **(अस्याः)** इस **(उषसः)** प्रातःकाल के **(व्युष्टौ)** विशेष दाह में **(नेदिष्ठः)** अत्यन्त समीप स्थित **(ऊती)** रक्षण आदि कर्म से **(नः)** हम लोगों के **(अवमः)** रक्षा करनेवाले **(भव)** हूजिये **(वरुणम्)** श्रेष्ठ अध्यापक वा उपदेशक को **(रराणः)** देते हुए **(नः)** हम लोगों को **(अव, यक्ष्व)** प्राप्त हूजिये और **(सुहवः)** उत्तम प्रकार बुलाने वाले हुए **(नः)** हम लोगों के लिये **(मृळीकम्)** सुख करने वाले कार्य्य को **(वीहि)** व्याप्त हूजिये और हम लोगों को **(एधि)** प्राप्त हूजिये॥५॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-वह ही अध्यापक वा राजा श्रेष्ठ है कि जो उत्तम शिक्षा से हम लोगों की प्रातःकाल के सदृश रक्षा करे। दुष्ट आचरण से अलग करके श्रेष्ठ आचरण करावे॥५॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अस्य श्रेष्ठा सुभगस्य संदृग्देवस्य चित्रतमा मर्त्येषु।**

**शुचि घृतं न तप्तमघ्न्यायाः स्पार्हा देवस्य मंहनेव धेनोः॥६॥**

**अस्य। श्रेष्ठा। सुऽभगस्य। सम्ऽदृक्। देवस्य। चित्रऽतमा। मर्त्येषु। शुचि। घृतम्। न। तप्तम्। अघ्न्यायाः। स्पार्हा। देवस्य। मंहनाऽइव। धेनोः॥६॥**

**पदार्थः**-**(अस्य)** सर्वपालकस्य राज्ञः **(श्रेष्ठा)** श्रेष्ठानि कर्माणि **(सुभगस्य)** प्रशंसितैश्वर्य्यस्य **(संदृक्)** यः सम्यक् पश्यति **(देवस्य)** दिव्यगुणकर्मस्वभावस्य **(चित्रतमा)** अतिशयाद्भुतगुणकर्मस्वभावोत्पादकानि **(मर्त्येषु)** मनुष्येषु **(शुचि)** पवित्रम् **(घृतम्)** आज्यम् **(न)** इव **(तप्तम्)** **(अघ्न्यायाः)** हन्तुमयोग्यायाः **(स्पार्हा)** स्पर्हणीयानि **(देवस्य)** परमात्मनः **(मंहनेव)** महान्ति पूजनीयानीव **(धेनोः)** वाण्या गोर्वा॥६॥

**अन्वयः**-हे विद्वन्! मर्त्येष्वस्य सुभगस्य देवस्य चित्रतमा श्रेष्ठा तप्तं शुचि घृतं न वर्त्तन्तेऽघ्न्याया धेनोस्तप्तं शुचि घृतं न देवस्य स्पार्हा मंहनेव वर्त्तन्ते तेषां संदृक् सन् राज्यं वर्द्धय॥६॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः।[81] येषां राजादीनामग्निना तप्तं शुद्धघृतमिव विदुषः सुशिक्षिताया वाचो मधुराणि भाषणानीव भाषणानि परमेश्वरस्य गुणकर्मस्वभावा इव गुणकर्मस्वभावास्सन्ति तेऽत्याश्चर्य्यमैश्वर्यं राज्यमद्भुतां कीर्त्तिं च लभन्ते॥६॥

**पदार्थः**-हे विद्वन्! **(मर्त्येषु)** मनुष्यों में **(अस्य)** इस सब के पालन करनेवाले **(सुभगस्य)** प्रशंसित ऐश्वर्य्य और **(देवस्य)** दिव्य गुण कर्म और स्वभावयुक्त राजा के **(चित्रतमा)** अत्यन्त अद्भुत और **(श्रेष्ठा)** उत्तम कर्म **(तप्तम्)** तपाये गये **(शुचि)** पवित्र **(घृतम्)** घी के **(न)** समान वर्त्तमान हैं तथा **(अघ्न्यायाः)** न नष्ट करने योग्य **(धेनोः)** वाणी के वा गौ के तपाये गये पवित्र घी के सदृश **(देवस्य)** परमात्मा के **(स्पार्हा)** चाहने योग्य **(मंहनेव)** अतीव पूजनीय सदृश कर्म वर्त्तमान हैं, उनके **(संदृक्)** उत्तम प्रकार देखने वाले होते हुए राज्य की वृद्धि करो॥६॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमावाचकलुप्तोपमालङ्कार हैं। जिन राजादिकों के अग्नि से तपाये गये स्वच्छ घृत के समान विद्वान् की उत्तम शिक्षित वाणी के मधुर वचनों के समान वचन और परमेश्वर के

८१. हिन्दीभाषायाम्- 'उपमावाचकलुप्तोपमालङ्कार है' लिखितमस्ति।



www.9009.co.in

गुण, कर्म, स्वभावों के समान गुण, कर्म, स्वभाव हैं, वे अति आश्चर्य्यरूप ऐश्वर्य्य राज्य और अद्भुत कीर्ति को प्राप्त होते हैं॥६॥

**अथाग्निदृष्टान्तेन विद्वद्गुणानाह।**

अब अग्नि के दृष्टान्त से विद्वानों के गुणों को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**त्रिरस्य ता परमा सन्ति सत्या स्पार्हा देवस्य जनिमान्यग्नेः।**

**अनन्ते अन्तः परिवीत आगाच्छुचिः शुक्रो अर्यो रोरुचानः॥७॥**

**त्रिः। अस्य। ता। परमा। सन्ति। सत्या। स्पार्हा। देवस्य। जनिमानि। अग्नेः। अनन्ते। अन्तरिति। परिऽवीतः। आ। अगात्। शुचिः। शुक्रः। अर्यः। रोरुचानः॥७॥**

**पदार्थः**-(**त्रिः**) त्रिवारम् (**अस्य**) राज्ञः (**ता**) तानि (**परमा**) उत्कृष्टानि (**सन्ति**) (**सत्या**) सत्सु व्यवहारेषु साधूनि (**स्पार्हा**) अभिकाङ्क्षितुं योग्यानि (**देवस्य**) दिव्यगुणकर्मस्वभावस्य (**जनिमानि**) जन्मानि (**अग्नेः**) विद्युदादेरिव (**अनन्ते**) परमात्मन्याकाशे वा (**अन्तः**) मध्ये (**परिवीतः**) परितः सर्वतो व्याप्तशुभगुणकर्मस्वभावः (**आ, अगात्**) आगच्छन्ति (**शुचिः**) पवित्रः (**शुक्रः**) आशुकारी (**अर्य्यः**) सर्वस्य स्वामी (**रोरुचानः**) भृशं देदीप्यमानः॥७॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! अग्नेरिव यस्याऽस्य देवस्य यानि सत्या स्पार्हा परमा जनिमानि सन्ति यो रोरुचानोऽर्य्यः शुक्रः शुचिः परिवीतोऽनन्तेऽन्तस्ता तानि त्रिरागात् स एव सर्वाधीशत्वमर्हति॥७॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। स एवोत्तमे कुले जायते यस्योत्तमानि कर्माणि स्युः। यथा विद्युदाद्यग्निर्निस्सीमेऽन्तरिक्षे विराजते तथैव योऽनन्तं जगदीश्वरमन्तर्ध्यात्वा सर्वज्ञानवाञ्छुद्धियुक्तो भूत्वा सर्वाण्युत्तमानि प्रशंस्यानि कर्माणि कर्तुं प्रभवति॥७॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! (**अग्नेः**) अग्नि के सदृश जिस (**अस्य, देवस्य**) उत्तम गुण कर्म और स्वभाव वाले इस राजा के जो (**सत्या**) उत्तम व्यवहारो में श्रेष्ठ (**स्पार्हा**) अभिकांक्षा करने के योग्य (**परमा**) उत्तम (**जनिमानि**) जन्म (**सन्ति**) हैं और जो (**रोरुचानः**) अत्यन्त प्रकाशमान (**अर्य्यः**) सब का स्वामी (**शुक्रः**) शीघ्र करने वाला (**शुचिः**) पवित्र (**परिवीतः**) जिसके सब और उत्तम गुण, कर्म और स्वभाव व्याप्त वह (**अनन्ते**) परमात्मा वा आकाशविषयक (**अन्तः**) मध्य में (**ता**) उनको (**त्रिः**) तीन वार (**आ, अगात्**) प्राप्त होता है, वही सब का अधीश होने योग्य है॥७॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। वही उत्तम कुल उत्पन्न होता है कि जिसके उत्तम कर्म हों। और जैसे बिजुली आदि अग्नि सीमारहित अन्तरिक्ष में शोभित होता है, वैसे ही जो अनन्त जगदीश्वर का ध्यान करके सब ज्ञान वाला शुद्धियुक्त होकर सम्पूर्ण उत्तम प्रशंसा करने योग्य कर्मों के करने को समर्थ होता है॥७॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**



www.9009.co.in

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**स दूतो विश्वेदभि वष्टि सद्मा होता हिरण्यरथो रंसुजिह्वः।**

**रोहिदश्वो वपुष्यो विभावा सदा रण्वः पितुमतीव संसत्॥८॥**

**सः। दूतः। विश्वा। इत्। अभि। वष्टि। सद्म। होता। हिरण्यऽरथः। रम्ऽसुजिह्वः। रोहित्ऽअश्वः। वपुष्यः। विभाऽवा। सदा। रण्वः। पितुमतीऽइव। सम्ऽसत्॥८॥**

**पदार्थः**-(**सः**) (**दूतः**) यो दुनोति दुष्टान् परितापयति सः (**विश्वा**) सर्वाणि (**इत्**) एव (**अभि**) (**वष्टि**) कामयते (**सद्म**) सद्मान्युत्तमानि कर्माणि स्थानानि वा (**होता**) दाता आदाता वा (**हिरण्यरथः**) तेजोमयरमणीयस्वरूपस्सूर्य इव रथो व्यवहारो यस्य सः (**रंसुजिह्वः**) रमणीयवाक् (**रोहिदश्वः**) रोहिता रक्तादिगुणविशिष्टा अग्न्यादयोऽश्वा आशुगामिनो यस्य सः (**वपुष्यः**) वपुष्षु रूपेषु भवः (**विभावा**) विभववान् (**सदा**) (**रण्वः**) रमणीयस्वरूपः (**पितुमतीव**) प्रशंसितबह्वन्नाद्यैश्वर्य्ययुक्तेव (**संसत्**) सम्राट्सभा॥८॥

**अन्वयः**-यो हिरण्यरथो रंसुजिह्वो रोहिदश्वो वपुष्यो विभावा रण्वो होता सन् राजा दूत इव विश्वा सद्माऽभि वष्टि स इत् संसत् पितुमतीव सदोन्नतिशीलो भवति॥८॥

**भावार्थः**-अत्रोपमावाचकलुप्तोपमालङ्कारौ। यथा दूता राज्ञां हितं चिकीर्षन्ति तथैव ये राजानः प्रजाहितं सततं कुर्वन्ति ते नृपाः सभासदश्च पुण्यभाजो भवन्ति॥८॥

**पदार्थः**-(**हिरण्यरथः**) तेजोमय सुन्दर स्वरूपयुक्त सूर्य्य के सदृश जिसका व्यवहार (**रंसुजिह्वः**) सुन्दर जिसकी वाणी (**रोहिदश्वः**) जिसके रक्त आदि गुणों से विशिष्ट अग्नि आदिक घोड़े शीघ्र चलने वाले वह (**वपुष्यः**) रूपों में प्रसिद्ध (**विभावा**) ऐश्वर्य्यवान् (**रण्वः**) सुन्दर स्वरूपयुक्त (**होता**) देने वा लेने वाला होता हुआ राजा (**दूतः**) दुष्टों को सन्ताप देते हुए के सदृश (**विश्वा**) सब (**सद्म**) उत्तम कर्म वा स्थानों की (**अभि, वष्टि**) कामना करता है (**सः**) वह (**इत्**) ही (**संसत्**) चक्रवर्तियों की सभा (**पितुमतीव**) जो कि प्रशंसित बहुत अन्न आदि ऐश्वर्य्य से युक्त उसके सदृश (**सदा**) सब काल में उन्नतिशील होता है॥८॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमा और वाचकलुप्तोपमा अलङ्कार हैं। जैसे दूतजन राजाओं के हित करने की इच्छा करते हैं, वैसे ही जो राजाजन प्रजा का हित निरन्तर करते हैं, वे राजा और सभासद् पुण्य के भजने वाले होते हैं॥८॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**स चेतयन्मनुषो यज्ञबन्धुः प्र तं मह्या रशनया नयन्ति।**



www.9009.co.in

**स क्षे॑त्यस्य दुर्या॑सु साध॑न् दे॒वो मर्त॑स्य सधनि॒त्वमा॑प॥९॥**

**सः। चे॒त॒य॒त्। मनु॑षः। य॒ज्ञऽब॑न्धुः। प्र। तम्। म॒ह्या। र॒श॒नया॑। न॒य॒न्ति॒। सः। क्षे॒ति॒। अ॒स्य॒। दुर्या॑सु। साध॑न्। दे॒वः। मर्त॑स्य। स॒ध॒नि॒ऽत्वम्। आ॒प॒॥९॥**

**पदार्थः**-(**सः**) (**चेतयत्**) ज्ञापयेत् (**मनुषः**) अमात्यप्रजाजनान् (**यज्ञबन्धुः**) यज्ञस्य न्यायव्यवहारस्य भ्रातेव वर्त्तमानः (**प्र**) (**तम्**) (**मह्या**) महत्या (**रशनया**) (**नयन्ति**) (**सः**) (**क्षेति**) निवसति (**अस्य**) (**दुर्य्यासु**) (**साधन्**) (**देवः**) दाता (**मर्त्तस्य**) मनुष्यस्य (**सधनित्वम्**) धनिनां भावेन सह वर्त्तमानं राज्यम् (**आप**) आप्नोति॥९॥

**अन्वयः**-यदि स यज्ञबन्धू राजा मनुषश्चेतयत्तं ये सभासदो मह्या रशनयाऽश्वा इव नीत्या प्र नयन्ति सोऽस्य राज्यस्य दुर्यासु न्यायगृहेषु राजव्यवहारं साधन् क्षेति स देवो मर्त्तस्य सधनित्वमाप॥९॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यथाऽऽप्ता अध्यापकोपदेशका सुशिक्षया विद्यार्थिनो धर्म्ये मार्गं नयन्ति तथैव राजनीतिशिक्षया राजानं राजधर्मपथं नयन्तु यः सामात्यः सप्रजो राजा निर्व्यसनो भूत्वा प्रीत्या राजधर्मं करोति स ऐश्वर्य्यवज्जनं राज्यं प्राप्य सुखेन निवसति॥९॥

**पदार्थः**-जो (**सः**) वह (**यज्ञबन्धुः**) न्याय व्यवहार के भ्राता के सदृश वर्त्तमान राजा (**मनुषः**) मन्त्री और प्रजाजनों को (**चेतयत्**) जनावे (**तम्**) उसको जो सभासद् लोग (**मह्या**) बड़ी (**रशनया**) रस्सी से घोड़े के सदृश नीति से (**प्र**) (**नयन्ति**) अच्छे प्रकार प्राप्त करते हैं (**सः**) वह (**अस्य**) इस राज्य के (**दुर्य्यासु**) न्याय के स्थानों में राजव्यवहार को (**साधन्**) साधता हुआ (**क्षेति**) निवास करता है, वह (**देवः**) देनेवाला (**मर्त्तस्य**) मनुष्यसम्बन्धी (**सधनित्वम्**) धनीपन के साथ वर्त्तमान राज्य को (**आप**) प्राप्त होता है॥९॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे यथार्थवादी अध्यापक और उपदेशक लोग उत्तम शिक्षा से विद्यार्थियों के लिये धर्मयुक्त मर्य्यादा को प्राप्त कराते हैं, वैसे ही राजनीति की शिक्षा से राजा के लिये राजधर्म के मार्ग को प्राप्त करो। और जो मन्त्री और प्रजा के सहित राजा व्यसनरहित होकर प्रीति से राजधर्म को करता है, वह ऐश्वर्य्ययुक्त जन और राज्य को प्राप्त होकर सुख से निवास करता है॥९॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**स तू नो॑ अ॒ग्निर्न॑यतु प्रजा॒नन्नच्छा॒ रत्नं॑ दे॒वभ॑क्तं॒ यद॑स्य।**

**धि॒या यद्विश्वे॑ अ॒मृता॒ अकृ॑ण्व॒न्द्यौष्पि॒ता ज॑नि॒ता स॒त्यमु॑क्षन्॥१०॥१३॥**

**सः। तु। नः॒। अ॒ग्निः। न॒य॒तु॒। प्र॒जा॒नन्। अच्छ॑। रत्न॑म्। दे॒वऽभक्तम्। यत्। अ॒स्य॒। धि॒या। यत्। विश्वे॑। अ॒मृता॑ः। अकृ॑ण्वन्। द्यौः। पि॒ता। ज॒नि॒ता। स॒त्यम्। उ॒क्षन्॥१०॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**सः**) (**तु**) पुनः। अत्र **ऋचि तुनुघे**ति दीर्घः। (**नः**) अस्मान् (**अग्निः**) स्वप्रकाशः परमात्मेव राजा (**नयतु**) प्रापयतु (**प्रजानन्**) (**अच्छ**) अत्र **संहितायामि**ति दीर्घः। (**रत्नम्**) रमणीयं धनम् (**देवभक्तम्**) देवैः सेवितम् (**यत्**) (**अस्य**) जगतः (**धिया**) प्रज्ञया (**यत्**) यस्मिन् (**विश्वे**) (**अमृताः**) जन्ममृत्युरहिता जीवाः (**अकृण्वन्**) कुर्वन्ति (**द्यौः**) प्रकाशमानः (**पिता**) पालकः (**जनिता**) जनकः (**सत्यम्**) (**उक्षन्**) सेवन्ते॥१०॥

**अन्वयः**-हे राजन्! यथा सोऽस्य पिता जनिता द्यौरग्निः परमात्मा धिया सर्वं प्रजानन् नोऽस्मान् यद्देवभक्तं रत्नमच्छ नयति तथा भवान्नयतु। यद्यस्मिँस्तु विश्वेऽमृताः सत्यमुक्षँस्तु मोक्षमकृण्वन् तत्रैव स्थित्वा सत्यं सेवित्वा धर्म्मेण राज्यं सम्पाल्य मोक्षमाप्नुहि॥१०॥

**भावार्थः**-हे राजादयो मनुष्या! यथा सर्वस्य जगतः पिता जनः परमात्मा दयया सर्वेषां जीवानां सुखाय विविधान् पदार्थान् रचयित्वा दत्वाऽभिमानं न करोति तथैव यूयं भवत। ईश्वरस्य सद्गुणकर्म्मस्वभावैस्तुल्यान्त्स्वगुणकर्म्मस्वभावान् कृत्वा राज्यादिकं पालयित्वाऽन्ते मोक्षमाप्नुत॥१०॥

**पदार्थः**-हे राजन्! जैसे (**सः**) वह (**अस्य**) इस संसार का (**पिता**) पालन करने और (**जनिता**) उत्पन्न करनेवाला (**द्यौः**) प्रकाशमान (**अग्निः**) अपने से प्रकाशरूप परमात्मा के सदृश राजा (**धिया**) बुद्धि से सब को (**प्रजानन्**) जानता हुआ (**नः**) हम लोगों को (**यत्**) जो (**देवभक्तम्**) देवों से सेवित (**रत्नम्**) सुन्दर धन को (**अच्छ**) उत्तम प्रकार प्राप्त कराता है, वैसे आप (**नयतु**) प्राप्त कराइये (**यत्**) जिसमें (**तु**) फिर (**विश्वे**) सब (**अमृताः**) जन्म और मृत्यु से रहित जीव (**सत्यम्**) सत्य का (**उक्षन्**) सेवन करते हुए मोक्ष को (**अकृण्वन्**) करते हैं, वहाँ ही स्थित हो और सत्य का सेवन और धर्म से राज्य का पालन करके मोक्ष को प्राप्त होइये॥१०॥

**भावार्थः**-हे राजा आदि मनुष्यों जैसे सब जगत् का पालन और उत्पन्न करनेवाला परमात्मा दया से सब जीवों के सुख के लिये अनेक प्रकार के पदार्थों को रच और दे के अभिमान नहीं करता है, वैसे ही आप लोग होइये। और ईश्वर के उत्तम गुण, कर्म्म और स्वभावों के तुल्य अपने गुण, कर्म्म और स्वभावों को करके राज्य आदि का पालन करके अन्त में मोक्ष को प्राप्त होओ॥१०॥

**अथाग्निपदेन परमात्मविषयमाह॥**

अब इस अगले मन्त्र में अग्निपद से परमात्मा के विषय को कहते हैं॥

**स जायत प्रथमः पस्त्यासु महो बुध्ने रजसो अस्य योनौ।**

**अपादशीर्षा गुहमानो अन्तायोयुवानो वृषभस्य नीळे॥११॥**

**सः। जायत। प्रथमः। पस्त्यासु। महः। बुध्ने। रजसः। अस्य। योनौ। अपात्। अशीर्षा। गुहमानः। अन्ता। आऽयोयुवानः। वृषभस्य। नीळे॥११॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**सः**) विद्युद्रूपोऽग्निः (**जायत**) जायते। अत्राडभावः (**प्रथमः**) आदिमः (**पस्त्यासु**) गृहेषु (**महः**) महति (**बुध्ने**) अन्तरिक्षे (**रजसः**) लोकसमूहस्य (**अस्य**) (**योनौ**) कारणे (**अपात्**) पादरहितः (**अशीर्षा**) शिरआद्यवयवरहितः (**गुहमानः**) संवृतः सन् (**अन्ता**) अन्ते समीपे (**आयोयुवानः**) समन्ताद् भृशं मिश्रयिता विभाजको वा (**वृषभस्य**) वर्षकस्य सूर्य्यस्य (**नीळे**) गृहे॥११॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथा स प्रथमः सूर्यो महो बुध्नेऽस्य रजसो योनौ जायत यथा गुहमानोऽपादशीर्षा आयोयुवानो वृषभस्य नीळेऽन्ता जायत तथैव यूयमपि पस्त्यासु जायध्वम्॥११॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यथाऽनन्त आकाशे प्रकृतेर्महदादि क्रमेणेदं जगज्जातमत्र निरवयवा जीवाः संवृताः सन्तः परमात्मनः समीपे वर्त्तमाना गृहेषु जायन्ते शरीरं धरन्ति त्यजन्ति च तं सर्वेश्वरमन्तर्ध्यात्वा सुखिनो भवत॥११॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे (**सः**) बिजुलीरूप अग्नि (**प्रथमः**) प्रथम सूर्य्य (**महः**) बड़े (**बुध्ने**) अन्तरिक्ष में (**अस्य**) इस (**रजसः**) लोकों के समूह के (**योनौ**) कारण में (**जायत**) उत्पन्न होता है और जैसे (**गुहमानः**) ढंपा हुआ (**अपात्**) पैरों और (**अशीर्षा**) शिर आदि (**आयोयुवानः**) सब प्रकार अत्यन्त मिलाने वा अलग करने वाला (**वृषभस्य**) वृष्टि करने वाले सूर्य्य के (**नीळे**) स्थान में (**अन्ता**) समीप में उत्पन्न होता है, वैसे ही आप लोग भी (**पस्त्यासु**) घरों में उत्पन्न अर्थात् प्रकट हूजिये॥११॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जैसे अन्तरहित आकाश में प्रकृति से महत् तत्त्व अर्थात् बुद्धि आदि के क्रम से यह संसार उत्पन्न हुआ इस संसार में अवयवों से रहित मिलते हुए जीव परमात्मा के समीप में वर्त्तमान हो, गृहों में उत्पन्न होते शरीर को धारण करते और त्यागते हैं, उस सब के स्वामी का हृदय में ध्यान कर सुखी हूजिये॥११॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**प्र शर्ध आर्त प्रथमं विपन्याँ ऋतस्य योना वृषभस्य नीळे।**

**स्पार्हो युवा वपुष्यो विभावा सप्त प्रियासोऽजनयन्त वृष्णे॥१२॥**

**प्र। शर्धः। आर्त। प्रथमम्। विपन्या। ऋतस्य। योना। वृषभस्य। नीळे। स्पार्हः। युवा। वपुष्यः। विभाऽवा। सप्त। प्रियासः। अजनयन्त। वृष्णे॥१२॥**

**पदार्थः**-(**प्र**) (**शर्धः**) बलम् (**आर्त**) प्राप्नुयाः (**प्रथमम्**) आदिमम् (**विपन्या**) विपने विविधव्यवहारे साध्व्या (**ऋतस्य**) सत्यस्य कारणस्य (**योना**) गृहे (**वृषभस्य**) वर्षकस्याऽग्नेः (**नीळे**) स्थाने (**स्पार्हः**) स्पृहणीयः (**युवा**) प्राप्तयुवावस्था (**वपुष्यः**) वपुष्षु साधुः (**विभावा**) विविधविद्याप्रकाशयुक्तः (**सप्त**) पञ्च प्राणमनोबुद्धिश्च (**प्रियासः**) कमनीयाः सेवनीयाः (**अजनयन्त**) जनयन्ति (**वृष्णे**) वर्षकाय जीवाय॥१२॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे विद्वन्! यथा वृष्णे सप्त प्रियासोऽजनयन्त तथर्त्तस्य योना वृषभस्य नीळे स्पार्हो युवा वपुष्यो विभावा सन् भवान् विपन्या प्रथमं शर्द्धः प्रार्त्त प्राप्नुयाः॥१२॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यथा प्राणान्तःकरणानि कार्य्यसाधकानि प्रियाणि भवन्ति तथैव पुरुषार्थेन कार्य्यकारणे विदित्वा परमेश्वरं विज्ञाय प्रथमे वयसि शरीरात्मबलं प्राप्य सुखानि जनयत॥१२॥

**पदार्थः**-हे विद्वन् पुरुष! जैसे **(वृष्णे)** वृष्टि करने वाले जीव के लिये **(सप्त)** पांच प्राण मन और बुद्धि ये सात **(प्रियासः)** सुन्दर और सेवन करने योग्य **(अजनयन्त)** उत्पन्न करते हैं, वैसे **(ऋतस्य)** सत्यकारण के **(योना)** स्थान में **(वृषभस्य)** वृष्टि करने वाले अग्नि के **(नीळे)** स्थान में **(स्पार्हः)** अभिलाषा करने योग्य **(युवा)** युवावस्था को प्राप्त **(वपुष्यः)** रूपों में श्रेष्ठ और **(विभावा)** अनेक प्रकार की विद्याओं के प्रकाशयुक्त हुए आप **(विपन्या)** अनेक प्रकार के व्यवहार में श्रेष्ठ प्रशंसा से **(प्रथमम्)** पहिले **(शर्धः)** बल को **(प्र, आर्त्त)** प्राप्त हूजिये॥१२॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे प्राण और अन्तःकरण कार्य के साधक और प्रिय होते हैं, वैसे ही पुरुषार्थ से कार्य्य और कारण जानकर और परमेश्वर का ज्ञान करके प्रथम अवस्था में शरीर और आत्मा के बल को प्राप्त होकर सुखों को उत्पन्न करो॥१२॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अस्माकमत्र पितरो मनुष्या अभि प्र सेदुर्ऋतमाशुषाणाः।**

**अश्मव्रजाः सुदुघा वव्रे अन्तरुदुस्रा आजन्नुषसो हुवानाः॥१३॥**

**अस्माकम्। अत्र। पितरः। मनुष्याः। अभि। प्र। सेदुः। ऋतम्। आशुषाणाः। अश्मऽव्रजाः। सुऽदुघाः। वव्रे। अन्तः। उत्। उस्राः। आजन्। उषसः। हुवानाः॥१३॥**

**पदार्थः**-**(अस्माकम्)** **(अत्र)** अस्मिञ्जगति व्यवहारे वा **(पितरः)** पालकाः **(मनुष्याः)** मननशीलाः समन्तात् **(अभि)** आभिमुख्ये **(प्र)** **(सेदुः)** प्रसीदन्ति **(ऋतम्)** सत्यम् **(आशुषाणाः)** प्राप्नुवन्तो ब्रह्मचर्येण शुष्कशरीरा वा **(अश्मव्रजाः)** येऽश्मसु मेघेषु व्रजन्ति **(सुदुघाः)** सुष्ठु कामानामलङ्कर्त्तारः **(वव्रे)** वृणोति **(अन्तः)** मध्ये **(उत्)** **(उस्राः)** किरणाः **(आजन्)** प्राप्नुवन्ति **(उषसः)** प्रभातान् **(हुवानाः)** कृताह्वानाः॥१३॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! येऽत्राऽस्माकं मनुष्याः पितर ऋतमाशुषाणा अश्मव्रजाः सुदुघा उषस उस्रा इव हुवानाः सन्त उदाजन्नन्तरभि प्र सेदुस्तान् योऽभि वव्रे सभाग्यशाली जायते॥३॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! ये युष्माकं पालका ब्रह्मचारिणो यथा सूर्यकिरणा मेघान् वर्षयन्ति तथैव कृताह्वानाः सन्तः सत्यं विज्ञापयन्ति तेषां यः सत्कारं करोति स भाग्यशाली भवति॥१३॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो **(अत्र)** इस संसार वा व्यवहार में **(अस्माकम्)** हम लोगों के **(मनुष्याः)** मनन करने और **(पितरः)** पालन करने वाले **(ऋतम्)** सत्य को **(आशुषाणाः)** सब प्रकार प्राप्त हुए वा ब्रह्मचर्य से शुष्क शरीरवाले **(अश्मव्रजाः)** मेघों में चलनेवाले **(सुदुघाः)** उत्तम प्रकार कामनाओं के पूर्ण करने वाले **(उषसः)** प्रातःकालों को **(उस्राः)** किरणों के सदृश **(हुवानाः)** पुकारने वाले हुए **(उत्, आजन्)** प्राप्त होते हैं **(अन्तः)** मध्य में **(अभि)** सम्मुख **(प्र, सेदुः)** जाते हैं, उनको जो **(वव्रे)** ढांपता है, वह भाग्यशाली होता है॥१३॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो लोग आप लोगों के पालन करने वाले ब्रह्मचर्य्य को धारण करके जैसे सूर्य की किरणें मेघों को वर्षाती हैं, वैसे ही बुलाये हुए सत्य का प्रकाश करते हैं, उनका जो सत्कार करता है, वह भाग्यशाली होता है॥१३॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**ते मर्मृजत ददृवांसो अद्रिं तदेषामन्ये अभितो वि वोचन्।**

**पश्वयन्त्रासो अभि कारमर्चन्विदन्त ज्योतिश्चकृपन्त धीभिः॥१४॥**

**ते। मर्मृजत। ददृऽवांसः। अद्रिम्। तत्। एषाम्। अन्ये। अभितः। वि। वोचन्। पश्वऽयन्त्रासः। अभि। कारम्। अर्चन्। विदन्त। ज्योतिः। चकृपन्त। धीभिः॥१४॥**

**पदार्थः**-**(ते)** **(मर्मृजत)** शुद्धा भूत्वा शोधयन्ति **(ददृवांसः)** विदारकाः **(अद्रिम्)** मेघम् **(तत्)** तस्मात् **(एषाम्)** मध्ये **(अन्ये)** भिन्नाः **(अभितः)** सर्वतोऽभिमुखाः **(वि)** **(वोचन्)** उपदिशन्ति **(पश्वयन्त्रासः)** पश्वानि दृष्टानि यन्त्राणि यैस्ते **(अभि)** **(कारम्)** शिल्पकृत्यम् **(अर्चन्)** सत्कुर्वन्ति **(विदन्त)** जानन्ति **(ज्योतिः)** प्रकाशम् **(चकृपन्त)** कृपालवो भवन्ति **(धीभिः)** प्रज्ञाभिः कर्मभिर्वा॥१४॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! येऽस्माकं मनुष्या पितरोऽद्रिं ददृवांसः किरणा इवास्मान् मर्मृजतैषामन्ये तदभितो विवोचन् पश्वयन्त्रासः सन्तः कारमभ्यर्चन् धीभिर्ज्योतिर्विदन्त सर्वेषु चकृपन्त ते सर्वैः पूज्यास्स्युः॥१४॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! ये वेदोपवेदाङ्गोपाङ्गपारगाशिल्पविद्याविदो विद्वांसः कृपया सर्वान् सुशिक्षामुपदिश्य विदुषः संपादयेयुस्ते सर्वैः सत्कर्त्तव्याः स्युः॥१४॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो हम लोगों के मनन करने और पालन करने वाले **(अद्रिम्)** मेघ के **(ददृवांस)** तोड़ने वाले किरणों के सदृश हम लोगों को **(मर्मृजत)** शुद्ध होकर शुद्ध करते हैं **(एषाम्)** इसके मध्य में **(अन्ये)** दूसरे लोग **(तत्)** इस कारण **(अभितः)** चारों ओर से सम्मुख **(वि, वोचन्)** उपदेश देते **(पश्वयन्त्रासः)** देखे हैं, यन्त्र जिन्होंने ऐसे होते हुए **(कारम्)** शिल्पकृत्य का **(अभि, अर्चन्)** सत्कार करते **(धीभिः)** बुद्धियों वा कर्मों से **(ज्योतिः)** प्रकाश को **(विदन्त)** जानने और सबों में **(चकृपन्त)** कृपालु होते हैं **(ते)** वे सब लोगों से सत्कार पाने योग्य होवें॥१४॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जो वेद, उपवेद, अङ्ग और उपांगों के पार जाने और शिल्पविद्या के जानने वाले विद्वान् लोग कृपा से सब को उत्तम प्रकार शिक्षा का उपदेश करके विद्यायुक्त करें, वे सब लोगों से सत्कार करने योग्य होवें॥१४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**ते गव्युता मनसा दृध्रमुब्धं गा येमानं परि षन्तमद्रिम्।**

**दृळहं नरो वचसा दैव्येन व्रजं गोमन्तमुशिजो वि वव्रुः॥१५॥१४॥**

**ते। गव्युता। मनसा। दृध्रम्। उब्धम्। गाः। येमानम्। परि। सन्तम्। अद्रिम्। दृळहम्। नरः। वचसा। दैव्येन। व्रजम्। गोऽमन्तम्। उशिजः। वि। वव्रुरिति वव्रुः॥१५॥**

**पदार्थः**-(**ते**) (**गव्यता**) गोः प्रचुरो गव्यं तदाचरतीव तेन (**मनसा**) (**दृध्रम्**) वर्धकम् (**उब्धम्**) उन्दकम् (**गाः**) किरणान् (**येमानम्**) नियन्तारम् (**परि**) सर्वतः (**सन्तम्**) वर्त्तमानम् (**अद्रिम्**) मेघमिव (**दृळहम्**) सुखवर्धकम् (**नरः**) (**वचसा**) वचनेन (**दैव्येन**) दिव्येन (**व्रजम्**) यो व्रजति तम् (**गोमन्तम्**) गावः किरणा विद्यन्ते यस्मिंस्तम् (**उशिजः**) कामयमानाः (**वि**) (**वव्रुः**) विवृण्वति॥१५॥

**अन्वयः**-ये नरो मनसा गव्यता दैव्येन वचसा गा दृध्रमुब्धं येमानं सन्तं दृळहं सूर्यो व्रजं गोमन्तमद्रिमिवोशिजः सन्तः परि वि वव्रुस्ते कामनां प्राप्नुवन्ति॥१५॥

**भावार्थः**-यथा किरणा मेघमुन्नयन्ति वर्षयन्ति तथैव विद्वांसो विचारेण दृढज्ञानं जनयन्ति॥१५॥

**पदार्थः**-जो (**नरः**) वीरपुरुष (**मनसः**) मन से (**गव्यता**) गौओं के समूह के सदृश आचरण करनेवाले (**दैव्येन**) सुन्दर (**वचसा**) वचन से (**गाः**) किरणों को (**दृध्रम्**) बढ़ाने वाले (**उब्धम्**) सब ओर से मिले हुए (**येमानम्**) नियन्ता अर्थात् नायक (**सन्तम्**) वर्त्तमान (**दृळहम्**) सुख के बढ़ाने वाले को सूर्य (**व्रजम्**) चलनेवाले (**गोमन्तम्**) किरणें विद्यमान जिसमें ऐसे को (**अद्रिम्**) मेघ के सदृश (**उशिजः**) कामना करते हुए (**परि, वि, वव्रुः**) प्रकट करते हैं (**ते**) वे कामना को प्राप्त होते हैं॥१५॥

**भावार्थः**-जैसे किरणें मेघ को ऊपर को प्राप्त करती और वर्षाती हैं, वैसे ही विद्वान् जन विचार से दृढ़ ज्ञान को उत्पन्न करते हैं॥१५॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**ते मन्वत प्रथमं नाम धेनोस्त्रिः सप्त मातुः परमाणि विन्दन्।**

**तज्जानतीरभ्यनूषत व्रा आविर्भुवदरुणीर्यशसा गोः॥१६॥**



www.9009.co.in

ते। मन्वत। प्रथमम्। नाम॑। धेनोः। त्रिः। सप्त। मातुः। परमाणि॑। विन्दन्। तत्। जानतीः। अभिः। अनूषत। व्राः। आविः। भुवत्। अरुणीः। यशसा॑। गोः॥ १६॥

**पदार्थः**-(**ते**) (**मन्वत**) मन्यन्ते (**प्रथमम्**) प्रख्यातम् (**नाम**) (**धेनोः**) वाण्याः (**त्रिः**) त्रिवारम् (**सप्त**) (**मातुः**) जनन्या इव (**परमाणि**) उत्कृष्टानि (**विन्दन्**) जानन्ति (**तत्**) (**जानतीः**) विज्ञानवतीः (**अभि**) सर्वतः (**अनूषत**) स्तुवन्ति (**व्राः**) या व्रियन्ते ताः (**आविः**) प्राकट्ये (**भुवत्**) भवेत् (**अरुणीः**) रक्तगुणविशिष्टाः (**यशसा**) कीर्त्या (**गोः**) विद्यासुशिक्षायुक्ताया वाचः॥ १६॥

**अन्वयः**-ये मातुरिव धेनोः सप्त परमाणि विन्दन् तेऽस्य प्रथमं नाम त्रिर्मन्वत। यो यशसा सह वर्त्तमान आविर्भुवत् स तद्गोर्विज्ञानं जानीयात्। ये यशसा प्रकटाः स्युस्तेऽरुणीर्जानतीर्व्रा अभ्यनूषत॥ १६॥

**भावार्थः**-यथा कामधेनुर्दुग्धादिनेच्छां पिपर्त्ति तथैव विद्यासुशिक्षायुक्ता वाणी विदुषः पिपर्त्ति। ये धर्माचरणं कुर्वन्ति ते यशस्विनो भूत्वा सर्वत्र प्रसिद्धा जायन्ते॥ १६॥

**पदार्थः**-जो (**मातुः**) माता के सदृश (**धेनोः**) वाणी के (**सप्त**) सात अर्थात् सात गायत्र्यादि छन्दों में विभक्त (**परमाणि**) उत्तम व्यवहारों को (**विन्दन्**) जानते हैं (**ते**) वे इसके (**प्रथमम्**) प्रसिद्ध (**नाम**) स्तुतिसाधक शब्दमात्र को (**त्रिः**) तीन वार (**मन्वत**) मानते हैं और जो (**यशसा**) कीर्ति के साथ वर्त्तमान (**आविः**) प्रकट (**भुवत्**) होवे वह (**तत्**) उस (**गोः**) वाणी के विज्ञान को जाने और जो कीर्ति से प्रकट होवें वे (**अरुणीः**) रक्तगुण से विशिष्ट (**जानतीः**) विज्ञानवाली (**व्राः**) प्रकट होने वालियों की (**अभि**) सब प्रकार (**अनूषत**) स्तुति करते हैं॥ १६॥

**भावार्थः**-जैसे कामधेनु दुग्ध आदि से इच्छा को पूर्ण करती है, वैसी ही विद्या और उत्तम शिक्षा से युक्त वाणी विद्वानों को प्रसन्न करती है। जो लोग धर्म का आचरण करते हैं, वे यशस्वी होकर सर्वत्र प्रसिद्ध होते हैं॥ १६॥

**अथ सूर्य्यदृष्टान्तेनात्मबलसंरक्षणमाह॥**

अब सूर्य्य के दृष्टान्त से आत्मा के बल की रक्षा को कहते हैं॥

**नेशत्तमो दुधि॑तं रोच॑त द्यौरुद्देव्या उषसो॑ भानुर॑र्त।**

**आ सूर्यो॑ बृहतस्ति॑ष्ठदज्राँ॑ ऋजु मर्ते॑षु वृजिना च पश्य॑न्॥ १७॥**

नेश॑त्। तम॑ः। दुधि॑तम्। रोच॑त। द्यौः। उत्। देव्याः। उषस॑ः। भानुः। अर्त। आ। सूर्य॑ः। बृहतः। तिष्ठत्। अज्रा॑न्। ऋजु। मर्ते॑षु। वृजिना। च। पश्य॑न्॥ १७॥

**पदार्थः**-(**नेशत्**) नाशयति (**तमः**) अन्धकारम् (**दुधितम्**) पूर्णम् (**रोचत**) प्रकाशते (**द्यौः**) आकाशस्थः (**उत्**) (**देव्याः**) दिव्यसुखप्रापिकायाः (**उषसः**) प्रभातवेलायाः (**भानुः**) प्रकाशमानः (**अर्त्त**) प्रापय (**आ**) समन्तात् (**सूर्य्यः**) (**बृहतः**) महतः (**तिष्ठत्**) तिष्ठति (**अज्रान्**) जगति प्रक्षिप्तान् (**ऋजु**) सरलम् (**मर्त्तेषु**) मनुष्येषु (**वृजिना**) बलानि (**च**) (**पश्यन्**)॥ १७॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे विद्वन्! यथा द्यौर्भानुः सूर्य्यो देव्या उषसो दुधितं तम उन्नेशद्रोचत तिष्ठत्तथा बृहतोऽत्र्यान् पश्यन् सँस्त्वं मर्त्तेषु वृजिना चर्ज्वार्त्त॥१७॥

**भावार्थः**-यथा सूर्य्य उषसा रात्रिं निवार्य प्रकाशं जनयति तथैवाऽध्यापक उपदेशकश्च व्याप्तानपि पदार्थान् दृष्ट्वाऽऽर्जानं मनुष्येषु शरीरात्मबलं जनयतु॥१७॥

**पदार्थः**-हे विद्वन् पुरुष! जैसे **(द्यौः)** आकाशस्थ **(भानुः)** प्रकाशमान **(सूर्य्यः)** सूर्य्य **(देव्याः)** उत्तम सुख को प्राप्त करानेवाली **(उषसः)** प्रभातवेला से **(दुधितम्)** पूर्ण **(तमः)** अन्धकार को **(उत्, नेशत्)** नाश करता और **(रोचत)** प्रकाशित होता **(तिष्ठत्)** और स्थित रहता है, वैसे **(बृहतः)** बड़े **(अत्र्यान्)** संसार में जिनका प्रक्षेप हुआ उन पदार्थों को **(पश्यन्)** देखते हुए आप **(मर्त्तेषु)** मनुष्यों में **(वृजिना)** बलों को **(च)** और **(ऋजु)** सरलभाव को **(आ)** **(अर्त्त)** प्राप्त कराओ॥१७॥

**भावार्थः**-जैसे सूर्य्य प्रातर्वेला से रात्रि का निवारण करके प्रकाश को उत्पन्न करता है, वैसे ही अध्यापक और उपदेशक व्याप्त भी पदार्थों को देख के नम्रता से मनुष्यों में शरीर [और] आत्मा के बल को बढ़ावे॥१७॥

**अथ वाणीविषयमाह॥**

अब वाणी के विषय को इस अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**आदित् पश्चा बुबुधाना व्यख्यन्नादिद्रत्नं धारयन्त द्युभक्तम्।**

**विश्वे विश्वासु दुर्यासु देवा मित्र धिये वरुण सत्यमस्तु॥१८॥**

**आत्। इत्। पश्चा। बुबुधानाः। वि। अख्यन्। आत्। इत्। रत्नम्। धारयन्त। द्युऽभक्तम्। विश्वे। विश्वासु। दुर्यासु। देवाः। मित्र। धिये। वरुण। सत्यम्। अस्तु॥१८॥**

**पदार्थः**-**(आत्)** आनन्तर्ये **(इत्)** एव **(पश्चा)** पश्चात् **(बुबुधानाः)** विजानन्तः **(वि)** विशेषेण **(अख्यन्)** उपदिशन्तु **(आत्)** **(इत्)** **(रत्नम्)** धनम् **(धारयन्त)** धारयन्ति **(द्युभक्तम्)** विद्युदादिभिस्सेवितम् **(विश्वे)** सर्वे **(विश्वासु)** **(दुर्यासु)** गृहेषु **(देवाः)** **(मित्र)** सखे **(धिये)** प्रज्ञायै कर्मणे वा **(वरुण)** दुष्टानां बन्धक **(सत्यम्)** त्रैकाल्याऽबाध्यम् **(अस्तु)** भवतु॥१८॥

**अन्वयः**-हे वरुण मित्र! यथा बुबुधाना विश्वे देवा विश्वासु दुर्य्यासु द्युभक्तं रत्नं धारयन्ताऽऽदित् पश्चैतद् व्यख्यन्नाऽऽदित्तत्सत्यं धियेऽस्तु॥१८॥

**भावार्थः**-ये ब्रह्मचर्य्येण विद्यासुशिक्षासत्यधर्माचरणान् धृत्वाऽन्यान् प्रत्युपदिशन्ति ते प्रज्ञां वर्धयित्वा सर्वत्र प्रसिद्धा भूत्वाऽऽनन्देन गृहेषु वसन्ति॥१८॥

**पदार्थः**-हे **(वरुण)** दुष्ट पुरुषों के बांधने वाले **(मित्र)** मित्र! जैसे **(बुबुधानाः)** विशेष करके जानते हुए **(विश्वे)** सम्पूर्ण **(देवाः)** विद्वान् जन **(विश्वासु)** सब **(दुर्य्यासु)** स्थानों [घरों] में **(द्युभक्तम्)** बिजुली आदि पदार्थों से सेवित **(रत्नम्)** धन को **(धारयन्त)** धारण करते हैं। और **(आत्)** अनन्तर **(इत्)**



www.9009.co.in

ही **(पश्चा)** पीछे से इसका **(वि, अख्यन्)** विशेष करके उपदेश दें **(आत्)** अनन्तर **(इत्)** ही वह **(सत्यम्)** सत्य **(धिये)** बुद्धि वा उत्तम कर्म के लिये **(अस्तु)** हो॥१८॥

**भावार्थः**-जो लोग ब्रह्मचर्य्य से विद्या, उत्तम शिक्षा, सत्य और धर्माचरणों को धारण करके अन्य जनों के प्रति उपदेश देते हैं, वे बुद्धि को बढ़ा के सर्वत्र प्रसिद्ध हो के आनन्द से घरों में रहते हैं॥१८॥

**अथ विद्युद्विषयमाह॥**

अब बिजुली के विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अच्छा॑ वोचेय शुशुचा॒नम॒ग्निं होता॑रं वि॒श्वभ॑रसं॒ यजि॑ष्ठम्।**

**शुच्यूधो॑ अतृण॒न्न गवा॒मन्धो॒ न पू॒तं परि॑षिक्तमंशोः॥ १९॥**

**अच्छ॑। वो॒चे॒य॒। शु॒शु॒चा॒नम्। अ॒ग्निम्। होता॑रम्। वि॒श्वऽभ॑रसम्। यजि॑ष्ठम्। शुचि॑। ऊध॑ः। अ॒तृ॒ण॒त्। न। गवा॑म्। अन्ध॑ः। न। पू॒तम्। परि॑ऽसिक्तम्। अं॒शोः॥ १९॥**

**पदार्थः**-**(अच्छ)** सम्यक्। अत्र **संहितायामिति** दीर्घः। **(वोचेय)** उपदिशेय **(शुशुचानम्)** शुद्धगुणकर्मस्वभावम् **(अग्निम्)** विद्युद्रूपम् **(होतारम्)** दातारम् **(विश्वभरसम्)** संसारस्य धारकम् **(यजिष्ठम्)** अतिशयेन सङ्गन्तारम् **(शुचि)** पवित्रं कर्म **(ऊधः)** प्रभातवेलेव **(अतृणत्)** हिनस्ति **(न)** निषेधे **(गवाम्)** **(अन्धः)** अन्नम् **(न)** इव **(पूतम्)** पवित्रम् **(परिषिक्तम्)** सर्वत आर्द्रीभूतं कृतम् **(अंशोः)** सूर्य्यस्य प्राप्तस्य॥१९॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! योंऽशोः परिषिक्तं पूतं शुच्यन्धो न गवामूधो नाऽतृणत्तं यजिष्ठं विश्वभरसं होतारं शुशुचानमग्निं युष्मान् प्रत्यहमच्छ वोचेय॥१९॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। मनुष्यैर्यथा विद्युत् समानरूपा सती सर्वान् रक्षति विकृता सती हन्ति, सा किरणान्न हिनस्ति। अन्नवत्पालिका भूत्वा सर्वाञ्चवयतीति वेद्यम्॥१९॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो **(अंशोः)** प्राप्त सूर्य्य के **(परिषिक्तम्)** सब ओर से गीले किये हुए **(पूतम्)** पवित्र वस्तु **(शुचि)** और पवित्र कर्म को **(अन्धः)** अन्न के **(न)** तुल्य वा **(गवाम्)** गौओं के **(ऊधः)** प्रभात समय के सदृश **(न)** नहीं **(अतृणत्)** हिंसा करता है, उस **(यजिष्ठम्)** अत्यन्त मिलाने **(विश्वभरसम्)** संसार के धारण करने और **(होतारम्)** देने और **(शुशुचानम्)** शुद्ध गुण, कर्म और स्वभाव कराने वाले **(अग्निम्)** बिजुलीरूप अग्नि का आप लोगों के प्रति मैं **(अच्छ)** उत्तम प्रकार **(वोचेय)** उपदेश दूं॥१९॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। मनुष्यों को चाहिये कि जैसे बिजुली समान रूप हुई सब की रक्षा करती है और विरूप होनेपर नाश करती, वह किरणों का नाश नहीं करती। और अन्न के सदृश पालन करनेवाली होकर सब को चलाती है, ऐसा जानें॥१९॥



www.9009.co.in

**पुनरुक्तं सूर्य्यसम्बन्धेनाप्याह॥**

फिर उक्त विषय को सूर्य के सम्बन्ध से भी कहते हैं॥

**विश्वेषामदितिर्यज्ञियानां विश्वेषामतिथिर्मानुषाणाम्।**

**अग्निर्देवानामव आवृणानः सुमृळीको भवतु जातवेदाः॥ २०॥ १५॥**

**विश्वेषाम्। अदितिः। यज्ञियानाम्। विश्वेषाम्। अतिथिः। मानुषाणाम्। अग्निः। देवानाम्। अवः। आऽवृणानः। सुऽमृळीकः। भवतु। जातऽवेदाः॥ २०॥**

**पदार्थः**-(**विश्वेषाम्**) सर्वेषाम् (**अदितिः**) अखण्डितमन्तरिक्षम् (**यज्ञियानाम्**) यज्ञानुष्ठानकर्त्तृणाम् (**विश्वेषाम्**) (**अतिथिः**) अभ्यागत इव वर्त्तमानः (**मानुषाणाम्**) मानवानाम् (**अग्निः**) (**देवानाम्**) (**अवः**) रक्षणम् (**आवृणानः**) समन्तात् स्वीकुर्वन् (**सुमृळीकः**) सुष्ठु सुखकारकः (**भवतु**) (**जातवेदाः**) जातेषु पदार्थेषु विद्यमानः॥ २०॥

**अन्वयः**-हे विद्वन्! भवान् विश्वेषां यज्ञियानामदितिरिव विश्वेषां मानुषाणामतिथिरिव देवानामग्निरिवाऽव आवृणानो जातवेदाः सुमृळीको भवतु॥ २०॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यथा सुगन्धधूमेन शोधितमन्तरिक्षं पूर्णविद्य आप्तोपदेष्टा सूर्य्यश्च सुखदा भवन्ति तथैव यूयं सर्वेभ्यः सुखप्रदा भवतेति॥ २०॥

अत्र विद्वद्वेद्याऽग्निवाणीसूर्य्यविद्युदादिगुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेनसह सङ्गतिर्वेद्या॥ २०॥

**इति प्रथमं सूक्तं पञ्चदशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे विद्वन्! आप (**विश्वेषाम्**) सम्पूर्ण (**यज्ञियानाम्**) यज्ञों के अनुष्ठान करनेवालों के (**अदितिः**) अखण्डित अन्तरिक्ष के तुल्य (**विश्वेषाम्**) सम्पूर्ण (**मानुषाणाम्**) मनुष्यों में (**अतिथिः**) अभ्यागत के सदृश वर्त्तमान (**देवानाम्**) विद्वानों के (**अग्निम्**) अग्नि के सदृश (**अवः**) रक्षण को (**आवृणानः**) सब प्रकार स्वीकार करते हुए (**जातवेदाः**) उत्पन्न पदार्थों में विद्यमान हुए (**सुमृळीकः**) उत्तम प्रकार सुख करनेवाले (**भवतु**) हूजिये॥ २०॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जैसे यज्ञ के सुगन्धित धूम से शुद्ध हुआ अन्तरिक्ष पूर्णविद्यायुक्त, यथार्थवक्ता उपदेश देनेवाला पुरुष और सूर्य्य सुखदेने वाले होते हैं, वैसे ही आप लोग सबों के लिये सुख देनेवाले हूजिये॥ २०॥

इस सूक्त में विद्वानों से जानने योग्य अग्नि, वाणी, सूर्य्य, बिजुली आदिकों के गुणवर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्वसूक्त के अर्थ के साथ संगति जाननी चाहिये॥

**यह प्रथम सूक्त और पन्द्रहवां वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

**अथ विंशत्यृचस्य द्वितीयस्य सूक्तस्य वामदेव ऋषिः। अग्निर्देवता। १, १९ पङ्क्तिः। १२ निचृत् पङ्क्तिः।१४ स्वराट् पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः। २,४-७, ९, १२, १३, १५, १७, १८, २० निचृत्त्रिष्टुप्। ३, १६ त्रिष्टुप्। ८, १०, ११ विराट् त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः॥**

**अथाप्तजनकृत्यमाह॥**

अब बीस ऋचा वाले दूसरे सूक्त का प्रारम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में यथार्थ मानने वाले पुरुषों के कृत्य को कहते हैं॥

**यो मर्त्येष्वमृत ऋतावा देवो देवेष्वरतिर्निधायि।**

**होता यजिष्ठो मह्ना शुचध्यै हव्यैरग्निर्मनुष ईरयध्यै॥ १॥**

**यः। मर्त्येषु। अमृतः। ऋतऽवा। देवः। देवेषु। अरतिः। निऽधायि। होता। यजिष्ठः। मह्ना। शुचध्यै। हव्यैः। अग्निः। मनुषः। ईरयध्यै॥ १॥**

**पदार्थः**-(**यः**) (**मर्त्येषु**) मरणधर्मेषु (**अमृतः**) मृत्युधर्मरहितः (**ऋतावा**) सत्यस्वरूपः (**देवः**) दिव्यगुणकर्मस्वभावः कमनीयः (**देवेषु**) दिव्येषु पदार्थेषु विद्वत्सु वा (**अरतिः**) सर्वत्र प्राप्तः (**निधायि**) निधीयते (**होता**) दाता (**यजिष्ठः**) पूजितुमर्हः (**मह्ना**) महत्त्वेन (**शुचध्यै**) शोचितुं पवित्रीकर्त्तुम् (**हव्यैः**) होतुं दातुमर्हैः (**अग्निः**) पावक इव (**मनुषः**) मानवान् (**ईरयध्यै**) प्रेरितुम्॥ १॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! योऽग्निर्विद्युदिव मर्त्येष्वमृतः ऋतावा देवेषु देवोऽरतिर्होता मह्ना यजिष्ठो हव्यैस्सहितो मनुष ईरयध्यै शुचध्यै स हृदि निधायि॥ १॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यो जगदीश्वर उत्पत्तिनाशादिगुणरहितत्वेन दिव्यस्वरूपः शुद्धः पवित्रोऽस्ति तं प्रेरणपवित्रताभ्यां भजत॥ १॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! (**यः**) जो (**अग्निः**) ईश्वर पावक अग्नि वा, बिजुली के सदृश (**मर्त्येषु**) मरणधर्म वालों में (**अमृतः**) मृत्युधर्म से रहित (**ऋतावा**) सत्यस्वरूप (**देवेषु**) उत्तम पदार्थों वा विद्वानों में (**देवः**) उत्तम गुण, कर्म और स्वभाववाला सुन्दर (**अरतिः**) सर्वस्थान में प्राप्त (**होता**) देनेवाला (**मह्ना**) महत्त्व से (**यजिष्ठः**) पूजा करने योग्य (**हव्यैः**) देने के योग्यों के सहित (**मनुषः**) मनुष्यों को (**ईरयध्यै**) प्रेरणा करने को (**शुचध्यै**) पवित्र करने को विद्यमान वह हृदय में (**निधायि**) धारण किया जाता है॥ १॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो जगदीश्वर उत्पत्ति और नाश आदि गुणरहित होने से दिव्यस्वरूप शुद्ध और पवित्र है, उसका प्रेरणा और पवित्रता से भजन करो॥ १॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥



www.9009.co.in

**इह त्वं सूनो सहसो नो अद्य जातो जाताँ उभयाँ अन्तरग्ने।**

**दूत ईयसे युयुजान ऋष्व ऋजुमुष्कान् वृषणः शुक्रांश्च॥२॥**

**इह। त्वम्। सूनो इति। सहसः। नः। अद्य। जातः। जातान्। उभयान्। अन्तः। अग्ने। दूतः। ईयसे। युयुजानः। ऋष्व। ऋजुऽमुष्कान्। वृषणः। शुक्रान्। च॥२॥**

**पदार्थः**-(**इह**) अस्मिन् संसारे (**त्वम्**) (**सूनो**) पवित्रपुत्र (**सहसः**) बलात् (**नः**) अस्माकम् (**अद्य**) (**जातः**) विद्याजन्मनि प्रादुर्भूतः (**जातान्**) विदुषः (**उभयान्**) अध्यापकान् अध्येतृंश्च (**अन्तः**) मध्ये (**अग्ने**) अग्निरिव वर्त्तमान (**दूतः**) दुष्टानां परितापकः (**ईयसे**) प्राप्नोषि (**युयुजानः**) समादधन् (**ऋष्व**) प्राप्तविज्ञान (**ऋजुमुष्कान्**) य ऋजुना मुष्णन्ति तान् (**वृषणः**) बलिष्ठान् (**शुक्रान्**) शुद्धिकरान् (**च**)॥२॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! ऋष्व नः सूनो त्वमिहाद्य सहसो जात ऋजुमुष्कान् वृषणः शुक्रांश्च युयुजानो दूत इव जातानुभयानन्तरीयसे तस्माच्छ्रेयस्करोषि॥२॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यथान्तरग्निः सर्वेषां पालको विनाशकश्चास्ति तथैवेह विद्वान् पुत्रः पालको मूर्खश्च विनाशको भवति तस्माद्दीर्घेण ब्रह्मचर्येण स्वसन्तानानुत्तमान् कृत्वा कृतकृत्यतां विजानीत॥२॥

**पदार्थः**-हे (**अग्ने**) अग्नि के सदृश वर्त्तमान (**ऋष्व**) विज्ञान को प्राप्त (**नः**) हम लोगों के (**सूनो**) पवित्रपुत्र (**त्वम्**) आप (**इह**) इस संसार में (**अद्य**) आज (**सहसः**) बल से (**जातः**) विद्या के जन्म में प्रकट हुए (**ऋजुमुष्कान्**) सरलता से चुराने वाले (**वृषणः**) बलयुक्त जनों और (**शुक्रान्**) शुद्धि करनेवालों का (**च**) भी (**युयुजानः**) समाधान करते हुए (**दूतः**) दुष्टों के सन्ताप देनेवाले के तुल्य (**जातान्**) विद्वान् और (**उभयान्**) पढ़ाने और पढ़ने वालों को (**अन्तः**) मध्य में (**ईयसे**) प्राप्त होते हो, इससे कल्याण करने वाले हो॥२॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे मध्य में अग्नि सब का पालन और नाश करने वाला है, वैसे ही इस संसार में विद्वान् पुत्र तो पालन करनेवाला और मूर्ख विनाश करनेवाला होता है। तिससे दीर्घ ब्रह्मचर्य से अपनी सन्तानों को उत्तम करके कृतकृत्यता अर्थात् जन्मसाफल्य जानो॥२॥

**अथ प्रजाकृत्यमाह॥**

अब इस अगले मन्त्र में प्रजा के कृत्य का वर्णन करते हैं॥

**अत्या वृधस्नू रोहिता घृतस्नू ऋतस्य मन्ये मनसा जविष्ठा।**

**अन्तरीयसे अरुषा युजानो युष्मांश्च देवान् विश आ च मर्तान्॥३॥**

**अत्या। वृधस्नू इति वृधऽस्नू। रोहिता। घृतस्नू इति घृतऽस्नू। ऋतस्य। मन्ये। मनसा। जविष्ठा। अन्तः। ईयसे। अरुषा। युजानः। युष्मान्। च। देवान्। विशः। आ। च। मर्तान्॥३॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**अत्या**) यावततोऽध्वानं व्याप्नुतस्तौ (**वृधस्नू**) यौ वृधान् प्रस्रवतस्तौ (**रोहिता**) रोहितेन वह्निगुणेन सहितौ (**घृतस्नू**) यौ घृतमुदकं स्नुतः प्रस्रावयतस्तौ (**ऋतस्य**) जलस्य (**मन्ये**) (**मनसा**) (**जविष्ठा**) अतिशयेन वेगवन्तौ (**अन्तः**) मध्ये (**ईयसे**) गच्छसि (**अरुषा**) रक्तगुणविशिष्टौ (**युजानः**) (**युष्मान्**) (**च**) (**देवान्**) (**विशः**) प्रजाः (**आ**) (**च**) (**मर्त्तान्**) मनुष्यान्॥३॥

**अन्वयः**-हे विद्वन्! यस्त्वमृतस्य यौ वृधस्नू रोहिता घृतस्नू अरुषा मनसा जविष्ठात्या युजानो देवान् युष्मान् मर्त्तांश्च विशश्चान्तरेयसे तानहं मन्ये॥३॥

**भावार्थः**-यदि मनुष्या वाय्वग्नी अद्भिः सह यानयन्त्रेषु संयोज्य चालयतस्तर्हि वेगप्रहरणाख्यौ जलवाष्पगुणौ मन इव यानादीनि चालयतः॥३॥

**पदार्थः**-हे विद्वन्! पुरुष जो आप (**ऋतस्य**) जल की (**वृधस्नू**) समृद्धि का विस्तार करते हुए (**रोहिता**) और अग्नि गुण के सहित (**घृतस्नू**) जल को बहाते हुए (**अरुषा**) रक्तगुण विशिष्ट (**मनसा**) मन से भी (**जविष्ठा**) अत्यन्त वेग वाले (**अत्या**) मार्ग को व्याप्त होते हुए वायु और अग्नि को (**युजानः**) संयुक्त करते हुए (**देवान्**) विद्वान् (**युष्मान्**) आप लोगों (**च**) और (**मर्त्तान्**) साधारण मनुष्यों को (**च**) और (**विशः**) प्रजाओं को (**अन्तः**) मध्य में (**आ**) सब प्रकार (**ईयसे**) प्राप्त होते हो, उनको मैं (**मन्ये**) मानता हूँ॥३॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य लोग वायु और अग्नि को जलों के साथ वाहन के यन्त्रों में संयुक्त करके चलाते हैं तो वेग और प्रहरण नामक जल और भाफ के गुण, मन के सदृश वाहन आदिकों को चलाते हैं॥३॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अर्यमणं वरुणं मित्रमेषामिन्द्राविष्णू मरुतो अश्विनोत।**
**स्वश्वो अग्ने सुरथः सुराधा एदु वह सुहविषे जनाय॥४॥**

**अर्यमणम्। वरुणम्। मित्रम्। एषाम्। इन्द्राविष्णू इति। मरुतः। अश्विना। उत। सुऽअश्वः। अग्ने। सुऽरथः। सुऽराधाः। आ। इत्। ऊम् इति। वह। सुऽहविषे। जनाय॥४॥**

**पदार्थः**-(**अर्यमणम्**) न्यायाधीशम् (**वरुणम्**) श्रेष्ठगुणम् (**मित्रम्**) सखायम् (**एषाम्**) (**इन्द्राविष्णू**) विद्युत्सूत्रात्मानौ (**मरुतः**) वायून् (**अश्विना**) सूर्य्याचन्द्रमसौ (**उत**) (**स्वश्वः**) सुष्ठु अश्वा यस्य सः (**अग्ने**) विद्वन् (**सुरथः**) प्रशस्तयानः (**सुराधाः**) शोभनं राधो धनं यस्य सः (**आ**) (**इत्**) (**उ**) (**वह**) (**सुहविषे**) सुसामग्रीकाय (**जनाय**) मनुष्याय॥४॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! सुराधाः स्वश्वः सुरथस्सांस्त्वं सुहविषे जनायाऽर्यमणं वरुणमेषां मित्रमिन्द्राविष्णू मरुत उताऽश्विना आ वह उ सर्वानिदेव सुखय॥४॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-हे विद्वन्! भवानग्निजलादिपदार्थान् यथावद्विदित्वा कार्येषु सम्प्रयुज्य प्रत्यक्षीकृत्याऽन्यानुपदिश। येन सर्वे धनधान्यसुखयुक्ताः स्युः॥४॥

**पदार्थः**-हे **(अग्ने)** विद्वन् पुरुष **(सुराधाः)** उत्तम धन से **(स्वश्वः)** उत्तम घोड़ों और **(सुरथः)** उत्तम वाहनों से युक्त आप **(सुहविषे)** उत्तम सामग्री वाले **(जनाय)** मनुष्य के लिये **(अर्यमणम्)** न्याय के अधीश **(वरुणम्)** श्रेष्ठ गुण वाले **(एषाम्)** इनके **(मित्रम्)** मित्र **(इन्द्राविष्णू)** तथा बिजुली और सूत्रात्मा **(मरुतः)** पवन **(उत)** और **(अश्विना)** सूर्य्य और चन्द्रमा की **(आ, वह)** प्राप्ति कराइये **(उ, इत्)** और सभी सुख दीजिये॥४॥

**भावार्थः**-हे विद्वन्! आप अग्नि और जलादि पदार्थों को उत्तम प्रकार जान के और कार्य्यों में संयुक्त कर प्रत्यक्ष करके अन्य जनों के लिये उपदेश दीजिये, जिससे कि सब लोग धन धान्य और सुखों से युक्त होवें॥४॥

**अथ राजविषयमाह॥**

अब राजा के विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**गोमाँ अग्नेऽविमाँ अश्वी यज्ञो नृवत्सखा सदमिदप्रमृष्यः।**

**इळावाँ एषो असुर प्रजावान् दीर्घो रयिः पृथुबुध्नः सभावान्॥५॥१६॥**

**गोऽमान्। अग्ने। अविऽमान्। अश्वी। यज्ञः। नृवत्ऽसखा। सदम्। इत्। अप्रमृष्यः। इळाऽवान्। एषः। असुर। प्रजाऽवान्। दीर्घः। रयिः। पृथुऽबुध्नः। सभाऽवान्॥५॥**

**पदार्थः**-**(गोमान्)** बह्वयो गावो विद्यन्ते यस्मिन् सः **(अग्ने)** विद्वन् **(अविमान्)** बह्वयोऽवयो विद्यन्ते यस्मिन् सः **(अश्वी)** बह्वश्वः **(यज्ञः)** सङ्गन्तव्यः **(नृवत्सखा)** नृवत्सु नायकयुक्तेषु सुहृत् **(सदम्)** स्थानम् **(इत्)** एव **(अप्रमृष्यः)** परैर्न प्रमर्षणीयः **(इळावान्)** बह्वन्नयुक्तः **(एषः)** **(असुर)** दुष्टानां प्रक्षेप्तः **(प्रजावान्)** बह्व्यः प्रजा विद्यन्ते यस्मिन् **(दीर्घः)** विस्तीर्णः **(रयिः)** धनम् **(पृथुबुध्नः)** विस्तीर्णः प्रबन्धः **(सभावान्)** प्रशस्ता सभा विद्यते यस्य॥५॥

**अन्वयः**-हे असुराग्ने! त्वं गोमानविमानश्वी यज्ञो नृवत्सखेळावान् प्रजावान् पृथुबुध्नः सभावानप्रमृष्योऽस्येष रयिर्दीर्घोऽस्ति स त्वमित्सदमावह॥५॥

**भावार्थः**-मनुष्यैस्स एव सभाध्यक्षः कर्त्तव्यो यो गोमानविमानश्ववानप्रधर्षितुं योग्यो दुष्टानां दृढप्रबन्धः प्रजावान् भवेत्॥५॥

**पदार्थः**-हे **(असुर)** दुष्ट पुरुषों के दूर करने वाले **(अग्ने)** विद्वन् पुरुष! आप **(गोमान्)** बहुत गौओं और **(अविमान्)** बहुत भेड़ों से युक्त **(अश्वी)** बहुत घोड़ों वाला **(यज्ञः)** प्राप्त होने योग्य **(नृवत्सखा)** नायकों से युक्त मनुष्यों में मित्र **(इळावान्)** बहुत अन्नयुक्त **(प्रजावान्)** जिसमें बहुत प्रजा विद्यमान ऐसे **(पृथुबुध्नः)** विस्तारसहित प्रबन्ध वाला **(सभावान्)** उत्तम सभा विद्यमान जिनको ऐसे



www.9009.co.in

**(अप्रमृष्य:)** दूसरों से नहीं दबाने योग्य हैं तथा **(एष:)** यह **(रयि:)** धन **(दीर्घ:)** बड़ा हुआ है, वह आप **(इत्)** ही **(सदम्)** स्थान को प्राप्त हूजिये॥५॥

**भावार्थ:**-मनुष्यों को वही सभाध्यक्ष करना चाहिये कि जो गौओं, भेड़ों और घोड़ों का पालक और दूसरों से नहीं भय करने और दुष्ट जनों को दूर करने वाला, अच्छे प्रबन्ध से युक्त तथा प्रजावाला हो॥५॥

**अथ राजविषयमाह॥**

अब अगले मन्त्र में राजविषय को कहते हैं॥

**यस्त॑ इ॒ध्मं ज॒भर॑त्सिष्विदा॒नो मू॒र्धानं॑ वा त॒तप॑ते त्वा॒या।**

**भुव॒स्तस्य॒ स्वत॑वाँ पा॒युर॑ग्ने॒ विश्व॑स्मात्सीमघाय॒त उ॑रुष्य॥६॥**

**यः। ते॒। इ॒ध्मम्। ज॒भर॑त्। सि॒स्वि॒दा॒नः। मू॒र्धान॑म्। वा॒। त॒तप॑ते। त्वा॒ऽया। भुव॑ः। तस्य॑। स्वऽत॑वान्। पा॒युः। अ॒ग्ने॒। विश्व॑स्मात्। सी॒म्। अ॒घ॒ऽय॒तः। उ॒रु॒ष्य॥६॥**

**पदार्थ:**-**(य:)** **(ते)** तव **(इध्मम्)** प्रदीप्तम् **(जभरत्)** बिभर्त्ति **(सिष्विदान:)** स्नेहयुक्त: **(मूर्धानम्)** **(वा)** **(ततपते)** ततानां विस्तृतानां पालक **(त्वाया)** यस्त्वामयते **(भुव:)** पृथिव्या: **(तस्य)** **(स्वतवान्)** स्वेन प्रवृद्ध: **(पायु:)** रक्षक: **(अग्ने)** पावक **(विश्वस्मात्)** सर्वस्मात् **(सीम्)** सर्वत: **(अघायत:)** आत्मनोऽघमिच्छत: **(उरुष्य)** रक्ष॥६॥

**अन्वय:**-हे ततपतेऽग्ने! य: सिष्विदान: स्वतवान् पायुस्त्वाया ते भुव इध्मं मूर्धानं जभरत्तं त्वमुरुष्य वा तस्य मूर्धानं सीमुरुष्य। अघायतस्तस्य विश्वस्मान्मूर्धानं छिन्धि॥६॥

**भावार्थ:**-हे मनुष्या! ये युष्माकं प्रतापं शरीराणि राज्यं रक्षित्वा दुष्टान् सर्वतो घ्नन्ति तान् सततं रक्षत॥६॥

**पदार्थ:**-हे **(ततपते)** लम्बे चौड़े बिथरे हुए चराचर पदार्थों की पालना करने और **(अग्ने)** अग्नि पवित्र करनेवाले! **(य:)** जो **(सिष्विदान:)** स्नेहयुक्त **(स्वतवान्)** अपने से बढ़ा **(पायु:)** रक्षा करनेवाला **(त्वाया)** आपको प्राप्त होता **(ते)** आपकी **(भुव:)** पृथिवी के **(इध्मम्)** तपे हुए **(मूर्धानम्)** मस्तक को **(जभरत्)** पोषण करता है, उसकी आप **(उरुष्य)** रक्षा करो **(वा)** अथवा **(तस्य)** उसके मस्तक की **(सीम्)** सब प्रकार रक्षा करो **(अघायत:)** अपने को पाप की इच्छा करते हुए का **(विश्वस्मात्)** सब प्रकार से मस्तक काटो॥६॥

**भावार्थ:**-हे मनुष्यो! जो लोग आप लोगों के प्रताप शरीर और राज्य की रक्षा करके दुष्टों का सब प्रकार नाश करते हैं, उनकी निरन्तर रक्षा करो॥६॥

**आप्तजनकृत्यविषयमाह॥**

श्रेष्ठजन के कर्त्तव्य के विषय को कहते हैं॥



www.9009.co.in

**यस्ते भरादन्नियते चिदन्नं निशिषन्मन्द्रमतिथिमुदीरत्।**

**आ देवयुरिनधते दुरोणे तस्मिन् रयिर्ध्रुवो अस्तु दास्वान्॥७॥**

**यः। ते। भरात्। अन्निऽयते। चित्। अन्नम्। निऽशिषत्। मन्द्रम्। अतिथिम्। उत्ऽईरत्। आ। देवऽयुः। इनधते। दुरोणे। तस्मिन्। रयिः। ध्रुवः। अस्तु। दास्वान्॥७॥**

**पदार्थः**-(**यः**) (**ते**) तुभ्यम् (**भरात्**) धरेत् (**अन्नियते**) अदतां नियते निश्चिते समये (**चित्**) (**अन्नम्**) (**निशिषत्**) नितरां विशेषयन् (**मन्द्रम्**) आनन्दप्रदम् (**अतिथिम्**) सत्योपदेशकम् (**उदीरत्**) सन्नुदन् (**आ**) (**देवयुः**) देवान् कामयमानः (**इनधते**) इनमीश्वरं दधाति यस्मिंस्तस्मिन् (**दुरोणे**) गृहे (**तस्मिन्**) (**रयिः**) धनम् (**ध्रुवः**) निश्चलः (**अस्तु**) (**दास्वान्**) दाता॥७॥

**अन्वयः**-हे विद्वन्! यो दास्वांस्तेऽन्नियतेऽन्नं निशिषन्मन्द्रमतिथिमुदीरद् देवयुस्सन्निनधते दुरोणेऽन्नमाभराच्चिदपि तस्मिन् ध्रुवो रयिरस्तु तं त्वं भर॥७॥

**भावार्थः**-ये मनुष्या येषां यादृशमुपकारं कुर्य्युस्तैस्तेषां तादृश उपकारः कर्त्तव्यः॥७॥

**पदार्थः**-हे विद्वान् पुरुष! (**यः**) जो (**दास्वान्**) देनेवाला (**ते**) आपके लिये (**अन्नियते**) भोजन करने वालों के निश्चित समय में (**अन्नम्**) भोजन के पदार्थ को (**निशिषत्**) अत्यन्त विशेष करता हुआ (**मन्द्रम्**) आनन्द देनेवाले (**अतिथिम्**) सत्योपदेशक को (**उदीरत्**) अच्छे प्रकार प्रेरणा देता और (**देवयुः**) विद्वानों की कामना करता हुआ (**इनधते**) ईश्वर को धारण करता है, जिसमें उस (**दुरोणे**) गृह में अन्न को (**आ, भरात्**) धारण करे (**चित्**) भी (**तस्मिन्**) उसमें (**ध्रुवः**) निश्चल (**रयिः**) धन (**अस्तु**) हो उसको आप पोषण करो॥७॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य जिन मनुष्यों का जैसा उपकार करें, उन मनुष्यों को चाहिये कि उनका वैसा उपकार करें॥७॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**यस्त्वा दोषा य उषसि प्रशंसात्प्रियं वा त्वा कृणवते हविष्मान्।**

**अश्वो न स्वे दम आ हेम्यावान्तमंहसः पीपरो दाश्वांसम्॥८॥**

**यः। त्वा। दोषा। यः। उषसि। प्रऽशंसात्। प्रियम्। वा। त्वा। कृणवते। हविष्मान्। अश्वः। न। स्वे। दमे। आ। हेम्याऽवान्। तम्। अंहसः। पीपरः। दाश्वांसम्॥८॥**

**पदार्थः**-(**यः**) (**त्वा**) त्वाम् (**दोषा**) रात्रौ (**यः**) (**उषसि**) दिने (**प्रशंसात्**) प्रशंसेत् (**प्रियम्**) (**वा**) (**त्वा**) त्वाम् (**कृणवते**) कुर्वते (**हविष्मान्**) प्रशस्तदानसामग्रीयुक्तः (**अश्वः**) तुरङ्गः (**न**) इव (**स्वे**)



www.9009.co.in

स्वकीये **(दमे)** गृहे **(आ)** **(हेम्यावान्)** हेम्न्युदके भवा रात्रिर्विद्यते यस्य। **हेमेत्युदकनामसु पठितम्।** (निघं०१.१२) **(तम्)** **(अंहसः)** अपराधात् **(पीपरः)** पालय **(दाश्वांसम्)** दातारम्॥८॥

**अन्वयः**-हे विद्वन्! यस्त्वा दोषोषसि प्रियं त्वाऽऽप्रशंसाद्वा यो हविष्मान् हेम्यावांस्तं दाश्वांसं त्वा त्वां स्वे दमेऽहंसोऽश्वो न पीपरस्तस्मै प्रियं सुखं कृणवते त्वं सुखं देहि॥८॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! येऽहर्निशं युष्मांस्तूत्साहयेयुस्तान् यूयं घासादिना-ऽश्वानिवाऽऽनन्दयत॥८॥

**पदार्थः**-हे विद्वन्! पुरुष **(यः)** जो **(त्वा)** आपकी **(दोषा)** रात्रि में और **(उषसि)** दिन में **(त्वा)** आपकी **(आ, प्रशंसात्)** सब प्रकार प्रशंसा करे **(वा)** अथवा **(यः)** जो **(हविष्मान्)** उत्तम दान की सामग्री से युक्त **(हेम्यावान्)** जिसके जल में प्रकट हुई रात्रि विद्यमान **(तम्)** उस **(दाश्वांसम्)** देनेवाले आपको **(स्वे)** अपने **(दमे)** घर में **(अंहसः)** अपराध से **(अश्वः)** घोड़े के **(न)** सदृश **(पीपरः)** पाले उस **(प्रियम्)** प्रिय सुख **(कृणवते)** करते हुए के लिये आप सुख दीजिये॥८॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जो लोग दिन और रात्रि आप का उत्साह बढ़ावें, उनको आप लोग घास आदि से घोड़ों को जैसे वैसे आनन्द देओ॥८॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**यस्तुभ्यमग्ने अमृताय दाशद्दुवस्त्वे कृणवते यतस्रुक्।**

**न स राया शशमानो वि योषन्नैनमंहः परि वरदघायोः॥९॥**

**यः। तुभ्यम्। अग्ने। अमृताय। दाशत्। दुवः। त्वे इति। कृणवते। यतऽस्रुक्। न। सः। राया। शशमानः। वि। योषत्। न। एनम्। अंहः। परि। वरत्। अघऽयोः॥९॥**

**पदार्थः**-**(यः)** **(तुभ्यम्)** **(अग्ने)** विद्वन् **(अमृताय)** मोक्षाय **(दाशत्)** दद्यात् **(दुवः)** परिचरणम् **(त्वे)** त्वयि **(कृणवते)** कुर्वते **(यतस्रुक्)** उद्यतक्रियासाधनः **(न)** **(सः)** **(राया)** धनेन **(शशमानः)** प्लवमानः **(वि, योषत्)** वियुज्येत **(न)** **(एनम्)** **(अंहः)** **(परि)** **(वरत्)** वृणुयात् **(अघायोः)** पापिनः॥९॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! यस्तुभ्यममृताय दाशत् त्वे दुवः कृणवते तस्मै त्वमपि विज्ञानं देहि। यो राया शशमानो यतस्रुक् सन्नेनमंहो न वियोषत् सोऽघायोरंहो न परि वरत्॥९॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! युष्मासु ये यथा प्रीतिं कुर्वन्ति तथैव तेषु भवन्तः स्नेहं कुर्वन्तु॥९॥

**पदार्थः**-हे **(अग्ने)** विद्वान् पुरुष! **(यः)** जो **(तुभ्यम्)** आपके लिये **(अमृताय)** मोक्ष के अर्थ **(दाशत्)** देवे **(त्वे)** वा आप में **(दुवः)** सेवा को **(कृणवते)** करता है, उसके लिये आप भी विज्ञान दीजिये। जो पुरुष **(राया)** धन से **(शशमानः)** उछलता और **(यतस्रुक्)** उद्यत है क्रिया के साधन



www.9009.co.in

जिसके ऐसा होता हुआ **(एनम्)** इसको **(अंहः)** दुःख देनेवाले को **(न)** नहीं **(वि, योषत्)** त्याग करे **(सः)** वह **(अघायोः)** पापी की हिंसा को **(न)** नहीं **(परि, वरत्)** सब ओर से स्वीकार करे॥९॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! आप लोगों में जैसे जो लोग प्रीति करते हैं, वैसे ही उनमें आप लोग स्नेह करें॥९॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**यस्य त्वमग्ने अध्वरं जुजोषो देवो मर्तस्य सुधितं रराणः।**

**प्रीतेदसद्धोत्रा सा यविष्ठासाम यस्य विधतो वृधासः॥१०॥१७॥**

**यस्य। त्वम्। अग्ने। अध्वरम्। जुजोषः। देवः। मर्तस्य। सुऽधितम्। रराणः। प्रीता। इत्। असत्। होत्रा। सा। यविष्ठ। असाम। यस्य। विधतः। वृधासः॥१०॥**

**पदार्थः**-**(यस्य)** **(त्वम्)** **(अग्ने)** पावकवद्वर्त्तमान विद्वन् **(अध्वरम्)** अहिंसनीयव्यवहारम् **(जुजोषः)** भृशं सेवसे **(देवः)** दिव्यसुखदाता **(मर्त्तस्य)** मनुष्यस्य **(सुधितम्)** सुहितम्। अत्र वर्णव्यत्ययेन हस्य धः। **(रराणः)** भृशं दाता **(प्रीता)** प्रसन्ना **(इत्)** **(असत्)** भवेत् **(होत्रा)** ग्राह्या **(सा)** **(यविष्ठ)** अतिशयेन युवन् **(असाम)** भवेम **(यस्य)** **(विधतः)** विधानं कुर्वतः **(वृधासः)** वर्धकास्सन्तः॥१०॥

**अन्वयः**-हे यविष्ठाऽग्ने! यस्याऽध्वरं त्वं जुजोषो देवस्सन् यस्य विधतो मर्त्तस्य सुधितं रराणः सा होत्रा प्रीतेद् मय्यसद् वृधासः सन्तो वयमसाम सोऽस्मांस्तथैव सुखयेत्॥१०॥

**भावार्थः**-यो यस्य सुखं साध्नुयात्तेनापि स सुखेनाऽलङ्कर्त्तव्यः॥१०॥

**पदार्थः**-हे **(यविष्ठ)** अति जवान **(अग्ने)** अग्नि के सदृश वर्त्तमान विद्वान् पुरुष! **(यस्य)** जिसके **(अध्वरम्)** हिंसारहित व्यवहार का **(त्वम्)** आप **(जुजोषः)** अत्यन्त सेवन करते हैं **(देवः)** उत्तम सुख के देनेवाले हुए **(यस्य)** जिस **(विधतः)** विधान करने वाले **(मर्त्तस्य)** मनुष्य के **(सुधितम्)** उत्तम हित के **(रराणः)** अत्यन्त देनेवाले हों उसकी **(सा)** वह **(होत्रा)** ग्रहण करने योग्य क्रिया **(प्रीता)** प्रसन्न **(इत्)** ही अर्थात् सफल ही मेरे में **(असत्)** होवे **(वृधासः)** वृद्धि करने वाले होते हुए हम लोग **(असाम)** प्रसिद्ध होवें और वह हम लोगों को वैसे ही सुख देवे॥१०॥

**भावार्थः**-जो जिसके सुख को साधे उस पुरुष को चाहिये कि उस उपकार करने वाले पुरुष को भी सुख देवें॥१०॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**चित्तिमचित्तिं चिनवद्वि विद्वान् पृष्ठेव वीता वृजिना च मर्तान्।**



www.9009.co.in

**राये च नः स्वपत्याय देव दितिं च रास्वादितिमुरुष्य॥ ११॥**

**चित्तिम्। अचित्तिम्। चिनवत्। वि। विद्वान्। पृष्ठाऽइव। वीता। वृजिना। च। मर्तान्। राये। च। नः। सुऽअपत्याय। देव। दितिम्। च। रास्व। अदितिम्। उरुष्य॥ ११॥**

**पदार्थः**-(**चित्तिम्**) कृतचयनां क्रियाम् (**अचित्तिम्**) अकृतचयनाम् (**चिनवत्**) चिनुयात् (**वि**) (**विद्वान्**) (**पृष्ठेव**) पृष्ठानीव (**वीता**) वीतानि प्राप्तानि (**वृजिना**) वृजिनानि बलानि (**च**) (**मर्त्तान्**) मनुष्यान् (**राये**) धनाय (**च**) (**नः**) अस्माकम् (**स्वपत्याय**) शोभनान्यपत्यानि यस्मात्तस्मै (**देव**) विद्वन् (**दितिम्**) खण्डितां क्रियाम् (**च**) (**रास्व**) देहि (**अदितिम्**) नाशरहिताम् (**उरुष्य**) सेवस्व॥ ११॥

**अन्वयः**-हे देव! यो वि विद्वान् पृष्ठेव वीता वृजिना मर्त्तांश्च नः स्वपत्याय राये च चित्तिमचित्तिं चिनवत्तस्मै दितिं रास्व चाऽदितिमुरुष्य॥ ११॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। यथोष्ट्रादयः पृष्ठैर्भारं वहन्ति तथैव बलिष्ठा जनाः सर्वं व्यवहारभारं वहन्ति व्यवहारे यस्य खण्डनं यस्य च मण्डनं कर्त्तव्यं स्यात्तत्तस्य तथैव कार्य्यम्॥ ११॥

**पदार्थः**-हे (**देव**) विद्वान् पुरुष! जो (**वि**) विशेष करके (**विद्वान्**) विद्यायुक्त पुरुष (**पृष्ठेव**) पीठों के सदृश (**वीता**) प्राप्त (**वृजिना**) पराक्रमों को (**मर्त्तान्**) मनुष्यों को (**च**) भी (**नः**) हम लोगों के (**स्वपत्याय**) उत्तम सन्तान जिससे उस (**राये**) धन के लिये (**च**) और (**चित्तिम्**) किया संग्रह जिसमें उस क्रिया और (**अचित्तिम्**) जिसमें संग्रह नहीं किया उसका (**चिनवत्**) संग्रह करे, उसके लिये (**दितिम्**) खण्डित क्रिया को (**रास्व**) दीजिये (**च**) और (**अदितिम्**) अखण्डित क्रिया का (**उरुष्य**) सेवन कीजिये॥ ११॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जैसे ऊंट आदि पीठों से भार को ले चलते हैं, वैसे ही बलवान् पुरुष सब व्यवहार के भार को धारण करते हैं। और व्यवहार में जिसका खण्डन और जिसका मण्डन करने योग्य होवे, वह उसका वैसा ही करना चाहिये॥ ११॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**कविं शशासुः कवयोऽदब्धा निधारयन्तो दुर्यास्वायोः।**

**अतस्त्वं दृश्याँ अग्न एतान् पड्भिः पश्येरद्भुताँ अर्य एवैः॥ १२॥**

**कविम्। शशासुः। कवयः। अदब्धाः। निऽधारयन्तः। दुर्यासु। आयोः। अतः। त्वम्। दृश्यान्। अग्ने। एतान्। पट्ऽभिः। पश्येः। अद्भुतान्। अर्यः। एवैः॥ १२॥**

**पदार्थः**-(**कविम्**) कान्तप्रज्ञं मेधाविनम् (**शशासुः**) शासति (**कवयः**) प्राज्ञा विपश्चितः (**अदब्धाः**) अहिंसनीयाः (**निधारयन्तः**) (**दुर्यासु**) गृहेषु (**आयोः**) जीवनस्य (**अतः**) (**त्वम्**) (**दृश्यान्**)



www.9009.co.in

द्रष्टव्यान् **(अग्ने)** अग्निरिव प्रकाशमानविद्य **(एतान्)** प्रत्यक्षान् **(पड्भिः)** विज्ञानादिभिः **(पश्येः)** **(अद्भुतान्)** आश्चर्यगुणकर्मस्वभावान् **(अर्यः)** **(एवैः)** प्राप्तैः॥१२॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! यथा अदब्धाः कवयः कविं दुर्यास्वदब्धा निधारयन्तः शशासुरायोर्वर्धनं शशासुरतस्त्वमेवैः पड्भिरेतानद्भुतान् दृश्यान् कवीनर्य इव पश्येः॥१२॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे राजन्! येऽध्यापकोपदेशका बुद्धिमतोऽध्यापयन्त्युपदिशन्ति तान्त्सदैव सत्कुरु यतो मनुष्या आश्चर्यगुणकर्मस्वभावाः स्युः॥१२॥

**पदार्थः**-हे **(अग्ने)** अग्नि के सदृश प्रकाशमान विद्वन् पुरुष! जैसे **(अदब्धाः)** अहिंसनीय **(कवयः)** बुद्धिमान् पण्डित लोग **(कविम्)** उत्तम बुद्धिवाले को **(दुर्यासु)** गृहों में [अहिंसनीय] **(निधारयन्तः)** धारण करते हुए **(शशासुः)** शासन करते हैं **(आयोः)** जीवन की वृद्धि का शासन करते हैं **(अतः)** इस कारण से **(त्वम्)** आप **(एवैः)** प्राप्त **(पड्भिः)** विज्ञान आदिकों से **(एतान्)** इन प्रत्यक्ष **(अद्भुतान्)** आश्चर्ययुक्त गुण, कर्म और स्वभाव वाले **(दृश्यान्)** देखने योग्य श्रेष्ठ बुद्धि वाले जनों को **(अर्यः)** स्वामी के समान **(पश्येः)** देखिये॥१२॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जो अध्यापक और उपदेशक लोग बुद्धिमान् पुरुषों को पढ़ाते और उपदेश देते हैं, उनका सदा ही सत्कार करो, जिससे कि मनुष्य लोग आश्चर्ययुक्त गुण, कर्म और स्वभाव वाले होवें॥१२॥

**अथ राजविषयमाह॥**

अब अगले मन्त्र में राजा के विषय को कहते हैं॥

**त्वम॑ग्ने वा॒घते॑ सु॒प्रणी॑तिः सु॒तसो॑माय वि॒धते॒ य॑विष्ठ।**

**रत्नं॑ भर शशमा॒नाय॑ घृष्वे पृ॒थुश्च॒न्द्रमव॑से चर्षणि॒प्राः॥१३॥**

**त्वम्। अ॒ग्ने॒। वा॒घते॑। सु॒ऽप्रनी॑तिः। सु॒तऽसो॑माय। वि॒ध॒ते॒। य॒वि॒ष्ठ॒। रत्न॑म्। भ॒र॒। श॒श॒मा॒नाय॑। घृ॒ष्वे॒। पृ॒थु। च॒न्द्रम्। अव॑से। च॒र्ष॒णि॒ऽप्राः॥१३॥**

**पदार्थः**-**(त्वम्)** **(अग्ने)** अग्निरिव पूर्णविद्यया प्रकाशमान **(वाघते)** मेधाविने **(सुप्रणीतिः)** सुष्ठु प्रगता नीतिर्येन सः **(सुतसोमाय)** सुतः सोम ऐश्वर्यमोषधिरसो वा येन तस्मै **(विधते)** विविधव्यवहारं यथावत्कुर्वते **(यविष्ठ)** अतिशयेन युवन् **(रत्नम्)** रमणीयं धनम् **(भर)** धर **(शशमानाय)** सर्वेषां दुःखानामुल्लङ्घकाय **(घृष्वे)** पदार्थानां सङ्घर्षक **(पृथु)** विस्तीर्णपुरुषार्थः **(चन्द्रम्)** आह्लादकरं सुवर्णम् **(अवसे)** रक्षणाद्याय **(चर्षणिप्राः)** यश्चर्षणीन् मनुष्यान् प्राति व्याप्नोति सः॥१३॥

**अन्वयः**-हे घृष्वे यविष्ठाग्ने! सुप्रणीतिः पृथु चर्षणिप्राः संस्त्वं सुतसोमाय शशमानाय विधते वाघतेऽवसे चन्द्रं रत्नं भर॥१३॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-हे राजन्! ये धार्मिकाः शूरा विद्वांसः शत्रुबलस्योल्लङ्घकाः परस्परं पदार्थघर्षणेन विद्युदादिविद्याप्रकाशका मनुष्यरक्षका अमात्यादयो भृत्याः स्युस्तदर्थमैश्वर्य्यं सततं धर॥१३॥

**पदार्थः**-हे **(घृष्वे)** पदार्थों के घिसने वाले **(यविष्ठ)** अत्यन्त युवन् **(अग्ने)** अग्नि के सदृश पूर्णविद्या से प्रकाशमान! **(सुप्रणीतिः)** उत्तम प्रकार चली हुई नीति जिनके विद्यमान **(पृथु)** जिनका पुरुषार्थ विस्तृत हो रहा है **(चर्षणिप्राः)** जो मनुष्यों को व्याप्त होने वाले **(त्वम्)** आप **(सुतसोमाय)** उत्पन्न किया गया ऐश्वर्य वा ओषधियों का रस जिससे उस **(शशमानाय)** सब के दुःखों के उल्लङ्घन करनेवाले **(विधते)** अनेक प्रकार के व्यवहार को यथावत् करते हुए **(वाघते)** बुद्धिमान् के लिये **(अवसे)** रक्षण आदि के अर्थ **(चन्द्रम्)** प्रसन्न करने वाले सुवर्ण और **(रत्नम्)** रमणीय मनोहर धन का **(भर)** धारण करो॥१३॥

**भावार्थः**-हे राजन्! जो धार्मिक शूरवीर विद्वान् लोग शत्रु के बल के उल्लङ्घन करने, परस्पर पदार्थों के घिसने से बिजुली आदि की विद्या के प्रकाश करने और मनुष्यों की रक्षा करने वाले मन्त्री आदि नौकर होवें, उनके लिये ऐश्वर्य निरन्तर धारण करो॥१३॥

**अथ प्रजाजनकृत्यमाह॥**

अब प्रजाजन के कृत्य को कहते हैं॥

**अधा ह यद्वयमग्ने त्वाया पड्भिर्हस्तेभिश्चकृमा तनूभिः।**

**रथं न क्रन्तो अपसा भुरिजोर्ऋतं येमुः सुध्य आशुषाणाः॥१४॥**

**अध। ह। यत्। वयम्। अग्ने। त्वाऽया। पड्ऽभिः। हस्तेभिः। चकृम। तनूभिः। रथम्। न। क्रन्तः। अपसा। भुरिजोः। ऋतम्। येमुः। सुऽध्यः। आशुषाणाः॥१४॥**

**पदार्थः**-**(अध)** अथ। अत्र **निपातस्य चे**ति दीर्घः। **(ह)** किल **(यत्)** यम् **(वयम्)** **(अग्ने)** पावकवद्वर्त्तमान राजन् **(त्वाया)** त्वां प्राप्ता। अत्र विभक्तेराकारादेशः **(पड्भिः)** पादैः। अत्र वर्णव्यत्ययेन दस्य डः। **(हस्तेभिः)** **(चकृम)** कुर्याम। अत्र **संहितायामि**ति दीर्घः। **(तनूभिः)** शरीरैः **(रथम्)** विमानादियानम् **(न)** इव **(क्रन्तः)** क्रमकः **(अपसा)** कर्मणा **(भुरिजोः)** धारकपोषकयोः **(ऋतम्)** सत्यम् **(येमुः)** यच्छेयुः **(सुध्यः)** शोभना धीर्येषान्ते **(आशुषाणाः)** सद्यो विभाजकाः॥१४॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! त्वाया सुध्य आशुषाणा वयं हस्तेभिः पड्भिस्तनूभिर्यद्यं रथं न चकृम। अध ह येऽपसा भुरिजोर्ऋत येमुस्तं रथं न त्वं क्रन्तो भव॥१४॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। मनुष्यैरालस्यं विहाय शरीरादिभिः पुरुषार्थं सदैवाऽनुष्ठाय प्रजाराज्ययोर्धर्म्येण नियमः कर्त्तव्यो येन सर्व आढ्याः स्युः॥१४॥

**पदार्थः**-हे **(अग्ने)** अग्नि के सदृश वर्त्तमान राजन्! **(त्वाया)** आपको प्राप्त **(सुध्यः)** उत्तम बुद्धि वाले **(आशुषाणाः)** शीघ्र विभाग करनेवाले **(वयम्)** हम लोग **(हस्तेभिः)** हाथों **(पड्भिः)** पैरों और



www.9009.co.in

**(तनूभिः)** शरीरों से **(यत्)** जिस **(रथम्)** विमान आदि वाहन के **(न)** सदृश **(चक्रम)** करें **(अध)** इसके अनन्तर **(ह)** निश्चय जो **(अपसा)** कर्म से **(भुरिजोः)** धारण और पोषण करनेवालों के **(ऋतम्)** सत्य को **(येमुः)** प्राप्त होवें उस विमान आदि वाहन के सदृश **(क्रन्तः)** क्रम से चलने वाले हूजिये॥१४॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। मनुष्यों को चाहिये कि आलस्य त्याग के शरीरादिकों से पुरुषार्थ को सदा ही करके प्रजा और राज्य का धर्म से नियम करें, जिससे सब लोग धनयुक्त होवें॥१४॥

**अथ राजविषयमाह॥**

अब इस अगले मन्त्र में राजा के विषय को कहते हैं॥

**अधा॑ मा॒तुरु॒षस॑: स॒प्त विप्रा॒ जाये॑महि प्रथ॒मा वे॒धसो॒ नॄन्।**

**दि॒वस्पु॒त्रा अङ्गि॑रसो भवे॒माद्रिं॑ रुजेम ध॒निनं॑ शु॒चन्त॑:॥१५॥१८॥**

**अध॑। मा॒तुः। उ॒षस॑:। स॒प्त। विप्रा॑:। जाये॑महि। प्र॒थ॒माः। वे॒धस॑:। नॄन्। दि॒वः। पु॒त्राः। अङ्गि॑रसः। भ॒वे॒म। अद्रि॑म्। रु॒जे॒म॒। ध॒निन॑म्। शु॒चन्त॑:॥१५॥**

**पदार्थः**-**(अध)** आनन्तर्य्ये **(मातुः)** मातृवद्वर्त्तमानाया विद्यायाः **(उषसः)** प्रभातवेलाया दिनमिव **(सप्त)** राजप्रधानाऽमात्यसेनासेनाध्यक्षप्रजाचाराः **(विप्राः)** धीमन्तः **(जायेमहि)** **(प्रथमाः)** प्रख्याता आदिमाः **(वेधसः)** प्राज्ञान् **(नॄन्)** नायकान् **(दिवः)** प्रकाशस्य **(पुत्राः)** तनयाः **(अङ्गिरसः)** प्राणा इव **(भवेम)** **(अद्रिम्)** मेघमिव शत्रुम् **(रुजेम)** प्रभग्नान् कुर्य्याम **(धनिनम्)** बहुधनवन्तं प्रजास्थम् **(शुचन्तः)** विद्याविनयाभ्यां पवित्राः॥१५॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथोषसः सप्तविधाः किरणा जायन्ते तथैव मातुर्विद्याया वयं प्रथमा विप्राः सप्त जायेमहि। वेधसो नॄन् प्राप्नुयाम दिवस्पुत्रा अङ्गिरसोऽद्रिमिव शत्रून् रुजेमाऽध धनिनं शुचन्तः प्रशंसिता भवेम॥१५॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। ये राजानो बुद्धिमतोऽमात्यान् सत्कृत्य रक्षन्ति ते सूर्य इव प्रकाशितकीर्त्तयो भवन्ति सर्वदैव व्यवसायिनो रक्षित्वा दुष्टान् सततं ताडयेयुर्येन सर्वे पवित्राचाराः स्युः॥१५॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे **(उषसः)** प्रभातवेला के दिन के समान सात प्रकार के किरणें होते हैं, वैसे ही **(मातुः)** माता के सदृश वर्त्तमान विद्या से हम लोग **(प्रथमाः)** प्रथम प्रसिद्ध **(विप्राः)** बुद्धिमान् **(सप्त)** सात प्रकार के अर्थात् राजा, प्रधान, मन्त्री, सेना, सेना के अध्यक्ष, प्रजा और चारादि **(जायेमहि)** होवें और **(वेधसः)** बुद्धिमान् **(नॄन्)** नायक पुरुषों को प्राप्त हों और **(दिवः)** प्रकाश के **(पुत्राः)** विस्तारने वाले **(अङ्गिरसः)** जैसे प्राणवायु **(अद्रिम्)** मेघ को वैसे शत्रु को **(रुजेम)** छिन्न-भिन्न करें **(अध)** इसके अनन्तर **(धनिनम्)** बहुत धनयुक्त प्रजा में विद्यमान को **(शुचन्तः)** विद्या और विनय से पवित्र करते हुए **(भवेम)** प्रसिद्ध होवें॥१५॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो राजा लोग बुद्धिमान् मन्त्रियों का सत्कार करके रक्षा करते हैं, वे सूर्य्य के सदृश प्रकाशित यशवाले होते हैं और सभी काल में उद्योगियों की रक्षा और दुष्टों का निरन्तर ताड़न करें, जिससे कि सब शुद्ध आचरण वाले होवें॥१५॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अधा॒ यथा॑ नः पि॒त॒रः परा॑सः प्र॒त्नासो॑ अग्न ऋ॒तमा॑शुषा॒णाः।**

**शुचीद॑य॒न्दीधि॑तिमुक्थ॒शासः॒ क्षामा॑ भि॒न्दन्तो॑ अरु॒णीरप॑ व्रन्॥ १६॥**

**अध॑। यथा॑। नः। पि॒तरः॑। परा॑सः। प्र॒त्नासः॑। अ॒ग्ने॒। ऋ॒तम्। आ॒शु॒षा॒णाः। शुचि॑। इत्। अ॒य॒न्। दीधि॑तिम्। उ॒क्थ॒ऽशसः॑। क्षाम॑। भि॒न्दन्तः॑। अ॒रु॒णीः। अप॑। व्र॒न्॥ १६॥**

**पदार्थः**-**(अध)** आनन्तर्य्ये। अत्र **निपातस्य चे**ति दीर्घः। **(यथा)** येन प्रकारेण **(नः)** अस्माकम् **(पितरः)** जनकाः **(परासः)** भविष्यन्तः **(प्रत्नासः)** भूताः **(अग्ने)** पावकवद्वर्त्तमान राजन् **(ऋतम्)** सत्यं न्याय्यम् **(आशुषाणाः)** समन्ताद्विभजन्तः **(शुचि)** पवित्रं शुद्धिकरम् **(इत्)** एव **(अयन्)** प्राप्नुवन्ति **(दीधितिम्)** नीतिप्रकाशम् **(उक्थशासः)** प्रशंसितशासनाः **(क्षाम)** पृथिवीम्। **क्षामेति पृथिवीनामसु पठितम्।** (निघं०१.१) अत्र **संहितायामि**ति दीर्घः। **(भिन्दन्तः)** विदृणन्तः **(अरुणीः)** प्राप्ताः प्रजाः **(अप) (व्रन्)** वृणुयुः॥१६॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! यथा नः परासः प्रत्नासः पितरः शुच्यृतमाशुषाणा उक्थशासः क्षाम भिन्दन्तो दीधितिमयन्। अधाऽरुणीरपव्रँस्तथेदेव त्वमस्मासु वर्त्तस्व॥१६॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। यो राजा राजपुरुषाश्च प्रजासु पितृवद्वर्त्तित्वा सत्यं न्यायं प्रकाश्याऽविद्यां निवार्य्य प्रजाः शिक्षन्ते ते पवित्रा गण्यन्ते॥१६॥

**पदार्थः**-हे **(अग्ने)** अग्नि के सदृश वर्त्तमान राजन्! **(यथा)** जिस प्रकार से **(नः)** हम लोगों के **(परासः)** होने वाले **(प्रत्नासः)** हुए **(पितरः)** उत्पन्न करने वाले पितृ लोग **(शुचि)** पवित्र, शुद्धि करने वाले **(ऋतम्)** सत्य न्याययुक्त व्यवहार को **(आशुषाणाः)** सब प्रकार बांटते और **(उक्थशासः)** प्रशंसित शासनों वाले **(क्षाम)** पृथिवी को **(भिन्दन्तः)** विदारते हुए **(दीधितिम्)** नीति के प्रकाश को **(अयन्)** प्राप्त होते हैं **(अध)** इसके अनन्तर **(अरुणीः)** प्राप्त प्रजाओं को **(अप) (व्रन्)** स्वीकार करें, वैसे **(इत्)** ही आप हम लोगों में वर्त्ताव करो॥१६॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जो राजा और राजपुरुष प्रजाओं में पिता के सदृश वर्त्ताव करके सत्य, न्याय का प्रकाश कर और अविद्या को दूर करके प्रजाओं को शिक्षा देते हैं, वे पवित्र गिने जाते हैं॥१६॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**



www.9009.co.in

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**सुकर्माणः सुरुचो देवयन्तोऽयो न देवा जनिमा धमन्तः।**

**शुचन्तो अग्निं ववृधन्त इन्द्रमूर्वं गव्यं परिषदन्तो अग्मन्॥ १७॥**

**सुऽकर्माणः। सुऽरुचः। देवऽयन्तः। अयः। न। देवाः। जनिम। धमन्तः। शुचन्तः। अग्निम्। ववृधन्तः। इन्द्रम्। ऊर्वम्। गव्यम्। परिऽसदन्तः। अग्मन्॥ १७॥**

**पदार्थः**-(**सुकर्माणः**) शोभनानि कर्माणि येषान्ते (**सुरुचः**) सुष्ठु रुचः प्रीतयो येषान्ते (**देवयन्तः**) कामयमानाः (**अयः**) सुवर्णम् (**न**) इव (**देवाः**) विद्वांसः (**जनिम**) जन्म। अत्र **संहितायामि**ति दीर्घः। (**धमन्तः**) कम्पयन्तः (**शुचन्तः**) पवित्राचरणं कुर्वन्तः कारयन्तः (**अग्निम्**) प्रसिद्धपावकम् (**ववृधन्तः**) वर्धयन्ति (**इन्द्रम्**) विद्युतम् (**ऊर्वम्**) हिंसकम् (**गव्यम्**) गोमयं वाङ्मयम् (**परिषदन्तः**) परिषदमाचरन्तः (**अग्मन्**) गच्छन्ति॥ १७॥

**अन्वयः**-हे राजप्रजाजना! भवन्तोऽयो धमन्तो न देवा जनिम देवयन्तः सुकर्माणः सुरुचः शुचन्तोऽग्निं ववृधन्तः परिषदन्त ऊर्वमिन्द्रं गव्यमग्मंस्तथैव यूयमाचरत॥ १७॥

**भावार्थः**-अत्रोपमावाचकलुप्तोपमालङ्कारौ। सर्वैर्मनुष्यैर्धर्म्याणि कर्माणि कृत्वा विद्यायां सभायां च रुचिं जनयित्वा पवित्रता कामयमाना विद्याजन्मना वर्धमाना विद्युदादिविद्यामुन्नयन्तस्साम्राज्यं कृत्वानन्दः सततं भोक्तव्यः॥ १७॥

**पदार्थः**-हे राजा और प्रजाजन! आप लोगों (**अयः**) सुवर्ण को (**धमन्तः**) कंपाते हुओं के (**न**) सदृश (**देवाः**) विद्वान् लोग (**जनिम**) जन्म की (**देवयन्तः**) कामना करते हुए (**सुकर्माणः**) जिनके उत्तम कर्म (**सुरुचः**) वा श्रेष्ठ प्रीति वह (**शुचन्तः**) पवित्र आचरण को करते और कराते हुए (**अग्निम्**) प्रसिद्ध अग्नि को (**ववृधन्तः**) बढ़ाते हैं (**परिषदन्तः**) और सभा का आचरण करते हुए (**ऊर्वम्**) हिंसा करने वाली (**इन्द्रम्**) बिजुली को (**गव्यम्**) वाणीमय शास्त्र को (**अग्मन्**) प्राप्त होते हैं, वैसा ही आप लोग आचरण करो॥ १७॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमा और वाचकलुप्तोपमालङ्कार हैं। सब मनुष्यों को चाहिये कि धर्मयुक्त कर्मों को करके विद्या और सभा में प्रीति उत्पन्न करके पवित्रता की कामना करते हुए विद्या और जन्म से बढ़ने वाले बिजुली आदि की विद्या को बढ़ाते हुए चक्रवर्त्ती राज्य करके आनन्द का निरन्तर भोग करें॥ १७॥

**अथ राज्ञो विषयमाह॥**

अब राजा के विषय को कहते हैं॥

**आ यूथेव क्षुमति पश्वो अख्यद्देवानां यज्जनिमान्त्युग्र।**



www.9009.co.in

**मर्तानां चिदुर्वशीरकृप्रन्वृधे चिदुर्य उपरस्यायोः॥ १८॥**

**आ। यूथाऽईव। क्षुऽमति। पश्वः। अख्यत्। देवानाम्। यत्। जनिम। अन्ति। उग्र। मर्तानाम्। चित्। उर्वशीः। अकृप्रन्। वृधे। चित्। अर्यः। उपरस्य। आयोः॥ १८॥**

**पदार्थः**-(**आ**) समन्तात् (**यूथेव**) सैन्यानीव (**क्षुमति**) बहु क्ष्वन्नं विद्यते यस्मिंस्तस्मिन् (**पश्वः**) पशोः (**अख्यत्**) प्रख्याति (**देवानाम्**) विदुषाम् (**यत्**) यानि (**जनिम**) जन्मानि (**अन्ति**) समीपे (**उग्र**) तेजस्विन् (**मर्त्तानाम्**) मनुष्याणाम् (**चित्**) अपि (**उर्वशीः**) बहुव्यापिकाः। **उर्वशीति पदनामसु पठितम्।** (निघं०४.२) (**अकृप्रन्**) कल्पन्ते (**वृधे**) वर्द्धनाय (**चित्**) इव (**अर्य्यः**) स्वामी (**उपरस्य**) मेघस्य (**आयोः**) जीवनस्य प्रापकस्य॥ १८॥

**अन्वयः**-हे उग्र राजन्! भवान् देवानां मर्त्तानां चान्ति यज्जनिमाऽऽख्यत् क्षुमति यूथेवाऽऽख्यत्। अर्य्यश्चिदिवोपरस्यायोः पश्वश्चिद् वृध उर्वशीर्देवा अकृप्रन्॥ १८॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। यन्मनुष्याणां मध्ये राजजन्म तन्महापुण्यजमिति वेद्यम्। यदि राजा न स्यात्तर्हि कोऽपि स्वास्थ्यं न प्राप्नुयाद् यथा मेघस्य सकाशात् सर्वेषां जीवनवर्धने भवतस्तथैव राज्ञः सर्वस्याः प्रजायाः वृद्धिजीवने भवतः॥ १८॥

**पदार्थः**-हे (**उग्र**) तेजस्वी राजन्! आप (**देवानाम्**) विद्वान् (**मर्त्तानाम्**) मनुष्यों के (**अन्ति**) समीप में (**यत्**) जिन (**जनिम**) जन्मों को (**आ, अख्यत्**) सब ओर से प्रसिद्ध करते वा (**क्षुमति**) बहुत अन्न जिसमें विद्यमान उसमें (**यूथेव**) सेनाजनों के सदृश प्रसिद्ध करते हैं (**अर्य्यः**) और जैसे स्वामी (**चित्**) वैसे (**उपरस्य**) मेघ और (**आयोः**) जीवन प्राप्त कराने वाले (**पश्वः**) पशु की (**चित्**) भी (**वृधे**) वृद्धि के लिये (**उर्वशीः**) बहुत व्याप्त होनेवाली क्रियाओं की विद्वान् लोग (**अकृप्रन्**) कल्पना करते हैं॥ १८॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जो मनुष्यों के मध्य में राजा का जन्म वह बड़े पुण्य से उत्पन्न हुआ ऐसा जानना चाहिये। जो राजा विद्यमान न हो तो कोई भी स्वस्थता को नहीं प्राप्त हो और जैसे मेघ के समीप से सब का जीवन और वृद्धि होती है, वैसे ही राजा के समीप से सब प्रजा की वृद्धि और जीवन होता है॥ १८॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अकर्म ते स्वपसो अभूम ऋतमवस्रन्नुषसो विभातीः।**

**अनूनमग्निं पुरुधा सुश्चन्द्रं देवस्य मर्मृजतश्चारु चक्षुः॥ १९॥**

**अकर्म। ते। सुऽअपसः। अभूम। ऋतम्। अवस्रन्। उषसः। विभातीः। अनूनम्। अग्निम्। पुरुधा। सुऽचन्द्रम्। देवस्य। मर्मृजतः। चारु। चक्षुः॥ १९॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**अकर्म**) कुर्याम (**ते**) तव (**स्वपसः**) सुष्ठ्वपो धर्म्यं कर्म कुर्वाणाः (**अभूम**) भवेम (**ऋतम्**) सत्यम् (**अवस्रन्**) वसन्ति (**उषसः**) प्रभातवेलाः (**विभातीः**) प्रकाशयन्त्यः (**अनूनम्**) पुष्कलम् (**अग्निम्**) (**पुरुधा**) बहुप्रकारैः (**सुश्चन्द्रम्**) शोभनं चन्द्रं हिरण्यं यस्मात्तम् (**देवस्य**) कामयमानस्य (**मर्मृजतः**) भृशं शोधयतः (**चारु**) सुन्दरम् (**चक्षुः**) नेत्रम्॥१९॥

**अन्वयः**-हे राजन्! यथा विभातीरुषसोऽनूनं सुश्चन्द्रम्मर्मृजतो देवस्य चारु चक्षुरग्निं पुरुधावस्रन् तथैवर्त्तं सेवमाना स्वपसो वयं ते मर्मृजतो देवस्य हितमकर्म ते सखायोऽभूम॥१९॥

**भावार्थः**-हे राजन्! यथा सूर्य्यादुत्पन्नोषा सर्वान् सुशोभितान् करोति तथैव ब्रह्मचर्य्येण जाता विद्वांसो वयं तवाऽऽज्ञायां यथा वर्त्तेमहि तथैव भवानस्माकं हितं सततं करोतु सर्वे वयं मिलित्वाऽन्यायं निवर्त्य धर्म्याणि कर्माणि प्रवर्त्तयेम॥१९॥

**पदार्थः**-हे राजन्! जैसे (**विभातीः**) प्रकाश करती हुई (**उषसः**) प्रभातवेलाओं को (**अनूनम्**) और बहुत (**सुश्चन्द्रम्**) सुन्दर सुवर्ण जिससे होता उसको (**मर्मृजतः**) अत्यन्त शोधते हुए (**देवस्य**) कामना करने वाले के (**चारु**) सुन्दर (**चक्षुः**) नेत्र (**अग्निम्**) और अग्नि को (**पुरुधा**) बहुत प्रकारों से (**अवस्रन्**) वसते हैं, वैसे ही (**ऋतम्**) सत्य की सेवा करते और (**स्वपसः**) उत्तम धर्म-सम्बन्धी कर्म करते हुए हम लोग अत्यन्त शुद्धता तथा कामना करते हुए के हित को (**अकर्म**) करें और (**ते**) आपके मित्र (**अभूम**) होवें॥१९॥

**भावार्थः**-हे राजन्! जैसे सूर्य्य से उत्पन्न प्रातःकाल सब को शोभित करता है, वैसे ही ब्रह्मचर्य्य से हुए विद्वान् हम लोग आपकी आज्ञानुकूल जैसे वर्तें, वैसे ही आप हम लोगों का हित निरन्तर करो और सब हम लोग परस्पर मेल करके और अन्याय दूर करके धर्मसम्बन्धी कर्मों को प्रवृत्त करें॥१९॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**एता ते अग्न उचथानि वेधोऽवोचाम कवये ता जुषस्व।**

**उच्छोचस्व कृणुहि वस्यसो नो महो रायः पुरुवार प्र यन्धि॥२०॥१९॥**

**एता। ते। अग्ने। उचथानि। वेधः। अवोचाम। कवये। ता। जुषस्व। उत्। शोचस्व। कृणुहि। वस्यसः। नः। महः। रायः। पुरुऽवार। प्र। यन्धि॥२०॥**

**पदार्थः**-(**एता**) एतानि (**ते**) तुभ्यम् (**अग्ने**) विद्वन्धार्मिकराजन् (**उचथानि**) उचितानि वचनानि (**वेधः**) मेधाविन् (**अवोचाम**) वदेम (**कवये**) सर्वविद्यायुक्ताय (**ता**) तानि (**जुषस्व**) सेवस्व (**उत्**) (**शोचस्व**) विचारय (**कृणुहि**) अनुतिष्ठ (**वस्यसः**) वसीयसः (**नः**) अस्मभ्यम् (**महः**) महतः (**रायः**) धनानि (**पुरुवार**) यः पुरून् बहूनाप्तान् वृणोति तत्सम्बुद्धौ (**प्र**) (**यन्धि**) प्रयच्छ॥२०॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे वेधोऽग्ने! वयं कवये ते यान्येता उचथान्यवोचाम ता त्वं जुषस्वोच्छोचस्व कृणुहि, हे पुरुवार! नो महो वस्यसो रायः प्र यन्धि॥२०॥

**भावार्थः**-राज्ञा आप्तानामेव वचांसि श्रुत्वा सुविचार्य्य सेवनीयानि तेभ्य आप्तेभ्यः प्रियाणि वस्तूनि दत्वैते सततं सन्तोषणीया एवं राजाप्तसभे मिलित्वा सर्वाणि कर्माणि समापयेतामिति॥२०॥

अथ राजप्रजाऽप्तजनकृत्यवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति द्वितीयं सूक्तमेकोनविंशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे **(वेधः)** बुद्धिमान् **(अग्ने)** विद्वान् धार्मिक राजन्! हम लोग **(कवये)** सब विद्या से युक्त **(ते)** आपके लिये जिन **(एता)** इन **(उचथानि)** उचित वचनों को **(अवोचाम)** कहें **(ता)** उनको आप **(जुषस्व)** सेवो और **(उत्, शोचस्व)** अत्यन्त विचारो **(कृणुहि)** करो **(पुरुवार)** हे बहुत आप्त अर्थात् सत्यवादी पुरुषों का स्वीकार करने वाले! **(नः)** हम लोगों के लिये **(महः)** बड़े **(वस्यसः)** अतिशयित निवसे धरे हुए **(रायः)** धनों को **(प्र, यन्धि)** उत्तमता से देओ॥२०॥

**भावार्थः**-राजा को चाहिये कि यथार्थवक्ता ही पुरुषों के वचनों को सुन और उत्तम प्रकार विचार कर सेवन करें, उन यथार्थवक्ता पुरुषों के लिये प्रिय वस्तुओं को देकर वे निरन्तर सन्तुष्ट करने योग्य हैं, इस प्रकार राजा और यथार्थवक्ता पुरुषों की सभा सब मिल कर सब कर्म्मों को सिद्ध करें॥२०॥

इस सूक्त में राजा, प्रजा और यथार्थवक्ता पुरुष के कृत्यवर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ संगति जाननी चाहिये॥

**यह द्वितीय सूक्त और उन्नीसवां वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

**अथ षोडशर्चस्य तृतीयस्य सूक्तस्य वामदेव ऋषिः। अग्निर्देवता। १,५,८,१०,१२,१५ निचृत्त्रिष्टुप्। २,१३,१४ विराट् त्रिष्टुप्। ३,७,९ त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः। ४ स्वराड् बृहतीच्छन्दः। मध्यमः स्वरः। ६,११,१६ पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः॥**

***अथ सूर्य्यरूपाग्निदृष्टान्तेन राजप्रजाजनकृत्यमाह॥***

अब सोलह ऋचा वाले तीसरे सूक्त का वर्णन है उसके प्रथम मन्त्र में सूर्य्यरूप अग्नि के दृष्टान्त से राज प्रजाजनों के कृत्य का वर्णन करते हैं॥

**आ वो राजानमध्वरस्य रुद्रं होतारं सत्ययजं रोदस्योः।**

**अग्निं पुरा तनयित्नोरचित्ताद्धिरण्यरूपमवसे कृणुध्वम्॥१॥**

**आ। वः। राजानम्। अध्वरस्य। रुद्रम्। होतारम्। सत्यऽयजम्। रोदस्योः। अग्निम्। पुरा। तनयित्नोः। अचित्तात्। हिरण्यऽरूपम्। अवसे। कृणुध्वम्॥१॥**

**पदार्थः**-(**आ**) (**वः**) युष्माकम् (**राजानम्**) प्रकाशमानम् (**अध्वरस्य**) अहिंसनीयस्य राज्यस्य (**रुद्रम्**) दुष्टानां रोदयितारम् (**होतारम्**) दातारम् (**सत्ययजम्**) यः सत्यमेव यजति सङ्गच्छते तम् (**रोदस्योः**) द्यावापृथिव्योर्मध्ये (**अग्निम्**) सूर्य्यमिव वर्त्तमानम् (**पुरा**) पुरस्तात् (**तनयित्नोः**) विद्युतः (**अचित्तात्**) अविद्यमानं चित्तं यत्र तस्मात् (**हिरण्यरूपम्**) हिरण्यस्य तेजसो रूपमिव रूपं यस्य तम् (**अवसे**) धर्मात्मनां रक्षणाय दुष्टानां हिंसनाय (**कृणुध्वम्**)॥१॥

**अन्वयः**-हे आप्ता विद्वांसो! यथा वयं वोऽध्वरस्यावसे होतारं सत्ययजं रुद्रमचित्तात् तनयित्नोर्हिरण्यरूपं रोदस्योरग्निमिव राजानं पुरा कुर्याम तथाभूतमस्माकं नृपं यूयमाकृणुध्वम्॥१॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे विद्वांसो! राजप्रजाजनैरेकसम्मतिं कृत्वा यथेश्वरेण ब्रह्माण्डस्य मध्ये सूर्य्यं स्थापयित्वा सर्वस्य प्रियं साधितं तथाभूतं राजानमस्माकं मध्ये शुभगुणकर्मस्वभावाऽन्वितं नृपं कृत्वाऽस्माकं हितं यूयं साधयत यतो युष्माकमपि प्रियं सिध्येत्॥१॥

**पदार्थः**-हे यथार्थवक्ता विद्वानो! जैसे हम लोग (**वः**) आपके (**अध्वरस्य**) न नष्ट करने योग्य राज्य के (**अवसे**) धर्मात्माओं की रक्षा और दुष्टों के नाश करने के लिये (**होतारम्**) देने (**सत्ययजम्**) सत्य ही को प्राप्त होने और (**रुद्रम्**) दुष्टों के रुलाने वाले (**अचित्तात्**) जिसमें चित्त नहीं स्थिर होता, ऐसी (**तनयित्नोः**) बिजुली के (**हिरण्यरूपम्**) तेजरूप के समान रूपवाले वा (**रोदस्योः**) अन्तरिक्ष और पृथिवी के मध्य में (**अग्निम्**) सूर्य्य के सदृश (**राजानम्**) प्रकाशमान न्याय (**पुरा**) प्रथम करें, वैसा हम लोगों के बीच राजा आप लोग (**आ, कृणुध्वम्**) सब प्रकार करें॥१॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे विद्वान् लोगो! राजा और प्रजाजनों के साथ एक सम्मति करके जैसे ईश्वर ने ब्रह्माण्ड के मध्य में सूर्य्य को स्थित करके सब का प्रियसुख साधन



www.9009.co.in

किया, वैसे ही हम लोगों के मध्य में उत्तम गुण, कर्म और स्वभावयुक्त को राजा करके हम लोगों के हित को आप लोग सिद्ध करो, जिससे आप लोगों का भी प्रिय सिद्ध होवे॥१॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अयं योनिश्चकृमा यं वयं ते जायेव पत्य उशती सुवासाः।**

**अर्वाचीनः परिवीतो नि षीदेमा उ ते स्वपाक प्रतीचीः॥२॥**

**अयम्। योनिः। चकृम। यम्। वयम्। ते। जायाऽइव। पत्ये। उशती। सुऽवासाः। अर्वाचीनः। परिऽवीतः। नि। सीद। इमाः। ऊम् इति। ते। सुऽअपाक। प्रतीचीः॥२॥**

**पदार्थः**-(**अयम्**) (**योनिः**) गृहम् (**चकृम**) कुर्य्याम। अत्र **संहितायामि**ति दीर्घः। (**यम्**) प्रासादम् (**वयम्**) (**ते**) तव (**जायेव**) हृद्या स्त्रीव (**पत्ये**) स्वामिने (**उशती**) कामयमाना (**सुवासाः**) शोभनवस्त्रालङ्कृता (**अर्वाचीनः**) इदानीन्तनः (**परिवीतः**) सर्वतो व्याप्तशुभगुणः (**नि**) (**सीद**) निवस (**इमाः**) वर्त्तमानाः प्रजाः (**उ**) (**ते**) तव (**स्वपाक**) सुष्ठ्वपरिपक्वज्ञान (**प्रतीचीः**) प्रतीतमञ्चन्त्यः॥२॥

**अन्वयः**-हे राजन्! वयं ते यं चकृम सोऽयं योनिः पत्य उशती सुवासा जायेवार्वाचीन परिवीतोऽस्तु, तत्र त्वं निषीद। हे स्वपाक! प्रतीचीरिमा उ ते भक्ता भवन्तु॥२॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। राज्ञेदृशं गृहं निर्मातव्यं यत्पतिव्रता सुन्दरी हृद्या जायावत्सर्वेष्वृतुषु सुखं दद्यात्। तत्राऽऽसीन ईदृशानि कर्माणि कुर्य्या यैस्स्वप्रजा अनुरक्तास्स्युः॥२॥

**पदार्थः**-हे राजन्! (**वयम्**) हम लोग (**ते**) आपके (**यम्**) जिस गृह को (**चकृम**) बनावें सो (**अयम्**) यह (**योनिः**) गृह (**पत्ये**) स्वामी के लिये (**उशती**) कामना करती हुई (**सुवासाः**) सुन्दर वस्त्रों से शोभित (**जायेव**) मन की प्यारी स्त्री के सदृश (**अर्वाचीनः**) इस वर्त्तमानकाल में हुआ (**परिवीतः**) सब प्रकार व्याप्त उत्तम गुण जिसमें ऐसा हो, उसमें आप (**नि, सीद**) निवास करो और (**स्वपाक**) हे उत्तम प्रकार परिपक्व ज्ञान वाले! (**प्रतीचीः**) प्रतीति को प्राप्त होती हुई (**इमाः**) यह वर्त्तमान प्रजा (**उ**) और (**ते**) आपके भक्त हों॥२॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। राजा को चाहिये कि ऐसा गृह बनावे कि जो पतिव्रता सुन्दरी मन की प्यारी स्त्री के सदृश सब ऋतुओं में सुख देवे। और वहाँ स्थित हुआ ऐसे कर्म करे कि जिन कर्मों से अपनी प्रजा अनुरक्त होवें॥२॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**आशृण्वते अदृपिताय मन्म नृचक्षसे सुमृळीकाय वेधः।**



www.9009.co.in

**देवाय शस्तिममृताय शंस ग्रावेव सोता मधुषुद्यमीळे॥ ३॥**

**आऽशृण्वते। अदृपिताय। मन्म। नृऽचक्षसे। सुऽमृळीकाय। वेधः। देवाय। शस्तिम्। अमृताय। शंस। ग्रावाऽइव। सोता। मधुऽसुत्। यम्। ईळे॥ ३॥**

**पदार्थः**-(**आश्रृण्वते**) समन्ताच्छ्रवणं कुर्वते (**अदृपिताय**) अमोहिताय (**मन्म**) विज्ञानम् (**नृचक्षसे**) सत्याऽसत्यकर्तॄणां जनानां साक्षाद्द्रष्ट्रे (**सुमृळीकाय**) सुसुखप्रदाय सुखस्वरूपाय (**वेधः**) मेधाविन् राजन् (**देवाय**) दिव्यगुणसम्पन्नाय (**शस्तिम्**) प्रशंसाम् (**अमृताय**) जलवच्छान्तस्वरूपाय (**शंस**) स्तुहि (**ग्रावेव**) मेघ इव (**सोता**) अभिषवस्य कर्त्ता (**मधुषुत्**) यो मधूनि मधुराणि सुनोति सः (**यम्**) (**ईळे**) स्तौमि॥ ३॥

**अन्वयः**-हे वेधो राजन्! यमहमीळ आश्रृण्वतेऽदृपिताय नृचक्षसे सुमृळीकायाऽमृताय देवाय ते मन्माहमुपदिशेय तथा त्वं ग्रावेव मधुषुत्सोता सञ्छस्तिं शंस॥ ३॥

**भावार्थः**-स एव राजोत्तमो भवति यो मोहादिदोषरहितः सर्वेषां वचनानां श्रोता सत्याऽसत्ययोर्द्रष्टा मेघवत्प्रजायां विविधभोगप्रापको न्यायेशः स्यात्॥ ३॥

**पदार्थः**-हे (**वेधः**) बुद्धिमान् राजन्! (**यम्**) जिसकी मैं (**ईळे**) स्तुति करता हूँ (**आश्रृण्वते**) सब प्रकार सुनते हुए (**अदृपिताय**) मोहरहित (**नृचक्षसे**) सत्य और असत्य व्यवहारों को करते हुए जनों के साक्षात् देखने और (**सुमृळीकाय**) उत्तम प्रकार सुख देने वाले, सुख और (**अमृताय**) जल के सदृश शान्तस्वरूप (**देवाय**) उत्तम गुणों से युक्त आपके लिये (**मन्म**) विज्ञान का मैं उपदेश देता हूँ, वैसे आप (**ग्रावेव**) मेघ के सदृश (**मधुषुत्**) मधुरताओं के उत्पन्न करने वाले (**सोता**) अभिषेक करनेवाले हुए (**शस्तिम्**) प्रशंसा की (**शंस**) स्तुति कीजिये अर्थात् प्रबन्ध से कहिये॥ ३॥

**भावार्थः**-वह ही राजा उत्तम होता है कि जो मोह आदि दोषों से रहित होकर सब वचनों का सुनने, सत्य और असत्य का देखने और मेघ के सदृश प्रजा में अनेक प्रकार का भोग प्राप्त करानेवाला न्यायाधीश होवे॥ ३॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**त्वं चिन्नः शम्या अग्ने अस्या ऋतस्य बोध्यृतचित्स्वाधीः।**

**कदा ते उक्था सधमाद्यानि कदा भवन्ति सख्या गृहे ते॥ ४॥**

**त्वम्। चित्। नः। शम्यै। अग्ने। अस्याः। ऋतस्य। बोधि। ऋतऽचित्। सुऽआधीः। कदा। ते। उक्था। सधऽमाद्यानि। कदा। भवन्ति। सख्या। गृहे। ते॥ ४॥**

**पदार्थः**-(**त्वम्**) (**चित्**) अपि (**नः**) अस्माकम् (**शम्यै**) कर्मणे (**अग्ने**) पावकवद्वर्त्तमान (**अस्याः**) प्रजायाः (**ऋतस्य**) सत्यस्य (**बोधि**) बुध्यस्व (**ऋतचित्**) य ऋतं सत्यं चिनोति सः (**स्वाधीः**)



www.9009.co.in

यः सुष्ठु समन्ताच्चिन्तयति **(कदा)** **(ते)** तव **(उक्था)** उचितानि **(सधमाद्यानि)** सहस्थानेषु साधूनि **(कदा)** **(भवन्ति)** **(सख्या)** सखीनां कर्माणि भावा वा **(गृहे)** **(ते)**॥४॥

**अन्वयः**-हे अग्ने राजंस्त्वं नोऽअस्या ऋतस्य शम्यै स्वाधीर्ऋतचित्सन्कदा बोधि चिदपि ते गृहे सधमाद्यान्युक्था चिदपि ते सख्या कदा भवन्ति॥४॥

**भावार्थः**-हे राजंस्त्वं यदा प्रजायाः सत्यं न्यायं करिष्यसि तदैव तवाऽऽज्ञायां वर्त्तित्वा प्रजा एकमत्या भविष्यन्ति॥४॥

**पदार्थः**-हे **(अग्ने)** अग्नि के सदृश वर्त्तमान राजन् **(त्वम्)** आप **(नः)** हम लोगों की **(अस्याः)** इस प्रजा के **(ऋतस्य)** सत्य के **(शम्यै)** कर्म्म के लिये **(स्वाधीः)** उत्तम प्रकार सब प्रकार विचार करने और **(ऋतचित्)** सत्य का संग्रह करने वाला [होते हुए] **(कदा)** कब **(बोधि)** जानो और **(चित्)** भी **(ते)** आपके **(गृहे)** गृह में **(सधमाद्यानि)** मेल के स्थानों में श्रेष्ठ और **(उक्था)** उचित भी **(ते)** तुम्हारे **(सख्या)** मित्रों के कर्म्म वा अभिप्राय **(कदा)** कब **(भवन्ति)** होते हैं॥४॥

**भावार्थः**-हे राजन्! आप जब प्रजा के सत्य न्याय को करेंगे, तब ही आपकी आज्ञा के अनुकूल वर्त्ताव करके प्रजा एकसम्मति से होंगी॥४॥

**अथोपदेशकविषयमाह॥**

अब उपदेशक विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**क॒था ह॒ तद्वरु॑णाय॒ त्वम॑ग्ने क॒था दि॒वे ग॑र्हसे॒ कन्न॒ आगः॑।**

**क॒था मि॒त्राय॑ मी॒ळ्हुषे॑ पृथि॒व्यै ब्रवः॒ कद॑र्य॒म्णे कद्भगा॑य॥५॥२०॥**

**क॒था। ह॒। तत्। वरु॑णाय। त्वम्। अ॒ग्ने॒। क॒था। दि॒वे। ग॒र्ह॒से॒। कत्। न॒ः। आग॑ः। क॒था। मि॒त्राय॑। मी॒ळ्हुषे॑। पृ॒थि॒व्यै। ब्रव॑ः। कत्। अ॒र्य॒म्णे। कत्। भगा॑य॥५॥**

**पदार्थः**-**(कथा)** केन प्रकारेण **(ह)** किल **(तत्)** **(वरुणाय)** श्रेष्ठाय **(त्वम्)** **(अग्ने)** पावकवद्वर्त्तमान **(कथा)** **(दिवे)** प्रकाशमानाय **(गर्हसे)** निन्दसि **(कत्)** कदा **(नः)** अस्माकम् **(आगः)** अपराधम् **(कथा)** **(मित्राय)** सख्ये **(मीळ्हुषे)** सुखवर्धकाय **(पृथिव्यै)** पृथिवीवद्वर्त्तमानायै स्त्रियै **(ब्रवः)** ब्रूयाः **(कत्)** कदा **(अर्यम्णे)** न्यायाधीशाय **(कत्)** कदा **(भगाय)** ऐश्वर्य्याय॥५॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! त्वं ह कथा वरुणाय गर्हसे कथा दिवे गर्हसे न आगः कद् गर्हसे मीळ्हुषे मित्राय कथा गर्हसे पृथिव्यै तद्वचः कद् ब्रवोऽर्य्यम्णे भगाय च कद् ब्रवः॥५॥

**भावार्थः**-हे विद्वांसो! यदि राजा श्रेष्ठस्य विदुषां वा निन्दां कुर्य्यात् तदैव भवद्भिर्निरोद्धव्यः सर्वेषां राजकर्म्मणां सिद्धये समयव्यवस्था कार्य्या यदा यदा यत् यत्कर्म कर्त्तव्यं भवेत्तदा तदा तत्तत्कर्म्म कर्त्तव्यमिति राजोपदेष्टव्यो यदा मित्रद्रोहमाचरेत् तदैव शिक्षणीय एवं कृते राजप्रजयोः सततमुन्नतिर्भवेत्॥५॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-हे **(अग्ने)** अग्नि के सदृश वर्त्तमान! **(त्वम्)** आप **(ह)** ही **(कथा)** किस प्रकार **(वरुणाय)** श्रेष्ठ की **(गर्हसे)** निन्दा करते हो **(कथा)** किस प्रकार **(दिवे)** प्रकाशमान के लिये निन्दा करते हो **(नः)** हम लोगों के **(आगः)** अपराध की **(कत्)** कब निन्दा करते हो **(मीळ्हुषे)** सुख बढ़ाने वाले **(मित्राय)** मित्र के लिये **(कथा)** किस प्रकार निन्दा करते हो **(पृथिव्यै)** पृथिवी के सदृश वर्त्तमान स्त्री के लिये **(तत्)** उस वचन को **(कत्)** कब **(ब्रवः)** कहो **(अर्य्यम्णे)** न्यायाधीश के लिये और **(भगाय)** ऐश्वर्य्य के लिये **(कत्)** कब कहो॥५॥

**भावार्थः**-हे विद्वानो! जो राजा श्रेष्ठ वा विद्वानों की निन्दा करे, वह आप लोगों से रोकने योग्य है और सब राजकर्मों की सिद्धि के लिये समयव्यवस्था करनी चाहिये और जब-जब जो-जो कर्म करना हो तब-तब वह-वह कर्म करना चाहिये। इस प्रकार राजा को उपदेश करना चाहिये जब मित्रद्रोह का आचरण करे तभी उसको शिक्षा देनी चाहिये ऐसा करने पर राजा और प्रजा दोनों की निरन्तर उन्नति होवे॥५॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**कद्धिष्ण्यासु वृधसानो अग्ने कद्वाताय प्रतवसे शुभंये।**

**परिज्मने नासत्याय क्षे ब्रवः कदग्ने रुद्राय नृघ्ने॥६॥**

**कत्। धिष्ण्यासु। वृधसानः। अग्ने। कत्। वाताय। प्रऽतवसे। शुभम्ऽये। परिऽज्मने। नासत्याय। क्षे। ब्रवः। कत्। अग्ने। रुद्राय। नृऽघ्ने॥६॥**

**पदार्थः**-**(कत्)** कदा **(धिष्ण्यासु)** धिष्णायां बुद्धौ भवासु क्रियासु **(वृधसानः)** यो वृधान् वर्धकान् विभजति **(अग्ने)** विद्वन् राजन् **(कत्)** कदा **(वाताय)** विज्ञानाय **(प्रतवसे)** प्रकृष्टबलाय **(शुभंये)** यः शुभं याति प्राप्नोति तस्मै **(परिज्मने)** परितः सर्वतो ज्मा भूमिर्यस्य तस्मै **(नासत्याय)** अविद्यमानासत्याचाराय **(क्षे)** भूमी राज्याय विद्यते यस्मिंस्तस्मिन्। अत्र**ार्शादिभ्यो**ऽच् **(ब्रवः)** ब्रूयाः **(कत्)** **(अग्ने)** पावकवद्देदीप्यमान **(रुद्राय)** दुष्टानां रोदयित्रे **(नृघ्ने)** यः शत्रूणां नायकान् हन्ति तस्मै॥६॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! त्वं धिष्ण्यासु वृधसानः सन् प्रतवसे वाताय कद् ब्रवः। हे अग्ने! परिज्मने शुभंये नासत्याय कद् ब्रवः क्षे नृघ्ने रुद्राय कद् ब्रवः॥६॥

**भावार्थः**-राजादीनध्यक्षान् प्रत्यध्यापकोपदेशकमन्त्रिणः एवमुपदिशेयुर्भवन्तो प्रज्ञाकर्म्मसु वृद्धा बलिष्ठाश्शुभाचरणाः सत्यभाषिणो दुष्टान् घातुकाः कदा भविष्यन्ति शुभाचरणे दुष्टाचारत्यागे विलम्बं मा कुर्वन्तु॥६॥

**पदार्थः**-हे **(अग्ने)** अग्नि के सदृश प्रकाशमान आप! **(धिष्ण्यासु)** बुद्धि में उत्पन्न क्रियाओं में **(वृधसानः)** बढ़ने वालों का विभाग करते हुए **(प्रतवसे)** श्रेष्ठ बल और **(वाताय)** विज्ञान के लिये **(कत्)**



www.9009.co.in

कब **(ब्रवः)** कहो **(अग्ने)** हे विद्वन् राजन्! **(परिज्मने)** सब ओर भूमि जिसके उस **(शुभंये)** कल्याण को प्राप्त होने वाले **(नासत्याय)** असत्य आचरण से रहित के लिये **(कत्)** कब कहो **(क्षे)** पृथिवी राज्य के लिये विद्यमान जिसमें उसमें **(नृघ्ने)** शत्रुओं के नायकों के नाश करने और **(रुद्राय)** दुष्ट पुरुषों को रुलाने वाले के लिये **(कत्)** कब कहो॥६॥

**भावार्थः**-राजा आदि अध्यक्षों के प्रति अध्यापक, उपदेशक और मन्त्रीजन ऐसा उपदेश देवें कि आप लोग बुद्धि के कामों में वृद्ध, बलिष्ठ, उत्तम आचरण वाले, सत्यवादी और दुष्ट पुरुषों के नाश करने वाले कब होओगे और उत्तम आचरण करने और दुष्ट आचरण के त्याग में विलम्ब न करो॥६॥

**अथ शिष्यपरीक्षाविषयमाह॥**

अब विद्यार्थियों की परीक्षा विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**कथा महे पुष्टिम्भरायं पूष्णे कद्रुद्राय सुमखाय हविर्दे।**

**कद्विष्णव उरुगायाय रेतो ब्रवः कदग्ने शरवे बृहत्यै॥७॥**

**कथा। महे। पुष्टिम्ऽभरायं। पूष्णे। कत्। रुद्रायं। सुऽमखाय। हविःऽदे। कत्। विष्णवे। उरुऽगायायं। रेतः। ब्रवः। कत्। अग्ने। शरवे। बृहत्यै॥७॥**

**पदार्थः**-**(कथा)** केन प्रकारेण **(महे)** महते **(पुष्टिम्भराय)** **(पूष्णे)** पोषकाय **(कत्)** कदा **(रुद्राय)** शत्रुघ्नाय **(सुमखाय)** सुष्ठु यज्ञसम्पादकाय **(हविर्दे)** यो हवींषि दातव्यानि ददाति तस्मै **(कत्)** कदा **(विष्णवे)** व्यापकाय परमेश्वराय **(उरुगायाय)** बहुप्रशंसाय **(रेतः)** उदकमिव शान्तो मृदुर्भूत्वा **(ब्रवः)** **(कत्)** **(अग्ने)** विद्वन् **(शरवे)** दुष्टानां हिंसकाय **(बृहत्यै)** महत्यै सेनायै॥७॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! त्वं रेत इव सन् महे पुष्टिम्भराय पूष्णे कथा ब्रवः सुमखाय हविर्दे रुद्राय कद् ब्रवः। उरुगायाय विष्णवे कद् ब्रवः शरवे बृहत्यै कद् ब्रवः॥७॥

**भावार्थः**-अध्यापकैर्विद्यार्थिनोऽध्याप्य प्रत्यष्टाऽहं प्रतिपक्षं प्रतिमासं प्रत्ययनं प्रतिवर्षञ्च तेषां परीक्षा यथार्हा कर्त्तव्या येन राजकुमारादयः सर्वे निर्भ्रमज्ञानाः सन्तः सुशीलाः शरीरात्मबलयुक्ताः धर्मिष्ठाः शतायुषो न्यायेन राज्यपालकाः स्युः॥७॥

**पदार्थः**-हे **(अग्ने)** विद्वन् पुरुष! आप **(रेतः)** जल के सदृश शान्त अर्थात् कोमलचित्त होके **(महे)** बड़े **(पुष्टिम्भराय)** पुष्टि धारण कराने **(पूष्णे)** पोषण करने वाले के लिये **(कथा)** किस प्रकार **(ब्रवः)** कहो **(सुमखाय)** उत्तम प्रकार यज्ञसम्पादन करने और **(हविर्दे)** देने योग्य वस्तुओं को देने वाले के लिये तथा **(रुद्राय)** शत्रुओं में प्रबल के लिये **(कत्)** कब कहो **(उरुगायाय)** बहुत प्रशंसा करने योग्य **(विष्णवे)** व्यापक परमेश्वर के लिये **(कत्)** कब कहो **(शरवे)** दुष्टों के नाश करने वाली **(बृहत्यै)** बड़ी सेना के लिये **(कत्)** कब कहो॥७॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-अध्यापक लोगों को विद्यार्थियों को पढ़ा के प्रत्येक अठवाड़े, प्रत्येक पक्ष, प्रतिमास, प्रतिछमाही और प्रतिवर्ष परीक्षा यथायोग्य करनी चाहिये, जिससे कि राजकुमारादि सब भ्रमरहित, ज्ञानविशिष्ट, उत्तमस्वभावयुक्त शरीर और आत्मा के बल सहित धर्मिष्ठ सौ वर्ष जीने और न्याय से राज्य के पालन करने वाले होवें॥७॥

**अथ राजविषयमाह॥**

अब अगले मन्त्र में राजविषय को कहते हैं॥

**कथा शर्धाय मरुतामृताय कथा सूरे बृहते पृच्छ्यमानः।**

**प्रति ब्रवोऽदितये तुराय साधा दिवो जातवेदश्चिकित्वान्॥८॥**

**कथा। शर्धाय। मरुताम्। ऋताय। कथा। सूरे। बृहते। पृच्छ्यमानः। प्रति। ब्रवः। अदितये। तुराय। साध। दिवः। जातऽवेदः। चिकित्वान्॥८॥**

**पदार्थः**-(**कथा**) (**शर्धाय**) बलाय (**मरुताम्**) वायूनामिव (**ऋताय**) सत्याय (**कथा**) (**सूरे**) सूर्य्य इव वर्त्तमाने सैन्ये (**बृहते**) वर्द्धमानाय (**पृच्छ्यमानः**) (**प्रति**) (**ब्रवः**) ब्रूयाः (**अदितये**) अविनष्टायाऽन्तरिक्षाय (**तुराय**) त्वरमाणाय (**साध**)। अत्र **द्व्यचोऽतस्तिङ** इति दीर्घः। (**दिवः**) प्रकाशान् (**जातवेदः**) प्रसिद्धप्रज्ञान (**चिकित्वान्**) ज्ञानवान् भूत्वा॥८॥

**अन्वयः**-हे जातवेदः! सूरे पृच्छ्यमानस्त्वं मरुतामिवर्ताय बृहते शर्धाय कथा ब्रवः तुरायाऽदितये कथा प्रति ब्रवश्चिकित्वान्सन् दिवः साध॥८॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। ये राजानो वायुवत्स्वबलं वर्धयन्ति योद्धॄणां शिक्षकान् परीक्षकान् सत्कुर्वन्ति प्रश्नोत्तराभ्यां सर्वान् विज्ञाय तैः कार्य्याणि साध्नुवन्ति ते सूर्य्य इवैश्वर्य्यप्रकाशका भवन्ति॥८॥

**पदार्थः**-हे (**जातवेदः**) प्रसिद्ध उत्तम ज्ञानयुक्त (**सूरे**) सूर्य्य के सदृश वर्त्तमान सेना में (**पृच्छ्यमानः**) पूंछे गए आप (**मरुताम्**) पवनों का जैसे वैसे (**ऋताय**) सत्य के और (**बृहते**) बढ़ते हुए (**शर्धाय**) बल के लिये (**कथा**) किस प्रकार से (**ब्रवः**) कहो (**तुराय**) शीघ्रता करते हुए (**अदितये**) नहीं नाश होने वाले अन्तरिक्ष के लिये (**कथा**) किस प्रकार से (**प्रति**) निश्चित कहो (**चिकित्वान्**) ज्ञानवान् होकर (**दिवः**) प्रकाशों को (**साध**) सिद्ध करो॥८॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो राजा लोग वायु के सदृश अपने बल को बढ़ाते, योधा लोगों के शिक्षक और परीक्षकों का सत्कार करते और प्रश्नोत्तर से सब को जान उनके द्वारा कार्य सिद्ध करते हैं, वे सूर्य्य के सदृश ऐश्वर्य के प्रकाशक होते हैं॥८॥

**अथ मनुष्यैर्ब्रह्मचर्य्यादिना पुरुषार्थः संसेव्य इत्याह॥**

अब मनुष्य को ब्रह्मचर्य्य आदि से पुरुषार्थ सेवना चाहिये, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते



www.9009.co.in

हैं॥

**ऋतेन॑ ऋतं निय॑तमीळ॒ आ गोरा॒मा सचा॒ मधु॑मत्प॒क्वम॑ग्ने।**

**कृ॒ष्णा स॒ती रुश॑ता धा॒सिनै॒षा जाम॑र्येण॒ पय॑सा पीपाय॥९॥**

**ऋ॒तेन॑। ऋ॒तम्। निऽय॑तम्। ई॒ळे॒। आ। गोः। आ॒मा। सचा॑। मधु॑ऽमत्। प॒क्वम्। अ॒ग्ने॒। कृ॒ष्णा। स॒ती। रुश॑ता। धा॒सिना॑। ए॒षा। जाम॑र्येण। पय॑सा। पी॒पा॒य॒॥९॥**

**पदार्थः**-(**ऋतेन**) सत्येन (**ऋतम्**) सत्यम् (**नियतम्**) निश्चितम् (**ईळे**) स्तौम्यध्यन्विच्छामि (**आ**) (**गोः**) पृथिव्या वाण्या वा (**आमा**) अपरिपक्वम्। अत्र विभक्तेराकारादेशः (**सचा**) प्रसङ्गेन (**मधुमत्**) प्रशस्तमधुरादिगुणयुक्तम् (**पक्वम्**) (**अग्ने**) (**कृष्णा**) श्यामा (**सती**) (**रुशता**) सुस्वरूपेण (**धासिना**) अन्नेन (**एषा**) (**जामर्येण**) जामस्येदं जामं तदृच्छति येन तेन (**पयसा**) दुग्धेन (**पीपाय**) वर्द्धस्व॥९॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! विद्वन् यथाऽहं गोर्ऋतेन नियतमृतमीळे तथाऽऽचरँस्त्वं पृथिव्या मध्ये सचा मधुमदामा पक्वं चापीपाय। यथैषा कृष्णा सती विदुषी पतिव्रता रुशता जामर्येण पयसा धासिना वर्धते तथा त्वं वर्धस्व॥९॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। ये मनुष्या ब्रह्मचर्य्येण विद्यासुशिक्षे प्राप्य धर्म्येण व्यवहारेण धर्ममन्विष्य जितेन्द्रियत्वेन मिताऽऽहारा भूत्वा पुरुषार्थयन्ति ते हृद्यौ दम्पती इवाऽऽनन्दिता भूत्वा सर्वतो वर्धन्ते॥९॥

**पदार्थः**-हे (**अग्ने**) अग्नि के सदृश प्रकाशमान विद्वान् पुरुष! जिस प्रकार से मैं (**गोः**) पृथिवी वा वाणी के (**ऋतेन**) सत्य से (**नियतम्**) नियमयुक्त (**ऋतम्**) सत्य की (**ईळे**) स्तुति वा ढूंढ करता हूं, वैसे आचरण करते हुए आप पृथिवी के मध्य में (**सचा**) प्रसङ्ग से (**मधुमत्**) श्रेष्ठ मधुर आदि गुणों से युक्त (**आमा**) कच्चे और (**पक्वम्**) पक्के पदार्थों की (**आ, पीपाय**) अच्छे प्रकार वृद्धि करो और जैसे (**एषा**) यह (**कृष्णा**) श्याम वर्ण (**सती**) सज्जन पण्डिता पतिव्रता स्त्री (**रुशता**) उत्तम स्वरूप से (**जामर्येण**) जीवन में निमित्त (**पयसा**) दुग्ध और (**धासिना**) अन्न से बढ़ती है, वैसे आप वृद्धि को प्राप्त होओ॥९॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो मनुष्य ब्रह्मचर्य से विद्या और उत्तम शिक्षा को प्राप्त होके और धर्मयुक्त व्यवहार से धर्म का अन्वेषण और इन्द्रियजित् होने से नियम से भोजन करने वाले होकर पुरुषार्थ करते हैं, वे स्नेही स्त्री और पुरुष के सदृश आनन्दित होकर सब प्रकार वृद्धि को प्राप्त होते हैं॥९॥

**पुनः पुरुषार्थकर्त्तव्यतामाह॥**

फिर भी पुरुषार्थ कर्त्तव्यता को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**ऋ॒तेन॒ हि ष्मा॑ वृष॒भश्चि॑द॒क्तः पुमाँ॑ अ॒ग्निः पय॑सा पृ॒ष्ठ्ये॑न।**



www.9009.co.in

**अस्पन्दमानो अचरद्वयोधा वृषा शुक्रं दुदुहे पृश्निरूधः॥१०॥२१॥**

**ऋतेन। हि। स्म। वृषभः। चित्। अक्तः। पुमान्। अग्निः। पयसा। पृष्ठ्येन। अस्पन्दमानः। अचरत्। वयःऽधाः। वृषा। शुक्रम्। दुदुहे। पृश्निः। ऊधः॥१०॥**

**पदार्थः**-(**ऋतेन**) सत्येन व्यवहारेण (**हि**) यतः (**स्म**) एव (**वृषभः**) बलिष्ठः (**चित्**) अपि (**अक्तः**) शुभगुणैर्युक्तः (**पुमान्**) पुरुषार्थी (**अग्निः**) विद्युदिव (**पयसा**) रात्र्या (**पृष्ठ्येन**) पृष्ठे भवेन दिनेन (**अस्पन्दमानः**) किञ्चिच्चलितस्सन् (**अचरत्**) चरति (**वयोधाः**) यः कमनीयानि वयांसि जीवनधनादीनि दधाति सः (**वृषा**) सुखानां वर्षकः (**शुक्रम्**) वीर्य्यम् (**दुदुहे**) पिपर्त्ति (**पृश्निः**) अन्तरिक्षम् (**ऊधः**) रात्रिरिव॥१०॥

**अन्वयः**-हे राजन्! हि यतो भवान् ऋतेन वृषभोऽक्तः पयसाऽग्निरिव पृष्ठ्येन पुमानस्पन्दमानो वयोधा वृषा सन्नचरत् पृश्निरूधरिव स चिच्छुक्रं स्म दुदुहे॥१०॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यथा पृथिव्या अर्द्धे भागे विद्युत् सूर्य्यरूपेण विराजतेऽपरे भागे रात्रावप्यन्तर्हिता चरति तथैव शयनजागरणे नियमेन विधाय पुरुषार्थे कृत्वा वीर्य्यं वर्धयित्वा शतायुषस्सन्तः सर्वानानन्दयत॥१०॥

**पदार्थः**-हे राजन्! (**हि**) जिससे कि आप (**ऋतेन**) सत्य व्यवहार से (**वृषभः**) बलिष्ठ (**अक्तः**) उत्तम गुणों से युक्त (**पयसा**) रात्रि के साथ (**अग्निः**) अग्नि के समान (**पृष्ठ्येन**) पृष्ठ भाग में होने वाले दिन में (**पुमान्**) पुरुषार्थी (**अस्पन्दमानः**) किञ्चित् चले हुए (**वयोधाः**) सुन्दर अवस्था जीवन और धनादिकों के धारण करने (**वृषा**) सुखों की वृष्टि करने वाले होते हुए (**अचरत्**) विचरते हैं (**पृश्निः**) अन्तरिक्ष (**ऊधः**) और रात्रि के सदृश (**चित्**) सो भी (**शुक्रम्**) वीर्य्य को (**स्म**) ही (**दुदुहे**) पूरा करते हैं॥१०॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जैसे पृथिवी के अर्द्धभाग में बिजुली सूर्य रूप से शोभित होती है और दूसरे भाग में रात्रि के समय छिपी हुई चलती है, वैसे ही शयन और जागरण नियम से कर और पुरुषार्थ करके वीर्य बढ़ाय के सौ वर्ष की अवस्थायुक्त हुए सब को आनन्द दीजिये॥१०॥

**अथ राजादिक्षत्रियेभ्य उपदेशमाह॥**

अब राजा आदि क्षत्रियों के लिये उपदेश अगले मन्त्र में करते हैं।

**ऋतेनाद्रिं व्यसन् भिदन्तःसमङ्गिरसो नवन्त गोभिः।**

**शुनं नरःपरि षदन्नुषासमाविः स्वरभवज्जाते अग्नौ॥११॥**

**ऋतेन। अद्रिम्। वि। असन्। भिदन्तः। सम्। अङ्गिरसः। नवन्त। गोभिः। शुनम्। नरः। परि। सदन्। उषसम्। आविः। स्वः। अभवत्। जाते। अग्नौ॥११॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**ऋतेन**) जलेन सह वर्त्तमानम् (**अद्रिम्**) मेघम् (**वि**) (**असन्**) प्रक्षिपन्ति (**भिदन्तः**) विदारयन्तः (**सम्**) (**अङ्गिरसः**) वायवः (**नवन्त**) प्रशंसत (**गोभिः**) किरणैरिव वाग्भिः (**शुनम्**) सुखम् (**नरः**) नेतारः सन्तः (**परि**) (**सदन्**) परिषीदन्ति (**उषसम्**) प्रभातम् (**आविः**) प्राकट्ये (**स्वः**) सूर्य्यः (**अभवत्**) भवति (**जाते**) उत्पन्ने (**अग्नौ**)॥११॥

**अन्वयः**-हे नरो विद्वांसो! यथा गोभिरङ्गिरस ऋतेन सहितमद्रिं सम्भिदन्तो व्यसन्नुषसं परिषदञ्जातेऽग्नौ स्वराविरभवत् तथा शुनं नवन्त॥११॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। ये राजादयो वीरा क्षत्रिया यथा वायुयुक्ता विद्युतो मेघं व्यस्तं कृत्वा विदीर्य्य भूमौ निपात्य सर्वान् सुखयन्ति विद्युतं विलोड्य सूर्य्यं जनयन्ति तथैव दुष्टान् विनाश्य न्यायं प्रकाश्य प्रज्ञां विलोड्य विद्याञ्जनयित्वा भानुरिव प्रकाशमानाः सन्तोऽतुलं सुखमाप्नुवन्तु॥११॥

**पदार्थः**-हे (**नरः**) नायक होते हुए विद्वान् लोगो! जैसे (**गोभिः**) किरणों के सदृश वाणियों से (**अङ्गिरसः**) पवन (**ऋतेन**) जल के सहित वर्त्तमान (**अद्रिम्**) मेघ के (**सम्, भिदन्तः**) अच्छे प्रकार टुकड़े करते हुए (**वि, असन्**) विविध प्रकार से फेंकते हैं। (**उषसम्**) और प्रातःकाल को (**परि, सदन्**) प्राप्त होते हैं वा (**जाते**) उत्पन्न हुए (**अग्नौ**) अग्नि में (**स्वः**) सूर्य्य (**आविः**) प्रकट (**अभवत्**) होता है, वैसे (**शुनम्**) सुख की (**नवन्त**) प्रशंसा करो॥११॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो राजा आदि वीर क्षत्रिय जैसे पवन से युक्त बिजुलियाँ मेघ को इधर-उधर चलाय और तोड़ पृथिवी पर गिरा के सब को सुख देती हैं और दूसरी बिजुली का विलोडन करके सूर्य्य को उत्पन्न करती हैं, वैसे ही दुष्ट पुरुषों का नाश और न्याय का प्रकाश, बुद्धि का विलोडन और विद्या को उत्पन्न करके सूर्य्य के सदृश प्रकाशमान हुए अतुल सुख को प्राप्त होओ॥११॥

**अथ सङ्गदोषादोषौ रक्षणविषयञ्चाह॥**

अब सङ्गदोष, अदोष और रक्षा विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**ऋतेन॑ दे॒वीर॒मृता॒ अमृ॑क्ता॒ अर्णो॑भि॒रापो॒ मधु॑मद्भिरग्ने।**

**वा॒जी न सर्गे॑षु प्रस्तु॒भा॒नः प्र सद॒मित्स्रवि॑तवे दधन्युः॥१२॥**

**ऋ॒तेन॑। दे॒वीः। अ॒मृता॑ः। अमृ॑क्ताः। अर्णः॑ऽभिः। आपः॑। मधु॑मत्ऽभिः। अ॒ग्ने॒। वा॒जी। न। सर्गे॑षु। प्र॒ऽस्तु॒भा॒नः। प्र। सद॑म्। इत्। स्रवि॑तवे। द॒ध॒न्यु॒ः॥१२॥**

**पदार्थः**-(**ऋतेन**) सत्येन (**देवीः**) दिव्याः (**अमृताः**) कारणरूपेण नाशरहिताः (**अमृक्ताः**) अशोधिताः (**अर्णोभिः**) जलैः (**आपः**) प्राणाः (**मधुमद्भिः**) बहुभिर्मधुरादिगुणयुक्तैः (**अग्ने**) विद्वन्



www.9009.co.in

(**वाजी**) बह्वन्नवान् (**न**) इव (**सर्गेषु**) सृष्टेषु कार्येषु (**प्रस्तुभानः**) प्रकर्षेण धरन् (**प्र**) (**सदम्**) प्राप्तं वस्तु (**इत्**) एव (**स्रवितवे**) स्रोतुं गन्तुम् (**दधन्युः**) धरन्त। अत्र **वाच्छन्दसी**ति नुडागमो यासुडभाव:॥१२॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! यथर्त्तेन मधुमद्भिरर्णोभिस्सहाऽमृक्ता देवीरमृता आपो स्रवितवे सदं प्रदधन्युस्तथेदेव सर्गेषु वाजी न प्रस्तुभानः सँस्त्वं भव॥१२॥

**भावार्थः**-अत्रोपमावाचकलुप्तोपमालङ्कारौ। हे मनुष्या! यथा शुद्धा आपः सुखकारिण्योऽशुद्धा दुःखप्रदा भवन्ति तथैव शुभगुणसङ्ग आनन्दप्रदो दोषसङ्गो दुःखप्रदश्च भवति। यथैश्वर्यवान् धार्मिको जनः कृपया बुभुक्षितादीन् पालयति तथैव सज्जनाः सर्वान् रक्षन्ति॥१२॥

**पदार्थः**-हे (**अग्ने**) विद्वान् पुरुष जैसे (**ऋतेन**) सत्य से (**मधुमद्भिः**) बहुत मधुर आदि गुणों से युक्त (**अर्णोभिः**) जलों के साथ (**अमृक्ताः**) नहीं शुद्ध किये गए (**देवीः**) उत्तम श्रेष्ठ (**अमृताः**) कारणरूप से नाशरहित (**आपः**) प्राणरूप पवन (**स्रवितवे**) जाने को (**सदम्**) प्राप्त वस्तु (**प्र, दधन्युः**) धारण करते हैं, वैसे (**इत्**) ही (**सर्गेषु**) किये हुए कार्य्यों में (**वाजी**) बहुत अन्न वाले के (**न**) सदृश (**प्रस्तुभानः**) अत्यन्त धारण करते हुए आप प्रकट हूजिये॥१२॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमा [और] वाचकलुप्तोपमालङ्कार हैं। हे मनुष्यो! जैसे शुद्ध जल सुखकारी और अशुद्ध दुःख देने वाले होते हैं, वैसे ही उत्तम गुणों का सङ्ग आनन्ददायक और दोषों का सङ्ग दुःख देने वाला होता है। और जैसे ऐश्वर्य्ययुक्त धार्मिकजन कृपा से बुभुक्षित आदि का पालन करता है, वैसे ही सज्जन लोग सब की रक्षा करते हैं॥१२॥

**बुद्धिमत्ताविषयमाह॥**

अब बुद्धिमानों के बुद्धिमत्ता विषय को कहते हैं॥

**मा कस्य॑ य॒क्षं सद॒मिद्धु॒रो गा॒ मा वे॒शस्य॑ प्रमिन॒तो मापेः।**

**मा भ्रातु॑रग्ने॒ अनृ॑जोर्ऋ॒णं वे॒र्मा सख्यु॒र्दक्षं॑ रि॒पोर्भु॑जेम॥१३॥**

**मा। कस्य॑। य॒क्षम्। सद॑म्। इत्। हु॒रः। गा॒ः। मा। वे॒शस्य॑। प्र॒ऽमि॒न॒तः। मा। आ॒पेः। मा। भ्रातु॑ः। अ॒ग्ने॒। अनृ॑जोः। ऋ॒णम्। वे॒ः। मा। सख्यु॑ः। दक्ष॑म्। रि॒पोः। भु॒जे॒म॒॥१३॥**

**पदार्थः**-(**मा**) (**कस्य**) (**यक्षम्**) सङ्गन्तव्यम् (**सदम्**) वस्तु (**इत्**) एव (**हुरः**) कुटिलस्य (**गाः**) प्राप्नुयाः (**मा**) (**वेशस्य**) प्रवेशस्य (**प्रमिनतः**) प्रकर्षेण हिंसतः (**मा**) (**आपेः**) प्राप्तस्य (**मा**) (**भ्रातुः**) बन्धोः (**अग्ने**) अग्निरिव प्रकाशमान (**अनृजोः**) कुटिलस्य (**ऋणम्**) (**वेः**) प्राप्नुयाः (**मा**) (**सख्युः**) मित्रस्य (**दक्षम्**) बलम् (**रिपोः**) शत्रोः (**भुजेम**) अभ्यवहरेम॥१३॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! त्वमनृजोः कस्यचित्प्रमिनतो वेशस्य हुरस्सदं मा गाः। अनृजोरापेर्यक्षं सदं मा गा अनृजोर्भ्रातुर्यक्षं सदं मा गाः। अनृजोः सख्युर्दक्षं मा वेरवृजो रिपोर्ऋणं मा वेः। येन वयं सुखमिद्भुजेम॥१३॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-त एव धीमन्तो विज्ञेया येऽन्यायेन कस्यचिद्वस्तु दुष्टवेशं हिंसकसङ्गं न्यायेन प्राप्तस्य धनस्याऽन्यथा व्ययं दुष्टबन्धोः सङ्गं शत्रुविश्वासमकृत्वाऽऽनन्दं भुञ्जीरन्॥१३॥

**पदार्थः**-हे **(अग्ने)** अग्नि के सदृश प्रकाशमान! आप **(अनृजोः)** कुटिल **(कस्य)** किसी **(प्रमिनतः)** अत्यन्त हिंसा करने वाले **(वेशस्य)** प्रवेश के **(हुरः)** कुटिल कार्यसम्बन्धी **(सदम्)** वस्तु को **(मा)** मत **(गाः)** प्राप्त होओ और कुटिल **(आपेः)** प्राप्त हुए के **(यक्षम्)** प्राप्त होने योग्य वस्तु को **(मा)** मत प्राप्त होओ, कुटिल **(भ्रातुः)** बन्धु के प्राप्त होने योग्य वस्तु को **(मा)** मत प्राप्त होओ, कुटिल **(सख्युः)** मित्र के **(दक्षम्)** बल को **(मा)** मत **(वेः)** प्राप्त होओ, कुटिल **(रिपोः)** शत्रु के **(ऋणम्)** ऋण को **(मा)** मत प्राप्त होओ, जिससे हम लोग सुख का **(इत्)** ही **(भुजेम)** व्यवहार करें॥१३॥

**भावार्थः**-उन्हीं लोगों को बुद्धिमान् समझना चाहिये कि जो अन्याय से किसी का वस्तु, दुष्टवेश, हिंसा करनेवाले का संग, न्याय से प्राप्त हुए धन का व्यर्थ खर्च, दुष्ट बन्धु का संग और शत्रु का विश्वास नहीं करके आनन्द का भोग करें॥१३॥

**अथ राज्यपालनविषयमाह॥**

अब राज्यपालन विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**रक्षा णो अग्ने तव रक्षणेभी रारक्षाणः सुमख प्रीणानः।**

**प्रति ष्फुर वि रुज वीड्वंहो जहि रक्षो महि चिद्वावृधानम्॥१४॥**

**रक्ष। नः। अग्ने। तव। रक्षणेभिः। ररक्षाणः। सुऽमख। प्रीणानः। प्रति। स्फुर। वि रुज। वीळु। अंहः। जहि। रक्षः। महि। चित्। ववृधानम्॥१४॥**

**पदार्थः**-**(रक्ष)** पालय। अत्र **द्व्यचोऽतस्तिङ** इति दीर्घः। **(नः)** अस्मान् **(अग्ने)** राजन् **(तव)** **(रक्षणेभिः)** अनेकविधैरुपायैः **(रारक्षाणः)** भृशं रक्षन्त्सन् **(सुमख)** सुष्ठुन्यायव्यवहारपालकः **(प्रीणानः)** प्रसन्नः प्रसादयन् **(प्रति)** **(स्फुर)** पुरुषार्थय **(वि)** **(रुज)** प्रभग्नं कुरु **(वीळु)** दृढम् **(अंहः)** पापम् **(जहि)** **(रक्षः)** दुष्टं शत्रुम् **(महि)** महान्तम् **(चित्)** अपि **(वावृधानम्)** भृशं वर्धमानम्॥१४॥

**अन्वयः**-हे सुमखाऽग्ने! त्वं नो रक्ष महि वावृधानं रारक्षाणः प्रीणानः सन् प्रति स्फुर। शत्रुं वीळु विरुज अंहो जहि रक्षो विरुज यतस्तव चिद्रक्षणेभिर्वयं सुखिनः स्याम॥१४॥

**भावार्थः**-त एव राजानः कीर्त्तिभाजो ये दुष्टानां दुष्टतां निवार्य्य श्रेष्ठानां श्रेष्ठतां वर्धयित्वा राज्यं सततं पितृवत्पालयेयुः॥१४॥

**पदार्थः**-हे **(सुमख)** उत्तम न्याय व्यवहार के पालन करने वाले **(अग्ने)** राजन्! आप **(नः)** हम लोगों की **(रक्ष)** रक्षा करो और **(महि)** बड़े **(वावृधानम्)** अत्यन्त वृद्धि को प्राप्त हुए की **(रारक्षाणः)** रक्षा करते **(प्रीणानः)** प्रसन्न होते वा प्रसन्न करते हुए, **(प्रति, स्फुर)** पुरुषार्थ करो और शत्रु को **(वीळु)** दृढ़ **(वि, रुज)** विशेषता से अच्छे प्रकार भग्न करो और **(अंहः)** पाप का **(जहि)** नाश करो **(रक्षः)** दुष्ट



www.9009.co.in

शत्रु का भंग करो और जिससे **(तव)** आपके **(चित्)** भी **(रक्षणेभिः)** अनेक प्रकार के उपायों से हम लोग सुखी होवें॥१४॥

**भावार्थः**-वे ही राजा लोग यश के भागी हैं कि जो दुष्ट पुरुषों की दुष्टता को दूर कर और श्रेष्ठ पुरुषों की श्रेष्ठता बढ़ा के राज्य का निरन्तर पिता के समान अर्थात् पिता अपने पुत्र की पालना करता, वैसे पालन करें॥१४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**एभिर्भव सुमना अग्ने अर्कैरिमान्त्स्पृश मन्मभिः शूर वाजान्।**

**उत ब्रह्माण्यङ्गिरो जुषस्व सं ते शस्तिर्देववाता जरेत॥१५॥**

**एभिः। भव। सुऽमनाः। अग्ने। अर्कैः। इमान्। स्पृश। मन्मऽभिः। शूरः। वाजान्। उत। ब्रह्माणि। अङ्गिरः। जुषस्व। सम्। ते। शस्तिः। देवऽवाता। जरेत॥१५॥**

**पदार्थः**-**(एभिः)** धार्मिकै रक्षकैर्विद्वद्भिः सह **(भव)** **(सुमनाः)** शोभनं मनो यस्य सः **(अग्ने)** विद्वन् **(अर्कैः)** सत्कर्त्तव्यैः **(इमान्)** **(स्पृश)** गृहाण **(मन्मभिः)** विद्वद्भिः **(शूरः)** **(वाजान्)** प्राप्तव्याञ्छुभगुणकर्मस्वभावान् **(उत)** **(ब्रह्माणि)** महान्ति धनानि **(अङ्गिरः)** प्राण इव वर्त्तमान **(जुषस्व)** सेवस्व **(सम्)** **(ते)** तव **(शस्तिः)** प्रशंसा **(देववाता)** देवैर्विद्वद्भिः कृता **(जरेत)** प्रशंसिता भवेत्॥१५॥

**अन्वयः**-हे अङ्गिरः शूराग्ने राजंस्त्वमेभिरर्कैर्मन्मभिस्सह सुमना भवेमान् वाजान् स्पृश उत ब्रह्माणि सञ्जुषस्व यतस्ते देववाता शस्तिर्जरेत॥१५॥

**भावार्थः**-हे राजन्! भवानाप्तानां विदुषां सङ्गं सततं कुरु तदुपदेशेन न्यायेन राज्यं पालयित्वा प्रशंसितो भवतु॥१५॥

**पदार्थः**-हे **(अङ्गिरः)** प्राण के सदृश वर्त्तमान **(शूर)** वीर **(अग्ने)** विद्वन् राजन्! आप **(एभिः)** इन धार्मिक रक्षक और विद्यावान् **(अर्कैः)** सत्कार करने योग्य **(मन्मभिः)** विद्वानों के साथ **(सुमनाः)** उत्तम मन युक्त **(भव)** हूजिये और **(इमान्)** इन **(वाजान्)** प्राप्त होने योग्य उत्तम गुण, कर्म और स्वभाव वालों को **(स्पृश)** ग्रहण करिये **(उत)** और **(ब्रह्माणि)** बड़े-बड़े धनों का **(सम् जुषस्व)** अच्छे प्रकार सेवन करिये जिससे कि **(ते)** आपकी **(देववाता)** विद्वानों से की गई **(शस्तिः)** प्रशंसा **(जरेत)** प्रशंसित हो अर्थात् अधिक विख्यात हो॥१५॥

**भावार्थः**-हे राजन्! आप यथार्थवक्ता विद्वानों का संग निरन्तर करिये और उनके उपदेश से न्यायपूर्वक राज्य का पालन करके प्रशंसित हूजिये॥१५॥

**अथ प्रजाविषयमाह॥**

अब प्रजा विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥



www.9009.co.in

**ए॒ता विश्वा॑ वि॒दुषे॒ तुभ्यं॑ वेधो नी॒थान्य॑ग्ने नि॒ण्या वचां॑सि।**

**नि॒वच॑ना क॒वये॒ काव्या॒न्यशं॑सिषं म॒तिभि॒र्विप्र॑ उ॒क्थैः॥ १६॥ २२॥**

**ए॒ता। विश्वा॑। वि॒दुषे॑। तुभ्य॑म्। वे॒धः॒। नी॒थानि॑। अ॒ग्ने॒। नि॒ण्या। वचां॑सि। नि॒ऽवच॑ना। क॒वये॑। काव्या॑नि। अशं॑सिषम्। म॒तिऽभिः॑। विप्रः॑। उ॒क्थैः॥ १६॥**

**पदार्थः**-(**एता**) एतानि (**विश्वा**) सर्वाणि (**विदुषे**) (**तुभ्यम्**) (**वेधः**) मेधाविन् (**नीथानि**) प्रापितानि (**अग्ने**) राजन् (**निण्या**) निर्णीतानि (**वचांसि**) वचनानि (**निवचना**) नितरामुच्यन्तेऽर्था यैस्तानि (**कवये**) विक्रान्तप्रज्ञाय (**काव्यानि**) कविभिर्निर्मितानि (**अशंसिषम्**) प्रशंसेयम् (**मतिभिः**) विद्वद्भिस्सह (**विप्रः**) मेधावी (**उक्थैः**) प्रशंसितुमर्हैः॥ १६॥

**अन्वयः**-हे वेधोऽग्ने! विप्रोऽहमुक्थैर्मतिभिः सह यानि काव्यान्यशंसिषं तानि विश्वैता निण्या निवचना वचांसि विदुषे कवये तुभ्यं नीथानि प्रशंसेयम्॥ १६॥

**भावार्थः**-सैव निश्चिता प्रशंसा वेदितव्या या धार्मिकैर्विद्वद्भिः क्रियेत, अध्यापकोपदेशकैरध्येतार उपदेश्याश्च सदैव सत्यवादिनो विद्वांसो विधातव्या इति॥ १६॥

अत्राग्निराजप्रजादिकृत्यगुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति तृतीयं सूक्तं द्वाविंशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे (**वेधः**) बुद्धिमान् (**अग्ने**) राजन्! (**विप्रः**) मेधावी जन मैं (**उक्थैः**) प्रशंसा करने योग्य (**मतिभिः**) विद्वानों के साथ जो (**काव्यानि**) कवियों ने रचे शास्त्र उनकी (**अशंसिषम्**) प्रशंसा करता हूँ और उन (**विश्वा**) सम्पूर्ण (**एता**) इन (**निण्या**) निर्णय किये गये (**निवचना**) अत्यन्त अर्थों को कहने वाले (**वचांसि**) वचनों को (**विदुषे**) विद्वान् (**कवये**) उत्तम बुद्धि वाले (**तुभ्यम्**) आपके लिये (**नीथानि**) प्राप्त किये गये प्रशंसूं अर्थात् वह आपको प्राप्त हुए ऐसी प्रशंसा करूं॥ १६॥

**भावार्थः**-वही निश्चित प्रशंसा जानने योग्य है कि जो धार्मिक विद्वानों से की जाय। अध्यापक और उपदेशक जनों को चाहिये कि पढ़ने और उपदेश देनेवालों को सदा ही सत्यवादी और विद्वान् करें॥ १६॥

इस सूक्त में अग्नि, राजा और प्रजादिकों के कृत्य और गुणों का वर्णन होने से इस सूक्त के अर्थ की पूर्व सूक्तार्थ के साथ संगति जाननी चाहिये॥

**॥यह तीसरा सूक्त और बाईसवां वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

**अथ पञ्चदशर्चस्य चतुर्थस्य सूक्तस्य वामदेव ऋषिः। अग्नीरक्षोहा देवता। १,२,४,५,८ भुरिक् पङ्क्तिः। ९ स्वराट् पङ्क्तिः। १२ निचृत्पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः। ३, १०, ११, १५ निचृत्त्रिष्टुप्। ६ विराट् त्रिष्टुप्। ७, १३ त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः। १४ स्वराड्बृहती छन्दः। मध्यमः स्वरः॥**

***अथ राजविषये सेनापतिकृत्यमाह॥***

अब पन्द्रह ऋचा वाले चौथे सूक्त का आरम्भ है। उसके प्रथम मन्त्र में राजविषय में सेनापति के काम को कहते हैं॥

**कृणुष्व पाजः प्रसितिं न पृथ्वीं याहि राजेवामवाँ इभेन।**

**तृष्वीमनु प्रसितिं द्रूणानोऽस्तासि विध्य रक्षसस्तपिष्ठैः॥ १॥**

**कृणुष्व। पाजः। प्रऽसितिम्। न। पृथ्वीम्। याहि। राजाऽइव। अमऽवान्। इभेन। तृष्वीम्। अनु। प्रऽसितिम्। द्रूणानः। अस्ता। असि। विध्य। रक्षसः। तपिष्ठैः॥ १॥**

**पदार्थः**-(**कृणुष्व**) (**पाजः**) बलम् (**प्रसितिम्**) प्रबद्धाम् (**न**) इव (**पृथ्वीम्**) भूमिम् (**याहि**) (**राजेव**) (**अमवान्**) बलवान् (**इभेन**) हस्तिना (**तृष्वीम्**) पिपासिताम् (**अनु**) (**प्रसितिम्**) बन्धनम् (**द्रूणानः**) शीघ्रकारी (**अस्ता**) प्रक्षेप्ता (**असि**) (**विध्य**) (**रक्षसः**) दुष्टान् (**तपिष्ठैः**) अतिशयेन सन्तापकैः शस्त्रादिभिः॥ १॥

**अन्वयः**-हे सेनेश! त्वं राजेवाऽमवानिभेन याहि प्रसितिं पृथ्वीं न पाजः कुणुष्व यतः प्रसितिं तृष्वीमनु द्रूणानोऽस्तासि तस्मात्तपिष्ठै रक्षसो विध्य॥ १॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। हे राजजना! यूयं पृथ्वीव दृढं बलं कृत्वा राजवन्न्यायाधीशा भूत्वा तृषिताम्मृगीमनुधावन् वृक इव दुष्टान् दस्यूननुधावन्तस्तान् घ्नत॥ १॥

**पदार्थः**-हे सेना के ईश! [आप] (**राजेव**) राजा के सदृश (**अमवान्**) बलवान् (**इभेन**) हाथी से (**याहि**) जाइये प्राप्त हूजिये (**प्रसितिम्**) दृढ़ बंधी हुई (**पृथ्वीम्**) भूमि के (**न**) सदृश (**पाजः**) बल (**कृणुष्व**) करिये जिससे (**प्रसितिम्**) बन्धन और (**तृष्वीम्**) पियासी के प्रति (**अनु, द्रूणानः**) अनुकूल शीघ्रता करने वाले और (**अस्ता**) फेंकने वाला (**असि**) हो इससे (**तपिष्ठैः**) अतिशय सन्ताप देने वाले शस्त्र आदिकों से (**रक्षसः**) दुष्टों को (**विध्य**) पीड़ा देओ॥ १॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे राजसम्बन्धी जनो! आप लोग पृथिवी के सदृश दृढ़ बल करके, राजा के सदृश न्यायाधीश होकर, पिपासित मृगी के पीछे दौड़ते हुए भेड़िये के सदृश दुष्ट डाकू जो कि अनुधावन करते अर्थात् जो कि पथिकादिकों के पीछे दौड़ते हुए, उनका नाश करो॥ १॥

**अथ राजविषये सामान्यतो राजजनविषयमाह॥**

अब राज विषय में सामान्य से राजजनों के विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥



www.9009.co.in

**तव॑ भ्र॒मास॑ आशु॒या प॑त॒न्त्यनु॑ स्पृश॒ धृष॒ता शोशु॑चानः।**

**तपू॑ष्यग्ने जु॒ह्वा॑ पत॒ङ्गानस॑न्दितो॒ वि सृ॑ज॒ विष्व॑गुल्काः॥ २॥**

**तव॑। भ्र॒मास॑ः। आ॒शु॒ऽया। प॒त॒न्ति॒। अनु॑। स्पृ॒श॒। धृ॒ष॒ता। शोशु॑चानः। तपूं॑षि। अ॒ग्ने॒। जु॒ह्वा॑। प॒त॒ङ्गान्। अस॑म्ऽदितः। वि। सृ॒ज॒। विष्व॑क्। उ॒ल्काः॥ २॥**

**पदार्थः**-(**तव**) (**भ्रमासः**) भ्रमणानि (**आशुया**) क्षिप्राणि (**पतन्ति**) (**अनु**) (**स्पृश**) (**धृषता**) प्रगल्भेन सैन्येन (**शोशुचानः**) भृशं पवित्रः सन् (**तपूंषि**) प्रतप्तानि (**अग्ने**) पावकवद्वर्त्तमान (**जुह्वा**) होमसाधनेन (**पतङ्गान्**) अग्निकणा इव वर्त्तमानानश्वान् (**असन्दितः**) अखण्डितः (**वि**) (**सृज**) (**विष्वक्**) सर्वशः (**उल्काः**) विद्युतः॥ २॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! ये तवाऽऽशुया भ्रमासः पतन्ति तान् धृषता शोशुचानोऽनुस्पृश जुह्वाग्निस्तपूंषीव पतङ्गाननु स्पृश। असन्दितः सन्नुल्का विष्वग्विसृज॥ २॥

**भावार्थः**-ये राजजना स्फूर्त्तिमन्तः सन्त आशुकारिणः स्युस्तेऽखण्डितवीर्यो भूत्वा विद्युत्प्रयोगान् ब्रह्मास्त्राद्याञ्छत्रूणामुपरि कृत्वा विजयं प्राप्नुवन्तु॥ २॥

**पदार्थः**-हे (**अग्ने**) अग्नि के सदृश वर्त्तमान! जो (**तव**) आपके (**आशुया**) शीघ्र (**भ्रमासः**) भ्रमण (**पतन्ति**) गिरते हैं, उनको (**धृषता**) प्रगल्भ सेना के साथ (**शोशुचानः**) अत्यन्त पवित्र हुए (**अनु, स्पृश**) स्पर्श करो और (**जुह्वा**) होम के साधन से अग्नि (**तपूंषि**) तपाये गये पदार्थों को जैसे वैसे (**पतङ्गान्**) अग्निकणों के सदृश वर्त्तमान घोड़ों को अनुकूलता से स्पर्श करो (**असन्दितः**) खण्डरहित हुए (**उल्काः**) बिजुलियों को (**विष्वक्**) सर्व प्रकार (**वि, सृज**) छोड़िये॥ २॥

**भावार्थः**-जो राजजन फुरती वाले होते हुए शीघ्र कार्य्यकारी हों, वे अखण्डितवीर्य्य अर्थात् पूर्णबल वाले होकर बिजुली के प्रयोगों और ब्रह्मास्त्र आदि अस्त्रों को शत्रुओं के ऊपर कर विजय को प्राप्त हों॥ २॥

**पुना राजविषयमाह॥**

फिर राज विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**प्रति॒ स्पशो॒ वि सृ॑ज॒ तूर्णि॑तमो॒ भवा॑ पा॒युर्वि॒शो अ॒स्या अद॑ब्धः।**

**यो नो॑ दू॒रे अ॒घशं॑सो॒ यो अन्त्यग्ने॒ माकि॑ष्टे॒ व्यथि॒रा द॑धर्षीत्॥ ३॥**

**प्रति॑। स्पश॑ः। वि। सृ॒ज॒। तूर्णि॑ऽतमः। भव॑। पा॒युः। वि॒शः। अ॒स्याः। अद॑ब्धः। यः। न॒ः। दू॒रे। अ॒घऽशं॑सः। यः। अन्ति॑। अग्ने॑। माकि॑ः। ते॒। व्यथि॑ः। आ। द॒धर्षी॒त्॥ ३॥**

**पदार्थः**-(**प्रति**) (**स्पशः**) स्पर्शकान् (**वि**) (**सृज**) (**तूर्णितमः**) अतिशीघ्रकारी (**भव**) अत्र **द्व्यचोऽतस्तिङ** इति दीर्घः। (**पायुः**) पालकः (**विशः**) प्रजायाः (**अस्याः**) (**अदब्धः**) अहिंसकः (**यः**)



www.9009.co.in

**(नः)** अस्माकम् **(दूरे)** **(अघशंसः)** पापप्रशंसकस्तेनः **(यः)** **(अन्ति)** समीपे **(अग्ने)** विद्वन् राजन् **(माकिः)** **(ते)** तव **(व्यथिः)** पीडा **(आ)** **(दधर्षीत्)** धृष्णुयात्॥३॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! त्वं तूर्णितमस्सन् स्पशो विसृज। अस्या विशोऽदब्धः पायुः प्रति भव योऽघशंसो नो दूरे योऽन्ति वर्त्तेत स ते व्यथिर्माकिरादधर्षीत्॥३॥

**भावार्थः**-हे राजंस्त्वं शुभान् गुणान् गृहीत्वा प्रजाः सम्पाल्य ये दूरसमीपस्था दस्यवस्तान् हिन्धि यतस्सर्वेषां सुखं स्यात्॥३॥

**पदार्थः**-हे **(अग्ने)** विद्वन् राजन्! आप **(तूर्णितमः)** अत्यन्त शीघ्रकारी होते हुए **(स्पशः)** अत्यन्त स्पर्श करने अर्थात् मुंह लगने वालों का **(वि, सृज)** त्याग करो, और **(अस्याः)** इस **(विशः)** प्रजा के **(अदब्धः)** नहीं मारने और **(पायुः)** पालन करने वाले **(प्रति, भव)** होओ **(यः)** जो **(अघशंसः)** पाप की प्रशंसा करनेवाला चोर **(नः)** हम लोगों के **(दूरे)** दूर देश में वा **(यः)** जो **(अन्ति)** समीप में वर्त्तमान हो वह **(ते)** आपको **(व्यथिः)** पीड़ारूप **(माकिः)** मत **(आ, दधर्षीत्)** ढीठ हो॥३॥

**भावार्थः**-हे राजन्! आप उत्तम गुणों को ग्रहण करके और प्रजा का पालन करके जो दूर और समीप में वर्त्तमान डाकू आदि दुष्ट पुरुष उनका नाश करो, जिससे सब को सुख हो॥३॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**उद॑ग्ने तिष्ठ॒ प्रत्या त॑नुष्व॒ न्य१॒॑मित्राँ॑ ओषतात् तिग्महेते।**

**यो नो॒ अरा॑तिं समिधान च॒क्रे नी॒चा तं ध॑क्ष्यत॒सं न शुष्क॑म्॥४॥**

**उत्। अ॒ग्ने॒। ति॒ष्ठ॒। प्रति॑। आ। त॒नु॒ष्व॒। नि। अ॒मित्रा॑न्। ओ॒ष॒ता॒त्। ति॒ग्म॒ऽहे॒ते॒। यः। न॒ः। अरा॑तिम्। स॒म्ऽइ॒धा॒न॒। च॒क्रे। नी॒चा। तम्। ध॒क्षि॒। अ॒त॒सम्। न। शुष्क॑म्॥४॥**

**पदार्थः**-**(उत्)** **(अग्ने)** अग्निरिव वर्त्तमान **(तिष्ठ)** उद्युक्तो भव **(प्रति)** **(आ)** **(तनुष्व)** विस्तृणीहि **(नि)** **(अमित्रान्)** शत्रून् **(ओषतात्)** दह **(तिग्महेते)** तिग्मा तीव्रा हेतिर्वृद्धिर्यस्य तत्सम्बुद्धौ **(यः)** **(नः)** **(अरातिम्)** शत्रुम् **(समिधान)** सम्यक् प्रकाशमान **(चक्रे)** **(नीचा)** नीचान् **(तम्)** **(धक्षि)** दहसि **(अतसम्)** कूपम् **(न)** इव **(शुष्कम्)** जलार्द्रभावरहितम्॥४॥

**अन्वयः**-हे समिधानाऽग्ने! त्वमुत्तिष्ठाऽऽतनुष्वाऽमित्रान् प्रति न्योषतात्। हे तिग्महेते! यो नोऽरातिममित्रान्नीचा चक्रे तं शुष्कमतसं न यतस्त्वं धक्षि तस्माद्राज्यमर्हसि॥४॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। मनुष्यैरालस्यं विहाय पुरुषार्थं विसृत्य शत्रवो दग्धव्या अन्धकूप इव कारागृहे बन्धनीयाः। नीचतां प्रापणीयाः। य एवं विदधति तान् राजा गुरुवत्सेवेत॥४॥

**पदार्थः**-हे **(समिधान)** उत्तम प्रकार प्रकाशमान और **(अग्ने)** अग्नि के सदृश वर्त्तमान आप **(उत्, तिष्ठ)** उद्युक्त हूजिये **(आ, तनुष्व)** अच्छे प्रकार विस्तृत हूजिये **(अमित्रान्)** शत्रुओं के **(प्रति)** प्रति



www.9009.co.in

**(नि, ओषतात्)** निरन्तर दाह देओ **(तिग्महेते)** हे अत्यन्त तीव्र वृद्धि वाले! **(यः)** जो **(नः)** हम लोगों के **(अरातिम्)** एक शत्रु और अनेक शत्रुओं को **(नीचा)** नीच **(चक्रे)** कर चुका अर्थात् सब से बढ़ गया **(तम्)** उसको **(शुष्कम्)** गीलेपन से रहित **(अतसम्)** कूप के **(न)** सदृश जिससे आप **(धक्षि)** जलाते हो, इससे वह आप राज्य के योग्य हो॥४॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। मनुष्यों को चाहिये कि आलस्य त्याग के पुरुषार्थ का विस्तार करके शत्रुओं को जलावें और अन्धकूप के सदृश कारागृह में उनका बन्धन करें और नीचता को प्राप्त करे [=करायें]। जो लोग ऐसा करते हैं, उनकी राजा गुरु के सदृश सेवा करे॥४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**ऊ॒र्ध्वो भ॑व॒ प्रति॑ वि॒ध्याध्य॒स्मदा॒विष्कृ॑णुष्व॒ दैव्या॒न्यग्ने।**

**अव॑ स्थि॒रा त॑नुहि यातु॒जूनां॑ जा॒मिमजा॑मिं॒ प्र मृ॑णीहि॒ शत्रू॑न्॥५॥२३॥**

**ऊ॒र्ध्वः। भ॒व॒। प्रति॑। वि॒ध्य॒। अधि॑। अ॒स्मत्। आ॒विः। कृ॒णु॒ष्व॒। दैव्या॑नि। अ॒ग्ने॒। अव॑। स्थि॒रा। त॒नु॒हि॒। या॒तु॒ऽजूना॑म्। जा॒मिम्। अजा॑मिम्। प्र। मृ॒णी॒हि॒। शत्रू॑न्॥५॥**

**पदार्थः**-**(ऊर्ध्वः)** उन्नतः **(भव)** **(प्रति)** **(विध्य)** **(अधि)** उपरिभावे **(अस्मत्)** **(आविः)** प्राकट्ये **(कृणुष्व)** **(दैव्यानि)** देवैर्विद्वद्भिः कृतानि कर्माणि **(अग्ने)** पावक इव तेजस्विन् **(अव)** **(स्थिरा)** स्थिराणि सैन्यानि **(तनुहि)** विस्तृणीहि **(यातुजूनाम्)** प्राप्तवेगानाम् **(जामिम्)** भोगम् **(अजामिम्)** अभोगम् **(प्र)** **(मृणीहि)** हिन्धि **(शत्रून्)** अरीन्॥५॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! त्वमस्मदूर्ध्वोऽधि भव स्थिरा दैव्यानि तनुहि यातुजूनां जामिमजामि- माविष्कृणुष्व शत्रून् प्राऽव मृणीहि प्रति विध्य॥५॥

**भावार्थः**-ये मनुष्याः स्वस्मादुत्कृष्टान् दृष्ट्वा हर्षन्ति, अनुत्कृष्टान् दृष्ट्वा शोचन्ति भोगयुक्तान् दृष्ट्वा प्रमोदन्तेऽभोगान् दृष्ट्वाऽप्रसन्नयन्ति त एव राजकर्म्मसु स्थिरा भवन्तु॥५॥

**पदार्थः**-हे **(अग्ने)** अग्नि के सदृश तेजस्विन्! आप **(अस्मत्)** हम लोगों से **(ऊर्ध्वः)** उन्नत **(अधि)** उपरिभाव में अर्थात् ऊपर में रहने वाले **(भव)** हूजिये **(स्थिरा)** स्थिर सेना और **(दैव्यानि)** विद्वानों के किये कर्म्मों का **(तनुहि)** विस्तार करिये **(यातुजूनाम्)** वेग को प्राप्त हुए प्राणियों के **(जामिम्)** भोग और **(अजामिम्)** अभोग को **(आविः)** प्रकट **(कृणुष्व)** करिये **(शत्रून्)** शत्रुओं का **(प्र, अव, मृणीहि)** अच्छे प्रकार नाश करिये और **(प्रति, विध्य)** वार-वार पीड़ा दीजिये॥५॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य अपने से उत्कृष्ट अर्थात् श्रेष्ठों को देख के प्रसन्न होते, अनुत्कृष्ट अर्थात् दुःखियों को देख के शोक करते, भोगयुक्तों को देख के आनन्दित होते और भोगरहितों को देख के अप्रसन्न होते, वे ही राजकर्मों में स्थिर होते हैं॥५॥



www.9009.co.in

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**स ते जानाति सुमतिं यविष्ठ य ईवते ब्रह्मणे गातुमैरत्।**

**विश्वान्यस्मै सुदिनानि रायो द्युम्नान्यर्यो वि दुरो अभि द्यौत्॥६॥**

**सः। ते। जानाति। सुऽमतिम्। यविष्ठ। यः। ईवते। ब्रह्मणे। गातुम्। ऐरत्। विश्वानि। अस्मै। सुऽदिनानि। रायः। द्युम्नानि। अर्यः। वि। दुरः। अभि। द्यौत्॥६॥**

**पदार्थः**-(**सः**) विद्वान् (**ते**) तव (**जानाति**) (**सुमतिम्**) श्रेष्ठां प्रज्ञाम् (**यविष्ठ**) (**यः**) (**ईवते**) विद्याव्याप्ताय (**ब्रह्मणे**) वेदविदे (**गातुम्**) प्रशंसितां वाणीम् (**ऐरत्**) प्रापयेत् (**विश्वानि**) सर्वाणि (**अस्मै**) (**सुदिनानि**) सुखकराणि (**रायः**) धनानि (**द्युम्नानि**) यशांसि (**अर्यः**) स्वामी (**वि**) (**दुरः**) द्वाराणि (**अभि**) (**द्यौत्**) द्योतयेत्॥६॥

**अन्वयः**-हे यविष्ठ! योऽर्य ईवते ब्रह्मणे गातुमरैदस्मै विश्वानि सुदिनानि रायो द्युम्नानि दुरोऽभि वि द्यौत् स ते सुमतिं जानाति॥६॥

**भावार्थः**-हे राजन्! ये नित्यमङ्गलाचारिणो यशस्विनोऽनुरक्ताश्शूरा राजव्यवहारविदस्त्वां बोधयेयुस्ताँस्त्वं सुहृदो जानीहि॥६॥

**पदार्थः**-हे (**यविष्ठ**) अत्यन्त युवावस्थायुक्त! (**यः**) जो (**अर्यः**) स्वामी (**ईवते**) विद्या से व्याप्त (**ब्रह्मणे**) वेद जानने वाले के लिये (**गातुम्**) प्रशंसित वाणी को (**ऐरत्**) प्राप्त कराये (**अस्मै**) इसके लिये (**विश्वानि**) सम्पूर्ण (**सुदिनानि**) सुख करने वाले दिनों (**रायः**) धनों (**द्युम्नानि**) प्रकाशित यशों (**दुरः**) और यश के द्वारों को (**अभि, वि, द्यौत्**) प्रकाशित करे (**सः**) वह विद्वान् (**ते**) आपकी (**सुमतिम्**) श्रेष्ठ बुद्धि को (**जानाति**) जानता है॥६॥

**भावार्थः**-हे राजन्! जो लोग नित्य मङ्गल आचरण करने वाले यशयुक्त अनुरक्त अर्थात् स्नेही शूरवीर और राज्यव्यवहार के जानने वाले आपको चितावें, उनको आप मित्र जानिये॥६॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**सेदग्ने अस्तु सुभगः सुदानुर्यस्त्वा नित्येन हविषा य उक्थैः।**

**पिप्रीषति स्व आयुषि दुरोणे विश्वेदस्मै सुदिना सासदिष्टिः॥७॥**

**सः। इत्। अग्ने। अस्तु। सुऽभगः। सुऽदानुः। यः। त्वा। नित्येन। हविषा। यः। उक्थैः। पिप्रीषति। स्वे। आयुषि। दुरोणे। विश्वा। इत्। अस्मै। सुऽदिना। सा। असत्। इष्टिः॥७॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**सः**) राजा (**इत्**) एव (**अग्ने**) विद्याप्रकाशितसभ्यजन (**अस्तु**) (**सुभगः**) प्रशस्तैश्वर्य्यः (**सुदानुः**) उत्तमदानः (**यः**) (**त्वा**) त्वाम् (**नित्येन**) अविनाशिना (**हविषा**) होतव्येन (**यः**) (**उक्थैः**) प्रशंसनैः (**पिप्रीषति**) कमितुमिच्छति (**स्वे**) स्वकीये (**आयुषि**) जीवने (**दुरोणे**) (**विश्वा**) अखिलानि (**इत्**) एव (**अस्मै**) (**सुदिना**) शोभनानि दिनानि (**सा**) (**असत्**) भवेत् (**इष्टिः**) यजनक्रिया॥७॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! यस्सुभगः सुदानुर्भवेत् स इदेव तव सभ्योऽस्तु य उक्थैर्नित्येन हविषा त्वा पिप्रीषति। अस्मै स्व आयुषि दुरोणे विश्वा सुदिना सन्तु सेष्टिरुभयत्र कल्याणकारिणीदसत्॥७॥

**भावार्थः**-हे राजन्! येऽविनाशिना प्रेम्णा न्यायविनयाभ्यां राज्योन्नतिं विदधति राजप्रजयोर्निरुपद्रवेण मङ्गलसमयं सदैव प्रापयन्ति ते राजगृहेऽध्यक्षाः स्युः॥७॥

**पदार्थः**-हे (**अग्ने**) विद्या से प्रकाशित सभ्यजन! (**यः**) जो (**सुभगः**) प्रशंसनीय ऐश्वर्य्ययुक्त (**सुदानुः**) उत्तम दान देने वाला हो (**सः, इत्**) वही आपका सभासद् (**अस्तु**) हो (**यः**) जो (**उक्थैः**) प्रशंसाओं और (**नित्येन**) नहीं नाश होने वाले (**हविषा**) हवन करने योग्य पदार्थ से (**त्वा**) आपको (**पिप्रीषति**) सुशोभित करने की इच्छा करता है (**अस्मै**) इसके लिये (**स्वे**) अपने (**आयुषि**) जीवन और (**दुरोणे**) गृह में (**विश्वा**) सम्पूर्ण (**सुदिना**) सुन्दर दिन हों (**सा**) वह (**इष्टिः**) यज्ञ करने की क्रिया दोनों लोकों में सुख देने वाली (**इत्**) ही (**असत्**) होवे॥७॥

**भावार्थः**-हे राजन्! जो लोग नित्य प्रेम से न्याय और विनय के द्वारा राज्य की उन्नति करते और राजा और प्रजा के उपद्रव के विना मङ्गल समय सदा ही प्राप्त कराते हैं, वे राजगृह में अध्यक्ष हों॥७॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अर्चामि ते सुमतिं घोष्यर्वाक् सं ते वावाता जरतामियं गीः।**
**स्वश्वास्त्वा सुरथा मर्जयेमास्मे क्षत्राणि धारयेरनु द्यून्॥८॥**

**अर्चामि। ते। सुऽमतिम्। घोषि। अर्वाक्। सम्। ते। ववाता। जरताम्। इयम्। गीः। सुऽअश्वाः। त्वा। सुऽरथाः। मर्जयेम। अस्मे इति। क्षत्राणि। धारयेः। अनु। द्यून्॥८॥**

**पदार्थः**-(**अर्चामि**) सत्करोमि (**ते**) तव (**सुमतिम्**) शोभना मतिर्यस्य सभ्यस्य तम् (**घोषि**) शब्दयुक्तं वचः (**अर्वाक्**) पश्चात् (**सम्**) (**ते**) तव (**वावाता**) दोषहन्त्री विद्याजनयित्री (**जरताम्**) स्तुयात् (**इयम्**) (**गीः**) सुशिक्षिता वाणी (**स्वश्वाः**) शोभना अश्वाः (**त्वा**) त्वाम् (**सुरथाः**) श्रेष्ठरथाः (**मर्जयेम**) शोधयेम (**अस्मे**) अस्माकम् (**क्षत्राणि**) राज्योद्भवानि धनानि। **क्षत्रमिति धननामसु पठितम्।** (निघं०२.१०) (**धारयेः**) (**अनु**) (**द्यून्**) दिवसान्॥८॥

**अन्वयः**-हे राजन्नहं ते सुमतिमर्चामि यं त्वा वावातेयं गीर्घोषि सञ्जरतां तं त्वां स्वश्वाः सुरथा वयम्मर्जयेम। यथा ते धनान्यनुद्यून् वयं धारयेम तथार्वाक् त्वमस्मे क्षत्राण्यनुद्यन् धारयेः॥८॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-यदा राजा सभ्यान् पृच्छेदस्मिन्नधिकारे कः पुरुषो रक्षणीय इति तदा सर्वे धार्मिकस्य योग्यस्य रक्षणे सम्मतिं दद्युः। राज्ञा च योग्या एव पुरुषा राजकर्मणि रक्षणीया यतो नित्यं प्रशंसा वर्धेत॥८॥

**पदार्थः**-हे राजन्! मैं **(ते)** आपके **(सुमतिम्)** श्रेष्ठ बुद्धिवाले सभासद् का **(अर्चामि)** सत्कार करता हूँ जिन **(त्वा)** आपकी **(वावाता)** दोषों को नाश करने और विद्या को उत्पन्न करने वाली **(इयम्)** यह **(गीः)** उत्तम प्रकार शिक्षित वाणी **(घोषि)** शब्दयुक्त वचन जैसे हों, वैसे **(सम्, जरताम्)** स्तुति करे उन आपको **(स्वश्वाः)** उत्तम घोड़े **(सुरथाः)** श्रेष्ठ रथ और हम लोग **(मर्जयेम)** शुद्ध करावें। जैसे **(ते)** आपके धनों को **(अनु, द्यून्)** अनुदिन प्रतिदिन हम लोग धारण करें, वैसे आप **(अर्वाक्)** पीछे **(अस्मे)** हम लोगों के लिये **(क्षत्राणि)** राज्य में उत्पन्न हुए धनों को **(धारयेः)** धारण करिये॥८॥

**भावार्थः**-जब राजा सभास्थ जनों को पूंछै कि इस अधिकार में कौन पुरुष रखने योग्य है, तब सम्पूर्ण जन धार्मिक योग्य पुरुष के नियत करने में सम्मति देवें। और राजा को भी चाहिये कि योग्य ही पुरुषों को राजकर्म में नियत करे, जिससे कि नित्य प्रशंसा बढ़े॥८॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**इह त्वा भूर्या चरेदुप त्मन् दोषावस्तर्दीदिवांसमनु द्यून्।**

**क्रीळन्तस्त्वा सुमनसः सपेमाभि द्युम्ना तस्थिवांसो जनानाम्॥९॥**

**इह। त्वा। भूरि। आ। चरेत्। उप। त्मन्। दोषाऽवस्तः। दीदिऽवांसम्। अनु। द्यून्। क्रीळन्तः। त्वा। सुऽमनसः। सपेम। अभि। द्युम्ना। तस्थिवांसः। जनानाम्॥९॥**

**पदार्थः**-**(इह)** अस्मिन् राजकर्मणि **(त्वा)** त्वाम् **(भूरि)** बहु **(आ)** **(चरेत्)** **(उप)** **(त्मन्)** आत्मनि **(दोषावस्तः)** अहर्निशम् **(दीदिवांसम्)** प्रकाशमानं प्रकाशयन्तं वा **(अनु)** **(द्यून्)** दिवसान् **(क्रीळन्तः)** धनुर्वेदविद्याशिक्षणाय युद्धाय शस्त्राऽभ्यासं कुर्वन्तः **(त्वा)** **(सुमनसः)** शोभनं मनो येषान्ते **(सपेम)** आक्रुश्याम निंद्येम **(अभि)** **(द्युम्ना)** यशसा धनेन वा **(तस्थिवांसः)** स्थिरास्सन्तः **(जनानाम्)** राजप्रजापुरुषाणाम्॥९॥

**अन्वयः**-हे राजन्निह भवान् त्मन् भूरि शुभमुपाचरेत् सुमनसस्तस्थिवांसोऽनुद्यून् क्रीळन्तो वयं जनानां दीदिवांसं द्युम्ना यशसा सह वर्त्तमानं राजानं त्वा दोषावस्तः प्रशंसेम यद्यशुभाचारं कुर्यात्तर्हि त्वाऽभि सपेम॥९॥

**भावार्थः**-हे राजन्! यदि भवान् दुर्व्यसनानि त्यक्त्वा धर्म्याणि कर्म्माणि कुर्य्यात्तर्हि वयं तव भक्ता निरन्तरं स्याम यद्यन्यायं कुर्य्यात्तर्हि भवन्तं सद्यस्त्यजेम॥९॥

**पदार्थः**-हे राजन्! **(इह)** इस राजकर्म में आप **(त्मन्)** आत्मा में **(भूरि)** बहुत शुभकर्म **(उप, आ, चरेत्)** करें **(सुमनसः)** श्रेष्ठ मनयुक्त जन **(तस्थिवांसः)** स्थिर और **(अनु, द्यून्,)** प्रतिदिन



www.9009.co.in

**(क्रीळन्तः)** धनुर्वेदविद्या की शिक्षा के लिये और युद्ध के लिये शस्त्रों का अभ्यास करते हुए हम लोग **(जनानाम्)** राजा और प्रजा के पुरुषों के मध्य में **(दीदिवांसम्)** प्रकाशमान वा प्रकाश करते हुए और **(द्युम्ना)** यश वा धन के सहित वर्त्तमान राजमान **(त्वा)** आपकी **(दोषावस्तः)** दिन-रात्रि प्रशंसा करें, जो अश्रेष्ठ कर्म्म करो तो **(त्वा)** आपकी **(अभि, सपेम)** निन्दा करें॥९॥

**भावार्थः**-हे राजन्! जो आप दुर्व्यसनों का त्याग करके धर्म्मसम्बन्धी कर्म्मों को करें तो हम लोग आपके भक्त निरन्तर होवें, जो अन्याय करो तो आप का शीघ्र त्याग करें॥९॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**यस्त्वा स्वश्वः सुहिरण्यो अग्न उपयाति वसुमता रथेन।**

**तस्य त्राता भवसि तस्य सखा यस्त आतिथ्यमानुषग्जुजोषत्॥१०॥२४॥**

**यः। त्वा। सुऽअश्वः। सुऽहिरण्यः। अग्ने। उपऽयाति। वसुऽमता। रथेन। तस्य। त्राता। भवसि। तस्य। सखा। यः। ते। आतिथ्यम्। आनुषक्। जुजोषत्॥१०॥**

**पदार्थः**-**(यः)** **(त्वा)** त्वाम् **(स्वश्वः)** शोभनाश्वः **(सुहिरण्यः)** उत्तमसुवर्णादिधनः **(अग्ने)** राजन् **(उपयाति)** **(वसुमता)** बहुधनयुक्तेन **(रथेन)** रमणीयेन यानेन **(तस्य)** **(त्राता)** **(भवसि)** भवेः **(तस्य)** **(सखा)** सुहृत् **(यः)** **(ते)** तव **(आतिथ्यम्)** अतिथिवत्सत्कारम् **(आनुषक्)** आनुकूल्येन **(जुजोषत्)** भृशं सेवेत॥१०॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! यस्त आनुषगातिथ्यं जुजोषद्यः सुहिरण्यः स्वश्वो वसुमता रथेन त्वोपयाति तस्य त्वं त्राता भवसि तस्य सखा भवसि॥१०॥

**भावार्थः**-हे राजन्! ये तव राष्ट्रस्य चोपकारकाः स्युः सत्कर्त्तारश्च तेषामेव सखा रक्षकः सञ्चक्रवर्त्ती भवेः॥१०॥

**पदार्थः**-हे **(अग्ने)** राजन् **(यः)** जो **(ते)** आपकी **(आनुषक्)** अनुकूलता से वर्त्तमान **(आतिथ्यम्)** अतिथि के सदृश सत्कार की **(जुजोषत्)** निरन्तर सेवा करे **(यः)** जो **(सुहिरण्यः)** उत्तम सुवर्ण आदि धनयुक्त और **(स्वश्वः)** सुन्दर घोड़ों से युक्त पुरुष **(वसुमता)** बहुत धन से युक्त **(रथेन)** रमणीय वाहन से **(त्वा)** आपके **(उपयाति)** समीप प्राप्त होता है **(तस्य)** उसके आप **(त्राता)** रक्षा करने वाले **(भवसि)** हूजिये और **(तस्य)** उसके **(सखा)** मित्र हूजिये॥१०॥

**भावार्थः**-हे राजन्! जो आपके राज्य के उपकार करने और सत्कार करने वालो हों, उनके ही मित्र और रक्षा करने वाले हुए चकवर्त्ती हूजिये॥१०॥

**अथ कुमारकुमारीणां शिक्षाविषयमाह॥**

अब कुमार और कुमारियों के शिक्षा विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥



www.9009.co.in

**म॒हो रु॑जामि ब॒न्धुता॒ वचो॑भि॒स्तन्मा॑ पि॒तुर्गोत॑मा॒दन्वि॑याय।**

**त्वं नो॑ अ॒स्य वच॑सश्चिकिद्धि होत॑र्यविष्ठ सुक्रतो॒ दमू॑नाः॥ ११॥**

**म॒हः। रु॒जा॒मि॒। ब॒न्धुता॑। वच॑ःऽभिः। तत्। मा॒। पि॒तुः। गोत॑मात्। अनु॑। इ॒या॒य॒। त्वम्। न॒ः। अ॒स्य। वच॑सः। चि॒कि॒द्धि॒। होत॑रिति॑। य॒वि॒ष्ठ॒। सु॒क्र॒तो॒ इति॑ सुऽक्रतो। दमू॑नाः॥ ११॥**

**पदार्थः**-(**महः**) महत् (**रुजामि**) प्रभग्नान् करोमि (**बन्धुता**) बन्धूनां भावः (**वचोभिः**) वचनैः (**तत्**) (**मा**) माम् (**पितुः**) जनकात् (**गोतमात्**) अतिशयेन गौः सकलविद्यास्तोता तस्मात्। **गौरिति स्तोतृनामसु पठितम्।** (निघं०३.१६) (**अनु**) (**इयाय**) प्राप्नोतु (**त्वम्**) (**नः**) अस्मान् (**अस्य**) (**वचसः**) (**चिकिद्धि**) ज्ञापय (**होतः**) दातः (**यविष्ठ**) अतिशयेन युवन् (**सुक्रतो**) सुष्ठुप्राप्तप्रज्ञ (**दमूनाः**) दमनशीलो जितेन्द्रियः॥ ११॥

**अन्वयः**-हे राजन्! यथाऽहं गोतमात् पितुर्विद्यां प्राप्य दोषाञ्छत्रूंश्च रुजामि तन्महो वचोभिर्बन्धुता मान्वियाय तथेयं त्वामियात् हे होतर्यविष्ठ सुक्रतो दमूनास्त्वमस्य वचसः सकाशान्नोऽस्माञ्चिकिद्धि॥ ११॥

**भावार्थः**-हे कुमारा कुमार्यश्च! यथा वयं मातुः पितुराचार्याच्च सुशिक्षां विद्यां प्राप्याऽऽनन्दिता भवेम तथैव यूयमपि भवत॥ ११॥

**पदार्थः**-हे राजन्! जैसे मैं (**गोतमात्**) अत्यन्त सम्पूर्ण विद्याओं के स्तुति करने वाले (**पितुः**) पिता से विद्या को प्राप्त होकर अविद्यादि दोष और शत्रुओं को (**रुजामि**) प्रभग्न करता हूँ (**तत्**) (**महः**) बड़ा कार्य और (**वचोभिः**) वचनों से (**बन्धुता**) बन्धुपन (**मा**) मुझे (**अनु, इयाय**) प्राप्त हो, वैसे यह बन्धुपन आपको प्राप्त हो और हे (**होतः**) देनेवाले (**यविष्ठ**) अत्यन्त युवा (**सुक्रतो**) उत्तम बुद्धियुक्त पुरुष (**दमूनाः**) दमनशील जितेन्द्रिय! (**त्वम्**) आप (**अस्य**) इस (**वचसः**) वचन की उत्तेजना से (**नः**) हम लोगों को (**चिकिद्धि**) जनाइये॥ ११॥

**भावार्थः**-हे कुमार और कुमारियो! जैसे हम लोग माता-पिता और आचार्य्य से उत्तम शिक्षा और विद्या [को] प्राप्त होकर आनन्दित होवें, वैसे आप लोग भी हूजिये॥ ११॥

**अथ प्रजाजनरक्षाविषयमाह॥**

अब प्रजाजनों के रक्षा विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अस्व॑प्नजस्त॒रण॑यः सु॒शेवा॒ अत॑न्द्रासोऽवृ॒का अश्र॑मिष्ठाः।**

**ते पा॒यव॑ः स॒ध्र्य॑ञ्चो नि॒षद्याग्ने॒ तव॑ नः पान्त्वमूर॥ १२॥**

**अस्व॑प्नऽजः। त॒रण॑यः। सु॒ऽशेवा॑ः। अत॑न्द्रासः। अ॒वृ॒काः। अश्र॑मिष्ठाः। ते। पा॒यवः। स॒ध्र्य॑ञ्चः। नि॒ऽसद्य॑। अग्ने॑। तव॑। न॒ः। पा॒न्तु॒। अ॒मू॒र॥ १२॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**अस्वप्नजः**) जागरूकाः (**तरणयः**) तरुणावस्थां प्राप्ताः (**सुशेवाः**) सुसुखाः (**अतन्द्रासः**) अनलसाः (**अवृकाः**) अस्तेनाः (**अश्रमिष्ठाः**) अतिशयेनाऽश्रान्ताः श्रमरहिताः (**ते**) (**पायवः**) पालकाः (**सध्र्यञ्चः**) ये सहाञ्चन्ति ते (**निषद्य**) नितरां स्थित्वा (**अग्ने**) (**तव**) (**नः**) अस्मान् (**पान्तु**) रक्षन्तु (**अमूर**) मूढतादिदोषरहित॥१२॥

**अन्वयः**-हे अमूराऽग्ने राजन्! ये तवाऽस्वप्नजस्तरणयोऽतन्द्रासोऽवृका अश्रमिष्ठाः सुशेवाः सध्र्यञ्चः पायवो भृत्याः सन्ति ते निषद्य नः पान्तु॥१२॥

**भावार्थः**-प्रजाजनैः सदैव राजोपदेष्टव्यो हे राजन्! भवतः सकाशादस्माकं रक्षणे धार्मिका अनलसा पुरुषार्थिनो बलवन्तो जना नियताः सन्त्विति॥१२॥

**पदार्थः**-हे (**अमूर**) मूर्खतादि दोषों से रहित (**अग्ने**) अग्नि सदृश तेजस्विन् राजन्! जो जन (**तव**) आपके (**अस्वप्नजः**) जागने वाले (**तरणयः**) युवावस्था को प्राप्त (**अतन्द्रासः**) आलस्य (**अवृकाः**) चोरीपन (**अश्रमिष्ठाः**) और अत्यन्त थकावट से रहित (**सुशेवाः**) उत्तम सुखयुक्त (**सध्र्यञ्चः**) साथ जाने वा सत्कार करने और (**पायवः**) पालन करने वाले नौकर हैं (**ते**) वे (**निषद्य**) निरन्तर स्थित होकर (**नः**) हम लोगों की (**पान्तु**) रक्षा करें॥१२॥

**भावार्थः**-प्रजाजनों को चाहिये कि सदा ही राजा को उपदेश देवें कि हे राजन्! आपकी ओर से हम लोगों की रक्षा में धार्मिक आलस्यरहित पुरुषार्थी और बलवान् जन नियत हों॥१२॥

**पुना राजविषयमाह**

फिर राजविषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**ये पायवो मामतेयं ते अग्ने पश्यन्तो अन्धं दुरितादरक्षन्॥**

**ररक्ष तान्त्सुकृतो विश्ववेदा दिप्सन्त इद्रिपवो नाह देभुः॥१३॥**

**ये। पायवः। मामतेयम्। ते। अग्ने। पश्यन्तः। अन्धम्। दुःऽइतात्। अरक्षन्। ररक्ष। तान्। सुऽकृतः। विश्वऽवेदाः। दिप्सन्तः। इत्। रिपवः। न। अह। देभुः॥१३॥**

**पदार्थः**-(**ये**) (**पायवः**) रक्षकाः (**मामतेयम्**) मम भावो ममता तस्या इदम् (**ते**) तव (**अग्ने**) पावकवद्राजन् (**पश्यन्तः**) प्रेक्षमाणाः (**अन्धम्**) नेत्ररहितमिव (**दुरितात्**) दुष्टाचाराद् दुःखाद्वा (**अरक्षन्**) रक्षन्ति (**ररक्ष**) पालय (**तान्**) (**सुकृतः**) उत्तमकर्मकारिणः (**विश्ववेदाः**) समग्रवित् (**दिप्सन्तः**) दम्भमिच्छन्तः (**इत्**) एव (**रिपवः**) शत्रवः (**न**) (**अह**) विनिग्रहे (**देभुः**) दभ्नुयुः॥१३॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! ये पायवस्ते मामतेयं पश्यन्तो दुरितादन्धमिवाऽस्मानरक्षंस्तान् सुकृतो विश्ववेदाः संस्त्वं ररक्ष येनेदेव दिप्सन्तो रिपवोऽस्मान्नाऽह देभुः॥१३॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे राजन्! ये स्वकीयमिवाऽन्येषाम्भवतश्च पदार्थं जानन्ति। आत्मानमिवान्यान् रक्षन्ति त एवाऽऽप्ता तव भृत्याः सन्तु येन शत्रूणां बलं विनश्येत्॥१३॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-हे **(अग्ने)** अग्नि के सदृश राजन्! **(ये)** जो **(पायवः)** रक्षा करने वाले **(ते)** आपके **(मामतेयम्)** ममता सम्बन्धी कार्य को **(पश्यन्तः)** देखते हुए **(दुरितात्)** दुष्ट आचरण वा दुःख से **(अन्धम्)** नेत्ररहित को जैसे वैसे हम लोगों की **(अरक्षन्)** रक्षा करते हैं **(तान्)** उन **(सुकृतः)** उत्तम कर्म करने वालों का **(विश्ववेदाः)** सम्पूर्ण विषय जानने वाले [होते हुए] आप **(रक्ष)** पालन करो, जिससे **(इत्)** ही **(दिप्सन्तः)** पाखण्ड की इच्छा करते हुए **(रिपवः)** शत्रु लोग हम लोगों के **(न, अह)** निग्रह करने में न **(देभुः)** दम्भ करें॥१३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे राजन्! जो लोग अपने के सदृश अन्य जनों और आपके पदार्थ को जानते हैं और अपने आत्मा के सदृश अन्यों की रक्षा करते हैं, वे ही यथार्थवक्ता आपके सेवक हों, जिससे कि शत्रुओं का बल नष्ट होवे॥१३॥

**पुनः प्रकारान्तरेण राजविषयमाह॥**

फिर प्रकारान्तर से राजविषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**त्वया॑ व॒यं स॑ध॒न्य॑१॒स्त्वोता॒स्तव॒ प्रणी॑त्यश्याम॒ वाजा॑न्।**

**उ॒भा शंसा॑ सूदय सत्यतातेऽनु॒ष्ठुया कृ॑णुह्यह्रयाण॥१४॥**

**त्वया॑। व॒यम्। स॒ऽध॒न्यः॑। त्वाऽऊ॑ताः। तव॑। प्रऽनी॑ती। अ॒श्या॒म॒। वाजा॑न्। उ॒भा। शंसा॑। सू॒द॒य॒। स॒त्य॒ऽता॒ते॒। अ॒नु॒ष्ठु॒या। कृ॒णु॒हि॒। अ॒ह्र॒या॒ण॒॥१४॥**

**पदार्थः**-**(त्वया)** स्वामिना राज्ञा **(वयम्)** **(सधन्यः)** समानं धनं विद्यते येषान्ते। अत्र मत्वर्थीय ईप्। **(त्वोताः)** त्वया पालिताः **(तव)** **(प्रणीती)** प्रकृष्ट नीत्या **(अश्याम)** प्राप्नुयाम **(वाजान्)** विज्ञानधनादिपदार्थान् **(उभा)** उभौ **(शंसा)** प्रशंसे **(सूदय)** क्षरय **(सत्यताते)** सत्याचरक **(अनुष्ठुया)** आनुकूल्येन **(कृणुहि)** **(अह्रयाण)** लज्जारहित॥१४॥

**अन्वयः**-हे अह्रयाण सत्यताते राजंस्त्वमनुष्ठुया उभा शंसा कृणुहि दोषान्त्सूदय यतस्स्वया सह त्वोताः सधन्यः सन्तो वयं तव प्रणीती वाजानश्याम॥१४॥

**भावार्थः**-सर्वैर्भृत्यै राज्ञा सह मित्रता राज्ञा च सर्वैस्सह पितृवद्भावो रक्षणीयोऽन्येषां प्रशंसां कृत्वा दोषान् विनाश्य सत्यनीतिं प्रचार्य्य यत्र यत्र कर्मणि लज्जा स्यात्तत्तद्विहाय साम्राज्यं भोक्तव्यम्॥१४॥

**पदार्थः**-हे **(अह्रयाण)** लज्जारहित **(सत्यताते)** सत्य आचरण करने वाले राजन्! आप **(अनुष्ठुया)** अनुकूलता से **(उभा)** दोनों **(शंसा)** प्रशंसाओं को **(कृणुहि)** करिये और दोषों का **(सूदय)** नाश करिये जिससे **(त्वया)** आपके साथ **(त्वोताः)** आपने पालन किये और **(सधन्यः)** तुल्य धनवाले हुए **(वयम्)** हम लोग **(तव)** आपकी **(प्रणीती)** उत्तम नीति से **(वाजान्)** विज्ञान और धन आदि पदार्थों को **(अश्याम)** प्राप्त होवें॥१४॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-सब नौकरों को चाहिये कि राजा के साथ मित्रता और राजा को चाहिये कि सब लोगों के साथ पिता के सदृश वर्त्ताव रखे और परस्पर एक-दूसरे की प्रशंसा कर दोषों का नाश और सत्यनीति का प्रचार करके जिस-जिस कर्म्म में लज्जा हो, उस उसका त्यागकर चक्रवर्त्ती राज्य का भोग करें॥१४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अया ते अग्ने समिधा विधेम प्रति स्तोमं शस्यमानं गृभाय।**
**दहाशसो रक्षसः पाह्य१स्मान् द्रुहो निदो मित्रमहो अवद्यात्॥१५॥२५॥४॥**

**अया। ते। अग्ने। सम्ऽइधा। विधेम। प्रति। स्तोमम्। शस्यमानम्। गृभाय। दह। अशसः। रक्षसः। पाहि। अस्मान्। द्रुहः। निदः। मित्रऽमहः। अवद्यात्॥१५॥**

**पदार्थः**-(**अया**) अनया प्राप्तया (**ते**) तव (**अग्ने**) राजन् (**समिधा**) सम्यक् प्रदीप्तया नीत्या सह (**विधेम**) कुर्य्याम (**प्रति**) (**स्तोमम्**) प्रशंसनीयम् (**शस्यमानम्**) प्रशंसितव्यम् (**गृभाय**) गृहाण (**दह**) (**अशसः**) अस्तवकान् (**रक्षसः**) दुष्टाचारान् (**पाहि**) (**अस्मान्**) (**द्रुहः**) द्रोहयुक्ताः (**निदः**) निन्दकात् (**मित्रमहः**) ये मित्राणि महन्ति सत्कुर्वन्ति (**अवद्यात्**) अधर्माचरणात्॥१५॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! वयं तेऽया समिधा यं शस्यमानं स्तोमं विधेम तं त्वं प्रति गृभाय। अशसो रक्षसो दह द्रुहो निदोऽवद्याच्च मित्रमहोऽस्माञ्च पाहि॥१५॥

**भावार्थः**-यदि राजाऽमात्याः सम्मतः सन्तो विनयेन राज्यं शासति तर्हि द्रोहनिन्दाऽधर्माचरणात् पृथग्भूत्वा शिष्टाचाराः सन्तो दशसु दिक्षु कीर्तिं प्रसारयन्तीति॥१५॥

अत्र राजप्रजाकृत्यवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति चतुर्थे मण्डले चतुर्थं सूक्तं तृतीयाष्टके पञ्चविंशो वर्गश्चतुर्थोऽध्यायश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे (**अग्ने**) राजन्! हम लोग (**ते**) आपकी (**अया**) इस प्राप्त हुई (**समिधा**) उत्तम प्रकार प्रदीप्त नीति के साथ जिस (**शस्यमानम्**) प्रशंसा करने योग्य प्रशंसित होते हुए को (**स्तोमम्**) प्रशंसनीय (**विधेम**) करें उसको आप (**प्रति, गृभाय**) ग्रहण कीजिये (**अशसः**) निन्दक (**रक्षसः**) दुष्टाचरणों को (**दह**) भस्म कीजिये और (**द्रुहः**) द्रोह से युक्त (**निदः**) निन्दा करने वाले का (**अवद्यात्**) अधर्माचरण से (**मित्रमहः**) मित्रों का सत्कार करने वाले (**अस्मान्**) हम लोगों का (**पाहि**) पालन कीजिये॥१५॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-जो राजा और मन्त्री जन परस्पर सम्मत हुए नम्रता से राज्य की शिक्षा करते हैं तो द्वेष निन्दा और अधर्माचरण से अलग होकर उत्तम शिष्टाचार करते हुए दशों दिशाओं में यश को फैलाते हैं॥१५॥

इस सूक्त में राजा और प्रजा के कृत्य वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह चतुर्थ मण्डल में चतुर्थ सूक्त और तीसरे अष्टक में पच्चीसवां वर्ग और चौथा अध्याय समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

ओ३म्॥

अथ तृतीयाष्टके पञ्चमोऽध्यायः॥

**विश्वा॑नि देव सवितर्दुरि॒तानि॒ परा॑ सुव। यद्भ॒द्रं तन्न॒ आ सु॑व॥ ऋ०५.८२.५॥**

**अथ पञ्चदशर्चस्य पञ्चमस्य सूक्तस्य वामदेव ऋषिः। वैश्वानरो देवता। १ विराट् त्रिष्टुप्। २,५-८, ११ निचृत् त्रिष्टुप्। ३, ४, ९, १२, १३, १५ त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः। १०, १४ भुरिक् पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः॥**

***अथाग्निदृष्टान्तेन राजविषयमाह॥***

अब तृतीयाष्टक में पांचवें अध्याय और चतुर्थ मण्डल में [पन्द्रह ऋचा वाले] पञ्चम सूक्त का आरम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में अग्नि के दृष्टान्त से राजविषय को कहते हैं॥

**वै॒श्वा॒न॒राय॑ मी॒ळ्हुषे॑ स॒जोषा॑: क॒था दा॑शेमा॒ग्नये॑ बृ॒हद्भाः।**

**अनू॑नेन बृह॒ता व॒क्षथे॒नोप॑ स्तभायदुप॒मिन्न रोध॑:॥ १॥**

**वै॒श्वा॒न॒राय॑। मी॒ळ्हुषे॑। स॒ऽजोषा॑:। क॒था। दा॒शे॒म॒। अ॒ग्नये॑। बृ॒हत्। भाः। अनू॑नेन। बृ॒ह॒ता। व॒क्षथे॑न। उप॑। स्त॒भा॒य॒त्। उ॒प॒ऽमित्। न। रोध॑:॥ १॥**

**पदार्थः**-(**वैश्वानराय**) विश्वेषु नायकाय (**मीळ्हुषे**) सेचकाय (**सजोषाः**) समानप्रीतिसेवनाः। अत्र वचनव्यत्ययेनैकवचनम्। (**कथा**) केन प्रकारेण (**दाशेम**) दद्याम (**अग्नये**) वह्निवद्वर्त्तमानाय विदुषे राज्ञे (**बृहत्**) महत् (**भाः**) यो भाति सः (**अनूनेन**) न्यूनतारहितेन (**बृहता**) महता (**वक्षथेन**) रोषेण (**उप**) (**स्तभायत्**) स्तभ्नीयात् (**उपमित्**) य उपमिनोति सः (**न**) इव (**रोधः**) रोधनम्॥ १॥

**अन्वयः**-हे राजन्! यस्त्वं बृहद्भा उपमिद्रोधो नानूनेन बृहता वक्षथेन राज्यमुप स्तभायत्तस्मै वैश्वानराय मीळ्हुषेऽग्नये सजोषा वयं सुखं कथा दाशेम॥ १॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। ये सूर्यविद्युद्वत्सद्‌गुणप्रकाशका जलावरणमिव दुष्टानां निरोधकाः स्वात्मवत्सुखदुःखहानिलाभाञ्जानन्तो राज्यं कुर्वन्ति ते दण्डन्यायं प्रचालयितुं शक्नुवन्ति॥ १॥

**पदार्थः**-हे राजन्! जो आप (**बृहत्**) बड़े (**भाः**) शोभित नापने वाले और (**रोधः**) रोकने को (**उपमित्**) अलग करता है उसके (**न**) समान (**अनूनेन**) न्यूनता से रहित (**बृहता**) बड़े (**वक्षथेन**) क्रोध से राज्य को (**उप, स्तभायत्**) रोके उस (**वैश्वानराय**) सब में नायक (**मीळ्हुषे**) सेचन करने वाले (**अग्नये**) अग्नि के सदृश वर्त्तमान विद्वान् राजा के लिये (**सजोषाः**) तुल्य प्रीति के सेवन करने वाले हम लोग सुख को (**कथा**) किस प्रकार से (**दाशेम**) देवें॥ १॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो लोग सूर्य और बिजुली के सदृश उत्तम गुणों के प्रकाश करने और जल के रोकने वाले पदार्थ के सदृश दुष्टों के रोकने वाले और अपने सदृश सुख, दुःख, हानि और लाभ को जानते हुए राज्य करते हैं, वे दण्ड और न्याय को चला सकते हैं॥१॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**मा नि॑न्दत॒ य इ॒मां मह्यं॑ रा॒तिं दे॒वो द॒दौ मर्त्या॑य स्व॒धावा॑न्।**

**पाका॑य॒ गृत्सो॑ अ॒मृतो॒ विचे॑ता वैश्वान॒रो नृत॑मो य॒ह्वो अ॒ग्निः॥२॥**

**मा। नि॒न्द॒त॒। यः। इ॒माम्। मह्य॑म्। रा॒तिम्। दे॒वः। द॒दौ। मर्त्या॑य। स्व॒धाऽवा॑न्। पाका॑य। गृत्सः॑। अ॒मृतः॑। विऽचे॑ताः। वै॒श्वा॒न॒रः। नृऽत॑मः। य॒ह्वः। अ॒ग्निः॥२॥**

**पदार्थः**-(**मा**) (**निन्दत**) (**यः**) (**इमाम्**) (**मह्यम्**) (**रातिम्**) दानम् (**देवः**) दाता (**ददौ**) ददाति (**मर्त्याय**) मनुष्याय (**स्वधावान्**) बह्वन्नाद्यैश्वर्य्यः (**पाकाय**) परिपक्वव्यवहाराय (**गृत्सः**) यो गृणाति स मेधावी (**अमृतः**) मृत्युरहितः (**विचेताः**) विविधानि चेतांसि संज्ञानानि ज्ञापनानि वा यस्य सः (**वैश्वानरः**) विश्वेषु नरेषु प्रकाशमानः (**नृतमः**) अतिशयेन नायको नरोत्तमः (**यह्वः**) महान् (**अग्निः**) सूर्य इव॥२॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यः स्वधावानमृतो विचेता वैश्वानरो नृतमो यह्वो गृत्सोऽग्निर्देवः पाकाय मर्त्याय मह्यमिमां रातिं ददौ तं मा निन्दत॥२॥

**भावार्थः**-हे राजप्रजाजना! योऽग्न्यादिगुणयुक्तः सर्वेभ्यः सुखदाता राजा शुभगुणः स्यात्तस्य निन्दां दुष्टस्य प्रशंसां कदाचिन्मा कुरुत॥२॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! (**यः**) जो (**स्वधावान्**) बहुत अन्न आदि ऐश्वर्य्य से युक्त (**अमृतः**) मृत्यु से रहित (**विचेताः**) अनेक प्रकार के अच्छे प्रकार ज्ञान होना वा ज्ञान कराने के प्रकार जिसके ऐसे (**वैश्वानरः**) सम्पूर्ण मनुष्यों में प्रकाशमान (**नृतमः**) अत्यन्त नायक वा मनुष्यों में श्रेष्ठ (**यह्वः**) बड़ा (**गृत्सः**) उपदेशदाता बुद्धिमान् (**अग्निः**) सूर्य्य के समान (**देवः**) देनेवाला पुरुष (**पाकाय**) परिपक्व व्यवहार वाले (**मह्यम्**) मुझ (**मर्त्याय**) मनुष्य के लिये (**इमाम्**) इस (**रातिम्**) दान को (**ददौ**) देता है, उसकी (**मा**) मत (**निन्दत**) निन्दा करो॥२॥

**भावार्थः**-हे राजा और प्रजाजनो! जो अग्नि आदि के गुणों से युक्त और सब के लिये सुख देनेवाला राजा उत्तम गुणवाला होवे, उसकी निन्दा और दुष्ट की प्रशंसा कभी मत करो॥२॥

**अथ मेधाविना किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

अब मेधावि पुरुष को क्या करना चाहिये, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**साम॑ द्वि॒बर्हा॒ महि॑ ति॒ग्मभृ॑ष्टिः स॒हस्र॑रेता वृष॒भस्तुवि॑ष्मान्।**



www.9009.co.in

**पुदं न गोरपंगूळहं विविद्वानुग्निर्मह्यं प्रेदुं वोचन्मनीषाम्॥३॥**

**सामं। द्विऽबर्हाः। महिं। तिग्मऽभृंष्टिः। सुहस्रंऽरेताः। वृषभः। तुविष्मान्। पुदम्। न। गोः। अपंगूळहम्। विविद्वान्। अग्निः। मह्यम्। प्र। इत्। ऊम् इतिं। वोचत्। मनीषाम्॥३॥**

**पदार्थः**-(**साम**) सिद्धान्तितं कर्म (**द्विबर्हाः**) द्वाभ्यां विद्याविनयाभ्यां वृद्धः (**महि**) महत् (**तिग्मभृष्टिः**) तिग्मा तीव्रा भृष्टिः परिपाको यस्य सः (**सहस्रेरताः**) अतुलवीर्यः (**वृषभः**) वृषभ इव श्रेष्ठः (**तुविष्मान्**) बहुबलः (**पदम्**) पादचिह्नम् (**न**) (**इव**) (**गोः**) धेनोः (**अपगूळहम्**) गुप्तम् (**विविद्वान्**) विशेषेण विपश्चित् (**अग्निः**) पावक इव तेजस्वी (**मह्यम्**) जिज्ञासवे (**प्र**) (**इत्**) एव (**उ**) (**वोचत्**) प्रोच्यात् (**मनीषाम्**) प्रज्ञाम्॥३॥

**अन्वयः**-यो द्विबर्हाः तिग्मभृष्टिः सहस्ररेता वृषभ इव तुविष्मानग्निरिव विविद्वान् गोरपगूळ्हं पदं न मह्यं मनीषां महि साम च प्र वोचत् स इदु अस्माभिः सत्कर्त्तव्यः॥३॥

**भावार्थः**-अत्रोपमावाचकलुप्तोपमालङ्कारौ। स एव श्रेष्ठो विद्वान् यः सर्वान् प्रमां प्रापयेत्। यथा गोः पदमन्विष्य गां प्राप्नोति तथैव पदार्थविद्या प्राप्तव्या॥३॥

**पदार्थः**-जो (**द्विबर्हाः**) दो अर्थात् विद्या और विनय से वृद्ध (**तिग्मभृष्टिः**) तीव्र परिपाक जिसका ऐसा (**सहस्ररेताः**) परिमाण रहित पराक्रमयुक्त (**वृषभः**) बैल के सदृश श्रेष्ठ (**तुविष्मान्**) बहुत बलयुक्त (**अग्निः**) अग्नि के सदृश तेजस्वी और (**विविद्वान्**) विशेष करके पण्डित (**गोः**) गौ के (**अपगूळहम्**) गुप्त (**पदम्**) पैरों के चिह्न के (**न**) सदृश (**मह्यम्**) मुझ जानने की इच्छा करने वाले के लिये (**मनीषाम्**) बुद्धि और (**महि**) बड़े (**साम**) सिद्धान्तित कर्म को (**प्र, वोचत्**) कहे (**इत्, उ**) फिर वही हम लोगों से सत्कार करने योग्य है॥३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमा [और] वाचकलुप्तोपमालङ्कार हैं। वही श्रेष्ठ विद्वान् है कि जो सब के लिये यथार्थज्ञान करावे। जैसे गौ के पैरों के चिह्न को खोज के गौ को प्राप्त होता है, वैसे ही पदार्थविद्या प्राप्त करने योग्य है॥३॥

**अथ सर्वसुखकरराजविषयमाह॥**

अब सुख को सुख करनेवाले राजविषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**प्र ताँ अग्निर्बभसत् तिग्मजम्भस्तपिंष्ठेन शोचिषा यः सुराधाः।**

**प्र ये मिनन्ति वरुणस्य धाम प्रिया मित्रस्य चेततो ध्रुवाणि॥४॥**

**प्र। तान्। अग्निः। बभसत्। तिग्मऽजम्भः। तपिंष्ठेन। शोचिषा। यः। सुऽराधाः। प्र। ये। मिनन्ति। वरुणस्य। धाम। प्रिया। मित्रस्य। चेततः। ध्रुवाणि॥४॥**

**पदार्थः**-(**प्र**) (**तान्**) (**अग्निः**) पावक इव (**बभसत्**) दीप्येद्भर्त्सेत् (**तिग्मजम्भः**) तिग्मानि गात्रविनमनानि यस्य सः (**तपिष्ठेन**) अतिशयेन तापयुक्तेन (**शोचिषा**) तेजसा (**यः**) (**सुराधाः**)



www.9009.co.in

शोभनधनः **(प्र)** **(ये)** **(मिनन्ति)** हिंसन्ति **(वरुणस्य)** श्रेष्ठस्य **(धाम)** जन्मस्थाननामानि **(प्रिया)** कमनीयानि **(मित्रस्य)** सख्युः **(चेततः)** संज्ञापकस्य **(ध्रुवाणि)** निश्चलानि दृढानि॥४॥

**अन्वयः**-योऽग्निरिव तिग्मजम्भस्तपिष्ठेन शोचिषा सुराधाः सन् ये चेततो वरुणस्य मित्रस्य प्रिया ध्रुवाणि धाम प्रमिणन्ति तान् प्र बभसत् स एव सर्वस्य सुखकरो जायते॥४॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यथा प्रदीप्तोऽग्निः प्राप्तशुष्कमार्द्रं च दहति तथैव यः स्वार्थिनः परस्य सुखविनाशकान् हन्ति स प्रशंसितो भवति॥४॥

**पदार्थः**-**(यः)** जो **(अग्निः)** अग्नि के सदृश **(तिग्मजम्भः)** तीक्ष्ण शरीर शिथिल करने वाली जम्भवाई वाला **(तपिष्ठेन)** अत्यन्त ताप अर्थात् दीप्तियुक्त **(शोचिषा)** तेज से **(सुराधाः)** उत्तम धन वाले होते हुए **(ये)** जो लोग **(चेततः)** चैतन्य कराने वाले **(वरुणस्य)** श्रेष्ठ **(मित्रस्य)** मित्र के **(प्रिया)** सुन्दर और **(ध्रुवाणि)** निश्चल अर्थात् दृढ़ **(धाम)** जन्म, स्थान नामों का **(प्र, मिनन्ति)** नाश करते हैं, **(तान्)** उनको **(प्र, बभसत्)** तिरस्कार करे, वही सब को सुख करने वाला होता है॥४॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे प्रदीप्त अग्नि प्राप्त हुए शुष्क और गीले पदार्थ को जलाता है, वैसे ही जो पुरुष अपने प्रयोजनसाधक स्वार्थी और अन्य पुरुष के सुखनाश करने वालों को नाश करता है, वह प्रशंसित होता है॥४॥

**अथ राजविषये दण्डविचारमाह॥**

अब राजविषय में दण्ड विचार को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अभ्रातरो न योषणो व्यन्तः पतिरिपो न जनयो दुरेवाः।**

**पापासः सन्तो अनृता असत्या इदं पदमजनता गभीरम्॥५॥१॥**

**अभ्रातरः। न। योषणः। व्यन्तः। पतिऽरिपः। न। जनयः। दुःऽएवाः। पापासः। सन्तः। अनृताः। असत्याः। इदम्। पदम्। अजनत। गभीरम्॥५॥**

**पदार्थः**-**(अभ्रातरः)** अबन्धुरिव वर्त्तमानाः **(न)** इव **(योषणः)** भार्य्याः **(व्यन्तः)** प्राप्नुवन्त्यः **(पतिरिपः)** पत्युर्भूमीः। **रिप इति पृथ्वीनामसु पठितम्।** (निघं०१.१) **(न)** इव **(जनयः)** जायाः **(दुरेवाः)** दुर्व्यसनाः **(पापासः)** अधर्माचाराः **(सन्तः)** **(अनृताः)** असत्यवादिनः **(असत्याः)** असत्याचरणाः **(इदम्)** **(पदम्)** **(अजनत)** जनयन्ति। अत्र **संहितायामिति** दीर्घः। **(गभीरम्)** गहनम्॥५॥

**अन्वयः**-येऽनृता असत्या दुरेवाः पापासस्सन्तो दुष्टा अभ्रातरो न योषणः पतिरिपो न व्यन्तो जनय इदं गभीरं पदं दुःखमजनत ते सदैव ताडनीयाः॥५॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। [हे] मनुष्या! या स्त्री भ्रातृवदनुकूला नानुकूला शत्रुवद्विरोधिनी ये घोरपापिनः सर्वेषां पीडकाः स्युस्तान् दूरतस्त्यजत॥५॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-जो **(अनृताः)** मिथ्या बोलने और **(असत्याः)** मिथ्या आचरण करने वाले **(दुरेवाः)** दुष्ट व्यसनों से युक्त **(पापासः)** अधर्माचरण करते **(सन्तः)** हुए दुष्ट **(अभ्रातरः)** जैसे बन्धुभिन्न जन **(नः)** वैसे और जैसे **(योषणः)** स्त्रियाँ **(पतिरिपः)** पति की भूमि को **(न)** वैसे **(व्यन्तः)** प्राप्त हुईं **(जनयः)** स्त्रियाँ **(इदम्)** इस **(गभीरम्)** गम्भीर **(पदम्)** स्थान [दुःख] को **(अजनत)** उत्पन्न करती हैं, वे सदा ही ताड़न करने योग्य हैं॥५॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जो स्त्री भाई के सदृश अनुकूल नहीं और जो अनुकूल हो तो शत्रु के सदृश विरोध करने वाली हो और जो घोर पापीजन सब के पीड़ा देने वाले हों, उनका दूर से त्याग करो॥५॥

**अथाध्यापकविषयमाह॥**

अब अध्यापक विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**इ॒दं मे॑ अग्ने॒ किय॑ते पाव॒काமि॑नते गु॒रुं भा॒रं न मन्म॑।**

**बृ॒हद्द॑धाथ धृष॒ता ग॑भी॒रं य॒ह्वं पृ॒ष्ठं प्रय॑सा स॒प्तधा॑तु॥६॥**

**इ॒दम्। मे॒। अ॒ग्ने॒। किय॑ते। पा॒व॒क॒। अमि॑नते। गु॒रुम्। भा॒रम्। न। मन्म॑। बृ॒हत्। द॒धा॒थ॒। धृ॒ष॒ता। ग॒भी॒रम्। य॒ह्वम्। पृ॒ष्ठम्। प्रय॑सा। स॒प्तऽधा॑तु॥६॥**

**पदार्थः**-**(इदम्)** **(मे)** मह्यम् **(अग्ने)** पावकवद्वर्त्तमान **(कियते)** अल्पसामर्थ्याय **(पावक)** पवित्रकर **(अमिनते)** अहिंसकाय **(गुरुम्)** महान्तम् **(भारम्)** **(न)** इव **(मन्म)** विज्ञानम् **(बृहत्)** वर्धकम् **(दधाथ)** धेहि। अत्र वचनव्यत्ययेन बहुवचनम् **(धृषता)** प्रगल्भेन सह **(गभीरम्)** **(यह्वम्)** महत् **(पृष्ठम्)** प्रच्छनीयम् **(प्रयसा)** प्रीतेन **(सप्तधातु)** सुवर्णादयस्सप्तधातवो यस्मिन्॥६॥

**अन्वयः**-हे पावकाग्ने! त्वं कियतेऽमिनते मे गुरुं भारं न मन्म धृषता प्रयसेदं बृहद्गभीरं पृष्ठं यह्वं सप्तधातु धनं दधाथ॥६॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। येऽल्पज्ञा विद्यार्थिनश्च ज्ञानिनो विदुषः सकाशाद्विज्ञानं धनसाधनं च याचन्ते ते विद्वांसो जायन्ते॥६॥

**पदार्थः**-हे **(पावक)** पवित्र करने वाले **(अग्ने)** अग्ने के सदृश वर्त्तमान! आप **(कियते)** थोड़े सामर्थ्य से युक्त **(अमिनते)** नहीं हिंसा करने वाले **(मे)** मेरे लिये **(गुरुम्)** बड़े **(भारम्)** भार के **(न)** सदृश **(मन्म)** विज्ञान को तथा **(धृषता)** ढीठ और **(प्रयसा)** प्रसन्न[ता] के साथ **(इदम्)** इस **(बृहत्)** बढ़ाने वाले **(गम्भीरम्)** गम्भीर **(पृष्ठम्)** पूछने योग्य **(यह्वम्)** बड़े **(सप्तधातु)** सुवर्ण आदि सातों धातु जिसमें ऐसे धन को **(दधाथ)** धारण कीजिये॥६॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जो अल्पज्ञ और विद्यार्थीजन ज्ञानी विद्वान् के समीप से विज्ञान और धन के साधन की याचना करते हैं, वे विद्वान् होते हैं॥६॥



www.9009.co.in

**अथ विवाहपरत्वेनोपदेशविषयमाह॥**

अब विवाहपरता से उपदेशविषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**तमिन्वे३॒॑व स॒म॒ना स॒मा॒नम॒भि क्रत्वा॑ पु॒न॒ती धी॒तिर॑श्या:।**

**स॒सस्य॒ चर्म॒न्नधि॒ चारु॒ पृश्ने॒रग्रे॑ रु॒प आरु॑पितं॒ जबा॑रु॥७॥**

**तम्। इत्। नु। ए॒व। स॒म॒ना। स॒मा॒नम्। अ॒भि। क्रत्वा॑। पु॒न॒ती। धी॒तिः। अ॒श्या॒:। स॒सस्य॑। चर्म॑न्। अधि॑। चारु॑। पृश्ने॑:। अग्रे॑। रु॒प:। आरु॑पितम्। जबा॑रु॥७॥**

**पदार्थः**-(**तम्**) (**इत्**) अपि (**नु**) (**एव**) (**समना**) सदृशी (**समानम्**) तुल्यं पतिम् (**अभि**) (**क्रत्वा**) प्रज्ञया (**पुनती**) पित्रा पवित्रयन्ती (**धीतिः**) शुभगुणधारिका (**अश्याः**) प्राप्नुया: (**ससस्य**) स्वपत: (**चर्मन्**) चर्मणि (**अधि**) उपरि (**चारु**) सुन्दरम् (**पृश्नेः**) अन्तरिक्षस्य (**अग्रे**) पुरस्तात् (**रुपः**) आरोपणकर्तु:। अत्र कर्त्तरि क्विप्। (**आरुपितम्**) (**जबारु**) जवमानमारूढम्॥७॥

**अन्वयः**-हे कन्ये! यस्य ससस्य चर्मन् चारु जबार्वारुपितं पृश्नेरभ्यस्ति तदग्रेऽधिरुपः क्रत्वा पुनती धीतिः समना सती तमिदेव समानं पतिं न्वेवाश्या:॥७॥

**भावार्थः**-यदि कन्या स्वसदृशं वरं ब्रह्मचारी स्वतुल्यां कन्याञ्चोपयच्छेत् तर्ह्यन्तरिक्षस्य मध्य ईश्वरेण स्थापित: सविता चन्द्रो नक्षत्राणीव सुशोभेते॥७॥

**पदार्थः**-हे कन्ये! जिस (**ससस्य**) शयन करते हुए के (**चर्मन्**) चमड़े में (**चारु**) सुन्दर (**जबारु**) वेग करता हुआ वा आरूढ़ (**आरुपितम्**) आरोपण किया गया वा जो (**पृश्नेः**) अन्तरिक्ष के (**अभि**) सब ओर है उसके (**अग्रे**) आगे (**अधि, रुपः**) अधिरोपण करनेवाले की (**क्रत्वा**) उत्तम बुद्धि से (**पुनती**) पिता के सम्बन्ध से पवित्र करती हुई (**धीतिः**) उत्तम गुणों के धारण करने वाली (**समना**) तुल्य हुई (**तम्**) (**इत्**) उसी (**समानम्**) समान पति को (**नु, एव**) शीघ्र ही (**अश्याः**) प्राप्त हो॥७॥

**भावार्थः**-जो कन्या अपने समान वर और ब्रह्मचारी अपने तुल्य कन्या के साथ विवाह करे तो अन्तरिक्ष के मध्य में ईश्वर से स्थापित सूर्य्य चन्द्रमा और नक्षत्रों के तुल्य शोभित होते हैं॥७॥

**अथ प्रच्छकविषयमाह॥**

अब प्रच्छक विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**प्र॒वाच्यं॒ वच॑स॒: किं मे॑ अ॒स्य गुहा॑ हि॒तमुप॑ नि॒णिग्व॑दन्ति।**

**यदु॒स्रिया॑णा॒मप॒ वारि॑व॒ व्रन् पाति॑ प्रि॒यं रु॒पो अग्रं॑ प॒दं वे:॥८॥**

**प्रऽवाच्य॑म्। वच॑सः। किम्। मे॒। अ॒स्य। गुहा॑। हि॒तम्। उप॑। नि॒णिक्। व॒द॒न्ति॒। यत्। उ॒स्रिया॑णाम्। अप॑। वाऽ:इ॑व। व्रन्। पाति॑। प्रि॒यम्। रु॒पः। अग्र॑म्। प॒दम्। वेरिति॒ वेः॥८॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**प्रवाच्यम्**) प्रकर्षेण वक्तुं योग्यम् (**वचसः**) वचनस्य (**किम्**) (**मे**) मम (**अस्य**) जनस्य (**गुहा**) बुद्धौ (**हितम्**) स्थितम् (**उप**) (**निणिक्**) नितरां शुन्धति (**वदन्ति**) (**यत्**) (**उस्रियाणाम्**) गवाम् (**अप**) (**वारिव**) जलमिव (**व्रन्**) अपवृणोति (**पाति**) (**प्रियम्**) कमनीयम् (**रुपः**) पृथिव्याः। **रुप इति पृथिवीनामसु पठितम्।** (निघं०१.१) (**अग्रम्**) (**पदम्**) (**वेः**) पक्षिणः॥८॥

**अन्वयः**-ये मेऽस्य च वचसो गुहा हितं प्रवाच्यं निणिक् किमुपवदन्ति यदुस्रियाणां वारिव वेरग्रं पदमिव रुपः प्रियमप व्रन् कश्चैतत् पाति॥८॥

**भावार्थः**-हे विद्वांसो! ममास्य च जनस्य बुद्धौ स्थितं चेतनं किमस्ति कीदृगस्ति यत्पशूनां पालकं जलमिव रक्षति सर्वेभ्यः प्रियं दृश्यते। यदाऽऽकाशे पक्षिणः पदमिव गुप्तमस्ति तद्विज्ञानायाऽस्मान् प्रति भवन्तः किं ब्रुवन्तु॥८॥

**पदार्थः**-जो (**मे**) मेरे और (**अस्य**) इस जन के (**वचसः**) वचन के सम्बन्ध में (**गुहा**) बुद्धि में (**हितम्**) स्थित (**प्रवाच्यम्**) प्रकर्षता से कहने योग्य (**निणिक्**) अत्यन्त शुद्ध करने वाले को (**किम्**) क्या (**उप, वदन्ति**) समीप में कहते हैं (**यत्**) जो (**उस्रियाणाम्**) गौओं के (**वारिव**) जल के सदृश वा (**वेः**) पक्षी के (**अग्रम्**) ऊँचे (**पदम्**) स्थान के सदृश (**रुपः**) पृथिवी के (**प्रियम्**) सुन्दर भाग को (**अप, व्रन्**) घेरता है, कौन इन दोनों का (**पाति**) पालन करता है॥८॥

**भावार्थः**-हे विद्वानो! मेरी और इस जन की बुद्धि में वर्त्तमान चेतन क्या और कैसा है? जो पशुओं के पालन करने वाला जल के सदृश रक्षा करता और सब से प्रिय देख पड़ता है। और जो आकाश में पक्षी के पैर के सदृश गुप्त है, उसके विज्ञान के लिये हम लोगों के प्रति आप लोग क्या कहते हो॥८॥

**अथ समाधातृविषयमाह॥**

अब समाधाता के विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**इ॒दमु॒ त्यन्महि॑ म॒हामनी॑कं॒ यदु॒स्रिया॒ सच॑त पू॒र्व्यं गौः।**

**ऋ॒तस्य॑ प॒दे अधि॒ दीद्या॑नं॒ गुहा॑ रघु॒ष्यद् र॑घु॒यद् वि॑वेद॥९॥**

**इ॒दम्। ऊ॒म् इति॑। त्यत्। महि॑। म॒हाम्। अनी॑कम्। यत्। उ॒स्रिया॑। सच॑त। पू॒र्व्यम्। गौः। ऋ॒तस्य॑। प॒दे। अधि॑। दीद्या॑नम्। गुहा॑। र॒घु॒ऽस्यत्। र॒घु॒ऽयत्। वि॒वे॒द॥९॥**

**पदार्थः**-(**इदम्**) (**उ**) (**त्यत्**) तत् (**महि**) महत् (**महाम्**) महताम्। अत्र **छान्दसो वर्णलोपो वेति** तलोपः। (**अनीकम्**) सैन्यमिव (**यत्**) (**उस्रिया**) क्षीरादिप्रदा (**सचत**) प्राप्नुत (**पूर्व्यम्**) पूर्वैर्निष्पादितम् (**गौः**) (**ऋतस्य**) सत्यस्य (**पदे**) स्थाने (**अधि**) (**दीद्यानम्**) (**गुहा**) बुद्धौ (**रघुष्यत्**) सद्यः स्यन्दमानम् (**रघुयत्**) सद्यो गन्त्री (**विवेद**) वेत्ति॥९॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे जिज्ञासवो! यन्महामनीकं महि ऋतस्य पदे यद्दीद्यानं गुहा रघुष्यत् पूर्व्यं रघुयद् विवेद त्यदिदमु उस्त्रिया गौरिवाधि यूयं सचत॥९॥

**भावार्थः**-हे श्रोतारो जना! यद्बुद्धिप्रेरकं मन्दशीघ्रगामि सत्यस्य परमेश्वरस्य मध्ये प्रकाशमानं बलिष्ठं सैन्यमिव वीर्यवद्वत्सं सुखयन्ती गौरिव सुखप्रदं वस्त्वस्ति तदेव युष्माकं स्वरूपमस्ति॥९॥

**पदार्थः**-हे जिज्ञासुजनो! **(यत्)** जो **(महाम्)** बड़ों की **(अनीकम्)** सेना के सदृश **(महि)** बड़ा वा **(ऋतस्य)** सत्य के **(पदे)** स्थान में जो **(दीद्यानम्)** प्रकाशित होता हुआ विद्यमान है, उसको **(गुहा)** बुद्धि में **(रघुष्यत्)** शीघ्र हिलते हुए के समान **(पूर्व्यम्)** पूर्वजनों से उत्पन्न किये गए के समान **(रघुयत्)** शीघ्र जाने वाली **(विवेद)** जानती है **(त्यत्, इदम्, उ)** उस ही **(उस्त्रिया)** दुग्ध आदि की देने वाली **(गौः)** गौ के सदृश **(अधि)** अधिक आप लोग **(सचत)** प्राप्त हूजिये॥९॥

**भावार्थः**-हे श्रोताजनो! जो बुद्धि की प्रेरणा करने, मन्द और शीघ्र चलने वाला सत्य परमेश्वर के मध्य में प्रकाशमान बलिष्ठ वाज पक्षी [सेना] के सदृश पराक्रम वाले बछड़े को सुख देती हुई, गौ के सदृश सुख देने वाला वस्तु है, वही आप लोगों का स्वरूप है॥९॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अध॑ द्युता॒नः पि॒त्रोः सचा॒साम॑नुत॒ गुह्यं॒ चारु॒ पृश्नेः॑।**

**मा॒तुष्प॒दे प॑र॒मे अन्ति॒ षद्गोर्वृष्णः॑ शो॒चिषः॒ प्रय॑तस्य जि॒ह्वा॥ १०॥ २॥**

**अध॑। द्यु॒ता॒नः। पि॒त्रोः। सचा॑। आ॒सा। अम॑नुत। गुह्य॑म्। चारु॑। पृश्नेः॑। मा॒तुः। प॒दे। प॒र॒मे। अन्ति॑। सत्। गोः। वृष्णः॑। शो॒चिषः॑। प्रऽय॑तस्य। जि॒ह्वा॥ १०॥**

**पदार्थः**-**(अध)** अथ **(द्युतानः)** प्रकाशमानः **(पित्रोः)** जनकयोः **(सचा)** सत्येन **(आसा)** आस्येन **(अमनुत)** विजानीत **(गुह्यम्)** गुप्तम् **(चारु)** सुन्दरम् **(पृश्नेः)** अन्तरिक्षस्य मध्ये **(मातुः)** मातृवद्वर्त्तमानस्य **(पदे)** प्रापणीये **(परमे)** उत्कृष्टे **(अन्ति)** समीपे **(सत्)** वर्त्तमानम् **(गोः)** **(वृष्णः)** वर्षकस्य **(शोचिषः)** प्रकाशमानस्य **(प्रयतस्य)** प्रयत्नं कुर्वतः **(जिह्वा)** वाणी॥१०॥

**अन्वयः**-हे जिज्ञासवोऽध यः पित्रोर्द्युतानः सचासा परमे मातुष्पदेऽन्ति सद्गोर्वृष्ण इव शोचिषः प्रयतस्य जिह्वेव यत्पृश्नेश्चारु गुह्यमस्ति तज्जीवस्वरूपममनुत॥१०॥

**भावार्थः**-यथा द्यावापृथिव्योर्मध्ये वर्त्तमानस्सूर्य्यः सुशोभितोऽस्ति यथा विदुषो वाणी विद्याप्रकाशिका वर्तते यथाऽन्तरिक्षं कस्मादपि दूरे न भवति तथैव स्वात्मवस्तु परमात्मा च सन्निकटे वर्त्तत इति वेदनीयम्॥१०॥

**पदार्थः**-हे जिज्ञासुजनो! **(अध)** इसके अनन्तर जो **(पित्रोः)** माता और पिता की उत्तेजना से **(द्युतानः)** प्रकाशमान **(सचा)** सत्य **(आसा)** मुख से **(परमे)** उत्तम **(मातुः)** माता के सदृश वर्त्तमान के



www.9009.co.in

**(पदे)** प्राप्त होने योग्य स्थान में **(अन्ति)** समीप **(सत्)** वर्त्तमान **(गो:)** गौ और **(वृष्ण:)** वृष्टि करने वाले के सदृश **(शोचिष:)** प्रकाशमान **(प्रयतस्य)** प्रयत्न करते हए की **(जिह्वा)** वाणी के सदृश जो **(पृश्ने:)** अन्तरिक्ष के मध्य में **(चारु)** सुन्दर **(गुह्यम्)** गुप्त है, उस जीवस्वरूप को **(अमनुत)** जानिये॥१०॥

**भावार्थ:**-जैसे अन्तरिक्ष और पृथिवी के मध्य में वर्त्तमान सूर्य्य उत्तम प्रकार शोभित है और जैसे विद्वान् की वाणी विद्या का प्रकाश करने वाली है और जैसे अन्तरिक्ष किसी से भी दूर नहीं है, वैसे ही उत्तम अपना आत्मारूप वस्तु और परमात्मा समीप में वर्त्तमान है, ऐसा जानना चाहिये॥१०॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**ऋ॒तं वो॑चे॒ नम॑सा पृ॒च्छ्यमा॑न॒स्तवा॒शसा॑ जातवेदो॒ यदी॒दम्।**

**त्वम॒स्य क्ष॑यसि॒ यद्ध॒ विश्वं॑ दि॒वि यदु॒ द्रवि॑णं॒ यत्पृ॑थि॒व्याम्॥११॥**

**ऋ॒तम्। वो॒चे॒। नम॑सा। पृ॒च्छ्यमा॑नः। तव॑। आ॒ऽशसा॑। जा॒त॒ऽवे॒दः॒। यदि॑। इ॒दम्। त्वम्। अ॒स्य। क्ष॒य॒सि॒। यत्। ह॒। विश्व॑म्। दि॒वि। यत्। ऊ॒म् इति॑। द्रवि॑णम्। यत्। पृ॒थि॒व्याम्॥११॥**

**पदार्थ:**-**(ऋतम्)** सत्यम् **(वोचे)** वदेयमुपदिशेयं वा **(नमसा)** सत्कारेण **(पृच्छ्यमान:)** **(तव)** **(आशसा)** समन्तात् प्रशंसितेन **(जातवेद:)** जातप्रज्ञान **(यदि)** चेत् **(इदम्)** **(त्वम्)** **(अस्य)** **(क्षयसि)** निवससि **(यत्)** **(ह)** किल **(विश्वम्)** सर्वम् **(दिवि)** प्रकाशमाने परमात्मनि सूर्य्ये वा **(यत्)** **(उ)** **(द्रविणम्)** द्रव्यम् **(यत्)** **(पृथिव्याम्)**॥११॥

**अन्वय:**-हे जातवेदो! यदि त्वं यद्ध दिवि विश्वं द्रविणं यत्पृथिव्यां यदु वाय्वादिषु वर्त्तते यत्र त्वं क्षयसि तस्यास्य तवाऽऽशसा नमसा पृच्छ्यमानोऽहं तर्हीदमृतं त्वां प्रतिवोचे॥११॥

**भावार्थ:**-हे मनुष्या! यद् ब्रह्म सर्वत्र व्याप्तमस्ति यत्र सर्वं वसति तत्सत्यस्वरूपं युष्मान् प्रत्यहमुपदिशामि तदेवोपाध्वम्॥११॥

**पदार्थ:**-हे **(जातवेद:)** ज्ञान से विशिष्ट **(यदि)** यदि आप **(यत्)** जो **(ह)** निश्चयकर **(दिवि)** प्रकाशमान परमात्मा वा सूर्य्य में **(विश्वम्)** सम्पूर्ण **(द्रविणम्)** द्रव्य और **(यत्)** जो **(पृथिव्याम्)** पृथिवी में **(यत्)** जो **(उ)** और वायु आदि में वर्त्तमान है और जिसमें **(त्वम्)** आप **(क्षयसि)** रहते हो उस **(अस्य)** इन **(तव)** आपके **(आशसा)** सब प्रकार प्रशंसित **(नमसा)** सत्कार से **(पृच्छ्यमान:)** पूंछा गया मैं तो **(इदम्)** इस **(ऋतम्)** सत्य को आपके प्रति **(वोचे)** कहूं वा उपदेश करूं॥११॥

**भावार्थ:**-हे मनुष्यो! जो ब्रह्म सब स्थान में व्याप्त है और जिसमें सम्पूर्ण पदार्थ वसते हैं, उस सत्यस्वरूप का आप लोगों के प्रति मैं उपदेश करता हूँ, उसी की उपासना करो॥११॥

**पुन: प्रच्छकविषयमाह॥**

फिर प्रच्छक विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**किं नो अस्य द्रविणं कद्ध रत्नं वि नो वोचो जातवेदश्चिकित्वान्।**

**गुहाध्वनः परमं यन्नो अस्य रेकु पदं न निदाना अगन्म॥१२॥**

**किम्। नः। अस्य। द्रविणम्। कत्। ह। रत्नम्। वि। नः। वोचः। जातऽवेदः। चिकित्वान्। गुहा। अध्वनः। परमम्। यत्। नः। अस्य। रेकु। पदम्। न। निदानाः। अगन्म॥१२॥**

**पदार्थः**-(**किम्**) प्रश्ने (**नः**) अस्माकम् (**अस्य**) संसारस्य मध्ये (**द्रविणम्**) यशः (**कत्**) कदा (**ह**) किल (**रत्नम्**) धनम् (**वि**) (**नः**) अस्मान् (**वोचः**) उपदिशेः (**जातवेदः**) जातविद्य (**चिकित्वान्**) विवेकी (**गुहा**) बुद्धेः (**अध्वनः**) मार्गस्य (**परमम्**) प्रकृष्टं प्रापणीयम् (**यत्**) (**नः**) अस्माकम् (**अस्य**) (**रेकु**) शङ्कितम् (**पदम्**) प्रापणीयम् (**न**) इव (**निदानाः**) निन्दां कुर्वाणाः (**अगन्म**)॥१२॥

**अन्वयः**-हे जातवेदश्चिकित्वाँस्त्वमस्य नः किं द्रविणं किं रत्नमस्तीति न कद्ध विवोचः यद् गुहाऽध्वनः परमं प्राप्तान्नोऽस्मान् रेकु पदं न नोऽस्मान्निदाना अस्य संसारस्य मध्ये स्युस्तान् विहायाऽगन्म तत्किमिति॥१२॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। हे विद्वांसोऽस्मासु किं यशः किं रमणीयं वस्तु के चाऽस्माकं निन्दकाः किं च शङ्कनीयं वस्तु किं च प्रापणीयं पदमस्तीत्युत्तराणि ब्रूत॥१२॥

**पदार्थः**-हे (**जातवेदः**) विद्यायुक्त (**चिकित्वान्**) विचारशील! आप (**अस्य**) इस संसार में (**नः**) हम लोगों का (**किम्**) क्या (**द्रविणम्**) यश और (**किम्**) क्या (**रत्नम्**) धन है ऐसा (**नः**) हम लोगों को (**कत्, ह**) कभी (**वि, वोचः**) उपदेश कीजिये (**यत्**) जो (**गुहा**) बुद्धि के (**अध्वनः**) मार्ग के (**परमम्**) उत्तम प्राप्त होने योग्य को प्राप्त हुए (**नः**) हम लोगों को (**रेकु**) शङ्कायुक्त (**पदम्**) प्राप्त होने योग्य स्थान के (**न**) तुल्य (**नः**) हम लोगों के (**निदानाः**) निन्दा करते हुए (**अस्य**) इस संसार के मध्य में हों, उनको त्याग के (**अगन्म**) प्राप्त हुए वह क्या है॥१२॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे विद्वानो! हम लोगों में क्या यश? क्या सुन्दर वस्तु? और कौन लोग हम लोगों की निन्दा करने वाले? और क्या शङ्का करने योग्य वस्तु? और क्या प्राप्त होने योग्य स्थान है? इनके उत्तर कहो॥१२॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**का मर्यादा वयुना कद्ध वाममच्छा गमेम रघवो न वाजम्।**

**कदा नो देवीरमृतस्य पत्नीः सूरो वर्णेन ततनन्नुषासः॥१३॥**

**का। मर्यादा। वयुना। कत्। ह। वामम्। अच्छ। गमेम। रघवः। न। वाजम्। कदा। नः। देवीः। अमृतस्य। पत्नीः। सूरः। वर्णेन। ततनन्। उषसः॥१३॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**का**) (**मर्य्यादा**) (**वयुना**) कर्माणि (**कत्**) कदा (**ह**) खलु (**वामम्**) प्रशस्तवस्तु (**अच्छ**) सम्यक्। अत्र **संहितायामि**ति दीर्घः। (**गमेम**) प्राप्नुयाम (**रघवः**) सद्यः कारिणः (**न**) इव (**वाजम्**) विज्ञानम् (**कदा**) (**नः**) अस्मान् (**देवीः**) देदीप्यमानाः (**अमृतस्य**) नाशरहितस्य (**पत्नीः**) स्त्रीवद्वर्त्तमानाः (**सूरः**) सूर्य्यः (**वर्णेन**) (**ततनन्**) तनिष्यन्ति (**उषासः**) प्रभातान्॥१३॥

**अन्वयः**-हे विद्वांसो! नोऽस्माकं का मर्य्यादा कानि वयुना रघवो वाजं वामं कद्धाच्छ गमेम कदा सूरोऽमृतस्य देवीः पत्नीरुषासो न इव वर्णेन ततनन्॥१३॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। मनुष्या आप्तविद्वांसं मनुष्येण कर्त्तव्यानि कर्माणि प्रापणीयं पदं पृच्छेयुर्भवान् सूर्य्ये प्रातर्वेलामिवाऽस्मान् कदा विदुषः सम्पादयिष्यतीति पृच्छेयुः॥१३॥

**पदार्थः**-हे विद्वानो! (**नः**) हम लोगों की (**का**) कौन (**मर्य्यादा**) प्रतिष्ठा और कौन (**वयुना**) कर्म्म हम लोग (**रघवः**) शीघ्र करने वालों के (**वाजम्**) विज्ञान और (**वामम्**) उत्तम वस्तु को (**कत् ह**) कभी (**अच्छ**) उत्तम प्रकार (**गमेम**) प्राप्त होवें और (**कदा**) कब (**सूरः**) सूर्य्य (**अमृतस्य**) नाशरहित काल की (**देवीः**) प्रकाशमान (**पत्नीः**) स्त्रियों के सदृश वर्त्तमान (**उषासः**) प्रातर्वेलाओं के (**न**) सदृश आप (**वर्णेन**) तेज से (**ततनन्**) विस्तृत करेंगे॥१३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। मनुष्य लोग यथार्थवादी विद्वान् से मनुष्य के करने योग्य कर्म्मों और प्राप्त होने योग्य स्थान को पूछें कि आप सूर्य्य में प्रातःकाल के सदृश हम लोगों को कब विद्वान् करोगे? ऐसा पूछें॥१३॥

**अथ समाधातृविषयमाह॥**

अब समाधाता के विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अनिरेण वचसा फल्ग्वेन प्रतीत्येन कृधुनातृपासः।**

**अधा ते अग्ने किमिहा वदन्त्यनायुधास आसता सचन्ताम्॥१४॥**

**अनिरेण। वचसा। फल्ग्वेन। प्रतीत्येन। कृधुना। अतृपासः। अध। ते। अग्ने। किम्। इह। वदन्ति। अनायुधासः। असता। सचन्ताम्॥१४॥**

**पदार्थः**-(**अनिरेण**) अरमणीयेन (**वचसा**) वचनेन (**फल्ग्वेन**) महता (**प्रतीत्येन**) प्रतीतौ भवेन (**कृधुना**) ह्रस्वेनाऽल्पेन। (**अतृपासः**) अतृप्ताः सन्तः (**अध**) अथ। अत्र **निपातस्य चे**ति दीर्घः। (**ते**) (**अग्ने**) विद्वन् (**किम्**) (**इह**) अस्मिन् संसारे जन्मनि वा। अत्र **निपातस्य चे**ति दीर्घः। (**वदन्ति**) (**अनायुधासः**) अविद्यमानायुधाः (**आसता**) अवर्त्तमानेन। अत्र**ान्येषामपी**त्याद्यचो दीर्घः। (**सचन्ताम्**) प्राप्नुवन्तु॥१४॥

**अन्वयः**-हे अग्ने विद्वन्! येऽनिरेण प्रतीत्येन फल्ग्वेन कृधुना वचसाऽतृपास आसताऽनायुधास इवेह किं वदन्त्यध ते किं सचन्तामित्यस्योत्तरं ब्रूत॥१४॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-यदि श्रोतार उपदेशेन प्राप्तोत्तराः सन्तुष्टा न स्युस्ते तावत्पृच्छन्तु यदा प्राप्तसमाधानाः स्युस्तदा तत्कर्म्मारभन्ताम्॥१४॥

**पदार्थः**-हे **(अग्ने)** विद्वान् पुरुष! जो **(अनिरेण)** नहीं रमने योग्य **(प्रतीत्येन)** प्रतीति में प्रसिद्ध हुए **(फल्वेन)** बड़े **(कृधुना)** छोटे **(वचसा)** वचन से **(अतृपासः)** अतृप्त होते हुए **(आसता)** नहीं वर्त्तमान बल आदि से **(अनायुधासः)** विना शस्त्र-अस्त्र वालों के सदृश **(इह)** इस संसार वा इस जन्म में **(किम्)** क्या **(वदन्ति)** कहते हैं **(अध)** इसके अनन्तर **(ते)** आपके लिये किसे **(सचन्ताम्)** प्राप्त होवें, इसका उत्तर कहिये॥१४॥

**भावार्थः**-जो श्रोता लोग उपदेश से उत्तर को प्राप्त हुए सन्तुष्ट न होवें, वे तब तक पूछें, जब कि समाधान को प्राप्त होवें, तब उस कर्म का आरम्भ करें॥१४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अस्य श्रिये समिधानस्य वृष्णो वसोरनीकं दम आ रुरोच।**

**रुशद्वसानः सुदृशीकरूपः क्षितिर्न राया पुरुवारो अद्यौत्॥१५॥३॥**

**अस्य। श्रिये। सम्ऽइधानस्य। वृष्णः। वसोः। अनीकम्। दमे। आ। रुरोच। रुशत्। वसानः। सुदृशीकऽरूपः। क्षितिः। न। राया। पुरुऽवारः। अद्यौत्॥१५॥**

**पदार्थः**-**(अस्य)** वर्त्तमानस्य **(श्रिये)** शोभनायै लक्ष्म्यै वा **(समिधानस्य)** देदीप्यमानस्य **(वृष्णः)** बलिष्ठस्य **(वसोः)** वासयितुः **(अनीकम्)** सैन्यम् **(दमे)** गृहे **(आ)** समन्तात् **(रुरोच)** रोचते **(रुशत्)** सुन्दरं रूपम् **(वसानः)** प्राप्तः **(सुदृशीकरूपः)** सुष्ठु दर्शनीयस्वरूपः **(क्षितिः)** पृथिवी **(न)** इव **(राया)** धनेन **(पुरुवारः)** बहुभिर्वरणीयस्वरूपः **(अद्यौत्)** प्रकाशते॥१५॥

**अन्वयः**-यो रुशद्वसानः सुदृशीकरूपः पुरुवारो राया क्षितिर्नाद्यौत् यस्य समिधानस्य वृष्णो वसो राज्ञो दमे श्रियेऽनीकमारुरोच। तस्या अस्य सर्वाणि समाधानानि सुखानि च भवन्ति॥१५॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। ये सुरूपवन्तः पृथिवीवत् क्षमादिगुणा बहु प्रतिष्ठिताश्चक्रवर्त्ति-राज्यश्रिया सुशोभिताः सन्तः सुशिक्षितां महाबलवतीं महतीं सेनामुन्नयन्ति तेषामेव चक्रवर्त्तिराज्यं संभाव्यते नेतरेषामिति॥१५॥

अत्राऽग्निमेधाविराजाऽध्यापकोपदेशकप्रच्छकसमाधातृगुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति पञ्चमं सूक्तं तृतीयो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-जो **(रुशत्)** सुन्दर रूप को **(वसानः)** प्राप्त **(सुदृशीकरूपः)** उत्तम प्रकार देखने योग्य स्वरूप से युक्त **(पुरुवारः)** सब से स्वीकार करने योग्य स्वरूप से शोभित तथा **(राया)** धन से



www.9009.co.in

**(क्षितिः)** पृथिवी के **(न)** समान **(अद्यौत्)** प्रकाशित होता है, जिस **(समिधानस्य)** प्रकाशमान **(वृष्णः)** बलिष्ठ **(वसोः)** वसाने वाले राजा के **(दमे)** गृह में **(श्रिये)** शोभा वा लक्ष्मी के लिये **(अनीकम्)** सेना **(आ)** सब प्रकार **(रुरोच)** सुन्दर है, उस सेना के और **(अस्य)** इस वर्त्तमान राजा के सम्पूर्ण समाधान और सुख होते हैं॥१५॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जो अच्छे रूपवान् पृथिवी के सदृश क्षमा आदि गुण वाले और प्रतिष्ठित चक्रवर्त्ती राजाओं की लक्ष्मी से शोभित हुए उत्तम प्रकार शिक्षित बड़ी बलवती बड़ी सेना को बढ़ाते हैं, उनका ही चक्रवर्त्ती राज्य संभावित होता है औरों का नहीं॥१५॥

इस सूक्त में बुद्धिमान् राजा, अध्यापक, उपदेशक, प्रश्नकर्त्ता और समाधानकर्त्ता के गुणवर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह पांचवां सूक्त और तीसरा वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

**अथैकादशर्चस्य षष्ठस्य सूक्तस्य वामदेव ऋषिः। अग्निर्देवता। १, ३, ५, ८, ११ विराट् त्रिष्टुप्। ७ निचृत्त्रिष्टुप्। १० त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः। २, ४, ९ भुरिक् पङ्क्तिः। ६ स्वराट् पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः॥**

***अथ विद्वद्विषयमाह॥***

अब ग्यारह ऋचा वाले छठे सूक्त का प्रारम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में विद्वानों के विषय को कहते हैं॥

**ऊर्ध्व ऊ षु णो अध्वरस्य होतरग्ने तिष्ठ देवताता यजीयान्।**

**त्वं हि विश्वमभ्यसि मन्म प्र वेधसश्चित्तिरसि मनीषाम्॥ १॥**

**ऊर्ध्वः। ऊम् इति। सु। नः। अध्वरस्य। होतः। अग्ने। तिष्ठ। देवऽताता। यजीयान्। त्वम्। हि। विश्वम्। अभि। असि। मन्म। प्र। वेधसः। चित्। तिरसि। मनीषाम्॥ १॥**

**पदार्थः**-(**ऊद्ध्वः**) उपर्य्यधिष्ठाता (**उ**) वितर्के (**सु**) शोभने (**नः**) अस्माकम् (**अध्वरस्य**) अहिंसनीयस्य धर्म्यस्य व्यवहारस्य (**होतः**) दातः (**अग्ने**) पावक इव विद्वन् (**तिष्ठ**) (**देवताता**) देवतातौ (**यजीयान्**) अतिशयेन यष्टा (**त्वम्**) (**हि**) यतः (**विश्वम्**) सर्वं जगत् (**अभि**) आभिमुख्ये (**असि**) भवसि (**मन्म**) विज्ञानम् (**प्र**) (**वेधसः**) मेधाविनो विपश्चितः (**चित्**) एव (**तिरसि**) तरसि (**मनीषाम्**) प्रज्ञाम्॥ १॥

**अन्वयः**-हे होतरग्ने! त्वं हि देवताता यजीयान्नोऽध्वरस्योद्ध्वो वेधसो विश्वं मन्माऽभ्यसि मनीषां चित् तिरसि स उ सु प्र तिष्ठ॥ १॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! ये विदुषां सकाशाद्विद्याः प्राप्य सर्वस्य रक्षकाः प्रज्ञाप्रदातारः स्युस्तेषामेव प्रतिष्ठां कुरुत॥ १॥

**पदार्थः**-हे (**होतः**) दानकर्त्ता (**अग्ने**) अग्नि के सदृश विद्वान्! (**हि**) जिससे (**त्वम्**) आप (**देवताता**) विद्वानों की पङ्क्ति में (**यजीयान्**) अत्यन्त यजन करने वाले (**नः**) हम लोगों के (**अध्वरस्य**) नहीं हिंसा करने योग्य धर्मयुक्त व्यवहार के (**ऊद्ध्वः**) ऊपर अधिष्ठाताजन (**वेधसः**) बुद्धिमान् विद्वान् के सम्बन्ध में (**विश्वम्**) सम्पूर्ण जगत् और (**मन्म**) विज्ञान के (**अभि**) सम्मुख (**असि**) होते और (**मनीषाम्, चित्**) उत्तम बुद्धि ही के (**तिरसि**) पार होते हो (**उ, सु, प्र, तिष्ठ**) सो ही स्थित हूजिये॥ १॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो लोग विद्वानों के समीप से विद्याओं को प्राप्त होकर सब के रक्षा करने और बुद्धि देने वाले होवें, उन्हीं लोगों की प्रतिष्ठा करो॥ १॥

**अथ विदुषां कर्त्तव्यमाह॥**

अब विद्वानों के कर्त्तव्य को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अमूरो होता न्यसादि विक्ष्वग्निर्मन्द्रो विदथेषु प्रचेताः।**



www.9009.co.in

**ऊर्ध्वं भानुं सवितेवाश्रेन्मेतेव धूमं स्तभायदुप द्याम्॥२॥**

**अमूरः। होता। नि। असादि। विक्षु। अग्निः। मन्द्रः। विदथेषु। प्रऽचेताः। ऊर्ध्वम्। भानुम्। सविताऽइव। अश्रेत्। मेताऽइव। धूमम्। स्तभायत्। उप। द्याम्॥२॥**

**पदार्थः**-(**अमूरः**) अमूढो विद्वान् सन्। अत्र वर्णव्यत्ययेन ढस्य रः। (**होता**) आदाता (**नि**) (**असादि**) (**विक्षु**) प्रजासु (**अग्निः**) पावक इव (**मन्द्रः**) आनन्दप्रदः (**विदथेषु**) सङ्ग्रामेषु (**प्रचेताः**) प्राज्ञः प्रज्ञापकः (**ऊद्ध्र्वम्**) उपरिस्थम् (**भानुम्**) किरणम् (**सवितेव**) सूर्य्य इव (**अश्रेत्**) आश्रयेत् (**मेतेव**) प्रमातेव (**धूमम्**) (**स्तभायत्**) स्तभ्नाति (**उप**) (**द्याम्**) प्रकाशम्॥२॥

**अन्वयः**-मनुष्यैर्योऽमूरो होता विक्षु विदथेष्वग्निरिव मन्द्रः प्रचेता द्यामूर्द्ध्वं भानुं सवितेव धूमं मेतेव स्तभायन् न्यायमश्रेत् स एव राज्यकर्म्मण्युप न्यसादि निषाद्येत तर्हि पुष्कलं सुखं प्राप्येत॥२॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। यदि मनुष्याः सूर्य्यवत्प्रतापिनमग्निवद् दुष्टप्रदाहकं न्यायविनयाभ्यां प्रजासु चन्द्र इव संग्रामे विजेतारं राजानं संस्थापयेयुस्तर्हि कदाचिद्दुःखं न प्राप्नुयुः॥२॥

**पदार्थः**-मनुष्यों को चाहिये कि जो (**अमूरः**) मूर्खपन से रहित विद्वान् जन होता हुआ (**होता**) ग्रहण करने वाला (**विक्षु**) प्रजाओं और (**विदथेषु**) संग्रामों में (**अग्निः**) अग्नि के सदृश (**मन्द्रः**) आनन्द देने वाला (**प्रचेताः**) बुद्धिमान् वा बुद्धिदाता (**द्याम्**) प्रकाश और (**उद्ध्र्वम्**) ऊपर वर्त्तमान (**भानुम्**) किरण को (**सवितेव**) सूर्य्य के सदृश (**धूमम्**) धुएं को (**मेतेव**) यथार्थ ज्ञान वाले के सदृश (**स्तभायत्**) रोकता है, न्याय का (**अश्रेत्**) आश्रय करे, वही राज्य कर्म्म में (**उप, नि, असादि**) स्थित होवे तो बहुत सुख को प्राप्त होवे॥२॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जो मनुष्य सूर्य्य के सदृश प्रतापी अग्नि के सदृश दुष्टों के दाहक और न्याय और नम्रता से प्रजाओं में चन्द्रमा के सदृश संग्राम में जीतने वाले राजा को संस्थापित करें तो कभी दुःख को न प्राप्त होवें॥२॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**यता सुजूर्णी रातिनी घृताची प्रदक्षिणिद्देवतातिमुराणः।**

**उदु स्वरुर्नवजा नाक्रः पश्वो अनक्ति सुधितः सुमेकः॥३॥**

**यता। सुऽजूर्णिः। रातिनी। घृताची। प्रऽदक्षिणित्। देवऽतातिम्। उराणः। उत्। ऊम् इति। स्वरुः। नवऽजाः। न। अक्रः। पश्वः। अनक्ति। सुऽधितः। सुऽमेकः॥३॥**

**पदार्थः**-(**यता**) प्राप्ता (**सुजूर्णिः**) सुष्ठु शीघ्रकारिणी (**रातिनी**) बहवो राता दातारो विद्यन्ते यस्याः सा (**घृताची**) रात्रिः। **घृताचीति रात्रिनामसु पठितम्।** (निघं०१.७) (**प्रदक्षिणित्**) या प्रदक्षिणमेति सा। अत्र **वाच्छन्दसी**त्यलोपः। (**देवतातिम्**) दिव्यगुणान्विताम् (**उराणः**) य उरून् बहूननिति प्राणयति सः



www.9009.co.in

**(उत्)** **(उ)** **(स्वरुः)** उपदेष्टा **(नवजाः)** नवेषु सुनवीनेषु जातः **(न)** इव **(अक्रः)** अक्रमिता **(पश्वः)** पशून् **(अनक्ति)** कामयते **(सुधितः)** सुहितः **(सुमेकः)** सुष्ठु प्रकाशमानः॥३॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथा सुजूर्णिर्यता रातिनी प्रदक्षिणिद् घृताची देवतातिमुदनक्ति यथा तामुराणस्सुधितस्सुमेकोऽक्रो नवजाः सूर्यः स्वरुर्न उदनक्ति तथा विद्वान् वर्त्तेत स उ पश्वो न हिंस्यात्॥३॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। उपदेशका रात्रौ दिने सर्वैः कर्त्तव्यां परिचर्य्यामुपदिशेयुर्येन शयनजागरणादियुक्ताहारविहारान् कृत्वा सिद्धहिता भवेयुः॥३॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे **(सुजूर्णिः)** उत्तम प्रकार शीघ्रता करने वाली **(यता)** प्राप्त **(रातिनी)** बहुत देने वाले जिसके ऐसी **(प्रदक्षिणित्)** दहिनी ओर प्राप्त होने वाली **(घृताची)** रात्रि **(देवतातिम्)** श्रेष्ठ गुणों से युक्त वेला को **(उत्, अनक्ति)** शोभा करती है और जैसे उसको **(उराणः)** बहुतों को जिलाने वाला **(सुधितः)** उत्तम प्रकार धारण किये हुए **(सुमेकः)** सुन्दर प्रकाशमान **(अक्रः)** नहीं किञ्चित् चलने वाला, किन्तु वेग से जाने वाला **(नवजाः)** नवीनों में उत्पन्न सूर्य्य **(स्वरुः)** उपदेश देनेवाले के **(न)** समान शोभा करता है, वैसे विद्वान् वर्त्ताव करें **(उ)** और वह **(पश्वः)** पशुओं की न हिंसा करे॥३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। उपदेशक लोग रात्रि और दिन में सभों के करने योग्य सेवा का उपदेश देवें, जिससे कि शयन जागरण आदि से युक्त आहार और विहारों को करके अपने हितों को सिद्ध करने वाले होवें॥३॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**स्तीर्णे बर्हिषि समिधाने अग्ना ऊर्ध्वो अध्वर्युर्जुजुषाणो अस्थात्।**

**पर्यग्निः पशुपा न होता त्रिविष्ट्येति प्रदिव उराणः॥४॥**

**स्तीर्णे। बर्हिषि। सम्ऽइधाने। अग्नौ। ऊर्ध्वः। अध्वर्युः। जुजुषाणः। अस्थात्। परि। अग्निः। पशुऽपाः। न। होता। त्रिऽविष्टि। एति। प्रऽदिवः। उराणः॥४॥**

**पदार्थः**-**(स्तीर्णे)** आच्छादिते **(बर्हिषि)** अन्तरिक्षे **(समिधाने)** प्रदीप्ते **(अग्नौ)** सूर्य्यरूपे **(ऊर्ध्वः)** उत्कृष्टः **(अध्वर्युः)** य आत्मनोऽध्वरमहिंसनीयं व्यवहारं कर्त्तुमिच्छुः **(जुजुषाणः)** सेवमानः **(अस्थात्)** तिष्ठेत् **(परि)** **(अग्निः)** **(पशुपाः)** यः पशून् पाति **(न)** इव **(होता)** यज्ञानुष्ठाता **(त्रिविष्टि)** आकाशे **(एति)** गच्छति **(प्रदिवः)** सुप्रकाशान् **(उराणः)** बहु कुर्वन्॥४॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथा समिधाने बर्हिषि स्तीर्णे अग्नावुराण ऊर्ध्वोऽग्निः सूर्य्यः पर्य्यस्थात् त्रिविष्टि प्र दिव एति पशुपा न होताऽस्ति तथैव जुजुषाणोऽध्वर्युर्वर्त्तेत॥४॥

**भावार्थः**-अत्रोपमावाचकलुप्तोपमालङ्कारौ। ये अहिंसादिकर्माणि कृत्वा विद्वांसो भूत्वा परोपकारिणः स्युस्तेऽन्तरिक्षे सूर्य्य इव सुप्रकाशिता भवेयुः॥४॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे **(समिधाने)** प्रदीप्त **(बर्हिषि)** अन्तरिक्ष में वा **(स्तीर्णे)** आच्छादित **(अग्नौ)** सूर्य्यरूप अग्नि में **(उराणः)** बहुत कार्य्य करता हुआ **(ऊर्ध्वः)** उत्तम **(अग्निः)** सूर्य्याग्नि **(परि, अस्थात्)** सब ओर से स्थित हो वा **(त्रिविष्टि)** आकाश में **(प्रदिवः)** उत्तम प्रकाशों को **(एति)** प्राप्त होता है **(पशुपाः)** पशुओं की रक्षा करने वाले के **(न)** सदृश **(होता)** यज्ञ कराने वाला है, वैसे ही **(जुजुषाणः)** सेवा करते हुए **(अध्वर्युः)** अपने को अहिंसनीय व्यवहार की इच्छा करने वाले वर्त्ताव करो॥४॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमा वाचकलुप्तोपमालङ्कार हैं। जो लोग अहिंसा आदि कर्म्मों को कर और विद्वान् होकर परोपकारी हों, वे अन्तरिक्ष में सूर्य्य के सदृश उत्तम प्रकार प्रकाशित होवें॥४॥

**अथेश्वरविषयमाह॥**

अब ईश्वरविषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**परि त्मना मितद्रुरेति होताग्निर्मन्द्रो मधुवचा ऋतावा।**

**द्रवन्त्यस्य वाजिनो न शोका भयन्ते विश्वा भुवना यदभ्राट्॥५॥४॥**

**परि। त्मना। मितऽद्रुः। एति। होता। अग्निः। मन्द्रः। मधुऽवचाः। ऋतऽवा। द्रवन्ति। अस्य। वाजिनः। न। शोकाः। भयन्ते। विश्वा। भुवना। यत्। अभ्राट्॥५॥**

**पदार्थः**-**(परि) (त्मना)** आत्मना **(मितद्रुः)** यो मितं द्रवति गच्छति सः **(एति)** प्राप्नोति **(होता)** यज्ञकर्त्ता **(अग्निः)** पावक इव **(मन्द्रः)** आनन्दप्रद आनन्दितः **(मधुवचाः)** मधुरवाक् **(ऋतावा)** सत्यस्य विभाजकः **(द्रवन्ति)** धावन्ति **(अस्य) (वाजिनः)** अश्वाः **(न)** इव **(शोकाः)** प्रकाशाः **(भयन्ते)** बिभ्यति। अत्र व्यत्ययेनात्मनेपदं शपो लुक् न। **(विश्वा)** सर्वाणि **(भुवना)** भूताधिकरणानि **(यत्)** यस्मात् **(अभ्राट्)** भ्राजते॥५॥

**अन्वयः**-यथास्य सूर्य्यस्य वाजिनो न शोका द्रवन्ति योऽभ्राड् यद्विश्वा भुवना भयन्ते तद्वद्वर्त्तमान ऋतावा मधुवचा अग्निरिव होता मन्द्रो मितद्रुस्त्मना पर्य्येति सः सर्वं सुखं प्राप्नोति॥५॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे मनुष्याः! यस्य परमात्मनः सर्वत्र प्रकाशो यस्मात्सर्वे बिभ्यति तस्य विज्ञानाय सत्याचारो योगाभ्यासश्च सर्वैः कर्त्तव्यः॥५॥

**पदार्थः**-जैसे **(अस्य)** इस सूर्य के **(वाजिनः)** घोड़े के **(न)** तुल्य **(शोकाः)** प्रकाश **(द्रवन्ति)** दौड़ते हैं जो **(अभ्राट्)** दीप्त होता है **(यत्)** जिससे **(विश्वा)** सम्पूर्ण **(भुवना)** जीवों के ठहरने के अधिकरण लोकलोकान्तर **(भयन्ते)** कंपते हैं, उस प्रकार वर्त्तमान जो पुरुष **(ऋतावा)** सत्य का विभाग करने वाला **(मधुवचाः)** मधुरवाणी युक्त **(अग्निः)** अग्नि के सदृश **(होता)** यज्ञ करने वाला **(मन्द्रः)** आनन्ददाता वा आनन्दित **(मितद्रुः)** परिमाणपूर्वक चलने वाला **(त्मना)** अपने से **(परि, एति)** प्राप्त होता है, वह सुख को प्राप्त होता है॥५॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जिस परमात्मा का सब जगह प्रकाश और जिससे सब डरते हैं, उसके विज्ञान के लिये सत्य का आचरण और योगाभ्यास सब को करना चाहिये॥५॥

**अथेश्वरतया राजगुणानाह॥**

अब ईश्वरता लेकर राजगुणों को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**भद्रा ते अग्ने स्वनीक संदृग्घोरस्य सतो विषुणस्य चारुः।**

**न यत्ते शोचिस्तमसा वरन्त न ध्वस्मानस्तन्वी३ रेप आ धुः॥६॥**

**भद्रा। ते। अग्ने। सुऽअनीक। सम्ऽदृक्। घोरस्य। सतः। विषुणस्य। चारुः। न। यत्। ते। शोचिः। तमसा। वरन्त। न। ध्वस्मानः। तन्वि। रेपः। आ। धुरिति धुः॥६॥**

**पदार्थः**-(**भद्रा**) कल्याणकारिणी (**ते**) तव (**अग्ने**) विद्युदिव वर्त्तमान (**स्वनीक**) उत्तमसैन्य (**संदृक्**) समानदृष्टिः (**घोरस्य**) दुष्टस्य (**सतः**) सत्पुरुषस्य (**विषुणस्य**) विषमस्य (**चारुः**) (**न**) (**यत्**) (**ते**) (**शोचिः**) दीप्तिः (**तमसा**) रात्र्या (**वरन्त**) निवारयन्ति (**न**) (**ध्वस्मानः**) ध्वंसकाः शत्रवः (**तन्वि**) विस्तीर्णा (**रेपः**) अपराधम् (**आ**) (**धुः**) समन्ताद् दध्युः॥६॥

**अन्वयः**-हे स्वनीकाग्ने! या ते घोरस्य सतो विषुणस्य चारुर्भद्रा संदृगस्ति यत्ते शोचिस्तमसा ध्वस्मानो न वरन्त या ते तन्वि नीतिस्तया रेपो न आ धुः स त्वमस्माकं राजा भव॥६॥

**भावार्थः**-यस्य राज्ञः पक्षपातरहिता प्रवृत्तिर्यस्य विस्तीर्णा नीतिरविहता वर्त्तते तस्य राज्ये कोऽप्यपराधं कर्त्तुं नेच्छेत्॥६॥

**पदार्थः**-हे (**स्वनीक**) उत्तम सेनायुक्त (**अग्ने**) बिजुली के समान वर्त्तमान! जो (**ते**) आपकी (**घोरस्य**) दुष्ट (**सतः**) श्रेष्ठ पुरुष की तथा (**विषुणस्य**) विषम की (**चारुः**) सुन्दर (**भद्रा**) कल्याण करने वाली (**संदृक्**) समान दृष्टि है (**यत्**) जो (**ते**) आपका (**शोचिः**) प्रकाश (**तमसा**) रात्रि से (**ध्वस्मानः**) नाश करने वाले शत्रु (**न**) नहीं (**वरन्त**) निवारण करते हैं, जो आपकी (**तन्वि**) विस्तीर्ण नीति उससे (**रेपः**) अपराध (**न**) नहीं (**आ, धुः**) सब प्रकार धारण करे, वह आप हम लोगों के राजा हूजिये॥६॥

**भावार्थः**-जिस राजा की पक्षपातरहित प्रवृत्ति और जिसकी विस्तीर्ण नीति अविच्छिन्न वर्त्तमान है, उसके राज्य में कोई भी अपराध करने की इच्छा न करे॥६॥

**अथेश्वरभावे मातापित्रोः सेवाधर्ममाह॥**

अब ईश्वरभाव में माता पिता के सेवाधर्म को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**न यस्य सातुर्जनितोरवारि न मातरापितरा नू चिदिष्टौ।**

**अधा मित्रो न सुधितः पावको३ग्निर्दीदाय मानुषीषु विक्षु॥७॥**



www.9009.co.in

न। यस्यं। सातुः। जनितोः। अवारि। न। मातरापितरा। नु। चित्। इष्टौ। अर्ध। मित्रः। न। सुऽधितः। पावकः। अग्निः। दीदाय। मानुषीषु। विक्षु॥७॥

**पदार्थः**-(**न**) (**यस्य**) (**सातुः**) सत्याऽसत्ययोर्विभाजकस्य (**जनितोः**) जनकयोः (**अवारि**) व्रियेत (**न**) (**मातरापितरा**) जनकजनन्यौ (**नु**) सद्यः (**चित्**) अपि (**इष्टौ**) पूजनीयौ (**अधा**) अथ। अत्र **निपातस्य चे**ति दीर्घः। (**मित्रः**) सखा (**न**) इव (**सुधितः**) सुष्ठु हितो हितकारी (**पावकः**) पवित्रः (**अग्निः**) वह्निरिव (**दीदाय**) दीप्यते (**मानुषीषु**) मनुष्यसम्बन्धिनीषु (**विक्षु**) प्रजासु॥७॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यस्य सातुर्जनितोः प्रियं नावारि यस्य चिन्मातरापितरेष्टौ नावारि। स दुःख्यधा यस्य सत्कृतौ भवेतां सुधितो मित्रो नाग्निरिव पावको मानुषीषु विक्षु नु दीदाय॥७॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यस्मिन्विद्यमाने पुत्रे मातापित्रोर्दुःखं जायते सत्कारो न भवति स भाग्यहीनः सततं पीडितो भवति यस्य च सुसेवया प्रीतौ भवतस्तस्य प्रजासु प्रशंसा सततं सुखञ्च जायते॥७॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! (**यस्य**) जिस (**सातुः**) सत्य और असत्य के विभाग करने वाले के (**जनितोः**) माता और पिता का प्रिय (**न**) नहीं (**अवारि**) स्वीकार किया जाता है और (**चित्**) जिसके (**मातारापितरा**) माता और पिता (**इष्टौ**) पूजा करने योग्य (**न**) नहीं स्वीकार किये जाते हैं, वह दुःखी होता (**अधा**) इसके अनन्तर जिसके माता और पिता सत्कृत होवें (**सुधितः**) वह उत्तम प्रकार हितकारी (**मित्रः**) मित्र के (**न**) और (**अग्निः**) अग्नि के सदृश (**पावकः**) पवित्र (**मानुषीषु**) मनुष्य संबन्धिनी (**विक्षु**) प्रजाओं में (**नु**) शीघ्र (**दीदाय**) प्रकाशित होता है॥७॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जिस पुत्र के विद्यमान रहने पर माता और पिता को दुःख होता और सत्कार नहीं होता है, वह भाग्यहीन निरन्तर पीड़ित होता है और जिस पुत्र की उत्तम सेवा से माता पिता प्रसन्न होते हैं, उसकी प्रजाओं में प्रशंसा और उसको सुख होता है॥७॥

**पुनर्विद्वद्विषयमाह॥**

फिर विद्वानों के विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**द्विर्यं पञ्च जीजनन्त्संवसानाः स्वसारो अग्निं मानुषीषु विक्षु।**
**उषर्बुधमथर्यो३न दन्तं शुक्रं स्वासं परशुं न तिग्मम्॥८॥**

द्विः। यम्। पञ्च। जीजनन्। सम्ऽवसानाः। स्वसारः। अग्निम्। मानुषीषु। विक्षु। उषःऽबुधम्। अथर्यः। न। दन्तम्। शुक्रम्। सुऽआसम्। परशुम्। न। तिग्मम्॥८॥

**पदार्थः**-(**द्विः**) द्विवारम् (**यम्**) (**पञ्च**) (**जीजनन्**) जनयन्ति (**संवसानाः**) सम्यगाच्छादकाः (**स्वसारः**) अङ्गुलयः (**अग्निम्**) (**मानुषीषु**) मनुष्याणामिमासु (**विक्षु**) (**उषर्बुधम्**) य उषसि बुध्यते तम्



www.9009.co.in

(**अथर्यः**) अहिंसिताः स्त्रियः (**न**) इव (**दन्तम्**) (**शुक्रम्**) शुद्धम् (**स्वासम्**) शोभनं मुखम् (**परशुम्**) कुठारम् (**न**) इव (**तिग्मम्**) तीव्रम्॥८॥

**अन्वयः**-ये विद्वांसो मानुषीषु विक्ष्वग्निं संवसानाः पञ्च स्वसारोऽथर्यः शुक्रं दन्तं स्वासं न तिग्मं परशुं न यमुषर्बुधं द्विर्जीजनंस्ते सर्वाणि कार्य्याणि साद्धुं शक्नुयुः॥८॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यथाऽङ्गुलिभिस्सर्वाणि कर्म्माणि सिध्यन्ति तथैव रात्रेः पश्चिमे याम उत्थाय प्रजानां हितानि साध्नुवन्तु। तीक्ष्णः कुठार इव दुःखानि छित्वा युवतयः शुद्धं मुखं दन्तं कुर्वन्तीव प्रजाः शोधयित्वा सुखं दत्वा द्विजान् विद्याजन्मयुक्तान् सम्पादयन्तु॥८॥

**पदार्थः**-जो विद्वान् लोग (**मानुषीषु**) मनुष्यसम्बन्धिनी (**विक्षु**) प्रजाओं में (**अग्निम्**) अग्नि को (**संवसानाः**) उत्तम प्रकार आच्छादन करने वाले जैसे (**पञ्च**) पांच (**स्वसारः**) अंगुलियाँ वा (**अथर्यः**) नहीं हिंसित स्त्रियाँ (**शुक्रम्**) शुद्ध (**दन्तम्**) दांत और (**स्वासम्**) सुन्दर मुख को (**न**) वैसे और जैसे (**तिग्मम्**) तीव्र (**परशुम्**) कुठार को (**न**) वैसे (**यम्**) जिस (**उषर्बुधम्**) प्रातःकाल में जानने वाले को (**द्विः**) दो बार (**जीजनन्**) उत्पन्न करते हैं, वे सम्पूर्ण कार्य्य को सिद्ध कर सकें॥८॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जैसे अंगुलियों से सम्पूर्ण कार्य्य सिद्ध होते हैं, वैसे ही रात्रि के पिछले प्रहर में उठ के प्रजाओं के हित को सिद्ध करो। तीक्ष्ण कुठार के सदृश दुःखों को काट के युवावस्था विशिष्ट स्त्रियाँ शुद्ध मुख और दांत को करतीं, उनके सदृश प्रजाओं को शुद्ध कर और सुख देकर द्विजों को विद्या के जन्म से युक्त करो॥८॥

**अथ प्रजाया ईश्वरत्वमाह॥**

अब प्रजा के ईश्वर विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**तव त्ये अ॑ग्ने हरितो॑ घृतस्ना रोहि॑तास ऋज्वञ्चः॒ स्वञ्चः॑।**

**अरुषासो॒ वृष॑ण ऋजुमुष्का आ दे॒वता॑तिमह्वन्त दस्माः॥९॥**

**तव॑। त्ये। अग्ने॒। हरि॑तः। घृतऽस्नाः। रोहि॑तासः। ऋजुऽअञ्चः॑। सुऽअञ्चः॑। अरुषासः॑। वृष॑णः। ऋजुऽमुष्काः। आ। दे॒वऽता॑तिम्। अह्वन्त। दस्माः॥९॥**

**पदार्थः**-(**तव**) (**त्ये**) ते (**अग्ने**) राजन् (**हरितः**) अङ्गुलयः। **हरित इत्यङ्गुलिनामसु पठितम्।** (निघं०२.५) (**घृतस्नाः**) याभिर्घृतमाज्यमुदकं वा स्नान्ति ताः (**रोहितासः**) वर्द्धिकाः (**ऋज्वञ्चः**) याभिर्ऋजुमञ्चन्ति (**स्वञ्चः**) याभिस्सुष्ठ्वञ्चन्ति गच्छन्ति प्राप्नुवन्ति वा (**अरुषासः**) सुशिक्षितास्तुरङ्गाः (**वृषणः**) बलिष्ठाः (**ऋजुमुष्काः**) य ऋजुं मार्गमुष्णन्ति ते (**आ**) (**देवतातिम्**) देवान् (**अह्वन्त**) आह्वयन्ते (**दस्माः**) दुःखोपक्षयितारः॥९॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! यास्तव रोहितासो घृतस्ना ऋज्वञ्चः स्वञ्चो हरितो वृषण ऋजुमुष्का दस्मा अरुषास इव देवतातिमाह्वन्त। य एताभिः कर्म्माणि कर्तुं जानन्ति तास्त्ये च त्वया सम्प्रयोजनीयाः॥९॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। येऽश्वैरिव स्वाङ्गुलिभिः कर्म्माणि कृत्वैश्वर्यमुन्नयन्ति ते क्षीणदुःखा जायन्ते॥९॥

**पदार्थः**-हे **(अग्ने)** राजन्! जो **(तव)** आपकी **(रोहितासः)** बढ़ाने वाली **(घृतस्नाः)** जिनसे घृत वा जल शुद्ध और **(ऋज्वञ्चः)** सीधा सत्कार करते तथा **(स्वञ्चः)** उत्तम प्रकार चलते वा प्राप्त होते हैं वह **(हरितः)** अंगुली **(वृषणः)** बलिष्ठ **(ऋजुमुष्काः)** सरल मार्ग को चलने वाले **(दस्माः)** दुःख के नाशकर्त्ता **(अरुषासः)** उत्तम प्रकार शिक्षित घोड़ों के सदृश **(देवतातिम्)** विद्वानों को **(आ, अह्वन्त)** बुलाते और जो इन से कर्म्मों को करना जानते हैं, वह अङ्गुली और **(त्ये)** वे मनुष्य आपको संप्रयुक्त करने योग्य हैं॥९॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो लोग घोड़ों के सदृश अपनी अङ्गुलियों से कर्म्मों को करके ऐश्वर्य्य की वृद्धि करते हैं, वे दुःखों से रहित होते हैं॥९॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**ये ह त्ये ते सहमाना अयासस्त्वेषासो अग्ने अर्चयश्चरन्ति।**

**श्येनासो न दुवसनासो अर्थं तुविष्वणसो मारुतं न शर्धः॥१०॥**

**ये। ह। त्ये। ते। सहमानाः। अयासः। त्वेषासः। अग्ने। अर्चयः। चरन्ति। श्येनासः। न। दुवसनासः। अर्थम्। तुविऽस्वनसः। मारुतम्। न। शर्धः॥१०॥**

**पदार्थः**-**(ये)** **(ह)** खलु **(त्ये)** अन्ये **(ते)** तव **(सहमानाः)** सुखदुःखादीनां सोढारः **(अयासः)** प्राप्तविज्ञानासः **(त्वेषासः)** प्रकाशमानाः **(अग्ने)** पावकवद्वर्त्तमान **(अर्चयः)** सत्क्रियाः **(चरन्ति)** प्राप्नुवन्ति गच्छन्ति वा **(श्येनासः)** श्येनः पक्षीव सद्यो गन्तारोऽश्वाः **(न)** इव **(दुवसनासः)** परिचारकाः **(अर्थम्)** द्रव्यम् **(तुविष्वणसः)** ये तुवींषि बलानि वन्वते याचन्ते ते **(मारुतम्)** मरुतामिदम् **(न)** इव **(शर्धः)** बलम्॥१०॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! ये ते सहमाना अयासस्त्वेषासः श्येनासो न दुवसनासस्तुविष्वणसो मारुतं शर्धो नाऽर्चयोऽर्थञ्चरन्ति त्ये ह त्वया सत्कर्त्तव्या भवन्ति॥१०॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! ये क्षमान्विता धर्म्यकर्माचरणेन प्रकाशमानाः सत्कीर्त्तयोऽश्ववत्कार्य्यकरा बलवन्तः स्युस्ते सत्कर्त्तव्या भवेयुः॥१०॥

**पदार्थः**-हे **(अग्ने)** अग्नि के सदृश वर्त्तमान! **(ये)** जो लोग **(ते)** आपके **(सहमानाः)** सुख दुःख आदि व्यवहारों के सहनेवाले **(अयासः)** विज्ञान को प्राप्त **(त्वेषासः)** प्रकाशमान **(श्येनासः)** और बाजपक्षी के सदृश शीघ्र चलनेवाले घोड़ों के **(न)** सदृश **(दुवसनासः)** लेचलने और **(तुविष्वणसः)** बलों के मांगने वाले **(मारुतम्)** पवनसम्बन्धी **(शर्धः)** बल को **(न)** जैसे **(अर्चयः)** उत्तम क्रिया वैसे



www.9009.co.in

**(अर्थम्)** द्रव्य को **(चरन्ति)** प्राप्त होते हैं **(त्ये)** वे **(ह)** ही अन्य जन आपको सत्कार करने योग्य होते हैं॥१०॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जो लोग क्षमा से युक्त, धर्म्म सम्बन्धी कर्म्म के आचरण से प्रकाशमान, उत्तम यशवाले, घोड़े के सदृश कार्य्यकर्ता और बलवान् हों, वे सत्कार करने योग्य होवें॥१०॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अकारि ब्रह्म समिधान तुभ्यं शंसात्युक्थं यजते व्यू धाः।**

**होतारमग्निं मनुषो नि षेदुर्नमस्यन्त उशिजः शंसमायोः॥११॥५॥**

**अकारि। ब्रह्म। सम्ऽइधान। तुभ्यम्। शंसाति। उक्थम्। यजते। वि। ऊम् इति। धाः। होतारम्। अग्निम्। मनुषः। नि। सेदुः। नमस्यन्तः। उशिजः। शंसम्। आयोः॥११॥**

**पदार्थः**-**(अकारि)** क्रियते **(ब्रह्म)** महद्धनम् **(समिधान)** देदीप्यमान **(तुभ्यम्)** **(शंसाति)** प्रशंसेत् **(उक्थम्)** स्तोतुमर्हम् **(यजते)** सङ्गच्छते **(वि)** **(उ)** वितर्के **(धाः)** धेहि **(होतारम्)** दातारम् **(अग्निम्)** पावकमिव **(मनुषः)** मनुष्याः **(नि)** **(सेदुः)** निषीदन्ति **(नमस्यन्तः)** नम्रतां कुर्वन्तः **(उशिजः)** कामयमानाः **(शंसम्)** प्रशंसाम् **(आयोः)** जीवनस्य॥११॥

**अन्वयः**-हे समिधान विद्वन्! ये नमस्यन्त उशिजो मनुष आयोः शंसं होतारमग्निं निषेदुर्य्यस्तुभ्यमुक्थं ब्रह्म शंसाति यजते यैस्त्वमैश्वर्य्यमकारि तान् व्युधाः॥११॥

**भावार्थः**-हे विद्वन् राजन् वा! ये त्वदर्थमैश्वर्य्यं कामयमानाः परमेश्वरं विदुषश्च नमस्यन्ति ते सततं प्रशंसिता जायन्त इति॥११॥

अत्र विद्वदीश्वरगुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति षष्ठं सूक्तं पञ्चमो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे **(समिधान)** प्रकाशमान विद्वन्! जो **(नमस्यन्तः)** नम्रता और **(उशिजः)** कामना करते हुए **(मनुषः)** मनुष्य **(आयोः)** जीवन की **(शंसम्)** प्रशंसा को और **(होतारम्)** देने वाले को **(अग्निम्)** अग्नि के सदृश **(नि, सेदुः)** प्राप्त होते हैं और [जो] **(तुभ्यम्)** आपके लिये **(उक्थम्)** स्तुति करने योग्य **(ब्रह्म)** बड़े धन की **(शंसाति)** प्रशंसा करे **(यजते)** तथा विशेषता ही से मिलते हुए के लिये जिनसे आप ने ऐश्वर्य्य **(अकारि)** किया उनको **(वि, उ, धाः)** धारण कीजिये॥११॥

**भावार्थः**-हे विद्वन्! वा राजन्! जो आपके लिये ऐश्वर्य की कामना करते हुए परमेश्वर और विद्वानों को नमस्कार करते हैं, वे निरन्तर प्रशंसित होते हैं॥११॥



www.9009.co.in

इस सूक्त में विद्वान् और ईश्वर के गुणवर्णन करने से इसके अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ संगति जाननी चाहिये।।

**यह छठवां सूक्त और पांचवां वर्ग समाप्त हुआ।।**



www.9009.co.in

**अथैकादशर्चस्य सप्तमस्य सूक्तस्य वामदेव ऋषिः। अग्निर्देवता। १ भुरिक् त्रिष्टुप्। ७, १०, ११ त्रिष्टुप्। ८, ९ निचृत्त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः। २ स्वराडुष्णिक् छन्दः। ऋषभः स्वरः। ३ निचृदनुष्टुप्। ४ अनुष्टुप् छन्दः। ५ विराडनुष्टुप् छन्दः। गान्धारः स्वरः॥**

**अथ सर्वगतस्याग्निशब्दार्थवाच्यव्यापकस्येश्वरस्य विषयमाह॥**

अब एकादश ऋचा वाले सप्तम सूक्त का आरम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में सर्वगत अग्निशब्दार्थवाच्य व्यापक परमेश्वर के विषय को कहते हैं॥

**अ॒यमि॒ह प्र॑थ॒मो धा॑यि धा॒तृभि॒र्होता॒ यजि॑ष्ठो अ॒ध्व॒रेष्वीड्यः॑।**

**यमप्न॑वानो॒ भृग॑वो विरुरु॒चुर्वने॑षु चि॒त्रं वि॒भ्वं॑ वि॒शेवि॑शे॥ १॥**

**अ॒यम्। इ॒ह। प्र॒थ॒मः। धा॒यि॒। धा॒तृऽभिः॑। होता॑। यजि॑ष्ठः। अ॒ध्व॒रेषु॑। ईड्यः॑। यम्। अप्न॑वानः। भृग॑वः। वि॒ऽरु॒रु॒चुः। वने॑षु। चि॒त्रम्। वि॒ऽभ्व॑म्। वि॒शेऽवि॑शे॥ १॥**

**पदार्थः**-(**अयम्**) (**इह**) अस्मिन्संसारे (**प्रथमः**) आदिमः (**धायि**) धीयते (**धातृभिः**) धारकैः (**होता**) दाता (**यजिष्ठः**) अतिशयेन यष्टा सङ्गन्ता (**अध्वरेषु**) अहिंसनीयेषु यज्ञेषु (**ईड्यः**) स्तोतुमर्हः (**यम्**) (**अप्नवानः**) पुत्रपौत्रादियुक्ताः (**भृगवः**) परिपक्वविज्ञानाः (**विरुरुचुः**) विशेषेण प्रकाशन्ते (**वनेषु**) वननीयेषु जङ्गलेषु (**चित्रम्**) अद्भुतम् (**विभ्वम्**) परमात्मानम् (**विशेविशे**) प्रजायै प्रजायै॥ १॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! इह धातृभिर्योऽयं प्रथमो होता यजिष्ठोऽध्वरेष्वीड्यो धायि विशेविशे यं चित्रं विभ्वमप्नवानो भृगवो वनेषु विरुरुचुस्तं परमात्मानं यूयं ध्यायत॥ १॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! अस्मिन् संसारे परमेश्वर एव युष्माभिर्ध्येयो ज्ञेयोऽस्ति यमुपास्य सांसारिकं पारमार्थिकं सुखं प्राप्स्यन्ति स एवेश्वरोऽत्र पूजनीयो मन्तव्यः॥ १॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! (**इह**) इस संसार में (**धातृभिः**) धारण करने वालों से जो (**अयम्**) यह (**प्रथमः**) पहिला (**होता**) देने और (**यजिष्ठः**) अत्यन्त मेल करने वाला (**अध्वरेषु**) नहीं हिंसा करने योग्य यज्ञों में (**ईड्यः**) स्तुति करने योग्य (**धायि**) धारण किया गया जिसको (**विशेविशे**) प्रजा-प्रजा के लिये (**यम्**) जिस (**चित्रम्**) अद्भुत (**विभ्वम्**) व्यापक परमात्मा को (**अप्नवानः**) पुत्र और पौत्रादिकों से युक्त (**भृगवः**) परिपक्व विज्ञान वाले लोग (**वनेषु**) याचना करने योग्य जङ्गलों में (**विरुरुचुः**) विशेष करके प्रकाशित करते अर्थात् अपने चित्त में रमाते हैं, उस परमात्मा का आप लोग ध्यान करो॥ १॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! इस संसार में परमेश्वर ही का आप लोगों को ध्यान करना योग्य है और जिसकी उपासना करके सांसारिक और पारमार्थिक सुख को प्राप्त होओगे, वही ईश्वर इस संसार में पूजा करने योग्य जानना चाहिये॥ १॥

**पुनरग्निपदवाच्येश्वरविषयमाह॥**

फिर अग्निपदवाच्य ईश्वर विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥



www.9009.co.in

**अग्ने॑ क॒दा त॑ आनु॒षग्भुव॑द्दे॒वस्य॒ चेत॑नम्।**

**अधा॒ हि त्वा॑ जगृभ्रि॒रे मर्ता॑सो वि॒क्ष्वीड्य॑म्॥ २॥**

**अग्ने॑। क॒दा। ते॒। आ॒नु॒षक्। भुव॑त्। दे॒वस्य॑। चेत॑नम्। अध॑। हि। त्वा॒। ज॒गृ॒भ्रि॒रे। मर्ता॑सः। वि॒क्षु। ईड्य॑म्॥ २॥**

**पदार्थः**-(**अग्ने**) परमात्मन्! (**कदा**) कस्मिन् काले (**ते**) तव (**आनुषक्**) अनुकूलः (**भुवत्**) भवेत् (**देवस्य**) सुखदातुः सर्वत्र प्रकाशमानस्य (**चेतनम्**) अनन्तविज्ञानादियुक्तम् (**अधा**) अथ। अत्र **निपातस्य चे**ति दीर्घः। (**हि**) खलु (**त्वा**) त्वाम् (**जगृभ्रिरे**) गृह्णीयुः (**मर्त्तासः**) मनुष्याः (**विक्षु**) मनुष्यप्रजासु (**ईड्यम्**) प्रशंसितुं योग्यम्॥ २॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! देवस्य ते मनुष्यः कदाऽऽनुषग्भुवदधा मर्त्तासो हि विक्ष्वीड्यं चेतनं त्वा कदा जगृभ्रिर इति वयमिच्छेम॥ २॥

**भावार्थः**-हे परमेश्वर! वयं त्वां सततं प्रार्थयेम भवतः कृपया इमे सर्वे मनुष्या भवद्भक्ता भवदाज्ञानुकूला भवदुपासकाः कदा भविष्यन्ति। हे कृपालोऽन्तर्यामिन् करुणां विधाय सर्वान्त्स्वस्मिन् प्रीतिमतः सद्यः कुर्विति॥ २॥

**पदार्थः**-हे (**अग्ने**) परमात्मन्! (**देवस्य**) सुख देनेवाले और सर्वत्र प्रकाशमान (**ते**) आपके मनुष्य (**कदा**) किस काल में (**आनुषक्**) अनुकूल (**भुवत्**) हो (**अधा**) इसके अनन्तर (**मर्त्तासः**) मनुष्य लोग (**हि**) निश्चय से (**विक्षु**) मनुष्यरूप प्रजाओं में (**ईड्यम्**) स्तुति करने योग्य (**चेतनम्**) अनन्त विज्ञान आदि से युक्त (**त्वा**) आपको कब (**जगृभ्रिरे**) ग्रहण करें, ऐसी हम लोग इच्छा करें॥ २॥

**भावार्थः**-हे परमेश्वर! हम लोग आपकी निरन्तर प्रार्थना करें और आपकी कृपा से ये सब मनुष्य आपके भक्त, आपकी आज्ञा के अनुकूल और आपके उपासक कब होंगे। हे कृपालो अन्तर्यामिन्! दया करके सब को अपने में प्रीतिमान् शीघ्र करो॥ २॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**ऋ॒तावा॑नं॒ विचे॑तसं॒ पश्य॑न्तो॒ द्यामि॑व॒ स्तृभिः॑।**

**विश्वे॑षामध्व॒राणां॑ हस्क॒र्तारं॒ दमे॑दमे॥ ३॥**

**ऋ॒तऽवा॑नम्। विऽचे॑तसम्। पश्य॑न्तः। द्याम्ऽइ॑व। स्तृऽभिः॑। विश्वे॑षाम्। अ॒ध्व॒राणा॑म्। ह॒स्क॒र्तार॑म्। दमे॑ऽदमे॥ ३॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**ऋतावानम्**) ऋतं सत्यं विद्यते यस्मिँस्तम् (**विचेतसम्**) विगतं चेतो यस्मात्तम् (**पश्यन्तः**) (**द्यामिव**) सूर्यमिव (**स्तृभिः**) नक्षत्रैः (**विश्वेषाम्**) सर्वेषाम् (**अध्वराणाम्**) अहिंसनीयानां यज्ञानाम् (**हस्कर्त्तारम्**) प्रकाशकर्त्तारम् (**दमेदमे**) गृहे गृहे॥३॥

**अन्वयः**-ये मनुष्या विश्वेषामध्वराणां स्तृभिर्द्यामिव दमेदमे हस्कर्त्तारं विचेतसमृतावानं पश्यन्तो जगृभिरे ते सुशोभन्ते॥३॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। ये चेतनारहितं कारणयुक्तं प्रतिगृहं प्रकाशयन्तं जानन्ति ते सूर्य्यप्रकाशे चन्द्रादीनीव जगति प्रकाशन्ते॥३॥

**पदार्थः**-जो मनुष्य लोग (**विश्वेषाम्**) सम्पूर्ण (**अध्वराणाम्**) नहीं हिंसा करने योग्य यज्ञों के (**स्तृभिः**) नक्षत्रों से (**द्यामिव**) सूर्य्य के सदृश (**दमेदमे**) घर-घर में (**हस्कर्त्तारम्**) प्रकाश करने वाले (**विचेतसम्**) जिससे विगतचित्त होता (**ऋतावानम्**) जिसमें सत्य विद्यमान उसको (**पश्यन्तः**) देखते हुए ग्रहण करे हुए हैं, वे उत्तम प्रकार शोभित होते हैं॥३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जो लोग चेतनारहित कारण से युक्त प्रत्येक गृह के प्रवेश करने वाले को जानते हैं, वे सूर्य के प्रकाश में चन्द्र आदिकों के सदृश संसार में प्रकाशित होते हैं॥३॥

**अथाग्निविषयमाह॥**

अब अग्निविषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**आशुं दूतं विवस्वतो विश्वा यश्चर्षणीरभि।**

**आ जभ्रुः केतुमायवो भृगवाणं विशेविशे॥४॥**

**आशुम्। दूतम्। विवस्वतः। विश्वाः। यः। चर्षणीः। अभि। आ। जभ्रुः। केतुम्। आयवः। भृगवाणम्। विशेऽविशे॥४॥**

**पदार्थः**-(**आशुम्**) सद्योगामिनम् (**दूतम्**) दूतमिव (**विवस्वतः**) सूर्य्यात् (**विश्वाः**) समग्राः (**यः**) (**चर्षणीः**) प्रकाशान् (**अभि**) (**आ**) (**जभ्रुः**) धरन्ति (**केतुम्**) प्रज्ञानम् (**आयवः**) ज्ञानवन्तो मनुष्याः (**भृगवाणम्**) परिपाककर्त्तारम् (**विशेविशे**) प्रजायै॥४॥

**अन्वयः**-यो विद्वान् विवस्वतो दूतमिवाशुं विशेविशे भृगवाणमायवो विश्वा यश्चर्षणीः केतुं चाऽभ्याजभ्रुरिव धरति स सर्वानन्दी जायते॥४॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। ये मनुष्याः सूर्य्यादेर्विद्युतादीन् गृह्णन्ति ते प्रजायै सुखप्रदा भवन्ति॥४॥

**पदार्थः**-(**यः**) जो विद्वान् (**विवस्वतः**) सूर्य से (**दूतम्**) दूत के सदृश (**आशुम्**) शीघ्र चलने और (**विशेविशे**) प्रजा के निमित्त (**भृगवाणम्**) परिपाक के करने वाले को जैसे (**आयवः**) ज्ञानवान्



www.9009.co.in

मनुष्य **(विश्वाः)** सम्पूर्ण **(चर्षणीः)** प्रकाशों और **(केतुम्)** प्रज्ञान को **(अभि, आ, जभ्रुः)** धारण करते हैं, वैसे धारण करता है, वह सम्पूर्ण आनन्दों से युक्त होता है॥४॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो मनुष्य सूर्य आदि से बिजुली आदि पदार्थ को ग्रहण करते हैं, वे प्रजा के लिये सुख देने वाले होते हैं॥४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**तमीं होतारमानुषक् चिकित्वांसं नि षेदिरे।**

**रण्वं पावकशोचिषं यजिष्ठं सप्त धामभिः॥५॥६॥**

**तम्। ईम्। होतारम्। आनुषक्। चिकित्वांसम्। नि। सेदिरे। रण्वम्। पावकऽशोचिषम्। यजिष्ठम्। सप्त। धामऽभिः॥५॥**

**पदार्थः**-**(तम्)** **(ईम्)** सर्वतः **(होतारम्)** ग्रहीतारम् **(आनुषक्)** आनुकूल्येन **(चिकित्वांसम्)** विद्वांसम् **(नि)** **(सेदिरे)** सीदन्ति **(रण्वम्)** रमणीयम् **(पावकशोचिषम्)** पावकस्य शोचिरिव शोचिर्दीप्तिर्यस्य तम् **(यजिष्ठम्)** अतिशयेन सङ्गन्तारम् **(सप्त)** सप्तभिः प्राणादिभिः **(धामभिः)** स्थानैः॥५॥

**अन्वयः**-ये तमग्निमिवानुषग्घोतारं चिकित्वांसं रण्वं सप्त धामभिः पावकशोचिषं यजिष्ठमीं निषेदिरे ते राज्यैश्वर्य्या भवन्ति॥५॥

**भावार्थः**-ये विपुलं वह्निं सर्वेभ्यः पदार्थेभ्यो निःसारितुं जानन्ति तेऽतिसुखा भवन्ति॥५॥

**पदार्थः**-जो लोग **(तम्)** उसको अग्नि के सदृश **(आनुषक्)** अनुकूलता से **(होतारम्)** ग्रहण करनेवाले **(चिकित्वांसम्)** विद्वान् **(रण्वम्)** सुन्दर **(सप्त)** सात प्राण आदि **(धामभिः)** स्थानों से **(पावकशोचिषम्)** अग्नि के तेज के सदृश तेज से युक्त **(यजिष्ठम्)** अत्यन्त मेल करनेवाले को **(ईम्)** सब प्रकार से **(नि, सेदिरे)** प्राप्त होते हैं, वे राज्य और ऐश्वर्य से युक्त होते हैं॥५॥

**भावार्थः**-जो लोग बिजुलीरूप अग्नि को सब पदार्थों से निकालना जानते हैं, वे अत्यन्त सुखी होते हैं॥५॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**तं शश्वतीषु मातृषु वन आ वीतमश्रितम्।**

**चित्रं सन्तं गुहा हितं सुवेदं कूचिदर्थिनम्॥६॥**



www.9009.co.in

**तम्। शश्व॑तीषु। मा॒तृषु॑। वने॑। आ। वी॒तम्। अश्रि॑तम्। चि॒त्रम्। सन्त॑म्। गुहा॑। हि॒तम्। सु॒ऽवेद॑म्। कू॒चि॒त्ऽअ॒र्थिन॑म्॥६॥**

**पदार्थः**-(**तम्**) पावकम् (**शश्वतीषु**) अनादिभूतासु (**मातृषु**) आकाशादिषु (**वने**) किरणे (**आ**) (**वीतम्**) व्याप्तम् (**अश्रितम्**) असेवितम् (**चित्रम्**) अद्भुतगुणकर्मस्वभावम् (**सन्तम्**) विद्यमानम् (**गुहा**) बुद्धौ (**हितम्**) स्थितम् (**सुवेदम्**) शोभनो वेदो विज्ञानं यस्य तम् (**कूचिदर्थिनम्**) क्वचिद् बहवोऽर्था विद्यन्ते यस्मिंस्तम्॥६॥

**अन्वयः**-हे विद्वांसो! यूयं शश्वतीषु मातृषु वने सन्तं गुहा हितं सुवेदं कूचिदर्थिनमश्रितमावीतं तं चित्रं विद्युदाख्यमग्निं विदित्वा कार्य्याणि साध्नुत॥६॥

**भावार्थः**-ये मनुष्याः सर्वपदार्थेषु पृथक् पृथगेव वर्त्तमानमग्निं तत्त्वतो विजानन्ति ते सर्वाणि कार्य्याणि साद्धुं शक्नुवन्ति॥६॥

**पदार्थः**-हे विद्वानो! आप लोग (**शश्वतीषु**) अनादिकाल से वर्त्तमान (**मातृषु**) आकाश आदि पदार्थों में और (**वने**) किरण में (**सन्तम्**) विद्यमान (**गुहा**) बुद्धि में (**हितम्**) स्थित (**सुवेदम्**) उत्तम विज्ञान जिसका (**कूचिदर्थिनम्**) जो कहीं बहुत अर्थों से युक्त (**अश्रितम्**) और नहीं सेवन किया गया (**आ, वीतम्**) व्याप्त (**तम्**) उस (**चित्रम्**) अद्भुत गुण, कर्म, स्वभाव वाले बिजुली नामक अग्नि को जान के कार्यों को सिद्ध करो॥६॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य सर्व पदार्थों में अलग ही अलग वर्त्तमान अग्नि को तत्त्व से जानते हैं, वे सब काम साध सकते हैं॥६॥

**पुनरग्निविषयमाह॥**

फिर अग्निविषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**स॒सस्य॒ यद्वियु॑ता॒ सस्मि॒न्नूध॑न्नृ॒तस्य॒ धाम॑न् र॒णय॑न्त दे॒वाः।**
**म॒हाँ अ॒ग्निर्नम॑सा रा॒तह॑व्यो॒ वेर॑ध्व॒राय॒ सद॒मिदृ॒तावा॑॥७॥**

**स॒सस्य॑। यत्। विऽयु॑ता। सस्मि॑न्। ऊध॑न्। ऋ॒तस्य॑। धाम॑न्। र॒णय॑न्त। दे॒वाः। म॒हान्। अ॒ग्निः। नम॑सा। रा॒तऽह॑व्यः। वेः। अ॒ध्व॒राय॑। सद॑म्। इत्। ऋ॒तऽवा॑॥७॥**

**पदार्थः**-(**ससस्य**) स्वप्नस्य (**यत्**) यस्मिन् (**वियुता**) वियुक्तानि (**सस्मिन्**) सर्वस्मिन्। अत्र **छान्दसो वर्णलोपो वे**ति लोपः। (**ऊधन्**) ऊधन्यवयवे (**ऋतस्य**) सत्यस्य (**धामन्**) धामनि (**रणयन्त**) शब्दयन्ति (**देवाः**) विद्वांसः (**महान्**) अतिविस्तीर्णः (**अग्निः**) विद्युत् (**नमसा**) अन्नाख्येन पृथिव्यादिना सह (**रातहव्यः**) रातं ग्रहीतुं योग्यं हव्यं दत्तं येन सः (**वेः**) पक्षिणः (**अध्वराय**) अहिंसनीयाय व्यवहाराय (**सदम्**) प्राप्तव्यम् (**इत्**) एव (**ऋतावा**) ऋतस्य जलस्य विभाजकः॥७॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-ये देवा विद्वांसो नमसा सह वर्त्तमानो रातहव्य ऋतावा महानग्निर्वेरिव सदं प्रापयति यद्यो सस्मिन्नूधन्नृतस्य धामन्त्ससस्य वियुता रणयन्त तमध्वराय विदन्तीत्ते सत्यविदो जायन्ते॥७॥

**भावार्थः**-हे विपश्चितो! योऽग्निः शरीरादौ निद्रायां च प्रसिद्धो भवति स महत्त्वात् सर्वत्र व्याप्तोऽस्ति॥७॥

**पदार्थः**-जो (**देवाः**) विद्वान् लोग (**नमसा**) पृथिवी आदि अन्न के साथ वर्त्तमान (**रातहव्यः**) जिसने ग्रहण करने योग्य पदार्थ दिया (**ऋतावा**) जो जल का विभाग करने वाला (**महान्**) महान् (**अग्निः**) बिजुली रूप अग्नि (**वेः**) पक्षी के सदृश (**सदम्**) प्राप्त होने योग्य स्थान को प्राप्त कराता है (**यत्**) जिस अग्नि में (**सस्मिन्**) सब (**ऊधन्**) अवयव में और (**ऋतस्य**) सत्य के (**धामन्**) स्थान में (**ससस्य**) स्वप्नसम्बन्ध से (**वियुता**) वियुक्त अर्थात् विना स्वप्न वस्तुएं (**रणयन्त**) शब्द करती हैं, उसको (**अध्वराय**) अहिंसनीय व्यवहार के लिये (**इत्**) जानते ही हैं, वे सत्य के जानने वाले होते हैं॥७॥

**भावार्थः**-हे बुद्धिमान् पुरुषो! जो अग्नि शरीर आदि में और निद्रा में प्रसिद्ध होता है, वह बड़ा होने से सर्वत्र व्यापक है॥७॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**वेरध्वरस्य दूत्यानि विद्वानुभे अन्ता रोदसी संचिकित्वान्।**

**दूत ईयसे प्रदिव उराणो विदुष्टरो दिव आरोधनानि॥८॥**

**वेः। अध्वरस्य। दूत्यानि। विद्वान्। उभे इति। अन्तरिति। रोदसी इति। सम्ऽचिकित्वान्। दूतः। ईयसे। प्रऽदिवः। उराणः। विदुःऽतरः। दिवः। आऽरोधनानि॥८॥**

**पदार्थः**-(**वेः**) व्याप्तस्य (**अध्वरस्य**) अहिंसनीयस्य (**दूत्यानि**) दूतवत् कर्माणि (**विद्वान्**) (**उभे**) (**अन्तः**) मध्ये (**रोदसी**) द्यावापृथिव्यौ (**संचिकित्वान्**) सम्यक् चिकीर्षकः (**दूतः**) (**ईयसे**) प्राप्नोषि (**प्रदिवः**) प्राचीनः (**उराणः**) बहुकुर्वाणः (**विदुष्टरः**) अतिशयेन वेत्ता (**दिवः**) प्रकाशस्य (**आरोधनानि**) समन्तान्निग्रहणानि॥८॥

**अन्वयः**-हे विद्वन्! संचिकित्वान् विद्वान् विदुष्टरस्संस्त्वं यो वेरध्वरस्य दूत्यान्यन्तरुभे रोदसी दूतः प्रदिव उराणो गच्छति तं विज्ञाय दिव आरोधनानीयसे तस्मात् सुखं प्राप्नोषि॥८॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! या विद्युत्सर्वस्य शिल्पजनस्य दूतवत्प्रेरिका सनातना सर्वेषु पदार्थेषु व्याप्तास्ति तस्या उत्पत्तिनिरोधाभ्यां बहूनि कार्य्याणि साद्ध्वैश्वर्य्यं प्राप्नुत॥८॥

**पदार्थः**-हे विद्वन् (**सञ्चिकित्वान्**) उत्तम प्रकार कार्य करने की इच्छा करनेवाले (**विद्वान्**) विद्यावान् पुरुष! (**विदुष्टरः**) अत्यन्त ज्ञाता हुए आप जो (**वेः**) व्याप्त (**अध्वरस्य**) न नष्ट करने योग्य



www.9009.co.in

व्यवहार के **(दूत्यानि)** संदेश पहुंचाने वाले के सदृश कर्म्मों को और **(अन्तः)** मध्य में **(उभे)** दोनों **(रोदसी)** अन्तरिक्ष और पृथिवी को **(दूतः)** संदेश पहुंचाने वाला **(प्रदिवः)** प्राचीन **(उराणः)** बहुत कार्य करता हुआ जाता है, उसको जानके **(दिवः)** प्रकाश के **(आरोधनानि)** सब प्रकार के ग्रहण करने को **(ईयसे)** प्राप्त होते हो, इससे सुख को प्राप्त होते हो॥८॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो बिजुली रूप अग्नि सम्पूर्ण शिल्पिजन का दूत के सदृश प्रेरणा करनेवाला, अनादि काल से सिद्ध और सम्पूर्ण पदार्थों में व्याप्त है, उसकी उत्पत्ति और निरोध से बहुत कार्य्यों को सिद्ध करके ऐश्वर्य्य को प्राप्त होओ॥८॥

**अथ विद्वद्विषयमाह॥**

अब विद्वद्विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**कृष्णं त एम रुशतः पुरो भाश्चरिष्णवर्चिर्वपुषामिदेकम्।**

**यदप्रवीता दधते ह गर्भं सद्यश्चिज्जातो भवसीदु दूतः॥९॥**

**कृष्णम्। ते। एम। रुशतः। पुरः। भाः। चरिष्णु। अर्चिः। वपुषाम्। इत्। एकम्। यत्। अप्रऽवीता। दधते। ह। गर्भम्। सद्यः। चित्। जातः। भवसि। इत्। ऊम् इति। दूतः॥९॥**

**पदार्थः**-**(कृष्णम्)** कर्षकम् **(ते)** तव **(एम)** प्राप्नुयाम **(रुशतः)** सुरूपस्य रुचिकरस्य **(पुरः)** पूर्वम् **(भाः)** प्रकाशमानः **(चरिष्णु)** यच्चरति गच्छति **(अर्चिः)** तेजः **(वपुषाम्)** रूपवतां शरीराणाम् **(इत्)** एव **(एकम्)** असहायम् **(यत्)** **(अप्रवीता)** अगच्छन्ती **(दधते)** धरति **(ह)** खलु **(गर्भम्)** अन्तःस्वरूपम् **(सद्यः)** शीघ्रम् **(चित्)** अपि **(जातः)** प्रकटः **(भवसि)** **(इत्)** (उ) **(दूतः)** दूत इव वर्त्तमानः॥९॥

**अन्वयः**-हे विद्वन्! यस्य रुशतस्ते यत्कृष्णं पुरो भाश्चरिष्णु वपुषामेकमर्चिरिदस्ति तद्वयमेम। हे विद्वन्! यथाऽप्रवीता गर्भं दधते तथा ह सद्यश्चिज्जातो दूत इवेदु भवसि तस्मात्सत्कर्त्तव्योऽसि॥९॥

**भावार्थः**-हे अध्यापक कृपालो! त्वं विद्युत्तेजसो विद्यामस्मान् बोधय येन तेजसा दूतवत्कर्म्माणि वयं कारयेम॥९॥

**पदार्थः**-हे विद्वन्! जिस **(रुशतः)** उत्तम रूपयुक्त प्रीतिकारक **(ते)** आपका **(यत्)** जो **(कृष्णम्)** खींचने वाला **(पुरः)** प्रथम **(भाः)** प्रकाशमान **(चरिष्णु)** चलनेवाला **(वपुषाम्)** रूपवाले शरीरों के **(एकम्)** सहायरहित **(अर्चिः)** तेज **(इत्)** ही है, उसको हम लोग **(एम)** प्राप्त होवें और हे विद्वन्! जैसे **(अप्रवीता)** नहीं जाती हुई स्त्री **(गर्भम्)** अन्तः स्वरूप को **(दधते)** धारण करती है, वैसे **(ह)** निश्चय से **(सद्यः)** शीघ्र **(चित्)** भी **(जातः)** प्रकट **(दूतः)** दूत के **(इत्)** सदृश वर्त्तमान (उ) ही **(भवसि)** होते हो, उससे सत्कार करने योग्य हो॥९॥



www.9009.co.in

**भावार्थ:**-हे अध्यापक कृपालो! आप बिजुली के तेज की विद्या का हम लोगों के लिये बोध कराइये कि जिस तेज से दूत के सदृश कार्य्यों को हम लोग करावें॥९॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**सद्यो जातस्य ददृशानमोजो यदस्य वातो अनुवाति शोचिः।**

**वृणक्ति तिग्मामतसेषु जिह्वां स्थिरा चिदन्ना दयते वि जम्भैः॥१०॥**

**सद्यः। जातस्य। ददृशानम्। ओजः। यत्। अस्य। वातः। अनुऽवाति। शोचिः। वृणक्ति। तिग्माम्। अतसेषु। जिह्वाम्। स्थिरा। चित्। अन्ना। दयते। वि। जम्भैः॥१०॥**

**पदार्थ:**-(**सद्यः**) क्षिप्रम् (**जातस्य**) उत्पन्नस्य (**ददृशानम्**) द्रष्टव्यम् (**ओजः**) वेगवद्बलम् (**यत्**) (**अस्य**) (**वातः**) वायुः (**अनुवाति**) (**शोचिः**) प्रदीप्तम् (**वृणक्ति**) सम्भजति (**तिग्माम्**) तीव्रां गतिम् (**अतसेषु**) वृक्षादिषु (**जिह्वाम्**) वाचम् (**स्थिरा**) स्थिराणि (**चित्**) अपि (**अन्ना**) अत्तव्यानि (**दयते**) ददाति (**वि**) (**जम्भैः**) गत्याक्षेपैः॥१०॥

**अन्वयः**-हे विद्वांसो! अस्य सद्यो जातस्य यद्ददृशानमोजो वातोऽनुवाति यदस्य शोचिरतसेषु तिग्मां जिह्वां वृणक्ति यो विजम्भैश्चित्स्थिरा अन्ना दयते तं विद्युतमग्निं विज्ञाय संप्रयुङ्ध्वम्॥१०॥

**भावार्थ:**-यदि शिल्पिनः पदार्थेभ्यो विद्युतं जनयेयुस्तर्हि सा दर्शनीयं पराक्रमं वेगं च दर्शयित्वा विविधान्यैश्वर्य्याणि ददाति॥१०॥

**पदार्थ:**-हे विद्वान् जनो! (**अस्य**) इस (**सद्यः**) शीघ्र (**जातस्य**) उत्पन्न हुए विद्युत् रूप अग्निप्रताप के (**यत्**) जिस (**ददृशानम्**) देखने योग्य (**ओजः**) वेगयुक्त बल के (**वातः**) वायु (**अनुवाति**) पीछे चलता है, जो इस साधारण अग्नि को (**शोचिः**) प्रज्वलित लपट को (**अतसेषु**) वृक्ष आदिकों में (**तिग्माम्**) तीव्र गति को और (**जिह्वाम्**) वाणी को (**वृणक्ति**) सेवन करता है और जो (**वि, जम्भैः**) गमनों के आक्षेपों से (**चित्**) भी (**स्थिरा**) दृढ़ (**अन्ना**) भोजन करने योग्य पदार्थों को (**दयते**) देता है, उस बिजुली रूप अग्नि को जान के कार्यों में प्रयुक्त करो॥१०॥

**भावार्थ:**-जो शिल्पीजन पदार्थों से बिजुली को उत्पन्न करें तो वह बिजुली देखने योग्य पराक्रम और वेग को दिखा के अनेक प्रकार के ऐश्वर्य्यों को देती है॥१०॥

**पुन शिल्पिविद्वद्विषयमाह॥**

फिर शिल्पि विद्वान् के विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**तृषु यदन्ना तृषुणा ववक्ष तृषुं दूतं कृणुते यह्वो अग्निः।**

**वातस्य मेळिं सचते निजूर्वन्नाशुं न वाजयते हिन्वे अर्वा॥११॥७॥**



www.9009.co.in

तृषु। यत्। अन्ना। तृषुणा। ववक्ष। तृषुम्। दूतम्। कृणुते। यह्वः। अग्निः। वातस्य। मेळिम्। सचते। निऽजूर्वन्। आशुम्। न। वाजयते। हिन्वे। अर्वा॥ ११॥

**पदार्थः**-(**तृषु**) क्षिप्रम्। **तृष्विति क्षिप्रनामसु पठितम्।** (निघं०२.१५) (**यत्**) यः (**अन्ना**) अन्नादीनि (**तृषुणा**) क्षिप्रेण (**ववक्ष**) वहति (**तृषुम्**) क्षिप्रकारिणम् (**दूतम्**) दूतमिव (**कृणुते**) करोति (**यह्वः**) महान् (**अग्निः**) विद्युत् (**वातस्य**) (**मेळिम्**) सङ्गमम् (**सचते**) समवैति (**निजूर्वन्**) नितरां सद्यो गच्छन् (**आशुम्**) शीघ्रगामिनमश्वम् (**न**) इव (**वाजयते**) गमयति (**हिन्वे**) गमयेय (**अर्वा**) वाजीव॥ ११॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यद्यो यह्वोऽर्वेव निजूर्वन्नग्निस्तृषुणाऽन्ना तृषु ववक्ष तृषु दूतमिव कृणुते वातस्य मेळिं सचते यं विद्वानाशुं न वाजयतेऽहं हिन्वे तं यूयं विजानीत॥ ११॥

**भावार्थः**-यदि मनुष्याः विद्युद्वाय्वादियोगविद्यां जानीयुस्तर्हि ते दूतवदश्ववद्दूरं यानं समाचारं च गमयितुं शक्नुयुः॥ ११॥

अत्राग्निविद्युद्वद्गुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति सप्तमं सूक्तं सप्तमो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! (**यत्**) जो (**यह्वः**) बड़े (**अर्वा**) घोड़े के सदृश (**निजूर्वन्**) निरन्तर शीघ्र चलती हुई (**अग्निः**) बिजुली (**तृषुणा**) शीघ्रता से युक्त (**अन्ना**) अन्न आदिक पदार्थों को (**तृषु**) शीघ्र (**ववक्ष**) प्राप्त कराती है (**तृषुम्**) शीघ्र कार्य्यकारी (**दूतम्**) समाचार पहुंचाने वाले जन के सदृश अपने प्रताप को (**कृणुते**) करती है और (**वातस्य**) पवन के (**मेळिम्**) सङ्गम का (**सचते**) सम्बन्ध करती है जिसको विद्वान् जन (**आशुम्**) शीघ्र चलने वाले घोड़े के (**न**) सदृश (**वाजयते**) चलाता है, मैं (**हिन्वे**) चलाऊं, उसको आप लोग जानिये॥ ११॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य बिजुली और वायु आदि के योग की विद्या को जानें तो वे दूत और घोड़े के सदृश दूर वाहन और समाचार को पहुंचा सकें॥ ११॥

इस सूक्त में अग्नि और विद्वान् के गुण वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह सातवां सूक्त और सातवां वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

**अथाष्टर्चस्याष्टमस्य सूक्तस्य वामदेव ऋषिः। अग्निर्देवता। १, ४, ५, ६ निचृद्गायत्री। २, ३, ७ गायत्री। ८ भुरिग्गायत्री छन्दः। षड्जः स्वरः॥**

**अथाग्निविषयमाह॥**

अब आठ ऋचा वाले आठवें सूक्त का आरम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में अग्निविषय को कहते हैं॥

**दूतं वो विश्ववेदसं हव्यवाहममर्त्यम्। यजिष्ठमृञ्जसे गिरा॥ १॥**

**दूतम्। वः। विश्वऽवेदसम्। हव्यऽवाहम्। अमर्त्यम्। यजिष्ठम्। ऋञ्जसे। गिरा॥ १॥**

**पदार्थः**-(**दूतम्**) उत्तमं दूतमिवं वर्त्तमानं वह्निम् (**वः**) युष्माकम् (**विश्ववेदसम्**) विश्वस्मिन् विद्यमानम् (**हव्यवाहम्**) यो हव्यान्यादातुमर्हाणि वहति गमयति प्रापयति वा तम् (**अमर्त्यम्**) नाशरहितम् (**यजिष्ठम्**) अतिशयेन सङ्गमयितारम् (**ऋञ्जसे**) प्रसाध्नोसि (**गिरा**) वाण्या॥ १॥

**अन्वयः**-हे मनुष्याः! वो यं दूतमिव वर्तमानममर्त्यं विश्ववेदसं यजिष्ठं हव्यवाहं गिरा वयं विजानीमः। हे विद्वन्! येन त्वं कार्य्याण्यृञ्जसे तं यूयं विज्ञाय सम्प्रयुङ्ध्वम्॥ १॥

**भावार्थः**-हे मनुष्याः! अयमेव विद्युदग्निर्दूतवत्कार्यसाधकोऽस्तीति यूयं वित्त॥ १॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! (**वः**) तुम्हारे बीच जिस (**दूतम्**) उत्तम दूत के सदृश वर्त्तमान (**अमर्त्यम्**) नाश से रहित (**विश्ववेदसम्**) सब में विद्यमान (**यजिष्ठम्**) अत्यन्त मिलाने वाले (**हव्यवाहम्**) ग्रहण करने योग्य पदार्थों को पहुंचाने वा प्राप्त कराने वाले को (**गिरा**) वाणी से हम लोग जानते हैं। हे विद्वन्! जिससे आप कार्य्यों को (**ऋञ्जसे**) सिद्ध करते हो, उसको आप लोग जान के कार्य्य में लगाइये॥ १॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! यही बिजुलीरूप अग्नि दूत के सदृश कार्यों को सिद्ध करने वाला है, ऐसा आप लोग जानो॥ १॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**स हि वेदा वसुधितिं महाँ आरोधनं दिवः। स देवाँ एह वक्षति॥ २॥**

**सः। हि। वेद। वसुऽधितिम्। महान्। आऽरोधनम्। दिवः। सः। देवान्। आ। इह। वक्षति॥ २॥**

**पदार्थः**-(**सः**) (**हि**) यतः (**वेद**) वेत्ति। **द्व्यचोऽतस्तिङ** इति दीर्घः। (**वसुधितिम्**) वसूनां द्रव्याणां धारकम् (**महान्**) (**आरोधनम्**) रोधनम् (**दिवः**) प्रकाशस्य (**सः**) (**देवान्**) दिव्यान् गुणान् भोगान् (**आ**) (**इह**) (**वक्षति**) वहति प्रापयति॥ २॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यं दिव आरोधनं वसुधितिं विद्वान् वेद स हि महान् वर्त्तत स इह देवानावक्षतीति विजानीत॥ २॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-हे मनुष्याः! यो विद्युदग्निर्दिव्यभोगगुणप्रदः सूर्यस्याऽपि सूर्यः सर्वधर्त्ता व्याप्तोऽस्ति तं विदित्वा कार्य्याणि साध्नुत॥२॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जिसको **(दिवः)** प्रकाश के **(आरोधनम्)** रोकने और **(वसुधितिम्)** द्रव्यों के धारण करने वाले को विद्वान् **(वेद)** जानता है **(सः)** वह **(हि)** जिससे **(महान्)** बड़ा है और **(सः)** वह **(इह)** इस संसार में **(देवान्)** श्रेष्ठ गुण और भोगों को **(आ, वक्षति)** प्राप्त कराता है, ऐसा जानो॥२॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो बिजुलीरूप अग्नि श्रेष्ठ भोग और गुणों का दाता सूर्य्य का भी सूर्य्य और सब का धारण करने वाला व्याप्त है, उसको जानके कार्य्यों को सिद्ध करो॥२॥

**पुनरग्निविषयमाह॥**

फिर अग्नि के विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**स वेद देव आनमं देवाँ ऋतायते दमे। दाति प्रियाणि चिद्वसु॥३॥**

**सः। वेद। देवः। आऽनमम्। देवान्। ऋतऽयते। दमे। दाति। प्रियाणि। चित्। वसु॥३॥**

**पदार्थः**-**(सः)** विद्युदग्निः **(वेद)** जानाति **(देवः)** कामयमानः **(आनमम्)** समन्तात् सत्कृतिं कर्त्तुम् **(देवान्)** पृथिव्यादीन् विदुषो वा **(ऋतायते)** ऋतमिव करोति **(दमे)** गृहे **(दाति)** ददाति। अत्राऽभ्यासलोपः। **(प्रियाणि)** कमनीयानि **(चित्)** अपि **(वसु)** वसूनि द्रव्याणि॥३॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यमाप्तो देवो वेद स देवानानममृतायते दमे चित्प्रियाणि वसु दातीति यूयं विजानीत॥३॥

**भावार्थः**-हे मनुष्याः! सर्वेषां पृथिव्यादीनां दिव्यानां पदार्थानां योऽग्निर्देवोऽस्ति तस्मादिमं सर्वैश्वर्यप्रदं महादेवं बुध्यध्वम्॥३॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जिसको यथार्थवक्ता **(देवः)** कामना करता हुआ विद्वान् जन **(वेद)** जानता है **(सः)** वह **(देवान्)** पृथिवी आदि पदार्थ वा विद्वानों के **(आनमम्)** सब प्रकार सत्कार करने को **(ऋतायते)** सत्य के सदृश आचरण और **(दमे)** गृह में **(चित्)** भी **(प्रियाणि)** सुन्दर **(वसु)** द्रव्यों को **(दाति)** देता है ऐसा जानो॥३॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! सम्पूर्ण पृथिवी आदि श्रेष्ठ पदार्थों के बीच जो अग्निदेव है, उससे इस सब ऐश्वर्य का देनेवाला बड़ा देव जानो॥३॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**स होता सेदु दूत्यं चिकित्वाँ अन्तरीयते। विद्वाँ आरोधनं दिवः॥४॥**

**सः। होता। सः। इत्। ऊम् इति। दूत्यम्। चिकित्वान्। अन्तः। ईयते। विद्वान्। आऽरोधनम्। दिवः॥४॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**सः**) (**होता**) अत्ता (**सः**) (**इत्**) (**उ**) (**दूत्यम्**) दूतस्य भावं कर्म वा (**चिकित्वान्**) विज्ञानवान् (**अन्तः**) मध्ये (**ईयते**) गच्छति (**विद्वान्**) (**आरोधनम्**) समन्तान्निरोधकम् (**दिवः**) प्रकाशस्य॥४॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या विद्वांसः! सोऽग्निर्होता स उ अन्तर्दूत्यमीयते स एव दिव आरोधनमस्तीति जानन्ति यं चिकित्वान् विद्वान् सम्प्रयुङ्क्ते तमिद्यूयमपि विज्ञाय प्रयुङ्ध्वम्॥४॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यः सर्वेषां पदार्थानां मध्ये वर्तमानो दूतवत्कार्य्याणि साध्नोति सूर्यादिकं प्रद्योतयति सोऽवश्यं युष्माभिर्वेदितव्यः॥४॥

**पदार्थः**-हे विद्वान् मनुष्यो! (**सः**) वह अग्नि (**होता**) पदार्थों का भक्षण करने वाला (**सः, उ**) वही (**अन्तः**) मध्य में वर्त्तमान (**दूत्यम्**) दूतपने वा दूत के कर्म को (**ईयते**) प्राप्त होता है, वही (**दिवः**) प्रकाश का (**आरोधनम्**) सब प्रकार रोकने वाला है ऐसा मानते हैं, जिसका (**चिकित्वान्**) विशेष ज्ञानवान् (**विद्वान्**) विद्वान् उत्तम प्रकार प्रयोग करता है (**इत्**) उसी को जान के तुम भी प्रयोग करो॥४॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो सम्पूर्ण पदार्थों के मध्य में वर्त्तमान और दूत के सदृश कार्य्यों को सिद्ध करता है और सूर्य आदि को प्रकाशित करता है, वह अवश्य आप लोगों को जानने योग्य है॥४॥

**अथाग्निविद्याविद्विषयमाह॥**

अब अग्नि विद्या के जानने वाले विद्वान् के विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**ते स्या॑म॒ ये अ॒ग्नये॑ ददा॒शुर्ह॒व्यदा॑तिभिः। य ईं॒ पुष्य॑न्त इन्ध॒ते॥५॥**

**ते। स्या॒म॒। ये। अ॒ग्नये॑। द॒दा॒शुः। ह॒व्यदा॑तिऽभिः। ये। ई॒म्। पुष्य॑न्तः। इ॒न्ध॒ते॥५॥**

**पदार्थः**-(**ते**) (**स्याम**) भवेम (**ये**) (**अग्नये**) अग्निविद्याप्राप्तये (**ददाशुः**) द्रव्यादिकं ददति (**हव्यदातिभिः**) दातव्यदानैः (**ये**) (**ईम्**) उदकम् (**पुष्यन्तः**) (**इन्धते**) प्रदीप्यन्ते॥५॥

**अन्वयः**-ये हव्यदातिभिरग्नये ददाशुर्य ईं पुष्यन्त इन्धते ते सुखिनः सन्ति तैस्सह वयं सुखिनस्स्याम॥५॥

**भावार्थः**-ये मनुष्या अग्न्यादिपदार्थविद्याप्राप्तये पुष्कलं धनं वियन्ति ते सर्वतः सर्वथा सर्वैः सुखैः पुष्टाः सन्त आनन्दन्ति॥५॥

**पदार्थः**-(**ये**) जो (**हव्यदातिभिः**) देने योग्य वस्तुओं के दानों से (**अग्नये**) अग्निविद्या की प्राप्ति के लिये (**ददाशुः**) द्रव्य आदि पदार्थ देते हैं और (**ये**) जो लोग (**ईम्**) जल को (**पुष्यन्तः**) पुष्ट करते हुए (**इन्धते**) प्रकाशित होते हैं (**ते**) वे सुखी हैं, उनके साथ हम लोग सुखी (**स्याम**) होवें॥५॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य अग्नि आदि पदार्थों की विद्या की प्राप्ति के लिये बहुत खर्चते हैं, वे सब से सब प्रकार सब सुखों से पुष्ट हुए आनन्दित होते हैं॥५॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥



www.9009.co.in

**ते राया ते सुवीर्यैः ससवांसो वि शृण्विरे। ये अग्ना दधिरे दुवः॥६॥**

**ते। राया। ते। सुऽवीर्यैः। ससऽवांसः वि। शृण्विरे। ये। अग्ना। दधिरे। दुवः॥६॥**

**पदार्थः**-(**ते**) (**राया**) धनेन (**ते**) (**सुवीर्यैः**) सुष्ठुपराक्रमबलैः (**ससवांसः**) शेरते (**वि**) (**शृण्विरे**) शृण्वन्ति (**ये**) (**अग्ना**) अग्नौ विद्युति (**दधिरे**) धरन्ति (**दुवः**) परिचरणम्॥६॥

**अन्वयः**-ये विद्वांसोऽग्ना दुवो दधिरे गुणान् वि शृण्विरे ते राया सह ते सुवीर्यैस्सह ससवांस इवानन्दन्ति॥६॥

**भावार्थः**-मनुष्या यावदग्न्यादिविद्याश्रवणसेवने न कुर्वन्ति तावद्धनाढ्या पूर्णबला भवितुं न शक्नुवन्ति यथा सुखेन शयाना आनन्दं भुञ्जते तथैवाग्न्यादिविद्यां प्राप्ता दारिद्र्यं विनाश्य धनबलाभ्यां सदैव सुखिनो भवन्ति॥६॥

**पदार्थः**-(**ये**) जो विद्वान् लोग (**अग्ना**) बिजुलीरूप अग्नि में (**दुवः**) अभ्यास सेवन को (**दधिरे**) धारण करते और गुणों को (**वि, शृण्विरे**) सुनते हैं (**ते**) वे (**राया**) धन के साथ (**ते**) वे (**सुवीर्यैः**) उत्तम पराक्रम और बल वालों के साथ (**ससवांसः**) शयन करते हुए से आनन्दित होते हैं॥६॥

**भावार्थः**-मनुष्य जब तक अग्नि आदि पदार्थों की विद्या का श्रवण और सेवन नहीं करते हैं, तब तक धनाढ्य और पूर्ण बलवाले हो नहीं सकते हैं और जैसे सुख से सोते हुए आनन्द को प्राप्त होते हैं, उसी प्रकार अग्नि आदि विद्या को प्राप्त हुए दारिद्र्य का नाश करके धन और बल से सदा ही सुखी होते हैं॥६॥

**अथ विद्वत्पुरुषार्थफलमाह॥**

अब विद्वानों के पुरुषार्थ का फल कहते हैं॥

**अस्मे रायो दिवेदिवे सं चरन्तु पुरुस्पृहः। अस्मे वाजास ईरताम्॥७॥**

**अस्मे इति। रायः। दिवेऽदिवे। सम्। चरन्तु। पुरुस्पृहः। अस्मे इति। वाजासः। ईरताम्॥७॥**

**पदार्थः**-(**अस्मे**) अस्मासु (**रायः**) शुभाः श्रियः (**दिवेदिवे**) प्रतिदिनम् (**सम्**) (**चरन्तु**) विलसन्तु (**पुरुस्पृहः**) बहुभिः स्पृहणीयाः (**अस्मे**) अस्मान् (**वाजासः**) अन्नाद्यैश्वर्य्ययोगाः (**ईरताम्**) प्राप्नुवन्तु॥७॥

**अन्वयः**-मनुष्या दिवेदिवेऽस्मे पुरुस्पृहो रायः सञ्चरन्तु वाजासोऽस्मे ईरतामित्यभिलषन्तु॥७॥

**भावार्थः**-मनुष्यैः सदैव पुरुषार्थेन धनान्नराज्यप्रतिष्ठाविद्यादयः शुभगुणा उन्नता भवन्त्विति सततमेष्टव्याः॥७॥

**पदार्थः**-मनुष्य लोग (**दिवेदिवे**) प्रतिदिन (**अस्मे**) हम लोगों में (**पुरुस्पृहः**) बहुतों से चाहने योग्य (**रायः**) श्रेष्ठ लक्ष्मियाँ (**सम्, चरन्तु**) विलसें और (**वाजासः**) अन्न आदि ऐश्वर्य्यों के योग (**अस्मे**) हम लोगों को (**ईरताम्**) प्राप्त हों, ऐसी अभिलाषा करो॥७॥



www.9009.co.in

**भावार्थ:**-मनुष्यो को चाहिये कि सदा ही पुरुषार्थ से धन, अन्न, राज्य, प्रतिष्ठा और विद्या आदि उत्तम गुणों की उन्नति होती है, इस प्रकार निरन्तर इच्छा करनी चाहिये॥७॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**स विप्रश्चर्षणीनां शवसा मानुषाणाम्। अति क्षिप्रेव विध्यति॥८॥८॥**

**सः। विप्रः। चर्षणीनाम्। शवसा। मानुषाणाम्। अति। क्षिप्राऽइव। विध्यति॥८॥**

**पदार्थ:**-**(सः)** **(विप्रः)** मेधावी **(चर्षणीनाम्)** ऐश्वर्य्येण प्रकाशमानानाम् **(शवसा)** बलेन **(मानुषाणाम्)** मानवानां मध्ये **(अति)** अतिशये **(क्षिप्रेव)** क्षिप्राणि प्रेरितानीव **(विध्यति)** ताडयति॥८॥

**अन्वय:**-यो विप्र: शवसा चर्षणीनां मानुषाणां क्षिप्रेव दु:खान्यतिविध्यति स एव प्रशंसितो भवति॥८॥

**भावार्थ:**-ये विपश्चितोऽग्न्यादिविद्याप्रयोगैर्मनुष्याणां दारिद्र्यं विनाश्यैश्वर्य्ययोगं जनयन्ति त एव सर्वै: सत्कर्त्तव्या: सर्वेषु भाग्यशालिन: सन्तीति॥८॥

अत्राग्निविद्वद्गुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इत्यष्टमं सूक्तमष्टमो वर्गश्च समाप्त:॥**

**पदार्थ:**-जो **(विप्रः)** बुद्धिमान् पुरुष **(शवसा)** बल से **(चर्षणीनाम्)** ऐश्वर्य्य से प्रकाशमान **(मानुषाणाम्)** मनुष्यों के मध्य में **(क्षिप्रेव)** प्रेरणा किये गयों के सदृश दु:खों को **(अति)** अत्यन्त **(विध्यति)** ताड़ता है **(सः)** वही प्रशंसित होता है॥८॥

**भावार्थ:**-जो विद्वान् लोग अग्नि आदि विद्या के प्रयोगों से मनुष्यों के दारिद्र्य का नाश करके ऐश्वर्य्य के योग को उत्पन्न करते हैं, वे ही सब लोगों को सत्कार करने योग्य और सभों में भाग्यशाली होते हैं॥८॥

इस सूक्त में अग्नि और विद्वान् के गुणवर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ संगति जाननी चाहिये॥

**यह अष्टम सूक्त और अष्टम वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

**अथाष्टर्चस्य नवमस्य सूक्तस्य वामदेव ऋषिः। अग्निर्देवता। १, ३, ४ गायत्री। २, ६ विराड्गायत्री। ५ त्रिपादगायत्री। ७, ८ निचृद्गायत्री छन्दः। षड्जः स्वरः।**

**अथाग्निसादृश्येन विद्वत्सत्कारमाह॥**

अब आठ ऋचावाले नवमें सूक्त का प्रारम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में अग्नि के सदृश होने से विद्वान् का सत्कार कहते हैं॥

**अग्ने॑ मृ॒ळ म॒हाँ अ॑सि॒ य ई॑मा॒ दे॑व॒युं जन॑म्। इ॒येथ॑ ब॒र्हिरा॒सद॑म्॥१॥**

**अग्ने॑। मृ॒ळ। म॒हान्। अ॒सि॒। यः। ई॒म्। आ। दे॒व॒ऽयुम्। जन॑म्। इ॒येथ॑। ब॒र्हिः। आ॒ऽसद॑म्॥१॥**

**पदार्थः**-(**अग्ने**) अग्निरिव प्रकाशमान (**मृळ**) सुखय (**महान्**) महत्त्वयुक्तः (**असि**) (**यः**) (**ईम्**) सर्वतः (**आ**) (**देवयुम्**) य आत्मनो देवान् कामयते तम् (**जनम्**) प्रसिद्धं विद्वांसम् (**इयेथ**) एषि (**बर्हिः**) उत्तममासनम् (**आसदम्**) य आसीदति तम्॥१॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! यस्त्वं बर्हिरासदं देवयुं जनमीमा इयेथ तस्मान्महानस्यस्मान् मृळ॥१॥

**भावार्थः**-यः पुरुषो विदुषां सङ्गेन विद्यां कामयते विद्यां प्राप्य मनुष्यादीन् सुखयति स एवाऽऽसनादिना प्रतिष्ठापनीयो भवति॥१॥

**पदार्थः**-हे (**अग्ने**) अग्नि के सदृश प्रकाशमान! (**यः**) जो आप (**बर्हिः**) उत्तम आसन को (**आसदम्**) बैठनेवाला (**देवयुम्**) अपने को विद्वानों की कामना कर (**जनम्**) प्रसिद्ध विद्वान् को (**ईम्**) सब प्रकार (**आ, इयेथ**) प्राप्त होते हो, इससे (**महान्**) महत्त्व से युक्त (**असि**) हो इससे [हमें] (**मृळ**) सुखी कीजिये॥१॥

**भावार्थः**-जो पुरुष विद्वानों के संग से विद्या की कामना करता और विद्या को प्राप्त होकर मनुष्य आदिकों को सुख देता है, वही आसन आदि से प्रतिष्ठा देने योग्य होता है॥१॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**स मानु॑षीषु दू॒ळभो॑ वि॒क्षु प्रा॒वीरम॑र्त्यः। दू॒तो विश्वे॑षां भुवत्॥२॥**

**सः। मानु॑षीषु। दुः॒ऽदभः॑। वि॒क्षु। प्र॒ऽअ॒वीः। अम॑र्त्यः। दूतः। विश्वे॑षाम्। भु॒व॒त्॥२॥**

**पदार्थः**-(**सः**) विद्वान् (**मानुषीषु**) मनुष्याणामिमासु (**दूळभः**) दुःखेन लब्धुं योग्यः (**विक्षु**) प्रजासु (**प्रावीः**) प्रकृष्टविद्याव्यापी (**अमर्त्यः**) मर्त्यस्वभावरहितः (**दूतः**) उपक्षेता सर्वविद्याप्रापकः (**विश्वेषाम्**) सर्वेषाम् (**भुवत्**)॥२॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यो मानुषीषु विक्षु विश्वेषां प्रावीरमर्त्यो दूतो भुवत्स इह दूळभोऽस्तीति वेद्यम्॥२॥

**भावार्थः**-ये विद्वांसस्सर्वेषां सुखसाधका विद्याप्रदा मनुष्याणां धर्म्माऽऽचरणे प्रवेशकाः स्वयं धार्मिकाः स्युस्ते जगति दुर्ल्लभाः सन्ति॥२॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो **(मानुषीषु)** मनुष्यसंबन्धी **(विक्षु)** प्रजाओं में **(विश्वेषाम्)** सब की **(प्रावीः)** उत्तम विद्या में व्याप्त **(अमर्त्यः)** मर्त्य के स्वभाव से रहित **(दूतः)** सम्पूर्ण विद्याओं का प्राप्त कराने वाला **(भुवत्)** होता है **(सः)** वह इस संसार में **(दूळभः)** दुर्लभ है, ऐसा जानना चाहिये॥२॥

**भावार्थः**-जो विद्वान् लोग सब लोगों के सुखसाधक विद्या के देने वाले और मनुष्यों को धर्म के आचरण में प्रवेश करानेवाले स्वयं धार्मिक होवें, वे संसार में दुर्लभ हैं॥२॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**स सद्म परि णीयते होता मन्द्रो दिविष्टिषु। उत पोता नि षीदति॥३॥**

**सः। सद्म। परि। नीयते। होता। मन्द्रः। दिविष्टिषु। उत। पोता। नि। सीदति॥३॥**

**पदार्थः**-**(सः)** विद्वान् **(सद्म)** सीदन्ति यस्मिँस्तत् **(परि)** सर्वतः **(नीयते)** **(होता)** दाता **(मन्द्रः)** आनन्दप्रदः **(दिविष्टिषु)** पक्षेष्ट्यादिसद्व्यवहारेषु **(उत)** अपि **(पोता)** पवित्रकर्त्ता **(नि)** **(सीदति)**॥३॥

**अन्वयः**-हे मनुष्याः! यो मन्द्रो होता उतापि पोता दिविष्टिषु सद्म निषीदति स विद्वद्भिः परिणीयते॥३॥

**भावार्थः**-यत्र पवित्रा आनन्दिता विद्यादिदातारो जनास्सन्ति तत्रैव समग्रो विनयो भवति॥३॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो **(मन्द्रः)** आनन्द का दाता **(होता)** दानकर्त्ता और **(उत)** भी **(पोता)** पवित्र करने वाला **(दिविष्टिषु)** पक्षेष्टि आदि उत्तम व्यवहारों के निमित्त **(सद्म)** बैठते हैं जिसमें उस गृह में **(नि, सीदति)** बैठता है **(सः)** वह विद्वान् विद्वानों को **(परि)** सब प्रकार **(नीयते)** प्राप्त होता है॥३॥

**भावार्थः**-जहाँ पवित्र आनन्दयुक्त और विद्या आदि के देनेवाले लोग हैं, वहीं सम्पूर्ण विनय होता है॥३॥

**अथ विद्वद्गुणानाह॥**

अब विद्वानों के गुणों को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**उत ग्ना अग्निरध्वर उतो गृहपतिर्दमे। उत ब्रह्मा नि षीदति॥४॥**

**उत। ग्नाः। अग्निः। अध्वरे। उतो इति। गृहऽपतिः। दमे। उत। ब्रह्मा। नि। सीदति॥४॥**

**पदार्थः**-**(उत)** अपि **(ग्नाः)** सुशिक्षिता वाचः **(अग्निः)** पावक इव **(अध्वरे)** अहिंसनीये **(उतो)** अपि **(गृहपतिः)** **(दमे)** दान्ते गृहे **(उत)** **(ब्रह्मा)** **(नि)** **(सीदति)**॥४॥

**अन्वयः**-हे मनुष्याः! यो गृहपतिरग्निरिव ग्ना निषीदति उत ब्रह्मा सन्नध्वरे दमे निषीदति उतो कर्म्म करोति उतापि सर्वान् बोधयति स एव सत्कर्त्तव्यो भवतीति विजानीत॥४॥

**भावार्थः**-ये मनुष्या पावकवत्पवित्रविद्या उतापि चतुर्वेदविदः प्रशस्तकर्म्मकर्त्तारो गृहस्वामिनस्स्युस्त एवोत्तमाऽधिकारेषु निषीदन्तु॥४॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो **(गृहपतिः)** गृह का स्वामी **(अग्निः)** अग्नि के सदृश **(ग्नाः)** उत्तम प्रकार शिक्षित वाणियों को **(नि, सीदति)** प्राप्त होता **(उत)** और **(ब्रह्मा)** चार वेद का पढ़ने वाला होता हुआ **(अध्वरे)** नहीं हिंसा करने योग्य दमनयुक्त **(दमे)** गृह में स्थित होता है **(उतो)** और कर्म्म करता और **(उत)** भी सब को बोध कराता है, वही सत्कार करने योग्य होता है, ऐसा जानो॥४॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य अग्नि के सदृश पवित्र विद्या वाले और चारों वेदों के ज्ञाता और भी उत्तम कर्म्मों के करने वाले गृह के स्वामी होवें, वे ही श्रेष्ठ अधिकारों में वर्त्तमान होवें॥४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**वेषि ह्यध्वरीयतामुपवक्ता जनानाम्। हव्या च मानुषाणाम्॥५॥**

**वेषि। हि। अध्वरिऽयताम्। उपऽवक्ता। जनानाम्। हव्या। च। मानुषाणाम्॥५॥**

**पदार्थः**-**(वेषि)** व्याप्नोषि **(हि)** **(अध्वरीयताम्)** य आत्मनोऽध्वरमहिंसायज्ञं कर्त्तुमिच्छन्ति तेषाम् **(उपवक्ता)** उपदेशकानामुपदेशकः **(जनानाम्)** प्रसिद्धानाम् **(हव्या)** दातुमर्हाणि **(च)** **(मानुषाणाम्)** मानुषेषु भवानाम्॥५॥

**अन्वयः**-हे विद्वन्! यतस्त्वमध्वरीयतां मानुषाणां जनानामुपवक्ता सन् हि हव्या च वेषि तस्मादुपदेशं कर्तुमर्हसि॥५॥

**भावार्थः**-य उपदेष्टारो धर्मोपदेशकाञ्जनयन्ति सुशिक्षितान् कृत्वोपदेशाय प्रेष्य मनुष्यान् बोधयन्ति ते हि जगत्कल्याणकारका भवन्ति॥५॥

**पदार्थः**-हे विद्वन्! जिससे आप **(अध्वरीयताम्)** अपने को अहिंसारूप यज्ञ करने वाले **(मानुषाणाम्)** मनुष्यों में उत्पन्न **(जनानाम्)** प्रसिद्ध पुरुषों को **(उपवक्ता)** उपदेश देनेवालों के भी उपदेशक हुए **(हि)** ही **(हव्या)** देने योग्य वस्तुओं को **(च)** भी **(वेषि)** प्राप्त होते हो, इससे उपदेश करने के योग्य हो॥५॥

**भावार्थः**-जो उपदेश देनेवाले लोग धर्म्म के उपदेश देने वालों को उत्पन्न करते और उत्तम प्रकार शिक्षित और उपदेश देने के लिये प्रवृत्त करके मनुष्यों को बोध कराते हैं, वे ही संसार के कल्याण करनेवाले होते हैं॥५॥

**अथ राजविषयमाह॥**

अब राजविषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**वेषीद्वस्य दूत्यं१ यस्य जुजोषो अध्वरम्। हव्यं मर्तस्य वोळ्हवे॥६॥**

**वेषि। इत्। ऊम् इति। अस्य। दूत्यम्। यस्य। जुजोषः। अध्वरम्। हव्यम्। मर्तस्य। वोळ्हवे॥६॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**वेषि**) व्याप्नोषि (**इत्**) (**उ**) (**अस्य**) (**दूत्यम्**) दूतस्य कर्म (**यस्य**) (**जुजोषः**) सेवस्व (**अध्वरम्**) अहिंसनीयं व्यवहारम् (**हव्यम्**) आदातुमर्हम् (**मर्त्तस्य**) मनुष्यस्य (**वोळ्हवे**) वोढुम्॥६॥

**अन्वयः**-हे विद्वन्! यस्त्वं यस्य मर्त्तस्य दूत्यं वेषि यस्य वोळ्हवे हव्यमध्वरमु जुजोषः स इद्भवानस्य दूतो भवितुमर्हति॥६॥

**भावार्थः**-हे राजानो! ये पूर्णविद्याः प्रगल्भा अनुरक्ता धार्मिका जनाः सन्ति ये राज्यस्य व्यवहारं वोढुं शक्नुवन्ति ताञ्छूरवीरान् सुहृदो दूतान् सम्पाद्य राज्यसमाचारान् विज्ञाय व्यवस्थां कुरुत॥६॥

**पदार्थः**-हे विद्वन्! जो आप (**यस्य**) जिस (**मर्तस्य**) मनुष्य के (**दूत्यम्**) दूतसम्बन्धी कर्म्म को (**वेषि**) प्राप्त होते हो और जिसके (**वोळ्हवे**) प्राप्त होने के लिये (**हव्यम्**) ग्रहण करने योग्य (**अध्वरम्**) हिंसारहित व्यवहार का (**उ**) ही (**जुजोषः**) सेवन करो (**इत्**) वही आप (**अस्य**) इसके दूत होने के योग्य हैं॥६॥

**भावार्थः**-हे राजा लोगो! जो पूर्ण विद्यायुक्त बहुत बोलने वाले स्नेही और धार्मिक जन हैं और जो लोग राज्य के व्यवहार को धारण कर सकते हैं, उन शूरवीर मित्रों को समाचारप्रापक बना और राज्य के समाचारों को जान के विशेष प्रबन्ध करो॥६॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अ॒स्माकं॑ जोष्यध्व॒रम॒स्माकं॑ य॒ज्ञम॑ङ्गिरः। अ॒स्माकं॑ शृणुधी॒ हव॑म्॥७॥**

**अ॒स्माक॑म्। जो॒षि॒। अ॒ध्व॒रम्। अ॒स्माक॑म्। य॒ज्ञम्। अ॒ङ्गि॒रः॒। अ॒स्माक॑म्। शृ॒णु॒धि॒। हव॑म्॥७॥**

**पदार्थः**-(**अस्माकम्**) (**जोषि**) सेवसे (**अध्वरम्**) न्यायव्यवहारम् (**अस्माकम्**) (**यज्ञम्**) विद्वत्सत्कारादिक्रियामयम् (**अङ्गिरः**) प्राण इव प्रिय (**अस्माकम्**) (**शृणुधि**) अत्र **संहितायामि**ति दीर्घः। (**हवम्**) शब्दार्थसम्बन्धविषयम्॥७॥

**अन्वयः**-हे अङ्गिरो राजन्! यतस्त्वमस्माकमध्वरमस्माकं यज्ञं जोषि तस्मादस्माकं हवं शृणुधि॥७॥

**भावार्थः**-हे राजन्! यतो भवानस्माकं रक्षकः प्रियोऽसि तस्मादर्थिप्रत्यर्थिनां वचांसि श्रुत्वा सततं न्यायं विधेहि॥७॥

**पदार्थः**-हे (**अङ्गिरः**) प्राण के सदृश प्रिय राजन्! जिससे आप (**अस्माकम्**) हम लोगों के (**अध्वरम्**) न्यायव्यवहार और (**अस्माकम्**) हम लोगों के (**यज्ञम्**) विद्वानों के सत्कार आदि क्रियामय व्यवहार को (**जोषि**) सेवन करते हो इससे (**अस्माकम्**) हम लोगों के (**हवम्**) शब्द अर्थ सम्बन्धरूप विषय को (**शृणुधि**) सुनिये॥७॥

**भावार्थः**-हे राजन्! जिससे कि आप हम लोगों की रक्षा करनेवाले प्रिय हैं, इससे अर्थी अर्थात् मुद्दई और प्रत्यर्थी अर्थात् मुद्दायले के वचनों को सुन के निरन्तर न्याय विधान करो॥७॥



www.9009.co.in

**अथ प्रजाविषयमाह॥**

अब प्रजा विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**परि॑ ते दू॒ळभो॒ रथो॒ऽस्माँ अ॑श्नोतु वि॒श्वत॑:। येन॒ रक्ष॑सि दा॒शुष॑:॥८॥९॥**

**परि॑। ते॒। दु॒:ऽदभ॑:। रथ॑:। अ॒स्मान्। अ॒श्नो॒तु॒। वि॒श्वत॑:। येन॑। रक्ष॑सि। दा॒शुष॑:॥८॥**

**पदार्थः**-(**परि**) सर्वतः (**ते**) तव (**दूळभः**) दुःखेन हिंसितुं योग्यः (**रथः**) रमणीयं यानम् (**अस्मान्**) (**अश्नोतु**) प्राप्नोतु (**विश्वतः**) सर्वतः (**येन**) (**रक्षसि**) (**दाशुषः**) विद्यादिदानकर्तॄन्॥८॥

**अन्वयः**-हे राजंस्त्वं येन दाशुषः परिरक्षसि स ते दूळभो रथोऽस्मान् विश्वतोऽश्नोतु॥८॥

**भावार्थः**-हे राजन्! यैस्साधनै राजसेनाङ्गैर्दृढैः प्रजायाः सर्वतो रक्षणं भवेत् तान्येवास्माभिरपि प्रापणीयानीति॥८॥

अथाग्निराजप्रजाविद्वद्गुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति नवमं सूक्तं नवमो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे राजन्! आप (**येन**) जिससे (**दाशुषः**) विद्या आदि के दान करने वालो की (**परि**) सब प्रकार (**रक्षसि**) रक्षा करते हो वह (**ते**) आप का (**दूळभः**) दुःख से नाश करने योग्य (**रथः**) सुन्दर वाहन (**अस्मान्**) हम लोगों को (**विश्वतः**) सब प्रकार (**अश्नोतु**) प्राप्त हो॥८॥

**भावार्थः**-हे राजन्! जिन साधनों और दृढ़ राजसेना के अङ्गों से प्रजा का सब प्रकार रक्षण होवे, वे ही हम लोगों से भी प्राप्त करने योग्य हैं॥८॥

इस सूक्त में अग्नि, राजा, प्रजा और विद्वानों के गुणवर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह नवम सूक्त और नवमा वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

**अथाष्टर्चस्य दशमस्य सूक्तस्य वामदेव ऋषिः। अग्निर्देवता। १ गायत्री। २, ३, ४, ७ भुरिग्गायत्री छन्दः। षड्जः स्वरः। ५, ८ स्वराडुष्णिक् छन्दः। ६ विराडुष्णिक्छन्दः। ऋषभः स्वरः॥**

**अथाग्निशब्दार्थविषयकं विद्वद्विषयमाह॥**

अब आठ ऋचावाले दशवें सूक्त का आरम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में अग्निशब्दार्थविषयक विद्वद्विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अग्ने तमद्याश्वं न स्तोमैः क्रतुं न भद्रं हृदिस्पृशम्। ऋध्यामा त ओहैः॥ १॥**

**अग्ने। तम्। अद्य। अश्वम्। न। स्तोमैः। क्रतुम्। न। भद्रम्। हृदिऽस्पृशम्। ऋध्याम। ते। ओहैः॥ १॥**

**पदार्थः**-हे **(अग्ने)** विद्वन्! **(तम्)** **(अद्य)** **(अश्वम्)** **(न)** इव **(स्तोमैः)** प्रशंसनैः **(क्रतुम्)** प्रज्ञाम् **(न)** इव **(भद्रम्)** कल्याणकरम् **(हृदिस्पृशम्)** हृदयस्य प्रियम् **(ऋध्याम)** समृध्याम **(ते)** तव **(ओहैः)** अर्दकैः कर्मभिः॥ १॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! वयमोहैः स्तोमैस्तेऽद्याश्वं न क्रतुं न यं हृदिस्पृशं भद्रमृध्याम तं त्वमस्मदर्थ-मृध्नुहि॥ १॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। मनुष्या यथाऽश्वेन मार्गं गन्तुं सद्यः शक्नुवन्ति तथा भद्रां धियं प्राप्य मोक्षमार्गं शीघ्रं प्राप्तुमर्हन्ति॥ १॥

**पदार्थः**-हे **(अग्ने)** विद्वन्! हम लोग **(ओहैः)** नम्रतायुक्त कर्मों और **(स्तोमैः)** प्रशंसाओं से **(ते)** आपके **(अद्य)** आज **(अश्वम्)** घोड़े के **(न)** सदृश और **(क्रतुम्)** बुद्धि के **(न)** सदृश जिस **(हृदिस्पृशम्)** हृदय को प्रिय और **(भद्रम्)** कल्याण करने वालों की **(ऋध्याम)** समृद्धि करें **(तम्)** उसकी आप हम लोगों के लिये समृद्धि करो॥ १॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। मनुष्य जैसे घोड़े से मार्ग को शीघ्र जा सकते हैं, वैसे श्रेष्ठ बुद्धि को प्राप्त होकर मोक्षमार्ग को शीघ्र पाने के योग्य हैं॥ १॥

**अथ राजविषयमाह॥**

अब राजविषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अधा ह्यग्ने क्रतोर्भद्रस्य दक्षस्य साधोः। रथीर्ऋतस्य बृहतो बभूथ॥ २॥**

**अध। हि। अग्ने। क्रतोः। भद्रस्य। दक्षस्य। साधोः। रथीः। ऋतस्य। बृहतः। बभूथ॥ २॥**

**पदार्थः**-**(अध)** आनन्तर्ये। अत्र **निपातस्य चे**ति दीर्घः। **(हि)** यतः **(अग्ने)** पावकवत्प्रकाशमान राजन् **(क्रतोः)** प्रज्ञायाः **(भद्रस्य)** कल्याणकरस्य **(दक्षस्य)** बलस्य **(साधोः)** सन्मार्गस्थस्य **(रथीः)** बहवो रथा विद्यन्ते यस्य सः **(ऋतस्य)** सत्यस्य न्यायस्य **(बृहतः)** महतः **(बभूथ)** भव॥ २॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! हि त्वं रथीः सन् भद्रस्य दक्षस्य क्रतोः साधोर्ऋतस्य बृहतो रक्षको बभूथाऽधाऽस्माकं राजा भव॥ २॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-राज्ञा सर्वेण बलेन विज्ञानेन साधूनां रक्षणं दुष्टानां ताडनं कृत्वा सत्यस्य न्यायस्योन्नतिः सततं विधेया॥२॥

**पदार्थः**-हे **(अग्ने)** राजन्! **(हि)** जिस कारण अग्नि के सदृश प्रकाशमान आप हैं, इससे **(रथीः)** बहुत वाहनों से युक्त होते हुए **(भद्रस्य)** कल्याणकर्त्ता तथा **(दक्षस्य)** बल **(क्रतोः)** बुद्धि और **(साधोः)** उत्तम मार्ग में वर्त्तमान **(ऋतस्य)** सत्य, न्याय और **(बृहतः)** बड़े व्यवहार के रक्षक **(बभूथ)** हूजिये **(अध)** इसके अनन्तर हम लोगों के राजा हूजिये॥२॥

**भावार्थः**-राजा को चाहिये कि सम्पूर्ण बल और विज्ञान से सज्जनों का रक्षण और दुष्ट पुरुषों का ताड़न करके सत्यन्याय की उन्नति निरन्तर करे॥२॥

**अथ प्रजाविषयमाह॥**

अब प्रजाविषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**एभिर्नो अर्कैर्भवा नो अर्वाङ् स्वर्ण ज्योतिः।**

**अग्ने विश्वेभिः सुमना अनीकैः॥३॥**

**एभिः। नः। अर्कैः। भव। नः। अर्वाङ्। स्वः। न। ज्योतिः। अग्ने। विश्वेभिः। सुऽमनाः। अनीकैः॥३॥**

**पदार्थः**-**(एभिः)** प्रज्ञाबलसाधुभिस्सहितः **(नः)** अस्माकमुपरि **(अर्कैः)** सत्कर्त्तव्यैः **(भव)** अत्र **द्व्यचोऽतस्तिङ** इति दीर्घः। **(नः)** अस्मभ्यम् **(अर्वाङ्)** इतरस्मिन् व्यवहारे वर्त्तमानः **(स्वः)** सूर्य इव सुखकारी **(न)** इव **(ज्योतिः)** प्रकाशकः **(अग्ने)** **(विश्वेभिः)** समग्रैः **(सुमनाः)** कल्याणमनाः **(अनीकैः)** शत्रुभिर्दुष्टैर्दस्युभिर्नेतुमशक्यैः सैन्यैः॥३॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! त्वमर्कैरेभिर्नो रक्षको भवाऽर्वाङ् स्वर्ण नो ज्योतिर्भव सुमनाः सन् विश्वेभिरनीकैः पालको भव॥३॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। ये राजानो बलबुद्धिसज्जनान् सङ्गत्य संरक्ष्य वर्द्धयित्वा प्रजापालनं विदधति ते सूर्य्य इव प्रकाशितयशसः सदानन्दिता भवन्ति॥३॥

**पदार्थः**-हे **(अग्ने)** अग्नि के सदृश तेजस्विन्! आप **(अर्कैः)** सत्कार और **(एभिः)** बुद्धि, बल और साधुओं के सहित **(नः)** हम लोगों के लिये रक्षक **(भव)** हूजिये और **(अर्वाङ्)** अन्य व्यवहार में वर्त्तमान **(स्वः)** जैसे सूर्य्य के सदृश सुखकारी **(न)** वैसे **(नः)** हम लोगों के ऊपर **(ज्योतिः)** प्रकाशक हूजिये और **(सुमनाः)** कल्याणकारक मनयुक्त होते हुए **(विश्वेभिः)** सम्पूर्ण **(अनीकैः)** शत्रु और दुष्ट डाकुओं से ग्रहण करने को अशक्य सेनाओं से पालनकर्त्ता हूजिये॥३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जो राजा लोग बल, बुद्धि और सज्जनों से संग उत्तम रक्षा कर और वृद्धि कराके प्रजा का पालन करते हैं, वे सूर्य्य के सदृश प्रकाशित यशयुक्त सदा आनन्दित होते हैं॥३॥



www.9009.co.in

**अथामात्यविषयमाह॥**

अब अमात्यविषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**आभिष्टे अद्य गीर्भिर्गृणन्तोऽग्ने दाशेम। प्र ते दिवो न स्तनयन्ति शुष्माः॥४॥**

**आभिः। ते। अद्य। गीःऽभिः। गृणन्तः। अग्ने। दाशेम। प्र। ते। दिवः। न। स्तनयन्ति। शुष्माः॥४॥**

**पदार्थः**-(**आभिः**) (**ते**) तुभ्यम् (**अद्य**) (**गीर्भिः**) प्रज्ञादिवर्धिकाभिर्वाग्भिः (**गृणन्तः**) स्तुवन्तः (**अग्ने**) विद्युदिव वर्त्तमान (**दाशेम**) दद्याम (**प्र**) (**ते**) तुभ्यम् (**दिवः**) विद्युतः (**न**) इव (**स्तनयन्ति**) ध्वनयन्ति (**शुष्माः**) बलपराक्रमयुक्ताः॥४॥

**अन्वयः**-हे अग्ने राजन्! वयमद्याभिर्गीर्भिस्ते गृणन्तः करं दाशेम यस्य ते दिवो न शुष्माः प्र स्तनयन्ति तस्मै तुभ्यं राज्यं दाशेम॥४॥

**भावार्थः**-हे राजन्! यदि भवान् विद्युत्तुल्यानमात्यान् रक्षित्वाऽस्मान् पालयेत् तर्हि वयं तव प्रजाः सन्तस्त्वामद्यारभ्य सततं प्रशंसेम पुष्कलमैश्वर्यं दद्याम॥४॥

**पदार्थः**-हे (**अग्ने**) बिजुली के सदृश वर्त्तमान राजन्! हम लोग (**अद्य**) आज शीघ्र (**आभिः**) इन (**गीर्भिः**) बुद्धि आदि की बढ़ाने वाली वाणियों से (**ते**) आपके लिये (**गृणन्तः**) स्तुति करते हुए कर धन (**दाशेम**) देवें जिन (**ते**) आपके लिये (**दिवः**) बिजुली के (**न**) सदृश (**शुष्माः**) बलपराक्रमयुक्त जन (**प्र, स्तनयन्ति**) शब्द करते हैं, उन आपके लिये राज्य देवें॥४॥

**भावार्थः**-हे राजन्! जो आप बिजुली के तुल्य मन्त्रियों की रक्षा करके हम लोगों की पालना करें तो हम लोग आपकी प्रजा हुए आज से लेकर आपकी निरन्तर प्रशंसा करें और बहुत धनादि सम्पत्ति देवें॥४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**तव स्वादिष्ठाग्ने संदृष्टिरिदा चिदह्न इदा चिदक्तोः।**

**श्रिये रुक्मो न रोचत उपाके॥५॥**

**तव। स्वादिष्ठा। अग्ने। सम्ऽदृष्टिः। इदा। चित्। अह्नः। इदा। चित्। अक्तोः। श्रिये। रुक्मः। न। रोचते। उपाके॥५॥**

**पदार्थः**-(**तव**) (**स्वादिष्ठा**) अतिशयेन स्वादिता (**अग्ने**) सूर्य्य इव प्रकाशमान (**संदृष्टिः**) सम्यग्दृष्टिः प्रेक्षणं (**इदा**) एव (**चित्**) (**अह्नः**) दिवसस्य (**इदा**) एव (**चित्**) (**अक्तोः**) रात्रेर्मध्ये (**श्रिये**) लक्ष्मीप्राप्तये (**रुक्मः**) रोचमानः सूर्य्यः (**न**) इव (**रोचते**) प्रकाशते (**उपाके**) समीपे॥५॥

**अन्वयः**-हे अग्ने राजन्! या स्वादिष्ठा संदृष्टिस्तवोपाक अह्नश्चिदक्तो रुक्मो न श्रिये रोचते सेदा भवता रक्षणीया यश्चित्सर्वगुणसम्पन्नो राज्यं रक्षितुं शत्रुं निरोद्धुं शक्नुयात् स इदा भवता गुरुवदासेवनीयः॥५॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-हे राजन्! योऽहर्निशं सम्प्रेक्षकोऽन्यायविरोधको न्यायप्रवर्त्तको दूतोऽमात्यो वा भवेत् स एव तावत् सत्कृत्य रक्षणीयः॥५॥

**पदार्थः**-हे **(अग्ने)** सूर्य के सदृश प्रकाशमान राजन्! जो **(स्वादिष्ठा)** अत्यन्त स्वादुयुक्त मधुर **(संदृष्टिः)** अच्छी दृष्टि **(तव)** आपके **(उपाके)** समीप में **(अह्नः)** दिन **(चित्)** और **(अक्तोः)** रात्रि के मध्य में **(रुक्मः)** प्रकाशमान सूर्य्य के **(न)** सदृश **(श्रिये)** लक्ष्मी की प्राप्ति के लिये **(रोचते)** प्रकाशित होती है **(इदा)** वही आपको रक्षा करने योग्य है **(चित्)** और जो सम्पूर्ण गुणों से युक्त पुरुष राज्य की रक्षा कर सके और शत्रु को रोक सके **(इदा)** वही आपको गुरु के सदृश सेवा करने योग्य है॥५॥

**भावार्थः**-हे राजन्! जो दिन रात्रि के प्रबन्ध देखने अन्याय का विरोध करने और न्याय की प्रवृत्ति करने वाला दूत वा मन्त्री होवे वही पहिले सत्कार करके रक्षा करने योग्य है॥५॥

**पुनः प्रजाविषयमाह॥**

फिर प्रजाविषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**घृतं न पूतं तनूररेपाः शुचि हिरण्यम्। तत्ते रुक्मो न रोचत स्वधावः॥६॥**

**घृतम्। न। पूतम्। तनूः। अरेपाः। शुचि। हिरण्यम्। तत्। ते। रुक्मः। न। रोचत। स्वधाऽवः॥६॥**

**पदार्थः**-**(घृतम्)** घृतमाज्यमुदकं वा **(न)** इव **(पूतम्)** पवित्रम् **(तनूः)** शरीरम् **(अरेपाः)** पापाचरणरहिताः **(शुचि)** पवित्रम् **(हिरण्यम्)** ज्योतिरिव सुवर्णम् **(तत्)** **(ते)** तव **(रुक्मः)** देदीप्यमानः **(न)** इव **(रोचत)** रोचन्ते **(स्वधावः)** स्वधा बह्वन्नं विद्यते यस्य तत्सम्बुद्धौ॥६॥

**अन्वयः**-हे स्वधावो राजन्! येऽरेपास्ते राज्ये रुक्मो न रोचत यच्छुचि हिरण्यं प्रापयन्ति तत्प्राप्यैतैः सह तव तनूः पूतं घृतं न चिरजीविनी भवतु॥६॥

**भावार्थः**-हे राजन्! ये सूर्य्य इव तेजस्विनो धनाढ्याः कुलीनाः पवित्राः प्रशंसिता निरपराधिनो वपुष्मन्तो विद्यावयोवृद्धाः स्युस्ते तव भवतो राज्यस्य च रक्षकाः सन्तु भवानेतेषां सम्मत्या वर्त्तित्वा दीर्घायुर्भवतु॥६॥

**पदार्थः**-हे **(स्वधावः)** बहुत अन्न से युक्त राजन्! जो **(अरेपाः)** पाप के आचरण से रहित **(ते)** आपके राज्य में **(रुक्मः)** अत्यन्त दिपते हुए के **(न)** सदृश **(रोचत)** शोभित होते हैं और जो **(शुचि)** पवित्र **(हिरण्यम्)** ज्योति के सदृश सुवर्ण को प्राप्त कराते हैं **(तत्)** उसको प्राप्त होकर उनके साथ आपका **(तनूः)** देह **(पूतम्)** पवित्र **(घृतम्)** घृत वा जल के **(न)** सदृश और चिरञ्जीव हो॥६॥

**भावार्थः**-हे राजन्! जो सूर्य्य के सदृश तेजस्वी, धनयुक्त, कुलीन, पवित्र, प्रशंसित, अपराधरहित, श्रेष्ठ शरीरयुक्त, विद्या और अवस्था में वृद्ध होवें, वे आपके और आपके राज्य के रक्षक हों और आप इन लोगों की सम्मति से वर्त्तमान होकर अधिक अवस्था युक्त हूजिये॥६॥

**पुना राजविषयमाह॥**



www.9009.co.in

फिर राजविषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**कृतं चिद्धि ष्मा सनेमि द्वेषोऽग्न इनोषि मर्तात्। इत्था यजमानादृतावः॥७॥**

**कृतम्। चित्। हि। स्म। सनेमि। द्वेषः। अग्ने। इनोषि। मर्तात्। इत्था। यजमानात्। ऋतऽवः॥७॥**

**पदार्थः**-(**कृतम्**) निष्पादितम् (**चित्**) अपि (**हि**) (**स्म**) एव (**सनेमि**) सनातनम् (**द्वेषः**) द्वेष्टुः (**अग्ने**) (**इनोषि**) व्याप्नोषि (**मर्तात्**) मनुष्यात् (**इत्था**) अनेन प्रकारेण (**यजमानात्**) धर्म्येण सङ्गतात् (**ऋतावः**) ऋतं सत्यं विद्यते यस्मिंस्तत्सम्बुद्धौ॥७॥

**अन्वयः**-हे ऋतावोऽग्ने! यस्त्वं हि चिद् द्वेषो मर्त्तादित्था यजमानाद्वा सनेमि कृतमिनोषि स स्म एव राज्यं कर्त्तुमर्हसि॥७॥

**भावार्थः**-हे राजादयो मनुष्या भवन्तः शत्रुभ्यो मित्रेभ्यश्च शुभान् गुणान् गृहीत्वा सुखानि प्राप्नुवन्तु॥७॥

**पदार्थः**-हे (**ऋतावः**) सत्य से युक्त (**अग्ने**) अग्नि के सदृश वर्त्तमान! जो आप (**हि**) ही (**चित्**)[82] निश्चित (**द्वेषः**) द्वेष करनेवाले (**मर्त्तात्**) मनुष्य से वा (**इत्था**) इस प्रकार (**यजमानात्**) धर्म से सङ्ग किये हुए जन से (**सनेमि**) अनादि सिद्ध और (**कृतम्**) उत्पन्न किये गये को (**इनोषि**) विशेषता से प्राप्त होते हैं (**स्म**) वही राज्य करने योग्य हैं॥७॥

**भावार्थः**-हे राजा आदि मनुष्यो! आप लोग शत्रु और मित्रों से उत्तम गुणों को ग्रहण करके सुखों को प्राप्त होइये॥७॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**शिवा नः सख्या सन्तु भ्रात्राग्ने देवेषु युष्मे।**

**सा नो नाभिः सदने सस्मिन्नूधन्॥८॥१०॥अनु० १॥**

**शिवा। नः। सख्या। सन्तु। भ्रात्रा। अग्ने। देवेषु। युष्मे इति। सा। नः। नाभिः। सदने। सस्मिन्। ऊधन्॥८॥**

**पदार्थः**-(**शिवा**) मङ्गलकारिणी (**नः**) अस्माकम् (**सख्या**) मित्रेण (**सन्तु**) (**भ्रात्रा**) बन्धुनेव वर्त्तमानेन (**अग्ने**) पावकवत्पवित्राचरण (**देवेषु**) विद्वत्सु दिव्यगुणेषु वा (**युष्मे**) युष्मान् (**सा**) (**नः**) अस्माकम् (**नाभिः**) मध्याङ्गम् (**सदने**) सीदन्ति यस्मिँस्तस्मिन् राज्ये (**सस्मिन्**) सर्वस्मिन्। अत्र **छान्दसो वर्णलोपो वे**तिर्विलोपः (**ऊधन्**) आढ्ये धनाढ्ये॥८॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! या ते नाभिरिव शिवा नीतिः सस्मिन्नूधन् सदने वर्त्तते सा नः देवेषु युष्मे प्रवर्त्तयतु। ये सख्या भ्रात्रा सह वर्त्तमाना इव नो रक्षकाः सन्तु तेषु त्वं विश्वसिहि॥८॥

८२. संस्कृत में 'चित्' का अर्थ 'अपि' दिया है, जबकि हिन्दी में 'निश्चित' किया है।



www.9009.co.in

**भावार्थः**-ये राजपुरुषा परस्मिन् मैत्रीं कृत्वा प्रजासु पितृवद्वर्त्तन्ते तैः सह यो राजनीतिं प्रचारयति स एव सर्वदा राज्यं भोक्तुमर्हतीति॥८॥

अत्राऽग्निराजाऽमात्यप्रजाकृत्यवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति चतुर्थमण्डले दशमं सूक्तं प्रथमोऽनुवाकऽस्तृतीयेऽष्टके पञ्चमेऽध्याये दशमो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे **(अग्ने)** अग्नि के सदृश पवित्र आचरण युक्त जो आपके **(नाभिः)** मध्य अङ्ग के सदृश **(शिवा)** मङ्गलकारिणी नीति **(सस्मिन्)** समस्त **(ऊधन्)** श्रेष्ठ धनाढ्य में और **(सदने)** विराजें जिसमें उस राज्य में वर्त्तमान है **(सा)** वह **(नः)** हम लोगों के **(देवेषु)** विद्वानों वा उत्तम गुणों में **(युष्मे)** आप लोगों को प्रवृत्त करे। जो लोग **(सख्या)** मित्र और **(भ्रात्रा)** बन्धु के सदृश वर्त्तमान पुरुष के साथ वर्त्तमानों के तुल्य **(नः)** हम लोगों की रक्षा करनेवाले **(सन्तु)** हों, उनमें आप विश्वास करो॥८॥

**भावार्थः**-जो राजपुरुष परस्पर मित्रता करके प्रजाओं में पिता के सदृश वर्त्तमान हैं, उन लोगों के साथ जो राजनीति का प्रचार करता है, वही सर्वदा राज्य भोगने के योग्य है॥८॥

इस सूक्त में अग्नि, राजा, मन्त्री और प्रजा के कृत्यवर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ संगति जाननी चाहिये॥

**यह चतुर्थ मण्डल में दशवां सूक्त प्रथम अनुवाक तृतीय अष्टक के पांचवें अध्याय में दशवां वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

**अथ षड्टचस्यैकादशस्य सूक्तस्य वामदेव ऋषिः। अग्निर्देवता। १, २, ५, ६ निचृत्त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः। ३ स्वराड्बृहती छन्दः। ऋषभः स्वरः। ४ भुरिक्पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः॥**

**अथाग्निसादृश्येन राजगुणानाह॥**

अब अग्नि की सदृशता से राजगुणों को कहते हैं॥

**भद्रं ते अग्ने सहसिन्ननीकमुपाक आ रोचते सूर्यस्य।**

**रुशद् दृशे ददृशे नक्तया चिदरूक्षितं दृश आ रूपे अन्नम्॥ १॥**

**भद्रम्। ते। अग्ने। सहसिन्। अनीकम्। उपाके। आ। रोचते। सूर्यस्य। रुशत्। दृशे। ददृशे। नक्तऽया। चित्। अरूक्षितम्। दृशे। आ। रूपे। अन्नम्॥ १॥**

**पदार्थः**-(**भद्रम्**) कल्याणकरम् (**ते**) तव (**अग्ने**) पावकवद्वर्त्तमान (**सहसिन्**) बहुबलयुक्त (**अनीकम्**) सैन्यम् (**उपाके**) समीपे (**आ**) (**रोचते**) प्रकाशते (**सूर्य्यस्य**) (**रुशत्**) सुरूपम् (**दृशे**) द्रष्टुम् (**ददृशे**) दृश्यते (**नक्तया**) रात्र्या (**चित्**) अपि (**अरूक्षितम्**) रूक्षतारहितम् (**दृशे**) द्रष्टव्ये (**आ**) (**रूपे**) (**अन्नम्**) अत्तव्यम्॥ १॥

**अन्वयः**-हे सहसिन्नग्ने! यस्य त उपाके भद्रं रुशदनीकं सूर्य्यस्य किरणा इवारोचते नक्तया रात्र्या सहितश्चन्द्र इव ददृशे चिदपि सुखं दृशेऽरूक्षितमन्नं दृशे रूप आ रोचते तस्य तव सर्वत्र विजय इति निश्चयः॥ १॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यो राजा सुशिक्षितया सेनया शुभैर्गुणैरैश्वर्य्येण च सहितः प्रजाः पालयति दुष्टान् दण्डयति स चन्द्रवत्सूर्य्य इव सर्वत्र प्रकाशितो भवति॥ १॥

**पदार्थः**-हे (**सहसिन्**) बहुत बल से युक्त (**अग्ने**) अग्नि के सदृश वर्त्तमान! जिन (**ते**) आपके (**उपाके**) समीप में (**भद्रम्**) कल्याणकारक (**रुशत्**) उत्तम स्वरूपयुक्त (**अनीकम्**) सेना (**सूर्यस्य**) सूर्य के किरणों के सदृश (**आ, रोचते**) प्रकाशित होती है और (**नक्तया**) रात्रि के सहित चन्द्रमा के सदृश (**ददृशे**) दीखती (**चित्**) और सुख (**दृशे**) देखने के (**अरूक्षितम्**) रुखेपन से रहित (**अन्नम्**) भोजन करने योग्य पदार्थ (**दृशे**) देखने के योग्य (**रूपे**) रूप में (**आ**) प्रकाशित होता है, उन आप का सर्वत्र विजय हो यह निश्चय है॥ १॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो राजा उत्तम प्रकार शिक्षित सेना [तथा] उत्तम गुणों और ऐश्वर्य के सहित प्रजाओं का पालन करता और दुष्टों को पीड़ा देता है, वह चन्द्र और सूर्य के सदृश सर्वत्र प्रकाशित होता है॥ १॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**वि षाह्यग्ने गृणते मनीषां खं वेपसा तुविजात स्तवानः।**



www.9009.co.in

**विश्वेभिर्यद्वावनः शुक्र देवैस्तन्नो रास्व सुमहो भूरि मन्म॥२॥**

**वि। साहि। अग्ने। गृणते। मनीषाम्। खम्। वेपसा। तुविऽजात। स्तवानः। विश्वेभिः। यत्। वावनः। शुक्र। देवैः। तत्। नः। रास्व। सुऽमहः। भूरि। मन्म॥२॥**

**पदार्थः**-(**वि**) विशेषेण (**साहि**) कर्मसमाप्तिं कुरु (**अग्ने**) पावकवद्विद्यया प्रकाशिते (**गृणते**) स्तुवते (**मनीषाम्**) मनस ईषिणीं प्रज्ञाम् (**खम्**) आकाशम् (**वेपसा**) राज्यपालनादिकर्मणा। **वेपस इति कर्मनामसु पठितम्।** (निघं०२.१) (**तुविजात**) बहुषु प्रसिद्ध (**स्तवानः**) स्तावकः सन् (**विश्वेभिः**) सर्वैः (**यत्**) (**वावनः**) सम्भज (**शुक्र**) आशुकर (**देवैः**) विद्वद्भिः (**तत्**) (**नः**) अस्मभ्यम् (**रास्व**) देहि (**सुमहः**) अतिमहत् (**भूरि**) बहु (**मन्म**) विज्ञानम्॥२॥

**अन्वयः**-हे तुविजाताग्ने! स्तवानस्त्वं वेपसा मनीषां खं गृणते वि साहि। हे शुक्र! विश्वेभिर्देवैस्सह त्वं यद्वावनस्तत्सुमहो भूरि मन्म नो रास्व॥२॥

**भावार्थः**-हे राजँस्त्वं जितेन्द्रियो भूत्वा प्रज्ञां प्राप्य कर्मणारब्धकार्य्यं समाप्तं कुरु। सर्वैर्विद्वद्भिस्सहितः पूर्णविज्ञानं प्रजाभ्यः सुखं प्रयच्छ॥२॥

**पदार्थः**-हे (**तुविजात**) बहुतों में प्रसिद्ध (**अग्ने**) अग्नि के सदृश विद्या से प्रकाशित! (**स्तवानः**) स्तुति करनेवाले हुए आप (**वेपसा**) राज्य के पालन आदि कर्म से (**मनीषाम्**) मन की नियामक बुद्धि और (**खम्**) आकाश की (**गृणते**) स्तुति करने वाले के लिये (**वि**) विशेष करके (**साहि**) कर्मों की समाप्ति करो। हे (**शुक्र**) शीघ्रता करनेवाले! (**विश्वेभिः**) सम्पूर्ण (**देवैः**) विद्वानों के साथ आप (**यत्**) जिसे (**वावनः**) उत्तम प्रकार भजो सेवो (**तत्**) उस (**सुमहः**) बहुत बड़े और (**भूरि**) बहुत (**मन्म**) विज्ञान को (**नः**) हम लोगों के लिये (**रास्व**) दीजिये॥२॥

**भावार्थः**-हे राजन्! आप जितेन्द्रिय हो और बुद्धि को प्राप्त होकर कर्म से प्रारम्भ किये हुए कार्य्य को समाप्त करो और सम्पूर्ण विद्वानों के सहित पूर्ण विज्ञान और प्रजाओं के लिये सुख दीजिये॥२॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**त्वदग्ने काव्या त्वन्मनीषास्त्वदुक्था जायन्ते राध्यानि।**

**त्वदेति द्रविणं वीरपेशा इत्थाधिये दाशुषे मर्त्याय॥३॥**

**त्वत्। अग्ने। काव्या। त्वत्। मनीषाः। त्वत्। उक्था। जायन्ते। राध्यानि। त्वत्। एति। द्रविणम्। वीरऽपेशाः। इत्थाऽधिये। दाशुषे। मर्त्याय॥३॥**

**पदार्थः**-(**त्वत्**) तव सकाशात् (**अग्ने**) विद्वन् (**काव्या**) कविभिर्विद्वद्भिर्निर्मितानि (**त्वत्**) (**मनीषाः**) प्रमाः (**त्वत्**) (**उक्था**) प्रशंसनीयानि (**जायन्ते**) (**राध्यानि**) संसाधनीयानि (**त्वत्**) (**एति**)



www.9009.co.in

प्राप्नोति **(द्रविणम्)** **(वीरपेशाः)** वीराणां पेशो रूपमिव रूपं येषान्ते **(इत्थाधिये)** अनेकप्रकारेण धीर्यस्य तस्मै **(दाशुषे)** दात्रे **(मर्त्याय)** मनुष्याय॥३॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! वीरपेशा वयमित्थाधिये दाशुषे मर्त्याय त्वत् काव्या त्वन्मनीषास्त्वदुक्था राध्यानि जायन्ते त्वद् द्रविणमेति तस्मात् त्वां वयं भजेम॥३॥

**भावार्थः**-हे राजन्! यदि त्वं विद्वाञ्जितेन्द्रियो न्यायकारी भवेस्तर्हि त्वदनुकरणेन सर्वे मनुष्याः सत्याचारे प्रवर्त्यैश्वर्य्यं प्राप्य सर्वस्याः प्रजाया हितं साद्धुं शक्नुयुः॥३॥

**पदार्थः**-हे **(अग्ने)** विद्वन्! आप **(वीरपेशाः)** वीर पुरुषों के रूप के सदृश रूपवाले हम लोग **(इत्थाधिये)** इस प्रकार **(त्वत्)** आपके समीप से बुद्धि युक्त **(दाशुषे)** देनेवाले **(मर्त्याय)** मनुष्य के लिये **(काव्या)** कवि विद्वानों के निर्मित किये काव्य **(त्वत्)** आपके समीप से **(मनीषाः)** यथार्थज्ञान **(त्वत्)** आपके समीप से **(उक्था)** प्रशंसा करने **(राध्यानि)** और सिद्ध करने योग्य द्रव्य **(जायन्ते)** प्रसिद्ध होते हैं **(त्वत्)** आपके समीप से **(द्रविणम्)** धन **(एति)** प्राप्त होता है, इससे हम लोग आपकी सेवा करें॥३॥

**भावार्थः**-हे राजन्! जो आप विद्वान्, जितेन्द्रिय और न्यायकारी होवें तो आपके अनुकरण से सम्पूर्ण मनुष्य सत्य आचरण में प्रवृत्त हो और ऐश्वर्य्य को प्राप्त होकर सम्पूर्ण प्रजा का हित साध सकें॥३॥

**अथाग्निसम्बन्धेन विद्वद्गुणानाह॥**

अब अग्निसम्बन्ध से विद्वानों के गुणों को कहते हैं॥

**त्वद्वाजी वाजंभरो विहाया अभिष्टिकृज्जायते सत्यशुष्मः।**

**त्वद्रयिर्देवजूतो मयोभुस्त्वदाशुर्जूजुवाँ अग्ने अर्वा॥४॥**

**त्वत्। वाजी। वाजम्ऽभरः। विऽहायाः। अभिष्टिऽकृत्। जायते। सत्यऽशुष्मः। त्वत्। रयिः। देवऽजूतः। मयःऽभुः। त्वत्। आशुः। जूजुऽवान्। अग्ने। अर्वा॥४॥**

**पदार्थः**-**(त्वत्)** तव सकाशात् **(वाजी)** वेगवान् **(वाजंभरः)** प्राप्तं बहुभारं धरति सः **(विहायाः)** विजिहीते सद्यो गच्छति येन सः **(अभिष्टिकृत्)** योऽभिष्टिं करोति सः **(जायते)** **(सत्यशुष्मः)** सत्यं शुष्मं बलं यस्मिन्त्सः **(त्वत्)** **(रयिः)** धनम् **(देवजूतः)** देवैर्विदितश्चलितः **(मयोभुः)** सुखम्भावुकः **(त्वत्)** **(आशुः)** शीघ्रं गन्ता **(जूजुवान्)** भृशं गमयिता **(अग्ने)** विद्वन् **(अर्वा)** यः सद्य ऋच्छति गच्छति सः॥४॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! यस्त्वत्प्रेरितो विहाया वाजंभरः सत्यशुष्मोऽभिष्टिकृद् वाजी जायते यस्त्वद्रयिर्देवजूतो मयोभुर्यस्त्वज्जूजुवानर्वाऽऽशुर्जायते सोऽस्माभिरप्युत्पादनीयः॥४॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यदि युष्माकं पुरुषार्थाद्विद्युदादिस्वरूपोऽग्निर्विद्यया प्रसिद्धो भवेत्तर्हि बहुभारयानहर्त्ता सुखहेतुर्धनजनकः सद्यो गमयिता जायेत॥४॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-हे **(अग्ने)** विद्वन्! जो **(त्वत्)** आपके समीप से प्रेरणा किया गया **(विहायाः)** जिससे वह बड़ा और शीघ्र जाता है इससे **(वाजंभरः)** प्राप्त हुए बहुत भार को धारण करने वाला **(सत्यशुष्मः)** सत्यबलयुक्त **(अभिष्टिकृत्)** अपेक्षितकर्म का कर्त्ता **(वाजी)** वेगवान् और **(जायते)** होता है वा जो **(त्वत्)** आपके समीप से **(रयिः)** धन **(देवजूतः)** विद्वानों ने जाना और चलाया हुआ **(मयोभुः)** सुख की भावना कराने वाला वा जो **(त्वत्)** आपके समीप से **(जूजुवान्)** शीघ्र प्राप्त कराने और **(अर्वा)** शीघ्र जानेवाला **(आशुः)** शीघ्रगामी **(जायते)** होता है, वह हम लोगों को भी उत्पन्न करने योग्य है॥४॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो आप लोगों के पुरुषार्थ से बिजुली आदि स्वरूप अग्निविद्या से प्रसिद्ध होवे तो बहुत भारवाले वाहन का पहुंचानेवाला सुख का हेतु और धन उत्पन्न कराने वा शीघ्र ले चलने वाला होवे॥४॥

**पुनरग्निविषयमाह॥**

फिर अग्नि के विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**त्वाम॑ग्ने प्र॒थ॒मं दे॑व॒यन्तो॑ दे॒वं मर्ता॑ अमृत म॒न्द्रजि॑ह्वम्।**

**द्वे॒षो॒युत॒मा वि॑वासन्ति धी॒भिर्दमू॑नसं गृ॒हप॑तिम॒मूर॑म्॥५॥**

**त्वाम्। अ॒ग्ने॒। प्र॒थ॒मम्। दे॒व॒ऽयन्तः॑। दे॒वम्। मर्ताः॑। अ॒मृ॒त॒। म॒न्द्रऽजि॑ह्वम्। द्वे॒षः॒ऽयुत॑म्। आ। वि॒वा॒स॒न्ति॒। धी॒भिः। दमू॑ऽनसम्। गृ॒हऽप॑तिम्। अ॒मूर॑म्॥५॥**

**पदार्थः**-**(त्वाम्)** **(अग्ने)** परमविद्वन् **(प्रथमम्)** आदिमम् **(देवयन्तः)** कामयमानाः **(देवम्)** कमनीयम् **(मर्त्ताः)** मनुष्याः **(अमृत)** स्वात्मस्वरूपेण नाशरहित **(मन्द्रजिह्वम्)** मन्द्रा आनन्दजनिका जिह्वा वाणी यस्य **(द्वेषोयुतम्)** द्वेषादिभी रहितम् **(आ)** **(विवासन्ति)** परिचरन्ति **(धीभिः)** कर्मभिः प्रज्ञाभिर्वा **(दमूनसम्)** दमनशीलम् **(गृहपतिम्)** गृहस्वामिनम् **(अमूरम्)** मूढतादिदोषरहितं विद्वांसम्॥५॥

**अन्वयः**-हे अमृताग्ने! ये धीभिर्मन्द्रजिह्वं द्वेषोयुतं दमूनसममूरं प्रथमं देवं गृहपतिं त्वां देवयन्तो मर्त्ता आविवासन्ति तांस्त्वमपि सेवस्व॥५॥

**भावार्थः**-ये विद्वांसो भूत्वा गृहस्थान् बोधयित्वा सर्वेषां सन्तानान् ब्रह्मचर्येण सुशिक्षां विद्यां ग्राहयित्वाऽविद्यादिदोषान् निवार्य्य शमादिशुभगुणान्वितान् कुर्वन्ति त एवात्र कमनीया भवन्ति॥५॥

**पदार्थः**-हे **(अमृत)** अपने आत्मस्वरूप से नाशरहित **(अग्ने)** अत्यन्त विद्वान्! जो लोग **(धीभिः)** कर्मों वा बुद्धियों से **(मन्द्रजिह्वम्)** आनन्द उत्पन्न करने वाली वाणीयुक्त **(द्वेषोयुतम्)** द्वेष आदि कर्मवियुक्त **(दमनूसम्)** इन्द्रियों को रोकने वाले **(अमूरम्)** मूर्खता आदि दोषरहित विद्वान् **(प्रथमम्)** आदिम **(देवम्)** सुन्दर **(गृहपतिम्)** गृह के स्वामी **(त्वाम्)** आपकी **(देवयन्तः)** कामना करते हुए **(मर्त्ताः)** मनुष्य **(आ, विवासन्ति)** सेवा करते हैं, उनकी आप भी सेवा करो॥५॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-जो लोग विद्वान् होकर गृहस्थों को बोध [करा के], सब के सन्तानों को ब्रह्मचर्य्य से उत्तम शिक्षा और विद्या ग्रहण करा के तथा अविद्या आदि दोषों को दूर करके शम, दम आदि उत्तम गुणों से युक्त करते हैं, वे ही इस संसार में सुन्दर होते हैं॥५॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**आ॒रे अ॒स्मद॑मतिमा॒रे अंह॑ आ॒रे विश्वां॑ दु॒र्म॒तिं यन्नि॒पासि॑।**

**दो॒षा शि॒वः स॑हसः सूनो अग्ने॒ यं दे॒व आ चि॒त्सच॑से स्व॒स्ति॥६॥११॥**

**आ॒रे। अ॒स्मत्। अम॑तिम्। आ॒रे। अंह॑ः। आ॒रे। विश्वा॑म्। दुः॒ऽम॒तिम्। यत्। नि॒ऽपासि॑। दो॒षा। शि॒वः। स॒ह॒सः॒। सू॒नो॒ इति॑। अ॒ग्ने। यम्। दे॒वः। आ। चि॒त्। सच॑से। स्व॒स्ति॥६॥**

**पदार्थः**-(**आरे**) दूरे (**अस्मत्**) (**अमतिम्**) (**आरे**) (**अंहः**) पापात्मकं कर्म (**आरे**) (**विश्वाम्**) समग्राम् (**दुर्म्मतिम्**) दुष्टां प्रज्ञाम् (**यत्**) यतः (**निपासि**) नितरां रक्षसि (**दोषा**) रात्रौ (**शिवः**) मङ्गलकारी (**सहसः**) बलवतः (**सूनो**) अपत्य (**अग्ने**) परमविद्वन् (**यम्**) (**देवः**) जगदीश्वर इव (**आ**) (**चित्**) अपि (**सचसे**) सम्बध्नासि (**स्वस्ति**) सुखम्॥६॥

**अन्वयः**-हे सहसः सूनोऽग्ने! यत्त्वं देव इवाऽस्मदारे अमतिमारे अंह आरे विश्वां दुर्मतिं निक्षिप्य यं निपासि तं शिवः सन् दोषा दिवसे चित्स्वस्ति आ सचसे तस्मादस्माभिः पूज्योऽसि॥६॥

**भावार्थः**-इदं वयं निश्चिनुमो येऽस्मान् दुष्टाचारादधर्मसङ्गाद् दुर्बुद्धेर्दूरेकुर्वन्ति त एवाऽहर्निशमस्माभिः सत्कर्त्तव्याः सन्तीति॥६॥

अत्राग्निराजविद्वद्गुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या।

**इत्येकादशं सूक्तमेकादशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे (**सहसः**) बलवान् के (**सूनो**) सन्तान और (**अग्ने**) अत्यन्त विद्वान् (**यत्**) जिससे आप (**देवः**) ईश्वर के सदृश (**अस्मत्**) हम लोगों से (**आरे**) दूर (**अमतिम्**) मूर्खपन को (**आरे**) दूर (**अंहः**) पापकर्म को और (**आरे**) दूर (**विश्वाम्**) समग्र (**दुर्मतिम्**) दुष्ट बुद्धि को निरन्तर अलग करा (**यम्**) जिसकी (**निपासि**) अत्यन्त रक्षा करते हो उसको (**शिवः**) मङ्गलकारी हुए (**दोषा**) रात्रि और दिन में (**चित्**) भी (**स्वस्ति**) सुख को (**आ, सचसे**) सम्बन्ध कराते हो, इससे हम लोगों से पूजा करने योग्य हो॥६॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-यह हम लोग निश्चय करते हैं कि जो लोग हम लोगों को अधर्मी और दुष्ट बुद्धिवाले पुरुष से दूर करते हैं, वे ही दिन-रात्रि हम लोगों से सत्कार करने योग्य हैं॥६॥

इस सूक्त में अग्नि, राजा, विद्वान् पुरुष के गुणवर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह ग्यारहवां सूक्त और ग्यारहवां वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

**अथ षड्चस्य द्वादशस्य [सूक्तस्य] वामदेव ऋषिः। अग्निर्देवता। १, ५ निचृत्त्रिष्टुप्। २ त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः। ३, ४ भुरिक् पङ्क्तिः। ६ पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः॥**

**पुनरग्निसादृश्येन विद्वद्गुणानाह॥**

अब छः ऋचावाले बारहवें सूक्त का आरम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में फिर अग्निसादृश्य होने से विद्वानों के विषय को कहते हैं॥

**यस्त्वामग्न इनधते यतस्रुक् त्रिस्ते अन्नं कृणवत्सस्मिन्नहन्।**

**स सु द्युम्नैरभ्यस्तु प्रसक्षत्तव क्रत्वा जातवेदश्चिकित्वान्॥ १॥**

**यः। त्वाम्। अग्ने। इनधते। यतऽस्रुक्। त्रिः। ते। अन्नम्। कृणवत्। सस्मिन्। अहन्। सः। सु। द्युम्नैः। अभि। अस्तु। प्रऽसक्षत्। तव। क्रत्वा। जातऽवेदः। चिकित्वान्॥ १॥**

**पदार्थः**-(**यः**) (**त्वाम्**) (**अग्ने**) विद्वन्! (**इनधते**) ईश्वरेण सङ्गमयेत् (**यतस्रुक्**) यता उद्यता स्रुचो येन सः (**त्रिः**) त्रिवारम् (**ते**) तुभ्यम् (**अन्नम्**) (**कृणवत्**) कुर्य्यात् (**सस्मिन्**) सर्वस्मिन् (**अहन्**) अहनि दिवसे (**सः**) (**सु**) (**द्युम्नैः**) यशोभिर्धनैर्वा (**अभि**) (**अस्तु**) (**प्रसक्षत्**) प्रसङ्गं कुर्य्यात् (**तव**) (**क्रत्वा**) प्रज्ञया कर्मणा वा (**जातवेदः**) जातप्रज्ञान (**चिकित्वान्**) सत्यार्थविज्ञापकः॥ १॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! यतःस्रुक् सस्मिन्नहँस्त्वामिनधते तेऽन्नं कृणवत्। हे जातवेदो! यस्तव क्रत्वा चिकित्वान्त्सन्नभि प्रसक्षत् स सुद्युम्नैस्त्रिर्युक्तोऽस्तु॥ १॥

**भावार्थः**-हे विद्वांसो! ये तुभ्यमीश्वरज्ञानमहाविहारविद्यां शोभनां मतिं सर्वदा प्रयच्छन्ति ते कीर्त्तिधनयुक्ताः कर्त्तव्याः॥ १॥

**पदार्थः**-हे (**अग्ने**) विद्वन्! (**यतःस्रुक्**) उद्यत किये हैं हवन करने के पात्र विशेषरूप स्रुवा जिसने ऐसा पुरुष (**सस्मिन्**) सब में (**अहन्**) दिन में (**त्वाम्**) आपको (**इनधते**) ईश्वर से मिलावे और (**ते**) आपके लिये (**अन्नम्**) भोजन के पदार्थ को (**कृणवत्**) सिद्ध करे और हे (**जातवेदः**) श्रेष्ठ ज्ञानयुक्त (**यः**) जो (**तव**) आपकी (**क्रत्वा**) बुद्धि वा कर्म से (**चिकित्वान्**) सत्य अर्थ का जानने वाला होता हुआ (**अभि, प्रसक्षत्**) प्रसङ्ग को करे (**सः**) वह (**सु, द्युम्नैः**) उत्तम यशों वा धनों से (**त्रिः**) तीन वार युक्त (**अस्तु**) हो॥ १॥

**भावार्थः**-हे विद्वानो! जो लोग आपके लिये ईश्वरज्ञान, बड़े विहार की विद्या और उत्तमबुद्धि को सब काल में देते हैं, वे यश और धन से युक्त करने चाहिये॥ १॥

**पुनरग्निसादृश्येन राजगुणानाह॥**

फिर अग्नि के सादृश्य से राजगुणों को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**इध्मं यस्ते जभरच्छश्रमाणो महो अग्ने अनीकमा सपर्यन्।**



www.9009.co.in

**स इ॒ध्या॒नः प्रति॒ दो॒षामु॒षासं॒ पुष्य॒न् र॒यिं स॒चते॒ घ्नन्न॒मित्रा॒न्॥ २॥**

**इ॒ध्मम्। यः। ते॒। ज॒भर॑त्। श॒श्र॒मा॒णः। म॒हः। अ॒ग्ने॒। अनी॑कम्। आ। स॒प॒र्यन्। सः। इ॒धा॒नः। प्रति॑। दो॒षाम्। उ॒षस॑म्। पुष्य॑न्। र॒यिम्। स॒च॒ते॒। घ्नन्। अ॒मित्रा॑न्॥ २॥**

**पदार्थः**-(**इध्मम्**) देदीप्यमानम् (**यः**) (**ते**) तव (**जभरत्**) यथावद्धरेत् पोषयेत्पुष्येत् (**शश्रमाणः**) भृशं श्रमं कुर्वन् (**महः**) महत् (**अग्ने**) राजन् (**अनीकम्**) विजयमानं सैन्यम् (**आ**) समन्तात् (**सपर्य्यन्**) सेवमानः (**सः**) (**इधानः**) प्रकाशमानः (**प्रति**) (**दोषाम्**) रात्रिम् (**उषासम्**) दिनम् (**पुष्यन्**) (**रयिम्**) राज्यश्रियम् (**सचते**) प्राप्नोति (**घ्नन्**) विनाशयन् (**अमित्रान्**) धर्मद्वेषिणः शत्रून्॥ २॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! यः शश्रमाणो बलाध्यक्षस्ते मह इध्ममनीकमासपर्य्यञ्जभरत् स इधानः प्रतिदोषामुषासं प्रति पुष्यन्नमित्रान् घ्नन् रयिं सचते॥ २॥

**भावार्थः**-हे राजन्! ये तव बलाध्यक्षा न्यायाधीशा विद्याविनयधर्मादिभिः प्रकाशमानाः स्वप्रजाः पालयन्तो दुष्टाञ्छत्रून् घ्नन्तो विजयन्ते तेभ्यो भवता पुष्कलां प्रतिष्ठां बहुधनं च दत्वाहर्निशं धर्मार्थकाममोक्षोन्नतिर्विधेया॥ २॥

**पदार्थः**-हे (**अग्ने**) राजन्! (**यः**) जो (**शश्रमाणः**) अत्यन्त परिश्रम करता हुआ सेना का स्वामी (**ते**) आपकी (**महः**) बड़ी (**इध्मम्**) प्रकाशयुक्त (**अनीकम्**) विजय को प्राप्त होती हुई सेना की (**आ**) सब प्रकार (**सपर्य्यन्**) सेवा करता हुआ (**जभरत्**) यथावत् हरे पोषे पुष्ट हो अर्थात् शत्रु बल हरे और आप पुष्ट हो (**सः**) वह (**इधानः**) प्रकाशमान होता (**प्रति, दोषाम्**) प्रत्येक रात्रि और (**उषासम्**) प्रत्येक दिन (**पुष्यन्**) पुष्टि पाता (**अमित्रान्**) और धर्म से द्वेष करने वाले शत्रुओं का (**घ्नन्**) नाश करता हुआ (**रयिम्**) राज्यलक्ष्मी को (**सचते**) प्राप्त होता है॥ २॥

**भावार्थः**-हे राजन्! जो आपके सेनाध्यक्ष और न्यायाधीश विद्या विनय और धर्म आदि से प्रकाशमान हुए अपनी प्रजाओं का पालन करते और दुष्ट शत्रुओं का नाश करते हुए विजय को प्राप्त होते हैं, उनके लिये आपको चाहिये कि बहुत प्रतिष्ठा और बहुत धन देकर दिन-रात्रि धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष की उन्नति करें॥ २॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अ॒ग्निरी॑शे बृह॒तः क्ष॒त्रिय॑स्या॒ग्निर्वाज॑स्य प॒रम॑स्य रा॒यः।**

**दधा॑ति॒ रत्नं॑ वि॒धते॒ यवि॑ष्ठो॒ व्या॑नु॒षङ् मर्त्या॑य स्व॒धावा॑न्॥ ३॥**

**अ॒ग्निः। ईशे॒। बृ॒ह॒तः। क्ष॒त्रिय॑स्य। अ॒ग्निः। वाज॑स्य। प॒रम॑स्य। रा॒यः। दधा॑ति। रत्न॑म्। वि॒ध॒ते। यवि॑ष्ठः। वि। आ॒नु॒षक्। मर्त्या॑य। स्व॒धाऽवा॑न्॥ ३॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**अग्निः**) पावक इव (**ईशे**) ईष्टे ऐश्वर्य्यं करोति (**बृहतः**) महतः (**क्षत्रियस्य**) क्षात्रधर्मयुक्तस्य (**अग्निः**) विद्युदिव वर्त्तमानः (**वाजस्य**) वेगस्य विज्ञानस्य वा (**परमस्य**) अत्युत्तमस्य (**रायः**) धनादेर्मध्ये (**दधाति**) (**रत्नम्**) रमणीयं धनम् (**विधते**) विधानं कुर्वते (**यविष्ठः**) अतिशयेन युवा शरीरात्मबलयुक्तः (**वि**) (**आनुषक्**) अनुकूलः (**मर्त्याय**) मरणधर्माय (**स्वधावान्**) बह्वन्नादियुक्तः॥३॥

**अन्वयः**-हे राजप्रजाजना! योऽग्निरिव क्षत्रियस्य बृहतो वाजस्य परमस्य राय ईशे यविष्ठः स्वधावानानुषग् विधते मर्त्यायाग्निरिव रत्नं विदधाति स सर्वैः सत्कर्त्तव्यः॥३॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। ये मनुष्याः सूर्य्यवद्विद्युदिव राज्यैश्वर्य्यस्योन्नतिं कुर्वाणाः कीर्तिं प्रसारयन्ति ते सर्वतः सर्वथा सत्कारमाप्नुवन्ति॥३॥

**पदार्थः**-हे राजा और प्रजाजनो! जो (**अग्निः**) अग्नि के सदृश जन (**क्षत्रियस्य**) क्षात्रधर्मयुक्त (**बृहतः**) बड़े (**वाजस्य**) वेग विज्ञान और (**परमस्य**) अत्यन्त श्रेष्ठ (**रायः**) धन आदि के मध्य में (**ईशे**) ऐश्वर्य्य करता है तथा (**यविष्ठः**) अत्यन्त युवा अर्थात् शरीर और आत्मा के बल से और (**स्वधावान्**) बहुत अन्न आदि से युक्त (**आनुषक्**) अनुकूल हुआ (**विधते**) विधान करते हुए (**मर्त्याय**) मरण धर्मवाले मनुष्य के लिये (**अग्निः**) बिजुली के समान वर्त्तमान (**रत्नम्**) रमण करने योग्य धन को (**वि, दधाति**) विधान करता है, वह सब लोगों से सत्कार करने योग्य है॥३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो मनुष्य सूर्य्य और बिजुली के सदृश राज्य और ऐश्वर्य्य की उन्नति करते हुए यश को विस्तारते हैं, वे सब से सब प्रकार सत्कार को प्राप्त होते हैं॥३॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**यच्चिद्धि ते पुरुषत्रा यविष्ठाचित्तिभिश्चकृमा कच्चिदागः।**

**कृधी ष्व१स्माँ अदितेरनागान् व्येनांसि शिश्रथो विष्वगग्ने॥४॥**

**यत्। चित्। हि। ते। पुरुषऽत्रा। यविष्ठ। अचित्तिऽभिः। चकृम। कत्। चित्। आगः। कृधि। सु। अस्मान्। अदितेः। अनागान्। वि। एनांसि। शिश्रथः। विष्वक्। अग्ने॥४॥**

**पदार्थः**-(**यत्**) (**चित्**) अपि (**हि**) खलु (**ते**) तव (**पुरुषत्रा**) पुरुषेषु (**यविष्ठ**) अतिशयेन प्राप्तयौवन (**अचित्तिभिः**) अचेतनाभिः (**चकृम**) कुर्य्याम। अत्र **संहितायामिति** दीर्घः। (**कत्**) कदा (**चित्**) (**आगः**) अपराधम् (**कृधि**) कुरु (**सु**) (**अस्मान्**) (**अदितेः**) पृथिव्याः (**अनागान्**) अनपराधान् (**वि**) (**एनांसि**) पापानि (**शिश्रथः**) शिथिलीकुरु वियोजय (**विष्वक्**) सर्वतः (**अग्ने**) विद्याविनयप्रकाशित राजन्॥४॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे यविष्ठाग्ने! यद् ये वयमचित्तिभिस्ते पुरुषत्रा चिदागश्चकृम तानस्मान् कच्चिदनागान् कृधि। यानि यान्यस्मदेनांसि जायेरँस्तानि तानि चिद्धि विष्वग्विशिश्रथोऽदितेः सु राष्ट्रं कृधि॥४॥

**भावार्थः**-हे राजन्! यदि कदाचिदज्ञानेन प्रमादेन वा वयमपराधं कुर्य्याम तानपि दण्डेन विना मा क्षमस्व। अस्मान् सुशिक्षया धार्मिकान् कृत्वा पृथिव्या राज्याधिकारिणः कुर्य्याः॥४॥

**पदार्थः**-हे **(यविष्ठ)** अत्यन्त यौवनावस्था को प्राप्त **(अग्ने)** विद्या और विनय से प्रकाशित राजन्! **(यत्)** जो हम लोग **(अचित्तिभिः)** चेतनाभिन्नों से **(ते)** आपके **(पुरुषत्रा)** पुरुषों में **(चित्)** कुछ **(आगः)** अपराध को **(चकृम)** करें उन **(अस्मान्)** हम लोगों को **(कत्, चित्)** कभी **(अनागान्)** अपराध से रहित **(कृधि)** कीजिये जो-जो हम लोगों से **(एनांसि)** पाप होवें, उन-उन को भी **(हि)** निश्चय से **(विष्वक्)** सब प्रकार **(वि, शिश्रथः)** शिथिल वा उनका वियोग करो और **(अदितेः)** पृथिवी के **(सु)** उत्तम राज्य को करो॥४॥

**भावार्थः**-हे राजन्! जो कदाचित् अज्ञान वा प्रमाद से हम लोग अपराध करें, उनको भी दण्ड के विना क्षमा न कीजिये और हम लोगों को उत्तम शिक्षा से धार्मिक करके पृथिवी के राज्य के अधिकारी करिये॥४॥

**पुनर्विद्वद्गुणानाह॥**

फिर विद्वानों के गुणों को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**म॒हश्चि॒दग्न॒ एन॑सो अ॒भीक॑ ऊ॒र्वाद्दे॒वाना॑मु॒त मर्त्या॑नाम्।**

**मा॒ ते॒ सखा॑यः॒ सद॒मिद्रि॑षाम॒ यच्छा॑ तो॒काय॒ तन॑याय॒ शं योः॥५॥**

**म॒हः। चि॒त्। अ॒ग्ने॒। एन॑सः। अ॒भीके॑। ऊ॒र्वात्। दे॒वाना॑म्। उ॒त। मर्त्या॑नाम्। मा। ते॒। सखा॑यः। सद॑म्। इत्। रि॒षा॒म॒। यच्छ॑। तो॒काय॑। तन॑याय। शम्। योः॥५॥**

**पदार्थः**-**(महः)** महतः **(चित्)** **(अग्ने)** विद्वन् **(एनसः)** अपराधस्य **(अभीके)** समीपे **(ऊर्वात्)** विस्तीर्णात् **(देवानाम्)** विदुषाम् **(उत)** अपि **(मर्त्यानाम्)** अविदुषाम् **(मा)** **(ते)** तव **(सखायः)** सुहृदः **(सदम्)** स्थानम् **(इत्)** **(रिषाम)** हिंस्याम **(यच्छ)** देहि। अत्र **द्व्यचोऽतस्तिङ** इति दीर्घः। **(तोकाय)** सद्यो जाताय पञ्चवार्षिकाय **(तनयाय)** दशवार्षिकाय षोडशवार्षिकाय वा **(शम्)** सुखम् **(योः)** सुकृताज्जनितम्॥५॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! देवानामुत मर्त्यानामभीके महश्चिदेनस ऊर्वाद्वयं विनाशयेम। ते सखायः सन्तस्तव सदं मा रिषाम। त्वं तोकाय तनयाय शं योरिद्यच्छ॥५॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यथा वयं देवानां समीपे स्थित्वा शिक्षाः प्राप्य पापात्मकं कर्म्म त्यक्त्वाऽन्यान् त्याजयेम सर्वेषां सुहृदो भूत्वा कुमारान् कुमारींश्च सुशिक्ष्य सकला विद्याः प्रापय्य सुखयुक्ताः सम्पादयेम तथा यूयमप्याचरत॥५॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-हे **(अग्ने)** विद्वन्! **(देवानाम्)** विद्वानों के **(उत)** और **(मर्त्यानाम्)** अविद्वानों के **(अभीके)** समीप में **(महः)** बड़े **(चित्)** भी **(एनसः)** अपराध के **(ऊर्वात्)** विस्तीर्णभाव से हम लोग विनाश करें अर्थात् उन कर्मों का नाश करें जो अपराध के मूल हैं और **(ते)** आपके **(सखायः)** मित्र हुए आपके **(सदम्)** स्थान को **(मा)** मत **(रिषाम)** नष्ट करें और आप **(तोकाय)** शीघ्र उत्पन्न हुए पांच वर्ष की अवस्थावाले **(तनयाय)** पुत्र के लिये **(शम्)** सुख **(योः)** उत्तम कर्म से उत्पन्न हुआ **(इत्)** ही **(यच्छ)** दीजिये॥५॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे हम लोग विद्वानों के समीप स्थित हों और शिक्षा को प्राप्त होकर पापस्वरूप कर्म्म का त्याग कर अन्यों का भी त्याग करें **[**=करावैं,**]** सब के मित्र होकर कुमार और कुमारियों को उत्तम शिक्षा देकर और सम्पूर्ण विद्या प्राप्त करा के सुखयुक्त करें, वैसा आप लोग भी आचरण करो॥५॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**यथा॑ ह॒ त्यद्व॑सवो गौ॒र्यं॑ चित्प॒दि षि॒ताममु॑ञ्चता यजत्राः।**

**ए॒वो ष्व१॒॑स्मन्मु॑ञ्चता॒ व्यंहः॒ प्र ता॑र्यग्ने प्र॒त॒रं न आयुः॑॥६॥१२॥**

**यथा॑। ह॒। त्यत्। व॒स॒वः॒। गौ॒र्य॑म्। चि॒त्। प॒दि। सि॒ताम्। अमु॑ञ्चत। य॒ज॒त्राः॒। ए॒वो इति॑। सु। अ॒स्मत्। मु॒ञ्च॒त। वि। अंहः॑। प्र। ता॒रि॒। अ॒ग्ने॒। प्र॒ऽत॒रम्। नः॒। आयुः॑॥६॥**

**पदार्थः**-**(यथा)** **(ह)** खलु **(त्यत्)** तत् **(वसवः)** निवसन्तः **(गौर्यम्)** गौरीं वाचम्। **गौरीति वाङ्नामसु पठितम्।** (निघं०१.११) **(चित्)** **(पदि)** प्राप्तव्ये विज्ञाने **(सिताम्)** शब्दार्थविज्ञानसम्बन्धिनीम् **(अमुञ्चता)** त्यजत। अत्र **संहितायामि**ति दीर्घः। **(यजत्राः)** विदुषां सत्कर्तारः **(एवो)** एव **(सु)** **(अस्मत्)** **(मुञ्चता)** त्यजत। अत्र **संहितायामि**ति दीर्घः। **(वि)** **(अंहः)** **(प्र)** **(तारि)** प्लूयते **(अग्ने)** विद्वन् **(प्रतरम्)** प्रतरन्ति येन तत् **(नः)** अस्माकम् **(आयुः)** जीवनम्॥६॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! यथा त्वया नः प्रतरमायुः प्रतार्यंहः प्रतारि तथा वयं तव प्रतरमायुरपराधं च प्रतारयेम। हे यजत्रा वसवो! यथा यूयं त्यदंहो हामुञ्चत पदि चित्सितां गौर्यं प्राप्नुत तथाऽस्मदंहः सुविमुञ्चत तथैवो वयमति पापं त्यक्त्वा सुशिक्षितां वाचं प्राप्नुयाम॥६॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यथा धार्मिका आप्ता विद्वांसः पापाचरणं विहाय सत्यमाचरन्त्यन्यान् स्वसदृशान् कर्त्तुमिच्छन्ति तथैव भवन्तोऽप्याचरन्तु॥६॥

अत्राग्निराजविद्वद्गुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति द्वादशं सूक्त द्वादशो वर्गश्च समाप्तः॥**



www.9009.co.in

**पदार्थ:**-हे **(अग्ने)** विद्वन्! **(यथा)** जैसे आप से **(नः)** हम लोगों के **(प्रतरम्)** जिससे संसार में पार होते वह **(आयुः)** जीवन **(प्र, तारि)** पार किया जाता है **(अंहः)** पाप पार किया जाता, वैसा हम लोग आपके पार कराने वाले जीवन और अपराध को पार करें। हे **(यजत्राः)** विद्वानों के सत्कार करने वाले **(वसवः)** निवास करते हुए जनो! जैसे आप लोग **(त्यत्)** उस पाप का **(ह)** निश्चय करि **(अमुञ्चत)** त्याग करें **(पदि)** प्राप्त होने योग्य विज्ञान में **(चित्)** भी **(सिताम्)** शब्दार्थविज्ञानसम्बन्धिनी **(गौर्यम्)** स्वच्छ वाणी को प्राप्त हूजिये, वैसे **(एवो)** ही **(अस्मत्)** हम से आपको **(सु, वि, मुञ्चत)** अच्छे प्रकार विशेषता से दूर कीजिये, उसी प्रकार हम लोग भी पाप का त्याग करके उत्तम प्रकार शिक्षित वाणी को प्राप्त होवें॥६॥

**भावार्थ:**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जैसे धार्मिक यथार्थवक्ता विद्वान् लोग पाप के आचरण का त्याग करके सत्य आचरण में अन्यों को अपने सदृश करने की इच्छा करते हैं, वैसा ही आप लोग भी आचरण करो॥६॥

इस सूक्त में अग्नि, राजा और विद्वान् के गुणवर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ संगति जाननी चाहिये॥

**यह बारहवां सूक्त बारहवां वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

**अथ पञ्चर्चस्य त्रयोदशस्य सूक्तस्य वामदेव ऋषिः। अग्निर्देवता। १, २, ४, ५ विराट्त्रिष्टुप्। ३ निचृत् त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः॥**

**अथ सूर्य्यसादृश्येन राजगुणानाह॥**

अब पांच ऋचा वाले तेरहवें सूक्त का प्रारम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में सूर्य के सादृश्य से राजगुणों को कहते हैं॥

**प्रत्युग्निरुषसामग्रमख्यद्विभातीनां सुमना रत्नधेयम्।**

**यातमश्विना सुकृतो दुरोणमुत्सूर्यो ज्योतिषा देव एति॥ १॥**

**प्रति। अग्निः। उषसाम्। अग्रम्। अख्यत्। विऽभातीनाम्। सुऽमनाः। रत्नऽधेयम्। यातम्। अश्विना। सुऽकृतः। दुरोणम्। उत्। सूर्यः। ज्योतिषा। देवः। एति॥ १॥**

**पदार्थः**-(**प्रति**) (**अग्निः**) अग्निरिव (**उषसाम्**) प्रभातानाम् (**अग्रम्**) उपरिभावम् (**अख्यत्**) प्रकाशयति (**विभातीनाम्**) प्रकाशयन्तीनाम् (**सुमनाः**) प्रसन्नचित्तः (**रत्नधेयम्**) रत्नानि धेयानि यस्मिंस्तत् (**यातम्**) प्राप्नुतम् (**अश्विना**) वायुविद्युताविव (**सुकृतः**) सुकृतस्य धर्मात्मनः (**दुरोणम्**) गृहम् (**उत्**) (**सूर्यः**) सविता (**ज्योतिषा**) प्रकाशेन (**देवः**) सुखप्रदाता (**एति**) प्राप्नोति॥ १॥

**अन्वयः**-यो विभातीनामुषसामग्रमग्निरिव यशः प्रत्यख्यत्सुमनाः सन्नश्विना यातमिव ज्योतिषा देवः सूर्य उदेतीव सुकृतो रत्नधेयं दुरोणमेति स सुखं लभते॥ १॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। ये वायुविद्युत्सूर्यगुणाः प्रजाः प्रालयन्ति ते तेन सत्येन न्यायेन बहुरत्नकोषं लभन्ते॥ १॥

**पदार्थः**-जो (**विभातीनाम्**) प्रकाश करते हुए (**उषसाम्**) प्रातःकालों के (**अग्रम्**) ऊपर होना जैसे हो वैसे (**अग्निः**) अग्नि के सदृश यश को (**प्रति, अख्यत्**) प्रकट करता और (**सुमनाः**) प्रसन्नचित्त होता हुआ (**अश्विना**) वायु और बिजुली के जैसे (**यातम्**) प्राप्त हों, वैसे (**ज्योतिषा**) प्रकाश के साथ (**देवः**) सुख का देनेवाला (**सूर्यः**) सूर्य जैसे (**उत्**) (**एति**) उदय होता, वैसे (**सुकृतः**) उत्तम कृत्य करने वाले धर्मात्मा के (**रत्नधेयम्**) रत्न जिसमें धरे जायें, उस (**दुरोणम्**) गृह को प्राप्त होता, वह सुख को प्राप्त होता है॥ १॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो वायु, बिजुली और सूर्य के गुणयुक्त पुरुष प्रजाओं का पालन करते हैं, वे उस सत्य न्याय से बहुत रत्नों के कोष को प्राप्त हैं॥ १॥

**अथ सूर्यलोकादीनां निमित्तकारणमाह॥**

अब सूर्यलोकादिकों के निमित्तकारण को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**ऊर्ध्वं भानुं सविता देवो अश्रेद् द्रप्सं दविध्वद्गविषो न सत्वा।**



www.9009.co.in

**अनु॑ व्र॒तं वरु॑णो यन्ति मि॒त्रो यत्सूर्यं॑ दि॒व्या॑रो॒हय॑न्ति॥२॥**

**ऊ॒र्ध्वम्। भा॒नुम्। स॒वि॒ता। दे॒वः। अ॒श्रे॒त्। द्र॒प्सम्। दवि॑ध्वत्। गो॒ऽइ॒षः। न। सत्वा॑। अनु॑। व्र॒तम्। वरु॑णः। य॒न्ति॒। मि॒त्रः। यत्। सूर्य॑म्। दि॒वि। आ॒ऽरो॒हय॑न्ति॥२॥**

**पदार्थः**-(**ऊर्ध्वम्**) उपरिस्थम् (**भानुम्**) किरणम् (**सविता**) सूर्य्यमण्डलम् (**देवः**) प्रकाशमानः (**अश्रेत्**) आश्रयति (**द्रप्सम्**) पार्थिवं भूगोलम् (**दविध्वत्**) भृशं धुन्वन् (**गविषः**) गाः प्राप्तुमिच्छन् (**न**) इव (**सत्वा**) गन्ता (**अनु**) (**व्रतम्**) कर्म (**वरुणः**) जलम् (**यन्ति**) (**मित्रः**) वायुः (**यत्**) यम् (**सूर्य्यम्**) सवितृलोकम् (**दिवि**) (**आरोहयन्ति**)॥२॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यः सविता देवः सत्वा गविषो नाऽनुव्रतं वरुणो मित्रोऽनुव्रतं यन्ति यत्सूर्यं दिव्यारोहयन्ति सविता देवो द्रप्सं दविध्वत् सन्नूर्ध्वं भानुमश्रेदिति विजानीत॥२॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। इह सृष्टौ परमात्मना यथा सूर्य्योत्पत्तेर्जलाग्निवायवो निर्मितास्तथैव पृथिव्यादीनामपि निमित्तानि विहितानीति वेदितव्यम्॥२॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो (**सविता**) सूर्य्यमण्डल (**देवः**) प्रकाशमान (**सत्वा**) चलने वाला (**गविषः**) गौओं को प्राप्त होने कि इच्छा करते हुए के (**न**) सदृश (**अनु, व्रतम्**) अनुकूल कर्म को और (**वरुणः**) जल और (**मित्रः**) वायु अनुकूल कर्म को (**यन्ति**) प्राप्त होते वा (**यत्**) जिस (**सूर्य्यम्**) सूर्य्यलोक को (**दिवि**) अन्तरिक्ष में (**आरोहयन्ति**) चढ़ाते हैं वा सूर्य्यमण्डल (**द्रप्सम्**) पृथिवीसंबन्धी भूलोक को (**दविध्वत्**) अत्यन्त कंपाता हुआ (**ऊर्ध्वम्**) ऊपर वर्त्तमान (**भानुम्**) किरण का (**अश्रेत्**) आश्रय करता है, यह सब जानो॥२॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। इस सृष्टि में परमात्मा ने जैसे सूर्य्य की उत्पत्ति से जल, अग्नि और पवन रचे, वैसे ही पृथिवी आदिकों के भी निमित्तकारण रचे, यह जानना चाहिये॥२॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**यं सी॒मकृ॑ण्व॒न् तम॑से वि॒पृचे॑ ध्रु॒वक्षे॑मा॒ अन॑वस्यन्तो॒ अर्थ॑म्।**

**तं सूर्यं॑ ह॒रितः॑ स॒प्त य॒ह्वीः स्पशं॒ विश्व॑स्य॒ जग॑तो वहन्ति॥३॥**

**यम्। सी॒म्। अकृ॑ण्वन्। तम॑से। वि॒ऽपृचे॑। ध्रु॒वऽक्षे॑माः। अन॑वऽस्यन्तः। अर्थ॑म्। तम्। सूर्य॑म्। ह॒रितः॑। स॒प्त। य॒ह्वीः। स्पश॑म्। विश्व॑स्य। जग॑तः। व॒ह॒न्ति॒॥३॥**

**पदार्थः**-(**यम्**) (**सीम्**) सर्वतः (**अकृण्वन्**) कुर्वन्ति (**तमसे**) अन्धकाराय (**विपृचे**) वियोजनाय (**ध्रुवक्षेमाः**) ध्रुवं क्षेमं रक्षणं येषान्ते (**अनवस्यन्तः**) अपरिचरन्तः कुर्वन्तः (**अर्थम्**) द्रव्यम् (**तम्**) (**सूर्य्यम्**) (**हरितः**) दिश इव व्याप्ताः किरणाः। **हरित इति दिङ्नाममसु पठितम्।** (निघं०१.६) (**सप्त**) (**यह्वीः**) महत्यः (**स्पशम्**) बन्धकम् (**विश्वस्य**) सर्वस्य (**जगतः**) (**वहन्ति**) प्रापयन्ति॥३॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यमर्थमनवस्यन्तो ध्रुवक्षेमास्तमसे विपृचे सीमकृण्वँस्तं विश्वस्य जगतः स्पशं सूर्य्यं सप्त यह्वीर्हरितो वहन्तीव शुभगुणान् वहन्तु प्रापयन्तु॥३॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यथा किरणाः सूर्यं तमोनिवारणाय वहन्ति तथैव सर्वस्य जगतोऽविद्यानिवारणाय विद्यारक्षणाय च सर्वथा सत्योपदेशान् कुर्वन्तु॥३॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(यम्)** जिस **(अर्थम्)** पदार्थरूप सूर्य को **(अनवस्यन्तः)** न सेवते और क्रिया करते हुए **(ध्रुवक्षेमाः)** निश्चित रक्षण करने वाले जन **(तमसे)** अन्धकार के अर्थ **(विपृचे)** वियोग करने के लिये **(सीम्)** सब ओर से **(अकृण्वन्)** निश्चित करते हैं **(तम्)** उस **(विश्वस्य)** सम्पूर्ण **(जगतः)** संसार के **(स्पशम्)** बांधनेवाले **(सूर्य्यम्)** सूर्य्य को **(सप्त)** सात **(यह्वीः)** बड़ी **(हरितः)** दिशाओं को **(वहन्ति)** प्राप्त कराते हैं, वैसे ही उत्तम गुणों को प्राप्त कराओ॥३॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे किरणें सूर्य्य को अन्धकार के दूर करने के लिये धारण करती हैं, वैसे ही सम्पूर्ण जगत् की अविद्या दूर करने के लिये और विद्या की रक्षा के लिये सब प्रकार सत्य के उपदेश करो॥३॥

**अथ सूर्य्यदृष्टान्तेन विद्वद्गुणानाह॥**

अब सूर्य्यदृष्टान्त से विद्वानों के गुणों को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**वहिष्ठेभिर्विहरन् यासि तन्तुमवव्ययन्नसितं देव वस्म।**

**दविध्वतो रश्मयः सूर्यस्य चर्मेवावाधुस्तमो अप्स्वन्तः॥४॥**

**वहिष्ठेभिः। विऽहरन्। यासि। तन्तुम्। अवऽव्ययन्। असितम्। देव। वस्म। दविध्वतः। रश्मयः। सूर्यस्य। चर्मऽइव। अव। अधुः। तमः। अप्ऽसु। अन्तरिति॥४॥**

**पदार्थः**-**(वहिष्ठेभिः)** अतिशयेन वोढृभिः **(विहरन्)** विचरन् **(यासि)** याति। अत्र पुरुषव्यत्ययः। **(तन्तुम्)** कारणम् **(अवव्ययन्)** दूरीकुर्वन् **(असितम्)** कृष्णं तमः **(देवः)** प्रकाशमान **(वस्म)** निवासस्थानम् **(दविध्वतः)** कम्पयतः **(रश्मयः)** **(सूर्यस्य)** **(चर्मेव)** यथा चर्म देहमावृणोति तथा **(अव)** **(अधुः)** आच्छादयन्ति **(तमः)** अन्धकारम् **(अप्सु)** अन्तरिक्षे **(अन्तः)** मध्ये॥४॥

**अन्वयः**-हे देव विद्वन्! यतस्त्वं वहिष्ठेभिः सविता तन्तुं विहरन्नसितमवव्ययन् याति तथा वस्माव यासि यथा दविध्वतस्सूर्यस्य रश्मयोऽप्स्वन्तस्तमश्चर्मेवाधुस्तद्वत्त्वं भव॥४॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। हे उपदेशक! यथा सूर्यो वोढृभिः किरणाकर्षणादिभिः स्वप्रकाशं विस्तारयन् चर्मणा देहमिव तम आच्छादयन्नन्तरिक्षस्य मध्ये विहरति तथैवाऽविद्यां विच्छिद्य विद्यां विस्तार्याऽस्मिञ्जगति विचर॥४॥

**पदार्थः**-हे **(देव)** प्रकाशमान विद्वन्! जिससे आप **(वहिष्ठेभिः)** अत्यन्त प्राप्त कराने वालों से सूर्य **(तन्तुम्)** कारण को **(विहरन्)** प्राप्त होता हुआ और **(असितम्)** कृष्णवर्ण अन्धकार को



www.9009.co.in

**(अवव्ययन्)** दूर करता हुआ चलता है, वैसे **(वस्म)** निवासस्थान को **(अव, यासि)** प्राप्त होते हो और जैसे **(दविध्वतः)** कंपाते हुए **(सूर्यस्य)** सूर्य की **(रश्मयः)** किरणें **(अप्सु)** अन्तरिक्ष के **(अन्तः)** मध्य में **(तमः)** अन्धकार को **(चर्मेव)** जैसे चर्म शरीर को ढांपता है, वैसे **(अधुः)** ढांपते हैं, वैसे आप हूजिये॥४॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे उपदेशक! जैसे सूर्य प्राप्त कराने वाले किरणों के आकर्षणादिकों से अपने प्रकाश का विस्तार करता हुआ, चर्म से देह के सदृश [अन्धकार को] ढांपता हुआ, अन्तरिक्ष के मध्य में विहार करता है, वैसे ही अविद्या का नाश और विद्या का प्रकाश [=विस्तार] करके इस संसार में विचरिये॥४॥

**अथ सूर्यमण्डलप्रश्नोत्तरपूर्वकविद्वद्गुणानाह॥**

अब सूर्य्यमण्डल प्रश्नोत्तर पूर्वक विद्वानों के गुणों को कहते हैं॥

**अनायतो अनिबद्धः कथायं न्यङ्ङुत्तानोऽव पद्यते न।**

**कया याति स्वधया को ददर्श दिवः स्कम्भः समृतः पाति नाकम्॥५॥१३॥**

**अनायतः। अनिऽबद्धः। कथा। अयम्। न्यङ्। उत्तानः। अव। पद्यते। न। कया। याति। स्वधया। कः। ददर्श। दिवः। स्कम्भः। सम्ऽऋतः। पाति। नाकम्॥५॥१३॥**

**पदार्थः**-**(अनायतः)** इतस्ततोऽगच्छन्त्सन्निहितः **(अनिबद्धः)** न कस्याप्याकर्षेण निबद्धः **(कथा)** केन प्रकारेण **(अयम्)** **(न्यङ्)** यो न्यग्भूतस्सन् **(उत्तानः)** ऊर्ध्वं स्थितः **(अव)** **(पद्यते)** अवगच्छति **(न)** निषेधे **(कया)** **(याति)** गच्छति **(स्वधया)** अन्नादिपदार्थयुक्त्या पृथिव्या सह **(कः)** **(ददर्श)** पश्यति **(दिवः)** प्रकाशस्य **(स्कम्भः)** स्तम्भ इव धारकः [**(समृतः)**] सम्यक्सत्यस्वरूपः **(पाति)** **(नाकम्)** अविद्यमानदुःखं व्यवहारम्॥५॥

**अन्वयः**-हे विद्वन्नयमनायतोऽनिबद्धो न्यङ्ङुत्तानः कथा नाऽवपद्यते कया स्वधया याति। यो दिवस्स्कम्भः समृतो नाकं पाति तं को ददर्श॥५॥

**भावार्थः**-हे विद्वन्नयं सूर्योऽन्तरिक्षमध्ये स्थितः कथमधो न पतति। केन गच्छति कथं प्रकाशस्य धर्त्ता सुखकारको भवतीति प्रश्नस्योत्तरं, परमेश्वरेण स्थापितो धृतो नाऽधः पतति स्वसन्निहितैर्भूगोलैः सह स्वकक्षायां गच्छन् वर्त्तते सर्वेषां सन्निहितानामाकर्षणेन धर्त्ता परमेश्वरस्य व्यवस्थया सुखकरो वर्त्तत इति वेदितव्यम्॥५॥

अथ सूर्य्यविद्वद्गुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह संगतिर्वेद्या॥

**इति त्रयोदशं सूक्तं त्रयोदशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे विद्वन्! **(अयम्)** यह **(अनायतः)** इधर-उधर [न] जाता और समीप वर्त्तमान **(अनिबद्धः)** किसी के आकर्षण से नहीं बंधा **(न्यङ्)** जो नीचे को होता हुआ **(उत्तानः)** ऊपर स्थित



www.9009.co.in

**(कथा)** किस प्रकार से **(न)** नहीं **(अव, पद्यते)** नीचे आता और **(कया)** किस **(स्वधया)** अन्न आदि पदार्थों से युक्त पृथिवी के साथ **(याति)** चलता है, जो **(दिव:)** प्रकाश का **(स्कम्भ:)** खम्भे के सदृश धारण करने वाला **(समृत:)** उत्तम प्रकार सत्यस्वरूप **(नाकम्)** दु:खरहित व्यवहार की **(पाति)** रक्षा करता है, उसको **(क:)** कौन **(ददर्श)** देखता है॥५॥

**भावार्थ:**-हे विद्वन्! यह सूर्य्य अन्तरिक्ष के मध्य में स्थित हुआ क्यों नीचे नहीं गिरता है? किससे चलता है? और कैसे प्रकाश का धारण करने वाला और सुखकारक होता है? इस प्रश्न का उत्तर- परमेश्वर ने स्थापित और धारण किया इससे नीचे नहीं गिरता है और अपने समीप वर्त्तमान भूगोलों के साथ अपनी कक्षा में चलता हुआ वर्त्तमान है और सम्पूर्ण समीप में वर्त्तमान पदार्थों के आकर्षण से धारणकर्त्ता और परमेश्वर की व्यवस्था से सुखकारक वर्त्तमान है, यह जानना चाहिये॥५॥

इस सूक्त में सूर्य्य और विद्वानों के गुणों का वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह तेरहवां सूक्त और तेरहवां वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

**अथ पञ्चर्चस्य चतुर्दशस्य सूक्तस्य वामदेव ऋषिः। अग्निर्लिङ्गोक्ता देवता वा। १ भुरिक्पङ्क्तिः। ३ स्वराट् पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः। २, ४ निचृत्त्रिष्टुप्। ५ विराट्त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः॥**

**अथाग्निसादृश्येन विद्वद्गुणानाह॥**

अब पांच ऋचावाले चौदहवें सूक्त का प्रारम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में अग्निसादृश्य से विद्वानों के गुणों का उपदेश करते हैं॥

**प्रत्यग्निरुषसो जातवेदा अख्यद्देवो रोचमाना महोभिः।**
**आ नासत्योरुगाया रथेनेमं यज्ञमुप नो यातमच्छ॥१॥**

**प्रति। अग्निः। उषसः। जातऽवेदाः। अख्यत्। देवः। रोचमानाः। महःऽभिः। आ। नासत्या। उरुऽगाया। रथेन। इमम्। यज्ञम्। उप। नः। यातम्। अच्छ॥१॥**

**पदार्थः**-(**प्रति**) (**अग्निः**) विद्युदिव (**उषसः**) दिवसमुखस्य (**जातवेदाः**) उत्पन्नेषु विद्यमानः (**अख्यत्**) प्रकाशते (**देवः**) देदीप्यमानः (**रोचमानाः**) प्रकाशमानाः (**महोभिः**) महद्भिः (**आ**) (**नासत्या**) अविद्यमानसत्याचरणौ (**उरुगाया**) बहुप्रशंसौ (**रथेन**) यानेन (**इमम्**) वर्त्तमानं (**यज्ञम्**) (**उप**) (**नः**) अस्माकम् [**(यज्ञम्)**] प्रकाश्यप्रकाशकमयं व्यवहारम् (**यातम्**) प्राप्नुतम् (**अच्छ**)॥१॥

**अन्वयः**-हे नासत्योरुगायाध्यापकोपदेशकौ! युवां महोभी रथेन न इमं यज्ञं जातवेदा देवोऽग्नी रोचमाना उषसः प्रत्यख्यद् दिवाऽच्छोपायातम्॥१॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! ये यथा सूर्य्य उषसो विभाति तथैव सत्येनोपदेशेन रथेन मार्गमिव विद्यां सुखं प्रापयन्ति तेऽत्र जगति कल्याणकरा भवन्ति॥१॥

**पदार्थः**-हे (**नासत्या**) असत्य आचरण से रहित (**उरुगाया**) बहुत प्रशंसावाले अध्यापक और उपदेशक जनो! आप दोनों (**महोभिः**) बड़ों के साथ (**रथेन**) वाहन से (**नः**) हम लोगों के प्रकाश्य और प्रकाशस्वरूप व्यवहार और (**इमम्**) इस वर्त्तमान (**यज्ञम्**) यज्ञ को (**जातवेदाः**) उत्पन्न हुए पदार्थों में विद्यमान (**देवः**) प्रकाशमान (**अग्निः**) बिजुली के सदृश अग्नि (**रोचमानाः**) प्रकाशमान (**उषसः**) दिन के मुख अर्थात् प्रारम्भ के (**प्रति**) प्रति (**अख्यत्**) प्रकाशित होता है, वैसे (**अच्छ**) उत्तम प्रकार (**उप**) समीप (**आ, यातम्**) आओ प्राप्त होओ॥१॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जो जैसे सूर्य्य प्रातःकाल से शोभित होता है, वैसे ही सत्य के उपदेश से रथ से मार्ग के सदृश विद्या के सुख को प्राप्त कराते हैं, वे इस संसार में कल्याणकारक होते हैं॥१॥

**अथ विद्वद्गुणानाह॥**

अब विद्वान् के गुणों को अगले मन्त्र में कहते हैं॥



www.9009.co.in

**ऊ॒र्ध्वं के॒तुं स॑वि॒ता दे॒वो अ॑श्रे॒ज्ज्योति॒र्विश्व॑स्मै॒ भुव॑नाय कृ॒ण्वन्।**

**आप्रा॒ द्यावा॑पृथि॒वी अ॒न्तरि॑क्षं॒ वि सूर्यो॑ र॒श्मिभि॒श्चेकि॑तानः॥ २॥**

**ऊ॒र्ध्वम्। के॒तुम्। स॒वि॒ता। दे॒वः। अ॒श्रे॒त्। ज्योतिः॑। विश्व॑स्मै। भुव॑नाय। कृ॒ण्वन्। आ। अ॒प्राः॒। द्यावा॑पृथि॒वी इति॑। अ॒न्तरि॑क्षम्। वि। सूर्यः॑। र॒श्मिऽभिः॑। चेकि॑तानः॥ २॥**

**पदार्थः**-(**ऊर्ध्वम्**) उत्कृष्टम् (**केतुम्**) प्रज्ञाम् (**सविता**) सूर्य्य इव (**देवः**) विद्वान् (**अश्रेत्**) (**ज्योतिः**) प्रकाशम् (**विश्वस्मै**) सर्वस्मै (**भुवनाय**) संसाराय (**कृण्वन्**) कुर्वन् (**आ**) (**अप्राः**) व्याप्नोति (**द्यावापृथिवी**) प्रकाशभूमी (**अन्तरिक्षम्**) आकाशम् (**वि**) (**सूर्य्यः**) प्रकाशमयः (**रश्मिभिः**) (**चेकितानः**) प्रज्ञापयन्॥ २॥

**अन्वयः**-यो देवो विद्वान् यथा सविता रश्मिभिश्चेकितानः सूर्य्यो विश्वस्मै भुवनाय ज्योतिः कृण्वन् द्यावापृथिवी अन्तरिक्षं व्याप्रास्तथोर्ध्वं केतुमश्रेत् स एवालं सुखी जायते॥ २॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। ये विद्वांसोऽखिला विद्या अधीत्य ब्रह्मचर्य्य-योगाभ्यासाभ्यां प्रमां प्राप्य रश्मिभिस्सूर्य्य इव जनान्तःकरणाण्युपदेशेनोज्ज्वलयन्ति त एव सर्वेषां पूज्या भवन्ति॥ २॥

**पदार्थः**-जो (**देवः**) विद्वान् जैसे (**सविता**) सूर्य्य (**रश्मिभिः**) किरणों से (**चेकितानः**) जनाता हुआ (**सूर्य्यः**) प्रकाशमान (**विश्वस्मै**) सब (**भुवनाय**) संसार के लिये (**ज्योतिः**) प्रकाश को (**कृण्वन्**) करता हुआ (**द्यावापृथिवी**) प्रकाश-भूमि (**अन्तरिक्षम्**) आकाश को (**वि, आ, अप्राः**) व्याप्त होता है, वैसे (**ऊर्ध्वम्**) उत्तम (**केतुम्**) ) बुद्धि का (**अश्रेत्**) आश्रय करे, वही पूर्ण सुखवाला होवे॥ २॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो विद्वान् लोग सम्पूर्ण विद्याओं को पढ़कर, ब्रह्मचर्य और योगाभ्यास से ज्ञान को प्राप्त होकर, किरणों से सूर्य्य के सदृश जनों के अन्तःकरणों को उपदेश से उज्ज्वल करते हैं, वे ही सब को सत्कार करने योग्य होते हैं॥ २॥

**अथ विदुषीगुणानाह॥**

अब विदुषी के गुणों को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**आ॒वह॑न्त्यरु॒णीर्ज्योति॒षागा॑न्म॒ही चि॒त्रा र॒श्मिभि॒श्चेकि॑ताना।**

**प्र॒बो॒धय॑न्ती सुवि॒ताय॑ दे॒व्यु॒१॒॑षा ईयते सु॒युजा॒ रथे॑न॥ ३॥**

**आ॒ऽवह॑न्ती। अ॒रु॒णीः। ज्योति॑षा। आ। अ॒गा॒त्। म॒ही। चि॒त्रा। र॒श्मिऽभिः॑। चेकि॑ताना। प्र॒ऽबो॒धय॑न्ती। सु॒वि॒ताय॑। दे॒वी। उ॒षाः। ई॒य॒ते। सु॒ऽयुजा॑। रथे॑न॥ ३॥**

**पदार्थः**-(**आवहन्ती**) समन्तात् प्रापयन्ती (**अरुणीः**) किञ्चिदारक्ताभाः (**ज्योतिषा**) प्रकाशेन (**आ**) (**अगात्**) आगच्छति (**मही**) महती (**चित्रा**) अद्भुतस्वरूपा (**रश्मिभिः**) स्वकिरणैः (**चेकिताना**)

प्राणिनः प्रज्ञापयन्ती (**प्रबोधयन्ती**) जागरयन्ती (**सुविताय**) ऐश्वर्याय (**देवी**) देदीप्यमाना (**उषाः**) प्रभातवेला (**ईयते**) गच्छति (**सुयुजा**) सष्ठु युञ्जन्त्यश्वान् यस्मिंस्तेन (**रथेन**) यानेनेव॥३॥

**अन्वयः**-हे विदुषि शुभगुणे पत्नि! त्वं यथा सुयुजा रथेनेव रश्मिभिश्चेकिताना सुविताय प्रबोधयन्ती ज्योतिषा चित्राऽरुणीरावहन्ती मही देव्युषा ईयत आगात्तथा त्वं भव॥३॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यदि हृद्या प्रिया सुलक्षणाऽद्भुतरूपा पतिव्रता स्त्री पुरुषं प्राप्नुयात् सा उषा इव कुलं प्रकाशयन्त्वपत्यानि सुशिक्षमाणा सर्वानानन्दयति॥३॥

**पदार्थः**-हे विद्यायुक्त और उत्तम गुण वाली स्त्रि! तू जैसे (**सुयुजा**) उत्तम प्रकार जोड़ते हैं घोड़ों को जिसमें उस (**रथेन**) वाहन के सदृश (**रश्मिभिः**) अपने किरणों से (**चेकिताना**) प्राणियों को जनाती हुई और (**सुविताय**) ऐश्वर्य के लिये (**प्रबोधयन्ती**) जगाती हुई (**ज्योतिषा**) प्रकाश से (**चित्रा**) अद्भुतस्वरूप वाली (**अरुणीः**) किञ्चित् लाल आभायुक्त कान्तियों को (**आवहन्ती**) सब प्रकार प्राप्त कराती हुई (**मही**) बड़ी (**देवी**) अत्यन्त प्रकाशमान (**उषाः**) प्रातःकाल की वेला (**ईयते**) जाती और (**आ, आगात्**) आती है, वैसे आप हूजिये॥३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो सुन्दर प्रिया उत्तम लक्षणों से युक्त, अद्भुत रूपवाली, पतिव्रता स्त्री पुरुष को प्राप्त होवे, वह प्रातःकाल के सदृश कुल का प्रकाश करती हुई और सन्तानों को उत्तम शिक्षा देती हुई सब को आनन्द देती है॥३॥

**अथ स्त्रीपुरुषगुणानाह॥**

अब स्त्री-पुरुष के गुणों को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**आ वां वहिष्ठा इह ते वहन्तु रथा अश्वास उषसो व्युष्टौ।**

**इमे हि वां मधुपेयाय सोमा अस्मिन्यज्ञे वृषणा मादयेथाम्॥४॥**

**आ। वाम्। वहिष्ठाः। इह। ते। वहन्तु। रथाः। अश्वासः। उषसः। विऽउष्टौ। इमे। हि। वाम्। मधुऽपेयाय। सोमाः। अस्मिन्। यज्ञे। वृषणा। मादयेथाम्॥४॥**

**पदार्थः**-(**आ**) (**वाम्**) युवयोः (**वहिष्ठाः**) अतिशयेन वोढारः (**इह**) अस्मिन् संसारे (**ते**) (**वहन्तु**) (**रथाः**) यानानि (**अश्वासः**) सद्यो गामिनः (**उषसः**) प्रातर्वेलायाः (**व्युष्टौ**) विशिष्टप्रतापे (**इमे**) (**हि**) यतः (**वाम्**) युवयोः (**मधुपेयाय**) मधुरैर्गुणैः पातुं योग्याय (**सोमाः**) सैश्वर्याः पदार्थाः (**अस्मिन्**) (**यज्ञे**) सङ्गन्तव्ये गृहाश्रमे (**वृषणा**) वीर्यवन्तौ (**मादयेथाम्**) आनन्दयतम्॥४॥

**अन्वयः**-हे स्त्रीपुरुषौ! वां ये वहिष्ठा रथा अश्वास उषसो व्युष्टौ सन्ति ते युवामिहाऽऽवहन्तु। य इमे हि वां सोमा अस्मिन् यज्ञे मधुपेयाय भवन्ति तानिह सेवित्वा वृषणा सन्तौ युवां मादयेथाम्॥४॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-हे स्त्रीपुरुषा! यूयं यदि रजन्याश्चतुर्थे प्रहर उत्थाय कृताऽवश्यका यानैः पद्भ्यां च सूर्योदयात् प्राक्छुद्धवायुदेशे भ्रमणं कुर्युस्तर्हि युष्मान् रोगा कदाचिन्नागच्छेयुर्येन बलिष्ठा भूत्वा दीर्घायुषस्सन्तोऽस्मिन् गृहाश्रमे पुष्कलमानन्दं भुङ्ध्वम्॥४॥

**पदार्थः**-हे स्त्री-पुरुषो! **(वाम्)** आप दोनों जो लोग **(वहिष्ठाः)** अत्यन्त धारण करने वाले **(रथाः)** वाहन **(अश्वासः)** शीघ्र चलने वाले **(उषसः)** प्रातःकाल के **(व्युष्टौ)** विशिष्ट प्रताप में हैं **(ते)** वे आप दोनों को **(इह)** इस संसार में **(आ, वहन्तु)** अभीष्ट स्थान को पहुंचावें और जो **(इमे)** ये **(हि)** जिस कारण **(वाम्)** आप दोनों के **(सोमाः)** ऐश्वर्य के सहित पदार्थ **(अस्मिन्)** इस **(यज्ञे)** मेल करने योग्य गृहाश्रम में **(मधुपेयाय)** मधुर गुणों से पीने योग्य के लिये होते हैं, इस कारण उनका इस संसार में सेवन करके **(वृषणा)** पराक्रम वाले होते हुए आप दोनों **(मादयेथाम्)** आनन्दित होवें॥४॥

**भावार्थः**-हे स्त्री पुरुषो! आप लोग यदि रात्रि के चौथे प्रहर में उठ और आवश्यक कृत्य करके वाहन वा पैरों से सूर्योदय से पहिले शुद्ध वायु देश में भ्रमण करें तो आप लोगों को रोग कभी न प्राप्त होवें, जिससे कि बलिष्ठ और अधिक अवस्था वाले हुए इस गृहाश्रम में बड़े आनन्द को भोगो॥४॥

**पुनर्विद्वद्गुणानाह॥**

फिर विद्वानों के गुणों को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अनायतो अनिबद्धः कथायं न्यङ्ङुत्तानोऽव पद्यते न।**

**कया याति स्वधया को ददर्श दिवः स्कम्भः समृतः पाति नाकम्॥५॥१४॥**

**अनायतः। अनिऽबद्धः। कथा। अयम्। न्यङ्। उत्तानः। अव। पद्यते। न। कया। याति। स्वधया। कः। ददर्श। दिवः। स्कम्भः। सम्ऽऋतः। पाति। नाकम्॥५॥**

**पदार्थः**-**(अनायतः)** अदूरभवः **(अनिबद्धः)** परवदेकत्र न स्थितः **(कथा)** कथम् **(अयम्)** **(न्यङ्)** यो नित्यमञ्चति **(उत्तानः)** ऊर्ध्वं तनित इव स्थितः **(अव)** **(पद्यते)** **(न)** **(कया)** **(याति)** गच्छति **(स्वधया)** स्वकीयया गत्या **(कः)** **(ददर्श)** पश्यति **(दिवः)** कमनीयस्य सुखस्य **(स्कम्भः)** गृहाधारको मध्ये स्थितस्तम्भ इव **(समृतः)** सम्यक्सत्यस्वरूपः **(पाति)** **(नाकम्)** सुखम्॥५॥

**अन्वयः**-यो विद्वाननायतोऽनिबद्धोऽयं न्यङ्ङुत्तानः कथा नावपद्यते कया स्वधया याति समृतो दिवः स्कम्भ इव नाकं पातीमं को ददर्श॥५॥

**भावार्थः**-हे विद्वन्! जीवोऽयमधोगतिं कथं नाप्नुयाद् यद्यविद्यादिबन्धनं त्यजेत् केन कर्मणा सुखं याति यदि धर्ममनुतिष्ठेत् कः पूर्णकामो भवति यः परमात्मानं पश्येदिति॥५॥

अत्राग्निविद्वत्स्त्रीपुरुषकृत्यवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति चतुर्दशं सूक्तं चतुर्दशो वर्गश्च समाप्तः॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-जो विद्वान् **(अनायतः)** दूर नहीं अर्थात् समीप वर्त्तमान **(अनिबद्धः)** शत्रुवान् पुरुष के समान एकत्र न ठहरने वाला **(अयम्)** यह **(न्यङ्)** नित्य आदर करता वा प्राप्त होता **(उत्तानः)** ऊपर को विस्तरित-सा स्थित **(कथा)** किस प्रकार **(न)** नहीं **(अव, पद्यते)** नीची दशा को प्राप्त होता है और **(कया)** किस **(स्वधया)** अपनी गति से **(याति)** चलता है **(समृतः)** उत्तम प्रकार सत्यस्वरूप **(दिवः)** मनोहर सुख के **(स्कम्भः)** घर का आधार खम्भा जैसे बीच में ठहरे वैसे **(नाकम्)** सुख की **(पाति)** रक्षा करता है, इसको **(कः)** कौन **(ददर्श)** देखता है॥५॥

**भावार्थः**-हे विद्वन्! जीव यह नीचे की दशा को किस रीति से न प्राप्त होवें जो अविद्या आदि बन्धन का त्याग करे तो, किस कर्म से सुख को प्राप्त होता है जो धर्म का अनुष्ठान करे, कौन कामनाओं से पूर्ण होता है, जो परमात्मा को देखे॥५॥

इस सूक्त में अग्नि, विद्वान्, स्त्री और पुरुष के कृत्य वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ संगति जाननी चाहिये॥

**यह चौदहवां सूक्त और चौदहवां वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

**अथ दशर्चस्य पञ्चदशस्य सूक्तस्य वामदेव ऋषिः। १-६ अग्निः। ७, ८ सोमकः साहदेव्यः। ९, १० अश्विनौ देवते। १, ४ गायत्री। २, ५, ६ विराड् गायत्री। ३, ७-१० निचृद् गायत्रीच्छन्दः। षड्जः स्वरः॥**

**अथाग्निविषयमाह॥**

अब दश ऋचावाले पन्द्रहवें सूक्त का प्रारम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में अग्निविषय को कहते हैं॥

**अ॒ग्निर्होता॑ नो अध्व॒रे वा॒जी सन् परि॑ णीयते। दे॒वो दे॒वेषु॑ य॒ज्ञियः॑॥१॥**

**अ॒ग्निः। होता॑। न॒ः। अ॒ध्व॒रे। वा॒जी। सन्। परि॑। नी॒य॒ते॒। दे॒वः। दे॒वेषु॑। य॒ज्ञियः॑॥१॥**

**पदार्थः**-(**अग्निः**) अग्निरिव शुभगुणप्रकाशितः (**होता**) धर्त्ता (**नः**) अस्माकम् (**अध्वरे**) व्यवहारे (**वाजी**) बलवानश्व इव (**सन्**) (**परि**) (**नीयते**) प्राप्यते (**देवः**) द्योतमानः (**देवेषु**) द्योतमानेषु (**यज्ञियः**) यो यज्ञमर्हति सः॥१॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यो नोऽध्वरेऽग्निरिव होता देवेषु देवो यज्ञियो वाजी सन् परिणीयते स युष्माभिरपि प्रापणीयः॥१॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यथाऽग्निस्सूर्यरूपेण सर्वान् व्यवहारान् प्रापयति तथैव विद्वान्त्सर्वान् कामान् प्रापयति॥१॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो (**नः**) हम लोगों के (**अध्वरे**) व्यवहार में (**अग्निः**) अग्नि के सदृश उत्तम गुणों से प्रकाशित (**होता**) धारण करनेवाला (**देवेषु**) प्रकाशमानों में (**देवः**) प्रकाशमान (**यज्ञियः**) यज्ञ के योग्य (**वाजी**) बलवान् अश्व के समान (**सन्**) होता हुआ अग्नि (**परि, नीयते**) प्राप्त किया जाता है, वह आप लोगों से भी प्राप्त होने योग्य है॥१॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे अग्नि सूर्य्यरूप से सब व्यवहारों को प्राप्त कराता है, वैसे ही विद्वान् सम्पूर्ण मनोरथों को प्राप्त कराता है॥१॥

**पुनरग्निविद्याविषयमाह॥**

फिर अग्निविद्याविषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**परि॑ त्रि॒वि॒ष्ट्य॑ध्व॒रं यात्य॒ग्नी र॒थीरि॑व। आ दे॒वेषु॒ प्रयो॒ दध॑त्॥२॥**

**परि॑। त्रि॒ऽवि॒ष्टि। अ॒ध्व॒रम्। याति॑। अ॒ग्निः। र॒थीःऽइ॑व। आ। दे॒वेषु॑। प्रयः॑। दध॑त्॥२॥**

**पदार्थः**-(**परि**) (**त्रिविष्टि**) विविधे सुखप्रवेशे (**अध्वरम्**) सत्कर्त्तव्यं व्यवहारम् (**याति**) (**अग्निः**) पावकः (**रथीरिव**) प्रशस्तरथादियुक्तः सेनेश इव (**आ**) (**देवेषु**) (**प्रयः**) कमनीयं धनम् (**दधत्**) धरन्त्सन्॥२॥

**अन्वयः**-हे विद्वांसो! योऽग्नी रथीरिव देवेषु प्रयो दधत् त्रिविष्ट्यध्वरं पर्यायाति स युष्माभिः कार्येषु योजनीयः॥२॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यथोत्तमसेनः सेनाध्यक्षस्त्रिविधं सुखमाप्नोति तथैवऽग्निविद्याविच्छरीरात्मेन्द्रियाऽऽनन्दं लभते॥२॥

**पदार्थः**-हे विद्वानो! जो **(अग्निः)** अग्नि **(रथीरिव)** श्रेष्ठ रथ आदि से युक्त सेना के स्वामी के सदृश **(देवेषु)** प्रकाशमान विद्वानों में **(प्रयः)** कामना करने योग्य धन को **(दधत्)** धारण करता हुआ **(त्रिविष्टि)** तीन प्रकार के सुख के प्रवेश में **(अध्वरम्)** सत्कार करने योग्य व्यवहार को **(परि, आ, याति)** सब ओर से प्राप्त होता है, वह आप लोगों से कार्य्यों में युक्त करने योग्य है॥२॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जैसे उत्तम सेना से युक्त सेनाध्यक्ष पुरुष तीन प्रकार के सुख को प्राप्त होता है, वैसे ही अग्निविद्या का जानने वाला शरीर, आत्मा और इन्द्रियों के आनन्द को प्राप्त होता है॥२॥

**पुनरग्निविषयमाह॥**

फिर अग्निविषय का वर्णन अगले मन्त्र में करते हैं॥

**परि वाजपतिः कविरग्निर्हव्यान्यक्रमीत्। दधत् रत्नानि दाशुषे॥३॥**

**परि। वाजऽपतिः। कविः। अग्निः। हव्यानि। अक्रमीत्। दधत्। रत्नानि। दाशुषे॥३॥**

**पदार्थः**-**(परि)** **(वाजपतिः)** अन्नादीनां स्वामी **(कविः)** सकलविद्यावित् **(अग्निः)** विद्युद्वद्वर्त्तमानः **(हव्यानि)** दातुं योग्यानि **(अक्रमीत्)** क्राम्यति **(दधत्)** धरन् **(रत्नानि)** रमणीयानि धनानि **(दाशुषे)** दात्रे॥३॥

**अन्वयः**-यो वाजपतिः कविरग्निरिव दाशुषे रत्नानि दधत् सन् हव्यानि पर्य्यक्रमीत् स एव सततं सुखी जायते॥३॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यथा दातारोऽन्यार्थान्युत्तमानि वस्तूनि ददति तथैवाऽग्निः यतः परसुखायाग्नेर्गुणा भवन्तीति॥३॥

**पदार्थः**-जो **(वाजपतिः)** अन्न आदिकों का स्वामी **(कविः)** सम्पूर्ण विद्याओं का जानने वाला **(अग्निः)** बिजुली के सदृश वर्त्तमान **(दाशुषे)** देनेवाले के लिये **(रत्नानि)** रमण करने योग्य धनों को **(दधत्)** धारण करता हुआ **(हव्यानि)** देने योग्य पदार्थों का **(परि, अक्रमीत्)** परिक्रमण करता अर्थात् समीप होता, वही निरन्तर सुखी होता है॥३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे देनेवाले अन्यों के लिये उत्तम वस्तुओं को देते हैं, वैसे ही अग्नि; क्योंकि दूसरे को सुख देने के लिये अग्नि के गुण होते हैं॥३॥

**अथ राजविषयमाह॥**

अब राजविषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥



www.9009.co.in

**अयं यः सृञ्जये पुरो दैववाते समिध्यते। द्युमाँ अमित्रदम्भनः॥४॥**

**अयम्। यः। सृञ्जये। पुरः। दैवऽवाते। सम्ऽइध्यते। द्युऽमान्। आमित्रऽदम्भनः॥४॥**

**पदार्थः**-(**अयम्**) (**यः**) (**सृञ्जये**) यः प्राप्ताञ्छत्रून् जयति तस्मिन् (**पुरः**) पुरस्तात् (**दैववाते**) देवानां प्राप्ते भवे (**समिध्यते**) प्रदीप्यते (**द्युमान्**) बहुविद्याप्रकाशयुक्तः (**अमित्रदम्भनः**) शत्रूणां हिंसकः॥४॥

**अन्वयः**-हे राजन्! योऽयं द्युमानमित्रदम्भनः पुरो दैववाते सृञ्जये समिध्यते स एव त्वया सत्कर्त्तव्यः॥४॥

**भावार्थः**-हे नृप! ये महति सङ्ग्रामे तेजस्विनो निर्भयाः पुरोगामिनः शत्रुविदारका भृत्याः स्युस्तानेव भवान् पुत्रवत् पालयतु॥४॥

**पदार्थः**-हे राजन्! (**यः**) जो (**अयम्**) यह (**द्युमान्**) बहुत विद्या के प्रकाश से युक्त (**अमित्रदम्भनः**) शत्रुओं का नाशकर्त्ता (**पुरः**) प्रथम (**दैववाते**) विद्वान् जनों के प्राप्तसुख में (**सृञ्जये**) पाये हुए शत्रुओं को जिसमें जीतता है, उस संग्राम में (**समिध्यते**) प्रकाशित होता है, वही आपके सत्कार करने योग्य है॥४॥

**भावार्थः**-हे राजन्! जो लोग बड़े संग्राम में तेजस्वी, भयरहित, आगे चलने वाले और शत्रुओं के नाशकर्त्ता नौकर हों, उनका ही आप पुत्र के सदृश पालन करो॥४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अस्य घा वीर ईवतोऽग्नेरीशीत मर्त्यः। तिग्मजम्भस्य मीळहुषः॥५॥१५॥**

**अस्य। घ। वीरः। ईवतः। अग्नेः। ईशीत। मर्त्यः। तिग्मऽजम्भस्य। मीळहुषः॥५॥**

**पदार्थः**-(**अस्य**) (**घ**) एव। अत्र **ऋचि तु नु घे**ति दीर्घः। (**वीरः**) (**ईवतः**) प्रशस्तगमनकर्त्तुः (**अग्नेः**) पावकस्येव (**ईशीत**) समर्थो भवेत् (**मर्त्यः**) मनुष्यः (**तिग्मजम्भस्य**) तिग्मं तीव्रं तेजस्वि जम्भो मुखं यस्य तस्य (**मीळहुषः**) वीर्य्यवतः॥५॥

**अन्वयः**-हे राजन्! यो वीरो मर्त्योऽग्नेरिवाऽस्येवतस्तिग्मजम्भस्य मीळहुषः सेनापतेः शत्रूणां मध्य ईशीत स घैव विजयं कर्त्तुमर्हेत॥५॥

**भावार्थः**-सेनापतिना त एव पुरुषाः सेनायां भर्त्तव्या ये शत्रून् विजेतुं शक्नुयुः॥५॥

**पदार्थः**-हे राजन्! जो (**वीरः**) वीर (**मर्त्यः**) मनुष्य (**अग्नेः**) अग्नि के सदृश (**अस्य**) इस (**ईवतः**) श्रेष्ठ गमन करनेवाले (**तिग्मजम्भस्य**) तीक्ष्ण तेजस्वि मुख जिसका उस (**मीळहुषः**) पराक्रमी सेनापति के शत्रुओं के मध्य में (**ईशीत**) समर्थ हो (**घ**) वही विजय करने योग्य होवे॥५॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-सेनापति को चाहिये कि उन्हीं पुरुषों को सेना में भर्ती करें कि जो लोग शत्रुओं को जीत सकें॥५॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**तमर्वन्तं न सानसिमरुषं न दिवः शिशुम्। मर्मृज्यन्ते दिवेदिवे॥६॥**

**तम्। अर्वन्तम्। न। सानसिम्। अरुषम्। न। दिवः। शिशुम्। मर्मृज्यन्ते। दिवेऽदिवे॥६॥**

**पदार्थः**-(**तम्**) वीरम् (**अर्वन्तम्**) शीघ्रगामिनमश्वम् (**न**) इव (**सानसिम्**) विभक्तव्यम् (**अरुषम्**) रक्तगुणविशिष्टम् (**न**) (**दिवः**) प्रकाशात् (**शिशुम्**) पुत्रम् (**मर्मृज्यन्ते**) शोधयन्ति (**दिवेदिवे**) प्रतिदिनम्॥६॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! दिवः शिशुमर्वन्तं नारुषं न सानसिं दिवेदिवे विद्वांसो मर्मृज्यन्ते तं त्वं पवित्रय॥६॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। ये मनुष्या अश्ववत्सन्तानाञ्छिक्षन्ते ते नित्यं सुखं वर्द्धयन्ते॥६॥

**पदार्थः**-हे अग्ने राजन्! जिस (**दिवः**) प्रकाश से (**शिशुम्**) पुत्र को (**अर्वन्तम्**) शीघ्र चलने वाले घोड़े के (**न**) सदृश वा (**अरुषम्**) रक्तगुणों से विशिष्ट के (**न**) सदृश (**सानसिम्**) और विभाग करने योग्य पदार्थ को (**दिवेदिवे**) प्रतिदिन विद्वान् लोग (**मर्मृज्यन्ते**) शुद्ध करते हैं (**तम्**) उसको आप पवित्र करो॥६॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जो मनुष्य घोड़े के सदृश सन्तानों को शिक्षा देते हैं, वे नित्य सुख को बढ़ाते हैं॥६॥

**अथाध्यापकविषयमाह॥**

अब अध्यापक विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**बोधद्यन्मा हरिभ्यां कुमारः साहदेव्यः। अच्छा न हूत उदरम्॥७॥**

**बोधत्। यत्। मा। हरिऽभ्याम्। कुमारः। साहऽदेव्यः। अच्छ। न। हूतः। उत्। अरम्॥७॥**

**पदार्थः**-(**बोधत्**) बोधय (**यत्**) यः (**मा**) माम् (**हरिभ्याम्**) अश्वाभ्यामिव पठनाभ्यासाभ्याम् (**कुमारः**) ब्रह्मचारी (**साहदेव्यः**) ये देवैः सह वर्त्तन्ते तत्र भवेषु साधुः (**अच्छ**) अत्र **संहितायामिति** दीर्घः। (**न**) (**हूतः**) प्रशंसितः (**उत्**) (**अरम्**) अलम्॥७॥

**अन्वयः**-हे अध्यापक! यत्साहदेव्यः कुमारोऽहं हूतस्सन्नरं न विजानीयां तं मा हरिभ्यामिवाच्छोद्बोधत्॥७॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यदा कुमाराः कुमार्य्यश्च मातापितृभ्यां शिक्षां प्राप्ता आचार्य्यकुलं गच्छेयुस्तदाऽऽचार्य्यस्य प्रियाचरणेन विनयेन तं प्रार्थ्यं विद्या याचनीया य एवं कुर्यात् स उत्तमाभ्यां हरिभ्यां युक्तेन रथेनेव विद्यापारं गच्छेत्॥७॥

**पदार्थः**-हे अध्यापक! **(यत्)** जो **(साहदेव्यः)** जो विद्वानों के साथ वर्त्तमान उनमें श्रेष्ठ **(कुमारः)** ब्रह्मचारी मैं **(हूतः)** प्रशंसित होता हुआ **(अरम्)** पूर्ण **(न)** न जानूं उस **(मा)** मुझको **(हरिभ्याम्)** घोड़ों के सदृश **(अच्छ)** अच्छे प्रकार **(उत्, बोधत्)** उत्तम बोध दीजिये॥७॥

**भावार्थः**-जब कुमार और कुमारियाँ माता और पिता से शिक्षा को प्राप्त हुए आचार्य के कुल को जावें, तब आचार्य के प्रिय आचरण और विनय से उसकी प्रार्थना करके विद्या की याचना करें, जो ऐसा करे, वह श्रेष्ठ घोड़ों से युक्त रथ से जैसे वैसे विद्या के पार को जावे॥७॥

**अथाध्येतृविषयमाह॥**

अब अध्येतृविषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**उत त्या यजता हरी कुमारात् साहदेव्यात्। प्रयता सद्य आ ददे॥८॥**

**उत। त्या। यजता। हरी इति। कुमारात्। साहऽदेव्यात्। प्रऽयता। सद्यः। आ। ददे॥८॥**

**पदार्थः**-**(उत)** **(त्या)** तौ **(यजता)** दातारावध्यापकोपदेशकौ **(हरी)** अविद्याया हर्त्तारौ **(कुमारात्)** ब्रह्मचारिणः **(साहदेव्यात्)** **(प्रयता)** प्रयतमानौ **(सद्यः)** **(आ)** **(ददे)** गृह्णीयात्॥८॥

**अन्वयः**-त्या यजता हरी प्रयताध्यापकोपदेशकौ साहदेव्यात्कुमारात् प्रतिज्ञां गृह्णीयातामुतापि ताभ्यां कुमारो विद्याः सद्य आददे॥८॥

**भावार्थः**-यदा विद्यार्थिनो विद्यार्थिन्यश्चाऽध्ययनाय गच्छेयुस्तदा तैः प्रतिज्ञा कार्य्या वयं धर्म्येण ब्रह्मचर्य्येण भवदानुकूल्येन वर्त्तित्वा विद्याभ्यासं करिष्यामो मध्ये ब्रह्मचर्य्यव्रतं न लोप्स्याम इति अध्यापकाश्च वयं प्रीत्या निष्कपटतया विद्यां दास्याम इति, च॥८॥

**पदार्थः**-**(त्या)** वे दोनों **(यजता)** देने और **(हरी)** अविद्या के हरनेवाले **(प्रयता)** प्रयत्न करते हुए अध्यापकोपदेशक **(साहदेव्यात्)** विद्वानों के साथ रहने वालों में उत्तम **(कुमारात्)** ब्रह्मचारी से प्रतिज्ञा को ग्रहण करें **(उत)** और उन दोनों से ब्रह्मचारी विद्या **(सद्यः)** शीघ्र **(आ, ददे)** ग्रहण करे॥८॥

**भावार्थः**-जब विद्यार्थी [और विद्यार्थिनी] पढ़ने के लिये जावें, तब उनको चाहिये कि प्रतिज्ञा करें कि हम लोग धर्म्मयुक्त ब्रह्मचर्य्य से आपके अनुकूल वर्त्ताव करके विद्या का अभ्यास करेंगे और मध्य में ब्रह्मचर्य्य व्रत का न लोप करेंगे और अध्यापक लोग यह प्रतिज्ञा करें कि हम निष्कपटता से विद्यादान करेंगे॥८॥

**अथाऽध्यापकोपदेशकविषयमाह॥**



www.9009.co.in

अब अध्यापक और उपदेशक विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**एष वां देवावश्विना कुमारः साहदेव्यः। दीर्घायुरस्तु सोमकः॥९॥**

**एषः। वाम्। देवौ। अश्विना। कुमारः। साहऽदेव्यः। दीर्घऽआयुः। अस्तु। सोमकः॥९॥**

**पदार्थः**-(**एषः**) ब्रह्मचारी (**वाम्**) युवयोरध्यापकोपदेशकयोः (**देवौ**) विद्वांसौ (**अश्विना**) सर्वविद्याव्यापिनौ (**कुमारः**) (**साहदेव्यः**) (**दीर्घायुः**) चिरञ्जीवी (**अस्तु**) भवतु (**सोमकः**) सोम इव शीतलस्वभावः॥९॥

**अन्वयः**-हे देवावश्विना! युवां यथैव वां साहदेव्यः सोमकः कुमारो दीर्घायुरस्तु तथा प्रयतेथाम्॥९॥

**भावार्थः**-अध्यापकोपदेशकौ तादृशं प्रयत्नं कुर्य्यातां येन धार्मिका दीर्घायुषो विद्वांसोऽध्येतारः स्युः॥९॥

**पदार्थः**-हे (**देवौ**) विद्वानो (**अश्विना**) सम्पूर्ण विद्याओं में व्याप्त आप दोनों! जैसे (**एषः**) यह ब्रह्मचारी (**वाम्**) आप दोनों अध्यापक और उपदेशक के (**साहदेव्यः**) विद्वानों के साथ रहनेवालों में श्रेष्ठ (**सोमकः**) चन्द्रमा के सदृश शीतलस्वभाववाला (**कुमारः**) ब्रह्मचारी (**दीर्घायुः**) बहुत काल पर्य्यन्त जीवने वाला (**अस्तु**) हो वैसा प्रयत्न करो॥९॥

**भावार्थः**-अध्यापक और उपदेशक ऐसा प्रयत्न करें कि जिससे धार्मिक अधिक अवस्था वाले और विद्वान् पढ़नेवाले होवें॥९॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**तं युवं देवावश्विना कुमारं साहदेव्यम्। दीर्घायुषं कृणोतन॥१०॥१६॥**

**तम्। युवम्। देवौ। अश्विना। कुमारम्। साहऽदेव्यम्। दीर्घऽआयुषम्। कृणोतन॥१०॥**

**पदार्थः**-(**तम्**) अध्येतारम् (**युवम्**) (**देवौ**) विद्यादातारौ (**अश्विना**) शुभगुणव्यापिनौ (**कुमारम्**) ब्रह्मचारिणम् (**साहदेव्यम्**) विद्वत्सहचरम् (**दीर्घायुषम्**) (**कृणोतन**) कुर्यातम्॥१०॥

**अन्वयः**-हे देवावश्विना युवं तं साहदेव्यं कुमारं दीर्घायुषं कृणोतन॥१०॥

**भावार्थः**-हे विद्वांसो! विदुष्यो यूयमध्यापनाय प्रवर्त्तित्वा सुशिक्षां कृत्वा विद्यायोगं सम्पाद्य सर्वान्त्सतश्चिरञ्जीविनः कुरुतेति॥१०॥

अत्राग्निराजाध्यापकाऽध्येतृकर्मवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति पञ्चदशं सूक्तं षोडशो वर्गश्च समाप्तः॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-हे **(देवौ)** विद्या के देनेवाले **(अश्विना)** श्रेष्ठ गुणों में व्यापक **(युवम्)** आप दोनों **(तम्)** उस पढ़नेवाले **(साहदेव्यम्)** विद्वानों के उत्तम साथी **(कुमारम्)** ब्रह्मचारी को **(दीर्घायुषम्)** अधिक अवस्था वाला **(कृणोतन)** करो॥१०॥

**भावार्थः**-हे विद्वानो और विदुषियो! आप लोग पढ़ाने के लिये प्रवृत्त हो और उत्तम शिक्षा करके और विद्या के योग को सम्पादन करके सब श्रेष्ठ पुरुषों को बहुत कालपर्य्यन्त जीवनेवाले करो॥१०॥

इस सूक्त में अग्नि, राजा, अध्यापक और पढ़नेवाले के कर्म्मों का वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह पन्द्रहवां सूक्त और सोलहवां वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

**अथैकाधिकविंशत्यृचस्य षोडशस्य सूक्तस्य वामदेव ऋषिः। इन्द्रो देवता। १, ४, ६, ८, ९, १२, १९ निचृत्त्रिष्टुप्। ३ त्रिष्टुप्। ७, १६, १७ विराट् त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः। २, २१ निचृत्पङ्क्तिः। ५, १३-१५ स्वराट्पङ्क्तिः। १०, ११, १८, २० भुरिक्पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः॥**

**अथेन्द्रपदवाच्यराजविषयमाह॥**

अब इक्कीस ऋचावाले सोलहवें सूक्त का प्रारम्भ है उसके प्रथम मन्त्र में इन्द्रपदवाच्य राजविषय को कहते हैं॥

**आ स॒त्यो या॑तु म॒घवाँ॑ ऋ॒जी॒षी द्रव॑न्त्वस्य॒ हर॑य॒ उप॑ नः।**

**तस्मा॒ इदन्धः॑ सुषुमा सु॒दक्ष॑मि॒हाभि॑पि॒त्वं क॑रते गृणा॒नः॥ १॥**

**आ। स॒त्यः। या॒तु। म॒घऽवा॑न्। ऋ॒जी॒षी। द्रव॑न्तु। अ॒स्य॒। हर॑यः। उप॑। न॒ः। तस्मै॑। इत्। अन्धः॑। सु॒सु॒म॒। सु॒ऽदक्ष॑म्। इ॒ह। अ॒भि॒ऽपि॒त्वम्। क॒र॒ते॒। गृ॒णा॒नः॥ १॥**

**पदार्थः**-(**आ**) समन्तात् (**सत्यः**) सत्सु साधुः (**यातु**) आगच्छतु (**मघवान्**) बहुपूजितधनयुक्तः (**ऋजीषी**) ऋजुनीतिः (**द्रवन्तु**) गच्छन्तु (**अस्य**) राज्ञः (**हरयः**) मनुष्याः। **हरय इति मनुष्यनामसु पठितम्।** (निघं०२.३) (**उप**) (**नः**) अस्मान् (**तस्मै**) (**इत्**) (**अन्धः**) अन्नादिकम् (**सुषुम**) निष्पादयेम। अत्र **संहितायामि**ति दीर्घः। (**सुदक्षम्**) सुष्ठुबलम्। (**इह**) अस्मिन् राज्ये (**अभिपित्वम्**) प्राप्तम् (**करते**) कुर्य्यात् (**गृणानः**) प्रशंसन्॥ १॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! य इह गृणानोऽभिपित्वं सुदक्षं करते तस्मा इदेव वयमन्धः सुषुम। यस्यास्य हरयो न द्रवन्तु स ऋजीषी सत्यो मघवान्नोऽस्मानुपायातु॥ १॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यो राजाऽस्माकं बलं वर्धयेन्नीत्या प्रजाः पालयेद्यस्य पुरुषा अपि धार्मिकाः प्रजापालनप्रियाः स्युरस्मान् प्रेम्णा संयुञ्जीरँस्तदर्थं वयमैश्वर्य्यमुन्नयेम॥ १॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो (**इह**) इस राज्य में (**गृणानः**) प्रशंसा करता हुआ (**अभिपित्वम्**) प्राप्त (**सुदक्षम्**) श्रेष्ठ बल को (**करते**) करे (**तस्मै**) उसके लिये (**इत्**) ही हम लोग (**अन्धः**) अन्न आदि को (**सुषुम**) उत्पन्न करें, जिस (**अस्य**) इस राजा के (**हरयः**) मनुष्य नहीं (**द्रवन्तु**) जावें, वह (**ऋजीषी**) सरलनीति वाला (**सत्यः**) श्रेष्ठों में साधु और (**मघवान्**) बहुत श्रेष्ठ धन से युक्त जन (**नः**) हम लोगों के (**उप**) समीप (**आ**) सब प्रकार (**यातु**) प्राप्त होवे॥ १॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो राजा हम लोगों के बल को बढ़ावे और नीति से प्रजाओं का पालन करे और जिस राजा के पुरुष भी धार्मिक और प्रजा के पालन में प्रिय हों और हम लोगों को प्रेम से संयुक्त करें, उसके लिये हम लोग ऐश्वर्य्य की वृद्धि करें॥ १॥

**पुना राजविषयमाह॥**



www.9009.co.in

फिर राजविषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अव॑ स्य शू॒राध्व॑नो॒ नान्ते॒ऽस्मिन्नो॑ अ॒द्य सव॑ने म॒न्दध्यै॑।**

**शंसा॑त्यु॒क्थमु॒शने॑व वे॒धाश्चि॑कि॒तुषे॑ असु॒र्या॑य॒ मन्म॑॥२॥**

**अव॑। स्य॒। शू॒र॒। अध्व॑नः। न। अन्ते॑। अ॒स्मिन्। नः॒। अ॒द्य। सव॑ने। म॒न्दध्यै॑। शंसा॑ति। उ॒क्थम्। उ॒शना॑ऽइव। वे॒धाः। चि॒कि॒तुषे॑। अ॒सु॒र्या॑य। मन्म॑॥२॥**

**पदार्थः**-(**अव**) विरोधे (**स्य**) अन्तं प्रापय (**शूर**) शत्रूणां हिंसक (**अध्वनः**) मार्गस्य (**न**) निषेधे (**अन्ते**) समीपे (**अस्मिन्**) (**नः**) अस्माकम् (**अद्य**) (**सवने**) क्रियाविशेषयज्ञे (**मन्दध्यै**) मन्दितुमानन्दितुम् (**शंसाति**) शंसेत (**उक्थम्**) वक्तुं योग्यं शास्त्रम् (**उशनेव**) यथाकामाः (**वेधाः**) मेधावी (**चिकितुषे**) विज्ञापनाय (**असुर्याय**) असुरेष्वविद्वत्सु भवायाविदुषे (**मन्म**) विज्ञानम्॥२॥

**अन्वयः**-हे शूर! योऽस्मिन् सवनेऽद्य मन्दध्यै नोऽस्मानुशनेव वेधा उक्थं मन्म शंसात्यसुर्य्याय चिकितुषे नः सवनेऽन्ते शंसाति तमध्वनो गन्तारं त्वं नाव स्य॥२॥

**भावार्थः**-हे राजन्! ये धीमन्तः सर्वेभ्यो विद्याः कामयमाना उपदेशका भवेयुस्तान् सततं रक्ष॥२॥

**पदार्थः**-हे (**शूर**) शत्रुओं के नाशक! जो (**अस्मिन्**) इस (**सवने**) क्रियाविशेषरूप यज्ञ में (**अद्य**) आज (**मन्दध्यै**) आनन्द करने को (**नः**) हम लोगों के (**उशनेव**) सदृश कामना करता हुआ (**वेधाः**) बुद्धिमान् जन (**उक्थम्**) कहने योग्य शास्त्र और (**मन्म**) विज्ञान को (**शंसाति**) प्रशंसित करे (**असुर्याय**) अविद्वानों में उत्पन्न अविद्वान् पुरुष के लिये (**चिकितुषे**) जनाने को हम लोगों के क्रियाविशेष यज्ञ में (**अन्ते**) समीप में प्रशंसित करे, उस (**अध्वनः**) मार्ग के जानेवाले को आप (**न**) न (**अव**) विरोध में (**स्य**) अन्त को प्राप्त कराओ॥२॥

**भावार्थः**-हे राजन्! जो बुद्धिमान् सब से विद्याओं की कामना करते हुए उपदेशक हों, उनकी निरन्तर रक्षा करो॥२॥

**अथ विद्वद्विषयमाह॥**

अब विद्वानों के विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**क॒विर्न नि॒ण्यं वि॒दथा॑नि॒ साध॒न् वृषा॒ यत्सेकं॑ विपिपा॒नो अर्चा॑त्।**

**दि॒व इ॒त्था जी॑जनत्सप्त॒ का॒रूनह्ना॑ चिच्चक्रुर्व॒युना॑ गृ॒णन्तः॑॥३॥**

**क॒विः। न। नि॒ण्यम्। वि॒दथा॑नि। साध॑न्। वृषा॑। यत्। सेक॑म्। वि॒ऽपि॒पा॒नः। अर्चा॑त्। दि॒वः। इ॒त्था। जी॒ज॒न॒त्। स॒प्त। का॒रून्। अह्ना॑। चि॒त्। च॒क्रुः॒। व॒युना॑। गृ॒णन्तः॑॥३॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**कविः**) विद्वान् (**न**) इव (**निण्यम्**) निश्चितम् (**विदथानि**) विज्ञातव्यानि (**साधन्**) साध्नुवन् (**वृषा**) बलिष्ठः (**यत्**) यः (**सेकम्**) सिञ्चनम् (**विपिपानः**) विशेषेण रक्षन् (**अर्चात्**) सत्कुर्य्यात् (**दिवः**) प्रकाशान् (**इत्था**) अनेन प्रकारेण (**जीजनत्**) जनयति (**सप्त**) (**कारून्**) शिल्पिनः (**अह्ना**) दिवसेन (**चित्**) (**चक्रुः**) कुर्वन्ति (**वयुना**) प्रज्ञानानि (**गृणन्तः**) स्तुवन्त उपदिशन्तः॥३॥

**अन्वयः**-गृणन्तो विद्वांसोऽह्ना वयुना चक्रुः सप्त कारूञ्चिच्चक्रुरित्था यद्यो वृषा सेकं विपिपानो विदथानि साधन् दिवोऽर्चात् स निण्यं दिवः कविर्न जीजनत्॥३॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। ये जना विद्यापुरुषार्थौ वर्धयन्ति ते सप्तविधाञ्छिल्पविदुषः कृत्वा सर्वाणि कार्य्याणि साधयित्वा कामसिद्धिं कर्त्तुं शक्नुयुः॥३॥

**पदार्थः**-(**गृणन्तः**) स्तुति और उपदेश करते हुए विद्वान् जन (**अह्ना**) दिन से (**वयुना**) प्रज्ञानों को (**चक्रुः**) करते हैं और (**सप्त**) सात (**कारून्**) कारीगर जनों को (**चित्**) भी करते हैं (**इत्था**) इस प्रकार से (**यत्**) जो (**वृषा**) बलिष्ठ (**सेकम्**) सिंचन की (**विपिपानः**) विशेष करके रक्षा और (**विदथानि**) जानने के योग्यों को (**साधन्**) सिद्ध करता हुआ (**दिवः**) प्रकाशों का (**अर्चात्**) सत्कार करे, वह (**निण्यम्**) निश्चित प्रकाशों को (**कविः**) विद्वान् के (**न**) सदृश (**जीजनत्**) उत्पन्न करता है॥३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जो जन विद्या और पुरुषार्थ को बढ़ाते हैं, वे सात प्रकार के कारीगरों को करके सब कार्य्यों को सिद्ध करा कामसिद्धि कर सकें॥३॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**स्व१॒र्यद्वेदि॑ सु॒दृशी॑कम॒र्कैर्महि॒ ज्योती॑ रुरुचु॒र्यद्ध॒ वस्तोः॑।**

**अ॒न्धा तमां॑सि दु॒धि॑ता वि॒चक्षे॑ नृ॒भ्य॑श्चकार॒ नृत॑मो अ॒भिष्टौ॑॥४॥**

**स्वः॑। यत्। वेदि॑। सु॒ऽदृशी॑कम्। अ॒र्कैः। महि॑। ज्योतिः॑। रु॒रु॒चुः॑। यत्। ह॒। वस्तोः॑। अ॒न्धा। तमां॑सि। दु॒धि॑ता। वि॒ऽचक्षे॑। नृ॒ऽभ्यः॑। च॒का॒र॒। नृ॒ऽत॑मः। अ॒भिष्टौ॑॥४॥**

**पदार्थः**-(**स्वः**) सुखम् (**यत्**) (**वेदि**) विज्ञायते (**सुदृशीकम्**) सुष्ठु द्रष्टुं योग्यम् (**अर्कैः**) मन्त्रैर्विचारैः (**महि**) महत् (**ज्योतिः**) प्रकाशमयम् (**रुरुचुः**) रोचन्ते (**यत्**) (**ह**) (**वस्तोः**) दिनम् (**अन्धा**) अन्धकाररूपाणि (**तमांसि**) रात्रीः (**दुधिता**) दुधितानि दुर्हितानि (**विचक्षे**) प्रकाशयति (**नृभ्यः**) नायकेभ्यो मनुष्येभ्यः (**चकार**) करोति (**नृतमः**) अतिशयेन नायकः (**अभिष्टौ**) अभितः सङ्गते कर्मणि॥४॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यत्सुदृशीकं महि ज्योतिस्स्वर्वेदि यद्ध वस्तोः किरणा रुरुचुयस्सूर्य्योऽन्धा तमांसि दुधिता विचक्षे तेन यो नृतमोऽभिष्टावर्कैर्नृभ्यः स्वश्चकार स एव सर्वैः सत्कर्त्तव्यो भवति॥४॥

**भावार्थः**-नित्यं नीतिवीरताभ्यां सम्वर्द्धितराज्यकर्म्मणि राजप्रजाजनेषु सर्वतः सुखं प्रतिदिनं सूर्य्यप्रकाश इव वर्द्धते॥४॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(यत्)** जो **(सुदृशीकम्)** उत्तम प्रकार देखने योग्य **(महि)** बड़ा **(ज्योतिः)** प्रकाशमय **(स्वः)** सुख **(वेदि)** जाना जाता है **(यत्)** जो **(ह)** निश्चय **(वस्तोः)** दिन को किरणें **(रुरुचुः)** प्रकाशित करते हैं और जिनसे सूर्य्य **(अन्धा)** अन्धकाररूप **(तमांसि)** रात्रियों को **(दुधिता)** दूर की हुई **(विचक्षे)** प्रकाशित करता है, तिससे जो **(नृतमः)** अत्यन्त नायक **(अभिष्टौ)** चारों ओर से सङ्गत कर्म्म में **(अर्कैः)** विचारों से **(नृभ्यः)** नायक मनुष्यों के लिये सुख को **(चकार)** करता है, वही सब लोगों के सत्कार करने योग्य होता है॥४॥

**भावार्थः**-नित्य नीति और वीरता से अच्छे प्रकार बढ़े हुए राज्यकर्म्म में राजा और प्रजाओं में सब ओर से सुख प्रतिदिन सूर्यप्रकाश के समान बढ़ता है॥४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**व॒व॒क्ष इन्द्रो॒ अमि॑तमृजी॒ष्यु१॒॑भे आ प॑प्रौ॒ रोद॑सी महि॒त्वा।**

**अत॑श्चिदस्य महि॒मा वि रे॑च्य॒भि यो विश्वा॒ भुव॑ना ब॒भूव॑॥५॥१७॥**

**व॒व॒क्षे। इन्द्रः॑। अमि॑तम्। ऋ॒जी॒षी। उ॒भे इति॑। आ। प॒प्रौ॒। रोद॑सी॒ इति॑। म॒हि॒ऽत्वा। अतः॑। चि॒त्। अ॒स्य। म॒हि॒मा। वि। रे॒चि॒। अ॒भि। यः। विश्वा॑। भुव॑ना। ब॒भूव॑॥५॥**

**पदार्थः**-**(ववक्षे)** वहति **(इन्द्रः)** सूर्य्य इव राजा **(अमितम्)** अपरिमितम् **(ऋजीषी)** ऋजुः **(उभे)** द्वे **(आ)** **(पप्रौ)** व्याप्नोति **(रोदसी)** द्यावापृथिव्यौ **(महित्वा)** महत्त्वेन **(अतः)** **(चित्)** अपि **(अस्य)** **(महिमा)** **(वि)** **(रेचि)** विरिच्यते **(अभि)** **(यः)** **(विश्वा)** सर्वाणि **(भुवना)** भुवनानि **(बभूव)**॥५॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यो जगदीश्वर इन्द्र इवाभि बभूव यतश्चिदस्य महिमा वि रेचि यो विश्वा भुवना दधात्यत उभे रोदसी महित्वा आ पप्रावृजीषी सन्नमितं ववक्षे स एव सर्वेभ्यो महान् वेद्यः॥५॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। ये मनुष्याः सर्वेभ्यो जगदीश्वरस्य महिमानमधिकं जानन्ति तेऽत्र महीयन्ते॥५॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(यः)** जो जगदीश्वर **(इन्द्रः)** सूर्य्य के सदृश राजा **(अभि, बभूव)** हुआ जिससे **(चित्)** भी **(अस्य)** इसका **(महिमा)** बड़प्पन **(वि, रेचि)** विशेष करके शोभित होता है और जो **(विश्वा)** सम्पूर्ण **(भुवना)** भुवनों को धारण करता है **(अतः)** इससे **(उभे)** दोनों **(रोदसी)** अन्तरिक्ष और पृथिवी को **(महित्वा)** महत्त्व से **(आ, पप्रौ)** व्याप्त करता है और **(ऋजीषी)** सरल हुआ **(अमितम्)** परिमाणरहित पदार्थ **(ववक्षे)** प्राप्त करता है, वही सब से बड़ा समझना चाहिये॥५॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो मनुष्य सब से जगदीश्वर का बड़प्पन अधिक जानते हैं, वे इस जगत् में प्रतिष्ठा को प्राप्त होते हैं॥५॥

**पुना राजविषयमाह॥**



www.9009.co.in

फिर राजविषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**विश्वा॑नि श॒क्रो नर्या॑णि वि॒द्वान॒पो रि॑रेच॒ सखि॑भि॒र्निका॑मैः।**

**अश्मा॑नं चि॒द्ये बि॑भि॒दुर्वचो॑भिर्व्र॒जं गोम॑न्तमु॒शिजो॒ वि व॑व्रुः॥६॥**

**विश्वा॑नि। श॒क्रः। नर्या॑णि। वि॒द्वान्। अ॒पः। रि॒रे॒च॒। सखि॑ऽभिः। निऽका॑मैः। अश्मा॑नम्। चि॒त्। ये। बि॒भि॒दुः। वच॑ःऽभिः। व्र॒जम्। गोऽम॑न्तम्। उ॒शिज॑ः। वि। व॒व्रु॒रिति॑ वव्रुः॥६॥**

**पदार्थः**-(**विश्वानि**) सर्वाणि (**शक्रः**) शक्तिमान् (**नर्याणि**) नृषु साधूनि (**विद्वान्**) (**अपः**) कर्म्माणि (**रिरेच**) रिणक्ति (**सखिभिः**) मित्रैः (**निकामैः**) नित्यः कामो येषान्तैः (**अश्मानम्**) मेघम् (**चित्**) इव (**ये**) (**बिभिदुः**) भिन्दन्ति (**वचोभिः**) वचनैः (**व्रजम्**) (**गोमन्तम्**) बह्व्यो गावो विद्यन्ते यस्मिंस्तम् (**उशिजः**) कामयमानाः (**वि**) (**वव्रुः**)॥६॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! ये वायवोऽश्मानं चिदिव बिभिदुर्गोमन्तं व्रजमुशिज इव न्यायं वि वव्रुस्तैर्निकामैः सखिभिः सह यः शक्रो विद्वान् विश्वानि नर्याण्यपो वचोभी रिरेच स एव पृथिवीं भोक्तुमर्हति॥६॥

**भावार्थः**-अत्रोपमावाचकलुप्तोपमालङ्कारौ। सूर्य्यो मेघमिव दुष्टनिवारका गोपाला व्रजाद् गा इवाऽन्यायाद् विमोचयितारः सखायो यस्य भवेयुः स नरो भूपतिर्भवितुमर्हति॥६॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! (**ये**) जो पवन (**अश्मानम्**) जैसे मेघ को (**चित्**) वैसे (**बिभिदुः**) विदीर्ण करते हैं (**गोमन्तम्**) बहुत गौओं से युक्त (**व्रजम्**) गौओं के स्थान की (**उशिजः**) कामना करते हुओं के समान न्याय को (**वि, वव्रुः**) अस्वीकार करते हैं, उन (**निकामैः**) नित्य कामना वाले (**सखिभिः**) मित्रों के साथ जो (**शक्रः**) सामर्थ्य वाला (**विद्वान्**) विद्वान् (**विश्वानि**) सम्पूर्ण (**नर्याणि**) मनुष्यों में उत्तम (**अपः**) कर्मों को (**वचोभिः**) वचनों से (**रिरेच**) पृथक् करता है, वही पृथिवी के भोगने के योग्य है॥६॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमावाचकलुप्तोपमालङ्कार हैं। सूर्य्य जैसे मेघ का वैसे दुष्टों के निवारण करनेवाले वा गोपाल लोग जैसे व्रज अर्थात् गौओं के बाड़े से गौओं को वैसे अन्याय से पृथक् करने वाले जिस पुरुष के मित्र होवें, वह मनुष्य राजा होने के योग्य है॥६॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अ॒पो वृ॒त्रं व॑व्रि॒वांसं॒ परा॑ह॒न् प्राव॑त्ते॒ वज्रं॑ पृथि॒वी सचे॑ताः।**

**प्रार्णां॑सि समु॒द्रिया॑ण्यैनोः॒ पति॒र्भव॒ञ्छव॑सा शूर धृष्णो॥७॥**

**अ॒पः। वृ॒त्रम्। व॒व्रि॒ऽवांस॑म्। परा॑। अ॒ह॒न्। प्र। आ॒व॒त्। ते॒। वज्र॑म्। पृ॒थि॒वी। सऽचे॑ताः। प्र। अर्णां॑सि। स॒मु॒द्रिया॑णि। ऐ॒नोः॒। पति॑ः। भव॑न्। शव॑सा। शू॒र॒। धृ॒ष्णो॒ इति॑॥७॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**अपः**) जलानि (**वृत्रम्**) मेघम् (**वव्रिवांसम्**) विवृतम् (**परा**) (**अहन्**) हन्ति (**प्र, आवत्**) रक्षति (**ते**) तव (**वज्रम्**) किरणरूपम् (**पृथिवी**) (**सचेताः**) चेतसा सहितः (**प्र**) (**अर्णांसि**) उदकानि (**समुद्रियाणि**) समुद्रार्हाणि (**ऐनोः**) प्रेरयेः (**पतिः**) स्वामी (**भवन्**) (**शवसा**) बलेन (**शूर**) (**धृष्णो**) दृढात्मन्॥७॥

**अन्वयः**-हे धृष्णो शूर! सचेताः शवसा पतिर्भवन्संस्त्वं यथा सूर्य्यो वज्रं प्रहृत्यापो वृत्रं वव्रिवांसं पराहन् समुद्रियाण्यर्णांसि पृथिवीव प्रावत् तथा ते यः प्रजां रक्षित्वा शत्रून् हन्यात्तं त्वं प्रैनोः॥७॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। ये सूर्य्यवत्प्रजाः सुखयन्ति त एव राजकर्मसु प्रेरणीयाः सन्ति॥७॥

**पदार्थः**-हे (**धृष्णो**) दृढ़ आत्मा वाले (**शूर**) वीरपुरुष! (**सचेताः**) चित्त के सहित वर्त्तमान (**शवसा**) बल से (**पतिः**) स्वामी (**भवन्**) होते हुए आप जैसे सूर्य्य (**वज्रम्**) किरणरूपी वज्र को फटकार (**अपः**) जलों को प्रकट करते (**वृत्रम्**) मेघ को (**वव्रिवांसम्**) फैल प्रकट (**परा, अहन्**) मारता और (**समुद्रियाणि**) समुद्र के योग्य (**अर्णांसि**) जलों की (**पृथिवी**) पृथिवी के सदृश (**प्र, आवत्**) रक्षा करता है, वैसे (**ते**) आपकी जो प्रजा की रक्षा करके शत्रुओं का नाश करे उसको आप (**प्र, ऐनोः**) प्रेरणा करो॥७॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो लोग सूर्य के सदृश प्रजाओं को सुख देते हैं, वे ही राजकर्म्मों में प्रेरणा करने योग्य होते हैं॥७॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अपो यदद्रिं पुरुहूत दर्दराविर्भुवत्सरमा पूर्व्यं ते।**

**स नो नेता वाजमा दर्षि भूरिं गोत्रा रुजन्नङ्गिरोभिर्गृणानः॥८॥**

**अपः। यत्। अद्रिम्। पुरुऽहूत। दर्दः। आविः। भुवत्। सरमा। पूर्व्यम्। ते। सः। नः। नेता। वाजम्। आ। दर्षि। भूरिम्। गोत्रा। रुजन्। अङ्गिरःऽभिः। गृणानः॥८॥**

**पदार्थः**-(**अपः**) जलानि (**यत्**) यः (**अद्रिम्**) मेघम् (**पुरुहूत**) बहुभिः प्रशंसित (**दर्दः**) विदारय (**आविः**) प्राकट्ये (**भुवत्**) भवेत् (**सरमा**) या सरति सा सरला नीतिः (**पूर्व्यम्**) पूर्वम् (**ते**) तव (**सः**) (**नः**) अस्माकम् (**नेता**) (**वाजम्**) वेगम् (**आ**) (**दर्षि**) विदीर्णं करोषि (**भूरिम्**) विपुलम् (**गोत्रा**) गोत्राणि मेघस्याऽवयवान् (**रुजन्**) भग्नानि कुर्वन् (**अङ्गिरोभिः**) वायुभिः (**गृणानः**) स्तूयमानः॥८॥

**अन्वयः**-हे पुरुहूत! या ते सरमाऽऽविर्भुवत्तया त्वं शत्रून् दर्दो यद्यो नो नेताऽऽविर्भुवत्तेन सह पूर्व्यं वाजमादर्षि यस्त्वमङ्गिगिरोभिस्सूर्योऽप इव गृणानो गोत्रा भूरिमद्रिं रुजन् वर्त्तसे, स ते सेनापतिर्भवेत्॥८॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे राजन्! ये शुद्धनीतयो मनुष्याः प्रसिद्धाः स्युस्तान् रक्षित्वा न्यायेन प्रजाः पालय॥८॥

**पदार्थः**-हे **(पुरुहूत)** बहुतों से प्रशंसित! जो **(ते)** आपकी **(सरमा)** सरलनीति **(आविः)** प्रकट **(भुवत्)** होवे उससे आप शत्रुओं का **(दर्दः)** नाश करो **(यत्)** जो **(नः)** हम लोगों का **(नेता)** नायक प्रकट होवे उसके साथ **(पूर्व्यम्)** पूर्व **(वाजम्)** वेग का **(आ, दर्षि)** नाश करते हो और जो आप **(अङ्गिरोभिः)** पवनों से सूर्य जैसे **(अपः)** जलों को वैसे **(गृणानः)** स्तुति करते हुए **(गोत्रा)** मेघों के अवयवों को और **(भूरिम्)** बहुत **(अद्रिम्)** मेघ को **(रुजन्)** छिन्न-भिन्न करते हुए वर्त्तमान हो **(सः)** वह आपका सेनापति होवे॥८॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे राजन्! जो शुद्धनीति वाले मनुष्य प्रसिद्ध होवें, उनकी रक्षा करके न्याय से प्रजाओं का पालन करो॥८॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अच्छा॑ क॒विं नृ॑मणो गा अ॒भिष्टौ॒ स्व॑र्षाता मघव॒न्नाध॑मानम्।**

**ऊ॒तिभि॒स्तमि॑षणो द्यु॒म्नहू॑तौ॒ नि मा॒याना॒नब्र॑ह्मा॒ दस्यु॑रर्त॥९॥**

**अच्छ॑। क॒विम्। नृ॒ऽम॒नः॒। गाः॒। अ॒भिष्टौ॑। स्वः॑ऽसाता। म॒घ॒ऽव॒न्। नाध॑मानम्। ऊ॒तिऽभिः॑। तम्। इ॒ष॒णः॒। द्यु॒म्नऽहू॑तौ। नि। मा॒याऽवा॑न्। अब्र॑ह्मा। दस्युः॑। अ॒र्त॒॥९॥**

**पदार्थः**-**(अच्छ)** अत्र **निपातस्य चे**ति दीर्घः। **(कविम्)** विद्वांसम् **(नृमणः)** नृषु मनो यस्य तत्सम्बुद्धौ **(गाः)** वाचः **(अभिष्टौ)** अभीष्टसिद्धौ **(स्वर्षाता)** सुखस्यान्तं प्राप्तः **(मघवन्)** बहुधनयुक्त **(नाधमानम्)** ऐश्वर्य्यं कुर्वाणम् **(ऊतिभिः)** रक्षणादिभिः **(तम्)** **(इषणः)** प्रेरयेः **(द्युम्नहूतौ)** धनयशसोर्हूतिः प्राप्तिर्यस्यां तस्याम् **(नि)** **(मायावान्)** कुत्सितप्रज्ञायुक्तः **(अब्रह्मा)** अवेदवित् **(दस्युः)** दुष्टस्वभावः **(अर्त्त)** नश्यतु॥९॥

**अन्वयः**-हे नृमणो मघवन्! स्वर्षाता त्वमूतिभिरभिष्टौ द्युम्नहूतौ गा नाधमानं कविं चाच्छेषणो यो मायावानब्रह्मा दस्युरर्त्त तं त्वं नीषणो निस्सारय॥९॥

**भावार्थः**-हे राजँस्त्वं कपटिनो मूर्खान् दस्यून् हत्वा धार्मिकान् विदुषः सत्कृत्य प्रशंसितः सन्नस्माकं राजा भव॥९॥

**पदार्थः**-हे **(नृमणः)** मनुष्यों में मन रखनेवाले **(मघवन्)** बहुत धन से युक्त! **(स्वर्षाता)** सुख के अन्त को प्राप्त आप **(ऊतिभिः)** रक्षण आदि से **(अभिष्टौ)** अभीष्ट की सिद्धि होने पर **(द्युम्नहूतौ)** धन और यश की प्राप्ति जिसमें उसमें **(गाः)** वाणियों को **(नाधमानम्)** ईश्वरीय भाव को पहुंचाते हुए **(कविम्)** विद्वान् को **(अच्छ)** उत्तम प्रकार प्रेरणा करें और जो **(मायावान्)** निकृष्ट बुद्धियुक्त **(अब्रह्मा)**



www.9009.co.in

वेद को नहीं जानने वाला (**दस्युः**) दुष्ट स्वभावयुक्त पुरुष [का] (**अर्त्त**) नाश हो (**तम्**) उसको आप (**नि, इषणः**) निकालें॥९॥

**भावार्थः**-हे राजन्! आप कपटी, मूर्ख और दुष्ट स्वभाव वाले मनुष्यों का नाश करके और धार्मिक विद्वानों का सत्कार करके प्रशंसित हुए हम लोगों के राजा हूजिये॥९॥

**अथ राजविषयसम्बन्धिप्रजाविषयमाह॥**

अब राजविषयसम्बन्धिप्रजाविषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**आ दस्युघ्ना मनसा याह्यस्तं भुवत्ते कुत्सः सख्ये निकामः।**

**स्वे योनौ नि षदतं सरूपा वि वां चिकित्सद् ऋतचिद्ध नारी॥१०॥१८॥**

**आ। दस्युऽघ्ना। मनसा। याहि। अस्तम्। भुवत्। ते। कुत्सः। सख्ये। निऽकामः। स्वे। योनौ। नि। सदतम्। सऽरूपा। वि। वाम्। चिकित्सत्। ऋतऽचित्। ह। नारी॥१०॥**

**पदार्थः**-(**आ**) समन्तात् (**दस्युघ्ना**) या दस्यून् हन्ति सा (**मनसा**) अन्तःकरणेन (**याहि**) प्राप्नुहि (**अस्तम्**) प्रक्षिप्ताम् (**भुवत्**) भवेत् (**ते**) तव (**कुत्सः**) निन्दितः (**सख्ये**) मित्राय (**निकामः**) निकृष्टः कामो यस्य सः (**स्वे**) स्वकीये (**योनौ**) गृहे (**नि**) (**सदतम्**) तिष्ठतम् (**सरूपा**) समानं रूपं यस्याः सा (**वि**) (**वाम्**) युवयोः (**चिकित्सत्**) चिकित्सते (**ऋतचित्**) या ऋतं सत्यं चिनोति सा (**ह**) किल (**नारी**) नरस्य स्त्री॥१०॥

**अन्वयः**-हे नर! या मनसा दस्युघ्ना सरूपा ऋतचिन्नारी भुवत्तां त्वमायाहि यस्ते सख्ये कुत्सो निकामो भुवत्तमस्तं कुरु यश्च ते स्वे योनौ वि चिकित्सत्तौ ह वां गृहे निषदतम्॥१०॥

**भावार्थः**-हे पुरुष! त्वं निन्दितां स्त्रियं त्यक्त्वा समानरूपां दोषघ्नीं प्राप्नुहि द्वौ मिलित्वा प्रीत्या स्वे गृहे निषीदतम्॥१०॥

**पदार्थः**-हे मनुष्य जो! (**मनसा**) अन्तःकरण से (**दस्युघ्ना**) दुष्टस्वभाव वालों को मारती (**सरूपा**) गुणादिकों से तुल्य रूपवती (**ऋतचित्**) सत्य को इकट्ठा करने वाली (**नारी**) मनुष्य की स्त्री (**भुवत्**) हो उसको आप (**आ**) सब प्रकार (**याहि**) प्राप्त हूजिये और जो (**ते**) आपके (**सख्ये**) मित्र के लिये (**कुत्सः**) निन्दित (**निकामः**) निकृष्ट कामनायुक्त होवे उसको आप (**अस्तम्**) प्रक्षिप्त अर्थात् दूर करो और आपके (**स्वे**) अपने (**योनौ**) गृह में (**वि, चिकित्सत्**) विशेष चिकित्सा करता है, वह दोनों (**ह**) निश्चय से (**वाम्**) आप दोनों के गृह में (**नि, सदतम्**) रहें॥१०॥

**भावार्थः**-हे पुरुष! आप निन्दित स्त्री का त्याग करके समान रूपवाली और दोषों के नाश करनेवाली को प्राप्त होओ और दोनों मिल कर प्रीति से अपने गृह में रहो॥१०॥

**पुना राजविषयमाह॥**

फिर राजविषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥



www.9009.co.in

**यासि कुत्सेन सरथमवस्युस्तोदो वातस्य हर्योरीशानः।**

**ऋज्रा वाजं न गध्यं युयूषन् कविर्यदहन् पार्याय भूषात्॥ ११॥**

**यासि। कुत्सेन। सऽरथम्। अवस्युः। तोदः। वातस्य। हर्योः। ईशानः। ऋज्रा। वाजम्। न। गध्यम्। युयूषन्। कविः। यत्। अहन्। पार्याय। भूषात्॥ ११॥**

**पदार्थः**-(**यासि**) गच्छसि (**कुत्सेन**) कुत्सितकर्मणा (**सरथम्**) रथादिभिः सहितं सैन्यम् (**अवस्युः**) आत्मनोऽवो रक्षणमिच्छुः (**तोदः**) शत्रूणां हन्ता (**वातस्य**) वायोः (**हर्य्योः**) अश्वयोः (**ईशानः**) स्वामी (**ऋज्रा**) ऋज्राणि (**वाजम्**) वेगम् (**न**) इव (**गध्यम्**) ग्रहीतव्यम्। अत्र वर्णव्यत्ययेन रेफलोपो हस्य धः। (**युयूषन्**) मिश्रयितुमिच्छन् (**कविः**) क्रान्तप्रज्ञः (**यत्**) यः (**अहन्**) हन्ति (**पार्य्याय**) पारभवाय (**भूषात्**) अलङ्कुर्यात्॥ ११॥

**अन्वयः**-हे राजन्! यतस्त्वमवस्युस्तोदो वातस्य हर्योरीशानः सन् सरथं यासि ऋज्रा गध्यं वाजं न युयूषन् कविः सन् कुत्सेन सहितमहन् यद्यः पार्याय भूषात् तं प्राप्नोषि तस्माद्राज्यं कर्त्तुं शक्नोसि॥ ११॥

**भावार्थः**-ये कुत्सितानि कर्माणि निन्दितजनसङ्गं च विहाय सत्येन न्यायेन प्रजाः पालयन्तः पुरुषार्थयेयुस्ते सर्वतोऽलङ्कृताः स्युः॥ ११॥

**पदार्थः**-हे राजन्! जिससे आप (**अवस्युः**) अपनी रक्षा की इच्छा करते हुए (**तोदः**) शत्रुओं के नाशकर्त्ता (**वातस्य**) पवन और (**हर्य्योः**) घोड़ों के (**ईशानः**) स्वामी होते हुए (**सरथम्**) रथ आदिकों के सहित सेना को (**यासि**) प्राप्त होते हो (**ऋज्रा**) और सरल गमनों को (**गध्यम्**) ग्रहण करने योग्य (**वाजम्**) वेग के (**न**) सदृश (**युयूषन्**) मिलाने की इच्छा करते हुए (**कविः**) श्रेष्ठ बुद्धियुक्त (**कुत्सेन**) निकृष्ट कर्म के सहित वर्त्तमान का (**अहन्**) नाश करता है (**यत्**) जो (**पार्याय**) पार होने के लिये (**भूषात्**) शोभित करे उसको प्राप्त होते हो, इससे राज्य करने को समर्थ हो सकते हो॥ ११॥

**भावार्थः**-जो लोग निन्दित कर्म्म और निन्दित जन के सङ्ग का त्याग करके सत्यन्याय से प्रजाओं का पालन करते हुए पुरुषार्थ करें, वे सब प्रकार से शोभित होवें॥ ११॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**कुत्साय शुष्णमशुषं नि बर्हीः प्रपित्वे अह्नः कुयवं सहस्रा।**

**सद्यो दस्यून् प्र मृण कुत्स्येन प्र सूरश्चक्रं वृहतादभीके॥ १२॥**

**कुत्साय। शुष्णम्। अशुषम्। नि। बर्हीः। प्रऽपित्वे। अह्नः। कुयवम्। सहस्रा। सद्यः। दस्यून्। प्र। मृण। कुत्स्येन। प्र। सूरः। चक्रम्। वृहतात्। अभीके॥ १२॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**कुत्साय**) निन्दिताय (**शुष्णम्**) शुष्कं नीरसम् (**अशुषम्**) असुरं दुःखम् (**नि**) (**बर्हीः**) उत्पाटय (**प्रपित्वे**) प्रकृष्टप्राप्ते (**अह्नः**) दिवसस्य (**कुयवम्**) कुत्सिता यवा यस्य तम् (**सहस्रा**) सहस्राणि (**सद्यः**) (**दस्यून्**) दुष्टान् चोरान् (**प्र**) (**मृण**) हिन्धि (**कुत्स्येन**) कुत्से वज्रे भवेन वेगेन (**प्र**) (**सूरः**) सूर्य्यः (**चक्रम्**) चक्रमिव वर्त्तमानं ब्रह्माण्डम् (**वृहतात्**) छिन्द्यात् (**अभीके**) समीपे॥१२॥

**अन्वयः**-हे राजंस्त्वमह्नः प्रपित्वे कुत्साय कुयवं शुष्णमशुषं निबर्हीः सूरश्चक्रमिव कुत्सेन सहस्रा दस्यून् सद्यः प्रमृणाऽभीके प्रवृहतात्॥१२॥

**भावार्थः**-हे राजन्! भवान् वज्रादिशस्त्रैर्दस्यून् हत्वा सूर्य्यप्रतापी भवतु॥१२॥

**पदार्थः**-हे राजन्! आप (**अह्नः**) दिन के (**प्रपित्वे**) उत्तम प्रकार प्राप्त होने पर (**कुत्साय**) निन्दित व्यवहार के लिये (**कुयवम्**) निकृष्ट यव जिसके उस (**शुष्णम्**) रसरहित (**अशुषम्**) दुःख को (**नि, बर्हीः**) दूर करो और जैसे (**सूरः**) सूर्य्य (**चक्रम्**) चक्र के सदृश वर्त्तमान ब्रह्माण्ड को (**कुत्सेन**) वैसे वज्र में हुए वेग से (**सहस्रा**) सहस्रों (**दस्यून्**) दुष्ट चोरों को (**सद्यः**) शीघ्र (**प्र**) (**मृण**) नाश कीजिये (**अभीके**) समीप में (**प्र, वृहतात्**) छेदन कीजिये॥१२॥

**भावार्थः**-हे राजन्! आप वज्र आदि शस्त्रों से दुष्ट चोरों का नाश करके सूर्य्य के सदृश प्रतापी हूजिये॥१२॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**त्वं पिप्रुं मृगयं शूशुवांसमृजिश्वने वैदथिनाय रन्धीः।**

**पञ्चाशत्कृष्णा नि वपः सहस्रात्कं न पुरो जरिमा वि दर्दः॥१३॥**

**त्वम्। पिप्रुम्। मृगयम्। शूशुऽवांसम्। ऋजिश्वने। वैदथिनाय। रन्धीः। पञ्चाशत्। कृष्णा। नि। वपः। सहस्रा। अत्कम्। न। पुरः। जरिमा। वि। दर्दरिति दर्दः॥१३॥**

**पदार्थः**-(**त्वम्**) (**पिप्रुम्**) व्यापकम् (**मृगयम्**) मृगमाचक्षाणम् (**शूशुवांसम्**) बलेन वृद्धम् (**ऋजिश्वने**) ऋजुगुणैर्वृद्धाय (**वैदथिनाय**) विज्ञानवतोऽपत्याय (**रन्धीः**) हिंस्याः (**पञ्चाशत्**) (**कृष्णा**) कृष्णानि सैन्यानि (**नि**) (**वपः**) सन्तनुहि (**सहस्रा**) सहस्राणि (**अत्कम्**) अतति व्याप्नोति तं वायुम् (**न**) इव (**पुरः**) (**जरिमा**) अतिशयेन जरा (**वि**) (**दर्दः**) विदारय॥१३॥

**अन्वयः**-हे राजंस्त्वं वैदथिनाय ऋजिश्वने पिप्रुं शूशुवांसं मृगयं रन्धीः। अत्कं जरिमा न पुरः पञ्चाशत्सहस्रा कृष्णा निवपो दुष्टान् वि दर्दः॥१३॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। राजादिराजपुरुषैः सेनायां सहस्राणि वीरान् रक्षयित्वा विनयेन जरा रूपाणि बलानि हरतीव शत्रूणां बलं शनैः शनैर्हत्वा शुद्धा नीतिः प्रचारणीया॥१३॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-हे राजन्! **(त्वम्)** आप **(वैदथिनाय)** विज्ञानवाले के पुत्र के लिये **(ऋजिश्वने)** सरलता आदि गुणों से बढ़े हुए पुरुष के लिये **(पिप्रुम्)** व्यापक **(शूशुवांसम्)** बल से वृद्ध **(मृगयम्)** मृग को ढूंढनेवाले का **(रन्धीः)** नाश करो और **(अत्कम्)** व्याप्त होने वाले वायु को **(जरिमा)** अतिवृद्ध अवस्था के **(न)** सदृश **(पुरः)** आगे **(पञ्चाशत्)** पचास और **(सहस्रा)** सहस्रों **(कृष्णा)** कृष्णवर्ण वाले सैन्यजनों का **(नि, वपः)** विस्तार करो और दुष्ट पुरुषों का **(वि, दर्दः)** नाश करो॥१३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। राजा आदि राजपुरुषों को चाहिये कि सेना में हजारों वीरों को रखके और नम्रता से वृद्धावस्था जैसे रूप और बलों को हरती है, वैसे ही शत्रुओं के बल को धीरे-धीरे नष्ट कर शुद्ध नीति का प्रचार करो॥१३॥

**अथ राजविषये सैन्यपुरुषरक्षणं तत्फलं चाह॥**

अब राजविषय में सेनायोग्य पुरुषों के रखने और उनके फल को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**सूर॑ उपा॒के त॒न्वं१॒॑ दधा॑नो॒ वि यत्ते॒ चेत्य॒मृत॑स्य॒ वर्पः॑।**

**मृ॒गो न ह॒स्ती तवि॑षीमुषा॒णः सिं॒हो न भी॒म आयु॑धानि॒ बिभ्र॑त्॥१४॥**

**सूरः॑। उ॒पा॒के। त॒न्व॑म्। दधा॑नः। वि। यत्। ते॒। चेति॑। अ॒मृत॑स्य। वर्पः॑। मृ॒गः। न। ह॒स्ती। तवि॑षीम्। उ॒षा॒णः। सिं॒हः। न। भी॒मः। आयु॑धानि। बिभ्र॑त्॥१४॥**

**पदार्थः**-**(सूरः)** सूर्य्य इव **(उपाके)** समीपे **(तन्वम्)** तेजस्विशरीरम् **(दधानः)** धरन् **(वि)** **(यत्)** यः **(ते)** तव **(चेति)** ज्ञाप्यते **(अमृतस्य)** नित्यस्य **(वर्पः)** रूपम् **(मृगः)** **(न)** इव **(हस्ती)** **(तविषीम्)** बलयुक्तां सेनाम् **(उषाणः)** दहन् **(सिंहः)** **(न)** इव **(भीमः)** **(आयुधानि)** असिभुशुण्डीशतघ्न्यादीनि **(बिभ्रत्)** धरन्॥१४॥

**अन्वयः**-हे राजन्! यद्य उपाके सूर इव तन्वं दधानस्तेऽमृतस्य वर्पो मृगो न वेगवान् हस्तीव बलिष्ठः सिंहो न भीम आयुधानि बिभ्रच्छत्रुतविषीमुषाणो वि चेति तं त्वं सदा सत्कृत्य रक्ष॥१४॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। हे राजन्! ये दीर्घब्रह्मचर्य्येण सूर्यवत्तेजस्विनो रूपवन्तो वेगवन्तो बलिष्ठाः सिंहवत्पराक्रमिणो धनुर्वेदविदो जनाः स्युस्तत्सेनया शत्रून् विजित्य सर्वत्र सत्कीर्त्या विदितो भव॥१४॥

**पदार्थः**-हे राजन्! **(यत्)** जो **(उपाके)** समीप में **(सूरः)** सूर्य्य के सदृश **(तन्वम्)** तेजस्वि शरीर को **(दधानः)** धारण करता हुआ **(ते)** तुम्हारा **(अमृतस्य)** नित्य वस्तु के **(वर्पः)** रूप और **(मृगः)** हरिण के **(न)** तुल्य वा वेगवान् **(हस्ती)** हाथी के तुल्य बलवान् वा **(सिंहः)** सिंह के **(न)** तुल्य **(भीमः)** भयङ्कर **(आयुधानि)** तलवार, भुशुण्डी, शतघ्न्यादि नामों से प्रसिद्ध आयुधों को **(बिभ्रत्)** धारण और शत्रुओं की **(तविषीम्)** बलयुक्त सेना का **(उषाणः)** दाह करता हुआ **(वि, चेति)** जनाया जाता है, उसका आप सदा सत्कार करके रक्खो॥१४॥



www.9009.co.in

**भावार्थ:**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे राजन्! जो लोग दीर्घ ब्रह्मचर्य से सूर्य्य के समान तेजस्वी रूपवान् और वेगवान् बलिष्ठ, सिंह के सदृश पराक्रमी, धनुर्वेद के जानने वाले जन हों; उनकी सेना से शत्रुओं को जीतकर सब स्थानों में उत्तम कीर्ति से विदित हूजिये॥१४॥

**अथ राजविषये सेनामात्यादियोग्यताविषयं चाह॥**

अब राजविषय में सेना और अमात्य आदिकों की योग्यता के विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**इन्द्रं कामा॑ वसूयन्तो॑ अग्मन्त्स्व॑र्मीळ्हे न सव॑ने चकानाः।**

**श्रवस्यवः॑ शशमानास॑ उक्थैरोको॑ न रण्वा सुदृशी॑व पुष्टिः॥१५॥१६॥**

**इन्द्र॑म्। कामाः॑। वसुऽयन्तः॑। अग्मन्। स्वः॑ऽमीळ्हे। न। सव॑ने। चकानाः। श्रवस्यवः॑। शशमानासः॑। उक्थैः। ओकः॑। न। रण्वा। सुदृशी॑ऽइव। पुष्टिः॥१५॥**

**पदार्थ:**-(**इन्द्रम्**) परमैश्वर्य्यम् (**कामाः**) ये कामयन्ते (**वसूयन्तः**) आत्मनो वसूनि धनानीच्छन्तः (**अग्मन्**) प्राप्नुवन्ति (**स्वर्मीळ्हे**) स्वः सुखेन युक्ते सङ्ग्रामे। **मीळ्ह इति सङ्ग्रामनामसु पठितम्।** (निघं०२.१७) (**न**) इव (**सवने**) प्रेरणे (**चकानाः**) देदीप्यमानाः (**श्रवस्यवः**) आत्मनः श्रवोऽन्नमिच्छन्तः (**शशमानासः**) शत्रुबलस्योल्लङ्घकाः (**उक्थैः**) प्रशंसितैर्गुणैः (**ओकः**) गृहम् (**न**) इव (**रण्वा**) रमणीया (**सुदृशीव**) सुष्ठु द्रष्टुं योग्येव (**पुष्टिः**)॥१५॥

**अन्वयः**-हे राजन्! ये वसूयन्तः कामाः सवने चकानाः श्रवस्यवः शशमानास उक्थैरोको न स्वर्मीळ्हे न या सुदृशीव रण्वा पुष्टिस्तामग्मन्। तां प्राप्येन्द्रं तांस्त्वं सेनाराज्यकर्माचारिणः कुरु॥१५॥

**भावार्थ:**-अत्रोपमालङ्कारः। ये धनकामाः स्युस्ते शरीरात्मबलं वर्धयित्वा युद्धस्य विद्यासामग्र्यौ पूर्णे कुर्वन्तु॥१५॥

**पदार्थ:**-हे राजन्! जो (**वसूयन्तः**) अपने को धनों की इच्छा करते हुए (**कामाः**) कामना करनेवाले (**सवने**) प्रेरणा करने में (**चकानाः**) प्रकाशमान (**श्रवस्यवः**) अपने को अन्न की इच्छा करते हुए (**शशमानासः**) शत्रुओं के बल का उल्लङ्घन करनेवाले (**उक्थैः**) प्रशंसित गुणों से (**ओकः**) गृह के (**न**) सदृश (**स्वर्मीळ्हे**) जैसे सुख से युक्त संग्राम में (**न**) वैसे जो (**सुदृशीव**) उत्तम प्रकार देखने के योग्य सी (**रण्वा**) सुन्दर (**पुष्टिः**) पुष्टि उसको (**अग्मन्**) प्राप्त होते हैं, उसको प्राप्त होकर (**इन्द्रम्**) अत्यन्त ऐश्वर्य्य वाले को और उन पूर्वोक्त जनों को आप सेना और राज्य के कर्मचारी करिये॥१५॥

**भावार्थ:**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जो धन की कामना वाले होवें, वे शरीर और आत्मा के बल को बढ़ाके युद्ध की विद्या और सामग्री पूर्ण करें॥१५॥

**अथ राजप्रजाजनानामेकसम्मतिविषयमाह॥**

अब राजा और प्रजाजनों की एक सम्मति होने के विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥



www.9009.co.in

**तमिद्ध इन्द्रं सुहवं हुवेम यस्ता चकार नर्या पुरूणि।**

**यो मावते जरित्रे गध्यं चिन्मक्षू वाजं भरति स्पार्हराधाः॥ १६॥**

**तम्। इत्। वः। इन्द्रम्। सुऽहवम्। हुवेम। यः। ता। चकार। नर्या। पुरूणि। यः। माऽवते। जरित्रे। गध्यम्। चित्। मक्षु। वाजम्। भरति। स्पार्हऽराधाः॥ १६॥**

**पदार्थः**-(**तम्**) (**इत्**) एव (**वः**) युष्मभ्यम् (**इन्द्रम्**) परमैश्वर्य्यम् (**सुहवम्**) सुष्ठु प्रशंसितम् (**हुवेम**) (**यः**) (**ता**) तानि (**चकार**) कुर्य्यात् (**नर्य्या**) नृभ्यो हितानि (**पुरूणि**) बहूनि सैन्यानि (**यः**) (**मावते**) मत्सदृशाय (**जरित्रे**) विद्यास्तावकाय (**गध्यम्**) गृह्यम् (**चित्**) अपि (**मक्षू**) अत्र **ऋचि तुनुघेति** दीर्घः। (**वाजम्**) अन्नाद्यैश्वर्य्यम् (**भरति**) धरति (**स्पार्हराधाः**) स्पार्हं स्पृहणीयं राधो धनं यस्य सः॥ १६॥

**अन्वयः**-हे प्रजाजना! यः स्पार्हराधा मावते जरित्रे गध्यं वाजं मक्षू भरति यश्चित् ता पुरूणि नर्य्या चकार तं सुहवमिन्द्रमिदेव वो हुवेम॥ १६॥

**भावार्थः**-यदि राजप्रजाजनैरेकां सम्मतिं कृत्वा शुभगुणकर्म्मस्वभावसम्पन्नो राजा स्वीक्रियते तर्हि पूर्णसुखं प्राप्येत॥ १६॥

**पदार्थः**-हे प्रजाजनो! (**यः**) जो (**स्पार्हराधाः**) इच्छा करने योग्य धनयुक्त पुरुष (**मावते**) मेरे सदृश (**जरित्रे**) विद्या की स्तुति करने वाले के लिये (**गध्यम्**) ग्रहण करने योग्य (**वाजम्**) अन्न आदि ऐश्वर्य को (**मक्षू**) शीघ्र (**भरति**) धारण करता है (**यः**) (**चित्**) और जो (**ता**) उन (**पुरूणि**) बहुत (**नर्य्या**) मनुष्यों के लिये हितकारक सैन्य कामों को (**चकार**) करे (**तम्**) उस (**सुहवम्**) उत्तम प्रकार प्रशंसित (**इन्द्रम्**) अत्यन्त ऐश्वर्य वाले को (**इत्**) ही (**वः**) आप लोगों के लिये (**हुवेम**) हवन करें॥ १६॥

**भावार्थः**-जो राजा और प्रजाजन एक सम्मति करके उत्तम गुण, कर्म्म और स्वभाव से युक्त राजा को स्वीकार करें तो पूर्ण सुख प्राप्त हो॥ १६॥

**अथ युद्धप्रवृत्तौ विजयताविषयमाह॥**

अब युद्ध की प्रवृत्ति में विजयता विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**तिग्मा यदन्तरशनिः पताति कस्मिंश्चिच्छूर मुहुके जनानाम्।**

**घोरा यदर्य समृतिर्भवात्यध स्मा नस्तन्वो बोधि गोपाः॥ १७॥**

**तिग्मा। यत्। अन्तः। अशनिः। पताति। कस्मिन्। चित्। शूर। मुहुके। जनानाम्। घोरा। यत्। अर्य। सम्ऽऋतिः। भवाति। अध। स्म। नः। तन्वः। बोधि। गोपाः॥ १७॥**

**पदार्थः**-(**तिग्मा**) तीव्रा (**यत्**) या (**अन्तः**) मध्ये (**अशनिः**) विद्युत् (**पताति**) पतेत् (**कस्मिन्**) (**चित्**) अपि (**शूर**) (**मुहुके**) मोहप्रापके मुहुर्मुहुः करणीये सङ्ग्रामे (**जनानाम्**) मनुष्याणाम् (**घोरा**)



www.9009.co.in

भयङ्करा **(यत्)** या **(अर्य्य)** प्रशंसित **(समृतिः)** युद्धम् **(भवाति)** भवेत् **(अध)** आनन्तर्य्ये **(स्मा)** एव। अत्र **निपातस्य चे**ति दीर्घः। **(नः)** अस्माकम् **(तन्वः)** **(बोधि)** **(गोपाः)** रक्षकः॥१७॥

**अन्वयः**-हे शूरार्य्य! यद् घोरा समृतिर्भवात्यध यत्तिग्माऽशनिर्जनानां कस्मिंश्चिन्मुहुकेऽन्तः पताति तत्र स्मा गोपाः सन्नस्तन्वो बोधि॥१७॥

**भावार्थः**-हे शूरवीरा! यदा बहुशस्त्रसम्पातं युद्धं प्रवर्त्तेत तदा स्वस्य स्वकीयानां च शरीररक्षणेन शत्रूणां हिंसनेन विजयिनो भवत॥१७॥

**पदार्थः**-हे **(शूर)** वीर! **(अर्य्य)** प्रशंसित **(यत्)** जो **(घोरा)** भयंकर **(समृतिः)** युद्ध **(भवाति)** होवे **(अध)** इसके अनन्तर **(यत्)** जो **(तिग्मा)** तीव्र **(अशनिः)** बिजुली **(जनानाम्)** मनुष्यों के **(कस्मिंश्चित्)** किसी **(मुहुके)** मोह के प्राप्त करानेवाले वारंवार करने योग्य संग्राम के **(अन्तः)** बीच **(पताति)** गिरे, उसमें **(स्मा)** ही **(गोपाः)** रक्षा करनेवाले हुए आप **(नः)** हम लोगों के **(तन्वः)** शरीरों की **(बोधि)** जानिये॥१७॥

**भावार्थः**-हे शूरवीरो! जब बहुत शस्त्रों के संपातयुक्त युद्ध प्रवृत्त होवे, तब अपने और अपने सम्बन्धियों के शरीरों की रक्षा करने और शत्रुओं के नाश करने से विजयी हूजिये॥१७॥

**अथ कीदृशं राजानं कुर्य्युरित्याह॥**

अब कैसे को राजा करें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**भुवोऽविता वामदेवस्य धीनां भुवः सखावृको वाजसातौ।**

**त्वामनु प्रमतिमा जगन्मोरुशंसो जरित्रे विश्वध स्याः॥१८॥**

**भुवः। अविता। वामऽदेवस्य। धीनाम्। भुवः। सखा। अवृकः। वाजऽसातौ। त्वाम्। अनु। प्रऽमतिम्। आ। जगन्म्। उरुऽशंसः। जरित्रे। विश्वध। स्याः॥१८॥**

**पदार्थः**-**(भुवः)** भव **(अविता)** **(वामदेवस्य)** सुरूपयुक्तस्य विदुषः **(धीनाम्)** प्रज्ञानाम् **(भुवः)** भव **(सखा)** सुहृत् **(अवृकः)** अस्तेनः **(वाजसातौ)** सङ्ग्रामे **(त्वाम्)** **(अनु)** **(प्रमतिम्)** प्रकृष्टां प्रज्ञाम् **(आ)** **(जगन्म)** **(उरुशंसः)** बहुप्रशंसः **(जरित्रे)** स्तुत्याय **(विश्वध)** यो विश्वं दधाति तत्सम्बुद्धौ **(स्याः)** भवेत्॥१८॥

**अन्वयः**-हे विश्वध राजंस्त्वं वाजसातौ वामदेवस्य धीनामविता भुवोऽवृकः सखा भुव उरुशंसो जरित्रे सुखदः स्या यतस्त्वामनु प्रमतिमाजगन्म॥१८॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यः सर्वाधीशो वीराणां युद्धकुशलानामुपदेशकानां प्रज्ञानां रक्षको भवेत् तमेव राजानं कुरुत॥१८॥

**पदार्थः**-हे **(विश्वध)** संसार के धारण करने वाले राजन्! आप **(वाजसातौ)** संग्राम में **(वामदेवस्य)** उत्तमरूप से युक्त विद्वान् और **(धीनाम्)** बुद्धियों के **(अविता)** रक्षा करने वाले **(भुवः)**



www.9009.co.in

हूजिये **(अवृकः)** चोरीरहित **(सखा)** मित्र **(भुवः)** हूजिये और **(उरुशंसः)** बहुत प्रशंसायुक्त होते हुए **(जरित्रे)** स्तुति करने योग्य के लिये सुखदायक **(स्याः)** हूजिये जिससे **(त्वाम्)** आपके **(अनु)** पश्चात् **(प्रमतिम्)** उत्तम बुद्धि को **(आ, जगन्म)** प्राप्त होवें॥१८॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो सब का स्वामी और वीरपुरुष युद्ध में चतुर उपदेश देनेवाले और बुद्धिमानों का रक्षक होवे, उसी को राजा करो॥१८॥

**अथ राजकर्त्तव्यताविषयमाह॥**

अब राजजन के लिये करने योग्य विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**एभिर्नृभिरिन्द्र त्वायुभिष्ट्वा मघवद्भिर्मघवन् विश्व आजौ।**

**द्यावो न द्युम्नैरभि सन्तो अर्यः क्षपो मदेम शरदश्च पूर्वीः॥१९॥**

**एभिः। नृऽभिः। इन्द्र। त्वायुऽभिः। त्वा। मघवत्ऽभिः। मघऽवन्। विश्वे। आजौ। द्यावः। न। द्युम्नैः। अभि। सन्तः। अर्यः। क्षपः। मदेम। शरदः। च। पूर्वीः॥१९॥**

**पदार्थः**-**(एभिः)** पूर्वोक्तैः **(नृभिः)** नेतृभिः **(इन्द्र)** शत्रूणां विदारक **(त्वायुभिः)** त्वां कामयमानैः **(त्वा)** त्वाम् **(मघवद्भिः)** बहुपूजितधनयुक्तैः **(मघवन्)** बह्वैश्वर्य्य **(विश्वे)** समग्रे **(आजौ)** सङ्ग्रामे **(द्यावः)** किरणाः **(न)** इव **(द्युम्नैः)** यशोधनयुक्तैः **(अभि)** **(सन्तः)** वर्त्तमानाः **(अर्य्यः)** स्वामी **(क्षपः)** रात्रीः **(मदेम)** आनन्देम **(शरदः)** शरदृतून् **(च)** **(पूर्वीः)** पुरातनीः॥१९॥

**अन्वयः**-हे मघवन्निन्द्र राजन्! वयमेभिस्त्वायुभिर्मघवद्भिर्नृभिः सह विश्व आजौ द्यावो न द्युम्नैः सह त्वाऽऽश्रिताः सन्तोऽर्य्य इव पूर्वीः क्षपश्शरदश्चाभि मदेम॥१९॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। ये धार्मिकैः शरीरात्मबलैः सत्यं कामयमानैः स्वराज्यैर्भवैर्धनाढ्यैः पुरुषैः सह दृढं सन्धिं कृत्वा शत्रून् विजित्य राज्यं प्रशंसन्ति ते सूर्य्यप्रकाश इव कीर्त्तिमन्तो धनिनो भूत्वा सर्वदाऽऽनन्दिता भवन्ति॥१९॥

**पदार्थः**-हे **(मघवन्)** बहुत ऐश्वर्य्य से युक्त **(इन्द्र)** शत्रुओं के नाशकारक राजन्! हम लोग **(एभिः)** इन पूर्वोक्त **(त्वायुभिः)** आपकी कामना करते हुए **(मघवद्भिः)** बहुत श्रेष्ठ धनों से युक्त **(नृभिः)** नायक मनुष्यों के साथ **(विश्वे)** सम्पूर्ण **(आजौ)** संग्राम में **(द्यावः)** किरणों के **(न)** तुल्य और **(द्युम्नैः)** यशरूप धन से युक्त सत्पुरुषों के साथ **(त्वा)** आपके आश्रय का **(सन्तः)** वर्ताव करते हुए **(अर्य्यः)** स्वामी के तुल्य **(पूर्वीः)** पुरानी **(क्षपः)** रात्रियों और **(शरदः)** शरद् ऋतुओं भर **(च)** भी **(अभि, मदेम)** सब ओर से आनन्द करें॥१९॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जो लोग धार्मिक शरीर और आत्मा के बल से युक्त सत्य की कामना करते हुए अपने राज्य में हुए धनयुक्त पुरुषों के साथ दृढ़ मेल कर और शत्रुओं को



www.9009.co.in

जीत के राज्य की प्रशंसा करते हैं, वे सूर्य्य के प्रकाश के सदृश कीर्तियुक्त और धनी होकर सब काल में आनन्दित होते हैं॥१९॥

**पुनरमात्यादिकर्मचारिविषयमाह॥**

फिर मन्त्री आदि कर्मचारियों के विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**एवेदिन्द्राय वृषभाय वृष्णे ब्रह्माकर्म भृगवो न रथम्।**

**नू चिद्यथा नः सख्या वियोषदसन्न उग्रोऽविता तनूपाः॥२०॥**

**एव। इत्। इन्द्राय। वृषभाय। वृष्णे। ब्रह्म। अकर्म। भृगवः। न। रथम्। नु। चित्। यथा। नः। सख्या। विऽयोषत्। असत्। नः। उग्रः। अविता। तनूऽपाः॥२०॥**

**पदार्थः**-(**एव**) (**इत्**) अपि (**इन्द्राय**) परमैश्वर्य्यप्रदाय (**वृषभाय**) वृषभ इव बलिष्ठाय (**वृष्णे**) बलिष्ठाय (**ब्रह्म**) महद्धनम् (**अकर्म**) कुर्य्याम (**भृगवः**) देदीप्यमानाः शिल्पिनः (**न**) इव (**रथम्**) (**नु**) सद्यः (**चित्**) (**यथा**) (**नः**) अस्माकम् (**सख्या**) मित्रेण (**वियोषत्**) सन्दधीत (**असत्**) भवेत् (**नः**) अस्माकम् (**उग्रः**) तेजस्वी (**अविता**) रक्षकः (**तनूपाः**) शरीरपालकः॥२०॥

**अन्वयः**-यथा राजानः सख्या वियोषदुग्रस्तनूपाः सन्नोऽविताऽसत्तस्मा इदेव वृषभाय वृष्ण इन्द्राय भृगवो रथं न ब्रह्म चिद्वयमकर्म॥२०॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। यथा शिल्पिनो विद्यया पदार्थसम्प्रयोगेण विमानादीनि निर्माय श्रीमन्तो भूत्वा मित्राण्यभ्यर्चन्ति तथैव राजसत्कृता वयं राज्ञैश्वर्य्यं वर्धयित्वा सर्वान् राजादीन् सत्कुर्याम॥२०॥

**पदार्थः**-(**यथा**) जैसे राजा (**नः**) हमारे (**सख्या**) मित्र के साथ (**वियोषत्**) धारण करे (**उग्रः**) तेजस्वी (**तनूपाः**) शरीर का पालन करने वाला हुआ (**नः**) हम लोगों का (**नु**) शीघ्र (**अविता**) रक्षक (**असत्**) होवे (**इत्, एव**) उसी (**वृषभाय**) बैल के सदृश बलिष्ठ (**वृष्णे**) वीर्यवान् (**इन्द्राय**) अत्यन्त ऐश्वर्य के देनेवाले के लिये (**भृगवः**) प्रकाशमान (**रथम्**) वाहन के (**न**) सदृश (**ब्रह्म, चित्**) बड़े भी धन को हम लोग (**अकर्म**) सिद्ध करें॥२०॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जैसे शिल्पीजन विद्या के साथ पदार्थों के संयोग से विमान आदि की रचना करके धनवान् होकर मित्रों का सत्कार करते हैं, वैसे ही राजा से सत्कार किये गये हम लोग राजा से ऐश्वर्य की वृद्धि करके सब राजा आदिकों का सत्कार करें॥२०॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**नू ष्टुत इन्द्र नू गृणान इषं जरित्रे नद्यो३ न पीपेः।**

**अकारि ते हरिवो ब्रह्म नव्यं धिया स्याम रथ्यः सदासाः॥२१॥२०॥**



www.9009.co.in

**नु। स्तुतः। इन्द्र। नु। गृणानः। इषम्। जरित्रे। नद्यः। न। पीपेरिति पीपेः। अकारि। ते। हरिऽवः। ब्रह्म। नव्यम्। धिया। स्याम। रथ्यः। सदाऽसाः॥२१॥**

**पदार्थः**-(**नु**) सद्यः। अत्र सर्वत्र **ऋचि तुनुघेति** दीर्घः। (**स्तुतः**) प्रशंसितः (**इन्द्र**) (**नु**) (**गृणानः**) प्रशंसन् (**इषम्**) अन्नाद्यैश्वर्यम् (**जरित्रे**) स्तावकाय (**नद्यः**) (**न**) इव (**पीपेः**) प्यायय (**अकारि**) (**ते**) तव (**हरिवः**) प्रशंसिताऽश्वः (**ब्रह्म**) असङ्ख्यं धनम् (**नव्यम्**) नवीनम् (**धिया**) प्रज्ञया कर्मणा वा (**स्याम**) (**रथ्यः**) रथेषु साधुः (**सदासाः**) दासैः सेवकैस्सह वर्त्तमानाः॥२१॥

**अन्वयः**-हे हरिव इन्द्र! त्वं गृणानस्सञ्जरित्रे नद्यो नेषन्नु पीपेर्यैस्सर्वैर्नु स्तुतोऽकारि तैस्ते तुभ्यं नव्यं ब्रह्म सदासा वयं धिया रथ्यो न कृतवन्तः स्याम॥२१॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। यो मनुष्यः परीक्षकः सर्वत्र प्रशंसितो नदीवत्प्रजानां तर्प्पकोऽश्व इव सुखेन स्थानान्तरं गमयिता भवेत् तं सर्वाधीशं कृत्वा सभृत्या वयं तदाऽज्ञायां वर्त्तित्वा सर्वे सततं सुखिनो भवेमेति॥२१॥

अत्रेन्द्रराजाऽमात्यविद्वद्गुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति षोडशं सूक्तं विंशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे (**हरिवः**) उत्तम घोड़ों से युक्त (**इन्द्र**) ऐश्वर्यवान् राजन्! आप (**गृणानः**) प्रशंसा करते हुए (**जरित्रे**) स्तुति करनेवाले के लिये (**नद्यः**) नदियों के (**न**) सदृश (**इषम्**) अन्न आदि ऐश्वर्य की (**नु**) शीघ्र (**पीपेः**) वृद्धि करावें और जिन सब लोगों से (**नु**) शीघ्र (**स्तुतः**) आप प्रशंसित (**अकारि**) किये गये उन जनों से (**ते**) आपके लिये (**नव्यम्**) नवीन (**ब्रह्म**) सङ्ख्यारहित धन को (**सदासाः**) सेवकों के सहित वर्त्तमान हम लोग (**धिया**) बुद्धि वा कर्म से (**रथ्यः**) वाहनों के निमित्त मार्ग के सदृश सिद्ध कर चुकनेवाले (**स्याम**) हों॥२१॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जो मनुष्य परीक्षा करनेवाला, सब जगह प्रशंसित और नदी के सदृश प्रजाओं के तृप्तिकर्त्ता, अश्वसमान सुखपूर्वक दूसरे स्थान को पहुँचानेवाला होवे, उसको सर्वाधीश करके नौकरों के सहित हम उसकी आज्ञा के अनुकूल वर्त्ताव करके सब लोग निरन्तर सुखी होवें॥२१॥

इस सूक्त में इन्द्र, राजा, मन्त्री और विद्वान् के गुणवर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्वसूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह सोलहवां सूक्त और बीसवां वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

**अथैकाधिकविंशत्यृचस्य सप्तदशस्य सूक्तस्य वामदेव ऋषिः। इन्द्रो देवता। १ पङ्क्तिः। ७, ९ भुरिक् पङ्क्तिः। १४, १६ स्वराट्पङ्क्तिः। १५ याजुषी पङ्क्तिः। २१ निचृत्पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः। २, १२, १३, १७, १८, १९ निचृत्त्रिष्टुप्। ३, ५, ६, ८, १०, ११ त्रिष्टुप्। ४, २० विराट्त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः॥**

**अथेन्द्रपदवाच्यराजगुणानाह॥**

अब इक्कीस ऋचावाले सत्रहवें सूक्त का आरम्भ है उसके प्रथम मन्त्र में इन्द्रपदवाच्य राजगुणों का वर्णन करते हैं॥

**त्वं म॒हाँ इ॑न्द्र॒ तुभ्यं॑ ह॒ क्षा अनु॑ क्ष॒त्रं मं॒हना॑ मन्यत॒ द्यौः।**

**त्वं वृ॒त्रं शव॑सा जघ॒न्वान्त्सृ॒जः सिन्धूँ॒रहि॑ना जग्रसा॒नान्॥ १॥**

**त्वम्। म॒हान्। इ॒न्द्र॒। तुभ्य॑म्। ह॒। क्षाः। अनु॑। क्ष॒त्रम्। मं॒हना॑। म॒न्य॒त॒। द्यौः। त्वम्। वृ॒त्रम्। शव॑सा। ज॒घ॒न्वान्। सृ॒जः। सिन्धू॑न्। अहि॑ना। ज॒ग्र॒सा॒नान्॥ १॥**

**पदार्थः**-(**त्वम्**) महान् (**इन्द्र**) विद्यैश्वर्यसम्पन्न राजन्! (**तुभ्यम्**) (**ह**) खलु (**क्षाः**) भूमयः। **क्षेति पृथिवीनामसु पठितम्।** (निघं०१.१) (**अनु**) (**क्षत्रम्**) राज्यम् (**मंहना**) महती (**मन्यत**) मन्यसे (**द्यौः**) सूर्य्य इव (**त्वम्**) (**वृत्रम्**) मेघवद्वर्त्तमानं शत्रुम् (**शवसा**) बलेन (**जघन्वान्**) (**सृजः**) सृज (**सिन्धून्**) नदीः (**अहिना**) मेघेनेव धनेन (**जग्रसानान्**) शत्रुसेनाग्रसमानान्॥१॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! यस्त्वं महान् क्षाः क्षत्रं मंहना द्यौरिवानुमन्यत तस्मै ह तुभ्यं वयमपि मन्यामहे यथा वृत्रं जघन्वान् सूर्य्योऽहिना सिन्धून् [सृजः] सृजति तथा त्वं शवसा जग्रसानान् सृजः॥१॥

**भावार्थः**-हे राजजना! यथा महान् सूर्य्यो वृष्ट्या नदीः प्रीणाति तथैव धनैश्वर्य्येण राज्यमलङ्कुर्वन्तु राजाऽऽज्ञयाऽनुवर्त्य महद्राज्यं सम्पादयन्तु॥१॥

**पदार्थः**-हे (**इन्द्र**) विद्या और ऐश्वर्य्य से युक्त राजन्! जो (**त्वम्**) आप (**महान्**) बड़े (**क्षाः**) भूमियों और (**क्षत्रम्**) राज्य को (**मंहना**) [महान्] जैसे (**द्यौः**) सूर्य्य वैसे (**अनु, मन्यत**) मानते हो (**ह**) उन्हीं (**तुभ्यम्**) आपके लिये हम लोग भी मानते और जैसे (**वृत्रम्**) मेघ के सदृश वर्त्तमान शत्रु को (**जघन्वान्**) नाश करने वाला (**अहिना**) मेघ के सदृश बड़े हुए धन से (**सिन्धून्**) नदियों को (**सृजः**) उत्पन्न करावे [उसी प्रकार] (**त्वम्**) आप (**शवसा**) बल से (**जग्रसानान्**) शत्रुसेना के अग्रणियों के समान उत्तम जनों को उत्पन्न कराओ॥१॥

**भावार्थः**-हे राजसम्बन्धी जनो! जैसे बड़ा सूर्य वृष्टि से नदियों को पूर्ण करता है, वैसे ही धन और ऐश्वर्य्य से राज्य को शोभित करो। राजा की आज्ञा के अनुकूल वर्त्ताव करके बड़े राज्य को सम्पादन करो॥१॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**



www.9009.co.in

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**तव॑ त्वि॒षो जनि॑मन् रेजत॒ द्यौ रेज॒द्भूमि॑र्भि॒यसा॒ स्वस्य॑ म॒न्योः।**

**ऋ॒घाय॑न्त सु॒भ्व१॒ः पर्व॑तास॒ आर्द॒न् धन्वा॑नि स॒रय॑न्त॒ आप॑ः॥२॥**

**तव॑। त्वि॒षः। जनि॑मन्। रे॒ज॒त॒। द्यौः। रेज॑त्। भूमि॑ः। भि॒यसा॑। स्वस्य॑। म॒न्योः। ऋ॒घाय॑न्त। सु॒ऽभ्व॑ः। पर्व॑तासः। आर्द॑न्। धन्वा॑नि। स॒रय॑न्ते। आप॑ः॥२॥**

**पदार्थः**-(**तव**) (**त्विषः**) प्रतापात् (**जनिमन्**) जन्मवन् (**रेजत**) रेजते (**द्यौः**) (**रेजत्**) रेजते कम्पते (**भूमिः**) (**भियसा**) भयेन (**स्वस्य**) (**मन्योः**) (**ऋघायन्त**) बाध्यन्ते (**सुभ्वः**) सुष्ठु भवन्ति वृष्टयो येभ्यस्ते (**पर्वतासः**) शैला इवोच्छ्रिता मेघाः (**आर्दन्**) हिंसन्ति (**धन्वानि**) स्थलानि (**सरयन्ते**) गमयन्ति (**आपः**) जलानि॥२॥

**अन्वयः**-हे जनिमन्! राजन्यस्य जगदीश्वरस्य त्विषो भियसा द्यौ रेजत भूमी रेजत्तथा तव स्वस्य मन्योः शत्रवः कम्पन्ताम्। यथा सुभ्वः पर्वतास ऋघायन्ताऽऽर्दनापो धन्वानि सरयन्ते तथैव तव सेना अमात्याश्च भवन्तु॥२॥

**भावार्थः**-हे राजंस्त्वं परमेश्वरवत्पक्षपातं विहाय नृषु पितृवद्वर्त्तस्व यथा जगदीश्वरभयात् सर्वं जगद् व्यवतिष्ठते तथैव तव दण्डभयात् सर्वं जगद्भोगाय कल्पतां यथा सूर्य्यो मेघं बाधते जलवृष्ट्या जगदानन्दयति तथैव शत्रून् बाधित्वा सज्जनानानन्दय॥२॥

**पदार्थः**-हे (**जनिमन्**) जन्मवाले राजन्! जिस जगदीश्वर के (**त्विषः**) प्रताप से (**भियसा**) भय से (**द्यौः**) अन्तरिक्ष (**रेजत**) कम्पित होता और (**भूमिः**) पृथ्वी (**रेजत्**) कम्पित होती वैसे (**तव**) आपके (**स्वस्य**) निज (**मन्योः**) क्रोध से शत्रु लोग कांपें और जैसे (**सुभ्वः**) उत्तम प्रकार वृष्टि जिनसे हो ऐसे (**पर्वतासः**) पर्वतों के सदृश ऊंचे मेघ (**ऋघायन्त**) बाधित होते (**आर्दन्**) और नाश करते हैं (**आपः**) जल और (**धन्वानि**) स्थल अर्थात् शुष्क भूमियाँ (**सरयन्ते**) गमन करती हैं, वैसे ही आपकी सेना और मन्त्रीजन होवें॥२॥

**भावार्थः**-हे राजन्! आप परमेश्वर के सदृश पक्षपात का त्याग करके मनुष्यों में पिता के सदृश वर्त्ताव करो और जैसे जगदीश्वर के भय से सम्पूर्ण जगत् व्यवस्थित रहता है, वैसे ही आप के दण्ड के भय से सब जगत् भोग के लिये कल्पित हो और सूर्य जैसे मेघ को बाधा करता और जलवृष्टि से जगत् को आनन्दित करता है, वैसे ही शत्रुओं को बाधित करके सज्जनों को आनन्द दीजिये॥२॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**भि॒नद्गि॒रिं शव॑सा॒ वज्र॑मि॒ष्णन्ना॑विष्कृण्वा॒नः स॑हसा॒न ओज॑ः।**

**वधी॑द् वृ॒त्रं वज्रे॑ण मन्दसा॒नः सर॒न्नापो॒ जव॑सा ह॒तवृ॑ष्णीः॥३॥**



www.9009.co.in

**भि॒नत्। गि॒रिम्। शव॑सा। वज्र॑म्। इ॒ष्णन्। आ॒वि॒ऽकृ॒ण्वा॒नः। स॒ह॒सा॒नः। ओजः॑। वधी॑त्। वृ॒त्रम्। वज्रे॑ण। म॒न्द॒सा॒नः। सर॑न्। आपः॑। जव॑सा। ह॒तऽवृ॑ष्णीः॥ ३॥**

**पदार्थः**-(**भिनत्**) भिनत्ति विदृणाति (**गिरिम्**) गिरिवद्वर्त्तमानं मेघम् (**शवसा**) बलेन (**वज्रम्**) किरणमिव शस्त्रम् (**इष्णन्**) प्राप्नुवन् (**आविष्कृण्वानः**) प्राकट्यं कुर्वन् (**सहसानः**) सहमानः। अत्र वर्णव्यत्ययेन मस्य सः। (**ओजः**) पराक्रमम् (**वधीत्**) हन्ति (**वृत्रम्**) मेघम् (**वज्रेण**) किरणेन (**मन्दसानः**) आनन्दन् (**सरन्**) गच्छन्ति। अत्राडभावः (**आपः**) जलानि (**जवसा**) वेगेन (**हतवृष्णीः**) हतो वृषा मेघो यासां ताः॥ ३॥

**अन्वयः**-हे राजन्! यथा सूर्य्यो गिरिं भिनद्वज्रेण वृत्रं वधीत् तद्धतान्मेघाद्धतवृष्णीरापो जवसा सरंस्तथैव मन्दसानः सहसान ओज आविष्कृण्वानो वज्रमिष्णञ्छवसा शत्रुसेनां विदारय च सेनया शत्रून् हत्वा रुधिराणि प्रवाहय॥ ३॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। ये सूर्य्यवन्न्यायप्रकाशबलप्रसिद्धा दुष्टविदारकाः सत्पुरुषेभ्य आनन्दप्रदा वर्त्तन्ते त एव प्रकटकीर्त्तयो भूत्वेहाऽमुत्र परजन्मन्यक्षयाऽऽनन्दा जायन्ते॥ ३॥

**पदार्थः**-हे राजन्! जैसे सूर्य (**गिरिम्**) पर्वत के समान मेघ को (**भिनत्**) विदीर्ण कर और (**वज्रेण**) किरण से (**वृत्रम्**) मेघ का (**वधीत्**) नाश करता है, उस नाश हुए मेघ से (**हतवृष्णीः**) नष्ट किया गया मेघ जिनका वह (**आपः**) जल (**जवसा**) वेग से (**सरन्**) जाते हैं, वैसे ही (**मन्दसानः**) आनन्द वा (**सहसानः**) सहन करते (**ओजः**) और पराक्रम को (**आविष्कृण्वानः**) प्रकट करते वा (**वज्रम्**) किरण के समान शस्त्र को (**इष्णन्**) प्राप्त होते हुए (**शवसा**) बल से शत्रुओं की सेना का नाश करो और सेना से शत्रुओं का नाश करके रुधिरों को बहाओ॥ ३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो लोग सूर्य्य के सदृश न्याय से प्रकाश बल से प्रसिद्ध, दुष्टों के नाशकारक और श्रेष्ठ पुरुषों के लिये आनन्ददायक होते हैं, वे ही प्रकट यश वाले होकर इस संसार में और परलोक अर्थात् दूसरे जन्म में अखण्ड आनन्द वाले होते हैं॥ ३॥

**अथ राजसन्तानविचारविषयमाह॥**

अब राजसन्तानविचार को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**सु॒वीर॑स्ते जनि॒ता म॑न्यत॒ द्यौरिन्द्र॑स्य क॒र्ता स्वप॑स्तमो भूत्।**

**य ईं॑ ज॒जान॑ स्व॒र्यं॑ सु॒वज्र॒मन॑पच्युतं॒ सद॑सो॒ न भूम॑॥ ४॥**

**सु॒ऽवीरः॑। ते॒। ज॒नि॒ता। म॒न्य॒त॒। द्यौः। इन्द्र॑स्य। क॒र्ता। स्वपः॑ऽतमः। भू॒त्। यः। ई॒म्। ज॒जान॑। स्व॒र्य॑म्। सु॒ऽवज्र॑म्। अन॑पऽच्युतम्। सद॑सः। न। भूम॑॥ ४॥**

**पदार्थः**-(**सुवीरः**) शोभनश्चासौ वीरश्च (**ते**) तव (**जनिता**) जनकः (**मन्यत**) मन्येत (**द्यौः**) विद्युदिव (**इन्द्रस्य**) परमैश्वर्यस्य (**कर्त्ता**) (**स्वपस्तमः**) शोभनान्यपांसि कर्माणि यस्य सोऽतिशयितः (**भूत्**)



www.9009.co.in

भवेत् **(यः)** **(ईम्)** महान्तम् **(जजान)** **(स्वर्य्यम्)** स्वर्हितम् **(सुवज्रम्)** शोभनानि वज्राण्यायुधानि यस्य तम् **(अनपच्युतम्)** अपचयरहितम् **(सदसः)** सभासदः **(न)** इव **(भूम)**॥४॥

**अन्वयः**-हे राजँस्त इन्द्रस्य द्यौरिव सुवीरो जनिता मन्यत स्वपस्तमः कर्त्ता भूद् य ईं स्वर्य्यमनपच्युतं सुवज्रं पुरुषं जजान ते सदसो न वयं प्राप्ता भूम॥४॥

**भावार्थः**-अत्रोपमावाचकलुप्तोपमालङ्कारौ। हे राजन्! यथा सुसभ्या अनुत्तमं राजानं प्राप्य न्यायं प्रचार्य कीर्त्तिमन्तो जायन्त एवमेव यदि भवान् धर्म्येण ब्रह्मचर्य्येण पुत्रेष्टिरीत्या प्रियायां सुतं जनयेत्तर्हि सोऽपि प्रख्यातसुकीर्तिः स्यात्॥४॥

**पदार्थः**-हे राजन्! **(इन्द्रस्य)** अत्यन्त ऐश्वर्यवान् **(ते)** आप का **(द्यौः)** बिजुली के सदृश **(सुवीरः)** श्रेष्ठवीर **(जनिता)** उत्पन्न करने वाला **(मन्यत)** माना जाय और वह **(स्वपस्तमः)** अतीव उत्तम कर्मों से पूरित **(कर्त्ता)** करने वाला **(भूत्)** हो वा **(यः)** जो **(ईम्)** महान् **(स्वर्य्यम्)** अत्यन्त सुख के लिये हित और **(अनपच्युतम्)** नाश से रहित **(सुवज्रम्)** उत्तम आयुधों वाले पुरुष को **(जजान)** उत्पन्न कर चुका उसको **(सदसः)** सभासदों के **(न)** सदृश हम लोग प्राप्त **(भूम)** होवें॥४॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमावाचकलुप्तोपमालङ्कार हैं। हे राजन्! जैसे श्रेष्ठ लोग अति उत्तम राजा को प्राप्त होकर और न्याय का प्रचार करके यशवाले होते हैं, इसी प्रकार यदि आप धर्मयुक्त ब्रह्मचर्य्य से पुत्रेष्टिकर्म्म की रीति से अपनी प्रिया में पुत्र उत्पन्न करें तो वह भी प्रसिद्ध यश वाला होवे॥४॥

**पुना राजविषयमाह॥**

फिर राजविषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**य एक इच्च्यावयति प्र भूमा राजा कृष्टीनां पुरुहूत इन्द्रः।**

**सत्यमेनमनु विश्वे मदन्ति रातिं देवस्य गृणतो मघोनः॥५॥२१॥**

**यः। एकः। इत्। च्यवयति। प्र। भूम। राजा। कृष्टीनाम्। पुरुऽहूतः। इन्द्रः। सत्यम्। एनम्। अनु। विश्वे। मदन्ति। रातिम्। देवस्य। गृणतः। मघोनः॥५॥**

**पदार्थः**-**(यः)** **(एकः)** **(इत्)** एव **(च्यावयति)** **(प्र)** **(भूम)** भवेम। अत्र **द्व्यचोऽतस्तिङ** इति दीर्घः। **(राजा)** शुभगुणैः प्रकाशमानः **(कृष्टीनाम्)** कृषीवलादिप्रजास्थमनुष्याणाम् **(पुरुहूतः)** बहुभिराहूतः प्रशंसितः **(इन्द्रः)** परमैश्वर्य्यवान् **(सत्यम्)** सत्सु साधुम् **(एनम्)** **(अनु)** **(विश्वे)** सर्वे **(मदन्ति)** **(रातिम्)** दातारम् **(देवस्य)** दिव्यगुणसम्पन्नस्य **(गृणतः)** सकलविद्याः स्तुवतः **(मघोनः)** बहुधनयुक्तस्य सभ्यसमूहस्य मध्ये॥५॥

**अन्वयः**-यः पुरुहूत इन्द्रः कृष्टीनां राजैक इच्छत्रून् प्र च्यावयति तं मघोनो गृणतो देवस्य मध्ये वर्त्तमानं सत्यं रातिं विश्वे विद्वांसः सभासदोऽनुमदन्ति तमेनं राजानं कृत्वा वयं सुखिनो भूम॥५॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-स एव राजा भवितुमर्हति य एकोऽपि बहूञ्छत्रून् विजेतुं शक्नोति स एव विजयी भवति यः सत्पुरुषाणां सङ्गमुपदेशं प्राप्य धर्म्यं न्यायं सततं करोति॥५॥

**पदार्थः**-(**यः**) जो (**पुरुहूतः**) बहुतों से बुलाया और प्रशंसा किया गया (**इन्द्रः**) अत्यन्त ऐश्वर्यवान् (**कृष्टीनाम्**) क्षेत्र बोनेवाले आदि प्रजास्थ मनुष्यों का (**राजा**) उत्तम गुणों से प्रकाशमान राजा (**एकः**) एक (**इत्**) ही शत्रुओं को (**प्र, च्यावयति**) कम्पाता है उसको (**मघोनः**) बहुत धन से युक्त श्रेष्ठ पुरुषों के समूह के मध्य में (**गृणतः**) सम्पूर्ण विद्या की स्तुति करते हुए (**देवस्य**) दिव्यगुणी विद्वानों के समूह में वर्त्तमान (**सत्यम्**) श्रेष्ठों में साधु (**रातिम्**) दाता जन को (**विश्वे**) सम्पूर्ण विद्वान् सभासद् (**अनु, मदन्ति**) अनुमति देते हैं उस (**एनम्**) इसको राजा करके हम लोग सुखी (**भूम**) होवें॥५॥

**भावार्थः**-वही राजा हो सकता है, जो एक भी बहुत शत्रुओं को जीत सकता है और वही विजयी होता है, जो श्रेष्ठ पुरुषों के सङ्ग और उपदेश को प्राप्त होकर धर्मयुक्त न्याय निरन्तर करता है॥५॥

**पुनर्भूपतिविषयमाह॥**

फिर भूपतिविषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**स॒त्रा सोमा॑ अभवन्न॒स्य॒ विश्वे॑ स॒त्रा मदा॑सो बृह॒तो मदि॑ष्ठाः।**

**स॒त्राभ॑वो॒ वसु॑पति॒र्वसू॑नां॒ दत्रे॒ विश्वा॑ अधिथा इन्द्र कृ॒ष्टीः॥६॥**

**स॒त्रा। सोमा॑ः। अ॒भ॒व॒न्। अ॒स्य॒। विश्वे॑। स॒त्रा। मदा॑सः। बृ॒ह॒तः। मदि॑ष्ठाः। स॒त्रा। अ॒भ॒वः॒। वसु॑ऽपतिः। वसू॑नाम्। दत्रे॑। विश्वा॑ः। अ॒धि॒थाः॒। इ॒न्द्र॒। कृ॒ष्टीः॥६॥**

**पदार्थः**-(**सत्रा**) सत्याः (**सोमाः**) सोम्यगुणसम्पन्नाः सभ्या जनाः (**अभवन्**) भवन्तु (**अस्य**) राज्ञः (**विश्वे**) सर्वे (**सत्रा**) सत्याः (**मदासः**) आनन्दाः (**बृहतः**) महान्तः (**मदिष्ठाः**) अतिशयेनाऽऽनन्दप्रदाः (**सत्रा**) सत्यः (**अभवः**) भवेः (**वसुपतिः**) धनस्य स्वामी (**वसूनाम्**) धनाढ्यानाम् (**दत्रे**) दातव्ये हिरण्यादिधने सति। **दत्रमिति हिरण्यनामसु पठितम्।** (निघं०१.२) (**विश्वाः**) सर्वाः (**अधिथाः**) धारयेथाः (**इन्द्र**) परमैश्वर्य्यप्रद (**कृष्टीः**) मनुष्यादिप्रजाः॥६॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! यदि त्वं वसूनां वसुपतिः सत्राभवो दत्रे विश्वाः कृष्टीरधिथास्तर्ह्यस्य राज्यस्य मध्ये सत्रा विश्वे सोमाः सत्रा विश्वे मदासो बृहतो मदिष्ठा अभवन्॥६॥

**भावार्थः**-यो राजा यथात्मने प्रियमिच्छेत्तथैव प्रजाभ्यः सुखं प्रदद्यात्तस्यैवोत्तमाः सभासदः परमैश्वर्य्यं च वर्द्धेत॥६॥

**पदार्थः**-हे (**इन्द्र**) अत्यन्त ऐश्वर्य्य के देनेवाले! जो आप (**वसूनाम्**) धनाढ्य पुरुषों के बीच (**वसुपतिः**) धन के स्वामी (**सत्रा**) सत्य (**अभवः**) होवें (**दत्रे**) देने योग्य सुवर्ण आदि धन के होने पर (**विश्वाः**) सम्पूर्ण (**कृष्टीः**) मनुष्यादि प्रजाओं को (**अधिथाः**) धारण करो तो (**अस्य**) इस राज्य के मध्य



www.9009.co.in

में **(सत्रा)** सत्य **(विश्वे)** सब **(सोमाः)** शान्तिगुणसम्पन्न सभ्यजन **(सत्रा)** सत्य सब **(मदासः)** आनन्द और **(बृहतः)** बड़े **(मदिष्ठाः)** अतीव आनन्द देनेवाले **(अभवन्)** होवें॥६॥

**भावार्थः**-जो राजा जैसे अपने निमित्त प्रिय की इच्छा करे, वैसे ही प्रजाओं के लिये सुख देवे, उसी के उत्तम सभासद् और अत्यन्त ऐश्वर्य बढ़े॥६॥

**अथ राजानं प्रति प्रजापालनप्रकारमाह॥**

अब राजा के प्रति प्रजापालन प्रकार को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**त्वमध॑ प्र॒थ॒मं जाय॑मानोऽमे॒ विश्वा॑ अधिथा इन्द्र कृ॒ष्टीः।**

**त्वं प्रति॑ प्र॒वत॑ आ॒शया॑न॒महिं॒ वज्रे॑ण मघव॒न् वि वृ॑श्चः॥७॥**

**त्वम्। अध॑। प्र॒थ॒मम्। जाय॑मानः। अमे॑। विश्वा॑ः। अ॒धि॒था॒ः। इ॒न्द्र॒। कृ॒ष्टीः। त्वम्। प्रति॑। प्र॒ऽवत॑ः। आ॒ऽशया॑नम्। अहि॑म्। वज्रे॑ण। म॒घ॒ऽव॒न्। वि। वृ॒श्च॒ः॥७॥**

**पदार्थः**-**(त्वम्)** **(अध)** आनन्तर्य्ये **(प्रथमम्)** **(जायमानः)** उत्पद्यमानः **(अमे)** गृहे **(विश्वाः)** समग्राः **(अधिथाः)** धारयेथाः **(इन्द्र)** दुष्टानां विदारक **(कृष्टीः)** मनुष्याद्याः प्रजाः **(त्वम्)** **(प्रति)** **(प्रवतः)** निम्नदेशान् **(आशयानम्)** समन्ताच्छयानमिव वर्त्तमानम् **(अहिम्)** मेघम् **(वज्रेण)** किरणैः **(मघवन्)** बहुधनयुक्त **(वि)** **(वृश्चः)** छिन्धि॥७॥

**अन्वयः**-हे मघवन्निन्द्र राजन्नमे जायमानस्त्वं विश्वाः कृष्टीः प्रथममधिथाः, अध त्वं यथा प्रवतः प्रत्याशयानमहिं वज्रेण सूर्यो हन्ति तथैव दुष्टाँस्त्वं वि वृश्चः॥७॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यो हि प्रथमतो ब्रह्मचर्य्येण विद्यया विनयसुशीलाभ्यां सर्वोत्कृष्टो जायते यश्च राज्यपालनयुद्धकरणं विजानाति तमेव राजानं कृत्वा सुखिनो भवत॥७॥

**पदार्थः**-हे **(मघवन्)** बहुत धन से युक्त **(इन्द्र)** दुष्ट पुरुषों के नाश करनेहारे राजन्! **(अमे)** गृह में **(जायमानः)** उत्पन्न होने वाले **(त्वम्)** आप **(विश्वाः)** सम्पूर्ण **(कृष्टीः)** मनुष्य आदि प्रजाओं को **(प्रथमम्)** पहिले **(अधिथाः)** धारण करो **(अध)** इसके अनन्तर **(त्वम्)** आप जैसे **(प्रवतः)** नीचले स्थलों के **(प्रति)** प्रति **(आशयानम्)** सब प्रकार सोते हुए के सदृश वर्त्तमान **(अहिम्)** मेघ को **(वज्रेण)** किरणों से सूर्य्य नाश करता है, वैसे ही दुष्ट पुरुषों का आप **(वि, वृश्चः)** नाश करो॥७॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जो पुरुष प्रथम से ब्रह्मचर्य्य, विद्या, विनय और सुशीलता से सब में उत्तम होता है और जो राज्यपालन और युद्ध करने को जानता है, उसी को राजा करके सुखी होओ॥७॥

**अथ प्रजाजनै राजस्वीकारमाह॥**

अब प्रजाजनों से राजा के स्वीकार करने को अगले मन्त्र में कहते हैं॥



www.9009.co.in

**स॒त्रा॒हणं॒ दाधृ॑षिं॒ तुम्र॒मिन्द्रं॑ म॒हाम॑पा॒रं वृ॑ष॒भं सु॒वज्र॑म्।**

**हन्ता॒ यो वृ॒त्रं सनि॑तो॒त वाजं॒ दाता॑ म॒घानि॑ म॒घवा॑ सु॒राधाः॑॥८॥**

**स॒त्रा॒ऽहन॑म्। दधृ॑षिम्। तुम्र॑म्। इन्द्र॑म्। म॒हाम्। अ॒पा॒रम्। वृ॒ष॒भम्। सु॒ऽवज्र॑म्। हन्ता॑। यः। वृ॒त्रम्। सनि॑ता। उ॒त। वाज॑म्। दाता॑। म॒घानि॑। म॒घऽवा॑। सु॒ऽराधाः॑॥८॥**

**पदार्थः**-(**सत्राहणम्**) यः सत्येनाऽसत्यं हन्ति (**दाधृषिम्**) भृशं प्रगल्भम् (**तुम्रम्**) प्रेरकम् (**इन्द्रम्**) परमैश्वर्यवन्तम् (**महाम्**) महान्तम् (**अपारम्**) अपारविद्यं गम्भीराशयम् (**वृषभम्**) बलिष्ठम् (**सुवज्रम्**) शोभनशस्त्रास्त्राणां प्रयोक्तारम् (**हन्ता**) (**यः**) (**वृत्रम्**) मेघमिव शत्रुम् (**सनिता**) विभाजकः (**उत**) अपि (**वाजम्**) अन्नाद्यैश्वर्यम् (**दाता**) (**मघानि**) धनानि (**मघवा**) बहुधनयुक्तः (**सुराधाः**) धर्म्येण सञ्चितधनः॥८॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यो वृत्रं सूर्य इव शत्रूणां हन्ता वाजं सनितोत मघवा सुराधा मघानि दाता भवेत्तं सत्राहणं दाधृषिं महामपारं तुम्रं वृषभं सुवज्रमिन्द्रं राजानं स्वीकुरुत॥८॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यः पूर्णविद्यः सत्यवादी प्रगल्भो बलिष्ठः शस्त्राऽस्त्रप्रयोगविदभयदाता पुरुषो भवेत्तमेव राज्यायाधिकुरुत॥८॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! (**यः**) जो (**वृत्रम्**) मेघ को जैसे सूर्य वैसे शत्रुओं का (**हन्ता**) नाश करने वाला पुरुष (**वाजम्**) अन्न आदि ऐश्वर्य्य का (**सनिता**) विभाग करने वाला (**उत**) भी (**मघवा**) बहुत धन से युक्त (**सुराधाः**) धर्म युक्त व्यवहार से धनसंचयकर्त्ता (**मघानि**) और धनों का (**दाता**) दाता हो उस (**सत्राहणम्**) सत्य से असत्य के नाश करने वाले (**दाधृषिम्**) निरन्तर प्रगल्भ (**महाम्**) महान् (**अपारम्**) अपार विद्यावान् गम्भीर आशय युक्त (**तुम्रम्**) प्रेरणा देने वाले (**वृषभम्**) बलिष्ठ (**सुवज्रम्**) सुन्दर शस्त्र और अस्त्रों के प्रयोगकर्त्ता (**इन्द्रम्**) अत्यन्त ऐश्वर्य्य युक्त राजा को स्वीकार करो॥८॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो पूर्णविद्यायुक्त, सत्यवादी, प्रगल्भ, बलिष्ठ, शस्त्र और अस्त्रों का चलाने वाला और अभयदाता पुरुष हो; उसी को राज्य के लिये नियत करो॥८॥

**अथ राज्ञा कीदृशा अमात्यादयो भृत्या संरक्षणीया इत्याह॥**

अब राजा को अमात्य आदि भृत्य कैसे रखने चाहिये, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अ॒यं वृत॑श्चातयते समी॒चीर्य आ॒जिषु॑ म॒घवा॑ शृण्व एकः॑।**

**अ॒यं वाजं॑ भरति॒ यं स॒नोत्य॒स्य प्रि॒यासः॑ स॒ख्ये स्या॑म॥९॥**

**अ॒यम्। वृतः॑। चा॒त॒य॒ते॒। स॒म्ऽई॒चीः। यः। आ॒जिषु॑। म॒घऽवा॑। शृ॒ण्वे। एकः॑। अ॒यम्। वाज॑म्। भ॒र॒ति॒। यम्। स॒नोति॑। अ॒स्य। प्रि॒यासः॑। स॒ख्ये। स्या॒म॒॥९॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**अयम्**) राजा (**वृतः**) (**चातयते**) विज्ञापयति। **चततीति गतिकर्म्मासु पठितम्।** (निघं०२.१४)। (**समीचीः**) याः सम्यगञ्चन्ति शिक्षाः प्राप्नुवन्ति ताः सेनाः (**यः**) (**आजिषु**) सङ्ग्रामेषु (**मघवा**) बहुधनैश्वर्यः (**शृण्वे**) (**एकः**) असहायः (**अयम्**) (**वाजम्**) विज्ञानम् (**भरति**) (**यम्**) (**सनोति**) सम्पन्नं करोति (**अस्य**) (**प्रियासः**) (**सख्ये**) मित्रस्य कर्मणि (**स्याम**) भवेम॥९॥

**अन्वयः**-हे राजन्! योऽयं वृतः सन्नबुद्धाञ्चातयते यो मघवैक आजिषु समीचीर्भरति। अयं वाजं भरति यमाप्तः सनोति यमहं शृण्वेऽस्य सख्ये वयं प्रियासः स्याम॥९॥

**भावार्थः**-हे राजन्! यः सेनाः शिक्षयति विशेषतो युद्धसमय उचितवक्तृत्वेन योधॄनुत्साहयति ये सम्मुखे भवद्दोषान् कथयन्ति तेषां शासने स्थित्वा तेष्वेव मैत्रीं भावयित्वा सर्वाणि कार्याणि साध्नुहि॥९॥

**पदार्थः**-हे राजन्! (**यः**) जो (**अयम्**) यह राजा (**वृतः**) स्वीकार किया हुआ बोधरहितों को (**चातयते**) विज्ञान करता है और जो (**मघवा**) बहुत धनरूप ऐश्वर्य्य से युक्त (**एकः**) अकेला अर्थात् सहायरहित (**आजिषु**) संग्रामों में (**समीचीः**) शिक्षाओं को प्राप्त होने वाली सेनाओं का (**भरति**) पोषण करता है (**अयम्**) और यह (**वाजम्**) विज्ञान को पुष्ट करता है (**यम्**) जिसको यथार्थवक्ता पुरुष [प्राप्त कर] (**सनोति**) संपन्न करता है, जिसको मैं (**शृण्वे**) सुनता हूँ (**अस्य**) इसके (**सख्ये**) मित्रकर्म्म में हम लोग (**प्रियासः**) प्रिय (**स्याम**) होवें॥९॥

**भावार्थः**-हे राजन्! जो सेनाओं को शिक्षा दिलाता है, विशेष करके युद्ध के समय में उचित बात कहने से योद्धाजनों का उत्साह बढ़ाता है और जो जन सम्मुख आपके दोषों को कहते हैं, उनकी शिक्षा में स्थित होकर, उन्हीं जनों में मित्रता करके सम्पूर्ण कार्य्यों को सिद्ध करो॥९॥

**अथ राज्ञा राज्यकरणप्रकारमाह॥**

अब राजा को राज्य करने का प्रकार अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अयं शृण्वे अध जयन्नुत घ्नन्नयमुत प्र कृणुते युधा गाः।**

**यदा सत्यं कृणुते मन्युमिन्द्रो विश्वं दृळहं भयत एजदस्मात्॥१०॥२२॥**

**अयम्। शृण्वे। अध। जयन्। उत। घ्नन्। अयम्। उत। प्र। कृणुते। युधा। गाः। यदा। सत्यम्। कृणुते। मन्युम्। इन्द्रः। विश्वम्। दृळहम्। भयते। एजत्। अस्मात्॥१०॥**

**पदार्थः**-(**अयम्**) (**शृण्वे**) (**अध**) (**जयन्**) शत्रून् पराजयन् (**उत**) अपि (**घ्नन्**) नाशयन् (**अयम्**) (**उत**) (**प्र**) (**कृणुते**) (**युधा**) युद्धेन (**गाः**) पृथिवीराज्यानि (**यदा**) (**सत्यम्**) (**कृणुते**) (**मन्युम्**) क्रोधम् (**इन्द्रः**) परमैश्वर्यो राजा (**विश्वम्**) सर्वं राज्यम् (**दृळहम्**) सुस्थिरम् (**भयते**) बिभेति (**एजत्**) कम्पते (**अस्मात्**) राज्ञः॥१०॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे राजन्! सुपरीक्ष्य वृतोऽयं जनः शत्रून् घ्नुतापि युधा जयन् गाः प्र कृणुते उत यमहं राज्यं कर्त्तुं शृण्वे यदाऽयं सत्यं कृणुते तदा विश्वं दृळ्हं भवति यदाऽयमिन्द्रो मन्युं कृणुतेऽध तदास्माद्विश्वं दृढमपि राज्यमेजत् सद्भयते॥१०॥

**भावार्थः**-हे राजन्! यां सुकीर्तिं भवाञ्छृणुयाद्ये च राज्यपालनयुद्धकुशलास्तान् वृत्वा सत्याचारेण वर्तित्वा शान्त्या सज्जनान् सम्पाल्य दुष्टान् भृशं दण्डयेत्तदैव सर्वे धर्मपथं विहायेतस्ततो न विचलेयुः॥१०॥

**पदार्थः**-हे राजन्! उत्तम प्रकार परीक्षा करके स्वीकार किया गया **(अयम्)** यह जन शत्रुओं का **(घ्नन्)** नाश करता है और **(उत)** भी **(युधा)** युद्ध से **(जयन्)** शत्रुओं को पराजित करता हुआ **(गाः)** पृथिवी के राज्यों को **(प्र, कृणुते)** उत्तम प्रकार करता है **(उत)** और **(शृण्वे)** जिसको मैं राज्य करने को सुनता हूँ **(यदा)** जब **(अयम्)** यह **(सत्यम्)** सत्य को **(कृणुते)** करता है तब **(विश्वम्)** सब राज्य **(दृळहम्)** उत्तम प्रकार स्थिर होता है, जब यह **(इन्द्रः)** अत्यन्त ऐश्वर्यवाला राजा **(मन्युम्)** क्रोध को करता है **(अध)** इसके अनन्तर तब **(अस्मात्)** इस राजा से सम्पूर्ण उत्तम प्रकार स्थिर भी राज्य **(एजत्)** कंपता हुआ **(भयते)** डरता है॥१०॥

**भावार्थः**-हे राजन्! जिस उत्तम कीर्त्ति को आप सुनें और जो लोग राज्यपालन और युद्ध में चतुर हों उनका स्वीकार करके सत्याचार से वर्ताव कर शान्ति से सज्जनों का अच्छे प्रकार पालन करके दुष्टजनों को निरन्तर दण्ड देवें, तभी सब जन धर्म के मार्ग का त्याग करके इधर-उधर न चलित होवें॥१०॥

**अथ राजा कथं विजयमानन्दं च प्राप्नोतीत्याह॥**

अब राजा कैसे विजय और आनन्द को प्राप्त होता है, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**समिन्द्रो गा अजयत् सं हिरण्या समश्विया मघवा यो ह पूर्वीः।**

**एभिर्नृभिर्नृतमो अस्य शाकै रायो विभक्ता संभरश्च वस्वः॥११॥**

**सम्। इन्द्रः। गाः। अजयत्। सम्। हिरण्या। सम्। अश्विया। मघऽवा। यः। ह। पूर्वीः। एभिः। नृऽभिः। नृऽतमः। अस्य। शाकैः। रायः। विऽभक्ता। सम्ऽभरः। च। वस्वः॥११॥**

**पदार्थः**-**(सम्)** सम्यक् **(इन्द्रः)** शत्रुविदारकः **(गाः)** भूमीः **(अजयत्)** जयेत् **(सम्)** **(हिरण्या)** सुवर्णादीनि धनानि **(सम्)** **(अश्विया)** अश्वादियुक्तानि **(मघवा)** पूजितधनः **(यः)** **(ह)** खलु **(पूर्वीः)** प्राचीनाः प्रजाः **(एभिः)** **(नृभिः)** नायकैः सह **(नृतमः)** अतिशयेन नेता **(अस्य)** सैन्यस्य **(शाकैः)** शक्तिभिः **(रायः)** धनस्य **(विभक्ता)** विभागकर्त्ता **(सम्भरः)** यः सम्भरति सः **(च)** **(वस्वः)** धनानि॥११॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यो मघवेन्द्र एभिर्नृभिः सह नृतमः सन् गाः समजयदश्विया हिरण्या समजयद्यो ह पूर्वीः प्रजाः समजयत्। योऽस्य शाकै रायो विभक्ता वस्वश्च सम्भरो भवेत् स एव राज्यं कर्त्तुमर्हेत्॥११॥

**भावार्थः**-य उत्तमसहायः प्रशस्तधनसामग्री शत्रूणां जेता यथार्हेभ्यो विभज्य दाता विचक्षणो राजा भवेत् स एव विजयं प्राप्य मोदेत॥११॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(यः)** जो **(मघवा)** श्रेष्ठधनयुक्त **(इन्द्रः)** शत्रुओं का नाशकर्त्ता **(एभिः)** इन **(नृभिः)** नायकों के साथ **(नृतमः)** अतिशय नायक हुआ **(गाः)** भूमियों को **(सम्)** उत्तम प्रकार **(अजयत्)** जीते **(अश्विया)** घोड़े आदि से युक्त **(हिरण्या)** सुवर्ण आदि धनों को **(सम्)** उत्तम प्रकार जीते जो **(ह)** निश्चय से **(पूर्वीः)** प्राचीन प्रजाओं को **(सम्)** उत्तम प्रकार जीते और जो **(अस्य)** इस सेना की **(शाकैः)** शक्तियों से **(रायः)** धन का **(विभक्ता)** विभाग करने वाला **(वस्वः)** धनों को **(च)** और **(सम्भरः)** इकट्ठा करने वाला होवे, वही राज्य करने को योग्य होवे॥११॥

**भावार्थः**-जो उत्तम सहाय और उत्तम धन सामग्रीयुक्त तथा शत्रुओं का जीतने और यथायोग्यों के लिये विभाग करके देनेवाला विद्वान् राजा होवे, वही विजय को प्राप्त होकर आनन्द करे॥११॥

**अथ प्रजाजनेषु कस्य राज्ययोग्यतेत्याह॥**

अब प्रजाजनों में किसकी राज्य की योग्यता है, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**कियत्स्विदिन्द्रो अध्येति मातुः कियत्पितुर्जनितुर्यो जजान।**

**यो अस्य शुष्मं मुहुकैरियर्ति वातो न जूतः स्तनयद्भिरभ्रैः॥१२॥**

**कियत्। स्वित्। इन्द्रः। अधि। एति। मातुः। कियत्। पितुः। जनितुः। यः। जजान। यः। अस्य। शुष्मम्। मुहुकैः। इयर्ति। वातः। न। जूतः। स्तनयत्ऽभिः। अभ्रैः॥१२॥**

**पदार्थः**-**(कियत्)** **(स्वित्)** अपि **(इन्द्रः)** **(अधि, एति)** स्मरति **(मातुः)** **(कियत्)** **(पितुः)** **(जनितुः)** जनकस्य **(यः)** **(जजान)** जायते **(यः)** **(अस्य)** **(शुष्मम्)** बलम् **(मुहुकैः)** मुहुर्मुहुः कुर्वद्भिः **(इयर्ति)** गच्छति **(वातः)** वायुः **(न)** इव **(जूतः)** प्राप्तवेगः **(स्तनयद्भिः)** शब्दायमानैः **(अभ्रैः)** घनैः सह॥१२॥

**अन्वयः**-यो मुहुकैरस्य शुष्मं स्तनयद्भिरभ्रैः सह जूतो वातो न विजयमियर्ति यः स्विदिन्द्रो मातुः कियज्जनितुः पितुः कियदध्येति स एव राजा जजान॥१२॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। ये मनुष्या मातुः पितुः कियानुपकारोऽस्तीति विज्ञाय प्रत्युपकुर्वन्ति ते मेघवायुभ्यां प्रेरिता विद्युदिव बलं प्राप्य वारं वारं शत्रून् विजित्य प्रकटकीर्त्तयो भवन्ति॥१२॥

**पदार्थः**-**(यः)** जो **(मुहुकैः)** बारंबार कार्य्य करने वालों से **(अस्य)** इसके **(शुष्मम्)** बल को **(स्तनयद्भिः)** शब्द करते हुए **(अभ्रैः)** मेघों के साथ **(जूतः)** वेग को प्राप्त **(वातः)** वायु के **(न)** तुल्य विजय को **(इयर्ति)** प्राप्त होता है और **(यः)** जो **(स्वित्)** कोई **(इन्द्रः)** तेजस्वी **(मातुः)** माता का



www.9009.co.in

(**कियत्**) कितना और (**जनितुः**) उत्पन्न करने वाले (**पितुः**) पिता का (**कियत्**) कितना उपकार (**अधि, एति**) स्मरण करता है, वही राजा (**जजान**) होता है॥१२॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जो मनुष्य माता और पिता का कितना उपकार है, ऐसा जानकर प्रत्युपकार करते हैं, वे मेघ और वायु से प्रेरित बिजुली के सदृश बल को प्राप्त होकर बारंबार शत्रुओं को जीतकर प्रकट यश वाले होते हैं॥१२॥

**अथ राज्ञोत्तमानुत्तमयोर्दण्डसत्कारौ कर्त्तव्यावित्याह॥**

अब राजा को उत्तम और अनुत्तम का दण्ड और सत्कार करना चाहिये, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**क्षियन्तं त्वमक्षियन्तं कृणोतीयर्ति रेणुं मघवा समोहम्।**

**विभञ्जनुरशनिमाँइव द्यौरुत स्तोतारं मघवा वसौ धात्॥१३॥**

**क्षियन्तम्। त्वम्। अक्षियन्तम्। कृणोति। इयर्ति। रेणुम्। मघऽवा। सम्ऽओहम्। विऽभञ्जनुः। अशनिमान्ऽइव। द्यौः। उत। स्तोतारम्। मघऽवा। वसौ। धात्॥१३॥**

**पदार्थः**-(**क्षियन्तम्**) निवसन्तम् (**त्वम्**) (**अक्षियन्तम्**) न निवसन्तम् (**कृणोति**) (**इयर्त्ति**) प्राप्नोति (**रेणुम्**) अपराधम् (**मघवा**) (**समोहम्**) सम्यग्गूढम् (**विभञ्जनुः**) शत्रूणां विभञ्जकः (**अशनिमानिव**) यथा बहुशस्त्राऽस्त्रः (**द्यौः**) प्रकाशः (**उत**) (**स्तोतारम्**) ऋत्विजम् (**मघवा**) (**वसौ**) धने (**धात्**) दधाति॥१३॥

**अन्वयः**-हे राजन्! यथा मघवा स्तोतारं वसौ धात्तथा यो द्यौरिवोताप्यशनिमानिव विभञ्जनुस्सन् मघवा क्षियन्तमक्षियन्तं कृणोति समोहं रेणुमियर्त्ति तं त्वं शिक्षय॥१३॥

**भावार्थः**-अत्रोपमावाचकलुप्तोपमालङ्कारः [=अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः]। हे राजँस्त्वं योऽपराधं कुर्य्यात्तं दण्डेन विना मा त्यजेः। यथा यजमानो विद्वांसं यज्ञे वृत्वा धनं दत्वा सुखयति तथैव श्रेष्ठान् सभासदो वृत्वैश्वर्य्यं दत्वा सर्वानानन्दय॥१३॥

**पदार्थः**-हे राजन्! जैसे (**मघवा**) अत्यन्त धनयुक्त पुरुष (**स्तोतारम्**) यज्ञ करनेवाले को (**वसौ**) धन में (**धात्**) धारण करता है, वैसे जो (**द्यौः**) प्रकाश के सदृश (**उत**) और भी (**अशनिमानिव**) बहुत शस्त्र और अस्त्र वाले के सदृश (**विभञ्जनुः**) शत्रुओं का नाश करता हुआ (**मघवा**) श्रेष्ठधन से युक्त पुरुष (**क्षियन्तम्**) निवास करते और (**अक्षियन्तम्**) नहीं निवास करते हुए को (**कृणोति**) स्वीकार करता है (**समोहम्**) उत्तम प्रकार से छिपे हुए (**रेणुम्**) अपराध को (**इयर्ति**) प्राप्त होता है, उसको (**त्वम्**) आप शिक्षा दीजिये॥१३॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे राजन्! आप जो अपराध करे उसको दण्ड के विना मत छोड़ो और जैसे यजमान विद्वान् जन को यज्ञ में स्वीकार करके धन देके सुख देता है, वैसे ही श्रेष्ठ सभासदों को स्वीकार करके ऐश्वर्य दे सब को आनन्द दीजिये॥१३॥

**अथ राज्ञा वेगवन्ति यन्त्राणि निर्माय दुष्टसंशोधनं कार्यमित्याह॥**

अब राजा को वेगवान् यन्त्रों को बनाय दुष्टसंशोधन करना चाहिये, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अ॒यं च॒क्रमि॑षण॒त्सूर्य॑स्य॒ न्येत॑शं रीरमत्ससृमा॒णम्।**

**आ कृष्ण ईं॑ जुहुरा॒णो जि॑घर्ति त्व॒चो बु॒ध्ने रज॑सो अ॒स्य योनौ॑॥१४॥**

**अ॒यम्। च॒क्रम्। इ॒ष॒ण॒त्। सूर्य॑स्य। नि। एत॑शम्। री॒र॒म॒त्। स॒सृ॒मा॒णम्। आ। कृ॒ष्णः। ई॒म्। जु॒हु॒रा॒णः। जि॒घ॒र्ति॒। त्व॒चः। बु॒ध्ने॑। रज॑सः। अ॒स्य। योनौ॑॥१४॥**

**पदार्थः**-(**अयम्**) (**चक्रम्**) (**इषणत्**) इष्णाति प्राप्नोति (**सूर्यस्य**) (**नि**) (**एतशम्**) अश्वम् (**रीरमत्**) रमयति (**ससृमाणम्**) भृशं गच्छन्तम् (**आ**) (**कृष्णः**) कर्षकः (**ईम्**) जलम् (**जुहुराणः**) कुटिलगतिः (**जिघर्त्ति**) क्षरति (**त्वचः**) वाचः (**बुध्ने**) अन्तरिक्षे (**रजसः**) लोकसमूहस्य (**अस्य**) (**योनौ**) गृहे॥१४॥

**अन्वयः**-हे राजन्! भवान् यथाऽयं सूर्यस्य मण्डलमिव चक्रमिषणत् ससृमाणमेतशं नि रीरमत् कृष्णो जुहुराण इवेमाजिघर्त्ति त्वचो रजसोऽस्य बुध्ने योनौ रमत इति विज्ञायेमं सत्कृत्य दुष्टं ताडय॥१४॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। ये मनुष्याः कलाकौशलेन चक्रयन्त्राणि निर्माय वेगवन्ति यानान्यासाद्य रमन्ते ते ऐश्वर्यं प्राप्य कुटिलतां विहाय सुखयन्ति॥१४॥

**पदार्थः**-हे राजन्! आप जैसे (**अयम्**) यह (**सूर्यस्य**) सूर्य के मण्डल के सदृश (**चक्रम्**) चक्र को (**इषणत्**) प्राप्त होता है (**ससृमाणम्**) निरन्तर प्राप्त होते हुए (**एतशम्**) घोड़े को (**नि, रीरमत्**) रमाता है (**कृष्णः**) खीचने वाला (**जुहुराणः**) कुटिल गमन वाले के सदृश (**ईम्**) जल को (**आ, जिघर्ति**) नष्ट करता है (**त्वचः**) वाणी के संबन्ध में (**रजसः**) लोकसमूह और (**अस्य**) इसके (**बुध्ने**) अन्तरिक्ष और (**योनौ**) गृह में रमता है, ऐसा जानकर इसका सत्कार करके दुष्ट पुरुष को ताड़न दीजिये॥१४॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो मनुष्य कलाकौशल से चक्रयन्त्रों का निर्म्माण करके वेगयुक्त वाहनों को प्राप्त होकर रमण करते हैं, वे ऐश्वर्य को प्राप्त होकर और कुटिलता को त्याग करके सुख को प्राप्त होते हैं॥१४॥

**अथ राजदण्डप्रकर्षतामाह॥**

अब राजदण्ड की प्रकर्षता को अगले मन्त्र में कहते हैं॥



www.9009.co.in

**असिक्न्यां यजमानो न होता॥ १५॥ २३॥**

**असिक्न्याम्। यजमानः। न। होता॥ १५॥**

**पदार्थः**-**(असिक्न्याम्)** रात्रौ। **असिक्नीति रात्रिनामसु पठितम्।** (निघं०१.७) **(यजमानः)** सङ्गन्ता **(न)** इव **(होता)** सुखस्य दाता॥ १५॥

**अन्वयः**-यो राजा यजमानो नाऽसिक्न्यामभयस्य होता स्यात् स एव सततं मोदेत॥ १५॥

**भावार्थः**-यस्य राज्ञः प्रजाजनेषु प्राणिषु सुप्तेषु दण्डो जागर्त्ति सोऽभयदः कुतश्चिदपि भयं नाऽऽप्नोति॥ १५॥

**पदार्थः**-जो राजा **(यजमानः)** मेल करने वाले के **(न)** सदृश **(असिक्न्याम्)** रात्रि में भयरहित **(होता)** सुख को देनेवाला होवे, वही निरन्तर आनन्द करे॥ १५॥

**भावार्थः**-जिस राजा के प्रजाजनों में प्राणियों वा शयन किये हुओं में दण्ड जागता है, वह अभय का देने वाला पुरुष किसी से भी भय को नहीं प्राप्त होता है॥ १५॥

**अथ प्रजाभ्यः कथं सुखमैश्वर्यं चाह॥**

अब प्रजाजनों को कैसे सुख और ऐश्वर्य हो, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**गव्यन्त इन्द्रं सख्याय विप्रा अश्वायन्तो वृषणं वाजयन्तः।**

**जनीयन्तो जनिदामक्षितोतिमा च्यावयामोऽवते न कोशम्॥ १६॥**

**गव्यन्तः। इन्द्रम्। सख्याय। विप्राः। अश्वऽयन्तः। वृषणम्। वाजयन्तः। जनिऽयन्तः। जनिऽदाम्। अक्षितऽऊतिम्। आ। च्यवयामः। अवते। न। कोशम्॥ १६॥**

**पदार्थः**-**(गव्यन्तः)** आत्मनो गा इच्छन्तः **(इन्द्रम्)** सूर्य्य इव प्रकाशमानं राजानम् **(सख्याय)** मित्रस्य भावाय कर्मणे वा **(विप्राः)** मेधाविनः **(अश्वायन्तः)** आत्मनोऽश्वानिच्छन्तः **(वृषणम्)** सुखवर्षकम् **(वाजयन्तः)** विज्ञानमन्नं वेच्छन्तः **(जनीयन्तः)** जायामिच्छन्तः **(जनिदाम्)** या जनिं जन्म ददाति **(अक्षितोतिम्)** अक्षीणा ऊती रक्षा यस्य तम् **(आ)** **(च्यावयामः)** प्रापयामः **(अवते)** कूपे। **अवत इति कूपनामसु पठितम्।** (निघं०३.२३) **(न)** इव **(कोशम्)** मेघम्॥ १६॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथा गव्यन्तोऽश्वायन्तो वाजयन्तो जनीयन्तो विप्रा वयं सख्याय वृषणं जनिदामक्षितोतिमवते कोशं नेन्द्रमाच्यावयामस्तथैतं यूयमप्येनमन्यान् प्रापयत॥ १६॥

**भावार्थः**-अत्रोपमावाचकलुप्तोपमालङ्कारौ। येषां सुखैश्वर्येच्छा स्यात्ते मेघ इव धनवर्षकं नित्यरक्षं राजानं मित्रत्वाय सङ्गृह्णीयुः॥ १६॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे **(गव्यन्तः)** अपनी गौओं की इच्छा **(अश्वायन्तः)** अपने घोड़ों की इच्छा **(वाजयन्तः)** विज्ञान वा अन्न की इच्छा **(जनीयन्तः)** तथा स्त्री की इच्छा करते हुए **(विप्राः)** बुद्धिमान्



www.9009.co.in

हम लोग **(सख्याय)** मित्र होने के वा मित्रकर्म के लिये **(वृषणम्)** सुख के वर्षाने वाले पिता **(जनिदाम्)** जन्म देनेवाली माता **(अक्षितोतिम्)** वा जिसकी रक्षा क्षीण नहीं होती, उस नित्यरक्षक पुरुष को और **(अवते)** कूप में **(कोशम्)** मेघ के **(न)** सदृश **(इन्द्रम्)** वा सूर्य्य के सदृश प्रकाशमान राजा को **(आ, च्यावयामः)** प्राप्त करावें, वैसे इस सब को आप लोग भी औरों को प्राप्त कराओ॥१६॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमावाचकलुप्तोपमालङ्कार हैं। जिनको सुख और ऐश्वर्य्य की इच्छा होवे, वे मेघ के सदृश धन वर्षाने और नित्य रक्षा करनेवाले राजा को मित्रभाव के लिये ग्रहण करें॥१६॥

**अथेश्वरोपासनाविषयमाह॥**

अब ईश्वरोपासना विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**त्राता नो बोधि दद‍ृशान आपिरभिख्याता मर्डिता सोम्यानाम्।**

**सखा पिता पितृतमः पितॄणां कर्तेमु लोकमुशते वयोधाः॥१७॥**

**त्राता। नः। बोधि। दद‍ृशानः। आपिः। अभिऽख्याता। मर्डिता। सोम्यानाम्। सखा॥ पिता। पितृऽतमः। पितॄणाम्। कर्ता। ईम्। ऊम् इति। लोकम्। उशते। वयःऽधाः॥१७॥**

**पदार्थः**-**(त्राता)** रक्षकः **(नः)** अस्माकमस्मान् वा **(बोधि)** बुध्यस्व **(ददृशानः)** सम्प्रेक्षकः **(आपिः)** व्याप्तः **(अभिख्याता)** आभिमुख्येनान्तर्यामितयोपदेष्टा **(मर्डिता)** सुखयिता **(सोम्यानाम्)** सोमवच्छान्त्यादिगुणयुक्तानाम् **(सखा)** सुहृत् **(पिता)** जगतो जनकः **(पितृतमः)** अतिशयेन पालकः **(पितॄणाम्)** जनकानां पालकानाम् **(कर्त्ता)** **(ईम्)** सर्वम् (उ) **(लोकम्)** **(उशते)** कामयमानाय **(वयोधाः)** यो वयो जीवनं कमनीयं वस्तु दधाति सः॥१७॥

**अन्वयः**-हे विद्वन्! यो नस्त्राता ददृशान आपिरभिख्याता मर्डिता सखा पिता सोम्यानां पितॄणां पितृतमः कर्त्ता लोकमुशत ईमु वयोधा जगदीश्वरोऽस्ति तं बोधि॥१७॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यो जगदीश्वरो मित्रवत्सर्वेषां सुखकरस्सत्योपदेष्टा जनकानां जनकः पालकानां पालकः सर्वेषां कर्मणां द्रष्टा न्यायाधीशोऽन्तर्याम्यभिव्याप्तोऽस्ति तमेव विज्ञायोपाध्वम्॥१७॥

**पदार्थः**-हे विद्वन्! जो **(नः)** हम लोगों का वा हम लोगों को **(त्राता)** रक्षा करने **(ददृशानः)** उत्तम प्रकार देखने **(आपिः)** व्याप्त रहने **(अभिख्याता)** सम्मुख अन्तर्यामीपने से उपदेश देने **(मर्डिता)** सुख देने और **(सखा)** मित्र **(पिता)** संसार का उत्पन्न करने वाला **(सोम्यानाम्)** चन्द्रमा के तुल्य शान्ति आदि गुणों से युक्त **(पितॄणाम्)** उत्पन्न वा पालन करने वालों का **(पितृतमः)** अत्यन्त पालन करने वाला **(कर्त्ता)** कर्त्तापुरुष **(लोकम्)** लोक की **(उशते)** कामना करते हुए के लिये **(ईम्)** सब को (उ) ही **(वयोधाः)** जीवन वा सुन्दर वस्तु का धारण करने वाला जगदीश्वर है, ऐसा उसको **(बोधि)** जानो॥१७॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो जगदीश्वर मित्र के तुल्य सब का सुखकर्त्ता, सत्य का उपदेश देनेवाला, उत्पन्न करने वालों का उत्पन्नकर्त्ता, पालन करने वालों का पालनकर्त्ता, सब कर्म्मों का देखने वाला, न्यायाधीश, अन्तर्य्यामी अभिव्याप्त है, उसी को जानकर उपासना करो॥१७॥

**अथ राज्यवर्द्धनप्रकारमाह॥**

अब राज्यवर्द्धन प्रकार को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**स॒खी॒य॒ताम॑वि॒ता बो॑धि॒ सखा॑ गृणा॒न इ॑न्द्र स्तुव॒ते वयो॑ धाः।**

**व॒यं ह्या ते॑ चकृ॒मा स॒बाध॑ आ॒भिः शमी॑भिर्म॒हय॑न्त इन्द्र॥१८॥**

**स॒खि॒ऽय॒ताम्। अ॒वि॒ता। बो॒धि॒। सखा॑। गृ॒णा॒नः। इ॒न्द्र॒। स्तु॒व॒ते। वयः॑। धा॒ः। व॒यम्। हि। आ। ते॒। च॒कृ॒म। स॒ऽबाधः॑। आ॒भिः। शमी॑भिः। म॒हय॑न्तः। इ॒न्द्र॒॥१८॥**

**पदार्थः**-(**सखीयताम्**) सखेवाचरताम् (**अविता**) (**बोधि**) बुध्यस्व (**सखा**) सुहृत् (**गृणानः**) स्तुवन् (**इन्द्र**) परमैश्वर्य्यप्रद (**स्तुवते**) प्रशंसकाय (**वयः**) कमनीयं धनम् (**धाः**) धेहि (**वयम्**) (**हि**) (**आ**) (**ते**) तव (**चकृमा**) कुर्य्याम। अत्र **संहितायामि**ति दीर्घः। (**सबाधः**) बाधेन सह वर्त्तमानः (**आभिः**) (**शमीभिः**) क्रियाभिः (**महयन्तः**) महानिवाचरन्तः (**इन्द्र**) सूर्य इव विद्याविनयप्रकाशित॥१८॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! सखीयतां सखाविता गृणानः सन् स्तुवते वयो धाः। हे इन्द्र! ये वयं हि ते तुभ्यमाभिः शमीभिर्महयन्तस्सन्तो वयश्चकृमा ताँस्त्वं सबाधः सन्नाऽबोधि॥१८॥

**भावार्थः**-हे राजन्! यदि वर्धयितुं भवानिच्छेत्तर्हि पक्षपातं विहाय सर्वैः सह मित्रवद्वर्त्तताम्। श्रेष्ठान् रक्षान् दुष्टान् दण्डयन्त्स्वतेजः प्रख्यापयताम्॥१८॥

**पदार्थः**-हे (**इन्द्र**) अत्यन्त ऐश्वर्य्य के देनेवाले (**सखीयताम्**) मित्र के सदृश आचरण करते हुए पुरुषों के (**सखा**) मित्र (**अविता**) रक्षा करने वाले (**गृणानः**) स्तुति करते हुए (**स्तुवते**) प्रशंसा करनेवाले के लिये (**वयः**) सुन्दर धन को (**धाः**) धारण कीजिये। और हे (**इन्द्र**) सूर्य्य के सदृश विद्या और विनय से प्रकाशित जो (**वयम्**) हम लोग (**हि**) ही (**ते**) आपके लिये (**आभिः**) इन (**शमीभिः**) क्रियाओं से (**महयन्तः**) बड़े के सदृश आचरण करते हुए (**वयः**) सुन्दर धन को (**चकृमा**) करें उनको आप (**सबाधः**) विलोडन के सहित वर्त्तमान होते हुए (**आ, बोधि**) अच्छे प्रकार जानिये॥१८॥

**भावार्थः**-हे राजन्! यदि राज्य बढ़वाने की आप इच्छा करें तो पक्षपात का त्याग करके सब के साथ मित्र के सदृश वर्त्ताव करिये और श्रेष्ठ पुरुषों की रक्षा करते और दुष्ट पुरुषों को दण्ड देते हुए अपने तेज की प्रसिद्धि करिये॥१८॥

**पुनः कीदृशाञ्जनान् राजा राज्यकर्म्मसु रक्षेदित्याह॥**

फिर कैसे जनों को राजा राज्यकर्म्मों में रक्खे, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**स्तु॒त इन्द्रो॑ म॒घवा॒ यद्ध॑ वृ॒त्रा भूरी॒ण्येको॑ अ॒प्रतीनि॑ हन्ति।**



www.9009.co.in

**अस्य प्रियो जरिता यस्य शर्मन्नकिर्देवा वारयन्ते न मर्ताः॥१९॥**

**स्तुतः। इन्द्रः। मघऽवा। यत्। ह। वृत्रा। भूरीणि। एकः। अप्रतीनि। हन्ति। अस्य। प्रियः। जरिता। यस्य। शर्मन्। नकिः। देवाः। वारयन्ते। न। मर्ताः॥१९॥**

**पदार्थः**-(**स्तुतः**) प्रशंसितः (**इन्द्रः**) सूर्य्य इव राजा (**मघवा**) बह्वैश्वर्ययुक्तः (**यत्**) यः (**ह**) किल (**वृत्रा**) वृत्राणि मेघावयववान् (**भूरीणि**) बहूनि (**एकः**) असहायः सन् (**अप्रतीनि**) अप्रीतानि (**हन्ति**) (**अस्य**) (**प्रियः**) कमनीयः (**जरिता**) स्तोता (**यस्य**) (**शर्मन्**) गृहे (**नकिः**) निषेधे (**देवाः**) विद्वांसः (**वारयन्ते**) निषेधयन्ति (**न**) (**मर्त्ताः**) अविद्वांसो मनुष्याः॥१९॥

**अन्वयः**-हे राजन्! यस्य शर्मन् प्रियो जरिता स्तुतो मघवेन्द्रो यथा सूर्य्योऽप्रतीनि भूरीणि वृत्रैकोऽपि हन्ति तथैव यद्योऽसहायोऽस्य सेनाया ह विद्वान् बहूनां हन्ता वर्त्तेत तं देवा नकिर्वारयन्ते न मर्त्ताश्च॥१९॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यो राजा सत्योपदेशकान्त्स्वप्रियकारकान् विदुषो राज्यकृत्ये रक्षेत् तस्य पराजयं कर्त्तुं कोऽपि न समर्थो भवेत्॥१९॥

**पदार्थः**-हे राजन्! (**यस्य**) जिसके (**शर्मन्**) गृह में (**प्रियः**) मनोहर (**जरिता**) स्तुति करने वाला (**स्तुतः**) प्रशंसित (**मघवा**) बहुत ऐश्वर्य्य से युक्त (**इन्द्रः**) सूर्य्य के सदृश प्रतापी राजा जैसे सूर्य्य (**अप्रतीनि**) नहीं प्रतीत (**भूरीणि**) बहुत (**वृत्रा**) मेघों के अवयवों को (**एकः**) सहायरहित अर्थात् अकेला भी (**हन्ति**) नाश करता है, वैसे ही (**यत्**) जो असहाय (**अस्य**) इसकी सेना में (**ह**) निश्चय से विद्वान् बहुतों का नाश करने वाला वर्त्ताव करे उसको (**देवाः**) विद्वान् लोग (**नकिः**) नहीं (**वारयन्ते**) रोकते हैं और (**न**) न (**मर्त्ताः**) अविद्वान् लोग॥१९॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो राजा सत्य के उपदेशक अपने प्रियकारक विद्वानों की राजकृत्य में रक्षा करे, उसका पराजय करने को कोई भी नहीं समर्थ होवे॥१९॥

**अथामात्यजनादिभी राज्ञो न्याये प्रवर्त्तयनमाह॥**

अब अमात्य आदि जनों से राजा की न्याय के बीच प्रवृत्ति कराने को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**एवा न इन्द्रो मघवा विरप्शी करत्सत्या चर्षणीधृदनर्वा।**

**त्वं राजा जनुषां धेह्यस्मे अधि श्रवो माहिनं यज्जरित्रे॥२०॥**

**एव। नः। इन्द्रः। मघऽवा। विऽरप्शी। करत्। सत्या। चर्षणिऽधृत्। अनर्वा। त्वम्। राजा। जनुषाम्। धेहि। अस्मे इति। अधि। श्रवः। माहिनम्। यत्। जरित्रे॥२०॥**

**पदार्थः**-(**एवा**) अत्र **निपातस्य चे**ति दीर्घः। (**नः**) अस्मभ्यम् (**इन्द्रः**) राजा (**मघवा**) धनप्रदः (**विरप्शी**) महान् (**करत्**) कुर्य्यात् (**सत्या**) अविनश्वराणि (**चर्षणीधृत्**) यो मनुष्यान् धरति (**अनर्वा**) अविद्यमाना अश्वा यस्य सः (**त्वम्**) (**राजा**) प्रकाशमानः (**जनुषाम्**) जन्मवताम् (**धेहि**) (**अस्मे**) अस्माकम् (**अधि**) (**श्रवः**) श्रवणमन्नं वा (**माहिनम्**) महत् (**यत्**) यः (**जरित्रे**) स्तावकाय॥२०॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे राजन्! यद्यो नो राजा मघवा विरप्शी चर्षणीधृदनर्वेन्द्रस्त्वं सत्या करत् स एवा त्वं जनुषामस्मे माहिनं श्रवोऽधिधेह्येवं जरित्रे च॥२०॥

**भावार्थः**-ये मनुष्या अन्याये प्रवर्त्तमानं राजानं निरुन्धन्ति ते सत्यप्रचारकाः सन्तो महत्सुखं प्राप्नुवन्ति॥२०॥

**पदार्थः**-हे राजन्! **(यत्)** जो **(नः)** हम लोगों के लिये **(राजा)** प्रकाशमान **(मघवा)** धनदाता **(विरप्शी)** बड़े **(चर्षणीधृत्)** मनुष्यों को धारण करने वाले **(अनर्वा)** घोड़ों से रहित **(इन्द्रः)** राजा **(त्वम्)** आप **(सत्या)** नहीं नाश होने वाले कार्यों को **(करत्)** सिद्ध करें **(एवा)** वही आप **(जनुषाम्)** जन्म वाले **(अस्मे)** हम लोगों के **(माहिनम्)** बड़े **(श्रवः)** श्रवण वा अन्न को **(अधि, धेहि)** अधिक धारण करें, इसी प्रकार **(जरित्रे)** स्तुति करनेवाले के लिये भी॥२०॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य अन्याय में प्रवर्त्तमान राजा को रोकते हैं, वे सत्य के प्रचार करनेवाले होते हुए बड़े सुख को प्राप्त होते हैं॥२०॥

**अथामात्यादीनामपि कार्यप्रवृत्तिमाह॥**

अब अमात्यादिकों की भी कार्य प्रवृत्ति को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**नू ष्टुत इन्द्र नू गृणान इषं जरित्रे नद्यो३ न पीपेः।**

**अकारि ते हरिवो ब्रह्म नव्यं धिया स्याम रथ्यः सदासाः॥२१॥२४॥**

**नु। स्तुतः। इन्द्र। नु। गृणानः। इषम्। जरित्रे। नद्यः। न। पीपेरिति पीपेः। अकारि। ते। हरिऽवः। ब्रह्म। नव्यम्। धिया। स्याम। रथ्यः। सदाऽसाः॥२१॥**

**पदार्थः**-**(नू)** सद्यः **(स्तुतः)** प्रशंसितः **(इन्द्र)** राजन् **(नू)** अत्र **ऋचि तुनुघेत्यु**भयत्र दीर्घः। **(गृणानः)** सत्यं स्तुवन् **(इषम्)** अन्नं विज्ञानं वा **(जरित्रे)** स्तावकाय **(नद्यः)** सरितः **(न)** इव **(पीपेः)** वर्धय **(अकारि)** क्रियते **(ते)** **(हरिवः)** प्रशस्तमनुष्ययुक्त **(ब्रह्म)** महद्धनम् **(नव्यम्)** नूतनम् **(धिया)** प्रज्ञया कर्मणा वा **(स्याम)** भवेम **(रथ्यः)** बहुरथवन्तः **(सदासाः)** सेवकैः सह वर्त्तमानाः॥२१॥

**अन्वयः**-हे हरिव इन्द्र! यो गृणानस्त्वमस्माभिर्नू स्तुतोऽकारि स जरित्रे नद्यो नेषं पीपेः। हे इन्द्र! त्वया नव्यं ब्रह्म न्वकारि तस्य ते वयं सदासा रथ्यो धियाऽनुकूलाः स्याम॥२१॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! योऽनुत्तमगुणकर्मस्वभावविद्यः प्रजाहिताय धनाऽन्नानि वर्धयति तस्याऽऽनुकूल्येन वर्त्तित्वा सेनाऽङ्गानि दृढानि सम्पादनीयानीति॥२१॥

अथेन्द्रराजप्रजाभृत्यगुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति सप्तदशं सूक्तं चतुर्विंशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे **(हरिवः)** श्रेष्ठ मनुष्यों से युक्त **(इन्द्र)** राजन्! जो **(गृणानः)** सत्य की स्तुति करते हुए आप हम लोगों से **(नू)** शीघ्र **(स्तुतः)** प्रशंसित **(अकारि)** किये गये वह आप **(जरित्रे)** स्तुति करने



www.9009.co.in

वाले के लिये **(नद्यः)** नदियों के **(न)** सदृश **(इषम्)** अन्न वा विज्ञान को **(पीपेः)** बढ़ाओ और हे राजन्! आप से **(नव्यम्)** नवीन **(ब्रह्म)** बड़ा धन **(नू)** निश्चय से किया गया उन **(ते)** आपके हम लोग **(सदासाः)** सेवकों के साथ वर्त्तमान **(रथ्यः)** बहुत वाहनों से युक्त **(धिया)** बुद्धि वा कर्म से अनुकूल **(स्याम)** होवें॥ २१॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो अति उत्तम गुण, कर्म, स्वभाव और विद्या से युक्त और प्रजा के हित के लिये धन और अन्नों को बढ़ाता है, उसके अनुकूलपन से वर्त्ताव करके सेना के अङ्गों का दृढ़ सम्पादन करना चाहिये॥ २१॥

इस सूक्त में इन्द्र, राजा, प्रजा और भृत्यों के गुणवर्णन होने से इस सूक्त के अर्थ की पिछले सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह सत्रहवां सूक्त और चौबीसवां वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

**अथ त्रयोदशर्चस्याष्टादशस्य सूक्तस्य वामदेव ऋषिः। इन्द्रादिती देवते। १, ८, १२ त्रिष्टुप्। ५-७, ९-११ निचृत्त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः। २ पङ्क्तिः। ३, ४ भुरिक् पङ्क्तिः। १३ स्वराट् पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः॥**

**अथेन्द्राय मनुष्याय सन्मार्गोपदेशमाह॥**

अब तेरह ऋचावाले अठारहवें सूक्त का प्रारम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में उत्तम ऐश्वर्यवान् मनुष्य के लिये अच्छे मार्ग का उपदेश करते हैं॥

**अयं पन्था अनुवित्तः पुराणो यतो देवा उदजायन्त विश्वे।**
**अतश्चिदा जनिषीष्ट प्रवृद्धो मा मातरममुया पत्तवे कः॥ १॥**

**अयम्। पन्थाः। अनुऽवित्तः। पुराणः। यतः। देवाः। उत्ऽअजायन्त। विश्वे। अतः। चित्। आ। जनिषीष्ट। प्रऽवृद्धः। मा। मातरम्। अमुया। पत्तवे। कुरिति कः॥ १॥**

**पदार्थः**-(**अयम्**) (**पन्थाः**) मार्गः (**अनुवित्तः**) अनुलब्धः (**पुराणः**) सनातनः (**यतः**) यस्मात् (**देवाः**) विद्वांसः (**उदजायन्त**) उत्कृष्टा भवन्ति (**विश्वे**) सर्वे (**अतः**) अस्मात् (**चित्**) अपि (**आ**) (**जनिषीष्ट**) जायेत (**प्रवृद्धः**) (**मा**) निषेधे (**मातरम्**) जननीम् (**अमुया**) तया (**पत्तवे**) पत्तुं प्राप्तुम् (**कः**) कुर्याः॥ १॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यतो विश्वे देवा उदजायन्त सोऽयमनुवित्तः पुराणः पन्था अस्ति। यतोऽयं संसारः प्रवृद्धो जनिषीष्टाऽतश्चित्त्वममुया मातरं पत्तवे माऽकः॥ १॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! येन मार्गेणाप्ता गच्छेयुस्तेनैव मार्गेण यूयमपि गच्छत। यदि महती वृद्धिरपि स्यात्तदपि माता केनापि नाऽवमन्तव्या॥ १॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! (**यतः**) जिससे (**विश्वे**) सब (**देवाः**) विद्वान् लोग (**उदजायन्त**) उत्तम होते हैं वह (**अयम्**) यह (**अनुवित्तः**) अनुकूल प्राप्त (**पुराणः**) अनादि काल से सिद्ध (**पन्थाः**) मार्ग है, जिससे यह संसार (**प्रवृद्धः**) बढ़ा (**जनिषीष्ट**) उत्पन्न होवे (**अतः**) इस कारण से (**चित्**) भी आप (**अमुया**) उस उत्पत्ति से (**मातरम्**) माता को (**पत्तवे**) प्राप्त होने को (**मा**) मत (**आ, कः**) करे॥ १॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जिस मार्ग से यथार्थवक्ता पुरुष जावें, उसी मार्ग से आप लोग भी चलो, जो बड़ी वृद्धि भी होवे तो भी माता का अपमान किसो को न करना चाहिये॥ १॥

**पुनर्दृष्टान्तेन पूर्वोक्तमाह॥**

फिर दृष्टान्त से पूर्वोक्त विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**नाहमतो निरया दुर्गहैतत्तिरश्चता पार्श्वान्निर्गमाणि।**
**बहूनि मे अकृता कर्त्वानि युध्यै त्वेन सं त्वेन पृच्छै॥ २॥**



www.9009.co.in

न। अहम्। अतः। निः। अय। दुःऽगहा। एतत्। तिरश्चता। पार्श्वात्। निः। गमानि। बहूनि। मे। अकृता। कर्त्वानि। युध्यै। त्वेन। सम्। त्वेन। पृच्छै॥२॥

**पदार्थः**-(**न**) (**अहम्**) (**अतः**) अस्मात् (**निः**) नितराम् (**अय**) प्राप्नुहि (**दुर्गहा**) यो दुर्गान् दुःखेन गन्तुं योग्यान् हन्ति (**एतत्**) (**तिरश्चता**) तिरश्चीनेन (**पार्श्वात्**) (**निः**) (**गमानि**) गच्छेयम् (**बहूनि**) (**मे**) मम (**अकृता**) अकृता (**कर्त्वानि**) कर्त्तव्यानि (**युध्यै**) युद्धं कुर्याम् (**त्वेन**) केन (**सम्**) (**त्वेन**) अन्येन (**पृच्छै**) पृच्छेयम्॥२॥

**अन्वयः**-हे विद्वन्! यथाऽहं दुर्गहा न भवेयं पार्श्वान्निर्गमाणि मे बहून्यकृता कर्त्वानि कर्माणि सन्ति तिरश्चता त्वेन युध्यै त्वेन सम्पृच्छै तथात्वमत एतन्निरय॥२॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यथाऽहं कर्म न करोमि कृत्वाऽकृतानि न रक्षामि मया सह योद्धुमिच्छेत्तेन सह युद्धे प्रष्टव्यं पृच्छामि तथैतत्सर्वमाचर॥२॥

**पदार्थः**-हे विद्वन्! जैसे (**अहम्**) मैं (**दुर्गहा**) दुःख से प्राप्त होने योग्यों का नाश करने वाला (**न**) न होऊँ (**पार्श्वात्**) पाश से (**निः, गमानि**) जाऊं (**मे**) मेरे (**बहूनि**) बहुत (**अकृता**) न किये गये (**कर्त्वानि**) कर्त्तव्य कर्म हैं (**तिरश्चता**) तिरछे बांके से (**त्वेन**) किससे (**युध्यै**) युद्ध करूं (**त्वेन**) अन्य से (**सम्, पृच्छै**) पूछूं, वैसे आप (**अतः**) इस कारण से (**एतत्**) इस पूर्वोक्त को (**निः**) अत्यन्त (**अय**) प्राप्त होओ॥२॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जैसे मैं कर्म नहीं करता हूँ और करके न किये गये न रखता हूँ, मेरे साथ जो युद्ध की इच्छा करे, उसके साथ युद्ध में पूछने योग्य को पूछता हूँ, वैसे इस सब का आचरण करो॥२॥

**अथेन्द्राय सेनासंरक्षणविषयमाह॥**

अब उत्तम ऐश्वर्यवान् राजा के लिये सेना के संरक्षण विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**परायतीं मातरमन्वचष्ट न नानु गान्यनु नू गमानि।**

**त्वष्टुर्गृहे अपिबत्सोममिन्द्रः शतधन्यं चम्वोः सुतस्य॥३॥**

पराऽयतीम्॥ मातरम्। अनु। अचष्ट। न। न। अनु। गानि। अनु। नु। गमानि। त्वष्टुः। गृहे। अपिबत्। सोमम्। इन्द्रः। शतऽधन्यम्। चम्वोः। सुतस्य॥३॥

**पदार्थः**-(**परायतीम्**) म्रियमाणाम् (**मातरम्**) जननीम् (**अनु**) (**अचष्ट**) ख्यापयेत् (**न**) (**न**) (**अनु**) (**गानि**) गच्छेयम् (**अनु**) (**नु**) सद्यः (**गमानि**) गच्छेयम् (**त्वष्टुः**) प्रकाशस्य (**गृहे**) (**अपिबत्**) पिबति (**सोमम्**) ओषधिरसम् (**इन्द्रः**) शत्रुविदारकः सेनेशः (**शतधन्यम्**) असङ्ख्ये धने साधुम् (**चम्वोः**) सेनयोर्मध्ये (**सुतस्य**) निष्पन्नस्यैश्वर्यस्य॥३॥



www.9009.co.in

**अन्वय**:-यथेन्द्रस्त्वष्टुर्गृहे सुतस्य शतधन्यं सोमं चम्वोरपिबत् परायतीं मातरं नाऽन्वचष्ट तथाऽहं न्वनुगानि तथाऽहं नानुगमानि॥३॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। ये सेनाधीशा राजगृहे सत्कारं प्राप्य युक्ताऽऽहारविहाराभ्यां पूर्णं बलं निष्पाद्य द्वयोः स्वस्य शत्रूणां च सेनयोर्मध्ये विवादं विनाशेयुर्वा योधयेयुस्तेषां सदैव विजयो यथा रुग्णां मातरमपत्यानि सेवन्ते तथैव सेनायाः सेवनं कुर्वन्ति ते न्यायाऽनुगामिनो भवन्ति॥३॥

**पदार्थः**-जैसे **(इन्द्रः)** शत्रुओं का नाश करनेवाला सेना का ईश **(त्वष्टुः)** प्रकाश के **(गृहे)** स्थान में **(सुतस्य)** ऐश्वर्य्य से युक्त के **(शतधन्यम्)** असंख्य धन में साधु **(सोमम्)** ओषधियों के रस को **(चम्वोः)** सेनाओं के मध्य में **(अपिबत्)** पीता है **(परायतीम्)** और मरनेवाली **(मातरम्)** माता को **(न)** नहीं **(अनु, अचष्ट)** प्रसिद्ध करे, वैसे मैं **(नु)** शीघ्र **(अनु, गानि)** पीछे जाऊं और वैसे मैं **(न)** न **(अनु, गमानि)** पीछे जाऊं॥३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो सेना के अधीश राजगृह में सत्कार को प्राप्त होकर, नियमित आहार और विहार से पूर्ण बल को करके, दोनों अपनी और शत्रुओं की सेना के मध्य में विवाद का नाश करें वा युद्ध करावें, उनका सदा ही विजय और जैसे रोगग्रस्त माता की सन्तान सेवा करते हैं, वैसे ही सेना का सेवन करते हैं, वे न्याय के अनुगामी होते हैं॥३॥

**अथेन्द्राय कालदृष्टान्तेन सन्मार्गमुपदिशति॥**

अब उत्तम ऐश्वर्यवान् पुरुष के लिये काल दृष्टान्त से अच्छे मार्ग का उपदेश अगले मन्त्र में करते हैं॥

**किं स ऋधक् कृणवद्यं सहस्रं मासो जभार शरदश्च पूर्वीः।**

**नही न्वस्य प्रतिमानमस्त्यन्तर्जातेषूत ये जनित्वाः॥४॥**

**किम्। सः। ऋधक्। कृणवत्। यम्। सहस्रम्। मासः। जभार। शरदः। च। पूर्वीः। नहि। नु। अस्य। प्रतिऽमानम्। अस्ति। अन्तः। जातेषु। उत। ये। जनिऽत्वाः॥४॥**

**पदार्थः**-**(किम्)** **(सः)** **(ऋधक्)** सत्यम् **(कृणवत्)** कुर्यात् **(यम्)** **(सहस्रम्)** असङ्ख्यम् **(मासः)** चैत्रादिः **(जभार)** **(शरदः)** शरदाद्यृतून् **(च)** **(पूर्वीः)** सनातनीः **(नही)** अत्र **निपातस्य चेति** दीर्घः। **(नु)** **(अस्य)** **(प्रतिमानम्)** परिमाणसाधनम् **(अस्ति)** **(अन्तः)** आभ्यन्तरे **(जातेषु)** उत्पन्नेषु **(उत)** अपि **(ये)** **(जनित्वाः)** ये जनिष्यन्ते ते॥४॥

**अन्वय**:-हे मनुष्या! ये जनित्वा अन्तर्जातेषु पूर्वीः शरदो जानन्त्युत यदस्य प्रतिमानं नह्यस्ति मासो जभार यं सहस्रमृधक् कृणवत् स च किन्वाप्नुयात्॥४॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यथा कालो मासाद्यवयवान् धरति स्वयमनन्तः सञ्जगति जातेषु परिमापकोऽस्ति तथैव यूयमपि कुरुत॥४॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(ये)** जो **(जनित्वाः)** उत्पन्न होने वाले [के] **(अन्तः)** बीच **(जातेषु)** उत्पन्न हुए पदार्थों में **(पूर्वीः)** अनादि काल से सिद्ध **(शरदः)** शरद् ऋतुओं को जानते हैं **(उत)** और जो **(अस्य)** इसका **(प्रतिमानम्)** परिमाण साधन **(नही)** नहीं **(अस्ति)** है वा **(मासः)** चैत्र आदि मास **(जभार)** पोषण करे और **(यम्)** जिसे **(सहस्रम्)** सङ्ख्यारहित **(ऋधक्)** सत्य **(कृणवत्)** प्रसिद्ध करे **(सः)** वह **(च)** और **(किम्)** किस को **(नु)** निश्चय से प्राप्त होवे॥४॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे काल, मास आदि अवयवों को धारण करता है और आप अनन्त हुआ संसार में उत्पन्न हुओं में नापने वाला है, वैसे ही आप लोग भी करो॥४॥

**अथ मानं कुर्वत्या मात्रेन्द्रपालनादिविषयमाह॥**

अब मान करने वाली माता से उत्तम ऐश्वर्यवान् पुरुष के पालनादि विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अवद्यमिव मन्यमाना गुहाकरिन्द्रं माता वीर्येणा न्यृष्टम्।**

**अथोदस्थात्स्वयमत्कं वसान आ रोदसी अपृणाज्जायमानः॥५॥२५॥**

**अवद्यम्ऽइव। मन्यमाना। गुहा। अकः। इन्द्रम्। माता। वीर्येण। निऽऋष्टम्। अथ। उत्। अस्थात्। स्वयम्। अत्कम्। वसानः। आ। रोदसी इति। अपृणात्। जायमानः॥५॥**

**पदार्थः**-**(अवद्यमिव)** निन्दनीयमिव **(मन्यमाना)** **(गुहा)** बुद्धौ **(अकः)** करोति **(इन्द्रम्)** राजानम् **(माता)** जननी **(वीर्येणा)** पराक्रमेण। अत्र **संहितायामिति** दीर्घः। **(न्यृष्टम्)** नितरां प्राप्तम् **(अथ)** **(उत्)** **(अस्थात्)** उत्तिष्ठते **(स्वयम्)** **(अत्कम्)** कूपम् **(वसानः)** आच्छादयन् **(आ)** **(रोदसी)** द्यावापृथिव्यौ **(अपृणात्)** पृणाति पालयति **(जायमानः)** उत्पद्यमानः॥५॥

**अन्वयः**-यथा मन्यमाना माता गुहा वीर्येणा न्यृष्टमिन्द्रमवद्यमिवाऽकस्तथैव जायमानः सूर्यो रोदसी आपृणाद् यथात्कं वसानो जनस्स्वयमेवोपर्यागच्छेत्तथा य उदस्थात्सोऽथ सर्वं जगद्रक्षति॥५॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यदि माता सूर्यवद्यानि स्वापत्यानि बोधयति दुष्टाचारानपनीय शिक्षते तानि उत्तमानि भवन्ति॥५॥

**पदार्थः**-जैसे **(मन्यमाना)** आदर की गई **(माता)** माता **(गुहा)** बुद्धि में **(वीर्येणा)** पराक्रम से **(न्यृष्टम्)** अत्यन्त प्राप्त **(इन्द्रम्)** राजा को **(अवद्यमिव)** निन्दनीय के सदृश **(अकः)** करती है, वैसे ही **(जायमानः)** उत्पन्न होनेवाला सूर्य **(रोदसी)** अन्तरिक्ष और पृथ्वी का **(आ, अपृणात्)** पालन करता है और जैसे **(अत्कम्)** कूप का **(वसानः)** आच्छादन करता हुआ जन **(स्वयम्)** आप ही ऊपर को प्राप्त होवे, वैसे जो **(उत, अस्थात्)** उठता है वह **(अथ)** अनन्तर सब जगत् की रक्षा करता है॥५॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो माता सूर्य के सदृश जिन अपने सन्तानों को बोध कराती और दुष्ट आचरणों को दूर करके शिक्षा करती है तो वे सन्तान उत्तम होते हैं॥५॥

**अथ मेघकृत्यमाह॥**

अब मेघ के कृत्य को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**एता अर्षन्त्यललाभवन्तीर्ऋतावरीरिव संक्रोशमानाः।**

**एता वि पृच्छ किमिदं भनन्ति कमापो अद्रिं परिधिं रुजन्ति॥६॥**

**एताः। अर्षन्ति। अललाऽभवन्तीः। ऋतवरीःऽइव। सम्ऽक्रोशमानाः। एताः। वि। पृच्छ। किम्। इदम्। भनन्ति। कम्। आपः। अद्रिम्। परिऽधिम्। रुजन्ति॥६॥**

**पदार्थः**-(**एताः**) (**अर्षन्ति**) गच्छन्ति (**अललाभवन्तीः**) अलला अलला इव शब्दयन्तीः (**ऋतावरीरिव**) उषस इव (**संक्रोशमानाः**) आक्रोशं कुर्वाणाः (**एताः**) गच्छन्त्यो नद्यः (**वि**) (**पृच्छ**) (**किम्**) (**इदम्**) (**भनन्ति**) शब्दयन्ति (**कम्**) (**आपः**) (**अद्रिम्**) मेघम् (**परिधिम्**) (**रुजन्ति**) भञ्जन्ति॥६॥

**अन्वयः**-हे जिज्ञासो! या एता नद्य ऋतावरीरिव संक्रोशमाना अललाभवन्तीरर्षन्ति ता एता किमिदं भनन्तीति वि पृच्छ। एता आपः कं परिधिमद्रिं रुजन्तीति च॥६॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! एता नद्यो मेघपुत्र्यास्तटान् भञ्जन्त्य अव्यक्ताञ्छब्दान् कुर्वन्त्य उषा इव गच्छन्ति तथैव सेनाः शत्रूनभिमुखं गच्छन्तु॥६॥

**पदार्थः**-हे जिज्ञासुजन! जो (**एताः**) ये नदियाँ (**ऋतावरीरिव**) प्रातःकालों के सदृश (**संक्रोशमानाः**) उच्चस्वर को करती हुई (**अललाभवन्तीः**) अलल अर्राती हुई (**अर्षन्ति**) जाती हैं सो (**एताः**) ये (**किम्**) क्या (**इदम्**) यह (**भनन्ति**) शब्द करती हैं, ऐसा (**वि, पृच्छ**) विशेष करके पूछिये और ये (**आपः**) जल (**कम्**) किस (**परिधिम्**) घेर और (**अद्रिम्**) मेघ को (**रुजन्ति**) भञ्जते हैं॥६॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! यह नदियाँ मेघों की पुत्रियाँ अर्थात् उनसे उत्पन्न हुई तटों को तोड़ती और अव्यक्त शब्दों को करती हुई प्रातःकालों के सदृश जाती हैं, वैसे ही सेना शत्रुओं के सम्मुख प्राप्त होवें॥६॥

**पुनर्मेघविषयमाह॥**

फिर मेघ विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**किमु ष्विदस्मै निविदो भनन्तेन्द्रस्यावद्यं दिधिषन्त आपः।**

**ममैतान् पुत्रो महता वधेन वृत्रं जघन्वाँ असृजद्वि सिन्धून्॥७॥**



www.9009.co.in

**किम्। ऊम् इति। स्वित्। अस्मै। निऽविदः। भनन्त। इन्द्रस्य। अवद्यम्। दिधिषन्ते। आपः। मम। एतान्। पुत्रः। महता। वधेन। वृत्रम्। जघन्वान्। असृजत्। वि। सिन्धून्॥७॥**

**पदार्थः**-(**किम्**) (उ) (**स्वित्**) प्रश्ने (**अस्मै**) मेघाय (**निविदः**) नितरां विदन्ति याभिस्ता वाचः। **निविदिति वाङ्नामसु पठितम्।** (निघं०१.११) (**भनन्त**) वदन्ति (**इन्द्रस्य**) सूर्य्यस्य (**अवद्यम्**) गर्ह्यम् (**दिधिषन्ते**) शब्दयन्ति (**आपः**) (**मम**) (**एतान्**) (**पुत्रः**) (**महता**) (**वधेन**) (**वृत्रम्**) (**जघन्वान्**) हतवान् (**असृजत्**) सृजति (**वि**) (**सिन्धून्**) नदीः॥७॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! ममाऽपत्यस्येन्द्रस्य निविदोऽस्मै मेघाय किमु ष्विद्भनन्तापोऽवद्यं दिधिषन्ते मम पुत्रो महता वधेनैतान् वृत्रञ्च जघन्वान्त्सिन्धून् व्यसृजत्॥७॥

**भावार्थः**-अत्राऽदितिसूर्य्यमेघाऽलङ्कारेण सेनासभाध्यक्षराज्ञां कृत्यं वर्णितमस्ति। यथाऽन्तरिक्षस्य पुत्रवद्वर्त्तमानोऽर्को मेघं हत्वा नदीर्वाहयति तथैव विदुषः सुशिक्षितः पुत्रः सेनाध्यक्षश्शत्रून् हत्वा सेना ऐश्वर्यं प्रापयति॥७॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! (**मम**) मुझ पुत्र के (**इन्द्रस्य**) सूर्यसम्बन्ध की (**निविदः**) अत्यन्त ज्ञान जिनसे वे वाणी (**अस्मै**) इस मेघ के लिये (**किम्**) क्या (उ) और (**स्वित्**) क्यों (**भनन्त**) शब्द करती हैं (**आपः**) जल (**अवद्यम्**) निन्द्य (**दिधिषन्ते**) शब्द करते हैं, मेरा (**पुत्रः**) सन्तान (**महता**) बड़े (**वधेन**) वध से (**एतान्**) इनको और (**वृत्रम्**) मेघ का (**जघन्वान्**) नाश किया हुआ सूर्य्य (**सिन्धून्**) नदियों को (**वि, असृजत्**) उत्पन्न करता है॥७॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में अदिति, सूर्य्य और मेघ के अलङ्कार से सेना, सभाध्यक्ष और राजा के कृत्य का वर्णन है। जैसे अन्तरिक्ष के पुत्र के समान वर्त्तमान सूर्य्य मेघ का नाश करके नदियों को बहाता है, वैसे ही विद्वान् का उत्तम प्रकार शिक्षित पुत्र सेना का अध्यक्ष शत्रुओं का नाश करके सेनाओं को ऐश्वर्य्य प्राप्त कराता है॥७॥

**अथ राजविषयमाह॥**

अब राजविषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**ममच्चन त्वा युवतिः परास ममच्चन त्वा कुषवा जगार।**

**ममच्चिदापः शिशवे ममृड्युर्ममच्चिदिन्द्रः सहसोदतिष्ठत्॥८॥**

**ममत्। चन। त्वा। युवतिः। पराऽआस। ममत्। चन। त्वा। कुषवा। जगार। ममत्। चित्। आपः। शिशवे। ममृड्युः। ममत्। चित्। इन्द्रः। सहसा। उत्। अतिष्ठत्॥८॥**

**पदार्थः**-(**ममत्**) प्रमादयन्ती (**चन**) अपि (**त्वा**) त्वाम् (**युवतिः**) पूर्णचतुर्विंशतिवार्षिका (**परास**) पराङ्मुखस्यति (**ममत्**) (**चन**) (**त्वा**) (**कुषवा**) कुत्सितः सवः प्रेरणा यस्याः सा (**जगार**) निगिलति



www.9009.co.in

**(ममत्)** **(चित्)** **(आपः)** जलवद्वर्त्तमाना मातरः **(शिशवे)** पुत्राय **(ममृड्युः)** सुखयन्ति **(ममत्)** **(चित्)** **(इन्द्रः)** सूर्य इव **(सहसा)** बलेन **(उत्)** **(अतिष्ठत्)** उत्तिष्ठति॥८॥

**अन्वयः**-हे राजन्! या युवतिस्त्वा ममच्चन परास या ममत् कुषवा त्वा चन जगार तत्सङ्गं त्यज या ममदापश्चिदिव शिशवे ममृड्युर्ये ममच्चिदिन्द्रः सहसा उदतिष्ठत्तं सेवस्व॥८॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। ये प्रमदासु न प्रमाद्यन्ति ते बलिनो जायन्ते ये पुत्रवत् प्रजाः पालयन्ति त उत्कृष्टा भवन्ति॥८॥

**पदार्थः**-हे राजन्! जो **(युवतिः)** पूर्ण चौबीस वर्ष वाली **(त्वा)** आपको **(ममत्)** मदयुक्त करती हुई **(चन)** भी **(परास)** पराङ्मुख करती है, जो **(ममत्)** प्रमादयुक्त करती हुई **(कुषवा)** निकृष्ट प्रेरणा वाली **(त्वा)** आपको **(चन)** भी **(जगार)** निगलती है, उसके सङ्ग का त्याग करो और जो **(ममत्)** मदयुक्त करती हुई **(आपः)** जलों के सदृश वर्तमान माता से **(चित्)** वैसे **(शिशवे)** पुत्र के लिये **(ममृड्युः)** सुख देती है और जो **(ममत्)** सुख देता हुआ **(चित्)** सा **(इन्द्रः)** सूर्य के सदृश **(सहसा)** बल से **(उत्, अतिष्ठत्)** उठता है, उसकी सेवा करो॥८॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो लोग प्रमत्त स्त्रियों में प्रमाद को नहीं प्राप्त होते, वे बली होते हैं और जो पुत्र के सदृश प्रजाओं का पालन करते, वे उत्तम होते हैं॥८॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**ममच्चन ते मघवन् व्यंसो निविविध्वाँ अप हनू जघान।**

**अधा निविद्ध उत्तरो बभूवाञ्छिरो दासस्य सं पिणग्वधेन॥९॥**

**ममत्। चन। ते। मघऽवन्। विऽअंसः। निऽविविध्वान्। अप। हनू इति। जघान। अध। निऽविद्धः। उत्ऽतरः। बभूवान्। शिरः। दासस्य। सम्। पिणक्। वधेन॥९॥**

**पदार्थः**-**(ममत्)** हर्षन् **(चन)** अपि **(ते)** **(मघवन्)** बहुधनयुक्त **(व्यंसः)** विप्रकृष्टा अंसा बलादयो यस्य सः **(निविविध्वान्)** यो नितरां शत्रून् विध्यति सः **(अप)** दूरीकरणे **(हनू)** मुखपार्श्वौ **(जघान)** **(अधा)** अत्र **निपातस्य चेति** दीर्घः। **(निविद्धः)** नितरां वाणैर्विच्छिन्नः **(उत्तरः)** उत्तरकालीनः **(बभूवान्)** भवति **(शिरः)** उत्तमाङ्गम् **(दासस्य)** दातुं योग्यस्य **(सम्)** **(पिणक्)** पिनष्टि **(वधेन)** ताडनेन॥९॥

**अन्वयः**-हे मघवन्! यस्त दासस्य वधेन शिरः सम्पिणग् व्यंसो निविविध्वान् हनू अप जघानाधा ममच्चनोत्तरो निविद्धो बभूवांस्तं त्वं दण्डय॥९॥

**भावार्थः**-हे राजन्! यो विरुद्धेन कर्मणा प्रजासु विचेष्टते तं सदा निबद्धं शस्त्रैर्व्यथितं कृत्वा सर्वतो निबध्नीहि॥९॥

**पदार्थः**-हे **(मघवन्)** बहुत धन से युक्त पुरुष जो **(ते)** आपके **(दासस्य)** देने योग्य के **(वधेन)** ताड़न से **(शिरः)** शिर को **(सम्, पिणक्)** अच्छे पीसता है **(व्यंसः)** खींच लिये गये हैं बल आदि जिसके ऐसा **(निविविध्वान्)** अत्यन्त शत्रुओं का नाश करने वाला **(हनू)** मुख के आस-पास के भागों को **(अप)** दूर करने में **(जघान)** नाश करता है **(अधा)** इसके **(ममत्)** प्रसन्न होता हुआ **(चन)** भी **(उत्तरः)** आगे के समय में होने वाला **(निविद्धः)** अत्यन्त वाणों से छेदा गया **(बभूवान्)** होता है, उसको आप दण्ड दीजिये॥९॥

**भावार्थः**-हे राजन्! जो विरुद्ध कर्म से प्रजाओं में चेष्टा करता है, उस सदा दृढ़ बंधे को शस्त्रों से व्यथित कर सब प्रकार से बांधो॥९॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**गृष्टिः ससूव स्थविरं तवागामनाधृष्यं वृषभं तुम्रमिन्द्रम्।**

**अरीळ्हं वत्सं चरथाय माता स्वयं गातुं तन्व इच्छमानम्॥१०॥**

**गृष्टिः। ससूव। स्थविरम्। तवागाम्। अनाधृष्यम्। वृषभम्। तुम्रम्। इन्द्रम्। अरीळ्हम्। वत्सम्। चरथाय। माता। स्वयम्। गातुम्। तन्वे। इच्छमानम्॥१०॥**

**पदार्थः**-**(गृष्टिः)** सकृत् प्रसूता गौः **(ससूव)** जनयति **(स्थविरम्)** स्थूलं वृद्धं वा **(तवागाम्)** प्राप्तबलम् **(अनाधृष्यम्)** प्रगल्भम् **(वृषभम्)** वृषभ इव बलिष्ठम् **(तुम्रम्)** सत्कर्मसु प्रेरकम् **(इन्द्रम्)** परमैश्वर्यवन्तम् **(अरीळ्हम्)** शत्रूणां हन्तारम् **(वत्सम्)** **(चरथाय)** **(माता)** **(स्वयम्)** **(गातुम्)** वाणीम् **(तन्वे)** विस्तृणुयाम् **(इच्छमानम्)**॥१०॥

**अन्वयः**-हे मघवन् राजन्! यथा गृष्टिश्चरथाय वत्समिव माता स्थविरं तवागामनाधृष्यं तुम्रं वृषभमिवाऽरीळ्हं स्वयं गातुं पृथिवीमिच्छमानमिन्द्रं ससूव तथाहं त्वदर्थं भूमिराज्यं तन्वे॥१०॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे राजन्! यथा सुसंस्कृताऽन्नादेः समये समये मिताहारः कृतः शरीरं पुष्टं कृत्वा बलं वर्धयित्वा शत्रुविजयनिमित्तं भूत्वा राज्यं वर्धयति तथैव त्वं न्यायेनाऽस्माकं वर्धय॥१०॥

**पदार्थः**-हे बहुधनयुक्त राजन्! जैसे **(गृष्टिः)** एक वार प्रसूता हुई गौ **(माता)** माता **(चरथाय)** चरने के लिये **(वत्सम्)** बछड़े के सदृश **(स्थविरम्)** स्थूल वा वृद्ध **(तवागाम्)** बल को प्राप्त **(अनाधृष्यम्)** प्रगल्भ **(तुम्रम्)** उत्तम कर्म्मों में प्रेरणा करने और **(वृषभम्)** बैल के सदृश बलिष्ठ



www.9009.co.in

**(अरीळहम्)** शत्रुओं के नाश करने वाले **(स्वयम्)** आप **(गातुम्)**[83] वाणी **(इन्द्रम्)** परमैश्वर्य्यवान् सुत की **(इच्छमानम्)** इच्छा करते हुए को **(ससूव)** उत्पन्न करती है, वैसे मैं आपके लिये पृथ्वी के राज्य का **(तन्वे)** विस्तार करूं॥१०॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे राजन्! जैसे उत्तम प्रकार संस्कारयुक्त किये हुए अन्न आदि का समय पर नियमित भोजन किया गया शरीर को पुष्ट कर बल को बढ़ाय शत्रुओं का विजयनिमित्तक हो राज्य को बढ़ाता है, वैसे ही आप न्याय से हम लोगों के सुख की वृद्धि करो॥१०॥

**अथ सन्तानशिक्षणेन विद्वद्विषयमाह॥**

अब सन्तान शिक्षा से विद्वानों के विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**उ॒त मा॒ता म॑हि॒षमन्व॑वेनद॒मी त्वा॑ जहति पुत्र दे॒वाः।**

**अथा॑ब्रवीद् वृ॒त्रमिन्द्रो॑ हनि॒ष्यन्त्सखे॑ विष्णो वित॒रं वि क्र॑मस्व॥११॥**

उ॒त। मा॒ता। म॒हि॒षम्। अनु॑। अ॒वे॒न॒त्। अ॒मी इति॑। त्वा॒। ज॒ह॒ति॒। पु॒त्र॒। दे॒वाः। अथ॑। अ॒ब्र॒वी॒त्। वृ॒त्रम्। इन्द्रः॑। ह॒नि॒ष्यन्। सखे॑। वि॒ष्णो॒ इति॑। वि॒ऽत॒रम्। वि। क्र॒म॒स्व॒॥११॥

**पदार्थः**-**(उत)** **(माता)** जननी **(महिषम्)** महान्तम् **(अनु)** **(अवेनत्)** याचते **(अमी)** **(त्वा)** त्वाम् **(जहति)** **(पुत्र)** दुःखात्त्रातः **(देवाः)** विद्वांसः **(अथ)** **(अब्रवीत्)** ब्रूते **(वृत्रम्)** मेघमिवाऽविद्याम् **(इन्द्रः)** परमैश्वर्यवान्सूर्य्य इव पिता **(हनिष्यन्)** हननं करिष्यन् **(सखे)** मित्र **(विष्णो)** सकलविद्याव्यापिन् **(वितरम्)** विविधप्रकारेण तरितुं योग्यम् **(वि)** **(क्रमस्व)** पुरुषार्थी भव॥११॥

**अन्वयः**-हे सखे विष्णो पुत्र! त्वमिन्द्रो वृत्रमिवाऽविद्यां हनिष्यन् वितरं वि क्रमस्वाथ माता त्वा महिषमवेनदेवमुतापि यथा पिताऽब्रवीत्तथा न कुर्य्याश्चेत्तर्ह्यमी देवास्त्वाऽनुजहति॥११॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। सन्तानानां योग्यतास्ति यथा विद्वांसौ मातापितरौ ब्रह्मचर्य्यादिना विद्याग्रहणं शरीरसुखवर्धनमुपदिशेतां तथैवाऽनुष्ठेयं यानि सुशीलान्यपत्यानि भवन्ति तान्येवाऽऽप्ताऽध्यापका अनुगृह्णन्ति दुर्व्यसनानि त्यजन्ति॥११॥

**पदार्थः**-हे **(सखे)** मित्र **(विष्णो)** सम्पूर्ण विद्याओं में व्यापक **(पुत्र)** दुःख से रक्षा करने वाले! आप **(इन्द्रः)** अत्यन्त ऐश्वर्यवान् सूर्य्य के सदृश पालनकर्त्ता **(वृत्रम्)** मेघ के समान अविद्या का **(हनिष्यन्)** नाश करनेवाले हुए **(वितरम्)** विविध प्रकार तरने योग्य को **(वि, क्रमस्व)** पुरुषार्थी हूजिये **(अथ)** इसके अनन्तर **(माता)** माता **(त्वा)** आपको **(महिषम्)** बड़ा **(अवेनत्)** मांगती है, जो इस प्रकार

८३. संस्कृत एवं हिन्दी पदार्थ में 'गातुम्' का अर्थ 'वाणी' किया है, जबकि अन्वय में 'गातुम्' का अर्थ 'पृथिवी' और निघण्टु (निघं०१.१.२०) में भी यह पृथिवीवाचक में पठित है।



www.9009.co.in

**(उत)** भी जैसे पिता **(अब्रवीत्)** कहता है, वैसे नहीं करे तो **(अमी)** यह **(देवा:)** विद्वान् लोग आपका **(अनु, जहति)** त्याग करते हैं॥११॥

**भावार्थ:**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। सन्तानों की योग्यता है कि जैसे विद्वान् माता पिता ब्रह्मचर्य आदि से विद्या का ग्रहण और शरीर के सुख के वर्धन का उपदेश करें, वैसे ही करना चाहिये और जो उत्तम शीलयुक्त पुत्र होते हैं, उन्हीं पर यथार्थवक्ता अध्यापक लोग कृपा करते और दुर्व्यसनियों का त्याग करते हैं॥११॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**कस्ते॑ मा॒तरं॑ वि॒धवा॑मचक्रच्छ॒युं कस्त्वाम॑जिघांस॒च्चर॑न्तम्।**

**कस्ते॑ दे॒वो अधि॑ मार्डी॒क आ॑सी॒द्यत्प्राक्षि॑णाः पि॒तरं॑ पाद॒गृह्य॑॥१२॥**

**कः। ते॒। मा॒तर॑म्। वि॒धवा॑म्। अ॒च॒क्र॒त्। श॒यु॒म्। कः। त्वाम्। अ॒जि॒घां॒स॒त्। चर॑न्तम्। कः। ते॒। दे॒वः। अधि॑। मा॒र्डी॒के। आ॒सी॒त्। यत्। प्र। अक्षि॑णाः। पि॒तर॑म्। पा॒द॒ऽगृह्य॑॥१२॥**

**पदार्थ:**-**(कः)** **(ते)** तव **(मातरम्)** **(विधवाम्)** विगतो धवः पतिर्यस्यास्ताम् **(अचक्रत्)** करोति **(शयुम्)** यः शेते तम् **(कः)** **(त्वाम्)** **(अजिघांसत्)** हन्तुमिच्छति **(चरन्तम्)** विहरन्तम् **(कः)** **(ते)** **(देवः)** दिव्यगुणः **(अधि)** उपरि **(मार्डीके)** सुखकरे **(आसीत्)** **(यत्)** यः **(प्र)** **(अक्षिणाः)** क्षयति हन्ति **(पितरम्)** जनकम् **(पादगृह्य)** पादान् ग्रहीतुं योग्यः॥१२॥

**अन्वयः**-हे पुत्र! ते मातरं विधवां कोऽचक्रत् कश्चरन्तं शयुं त्वामजिघांसत् कस्ते देवो मार्डीकेऽध्यासीत् पादगृह्य यद्यस्ते पितरं प्राऽक्षिणाः॥१२॥

**भावार्थ:**-हे सन्ताना! ये या वा युष्माकं पितॄन् हत्वा मातॄर्विधवाः कुर्य्युर्युष्मानपि घ्नन्तु तेषां विश्वासं यूयं मा कुरुत॥१२॥

**पदार्थ:**-हे पुत्र! **(ते)** आपकी **(मातरम्)** माता को **(विधवाम्)** पतिहीन **(कः)** कौन **(अचक्रत्)** करता है **(कः)** कौन **(चरन्तम्)** विहार वा **(शयुम्)** शयन करते हुए **(त्वाम्)** आपको **(अजिघांसत्)** मारने की इच्छा करता है **(कः)** कौन **(ते)** आपके **(देवः)** श्रेष्ठ गुण वाला **(मार्डीके)** सुख करने में **(अधि)** सर्वोपरि **(आसीत्)** विराजमान हुआ है **(पादगृह्य)** हे पैरों को ग्रहण करने योग्य! **(यत्)** जो आपके **(पितरम्)** उत्पन्न करने वाले को **(प्र, अक्षिणाः)** नाश करता है॥१२॥

**भावार्थ:**-हे सन्तानो! जो पुरुष वा स्त्रियाँ आप लोगों के पितरों का नाश करके माताओं को विधवा करें और आप लोगों का भी नाश करें, उनका विश्वास आप लोग न करिये॥१२॥

**पुना राजविषयमाह॥**

फिर राजविषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥



www.9009.co.in

**अर्वर्त्या शुनं आन्त्राणि पेचे न देवेषु विविदे मर्डितारम्।**

**अपश्यं जायाममहीयमानामधा मे श्येनो मध्वा जभार॥ १३॥ २६॥ ५॥**

**अर्वर्त्या। शुनः। आन्त्राणि। पेचे। न। देवेषु। विविदे। मर्डितारम्। अपश्यम्। जायाम्। अमहीयमानाम्। अध। मे। श्येनः। मधु। आ। जभार॥ १३॥**

**पदार्थः**-(**अवर्त्या**) अवर्त्तनीयानि (**शुनः**) कुक्कुरस्येव (**आन्त्राणि**) उदरस्थाः स्थूला नाडी (**पेचे**) पचति (**न**) (**देवेषु**) विद्वत्सु (**विविदे**) लभते (**मर्डितारम्**) सुखकरम् (**अपश्यम्**) पश्येयम् (**जायाम्**) स्त्रियम् (**अमहीयमानाम्**) असत्कृताम् (**अधा**) **निपातस्य चे**ति दीर्घः। (**मे**) मम (**श्येनः**) श्येन इव शीघ्रगन्ता (**मधु**) मधुरं विज्ञानम् (**आ**) सर्वतः (**जभार**) हरति॥ १३॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! यो मेऽमहीयमानां जायां श्येन इवाऽऽजभाराऽधा शुनोऽवर्त्याऽऽन्त्राणीव शरीरं पेचे तस्मान्मर्डितारं त्वामहमपश्यं स यथा देवेषु मधु न विविदे तथा तं भृशं दण्डय॥ १३॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे राजन्! ये पुरुषा याः स्त्रियश्च व्यभिचारं कुर्युस्तांस्तीव्रं दण्डं नीत्वा विनाशय॥ १३॥

अत्रेन्द्रमेघराजविद्वत्कृत्यवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्येण दयानन्दसरस्वतीस्वामिना विरचिते संस्कृतार्य्यभाषाभ्यां विभूषिते सुप्रमाणयुक्त ऋग्वेदभाष्ये तृतीयाष्टके पञ्चमोऽध्यायोऽष्टादशं सूक्तं षड्विंशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे राजन्! जो (**मे**) मेरी (**अमहीयमानाम्**) नहीं सत्कार की गई (**जायाम्**) स्त्री को (**श्येनः**) वाज पक्षी के सदृश शीघ्र चलने वाला सब ओर से (**आ, जभार**) हरता है (**अधा**) इसके अनन्तर (**शुनः**) कुत्ते की (**अवर्त्या**) नहीं वर्त्तने योग्य (**आन्त्राणि**) और उठे हैं हाड़ जिनसे उन स्थूल नाड़ियों के सदृश शरीर को (**पेचे**) पचाता है, इससे (**मर्डितारम्**) सुख करने वाले आपका मैं (**अपश्यम्**) दर्शन करूं। वह जैसे (**देवेषु**) विद्वानों में (**मधु**) मधुर विज्ञान को (**न**) नहीं (**विविदे**) प्राप्त होता है, वैसे उसको निरन्तर दण्ड दीजिये॥ १३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे राजन्! जो पुरुष और स्त्रियाँ व्यभिचार करें, उनको तीव्र दण्ड देकर नाश करो॥ १३॥

इस सूक्त में इन्द्र मेघ राजा और विद्वान् के कृत्य वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह तृतीय अष्टक में पांचवां अध्याय अठारहवां सूक्त और छब्बीसवां वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

अथ तृतीयाष्टके षष्ठाध्यायारम्भः॥

**ओ३म् विश्वा॑नि देव सवितर्दुरि॒तानि॒ परा॑ सुव। यद्भ॒द्रं तन्न॒ आ सु॑व॥ ऋ०५.८२.५॥**

**अथैकादशर्चस्यैकोनविंशतितमस्य सूक्तस्य वामदेव ऋषिः। इन्द्रो देवता। १ विराट् त्रिष्टुप्। २, ९ निचृत् त्रिष्टुप्। ३, ५, ८ त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः। ४, ६ भुरिक् पङ्क्तिः। ७, १० पङ्क्तिः। ११ निचृत्पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः॥**

**अथेन्द्रपदवाच्यराजगुणानाह॥**

अब तृतीयाष्टक में छठे अध्याय का और [ग्यारह ऋचा वाले] उन्नसीवें सूक्त का प्रारम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में इन्द्रपदवाच्य राजगुणों का उपदेश करते हैं॥

**ए॒वा त्वामि॑न्द्र वज्रि॒न्नत्र॒ विश्वे॑ दे॒वास॑: सु॒हवा॑स॒ ऊमा॑:।**

**म॒हामु॒भे रोद॑सी वृ॒द्धमृ॒ष्वं निरेक॒मिद् वृ॑णते वृत्र॒हत्ये॑॥ १॥**

**ए॒व। त्वाम्। इ॒न्द्र॒। व॒ज्रि॒न्। अत्र॑। विश्वे॑। दे॒वास॑:। सु॒ऽहवा॑सः। ऊमा॑:। म॒हाम्। उ॒भे इति॑। रोद॑सी॒ इति॑। वृ॒द्धम्। ऋ॒ष्वम्। निः। एक॑म्। इत्। वृ॒ण॒ते॒। वृ॒त्र॒ऽहत्ये॑॥ १॥**

**पदार्थः**-(**एवा**) अत्र **निपातस्य चे**ति दीर्घः। (**त्वाम्**) त्वाम् (**इन्द्र**) शत्रूणां विदारक (**वज्रिन्**) प्रशंसितशस्त्रास्त्र (**अत्र**) (**विश्वे**) सर्वे (**देवासः**) विद्वांसः (**सुहवासः**) ये सुष्ठ्वाह्वयन्ति ते (**ऊमाः**) रक्षणादिकर्त्तारः (**महाम्**) महान्तम् (**उभे**) (**रोदसी**) द्यावापृथिव्यौ (**वृद्धम्**) सर्वेभ्यो विस्तीर्णम् (**ऋष्वम्**) श्रेष्ठम् (**निः**) (**एकम्**) अद्वितीयम् (**इत्**) एव (**वृणते**) स्वीकुर्वन्ति (**वृत्रहत्ये**) वृत्रस्य हत्या हननमिव शत्रुहननं यस्मिन्त्सङ्ग्रामे तस्मिन्॥ १॥

**अन्वयः**-हे वज्रिन्निन्द्राऽत्र ये ऊमाः सुहवासो विश्वे देवासो महां वृद्धमृष्वमेकं त्वामेवा वृत्रहत्य उभे रोदसी सूर्य्यमिवेन्निर्वृणते तानेव त्वं सेवस्व॥ १॥

**भावार्तः**-ये विद्वांसोऽत्युत्तमगुणवन्तं राजानं स्वीकुर्य्युस्त एव पूर्णसुखा भवन्ति॥ १॥

**पदार्थः**-हे (**वज्रिन्**) प्रशंसित शस्त्र और अस्त्र से युक्त (**इन्द्र**) शत्रुओं के विदीर्ण करनेहारे (**अत्र**) इस संसार में जो (**ऊमाः**) रक्षा आदि करने वाले (**सुहवासः**) उत्तम प्रकार पुकारने वाले (**विश्वे**) सब (**देवासः**) विद्वान् लोग (**महाम्**) बड़े (**वृद्धम्**) सब से विस्तीर्ण (**ऋष्वम्**) श्रेष्ठ (**एकम्**) अद्वितीय (**त्वाम्**) (**त्वाम्**) आपको (**एवा**) ही (**वृत्रहत्ये**) मेघ के नाश के सदृश शत्रु का नाश जिस संग्राम में उसमें (**उभे**) दोनों (**रोदसी**) अन्तरिक्ष और पृथिवी सूर्य्य के सदृश (**इत्**) ही (**निः, वृणते**) स्वीकार करते हैं, उन्हीं की आप सेवा करिये॥ १॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-जो विद्वान् लोग अतिश्रेष्ठ गुण वाले राजा को स्वीकार करें, वे ही पूर्ण सुख वाले होते हैं॥१॥

**अथ मेघदृष्टान्तेन राजगुणानाह॥**

अब मेघ दृष्टान्त से राजगुणों को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अवा॑सृजन्त जिव्र॑यो न दे॒वा भुव॑: स॒म्राळि॑न्द्र स॒त्यया॑निः।**

**अह॒न्नहि॑ परि॒शया॑न॒मर्णः॒ प्र व॑र्त॒नीर॑रदो वि॒श्वधे॑नाः॥२॥**

**अव॑। अ॒सृ॒ज॒न्त॒। जिव्र॑यः। न। दे॒वाः। भुव॑:। स॒म्ऽराट्। इ॒न्द्र॒। स॒त्यऽयो॑निः। अह॑न्। अहि॑म्। प॒रि॒ऽशया॑नम्। अर्णः॑। प्र। व॒र्त॒नीः। अ॒र॒दः॒। वि॒श्वऽधे॑नाः॥२॥**

**पदार्थः**-(**अव**) (**असृजन्त**) सृजन्ते (**जिव्रयः**) दृढजीवनाः (**न**) इव (**देवाः**) चन्द्रादयो दिव्याः पदार्था इव विद्वांसः (**भुवः**) पृथिव्या मध्ये (**सम्राट्**) यः सम्यग्राजते चक्रवर्त्ती (**इन्द्र**) परमैश्वर्य्ययुक्त (**सत्ययोनिः**) सत्यमविनाशि योनिः कारणङ्गृहं वा यस्य (**अहन्**) हन्ति (**अहिम्**) मेघम् (**परिशयानम्**) योऽन्तरिक्षे सर्वतः शेते तम् (**अर्णः**) उदकम् (**प्र**) (**वर्त्तनीः**) मार्गान् (**अरदः**) विलिखति (**विश्वधेनाः**) विश्वाः सर्वा धेना वाचो येषान्ते॥२॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! भवान् भुवः सम्राट् सत्ययोनिर्यथा सूर्य्यः परिशयानमहिमहन्नर्णो वर्त्तनीः प्रारदस्तथैव शत्रून् हत्वा विराजस्व ये विश्वधेना जिव्रयो न देवास्त्वामवाऽसृजन्त तांस्त्वं सङ्गच्छस्व॥२॥

**भावार्थः**-अत्रोपमावाचकलुप्तोपमालङ्कारौ। हे राजंस्त्वं सत्याचारः सन्नाप्तसहायेन चक्रवर्त्ती सार्वभौमो भव यथा सूर्य्यो मेघं हत्वा जगत् सुखयति तथा दस्यून् विनाश्य प्रजा आनन्दय॥२॥

**पदार्थः**-हे (**इन्द्र**) अत्यन्त ऐश्वर्ययुक्त! आप (**भुवः**) पृथिवी के मध्य में (**सम्राट्**) उत्तम प्रकार प्रकाशमान चक्रवर्त्ती (**सत्ययोनिः**) नहीं नाश होने वाला कारण वा स्थान जिसका ऐसा सूर्य्य जैसे (**परिशयानम्**) अन्तरिक्ष में सब ओर से शयन करने वाले (**अहिम्**) मेघ का (**अहन्**) नाश करता है (**अर्णः**) जल (**वर्त्तनीः**) मार्गों को (**प्र, अरदः**) अर्थात् करोदता है, वैसे ही शत्रुओं का नाश करके विराजमान हूजिये जो (**विश्वधेनाः**) समस्त वाणियों वाले (**जिव्रयः**) दृढजीवनों के (**न**) समान (**देवाः**) चन्द्र आदि दिव्य पदार्थों के सदृश विद्वान् जन आपको (**अव, असृजन्त**) उत्पन्न करते हैं, उनका तुम संग करो॥२॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमावाचकलुप्तोपमालङ्कार हैं। हे राजन्! आप सत्य आचरण करने वाले हुए यथार्थ वक्ताओं के सहाय से चक्रवर्त्ती सार्वभौम हूजिये और जैसे सूर्य्य मेघ का नाश करके संसार को सुख देता है, वैसे चोर डाकुओं का नाश करके प्रजाओं को आनन्द दीजिये॥२॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥



www.9009.co.in

**अतृ॑ण्णुवन्तं॒ विय॑तमबुध्यमबु॑ध्यमानं सुषुपा॒णमि॑न्द्र।**

**स॒प्त प्रति॑ प्र॒वत॑ आ॒शया॑न॒महिं॒ वज्रे॑ण॒ वि रि॑णा अप॒र्वन्॥ ३॥**

**अतृ॑ण्णुवन्तम्। वि॒ऽय॑तम्। अ॒बुध्यम्। अबु॑ध्यमानम्। सु॒सु॒पा॒नम्। इ॒न्द्र। स॒प्त। प्रति॑। प्र॒ऽवत॑:। आ॒ऽशया॑नम्। अहि॑म्। वज्रे॑ण। वि। रि॒णा॒:। अ॒प॒र्वन्॥ ३॥**

**पदार्थः**-(**अतृण्णुवन्तम्**) भोगेष्वतृप्तम् (**वियतम्**) अजितेन्द्रियम् (**अबुध्यम्**) बुद्धिरहितम् (**अबुध्यमानम्**) उपदेशेनाऽप्यजानन्तम् (**सुषुपाणम्**) शोभनम्पानं यस्य तम् (**इन्द्र**) परमैश्वर्ययुक्त (**सप्त**) (**प्रति**) (**प्रवतः**) अधोमार्गान् (**आशयानम्**) (**अहिम्**) मेघम् (**वज्रेण**) (**वि**) (**रिणाः**) हिंस्याः (**अपर्वन्**) अपर्वणि पर्वरहिते समये॥ ३॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! त्वं यथा सूर्य्यो वज्रेणाऽऽशयानमहिं हत्वा सप्त प्रवतो गमयति तथैवाऽपर्वन्नतृण्णुवन्तं सुषुपाणं वियतमबुध्यमबुध्यमानमधआर्स्मिकञ्जनं दण्डेन प्रति वि रिणाः॥ ३॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यथा सूर्य्यः किरणैर्मेघञ्छिन्नङ्कृत्वा भूमौ निपात्य विविधेषु मार्गेषु वाहयति तथैव विद्ययाऽविद्यां हत्वा दण्डेनाधार्मिकान् कारगृहे निपात्य बहुशाखां राजनीतिं सर्वत्र प्रचालयेत्॥ ३॥

**पदार्थः**-हे (**इन्द्र**) अत्यन्त ऐश्वर्य्ययुक्त! आप जैसे सूर्य (**वज्रेण**) वज्र से (**आशयानम्**) सब ओर से सोते हुए (**अहिम्**) मेघ का नाश करके (**सप्त**) सात (**प्रवतः**) नीच के मार्गों को प्राप्त कराता है, वैसे ही (**अपर्वन्**) पर्व से रहित समय में (**अतृण्णुवन्तम्**) भोगों में नहीं तृप्त (**सुषुपाणम्**) उत्तम पानयुक्त (**वियतम्**) नहीं जितेन्द्रिय (**अबुध्यम्**) बुद्धि से रहित (**अबुध्यमानम्**) उपदेश से भी नहीं जानते हुए अधार्मिक जन की दण्ड से (**प्रति, वि, रिणाः**) विशेष हिंसा करें॥ ३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे सूर्य्य किरणों से मेघ को काट के और पृथिवी पर गिरा के नाना प्रकार के मार्गों में बहाता है, वैसे ही विद्या से अविद्या का नाश करके दण्ड से अधार्मिमक पुरुषों को कारगृह अर्थात् जेलखाने में छोड़ के बहुत शाखायुक्त नीति का सर्वत्र प्रचार करे॥ ३॥

**अथ मेघदृष्टान्तेन राजसेनाविषयमाह॥**

अब मेघदृष्टान्त से राजसेनाविषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अक्षो॑दय॒च्छव॑सा॒ क्षाम॑ बु॒ध्नं वार्ण वात॒स्तवि॑षीभि॒रिन्द्र॑ः।**

**दृ॒ळहान्यौ॑भ्नादु॒शमा॑नः ओजोऽवा॑भिनत्क॒कुभ॒ः पर्व॑तानाम्॥ ४॥**

**अक्षो॑दयत्। शव॑सा। क्षाम॑। बु॒ध्नम्। वाः। न। वात॑ः। तवि॑षीभिः। इन्द्र॑ः। दृ॒ळहानि॑। औ॒भ्ना॒त्। उ॒शमा॑नः। ओज॑ः। अव॑। अ॒भि॒न॒त्। क॒कुभ॑ः। पर्व॑तानाम्॥ ४॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**अक्षोदयत्**) सञ्चूर्णयति (**शवसा**) बलेन (**क्षाम**) क्षान्तम् (**बुध्नम्**) अन्तरिक्षम् (**वाः**) उदकम् (**न**) इव (**वातः**) वायुः (**तविषीभिः**) बलयुक्ताभिस्सेनाभिः (**इन्द्रः**) दुष्टानां विदारकः (**दृळ्हानि**) पुष्टानि (**औभ्नात्**) मृद्नाति (**उशमानः**) कामयमानः (**ओजः**) पराक्रमम् (**अव**) (**अभिनत्**) भिनत्ति (**ककुभः**) दिशाः (**पर्वतानाम्**) मेघानाम्॥४॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यस्तविषीभिस्सहेन्द्रश्शवसा वातः क्षाम बुध्नं वार्ण दृळ्हानि शत्रुसैन्यान्यक्षोदयदोज उशमान औभ्नात् पर्वतानां शिखराणीव ककुभः शत्रूनवाभिनत् तमेव स्वकीयं राजानङ्कुरुत॥४॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। यथा वायुरग्निना सूक्ष्मीकृतञ्जलमन्तरिक्षन्नीत्वा वर्षयित्वा जगदानन्दयति तथैव ससामग्रीविद्यासेनो राजा दुष्टान् सूक्ष्मीकृत्य दण्डोपदेशाभ्यां दुष्टान् भित्त्वा सज्जनान् सम्पाद्य प्रजाः सततं सुखयेत्॥४॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो (**तविषीभिः**) बल से युक्त सेनाओं के साथ (**इन्द्रः**) दुष्ट पुरुषों का नाश करने वाला (**शवसा**) बल से (**वातः**) वायु (**क्षाम**) सहनयुक्त (**बुध्नम्**) अन्तरिक्ष और (**वाः**) उदक को जैसे (**न**) वैसे (**दृळ्हानि**) पुष्ट शत्रुसैन्य-दलों को (**अक्षोदयत्**) सञ्चूर्णित करता है तथा (**ओजः**) पराक्रम की (**उशमानः**) कामना करता हुआ (**औभ्नात्**) मृदुता करता है (**पर्वतानाम्**) मेघों के शिखरों के सदृश (**ककुभः**) दिशाओं और शत्रुओं को (**अव, अभिनत्**) तोड़ता है, उसीको अपना राजा करो॥४॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जैसे वायु अग्नि से सूक्ष्म किये हुए जल को अन्तरिक्ष में पहुँचा और वर्षा कर संसार को आनन्द देता है, वैसे ही सामग्री, विद्या और सेना के सहित राजा दुष्टों को न्यून करके दण्ड और उपदेश से दुष्टों का नाश कर और सज्जनों को सिद्ध करके प्रजाओं को निरन्तर सुख दीजिये॥४॥

**अथ सेनापतिगुणानाह॥**

अब सेनापति के गुणों को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अभि प्र दद्रुर्जनयो न गर्भं रथाइव प्र ययुः साकमद्रयः।**

**अतर्पयो विसृत उब्ज ऊर्मीन्त्वं वृताँ अरिणा इन्द्र सिन्धून्॥५॥१॥**

**अभि। प्र। दद्रुः। जनयः। न। गर्भम्। रथाःऽइव। प्र। ययुः। साकम्। अद्रयः। अतर्पयः। विऽसृतः। उब्जः। ऊर्मीन्। त्वम्। वृतान्। अरिणाः। इन्द्र। सिन्धून्॥५॥**

**पदार्थः**-(**अभि**) आभिमुख्ये (**प्र**) (**दद्रुः**) गच्छन्ति प्राप्नुवन्ति (**जनयः**) जनित्र्यो भार्य्याः (**न**) इव (**गर्भम्**) (**रथाइव**) (**प्र**) (**ययुः**) प्रयान्ति (**साकम्**) सह (**अद्रयः**) मेघाः (**अतर्पयः**) तर्पय (**विसृतः**) ये विशेषेण सरन्ति तान् (**उब्जः**) हन्याः (**उर्म्मीन्**) सतरङ्गान् (**त्वम्**) (**वृतान्**) स्वीकृतान् (**अरिणाः**) हिनस्ति (**इन्द्र**) शत्रुविदारक (**सिन्धून्**) नदीः॥५॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे इन्द्र! येऽद्रयो जनयो न गर्भम्प्राभिदद्रू रथा इव साकं प्रययुर्यथा तान् विसृत ऊर्म्मीन् सिन्धूंन्त्सूर्य्य उब्जोऽरिणास्तथा त्वं वृतानतर्पयस्तव भृत्या गच्छन्तु भार्य्या गर्भन्धरतु॥५॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यस्य राज्ञो मेघा इवोच्छ्रिता रथा इव सह गामिन्यस्सेना गच्छन्ति तस्य सूर्य्यस्येव विजयो भवति॥५॥

**पदार्थः**-हे **(इन्द्र)** शत्रुओं के नाश करने वाले सेनापति! जो **(अद्रयः)** मेघ **(जनयः)** स्त्रियों के **(न)** तुल्य **(गर्भम्)** गर्भ को **(प्र, अभि, दद्रुः)** सब ओर से प्राप्त होते हैं **(रथाइव)** वाहनों के सदृश **(साकम्)** साथ **(प्र, ययुः)** शीघ्र जाते हैं और जैसे उन **(विसृतः)** जो विशेष करके फैलती **(ऊर्म्मीन्)** उन तरङ्गों के सहित **(सिन्धून्)** नदियों का सूर्य्य **(उब्जः)** नाश करे वा **(अरिणाः)** नाश करता है, वैसे **(त्वम्)** आप **(वृतान्)** स्वीकार किये हुओं को **(अतर्पयः)** तृप्त करो और आपके भृत्य जावें और स्त्री गर्भ को धारण करें॥५॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जिस राजा की मेघ के सदृश ऊंची और वाहनों के सदृश साथ चलने वाली सेनायें चलती हैं, उसका सूर्य्य के सदृश विजय होता है॥५॥

**पुना राजगुणानाह॥**

फिर राजगुणों को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**त्वं महीमवनिं विश्वधेनां तुर्वीतये वय्याय क्षरन्तीम्।**

**अरमयो नमसैजदर्णः सुतरणाँ अकृणोरिन्द्र सिन्धून्॥६॥**

**त्वम्। महीम्। अवनिम्। विश्वऽधेनाम्। तुर्वीतये। वय्याय। क्षरन्तीम्। अरमयः। नमसा। एजत्। अर्णः। सुऽतरणान्। अकृणोः। इन्द्र। सिन्धून्॥६॥**

**पदार्थः**-**(त्वम्)** **(महीम्)** पृथिवीम् **(अवनिम्)** रक्षिकाम् **(विश्वधेनाम्)** समग्रवाचम् **(तुर्वीतये)** शत्रूणां हिंसकाय **(वय्याय)** प्राप्तव्याय सुखाय **(क्षरन्तीम्)** प्रापयन्तीम् **(अरमयः)** रमय **(नमसा)** **(एजत्)** कम्पते **(अर्णः)** उदकम् **(सुतरणान्)** सुखं तरणं येषान्तान् **(अकृणोः)** कुर्याः **(इन्द्र)** राजन्! **(सिन्धून्)** नदान्॥६॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! त्वं तुर्वीतये वय्याय विश्वधेनां क्षरन्तीमवनिम्महीम्प्राप्याऽस्मान्नमसाऽरमयो यत्राऽर्ण एजत् तान् सिन्धून्त्सुतरणानकृणोः॥६॥

**भावार्थः**-हे राजन्! भवान् यदि राज्यम्प्राप्य स्वयमेवाऽऽनन्द्याऽस्मान्नाऽऽनन्दयेत्तर्हि तवाऽऽनन्दः क्षिपन्नश्येद्भवान् सर्वेषां सुखाय नदीनदतडागसमुद्रादीनान्तरणाय नौकादीन्निर्माय धनाढ्यान् सततं सम्पादयतु॥६॥

**पदार्थः**-हे **(इन्द्र)** राजन्! **(त्वम्)** आप **(तुर्वीतये)** शत्रुओं के नाश करने वाले के और **(वय्याय)** प्राप्त होने योग्य सुख के लिये **(विश्वधेनाम्)** सम्पूर्ण वाणी जिसके लिये उस **(क्षरन्तीम्)** प्राप्त कराती हुई

**(अवनिम्)** रक्षा करने वाली **(महीम्)** पृथिवी को प्राप्त होकर हम लोगों को **(नमसा)** अन्न आदि से **(अरमयः)** रमाओ और जिनमें **(अर्णः)** जल **(एजत्)** कम्पता है, उन **(सिन्धून्)** नदों को **(सुतरणान्)** सुखपूर्वक तरना जिनका ऐसे **(अकृणोः)** करो॥६॥

**भावार्थः**-हे राजन्! आप जो राज्य को प्राप्त हो, आप ही आनन्दित हो हम लोगों को नहीं आनन्द देवें तो आपका आनन्द शीघ्र नष्ट हो और आप सब लोगों के सुख के लिये नदी, नद, तड़ाग और समुद्र आदिकों के पार उतरने के लिये नौका आदि बना के धनाढ्य निरन्तर करिये॥६॥

**अथ प्रजार्थ राजोपदेशविषयमाह॥**

अब प्रजाओं के निमित्त राज-उपदेश को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**प्राग्रुवो नभन्वो३ न वक्वा ध्वस्रा अपिन्वद्युवतीर्ऋतज्ञाः।**

**धन्वान्यज्राँ अपृणक् तृषाणाँ अधोगिन्द्रः स्तर्यो३ दंसुपत्नीः॥७॥**

**प्र। अग्रुवः। नभन्वः। न। वक्वाः। ध्वस्राः। अपिन्वत्। युवतीः। ऋतऽज्ञाः। धन्वानि। अज्रान्। अपृणक्। तृषाणान्। अधोक्। इन्द्रः। स्तर्यः। दम्ऽसुपत्नीः॥७॥**

**पदार्थः**-**(प्र)** **(अग्रुवः)** या अग्रङ्गच्छन्ति ता नद्यः। **अग्रुव इति नदीनामसु पठितम्।** (निघं०१.१३) **(नभन्वः)** अरीणां हिंसका वीराः **(न)** **(वक्वाः)** वक्ताः **(ध्वस्राः)** ध्वंसिकाः **(अपिन्वत्)** सेवेत सिञ्चेत वा **(युवतीः)** प्राप्तयौवनाः स्त्रियः **(ऋतज्ञाः)** या ऋतञ्जानन्ति ताः **(धन्वानि)** स्थलप्रदेशान् **(अज्रान्)** येऽजन्ति नित्यङ्गच्छन्ति तान् **(अपृणत्)** तर्पयेत् **(तृषाणान्)** पिपासितान् **(अधोक्)** प्रायात् **(इन्द्रः)** **(स्तर्यः)** आच्छादिकाः **(दंसुपत्नीः)** दंसूनां कर्मकर्त्तॄणाम्पत्न्यः॥७॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! य इन्द्रो वक्वा ध्वस्रा नभन्वोऽग्रुवो न ऋतज्ञा युवतीः प्रापिन्वद् धन्वान्यज्रान् तृषाणानपृणग् याः स्तर्य्यो दंसुपत्नीः स्युस्ता नाधोक् स एव युष्माकं राजा भवतु॥७॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। यस्य राज्ञो नदीवत् शत्रुहिंसिका अन्नपानादितृप्ताः स्वविवराच्छादिकाः पतिव्रताः स्त्रिय इव राजभक्ताः सेनाः स्युस्स एव विजयम्प्राप्तुमर्हेत्॥७॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो **(इन्द्रः)** राजा **(वक्वाः)** टेढ़ी **(ध्वस्राः)** विध्वंस करने वाली सेनाओं को और **(नभन्वः)** शत्रुओं के नाश करनेवाले वीर पुरुष जैसे **(अग्रुवः)** आगे चलनेवाली नदियों को **(न)** वैसे **(ऋतज्ञाः)** सत्य को जानने वाली **(युवतीः)** युवती स्त्रियों को **(प्र, अपिन्वत्)** अच्छे प्रकार सेवे वा सींचे **(धन्वानि)** और स्थलप्रदेशों को अर्थात् जहाँ-तहाँ मार्गस्थानों को **(अज्रान्)** तथा नित्य चलनेवाले **(तृषाणान्)** पियासे मनुष्यादि प्राणियों को **(अपृणक्)** तृप्त करे वा जो **(स्तर्य्यः)** आच्छादन करनेवाली **(दंसुपत्नीः)** कर्म्म करनेवालों की स्त्रियाँ हों, उनके समान **(अधोक्)** पूर्ण करे अर्थात् उनके समान परिपूर्ण सेना रक्खे, वही आप लोगों का राजा होवे॥७॥



www.9009.co.in

**भावार्थ:**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जिस राजा की नदी के सदृश और शत्रुओं के नाश करनेवाली, अन्न और पान आदि से तृप्त और अपने विवर के ढांपने वाली पतिव्रता स्त्रियों के सदृश राजभक्त सेना होवे, वही विजय प्राप्त होने योग्य है॥७॥

**पुना राज्यविषयमाह॥**

फिर राज्यविषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**पूर्वीरुषसः शरदश्च गूर्ता वृत्रं जघन्वाँ असृजद्वि सिन्धून्।**

**परिष्ठिता अतृणद्बद्बधानाः सीरा इन्द्रः स्रवितवे पृथिव्या॥८॥**

**पूर्वीः। उषसः। शरदः। च। गूर्ताः। वृत्रम्। जघन्वान्। असृजत्। वि। सिन्धून्। परिऽस्थिताः। अतृणत्। बद्बधानाः। सीराः। इन्द्रः। स्रवितवे। पृथिव्या॥८॥**

**पदार्थ:**-(**पूर्वीः**) पूर्वतनीः (**उषसः**) प्रभातवेलाः (**शरदः**) शरदृतून् (**च**) हेमन्तादीन् (**गूर्त्ताः**) गच्छन्त्यो हिंसिकाः (**वृत्रम्**) मेघम् (**जघन्वान्**) हतवान् (**असृजत्**) सृजति (**वि**) विविधान् (**सिन्धून्**) नद्यादीन् (**परिष्ठिताः**) परितः सर्वतः स्थिताः (**अतृणत्**) हिनस्ति (**बद्बधानाः**) वधङ्कुर्वाणाः (**सीराः**) याः सरन्ति ता नद्यः। **सीरा इति नदीनामसु पठितम्।** (निघं०१.१३) (**इन्द्रः**) सूर्य्यः (**स्रवितवे**) स्रवितुं चलितुम् (**पृथिव्या**) पृथिव्या सह॥८॥

**अन्वयः**-हे राजन्! यथेन्द्रः पूर्वीर्गूर्त्ता उषसो वृत्रं शरदश्च जघन्वान् सन् सिन्धून् व्यसृजत् परिष्ठिता बद्बधानाः सीराः स्रवितवे पृथिव्या सहाऽतृणत्तथैव नीतिं सेनां सृष्ट्वा विजयं सृज युद्धाय चलन्त्या सुशिक्षितया सेनया शत्रून् हिन्धि॥८॥

**भावार्थ:**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यो राजा प्रातःसमयवच्छुभान्नीतिं नद्योघवत् सेनां निर्मिमीते स एव पृथिवीराज्यमर्हति॥८॥

**पदार्थ:**-हे राजन्! जैसे (**इन्द्रः**) सूर्य्य (**पूर्वीः**) पुरातन (**गूर्त्ताः**) चलती हुई हिंसा करने वाली (**उषसः**) प्रभातवेला (**वृत्रम्**) मेघ को (**शरदः**) शरद् ऋतुओं (**च**) और हेमन्तादि ऋतुओं को (**जघन्वान्**) नष्ट किये हुए (**सिन्धून्**) नद्यादिकों को (**वि**) अनेक प्रकार (**असृजत्**) उत्पन्न करता है (**परिष्ठिताः**) तथा सब ओर से स्थित (**बद्बधानाः**) बदबदातीं तटों का नाश करती हुईं (**सीराः**) जो बहने वाली नदियाँ उनको (**स्रवितवे**) चलने को (**पृथिव्या**) पृथिवी के साथ (**अतृणत्**) नाश करता है, वैसे ही नीति और सेना को उत्पन्न करके विजय सिद्ध करो और युद्ध के लिये चलती हुई उत्तम प्रकार शिक्षित सेना से शत्रुओं का नाश करो॥८॥

**भावार्थ:**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो राजा प्रातःकाल के सदृश उत्तम नीति और नदी के समूह के सदृश सेना को निर्मित करता है, वही पृथिवी के राज्य के योग्य है॥८॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**



www.9009.co.in

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**व॒म्रीभि॑: पु॒त्रम॒ग्रुवो॑ अदा॒नन्नि॒वेश॑नाद्धरिव॒ आ ज॑भर्थ।**

**व्य१॒॑न्धो अ॑ख्य॒दहि॑माददा॒नो निर्भू॑दुख॒च्छित्सम॑रन्त॒ पर्व॑॥९॥**

**व॒म्रीभि॑:। पु॒त्रम्। अ॒ग्रुव॑:। अ॒दा॒नम्। नि॒ऽवेश॑नात्। ह॒रि॒ऽव॒:। आ। ज॒भ॒र्थ॒। वि। अ॒न्धः। अ॒ख्य॒त्। अहि॑म्। आ॒ऽद॒दा॒नः। निः। भू॒त्। उ॒ख॒ऽछित्। सम्। अ॒र॒न्त॒। पर्व॑॥९॥**

**पदार्थः**-**(व॒म्रीभिः)** उद्गीर्णाभिः **(पु॒त्रम्)** **(अ॒ग्रुवः)** नद्यः **(अदानम्)** दानस्याऽकर्त्तारम् **(निवेशनात्)** स्वस्थानात् **(हरिवः)** प्रशस्ताऽश्वयुक्त **(आ)** **(जभर्थ)** हरसि **(वि)** **(अन्धः)** अन्धकारकृत् **(अख्यत्)** ख्याति **(अहिम्)** मेघम् **(आददानः)** गृह्णन् **(निः)** **(भूत्)** भवति **(उखच्छित्)** य उखङ्गमनच्छिनत्ति सः **(सम्)** **(अरन्त)** रमते **(पर्व)** पालकम्॥९॥

**अन्वयः**-हे हरिवो राजन्! यथा निवेशनाद् वम्रीभिरग्रुवस्तटादिकं हरन्ति तथैवाऽदानं पुत्रमाजभर्थ। यथान्धोऽहिमाददानो व्यख्यदुखच्छिन्निर्भूत् पर्व समरन्त तथैवाऽदाता गतिं लभते॥९॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे राजन्त्स्वस्य पुत्रोऽपि कुलक्षणश्चेन्निरधिकारी कर्त्तव्यो यथा वर्षासु नद्यो वर्धन्ते तथैव प्रजा वर्द्धनीयाः॥९॥

**पदार्थः**-हे **(हरिवः)** प्रशंसित घोड़ों से युक्त राजन्! जैसे **(निवेशनात्)** अपने स्थान से **(वम्रीभिः)** उगली हुई पहाड़ियों से **(अग्रुवः)** नदियाँ तट आदि का हरण करती हैं, वैसे ही **(अदानम्)** दान नहीं करने वाले **(पुत्रम्)** पुत्र को **(आ, जभर्थ)** हरते हो और जैसे **(अन्धः)** अन्धकार करने वाले **(अहिम्)** मेघ को **(आददानः)** ग्रहण करता हुआ **(वि, अख्यत्)** विख्यात करता है और **(उखच्छित्)** गमन का काटने अर्थात् मार्ग छिन्न-भिन्न करने वाला **(निः, भूत्)** निरन्तर होता **(पर्व)** और पालने वाले को **(सम् अरन्त)** अच्छे प्रकार रमाता है, वैसे ही नहीं दान करने वाला गति पाता है॥९॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे राजन्! अपना पुत्र भी बुरे लक्षणों वाला हो तो नहीं अधिकार देने योग्य और वर्षाकालों में नदियाँ बढ़ती हैं, वैसे ही प्रजाओं की वृद्धि करनी चाहिये॥९॥

**अथ विद्वद्गुणानाह॥**

अब विद्वान् के गुणों को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**प्र ते॒ पूर्वा॑णि॒ कर॑णानि विप्राविद्वाँ॑ आ॑ह वि॒दुषे॒ करां॑सि।**

**यथा॑यथा॒ वृष्ण्या॑नि॒ स्वगू॑र्तापां॑सि राज॒न्नर्या॒वि॑वेषीः॥१०॥**

**प्र। ते॒। पूर्वा॑णि। कर॑णानि। वि॒प्र॒। आ॒ऽवि॒द्वान्। आ॒ह॒। वि॒दुषे॑। करां॑सि। यथा॑ऽयथा। वृष्ण्या॑नि। स्वऽगू॑र्ता। अपां॑सि। रा॒ज॒न्। नर्या॑। अवि॑वेषीः॥१०॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**प्र**) (**ते**) तव (**पूर्वाणि**) सनातनानि (**करणानि**) क्रियन्ते यैस्तानि (**विप्र**) मेधाविन् (**आविद्वान्**) यः समन्तात् सर्वं वेत्ति (**आह**) ब्रूते (**विदुषे**) (**करांसि**) करणीयानि कर्म्माणि (**यथायथा**) (**वृष्ण्यानि**) बलकराणि (**स्वगूर्त्ता**) स्वेन प्राप्तानि (**अपांसि**) कर्म्माणि (**राजन्**) (**नर्य्या**) नृषु हितानि (**अविवेषीः**) विशेषेण प्राप्नुयाः॥१०॥

**अन्वयः**-हे विप्र राजन् विदुषे! ते यथायथा पूर्वाणि करणानि करांसि वृष्ण्यानि स्वगूर्त्ता नर्य्याऽपांस्याऽऽविद्वान् प्राह तानि त्वमविवेषीः॥१०॥

**भावार्थः**-हे विद्वन्! राजँस्त्वं सदाप्तशासने प्रवर्त्तस्व यद्यत्ते त उपदिशेयुस्तथैव कुरुष्व॥१०॥

**पदार्थः**-हे (**विप्र**) बुद्धिमान् (**राजन्**) राजन्! (**विदुषे**) विद्वान्! (**ते**) आपके लिये (**यथायथा**) जैसे-जैसे (**पूर्वाणि**) अनादि काल से सिद्ध (**करणानि**) जिनसे करें वह कार्य्यसाधन (**करांसि**) और करने योग्य कर्म्म (**वृष्ण्यानि**) बलकारक (**स्वगूर्त्ता**) अपने से प्राप्त (**नर्य्या**) मनुष्यों में हित करने वाले (**अपांसि**) कर्म्मों को (**आविद्वान्**) सब प्रकार से समस्त जानता हुआ (**प्र, आह**) अच्छे कहता है, उनको आप (**अविवेषीः**) विशेष करके प्राप्त हूजिये॥१०॥

**भावार्थः**-हे विद्वन् राजन्! आप सदा श्रेष्ठ पुरुषों की शिक्षा में प्रवृत्त हूजिये और जो-जो आपके लिये वे उपदेश देवें, वैसे ही करिये॥१०॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**नू ष्टुत इन्द्र नू गृणान इषं जरित्रे नद्यो३ न पीपेः।**

**अकारि ते हरिवो ब्रह्म नव्यं धिया स्याम रथ्यः सदासाः॥११॥२॥**

**नु। स्तुतः। इन्द्र। नु। गृणानः। इषम्। जरित्रे। नद्यः। न। पीपेरिति पीपेः। अकारि। ते। हरिऽवः। ब्रह्म। नव्यम्। धिया। स्याम। रथ्यः। सदाऽसाः॥११॥**

**पदार्थः**-(**नु**) सद्यः (**स्तुतः**) प्राप्तप्रशंसः (**इन्द्र**) प्रशंसनीयकर्म्मन् (**नु**) (**गृणानः**) सत्यं स्तुवन् (**इषम्**) अन्नं विज्ञानं वा (**जरित्रे**) स्तावकाय (**नद्यः**) सरितः (**न**) इव (**पीपेः**) वर्धय (**अकारि**) क्रियते (**ते**) तव (**हरिवः**) प्रशस्तपुरुषयुक्त (**ब्रह्म**) महद्धनम् (**नव्यम्**) नूतनम् (**धिया**) प्रज्ञया कर्म्मणा वा (**स्याम**) भवेम (**रथ्यः**) रमणीयबहुरथादियुक्ताः (**सदासाः**) ससेवकाः॥११॥

**अन्वयः**-हे हरिव इन्द्र! येन विदुषा ते नव्यम्ब्रह्माऽकारि तस्मै जरित्रे स्तुतस्संस्त्वन्नद्यो न नु पीपेः। गृणानः सन्निषन्नु देहि एवम्भूतस्य रथ्यः सदासा वयं धियाऽनुकूलाः स्याम॥११॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। हे राजन्! ये प्रशंसितानि कर्म्माणि कुर्य्युस्तांस्त्वं सततं सत्कुर्य्यास्ते च भवदनुकूलास्सन्तः सर्वे यूयं धर्मार्थकामसाधका भवतेति॥११॥

अथेन्द्रमेघसेनासेनापतिराजप्रजाविद्वद्गुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥



www.9009.co.in

**इत्येकोनविंशतितमं सूक्तं द्वितीयो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे **(हरिवः)** उत्तम पुरुषों से युक्त **(इन्द्र)** प्रशंसा करने योग्य कर्म्म करनेवाले! जिस विद्वान् से **(ते)** आपका **(नव्यम्)** नवीन **(ब्रह्म)** बड़ा धन **(अकारि)** किया जाता है उस **(जरित्रे)** स्तुति करने वाले के लिये **(स्तुतः)** प्रशंसा को प्राप्त हुए आप **(नद्यः)** नदियों के **(न)** सदृश **(नु)** शीघ्र **(पीपेः)** वृद्धि दिलाइये और **(गृणानः)** सत्य की प्रशंसा करते हुए **(इषम्)** अन्न वा विज्ञान को **(नु)** शीघ्र दीजिये, इस प्रकार के हुए सम्बन्ध में **(रथ्यः)** रमण करने योग्य बहुत रथादिकों से युक्त **(सदासाः)** सेवकों के सहित हम लोग **(धिया)** बुद्धि वा कर्म्म से अनुकूल **(स्याम)** होवें॥११॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे राजन्! जो प्रशंसित कर्म्म करें, उनका आप निरन्तर सत्कार करिये और वे आपके अनुकूल हुए और तुम लोग सब धर्म्म, अर्थ और काम के साधक हूजिये॥११॥

इस सूक्त में इन्द्र, मेघ, सेना, सेनापति, राजा, प्रजा और विद्वान् के गुणवर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह उन्नीसवां सूक्त और द्वितीय वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

**अथैकादशर्चस्य विंशतितमस्य सूक्तस्य वामदेव ऋषिः। इन्द्रो देवता। १, ३, ६ निचृत्त्रिष्टुप्। ४, ५ विराट्त्रिष्टुप्। ८, १० त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः। २ पङ्क्तिः। ७, ९ स्वराट् पङ्क्तिः। ११ निचृत्पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः॥**

**अथेन्द्रपदवाच्यराजगुणानाह॥**

अब ग्यारह ऋचावाले बीसवें सूक्त का प्रारम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में इन्द्रपदवाच्य राजगुणों को कहते हैं॥

**आ न इन्द्रो दूरादा न आसादभिष्टिकृदवसे यासदुग्रः।**

**ओजिष्ठेभिर्नृपतिर्वज्रबाहुः संगे समत्सु तुर्वणिः पृतन्यून्॥ १॥**

**आ। नः। इन्द्रः। दूरात्। आ। नः। आसात्। अभिष्टिऽकृत्। अवसे। यासत्। उग्रः। ओजिष्ठेभिः। नृऽपतिः। वज्रऽबाहुः। सम्ऽगे। समत्ऽसु। तुर्वणिः। पृतन्यून्॥ १॥**

**पदार्थः**-(**आ**) समन्तात् (**नः**) अस्मान् (**इन्द्रः**) परमैश्वर्य्यवान् राजा (**दूरात्**) (**आ**) (**नः**) अस्माकमस्मभ्यं वा (**आसात्**) समीपात् (**अभिष्टिकृत्**) अभीष्टसुखकारी (**अवसे**) रक्षणाद्याय (**यासत्**) प्राप्नुयात् (**उग्रः**) तेजस्वी (**ओजिष्ठेभिः**) अतिशयेन बलादिगुणयुक्तैर्नरोत्तमसैन्यैः (**नृपतिः**) नृणां पालकः (**वज्रबाहुः**) वज्रः शस्त्रविशेषो बाहौ यस्य सः (**सङ्गे**) सह (**समत्सु**) सङ्ग्रामेषु (**तुर्वणिः**) शीघ्रकारी (**पृतन्यून्**) आत्मनः पृतनां सेनामिच्छून्॥ १॥

**अन्वयः**-हे राजप्रजाजना! योऽभिष्टिकृद्वज्रबाहुरुग्रो नृपतिस्तुर्वणिरिन्द्र ओजिष्ठेभिस्सह नोऽवसे दूरादासाद्वाऽऽयासत्समत्सु पृतन्यून्नोऽस्मान् सङ्ग आयासत् सोऽस्माभिस्सदैव रक्षणीयः सत्कर्त्तव्यश्च॥ १॥

**भावार्थः**-हे मनुष्याः! सर्वतोऽभिरक्षितारम्महाबलिष्ठं विद्याबलयुक्तं सभ्यसेनं संग्रामे विजेतारं राजानं स्वीकृत्य सर्वदाऽऽनन्दन्तु॥ १॥

**पदार्थः**-हे राजा और प्रजाजनो! जो (**अभिष्टिकृत्**) अपेक्षित सुख करने वाला (**वज्रबाहुः**) शस्त्र विशेष जिसकी बाहु में विद्यमान (**उग्रः**) जो तेजस्वी (**नृपतिः**) मनुष्यों का पालन करने वाला (**तुर्वणिः**) शीघ्रकारी (**इन्द्रः**) अत्यन्त ऐश्वर्यवान् राजा (**ओजिष्ठेभिः**) अत्यन्त बल आदि गुणों से युक्त मनुष्यों में उत्तम सेनाजनों के साथ (**नः**) हम लोगों की वा हम लोगों के अर्थ (**अवसे**) रक्षा आदि के लिये (**दूरात्**) दूर और (**आसात्**) समीप से वा (**आ**) सब प्रकार सेना (**यासत्**) प्राप्त होवे और (**समत्सु**) सङ्ग्रामों में (**पृतन्यून्**) अपनी सेना की इच्छा करने वाले (**नः**) हम लोगों को (**सङ्गे**) साथ (**आ**) प्राप्त होवे, वह हम लोगों से सदा ही रक्षा करने और सत्कार करने योग्य है॥ १॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! सब प्रकार से रक्षा करने वाले, बड़े बलिष्ठ, विद्या और बलयुक्त श्रेष्ठ सेनाजनों के सहित वर्त्तमान और सङ्ग्राम में जीतनेवाले राजा को स्वीकार करके सब काल में आनन्द करो॥ १॥



www.9009.co.in

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**आ न इन्द्रो हरिभिर्यात्वच्छार्वाचीनोऽवसे राधसे च।**

**तिष्ठाति वज्री मघवा विरप्शीमं यज्ञमनु नो वाजसातौ॥ २॥**

**आ। नः। इन्द्रः। हरिऽभिः। यातु। अच्छ। अर्वाचीनः। अवसे। राधसे। च। तिष्ठाति। वज्री। मघऽवा। विऽरप्शी। इमम्। यज्ञम्। अनु। नः। वाजऽसातौ॥ २॥**

**पदार्थः**-(**आ**) (**नः**) अस्मानस्माकं वा (**इन्द्रः**) परमैश्वर्य्यवान् राजा (**हरिभिः**) प्रशस्तैर्नरैस्सह (**यातु**) आयातु प्राप्नोतु (**अच्छ**) (**अर्वाचीनः**) इदानीन्तनः (**अवसे**) अन्नाद्याय। **अव इत्यन्ननामसु पठितम्।** (निघं० २.७) (**राधसे**) धनाय (**च**) (**तिष्ठाति**) तिष्ठेत् (**वज्री**) शस्त्राऽस्त्रवित् (**मघवा**) न्यायार्जितधनत्वात् पूजनीयः (**विरप्शी**) महान् (**इमम्**) (**यज्ञम्**) प्रजापालनाख्यम् (**अनु**) (**नः**) अस्माकम् (**वाजसातौ**) संग्रामे॥ २॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! योऽर्वाचीनो मघवा वज्री विरप्शीन्द्रो हरिभिस्सह नोऽवसे राधसे चाऽच्छाऽऽयात्विमं यज्ञन्नो वाजसातौ चानुतिष्ठाति तमेव राजानं स्वीकुरुत॥ २॥

**भावार्थः**-यो राजोत्तमैस्सभ्यैः प्रजासुखायाऽन्नधने बहुले कृत्वा संग्रामे विजयी न्यायकारी भवेत् स खलु राजा भवितुमर्हेत्॥ २॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो (**अर्वाचीनः**) इस काल में उत्पन्न (**मघवा**) न्याय से इकट्ठे किये हुए धन के होने से आदर करने योग्य (**वज्री**) शस्त्रों और अस्त्रों का जानने वाले (**विरप्शी**) बड़ा (**इन्द्रः**) अत्यन्त ऐश्वर्य्य वाला राजा (**हरिभिः**) श्रेष्ठ मनुष्यों के साथ (**नः**) हम लोगों को वा हम लोगों के (**अवसे**) अन्न आदि के (**च**) और (**राधसे**) धन के लिये (**अच्छ**) उत्तम प्रकार (**आ, यातु**) प्राप्त हो (**इमम्**) इस (**यज्ञम्**) प्रजापालनरूप यज्ञ का (**नः**) हम लोगों के (**वाजसातौ**) सङ्ग्राम में (**अनु, तिष्ठाति**) अनुष्ठान करे, उसी को राजा मानो॥ २॥

**भावार्थः**-जो राजा उत्तम सभा के जनों से प्रजा के सुख के लिये अन्न और धन बहुत करके सङ्ग्राम में जीतने वाला न्यायकारी होवे, वही राजा होने को योग्य होवे॥ २॥

**अथामात्यगुणानाह॥**

अब अमात्य के गुणों को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**इमं यज्ञं त्वमस्माकमिन्द्र पुरो दधत्सनिष्यसि क्रतुं नः।**

**श्वघ्नीव वज्रिन्त्सनये धनानां त्वया वयमर्य आजिं जयेम॥ ३॥**



www.9009.co.in

इमम्। यज्ञम्। त्वम्। अस्माकम्। इन्द्र। पुरः। दधत्। सनिष्यसि। क्रतुम्। नः। श्वघ्नीऽईव। वज्रिन्। सनये। धनानाम्। त्वया। वयम्। अर्यः। आजिम्। जयेम॥ ३॥

**पदार्थः**-(**इमम्**) वर्त्तमानम् (**यज्ञम्**) राजधर्म्मानुष्ठानाख्यम् (**त्वम्**) (**अस्माकम्**) (**इन्द्र**) पुष्कलधनप्रद सेनापते! (**पुरः**) नगराणि (**दधत्**) धरन्त्सन् (**सनिष्यसि**) सम्भजिष्यसि (**क्रतुम्**) प्रज्ञाम् (**नः**) अस्माकम् (**श्वघ्नीव**) वृकीव (**वज्रिन्**) शस्त्राऽस्त्रवित् (**सनये**) संविभागाय (**धनानाम्**) (**त्वया**) (**वयम्**) (**अर्य्यः**) स्वामी (**आजिम्**) सङ्ग्रामम्। **आजिरिति सङ्ग्रामनामसु पठितम्।** (निघं०२.१७) (**जयेम**)॥ ३॥

**अन्वयः**-हे वज्रिन्निन्द्र! यतोऽर्य्यस्त्वमस्माकमिमं यज्ञं पुरश्च दधत् सन्नोऽस्माकं क्रतुं सनिष्यसि तस्मात्त्वया सह वयं धनानां सनये श्वघ्नीवाऽऽजिञ्जयेम॥ ३॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। यत्र राजाऽमात्यानमात्या राजानञ्च हर्षयित्वा सम्भज्य दत्त्वा गृहीत्वा प्रीत्या बलिष्ठाः सन्तो ह्यैश्वर्य्याय यथा वृक्यजां हन्यात्तथा शत्रून् हत्वा विजयेन भूषिता भवन्ति तत्रैव सर्वाणि सुखानि भवन्ति॥ ३॥

**पदार्थः**-हे (**वज्रिन्**) शस्त्र और अस्त्र के प्रयोग जानने और (**इन्द्र**) बहुत धन के देने वाले सेनापति! जिससे कि (**अर्य्यः**) स्वामी (**त्वम्**) आप (**अस्माकम्**) हम लोगों के (**इमम्**) इस वर्त्तमान (**यज्ञम्**) राजधर्म के निर्वाहरूप यज्ञ को और (**पुरः**) नगरों को (**दधत्**) धारण करते हुए (**नः**) हम लोगों की (**क्रतुम्**) बुद्धि का (**सनिष्यसि**) सेवन करोगे इससे (**त्वया**) आपके साथ (**वयम्**) हम लोग (**धनानाम्**) धनों के (**सनये**) सम्यक् विभाग करने के लिये (**श्वघ्नीव**) भेड़िनी के सदृश (**आजिम्**) सङ्ग्राम को (**जयेम**) जीतें॥ ३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जहाँ राजा मन्त्रियों और मन्त्री राजा को प्रसन्न करके और विभाग कर दे और ग्रहण करके प्रीति से बलिष्ठ हुए ही ऐश्वर्य्य के लिये जैसे भेड़िनी बकरी को मारे, वैसे शत्रुओं का नाश करके विजय से भूषित होते हैं, वहीं सम्पूर्ण सुख होते हैं॥ ३॥

**पुना राजगुणानाह॥**

फिर राजगुणों को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**उशन्नु षु णः सुमना उपाके सोमस्य नु सुषुतस्य स्वधावः।**
**पा इन्द्र प्रतिभृतस्य मध्वः समन्धसा ममदः पृष्ठ्येन॥ ४॥**

**उशन्। ऊम् इति। सु। नः। सुऽमनाः। उपाके। सोमस्य। नु। सुऽसुतस्य। स्वधाऽवः। पाः। इन्द्र। प्रतिऽभृतस्य। मध्वः। सम्। अन्धसा। ममदः। पृष्ठ्येन॥ ४॥**

**पदार्थः**-(**उशन्**) कामयमान (उ) (**सु**) (**नः**) अस्माकम् (**सुमनाः**) प्रसन्नचित्तः (**उपाके**) समीपे (**सोमस्य**) ऐश्वर्य्ययुक्तस्य (**नु**) (**सुषुतस्य**) सुष्ठु विद्याविनयाभ्यां निष्पन्नस्य (**स्वधावः**) अन्नाद्यैश्वर्य्ययुक्त



www.9009.co.in

**(पा:)** रक्ष **(इन्द्र)** **(प्रतिभृतस्य)** धृतं धृतं प्रति वर्त्तमानस्य **(मध्व:)** माधुर्य्यादिगुणोपेतस्य **(सम्)** **(अन्धसा)** अन्नाद्येन **(ममद:)** आनन्द **(पृष्ठ्येन)** पृष्ठ्येन पश्चाद्भवेन सुखेन॥४॥

**अन्वय:**-हे उशन् स्वधाव इन्द्र राजंस्त्वं सुमनाः सन्न उपाके सुषुतस्य सोमस्य प्रतिभृतस्य नु सु पाः। मध्वोऽन्धसा पृष्ठ्येनो सम्ममदः॥४॥

**भावार्थ:**-यो राजा प्रेम्णा भृत्यवर्गमैश्वर्य्याऽन्नाद्येन रक्षति स कामनासिद्धिं प्राप्य पुनः सततं मोदते॥४॥

**पदार्थ:**-हे **(उशन्)** कामना करते हुए **(स्वधाव:)** अन्न आदि ऐश्वर्य से युक्त **(इन्द्र)** अत्यन्त ऐश्वर्य्यवान् राजन्! आप **(सुमना:)** प्रसन्न चित्तवाले हुए **(न:)** हम लोगों के **(उपाके)** समीप में **(सुषुतस्य)** उत्तम प्रकार विद्या और विनय से निष्पन्न अर्थात् प्रसिद्ध **(सोमस्य)** ऐश्वर्ययुक्त **(प्रतिभृतस्य)** धारण-धारण किये गये के प्रति वर्त्तमान जन की **(नु)** निश्चय से **(सु, पा:)** अच्छे प्रकार रक्षा कीजिये और **(मध्व:)** माधुर्य्य आदि गुणों से युक्त पदार्थसम्बन्धी **(अन्धसा)** अन्न आदि से **(पृष्ठ्येन, उ)** और पीछे हुए सुख से **(सम्, ममद:)** अच्छे प्रकार आनन्द कीजिये॥४॥

**भावार्थ:**-जो राजा प्रेम से भृत्यजनों के समूह की ऐश्वर्य और अन्न आदि से रक्षा करता है, वह कामना की सिद्धि को प्राप्त होकर फिर निरन्तर आनन्द को प्राप्त होता है॥४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**वि यो ररप्श ऋषिभिर्नवेभिर्वृक्षो न पक्वः सृण्यो न जेता।**

**मर्यो न योषामभि मन्यमानोऽच्छा विवक्मि पुरुहूतमिन्द्रम्॥५॥३॥**

**वि। यः। ररप्शे। ऋषिऽभिः। नवेभिः। वृक्षः। न। पक्वः। सृण्यः। न। जेता। मर्यः। न। योषाम्। अभि। मन्यमानः। अच्छ। विवक्मि। पुरुऽहूतम्। इन्द्रम्॥५॥**

**पदार्थ:**-**(वि)** **(य:)** **(ररप्शे)** स्तूयते। अत्र रभधातोर्लिटि सस्य शः। **(ऋषिभि:)** वेदार्थविद्भिः **(नवेभि:)** नूतनाऽध्ययनैः **(वृक्ष:)** **(न)** इव **(पक्व:)** परिपक्वफलादिः **(सृण्य:)** प्राप्तबलाः सुशिक्षिताः सेनाः **(न)** इव **(जेता)** जेतुं शीलः **(मर्य:)** मनुष्यः **(न)** इव **(योषाम्)** स्त्रियम् **(अभि)** आभिमुख्ये **(मन्यमान:)** जानन् **(अच्छा)** **संहितायामि**ति दीर्घः। **(विवक्मि)** विशेषेणोपदिशामि **(पुरुहूतम्)** बहुभिः स्तुतम् **(इन्द्रम्)** प्रशंसितगुणधरम्॥५॥

**अन्वय:**-हे मनुष्या! यो नवेभिर्ऋषिभिर्वि ररप्शे वृक्षो न पक्वः सृण्यो न जेता मर्य्यो योषां न प्रजामभिमन्यमानोऽस्ति तं पुरुहूतमिन्द्रं यथाऽहमच्छा विवक्मि तथैनं यूयमप्युपदिशत॥५॥

**भावार्थ:**-अत्रोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! ये आप्तेषु प्राप्तप्रशंसो वृक्ष इव दृढोत्साहफल एकाकी सेनावद्विजयमानः पतिव्रता भार्यावत् प्रजाप्रीतो भवेत् तं प्रशंसितं राजानं यूयम्मन्यध्वम्॥५॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(यः)** जो **(नवेभिः)** नवीन अध्ययनकर्त्ता **(ऋषिभिः)** वेदार्थ के जानने वालों से **(वि, ररप्शे)** स्तुति किये जाते हो **(वृक्षः)** वृक्ष के **(न)** सदृश **(पक्वः)** पके हुए फल आदि युक्त **(सृण्यः)** बल को प्राप्त उत्तम प्रकार शिक्षित सेना के **(न)** सदृश **(जेता)** जीतने वाला **(मर्य्यः)** मनुष्य **(योषाम्)** स्त्री के **(न)** तुल्य प्रजा को **(अभि, मन्यमानः)** प्रत्यक्ष जानता हुआ वर्तमान है, उस **(पुरुहूतम्)** बहुतों से स्तुति किये गये **(इन्द्रम्)** प्रशंसित गुणों के धारण करने वाले को जैसे मैं **(अच्छा)** उत्तम प्रकार **(विवक्मि)** विशेष करके उपदेश करता हूँ, वैसे इसको आप लोग भी उपदेश दीजिये॥५॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जो यथार्थवक्ता जनों में प्रशंसा को प्राप्त, वृक्ष के सदृश दृढ़ उत्साहरूप फलवान्, अकेला सेना के सदृश जीतने वाला, पतिव्रता स्त्री के सदृश प्रजा में प्रसन्न होवे, उस प्रशंसित को राजा आप लोग मानो॥५॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**गिरिर्न यः स्वतवाँ ऋष्व इन्द्रः सनादेव सहसे जात उग्रः।**

**आदर्ता वज्रं स्थविरं न भीम उद्नेव कोशं वसुना न्यृष्टम्॥६॥**

**गिरिः। न। यः। स्वऽतवान्। ऋष्वः। इन्द्रः। सनात्। एव। सहसे। जातः। उग्रः। आऽदर्ता। वज्रम्। स्थविरम्। न। भीमः। उद्नाऽइव। कोशम्। वसुना। निऽऋष्टम्॥६॥**

**पदार्थः**-**(गिरिः)** मेघः **(न)** इव **(यः)** **(स्वतवान्)** स्वैर्गुणैर्वृद्धः **(ऋष्वः)** महान् **(इन्द्रः)** सूर्य इव प्रतापी **(सनात्)** सदा **(एव)** **(सहसे)** बलाय **(जातः)** प्रसिद्धः **(उग्रः)** तीव्रस्वभावः **(आदर्त्ता)** समन्ताच्छत्रूणां विदारकः **(वज्रम्)** विद्युद्रूपम् **(स्थविरम्)** स्थूलम् **(न)** इव **(भीमः)** भयङ्करः **(उद्नेव)** जलानीव **(कोशम्)** मेघम् **(वसुना)** धनेन **(न्यृष्टम्)** नितरां प्राप्तम्॥६॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यो गिरिर्न स्वतवानृष्वः सनादेव सहसे जात उग्र इन्द्रः स्थविरं वज्रं नादर्त्ता भीमः कोशमुद्नेव वसुना न्यृष्टं करोति स एव विजयी भवितुमर्हति॥६॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यो मेघ इव महान् प्रजासुखकरः सनातनधर्म्मसेवी विद्युद्वद्भयङ्करोऽक्षयकोशः शत्रुविनाशको बलवान् भवेत् स सर्वस्य राजा भवितुमर्हेदिति विजानीत॥६॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(यः)** जो **(गिरिः)** मेघ के **(न)** सदृश **(स्वतवान्)** अपने गुणों से वृद्ध **(ऋष्वः)** बड़ा **(सनात्)** सब काल में **(एव)** ही **(सहसे)** बल के लिये **(जातः)** प्रसिद्ध **(उग्रः)** तीव्र स्वभावयुक्त **(इन्द्रः)** सूर्य्य के समान प्रतापी **(स्थविरम्)** स्थूल **(वज्रम्)** बिजुलीरूप के **(न)** समान **(आदर्त्ता)** सब प्रकार से शत्रुओं का नाश करने वाला **(भीमः)** भयङ्कर और **(कोशम्)** मेघ को **(उद्नेव)** जलों के सदृश **(वसुना)** धन से **(न्यृष्टम्)** अत्यन्त प्राप्त करता है, वही विजयी होने के योग्य होता है॥६॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जो मेघ के सदृश बड़ा प्रजाओं का सुख करने और सनातनधर्म्म का सेवन करनेवाला, बिजुली के सदृश भयंकर, नहीं नाश होने वाले खजाने से युक्त, शत्रुओं का नाश करने वाला और बलवान् होवे, वह सब का राजा होने को योग्य है, ऐसा जानिये॥६॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**न यस्य॑ व॒र्ता ज॒नुषा॒ न्वस्ति॒ न राध॑स आमरी॒ता म॒घस्य॑।**

**उ॒द्वा॒वृ॒षा॒णस्त॑विषीव उग्रा॒स्मभ्यं॑ दद्धि पुरुहूत रा॒यः॥७॥**

**न। यस्य॑। व॒र्ता। ज॒नुषा॑। नु। अस्ति॑। न। राध॑सः। आ॒ऽम॒री॒ता। म॒घस्य॑। उ॒त्ऽव॒वृ॒षा॒णः। त॒वि॒षी॒ऽव॒ः। उ॒ग्र। अ॒स्मभ्य॑म्। द॒द्धि। पु॒रु॒ऽहू॒त। रा॒यः॥७॥**

**पदार्थः**-(**न**) निषेधे (**यस्य**) (**वर्त्ता**) निवारकः (**जनुषा**) जन्मना (**नु**) (**अस्ति**) (**न**) निषेधे (**राधसः**) धनाऽन्नस्य (**आमरीता**) समन्ताद्विनाशकः (**मघस्य**) धनस्य (**उद्वावृषाणः**) उत्कृष्टतया भृशम्बलकरस्य (**तविषीवः**) बलवत्सेनावन् (**उग्र**) प्रतापिन् (**अस्मभ्यम्**) (**दद्धि**) देहि (**पुरुहूत**) बहूनामाह्वयक (**रायः**) धनानि॥७॥

**अन्वयः**-हे पुरुहूतोग्र राजन्! यस्य जनुषा वर्त्ता कोऽपि नास्ति यस्य मघस्य राधस आमरीता न विद्यते। उद्वावृषाणस्तविषीवो विजयी स त्वमस्मभ्यं रायो नु दद्धि॥७॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यस्योत्तमकुले जन्म यस्य कुलं प्रशंसितं कर्म्म कृतवद् यस्य संग्रामे विचारे वा रोधको न विद्यते स एव सुखदाता राजाऽस्माकम्भवेदिति वयमिच्छेम॥७॥

**पदार्थः**-हे (**पुरुहूत**) बहुतों के पुकारने वाले (**उग्र**) प्रतापी राजन् (**यस्य**) जिसका (**जनुषा**) जन्म से (**वर्त्ता**) निवारण करनेवाला कोई भी (**न**) नहीं (**अस्ति**) है जिसके (**मघस्य**) धन और (**राधसः**) धनरूप अन्न का (**आमरीता**) सब प्रकार नाश करनेवाला (**न**) नहीं विद्यमान है। हे (**उद्वावृषाणः**) उत्तमता से अत्यन्त बल करने वाले की (**तविषीवः**) बलयुक्त सेनावान् जीतने वाला वह आप (**अस्मभ्यम्**) हम लोगों के लिये (**रायः**) धनों को (**नु**) निश्चय से (**दद्धि**) दीजिये॥७॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जिसका उत्तम कुल में जन्म और जिसका कुल प्रशंसित कर्म्म किये गये के समान और जिसका संग्राम में वा विचार में रोकने वाला नहीं है, वही सुख देने वाला राजा हम लोगों का होवे, ऐसी हम लोग इच्छा करें॥७॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर राजविषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**ईक्षे॑ रा॒यः क्षय॑स्य चर्षणी॒नामु॒त व्र॒जम॑पवर्तासि॒ गोना॑म्।**



www.9009.co.in

**शिक्षानरः समिथेषु प्रहावान् वस्वो राशिमभिनेताऽसि भूरिम्॥८॥**

**ईक्षे। रायः। क्षयस्य। चर्षणीनाम्। उत। व्रजम्। अपऽवर्ता। असि। गोनाम्। शिक्षाऽनरः। सम्ऽइथेषु। प्रहाऽवान्। वस्वः। राशिम्। अभिऽनेता। असि। भूरिम्॥८॥**

**पदार्थः**-(**ईक्षे**) पश्यामि (**रायः**) धनस्य (**क्षयस्य**) निवासस्य (**चर्षणीनाम्**) मनुष्याणाम् (**उत**) अपि (**व्रजम्**) शस्त्राऽस्त्रम् (**अपवर्त्ता**) अपवारयिता। अत्र तृन् प्रत्ययः। (**असि**) (**गोनाम्**) स्तोतॄणाम् (**शिक्षानरः**) विद्योपादानेन नेता (**समिथेषु**) संग्रामेषु (**प्रहावान्**) विजयं प्राप्तवान् (**वस्वः**) धनस्य (**राशिम्**) समूहम् (**अभिनेता**) आभिमुख्यं प्रापयिता। अत्रापि तृन्। (**असि**) (**भूरिम्**) बहुविधम्॥८॥

**अन्वयः**-हे राजन्! यतः शिक्षानरस्त्वं प्रहावान् समिथेषु वस्वो भूरिं राशिमभिनेताऽसि चर्षणीनां रायः क्षयस्योत गोनाञ्च व्रजमपवर्त्ताऽसि तमहं राजानमीक्षे॥८॥

**भावार्थः**-स एव राजा दिक्षु कीर्तिमान् भवेद्यो मनुष्येभ्यो विद्यां धनं सुवासं च दत्वा संग्रामादिषु सततं सर्वान् रक्षेत्॥८॥

**पदार्थः**-हे राजन्! जिस कारण (**शिक्षानरः**) विद्या के देने से नायक आप (**प्रहावान्**) विजय को प्राप्त तथा (**समिथेषु**) संग्रामों में (**वस्वः**) धन के (**भूरिम्**) बहुत प्रकार के (**राशिम्**) समूह को (**अभिनेता**) सम्मुख पहुंचाने वाले (**असि**) हो और (**चर्षणीनाम्**) मनुष्यों के (**रायः**) धन (**क्षयस्य**) निवास (**उत**) और (**गोनाम्**) स्तुति करने वालों के सम्बन्धी (**व्रजम्**) शस्त्र-अस्त्रों को (**अपवर्त्ता**) दूर करने वाले (**असि**) हो उनको मैं राजा होने को (**ईक्षे**) देखता हूँ॥८॥

**भावार्थः**-वही राजा दिशाओं में यशस्वी होवे कि जो मनुष्यों को विद्या, धन और उत्तम वास देकर संग्रामादिकों में निरन्तर सब की रक्षा करे॥८॥

**अथ विद्वदुपदेशगुणानाह॥**

अब विद्वानों के उपदेशगुणों को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**कया तच्छृण्वे शच्या शचिष्ठो यया कृणोति मुहु का चिदृष्वः।**

**पुरु दाशुषे विचयिष्ठो अंहोऽथा दधाति द्रविणं जरित्रे॥९॥**

**कया। तत्। शृण्वे। शच्या। शचिष्ठः। यया। कृणोति। मुहु। का। चित्। ऋष्वः। पुरु। दाशुषे। विऽचयिष्ठः। अंहः। अथ। दधाति। द्रविणम्। जरित्रे॥९॥**

**पदार्थः**-(**कया**) (**तत्**) तानि (**शृण्वे**) शृणुयाम् (**शच्या**) प्रज्ञया क्रियया वा (**शचिष्ठः**) अतिशयेन प्राज्ञः (**यया**) (**कृणोति**) (**मुहु**) वारं वारम् (**का**) कानि (**चित्**) अपि (**ऋष्वः**) महान् (**पुरु**) बहु (**दाशुषे**) दात्रे (**विचयिष्ठः**) अतिशयेन वियोजकः (**अंहः**) अपराधम् (**अथा**) अत्र **निपातस्य चेति** दीर्घः। (**दधाति**) (**द्रविणम्**) धनम् (**जरित्रे**) स्तावकाय॥९॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे राजन्! यथा शचिष्ठो विचयिष्ठ ऋष्वो विद्वानंहः पृथक्कृत्याऽथा जरित्रे दाशुषे पुरु द्रविणं दधाति यानि का चिदुत्तमानि कर्म्माणि यया कया शच्या मुहु कृणोति तत्तया शृण्वे॥९॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। मनुष्याणां योग्यतास्ति यथाऽऽप्ताः पापानि विहाय धर्म्माचरणङ्कृत्वा प्रमात्मकज्ज्ञानं धृत्वा जगत्कल्याणाय पुष्कलं विज्ञानं प्रसारयन्ति तथैव यूयमाचरत॥९॥

**पदार्थः**-हे राजन्! जैसे **(शचिष्ठः)** अत्यन्त बुद्धिमान् **(विचयिष्ठः)** अत्यन्त वियोग करने वाला **(ऋष्वः)** बड़ा विद्वान् **(अंहः)** अपराध को पृथक् करके **(अथा)** अनन्तर **(जरित्रे)** स्तुति करने और **(दाशुषे)** देनेवाले के लिये **(पुरु)** बहुत **(द्रविणम्)** धन को **(दधाति)** धारण करता है और जिन **(का)** किन्हीं **(चित्)** भी उत्तम कर्म्मों को **(यया)** जिस **(कया)** किसी **(शच्या)** बुद्धि वा क्रिया से **(मुहु)** बार-बार **(कृणोति)** सिद्ध करता है **(तत्)** उन्हें उससे **(शृण्वे)** सुनूं॥९॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। मनुष्यों की योग्यता है कि जैसे यथार्थवक्ता जन पापों का त्याग, धर्म्म का आचरण और यथार्थ ज्ञानस्वरूप ज्ञान को धारण करके जगत् के कल्याण के लिये बहुत ज्ञान को फैलाते हैं, वैसे ही आप लोग आचरण करो॥९॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**मा नो॑ मर्धी॒रा भ॑रा द॒द्धि तन्नः॒ प्र दा॒शुषे॒ दात॑वे॒ भूरि॒ यत्ते॑।**

**नव्ये॑ दे॒ष्णे श॒स्ते अ॒स्मिन्त॑ उ॒क्थे प्र ब्र॑वाम व॒यमि॑न्द्र स्तु॒वन्तः॑॥१०॥**

**मा। नः॒। म॒र्धीः॒। आ। भ॒र। द॒द्धि। तत्। नः॒। प्र। दा॒शुषे॑। दात॑वे। भूरि॑। यत्। ते॒। नव्ये॑। दे॒ष्णे। श॒स्ते। अ॒स्मिन्। ते॒। उ॒क्थे। प्र। ब्र॒वा॒म॒। व॒यम्। इ॒न्द्र॒। स्तु॒वन्तः॑॥१०॥**

**पदार्थः**-**(मा)** निषेधे **(नः)** अस्मान् **(मर्धीः)** उन्दितान् मा कुरु **(आ) (भर)** धर **(दद्धि)** देहि **(तत्)** धनम् **(नः)** अस्मभ्यम् **(प्र) (दाशुषे)** दानशीलाय **(दातवे)** दातुम् **(भूरि)** बहु **(यत्) (ते)** तव **(नव्ये)** नवीने **(देष्णे)** दातुं योग्ये **(शस्ते)** प्रशंसिते **(अस्मिन्) (ते)** तुभ्यम् **(उक्थे)** वक्तव्ये **(प्र) (ब्रवाम)** उपदिशेम **(वयम्) (इन्द्र)** राजन् **(स्तुवन्तः)**॥१०॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! त्वं नो मा मर्धीर्नस्तदाऽऽभर यत्तेऽस्मिन् नव्ये देष्णे ते शस्त उक्थे भूरि द्रव्यमस्ति तद्दाशुषे दातवे प्रभर सर्वेभ्यो नोऽस्मभ्यं दद्धि। स्तुवन्तो वयमिदं त्वां प्र ब्रवाम॥१०॥

**भावार्थः**-हे राजंस्तुभ्यं कर्त्तव्यं कर्म्म यद्यद्ब्रवेम तत्तदाचर प्रजाऽमात्यराज्योन्नतये बहु धनं विद्यान्यायौ च प्रसारय॥१०॥

**पदार्थः**-हे **(इन्द्र)** राजन्! आप **(नः)** हम लोगों को **(मा)** मत **(मर्धीः)** गीला कीजिये हम लोगों के लिये **(तत्)** उस धन को **(आ, भर)** धारण कीजिये **(यत्)** जो **(ते)** आपके **(अस्मिन्)** इस **(नव्ये)**



www.9009.co.in

नवीन **(देष्णे)** देने और **(ते)** आपके **(शस्ते)** प्रशंसित **(उक्थे)** कहने योग्य व्यवहार में **(भूरि)** बहुत द्रव्य है वह **(दाशुषे)** दानशील के लिये **(दातवे)** देने को **(प्र)** अत्यन्त धारण कीजिये और **(नः)** हम सब लोगों के लिये **(दद्धि)** दीजिये और **(स्तुवन्तः)** स्तुति करते हुए **(वयम्)** हम लोग यह आपको **(प्र, ब्रवाम)** उपदेश करें॥१०॥

**भावार्थः**-हे राजन्! आपके लिये करने योग्य कर्म्म जो-जो कहें उस-उसका आचरण करो और प्रजा, मन्त्री और राज्य की उन्नति के लिये बहुत धन, विद्या और न्याय को फैलाओ॥१०॥

**पुनरुपदेशविषयमाह॥**

फिर उपदेशविषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**नू ष्टुत इन्द्र नू गृणान इषं जरित्रे नद्यो३ न पीपेः।**

**अकारि ते हरिवो ब्रह्म नव्यं धिया स्याम रथ्यः सदासाः॥११॥४॥**

**नु। स्तुतः। इन्द्र। नु। गृणानः। इषम्। जरित्रे। नद्यः। न। पीपेरिति पीपेः। अकारि। ते। हरिऽवः। ब्रह्म। नव्यम्। धिया। स्याम। रथ्यः। सदाऽसाः॥११॥**

**पदार्थः**-**(नु)** सद्यः **(स्तुतः)** प्रशंसितः **(इन्द्र)** सुखप्रदातः **(नु)** **(गृणानः)** स्तुवन् **(इषम्)** विज्ञानम् **(जरित्रे)** सत्यप्रशंसकाय **(नद्यः)** **(न)** इव **(पीपेः)** वर्धय **(अकारि)** क्रियते **(ते)** तव **(हरिवः)** बहुसेनाङ्गयुक्त **(ब्रह्म)** महद्धनमन्नं वा **(नव्यम्)** नवीनम् **(धिया)** कर्म्मणा **(स्याम)** **(रथ्यः)** बहुरमणीयरथादियुक्ताः **(सदासाः)** समानदानसेवकाः॥११॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! स्तुतस्संस्त्वं जरित्रे नव्यम्ब्रह्म नु नद्यो न पीपेः। गृणानः सन्नव्यमिषम्पीपेः। हे हरिवो! यस्मै तेऽस्माभिर्धिया नव्यं ब्रह्माऽकारि तत्सहायेन सदासा वयं रथ्यो नु स्याम॥११॥

**भावार्थः**-अमात्यसेनाप्रजाजनैः प्रशंसितानि कर्म्माणि कुर्वतो राज्ञः स्तुतिर्यथा कार्य्या तथैव राज्ञाप्येतेषां शुभकर्म्मसु प्रवर्त्तमानानां प्रशंसा कर्त्तव्येति॥११॥

अत्रेन्द्रराजाऽमात्यविद्वद्गुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति विंशतितमं सूक्तं चतुर्थो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे **(इन्द्र)** सुख के देनेवाले! **(स्तुतः)** प्रशंसित हुए आप **(जरित्रे)** सत्य कहनेवाले के लिये **(नव्यम्)** नवीन **(ब्रह्म)** बड़े धन वा अन्न की **(नु)** शीघ्र **(नद्यः)** नदियों के **(न)** सदृश **(पीपेः)** वृद्धि करो और **(गृणानः)** स्तुति करता हुआ नवीन **(इषम्)** विज्ञान की वृद्धि करो हे **(हरिवः)** बहुत सेना के अङ्गों से युक्त! जिसके लिये **(ते)** आपके हम लोगों ने **(धिया)** कर्म से नवीन बड़ा धन वा अन्न **(अकारि)** किया उसके सहाय से **(सदासाः)** समान दान देने वाले सेवक हम लोग **(रथ्यः)** बहुत सुन्दर रथ आदिकों से युक्त **(नु)** निश्चय **(स्याम)** होवें॥११॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-मन्त्री, सेना और प्रजाजनों को श्रेष्ठ कर्म्म करते हुए राजा की स्तुति जैसी कर्त्तव्य है, वैसी ही राजा को भी इन उत्तम कर्म्मों में प्रवर्त्तमान लोगों की प्रशंसा करनी चाहिये॥११॥

इस सूक्त में इन्द्र, राजा, अमात्य और विद्वानों के गुणों का वर्णन होने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पिछले सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह बीसवां सूक्त और चौथा वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

**अथैकादशर्चस्यैकाधिकविंशतितमस्य सूक्तस्य वामदेव ऋषिः। इन्द्रो देवता। १, २, ७, १० भुरिक्पङ्क्तिः। ३ स्वराट् पङ्क्तिः। ११ निचृत् पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः। ४, ५ निचृत्त्रिष्टुप्। ६, ८ विराट् त्रिष्टुप् छन्दः। ९ त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः॥**

**अथेन्द्रपदवाच्यराजगुणानाह॥**

अब ग्यारह ऋचावाले इक्कीसवें सूक्त का प्रारम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में इन्द्रपदवाच्य राजगुणों को कहते हैं॥

**आ यात्विन्द्रोऽवस उप न इह स्तुतः सधमादस्तु शूरः।**
**वावृधानस्तविषीर्यस्य पूर्वीर्द्यौर्न क्षत्रमभिभूति पुष्यात्॥ १॥**

**आ। यातु। इन्द्रः। अवसे। उप। नः। इह। स्तुतः। सधऽमात्। अस्तु। शूरः। ववृधानः। तविषीः। यस्य। पूर्वीः। द्यौः। न। क्षत्रम्। अभिऽभूति। पुष्यात्॥ १॥**

**पदार्थः**-(**आ**) (**यातु**) आगच्छतु (**इन्द्रः**) प्रजारक्षकः (**अवसे**) रक्षणाद्याय (**उप**) (**नः**) अस्माकम् (**इह**) अस्मिन् राजप्रजाव्यवहारे (**स्तुतः**) प्राप्तप्रशंसः (**सधमात्**) समानस्थानात् यस्सह माद्यति (**अस्तु**) (**शूरः**) शत्रूणां हिंसकः (**वावृधानः**) वर्धमानः (**तविषीः**) बलयुक्ताः सेनाः (**यस्य**) (**पूर्वीः**) प्राचीनाः (**द्यौः**) सूर्य्यः (**न**) इव (**क्षत्रम्**) राज्यम् (**अभिभूति**) शत्रूणां तिरस्कारनिमित्तम् (**पुष्यात्**) पुष्टं भवेत्॥ १॥

**अन्वयः**-हे विद्वांसो! यस्य राज्ञो द्यौर्न पूर्वीस्तविषीः स्युर्द्यौर्नाऽभिभूति क्षत्रं पुष्यात् स वावृधानः शूरः स्तुत इन्द्रो नोऽस्माकमवस इहोपायात्वस्माभिः सधमादस्तु॥ १॥

**भावार्थः**-यो राजा विद्युद्वद्बलिष्ठः सूर्य्यवत् सुप्रकाशाः सेनाः कृत्वा निष्कण्टकं राज्यं पुष्यात्स एवेह सर्वां प्रतिष्ठामखिलमानन्दं प्राप्य देहान्ते मोक्षं गच्छेत्॥ १॥

**पदार्थः**-हे विद्वान् जनो! (**यस्य**) जिस राजा की (**द्यौः**) सूर्य्य के (**न**) सदृश (**पूर्वीः**) प्राचीन (**तविषीः**) बलयुक्त सेना हों और सूर्य्य के सदृश (**अभिभूति**) शत्रुओं के तिरस्कार में निमित्त (**क्षत्रम्**) राज्य (**पुष्यात्**) पुष्ट होवे वह (**वावृधानः**) बढ़ने और (**शूरः**) शत्रुओं का नाश करने वाला (**स्तुतः**) प्रशंसा को प्राप्त (**इन्द्रः**) प्रजारक्षक (**नः**) हम लोगों के (**अवसे**) रक्षण आदि के लिये (**इह**) यहाँ राजा और प्रजा के व्यवहार में (**उप, आ, यातु**) समीप प्राप्त हो और हम लोगों के (**सधमात्**) समीप स्थान से आनन्द करने वाला (**अस्तु**) हो॥ १॥

**भावार्थः**-जो राजा बिजुली के सदृश बलिष्ठ, सूर्य्य के सदृश उत्तम प्रकार प्रकाशित, सेना कर निष्कंटक अर्थात् दुष्टजनादिरहित राज्य को पुष्ट करे, वही इस संसार में सम्पूर्ण प्रतिष्ठा और सम्पूर्ण आनन्द को प्राप्त होके शरीर के त्याग के समय मोक्ष को प्राप्त होवे॥ १॥

**अथ राजगुणानाह॥**



www.9009.co.in

अब राजगुणों को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**तस्येदिह स्तवथ वृष्ण्यानि तुविद्युम्नस्य तुविराधसो नॄन्।**

**यस्य क्रतुर्विदथ्यो३ न सम्राट् साह्वान् तरुत्रो अभ्यस्ति कृष्टीः॥ २॥**

**तस्य। इत्। इह। स्तवथ। वृष्ण्यानि। तुविऽद्युम्नस्य। तुविऽराधसः। नॄन्। यस्य। क्रतुः। विदथ्यः। न। सम्ऽराट्। सह्वान्। तरुत्रः। अभि। अस्ति। कृष्टीः॥ २॥**

**पदार्थः**-(**तस्य**) (**इत्**) (**इह**) अस्मिन् राज्ये (**स्तवथ**) प्रशंसथ (**वृष्ण्यानि**) बलेषु साधूनि (**तुविद्युम्नस्य**) बहुयशसः (**तुविराधसः**) बह्वैश्वर्यस्य (**नॄन्**) नायकान् (**यस्य**) (**क्रतुः**) प्रज्ञाराज्यपालनाख्यो यज्ञो वा (**विदथ्यः**) विज्ञातुं योग्यः (**न**) इव (**सम्राट्**) सार्वभौमो राजमानः (**साह्वान्**) सोढा (**तरुत्रः**) दुःखेभ्यस्तारकः (**अभि**) (**अस्ति**) (**कृष्टीः**) मनुष्यान्॥ २॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यस्य तुविद्युम्नस्य तुविराधसो राज्ञ इह विदथ्यो सम्राण्ण साह्वान् तरुत्रः क्रतुरभ्यस्ति वृष्ण्यानि सन्ति तस्येन्नॄन् कृष्टीर्यूयं स्तवथ॥ २॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यस्य पूर्णबलानि सैन्यानि महाकीर्त्तिरसङ्ख्यं धनं पूर्णा विद्या शुभा गुणकर्म्मस्वभावाः सहायाश्च स्युस्स एव चक्रवर्त्ती राजा भवितुमर्हति॥ २॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! (**यस्य**) जिस (**तुविद्युम्नस्य**) बहुत यशयुक्त (**तुविराधसः**) बहुत ऐश्वर्य्य वाले राजा के (**इह**) इस राज्य में (**विदथ्यः**) जानने योग्य (**सम्राट्**) सम्पूर्ण भूमि में प्रसिद्ध और प्रकाशमान के (**न**) सदृश (**साह्वान्**) सहने वा (**तरुत्रः**) दुःखों से पार उतारने वाला (**क्रतुः**) बुद्धि और राज्य का पालनरूप यज्ञ (**अभि, अस्ति**) सब ओर से है और (**वृष्ण्यानि**) बलों में साधु कार्य हैं (**तस्य, इत्**) उसी के (**नॄन्**) नायक अर्थात् मुख्य (**कृष्टीः**) मनुष्यों की (**स्तवथ**) तुम लोग प्रशंसा करो॥ २॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जिसकी पूर्णबलवाली सेना और बड़ा यश, असंख्य धन, पूर्णविद्या, उत्तम गुण, कर्म्म, स्वभाव और सहाय होवें; वही चक्रवर्त्ती राजा होने के योग्य होता है॥ २॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**आ यात्विन्द्रो दिव आ पृथिव्या मक्षू समुद्रादुत वा पुरीषात्।**

**स्वर्णरादवसे नो मरुत्वान् परावतो वा सदनादृतस्य॥ ३॥**

**आ। यातु। इन्द्रः। दिवः। आ। पृथिव्याः। मक्षु। समुद्रात्। उत। वा। पुरीषात्। स्वःऽनरात्। अवसे। नः। मरुत्वान्। पराऽवतः। वा। सदनात्। ऋतस्य॥ ३॥**

**पदार्थः**-(**आ**) समन्तात् (**यातु**) प्राप्नोतु (**इन्द्रः**) सूर्य इव राजा (**दिवः**) प्रकाशात् (**आ**) (**पृथिव्याः**) भूमेः (**मक्षू**) शीघ्रम्। **मक्ष्विति क्षिप्रनामसु पठितम्।** (निघं०२.१५) (**समुद्रात्**) अन्तरिक्षात्



www.9009.co.in

**(उत)** **(वा)** **(पुरीषात्)** उदकात्। **पुरीषमित्युदकनामसु पठितम्।** (निघं०१.१२) **(स्वर्णरात्)** स्वरादित्य इव नरान्नायकात् **(अवसे)** रक्षणाद्याय **(नः)** अस्माकम् **(मरुत्वान्)** वायुवानिव प्रशस्तपुरुषयुक्तः **(परावतः)** दूरदेशात् **(वा)** **(सदनात्)** स्थानात् **(ऋतस्य)** सत्यस्य कारणस्य॥३॥

**अन्वयः**-यथा सूर्य्य आ दिवः पृथिव्या उत समुद्राद्वा पुरीषात् परावत ऋतस्य सदनाद्वा नोऽवसे मक्ष्वायाति तथैव स्वर्णरान्नोऽवसे मरुत्वान्त्सन्निन्द्र आ यातु॥३॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे राजन्! यथा सूर्य्योऽन्तरिक्षं प्रकाशं भूमिञ्जलं कार्य्यं जगच्च व्याप्य सर्वं रक्षति तथैव प्रतापी सुसहायो भूत्वाऽस्मान् संरक्ष्य प्रकाशितो भव॥३॥

**पदार्थः**-जैसे सूर्य **(आ, दिवः)** प्रकाश से **(पृथिव्याः)** भूमि से **(उत)** और **(समुद्रात्)** अन्तरिक्ष से **(वा)** वा **(पुरीषात्)** जल से **(परावतः)** दूर देश से **(ऋतस्य)** सत्य कारण के **(सदनात्)** स्थान से **(वा)** वा हम संसारी जनों की रक्षा आदि के लिये **(मक्षू)** शीघ्र प्राप्त होता है, वैसे ही **(स्वर्णरात्)** सूर्य्य के सदृश नायक से **(नः)** हम लोगों के **(अवसे)** रक्षण आदि के लिये **(मरुत्वान्)** वायुवान् पदार्थ के सदृश प्रशंसित पुरुषों से युक्त होता हुआ **(इन्द्रः)** सूर्य के समान राजा **(आ, यातु)** प्राप्त हो॥३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे राजन्! जैसे सूर्य्य अन्तरिक्ष, प्रकाश, भूमि, जल और कार्य्य जगत् को व्याप्त होकर सब की रक्षा करता है, वैसे ही प्रतापी और उत्तम सहाययुक्त होकर और हम लोग की उत्तम प्रकार रक्षा करके प्रकाशित हूजिये॥३॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**स्थूरस्य रायो बृहतो य ईशे तमु ष्टवाम विदथेष्विन्द्रम्।**

**यो वायुना जयति गोमतीषु प्र धृष्णुया नयति वस्यो अच्छ॥४॥**

**स्थूरस्य। रायः। बृहतः। यः। ईशे। तम्। ऊम् इति। स्तवाम। विदथेषु। इन्द्रम्। यः। वायुना। जयति। गोऽमतीषु। प्र। धृष्णुऽया। नयति। वस्यः। अच्छ॥४॥**

**पदार्थः**-**(स्थूरस्य)** स्थूलस्य **(रायः)** धनस्य **(बृहतः)** महतः **(यः)** **(ईशे)** ईष्टे ईश्वरो भवति **(तम्)** **(उ)** **(स्तवाम)** प्रशंसेम **(विदथेषु)** सङ्ग्रामेषु **(इन्द्रम्)** शत्रुविदारकम् **(यः)** **(वायुना)** पवनेन **(जयति)** **(गोमतीषु)** प्रशंसिता गावो वाचो यासु सेनासु तासु **(प्र)** **(धृष्णुया)** धृष्णूनि प्रगल्भानि याति यैस्तानि **(नयति)** **(वस्यः)** अतिशयेन श्रेष्ठं धनम् **(अच्छ)**॥४॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यो बृहतः स्थूरस्य राय ईशे विदथेष्विन्द्रमच्छ नयति यो गोमतीषु धृष्णुया वायुनाऽच्छ जयति वस्यः प्रणयति तमु वयं स्तवाम॥४॥

**भावार्थः**-यो राजा महतीभिस्सेनाभिः सङ्ग्रामेषु विजयं प्राप्य महान्ति धनानि प्रतिष्ठाञ्च लब्ध्वा प्रशंसितो जायते तस्यैव स्तुतिः कर्त्तव्या॥४॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(यः)** जो **(बृहतः)** बड़े **(स्थूरस्य)** स्थूल **(रायः)** धन का **(ईशे)** स्वामी होता है **(विदथेषु)** सङ्ग्रामों में **(इन्द्रम्)** शत्रु के नाश करने वाले को **(अच्छ)** उत्तम प्रकार **(नयति)** प्राप्त करता है **(यः)** जो **(गोमतीषु)** प्रशंसित वाणियों से युक्त सेनाओं में **(धृष्णुया)** प्रगल्भता और **(वायुना)** पवन के साथ उत्तम प्रकार **(जयति)** विजयी होता है **(वस्यः)** अत्यन्त श्रेष्ठ धन को **(प्र)** प्रीति के साथ चाहता है **(तम्, उ)** उसी की हम लोग **(स्तवाम)** प्रशंसा करें॥४॥

**भावार्थः**-जो राजा बड़ी सेनाओं से सङ्ग्रामों में विजय को प्राप्त हो तथा बहुत धनों और प्रतिष्ठा को प्राप्त होकर प्रशंसित होता है, उसी की स्तुति करनी चाहिये॥४॥

**पुनस्तमेव राजविषयमाह॥**

फिर उसी राजविषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**उप॒ यो नमो॒ नम॑सि स्तभा॒यन्निय॑र्ति॒ वाचं॑ ज॒नय॑न् यज॑ध्यै।**

**ऋ॒ञ्ज॒सा॒नः पु॑रु॒वार॑ उ॒क्थैरेन्द्रं॑ कृण्वीत॒ सद॑नेषु॒ होता॑॥५॥५॥**

**उप॑। यः। नम॑ः। नम॑सि। स्त॒भा॒यन्। इय॑र्ति। वाच॑म्। ज॒नय॑न्। यज॑ध्यै। ऋ॒ञ्ज॒सा॒नः। पु॒रु॒ऽवार॑ः। उ॒क्थैः। आ। इन्द्र॑म्। कृ॒ण्वी॒त॒। सद॑नेषु। होता॑॥५॥**

**पदार्थः**-**(उप)** **(यः)** **(नमः)** अन्नम् **(नमसि)** अन्ने सत्कारे वा **(स्तभायन्)** स्तम्भयन् **(इयर्त्ति)** प्राप्नोति **(वाचम्)** सुशिक्षितां वाणीम् **(जनयन्)** प्रकटयन् **(यजध्यै)** यष्टुं सङ्गन्तुम् **(ऋञ्जसानः)** प्रसाध्नुवन् **(पुरुवारः)** बहुभिः स्वीकृतः **(उक्थैः)** प्रशंसितैः कर्म्मभिः **(आ)** **(इन्द्रम्)** परमैश्वर्य्यम् **(कृण्वीत)** कुर्य्यात् **(सदनेषु)** न्यायस्थानेषु **(होता)** न्यायस्य दाता॥५॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यो यजध्यै वाचं जनयन्नुक्थैर्ऋञ्जसानः पुरुवारो होता सदनेषु नमसि नम उप स्तभायन्निन्द्रमा कृण्वीत स नमः सत्कारमियर्त्ति॥५॥

**भावार्थः**-यो राजा विद्यासुशिक्षायुक्तां नीतिं प्रकटयन् सत्कारार्हान् सत्कुर्वन् दुष्टान् दण्डयन् प्रयतमानः राज्यपालनेनैश्वर्योन्नतिं करोति स एव सर्वत्र सत्कृतो जायते॥५॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(यः)** जो **(यजध्यै)** मेल करने को **(वाचम्)** उत्तम शिक्षायुक्त वाणी **(जनयन्)** प्रकट करता हुआ **(उक्थैः)** प्रशंसित कर्म्मों से **(ऋञ्जसानः)** अत्यन्त सिद्ध करता हुआ **(पुरुवारः)** बहुतों से स्वीकार किया गया **(होता)** न्याय को देनेवाला **(सदनेषु)** न्याय के स्थानों में **(नमसि)** अन्न वा सत्कार के निमित्त **(नमः)** अन्न को **(उप, स्तभायन्)** स्तम्भित अर्थात् रोकता हुआ **(इन्द्रम्)** अत्यन्त ऐश्वर्य्य को **(आ, कृण्वीत)** सिद्ध करे, वह अन्न और सत्कार को **(इयर्त्ति)** प्राप्त होता है॥५॥



www.9009.co.in

**भावार्थ:**-जो राजा विद्या और उत्तम शिक्षा से युक्त नीति को प्रकट करता, सत्कार करने के योग्यों का सत्कार करता, दुष्टों को दण्ड देता और प्रयत्न करता हुआ राज्य के पालन से ऐश्वर्य्य की उन्नति करता है, वही सर्वत्र सत्कृत होता है॥५॥

**अथ राज्ञा सह प्रजाजनविषयमाह॥**

अब राजा के साथ प्रजाजनों के विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**धिषा यदि धिषण्यन्तः सरण्यान्सदन्तो अद्रिमौशिजस्य गोहे।**

**आ दुरोषाः पास्त्यस्य होता यो नो महान्संवरणेषु वह्निः॥६॥**

**धिषा। यदि। धिषण्यन्तः। सरण्यान्। सदन्तः। अद्रिम्। औशिजस्य। गोहे। आ। दुरोषाः। पास्त्यस्य। होता। यः। नः। महान्। सम्ऽवरणेषु। वह्निः॥६॥**

**पदार्थः**-(**धिषा**) स्तुत्या (**यदि**) (**धिषण्यन्तः**) स्तुवन्तः (**सरण्यान्**) सरणं प्राप्तान् (**सदन्तः**) निवासयन्तः (**अद्रिम्**) मेघमिव (**औशिजस्य**) कामयमानाऽपत्यस्य (**गोहे**) संवरणीये गृहे (**आ**) (**दुरोषाः**) दुर्गतो दूरीभूत ओषः क्रोधो यस्य सः (**पास्त्यस्य**) गृहे भवस्य (**होता**) दाता (**यः**) (**नः**) अस्माकम् (**महान्**) (**संवरणेषु**) आच्छादकेषु व्यवहारेषु (**वह्निः**) वोढाग्निरिव॥६॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यो नः पास्त्यस्य संवरणेषु वह्निरिव महान् दुरोषा होता भवेद्यदि तमद्रिमिवौशिजस्य गोहे धिषण्यन्तः सरण्यानासदन्तो धिषा यूयं गृह्णीत तर्हि युष्मान्त्सर्वं सुखम्प्राप्नुयात्॥६॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यदि राजादयो मनुष्याः प्रशंसितान् प्रशंसयेयुः प्राप्तान् रक्षेयुस्तर्हि ते महान्तो भवेयुः॥६॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! (**यः**) जो (**नः**) हम लोगों के (**पास्त्यस्य**) गृह में उत्पन्न हुए के (**संवरणेषु**) आच्छादक अर्थात् ढांपने वाले व्यवहारों में (**वह्निः**) पदार्थ पहुँचाने वाले अग्नि के सदृश (**महान्**) बड़ा (**दुरोषाः**) क्रोध से रहित (**होता**) देने वाला हो (**यदि**) जो उसके (**अद्रिम्**) मेघ के सदृश (**औशिजस्य**) कामना करने वाले के सन्तान के (**गोहे**) ढांपने योग्य गृह में (**धिषण्यन्तः**) स्तुति करते और (**सरण्यान्**) सरण्यान् अर्थात् सन्मार्ग को प्राप्त जनों को (**आ, सदन्तः**) निवास देते हुए (**धिषा**) स्तुति अर्थात् प्रशंसा के साथ आप लोग ग्रहण करो तो आप लोगों को सब सुख प्राप्त होवे॥६॥

**भावार्थ:**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो राजा आदि मनुष्य प्रशंसित पुरुषों की प्रशंसा करावें **[=करें]** और प्राप्त हुए पुरुषों की रक्षा करें तो वे श्रेष्ठ होवें॥६॥

**अथ राजविषयान्तर्गतराजभृत्यकर्माह॥**

अब राजविषयान्तर्गत राजभृत्यों के कर्म को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**सत्रा यदीं भार्वरस्य वृष्णः सिषक्ति शुष्मः स्तुवते भराय।**



www.9009.co.in

**गुहा यदीमौशिजस्य गोहे प्र यद्धिये प्रायसे मदाय॥७॥**

**सत्रा। यत्। ईम्। भार्वरस्य। वृष्णः। सिसक्ति। शुष्मः। स्तुवते। भराय। गुहा। यत्। ईम्। औशिजस्य। गोहे। प्र। यत्। धिये। प्र। अयसे। मदाय॥७॥**

**पदार्थः**-(**सत्रा**) सत्येन (**यत्**) यः (**ईम्**) सर्वतः (**भार्वरस्य**) प्रजाः भर्तॄ राज्ञः (**वृष्णः**) बलिष्ठस्य (**सिषक्ति**) सिञ्चति (**शुष्मः**) बलवान् (**स्तुवते**) प्रशंसां कुर्वते (**भराय**) धारकाय (**गुहा**) बुद्धौ (**यत्**) यः (**ईम्**) (**औशिजस्य**) कामयमानेषु कुशलस्य (**गोहे**) संवरणीये गृहे (**प्र**) (**यत्**) यः (**धिये**) प्रज्ञायै (**प्र**) (**अयसे**) गमनाय (**मदाय**) आनन्दाय॥७॥

**अन्वयः**-यद्यः शुष्मः सत्रेम् भार्वरस्य वृष्णः स्तुवते भराय सिषक्ति यद्यो गुहौशिजस्य गोहे सत्यं प्र सिषक्ति यद्योऽयसे मदाय धिये गुहा प्रज्ञानमीं प्र सिषक्ति स एव सर्वं लभते॥७॥

**भावार्थः**-ये भृत्या धर्म्येण राज्यं शासतो राज्ञो राष्ट्रे सत्येन न्यायेन प्रजाः पालयन्ति तेऽतुलमानन्दं लभन्ते॥७॥

**पदार्थः**-(**यत्**) जो (**शुष्मः**) बलवान् (**सत्रा**) सत्य से (**ईम्**) सब प्रकार (**भार्वरस्य**) प्रजा के पालन करने वाले राजा के (**वृष्णः**) बलिष्ठ की (**स्तुवते**) प्रशंसा करते हुए (**भराय**) धारण करने वाले के लिए (**सिषक्ति**) सींचता है और (**यत्**) जो (**गुहा**) बुद्धि में (**औशिजस्य**) कामना करने वालों में चतुर के (**गोहे**) स्वीकार करने योग्य घर में सत्य का (**प्र**) सिञ्चन करता है (**यत्**) जो (**अयसे**) गमन (**मदाय**) आनन्द और (**धिये**) बुद्धि के लिये बुद्धि में प्रज्ञान को (**ईम्**) सब प्रकार से (**प्र**) अत्यन्त सींचता है, वही सम्पूर्ण लाभ को प्राप्त होता है॥७॥

**भावार्थः**-जो कर्मचारी लोग धर्म से राज्य का शासन करते हुए राजा के राज्य में सत्य-न्याय से प्रजाओं का पालन करते हैं, वे अतुल आनन्द को प्राप्त होते हैं॥७॥

**पुना राजविषयमाह॥**

फिर राजविषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**वि यद्वरांसि पर्वतस्य वृण्वे पयोभिर्जिन्वे अपां जवांसि।**
**विदद्गौरस्य गवयस्य गोहे यदी वाजाय सुध्यो३ वहन्ति॥८॥**

**वि। यत्। वरांसि। पर्वतस्य। वृण्वे। पयःऽभिः। जिन्वे। अपाम्। जवांसि। विदत्। गौरस्य। गवयस्य। गोहे। यदि। वाजाय। सुऽध्यः। वहन्ति॥८॥**

**पदार्थः**-(**वि**) (**यत्**) यः (**वरांसि**) वरणीयानि धर्म्याणि कर्म्माणि (**पर्वतस्य**) मेघस्येव (**वृण्वे**) स्वीकुर्य्याम् (**पयोभिः**) उदकैः (**जिन्वे**) तर्पयामि (**अपाम्**) जलानाम् (**जवांसि**) वेगा इव (**विदत्**) लभमानः (**गौरस्य**) (**गवयस्य**) गोसदृशस्य (**गोहे**) गृहे (**यदी**) अत्र **निपातस्य चेति** दीर्घः। (**वाजाय**) वेगाय (**सुध्यः**) शोभना धीर्येषान्ते (**वहन्ति**) प्रापयन्ति॥८॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे राजन्! यदी सुध्यो वाजाय गौरस्य गवयस्य गोहे वि वहन्ति तर्हि सुखं लभन्ते यद्योऽहं पर्वतस्य पयोभिरिव वरांसि वृण्वेऽपां जवांसि विदत् सन् राज्यं जिन्वे तान्माञ्च भवान् सत्करोतु॥८॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यथा गवयस्य साधर्म्यं गौ रक्षति तथैव धार्मिकानां साधर्म्यं राजानो रक्षन्तु यथा मेघो जलदानेन सर्वं प्रीणाति तथैव राजाऽभयदानेन सर्वं सुखयेत्॥८॥

**पदार्थः**-हे राजन्! **(यदी)** जो **(सुध्यः)** उत्तम बुद्धि वाले जन **(वाजाय)** वेग के लिये **(गौरस्य)** गौर **(गवयस्य)** गोसदृश के **(गोहे)** गृह में **(वि, वहन्ति)** स्वीकार करते हैं तो सुख को प्राप्त होते हैं और **(यत्)** जो मैं **(पर्वतस्य)** मेघ के **(पयोभिः)** जलों के सदृश पदार्थों और **(वरांसि)** स्वीकार करने योग्य धर्म्मयुक्त कर्म्मों का **(वृण्वे)** स्वीकार करूं और **(अपाम्)** जलों के **(जवांसि)** वेगों के सदृश कर्म्मों को **(विदत्)** प्राप्त होता हुआ राज्य को **(जिन्वे)** शोभित करता हूँ, उनका और मेरा आप सत्कार करो॥८॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे गवय के साधर्म्य को गौ धारण करती है, वैसे ही धार्मिक पुरुषों के साधर्म्य को राजा लोग धारण करें और जैसे मेघ जलदान से सब को तृप्त करता है, वैसे ही राजा अभयदान से सब को सुख देवे॥८॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**भद्रा ते हस्ता सुकृतोत पाणी प्रयन्तारा स्तुवते राध इन्द्र।**

**का ते निषत्तिः किमु नो ममत्सि किं नोदुदु हर्षसे दातवा उ॥९॥**

**भद्रा। ते। हस्ता। सुऽकृता। उत। पाणी इति। प्रऽयन्तारा। स्तुवते। राधः। इन्द्र। का। ते। निऽसत्तिः। किम्। ऊम् इति। नो इति। ममत्सि। किम्। न। उत्ऽउत्। ऊम् इति। हर्षसे। दातवै। ऊँ इति॥९॥**

**पदार्थः**-**(भद्रा)** कल्याणकर्म्मकरौ **(ते)** तव **(हस्ता)** हस्तौ **(सुकृता)** शोभनं धर्म्यं कर्म्म क्रियते याभ्यान्तौ **(उत)** अपि **(पाणी)** बाहू **(प्रयन्तारा)** प्रयच्छन्ति याभ्यान्तौ **(स्तुवते)** सत्यं वदते **(राधः)** धनम् **(इन्द्र)** सर्वेभ्यः सुखप्रद **(का)** **(ते)** तव **(निषत्तिः)** निषीदन्ति यया सा स्थितिर्नीतिर्वा **(किम्)** (उ) **(नः)** अस्मान् **(ममत्सि)** हर्षयसि **(किम्)** **(न)** निषेधे **(उदुत्)** उत्कृष्टे (उ) वितर्के **(हर्षसे)** आनन्दसि **(दातवै)** दातुम् (उ)॥९॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! यस्य ते सुकृता हस्ता उतापि प्रयन्तारा भद्रा पाणी स्तुवते राधो दद्यातां तस्य ते का निषत्तिरु त्वं किं नो ममत्सि दातवा उ किं न उ उदुद्धर्षसे॥९॥

**भावार्थः**-हे राजन्! यस्मात्त्वमस्मानानन्दयसि तस्मादानन्दितः सततञ्जायसे यतस्त्वं सुवर्णपाणिर्दानहस्तो योग्यान् सत्करोषि तस्मात्तव कल्याणकरी नीतिरस्ति॥९॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-हे **(इन्द्र)** सब के लिये सुख देनेवाले! जिन **(ते)** आपके **(सुकृता)** श्रेष्ठ धर्म्मयुक्त कर्म्म किया जाता जिनसे वे **(हस्ता)** हाथ **(उत)** और **(प्रयन्तारा)** देते हैं जिनसे वे **(भद्रा)** कल्याण कर्म करने वाले **(पाणी)** हाथ **(स्तुवते)** सत्य बोलते हुए के लिये **(राधः)** धन देवें उन **(ते)** आपको **(का)** कौन **(निषत्तिः)** स्थित होते हैं जिससे ऐसी मर्य्यादा वा नीति है **(उ)** और आप **(किम्)** क्या **(नः)** हम लोगों को **(ममत्सि)** प्रसन्न करते हो और **(दातवै)** देने को **(उ)** भी **(किम्)** क्यों **(न, उ)** नहीं **(उदुत्)** उत्तम प्रकार **(हर्षसे)** आनन्दित होते हो॥९॥

**भावार्थः**-हे राजन्! जिससे आप हम लोगों को आनन्द देते हो, इससे आनन्दित निरन्तर होते हो और जिससे आप सुवर्ण हस्त में धारण किये हुए दानसहित हस्तयुक्त हुए योग्यों का सत्कार करते हो, इससे आपकी कल्याण करनेवाली नीति है॥९॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**एवा वस्व इन्द्रः सत्यः सम्राड्ढन्ता वृत्रं वरिवः पूरवे कः।**

**पुरुष्टुत क्रत्वा नः शग्धि रायो भक्षीय तेऽवसो दैव्यस्य॥१०॥**

**एव। वस्वः। इन्द्रः। सत्यः। सम्ऽराट्। हन्ता। वृत्रम्। वरिवः। पूरवे। करिति कः। पुरुऽस्तुत। क्रत्वा। नः। शग्धि। रायः। भक्षीय। ते। अवसः। दैव्यस्य॥१०॥**

**पदार्थः**-**(एवा)** निश्चये। अत्र **निपातस्य चे**ति दीर्घः। **(वस्वः)** धनस्य **(इन्द्रः)** ऐश्वर्य्यप्रदाता **(सत्यः)** सत्सु पुरुषेषु साधुः **(सम्राट्)** सार्वभौमो राजा **(हन्ता)** **(वृत्रम्)** मेघमिव शत्रुम् **(वरिवः)** सेवनम् **(पूरवे)** धार्मिकाय मनुष्याय। **पूरव इति मनुष्यनामसु पठितम्।** (निघं०२.३) **(कः)** कुर्य्याः **(पुरुष्टुत)** बहुभिः प्रशंसित **(क्रत्वा)** श्रेष्ठया प्रज्ञयोत्तमेन कर्म्मणा वा **(नः)** अस्मान् **(शग्धि)** देहि **(रायः)** धनानि **(भक्षीय)** सेवेय भुञ्जीय वा **(ते)** तव **(अवसः)** रक्षणस्य **(दैव्यस्य)** दिव्यसुखप्रापकस्य॥१०॥

**अन्वयः**-हे पुरुष्टुत! यः सत्य इन्द्रस्त्वं सूर्य्यो वृत्रमिव शत्रून् हन्तैवा सम्राट् पूरवे वस्वो वरिवः कः यस्त्वं क्रत्वा नो रायः शग्धि तस्यैव ते दैव्यस्याऽवसः सकाशाद्रक्षितोऽहं धनानि भक्षीय॥१०॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यः सूर्य्यवत् प्रकाशितन्यायोऽभयदाता सर्वथा सर्वस्य रक्षको नरो भवेत् स एव चक्रवर्त्ती भवितुमर्हति॥१०॥

**पदार्थः**-हे **(पुरुष्टुत)** बहुतों से प्रशंसित! जो **(सत्यः)** श्रेष्ठ पुरुषों में श्रेष्ठ **(इन्द्रः)** ऐश्वर्य्य के देने वाले आप सूर्य **(वृत्रम्)** मेघ को जैसे वैसे शत्रुओं को **(हन्ता, एवा)** नाश करनेवाले ही **(सम्राट्)** सम्पूर्ण भूमि के राजा **(पूरवे)** धार्मिक मनुष्य के लिये **(वस्वः)** धन का **(वरिवः)** सेवन **(कः)** करें और जो आप **(क्रत्वा)** श्रेष्ठ बुद्धि वा उत्तम कर्म्म से **(नः)** हम लोगों के लिये **(रायः)** धनों को **(शग्धि)** देवें



www.9009.co.in

उन्हीं **(ते)** आपके **(दैव्यस्य)** श्रेष्ठ सुख प्राप्त कराने वाले **(अवसः)** रक्षण की उत्तेजना से रक्षित मैं धनों का **(भक्षीय)** सेवन वा भोग करूं॥१०॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो सूर्य के सदृश प्रकाशित, न्याययुक्त, अभय का देनेवाला और सब प्रकार से सब का रक्षक नायक होवे, वही चक्रवर्त्ती होने के योग्य होता है॥१०॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी राजविषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**नू ष्टुत इन्द्र नू गृणान इषं जरित्रे नद्यो३ न पीपेः।**

**अकारि ते हरिवो ब्रह्म नव्यं धिया स्याम रथ्यः सदासाः॥११॥६॥**

**नु। स्तुतः। इन्द्र। नु। गृणानः। इषम्। जरित्रे। नद्यः। न। पीपेरिति पीपेः। अकारि। ते। हरिऽवः। ब्रह्म। नव्यम्। धिया। स्याम। रथ्यः। सदाऽसाः॥११॥**

**पदार्थः**-**(नु)** सद्यः **(स्तुतः)** प्रशंसितः **(इन्द्र)** विद्यैश्वर्य्ययुक्त **(नु)** अत्रोभयत्र **ऋचि तुनुघेति** दीर्घः। **(गृणानः)** विद्यां स्तुवन् **(इषम्)** **(जरित्रे)** सकलविद्याऽध्यापकाय **(नद्यः)** **(न)** इव **(पीपेः)** वर्धय **(अकारि)** **(ते)** तुभ्यम् **(हरिवः)** विद्वत्सङ्गप्रिय **(ब्रह्म)** विद्याधनम् **(नव्यम्)** नवीनम् **(धिया)** प्रज्ञया **(स्याम)** **(रथ्यः)** बहुरथाद्यैश्वर्य्ययुक्ताः **(सदासाः)** ससेवकाः॥११॥

**अन्वयः**-हे हरिव इन्द्र! येन धिया ते नव्यं ब्रह्माऽकारि यस्य रथ्यः सदासा वयं स्याम तदर्थमिषं नु गृणानो नु ष्टुतस्सन्नस्मै जरित्रे नद्यो न पीपेः॥११॥

**भावार्थः**-यो यस्मै विद्यां दद्यात् तस्य सेवा तेन यथावत् कर्त्तव्येति॥११॥

अत्रेन्द्रराजप्रजागुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इत्येकाऽधिकविंशत्तमं सूक्तं षष्ठो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे **(हरिवः)** विद्वानों के सङ्ग में प्रीति करने वाले **(इन्द्र)** विद्या और ऐश्वर्य्य से युक्त! जिस **(धिया)** बुद्धि से **(ते)** आपके लिये **(नव्यम्)** नवीन **(ब्रह्म)** विद्यारूप धन **(अकारि)** किया गया और जिसके **(रथ्यः)** बहुत रथ आदि ऐश्वर्य्य से युक्त **(सदासाः)** सेवा करनेवालों के सहित वर्त्तमान हम लोग **(स्याम)** होवें इसके लिये **(इषम्)** अन्न की **(नू)** निश्चय **(गृणानः)** विद्या की स्तुति करता हुआ **(नु)** शीघ्र **(स्तुतः)** प्रशंसा को प्राप्त इस **(जरित्रे)** सम्पूर्ण विद्याओं के अध्यापक के लिये **(नद्यः)** नदियों के **(न)** सदृश **(पीपेः)** वृद्धि करो॥११॥

**भावार्थः**-जो जिसके लिये विद्या को देवे उसकी सेवा उसको चाहिये कि यथायोग्य करे॥११॥

इस सूक्त में इन्द्र, राजा और प्रजा के गुणवर्णन करने से इसके अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह इक्कीसवां सूक्त और छठा वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

**अथैकादशर्चस्य द्वाविंशत्तमस्य सूक्तस्य वामदेव ऋषिः। इन्द्रो देवता १, २, ५, १० निचृत्त्रिष्टुप्। ३, ४ विराट्त्रिष्टुप्। ६, ७ त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः। ८ भुरिक् पङ्क्तिः। ९ स्वराट् पङ्क्तिः। ११ निचृत् पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः॥**

**अथेन्द्रगुणानाह॥**

अब ग्यारह ऋचा वाले बाईसवें सूक्त का आरम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में इन्द्रपदवाच्य राजगुणों को कहते हैं॥

**यन्न इन्द्रो जुजुषे यच्च वष्टि तन्नो महान् करति शुष्म्या चित्।**

**ब्रह्म स्तोमं मघवा सोममुक्था यो अश्मानं शवसा बिभ्रदेति॥१॥**

**यत्। नः। इन्द्रः। जुजुषे। यत्। च। वष्टि। तत्। नः। महान्। करति। शुष्मी। आ। चित्। ब्रह्म। स्तोमम्। मघऽवा। सोमम्। उक्था। यः। अश्मानम्। शवसा। बिभ्रत्। एति॥१॥**

**पदार्थः**-**(यत्)** यः **(नः)** अस्मान् **(इन्द्रः)** परमसुखप्रदो राजा **(जुजुषे)** सेवते **(यत्)** यः **(च)** **(वष्टि)** कामयते **(तत्)** सः **(नः)** अस्मभ्यम् **(महान्)** **(करति)** कुर्य्यात् **(शुष्मी)** महाबलिष्ठः **(आ)** **(चित्)** अपि **(ब्रह्म)** महद्धनमन्नं वा **(स्तोमम्)** प्रशंसनीयम् **(मघवा)** परमपूजितधनः **(सोमम्)** ओषध्यादिगणैश्वर्य्यम् **(उक्था)** प्रशंसनीयानि वस्तूनि **(यः)** **(अश्मानम्)** मेघमिव राज्यम् **(शवसा)** बलेन **(बिभ्रत्)** धरन्त्सन् **(एति)** प्राप्नोति॥१॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यद्य इन्द्रो नो जुजुषे यद्यो महांश्चाऽऽवष्टि यः शुष्मी मघवा सूर्य्योऽश्मानमिव शवसा ब्रह्म स्तोमं सोममुक्था चिद्बिभ्रत् सन् राज्यमेति तत् स नस्सुखं करतीति विजानीत॥१॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यथा सूर्य्यो मेघं धरति हन्ति च तथैव यो राजा श्रेष्ठान् दधाति दुष्टान् दण्डयति स एवाऽस्मान् पालयितुमर्हति॥१॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(यत्)** जो **(इन्द्रः)** अत्यन्त सुख का देनेवाला राजा **(नः)** हम लोगों की **(जुजुषे)** सेवा करता है **(यत्, च)** और जो **(महान्)** बड़ा ऐश्वर्यवाला **(आ, वष्टि)** कामना करता है **(यः)** जो **(शुष्मी)** अत्यन्त बलवान् **(मघवा)** अति उत्तम धनयुक्त राजा सूर्य्य **(अश्मानम्)** मेघ को जैसे वैसे **(शवसा)** बल से **(ब्रह्म)** बहुत धन वा अन्न **(स्तोमम्)** प्रशंसा करने योग्य **(सोमम्)** ओषधी आदि पदार्थसमूह से ऐश्वर्य्य और **(उक्था)** प्रशंसा करने योग्य वस्तुओं को **(चित्)** भी **(बिभ्रत्)** धारण करता हुआ राज्य को **(एति)** प्राप्त होता है **(तत्)** वह **(नः)** हम लोगों को सुख **(करति)** करता है, ऐसा जानो॥१॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जैसे सूर्य्य मेघ को धारण करता और नाश करता है, वैसे ही जो राजा श्रेष्ठों को धारण करता और दुष्टों को दण्ड देता है, वही हम लोगों के पालन करने योग्य है॥१॥



www.9009.co.in

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**वृषा वृषन्धिं चतुरश्रिमस्यन्नुग्रो बाहुभ्यां नृतमः शचीवान्।**

**श्रिये परुष्णीमुषमाण ऊर्णां यस्याः पर्वाणि सख्याय विव्ये॥ २॥**

**वृषा। वृषन्धिम्। चतुःऽअश्रिम्। अस्यन्। उग्रः। बाहुभ्याम्। नृऽतमः। शचीऽवान्। श्रिये। परुष्णीम्। उषमाणः। ऊर्णाम्। यस्याः। पर्वाणि। सख्याय। विव्ये॥ २॥**

**पदार्थः**-(**वृषा**) बलिष्ठः (**वृषन्धिम्**) बलिष्ठानां धारकम् (**चतुरश्रिम्**) चतुरङ्गिणीं सेनां प्राप्तम् (**अस्यन्**) प्रक्षिपन् (**उग्रः**) तेजस्वी (**बाहुभ्याम्**) भुजाभ्याम् (**नृतमः**) अतिशयेन नायकः श्रेष्ठः (**शचीवान्**) बहुप्रजावान् (**श्रिये**) लक्ष्म्यै (**परुष्णीम्**) विभागवतीम् (**उषमाणः**) दहन् (**ऊर्णाम्**) आच्छादिकाम् (**यस्याः**) (**पर्वाणि**) पूर्णानि पालनानि (**सख्याय**) मित्रस्य भावाय कर्म्मणे वा (**विव्ये**) कामयते॥ २॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यो वृषा वृषन्धिं चतुरश्रिं बाहुभ्यामस्यन्नुग्रो नृतमश्शचीवान् यस्याः पर्वाणि श्रिये प्रभवन्ति तां परुष्णीमूर्णामुषमाणः सन्त्सख्याय विव्ये स एवाऽस्माकं राजा भवितुमर्हेत्॥ २॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यो बाहुबलेन दुष्टाँस्तिरस्कुर्वन्नरोत्तमगुणैरुत्कृष्टो मित्रवत् प्रजाः पालयति स एव श्रीमान् प्रजावान् न्यायाधीशो राजा भवितुमर्हति॥ २॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो (**वृषा**) अत्यन्त बलवान् (**वृषन्धिम्**) बलिष्ठों के धारण करने वाले (**चतुरश्रिम्**) चतुरङ्ग सेना को प्राप्त जन को (**बाहुभ्याम्**) भुजाओं से (**अस्यन्**) फेंकता हुआ (**उग्रः**) तेजस्वी (**नृतमः**) अतिशय नायक (**शचीवान्**) बहुत प्रजावाला (**यस्याः**) जिसके (**पर्वाणि**) पूर्ण पालन (**श्रिये**) लक्ष्मी के लिये समर्थ होते हैं उस (**परुष्णीम्**) विभागवती (**ऊर्णाम्**) ढांपने वाली दुर्बुद्धि को (**उषमाणः**) जलाता हुआ (**सख्याय**) मित्र होने के वा मित्र के कर्म्म के लिये (**विव्ये**) कामना करता है, वही हम लोगों का राजा होने को योग्य होवे॥ २॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो बाहुबल से दुष्टों का तिरस्कार करता हुआ मनुष्यों के उत्तम गुणों से उत्तम और मित्र के सदृश प्रजाओं को पालता है वही लक्ष्मीवान् प्रजावान् न्यायाधीश राजा होने के योग्य होता है॥ २॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**यो देवो देवतमो जायमानो महो वाजेभिर्महद्भिश्च शुष्मैः।**

**दधानो वज्रं बाह्वोरुशन्तं द्यामर्मेन रेजयत् प्र भूम॥ ३॥**



www.9009.co.in

**यः। देवः। देवऽतमः। जायमानः। महः। वाजेभिः। महत्ऽभिः। च। शुष्मैः। दधानः। वज्रम्। बाह्वोः। उशन्तम्। द्याम्। अमेन। रेजयत्। प्र। भूम॥३॥**

**पदार्थः**-(**यः**) (**देवः**) विद्वान् (**देवतमः**) विद्वत्तमः (**जायमानः**) उत्पद्यमानः (**महः**) महान् (**वाजेभिः**) वेगवद्भिः सैन्यैः (**महद्भिः**) महागुणविशिष्टैः (**च**) (**शुष्मैः**) बलैस्सह (**दधानः**) धरन् (**वज्रम्**) शस्त्राऽस्त्रम् (**बाह्वोः**) भुजयोः (**उशन्तम्**) कामयमानम् (**द्याम्**) प्रकाशम् (**अमेन**) बलेन (**रेजयत्**) कम्पयते (**प्र**) (**भूम**) भूमिम्। अत्र पृषोदरादिना रूपसिद्धिः॥३॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यो महद्भिर्वाजेभिश्च शुष्मैस्सह महो जायमानो देवो देवतमो राजा बाह्वोर्वज्रं दधानोऽमेन सूर्य्यो द्यां भूम च यथा प्र रेजयत् तथोशन्तं कामयमानं शत्रुं कम्पयते तमस्माकं सुखं कामयमानं वयं वृणुयाम॥३॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यो न्याय्येन दण्डेन सूर्यः प्रकाशं भूगोलांश्च कम्पयन्निव प्रजां अधर्म्माचरणात् कम्पयति स एव पूर्णविद्यो राजवरो ज्ञायते॥३॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! (**यः**) जो (**महद्भिः**) बड़े गुणों से विशिष्ट (**वाजेभिः**) वेगयुक्त सेनाजनों और (**शुष्मैः**) बलों के साथ (**महः**) बड़ा (**जायमानः**) उत्पन्न होता हुआ (**देवः**) विद्वान् (**देवतमः**) अत्यन्त विद्वान् राजा (**बाह्वोः**) भुजाओं के बीच (**वज्रम्**) शस्त्र और अस्त्र को (**दधानः**) धारण करता हुआ (**अमेन**) बल से सूर्य्य (**द्याम्**) प्रकाश (**च**) और (**भूम**) पृथिवी को जैसे (**प्र, रेजयत्**) कम्पाता है, वैसे (**उशन्तम्**) कामना करते हुए शत्रु को कम्पाता है, उस हम लोगों के सुख की कामना करते हुए राजा को हम लोग स्वीकार करें॥३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो योग्य दण्ड से सूर्य्य, प्रकाश और भूगोलों को कम्पाते हुए के सदृश प्रजाओं को अधर्म्माचरण से कम्पाता है, वही पूर्ण विद्वान् राजा होता है॥३॥

**अथ पृथिवीधारणभ्रमणविषयमाह॥**

अब पृथिवी के धारण ***[और]*** भ्रमणविषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**विश्वा रोधांसि प्रवतश्च पूर्वीर्द्यौर्ऋष्वाज्जनिमन् रेजत क्षाः।**

**आ मातरा भरति शुष्म्या गोर्नृवत्परिज्मन्नोनुवन्त वाताः॥४॥**

**विश्वा। रोधांसि। प्रऽवतः। च। पूर्वीः। द्यौः। ऋष्वात्। जनिमन्। रेजत। क्षाः। आ। मातरा। भरति। शुष्मी। आ। गोः। नृऽवत्। परिऽज्मन्। नोनुवन्त। वाताः॥४॥**

**पदार्थः**-(**विश्वा**) सर्वाणि (**रोधांसि**) रोधनानि (**प्रवतः**) अधस्ताद्वर्त्तमानान् (**च**) (**पूर्वीः**) प्राचीनाः सनातनीः (**द्यौः**) विद्युत् (**ऋष्वात्**) महतः कारणात् (**जनिमन्**) जन्मनि प्रादुर्भावे (**रेजत**) कम्पयति (**क्षाः**) भूमयः (**आ**) (**मातरा**) मातापितृरूपौ राजप्रजाजनौ (**भरति**) धरति (**शुष्मी**) बलवान् (**आ**) (**गोः**) पृथिव्याः (**नृवत्**) मनुष्यवत् (**परिज्मन्**) सर्वतो व्याप्तेऽन्तरिक्षे विस्तृतायां भूमौ वा। **ज्मेति पृथिवीनामसु पठितम्।** (निघं०१.१) (**नोनुवन्त**) भृशं शब्दायन्ते (**वाताः**) वायवः॥४॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे मनुष्या! या ऋष्वाज्जनिमन् प्रादुर्भूता पूर्वीर्द्यौः क्षा आ भरति प्रवतश्च विश्वा रोधांसि नृवदाऽऽभरति यश्शुष्मी गोर्मातरा द्यावाभूमी नृवद्रेजत यत्र परिज्मन् वाता नोनुवन्त तान् यूयं विजानीत॥४॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यः प्रकृतेर्जातो महानग्निः सर्वान् भूगोलान् रुणद्धि मातापितृवत् सर्वान् पालयत्यन्तरिक्षे भ्रामयति तं विज्ञायोपयुङ्ग्ध्वम्॥४॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो **(ऋष्वात्)** बड़े प्रकृतिरूप कारण से **(जनिमन्)** उत्पत्ति में प्रकट हुई **(पूर्वीः)** प्राचीनकाल से सिद्ध क्रियाओं को **(द्यौः)** बिजुली और **(क्षाः)** पृथिवी **(आ, भरति)** अच्छे प्रकार धारण करती है **(च)** और **(प्रवतः)** नीचे के स्थल में वर्त्तमान **(विश्वा)** सम्पूर्ण प्रजाओं तथा **(रोधांसि)** रुकावटों को **(नृवत्)** मनुष्यों के सदृश **(आ)** अच्छे प्रकार धारण करती है और जो **(शुष्मी)** बलवान् अग्नि **(गोः)** पृथिवी के सम्बन्ध में **(मातरा)** माता और पितारूप राजा और प्रजाजन तथा अन्तरिक्ष और पृथिवी को मनुष्यों के सदृश **(रेजत)** कम्पाता है, जहाँ **(परिज्मन्)** सब ओर से व्याप्त अन्तरिक्ष वा विस्तृत भूमि में **(वाताः)** पवन **(नोनुवन्त)** अत्यन्त शब्द करते हैं, उनको आप लोग जानो॥४॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो प्रकृतिरूप कारण से उत्पन्न हुआ बड़ा अग्नि सम्पूर्ण भूगोलों का आकर्षण करता है, माता और पिता के सदृश सब का पालन करता और अन्तरिक्ष में घुमाता है, उसको जान के कार्य्य सिद्ध करो॥४॥

**अथ भूगोलभ्रमणदृष्टान्तेन राजगुणानाह॥**

अब भूगोल के भ्रमणदृष्टान्त से राजगुणों को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**ता तू त॑ इन्द्र म॒हतो॑ म॒हानि॒ विश्वे॑ष्वित्सव॑नेषु प्र॒वाच्या॑।**

**यच्छू॑र धृष्णो धृष॒ता द॑धृ॒ष्वानहिं॒ वज्रे॑ण॒ शव॒साविवे॑षीः॥५॥७॥**

**ता। तु। ते॒। इ॒न्द्र॒। म॒ह॒तः। म॒हानि॑। विश्वे॑षु। इत्। सव॑नेषु। प्र॒ऽवाच्या॑। यत्। शू॒र॒। धृ॒ष्णो॒ इति॑। धृ॒ष॒ता। द॒धृ॒ष्वान्। अहि॑म्। वज्रे॑ण। शव॑सा। अवि॑वेषीः॥५॥**

**पदार्थः**-**(ता)** तानि **(तू)** अत्र **ऋचि तुनुघे**ति दीर्घः। **(ते)** तव **(इन्द्र)** परमैश्वर्य्यप्रयोजक **(महतः)** पूजनीयस्य **(महानि)** महान्ति **(विश्वेषु)** समग्रेषु **(इत्)** एव **(सवनेषु)** ऐश्वर्य्ययुक्तेषु लोकेषु **(प्रवाच्या)** प्रकर्षेण वक्तुं योग्यानि **(यत्)** यानि **(शूर)** निर्भय **(धृष्णो)** दृढप्रगल्भ **(धृषता)** प्रागल्भ्येन **(दधृष्वान्)** धारयन् **(अहिम्)** मेघमिव **(वज्रेण)** किरणेनेव शस्त्राऽस्त्रेण **(शवसा)** बलेन **(अविवेषीः)** व्याप्नुयाः॥५॥

**अन्वयः**-हे धृष्णो शूर इन्द्र राजन्! यद्यानि विश्वेषु सवनेषु महतस्ते महानि प्रवाच्या सन्ति ता इदेव तू दधृष्वान् धृषता शवसा वज्रेणाऽहिं सूर्य्य इवाऽविवेषीः॥५॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यथा सूर्य्यः किरणैराकृष्य सर्वान् भूगोलान् धरति तथैव महतीं सत्पुरुषादिसामग्रीं कृत्वा राजा दीपद्वीपान्तरस्थानि राज्यानि शिष्यात्॥५॥

**पदार्थः**-हे **(धृष्णो)** अत्यन्त ढीठ **(शूर)** भयरहित **(इन्द्र)** परम ऐश्वर्य्य का प्रयोग करने वाले राजन्! **(यत्)** जो **(विश्वेषु)** सम्पूर्ण **(सवनेषु)** ऐश्वर्य्य से युक्त लोकों में **(महतः)** आदर करने योग्य **(ते)** आपके **(महानि)** बड़े-बड़े **(प्रवाच्या)** उत्तमता से कहने योग्य कार्य्य हैं **(ता, इत्)** उन्हीं को **(तू)** तो **(दधृष्वान्)** धारण करते हुए **(धृषता)** अत्यन्त ढिठाई और **(शवसा)** बल से **(वज्रेण)** किरण से **(अहिम्)** मेघ को सूर्य्य जैसे वैसे शस्त्र और अस्त्र से **(अविवेषीः)** प्राप्त हूजिये॥५॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जैसे सूर्य्य किरणों से आकर्षण करके सम्पूर्ण भूगोलों को धारण करता है, वैसे ही बड़ी सत्पुरुष आदि सामग्री को करके राजा द्वीप और द्वीपान्तरों में स्थित राज्यों को शासन देवे॥५॥

**अथ विद्वद्विषयमाह॥**

अब विद्वद्विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**ता तू ते सत्या तुविनृम्ण विश्वा प्र धेनवः। सिस्रते वृष्ण ऊध्नः।**

**अधा ह त्वद् वृषमणो भियानाः प्र सिन्धवो जवसा चक्रमन्त॥६॥**

**ता। तु। ते। सत्या। तुविऽनृम्ण। विश्वा। प्र। धेनवः। सिस्रते। वृष्णः। ऊध्नः। अध। ह। त्वत्। वृषऽमनः। भियानाः। प्र। सिन्धवः। जवसा। चक्रमन्त॥६॥**

**पदार्थः**-**(ता)** तानि **(तू)** पुनः। अत्र **ऋचि तुनुघेति** दीर्घः। **(ते)** तव **(सत्या)** सत्सु साधूनि कर्म्माणि **(तुविनृम्ण)** बहुधन **(विश्वा)** सर्वाणि **(प्र)** **(धेनवः)** वाचः **(सिस्रते)** सरन्ति प्राप्नुवन्ति **(वृष्णः)** ब्रह्मचर्य्यादिना बलिष्ठान् **(ऊध्नः)** विस्तीर्णबलान् **(अधा)** अत्र **निपातस्य चेति** दीर्घः। **(ह)** खलु **(त्वत्)** तव सकाशात् **(वृषमणः)** वृषस्य बलयुक्तस्य मन इव मनो यस्य तत्सम्बुद्धौ **(भियानाः)** भयम्प्राप्ताः **(प्र)** **(सिन्धवः)** नद्यः **(जवसा)** वेगेन **(चक्रमन्त)** क्रमन्ते गच्छन्ति॥६॥

**अन्वयः**-हे तुविनृम्ण वृषमण इन्द्र! यथा सिन्धवो जवसा चक्रमन्त तथा त्वद्भियानाः शत्रवः दूरं पलायन्तेऽधा या ते विश्वा सत्या आचरणानि धेनवो वाचो वृष्ण ऊध्नः प्र सिस्रते ता तू ह त्वं जवसा प्र साध्नुहि॥६॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यस्य राज्ञोऽमोघा वाग्धर्म्यं कर्म्म वर्त्तते तस्माद्धेनुभ्यो वत्सा इव प्रजास्तृप्ता भवन्ति तस्माद् दुष्टा बिभ्यति यशश्च प्रथते॥६॥

**पदार्थः**-हे **(तुविनृम्ण)** बहुत धनवाले और **(वृषमणः)** बलयुक्त पुरुष के मन के सदृश मन से युक्त राजन्! जैसे **(सिन्धवः)** नदियाँ **(जवसा)** वेग से **(चक्रमन्त)** चलती हैं, वैसे **(त्वत्)** आपके समीप से **(भियानाः)** भय को प्राप्त शत्रु लोग दूर भागते हैं **(अधा)** इसके अनन्तर जो **(ते)** आपके **(विश्वा)** सम्पूर्ण **(सत्या)** श्रेष्ठ पुरुषों में साधु कर्म्म अर्थात् उत्तम आचरण और **(धेनवः)** वाणियाँ **(वृष्णः)**



www.9009.co.in

ब्रह्मचर्य्य आदि से बलिष्ठ **(ऊध्न:)** विस्तीर्ण बलवालों को **(प्र, सिस्रते)** अच्छे प्रकार प्राप्त होती हैं **(ता)** उनको **(तू)** फिर **(ह)** निश्चय से आप वेग से **(प्र)** अत्यन्त सिद्ध करो॥६॥

**भावार्थ:**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जिस राजा की सफल वाणी और धर्मयुक्त कर्म्म वर्तमान है, उससे गौओं से बछड़ों के सदृश प्रजा तृप्त होती है और उससे दुष्ट डरते हैं और यश विस्तृत होता है॥६॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अत्राह ते हरिवस्ता उ देवीरवोभिरिन्द्र स्तवन्त स्वसार:।**

**यत्सीमनु प्र मुचो बद्बधाना दीर्घामनु प्रसितिं स्यन्दयध्यै॥७॥**

**अत्र। अह। ते। हरिऽव:। ता:। ऊम् इति। देवी:। अव:ऽभि:। इन्द्र। स्तवन्त। स्वसार:। यत्। सीम्। अनु। प्र। मुच:। बद्बधाना:। दीर्घाम्। अनु। प्रऽसितिम्। स्यन्दयध्यै॥७॥**

**पदार्थ:**-**(अत्र)** अस्मिन् राज्ये **(अह)** विनिग्रहे **(ते)** तव **(हरिव:)** प्रशस्तपुरुषयुक्त **(ता:)** **(उ)** **(देवी:)** देदीप्यमाना विदुष्यस्स्त्रिय: **(अवोभि:)** रक्षणादिभि: **(इन्द्र)** परमैश्वर्य्ययुक्त राजन् **(स्तवन्त)** स्तुवन्ति **(स्वसार:)** अङ्गुल्य इव मैत्रीं भगिनित्वमाचरन्त्य: **(यत्)** या: **(सीम्)** सर्वत: **(अनु)** **(प्र)** **(मुच:)** मोचय **(बद्बधाना:)** प्रबन्धकर्त्र्य: **(दीर्घाम्)** लम्बीभूताम् **(अनु)** **(प्रसितिम्)** बन्धनम् **(स्यन्दयध्यै)** स्यन्दयितुं प्रस्रावयितुम्॥७॥

**अन्वय:**-हे हरिव इन्द्र! अत्राऽह यद्या ते बद्बधाना: स्वसार इव वर्त्तमाना विदुष्यस्स्त्रिय: स्यन्दयध्यै दीर्घां प्रसितिमनु स्तवन्त ता उ देवीरवोभि: सीं दु:खबन्धनात्त्वमनु प्र मुच:॥७॥

**भावार्थ:**-हे राजादयो मनुष्या! यथा भवन्तो ब्रह्मचर्य्येण विद्या अधीत्य राजनीत्या राज्यं पालयन्ति तथैव भवतां स्त्रिय: स्त्रीणां न्यायं कुर्युरेवं कृते सति दृढो राजधर्मप्रबन्धो भवतीति वेद्यम्॥७॥

**पदार्थ:**-हे **(हरिव:)** श्रेष्ठ पुरुषों से और **(इन्द्र)** अत्यन्त ऐश्वर्य्य से युक्त **(अत्र)** इस राज्य में **(अह)** ग्रहण करने में **(यत्)** जो **(ते)** आपकी **(बद्बधाना:)** प्रबन्ध करने वाली **(स्वसार:)** अङ्गुलियों के समान वर्त्तमान बहिनपने का आचरण करती और पढ़ी हुई स्त्रियाँ **(स्यन्दयध्यै)** बहाने को **(दीर्घाम्)** लम्बीभूत **(प्रसितिम्)** बन्धावट की **(अनु, स्तवन्त)** अनुकूल स्तुति करती हैं **(ता:, उ)** उन्हीं **(देवी:)** प्रकाशित पढ़ी हुई स्त्रियों को **(अवोभि:)** रक्षण आदि व्यवहारों से **(सीम्)** सब प्रकार दु:खरूप बन्धन से आप **(अनु, प्र, मुच:)** अच्छे प्रकार छुड़ाइये॥७॥

**भावार्थ:**-हे राजा आदि मनुष्यो! जैसे आप लोग ब्रह्मचर्य से विद्याओं को पढ़कर राजनीति से राज्य का पालन करते हैं, वैसे ही आप लोगों की स्त्रियाँ स्त्रियों का न्याय करें। ऐसा करने पर दृढ़ राज्यधर्म्म का प्रबन्ध होता है, ऐसा जानना चाहिये॥७॥



www.9009.co.in

**अथ राजनीत्यध्ययनेनाध्यापकविषयमाह॥**

अब राजनीति के अध्ययन से अध्यापकविषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**पिपीळे अंशुर्मद्यो न सिन्धुरा त्वा शमी शशमानस्य शक्तिः।**

**अस्मद्र्यक् शुशुचानस्य यम्या आशुर्न रश्मिं तुव्योजसं गोः॥८॥**

**पिपीळे। अंशुः। मद्यः। न। सिन्धुः। आ। त्वा। शमी। शशमानस्य। शक्तिः। अस्मद्र्यक्। शुशुचानस्य। यम्याः। आशुः। न। रश्मिम्। तुविऽओजसम्। गोः॥८॥**

**पदार्थः**-(**पिपीळे**) पीडयति (**अंशुः**) प्रापकः (**मद्यः**) आनन्दयिता (**न**) इव (**सिन्धुः**) नदीव (**आ**) (**त्वा**) त्वाम् (**शमी**) उत्तमं कर्म्म (**शशमानस्य**) अधर्म्ममुल्लङ्घतः (**शक्तिः**) सामर्थ्यम् (**अस्मद्र्यक्**) याऽस्मानञ्चति प्राप्नोति (**शुशुचानस्य**) भृशं शोधकस्य (**यम्याः**) रात्रयः। **यम्येति रात्रिनामसु पठितम्।** (निघं०१.७) (**आशुः**) शीघ्रगाम्यश्वः (**न**) इव (**रश्मिम्**) सूर्य्यप्रकाशम् (**तुव्योजसम्**) बहुबलपराक्रमम् (**गोः**) स्तावकस्य। **गौरिति स्तोतृनामसु पठितम्।** (निघं०३.१६)॥८॥

**अन्वयः**-हे राजन्! मद्यस्सिन्धुर्न यन्त्वामंशुरापिपीळे तस्य शशमानस्य शुशुचानस्य गोस्त आशुर्न यम्या रश्मिमिव याऽस्मद्र्यक् शक्तिरस्मान् पालयेत् सा शमी च तुव्योजसन्त्वाऽऽप्नोतु॥८॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। हे प्रजाजना! ये स्वं राजानं पीडयेयुस्ते युष्माभिर्हन्तव्याः। यथा रात्रयो रश्मिं प्रानश्यन्ति तथैव धार्मिकस्य राज्ञो बलं प्राप्य शत्रवो निवर्त्तन्ते॥८॥

**पदार्थः**-हे राजन्! (**मद्यः**) आनन्दित कराने वाली (**सिन्धुः**) नदी जैसे (**न**) वैसे जिन आपको (**अंशुः**) पदार्थ पहुंचने वाला (**आ, पिपीळे**) पीड़ा देता है उन (**शशमानस्य**) अधर्म्म का उल्लङ्घन करने (**शुशुचानस्य**) अत्यन्त शोधने और (**गोः**) स्तुति करनेवाले आपके (**आशुः**) शीघ्र चलनेवाले घोड़े के (**न**) सदृश (**यम्याः**) रात्रियाँ (**रश्मिम्**) सूर्य्य के प्रकाश को जैसे वैसे जो (**अस्मद्र्यक्**) हम को प्राप्त होनेवाली (**शक्तिः**) सामर्थ्य हम लोगों का पालन करे वह और (**शमी**) उत्तम कर्म्म (**तुव्योजसम्**) बहुत बल और पराक्रमयुक्त (**त्वा**) आपको प्राप्त होवे॥८॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे प्रजाजनो! जो लोग अपने राजा को पीड़ा देवें, वे आप लोगों से नाश करने योग्य हैं। और जैसे रात्रि[याँ] किरणों को नष्ट करती हैं, वैसे ही धार्म्मिक राजा के बल को प्राप्त होकर शत्रु दूर होते हैं॥८॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अस्मे वर्षिष्ठा कृणुहि ज्येष्ठा नृम्णानि सत्रा सहुरे सहांसि।**

**अस्मभ्यं वृत्रा सुहनानि रन्धि जहि वधर्वनुषो मर्त्यस्य॥९॥**



www.9009.co.in

**अस्मे इति। वर्षिष्ठा। कृणुहि। ज्येष्ठा। नृम्णानि। सत्रा। सहुरे। सहांसि। अस्मभ्यम्। वृत्रा। सुऽहनानि। रन्धि। जहि। वधः। वनुषः। मर्त्यस्य॥ ९॥**

**पदार्थः**-**(अस्मे)** अस्मासु **(वर्षिष्ठा)** अतिशयेन वृद्धानि **(कृणुहि)** कुरु **(ज्येष्ठा)** प्रशस्यानि **(नृम्णानि)** धनानि **(सत्रा)** सत्यानि **(सहुरे)** सहनशीलेन्द्र **(सहांसि)** सहनानि **(अस्मभ्यम्)** **(वृत्रा)** वृत्राणि मेघघना इव शत्रुसैन्यानि **(सुहनानि)** सुष्ठु हन्तुं योग्यानि **(रन्धि)** नाशय **(जहि)** दूरे प्रक्षिप **(वधः)** वधसाधनम् **(वनुषः)** सेवमानस्य **(मर्त्यस्य)**॥ ९॥

**अन्वयः**-हे सहुरे राजन्! यानि ते सत्रा वर्षिष्ठा ज्येष्ठा नृम्णानि सहांसि वर्त्तन्ते तान्यस्मे कृणुहि। अस्मभ्यं दुःखप्रदस्य वनुषो मर्त्यस्य वधर्जहि सुहनानि वृत्रेव शत्रुसैन्यानि रन्धि॥ ९॥

**भावार्थः**-हे राजादयो जना! यूयम्मिलित्वा प्रजापीडकस्य बलं घ्नत यानि स्वेषामुत्तमानि वस्तूनि तान्यस्मासु दधत यान्यस्माकमुत्तमानि रत्नानि तानि युष्मासु वयं धरेम॥ ९॥

**पदार्थः**-हे **(सहुरे)** सहनशील राजन्! जो आपके **(सत्रा)** सत्य **(वर्षिष्ठा)** अत्यन्त वृद्ध **(ज्येष्ठा)** प्रशंसा करने योग्य **(नृम्णानि)** धन **(सहांसि)** और सहन वर्त्तमान हैं उनको **(अस्मे)** हम लोगों में **(कृणुहि)** करो **(अस्मभ्यम्)** हम लोगों के लिये दुःख देने वाले **(वनुषः)** सेवा करते हुए **(मर्त्यस्य)** मनुष्य के **(वधः)** मारने के साधन को **(जहि)** दूर फेंको और **(सुहनानि)** उत्तम प्रकार नाश करने योग्य **(वृत्रा)** मेघ बादलों के समान शत्रुओं की सेनाओं का **(रन्धि)** नाश कीजिये॥ ९॥

**भावार्थः**-हे राजा आदि जनो! आप लोग मिल के प्रजा को पीड़ा देने वाले के बल का नाश करो और जो आप लोगों के उत्तम वस्तु उनको हम लोगों में धारण कीजिये और जो हम लोगों के उत्तम रत्न उनको आप लोग धरें॥ ९॥

**अथोपदेशकविषयमाह॥**

अब उपदेशकविषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अस्माकमित्सु शृणुहि त्वमिन्द्रास्मभ्यं चित्राँ उप माहि वाजान्।**

**अस्मभ्यं विश्वा इषणः पुरंधीरस्माकं सु मघवन् बोधि गोदाः॥ १०॥**

**अस्माकम्। इत्। सु। शृणुहि। त्वम्। इन्द्र। अस्मभ्यम्। चित्रान्। उप। माहि। वाजान्। अस्मभ्यम्। विश्वाः। इषणः। पुरम्ऽधीः। अस्माकम्। सु। मघऽवन्। बोधि। गोऽदाः॥ १०॥**

**पदार्थः**-**(अस्माकम्)** **(इत्)** एव **(सु)** **(शृणुहि)** **(त्वम्)** **(इन्द्र)** **(अस्मभ्यम्)** **(चित्रान्)** अद्भुतान् **(उप)** **(माहि)** मन्यस्व **(वाजान्)** अन्नादीन् **(अस्मभ्यम्)** **(विश्वाः)** समग्राः **(इषणः)** प्रेरय **(पुरन्धीः)** याः पुरूणि विज्ञानानि दधति ताः प्रज्ञाः **(अस्माकम्)** **(सु)** **(मघवन्)** **(बोधि)** बुध्यस्व **(गोदाः)** यो गां धेनुं ददाति सः॥ १०॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे मघवन्निन्द्र! त्वमस्माकं वचांसि सुशृणुह्यस्मभ्यं चित्रान् वाजानुप माह्यस्मभ्यं विश्वाः पुरन्धीरिदिषणोऽस्माकं गोदास्सन्नस्मान् सु बोधि॥१०॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! येऽस्माकं न्यायवचांसि शृणवन्त्यस्मान् विदुषः प्रज्ञान् कुर्वन्ति तेषां सेवाऽस्माभिः सततं कार्य्या॥१०॥

**पदार्थः**-हे **(मघवन्)** बहुत धन से युक्त **(इन्द्र)** राजन् **(त्वम्)** आप **(अस्माकम्)** हम लोगों के वचनों को **(सु, शृणुहि)** उत्तम प्रकार सुनो और **(अस्मभ्यम्)** हम लोगों के लिये **(चित्रान्)** अद्भुत **(वाजान्)** अन्न आदिक पदार्थों को **(उप, माहि)** उपमित कीजिये अर्थात् उत्तमता से मानिये और **(अस्मभ्यम्)** हम लोगों के लिये **(विश्वाः)** सम्पूर्ण **(पुरन्धीः)** विज्ञानों को धारण करने वाली बुद्धियों को **(इत्)** ही **(इषणः)** प्रेरित करो और **(अस्माकम्)** हम लोगों के **(गोदाः)** गौ को देनेवाले होते हुए आप हम लागों को **(सु, बोधि)** उत्तम प्रकार जानिये॥१०॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो लोग हम लोगों के नीति के अनुकूल वचनों को सुनते और हम लोगों को विद्वान् करते हैं, उन लोगों की सेवा हम लोगों को चाहिये कि निरन्तर करें॥१०॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**नू ष्टुत इन्द्र नू गृणान इषं जरित्रे नद्यो३ न पीपेः।**

**अकारि ते हरिवो ब्रह्म नव्यं धिया स्याम रथ्यः सदासाः॥११॥८॥**

**नु। स्तुतः। इन्द्र। नु। गृणानः। इषम्। जरित्रे। नद्यः। न। पीपेरिति पीपेः। अकारि। ते। हरिऽवः। ब्रह्म। नव्यम्। धिया। स्याम। रथ्यः। सदाऽसाः॥११॥**

**पदार्थः**-**(नु)** **(स्तुतः)** प्रशंसितः **(इन्द्र)** यज्ञैश्वर्य्ययुक्त **(नु)** **(गृणानः)** **(इषम्)** अन्नम् **(जरित्रे)** विदुषे **(नद्यः)** सरितः **(न)** इव **(पीपेः)** वर्धय **(अकारि)** **(ते)** **(हरिवः)** प्रशस्तविद्यार्थियुक्त **(ब्रह्म)** धनम् **(नव्यम्)** नवीनं नवीनम् **(धिया)** **(स्याम)** **(रथ्यः)** **(सदासाः)**॥११॥

**अन्वयः**-हे हरिव इन्द्र! यतस्त्वं स्तुतस्सञ्जरित्र इषं दत्वा नद्यो न नु पीपेः। यतस्त्वमस्माभिर्गृणानो न्वकारि ते तुभ्यं नव्यं ब्रह्म दीयेत तस्माद् रथ्यः सदासा वयं धिया तव सखायः स्याम॥११॥

**भावार्थः**-हे विद्वन्! यस्मात्त्वं सर्वेभ्यो विद्यां ददासि तस्मात्त्वया सह मैत्रीं कृत्वा तुभ्यं पुष्कलधनमन्नञ्च दत्वा सततं सत्कुर्याम॥११॥

अत्रेन्द्रपृथिवीधारणभ्रमणविद्वदध्यापकोपदेशकगुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति द्वाविंशत्तमं सूक्तमष्टमो वर्गश्च समाप्तः॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-हे **(हरिवः)** श्रेष्ठ विद्यार्थियों और **(इन्द्र)** यज्ञ के ऐश्वर्य्य से युक्त! जिससे आप **(स्तुतः)** प्रशंसित हुए **(जरित्रे)** विद्वान् पुरुष के लिये **(इषम्)** अन्न को देकर **(नद्यः)** नदियों के **(न)** सदृश **(नु)** शीघ्र **(पीपेः)** वृद्धि कराओ जिससे आप हम लोगों से **(गृणानः)** प्रशंसा करते हुए **(नु)** निश्चय **(अकारि)** किये गये और **(ते)** आपके लिये **(नव्यम्)** नवीन-नवीन **(ब्रह्म)** धन दिया जाय इससे **(रथ्यः)** रथयुक्त **(सदासाः)** दासों के सहित वर्त्तमान हम लोग **(धिया)** बुद्धि से आपके मित्र **(स्याम)** होवे॥११॥

**भावार्थः**-हे विद्वन्! जिससे आप सब के लिये विद्या देते हो, इससे आपके साथ मित्रता करके आपके लिये बहुत धन और अन्न देकर निरन्तर सत्कार करें॥११॥

इस सूक्त के अर्थ में इन्द्र, पृथिवी, धारण, भ्रमण, विद्वान्, अध्यापक और उपदेशक के गुणवर्णन करने से इसके अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह बाईसवां सूक्त और आठवां वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

**अथैकादशर्चस्य त्रयोविंशत्तमस्य सूक्तस्य वामदेव ऋषिः। १-७, ११ इन्द्रः। ८-१० इन्द्र ऋतदेवा देवताः। १-३, ७-९ त्रिष्टुप्। ४, १० निचृत्त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः। ५, ६ भुरिक् पङ्क्तिः। ११ निचृत्पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः॥**

**अथ प्रश्नोत्तरविषयमाह॥**

अब ग्यारह ऋचा वाले तेईसवें सूक्त का प्रारम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में प्रश्नोत्तरविषय को कहते हैं॥

**कथा महामवृधत्कस्य होतुर्यज्ञं जुषाणो अभि सोममूधः।**

**पिबन्नुशानो जुषमाणो अन्धो ववक्ष ऋष्वः शुचते धनाय॥ १॥**

**कथा। महाम्। अवृधत्। कस्य। होतुः। यज्ञम्। जुषाणः। अभि। सोमम्। ऊधः। पिबन्। उशानः। जुषमाणः। अन्धः। ववक्षे। ऋष्वः। शुचते। धनाय॥ १॥**

**पदार्थः**-(**कथा**) (**महाम्**) महान्तम् (**अवृधत्**) वर्धते (**कस्य**) (**होतुः**) न्यायादिकर्म्मकर्तुः (**यज्ञम्**) सङ्गन्तव्यं व्यवहारम् (**जुषाणः**) सेवमानः (**अभि**) (**सोमम्**) दुग्धादिरसम् (**ऊधः**) उत्कृष्टम् (**पिबन्**) (**उशानः**) कामयमानः (**जुषमाणः**) सेवमानः (**अन्धः**) अन्नम् (**ववक्षे**) वहति (**ऋष्वः**) महान् (**शुचते**) पवित्रयति विचारयति वा (**धनाय**)॥ १॥

**अन्वयः**-हे विद्वन्! कस्य होतुर्महां यज्ञं जुषाणः कथाऽभ्यवृधत् य ऊधस्सोमं पिबन्नैश्वर्यमुशानोऽन्धो जुषमाणो ववक्ष ऋष्वस्सन् धनाय शुचते॥ १॥

**भावार्थः**-हे विद्वन्! कस्मादधीत्य विद्यार्थी कथं वर्धेत कथं विद्यां सेवेत कश्च विद्वान् भवेदित्यस्य प्रश्नस्यः ब्रह्मचर्य्येण वीर्य्यं निगृह्य विद्यां कामयमान आचार्य्यमुपेत्य सेवां कृत्वा मिताऽऽहारविहारः सन्नरोगोः भूत्वा विद्याप्राप्तये भृशं प्रयतत इत्युत्तरम्॥ १॥

**पदार्थः**-हे विद्वन्! (**कस्य**) किस (**होतुः**) न्याय आदि कर्म्म करनेवाले के (**महाम्**) बड़े (**यज्ञम्**) मेल करने योग्य व्यवहार का (**जुषाणः**) सेवन करता हुआ (**कथा**) किस प्रकार से (**अभि, अवृधत्**) बढ़ता और जो (**ऊधः**) उत्तम (**सोमम्**) दुग्ध आदि रस को (**पिबन्**) पीता ऐश्वर्य की (**उशानः**) कामना करता और (**अन्धः**) अन्न की (**जुषमाणः**) सेवा करता हुआ (**ववक्षे**) पदार्थ पहुंचाता है (**ऋष्वः**) तथा बड़ा हुआ (**धनाय**) धन के लिये (**शुचते**) पवित्र कराता विचार कराता है॥ १॥

**भावार्थः**-हे विद्वन्! किससे पढ़कर विद्यार्थी कैसे बढ़े? कैसे विद्या का सेवन करे? और कौन विद्वान् होवे? इस प्रश्न का, ब्रह्मचर्य्य से वीर्य्य का निग्रह करके, विद्या की कामना करता हुआ, आचार्य्य के समीप जा और सेवा करके, नियत आहार-विहार युक्त हुआ, रोगरहित होकर, विद्या की प्राप्ति के लिये अत्यन्त प्रयत्न करता है, यह उत्तर है॥ १॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**



www.9009.co.in

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**को अस्य वीरः सधमादमाप समानंश सुमतिभिः को अस्य।**

**कदस्य चित्रं चिकिते कदूती वृधे भुवच्छशमानस्य यज्योः॥ २॥**

**कः। अस्य। वीरः। सधऽमादम्। आप। सम्। आनंश। सुमतिऽभिः। कः। अस्य। कत्। अस्य। चित्रम्। चिकिते। कत्। ऊती। वृधे। भुवत्। शशमानस्य। यज्योः॥ २॥**

**पदार्थः**-(**कः**) (**अस्य**) अध्यापकस्य राज्ञो वा (**वीरः**) विद्यया प्राप्तशरीरात्मबलः (**सधमादम्**) सहाऽऽनन्दम् (**आप**) आप्नुयात् (**सम्**) (**आनंश**) प्राप्नोति (**सुमतिभिः**) श्रेष्ठैर्विद्वद्भिस्सह (**कः**) (**अस्य**) (**कत्**) कदा (**अस्य**) (**चित्रम्**) अद्भुतं विज्ञानम् (**चिकिते**) जानाति (**कत्**) (**ऊती**) ऊत्या रक्षणाद्येन (**वृधे**) वृद्धये (**भुवत्**) भवेत् (**शशमानस्य**) प्रशंसितस्य (**यज्योः**) सङ्गन्तुमर्हस्य सत्यव्यवहारस्य॥ २॥

**अन्वयः**-हे विद्वन्! को वीरोऽस्य सधमादमाप को वीरोऽस्य सुमतिभिश्चित्रं चिकिते कदस्य विद्यां समानंश को वीर ऊती शशमानस्य यज्योर्वृधे कद्भुवत्॥ २॥

**भावार्थः**-हे विद्वन् राजन् वा! कः केन सह पठेत् कः केन सह न्यायं कुर्य्याद् युद्ध्येद्वा क एषां वरिष्ठ इति प्रश्नस्य ये प्रशंसितकर्म्मणामनुष्ठातारो वर्धकाः स्युरित्युत्तरम्॥ २॥

**पदार्थः**-हे विद्वन्! (**कः**) कौन (**वीरः**) विद्या से प्राप्त शरीर और आत्मबलयुक्त (**अस्य**) इस अध्यापक वा राजा के (**सधमादम्**) साथ आनन्द को (**आप**) प्राप्त होवे (**कः**) कौन वीर (**अस्य**) इसके (**सुमतिभिः**) श्रेष्ठ विद्वानों के साथ (**चित्रम्**) अद्भुत विज्ञान को (**चिकिते**) जानता है (**कत्**) कब (**अस्य**) इसको विद्या को (**सम्, आनंश**) प्राप्त होता है और कौन वीर (**ऊती**) रक्षण आदि से (**शशमानस्य**) प्रशंसित (**यज्योः**) संगम करने योग्य सत्य व्यवहार की (**वृधे**) वृद्धि के लिये (**कत्**) कब (**भुवत्**) होवे॥ २॥

**भावार्थः**-हे विद्वन् वा राजन्! कौन किसके साथ पढ़े? कौन किसके साथ न्याय करे? वा युद्ध करे? कौन इनमें श्रेष्ठ? इस प्रश्न का जो प्रशंसित कर्म्मों के अनुष्ठान और वृद्धि करने वाले होवें, यह उत्तर है॥ २॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**कथा शृणोति हूयमानमिन्द्रः कथा शृण्वन्नवसामस्य वेद।**

**का अस्य पूर्वीरुपमातयो ह कथैनमाहुः पपुरिं जरित्रे॥ ३॥**

**कथा। शृणोति। हूयमानम्। इन्द्रः। कथा। शृण्वन्। अवसाम्। अस्य। वेद। काः। अस्य। पूर्वीः। उपऽमातयः। ह। कथा। एनम्। आहुः। पपुरिम्। जरित्रे॥ ३॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**कथा**) केन प्रकारेण (**शृणोति**) (**हूयमानम्**) स्पर्द्धमानम् (**इन्द्रः**) अध्यापको राजा वा (**कथा**) (**शृण्वन्**) (**अवसाम्**) रक्षणादीनाम् (**अस्य**) (**वेद**) जानीयात् (**काः**) (**अस्य**) (**पूर्वीः**) प्राचीनाः (**उपमातयः**) उपमाः (**ह**) खलु (**कथा**) (**एनम्**) (**आहुः**) (**पपुरिम्**) पालकम् (**जरित्रे**) विदुषे॥३॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! इन्द्रो हूयमानं कथा शृणोति शृण्वन्नस्याऽवसां हूयमानं कथा वेदाऽस्य पूर्वीरुपमातयो ह काः सन्ति। अथैनं जरित्रे पपुरिं कथाऽऽहुरिति प्रष्टव्यम्॥३॥

**भावार्थः**-ये विद्यार्थिनो राजजनाश्चाऽऽप्तानां वचांसि शास्त्राणि सम्यक्छ्रुत्वा मत्वा निश्चित्य पुनः कर्म्माऽऽरभन्ते त एव सर्वं वेदितव्यं विजानन्ति॥३॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! (**इन्द्रः**) अध्यापक वा राजा (**हूयमानम्**) स्पर्द्धा करते हुए को (**कथा**) किस प्रकार (**शृणोति**) सुनता है और (**शृण्वन्**) सुनता हुआ (**अस्य**) इसके (**अवसाम्**) रक्षण आदिकों की स्पर्द्धा करते हुए को (**कथा**) किस प्रकार से (**वेद**) जाने (**अस्य**) इसकी (**पूर्वीः**) प्राचीन (**उपमातयः**) उपमा (**ह**) ही (**काः**) कौन हैं? अनन्तर (**एनम्**) इसको (**जरित्रे**) विद्वान् के लिये (**पपुरिम्**) पालन करने वाला (**कथा**) किस प्रकार (**आहुः**) कहते हैं, ऐसा पूछना चाहिए॥३॥

**भावार्थः**-जो विद्यार्थी और राजा के जन यथार्थवक्ता पुरुषों के वचनों के शास्त्रों को उत्तम प्रकार सुन, मान और निश्चय करके पुनः कर्मों का आरम्भ करते हैं, वे ही सम्पूर्ण जानने योग्य को जानते हैं॥३॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**कथा सबाधः शशमानो अस्य नशदभि द्रविणं दीध्यानः।**

**देवो भुवन्नवेदा म ऋतानां नमो जगृभ्वाँ अभि यज्जुजोषत्॥४॥**

**कथा। सऽबाधः। शशमानः। अस्य। नशत्। अभि। द्रविणम्। दीध्यानः। देवः। भुवत्। नवेदाः। मे। ऋतानाम्। नमः। जगृभ्वान्। अभि। यत्। जुजोषत्॥४॥**

**पदार्थः**-(**कथा**) (**सबाधः**) बाधेन सह वर्त्तमानः (**शशमानः**) प्रशंसन् (**अस्य**) (**नशत्**) नश्यति (**अभि**) (**द्रविणम्**) धनम् (**दीध्यानः**) प्रकाशयन् (**देवः**) विद्वान् (**भुवत्**) भवेत् (**नवेदाः**) यो न वेत्ति सः (**मे**) मम (**ऋतानाम्**) सत्यानाम् (**नमः**) अन्नम् (**जगृभ्वान्**) गृहीतवान् (**अभि**) (**यत्**) यः (**जुजोषत्**) सेवते॥४॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! अस्य सबाधः कथा नशद् द्रविणमभि दीध्यानः शशमानो देवः कथा भुवन्नवेदा म ऋतानां नमो जगृभ्वान् यद्यः स कथाऽभि जुजोषत्॥४॥

**भावार्थः**-हे अध्यापक राजन् वा! कथमेतान् विद्याऽभयं वा प्राप्नुयात्। कथमिमे विद्वांसो भवेयुरिति प्रश्नस्य ये सत्कारेण सत्पुरुषेभ्यः शिक्षां गृहीत्वा धर्म्मं सेवेरन्नित्युत्तरम्॥४॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(अस्य)** इस का **(सबाधः)** बाधसहित अर्थात् दुःख के सहित वर्त्तमान **(कथा)** किस प्रकार से **(नशत्)** नष्ट होता है **(द्रविणम्)** धन का **(अभि, दीध्यानः)** सब ओर से प्रकाश और **(शशमानः)** प्रशंसा करता हुआ **(देवः)** विद्वान् किस प्रकार **(भुवत्)** होवे **(नवेदाः)** नहीं जाननेवाला जन **(मे)** मेरे **(ऋतानाम्)** सत्य व्यवहारों के सम्बन्ध में **(नमः)** अन्न को **(जगृभ्वान्)** ग्रहण किये हुए **(यत्)** जो जन वह किस प्रकार से **(अभि, जुजोषत्)** सेवन करता है॥४॥

**भावार्थः**-हे अध्यापक वा राजन्! किस प्रकार से इस विद्या वा अभय को प्राप्त होवे? और किस प्रकार से ये विद्वान् होवें? इस प्रश्न का, जो सत्कार से श्रेष्ठ पुरुषों से शिक्षा को ग्रहण करके धर्म्म का सेवन करें, यह उत्तर है॥४॥

**अथ प्रश्नोत्तराभ्याम्मैत्रीकरणविषयमाह॥**

अब प्रश्नोत्तर से मैत्रीकरणविषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**कथा कदस्या उषसो व्युष्टौ देवो मर्त्तस्य सख्यं जुजोष।**

**कथा कदस्य सख्यं सखिभ्यो ये अस्मिन् कामं सुयुजं ततस्रे॥५॥९॥**

**कथा। कत्। अस्याः। उषसः। विऽउष्टौ। देवः। मर्त्तस्य। सख्यम्। जुजोष। कथा। कत्। अस्य। सख्यम्। सखिऽभ्यः। ये। अस्मिन्। कामम्। सुऽयुजम्। ततस्रे॥५॥**

**पदार्थः**-**(कथा)** **(कत्)** **(अस्याः)** वर्त्तमानायाः **(उषसः)** प्रातर्वेलायाः **(व्युष्टौ)** विशेषदीप्तौ **(देवः)** सूर्य्य इव विद्वान् **(मर्त्तस्य)** मनुष्यस्य **(सख्यम्)** सख्युर्भावं कर्म्म वा **(जुजोष)** सेवते **(कथा)** **(कत्)** कदा **(अस्य)** **(सख्यम्)** सख्युर्भावं कर्म्म वा **(सखिभ्यः)** मित्रेभ्यः **(ये)** **(अस्मिन्)** मित्रभावकर्म्मणि **(कामम्)** इच्छाम् **(सुयुजम्)** सुष्ठु योक्तुमर्हम् **(ततस्रे)** तन्वन्ति॥५॥

**अन्वयः**-हे विद्वांसो! देवो विद्वानस्या उषसो व्युष्टौ मर्त्तस्य सख्यं कत्कथा जुजोष तेभ्यः सखिभ्योऽस्य सख्यं कत् कथा भवितुं योग्यं येऽस्मिन्त्सुयुजं कामं ततस्रे॥५॥

**भावार्थः**-हे विद्वांसो! मनुष्यैः केन सह कदा मित्रता कथं मित्रत्वनिर्वाहं कर्त्तव्यः। सखिभिस्सह कथं वर्त्तितव्यमिति प्रश्नस्य यदा सम्यक् परीक्षां कुर्य्यात्तदा तेन सह मैत्रीं ये चाऽस्मिञ्जगति सर्वैस्सह मित्राचारं कर्त्तुं कामयन्ते तैः सह सदैव सखित्वं रक्षणीयम्॥५॥

**पदार्थः**-हे विद्वज्जनो **(देवः)** सूर्य्य के सदृश विद्वान् **(अस्याः)** इस वर्त्तमान **(उषसः)** प्रातःकाल के **(व्युष्टौ)** विशेष प्रकाश में **(मर्त्तस्य)** मनुष्य के **(सख्यम्)** मित्रपने वा मित्र के कर्म का **(कत्)** कब **(कथा)** किस प्रकार **(जुजोष)** सेवन करता है उन **(सखिभ्यः)** मित्रों के लिये **(अस्य)** इस का **(सख्यम्)** मित्रपन वा मित्रकर्म्म **(कत्)** कब **(कथा)** किस प्रकार से होने के योग्य है **(ये)** जो **(अस्मिन्)** इस मित्रपने रूप कर्म्म में **(सुयुजम्)** उत्तम प्रकार मिलाने के योग्य **(कामम्)** इच्छा का **(ततस्रे)** विस्तार करते हैं॥५॥



www.9009.co.in

**भावार्थ:**-हे विद्वानो! मनुष्यों को किसके साथ कब मित्रता और किस प्रकार मित्रता का निर्वाह करना चाहिये और मित्रों के साथ कैसे वर्त्तना चाहिये? इस प्रश्न का यह उत्तर है कि जब उत्तम प्रकार परीक्षा करे, तब उसके साथ मित्रता करे और जो इस जगत् में सबके साथ मित्राचार करने की कामना करते हैं, उनके साथ सदा ही मित्रता की रक्षा करनी चाहिये॥५॥

**पुनर्मैत्रीकरणविषयमाह॥**

फिर भी मैत्रीकरणविषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**किमादम॑त्रं स॒ख्यं सखि॑भ्यः क॒दा नु ते॑ भ्रा॒त्रं प्र ब्र॑वाम।**

**श्रि॒ये सु॒दृशो॒ वपु॑रस्य॒ सर्गा॑ः स्व१॒॑र्ण चि॒त्रत॑ममिष॒ आ गोः॥ ६॥**

**किम्। आत्। अम॑त्रम्। स॒ख्यम्। सखि॑ऽभ्यः। क॒दा। नु। ते॒। भ्रा॒त्रम्। प्र। ब्र॒वा॒म॒। श्रि॒ये। सु॒ऽदृश॑ः। वपु॑ः। अ॒स्य॒। सर्गा॑ः। स्व॑ः। न। चि॒त्रऽत॑मम्। इ॒षे॒। आ। गोः॥ ६॥**

**पदार्थः**-(**किम्**) (**आत्**) आनन्तर्ये (**अमत्रम्**) सुपात्रम् (**सख्यम्**) (**सखिभ्यः**) (**कदा**) (**नु**) (**ते**) तव (**भ्रात्रम्**) भ्रातुरिदं कर्म्म तद्वद्वर्त्तमानम् (**प्र**) (**ब्रवाम**) उपदिशेम (**श्रिये**) सेवायै धनाय वा (**सुदृशः**) सुष्ठु द्रष्टव्यस्य (**वपुः**) सुरूपं शरीरम् (**अस्य**) (**सर्गाः**) सृष्टयः (**स्वः**) सुखम् (**न**) इव (**चित्रतमम्**) अतिशयेनाश्चर्य्यरूपम् (**इषे**) इच्छायै (**आ**) (**गोः**) पृथिव्यादेः॥६॥

**अन्वयः**-हे विद्वन् राजन् वा! ते सखिभ्यो भ्रात्रं सख्यं कदा नु प्र ब्रवामाऽऽत् किममत्रं ते सखिभ्यः प्रब्रवाम। ये सुदृशोऽस्य श्रिये आ गोस्सर्गा वपुरिषे सन्ति तद्विज्ञानं चित्रतमं स्वर्ण वर्त्तत इति प्रब्रवाम॥६॥

**भावार्थः**-सर्वैर्मनुष्यैराप्तानां विदुषां मित्रता सदैव कार्या यतस्ते सदुपदेशेन सर्वान् सृष्टिविद्याविदो धर्म्मात्मनः सम्पाद्यातीवोत्तमं विज्ञानं दत्वा सुखिनः कुर्य्युरिति॥६॥

**पदार्थ:**-हे विद्वन् वा राजन्! (**ते**) आपके (**सखिभ्यः**) मित्रों के लिये (**भ्रात्रम्**) भ्रातृसम्बन्धि कर्म्म के सदृश वर्त्तमान (**सख्यम्**) मित्रपने वा मित्र के कर्म्म का (**कदा**) कब (**नु**) शीघ्र (**प्र, ब्रवाम**) उपदेश देवें (**आत्**) इसके अनन्तर (**किम्**) किस (**अमत्रम्**) सुपात्र का आपके मित्रों के लिये उपदेश देवें और जो (**सुदृशः**) उत्तम प्रकार देखने योग्य (**अन्य**) इसकी (**श्रिये**) सेवा वा धन के लिये (**आ, गोः**) पृथिवी से लेकर (**सर्गाः**) सृष्टियाँ (**वपुः**) उत्तम रूपयुक्त शरीर की (**इषे**) इच्छा के लिये हैं, उनका विज्ञान (**चित्रतमम्**) अत्यन्त आश्चर्य्यरूप (**स्वः**) सुख के (**न**) सदृश वर्त्तमान है, ऐसा उपदेश देवें॥६॥

**भावार्थ:**-सब मनुष्यों को चाहिये कि यथार्थवक्ता विद्वानों से मित्रता सदा ही करें, जिससे वे उत्तम उपदेश से सब को सृष्टिविद्या के जाननेवाले धर्म्मात्मा करके बहुत ही उत्तम विज्ञान को देकर सुखी करें॥६॥

**अथ शत्रुनिवारणसेनोन्नतिविषयमाह॥**

अब शत्रुनिवारण के अनुकूल सेना की उन्नति के विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥



www.9009.co.in

**द्रुहं जिघांसन् ध्वरसमनिन्द्रां तेतिक्ते तिग्मा तुजसे अनीका।**

**ऋणा चिद्यत्र ऋणया न उग्रो दूरे अज्ञाता उषसो बबाधे॥७॥**

**द्रुहम्। जिघांसन्। ध्वरसम्। अनिन्द्राम्। तेतिक्ते। तिग्मा। तुजसे। अनीका। ऋणा। चित्। यत्र। ऋणऽयाः। नः। उग्रः। दूरे। अज्ञाताः। उषसः। बबाधे॥७॥**

**पदार्थः**-(**द्रुहम्**) द्रोग्धारम् (**जिघांसन्**) हन्तुमिच्छन् (**ध्वरसम्**) हिंसकम् (**अनिन्द्राम्**) अनीश्वरीं गतिम् (**तेतिक्ते**) भृशं तीक्ष्णं करोति (**तिग्मा**) तिग्मानि तीव्राणि (**तुजसे**) बलाय शत्रूणां हिंसनाय वा (**अनीका**) शत्रुभिः प्राप्तुमनर्हाणि सैन्यानि (**ऋणा**) प्राप्तानि (**चित्**) अपि (**यत्र**) (**ऋणयाः**) प्राप्तया सेनया (**नः**) अस्माकम् (**उग्रः**) तीव्रः प्रभावः (**दूरे**) विप्रकृष्टे (**अज्ञाताः**) न ज्ञाताः (**उषसः**) प्रभातान् (**बबाधे**) बाधते॥७॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यत्र नो य उग्रो दूरेऽज्ञाताः शत्रुसेना उषसस्तमः सूर्य्य इव बबाध ऋणयाश्चित् तुजसे तिग्मा ऋणा अनीका तेतिक्ते द्रुहं ध्वरसं जिघांसन्ननिन्द्रां बबाधे॥७॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे राजन्! ये सुशिक्षितान्युत्तमानि शत्रूणां सद्यः पराजयकराणि सैन्यानि सम्पादयेयुर्यतोऽदूरेऽपि सन्तः शत्रवो बिभियुर्दारिद्र्यं भयञ्च दूरीकृत्य स्वप्रजाञ्चाऽऽनन्द्य दुष्टान् सततं हिंस्युस्तांस्त्वं सदैव सत्कुर्याः॥७॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! (**यत्र**) जहाँ (**नः**) हम लोगों का जो (**उग्रः**) तीव्र प्रताप (**दूरे**) दूर स्थान में (**अज्ञाताः**) नहीं जानी गई शत्रुओं की सेनाओं को (**उषसः**) प्रातःकाल से अन्धकार को जैसे सूर्य्य वैसे (**बबाधे**) विलोता है (**ऋणयाः**) प्राप्त सेना से (**चित्**) भी (**तुजसे**) बल के लिये अथवा शत्रुओं के नाश के लिये (**तिग्मा**) तीव्र (**ऋणा**) प्राप्त (**अनीका**) शत्रुओं से प्राप्त नहीं होने योग्य सैन्यसमूहों को (**तेतिक्ते**) अत्यन्त तीक्ष्ण करता है (**द्रुहम्**) द्रोह करने और (**ध्वरसम्**) हिंसा करनेवाले को (**जिघांसन्**) नष्ट करने की इच्छा करता हुआ (**अनिन्द्राम्**) ईश्वरसम्बन्धरहित मार्ग को (**बबाधे**) विलोता है॥७॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे राजन्! जो लोग उत्तम प्रकार शिक्षित, श्रेष्ठ, शत्रुओं को शीघ्र पराजय करने वाली सेनाओं को सिद्ध करें, जिनसे दूर स्थान में भी वर्त्तमान शत्रु लोग डरें, दारिद्र्य और भय को दूरकर अपनी प्रजा को आनन्द देकर दुष्टों का निरन्तर नाश करें, उनका आप सदा ही सत्कार करो॥७॥

**अथ सत्याचरणोत्तमताविषयमाह॥**

अब सत्याचरणोत्तमता विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**ऋतस्य हि शुरुधः सन्ति पूर्वीर्ऋतस्य धीतिर्वृजिनानि हन्ति।**

**ऋतस्य श्लोको बधिरा ततर्द कर्णा बुधानः शुचमान आयोः॥८॥**



www.9009.co.in

ऋतस्य॑। हि। शुरुध॑:। सन्ति॑। पूर्वी॑:। ऋतस्य॑। धीतिः। वृजिनानि॑। हन्ति॒। ऋतस्य॑। श्लोक॑:। बधिरा। ततर्द॒। कर्णा॑। बुधानः। शुचमा॑नः। आयोः॥८॥

**पदार्थः**-(**ऋतस्य**) सत्यस्य (**हि**) यतः (**शुरुधः**) याः शु सद्यो रुन्धन्ति ताः स्वसेनाः। **शुरुध इति पदनामसु पठितम्।** (निघं०४.३) (**सन्ति**) (**पूर्वीः**) प्राचीनाः (**ऋतस्य**) यथार्थस्य (**धीतिः**) धारणावती प्रज्ञा (**वृजिनानि**) बलानि। **वृजिनमिति बलनामसु पठितम्।** (निघं०२.९) (**हन्ति**) (**ऋतस्य**) सत्यस्य (**श्लोकः**) वाक्। **श्लोक इति वाङ्नामसु पठितम्।** (निघं०१.११) (**बधिरा**) बधिराणि (**ततर्द**) हिनस्ति (**कर्णा**) कर्णानि (**बुधानः**) बोधयन् (**शुचमानः**) पवित्रः पवित्रयन् (**आयोः**) जीवनस्य॥८॥

**अन्वयः**-हे राजन्! यस्यर्त्तस्य सत्याचारस्य पूर्वीः शुरुधः सन्ति यस्यर्त्तस्य धीतिर्वृजिनानि प्राप्य शत्रून् हन्ति यस्यर्त्तस्य श्लोको बधिरा कर्णा ततर्द योऽन्यान् बुधानः शुचमान आयोर्जीवनस्योपायानुपदिशति तं हि गुरुवत् सत्कुर्य्याः॥८॥

**भावार्थः**-हे अध्यापक राजन् वा! ये जितेन्द्रिया दुष्टाचारस्य निरोधकाः सत्यस्य प्रचारकाः सत्यवाचो बधिरवद्वर्त्तमानाज्ञान् बोधयन्तो ब्रह्मचर्य्याद्युपदेशेन दीर्घायुषः सम्पादयन्तः क्लेशानां शत्रूणाञ्च हन्तारः स्युस्त एव स्वात्मवन्माननीयाः स्युः॥८॥

**पदार्थः**-हे राजन्! जिस (**ऋतस्य**) सत्य आचार की (**पूर्वीः**) प्राचीन (**शुरुधः**) शीघ्र रोकने वाली अपनी सेना (**सन्ति**) हैं जिस (**ऋतस्य**) सत्य की (**धीतिः**) धारणा करने वाली बुद्धि (**वृजिनानि**) बलों को प्राप्त होकर शत्रुओं का (**हन्ति**) नाश करती है और जिसे (**ऋतस्य**) सत्य की (**श्लोकः**) वाणी (**बधिरा**) बधिर (**कर्णा**) कर्णों का (**ततर्द**) नाश करती है और जो अन्य जनों को (**बुधानः**) जनाता और (**शुचमानः**) पवित्र होकर पवित्र करता हुआ (**आयोः**) जीवन के उपायों का उपदेश देता है, उसका (**हि**) जिससे गुरु के सदृश सत्कार करो॥८॥

**भावार्थः**-हे अध्यापक वा राजन्! जो जितेन्द्रिय दुष्ट आचार के रोकने और सत्य के प्रचार करने वाले सत्यवाणीयुक्त और बधिर के सदृश वर्त्तमान अज्ञ पुरुषों को बोध देते हुए ब्रह्मचर्य्य आदि उपदेश से अधिक अवस्था वाले करते हुए क्लेश और शत्रुओं के नाश करनेवाले होवें, वे ही अपने आत्मा के सदृश आदर करने योग्य होवें॥८॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**ऋतस्य॑ दृळ्हा धरुणा॑नि सन्ति पुरूणि॑ चन्द्रा वपु॑षे वपूं॑षि।**

**ऋतेन॑ दीर्घमि॑षणन्त पृक्ष॑ ऋतेन गाव॑ ऋतमा वि॑वेशुः॥९॥**

ऋतस्य॑। दृळ्हा। धरुणा॑नि। सन्ति। पुरूणि॑। चन्द्रा। वपु॑षे। वपूं॑षि। ऋतेन॑। दीर्घम्। इषणन्त। पृक्ष॑:। ऋतेन। गाव॑:। ऋतम्। आ। विवेशुः॥९॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**ऋतस्य**) सत्यस्य धर्म्मस्य (**दृळ्हा**) दृढानि (**धरुणानि**) उदकानीव शान्तान्याचरणानि। **धरुणमित्युदकनामसु पठितम्।** (निघं०१.१२) (**सन्ति**) (**पुरूणि**) बहूनि (**चन्द्रा**) आह्लादकानि सुवर्णादीनि (**वपुषे**) सुरूपाय शरीराय (**वपूंषि**) रूपाणि (**ऋतेन**) सत्याचरणेन (**दीर्घम्**) चिरञ्जीविनम् (**इषणन्त**) प्राप्नुवन्ति (**पृक्षः**) संस्पृष्टव्यमन्नादिकम् (**ऋतेन**) सत्याचरणेन (**गावः**) धेनवो वत्सस्थानानीव सुशिक्षिता वाचः (**ऋतम्**) सत्यं ब्रह्म (**आ**) (**विवेशुः**) आविशन्ति॥९॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! ऋतस्याचरणेनैव दृळ्हा धरुणानि पुरूणि चन्द्रा वपुषे वपूंषि प्राप्तानि सन्ति। ऋतेन पृक्षो दीर्घञ्चायुरिषणन्त ऋतेन गाव ऋतमाविवेशुरिति विजानीत॥९॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यथा जलेन प्राणधारणमन्नाद्युत्पत्तिः सुरूपं दीर्घमायुश्च जायते तथैव सत्याचारेण सकलैश्वर्य्यं विद्या चिरञ्जीवनञ्च भवति यतः सततं सत्यमेवाऽऽचरत॥९॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! (**ऋतस्य**) सत्य धर्म्म के आचरण से ही (**दृळ्हा**) दृढ़ (**धरुणानि**) जलों के सदृश शान्त आचार (**पुरूणि**) बहुत (**चन्द्रा**) आनन्द देने वाले सुवर्ण आदि (**वपुषे**) सुन्दर रूपयुक्त शरीर के लिये (**वपूंषि**) रूपों को प्राप्त (**सन्ति**) हैं और (**ऋतेन**) सत्य आचरण से (**पृक्षः**) उत्तम प्रकार स्पर्श होने योग्य अन्न आदिक (**दीर्घम्**) चिरकाल रहने वाले आयु को (**इषणन्त**) प्राप्त होते हैं (**ऋतेन**) सत्य आचरण से (**गावः**) गौवें जैसे बछड़ों के स्थानों को वैसे उत्तम प्रकार शिक्षित वाणियाँ (**ऋतम्**) सत्य ब्रह्म को (**आ, विवेशुः**) प्राप्त होती हैं, ऐसा जानो॥९॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे जल से प्राणधारण, अन्न आदि की उत्पत्ति और सुन्दर और दीर्घ अवस्था होती है, वैसे ही सत्य आचरण से सम्पूर्ण ऐश्वर्य्य, विद्या और बहुत काल पर्य्यन्त जीवन होता है, जिससे निरन्तर सत्य ही का आचरण करो॥९॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**ऋ॒तं ये॑मा॒न ऋ॒तमिद्व॑नोत्यृ॒तस्य॒ शुष्म॑स्तुर॒या उ॑ ग॒व्युः।**

**ऋ॒ताय॑ पृ॒थ्वी ब॑हु॒ले ग॑भी॒रे ऋ॒ताय॑ धे॒नू प॑र॒मे दु॑हाते॥ १०॥**

**ऋ॒तम्। ये॒मा॒नः। ऋ॒तम्। इत्। व॒नो॒ति॒। ऋ॒तस्य॑। शुष्म॑ः। तु॒र॒ऽयाः। ऊ॒म् इति॑। ग॒व्युः। ऋ॒ताय॑। पृ॒थ्वी इति॑। ब॒हु॒ले इति॑। ग॒भी॒रे इति॑। ऋ॒ताय॑। धे॒नू इति॑। प॒र॒मे इति॑। दु॒हा॒ते इति॑॥ १०॥**

**पदार्थः**-(**ऋतम्**) सत्यम् (**येमानः**) नियमयन्तः (**ऋतम्**) (**इत्**) एव (**वनोति**) याचते (**ऋतस्य**) (**शुष्मः**) बलम् (**तुरयाः**) शीघ्रतां प्राप्तम् (**उ**) (**गव्युः**) य आत्मनो गां पृथ्वीं वाचं वेच्छुः (**ऋताय**) सत्याय जलाय वा (**पृथ्वी**) भूम्यन्तरिक्षे (**बहुले**) बहुपदार्थयुक्ते (**गभीरे**) गम्भीराश्रये (**ऋताय**) सत्याय (**धेनू**) गावाविव वर्त्तमाने (**परमे**) प्रकृष्टे (**दुहाते**) प्रातः॥१०॥



www.9009.co.in

**अन्वय:**-हे मनुष्या! यथर्त्ताय बहुले गभीरे पृथ्वी यथर्त्ताय परमे धेनू दुहाते तथर्तं ये येमानस्तथर्त्तं यो वनोति तथर्त्तस्य यः शुष्मस्तुरया उ गव्युरस्ति त इत् सदैव पूर्णं सुखं लभन्ते॥१०॥

**भावार्थ:**-हे मनुष्या! ये मनुष्यशरीरं प्राप्य नियमेन सत्याचारं सत्ययाञ्चां कृत्या सद्यो धार्मिका जायन्ते भूमिसूर्य्यवत् सर्वेषां कामपूर्तिं कर्त्तुं शक्नुवन्ति॥१०॥

**पदार्थ:**-हे मनुष्यो! जैसे **(ऋताय)** सत्य के लिये **(बहुले)** बहुत पदार्थों से युक्त **(गभीरे)** गम्भीर आश्रय में **(पृथ्वी)** भूमि और अन्तरिक्ष तथा जैसे **(ऋताय)** सत्य और जल के लिये **(परमे)** अति उत्तम **(धेनू)** गौओं के सदृश वर्त्तमान **(दुहाते)** प्रातःकाल वैसे **(ऋतम्)** सत्य को जो **(येमानः)** नियम करते हुए और वैसे **(ऋतम्)** सत्य की जो **(वनोति)** याचना करता है तथा **(ऋतस्य)** सत्य के जो **(शुष्मः)** बल को **(तुरयाः)** शीघ्रता को प्राप्त **(उ)** और **(गव्युः)** निज सम्बन्धिनी पृथिवी वा वाणी को चाहनेवाला है, वे **(इत्)** ही सर्वदा पूर्ण सुख को प्राप्त होते हैं॥१०॥

**भावार्थ:**-हे मनुष्यो! जो लोग मनुष्य के शरीर को प्राप्त होकर नियम से सत्य आचार, सत्य याञ्चा करके शीघ्र धार्मिक होते हैं, वे भूमि और सूर्य्य के सदृश सब की कामना की पूर्ति कर सकते हैं॥१०॥

**पुनः प्रशंसापरत्वेन पूर्वविषयमाह॥**

फिर प्रशंसापरत्व से पूर्व विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**नू ष्टुत इन्द्र नू गृणान इषं जरित्रे नद्यो३ न पीपेः।**

**अकारि ते हरिवो ब्रह्म नव्यं धिया स्याम रथ्यः सदासाः॥११॥१०॥**

**नु। स्तुतः। इन्द्र। नु। गृणानः। इषम्। जरित्रे। नद्यः। न। पीपेरिति पीपेः। अकारि। ते। हरिऽवः। ब्रह्म। नव्यम्। धिया। स्याम। रथ्यः। सदाऽसाः॥११॥**

**पदार्थ:**-**(नु)** **(स्तुतः)** सत्याचारेण प्रशंसितः **(इन्द्र)** सत्यैश्वर्य्यप्रद **(नु)** **(गृणानः)** सत्याचारं स्तुवन् **(इषम्)** विज्ञानम् **(जरित्रे)** विद्यामिच्छुकाय **(नद्यः)** **(न)** इव **(पीपेः)** **(अकारि)** **(ते)** **(हरिवः)** **(ब्रह्म)** बृहद्विद्याधनम् **(नव्यम्)** **(धिया)** प्रज्ञया **(स्याम)** **(रथ्यः)** **(सदासाः)**॥११॥

**अन्वय:**-हे हरिव इन्द्र! यस्य ते नव्यम्ब्रह्म येनाऽकारि तस्मै जरित्रे स्तुतो नद्यो नेषं दत्वा नु पीपेः सत्यं गृणानो धर्म्मं प्रापय्य नु पीपेः यथा वयं धिया पुरुषार्थेन रथ्यः सदासाः स्याम तथा त्वं भव॥११॥

**भावार्थ:**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! ये यथा युष्मासु धर्म्यां नीतिं स्थापयेयुस्तेषां सेवां कृत्वा सखायो भूत्वा सर्वा विद्या विजानीतेति॥११॥

अत्र प्रश्नोत्तरमैत्रीशत्रुनिवारणसेनोन्नतिसत्याचारोत्कर्षवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति त्रयोविंशतितमं सूक्तं दशमो वर्गश्च समाप्तः।**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-हे **(हरिवः)** बहुत धनयुक्त **(इन्द्र)** सत्य ऐश्वर्य्य के देने वाले जिस **(ते)** आपका **(नव्यम्)** नवीन **(ब्रह्म)** बड़ा विद्यारूप धन जिसने **(अकारि)** किया उस **(जरित्रे)** विद्या की इच्छा करने वाले के लिये **(स्तुतः)** सत्य आचरण से प्रशंसित **(नद्यः)** नदियों के **(न)** सदृश **(इषम्)** विज्ञान को देकर **(नु)** शीघ्र **(पीपेः)** पालन करे और सत्य का **(गृणानः)** प्रचार करता हुआ धर्म्म को प्राप्त कराय के **(नु)** निश्चय पालन करो और जैसे हम लोग **(धिया)** बुद्धि से और पुरुषार्थ से **(रथ्यः)** रथयुक्त और **(सदासाः)** दासों के सहित वर्त्तमान **(स्याम)** होवें, वैसे आप हूजिये॥११॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जो जैसे आप लोगों में धर्म्मयुक्त नीति का स्थापन करें, उनकी सेवा करके मित्र हो के सम्पूर्ण विद्याओं को जानिये॥११॥

इस सूक्त में प्रश्न उत्तर, मैत्री, शत्रुओं का निवारण, सेना की उन्नति और सत्य आचरण की उत्तमता का वर्णन करने से इसके अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह तेईसवां सूक्त तथा दशमा वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

**अथैकादशर्चस्य चतुर्विंशत्तमस्य सूक्तस्य वामदेव ऋषिः। इन्द्रो देवता। १, ५, ७ त्रिष्टुप्। ३, ९ निचृत्त्रिष्टुप्। ४ विराट्त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः। २, ८ भुरिक्पङ्क्तिः। ६ स्वराट् पङ्क्तिः। ११ निचृत्पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः। १० निचृदनुष्टुप् छन्दः। गान्धारः स्वरः॥**

**अथ ब्रह्मचर्य्यवतः पुत्रप्रशंसामाह॥**

अब ग्यारह ऋचा वाले चौबीसवें सूक्त का आरम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में ब्रह्मचर्य्यावान् के पुत्र की प्रशंसा कहते हैं॥

**का सुष्टुतिः शवसः सूनुमिन्द्रमर्वाचीनं राधस आ ववर्तत्।**
**ददिर्हि वीरो गृणते वसूनि स गोपतिर्निष्षिधां नो जनासः॥१॥**

**का। सुऽस्तुतिः। शवसः। सूनुम्। इन्द्रम्। अर्वाचीनम्। राधसे। आ। ववर्तत्। ददिः। हि। वीरः। गृणते। वसूनि। सः। गोऽपतिः। निःऽसिधाम्। नः। जनासः॥१॥**

**पदार्थः**-(**का**) (**सुष्टुतिः**) शोभना प्रशंसा (**शवसः**) बहुबलवतः (**सूनुम्**) अपत्यम् (**इन्द्रम्**) परमैश्वर्य्यप्रदम् (**अर्वाचीनम्**) इदानीन्तनं युवावस्थास्थम् (**राधसे**) धनैश्वर्य्याय (**आ**) (**ववर्त्तत्**) आवर्त्तयेत् (**ददिः**) दाता (**हि**) यतः (**वीरः**) व्याप्तविद्याशौर्य्यादिगुणः (**गृणते**) प्रशंसितकर्म्मणे (**वसूनि**) द्रव्याणि (**सः**) (**गोपतिः**) गोः पृथिव्याः स्वामी (**निष्षिधाम्**) नितरां शासितॄणां मङ्गलाचाराणाम् (**नः**) अस्माकम् (**जनासः**) विद्वांसो वीराः॥१॥

**अन्वयः**-हे जनासो! यो वीरो गृणते वसूनि ददिर्वर्त्तते स हि निष्षिधां नो गोपतिर्भवतु। का सुष्टुतिः शवसः सूनुमर्वाचीनमिन्द्रमाववर्त्तत्। को राधसे धनस्य योगमाववर्त्तत्॥१॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यः पूर्णकृतब्रह्मचर्यस्य पुत्रः स्वयमनुष्ठितपूर्णब्रह्मचर्य्यविद्यः प्रशंसिताचरणस्सुखदाता भवेत् स एव युष्माकमस्माकञ्च राजा भवतु॥१॥

**पदार्थः**-हे (**जनासः**) विद्वान् वीरपुरुषो! जो (**वीरः**) विद्या और शौर्य्य आदि गुणों से व्याप्त जन (**गृणते**) प्रशंसित कर्म्मवान् के लिये (**वसूनि**) द्रव्यों को (**ददिः**) देनेवाला वर्त्तमान है (**सः**) वह (**हि**) जिससे (**निष्षिधाम्**) अत्यन्त शासन करने वालों के मङ्गलाचारों से युक्त (**नः**) हम लोगों का (**गोपतिः**) पृथिवीपति अर्थात् राजा हो (**का**) कौन (**सुष्टुतिः**) उत्तम प्रशंसा और (**शवसः**) बहुत बलवान् के (**सूनुम्**) पुत्र को (**अर्वाचीनम्**) इस समय वाले युवावस्थायुक्त (**इन्द्रम्**) अत्यन्त ऐश्वर्य्य के देनेवाले का (**आ, ववर्त्तत्**) वर्त्ताव करावे और कौन (**राधसे**) धन और ऐश्वर्य्यवान् के लिये धन के योग का वर्त्ताव करावे॥१॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो पूर्ण ब्रह्मचर्य्य को किये हुए का पुत्र और वह स्वयं भी पूर्ण ब्रह्मचर्य्य और विद्या से युक्त और प्रशंसित आचरण करने और सुख देनेवाला होवे, वह ही आप का और हम लोगों का राजा हो॥१॥



www.9009.co.in

**अथोक्तविषये धनुर्वेदाध्ययनफलमाह॥**

अब पूर्वोक्त विषय के अन्तर्गत धनुर्वेदाध्ययन के फल को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**स वृ॒त्रह॑त्ये॒ हव्य॒ः स ईड्य॒ः स सुष्टु॑त॒ इन्द्र॑ः स॒त्यरा॑धाः।**

**स याम॒न्ना म॒घवा॒ मर्त्या॑य ब्रह्मण्य॒ते सुष्व॑ये॒ वरि॑वो धात्॥ २॥**

**सः। वृ॒त्र॒ऽहत्ये॑। हव्य॑ः। सः। ईड्य॑ः। सः। सु॒ऽस्तु॑तः। इन्द्र॑ः। स॒त्यऽरा॑धाः। सः। याम॑न्। आ। म॒घऽवा॑। मर्त्या॑य। ब्र॒ह्म॒ण्य॒ते। सु॒स्व॑ये। वरि॑वः। धा॒त्॥ २॥**

**पदार्थः**-(**सः**) (**वृत्रहत्ये**) महासङ्ग्रामे (**हव्यः**) आह्वातुं योग्यः (**सः**) (**ईड्यः**) प्रशंसितुमर्हः (**सः**) (**सुष्टुतः**) सर्वत्र प्राप्तसुकीर्त्तिः (**इन्द्रः**) परमैश्वर्य्यवान् (**सत्यराधाः**) न्यायोपार्जितसत्यधनः (**सः**) (**यामन्**) यामनि मार्गे (**आ**) (**मघवा**) पूजितराज्यः (**मर्त्याय**) मनुष्याय (**ब्रह्मण्यते**) आत्मनो धर्मेण धनमिच्छते (**सुष्वये**) ऐश्वर्य्यप्राप्त्यनुष्ठात्रे (**वरिवः**) सेवनम् (**धात्**) दध्यात्॥ २॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यो मघवा सुष्वये ब्रह्मण्यते मर्त्याय वरिव आ धात् स इन्द्रो यामन् स सत्यराधाः स वृत्रहत्ये सुष्टुतः स ईड्यः स हव्यश्च भवेत्॥ २॥

**भावार्थः**-यो मनुष्यो बाल्याऽवस्थामारभ्य सुचेष्टो विद्वत्सेवी सुशिक्षो न्यायमार्गाऽनुवर्ती धनुर्वेदविदज्ञो युद्धे निर्भयः स्यात्तमेव राजानङ्कुरुत॥ २॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो (**मघवा**) सत्कृत राज्ययुक्त (**सुष्वये**) ऐश्वर्य्य की प्राप्ति का अनुष्ठान करने वाले (**ब्रह्मण्यते**) अपने धर्म से धन की इच्छा करने वाले (**मर्त्याय**) मनुष्य के लिये (**वरिवः**) सेवन को (**आ, धात्**) धारण करे (**सः**) वह (**इन्द्रः**) अत्यन्त ऐश्वर्य्यवाला (**यामन्**) मार्ग में (**सः**) वह (**सत्यराधाः**) न्याय से इकट्ठे किये हुए सत्यधन से युक्त (**सः**) वह (**वृत्रहत्ये**) बड़े सङ्ग्राम में (**सुष्टुतः**) सर्वत्र प्राप्त उत्तम कीर्त्तियुक्त (**सः**) वह (**ईड्यः**) प्रशंसा करने योग्य और वह (**हव्यः**) पुकारने योग्य होवे॥ २॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य बाल्यावस्था से लेकर उत्तम चेष्टायुक्त, विद्वानों की सेवा करने वाला, उत्तम प्रकार शिक्षायुक्त, न्यायमार्ग का अनुगामी, धनुर्वेद का जानने वाला, चतुर और युद्ध में भयरहित होवे, उसी को राजा करो॥ २॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**तमिन्नरो॒ वि ह्व॑यन्ते समी॒के रि॑रि॒क्वांस॑स्त॒न्व॑ः कृण्वत॒ त्राम्।**

**मि॒थो यत्त्या॒गमु॒भया॑सो॒ अग्म॒न्नर॑स्तो॒कस्य॒ तन॑यस्य सा॒तौ॥ ३॥**



www.9009.co.in

**तम्। इत्। नरः। वि। ह्वयन्ते। सम्ऽईके। रिरिक्वांसः। तन्वः। कृण्वत। त्राम्। मिथः। यत्। त्यागम्। उभयासः। अग्मन्। नरः। तोकस्य। तनयस्य। सातौ॥ ३॥**

**पदार्थः**-(**तम्**) (**इत्**) एव (**नरः**) नायकाः (**वि**) विशेषेण (**ह्वयन्ते**) स्पर्द्धन्ते (**समीके**) सम्यक् प्राप्ते सङ्ग्रामे। **समीक इति सङ्ग्रामनामसु पठितम्।** (निघं० २.१७) (**रिरिक्वांसः**) रेचनङ्कारयन्तः (**तन्वः**) शरीरस्य (**कृण्वत**) कुरुत (**त्राम्**) रक्षकम् (**मिथः**) अन्योऽन्यम् (**यत्**) यम् (**त्यागम्**) (**उभयासः**) उभयत्र वर्त्तमानाः (**अग्मन्**) प्राप्नुत (**नरः**) राज्यस्य नेतारः (**तोकस्य**) सद्यो जातस्याऽपत्यस्य (**तनयस्य**) कुमाराऽवस्थां प्राप्तस्य (**सातौ**) संविभक्ते॥ ३॥

**अन्वयः**-हे रिरिक्वांसो नरः! समीके यद्यं विद्वांसो वि ह्वयन्ते तमिदेव तन्वस्त्रां कृण्वत। हे नरस्तोकस्य तनयस्य साता उभयासो दुःखस्य त्यागङ्कुर्वन्तो मिथः शत्रून् घ्नन्तोऽग्मँस्तान् सेवध्वम्॥ ३॥

**भावार्थः**-हे सेनाजना! यो भृत्यानां रक्षक उत्साहक शूरवीरो भवेत्तं सत्कृत्य ये सङ्ग्रामङ्कृत्वा पलायन्ते तानसत्कृत्य भृशं दण्डयित्वा विजयं प्राप्नुत॥ ३॥

**पदार्थः**-हे (**रिरिक्वांसः**) रेचन कराते हुए (**नरः**) नायक लोगो! (**समीके**) उत्तम प्रकार प्राप्त सङ्ग्राम में (**यत्**) जिसकी विद्वान् लोग (**वि**) विशेष करके (**ह्वयन्ते**) स्पर्द्धा करते हैं (**तम्**) उसको (**इत्**) ही (**तन्वः**) शरीर का (**त्राम्**) रक्षक (**कृण्वत**) करिये और हे (**नरः**) राज्य के नायको! (**तोकस्य**) शीघ्र उत्पन्न हुए और (**तनयस्य**) कुमारावस्था को प्राप्त बालक के (**सातौ**) उत्तम प्रकार विभाग में (**उभयासः**) दोनों ओर वर्त्तमान और दुःख का (**त्यागम्**) त्याग तथा (**मिथः**) परस्पर शत्रुओं को नष्ट करते हुए जन (**अग्मन्**) प्राप्त हों, उनका सेवन करो॥ ३॥

**भावार्थः**-हे सेना के जनो! जो भृत्यों का रक्षक, उत्साहयुक्त और शूरवीर होवे, उसका सत्कार करके और जो सङ्ग्राम को छोड़के भागते हैं, उनका नहीं सत्कार करके और अत्यन्त दण्ड देकर विजय को प्राप्त होओ॥ ३॥

**अथाधर्मत्यागेन सुकर्मणा प्रज्ञैश्वर्यवर्धनविषयमाह॥**

अब अधर्मत्याग से तथा अच्छे कर्म से प्रज्ञा और ऐश्वर्यवृद्धि विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**क्रतूयन्ति क्षितयो योग उग्राशुषाणासो मिथो अर्णसातौ।**

**सं यद्विशोऽववृत्रन्त युध्मा आदिन्नेम इन्द्रयन्ते अभीके॥ ४॥**

**क्रतुऽयन्ति। क्षितयः। योगे। उग्र। आशुषाणासः। मिथः। अर्णऽसातौ। सम्। यत्। विशः। अववृत्रन्त। युध्माः। आत्। इत्। नेमे। इन्द्रयन्ते। अभीके॥ ४॥**

**पदार्थः**-(**क्रतूयन्ति**) प्रज्ञां कर्म्माणि चेच्छन्ति (**क्षितयः**) मनुष्याः (**योगे**) समागमे यमाऽऽद्यनुष्ठाने वा (**उग्र**) तीक्ष्णस्वभाव (**आशुषाणासः**) शीघ्रकारिणः (**मिथः**) परस्परम् (**अर्णसातौ**)



www.9009.co.in

प्राप्तविभागे **(सम्)** **(यत्)** ये **(विशः)** प्रजाः **(अववृत्रन्त)** विरोधेन धनं प्राप्नुवन्तु **(युध्माः)** योद्धारः **(आत्)** **(इत्)** एव **(नेमे)** नियन्तारः **(इन्द्रयन्ते)** इन्द्रं स्वामिनं कुर्वते **(अभीके)** समीपे॥४॥

**अन्वयः**-हे उग्र राजन्! यद्ये क्षितयो योग आशुषाणासो मिथः प्रीतिमन्तः सन्तोऽर्णसातौ क्रतूयन्ति विश इन्द्रयन्ते युध्मा नेमेऽभीके समववृत्रन्त ताऽऽदिदेव तव भृत्याः सन्तु॥४॥

**भावार्थः**-न हि योगाऽभ्यासमन्तरा प्रज्ञा वर्धते, न प्रज्ञया विना धनात्मसिद्धिर्जायते, न विद्यापुरुषार्थन्यायैरन्तरा प्रजापालनं कर्त्तुं शक्नुवन्ति॥४॥

**पदार्थः**-हे **(उग्र)** तीक्ष्णस्वभावयुक्त राजन्! **(यत्)** जो **(क्षितयः)** मनुष्य **(योगे)** मिलने वा यम नियमादिकों के अनुष्ठान में **(आशुषाणासः)** शीघ्र करने वाले **(मिथः)** परस्पर प्रीतियुक्त हुए **(अर्णसातौ)** प्राप्त विभाग में **(क्रतूयन्ति)** बुद्धि कर्म्मों की इच्छा करते हैं और **(विशः)** प्रजा **(इन्द्रयन्ते)** स्वामी करती हैं **(युध्माः)** युद्ध करने वाले **(नेमे)** नायक अर्थात् अग्रणी लोग **(अभीके)** समीप में **(सम्, अववृत्रन्त)** विरोध से धन को प्राप्त हों और **(आत्)** **(इत्)** उसी समय आपके भृत्य हों॥४॥

**भावार्थः**-योगाभ्यास के विना बुद्धि नहीं बढ़ती है और बुद्धि के विना धन और आत्मा की सिद्धि नहीं होती है और विद्या पुरुषार्थ और न्याय के विना प्रजा का पालन-नहीं कर सकते हैं॥४॥

**अथ युक्ताहारविहारविषयमाह॥**

अब योग्य आहार-विहार विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**आदिद्ध नेम इन्द्रियं यजन्त आदित्पक्तिः पुरोळाशं रिरिच्यात्।**

**आदित्सोमो वि पपृच्यादसुष्वीनादिज्जुजोष वृषभं यजध्यै॥५॥११॥**

**आत्। इत्। ह। नेमे। इन्द्रियम्। यजन्ते। आत्। इत्। पक्तिः। पुरोळाशम्। रिरिच्यात्। आत्। इत्। सोमः। वि। पपृच्यात्। असुस्वीन्। आत्। इत्। जुजोष। वृषभम्। यजध्यै॥५॥**

**पदार्थः**-**(आत्)** आनन्तर्य्ये **(इत्)** एव **(ह)** किल **(नेमे)** अन्ये **(इन्द्रियम्)** धनम् **(यजन्ते)** सङ्गच्छन्ते **(आत्)** **(इत्)** **(पक्तिः)** पाकः **(पुरोळाशम्)** सुसंस्कृतान्नम् **(रिरिच्यात्)** अतिरिच्यात् **(आत्)** **(इत्)** **(सोमः)** ऐश्वर्य्यम् **(वि)** **(पपृच्यात्)** संयुज्येत **(असुष्वीन्)** येऽसूनभिसुन्वन्ति तान् **(आत्)** **(इत्)** **(जुजोष)** जुषते **(वृषभम्)** बलिष्ठम् **(यजध्यै)** यष्टुं सङ्गन्तुम्॥५॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! येषां पुरोळाशं पक्ती रिरिच्यात् ते नेम आदिदिन्द्रियं यजन्ते यस्यादित् सोमोऽसुष्वीन् वि पपृच्यात् स आदिद् यजध्यै वृषभं जुजोष। आदिद्ध ते सर्वे राज्यं बलञ्च प्राप्तुमर्हेयुः॥५॥

**भावार्थः**-ये जनाः सुसंस्कृतान्यन्नानि पक्त्वा यथारुचि भुञ्जते ते बलम्प्राप्य रोगातिरिक्ता भवितुमर्हेयुरैश्वर्य्यं प्राप्य धर्म्ममाप्तांश्च सेवेरन्॥५॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जिनके **(पुरोळाशम्)** उत्तम प्रकार संस्कारयुक्त अन्न को **(पक्तिः)** पाक **(रिरिच्यात्)** बढ़ावें वे **(नेमे)** अन्य जन **(आत्)** अनन्तर **(इत्)** ही **(इन्द्रियम्)** धन को **(यजन्ते)** प्राप्त



www.9009.co.in

होते हैं और जिसके **(आत्)** अनन्तर **(इत्)** ही **(सोमः)** ऐश्वर्य **(असुष्वीन्)** जो प्राणों को प्राप्त होते हैं उनको **(वि, पपृच्यात्)** संयुक्त हो वह **(आत्)** अनन्तर **(इत्)** ही **(यजध्यै)** मिलने के लिये **(वृषभम्)** बलिष्ठ का **(जुजोष)** सेवन करता है **(आत्)** अनन्तर **(इत्, ह)** ही वे सब राज्य और बल को प्राप्त होने के योग्य होवें॥५॥

**भावार्थः**-जो जन उत्तम प्रकार संस्कारयुक्त अन्नों का पाक करके रुचिपूर्वक भोजन करते हैं, वे बल को प्राप्त होके रोग से रहित होने के योग्य होवें और ऐश्वर्य्य को प्राप्त होके धर्म्म और यथार्थवक्ता पुरुषों की सेवा करें॥५॥

**अथ शत्रुविजयार्थराज्यप्रबन्धविषयमाह॥**

अब शत्रुजनों को जीतने के लिये राज्यप्रबन्ध को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**कृणोत्यस्मै वरिवो य इत्थेन्द्राय सोममुशते सुनोति।**

**सध्रीचीनेन मनसाविवेनम् तमित्सखायं कृणुते समत्सु॥६॥**

**कृणोति। अस्मै। वरिवः। यः। इत्था। इन्द्राय। सोमम्। उशते। सुनोति। सध्रीचीनेन। मनसा। अविऽवेनम्। तम्। इत्। सखायम्। कृणुते। समत्ऽसु॥६॥**

**पदार्थः**-**(कृणोति)** **(अस्मै)** **(वरिवः)** सेवनम् **(यः)** जनः **(इत्था)** अनेन प्रकारेण **(इन्द्राय)** परमैश्वर्य्याय राज्ञे **(सोमम्)** ऐश्वर्य्यम् **(उशते)** कामयमानाय **(सुनोति)** निष्पादयति **(सध्रीचीनेन)** संज्ञापकेनाऽनुष्ठापकेन वा **(मनसा)** अन्तःकरणेन **(अविवेनम्)** विगतकामः **(तम्)** **(इत्)** एव **(सखायम्)** मित्रम् **(कृणुते)** कुरुते **(समत्सु)** सङ्ग्रामेषु॥६॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! योऽस्मै सोममुशत इन्द्रायेत्था वरिवः कृणोति सध्रीचीनेन मनसाऽविवेनन्त्सन्नैश्वर्य्यं सुनोति समत्सु सखायं कृणुते तमिदेव राजानं प्रधानञ्च कुरुत॥६॥

**भावार्थः**-हे राजन्! ये मनुष्याः स्वराज्यभक्ता धर्म्मसेविन ऐश्वर्य्यं कामयमाना अधर्म्मं त्यक्तवन्तः सङ्ग्रामे परस्परं स्वकीयेषु जनेषु मैत्रीमाचरन्तो विचक्षणा जनाः स्युस्त एव भवता राजशासने संस्थापनीयाः॥६॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(यः)** जो **(अस्मै)** इस **(सोमम्)** ऐश्वर्य्य की **(उशते)** कामना करनेवाले **(इन्द्राय)** अत्यन्त ऐश्वर्यवाले राजा के लिये **(इत्था)** इस प्रकार से **(वरिवः)** सेवन को **(कृणोति)** करता है **(सध्रीचीनेन)** ज्ञापक वा अनुष्ठापक अर्थात् समझाने वा आरम्भ करनेवाले के सहित **(मनसा)** अन्तःकरण से **(अविवेनन्)** कामनारहित होता हुआ ऐश्वर्य्य को **(सुनोति)** उत्पन्न करता और **(समत्सु)** सङ्ग्रामों में **(सखायम्)** मित्र को **(कृणुते)** करता है **(तम्)** उसको **(इत्)** ही राजा और प्रधान करो॥६॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-हे राजन्! जो मनुष्य अपने राज्य के भक्त, धर्म्म का सेवन और ऐश्वर्य्य की कामना करने तथा अधर्म्म को छोड़ने वाले, सङ्ग्राम में परस्पर अपने जनों में मैत्री करते हुए विद्वान् जन होवें, वे ही आपको राजशासन में संस्थापन करने योग्य हैं॥६॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**य इन्द्राय सुनवत् सोममद्य पचात् पक्तीरुत भृज्जाति धानाः।**

**प्रति मनायोरुचथानि हर्यन् तस्मिन् दधद् वृषणं शुष्ममिन्द्रः॥७॥**

**यः। इन्द्राय। सुनवत्। सोमम्। अद्य। पचात्। पक्तीः। उत। भृज्जाति। धानाः। प्रति। मनायोः। उचथानि। हर्यन्। तस्मिन्। दधत्। वृषणम्। शुष्मम्। इन्द्रः॥७॥**

**पदार्थः**-**(यः)** **(इन्द्राय)** सुखप्रदात्रे द्रव्यैश्वर्य्याय **(सुनवत्)** निष्पादयेत् **(सोमम्)** ऐश्वर्य्यम् **(अद्य)** **(पचात्)** पचेत् **(पक्तीः)** पाकान् **(उत)** **(भृज्जाति)** भृज्जेत् **(धानाः)** यवाः **(प्रति)** **(मनायोः)** प्रशंसां कामयमानस्य **(उचथानि)** रुचिकराणि **(हर्य्यन्)** कामयमानः **(तस्मिन्)** **(दधत्)** धरेत् **(वृषणम्)** बलकरम् **(शुष्मम्)** बलिष्ठम् **(इन्द्रः)** राजा॥७॥

**अन्वयः**-य इन्द्रो राजाद्येन्द्राय सोमं सुनवत् पक्तीः पचादुतापि धाना भृज्जाति मनायोरुचथानि हर्य्यन् सँस्तस्मिन् वृषणं शुष्मं प्रति दधत् स पुष्कलां विजयिनीं सेनां प्राप्नुयात्॥७॥

**भावार्थः**-ये राजपुरुषा राज्यायैश्वर्य्यं बलाय सेनायै च भोजनादिसामग्रीर्दध्युस्ते रुचितानि सुखानि लभेरन्॥७॥

**पदार्थः**-**(यः)** जो **(इन्द्रः)** राजा **(अद्य)** आज **(इन्द्राय)** सुख देनेवाले द्रव्य और ऐश्वर्य्ययुक्त के लिये **(सोमम्)** ऐश्वर्य्य को **(सुनवत्)** उत्पन्न करे **(पक्तीः)** पाकों को **(पचात्)** पकावे **(उत)** और **(धानाः)** यवों को **(भृज्जाति)** भूंजे **(मनायोः)** प्रशंसा की कामना करने वाले की **(उचथानि)** रुचि करनेवालों की **(हर्य्यन्)** कामना करता हुआ **(तस्मिन्)** उसमें **(वृषणम्)** बल करने वाले **(शुष्मम्)** बलयुक्त पुरुष को **(प्रति, दधत्)** धारण करे, वह बहुत जीतने वाली सेना को प्राप्त होवे॥७॥

**भावार्थः**-जो राजपुरुष राज्य के लिये ऐश्वर्य्य को बल और सेना के लिये भोजन आदि सामग्रियों को धारण करें, वे प्रीतिकारक सुखों को प्राप्त होवें॥७॥

**अथ शत्रुविजयेन राज्यादिरक्षणविषयमाह॥**

अब शत्रुओं के विजय से राज्यादि पदार्थों के रक्षण विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**यदा समर्यं व्यचेद् ऋघावा दीर्घं यदाजिमभ्यख्यदर्यः।**

**अचिक्रदद् वृषणं पत्न्यच्छा दुरोण आ निशितं सोमसुद्भिः॥८॥**



www.9009.co.in

**यदा। सऽमर्यम्। वि। अचेत्। ऋघावा। दीर्घम्। यत्। आजिम्। अभि। अख्यत्। अर्यः। अचिक्रदत्। वृषणम्। पत्नी। अच्छ। दुरोणे। आ। निऽशितम्। सोमसुत्ऽभिः॥८॥**

**पदार्थः**-(**यदा**) यस्मिन् काले (**समर्य्यम्**) सङ्ग्रामम् (**वि**) (**अचेत्**) चेतयति (**ऋघावा**) शत्रूणां हन्ता (**दीर्घम्**) लम्बीभूतम् (**यत्**) यः (**आजिम्**) अजन्ति प्रक्षिपन्ति शस्त्राण्यस्मिंस्तम् (**अभि**) (**अख्यत्**) प्रख्यापयेत् (**अर्य्यः**) स्वामीश्वरो राजा (**अचिक्रदत्**) भृशमाक्रन्दति (**वृषणम्**) बलिष्ठम् (**पत्नी**) (**अच्छा**) अत्र **संहितायामि**ति दीर्घः। (**दुरोणे**) गृहे (**आ**) (**निशितम्**) नितरां तीक्ष्णम् (**सोमसुद्भिः**) ये सोममैश्वर्य्यमोषधिगणं वा सुन्वन्ति तैः॥८॥

**अन्वयः**-यदाऽर्य्यः समर्य्यं व्यचेद्यदृघावा दीर्घमाजिमभ्यख्यद् वृषणमचिक्रदत्तदा दुरोणे पत्नीव सोमसुद्भिः सहानिशितमच्छाचिक्रदत्॥८॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यथा पतिव्रता स्त्री सर्वाण्यैश्वर्य्याणि संरक्ष्योन्नीय पत्यादीनानन्दयति तथैव विद्याविनयो राजा स्वप्रजाः संरक्ष्यैश्वर्य्यं वर्द्धयित्वा सर्वान्त्सज्जनान् रक्षयति॥८॥

**पदार्थः**-(**यदा**) जिस काल में (**अर्य्यः**) स्वामी ईश्वर अर्थात् राजा (**समर्य्यम्**) सङ्ग्राम को (**वि, अचेत्**) चेतन कराता है (**यत्**) जो (**ऋघावा**) शत्रुओं का नाश करने वाला (**दीर्घम्**) लम्बे बहुत (**आजिम्**) फेंकते हैं शस्त्र जिसमें उस सङ्ग्राम की (**अभि, अख्यत्**) प्रसिद्धि करावे और (**वृषणम्**) बलिष्ठ के प्रति (**अचिक्रदत्**) अत्यन्त चिल्लाता है, तब (**दुरोणे**) गृह में (**पत्नी**) स्त्री के सदृश (**सोमसुद्भिः**) ऐश्वर्य्य वा ओषधियों के समूह को उत्पन्न करने वालों के साथ (**आ, निशितम्**) अच्छे प्रकार निरन्तर तीक्ष्ण (**अच्छा**) अच्छा अत्यन्त शब्द करता है॥८॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे पतिव्रता स्त्री सम्पूर्ण ऐश्वर्य्यों की उत्तम प्रकार रक्षा और उन्नति करके पति आदि को आनन्द देती है, वैसे ही विद्या और विनययुक्त राजा अपने प्रजाजनों की अच्छे प्रकार रक्षा और ऐश्वर्य्य की वृद्धि करके सब सज्जनों की रक्षा करता है॥८॥

**अथ ज्येष्ठकनिष्ठव्यवहारविषयमाह॥**

अब ज्येष्ठ-कनिष्ठ के व्यवहार विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**भूयसा वस्नमचरत् कनीयोऽविक्रीतो अकानिषं पुनर्यन्।**
**स भूयसा कनीयो नारिरेचीद्दीना दक्षा वि दुहन्ति प्र वाणम्॥९॥**

**भूयसा। वस्नम्। अचरत्। कनीयः। अविऽक्रीतः। अकानिषम्। पुनः। यन्। सः। भूयसा। कनीयः। न। अरिरेचीत्। दीनाः। दक्षाः। वि। दुहन्ति। प्र। वाणम्॥९॥**

**पदार्थः**-(**भूयसा**) बहुना (**वस्नम्**) हट्टस्रस्तरम् (**अचरत्**) (**कनीयः**) अतिशयेन कनिष्ठम् (**अविक्रीतः**) न विक्रीतः (**अकानिषम्**) प्रदीपयेयम् (**पुनः**) (**यन्**) गच्छन् (**सः**) (**भूयसा**) बहुना


www.9009.co.in

**(कनीयः)** **(न)** निषेधे **(अरिरेचीत्)** रिक्तङ्कुर्यात् **(दीनाः)** क्षीणाः **(दक्षाः)** चतुराः **(वि)** **(दुहन्ति)** पूरिताङ्कुर्वन्ति **(प्र)** **(वाणम्)** वाणीम्। **वाण इति वाङ्नामसु पठितम्।** (निघं०१.११)॥९॥

**अन्वयः**-योऽविक्रीतो भूयसा कनीयो वस्नमचरत् स पुनर्यन् भूयसा कनीयो नारिरेचीद्ये दीना दक्षा वाणं वि प्र दुहन्ति तानहमकानिषं कामयेयम्॥९॥

**भावार्थः**-ये मनुष्या विविधव्यापारकारिणो निरभिमानाः प्राज्ञाः सन्तो विद्याशिक्षाभ्यां पूर्णां वाचं कुर्वन्ति ते कनीयसः पालयितुं शक्नुवन्ति॥९॥

**पदार्थः**-जो **(अविक्रीतः)** नहीं बेचा गया **(भूयसा)** बहुत प्रकार से **(कनीयः)** अत्यन्त अल्प **(वस्नम्)** हट्टस्त्रस्तर अर्थात् हटिया में बिछाने का **(अचरत्)** आचरण करे **(सः)** वह **(पुनः)** फिर **(यन्)** जाता हुआ **(भूयसा)** बहुत भाव से **(कनीयः)** अत्यन्त न्यून कर्म को **(न)** नहीं **(अरिरेचीत्)** रीता करे और जो **(दीनाः)** क्षीण **(दक्षाः)** चतुर जन **(वाणम्)** वाणी को **(वि, प्र, दुहन्ति)** अच्छे प्रकार पूरित करते हैं, उनको मैं **(अकानिषम्)** प्रदीप्त करूं और कामना करूं॥९॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य अनेक प्रकार के व्यापार करने वाले, अभिमानरहित, बुद्धिमान् हुए, विद्या और शिक्षा से पूर्ण वाणी को करते हैं, वे छोटों को पाल सकते हैं॥९॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**क इमं दशभिर्ममेन्द्रं क्रीणाति धेनुभिः।**

**यदा वृत्राणि जङ्घनदथैनं मे पुनर्ददत्॥ १०॥**

**कः। इमम्। दशऽभिः। मम। इन्द्रम्। क्रीणाति। धेनुऽभिः। यदा। वृत्राणि। जङ्घनत्। अथ। एनम्। मे। पुनः। ददत्॥ १०॥**

**पदार्थः**-**(कः)** **(इमम्)** **(दशभिः)** अङ्गुलिभिः **(मम)** **(इन्द्रम्)** ऐश्वर्यम् **(क्रीणाति)** **(धेनुभिः)** दोग्ध्रीभिर्गोभिरिव वाग्भिः **(यदा)** **(वृत्राणि)** धनानि **(जङ्घनत्)** भृशं हन्ति प्राप्नोति **(अथ)** **(एनम्)** **(मे)** मह्यम् **(पुनः)** **(ददत्)** ददाति॥१०॥

**अन्वयः**-हे मनुष्याः! को दशभिर्धेनुभिर्ममेममिन्द्रं क्रीणाति यदा यो वृत्राणि जङ्घनदथैनं [मे] पुनर्ददत् तदैश्वर्य्यं वर्धेत॥१०॥

**भावार्थः**-क ऐश्वर्यं वर्द्धितुं शक्नुयादिति प्रश्नस्य, यः सर्वथा पुरुषार्थी सुशिक्षितया वाचा युक्तश्चेति कुतो य आदावैश्वर्य्यं प्राप्नुयात् स एवान्येभ्यो दातुमर्हेत्॥१०॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(कः)** कौन **(दशभिः)** दश अङ्गुलियों और **(धेनुभिः)** दोहने वाली गौओं के सदृश वाणियों से **(मम)** मेरे **(इमम्)** इस **(इन्द्रम्)** ऐश्वर्य्य को **(क्रीणाति)** खरीदता है **(यदा)** जब जो



www.9009.co.in

**(वृत्राणि)** धनों को **(जङ्घनत्)** अत्यन्त प्राप्त होता है **(अथ)** अनन्तर **(एनम्)** इसको **(मे)** मेरे लिये **(पुनः)** फिर **(ददत्)** देता है, तभी ऐश्वर्य्य बढ़े॥१०॥

**भावार्थः**-कौन ऐश्वर्य्य को बढ़ा सके इस प्रश्न का, जो सब प्रकार पुरुषार्थयुक्त, उत्तम प्रकार शिक्षित वाणी से युक्त है, यह उत्तर है, क्योंकि जो आदि में ऐश्वर्य्य को प्राप्त होवे, वही औरों को देने को योग्य होवे॥१०॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**नू ष्टुत इन्द्र नू गृणान इषं जरित्रे नद्यो३ न पीपेः।**

**अकारि ते हरिवो ब्रह्म नव्यं धिया स्याम रथ्यः सदासाः॥११॥१२॥**

**नु। स्तुतः। इन्द्र। नु। गृणानः। इषम्। जरित्रे। नद्यः। पीपेरिति पीपेः। अकारि। ते। हरिऽवः। ब्रह्म। नव्यम्। धिया। स्याम। रथ्यः। सदाऽसाः॥११॥**

**पदार्थः**-**(नु)** अत्रोभयत्र **ऋचि तुनुघे**ति दीर्घः। **(स्तुतः)** शुद्धव्यवहारेण प्रशंसितः **(इन्द्र)** ऐश्वर्यमिच्छुक **(नु)** **(गृणानः)** पुरुषार्थं स्तुवन् **(इषम्)** अन्नम् **(जरित्रे)** याचमानाऽयाचिताय वा **(नद्यः)** सरितः **(न)** इव **(पीपेः)** वर्द्धय **(अकारि)** क्रियते **(ते)** तव **(हरिवः)** प्रशंसितभृत्ययुक्त **(ब्रह्म)** महद्धनम् **(नव्यम्)** देशदेशान्तराद् द्वीपद्वीपान्तराद्वा **(धिया)** व्यवहारज्ञया प्रज्ञया सुष्ठु कृतेन कर्म्मणा वा **(स्याम)** भवेम **(रथ्यः)** बहुरथादियुक्ताः **(सदासाः)** भृत्यैः सहिताः॥११॥

**अन्वयः**-हे हरिव इन्द्र! स्तुतो गृणानस्त्वं जरित्रे नद्यो नेषं नु पीपेस्तस्मात्तेऽस्माभिर्धिया नव्यं ब्रह्माकारि त्वया सह रथ्यः सदासा वयमैश्वर्य्यन्तो नु स्याम॥११॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यदि यूयं धनमिच्छत तर्हि धर्म्येण पुरुषार्थेन योग्यां क्रियां सततं कुरुतेति॥११॥

अत्र ब्रह्मचर्य्यवतः पुत्रप्रशंसाऽधर्म्मत्यागेन सुकर्म्मणा प्रज्ञैश्वर्य्यवर्धनं युक्ताऽहारविहारः शत्रुविजयो ज्येष्ठकनिष्ठव्यवहारश्चोक्तोऽत एतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति चतुर्विंशं सूक्तं द्वादशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे **(हरिवः)** प्रशंसा करने योग्य भृत्यों से युक्त **(इन्द्र)** ऐश्वर्य्य की इच्छा करने वाले! **(स्तुतः)** शुद्ध व्यवहार से प्रशंसित **(गृणानः)** पुरुषार्थ की स्तुति करते हुए आप **(जरित्रे)** याचना करने वाले वा जिसकी याचना नहीं की गई उसके लिये **(नद्यः)** नदियों के **(न)** सदृश **(इषम्)** अन्न को **(नु)** निश्चय **(पीपेः)** बढ़ाओ तिससे [=उससे] **(ते)** आपका हम लोगों से **(धिया)** व्यवहार को जानने वाली बुद्धि वा उत्तम किये हुए कर्म्म से **(नव्यम्)** देश-देशान्तर वा द्वीप-द्वीपान्तर से नवीन **(ब्रह्म)** बहुत धन



www.9009.co.in

**(अकारि)** किया जाता है और आपके साथ **(रथ्य:)** बहुत रथ आदि से युक्त **(सदासा:)** भृत्यों के सहित हम लोग ऐश्वर्य्य वाले **(नु)** शीघ्र **(स्याम)** होवें॥११॥

**भावार्थ:**-हे मनुष्यो! यदि आप लोग धन की इच्छा करो तो धर्म्मयुक्त पुरुषार्थ से योग्य क्रिया को निरन्तर करो॥११॥

इस सूक्त में ब्रह्मचर्य्य वाले के पुत्र की प्रशंसा, अधर्म्म के त्याग से और उत्तम कर्म्म से बुद्धि और ऐश्वर्य्य की वृद्धि, नियमित आहार-विहार, शत्रु का विजय और ज्येष्ठ कनिष्ठ का व्यवहार कहा गया, इससे इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह चौबीसवां सूक्त और बारहवां वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

**अथाऽष्टर्चस्य पञ्चविंशत्तमस्य सूक्तस्य वामदेव ऋषिः। इन्द्रो देवता। १ निचृत् पङ्क्तिः। २, ८ स्वराट् पङ्क्तिः। ४, ६ भुरिक् पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः। ३, ५, ७ निचृत्त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः॥**

**अथ प्रश्नोत्तरविषय आरभ्यते॥**

अब आठ ऋचावाले पच्चीसवें सूक्त का आरम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में प्रश्नोत्तरविषय का आरम्भ किया जाता है॥

**को अ॒द्य नर्यो॑ दे॒वका॑म उ॒शन्निन्द्र॑स्य स॒ख्यं जु॑जोष।**

**को वा॑ म॒हेऽव॑से॒ पार्या॑य॒ समि॑द्धे अ॒ग्नौ सु॒तसो॑म ईट्टे॥ १॥**

**कः। अ॒द्य। नर्यः॑। दे॒वऽका॑मः। उ॒शन्। इन्द्र॑स्य। स॒ख्यम्। जु॒जो॒ष॒। कः। वा॒। म॒हे। अव॑से। पार्या॑य। सम्ऽइ॑द्धे। अ॒ग्नौ। सु॒तऽसो॑मः। ई॒ट्टे॥ १॥**

**पदार्थः**-(**कः**) (**अद्य**) इदानीम् (**नर्य्यः**) नृषु साधुः (**देवकामः**) यो देवान् विदुषः कामयते (**उशन्**) कामयमानः (**इन्द्रस्य**) परमैश्वर्य्ययुक्तस्य (**सख्यम्**) मित्रत्वम् (**जुजोष**) सेवते (**कः**) (**वा**) विकल्पे (**महे**) महते (**अवसे**) रक्षणाद्याय (**पार्य्याय**) दुःखपारं गमयते (**समिद्धे**) प्रसिद्धे (**अग्नौ**) पावके (**सुतसोमः**) सुतः सोमो येन (**ईट्टे**) ऐश्वर्य्यं लभते॥ १॥

**अन्वयः**-हे विद्वन्नद्य को देवकाम इन्द्रस्य सख्यमुशन्नर्य्यो धर्म्मं जुजोष को वा महे पार्य्यायावसे समिद्ध अग्नौ सुतसोमः सन्नैश्वर्य्यमीट्टे इति वयं पृच्छामः॥ १॥

**भावार्थः**-यो विद्यामित्रत्वकामस्सर्वजगत्प्रियाचारी सर्वेषां रक्षणं कुर्वन्नग्नौ होमादिना प्रजाहितं कुर्य्यात् स एव जगद्धितैषी वर्त्तत इत्युत्तरम्॥ १॥

**पदार्थः**-हे विद्वन्! (**अद्य**) इस समय (**कः**) कौन (**देवकामः**) विद्वानों की कामना करने वाला (**इन्द्रस्य**) अत्यन्त ऐश्वर्य्य से युक्त के (**सख्यम्**) मित्रत्व की (**उशन्**) कामना करता हुआ (**नर्य्यः**) मनुष्यों में श्रेष्ठ धर्म्म का (**जुजोष**) सेवन करता है (**कः, वा**) अथवा कौन (**महे**) बड़े (**पार्य्याय**) दुःख के पार उतारने वाले (**अवसे**) रक्षण आदि के लिये (**समिद्धे**) प्रसिद्ध (**अग्नौ**) अग्नि में (**सुतसोमः**) सोमरस को उत्पन्न करने वाला हुआ ऐश्वर्य्य को (**ईट्टे**) प्राप्त होता है, यह हम लोग पूछते हैं॥ १॥

**भावार्थः**-जो विद्या और मित्रता की कामना करनेवाला, सम्पूर्ण जगत् का प्रिय आचरण करता और सब का रक्षण करता हुआ अग्नि में होम आदि से प्रजा का हित करे, वही जगत् का हित चाहने वाला है, यह उत्तर है॥ १॥

**अथ राजकर्त्तव्यविषयमाह॥**

अब राजकर्त्तव्यविषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**को ना॑नाम॒ वच॑सा सो॒म्याय॑ मना॒युर्वा॑ भवति॒ वस्त॑ उ॒स्राः।**



www.9009.co.in

**क इन्द्र॑स्य॒ युज्यं॒ क: स॑खि॒त्वं को भ्रा॒त्रं व॑ष्टि क॒वये॒ क ऊ॒ती॥२॥**

**क:। न॒ना॒म॒। वच॑सा। सो॒म्याय॑। म॒ना॒यु:। वा॒। भ॒व॒ति॒। वस्ते॑। उ॒स्रा:। क:। इन्द्र॑स्य। युज्य॑म्। क:। स॒खि॒ऽत्वम्। क:। भ्रा॒त्रम्। व॒ष्टि॒। क॒वये॑। क:। ऊ॒ती॥२॥**

**पदार्थ:**-(**क:**) (**नानाम**) नम्रो भवति। अत्र **तुजादीनां दीर्घोऽभ्यासस्येति** दीर्घ:। (**वचसा**) वचनेन (**सोम्याय**) सोमैश्वर्य्यसाधवे (**मनायु:**) मनो विज्ञानं कामयमान: (**वा**) (**भवति**) (**वस्ते**) कामयते (**उस्रा:**) रश्मय इव। **उस्रा इति रश्मिनामसु पठितम्।** (निघं०१.५) (**क:**) (**इन्द्रस्य**) (**युज्यम्**) योक्तुमर्हम् (**क:**) (**सखित्वम्**) (**क:**) (**भ्रात्रम्**) भ्रातृभावम् (**वष्टि**) कामयते (**कवये**) प्राज्ञाय (**क:**) (**ऊती**) ऊत्या रक्षणादिक्रियया॥२॥

**अन्वय:**-हे विद्वांस:! को वचसा सोम्याय नानाम को वा वचसा सोम्याय मनायुर्भवति क उस्रा इव सर्वान् गुणैर्वस्ते क इन्द्रस्य युज्यं सखित्वं को वा कवय ऊती भ्रात्रं वष्टीत्युत्तरं ब्रूत॥२॥

**भावार्थ:**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कार:। यो मनसा कर्म्मणा वाचा नम्रो जायते यो रश्मिवत् प्रकाशात्मव्यवहारो यो जगदीश्वरेण मित्रत्वमाचरति सर्वैस्सह भ्रातृभावं रक्षति यश्च विद्वद्भ्यो हितं करोति स एव सर्वमिष्टं फलं लभते॥२॥

**पदार्थ:**-हे विद्वानो (**क:**) कौन (**वचसा**) वचन से (**सोम्याय**) सोमरूप ऐश्वर्य्य की सिद्धि करनेवाले के लिये (**नानाम**) नम्र होता है (**क:, वा**) अथवा कौन वचन से सोमरूप ऐश्वर्य्य की सिद्धि करने वाले के लिये (**मनायु:**) विज्ञान की कामना करता हुआ (**भवति**) होता है (**क:**) कौन (**उस्रा:**) किरणों के सदृश सब को गुणों से (**वस्ते**) चाहता है (**क:**) कौन (**इन्द्रस्य**) ऐश्वर्य्ययुक्त के (**युज्यम्**) जोड़ने योग्य (**सखित्वम्**) मित्रपने को (**क:**) अथवा कौन (**कवये**) बुद्धिमान् के लिये (**ऊती**) रक्षण आदि कर्म्म से (**भ्रात्रम्**) भ्रातृपने की (**वष्टि**) कामना करता है, इस का उत्तर कहो॥२॥

**भावार्थ:**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो मन, कर्म्म और वचन से नम्र होता है, जो किरणों के तुल्य प्रकाशस्वरूप व्यवहारयुक्त, जो जगदीश्वर के साथ मित्रता करता तथा सबके साथ भ्रातृपन की रक्षा करता और जो विद्वानों के लिये हित करता है, वही सम्पूर्ण इष्टफल को प्राप्त होता है॥२॥

**अथोत्तममध्यमनिकृष्टकर्त्तव्यकर्मविषयमाह॥**

अब उत्तम, मध्यम और निकृष्टों को कर्त्तव्यकर्मविषय का उपदेश अगले मन्त्र में दिया है॥

**को दे॒वाना॒मवो॑ अ॒द्या वृ॑णीते॒ क आ॑दि॒त्याँ अदि॑तिं॒ ज्योति॑रीट्टे।**

**कस्या॒श्विना॒विन्द्रो॑ अ॒ग्नि: सु॒तस्यां॒शो: पि॑बन्ति॒ मन॒सावि॑वेनम्॥३॥**

**क:। दे॒वाना॑म्। अव॑:। अ॒द्य। वृ॒णी॒ते॒। क:। आ॒दि॒त्यान्। अदि॑तिम्। ज्योति॑:। ई॒ट्टे॒। कस्य॑। अ॒श्विनौ॑। इन्द्र॑:। अ॒ग्नि:। सु॒तस्य॑। अं॒शो:। पि॒ब॒न्ति॒। मन॑सा। अ॒वि॑ऽवेनम्॥३॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-**(कः)** **(देवानाम्)** विदुषाम् **(अवः)** रक्षणादि **(अद्य)** अत्र **संहितायामि**ति दीर्घः। **(वृणीते)** स्वीकुरुते **(कः)** **(आदित्यान्)** मासानिव वर्त्तमानान् पूर्णविद्यान् **(अदितिम्)** पृथिवीम् **(ज्योतिः)** प्रकाशम् **(ईट्टे)** अधीच्छति **(कस्य)** **(अश्विनौ)** द्यावापृथिव्यौ **(इन्द्रः)** सूर्य्यः **(अग्निः)** विद्युत् प्रसिद्धस्वरूपः **(सुतस्य)** निष्पन्नस्य **(अंशोः)** प्राप्तव्यस्य महौषधिरस्य **(पिबन्ति)** **(मनसा)** विज्ञानेन **(अविवेनम्)** दुष्टकामनारहितम्॥३॥

**अन्वयः**-हे विद्वांसः! कोऽद्य देवानामवो वृणीते क आदित्यानदितिञ्ज्योतिश्चेट्टे। कस्य सुतस्यांशोर्मनसाऽविवेनमश्विनाविन्द्रोऽग्निश्च रसं पिबन्ति॥३॥

**भावार्थः**-ये विद्वत्सङ्गङ्कुर्वन्ति ते सूर्य्यादिवत् सर्वान् कामान् प्रापयितुं शक्नुवन्ति। येऽकमनीयं न कामयन्ते ते सिद्धकामा जायन्त इत्युत्तरम्॥३॥

**पदार्थः**-हे विद्वानो! **(कः)** कौन **(अद्य)** आज **(देवानाम्)** विद्वानों के **(अवः)** रक्षण आदि का **(वृणीते)** स्वीकार करता है **(कः)** कौन **(आदित्यान्)** मासों के सदृश वर्त्तमान पूर्ण विद्वानों तथा **(अदितिम्)** पृथिवी और **(ज्योतिः)** प्रकाश की **(ईट्टे)** अधिक इच्छा करता है **(कस्य)** किस **(सुतस्य)** उत्पन्न **(अंशोः)** प्राप्त होने योग्य बड़ी औषध के रस के **(मनसा)** विज्ञान से **(अविवेनम्)** दुष्ट कामनाओं से रहित जैसे हो, वैसे **(अश्विनौ)** अन्तरिक्ष-पृथिवी **(इन्द्रः)** सूर्य्य और **(अग्निः)** बिजुली वा प्रसिद्धरूप अग्निरस को **(पिबन्ति)** पीते हैं॥३॥

**भावार्थः**-जो विद्वानों के सङ्ग को करते हैं, वे सूर्य आदि के सदृश सम्पूर्ण कामनाओं को प्राप्त करा सकते हैं और जो नहीं कामना करने योग्य वस्तु की नहीं कामना करते हैं, वे कामनाओं की सिद्धि से युक्त होते हैं, यह उत्तर है॥३॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**तस्मा॑ अ॒ग्निर्भार॑तः॒ शर्म॑ यंस॒ज्ज्योक् प॑श्या॒त् सूर्य॑मु॒च्चर॑न्तम्।**

**य इन्द्रा॑य सु॒नवा॒मेत्याह॒ नरे॒ नर्या॑य॒ नृत॑माय नृ॒णाम्॥४॥**

**तस्मै॑। अ॒ग्निः। भार॑तः। शर्म॑। यं॒स॒त्। ज्योक्। प॒श्या॒त्। सूर्य॑म्। उ॒त्ऽचर॑न्तम्। यः। इन्द्रा॑य। सु॒नवा॑म। इति॑। आह॑। नरे॑। नर्या॑य। नृऽत॑माय। नृ॒णाम्॥४॥**

**पदार्थः**-**(तस्मै)** **(अग्निः)** पावकवद्वर्त्तमानः **(भारतः)** धारकस्यायं धर्त्ता **(शर्म्म)** गृहमिव सुखम्। **शर्मेति गृहनामसु पठितम्।** (निघं०३.४) **(यंसत्)** यच्छेत् प्राप्नुयात् **(ज्योक्)** निरन्तरम् **(पश्यात्)** सम्प्रेक्षेत **(सूर्य्यम्)** सूर्य्यमण्डलम् **(उच्चरन्तम्)** ऊर्ध्वं विहरन्तम् **(यः)** **(इन्द्राय)** परमैश्वर्य्याय **(सुनवाम)** निष्पादयेम **(इति)** **(आह)** ब्रूते **(नरे)** नायकाय **(नर्य्याय)** नृषु कुशलाय **(नृतमाय)** अतिशयेन नायकाय **(नृणाम्)** विद्यासुशीलयुक्तानां मनुष्याणाम्॥४॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! योऽग्निरिव भारतः शर्म्म यंसत् स उच्चरन्तं सूर्य्यं ज्योक् पश्यात् तस्मै नृणां नृतमाय नरे नर्य्यायेन्द्रायेत्याह तं वयं सुनवाम॥४॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यो गृहे निवास इव विद्यायां निवसेद् ब्रह्मचर्य्येण खगोलदिविद्यां प्राप्नुयान्मनुष्येभ्यो हितमुपदिशेत् स एवोत्तमः सञ्छतं वर्षाणि जीवन्त्सूर्य्यादिकं पश्यन्त्सर्वं सुखं यच्छेत्॥४॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(यः)** जो **(अग्निः)** अग्नि के सदृश वर्त्तमान **(भारतः)** धारण करने वाले का यह धारण करने वाला **(शर्म्म)** गृह के सदृश सुख को **(यंसत्)** प्राप्त होवे वह **(उच्चरन्तम्)** ऊपर को घूमते हुए **(सूर्य्यम्)** सूर्य्यमण्डल को **(ज्योक्)** निरन्तर **(पश्यात्)** देखे **(तस्मै)** उस **(नृणाम्)** विद्या और उत्तमशीलयुक्त मनुष्यों के **(नृतमाय)** अत्यन्त मुखिया **(नरे)** नायक **(नर्य्याय)** मनुष्यों में कुशल **(इन्द्राय)** उत्तम ऐश्वर्य्यवान् के लिये **(इति)** ऐसा **(आह)** कहता है, उसको हम लोग **(सुनवाम)** उत्पन्न करें॥४॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो गृह में निवास के सदृश विद्या में निवास करे और ब्रह्मचर्य्य से खगोल आदि विद्या को प्राप्त होवे और मनुष्यों के लिये हित का उपदेश देवे, वही उत्तम होता सौ वर्ष पर्य्यन्त जीवता और सूर्य्य आदि को देखता हुआ सब सुख को देवे॥४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**न तं जिनन्ति बहवो न दुभ्रा उर्वस्मा अदितिः शर्म यंसत्।**

**प्रियः सुकृत् प्रिय इन्द्रे मनायुः प्रियः सुप्रावीः प्रियो अस्य सोमी॥५॥१३॥**

**न। तम्। जिनन्ति। बहवः। न। दभ्राः। उरु। अस्मै। अदितिः। शर्म। यंसत्। प्रियः। सुऽकृत्। प्रियः। इन्द्रे। मनायुः। प्रियः। सुप्रऽअवीः। प्रियः। अस्य। सोमी॥५॥**

**पदार्थः**-**(न)** **(तम्)** **(जिनन्ति)** जयन्ति। अत्र विकरणव्यत्ययः। **(बहवः)** अनेके **(न)** **(दभ्राः)** हिंसकाः **(उरु)** बहु **(अस्मै)** **(अदितिः)** माता **(शर्म)** सुखम् **(यंसत्)** ददाति **(प्रियः)** योऽन्यान् प्रीणाति सः **(सुकृत्)** सुष्ठु सत्यं कर्म्म करोति सः **(प्रियः)** प्रीतिकरः **(इन्द्रे)** परमैश्वर्य्ये **(मनायुः)** मन इवाचरति **(प्रियः)** हर्षशोकरहितः **(सुप्रावीः)** सुष्ठु शुभगुणप्राप्तः **(प्रियः)** कमनीयः **(अस्य)** **(सोमी)** सोमो बहुविधमैश्वर्य्यं विद्यते यस्य सः॥५॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! य इन्द्रे प्रियः सुकृज्जनेषु प्रियः प्रियेषु मनायुर्धर्म्येण प्रियो विद्यासु सुप्रावीर्विद्वत्सु प्रियोऽस्य जगतो मध्ये सोमी वर्त्तते तं शत्रवो न जिनन्ति बहवो दभ्रा न हिंसन्त्यस्मा अदितिरुरु शर्म यंसत्॥५॥

**भावार्थः**-येऽजातशत्रवः परमेश्वरोपासकाः सर्वप्रियसाधका जना भवन्ति तान् कोऽपि शत्रुर्जेतुं न शक्नोति यथा मातरं श्रेष्ठं गृहं वा प्राप्य मनुष्यः सुखयति तथैव सर्वाणि सुखानि प्राप्य सततं मोदते॥५॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो **(इन्द्रे)** अत्यन्त ऐश्वर्य्य होने पर **(प्रियः)** अन्यों को प्रसन्न करने **(सुकृत्)** सत्य कर्म्म करने, जनों में **(प्रियः)** प्रीति करने और प्रियों में **(मनायुः)** मन के सदृश आचरण करने वाला धर्म्मयुक्त कर्म्म से **(प्रियः)** आनन्द और शोक से रहित विद्याओं में **(सुप्रावीः)** अच्छे प्रकार उत्तम गुणों को प्राप्त विद्वानों में **(प्रियः)** सुन्दर और **(अस्य)** इस जगत् के मध्य में **(सोमी)** अनेक प्रकार के ऐश्वर्य्य से युक्त है **(तम्)** उसको शत्रु लोग **(न)** नहीं **(जिनन्ति)** जीतते हैं **(बहवः)** अनेक **(दभ्राः)** नाश करने वाले **(न)** नहीं नाश करते हैं **(अस्मै)** इसके लिये **(अदितिः)** माता **(उरु)** बहुत **(शर्म्म)** सुख को **(यंसत्)** देती है॥५॥

**भावार्थः**-जो शत्रुरहित परमेश्वर की उपासना करने और सब के प्रिय साधने वाले जन होते हैं, उनको कोई भी शत्रु जीत नहीं सकता है और जैसे माता वा श्रेष्ठ गृह को प्राप्त होकर मनुष्य सुख का आचरण करता है, वैसे ही सब सुखों को प्राप्त होकर निरन्तर आनन्दित होता है॥५॥

**अथ राजामात्यादिगुणानाह॥**

अब राजा अमात्यादिकों के गुणों को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**सुप्राव्यः प्राशुषाळेष वीरः सुष्वेः पक्तिं कृणुते केवलेन्द्रः।**

**नासुष्वेरापिर्न सखा न जामिर्दुष्प्राव्योऽवहन्तेदवाचः॥६॥**

**सुप्रऽअव्यः। प्राशुषाट्। एषः। वीरः। सुस्वेः। पक्तिम्। कृणुते। केवला। इन्द्रः। न। असुस्वेः। आपिः। न। सखा। न। जामिः। दुःप्रऽअव्यः। अवहन्ता। इत्। अवाचः॥६॥**

**पदार्थः**-**(सुप्राव्यः)** सुष्ठु रक्षितुं योग्यः **(प्राशुषाट्)** यः प्राशून् वेगवतश्शत्रून् सहते **(एषः)** वर्त्तमानः **(वीरः)** बलिष्ठः **(सुष्वेः)** सुष्ठु निष्पन्नस्याऽन्नस्य **(पक्तिम्)** पाकम् **(कृणुते)** करोति **(केवला)** केवलाम् **(इन्द्रः)** ऐश्वर्य्यवान् **(न)** **(असुष्वेः)** अलसस्याऽनिष्पादकस्य **(आपिः)** यः सर्वानाप्नोति **(न)** इव **(सखा)** सुहृत् **(न)** **(जामिः)** बन्धुः **(दुष्प्राव्यः)** दुःखेन प्रावितुं योग्यः **(अवहन्ता)** विरुद्धस्य हननकर्त्ता **(इत्)** एव **(अवाचः)** दुष्टवचनस्य॥६॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यः सुप्राव्यः प्राशुषाडेष वीर इन्द्रः सुष्वेः केवला पक्तिं कृणुते योऽसुष्वेरापिर्न सखा न जामिर्दुष्प्राव्योऽवाचोऽवहन्तेदेव विरोधं न कृणुते स एव सर्वस्य सुखदाता जायते॥६॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। ये राजपुरुषाः सुसंस्कृतान्नं भुक्त्वा मित्रवद् बन्धुवद्वर्त्तित्वा दुःशीलान् घ्नन्ति न ते दारिद्र्यं पराजयञ्च प्राप्नुवन्ति॥६॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो **(सुप्राव्यः)** उत्तम प्रकार रक्षा करने योग्य **(प्राशुषाट्)** वेगयुक्त शत्रुओं को सहने वाला **(एषः)** यह **(वीरः)** बलिष्ठ **(इन्द्रः)** ऐश्वर्य्ययुक्त जन **(सुष्वेः)** उत्तम प्रकार उत्पन्न अन्न के **(केवला)** केवल **(पक्तिम्)** पाक को **(कृणुते)** करता है और जो **(असुष्वेः)** आलस्य भरे हुए अर्थात् नहीं उत्पन्न करने वाले के सम्बन्ध में **(आपिः)** सब को प्राप्त होने वाले के **(न)** सदृश वा **(सखा)** मित्र



www.9009.co.in

के **(न)** सदृश **(जामिः)** बन्धु **(दुष्प्राव्यः)** दुःख से रक्षा करने योग्य और **(अवाचः)** दुष्ट वचन वाले के **(अवहन्ता)** विरुद्ध काम का हनन करने वाला **(इत्)** ही विरोध को **(न)** नहीं करता है, वही सब का सुखदाता होता है॥६॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जो राजपुरुष उत्तम प्रकार संस्कारयुक्त अन्न का भोग तथा मित्र और बन्धुओं के सदृश वर्त्ताव करके दुष्ट स्वभाववालों का नाश करते, वे दारिद्र्य और पराजय को नहीं प्राप्त होते हैं॥६॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**न रेवता पणिना सख्यमिन्द्रोऽसुन्वता सुतपाः सं गृणीते।**

**आस्य वेदः खिदति हन्ति नग्नं वि सुष्वये पक्तये केवलो भूत्॥७॥**

**न। रेवता। पणिना। सख्यम्। इन्द्रः। असुन्वता। सुतऽपाः। सम्। गृणीते। आ। अस्य। वेदः। खिदति। हन्ति। नग्नम्। वि। सुस्वये। पक्तये। केवलः। भूत्॥७॥**

**पदार्थः**-**(न)** **(रेवता)** प्रशस्तधनवता **(पणिना)** व्यवहर्त्रा वणिग्जनादिना **(सख्यम्)** मित्रभावम् **(इन्द्रः)** परमैश्वर्य्यवान् राजा **(असुन्वता)** अपुरुषार्थिना **(सुतपाः)** सुष्ठु धर्म्मात्मा रागद्वेषरहितः **(सम्)** **(गृणीते)** उपदिशति **(आ)** **(अस्य)** राज्ञः **(वेदः)** द्रव्यम् **(खिदति)** दैन्यं प्राप्नोति **(हन्ति)** **(नग्नम्)** निर्लज्जम् **(वि)** **(सुष्वये)** सुष्ठु निष्पादकाय **(पक्तये)** पाककर्त्रे **(केवलः)** असहायः **(भूत्)** भवति॥७॥

**अन्वयः**-यः सुतपा इन्द्रो रेवता पणिनाऽसुन्वता सह सख्यं न करोति सर्वेभ्यः सत्यं न्यायं सङ्गृणीते यः केवलः सन् सुष्वये पक्तये भूद्यो नग्नं विहन्त्यस्य वेदः कदाचिन्नाखिदति॥७॥

**भावार्थः**-यो राजा धनादिलोभेन धनिनामुपरि प्रीतो दरिद्रान् प्रत्यप्रसन्नो न भवति, यो दुष्टान्तसम्यग्दण्डयित्वा श्रेष्ठान् सततं रक्षति नैवाऽस्य राष्ट्रं कदाचित् खेदं प्राप्नोति॥७॥

**पदार्थः**-जो **(सुतपाः)** उत्तम प्रकार धर्म्मात्मा और राग अर्थात् विषयों में प्रीति और प्राणियों में द्वेष से रहित **(इन्द्रः)** अत्यन्त ऐश्वर्य्यवाला राजा **(रेवता)** श्रेष्ठ धनवाले **(पणिना)** व्यवहारी वैश्य जन आदि और **(असुन्वता)** नहीं पुरुषार्थ करने वाले जन के साथ **(सख्यम्)** मित्रपने को **(न)** नहीं करता और सब को सत्य न्याय का **(सम्, गृणीते)** अच्छे प्रकार उपदेश देता है और जो **(केवलः)** सहायरहित हुआ **(सुष्वये)** उत्तम प्रकार उत्पन्न करने वाले **(पक्तये)** पाककर्त्ता के लिये **(भूत्)** होता है और जो **(नग्नम्)** निर्लज्ज का **(वि, हन्ति)** उत्तम प्रकार नाश करता है **(अस्य)** इस राजा का **(वेदः)** द्रव्य कभी नहीं **(आ, खिदति)** दीनता अर्थात् नाश को प्राप्त होता है॥७॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-जो राजा धन आदि के लोभ से धनियों के ऊपर प्रसन्न और दरिद्रों के प्रति अप्रसन्न नहीं होता है और जो दुष्टों को उत्तम प्रकार दण्ड देकर श्रेष्ठों की निरन्तर रक्षा करता है, नहीं इस का राज्य कभी खेद को प्राप्त होता है॥७॥

**अथ पक्षपातराहित्याचरणविषयमाह॥**

अब पक्षपातरहित आचरण विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**इन्द्रं परेऽवरे मध्यमास इन्द्रं यान्तोऽवसितास इन्द्रम्।**

**इन्द्रं क्षियन्त उत युध्यमाना इन्द्रं नरो वाजयन्तो हवन्ते॥८॥१४॥**

**इन्द्रम्। परे। अवरे। मध्यमासः। इन्द्रम्। यान्तः। अवऽसितासः। इन्द्रम्। इन्द्रम्। क्षियन्तः। उत। युध्यमानाः। इन्द्रम्। नरः। वाजयन्तः। हवन्ते॥८॥**

**पदार्थः**-**(इन्द्रम्)** परमैश्वर्य्यवन्तम् **(परे)** प्रकृष्टा जनाः **(अवरे)** निकृष्टाः **(मध्यमासः)** पक्षपातरहिताः **(इन्द्रम्)** सर्वसुखप्रदातारम् **(यान्तः)** प्राप्नुवन्तः **(अवसितासः)** कृतनिश्चयाः **(इन्द्रम्)** दुष्टानां हन्तारम् **(इन्द्रम्)** सर्वसुखधर्त्तारम् **(क्षियन्तः)** निवसन्तः **(उत)** अपि **(युध्यमानाः)** युद्धं कुर्वन्तः **(इन्द्रम्)** दुष्टानां विदारकम् **(नरः)** नायकाः **(वाजयन्तः)** विज्ञापयन्तः **(हवन्ते)** स्तुवन्ति स्पर्द्धयन्ति वा॥८॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! ये परेऽवरे मध्यमास इन्द्रं यान्त इन्द्रमवसितास इन्द्रं क्षियन्त इन्द्रं वाजयन्त उतापि युध्यमाना नर इन्द्रं हवन्ते त एव राज्यं कर्म कर्त्तुमर्हेयुः॥८॥

**भावार्थः**-यस्य राज्ये श्रेष्ठा मध्यस्था निकृष्टाश्च धर्म्मात्मानो विद्वांसोऽविद्वांसश्च स्वराज्यप्रियाः शत्रूणां हन्तारः स्वस्वामिभक्ताः सन्ति तत्र सदा राष्ट्रं वर्द्धत इति वेदितव्यम्॥८॥

अत्र प्रश्नोत्तरराजोत्तममध्यमनिकृष्टमनुष्यगुणवर्णनं राजाऽमात्यपक्षपातराहित्याचरणं चोपदिष्टमत एतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति द्वाविंशतितमं सूक्तं चतुर्दशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो **(परे)** श्रेष्ठ **(अवरे)** निकृष्ट और **(मध्यमासः)** पक्षपात से रहित जन **(इन्द्रम्)** अत्यन्त ऐश्वर्य वाले को **(यान्तः)** प्राप्त होते हुए **(इन्द्रम्)** सब सुख धारण करने वाले का **(अवसितासः)** निश्चय किये हुए और **(इन्द्रम्)** दुष्टों के मारनेवाले को **(क्षियन्तः)** निवास करते हुए **(इन्द्रम्)** सब सुख देनेवाले को **(वाजयन्तः)** जनाते **(उत)** और **(युध्यमानाः)** युद्ध करते हुए **(नरः)** नायक लोग **(इन्द्रम्)** दुष्टों के नाश करने वाले की **(हवन्ते)** स्तुति वा ईर्ष्या करते हैं, वे ही राज्यकर्म्म करने को योग्य होवें॥८॥



www.9009.co.in

**भावार्थ:**-जिसके राज्य में श्रेष्ठ, मध्यस्थ और निकृष्ट अर्थात् नीची श्रेणी में वर्त्तमान धर्म्मात्मा, विद्वान् और अविद्वान् लोग, अपने राज्य के प्रिय, शत्रुओं के नाश करने वाले, धन और स्वामी के भक्त हैं, वहाँ सदा राज्य बढ़ता है, ऐसा जानना चाहिये॥८॥

इस सूक्त में प्रश्न-उत्तर, राजा, उत्तम, मध्यम, निकृष्ट मनुष्यों के गुणों का वर्णन, राजा के मन्त्री के पक्षपात राहित्यरूप आचरण का उपदेश किया, इससे इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्तार्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह पच्चीसवां सूक्त और चौदहवां वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

**अथ सप्तर्चस्य षड्विंशतितमस्य सूक्तस्य वामदेव ऋषिः। इन्द्रो देवता १ पङ्क्तिः। २ भुरिक् पङ्क्तिः। ३, ७ स्वराट् पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः। ४ निचृत्त्रिष्टुप्। ५ विराट् त्रिष्टुप्। ६ त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः॥**

**अथेश्वरगुणानाह॥**

अब सात ऋचावाले छब्बीसवें सूक्त का आरम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में ईश्वर के गुणों का उपदेश करते हैं॥

**अहं मनुरभवं सूर्यश्चाहं कक्षीवाँ ऋषिरस्मि विप्रः।**

**अहं कुत्समार्जुनेयं न्यृञ्जेऽहं कविरुशना पश्यता मा॥ १॥**

**अहम्। मनुः। अभवम्। सूर्यः। च। अहम्। कक्षीवान्। ऋषिः। अस्मि। विप्रः। अहम्। कुत्सम्। आर्जुनेयम्। नि। ऋञ्जे। अहम्। कविः। उशना। पश्यत। मा॥ १॥**

**पदार्थः**-(**अहम्**) सृष्टिकर्तेश्वरः (**मनुः**) मननशीलो विद्वानिव सर्वविद्याविज्ञापकः (**अभवम्**) अस्मि (**सूर्य्यः**) सूर्य्य इव सर्वप्रकाशकः (**च**) इन्द्र इव सर्वाह्लादकः (**अहम्**) (**कक्षीवान्**) सर्वसृष्टिकक्षा विद्यन्ते यस्मिन्त्सः (**ऋषिः**) मन्त्रार्थवेत्तेव (**अस्मि**) (**विप्रः**) मेधावीव सर्ववेत्ता (**अहम्**) (**कुत्सम्**) वज्रम् (**आर्जुनेयम्**) अर्जुनेनर्जुना विदुषा निष्पादितमिव (**नि**) नितराम् (**ऋञ्जे**) साध्नोमि (**अहम्**) (**कविः**) सर्वशास्त्रविद्विद्वान् (**उशना**) सर्वहितङ्कामयमानः (**पश्यत**) सम्प्रेक्षध्वम्। अत्र **संहितायामि**ति दीर्घः। (**मा**) माम्॥ १॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! योऽहं मनुः सूर्य्यश्चाभवमहं कक्षीवानृषिर्विप्रोऽस्म्यहमार्जुनेयं कुत्सं न्यृञ्जेऽहमुशना कविरस्मि तं मा यूयं पश्यत॥ १॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यो जगदीश्वरो मन्त्रिणां मन्त्री प्रकाशकानां प्रकाशको विदुषां विद्वाननभिहतन्यायः सर्वज्ञः सर्वोपकारी वर्त्तते तमेव विद्याधर्म्माचरणयोगाभ्यासैः साक्षात्कुरुत॥ १॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो (**अहम्**) मैं सृष्टि को करने वाला ईश्वर (**मनुः**) विचार करने और विद्वान् के सदृश सम्पूर्ण विद्याओं का जनाने वाला (**च**) और (**सूर्य्यः**) सूर्य्य के सदृश सब का प्रकाशक (**अभवम्**) हूँ और (**अहम्**) मैं (**कक्षीवान्**) सम्पूर्ण सृष्टि की कक्षा अर्थात् परम्पराओं से युक्त (**ऋषिः**) मन्त्रों के अर्थ जानने वाले के सदृश (**विप्रः**) बुद्धिमान् के सदृश सब पदार्थों को जानने वाला (**अस्मि**) हूँ और (**अहम्**) मैं (**आर्ज्जुनेयम्**) सरल विद्वान् ने उत्पन्न किये हुए (**कुत्सम्**) वज्र को (**नि**) अत्यन्त (**ऋञ्जे**) सिद्ध करता हूँ और (**अहम्**) मैं (**उशना**) सब के हित की कामना करता हुआ (**कविः**) सम्पूर्ण शास्त्र को जानने वाला विद्वान् हूँ, उस (**मा**) मुझको तुम (**पश्यत**) देखो॥ १॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जो जगदीश्वर मन्त्रियों अर्थात् विचार करने वालों में विचार करने और प्रकाश करने वालों का प्रकाशक, विद्वानों में विद्वान्, अखण्डित न्याययुक्त, सर्वज्ञ और सब का उपकारी है; उस ही का विद्या, धर्म्माचरण और योगाऽभ्यास से प्रत्यक्ष करो॥१॥

**पुनरीश्वरगुणानाह॥**

फिर ईश्वर के गुणों को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अहं भूमिमददामार्यायाहं वृष्टिं दाशुषे मर्त्याय।**

**अहमपो अनयं वावशाना मम देवासो अनु केतमायन्॥२॥**

**अहम्। भूमिम्। अददाम्। आर्याय। अहम्। वृष्टिम्। दाशुषे। मर्त्याय। अहम्। अपः। अनयम्। वावशानाः। मम। देवासः। अनु। केतम्। आयन्॥२॥**

**पदार्थः**-**(अहम्)** सर्वधर्त्ता सर्वस्त्रष्टेश्वरः **(भूमिम्)** पृथिवीराज्यम् **(अददाम्)** ददामि **(आर्य्याय)** धर्म्यगुणकर्मस्वभावाय **(अहम्)** **(वृष्टिम्)** **(दाशुषे)** दानशीलाय **(मर्त्याय)** मनुष्याय **(अहम्)** **(अपः)** प्राणान् वायून् वा **(अनयम्)** प्रापयेयम् **(वावशानाः)** कामयमानाः **(मम)** **(देवासः)** विद्वांसः **(अनु)** **(केतम्)** प्रज्ञां प्रज्ञापनं वा **(आयन्)** प्राप्नुवन्ति॥२॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! योऽहमार्य्याय भूमिमददामहं दाशुषे मर्त्याय वृष्टिमनयमहमपोऽनयं यस्य मम वावशाना देवासः केतमन्वायंस्तं मां यूयं सेवध्वम्॥२॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यो न्यायशीलाय भूमिराज्यं ददाति सर्वस्य सुखाय वृष्टिं करोति सर्वेषां जीवनाय वायुं प्रेरयति यस्योपदेशद्वारा विद्वांसो भवन्ति तमेव सततमनूपाध्वम्॥२॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो **(अहम्)** सबका धारण करने और सब का उत्पन्न करने वाला ईश्वर मैं **(आर्य्याय)** धर्म्मयुक्त गुण, कर्म्म और स्वभाव वाले के लिये **(भूमिम्)** पृथिवी के राज्य को **(अददाम्)** देता हूँ **(अहम्)** मैं **(दाशुषे)** देने वाले **(मर्त्याय)** मनुष्य के लिये **(वृष्टिम्)** वर्षा को **(अनयम्)** प्राप्त कराऊं **(अहम्)** मैं **(अपः)** प्राणों वा पवनों को प्राप्त कराऊं जिस **(मम)** मेरे **(वावशानाः)** कामना करते हुए **(देवासः)** विद्वान् लोग **(केतम्)** बुद्धि वा जनाने के लिये **(अनु, आयन्)** अनुकूल प्राप्त होते हैं, उस मुझको तुम सेवो॥२॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो न्यायकारी स्वभाव वाले के लिये भूमि का राज्य देता, सब के सुख के लिये वृष्टि करता और सब के जीवन के लिये वायु को प्रेरणा करता है और जिसके उपदेश के द्वारा विद्वान् होते हैं, उसी की निरन्तर उपासना करो॥२॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥



www.9009.co.in

**अहं पुरो मन्दसानो व्यैरं नव साकं नवतीः शम्बरस्य।**

**शततमं वेश्यं सर्वताता दिवोदासमतिथिग्वं यदावम्॥ ३॥**

**अहम्। पुरः। मन्दसानः। वि। ऐरम्। नव। साकम्। नवतीः। शम्बरस्य। शतऽतमम्। वेश्यम्। सर्वऽताता। दिवःऽदासम्। अतिथिग्वम्। यत्। आवम्॥ ३॥**

**पदार्थः**-(**अहम्**) जगदीश्वरः (**पुरः**) प्रथमम् (**मन्दसानः**) आनन्दस्वरूप आनन्दयिता (**वि**) (**ऐरम्**) प्रेरयेयम् (**नव**) (**साकम्**) सह (**नवतीः**) एतत्सङ्ख्याकान् पदार्थान् (**शम्बरस्य**) मेघस्य (**शततमम्**) अतिशयेनाऽसङ्ख्यातम् (**वेश्यम्**) वेशेषु प्रवेशेषु भवम् (**सर्वताता**) सर्वतातौ सर्वस्मिन्नेव सङ्गन्तव्ये जगति (**दिवोदासम्**) विज्ञानमयस्य प्रकाशस्य दातारम् (**अतिथिग्वम्**) योऽतिथीन् गच्छति गमयति वा तम् (**यत्**) यम् (**आवम्**) रक्षयेयम्॥ ३॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यो मन्दसानोऽहं पुरः शम्बरस्य शततमं वेश्यं नव नवतीः साकं व्यैरम्। सर्वताता यद्यं दिवोदासमतिथिग्वमावन्तं मामुपाध्वं स चाऽऽनन्दी भवति॥ ३॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यो जगदीश्वरो जगदुत्पत्तेः प्राक् चेतनस्वरूपेण वर्त्तमानः स सर्वं जगदुत्पाद्य सर्वैः सह सर्वेषां सम्बन्धं विधाय सर्वहितं विदधाति॥ ३॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो (**मन्दसानः**) आनन्दस्वरूप और आनन्द देने वाला (**अहम्**) मैं जगदीश्वर (**पुरः**) प्रथम (**शम्बरस्य**) मेघ के (**शततमम्**) अत्यन्त असंख्यात (**वेश्यम्**) उत्तम वेशों अर्थात् प्रवेशों में उत्पन्न (**नव, नवतीः**) निन्नानवे पदार्थों को (**साकम्**) साथ (**वि, ऐरम्**) प्रेरणा करूं (**सर्वताता**) सब में ही मिलने योग्य जगत् में (**यत्**) जिस (**दिवोदासम्**) विज्ञानस्वरूप प्रकाश के देनेवाले (**अतिथिग्वम्**) अतिथियों को प्राप्त हो वा प्राप्त करावे उसकी (**आवम्**) रक्षा करूं, उस मेरी उपासना करो और वह आनन्दयुक्त होता है॥ ३॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो जगदीश्वर जगत् की उत्पति के प्रथम चेतनस्वरूप से वर्त्तमान, वह सब जगत् को उत्पन्न करके, सब के साथ सब का सम्बन्ध करके सब का हित करता है॥ ३॥

**अथ राजसेनाविषयमाह॥**

अब राजसेनाविषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**प्र सु ष विभ्यो मरुतो विरस्तु प्र श्येनः श्येनेभ्य आशुपत्वा।**

**अचक्रया यत्स्वधया सुपर्णो हव्यं भरन्मनवे देवजुष्टम्॥ ४॥**

**प्र। सु। सः। विऽभ्यः। मरुतः। विः। अस्तु। प्र। श्येनः। श्येनेभ्यः। आशुऽपत्वा। अचक्रया। यत्। स्वधया। सुऽपर्णः। हव्यम्। भरत्। मनवे। देवऽजुष्टम्॥ ४॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**प्र**) (**सु**) (**सः**) (**विभ्यः**) पक्षिभ्यः (**मरुतः**) मनुष्याः (**विः**) पक्षी (**अस्तु**) भवतु (**प्र**) (**श्येनः**) (**श्येनेभ्यः**) पक्षिविशेषेभ्यः (**आशुपत्वा**) सद्यः पतित्वा (**अचक्रया**) अविद्यमानचक्राकारया (**यत्**) यः (**स्वधया**) अन्नादिना (**सुपर्णः**) शोभनपतनः (**हव्यम्**) ग्रहीतुमर्हम् (**भरत्**) दधाति (**मनवे**) मनुष्याय (**देवजुष्टम्**) विद्वद्भिः सेवितम्॥४॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथा श्येनो विः श्येनेभ्यो विभ्य अचक्रया आशुपत्वा वेगं भरत्तथा मरुतो मनुष्याणां सेनावेगादिकं प्रभरद्यद्यो सुपर्णो मनवे स्वधया देवजुष्टं हव्यं प्र सु भरत् स सर्वत्र सुखकार्य्यस्तु॥४॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! अस्यां सृष्टावन्तरिक्षे यथा पक्षिण आकाशे गत्वाऽऽगच्छन्ति तथैव सर्वे लोकलोकान्तरा भ्रमन्ति यः सृष्टिविद्यां जानाति स एव मनुष्यादीनां सुखकारी भवति॥४॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे (**श्येनः**) वाज (**विः**) पक्षी (**श्येनेभ्यः**) वाजनामक (**विभ्यः**) पक्षी विशेषों से (**अचक्रया**) अविद्यमान चक्राकारगति के साथ (**आशुपत्वा**) शीघ्र गिर के वेग को (**भरत्**) धारण करता है, वैसे (**मरुतः**) मनुष्य जन मनुष्यों की सेना के वेगादिगुण को (**प्र**) विशेष करके धारण करता है (**यत्**) जो (**सुपर्णः**) उत्तम पतनयुक्त (**मनवे**) मनुष्य के लिये (**स्वधया**) अन्न आदि से (**देवजुष्टम्**) विद्वानों से सेवित (**हव्यम्**) ग्रहण करने योग्य वस्तु को (**प्र**) अत्यन्त (**सु**) उत्तम प्रकार धारण करता है (**सः**) वह सब स्थानों में सुखकारी (**अस्तु**) हो॥४॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! इस सृष्टि और अन्तरिक्ष में जैसे पक्षी आकाश में जाकर आते हैं, वैसे ही सब लोक और लोकान्तर घूमते हैं, जो सृष्टिविद्या को जानता है, वही मनुष्यादिकों का सुखकारी होता है॥४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**भरद्यदि विरतो वेविजानः पथोरुणा मनोजवा असर्जि।**

**तूयं ययौ मधुना सोम्येनोत श्रवो विविदे श्येनो अत्र॥५॥**

**भरत्। यदि। विः। अतः। वेविजानः। पथा। उरुणा। मनःऽजवाः। असर्जि। तूयम्। ययौ। मधुना। सोम्येन। उत। श्रवः। विविदे। श्येनः। अत्र॥५॥**

**पदार्थः**-(**भरत्**) पुष्यात् (**यदि**) (**विः**) पक्षी (**अतः**) अस्मात् स्थानात् (**वेविजानः**) कम्पमानः (**पथा**) मार्गेण (**उरुणा**) बहुना (**मनोजवाः**) मनोवद्वेगाः (**असर्जि**) सृजति (**तूयम्**) तूर्णम् (**ययौ**) याति गच्छति (**मधुना**) मधुरेण (**सोम्येन**) सोमेष्वोषधीषु भवेन (**उत**) अपि (**श्रवः**) अन्नादिकम् (**विविदे**) विन्दति (**श्येनः**) हिंस्रो वेगवान् पक्षी (**अत्र**) अस्मिन् संसारे॥५॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे राजपुरुषा! यद्यत्र भवद्भिर्मनोजवाः सेना असर्जि तर्ह्यतो यथा श्येनो विर्वेविजानः सन्नुरुणा पथा तूयं ययौ तथा यो राजा मधुना सोम्येन श्रवोऽन्नमुत सेनां भरत् स विजयं विविदे॥५॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे राजजना! भवन्तो यावच्छ्येनवद्वेगवतीं सेनां न कुर्वन्ति तावद्विजयधनलाभो भवितुमशक्यः॥५॥

**पदार्थः**-हे राजजनो! **(यदि)** जो **(अत्र)** इस संसार में आप लोगों से **(मनोजवाः)** मन के सदृश वेगयुक्त सेनाओं को **(असर्जि)** बनाता है तो **(अतः)** इस स्थान से जैसे **(श्येनः)** हिंसा करने वाला वेगयुक्त **(विः)** पक्षी **(वेविजानः)** कम्पता हुआ **(उरुणा)** बहुत **(पथा)** मार्ग से **(तूयम्)** शीघ्र **(ययौ)** जाता है, वैसे जो राजा **(मधुना)** मधुर **(सोम्येन)** सोम अर्थात् ओषधियों में उत्पन्न हुए रस से **(श्रवः)** अन्न आदि को **(उत)** और सेना को **(भरत्)** पुष्ट करे, वह विजय को **(विविदे)** प्राप्त होता है॥५॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे राजजनो! आप लोग जब तक वाजपक्षी के के सदृश वेग युक्त सेना को नहीं करते हैं, तब तक विजय से धन का लाभ नहीं हो सकता है॥५॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**ऋजीपी श्येनो ददमानो अंशुं परावतः शकुनो मन्द्रं मदम्।**

**सोमं भरद् दादृहाणो देवावान् दिवो अमुष्मादुत्तरादादाय॥६॥**

**ऋजीपी। श्येनः। ददमानः। अंशुम्। पराऽवतः। शकुनः। मन्द्रम्। मदम्। सोमम्। भरत्। दादृहाणः। देवऽवान्। दिवः। अमुष्मात्। उत्ऽतरात्। आऽदाय॥६॥**

**पदार्थः**-**(ऋजीपी)** सरलगामी **(श्येनः)** प्रवृद्धवेगः **(ददमानः)** **(अंशुम्)** विज्ञानादिकं पदार्थम् **(परावतः)** दूरदेशात् **(शकुनः)** पक्षी **(मन्द्रम्)** प्रशंसनीयम् **(मदम्)** आनन्दकरम् **(सोमम्)** ऐश्वर्य्यम् **(भरत्)** धरति **(दादृहाणः)** वर्धमानः **(देवावान्)** बहवो देवा विद्वांसो विद्यन्ते यस्य सः **(दिवः)** विद्युत्प्रकाशात् **(अमुष्मात्)** परोक्षात् **(उत्तरात्)** **(आदाय)**॥६॥

**अन्वयः**-हे राजन्! यथर्जीपी श्येनः शकुनः परावतो देशात् पतित्वा स्वाभीष्टं पदार्थं भरत् तथैव भवानंशुं मदं मन्द्रं सोमं ददमानो देवावानमुष्मादुत्तराद् दिवो विद्यामादाय दादृहाणो भवेत्॥६॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यथा पक्षिणो भूमेरुत्थायाऽन्तरिक्षमार्गेण गत्वाऽऽगत्य स्वप्रयोजनं साध्नुवन्ति तथैव देशदेशान्तरं विमानादिना गत्वा स्वप्रयोजनं साध्नुवन्तु॥६॥

**पदार्थः**-हे राजन्! जैसे **(ऋजीपी)** सीधी चाल वाला **(श्येनः)** बढ़े हुए वेग से युक्त **(शकुनः)** पक्षी **(परावतः)** दूर देश से गिर के अपने अपेक्षित पदार्थ को **(भरत्)** धारण करता है, वैसे ही आप **(अंशुम्)** विज्ञान आदि पदार्थ **(मदम्)** आनन्द करने वाले **(मन्द्रम्)** प्रशंसा करने योग्य **(सोमम्)** ऐश्वर्य्य



www.9009.co.in

को **(ददमानः)** देते हुए **(देवावान्)** बहुत विद्वानों से युक्त **(अमुष्मात्)** परोक्ष **(उत्तरात्)** आने वाले **(दिवः)** बिजुली के प्रकाश से विद्या को **(आदाय)** ग्रहण करके **(दादृहाणः)** बढ़ते हुए होवें॥६॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जैसे पक्षी पृथिवी से उड़ के अन्तरिक्ष के मार्ग से जाकर और आकर अपने प्रयोजन को सिद्ध करते हैं, वैसे ही देश-देशान्तर में विमान आदि से जाकर अपने प्रयोजन को सिद्ध करो॥६॥

**पुनः प्रकारान्तरेण पूर्वोक्तविषयमाह॥**

फिर प्रकारान्तर से पूर्वोक्त विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**आदाय श्येनो अभरत्सोमं सहस्रं सवाँ अयुतं च साकम्।**

**अत्रा पुरंधिरजहादरातीर्मदे सोमस्य मूरा अमूरः॥७॥१५॥**

**आऽदाय। श्येनः। अभरत्। सोमम्। सहस्रम्। सवान्। अयुतम्। च। साकम्। अत्र। पुरम्ऽधिः। अजहात्। अरातीः। मदे। सोमस्य। मूराः। अमूरः॥७॥**

**पदार्थः**-**(आदाय)** गृहीत्वा **(श्येनः)** श्येनपक्षिवत् **(अभरत्)** धरेत् **(सोमम्)** ऐश्वर्य्यमोषध्यादिकं वा **(सहस्रम्)** **(सवान्)** निष्पन्नान् पदार्थान् **(अयुतम्)** अपरिमितसङ्ख्याकम् **(च)** **(साकम्)** **(अत्रा)** अत्र **ऋचि तुनुघेति** दीर्घः। **(पुरन्धिः)** यः पुरं दधाति **(अजहात्)** जहाति त्यजति **(अरातीः)** शत्रून् **(मदे)** आनन्दे **(सोमस्य)** ऐश्वर्य्यस्य **(मूराः)** मूढाः **(अमूरः)** मोहरहितः॥७॥

**अन्वयः**-यः सेनेशः श्येन इव सहस्रं सोममयुतञ्च सवानादाय सेनाराष्ट्रेऽभरत् स अमूरोऽत्रा पुरन्धिः सोमस्य मदे मूरा अरातीरजहात् सोऽत्र साकं विजयमाप्नुयात्॥७॥

**भावार्थः**-ये शत्रुबलादधिकं बलं शत्रोः सामग्र्याः शतशोऽधिकां सामग्रीं सुक्षितां सेनां विदुषोऽध्यक्षान् कृत्वा युध्येरँस्ते ध्रुवं विजयमाप्नुयुः॥७॥

अत्रेश्वरराजसेनागुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति षड्विंशं सूक्तं पञ्चदशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-जो सेना का स्वामी **(श्येनः)** वाज नामक पक्षी के सदृश **(सहस्रम्)** सहस्र संख्यायुक्त **(सोमम्)** ऐश्वर्य्य वा ओषधि आदि पदार्थ **(च)** और **(अयुतम्)** असंख्य **(सवान्)** उत्पन्न हुए पदार्थों को **(आदाय)** ग्रहण करके सेना और राज्य को **(अभरत्)** धारण करे वह **(अमूरः)** निर्मोह जन **(अत्रा)** इस में **(पुरन्धिः)** पुर को धारण करने वाला **(सोमस्य)** ऐश्वर्य्य सम्बन्धी **(मदे)** आनन्द के निमित्त **(मूराः)**



www.9009.co.in

मूढ़ **(अरातीः)** शत्रुओं का **(अजहात्)** त्याग करता है, वह इसमें **(साकम्)** साथ ही विजय को प्राप्त होवे॥७॥

**भावार्थः**-जो शत्रु के बल से अधिक बल, शत्रु की सामग्री से सैकड़ों गुणी अधिक सामग्री, उत्तम प्रकार शिक्षायुक्त सेना और विद्वानों को अध्यक्ष करके युद्ध करें, वे निश्चय विजय को प्राप्त होवें॥७॥

इस सूक्त में ईश्वर और राजसेना के गुणवर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह छब्बीसवां सूक्त और पन्द्रहवां वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

अथ पञ्चर्चस्य सप्तविंशतितमस्य सूक्तस्य वामदेव ऋषिः। इन्द्रो देवता। १, ४ निचृत्त्रिष्टुप्। २ विराट् त्रिष्टुप्। ३ त्रिष्टुप् छन्दः। ५ निचृच्छक्वरीछन्दः। धैवतः स्वरः॥

**अथ जीवगुणानाह॥**

अब पांच ऋचा वाले सत्ताईसवें सूक्त का प्रारम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में जीव के गुणों को कहते हैं॥

**गर्भे॒ नु सन्नन्वे॑षामवेदम॒हं दे॒वानां॒ जनि॑मानि॒ विश्वा॑।**

**श॒तं मा॒ पुर॒ आय॑सीररक्ष॒न्नध॑ श्ये॒नो ज॒वसा॒ निर॑दीयम्॥१॥**

गर्भे॑। नु। सन्। अनु॑। ए॒षाम्। अ॒वे॒द॒म्। अ॒हम्। दे॒वाना॑म्। जनि॑मानि। विश्वा॑। श॒तम्। मा॒। पुरः॑। आय॑सीः। अ॒र॒क्ष॒न्। अध॑। श्ये॒नः। ज॒वसा॑। निः। अ॒दी॒य॒म्॥१॥

**पदार्थः**-(**गर्भे**) (**नु**) सद्यः (**सन्**) (**अनु**) पश्चात् (**एषाम्**) (**अवेदम्**) विजानामि (**अहम्**) विद्वान् (**देवानाम्**) दिव्यानां पृथिव्यादीनां पदार्थानां विदुषां वा (**जनिमानि**) जन्मानि (**विश्वा**) सर्वाणि (**शतम्**) (**मा**) माम् (**पुरः**) नगर्य्यः (**आयसीः**) सुवर्णमयीर्लोहमयीर्वा (**अरक्षन्**) रक्षन्ति (**अध**) अथ (**श्येनः**) (**जवसा**) वेगेन (**निः**) नितराम् (**अदीयम्**) निःसरेयम्॥१॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथाऽहं गर्भे सन्नेषां देवानां विश्वा जनिमान्यन्ववेदं यं मा आयसीः शतं पुरोऽरक्षन्नध सोऽहं श्येन इवाऽस्माच्छरीराज्जवसा नु निरदीयम्॥१॥

**भावार्थः**-मनुष्यैस्सदा सृष्टिविद्याबोधस्य जन्ममरणयोः शारीरिकी च विद्या विज्ञेया, यतो सदैव निर्भयता वर्त्तेत॥१॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे (**अहम्**) मैं विद्वान् (**गर्भे**) गर्भ में (**सन्**) वर्त्तमान (**एषाम्**) इन (**देवानाम्**) श्रेष्ठ पृथिवी आदि पदार्थ वा विद्वानों के (**विश्वा**) सम्पूर्ण (**जनिमानि**) जन्मों को (**अनु, अवेदम्**) अनुकूल जानता हूँ जिस (**मा**) मुझको (**आयसीः**) सुवर्ण वाली वा लोह वाली (**शतम्**) सौ (**पुरः**) नगरी (**अरक्षन्**) रक्षा करती हैं (**अध**) इसके अनन्तर सो मैं (**श्येनः**) वाज पक्षी के सदृश इस शरीर से (**जवसा**) वेग के साथ (**नु**) शीघ्र (**निः**) अत्यन्त (**अदीयम्**) निकलूं॥१॥

**भावार्थः**-मनुष्यों को चाहिये कि सदा सृष्टिविद्या बोध और जन्म-मरण की शरीर सम्बन्धिनी विद्या जानें, जिससे सदैव निर्भयता वर्त्ते॥१॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**न घा॒ स मामप॒ जोषं॑ जभारा॒भीमा॑स॒ त्वक्ष॑सा॒ वी॒र्ये॑ण।**

**ई॒र्मा पुर॑न्धिरजहा॒दरा॑तीरु॒त वाताँ॑ अतर॒च्छूशु॑वानः॥२॥**



www.9009.co.in

न। घ। सः। माम्। अप॑। जोष॑म्। जुभार। अभि। ईम्। आस। त्वक्ष॑सा। वीर्ये॑ण। ईर्मा। पुर॑म्ऽधिः। अजहात्। अरा॑तीः। उत। वाता॑न्। अतरत्। शूशु॑वानः॥ २॥

**पदार्थः-(न)** निषेधे **(घा)** एव। अत्र **ऋचि तुनुघेति** दीर्घः। **(सः) (माम्) (अप) (जोषम्)** विपरीतसेवनम् **(जभार)** धरेत् **(अभि) (ईम्)** सर्वतः **(आस)** भवेयम् **(त्वक्षसा)** तीव्रेण **(वीर्येण)** बलेन **(ईर्मा)** प्रेरकः **(पुरन्धिः)** बहुधरः **(अजहात्) (अरातीः)** शत्रून् **(उत) (वातान्)** वायुवद्वेगयुक्तान् **(अतरत्)** तरेत् **(शूशुवानः)** वर्धमानः॥ २॥

**अन्वयः-**यः शूशुवानः पुरन्धिरीर्मा त्वक्षसा वीर्येण वातानिवाऽरातीरजहादुत शत्रुबलमतरत् स घा मामप जोषं न जभार एतेनाऽहमीं सर्वतस्सुरभ्यास॥ २॥

**भावार्थः-**अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। ये मनुष्या वायुवद्बलिष्ठा भूत्वा शत्रून् धर्षन्ति ते दुःखं तीर्त्वा दुष्टकर्म्म त्यक्त्वा सुखिनो भवन्ति॥ २॥

**पदार्थः-**जो **(शूशुवानः)** बढ़ने **(पुरन्धिः)** बहुत पदार्थों को धारण करने और **(ईर्मा)** प्रेरणा करने वाला **(त्वक्षसा)** तीव्र **(वीर्य्येण)** बल से **(वातान्)** वायु के सदृश वेगयुक्त पदार्थों के समान **(अरातीः)** शत्रुओं का **(अजहात्)** त्याग करे **(उत)** और शत्रुओं के बल के **(अतरत्)** पार होवे **(सः, घा)** वही **(माम्)** मेरे **(अप, जोषम्)** विपरीत सेवन को **(न)** नहीं **(जभार)** धारण करे, इससे मैं **(ईम्)** सब प्रकार सुखयुक्त **(अभि, आस)** सब ओर से होऊँ॥ २॥

**भावार्थः-**इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो मनुष्य वायु के सदृश बलवान् होकर शत्रुओं को दबाते हैं, वे दुःख को लांघ और और बुरे कर्म को त्याग के सुखी होते हैं॥ २॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अव यच्छ्येनो अस्व॑नीदध द्योर्वि यद्यदि वात॑ ऊहुः पुर॑न्धिम्।**

**सृजद्यद॑स्मा अव॑ ह क्षिपज्ज्यां कृशानुरस्ता मन॑सा भुरण्यन्॥ ३॥**

अव॑। यत्। श्येनः। अस्व॑नीत्। अध॑। द्योः। वि। यत्। यदि॑। वा। अत॑ः। ऊहुः। पुर॑म्ऽधिम्। सृजत्। यत्। अस्मै। अव॑। ह। क्षिपत्। ज्याम्। कृशानु॑ः। अस्ता॑। मन॑सा। भुरण्यन्॥ ३॥

**पदार्थः-(अव) (यत्)** यः **(श्येनः)** श्येन इव वर्त्तमानः **(अस्वनीत्)** शब्दयेदुपदिशेत् **(अध) (द्योः)** प्रकाशस्य **(वि) (यत्)** यः **(यदि) (वा) (अतः) (ऊहुः)** वहन्ति **(पुरन्धिम्)** बहुधरं राजानम् **(सृजत्)** सृजेत् **(यत्)** यः **(अस्मै) (अव) (ह)** खलु **(क्षिपत्)** प्रेरयति **(ज्याम्)** धनुषः प्रत्यञ्चाम् **(कृशानुः)** शत्रूणां कर्षकः **(अस्ता)** प्रक्षेप्ता **(मनसा)** अन्तःकरणेन **(भुरण्यन्)** धरन् पुष्यन् वा॥ ३॥

**अन्वयः-**हे मनुष्याः! यद्यः श्येन इवावास्वनीदध यद् द्योः पुरन्धिं सृजद् यद्वा शत्रुबलं कम्पयेदस्मै ह ज्यामवक्षिपदतः कृशानुरिव मनसा भुरण्यन्नस्ता व्यवक्षिपद्यदि तमन्य ऊहुस्तर्हि स सर्वत्र विजयी स्यात्॥ ३॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-ये मनुष्या सत्यमुपदेष्टारं सत्यन्यायकरं शत्रूणां जेतारं प्रजापालकं राजानं प्राप्नुयुस्ते सर्वतः सुखिनः स्युः॥३॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(यत्)** जो **(श्येनः)** वाज पक्षी के सदृश वर्त्तमान **(अव, अस्वनीत्)** शब्द करे उपदेश देवे **(अध)** इसके अनन्तर **(यत्)** जो **(द्योः)** प्रकाश के सम्बन्ध में **(पुरन्धिम्)** बहुत धारण करने वाले राजा को **(सृजत्)** उत्पन्न करे **(यत्, वा)** अथवा जो शत्रुबल को कम्पावे **(अस्मै,ह)** इसी के लिये **(ज्याम्)** धनुष् की तांत की **(अव, क्षिपत्)** प्रेरणा देता है **(अतः)** इस कारण **(कृशानुः)** शत्रुओं को खींचने वाला जैसे वैसे **(मनसा)** अन्तःकरण से **(भुरण्यन्)** पदार्थों का धारण वा पोषण करता हुआ **(अस्ता)** फेंकनेवाला **(वि)** विशेष करके फेंकता है **(यदि)** जो उसको अन्य जन **(ऊहुः)** पहुँचाते हैं तो वह सब स्थान में विजयी होवे॥३॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य सत्य के उपदेश करने, सत्य न्याय करने, शत्रुओं के जीतने और प्रजा के पालन करने वाले राजा को प्राप्त होवें, वे सब प्रकार से सुखी होवें॥३॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**ऋजिप्य ईमिन्द्रावतो न भुज्युं श्येनो जभार बृहतो अधि ष्णोः।**

**अन्तः पतत् पतत्र्यस्य पर्णमध यामनि प्रसितस्य तद्वेः॥४॥**

**ऋजिप्यः। ईम्। इन्द्रऽवतः। न। भुज्युम्। श्येनः। जभार। बृहतः। अधि। स्नोः। अन्तरिति। पतत्। पतत्रि। अस्य। पर्णम्। अध। यामनि। प्रऽसितस्य। तत्। वेरिति वेः॥४॥**

**पदार्थः**-**(ऋजिप्यः)** य ऋजुगामिषु साधुः **(ईम्)** सर्वतः **(इन्द्रावतः)** ऐश्वर्य्ययुक्तान् **(न)** इव **(भुज्युम्)** भोक्तारम् **(श्येनः)** श्येन इव **(जभार)** धरति **(बृहतः)** महतः **(अधि)** **(स्नोः)** प्रकाशमानात् पुरुषार्थात् **(अन्तः)** मध्ये **(पतत्)** पतति **(पतत्रि)** पतनशीलम् **(अस्य)** **(पर्णम्)** पत्रम् **(अध)** **(यामनि)** मार्गे **(प्रसितस्य)** बद्धस्य **(तत्)** **(वेः)** पक्षिणः॥४॥

**अन्वयः**-य ऋजिप्यो मनुष्यः श्येन इव बृहतः स्नोरिन्द्रावतो न भुज्युमधि जभार। अस्य पर्णं यामनि प्रसितस्य वेर्यत् पतत्रि पर्णमन्तः पतत् तज्जभार सोऽधेमानन्दं प्राप्नुयात्॥४॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यथा श्येनः पक्षी स्वपुरुषार्थेन पुष्कलं भोगं प्राप्नोति सद्यो गच्छति तथैव पुरुषार्थिनो जनाः पुष्कलं सुखं प्राप्नुवन्ति॥४॥

**पदार्थः**-जो **(ऋजिप्यः)** सरल मार्ग चलनेवालों में श्रेष्ठ मनुष्य **(श्येनः)** वाज पक्षी के सदृश **(बृहतः)** बड़े **(स्नोः)** प्रकाशमान पुरुषार्थ से **(इन्द्रावतः)** ऐश्वर्य्य से युक्तों को **(न)** जैसे वैसे **(भुज्युम्)** भोग करने वाले को **(अधि, जभार)** अधिक धारण करता है **(अस्य)** इसका **(पर्णम्)** पत्र **(यामनि)** मार्ग में और **(प्रसितस्य)** बंधे हुए **(वेः)** पक्षी का जो **(पतत्रि)** गिरनेवाला पत्र **(अन्तः)** मध्य में **(पतत्)**



www.9009.co.in

गिरता है **(तत्)** उसको **(जभार)** धारण करता है वह **(अध)** इसके अनन्तर **(ईम्)** सब प्रकार से आनन्द को प्राप्त होवे॥४॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जैसे वाज पक्षी अपने पुरुषार्थ से बहुत भोग को प्राप्त होता और शीघ्र चलता है, वैसे ही पुरुषार्थ करने वाले जन बहुत सुख को प्राप्त होते हैं॥४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अध श्वेतं कलशं गोभिरक्तमापिप्यानं मघवा शुक्रमन्धः।**
**अध्वर्युभिः प्रयतं मध्वो अग्रमिन्द्रो मदाय प्रति धत्पिबध्यै**
**शूरो मदाय प्रति धत् पिबध्यै॥५॥१६॥**

**अध। श्वेतम्। कलशम्। गोभिः। अक्तम्। आऽपिप्यानम्। मघऽवा। शुक्रम्। अन्धः। अध्वर्युऽभिः। प्रऽयतम्। मध्वः। अग्रम्। इन्द्रः। मदाय। प्रति। धत्। पिबध्यै। शूरः। मदाय। प्रति। धत्। पिबध्यै॥५॥**

**पदार्थः-(अध) (श्वेतम्) (कलशम्)** कुम्भम् **(गोभिः)** धेनुभिः **(अक्तम्)** सम्बद्धम् **(आपिप्यानम्)** सर्वतो वर्धमानम् **(मघवा)** बहुपूजितधनः **(शुक्रम्)** उदकम्। **शुक्रमित्युदकनामसु पठितम्।** (निघं०१.१२) **(अन्धः)** अन्नम् **(अध्वर्युभिः)** आत्मनोऽध्वरमहिंसामिच्छुभिः **(प्रयतम्)** प्रयत्नसाध्यम् **(मध्वः)** मधुरादिगुणस्य **(अग्रम्) (इन्द्रः)** परमैश्वर्य्यवान् **(मदाय)** आनन्दाय **(प्रति) (धत्)** प्रतिदधाति **(पिबध्यै)** पातुम् **(शूरः)** निर्भयः **(मदाय) (प्रति) (धत्) (पिबध्यै)** पातुम्॥५॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यो मघवा गोभिरक्तमापिप्यानं श्वेतं कलशं शुक्रमन्धः पिबध्यै मदाय प्रतिधदध यः शूर इन्द्रो मदायाऽध्वर्य्युभिः सह मध्वोऽग्रं प्रयतं पिबध्यै प्रतिधत् सोऽक्षयं बलमाप्नोति॥५॥

**भावार्थः**-ये युक्ताहारविहारा अहिंस्राः शूरवीराः स्युस्ते सदा विजयमाप्नुयुरिति॥५॥

अत्र जीवगुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति सप्तविंशतितमं सूक्तं षोडशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो **(मघवा)** बहुत श्रेष्ठ धनयुक्त **(गोभिः)** गौओं से **(अक्तम्)** सम्बद्ध **(आपिप्यानम्)** बढ़े हुए **(श्वेतम्)** श्वेत वर्ण वाले **(कलशम्)** घड़े **(शुक्रम्)** जल और **(अन्धः)** अन्न को **(पिबध्यै)** पीने के लिये **(मदाय)** आनन्द के लिये **(प्रति, धत्)** धारण करता है **(अध)** और जो **(शूरः)** भय से रहित **(इन्द्रः)** अत्यन्त ऐश्वर्य्य वाला **(मदाय)** आनन्द के लिये **(अध्वर्य्युभिः)** अपने नहीं नाश होने की इच्छा करने वालों के साथ **(मध्वः)** मधुर आदि गुणों के **(अग्रम्)** प्रथम **(प्रयतम्)** प्रयत्न से सिद्ध करने योग्य आनन्द के लिये **(पिबध्यै)** पीने को **(प्रति, धत्)** धारण करता है, वह नहीं नष्ट होने वाले बल को प्राप्त होता है॥५॥



www.9009.co.in

**भावार्थ:**-जो नियमित आहार और विहार करने और नहीं हिंसा करने वाले शूरवीर होवें, वे सदा विजय को प्राप्त होवें॥५॥

इस सूक्त में जीव के गुणों के वर्णन होने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह सत्ताईसवां सूक्त और सोलहवां वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

अथ पञ्चर्चस्याष्टविंशतितमस्य सूक्तस्य वामदेव ऋषिः। इन्द्रासोमौ देवते। १ निचृत्त्रिष्टुप्। ३ विराट्त्रिष्टुप्। ४ त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः। २ भुरिक् पङ्क्तिः। ५ पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः॥

**अथेन्द्रपदवाच्यसूर्य्यदृष्टान्तेन राजप्रजागुणानाह॥**

अब पांच ऋचा वाले अट्ठाईसवें सूक्त का आरम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में इन्द्रपदवाच्य सूर्य्यदृष्टान्त से राजप्रजागुणों का उपदेश करते हैं॥

**त्वा युजा तव तत्सोम सख्य इन्द्रो अपो मनवे सस्रुतस्कः।**

**अहन्नहिमरिणात् सप्त सिन्धूनपावृणोदपिहितेव खानि॥ १॥**

त्वा। युजा। तव। तत्। सोम। सख्ये। इन्द्रः। अपः। मनवे। सऽस्रुतः। करिति कः। अहन्। अहिम्। अरिणात्। सप्त। सिन्धून्। अप। अवृणोत्। अपिहिताऽइव। खानि॥ १॥

**पदार्थः**-(**त्वा**) त्वाम् (**युजा**) युक्तेन (**तव**) (**तत्**) (**सोम**) ऐश्वर्य्यसम्पन्न (**सख्ये**) मित्रत्वाय (**इन्द्रः**) सूर्य्य इव राजा (**अपः**) जलानि (**मनवे**) मनुष्याय (**सस्रुतः**) गमनशीलान् (**कः**) करोति (**अहन्**) हन्ति (**अहिम्**) मेघम् (**अरिणात्**) प्रेरयति (**सप्त**) एतत्सङ्ख्याकान् (**सिन्धून्**) नदीः (**अप**) (**अवृणोत्**) आच्छादयति (**अपिहितेव**) आच्छादितानीव। (**खानि**) इन्द्रियाणि॥ १॥

**अन्वयः**-हे सोम! तव सख्ये यथेन्द्रो मनवे सस्रुतः कोऽहिमहन् सप्त सिन्धूनरिणात् खान्यपिहितेवापोऽपावृणोत् तथा तत्त्वा युजा पुरुषेण कर्म्म कर्त्तुं शक्यम्॥ १॥

**भावार्थः**-अत्रोपमावाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यथा सूर्य्यः सर्वेषां सुखाय वृष्टिं कृत्वा सर्वानानन्दयति तथैव विदुषां मित्रता सर्वानन्दप्रदाऽस्तीति वेद्यम्॥ १॥

**पदार्थः**-हे (**सोम**) ऐश्वर्य्य से युक्त (**तव**) आपकी (**सख्ये**) मित्रता के लिये जैसे (**इन्द्रः**) सूर्य्य के सदृश राजा (**मनवे**) मनुष्य के लिये (**सस्रुतः**) चलने वालों को (**कः**) करता (**अहिम्**) मेघ का (**अहन्**) नाश करता (**सप्त**) सात (**सिन्धून्**) नदियों को (**अरिणात्**) प्रेरित करता और (**खानि**) इन्द्रियाँ (**अपिहितेव**) घिरी हुईं सी (**अपः**) जलों को (**अप, अवृणोत्**) घेरती हैं, वैसे (**तत्**) वह (**त्वा**) आपको (**युजा**) युक्त पुरुष के साथ कर्म करने योग्य हो सकता है॥ १॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमावाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जैसे सूर्य्य सब के सुख के लिये वर्षा करके सब को आनन्द देता है, वैसे ही विद्वानों की मित्रता सब को आनन्द देने वाली है, यह जानना चाहिये॥ १॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**त्वा युजा नि खिदत् सूर्यस्येन्द्रश्चक्रं सहसा सद्य इन्दो।**



www.9009.co.in

**अधि ष्णुना बृहता वर्तमानं महो द्रुहो अप विश्वायु धायि॥ २॥**

**त्वा। युजा। नि। खिदत्। सूर्यस्य। इन्द्रः। चक्रम्। सहसा। सद्यः। इन्दो इति। अधि। स्नुना। बृहता। वर्तमानम्। महः। द्रुहः। अप। विश्वऽआयु। धायि॥ २॥**

**पदार्थः**-(**त्वा**) त्वाम् (**युजा**) युक्तेन (**नि**) (**खिदत्**) दैन्यम्प्राप्नोति (**सूर्य्यस्य**) (**इन्द्रः**) विद्युत् (**चक्रम्**) (**सहसा**) बलेन (**सद्यः**) शीघ्रम् (**इन्दो**) ऐश्वर्य्यवन् (**अधि**) उपरि (**स्नुना**) व्याप्तेन (**बृहता**) महता (**वर्त्तमानम्**) (**महः**) महत् (**द्रुहः**) द्वेष्टुः (**अप**) (**विश्वायु**) सर्वमायुः (**धायि**) ध्रियते॥ २॥

**अन्वयः**-हे इन्दो! त्वा युजा द्रुहोऽप धायि महो वर्त्तमानं विश्वायु अधिधायि बृहता स्नुना सहसा सद्यः सूर्य्यस्येन्द्र इव चक्रं यो नि खिदत् स इष्टं सुखमाप्नुयात्॥ २॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। ये विदुषा राज्ञा पालिता विद्याधर्म्मब्रह्मचर्य्यादियुक्ता-श्चिरञ्जीविनः स्युस्ते शत्रूणां विजेतारो भवन्ति॥ २॥

**पदार्थः**-हे (**इन्दो**) ऐश्वर्य्यवान्! (**त्वा**) आपको (**युजा**) युक्तजन से (**द्रुहः**) द्वेष करने वाले का सम्बन्ध (**अप, धायि**) नहीं धारण किया जाता और (**महः**) बड़ी (**वर्त्तमानम्**) वर्त्तमान (**विश्वायु**) सम्पूर्ण अवस्था (**अधि**) अधिक धारण की जाती है (**बृहता**) बड़े (**स्नुना**) व्याप्त (**सहसा**) बल से (**सद्यः**) शीघ्र (**सूर्य्यस्य**) सूर्य्य की (**इन्द्रः**) बिजुली के सदृश (**चक्रम्**) चक्र की जो (**नि, खिदत्**) दीनता को प्राप्त होता है, वह अपेक्षित सुख को प्राप्त होवे॥ २॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो विद्वान् राजा से पालित विद्या धर्म्म और ब्रह्मचर्य्य आदि से युक्त अतिकाल पर्य्यन्त जीवने वाले होवें, वे शत्रुओं के जीतने वाले होते हैं॥ २॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अहन्निन्द्रो अदहदग्निरिन्दो पुरा दस्यून् मध्यंदिनादभीके।**

**दुर्गे दुरोणे क्रत्वा न यातां पुरू सहस्रा शर्वा नि बर्हीत्॥ ३॥**

**अहन्। इन्द्रः। अदहत्। अग्निः। इन्दो इति। पुरा। दस्यून्। मध्यंदिनात्। अभीके। दुःऽगे। दुरोणे। क्रत्वा। न। याताम्। पुरु। सहस्रा। शर्वा। नि। बर्हीत्॥ ३॥**

**पदार्थः**-(**अहन्**) हन्ति (**इन्द्रः**) सूर्य्य इव राजा (**अदहत्**) दहति भस्मीकरोति (**अग्निः**) पावक इव (**इन्दो**) परमैश्वर्य्ययुक्त प्रजाजन (**पुरा**) प्रथमतः (**दस्यून्**) महासाहसिकान् (**मध्यन्दिनात्**) मध्यन्दिने वर्त्तमानात् तापात् (**अभीके**) समीपे (**दुर्गे**) प्रकोटे (**दुरोणे**) गृहे (**क्रत्वा**) प्रज्ञया कर्मणा वा (**न**) इव (**याताम्**) गच्छताम् (**पुरू**) बहूनि (**सहस्रा**) सहस्राणि (**शर्वा**) सर्वाणि हिंसनानि (**नि**) (**बर्हीत्**)॥ ३॥

**अन्वयः**-हे इन्दो! ये इन्द्र इव मध्यन्दिनाद् दस्यूनहन्नग्निरिवाभीके दुष्टानदहत् पुरा दुर्गे दुरोणे क्रत्वा न पुरू शर्वा सहस्रा नि बर्हीत् स त्वं चैवं सुखं याताम्॥ ३॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-अत्रोपमावाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यथा मध्याह्ने सूर्य्यस्सर्वान् प्रतापयति तथैव न्यायशीलो राजा दुष्टाञ्चोरादीन् दुःखयति, अग्निवद्भस्मीभूतान् कृत्वा सर्वा हिंसा निवारयेत्॥३॥

**पदार्थः**-हे **(इन्दो)** अत्यन्त ऐश्वर्य्य से युक्त प्रजाजन जो **(इन्द्रः)** सूर्य्य के सदृश राजा **(मध्यन्दिनात्)** मध्य दिन में वर्त्तमान ताप से **(दस्यून्)** बड़े साहस करने वालों को **(अहन्)** नाश करता है **(अग्निः)** अग्नि के सदृश **(अभीके)** समीप में दुष्टों को **(अदहत्)** जलाता है और **(पुरा)** पहिले से **(दुर्गे)** राजगढ़ **(दुरोणे)** गृह में **(क्रत्वा)** बुद्धि वा कर्म्म के **(न)** सदृश **(पुरू)** बहुत **(शर्वा)** सम्पूर्ण हिंसनों और **(सहस्रा)** हजारों को **(नि, बर्हीत्)** नाश करे वह और आप इस प्रकार से सुख को **(याताम्)** प्राप्त होओ॥३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमावाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे मध्याह्न में सूर्य्य सब को तपाता है, वैसे ही न्यायकारी राजा दुष्ट चोरादिकों को दुःख देता है और अग्नि के सदृश भस्मीभूत करके सम्पूर्ण हिंसा दूर करे॥३॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**विश्व॑स्मात् सीमध॒माँ इन्द्र॒ दस्यू॒न् विशो॒ दासी॑रकृणोरप्रश॒स्ताः।**

**अबा॑धेथा॒मममृ॑णतं॒ नि शत्रू॒नवि॑न्देथा॒मप॑चितिं॒ वध॑त्रैः॥४॥**

**विश्व॑स्मात्। सी॒म्। अ॒ध॒मान्। इ॒न्द्र॒। दस्यू॑न्। विशः॑। दासीः॑। अ॒कृ॒णोः॒। अ॒प्र॒ऽश॒स्ताः। अबा॑धेथाम्। अमृ॑णतम्। नि। शत्रू॑न्। अवि॑न्देथाम्। अप॑ऽचितिम्। वध॑त्रैः॥४॥**

**पदार्थः**-**(विश्वस्मात्)** सर्वस्मात् **(सीम्)** आदित्य इव **(अधमान्)** पापाचारान् **(इन्द्र)** दुष्टविदारक **(दस्यून्)** **(विशः)** प्रजाः **(दासीः)** दानशीलाः **(अकृणोः)** कुर्य्याः **(अप्रशस्ताः)** प्रशस्तसुखरहिताः **(अबाधेथाम्)** बाधेथाम् **(अमृणतम्)** सुखयतम् **(नि)** नितराम् **(शत्रून्)** **(अविन्देथाम्)** प्राप्नुतम् **(अपचितिम्)** सत्कारम् **(वधत्रैः)** वधैः॥४॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! त्वं सीमिव दासीर्विशोऽप्रशस्ताः कुर्वतोऽधमान् दस्यून् विश्वस्मात् पीडितानकृणोः। हे राजप्रजाजनौ! मिलित्वा युवां वधत्रैः शत्रूनबाधेथां प्रजा अमृणतमपचितिं न्यविन्देथाम्॥४॥

**भावार्थः**-हे राजादयो राजजना! ये साहसिका ये च कूपदेशेन प्रजादूषका नीचा जनाः स्युस्तान् सततं बाधन्ताम् श्रेष्ठान्त्सत्कुर्वन्तु एवङ्कृते युष्माकं महान् सत्कारो भविष्यतीति वेद्यम्॥४॥

**पदार्थः**-हे **(इन्द्र)** दुष्टों के नाश करने वाले आप **(सीम्)** सूर्य्य के सदृश **(दासीः)** देने वाली **(विशः)** प्रजाओं को **(अप्रशस्ताः)** श्रेष्ठ सुख से रहित करते हुए **(अधमान्)** पाप के आचरण करने वाले **(दस्यून्)** दुष्टों को **(विश्वस्मात्)** सब से पीड़ायुक्त **(अकृणोः)** करें। हे राजा और प्रजाजनो मिलकर आप



www.9009.co.in

दोनों **(वधत्रैः)** वधों से **(शत्रून्)** शत्रुओं को **(अबाधेथाम्)** बाधा देओ और प्रजा को **(अमृणतम्)** सुख देओ **(अपचितिम्)** सत्कार को **(नि)** अत्यन्त **(अविन्देथाम्)** प्राप्त होओ॥४॥

**भावार्थः**-हे राजा आदि राजजनो! जो साहस कर्म्म करने और जो दुष्ट उपदेश से प्रजा को दोषयुक्त करनेवाले नीच जन होवें, उनको निरन्तर बाधा देओ और श्रेष्ठों का सत्कार करो। ऐसा करने पर आप लोगों का बड़ा सत्कार होगा, यह जानना चाहिये॥४॥

**पुना राजप्रजागुणानाह॥**

फिर राजप्रजा के गुणों को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**एवा सत्यं मघवाना युवं तदिन्द्रश्च सोमोर्वमश्व्यं गोः।**

**आदर्दृतमपिहितान्यश्ना रिरिचथुः क्षाश्चित्ततृदाना॥५॥१७॥**

**एव। सत्यम्। मघऽवाना। युवम्। तत्। इन्द्रः। च। सोम। ऊर्वम्। अश्व्यम्। गोः। आ। अदर्दृतम्। अपिऽहितानि। अश्ना। रिरिचथुः। क्षाः। चित्। ततृदाना॥५॥**

**पदार्थः**-**(एवा)** अत्र **निपातस्य चे**ति दीर्घः। **(सत्यम्)** **(मघवाना)** बहुधनयुक्तौ राजप्रजाजनौ **(युवम्)** **(तत्)** **(इन्द्रः)** राजा **(च)** **(सोम)** सोम्यगुणसम्पन्नौ **(ऊर्वम्)** आच्छादकम् **(अश्व्यम्)** अश्वेषु भवम् **(गोः)** पृथिव्याः **(आ)** **(अदर्दृतम्)** भृशं विदारयतम् **(अपिहितानि)** आच्छादितानि **(अश्ना)** भोक्तव्यानि **(रिरिचथुः)** रेचताम् **(क्षाः)** पृथिवीः **(चित्)** **(ततृदाना)** दुःखस्य हिंसकौ॥५॥

**अन्वयः**-हे सोम! मघवाना युवं यत्सत्यं गोरूर्वमश्व्यं प्राप्य शत्रूनादर्दृतं तदिन्द्रः सङ्गृह्य शत्रून् हिंस्याद् यान्यपिहितान्यश्ना रिरिचथुः क्षाश्च चिद्रिरिचथुस्ताः प्राप्य दुष्टानां ततृदाना स्यातामेवमेवेन्द्रः स्यात्॥५॥

**भावार्थः**-यदि राजाऽमात्यसेनाप्रजाजनाः परस्परस्मिन् प्रीतिं विधाय राज्यशासनं कुर्य्युस्तर्ह्येषां कोऽपि शत्रुर्नोपतिष्ठेतेति॥५॥

अत्रेन्द्रराजप्रजागुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इत्यष्टाविंशतितमं सूक्तं सप्तदशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे **(सोम)** उत्तम गुणों से युक्त **(मघवाना)** बहुत धनों से युक्त राजा और प्रजाजनो **(युवम्)** आप दोनों जो **(सत्यम्)** सत्य **(गोः)** पृथिवी का **(ऊर्वम्)** ढांपने वाला **(अश्व्यम्)** घोड़ों में उत्पन्न हुए को प्राप्त होकर शत्रुओं को **(आ, अदर्दृतम्)** निरन्तर नाश करो **(तत्)** उसको **(इन्द्रः)** राजा ग्रहण करके शत्रुओं का नाश करे और जिन **(अपिहितानि)** घिरे हुए **(अश्ना)** भोग करने योग्य पदार्थों को **(रिरिचथुः)** छोड़ो **(क्षाः, च)** पृथिवियों को **(चित्)** भी छोड़ो, उनको प्राप्त होकर दुष्ट संबन्धी **(ततृदाना)** दुःख के नाश करने वाले होवें, इस प्रकार से **(एव)** ऐसे ही राजा भी होवे॥५॥

**भावार्थः**-जो राजा, मन्त्री, सेना और प्रजाजन परस्पर में स्नेह करके राज्य शिक्षा करें तो इनका कोई भी शत्रु नहीं उपस्थित हो॥५॥



www.9009.co.in

इस सूक्त में राजा और प्रजादि के गुणवर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह अट्ठाईसवां सूक्त और सत्रहवां वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

**अथ पञ्चर्चस्यैकोनत्रिंशत्तमस्य सूक्तस्य वामदेव ऋषिः। इन्द्रो देवता। १ विराट् त्रिष्टुप्। ३ निचृत्त्रिष्टुप्। [२], ४ त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः। ५ स्वराट् पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः॥**

**अथ राजविषयमाह॥**

अब पांच ऋचावाले उनतीसवें सूक्त का प्रारम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में राजविषय को कहते हैं॥

**आ नः स्तुत उप वाजेभिरूती इन्द्र याहि हरिभिर्मन्दसानः।**

**तिरश्चिदर्यः सवना पुरूण्याङ्गूषेभिर्गृणानः सत्यराधाः॥१॥**

**आ। नः। स्तुतः। उप। वाजेभिः। ऊती। इन्द्र। याहि। हरिऽभिः। मन्दसानः। तिरः। चित्। अर्यः। सवना। पुरूणि। आङ्गूषेभिः। गृणानः। सत्यऽराधाः॥१॥**

**पदार्थः**-(**आ**) (**नः**) अस्मान् (**स्तुतः**) प्रशंसितः (**उप**) (**वाजेभिः**) अन्नसेनादिभिः सह (**ऊती**) ऊत्यै रक्षणाद्याय (**इन्द्र**) राजन् (**याहि**) प्राप्नुहि (**हरिभिः**) उत्तमैर्वीरपुरुषैः (**मन्दसानः**) आनन्दन् (**तिरः**) तिर्यक् (**चित्**) अपि (**अर्य्यः**) स्वामीश्वरः (**सवना**) ऐश्वर्याणि (**पुरूणि**) बहूनि (**आङ्गूषेभिः**) स्तावकैः (**गृणानः**) स्तूयमानः (**सत्यराधाः**) सत्येन राधो धनं यस्य सः॥१॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! स्तुतो मन्दसान आङ्गूषेभिर्गृणानः सत्यराधा अर्य्यस्त्वं पुरूणि सवना प्राप्तः तिरश्चित्सन्नूती वाजेभिर्हरिभिश्च सह न उपायाहि॥१॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! योऽत्र प्रशंसितगुणकर्मस्वभाव आपत्कालनिवारकः प्रजारक्षणतत्परः सुसहायोत्तमसेनो न्यायकारी धर्म्योपार्जितधनो निरभिमानो भवेत्तमेव राजानं मन्यध्वम्॥१॥

**पदार्थः**-हे (**इन्द्र**) राजन् (**स्तुतः**) प्रशंसित (**मन्दसानः**) आनन्द करते और (**आङ्गूषेभिः**) स्तुति करने वालों से (**गृणानः**) स्तुति को प्राप्त होते हुए (**सत्यराधाः**) सत्य से धनयुक्त (**अर्य्यः**) स्वामी आप (**पुरूणि**) बहुत (**सवना**) ऐश्वर्य्यों को प्राप्त (**तिरः**) तिरछे (**चित्**) भी होते हुए (**ऊती**) रक्षण आदि के लिये (**वाजेभिः**) अन्न, सेना आदि के और (**हरिभिः**) उत्तम वीर पुरुषों के साथ (**नः**) हम लोगों को (**उप, आ, याहि**) प्राप्त हूजिये॥१॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो यहाँ प्रशंसित गुण, कर्म्म और स्वभावयुक्त, आपत्काल का निवारण करने वाला, प्रजा के रक्षण में तत्पर, श्रेष्ठ सहायवाली उत्तम सेना से युक्त, न्यायकारी, धर्म्म से इकट्ठे किये हुए धनवाला और अभिमान से रहित होवे, उसी को राजा मानो॥१॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**आ हि ष्मा याति नर्यश्चिकित्वान् हूयमानः सोतृभिरुप यज्ञम्।**



www.9009.co.in

**स्वश्वो यो अभीरुर्मन्यमानः सुष्वाणेभिर्मदति सं ह वीरैः॥२॥**

**आ। हि। स्म। याति। नर्यः। चिकित्वान्। हूयमानः। सोतृऽभिः। उप। यज्ञम्। सुऽअश्वः। यः। अभीरुः। मन्यमानः। सुस्वानेभिः। मदति। सम्। ह। वीरैः॥२॥**

**पदार्थः**-(**आ**) (**हि**) यतः (**स्मा**) एव। अत्र **निपातस्य चे**ति दीर्घः। (**याति**) आगच्छति (**नर्य्यः**) नृषु साधुः (**चिकित्वान्**) ज्ञानवान् (**हूयमानः**) स्तूयमानः (**सोतृभिः**) अभिषवकर्तृभिः (**उप**) (**यज्ञम्**) राजप्रजाव्यवहारम् (**स्वश्वः**) शोभना अश्वा यस्य सः (**यः**) (**अभीरुः**) भयरहितः (**मन्यमानः**) सत्याभिमानी (**सुष्वाणेभिः**) सुष्ठु शब्दायमानैः (**मदति**) आनन्दति (**सम्**) (**ह**) खलु (**वीरैः**) शौर्य्यादिगुणोपेतैर्जनैः सह॥२॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! योऽभीरुर्मन्यमानः स्वश्वश्चिकित्वान् हूयमानो नर्य्यो हि सोतृभिः सह यज्ञमुपायाति ष्मा स सुष्वाणेभिर्वीरैस्सह सम्मदति ह॥२॥

**भावार्थः**-यथा चतुर्वेदविच्छ्रोत्रियैस्सह यज्ञमुपागत्य स्तूयते तथैव शुभलक्षणैरमात्यभृत्यैस्सह राजा स्तूयते॥२॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! (**यः**) जो (**अभीरुः**) भयरहित (**मन्यमानः**) सत्य का अभिमान रखने वाला (**स्वश्वः**) श्रेष्ठ घोड़ों से युक्त (**चिकित्वान्**) ज्ञानवान् (**हूयमानः**) स्तुति किया गया (**नर्य्यः**) मनुष्यों में श्रेष्ठ (**हि**) जिससे (**सोतृभिः**) सत्य आचरण करने वालों के साथ (**यज्ञम्**) राजा और प्रजा के व्यवहार को (**उप, आ, याति, स्म**) समीप आता ही है, वह (**सुष्वाणेभिः**) उत्तम प्रकार शब्द करते हुए (**वीरैः**) शूरता आदि गुणों से युक्त पुरुषों के साथ (**सम्, मदति, ह**) आनन्द करता ही है॥२॥

**भावार्थः**-जैसे चार वेदों का जानने वाला वेद विद्यानिपुण विद्वानों के साथ यज्ञ को प्राप्त होकर स्तुति किया जाता है, वैसे ही श्रेष्ठ लक्षणों से युक्त मन्त्री और भृत्यों के साथ राजा स्तुति किया जाता है॥२॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**श्रावयेदस्य कर्णा वाजयध्यै जुष्टामनु प्र दिशं मन्दयध्यै।**

**उद्वावृषाणो राधसे तुविष्मान् करन्न इन्द्रः सुतीर्थाभयं च॥३॥**

**श्रवय। इत्। अस्य। कर्णा। वाजयध्यै। जुष्टाम्। अनु। प्र। दिशम्। मन्दयध्यै। उत्ऽववृषाणः। राधसे। तुविष्मान्। करत्। नः। इन्द्रः। सुऽतीर्था। अभयम्। च॥३॥**

**पदार्थः**-(**श्रावय**) (**इत्**) एव (**अस्य**) (**कर्णा**) श्रोत्रौ (**वाजयध्यै**) विज्ञापयितुम् (**जुष्टाम्**) सद्भी राजभिस्सेवितां नीतिम् (**अनु**) (**प्र**) (**दिशम्**) (**मन्दयध्यै**) आनन्दयितुम् (**उद्वावृषाणः**) उत्कृष्टतया बलिष्ठः सन् (**राधसे**) धनाय (**तुविष्मान्**) प्रशंसितबलः (**करत्**) कुर्यात् (**नः**) अस्माकम् (**इन्द्रः**) सत्यन्यायधर्त्ता



www.9009.co.in

**(सुतीर्था)** शोभनानि तीर्थानि दु:खतारकाण्याचार्यब्रह्मचर्यसत्यभाषणादीनि येषान्तान् **(अभयम्)** भयरहितम् **(च)**॥३॥

**अन्वय:**-हे सत्योपदेशकाचार्योपदेशक! त्वमस्य कर्णा वाजयध्यै जुष्टामनु श्रावय येनाऽयं दिशं मन्दयध्यै उद्वावृषाणस्तुविष्मानिन्द्रो राधसे न: सुतीर्थाभयञ्चेदेव प्र करत्॥३॥

**भावार्थ:**-यस्य राज्ञ: सत्यन्यायोपदेशका धार्मिका विद्वांस: स्युस्स विद्याविनयादिशुभैर्गुणै: सहित: सन् सर्वानभयान् कृत्वा सततं प्रसादयितुं शक्नुयात्॥३॥

**पदार्थ:**-हे सत्य के उपदेशक करने वाले आचार्य्य और उपदेशक! आप **(अस्य)** इसके **(कर्णा)** कानों को **(वाजयध्यै)** जनाने के लिये **(जुष्टाम्)** श्रेष्ठ राजाओं से सेवन की गई नीति को **(अनु, श्रावय)** अनुकूल सुनाइये जिससे यह **(दिशम्)** दिशा को **(मन्दयध्यै)** प्रसन्न करने को **(उद्वावृषाण:)** अति बलिष्ठ **(तुविष्मान्)** प्रशंसित बलयुक्त **(इन्द्र:)** सत्य-न्याय को धारण करने वाला **(राधसे)** धन के लिये **(न:)** हमारे **(सुतीर्था)** सुन्दर दु:खों को दूर करने वाले आचार्य्य, ब्रह्मचर्य्य और सत्यभाषण आदि जिनमें उनको **(च)** और **(अभयम्)** भय रहित को **(इत्)** ही **(प्र, करत्)** करे॥३॥

**भावार्थ:**-जिस राजा के सत्य और न्याय के उपदेश करने वाले धार्मिक विद्वान् होवें, वह राजा विद्या और विनय आदि उत्तम गुणों के सहित होता हुआ सब को भयरहित करके निरन्तर प्रसन्न कर सके॥३॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अच्छा॒ यो गन्ता॒ नाध॑मानमू॒ती इ॒त्था विप्रं॒ हव॑मानं गृ॒णन्त॑म्।**

**उप॒ त्मनि॒ दधा॑नो धु॒र्या॒३॒॑शून्त्स॒हस्रा॑णि श॒तानि॒ वज्र॑बाहुः॥४॥**

**अच्छ॑। यः। गन्ता॑। नाध॑मानम्। ऊ॒ती। इ॒त्था। विप्र॑म्। हव॑मानम्। गृ॒णन्त॑म्। उप॑। त्मनि॑। दधा॑नः। धु॒रि। आ॒शून्। स॒हस्रा॑णि। श॒तानि॑। वज्र॑ऽबाहुः॥४॥**

**पदार्थ:**-**(अच्छ)** सम्यक्। अत्र **संहितायामि**ति दीर्घ:। **(य:) (गन्ता) (नाधमानम्)** ऐश्वर्य्यवन्तं प्रशंसितम् **(ऊती)** रक्षणाद्याय **(इत्था)** अनेन प्रकारेण **(विप्रम्)** मेधाविनम् **(हवमानम्)** स्पर्धमानम् **(गृणन्तम्)** स्तुवन्तम् **(उप) (त्मनि)** आत्मनि **(दधान:) (धुरि)** रथस्य युग्मे **(आशून्)** आशुगामिनोऽश्वात् **(सहस्राणि) (शतानि)** बहून् **(वज्रबाहु:)** शस्त्रहस्त:॥४॥

**अन्वय:**-हे मनुष्या! यो गन्तोती इत्था नाधमानं हवमानं गृणन्तं विप्रं त्मन्युप दधान: सहस्राणि शतान्याशून् धुरि दधानोऽच्छ गन्ता वज्रबाहू राजा भवेत् सोऽस्मानभयङ्कर्त्तुमर्हेत्॥४॥

**भावार्थ:**-यो नृप: श्रेष्ठान् मनुष्यान् सङ्गृह्णीत स एव राज्यं वर्द्धयितुमर्हेत्॥४॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(यः)** जो **(गन्ता)** चलने वाला **(ऊती)** रक्षण आदि के लिये **(इत्था)** इस प्रकार से **(नाधमानम्)** ऐश्वर्य्यवान् प्रशंसित **(हवमानम्)** ईर्ष्या करने वाले **(गृणन्तम्)** स्तुति करते हुए **(विप्रम्)** बुद्धिमान् को **(त्मनि)** आत्मा में **(उप, दधानः)** धारण करता हुआ **(सहस्राणि)** सहस्रों और **(शतानि)** सैकड़ों **(आशून्)** शीघ्र चलने वाले घोड़ों को **(धुरि)** रथ के जुए में धारण करता हुआ **(अच्छ)** उत्तम प्रकार चलने वाला **(वज्रबाहुः)** शस्त्र हाथों में लिये राजा होवे, वह हम लोगों को भयरहित करने योग्य हो॥४॥

**भावार्थः**-जो राजा श्रेष्ठ मनुष्यों को ग्रहण करे, वही राज्य बढ़ाने को योग्य होवे॥४॥

**अथ प्रजागुणानाह॥**

अब प्रजागुणों को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**त्वोतासो मघवन्निन्द्र विप्रा वयं ते स्याम सूरयो गृणन्तः।**

**भेजानासो बृहद्दिवस्य राय आकाय्यस्य दावने पुरुक्षोः॥५॥१८॥**

**त्वाऽऊतासः। मघऽवन्। इन्द्र। विप्राः। वयम्। ते। स्याम। सूरयः। गृणन्तः। भेजानासः। बृहत्ऽदिवस्य। रायः। आऽकाय्यस्य। दावने। पुरुऽक्षोः॥५॥**

**पदार्थः**-**(त्वोतासः)** त्वया रक्षिता वर्धिताः **(मघवन्)** उत्तमधन **(इन्द्र)** शुभगुणधारक राजन् **(विप्राः)** मेधाविनः **(वयम्)** **(ते)** तव **(स्याम)** **(सूरयः)** प्रकाशितविद्याः **(गृणन्तः)** स्तुवन्तः **(भेजानासः)** भजमानाः। अत्र वर्णव्यत्ययेनास्यैत्वम्। **(बृहद्दिवस्य)** प्रकाशमानस्य **(रायः)** धनस्य **(आकाय्यस्य)** समन्तात् काये भवस्य **(दावने)** दात्रे **(पुरुक्षोः)** बह्वन्नादियुक्तस्य॥५॥

**अन्वयः**-हे मघवन्निन्द्र! त्वोतासो भेजानासो गृणन्तो विप्राः सूरयो वयं बृहद्दिवस्याकाय्यस्य पुरुक्षोः ते रायो दावने स्थिराः स्याम॥५॥

**भावार्थः**-हे राजन्! यदि भवानस्मान् सर्वतो रक्षेत्तर्हि वयमत्युन्नता भवेम॥५॥

अत्र राजप्रजागुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इत्येकोनत्रिंशत्तमं सूक्तमष्टादशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे **(मघवन्)** श्रेष्ठ धनयुक्त **(इन्द्र)** उत्तम गुणों के धारण करनेवाले राजन्! **(त्वोतासः)** आप से रक्षा और वृद्धि को प्राप्त **(भेजानासः)** सेवन और **(गृणन्तः)** स्तुति करते हुए **(विप्राः)** बुद्धिमान् **(सूरयः)** प्रकाशित विद्या वाले **(वयम्)** हम लोग **(बृहद्दिवस्य)** प्रकाशमान **(आकाय्यस्य)** सब प्रकार शरीर में उत्पन्न **(पुरुक्षोः)** बहुत अन्नादि से युक्त **(ते)** आपके **(रायः)** धन के और **(दावने)** देने वाले के लिये स्थिर **(स्याम)** होवें॥५॥

**भावार्थः**-हे राजन्! जो आप हम लोगों की सब प्रकार से रक्षा करें तो हम लोग अति उन्नतियुक्त होवें॥५॥



www.9009.co.in

इस सूक्त में राजा और प्रजा के गुणों का वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह उनत्तीसवां सूक्त और अठारहवां वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

**अथ चतुर्विंशत्यृचस्य त्रिंशत्तमस्य सूक्तस्य वामदेव ऋषिः। १-८, १२-२४ इन्द्रः। ९-११ इन्द्र उषाश्च देवते। १, ३, ५, ९, ११, १२, १६, १८, १९, २३ निचृद् गायत्री। २, १०, ७, १३-१५, १७, २१, २२ गायत्री। ४, ६ विराट् गायत्री। २० पिपीलिकामध्या गायत्री छन्दः। षड्जः स्वरः। ८, २४ विराडनुष्टुप् छन्दः। ऋषभः स्वरः॥**

**अथ सूर्य्यदृष्टान्तेन राजविषयमाह॥**

अब चौबीस ऋचा वाले तीसवें सूक्त का आरम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में सूर्यदृष्टान्त से राजविषय को कहते हैं॥

**नकिरिन्द्र त्वदुत्तरो न ज्यायाँ अस्ति वृत्रहन्। नकिरेवा यथा त्वम्॥१॥**

**नकिः। इन्द्र। त्वत्। उत्ऽतरः। न। ज्यायान्। अस्ति। वृत्रऽहन्। नकिः। एव। यथा। त्वम्॥१॥**

**पदार्थः**-(**नकिः**) निषेधे (**इन्द्र**) राजन् (**त्वत्**) (**उत्तरः**) पश्चात् (**न**) निषेधे (**ज्यायान्**) ज्येष्ठः (**अस्ति**) (**वृत्रहन्**) यो वृत्रं हन्ति स सूर्य्यस्तद्वद्वर्त्तमान (**नकिः**) (**एव**) अत्र **निपातस्य चे**ति दीर्घः। (**यथा**) (**त्वम्**)॥१॥

**अन्वयः**-हे वृत्रहन्निन्द्र! यथा त्वमसि तथैव त्वदुत्तरो नकिरस्ति न ज्यायानस्ति नकिरुत्तमश्चैव॥१॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यः सर्वेभ्यः श्रेष्ठो भवेत्तमेव राजानं कुरुत॥१॥

**पदार्थः**-हे (**वृत्रहन्**) मेघ को नाश करने वाले सूर्य के सदृश वर्त्तमान (**इन्द्र**) राजन्! (**यथा**) जैसे (**त्वम्**) आप हो, वैसे ही (**त्वत्**) आप से (**उत्तरः**) पीछे (**नकिः**) नहीं (**अस्ति**) है (**न**) नहीं (**ज्यायान्**) बड़ा है और (**नकिः, एव**) न उत्तम ही है॥१॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो सबसे श्रेष्ठ होवे, उसी का राजा करो॥१॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**सत्रा ते अनु कृष्टयो विश्वा चक्रेव वावृतुः। सत्रा महाँ असि श्रुतः॥२॥**

**सत्रा। ते। अनु। कृष्टयः। विश्वा। चक्राऽइव। ववृतुः। सत्रा। महान्। असि। श्रुतः॥२॥**

**पदार्थः**-(**सत्रा**) सत्याचारस्य (**ते**) तव (**अनु**) (**कृष्टयः**) मनुष्याः (**विश्वा**) सर्वाणि (**चक्रेव**) चक्राणीव (**वावृतुः**) वर्त्तेरन्। अत्र **तुजादीनामित्यभ्यासदैर्घ्यम्**। (**सत्रा**) सत्याचरणेन (**महान्**) (**असि**) (**श्रुतः**) सकलशास्त्रश्रवणेन कीर्तिमान्॥२॥

**अन्वयः**-हे राजन्! यदि त्वं सत्रा महाञ्छ्रुतोऽसि तर्हि ते सत्रा कृष्टयो विश्वा चक्रेवानु वावृतुः॥२॥

**भावार्थः**-हे राजन्! भवान् न्यायकारी भवेत्तर्हि सर्वाः प्रजास्त्वामानुवर्त्तेरन्॥२॥

**पदार्थः**-हे राजन्! जो आप (**सत्रा**) सत्य आचरण के (**महान्**) बड़े (**श्रुतः**) सम्पूर्ण शास्त्र के श्रवण से यशयुक्त (**असि**) हो तो (**ते**) आपके सम्बन्ध में (**सत्रा**) सत्य आचरण से (**कृष्टयः**) मनुष्य



www.9009.co.in

**(विश्वा)** सम्पूर्ण **(चक्रेव)** चक्रों के सदृश अर्थात् जैसे गाड़ी में पहिया वैसे **(अनु, वावृतुः)** वर्त्ताव करें॥२॥

**भावार्थः**-हे राजन्! आप न्यायकारी होवें तो सम्पूर्ण प्रजा आपके अनुकूल वर्ताव करें॥२॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**विश्वे॑ च॒नेद॒ना त्वा॑ दे॒वास॑ इन्द्र युयु॒धुः। यदहा॒ नक्त॒माति॑रः॥३॥**

**विश्वे॑। च॒न। इत्। अ॒ना। त्वा॒। दे॒वासः॑। इ॒न्द्र॒। यु॒यु॒धुः। यत्। अहा॑। नक्त॑म्। आ। अति॑रः॥३॥**

**पदार्थः**-**(विश्वे)** **(सर्वे)** **(चन)** अपि **(इत्)** **(अना)** प्रणात्मकानि **(त्वा)** त्वाम् **(देवासः)** विद्वांसः **(इन्द्र)** शत्रूणां विदारक **(युयुधुः)** युध्यन्ते **(यत्)** ये **(अहा)** दिनानि **(नक्तम्)** रात्रिम् **(आ, अतिरः)** हन्याः॥३॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! यद्ये विश्व इद् देवासोऽनाऽहा नक्तं त्वाश्रित्य शत्रुभिः सह युयुधुस्तैश्चन त्वं शत्रूनातिरः॥३॥

**भावार्थः**-राज्ञा भृत्याः सुशिक्षिताः श्रेष्ठ रक्षणीया येनाहर्निशं शत्रवो निलीना निवसेयुः॥३॥

**पदार्थः**-हे **(इन्द्र)** शत्रुओं के विदीर्ण करने वाले **(यत्)** जो **(विश्वे इत्)** सभी **(देवासः)** विद्वान् जन **(अना)** प्रतिज्ञास्वरूप **(अहा)** दिनों और **(नक्तम्)** रात्रि को **(त्वा)** आपका आश्रय लेकर शत्रुओं के साथ **(युयुधुः)** युद्ध करते हैं, उनके **(चन)** भी साथ आप शत्रुओं का **(आ, अतिरः)** नाश करिये॥३॥

**भावार्थः**-राजा को चाहिये कि भृत्यजन उत्तम शिक्षित और श्रेष्ठ रक्खें, जिससे दिन-रात्रि शत्रु लोग छिपे हुए रहें॥३॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**यत्रो॒त बा॑धि॒तेभ्य॑श्च॒क्रं कुत्सा॑य॒ युध्य॑ते। मु॒षा॒य इ॑न्द्र॒ सूर्य॑म्॥४॥**

**यत्र॑। उ॒त। बा॒धि॒तेभ्यः॑। च॒क्रम्। कुत्सा॑य। युध्य॑ते। मु॒षा॒यः। इ॒न्द्र॒। सूर्य॑म्॥४॥**

**पदार्थः**-**(यत्र)** यस्मिन् राज्ये **(उत)** अपि **(बाधितेभ्यः)** पीडितेभ्यः **(चक्रम्)** चक्रवद्वर्त्तमानं राज्यम् **(कुत्साय)** शस्त्रास्त्रयुक्ताय **(युध्यते)** युद्धङ्कुर्वते **(मुषायः)** यो मुष इवाऽऽचरति **(इन्द्र)** **(सूर्य्यम्)** सूर्य्यमिव वर्त्तमानं न्यायम्॥४॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! यत्र मुषायो बाधितेभ्यः कुत्साय युध्यते जनाय सूर्य्यमिव चक्रं वर्त्तयति तत्रोतापि सुखं न वर्द्धते॥४॥

**भावार्थः**-यो राजा प्रजापीडां न निवारयेत् सूर्यवद् सद्गुणैः प्रकाशमानो न स्यात् प्रजाभ्यः करञ्च गृह्णीयात् स च न स्यात्॥४॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-हे **(इन्द्र)** सूर्य्य के सदृश वर्त्तमान न्यायकारिन्! **(यत्र)** जिस राज्य में **(मुषायः)** चोरी करने वाले के सदृश आचरण करने वाले **(बाधितेभ्यः)** पीड़ायुक्त जनों से **(कुत्साय)** शस्त्र और अस्त्र से युक्तजन और **(युध्यते)** युद्ध करते हुए जन के लिये **(सूर्यम्)** सूर्य के सदृश वर्त्तमान न्यायरूपी **(चक्रम्)** चक्र को वर्त्ताता है, वहाँ **(उत)** भी सुख नहीं बढ़ता है॥४॥

**भावार्थः**-जो राजा प्रजा की पीड़ा को नहीं निवारण करे और सूर्य के सदृश श्रेष्ठ गुणों से प्रकाशमान न हो और प्रजाओं से कर ग्रहण करे, वह राजा नहीं होवे॥४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**यत्र॑ दे॒वाँ ऋ॑घाय॒तो विश्वाँ॒ अयु॑ध्य॒ एक॒ इत्। त्वमि॑न्द्र व॒नूँर॒हन्॥५॥१९॥**

**यत्र॑। दे॒वान्। ऋ॒घा॒य॒तः। विश्वा॑न्। अयु॑ध्यः। एकः॑। इत्। त्वम्। इ॒न्द्र॒। व॒नून्। अह॑न्॥५॥**

**पदार्थः**-**(यत्र)** **(देवान्)** विदुषः **(ऋघायतः)** बाधमानान् **(विश्वान्)** **(अयुध्यः)** योद्धुमनर्हः **(एकः)** **(इत्)** एव **(त्वम्)** **(इन्द्र)** **(वनून्)** अधर्म्मसेविनः **(अहन्)** हन्याः॥५॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! एक इदेव त्वं यत्र विश्वान् देवानृघायतो वनूनहंस्तत्र शत्रुभिरयुध्यो भवेः॥५॥

**भावार्थः**-यदा यदा दुष्टाः श्रेष्ठान् बाधन्तां तदा तदा त्वं सर्वानधर्मिणो भृशं दण्डय॥५॥

**पदार्थः**-हे **(इन्द्र)** तेजस्वी राजन् **(एकः)** एक **(इत्)** ही **(त्वम्)** आप **(यत्र)** जहाँ **(विश्वान्)** सम्पूर्ण **(देवान्)** विद्वानों को **(ऋघायतः)** बाधते हुए **(वनून्)** अधर्म्म के सेवन करनेवालों का **(अहन्)** नाश करें, वहाँ शत्रुओं से **(अयुध्यः)** नहीं युद्ध करने योग्य अर्थात् शत्रुजन आप से युद्ध न कर सकें, ऐसे होवें॥५॥

**भावार्थः**-जब-जब दुष्टजन श्रेष्ठों को बाधा देवें, तब-तब आप सम्पूर्ण अधर्म्मियों को अत्यन्त दण्ड दीजिये॥५॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**यत्रो॒त मर्त्या॑य॒ कमरि॑णा इन्द्र॒ सूर्य॑म्। प्राव॒ः शची॑भि॒रेत॑शम्॥६॥**

**यत्र॑। उ॒त। मर्त्या॑य। कम्। अरि॑णाः। इ॒न्द्र॒। सूर्य॑म्। प्र। आ॒व॒ः। शची॑भिः। एत॑शम्॥६॥**

**पदार्थः**-**(यत्र)** यस्मिन् राज्ये **(उत)** अपि **(मर्त्याय)** मनुष्याय **(कम्)** सुखम् **(अरिणाः)** प्रदद्याः **(इन्द्र)** सुखप्रदातः **(सूर्य्यम्)** सवितारं वायुरिव **(प्र)** **(आवः)** रक्षेः **(शचीभिः)** प्रज्ञाभिः कर्म्मभिर्वा **(एतशम्)** प्राप्तविद्यमश्ववद् बलिष्ठम्॥६॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! त्वं सूर्य्यं वायुरिव शचीभिरेतशं प्रावः। यत्र मर्त्याय कमरिणास्तत्रोत दुष्टान् दुःखं दद्याः॥६॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-यत्र राजा श्रेष्ठान्त्सत्कृत्य दुष्टान् दण्डयित्वा विद्याविनयौ वर्द्धयति तत्र सर्वाः प्रजाः स्वस्था भवन्ति॥६॥

**पदार्थः**-हे **(इन्द्र)** सुख के देनेवाले आप **(सूर्य्यम्)** सूर्य्य को वायु के सदृश **(शचीभिः)** बुद्धियों वा कर्म्मों से **(एतशम्)** विद्या को प्राप्त घोड़े के सदृश बलवान् की **(प्र, आवः,)** रक्षा करें **(यत्र)** जिस राज्य में **(मर्त्याय)** मनुष्य के लिये **(कम्)** सुख **(अरिणाः)** देवें वहाँ **(उत)** भी दुष्टों को दुःख देवें॥६॥

**भावार्थः**-जहाँ राजा श्रेष्ठों का सत्कार और दुष्टों को दण्ड देकर विद्या और विनय को बढ़ाता है, वहाँ सम्पूर्ण प्रजा स्वस्थ होती है॥६॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**किमादुतासि वृत्रहन् मघवन् मन्युमत्तमः। अत्राह दानुमातिरः॥७॥**

**किम्। आत्। उत। असि। वृत्रऽहन्। मघऽवन्। मन्युमत्ऽतमः। अत्र। अह। दानुम्। आ। अतिरः॥७॥**

**पदार्थः**-**(किम्)** **(आत्)** आनन्तर्य्ये **(उत)** **(असि)** **(वृत्रहन्)** शत्रुनाशक **(मघवन्)** प्रशंसितधन **(मन्युमत्तमः)** प्रशंसितो मन्युः क्रोधो यस्य सोऽतिशयितः **(अत्र)** **(अह)** **(दानुम्)** दातारम् **(आ)** **(अतिरः)** हंसि॥७॥

**अन्वयः**-हे मघवन् वृत्रहन्! मन्युमत्तमस्त्वं सूर्य्यो मेघमिव दानुमातिरोऽत्राहाऽऽत् किमुत राजाऽसि॥७॥

**भावार्थः**-यो राजा दुष्टानामुपर्य्यतिक्रोधकृच्छ्रेष्ठेषु शान्ततमो भवति स एव राज्यं वर्द्धयितुमर्हति॥७॥

**पदार्थः**-हे **(मघवन्)** श्रेष्ठ धनयुक्त **(वृत्रहन्)** शत्रुओं के नाश करने वाले! **(मन्युमत्तमः)** प्रशंसित क्रोधयुक्त आप सूर्य्य मेघ को जैसे वैसे **(दानुम्)** देनेवाले का **(आ, अतिरः)** नाश करते हैं, **(अत्र, अह, आत्, किम्, उत)** अहह इस विषय में तो क्या अनन्तर आप राजा भी **(असि)** हो॥७॥

**भावार्थः**-जो राजा दुष्टों के ऊपर अति क्रोध करने और श्रेष्ठों में अत्यन्त शान्ति रखने वाला होता है, वही राज्य बढ़ा सकता है॥७॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**एतद् घेदुत वीर्य१मिन्द्र चकर्थ पौंस्यम्। स्त्रियं यद्दुर्हणायुवं वधीर्दुहितरं दिवः॥८॥**

**एतत्। घ। इत्। उत। वीर्यम्। इन्द्र। चकर्थ। पौंस्यम्। स्त्रियम्। यत्। दुःऽहनायुवम्। वधीः। दुहितरम्। दिवः॥८॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**एतत्**) कर्म्म (**घ**) एव (**इत्**) (**उत**) (**वीर्य्यम्**) पराक्रमम् (**इन्द्र**) दोषविनाशक (**चकर्थ**) करोषि (**पौंस्यम्**) पुंभ्यो हितम् (**स्त्रियम्**) (**यत्**) (**दुर्हणायुवम्**) दुःखेन हन्तुं योग्यं कामयते ताम् (**वधीः**) हंसि (**दुहितरम्**) दुहितरमिव वर्त्तमानामुषसम् (**दिवः**) प्रकाशस्य॥८॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! यथा सूर्य्यो दुर्हणायुवं दिवो दुहितरं हन्ति तथैतत् पौंस्यं वीर्य्यं चकर्थ त्वं शत्रून् घ वधीरिद्यत् स्त्रियमुतापि भृत्यं पालयेः॥८॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यथा सूर्य्यो रात्रिं हत्वा दिनं जनयित्वा प्राणिनः सुखयति तथैव दुष्टाचारान् हत्वा श्रेष्ठान्त्सम्पाल्य विद्यां जनयित्वा सर्वाः प्रजाः सुखयेत्॥८॥

**पदार्थः**-हे (**इन्द्र**) दोषों के नाश करनेवाले जैसे सूर्य्य (**दुर्हणायुवम्**) दुःख से नाश करने योग्य की कामना करनेवाले (**दिवः**) प्रकाश की (**दुहितरम्**) कन्या के सदृश वर्त्तमान प्रातर्वेला का नाश करता है, वैसे (**एतत्**) इस कर्म्म और (**पौंस्यम्**) पुरुषों के लिये हित (**वीर्य्यम्**) पराक्रम को (**चकर्थ**) करते हो और आप (**घ**) शत्रुओं ही का (**वधीः, इत्**) नाश करते ही हो (**यत्**) जो (**स्त्रियम्**) स्त्री (**उत**) और भृत्य को भी पालिये॥८॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे सूर्य्य रात्रि का नाश और दिन की उत्पत्ति करके प्राणियों को सुख देता है, वैसे ही दुष्ट आचरणों का नाश और श्रेष्ठों का पालन कर और विद्या को उत्पन्न करके सम्पूर्ण प्रजाओं को सुख देवें॥८॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**दिवश्चिद् घा दुहितरं महान् महीयमानाम्। उषासमिन्द्र सं पिणक्॥९॥**

**दिवः। चित्। घ। दुहितरम्। महान्। महीयमानाम्। उषसम्। इन्द्र। सम्। पिणक्॥९॥**

**पदार्थः**-(**दिवः**) सूर्य्यस्य (**चित्**) इव (**घ**) इव। अत्र **ऋचि तुनुघे**ति दीर्घः। (**दुहितरम्**) कन्यामिव वर्त्तमानाम् (**महान्**) (**महीयमानाम्**) विस्तीर्णाम् (**उषासम्**) प्रातर्वेलाम् (**इन्द्र**) (**सम्**) (**पिणक्**) पिनष्टि॥९॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र राजन्! यथा महान्त्सूर्य्यो दिवो दुहितरं महीयमानामुषासञ्चित् सम्पिणक् तथा घाविद्यां दुष्टांश्च निवारय॥९॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। ये राजपुरुषा चान्यायान्धकारं निवार्य्य विद्यां न्यायार्कञ्च जनयन्ति ते सूर्य्य इव प्रतापिनो जायन्ते॥९॥

**पदार्थः**-हे (**इन्द्र**) तेजस्वि राजन्! जैसे (**महान्**) महानुभाव कोई (**दिवः, दुहितरम्**) कन्या के सदृश वर्त्तमान सूर्य्य की (**महीयमानाम्**) विस्तीर्ण (**उषासम्**) प्रातर्वेला के (**चित्**) सदृश (**सम्, पिणक्**) पीसता है, वैसे (**घ**) ही अविद्या और दुष्टों का निवारण करो॥९॥



www.9009.co.in

**भावार्थ:**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जो राजपुरुष और राजा अन्यायरूप अन्धकार को निवृत्त करके विद्या और न्यायरूप सूर्य्य को उत्पन्न करते, वे सूर्य्य के सदृश प्रतापी होते हैं॥९॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अपोषा अनसः सरत्संपिष्टादह बिभ्युषी। नि यत्सीं शिश्नथद् वृषा॥१०॥२०॥**

**अप। उषाः। अनसः। सरत्। सम्ऽपिष्टात्। अह। बिभ्युषी। नि। यत्। सीम्। शिश्नथत्। वृषा॥१०॥**

**पदार्थः**-**(अप)** **(उषाः)** प्रातर्वेलेव **(अनसः)** शकटस्याग्रम् **(सरत्)** सरति **(सम्पिष्टात्)** सञ्चूर्णितात् **(अह)** **(बिभ्युषी)** भयप्रदा **(नि)** **(यत्)** या **(सीम्)** सर्वतः **(शिश्नथत्)** शिथिलीकरोति **(वृषा)** बलिष्ठो राजा॥१०॥

**अन्वयः**-यो वृषा यथा बिभ्युषी उषा अनसोऽग्रमिव सम्पिष्टादहाप सरद् यद् या सीं नि शिश्नथत् तथाचरेत् स सूर्य्य इव तेजस्वी भवेत्॥१०॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यथा रथस्याग्रं पुरःसरं भवति तथैव सूर्य्यस्याग्र उषा गच्छति यथा सूर्य्यस्तमो हन्ति तथा राजाऽन्यायाऽऽचारं हन्यात्॥१०॥

**पदार्थ:**-जो **(वृषा)** बलिष्ठ राजा जैसे **(बिभ्युषी)** भय देनेवाली **(उषाः)** प्रातर्वेला **(अनसः)** गाड़ी के अग्रभाग के सदृश आगे चलने वाली **(सम्पिष्टात्)** चूर्णित हुए **(अह)** ही अन्धकार से **(अप, सरत्)** आगे चलती है **(यत्)** जो **(सीम्)** सब प्रकार **(नि, शिश्नथत्)** शिथिल करती है, वैसा आचरण करे, वह सूर्य्य के सदृश तेजस्वी होवे॥१०॥

**भावार्थ:**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे रथ का अग्रभाग आगे होता है, वैसे ही सूर्य्य के आगे प्रातःकाल चलता है और जैसे सूर्य्य अन्धकार का नाश करता है, वैसे राजा अन्याय के आचार का नाश करे॥१०॥

**[अथ] पुनः सूर्य्यविषयमाह॥**

अब सूर्य्यविषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**एतदस्या अनः शये सुसंपिष्टं विपाश्या। ससार सीं परावतः॥११॥**

**एतत्। अस्याः। अनः। शये। सुऽसंपिष्टम्। विऽपाशि। आ। ससार। सीम्। पराऽवतः॥११॥**

**पदार्थः**-**(एतत्)** **(अस्याः)** उषसः **(अनः)** शकटमिव **(शये)** शयनं कुर्य्याम् **(सुसम्पिष्टम्)** सुष्ठ्वेकत्र पिष्टं यस्मिँस्तत् **(विपाशि)** विगतपाशे बन्धनरहिते मार्गे **(आ)** **(ससार)** समन्ताद्गच्छति **(सीम्)** आदित्यः **(परावतः)** दूरदेशात्॥११॥

**अन्वयः**-हे विद्वन्! यथा सीमादित्योऽस्या उषस एतत् सुसम्पिष्टमनो विपाशि परावत आ ससार यस्यामहं शये तथैतां त्वं विजानीहि॥११॥



www.9009.co.in

**भावार्थ:**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यथा श्रेष्ठानि यानानि सद्यो दूरं यान्ति तथैवोषा दूरं गच्छतीति वेद्यम्॥११॥

**पदार्थ:**-हे विद्वन्! जैसे **(सीम्)** सूर्य्य **(अस्याः)** इस प्रातःकाल का **(एतत्)** यह **(सुसम्पिष्टम्)** उत्तम प्रकार एक स्थान में पीसा चूर्ण हो जिसमें उस अन्धकार को **(अनः)** गाड़ी के सदृश **(विपाशि)** बन्धनरहित मार्ग में **(परावतः)** दूर देश से **(आ, ससार)** सब प्रकार चलता है, जिसमें मैं **(शये)** शयन करूं, वैसे इसको आप जानिये॥११॥

**भावार्थ:**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे श्रेष्ठ वाहन शीघ्र दूर जाते हैं, वैसे ही प्रातःकाल दूर जाता है, ऐसा जानना चाहिये॥११॥

**अथ मेघसंबन्धिनदीसंतरणविषयमाह॥**

अब मेघसंबन्धि नदीसंतरण विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**उत सिन्धुं विबाल्यं वितस्थानामधि क्षमि। परि ष्ठा इन्द्र मायया॥१२॥**

**उत। सिन्धुम्। विऽबाल्यम्। विऽतस्थानाम्। अधि। क्षमि। परि। स्थाः। इन्द्र। मायया॥१२॥**

**पदार्थ:**-**(उत)** अपि **(सिन्धुम्)** नदम् **(विबाल्यम्)** विगतं बाल्यं यस्य तम् **(वितस्थानाम्)** विशेषेण स्थिताम् **(अधि)** **(क्षमि)** पृथिव्याम् **(परि)** सर्वतः **(स्थाः)** तिष्ठति **(इन्द्र)** विद्यैश्वर्य्य **(मायया)** प्रज्ञया॥१२॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! भवान् मायया अधि क्षमि वितस्थानां नदीमुत विबाल्यं सिन्धुं परि ष्ठाः॥१२॥

**भावार्थ:**-हे मनुष्याः! समुद्रनदीनदतरणाय प्रज्ञया नौकादिकं निर्माय श्रीमन्तो भवन्तु॥१२॥

**पदार्थ:**-हे **(इन्द्र)** विद्या और ऐश्वर्य्य से युक्त आप **(मायया)** बुद्धि से **(अधि, क्षमि)** पृथिवी के बीच **(वितस्थानाम्)** विशेष करके स्थित नदी **(उत)** और **(विबाल्यम्)** बालपन से रहित अर्थात् छोटे नहीं बड़े **(सिन्धुम्)** नद के **(परि)** सब ओर से **(स्थाः)** स्थित होते हैं॥१२॥

**भावार्थ:**-हे मनुष्यो! समुद्र, नदी, नद के पार होने के लिये बुद्धि से नौका आदि को रच के लक्ष्मीवान् होओ॥१२॥

**अथ राजसम्बन्धेन मनुष्यविषयमाह॥**

अब राजसम्बन्ध से मनुष्य विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**उत शुष्णस्य धृष्णुया प्र मृक्षो अभि वेदनम्। पुरो यदस्य संपिणक्॥१३॥**

**उत। शुष्णस्य। धृष्णुऽया। प्र। मृक्षः। अभि। वेदनम्। पुरः। यत्। अस्य। सम्ऽपिणक्॥१३॥**

**पदार्थ:**-**(उत)** अपि **(शुष्णस्य)** बलस्य **(धृष्णुया)** प्रगल्भत्वेन **(प्र)** **(मृक्षः)** सिञ्चय **(अभि)** **(वेदनम्)** विज्ञानम् **(पुरः)** नगराणि **(यत्)** यतः **(अस्य)** शत्रोः **(संपिणक्)** सञ्चूर्णय॥१३॥



www.9009.co.in

**अन्वय:**-हे राजन्! यद्यतस्त्वं शुष्णस्य बलिष्ठस्य सैन्यस्य धृष्णुयाऽस्य पुरः प्र मृक्षोऽतः शत्रून् संपिणगुताप्यभिवेदनं प्रापय॥१३॥

**भावार्थ:**-स एव राजा सम्मतो भवेद्यः सेनां वर्द्धयित्वाऽन्यायाचारान्निवार्य्याऽविहिताज्ञो भवेत्॥१३॥

**पदार्थ:**-हे राजन्! **(यत्)** जिससे आप **(शुष्णस्य)** बलयुक्त सेना की **(धृष्णुया)** ढिठाई से **(अस्य)** इस शत्रु के **(पुरः)** नगरों को **(प्र, मृक्षः)** अच्छे प्रकार सींचो अत एव शत्रुओं को **(सम्पिणक्)** चूर्णित करो **(उत)** और भी **(अभि, वेदनम्)** विज्ञान को प्राप्त कराओ॥१३॥

**भावार्थ:**-वही राजा सम्मत होवे कि जो सेना को बढ़ाय और अन्याय के आचरणों को दूर करके बिन कहे को अच्छा जानने वाला होवे॥१३॥

**पुनः सूर्यदृष्टान्तेन राजविषयमाह॥**

फिर सूर्यदृष्टान्त से राजविषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**उत दासं कौलितरं बृहतः पर्वतादधि। अवाहन्निन्द्र शम्बरम्॥१४॥**

**उत। दासम्। कौलिऽतरम्। बृहतः। पर्वतात्। अधि। अव। अहन्। इन्द्र। शम्बरम्॥१४॥**

**पदार्थ:**-**(उत)** **(दासम्)** सेवकम् **(कौलितरम्)** अतिशयेन कुलीनम् **(बृहतः)** महतः **(पर्वतात्)** शैलात् **(अधि)** उपरि **(अव)** **(अहन्)** हन्ति **(इन्द्र)** **(शम्बरम्)** शं सुखं वृणोति यस्मात्तं मेघम्॥१४॥

**अन्वय:**-हे इन्द्र! त्वं यथा सूर्य्यो बृहतः पर्वतादधि शम्बरमवाहन्नुतापि प्रजाः पालयसि तथैव शत्रून् हत्वा कौलितरं दासं पालय॥१४॥

**भावार्थ:**-हे मनुष्या! यथा सूर्य्यो मेघाज्जलं भूमौ निपात्य सर्वाञ्जीवयति तथैव पर्वतोपरिस्थानपि दस्यूनधो निपात्य प्रजाः पालयतः॥१४॥

**पदार्थ:**-हे **(इन्द्र)** तेजस्वि राजन्! आप जैसे सूर्य्य **(बृहतः)** बड़े **(पर्वतात्)** पर्वत से **(अधि)** ऊपर **(शम्बरम्)** सुख प्राप्त होता है, जिससे उस मेघ को **(अव, अहन्)** नाश करता और **(उत)** भी प्रजाओं को पालता है, वैसे ही शत्रुओं का नाश करके **(कौलितरम्)** अत्यन्त कुलीन **(दासम्)** सेवक का पालन करो॥१४॥

**भावार्थ:**-हे मनुष्यो! जैसे सूर्य्य मेघ से जल को पृथिवी में गिरा के सब को जिलाता है, वैसे ही पर्वत के ऊपर स्थित भी डाकुओं को नीचे गिरा के प्रजाओं का पालन करो॥१४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**उत दासस्य वर्चिनः सहस्राणि शताऽवधीः। अधि पञ्च प्रधीँरिव॥१५॥२१॥**

**उत। दासस्य। वर्चिनः। सहस्राणि। शता। अवधीः। अधि। पञ्च। प्रधीन्ऽइव॥१५॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**उत**) अपि (**दासस्य**) सेवकस्य (**वर्चिनः**) बह्वधीतस्य (**सहस्राणि**) असंख्यानि (**शता**) शतानि (**अवधीः**) हन्याः (**अधि**) (**पञ्च**) (**प्रधीनिव**) चक्रस्थानि तीक्ष्णानि कीलकानीव वर्त्तमानान् जगत्कण्टकान् दुष्टान्॥१५॥

**अन्वयः**-हे राजंस्त्वं प्रधीनिव वर्त्तमानान् पञ्च शता सहस्राणि दुष्टानध्यवधीरुतापि वर्चिनो दासस्य जनान् पालय॥१५॥

**भावार्थः**-स राजभी राजपुरुषैर्यदि दुष्टान्निवार्य्य श्रेष्ठान् सत्कुर्य्यात्तर्हि सर्वं जगत् तस्य सेवकं भवेत्॥१५॥

**पदार्थः**-हे राजन्! आप (**प्रधीनिव**) चक्र में स्थित पैनी कीलों के सदृश वर्त्तमान संसार में कण्टक दुष्टों को (**पञ्च**) पांच (**शता**) सौ वा (**सहस्राणि**) सहस्रों दुष्टों का (**अधि, अवधीः**) नाश करो (**उत**) और (**वर्चिनः**) बहुत पढ़े हुए (**दासस्य**) सेवक के जनों को पालिये॥१५॥

**भावार्थः**-वह राजा जो राजमान राजपुरुषों से यदि दुष्टों का निवारण करके श्रेष्ठों का सत्कार करे तो सम्पूर्ण जगत् उसका सेवक होवे॥१५॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**उ॒त त्यं पु॒त्रम॒ग्रुव॒: परा॑वृक्तं श॒तक्र॑तु:। उ॒क्थेष्विन्द्र॒ आभ॑जत्॥ १६॥**

**उ॒त। त्यम्। पु॒त्रम्। अ॒ग्रुव॑:। परा॑ऽवृक्तम्। श॒तऽक्र॑तु:। उ॒क्थेषु॑। इन्द्र॑:। आ। अ॒भ॒ज॒त्॥ १६॥**

**पदार्थः**-(**उत**) अपि (**त्यम्**) तम् (**पुत्रम्**) (**अग्रुवः**) अग्रसराः (**परावृक्तम्**) अच्छिन्नवीर्य्यम् (**शतक्रतुः**) असंख्यप्रज्ञः (**उक्थेषु**) प्रशंसनीयेषु शास्त्रेषु (**इन्द्रः**) परमैश्वर्य्यवान् (**आ**) (**अभजत्**) समन्तात् सेवते॥१६॥

**अन्वयः**-यश्शतक्रतुरिन्द्र उक्थेषु त्यं परावृक्तं पुत्रमग्रुव इवाऽभजदुतापि शिक्षेत स सिद्धकार्य्यो भवेत्॥१६॥

**भावार्थः**-यो राजा मातरोऽपत्यानीव प्रजाः पालयेत्तं प्रजाः पितरमिव मन्येरन्॥१६॥

**पदार्थः**-जो (**शतक्रतुः**) असंख्यबुद्धियों वा (**इन्द्रः**) अत्यन्त ऐश्वर्य्यवान् राजा (**उक्थेषु**) प्रशंसा करने योग्य शास्त्रों में (**त्यम्**) उस (**परावृक्तम्**) नहीं नष्ट हुए पराक्रम वाले (**पुत्रम्**) पुत्र को (**अग्रुवः**) अग्रगामियों के सदृश (**आ, अभजत्**) सब प्रकार सेवन करता है (**उत**) और शिक्षा भी देवे, वह सिद्धकार्य्य होवे॥१६॥

**भावार्थः**-जो राजा माता पुत्रों का जैसे वैसे प्रजाओं का पालन करे, उसको प्रजाजन पिता के समान मानें॥१६॥

**अथ विद्वद्विषयमाह॥**

अब विद्वद्विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥



www.9009.co.in

**उत त्या तुर्वशायदू अस्नातारा शचीपतिः। इन्द्रो विद्वाँ अपारयत्॥ १७॥**

उत। त्या। तुर्वशायदू इति। अस्नातारा। शचीऽ३ऽपतिः। इन्द्रः। विद्वान्। अपारयत्॥ १७॥

**पदार्थः**-(**उत**) अपि (**त्या**) तौ (**तुर्वशायदू**) शीघ्रं वशंकरो यत्नवाँश्च तौ मनुष्यौ। **तुर्वशा इति मनुष्यनामसु पठितम्।** (निघं०२.३) यदव इति च। (**अस्नातारा**) स्नानादिकर्मरहितौ (**शचीपतिः**) प्रजापतिर्वाक्पतिर्वा (**इन्द्रः**) राजा (**विद्वान्**) (**अपारयत्**) दुःखात् पारयेत्॥ १७॥

**अन्वयः**-शचीपतिर्विद्वानिन्द्रो यौ तुर्वशायदू उताप्यस्नातारापारयत् त्या सुखिनौ स्याताम्॥ १७॥

**भावार्थः**-यान् मनुष्यानाप्ता विद्वांसः सुशिक्षेरंस्ते दुःखान्तं गत्वा सुखिनो भवन्ति॥ १७॥

**पदार्थः**-(**शचीपतिः**) प्रजा वा वाणी का पति (**विद्वान्**) विद्वान् (**इन्द्रः**) और राजा जिन (**तुर्वशायदू**) शीघ्र वश करने और यत्न करने वाले मनुष्य (**उत**) और (**अस्नातारा**) स्नान आदि कर्म्मों से रहित मनुष्यों को (**अपारयत्**) दुःख से पार उतारे (**त्या**) वे दोनों सुखी होवें॥ १७॥

**भावार्थः**-जिन मनुष्यों को यथार्थवक्ता विद्वान् लोग शिक्षा देवें, वे दुःख के पार जाकर सुखी होते हैं॥ १७॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**उत त्या सद्य आर्या सरयोरिन्द्र पारतः। अर्णाचित्ररथावधीः॥ १८॥**

उत। त्या। सद्यः। आर्या। सरयोः। इन्द्र। पारतः। अर्णाचित्ररथा। अवधीः॥ १८॥

**पदार्थः**-(**उत**) (**त्या**) तौ (**सद्यः**) शीघ्रम् (**आर्या**) उत्तमगुणकर्म्मस्वभावौ (**सरयोः**) गच्छतोः (**इन्द्र**) (**पारतः**) पारात् (**अर्णाचित्ररथा**) अर्णौ प्रापकौ च तौ चित्ररथा आश्चर्य्यरथौ च तौ (**अवधीः**) हन्याः॥ १८॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! त्वं सद्यस्त्या सरयोः पारतो वर्त्तमानावर्णाचित्ररथावधीरुताप्यार्य्या पालयेः॥ १८॥

**भावार्थः**-हे राजँस्त्वं सततं दुष्टान् ताडय श्रेष्ठान् सत्कुरु॥ १८॥

**पदार्थः**-हे (**इन्द्र**) राजन् आप (**सद्यः**) शीघ्र (**त्या**) उन दोनों (**सरयोः**) चलते हुओं के (**पारतः**) पार से वर्त्तमान (**अर्णाचित्ररथा**) पहुंचाने वाले आश्चर्य्यकारक रथों का (**अवधीः**) नाश करो (**उत**) और (**आर्य्या**) उत्तम गुण, कर्म्म और स्वभाव वालों का पालन करो॥ १८॥

**भावार्थः**-हे राजन्! आप निरन्तर दुष्टों का ताड़न और श्रेष्ठों का सत्कार करो॥ १८॥

**अथ राजविषयमाह॥**

अब राजविषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अनु द्वा जहिता नयोऽन्धं श्रोणं च वृत्रहन्। न तत्ते सुम्नमष्टवे॥ १९॥**



www.9009.co.in

**अनु॑। द्वा। ज॒हि॒ता। न॒यः॑। अ॒न्धम्। श्रो॒णम्। च॒। वृ॒त्र॒ऽह॒न्। न। तत्। ते॒। सु॒म्नम्। अ॒ष्ट॒वे॥१९॥**

**पदार्थः**-(**अनु**) (**द्वा**) द्वौ (**जहिता**) जहितौ त्यक्तारौ (**नयः**) नायकः (**अन्धम्**) चक्षुर्विज्ञानविकलम् (**श्रोणम्**) खञ्जम् (**च**) (**वृत्रहन्**) शत्रुहन्तः (**न**) (**तत्**) (**ते**) तव (**सुम्नम्**) सुखम् (**अष्टवे**) व्याप्तुम्॥१९॥

**अन्वयः**-हे वृत्रहन्! यदि नयः संस्त्वमन्धं श्रोणञ्च द्वा जहिताऽनु पालयेस्तर्हि ते तत्सुम्नमष्टवे कश्चिदपि शत्रुर्न शक्नुयात्॥१९॥

**भावार्थः**-यो राजानाथानन्धादीन् सततं पालयेत्तस्य राज्यं सुखञ्च न नश्येत्॥१९॥

**पदार्थः**-हे (**वृत्रहन्**) शत्रुओं के नाश करने वाले! जो (**नयः**) नायक अर्थात् अग्रणी होते हुए आप (**अन्धम्**) नेत्रों के विज्ञान से विकल (**श्रोणं, च**) और खञ्ज अर्थात् पङ्गु (**द्वा**) दोनों (**जहिता**) छोड़ने वालों का (**अनु**) पश्चात् पालन करें तो (**ते**) आपके (**तत्**) उस (**सुम्नम्**) सुख को (**अष्टवे**) व्याप्त होने को कोई भी शत्रु (**न**) नहीं समर्थ होवें॥१९॥

**भावार्थः**-जो राजा अनाथ अन्धादिकों का निरन्तर पालन करे, उसका राज्य और सुख कभी नहीं नष्ट होवे॥१९॥

**पुनः सूर्यदृष्टान्तेन राजविषयमाह॥**

फिर सूर्यदृष्टान्त से राजविषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**श॒तम॑श्म॒न्मयी॑नां पु॒रामिन्द्रो॒ व्या॑स्यत्। दिवो॑दासाय दा॒शुषे॑॥२०॥२२॥**

**श॒तम्। अ॒श्म॒न्ऽमयी॑नाम्। पु॒राम्। इन्द्रः॑। वि। आ॒स्य॒त्। दिवः॑ऽदासाय। दा॒शुषे॑॥२०॥**

**पदार्थः**-(**शतम्**) (**अश्मन्मयीनाम्**) मेघप्रचुराणामिव पाषाणनिर्मितानाम् (**पुराम्**) नगरीणाम् (**इन्द्रः**) (**वि**) (**आस्यत्**) व्यसेच्छिन्द्यात् (**दिवोदासाय**) प्रकाशस्य सेवकाय (**दाशुषे**) दात्रे॥२०॥

**अन्वयः**-य इन्द्रो रविरिव दिवोदासाय दाशुषेऽश्मन्मयीनां पुरां शतं व्यास्यत् स एव विजयी भवितुमर्हेत्॥२०॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे राजन्! यदि त्वमतिप्रवृद्धानां मेघानां सूर्य्यवदनेकानि शत्रुपुराणि जेतुं शक्नुयास्तर्हि राज्यश्रियं कीर्त्तिञ्चाप्तुमर्हेः॥२०॥

**पदार्थः**-जो (**इन्द्रः**) तेजस्वी सूर्य्य के सदृश (**दिवोदासाय**) प्रकाश के सेवने वाले और (**दाशुषे**) देनेवाले के लिये (**अश्मन्मयीनाम्**) मेघों के समूहों के सदृश पाषाणों से बने हुए (**पुराम्**) नगरों के (**शतम्**) सैकड़े को (**वि, आस्यत्**) काटे, वही विजयी होने के योग्य होवे॥२०॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे राजन्! जो आप बहुत बढ़े हुए मेघों को जैसे सूर्य्य वैसे अनेक शत्रुओं के नगरों को जीत सकें तो राज्यलक्ष्मी और यश को प्राप्त होने के योग्य होवें॥२०॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**



www.9009.co.in

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अस्वा॑पयद्द॒भीत॑ये स॒हस्रा॑ त्रि॒ंशतं॒ हथैः॑। दा॒सानां॒मिन्द्रो॑ मा॒यया॑॥२१॥**

**अस्वा॑पयत्। द॒भीत॑ये। स॒हस्रा॑। त्रि॒ंशत॑म्। हथैः॑। दा॒साना॑म्। इन्द्रः॑। मा॒यया॑॥२१॥**

**पदार्थः**-**(अस्वापयत्)** स्वापयेत् **(दभीतये)** हिंसनाय **(सहस्रा)** असंख्यानि **(त्रिंशतम्)** एतत्संख्यातम् **(हथैः)** हननैः **(दासानाम्)** सेवकानाम् **(इन्द्रः)** राजा **(मायया)** प्रज्ञया॥२१॥

**अन्वयः**-य इन्द्रो मायया दासानां सेवकानां शत्रूणां हथैर्दभीतये सहस्रा त्रिंशतमस्वापयत् स एव विजयवान् भवेत्॥२१॥

**भावार्थः**-ये सेनापत्यादयो बुद्ध्या शत्रून् हन्युस्ते सदैव सुखिनः स्युः॥२१॥

**पदार्थः**-जो **(इन्द्रः)** राजा **(मायया)** बुद्धि से **(दासानाम्)** सेवकों और शत्रुओं के **(हथैः)** हननसाधनों से **(दभीतये)** हिंसन करने के लिये **(सहस्रा)** असंख्य **(त्रिंशतम्)** वा तीस को **(अस्वापयत्)** सुलावे, वही जीतने वाला होवे॥२१॥

**भावार्थः**-जो सेनापति आदि बुद्धि से शत्रुओं का नाश करें, वे सदा ही सुखी होवें॥२१॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**स घेदु॒तासि॑ वृत्रहन्त्सम॒ान इ॑न्द्र॒ गोप॑तिः। यस्ता विश्वा॑नि चिच्यु॒षे॥२२॥**

**सः। घ॒। इत्। उ॒त। अ॒सि॒। वृ॒त्र॒ऽह॒न्। स॒मा॒नः। इ॒न्द्र॒। गोऽप॑तिः। यः। ता। विश्वा॑नि। चि॒च्यु॒षे॥२२॥**

**पदार्थः**-**(सः)** **(घ)** एव **(इत्)** **(उत)** अपि **(असि)** **(वृत्रहन्)** शत्रुविदारक **(समानः)** सूर्येण तुल्यः **(इन्द्र)** पुष्कलैश्वर्य्यकारक **(गोपतिः)** पृथिव्याः स्वामी **(यः)** **(ता)** तानि **(विश्वानि)** सर्वाणि **(चिच्युषे)** च्यावयसि॥२२॥

**अन्वयः**-हे वृत्रहन्निन्द्र! यो गोपतिः समानस्त्वं ता विश्वानि चिच्युषे घ स इद् बलवानुतापि सुख्यसि॥२२॥

**भावार्थः**-यो राजा सूर्य्यवन्न्यायप्रकाशेन रागद्वेषवान् सन् सर्वं राष्ट्रं पालयति स एव गणनीयो जायते॥२२॥

**पदार्थः**-हे **(वृत्रहन्)** शत्रुओं के नाश करनेवाले **(इन्द्र)** अत्यन्त ऐश्वर्य्य के कर्त्ता! **(यः)** जो **(गोपतिः)** पृथिवी के स्वामी **(समानः)** सूर्य्य के सदृश आप **(ता)** उन **(विश्वानि)** सब की **(चिच्युषे)** वृद्धि करते **(घ)** ही हो **(स, इत्)** वही बलवान् **(उत)** और सुखी **(असि)** होते हैं॥२२॥

**भावार्थः**-जो राजा सूर्य्य के सदृश न्याय के प्रकाश से रागद्वेष वाला होता हुआ सम्पूर्ण राज्य का पालनकर्त्ता है, वही गणना करने योग्य होता है॥२२॥

**पुना राजविषयमाह॥**

फिर राजविषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥



www.9009.co.in

**उ॒त नू॒नं यदि॑न्द्रि॒यं क॑रि॒ष्या इ॑न्द्र॒ पौंस्य॑म्। अ॒द्या नकि॒ष्टदा मि॑नत्॥ २३॥**

**उ॒त। नू॒नम्। यत्। इ॒न्द्रि॒यम्। क॒रि॒ष्याः। इ॒न्द्र॒। पौंस्य॑म्। अ॒द्य। नकिः॑। तत्। आ। मि॒न॒त्॥ २३॥**

**पदार्थः**-(**उत**) अपि (**नूनम्**) निश्चितम् (**यत्**) (**इन्द्रियम्**) (**करिष्याः**) (**इन्द्र**) सर्वरक्षक (**पौंस्यम्**) पुंसु साधुः (**अद्य**) अत्र **संहितायामि**ति दीर्घः। (**नकिः**) (**तत्**) (**आ**) (**मिनत्**) हिंस्यात्॥२३॥

**अन्वयः**-हे इन्द्रत्वमद्य यन्नूनमिन्द्रियमुत पौंस्यं करिष्यास्तत् कोऽपि नकिरामिनत्॥२३॥

**भावार्थः**-यो राजा वर्त्तमानसमये बलं वर्द्धयितुं शक्नुयात् शत्रुभिरजितस्सन् निश्चितं विजयं प्राप्नुयात्॥२३॥

**पदार्थः**-हे (**इन्द्र**) सब के रक्षा करने वाले आप (**अद्य**) आज (**यत्**) जो (**नूनम्**) निश्चित (**इन्द्रियम्**) इन्द्रिय को (**उत**) और (**पौंस्यम्**) पुरुषों में श्रेष्ठ कर्म्म को (**करिष्याः**) करें (**तत्**) उसकी कोई भी (**नकिः**) नहीं (**आ, मिनत्**) हिंसा करे॥२३॥

**भावार्थः**-जो राजा वर्त्तमान समय में बल को बढ़ा सके, वह शत्रुओं से अजित हुआ निश्चय विजय को प्राप्त होवे॥२३॥

**अथ विद्वदुपदेशविषयमाह॥**

अब विद्वानों के उपदेशविषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**वा॒मंवा॑मं त आदुरे दे॒वो द॑दात्वर्य॒मा।**

**वा॒मं पू॒षा वा॒मं भगो॑ वा॒मं दे॒वः करू॑ळती॥ २४॥ २३॥**

**वा॒मम्ऽवा॑मम्। ते॒। आ॒ऽदु॒रे॒। दे॒वः। द॒दा॒तु॒। अ॒र्य॒मा। वा॒मम्। पू॒षा। वा॒मम्। भगः॑। वा॒मम्। दे॒वः। करू॑ळती॥ २४॥**

**पदार्थः**-(**वामंवामम्**) प्रशस्यं प्रशस्यम्। **वाम इति प्रशस्यनामसु पठितम्।** (निघं०३.८) (**ते**) तुभ्यम् (**आदुरे**) शत्रूणां विदारक (**देवः**) विजयप्रदाता (**ददातु**) (**अर्य्यमा**) न्यायेशः (**वामम्**) प्राप्तव्यम् (**पूषा**) पुष्टिकर्त्ता (**वामम्**) भजनीयं धनम् (**भगः**) ऐश्वर्यवान् (**वामम्**) श्रेष्ठं विज्ञानम् (**देवः**) प्रकाशमानः (**करूळती**) यः करूनूढा कामयते स करूळतः सोऽस्यास्तीति॥२४॥

**अन्वयः**-हे आदुरे राजन्! यः करूळती देवस्ते वामंवामं ददातु यः करूळत्यर्य्यमा वामं ददातु यः करूळती पूषा वामं प्रयच्छतु यः करूळती भगो देवो वामं ददातु तान्सर्वांस्त्वं सदा सेवयेः॥२४॥

**भावार्थः**-हे राजन्! ये सत्यमुपदेशं सत्यं न्यायं यथार्थां विद्यां क्रियां च त्वां शिक्षेरँस्तान् सर्वास्त्वं सततं सत्कुर्यादिति॥२४॥

अत्र सूर्य्यमेघमनुष्यविद्वद्राजगुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह संगतिर्वेद्या॥

**इति त्रिंशत्तमं सूक्तं त्रयोविंशो वर्गश्च समाप्तः॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-**(आदुरे)** शत्रुओं के नाश करनेवाले राजन्! **(करूळती)** जिसके कारीगरों की कामना करनेवाला विद्यमान वह **(देवः)** विजय का लेनेवाला **(ते)** आपके लिये **(वामंवामम्)** प्रशंसा करने योग्य प्रशंसा करने योग्य को **(ददातु)** देवे और जिसके कारीगरों की कामना करनेवाला विद्यमान वह **(अर्य्यमा)** न्यायाधीश **(वामम्)** प्राप्त होने योग्य पदार्थ दे और जिसके कारीगरों की कामना करनेवाला विद्यमान वह **(पूषा)** पुष्टि करनेवाला **(वामम्)** सेवन करने योग्य धन को दे और जिसके कारीगरों की कामना करनेवाला विद्यमान वह **(भगः)** ऐश्वर्य्य से युक्त **(देवः)** प्रकाशमान **(वामम्)** श्रेष्ठ विज्ञान को देवे, उन सब की आप सदा सेवा करो॥२४॥

**भावार्थः**-हे राजन्! जो लोग सत्य उपदेश, सत्य न्याय, यथार्थ विद्या और क्रिया की आपको शिक्षा देवें, उन सब का आप निरन्तर सत्कार करो॥२४॥

इस सूक्त में सूर्य्य, मेघ, मनुष्य, विद्वान् और राजा के गुणवर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह तीसवां सूक्त और तेईसवां वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

**अथ पञ्चदशर्चस्यैकाऽधिकत्रिंशत्तमस्य सूक्तस्य वामदेव ऋषिः। इन्द्रो देवता। १, ७-१०, १४ गायत्री। २, ६, १२, १३, १५ निचृद्गायत्री। ३ त्रिपादगायत्री। ४, ५ विराड् गायत्री। ११ पिपीलिकामध्यागायत्री छन्दः। षड्जः स्वरः॥**

**अथ राजप्रजाधर्ममाह॥**

अब पन्द्रह ऋचा वाले इकतीसवें सूक्त का प्रारम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में राजप्रजाधर्मविषय को कहते हैं॥

**कया॑ नश्चि॒त्र आ भु॑वदू॒ती स॒दावृ॑धः॒ सखा॑। कया॒ शचि॑ष्ठया वृ॒ता॥१॥**

**कया॑। नः॒। चि॒त्रः। आ। भु॒व॒त्। ऊ॒ती। स॒दाऽवृ॑धः। सखा॑। कया॑। शचि॑ष्ठया। वृ॒ता॥१॥**

**पदार्थः-(कया) (नः)** अस्माकम् **(चित्रः)** अद्भुतगुणकर्मस्वभावः **(आ) (भुवत्)** भवेः **(ऊती)** ऊत्या रक्षणादिक्रियया सह **(सदावृधः)** सर्वदा वर्धमानः **(सखा) (कया) (शचिष्ठया)** अतिशयेन श्रेष्ठया वाचा प्रज्ञया कर्मणा वा **(वृता)** संयुक्तया॥१॥

**अन्वयः**-हे राजन्! सदावृधस्त्वं नः कयोती, कया शचिष्ठया वृता चित्रः सखा आ भुवत्॥१॥

**भावार्थः**-हे राजन्! भवतास्माभिस्सह तादृशानि कर्माणि कर्त्तव्यानि यैरस्माकं प्रीतिर्वर्द्धेत॥१॥

**पदार्थः**-हे राजन्! **(सदावृधः)** सर्वदा वृद्धि को प्राप्त होते हुए आप **(नः)** हम लोगों की **(कया)** किस **(ऊती)** रक्षण आदि क्रिया के साथ और **(कया)** किस **(शचिष्ठया)** अत्यन्त श्रेष्ठ वाणी बुद्धि वा कर्म्म जो **(वृता)** संयुक्त उससे **(चित्रः)** अद्भुत गुण, कर्म्म और स्वभाव वाले **(सखा)** मित्र **(आ, भुवत्)** हूजिये॥१॥

**भावार्थः**-हे राजन्! आपको चाहिये कि हम लोगों के साथ, वैसे कर्म्म करें कि जिनसे हम लोगों की प्रीति बढ़े॥१॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**कस्त्वा॑ स॒त्यो मदा॑नां॒ मंहि॑ष्ठो मत्स॒दन्ध॑सः। दृ॒ळ्हा चि॑दा॒रुजे॒ वसु॑॥२॥**

**कः। त्वा॒। स॒त्यः। मदा॑नाम्। मंहि॑ष्ठः। म॒त्स॒त्। अन्ध॑सः। दृ॒ळ्हा। चि॒त्। आ॒ऽरुजे॑। वसु॑॥२॥**

**पदार्थः-(कः) (त्वा) (सत्यः)** सत्सु साधुः **(मदानाम्)** आनन्दानाम् **(मंहिष्ठः)** अतिशयेन महान् **(मत्सत्)** आनन्दयेत् **(अन्धसः)** अन्नादेः **(दृळहा)** दृढानि **(चित्)** अपि **(आरुजे)** समन्ताद्रोगाय **(वसु)** धनानि॥२॥

**अन्वयः**-हे मनुष्य! मदानामन्धसो मंहिष्ठः सत्यस्त्वा मत्सदारुजे दृळहा वसु चित्को भवेत्॥२॥

**भावार्थः**-यदि मनुष्या ब्रह्मचर्यादिधर्म्माचरणेन यथावदाहारविहारौ कुर्युस्तर्हि तेषु कदाचिद्दारिद्र्यं रोगश्च नैवागच्छेत्॥२॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-हे मनुष्य **(मदानाम्)** आनन्दों और **(अन्धसः)** अन्न आदि के सम्बन्ध में **(मंहिष्ठः)** अत्यन्त बड़ा **(सत्यः)** श्रेष्ठों में श्रेष्ठ **(त्वा)** आपको **(मत्सत्)** आनन्द देवे और **(आरुजे)** सब प्रकार से रोग के लिये **(दृळ्हा)** दृढ़ **(वसु)** धनरूप **(चित्)** भी **(कः)** कौन होवे अर्थात् रोग के दूर करने को अत्यन्त संलग्न कौन हो॥२॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य ब्रह्मचर्य्य आदि धर्म्माचरण से यथायोग्य आहार और विहार करें तो उनमें कभी दारिद्र्य और रोग नहीं आवे॥२॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अभी षु णः सखीनामविता जरितॄणाम्। शतं भवास्यूतिभिः॥३॥**

**अभि। सु। नः। सखीनाम्। अविता। जरितॄणाम्। शतम्। भवासि। ऊतिऽभिः॥३॥**

**पदार्थः**-**(अभि)** आभिमुख्ये। अत्र **संहितायामि**ति दीर्घः। **(सु)** **(नः)** अस्माकम् **(सखीनाम्)** सर्वसुहृदाम् **(अविता)** रक्षकः **(जरितॄणाम्)** सद्विद्याविदाम् **(शतम्)** **(भवासि)** **(ऊतिभिः)** रक्षणादिभिः॥३॥

**अन्वयः**-हे राजन्! यस्त्वमूतिभिर्जरितॄणां सखीनां नश्शतं भवासि तस्मादभि स्वविता भव॥३॥

**भावार्थः**-ये मनुष्याः स्वात्मवत्सुखदुःखहानिलाभानन्येषामपि विज्ञाय परप्रियाय वर्त्तेरंस्तेष्वन्येऽपि मैत्रीं कुर्य्युः॥३॥

**पदार्थः**-हे राजन्! जो आप **(ऊतिभिः)** रक्षणादिकों से **(जरितॄणाम्)** श्रेष्ठ विद्याओं के जानने वाले **(सखीनाम्)** सब के मित्र **(नः)** हम लोगों के **(शतम्)** सैकड़े **(भवासि)** होते हो इससे **(अभि)** सम्मुख **(सु)** उत्तम प्रकार **(अविता)** रक्षक हूजिये॥३॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य अपने आत्मा के सदृश सुख-दुःख, हानि और लाभ को औरों के भी जानकर दूसरे के प्रिय के लिये वर्त्ताव करें, उनमें अन्य जन भी मित्रता करें॥३॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अभी न आ ववृत्स्व चक्रं न वृत्तमर्वतः। नियुद्भिश्चर्षणीनाम्॥४॥**

**अभि। नः। आ। ववृत्स्व। चक्रम्। न। वृत्तम्। अर्वतः। नियुत्ऽभिः। चर्षणीनाम्॥४॥**

**पदार्थः**-**(अभि)** अत्र **संहितायामि**ति दीर्घः। **(नः)** अस्मान् **(आ)** **(ववृत्स्व)** आवर्तय **(चक्रम्)** **(न)** इव **(वृत्तम्)** सर्वतो दृढम् **(अर्वतः)** अश्वान् **(नियुद्भिः)** वायुगतिभिरिव वेगैः **(चर्षणीनाम्)** मनुष्याणाम्॥४॥

**अन्वयः**-हे राजँस्त्वं नोऽस्मान् वृत्तं चक्रं न सत्कर्मस्वभ्याववृत्स्व नियुद्भिः सह चर्षणीनामर्वतश्चाभ्याववृत्स्व॥४॥

**भावार्थः**-हे राजन्! भवान्सत्ये न्याये वर्तित्वास्मानपि वर्तयतु॥४॥

**पदार्थः**-हे राजन्! आप **(नः)** हम लोगों को **(वृत्तम्)** सब प्रकार से दृढ़ **(चक्रम्)** चक्र के **(न)** सदृश श्रेष्ठ कर्म्मों में **(अभि, आ, ववृत्स्व)** सब ओर से अच्छे प्रकार वर्त्ताइये **(नियुद्भिः)** और वायु के गमनों के सदृश वेगों के साथ **(चर्षणीनाम्)** मनुष्यों के **(अर्वतः)** घोड़ों को वर्त्ताईये॥४॥

**भावार्थः**-हे राजन्! आप सत्य न्याय में वर्त्ताव करके हम लोगों का भी उसी के अनुसार वर्त्ताव कराइये॥४॥

**पुना राजप्रजाधर्मविषयमाह॥**

फिर राजप्रजाधर्मविषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**प्रवता हि क्रतूनामा हा पदेव गच्छसि। अभक्षि सूर्ये सचा॥५॥२४॥**

**प्रऽवता। हि। क्रतूनाम्। आ। ह। पदाऽइव। गच्छसि। अभक्षि। सूर्ये। सचा॥५॥**

**पदार्थः**-**(प्रवता)** निम्नेन मार्गेण **(हि)** यतः **(क्रतूनाम्)** प्रज्ञानां कर्मणां वा **(आ)** **(ह)** खलु। अत्र **निपातस्य चे**ति दीर्घः। **(पदेव)** पद्भ्यामिव **(गच्छसि)** **(अभक्षि)** सेवे **(सूर्ये)** सवितरि **(सचा)** सत्येन॥५॥

**अन्वयः**-हे राजँस्त्वं हि क्रतूनां प्रवता मार्गेण पदेवागच्छसि तस्माद्ध तथैव सचा सहाहं सूर्य्ये प्रकाश इव धर्म्ममभक्षि॥५॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यथाप्ता विद्वांसः शुद्धेन मार्गेण गत्वा पूर्णां प्रज्ञां प्राप्नुवन्ति तथैवेतरेऽपि वर्त्तित्वा प्रज्ञां प्राप्नुवन्तु॥५॥

**पदार्थः**-हे राजन्! आप **(हि)** जिससे **(क्रतूनाम्)** बुद्धि वा कर्म्मों के **(प्रवता)** नीचे मार्ग से **(पदेव)** पैरों के सदृश **(आ, गच्छसि)** आते हो इससे **(ह)** निश्चय वैसे ही **(सचा)** सत्य के साथ मैं **(सूर्य्ये)** सूर्य्ये में प्रकाश के सदृश धर्म्म का **(अभक्षि)** सेवन करता हूँ॥५॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जैसे श्रेष्ठ विद्वान् लोग शुद्ध मार्ग से जाकर पूर्ण बुद्धि को प्राप्त होते हैं, वैसा ही अन्य जन भी वर्त्ताव करके बुद्धि को प्राप्त हों॥५॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**सं यत्त इन्द्र मन्यवः सं चक्राणि दधन्विरे। अध त्वे अध सूर्ये॥६॥**

**सम्। यत्। ते। इन्द्र। मन्यवः। सम्। चक्राणि। दधन्विरे। अध। त्वे इति। अध। सूर्ये॥६॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**सम्**) (**यत्**) ये (**ते**) तव (**इन्द्र**) जीव (**मन्यवः**) क्रोधादयो व्यवहाराः (**सम्**) (**चक्राणि**) चक्रवद्वर्त्तमानानि कर्माणि (**दधन्विरे**) धरन्ति (**अध**) (**त्वे**) त्वयि (**अध**) (**सूर्ये**) सवितरि॥६॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! ते यन्मन्यवश्चक्राणि संदधन्विरेऽध त्वे धनं दधत्यध ते सूर्य्ये प्रकाश इव प्रतापं संदधन्विरे॥६॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे मनुष्य! यदि त्वं दुष्टाचारं प्रति क्रोधं श्रेष्ठाचारं प्रत्याह्लादं कुर्यास्तर्हि त्वं सूर्य्य इव प्रतापी भवेः॥६॥

**पदार्थः**-हे (**इन्द्र**) जीव (**ते**) तेरे (**यत्**) जो (**मन्यवः**) क्रोध आदि व्यवहार (**चक्राणि**) चक्र के सदृश वर्तमान कर्म्मों को (**सम्, दधन्विरे**) धारण करते हैं (**अध**) अनन्तर (**त्वे**) आप में धन को धारण करते (**अध**) इसके अनन्तर वे (**सूर्य्ये**) सूर्य्य में प्रकाश के सदृश प्रताप को (**सम्**) धारण करते हैं॥६॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे मनुष्य! जो तू दुष्ट आचरण करने वाले पर क्रोध और श्रेष्ठ आचरण करने वाले के प्रति हर्ष करे तो सूर्य्य के सदृश प्रतापी होवे॥६॥

**पुनः प्रतिज्ञापालकराजप्रजाधर्मविषयमाह॥**

फिर प्रतिज्ञा पालने वाले राजप्रजाधर्मविषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**उत स्मा हि त्वामाहुरिन्मघवानं शचीपते। दातारमविदीधयुम्॥७॥**

**उत। स्म। हि। त्वाम्। आहुः। इत्। मघऽवानम्। शचीऽपते। दातारम्। अविऽदीधयुम्॥७॥**

**पदार्थः**-(**उत**) अपि (**स्मा**) एव। अत्र **निपातस्य चेति** दीर्घः। (**हि**) यतः (**त्वाम्**) (**आहुः**) कथयन्ति (**इत्**) एव (**मघवानम्**) परमपूजितबहुधनम् (**शचीपते**) वाचः प्रज्ञायाः पालक (**दातारम्**) (**अविदीधयुम्**) द्यूतादिदुष्टकर्म्मरहितम्॥७॥

**अन्वयः**-हे शचीपते राजन्! हि त्वां मघवानमविदीधयुं दातारं स्म विद्वांस आहुरुतापि सेवेरनतस्तमिदेव वयमपि सेवेमहि॥७॥

**भावार्थः**-हे विद्वांसो! यदि यूयं धर्म्याणि कर्माण्याचरत तर्हि युष्मास्वैश्वर्यं दातृत्वं च कदाचिन्न हीयेत॥७॥

**पदार्थः**-हे (**शचीपते**) वाणी और बुद्धि के पालन करने वाले राजन्! (**हि**) जिससे (**त्वाम्**) आपको (**मघवानम्**) अत्यन्त श्रेष्ठ बहुत धन वाले (**अविदीधयुम्**) जुआ आदि दुष्ट कर्म्मों से रहित (**दातारम्**) देनेवाला (**स्म**) ही विद्वान् लोग (**आहुः**) कहते हैं (**उत**) और सेवा भी करें, इससे (**इत्**) उन्हीं को हम लोग भी सेवें॥७॥

**भावार्थः**-हे विद्वानो! जो आप लोग धर्म्मयुक्त कर्म्मों का आचरण करें तो आप लोगों में ऐश्वर्य्य और दानकर्म्म कभी न नष्ट होवें॥७॥

**पुनर्न्यायपालनराजप्रजाधर्मविषयमाह॥**



www.9009.co.in

फिर न्यायपालन राजप्रजाधर्मविषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**उत स्मा सद्य इत्परि शशमानाय सुन्वते। पुरू चिन्मंहसे वसु॥८॥**

**उत। स्म। सद्यः। इत्। परि। शशमानाय। सुन्वते। पुरु। चित्। मंहसे। वसु॥८॥**

**पदार्थः**-(**उत**) अपि (**स्मा**) एव (**सद्यः**) (**इत्**) (**परि**) सर्वतः (**शशमानाय**) प्रशंसिताय (**सुन्वते**) पुरुषार्थेनाभिषवं कुर्वते (**पुरू**) बहु। अत्र **संहितायामि**ति दीर्घः। (**चित्**) अपि (**मंहसे**) वर्धयसि (**वसु**) धनम्॥८॥

**अन्वयः**-हे विद्वन्! यतस्त्वं शशमानाय सुन्वते चित् पुरू वसु परि मंहसे तस्मात्त्वं सद्य उत स्मेदैश्वर्य्यं प्राप्नोति॥८॥

**भावार्थः**-ये मनुष्या आप्तानां सत्कारं कुर्वन्ति ते तूर्णं गुणवन्तो भूत्वैश्वर्य्ययुक्ता भवेयुः॥८॥

**पदार्थः**-हे विद्वन्! जिससे कि आप (**शशमानाय**) प्रशंसित और (**सुन्वते**) पुरुषार्थ से ओषधियों के रस को उत्पन्न करते हुए के लिये (**चित्**) भी (**पुरू**) बहुत (**वसु**) धन को (**परि**) सब प्रकार (**मंहसे**) बढ़वाते हो इससे आप (**सद्यः**) शीघ्र (**उत**) फिर (**स्म**) ही (**इत्**) निश्चित ऐश्वर्य्य को प्राप्त होते हो॥८॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य यथार्थवक्ता पुरुषों का सत्कार करते हैं, वे शीघ्र गुणवान् होकर ऐश्वर्य्य से युक्त होवें॥८॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**नहि ष्मा ते शतं चन राधो वरन्त आमुरः। न च्यौत्नानि करिष्यतः॥९॥**

**नहि। स्म। ते। शतम्। चन। राधः। वरन्ते। आऽमुरः। न। च्यौत्नानि। करिष्यतः॥९॥**

**पदार्थः**-(**नहि**) निषेधे (**स्मा**) एव। अत्र **निपातस्य चे**ति दीर्घः। (**ते**) तव (**शतम्**) असंख्यम् (**चन**) अपि (**राधः**) धनम् (**वरन्ते**) स्वीकुर्वन्ति (**आमुरः**) समन्ताद् रोगकारिणः (**न**) (**च्यौत्नानि**) बलानि (**करिष्यतः**)॥९॥

**अन्वयः**-हे राजन्! च्यौत्नानि करिष्यतस्ते शतं राधश्चनामुरो नहि वरन्ते न च विजयं स्माप्नुवन्ति॥९॥

**भावार्थः** हे राजन्! यदि भवान् यथावन्न्यायशीलो भवेत्तर्हि तव धनं बलं कदाचिन्न नश्येच्छतशो वर्द्धेत॥९॥

**पदार्थः**-हे राजन्! (**च्यौत्नानि**) बलों को (**करिष्यतः**) करते हुए (**ते**) आपके (**शतम्**) असंख्य (**राधः**) धन को (**चन**) भी (**आमुरः**) सब प्रकार रोग करने वाले (**नहि**) नहीं (**वरन्ते**) स्वीकार करते हैं (**न**) और न विजय को (**स्म**) ही प्राप्त होते हैं॥९॥

**भावार्थः**-हे राजन्! जो आप यथायोग्य न्यायकारी होवें तो आपका धन और बल कभी न नष्ट होवे और सैकड़ों प्रकार बढ़े॥९॥



www.9009.co.in

पुनस्तमेव विषयमाह॥

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अ॒स्माँ अ॑वन्तु ते श॒तम॒स्मान्त्स॒हस्र॑मू॒तय॑:। अ॒स्मान् विश्वा॑ अ॒भिष्ट॑य:॥१०॥२५॥**

**अ॒स्मान्। अ॒व॒न्तु॒। ते॒। श॒तम्। अ॒स्मान्। स॒हस्र॑म्। ऊ॒तय॑:। अ॒स्मान्। विश्वा॑:। अ॒भिष्ट॑य:॥१०॥**

**पदार्थ:**-(**अस्मान्**) (**अवन्तु**) (**ते**) तव (**शतम्**) असंख्या: (**अस्मान्**) (**सहस्रम्**) बहुविधा: (**ऊतय:**) रक्षा: (**अस्मान्**) (**विश्वा:**) सर्वा: (**अभिष्टय:**) इष्टय इच्छा:॥१०॥

**अन्वय:**-हे राजन्! ते सहस्रमूतय: शतं विश्वा अभिष्टयोऽस्मानवन्त्वस्मान् वर्द्धयन्त्वस्मानानन्दयन्तु॥१०॥

**भावार्थ:**-हे राजँस्तदैव त्वं सत्यो राजा भवेर्यदा स्वात्मवत्पितृवदस्मान् पालयित्वा वर्द्धयित्वाऽऽनन्दये:॥१०॥

**पदार्थ:**-हे राजन्! (**ते**) आपकी (**सहस्रम्**) अनेक प्रकार की (**ऊतय:**) रक्षायें (**शतम्**) संख्यारहित (**विश्वा:**) सम्पूर्ण (**अभिष्टय:**) इच्छायें (**अस्मान्**) हम लोगों की (**अवन्तु**) रक्षा और (**अस्मान्**) हम लागों की वृद्धि करें (**अस्मान्**) तथा हम लोगों को आनन्द देवें॥१०॥

**भावार्थ:**-हे राजन्! तभी आप सत्य राजा होवें, जब अपने और पिता के सदृश हम लोगों का पालन और वृद्धि करा के आनन्द देवें॥१०॥

पुनस्तमेव विषयमाह॥

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अ॒स्माँ इ॒हा वृ॑णीष्व स॒ख्या॑य स्व॒स्तये॑। म॒हो रा॒ये दि॒वित्म॑ते॥११॥**

**अ॒स्मान्। इ॒ह। वृ॒णी॒ष्व॒। स॒ख्याय॑। स्व॒स्तये॑। म॒ह:। रा॒ये। दि॒वित्म॑ते॥११॥**

**पदार्थ:**-(**अस्मान्**) (**इहा**) संसारे राज्ये वा। अत्र **संहितायामि**ति दीर्घ:। (**वृणीष्व**) स्वीकुर्या: (**सख्याय**) मित्रत्वाय (**स्वस्तये**) सुखाय (**मह:**) महते (**राये**) धनाय (**दिवित्मते**) विद्याधर्म्मन्यायप्रकाशिताय॥११॥

**अन्वय:**-हे इन्द्र! राजँस्त्वमिहास्मान् स्वस्तये महो दिवित्मते सख्याय राये च वृणीष्व॥११॥

**भावार्थ:**-हे राजन्! यथा भवानस्मासु मैत्रीं रक्षति तथा वयमपि त्वयि सदैव सखाय: सन्तो वर्त्तेमहि॥११॥

**पदार्थ:**-हे तेजस्वी राजन्! आप (**इह**) इस संसार वा राज्य में (**अस्मान्**) हम लोगों को (**स्वस्तये**) सुख के लिये (**मह:**) बड़े (**दिवित्मते**) विद्या, धर्म्म और न्याय से प्रकाशित (**सख्याय**) मित्रत्व के लिये और (**राये**) धन के लिये (**वृणीष्व**) स्वीकार करो॥११॥

**भावार्थ:**-हे राजन्! जैसे आप हम लोगों में मित्रता रखते हैं, वैसे हम लोग भी आप में सदा ही मित्र हुए वर्त्ताव करें॥११॥



www.9009.co.in

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

## अ॒स्माँ अ॑विड्ढि वि॒श्वहेन्द्र रा॒या परी॑णसा। अ॒स्मान् विश्वा॑भिरू॒तिभिः॑॥ १२॥

**अ॒स्मान्। अ॒वि॒ड्ढि॒। वि॒श्वहा॑। इन्द्र॑। रा॒या। परी॑णसा। अ॒स्मान्। विश्वा॑भिः। ऊ॒तिऽभिः॑॥ १२॥**

**पदार्थः**-(**अस्मान्**) (**अविड्ढि**) प्रवेशय (**विश्वहा**) सर्वाणि दिनानि (**इन्द्र**) परमैश्वर्य्ययुक्त राजन् (**राया**) धनेन (**परीणसा**) बहुविधेन (**अस्मान्**) (**विश्वाभिः**) अखिलाभिः (**ऊतिभिः**) रक्षादिभिः क्रियाभिः॥ १२॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! त्वं विश्वहा परीणसा राया सहास्मानविड्ढि विश्वाभिरूतिभि-रस्मानविड्ढि॥ १२॥

**भावार्थः**-स एवोत्तमो राजा राजपुरुषाश्च ये सर्वतो रक्षणेन प्रजा धनाढ्याः कुर्य्युः॥ १२॥

**पदार्थः**-हे (**इन्द्र**) अत्यन्त ऐश्वर्य्य से युक्त राजन्! आप (**विश्वहा**) सम्पूर्ण दिनों को (**परीणसा**) अनेक प्रकार के (**राया**) धन के साथ (**अस्मान्**) हम लोगों को (**अविड्ढि**) प्रवेश कराइये और (**विश्वाभिः**) सम्पूर्ण (**ऊतिभिः**) रक्षा आदि क्रियाओं से हम लोगों को प्रवेश कराईये अर्थात् युक्त करिये॥ १२॥

**भावार्थः**-वही उत्तम राजा और राजपुरुष हैं कि जो सब प्रकार रक्षा से प्रजा को धनाढ्य करें॥ १२॥

**पुनः प्रजावर्द्धनप्रकारेण राजप्रजाधर्मविषयमाह॥**

फिर प्रजावृद्धिप्रकार से राजप्रजाधर्म विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

## अ॒स्मभ्यं॒ ताँ अपा॑ वृधि व्र॒जाँ अस्ते॑व॒ गोम॑तः। नवा॑भिरिन्द्रो॒तिभिः॑॥ १३॥

**अ॒स्मभ्य॑म्। तान्। अप॑। वृ॒धि॒। व्र॒जान्। अस्ता॑ऽइव। गोऽम॑तः। नवा॑भिः। इ॒न्द्र॒। ऊ॒तिऽभिः॑॥ १३॥**

**पदार्थः**-(**अस्मभ्यम्**) (**तान्**) (**अपा**) अत्र **निपातस्य चे**ति दीर्घः। (**वृधि**) वर्धय (**व्रजान्**) व्रजन्ति गावो येषु तान् (**अस्तेव**) गृहाणीव (**गोमतः**) बह्व्यो गावो विद्यन्ते येषु तान् (**नवाभिः**) नूतनाभिः (**इन्द्र**) परमैश्वर्य्यप्रद राजन् (**ऊतिभिः**) रक्षादिभिः॥ १३॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! त्वं नवाभिरूतिभिरस्मभ्यं गोमतो व्रजाँस्तानस्तेव वृधि दुःखान्यपावृधि॥ १३॥

**भावार्थः**-हे राजन्! यथा गोपाला गा वर्धयित्वा दुग्धादिभिराढ्या भूत्वाऽऽनन्दन्ति तथैवाऽऽस्मान् वर्धयित्वाऽढ्यो भूत्वा सदैवानन्द॥ १३॥

**पदार्थः**-हे (**इन्द्र**) परम ऐश्वर्य्य के देनेवाले राजन्! आप (**नवाभिः**) नवीन (**ऊतिभिः**) रक्षादिकों से (**अस्मभ्यम्**) हम लोगों के लिये (**गोमतः**) जिनमें बहुत गौएँ विद्यमान और (**व्रजान्**) बहुत गौएँ जातीं (**तान्**) उन गोड़ों (**अस्तेव**) गृहों के समान बढ़ाइये और दुःखों को (**अपा, वृधि**) न्यून कीजिये, नष्ट कीजिये॥ १३॥



www.9009.co.in

**भावार्थ:**-हे राजन्! जैसे गोपाल गौओं को बढ़ा के दुग्धादिकों से आढ्य होते हैं, वैसे ही हम लोगों की वृद्धि करो और आढ्य होकर सदैव आनन्द कीजिये॥१३॥

**पुना राजप्रजाधर्मविषयमाह॥**

फिर राजाप्रजा धर्मविषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अस्माकं धृष्णुया रथो द्युमाँ इन्द्रानपच्युतः। गव्युरश्वयुरीयते॥१४॥**

**अस्माकम्। धृष्णुऽया। रथः। द्युऽमान्। इन्द्र। अनपऽच्युतः। गव्युः। अश्वऽयुः। ईयते॥१४॥**

**पदार्थः**-**(अस्माकम्)** **(धृष्णुया)** दृढत्वेन युक्तः **(रथः)** सद्यो गमयिता विमानादियानविशेषः **(द्युमान्)** बहुकलायन्त्रादिप्रकाशित **(इन्द्र)** राजन्! **(अनपच्युतः)** अपचयरहितः **(गव्युः)** बहवो गावो विद्यन्ते यस्मिन् सः **(अश्वयुः)** बह्वश्वबलयुक्तः **(ईयते)** गच्छति॥१४॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! योऽस्माकं धृष्णुया द्युमाननपच्युतो गव्युरश्वयू रथ ईयते तेन सह शत्रून् विजयस्व॥१४॥

**भावार्थः**-राजा प्रजाजनाश्चैवं मन्येरन् ये राज्ञः पदार्थास्तेऽस्माकं येऽस्माकं ते च राज्ञस्सन्तीति॥१४॥

**पदार्थः**-हे **(इन्द्र)** राजन्! जो **(अस्माकम्)** हम लोगों को **(धृष्णुया)** दृढ़ता से युक्त **(द्युमान्)** बहुत कलायन्त्र आदि से प्रकाशित **(अनपच्युतः)** घटने से रहित **(गव्युः)** बहुत गौओं और **(अश्वयुः)** बहुत घोड़ों के बल से युक्त **(रथः)** शीघ्र पहुँचानेवाला विमान आदि विशेष वाहन **(ईयते)** जाता है, उसके साथ शत्रुओं को जीतिये॥१४॥

**भावार्थः**-राजा और प्रजाजन ऐसा मानें कि जो राजा के पदार्थ वे हम लोगों के और जो हम लोगों के वे राजा के हैं॥१४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अस्माकमुत्तमं कृधि श्रवो देवेषु सूर्य। वर्षिष्ठं द्यामिवोपरि॥१५॥२६॥**

**अस्माकम्। उत्ऽतमम्। कृधि। श्रवः। देवेषु। सूर्य। वर्षिष्ठम्। द्याम्ऽइव। उपरि॥१५॥२६॥**

**पदार्थः**-**(अस्माकम्)** **(उत्तमम्)** अतिश्रेष्ठम् **(कृधि)** कुरु **(श्रवः)** अन्नादिकं श्रवणं वा **(देवेषु)** विद्वत्सु **(सूर्य्य)** सूर्य इव वर्त्तमान **(वर्षिष्ठम्)** अतिशयेन वृद्धम् **(द्यामिव)** प्रकाशमिव **(उपरि)** ऊर्ध्वं वर्त्तमानम्॥१५॥

**अन्वयः**-हे सूर्य्य राजँस्त्वमुपरि द्यामिवाऽस्माकमुत्तमं वर्षिष्ठं श्रवो देवेषु कृधि॥१५॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यथाऽऽकाशे सूर्य्यो महानस्ति तथैव विद्याविनयोन्नत्या सर्वोत्कृष्टमैश्वर्य्यं जनयतेति॥१५॥

अत्र राजप्रजाधर्म्मवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥



www.9009.co.in

**इत्येकत्रिंशत्तमं सूक्तं षड्विंशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे **(सूर्य्य)** सूर्य्य के सदृश वर्त्तमान राजन्! आप **(उपरि)** ऊपर वर्त्तमान **(द्यामिव)** प्रकाश के सदृश **(अस्माकम्)** हम लोगों के **(उत्तमम्)** अत्यन्त श्रेष्ठ **(वर्षिष्ठम्)** अत्यन्त बड़े हुए **(श्रवः)** अन्न आदि वा श्रवण को **(देवेषु)** विद्वानों में **(कृधि)** करिये॥१५॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जैसे आकाश में सूर्य्य बड़ा है, वैसे ही विद्या और विनय की उन्नति से उत्तम ऐश्वर्य्य को उत्पन्न करो॥१५॥

इस सूक्त में राजा और प्रजा के धर्म्म वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह इकतीसवां सूक्त और छब्बीसवां वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

**अथ चतुर्विंशत्यृचस्य द्वात्रिंशत्तमस्य सूक्तस्य वामदेव ऋषिः। १-२२ इन्द्रः। २३, २४ इन्द्राश्वौ देवते। १, ८-१०, १४, १६, १८, २२, २३ गायत्री। २, ४, ७ विराड्गायत्री। ३, ५, ६, १२, १३, १५, १९-२१ निचृद्गायत्री। ११ पिपीलिकामध्या गायत्री छन्दः। १७ पादनिचृद्गायत्री। २४ स्वराडार्ची गायत्री च छन्दः। षड्जः स्वरः॥**

**अथेन्द्रपदवाच्यराजप्रजागुणानाह॥**

अब चौबीस ऋचा वाले बत्तीसवें सूक्त का आरम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में इन्द्रपदवाच्य राजप्रजागुणों को कहते हैं॥

**आ तू न इन्द्र वृत्रहन्नस्माकमर्धमा गहि। महान् महीभिरूतिभिः॥ १॥**

**आ। तु। नः। इन्द्र। वृत्रऽहन्। अस्माकम्। अर्धम्। आ। गहि। महान्। महीभिः। ऊतिऽभिः॥ १॥**

**पदार्थः**-(**आ**) समन्तात् (**तु**) पुनः (**नः**) अस्मान् (**इन्द्र**) राजन्! (**वृत्रहन्**) यो वृत्रं हन्ति सूर्यस्तद्वत् (**अस्माकम्**) (**अर्द्धम्**) वर्धनम् (**आ, गहि**) आगच्छ (**महान्**) (**महीभिः**) महतीभिः (**ऊतिभिः**) रक्षादिभिः॥ १॥

**अन्वयः**-हे वृत्रहन्निन्द्र! त्वमस्माकमर्द्धमागहि महीभिरूतिभिस्सह महान् सन्नोऽस्माँस्त्वागहि॥ १॥

**भावार्थः**-हे राजन्! यदि भवानस्माकं वृद्धिं कुर्यात्तर्हि वयं भवन्तमति वर्धयेम॥ १॥

**पदार्थः**-हे (**वृत्रहन्**) मेघ को नाश करनेवाले सूर्य के सदृश (**इन्द्र**) राजन्! आप (**अस्माकम्**) हम लोगों की (**अर्द्धम्**) वृद्धि को (**आ, गहि**) प्राप्त हूजिये और (**महीभिः**) बड़ी (**ऊतिभिः**) ऊतियों अर्थात् रक्षादिकों के साथ (**महान्**) बढ़े हुए (**नः**) हम लोगों को (**तु**) फिर (**आ**) प्राप्त होओ॥ १॥

**भावार्थः**-हे राजन्! जो आप हम लोगों की वृद्धि करें तो हम लोग आपकी अतिवृद्धि करें॥ १॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**भृमिश्चिद् घासि तूतुजिरा चित्र चित्रिणीष्वा। चित्रं कृणोष्यूतये॥ २॥**

**भृमिः। चित्। घ। असि। तूतुजिः। आ। चित्र। चित्रिणीषु। आ। चित्रम्। कृणोषि। ऊतये॥ २॥**

**पदार्थः**-(**भृमिः**) भ्रमणशीलः (**चित्**) अपि (**घ**) (**असि**) अभीष्टकारी भवसि (**तूतुजिः**) शीघ्रकारी (**आ**) (**चित्र**) आश्चर्यगुणकर्मस्वभाव (**चित्रिणीषु**) अद्भुतासु सेनासु (**आ**) (**चित्रम्**) अद्भुतम् (**कृणोषि**) (**ऊतये**) रक्षाद्याय॥ २॥

**अन्वयः**-हे चित्र! तूतुजिर्भृमिस्त्वमूतये चित्रिणीषु चित्रमाकृणोषि चिदाघासि तस्मात् सत्कर्त्तव्योऽसि॥ २॥

**भावार्थः**-हे राजन्! यदि भवान्सर्वत्र भ्रमित्वा सद्यो न्यायं कृत्वा सर्वस्य रक्षां कुर्यात्तर्हि भवत आश्चर्याः प्रजा अद्भुतमैश्वर्यमुन्नयेयुः॥ २॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-हे **(चित्र)** आश्चर्य्यवान् गुण, कर्म स्वभावयुक्त **(तूतुजिः)** शीघ्रकारी **(भृमिः)** घूमने वाले आप **(ऊतये)** रक्षा आदि के लिये **(चित्रिणीषु)** अद्भुत सेनाओं में **(चित्रम्)** अद्भुत व्यवहार को **(आ, कृणोषि)** करते हो **(चित्)** और **(आ, घ, असि)** अभीष्टकारी होते हो, इससे सत्कार करने योग्य हो॥२॥

**भावार्थः**-हे राजन्! जो आप सब जगह घूमके शीघ्र न्याय करके सब की रक्षा करें तो आपकी आश्चर्यजनक प्रजा अद्भुत ऐश्वर्य की उन्नति करे॥२॥

**पुनस्तमेव राजप्रजाविषयमाह॥**

फिर उसी राजप्रजाविषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**दुभ्रेभिश्चिच्छशीयांसं हंसि व्राधन्तमोजसा। सखिभिर्ये त्वे सचा॥३॥**

**दुभ्रेभिः। चित्। शशीयांसम्। हंसि। व्राधन्तम्। ओजसा। सखिऽभिः। ये। त्वे इति। सचा॥३॥**

**पदार्थः**-**(दभ्रेभिः)** अल्पैर्ह्रस्वैर्वा **(चित्)** अपि **(शशीयांसम्)** धर्ममुत्प्लवमानम् **(हंसि)** **(व्राधन्तम्)** व्याधमिव प्रजाहिंसकम् **(ओजसा)** बलेन **(सखिभिः)** सुहृद्भिः **(ये)** **(त्वे)** त्वयि **(सचा)**॥३॥

**अन्वयः**-हे सेनेश राजन्! यदि त्वं दभ्रेभिः सखिभिश्चिदोजसा शशीयांसं व्राधन्तं हंसि ये च त्वे सचा सत्येन वर्त्तन्ते तान् रक्षसि तर्हि विजयं कथन्न प्राप्नोसि॥३॥

**भावार्थः**-यदि धार्मिका अल्पा अपि परस्परं सुहृदो भूत्वा शत्रुभिस्सह युद्धेरँस्तर्हि बहूनप्यधर्माचारिणो विजयेरन्॥३॥

**पदार्थः**-हे सेनापति राजन्! जो आप **(दभ्रेभिः)** थोड़े वा छोटे **(सखिभिः)** मित्रों से **(चित्)** भी **(ओजसा)** बल से **(शशीयांसम्)** धर्म्म के उल्लङ्घन करने और **(व्राधन्तम्)** बहिलिये के सदृश प्रजा के नाश करने वाले का **(हंसि)** नाश करते हो और **(ये)** जो **(त्वे)** आप में **(सचा)** सत्य से वर्त्तमान हैं, उनकी रक्षा करते हो तो विजय को कैसे न प्राप्त होते हो॥३॥

**भावार्थः**-जो धार्मिक थोड़े भी परस्पर मित्र होकर शत्रुओं के साथ युद्ध करें तो बहुत अधर्म्माचारियों को जीतें॥३॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**वयमिन्द्र त्वे सचा वयं त्वाभि नोनुमः। अस्माँअस्माँ इदुदव॥४॥**

**वयम्। इन्द्र। त्वे। इति। सचा। वयम्। त्वा। अभि। नोनुमः। अस्मान्ऽअस्मान्। इत्। उत्। अव॥४॥**

**पदार्थः**-**(वयम्)** **(इन्द्र)** राजन् **(त्वे)** त्वयि **(सचा)** सत्याचारेण **(वयम्)** **(त्वा)** त्वाम् **(अभि, नोनुमः)** भृशं नताः स्मः **(अस्मानस्मान्)** **(इत्)** एव **(उत्)** **(अव)** रक्ष॥४॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे इन्द्र! ये वयं त्वे सचा वर्त्तेमहि वयं त्वाभिनोनुमस्तानस्मानस्मान् सततमिदुदव॥४॥

**भावार्थः**-हे राजन्! यथा वयं त्वयि सत्यभावेन वर्त्तेमहि प्रीत्या भवन्तं सत्कुर्याम तथैव भवानस्मान्त्सततं वर्धयेत्॥४॥

**पदार्थः**-हे **(इन्द्र)** राजन्! जो **(वयम्)** हम लोग **(त्वे)** आप में **(सचा)** सत्य आचरण से वर्त्ताव करें और **(वयम्)** हम लोग **(त्वा)** आपको **(अभि, नोनुमः)** सब प्रकार निरन्तर नमस्कार करते हैं, उन **(अस्मानस्मान्)** हम लोगों की हम लोगों की निरन्तर **(इत्, उत)** निश्चित ही **(अव)** रक्षा करो॥४॥

**भावार्थः**-हे राजन्! जैसे हम लोग आप में सत्यभाव से वर्त्ताव और प्रीति से आप का सत्कार करें, वैसे ही आप हम लोगों की निरन्तर वृद्धि करें॥४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**स नश्चित्राभिरद्रिवोऽनवद्याभिरूतिभिः। अनाधृष्टाभिरागहि॥५॥२७॥**

**सः। नः। चित्राभिः। अद्रिऽवः। अनवद्याभिः। ऊतिऽभिः। अनाधृष्टाभिः। आ। गहि॥५॥२७॥**

**पदार्थः**-**(सः)** **(नः)** अस्माकम् **(चित्राभिः)** अद्भुताभिः **(अद्रिवः)** अद्रयो मेघा विद्यन्ते सम्बन्धे यस्य सूर्यस्य तद्वद्वर्त्तमान **(अनवद्याभिः)** प्रशंसनीयाभिः **(ऊतिभिः)** रक्षादिभिः **(अनाधृष्टाभिः)** शत्रुभिर्धर्षितुमयोग्याभिः **(आ, गहि)** प्राप्नुयाः॥५॥

**अन्वयः**-हे अद्रिवो राजन्! स त्वं चित्राभिरनवद्याभिरनाधृष्टाभिरूतिभिः सह नोऽस्मानागहि॥५॥

**भावार्थः**-हे प्रजाजना यथा राजा युष्मान् सर्वतो रक्षेत्तथा यूयमपि राजानं सर्वथा रक्षत॥५॥

**पदार्थः**-हे **(अद्रिवः)** मेघों के सम्बन्ध से युक्त सूर्य्य के सदृश वर्त्तमान राजन्! **(सः)** वह आप **(चित्राभिः)** अद्भुत **(अनवद्याभिः)** प्रशंसा करने योग्य **(अनाधृष्टाभिः)** शत्रुओं से दबाने को नहीं योग्य **(ऊतिभिः)** रक्षादिकों के साथ **(नः)** हम लोगों को **(आ, गहि)** प्राप्त हूजिये॥५॥

**भावार्थः**-हे प्रजाजनो! जैसे राजा आप लोगों की सब प्रकार रक्षा करे, वैसे आप लोग भी राजा की सब प्रकार रक्षा करो॥५॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**भूयामो षु त्वावतः सखाय इन्द्र गोमतः। युजो वाजाय घृष्वये॥६॥**

**भूयामो इति। सु। त्वाऽवतः। सखायः। इन्द्र। गोऽमतः। युजः। वाजाय। घृष्वये॥६॥**

**पदार्थः**-**(भूयामो)** भवेम। अत्र **वाच्छन्दसी**त्यस्योत्वम् **(सु)** शोभने **(त्वावतः)** त्वया रक्षिताः **(सखायः)** सुहृदः **(इन्द्र)** राजन् **(गोमतः)** गावो विद्यन्ते येषान्ते **(युजः)** ये युञ्जते तान् **(वाजाय)** विज्ञानायाऽन्नाय वा **(घृष्वये)** घर्षणाय॥६॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे इन्द्र! त्वावतः सखायो वयं घृष्वये वाजाय गोमतो युजः प्राप्य सुभूयामो॥६॥

**भावार्थः**-हे राजन्! यदि भवान् पृथिव्यादियुक्तानस्मानैश्वर्येण सह योजयेत्तर्हि वयमपि त्वया सह युञ्जीमहि॥६॥

**पदार्थः**-हे **(इन्द्र)** राजन्! **(त्वावतः)** आपसे रक्षित **(सखायः)** मित्र हम लोग **(घृष्वये)** घिसने और **(वाजाय)** विज्ञान वा अन्न के लिये **(गोमतः)** गौओं से युक्त **(युजः)** युक्त होने वालों को प्राप्त होकर **(सु)** सुन्दर **(भूयामो)** होवें॥६॥

**भावार्थः**-हे राजन्! जो आप पृथिवी आदि से युक्त हम लोगों को ऐश्वर्य्य के साथ युक्त करें तो हम लोग भी आपके साथ युक्त हों॥६॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**त्वं ह्येक ईशिष इन्द्र वाजस्य गोमतः। स नो यन्धि महीमिषम्॥७॥**

**त्वम्। हि। एकः। ईशिषे। इन्द्र। वाजस्य। गोऽमतः। सः। नः। यन्धि। महीम्। इषम्॥७॥**

**पदार्थः**-**(त्वम्)** **(हि)** यतः **(एकः)** असहायः **(ईशिषे)** **(इन्द्र)** परमैश्वर्य्ययुक्त विद्वन्! **(वाजस्य)** विज्ञानादियुक्तस्य **(गोमतः)** बहुविधपृथिव्यादिसहितस्य **(सः)** **(नः)** अस्मभ्यम् **(यन्धि)** प्रयच्छ **(महीम्)** महतीम् **(इषम्)** अन्नादिकम्॥७॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! यो ह्येकस्त्वं गोमतो वाजस्येशिषे स नो महीमिषं यन्धि॥७॥

**भावार्थः**-यो विद्वान् पुरुषार्थेन महदैश्वर्य्यं प्राप्यान्येभ्यो ददाति स एव सर्वेषामीश्वरो भवति॥७॥

**पदार्थः**-हे **(इन्द्र)** अत्यन्त ऐश्वर्य से युक्त विद्वान् जो **(हि)** जिससे **(एकः)** सहायरहित **(त्वम्)** आप **(गोमतः)** बहुत प्रकार की पृथिवी आदि के सहित **(वाजस्य)** विज्ञान आदि से युक्त जनसमूह के **(ईशिषे)** स्वामी हो **(सः)** वह **(नः)** हम लोगों के लिये **(महीम्)** बड़े **(इषम्)** अन्न आदि को **(यन्धि)** दीजिये॥७॥

**भावार्थः**-जो विद्वान् पुरुषार्थ से बड़े ऐश्वर्य्य को प्राप्त होकर अन्य जनों के लिये देता है, वही सब का ईश्वर होता है॥७॥

**अथाध्यापकोपदेशकगुणानाह॥**

अब अध्यापक और उपदेशक के गुणों को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**न त्वा वरन्ते अन्यथा यद्दित्ससि स्तुतो मघम्। स्तोतृभ्य इन्द्र गिर्वणः॥८॥**

**न। त्वा। वरन्ते। अन्यथा। यत्। दित्ससि। स्तुतः। मघम्। स्तोतृऽभ्यः। इन्द्र। गिर्वणः॥८॥**

**पदार्थः**-**(न)** **(त्वा)** त्वाम् **(वरन्ते)** स्वीकुर्वन्ति **(अन्यथा)** **(यत्)** यः **(दित्ससि)** दातुमिच्छसि **(स्तुतः)** प्रशंसितः **(मघम्)** धनम् **(स्तोतृभ्यः)** विद्वद्भ्यः **(इन्द्र)** राजन् **(गिर्वणः)** गीर्भिस्सत्कृत॥८॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे गिर्वण इन्द्र! यद्यः स्तुतः सँस्त्वं स्तोतृभ्यो मघं दित्ससि तं त्वाऽन्यथा मनुष्या न वरन्ते॥८॥

**भावार्थः**-योऽत्र दाता भवति स एव सर्वेषां प्रियो जायते नैव तस्य कोऽपि विरोधी भवति॥८॥

**पदार्थः**-हे **(गिर्वणः)** वाणियों से सत्कार को प्राप्त **(इन्द्र)** राजन्! **(यत्)** जो **(स्तुतः)** प्रशंसा किये गये आप **(स्तोतृभ्यः)** विद्वानों के लिये **(मघम्)** धन को **(दित्ससि)** देने की इच्छा करते हो उन **(त्वा)** आपको **(अन्यथा)** अन्य प्रकार से मनुष्य **(न)** नहीं **(वरन्ते)** स्वीकार करते हैं॥८॥

**भावार्थः**-जो इस संसार में देनेवाला होता है, वही सब का प्रिय होता और कोई भी उसका विरोधी नहीं होता है॥८॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

### अभि त्वा गोतमा गिरानूषत प्र दावने। इन्द्र वाजाय घृष्वये॥९॥

**अभि। त्वा। गोतमाः। गिरा। अनूषत। प्र। दावने। इन्द्र। वाजाय। घृष्वये॥९॥**

**पदार्थः-(अभि) (त्वा)** त्वाम् **(गोतमाः)** प्रशस्ता गोर्वाग्विद्यते येषान्ते। **गौरिति वाङ्नामसु पठितम्।** (निघं०१.११) **(गिरा)** वाण्या **(अनूषत)** स्तुवन्तु **(प्र) (दावने)** दात्रे **(इन्द्र)** राजन् **(वाजाय)** विज्ञानाऽन्नाद्याय **(घृष्वये)** घर्षिताय शुद्धाय॥९॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! ये गोतमा गिरा त्वाभ्यनूषत वाजाय घृष्वये दावने प्राऽनूषत तांस्त्वं प्रशंस॥९॥

**भावार्थः**-यस्य प्रशंसां विद्वांसः कुर्वन्ति स एव प्रशंसितो मन्तव्यः॥९॥

**पदार्थः**-हे **(इन्द्र)** राजन्! **(गोतमाः)** श्रेष्ठ वाणी से युक्त जन **(गिरा)** वाणी से **(त्वा)** आपकी **(अभि, अनूषत)** सब ओर से स्तुति करें **(वाजाय)** विज्ञान और अन्न आदि के **(घृष्वये)** घिसे अर्थात् शुद्ध और **(दावने)** देनेवाले के लिये **(प्र)** उत्तम प्रकार स्तुति करें, उनकी आप प्रशंसा करो॥९॥

**भावार्थः**-जिसकी प्रशंसा विद्वान् जन करते हैं, वही प्रशंसित मानने के योग्य है॥९॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

### प्र ते वोचाम वीर्या३ या मन्दसान आरुजः। पुरो दासीरभीत्य॥१०॥२८॥

**प्र। ते। वोचाम। वीर्या। याः। मन्दसानः। आ। अरुजः। पुरः। दासीः। अभिऽइत्य॥१०॥**

**पदार्थः-(प्र) (ते)** तव **(वोचाम)** उपदिशेम **(वीर्या)** बलपराक्रमयुक्तानि कर्म्माणि **(याः) (मन्दसानः)** कामयमानः **(आ, अरुजः)** समन्ताद्रोगयुक्ताः **(पुरः)** नगरीः **(दासीः)** सेविकाः **(अभीत्य)** अभितः प्राप्य॥१०॥

**अन्वयः**-हे राजन्! मन्दसानस्त्वं शत्रूणां या दासीरिवारुजः पुरोऽभीत्य विजयसे तस्य ते वीर्या वयं प्रवोचाम॥१०॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-यो राजा शत्रूणां पराजयं कर्त्तुं शक्नुयात् स एव राज्यं कर्तुमर्हेत्॥१०॥

**पदार्थः**-हे राजन्! **(मन्दसानः)** कामना करते हुए आप शत्रुओं की **(याः)** जो **(दासीः)** सेविकाओं के सदृश **(आ, अरुजः)** सब प्रकार रोगयुक्त **(पुरः)** नगरियों को **(अभीत्य)** सब ओर से प्राप्त होकर जीतते हो उन **(ते)** आपके **(वीर्य्या)** बल, पराक्रम से युक्त कर्म्मों का हम लोग **(प्र, वोचाम)** उपदेश करें॥१०॥

**भावार्थः**-जो राजा शत्रुओं का पराजय कर सके, वही राज्य करने को योग्य हो॥१०॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**ता ते॑ गृणन्ति वे॒धसो॒ यानि॑ च॒कर्थ॒ पौंस्या॑। सु॒तेष्वि॑न्द्र गिर्वणः॥११॥**

**ता। ते॒। गृ॒ण॒न्ति॒। वे॒धस॑ः। यानि॑। च॒कर्थ॑। पौंस्या॑। सु॒तेषु॑। इ॒न्द्र॒। गि॒र्व॒णः॒॥११॥**

**पदार्थः**-**(ता)** तानि **(ते)** तव **(गृणन्ति)** **(वेधसः)** मेधाविनः **(यानि)** **(चकर्थ)** करोषि **(पौंस्या)** पुंभ्यो हितानि बलानि **(सुतेषु)** निष्पन्नेषु पदार्थेषु **(इन्द्र)** राजन् **(गिर्वणः)** गीर्भिः स्तुत॥११॥

**अन्वयः**-हे गिर्वण इन्द्र! यानि वेधसस्ते पौंस्या गृणन्ति यानि त्वं सुतेषु चकर्थ ता वयं प्रशंसेम॥११॥

**भावार्थः**-तान्येव प्रशंसनीयानि कर्माणि भवन्ति यान्याप्ता प्रशंसेयुः॥११॥

**पदार्थः**-हे **(गिर्वणः)** वाणियों से स्तुति किये गये **(इन्द्र)** राजन्! **(यानि)** जो **(वेधसः)** बुद्धिमान् **(ते)** आपके **(पौंस्या)** पुरुषों के लिये हितकारक बलों को **(गृणन्ति)** कहते हैं और जिनको आप **(सुतेषु)** उत्पन्न पदार्थों में **(चकर्थ)** करते हो **(ता)** उनकी हम लोग प्रशंसा करें॥११॥

**भावार्थः**-वे ही प्रशंसा करने योग्य कर्म्म होते हैं कि जिनकी यथार्थवक्ता जन प्रशंसा करें॥११॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अवी॑वृधन्त॒ गोत॑मा॒ इन्द्र॒ त्वे स्तोम॑वाहसः। ऐषु॑ धा वी॒रव॒द्यशः॑॥१२॥**

**अवी॑वृधन्त। गोत॑माः। इन्द्र॑। त्वे इति॑। स्तोमऽवाहसः। आ। ए॒षु॒। धाः॒। वी॒रऽव॑त्। यश॑ः॥१२॥**

**पदार्थः**-**(अवीवृधन्त)** वर्धन्तु **(गोतमाः)** विद्वांसः **(इन्द्र)** विद्वन्! **(त्वे)** त्वयि **(स्तोमवाहसः)** प्रशंसाप्रापकाः **(आ)** **(एषु)** **(धाः)** धेहि **(वीरवत्)** वीरा विद्यन्ते यस्मिंस्तत् **(यशः)** कीर्तिं धनं वा॥१२॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! ये स्तोमवाहसो गोतमास्त्वे वीरवद्यशोऽवीवृधन्तैषु त्वं वीरवद्यश आ धाः॥१२॥

**भावार्थः**-हे राजन्! ये सत्कर्मणा तव कीर्त्तिं वर्धयेयुस्तेषां कीर्त्तिं त्वमपि वर्धय॥१२॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-हे **(इन्द्र)** विद्वन् जो **(स्तोमवाहसः)** प्रशंसा को प्राप्त करानेवाले **(गोतमाः)** विद्वान् जन **(त्वे)** आप में **(वीरवत्)** वीर पुरुष जिसमें विद्यमान उस **(यशः)** कीर्ति वा धन को **(अवीवृधन्त)** बढ़ावें **(एषु)** इनमें आप वीरयुक्त कीर्ति वा धन को **(आ, धाः)** अच्छे प्रकार धारण कीजिये॥१२॥

**भावार्थः**-हे राजन्! जो लोग उत्तम कर्म्म से आपकी कीर्ति को बढ़ावें, उनकी कीर्ति आप भी बढ़ाइये॥१२॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**यच्चिद्धि शश्वतामसीन्द्र साधारणस्त्वम्। तं त्वा वयं हवामहे॥१३॥**

**यत्। चित्। हि। शश्वताम्। असि। इन्द्र। साधारणः। त्वम्। तम्। त्वा। वयम्। हवामहे॥१३॥**

**पदार्थः**-**(यत्)** यः **(चित्)** अपि **(हि)** खलु **(शश्वताम्)** अनादिभूतानां मध्ये **(असि)** **(इन्द्र)** परमैश्वर्य्ययुक्त परमेश्वर **(साधारणः)** सामान्येन व्याप्तः **(त्वम्)** **(तम्)** **(त्वा)** त्वाम् **(वयम्)** **(हवामहे)** स्तूमह आश्रयेम॥१३॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र जगदीश्वर! यद्यस्त्वं शश्वतां प्रकृत्यादीनां मध्ये साधारणोऽसि तं चित् वा हि वयं हवामहे॥१३॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यः परमेश्वरः सनातनानां स्वामी धर्ता स कार्यनिर्माता व्यवस्थापकोऽन्तर्यामी वर्त्तते तमेव सदोपासीरन्॥१३॥

**पदार्थः**-हे **(इन्द्र)** अत्यन्त ऐश्वर्य से युक्त जगदीश्वर! **(यत्)** जो **(त्वम्)** आप **(शश्वताम्)** अनादि काल से हुए प्रकृति आदि पदार्थों के मध्य में **(साधारणः)** सामान्य से व्याप्त **(असि)** होते हो **(तम्, चित्)** उन्हीं **(त्वा)** आपकी **(हि)** निश्चय **(वयम्)** हम लोग **(हवामहे)** स्तुति करते वा आपका आश्रय करते हैं॥१३॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो परमेश्वर अनादि काल से सिद्ध प्रकृति आदि पदार्थों का स्वामी, उनका धारण करनेवाला, वह कार्य्य का निर्माणकर्ता और कार्य्यों की व्यवस्था करनेवाला अन्तर्यामी है, उसी की सदा उपासना करो॥१३॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अर्वाचीनो वसो भवास्मे सु मत्स्वान्धसः। सोमानामिन्द्र सोमपाः॥१४॥**

**अर्वाचीनः। वसो इति। भव। अस्मे इति। सु। मत्स्व। अन्धसः। सोमानाम्। इन्द्र। सोमऽपाः॥१४॥**

**पदार्थः**-**(अर्वाचीनः)** इदानीन्तनः **(वसो)** वासकर्त्तः **(भव)** **(अस्मे)** अस्मासु **(सु)** **(मत्स्व)** आनन्द **(अन्धसः)** अन्नादेः **(सोमानाम्)** पदार्थानाम् **(इन्द्र)** राजन् **(सोमपाः)** यः सोममैश्वर्य्यं पाति सः॥१४॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे वसो इन्द्र! अर्वाचीनः सोमपास्त्वमस्मेऽन्धसः सोमानां रक्षको भव सु मत्स्व॥१४॥

**भावार्थः**-यो राजा प्रजापदार्थानां यथावद्रक्षां कुर्यात् स उत्तरकाले वृद्धसुखः स्यात्॥१४॥

**पदार्थः**-हे **(वसो)** वास करने वाले **(इन्द्र)** राजन्! **(अर्वाचीनः)** इस काल में वर्त्तमान **(सोमपाः)** ऐश्वर्य्य की रक्षा करनेवाले आप **(अस्मे)** हम लोगों में **(अन्धसः)** अन्न आदि और **(सोमानाम्)** अन्य पदार्थों के रक्षक **(भव)** हूजिये और **(सु, मत्स्व)** उत्तम प्रकार आनन्द कीजिये॥१४॥

**भावार्थः**-जो राजा प्रजा के पदार्थों की यथायोग्य रक्षा करे, वह आगे के समय में सुख की वृद्धियुक्त होवे॥१४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अ॒स्माकं॑ त्वा मती॒नामा स्तोम॑ इन्द्र यच्छतु। अ॒र्वागा व॑र्तया॒ हरी॑॥१५॥**

**अ॒स्माक॑म्। त्वा॒। म॒ती॒नाम्। आ। स्तोम॑ः। इ॒न्द्र॒। य॒च्छ॒तु॒। अ॒र्वाक्। आ। व॒र्त॒य॒। हरी॒ इति॑॥१५॥**

**पदार्थः**-**(अस्माकम्)** **(त्वा)** त्वाम् **(मतीनाम्)** मननशीलानां मनुष्याणाम् **(आ)** **(स्तोमः)** स्तुतिः **(इन्द्र)** **(यच्छतु)** निगृह्णातु **(अर्वाक्)** पुनः **(आ)** **(वर्त्तय)** अत्र **संहितायामि**ति दीर्घः। **(हरी)** अग्निजले अश्वौ वा॥१५॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! अस्माकं मतीनां स्तोमो यं त्वा आ यच्छतु स त्वमर्वाग्धरी आवर्त्तय॥१५॥

**भावार्थः**-यं विद्याविनययुक्तं राजानं सर्वतः प्रशंसा प्राप्नुयात् स एव प्रजा नियन्तुं शक्नुयात्॥१५॥

**पदार्थः**-हे **(इन्द्र)** राजन्! **(अस्माकम्)** हम **(मतीनाम्)** विचारशील मनुष्यों की **(स्तोमः)** स्तुति जिन **(त्वा)** आपको **(आ, यच्छतु)** प्राप्त होवे वह आप **(अर्वाक्)** फिर **(हरी)** अग्नि जल वा घोड़ों को **(आ, वर्त्तय)** अच्छे प्रकार वर्त्ताइये॥१५॥

**भावार्थः**-जिस विद्या और विनय से युक्त राजा को सब प्रकार प्रशंसा प्राप्त होवे, वही प्रजा को नियमयुक्त कर सके॥१५॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**पु॒रो॒ळाशं॑ च नो॒ घसो॑ जो॒षया॑से॒ गिर॑श्च नः। व॒धू॒युरि॑व॒ योष॑णाम्॥१६॥२९॥**

**पु॒रो॒ळाश॑म्। च॒। न॒ः। घस॑ः। जो॒षया॑से। गिर॑ः। च॒। न॒ः। व॒धू॒युःऽइ॑व। योष॑णाम्॥१६॥**

**पदार्थः**-**(पुरोळाशम्)** सुसंस्कृतान्नविशेषम् **(च)** **(नः)** अस्मभ्यम् **(घसः)** भोगः **(जोषयासे)** सेवय **(गिरः)** वाणीः **(च)** **(नः)** अस्माकम् **(वधूयुरिव)** **(योषणाम्)** भार्याम्॥१६॥

**अन्वयः**-हे वैद्यराज! यो नो घसोऽस्ति तं पुरोळाशं च जोषयासे योषणां वधूयुरिव नो गिरश्च जोषयासे॥१६॥



www.9009.co.in

**भावार्थ:**-अत्रोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यो राजा स्त्रियं कामयमानः पतिरिव प्रजावाचः श्रुत्वा न्यायं करोत्यैश्वर्यञ्च दधाति स राष्ट्रे पूज्यो भवति॥१६॥

**पदार्थ:**-हे वैद्यराज! जो **(नः)** हम लोगों के लिये **(घसः)** भोग है उसकी **(पुरोळाशम्, च)** और उत्तम प्रकार संस्कारयुक्त अन्नविशेष की **(जोषयासे)** सेवा कराओ और **(योषणाम्)** स्त्री को **(वधूयुरिव)** वधूयु अर्थात् अपने को वधू की चाहना करनेवाली के सदृश **(नः)** हम लोगों को **(गिरः)** वाणियों की **(च)** भी सेवा कराओ॥१६॥

**भावार्थ:**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जो राजा स्त्री की कामना करते हुए पति के सदृश प्रजा की वाणियों को सुन के न्याय करता और ऐश्वर्य को धारण करता है, वह राज्य में पूज्य होता है॥१६॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**स॒हस्रं॒ व्यती॑नां यु॒क्ताना॒मिन्द्र॑मीमहे। श॒तं सोम॑स्य खा॒र्यः॑॥ १७॥**

**स॒हस्र॑म्। व्यती॑नाम्। यु॒क्ताना॑म्। इन्द्र॑म्। ई॒म॒हे॒। श॒तम्। सोम॑स्य। खा॒र्यः॑॥ १७॥**

**पदार्थ:**-**(सहस्रम्)** **(व्यतीनाम्)** गमनकर्तॄणाम् **(युक्तानाम्)** समाहितानाम् **(इन्द्रम्)** दुष्टदर्त्तारं राजानम् **(ईमहे)** याचामहे **(शतम्)** **(सोमस्य)** धान्याद्यैश्वर्यस्य **(खार्यः)** एतत्परिमाण-मितान्यन्नादीनि॥१७॥

**अन्वयः**-हे धनाढ्य! व्यतीनां युक्तानां सहस्रं सोमस्य खार्यः शतं सन्ति ता इन्द्रं प्राप्येमहे॥१७॥

**भावार्थ:**-ये धनाढ्यान् प्राप्यासंख्यान् पदार्थान् याचन्ते ते स्वल्पं लभन्ते ये च न याचन्ते ते बहु प्राप्नुवन्ति॥१७॥

**पदार्थ:**-हे धनाढ्य पुरुष **(व्यतीनाम्)** गमन करने वाले **(युक्तानाम्)** उत्तम प्रकार सावधान चित्त हुए जनों का **(सहस्रम्)** एक सहस्र और **(सोमस्य)** धान्य आदि ऐश्वर्य की **(खार्यः, शतम्)** सौ खारी अर्थात् सौ मन तुले हुए अन्न आदि पदार्थ हैं उनकी **(इन्द्रम्)** दुष्टों को नाश करनेवाले राजा को प्राप्त होकर **(ईमहे)** याचना करते हैं॥१७॥

**भावार्थ:**-जो धनाढ्य जनों को प्राप्त होकर असङ्ख्य पदार्थों की याचना करते हैं, वे थोड़ा पाते हैं और जो याचना नहीं करते हैं, वे बहुत पाते हैं॥१७॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**स॒हस्रा॑ ते श॒ता व॒यं गवा॒मा च्या॑वयामसि। अ॒स्म॒त्रा राध॑ एतु ते॥ १८॥**

**स॒हस्रा॑। ते॒। श॒ता। व॒यम्। गवा॑म्। आ। च्या॒व॒या॒म॒सि॒। अ॒स्म॒ऽत्रा। राधः॑। ए॒तु॒। ते॒॥ १८॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**सहस्रा**) सहस्राणि (**ते**) तव (**शता**) शतानि (**वयम्**) (**गवाम्**) (**आ**) (**च्यावयामसि**) प्रापयामः (**अस्मत्रा**) अस्मासु (**राधः**) धनम् (**एतु**) प्राप्नोतु (**ते**) तव॥१८॥

**अन्वयः**-हे धनेश! ते राधोऽस्मत्रैतु ते तव गवां सहस्रा शता वयमाच्यावयामसि॥१८॥

**भावार्थः**-हे धनाढ्य! तव सकाशाद्वयं गवादीन् प्राप्याऽन्येभ्यो दद्मः। अस्माकं धनं भवन्तं प्राप्नोतु॥१८॥

**पदार्थः**-हे धन के ईश (**ते**) आप का (**राधः**) धन (**अस्मत्रा**) हम लोगों में (**एतु**) प्राप्त हो और (**ते**) आपकी (**गवाम्**) गौ के (**सहस्रा**) हजारों और (**शता**) सैकड़ों समूह को (**वयम्**) हम लोग (**आ, च्यावयामसि**) प्राप्त कराते हैं॥१८॥

**भावार्थः**-हे धनाढ्य! आपके समीप से हम लोग गौ आदि पदार्थों को प्राप्त होकर औरों के लिये देते हैं और हम लोगों का धन आपको प्राप्त हो॥१८॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**दश॑ ते क॒लशा॑नां॒ हिर॑ण्यानामधीमहि। भू॒रि॒दा अ॑सि वृत्रहन्॥१९॥**

**दश॑। ते॒। क॒लशा॑नाम्। हिर॑ण्यानाम्। अ॒धी॒म॒हि। भू॒रि॒ऽदाः। अ॒सि॒। वृ॒त्र॒ऽह॒न्॥१९॥**

**पदार्थः**-(**दश**) (**ते**) तव (**कलशानाम्**) घटानाम् (**हिरण्यानाम्**) (**अधीमहि**) प्राप्नुयाम (**भूरिदाः**) बहूनां दाता (**असि**) (**वृत्रहन्**) शत्रुहन्ता॥१९॥

**अन्वयः**-हे वृत्रहन्! यतस्त्वं भूरिदा असि तस्मात्ते हिरण्यानां कलशानां दशाधीमहि॥१९॥

**भावार्थः**-यो मनुष्यो बहुप्रदो भवति तस्य मित्राणि बहूनि जायन्ते॥१९॥

**पदार्थः**-हे (**वृत्रहन्**) शत्रुओं के नाश करनेवाले! जिससे आप (**भूरिदाः**) बहुतों के देनेवाले (**असि**) हो इससे (**ते**) आपके (**हिरण्यानाम्**) सुवर्ण के बने हुए (**कलशानाम्**) घटों के (**दश**) दशसंख्यायुक्त समूह को हम लोग (**अधीमहि**) प्राप्त होवें॥१९॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य बहुत देनेवाला होता है, उसके मित्र बहुत होते हैं॥१९॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**भूरि॑दा॒ भूरि॑ देहि नो॒ मा द॒भ्रं भूर्या भ॑र। भूरि॒ घेदि॑न्द्र दित्ससि॥२०॥**

**भूरि॑ऽदाः। भूरि॑। दे॒हि॒। नः॒। मा। द॒भ्रम्। भूरि॑। आ। भ॒र॒। भूरि॑। घ॒। इत्। इ॒न्द्र॒। दि॒त्स॒सि॒॥२०॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**भूरिदाः**) बहुदाः (**भूरि**) बहु (**देहि**) (**नः**) अस्मभ्यम् (**मा**) (**दभ्रम्**) अल्पम् (**भूरि**) बहु (**आ**) (**भर**) समन्ताद्धर (**भूरि**) बहु (**घ**) एव (**इत्**) अपि (**इन्द्र**) दातः (**दित्ससि**) दातुमिच्छसि॥२०॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! यस्त्वं नो भूरि दित्ससि स भूरिदास्त्वं नो भूरि देहि भूर्याभर दभ्रं घेन्मा देहि दभ्रमिन्माभर॥२०॥

**भावार्थः**-यो बहुप्रदोऽस्ति स एव प्रशंसां लभते योऽल्पदः स नैवं प्रशंसितो भवति॥२०॥

**पदार्थः**-हे (**इन्द्र**) देनेवाले! जो आप (**नः**) हम लोगों के लिये (**भूरि**) बहुत (**दित्ससि**) देने की इच्छा करते हो वह (**भूरिदाः**) बहुत देनेवाले आप हम लोगों के लिये (**भूरि**) बहुत (**देहि**) दीजिये और (**भूरि**) बहुत को (**आ, भर**) सब प्रकार धारण कीजिये (**दभ्रम्**) थोड़े को (**घ**) ही (**मा**) मत दीजिये और थोड़े को (**इत्**) ही न धारण कीजिये॥२०॥

**भावार्थः**-जो बहुत देनेवाला है वही प्रशंसा को प्राप्त होता है और जो थोड़ा देनेवाला वह नहीं इस प्रकार प्रशंसित होता है॥२०॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**भूरिदा ह्यसि श्रुतः पुरुत्रा शूर वृत्रहन्। आ नो भजस्व राधसि॥२१॥**

**भूरिऽदाः। हि। असि। श्रुतः। पुरुऽत्रा। शूर। वृत्रऽहन्। आ। नः। भजस्व। राधसि॥२१॥**

**पदार्थः**-(**भूरिदाः**) बहुप्रदाः (**हि**) यतः (**असि**) (**श्रुतः**) सर्वत्र प्रसिद्धकीर्त्तिः (**पुरुत्रा**) बहुषु प्रतिष्ठितः (**शूर**) शत्रुहन्तः (**वृत्रहन्**) प्राप्तधन (**आ**) (**नः**) अस्मान् (**भजस्व**) सेवस्व (**राधसि**) संसाध्नोसि॥२१॥

**अन्वयः**-हे शूर वृत्रहन्! राजँस्त्वं हि भूरिदा असि तस्मात् पुरुत्रा श्रुतोऽसि यतस्त्वं नो राधसि तस्मादस्माना भजस्व॥२१॥

**भावार्थः**-योऽत्र जगति बहुदाता भवति स एव सर्वदिक्कीर्तिर्भवति॥२१॥

**पदार्थः**-हे (**शूर**) शत्रुओं के नाश करनेवाले (**वृत्रहन्**) धन को प्राप्त राजन्! आप (**हि**) जिससे (**भूरिदाः**) बहुत देनेवाले (**असि**) हो इससे (**पुरुत्रा**) बहुतों में प्रतिष्ठित और (**श्रुतः**) सब जगह प्रसिद्ध यशवाले हो जिससे आप (**नः**) हम लोगों को (**राधसि**) अच्छे प्रकार साधते हैं, इससे हम लोगों को (**आ, भजस्व**) अच्छे प्रकार सेवो॥२१॥

**भावार्थः**-जो इस संसार में बहुत देनेवाला होता है, वही सम्पूर्ण दिशाओं में कीर्तियुक्त होता है॥२१॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**



www.9009.co.in

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**प्र ते॑ ब॒भ्रू वि॑चक्षण॒ शंसा॑मि गोषणो नपात्। माभ्यां॒ गा अनु॒ शिश्रथः॥२२॥**

**प्र। ते॒। ब॒भ्रू इति॑। वि॒ऽच॒क्ष॒ण॒। शंसा॑मि। गो॒ऽस॒न॒ः। न॒पा॒त्। मा। आ॒भ्या॒म्। गाः। अनु॑। शि॒श्र॒थ॒ः॥२२॥**

**पदार्थः**-(**प्र**) (**ते**) तव (**बभ्रू**) सकलविद्याधारकावध्यापकोपदेशकौ (**विचक्षण**) प्राज्ञ (**शंसामि**) (**गोषणः**) यो गाः सनुते याचते तत्संबुद्धौ (**नपात्**) यो न पतति (**मा**) (**आभ्याम्**) सह (**गाः**) पृथिव्यादीन् (**अनु**) (**शिश्रथः**) श्रथ्नाति॥२२॥

**अन्वयः**-हे गोषणो विचक्षण! यौ बभ्रू अहं प्रशंसामि तौ ते शिक्षकौ स्याताम्। आभ्यां त्वं नपात् सन् गा मानु शिश्रथः॥२२॥

**भावार्थः**-हे जिज्ञासो! त्वमध्यापकमुपदेशकं च प्राप्य पुरुषार्थेन विद्यामुपदेशञ्च सद्यो गृहाणालस्यं मा कुरु॥२२॥

**पदार्थः**-हे (**गोषणः**) गौ मांगने वाले (**विचक्षण**) उत्तम ज्ञाता! जो (**बभ्रू**) सम्पूर्ण विद्याओं के धारण करने वाले अध्यापक और उपदेशक की मैं (**प्र, शंसामि**) प्रशंसा करता हूँ वे (**ते**) आपके शिक्षक होवें (**आभ्याम्**) इनके साथ आप (**नपात्**) नहीं गिरने वाले होते हुए (**गाः**) पृथिव्यादिकों को (**मा**) मत (**अनु, शिश्रथः**) शिथिल करते हैं॥२२॥

**भावार्थः**-हे जिज्ञासु ज्ञान को चाहने वाले! तू अध्यापक और उपदेशक को पाकर पुरुषार्थ से विद्या और उपदेश को शीघ्र ग्रहण कर, आलस्य मत कर॥२२॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**क॒नी॒न॒केव॑ विद्र॒धे नवे॑ द्रु॒प॒दे अ॑र्भ॒के। ब॒भ्रू यामे॑षु शोभेते॥२३॥**

**क॒नी॒न॒काऽइ॑व। वि॒द्र॒धे। नवे॑। द्रु॒ऽप॒दे। अ॒र्भ॒के। ब॒भ्रू इति॑। यामे॑षु। शो॒भे॒ते॒ इति॑॥२३॥**

**पदार्थः**-(**कनीनकेव**) कमनीयेव (**विद्रधे**) विशेषेण दृढे (**नवे**) नवीने (**द्रुपदे**) सद्यः प्रापणीये वृक्षादिद्रव्यपदे वा (**अर्भके**) अल्पे (**बभ्रू**) अध्यापकोपदेशकौ (**यामेषु**) प्रहरेषु (**शोभेते**)॥२३॥

**अन्वयः**-हे विद्वांसौ! भवन्तौ यौ बभ्रू यामेषु कनीनकेव नवे विद्रधे द्रुपदे अर्भके शोभेते ताविव जगदुपकारकौ भवितुमर्हतः॥२३॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। ये विद्वांसोऽधिकेऽल्पे विज्ञाने कर्मणि वा सुशोभिताः स्युस्ते जगति कल्याणकाराः स्युः॥२३॥

**पदार्थः**-हे विद्वानो! आप जो (**बभ्रू**) अध्यापक और उपदेशक (**यामेषु**) प्रहरों में (**कनीनकेव**) सुन्दर के तुल्य (**नवे**) नवीन (**विद्रधे**) विशेष दृढ़ (**द्रुपदे**) शीघ्र प्राप्त होने योग्य पदार्थ वा वृक्ष आदि



www.9009.co.in

द्रव्यों के स्थान और **(अर्भके)** छोटे बालक के निमित्त **(शोभेते)** शोभित होते हैं, उनके सदृश संसार के उपकार करनेवाले होने को योग्य हों॥२३॥

**भावार्थ:**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जो विद्वान् अधिक वा न्यून विज्ञान में वा काम में सुशोभित हों, वे जगत् के बीच कल्याण करनेवाले हों॥२३॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अरं म उस्रयाम्णेऽरमनुस्रयाम्णे। बभ्रू यामेष्वस्रिधा॥२४॥३०॥६॥३॥**

**अरम्। मे। उस्रऽयाम्ने। अरम्। अनुस्रऽयाम्ने। बभ्रू इति। यामेषु। अस्रिधा॥२४॥**

**पदार्थ:**-**(अरम्)** अलम् **(मे)** मह्यम् **(उस्रयाम्णे)** उस्रैः किरणैरिव यानेन याति तस्मै **(अरम्)** अलम् **(अनुस्रयाम्णे)** योऽनुस्रं शीतं देशं याति तस्मै **(बभ्रू)** सत्यधारकौ **(यामेषु)** प्रहरेषु **(अस्रिधा)** अहिंसकौ॥२४॥

**अन्वय:**-यावस्रिधा बभ्रू यामेषूस्रयाम्णे मेऽरमनुस्रयाम्णे मेऽरं भवतस्तौ मया सेवनीयौ॥२४॥

**भावार्थ:**-यावध्यापकोपदेशकौ शीतोष्णदेशनिवासिनं मामध्यापयितुमुपदेष्टुं च शक्नुतस्तौ सदैव मया सत्कर्त्तव्यौ भवत इति॥२४॥

अत्रेन्द्रराजाप्रजाध्यापकोपदेशकगुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इत्यृक्संहितायां तृतीयाष्टके षष्ठोऽध्यायस्त्रिंशो वर्गश्चतुर्थमण्डले द्वात्रिंशत्तमं सूक्तं तृतीयोऽनुवाकश्च समाप्तः॥**

**पदार्थ:**-जो **(अस्रिधा)** नहीं हिंसा करने **(बभ्रू)** और सत्य की धारणा करने वाले **(यामेषु)** प्रहरों में **(उस्रयाम्णे)** किरणों के समान जो यान से जाता उस **(मे)** मेरे लिये **(अरम्)** समर्थ और **(अनुस्रयाम्णे)** शीत देश को जाने वाले मेरे लिये **(अरम्)** समर्थ होते हैं, वे मुझसे सेवन योग्य हैं॥२४॥

**भावार्थ:**-जो अध्यापक और उपदेशक शीतोष्ण देश निवासी मुझको पढ़ा और उपदेश दे सकते हैं, वे सदैव मुझ से सत्कार करने योग्य होते हैं॥२४॥

इस सूक्त में इन्द्र, राजा, प्रजा, अध्यापक और उपदेशक के गुणों का वर्णन होने से इस सूक्त के अर्थ की पिछले सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह ऋग्वेद संहिता के तीसरे अष्टक में छठा अध्याय तीसवां वर्ग तथा चतुर्थ मण्डल में बत्तीसवां सूक्त और तीसरा अनुवाक पूरा हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

अथ तृतीयाष्टके सप्तमाध्यायारम्भः

**विश्वा॑नि देव सवितर्दुरि॒तानि॒ परा॑ सुव। यद्भ॒द्रं तन्न॒ आ सु॑व॥ ऋ०५.८२.५॥**

**अथैकादशर्चस्य त्रयस्त्रिंशत्तमस्य सूक्तस्य वामदेव ऋषिः। ऋभवो देवताः। १ भुरिक् त्रिष्टुप्। २, ४, ५, ११ त्रिष्टुप्। ३, ६, १० निचृत्त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः। ७, ८ भुरिक् पङ्क्तिः। ९ स्वराट् पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः॥**

**अथ विद्वद्विषयमाह॥**

अब ग्यारह ऋचा वाले तेंतीसवें सूक्त का प्रारम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में विद्वान् के विषय को कहते हैं॥

**प्र ऋ॒भुभ्यो॑ दू॒तमि॑व॒ वाच॑मिष्य उप॒स्तिरे॒ श्वैत॑रीं धे॒नुमी॑ळे।**

**ये वात॑जूतास्त॒रणि॑भि॒रेवैः॒ परि॒ द्यां स॒द्यो अ॒पसो॑ बभू॒वुः॥ १॥**

**प्र। ऋ॒भुऽभ्यः॑। दू॒तम्ऽइ॑व। वाच॑म्। इ॒ष्ये॒। उ॒प॒ऽस्तिरे॑। श्वैत॑रीम्। धे॒नुम्। ई॒ळे॒। ये। वात॑ऽजूताः। त॒रणि॑ऽभिः। एवैः॑। परि॑। द्याम्। स॒द्यः। अ॒प॑सः। ब॒भू॒वुः॥ १॥**

**पदार्थः-(प्र) (ऋभुभ्यः)** मेधाविभ्यः। **ऋभुरिति मेधाविनामसु पठितम्।** (निघं०३.१५) **(दूतमिव)** यथा दूतो दौत्यमिच्छति **(वाचम्) (इष्ये)** प्राप्नोमि **(उपस्तिरे)** स्रस्तराय **(श्वैतरीम्)** अतिशयेन शुद्धाम् **(धेनुम्)** धारणाम् **(ईळे)** स्तौमि प्राप्नोमि **(ये) (वातजूताः)** वायुप्रेरितास्त्रसरेण्वादिपदार्थाः **(तरणिभिः)** सन्तरणैः **(एवैः)** प्राप्तैर्वेगादिगुणैः **(परि) (द्याम्)** आकाशम् **(सद्यः)** शीघ्रम् **(अपसः)** कर्माणि **(बभूवुः)** भवन्ति॥१॥

**अन्वयः**-ये वाजतूजाः पदार्था एवैस्तरणिभिः सद्यो द्यामपसः परिबभूवुस्तैरहमुपस्तिर ऋभुभ्यो दूतमिव श्वैतरीं धेनुं वाचं प्रेष्ये तथा पदार्थविज्ञानमीळे॥१॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। ये पुरुषा यथा त्रसरेणवो वायुना क्रियां सततं कुर्वन्ति तथैव विद्वद्भ्यो विद्यां प्राप्य पुरुषार्थं सदा कुर्वन्ति ते सर्वविद्यायुक्तां शोभनां वाचं प्राप्नुवन्ति॥१॥

**पदार्थः-(ये)** जो **(वातजूताः)** वायु से उड़ाये गये त्रसरेणु आदि पदार्थ **(एवैः)** प्राप्त वेग आदि गुणों और **(तरणिभिः)** उत्तम प्रकार तैरने आदि क्रियाओं से **(सद्यः)** शीघ्र **(द्याम्)** आकाश और **(अपसः)** कर्मों के प्रति **(परिबभूवुः)** परिभूत तिरस्कृत अर्थात् रूपान्तर को प्राप्त होते हैं, उनसे **[मैं]** **(उपस्तिरे)** विस्तार के अर्थ और **(ऋभुभ्यः)** बुद्धिमानों के लिये **(दूतमिव)** जैसे दूत दूतपन की इच्छा



www.9009.co.in

करे वैसे **(श्वैतरीम्)** अत्यन्त शुद्ध **(धेनुम्)** धारण करने वाली **(वाचम्)** वाणी को **(प्र, इष्ये)** प्राप्त करता हूँ, उस वाणी से पदार्थ विज्ञान की **(ईळे)** स्तुति करता हूँ॥१॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जो पुरुष जैसे त्रसरेणु वायु से क्रिया को निरन्तर करते हैं, वैसे ही विद्वानों से विद्या को प्राप्त होकर पुरुषार्थ सदा करते हैं, वे सर्व विद्याओं से युक्त सुन्दर वाणी को प्राप्त होते हैं॥१॥

**अथ मातापित्रादिशिक्षाविषयमाह॥**

अब माता पिता आदि के शिक्षा विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**यदारमक्रन्नृभवः पितृभ्यां परिविष्टी वेषणा दंसनाभिः।**

**आदिद्देवानामुप सख्यमायन् धीरासः पुष्टिमवहन् मनायै॥२॥**

**यदा। अरम्। अक्रन्। ऋभवः। पितृऽभ्याम्। परिऽविष्टी। वेषणा। दंसनाभिः। आत्। इत्। देवानाम्। उप। सख्यम्। आयन्। धीरासः। पुष्टिम्। अवहन्। मनायै॥२॥**

**पदार्थः-(यदा) (अरम्)** अलम् **(अक्रन्)** कुर्वन्ति **(ऋभवः)** प्राज्ञाः **(पितृभ्याम्)** विद्वद्भ्यां जननीजनकाभ्याम् **(परिविष्टी)** सर्वतो विद्या व्याप्नोति यया तया क्रियया **(वेषणा)** व्याप्तेन पदार्थेन **(दंसनाभिः)** उत्तमैः कर्मभिः **(आत्) (इत्)** एव **(देवानाम्)** विदुषाम् **(उप) (सख्यम्)** मित्रभावम् **(आयन्)** प्राप्नुवन्ति **(धीरासः)** योगयुक्ता ध्यानवन्तः **(पुष्टिम्)** सर्वाऽवयवदृढत्वम् **(अवहन्)** प्राप्नुवन्ति **(मनायै)** मन्तव्यायै विद्यायै॥२॥

**अन्वयः**-ऋभवो यदा पितृभ्यां परिविष्टी वेषणा दंसनाभिर्देवानां सख्यमरमक्रन्नादित्ते धीरासो मनायै बुद्धिमुपायन् पुष्टिमवहन्॥२॥

**भावार्थः**-ये मनुष्या बाल्यावस्थायामापञ्चमाद् वर्षान्मातृशिक्षामाष्टात् संवत्सरात् पितृशिक्षामष्टाचत्वारिंशाद् वर्षादाचार्य्यशिक्षां च गृह्णन्ति त एव विद्वांसो मेधाविनो धार्मिका चिरञ्जीविनो जगत्कल्याणकरा भवन्ति॥२॥

**पदार्थः-(ऋभवः)** बुद्धिमान् जन **(यदा)** जब **(पितृभ्याम्)** विद्वान् माता और पिता से **(परिविष्टी)** सब प्रकार विद्या को व्याप्त होता जिससे उस क्रिया और **(वेषणा)** व्याप्त पदार्थ से तथा **(दंसनाभिः)** उत्तम कर्मों से **(देवानाम्)** विद्वानों के **(सख्यम्)** मित्रपन को **(अरम्)** पूरा **(अक्रन्)** करते हैं **(आत्, इत्)** तभी वे **(धीरासः)** योग से युक्त ध्यान वाले **(मनायै)** मानने योग्य विद्या के लिये बुद्धि को **(उप, आयन्)** प्राप्त होते और **(पुष्टिम्)** सम्पूर्ण अवयवों की पुष्टि को **(अवहन्)** प्राप्त होते हैं॥२॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य बाल्यावस्था में पांचवें वर्ष से माता की शिक्षा और आठवें वर्ष से लेकर पिता की शिक्षा को और अड़तालीस वर्ष पर्य्यन्त आचार्य्य की शिक्षा को ग्रहण करते हैं, वे ही विद्वान्, बुद्धिमान्, धार्मिक, बहुत काल पर्य्यन्त जीवने और संसार के कल्याण करनेवाले होते हैं॥२॥



www.9009.co.in

**पुनर्मातापितृशिक्षाविषयमाह॥**

फिर माता-पिता से शिक्षा विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**पुनर्ये चक्रुः पितरा युवाना सना यूपेव जरणा शयाना।**

**ते वाजो विभ्वाँ ऋभुरिन्द्रवन्तो मधुप्सरसो नोऽवन्तु यज्ञम्॥३॥**

**पुनः। ये। चक्रुः। पितरा। युवाना। सना। यूपाऽइव। जरणा। शयाना। ते। वाजः। विऽभ्वा। ऋभुः। इन्द्रऽवन्तः। मधुऽप्सरसः। नः। अवन्तु। यज्ञम्॥३॥**

**पदार्थः-(पुनः)** **(ये)** **(चक्रुः)** कुर्य्युः **(पितरा)** पितरौ **(युवाना)** प्राप्तयौवनौ **(सना)** संसेविनौ **(यूपेव)** स्तम्भ इव दृढौ **(जरणा)** जरां प्राप्तौ **(शयाना)** यौ शयाते तौ **(ते)** **(वाजः)** ज्ञानवान् **(विभ्वा)** विभुना ज्ञानेन जगदीश्वरेण **(ऋभुः)** विद्वान् **(इन्द्रवन्तः)** परमैश्वर्य्ययुक्ताः **(मधुप्सरसः)** मधुप्सरस्स्वरूपं सुन्दरं येषान्ते **(नः)** अस्माकम् **(अवन्तु)** **(यज्ञम्)** अध्ययनाध्यापनादिकम्॥३॥

**अन्वयः**-ये जरणा शयाना सन्तौ सना पितरा युवाना यूपेव पुनश्चक्रुस्ते मधुप्सरस इन्द्रवन्तो भूत्वा नो यज्ञमवन्तु तत्सङ्गेन विभ्वा वाज ऋभुरहं भवेयम्॥३॥

**भावार्थः**-ये पितरः स्वसन्तानान् दीर्घेण ब्रह्मचर्य्येण सुशीलान् विदुषः कुर्वन्ति ते तत्सेवया पुनरपि वृद्धाः सन्तो युवान इव भवन्ति॥३॥

**पदार्थः-(ये)** जो जन **(जरणा)** बुढ़ापे को प्राप्त **(शयाना)** सोते हुए **(सना)** उत्तम प्रकार सेवा करने वाले **(पितरा)** माता-पिता को **(युवाना)** जवान **(यूपेव)** खम्भे के सदृश पुष्ट **(पुनः)** फिर **(चक्रुः)** करें **(ते)** वे **(मधुप्सरसः)** सुन्दर स्वरूप और **(इन्द्रवन्तः)** अत्यन्त ऐश्वर्य्य से युक्त होकर **(नः)** हम लोगों के **(यज्ञम्)** पढ़ने-पढ़ाने आदि कर्म्म की **(अवन्तु)** रक्षा करें, उस कर्म्म के संग से **(विभ्वा)** व्यापक जाने गये जगदीश्वर से **(वाजः)** ज्ञानवान् और **(ऋभुः)** विद्वान् मैं होऊँ॥३॥

**भावार्थः**-जो पितृजन अपने सन्तानों को अतिकाल पर्य्यन्त ब्रह्मचर्य्य से उत्तम स्वभाव और विद्यायुक्त करते हैं, वे उन सन्तानों की सेवा से फिर भी वृद्ध हुए युवावस्था वालों के सदृश होते हैं॥३॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**यत्संवत्समृभवो गामरक्षन् यत्संवत्समृभवो मा अपिंशन्।**

**यत्संवत्समभरन् भासो अस्यास्ताभिः शमीभिरमृतत्वमाशुः॥४॥**

**यत्। सम्ऽवत्सम्। ऋभवः। गाम्। अरक्षन्। यत्। सम्ऽवत्सम्। ऋभवः। माः। अपिंशन्। यत्। सम्ऽवत्सम्। अभरन्। भासः। अस्याः। ताभिः। शमीभिः। अमृतत्वम्। आशुः॥४॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**यत्**) ये (**संवत्सम्**) सङ्गतं वत्समिव (**ऋभवः**) मेधाविनः पितरः (**गाम्**) (**अरक्षन्**) रक्षन्ति (**यत्**) ये (**संवत्सम्**) एकीभूतं वात्सल्येन पालितं सन्तानम् (**ऋभवः**) (**माः**) मातॄः (**अपिंशन्**) साऽवयवान् कुर्वन्ति (**यत्**) याः (**संवत्सम्**) (**अभरन्**) धरन्ति पुष्णन्ति वा (**भासः**) प्रकाशमानायाः (**अस्याः**) विद्यायाः (**ताभिः**) मातृपित्राचार्यसेवया विद्याप्राप्तिभिः (**शमीभिः**) श्रेष्ठैः कर्मभिः (**अमृतत्वम्**) मोक्षभावमुत्तममानन्दं वा (**आशुः**) प्राप्नुवन्ति॥४॥

**अन्वयः**-यद्य ऋभवः संवत्समिवाऽपत्यानि शिक्षन्ते गां वाचमरक्षन् यद्य ऋभवः संवत्समिव मा अपिंशन् यद्या मातरो भासोऽस्याः संवत्समभरँस्ते ताश्च ताभिः शमीभिरमृतत्वमाशुः॥४॥

**भावार्थः**-ये विद्वांसः पितरः स्वसन्तानान् ब्रह्मचर्य्यविद्याविनयैर्विद्याबलशुभगुणकर्माचरणान् कुर्वन्ति तेऽत्यन्तं सुखमाप्नुवन्ति॥४॥

**पदार्थः**-(**यत्**) जो (**ऋभवः**) बुद्धिमान् पितृजन (**संवत्सम्**) प्राप्त बछड़े के सदृश सन्तानों को शिक्षा देते हैं (**गाम्**) वाणी की (**अरक्षन्**) रक्षा करते हैं और (**यत्**) जो (**ऋभवः**) बुद्धिमान् पितृ, आचार्य्यजन (**संवत्सम्**) एक हुए और प्रेम से पाले गये सन्तान के सदृश (**माः**) माताओं को (**अपिंशन्**) अवयवों के सहित करते हैं अर्थात् भरण-पोषण से उनके अङ्गों को पुष्ट करते और (**यत्**) जो मातृजन (**भासः**) प्रकाशमान (**अस्याः**) इस विद्या के (**संवत्सम्**) एकीभाव को प्राप्त प्रेम से पालित सन्तान का (**अभरन्**) धारण वा पोषण करते हैं, वे बुद्धिमान् पितृजन और मातृजन (**ताभिः**) उन मातृ-पितृ-आचार्य्य की सेवा और विद्या की प्राप्तियों और (**शमीभिः**) श्रेष्ठ कर्म्मों से (**अमृतत्वम्**) मोक्षभाव वा उत्तम आनन्द को (**आशुः**) प्राप्त होते हैं॥४॥

**भावार्थः**-जो विद्वान् पितृजन अपने सन्तानों को ब्रह्मचर्य्य और विद्या [तथा विनय] से विद्या, बल और उत्तम गुण और कर्मों के आचरण [से] युक्त करते हैं, वे अत्यन्त सुख को प्राप्त होते हैं॥४॥

**अथ मनुष्यगुणानाह॥**

अब मनुष्यगुणों को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**ज्येष्ठ आह चमसा द्वा करेति कनीयान् त्रीन् कृणवामेत्याह।**

**कनिष्ठ आह चतुरस्करेति त्वष्ट ऋभवस्तत्पनयद्वचो वः॥५॥१॥**

**ज्येष्ठः। आह। चमसा। द्वा। कर। इति। कनीयान्। त्रीन्। कृणवाम। इति। आह। कनिष्ठः। आह। चतुरः। कर। इति। त्वष्टा। ऋभवः। तत्। पनयत्। वचः। वः॥५॥**

**पदार्थः**-(**ज्येष्ठः**) पूर्वजः (**आह**) वदति (**चमसा**) चमसौ (**द्वा**) द्वौ (**कर**) कुर्य्याः (**इति**) अनेन प्रकारेण (**कनीयान्**) कनिष्ठः (**त्रीन्**) (**कृणवाम**) कुर्य्याम (**इति**) (**आह**) (**कनिष्ठः**) (**आह**) (**चतुरः**) (**कर**) (**इति**) (**त्वष्टा**) शिक्षकः (**ऋभवः**) मेधाविनः (**तत्**) (**पनयत्**) प्रशंसेत् (**वचः**) वचनम् (**वः**) युष्माकम्॥५॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे ऋभवो! यद्वो वचस्त्वष्टा पनयत् तत् द्वा चमसा करेति ज्येष्ठ आह। कनीयाँस्त्रीन् कृणवामेत्याह कनिष्ठश्चतुरः करेत्याह॥५॥

**भावार्थः**-बन्धवो विद्वांसो भूत्वा परस्परं संवदेरन् यथा ज्येष्ठ आज्ञो कुर्यात् तथा कनिष्ठो यथा कनिष्ठो ब्रूयात्तथा ज्येष्ठ आचरेत् यथात्र कनीयानिति कर्त्तृपदमेकवचनान्तं कृणवामेति बहुवचनान्ता क्रिया न सङ्गच्छत इति सम्बोधनीयं यद्वा यथा वयं परस्परं संवदेमहि तथैव युष्माभिरपि परस्परं वक्तव्यं यथा सत्यं प्रशंसितव्यं वचनं स्यात्तथैव सर्वैर्वाच्यमिति॥५॥

**पदार्थः**-हे **(ऋभवः)** बुद्धिमानो! जिस **(वः)** आपके **(वचः)** वचन की **(त्वष्टा)** शिक्षा देनेवाला **(पनयत्)** प्रशंसा करे **(तत्)** वह वचन **(द्वा)** दो **(चमसा)** चमसों को **(कर)** करे **(इति)** इस प्रकार से **(ज्येष्ठः)** प्रथम उत्पन्न हुआ **(आह)** कहता है **(कनीयान्)** पीछे उत्पन्न हुआ छोटा **(त्रीन्)** तीन को **(कृणवाम)** करे **(इति)** इस प्रकार से **(आह)** कहता है और **(कनिष्ठः)** कनिष्ठ अर्थात् छोटा **(चतुरः)** चार को **(कर)** करे **(इति)** इस प्रकार से **(आह)** कहता है॥५॥

**भावार्थः**-बन्धुजन विद्वान् होकर परस्पर वार्त्तालाप करें कि जैसे बड़ा आज्ञा करे, वैसे छोटा और जैसे छोटा कहे वैसा ही ज्येष्ठ आचरण करे। जैसे इस मन्त्र में **(कनीयान्)** यह कर्त्तृ पद एकवचनान्त और **(कृणवाम)** यह बहुवचनान्त क्रिया नहीं संगत होते हैं, ऐसा जनाना चाहिये अर्थात् अहं कर्त्ता की योग्यता में वयं कर्त्ता के पक्ष से योजना कर समझना चाहिये अथवा जैसे हम लोग परस्पर वार्त्तालाप करें, वैसे ही आप लोगों को भी परस्पर वार्त्तालाप करना चाहिये और जिस प्रकार सत्य और प्रशंसित वचन होवे, उसी प्रकार सब को बोलना चाहिये॥५॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**स॒त्यमू॑चु॒र्नर॑ ए॒वा हि च॒क्रुरनु॑ स्व॒धामृ॒भवो॑ जग्मु॒रेता॑म्।**

**वि॒भ्राज॑मानांश्चम॒साँ अहे॒वावे॑न॒त् त्वष्टा॑ च॒तुरो॑ ददृ॒श्वान्॥६॥**

**स॒त्यम्। ऊ॒चुः॒। नरः॑। ए॒व। हि। च॒क्रुः। अनु॑। स्व॒धाम्। ऋ॒भवः॑। ज॒ग्मुः॒। ए॒ताम्। वि॒ऽभ्राज॑मानान्। च॒म॒सान्। अहा॑ऽइव। अवे॑नत्। त्वष्टा॑। च॒तुरः॑। द॒दृ॒श्वान्॥६॥**

**पदार्थः**-**(सत्यम्)** यथार्थम् **(ऊचुः)** वदन्तु **(नरः)** मनुष्याः **(एवा)** अत्र **निपातस्य चे**ति दीर्घः। **(हि)** यतः **(चक्रुः)** कुर्य्युः **(अनु)** **(स्वधाम्)** अन्नम् **(ऋभवः)** मेधाविनः **(जग्मुः)** प्राप्नुवन्ति **(एताम्)** एतत् **(विभ्राजमानान्)** प्रकाशमानान् **(चमसान्)** मेघान्। **चमस इति मेघनामसु पठितम्।** (निघं०१.१०) **(अहेव)** अहानीव **(अवेनत्)** कामयते **(त्वष्टा)** ज्ञाता **(चतुरः)** **(ददृश्वान्)** दृष्टवान्॥६॥

**अन्वयः**-यथर्भव एतां स्वधां जग्मुराप्ताचरणमनुचक्रुस्तथैव नरः सत्यमूचुर्यो हि त्वष्टा चतुरो ददृश्वान् भवेत् स विभ्राजमानांश्चमसानहेव चतुरः पदार्थानवेनत्॥६॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। मनुष्यैरिहाप्तानुकरणं कृत्वा यथाक्रमेण वर्त्तित्वा दिनानि प्रावृडृतुं प्राप्नुवन्ति तथैव क्रमेण कर्मोपासनाज्ञानानि सत्यभाषणादीनि वर्द्धयित्वा धर्मार्थकाममोक्षान् साधयन्तीति विज्ञातव्यम्॥६॥

**पदार्थः**-जैसे **(ऋभवः)** बुद्धिमान् जन **(एताम्)** इस **(स्वधाम्)** अन्न को **(जग्मुः)** प्राप्त होते हैं और यथार्थ वक्ताओं के आचरण को **(अनु, चक्रुः)** करें वैसे **(एवा)** ही **(नरः)** मनुष्य **(सत्यम्)** यथार्थ **(ऊचुः)** कहें और जो **(हि)** जिससे **(त्वष्टा)** जानने वाला **(चतुरः)** चार को **(ददृश्वान्)** देखने वाला होवे वह **(विभ्राजमानान्)** प्रकाशित हुए **(चमसान्)** मेघों को **(अहेव)** दिनों के सदृश चार पदार्थों की **(अवेनत्)** कामना करता है॥६॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। मनुष्यों को चाहिये कि इस संसार में यथार्थवक्ताओं का अनुकरण करके जैसे क्रम से वर्त्ताव कर दिन वर्षा ऋतु को प्राप्त होते हैं, वैसे ही क्रम से कर्म, उपासना और ज्ञान, सत्यभाषण आदि को बढ़ा के धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को सिद्ध कराते हैं, यह जानें॥६॥

**पुनर्विद्वद्विषयमाह॥**

फिर विद्वान् के विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**द्वाद॑श॒ द्यून् यदगो॑ह्यस्याति॒थ्ये रण॑न्नृ॒भव॑: स॒सन्त॑:।**

**सु॒क्षेत्रा॑कृण्व॒न्नन॑यन्त॒ सिन्धू॑न् धन्वाति॑ष्ठ॒न्नोष॑धीर्नि॒म्नमाप॑:॥७॥**

**द्वाद॑श। द्यून्। यत्। अगो॑ह्यस्य। आ॒ति॒थ्ये। रण॑न्। ऋ॒भव॑:। स॒सन्त॑:। सु॒ऽक्षेत्रा॑। अ॒कृ॒ण्व॒न्। अन॑यन्त। सिन्धू॑न्। धन्व॑। आ। अ॒ति॒ष्ठ॒न्। ओष॑धीः। नि॒म्नम्। आप॑:॥७॥**

**पदार्थः**-**(द्वादश)** **(द्यून्)** दिनानि **(यत्)** ये **(अगोह्यस्य)** असंवृतस्य **(आतिथ्ये)** अतिथीनां सत्कारम् **(रणन्)** उपदिशन्तु **(ऋभवः)** मेधाविनः **(ससन्तः)** शयाना उत्थाय **(सुक्षेत्रा)** शोभनानि क्षेत्राणि **(अकृण्वन्)** कुर्वन्ति **(अनयन्त)** नयन्ति **(सिन्धून्)** नदीन् समुद्रान् वा **(धन्व)** अन्तरिक्षम् **(आ)** **(अतिष्ठन्)** तिष्ठन्ति **(ओषधीः)** **(निम्नम्)** **(आपः)** जलानि॥७॥

**अन्वयः**-यद्ये ससन्त ऋभवो यथाऽऽपः सिन्धून् धन्वौषधीर्निम्नमातिष्ठँस्तथाऽगोह्यस्याऽऽतिथ्ये द्वादश द्यून् रणन्त्सुक्षेत्राऽकृण्वन्त्सुखान्यनयन्त ते मङ्गलप्रदाः सन्ति॥७॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। विद्वांसो यथा शयानान् प्रबोद्ध्य जागरयन्ति तथैवाऽविद्यान्त्संशिक्ष्य विदुषः कृत्वाऽऽनन्दयन्तु॥७॥

**पदार्थः**-**(यत्)** जो **(ससन्तः)** सोते हुए उठकर **(ऋभवः)** बुद्धिमान् जन जिस प्रकार से **(आपः)** जलों और **(सिन्धून्)** नदी वा समुद्रों **(धन्व)** तथा अन्तरिक्ष और **(ओषधीः)** ओषधियों के **(निम्नम्)** नीचे **(आ, अतिष्ठन्)** स्थित होते हैं, वैसे **(अगोह्यस्य)** अगुप्त के **(आतिथ्ये)** आतिथ्य में **[अर्थात्]**



www.9009.co.in

अतिथिसम्बन्धी सत्कार में **(द्वादश)** बारह **(द्यून्)** दिन **(रणन्)** उपदेश देवें तथा **(सुक्षेत्रा)** सुन्दर स्थानों को **(अकृण्वन्)** करते और सुखों को **(अनयन्त)** प्राप्त होते हैं, वे मङ्गल देने वाले हैं॥७॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। विद्वान् जन जैसे सोते हुओं को चेताय के जगाते हैं, वैसे ही अविद्वानों को उत्तम शिक्षा दे विद्वान् करके आनन्द देवें॥७॥

**पुनर्मनुष्यगुणानाह॥**

फिर मनुष्यगुणों को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**रथं ये चक्रुः सुवृतं नरेष्ठां ये धेनुं विश्वजुवं विश्वरूपाम्।**

**त आ तक्षन्त्वृभवो रयिं नः स्ववसः स्वपसः सुहस्ताः॥८॥**

**रथम्। ये। चक्रुः। सुऽवृतम्। नरेऽस्थाम्। ये। धेनुम्। विश्वऽजुवम्। विश्वऽरूपाम्। ते। आ। तक्षन्तु। ऋभवः। रयिम्। नः। सुऽअवसः। सुऽअपसः। सुऽहस्ताः॥८॥**

**पदार्थः**-**(रथम्)** विमानादियानम् **(ये)** **(चक्रुः)** कुर्वन्ति **(सुवृतम्)** सुष्ठु रचितं साङ्गोपाङ्गसहितम् **(नरेष्ठाम्)** नरास्तिष्ठन्ति यस्मिंस्तम् **(ये)** **(धेनुम्)** वाचम् **(विश्वजुवम्)** समग्रवेगाम् **(विश्वरूपाम्)** समग्रशास्त्रस्वरूपविदम् **(ते)** **(आ)** **(तक्षन्तु)** रचयन्तु **(ऋभवः)** मेधाविनः **(रयिम्)** धनम् **(नः)** अस्मभ्यम् **(स्ववसः)** शोभनमवी रक्षणादिकं कर्म येषान्ते **(स्वपसः)** सुष्ठु धर्म्याणि कर्म्माणि येषान्ते **(सुहस्ताः)** शोभनाः कर्मसाधका हस्ता येषान्ते॥८॥

**अन्वयः**-य ऋभवः सुवृतं नरेष्ठां रथं चक्रुर्ये विश्वरूपां विश्वजुवं धेनुं प्राप्नुवन्ति ते स्ववसः स्वपसः सुहस्ता नो रयिमा तक्षन्तु॥८॥

**भावार्थः**-ये मनुष्याः प्रथमतो विद्यां पुनर्हस्तक्रियां गृहीत्वा श्रेष्ठाचाराः सन्त आत्मीयं बाह्यञ्च विज्ञानं सुलक्षीकृत्य शिल्पकार्य्याणि कुर्वन्ति ते धीमन्तः सन्त ऐश्वर्य्यं प्राप्नुवन्ति॥८॥

**पदार्थः**-**(ये)** जो **(ऋभवः)** बुद्धिमान् जन **(सुवृतम्)** उत्तम रचित और अङ्गों वा उपाङ्गों के सहित **(नरेष्ठाम्)** मनुष्य जिसमें स्थित होते हैं उस **(रथम्)** विमान आदि वाहन को **(चक्रुः)** करते हैं और **(ये)** जो **(विश्वरूपाम्)** सम्पूर्ण शास्त्रज्ञान वाली और **(विश्वजुवम्)** सम्पूर्ण वेगों से युक्त **(धेनुम्)** वाणी को प्राप्त होते हैं **(ते)** वे **(स्ववसः)** सुन्दर रक्षण आदि कर्म से और **(स्वपसः)** उत्तम प्रकार धर्मयुक्त कर्मों से युक्त **(सुहस्ताः)** सुन्दर कर्मसाधक हाथों वाले **(नः)** हम लोगों के लिये **(रयिम्)** धन को **(आ, तक्षन्तु)** रखें॥८॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य पहिले विद्या को और फिर हस्तक्रिया को ग्रहण करके उत्तम आचरण वाले होते हुए आत्मसम्बन्धी और बाहिर के विशेष ज्ञान को उत्तम प्रकार जांच के शिल्पविद्यासम्बन्धी कार्य्यों को करते हैं, वे बुद्धिमान् होते हुए ऐश्वर्य्य को प्राप्त होते हैं॥८॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**



www.9009.co.in

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अपो ह्येषामजुषन्त देवा अभि क्रत्वा मनसा दीध्यानाः।**

**वाजो देवानामभवत् सुकर्मेन्द्रस्य ऋभुक्षा वरुणस्य विभ्वा॥ ९॥**

**अपः। हि। एषाम्। अजुषन्त। देवाः। अभि। क्रत्वा। मनसा। दीध्यानाः। वाजः। देवानाम्। अभवत्। सुऽकर्मा। इन्द्रस्य। ऋभुक्षाः। वरुणस्य। विऽभ्वा॥ ९॥**

**पदार्थः-(अपः)** विमानादिनिर्माणसाधकं कर्म **(हि)** यतः **(एषाम्)** **(अजुषन्त)** जुषन्ते **(देवाः)** विद्वांसः **(अभि)** **(क्रत्वा)** प्रज्ञया **(मनसा)** विज्ञानेन **(दीध्यानाः)** देदीप्यमानाः **(वाजः)** अन्नादि **(देवानाम्)** विदुषाम् **(अभवत्)** भवति **(सुकर्मा)** शोभनानि कर्माणि यस्य सः **(इन्द्रस्य)** विद्युदादेः **(ऋभुक्षाः)** महान्। **ऋभुक्षा इति महन्नामसु पठितम्।** (निघं०३.३) **(वरुणस्य)** जलादेः **(विभ्वा)** व्याप्त्या॥ ९॥

**अन्वयः**-ये क्रत्वा मनसा दीध्याना देवा ह्येषां पदार्थानां कार्य्यसिद्ध्यर्थमपोऽभ्यजुषन्त सुकर्मा देवानामिन्द्रस्य वरुणस्य विभ्वा वाजो देवानां मध्य ऋभुक्षा अभवत् ते स च श्रीमन्तो जायन्ते॥ ९॥

**भावार्थः**-ये मनुष्या इह सृष्टिस्थानां पदार्थानां सुपरीक्षया संयोगविभागाभ्यां श्रेष्ठान् पदार्थान् कर्माणि च निष्पादयन्ति ते विद्वद्वरा धनाढ्यतमाश्च जायन्ते॥ ९॥

**पदार्थः**-जो **(क्रत्वा)** बुद्धि और **(मनसा)** विज्ञान से **(दीध्यानाः)** प्रकाशमान **(देवाः)** विद्वान् जन **(हि)** जिस कारण **(एषाम्)** इन पदार्थों को कार्य्यसिद्धि के लिये **(अपः)** विमान आदि के बनाने में साधक कर्म का **(अभि, अजुषन्त)** सब प्रकार सेवन करते हैं और **(सुकर्मा)** उत्तम कर्म करने वाला **(देवानाम्)** विद्वानों **(इन्द्रस्य)** बिजुली आदि और **(वरुणस्य)** जल आदि की **(विभ्वा)** व्याप्ति से **(वाजः)** अन्न, आदि विद्वानों के मध्य में **(ऋभुक्षाः)** बड़ा **(अभवत्)** होता है, वे और वह श्रीमान् होते हैं॥ ९॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य इस संसार में सृष्टिस्थ पदार्थों की उत्तम परीक्षा से संयोग और विभाग के द्वारा श्रेष्ठ पदार्थ और कार्य्यों को सिद्ध करते हैं, वे विद्वानों में श्रेष्ठ और अत्यन्त धनी होते हैं॥ ९॥

**पुनर्विद्वद्विषयमाह॥**

फिर विद्वद्विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**ये हरी मेधयोक्था मदन्त इन्द्राय चक्रुः सुयुजा ये अश्वा।**

**ते रायस्पोषं द्रविणान्यस्मे धत्त ऋभवः क्षेमयन्तो न मित्रम्॥ १०॥**

**ये। हरी इति। मेधया। उक्था। मदन्तः। इन्द्राय। चक्रुः। सुऽयुजा। ये अश्वा। ते। रायः। पोषम्। द्रविणानि। अस्मे इति। धत्त। ऋभवः। क्षेमऽयन्तः। न। मित्रम्॥ १०॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**ये**) (**हरी**) तुरङ्गाविवाग्निजले (**मेधया**) प्रज्ञया (**उक्था**) प्रशंसनैः (**मदन्तः**) आनन्दन्तः (**इन्द्राय**) ऐश्वर्य्याय (**चक्रुः**) कुर्वन्ति (**सुयुजा**) यो सुष्ठु युङ्क्तस्तौ (**ये**) (**अश्वा**) आशुगामिनौ (**ते**) (**रायः**) धनादेः (**पोषम्**) पुष्टिम् (**द्रविणानि**) द्रव्याणि यशांसि वा (**अस्मे**) अस्मासु (**धत्त**) धरत (**ऋभवः**) मेधाविनः (**क्षेमयन्तः**) क्षेमं रक्षणं कुर्वन्तः (**न**) इव (**मित्रम्**) सुहृदम्॥१०॥

**अन्वयः**-हे ऋभवो! ये मेधयोक्था मदन्त इन्द्राय हरी अश्वा सुयुजा चक्रुः ये चैतद्विद्यां जानीयुस्ते यूयं मित्रं क्षेमयन्तो नाऽस्मे रायस्पोषं द्रविणानि धत्त॥१०॥

**भावार्थः**-हे विद्वांसो! भवन्तो सृष्टिक्रमेण पदार्थविद्याः प्राप्याऽन्यान् बोधयित्वा स्वसदृशान् कृत्वा धनाढ्यान् कुर्वन्तु॥१०॥

**पदार्थः**-हे (**ऋभवः**) बुद्धिमानो! (**ये**) जो (**मेधया**) बुद्धि (**उक्था**) और प्रशंसाओं से (**मदन्तः**) आनन्द करते हुए (**इन्द्राय**) ऐश्वर्य्य के लिये (**हरी**) घोड़ों के सदृश अग्नि और जल को (**अश्वा**) शीघ्र चलने वाले और (**सुयुजा**) उत्तम प्रकार जुड़े हुए (**चक्रुः**) करते हैं और (**ये**) जो इस विद्या को जानें (**ते**) वे आप लोग (**मित्रम्**) मित्र की (**क्षेमयन्तः**) रक्षा करते हुए के (**न**) सदृश (**अस्मे**) हम लोगों के निमित्त (**रायः, पोषम्**) धन आदि की पुष्टि को (**द्रविणानि**) तथा द्रव्यों वा यशों को (**धत्त**) धारण करो॥१०॥

**भावार्थः**-हे विद्वानो! आप लोग सृष्टि के क्रम से पदार्थविद्याओं को प्राप्त होकर अन्य जनों को बोध कराय के अपने सदृश करके धनाढ्य करो॥१०॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**इ॒दाह्नः पी॒तिमु॒त वो॒ मदं॑ धु॒र्न ऋ॒ते श्रा॒न्तस्य॑ स॒ख्याय॑ दे॒वाः।**

**ते नू॒नम॒स्मे ऋ॑भवो॒ वसू॑नि तृ॒तीये॑ अ॒स्मिन्त्सव॑ने दधात॥११॥२॥**

**इ॒दा। अह्नः॑। पी॒तिम्। उ॒त। व॒ः। मद॑म्। धुः॒। न। ऋ॒ते। श्रा॒न्तस्य॑। स॒ख्याय॑। दे॒वाः। ते। नू॒नम्। अ॒स्मे। इति॑। ऋ॒भ॒व॒ः। वसू॑नि। तृ॒तीये॑। अ॒स्मिन्। सव॑ने। द॒धा॒त॒॥११॥**

**पदार्थः**-(**इदा**) इदानीम् (**अह्नः**) दिनस्य मध्ये (**पीतिम्**) पानम् (**उत**) अपि (**वः**) युष्माकम् (**मदम्**) आनन्दम् (**धुः**) दध्युः (**न**) (**ऋते**) विना (**श्रान्तस्य**) तपसा हतकिल्विषस्य (**सख्याय**) मित्रभावाय (**देवाः**) विद्वांसः (**ते**) (**नूनम्**) निश्चितम् (**अस्मे**) अस्मासु (**ऋभवः**) मेधाविनः (**वसूनि**) धनानि (**तृतीये**) अन्त्ये (**अस्मिन्**) (**सवने**) सत्कर्मणि (**दधात**)॥११॥

**अन्वयः**-हे ऋभवो! ये देवा वो युष्माकमह्नः पीतिमुत वो मदं धुस्त इदा श्रान्तस्य सेवया ऋते सख्याय न प्रभवन्ति तेऽस्मिँस्तृतीये सवनेऽस्मे नूनं दधात॥११॥

**भावार्थः**-ये वर्त्तमाने समये यथार्थं पुरुषार्थं कुर्वन्ति ते धनपतयो भवन्ति ये च विद्वत्सङ्गं न कुर्वन्ति ते धनहीनाः सन्तो दारिद्र्यं भजन्ते॥११॥



www.9009.co.in

अत्र विद्वन्मातापितृमनुष्यगुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिरस्तीति वेद्यम्॥

**इति त्रयस्त्रिंशत्तमं सूक्तं द्वितीयो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे **(ऋभवः)** बुद्धिमानो! जो **(देवाः)** विद्वान् जन **(वः)** आप लोगों में से **(अह्नः)** दिन के मध्य में **(पीतिम्)** पान को **(उत)** और आप लोगों के **(मदम्)** आनन्द को **(धुः)** धारण करें **(ते)** वे **(इदा)** इस समय **(श्रान्तस्य)** तप से नष्ट हुआ है पाप जिसका उसकी सेवा के **(ऋते)** विना **(सख्याय)** मित्रपने के लिये **(न)** नहीं समर्थ होते हैं वे **(अस्मिन्)** इस **(तृतीये)** अन्त्य **(सवने)** श्रेष्ठ कर्म के निमित्त **(अस्मे)** हम लोगों में **(वसूनि)** धनों को **(नूनम्)** निश्चय युक्त **(दधात)** धारण करो॥११॥

**भावार्थः**-जो जन वर्त्तमान समय में यथार्थ पुरुषार्थ को करते हैं, वे धनपति होते हैं और जो विद्वानों के सङ्ग को नहीं करते हैं, वे धन से रहित हुए दारिद्र्य को भजते हैं॥११॥

इस सूक्त में विद्वान्, माता, पिता और मनुष्यों के गुणवर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की पिछले सूक्त के अर्थ के साथ संगति है, यह जानना चाहिये॥

**यह तेतीसवां सूक्त और द्वितीय वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

**अथैकादशर्चस्य चतुस्त्रिंशत्तमस्य सूक्तस्य वामदेव ऋषिः। ऋभवो देवताः। १ विराट् त्रिष्टुप्। २ भुरिक् त्रिष्टुप्। ४-९ निचृत् त्रिष्टुप्। १० त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः। ३, ११, स्वराट् पङ्क्तिः। ५ भुरिक् पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः॥**

**अथ मेधाविगुणानाह॥**

अब ग्यारह ऋचा वाले चौतीसवें सूक्त का आरम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में मेधावी बुद्धिमान् के गुणों को कहते हैं॥

**ऋ॒भुर्विभ्वा॒ वाज॒ इन्द्रो॑ नो॒ अच्छे॒मं य॒ज्ञं र॑त्न॒धेयोप॑ यात।**

**इ॒दा हि वो॑ धि॒षणा॑ दे॒व्यह्ना॒मधा॑त् पी॒तिं सं मदा॑ अग्मता वः॥ १॥**

**ऋ॒भुः। वि॒ऽभ्वा॑। वाज॑ः। इन्द्र॑ः। न॒ः। अच्छ॑। इ॒मम्। य॒ज्ञम्। र॒त्न॒ऽधेया॑। उप॑। या॒त॒। इ॒दा। हि। व॒ः। धि॒षणा॑। दे॒वी। अह्ना॑म्। अधा॑त्। पी॒तिम्। सम्। मदा॑ः। अ॒ग्म॒त॒। व॒ः॥ १॥**

**पदार्थः**-(**ऋभुः**) मेधावी (**विभ्वा**) विभुनेश्वरेण (**वाजः**) विज्ञानवान् (**इन्द्रः**) ऐश्वर्य्ययुक्तः (**नः**) अस्माकम् (**अच्छ**) (**इमम्**) (**यज्ञम्**) विद्याप्रज्ञावर्द्धकम् (**रत्नधेया**) रत्नानि धनानि धीयन्ते यया तस्यै (**उत, यात**) प्राप्नुत (**इदा**) इदानीम् (**हि**) (**वः**) युष्माकम् (**धिषणा**) प्रज्ञा (**देवी**) दिव्यगुणा (**अह्नाम्**) (**अधात्**) दधाति (**पीतिम्**) पानम् (**सम्**) (**मदाः**) आनन्दाः (**अग्मत**) प्राप्नुत। अत्र **संहितायामि**ति दीर्घः। (**वः**) युष्मान्॥ १॥

**अन्वयः**-यथा मदा वः समग्मत यथा हि देवी धिषणाह्नां पीतिमधाद् विद्वांसो यूयं रत्नधेयेमं यज्ञमुप यात तथेदा वाज इन्द्र ऋभुर्विभ्वा नो वोऽच्छायातु॥ १॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यथा युष्मानानन्दाः प्राप्नुयुस्तथैव कर्मप्रज्ञावर्द्धिं च कुरुत विभोरीश्वरस्योपासना च विदधत॥ १॥

**पदार्थः**-जैसे (**मदाः**) आनन्द (**वः**) आप लोगों के (**सम्, अग्मत**) सम्यक् प्राप्त होवें, जैसे (**हि**) निश्चित (**देवी**) श्रेष्ठ गुण वाली (**धिषणा**) बुद्धि (**अह्नाम्**) दिनों के बीच (**पीतिम्**) पान को (**अधात्**) धारण करती है और हे विद्वान् जनो! आप (**रत्नधेया**) धनों को धारण करने वाली क्रिया के लिये (**इमम्**) इस (**यज्ञम्**) विद्या और बुद्धि के बढ़ाने वाले यज्ञ को (**उप, यात**) प्राप्त होवें, वैसे (**इदा**) इस समय (**वाजः**) विज्ञानवान् और (**इन्द्रः**) ऐश्वर्य्य से युक्त (**ऋभुः**) बुद्धिमान् पुरुष (**विभ्वा**) ईश्वर की सहायता से (**नः**) हम लोगों को और (**वः**) तुम लोगों को (**अच्छ**) उत्तम प्रकार प्राप्त हो॥ १॥

**भावार्थः**-[इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है।] हे मनुष्यो! जैसे आप लोगों को आनन्द प्राप्त होवे, वैसे ही कर्म्म और बुद्धि की वृद्धि को करो और व्यापक ईश्वर की उपासना भी करो॥ १॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥



www.9009.co.in

**वि॒दा॒नासो॒ जन्म॑नो वाजरत्ना उ॒त ऋ॒तुभि॑र्ऋभवो मादयध्वम्।**

**सं वो॒ मदा॒ अग्म॑त॒ सं पुरं॑धिः सु॒वीरा॑म॒स्मे र॒यिमेर॑यध्वम्॥ २॥**

**वि॒दा॒नासः॑। जन्म॑नः। वा॒ज॒ऽर॒त्ना॒ः। उ॒त। ऋ॒तुऽभिः॑। ऋ॒भ॒व॒ः। मा॒द॒य॒ध्व॒म्। सम्। व॒ः। मदाः॑। अग्म॑त। सम्। पुर॑म्ऽधिः। सु॒ऽवीरा॑म्। अ॒स्मे इति॑। र॒यिम्। आ। ई॒र॒य॒ध्व॒म्॥ २॥**

**पदार्थः**-(**विदानासः**) ज्ञानवन्तो विद्याग्रहणाय कृतप्रतिज्ञाः (**जन्मनः**) (**वाजरत्नाः**) विज्ञानादीनि रत्नादीनि येषान्ते (**उत**) अपि (**ऋतुभिः**) मेधाविभिः सह (**ऋभवः**) मेधाविनः (**मादयध्वम्**) आनन्दयत (**सम्**) (**वः**) युष्मान् (**मदाः**) आनन्दाः (**अग्मत**) प्राप्नुवन्तु (**सम्**) (**पुरन्धिः**) पुरां धारको राज्यभावः (**सुवीराम्**) शोभना वीरा यस्यां सेनायां ताम् (**अस्मे**) अस्मभ्यम् (**रयिम्**) श्रियम् (**आ**) समन्तात् (**ईरयध्वम्**) प्रापयतम्॥ २॥

**अन्वयः**-हे वाजरत्ना ऋभवो! यूयं जन्मनो विदानासस्सन्त ऋभुभिः सह मादयध्वं यतो वो मदाः समग्मतोत पुरन्धिः प्राप्नोतु। अस्मे सुवीरां रयिं च समेरयध्वम्॥ २॥

**भावार्थः**-ये द्वितीये विद्याजन्मनि प्राप्तविद्यायौवना भवन्ति ते विद्वांसो भूत्वा विद्वत्सु मैत्रीमाचरन्तोऽविदुषां कल्याणाय प्रयतन्ते॥ २॥

**पदार्थः**-हे (**वाजरत्नाः**) विज्ञान आदि रत्नों से युक्त (**ऋभवः**) बुद्धिमानो! आप लोग (**जन्मनः**) जन्म से (**विदानासः**) ज्ञानवान् और विद्या ग्रहण के लिये प्रतिज्ञा करनेवाले हुए (**ऋतुभिः**) बुद्धिमानों के साथ (**मादयध्वम्**) आनन्द कराओ जिससे (**वः**) आप लोगों को (**मदाः**) आनन्द (**सम्**) उत्तम प्रकार (**अग्मत**) प्राप्त हों (**उत**) और (**पुरन्धिः**) नगरों का धारण करनेवाला राज्य प्राप्त हो तथा (**अस्मे**) हम लोगों के लिये (**सुवीराम्**) सुन्दर वीरों से युक्त सेना और (**रयिम्**) लक्ष्मी को (**सम्, आ, ईरयध्वम्**) सब प्रकार से प्राप्त कराओ॥ २॥

**भावार्थः**-जो दूसरे विद्यारूप जन्म के होने पर प्राप्त विद्यारूप यौवनावस्थायुक्त होते हैं, वे विद्वान् होकर विद्वानों में मित्रता करते हैं और अविद्वानों के कल्याण के लिये प्रयत्न करते हैं॥ २॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अ॒यं वो॑ य॒ज्ञ ऋ॑भवोऽकारि॒ यमा म॑नु॒ष्वत् प्र॒दिवो॑ दधि॒ध्वे।**

**प्र वोऽच्छा॑ जुजुषा॒णासो॑ अस्थु॒रभू॑त॒ विश्वे॑ अग्रि॒योत वा॑जाः॥ ३॥**

**अ॒यम्। व॒ः। य॒ज्ञः। ऋ॒भ॒व॒ः। अ॒का॒रि॒। यम्। आ। म॒नु॒ष्वत्। प्र॒ऽदिवः॑। द॒धि॒ध्वे। प्र। व॒ः। अ॒च्छ॑। जु॒जु॒षा॒णासः॑। अ॒स्थु॒ः। अभू॑त। विश्वे॑। अ॒ग्रि॒या। उ॒त। वा॒जा॒ः॥ ३॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-**(अयम्)** **(वः)** युष्माकम् **(यज्ञः)** अध्यापनोपदेशाख्यः **(ऋभवः)** **(अकारि)** क्रियते **(यम्)** **(आ)** **(मनुष्वत्)** मननशीलविद्वद्वत् **(प्रदिवः)** प्रकर्षेण विद्यादिसद्गुणान् कामयमानान् **(दधिध्वे)** धरत **(प्र)** **(वः)** युष्मान् **(अच्छा)** अत्र **संहितायामि**ति दीर्घः। **(जुजुषाणासः)** भृशं सेवमानाः **(अस्थुः)** तिष्ठन्तु **(अभूत)** भवत **(विश्वे)** सर्वे **(अग्रिया)** अग्रे भवाः **(उत)** अपि **(वाजाः)** सत्कर्मसु वेगाः॥३॥

**अन्वयः**-हे ऋभवो! विद्वद्भिरयं वो यज्ञोऽकारि यं मनुष्वद् यूयं दधिध्वे। ये प्रदिवो वोऽच्छा जुजुषाणासः प्रास्थुरुतापि विश्व अग्रिया वाजा ये भवेयुस्तान् यूयं प्राप्ता अभूत॥३॥

**भावार्थः**-हे धीमन्तो विद्यार्थिनो! ये युष्मभ्यं विद्यां प्रयच्छेयुस्तान्निष्कपटेन प्रीत्या सेवध्वं जितेन्द्रिया भूत्वा यथार्थविद्यां प्राप्नुत॥३॥

**पदार्थः**-हे **(ऋभवः)** बुद्धिमानो! विद्वानों से जो **(अयम्)** यह **(वः)** आप लोगों का **(यज्ञः)** पढ़ाना और उपदेश करना रूप यज्ञ **(अकारि)** किया जाता है **(यम्)** जिसको **(मनुष्वत्)** विचार करने वाले विद्वानों के सदृश आप लोग **(दधिध्वे)** धारण करो और जो **(प्रदिवः)** अतिशय विद्या आदि उत्तम गुणों की कामना करते हुए **(वः)** आप लोगों की **(अच्छा)** उत्तम प्रकार **(आ, जुजुषाणासः)** अत्यन्त सेवा करते हुए **(प्र, अस्थुः)** उत्तम स्थित हूजिये **(उत)** और **(विश्वे)** सम्पूर्ण **(अग्रिया)** प्रथम उत्पन्न हुए **(वाजाः)** श्रेष्ठ कर्म्मों में वेग जो होवें, उनको आप लोग प्राप्त **(अभूत)** हूजिये॥३॥

**भावार्थः**-हे बुद्धिमान् विद्यार्थी जनो! जो आप लोगों के लिये विद्या देवें, उनकी कपटरहित प्रीति से सेवा करो और जितेन्द्रिय होकर यथार्थ विद्या को प्राप्त होओ॥३॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अभूदु वो विधते रत्नधेयमिदा नरो दाशुषे मर्त्याय।**

**पिबत वाजा ऋभवो ददे वो महि तृतीयं सवनं मदाय॥४॥**

**अभूत्। ऊम् इति। वः। विधते। रत्नऽधेयम्। इदा। नरः। दाशुषे। मर्त्याय। पिबत। वाजाः। ऋभवः। ददे। वः। महि। तृतीयम्। सवनम्। मदाय॥४॥**

**पदार्थः**-**(अभूत्)** भवेत् (उ) वितर्के **(वः)** युष्मभ्यम् **(विधते)** विद्यासुशिक्षाविधानं कुर्वतेऽध्यापकोपदेशकाय वा **(रत्नधेयम्)** रत्नानि धीयन्ते यस्मिँस्तत् **(इदा)** **(नरः)** नेतारः **(दाशुषे)** विद्यादात्रे **(मर्त्याय)** मनुष्याय **(पिबत)** **(वाजाः)** विज्ञानवन्तः **(ऋभवः)** प्राज्ञाः **(ददे)** दद्याम् **(वः)** युष्मभ्यम् **(महि)** महत् **(तृतीयम्)** त्रयाणां पूरकम् **(सवनम्)** सुखैश्वर्य्यम् **(मदाय)** आनन्दाय॥४॥

**अन्वयः**-हे वाजा नर ऋभवो! वो विधते दाशुषे मर्त्याय रत्नधेयमिदाभूदु वो युष्मभ्यं यन्मदाय महि तृतीयं सवनमहं ददे तद्यूयं पिबत युष्मभ्यं विद्यामहमाददे॥४॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-हे मनुष्या! येषां सकाशाद्विद्या भवन्तो गृह्णीयुस्तेभ्यो रत्नानि ददतु। यत उभयत्र विद्यैश्वर्य्यं वर्द्धेत॥४॥

**पदार्थः**-हे **(वाजाः)** बुद्धिमान् **(नरः)** सत्कर्म्मों में अग्रगामी और **(ऋभवः)** विज्ञानवान् जनो! **(वः)** आप लोगों के वा **(विधते)** विद्या और उत्तम शिक्षा का ग्रहण करते हुए अध्यापक वा उपदेशक जन के तथा **(दाशुषे)** विद्या के देने वाले **(मर्त्याय)** मनुष्य के लिये **(रत्नधेयम्)** रत्नों का पात्र **(इदा)** इस समय **(अभूत्)** होवे **(उ)** और **(वः)** आप लोगों के लिये जो **(मदाय)** आनन्द के अर्थ **(महि)** बड़े **(तृतीयम्)** तीन संख्या को पूर्ण करने वाले **(सवनम्)** सुख और ऐश्वर्य को मैं **(ददे)** देता हूँ, उसका आप लोग **(पिबत)** पान करो और आप लोगों से मैं विद्याग्रहण करता हूँ॥४॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जिन लोगों के समीप से विद्या आप लोग ग्रहण करें, उनके लिये रत्न दो, जिससे दोनों जगह विद्या और ऐश्वर्य्य बढ़े॥४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**आ वाजा यातोप न ऋभुक्षा महो नरो द्रविणसो गृणानाः।**

**आ वः पीतयोऽभिपित्वे अह्नामिमा अस्तं नवस्वइव ग्मन्॥५॥३॥**

**आ। वाजाः। यात। उप। नः। ऋभुक्षाः। महः। नरः। द्रविणसः। गृणानाः। आ। वः। पीतयः। अभिऽपित्वे। अह्नाम्। इमाः। अस्तम्। नवस्वःऽइव। ग्मन्॥५॥**

**पदार्थः**-**(आ)** समन्तात् **(वाजाः)** प्राप्तब्रह्मचर्य्याः **(यात)** प्राप्नुत **(उप)** **(नः)** अस्मान् **(ऋभुक्षाः)** सद्गुणैर्महान्तः **(महः)** पूजनीयाः **(नरः)** नेतारः **(द्रविणसः)** यशोधनस्य **(गृणानाः)** स्तुवन्तः **(आ)** **(वः)** युष्मान् **(पीतयः)** पानानि **(अभिपित्वे)** प्राप्तौ **(अह्नाम्)** दिनानाम् **(इमाः)** प्रत्यक्षाः **(अस्तम्)** गृहम् **(नवस्वइव)** यथा नवीनसुखः **(ग्मन्)** प्राप्नुवन्तु॥५॥

**अन्वयः**-हे ऋभुक्षा वाजा महो नरो! द्रविणसो गृणाना यूयं न उपायाताह्नामभिपित्व इमाः पीतयोऽस्तं नवस्वइव व आग्मन्॥५॥

**भावार्थः**-सर्वैमनुष्यैरियमाशीर्नित्या कर्त्तव्यास्मानाप्ताविद्वांसः प्राप्नुताऽहर्निशमैश्वर्य्यप्राप्तिर्भवेद् यथा नूतना विवाहाश्रमं सेवन्ते तथैव स्त्रीपुरुषा गृहकृत्यानि सेवेरन्॥५॥

**पदार्थः**-हे **(ऋभुक्षाः)** उत्तम गुणों से बड़े **(वाजाः)** ब्रह्मचर्य्य को प्राप्त **(महः)** आदर करने योग्य **(नरः)** नायक! **(द्रविणसः)** यशरूप धन की **(गृणानाः)** स्तुति प्रशंसा करते हुए आप लोग **(नः)** हम लोगों के **(उप, आ, यात)** समीप प्राप्त हूजिये और **(अह्नाम्)** दिनों की **(अभिपित्वे)** प्राप्ति होने में **(इमाः)** यह प्रत्यक्ष **(पीतयः)** जो पान हैं वह **(अस्तम्, नवस्वइव)** जैसे नवीन सुख वाला घर को प्राप्त होता है, वैसे **(वः)** आपको **(आ, ग्मन्)** प्राप्त हों॥५॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-सब मनुष्यों को चाहिये कि ऐसी इच्छा नित्य करें कि हम लोगों को यथार्थवक्ता विद्वान् लोग प्राप्त होवें और दिन-रात्रि ऐश्वर्य्य की प्राप्ति होवे। जैसे नवीन विवाहाश्रम का सेवन करते हैं, वैसे ही स्त्री और पुरुष गृह के कृत्यों का सेवन करें॥५॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**आ नपातः शवसो यातनोपेमं यज्ञं नमसा हूयमानाः।**

**सजोषसः सूरयो यस्य च स्थ मध्वः पात रत्नधा इन्द्रवन्तः॥६॥**

**आ। नपातः। शवसः। यातन। उप। इमम्। यज्ञम्। नमसा। हूयमानाः। सऽजोषसः। सूरयः। यस्य। च। स्थ। मध्वः। पात। रत्नऽधाः। इन्द्रऽवन्तः॥६॥**

**पदार्थः**-(**आ**) (**नपातः**) न विद्यते पात् पतनं येषान्ते (**शवसः**) बलवन्तः (**यातन**) प्राप्नुत (**उप**) (**इमम्**) (**यज्ञम्**) विद्यावृद्धिकरं व्यवहारम् (**नमसा**) सत्कारेण (**हूयमानाः**) स्पर्द्धमानाः (**सजोषसः**) समानप्रीतिसेवनाः (**सूरयः**) विद्वांसः (**यस्य**) (**च**) (**स्थ**) सन्तु (**मध्वः**) मधुरगुणयुक्तस्य (**पात**) रक्षत (**रत्नधाः**) ये रत्नानि धनानि दधति ते (**इन्द्रवन्तः**) ऐश्वर्य्यवन्तः॥६॥

**अन्वयः**-हे हूयमानाः शवसो नपातः सजोषसो रत्नधा इन्द्रवन्तः सूरयो! यूयन्नमसेमं यज्ञमुपायातन यस्य च मध्वः प्राप्ताः स्थ तन्नित्यं पात॥६॥

**भावार्थः**-मनुष्यैः परस्परम्मित्रतां विधाय शरीरात्मबलं वर्द्धयित्वा विद्याधनैश्वर्य्यं प्राप्य संरक्ष्य वर्द्धयित्वाऽनेन सर्वे सुखिनः कर्त्तव्याः॥६॥

**पदार्थः**-हे (**हूयमानाः**) ईर्ष्या करते हुए (**शवसः**) बलयुक्त (**नपातः**) नहीं गिरना जिनके विद्यमान (**सजोषसः**) तुल्य प्रीति के सेवनकर्त्ता (**रत्नधाः**) धनों को धारण करने वाले (**इन्द्रवन्तः**) ऐश्वर्य्य से युक्त (**सूरयः**) विद्वान् जनो! आप लोग (**नमसा**) सत्कार से (**इमम्**) इस (**यज्ञम्**) विद्यावृद्धि करनेवाले यज्ञ को (**उप, आ, यातन**) प्राप्त हूजिये (**च**) और (**यस्य**) जिसके (**मध्वः**) मधुरगुणयुक्त पदार्थ को प्राप्त (**स्थ**) होओ उसकी नित्य (**पात**) रक्षा कीजिये॥६॥

**भावार्थः**-मनुष्यों को चाहिये कि परस्पर मित्रता कर शरीर और आत्मा का बल बढ़ाय, विद्याधनरूप ऐश्वर्य्य को प्राप्त हों, उसकी उत्तम प्रकार रक्षा कर और बढ़ाय के इससे सब को सुखी करें॥६॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**सजोषा इन्द्र वरुणेन सोमं सजोषाः पाहि गिर्वणो मरुद्भिः।**



www.9009.co.in

**अ॒ग्रे॒पाभि॑र्ऋ॒तु॒पाभि॑: स॒जोषा॒ ग्नास्पत्नी॑भी रत्न॒धाभि॑: स॒जोषा॑:॥७॥**

**स॒ऽजोषा॑:। इ॒न्द्र॒। वरु॑णेन। सोम॑म्। स॒ऽजोषा॑:। पा॒हि॒। गि॒र्व॒ण॒:। म॒रुत्ऽभि॑:। अ॒ग्रे॒ऽपाभि॑:। ऋ॒तु॒ऽपाभि॑:। स॒ऽजोषा॑:। ग्ना:पत्नी॑भि:। र॒त्न॒ऽधाभि॑:। स॒ऽजोषा॑:॥७॥**

**पदार्थ:**-(**सजोषा:**) समानप्रीतिसेवी (**इन्द्र**) ऐश्वर्य्यप्रद (**वरुणेन**) वरेण पुरुषार्थेन (**सोमम्**) ऐश्वर्य्यम् (**सजोषा:**) (**पाहि**) (**गिर्वण:**) गीर्भि: स्तुत (**मरुद्भि:**) मनुष्यै: सह (**अग्रेपाभि:**) येऽग्रे पान्ति रक्षन्ति तै: (**ऋतुपाभि:**) ये ऋतुषु पान्ति तै: (**सजोषा:**) (**ग्नास्पत्नीभि:**) या ग्ना: पतीनां स्त्रियस्ताभि: (**रत्नधाभि:**) या रत्नानि द्रव्याणि दधति ताभि: (**सजोषा:**)॥७॥

**अन्वय:**-हे गिर्वण इन्द्र! त्वं वरुणेन सजोषा: सोमं पाह्यग्रेपाभिर्मरुद्भि: सह सजोषा: सन्त्सोमं पाहि त्वं रत्नधाभिर्ग्नास्पत्नीभि: सह सजोषा: सोमं पाहि त्वमृतुपाभि: सह सजोषा: सोमं पाहि॥७॥

**भावार्थ:**-हे मनुष्या! यूयं सत्पुरुषसन्धिनैश्वर्य्यमुन्नयत ये विनाशात् पुरस्तादृतुषु च रक्षां कुर्वन्ति या च स्वपत्नी पतिव्रता भवति तैस्तया च सह समानप्रीतिसुखदु:खलाभसेविन: सन्त: सर्वेषां प्रिया भवत॥७॥

**पदार्थ:**-हे (**गिर्वण:**) वाणियों से स्तुति किये (**इन्द्र**) ऐश्वर्य्य के देने वाले! आप (**वरुणेन**) श्रेष्ठ पुरुषार्थ से (**सजोषा:**) तुल्य प्रीति के सेवने वाले (**सोमम्**) ऐश्वर्य्य की (**पाहि**) रक्षा करो और (**अग्रेपाभि:**) प्रथम रक्षा करने वाले (**मरुद्भि:**) मनुष्यों के साथ (**सजोषा:**) तुल्य प्रीति सेवने वाले हुए ऐश्वर्य्य की रक्षा करो और आप (**रत्नधाभि:**) द्रव्यों को धारण करने वाली (**ग्नास्पत्नीभि:**) पतियों की स्त्रियों के साथ (**सजोषा:**) समान सेवने वाले ऐश्वर्य्य की रक्षा करो और आप (**ऋतुपाभि:**) ऋतुओं में रक्षा करने वालों के साथ (**सजोषा:**) समान सेवन करने वाले ऐश्वर्य्य की रक्षा करो॥७॥

**भावार्थ:**-हे मनुष्यो! आप लोग श्रेष्ठ पुरुषों के मेल से ऐश्वर्य्य की उन्नति करो और जो विनाश से पहिले और ऋतुओं में रक्षा करते हैं और जो अपनी स्त्री पतिव्रता होती है, उन मनुष्यों और उस स्त्री के साथ तुल्य प्रीति, सुख-दु:ख और लाभ का सेवन करते हुए सब के प्रिय होओ॥७॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**स॒जोष॑स आदि॒त्यैर्मा॑दयध्वं स॒जोष॑स ऋभव॒: पर्व॑तेभि:।**

**स॒जोष॑सो॒ दैव्ये॑ना सवि॒त्रा स॒जोष॑स॒: सिन्धु॑भी रत्न॒धेभि॑:॥८॥**

**स॒ऽजोष॑स:। आ॒दि॒त्यै:। मा॒द॒य॒ध्व॒म्। स॒ऽजोष॑स:। ऋ॒भ॒व॒:। पर्व॑तेभि:। स॒ऽजोष॑स:। दैव्ये॑न। स॒वि॒त्रा। स॒ऽजोष॑स:। सिन्धु॑ऽभि:। र॒त्न॒ऽधेभि॑:॥८॥**

**पदार्थ:**-(**सजोषस:**) समानोत्तमगुणकर्मस्वभावसेविन: (**आदित्यै:**) कृताष्टाचत्वरिंशद् ब्रह्मचर्य्यविद्यै: (**मादयध्वम्**) परस्परानानन्दयत (**सजोषस:**) (**ऋभव:**) मेधाविन: (**पर्वतेभि:**) मेघै: सह

**(सजोषसः)** **(दैव्येन)** दिव्यस्वरूपेण। अत्र **संहितायामि**ति दीर्घः। **(सवित्रा)** विद्युद्रूपेण **(सजोषसः)** **(सिन्धुभिः)** नदीभिः समुद्रैर्वा **(रत्नधेभिः)** ये रत्नानि द्रव्याणि दधति तैः॥८॥

**अन्वयः**-हे ऋभवो! यूयमादित्यैः सह सजोषसः पर्वतेभिः सह सजोषसः दैव्येना सवित्रा सह सजोषसो रत्नधेभिः सिन्धुभिः सह सजोषसः सन्तोऽस्मान् मादयध्वम्॥८॥

**भावार्थः**-ये मनुष्याः पूर्णविद्यैः सह सङ्गत्य पदार्थविद्यां गृह्णन्ति ते विमानादीनि निर्माय मेघमण्डले तत ऊर्ध्वं वा समुद्रेषु नदीषु च सुखेन विहर्त्तुमर्हन्ति॥८॥

**पदार्थः**-हे **(ऋभवः)** बुद्धिमानो! आप लोग **(आदित्यैः)** अड़तालीस वर्ष पर्यन्त ब्रह्मचर्य्य और विद्या का ग्रहण जिन्होंने किया उनके साथ **(सजोषसः)** समान उत्तम गुण, कर्म, स्वभाव के सेवन करने और **(पर्वतेभिः)** मेघों के साथ **(सजोषसः)** समान उत्तम गुण, कर्म, स्वभाव के सेवन करने और **(दैव्येन)** उत्तम स्वरूप वाले **(सवित्रा)** बिजुलीरूप के साथ **(सजोषसः)** तुल्य प्रीति सेवन करने **(रत्नधेभिः)** रत्नों को धारण करने वाले **(सिन्धुभिः)** नदी वा समुद्रों के साथ **(सजोषसः)** उत्तम गुण, कर्म, स्वभाव के सेवन करने वाले हुए आप हम लोगों को परस्पर **(मादयध्वम्)** आनन्दित कीजिये॥८॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य पूर्ण विद्वानों के साथ मेल करके पदार्थविद्या का ग्रहण करते हैं, वे विमान आदि को रचके मेघमण्डल वा उससे ऊपर समुद्र और नदियों में सुख से विहार करने के योग्य होते हैं॥८॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**ये अश्विना ये पितरा य ऊती धेनुं ततक्षुर्ऋभवो ये अश्वा।**

**ये अंसत्रा य ऋधग्रोदसी ये विभ्वो नरः स्वपत्यानि चक्रुः॥९॥**

**ये। अश्विना। ये पितरा। ये। ऊती। धेनुम्। ततक्षुः। ऋभवः। ये। अश्वा। ये। अंसत्रा। ये। ऋधक्। रोदसी इति। ये। विऽभ्वः। नरः। सुऽअपत्यानि। चक्रुः॥९॥**

**पदार्थः**-**(ये)** **(अश्विना)** सकलविद्याव्याप्तौ **(ये)** **(पितरा)** सर्वथा पालकौ **(ये)** **(ऊती)** रक्षणाद्येन **(धेनुम्)** विद्यासहितां वाचम् **(ततक्षुः)** सूक्ष्मां विस्तृताञ्च कुर्वन्ति **(ऋभवः)** मेधाविनः **(ये)** **(अश्वा)** वेगेनाऽध्वनि व्याप्तिशीलौ युग्मौ पदार्थौ **(ये)** **(अंसत्रा)** अंसान् गत्यादीन् रक्षतस्तौ **(ये)** **(ऋधक्)** यथार्थतया **(रोदसी)** द्यावापृथिव्यौ **(ये)** **(विभ्वः)** सकलविद्यासु व्यापकाः **(नरः)** नेतारो मनुष्याः **(स्वपत्यानि)** सुष्ठु शिक्षयोत्तमानि चापत्यानि च तानि **(चक्रुः)** कुर्य्युः॥९॥

**अन्वयः**-य ऋभवोऽश्विना ये पितरा येऽश्वा येंऽसत्रा ये रोदसी ये च विभ्वो नरो य ऋभव ऊती धेनुं ततक्षुः स्वपत्यानि चर्धक् चक्रुस्ते महाभाग्यशालिनः स्युः॥९॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-ये मनुष्या विद्यां सत्पुरुषसङ्गं वृद्धसेवनं प्राप्तरक्षां च कृत्वा स्वसन्तानाञ्छ्रेष्ठान् कुर्य्युस्ते विस्तीर्णसुखप्राप्ता भवेयुः॥९॥

**पदार्थः**-(**ये**) जो (**ऋभवः**) बुद्धिमान् (**अश्विना**) सम्पूर्ण विद्याओं में व्याप्त (**ये**) जो (**पितरा**) सब प्रकार से पालन करने वाले और (**ये**) जो (**अश्वा**) वेग से मार्ग के बीच व्याप्त होने वाले दो पदार्थ (**ये**) (**अंसत्रा**) गमन आदि के रक्षक और (**ये**) जो (**रोदसी**) अन्तरिक्ष और पृथिवी और (**ये**) जो (**विभ्वः**) सम्पूर्ण विद्याओं में व्यापक (**नरः**) नायक मनुष्य और (**ये**) जो बुद्धिमान् (**ऊती**) रक्षण आदि से (**धेनुम्**) विद्यासहित वाणी को (**ततक्षुः**) सूक्ष्म और विस्तारयुक्त करते हैं और (**स्वपत्यानि**) उत्तम शिक्षा से सन्तानों को श्रेष्ठ (**ऋधक्**) यथार्थ भाव से (**चक्रुः**) करें, वे बड़े भाग्यशाली होवें॥९॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य विद्या और सत्पुरुषों का संग, वृद्धों का सेवन और अपने समीप प्राप्तों की रक्षा करके अपने सन्तानों को श्रेष्ठ करें, वे विस्तारयुक्त सुख को प्राप्त होवें॥९॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**ये गोम॑न्तं॒ वाज॑वन्तं सु॒वीरं॑ र॒यिं ध॒त्थ वसु॑मन्तं पु॒रु॒क्षुम्।**

**ते अ॑ग्रे॒पा ऋ॑भवो मन्दसा॒ना अ॒स्मे ध॑त्त॒ ये च॑ रा॒तिं गृ॒णन्ति॑॥१०॥**

**ये। गोऽम॑न्तम्। वाज॑ऽवन्तम्। सु॒ऽवीर॑म्। र॒यिम्। ध॒त्थ। वसु॑ऽमन्तम्। पु॒रु॒ऽक्षुम्। ते। अ॒ग्रे॒ऽपाः। ऋ॒भ॒वः। म॒न्द॒सा॒नाः। अ॒स्मे इति॑। ध॒त्त॒। ये। च॒। रा॒तिम्। गृ॒णन्ति॑॥१०॥**

**पदार्थः**-(**ये**) (**गोमन्तम्**) बह्व्यो गावो विद्यन्ते यस्मिँस्तं बहुराज्ययुक्तम् (**वाजवन्तम्**) बह्वन्नविज्ञानसाधकम् (**सुवीरम्**) उत्तमवीरप्रापकम् (**रयिम्**) धनम् (**धत्थ**) (**वसुमन्तम्**) बहुविधद्रव्यसहितम् (**पुरुक्षुम्**) बहुधनधान्यसहितम् (**ते**) (**अग्रेपाः**) पुरस्ताद्रक्षकाः (**ऋभवः**) विपश्चितः (**मन्दसानाः**) आनन्दन्तः (**अस्मे**) धत्त (**ये**) (**च**) (**रातिम्**) दानम् (**गृणन्ति**) स्तुवन्ति॥१०॥

**अन्वयः**-हे ऋभवो! ये गोमन्तं वाजवन्तं वसुमन्तं पुरुक्षुं सुवीरं रयिं येऽग्रेपा मन्दसाना ये चाऽस्मे रातिं गृणन्ति ते यूयमेतदस्मे धत्थैतेनास्मासु सुखं धत्त॥१०॥

**भावार्थः**-हे विद्वांसो! यूयं येभ्यः साध्यजन्यसुखं प्राप्याऽन्येभ्यो दत्थ ते सुपात्रेभ्यो दानं दातुं प्रशंसन्ति॥१०॥

**पदार्थः**-हे (**ऋभवः**) विद्वानो! (**ये**) जो (**गोमन्तम्**) बहुत गौओं से युक्त (**वाजवन्तम्**) बहुत अन्न और विज्ञान के साधने वाले और (**वसुमन्तम्**) अनेक प्रकार द्रव्यों तथा (**पुरुक्षुम्**) बहुत धन और धान्य के सहित (**सुवीरम्**) श्रेष्ठ वीरों के प्राप्त कराने वाले (**रयिम्**) धन को (**ये**) जो (**अग्रेपाः**) पहिले रक्षा करने वाले (**मन्दसानाः**) आनन्द करते हुए (**च**) और जो (**अस्मे**) हम लोगों के लिये (**रातिम्**) दान



www.9009.co.in

की **(गृणन्ति)** स्तुति करते हैं **(ते)** वे आप लोग इसको हम लोगों के लिये **(धत्थ)** धारण करो और इससे हम लोगों में सुख को **(धत्त)** धारण करो॥१०॥

**भावार्थः**-हे विद्वानो! आप लोग जिनके लिये सिद्ध करने योग्य पदार्थ से उत्पन्न सुख को प्राप्त होकर अन्य जनों के लिये देते हैं, वे सुपात्रों के लिये दान देने की प्रशंसा करते हैं॥१०॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**नापाभूत न वोऽतीतृषामानिःशस्ता ऋभवो यज्ञे अस्मिन्।**

**समिन्द्रेण मदथ सं मरुद्भिः सं राजभी रत्नधेयाय देवाः॥११॥४॥**

**न। अप। अभूत। न। वः। अतीतृषाम। अनिःऽशस्ताः। ऋभवः। यज्ञे। अस्मिन्। सम्। इन्द्रेण। मदथ। सम्। मरुत्ऽभिः। सम्। राजऽभिः। रत्नऽधेयाय। देवाः॥११॥**

**पदार्थः**-**(न)** निषेधे **(अप, अभूत)** तिरस्कृता भवत **(न)** **(वः)** युष्मान् **(अतितृषाम)** अतितृष्णायुक्तान् कुर्य्याम। अत्र **संहितायामिति** दीर्घः। **(अनिःशस्ताः)** निर्गतं शस्तं प्रशंसनं येभ्यस्तद्विरुद्धाः **(ऋभवः)** मेधाविनः **(यज्ञे)** राज्यपालनाख्ये **(अस्मिन्)** **(सम्)** **(इन्द्रेण)** ऐश्वर्य्येण **(मदथ)** आनन्दत **(सम्)** **(मरुद्भिः)** उत्तमैर्मनुष्यैः सह **(सम्)** **(राजभिः)** **(रत्नधेयाय)** रत्नानि धीयन्ते यस्मिन् कोषे तस्मै **(देवाः)** विद्वांसः॥११॥

**अन्वयः**-हे देवा ऋभवोऽनिःशस्ता यूयं क्वापि नापाभूत यथाऽस्मिन् यज्ञे वो नातितृषाम तथाऽत्रेन्द्रेण सह सम्मदथ मरुद्भिः सह सम्मदथ राजभिः सह रत्नधेयाय सम्मदथ॥११॥

**भावार्थः**-ये लोभादिदोषरहिता राजप्रजाजनैः सह मिलित्वा गृहाश्रमव्यवहारमुन्नयन्ति ते क्वापि तिरस्कृता न भवन्ति॥११॥

अत्र मेधाविगुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति चतुस्त्रिंशत्तमं सूक्तं चतुर्थो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे **(देवाः)** विद्वान् और **(ऋभवः)** बुद्धिमानो! **(अनिःशस्ताः)** निरन्तर प्रशंसा को प्राप्त आप लोग कहीं भी **(न)** नहीं **(अप, अभूत)** तिरस्कृत हूजिये और जैसे **(अस्मिन्)** इस **(यज्ञे)** राज्यपालन करने रूप यज्ञ में **(वः)** तुम लोगों को **(न)** नहीं **(अतितृषाम)** अतितृष्णा युक्त करें, वैसे इस में **(इन्द्रेण)** ऐश्वर्य्य के साथ **(सम्, मदथ)** आनन्द करो और **(मरुद्भिः)** उत्तम मनुष्यों के साथ **(सम्)** आनन्द करो और **(राजभिः)** राजा लोगों के साथ **(रत्नधेयाय)** जिसमें धन रक्खे जाते हैं उस कोश के लिये **(सम्)** आनन्द करो॥११॥

**भावार्थः**-जो लोभ आदि दोषों से रहित हुए राजा और प्रजाजनों के साथ मिल कर गृहाश्रम के व्यवहार की उन्नति करते हैं, वे कहीं तिरस्कृत नहीं होते हैं॥११॥



www.9009.co.in

इस सूक्त में मेधावी के गुणवर्णन होने से इस सूक्त के अर्थ की पिछले सूक्त के अर्थ के साथ संगति है, यह जानना चाहिये॥

**यह चौबीसवां सूक्त और चौथा वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

**अथ नवर्चस्य पञ्चत्रिंशत्तमस्य सूक्तस्य वामदेव ऋषिः। ऋभवो देवताः। १, २, ४, ६, ७, ९ निचृत् त्रिष्टुप्। ८ त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः। ३ भुरिक् पङ्क्तिः। ५ स्वराट् पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः॥**

**अथ विद्वद्विषयमाह॥**

अब नव ऋचा वाले पैंतीसवें सूक्त का आरम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में विद्वान् के विषय को कहते हैं॥

**इहोप यात शवसो नपातः सौधन्वना ऋभवो माप भूत।**

**अस्मिन् हि वः सवने रत्नधेयं गमन्त्विन्द्रमनु वो मदासः॥१॥**

**इह। उप। यात। शवसः। नपातः। सौधन्वनाः। ऋभवः। मा। अप। भूत। अस्मिन्। हि। वः। सवने। रत्नऽधेयम्। गमन्तु। इन्द्रम्। अनु। वः। मदासः॥१॥**

**पदार्थः**-(**इह**) अस्मिन् (**उप**) (**यात**) प्राप्नुत (**शवसः**) प्रशस्तबलाः (**नपातः**) अविद्यमानह्रासाः (**सौधन्वनाः**) शोभनानि धन्वान्यन्तरिक्षस्थानि येषान्तेषामिमे (**ऋभवः**) मेधाविनः (**मा**) निषेधे (**अप**) (**भूत**) अपमानयुक्ता भवत (**अस्मिन्**) (**हि**) यतः (**वः**) युष्माकम् (**सवने**) क्रियामये व्यवहारे (**रत्नधेयम्**) (**गमन्तु**) गच्छन्तु (**इन्द्रम्**) परमैश्वर्य्यम् (**अनु**) (**वः**) युष्माकम् (**मदासः**) आनन्दाः॥१॥

**अन्वयः**-हे शवसो नपातः सौधन्वना ऋभवो! यूयमिहोप यात वोऽस्मिन्त्सवने हि वो मदासो रत्नधेयमिन्द्रमनुगमन्तु। अत्र एतत्प्राप्य क्वचिन्मापभूत तिरस्कृता मा भवत॥१॥

**भावार्थः**-य उत्साहेनैश्वर्य्यमुन्नेतुमिच्छन्ति ते सकलैश्वर्य्यं प्राप्य सर्वत्र सत्कृता ये चालसास्ते दरिद्रत्वेनाऽभिभूताः सदा तिरस्कृता भवन्ति॥१॥

**पदार्थः**-हे (**शवसः**) प्रशंसा करने योग्य बलयुक्त (**नपातः**) पतनरहित अर्थात् हानि से रहित (**सौधन्वनाः**) सुन्दर धनुष् अन्तरिक्ष में स्थित जिनके उनके सम्बन्धी (**ऋभवः**) बुद्धिमानो! आप लोग (**इह**) यहाँ (**उप, यात**) समीप में प्राप्त हूजिये (**वः**) आप लोगों के (**अस्मिन्**) इस (**सवने**) क्रियामय व्यवहार में (**हि**) जिस कारण (**वः**) आप लोगों के (**मदासः**) आनन्द (**रत्नधेयम्**) धन धरने के पात्ररूप (**इन्द्रम्**) परम ऐश्वर्य्य युक्त जन के (**अनु, गमन्तु**) पीछे जावें, इस कारण इसको प्राप्त होकर कहीं (**मा**) मत (**अप, भूत**) अपमान से युक्त हूजिये॥१॥

**भावार्थः**-जो लोग उत्साह से ऐश्वर्य्य की वृद्धि करने की इच्छा करते हैं, वे सब जगह सम्पूर्ण ऐश्वर्य्य को प्राप्त होकर सर्वत्र सत्कारयुक्त और जो आलस्ययुक्त होते हैं, वे दरिद्रपन से अभिभूत अर्थात् सदा तिरस्कृत होते हैं॥१॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥



www.9009.co.in

**आग॑न्नृभूणामि॒ह र॑त्न॒धेय॒मभू॑त् सोम॑स्य॒ सुषु॑तस्य पी॒तिः।**

**सु॒कृ॒त्यया॒ यत्स्व॑प॒स्यया॑ चँ॒ एकं॑ विच॒क्र च॑म॒सं च॑तु॒र्धा॥२॥**

**आ। अ॒ग॒न्। ऋ॒भू॒णाम्। इ॒ह। र॒त्न॒ऽधेय॑म्। अभू॑त्। सोम॑स्य। सुऽसु॑तस्य। पी॒तिः। सु॒ऽकृ॒त्यया॑। यत्। सु॒ऽअ॒प॒स्यया॑। च॒। एक॑म्। वि॒ऽच॒क्र। च॒म॒सम्। च॒तुः॒ऽधा॥२॥**

**पदार्थः**-(**आ**) समन्तात् (**अगन्**) (**ऋभूणाम्**) मेधाविनाम् (**इह**) अस्मिन् संसारे (**रत्नधेयम्**) (**अभूत्**) भवेत् (**सोमस्य**) ऐश्वर्य्यस्य (**सुषुतस्य**) सुष्ठु निष्पादितस्य (**पीतिः**) पानम् (**सुकृत्यया**) शोभनक्रियया (**यत्**) यम् (**स्वपस्यया**) सुष्ठ्वपांसि कर्माणि तान्यात्मन इच्छया (**च**) (**एकम्**) (**विचक्र**) कुर्वन्ति (**चमसम्**) चमसं मेघमिव गर्जनावन्तं रथम् (**चतुर्धा**) अधऊर्ध्वतिर्यक्समगतियुक्तम्॥२॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! भवन्तो सुकृत्यया स्वपस्यया यद्यमेकं चमसं चतुर्धा विचक्र येन सुषुतस्य सोमस्य पीतिरभूदिहर्भूणां रत्नधेयमागँस्तेन च गमनादिकार्य्याणि साध्नुत॥२॥

**भावार्थः**-ये मनुष्याः सुष्ठुहस्तक्रिययोत्तमकर्मणा सर्वतो गमयितारं रथादिकं निर्ममते ते भोज्यपेयासङ्ख्यधनानि प्राप्नुवन्ति॥२॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! आप (**सुकृत्यया**) सुन्दर क्रिया से (**स्वपस्यया**) वा सुन्दर कर्म्मों को अपनी इच्छा से (**यत्**) जिस (**एकम्**) एक (**चमसम्**) मेघ के सदृश गर्जना करने वाले रथ को (**चतुर्धा**) नीचे, ऊपर, तिरछी और मध्यम गति वाला (**विचक्र**) करते हैं जिससे (**सुषुतस्य**) उत्तम प्रकार उत्पन्न किये गये (**सोमस्य**) ऐश्वर्य्य का (**पीतिः**) पान (**अभूत्**) होवे और (**इह**) इस संसार में (**ऋभूणाम्**) बुद्धिमानों के (**रत्नधेयम्**) रत्न धरने के पात्ररूप जन को (**आ, अगन्**) सब प्रकार प्राप्त होवें (**च**) उसीसे गमन आदि कार्य्यों को सिद्ध करो॥२॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य उत्तम हस्तक्रिया और उत्तम कर्म से सर्वत्र पहुँचाने वाले वाहन आदि को रचते हैं, वे खाने और पीने योग्य पदार्थ और असङ्ख्य धनों को प्राप्त होते हैं॥२॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**व्य॑कृणोत चम॒सं च॑तु॒र्धा सखे॒ वि शि॒क्षेत्य॑ब्रवीत।**

**अथै॑त वाजा अ॒मृत॑स्य॒ पन्थां॑ ग॒णं दे॒वाना॑मृभवः सुहस्ताः॥३॥**

**वि। अ॒कृ॒णो॒त॒। च॒म॒सम्। च॒तुः॒ऽधा। सखे॑। वि। शि॒क्ष॒। इति॑। अ॒ब्र॒वी॒त॒। अथ॑। ऐ॒त॒। वा॒जाः॒। अ॒मृत॑स्य। पन्था॑म्। ग॒णम्। दे॒वाना॑म्। ऋ॒भ॒वः॒। सु॒ऽह॒स्ताः॒॥३॥**

**पदार्थः**-(**वि**) विशेषेण (**अकृणोत**) (**चमसम्**) यथा यज्ञसाधनम् (**चतुर्धा**) (**सखे**) (**वि**) (**शिक्ष**) अत्र व्यत्ययेन परस्मैपदम्। (**इति**) (**अब्रवीत**) उपदिशत (**अथ**) (**ऐत**) प्राप्नुत (**वाजाः**)



www.9009.co.in

**(अमृतस्य)** नाशरहितस्य मोक्षस्य **(पन्थाम्)** **(गणम्)** समूहम् **(देवानाम्)** विदुषाम् **(ऋभवः)** मेधाविनः **(सुहस्ताः)**॥३॥

**अन्वयः**-हे सखे! यथाप्ता विद्वांसो सत्यविद्यां शिक्षन्ते तथा त्वं शिक्ष। हे वाजाः सुहस्ता ऋभवो! यथा सखायस्तथा यूयं चमसं चतुर्धा व्यकृणोत शास्त्राणि व्यब्रवीत। अथेति देवानां गणममृतस्य पन्थामैत॥३॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे मनुष्याः! परमेश्वरो युष्मान् चतुर्विधं पुरुषार्थं साध्नुतेति ब्रूते यदि सखायो भूत्वा कार्य्यसिद्धये प्रयत्नं कुर्य्युस्तर्हि धर्मार्थकाममोक्षसिद्धिर्युष्मानसंशयं प्राप्नुयात्॥३॥

**पदार्थः**-हे **(सखे)** मित्र! जैसे यथार्थवक्ता विद्वान् जन सत्यविद्या की शिक्षा देते हैं, वैसे आप **(शिक्ष)** शिक्षा देओ और हे **(वाजाः)** विज्ञानयुक्त **(सुहस्ताः)** अच्छे हाथों वाले **(ऋभवः)** बुद्धिमान् जनो! जैसे मित्र वैसे आप लोग **(चमसम्)** यज्ञ सिद्ध कराने वाले पात्र के सदृश कार्य्य को **(चतुर्धा)** चार प्रकार **(वि)** विशेषता से **(अकृणोत)** करो और शास्त्रों का **(वि)** विशेष करके **(अब्रवीत)** उपदेश देओ। **(अथ)** इसके अनन्तर **(इति)** इस प्रकार से **(देवानाम्)** विद्वानों के **(गणम्)** समूह को और **(अमृतस्य)** नाशरहित मोक्ष के **(पन्थाम्)** मार्ग को **(ऐत)** प्राप्त होओ॥३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! परमेश्वर आप लोगों के प्रति चार प्रकार के पुरुषार्थ को सिद्ध करो, ऐसा कहता है कि जो परस्पर मित्र होकर कार्य्य की सिद्धि के लिये प्रयत्न करो तो धर्म्म, अर्थ, काम और मोक्ष की सिद्धि आप लोगों को विना संशय प्राप्त होवे॥३॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**किंमयः स्विच्चमस एष आस यं काव्येन चतुरो विचक्र।**

**अथा सुनुध्वं सवनं मदाय पात ऋभवो मधुनः सोम्यस्य॥४॥**

**किम्ऽमयः। स्वित्। चमसः। एषः। आस। यम्। काव्येन। चतुरः। विऽचक्र। अथ। सुनुध्वम्। सवनम्। मदाय। पात। ऋभवः। मधुनः। सोम्यस्य॥४॥**

**पदार्थः**-**(किंमयः)** यः किं मिनोति सः **(स्वित्)** प्रश्ने **(चमसः)** आचामति येन सः **(एषः)** **(आस)** **(यम्)** **(काव्येन)** कविना निर्मितेन विधिना **(चतुरः)** एतत्सङ्ख्याकान् **(विचक्र)** विदधति **(अथ)** अत्र **निपातस्य चे**ति दीर्घः। **(सुनुध्वम्)** निष्पादयत **(सवनम्)** कार्य्यसिद्ध्यर्थं कर्म **(मदाय)** आनन्दाय **(पात)** रक्षत **(ऋभवः)** मेधाविनः **(मधुनः)** ज्ञानजन्यस्य **(सोम्यस्य)** सोमैश्वर्य्ये साधोः॥४॥

**अन्वयः**-हे ऋभव! एष चमसः स्वित्किंमय आस यं काव्येन चतुरो यूयं विचक्र मदाय मधुनः सोम्यस्य सवनं सुनुध्वमथैतत्पात॥४॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-कर्म्मसाधनानि कीदृशानि किंमयानि भवन्तीति पृच्छ्यते यद्यद्विद्यायुक्तिभ्यां निर्मितं स्यात् तत्तत्साधनं कार्य्यसिद्धिकरं भवतीत्युत्तरम्॥४॥

**पदार्थः**-हे **(ऋभवः)** बुद्धिमानो! **(एषः)** यह **(चमसः)** यज्ञपात्र जिससे कि आचमन करता है **(स्वित्)** सो क्या **(किंमयः)** किसी को फेंकता **(आस)** हुआ है **(यम्)** जिसको **(काव्येन)** कवियों के बनाये गये कर्म से **(चतुरः)** चार भाग आप लोग **(विचक्र)** विधान करते हैं और **(मदाय)** आनन्द के लिये **(मधुनः)** ज्ञान से उत्पन्न **(सोमस्य)** ऐश्वर्य्य में श्रेष्ठ पदार्थ के **(सवनम्)** कार्य्य की सिद्धि करने वाले को **(सुनुध्वम्)** उत्पन्न करो **(अथ)** इसके अनन्तर इसकी **(पात)** रक्षा करो॥४॥

**भावार्थः**-कार्य्यों के साधन कैसे और काहे के बने हुए होते हैं, यह पूछा जाता है। जो-जो विद्या और युक्ति से बनाया गया हो, वह-वह साधन कार्य्य की सिद्धि करने वाला होता है, यह उत्तर है॥४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**शच्या॑कर्त पि॒तरा॒ युवा॑ना॒ शच्या॑कर्त चम॒सं दे॑व॒पान॑म्**

**शच्या॒ हरी॒ धनु॑तरावतष्टेन्द्र॒वाहा॑वृभवो वाजरत्नाः॥५॥५॥**

**शच्या॑। अ॒क॒र्त॒। पि॒तरा॑। युवा॑ना। शच्या॑। अ॒क॒र्त॒। च॒म॒सम्। दे॒व॒ऽपान॑म्। शच्या॑। हरी॒ इति॑। धनु॑ऽतरौ। अ॒त॒ष्ट॒। इ॒न्द्र॒ऽवाहौ॑। ऋ॒भ॒वः॒। वा॒ज॒ऽर॒त्नाः॒॥५॥**

**पदार्थः**-**(शच्या)** प्रज्ञया **(अकर्त्त)** कुरुत **(पितरा)** विज्ञानवन्तावध्यापकोपदेशकौ **(युवाना)** प्राप्तयौवनौ **(शच्या)** कर्मणा **(अकर्त्त)** **(चमसम्)** पेयसाधनम् **(देवपानम्)** देवाः पिबन्ति येन तत् **(शच्या)** वाण्या। **शचीति वाङ्नामसु पठितम्।** (निघं०१.११) **(हरी)** वायुविद्युतौ **(धनुतरौ)** शीघ्रं गमयितारौ **(अतष्ट)** निष्पादयत **(इन्द्रवाहौ)** ऐश्वर्यप्रापकौ **(ऋभवः)** धीमन्तः **(वाजरत्नाः)** वाजा अन्नादयो रत्नानि सुवर्णादीनि च येषान्ते॥५॥

**अन्वयः**-हे वाजरत्ना ऋभवो! यूयं शच्या युवाना पितराकर्त्त शच्या देवपानं चमसमकर्त्त शच्या धनुतराविन्द्रवाहौ हरी अतष्ट॥५॥

**भावार्थः**-हे विद्वांसो! यूयमेवं यत्नं कुरुत यथा मनुष्यसन्ताना युवावस्था यावत्तावत् प्राप्तपूर्णविज्ञाना भूत्वा पूर्णायां युवावस्थायां परस्परस्य प्रीत्यनुमतिभ्यां स्वयंवरं विवाहं कृत्वा सर्वदाऽऽनन्दिताः स्युः॥५॥

**पदार्थः**-हे **(वाजरत्नाः)** अन्न आदि पदार्थ और सुवर्ण आदि पदार्थों से युक्त **(ऋभवः)** बुद्धिमानो! आप लोग **(शच्या)** उत्तम बुद्धि से **(युवाना)** युवावस्था को प्राप्त **(पितरा)** विज्ञान वाले अध्यापक और उपदेशक को **(अकर्त्त)** करिये **(शच्या)** कर्म से **(देवपानम्)** देव विद्वान् जन जिससे पान करते हैं उस **(चमसम्)** पान करने के साधन को **(अकर्त्त)** करिये **(शच्या)** वाणी से **(धनुतरौ)** शीघ्र



www.9009.co.in

पहुंचाने और **(इन्द्रवाहौ)** ऐश्वर्य्य को प्राप्त कराने वाले **(हरी)** वायु और बिजुली को **(अतष्ट)** उत्पन्न करो॥५॥

**भावार्थः**-हे विद्वानो! आप लोग इस प्रकार यत्न करो जैसे कि मनुष्यों के सन्तान युवावस्था जब तक तब तक प्राप्त पूर्ण विज्ञान वाले होकर पूर्ण युवावस्था में परस्पर प्रीति और अनुमति से स्वयंवर विवाह करके सदा आनन्दित होवें॥५॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**यो वः सुनोत्यभिपित्वे अह्नां तीव्रं वाजासः सवनं मदाय।**

**तस्मै रयिमृभवः सर्ववीरमा तक्षत वृषणो मन्दसानाः॥६॥**

**यः। वः। सुनोति। अभिऽपित्वे। अह्नाम्। तीव्रम्। वाजासः। सवनम्। मदाय। तस्मै। रयिम्। ऋभवः। सर्वऽवीरम्। आ। तक्षत। वृषणः। मन्दसानाः॥६॥**

**पदार्थः**-**(यः)** **(वः)** युष्मभ्यम् **(सुनोति)** निष्पादयति **(अभिपित्वे)** अभीष्टप्राप्तौ **(अह्नाम्)** दिनानां मध्ये **(तीव्रम्)** तेजोमयम् **(वाजासः)** विज्ञानवन्तः **(सवनम्)** ऐश्वर्य्यम् **(मदाय)** नित्यानन्दाय **(तस्मै)** **(रयिम्)** श्रियम् **(ऋभवः)** प्राज्ञाः **(सर्ववीरम्)** सर्वे वीरा यस्मात्तम् **(आ)** **(तक्षत)** साध्नुत **(वृषणः)** बलिष्ठः **(मन्दसानाः)** कामयमानाः॥६॥

**अन्वयः**-हे वृषणो वाजास ऋभवो! मन्दसाना यूयं यो वोऽह्नामभिपित्वे मदाय तीव्रं सवनं सुनोति तस्मै सर्ववीरं रयिमातक्षत॥६॥

**भावार्थः**-हे विद्वांसो! ये युष्माकं सेवामाज्ञानुसारेण वर्त्तमानं कर्म च कुर्वन्ति तान् विदुषः सुशिक्षातान् कृत्वा समग्रैश्वर्य्यं प्रापयत॥६॥

**पदार्थः**-हे **(वृषणः)** बलयुक्त **(वाजासः)** विज्ञान वाले **(ऋभवः)** बुद्धिमानो! **(मन्दसानाः)** कामना करते हुए आप लोग **(यः)** जो **(वः)** आप लोगों के लिये **(अह्नाम्)** दिनों के मध्य में **(अभिपित्वे)** अभीष्ट की प्राप्ति होने पर **(मदाय)** नित्य आनन्द के लिये **(तीव्रम्)** तेजःस्वरूप **(सवनम्)** ऐश्वर्य्य को **(सुनोति)** उत्पन्न करता है **(तस्मै)** उसके लिये **(सर्ववीरम्)** सम्पूर्ण वीर जिससे हों उस **(रयिम्)** धन को **(आ, तक्षत)** सिद्ध करो॥६॥

**भावार्थः**-हे विद्वानो! जो आप लोगों की सेवा तथा आज्ञा के अनुसार कार्य करते हैं, उनको विद्वान् और उत्तम प्रकार शिक्षित करके सम्पूर्ण ऐश्वर्य्य को प्राप्त कराइये॥६॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**प्रातः सुतमपिबो हर्यश्व माध्यंदिनं सवनं केवलं ते।**



www.9009.co.in

**समृभुभिः पिबस्व रत्नधेभिः सखीँर्याँ इन्द्र चकृषे सुकृत्या॥७॥**

**प्रातरिति। सुतम्। अपिबः। हरिऽअश्व। माध्यंदिनम्। सवनम्। केवलम्। ते। सम्। ऋभुऽभिः। पिबस्व। रत्नऽधेभिः। सखीन्। यान्। इन्द्र। चकृषे। सुऽकृत्या॥७॥**

**पदार्थः**-(**प्रातः**) (**सुतम्**) निष्पन्नं दुग्धमुदकं वा (**अपिबः**) पिब (**हर्य्यश्व**) हर्य्याः कमनीया गमनीया अश्वा यस्य तत्सम्बुद्धौ (**माध्यन्दिनम्**) मध्ये दिने भवं भोजनादिकम् (**सवनम्**) सकलसंस्काररसोपेतम् (**केवलम्**) (**ते**) तव (**सम्**) (**ऋभुभिः**) मेधाविभिः सह (**पिबस्व**) (**रत्नधेभिः**) ये रत्नानि दधति तैः (**सखीन्**) सुहृदः (**यान्**) (**इन्द्र**) ऐश्वर्य्यप्रद राजन् (**चकृषे**) करोषि (**सुकृत्या**) शोभनेन धर्म्येण कर्मणा॥७॥

**अन्वयः**-हे हर्य्यश्वेन्द्र! त्वं सुकृत्या यान् सखीञ्चकृषे तै रत्नधेभिर्ऋभुभिः सह प्रातः सुतं माध्यन्दिनं केवलं सवनमपिबः सम्पिबस्वैवं ते ध्रुवं ते कल्याणं भवेत्॥७॥

**भावार्थः**-ये मनुष्या विद्वन्मित्राः सर्वेषां सुखैषिणः प्रातर्मध्यसायं कर्त्तव्यानि कर्माण्यभिहरणानि च कृत्वा सुकर्मणो भवेयुस्ते सर्वमित्राः सन्तो भाग्यशालिनः स्युः॥७॥

**पदार्थः**-हे (**हर्य्यश्व**) उत्तम प्रकार चलने योग्य घोड़ों से युक्त (**इन्द्र**) ऐश्वर्य्य के देने वाले राजन्! आप (**सुकृत्या**) उत्तम धर्मयुक्त कर्म से (**यान्**) जिन (**सखीन्**) मित्रों को (**चकृषे**) करते हो और उन (**रत्नधेभिः**) धनों को धारण करने वाले (**ऋभुभिः**) बुद्धिमानों के साथ (**प्रातः**) प्रातःकाल में (**सुतम्**) उत्पन्न दूध वा जल (**माध्यन्दिनम्**) तथा मध्य दिन में उत्पन्न भोजन आदि और (**केवलम्**) केवल (**सवनम्**) सम्पूर्ण संस्कारों के रसों से युक्त पीने योग्य पदार्थ का (**अपिबः**) पान करो (**सम्, पिबस्व**) अच्छे प्रकार आप पान करिये, इस प्रकार (**ते**) आप का निश्चय कल्याण होवे॥७॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य विद्वानों के मित्र, सब के सुख चाहने वाले, प्रातःकाल, मध्यकाल और सायंकाल में करने योग्य कर्मों को करके उत्तम कर्म करनेवाले होवें, ये सबके मित्र हुए भाग्यशाली होवें॥७॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**ये देवासो अभवता सुकृत्या श्येनाइवेदधि दिवि निषेद।**

**ते रत्नं धात शवसो नपातः सौधन्वना अभवतामृतासः॥८॥**

**ये। देवासः। अभवत। सुऽकृत्या। श्येनाःऽइव। इत्। अधि। दिवि। निऽसेद। ते। रत्नम्। धात। शवसः। नपातः। सौधन्वनाः। अभवत। अमृतासः॥८॥**

**पदार्थः**-(**ये**) (**देवासः**) विद्वांसः (**अभवत**) भवन्ति। अत्र **संहितायामिति** दीर्घः। (**सुकृत्या**) सुकृतेन कर्मणा (**श्येनाइव**) श्येनवत्पुरुषार्थिनः (**इत्**) एव (**अधि**) उपरि (**दिवि**) द्युलोके अन्तरिक्षे



www.9009.co.in

**(निषेद)** निषीदन्ति। अत्र वचनव्यत्ययेनैकवचनम्। **(ते)** **(रत्नम्)** रमणीयं धनम् **(धात)** धरन्ति **(शवसः)** बलवन्तः सन्तः **(नपातः)** ये धर्मान्न पतन्ति **(सौधन्वनाः)** शोभनं धन्वान्तरिक्षं येषान्ते तेषां पुत्राः **(अभवत)** भवन्ति **(अमृतासः)** प्राप्तमोक्षसुखाः॥८॥

**अन्वयः**-ये देवासः सुकृत्याऽभवत श्येनाइव दिव्यधि निषेद त इच्छवसो नपातः सौधन्वना रत्नं धातामृतासोऽभवत॥८॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। ये श्येनवद्विमानेनान्तरिक्षे गच्छन्ति धर्माचरणेन विद्वांसो भूत्वाऽन्यानपि तादृशान् कुर्वन्ति ते ऐश्वर्य्यं लब्ध्वा भुक्त्वा मुक्तिमधिगच्छन्ति॥८॥

**पदार्थः**-**(ये)** जो **(देवासः)** विद्वान् **(सुकृत्या)** श्रेष्ठ कर्म से **(अभवत)** होते और **(श्येनाइव)** वाज के सदृश पुरुषार्थी **(दिवि)** अन्तरिक्ष में **(अधि)** ऊपर **(निषेद)** स्थित होते हैं **(ते)** वे **(इत्)** ही **(शवसः)** बलवान् हुए **(नपातः)** धर्म से नहीं गिरने वाले **(सौधन्वनाः)** जिनका सुन्दर अन्तरिक्ष अर्थात् जिन्होंने यज्ञादि कर्म से अन्तरिक्ष को स्वच्छ किया उनके पुत्र **(रत्नम्)** सुन्दर धन को **(धात)** धारण करते हैं और **(अमृतासः)** मोक्षसुख को प्राप्त **(अभवत)** होते हैं॥८॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जो बाज के सदृश विमान से अन्तरिक्ष में जाते हैं, धर्म के आचरण से विद्वान् होकर अन्य जनों को भी वैसे करते हैं, ऐश्वर्य्य को प्राप्त हो तथा उसका भोग करके अन्त में मोक्ष को प्राप्त होते हैं॥८॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**यत्तृतीयं सवनं रत्नधेयमकृणुध्वं स्वपस्या सुहस्ताः।**

**तदृभवः परिषिक्तं व एतत्सं मदेभिरिन्द्रियेभिः पिबध्वम्॥९॥६॥**

**यत्। तृतीयम्। सवनम्। रत्नऽधेयम्। अकृणुध्वम्। सुऽअपस्या। सुऽहस्ताः। तत्। ऋभवः। परिऽसिक्तम्। वः। एतत्। सम्। मदेभिः। इन्द्रियेभिः। पिबध्वम्॥९॥**

**पदार्थः**-**(यत्)** **(तृतीयम्)** अष्टाचत्वारिंशद्वर्षपरिमितसेवितं ब्रह्मचर्य्यम् **(सवनम्)** सकलैश्वर्य्यप्रापकम् **(रत्नधेयम्)** रत्नानि धीयन्ते यस्मिँस्तत् **(अकृणुध्वम्)** **(स्वपस्या)** सुष्ठु धर्म्यकर्मेच्छया **(सुहस्ताः)** शोभना धर्म्यकर्मकरा हस्ता येषान्ते **(तत्)** **(ऋभवः)** **(परिषिक्तम्)** परितः सर्वतः श्रेष्ठपदार्थैः संयोजितम् **(वः)** युष्मभ्यम् **(एतत्)** **(सम्)** **(मदेभिः)** आनन्दैः **(इन्द्रियेभिः)** **(पिबध्वम्)**॥९॥

**अन्वयः**-हे सुहस्ता ऋभवो! यूयं यद्व एतत्परिषिक्तं तन्मदेभिरिन्द्रियेभिः स्वपस्या सम्पिबध्वं तद्रत्नधेयं तृतीयं सवनमकृणुध्वम्॥९॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यूयं प्रथमे वयसि विद्याभ्यासं द्वितीये गृहाश्रमं तृतीये न्यायादिकर्मानुष्ठानं च कृत्वा पूर्णमैश्वर्य्यं प्राप्नुत॥९॥



www.9009.co.in

अत्र विद्वत्कृत्यवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति पञ्चत्रिंशत्तमं सूक्तं षष्ठो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे **(सुहस्ताः)** सुन्दर धर्म्मसम्बन्धी कर्म्म करने वाले हाथों से युक्त **(ऋभवः)** बुद्धिमानो! **[**आप**]** **(यत्)** जो **(वः)** आप लोगों के लिये **(एतत्)** यह **(परिषिक्तम्)** सब प्रकार श्रेष्ठ पदार्थों से संयुक्त किया हुआ **(तत्)** उसको **(मदेभिः)** आनन्दों **(इन्द्रियेभिः)** चक्षुरादि इन्द्रियों और **(स्वपस्या)** उत्तम धर्मसम्बन्धी कर्म की इच्छा से **(सम्, पिबध्वम्)** पान करो और **(रत्नधेयम्)** जिसमें रत्न धरे जाते हैं उस **(तृतीयम्)** तीसरे अर्थात् अड़तालीसवें वर्ष पर्य्यन्त सेवित ब्रह्मचर्य्य और **(सवनम्)** सम्पूर्ण ऐश्वर्य्यों के प्राप्त करने वाले कर्म को **(अकृणुध्वम्)** करिये॥९॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! तुम प्रथम अर्थात् युवावस्था में विद्या का अभ्यास, द्वितीय अर्थात् मध्यम अवस्था में गृहाश्रम और तृतीय में न्याय आदि कर्मों का अनुष्ठान करके पूर्ण ऐश्वर्य्य को प्राप्त होओ॥९॥

इस सूक्त में विद्वानों का कृत्य वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की पिछले सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह पैतीसवां सूक्त और छठा वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

**अथ नवर्चस्य षट्त्रिंशत्तमस्य सूक्तस्य वामदेव ऋषिः। ऋभवो देवताः। १, ६, ८ स्वराट् त्रिष्टुप् छन्दः। ९ निचृत्त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः। २-५ विराड् जगती। ७ जगती छन्दः। निषादः स्वरः॥**

**अथ शिल्पविद्याविषयमाह॥**

अब नव ऋचा वाले छत्तीसवें सूक्त का आरम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में शिल्पविद्या के विषय को कहते हैं॥

**अनश्वो जातो अनभीशुरुक्थ्यो३ रथस्त्रिचक्रः परि वर्तते रजः।**

**महत्तद्वो देव्यस्य प्रवाचनं द्यामृभवः पृथिवीं यच्च पुष्यथ॥१॥**

**अनश्वः। जातः। अनभीशुः। उक्थ्यः। रथः। त्रिऽचक्रः। परि। वर्तते। रजः। महत्। तत्। वः। देव्यस्य। प्रऽवाचनम्। द्याम्। ऋभवः। पृथिवीम्। यत्। च। पुष्यथ॥१॥**

**पदार्थः-(अनश्वः)** अविद्यमाना अश्वा यस्मिन्त्सः **(जातः)** उत्पन्नः **(अनभीशुः)** अप्रतिग्रहः **(उक्थ्यः)** प्रशंसितुमर्हः **(रथः)** यानविशेषः **(त्रिचक्रः)** त्रीणि चक्राण्यस्मिन् सः **(परि)** सर्वतः **(वर्त्तते)** **(रजः)** लोकसमूहः **(महत्)** **(तत्)** **(वः)** युष्मभ्यम् **(देव्यस्य)** देवेषु विद्वत्सु भवस्य **(प्रवाचनम्)** उपदेशनम् **(द्याम्)** प्रकाशम् **(ऋभवः)** मेधाविनः **(पृथिवीम्)** अन्तरिक्षं भूमिं वा **(यत्)** **(च)** **(पुष्यथ)**॥१॥

**अन्वयः**-हे ऋभवो! वोऽनश्वोऽनभीशुरुक्थ्यस्त्रिचक्रो रथो जातः सन् यन्महद्रजः परिवर्त्तते तद्देव्यस्य प्रवाचनं परिवर्त्तते तेन द्यां पृथिवीं च यूयं पुष्यथ॥१॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यूयमनेकविधान्यनेककलाचक्राणि पश्वश्ववहनरहितान्यग्न्युदकवाहितानि विमानादीनि यानानि निर्माय पृथिव्यामप्स्वन्तरिक्षे च गत्वाऽऽगत्यैश्वर्य्यं प्राप्य पुष्टसुखा भवत॥१॥

**पदार्थः**-हे **(ऋभवः)** बुद्धिमानो! **(वः)** आप लोगों के लिये **(अनश्वः)** घोड़ों से रहित **(अनभीशुः)** जिसने किसी का दिया नहीं लिया वह **(उक्थ्यः)** प्रशंसा करने योग्य **(त्रिचक्रः)** तीन पहियों से युक्त **(रथः)** वाहनविशेष **(जातः)** उत्पन्न हुआ **(यत्)** जो **(महत्)** बड़े **(रजः)** लोकसमूह के **(परि)** सब ओर **(वर्तते)** वर्त्तमान है **(तत्)** वह **(देव्यस्य)** विद्वानों में उत्पन्न कर्म का **(प्रवाचनम्)** उपदेश सब ओर वर्त्तमान है, उससे **(द्याम्)** प्रकाश **(च)** और **(पृथिवीम्)** अन्तरिक्ष वा भूमि को आप लोग **(पुष्यथ)** पुष्ट करो॥१॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! तुम लोग अनेक प्रकार के अनेक कलाचक्रों तथा पशु घोड़ा के वाहन से रहित, अग्नि और जल से चलाये गये विमान आदि वाहनों को बना पृथिवी, जलों और अन्तरिक्ष में जा आकर और ऐश्वर्य्य को प्राप्त होकर पूर्ण सुख वाले होओ॥१॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**



www.9009.co.in

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**रथं ये चक्रुः सुवृतं सुचेतसोऽविह्वरन्तं मनसस्परि ध्यया।**

**ताँ ऊ न्व१स्य सवनस्य पीतय आ वो वाजा ऋभवो वेदयामसि॥ २॥**

**रथम्। ये। चक्रुः। सुऽवृतम्। सुऽचेतसः। अविऽह्वरन्तम्। मनसः। परि। ध्यया। तान्। ऊम् इति। नु। अस्य। सवनस्य। पीतये। आ। वः। वाजाः। ऋभवः। वेदयामसि॥ २॥**

**पदार्थः-(रथम्)** विमानादियानम् **(ये)** **(चक्रुः)** कुर्वन्ति **(सुवृतम्)** सुष्ठु साङ्गोपाङ्गसहितम् **(सुचेतसः)** सुष्ठुविज्ञानाः **(अविह्वरन्तम्)** अकुटिलगतिम् **(मनसः)** विज्ञानात् **(परि)** **(ध्यया)** ध्यानेन **(तान्)** **(उ)** **(नु)** **(अस्य)** **(सवनस्य)** शिल्पविद्याजनितस्य कार्यस्य **(पीतये)** तृप्तये **(आ)** **(वः)** युष्मान् **(वाजा)** प्राप्तहस्तक्रियाः **(ऋभवः)** मेधाविनः **(वेदयामसि)** वेदयामः प्रज्ञापयामः॥ २॥

**अन्वयः**-हे वाजा ऋभवो! ये वोऽस्य सनवस्य पीतये सुचेतसो मनसो ध्ययाविह्वरन्तं सुवृतं रथं परि चक्रुर्यान् वयमावेदयामसि तान्नू यूयं सद्यः परिगृह्णीत॥ २॥

**भावार्थः**-हे मेधाविनो ये यानरचनचालनकुशलाः शिल्पिनः स्युस्तान् परिगृह्य सत्कृत्य शिल्पविद्योन्नतिं कुरुत॥ २॥

**पदार्थः**-हे **(वाजाः)** हस्तक्रिया को प्राप्त हुए **(ऋभवः)** बुद्धिमानो! **(ये)** जो **(वः)** आप लोगों को **(अस्य)** इस **(सवनस्य)** शिल्पविद्या से उत्पन्न हुए कार्य की **(पीतये)** तृप्ति के लिये **(सुचेतसः)** उत्तम विज्ञान वाले **(मनसः)** विज्ञान से **(ध्यया)** ध्यान से **(अविह्वरन्तम्)** नहीं टेढ़े चलने वाले **(सुवृतम्)** उत्तम प्रकार अङ्ग और उपाङ्गों के सहित **(रथम्)** विमान आदि वाहन को **(परि, चक्रुः)** सब ओर से बनाते हैं और जिनको हम लोग **(आ, वेदयामसि)** जनाते हैं **(तान्)** उनको **(नु)** निश्चय करके **(उ)** ही आप लोग शीघ्र ग्रहण कीजिये॥ २॥

**भावार्थः**-हे बुद्धिमानो! जो वाहनो के बनाने और चलाने में चतुर शिल्पीजन होवें, उनका ग्रहण और सत्कार करके शिल्पविद्या की उन्नति करो॥ २॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**तद्वो वाजा ऋभवः सुप्रवाचनं देवेषु विभ्वो अभवन्महित्वनम्।**

**जिव्री यत्सन्ता पितरा सनाजुरा पुनर्युवाना चरथाय तक्षथ॥ ३॥**

**तत्। वः। वाजाः। ऋभवः। सुऽप्रवाचनम्। देवेषु। विऽभ्वः। अभवत्। महिऽत्वनम्। जिव्री इति। यत्। सन्ता। पितरा। सनाऽजुरा। पुनः। युवाना। चरथाय। तक्षथ॥ ३॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-**(तत्)** **(वः)** युष्मान् **(वाजाः)** अन्नादियुक्ताः **(ऋभवः)** मेधाविनः **(सुप्रवाचनम्)** सुष्ठ्वध्यापनमुपदेशनं च **(देवेषु)** विद्वत्सु **(विभ्वः)** सकलविद्यासु व्याप्ताः **(अभवत्)** भवेत् **(महित्वनम्)** महत्त्वम् **(जिव्री)** जीवन्तौ **(यत्)** **(सन्ता)** सन्तौ विद्यमानौ **(पितरा)** पितरौ **(सनाजुरा)** सदा जरावस्थास्थौ **(पुनः)** **(युवाना)** प्राप्तयौवनौ **(चरथाय)** गमनाय विज्ञानाय भोजनाय वा **(तक्षथ)** कुरुत॥३॥

**अन्वयः**-हे वाजा ऋभवो! विभ्वो यद्वो युष्मान् प्रति देवेषु महित्वनं सुप्रवाचनमभवत् तत्प्राप्य जिव्री सन्ता सनाजुरा पितरा चरथाय पुनर्युवाना तक्षथ॥३॥

**भावार्थः**-हे धीमन्तो जना! यदि युष्माभिर्विद्वत्सु स्थित्वैतेभ्योऽध्ययनमुपदेशनं च क्रियेत तर्हि ज्ञानवृद्धत्वाद्युवानः सन्तोऽपि वृद्धा भूत्वा सत्कृताः स्युः॥३॥

**पदार्थः**-हे **(वाजाः)** अन्न आदिकों से युक्त **(ऋभवः)** बुद्धिमानो! **(विभ्वः)** सकल विद्याओं में व्याप्त **(यत्)** जो **(वः)** आप लोगों के प्रति **(देवेषु)** विद्वानों में **(महित्वनम्)** प्रतिष्ठा को **(सुप्रवाचनम्)** उत्तम प्रकार पढ़ाना और उपदेश करना **(अभवत्)** होवे **(तत्)** उसको प्राप्त होकर **(जिव्री)** जीवते हुए **(सन्ता)** विद्यमान और **(सनाजुरा)** सदा वृद्धावस्था को प्राप्त **(पितरः)** माता-पिता **(चरथाय)** चलने, विज्ञान वा भोजन के लिये **(पुनः)** फिर **(युवाना)** युवावस्था को प्राप्त हुए **(तक्षथ)** करो॥३॥

**भावार्थः**-हे बुद्धिमान् जनो! जो आप लोग विद्वानों में स्थित होकर उनसे अध्ययन और उपदेश करें तो ज्ञानवृद्ध होने से युवावस्था को प्राप्त हुए भी वृद्ध होकर सत्कृत होवें॥३॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**एकं वि चक्र चमसं चतुर्वयं निश्चर्मणो गामरिणीत धीतिभिः।**
**अथा देवेष्वमृतत्वमानश श्रुष्टी वाजा ऋभवस्तद्व उक्थ्यम्॥४॥**

एकम्। वि। चक्र। चमसम्। चतुःऽवयम्। निः। चर्मणः। गाम्। अरिणीत। धीतिऽभिः। अथ। देवेषु। अमृतऽत्वम्। आनश। श्रुष्टी। वाजाः। ऋभवः। तत्। वः। उक्थ्यम्॥४॥

**पदार्थः**-**(एकम्)** असहायम् **(वि)** **(चक्र)** कुर्य्याम **(चमसम्)** मेघमिव विभक्तम् **(चतुर्वयम्)** चत्वारो वयम् **(निः)** नितराम् **(चर्मणः)** त्वचः **(गाम्)** पृथिवीम् **(अरिणीत)** प्राप्नुत **(धीतिभिः)** अङ्गुलिभिरिव विलेखनगतिभिः **(अथ)** अत्र **निपातस्य चे**ति दीर्घः। **(देवेषु)** विद्वत्सु **(अमृतत्वम्)** मोक्षसुखम् **(आनश)** प्राप्नुयुः **(श्रुष्टी)** क्षिप्रम् **(वाजाः)** विभवयुक्ताः **(ऋभवः)** विपश्चितः **(तत्)** **(वः)** युष्माकम् **(उक्थ्यम्)** प्रशंसनीयं कर्म॥४॥

**अन्वयः**-हे वाजा ऋभवस्तद्व उक्थ्यं कर्म येन यूयं श्रुष्टी धीतिभिश्चर्मणो गामरिणीत। अथैतेन देवेष्वमृतत्वमानश यथैकं चमसं चतुर्वयं विनिश्चक्र तथ यूयमपि कुरुत॥४॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। ये प्रशंसितानि कर्माणि कुर्वन्ति ते व्यावहारिकपारमार्थिकसुखं लब्ध्वा विपश्चिद्वरेषु प्रशंसां लभन्ते॥४॥

**पदार्थः**-हे **(वाजाः)** ऐश्वर्य्य से युक्त **(ऋभवः)** बुद्धिमान् जनो! **(तत्)** वह **(वः)** आप लोगों का **(उक्थ्यम्)** प्रशंसा करने योग्य कर्म कि जिससे आप लोग **(श्रुष्टी)** शीघ्र **(धीतिभिः)** अङ्गुलियों के सदृश विलेखनगतियों से **(चर्मणः)** त्वचा की **(गाम्)** भूमि को **(अरिणीत)** प्राप्त हूजिये **(अथ)** इसके अनन्तर इससे **(देवेषु)** विद्वानों में **(अमृतत्वम्)** मोक्षसुख को **(आनश)** प्राप्त हूजिये और जैसे **(एकम्)** सहायरहित अर्थात् अकेले **(चमसम्)** मेघों के सदृश विभक्त **(चतुर्वयम्)** चार हम लोग **(वि, निः, चक्र)** करें, वैसे आप लोग भी करो॥४॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो प्रशंसित कर्मों को करते हैं, वे व्यावहारिक और पारमार्थिक सुख को प्राप्त होकर पण्डितवरों में प्रशंसा को प्राप्त होते हैं॥४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**ऋभुतो रयिः प्रथमश्रवस्तमो वाजश्रुतासो यमजीजनन् नरः।**

**विभ्वतष्टो विदथेषु प्रवाच्यो यं देवासोऽवथा स विचर्षणिः॥५॥७॥**

**ऋभुतः। रयिः। प्रथमश्रवःऽतमः। वाजऽश्रुतासः। यम्। अजीजनन्। नरः। विभ्वऽतष्टः। विदथेषु। प्रऽवाच्यः। यम्। देवासः। अवथ। सः। विऽचर्षणिः॥५॥**

**पदार्थः-(ऋभुतः)** ऋभूणां सकाशात् **(रयिः)** श्रीः **(प्रथमश्रवस्तमः)** अतिशयेन प्रथमः श्रवः श्रवणमन्नं वा यस्मात् सः **(वाजश्रुतासः)** वाजं विज्ञानं श्रुतं यैस्ते **(यम्)** **(अजीजनन्)** जनयन्ति **(नरः)** नायकाः **(विभ्वतष्टः)** यो विभुषु पदार्थेष्वतष्टोऽविचक्षणः सः **(विदथेषु)** विज्ञापनीयेषु व्यवहारेषु **(प्रवाच्यः)** प्रवक्तुं योग्यः **(यम्)** **(देवासः)** विद्वांसः **(अवथ)** रक्षथ **(सः)** **(विचर्षणिः)** सर्वद्रष्टव्यद्रष्टा मनुष्यः॥५॥

**अन्वयः**-हे देवासो! ये वाजश्रुतासो नरो यमजीजनन्त्स विभ्वतष्टो विदथेषु प्रवाच्यः स्यात्। तेनर्भुतः प्रथमश्रवस्तमो रयिः प्राप्येत तं यूयमवथ स विचर्षणिर्भवेत्॥५॥

**भावार्थः**-त एव विद्वांस उत्तमा ये विद्यार्थिनो विदुषः कुर्वन्ति। त एवाध्यापनीया उपदेष्टव्या ये पदार्थविद्याविरहाः स्युस्त एव सुखिनो भवन्ति ये विद्याश्रियौ प्राप्य धर्मात्मानो भवेयुः॥५॥

**पदार्थः**-हे **(देवासः)** विद्वानो! जो **(वाजश्रुतासः)** विज्ञान के सुनने वाले **(नरः)** नायकजन **(यम्)** जिसको **(अजीजनन्)** उत्पन्न करते हैं **(सः)** वह **(विभ्वतष्टः)** व्यापक पदार्थों में नहीं पण्डित अर्थात् उनको नहीं जानने वाला **(विदथेषु)** जनाने योग्य व्यवहारों में **(प्रवाच्यः)** कहने के योग्य होवे इससे **(ऋभुतः)** बुद्धिमानों के समीप से **(प्रथमश्रवस्तमः)** अत्यन्त प्रथम श्रवण वा अन्न जिससे वह



www.9009.co.in

**(रयिः)** धन प्राप्त होवे और **(यम्)** जिसकी आप लोग **(अवथ)** रक्षा करते हो [वह] **(विचर्षणिः)** सम्पूर्ण देखने योग्य पदार्थों को देखने वाला मनुष्य होवे॥५॥

**भावार्थः**-वे ही विद्वान् उत्तम हैं कि जो विद्यार्थियों को विद्वान् करते हैं, उन्हीं को पढ़ाना और उपदेश देना चाहिये जो पदार्थविद्या से रहित होवें, वे ही सुखी होते हैं जो विद्या और धन को प्राप्त होकर धर्मात्मा होवें॥५॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**स वाज्यर्वा स ऋषिर्वचस्यया स शूरो अस्ता पृतनासु दुष्टरः।**

**स रायस्पोषं स सुवीर्यं दधे यं वाजो विभ्वाँ ऋभवो यमाविषुः॥६॥**

**सः। वाजी। अर्वा। सः। ऋषिः। वचस्यया। सः। शूरः। अस्ता। पृतनासु। दुस्तरः। सः। रायः। पोषम्। सः। सुऽवीर्यम्। दधे। यम्। वाजः। विऽभ्वा। ऋभवः। यम्। आविषुः॥६॥**

**पदार्थः**-**(सः)** **(वाजी)** विज्ञानवान् **(अर्वा)** शुभगुणप्रापकः **(सः)** **(ऋषिः)** वेदार्थवेत्ता **(वचस्यया)** अतिशयितया प्रशंसया **(सः)** **(शूरः)** **(अस्ता)** शत्रूणां प्रक्षेप्ता **(पृतनासु)** शत्रुसेनासु **(दुष्टरः)** दुःखेनोल्लङ्घयितुं योग्यः **(सः)** **(रायः)** धनस्य **(पोषम्)** **(सः)** **(सुवीर्य्यम्)** सुष्ठु बलं पराक्रमम् **(दधे)** दधाति **(यम्)** **(वाजः)** विज्ञानवान् **(विभ्वा)** विभुना पदार्थेन **(ऋभवः)** मेधाविनः **(यम्)** **(आविषुः)** प्राप्तविद्यं कुर्वन्तु॥६॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! ऋभवो विभ्वा यमाविषुर्यं वाजो दधाति स वचस्यया सहार्वा वाजी स ऋषिः सः पृतनासु दुष्टरः शूरोऽस्ता भवति स रायस्पोषं सः सुवीर्य्यं च दधे॥६॥

**भावार्थः**-ये मनुष्या विद्वत्सङ्गेन गुणान् ग्रहीतुमिच्छन्ति ते प्रशंसिता शत्रुभिरजेया धनाढ्या वीर्य्यवन्तश्च जायन्ते॥६॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(ऋभवः)** बुद्धिमान् जन **(विभ्वा)** व्यापक पदार्थ से **(यम्)** जिसको **(आविषुः)** विद्यायुक्त करें और **(यम्)** जिसको **(वाजः)** विज्ञानवान् धारण करता है **(सः)** वह **(वचस्यया)** अत्यन्त प्रशंसा के साथ **(अर्वा)** उत्तम गुणों को प्राप्त कराने वाला **(वाजी)** विज्ञानयुक्त **(सः)** वह **(ऋषिः)** वेदार्थ को जानने वाला **(सः)** वह **(पृतनासु)** शत्रुओं की सेनाओं में **(दुष्टरः)** दुःख से उल्लङ्घन करने योग्य **(शूरः)** वीर पुरुष **(अस्ता)** शत्रुओं का फेंकने वाला होता है **(सः)** वह **(रायः)** धन की **(पोषम्)** पुष्टि और **(सः)** वह **(सुवीर्य्यम्)** उत्तम बल और पराक्रम को **(दधे)** धारण करता है॥६॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य विद्वानों के संग से गुणों के ग्रहण करने की इच्छा करते हैं; वे प्रशंसित, शत्रुओं से नहीं जीतने योग्य, धनाढ्य और पराक्रमी होते हैं॥६॥



www.9009.co.in

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**श्रेष्ठं वः पेशो अधि धायि दर्शतं स्तोमो वाजा ऋभवस्तं जुजुष्टन।**

**धीरासो हि ष्ठा कवयो विपश्चितस्तान् व एना ब्रह्मणा वेदयामसि॥७॥**

**श्रेष्ठम्। वः। पेशः। अधि। धायि। दर्शतम्। स्तोमः। वाजाः। ऋभवः। तम्। जुजुष्टन। धीरासः। हि। स्थ। कवयः। विपःऽचितः। तान्। वः। एना। ब्रह्मणा। आ। वेदयामसि॥७॥**

**पदार्थः-(श्रेष्ठम्)** अतिशयेन प्रशस्यम् **(वः)** युष्माकम् **(पेशः)** सुन्दरं रूपं हिरण्यञ्च। **पेश इति रूपनामसु पठितम्।** (निघं०३.७) **हिरण्यनामसु च।** (निघं०१.२) **(अधि)** उपरि **(धायि)** ध्रियते **(दर्शतम्)** द्रष्टव्यम् **(स्तोमः)** प्रशंसा **(वाजाः)** प्राप्तसुशीला वेगवन्तः **(ऋभवः)** सूरयः **(तम्)** **(जुजुष्टन)** सेवध्वम् **(धीरासः)** योगिनो विचारवन्तः **(हि)** यतः **(स्थ)** भवत। अत्र **संहितायामिति** दीर्घः। **(कवयः)** बहुदर्शिन उपदेशकाः **(विपश्चितः)** सदसद्विवेका विद्वांसः **(तान्)** **(वः)** युष्मान् **(एना)** एनेन **(ब्रह्मणा)** वेदेन **(आ)** **(वेदयामसि)** ज्ञापयामः॥७॥

**अन्वयः**-हे वाजा ऋभवो! यूयं येन वो श्रेष्ठं दर्शतं पेशः स्तोमोऽधिधायि ये हि धीरासः कवयो विपश्चित उपदेशकाः स्युर्यं यान् व एना ब्रह्मणाऽऽवेदयामसि तं तांश्च जुजुष्टनैतत्सङ्गेन विद्वांसः स्थ॥७॥

**भावार्थः**-ये विद्यार्थिनः श्रेष्ठानध्यापकान् विदुष आप्तान् संसेव्य शिक्षां गृह्णीयुस्ते विद्वांसः श्रीमन्तश्च भवेयुः॥७॥

**पदार्थः**-हे **(वाजाः)** उत्तम स्वभावयुक्त और वेगवाले **(ऋभवः)** बुद्धिमान्! आप लोग जिसके **(वः)** आप लोगों के **(श्रेष्ठम्)** अत्यन्त प्रशंसा करने योग्य और **(दर्शतम्)** देखने योग्य **(पेशः)** सुन्दररूप और सुवर्ण तथा **(स्तोमः)** प्रशंसा **(अधि)** ऊपर **(धायि)** धारण की जाती है और जो **(हि)** जिससे **(धीरासः)** योगी विचार वाले **(कवयः)** बहुत शास्त्रों को देखे अर्थात विचारे हुए उपदेशक **(विपश्चितः)** सत्य और मिथ्या को पृथक् करने वाले विद्वान् जन उपदेशक होवें जिसको और जिन **(वः)** आप लोगों को **(एना)** इस **(ब्रह्मणा)** वेद से **(आ, वेदयामसि)** जनाते हैं **(तम्)** उस और **(तान्)** उनकी **(जुजुष्टन)** सेवा करो अर्थात् उसमें और अपने में प्रीति करो इसके संग से विद्वान् **(स्थ)** होओ॥७॥

**भावार्थः**-जो विद्यार्थी जन श्रेष्ठ अध्यापक और विद्वान् यथार्थवक्ता जनों की सेवा करके शिक्षा ग्रहण करें, वे विद्वान् और लक्ष्मीवान् होवें॥७॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**यूयमस्मभ्यं धिषणाभ्यस्परि विद्वांसो विश्वा नर्याणि भोजना।**



www.9009.co.in

**द्यु॒मन्तं॒ वाज॒ं वृष॑शुष्ममुत्त॒ममा नो॑ र॒यिमृ॑भवस्तक्ष॒ता वय॑:॥८॥**

**यू॒यम्। अ॒स्मभ्य॑म्। धि॒षणा॑भ्यः। परि॑। वि॒द्वांस॑:। विश्वा॑। नर्या॑णि। भोज॑ना। द्यु॒ऽमन्त॑म्। वाज॑म्। वृष॑ऽशुष्मम्। उ॒त्ऽत॒मम्। आ। न॒:। र॒यिम्। ऋ॒भ॒व॒:। त॒क्ष॒त॒। आ। वय॑:॥८॥**

**पदार्थः**-(**यूयम्**) (**अस्मभ्यम्**) (**धिषणाभ्यः**) प्रज्ञाभ्यः (**परि**) सर्वतः (**विद्वांसः**) (**विश्वा**) सर्वाणि (**नर्य्याणि**) नृषु साधूनि नृभ्यो हितानि वा (**भोजना**) पालनान्यन्नानि वा (**द्युमन्तम्**) प्रकाशवन्तम् (**वाजम्**) विज्ञानम् (**वृषशुष्मम्**) वृषणां बलीनां बलम् (**उत्तमम्**) श्रेष्ठम् (**आ**) (**नः**) अस्मभ्यम् (**रयिम्**) धनम् (**ऋभवः**) मेधाविनः (**तक्षत**) विस्तृणुत (**आ**) (**वयः**) जीवनम्॥८॥

**अन्वयः**-हे विद्वांस ऋभवो! यूयमस्मभ्यं धिषणाभ्यो विश्वा नर्य्याणि भोजना द्युमन्तं वृषशुष्ममुत्तमं वाजं रयिं नो वयश्चातक्षत तेन सुखं पर्य्यावर्द्धयत॥८॥

**भावार्थः**-ये विद्वांसोऽध्यापनोपदेशाभ्यां मनुष्याणां प्रज्ञां वर्द्धयन्ति ते सर्वहितैषिणो विज्ञेयाः॥८॥

**पदार्थः**-हे (**विद्वांसः**) विद्वानो (**ऋभवः**) बुद्धिमानो! (**यूयम्**) आप लोग (**अस्मभ्यम्**) हम लोगों के लिये (**धिषणाभ्यः**) बुद्धियों से (**विश्वा**) सम्पूर्ण (**नर्य्याणि**) मनुष्यों में श्रेष्ठ वा मनुष्यों के लिये हितकारक (**भोजना**) पालन वा अन्न (**द्युमन्तम्**) प्रकाश वाले (**वृषशुष्मम्**) बलियों के बल और (**उत्तमम्**) श्रेष्ठ (**वाजम्**) विज्ञान और (**रयिम्**) धन का तथा (**नः**) हम लोगों के लिये (**वयः**) जीवन का (**आ, तक्षत**) विस्तार कीजिये, उससे सुख को (**परि, आ**) सब प्रकार से बढ़ाइये॥८॥

**भावार्थः**-जो विद्वान् पढ़ाने और उपदेश करने से मनुष्यों की बुद्धि बढ़ाते हैं, वे सब के हितैषी जानने चाहिये॥८॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**इ॒ह प्र॒जामि॒ह र॒यिं ररा॑णा इ॒ह श्रवो॑ वी॒रव॑त्तक्षता नः।**
**येन॑ व॒यं चि॒तये॒मात्य॒न्यान् तं वाजं॑ चि॒त्रमृ॑भवो ददा नः॥९॥८॥**

**इ॒ह। प्र॒ऽजाम्। इ॒ह। र॒यिम्। ररा॑णाः। इ॒ह। श्रव॑:। वी॒रऽव॑त्। त॒क्ष॒त॒। न॒:। येन॑। व॒यम्। चि॒तये॑म। अति॑। अ॒न्यान्। तम्। वाज॑म्। चि॒त्रम्। ऋ॒भ॒व॒:। द॒द॒। न॒:॥९॥८॥**

**पदार्थः**-(**इह**) अस्मिन् संसारे (**प्रजाम्**) उत्तमान् सन्तानान् राष्ट्रं वा (**इह**) (**रयिम्**) धनम् (**रराणाः**) ददमानाः (**इह**) (**श्रवः**) अन्नं श्रवणं वा (**वीरवत्**) प्रशस्तवीरकारम् (**तक्षत**) प्रापयत। अत्र **संहितायामिति** दीर्घः। (**नः**) अस्मभ्यम् (**येन**) (**वयम्**) (**चितयेम**) चितिं संज्ञानमाचक्ष्महि (**अति**) (**अन्यान्**) (**तम्**) (**वाजम्**) विज्ञानम् (**चित्रम्**) अद्भुतम् (**ऋभवः**) (**ददा**) ददतु। अत्र **द्व्यचोऽतस्तिङ** इति दीर्घः। (**नः**)॥९॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे ऋभवो! भवन्त इह नः प्रजामिह रयिमिह वीरवच्छ्रवो रराणाः सन्तस्तक्षत येन वयमन्यानति चितयेम तं चित्रं वाजं नो ददा॥९॥

**भावार्थः**-यदा मनुष्या विदुषः सङ्गच्छन्ते तदा विज्ञानं सत्यश्रवणं धनमुत्तमां प्रजां शूरवीरयुक्तसेनां च याचन्तां तेभ्यो यथार्थां विद्यां प्राप्याऽन्यान् सततं बोधयेयुरिति॥९॥

अत्र विपश्चिद्गुणकृत्यवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति षट्त्रिंशत्तमं सूक्तमष्टमो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे **(ऋभवः)** बुद्धिमानो! आप लोग **(इह)** इस संसार में **(नः)** हम लोगों के लिये **(प्रजाम्)** उत्तम सन्तान वा राज्य को **(इह)** इस संसार में **(रयिम्)** धन को और **(इह)** इस संसार में **(वीरवत्)** प्रशंसा करने योग्य वीरों के करने वाले **(श्रवः)** अन्न वा श्रवण को **(रराणाः)** देते हुए **(तक्षत)** प्राप्त कराओ **(येन)** जिससे **(वयम्)** हम लोग **(अन्यान्)** औरों के प्रति **(अति, चितयेम)** उत्तम रीति से विज्ञान को कहें **(तम्)** उस **(चित्रम्)** अद्भुत **(वाजम्)** विज्ञान को **(नः)** हम लोगों के लिये **(ददा)** दीजिये॥९॥

**भावार्थः**-जब मनुष्य विद्वानों को प्राप्त होवें तब विज्ञान, सत्यश्रवण, धन, उत्तम प्रजा और शूरवीरयुक्त सेना की याचना करें, उनसे यथार्थ विद्या को प्राप्त होकर अन्यों को निरन्तर बोध करावें॥९॥

इस सूक्त में विपश्चित् के गुणकृत्य [का] वर्णन होने से इस सूक्त के अर्थ की पिछले सूक्त के अर्थ के साथ संगति जाननी चाहिये॥

**यह छत्तीसवां सूक्त और आठवां वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

**अथाष्टर्चस्य सप्तत्रिंशत्तमस्य सूक्तस्य वामदेव ऋषिः। ऋभवो देवताः। १ विराट् त्रिष्टुप्। २ त्रिष्टुप्। ३, ८ निचृत् त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः। ४ पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः। ५, ७ अनुष्टुप्। ६ निचृदनुष्टुप् छन्दः। ऋषभः स्वरः॥**

**अथाप्तविषयमाह॥**

अब आठ ऋचा वाले सैंतीसवें सूक्त का आरम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में आप्त के विषय को कहते हैं॥

**उप॑ नो वाजा अध्व॒रमृ॑भुक्षा॒ देवा॑ या॒त प॒थिभि॑र्देव॒यानैः॑।**

**यथा॑ य॒ज्ञं मनु॑षो वि॒क्ष्वा॒३॑सु द॑धि॒ध्वे र॑ण्वाः सु॒दिने॒ष्वह्ना॑म्॥ १॥**

**उप॑। न॒ः। वा॒जाः॒। अ॒ध्व॒रम्। ऋ॒भु॒क्षाः॒। देवाः॑। या॒त। प॒थिऽभिः॑। दे॒व॒ऽयानैः॑। यथा॑। य॒ज्ञम्। मनु॑षः। वि॒क्षु। आ॒सु। द॒धि॒ध्वे। र॒ण्वाः॒। सु॒ऽदिने॑षु। अह्ना॑म्॥ १॥**

**पदार्थः**-(**उप**) (**नः**) अस्माकम् (**वाजाः**) विज्ञानवन्तः (**अध्वरम्**) अहिंसामयं यज्ञम् (**ऋभुक्षाः**) महान्तः (**देवाः**) (**यात**) प्राप्नुत (**पथिभिः**) मार्गैः (**देवयानैः**) देवा विद्वांसो यन्ति येषु तैः (**यथा**) (**यज्ञम्**) वैरादिदोषरहितं व्यवहारम् (**मनुषः**) मननशीलाः (**विक्षु**) प्रजासु (**आसु**) प्रत्यक्षवर्त्तमानासु (**दधिध्वे**) धरध्वम् (**रण्वाः**) रमणीयाः (**सुदिनेषु**) सुखेन वर्त्तमानेष्वहःसु (**अह्नाम्**) दिनानां मध्ये॥ १॥

**अन्वयः**-हे ऋभुक्षा वाजा देवा! भवन्तो यथा रण्वा मनुषोऽह्नां सुदिनेष्वासु विक्षु यज्ञं दधति तथैव यूयमेतं दधिध्वे तथा पथिभिर्देवयानैर्नोऽध्वरमुपयात॥ १॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। ये धार्मिकाणां विदुषां मार्गेण गच्छन्ति ते प्रजाहितकरणे समर्था जायन्ते॥ १॥

**पदार्थः**-हे (**ऋभुक्षाः**) बड़े (**वाजाः**) विज्ञानवाले (**देवाः**) विद्वानो! आप लोग (**यथा**) जैसे (**रण्वाः**) सुन्दर (**मनुषः**) विचार करने वाले (**अह्नाम्**) दिनों के मध्य में (**सुदिनेषु**) सुख से वर्त्तमान दिनों में और (**आसु**) इन प्रत्यक्ष वर्त्तमान (**विक्षु**) प्रजाओं में (**यज्ञम्**) वैर आदि दोषरहित व्यवहार को धारण करते हैं, वैसे ही आप लोग इसको (**दधिध्वे**) धारण कीजिये वैसे (**पथिभिः**) मार्गों (**देवयानैः**) विद्वान् लोग जिसमें जायें उनसे (**नः**) हम लोगों के (**अध्वरम्**) अहिंसामय यज्ञ को (**उप, यात**) प्राप्त हूजिये॥ १॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो जन धार्मिक विद्वानों के मार्ग अर्थात् मर्यादा से चलते हैं, वे प्रजा के हित करने में समर्थ होते हैं॥ १॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**ते वो॑ हृ॒दे मन॑से सन्तु य॒ज्ञा जुष्टा॑सो अ॒द्य घृ॒तनि॑र्णिजो गुः।**



www.9009.co.in

**प्र वः सुतासो हरयन्त पूर्णाः क्रत्वे दक्षाय हर्षयन्त पीताः॥ २॥**

**ते। वः। हृदे। मनसे। सन्तु। यज्ञाः। जुष्टासः। अद्य। घृतऽनिर्निजः। गुः। प्र। वः। सुतासः। हरयन्त। पूर्णाः। क्रत्वे। दक्षाय। हर्षयन्त। पीताः॥ २॥**

**पदार्थः**-(**ते**) (**वः**) युष्माकम् (**हृदे**) हृदयाय (**मनसे**) अन्तःकरणाय (**सन्तु**) (**यज्ञाः**) सत्या व्यवहाराः (**जुष्टासः**) विद्वद्भिः सेविताः (**अद्य**) (**घृतनिर्णिजः**) घृतेनाज्येनोदकेन शुद्धीकृताः (**गुः**) प्राप्नुवन्तु (**प्र**) (**वः**) युष्मान् (**सुतासः**) निष्पन्नाः (**हरयन्त**) कामयन्ताम् (**पूर्णाः**) (**क्रत्वे**) प्रज्ञायै (**दक्षाय**) चातुर्याय (**हर्षयन्त**) (**पीताः**)॥ २॥

**अन्वयः**-हे विद्वांसस्ते हृदे मनसेऽद्य वो घृतनिर्णिजो जुष्टासो यज्ञाः प्राप्ताः सन्तु सुतासो वो गुः प्र हरयन्त क्रत्वे दक्षाय पूर्णाः पीता हर्षयन्त॥ २॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! भवन्त एवं पुरुषार्थमनुतिष्ठन्तु यतो पवित्रता प्रज्ञा चातुर्य्यञ्च वर्द्धेरन्। ये मांसमद्याहारं विहायोत्तमं भुञ्जते ते सततं विज्ञानमुन्नयन्ति॥ २॥

**पदार्थः**-हे विद्वानो! (**ते**) वे (**हृदे**) हृदय वा (**मनसे**) अन्तःकरण के लिये (**अद्य**) आज (**वः**) आप लोगों के (**घृतनिर्णिजः**) घृत वा जल से शुद्ध किये गये (**जुष्टासः**) विद्वानों से सेवित (**यज्ञाः**) सत्य व्यवहार प्राप्त (**सन्तु**) होवें (**सुतासः**) उत्पन्न हुए (**वः**) आप लोगों को (**गुः**) प्राप्त हों और (**प्र, हरयन्त**) कामना करें तथा (**क्रत्वे**) बुद्धि और (**दक्षाय**) चतुरता के लिये (**पूर्णाः**) पूर्ण (**पीताः**) पालन किये गये (**हर्षयन्त**) प्रसन्न होवें॥ २॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! आप लोग ऐसा पुरुषार्थ करो जिससे पवित्रता, बुद्धि और चातुर्य्य बढ़े और जो मांस, मद्य के आहार का त्याग करके उत्तम पदार्थ का भोग करते, वे निरन्तर विज्ञान को बढ़ाते हैं॥ २॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**त्र्युदायं देवहितं यथा वः स्तोमो वाजा ऋभुक्षणो ददे वः।**

**जुह्वे मनुष्वदुपरासु विक्षु युष्मे सचा बृहद्दिवेषु सोमम्॥ ३॥**

**त्रिऽउदायम्। देवऽहितम्। यथा। वः। स्तोमः। वाजाः। ऋभुक्षणः। ददे। वः। जुह्वे। मनुष्वत्। उपरासु। विक्षु। युष्मे इति। सचा। बृहत्ऽदिवेषु। सोमम्॥ ३॥**

**पदार्थः**-(**त्र्युदायम्**) यं मनोदेहवचनैरुदायन्ति तम् (**देवहितम्**) देवेभ्यो हितकरम् (**यथा**) (**वः**) युष्माकं युष्मभ्यं वा (**स्तोमः**) प्रशंसा (**वाजाः**) अन्नविज्ञानवन्तः (**ऋभुक्षणः**) महान्तः (**ददे**) ददामि (**वः**) युष्मान् (**जुह्वे**) स्पर्द्धे (**मनुष्वत्**) विद्वद्वत् (**उपरासु**) श्रेष्ठासु (**विक्षु**) मनुष्यादिप्रजासु (**युष्मे**) युष्मान् (**सचा**) सत्येन (**बृहद्दिवेषु**) दिव्येषु पदार्थेषु (**सोमम्**) ऐश्वर्य्यम्॥ ३॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे वाजा ऋभुक्षणो! यथा वः स्तोमो मां सुखं ददाति तथा युष्मभ्यमानन्दमहं ददे। यथाहं मनुष्वद्व उपरासु विक्षु सचा बृहद्दिवेषु त्र्युदायं देवहितं सोमं जुह्वे युष्मे सुखं प्रयच्छामि तथा मां यूयमाह्वयत सुखं प्रयच्छत॥३॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यथा विद्वांसो युष्मभ्यं सुखं ददति युष्माकं हितं चिकीर्षन्ति तथैव यूयमपि तदर्थमाचरत॥३॥

**पदार्थः**-हे **(वाजाः)** अन्न तथा विज्ञानवाले **(ऋभुक्षणः)** श्रेष्ठ जनो! **(यथा)** जैसे **(वः)** आप लोगों की वा आप लोगों के लिये **(स्तोमः)** प्रशंसा मुझको सुख देती है, वैसे आप लोगों के लिये आनन्द को मैं **(ददे)** देता हूँ और जैसे मैं **(मनुष्वत्)** विद्वान् के सदृश **(वः)** आप लोगों को **(उपरासु)** श्रेष्ठ **(विक्षु)** मनुष्य आदि प्रजाओं में **(सचा)** सत्य से **(बृहद्दिवेषु)** महान् दिव्य पदार्थों में **(त्र्युदायम्)** मन, देह और वचन इन तीनों से जिसको देते हैं उस **(देवहितम्)** विद्वानों के लिये हितकारक **(सोमम्)** ऐश्वर्य्य को **(जुह्वे)** स्पर्द्धा करता हूँ और **(युष्मे)** आप लोगों के लिये सुख देता हूँ, वैसे मुझको आप लोग भी बुलाओ और सुख दो॥३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जैसे विद्वान् जन आप लोगों के लिये सुख देते हैं और आप लोगों के हित की इच्छा करते हैं, वैसे ही आप लोग भी उनके लिये आचरण करो॥३॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**पीवो॑अश्वाः शु॒चद्र॑था॒ हि भू॒ताय॑:शिप्रा वाजिनः सुनि॒ष्काः।**

**इन्द्र॑स्य सूनो शवसो नपा॒तोऽनु॑ वश्चेत्यग्रि॒यं मदा॑य॥४॥**

**पीव॑:ऽअश्वाः। शु॒चत्ऽर॑थाः। हि। भू॒त। अय॑:ऽशिप्राः। वा॒जि॒नः॒। सु॒ऽनि॒ष्काः। इन्द्र॑स्य। सू॒नो॒ इति॑। श॒व॒सः॒। न॒पा॒तः॒। अनु॑। व॒ः। चे॒ति॒। अ॒ग्रि॒यम्। मदा॑य॥४॥**

**पदार्थः**-**(पीवोअश्वाः)** पीवसः स्थूला अश्वा येषान्ते **(शुचद्रथाः)** शुचन्तः पवित्रा रथा यानानि येषान्ते **(हि)** यतः **(भूत)** भवत **(अयःशिप्राः)** अय इव शिप्रे हनूनासिके येषामश्वानां तद्वन्तः **(वाजिनः)** वेगवन्तः **(सुनिष्काः)** शोभनानि निष्कानि सुवर्णमयान्याभूषणानि येषान्ते **(इन्द्रस्य)** परमैश्वर्य्यवतो राज्ञः **(सूनो)** अपत्य **(शवसः)** बलवतः **(नपातः)** अविद्यमानाऽधःपतनस्य **(अनु)** **(वः)** **(चेति)** विज्ञायते **(अग्रियम्)** अग्रे भवं सुखम् **(मदाय)** आनन्दाय॥४॥

**अन्वयः**-हे पीवोअश्वाः शुचद्रथा अयःशिप्राः सुनिष्का वाजिनो यूयं हि विजयिनो भूत। हे नपातः शवस इन्द्रस्य सूनो! त्वं मदायाग्रियं पुरुषार्थं कुरु यथाऽस्माभिर्वः सुखमनु चेति तथा युष्माभिरस्मत्सुखवृद्धिः प्रयत्येत॥४॥

**भावार्थः**-हे राजपुरुषा! भवन्तो विस्तीर्णबलाः सेनाङ्गसहिता ऐश्वर्य्यालङ्कृता राज्याऽऽनन्दवृद्धये पुरुषार्थं कुर्वन्तु यतः शत्रवो युष्मान् तिरस्कर्तुं न शक्नुयुः॥४॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-हे **(पीवोअश्वाः)** मोटे घोड़ों **(शुचद्रथाः)** पवित्र वाहनों और **(अयः शिप्राः)** लोह के सदृश ठुड्ढी और नासिका वाले घोड़ों से युक्त **(सुनिष्काः)** सुन्दर सुवर्ण के आभूषणों वाले **(वाजिनः)** वेगयुक्त आप लोग **(हि)** जिससे जीतने वाले **(भूत)** हूजिये। और हे **(नपातः)** नीचे गिरना अर्थात् नीच दशा को प्राप्त होना जिसके नहीं उस **(शवसः)** बलवान् **(इन्द्रस्य)** अत्यन्त ऐश्वर्य्य वाले राजा के **(सूनो)** पुत्र! आप **(मदाय)** आनन्द के लिये **(अग्रियम्)** प्रथम हुए सुख और पुरुषार्थ को करो और जैसे हम लोगों से **(वः)** आप लोगों का सुख **(अनु, चेति)** जाना जाता है, वैसे आप लोगों को हम लोगों की सुखवृद्धि का प्रयत्न करना चाहिये॥४॥

**भावार्थः**-हे राजपुरुषो! आप लोग विस्तीर्ण बल से युक्त और सेना के अङ्गों के सहित विराजमान और ऐश्वर्य्य से शोभित हुए राज्य के आनन्द की वृद्धि के लिये पुरुषार्थ करो, जिससे शत्रुजन आप लोगों का तिरस्कार करने को समर्थ न हो सकें॥४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**ऋभुमृभुक्षणो रयिं वाजे वाजिन्तमं युजम्।**

**इन्द्रस्वन्तं हवामहे सदासातममश्विनम्॥५॥९॥**

**ऋभुम्। ऋभुक्षणः। रयिम्। वाजे। वाजिन्ऽतमम्। युजम्। इन्द्रस्वन्तम्। हवामहे। सदाऽसातमम्। अश्विनम्॥५॥**

**पदार्थः**-**(ऋभुम्)** मेधाविनम् **(ऋभुक्षणः)** महान्तो विद्वांसः **(रयिम्)** धनम् **(वाजे)** सङ्ग्रामे **(वाजिन्तमम्)** प्रशंसिता बहवोऽतिशयिता वाजिनो विद्यन्ते यस्मिँस्तम् **(युजम्)** समाधातुमर्हम् **(इन्द्रस्वन्तम्)** परमैश्वर्य्ययुक्तस्वामिसहितम् **(हवामहे)** आदद्मः **(सदासातमम्)** सदाऽतिशयेन विभजनीयम् **(अश्विनम्)** बहूत्तमाश्वादियुक्तम्॥५॥

**अन्वयः**-हे ऋभुक्षणो! यूयं वाज ऋभुं वाजिन्तमं युजमिन्द्रस्वन्तं सदासातममश्विनं रयिं वयं हवामहे तथैवैतं यूयमप्याहूयत॥५॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यूयं स्पर्द्धया परस्परस्य बलं वर्द्धयित्वा युधि शत्रून् विजयध्वम्॥५॥

**पदार्थः**-हे **(ऋभुक्षणः)** बड़े विद्वान्! आप लोग **(वाजे)** संग्राम में **(ऋभुम्)** बुद्धिमान् **(वाजिन्तमम्)** प्रशंसित अतीव बहुत घोड़ों से युक्त **(युजम्)** समाधान करने को योग्य **(इन्द्रस्वन्तम्)** अत्यन्त ऐश्वर्य्य से युक्त स्वामी के सहित **(सदासातमम्)** सदा अतिशय करके विभाग करने योग्य **(अश्विनम्)** बहुत उत्तम घोड़े आदि से युक्त **(रयिम्)** धन को हम लोग **(हवामहे)** ग्रहण करते हैं, वैसे ही इसको आप लोग बुलावें ग्रहण करें॥५॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! आप लोग स्पर्द्धा से परस्पर बल बढ़ाय के सङ्ग्राम में शत्रुओं को जीतो॥५॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**सेदृ॑भवो॒ यमव॑थ यू॒यमिन्द्र॑श्च॒ मर्त्य॑म्।**

**स धी॒भिर॑स्तु॒ सनि॑ता मे॒धसा॑ता॒ सो अर्व॑ता॥६॥**

**सः। इत्। ऋ॒भ॒व॒ः। यम्। अव॑थ। यू॒यम्। इन्द्र॑ः। च॒। मर्त्य॑म्। सः। धी॒भिः। अ॒स्तु॒। सनि॑ता। मे॒धऽसा॑ता। सः। अर्व॑ता॥६॥**

**पदार्थः**-**(सः)** **(इत्)** एव **(ऋभवः)** मेधावी **(यम्)** **(अवथ)** रक्षथ **(यूयम्)** **(इन्द्रः)** परमैश्वर्य्यो राजा **(च)** **(मर्त्यम्)** मनुष्यम् **(सः)** **(धीभिः)** प्रज्ञाभिः **(अस्तु)** भवतु **(सनिता)** सत्याऽसत्ययोः संविभाजकः **(मेधसाता)** शुद्धसङ्ग्रामविभक्तम् **(सः)** **(अर्वता)** अश्वादिना॥६॥

**अन्वयः**-हे ऋभवो! यूयं यं मर्त्यमवथेन्द्रश्चावति स इद्धीभिर्युक्तः स सनिता सोऽर्वता मेधसाता विजय्यस्तु॥६॥

**भावार्थः**-हे राजसेनाजना! यदि युष्माकमध्यक्षा राजा मेधाविनश्च रक्षकाः स्युस्तर्हि युष्माकं सर्वत्र विजयः सुखञ्च सततं वर्द्धेत॥६॥

**पदार्थः**-हे **(ऋभवः)** बुद्धिमान् जनो! **(यूयम्)** आप लोग **(यम्)** जिस **(मर्त्यम्)** मनुष्य की **(अवथ)** रक्षा करते हो और **(इन्द्रः)** अत्यन्त ऐश्वर्य्य युक्त राजा **(च)** भी रक्षा करता है **(सः)** **(इत्)** वही **(धीभिः)** बुद्धियों से युक्त **(सः)** वह **(सनिता)** सत्य और असत्य का विभाग करने वाला और **(सः)** वह **(अर्वता)** घोड़ा आदि से **(मेधसाता)** शुद्ध संग्राम में विजयी **(अस्तु)** होवे॥६॥

**भावार्थः**-हे राजसेनाजनो! जो आप लोगों के अध्यक्ष राजा और बुद्धिमान् रक्षक होवें तो आप लोगों का सर्वत्र विजय और सुख निरन्तर बढ़े॥६॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**वि नो॑ वाजा ऋभुक्षणः प॒थश्चि॑तन॒ यष्ट॑वे।**

**अ॒स्मभ्य॑ं सूरयः स्तु॒ता विश्वा॒ आशा॑स्तरी॒षणि॑॥७॥**

**वि। न॒ः। वा॒जा॒ः। ऋ॒भु॒क्ष॒ण॒ः। प॒थः। चि॒त॒न॒। यष्ट॑वे। अ॒स्मभ्य॑म्। सू॒र॒य॒ः। स्तु॒ताः। विश्वा॑ः। आशा॑ः। त॒री॒षणि॑॥७॥**

**पदार्थः**-(**वि**) (**नः**) अस्माकम् (**वाजाः**) (**ऋभुक्षणः**) महान्तः (**पथः**) मार्गान् (**चितन**) ज्ञापयत (**यष्टवे**) सङ्गन्तुम् (**अस्मभ्यम्**) (**सूरयः**) विद्वांसः (**स्तुताः**) (**विश्वाः**) अखिलाः (**आशाः**) इच्छाः (**तरीषणि**) दुःखं तरितुं सामर्थ्यम्॥७॥

**अन्वयः**-हे वाजा ऋभुक्षणः स्तुताः सूरयो! यूयमस्मभ्यं यष्टवे पथो विचितन यतो तरीषणि प्राप्य नोऽस्माकं विश्वा आशाः पूर्णाः स्युः॥७॥

**भावार्थः**-ये मनुष्या बाल्यावस्थामारभ्य विद्वच्छिक्षां गृह्णीयुस्तेषां सकला इच्छाः पूर्णाः स्युः॥७॥

**पदार्थः**-हे (**वाजाः**) प्रशंसित (**ऋभुक्षणः**) बड़े (**स्तुताः**) स्तुति किये गये (**सूरयः**) विद्वानो! आप लोग (**अस्मभ्यम्**) हम लोगों के लिये (**यष्टवे**) मिलने को (**पथः**) मार्ग (**वि चितन**) जनाइये जिससे (**तरीषणि**) दुःख के पार उतरने के सामर्थ्य को प्राप्त होकर (**नः**) हम लोगों की (**विश्वाः**) सम्पूर्ण (**आशाः**) इच्छायें पूर्ण होवें॥७॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य बाल्यावस्था से लेकर विद्वानों की शिक्षा का ग्रहण करें, उनकी सम्पूर्ण इच्छा पूर्ण होवें॥७॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**तं नो वाजा ऋभुक्षण इन्द्र नासत्या रयिम्।**

**समश्वं चर्षणिभ्य आ पुरु शस्त मघत्तये॥८॥१०॥**

**तम्। नः। वाजाः। ऋभुक्षणः। इन्द्र। नासत्या। रयिम्। सम्। अश्वम्। चर्षणिऽभ्यः। आ। पुरु। शस्त। मघत्तये॥८॥**

**पदार्थः**-(**तम्**) (**नः**) अस्मभ्यम् (**वाजाः**) दातारः (**ऋभुक्षणः**) महान्तः (**इन्द्र**) परमैश्वर्य्ययुक्त (**नासत्या**) अविद्यमानासत्याचारौ सभान्यायेशौ (**रयिम्**) धनम् (**सम्**) (**अश्वम्**) महान्तम् (**चर्षणिभ्यः**) मनुष्येभ्यः (**आ**) समन्तात् (**पुरु**) बहु (**शस्त**) प्रशंसत (**मघत्तये**) पूजितधनप्राप्तये॥८॥

**अन्वयः**-हे वाजा ऋभुक्षणो! यूयं यथा नासत्या तथा नश्चर्षणिभ्यो मघत्तये तमश्वं रयिं पुरु समादत्त। हे इन्द्र! त्वमेताञ्छस्त॥८॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। मनुष्यै राज्ञो राजपुरुषेभ्यश्च धनोन्नतिः सदा कार्या येन बहुविधं सुखं भवेदिति॥८॥

अत्र विद्वद्गुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति सप्तत्रिंशत्तमं सूक्तं दशमो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे (**वाजाः**) देने वाले! (**ऋभुक्षणः**) बड़े! आप लोग जैसे (**नासत्या**) असत्याचार से रहित सभा और न्याय के ईश वैसे (**नः**) हम (**चर्षणिभ्यः**) मनुष्यों के अर्थ (**मघत्तये**) श्रेष्ठ धन की प्राप्ति



www.9009.co.in

के लिये **(तम्)** उस **(अश्वम्)** बड़े **(रयिम्)** धन को **(पुरु)** बहुत **(सम्)** उत्तम प्रकार **(आ)** ग्रहण करिये। और हे **(इन्द्र)** अत्यन्त ऐश्वर्य्य से युक्त! आप इन लोगों की **(शस्त)** प्रशंसा कीजिये॥८॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। मनुष्यों को चाहिये कि राजा और राजपुरुषों से धन की उन्नति सदा करें, जिससे बहुत प्रकार का सुख होवे॥८॥

इस सूक्त में विद्वानों के गुणों का वर्णन होने से इस सूक्त के अर्थ की पिछले सूक्त के अर्थ के साथ संगति जाननी चाहिये॥

**यह सैंतीसवां सूक्त और दशवां वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

**अथ दशर्चस्याष्टत्रिंशत्तमस्य सूक्तस्य वामदेव ऋषिः। १ द्यावापृथिव्यौ देवते। २-१० दधिक्रा देवताः। १, ४ विराट् पङ्क्तिः। ६ भुरिक् पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः। २, ३ त्रिष्टुप्। ५, ८-१० निचृत् त्रिष्टुप्। ७ विराट् त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः॥**

**कीदृशो राजा भवेदित्याह॥**

अब दश ऋचा वाले अड़तीसवें सूक्त का आरम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में कैसा राजा हो, इस विषय को कहते हैं॥

**उ॒तो हि वां॑ दा॒त्रा सन्ति॒ पूर्वा॒ या पू॒रुभ्य॑स्त्र॒सद॑स्युर्नितो॒शे।**

**क्षे॒त्रा॒सां द॑दथुरुर्व॒रा॒सां घ॒नं दस्यु॑भ्यो अ॒भिभू॑तिमु॒ग्रम्॥ १॥**

**उ॒तो इति॑। हि। वा॒म्। दा॒त्रा। सन्ति॑। पूर्वा॑। या। पू॒रुऽभ्यः॑। त्र॒सद॑स्युः। नि॒ऽतो॒शे। क्षे॒त्र॒ऽसाम्। द॒द॒थुः। उ॒र्व॒रा॒ऽसाम्। घ॒नम्। दस्यु॑ऽभ्यः। अ॒भिऽभू॑तिम्। उ॒ग्रम्॥ १॥**

**पदार्थः**-(**उतो**) अपि (**हि**) यतः (**वाम्**) युवयोः (**दात्रा**) दातारौ (**सन्ति**) (**पूर्वा**) पूर्वौ (**याः**) यः (**पुरुभ्यः**) बहुभ्यः (**त्रसदस्युः**) त्रस्यन्ति दस्यवो यस्मात्सः (**नितोशे**) नितरां वधे। **नितोशत इति वधकर्मासु पठितम्।** (निघं०२.१९) (**क्षेत्रासाम्**) यः क्षेत्राणि सनति विभजति तम् (**ददथुः**) दत्तः (**उर्वरासाम्**) बहुश्रेष्ठाः पदार्थाः सन्ति यस्यान्तां भूमिं सनति तम् (**घनम्**) हन्ति येन तम् (**दस्युभ्यः**) साहसिकेभ्यश्चौरेभ्यः (**अभिभूतिम्**) पराजयम् (**उग्रम्**) कठिनम्॥१॥

**अन्वयः**-हे राजन्! भवान् सेनापतिस्त्रसदस्युस्सन् ये हि वां भृत्याः सन्ति तेभ्यः पूरुभ्यो या पूर्वा दात्रा युवां नितोशे क्षेत्रासामुर्वरासां ददथुरुतो दस्युभ्य उग्रमभिभूतिं तेन सह दस्युभ्यो घनं प्रहत्योग्रमभिभूतिं ददथुस्तस्मात् सत्कर्त्तव्यौ स्तः॥१॥

**भावार्थः**-हे राजसेनाध्यक्षौ! युवां सुशिक्षितान् भृत्यान् संरक्ष्य दस्यून् हत्वा विजयं प्राप्य न्यायेन राष्ट्रं पालयतम्॥१॥

**पदार्थः**-हे राजन्! आप और सेनापति (**त्रसदस्युः**) डरते हैं दस्यु जिससे ऐसे होते हुए जो (**हि**) जिस कारण (**वाम्**) आप दोनों के भृत्य (**सन्ति**) हैं उन (**पूरुभ्यः**) बुहतों से (**या**) जो (**पूर्वा**) प्रथम वर्त्तमान (**दात्रा**) दाता जन आप दोनों (**नितोशे**) अत्यन्त वध करने में (**क्षेत्रासाम्**) क्षेत्रों को विभाग करने और (**उर्वरासाम्**) बहुत श्रेष्ट पदार्थों से युक्त भूमि सेवने वाले को (**ददथुः**) देते हो (**उतो**) और (**दस्युभ्यः**) साहस करने वाले चोरों के लिये (**उग्रम्**) कठिन (**अभिभूतिम्**) पराजय को और उसके साथ चोरों के लिये (**घनम्**) जिससे नाश करता है, उसका प्रहार करके कठिन पराजय को देते हो, इससे सत्कार करने योग्य हो॥१॥

**भावार्थः**-हे राजा और सेना के अध्यक्ष! आप दोनों उत्तम प्रकार शिक्षित भृत्यों को रख दुष्टों को नाश करके और विजय को प्राप्त होकर न्याय से राज्य का पालन करो॥१॥



www.9009.co.in

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**उत वाजिनं पुरुनिष्षिध्वानं दधिक्रामु ददथुर्विश्वकृष्टिम्।**

**ऋजिप्यं श्येनं प्रुषितप्सुमाशुं चर्कृत्यमर्यो नृपतिं न शूरम्॥ २॥**

**उत। वाजिनम्। पुरुनिःऽसिध्वानम्। दधिऽक्राम्। ऊम् इति। ददथुः। विश्वऽकृष्टिम्। ऋजिप्यम्। श्येनम्। प्रुषितऽप्सुम्। आशुम्। चर्कृत्यम्। अर्यः। नृऽपतिम्। न। शूरम्॥ २॥**

**पदार्थः**-(**उत**) अपि (**वाजिनम्**) बहुवेगवन्तम् (**पुरुनिष्षिध्वानम्**) बहवः शत्रवो निषिध्यन्ते येन तम् (**दधिक्राम्**) यो दधिना धारकेणाऽधिकेन सह तम् (**उ**) (**ददथुः**) दद्याताम् (**विश्वकृष्टिम्**) विश्वे सर्वे कृष्टयो मनुष्या विजयिनो यस्मात्तम् (**ऋजिप्यम्**) ऋजिपेषु सरलानां पालकेषु साधुम् (**श्येनम्**) श्येनमिव सद्योगामिनम् (**प्रुषितप्सुम्**) यः प्रुषितान् स्निग्धान् पदार्थान् प्साति भक्षयति तम् (**आशुम्**) पूर्णमध्वानं प्राप्नुवन्तम् (**चर्कृत्यम्**) भृशं कर्त्तुं योग्यम् (**अर्य्यः**) स्वामी (**नृपतिम्**) नराणां पालकम् (**न**) इव (**शूरम्**) शूरवीरम्॥ २॥

**अन्वयः**-हे सभासेनेशौ! युवां यस्मायर्यः शूरं नृपतिं न वाजिनं पुरुनिष्षिध्वानं दधिक्रां विश्वकृष्टिमुत वाजिनमु ऋजिप्यं प्रुषितप्सुं श्येनमिव चर्कृत्यमाशुं ददथुः स विजयाय प्रभवेत्॥ २॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। यदि राजजनाः शिल्पविद्याजन्यानि शस्त्रास्त्राणि सुशिक्षितां चतुरङ्गिणीं सेनां च निष्पादयेयुस्तर्हि क्वापि पराजयो न स्यात्॥ २॥

**पदार्थः**-हे सभा और सेना के ईश! आप दोनों जिसके लिये (**अर्य्यः**) स्वामी (**शूरम्**) वीर (**नृपतिम्**) मनुष्यों के पालन करने वाले राजा के (**न**) सदृश (**वाजिनम्**) बहुत वेगयुक्त (**पुरुनिष्षिध्वानम्**) बहुत शत्रुओं के हराने वाले। (**दधिक्राम्**) धारण करने वाली अधिकता के सहित वर्त्तमान (**विश्वकृष्टिम्**) सब मनुष्य जीतते जिससे उस (**उत**) और बहुत वेगवाले (**उ**) और (**ऋजिप्यम्**) सरलों के पालन करने वालों में श्रेष्ठ (**प्रुषितप्सुम्**) जो श्रेष्ठ पदार्थों को भक्षण करने वाले (**श्येनम्**) शीघ्रगामी वाज के सदृश (**चर्कृत्यम्**) निरन्तर करने के योग्य (**आशुम्**) पूर्ण मार्ग को व्याप्त होने वाले को (**ददथुः**) देवें, वह विजय के लिये समर्थ होवे॥ २॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जो राजजन शिल्पविद्या से उत्पन्न शस्त्र-अस्त्र और उत्तम प्रकार शिक्षित चार अङ्गों से युक्त सेना को सिद्ध करें तो कहीं भी पराजय न होवे॥ २॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**यं सीमनु प्रवतेव द्रवन्तं विश्वः पूरुर्मदति हर्षमाणः।**



www.9009.co.in

**पुड्भिर्गृध्यन्तं मेधयुं न शूरं रथतुरं वातमिव ध्रजन्तम्॥ ३॥**

**यम्। सीम्। अनु। प्रवताऽइव। द्रवन्तम्। विश्वः। पूरुः। मदति। हर्षमाणः। पट्ऽभिः। गृध्यन्तम्। मेधऽयुम्। न। शूरम्। रथऽतुरम्। वातम्ऽइव। ध्रजन्तम्॥ ३॥**

**पदार्थः**-(**यम्**) (**सीम्**) सर्वतः (**अनु**) (**प्रवतेव**) निम्नस्थलेनेव (**द्रवन्तम्**) (**विश्वः**) सर्वः (**पूरुः**) मनुष्यः (**मदति**) आनन्दति (**हर्षमाणः**) आनन्दितः सन् (**पड्भिः**) पादैः (**गृध्यन्तम्**) अभिकाङ्क्षमाणम् (**मेधयुम्**) मेधं हिंसां कामयमानम् (**न**) इव (**शूरम्**) (**रथतुरम्**) यो रथेन सद्यो गच्छति तम् (**वातमिव**) (**ध्रजन्तम्**) गच्छन्तम्॥ ३॥

**अन्वयः**-हे राजन्! यं सीं जलं प्रवतेव द्रवन्तमनु विश्वो हर्षमाणः पूरुर्मदति स मेधयुं शूरं न ध्रजन्तं वातमिव रथतुरं पड्भिर्गृध्यन्तं शत्रुं हन्तुं प्रभवति॥ ३॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। यस्य राज्ञो राष्ट्रे निम्नं स्थानं जलमिव सर्वतो गुणाधानं चेकीभवति तस्य सन्निधौ योग्याः पुरुषा निवसन्ति॥ ३॥

**पदार्थः**-हे राजन्! (**यम्**) जिसको (**सीम्**) सब ओर से जल (**प्रवतेव**) नीचे स्थल से जैसे वैसे (**द्रवन्तम्**) जाते हुए को (**अनु**) पीछे (**विश्वः**) सब (**हर्षमाणः**) हर्षित होता हुआ (**पूरुः**) मनुष्यमात्र (**मदति**) आनन्दित होता है वह (**मेधयुम्**) हिंसा की कामना करते और (**शूरम्**) वीर पुरुष के (**न**) सदृश (**ध्रजन्तम्**) चलते हुए (**वातमिव**) वायु के सदृश (**रथतुरम्**) रथ के द्वारा शीघ्र चलने वाले (**पड्भिः**) पैरों से (**गृध्यन्तम्**) अभिकांक्षा करते हुए शत्रु के मारने को समर्थ होता है॥ ३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जिस राजा के राज्य में नीचा स्थान जल के सदृश और सब प्रकार से गुणों का पात्र एक होता है, उसके समीप योग्य पुरुष रहते हैं॥ ३॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**यः स्मारुन्धानो गध्या समत्सु सनुतरश्चरति गोषु गच्छन्।**

**आविर्ऋजीको विदथा निचिक्यत्तिरो अरतिं पर्याप आयोः॥ ४॥**

**यः। स्म। आऽरुन्धानः। गध्या। समत्ऽसु। सनुऽतरः। चरति। गोषु। गच्छन्। आविःऽऋजीकः। विदथा। निऽचिक्यत्। तिरः। अरतिम्। परि। आपः। आयोः॥ ४॥**

**पदार्थः**-(**यः**) (**स्म**) (**आरुन्धानः**) समन्ताच्छत्रून्निरुन्धानः (**गध्या**) मिश्रीभूतान् (**समत्सु**) सङ्ग्रामेषु (**सनुतरः**) सनातनविद्यः (**चरति**) (**गोषु**) पृथिवीषु (**गच्छन्**) (**आविर्ऋजीकः**) प्रसिद्धसरलस्वभावः (**विदथा**) विज्ञानानि (**निचिक्यत्**) पश्यन् (**तिरः**) तिरस्करणे (**अरतिम्**) दुःखम् (**परि**) (**आपः**) जलानि (**आयोः**) आयुषः॥ ४॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे राजन्! यः सनुतरः समत्सु गध्याऽऽरुन्धान आविर्ऋजीको गोषु गच्छन् निचिक्यच्छत्रूंस्तिरस्कृत्यारतिं निवार्य परि चरति आप इवाऽऽयोर्विदथा प्राप्नोति तं स्म भवानधिकारिणं कुर्य्यात्॥४॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे राजन्! ये जनाः स्वराष्ट्रे शान्तिकराः शत्रुराष्ट्र उद्वेजका बलिष्ठा दीर्घायुषः प्रसिद्धकीर्त्तयः स्युस्तानेव शत्रुजयाय नियोजय॥४॥

**पदार्थः**-हे राजन्! **(यः)** जो **(सनुतरः)** सनातन विद्यायुक्त **(समत्सु)** संग्रामों में **(गध्या)** मिले हुए **(आरुन्धानः)** सब ओर से शत्रुओं को रोकता हुआ **(आविर्ऋजीकः)** प्रसिद्ध सरल अर्थात् कपटरहित स्वभाववाला **(गोषु)** पृथिवियों में **(गच्छन्)** चलता और **(निचिक्यत्)** देखता हुआ शत्रुओं का **(तिरः)** तिरस्कार और **(अरतिम्)** दुःख का निवारण करके **(परि, चरति)** घूमता है **(आपः)** जलों के सदृश **(आयोः)** अवस्था के **(विदथा)** विज्ञानों को प्राप्त होता है **(स्म)** उसी को आप अधिकारी करें॥४॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे राजन्! जो जन अपने राज्य में शान्ति करने, शत्रुओं के राज्य में भय देने और बलयुक्त, अधिक अवस्था वाले, प्रसिद्ध कीर्तियुक्त होवें, उन्हीं को शत्रुओं के जीतने के लिये नियुक्त करो॥४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**उत स्मैनं वस्त्रमथिं न तायुमनु क्रोशन्ति क्षितयो भरेषु।**

**नीचायमानं जसुरिं न श्येनं श्रवश्चाच्छा पशुमच्च यूथम्॥५॥११॥**

**उत। स्म। एनम्। वस्त्रऽमथिम्। न। तायुम्। अनु। क्रोशन्ति। क्षितयः। भरेषु। नीचा। अयमानम्। जसुरिम्। न। श्येनम्। श्रवः। च। अच्छ। पशुऽमत्। च। यूथम्॥५॥**

**पदार्थः**-**(उत)** **(स्म)** **(एनम्)** **(वस्त्रमथिम्)** यो वस्त्राणि मथ्नाति तम् **(न)** इव **(तायुम्)** तस्करम् **(अनु)** **(क्रोशन्ति)** रुदन्ति **(क्षितयः)** मनुष्याः **(भरेषु)** सङ्ग्रामेषु **(नीचा)** नीचानि कर्म्माणि **(अयमानम्)** प्राप्नुवन्तम् **(जसुरिम्)** प्रयतमानम् **(न)** इव **(श्येनम्)** पक्षिविशेषम् **(श्रवः)** अन्नं श्रवणं वा **(च)** **(अच्छ)** अत्र **संहितायामिति** दीर्घः। **(पशुमत्)** पशवो विद्यन्ते यस्मिंस्तत् **(च)** **(यूथम्)** समूहम्॥५॥

**अन्वयः**-क्षितयो भरेषु यमेनं राजानं वस्त्रमथिं तायुं नाऽनु क्रोशन्ति जसुरिं श्येनं न नीचायमानं पशुमच्छ्रवश्चाऽच्छ यूथञ्चाऽनु क्रोशन्त्युत स स्म सद्यो विनश्यति॥५॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। यो राजा प्रजापालनेन विना करं हरति यस्य प्रजाभ्यो दुष्टा दुःखं ददति यः स्वयं नीचकर्मा श्येनवद्धिंस्रः पशुवन्मूर्खो यस्य सेना च चोरवद्वर्त्तते तस्य सद्यो विनाशो भवतीति निश्चयः॥५॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**क्षितयः**) मनुष्य (**भरेषु**) संग्रामों में जिस (**एनम्**) इस राजा को (**वस्त्रमथिम्**) वस्त्रों को मथने वाले (**तायुम्**) चोर को (**न**) जैसे वैसे (**अनु, क्रोशन्ति**) पीछे कोशते रोते हैं (**जसुरिम्**) प्रयत्न करते हुए (**श्येनम्**) पक्षिविशेष अर्थात् वाज के (**न**) सदृश (**नीचा**) नीच कर्मों को (**अयमानम्**) प्राप्त होने वाले को और (**पशुमत्**) पशुओं से युक्त (**श्रवः**) अन्न वा श्रवण को (**च**) भी (**अच्छ**) उत्तम प्रकार (**यूथम्, च**) तथा समूह के पीछे कोशते रोते हैं (**उत, स्म**) वही तो शीघ्र नष्ट होता है॥५॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जो राजा प्रजापालन के विना कर लेता है, जिस राजा की प्रजा को दुष्ट जन दुःख देते हैं और जो राजा आप नीच कर्म करने वाला, वाज पक्षी के सदृश हिंसक, पशु के सदृश मूर्ख और जिस राजा की सेना चोर के सदृश वर्त्तमान है, उसका शीघ्र विनाश होता है, यह निश्चय है॥५॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**उ॒त स्मा॑सु प्रथ॒मः स॑रि॒ष्यन्नि वे॑वेति॒ श्रेणि॑भी॒ रथा॑नाम्।**

**स्र॒जं॑ कृण्वा॒नो जन्यो॒ न शुभ्वा॑ रे॒णुं रेरि॑हत्कि॒रणं॑ दद॒श्वान्॥६॥**

**उ॒त। स्म॒। आ॒सु॒। प्र॒थ॒मः। स॒रि॒ष्यन्। नि। वे॒वे॒ति॒। श्रेणि॑ऽभिः। रथा॑नाम्। स्र॒जम्। कृ॒ण्वा॒नः। जन्यः॑। न। शुभ्वा॑। रे॒णुम्। रेरि॑हत्। कि॒रण॑म्। द॒द॒श्वान्॥६॥**

**पदार्थः**-(**उत**) अपि (**स्म**) (**आसु**) सेनासु (**प्रथमः**) आदिमः (**सरिष्यन्**) गमिष्यन् (**नि**) (**वेवेति**) गच्छति (**श्रेणिभिः**) पङ्क्तिभिः (**रथानाम्**) यानानाम् (**स्रजम्**) मालामिव सेनाम् (**कृण्वानः**) कुर्वन् (**जन्यः**) यो जायते (**न**) इव (**शुभ्वा**) सुशोभमानः (**रेणुम्**) (**रेरिहत्**) (**किरणम्**) ज्योतिः (**ददश्वान्**) दत्तवान् वायुरिव॥६॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! य आसु रथानां श्रेणिभिः स्रजं कृण्वानः प्रथमः सरिष्यन् नि वेवेत्युत शुभ्वा जन्यो न किरणं ददश्वान् रेणुं रेरिहत् स स्मैव राजा सर्वतो वर्धते॥६॥

**भावार्थः**-अत्रोपमावाचकलुप्तोपमालङ्कारौ। यो न्यायेन प्रजाः पालयन्त्सेनाष्वग्रगामी धनुर्वेदविद्विजयी दक्षो विद्वान् धार्मिकः सुसहायो राजा भवेत् स एव कीर्त्तिमान् भूत्वा महाराजः स्यात्॥६॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो (**आसु**) इन सेनाओं में (**रथानाम्**) वाहनों की (**श्रेणिभिः**) पङ्क्तियों से (**स्रजम्**) माला के सदृश सेना को (**कृण्वानः**) करता और (**प्रथमः**) प्रथम (**सरिष्यन्**) चलने वाला होता हुआ (**नि, वेवेति**) जाता है (**उत**) और (**शुभ्वा**) उत्तम प्रकार शोभित (**जन्यः**) उत्पन्न होने वाले के (**न**) सदृश और (**किरणम्**) ज्योति को (**ददश्वान्**) देने वाले वायु के सदृश (**रेणुम्**) धूलि को (**रेरिहत्**) निरन्तर उड़ाता है (**स्म**) वही राजा सब ओर से वृद्धि को प्राप्त होता है॥६॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमावाचकलुप्तोपमालङ्कार हैं। जो न्याय से प्रजाओं का पालन करता हुआ सेनाओं में अग्रगामी, धनुर्वेद का जानने वाला, विजयी, चतुर, विद्वान्, धार्मिक और उत्तम सहाययुक्त राजा होवे, वही यशस्वी होकर महाराज होवे॥६॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**उत स्य वाजी सहुरिर्ऋतावा शुश्रूषमाणस्तन्वा समर्ये।**

**तुरं यतीषु तुरयन्नृजिप्योऽधि भ्रुवोः किरते रेणुमृञ्जन्॥७॥**

**उत। स्यः। वाजी। सहुरिः। ऋतऽवा। शुश्रूषमाणः। तन्वा। सऽमर्ये। तुरम्। यतीषु। तुरयन्। ऋजिप्यः। अधि। भ्रुवोः। किरते। रेणुम्। ऋञ्जन्॥७॥**

**पदार्थः**-(**उत**) अपि (**स्यः**) सः (**वाजी**) विज्ञानवान् (**सहुरिः**) सहनशीलः (**ऋतावा**) सत्याचरणः (**शुश्रूषमाणः**) सेवमानः (**तन्वा**) शरीरेण (**समर्ये**) सङ्ग्रामे (**तुरम्**) शीघ्रकारिणम् (**यतीषु**) नियतासु सेनासु (**तुरयन्**) सद्यो गमयन् (**ऋजिप्यः**) सरलगामिषु साधुः (**अधि**) (**भ्रुवोः**) (**किरते**) विकिरति (**रेणुम्**) धूलिम् (**ऋञ्जन्**) प्रसाध्नुवन्॥७॥

**अन्वयः**-हे मनुष्याः! स्य वाजी सहुरिर्ऋतावा यतीषु तुरं तुरयन्नुतर्जिप्यस्तन्वा शुश्रूषमाण ऋञ्जन् समर्ये भ्रुवो रेणुमधिकिरते स राजा विजयी सत्कर्त्तव्यः॥७॥

**भावार्थः**-स एव राज्यं कर्त्तुमर्हेद्यो विद्वान् सर्वैः सह सत्यसेवी उत्तमसेनः सरलस्वभावो भवेत्॥७॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! (**स्यः**) वह (**वाजी**) विज्ञानयुक्त (**सहुरिः**) सहनेवाला (**ऋतावा**) सत्य आचरण से युक्त (**यतीषु**) नियत सेनाओं में (**तुरम्**) शीघ्र करने वाले को (**तुरयन्**) शीघ्र चलाता हुआ (**उत**) भी (**ऋजिप्यः**) सरलगति वालों में श्रेष्ठ (**तन्वा**) शरीर से (**शुश्रूषमाणः**) सेवन करता और (**ऋञ्जन्**) प्रसिद्ध करता हुआ (**समर्ये**) सङ्ग्राम में (**भ्रुवोः**) भौओं की (**रेणुम्**) धूलि को (**अधि, किरते**) उड़ाता है, वह राजा विजयी और सत्कार करने योग्य होता है॥७॥

**भावार्थः**-वही राज्य करने योग्य होवे जो विद्वान्, सब को सहने वाला, सत्य का सेवी, उत्तम सेना और सरल स्वभावयुक्त होवे॥७॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**उत स्मास्य तन्यतोरिव द्योर्ऋघायतो अभियुजो भयन्ते।**

**यदा सहस्रमभि षीमयोधीद् दुर्वर्तुः स्मा भवति भीम ऋञ्जन्॥८॥**



www.9009.co.in

उत। स्म। अस्य। तन्यतोःऽइव। द्योः। ऋघायतः। अभिऽयुजः। भयन्ते। यदा। सहस्रम्। अभि। सीम्। अयोधीत्। दुःऽवर्तुः। स्म। भवति। भीमः। ऋञ्जन्॥८॥

**पदार्थः**-(**उत**) (**स्म**) (**अस्य**) (**तन्यतोरिव**) विद्युत इव (**द्योः**) प्रकाशमानायाः (**ऋघायतः**) हिंसतः (**अभियुजः**) योऽभियुङ्क्ते तस्य (**भयन्ते**) बिभ्यति (**यदा**) (**सहस्रम्**) असङ्ख्यम् (**अभि**) सर्वतः (**सीम्**) (**अयोधीत्**) योधयति (**दुर्वर्त्तुः**) यो दुःखेन वर्त्तते तस्य (**स्म**) अत्र **निपातस्य चे**ति दीर्घः। (**भवति**) (**भीमः**) बिभेति यस्मात्सः (**ऋञ्जन्**) विजयं प्रसाध्नुवन्॥८॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यः स्म भीम ऋञ्जन् भवति यो यदा सहस्रं सीमभ्ययोधीदस्य स्य दुर्वर्त्तुर्ऋघायत उताभियुजो द्योस्तन्यतोरिव सर्वे भयन्ते तदैव राजप्रतापः प्रवर्त्तते॥८॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। यो राजा विद्युद्वद् दुष्टान् हत्वा धार्मिकान् सत्करोति स एकोऽप्यसङ्ख्यैः सह योद्धुमर्हति यदाऽयं राजा न्यायेन प्रकटदण्डः स्यात्तदा सर्वे दुष्टा भीत्वा निलीयन्ते॥८॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! [जो] (**स्म**) ही (**भीमः**) भयंकर (**ऋञ्जन्**) विजय को प्रसिद्ध करता हुआ (**भवति**) होता है जो (**यदा**) जब (**सहस्रम्**) सङ्ख्यारहित (**सीम्**) सब प्रकार (**अभि, अयोधीत्**) युद्ध करता है (**अस्य, स्म**) इसी (**दुर्वर्त्तुः**) दुःख से वर्त्तमान (**ऋघायतः**) हिंसा करते हुए (**उत**) और (**अभियुजः**) अभियोग करते हुए के समीप से (**द्योः**) प्रकाशमान (**तन्यतोरिव**) बिजुली के सदृश सब लोग (**भयन्ते**) भय करते हैं, तभी राजा का प्रताप प्रवृत्त होता है॥८॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जो राजा बिजुली के सदृश दुष्टों का नाश करके धार्मिकों का सत्कार करता है, वह एक भी संख्यारहित वीरों के साथ युद्ध करने योग्य होता है और जब वह राजा न्याय से प्रकट दण्ड देने वाला होवे, तब सब दुष्ट जन डर के छिप जाते हैं॥८॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**उत स्मास्य पनयन्ति जना जूतिं कृष्टिप्रो अभिभूतिमाशोः।**

**उतैनमाहुः समिथे वियन्तः परा दधिक्रा असरत् सहस्रैः॥९॥**

उत। स्म। अस्य। पनयन्ति। जनाः। जूतिम्। कृष्टिऽप्रः। अभिऽभूतिम्। आशोः। उत। एनम्। आहुः। सम्ऽइथे। विऽयन्तः। परा। दधिऽक्राः। असरत्। सहस्रैः॥९॥

**पदार्थः**-(**उत**) वितर्के (**स्म**) (**अस्य**) राज्ञः (**पनयन्ति**) व्यवहरन्ति स्तुवन्ति वा (**जनाः**) राजप्रजामनुष्याः (**जूतिम्**) न्यायवेगम् (**कृष्टिप्रः**) यः कृष्टीन् मनुष्यान् दूतचारैः प्राति तस्य (**अभिभूतिम्**) अभिभवं तिरस्कारम् (**आशोः**) सकलविद्याव्यापकस्य (**उत**) अपि (**एनम्**) (**आहुः**) कथयन्ति (**समिथे**)



www.9009.co.in

सङ्ग्रामे **(वियन्तः)** विशेषेण प्राप्नुवन्तः **(परा)** **(दधिक्राः)** यो धारकैः सह क्रामति **(असरत्)** सरति गच्छति **(सहस्रैः)** असङ्ख्यैः॥९॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! जना अस्य कृष्टिप्र आशोः सङ्ग्रामेऽभिभूतिं जूतिमुत पनयन्त्युतैनं समिथे वियन्त आहुर्यो दधिक्राः सहस्रैः परासरत् स स्म विजेतुं शक्नुयात्॥९॥

**भावार्थः**-तमेव राजानं विद्वांसः प्रशंसन्ति यः प्रजापालनतत्परः सन् सर्वान् व्यावहारयति॥९॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(जनाः)** राजा और प्रजाजन **(अस्य)** इस **(कृष्टिप्रः)** मनुष्य को दूतचार अर्थात् गुप्त दूत आदि से पालना करने वाले **(आशोः)** सम्पूर्ण विद्याओं में व्याप्त राजा के सङ्ग्राम में **(अभिभूतिम्)** तिरस्कार और **(जूतिम्)** न्याय के वेग का **(उत)** तर्क-वितर्क के साथ **(पनयन्ति)** व्यवहार करते वा प्रशंसा करते हैं **(उत)** और भी **(एनम्)** इसको **(समिथे)** सङ्ग्राम में **(वियन्तः)** विशेष करके प्राप्त होते हुए **(आहुः)** कहते हैं और जो **(दधिक्राः)** धारण करने वालों के साथ चलने वाला **(सहस्रैः)** असङ्ख्यों के साथ **(परा, असरत्)** उत्कृष्ट चलता है **(स्म)** वही जीत सके॥९॥

**भावार्थः**-उसी राजा की विद्वान् जन प्रशंसा करते हैं, जो प्रजा के पालन में तत्पर हुआ सब के व्यवहारों को सिद्ध करता है॥९॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**आ द॑धि॒क्राः शव॑सा॒ पञ्च॑ कृ॒ष्टीः सूर्य॑इव॒ ज्योति॑षा॒पस्त॑तान।**

**स॒ह॒स्र॒साः श॑त॒सा वा॒ज्यर्वा॑ पृ॒णक्तु॒ मध्वा॒ समि॒मा वचां॑सि॥१०॥१२॥**

**आ। द॒धि॒ऽक्राः। शव॑सा। पञ्च॑। कृ॒ष्टीः। सूर्यः॑ऽइव। ज्योति॑षा। अ॒पः। त॒ता॒न। स॒ह॒स्र॒ऽसाः। श॒त॒ऽसाः। वा॒जी। अर्वा॑। पृ॒णक्तु॑। मध्वा॑। सम्। इ॒मा। वचां॑सि॥१०॥**

**पदार्थः**-**(आ)** **(दधिक्राः)** यो दधिभिर्धर्तृभिः क्रम्यते गम्यते सः **(शवसा)** बलेन **(पञ्च)** **(कृष्टीः)** मनुष्यान् **(सूर्य्यइव)** सवितेव **(ज्योतिषा)** प्रकाशेन **(अपः)** जलानि **(ततान)** विस्तृणोति **(सहस्रसाः)** यः सहस्राणि सनति विभजति सः **(शतसाः)** यः शतानि सनति सम्भजति **(वाजी)** वेगवान् **(अर्वा)** यः सद्यो मार्गान् गच्छति **(पृणक्तु)** स बध्नातु **(मध्वा)** क्षौद्रेण **(सम्)** **(इमा)** इमानि **(वचांसि)** वचनानि॥१०॥

**अन्वयः**-यो राजा शवसा सूर्य्यइव दधिक्राः पञ्च कृष्टी ज्योतिषा सूर्य्योऽप इवाऽऽततान सहस्रसाः शतसा वर्त्तमानोऽर्वा वाजी मध्वेमा वचांसि सम्पृणक्तु स एव राज्यं कर्त्तुमर्हति॥१०॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। यः सूर्य्यप्रकाश इव न्यायेन पञ्चविधाः प्रजाः पाति सोऽसङ्ख्यमानन्दमाप्नोति॥१०॥

अत्र राजधर्मवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥



www.9009.co.in

**इत्यष्टत्रिंशत्तमं सूक्तं द्वादशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-जो राजा (**शवसा**) बल से (**सूर्य्यइव**) सूर्य्य के सदृश (**दधिक्राः**) धारण करने वालों से प्राप्त होने वाला (**पञ्च**) पांच (**कृष्टीः**) मनुष्यों को (**ज्योतिषा**) प्रकाश से सूर्य्य जैसे (**अपः**) जलों को वैसे (**आ, ततान**) विस्तृत करता है (**सहस्रसाः**) हजारों का विभाग करने वाला (**शतसाः**) और सैकड़ों का विभागकर्त्ता वर्त्तमान (**अर्वा**) शीघ्र मार्गों को जाने वाला (**वाजी**) वेगवान् (**मध्वा**) सहत [शहद] के साथ (**इमा**) इन (**वचांसि**) वचनों का (**सम्, पृणक्तु**) सम्बन्ध करे, वही राज्य करने के योग्य होता है॥१०॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जो सूर्य्य के प्रकाश के सदृश न्याय से पांच प्रकार की प्रजाओं का पालन करता है, वह असंख्य आनन्द को प्राप्त होता है॥१०॥

इस सूक्त में राजा के धर्म का वर्णन होने से इस सूक्त के अर्थ की पिछले सूक्त के अर्थ के साथ संगति जाननी चाहिये॥

**यह अड़तीसवां सूक्त और बारहवां वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

अथ षडर्चस्यैकोनचत्वारिंशत्तमस्य सूक्तस्य वामदेव ऋषिः। दधिक्रा देवताः। १, ३, ५ निचृत् त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः। २, ४ स्वराट् पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः। ६ अनुष्टुप् छन्दः। ऋषभः स्वरः॥

**अथ राजा कीदृशो भवेदित्याह॥**

अब छः ऋचा वाले उनतालीसवें सूक्त का आरम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में कैसा राजा हो, इस विषय को कहते हैं॥

**आशुं दधिक्रां तमु नु ष्टवाम दिवस्पृथिव्या उत चर्किराम।**

**उच्छन्तीर्मामुषसः सूदयन्त्वति विश्वानि दुरितानि पर्षन्॥ १॥**

**आशुम्। दधिऽक्राम्। तम्। ऊम् इति। नु। स्तवाम। दिवः। पृथिव्याः। उत। चर्किराम। उच्छन्तीः। माम्। उषसः। सूदयन्तु। अति। विश्वानि। दुःऽइतानि। पर्षन्॥ १॥**

**पदार्थः**-(**आशुम्**) सद्योगामिनम् (**दधिक्राम्**) धर्त्तव्यधरम् (**तम्**) (उ) (**नु**) (**स्तवाम**) प्रशंसेम (**दिवः**) प्रकाशस्य (**पृथिव्याः**) भूमेर्मध्ये (**उत**) (**चर्किराम**) भृशं विक्षेपयाम (**उच्छन्तीः**) सेवयन्तीः (**माम्**) (**उषसः**) प्रभातवेलाः (**सूदयन्तु**) क्षरयन्तु दूरीकुर्वन्तु (**अति**) (**विश्वानि**) समग्राणि (**दुरितानि**) दुःखानि दुष्टाचरणानि वा (**पर्षन्**) सिञ्चन्तु॥ १॥

**अन्वयः**-वयं दिवस्पृथिव्यास्तमाशुं दधिक्रां नु ष्टवामोत शत्रूनु चर्किराम या मां पर्षंस्ता उच्छन्तीरुषसो विश्वानि दुरितान्यति सूदयन्तु॥ १॥

**भावार्थः**-यो राजास्मद् दुःखानि दूरं नीत्वोषा अन्धकारमिवाऽन्यायं दुष्टान्निषेधति तस्यैव वयं प्रशंसां कुर्य्याम॥ १॥

**पदार्थः**-हम लोग (**दिवः**) प्रकाश और (**पृथिव्याः**) भूमि के मध्य में (**तम्**) उस (**आशुम्**) शीघ्र चलने वाले (**दधिक्राम्**) धारण करने योग्य को धारण करने वाले की (**नु**) तर्क वितर्क के साथ (**स्तवाम**) प्रशंसा करें (**उत**) और शत्रुओं को (उ) भी (**चर्किराम**) निरन्तर फैकें और जो (**माम्**) मुझको (**पर्षन्**) सीचें उनकी (**उच्छन्तीः**) सेवा करती हुई (**उषसः**) प्रभात वेला (**विश्वानि**) सम्पूर्ण (**दुरितानि**) दुःखों वा दुष्टाचरणों को (**अति, सूदयन्तु**) अत्यन्त दूर करें॥ १॥

**भावार्थः**-जो राजा हम लोगों के दुःखों को दूर करके जैसे प्रातःकाल अन्धकार को वैसे अन्याय और दुष्टों का निषेध करता है, उसी की हम लोग प्रशंसा करें॥ १॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**महश्चर्कर्म्यर्वतः क्रतुप्रा दधिक्राव्णः पुरुवारस्य वृष्णः।**



www.9009.co.in

**यं पूरुभ्यो दीदिवांसं नाग्निं दुदर्थुर्मित्रावरुणा ततुरिम्॥ २॥**

**महः। चर्कर्मि। अर्वतः। क्रतुऽप्राः। दुधिऽक्राव्णः। पुरुऽवारस्य। वृष्णः। यम्। पूरुऽभ्यः। दीदिऽवांसम्। न। अग्निम्। दुदथुः। मित्रावरुणा। ततुरिम्॥ २॥**

**पदार्थः**-(**महः**) महतः (**चर्कर्मि**) भृशं करोति (**अर्वतः**) अश्वानिव (**क्रतुप्राः**) ये प्रज्ञां पूरयन्ति ते (**दधिक्राव्णः**) यो विद्याधरान् कामयते तस्य (**पुरुवारस्य**) बहूत्तमजनस्वीकृतस्य (**वृष्णः**) सुखानां वर्षकस्य (**यम्**) (**पूरुभ्यः**) बहुभ्यः (**दीदिवांसम्**) देदीप्यमानम् (**न**) इव (**अग्निम्**) पावकम् (**ददथुः**) (**मित्रावरुणा**) प्राणोदानाविव वर्त्तमानौ सभासेनेशौ (**ततुरिम्**) त्वरमाणम्॥ २॥

**अन्वयः**-हे मित्रावरुणा! पूरुभ्यो यं ततुरिं दीदिवांसमग्निं न विनयं ददथुस्तस्य पुरुवारस्य दधिक्राव्णो वृष्णो ये क्रतुप्रास्तान् महोऽर्वतोऽहं कार्य्यं चर्कर्मि॥ २॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। यो राजा प्रज्ञान् प्रज्ञाप्रदान् सदा धरति स सूर्य्य इव प्रतापी सन् सद्यः स्वकार्य्यं साद्धुं शक्नोति॥ २॥

**पदार्थः**-हे (**मित्रावरुणा**) प्राण और उदान वायु के सदृश वर्त्तमान सभा और सेना के ईश आप दो जन (**पूरुभ्यः**) बहुतों से (**यम्**) जिस (**ततुरिम्**) शीघ्रता करते हुए (**दीदिवांसम्**) प्रकाशमान (**अग्निम्**) अग्नि के (**न**) सदृश विनय को (**ददथुः**) देते हैं उस (**पुरुवारस्य**) बहुत श्रेष्ठ जनों से स्वीकार किय गये और (**दधिक्राव्णः**) विद्या की धारणा करने वालों की कामना करने और (**वृष्णः**) सुखों के वर्षाने वाले के जो (**क्रतुप्राः**) बुद्धि के पूर्ण करने वाले उन (**महः**) बड़े (**अर्वतः**) घोड़ों के सदृशों को और कार्य्य को मैं (**चर्कर्मि**) निरन्तर करता हूँ॥ २॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जो राजा बुद्धि वाले और बुद्धि के देने वालों को सदा धारण करता है, वह सूर्य्य के सदृश प्रतापी होता हुआ शीघ्र अपने कार्य्य को सिद्ध कर सकता है॥ २॥

**अथ प्रजाकृत्यमाह॥**

अब प्रजाकृत्य को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**यो अश्वस्य दधिक्राव्णो अकारीत् समिद्धे अग्ना उषसो व्युष्टौ।**
**अनागसं तमदितिः कृणोतु स मित्रेण वरुणेना सजोषाः॥ ३॥**

**यः। अश्वस्य। दुधिऽक्राव्णः। अकारीत्। सम्ऽइद्धे। अग्नौ। उषसः। विऽउष्टौ। अनागसम्। तम्। अदितिः। कृणोतु। सः। मित्रेण। वरुणेन। सऽजोषाः॥ ३॥**

**पदार्थः**-(**यः**) (**अश्वस्य**) महतो व्याप्तविद्यस्य (**दधिक्राव्णः**) धारकाणां क्रमयितुः (**अकारीत्**) करोति (**समिद्धे**) प्रदीप्ते (**अग्नौ**) विद्युद्रूपे पावके (**उषसः**) प्रभातस्य (**व्युष्टौ**) विविधरूपायां सेवायाम् (**अनागसम्**) अनपराधम् (**तम्**) (**अदितिः**) माता पिता वा (**कृणोतु**) (**सः**) (**मित्रेण**) (**वरुणेन**) श्रेष्ठेन। अत्र **संहितायामि**ति दीर्घः। (**सजोषाः**) समानप्रीतिसेवी॥ ३॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यो विद्वान् दधिक्राव्णोऽश्वस्योषसो व्युष्टौ समिद्धऽग्नावनागसमकारीत् तमदितिरनागसं कृणोतु स च मित्रेण वरुणेन सजोषा भवेत्॥३॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! योग्नावबादीनां पदार्थानां संयोगं कर्त्तुं विजानीयात्। यश्च सज्जनैः सह मित्रतां कृत्वा प्रातरुत्थाय सत्कर्माणि करोति स एव सदैव प्रसन्नो भवतीति विजानीत॥३॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(यः)** जो विद्वान् **(दधिक्राव्णः)** धारण करने वालों को क्रमण कराने वाले **(अश्वस्य)** बड़े और विद्या में अर्थात् पदार्थविद्या के गुणों में व्याप्त **(उषसः)** प्रातःकाल की **(व्युष्टौ)** अनेक प्रकार की सेवा में और **(समिद्धे)** बहुत प्रदीप्त **(अग्नौ)** बिजुलीरूप अग्नि में **(अनागसम्)** अपराधरहित को **(अकारीत्)** करता है **(तम्)** उसको **(अदितिः)** माता व पिता निरपराध **(कृणोतु)** करे **(सः)** सो भी **(मित्रेण)** मित्र **(वरुणेन)** श्रेष्ठ के साथ **(सजोषाः)** तुल्य प्रीति सेवनेवाला हो॥३॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो अग्नि में जल आदि पदार्थों के संयोग करने को जाने और जो सज्जनों के साथ मित्रता कर और प्रातःकाल उठ के श्रेष्ठ कर्मों को करता है, वही सदैव प्रसन्न होता है, यह जानो॥३॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**दुधिक्राव्णा इष ऊर्जो मुहो यदमन्महि मुरुतां नाम भुद्रम्।**

**स्वुस्तये वरुणं मित्रमुग्निं हवामह इन्द्रं वज्रबाहुम्॥४॥**

**दुधिऽक्राव्णः। इषः। ऊर्जः। मुहः। यत्। अमन्महि। मुरुताम्। नाम। भुद्रम्। स्वुस्तये। वरुणम्। मित्रम्। अुग्निम्। हवामहे। इन्द्रम्। वज्रऽबाहुम्॥४॥**

**पदार्थः**-**(दधिक्राव्णः)** धर्त्तॄणां प्रचालकस्य **(इषः)** अन्नादेः **(ऊर्जः)** पराक्रमस्य **(महः)** महत् **(यत्)** **(अमन्महि)** विजानीयाम **(मरुताम्)** मनुष्याणाम् **(नाम)** संज्ञाम् **(भद्रम्)** कल्याणकरम् **(स्वस्तये)** सुखाय **(वरुणम्)** जलमिव शान्त्यादिगुणम् **(मित्रम्)** प्राणवत्सर्वप्रियम् **(अग्निम्)** विद्युतमिव सकलगुणप्रकाशकम् **(हवामहे)** प्रशंसेमाऽऽदद्याम वा **(इन्द्रम्)** परमैश्वर्य्यवन्तम् **(वज्रबाहुम्)** शस्त्रास्त्रभुजम्॥४॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! वयं स्वस्तये यन्महो दधिक्राव्ण इष ऊर्जो मरुतां च भद्रं नामाऽमन्महि। वरुणं मित्रमग्निं वज्रबाहुमिन्द्रं हवामहे तत्तं च यूयं ज्ञात्वाऽन्यान् प्रति प्रशंसत॥४॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। येऽन्नादिसंस्कारभोजनसमयरीतीर्ज्ञात्वा स्वयमाचर्य्यान्यानुपदिशन्ति राजविरोधं कृत्वा प्रजया मित्रवदाचरन्ति त एव प्रशंसनीया भवन्ति॥४॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! हम लोग **(स्वस्तये)** सुख के लिये **(यत्)** जिस **(महः)** बड़ी **(दधिक्राव्णः)** धारण करने वालों के हिलाने वाले **(इषः)** अन्न आदि की **(ऊर्जः)** पराक्रम की **(मरुताम्)** और मनुष्यों



www.9009.co.in

के **(भद्रम्)** कल्याण करने वाली **(नाम)** संज्ञा को **(अमन्महि)** जानें। और **(वरुणम्)** जल के सदृश शान्ति आदि गुणों से युक्त **(मित्रम्)** प्राणों के सदृश सब के प्रिय **(अग्निम्)** बिजुली के सदृश सम्पूर्ण गुणों के प्रकाश करने वाले **(वज्रबाहुम्)** शस्त्र और अस्त्रों को सेवने वाले बाहुयुक्त **(इन्द्रम्)** अत्यन्त ऐश्वर्य्यवान् की **(हवामहे)** प्रशंसा करें वा ग्रहण करें, उस संज्ञा और ऐश्वर्य्यवान् को आप लोग जान के अन्यों के प्रति प्रशंसा करो॥४॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो अन्न आदि संस्कार और भोजन के समय की रीतियों को जान और स्वयं आचरण करके अन्यों को उपदेश देते और राजा के साथ विरोध नहीं करके प्रजा के साथ मित्र के सदृश आचरण करते हैं, वे ही प्रशंसा करने योग्य होते हैं॥४॥

**अथ राजप्रजाकृत्यमाह॥**

अब राजप्रजाकृत्य को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**इन्द्र॑मि॒वेदु॒भये॒ वि ह्व॑यन्त उ॒दीरा॑णा य॒ज्ञमु॑पप्र॒यन्तः॑।**

**द॒धि॒क्रामु॒ सूद॑नं॒ मर्त्या॑य द॒दथु॒र्मित्रावरुणा नो॒ अश्व॑म्॥५॥**

**इन्द्र॑म्ऽइव। इत्। उ॒भये॑। वि। ह्व॒य॒न्ते॒। उ॒त्ऽईरा॑णाः। य॒ज्ञम्। उ॒प॒ऽप्र॒यन्तः॑। द॒धि॒ऽक्राम्। ऊम् इति॑। सूद॑नम्। मर्त्या॑य। द॒दथुः॑। मि॒त्रा॒व॒रु॒णा॒। नः॒। अश्व॑म्॥५॥**

**पदार्थः**-**(इन्द्रमिव)** विद्युतमिव **(इत्)** एव **(उभये)** राजप्रजाजनाः **(वि)** विशेषेण **(ह्वयन्ते)** प्रशंसेयुः **(उदीराणाः)** उत्कृष्टतां प्राप्ताः **(यज्ञम्)** न्यायव्यवहारम् **(उपप्रयन्तः)** प्राप्नुवन्तः **(दधिक्राम्)** न्यायधर्त्तॄणां कामयितारम् **(उ)** **(सूदनम्)** क्षरणम् **(मर्त्याय)** **(ददथुः)** दद्यातम् **(मित्रावरुणा)** प्राणोदानवद् राजप्रधानामात्यौ **(नः)** अस्मभ्यम् **(अश्वम्)** आशु सुखकरं बोधम्॥५॥

**अन्वयः**-हे मित्रावरुणा! य उदीराणा यज्ञमुपप्रयन्त उभये मर्त्याय नोऽस्मभ्यं च दधिक्रां सूदनमश्वं च वि ह्वयन्ते तानुत्तमान् पदार्थान् युवां ददथुस्ताविन्द्रमिवेदु कृतज्ञौ स्यातम्॥५॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। ये राजप्रजाजनाः पक्षपातरहितं न्याय्यं धर्ममाचरन्ति तेऽजातशत्रवस्सन्तः सर्वप्रिया भवन्ति॥५॥

**पदार्थः**-हे **(मित्रावरुणा)** प्राण और उदान वायु के सदृश राजा के प्रधान और मन्त्री जो **(उदीराणाः)** उत्तमता को प्राप्त **(यज्ञम्)** न्याय व्यवहार को **(उपप्रयन्तः)** प्राप्त होते हुए **(उभये)** राजा और प्रजाजन **(मर्त्याय)** अन्य मनुष्य और **(नः)** हम लोगों के लिये **(दधिक्राम्)** न्याय धारण करने वालों की कामना करने वाले **(सूदनम्)** जलादि बहने **(अश्वम्)** और शीघ्र सुख करने वाले बोध की **(वि)** विशेष करके **(ह्वयन्ते)** प्रशंसा करें और उन उत्तम पदार्थों को **(ददथुः)** तुम देओ वे आप **(इन्द्रमिव)** बिजुली के सदृश **(इत्, उ)** ही कृतज्ञ होओ॥५॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जो राजा और प्रजाजन पक्षपात से रहित, न्याययुक्त धर्म का आचरण करते हैं, वे शत्रुरहित हुए सब के प्रिय होते हैं॥५॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**दधिक्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः।**

**सुरभि नो मुखा करत् प्र ण आयूंषि तारिषत्॥६॥१३॥**

**दधिऽक्राव्णः। अकारिषम्। जिष्णोः। अश्वस्य। वाजिनः। सुरभि। नः। मुखा। करत्। प्र। नः। आयूंषि। तारिषत्**॥६॥

**पदार्थः**-(**दधिक्राव्णः**) धर्मधरस्य क्रमयितुर्वा (**अकारिषम्**) कुर्य्याम् (**जिष्णोः**) जयशीलस्य (**अश्वस्य**) सकलशुभगुणव्याप्तस्य (**वाजिनः**) विज्ञानवतः (**सुरभि**) सुगन्धादिगुणयुक्तं द्रव्यम् (**नः**) अस्माकम् (**मुखा**) मुखेन सहचरितानि श्रोत्रादीनीन्द्रियाणि प्रति (**करत्**) कुर्य्यात् (**प्र**) (**नः**) अस्माकम् (**आयूंषि**) (**तारिषत्**) वर्द्धयेत्॥६॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यो नो मुखा सुरभि करन्न आयूंषि प्रतारिषत्तस्य दधिक्राव्णोऽश्वस्य वाजिनो जिष्णो राज्ञो यथाहमाज्ञामकारिषं तथैव यूयमपि कुरुत॥६॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यो राजा सुगन्धादियुक्तघृतादिहोमेन वायुवृष्टिजलादिं शोधयित्वा सर्वेषां रोगान्निवार्य्याऽऽयूंषि वर्धयति प्रयत्नेन सर्वाः प्रजाः पुत्रवत्पालयति च सोऽस्माभिः पितृवत्सत्कर्त्तव्योऽस्तीति॥६॥

अत्र राजप्रजाकृत्यवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिरस्तीति वेद्यम्॥

**इत्येकोनचत्वारिंशत्तमं सूक्तं त्रयोदशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो (**नः**) हम लोगों के (**मुखा**) मुख के सहचरित श्रवण आदि इन्द्रियों के प्रति (**सुरभि**) सुगन्ध आदि गुणों से युक्त द्रव्य को (**करत्**) करे और (**नः**) हम लोगों की (**आयूंषि**) अवस्थाओं को (**प्र, तारिषत्**) बढ़ावे उस (**दधिक्राव्णः**) धर्म को धारण करने वा चलाने वाले (**अश्वस्य**) सम्पूर्ण उत्तम गुणों में व्याप्त (**वाजिनः**) विज्ञानवाले (**जिष्णोः**) जयशील राजा की जिस प्रकार मैं आज्ञा को (**अकारिषम्**) करूं, वैसे ही आप लोग भी करो॥६॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जो राजा सुगन्ध आदि से युक्त घृत आदि के होम से वायु वृष्टि जलादि को पवित्र कर सब के रोगों का निवारण करके अवस्थाओं को बढ़ाता है और प्रयत्न से सब प्रजाओं का पुत्र के सदृश पालन करता है, वह हम लोगों को पिता के सदृश सत्कार करने योग्य है॥६॥



www.9009.co.in

इस सूक्त में राजा और प्रजा के कृत्य का वर्णन होने से इस सूक्त के अर्थ की पिछले सूक्त के अर्थ के साथ संगति है, यह जानना चाहिये॥

**यह उनतालीसवां सूक्त और तेरहवां वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

**अथ पञ्चर्चस्य चत्वारिंशत्तमस्य सूक्तस्य वामदेव ऋषिः। १-४ दधिक्रावा। ५ सूर्य्यश्च देवताः। १ निचृत् त्रिष्टुप्। २ त्रिष्टुप्। ३ स्वराट् त्रिष्टुप्। ४ भुरिक्त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः। ५ निचृत् जगती छन्दः। निषादः स्वरः॥**

**अथ राजप्रजाकृत्यमाह॥**

अब पांच ऋचा वाले चालीसवें सूक्त का आरम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में राजा और प्रजा के कृत्य को कहते हैं॥

**दुधिक्राव्ण इदु नु चर्किराम विश्वा इन्मामुषसः सूदयन्तु।**

**अपामग्नेरुषसः सूर्यस्य बृहस्पतेराङ्गिरसस्य जिष्णोः॥ १॥**

**दुधिक्राऽव्र्णः। इत्। ऊम् इति। नु। चर्किराम। विश्वाः। इत्। माम्। उषसः। सूदयन्तु। अपाम्। अग्नेः। उषसः। सूर्यस्य। बृहस्पतेः। आङ्गिरसस्य। जिष्णोः॥ १॥**

**पदार्थः**-(**दधिक्राव्णः**) वाय्वादिकारणं क्रामयितुः (**इत्**) (उ) (**नु**) (**चर्किराम**) भृशं विक्षिपेम (**विश्वाः**) अखिलाः (**इत्**) (**माम्**) (**उषसः**) प्रभातवेलाः (**सूदयन्तु**) वर्षयन्तु वर्धयन्तु (**अपाम्**) जलानाम् (**अग्नेः**) विद्युतः (**उषसः**) (**सूर्य्यस्य**) सवितुः (**बृहस्पतेः**) बृहतां पालकस्य (**आङ्गिरसस्य**) अङ्गिरस्सु प्राणेषु भवस्य (**जिष्णोः**) जयशीलस्य॥ १॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथा विश्वा उषसो दधिक्राव्ण आयुर्मा च सूदयन्तु तथेदु वयं सर्वाः प्रजाश्चर्किराम यथा विश्वा उषसोऽपामग्ने सूर्य्यस्य बृहस्पतेराङ्गिरसस्य जिष्णोर्जयशीलस्य राज्ञो दोषान् सूदयन्तु तथेदेव वयं सर्वाः प्रजाः सत्कर्मसु नु चर्किराम॥ १॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे राजन् राजपुरुषा वा! यूयं यथा प्रातर्वेला सर्वान् चेतयति तथा न्यायेनाखिलाः प्रजाश्चेतयत यथोषसो निमित्तं सूर्यः सूर्य्यस्य निमित्तं विद्युद्विद्युतो निमित्तं वायुर्वायोः कारणं प्रकृतिः प्रकृतेरधिष्ठाता परमेश्वरोऽस्ति तथैव प्रजापालननिमित्तं भृत्या भृत्यनिमित्तमध्यक्षा अध्यक्षनिमित्तं प्रधानः प्रधाननिमित्तं राजा भवेत्॥ १॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे (**विश्वाः**) सम्पूर्ण (**उषसः**) प्रातर्वेला (**दधिक्राव्णः**) वायु आदि के कारण को चलाने वाले की अवस्था को और (**माम्**) मुझको (**सूदयन्तु**) वर्षावें बढ़ावें (**इत्, उ**) वैसे ही हम लोग सम्पूर्ण प्रजाओं को (**चर्किराम**) कार्य्यसंलग्न करावें और जैसे सम्पूर्ण (**उषसः**) प्रातःकाल (**अपाम्**) जलों (**अग्नेः**) बिजुली (**सूर्य्यस्य**) सूर्य्य (**बृहस्पतेः**) बड़ों के पालन करने वाले (**आङ्गिरसस्य**) प्राणों में उत्पन्न (**जिष्णोः**) और जयशील राजा के दोषों को प्रकट करें वैसे (**इत्**) ही हम लोग सब प्रजाओं को उत्तम कर्म्मों में (**नु**) शीघ्र संलग्न करावें॥ १॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे राजन् वा राजपुरुषो! आप लोग जैसे प्रातर्वेला सब को चैतन्य करती है, वैसे न्याय से सम्पूर्ण प्रजाओं को चैतन्य करो और जैसे प्रातःकाल का



www.9009.co.in

निमित्त सूर्य्य और सूर्य्य का निमित्त बिजुली, बिजुली का निमित्त वायु, वायु का कारण प्रकृति और प्रकृति का अधिष्ठाता परमेश्वर है, वैसे ही प्रजापालननिमित्त भृत्य, भृत्यनिमित्त अध्यक्ष, अध्यक्षों का निमित्त प्रधान और प्रधान का निमित्त राजा होवे॥१॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**सत्वा॑ भरि॒षो ग॑वि॒षो दु॑वन्य॒सच्छ्र॑व॒स्यादि॒ष उ॒षस॑स्तुरण्य॒सत्।**

**स॒त्यो द्र॒वो द्र॑व॒रः प॑तङ्ग॒रो द॑धि॒क्रावे॒षमूर्जं॒ स्व॑र्जनत्॥२॥**

**सत्वा॑। भ॒रि॒षः। गो॒ऽइ॒षः। दु॒व॒न्य॒ऽसत्। श्र॒व॒स्यात्। इ॒षः। उ॒षसः॑। तु॒र॒ण्य॒ऽसत्। स॒त्यः। द्र॒वः। द्र॒व॒रः। प॒त॒ङ्ग॒रः। द॒धि॒ऽक्रावा॑। इ॒ष॑म्। ऊर्ज॑म्। स्वः॑। ज॒न॒त्॥२॥**

**पदार्थः**-(**सत्वा**) प्रापकः (**भरिषः**) धारणपोषणचतुरः (**गविषः**) गा इच्छन् (**दुवन्यसत्**) परिचरणमिच्छन् (**श्रवस्यात्**) आत्मनः श्रवणमिच्छेत् (**इषः**) इच्छाः (**उषसः**) प्रभातान् (**तुरण्यसत्**) आत्मनस्तुरणं त्वरणमिच्छन् (**सत्यः**) सत्सु साधुः (**द्रवः**) स्निग्धः (**द्रवरः**) यो द्रवे रमते द्रवान् ददाति वा (**पतङ्गरः**) यः पतङ्गेऽग्नौ रमते पतङ्गं ददाति वा (**दधिक्रावा**) धर्त्तव्ययानक्रमिता (**इषम्**) अन्नम् (**ऊर्जम्**) पराक्रमम् (**स्वः**) सुखम् (**जनत्**) जनयेत्॥२॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यः सत्वा भरिषो गविषो दुवन्यसदिष उषसस्तुरण्यसच्छ्रवस्याद्यः सत्यो द्रवो द्रवरः पतङ्गरो दधिक्रावेषमूर्जं स्वश्च जनत् स एव राजा युष्माभिः सत्कर्त्तव्योऽस्ति॥२॥

**भावार्थः**-प्रजाजनैर्यो राजा सत्यवादी जितेन्द्रियः सर्वेषां सुखमिच्छुर्न्यायकारी पितृवद्वर्त्तेत स एव प्रजाः पालयितुं शक्नोति॥२॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो (**सत्वा**) प्राप्त करने वाला (**भरिषः**) धारण और पोषण में चतुर (**गविषः**) गौओं की और (**दुवन्यसत्**) सेवा की इच्छा करता हुआ तथा (**इषः**) इच्छाओं और (**उषसः**) प्रातःकालों को (**तुरण्यसत्**) अपनी शीघ्रता को चाहता हुआ (**श्रवस्यात्**) अपने श्रवण की इच्छा करे तथा जो (**सत्यः**) श्रेष्ठों में श्रेष्ठ (**द्रवः**) स्नेही (**द्रवरः**) द्रव में रमने वा द्रव अर्थात् गीले पदार्थों को देने और (**पतङ्गरः**) अग्नि में रमने वा अग्नि को देने वाला (**दधिक्रावा**) धारण करने योग्य वाहन पर जाता (**इषम्**) अन्न (**ऊर्जम्**) पराक्रम और (**स्वः**) सुख को (**जनत्**) उत्पन्न करे, वही राजा आप लोगों को सत्कार करने योग्य है॥२॥

**भावार्थः**-प्रजाजनों के साथ जो राजा सत्यवादी, जितेन्द्रिय, सब के सुख की इच्छा करता हुआ, न्यायकारी पिता के सदृश वर्ताव करे, वही प्रजाओं का पालन कर सकता है॥२॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥



www.9009.co.in

**उत स्मास्य द्रवतस्तुरण्यतः पर्णं न वेरनु वाति प्रगर्धिनः।**

**श्येनस्येव ध्रजतो अङ्कसं परि दधिक्राव्णः सहोर्जा तरित्रतः॥ ३॥**

**उत। स्म। अस्य। द्रवतः। तुरण्यतः। पर्णम्। न। वेः। अनु। वाति। प्रऽगर्धिनः। श्येनस्यऽइव। ध्रजतः। अङ्कसम्। परि। दधिऽक्राव्णः। सह। ऊर्जा। तरित्रतः॥ ३॥**

**पदार्थः**-(**उत**) अपि (**स्म**) एव (**अस्य**) (**द्रवतः**) धावतः (**तुरण्यतः**) सद्यो गच्छतः (**पर्णम्**) प्रजापालनम् (**न**) इव (**वेः**) पक्षिणः (**अनु**) (**वाति**) अनुगच्छति (**प्रगर्धिनः**) प्रलुब्धस्य (**श्येनस्येव**) (**ध्रजतः**) वेगेन धावतः (**अङ्कसम्**) लक्षणम् (**परि**) सर्वतः (**दधिक्राव्णः**) धर्त्तृधरस्य वायोः (**सह**) (**ऊर्जा**) पराक्रमेण (**तरित्रतः**) अध्वनस्तरिता॥ ३॥

**अन्वयः**-यो जनोऽङ्कसं ध्रजतः प्रगर्धिनः श्येनस्येवोर्जा तरित्रतो दधिक्राव्णोऽस्योत द्रवतस्तुरण्यतः पर्णं न वेर्न राज्ञः पर्णं स्म पर्य्यनुवाति तेन सह सर्वेऽमात्या मन्त्रयन्तु॥ ३॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यस्य राज्ञः श्येनेव सेना पराक्रमिणी वर्त्तते स तया प्रजापालनं कृत्वा दस्यून्निवारयेत्॥ ३॥

**पदार्थः**-जो जन (**अङ्कसम्**) लक्षण का (**ध्रजतः**) वेग से जाते हुए (**प्रगर्धिनः**) अत्यन्त लोभी (**श्येनस्येव**) वाज पक्षी के सदृश (**ऊर्जा**) पराक्रम से (**तरित्रतः**) मार्ग के पार उतारने और (**दधिक्राव्णः**) धारण करने वाले की धारणा करने वाले वायु (**अस्य, उत**) और इस (**द्रवतः**) दौड़ते तथा (**तुरण्यतः**) शीघ्र चलते हुए की (**पर्णम्**) प्रजापालना के (**न**) सदृश और (**वेः**) पक्षी के सदृश राजा की प्रजापालना के (**स्म**) ही (**परि**) सब प्रकार (**अनु, वाति**) पीछे चलता है उसके (**सह**) साथ मन्त्री जन सम्मति करें॥ ३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जिस राजा की वाज पक्षिणी के सदृश सेना पराक्रम वाली है, वह उसके द्वारा प्रजा का पालन करके डाकू चोरों का निवारण करे॥ ३॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**उत स्य वाजी क्षिपणिं तुरण्यति ग्रीवायां बद्धो अपिकक्ष आसनि।**

**क्रतुं दधिक्रा अनु सन्तवीत्वत् पथामङ्कांस्यन्वापनीफणत्॥ ४॥**

**उत। स्यः। वाजी। क्षिपणिम्। तुरण्यति। ग्रीवायाम्। बद्धः। अपिऽकक्षे। आसनि। क्रतुम्। दधिऽक्राः। अनु। सम्ऽतवीत्वत्। पथाम्। अङ्कांसि। अनु। आऽपनीफणत्॥ ४॥**

**पदार्थः**-(**उत**) (**स्यः**) सः (**वाजी**) वेगवान् (**क्षिपणिम्**) शीघ्रकारिणम् (**तुरण्यति**) सद्यो गमयति (**ग्रीवायाम्**) कण्ठे (**बद्धः**) (**अपिकक्षे**) पार्श्वे (**आसनि**) मुखे (**क्रतुम्**) प्रज्ञां कर्म वा (**दधिक्राः**)



www.9009.co.in

धर्त्तव्यानां धारकः **(अनु)** **(सन्तवीत्वत्)** बहुबलः सन् **(पथाम्)** मार्गाणाम् **(अङ्कांसि)** लक्षणानि चिह्नानि **(अनु)** **(आपनीफणत्)** अत्यन्तं गच्छति॥४॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यो वाजी ग्रीवायामपिकक्ष आसनि बद्धो दधिक्राः सन् क्षिपणिमनु तुरण्यत्युत सन्तवीत्वत् सन् पथामङ्कांसि क्रतुमन्वापनीफणत् स्य युष्माभिः कार्य्येषु नियोजनीयः॥४॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यथा सर्वतोऽलङ्कृतो बन्धनेन सज्जोऽश्वः सद्यो गच्छति तथैवाग्न्यादिभिश्चालितेन यानेन सद्यो गच्छत॥४॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो **(वाजी)** वेगयुक्त **(ग्रीवायाम्)** कण्ठ में **(अपिकक्षे)** कांख में **(आसनि)** मुख में **(बद्धः)** बंधा और **(दधिक्राः)** धारण करने योग्यों का धारण करने वाला हुआ **(क्षिपणिम्)** शीघ्र करने वाले को **(अनु, तुरण्यति)** शीघ्र चलाता है **(उत)** और **(सन्तवीत्वत्)** बहुत बलवान् होता हुआ **(पथाम्)** मार्गों के **(अङ्कांसि)** चिह्नों को **(क्रतुम्)** बुद्धि वा कर्म के **(अनु)** पीछे **(आपनीफणत्)** अत्यन्त प्राप्त होता है **(स्यः)** वह आप लोगों से कार्य्यों में नियुक्त करने योग्य है॥४॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे सब प्रकार शोभित बन्धन से सन्नद्ध किया घोड़ा शीघ्र चलता है, वैसे ही अग्नि आदि से चलाये गये वाहन से शीघ्र जाओ॥४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**हंसः शुचिषद्वसुरन्तरिक्षसद्धोता वेदिषदतिथिर्दुरोणसत्।**

**नृषद्वरसदृतसद् व्योमसदब्जा गोजा ऋतजा अद्रिजा ऋतम्॥५॥१४॥**

**हंसः। शुचिऽसत्। वसुः। अन्तरिक्षऽसत्। होता। वेदिऽसत्। अतिथिः। दुरोणऽसत्। नृऽसत्। वरऽसत्। ऋतऽसत्। व्योमऽसत्। अप्ऽजाः। गोऽजाः। ऋतऽजाः। अद्रिऽजाः। ऋतम्॥५॥**

**पदार्थः**-**(हंसः)** यो हन्ति पापानि सः **(शुचिषत्)** यः शुचिषु पवित्रेषु सीदति **(वसुः)** यः शरीरादिषु वसति **(अन्तरिक्षसत्)** योऽन्तरिक्ष आकाशे वा सीदति **(होता)** दाता आदाता वा **(वेदिषत्)** यो वेद्यां सीदति **(अतिथिः)** अनियततिथिः **(दुरोणसत्)** यो दुरोणे गृहे सीदति **(नृषत्)** यो नरेषु सीदति **(वरसत्)** यो वरेषु श्रेष्ठेषु सीदति **(ऋतसत्)** यः सत्ये सीदति **(व्योमसत्)** यो व्योम्नि सीदति **(अब्जाः)** योऽद्भ्यो जातः **(गोजाः)** यो गोषु पृथिव्यादिषु जातः **(ऋतजाः)** यः सत्याज्जातः **(अद्रिजाः)** योऽद्रेर्मेघाज्जातः **(ऋतम्)**॥५॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यः शुचिषद्वसुरन्तरिक्षसद्धोता वेदिषदतिथिर्दुरोणसन्नृषद्वरसद् व्योमसदृतसदब्जा गोजा ऋतजा अद्रिजा हंस ऋतमाचरति स एव जगदीश्वरप्रियो भवति॥५॥

**भावार्थः**-ये जीवाः शुभगुणकर्मस्वभावा ईश्वराज्ञानुकूला वर्त्तन्ते त एव परमेश्वरेण सहाऽऽनन्दं भुञ्जत इति॥५॥



www.9009.co.in

अथ राजप्रजाकृत्यवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति चत्वारिंशत्तमं सूक्तं चतुर्दशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो **(शुचिषत्)** पवित्रों में स्थित होने **(वसुः)** शरीरादिकों में रहने **(अन्तरिक्षसत्)** अन्तरिक्ष वा आकाश में स्थित होने **(होता)** दान वा ग्रहण करने और **(वेदिषत्)** वेदी पर स्थित होने वाला **(अतिथिः)** जिसकी कोई तिथि नियत न हो वह **(दुरोणसत्)** गृह में **(नृषत्)** मनुष्यों में **(वरसत्)** श्रेष्ठों में **(व्योमसत्)** अन्तरिक्ष में **(ऋतसत्)** और सत्य में स्थित होने वाला **(अब्जाः)** जलों से उत्पन्न **(गोजाः)** वा पृथिवी आदिकों में उत्पन्न **(ऋतजाः)** तथा सत्य से और **(अद्रिजाः)** मेघों से उत्पन्न हुआ **(हंसः)** पापों को हन्ता है और **(ऋतम्)** सत्य का आचरण करता है, वही जगदीश्वर का प्रिय होता है॥५॥

**भावार्थः**-जो जीव उत्तम गुण, कर्म और स्वभाव वाले ईश्वर की आज्ञा के अनुकूल वर्त्ताव करते हैं, वे ही परमेश्वर के साथ आनन्द को भोगते हैं॥५॥

इस सूक्त में राजा और प्रजा के कृत्यों का वर्णन होने से इस सूक्त के अर्थ की पिछले सूक्त के अर्थ के साथ संगति जाननी चाहिये॥

**यह चालीसवां सूक्त और चौदहवां वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

**अथैकादशर्चस्यैकाऽधिकचत्वारिंशत्तमस्य सूक्तस्य वामदेव ऋषिः। इन्द्रावरुणौ देवते। १, ५, ९, ११ त्रिष्टुप्। २, ४ निचृत् त्रिष्टुप्। ३, ६ विराट् त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः। ७ पङ्क्तिः। ८, १० स्वराट् पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः॥**

**अथाध्यापकोपदेशकविषयमाह॥**

अब ग्यारह ऋचा वाले इकतालीसवें सूक्त का आरम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में अध्यापक और उपदेशक के विषय को कहते हैं॥

**इन्द्रा को वां वरुणा सुम्नमाप स्तोमो हविष्माँ अमृतो न होता।**

**यो वां हृदि क्रतुमाँ अस्मदुक्तः पस्पर्शदिन्द्रावरुणा नमस्वान्॥ १॥**

**इन्द्रा। कः। वाम्। वरुणा। सुम्नम्। आप। स्तोमः। हविष्मान्। अमृतः। न। होता। यः। वाम्। हृदि। क्रतुऽमान्। अस्मत्। उक्तः। पस्पर्शत्। इन्द्रावरुणा। नमस्वान्॥ १॥**

**पदार्थः**-(**इन्द्रा**) परमैश्वर्य्ययुक्त (**कः**) (**वाम्**) युवाभ्याम् (**वरुणा**) श्रेष्ठाचारिन् (**सुम्नम्**) सुखम् (**आप**) प्राप्नुयात् (**स्तोमः**) प्रशंसा (**हविष्मान्**) बहुपदार्थहेतुः (**अमृतः**) नाशरहितः (**न**) इव (**होता**) दाता (**यः**) (**वाम्**) युवयोः (**हृदि**) (**क्रतुमान्**) बहुशुभप्रज्ञः (**अस्मत्**) (**उक्तः**) कथितः (**पस्पर्शत्**) (**इन्द्रावरुणा**) प्राणोदानवत् प्रियबलिनौ (**नमस्वान्**) बहूनि नमांस्यन्नादीनि सत्करणानि वा विद्यन्ते यस्य सः॥ १॥

**अन्वयः**-हे इन्द्रावरुणाऽध्यापकोपदेशकौ! वां कः स्तोमः सुम्नं हविष्मानमृतो होता नाप। हे इन्द्रावरुणा! योऽस्मदुक्तो नमस्वान् क्रतुमान् वां हृदि पस्पर्शत्॥ १॥

**भावार्थः**-हे अध्यापकोपदेशका! ये होतृवत्पुरुषार्थिनो धीमन्तो नम्राः शान्ताः सत्कारिणो मातापितृभिः सुशिक्षिताः स्युस्तानध्याप्योपदिश्य श्रीमतः श्रेष्ठान् सम्पादयत॥ १॥

**पदार्थः**-हे (**इन्द्रा**) अत्यन्त ऐश्वर्य्य से युक्त (**वरुणा**) श्रेष्ठ आचरण करने वाले अध्यापक और उपदेशक जन! (**वाम्**) तुम दोनों से (**कः**) कौन (**स्तोमः**) प्रशंसा (**सुम्नम्**) सुख को (**हविष्मान्**) बहुत पदार्थों में कारण (**अमृतः**) नाश से रहित और (**होता**) दाता जन के (**न**) सदृश (**आप**) प्राप्त होवे। हे (**इन्द्रावरुणा**) प्राण और उदान वायु के सदृश प्रियबली जनो! (**यः**) जो (**अस्मत्**) हम लोगों से (**उक्तः**) कहा गया (**नमस्वान्**) बहुत अन्न आदि वा सत्करणों युक्त (**क्रतुमान्**) बहुत श्रेष्ठ बुद्धि वाला (**वाम्**) आप दोनों के (**हृदि**) हृदय में (**पस्पर्शत्**) स्पर्श करे॥ १॥

**भावार्थः**-हे अध्यापक और उपदेशको! जो दाता जन के सदृश पुरुषार्थी, बुद्धिमान्, नम्र, शान्त, सत्कार करने वाले और माता-पिता से उत्तम प्रकार शिक्षित होवें, उनको पढ़ा और उपदेश देकर लक्ष्मीयुक्त और श्रेष्ठ करो॥ १॥

**अथ राजामात्यविषयमाह॥**



www.9009.co.in

अब राजा और अमात्य विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**इन्द्रा ह यो वरुणा चक्र आपी देवौ मर्तः सख्याय प्रयस्वान्।**

**स हन्ति वृत्रा समिथेषु शत्रूनवोभिर्वा महद्भिः स प्र शृण्वे॥ २॥**

**इन्द्रा। ह। यः। वरुणा। चक्रे। आपी इति। देवौ। मर्तः। सख्याय। प्रयस्वान्। सः। हन्ति। वृत्रा। सम्ऽइथेषु। शत्रून्। अवःऽभिः। वा। महत्ऽभिः। सः। प्र। शृण्वे॥ २॥**

**पदार्थः-(इन्द्रा)** इन्द्र **(ह)** किल **(यः)** **(वरुणा)** श्रेष्ठः **(चक्रे)** **(आपी)** सकलविद्यां प्राप्तौ **(देवौ)** विद्वांसौ **(मर्त्तः)** मनुष्यः **(सख्याय)** सख्युर्भावाय **(प्रयस्वान्)** प्रयत्नवान् **(सः)** **(हन्ति)** **(वृत्रा)** वृत्राणि शत्रुसैन्यानि **(समिथेषु)** सङ्ग्रामेषु **(शत्रून्)** **(अवोभिः)** रक्षणादिभिः **(वा)** **(महद्भिः)** महाशयैः **(सः)** **(प्र)** **(शृण्वे)**॥ २॥

**अन्वयः**-हे इन्द्रा वरुणापी देवौ! युवयोर्यः प्रयस्वान् मर्त्तः सख्याय प्र चक्रे स हाऽवोभिस्स वा महद्भिः समिथेषु वृत्रा शत्रून् हन्ति तमहं कीर्तिमन्तं शृण्वे॥ २॥

**भावार्थः**-हे न्यायशीलौ राजामात्यौ! ये भवत्सत्कर्त्तारः शत्रूणां जेतारो महाशयास्सन्धयो भवत्सख्यप्रिया विजयिनो भवेयुस्तान् सत्कृत्य रक्षेतम्॥ २॥

**पदार्थः**-हे **(इन्द्रा)** अत्यन्त ऐश्वर्य्य से युक्त **(वरुणा)** उत्तम **(आपी)** सम्पूर्ण विद्याओं को प्राप्त **(देवौ)** विद्वान् जनो! आप लोगों के मध्य में **(यः)** **(प्रयस्वान्)** प्रयत्न करने वाला **(मर्त्तः)** मनुष्य **(सख्याय)** मित्रपन के लिये **(प्र, चक्रे)** उत्तमता करता है **(सः, ह)** वही **(अवोभिः)** रक्षण आदिकों के साथ **(वा)** वा **(सः)** वह **(महद्भिः)** महाशयों के साथ **(समिथेषु)** संग्रामों में **(वृत्रा)** शत्रुओं की सेनाओं और **(शत्रून्)** शत्रुओं का **(हन्ति)** नाश करता है, उसको मैं यशस्वी **(शृण्वे)** सुनता हूँ॥ २॥

**भावार्थः**-हे न्याय करने वाले राजा और मन्त्रीजनो! जो आप लोगों के सत्कार करने और शत्रुओं के जीतने वाले महाशय अर्थात् गम्भीर अभिप्राय वाले, मेलयुक्त, आप लोगों की मित्रता में प्रीतिकर्त्ता, विजयी होवें; उनका सत्कार करके रक्षा करो॥ २॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**इन्द्रा ह रत्नं वरुणा धेष्ठेत्था नृभ्यः शशमानेभ्यस्ता।**

**यदी सखाया सख्याय सोमैः सुतेभिः सुप्रयसा मादयैते॥ ३॥**

**इन्द्रा। ह। रत्नम्। वरुणा। धेष्ठा। इत्था। नृऽभ्यः। शशमानेभ्यः। ता। यदि। सखाया। सख्याय। सोमैः। सुतेभिः। सुऽप्रयसा। मादयैते। इति॥ ३॥**



www.9009.co.in

**पदार्थ:**-(**इन्द्रा**) राजन् (**ह**) किल (**रत्नम्**) रमणीयं धनम् (**वरुणा**) शुभगुणयुक्तप्रधान (**धेष्ठा**) धातारौ (**इत्था**) एवं प्रकारेण (**नृभ्य:**) मनुष्येभ्य: (**शशमानेभ्य:**) प्रशंसमानेभ्य: (**ता**) तौ (**यदि**) अत्र **निपातस्य चे**ति दीर्घ:। (**सखाया**) परस्परं सुहृदौ (**सख्याय**) सख्युर्भावाय (**सोमै:**) ऐश्वर्यै: (**सुतेभि:**) निष्पादितै: (**सुप्रयसा**) सुष्ठु प्रयत्नेन (**मादयैते**) सुखयेताम्॥ ३॥

**अन्वय:**-हे धेष्ठा इन्द्रावरुणा! यदि युवाभ्यां शशमानेभ्यो नृभ्यो ह रत्नं दत्तं तर्हि ता सखाया भवन्तौ सख्याय सुप्रयसा सुतेभिस्सोमैर्मादयैत इत्था युवामप्यानन्दितौ भवेथाम्॥ ३॥

**भावार्थ:**-ये राजामात्या: शुभगुणानां जनानां धनादिना सत्कारं कुर्वन्ति त एवैश्वर्य्यं प्राप्य सदा मोदन्ते॥ ३॥

**पदार्थ:**-हे (**धेष्ठा**) धाता जनो (**इन्द्रा**) राजन् (**वरुणा**) और उत्तम गुणों से युक्त प्रधान! (**यदी**) यदि जिन तुम दोनों ने (**शशमानेभ्य:**) प्रशंसा करते हुए (**नृभ्य:**) मनुष्यों के लिये (**ह**) ही (**रत्नम्**) सुन्दर धन दिया तो (**ता**) वे (**सखाया**) परस्पर मित्र आप दोनों (**सख्याय**) मित्रपन के लिये (**सुप्रयसा**) श्रेष्ठ प्रयत्न से (**सुतेभि:**) उत्पन्न किये गये (**सोमै:**) ऐश्वर्य्यों से (**मादयैते**) सुख को प्राप्त हों (**इत्था**) इस प्रकार से आप दोनों निश्चय आनन्दित हों॥ ३॥

**भावार्थ:**-जो राजा और मन्त्रीजन उत्तम गुण वाले मनुष्यों का धन आदि से सत्कार करते हैं, वे ही ऐश्वर्य्य को प्राप्त होकर सदा आनन्दित होते हैं॥ ३॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**इन्द्रा युवं वरुणा दिद्युमस्मिन्नोजिष्ठमुग्रा नि वधिष्टं वज्रम्।**

**यो नो दुरेवो वृकतिर्दभीतिस्तस्मिन् मिमाथामभिभूत्योज:॥ ४॥**

**इन्द्रा। युवम्। वरुणा। दिद्युम्। अस्मिन्। ओजिष्ठम्। उग्रा। नि। वधिष्टम्। वज्रम्। य:। न:। दु:ऽएव:। वृकति:। दभीति:। तस्मिन्। मिमाथाम्। अभिऽभूति। ओज:॥ ४॥**

**पदार्थ:**-(**इन्द्रा**) शत्रुविदारक राजन्! (**युवम्**) युवाम् (**वरुणा**) श्रेष्ठाऽमात्य (**दिद्युम्**) विद्यान्यायप्रकाशम् (**अस्मिन्**) (**ओजिष्ठम्**) अतिशयेन पराक्रमयुक्तम् (**उग्रा**) तेजस्विनी (**नि**) (**वधिष्टम्**) हन्यातम् (**वज्रम्**) (**य:**) (**न:**) अस्मान् (**दुरेव:**) दु:खेन प्राप्तुं योग्य: (**वृकति:**) वृकवच्छत्रुहिंसक: (**दभीति:**) हिंस्र: (**तस्मिन्**) (**मिमाथाम्**) रचयेतम् (**अभिभूति**) तिरस्कारकम् (**ओज:**) पराक्रमम्॥ ४॥

**अन्वय:**-हे इन्द्रावरुणोग्रा युवमस्मिन्नोजिष्ठं दिद्युं वज्रं गृहीत्वा शत्रून्नि वधिष्टं यो दुरेवो वृकतिर्दभीतिर्नोऽस्मभ्यमभिभूत्योजो तन् मिमाथां तस्मिन् विश्वासं कुर्य्यातम्॥ ४॥

**भावार्थ:**-हे राजाऽमात्या! भवन्तो ब्रह्मचर्य्यविद्यासत्याचरणजितेन्द्रियत्वादिभिरतुलं बलं वर्द्धयित्वा शत्रून्निवार्य्य प्रजा: सम्पाल्य निष्कण्टकं राज्याऽऽनन्दं सततं भुञ्जाताम्॥ ४॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-हे **(इन्द्रा)** शत्रु के नाश करने वाले राजन् और **(वरुणा)** श्रेष्ठ मन्त्रीजन! **(उग्रा)** तेजस्वी **(युवम्)** आप दोनों **(अस्मिन्)** इस में **(ओजिष्ठम्)** अत्यन्त पराक्रमयुक्त **(दिद्युम्)** विद्या और न्याय के प्रकाशरूप **(वज्रम्)** वज्र को ग्रहण कर शत्रुओं का **(नि, वधिष्टम्)** निरन्तर नाश करो तथा **(यः)** जो **(दुरेवः)** दुःख से प्राप्त होने योग्य **(वृकतिः)** भेड़िये के सदृश शत्रुओं का नाश करने वाला **(दभीतिः)** हिंसक **(नः)** हम लोगों के लिये **(अभिभूति)** तिरस्कार करने वाला **(ओजः)** पराक्रम है उसको **(मिमाथाम्)** रचो और **(तस्मिन्)** उस में विश्वास को करो॥४॥

**भावार्थः**-हे राजा और मन्त्री जनो! आप ब्रह्मचर्य्य, विद्या, सत्याचरण और जितेन्द्रियत्वादि गुणों से अतुल बल को बढ़ाय के शत्रुओं का निवारण और प्रजाओं का अच्छे प्रकार पालन करके निष्कण्टक राज्यानन्द का निरन्तर भोग करें॥४॥

**पुनरध्यापकोपदेशकविषयमाह॥**

फिर अध्यापकोपदेशक विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**इन्द्रा युवं वरुणा भूतमस्या धियः प्रेतारा वृषभेव धेनोः।**

**सा नो दुहीयद्यवसेव गत्वी सहस्रधारा पयसा मही गौः॥५॥१५॥**

**इन्द्रा। युवम्। वरुणा। भूतम्। अस्याः। धियः। प्रेतारा। वृषभाऽइव। धेनोः। सा। नः। दुहीयत्। यवसाऽइव। गत्वी। सहस्रऽधारा। पयसा। मही। गौः॥५॥**

**पदार्थः**-**(इन्द्रा)** विद्यैश्वर्य्ययुक्त **(युवम्)** युवाम् **(वरुणा)** प्रशंसितगुण **(भूतम्)** अतीतम् **(अस्याः)** **(धियः)** प्रज्ञायाः **(प्रेतारा)** प्राप्तारौ **(वृषभेव)** **(धेनोः)** **(सा)** **(नः)** अस्मान् **(दुहीयत्)** प्रपूरयेत् **(यवसेव)** बुसादिनेव **(गत्वी)** गत्वा प्राप्य **(सहस्रधारा)** सहस्राण्यसङ्ख्या धाराः प्रवाहा यस्या वाचः सा **(पयसा)** दुग्धादिना **(मही)** महती **(गौः)** गन्त्री॥५॥

**अन्वयः**-हे इन्द्रावरुणा प्रेतारा! युवमस्या धियो धेनोर्वृषभेव भूतं प्राप्नुतं यथा सा सहस्रधारा मही गौः पयसा यवसेव नोऽस्मान् गत्वी दुहीयत् तथा शुभगुणैः पूरयतम्॥५॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। हे अध्यापकोपदेशका! भवन्तः सर्वेभ्यः ईदृशीं प्रज्ञां प्रयच्छेयुर्यथा सर्वेऽलङ्कामाः स्युः॥५॥

**पदार्थः**-हे **(इन्द्रा)** विद्या और ऐश्वर्य्य से युक्त **(वरुणा)** प्रशंसित गुणवान् **(प्रेतारा)** प्राप्त होने वाले! **(युवम्)** आप दोनों **(अस्याः)** इस **(धियः)** बुद्धि के **(धेनोः)** गौ के सम्बन्ध में **(वृषभेव)** बैल के सदृश **(भूतम्)** व्यतीत हुए विषय को प्राप्त होओ और जैसे **(सा)** वह **(सहस्रधारा)** असंख्य प्रवाह वाली वाणी **(मही)** बड़ी **(गौः)** चलने वाली गौ **(पयसा)** दुग्धादि से **(यवसेव)** भूसा आदि के सदृश **(नः)** हम लोगों को **(गत्वी)** प्राप्त होकर **(दुहीयत्)** पूर्ण करे, वैसे श्रेष्ठ गुणों से पूर्ण करो॥५॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे अध्यापक और उपदेशक जनो! आप सब के लिये ऐसी बुद्धि देओ कि जिससे सब पूर्ण मनोरथ वाले होवें॥५॥

**अथ राजविषयमाह॥**

अब राज विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**तो॒के हि॒ते तन॑य उ॒र्वरा॑सु सूरो॒ दृशी॑के॒ वृष॑णश्च॒ पौंस्ये॑।**

**इन्द्रा॑ नो॒ अत्र॒ वरु॑णा स्याता॒मवो॑भिर्द॒स्मा परि॑तक्म्यायाम्॥६॥**

**तो॒के। हि॒ते। तन॑ये। उ॒र्वरा॑सु। सूरः॑। दृशी॑के। वृष॑णः। च॒। पौंस्ये॑। इन्द्रा॑। नः॒। अत्र॑। वरु॑णा। स्या॒ता॒म्। अव॑ःऽभिः। द॒स्मा। परि॑ऽतक्म्यायाम्॥६॥**

**पदार्थः**-(**तोके**) सद्यो जातेऽपत्ये (**हिते**) हितसाधके (**तनये**) कुमारे (**उर्वरासु**) भूमिषु (**सूरः**) सूर्य्यः (**दृशीके**) द्रष्टव्ये (**वृषणः**) बलिष्ठान् (**च**) (**पौंस्ये**) बले (**इन्द्रा**) ऐश्वर्य्यदातर्नृप (**नः**) अस्मान् (**अत्र**) अस्यां प्रजायाम् (**वरुणा**) श्रेष्ठसचिव (**स्याताम्**) (**अवोभिः**) रक्षणादिभिः (**दस्मा**) दुःखोपक्षयितारौ (**परितक्म्यायाम्**) परितस्तक्मानश्वो यस्यां तस्याम्॥६॥

**अन्वयः**-हे इन्द्रा वरुणा! भवन्तावत्र परितक्म्यायां चोर्वरासु सूर इव हिते तोके तनये दृशीके पौंस्ये नो वृषणः कुर्वातामवोभिर्दस्मा स्याताम्॥६॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। राजपुरुषा ब्रह्माण्डे सूर्य्य इव प्रजासु पितृवद्वर्त्तित्वा चोरान् निवार्य्य न्यायेन प्रजाः पालयेयुः॥६॥

**पदार्थः**-हे (**इन्द्रा**) ऐश्वर्य्य के देने वाले राजन् (**वरुणा**) श्रेष्ठ मन्त्री! आप दोनों (**अत्र**) इस प्रजा में (**परितक्म्यायाम्**) सब ओर से घोड़ा जिसमें उस राज्य में (**च**) और (**उर्वरासु**) भूमियों में (**सूरः**) सूर्य्य के सदृश (**हिते**) हित के सिद्ध करने वाले (**तोके**) शीघ्र उत्पन्न हुए पुत्र (**तनये**) कुमार (**दृशीके**) और देखने योग्य (**पौंस्ये**) पुरुषार्थ के निमित्त (**नः**) हम लोगों को (**वृषणः**) बलयुक्त करें तथा (**अवोभिः**) रक्षा आदि से (**दस्मा**) दुःख के नाश करने वाले (**स्याताम्**) होवें॥६॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। राजपुरुष जैसे ब्रह्माण्ड में सूर्य्य, वैसे प्रजाओं में पिता के सदृश वर्त्ताव कर और चोरों का निवारण करके न्याय से प्रजाओं का पालन करें॥६॥

**अथ प्रजाविषयमाह॥**

अब प्रजा विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**यु॒वामिद्ध्यव॑से पू॒र्व्याय॒ परि॒ प्रभू॑ती ग॒विषः॑ स्वापी।**

**वृ॒णी॒महे॑ स॒ख्याय॑ प्रि॒याय॒ शूरा॒ मंहि॑ष्ठा पि॒तरे॑व श॒म्भू॥७॥**



www.9009.co.in

**युवाम्। इत्। हि। अर्वसे। पूर्व्याय। परि। प्रभूती इति प्रऽभूती। गोऽइषः। स्वापी इति सुऽआपी। वृणीमहे। सख्याय। प्रियाय। शूरा। मंहिष्ठा। पितराऽइव। शम्भू इति शम्ऽभू॥७॥**

**पदार्थः**-(**युवाम्**) (**इत्**) एव (**हि**) निश्चये (**अवसे**) रक्षणाद्याय (**पूर्व्याय**) पूर्वै राजभिः कृताय (**परि**) (**प्रभूती**) समर्थौ (**गविषः**) गवामिच्छोः (**स्वापी**) शयानौ (**वृणीमहे**) स्वीकुर्महे (**सख्याय**) मित्रत्वाय (**प्रियाय**) कमनीयाय (**शूरा**) निर्भयौ शत्रुहिंसकौ (**मंहिष्ठा**) अतिशयेन सत्कर्त्तव्यौ (**पितरेव**) यथा जनकजनन्यौ (**शम्भू**) शं सुखं भावुकौ॥७॥

**अन्वयः**-हे राजाऽमात्यौ! युवां हि पूर्व्यायावसे इत्प्रभूती स्वापी शूरा मंहिष्ठा पितरेव शम्भू प्रियाय सख्याय गविषो वयं परि वृणीमहे तस्माद्युवामस्माकं पालकौ सततं भवेतम्॥७॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। हे प्रजाजना भवन्तस्तानेव राजादीन् स्वीकुर्वन्तु ये पितृवत्सर्वान् पालयितुं समर्थाः स्युः॥७॥

**पदार्थः**-हे राजा और मन्त्रीजनो! (**युवाम्**) तुम दोनों (**हि**) ही को (**पूर्व्याय**) पूर्व राजाओं ने किये (**अवसे**) रक्षण आदि के लिये (**इत्**) ही (**प्रभूती**) समर्थ (**स्वापी**) शयन करते हुए (**शूरा**) भयरहित और शत्रुओं के नाश करने वाले (**मंहिष्ठा**) अत्यन्त सत्कार करने योग्य (**पितरेव**) जैसे पिता और माता, वैसे (**शम्भू**) सुख को हुवानेवाले **[**=करनेवाले**]** (**प्रियाय**) सुन्दर (**सख्याय**) मित्रपन के लिये (**गविषः**) गौओं की इच्छा करने वाले का हम लोग (**परि, वृणीमहे**) स्वीकार करते हैं, इससे आप दोनों हम लोगों के पालन करनेवाले निरन्तर होवें॥७॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे प्रजाजनो! आप लोग उन्हीं राजा आदिकों को स्वीकार करो कि जो पिता के सदृश सब लोगों के पालन करने को समर्थ होवें॥७॥

**पुना राजविषयमाह॥**

फिर राजविषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**ता वां धियोऽवसे वाजयन्तीराजिं न जग्मुर्युवयूः सुदानू।**

**श्रिये न गाव उप सोममस्थुरिन्द्रं गिरो वरुणं मे मनीषाः॥८॥**

**ताः। वाम्। धियः। अवसे। वाजऽयन्तीः। आजिम्। न। जग्मुः। युवऽयूः। सुदानू इति सुऽदानू। श्रिये। न। गावः। उप। सोमम्। अस्थुः। इन्द्रम्। गिरः। वरुणम्। मे। मनीषाः॥८॥**

**पदार्थः**-(**ताः**) (**वाम्**) युवयोः (**धियः**) प्रज्ञाः कर्माणि वा (**अवसे**) रक्षणाद्याय (**वाजयन्तीः**) ज्ञापयन्त्यः (**आजिम्**) सङ्ग्रामम् (**न**) इव (**जग्मुः**) प्राप्नुयुः (**युवयूः**) युवां कामयमानाः (**सुदानू**) सुष्ठु दातारौ (**श्रिये**) धनाय (**न**) इव (**गावः**) पृथिव्यो धेनवो वा (**उप**) (**सोमम्**) ऐश्वर्य्यम् (**अस्थुः**) प्राप्नुवन्तु (**इन्द्रम्**) परमसुखकारकम् (**गिरः**) सुशिक्षिता वाण्यः (**वरुणम्**) श्रेष्ठं जनम् (**मे**) मम (**मनीषाः**) प्रज्ञाः॥८॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथा मे गिरो मनीषाश्च श्रिये गावो न सोममिन्द्रं वरुणमुपास्थुस्तथैव या वां धियोऽवसे वाजयन्तीराजिं न सुदानू युवयूः प्रजा जग्मुस्ता युवां सततं पालयत॥८॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। यथा विदुष्यो मातरः स्वापत्यानि सुशिक्ष्य सम्पाल्य विद्यायुक्तानि कृत्वा सुखयन्ति तथैव राजा प्रजाः प्रति वर्त्तेत॥८॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे **(मे)** मेरी **(गिरः)** उत्तम प्रकार शिक्षित वाणियाँ और **(मनीषाः)** बुद्धियाँ **(श्रिये)** धन के लिये **(गावः)** पृथिवी वा गौओं के **(न)** सदृश **(सोमम्)** ऐश्वर्य्य **(इन्द्रम्)** अत्यन्त सुख करने वाले **(वरुणम्)** श्रेष्ठ जन के **(उप, अस्थुः)** समीप प्राप्त होवें, वैसे ही जो **(वाम्)** आप दोनों की **(धियः)** बुद्धियाँ वा कर्म **(अवसे)** रक्षण आदि के लिये **(वाजयन्तीः)** जनाती हुई **(आजिम्)** संग्राम के **(न)** सदृश **(सुदानू)** उत्तम प्रकार दाता जनों को और **(युवयूः)** आप दोनों की कामना करते हुए प्रजाजनों को **(जग्मुः)** प्राप्त होवें **(ता)** उनका आप दोनों निरन्तर पालन करो॥८॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जैसे विद्या वाली माता अपने सन्तानों को उत्तम प्रकार शिक्षा दे पालन कर और विद्या से युक्त करके सुखी करती है, वैसे ही राजा प्रजा के प्रति वर्त्ताव करे॥८॥

**अथ राजाप्रजाकृत्यमाह॥**

अब राजा और प्रजा के कर्त्तव्य विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**इमा इन्द्रं वरुणं मे मनीषा अग्मन्नुप द्रविणमिच्छमानाः।**

**उपेमस्थुर्जोष्टारइव वस्वो रघ्वीरिव श्रवसो भिक्षमाणाः॥९॥**

**इमाः। इन्द्रम्। वरुणम्। मे। मनीषाः। अग्मन्। उप। द्रविणम्। इच्छमानाः। उप। ईम्। अस्थुः। जोष्टारःऽइव। वस्वः। रघ्वीःऽइव। श्रवसः। भिक्षमाणाः॥९॥**

**पदार्थः**-**(इमाः)** प्रत्यक्षाः **(इन्द्रम्)** परमैश्वर्य्यम् **(वरुणम्)** श्रेष्ठं स्वभावम् **(मे)** मम **(मनीषाः)** **(अग्मन्)** प्राप्नुवन्तु **(उप)** **(द्रविणम्)** धनं यशो वा **(इच्छमानाः)** **(उप)** **(ईम्)** **(अस्थुः)** तिष्ठन्ति **(जोष्टारइव)** सेवमाना इव **(वस्वः)** धनस्य **(रघ्वीरिव)** लघ्व्यो ब्रह्मचारिण्य इव **(श्रवसः)** अन्नस्य **(भिक्षमाणाः)** याचमानाः॥९॥

**अन्वयः**-हे राजन्! या इमाः कुमार्यो ब्रह्मचारिण्यो मे मनीषा इवेन्द्रं द्रविणं वरुणमिच्छमाना अध्यापिका अग्मन् जोष्टारइव वस्व उपास्थुरीं श्रवसो रघ्वीरिव भिक्षमाणा अध्यापिका उप तस्थुस्ता एव प्रवरा जायन्ते॥९॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। हे राजन्! यथा कन्या ब्रह्मचर्य्येण गृहीताभ्यां विद्यासुशिक्षाभ्यां यशस्विन्यो विदुष्यो भूत्वा स्वसदृशान् पतीन् प्राप्य सदाऽऽनन्दन्ति तथैव प्रजाभिः सह भवान् भवता सह प्रजाः सततमानन्दन्तु॥९॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-हे राजन्! जो **(इमाः)** ये प्रत्यक्ष कुमारी ब्रह्मचारिणियाँ **(मे)** मेरी **(मनीषाः)** बुद्धियों के सदृश **(इन्द्रम्)** अत्यन्त ऐश्वर्य्य **(द्रविणम्)** धन वा यश और **(वरुणम्)** श्रेष्ठ स्वभाव की **(इच्छमानाः)** इच्छा करती हुई पढ़ानेवालियों को **(अग्मन्)** प्राप्त होवें और **(जोष्टारइव)** सेवा करते हुए पुरुषों के समान **(वस्वः)** धन के **(उप, अस्थुः)** समीप स्थित होती **(ईम्)** और प्रत्यक्ष **(श्रवसः)** अन्न की **(रघ्वीरिव)** छोटी ब्रह्मचारिणियों के सदृश **(भिक्षमाणाः)** याचना करती हुई पढ़ाने वाली स्त्रियों के **(उप)** समीप स्थित हुई वे ही कन्या अत्यन्त श्रेष्ठ होती हैं॥९॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे राजन्! जैसे कन्याजन ब्रह्मचर्य्य से ग्रहण की गई विद्या और उत्तम शिक्षा से यशयुक्त और विद्या वाली होकर अपने अनुकूल पतियों को प्राप्त होकर सदा आनन्दित होती हैं, वैसे ही प्रजाओं के साथ आप और आपके साथ प्रजाजन निरन्तर आनन्द करें॥९॥

**अथ प्रजाविषयमाह॥**

अब प्रजा विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अश्व्यस्य त्मना रथ्यस्य पुष्टेर्नित्यस्य रायः पतयः स्याम।**

**ता चक्राणा ऊतिभिर्नव्यसीभिरस्मत्रा रायो नियुतः सचन्ताम्॥१०॥**

**अश्व्यस्य। त्मना। रथ्यस्य। पुष्टेः। नित्यस्य। रायः। पतयः। स्याम। ता। चक्राणौ। ऊतिऽभिः। नव्यसीभिः। अस्मऽत्रा। रायः। निऽयुतः। सचन्ताम्॥१०॥**

**पदार्थः**-**(अश्व्यस्य)** अश्वेष्वाशुगामिषु भवस्य **(त्मना)** आत्मना **(रथ्यस्य)** रथेषु रमणीयेषु साधोः **(पुष्टेः)** **(नित्यस्य)** **(रायः)** धनस्य **(पतयः)** स्वामिनः **(स्याम)** **(ता)** तौ **(चक्राणौ)** कुर्वन्तौ **(ऊतिभिः)** रक्षादिभिः **(नव्यसीभिः)** **(अस्मत्रा)** अस्मासु वर्त्तमानस्य **(रायः)** **(नियुतः)** निश्चययुक्ताः **(सचन्ताम्)** सम्बध्नन्तु॥१०॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथा ता चक्राणौ नव्यसीभिरूतिभिरस्मत्रा रायः सम्बन्धं प्राप्नुयातां नियुतश्च सचन्तां तथा वयं त्मना स्वस्याश्व्यस्य रथ्यस्य पुष्टेर्नित्यस्य रायः पतयः स्याम॥१०॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। मनुष्यैर्यथा युक्ताः पुरुषाः सर्वैश्वर्य्यमाप्नुवन्ति तथैव वयं सर्वाऽऽनन्दं प्राप्नुयामेतीच्छा कार्य्या॥१०॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे **(ता)** वे **(चक्राणौ)** करते हुए दो जन **(नव्यसीभिः)** नवीन **(ऊतिभिः)** रक्षा आदि कर्मों से **(अस्मत्रा)** हम लोगों में वर्त्तमान **(रायः)** धन के सम्बन्ध को प्राप्त होवें और **(नियुतः)** निश्चययुक्त पदार्थ **(सचन्ताम्)** सम्बद्ध होवें, वैसे हम लोग **(त्मना)** आत्मा से अपने **(अश्व्यस्य)** शीघ्र चलने वालों में उत्पन्न हुए **(रथ्यस्य)** रमण करने योग्य वाहनों में श्रेष्ठ **(पुष्टेः)** पुष्टि के सम्बन्ध में **(नित्यस्य)** नित्य वर्त्तमान **(रायः)** धन के **(पतयः)** स्वामी **(स्याम)** होवें॥१०॥



www.9009.co.in

**भावार्थ:**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। मनुष्यों को चाहिये कि जैसे युक्त अर्थात् कार्य में लगे हुए पुरुष सम्पूर्ण ऐश्वर्य्य को प्राप्त होते हैं, वैसे हम लोग सम्पूर्ण आनन्द को प्राप्त होवें, ऐसी इच्छा करें॥१०॥

**पुना राजप्रजाविषयमाह॥**

फिर राजप्रजाविषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**आ नो बृहन्ता बृहतीभिरूती इन्द्र यातं वरुण वाजसातौ।**

**यद् दिद्यवः पृतनासु प्रक्रीळान् तस्य वां स्याम सनितार आजेः॥११॥१६॥**

**आ। नः। बृहन्ता। बृहतीभिः। ऊती। इन्द्र। यातम्। वरुण। वाजऽसातौ। यत्। दिद्यवः। पृतनासु। प्रऽकीळान्। तस्य। वाम्। स्याम्। सनितारः। आजेः॥११॥**

**पदार्थ:**-(**आ**) समन्तात् (**नः**) अस्मान् (**बृहन्ता**) सद्गुणैर्महान्तौ (**बृहतीभिः**) महतीभिः (**ऊती**) रक्षाभिः। अत्र **सुपां सुलुगि**ति भिसो लुक्। (**इन्द्र**) दुष्टदलक राजन् (**यातम्**) प्राप्नुतम् (**वरुण**) सेनेश (**वाजसातौ**) सङ्ग्रामे (**यत्**) ये (**दिद्यवः**) विद्याविनयाभ्यां प्रकाशमानास्तेजस्विनः (**पृतनासु**) सेनासु (**प्रक्रीळान्**) प्रकृष्टान् विहारान् (**तस्य**) (**वाम्**) युवाभ्याम् (**स्याम**) (**सनितारः**) विभक्तारः (**आजेः**) सङ्ग्रामस्य॥११॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र वरुण! बृहन्ता युवां बृहतीभिरूती वाजसातौ न आ यातम्। यद्ये दिद्यवस्तस्याजेः सनितारो वयं पृतनासु प्रक्रीळान् प्राप्य वां क्रीडां प्राप्ताः स्याम तानस्मान् युवां सत्कुर्य्यातम्॥११॥

**भावार्थ:**-हे राजन्! यथा वयं भवतः प्रति प्रीत्या वर्त्तेमहि तथैव भवताप्यस्मासु वर्त्तितव्यमिति॥११॥

अत्राध्यापकोपदेशकराजप्रजामात्यकृत्यवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इत्येकचत्वारिंशत्तमं सूक्तं षोडशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थ:**-हे (**इन्द्र**) दुष्टों के दलन करने वाले राजन् और (**वरुण**) सेना के ईश! (**बृहन्ता**) श्रेष्ठ गुणों से बड़े आप दोनों (**बृहतीभिः**) बड़ी (**ऊती**) रक्षा आदिकों से (**वाजसातौ**) सङ्ग्राम में (**नः**) हम लोगों को (**आ**) सब ओर से (**यातम्**) प्राप्त हूजिये (**यत्**) जो (**दिद्यवः**) विद्या और विनय से प्रकाशमान तेजस्वी (**तस्य**) उस (**आजेः**) सङ्ग्राम के (**सनितारः**) विभाग करने वाले हम (**पृतनासु**) सेनाओं में (**प्रक्रीळान्**) उत्तम क्रीड़ा अर्थात् विहारों को प्राप्त होकर (**वाम्**) आप दोनों से विहार को प्राप्त हुए (**स्याम**) होवें, उन हम लोगों का आप दोनों सत्कार करें॥११॥

**भावार्थ:**-हे राजन्! जैसे हम लोग आपके प्रति प्रीति से वर्त्ताव करें, वैसा ही आपको भी चाहिये कि हम लोगों में वर्त्ताव करें॥११॥



www.9009.co.in

इस सूक्त में अध्यापक, उपदेशक, राजा, प्रजा और मन्त्री के कृत्य का वर्णन होने से इस सूक्त के अर्थ की पिछले सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह इकतालीसवां सूक्त और सोलहवां वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

**अथ दशर्चस्य द्विचत्वारिंशत्तमस्य सूक्तस्य। १-१० त्रसदस्युः पौरुकुत्स्य ऋषिः। १-६ आत्मा। ७-१० इन्द्रावरुणौ देवते। १-६,९ निचृत्त्रिष्टुप्। ७ विराट् त्रिष्टुप्। ८ भुरिक् त्रिष्टुप्। १० त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः। ५ निचृत्पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः॥**

**अथ राजविषयमाह॥**

अब दश ऋचावाले बयालीसवें सूक्त का प्रारम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में राजविषय को कहते हैं॥

**मम॑ द्वि॒ता रा॒ष्ट्रं क्ष॒त्रिय॑स्य वि॒श्वायो॒र्विश्वे॑ अ॒मृता॒ यथा॑ नः।**

**क्रतुं॑ सचन्ते॒ वरु॑णस्य दे॒वा राजा॑मि कृ॒ष्टेरु॑प॒मस्य॑ व॒व्रेः॥ १॥**

**मम॑। द्वि॒ता। रा॒ष्ट्रम्। क्ष॒त्रिय॑स्य। वि॒श्वऽआ॑योः। विश्वे॑। अ॒मृता॑ः। यथा॑। न॒ः। क्रतु॑म्। स॒च॒न्ते॒। वरु॑णस्य। दे॒वाः। राजा॑मि। कृ॒ष्टेः। उ॒प॒ऽमस्य॑। व॒व्रेः॥ १॥**

**पदार्थः**-**(मम)** **(द्विता)** द्वयोर्भावः **(राष्ट्रम्)** **(क्षत्रियस्य)** **(विश्वायोः)** विश्वं पूर्णमायुर्यस्य तस्य **(विश्वे)** सर्वे **(अमृताः)** नाशरहिताः **(यथा)** **(नः)** अस्माकम् **(क्रतुम्)** प्रज्ञाम् **(सचन्ते)** सम्बध्नन्ति **(वरुणस्य)** श्रेष्ठस्य **(देवाः)** देदीप्यमानाः **(राजामि)** **(कृष्टेः)** कृष्टस्य **(उपमस्य)** उपमा विद्यते यस्य तस्य **(वव्रेः)** स्वीकर्तुः॥ १॥

**अन्वयः**-हे विद्वांसो! यथा मम विश्वायोः क्षत्रियस्य द्विता विश्व अमृता नो राष्ट्रं क्रतुञ्च सचन्ते वरुणस्य कृष्टेरुपमस्य वव्रेर्मम क्रतुं देवाः सचन्ते तथैवैतेष्वहं राजामि॥ १॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! अस्मिञ्जगति स्वामी स्वं वा द्वावेव पदार्थौ वर्त्तेते यत्र दीर्घजीविनो न्यायशीलवृत्ता धार्मिका अमात्याः सर्वतो गुणग्राहकाः श्रेष्ठोपमा वर्त्तन्ते तत्रैव निवसन्त्सज्जनः सुखमत्यन्तमश्नुते॥ १॥

**पदार्थः**-हे विद्वानो! **(यथा)** जैसे **(मम)** मुझ **(विश्वायोः)** पूर्ण अवस्था वाले **(क्षत्रियस्य)** क्षत्रिय के **(द्विता)** दो का होना तथा **(विश्वे)** सम्पूर्ण **(अमृताः)** नाश से रहित जन **(नः)** हम लोगों के **(राष्ट्रम्)** राज्य **(क्रतुम्)** और बुद्धि को **(सचन्ते)** संबन्धयुक्त करते हैं और **(वरुणस्य)** श्रेष्ठ **(कृष्टेः)** खींचते हुए **(उपमस्य)** उपमायुक्त **(वव्रेः)** स्वीकार करनेवाले मुझ जन की बुद्धि को **(देवाः)** प्रकाशमान जन मेलते हैं, वैसे ही इन में मैं **(राजामि)** शोभित होता हूँ॥ १॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! इस संसार में स्वामी और स्वम् अर्थात् अपना ये दो ही पदार्थ वर्त्तमान हैं और जिस देश में दीर्घकालपर्य्यन्त जीवने और न्याययुक्त स्वभाव वाले धार्मिक मन्त्री जन सब प्रकार के गुणग्रहणकर्त्ता श्रेष्ठ उपमा से युक्त वर्त्तमान हैं, वहाँ ही रहता हुआ सज्जन सुख का अत्यन्त भोग करता है॥ १॥

**अथेश्वरविषयमाह॥**



www.9009.co.in

अब ईश्वरविषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अहं राजा वरुणो मह्यं तान्यसुर्याणि प्रथमा धारयन्त।**

**क्रतुं सचन्ते वरुणस्य देवा राजामि कृष्टेरुपमस्य वव्रेः॥ २॥**

**अहम्। राजा। वरुणः। मह्यम्। तानि। असुर्याणि। प्रथमा। धारयन्त। क्रतुम्। सचन्ते। वरुणस्य। देवाः। राजामि। कृष्टेः। उपऽमस्यः। वव्रेः॥ २॥**

**पदार्थः**-(**अहम्**) जगदीश्वरः (**राजा**) प्रकाशमानः (**वरुणः**) सर्वोत्तमप्रबन्धकर्त्ता (**मह्यम्**) (**तानि**) (**असुर्य्याणि**) असुराणां मेघादीनामिमानि चिह्नानि (**प्रथमा**) आदिमानि (**धारयन्त**) धरन्ति (**क्रतुम्**) प्रज्ञाम् (**सचन्ते**) प्राप्नुवन्ति (**वरुणस्य**) सम्बन्धस्योत्तमस्य (**देवाः**) विद्वांसः (**राजामि**) प्रकाशे (**कृष्टेः**) मनुष्यस्य (**उपमस्य**) उपमायुक्तस्य (**वव्रेः**) स्वीकर्त्तव्यस्य॥ २॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथा यो वरुणो राजाऽहं वरुणस्य वव्रेः कृष्टेरुपमस्य जगतो मध्ये राजामि तस्मै मह्यं देवाः प्रीणन्ति यानि प्रथमाऽसुर्य्याणि तानि धारयन्त क्रतुं सचन्ते तथा यूयमप्याचरत॥ २॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। ये मनुष्याः सर्वत्र व्याप्तं बुद्धिधनप्रदं जगतः स्वामिनं मां परमात्मानं भजन्ते ते सर्वाणि भजन्ते॥ २॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे जो (**वरुणः**) सम्पूर्ण उत्तम प्रबन्धों का कर्त्ता (**राजा**) प्रकाशमान (**अहम्**) मैं जगदीश्वर (**वरुणस्य**) उत्तम सम्बन्ध में और (**वव्रेः**) स्वीकार करने योग्य (**कृष्टेः**) मनुष्य के सम्बन्ध में तथा (**उपमस्य**) उपमायुक्त जगत् के बीच में (**राजामि**) प्रकाशित होता हूँ उस (**मह्यम्**) मेरे लिये (**देवाः**) विद्वान् जन तृप्त होते हैं तथा जो (**प्रथमा**) आदि से वर्त्तमान (**असुर्य्याणि**) मेघादिकों के चिह्न (**तानि**) उनको (**धारयन्त**) धारण करते हैं और (**क्रतुम्**) बुद्धि को (**सचन्ते**) प्राप्त होते हैं, वैसे तुम लोग भी आचरण करो॥ २॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो मनुष्य सर्वत्र व्याप्त, बुद्धि और धन के देने वाले जगत् के स्वामी मुझ परमात्मा को भजते हैं, वे सब सुखों को भजते हैं॥ २॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अहमिन्द्रो वरुणस्ते महित्वोर्वी गभीरे रजसी सुमेके।**

**त्वष्टेव विश्वा भुवनानि विद्वान्त्समैरयं रोदसी धारयं च॥ ३॥**

**अहम्। इन्द्रः। वरुणः। ते इति। महिऽत्वा। उर्वी इति। गभीरे इति। रजसी इति। सुमेके इति सुऽमेके। त्वष्टाऽइव। विश्वा। भुवनानि। विद्वान्। सम्। ऐरयम्। रोदसी इति। धारयम्। च॥ ३॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**अहम्**) महान् व्याप्तः (**इन्द्रः**) परमैश्वर्य्यवान् (**वरुणः**) सर्वत उत्कृष्टः (**ते**) (**महित्वा**) पूजयित्वा (**ऊर्वी**) बहुपदार्थधरे (**गभीरे**) विस्तीर्णे (**रजसी**) द्यावापृथिव्यौ (**सुमेके**) शोभने मया सृष्टे सुष्ठु क्षिप्ते (**त्वष्टेव**) उत्तमः शिल्पीव (**विश्वा**) सर्वाणि (**भुवनानि**) लोकान् (**विद्वान्**) सकलविद्यावित् (**सम्**) एकीभावे (**ऐरयम्**) प्रेरयेयम् (**रोदसी**) सूर्य्यभूलोकौ (**धारयम्**) धरेयं धारयेयं वा (**च**)॥३॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! इन्द्रो वरुणोऽहं विद्वांस्त्वष्टेव गभीरे सुमेके रजसी महित्वा ते उर्वी रोदसी रचयित्वाऽत्र विश्वा भुवनानि समैरयन्धारयञ्चेति विजानीत॥३॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। यथा दक्षा विचक्षणाः पूर्णविद्याः शिल्पिन उत्तमानि वस्तूनि निर्मिमते तथैव मया विचित्रमुत्तमं जगन्निर्मितं ध्रियते यथा मया रचितं तथाऽन्यस्य जीवस्य सामर्थ्यं रचयितुं नास्ति किन्तु मत्कृतात् कार्य्यात् किञ्चिद् गृहीत्वा यथामति रचयन्तीति वेद्यम्॥३॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! (**इन्द्रः**) अत्यन्त ऐश्वर्य्यवान् (**वरुणः**) सब से उत्तम (**अहम्**) अतीव व्याप्त मैं (**विद्वान्**) सकलविद्यावेत्ता (**त्वष्टेव**) उत्तम शिल्पी के सदृश (**गभीरे**) विस्तारयुक्त (**सुमेके**) सुन्दर मुझ से रचे और उत्तम प्रकार फैलाये गये (**रजसी**) सूर्य्य और पृथिवी को (**महित्वा**) पूजित कर (**ते**) उन (**उर्वी**) बहुत पदार्थों को धारण करने वाले (**रोदसी**) सूर्य्य और पृथिवी लोकों को रच के यहाँ (**विश्वा**) सब (**भुवनानि**) लोकों को (**सम्**) एक होने में (**ऐरयम्**) प्रेरणा करूं (**धारयम् च,**) और धारण करूं वा धारण कराऊं, यह जानो॥३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जैसे चतुर पण्डित, पूर्ण विद्यावान्, शिल्पी जन उत्तम वस्तुओं को रचते हैं, वैसे ही मुझ से विचित्र उत्तम उत्तम जगत् रचा गया धारण किया जाता है और जैसे मैंने रचा वैसे अन्य जीव का सामर्थ्य रचने का नहीं है, किन्तु मेरे किये हुए कार्य्य से कुछ ग्रहण करके अपनी अपनी बुद्धि के अनुसार रचते हैं, यह जानना चाहिये॥३॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अहमपो अपिन्वमुक्षमाणा धारयं दिवं सदन ऋतस्य।**

**ऋतेन पुत्रो अदितेर्ऋतावोत त्रिधातु प्रथयद्वि भूम॥४॥**

**अहम्। अपः। अपिन्वम्। उक्षमाणाः। धारयम्। दिवम्। सदने। ऋतस्य। ऋतेन। पुत्रः। अदितेः। ऋतऽवा। उत। त्रिऽधातु। प्रथयत्। वि। भूम॥४॥**

**पदार्थः**-(**अहम्**) परमात्मा (**अपः**) जलान्यन्तरिक्षं वा (**अपिन्वम्**) सेवे (**उक्षमाणाः**) सेवमानाः (**धारयम्**) (**दिवम्**) विद्युतम् (**सदने**) सर्वस्थित्यर्थे जगति (**ऋतस्य**) सत्यस्य प्रकृत्याख्यस्य (**ऋतेन**) सत्येन कारणेन (**पुत्रः**) तनय इव (**अदितेः**) अखण्डितस्यान्तरिक्षस्य (**ऋतावा**) ऋतं सत्यं विद्यते यस्मिन्



www.9009.co.in

सः (**उत**) अपि (**त्रिधातु**) त्रयः सत्वरजस्तमांसि गुणा धारका यस्मिंस्तत् सर्वं जगत् (**प्रथयत्**) (**वि**) विविधम् (**भूम**) बहुविधम्॥४॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! अहमेवर्त्तस्य सदने दिवमुक्षमाणा अपोऽपिन्वमृतेनादितेर्ऋतावा पुत्र उत भूम त्रिधातु वि प्रथयत् तमहं धारयम्॥४॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! मदृतेनास्य जगतो धर्त्ताऽन्यः कश्चिदपि नास्ति यादृशं त्रिगुणमयं कारणमस्ति तादृशमेवेदं कार्य्यं पश्यत॥४॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! (**अहम्**) मैं परमात्मा ही (**ऋतस्य**) सत्य प्रकृति नामक के (**सदने**) सदन में अर्थात् सब के ठहरने के लिये जो संसार उसमें (**दिवम्**) बिजुली की (**उक्षमाणाः**) सेवा करते हुए (**अपः**) जलों वा अन्तरिक्ष की (**अपिन्वम्**) सेवा करता हूँ और (**ऋतेन**) सत्य कारण से (**अदितेः**) खण्डरहित अन्तरिक्ष का (**ऋतावा**) सत्य से युक्त (**पुत्रः**) पुत्र के सदृश वर्त्तमान (**उत**) निश्चय से (**भूम**) अनेक प्रकार के (**त्रिधातु**) तीन अर्थात् सत्त्वगुण रजोगुण और तमोगुण धारण करने वाले जिसमें उस सम्पूर्ण जगत् को (**वि, प्रथयत्**) विविध प्रकट करे, उसको मैं (**धारयम्**) धारण करूं॥४॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! मेरे विना इस संसार का धारण करने वाला अन्य कोई भी नहीं है और जैसा तीन अर्थात् सत्त्वादिगुणमय कारण है, वैसे ही इस कार्य्य को देखो॥४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**मां नरः स्वश्वा वाजयन्तो मां वृताः समरणे हवन्ते।**

**कृणोम्याजिं मघवाहमिन्द्र इयर्मि रेणुमभिभूत्योजाः॥५॥१७॥**

**माम्। नरः। सुऽअश्वाः। वाजयन्तः। माम्। वृताः। सम्ऽअरणे। हवन्ते। कृणोमि। आजिम्। मघऽवा। अहम्। इन्द्रः। इयर्मि। रेणुम्। अभिभूतिऽओजाः॥५॥**

**पदार्थः**-(**माम्**) (**नरः**) नायकाः (**स्वश्वाः**) शोभना अश्वास्तुरङ्गा अग्न्यादयः पदार्था वा येषान्ते (**वाजयन्तः**) जानन्तो ज्ञापयन्तो वा (**माम्**) (**वृताः**) कृतस्वीकाराः (**समरणे**) सङ्ग्रामे (**हवन्ते**) स्पर्द्धन्ते स्वीकुर्वन्ति (**कृणोमि**) करोमि (**आजिम्**) सङ्ग्रामम् (**मघवा**) परमपूजितधनः (**अहम्**) (**इन्द्रः**) (**इयर्मि**) प्राप्नोमि (**रेणुम्**) रजः (**अभिभूत्योजाः**) अभिभूतिर्दुष्टानामभिभवकर्त्रोजो यस्य सः॥५॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथा स्वश्वा मां वाजयन्तो वृता नरो समरणे मां हवन्ते तत्र मघवेन्द्रोऽभिभूत्योजा अहमाजिं कृणोमि रेणुमियर्मि तथा यूयमपि मां वृणोत॥५॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! ये सर्वव्यापकं सर्वान्तर्यामिणं सर्वशक्तिमन्तं परमात्मानं सङ्ग्रामे प्रार्थयन्ति तेषामेवाहं विजयं कारयामि ये च धर्म्येण युध्यन्ते तेषामेव सहायो भवामि॥५॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे **(स्वश्वाः)** सुन्दर घोड़े वा अग्नि आदि जिनके विद्यमान और **(माम्)** मुझको **(वाजयन्तः)** जानते वा जनाते हुए **(वृताः)** स्वीकार जिन्होंने किया वे **(नरः)** नायक जन **(समरणे)** संग्राम में **(माम्)** मेरी **(हवन्ते)** स्पर्द्धा अर्थात् स्वीकार करते हैं वहाँ **(मघवा)** अत्यन्त श्रेष्ठ धनयुक्त **(इन्द्रः)** तेजस्वी **(अभिभूत्योजाः)** दुष्टों का अभिभव करने वाले बल से युक्त **(अहम्)** मैं **(आजिम्)** संग्राम को **(कृणोमि)** करता हूँ **(रेणुम्)** धूलि को **(इयर्मि)** प्राप्त होता हूँ, वैसे तुम लोग भी मेरा स्वीकार करो॥५॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो जन सब वस्तुओं में प्राप्त होने वाले, सब के अन्तर्यामि और सर्वशक्तिमान् मुझ परमात्मा की संग्राम में प्रार्थना करते हैं, उन्हीं का मैं विजय कराता हूँ और जो धर्म से युद्ध करते हैं, उन्हीं का मैं सहायक होता हूँ॥५॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अहं ता विश्वा चकरं नकिर्मा दैव्यं सहो वरते अप्रतीतम्।**

**यन्मा सोमासो ममदन् यदुक्थोभे भयेते रजसी अपारे॥६॥**

**अहम्। ता। विश्वा। चकरम्। नकिः। मा। दैव्यम्। सहः। वरते। अप्रतिऽइतम्। यत्। मा। सोमासः। ममदन्। यत्। उक्था। उभे इति। भयेते इति। रजसी इति। अपारे इति॥६॥**

**पदार्थः-(अहम्) (ता)** तानि **(विश्वा)** सर्वाणि **(चकरम्)** भृशं करोमि **(नकिः)** निषेधे **(मा)** माम् **(दैव्यम्)** देवेषु विद्वत्सु प्रियम् **(सहः)** बलम् **(वरते)** स्वीकरोति **(अप्रतीतम्)** अप्रज्ञातम् **(यत्)** यम् **(मा)** माम् **(सोमासः)** ऐश्वर्य्यवन्तः **(ममदन्)** हर्षन्ति **(यत्)** यम् **(उक्था)** प्रशंसनीये **(उभे) (भयेते) (रजसी)** द्यावापृथिव्यौ **(अपारे)** पाररहितेऽपरिमिते॥६॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! योऽहं ता विश्वा चकरं जीवो यद् दैव्यं माप्रतीतं सहो वरते यद्यं माश्रिताः सोमासो ममदन् मत्त उक्थोभे अपारे रजसी भयेते तेन मया सदृशः कोऽपि नकिरस्ति॥६॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! ये पदार्था दृश्यन्ते ये चाऽदृष्टाः सन्ति ते सर्वे मयैव निर्मिता मय्यप्रमेयं बलं मां प्राप्य सर्वानन्दं लभन्ते ममैव भयात् सर्वैर्लोकैः सहचरिता जीवा बिभ्यति॥६॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो **(अहम्)** मैं **(ता)** उन **(विश्वा)** सब कामों को **(चकरम्)** निरन्तर करता हूँ तथा जीव **(यत्)** जिस **(दैव्यम्)** विद्वानों में प्रिय **(मा)** मुझको और **(अप्रतीतम्)** नहीं जाने गये **(सहः)** बल को **(वरते)** स्वीकार करता है **(यत्)** जिस **(मा)** मेरी सेवा करते **(सोमासः)** ऐश्वर्य्यवाले **(ममदन्)** प्रसन्न होते हैं और मुझ से **(उक्था)** प्रशंसा करने योग्य **(उभे)** दोनों **(अपारे)** पाररहित अपरिमित **(रजसी)** सूर्य्यलोक और भूमिलोक **(भयेते)** कंपते हैं, उस मेरे सदृश कोई भी **(नकिः)** नहीं है॥६॥



www.9009.co.in

**भावार्थ:**-हे मनुष्यो! जो पदार्थ प्रत्यक्ष और जो नहीं प्रत्यक्ष हैं, वे सब मुझ से ही बनाये गये, मेरे में अनन्त बल है, मुझको प्राप्त होकर सम्पूर्ण आनन्द को प्राप्त होते हैं और मेरे ही भय से सब लोगों के सहचारी जीव डरते हैं॥६॥

**अथेश्वरोपासनाविषयमाह॥**

अब ईश्वरोपासना विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**विदुष्टे विश्वा भुवनानि तस्य ता प्र ब्रवीषि वरुणाय वेधः।**

**त्वं वृत्राणि शृण्विषे जघन्वान्त्वं वृताँ अरिणा इन्द्र सिन्धून्॥७॥**

**विदुः। ते। विश्वा। भुवनानि। तस्य। ता। प्र। ब्रवीषि। वरुणाय। वेधः। त्वम्। वृत्राणि। शृण्विषे। जघन्वान्। त्वम्। वृतान्। अरिणाः। इन्द्र। सिन्धून्॥७॥**

**पदार्थः**-(**विदुः**) जानन्ति (**ते**) तव (**विश्वा**) सर्वाणि (**भुवनानि**) (**तस्य**) (**ता**) तानि (**प्र**) (**ब्रवीषि**) उपदिशति (**वरुणाय**) श्रेष्ठाय जनाय (**वेधः**) अनन्तविद्य (**त्वम्**) (**वृत्राणि**) धनानि (**शृण्विषे**) शृणोषि (**जघन्वान्**) हतवान् (**त्वम्**) (**वृतान्**) स्वीकृतान् (**अरिणाः**) प्राप्नुयाः (**इन्द्र**) परमैश्वर्य्यप्रद (**सिन्धून्**) समुद्रान्नदीर्वा॥७॥

**अन्वयः**-हे वेध इन्द्र जगदीश्वर! यस्त्वं वरुणाय वेदान् प्र ब्रवीषि तस्य ते ता विश्वा भुवनानि विद्वांसो राज्यं विदुर्यस्त्वं वृत्राणि शृण्विषे सिन्धून् वृतानरिणाः स त्वं दुष्टानधर्मिणो जघन्वान्॥७॥

**भावार्थः**-हे परमेश्वर! यस्माद्भवता कृपां कृत्वाऽस्माकं कल्याणाय वेदा उपदिष्टा येनाऽस्माकं दोषा विनाशिता वर्षाद्वारा पालनं च क्रियते तमेव वयमुपास्महे॥७॥

**पदार्थ:**-हे (**वेधः**) अनन्तविद्यायुक्त (**इन्द्र**) अतीव ऐश्वर्य्य के दाता जगदीश्वर! जो (**त्वम्**) आप (**वरुणाय**) श्रेष्ठ जन के लिये वेदों का (**प्र, ब्रवीषि**) उपदेश देते हो (**तस्य**) उन (**ते**) आप का (**ता**) उन (**विश्वा**) सम्पूर्ण (**भुवनानि**) लोकों को विद्वान् जन राज्य (**विदुः**) जानते हैं और जो (**त्वम्**) आप (**वृत्राणि**) धनों को (**शृण्विषे**) सुनते हो (**सिन्धून्**) समुद्र वा नदियों को और (**वृतान्**) स्वीकार किये हुओं को (**अरिणाः**) प्राप्त होओ, वह आप दुष्ट अधर्मियों के (**जघन्वान्**) नाशकारी हो॥७॥

**भावार्थ:**-हे परमेश्वर! जिससे आपने कृपा करके हम लोगों के कल्याण के लिये वेदों का उपदेश किया, जिससे हम लोगों के दोष नाश किये गये और वर्षा के द्वारा पालन किया जाता है, उस ही की हम लोग उपासना करते हैं॥७॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अस्माकमत्र पितरस्त आसन्त्सप्त ऋषयो दौर्गहे बध्यमाने।**



www.9009.co.in

**त आयजन्त त्रसदस्युमस्या इन्द्रं न वृत्रतुरमर्धदेवम्॥८॥**

**अस्माकम्। अत्र। पितरः। ते। आसन्। सप्त। ऋषयः। दौःऽगहे। बध्यमाने। ते। आ। अयजन्त। त्रसदस्युम्। अस्याः। इन्द्रम्। न। वृत्रऽतुरम्। अर्धऽदेवम्॥८॥**

**पदार्थः**-(**अस्माकम्**) (**अत्र**) अस्मिन् जगति (**पितरः**) पालकाः (**ते**) (**आसन्**) सन्ति (**सप्त**) षड्तवो वायुश्च सप्तमः (**ऋषयः**) प्राप्ताः (**दौर्गहे**) दुर्गहने (**बध्यमाने**) ताड्यमाने (**ते**) (**आ**) (**अयजन्त**) समन्तात् सङ्गच्छन्ते (**त्रसदस्युम्**) त्रस्यन्ति दस्यवो यस्मात्तम् (**अस्याः**) सृष्टेर्मध्ये (**इन्द्रम्**) सूर्य्यम् (**न**) इव (**वृत्रतुरम्**) यो वृत्रं मेघं धनं वा त्वरयति तम् (**अर्द्धदेवम्**) देवस्यार्द्धस्य जगतो देवं वा॥८॥

**अन्वयः**-हे जगदीश्वर! भवत्कृपया येऽत्रास्माकं सप्त ऋषयः पितर आसँस्ते दौर्गहे बध्यमाने वृत्रतुरमर्द्धदेवमिन्द्रं नास्याः सृष्टेर्मध्ये त्रसदस्युमायजन्त तेऽस्माकं सुखकराः सन्तु॥८॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! येन जगदीश्वरेण सर्वेषां रक्षणायर्त्वादयः पदार्था निर्मिता तमुपास्य दुर्जयं दुःखं विजयध्वम्॥८॥

**पदार्थः**-हे जगदीश्वर आपकी कृपा से (**अत्र**) जो इस संसार में (**अस्माकम्**) हम लोगों के (**सप्त**) छः ऋतु और सातवां वायु (**ऋषयः**) प्राप्त हुए (**पितरः**) पालन करने वाले (**आसन्**) हैं (**ते**) वे (**दौर्गहे**) अत्यन्त गहन (**बध्यमाने**) ताड़ना दिये जाते हुए में (**वृत्रतुरम्**) जो मेघ वा धन की शीघ्रता कराता है उस (**अर्द्धदेवम्**) देव के आधे जगत् के देव को (**इन्द्रम्**) सूर्य्य के (**न**) सदृश तथा (**अस्याः**) इस सृष्टि के मध्य में (**त्रसदस्युम्**) दुष्ट डाकू जिससे डरते हैं उसको (**आ, अयजन्त**) सब प्रकार मिलते हैं (**ते**) वे हमारे सुख के करनेवाले हों॥८॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जिस जगदीश्वर ने सब के रक्षण के लिये ऋतु आदि पदार्थ रचे, उसकी उपासना करके दुःख से जीतने योग्य दुःख को जीतो॥८॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**पुरुकुत्सानी हि वामदाशद्धव्येभिरिन्द्रावरुणा नमोभिः।**

**अथा राजानं त्रसदस्युमस्या वृत्रहणं ददथुरर्धदेवम्॥९॥**

**पुरुऽकुत्सानी। हि। वाम्। अदाशत्। हव्येभिः। इन्द्रावरुणा। नमःऽभिः। अथ। राजानम्। त्रसदस्युम्। अस्याः। वृत्रऽहनम्। ददथुः। अर्धऽदेवम्॥९॥**

**पदार्थः**-(**पुरुकुत्सानी**) पुरूणि कुत्सानि यस्यां सा (**हि**) यतः (**वाम्**) युवाम् (**अदाशत्**) ददाति (**हव्येभिः**) आदातुमर्हैः (**इन्द्रावरुणा**) वायुविद्युताविव (**नमोभिः**) अन्नादिभिः (**अथा**) अत्र **निपातस्य चेति** दीर्घः। (**राजानम्**) (**त्रसदस्युम्**) त्रस्यन्ति दस्यवो यस्मात्तम् (**अस्याः**) पृथिव्याः (**वृत्रहणम्**) यो वृत्रं मेघं हन्ति तम् (**ददथुः**) दद्यातम् (**अर्द्धदेवम्**) अर्द्धं जगत् प्रकाशकं सूर्य्यम्॥९॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे इन्द्रावरुणा! या पुरुकुत्सानी हव्येभिर्नमोभिर्युवां सुखमदाशदथास्या वृत्रहणमर्द्धदेवमिव त्रसदस्युं राजानं वां ददथुस्तां तौ हि वयं विजानीमः॥९॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यस्य कृपया सकला पृथिवी शस्याढ्या जाता सूर्य्यश्च तं सततमुपाध्वम्॥९॥

**पदार्थः**-हे **(इन्द्रावरुणा)** वायु और बिजुली के सदृश वर्त्तमान! जो **(पुरुकुत्सानी)** बहुत निन्दित कर्मों से विशिष्ट **(हव्येभिः)** ग्रहण करने योग्य **(नमोभिः)** अन्नादिकों से आप दोनों को सुख **(अदाशत्)** देती है **(अथा)** इसके अनन्तर **(अस्याः)** इस पृथिवी के **(वृत्रहणम्)** मेघ को नाश करने और **(अर्द्धदेवम्)** आधे जगत् को प्रकाश करनेवाले सूर्य्य के सदृश **(त्रसदस्युम्)** जिससे दुष्ट डाकू जन डरते हैं उस **(राजानम्)** राजा को **(वाम्)** आप दोनों **(ददथुः)** दीजिये उसको और उनको **(हि)** जिससे हम लोग जानें॥९॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जिसकी कृपा से सम्पूर्ण पृथिवी धान्य से युक्त हुई और सूर्य्य प्रकट हुआ उसकी निरन्तर उपासना करो॥९॥

**अथ विद्वद्विषयमाह॥**

अब विद्वद्विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**राया वयं ससवांसो मदेम हव्येन देवा यवसेन गावः।**

**तां धेनुमिन्द्रावरुणा युवं नो विश्वाहा धत्तमनपस्फुरन्तीम्॥१०॥१८॥**

**राया। वयम्। ससऽवांसः। मदेम। हव्येन। देवाः। यवसेन। गावः। ताम्। धेनुम्। इन्द्रावरुणा। युवम्। नः। विश्वाहा। धत्तम्। अनपऽस्फुरन्तीम्॥१०॥**

**पदार्थः**-**(राया)** धनेन **(वयम्)** **(ससवांसः)** सुशयाना इव **(मदेम)** **(हव्येन)** दातुमादातुमर्हेण **(देवाः)** विद्वांसः **(यवसेन)** बुसादिनेव **(गावः)** **(ताम्)** **(धेनुम्)** सर्वकामदोग्ध्रीं वाचम् **(इन्द्रावरुणा)** अध्यापकोपदेशकौ **(युवम्)** युवाम् **(नः)** अस्मभ्यम् **(विश्वाहा)** सर्वाणि दिनानि **(धत्तम्)** **(अनपस्फुरन्तीम्)** दृढां निश्चलां प्रज्ञां सम्पादयन्तीम्॥१०॥

**अन्वयः**-हव्येन देवा यवसेन गावो राया वयं ससवांसो मदेम। हे इन्द्रावरुणा! युवं विश्वाहानपस्फुरन्तीं तां धेनुं नो धत्तम्॥१०॥

**भावार्थः**-हे विद्वांसोऽस्मासु तादृशीं सर्वशास्त्रोक्तपदार्थविषयां वाचं स्थापयत येन वयं सदैवाऽऽनन्दिताः स्यामेति॥१०॥

अत्र राजेश्वरोपासनाविद्वद्गुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिरस्तीति वेदितव्यम्॥

**इति द्विचत्वारिंशत्तमं सूक्तमष्टादशो वर्गश्च समाप्तः॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**हव्येन**) देने और ग्रहण करने योग्य वस्तु से (**देवाः**) विद्वान् जन (**यवसेन**) भूसा आदि से जैसे (**गावः**) गौवें वैसे (**राया**) धन से (**वयम्**) हम लोग (**ससवांसः**) उत्तम प्रकार शयन करते हुए से (**मदेम**) आनन्द करें। और हे (**इन्द्रावरुणा**) अध्यापक और उपदेशको! (**युवम्**) आप दोनों (**विश्वाहा**) सब दिन (**अनपस्फुरन्तीम्**) दृढ़ निश्चल बुद्धि को उत्पन्न करती और (**ताम्, धेनुम्**) सम्पूर्ण मनोरथों को पूर्ण करती हुई उस वाणी को (**नः**) हम लोगों के लिये (**धत्तम्**) धारण कीजिये॥१०॥

**भावार्थः**-हे विद्वानो! हम लोगों में वैसी सम्पूर्ण शास्त्रों में कहे पदार्थविषयक वाणी को स्थित करो, जिससे हम लोग सदा ही आनन्दित होवें॥१०॥

इस सूक्त में राजा, ईश्वरोपासना और विद्वानों के गुणों का वर्णन होने से इस सूक्त के अर्थ की पिछले सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति है, यह जानना चाहिये।

**यह बयालीसवां सूक्त और अठारहवां वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

**अथ सप्तर्चस्य त्रिचत्वारिंशत्तमस्य सूक्तस्य पुरुमीळाजमीळौ सौहोत्रावृषी। अश्विनौ देवते। १ त्रिष्टुप्। २, ३, ५-७ निचृत्त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः। ४ स्वराट् पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः॥**

**अथाध्यापकोपदेशकविषये प्रश्नोत्तरविषयमाह॥**

अब सात ऋचा वाले तेंतालीसवें सूक्त का आरम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में अध्यापकोपदेशकविषय में प्रश्नोत्तर विषय को कहते हैं॥

**क उ॑ श्रवत्कत॒मो य॒ज्ञिया॑नां व॒न्दारु॑ दे॒वः क॑त॒मो जु॑षाते।**

**कस्ये॒मां दे॒वीम॒मृते॑षु प्रेष्ठां॑ हृ॒दि श्रे॑षाम सुष्टु॒तिं सु॑ह॒व्याम्॥ १॥**

**कः। ऊम् इति॑। श्र॒व॒त्। क॒त॒मः। य॒ज्ञिया॑नाम्। व॒न्दारु॑। दे॒वः। क॒त॒मः। जु॒षा॒ते॒। कस्य॑। इ॒माम्। दे॒वीम्। अ॒मृते॑षु। प्रेष्ठा॑म्। हृ॒दि। श्रे॒षा॒म॒। सु॒ऽस्तु॒तिम्। सु॒ऽह॒व्याम्॥ १॥**

**पदार्थः-(कः)** **(उ)** **(श्रवत्)** शृणोति **(कतमः)** **(यज्ञियानाम्)** यज्ञसिद्धिकर्त्तॄणाम् **(वन्दारु)** वन्दनशीलम् **(देवः)** विद्वान् **(कतमः)** **(जुषाते)** सेवते **(कस्य)** **(इमाम्)** **(देवीम्)** देदीप्यमानां विदुषीम् **(अमृतेषु)** मरणरहितेषु **(प्रेष्ठाम्)** अतिशयेन प्रियाम् **(हृदि)** **(श्रेषाम)** सेवेम **(सुष्टुतिम्)** शोभना प्रशंसा यस्यास्ताम् **(सुहव्याम्)** सुष्ठु गृहीतव्याम्॥ १॥

**अन्वयः**-हे विद्वन्! क उ कतमो देवो यज्ञियानां वन्दारु श्रवत्कतमश्च जुषाते। कस्य हृदीमां प्रेष्ठां सुष्टुतिं सुहव्याममृतेषु देवीं श्रेषाम॥ १॥

**भावार्थः**-हे विद्वांसो! कोऽत्र यज्ञः के यज्ञसम्पादकाः को देवः का देवी किममृतं सेवनीयं श्रवणीयञ्चेति पृच्छ्यते, उत्तरमग्रे॥ १॥

**पदार्थः**-हे विद्वन्! **(कः)** कौन **(उ)** और **(कतमः)** कौनसा **(देवः)** विद्वान् **(यज्ञियानाम्)** यज्ञ की सिद्धि करने वालों की **(वन्दारु)** वन्दना करने वाले स्वभाव को **(श्रवत्)** सुनता है और **(कतमः)** कौनसा **(जुषाते)** सेवन करता है **(कस्य)** किस के **(हृदि)** हृदय के निमित्त **(इमाम्)** इस **(प्रेष्ठाम्)** अत्यन्त प्रिय **(सुष्टुतिम्)** उत्तम प्रशंसा युक्त **(सुहव्याम्)** उत्तम प्रकार ग्रहण करने योग्य और **(अमृतेषु)** मरणरहितों में **(देवीम्)** प्रकाशमान और विद्यायुक्त स्त्री की **(श्रेषाम)** सेवा करें॥ १॥

**भावार्थः**-हे विद्वानो! कौन इस संसार में यज्ञ, कौन यज्ञ के करने वाले, कौन विद्वान्, कौन विद्यायुक्त स्त्री तथा कौन अमृत और कौन सेवने और सुनने योग्य है, यह पूछा है, उत्तर आगे हैं॥ १॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**को मृ॑ळाति कत॒म आग॑मिष्ठो दे॒वाना॑मु कत॒मः शंभ॑विष्ठः।**



www.9009.co.in

**रथं कमाहुर्द्रवदश्वमाशुं यं सूर्यस्य दुहितावृणीत॥ २॥**

**कः। मृळाति। कतमः। आऽगमिष्ठः। देवानाम्। ऊम् इति। कतमः। शम्ऽभविष्ठः। रथम्। कम्। आहुः। द्रवत्ऽअश्वम्। आशुम्। यम्। सूर्यस्य। दुहिता। अवृणीत॥ २॥**

**पदार्थः-(कः) (मृळाति)** सुखयति **(कतमः) (आगमिष्ठः)** अतिशयेनागन्ता **(देवानाम्)** विदुषां मध्ये पृथिव्यादीनां वा **(उ) (कतमः) (शम्भविष्ठः)** अतिशयेन कल्याणकारकः **(रथम्)** रमणीयं यानम् **(कम्) (आहुः)** कथयन्ति **(द्रवदश्वम्)** द्रवन्तो द्रुतं गच्छन्तोऽश्वा यस्मिँस्तम् **(आशुम्)** सद्यो गामिनम् **(यम्) (सूर्य्यस्य) (दुहिता)** दुहितेव कान्तिः **(अवृणीत)** स्वीकुरुते॥ २॥

**अन्वयः**-को देवानां मृळाति कतम आगमिष्ठः उ कतमः शम्भविष्ठो देवः कं द्रवदश्वमाशुं रथमाहुर्यं सूर्य्यस्य दुहितावृणीत॥ २॥

**भावार्थः**-हे विद्वांसो! वयं कं सुखकरं भृशमागन्तारं सुष्ठु कल्याणकरं पदार्थमग्निजलाश्वरथं विजानीयामेति मन्त्रद्वयोक्तानां प्रश्नानामिमान्युत्तराणि। य उषा सूर्य्यमिवाऽध्यापकाच्छृणोति वायुमिव विद्यां सेवते पतिव्रतेव विदुषी प्रशंसनीयं पतिं वृणुते यः परोपकारी स सुखकरो विद्युदतिशयेनागन्त्री परमेश्वरोऽतिशयेन कल्याणकरो विदुषां मध्ये विद्वाञ्जलाग्निकलाकौशलेन चालितं विमानादियानं प्रशंसनीयं भवतीति विज्ञेयम्॥ २॥

**पदार्थः-(कः)** कौन **(देवानाम्)** विद्वानों के बीच वा पृथिव्यादिकों में **(मृळाति)** सुख देता है **(कतमः)** कौनसा **(आगमिष्ठः)** अत्यन्त आने वाला **(उ)** और **(कतमः)** कौनसा **(शम्भविष्ठः)** अत्यन्त कल्याण करने वाला विद्वान् **(कम्)** किस **(द्रवदश्वम्)** शीघ्र चलने वाले घोड़ों से युक्त **(आशुम्)** शीघ्रगामी **(रथम्)** रमण करने योग्य वाहन को **(आहुः)** कहते हैं **(यम्)** जिसको **(सूर्य्यस्य)** सूर्य्य की **(दुहिता)** कन्या के सदृश कान्ति **(अवृणीत)** स्वीकार करती है॥ २॥

**भावार्थः**-हे विद्वानो! हम लोग किस सुखकारक निरन्तर आने वाले उत्तम प्रकार कल्याणकारक पदार्थ तथा अग्नि और जल के द्वारा चलने वाले वाहन को उत्तम प्रकार जानें, इस प्रकार दो मन्त्रों में कहे हुए प्रश्नों के ये उत्तर हैं। जो जैसे प्रातर्वेला उषा सूर्य्य को वैसे अध्यापक से सुनता, वायु के सदृश विद्या का सेवन करता है और पतिव्रता स्त्री के सदृश विद्यायुक्त स्त्री प्रशंसा के योग्य पति को स्वीकार करती है, जो परोपकारी है, वह सुख करने वाला, बिजुली अतीव आने वाली, परमेश्वर अत्यन्त कल्याण करने वाला, विद्वानों के मध्य में विद्वान्, जल-अग्नि [के] कलाकौशल से चलाया गया विमान आदि यान प्रशंसा के योग्य होता है, ऐसा जानो॥ २॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**मक्षू हि ष्मा गच्छथ ईवतो द्यूनिन्द्रो न शक्तिं परितक्म्यायाम्।**



www.9009.co.in

**दिव आजाता दिव्या सुपर्णा कया शचीनां भवथः शचिष्ठा॥ ३॥**

**मक्षु। हि। स्म। गच्छथः। ईवतः। द्यून्। इन्द्रः। न। शक्तिम्। परिऽतक्म्यायाम्। दिवः। आऽजाता। दिव्या। सुऽपर्णा। कया। शचीनाम्। भवथः। शचिष्ठा॥ ३॥**

**पदार्थः-(मक्षु)** सद्यः **(हि)** **(स्मा)** एव। अत्र **निपातस्य चे**ति दीर्घः। **(गच्छथः)** **(ईवतः)** बहुगतिमतः **(द्यून्)** प्रकाशान् **(इन्द्रः)** विद्युत् **(न)** इव **(शक्तिम्)** सामर्थ्यम् **(परितक्म्यायाम्)** परितः सर्वतस्तकन्ति हसन्ति यस्यां सृष्टौ तस्याम् **(दिवः)** विद्याप्रकाशात् **(आजाता)** समन्ताज्जातौ **(दिव्या)** दिवि शुद्धे व्यवहारे भवौ **(सुपर्णा)** सुष्ठु पर्णानि पालनानि ययोस्तौ **(कया)** **(शचीनाम्)** प्रज्ञानां वाचां वा **(भवथः)** **(शचिष्ठा)** अतिशयेन प्राज्ञौ॥ ३॥

**अन्वयः**-हे अध्यापकोपदेशकौ दिव्या सुपर्णा दिव आजाता शचिष्ठा! भवन्ताविन्द्र ईवतो द्यून्न परितक्म्यायां शक्तिं गच्छथो हि कया स्मा शचीनां शचिष्ठा मक्षु भवथः॥ ३॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। ये विद्युद्वत्सामर्थ्यं वर्द्धयन्ति ते धीमन्तो भूत्वाऽतुलां श्रियं जगति लभन्ते॥ ३॥

**पदार्थः**-हे अध्यापकोपदेशको **(दिव्या)** शुद्ध व्यवहार में उत्पन्न **(सुपर्णा)** उत्तम पालनों से युक्त **(दिवः)** विद्या के प्रकाश से **(आजाता)** सब प्रकार उत्पन्न हुए **(शचिष्ठा)** अत्यन्त बुद्धिमानो! आप **(इन्द्रः)** बिजुली **(ईवतः)** बहुत गति वाले **(द्यून्)** प्रकाशों को जैसे **(न)** वैसे **(परितक्म्यायाम्)** सब प्रकार हंसने वालों से युक्त सृष्टि में **(शक्तिम्)** सामर्थ्य को **(गच्छथः)** प्राप्त होते हैं **(हि)** ही हो और **(कया, स्मा)** किसी से **(शचीनाम्)** बुद्धियों वा वाणियों के अत्यन्त जानने वाले **(मक्षु)** शीघ्र **(भवथः)** होते हो॥ ३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जो बिजुली के सदृश सामर्थ्य को बढ़ाते हैं, वे बुद्धिमान् होकर अतुल लक्ष्मी को संसार में प्राप्त होते हैं॥ ३॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**का वां भूदुपमातिः कया न आश्विना गमथो हूयमाना।**

**को वां महश्चित् त्यजसो अभीक उरुष्यतं माध्वी दस्रा न ऊती॥ ४॥**

**का। वाम्। भूत्। उपऽमातिः। कया। नः। आ। अश्विना। गमथः। हूयमाना। कः। वाम्। महः। चित्। त्यजसः। अभीके। उरुष्यतम्। माध्वी इति। दस्रा। नः। ऊती॥ ४॥**

**पदार्थः-(का)** **(वाम्)** युवयोः **(भूत्)** भवति **(उपमातिः)** उपमानम् **(कया)** **(नः)** अस्मान् **(आ)** **(अश्विना)** व्याप्तविद्यावध्यापकोपदेशकौ **(गमथः)** प्राप्नुथः **(हूयमाना)** कृताह्वानौ प्रशंसितौ **(कः)** **(वाम्)** युवयोः **(महः)** महान् **(चित्)** **(त्यजसः)** त्यक्तुं योग्यो व्यवहारः **(अभीके)** समीपे **(उरुष्यतम्)**



www.9009.co.in

सेवेतम् **(माध्वी)** माधुर्यादिगुणोपेतौ **(दस्रा)** दुःखोपक्षयितारौ **(नः)** अस्मान् **(ऊती)** रक्षणादिक्रियया॥४॥

**अन्वयः**-हे हूयमाना माध्वी दस्राऽश्विना! वां कोपमातिर्भूत्। युवां कया रीत्या न आ गमथः को वामभीके महश्चित् त्यजसोऽस्त्यभीके कयोती न उरुष्यतम्॥४॥

**भावार्थः**-हे अध्यापकोपदेशकौ! तदैव युवयोरुत्तमोपमा जायते यदाऽस्मान् विद्यावतः कुर्य्यातं दुष्टान् दोषान् दूरे गमयतम्॥४॥

**पदार्थः**-हे **(हूयमाना)** आह्वान के किये अर्थात् बुलावा दिये हुए प्रशंसा को प्राप्त **(माध्वी)** मधुरता आदि गुणों से युक्त **(दस्रा)** दुःख के नाश करने वाले **(अश्विना)** विद्या व्याप्त अध्यापक और उपदेशकजनो! **(वाम्)** आप दोनों का **(का)** कौन **(उपमातिः)** उपमान **(भूत्)** होता है। और आप दोनों **(कया)** किस रीति से **(नः)** हम लोगों को **(आ, गमथः)** प्राप्त होते हो और **(कः)** कौन **(वाम्)** आप दोनों के **(अभीके)** समीप में **(महः)** बड़ा **(चित्)** भी **(त्यजसः)** त्याग करने योग्य व्यवहार है और समीप में किस **(ऊती)** रक्षण आदि क्रिया से **(नः)** हम लोगों की **(उरुष्यतम्)** सेवा करो॥४॥

**भावार्थः**-हे अध्यापक और उपदेशक जनो! तभी आप दोनों की श्रेष्ठ उपमा होती है कि जब हम लोगों को विद्यावान् करो और दुष्ट दोषों को दूर पहुंचाओ॥४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**उरु वां रथः परि नक्षति द्यामा यत्समुद्रादभि वर्तते वाम्।**

**मध्वा माध्वी मधु वां प्रुषायन् यत्सीं वां पृक्षो भुरजन्त पक्वाः॥५॥**

**उरु। वाम्। रथः। परि। नक्षति। द्याम्। आ। यत्। समुद्रात्। अभि। वर्तते। वाम्। मध्वा। माध्वी इति। मधु। वाम्। प्रुषायन्। यत्। सीम्। वाम्। पृक्षः। भुरजन्त। पक्वाः॥५॥**

**पदार्थः**-**(उरु)** बहु **(वाम्)** युवयोः **(रथः)** **(परि)** सर्वतः **(नक्षति)** व्याप्नोति **(द्याम्)** **(आ)** **(यत्)** यः **(समुद्रात्)** अन्तरिक्षाज्जलाशयाद्वा **(अभि)** आभिमुख्ये **(वर्त्तते)** **(वाम्)** युवाम् **(मध्वा)** मधुना **(माध्वी)** मधुरा नीतिः **(मधु)** **(वाम्)** युवाम् **(प्रुषायन्)** प्राप्नुवन्ति **(यत्)** ये **(सीम्)** सर्वतः **(वाम्)** युवाम् **(पृक्षः)** सम्बन्धिनः **(भुरजन्त)** प्राप्नुवन्ति **(पक्वाः)** परिपक्वज्ञानाः परिपक्वस्वरूपा वा॥५॥

**अन्वयः**-हे अध्यापकोपदेशकौ! यो वां रथो द्यामुरु परि नक्षति यद्यो वां समुद्रादभ्या वर्त्तते वां माध्वी मध्वा मधु सीम्भुरजन्त यद्ये पृक्षः पक्वा वां प्रुषायँस्तान् विदुषो युवां सम्पादयेतम्॥५॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! ये युष्मान् विदुषः कुर्य्युस्तान् सेवध्वम्॥५॥

**पदार्थः**-हे अध्यापक और उपदेशक जनो! जो **(वाम्)** आप दोनों का **(रथः)** वाहन **(द्याम्)** आकाश को **(उरु)** बहुत **(परि)** सब ओर से **(नक्षति)** व्याप्त होता है **(यत्)** जो **(वाम्)** आप दोनों को



www.9009.co.in

**(समुद्रात्)** अन्तरिक्ष वा जलाशय से **(अभि)** सम्मुख **(आ, वर्त्तते)** वर्त्तमान होता है तथा **(वाम्)** आप दोनों और **(माध्वी)** मधुर नीति **(मध्वा)** मधुर गुण से **(मधु)** मधुरकर्म्म को **(सीम्)** सब ओर से **(भुरजन्त)** प्राप्त होती हैं और **(यत्)** जो **(पृक्षः)** सम्बन्धी जन **(पक्वाः)** पूर्ण ज्ञान से युक्त वा जिनका स्वरूप परिपक्व अर्थात् पूर्ण अवस्था वाले **(वाम्)** आप दोनों को **(प्रुषायन्)** प्राप्त होते हैं, उनको विद्वान् आप दोनों करें॥५॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो आप लोगों को विद्वान् करें, उनकी निरन्तर सेवा करो॥५॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**सिन्धु॑र्ह वां र॒सया॑ सिञ्च॒दश्वा॒न् घृ॒णा वयो॑ऽरु॒षास॒: परि॑ ग्मन्।**

**तदू॒ षु वा॑मजि॒रं चे॑ति॒ यानं॒ येन॒ पती॒ भव॑थः सू॒र्याया॑:॥६॥**

**सिन्धु॑:। ह॒। वा॒म्। र॒सया॑। सि॒ञ्च॒त्। अश्वा॑न्। घृ॒णा। वय॑:। अ॒रु॒षास॑:। परि॑। ग्म॒न्। तत्। ऊ॒म् इति॑। सु। वा॒म्। अ॒जि॒रम्। चे॒ति॒। यान॑म्। येन॑। पती॒ इति॑। भव॑थ:। सू॒र्याया॑:॥६॥**

**पदार्थः**-**(सिन्धुः)** नदी समुद्रो वा **(ह)** किल **(वाम्)** **(रसया)** रसादिना **(सिञ्चत्)** सिञ्चति **(अश्वान्)** सद्यो गामिनोऽग्न्यादीन् **(घृणा)** प्रदीप्ताः **(वयः)** व्यापिनः **(अरुषासः)** रक्तगुणविशिष्टाः **(परि)** **(ग्मन्)** गच्छन्ति **(तत्)** (उ) **(सु)** **(वाम्)** युवाम् **(अजिरम्)** प्राप्तव्यं प्रक्षेपकं वा **(चेति)** जानाति। अत्र विकरणस्य लुक् **(यानम्)** **(येन)** **(पती)** पालकौ **(भवथः)** **(सूर्य्यायाः)** सूर्य्यस्येयं कान्तिरुषास्तस्याः॥६॥

**अन्वयः**-हे अध्यापकोपदेशकौ! यः सिन्धू रसयो वां सिञ्चद्वयो घृणाऽरुषासोऽश्वान् परि ग्मँस्तदु वामजिरं सु चेति येन यानं प्राप्य सूर्य्यायाः पती भवथस्तौ ह विजानीयाताम्॥६॥

**भावार्थः**-हे अध्यापकोपदेशकौ! भवन्तौ यथा सुरसेन जलेन वृक्षान् क्षेत्रादिकं च संसिच्य वर्द्धयित्वैतेभ्यः फलानि प्राप्नुवन्ति तथैवं सर्वान् मनुष्यानध्याप्योपदिश्य प्रज्ञया वर्धयित्वा सुखफलौ भवेताम्॥६॥

**पदार्थः**-हे अध्यापक और उपदेशक जनो! जो **(सिन्धुः)** नदी वा समुद्र **(रसया)** रस आदि से (उ) तो **(वाम्)** आप दोनों को **(सिञ्चत्)** सींचता है तथा **(वयः)** व्याप्त होने वाले **(घृणा)** प्रदीप्त **(अरुषासः)** रक्त गुण से विशिष्ट पदार्थ **(अश्वान्)** शीघ्र चलने वाले अग्न्यादिकों को **(परि, ग्मन्)** सब ओर से प्राप्त होते हैं **(तत्)** उनको और **(वाम्)** आप दोनों को वा **(अजिरम्)** प्राप्त होने योग्य और फेंकने वाले को **(सु चेति)** उत्तम प्रकार जानता है वा **(येन)** जिससे **(यानम्)** वाहन को प्राप्त होकर **(सूर्य्यायाः)** सूर्य्य की कान्तिरूप प्रातःकाल के **(पती)** पालन करने वाले **(भवथः)** होते हो, उन [दोनों] को **(ह)** निश्चय जानो॥६॥



www.9009.co.in

**भावार्थ:**-हे अध्यापक और उपदेशक जनो! आप जैसे उत्तम रस युक्त जल से वृक्षों और क्षेत्रादि को उत्तम प्रकार सिञ्चन कर और बढ़ाय के इन से फलों को प्राप्त होते हैं, वैसे ही सब मनुष्यों को पढ़ा उपदेश दे और बुद्धि से बढ़ाय कर सुखरूपी फलयुक्त होओ॥६॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**इहेह यद्वां समना पपृक्षे सेयमस्मे सुमतिर्वाजरत्ना।**

**उरुष्यतं जरितारं युवं ह श्रितः कामो नासत्या युवद्रिक्॥७॥१९॥**

**इहऽइह। यत्। वाम्। समना। पपृक्षे। सा। इयम्। अस्मे इति। सुऽमतिः। वाजऽरत्ना। उरुष्यतम्। जरितारम्। युवम्। ह। श्रितः। कामः। नासत्या। युवद्रिक्॥७॥**

**पदार्थः**-(**इहेह**) अस्मिन् संसारे (**यत्**) या (**वाम्**) युवाम् (**समना**) समनस्कौ (**पपृक्षे**) सम्बध्नाति (**सा**) (**इयम्**) (**अस्मे**) अस्मान् (**सुमतिः**) शोभना प्रज्ञा (**वाजरत्ना**) वाजो बोधो रत्नं धनं ययोस्तौ (**उरुष्यतम्**) सेवेथाम् (**जरितारम्**) स्तावकम् (**युवम्**) युवाम् (**ह**) (**श्रितः**) आश्रितः (**कामः**) इच्छा (**नासत्या**) अविद्यमानासत्याचरणौ (**युवद्रिक्**) युवां प्राप्नुवन्॥७॥

**अन्वयः**-हे वाजरत्ना नासत्या समना यद्या सुमतिर्वां पपृक्षे सेयमिहेहास्मे सुसेवतां युवं ह जरितारमुरुष्यतं तौ वां युवद्रिच्छ्रितः कामः सेवताम्॥७॥

**भावार्थः**-हे अध्यापकोपदेशका! भवन्त इह या प्रज्ञा युष्मान् प्राप्नुयात् तां सर्वेभ्यः प्रयच्छत यादृशी स्वहितायेच्छा क्रियते तादृशी सर्वार्था कार्य्या॥७॥

अत्राऽध्यापकोपदेशकाऽध्याप्योपदेश्यगुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति त्रिचत्वारिंशत्तमं सूक्तमेकोनविंशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थ:**-हे (**वाजरत्ना**) बोधरुपरत्न धन जिनके वे (**नासत्या**) असत्य आचरण से रहित (**समना**) तुल्य मन वाले और (**यत्**) जो (**सुमतिः**) उत्तम बुद्धि (**वाम्**) आप दोनों को (**पपृक्षे**) सम्बन्धित होती है (**सा, इयम्**) सो यह (**इहेह**) इस संसार में (**अस्मे**) हम लोगों की उत्तम प्रकार सेवा करे (**युवम्**) आप दोनों (**ह**) ही (**जरितारम्**) स्तुति करने वाले की (**उरुष्यतम्**) सेवा करें उन (**युवद्रिक्**) आप दोनों को प्राप्त होती (**श्रितः**) और आश्रित हुई (**कामः**) इच्छा सेवे॥७॥

**भावार्थ:**-हे अध्यापक और उपदेशक जनो! आप लोग इस संसार में जो बुद्धि आप लोगों को प्राप्त होवे उसको सब के लिये देओ और जैसी अपने हित के लिये इच्छा करते हो, वैसी सब के लिये करो॥७॥

इस सूक्त में अध्यापक और उपदेशक, पढ़ने और उपदेश सुनने वाले के गुणवर्णन होने से इस सूक्त के अर्थ की पिछले सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह तेतालीसवां सूक्त और उन्नीसवां वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

**अथ सप्तर्चस्य चतुश्चत्वारिंशत्तमस्य सूक्तस्य पुरुमीढाजमीढौ सौहोत्रावृषी। अश्विनौ देवते। १, ३, ६, ७ निचृत्त्रिष्टुप्। २ त्रिष्टुप्। ५ विराट् त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः। ४ भुरिक् पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः॥**

**अथाध्यापकोपदेशकविषये शिल्पविद्याविषयमाह॥**

अब सात ऋचा वाले चवालीसवें सूक्त का आरम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में अध्यापक और उपदेशकविषय में शिल्पविद्याविषय को कहते हैं॥

**तं वां रथं वयमद्या हुवेम पृथुज्रयमश्विना संगतिं गोः।**

**यः सूर्यां वहति वन्धुरायुर्गिर्वाहसं पुरुतमं वसूयुम्॥ १॥**

**तम्। वाम्। रथम्। वयम्। अद्य। हुवेम। पृथुऽज्रयम्। अश्विना। सम्ऽगतिम्। गोः। यः। सूर्याम्। वहति। वन्धुरऽयुः। गिर्वाहसम्। पुरुऽतमम्। वसुऽयुम्॥ १॥**

**पदार्थः**-(**तम्**) (**वाम्**) (**रथम्**) रमणीयं यानम् (**वयम्**) (**अद्या**) अस्मिन्नहनि। अत्र **संहितायामिति** दीर्घः। (**हुवेम**) आदद्याम (**पृथुज्रयम्**) विस्तीर्णं बहुगतिम् (**अश्विना**) अध्यापकोपदेशकौ (**सङ्गतिम्**) (**गोः**) पृथिव्याः (**यः**) (**सूर्य्याम्**) सूर्य्यसम्बन्धिनीं कान्तिम् (**वहति**) (**वन्धुरायुः**) वन्धुरमायुर्यस्य सः (**गिर्वाहसम्**) यो गिरा वहति प्राप्यते वा तम् (**पुरुतमम्**) यः पुरून् बहून् ताम्यति तम् (**वसूयुम्**) आत्मनो वसु द्रव्यमिच्छुम्॥ १॥

**अन्वयः**-हे अश्विना! वयमद्या वां पृथुज्रयन्तं रथं हुवेम गोः सङ्गतिं हुवेम यो वन्धुरायुः सूर्य्यां वहति यं पुरुतमं गिर्वाहसं वसूयुं हुवेम स एव सुखी भवति॥ १॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! येनाग्निजलाभ्यां शिल्पविद्यासाधनं रथादिकं सम्पाद्यते स एव स्वात्मवत् सर्वान् प्रीणाति॥ १॥

**पदार्थः**-हे (**अश्विना**) अध्यापक और उपदेशक जनो! (**वयम्**) हम लोग (**अद्या**) आज (**वाम्**) तुम दोनों के (**पृथुज्रयम्**) विस्तीर्ण और बहुत गति वाले (**तम्**) उस (**रथम्**) रमण करने योग्य वाहन को (**हुवेम**) ग्रहण करें और (**गोः**) पृथिवी के (**सङ्गतिम्**) सङ्ग को ग्रहण करें (**यः**) जो (**वन्धुरायुः**) थोड़ी अवस्था वाला (**सूर्य्याम्**) सूर्य्यसम्बन्धिनी कान्ति अर्थात् तेज की (**वहति**) प्राप्ति करता है जिस (**पुरुतमम्**) बहुतों को ग्लानि करने (**गिर्वाहसम्**) वाणी से प्राप्त करने वा प्राप्त होने (**वसूयुम्**) और अपने को द्रव्य की इच्छा करने वाले का ग्रहण करें, वही सुखी होता है॥ १॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जिस अग्नि और जल से शिल्पविद्या ही साधन जिसका ऐसा रथ आदि उत्पन्न किया जाता है, वही अपने आत्मा के तुल्य सब को प्रसन्न करता है॥ १॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥



www.9009.co.in

**यु॒वं श्रिय॑मश्विना दे॒वता॒ तां दिवो॑ नपाता वनथ॒: शची॑भिः।**

**यु॒वोर्वपु॑र॒भि पृक्ष॑: सचन्ते॒ वह॑न्ति॒ यत्क॑कु॒हासो॒ रथे॑ वाम्॥ २॥**

**यु॒वम्। श्रिय॑म्। अ॒श्वि॒ना॒। दे॒वता॑। ताम्। दिव॑ः। न॒पा॒ता॒। व॒न॒थ॒ः। शची॑भिः। यु॒वोः। वपु॑ः। अ॒भि। पृक्ष॑ः। स॒च॒न्ते॒। वह॑न्ति। यत्। क॒कु॒हास॑ः। रथे॑। वा॒म्॥ २॥**

**पदार्थः**-(**युवम्**) युवाम् (**श्रियम्**) लक्ष्मीम् (**अश्विना**) अध्यापकोपदेशकौ (**देवता**) दिव्यगुणसम्पन्नौ (**ताम्**) (**दिवः**) द्युलोकस्य (**नपाता**) पातरहितौ (**वनथः**) संसेवेथाम् (**शचीभिः**) प्रज्ञाभिः (**युवोः**) युवयोः (**वपुः**) शरीरम् (**अभि**) आभिमुख्ये (**पृक्षः**) सम्पर्कः (**सचन्ते**) सम्बध्नन्ति (**वहन्ति**) (**यत्**) याम् (**ककुहासः**) सर्वा दिशः (**रथे**) (**वाम्**) युवयोः॥ २॥

**अन्वयः**-हे दिवो नपाता देवताश्विना! युवं शचीभिः तां श्रियं वनथो यद्यां वां रथे युवोः पृक्षो वपुरभि सचन्ते ककुहासो वहन्ति॥ २॥

**भावार्थः**-ये विद्वांसः प्रज्ञां प्राप्याऽन्येभ्यो ददति ते सर्वासु दिक्षु पूज्या भवन्ति॥ २॥

**पदार्थः**-हे (**दिवः**) द्रष्टव्य अत्यन्त सुख के (**नपाता**) पतन से रहित (**देवता**) दिव्यगुणसम्पन्न (**अश्विना**) अध्यापक और उपदेशक जनो! (**युवम्**) आप दोनों (**शचीभिः**) बुद्धियों से (**ताम्**) उस (**श्रियम्**) लक्ष्मी का (**वनथः**) सेवन करो (**यत्**) जिसको (**वाम्**) आप दोनों के (**रथे**) वाहन में (**युवोः**) आप दोनों के (**पृक्षः**) सम्बन्ध और (**वपुः**) शरीर को (**अभि**) सम्मुख (**सचन्ते**) सम्बन्धयुक्त करती (**ककुहासः**) सम्पूर्ण दिशा (**वहन्ति**) प्राप्त होती हैं॥ २॥

**भावार्थः**-जो विद्वान् जन बुद्धि को प्राप्त होकर अन्य जनों के लिये देते हैं, वे सम्पूर्ण दिशाओं में पूजने अर्थात् सत्कार करने योग्य होते हैं॥ २॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**को वा॑म॒द्या क॑रते रा॒तह॑व्य ऊ॒तये॑ वा सु॒तपेया॑य वा॒र्कैः।**

**ऋ॒तस्य॑ वा व॒नुषे॑ पू॒र्व्याय॒ नमो॑ येमा॒नो अ॑श्वि॒ना व॑वर्तत्॥ ३॥**

**कः। वा॒म्। अ॒द्य। क॒र॒ते॒। रा॒तऽह॑व्यः। ऊ॒तये॑। वा॒। सु॒त॒ऽपेया॑य। वा॒। अ॒र्कैः। ऋ॒तस्य॑। वा॒। व॒नुषे॑। पू॒र्व्याय॑। नम॑ः। ये॒मा॒नः। अ॒श्वि॒ना॒। आ। व॒व॒र्त॒त्॥ ३॥**

**पदार्थः**-(**कः**) (**वाम्**) युवाम् (**अद्या**) अस्मिन्नहनि (**करते**) करोति (**रातहव्यः**) दत्तदातव्यः (**ऊतये**) रक्षणाद्याय (**वा**) (**सुतपेयाय**) निष्पन्नरसपातव्याय (**वा**) (**अर्कैः**) सत्कारैः (**ऋतस्य**) सत्यस्य (**वा**) (**वनुषे**) याचसे (**पूर्व्याय**) पूर्वेषु कुशलाय (**नमः**) अन्नम् (**येमानः**) नियच्छन्तः (**अश्विना**) अध्यापकोपदेशकौ (**आ**) (**ववर्त्तत्**) वर्त्तते॥ ३॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे अश्विनाऽद्या वां को रातहव्य ऊतये वाद्या सुतपेयाय करते वाऽर्कैः सत्करोति वर्त्तस्य पूर्व्याय नमो ददाति अनुकूलो आ ववर्त्तत् तद्ये येमानः सत्कुर्वन्ति तान् युवां सत्कुर्य्यातम्। हे विद्वन्! यतस्त्वमाभ्यां विद्यां वनुषे तस्मादेतौ सततं सत्कुरु॥३॥

**भावार्थः**-हे अध्यापकोपदेशकौ! ये युवां सत्कुर्य्युस्तान् सुशिक्षितान् सभ्यान् सम्पादयतम्, येभ्यो विद्यां ग्राहयतं तान् सततं पूजयतं च॥३॥

**पदार्थः**-हे **(अश्विना)** अध्यापक और उपदेशक जनो! **(अद्या)** आज **(वाम्)** आप दोनों को **(कः)** कौन **(रातहव्यः)** देने योग्य को दिये हुए **(ऊतये)** रक्षण आदि के लिये **(वा)** वा आज **(सुतपेयाय)** उत्पन्न जो पीने योग्य रस उसके लिये **(करते)** करता अर्थात् प्रयत्नयुक्त करता **(वा)** वा **(अर्कैः)** सत्कारों से सत्कार करता **(वा)** वा **(ऋतस्य)** सत्य के सम्बन्ध में **(पूर्व्याय)** प्राचीन जनों में चतुर के लिये **(नमः)** अन्न को देता और अनुकूल हुआ **(आ, ववर्त्तत्)** वर्त्ताव करता है, उसका **(येमानः)** जो नियम करते हुए सत्कार करते हैं, उनका आप दोनों सत्कार करें। और हे विद्वन्! जिस कारण आप इन दोनों से विद्या को **(वनुषे)** मांगते हो, इससे इन दोनों का निरन्तर सत्कार करो॥३॥

**भावार्थः**-हे अध्यापक और उपदेशक जनो! जो आप दोनों का सत्कार करें, उनको उत्तम प्रकार शिक्षित और सभ्य अर्थात् सभा के योग्य करो और जिनसे विद्या का ग्रहण कराओ, उनका निरन्तर सत्कार भी करो॥३॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**हिरण्ययेन पुरुभू रथेनेमं यज्ञं नासत्योप यातम्।**

**पिबाथ इन्मधुनः सोम्यस्य दधथो रत्नं विधते जनाय॥४॥**

**हिरण्ययेन। पुरुभू इति पुरुऽभू। रथेन। इमम्। यज्ञम्। नासत्या। उप। यातम्। पिबाथः। इत्। मधुनः। सोम्यस्य। दधथः। रत्नम्। विधते। जनाय॥४॥**

**पदार्थः**-**(हिरण्ययेन)** ज्योतिर्मयेन सुवर्णाद्यलङ्कृतेन **(पुरुभू)** यो पुरून् भावयतस्तौ **(रथेन)** यानेन **(इमम्)** **(यज्ञम्)** अध्यापनाऽध्ययनाख्यम् **(नासत्या)** सत्याचरणावध्यापकोपदेशकौ **(उप)** **(यातम्)** **(पिबाथः)** पिबतम् **(इत्)** एव **(मधुनः)** मधुरादिगुणयुक्तस्य **(सोम्यस्य)** सोमेषु भवस्य **(दधथः)** **(रत्नम्)** रमणीयं धनम् **(विधते)** पुरुषार्थं कुर्वते **(जनाय)** मनुष्याय॥४॥

**अन्वयः**-हे पुरुभू नासत्याऽश्विनौ! युवां हिरण्ययेन रथेनेमं यज्ञमुपयातं मधुनः सोम्यस्य रसं पिबाथो विधते जनाय रत्नं दधथस्तावित्सुखिनौ कथं न भवेतम्॥४॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! ये विद्याप्रचारकाः स्युस्त एव जगत्सुखकरा भवेयुः॥४॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-हे **(पुरुभू)** बहुतों की भावना कराने और **(नासत्या)** सत्य आचरण वाले अध्यापक और उपदेशक जनो! आप दोनों **(हिरण्ययेन)** ज्योतिर्मय और सुवर्ण आदि से शोभित **(रथेन)** वाहन से **(इमम्)** इस **(यज्ञम्)** पढ़ाने और पढ़ने रूप यज्ञ को **(उप, यातम्)** प्राप्त होओ और **(मधुनः)** मधुर आदि गुणों से युक्त **(सोम्यस्य)** सोमलतारूप ओषधियों में उत्पन्न पदार्थ के रस का **(पिबाथः)** पान करो और **(विधते)** पुरुषार्थ को करते हुए **(जनाय)** मनुष्य के लिये **(रत्नम्)** सुन्दर धन को **(दधथः)** तुम धारण करते हो वे [दोनों] **(इत्)** ही सुखी कैसे न होओ॥४॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो शिल्पविद्या के प्रचार करने वाले हों, वे ही संसार के सुख करने वाले होवें॥४॥

**अथ राजामात्यविषयमाह॥**

अब राजा और अमात्य विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**आ नो यातं दिवो अच्छा पृथिव्या हिरण्ययेन सुवृता रथेन।**

**मा वामन्ये नि यमन् देवयन्तः सं यद्दे नाभिः पूर्व्या वाम्॥५॥**

**आ। नः। यातम्। दिवः। अच्छ। पृथिव्याः। हिरण्ययेन। सुऽवृता। रथेन। मा। वाम्। अन्ये। नि। यमन्। देवऽयन्तः। सम्। यत्। ददे। नाभिः। पूर्व्या। वाम्॥५॥**

**पदार्थः**-**(आ)** **(नः)** **(यातम्)** प्राप्नुतम् **(दिवः)** कामयमानाम् **(अच्छा)** सम्यक्। अत्र **संहितायामि**ति दीर्घः। **(पृथिव्याः)** भूम्याः **(हिरण्ययेन)** सुवर्णादिनाऽलङ्कृतेन **(सुवृता)** शोभनावरणेन **(रथेन)** विमानादियानेन **(मा)** **(वाम्)** युवयोः **(अन्ये)** **(नि)** **(यमन्)** निग्रहं कुर्वन्तु **(देवयन्तः)** कामयन्तः **(सम्)** **(यत्)** **(ददे)** ददामि **(नाभिः)** नाभिरिव वर्त्तमानः **(पूर्व्या)** पूर्वैः कृतेषु कुशलौ **(वाम्)** युवाभ्याम्॥५॥

**अन्वयः**-हे पूर्व्या राजाऽमात्यौ! वां सुवृता हिरण्ययेन रथेन पृथिव्या दिवो नोऽच्छाऽऽयातम्। यतोऽन्ये देवयन्तो वां मा नियमन् यदहं नाभिरिव वां सन्ददे तद्गृह्णीतम्॥५॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। सर्वे प्रजाराजजना राज्ञो राजपुरुषाणाञ्च सङ्गं सदैवेच्छेयुः सदैव सुखदुःखे भुञ्जीरन्॥५॥

**पदार्थः**-हे **(पूर्व्या)** प्राचीनों से किये हुओं में चतुर राजा औ मन्त्री जनो! **(वाम्)** आप दोनों के **(सुवृता)** सुन्दर परदे से युक्त **(हिरण्ययेन)** सुवर्ण आदि से शोभित **(रथेन)** विमान आदि वाहन से **(पृथिव्याः)** भूमि की **(दिवः)** कामना करते हुए **(नः)** हम लोगों को **(अच्छा)** उत्तम प्रकार **(आ, यातम्)** प्राप्त होओ जिससे **(अन्ये)** अन्य जन **(देवयन्तः)** कामना करते हुए **(वाम्)** आप दोनों से **(मा)** नहीं **(नि, यमन्)** निग्रह करें और **(यत्)** जिसको मैं **(नाभिः)** नाभि के सदृश वर्त्तमान आप दोनों को **(सम्, ददे)** अच्छे प्रकार देता हूँ, उसका ग्रहण करो॥५॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। सब प्रजा और राजाजन, राजा और राजा के पुरुषों के सङ्ग की सदा ही इच्छा करें और सदैव सुख और दु:ख को भोगें॥५॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**नू नो रयिं पुरुवीरं बृहन्तं दस्रा मिमाथामुभयेष्वस्मे।**

**नरो यद्वामश्विना स्तोममावन्त्सधस्तुतिमाजमीळ्हासो अग्मन्॥६॥**

**नु। नः। रयिम्। पुरुऽवीरम्। बृहन्तम्। दस्रा। मिमाथाम्। उभयेषु। अस्मे इति। नरः। यत्। वाम्। अश्विना। स्तोमम्। आवन्। सधऽस्तुतिम्। आजऽमीळ्हासः। अग्मन्॥६॥**

**पदार्थः**-(**नु**) सद्यः (**नः**) अस्मभ्यम् (**रयिम्**) (**पुरुवीरम्**) बहवो वीरा यस्मात्तम् (**बृहन्तम्**) महान्तम् (**दस्रा**) दु:खोपक्षयितारौ (**मिमाथाम्**) विधत्तम् (**उभयेषु**) राजप्रजाजनेषु (**अस्मे**) अस्मासु (**नरः**) नायकाः (**यत्**) ये (**वाम्**) युवाम् (**अश्विना**) सूर्य्याचन्द्रमसाविव शुभगुणयुक्तौ (**स्तोमम्**) प्रशंसाम् (**आवन्**) प्राप्नुयामः (**सधस्तुतिम्**) सहकीर्त्तिम् (**आजमीळहासः**) येऽजान् विद्यया सिञ्चन्ति तदपत्यानि (**अग्मन्**) प्राप्नुवन्ति॥६॥

**अन्वयः**-हे दस्राऽश्विना यदाजमीळहासो नरो! वां सधस्तुतिमग्मन्स्तोममावँस्तेभ्यो नोऽस्मभ्यं युवां पुरुवीरं बृहन्तं रयिं मिमाथाम्। यदुभयेष्वस्मे श्रीर्नु वर्द्धेत॥६॥

**भावार्थः**-हे राजमुख्याऽमात्यौ! भवन्तौ सूर्य्याचन्द्रवदस्मासु वर्तेथाम्। पुष्कलां श्रियं स्थापयत यतो वयं धनाढ्या स्याम॥६॥

**पदार्थः**-हे (**दस्रा**) दु:ख के नाश करने वाले (**अश्विना**) सूर्य्य और चन्द्रमा के सदृश श्रेष्ठ गुणों से युक्त (**यत्**) जो (**आजमीळहासः**) बकरों को विद्या से सिञ्चन करने वालों के पुत्र (**नरः**) नायकजन! (**वाम्**) आप दोनों को और (**सधस्तुतिम्**) साथ कीर्त्ति को (**अग्मन्**) प्राप्त होते और (**स्तोमम्**) प्रशंसा को (**आवन्**) हम प्राप्त होते हैं उन (**नः**) हम सब लोगों के लिये आप दोनों (**पुरुवीरम्**) बहुत वीर हों जिससे उस (**बृहन्तम्**) बड़े (**रयिम्**) धन को (**मिमाथाम्**) धारण करो जिससे (**उभयेषु**) दोनों राजा और प्रजा जनों [में] (**अस्मे**) हम लोगों में लक्ष्मी (**नु**) शीघ्र बड़े॥६॥

**भावार्थः**-हे राजन् और मुख्य मन्त्रीजनो! आप दोनों सूर्य्य और चन्द्रमा के सदृश हम लोगों में वर्त्ताव कीजिये और बहुत लक्ष्मी को स्थापित कीजिये, जिससे हम लोग धन से युक्त होवें॥६॥

**अथ सज्जनगुणविषयमाह॥**

अब सज्जन विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**इहेह यद्वां समना पपृक्षे सेयमस्मे सुमतिर्वाजरत्ना।**



www.9009.co.in

**उ॒रु॒ष्यतं॑ जरि॒तारं॑ यु॒वं ह॑ श्रि॒तः कामो॑ नासत्या युव॒द्रिक्॥७॥२०॥**

**इ॒हऽइ॑ह। यत्। वा॒म्। स॒म॒ना। प॒पृ॒क्षे। सा। इ॒यम्। अ॒स्मे इति॑। सु॒ऽम॒तिः। वा॒ज॒र॒त्ना। उ॒रु॒ष्यत॑म्। ज॒रि॒तार॑म्। यु॒वम्। ह॒। श्रि॒तः। काम॑ः। ना॒स॒त्या॒। यु॒व॒द्रिक्॥७॥**

**पदार्थः**-(**इहेह**) अस्मिञ्जगति (**यत्**) या (**वाम्**) (**समना**) सान्त्वनादिगुणयुक्ता (**पपृक्षे**) सम्बध्नातु (**सा**) (**इयम्**) (**अस्मे**) अस्मान् (**सुमतिः**) (**वाजरत्ना**) विज्ञानधनप्राप्तिसाधिका (**उरुष्यतम्**) सेवेतम् (**जरितारम्**) सकलविद्यास्तावकम् (**युवम्**) युवाम् (**ह**) खलु (**श्रितः**) आश्रितः (**कामः**) (**नासत्या**) धर्म्मात्मानौ (**युवद्रिक्**) युवां प्रापकः॥७॥

**अन्वयः**-हे नासत्याऽध्यापकोपदेशकाविहेह वां यद्या समना वाजरत्ना सुमतिरस्ति सेयमस्मे पपृक्षे योऽयं युवद्रिक् कामो जरितारं श्रितस्तं ह युवमुरुष्यतम्॥७॥

**भावार्थः**-मनुष्यैः सदात्राप्तानां प्रज्ञेषणीया सत्यस्य कामना च याभ्यां सर्वेच्छा पूर्णा स्यादिति॥७॥

अत्राऽध्यापकोपदेशकराजामात्यसज्जनगुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति चतुश्चत्वारिंशत्तमं सूक्तं विंशो वर्गश्च समाप्तः।**

**पदार्थः**-हे (**नासत्या**) धर्मात्मा अध्यापक और उपदेशक जनो! (**इहेह**) इस संसार में (**वाम्**) आप दोनों की (**यत्**) जो (**समना**) शान्ति आदि गुणों से युक्त (**वाजरत्ना**) विज्ञान रूप धन की प्राप्ति सिद्ध करने वाली (**सुमतिः**) श्रेष्ठ मति है (**सा**) सो (**इयम्**) यह (**अस्मे**) हम लोगों को (**पपृक्षे**) सम्बन्धयुक्त करे जो यह और (**युवद्रिक्**) आप दोनों को प्राप्त कराने वाला (**कामः**) मनोरथ (**जरिताम्**) सम्पूर्ण विद्याओं के स्तुति करने वाले को (**श्रितः**) आश्रित है (**ह**) उसी का (**युवम्**) आप (**उरुष्यतम्**) सेवन करें॥७॥

**भावार्थः**-मनुष्यों को चाहिये सदा इस संसार में यथार्थवक्ता पुरुषों की बुद्धि की इच्छा करें और सत्य की कामना करें, जिससे सम्पूर्ण इच्छा पूर्ण होवे॥७॥

इस सूक्त में अध्यापक, उपदेशक, राजा, अमात्य और सज्जन के गुणों का वर्णन होने से इस सूक्त के अर्थ की पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह चवालीसवां सूक्त और बीसवां वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

**अथ सप्तर्चस्य पञ्चचत्वारिंशत्तमस्य सूक्तस्य वामदेव ऋषिः। अश्विनौ देवते। १, ३, ४ जगती। ५ निचृज्जगती। ६ विराट् जगती छन्दः। निषादः स्वरः। २ भुरिक् त्रिष्टुप्। ७ निचृत्त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः॥**

**अथ सूर्य्यविषयमाह॥**

अब सात ऋचा वाले पैंतालीसवें सूक्त का प्रारम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र से सूर्य्यविषय को कहते हैं॥

**एष स्य भानुरुदियर्ति युज्यते रथः परिज्मा दिवो अस्य सानवि।**

**पृक्षासो अस्मिन् मिथुना अधि त्रयो दृतिस्तुरीयो मधुनो वि रप्शते॥१॥**

**एषः। स्यः। भानुः। उत्। इयर्ति। युज्यते। रथः। परिऽज्मा। दिवः। अस्य। सानवि। पृक्षासः। अस्मिन्। मिथुनाः। अधि। त्रयः। दृतिः। तुरीयः। मधुनः। वि। रप्शते॥१॥**

**पदार्थः-(एषः) (स्यः)** सः **(भानुः)** सूर्य्यः **(उत्)** ऊर्ध्वम् **(इयर्त्ति)** प्राप्नोति **(युज्यते) (रथः) (परिज्मा)** परितः सर्वतो ज्मायां भूमौ गच्छति त्यजति वा। **ज्मेति पृथिवीनामसु पठितम्।** (निघं०१.१) **(दिवः)** प्रशंसायुक्तस्यान्तरिक्षस्य मध्ये **(अस्य) (सानवि)** आकाशप्रदेशे **(पृक्षासः)** सम्बद्धाः **(अस्मिन्) (मिथुनाः)** द्वन्द्वा द्वौ द्वौ मिलिताः **(अधि)** उपरिभावे **(त्रयः)** वायुजलविद्युतः **(दृतिः)** मेघः। **दृतिरिति मेघनामसु पठितम्।** (निघं०१.१०) **(तुरीयः)** चतुर्थः **(मधुनः)** मधुरगुणयुक्तस्य **(वि) (रप्शते)** विशेषेण राजते॥१॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! एषः स्यः परिज्मा भानुरुदियर्त्ति, अस्य सानवि रथो युज्यतेऽस्मिंस्त्रयः पृक्षासो मिथुनाः प्रकाशन्ते, अस्य मधुनो मध्ये तुरीयो दृतिर्दिवोऽधि वि रप्शते तान् सर्वान् विजानीत॥१॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यो हि प्रकाशमानः सूर्य्यो ब्रह्माण्डस्य मध्ये विराजतेऽस्याभितो बहवो भूगोलाः सम्बद्धाः सन्ति भूचन्द्रलोकौ च युक्तौ भ्रमतो यस्य प्रभावेन वर्षा जायन्त इति विजानीत॥१॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(एषः, स्यः)** सो वह **(परिज्मा)** सब ओर से भूमि में चलता वा त्यागता **(भानुः)** सूर्य्य **(उत्)** ऊपर को **(इयर्त्ति)** प्राप्त होता है **(अस्य)** इसके **(सानवि)** आकाशप्रदेश में **(रथः)** वाहन **(युज्यते)** जोड़ा जाता है **(अस्मिन्)** इस में **(त्रयः)** वायु, जल और बिजुली **(पृक्षासः)** सम्बन्ध को प्राप्त **(मिथुनाः)** दो दो मिले हुए प्रकाशित होते हैं इस **(मधुनः)** मधुर गुण से युक्त के बीच **(तुरीयः)** चौथा **(दृतिः)** मेघ **(दिवः)** प्रशंसायुक्त अन्तरिक्ष के बीच **(अधि)** ऊपर **(वि, रप्शते)** विशेष करके शोभित होता है, उन सबको जानिये॥१॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो प्रकाशमान सूर्य्य ब्रह्माण्ड के मध्य में विराजित है और इसके चारों ओर बहुत भूगोल सम्बन्धयुक्त हैं तथा पृथिवी और चन्द्रलोक एक साथ घूमते हैं और जिसके प्रभाव से वृष्टियाँ होती हैं, इस सम्पूर्ण को जानो॥१॥



www.9009.co.in

पुनस्तमेव विषयमाह॥

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**उद्वां पृक्षासो मधुमन्त ईरते रथा अश्वास उषसो व्युष्टिषु।**
**अपोर्णुवन्तस्तम आ परीवृतं स्वर्ण शुक्रं तन्वन्त आ रजः॥ २॥**

उत्। वाम्। पृक्षासः। मधुऽमन्तः। ईरते। रथाः। अश्वासः। उषसः। विऽउष्टिषु। अपऽऊर्णुवन्तः। तमः। आ। परिऽवृतम्। स्वः। न। शुक्रम्। तन्वन्तः। आ। रजः॥ २॥

**पदार्थः**-(**उत्**) (**वाम्**) युवाम् (**पृक्षासः**) संसिक्ताः (**मधुमन्तः**) मधुरादिगुणयुक्ताः (**ईरते**) कम्पन्ते गच्छन्ति (**रथाः**) यथा यानानि (**अश्वासः**) तुरङ्गाः (**उषसः**) प्रभातवेलायाः (**व्युष्टिषु**) विविधासु सेवासु (**अपोर्णुवन्तः**) निवारयन्तः (**तमः**) रात्रीम् (**आ**) (**परीवृतम्**) सर्वत आवृतम् (**स्वः**) आदित्यः (**न**) इव (**शुक्रम्**) शुद्धम् (**तन्वन्तः**) विस्तृणन्तः (**आ**) (**रजः**) लोकलोकान्तरम्॥ २॥

**अन्वयः**-हे अध्यापकोपदेशकौ! यथा मधुमन्तः पृक्षास उषसस्तमोऽपोर्णुवन्तो व्युष्टिषु रथा अश्वास इवा परीवृतं स्वर्ण शुक्रमारजस्तन्वन्तस्सूर्यकिरणा वामुदीरते तान् यूयं विजानीत॥ २॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! इमे सर्वे लोकाः सूर्य्यस्याऽभितो भ्रमन्ति यथा सूर्य्यकिरणा भूगोलार्धस्थं तमो निवार्य्य प्रकाशं जनयन्ति तथैव विद्वांसो विद्यादानेनाविद्यान् निवार्य्य विद्यां जनयेयुः॥ २॥

**पदार्थः**-हे अध्यापक और उपदेशक जनो! जैसे (**मधुमन्तः**) मधुर आदि गुणों से युक्त (**पृक्षासः**) उत्तम प्रकार सींचे गये (**उषसः**) प्रभात वेला की (**तमः**) रात्रि को (**अपोर्णुवन्तः**) निवारण करते अर्थात् हटाते हुए (**व्युष्टिषु**) अनेक प्रकार की सेवाओं में (**रथाः**) वाहनों और (**अश्वासः**) घोड़ों के सदृश (**आ, परीवृतम्**) सब प्रकार से घिरे हुए को (**स्वः**) सूर्य्य के (**न**) सदृश (**शुक्रम्**) शुद्ध (**आ, रजः**) लोक-लोकान्तर को (**तन्वन्तः**) विस्तृत करते हुए सूर्य्यकिरण (**वाम्**) आप दोनों को (**उत्, ईरते**) कंपते, चञ्चल होते, ऊपर से प्राप्त होते हैं, उनको आप लोग विशेष करके जानो॥ २॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! ये सब लोक सूर्य्य के सब ओर घूमते हैं और जैसे सूर्य्य की किरणें भूगोल के आधे भाग में स्थित अन्धकार को निवारण करके प्रकाश उत्पन्न करते हैं, वैसे ही विद्वान् जन विद्या के दान से अविद्या को निवारण करके विद्या को उत्पन्न करें॥ २॥

पुनस्तमेव विषयमाह॥

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**मध्वः पिबतं मधुपेभिरासभिरुत प्रियं मधुने युञ्जाथां रथम्।**



www.9009.co.in

**आ वर्तनिं मधुना जिन्वथस्पथो दृतिं वहेथे मधुमन्तमश्विना॥३॥**

**मध्वः। पिबतम्। मधुऽपेभिः। आसऽभिः। उत। प्रियम्। मधुने। युञ्जाथाम्। रथम्। आ। वर्तनिम्। मधुना। जिन्वथः। पथः। दृतिम्। वहेथे इति। मधुऽमन्तम्। अश्विना॥३॥**

**पदार्थः-(मध्वः)** मधुरादिगुणयुक्तस्य **(पिबतम्)** **(मधुपेभिः)** ये मधुरान् रसान् पिबन्ति तैः सह **(आसभिः)** आस्यैर्मुखैः **(उत)** अपि **(प्रियम्)** कमनीयम् **(मधुने)** विज्ञाताय मार्गाय **(युञ्जाथाम्)** **(रथम्)** विमानादियानम् **(आ)** **(वर्त्तनिम्)** वर्त्तन्ते यस्मिँस्तं मार्गम् **(मधुना)** माधुर्य्यगुणोपेतेन **(जिन्वथः)** गच्छथः **(पथः)** मार्गान् **(दृतिम्)** दृतिमिव वर्त्तमानं मेघम् **(वहेथे)** प्रापयेताम्। अत्र पुरुषव्यत्ययः। **(मधुमन्तम्)** मधुरादिगुणयुक्तम् **(अश्विना)** सेनेशयोद्धारौ॥३॥

**अन्वयः**-हे अश्विना! युवां मधुपेभिर्वीरैः सहासभिर्मध्वः प्रियं रसं पिबतमुत मधुने रथं युञ्जाथां मधुना वर्त्तनिमा जिन्वथः पथो जिन्वथो मधुमन्तं दृतिं सूर्य्यवायू वहेथे तथेमं वहेथाम्॥३॥

**भावार्थः**-हे सेनेशयोद्धारो! यूयं सेनास्थवीरैः सहेदृशानि भोजनानि कुरुत यानानि रचयत यैर्बलवृद्धिः श्रीप्राप्तिश्च स्याद्यथा वायुविद्युतौ वृष्टिं कृत्वा सर्वान् सुखयतस्तथा प्रजाः सुखयथ॥३॥

**पदार्थः**-हे **(अश्विना)** सेना के ईश और योद्धा जन आप दोनों **(मधुपेभिः)** मधुर रसों को पीने वाले वीर पुरुषों के साथ **(आसभिः)** मुखों से **(मध्वः)** मधुर आदि गुण से युक्त पदार्थ के **(प्रियम्)** मनोहर रस को **(पिबतम्)** पिओ **(उत)** और **(मधुने)** जाने गये मार्ग के लिये **(रथम्)** विमान आदि वाहन को **(युञ्जाथाम्)** युक्त करो तथा **(मधुना)** मधुरता गुण युक्त पदार्थ से **(वर्त्तनिम्)** जिसमें वर्त्तमान होते उस मार्ग को **(आ, जिन्वथः)** सब प्रकार प्राप्त होते हो और अन्य **(पथः)** मार्गों को प्राप्त होते हो और जैसे **(मधुमन्तम्)** मधुर आदि गुणों से युक्त **(दृतिम्)** जल के चर्मपात्र के सदृश वर्त्तमान मेघ को सूर्य्य और वायु **(वहेथे)** धारण करते हैं, वैसे इस व्यवहार को धारण करो॥३॥

**भावार्थः**-हे सेना के ईश और योद्धाजनो! तुम सेनास्थ वीरों के साथ ऐसे भोजन करो और वाहनों को रचो जिनसे बल की वृद्धि और लक्ष्मी की प्राप्ति हो, जैसे वायु और बिजुली वर्षा करके सबको सुखी करते हैं, वैसे प्रजा को सुखी करो॥३॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**हंसासो ये वां मधुमन्तो अस्रिधो हिरण्यपर्णा उहुव उषर्बुधः।**

**उदप्रुतो मन्दिनो मन्दिनिस्पृशो मध्वो न मक्षः सवनानि गच्छथः॥४॥**

**हंसासः। ये। वाम्। मधुऽमन्तः। अस्रिधः। हिरण्यऽपर्णाः। उहुवः। उषःऽबुधः। उदऽप्रुतः। मन्दिनः। मन्दिऽनिस्पृशः। मध्वः। न। मक्षः। सवनानि। गच्छथः॥४॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः-(हंसासः)** हंस इव सद्यो गन्तारोऽश्वाः। **हंसास इत्यश्वनामसु पठितम्।** (निघं०१.१४) **(ये) (वाम्)** युवयोः **(मधुमन्तः)** मधुगत्योपेताः **(अस्त्रिधः)** अहिंसिताः **(हिरण्यपर्णाः)** हिरण्यानि पर्णाः पक्षा येषान्ते **(उहुवः)** भाराणां वोढारः **(उषर्बुधः)** उषसि बोधयुक्ताः **(उदप्रुतः)** उदकस्य गमयितारः **(मन्दिनः)** आनन्दयितारः **(मन्दिनिस्पृशः)** आनन्दस्य स्पर्शयितारः **(मध्वः)** मधुनः **(न)** इव **(मक्षः)** मक्षिराजः **(सवनानि)** ऐश्वर्याणि **(गच्छथः)**॥४॥

**अन्वयः**-हे राजसेनेशौ! वां ये मधुमन्तोऽस्त्रिधो हिरण्यपर्णा उषर्बुध उहुव उदप्रुतो मन्दिनः मन्दिनिस्पृशो मध्वो मक्षो न हंसासः सन्ति तैः सवनानि युवां गच्छथः॥४॥

**भावार्थः**-हे राजपुरुषा! भवन्तो यानयन्त्रेष्वग्निजलादिसम्प्रयोगात् सद्योगत्वाऽऽगत्यैश्वर्य्यं चिकीर्षेयुस्तर्हि किं रत्नं नोपलभेरन्॥४॥

**पदार्थः**-हे राजा और सेना के ईश जन! **(वाम्)** आप दोनों के **(ये)** जो **(मधुमन्तः)** मधुर गमन से युक्त **(अस्त्रिधः)** नहीं मारे गये **(हिरण्यपर्णाः)** तेजमय वा सुवर्ण आदि से बने हुए पंख जिनके **(उषर्बुधः)** जो प्रातःकाल में बोध से युक्त **(उहुवः)** भारों के ले चलने **(उदप्रुतः)** जल के चलाने **(मन्दिनः)** आनन्द के देने और **(मन्दिनिस्पृशः)** आनन्द के स्पर्श कराने वाले **(मध्वः)** मधुर पदार्थ के सम्बन्ध में **(मक्षः)** मक्षियों के राजा के **(न)** सदृश **(हंसासः)** तथा हंस के सदृश शीघ्र चलने वाले घोड़े हैं उनसे **(सवनानि)** ऐश्वर्य्यों को आप दोनों **(गच्छथः)** प्राप्त होते हैं॥४॥

**भावार्थः**-हे राजपुरुषो! आप लोग वाहनों की कलों में अग्निजलादि के संप्रयोग से शीघ्र आ आकर ऐश्वर्य्य की इच्छा करें तो क्या रत्न को न प्राप्त होवें॥४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**स्वध्वरासो मधुमन्तो अग्नय उस्रा जरन्ते प्रति वस्तोरश्विना।**

**यन्निक्तहस्तस्तरणिर्विचक्षणः सोमं सुषाव मधुमन्तमद्रिभिः॥५॥**

**सुऽअध्वरासः। मधुऽमन्तः। अग्नयः। उस्रा। जरन्ते। प्रति। वस्तोः। अश्विना। यत्। निक्तऽहस्तः। तरणिः। विऽचक्षणः। सोमम्। सुसाव। मधुऽमन्तम्। अद्रिऽभिः॥५॥**

**पदार्थः-(स्वध्वरासः)** सुष्ठ्वध्वराः क्रियायोगसिद्धयो येभ्यस्ते **(मधुमन्तः)** मधुरादिरसोपेताः **(अग्नयः)** पावकाः **(उस्रा)** रश्मीन्। **उस्रा इति रश्मिनामसु पठितम्।** (निघं०१.५) **(जरन्ते)** स्तुवन्ति **(प्रति) (वस्तोः)** दिनस्य **(अश्विना)** राजाऽमात्यौ **(यत्)** यः **(निक्तहस्तः)** शुद्धहस्तः **(तरणिः)** दुःखेभ्यस्तारकः **(विचक्षणः)** अतीव धीमान् **(सोमम्)** ओषधिसमूहम् **(सुषाव)** सुनोति **(मधुमन्तम्)** मधुरादिगुणोपेतम् **(अद्रिभिः)** मेघैः॥५॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे अश्विना! यथा प्रति वस्तोः स्वध्वरासो मधुमन्तोऽग्नय उस्रा जरन्ते यद्यो निक्तहस्तस्तरणिर्विचक्षणोऽद्रिभिर्मधुमन्तं सोमं सुषाव ताँस्तञ्च युवां साध्नुतम्॥५॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यूयं शिल्पिनां विदुषां सङ्गेनाऽग्न्यादिसोमलतादीन् पदार्थान् विज्ञाय सम्प्रयोज्याऽभीष्टानि कार्य्याणि साध्नुत॥५॥

**पदार्थः**-हे **(अश्विना)** राजा और मन्त्री जनो! जैसे **(प्रति, वस्तोः)** प्रतिदिन की **(स्वध्वरासः)** उत्तम प्रकार क्रियायोगों की सिद्धियाँ जिनसे वे **(मधुमन्तः)** मधुर आदि गुणों से युक्त **(अग्नयः)** अग्नि **(उस्रा)** किरणों की **(जरन्ते)** स्तुति करते अर्थात् उन्हें प्रशंसित करते हैं और **(यत्)** जो **(निक्तहस्तः)** शुद्ध हाथों युक्त **(तरणिः)** दुःखों से पार करने वाला **(विचक्षणः)** अत्यन्त बुद्धिमान् **(अद्रिभिः)** मेघों से **(मधुमन्तम्)** मधुर आदि गुणयुक्त **(सोमम्)** ओषधियों के समूह को **(सुषाव)** उत्पन्न करता है, उन और उसको आप दोनों सिद्ध करो॥५॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! आप लोग शिल्पी विद्वानों के सङ्ग से अग्नि आदि और सोमलता आदि पदार्थों को जान के और अच्छे प्रकार प्रयोग करके अभीष्ट कार्य्यों को सिद्ध करो॥५॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**आकेनिपासो अहभिर्दविध्वतः स्वर्णं शुक्रं तन्वन्त आ रजः।**

**सूरश्चिदश्वान् युयुजान ईयते विश्वाँ अनु स्वधया चेतथस्पथः॥६॥**

**आकेऽनिपासः। अहऽभिः। दविध्वतः। स्वः। न। शुक्रम्। तन्वन्तः। आ। रजः। सूरः। चित्। अश्वान्। युयुजानः। ईयते। विश्वान्। अनु। स्वधया। चेतथः। पथः॥६॥**

**पदार्थः**-**(आकेनिपासः)** य आके समीपे नितरां पान्ति ते किरणाः **(अहभिः)** दिनैः। अत्र **वाच्छन्दसी**ति रुत्वाभावो नलोपश्च। **(दविध्वतः)** पदार्थान् ध्वंसयन्तः **(स्वः)** आदित्यः **(न)** इव **(शुक्रम्)** जलम् **(तन्वन्तः)** विस्तारयन्तः **(आ)** **(रजः)** लोकम् **(सूरः)** सूर्य्यः **(चित्)** **(अश्वान्)** आशुगामिनः किरणान् **(युयुजानः)** युक्तान् कुर्वन् **(ईयते)** गच्छति **(विश्वान्)** सर्वान् **(अनु)** **(स्वधया)** अन्नादिना **(चेतथः)** ज्ञापयथः **(पथः)** मार्गान्॥६॥

**अन्वयः**-हे क्रियाकुशलौ याननिर्मातृप्रचालकौ! युवां यथाहभिर्दविध्वत आकेनिपासः किरणाः शुक्रं रजश्चातन्वन्तः स्वर्ण विराजन्ते यथा कश्चित् सूरश्चिदश्वान् युयुजान ईयते तथा युवां स्वधया विश्वान् पदार्थान् विज्ञाय पथोऽनु चेतथः॥६॥

**भावार्थः**-अत्रोपमावाचकलुप्तोपमालङ्कारौ। हे मनुष्या! यदि यूयं किरणवत्सूर्य्यवद्यानेष्वग्निना जलं तनुत तर्हि जलस्थलान्तरिक्षमार्गान् सुखेन गच्छथः॥६॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-हे क्रियाओं में कुशल वाहनों के बनाने और चलाने वाले! आप दोनों जैसे **(अहभिः)** दिनों से **(दविध्वतः)** पदार्थों का नाश करती हुईं **(आकेनिपासः)** समीप में अत्यन्त पालन करने वाली किरणें **(शुक्रम्)** जल और **(रजः)** लोक को **(आ, तन्वतः)** विस्तारयुक्त करते हुए **(स्वः)** सूर्य्य के **(न)** सदृश प्रकाशित होते हैं वा जैसे कोई **(सूरः)** सूर्य्य **(चित्)** भी **(अश्वान्)** शीघ्र चलने वाले किरणों को **(युयुजानः)** युक्त करता **(ईयते)** प्राप्त होता है, वैसे आप दोनों **(स्वधया)** अन्न आदि से **(विश्वान्)** सम्पूर्ण पदार्थों को जान के **(पथः)** मार्गों को **(अनु, चेतथः)** अनुकूल जनाते हो॥६॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमा और वाचकलुप्तोपमालङ्कार हैं। हे मनुष्यो! जो आप लोग किरणों और सूर्य्य के सदृश वाहनों में अग्नि से जल को विस्तारो तो जल, स्थल और आकाशमार्गों को सुख से जाओ॥६॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**प्र वामवोचमश्विना धियंधा रथः स्वश्वो अजरो यो अस्ति।**

**येन सद्यः परि रजांसि याथो हविष्मन्तं तरणिं भोजमच्छ॥७॥२१॥४॥**

**प्र। वाम्। अवोचम्। अश्विना। धियम्ऽधाः। रथः। सुऽअश्वः। अजरः। यः। अस्ति। येन। सद्यः। परि। रजांसि। याथः। हविष्मन्तम्। तरणिम्। भोजम्। अच्छ॥७॥**

**पदार्थः**-**(प्र)** **(वाम्)** युवाम् **(अवोचम्)** उपदिशेयम् **(अश्विना)** अध्यापकोपदेशकौ **(धियन्धाः)** यो धियं प्रज्ञां शिल्पविद्यां कर्म दधाति **(रथः)** रमणीययानः **(स्वश्वः)** शोभनाश्वः **(अजरः)** **(यः)** **(अस्ति)** **(येन)** **(सद्यः)** शीघ्रम् **(परि)** **(रजांसि)** लोकानैश्वर्य्याणि वा **(याथः)** गच्छथः **(हविष्मन्तम्)** बहुसामग्रीयुक्तम् **(तरणिम्)** तारकम् **(भोजम्)** भोक्तुं योग्यम् **(अच्छ)**॥७॥

**अन्वयः**-हे अश्विना! यः स्वश्वोऽजरो रथोऽस्ति तद्विद्या धियन्धा अहं वां प्रावोचं येन युवां हविष्मन्तं तरणिं भोजं रजांसि सद्योऽच्छ परियाथः॥७॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! विद्वांसो वयं युष्मान् याः शिल्पविद्या ग्राहयेम ताभिर्यूयं विमानादीनि यानानि निर्माय सद्यो गमनागमने कृत्वा पुष्कलान् भोगान् प्राप्नुतेति॥७॥

अत्र सूर्याश्विगुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति पञ्चचत्वारिंशत्तमं सूक्तमेकविंशो वर्गश्चतुर्थोऽनुवाकश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे **(अश्विना)** अध्यापक और उपदेशक जनो! **(यः)** जो **(स्वश्वः)** उत्तमोत्तम घोड़ों से युक्त **(अजरः)** वृद्धावस्थारहित **(रथः)** सुन्दर वाहन **(अस्ति)** है उसकी विद्या को **(धियन्धाः)** बुद्धि अर्थात शिल्पविद्या रूप कर्म को धारण करने वाला मैं **(वाम्)** आप दोनों को **(प्र, अवोचम्)** उत्तम उपदेश करूं **(येन)** जिससे आप दोनों **(हविष्मन्तम्)** बहुत सामग्री से युक्त **(तरणिम्)** तारने वाले



www.9009.co.in

**(भोजम्)** खाने योग्य पदार्थ और **(रजांसि)** लोक वा ऐश्वर्य्यों को **(सद्यः)** शीघ्र **(अच्छ)** उत्तम प्रकार **(परि, याथः)** सब ओर से प्राप्त होते हैं॥७॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! विद्वान् हम लोग आप लोगों को जिन शिल्पविद्याओं का ग्रहण करावें, उन विद्याओं से आप लोग विमान आदि वाहनों को रच शीघ्र गमन और आगमन को करके बहुत भोगों को प्राप्त होओ॥७॥

इस सूक्त में सूर्य्य और अश्वि के गुणों का वर्णन होने से इस सूक्त के अर्थ की पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह पैंतालीसवां सूक्त और इक्कीसवां वर्ग और चौथा अनुवाक समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

**अथ सप्तर्चस्य षट्चत्वारिंशत्तमस्य सूक्तस्य वामदेव ऋषिः। इन्द्रवायू देवते। १ विराड् गायत्री। २, ३, ५-७ गायत्री। ४ निचृद्गायत्री छन्दः। षड्जः स्वरः॥**

**अथ विद्युद्विद्याविषयमाह॥**

अब सात ऋचा वाले छियालीसवें सूक्त का आरम्भ हैं उसके प्रथम मन्त्र में बिजुली की विद्या के विषय को कहते हैं॥

**अग्रं॑ पिबा॒ मधू॑नां सु॒तं वा॑यो॒ दिवि॑ष्टिषु। त्वं हि पू॒र्व॒पा असि॑॥१॥**

**अग्र॑म्। पि॒ब॒। मधू॑नाम्। सु॒तम्। वा॒यो॒। इति॑। दिवि॑ष्टिषु। त्वम्। हि। पू॒र्व॒ऽपाः। असि॑॥१॥**

**पदार्थः**-(**अग्रम्**) उत्तमम् (**पिबा**)। अत्र **द्व्यचोऽतस्तिङ** इति दीर्घः। (**मधूनाम्**) मधुराणां रसानां मध्ये (**सुतम्**) निष्पादितम् (**वायो**) वायुरिव बलिष्ठ (**दिविष्टिषु**) दिव्यासु क्रियासु (**त्वम्**) (**हि**) यतः (**पूर्वपाः**) यः पूर्वान् पाति सः (**असि**)॥१॥

**अन्वयः**-हे वायो! हि त्वं दिविष्टिषु पूर्वपा असि तस्मान्मधूनामग्रं सुतं रसं पिबा॥१॥

**भावार्थः**-हे विद्वन्! यतस्त्वं सनातनीर्विद्या रक्षित्वा सर्वेभ्यो ददासि तस्माद्भवानेतासु क्रियास्वग्रगण्यो भवति॥१॥

**पदार्थः**-हे (**वायो**) वायु के सदृश बलयुक्त (**हि**) जिससे (**त्वम्**) आप (**दिविष्टिषु**) श्रेष्ठ क्रियाओं में (**पूर्वपाः**) पूर्व वर्त्तमान जनों का पालन करने वाले (**असि**) हो इससे (**मधूनाम्**) मधुर रसों के बीच में (**अग्रम्**) उत्तम (**सुतम्**) उत्पन्न किये गये रस का (**पिबा**) पान कीजिये॥१॥

**भावार्थः**-हे विद्वन्! जिससे आप सनातन विद्याओं की रक्षा करके सब के लिये देते हो, इससे आप इन क्रियाओं में मुखिया होते हैं॥१॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**श॒तेना॑ नो अ॒भिष्टि॑भिर्नि॒युत्वाँ॒ इन्द्र॑सारथिः। वायो॑ सु॒तस्य॑ तृम्पतम्॥२॥**

**श॒तेन॑। नः॒। अ॒भिष्टि॑ऽभिः। नि॒युत्वा॑न्। इन्द्र॑ऽसारथिः। वायो॒ इति॑। सु॒तस्य॑। तृ॒म्प॒त॒म्॥२॥**

**पदार्थः**-(**शतेना**) असङ्ख्येन। अत्र **संहितायामिति** दीर्घः। (**नः**) अस्मान् (**अभिष्टिभिः**) अभीष्टाभिः क्रियाभिः (**नियुत्वान्**) बलवान् समर्थो वायुः (**इन्द्रसारथिः**) इन्द्रो विद्युत् सारथिर्यस्य सः (**वायो**) वायुवद्वर्त्तमान विज्ञानयुक्त (**सुतस्य**) निष्पादितस्य (**तृम्पतम्**)॥२॥

**अन्वयः**-हे वायो वायुवद्वर्त्तमानविज्ञानयुक्ताध्यापकोपदेशकावभिष्टिभिर्यथेन्द्रसारथिर्नियुत्वाञ्छतेना नोऽस्मान् तर्पयति तथा सुतस्य च युवां तृम्पतम्॥२॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यथा वायुना सह विद्युद्विद्युता सह वायुश्चानेकाः क्रिया जनयतस्तथा पृथिवीजलादिभिर्यूयमनेकानि कार्य्याणि साध्नुत॥२॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-हे **(वायो)** वायुवद्वर्त्तमान विज्ञानयुक्त अध्यापक और उपदेशक! **(अभिष्टिभिः)** अभीष्ट क्रियाओं से जैसे **(इन्द्रसारथिः)** बिजुलीरूप सारथि जिसका वह **(नियुत्वान्)** बलवान् समर्थ वायु **(शतेना)** असङ्ख्य से **(नः)** हम लोगों को तृप्त करता है, वैसे **(सुतस्य)** उत्पन्न किये गये के सम्बन्ध में आप दोनों **(तृम्पतम्)** तृप्त होओ॥२॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जैसे वायु के साथ बिजुली, बिजुली के साथ वायु अनेक क्रियाओं को उत्पन्न करते हैं, वैसे पृथिवी और जलादिकों से आप अनेक कार्य्यों को सिद्ध करो॥२॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**आ वां सहस्रं हरय इन्द्रवायू अभि प्रयः। वहन्तु सोमपीतये॥३॥**

**आ। वाम्। सहस्रम्। हरयः। इन्द्रवायू इति। अभि। प्रयः। वहन्तु। सोमऽपीतये॥३॥**

**पदार्थः**-**(आ)** **(वाम्)** युवाम् **(सहस्रम्)** असङ्ख्यम् **(हरयः)** हरणशीला मनुष्याः **(इन्द्रवायू)** सूर्य्यपवनौ **(अभि)** **(प्रयः)** कमनीयम् **(वहन्तु)** **(सोमपीतये)** सोमस्य पानाय॥३॥

**अन्वयः**-हे इन्द्रवायू! ये हरयो वां सोमपीतये सहस्रं प्रय आवहन्तु तान् युवामभिबोधयतम्॥३॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! ये विद्वांसो युष्मानध्याप्य सुशिक्ष्य विदुषः कुर्वन्ति तान् सततं सेवध्वम्॥३॥

**पदार्थः**-हे **(इन्द्रवायू)** सूर्य्य और पवन! जो **(हरयः)** हरने वाले मनुष्य **(वाम्)** आप दोनों को **(सोमपीतये)** सोमलता के पान करने के लिये **(सहस्रम्)** असंख्य **(प्रयः)** मनोहर भाव जैसे हों वैसे **(आ, वहन्तु)** प्राप्त करें, उनको आप दोनों **(अभि)** सब ओर से बोध दीजिये॥३॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो विद्वान् जन आप लोगों को पढ़ाय और उत्तम प्रकार शिक्षा देकर विद्वान् करते हैं, उनकी निरन्तर सेवा करो॥३॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**रथं हिरण्यवन्धुरमिन्द्रवायू स्वध्वरम्। आ हि स्थाथो दिविस्पृशम्॥४॥**

**रथम्। हिरण्यऽवन्धुरम्। इन्द्रवायू इति। सुऽअध्वरम् आ। हि। स्थाथः। दिविऽस्पृशम्॥४॥**

**पदार्थः**-**(रथम्)** रमणीयं यानम् **(हिरण्यवन्धुरम्)** हिरण्यानि सुवर्णानि वन्धुराणि बन्धनानि यस्मिंस्तम् **(इन्द्रवायू)** वायुविद्युद्वच्छीघ्रकारिणौ शिल्पविद्याऽध्यापकोपदेशकौ **(स्वध्वरम्)** सुष्ठ्वध्वरा अहिंसिता क्रिया यस्मात्तम् **(आ)** **(हि)** **(स्थाथः)** भवथः **(दिविस्पृशम्)** दिवि स्पृशति येन तम्॥४॥

**अन्वयः**-हे इन्द्रवायू! युवां स्वध्वरं हिरण्यवन्धुरं दिविस्पृशं रथं ह्यास्थाथः॥४॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-हे अध्यापकोपदेशका! भवन्तः प्रीत्या सुवर्णादिजटितानां यानानां विद्यां मनुष्येभ्यः सततमुपदिशन्तु यैरेतेऽन्तरिक्षादिषु गन्तुं शक्नुयुः॥४॥

**पदार्थः**-हे **(इन्द्रवायू)** वायु और बिजुली के सदृश शीघ्रकारी शिल्पविद्या के अध्यापक और उपदेशक जनो! आप दोनों **(स्वध्वरम्)** नहीं नष्ट हुई उत्तम क्रिया जिससे और **(हिरण्यवन्धुरम्)** सुवर्ण हैं बन्धन जिसमें उस **(दिविस्पृशम्)** आकाश में चलने वाले **(रथम्)** सुन्दर वाहन को **(हि)** ही **(आ, स्थाथः)** आ स्थित होओ॥४॥

**भावार्थः**-हे अध्यापक और उपदेशक जनो! आप लोग प्रीति से सुवर्ण आदि से जड़े हुए वाहनों की विद्या का मनुष्यों के लिये निरन्तर उपदेश देओ कि जिन वाहनों से ये लोग अन्तरिक्ष आदिकों में जा सकें॥४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**रथे॑न पृथुपाज॑सा दाश्वांस॒मुप॑ गच्छतम्। इन्द्र॑वायू इ॒हा ग॑तम्॥५॥**

**रथे॑न। पृथुऽपाज॑सा। दा॒श्वांस॑म्। उप॑। ग॒च्छ॒त॒म्। इन्द्र॑वायू॒ इति॑। इ॒ह। आ। ग॒त॒म्॥५॥**

**पदार्थः-(रथेन)** रमणीयेन यानेन **(पृथुपाजसा)** विस्तीर्णबलेन **(दाश्वांसम्)** दातारम् **(उप) (गच्छतम्) (इन्द्रवायू)** वायुविद्युदग्नी इव राजसेनेशौ **(इह)** अस्मिन् सङ्ग्रामे **(आ) (गतम्)**॥५॥

**अन्वयः**-हे इन्द्रवायू इव प्रतापिनौ राजसेनेशौ! युवां पृथुपाजसा रथेनेहाऽऽगतं दाश्वांसमुपगच्छतम्॥५॥

**भावार्थः**-यथा वायुविद्युतौ महाप्रतापयुक्तौ वर्त्तेते तथैव राजाऽमात्यौ भवेताम्॥५॥

**पदार्थः**-हे **(इन्द्रवायू)** वायु और बिजुलीरूप अग्नि के सदृश प्रतापी राजा और सेना के ईश जनो! आप दोनों **(पृथुपाजसा)** विस्तीर्ण बलयुक्त **(रथेन)** रमणीय वाहन से **(इह)** इस संग्राम में **(आ, गतम्)** आओ और **(दाश्वासंम्)** दाता जन के **(उप, गच्छतम्)** समीप प्राप्त होओ॥५॥

**भावार्थः**-जैसे वायु और बिजुली बड़े प्रताप से युक्त वर्त्तमान हैं, वैसे ही राजा और मन्त्रीजन होवें॥५॥

**अथ सूर्य्ययुक्तवायुविषयमाह॥**

अब सूर्य्ययुक्त वायु विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**इन्द्र॑वायू अ॒यं सु॒तस्तं दे॒वेभिः स॒जोष॑सा। पिब॑तं दा॒शुषो॑ गृ॒हे॥६॥**

**इन्द्र॑वायू॒ इति॑। अ॒यम्। सु॒तः। तम्। दे॒वेभिः॑। स॒ऽजोष॑सा। पिब॑तम्। दा॒शुषः॑। गृ॒हे॥६॥**

**पदार्थः-(इन्द्रवायू)** सूर्य्यवायू इवाध्यापकोपदेशकौ **(अयम्) (सुतः)** निष्पादितः **(तम्) (देवेभिः)** विद्वद्भिर्दिव्यैः पदार्थैर्वा **(सजोषसा)** समानप्रीतिकामौ **(पिबतम्) (दाशुषः)** दातुः **(गृहे)**॥६॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे सजोषसेन्द्रवायू! योऽयं दाशुषो गृहे सुतस्तं देवेभिस्सह यथा पिबतं तथैव सूर्य्यवायू सर्वेभ्यो रसं पिबतः॥६॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यथाऽर्कपवनौ सर्वेषामुपकारं सततं कुरुतस्तथैव विद्वद्भिरनुष्ठेयम्॥६॥

**पदार्थः**-हे **(सजोषसा)** तुल्य प्रीति की कामना करने वाले **(इन्द्रवायू)** सूर्य्य और वायु के सदृश अध्यापक और उपदेशको! जो **(अयम्)** यह **(दाशुषः)** दाता जन के **(गृहे)** गृह में **(सुतः)** उत्पन्न किया गया **(तम्)** उसको **(देवेभिः)** विद्वानों वा श्रेष्ठ पदार्थों के साथ जैसे **(पिबतम्)** पान करो, वैसे ही सूर्य्य और वायु सब से रस पीते हैं॥६॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे सूर्य्य और पवन सब के उपकार को निरन्तर करते हैं, वैसे ही विद्वानों को करना चाहिये॥६॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**इ॒ह प्र॒याण॑मस्तु वा॒मिन्द्र॑वायू वि॒मोच॑नम्। इ॒ह वां॒ सोम॑पीतये॥७॥२२॥**

**इ॒ह। प्र॒ऽयान॑म्। अ॒स्तु॒। वा॒म्। इन्द्र॑वायू॒ इति॑। वि॒ऽमोच॑नम्। इ॒ह। वा॒म्। सोम॑ऽपीतये॥७॥**

**पदार्थः**-**(इह)** अस्मिन् **(प्रयाणम्)** गमनम् **(अस्तु)** **(वाम्)** युवयोः **(इन्द्रवायू)** वायुविद्युद्वद्वर्त्तमानौ राजाऽमात्यौ **(विमोचनम्)** **(इह)** **(वाम्)** युवयोः **(सोमपीतये)** सोमस्य पानाय॥७॥

**अन्वयः**-हे इन्द्रवायू! यथेह वां प्रयाणमस्तु यथेह वां सोमपीतये विमोचनमस्तु तथैव वायुविद्युतौ वर्त्तेत इति विजानीतम्॥७॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यो नित्यमितस्ततः कार्य्यसिद्धये गच्छेदागच्छेत्तमेव राजानं मन्यध्वमिति॥७॥

अत्रेन्द्रवायुगुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिरस्तीति वेद्यम्॥

**इति षट्चत्वारिंशत्तमं सूक्तं द्वाविंशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे **(इन्द्रवायू)** वायु और बिजुली के सदृश वर्त्तमान राजा और मन्त्री जनो! जैसे **(इह)** इस में **(वाम्)** आप दोनों का **(प्रयाणम्)** गमन **(अस्तु)** हो और जैसे **(इह)** इस में **(वाम्)** आप दोनों का **(सोमपीतये)** सोमपान के लिये **(विमोचनम्)** त्याग हो, वैसे ही वायु और बिजुली वर्त्तमान हैं, ऐसा जानो॥७॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो नित्य इधर उधर कार्य्यसिद्धि के लिय जावे और आवे उसी को राजा मानो॥७॥



www.9009.co.in

इस सूक्त में बिजुली और वायु के गुणों का वर्णन होने से इस सूक्त के अर्थ की पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ संगति है, यह जानना चाहिये॥

**यह छियालीसवां सूक्त और बाईसवां वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

**अथ चतुर्ऋचस्य सप्तचत्वारिंशत्तमस्य सूक्तस्य वामदेव ऋषिः। १ वायुः। २-४ इन्द्रवायू देवते। १, ३ अनुष्टुप्। ४ निचृदनुष्टुप् छन्दः। गान्धारः स्वरः। २ भुरिगुष्णिक् छन्दः। ऋषभः स्वरः॥**

**अथ वायुसादृश्येन विद्वद्गुणानाह॥**

अब चार ऋचा वाले सैंतालीसवें सूक्त का आरम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में वायुसादृश्य से विद्वानों के गुणों को कहते हैं॥

**वायो॑ शु॒क्रो अ॑यामि ते॒ मध्वो॒ अग्रं॒ दिवि॑ष्टिषु।**

**आ या॑हि॒ सोम॑पीतये स्पा॒र्हो दे॑व नि॒युत्व॑ता॥ १॥**

**वायो॒ इति॑। शु॒क्रः। अ॒या॒मि॒। ते॒। मध्वः॑। अग्र॑म्। दिवि॑ष्टिषु। आ। या॒हि॒। सोम॑ऽपीतये। स्पा॒र्हः। दे॒व॒। नि॒युत्व॑ता॥ १॥**

**पदार्थः**-(**वायो**) (**शुक्रः**) शुद्धस्वभावः (**अयामि**) प्राप्नोमि (**ते**) तव (**मध्वः**) मधुरस्य (**अग्रम्**) (**दिविष्टिषु**) प्रकाशे स्थितासु क्रियासु (**आ**) (**याहि**) (**सोमपीतये**) उत्तमरसपानाय (**स्पार्हः**) स्पर्हणीयः (**देव**) (**नियुत्वता**) प्रभुणा राज्ञा सह॥ १॥

**अन्वयः**-हे देव वायो! स्पार्हः शुक्रोऽहं दिविष्टिषु नियुत्वता सह सोमपीतये ते मध्वोऽग्रं यथायामि तथा त्वमायाहि॥ १॥

**भावार्थः**-ये वायुवत्सर्वत्र विहत्य विद्याग्रहणं कुर्वन्ति ते सर्वत्र स्पर्हणीया जायन्ते॥ १॥

**पदार्थः**-हे (**देव**) विद्वन् (**वायो**) वायु के सदृश वर्त्तमान! (**स्पार्हः**) ईप्सा करने योग्य (**शुक्रः**) शुद्ध स्वभाव वाला मैं (**दिविष्टिषु**) प्रकाश के बीच जो स्थित क्रिया उनमें (**नियुत्वता**) समर्थ राजा के साथ (**सोमपीतये**) उत्तम रस के पान के लिये (**ते**) आपके (**मध्वः**) मधुर रस के (**अग्रम्**) अग्रभाग को जैसे (**अयामि**) प्राप्त होता हूँ, वैसे आप (**आ, याहि**) प्राप्त होओ॥ १॥

**भावार्थः**-जो वायु के सदृश सर्वत्र विहार करके विद्या का ग्रहण करते हैं, वे सर्वत्र ईप्सा करने योग्य होते हैं॥ १॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**इन्द्र॑श्च वायवेषां॒ सोमा॑नां पी॒तिम॑र्हथः।**

**यु॒वां हि यन्तीन्द॑वो नि॒म्नमापो॒ न स॒ध्र्य॑क्॥ २॥**

**इन्द्रः॑। च॒। वा॒यो॒ इति॑। ए॒षाम्। सोमा॑नाम्। पी॒तिम्। अ॒र्ह॒थः॒। यु॒वाम्। हि। यन्ति॑। इन्द॑वः। निम्नम्। आपः॑। न। स॒ध्र्य॑क्॥ २॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**इन्द्रः**) परमैश्वर्य्यवान् (**च**) (**वायो**) बलयुक्त (**एषाम्**) (**सोमानाम्**) ओषध्युत्पन्नानां रसानाम् (**पीतिम्**) पानम् (**अर्हथः**) (**युवाम्**) (**हि**) (**यन्ति**) (**इन्दवः**) सङ्गन्तारः पूजनीयाः। **इन्दुरिति यज्ञनामसु पठितम्।** (निघं०३.१७) (**निम्नम्**) (**आपः**) (**न**) इव (**सध्र्यक्**) यः सहाञ्चति॥२॥

**अन्वयः**-हे वायो! त्वमिन्द्रश्च युवामापो निम्नं न यथेन्दवः सध्र्यक् यन्ति तथा हि युवामेषां सोमानां पीतिमर्हथः॥२॥

**भावार्थः**-अत्रोपमावाचकलुप्तोपमालङ्कारौ। यथा यज्ञा अपो गच्छन्ति तथैव विद्वांसो विद्याव्यवहारमर्हन्ति॥२॥

**पदार्थः**-हे (**वायो**) बल से युक्त! आप (**च**) और (**इन्द्रः**) अत्यन्त ऐश्वर्यवान् (**युवाम्**) आप दोनों (**आपः**) जैसे जल (**निम्नम्**) नीचे के स्थल के (**न**) वैसे जिस प्रकार (**इन्दवः**) मिलने वाले और सत्कार करने योग्य जन और (**सध्र्यक्**) एक साथ सत्कार करने वाला ये सब (**यन्ति**) प्राप्त होते हैं (**हि**) उसी प्रकार आप दोनों (**एषाम्**) इन (**सोमानाम्**) ओषधियों से उत्पन्न हुए रसों के (**पीतिम्**) पान के (**अर्हथः**) योग्य हैं॥२॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमा और वाचकलुप्तोपमालङ्कार हैं। जैसे यज्ञ जलों को प्राप्त होते हैं, वैसे ही विद्वान् विद्याव्यवहार के योग्य होते हैं॥२॥

**अथ राजामात्यगुणानाह॥**

अब राजा और अमात्य के गुणों को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**वायविन्द्रश्च शुष्मिणा सरथं शवसस्पती।**

**नियुत्वन्ता न ऊतय आ यातं सोमपीतये॥३॥**

**वायो इति। इन्द्रः। च। शुष्मिणा। सऽरथम्। शवसः। पती इति। नियुत्वन्ता। नः। ऊतये। आ। यातम्। सोमऽपीतये॥३॥**

**पदार्थः**-(**वायो**) महाबल (**इन्द्रः**) राजा (**च**) (**शुष्मिणा**) बलिष्ठौ (**सरथम्**) समानं यानम् (**शवसः**) बलस्य (**पती**) पालकौ (**नियुत्वन्ता**) प्रभुसमर्थौ (**नः**) अस्माकम् (**ऊतये**) रक्षणाय (**आ**) (**यातम्**) (**सोमपीतये**) ऐश्वर्य्यपालनाय॥३॥

**अन्वयः**-हे शुष्मिणा शवसस्पती नियुत्वन्ता वायविन्द्रश्च न ऊतये सोमपीतये सरथमायातम्॥३॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! ये राज्ञोऽमात्याश्च बलवर्द्धिनः समर्था न्यायकारिणः स्युस्ते युष्माकं पालकाः सन्तु॥३॥

**पदार्थः**-हे (**शुष्मिणा**) बलयुक्त और (**शवसः**) बल के (**पती**) पालन करने वाले (**नियुत्वन्ता**) स्वामी और समर्थ (**वायो**) बड़े बल से युक्त (**इन्द्रः, च**) और राजा (**नः**) हम लोगों के (**ऊतये**) रक्षण



www.9009.co.in

आदि के और (**सोमपीतये**) ऐश्वर्य्य के पालन के लिये (**सरथम्**) समान वाहन को (**आ, यातम्**) प्राप्त होओ॥३॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो राजा के मन्त्री जन बल के बढ़ाने वाले सामर्थ्य युक्त और न्यायकारी होवें, वे आप लोगों के पालन करने वाले हों॥३॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**या वां सन्ति पुरुस्पृहो नियुतो दाशुषे नरा।**

**अस्मे ता यज्ञवाहसेन्द्रवायू नि यच्छतम्॥४॥२३॥**

**याः। वाम्। सन्ति। पुरुऽस्पृहः। निऽयुतः। दाशुषे। नरा। अस्मे इति। ताः। यज्ञऽवाहसा। इन्द्रवायू इति। नि। यच्छतम्॥४॥**

**पदार्थः**-(**याः**) (**वाम्**) युवयोः (**सन्ति**) (**पुरुस्पृहः**) बहुभिः स्पर्हणीयाः क्रियाः (**नियुतः**) निश्चितः (**दाशुषे**) दात्रे (**नरा**) नायकौ (**अस्मे**) अस्मभ्यम् (**ताः**) (**यज्ञवाहसा**) यज्ञप्रापकौ (**इन्द्रवायू**) धनिविद्वांसौ राजामात्यौ (**नि**) (**यच्छतम्**) नितरां दद्यातम्॥४॥

**अन्वयः**-हे यज्ञवाहसा नरेन्द्रवायू! वां या नियुतः पुरुस्पृहो दाशुषे सन्ति ता अस्मे नि यच्छतम्॥४॥

**भावार्थः**-हे राजाऽमात्या! युष्माभिरस्माकं प्रजाजनानामिच्छाः पूर्णाः कार्य्या यतो वयं युष्माकमलं कामं कुर्य्याम॥४॥

अत्र विद्वद्राजामात्यगुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिरस्तीति बोध्यम्॥

**इति सप्तचत्वारिंशत्तमं सूक्तं त्रयोविंशो वर्गश्च समाप्तः।**

**पदार्थः**-हे (**यज्ञवाहसा**) यज्ञ को प्राप्त कराने वाले (**नरा**) नायक (**इन्द्रवायू**) धनी और विद्वान् तथा राजा और मन्त्री जनो! (**वाम्**) आप दोनों की (**याः**) जो (**नियुतः**) निश्चित (**पुरुस्पृहः**) बहुतों से ईप्सा करने योग्य क्रिया (**दाशुषे**) दाता जन के लिये (**सन्ति**) हैं (**ताः**) उन क्रियाओं को (**अस्मे**) हम लोगों के लिये (**नि, यच्छतम्**) अतिशय करके दीजिये॥४॥

**भावार्थः**-हे राजा और मन्त्री जनो! आप लोगों को चाहिये कि हम प्रजा जनों की इच्छा पूर्ण करें, जिससे हम लोग आप लोगों का पूर्ण काम करें॥४॥

इस सूक्त में विद्वान्, राजा और अमात्य के गुणों का वर्णन होने से इस सूक्त के अर्थ की पिछले सूक्त के अर्थ के साथ संगति है, यह जानना चाहिये॥

**यह सैंतालीसवाँ सूक्त और तेईसवां वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

**अथ पञ्चर्चस्याष्टचत्वारिंशत्तमस्य सूक्तस्य वामदेव ऋषिः। वायुर्देवता। १ निचृदनुष्टुप्। २ अनुष्टुप्। ३-५ भुरिगनुष्टुप् छन्दः। गान्धारः स्वरः।**

**अथ राजा प्रजाभिः सह कथं वर्त्तेतेत्याह॥**

[अब पाँच ऋचावाले अड़तालीसवें सूक्त का आरम्भ है।] अब राजा प्रजा के साथ कैसे वर्ते, इस विषय को प्रथम मन्त्र में कहते हैं॥

**वि॒हि होत्रा॒ अवी॑ता॒ विपो॒ न रायो॑ अ॒र्यः।**

**वाय॒वा च॒न्द्रेण॒ रथे॑न या॒हि सु॒तस्य॑ पी॒तये॑॥१॥**

**वि॒हि। होत्राः॑। अवी॑ताः। विपः॑। न। रायः॑। अ॒र्यः। वायो॒ इति॑। आ। च॒न्द्रेण॑। रथे॑न। या॒हि। सु॒तस्य॑। पी॒तये॑॥ १॥**

**पदार्थः**-(**विहि**) व्याप्नुहि। अत्र **वाच्छन्दसी**ति ह्रस्वः। (**होत्राः**) आददानाः (**अवीताः**) नाशरहिताः (**विपः**) मेधावी (**न**) इव (**रायः**) धनानि (**अर्यः**) वैश्यः (**वायो**) विद्वन् (**आ**) (**चन्द्रेण**) सुवर्णमयेन (**रथेन**) यानेन (**याहि**) आगच्छ (**सुतस्य**) निष्पादितस्य (**पीतये**) रक्षणाय॥१॥

**अन्वयः**-हे वायो विपस्त्वमर्यो रायो नावीता होत्रा विहि सुतस्य पीतये चन्द्रेण रथेनाऽऽयाहि॥१॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। यथा धीमान् वणिग्जनः प्रीत्या धनं रक्षति तथैव भवान् भवद्भृत्याश्च सम्प्रीत्या प्रजाः सततं रक्षन्तु॥१॥

**पदार्थः**-हे (**वायो**) विद्वान् (**विपः**) बुद्धिमान्! आप (**अर्यः**) वैश्यजन (**रायः**) धनों के (**न**) जैसे वैसे (**अवीताः**) नाश से रहित क्रियाओं को (**होत्राः**) ग्रहण करते हुए (**विहि**) व्याप्त हूजिये और (**सुतस्य**) उत्पन्न किये रस की (**पीतये**) रक्षा के लिये (**चन्द्रेण**) सुवर्णमय (**रथेन**) वाहन से (**आ, याहि**) प्राप्त हूजिये॥१॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जैसे बुद्धिमान् वैश्यजन प्रीति से धन की रक्षा करता है, वैसे ही आप और आपके भृत्यजन अच्छी प्रीति से प्रजाओं की निरन्तर रक्षा करो॥१॥

**पुना राजविषयमाह॥**

फिर राजविषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**नि॒र्यु॒वा॒णो अश॑स्तीर्नि॒युत्वाँ॒ इन्द्र॑सारथिः।**

**वाय॒वा च॒न्द्रेण॒ रथे॑न या॒हि सु॒तस्य॑ पी॒तये॑॥२॥**

**नि॒ःऽयु॒वा॒नः। अश॑स्तीः। नि॒युत्वा॑न्। इन्द्र॑ऽसारथिः। वायो॒ इति॑। आ। च॒न्द्रेण॑। रथे॑न। या॒हि। सु॒तस्य॑। पी॒तये॑॥ २॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**निर्युवाणः**) निर्गता युवानो यस्मन्नितरां युवानो वा (**अशस्तीः**) अहिंसाः (**नियुत्वान्**) नियतगतिर्वायुः (**इन्द्रसारथिः**) इन्द्रस्य विद्युतः सूर्य्यस्याऽग्नेर्वा नियमेन गमयिता (**वायो**) वायुवद्गुणविशिष्ट (**आ**) (**चन्द्रेण**) आह्लादकेन सुवर्णादिजटितेन (**रथेन**) (**याहि**) आगच्छ (**सुतस्य**) निष्पन्नस्य रसस्य (**पीतये**) पानाय॥२॥

**अन्वयः**-हे वायो राजँस्त्वं नियुत्वानिन्द्रसारथिरिव चन्द्रेण रथेन सुतस्य पीतय आयाहि यथा निर्युवाणोऽशस्तीश्चरन्ति तथा चर॥२॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यथा वायुनाग्निर्वर्धते सद्यो गच्छति तथैव न्यायेन पालितया प्रजया राजा वर्धते ये हिंसां नाचरन्ति तेऽजातशत्रवः सन्तः सर्वप्रिया भवन्ति॥२॥

**पदार्थः**-हे (**वायो**) वायु के सदृश गुणों से विशिष्ट राजन्! आप (**नियुत्वान्**) नियमयुक्त गमन वाले वायु के और (**इन्द्रसारथिः**) बिजुली सूर्य्य वा अग्नि को नियम से चलाने वाले के सदृश (**चन्द्रेण**) आनन्द देने वाले सुवर्ण आदि से जड़े हुए (**रथेन**) वाहन से (**सुतस्य**) उत्पन्न हुए रस के (**पीतये**) पान करने के लिये (**आ याहि**) आइये और जैसे (**निर्युवाणः**) निकल गये युवा जन जिससे वा निरन्तर युवाजन (**अशस्तीः**) अहिंसाओं का आचरण करते अर्थात् हिंसाओं को नहीं करते हैं, वैसे कीजिये॥२॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे वायु से अग्नि बढ़ती और शीघ्र चलती है, वैसे ही न्याय से पालन की गई प्रजा से राजा वृद्धि को प्राप्त होता है और जो हिंसा नहीं करते हैं, वे शत्रुओं से रहित हुए सब के प्रिय होते हैं॥२॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अनु॑ कृ॒ष्णे वसु॑धिती ये॒माते॒ वि॒श्वपे॑शसा।**

**वाय॒वा च॒न्द्रेण॒ रथे॑न या॒हि सु॒तस्य॑ पी॒तये॑॥३॥**

**अनु॑। कृ॒ष्णे। इति॑। वसु॑धिती॒ इति॒ वसु॑ऽधिती। ये॒माते॒ इति॑। वि॒श्वऽपे॑शसा। वायो॒ इति॑। आ। च॒न्द्रेण॑। रथे॑न। या॒हि। सु॒तस्य॑। पी॒तये॑॥३॥**

**पदार्थः**-(**अनु**) (**कृष्णे**) कर्षिते (**वसुधिती**) वसूनां धितिर्ययोर्द्यावापृथिव्योस्ते (**येमाते**) नियमेन गच्छतः (**विश्वपेशसा**) सर्वस्वरूपेण (**वायो**) राजन् (**आ**) (**चन्द्रेण**) रत्नजटितेन (**रथेन**) (**याहि**) (**सुतस्य**) (**पीतये**) रक्षणाय॥३॥

**अन्वयः**-हे वायो! यथा विश्वपेशसा कृष्णे वसुधिती अनु येमाते तथैव सुतस्य पीतये चन्द्रेण रथेन त्वमा याहि॥३॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे राजन्! यथा भूमिसूर्य्यौ बहुफलदौ वर्त्तेते नियमेन गच्छतस्तथा बहुफलदो भूत्वा विद्याविनयनियमेन सततं गच्छेः॥३॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-हे **(वायो)** राजन्! जैसे **(विश्वपेशसा)** सम्पूर्ण उत्तमरूप से **(कृष्णे)** खींची गई **(वसुधिती)** सम्पूर्ण लोकों की स्थिति जिनमें वे अन्तरिक्ष और पृथिवी **(अनु, येमाते)** नियम से चलती हैं, वैसे ही **(सुतस्य)** उत्पन्न किये गये पदार्थ की **(पीतये)** रक्षा के लिये **(चन्द्रेण)** रत्नों से जड़े हुए **(रथेन)** वाहन के द्वारा आप **(आ, याहि)** प्राप्त हूजिये॥३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे राजन्! जैसे भूमि और सूर्य्य बहुत फल देने वाले वर्त्तमान और नियम से चलते हैं, वैसे बहुत फलों के देने वाले होकर विद्या और विनय के नियम से निरन्तर जाइये॥३॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**वह॑न्तु त्वा मनो॒युजो॑ यु॒क्तासो॑ नव॒तिर्नव॑।**

**वाय॒वा च॒न्द्रेण॒ रथे॑न या॒हि सु॒तस्य॑ पी॒तये॑॥४॥**

**वह॑न्तु। त्वा। म॒नः॒ऽयुज॑ः। यु॒क्तास॑ः। न॒व॒तिः। नव॑। वायो॒ इति॑। आ। च॒न्द्रेण॑। रथे॑न। या॒हि। सु॒तस्य॑। पी॒तये॑॥४॥**

**पदार्थः**-**(वहन्तु)** प्राप्नुवन्तु प्रापयन्तु वा **(त्वा)** त्वां राजानम् **(मनोयुजः)** ये मनसा ब्रह्म युञ्जते ते **(युक्तासः)** कृतयोगाभ्यासाः **(नवतिः)** **(नव)** नवगुणिता **(वायो)** बलिष्ठ राजन् **(आ)** **(चन्द्रेण)** **(रथेन)** **(याहि)** **(सुतस्य)** प्राप्तस्य राज्यस्य **(पीतये)** रक्षणाय॥४॥

**अन्वयः**-हे वायो! मनोयुजो युक्तासो नव नवतिर्नाड्य इव त्वा वहन्तु त्वमेषां सुतस्य पीतये चन्द्रेण रथेनाऽऽयाहि॥४॥

**भावार्थः**-हे राजन्! यद्युत्तमा आप्तजनास्तव सहायाः स्युस्तर्हि भवान् यद्यदिच्छेत् तत्तत्सर्वं सिद्ध्येत्॥४॥

**पदार्थः**-हे **(वायो)** बलवान् राजन्! **(मनोयुजः)** मन से ब्रह्म का योग करने वाले **(युक्तासः)** जिन्होंने योगाभ्यास किया वे **(नव)** नौ वार गुनी गईं **(नवतिः)** नव्वे संख्या से युक्त नाड़ियो के सदृश **(त्वा)** आप राजा को **(वहन्तु)** प्राप्त हों वा प्राप्त करावें आप इनके **(सुतस्य)** प्राप्त राज्य के **(पीतये)** रक्षण आदि के लिये **(चन्द्रेण)** सुवर्ण आदि से बने हुए **(रथेन)** वाहन से **(आ, याहि)** आइये॥४॥

**भावार्थः**-हे राजन्! जो श्रेष्ठ यथार्थवक्ता जन आपके सहायक होवें तो आप जिस-जिस पदार्थ की इच्छा करें, वह-वह सब सिद्ध होवें॥४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**वायो॑ श॒तं हरी॑णां यु॒वस्व॒ पोष्या॑णाम्।**



www.9009.co.in

**उ॒त वा॑ ते स॒ह॒स्रिणो॒ रथ॒ आ या॑तु पाज॑सा॥५॥२४॥**

**वायो॒ इति॑ श॒तम्। हरी॑णाम्। यु॒वस्व॑। पोष्या॑णाम्। उ॒त। वा॒। ते॒। स॒ह॒स्रिण॑:। रथ॑:। आ। या॒तु। पाज॑सा॥५॥**

**पदार्थः**-(**वायो**) (**राजन्**) (**शतम्**) असङ्ख्यम् (**हरीणाम्**) मनुष्याणाम् (**युवस्व**) कर्मसु प्रेर्स्व (**पोष्याणाम्**) पोषितुं योग्यानाम् (**उत**) (**वा**) (**ते**) तव (**सहस्रिणः**) असङ्ख्यपुरुषधनयुक्तस्य (**रथः**) (**आ**) (**यातु**) समन्तात्प्राप्नोतु (**पाजसा**) बलेन॥५॥

**अन्वयः**-हे वायो राजंस्त्वं पोष्याणां हरीणां शतं युवस्वोत वा सहस्रिणस्ते पाजसा रथ आयातु॥५॥

**भावार्थः**-हे राजन्! यदि राज्यं कर्त्तुमिच्छेस्तर्हि सुसहायान् गृहाणेति॥५॥

अत्र राजगुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इत्यष्टाचत्वारिंशत्तमं सूक्तं चतुर्विंशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे (**वायो**) राजन्! आप (**पोष्याणाम्**) पोषण करने योग्य (**हरीणाम्**) मनुष्यों के (**शतम्**) असङ्ख्य को (**युवस्व**) कर्मों के बीच प्रेरणा देओ (**उत, वा**) अथवा (**सहस्रिणः**) असंख्य पुरुष और धन से युक्त (**ते**) आपके (**पाजसा**) बल से (**रथः**) वाहन (**आ, यातु**) सब ओर से प्राप्त हो॥५॥

**भावार्थः**-हे राजन्! जो राज्य करने की इच्छा करो तो उत्तम सहायों का ग्रहण करो॥५॥

इस सूक्त में राजगुणों का वर्णन होने से इस सूक्त के अर्थ की पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ संगति जाननी चाहिये॥

**यह अड़तालीसवां सूक्त और चौबीसवां वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

**अथ षड्चस्यैकोनपञ्चाशत्तमस्य सूक्तस्य वामदेव ऋषिः। इन्द्राबृहस्पती देवते। १ निचृद्गायत्री। २-६ गायत्री छन्दः। षड्जः स्वरः॥**

**अथ राजमनुष्याः कथं वर्धेरन्नित्याह॥**

अब छः ऋचा वाले उनचासवें सूक्त का आरम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में राजा और प्रजा की कैसे वृद्धि हो, इस विषय को कहते हैं॥

**इ॒दं वा॑मा॒स्ये॑ ह॒विः प्रि॒यमि॑न्द्राबृहस्पती। उ॒क्थं मद॑श्च शस्यते॥ १॥**

**इ॒दम्। वा॒म्। आ॒स्ये॑। ह॒विः। प्रि॒यम्। इ॒न्द्रा॒बृ॒ह॒स्प॒ती॒ इति॑। उ॒क्थम्। मदः॑। च॒। श॒स्य॒ते॒॥ १॥**

**पदार्थः**-(**इदम्**) (**वाम्**) (**आस्ये**) मुखे (**हविः**) अत्तुमर्हं संस्कृतमन्नम् (**प्रियम्**) कमनीयम् (**इन्द्राबृहस्पती**) विद्युत्सूर्य्याविव प्रधानराजानौ (**उक्थम्**) प्रशंसनीयम् (**मदः**) आनन्दः (**च**) (**शस्यते**) स्तूयते॥१॥

**अन्वयः**-हे इन्द्राबृहस्पती! वामास्य इदं प्रियमुक्थं मदश्च हविः शस्यते॥१॥

**भावार्थः**-यदि राजादयो मनुष्याः सुसंस्कृतान्नं भुञ्जते तर्हि प्रकाशवन्तो दीर्घायुषो बलिष्ठाश्च जायन्ते॥१॥

**पदार्थः**-हे (**इन्द्राबृहस्पती**) बिजुली और सूर्य्य के सदृश मन्त्री और राजा! (**वाम्**) आप दोनों के (**आस्ये**) सुख में (**इदम्**) यह (**प्रियम्**) सुन्दर (**उक्थम्**) प्रशंसा करने योग्य (**मदः**) आनन्द (**च**) और (**हविः**) खाने योग्य वस्तु (**शस्यते**) स्तुति किया जाता है॥१॥

**भावार्थः**-जो राजा आदि मनुष्य उत्तम प्रकार संस्कारयुक्त अन्न को खाते हैं तो प्रकाशयुक्त अधिक अवस्था वाले और बलवान् होते हैं॥१॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अ॒यं वां॒ परि॑ षिच्यते॒ सोम॑ इन्द्राबृहस्पती। चारु॒र्मदा॑य पी॒तये॑॥ २॥**

**अ॒यम्। वा॒म्। परि॑। सि॒च्य॒ते॒। सोमः॑। इ॒न्द्रा॒बृ॒ह॒स्प॒ती॒ इति॑। चारुः॑। मदा॑य पी॒तये॑॥ २॥**

**पदार्थः**-(**अयम्**) (**वाम्**) युवयोः (**परि**) सर्वतः (**सिञ्चते**) (**सोमः**) महौषधिरसः (**इन्द्राबृहस्पती**) राजोपदेशकविद्वांसौ (**चारुः**) अत्युत्तमः (**मदाय**) आनन्दाय (**पीतये**) पानाय॥२॥

**अन्वयः**-हे इन्द्राबृहस्पती! वामास्ये मदाय पीतये चारुः सोमोऽयं परिषिच्यतेऽनेन भवान्तसमर्थो भवेत्॥२॥

**भावार्थः**-यथोत्तमाऽन्नं सेव्यते तथैव श्रेष्ठो रसोऽपि सेव्येत॥२॥

**पदार्थः**-हे (**इन्द्राबृहस्पती**) राजा और उपदेशक विद्वान् जनो! (**वाम्**) आप दोनों के मुख में (**मदाय**) आनन्द के लिये (**पीतये**) पान करने को (**चारुः**) अति उत्तम (**सोमः**) बड़ी ओषधि का रस (**अयम्**) यह (**परि**) सब प्रकार से (**सिच्यते**) सींचा जाता है, इससे आप समर्थ होवें॥२॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-जैसे उत्तमान्न सेवन किया जाता, वैसे ही उत्तम रस भी सेवन किया जावे॥२॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**आ न इन्द्राबृहस्पती गृहमिन्द्रश्च गच्छतम्। सोमपा सोमपीतये॥३॥**

**आ। नः। इन्द्राबृहस्पती इति। गृहम्। इन्द्रः। च। गच्छतम्। सोमऽपा। सोमऽपीतये॥३॥**

**पदार्थः**-**(आ)** **(नः)** अस्माकम् **(इन्द्राबृहस्पती)** राजाऽध्यापकौ **(गृहम्)** **(इन्द्रः)** ऐश्वर्य्यवान् **(च)** **(गच्छतम्)** **(सोमपा)** यो सोमं पिबतस्तौ **(सोमपीतये)** सोमस्योत्तमरसपानाय॥३॥

**अन्वयः**-हे सोमपा इन्द्राबृहस्पती! युवां नो गृहं सोमपीतये आ गच्छतमिन्द्रश्चागच्छेत्॥३॥

**भावार्थः**-हे राजाऽमात्यधनाढ्या यथा वयं युष्मान्निमन्त्र्याऽन्नादिना सत्कुर्य्याम तथैव यूयमस्मान् सत्कुरुत॥३॥

**पदार्थः**-हे **(सोमपा)** सोमलता के रस को पीने वाले **(इन्द्राबृहस्पती)** राजा और अध्यापक आप दोनों **(नः)** हम लोगों के **(गृहम्)** घर को **(सोमपीतये)** सोमलता के उत्तम रस पीने के लिये **(आ, गच्छतम्)** आओ **(इन्द्रः)** और ऐश्वर्य्य वाला जन **(च)** भी आवे॥३॥

**भावार्थः**-हे राजा, मन्त्री और धनी जनो! जैसे हम लोग आप लोगों को निमन्त्रण देकर अन्न आदि से सत्कार करें, वैसे ही आप हम लोगों का सत्कार करो॥३॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अस्मे इन्द्राबृहस्पती रयिं धत्तं शतग्विनम्। अश्वावन्तं सहस्रिणम्॥४॥**

**अस्मे इति। इन्द्राबृहस्पती इति। रयिम्। धत्तम्। शतऽग्विनम्। अश्वऽवन्तम्। सहस्रिणम्॥४॥**

**पदार्थः**-**(अस्मे)** अस्मभ्यम्। अत्र **शे** इति सूत्रेण प्रगृह्यसञ्ज्ञा, **प्लुतप्रगृह्या अचि नित्यमि**ति सन्ध्यभावः। **(इन्द्राबृहस्पती)** विद्युत्सूर्य्याविव राजप्रधानौ **(रयिम्)** धनम् **(धत्तम्)** **(शतग्विनम्)** शतग्वोऽसङ्ख्याता गावो विद्यन्ते यस्मिँस्तम् **(अश्वावन्तम्)** प्रशस्ताऽश्वादिसहितम् **(सहस्रिणम्)** सहस्रमसङ्ख्या: पदार्था विद्यन्ते यस्मिँस्तम्॥४॥

**अन्वयः**-हे इन्द्राबृहस्पती! युवामस्मे शतग्विनमश्वावन्तं सहस्रिणं रयिं धत्तम्॥४॥

**भावार्थः**-तदैव राजप्रधानादीनां प्रशंसा जायेत यदा सर्वां प्रजां धनाढ्यां विदुषीं च ते कुर्य्युः॥४॥

**पदार्थः**-हे **(इन्द्राबृहस्पती)** बिजुली और सूर्य्य के सदृश राजा और प्रधान जनो! आप दोनों **(अस्मे)** हम लोगों के लिये **(शतग्विनम्)** असङ्ख्यात गौओं और **(अश्वावन्तम्)** उत्तम घोड़ों आदि से युक्त **(सहस्रिणम्)** असंख्य पदार्थ जिसमें विद्यमान उस **(रयिम्)** धन को **(धत्तम्)** धारण करो॥४॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-तभी राजा और प्रधानादिकों की प्रशंसा होवे कि जब सब प्रजा को धन और विद्या से युक्त करें॥४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**इन्द्राबृहस्पती वयं सुते गीर्भिर्हवामहे। अस्य सोमस्य पीतये॥५॥**

**इन्द्राबृहस्पती इति। वयम्। सुते। गीःऽभिः। हवामहे। अस्य। सोमस्य। पीतये॥५॥**

**पदार्थः**-**(इन्द्राबृहस्पती)** अध्यापकोपदेशकौ **(वयम्)** **(सुते)** निष्पन्ने **(गीर्भिः)** **(हवामहे)** स्वीकुर्महे **(अस्य)** **(सोमस्य)** ओषधिजातस्य रसस्य **(पीतये)** पानाय॥५॥

**अन्वयः**-[हे] इन्द्राबृहस्पती! यथा वयं गीर्भिरस्य सोमस्य पीतये युवां हवामहे तथा सुतेऽस्मानाह्वयत॥५॥

**भावार्थः**-राजप्रजाजनैः परस्परस्य सत्कारेण महदैश्वर्य्यं भोक्तव्यम्॥५॥

**पदार्थः**-हे **(इन्द्राबृहस्पती)** अध्यापक और उपदेशकजनो! जैसे **(वयम्)** हम लोग **(गीर्भिः)** वाणियों से **(अस्य)** इस **(सोमस्य)** ओषधियों से उत्पन्न हुए रस के **(पीतये)** पान के लिये आप दोनों का **(हवामहे)** स्वीकार करते हैं, वैसे **(सुते)** रस के उत्पन्न होने पर हम लोगों का स्वीकार करो॥५॥

**भावार्थः**-राजा और प्रजाजनों को चाहिये कि परस्पर के सत्कार से बड़े ऐश्वर्य्य का भोग करें॥५॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**सोममिन्द्राबृहस्पती पिबतं दाशुषो गृहे। मादयेथां तदोकसा॥६॥२५॥**

**सोमम्। इन्द्राबृहस्पती इति। पिबतम्। दाशुषः। गृहे। मादयेथाम्। तत्ऽओकसा॥६॥**

**पदार्थः**-**(सोमम्)** अत्युत्तमं रसम् **(इन्द्राबृहस्पती)** राजामात्यौ **(पिबतम्)** **(दाशुषः)** दातुः **(गृहे)** **(मादयेथाम्)** हर्षयेतम् **(तदोकसा)** तदोकः स्थानं ययोस्तौ॥६॥

**अन्वयः**-हे तदोकसेन्द्राबृहस्पती! युवां दाशुषो गृहे सोमं पिबतमस्मान् सततम्मादयेथाम्॥६॥

**भावार्थः**-राजादयो जना यथा स्वयं विद्यावन्तो धार्मिका न्यायशीला आनन्दिनः स्युस्तथा प्रजाजनानपि कुर्य्युः॥६॥

अत्र राजप्रजादिगुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिरस्तीति वेदितव्यम्॥

**इत्येकोनपञ्चाशत्तमं सूक्तं पञ्चविंशो वर्गश्च समाप्तः॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-हे **(तदोकसा)** उस स्थान वाले **(इन्द्राबृहस्पती)** राजा और मन्त्री जनो! आप दोनों **(दाशुषः)** दाता जन के **(गृहे)** स्थान में **(सोमम्)** अति उत्तम रस का **(पिबतम्)** पान करो और हम लोगों को निरन्तर **(मादयेथाम्)** आनन्द देओ॥६॥

**भावार्थः**-राजा आदि जन जैसे स्वयं विद्यायुक्त, धार्मिक, न्यायकारी और आनन्दित होवें, वैसे प्रजाजनों को भी करें॥६॥

इस सूक्त में राजा और प्रजादि के गुणों का वर्णन होने से इस सूक्त के अर्थ की पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति है, यह जानना चाहिये॥

**यह उनचासवां सूक्त और पच्चीसवां वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

**अथैकादशर्चस्य पञ्चाशत्तमस्य सूक्तस्य वामदेव ऋषिः। १-९ बृहस्पतिः। १०, ११ इन्द्राबृहस्पती देवते। १-३, ६, ७, ९ निचृत्त्रिष्टुप्। ५, ४, ११ विराट् त्रिष्टुप्। ८, १० त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः॥**

**अथ विद्वांसः किं कुर्य्युरित्याह॥**

अब ग्यारह ऋचा वाले पचासवें सूक्त का आरम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में विद्वानों को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**यस्तस्तम्भ सहसा वि ज्मो अन्तान् बृहस्पतिस्त्रिषधस्थो रवेण।**

**तं प्रत्नास ऋषयो दीध्यानाः पुरो विप्रा दधिरे मन्द्रजिह्वम्॥१॥**

**यः। तस्तम्भ। सहसा। वि। ज्मः। अन्तान्। बृहस्पतिः। त्रिऽसधस्थः। रवेण। तम्। प्रत्नासः। ऋषयः। दीध्यानाः। पुरः। विप्राः। दधिरे। मन्द्रऽजिह्वम्॥१॥**

**पदार्थः**-(**यः**) विद्वान् राजा (**तस्तम्भ**) धरेत् (**सहसा**) बलेन (**वि**) (**ज्मः**) पृथिव्याः (**अन्तान्**) समीपान् (**बृहस्पतिः**) महान् बृहतां पतिर्वा (**त्रिषधस्थः**) त्रिषु समानस्थानेषु कर्मोपासनाज्ञानेषु वा तिष्ठति (**रवेण**) उपदेशेन (**तम**) (**प्रत्नासः**) प्राक्तनाः पूर्वमधीतविद्याः (**ऋषयः**) मन्त्रार्थवेत्तारः (**दीध्यानाः**) शुभैर्गुणैः प्रकाशमानाः (**पुरः**) महान्ति नगराणि (**विप्राः**) मेधाविनः (**दधिरे**) धरन्तु (**मन्द्रजिह्वम्**) मन्द्राऽऽनन्ददा कल्याणकरी जिह्वा यस्य तं विद्वांसम्॥१॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथा त्रिषधस्थो बृहस्पतिः सूर्य्यः सहसा ज्मोऽन्तान् वि तस्तम्भ तथा त्रिषधस्थो बृहस्पतिर्यो विद्वान् रवेण जनान् दध्यात् तं मन्द्रजिह्वमेषां पुरो दीध्यानाः प्रत्नास ऋषयो विप्रा दधिरे॥१॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यथा सूर्य्यस्स्वाकर्षणेन भूगोलान् दधाति तत्रस्थान् पदर्थांश्च तथैव विद्वांसो सर्वान् मनुष्यान् धृत्वा तेषामन्तःकरणानि प्रकाशयेयुः॥१॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे (**त्रिषधस्थः**) तीन तुल्य स्थानों वा कर्म, उपासना ज्ञान में स्थित होने वाला (**बृहस्पतिः**) महान् वा बड़े पदार्थों का पालने वाला सूर्य्य (**सहसा**) बल से (**ज्मः**) पृथिवी के (**अन्तान्**) समीपों को (**वि, तस्तम्भ**) धारण करे, वैसे कर्मोपासना और ज्ञान में स्थित होने और बड़े पदार्थों का पालने वाला (**यः**) जो विद्वान् (**रवेण**) उपदेश से जनों को धारण करे (**तम्**) उस (**मन्द्रजिह्वम्**) आनन्द देने और कल्याण करने वाली जिह्वा से युक्त विद्वान् को इनके (**पुरः**) बड़े नगरों को (**दीध्यानाः**) उत्तम गुणों से प्रकाशित करते हुए (**प्रत्नासः**) प्राचीन और प्रथम जिन्होंने विद्या पढ़ी ऐसे (**ऋषयः**) मन्त्रों के अर्थ जानने वाले (**विप्राः**) बुद्धिमान् जन (**दधिरे**) धारण करें॥१॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जैसे सूर्य्य अपनी आकर्षणशक्ति से भूगोलों को धारण करता और भूगोलों में वर्त्तमान पदार्थों को धारण करता है, वैसे ही विद्वान् लोग सब मनुष्यों को धारण करके उनके अन्तःकरणों को प्रकाशित करें॥१॥



www.9009.co.in

**अथ के प्रशंसनीया भवन्तीत्याह॥**

अब कौन प्रशंसा के योग्य होते हैं, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**धुनेतयः सुप्रकेतं मदन्तो बृहस्पते अभि ये नस्ततस्रे।**

**पृषन्तं सृप्रमदब्धमूर्वं बृहस्पते रक्षतादस्य योनिम्॥ २॥**

**धुनऽइतयः। सुऽप्रकेतम्। मदन्तः। बृहस्पते। अभि। ये। नः। ततस्रे। पृषन्तम्। सृप्रम्। अदब्धम्। ऊर्वम्। बृहस्पते। रक्षतात्। अस्य। योनिम्॥ २॥**

**पदार्थः-(धुनेतयः)** ये धुनान् धर्मात्मनां कम्पकान् कम्पयन्ति ते **(सुप्रकेतम्)** सुष्ठु प्रकृष्टः केतः प्रज्ञा यस्य तमध्यापकम् **(मदन्तः)** आनन्दयन्तः **(बृहस्पते)** बृहत्या वाचः पालक **(अभि) (ये) (नः)** अस्मान् **(ततस्रे)** उपक्षयन्ति **(पृषन्तम्)** विद्यादिशुभगुणान् सिञ्चन्तम् **(सृप्रम्)** प्राप्तशुभगुणम् **(अदब्धम्)** अहिंसितम् **(ऊर्वम्)** हिंसकम् **(बृहस्पते)** बृहतां पालक **(रक्षतात्) (अस्य)** विद्याव्यवहारस्य **(योनिम्)** कारणम्॥ २॥

**अन्वयः**-हे बृहस्पते! ये मदन्तो धुनेतयः सुप्रकेतं पृषन्तं सृप्रमदब्धमूर्वं जनं ततस्रे नोऽस्माँश्चाभि ततस्रे तान्निवार्य तांस्त्वं निवारय। हे बृहस्पते! येषां निरोधेनास्य योनिं भवान् रक्षतात्॥ २॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! ये दस्युचोरादीन्निवार्य्य धार्म्मिकान् विदुषः सुखयित्वा साङ्गोपाङ्गं विद्यावृद्धिव्यवहारं वर्धयेयुस्ते युष्माभिः सत्कर्त्तव्याः स्युः॥ २॥

**पदार्थः**-हे **(बृहस्पते)** बड़ी वाणी के पालन करने वाले **(ये)** जो **(मदन्तः)** आनन्द देते हुए **(धुनेतयः)** धर्मात्मा जनों के कंपाने वालों को कम्पाने वाले **(सुप्रकेतम्)** उत्तम तीक्ष्ण बुद्धि वाले **(पृषन्तम्)** विद्यादि उत्तम गुणों को सींचते हुए **(सृप्रम्)** उत्तम गुणों को प्राप्त **(अदब्धम्)** नहीं हिंसित **(ऊर्वम्)** हिंसा करने वाले जन का **(ततस्रे)** नाश करते हैं और **(नः)** हम लोगों को **(अभि)** चारों ओर से नाश करते हैं, उनका निवारण करके आप उनका निवारण करो। हे **(बृहस्पते)** बड़ी वस्तुओं के पालन करने वाले! जिनके रोकने से **(अस्य)** इस विद्याव्यवहार के **(योनिम्)** कारण की आप **(रक्षतात्)** रक्षा करें॥ २॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो लोग डाकू और चोरादिकों का निवारण कर धार्मिक विद्वानों को सुख दे कर अङ्ग और उपाङ्गों के सहित विद्या के व्यवहार को बढ़ावें, उनका आप लोग सत्कार करें॥ २॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**बृहस्पते या परमा परावदत आ त ऋतस्पृशो नि षेदुः।**

**तुभ्यं खाता अवता अद्रिदुग्धा मध्वः श्चोतन्त्यभितो विरप्शम्॥ ३॥**



www.9009.co.in

**बृह॑स्पते। या। प॒र॒मा। प॒रा॒ऽवत्। अत॑:। आ। ते॒। ऋ॒त॒ऽस्पृश॑:। नि। से॒दु॒:। तुभ्य॑म्। खा॒ता॒:। अ॒व॒ता॒:। अद्रि॑ऽदुग्धाः। मध्व॑:। श्चो॒त॒न्ति॒। अ॒भित॑:। वि॒ऽर॒प्शम्॥ ३॥**

**पदार्थः-(बृहस्पते)** बृहतो राष्ट्रस्य पालक **(या) (परमा)** उत्कृष्टा नीतिः **(परावत्)** परा गुणा विद्यन्ते यस्मिन् **(अतः)** अस्मात् **(आ) (ते)** तव **(ऋतस्पृशः)** सत्यस्पर्शस्य **(नि) (सेदुः)** निषीदेयुः **(तुभ्यम्) (खाताः)** खनिताः **(अवताः)** कूपाः **(अद्रिदुग्धाः)** मेघेन पूर्णाः **(मध्वः)** मधुरादिगुणयुक्तजलोपेताः **(श्चोतन्ति)** सिञ्चन्ति **(अभितः)** सर्वतः **(विरप्शम्)** महान्तं संसारम्॥ ३॥

**अन्वयः-**हे बृहस्पते! ते या परमा नीतिरस्ति तयर्तस्पृशस्तेऽद्रिदुग्धाः खाता मध्वोऽवतास्तुभ्यमभितः श्चोतन्ति विरप्शमा निषेदुरतस्तान् वयं परावत् सत्कुर्य्याम॥ ३॥

**भावार्थः-**हे मनुष्या! भवन्तो वृद्धानां विदुषां राज्ञां सकाशात् सनातनीं नीतिं गृहीत्वा मेघवत्प्रजाः सुखेन सिञ्चन्तु॥ ३॥

**पदार्थः-**हे **(बृहस्पते)** बड़े राज्य के पालन करने **(ते)** आपकी **(या)** जो **(परमा)** उत्तम नीति है उससे **(ऋतस्पृशः)** सत्य का स्पर्श करने वाले आपके **(अद्रिदुग्धाः)** मेघ से पूर्ण **(खाताः)** खोदे गये **(मध्वः)** मधुर आदि गुण वाले जल से युक्त **(अवताः)** कूप **(तुभ्यम्)** आपके लिये **(अभितः)** सब प्रकार से **(श्चोतन्ति)** सींचते हैं और **(विरप्शम्)** महान् संसार को **(आ, निषेदुः)** सब ओर से स्थित करें **(अतः)** इससे उनका हम लोग **(परावत्)** गुणयुक्त सत्कार करें॥ ३॥

**भावार्थः-**हे मनुष्यो! आप लोग वृद्ध विद्वान् राजा लोगों के समीप से अनादि काल से सिद्ध नीति को ग्रहण करके मेघों के सदृश प्रजाओं को सुख से सींचो॥ ३॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**बृह॒स्पति॑: प्रथ॒मं जाय॑मानो म॒हो ज्योति॑षः पर॒मे व्यो॑मन्।**
**स॒प्तास्य॑स्तुविजा॒तो रवे॑ण॒ वि स॒प्तर॑श्मिरधम॒त्तमां॑सि॥ ४॥**

**बृ॒ह॒स्पति॑:। प्र॒थ॒मम्। जाय॑मानः। म॒हः। ज्योति॑षः। प॒र॒मे। वि॒ऽओ॑मन्। स॒प्तऽआ॑स्यः। तु॒वि॒ऽजा॒तः। रवे॑ण। वि। स॒प्तऽर॑श्मिः। अ॒ध॒म॒त्। तमां॑सि॥ ४॥**

**पदार्थः-(बृहस्पतिः)** महान् **(प्रथमम्)** आदौ **(जायमानः) (महः)** महतः **(ज्योतिषः)** प्रकाशात् **(परमे)** प्रकृष्टे **(व्योमन्)** व्यापके **(सप्तास्यः)** सप्तकिरणा आस्यानि यस्य **(तुविजातः)** बहुषु प्रसिद्धः **(रवेण)** शब्देन **(वि) (सप्तरश्मिः)** सप्तविधकिरणः **(अधमत्)** धमति निराकरोति **(तमांसि)** रात्रीः॥ ४॥

**अन्वयः-**हे मनुष्या! यथा परमे व्योमन् महो ज्योतिषः प्रथमं जायमानः सप्तास्यस्तुविजातस्सप्तरश्मिर्बृहस्पतिस्सूर्य्यो रवेण तमांसि व्यधमत् तथैव महान् विद्वानुपदेशेनाऽविद्यां निवार्य्य विद्यां जनयेत्॥ ४॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-हे विद्वांसो! यथा सूर्य्ये सप्तविधरूपाणि तत्त्वानि मिलितानि यैः सर्वेभ्यो रसान् गृह्णाति तथैव पञ्चभिर्ज्ञानेन्द्रियैर्मनसात्मना च सर्वा विद्याः सङ्गृह्याऽध्यापनोपदेशाभ्यां सर्वेषामज्ञानं निवार्य्य विद्याप्रकाशं जनयन्तु॥४॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे **(परमे)** उत्तम **(व्योमन्)** व्यापक में **(महः)** बड़े **(ज्योतिषः)** प्रकाश से **(प्रथमम्)** पहिले **(जायमानः)** उत्पन्न हुआ **(सप्तास्यः)** सात किरणरूप मुखों से युक्त **(तुविजातः)** बहुतों में प्रसिद्ध **(सप्तरश्मिः)** सात प्रकार के किरणों से युक्त **(बृहस्पतिः)** बड़ा सूर्य **(रवेण)** शब्द से अर्थात् गति शब्द से **(तमांसि)** रात्रियों को **(वि, अधमत्)** दूर करता है, वैसे बड़ा विद्वान् उपदेश से अविद्या का निवारण करके विद्या को प्रकट करे॥४॥

**भावार्थः**-हे विद्वानो! जैसे सूर्य्य में सात प्रकार के रूप वाले तत्त्व मिले हुए वर्त्तमान हैं, जिन किरणों के द्वारा सब से रसों को ग्रहण करता है, वैसे पाँच ज्ञानेन्द्रिय, मन और आत्मा से सब विद्याओं को ग्रहण करके पढ़ाने और उपदेश करने से सबके अज्ञान को दूर करके विद्या के प्रकाश को उत्पन्न करो॥४॥

**अथ विद्वद्विषयमाह॥**

अब विद्वान् के विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**स सुष्टुभा स ऋक्वता गणेन वलं रुरोज फलिगं रवेण।**

**बृहस्पतिरुस्रिया हव्यसूदः कनिक्रदद्वावशतीरुदाजत्॥५॥२६॥**

**सः। सुऽस्तुभा। सः। ऋक्वता। गणेन। वलम्। रुरोज। फलिऽगम्। रवेण। बृहस्पतिः। उस्रियाः। हव्यऽसूदः। कनिक्रदत्। वावशतीः। उत्। आजत्॥५॥**

**पदार्थः**-**(सः)** विद्वान् **(सुष्टुभा)** शोभनेन प्रशंसितेन **(सः)** **(ऋक्वता)** बहुप्रशंसायुक्तेन **(गणेन)** किरणसमूहेनोपदेश्यविद्यार्थिसमुदायेन **(वलम्)** वक्रगतिम् **(रुरोज)** रुजेत् **(फलिगम्)** मेघम्। **फलिग इति मेघनामसु पठितम्।** (निघं०१.१०) **(रवेण)** शब्देन **(बृहस्पतिः)** महान् सर्वेषां पालकः **(उस्रियाः)** पृथिव्यां वर्त्तमानाः **(हव्यसूदः)** यो हव्यानि सूदयति क्षरयति सः **(कनिक्रदत्)** भृशं शब्दयन् **(वावशतीः)** भृशं कामयमानाः प्रजाः **(उत्)** **(आजत्)** प्राप्नोति॥५॥

**अन्वयः**-हे विद्वन्! यथा स हव्यसूदः कनिक्रदद् बृहस्पतिः सूर्य्यः सुष्टुभा गणेन फलिगं रुरोज स ऋक्वता गणेन रवेण वलं रुरोजोस्रिया वावशतीरुदाजत् तथा त्वं वर्त्तस्व॥५॥

**भावार्थः**-यथा सविता वृष्टिद्वारा सर्वाः प्रजा रक्षति विद्युच्छब्देन सर्वान् प्रज्ञापयति तथैव सर्वे विद्वांसो विद्याद्वारा सर्वात्मनः प्रकाशयेयुः॥५॥

**पदार्थः**-हे विद्वन्! जैसे **(सः)** वह **(हव्यसूदः)** हवन करने योग्य पदार्थों को क्षरण कराने अर्थात् अपने प्रताप से अणुरूप कराने वाला **(कनिक्रदत्)** अत्यन्त शब्द करता हुआ **(बृहस्पतिः)** बड़ा



www.9009.co.in

और सब का पालन करने वाला सूर्य्य **(सुष्टुभा)** सुन्दर प्रशंसित **(गणेन)** किरणसमूह से **(फलिगम्)** मेघ को **(रुरोज)** भङ्ग करे और **(सः)** वह विद्वान् **(ऋक्वता)** बहुत प्रशंसायुक्त उपदेश देने योग्य विद्यार्थियों के समूह से **(रवेण)** शब्द से **(वलम्)** कुटिल चाल को भंग करे और **(उस्रियाः)** पृथिवी के बीच वर्त्तमान **(वावशतीः)** अत्यन्त कामना करती हुई प्रजाओं को **(उत्, आजत्)** प्राप्त होता है, वैसे आप वर्त्ताव करो॥५॥

**भावार्थः**-जैसे सूर्य्य वृष्टि के द्वारा सब प्रजाओं की रक्षा करता और बिजुली के शब्द से सब को जनाता है, वैसे ही सब विद्वान् जन विद्या के द्वारा सब के द्वारा सब के आत्माओं को प्रकाशित करें॥५॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**एवा पित्रे विश्वदेवाय वृष्णे यज्ञैर्विधेम नमसा हविर्भिः।**

**बृहस्पते सुप्रजा वीरवन्तो वयं स्याम पतयो रयीणाम्॥६॥**

**एव। पित्रे। विश्वऽदेवाय। वृष्णे। यज्ञैः। विधेम। नमसा। हविऽभिः। बृहस्पते। सुऽप्रजाः। वीरऽवन्तः। वयम्। स्याम। पतयः। रयीणाम्॥६॥**

**पदार्थः**-**(एवा)** अत्र **निपातस्य चे**ति दीर्घः। **(पित्रे)** पालकाय **(विश्वदेवाय)** विश्वस्य प्रकाशकाय **(वृष्णे)** वृष्टिकराय **(यज्ञैः)** सङ्गतैः कर्मभिः **(विधेम)** कुर्य्याम **(नमसा)** सत्कारेणान्नादिना वा **(हविर्भिः)** आदातुं योग्यैरुपदेशैर्द्रव्यैर्वा **(बृहस्पते)** बृहतां पालक **(सुप्रजाः)** विद्याविनययुक्ताः श्रेष्ठाः प्रजा येषान्ते **(वीरवन्तः)** वीरपुत्राः **(वयम्)** **(स्याम)** **(पतयः)** स्वामिनः **(रयीणाम्)** धनानाम्॥६॥

**अन्वयः**-हे बृहस्पते! यथा वयं यज्ञैर्विश्वदेवाय वृष्णे पित्रे नमसा हविर्भिर्विधेम सुप्रजा वीरवन्तो वयं रयीणां पतयस्स्याम तथैवा त्वं भव॥६॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यथा सूर्य्यो मेघालङ्कारेण सर्वेषां पालको वर्त्तते तथैव वयं वर्त्तित्वाऽत्युत्तमपुरुषा राज्याऽधिपतयो भवेम॥६॥

**पदार्थः**-हे **(बृहस्पते)** बड़ों के पालन करने वाले जैसे हम लोग **(यज्ञैः)** मिले हुए कर्मों से **(विश्वदेवाय)** संसार के प्रकाशक **(वृष्णे)** वृष्टि करने और **(पित्रे)** पालन करने वाले के लिये **(नमसा)** सत्कार वा अन्न आदि से **(हविर्भिः)** ग्रहण करने योग्य उपदेश वा द्रव्यों से **(विधेम)** करें और अर्थात् क्रिया विधान करें तथा **(सुप्रजाः)** विद्या और विनय वाली श्रेष्ठ प्रजाओं से युक्त **(वीरवन्तः)** वीर पुत्रों वाले **(वयम्)** हम लोग **(रयीणाम्)** धनों के **(पतयः)** स्वामी **(स्याम)** होवें **(एवा)** वैसे ही आप हूजिये॥६॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जैसे सूर्य्य मेघ के अलङ्कार से सब का पालन करने वाला है, वैसे ही हम लोग वर्त्ताव करके अति उत्तम पुरुष और राज्य के स्वामी होवें॥६॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**स इद्राजा प्रतिजन्यानि विश्वा शुष्मेण तस्थावभि वीर्येण।**

**बृहस्पतिं यः सुभृतं बिभर्ति वल्गूयति वन्दते पूर्वभाजम्॥७॥**

**सः। इत्। राजा। प्रतिऽजन्यानि। विश्वा। शुष्मेण। तस्थौ। अभि। वीर्येण। बृहस्पतिम्। यः। सुऽभृतम्। बिभर्त्ति। वल्गुऽयति। वन्दते। पूर्वऽभाजम्॥७॥**

**पदार्थः**-**(सः)** जगदीश्वरः **(इत्)** **(राजा)** सर्वप्रकाशकः **(प्रतिजन्यानि)** प्रत्यक्षेण जनितुं योग्यानि **(विश्वा)** सर्वाणि **(शुष्मेण)** बलेन **(तस्थौ)** तिष्ठति **(अभि)** आभिमुख्ये **(वीर्य्येण)** पराक्रमेण **(बृहस्पतिम्)** महतां महान्तम् **(यः)** **(सुभृतम्)** सुष्ठु धृतम् **(बिभर्त्ति)** धरति **(वल्गूयति)** सत्करोति। **वल्गूयतीत्यर्चतिकर्मा।** (निघं०३.१४) **(वन्दते)** कामयते **(पूर्वभाजम्)** पूर्वैर्भजनीयम्॥७॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यः सुभृतं बृहस्पतिं पूर्वभाजं बिभर्त्ति वल्गूयति वन्दते यः शुष्मेण वीर्य्येण विश्वा प्रतिजन्यान्यभि तस्थौ स इदेव राजा सर्वैर्भजनीयोऽस्ति॥७॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यः परमेश्वरः सर्वं जगदभिव्याप्य धृत्वा सूर्य्यमपि धरति सर्वान् वेदानुपदिश्य प्रशंसितो वर्त्तते यस्य सेवां योगिराजाः कुर्वन्ति तमेव नित्यमुपाध्वम्॥७॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(यः)** जो **(सुभृतम्)** उत्तम प्रकार धारण किये गये **(बृहस्पतिम्)** बड़ों में बड़े **(पूर्वभाजम्)** प्राचीनों से सेवा करने योग्य का **(बिभर्त्ति)** धारण करता **(वल्गूयति)** सत्कार करता और **(वन्दते)** कामना करता है जो **(शुष्मेण)** बल **(वीर्य्येण)** और पराक्रम से **(विश्वा)** सम्पूर्ण **(प्रतिजन्यानि)** प्रत्यक्ष से उत्पन्न होने योग्यों के **(अभि)** सम्मुख **(तस्थौ)** स्थित होता है **(सः, इत्)** वही जगदीश्वर **(राजा)** सब का प्रकाश करने वाला सब लोगों के सेवा करने योग्य है॥७॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो परमेश्वर सम्पूर्ण जगत् को अभिव्याप्त होकर और धारके सूर्य्य को भी धारता है और सम्पूर्ण वेदों का उपदेश देकर प्रशंसित वर्त्तमान है और जिसकी सेवा योगिराज करते हैं, उसी की नित्य उपासना करो॥७॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**स इत्क्षेति सुधित ओकसि स्वे तस्मा इळा पिन्वते विश्वदानीम्।**



www.9009.co.in

**तस्मै॒ विश॑: स्व॒यमे॒वा न॑मन्ते॒ यस्मि॑न् ब्र॒ह्मा राज॑नि॒ पूर्व॒ एति॑॥८॥**

**सः। इत्। क्षे॒ति॒। सुऽधि॑तः। ओक॑सि। स्वे। तस्मै॑। इळा॑। पि॒न्व॒ते॒। वि॒श्व॒ऽदानी॑म्। तस्मै॑। विश॑ः। स्व॒यम्। ए॒व। न॒म॒न्ते॒। यस्मि॑न्। ब्र॒ह्मा। राज॑नि। पूर्व॑ः। एति॑॥८॥**

**पदार्थः**-(**सः**) (**इत्**) एव (**क्षेति**) निवसति (**सुधितः**) सुहितस्तृप्तः। अत्र **सुधितवसुधितेति** सूत्रेण हस्य धः। (**ओकसि**) निवासस्थाने (**स्वे**) स्वकीये (**तस्मै**) (**इळा**) प्रशंसिता वाग्भूमिर्वा (**पिन्वते**) सेवते (**विश्वदानीम्**) सर्वस्मिन् काले (**तस्मै**) (**विशः**) प्रजाः (**स्वयम्**) (**एवा**) अत्र **निपातस्य चेति** दीर्घः। (**नमन्ते**) नम्रीभूता भवन्ति (**यस्मिन्**) परमात्मनि (**ब्रह्मा**) चतुर्वेदवित् (**राजनि**) प्रकाशमाने (**पूर्वः**) अनादिभूत आदिमः (**एति**) प्राप्नोति॥८॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यो जनः परमेश्वरं भजते स इद् सुधितः सन् स्व ओकसि क्षेति विश्वदानीं तस्मा इळा पिन्वते यस्मिन् राजनि ब्रह्मा पूर्व एति तस्मै राज्ञे विशः स्वयमेवा नमन्ते॥८॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यद्यन्यान् सर्वान् विहायैकं परमेश्वरमेव यूयं भजत तर्हि युष्मासु श्री राज्यं प्रतिष्ठा यशश्च सदैव निवसेत्॥८॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो जन परमेश्वर का भजन करता है (**सः, इत्**) वही (**सुधितः**) उत्तम प्रकार तृप्त हुआ (**स्वे**) अपने (**ओकसि**) निवासस्थान में (**क्षेति**) निवास करता है तथा (**विश्वदानीम्**) सब काल में (**तस्मै**) उसके लिये (**इळा**) प्रशंसित वाणी वा भूमि (**पिन्वते**) सेवन करती है (**यस्मिन्**) जिस (**राजनि**) प्रकाशमान परमात्मा में (**ब्रह्मा**) चार वेद का जानने वाला (**पूर्वः**) अनादि से हुआ प्रथम (**एति**) प्राप्त होता है (**तस्मै**) उस राजा के लिये (**विशः**) प्रजा (**स्वयम्**) (**एवा**) आप ही (**नमन्ते**) नम्र होती हैं॥८॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो अन्य सब का त्याग करके एक परमेश्वर ही की आप लोग सेवा करें तो आप लोगों में लक्ष्मी, राज्य, प्रतिष्ठा और यश सदा ही निवास करें॥८॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अप्र॑तीतो जयति॒ सं धना॑नि॒ प्रति॑जन्यान्यु॒त या सज॑न्या।**

**अ॒व॒स्यवे॒ यो वरि॑वः कृ॒णोति॑ ब्र॒ह्मणे॒ राजा॒ तम॑वन्ति दे॒वाः॥९॥**

**अप्र॑तिऽइतः। ज॒य॒ति॒। सम्। धना॑नि। प्रति॑ऽजन्यानि। उ॒त। या। सऽज॑न्या। अ॒व॒स्यवे॑। यः। वरि॑वः। कृ॒णोति॑। ब्र॒ह्मणे॑। राजा॑। तम्। अ॒व॒न्ति॒। दे॒वाः॥९॥**

**पदार्थः**-(**अप्रतीतः**) शत्रुभिरपराजितः (**जयति**) (**सम्**) (**धनानि**) (**प्रतिजन्यानि**) जनं जनं प्रति योग्यानि (**उत**) (**या**) यानि (**सजन्या**) समानैर्जन्यैः सह वर्त्तमानानि (**अवस्यवे**) रक्षामिच्छवे (**यः**)



www.9009.co.in

**(वरिवः)** सेवनम् **(कृणोति)** **(ब्रह्मणे)** परमात्मने **(राजा)** **(तम्)** **(अवन्ति)** रक्षन्ति **(देवाः)** विद्वांसः॥९॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! योऽप्रतीतो राजा अवस्यवे ब्रह्मणे वरिवः कृणोति तं देवा अवन्ति या सजन्योत प्रतिजन्यानि धनानि सन्ति तानि सहजस्वभावेन सञ्जयति॥९॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यो राजा परमात्मानमेवोपास्त आप्तान् विदुषस्सेवते स एवाक्षतं राष्ट्रं धनं च प्राप्य सदैव विजयी जायते॥९॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(यः)** जो **(अप्रतीतः)** शत्रुओं से नहीं पराजित किया गया **(राजा)** राजा **(अवस्यवे)** रक्षा की इच्छा करते हुए **(ब्रह्मणे)** परमात्मा के लिये **(वरिवः)** सेवन को **(कृणोति)** करता है **(तम्)** उसकी **(देवाः)** विद्वान् जन **(अवन्ति)** रक्षा करते हैं और **(या)** जो **(सजन्या)** तुल्य उत्पन्न हुए पदार्थों के साथ वर्त्तमान **(उत)** भी **(प्रतिजन्यानि)** मनुष्य-मनुष्य के प्रति वर्त्तमान **(धनानि)** धन हैं उनको सहज स्वभाव से **(सम्, जयति)** अच्छे प्रकार जीतता है॥९॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो राजा परमात्मा ही की उपासना करता और यथार्थवक्ता विद्वानों की सेवा करता है, वही नहीं नाश होने वाले राज्य और धन को प्राप्त होकर सदा ही विजयी होता है॥९॥

**अथ राजानः कीदृशो भवेयुरित्याह॥**

अब राजा कैसे हों, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**इन्द्रश्च सोमं पिबतं बृहस्पतेऽस्मिन् यज्ञे मन्दसाना वृषण्वसू।**

**आ वां विशन्त्विन्दवः स्वाभुवोऽस्मे रयिं सर्ववीरं नि यच्छतम्॥१०॥**

**इन्द्रः। च। सोमम्। पिबतम्। बृहस्पते। अस्मिन्। यज्ञे। मन्दसाना। वृषण्वसू इति वृषण्ऽवसू। आ। वाम्। विशन्तु। इन्दवः। सुऽआभुवः। अस्मे इति। रयिम्। सर्वऽवीरम्। नि। यच्छतम्॥१०॥**

**पदार्थः**-**(इन्द्रः)** परमैश्वर्य्यवान् **(च)** **(सोमम्)** सदोषधिरसम् **(पिबतम्)** **(बृहस्पते)** पूर्णविद्वन्! **(अस्मिन्)** **(यज्ञे)** राज्यपालनाख्ये व्यवहारे **(मन्दसाना)** प्रशंसितावानन्दितौ **(वृषण्वसू)** यौ वृष्णो बलिष्ठान् वीरान् वासयतस्तौ **(आ)** **(वाम्)** युवाम् **(विशन्तु)** प्राप्नुवन्तु **(इन्दवः)** ऐश्वर्य्याणि **(स्वाभुवः)** ये स्वयं भवन्ति ते **(अस्मे)** अस्मभ्यम् **(रयिम्)** धनम् **(सर्ववीरम्)** सर्वे वीरा यस्मात्तम् **(नि)** नितराम् **(यच्छतम्)** प्रदद्यातम्॥१०॥

**अन्वयः**-हे बृहस्पते! इन्द्रश्च मन्दसाना वृषण्वसू युवामस्मिन् यज्ञे सोमं पिबतं यथा स्वाभुव इन्दवो वामा विशन्तु तथाऽस्मे सर्ववीरं रयिं युवां नियच्छतम्॥१०॥

**भावार्थः**-हे राजराजोपदेशकौ! युवां कदाचिदपि मादकद्रव्यं मा सेवेथां राज्यपालनेन सत्योपदेशेनैव प्रजाः सम्पाल्य सदैवानन्देतमस्मभ्यं सर्वैश्वर्य्यं प्रदद्यातम्॥१०॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-हे **(बृहस्पते)** पूर्णविद्वन्! **(च)** और **(इन्द्रः)** अत्यन्त ऐश्वर्य्य वाला **(मन्दसाना)** प्रशंसित और आनन्दयुक्त **(वृषण्वसू)** बलिष्ठ वीर पुरुषों को निवास कराने वाले आप दोनों **(अस्मिन्)** इस **(यज्ञे)** राज्यपालननामक व्यवहार में **(सोमम्)** उत्तम ओषधियों के रस का **(पिबतम्)** पान करो और जैसे **(स्वाभुवः)** आप होने वाले **(इन्दवः)** ऐश्वर्य्य **(वाम्)** आप दोनों को **(आ, विशन्तु)** प्राप्त हों, वैसे **(अस्मे)** हम लोगों के लिये **(सर्ववीरम्)** सब वीर हों जिससे उस **(रयिम्)** धन को आप दोनों **(नि, यच्छतम्)** उत्तम प्रकार दीजिये॥१०॥

**भावार्थः**-हे राजा और राजोपदेशको! तुम कभी मदकारक वस्तु का सेवन न करो और राज्यपालन तथा सत्योपदेश से ही प्रजाओं का पालन कर सदैव आनन्दित होओ और हम लोगों के लिये सब ऐश्वर्य्य अच्छे प्रकार देओ॥१०॥

**अथ प्रजाविषयमाह॥**

अब प्रजाविषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**बृह॑स्पत इन्द्र॒ वर्ध॑तं नः॒ सचा॒ सा वां॑ सुम॒तिर्भू॑त्व॒स्मे।**

**अ॒वि॒ष्टं धियो॑ जिगृतं पुर॑न्धीर्जज॒स्तम॒र्यो व॒नुषा॒मरा॑तीः॥११॥२७॥७॥**

**बृह॑स्पते। इन्द्र॑। वर्ध॑तम्। नः॒। सचा॑। सा। वा॒म्। सु॒ऽम॒तिः। भू॒तु॒। अ॒स्मे इति॑। अ॒वि॒ष्टम्। धिय॑ः। जि॒गृ॒तम्। पुर॑म्ऽधीः। ज॒ज॒स्तम्। अ॒र्यः। व॒नुषा॑म्। अरा॑तीः॥११॥**

**पदार्थः**-**(बृहस्पते)** सकलविद्यां प्राप्त **(इन्द्र)** परमैश्वर्य्य राजन्! **(वर्धतम्)** वर्धेथाम्। अत्र व्यत्ययेन परस्मैपदम्। **(नः)** अस्माकम् **(सचा)** सत्येन **(सा)** **(वाम्)** युवयोः **(सुमतिः)** श्रेष्ठा प्रज्ञा **(भूतु)** भवतु **(अस्मे)** अस्मान् **(अविष्टम्)** प्राप्नुयातम् **(धियः)** प्रज्ञाः **(जिगृतम्)** उपदेशयतम् **(पुरन्धीः)** बहुविद्याधराः **(जजस्तम्)** योधयतम् **(अर्य्यः)** स्वामी **(वनुषाम्)** संविभाजकानाम् **(अरातीः)** शत्रून्॥११॥

**अन्वयः**-हे बृहस्पते इन्द्र! या वां सुमतिर्भूतु सा वनुषां नः सचा भूतु तयास्मान् वर्धतम्। युवां याः पुरन्धीर्धियोऽविष्टं यया जिगृतं ता अस्मे प्राप्नुवन्तु यथाऽर्य्यः स्वामी तथा युवामस्माक- मरातीर्जजस्तम्॥११॥

**भावार्थः**-मनुष्यैः सर्वदा विद्वद्भ्यो विद्याप्राप्तिर्याचनीया ययोत्तमाः प्रज्ञा जायेरञ्छत्रवश्च दूरतः प्लवेरन्निति॥११॥

अत्र विद्वद्राजप्रजागुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्य्याणां श्रीमद्विरजानन्दसरस्वतीस्वामिनां शिष्येण दयानन्दसरस्वतीस्वामिना विरचिते संस्कृतार्य्यभाषाभ्यां विभूषिते सुप्रमाणयुक्त ऋग्वेदभाष्ये तृतीयाष्टके सप्तमेऽध्याये सप्तविंशो वर्गः सप्तमोऽध्यायश्चतुर्थे मण्डले पञ्चमानुवाकः पञ्चाशत्तमं सूक्तञ्च समाप्तम्॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-हे **(बृहस्पते)** सम्पूर्ण विद्याओं को प्राप्त **(इन्द्र)** और अत्यन्त ऐश्वर्य्य वाले राजन्! जो **(वाम्)** आप दोनों की **(सुमतिः)** श्रेष्ठ बुद्धि **(भूतु)** हो **(सा)** वह **(वनुषाम्)** संविभाग करने वाले **(नः)** हमारे **(सचा)** सत्य के साथ हो और उससे हम लोगों की **(वर्धतम्)** वृद्धि करो, आप दोनों जो **(पुरन्धीः)** बहुत विद्याओं को धारण करने वाली **(धियः)** बुद्धियों को **(अविष्टम्)** प्राप्त होइये जिससे **(जिगृतम्)** उपदेश दीजिये वे **(अस्मे)** हम लोगों को प्राप्त होवें और जैसे **(अर्य्यः)** स्वामी वैसे आप दोनों हम लोगों के **(अरातीः)** शत्रुओं को **(जजस्तम्)** युद्ध कराइये॥११॥

**भावार्थः**-मनुष्यों को चाहिये कि सर्वदा विद्वानों से विद्याप्राप्ति विषयक याचना करें, जिससे उत्तम बुद्धियाँ होवें और शत्रुजन दूर से भागें॥११॥

इस सूक्त में विद्वान्, राजा और प्रजा के गुणवर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की पिछले सूक्त के अर्थ के साथ संगति जाननी चाहिये॥

**इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्य्य श्रीमान् विरजानन्द सरस्वती स्वामीजी के शिष्य दयानन्द सरस्वती स्वामिविरचित संस्कृतार्य्यभाषासुशोभित सुप्रमाणयुक्त ऋग्वेदभाष्य में तृतीय अष्टक के सप्तम अध्याय में सत्ताईसवाँ वर्ग तथा सातवाँ अध्याय और चतुर्थमण्डल में पाँचवाँ अनुवाक और पचासवाँ सूक्त समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

अथाष्टमाध्यायः॥

**ओ३म् विश्वा॑नि देव सवितर्दुरि॒तानि॒ परा॑ सुव। यद्भ॒द्रं तन्न॒ आ सु॑व॥ ऋ०५.८२.५॥**

**अथैकादशर्चस्यैकाधिकपञ्चाशत्तमस्य सूक्तस्य वामदेव ऋषिः। उषा देवता। १, ५, ८ त्रिष्टुप्। ३ विराट् त्रिष्टुप्। ४, ६, ७, ९, ११ निचृत्त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः। २ पङ्क्तिः। १० भुरिक्पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः॥**

**अथ प्रातर्वर्णनविषयमाह॥**

अब ग्यारह ऋचा वाले इक्कावनवें सूक्त का आरम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में प्रातःकाल का वर्णन जिसमें ऐसे विषय को कहते हैं॥

**इ॒दमु॒ त्यत्पु॑रु॒तमं॑ पु॒रस्ता॒ज्ज्योति॒स्तम॑सो व॒युना॑वदस्थात्।**

**नू॒नं दि॒वो दु॑हि॒तरो॑ विभा॒तीर्गा॒तुं कृ॑णवन्नु॒षसो॒ जना॑य॥ १॥**

**इ॒दम्। ऊ॒म् इति॑। त्यत्। पु॒रु॒ऽतम॑म्। पु॒रस्ता॑त्। ज्योति॑ः। तम॑सः। व॒युन॑ऽवत्। अ॒स्था॒त्। नू॒नम्। दि॒वः। दु॒हि॒तर॑ः। वि॒ऽभा॒तीः। गा॒तुम्। कृ॒ण॒व॒न्। उ॒षस॑ः। जना॑य॥ १॥**

**पदार्थः**-(**इदम्**) (उ) (**त्यत्**) तत् (**पुरुतमम्**) अतिशयेन बहुप्रकारम् (**पुरस्तात्**) पूर्वम् (**ज्योतिः**) तेजः (**तमसः**) रात्रेः (**वयुनावत्**) प्रज्ञानवत् (**अस्थात्**) वर्त्तते (**नूनम्**) (**दिवः**) प्रकाशस्य (**दुहितरः**) कन्या इव वर्त्तमानाः (**विभातीः**) प्रकाशयन्तः (**गातुम्**) पृथिवीम् (**कृणवन्**) कुर्वन्ति (**उषसः**) प्रभाताः (**जनाय**) मनुष्याद्याय॥ १॥

**अन्वयः**-हे मनुष्यास्त्यदिदं पुरुतमं ज्योतिर्वयुनावत्तमसः पुरस्तादस्थात्तस्य दिवो विभातीर्दुहितर उषसो जनाय गातुमु नूनं प्रकाशितां कृणवन्निति विजानीत॥ १॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! भवन्तः पुरुषार्थेन सूर्य्यप्रकाशवद्विज्ञानं प्राप्य तमोनिवृत्तिवदविद्यां निवार्य्याऽऽनन्दिताः भवन्तु॥ १॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! (**त्यत्**) सो (**इदम्**) यह (**पुरुतमम्**) अतिशय करके अनेक प्रकार का (**ज्योतिः**) तेज अर्थात् प्रकाश (**वयुनावत्**) प्रज्ञान के सदृश (**तमसः**) रात्रि से (**पुरस्तात्**) प्रथम (**अस्थात्**) वर्त्तमान है उस (**दिवः**) प्रकाश के सम्बन्ध से (**विभातीः**) प्रकाश करती हुई (**दुहितरः**) कन्याओं के सदृश वर्त्तमान (**उषसः**) प्रभातवेलाएं (**जनाय**) मनुष्य आदि के लिये (**गातुम्**) भूमि को (उ) तो (**नूनम्**) निश्चय प्रकाशित (**कृणवन्**) करती हैं, यह जानो॥ १॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! आप लोग पुरुषार्थ से सूर्य्य के प्रकाश के सदृश विज्ञान को प्राप्त होकर, अन्धकार की निवृत्ति के सदृश अविद्या का निवारण करके आनन्दित होओ॥१॥

**अथ स्त्रीपुरुषविषयमाह॥**

अब स्त्री पुरुष के विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अस्थु॑रु चि॒त्रा उ॒षस॑: पु॒रस्ता॑न्मि॒ताइ॑व॒ स्वर॑वोऽध्व॒रेषु॑।**

**व्यू॑ व्र॒जस्य॒ तम॑सो॒ द्वारो॒च्छन्ती॑रव्र॒ञ्छुच॑यः पाव॒काः॥ २॥**

**अस्थु॑ः। ऊँ॒ इति॑। चि॒त्राः। उ॒षस॑ः। पु॒रस्ता॑त्। मि॒ताःऽइ॑व। स्वर॑वः। अ॒ध्व॒रेषु॑। वि। ऊँ॒म् इति॑। व्र॒जस्य॑। तम॑सः। द्वारा॑। उ॒च्छन्ती॑ः। अ॒व्र॒न्। शुच॑यः। पा॒व॒काः॥ २॥**

**पदार्थः-(अस्थुः)** तिष्ठन्ति **(उ)** **(चित्राः)** विचित्रगुणकर्मस्वभावाः **(उषसः)** प्रभातवेला इव दुहितरः **(पुरस्तात्)** पूर्वस्मात् **(मिताइव)** विद्यया सकलपदार्थवेदित्र्य इव **(स्वरवः)** प्रतापयुक्ताः **(अध्वरेषु)** गृहाश्रमव्यवहाराऽनुष्ठानेषु **(वि)** **(उ)** **(व्रजस्य)** **(तमसः)** अन्धकारस्य **(द्वारा)** द्वाराणि **(उच्छन्तीः)** विवासयन्त्यः **(अव्रन्)** वृणुयुः **(शुचयः)** पवित्राः **(पावकाः)** पवित्रकर्मकर्त्र्यः॥२॥

**अन्वयः**-हे ब्रह्मचारिणो! या उ अध्वरेषु शुचयः पावकाः स्वरवः पुरस्तान्मिता इवोषसो व्रजस्य तमसो द्वारा व्युच्छन्तीरिव चित्रा अस्थुस्ता उ विवाहायाव्रन्॥२॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे ब्रह्मचारिणो! या ब्रह्मचारिण्यो मेघस्वना मितभाषिण्यः पवित्रा विदुष्यः स्युस्ता एव पूर्वे सम्परीक्ष्य वोढव्याः॥२॥

**पदार्थः**-हे ब्रह्मचारी जनो! जो **(उ)** ही **(अध्वरेषु)** गृहाश्रम के व्यवहारों के अनुष्ठानों में **(शुचयः)** पवित्र **(पावकः)** पवित्र कर्म करने वाली **(स्वरवः)** प्रताप से युक्त **(पुरस्तात्)** पूर्व से **(मिताइव)** विद्या से सम्पूर्ण पदार्थों को जानती सी हुईं **(उषसः)** प्रभात वेलाओं के सदृश कन्याएँ **(व्रजस्य)** प्राप्त **(तमसः)** अन्धकार के **(द्वारा)** द्वारों को **(वि, उच्छन्तीः)** विवास कराती हुईं सी **(चित्राः)** विचित्र गुण, कर्म, स्वभावयुक्त ब्रह्मचारिणी **(अस्थुः)** स्थित होती हैं **(उ)** उन्हीं को विवाह के लिये **(अव्रन्)** स्वीकार करो॥२॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे ब्रह्मचारी जनो! जो ब्रह्मचारिणी मेघ के सदृश गम्भीर शब्दयुक्त, थोड़ा बोलने वाली, पवित्र और विद्यायुक्त होवें, वही प्रथम उत्तम प्रकार परीक्षा करके विवाहने योग्य हैं॥२॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**उ॒च्छन्ती॑र॒द्य चि॑तयन्त भो॒जान् रा॑धो॒देया॑यो॒षसो॑ म॒घोनी॑ः।**



www.9009.co.in

**अचित्रे अन्तः पणयः ससन्त्वबुध्यमानास्तमसो विमध्ये॥३॥**

उच्छन्तीः। अद्य। चितयन्त। भोजान्। राधःऽदेयाय। उषसः। मघोनीः। अचित्रे। अन्तरिति। पणयः। ससन्तु। अबुध्यमानाः। तमसः। विऽमध्ये॥३॥

**पदार्थः**-(**उच्छन्तीः**) सुवासयन्त्यः (**अद्य**) (**चितयन्त**) विज्ञापयन्ति (**भोजान्**) पालकान् पतीन् (**राधोदेयाय**) धनं दातुं योग्याय व्यवहाराय (**उषसः**) प्रातर्वेला इव (**मघोनीः**) सत्कृतधनानां स्त्रियः (**अचित्रे**) अनाश्चर्ये (**अन्तः**) मध्ये (**पणयः**) प्रशंसनीयाः (**ससन्तु**) शयीरन् (**अबुध्यमानाः**) बोधरहिताः (**तमसः**) रात्रेः (**विमध्ये**) विशेषान्धकारे॥३॥

**अन्वयः**-हे विद्वांसो! या तमसोऽचित्रे विमध्य उषस इव मघोनीरुच्छन्तीरन्तोऽबुध्यमानाः पणयः स्त्रियः सुखेन ससन्तु राधोदेयाय भोजानद्य चितयन्त ता सङ्ग्रहीतव्याः॥३॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे पुरुषा! याः कन्याः स्वसदृश्यो विदुष्यः शुभगुणकर्मस्वभावाः स्युस्ता एव भार्य्यत्वायाङ्गीकार्याः॥३॥

**पदार्थः**-हे विद्वानो! जो (**तमसः**) रात्रि के (**अचित्रे**) नहीं आश्चर्य जिसमें ऐसे (**विमध्ये**) विशेष अन्धकार में (**उषसः**) प्रातर्वेलाओं के सदृश (**मघोनीः**) सत्कार किया धन का जिन्होंने उनकी स्त्रियाँ (**उच्छन्तीः**) और उत्तम प्रकार वास देती हुई (**अन्तः**) मध्य में (**अबुध्यमानाः**) बोधरहित (**पणयः**) प्रशंसा करने योग्य स्त्रियाँ (**ससन्तु**) सुख से सोवें और (**राधोदेयाय**) धन देने योग्य व्यवहार के लिये (**भोजान्**) पालन करने वाले पतियों को (**अद्य**) आज (**चितयन्त**) जनाती हैं, वे अच्छे प्रकार ग्रहण करनी चाहिये॥३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे पुरुषो! जो कन्या अपने सदृश विदुषी और शुभ गुण, कर्म, स्वभाव वाली होवें, वे ही स्त्री होने के लिये स्वीकार करने योग्य हैं॥३॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**कुवित्स देवीः सनयो नवो वा यामो बभूयादुषसो वो अद्य।**
**येना नवग्वे अङ्गिरे दशग्वे सप्तास्ये रेवती रेवदूष॥४॥**

कुवित्। सः। देवीः। सनयः। नवः। वा। यामः। बभूयात्। उषसः। वः। अद्य। येन। नवऽग्वे। अङ्गिरे। दशऽग्वे। सप्तऽआस्ये। रेवतीः। रेवत्। ऊष॥४॥

**पदार्थः**-(**कुवित्**) महान् (**सः**) (**देवीः**) (**सनयः**) विभक्त्र्यः (**नवः**) नवीनविद्यावयस्कः (**वा**) (**यामः**) यो याति सः (**बभूयात्**) भृशं भूयात् (**उषसः**) प्रभाताः (**वः**) युष्मान् (**अद्य**) (**येना**) अत्र **संहितायामिति** दीर्घः। (**नवग्वे**) नव गावो विद्यन्ते यस्य तस्मै (**अङ्गिरे**) प्राणवत्प्रिये पत्यौ (**दशग्वे**) दश



www.9009.co.in

गावो यस्य तस्मै **(सप्तास्ये)** सप्त प्राणा आस्ये यस्य तस्मिन् **(रेवती:)** बहुधनशोभायुक्ता: **(रेवत् )** बहुप्रशंसितधनवत् **(ऊष)** निवासयन्ति॥४॥

**अन्वय:**-हे पुरुषा:! स कुविद्यामो नवस्त्वं बभूयात् तद्वद् रेवती: सनयो देवीरुषस इव वो रेवदूष वा येनाद्य नवग्वे दशग्वे अङ्गिरे सप्तास्ये वर्त्तन्तेऽतस्ता गृहाश्रमाय सेवध्वम्॥४॥

**भावार्थ:**-योऽधिकविद्याबल: समानरूपो नवयौवन: सुशीलो विद्वान् स्वसदृशीं स्त्रियमुपयच्छेत् स सुखी भूयात्। या स्त्री पतिं कामयमाना धनविद्योन्नतिं कुर्यात् सा सर्वान् मनुष्यान् सुखयितुमर्हेत्॥४॥

**पदार्थ:**-हे पुरुषो! **(स:)** वह **(कुवित्)** बड़े **(याम:)** चलने वाले **(नव)** नवीन विद्या अवस्था युक्त आप **(बभूयात्)** निरन्तर हूजिये उसी प्रकार **(रेवती:)** बहुत धन और शोभा से युक्त **(सनय:)** विभाग करने वाली **(देवी:)** प्रकाशमान **(उषस:)** प्रभात वेलाओं के सदृश कन्या **(व:)** आप लोगों को **(रेवत्)** बहुत प्रशंसित धनवान् जैसे हो वैसे **(ऊष)** निरन्तर वसाती हैं **(वा)** अथवा **(येना)** जिस कारण **(अद्य)** आज दिन **(नवग्वे)** नौ गौओं से युक्त **(दशग्वे)** और दश गौवों से युक्त **(अङ्गिरे)** प्राणों के सदृश प्रिय पति के निमित्त **(सप्तास्ये)** सात प्राण मुख में जिसके उसमें वर्त्तमान हैं, इससे उनकी गृहाश्रम के लिये सेवा करो॥४॥

**भावार्थ:**-जो अधिक विद्या, बल, तुल्य रूप, नवीन युवावस्थायुक्त और सुशील, विद्वान् अपने सदृश स्त्री को स्वीकार करे; वह सुखी होवे और जो स्त्री पति की कामना करती हुई धन और विद्या की उन्नति करे; वह सब मनुष्यों को सुखी करने के योग्य होवे॥४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**यूयं हि देवीर्ऋतयुग्भिरश्वैः परिप्रयाथ भुवनानि सद्यः।**

**प्रबोधयन्तीरुषसः ससन्तं द्विपाच्चतुष्पाच्चरथाय जीवम्॥५॥१॥**

**यूयम्। हि। देवीः। ऋतयुक्ऽभिः। अश्वैः। परिऽप्रयाथ। भुवनानि। सद्यः। प्रऽबोधयन्तीः। उषसः। ससन्तम्। द्विऽपात्। चतुःऽपात्। चरथाय। जीवम्॥५॥**

**पदार्थ:**-**(यूयम्)** **(हि)** **(देवी:)** दिव्यगुणकर्मस्वभावा: **(ऋतयुग्भि:)** य ऋतेन सत्येन युञ्जते तै: **(अश्वै:)** महाबलिष्ठै: पुरुषार्थयुक्तै: **(परिप्रयाथ)** सर्वत: प्राप्नुयात् **(भुवनानि)** लोकलोकान्तराणि **(सद्य:)** शीघ्रम् **(प्रबोधयन्ती:)** जागरयन्त्य: **(उषस:)** **(ससन्तम्)** शयानम् **(द्विपात्)** द्वौ पादौ यस्य स मनुष्यादि: **(चतुष्पात्)** चत्वार: पादा यस्य स गवादि: **(चरथाय)** **(जीवम्)** प्राणधारिणम्॥५॥

**अन्वय:**-हे नरा! यूयं यथा चरथाय ससन्तं जीवं प्रबोधयन्तीरुषसो द्विपाच्चतुष्पाद्वत्सद्यो भुवनानि गच्छन्ति तथा ह्यृतयुग्भिरश्वैर्देवी: स्त्रिय: परिप्रयाथ॥५॥



www.9009.co.in

**भावार्थ:**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। ये शुभगुणान्विता विदुषीर्हृद्याः स्वसदृशीर्भार्याः प्राप्नुवन्ति ते सदैवोषर्वत्प्रकाशमानाः सर्वेषां ज्ञापका भवन्ति॥५॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(यूयम्)** आप लोग जैसे **(चरथाय)** भ्रमण के लिये **(ससन्तम्)** शयन करते हुए **(जीवम्)** प्राणधारी को **(प्रबोधयन्तीः)** जगाती हुई **(उषसः)** प्रातर्वेला **(द्विपात्)** दो पाद वाले मनुष्य आदि और **(चतुष्पात्)** चार पैर वाली गौ आदि के सदृश **(सद्यः)** शीघ्र **(भुवनानि)** लोक-लोकान्तरों को प्राप्त होती हैं, वैसे **(हि)** ही **(ऋतयुग्भिः)** सत्य से युक्त **(अश्वैः)** बड़े बलिष्ठ और पुरुषार्थियों के साथ **(देवीः)** दिव्य गुण, कर्म, स्वभाव युक्त स्त्रियों को **(परिप्रयाथ)** सब ओर से प्राप्त होओ॥५॥

**भावार्थ:**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो जन उत्तम गुणों से युक्त, विदुषी, सुन्दर, अपने सदृश स्त्रियों को प्राप्त होते हैं; वे सदा ही प्रातःकाल के सदृश प्रकाशमान और सब के बोधक होते हैं॥५॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**क्व स्विदासां कतमा पुराणी यया विधाना विदधुर्ऋभूणाम्।**

**शुभं यच्छुभ्रा उषसश्चरन्ति न वि ज्ञायन्ते सदृशीरजुर्याः॥६॥**

**क्व। स्वित्। आसाम्। कतमा। पुराणी। यया। विऽधाना। विऽदधुः। ऋभूणाम्। शुभम्। यत्। शुभ्राः। उषसः। चरन्ति। न। वि। ज्ञायन्ते। सऽदृशीः। अजुर्याः॥६॥**

**पदार्थः**-**(क्व)** कस्मिन् **(स्वित्)** प्रश्ने **(आसाम्)** **(कतमा)** **(पुराणी)** पुरातनी **(यया)** **(विधाना)** **(विदधुः)** विदध्यासुः **(ऋभूणाम्)** धीमताम् **(शुभम्)** कल्याणम् **(यत्)** याः **(शुभ्राः)** भास्वराः **(उषसः)** प्रातर्वेलाः **(चरन्ति)** गच्छन्ति **(न)** निषेधे **(वि)** **(ज्ञायन्ते)** **(सदृशीः)** समानाः **(अजुर्याः)** अजीर्णाः॥६॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यद्या शुभ्राः सदृशीरजुर्या उषसः शुभं चरन्त्यासां कतमा पुराणी क्व विधाना ययर्भूणां स्विद् किं विदधुरेवं न वि ज्ञायन्ते इत्थंभूताः स्त्रियो वरा विजानीत॥६॥

**भावार्थ:**-यथा सर्वाः प्रातर्वेलाः सदृश्यः सन्ति तथैव पतिभिः सदृशा भार्याः प्रशंसनीया भवन्ति ताः सदैव युवावस्थायां यूनः प्राप्यानन्दन्तु नैव विज्ञायते का नवीना का प्राचीनोषा वर्त्तते तद्वत्कृतब्रह्मचर्याः कन्या भवन्ति॥६॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(यत्)** जो **(शुभ्राः)** चमकीली **(सदृशीः)** तुल्य **(अजुर्याः)** नहीं जीर्ण अर्थात् नवीन **(उषसः)** प्रातर्वेलायें **(शुभम्)** कल्याण को **(चरन्ति)** प्राप्त होती हैं **(आसाम्)** इनके मध्य में **(कतमा)** कौन सी **(पुराणी)** पुरानी **(क्व)** किस में **(विधाना)** करती **(यया)** जिससे **(ऋभूणाम्)** बुद्धिमानों का **(स्वित्)** क्या **(विदधुः)** विधान करें ऐसा **(न)** नहीं **(वि, ज्ञायन्ते)** जाना जाता है, इस प्रकार की स्त्रियों को श्रेष्ठ जानें॥६॥



www.9009.co.in

**भावार्थ:**-जैसे सम्पूर्ण प्रातर्वेला तुल्य होती हैं, वैसे ही पतियों के साथ सदृश स्त्रियाँ प्रशंसा करने योग्य होती हैं, वह सदा ही युवावस्था में युवा पुरुषों को प्राप्त होकर आनन्दित हों, नहीं जाना जाता है कि कौन नवीन कौन प्राचीन प्रातर्वेला होती है, वैसे ब्रह्मचर्य्य से युक्त कन्या होती हैं॥६॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**ता घा ता भद्रा उषसः पुरासुरभिष्टिद्युम्ना ऋतजातसत्याः।**

**यास्वीजानः शशमान उक्थैः स्तुवञ्छंसन् द्रविणं सद्य आप॥७॥**

**ताः। घ। ताः। भद्राः। उषसः। पुरा। आसुः। अभिष्टिऽद्युम्नाः। ऋतजातऽसत्याः। यासु। ईजानः। शशमानः। उक्थैः। स्तुवन्। शंसन्। द्रविणम्। सद्यः। आप॥७॥**

**पदार्थः**-**(ताः)** **(घा)** एव। अत्र **ऋचि तुनुघे**ति दीर्घः। **(ताः)** **(भद्राः)** कल्याणकारीः **(उषसः)** प्रभातवेलाः **(पुरा)** **(आसुः)** आसन् **(अभिष्टिद्युम्नाः)** प्रशंसितयशोधनाः **(ऋतजातसत्याः)** ऋताज्जातेषु व्यवहारेषु सत्सु साध्व्यः **(यासु)** **(ईजानः)** **(शशमानः)** प्राप्तप्रशंसः सन् **(उक्थैः)** वक्तुमर्हैर्वचनैः **(स्तुवन्)** **(शंसन्)** प्रशंसन् **(द्रविणम्)** धनं यशो वा **(सद्यः)** शीघ्रम् **(आप)** प्राप्नोति॥७॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! ईजानः शशमान उक्थैः स्तुवच्छंसन् यासु द्रविणं सद्य आप ता उषसो भद्रा यादृश्यः पुराऽऽसुस्तादृश्यः पुनर्वर्त्तन्ते तद्वद्या अभिष्टिद्युम्ना ऋतजातसत्या ब्रह्मचारिण्यः सन्ति ता घा यूयं गृहाश्रमाय प्राप्नुत॥७॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यथा सूर्य्येण सहोषा सदा वर्त्तते तथैव कृतस्वयंवरौ स्त्रीपुरुषौ यशस्विनौ सत्याचरणौ भवेताम्॥७॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(ईजानः)** गमन करने वाला जन **(शशमानः)** प्रशंसा को प्राप्त होता **(उक्थैः)** कहने योग्य वचनों से **(स्तुवन्)** स्तुति करता और **(शंसन्)** प्रशंसा करता हुआ **(यासु)** जिनमें **(द्रविणम्)** धन वा यश को **(सद्यः)** शीघ्र **(आप)** प्राप्त होता है **(ताः)** वे **(उषसः)** प्रभात वेला **(भद्राः)** कल्याण करने वाली जैसी **(पुरा)** पहिले **(आसुः)** हुईं वैसी फिर वर्त्तमान हैं, उनके समान जो **(अभिष्टिद्युम्ना)** प्रशंसित यशरूप धन से युक्त **(ऋतजातसत्याः)** सत्य से उत्पन्न हुए व्यवहारों में श्रेष्ठ ब्रह्मचारिणी हैं **(ताः, घा)** उन्हीं को आप लोग गृहाश्रम के लिये प्राप्त होओ॥७॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे सूर्य्य के साथ प्रातर्वेला सदा वर्त्तमान है, वैसे ही स्वयंवर जिन्होंने किया ऐसे स्त्री-पुरुष यशस्वी और सत्य आचरण वाले होवें॥७॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**ता आ चरन्ति समना पुरस्तात् समानतः समना पप्रथानाः।**



www.9009.co.in

**ऋतस्य॑ दे॒वीः सद॑सो बुधा॒ना ग॒वां न सर्गा॑ उ॒षसो॑ जरन्ते॥८॥**

**ताः। आ। च॒र॒न्ति॒। स॒म॒ना। पु॒रस्ता॑त्। स॒मा॒नतः॑। स॒म॒ना। प॒प्र॒था॒नाः। ऋ॒तस्य॑। दे॒वीः। सद॑सः। बु॒धा॒नाः। गवा॑म्। न। सर्गाः॑। उ॒षसः॑। ज॒र॒न्ते॒॥८॥**

**पदार्थः**-(**ता**) (**आ**) (**चरन्ति**) (**समना**) समानाः। अत्र **सुपां सुलुगि**ति जसो लुक्। (**पुरस्तात्**) (**समानतः**) सदृशेभ्यः पतिभ्यः (**समना**) समानगुणकर्मस्वभावाः (**पप्रथानाः**) विस्तीर्णविद्यासौन्दर्यादिगुणाः (**ऋतस्य**) सत्यस्य (**देवीः**) विदुष्यः (**सदसः**) सभ्यान् (**बुधानाः**) प्रबोधयन्त्यः (**गवाम्**) (**न**) इव (**सर्गाः**) उत्पद्यमानाः (**उषसः**) प्रातर्वेलाः (**जरन्ते**) स्तुवन्ति॥८॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! या पुरस्तात् कृतब्रह्मचर्य्यपरीक्षाः समानतः समना ऋतस्य देवीः पप्रथानाः सदसो बुधाना उषसः समना गवां सर्गा ना चरन्ति जरन्ते ता उपयच्छन्तु॥८॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! गृहीतशिक्षा रूपलावण्यादिशुभगुणाढ्या विदुष्यो ब्रह्मचारिण्यः स्युस्ता एव यथायोग्यं विवहन्तु॥८॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो (**पुरस्तात्**) पुरस्तात् कृत ब्रह्मचर्य्य परीक्षा अर्थात् प्रथम ब्रह्मचर्य्य की परीक्षा जिनकी की [गयी] ऐसी (**समानतः**) सदृश पतियों से (**समना**) तुल्य गुण, कर्म और स्वभाव वाली (**ऋतस्य**) सत्य की (**देवीः**) जानने वाली पण्डिता (**पप्रथानाः**) विस्तीर्ण विद्या और सौन्दर्य्य आदि गुणयुक्त कन्या (**सदसः**) श्रेष्ठ पुरुषों को (**बुधानाः**) ज्ञान से जगाती (**उषसः**) प्रातर्वेलाओं के (**समना**) समान और (**गवाम्**) गौओं के (**सर्गाः**) उत्पन्न हुए वृन्दों के (**न**) समान (**आ, चरन्ति**) आचरण करती और (**जरन्ते**) स्तुति करती हैं (**ताः**) उनको विवाहो॥८॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो शिक्षा को ग्रहण किये हुए, रूप और कान्ति आदि उत्तम गुणों से युक्त, विदुषी, ब्रह्मचारिणी कन्या होवें; उन्हीं को यथायोग्य विवाहो॥८॥

**अथ स्त्रीभ्य उपदेशविषयमाह॥**

अब स्त्रियों के लिये उपदेशविषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**ता इन्न्वे॒३॑व स॑म॒ना स॑मा॒नीरमी॑तवर्णा उ॒षस॑श्चरन्ति।**
**गूह॑न्ती॒रभ्व॒मसि॑तं॒ रुश॑द्भिः शु॒क्रास्त॒नूभिः॒ शुच॑यो रुचा॒नाः॥९॥**

**ताः। इत्। नु। ए॒व। स॒म॒ना। स॒मा॒नीः। अमी॑तऽवर्णाः। उ॒षसः॑। च॒र॒न्ति॒। गूह॑न्तीः। अभ्व॑म्। असि॑तम्। रुश॑त्ऽभिः। शु॒क्राः। त॒नूभिः॑। शुच॑यः। रु॒चा॒नाः॥९॥**

**पदार्थः**-(**ताः**) (**इत्**) एव (**नु**) सद्यः (**एव**) (**समना**) समानाः (**समानीः**) (**अमीतवर्णाः**) अहिंसितवर्णाः (**उषसः**) प्रभातवेला इव (**चरन्ति**) (**गूहन्तीः**) संवृण्वत्यः (**अभ्वम्**) महान्तम् (**असितम्**) निकृष्टवर्णन्तमः (**रुशद्भिः**) हिंसकैर्गुणैः (**शुक्राः**) प्रदीप्ताः (**तनूभिः**) विस्तृतशरीरैः (**शुचयः**) पवित्राः (**रुचानाः**) रुचिकर्य्यः॥९॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे स्त्रियो! या अमीतवर्णाः समना समानी रुशद्भिरभ्वमसितं गूहन्तीस्तनूभिः शुक्राः शुचयो रुचाना उषसश्चरन्ति ता इन्वेव यथा सुखं प्रयच्छन्ति तथैव सर्वान्त्सुखयत॥९॥

**भावार्थः**-याः स्त्रिय उषर्वद् दुःखध्वंसिका सुखजनित्र्यः स्युस्ता एवाऽऽह्लादिका भवेयुः॥९॥

**पदार्थः**-हे स्त्रियो! जो **(अमीतवर्णाः)** विद्यमान वर्ण वाली **(समना)** तुल्य **(समानीः)** तुल्यविचारशील **(रुशद्भिः)** नाश करने वाले गुणों से **(अभ्वम्)** बड़े **(असितम्)** निकृष्ट वर्ण वाले अन्धकार को **(गूहन्तीः)** ढांपती हुई **(तनूभिः)** विस्तृत शरीरों से **(शुक्राः)** कान्तिमती और **(शुचयः)** पवित्र **(रुचानाः)** प्रीति करने वाली **(उषसः)** प्रभातवेलाओं के सदृश **(चरन्ति)** चलती हैं **(ताः)** वे **(इत्)** ही **(नु)** शीघ्र **(एव)** ही जैसे सुख देती हैं, वैसे सब को सुखी करो॥९॥

**भावार्थः**-जो स्त्रियाँ प्रातर्वेला के सदृश दुःख को नाश करने वाली और सुख को उत्पन्न करने वाली हों, वे ही आनन्द देने वाली होवें॥९॥

**अथाग्रिमेण स्वयंवर उच्यते**

अब अगले मन्त्र से स्वयंवर विवाह कहा है॥

**र॒यिं दि॒वो दु॑हितरो विभा॒तीः प्र॒जाव॑न्तं यच्छता॒स्मासु॑ देवीः।**

**स्यो॒नादा व॑: प्रति॒बुध्य॑माना॒: सु॒वीर्य॑स्य॒ पत॑यः स्याम॥ १०॥**

**र॒यिम्। दि॒वः। दु॒हि॒त॒रः। वि॒ऽभा॒तीः। प्र॒जाऽव॑न्तम्। य॒च्छ॒त॒। अ॒स्मासु॑। दे॒वीः। स्यो॒नात्। आ। व॒ः। प्र॒ति॒ऽबुध्य॑मानाः। सु॒ऽवीर्य॑स्य। पत॑यः। स्या॒म॒॥ १०॥**

**पदार्थः**-**(रयिम्)** धनम् **(दिवः)** सूर्य्यस्य **(दुहितरः)** कन्या इव किरणाः **(विभातीः)** प्रकाशयन्त्यः **(प्रजावन्तम्)** बह्व्यः प्रजा विद्यन्ते यस्य तम् **(यच्छत)** गृह्णीत **(अस्मासु)** **(देवीः)** विदुष्यः **(स्योनात्)** सुखात् **(आ)** **(वः)** युष्मान् **(प्रतिबुध्यमानाः)** **(सुवीर्य्यस्य)** सुष्ठु पराक्रमयुक्तस्य सैन्यस्य **(पतयः)** **(स्याम)**॥१०॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथा दिवो विभातीर्दुहितरः किरणाः प्रकाशं ददति। हे देवीर्देव्यस्तथास्मासु स्योनात् प्रजावन्तं रयिमायच्छत वः प्रतिबुध्यमाना वयं सुवीर्य्यस्य पतयः स्याम॥१०॥

**भावार्थः**- अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। याः कन्याः प्रभातवेलावत्सुशोभिताः सुखं जनयन्ति ताभिः सह स्वयंवरेण विवाहेनैव मनुष्याः श्रीमन्तो जायन्ते॥१०॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे **(दिवः)** सूर्य्य की **(विभातीः)** प्रकाश करती हुई **(दुहितरः)** कन्याओं के सदृश वर्त्तमान किरणें प्रकाश को देती हैं। हे **(देवीः)** विदुषियों! वैसे **(अस्मासु)** हम लोगों में **(स्योनात्)** सुख से **(प्रजावन्तम्)** बहुत प्रजायुक्त **(रयिम्)** धन को **(आ, यच्छत)** ग्रहण करो **(वः)** तुम को **(प्रतिबुध्यमानाः)** प्रतिबोध कराते हुए हम लोग **(सुवीर्यस्य)** उत्तम पराक्रम युक्त सेना के **(पतयः)** स्वामी **(स्याम)** होवें॥१०॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो कन्या प्रभात वेला के सदृश उत्तम प्रकार शोभित सुख को उत्पन्न करती हैं, उनके साथ स्वयंवर विवाह से ही मनुष्य श्रीमान् होते हैं॥१०॥

**अथ पुरुषविषयमाह॥**

अब पुरुष विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**तद्वो॑ दि॒वो दु॑हि॒तरो॑ विभा॒तीरुप॑ ब्रुव उ॒षसो॑ य॒ज्ञके॑तुः।**

**व॒यं स्या॑म य॒शसो॒ जने॑षु तद् द्यौश्च॑ ध॒त्तां पृ॑थि॒वी च॑ दे॒वी॥११॥२॥**

**तत्। वः॒। दि॒वः। दु॒हि॒तरः॑। वि॒ऽभा॒तीः। उप॑। ब्रु॒वे॒। उ॒षसः॑। य॒ज्ञऽके॑तुः। व॒यम्। स्या॒म॒। य॒शसः॑। जने॑षु। तत्। द्यौः। च॒। ध॒त्ताम्। पृ॒थि॒वी। च॒। दे॒वी॥११॥**

**पदार्थः**-(**तत्**) (**वः**) युष्माकम् (**दिवः**) प्रकाशस्य (**दुहितरः**) कन्या इव वर्त्तमानाः (**विभातीः**) प्रकाशयन्त्यः (**उप**) (**ब्रुवे**) उपदिशामि (**उषसः**) प्रातर्वेलायाः (**यज्ञकेतुः**) यज्ञस्य प्रापकः (**वयम्**) (**स्याम**) (**यशसः**) यशस्विनः (**जनेषु**) विद्वत्सु (**तत्**) (**द्यौः**) विद्युत् (**च**) (**धत्ताम्**) (**पृथिवी**) (**च**) (**देवी**) देदीप्यमाना॥११॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! विभातीर्दिवो दुहितर उषस इव स्त्रियो वो यद् ब्रूयुस्तद्यज्ञकेतुरहं युष्मानुप ब्रुवे यथा तद्देवी द्यौश्च पृथिवी च धत्तां तथा वयं जनेषु यशसः स्याम॥११॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। ये परस्परानुपदिश्य सत्यं ग्राहयन्ति ते सूर्यवत्प्रकाशका भूमिवत्प्रजाधर्त्तारो भवन्तीति॥११॥

अत्रोषःस्त्रीपुरुषगुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इत्येकाधिकपञ्चाशत्तमं सूक्तं द्वितीयो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! (**विभातीः**) प्रकाश करती हुईं (**दिवः**) प्रकाश की (**दुहितरः**) कन्याओं के सदृश वर्त्तमान (**उषसः**) प्रातर्वेला के सदृश स्त्रियाँ (**वः**) आप लोगों का जो विषय कहें (**तत्**) उसको (**यज्ञकेतुः**) यज्ञ का जनाने वाला मैं आप लोगों को (**उप, ब्रुवे**) उपदेश देता हूँ जैसे (**तत्**) उसको (**देवी**) प्रकाश (**द्यौः**) बिजुली (**च**) और (**पृथिवी**) पृथिवी (**च**) भी (**धत्ताम्**) धारण करें, वैसे (**वयम्**) हम लोग (**जनेषु**) विद्वानों में (**यशसः**) यशस्वी (**स्याम**) होवें॥११॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो परस्पर जनों को उपदेश देकर सत्य का ग्रहण कराते हैं, वे सूर्य्य के सदृश प्रकाश करने और भूमि के सदृश प्रजा के धारण करने वाले होते हैं॥११॥

इस सूक्त में प्रातःकाल, स्त्री और पुरुष के गुण कर्म वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की पिछले सूक्त के अर्थ के साथ संगति जाननी चाहिये॥

**यह इक्क्यावनवां सूक्त और दूसरा वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

**अथ सप्तर्चस्य द्विपञ्चाशत्तमस्य सूक्तस्य वामदेव ऋषिः। उषा देवता। १-६ निचृद्गायत्री। ५, ७ गायत्री छन्दः। षड्जः स्वरः॥**

**अथोषर्वत्स्त्रीगुणानाह॥**

अब सात ऋचा वाले बावनवें सूक्त का आरम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में उषा की तुल्यता से स्त्री के गुणों का वर्णन करते हैं॥

**प्रति ष्या सूनरी जनी व्युच्छन्ती परि स्वसुः। दिवो अदर्शि दुहिता॥१॥**

**प्रति। स्या। सूनरी। जनी। विऽउच्छन्ती। परि। स्वसुः। दिवः। अदर्शि। दुहिता॥१॥**

**पदार्थः-(प्रति) (स्या)** सा **(सूनरी)** सुष्ठु नेत्री **(जनी)** जनयित्री **(व्युच्छन्ती)** निवासयन्ती **(परि) (स्वसुः)** भगिन्याः **(दिवः)** कमनीयायाः **(अदर्शि)** दृश्यते **(दुहिता)** कन्येव वर्त्तमाना॥१॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! या दिवः स्वसुर्जनी सूनरी परिव्युच्छन्ती दुहितेवोषाः प्रत्यदर्शि स्या जागृतेन मनुष्येण द्रष्टव्या॥१॥

**भावार्थः**-सैव स्त्री वरा या उषर्वद्वर्त्तते॥१॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो **(दिवः)** सुन्दर **(स्वसुः)** भगिनी की **(जनी)** उत्पन्न करने वाली **(सूनरी)** उत्तम पहुंचाती और **(परि, व्युच्छन्ती)** सब ओर से निवास देती हुई **(दुहिता)** कन्या के सदृश वर्त्तमान प्रातर्वेला **(प्रति, अदर्शि)** एक के प्रति एक देखी जाती है **(स्या)** वह जागे हुए मनुष्य से देखने योग्य है॥१॥

**भावार्थः**-वही स्त्री श्रेष्ठ, जो प्रातर्वेला के सदृश वर्त्तमान है॥१॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अश्वेव चित्रारुषी माता गवामृतावरी। सखाभूदश्विनोरुषाः॥२॥**

**अश्वाऽइव। चित्रा। अरुषी। माता। गवाम्। ऋतऽवरी। सखा। अभूत्। अश्विनोः। उषाः॥२॥**

**पदार्थः-(अश्वेव)** अश्वावद्वर्त्तमाना **(चित्रा)** अद्भुतगुणकर्म्मस्वभावा **(अरुषी)** आरक्ता **(माता)** जननी **(गवाम्)** किरणानाम् **(ऋतावरी)** बहुसत्यप्रकाशिका **(सखा) (अभूत्) (अश्विनोः)** सूर्य्याचन्द्रमसोः **(उषाः)**॥२॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! या चित्राऽरुष्यृतावरी उषा अश्वेवाश्विनोः सखाऽभूत् सा गवां मातेव पालिका वेद्या॥२॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! या मातृवत्सखिवद्वर्त्तमानोषा वर्त्तते सा युक्त्या सर्वैः सेवनीया॥२॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो **(चित्रा)** अद्भुत गुण, कर्म और स्वभावयुक्त **(अरुषी)** ईषत् लाल वर्ण **(ऋतावरी)** बहुत सत्य का प्रकाश कराने वाली **(उषाः)** प्रातर्वेला **(अश्वेव)** घोड़ी के सदृश वर्त्तमान



www.9009.co.in

**(अश्विनोः)** सूर्य और चन्द्रमा की **(सखा)** मित्र **(अभूत्)** हुई वह **(गवाम्)** किरणों की **(माता)** माता के सदृश पालन करने वाली जाननी चाहिये॥२॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जो माता और मित्र के सदृश वर्त्तमान प्रातर्वेला है, वह युक्ति से सब पुरुषों से सेवन करने योग्य है॥२॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**उत सखास्यश्विनोरुत माता गवामसि। उतोषो वस्व ईशिषे॥३॥**

**उत। सखा। असि। अश्विनोः। उत। माता। गवाम्। असि। उत। उषः। वस्वः। ईशिषे॥३॥**

**पदार्थः**-**(उत)** **(सखा)** **(असि)** **(अश्विनोः)** सूर्य्याचन्द्रमसोरिवाऽध्यापकोपदेशकयोः **(उत)** **(माता)** जननीव **(गवाम्)** किरणानां धेनूनां वा **(असि)** **(उत)** **(उषः)** उष इव शुम्भमाने **(वस्वः)** धनस्य **(ईशिषे)** इच्छसि॥३॥

**अन्वयः**-हे उष इव वर्त्तमाने स्त्रि! त्वं पत्युः सखेवासि उताऽश्विनोः सखासि उत गवां मातासि उत वस्व ईशिषे॥३॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। सैव स्त्री सुखप्रदा या सुहृद्वदाज्ञानुकारिणी सेविका वर्त्तते सैवोषर्वत् कुलप्रकाशिका भवति॥३॥

**पदार्थः**-हे **(उषः)** प्रातर्वेला के सदृश वर्त्तमान सुन्दर स्त्री! तू अपने पति की **(सखा)** सखी के सदृश वर्त्तमान **(असि)** है **(उत)** और **(अश्विनोः)** सूर्य्य और चन्द्रमा के सदृश अध्यापक और उपदेशक की सखी **(असि)** है **(उत)** और **(गवाम्)** किरण वा गौओं की **(माता)** माता **(उत)** और **(वस्वः)** धन की **(ईशिषे)** इच्छा करती है॥३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। वही स्त्री सुख देने वाली जो मित्र के सदृश आज्ञा मानने और सेवा करने वाली है, वही प्रातर्वेला के सदृश कुल की प्रकाशिका होती है॥३॥

**पुनः स्त्रीगुणानाह॥**

फिर स्त्री गुणों को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**यावयद् द्वेषसं त्वा चिकित्वित्सूनृतावरि। प्रति स्तोमैरभूत्स्महि॥४॥**

**यवयत्ऽद्वेषसम्। त्वा। चिकित्वित्। सूनृताऽवरि। प्रति। स्तोमैः। अभूत्स्महि॥४॥**

**पदार्थः**-**(यावयद्द्वेषसम्)** यावयन्तं द्वेष्टारं द्वेषसं द्वेष्टारं पृथक्कारयन्तीम् **(त्वा)** त्वाम् **(चिकित्वित्)** ज्ञापयन्तीम् **(सूनृतावरि)** सत्यवाक्प्रकाशिके **(प्रति)** **(स्तोमैः)** प्रशंसाभिः **(अभूत्स्महि)** विजानीयाम॥४॥

**अन्वयः**-हे चिकित्वित् सूनृतावरि स्त्रि! वयं स्तौमैर्यावयद्द्वेषसं त्वा प्रत्यभूत्स्महि॥४॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-या कदाचिद् द्वेषं द्वेष्टृसङ्गन्न करोति सत्यवाक् प्रशंसिता वर्त्तते सैव स्त्री वरा॥४॥

**पदार्थः**-हे **(चिकित्वित्)** जनाने और **(सूनृतावरि)** सत्यवाणी का प्रकाश करने वाली स्त्री! हम लोग **(स्तोमैः)** प्रशंसाओं से **(यावयद्द्वेषसम्)** द्वेष करने वाले को पृथक् कराने वाली **(त्वा)** तुझको **(प्रति, अभूत्स्महि)** जानें॥४॥

**भावार्थः**-जो कभी द्वेष और द्वेष करने वाले के सङ्ग को नहीं करती और सत्यवाणी और प्रशंसायुक्त है, वही स्त्री श्रेष्ठ है॥४॥

**अथ स्त्रीणामुत्तमव्यवहारेषु प्रशंसामाह॥**

अब स्त्रियों की उत्तम व्यवहारों में प्रशंसा कहते हैं॥

**प्रति भद्रा अदृक्षत गवां सर्गा न रश्मयः। ओषा अप्रा उरु ज्रयः॥५॥**

**प्रति। भद्राः। अदृक्षत। गवाम्। सर्गाः। न। रश्मयः। आ। उषाः। अप्राः। उरु। ज्रयः॥५॥**

**पदार्थः**-**(प्रति)** **(भद्राः)** कल्याणकर्यः **(अदृक्षत)** दृश्यन्ते **(गवाम्)** पृथिवीनाम् **(सर्गाः)** सृष्टयः **(न)** इव **(रश्मयः)** किरणाः **(आ)** **(उषाः)** प्रभातवेलाः **(अप्राः)** प्राति व्याप्नोति **(उरु)** बहु **(ज्रयः)** अतितेजोमय॥५॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! या उरु ज्रयो रश्मयो न भद्रा गवां सर्गाः प्रत्यदृक्षत यथोषास्ता आऽप्रास्तथा स्त्री भवेत्॥५॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। याः स्त्रियो रश्मिवदुत्तमान् व्यवहारान् प्रकाशयन्ति ताः सततं कल्याणाय कुलोन्नतिकर्य्यो जायन्ते॥५॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो **(उरु)** बहुत **(ज्रयः)** अत्यन्त तेजःस्वरूप मण्डल को **(रश्मयः)** किरणों के **(न)** सदृश **(भद्राः)** कल्याण करने वाली **(गवाम्)** पृथिवियों की **(सर्गाः)** सृष्टियां, रचना **(प्रति, अदृक्षत)** प्रति समय देखी जाती हैं जैसे **(उषाः)** प्रभातवेला उनको **(आ, अप्राः)** व्याप्त होती है, वैसे स्त्री हो॥५॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जो स्त्रियाँ किरणों के समान उत्तम व्यवहारों का प्रकाश कराती हैं, वे निरन्तर कल्याण के लिये कुल की उन्नति करने वाली होती हैं॥५॥

**पुनरुषर्वत्स्त्रीकर्त्तव्यकर्म्माण्याह॥**

अब उषा के तुल्य स्त्रियों के कर्त्तव्य कामों को कहते हैं॥

**आपप्रुषी विभावरि व्यावर्ज्योतिषा तमः। उषो अनु स्वधामव॥६॥**

**आऽपप्रुषी। विभाऽवरि। वि आवः। ज्योतिषा। तमः। उषः। अनु। स्वधाम्। अव॥६॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**आपप्रुषी**) समन्तात् सर्वा विद्या व्याप्नुवती (**विभावरि**) प्रशस्तविविधप्रकाशयुक्ते (**वि**) (**आवः**) विरक्ष (**ज्योतिषा**) प्रकाशेन (**तमः**) अन्धकारम् (**उषः**) उषर्वत्सुप्रकाशे (**अनु**) (**स्वधाम्**) अन्नादिकम् (**अव**) रक्ष॥६॥

**अन्वयः**-हे उष इव विभावरि शुभगुणे स्त्रि! आपप्रुषी त्वं ज्योतिषा तम इव दोषान् व्यावोऽनु स्वधामव॥६॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यथोषाः स्वप्रकाशेनान्धकारं निवारयति तथैव विदुष्यः स्त्रियः स्वोत्तमस्वभावेन दोषान्निवार्य्य सुसंस्कृतान्नादिना सर्वान् संरक्षन्तु॥६॥

**पदार्थः**-हे (**उषः**) प्रभात वेला के सदृश उत्तम प्रकाश और (**विभावरि**) प्रशंसित विविध प्रकाश से युक्त उत्तम गुणवाली स्त्री! (**आपप्रुषी**) सब ओर से सर्व विद्याओं को व्याप्त तू (**ज्योतिषा**) प्रकाश से (**तमः**) अन्धकार के सदृश दोषों की (**वि, आवः**) विगतरक्षा अर्थात् रखने के विरुद्ध निकाल और (**अनु, स्वधाम्**) अनुकूल अन्न आदि की (**अव**) रक्षा कर॥६॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे प्रभात वेला अपने प्रकाश से अन्धकार का निवारण करती है, वैसे ही विद्यायुक्त स्त्रियाँ अपने उत्तम स्वभाव से दोषों का निवारण करके उत्तम प्रकार संस्कारयुक्त अन्न आदि से सब की उत्तम प्रकार रक्षा करें॥६॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**आ द्यां तनोषि रश्मिभिरान्तरिक्षमुरु प्रियम्। उषः शुक्रेण शोचिषा॥७॥३॥**

**आ। द्याम्। तनोषि। रश्मिऽभिः। आ। अन्तरिक्षम्। उरु। प्रियम्। उषः। शुक्रेण। शोचिषा॥७॥**

**पदार्थः**-(**आ**) (**द्याम्**) प्रकाशम् (**तनोषि**) विस्तृणासि (**रश्मिभिः**) किरणैः (**आ**) सर्वतः (**अन्तरिक्षम्**) (**उरु**) बहु (**प्रियम्**) कमनीयं पतिम् (**उषः**) (**शुक्रेण**) शुद्धेन (**शोचिषा**) प्रकाशेन॥७॥

**अन्वयः**-हे उषरिव वर्त्तमाने स्त्रि! यथोषा रश्मिभिर्द्यामुर्वाऽन्तरिक्षञ्च प्रकाशयति तथैव त्वं शुक्रेण शोचिषा प्रियं पतिमातनोषि तस्मात् सत्कर्त्तव्यासि॥७॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। सैव स्त्री बहुसुखं प्राप्नोति या विद्याविनयसुशीलादिभिः स्वपतिं सदैव प्रीणातीति॥७॥

अत्रोषर्वत्स्त्रीगुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति द्विपञ्चाशत्तमं सूक्तं तृतीयो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे (**उषः**) प्रभात वेला के सदृश वर्त्तमान स्त्री जैसे प्रभातवेला (**रश्मिभिः**) किरणों से (**द्याम्**) प्रकाश और (**उरु**) बहुत (**आ, अन्तरिक्षम्**) सब ओर से अन्तरिक्ष को प्रकाशित करती है, वैसे ही तू (**शुक्रेण**) शुद्ध (**शोचिषा**) प्रकाश से (**प्रियम्**) सुन्दर पति का (**आ, तनोषि**) विस्तार करती अर्थात् पति की कीर्त्ति बढ़ाती है, इससे सत्कार करने योग्य है॥७॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। वही स्त्री बहुत सुख को प्राप्त होती है, जो विद्या, विनय और उत्तम स्वभावादिकों से अपने पति को नित्य प्रसन्न करती है॥७॥

इस सूक्त में प्रभात वेला के सदृश स्त्रियों के गुणवर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह बावनवां सूक्त और तृतीय वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

**अथ सप्तर्चस्य त्रिपञ्चाशत्तमस्य सूक्तस्य वामदेव ऋषिः। सविता देवता। १, ३, ६, ७ निचृज्जगती। २ विराड्जगती। ४ स्वराड्जगती। ५ जगती छन्दः। निषादः स्वरः॥**

**अथ सवितुर्गुणानाह॥**

अब सात ऋचा वाले त्रेपनवें सूक्त का आरम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में सविता परमात्मा के गुणों का वर्णन करते हैं॥

**तद्देवस्य सवितुर्वार्यं महद् वृणीमहे असुरस्य प्रचेतसः।**

**छर्दिर्येन दाशुषे यच्छति त्मना तन्नो महाँ उदयान् देवो अक्तुभिः॥ १॥**

**तत्। देवस्य। सवितुः। वार्यम्। महत्। वृणीमहे। असुरस्य। प्रऽचेतसः। छर्दिः। येन। दाशुषे। यच्छति। त्मना। तत्। नः। महान्। उत्। अयान्। देवः। अक्तुऽभिः॥ १॥**

**पदार्थः**-**(तत्)** **(देवस्य)** देदीप्यमानस्य **(सवितुः)** वृष्ट्यादीनां प्रसवकर्त्तुः **(वार्यम्)** वरणीयेषु वा जलेषु भवम् **(महत्)** **(वृणीमहे)** स्वीकुर्म्महे **(असुरस्य)** मेघस्य **(प्रचेतसः)** प्रज्ञापकस्य **(छर्दिः)** गृहम्। **छर्दिरिति गृहनामसु पठितम्।** (निघं०३.४) **(येन)** **(दाशुषे)** दात्रे **(यच्छति)** **(त्मना)** आत्मना **(तत्)** **(नः)** अस्मभ्यम् **(महान्)** **(उत्)** **(अयान्)** यच्छतु **(देवः)** द्योतमानः **(अक्तुभिः)** रात्रिभिः॥ १॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! वयं यत्सवितुर्देवस्य प्रचेतसोऽसुरस्य मेघस्य महद्वार्यं छर्दिर्वृणीमहे तद्यूयं स्वीकुरुत येन विद्वांस्त्मना दाशुषे वार्यं महच्छर्दिर्यच्छति तन्महान् देवोऽक्तुभिर्न उदयान्॥ १॥

**भावार्थः**-ये विद्वांसो मेघस्य सूर्य्यस्य च सम्बन्धविद्यां जानन्ति तेऽहोरात्रेषु महत्कार्य्यं संसाध्याऽऽनन्दन्ति॥ १॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! हम लोग जिस **(सवितुः)** वृष्टि आदि की उत्पत्ति करने वाले **(देवस्य)** निरन्तर प्रकाशमान **(प्रचेतसः)** जनानेवाले **(असुरस्य)** मेघ के **(महत्)** बड़े **(वार्यम्)** स्वीकार करने योग्य पदार्थों वा जलों में उत्पन्न **(छर्दिः)** गृह का **(वृणीमहे)** स्वीकार करते हैं **(तत्)** उसका आप लोग स्वीकार करो **(येन)** जिस कारण से विद्वान् जन **(त्मना)** आत्मा से **(दाशुषे)** दाता जन के लिये स्वीकार करने योग्यों वा जलों में उत्पन्न हुए बड़े गृह को **(यच्छति)** देता है **(तत्)** उसको **(महान्)** बड़ा **(देवः)** प्रकाशमान होता हुआ **(अक्तुभिः)** रात्रियों से **(नः)** हम लोगों के लिये **(उत्, अयान्)** उत्कृष्टता से देवे॥ १॥

**भावार्थः**-जो विद्वान् जन मेघ और सूर्य्य के सम्बन्ध की विद्या को जानते हैं, वे दिन और रात्रियों में बड़े कार्य्य को सिद्ध करके आनन्दित होते हैं॥ १॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**दिवो धर्ता भुवनस्य प्रजापतिः पिशङ्गं द्रापिं प्रति मुञ्चते कविः।**



www.9009.co.in

**वि॒च॒क्ष॒णः प्र॒थय॑न्ना॒पृण॑न्नु॒र्वजी॑जनत् सवि॒ता सु॒म्नमु॒क्थ्य॑म्॥ २॥**

**दि॒वः। ध॒र्ता। भुव॑नस्य। प्र॒जाऽप॑तिः। पि॒शङ्ग॑म्। द्रा॒पिम्। प्रति॑। मु॒ञ्च॒ते। क॒विः। वि॒ऽच॒क्ष॒णः। प्र॒थय॑न्। आ॒ऽपृ॒णन्। उ॒रु। अजी॑जनत्। स॒वि॒ता। सु॒म्नम्। उ॒क्थ्य॑म्॥ २॥**

**पदार्थः**-(**दिवः**) प्रकाशस्य (**धर्त्ता**) (**भुवनस्य**) अनेकभूगोलालङ्कृतस्य (**प्रजापतिः**) प्रजायाः पालकः (**पिशङ्गम्**) विचित्ररूपम् (**द्रापिम्**) कवचम् (**प्रति**) (**मुञ्चते**) त्यजति (**कविः**) क्रान्तदर्शनः (**विचक्षणः**) विविधपदार्थानां प्रकाशकः (**प्रथयन्**) विस्तारयन् (**आपृणन्**) समन्तात् पूरयन् (**उरु**) बहु (**अजीजनत्**) जनयति (**सविता**) सकलैश्वर्य्ययोक्ता प्रभ्वैश्वर्य्यदाननिमित्तो वा (**सुम्नम्**) सुखम् (**उक्थ्यम्**) प्रशंसनीयम्॥ २॥

**अन्वयः**-हे विद्वांसो! योऽयं दिवो भुवनस्य धर्त्ता प्रजापतिः कविः पिशङ्गं द्रापिं प्रति मुञ्चते विचक्षणः प्रथयन्नापृणन्त्सवितोरुक्थ्यं सुम्नमजीजनत् स युष्माभिर्यथावद्वेदितव्यः॥ २॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! येन परमेश्वरेण प्रजाया धारणाय प्रकाशाय पालनाय सूर्य्यो निर्मितस्तमेव परमेश्वरमुपास्य बहु सुखं प्राप्नुत॥ २॥

**पदार्थः**-हे विद्वान् जनो! जो यह (**दिवः**) प्रकाश और (**भुवनस्य**) अनेक भूगोलों से अलङ्कृत अर्थात् शोभित संसार का (**धर्त्ता**) धारण करने वाला (**प्रजापतिः**) प्रजा का पालनकर्त्ता (**कविः**) तेजयुक्त दर्शनवाला (**पिशङ्गम्**) विचित्र रूपवाले (**द्रापिम्**) कवच को (**प्रति, मुञ्चते**) त्याग करता है और (**विचक्षणः**) अनेक प्रकार से पदार्थों का प्रकाश करने वाला (**प्रथयन्**) विस्तार करता और (**आपृणन्**) सब प्रकार से पूर्ण करता हुआ (**सविता**) सम्पूर्ण ऐश्वर्य्यों से युक्त करने वाला वा समर्थ ऐश्वर्य्यों के देने का निमित्त (**उरु**) बहुत (**उक्थ्यम्**) प्रशंसा करने योग्य (**सुम्नम्**) सुख को (**अजीजनत्**) उत्पन्न करता है, वह आप लोगों को यथावत् जानने योग्य है॥ २॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जिस परमेश्वर ने प्रजा के धारण प्रकाश और पालन के लिये सूर्य्य बनाया, उसी परमेश्वर की उपासना करके बहुत सुख को प्राप्त होइये॥ २॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**आप्रा॒ रजां॑सि दि॒व्यानि॒ पार्थि॑वा॒ श्लोकं॑ दे॒वः कृ॑णुते॒ स्वाय॒ धर्म॑णे।**
**प्र बा॒हू अ॑स्राक् सवि॒ता सवी॑मनि निवे॒शय॑न् प्रसु॒वन्न॒क्तुभि॒र्जग॑त्॥ ३॥**

**आ। अ॒प्राः। रजां॑सि। दि॒व्यानि॑। पार्थि॑वा। श्लोक॑म्। दे॒वः। कृ॒णु॒ते॒। स्वाय॑। धर्म॑णे। प्र। बा॒हू इति॑। अ॒स्रा॒क्। स॒वि॒ता। सवी॑मनि। नि॒ऽवे॒शय॑न्। प्र॒ऽसु॒वन्। अ॒क्तुऽभिः॑। जग॑त्॥ ३॥**

**पदार्थः**-(**आ**) समन्तात् (**अप्राः**) व्याप्नोति (**रजांसि**) लोकान् (**दिव्यानि**) शुद्धानि (**पार्थिवा**) पृथिव्यां विदितानि (**श्लोकम्**) श्लाघनीयां वाचम् (**देवः**) (**कृणुते**) (**स्वाय**) (**धर्म्मणे**) धर्मोन्नतये (**प्र**)



www.9009.co.in

**(बाहू)** भुजौ **(अस्राक्)** यः सृजति **(सविता)** सकलजगदुत्पादकः **(सवीमनि)** महैश्वर्ये **(निवेशयन्)** **(प्रसुवन्)** उत्पादयन् **(अक्तुभिः)** रात्रिभिः सह **(जगत्)** सर्वं विश्वम्॥३॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यः सविता देवः सवीमन्यक्तुभिर्जगन्निवेशयन् प्रसुवन् बाहू अस्राक् स देवः स्वाय धर्म्मणे श्लोकं प्र कृणुते सविता दिव्यानि पार्थिवा रजांस्याऽऽप्राः॥३॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यो जगदीश्वरः सर्वं जगदभिव्याप्य निर्माय धर्म्मं वेदवाणीं प्रचार्य्य जगद् व्यवस्थापयति तमेव सर्वस्वामिनं विज्ञाय सततमुपाध्वम्॥३॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो **(सविता)** सम्पूर्ण जगत् का उत्पन्न करने वाला **(देवः)** प्रकाशमान विद्वान् **(सवीमनि)** बड़े ऐश्वर्य्य में **(अक्तुभिः)** रात्रियों के साथ **(जगत्)** सम्पूर्ण संसार को **(निवेशयन्)** प्रवेश कराता और **(प्रसुवन्)** उत्पन्न करता हुआ **(बाहू)** भुजाओं को **(अस्राक्)** उत्पन्न करता वह विद्वान् **(स्वाय)** अपनी **(धर्म्मणे)** धर्म्म की उन्नति के लिये **(श्लोकम्)** श्लाघा प्रशंसा करने योग्य वाणी को **(प्र, कृणुते)** उत्पन्न करता, परमात्मा और **(दिव्यानि)** शुद्ध **(पार्थिवा)** पृथिवीं में विदित **(रजांसि)** लोकों को **(आ, अप्राः)** व्याप्त होता है॥३॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो जगदीश्वर सम्पूर्ण जगत् में अभिव्याप्त हो और उस जगत् को रच के धर्म्म और वेदवाणी का प्रचार करके संसार को व्यवस्थित अर्थात् जैसा चाहिये वैसा नियत करता, उसीको सब का स्वामी जानके निरन्तर उपासना करो॥३॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अदा॑भ्यो॒ भुव॑नानि प्रचाक॑शद् व्र॒तानि॑ दे॒वः स॑वि॒ताभि र॑क्षते।**

**प्रास्रा॒ग्बा॒हू भुव॑नस्य प्र॒जाभ्यो॑ धृ॒तव्र॑तो म॒हो अज्म॑स्य राजति॥४॥**

**अदा॑भ्यः। भुव॑नानि। प्र॒ऽचाक॑शत्। व्र॒तानि॑। दे॒वः। स॒वि॒ता। अ॒भि। र॒क्ष॒ते॒। प्र। अ॒स्रा॒क्। बा॒हू इति॑। भुव॑नस्य। प्र॒ऽजाभ्यः॑। धृ॒तऽव्र॑त। म॒हः। अज्म॑स्य। रा॒ज॒ति॒॥४॥**

**पदार्थः**-**(अदाभ्यः)** अहिंसनीयः **(भुवनानि)** सर्वाणि लोकजातानि **(प्रचाकशत्)** प्रकाशते **(व्रतानि)** सत्यभाषणादीनि **(देवः)** कमनीयः **(सविता)** सूर्य्यः **(अभि)** आभिमुख्ये **(रक्षते)** **(प्र)** **(अस्राक्)** सृजति **(बाहू)** बलवीर्य्ये **(भुवनस्य)** **(प्रजाभ्यः)** **(धृतव्रतः)** धृतानि व्रतानि येन सः **(महः)** महतः **(अज्मस्य)** अन्तरिक्षे प्रक्षिप्तस्य **(राजति)**॥४॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! योऽदाभ्यः सविता धृतव्रतो देवो महोऽज्मस्य भुवनस्य मध्ये प्रजाभ्यो व्रतानि भुवनानि प्रचाकशद् बाहू प्रास्राक् सर्वमभि रक्षते राजति स एव सर्वैरुपासनीयः॥४॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! येन परमेश्वरेण प्रजासु सर्वं हितं साधितं योऽन्तर्बहिरभिव्याप्य सर्वेभ्यः कर्मफलानि प्रयच्छति स एव सततं ध्येयः॥४॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो **(अदाभ्यः)** नहीं नष्ट होने योग्य अर्थात् नहीं मन से छोड़ने योग्य **(सविता)** सूर्य्य **(धृतव्रतः)** व्रतों को धारण करने वाला **(देवः)** सुन्दर **(महः)** बड़े **(अज्मस्य)** अन्तरिक्ष में छोड़े हुए **(भुवनस्य)** लोक **(प्रजाभ्यः)** प्रजाओं के लिये **(व्रतानि)** सत्यभाषण आदि व्रतों को और **(भुवनानि)** लोकोत्पन्न समस्त वस्तुओं को **(प्रचाकशत्)** प्रकाश करता **(बाहू)** बल और वीर्य्य को **(प्र, अस्राक्)** उत्पन्न करता सब की **(अभि)** प्रत्यक्ष **(रक्षते)** रक्षा करता और **(राजति)** प्रकाश करता है, वही सब लोगों को उपासना करने योग्य है॥४॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जिस परमेश्वर ने प्रजाओं में सम्पूर्ण हित सिद्ध किया और जो भीतर-बाहर अभिव्याप्त होके सब के लिये कर्म्मों का फल देता है, वही निरन्तर ध्यान करने योग्य है॥४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**त्रिर॒न्तरि॑क्षं सवि॒ता म॑हित्व॒ना त्री रजां॑सि परि॒भूस्त्रीणि॑ रोच॒ना।**

**ति॒स्रो दिवः॑ पृथि॒वीस्ति॒स्र इ॑न्वति त्रि॒भिर्व्र॒तैर॒भि नो॑ रक्षति॒ त्मना॑॥५॥**

**त्रिः। अ॒न्तरि॑क्षम्। स॒वि॒ता। म॒हि॒ऽत्व॒ना। त्री। रजां॑सि। प॒रि॒ऽभूः। त्रीणि॑। रो॒च॒ना। ति॒स्रः। दिवः॑। पृ॒थि॒वीः। ति॒स्रः। इ॒न्व॒ति॒। त्रि॒ऽभिः। व्र॒तैः। अ॒भि। न॒ः। र॒क्ष॒ति॒। त्मना॑॥५॥**

**पदार्थः**-**(त्रिः)** त्रिवारम् **(अन्तरिक्षम्)** अन्तरक्षयमाकशम् **(सविता)** सकलैश्वर्य्योत्पादकः **(महित्वना)** महत्त्वेन **(त्री)** त्रीणि त्रिप्रकारका **(रजांसि)** उत्तममध्यमनिकृष्टानि **(परिभूः)** यः सर्वतो भवति सर्वेषामुपरि विराजमानः **(त्रीणि)** त्रिप्रकाराणि **(रोचना)** विद्युद्भौतिकसूर्यरूपाणि ज्योतींषि **(तिस्रः)** त्रिविधाः **(दिवः)** प्रकाशान् **(पृथिवीः)** भूमीः **(तिस्रः)** **(इन्वति)** व्याप्नोति **(त्रिभिः)** **(व्रतैः)** नियमैः **(अभि)** **(नः)** अस्मान् **(रक्षति)** **(त्मना)** आत्मना॥५॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यः परिभूः सविता परमेश्वरो महित्वना त्मनाऽन्तरिक्षं त्रिरिन्वति त्री रजांसीन्वति त्रीणि रोचनेन्वति तिस्रो दिवस्तिस्रः पृथिवीरिन्वति त्रिभिर्व्रतैर्नोऽभि रक्षति स एव सर्वदा भजनीयः॥५॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यः परमेश्वरस्त्रिविधं सर्वं त्रिगुणमयं जगन्निर्माय सुनियमैः पालयति तमेवोपाध्वम्॥५॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो **(परिभूः)** सब स्थानों में वर्त्तमान और सब के ऊपर विराजमान **(सविता)** सम्पूर्ण ऐश्वर्य्यों का उत्पन्न करने वाला परमेश्वर **(महित्वना)** महिमा और **(त्मना)** आत्मा से **(अन्तरिक्षम्)** भीतर नहीं नाश होने वाले आकाश को **(त्रिः)** तीन वार **(इन्वति)** व्याप्त होता **(त्री)** तीन प्रकार के **(रजांसि)** उत्तम मध्यम निकृष्ट लोकों को व्याप्त होता **(त्रीणि)** तीन प्रकार के **(रोचना)** बिजुली, भौतिक और सूर्यरूप ज्योतियों को व्याप्त होता **(तिस्रः)** तीन प्रकार के **(दिवः)** प्रकाशों और



www.9009.co.in

(**तिस्रः**) तीन प्रकार की (**पृथिवीः**) भूमियों को व्याप्त होता और (**त्रिभिः**) तीन (**व्रतैः**) नियमों से (**नः**) हम लोगों की (**अभि**) सब ओर से (**रक्षति**) रक्षा करता है, वही सर्वदा सेवा करने योग्य है॥५॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो परमेश्वर तीन प्रकार के सम्पूर्ण त्रिगुण अर्थात् सतोगुण, रजोगुण, तमोगुण स्वरूप जगत् को रच के उत्तम नियमों से पालन करता है, उसी की उपासना करो॥५॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**बृहत्सु॑म्नः प्रसवी॒ता नि॒वेश॑नो॒ जग॑तः स्था॒तुरु॒भय॑स्य॒ यो व॒शी।**

**स नो॑ दे॒वः स॑वि॒ता शर्म॑ यच्छत्व॒स्मे क्षया॑य त्रि॒वरू॑थ॒मंह॑सः॥६॥**

**बृ॒हत्ऽसु॒म्नः। प्र॒ऽस॒वि॒ता। नि॒ऽवेश॑नः। जग॑तः। स्था॒तुः। उ॒भय॑स्य। यः। व॒शी। सः। नः॒। दे॒वः। स॒वि॒ता। शर्म॑। य॒च्छ॒तु। अ॒स्मे इति॑। क्षया॑य। त्रि॒ऽवरू॑थम्। अंह॑सः॥६॥**

**पदार्थः**-(**बृहत्सुम्नः**) महतः सुखस्य (**प्रसवीता**) उत्पादकः। अत्र **संहितायामि**ति दीर्घः। (**निवेशनः**) निवेशस्य कर्त्ता (**जगतः**) जङ्गमस्य (**स्थातुः**) स्थिरस्य स्थावरस्य (**उभयस्य**) द्विविधस्य (**यः**) (**वशी**) वशीकर्त्तुं समर्थः (**सः**) (**नः**) अस्मभ्यम् (**देवः**) दाता (**सविता**) सकलैश्वर्यः (**शर्म**) सुसुखं गृहम् (**यच्छतु**) ददातु (**अस्मे**) अस्माकम् (**क्षयाय**) निवासाय (**त्रिवरूथम्**) त्रीणि वरूथानि गृहाणि यस्मिन् (**अंहसः**) दुःखात्पृथग्भूतम्॥६॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यो नो बृहत्सुम्नः प्रसवीता जगतः स्थातुर्निवेशन उभयस्य वशी देवो जगदीश्वरो नो विद्यां यच्छतु स सविताऽस्मे क्षयायांऽहसः पृथग्भूतं त्रिवरूथं शर्म यच्छतु स एवास्माकमुपासनीयो देवो भवतु॥६॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यो जगदीश्वरः सर्वस्य जगतो नियन्ता सर्वेषां जीवानां निवासायाऽनेकविधस्य स्थानस्य निर्माताऽस्ति तं विहायाऽन्यस्य कस्याप्युपासनां मा कुरुत॥६॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! (**यः**) जो (**नः**) हम लोगों के लिये (**बृहत्सुम्नः**) अत्यन्त सुख का (**प्रसवीता**) उत्पन्न करने वाला और (**जगतः**) जङ्गम अर्थात् चेतनता युक्त मनुष्य आदि और (**स्थातुः**) स्थिर स्थावर अर्थात् नहीं चलने-फिरने वाले वृक्ष आदि जगत् के (**निवेशनः**) निवेश अर्थात् स्थिति का करने वाला (**उभयस्य**) दो प्रकार के जगत् के (**वशी**) वश करने को समर्थ (**देवः**) दाता जगदीश्वर हम लोगों के लिये विद्या को (**यच्छतु**) देवे (**सः**) वह (**सविता**) सम्पूर्ण ऐश्वर्य्य से युक्त (**अस्मे**) हम लोगों के (**क्षयाय**) निवास के लिये (**अंहसः**) दुःख से अलग हुए (**त्रिवरूथम्**) तीन गृह जिसमें उस (**शर्म**) उत्तम प्रकार सुख देने वाले स्थान को देवे, वही हम लोगों का उपासना करने योग्य देव हो॥६॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो जगदीश्वर सब जगत् का नियामक और सब जीवों के निवास के लिये अनेक प्रकार के स्थान का रचने वाला है, उसको छोड़ के अन्य किसी की भी उपासना न करो॥६॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**



www.9009.co.in

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**आग॑न् दे॒व ऋ॒तुभि॒र्वर्ध॑तु॒ क्षयं॒ दधा॑तु नः सवि॒ता सु॑प्र॒जामिष॑म्।**

**स नः॑ क्ष॒पाभि॒रह॑भिश्च जिन्वतु प्र॒जाव॑न्तं र॒यिम॒स्मे समि॑न्वतु॥७॥४॥**

**आ। अ॒ग॒न्। दे॒वः। ऋ॒तुऽभिः॑। वर्ध॑तु। क्षय॑म्। दधा॑तु। नः॒। स॒वि॒ता। सु॒ऽप्र॒जाम्। इष॑म्। सः। नः॒। क्ष॒पाभिः॑। अह॑ऽभिः। च॒। जि॒न्व॒तु॒। प्र॒जाऽव॑न्तम्। र॒यिम्। अ॒स्मे इति॑। सम्। इ॒न्व॒तु॒॥७॥**

**पदार्थः**-(**आ**) समन्तात् (**अगन्**) आगच्छतु (**देवः**) देदीप्यमानः (**ऋतुभिः**) वसन्तादिभिः (**वर्धतु**) वर्धताम्। अत्र व्यत्ययेन परस्मैपदम्। (**क्षयम्**) निवासम् (**दधातु**) (**नः**) अस्माकम् (**सविता**) सकलजगज्जनकः (**सुप्रजाम्**) उत्तमां प्रजाम् (**इषम्**) अन्नादिकम् (**सः**) (**नः**) अस्मान् (**क्षपाभिः**) रात्रिभिः (**अहभिः**) दिनैः सह (**च**) (**जिन्वतु**) प्रीणात्वानन्दतु (**प्रजावन्तम्**) बहुप्रजायुक्तम् (**रयिम्**) धनम् (**अस्मे**) अस्मभ्यम् (**सम्**) (**इन्वतु**) ददातु॥७॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यस्सविता देवो जगदीश्वर ऋतुभिर्नः क्षयं वर्धत्वस्मानागन् सुप्रजामिषं च दधातु स क्षपाभिरहभिश्च नो जिन्वत्वस्मे प्रजावन्तं रयिं समिन्वतु॥७॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यः परमात्मा सर्वेष्वहोरात्रेषु सर्वं जगत्सर्वथा रक्षति सर्वान् पदार्थान् निर्मायाऽस्मभ्यं दत्वाऽस्मान् सततमानन्दयति सोऽस्माभिः सदैवोपासनीय इति॥७॥

अत्र सवितृगुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति त्रिपञ्चाशत्तमं सूक्तं चतुर्थो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो (**सविता**) सम्पूर्ण जगत् का उत्पन्न करने वाला (**देवः**) निरन्तर प्रकाशमान जगदीश्वर (**ऋतुभिः**) वसन्त आदि ऋतुओं से (**नः**) हम लोगों के (**क्षयम्**) निवास की (**वर्धतु**) वृद्धि करें और हम लोगों को (**आ**) सब प्रकार से (**अगन्**) प्राप्त हो (**सुप्रजाम्**) उत्तम प्रजा और (**इषम्**) अन्न आदि को (**दधातु**) धारण करे (**सः**) वह (**क्षपाभिः**) रात्रियों और (**अहभिः**) दिनों के साथ (**च**) भी (**नः**) हम लोगों को (**जिन्वतु**) प्रसन्न और आनन्दित करे और (**अस्मे**) हम लोगों के लिये (**प्रजावन्तम्**) बहुत प्रजाओं से युक्त (**रयिम्**) धन को (**सम्, इन्वतु**) अच्छे प्रकार देवे॥७॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो परमात्मा सब दिन, सब रात्रियों में सब जगत् की सब प्रकार से रक्षा करता है, सब पदार्थों को रच के हम लोगों के लिये देकर हम लोगों को निरन्तर आनन्दित करता है, वह हम लोगों को सदा उपासना करने योग्य है॥७॥

इस सूक्त में सविता अर्थात् सकल जगत् के उत्पन्न करने वाले परमात्मा के गुणवर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह तिरपनवां सूक्त और चौथा वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

**अथ षड्टचस्य चतु:पञ्चाशत्तमस्य सूक्तस्य वामदेव ऋषि:। सविता देवता। १ भुरिक् त्रिष्टुप्। २ निचृत्त्रिष्टुप्। ३-५ स्वराट् त्रिष्टुप्। ६ त्रिष्टुप् छन्द:। धैवत: स्वर:॥**

**अथ सवितृगुणानाह॥**

अब छ: ऋचा वाले चौपनवें सूक्त का आरम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में सविता परमात्मा के गुणों का वर्णन करते हैं॥

**अभूद् देव: सविता वन्द्यो नु न इदानीमह्न उपवाच्यो नृभि:।**

**वि यो रत्ना भजति मानवेभ्य: श्रेष्ठं नो अत्र द्रविणं यथा दधत्॥ १॥**

**अभूत्। देव:। सविता। वन्द्य:। नु। न:। इदानीम्। अह्न:। उपऽवाच्य:। नृऽभि:। वि। य:। रत्ना। भजति। मानवेभ्य:। श्रेष्ठम्। न:। अत्र। द्रविणम्। यथा। दधत्॥ १॥**

**पदार्थ:**-(**अभूत्**) भवति (**देव:**) सर्वसुखप्रदाता (**सविता**) सर्वैश्वर्य्यप्रद: (**वन्द्य:**) प्रशंसनीय: (**नु**) सद्य: (**न:**) अस्माकम् (**इदानीम्**) (**अह्न:**) दिनस्य मध्ये (**उपवाच्य:**) उपदेशनीय: (**नृभि:**) नायकैर्मनुष्यै: (**वि**) (**य:**) (**रत्ना**) रमणीयानि धनानि (**भजति**) (**मानवेभ्य:**) मननशीलेभ्य: (**श्रेष्ठम्**) अत्युत्तमम् (**न:**) अस्मभ्यम् (**अत्र**) (**द्रविणम्**) धनं यशो वा (**यथा**) (**दधत्**) दध्यात्॥ १॥

**अन्वय:**-हे मनुष्या! य इदानीमह्नो यथा नृभिरुपवाच्यो नो वन्द्य: सविता देवोऽभूद्यो नो मानवेभ्यो रत्ना यथा विभजत्यत्र श्रेष्ठं द्रविणं नु दधत्तथैवाऽस्माभि: सत्कर्त्तव्योऽस्ति॥ १॥

**भावार्थ:**-अत्रोपमालङ्कार:। नष्टं तेषां भाग्यं ये सकलैश्वर्य्यकीर्त्तिप्रदातारं वन्दनीयं स्तोतुमुपासितुमुपदेष्टुमर्हं परमात्मानं विहायाऽन्यं भजन्ति॥ १॥

**पदार्थ:**-हे मनुष्यो! (**य:**) जो (**इदानीम्**) इस समय (**अह्न:**) दिन के मध्य में जैसे (**नृभि:**) नायक अर्थात् मुखिया मनुष्यों से (**उपवाच्य:**) उपदेश योग्य और (**न:**) हम लोगों के (**वन्द्य:**) प्रशंसा करने योग्य (**सविता**) सम्पूर्ण ऐश्वर्य्यों को और (**देव:**) सम्पूर्ण सुखों को देने वाला (**अभूत्**) होता है जो (**न:**) हम (**मानवेभ्य:**) विचारशीलों के लिये (**रत्ना**) रमण करने योग्य धनों को (**यथा**) जैसे (**वि, भजति**) बांटता और (**अत्र**) इस संसार में (**श्रेष्ठम्**) अत्यन्त उत्तम (**द्रविणम्**) धन वा यश को (**नु**) शीघ्र (**दधत्**) धारण करे, वैसे ही हम लोगों को सत्कार करने योग्य है॥ १॥

**भावार्थ:**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। नष्ट उनका भाग्य जो सम्पूर्ण ऐश्वर्य और यश के देने वाले वन्दना करने योग्य तथा स्तुति, उपासना और उपदेश करने योग्य परमात्मा को छोड़ के अन्य की उपासना करते हैं॥ १॥

**पुनरीश्वरगुणानाह॥**

फिर ईश्वर के गुणों को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**देवेभ्यो हि प्रथमं यज्ञियेभ्योऽमृतत्वं सुवसि भागमुत्तमम्।**



www.9009.co.in

**आदिद् दामानं सवितर्व्यूर्णुषेऽनूचीना जीविता मानुषेभ्यः॥२॥**

**देवेभ्यः। हि। प्रथमम्। यज्ञियेभ्यः। अमृतऽत्वम्। सुवसि। भागम्। उत्ऽतमम्। आत्। इत्। दामानम्। सवितः। वि। ऊर्णुषे। अनूचीना। जीविता। मानुषेभ्यः॥२॥**

**पदार्थः-(देवेभ्यः)** दिव्यगुणकर्मस्वभावेभ्यो जीवेभ्यः **(हि)** यतः **(प्रथमम्)** आदौ **(यज्ञियेभ्यः)** सत्यभाषणादियज्ञानुष्ठातृभ्यः **(अमृतत्वम्)** मोक्षसुखम् **(सुवसि)** प्रेरयसि **(भागम्)** भजनीयम् **(उत्तमम्)** **(आत्)** आनन्तर्य्ये **(इत्)** **(दामानम्)** दातारम् **(सवितः)** सकलजगदुत्पादक जगदीश्वर **(वि)** **(ऊर्णुषे)** स्वव्याप्त्याऽऽच्छादयसि **(अनूचीना)** यान्यनुचरन्ति तानि **(जीविता)** जीवितानि **(मानुषेभ्यः)**॥२॥

**अन्वयः**-हे सवितर्जगदुत्पादक! हि त्वं यज्ञियेभ्यो देवेभ्यः प्रथमं भागमुत्तमममृतत्वं सुवस्याद् दामानं व्यूर्णुषेऽनूचीना जीवितेन्मानुषेभ्यो ददासि तस्मादस्माभिरुपास्योऽसि॥२॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यः परमात्मा सत्याचारे प्रेरयति मुक्तिसुखं प्रदाय सर्वानानन्दयति तमेव सदोपाध्वम्॥२॥

**पदार्थः**-हे **(सवितः)** सम्पूर्ण संसार के उत्पन्न करने वाले जगदीश्वर! **(हि)** जिससे आप **(यज्ञियेभ्यः)** सत्यभाषण आदि यज्ञानुष्ठान करने वाले **(देवेभ्यः)** श्रेष्ठ गुण, कर्म्म और स्वभावयुक्त जीवों के लिये **(प्रथमम्)** पहिले **(भागम्)** भजने योग्य **(उत्तमम्)** श्रेष्ठ **(अमृतत्वम्)** मोक्षसुख की **(सुवसि)** प्रेरणा करते हो **(आत्)** इसके अनन्तर **(दामानम्)** दाता जन को **(वि, ऊर्णुषे)** अपनी व्याप्ति से ढांपते हो **(अनूचीना)** अनुचर **(जीविता)** जीवनों को **(इत्)** ही **(मानुषेभ्यः)** मनुष्यों के लिये देते हो, इससे हम लोगों को उपासना करने योग्य हो॥२॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो परमात्मा सत्य आचरण में प्रेरणा करता और मुक्तिसुख को देकर सब को आनन्दित करता है, उसी की सदा उपासना करो॥२॥

**अथ विद्वद्गुणानाह॥**

अब विद्वानों के गुणों को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अचित्ती यच्चकृमा दैव्ये जने दीनैर्दक्षैः प्रभूती पूरुषत्वता।**

**देवेषु च सवितर्मानुषेषु च त्वं नो अत्र सुवतादनागसः॥३॥**

**अचित्ती। यत्। चकृम। दैव्ये। जने। दीनैः। दक्षैः। प्रऽभूती। पुरुषत्वता। देवेषु। च। सवितः। मानुषेषु। च। त्वम्। नः। अत्र। सुवतात्। अनागसः॥३॥**

**पदार्थः-(अचित्ती)** अचित्त्या अविद्यया **(यत्)** कर्म्म **(चकृमा)** कुर्य्याम। अत्र **संहितायामिति** दीर्घः। **(दैव्ये)** देवेषु विद्वत्सु कुशले **(जने)** विदुषि **(दीनैः)** क्षीणैः **(दक्षैः)** चतुरैः **(प्रभूती)** बहुत्वेन **(पूरुषत्वता)** उत्तमाः पुरुषा विद्यन्तेऽस्मिंस्तेन **(देवेषु)** विद्वत्सु **(च)** **(सवितः)** सकलजगदुत्पादक



www.9009.co.in

**(मानुषेषु)** अविद्वत्सु **(च)** **(त्वम्)** **(नः)** अस्मान् **(अत्र)** अस्मिन् **(सुवतात्)** प्रेरय **(अनागसः)** अनपराधिनः॥३॥

**अन्वयः**-हे सवितरचित्ती प्रभूती दीनैर्दक्षैः पूरुषत्वता दैव्ये जने देवेषु च मानुषेषु च यच्चकृमाऽत्र नोऽनागसस्त्वं सुवतात्॥३॥

**भावार्थः**-हे विद्वांसो! यूयं यद् वयमविद्यया युष्माकमपराधं कुर्याम स क्षन्तव्योऽस्मानध्यापनोपदेशाभ्यां निरपराधिनः कुरुत॥३॥

**पदार्थः**-हे **(सवितः)** सम्पूर्ण जगत् के उत्पन्न करने वाले! **(अचित्ती)** अविद्या से **(प्रभूती)** बहुत्व से **(दीनैः)** क्षीण अर्थात् दुर्बल **(दक्षैः)** चतुरों से और **(पूरुषत्वता)** उत्तम पुरुषवान् से **(दैव्ये)** विद्वानों में चतुर **(जने)** विद्वान् में **(देवेषु)** विद्वानों **(च)** और **(मानुषेषु)** अविद्वानों में **(च)** भी **(यत्)** जो कर्म्म **(चकृमा)** हम लोग करें **(अत्र)** इस में **(नः)** हम **(अनागसः)** अनपराधियों को **(त्वम्)** आप **(सुवतात्)** प्रेरणा करो॥३॥

**भावार्थः**-हे विद्वानो! आप लोग जो हम लोग अविद्या से आप लोगों का अपराध करें, वह क्षमा करने योग्य है और हम लोगों को अध्यापन और उपदेश से निरपराधी करो॥३॥

**अथ विद्वत्कर्त्तव्यकर्माह॥**

अब विद्वानों के करने योग्य काम को कहते हैं॥

**न प्रमिये सवितुर्दैव्यस्य तद्यथा विश्वं भुवनं धारयिष्यति।**

**यत्पृथिव्या वरिमन्ना स्वङ्गुरिर्वर्ष्मन् दिवः सुवति सत्यमस्य तत्॥४॥**

**न। प्रऽमिये। सवितुः। दैव्यस्य। तत्। यथा। विश्वम्। भुवनम्। धारयिष्यति। यत्। पृथिव्याः। वरिमन्। आ। सुऽअङ्गुरिः। वर्ष्मन्। दिवः। सुवति। सत्यम्। अस्य। तत्॥४॥**

**पदार्थः**-**(न)** निषेधे **(प्रमिये)** मरणं प्राप्नुयाम् **(सवितुः)** सकलजगदुत्पादकस्य **(दैव्यस्य)** दिव्येषु पदार्थेषु साक्षात्कृतस्य **(तत्)** **(यथा)** **(विश्वम्)** समग्रम् **(भुवनम्)** भवन्ति भूतानि यस्मिंस्तत् **(धारयिष्यति)** **(यत्)** **(पृथिव्याः)** भूमेः **(वरिमन्)** बहुगुणयुक्त **(आ)** समन्तात् **(स्वङ्गुरिः)** शोभना अङ्गुलयो यस्य सः **(वर्ष्मन्)** यो वर्षति तत्सम्बुद्धौ **(दिवः)** कमनीयस्य **(सुवति)** **(सत्यम्)** **(अस्य)** **(तत्)**॥४॥

**अन्वयः**-हे वरिमन् वर्ष्मन् विद्वन्! यथा सवितुर्दैव्यस्य मध्ये यद् विश्वं भुवनं धारयिष्यति पृथिव्याः स्वङ्गुरिः सन्नस्य दिवोऽस्य यत्सत्यं तत्सुवति तत्प्राप्य यथाऽहं न प्रमिये तथैव त्वमाचर॥४॥

**भावार्थः**-हे विद्वांसो! यद्ब्रह्म सर्वं जगद्धरति सूर्यवायुभ्यां धारयति च वेदद्वारा सर्वं सत्यं प्रकाशयति च तदेव वयमुपास्महे॥४॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-हे **(वरिमन्)** बहुत गुणों से युक्त **(वर्ष्मन्)** वर्षने वाले विद्वन्! **(यथा)** जैसे **(सवितुः)** सम्पूर्ण संसार के उत्पन्न करने वाले **(दैव्यस्य)** श्रेष्ठ पदार्थों में साक्षात् किये गये के मध्य में **(यत्)** जो **(विश्वम्)** सम्पूर्ण **(भुवनम्)** संसार को जिसमें प्राणी होते हैं **(धारयिष्यति)** धारण करावेगा **(पृथिव्याः)** और भूमि के सम्बन्ध में **(स्वङ्गुरिः)** श्रेष्ठ अंगुलियों से युक्त हस्तवाला हुआ **(अस्य)** इस **(दिवः)** सुन्दर का **(यत्)** जो **(सत्यम्)** सत्य **(तत्)** उसको **(सुवति)** प्रेरणा करता है **(तत्)** उसको प्राप्त होकर जैसे मैं **(न)** नहीं **(प्रमिये)** मरण को प्राप्त होऊँ, वैसे ही आप **(आ)** आचरण करो॥४॥

**भावार्थः**-हे विद्वानो! जो ब्रह्म सब जगत् को धारण करता और सूर्य और वायु से धारण कराता है, वेद के द्वारा सब सत्य का प्रकाश कराता है, उसी की हम लोग उपासना करें॥४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**इन्द्रज्येष्ठान् बृहद्भ्यः पर्वतेभ्यः क्षयाँ एभ्यः सुवसि पस्त्यावतः।**
**यथायथा पतयन्तो वियेमिर एवैव तस्थुः सवितः सवाय ते॥५॥**

इन्द्रऽज्येष्ठान्। बृहत्ऽभ्यः। पर्वतेभ्यः। क्षयान्। एभ्यः। सुवसि। पस्त्यऽवतः। यथाऽयथा। पतयन्तः। विऽयेमिरे। एव। एव। तस्थुः। सवितरिति। सवाय। ते॥५॥

**पदार्थः**-**(इन्द्रज्येष्ठान्)** इन्द्रो विद्युत्सूर्य्यो वा ज्येष्ठो येषां तान् **(बृहद्भ्यः)** महद्भ्यः **(पर्वतेभ्यः)** मेघादिभ्यः **(क्षयान्)** निवासान् **(एभ्यः)** **(सुवसि)** **(पस्त्यावतः)** प्रशंसितानि पस्त्यानि विद्यन्ते येषु तान् **(यथायथा)** **(पतयन्तः)** पतिरिवाचरन्तः **(वियेमिरे)** विशेषेण नियच्छन्ति **(एव)** निश्चये **(एव)** **(तस्थुः)** तिष्ठन्ति **(सवितः)** जगदीश्वर **(सवाय)** ऐश्वर्य्याय **(ते)** तव॥५॥

**अन्वयः**-हे सवितर्जगदीश्वर! त्वं यथायथा बृहद्भ्य एभ्यः पर्वतेभ्यः पस्त्यावत इन्द्रज्येष्ठान् क्षयान् सुवसि तथा तथा पतयन्त एव सर्वे वियेमिरे ते सवायैव तस्थुः॥५॥

**भावार्थः**-हे भगवन्! भवता सर्वेषां जीवानां निवासादिव्यवहाराय भूम्यादिलोका निर्मिता अत एव भवन्तं धन्यवादान् समर्प्य वयं तवैश्वर्य्ये निवसाम॥५॥

**पदार्थः**-हे **(सवितः)** जगदीश्वर! आप **(यथायथा)** जैसे जैसे **(बृहद्भ्यः)** बड़े **(एभ्यः)** इन **(पर्वतेभ्यः)** मेघादिकों से **(पस्त्यावतः)** प्रशंसित गृहों से युक्त **(इन्द्रज्येष्ठान्)** बिजुली वा सूर्य्य बड़े जिनमें उन **(क्षयान्)** निवासों को **(सुवसि)** प्रेरणा करते हो, वैसे-वैसे **(पतयन्तः)** पति के सदृश आचरण करते हुए **(एव)** ही सब **(वियेमिरे)** विशेष करके देते हैं और **(ते)** आपके **(सवाय)** ऐश्वर्य्य के लिये **(एव)** ही **(तस्थुः)** स्थित होते हैं॥५॥

**भावार्थः**-हे भगवन्! आपने सब जीवों के निवासादि व्यवहार के लिये भूमि आदि लोक रचे, इसी से आपके लिये धन्यवादों को समर्पण करके हम लोग आपके ऐश्वर्य्य में निवास करें॥५॥



www.9009.co.in

**अथ पदार्थोद्देशेनेश्वरसेवनमाह॥**

अब पदार्थोद्देश से ईश्वर की सेवा को कहते हैं॥

**ये ते त्रिरहन्त्सवितः सवासो दिवेदिवे सौभगमासुवन्ति।**

**इन्द्रो द्यावापृथिवी सिन्धुरद्भिरादित्यैर्नो अदितिः शर्म यंसत्॥६॥५॥**

**ये। ते। त्रिः। अहन्। सवितरिति। सवासः। दिवेऽदिवे। सौभगम्। आऽसुवन्ति। इन्द्रः। द्यावापृथिवी इति। सिन्धुः। अत्ऽभिः। आदित्यैः। नः। अदितिः। शर्मः। यंसत्॥६॥**

**पदार्थः-(ये) (ते)** तव **(त्रिः) (अहन्)** अहनि **(सवितः)** परमेश्वर **(सवासः)** उत्पन्नाः पदार्थाः **(दिवेदिवे)** प्रतिदिनम् **(सौभगम्)** सुभगस्य श्रेष्ठैश्वर्य्यस्य भावम् **(आसुवन्ति)** उत्पादयन्ति **(इन्द्रः)** सूर्य्यः **(द्यावापृथिवी)** प्रकाशभूमी **(सिन्धुः) (अद्भिः)** जलैः **(आदित्यैः)** मासैः **(नः)** अस्मभ्यम् **(अदितिः)** अखण्डितः परमात्मा **(शर्म)** सुखम् **(यंसत्)** प्रदद्यात्॥६॥

**अन्वयः**-हे सवितर्जगदीश्वर! ते तव ये सवासोऽहन् दिवेदिवे सौभगं त्रिरासुवन्ति। अद्भिरादित्यैस्सह इन्द्रो द्यावापृथिवी सिन्धुश्चासुवन्ति सोऽदितिर्भवान्नः शर्म यंसत्॥६॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यस्य जगदीश्वरस्य सृष्टौ वयमत्यन्तैश्वर्य्यवन्तो भवामोऽस्माकरक्षकाः सर्वे पदार्थाः सन्ति तमेव वयं सततं भजेमेति॥६॥

अत्र सवित्रीश्वरविद्वत्पदार्थगुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति चतुःपञ्चाशत्तमं सूक्तं पञ्चमो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे **(सवितः)** परमेश्वर **(ते)** आपके **(ये)** जो **(सवासः)** उत्पन्न पदार्थ **(अहन्)** दिन में **(दिवेदिवे)** प्रतिदिन **(सौभगम्)** श्रेष्ठ ऐश्वर्य्य के होने को **(त्रिः)** तीन वार **(आसुवन्ति)** उत्पन्न कराते हैं तथा **(अद्भिः)** जलों और **(आदित्यैः)** और महीनों के साथ **(इन्द्रः)** सूर्य्य **(द्यावापृथिवी)** प्रकाश-भूमि और **(सिन्धुः)** समुद्र भी उत्पन्न कराते हैं, वह **(अदितिः)** खण्डरहित परमात्मा आप **(नः)** हम लोगों के लिये **(शर्म)** सुख को **(यंसत्)** दीजिये॥६॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जिस जगदीश्वर की सृष्टि में हम लोग ऐश्वर्य्य वाले होते हैं और हम लोगों के रक्षा करने वाले सम्पूर्ण पदार्थ हैं, उसी का हम लोग निरन्तर भजन करें॥६॥

इस सूक्त में सविता, ईश्वर, विद्वान् और पदार्थों के गुणों का वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह चौवनवाँ सूक्त और पांचवां वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

**अथ दशर्चस्य पञ्चपञ्चाशत्तमस्य सूक्तस्य वामदेव ऋषिः। विश्वेदेवा देवताः। १ त्रिष्टुप्। २, ४ निचृत्त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः। ३, ५ भुरिक् पङ्क्तिः। ६, ७ स्वराट् पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः। ८, ९ विराड्गायत्री। १० गायत्री छन्दः। षड्जः स्वरः॥**

**अथ विद्वद्गुणानाह॥**

अब दश ऋचा वाले पचपनवें सूक्त का आरम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में विद्वान् के गुणों का वर्णन करते हैं॥

**को व॑स्त्रा॒ता व॑सव॒: को व॑रू॒ता द्यावा॑भूमी अदि॑ते॒ त्रासी॑थां नः।**

**सही॑यसो वरुण मित्र॒ मर्ता॒त्को वो॑ऽध्व॒रे वरि॑वो धाति देवा:॥ १॥**

**कः। व॒ः। त्रा॒ता। व॒स॒व॒ः। क॒ः। व॒रू॒ता। द्यावा॑भूमी॒ इति॑। अ॒दि॒ते॒। त्रासी॑थाम्। न॒ः। सही॑यसः। व॒रु॒ण॒। मि॒त्र॒। मर्ता॑त्। कः। व॒ः। अ॒ध्व॒रे। वरि॑वः। धा॒ति॒। दे॒वा:॥ १॥**

**पदार्थः**-(**कः**) (**वः**) युष्माकम् (**त्राता**) रक्षकः (**वसवः**) ये वसन्ति तत्सम्बुद्धौ (**कः**) (**वरूता**) स्वीकर्त्ता (**द्यावाभूमी**) प्रकाशपृथिव्यौ (**अदिते**) अविनाशिन् (**त्रासीथाम्**) रक्षेथाम् (**नः**) अस्माकम् (**सहीयसः**) अतिशयेन सहनशीलान् बलिष्ठान् (**वरुण**) उत्कृष्टविद्वन्नध्यापक (**मित्र**) सर्वसुहृदुपदेशक (**मर्त्तात्**) मनुष्यात् (**कः**) (**वः**) युष्माकम् (**अध्वरे**) सत्ये व्यवहारे (**वरिवः**) परिचरणं सेवनम् (**धाति**) दधाति (**देवाः**) विद्वांसः॥ १॥

**अन्वयः**-हे वरुण मित्र सहीयसो! नो वोऽध्वरे को मर्त्ताद्वरिवो धाति द्यावाभूमी इव युवामस्मान् त्रासीथाम्। हे वसवो देवा! वः वस्त्राताऽस्ति। हे अदिते जगदीश्वर! तव को वरुताऽस्ति॥ १॥

**भावार्थः**-यो हि परमेश्वराज्ञां पालयति स परमेश्वरेण स्वीक्रियते। हे मनुष्या! योऽस्माकं युष्माकञ्च रक्षकः स एवाऽस्माभिर्भजनीयः येऽहिंसया सर्वान् मनुष्यान् विज्ञाने दधति स ते च सदैव सत्कर्त्तव्याः॥ १॥

**पदार्थः**-हे (**वरुण**) उत्तम विद्वन् अध्यापक (**मित्र**) सम्पूर्ण मित्रों के उपदेशक (**सहीयसः**) अत्यन्त सहने वाले बलिष्ठ! (**नः**) हम लोगों के और (**वः**) आप लोगों के (**अध्वरे**) सत्य व्यवहार में (**कः**) कौन (**मर्त्तात्**) मनुष्य से (**वरिवः**) सेवन को (**धाति**) धारण करता है (**द्यावाभूमी**) प्रकाश और पृथिवी के सदृश आप दोनों हम लोगों की (**त्रासीथाम्**) रक्षा करो हे (**वसवः**) रहने वाले (**देवाः**) विद्वानो! (**वः**) आप लोगों का (**कः**) कौन (**त्राता**) रक्षक है। हे (**अदिते**) नहीं नाश होने वाले जगदीश्वर! आप का (**कः**) कौन (**वरूता**) स्वीकार करने वाला है॥ १॥

**भावार्थः**-जो परमेश्वर की आज्ञा का पालन करता है, वह परमेश्वर से स्वीकार किया जाता है। हे मनुष्यो! जो हमारा और आप लोगों का रक्षक है, वही हम लोगों से सेवा करने योग्य है और जो अहिंसा से सब मनुष्यों को विज्ञान में धारण करते हैं, वह और वे सदा सत्कार करने योग्य हैं॥ १॥



www.9009.co.in

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**प्र ये धामानि पूर्व्याण्यर्चान् वि यदुच्छान् वियोतारो अमूराः।**

**विधातारो वि ते दधुरजस्रा ऋतधीतयो रुरुचन्त दस्माः॥ २॥**

**प्र। ये। धामानि। पूर्व्याणि। अर्चान्। वि। यत्। उच्छान्। विऽयोतारः। अमूराः। विऽधातारः। वि। ते। दधुः। अजस्राः। ऋतऽधीतयः। रुरुचन्त। दस्माः॥ २॥**

**पदार्थः-(प्र) (ये) (धामानि)** जन्मनामस्थानानि **(पूर्व्याणि)** पूर्वैः साक्षात्कृतानि **(अर्चान्)** सत्कुर्य्युः **(वि) (यत्)** ये **(उच्छान्)** विवासयेयुः **(वियोतारः)** विभाजकाः **(अमूराः)** अमूढाः **(विधातारः)** निर्मातारः **(वि) (ते) (दधुः)** दध्युः **(अजस्राः)** अहिंसकाः **(ऋतधीतयः)** ऋतस्य धीतिर्धारणं येषान्ते **(रुरुचन्त)** सुशोभन्ते **(दस्माः)** दुःखानां विनाशकाः॥ २॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! ये पूर्व्याणि धामानि प्रार्चान् यद्येऽमूरा वियोतारः पूर्व्याणि धामानि व्युच्छान् येऽजस्रा ऋतधीतयो विधातारो दस्मा रुरुचन्त ते सततं वि दधुः॥ २॥

**भावार्थः**-ये आप्ताः सर्वेषां सुखमिच्छुका विद्वांसस्स्युस्त एव सर्वेषां सर्वाणि सुखानि कर्त्तुमर्हेयुः॥ २॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(ये)** जो **(पूर्व्याणि)** प्राचीन जनों से प्रत्यक्ष किये गये **(धामानि)** जन्म, नाम, स्थानों का **(प्र, अर्चान्)** उत्तम सत्कार करें और **(यत्)** जो **(अमूराः)** नहीं मूर्ख **(वियोतारः)** विभाग करने वाले जन प्राचीन जनों से प्रत्यक्ष किये गये जन्म, नाम, स्थानों का **(वि, उच्छान्)** विवास करावें और जो **(अजस्राः)** नहीं हिंसा करने और **(ऋतधीतयः)** सत्य के धारण करने वाले **(विधातारः)** निर्माणकर्त्ता **(दस्माः)** दुःखों के विनाशक जन **(रुरुचन्त)** उत्तम प्रकार शोभित होते हैं **(ते)** वे निरन्तर **(वि, दधुः)** विधान करें॥ २॥

**भावार्थः**-जो यथार्थवक्ता सब के सुख की इच्छा करने वाले विद्वान् जन हों, वे ही सब के सब सुखों के करने योग्य होवें॥ २॥

**अथ विद्वद्विषये गार्हस्थ्यकर्माह॥**

अब विद्वानों के विषय में गृहस्थ के कर्म को कहते हैं॥

**प्र पस्त्या३मदितिं सिन्धुमर्कैः स्वस्तिमीळे सख्याय देवीम्।**

**उभे यथा नो अहनी निपात उषासानक्ता करतामदब्धे॥ ३॥**

**प्र। पस्त्याम्। अदितिम्। सिन्धुम्। अर्कैः। स्वस्तिम्। ईळे। सख्याय। देवीम्। उभे इति। यथा। नः। अहनी इति। निऽपातः। उषसानक्ता। करताम्। अदब्धे इति॥ ३॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**प्र**) (**पस्त्याम्**) गृहम् (**अदितिम्**) अखण्डिताम् (**सिन्धुम्**) नदीम् (**अर्कैः**) मन्त्रैः (**स्वस्तिम्**) सुखम् (**ईळे**) अध्यन्विच्छामि (**सख्याय**) मित्रभावाय (**देवीम्**) कमनीयां विदुषीं स्त्रियम् (**उभे**) (**यथा**) (**नः**) अस्माकम् (**अहनी**) रात्रिदिने (**निपातः**) यो नितरां पाति (**उषासानक्ता**) रात्रिदिवसौ (**करताम्**) (**अदब्धे**) अहिंसिते॥३॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथोभे अहनी उषासानक्ता अदब्धे करतां तथा नो निपातोऽहमर्कैरदितिं पस्त्यां सिन्धुं स्वस्ति सख्याय देवीं प्रेळे॥३॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। यथा रात्रिदिने सम्बद्धे वर्त्तित्वा सर्वव्यवहारसिद्धे निमित्ते भवतस्तथाऽऽवां विहितौ सखिवद्वर्त्तमानौ स्त्रीपुरुषौ श्रेष्ठं गृहं पुष्कलं सुखं सर्वदोन्नयेय॥३॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! (**यथा**) जैसे (**उभे**) दोनों (**अहनी**) रात्रि और दिन (**उषासानक्ता**) रात्रि और दिन को (**अदब्धे**) नहीं हिंसित (**करताम्**) करें, वैसे (**नः**) हम लोगों का अर्थात् अपना (**निपातः**) अतिशय पालन करने वाला मैं (**अर्कैः**) मन्त्रों से (**अदितिम्**) खण्डरहित (**पस्त्याम्**) गृह और (**सिन्धुम्**) नदी की (**स्वस्तिम्**) सुख की और (**सख्याय**) मित्रपने के लिये (**देवीम्**) सुन्दर विद्यायुक्त स्त्री की (**प्र, ईळे**) विशेष इच्छा करता हूँ॥३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जैसे रात्रि और दिन मिले हुए वर्ताव करके सम्पूर्ण व्यवहार में कारण होते हैं, वैसे हम दोनों विशेष करके हित चाहते हुए मित्र के सदृश वर्तमान स्त्री और पुरुष उत्तम गृह और बहुत सुख की सदा उन्नति करें॥३॥

**पुनर्विद्वद्विषयमाह॥**

फिर विद्वद्विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**व्य॑र्य॒मा वरु॑णश्चेति॒ पन्था॑मि॒षस्पति॑ः सुवि॒तं गा॒तुम॒ग्निः।**

**इन्द्रा॑विष्णू नृवदु षु स्तवा॑ना॒ शर्म॑ नो यन्त॒मम॑वद्वरू॑थम्॥४॥**

**वि। अ॒र्य॒मा। वरु॑णः। चे॒ति॒। पन्था॑म्। इ॒षः। पति॑ः। सु॒वि॒तम्। गा॒तुम्। अ॒ग्निः। इन्द्रा॑विष्णू इति॑। नृ॒ऽवत्। ऊ॒म् इति॑। सु। स्तवा॑ना। शर्म॑। नः। य॒न्तम्। अम॑ऽवत्। वरू॑थम्॥४॥**

**पदार्थः**-(**वि**) (**अर्यमा**) न्यायकर्त्ता (**वरुणः**) श्रेष्ठः (**चेति**) विजानाति (**पन्थाम्**) धर्म्ममार्गम् (**इषः**) अन्नादेः (**पतिः**) स्वामी (**सुवितम्**) सुष्ठूत्पादितम् (**गातुम्**) पृथिवीम् (**अग्निः**) अग्निरिव वर्त्तमानः (**इन्द्राविष्णू**) विद्युद्वायू (**नृवत्**) नायकवत् (उ) (**सु**) (**स्तवाना**) सत्यप्रशंसकौ (**शर्म**) सुखम् (**नः**) अस्माकम् (**यन्तम्**) प्राप्नुतम् (**अमवत्**) प्रशस्तरूपयुक्तम्। (**वरूथम्**) गृहम्॥४॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! योऽर्यमा वरुणश्च पन्थां वि चेति गातुमग्निरिवेषस्पतिः सुवितं वि चेति। हे अध्यापकोपदेशकौ युवामिन्द्राविष्णू इव स्तवाना! नृवदु नोऽमवच्छर्म वरूथं सु यन्तम्॥४॥



www.9009.co.in

**भावार्थ:**-हे मनुष्या! यथा न्यायशीला विद्वांसोऽधर्म्यमार्गं विहाय धर्म्ये गच्छन्ति तथा यूयमपि गच्छत॥४॥

**पदार्थ:**-हे मनुष्यो! जो **(अर्यमा)** न्यायकर्त्ता और **(वरुण:)** श्रेष्ठ पुरुष **(पन्थाम्)** धर्मसम्बन्धी मार्ग को **(वि, चेति)** विशेष कर जानता है **(गातुम्)** पृथिवी को **(अग्नि:)** अग्नि जैसे वैसे वर्त्तमान **(इष:)** अन्न आदि का **(पति:)** स्वामी **(सुवितम्)** उत्तम प्रकार उत्पन्न किये गये को विशेष कर जानता है। और हे अध्यापकोपदेशको आप दोनों **(इन्द्राविष्णू)** बिजुली और वायु के सदृश **(स्तवाना)** सत्य की प्रशंसा करने वालो! **(नृवत्)** प्रधान पुरुष के सदृश **(उ)** और **(न:)** हम लोगों के **(अमवत्)** प्रशस्तरूप से युक्त **(शर्म)** सुख और **(वरूथम्)** गृह को **(सु, यन्तम्)** अच्छे प्रकार प्राप्त होओ॥४॥

**भावार्थ:**-हे मनुष्यो! जैसे न्यायकारी विद्वान् लोग अधर्म्मसम्बन्धी मार्ग का त्याग करके धर्मसम्बन्धी मार्ग में चलते हैं, वैसे आप लोग भी चलें॥४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**आ पर्वतस्य मरुतामवांसि देवस्य त्रातुरव्रि भगस्य।**

**पात् पतिर्जन्यादंहसो नो मित्रो मित्रियादुत न उरुष्येत्॥५॥६॥**

**आ। पर्वतस्य। मरुताम्। अवांसि। देवस्य। त्रातुः। अव्रि। भगस्य। पात्। पतिः। जन्यात्। अंहसः। नः। मित्रः। मित्रियात्। उत। नः। उरुष्येत्॥५॥**

**पदार्थ:**-**(आ)** **(पर्वतस्य)** मेघस्य **(मरुताम्)** मनुष्याणाम् **(अवांसि)** बहुविधानि रक्षणानि **(देवस्य)** दिव्यसुखप्रापकस्य **(त्रातु:)** रक्षकस्य **(अव्रि)** आवृणोमि **(भगस्य)** ऐश्वर्य्यस्य **(पात्)** रक्षतु **(पति:)** स्वामी **(जन्यात्)** उत्पत्स्यमानात् **(अंहस:)** अपराधात् **(न:)** अस्मान् **(मित्र:)** सखा **(मित्रियात्)** मित्रात् **(उत)** **(न:)** अस्मान् **(उरुष्येत्)** सेवेत॥५॥

**अन्वय:**-हे विद्वन्! यथाऽहं पर्वतस्य देवस्य भगस्य त्रातुर्मरुतामवांस्यहमाऽऽव्रि तथा पतिर्भवान्नो जन्यादंहस: पान्न उत मित्रो मित्रियादुरुष्येत्॥५॥

**भावार्थ:**-ये मनुष्या: सत्यं ज्ञातुमाचरितुमिच्छेयुस्ते सत्यं ज्ञानं प्राप्य सत्याचारिणो भवेयु:॥५॥

**पदार्थ:**-हे विद्वन्! जैसे मैं **(पर्वतस्य)** मेघ के **(देवस्य)** उत्तम सुख प्राप्त कराने वाले के **(भगस्य)** ऐश्वर्य्य के **(त्रातु:)** रक्षा करने वाले और **(मरुताम्)** मनुष्यों के **(अवांसि)** अनेक प्रकार रक्षणों का मैं **(आ, अव्रि)** स्वीकार करता हूँ, वैसे **(पति:)** स्वामी आप **(न:)** हम लोगों की **(जन्यात्)** उत्पन्न होने वाले **(अंहस:)** अपराध से **(पात्)** रक्षा करो और **(न:)** हम लोगों को **(उत)** तो **(मित्र:)** मित्र **(मित्रियात्)** मित्र से **(उरुष्येत्)** सेवन करे॥५॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-जो मनुष्य सत्य के जानने और उसके आचरण करने की इच्छा करें, वे सत्य ज्ञान को प्राप्त होकर सत्य के आचरण करने वाले होवें॥५॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**नू रोदसी अहिना बुध्न्येन स्तुवीत देवी अप्येभिरिष्टैः।**

**समुद्रं न संचरणे सनिष्यवो घर्मस्वरसो नद्यो३ अप व्रन्॥६॥**

**नु। रोदसी इति। अहिना। बुध्न्येन। स्तुवीत। देवी इति। अप्येभिः। इष्टैः। समुद्रम्। न। सम्ऽचरणे। सनिष्यवः। घर्मऽस्वरसः। नद्यः। अप। व्रन्॥६॥**

**पदार्थः**-(**नू**) सद्यः। अत्र **ऋचि तुनुघे**ति दीर्घः। (**रोदसी**) द्यावापृथिव्यौ (**अहिना**) मेघेन (**बुध्न्येन**) अन्तरिक्षे भवेन (**स्तुवीत**) प्रशंसेत् (**देवी**) देदीप्यमाने (**अप्येभिः**) अप्सु भवैः (**इष्टैः**) सङ्गन्तुं प्राप्तुमर्हैः (**समुद्रम्**) अन्तरिक्षम् (**न**) इव (**सञ्चरणे**) सम्यग्गमने (**सनिष्यवः**) विभागं करिष्यमाणाः (**घर्मस्वरसः**) घर्मे यज्ञे स्वकीयो रसो यस्य सः (**नद्यः**) सरितः (**अप**) (**व्रन्**) अपवृण्वन्ति॥६॥

**अन्वयः**-हे विद्वन्! घर्मस्वरसो भवान् यथेष्टैरप्येभिस्सह सनिष्यवो नद्यः सञ्चरणे समुद्रं नापव्रँस्तथा बुध्न्येनाहिना सहिते देवी रोदसी नू स्तुवीत॥६॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यथा मेघजलैः पूर्णा नद्य आवरणानि छित्त्वाऽन्तिरक्ष आपो गच्छन्ति तथैव यूयं विद्याकाशं गत्वा सर्वा विद्याः प्रशंसत॥६॥

**पदार्थः**-हे विद्वन्! (**घर्मस्वरसः**) यज्ञ में अपने रस वाले आप जैसे (**इष्टैः**) मिलने और प्राप्त होने योग्य (**अप्येभिः**) जल में उत्पन्न हुए पदार्थों के साथ (**सनिष्यवः**) विभाग करती हुई (**नद्यः**) नदियाँ (**सञ्चरणे**) सुन्दर गमन में (**समुद्रम्**) अन्तरिक्ष के (**न**) तुल्य (**अप, व्रन्**) ढांपती हैं, वैसे (**बुध्न्येन**) अन्तरिक्ष में हुए (**अहिना**) मेघ के सहित (**देवी**) प्रकाशमान (**रोदसी**) अन्तरिक्ष और पृथिवी की (**नू**) शीघ्र (**स्तुवीत**) प्रशंसा करें॥६॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जैसे मेघों के जलों से पूर्ण नदियाँ आवरणों को काट कर अन्तरिक्ष में जलों को प्राप्त होती हैं, वैसे ही आप लोग विद्या की दीप्ति को प्राप्त होकर सब विद्याओं की प्रशंसा करो॥६॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**देवैर्नो देव्यदितिर्नि पातु देवस्त्राता त्रायतामप्रयुच्छन्।**

**नहि मित्रस्य वरुणस्य धासिमर्हामसि प्रमियं सान्वग्नेः॥७॥**

**दे॒वैः। नः॒। दे॒वी। अदि॑तिः। नि। पा॒तु॒। दे॒वः। त्रा॒ता। त्राय॑ताम्। अप्र॑ऽयुच्छन्। न॒हि। मि॒त्रस्य॑। वरु॑णस्य। धा॒सिम्। अर्हा॑मसि। प्र॒ऽमिय॑म्। सानु॑। अ॒ग्नेः॥७॥**

**पदार्थः-(देवैः)** विद्वद्भिः पृथिव्यादिभिस्सह वा **(नः)** अस्मान् **(देवी)** देदीप्यमाना विदुषी माता **(अदितिः)** अखण्डितज्ञाना **(नि)** **(पातु)** रक्षतु **(देवः)** विद्वान् पिता **(त्राता)** रक्षकः **(त्रायताम्)** पालयतु **(अप्रयुच्छन्)** अप्रमाद्यन् **(नहि)** निषेधे **(मित्रस्य)** **(वरुणस्य)** **(धासिम्)** अन्नम् **(अर्हामसि)** योग्या भवामः **(प्रमियम्)** प्रहिंसितुम् **(सानु)** शिखरम् **(अग्नेः)** पावकस्य॥७॥

**अन्वयः**-हे विद्वन्! यथा वयं वरुणस्य मित्रस्याग्नेः सानु धासिं प्रमियं नह्यर्हामसि तथा देवैस्सह देव्यदितिर्नो नि पात्वप्रयुच्छँस्त्राता देवोऽस्माँस्त्रायताम्॥७॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। केनाऽपि मनुष्येण कस्याऽपि जनस्य पदार्थस्य वा हिंसा मादकद्रव्यसेवनञ्च सदैव न कार्य्यं सदा विदुषां मातुः पितुश्च शिक्षा सङ्ग्राह्या॥७॥

**पदार्थः**-हे विद्वन्! जैसे हम लोग **(वरुणस्य)** श्रेष्ठ पुरुष **(मित्रस्य)** मित्र और **(अग्नेः)** अग्नि के **(सानु)** शिखर और **(धासिम्)** अन्न के **(प्रमियम्)** नाश करने को **(नहि)** नहीं **(अर्हामसि)** योग्य होते हैं, वैसे **(देवैः)** विद्वानों वा पृथिवी आदिकों के साथ **(देवी)** प्रकाशमान विद्यायुक्त माता **(अदितिः)** अखण्डित ज्ञानवाली **(नः)** हम लोगों की **(नि, पातु)** रक्षा करे और **(अप्रयुच्छन्)** नहीं प्रमाद करता हुआ **(त्राता)** रक्षा करने वाला **(देवः)** विद्वान् पिता हम लोगों का **(त्रायताम्)** पालन करे॥७॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। प्रत्येक मनुष्य को चाहिये कि किसी सज्जन वा किसी पदार्थ का नाश और नशा करने वाले द्रव्य का सेवन सदा ही न करे और सदा विद्वानों और माता-पिता की शिक्षा को ग्रहण करे॥७॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अ॒ग्निरी॑शे व॒सव्य॑स्या॒ग्निर्म॒हः सौभ॑गस्य। तान्य॒स्मभ्यं॑ रासते॥८॥**

**अ॒ग्निः। ई॒शे॒। व॒स॒व्य॑स्य। अ॒ग्निः। म॒हः। सौभ॑गस्य। तानि॑। अ॒स्मभ्य॑म्। रा॒स॒ते॒॥८॥**

**पदार्थः-(अग्निः)** अग्निरिव पुरुषार्थी **(ईशे)** ईष्टे **(वसव्यस्य)** वसुषु धनेषु साधोः **(अग्निः)** पावकः **(महः)** महतः **(सौभगस्य)** सुष्ठ्वैश्वर्य्यभावस्य **(तानि)** **(अस्मभ्यम्)** **(रासते)** ददाति॥८॥

**अन्वयः**-हे विद्वन्! यथाऽग्निर्वसव्यस्य यथाऽग्निर्महः सौभगस्येशे तान्यस्मभ्यं रासते तथा त्वं कुरु॥८॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे विद्वांसो! यथा विद्ययोपजितोऽग्निः कार्य्याणि संसाध्य महदैश्वर्य्यं प्रापयति तथैव सेविता यूयं विद्योपदेशादिकार्य्याणि संसाध्य सर्वानैश्वर्य्ययुक्तान् कुरुत॥८॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-हे विद्वन्! जैसे **(अग्निः)** अग्नि के सदृश पुरुषार्थी **(वसव्यस्य)** धनों में श्रेष्ठ का और जैसे **(अग्निः)** अग्नि **(महः)** बड़े **(सौभगस्य)** उत्तम ऐश्वर्य्य के होने की **(ईशे)** इच्छा करता है **(तानि)** उनको **(अस्मभ्यम्)** हम लोगों के लिये **(रासते)** देता है, वैसे आप करो॥८॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे विद्वानो! जैसे विद्या से उपजित अर्थात् वश में किया गया अग्नि, कार्य्यों को सिद्ध करके बड़े ऐश्वर्य्य को प्राप्त कराता है, वैसे ही सेवा किये गये आप लोग विद्या और उपदेश आदि कार्य्यों को सिद्ध करके सब को ऐश्वर्य्ययुक्त करो॥८॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**उषो मघोन्या वह सूनृते वार्या पुरु। अस्मभ्यं वाजिनीवति॥९॥**

**उषः। मघोनि। आ। वह। सूनृते। वार्या। पुरु। अस्मभ्यम्। वाजिनीऽवति॥९॥**

**पदार्थः**-**(उषः)** उषर्वद्वर्त्तमाने **(मघोनि)** प्रशंसितधनकारिके **(आ)** **(वह)** समन्तात् प्रापय **(सूनृते)** सत्यवाक् **(वार्या)** वर्त्तुमर्हाणि वस्तूनि **(पुरु)** **(अस्मभ्यम्)** **(वाजिनीवति)** उत्तमविद्यायुक्ते॥९॥

**अन्वयः**-हे उषर्वद्वर्त्तमाने सूनृते मघोनि वाजिनीवति! पत्नी त्वमस्मभ्यं पुरु वार्याऽऽवह॥९॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यथोषाः सर्वजीवानां प्रियकारिणी वर्त्तते तथैव विदुषी स्त्री सर्वप्रिया जायते॥९॥

**पदार्थः**-हे **(उषः)** प्रातःकाल के सदृश वर्त्तमान **(सूनृते)** सत्यवाणीयुक्त **(मघोनि)** प्रशंसित धन को करने वाली **(वाजिनीवति)** उत्तम विद्या से युक्त पत्नी तू **(अस्मभ्यम्)** हम लोगों के लिये **(पुरु)** बहुत **(वार्या)** वर्त्ताव में लाने योग्य वस्तुओं को **(आ, वह)** सब प्रकार से प्राप्त कराओ॥९॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे प्रभातवेला सब जीवों की प्रिय करने वाली है, वैसे ही विद्यायुक्त स्त्री सब को प्रिय होती है॥९॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**तत्सु नः सविता। भगो वरुणो मित्रो अर्यमा। इन्द्रो नो राधसा गमत्॥१०॥७॥**

**तत्। सु। नः। सविता। भगः। वरुणः। मित्रः। अर्यमा। इन्द्रः। नः। राधसा। आ। गमत्॥१०॥**

**पदार्थः**-**(तत्)** तेन **(सु)** **(नः)** अस्मान् **(सविता)** सूर्य्यः **(भगः)** भजनीयः पदार्थसमुदायः **(वरुणः)** उदानः **(मित्रः)** प्राणः **(अर्यमा)** न्यायकारी **(इन्द्रः)** विद्युत् **(नः)** अस्मान् **(राधसा)** धनेन **(आ)** समन्तात् **(गमत्)** गच्छति॥१०॥

**अन्वयः**-हे विद्वन्! यथा सविता भगो वरुणो मित्रोऽर्यमा तद्राधसा न आ गमदिन्द्रो नः सु गमत्तथा त्वं भव॥१०॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे अध्यापकोपदेशका! यथा नियमेन सूर्य्यवायू प्राणादयो विद्युच्च प्राप्ताः सन्ति तथैवाऽस्मान् सततं प्राप्ता भवत॥१०॥

अत्र विद्वद्गुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति पञ्चपञ्चाशत्तमं सूक्तं सप्तमो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे विद्वन्! जैसे **(सविता)** सूर्य **(भगः)** सेवन करने योग्य पदार्थसमुदाय **(वरुणः)** उदानवायु **(मित्रः)** प्राणवायु **(अर्यमा)** न्यायकारी **(तत्)** उस **(राधसा)** धन से **(नः)** हम लोगों को **(आ)** सब प्रकार **(गमत्)** प्राप्त होता और **(इन्द्रः)** बिजुली **(नः)** हम लोगों को **(सु)** उत्तम प्रकार प्राप्त होती है, वैसे आप हूजिये॥१०॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे अध्यापक और उपदेशक जनो! जैसे नियम से सूर्य, वायु, प्राण आदि और बिजुली प्राप्त हैं, वैसे ही आप हम लोगों को निरन्तर प्राप्त हूजिये॥१०॥

इस सूक्त में विद्वानों के गुणों का वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह पचपनवाँ सूक्त और सप्तम वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

**अथ सप्तर्चस्य षट्पञ्चाशत्तमस्य सूक्तस्य वामदेव ऋषिः। द्यावापृथिव्यौ देवते। १, २ त्रिष्टुप्। ४ विराट् त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः। ३ भुरिक् पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः। ५ निचृद्गायत्री। ६ विराट् गायत्री। ७ गायत्री छन्दः। षड्जः स्वरः॥**

**अथ द्यावापृथिव्योर्गुणानाह॥**

अब सात ऋचा वाले छप्पनवें सूक्त का प्रारम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में द्यावापृथिवी अर्थात् प्रकाश और भूमि के गुणों को कहते हैं॥

**म॒ही द्यावा॑पृथि॒वी इ॒ह ज्येष्ठे॑ रु॒चा भ॑वतां शु॒चय॑द्भि॒रर्कैः।**

**यत्सीं॒ वरि॑ष्ठे बृह॒ती वि॑मि॒न्वन् रु॒वद्धो॒क्षा प॑प्रथा॒नेभि॒रेवैः॥ १॥**

**म॒ही इति॑। द्यावा॑पृथि॒वी इति॑। इ॒ह। ज्येष्ठे॒ इति॑। रु॒चा। भ॒व॒ता॒म्। शु॒चय॑त्ऽभिः। अ॒र्कैः। यत्। सी॒म्। वरि॑ष्ठे इति॑। बृ॒ह॒ती इति॑। वि॒ऽमि॒न्वन्। रु॒वत्। ह॒। उ॒क्षा। प॒प्र॒था॒नेभि॑ः। एवैः॑॥ १॥**

**पदार्थः**-(**मही**) महत्यौ (**द्यावापृथिवी**) सूर्यभूमी (**इह**) (**ज्येष्ठे**) अतिशयेन प्रशस्ये (**रुचा**) रुचिकर्यौ (**भवताम्**) (**शुचयद्भिः**) पवित्रयद्भिः (**अर्कैः**) अर्चनीयैः (**यत्**) यः (**सीम्**) सर्वतः (**वरिष्ठे**) अतिशयेन वरे (**बृहती**) बृहन्त्यौ (**विमिन्वन्**) विशेषेण प्रक्षिपन् (**रुवत्**) प्रशस्तशब्दवत् (**ह**) किल (**उक्षा**) सूर्यः (**पप्रथानेभिः**) भृशं विस्तृतैः (**एवैः**) सुखप्रापकैः॥१॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यद्यो विमिन्वन् रुवद्धोक्षेव विद्वानिह सीं शुचयद्भिरर्कैः पप्रथानेभिरेवैर्गुणै- स्सह वर्त्तमाने वरिष्ठे बृहती मही ज्येष्ठे रुचा द्यावापृथिवी भवतां ते [=तान्] यथावद्विजानाति स एव सर्वेषां कल्याणकरो भवति॥१॥

**भावार्थः**-ये मनुष्याः पृथिवीमारभ्य सूर्य्यपर्य्यन्तान् पदार्थाञ्च जानन्ति त ऐश्वर्य्यवन्तो भूत्वा सर्वान् सुखयन्तु॥१॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! (**यत्**) जो (**विमिन्वन्**) विशेष करके फेंकता हुआ (**रुवन्**) प्रशंसित शब्दवान् जैसे हो वैसे (**ह**) ही (**उक्षा**) सूर्य्य के समान विद्वान् (**इह**) यहाँ (**सीम्**) सब ओर से (**शुचयद्भिः**) पवित्र करते हुए (**अर्कैः**) सेवा करने योग्य और (**पप्रथानेभिः**) अत्यन्त विस्तारयुक्त (**एवैः**) सुख को प्राप्त कराने वाले गुणों के साथ वर्त्तमान (**वरिष्ठे**) अतीव श्रेष्ठ (**बृहती**) बढ़ते हुए (**मही**) बड़े (**ज्येष्ठे**) अत्यन्त प्रशंसा करने योग्य (**रुचा**) रुचिकर (**द्यावापृथिवी**) सूर्य्य और भूमि (**भवताम्**) होते हैं, उनको यथावत् विशेष करके जानता है, वही सब का कल्याण करने वाला होता है॥१॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य पृथिवी से लेके सूर्य्यपर्य्यन्त पदार्थों को जानते हैं, वे धनवान् होकर सब को सुखी करें॥१॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥



www.9009.co.in

दे॒वी दे॒वेभि॑र्यज॒ते यज॑त्रै॒रमि॑नती तस्थतु॒रु॒क्षमा॑णे।

ऋ॒तावरी॑ अ॒द्रुहा॑ दे॒वपु॑त्रे य॒ज्ञस्य॑ ने॒त्री शु॒चय॑द्भि॒रर्कैः॥२॥

दे॒वी इति॑। दे॒वेभिः॑। य॒ज॒ते इति॑। यज॑त्रैः। अमि॑नती॒ इति॑। त॒स्थ॒तुः॒। उ॒क्षमा॑णे॒ इति॑। ऋ॒तव॑री॒ इत्यृ॒तऽव॑री। अ॒द्रुहा॑। दे॒वपु॑त्रे इति॑ दे॒वऽपु॑त्रे। य॒ज्ञस्य॑। ने॒त्री इति॑। शु॒चय॑त्ऽभिः। अ॒र्कैः॥२॥

**पदार्थः**-(**देवी**) देदीप्यमाने (**देवेभिः**) दिव्यैर्गुणैर्विद्वद्भिर्वा (**यजते**) सङ्गन्तव्ये (**यजत्रैः**) सङ्गन्तव्यैः (**अमिनती**) अहिंसके (**तस्थतुः**) तिष्ठतः (**उक्षमाणे**) सर्वान् प्राणिनः सुखैः सिञ्चमाने (**ऋतावरी**) बह्वृतं सत्यं विद्यते ययोस्ते (**अद्रुहा**) अद्रोग्धव्ये (**देवपुत्रे**) देवा विद्वांसः पुत्रा ययोस्ते (**यज्ञस्य**) संसारव्यवहारस्य (**नेत्री**) नयनकर्त्र्यौ (**शुचयद्भिः**) शुचिमाचक्षाणैः (**अर्कैः**) सत्कर्त्तव्यैः॥२॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! अर्कैः शुचयद्भिर्यजत्रैर्देवेभिर्विद्वद्भिर्ये देवी अमिनती ऋतावरी अद्रुहा देवपुत्रे यज्ञस्य नेत्री उक्षमाणे यजते द्यावापृथिवी तस्थतुर्विज्ञायैते यो यजते स एव भाग्यशाली जायते॥२॥

**भावार्थः**-ये मनुष्या पृथिवीमारभ्य प्रकृतिपर्यन्तान् पदार्थान् यथावद् विज्ञाय कार्यसिद्धये सम्प्रयुञ्जते ते सदैव भाग्यशालिनो भवन्ति॥२॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! (**अर्कैः**) सत्कार करने योग्य (**शुचयद्भिः**) पवित्रता को कहते हुए (**यजत्रैः**) मिलने योग्य (**देवेभिः**) श्रेष्ठ गुणों वा विद्वानों से जो (**देवी**) प्रकाशमान (**अमिनती**) नहीं हिंसा करने वाले (**ऋतावरी**) बहुत सत्य से युक्त (**अद्रुहा**) नहीं द्रोह करने योग्य (**देवपुत्रे**) विद्वान् जन पुत्र जिनके वे (**यज्ञस्य**) संसार के व्यवहार के (**नेत्री**) चलाने वाले (**उक्षमाणे**) सब प्राणियों को सुखों से सींचते हुए (**यजते**) मिलने योग्य सूर्य्य और भूमि (**तस्थतुः**) स्थित होते हैं, उनको जान के जो व्यवहारों में संयुक्त करता है, वही भाग्यशाली होता है॥२॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य पृथिवी से लेके प्रकृति अर्थात् प्रधानपर्य्यन्त पदार्थों को उनके गुण, कर्म्म, स्वभाव से यथावत् जान के कार्य्य की सिद्धि के लिये सम्प्रयोग करते हैं, वे सदा ही भाग्यशाली होते हैं॥२॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

स इत्स्वपा॒ भुव॑नेष्वास॒ य इ॒मे द्यावा॑पृथि॒वी ज॒जान॑।

उ॒र्वी ग॑भी॒रे रज॑सी सु॒मेके॑ अव॒ंशे धीर॑ः शच्या॒ समै॑रत्॥३॥

सः। इत्। सु॒ऽअपाः॑। भुव॑नेषु। आ॒स॒। यः। इ॒मे इति॑। द्यावा॑पृथि॒वी इति॑। ज॒जान॑। उ॒र्वी। ग॒भी॒रे इति॑। रज॑सी॒। सु॒मेके॒ इति॑ सु॒ऽमेके॑। अ॒व॒ंशे। धीरः॑। शच्या॑। सम्। ऐ॒र॒त्॥३॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**सः**) (**इत्**) एव (**स्वपाः**) शोभानान्यपांसि कर्माणि यस्य सः (**भुवनेषु**) लोकेषु (**आस**) आस्ते (**यः**) (**इमे**) (**द्यावापृथिवी**) सूर्य्यभूमी (**जजान**) उत्पादितवान् (**उर्वी**) बहुपदार्थयुक्ते (**गभीरे**) गाम्भीर्य्यादिगुणसहिते (**रजसी**) रजोभिर्निर्मिते (**सुमेके**) एकीभूते सम्बद्धे (**अवंशे**) अविद्यमानो वंशो ययोस्ते अन्तरिक्षस्थे (**धीरः**) (**शच्या**) प्रज्ञया (**सम्**) (**ऐरत्**) कम्पयति यथाक्रमं चालयति॥३॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! युष्माभिर्यः स्वपा धीरो जगदीश्वरो भुवनेष्वासेमे उर्वी गभीरे रजसी सुमेके अवंशे द्यावापृथिवी जजान शच्या समैरत्स इदेव सदोपासनीयोऽस्ति॥३॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! येन जगदीश्वरेणऽसङ्ख्या भूमयश्चाकाशे निर्मिता व्यवस्थया चाल्यन्ते स एव सदैव भजनीयः॥३॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! आप लोगों को (**यः**) जो (**स्वपाः**) श्रेष्ठ कर्म्मों से युक्त (**धीरः**) धीर जगदीश्वर (**भुवनेषु**) लोकों में (**आस**) विद्यमान है (**इमे**) इन (**उर्वी**) बहुत पदार्थों से युक्त (**गभीरे**) गाम्भीर्य्य आदि गुणसहित (**रजसी**) रजोवृन्दों से बनाये गये (**सुमेके**) एक हुए अर्थात् परस्पर सम्बन्धयुक्त (**अवंशे**) वंश अर्थात् उत्पत्तिक्रम से आगे को रहित और अन्तरिक्ष में स्थित (**द्यावापृथिवी**) सूर्य्य और भूमि को (**जजान**) उत्पन्न किया (**शच्या**) बुद्धि से (**सम्, ऐरत्**) कम्पाता अर्थात् क्रम से अनुकूल चलाता है (**सः, इत्**) वही सदा उपासना करने योग्य है॥३॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जिस जगदीश्वर ने असङ्ख्य भूमि आदि लोक आकाश में रचे और व्यवस्था से चलाये हैं, वह सदा ही उपासना करने योग्य है॥३॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**नू रोदसी बृहद्भिर्नो वरूथैः पत्नीवद्भिरिषयन्ती सजोषाः।**

**उरूची विश्वे यजते नि पातं धिया स्याम रथ्यः सदासाः॥४॥**

**नु। रोदसी इति। बृहत्ऽभिः। नः। वरूथैः। पत्नीवत्ऽभिः। इषयन्ती इति। सऽजोषाः। उरूची इति। विश्वे इति। यजते इति। नि। पातम्। धिया। स्याम। रथ्यः। सदाऽसाः॥४॥**

**पदार्थः**-(**नू**) सद्यः। अत्र **ऋचि तुनुघे**ति दीर्घः। (**रोदसी**) द्यावापृथिव्यौ (**बृहद्भिः**) महद्भिः (**नः**) अस्मान् (**वरूथैः**) उत्तमैर्गृहैः (**पत्नीवद्भिः**) बह्व्यः पत्न्यो विद्यन्ते येषु तैः (**इषयन्ती**) सुखं प्रापयन्त्यौ (**सजोषाः**) समानप्रीतिसेवी (**उरूची**) य उरून् बहूनञ्चतस्ते (**विश्वे**) अन्तरिक्षे प्रविष्टे (**यजते**) सङ्गन्तव्ये (**नि**) नितराम् (**पातम्**) रक्षतः। अत्र पुरुषव्यत्ययः। (**धिया**) प्रज्ञया कर्मणा वा (**स्याम**) भवेम (**रथ्यः**) बहुरथादियुक्ताः (**सदासाः**) ससेवकाः॥४॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथा सजोषा विद्वान् धिया ये इषयन्ती उरूची विश्वे यजते बृहद्भिः पत्नीवद्भिर्वरूथैस्सह वर्त्तमाने रोदसी नोऽस्मान् नि पातं ते जानाति तथैते विदित्वा वयं रथ्यः सदासा नू स्याम॥४॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। ये मनुष्या बहुभिर्बृहद्भिः पदार्थैर्युक्ते विद्युद्भूमी विजानन्ति ते सद्यः श्रीमन्तो जायन्ते॥४॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे **(सजोषाः)** तुल्य प्रीति का सेवन करने वाला विद्वान् **(धिया)** बुद्धि वा कर्म्म से जो **(इषयन्ती)** सुख को प्राप्त कराती हुईं **(उरूची)** बहुतों का आदर करने वाली **(विश्वे)** अन्तरिक्ष में प्रविष्ट **(यजते)** मिलने योग्य और **(बृहद्भिः)** जो बड़े **(पत्नीवद्भिः)** बहुत स्त्रियों से युक्त **(वरूथैः)** उत्तम गृह उनके साथ वर्त्तमान **(रोदसी)** सूर्य्य और पृथिवी **(नः)** हम लोगों की **(नि)** अत्यन्त **(पातम्)** रक्षा करती हैं उनको जानता है, वैसे इनको जान के हम लोग **(रथ्यः)** बहुत रथ आदि से युक्त **(सदासाः)** सेवकों के सहित **(नू)** शीघ्र **(स्याम)** होवें॥४॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो मनुष्य बहुत और बड़े पदार्थों से युक्त बिजुली और भूमि को विशेष करके जानते हैं, वे शीघ्र लक्ष्मीवान् होते हैं॥४॥

**अथ शिल्पविद्याशिक्षामाह॥**

अब शिल्पविद्या की शिक्षा को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**प्र वां महि द्यवी अभ्युपस्तुतिं भरामहे। शुची उप प्रशस्तये॥५॥**

**प्र। वाम्। महि। द्यवी इति। अभि। उपऽस्तुतिम्। भरामहे। शुची इति। उप। प्रऽशस्तये॥५॥**

**पदार्थः**-**(प्र)** **(वाम्)** युवयोरध्यापकक्रियाकर्त्रोः **(महि)** महागुणे **(द्यवी)** द्योतमाने **(अभि)** **(उपस्तुतिम्)** उपमितां प्रशंसाम् **(भरामहे)** धरामहे **(शुची)** पवित्रे **(उप)** **(प्रशस्तये)**॥५॥

**अन्वयः**-हे शिल्पविद्याप्रवीणौ! यतो वयं प्रशस्तये शुची महि द्यवी अभ्युप प्रभरामहे तस्माद् वामुपस्तुतिं कुर्महे॥५॥

**भावार्थः**-येषां सकाशाच्छिल्पादिविद्या गृह्यन्ते तेषां मान्यं मनुष्याः सदा कुर्वन्तु॥५॥

**पदार्थः**-हे शिल्पविद्या में प्रवीणो! जिससे हम लोग **(प्रशस्तये)** प्रशंसित **(शुची)** पवित्र **(महि)** महागुणयुक्त **(द्यवी)** प्रकाशमान को **(अभि, उप, प्र, भरामहे)** सब ओर से अच्छे प्रकार धारण करते हैं इससे **(वाम्)** आप दोनों अध्यापक और क्रिया करने वालों की **(उपस्तुतिम्)** उपमायुक्त प्रशंसा करते हैं॥५॥

**भावार्थः**-जिनके समीप से शिल्प आदि विद्या ग्रहण की जाती हैं, उनका आदर मनुष्य सदा करें॥५॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**पुनाने तन्वा मिथः स्वेन दक्षेण राजथः। ऊह्याथे सनादृतम्॥६॥**

**पुनाने इति। तन्वा। मिथः। स्वेन। दक्षेण। राजथः। ऊह्याथे इति। सनात्। ऋतम्॥६॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**पुनाने**) पवित्रकारिके (**तन्वा**) शरीरेण (**मिथः**) परस्परम् (**स्वेन**) स्वकीयेन (**दक्षेण**) बलयुक्तेन (**राजथः**) (**ऊह्याथे**) वितर्कयथः (**सनात्**) सनातनात् (**ऋतम्**) सत्यम्॥६॥

**अन्वयः**-यौ शिल्पविद्यापकाऽध्येतारौ स्वेन दक्षेण तन्वा पुनाने विदित्वा मिथो राजथः सनाद् ऋतमूह्याथे तौ सत्कर्त्तव्यौ भवथः॥६॥

**भावार्थः**-ये शिल्पविद्यायां निपुणा जायन्ते तेषां सत्कारो यथायोग्यं राजादिभिः कर्त्तव्यः॥६॥

**पदार्थः**-जो शिल्पविद्या के पढ़ाने और पढ़ने वाले (**स्वेन**) अपने (**दक्षेण**) बलयुक्त (**तन्वा**) शरीर से (**पुनाने**) पवित्र करनेवाली सूर्य और पृथिवी को जान के (**मिथः**) परस्पर (**राजथः**) शोभित होते हैं और (**सनात्**) सनातन से (**ऋतम्**) सत्य का (**ऊह्याथे**) ऊहापोह करते हैं, वे सत्कार के योग्य होते हैं॥६॥

**भावार्थः**-जो शिल्पविद्या में निपुण होते हैं, उनका सत्कार यथायोग्य राजा आदि को करना चाहिये॥६॥

**पुनः शिल्पविद्याविषयमाह॥**

फिर शिल्पविद्या विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**म॒ही मि॒त्रस्य॑ साधथ॒स्तर॑न्ती॒ पिप्र॑ती ऋ॒तम्। परि॑ य॒ज्ञं नि षे॑दथुः॥७॥८॥**

**म॒ही इति॑। मि॒त्रस्य॑। सा॒ध॒थ॒ः। तर॑न्ती॒ इति॑। पिप्र॑ती॒ इति॑। ऋ॒तम्। परि॑। य॒ज्ञम्। नि। से॒द॒थुः॥७॥**

**पदार्थः**-(**मही**) महत्यौ (**मित्रस्य**) सर्वस्य सुहृदः (**साधथः**) साध्नुतः। अत्र व्यत्ययः। (**तरन्ती**) दुःखं प्लावयन्त्यौ (**पिप्रती**) सर्वानन्दं प्रपूरयन्त्यौ (**ऋतम्**) सत्यं कारणम् (**परि**) सर्वतः (**यज्ञम्**) सङ्गन्तव्यम् (**नि**) (**सेदथुः**) निषीदतः॥७॥

**अन्वयः**-हे विद्वांसो! ये तरन्ती पिप्रती मही ऋतं यज्ञं परि नि षेदथुर्मित्रस्य कार्याणि साधथस्ते यथावद्विज्ञाय सम्प्रयुग्ध्वम्॥७॥

**भावार्थः**-मनुष्यैः सर्वाधारे सर्वकार्यसाधिके द्यावापृथिवी विज्ञायाभीष्टानि कार्याणि साधनीयानीति॥७॥

अत्र द्यावापृथिव्योर्गुणशिल्पविद्याशिक्षावर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति षट्पञ्चाशत्तमं सूक्तमष्टमो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे विद्वानो जो (**तरन्ती**) दुःख से पार उतारती और (**पिप्रती**) सम्पूर्ण आनन्द को पूर्ण करती हुईं (**मही**) बड़े सूर्य और पृथिवी (**ऋतम्**) सत्यकारणरूप (**यज्ञम्**) संग करने अर्थात् आरम्भ करने योग्य यज्ञ को (**परि**) सब प्रकार से (**नि, सेदथुः**) सिद्धि करती और (**मित्रस्य**) सब के मित्र के कार्य्यों को (**साधथः**) सिद्ध करती उन सूर्य्य और भूमि को यथावत् जान के उनका संयोग करो अर्थात् काम [में] लाओ॥७॥



www.9009.co.in

**भावार्थ:**-मनुष्यों को चाहिये सब के आधारभूत सब कार्य्य सिद्ध करने वाली सूर्य और पृथिवी को जान के अभीष्ट कार्य्यों को सिद्ध करें॥७॥

इस सूक्त में सूर्य्य और पृथिवी के गुण और शिल्पविद्या शिक्षा वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥७॥

**यह छप्पनवाँ सूक्त और आठवाँ वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

**अथाष्टर्चस्य सप्तपञ्चाशत्तमस्य सूक्तस्य वामदेव ऋषिः। १-३ क्षेत्रपतिः। ४ शुनः। ५, ८ शुनासीरौ। ६, ७ सीता देवता। १, ४, ६, ७ अनुष्टुप् छन्दः। गान्धारः स्वरः। २, ३, ८ त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः। ५ पुर उष्णिक् छन्दः। ऋषभः स्वरः॥**

**अथ कृषिकर्माह॥**

अब आठ ऋचा वाले सत्तावनवें सूक्त का आरम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में कृषिकर्म को कहते हैं॥

**क्षेत्र॑स्य॒ पति॑ना व॒यं हि॒तेने॑व जयामसि।**

**गामश्वं॑ पोषयि॒त्न्वा स नो॑ मृळाती॒दृशे॑॥ १॥**

**क्षेत्र॑स्य। पति॑ना। व॒यम्। हि॒तेन॑ऽइव। ज॒या॒म॒सि॒। गाम्। अश्व॑म्। पो॒ष॒यि॒त्नु। आ। सः। न॒ः। मृ॒ळा॒ति॒। ई॒दृशे॑॥ १॥**

**पदार्थः-(क्षेत्रस्य)** शस्यस्योपत्त्यधिकरणस्य **(पतिना)** स्वामिना। अत्र **षष्ठीयुक्तश्छन्दसि वे**ति पतिशब्दस्य घिसंज्ञा। **(वयम्)** **(हितेनेव)** हितसाधकेन सैन्येनेव **(जयामसि)** जयामः **(गाम्)** पृथिवीम् **(अश्वम्)** तुरङ्गम् **(पोषयित्नु)** पुष्टिकरम् **(आ)** **(सः)** **(नः)** अस्मान् **(मृळाति)** **(ईदृशे)**॥ १॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! येन क्षेत्रस्य पतिना सहिता वयं हितेनेव गामश्वं पोषयित्नु द्रव्यं जयामसि स क्षेत्रपतिरीदृशे न आ मृळाति सुखयेत्॥ १॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। यथा सुशिक्षितेनानुरक्तेन सैन्येन वीरा विजयं प्राप्नुवन्ति तथैव कृषिकर्मसु कुशला ऐश्वर्यं लभन्ते॥ १॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जिस **(क्षेत्रस्य)** अन्न की उत्पत्ति के आधारस्थान अर्थात् खेत के **(पतिना)** स्वामी से **(वयम्)** हम लोग **(हितेनेव)** हित की सिद्धि करने वाली सेना के सदृश **(गाम्)** पृथिवी **(अश्वम्)** घोड़ा **(पोषयित्नु)** और पुष्टि करने वाले द्रव्य को **(जयामसि)** जीतते हैं **(सः)** वह क्षेत्र का स्वामी **(ईदृशे)** ऐसे में **(नः)** हम लोगों को **(आ, मृळाति)** सुख देवें॥ १॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। उस उत्तम प्रकार शिक्षित और अनुरक्त सेना से वीरजन विजय को प्राप्त होते हैं, वैसे ही कृषि अर्थात् खेतीकर्म्म में चतुर जन ऐश्वर्य्य को प्राप्त होते हैं॥ १॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**क्षेत्र॑स्य पते॒ मधु॑मन्तमू॒र्मिं धे॒नुरि॑व॒ पयो॑ अ॒स्मासु॑ धुक्ष्व।**

**म॒धु॒श्चुतं॑ घृ॒तमि॑व॒ सुपू॑तमृ॒तस्य॑ न॒ः पत॑यो मृळयन्तु॥ २॥**



www.9009.co.in

**क्षेत्रस्य। पते। मधुऽमन्तम्। ऊर्मिम्। धेनुःऽइव। पयः। अस्मासु। धुक्ष्व। मधुऽश्चुतम्। घृतम्ऽइव। सुऽपूतम्। ऋतस्य। नः। पतयः। मृळयन्तु॥२॥**

**पदार्थः-(क्षेत्रस्य) (पते)** स्वामिन् **(मधुमन्तम्)** मधुरादिगुणयुक्तम् **(ऊर्मिम्)** जलधाराम् **(धेनुरिव) (पयः)** दुग्धम् **(अस्मासु) (धुक्ष्व)** पूर्णे कुरु **(मधुश्चुतम्)** मधुरादिगुणयुक्तम् **(घृतमिव) (सुपूतम्)** सुष्ठु पवित्रम् **(ऋतस्य) (नः)** अस्मान् **(पतयः)** स्वामिनः **(मृळयन्तु)**॥२॥

**अन्वयः**-हे क्षेत्रस्य पते! यथर्तस्य पतयो घृतमिव मधुश्चुतं सुपूतं विज्ञानं प्राप्य नो मृळयन्तु तथा धेनुरिव मधुमन्तमूर्मिं पयोऽस्मासु धुक्ष्व॥२॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यथा धीमन्तः कृषीवलाः सुन्दराणि शुद्धान्यन्नान्युत्पाद्य सर्वानानन्दयन्ति तथैव कृषीवलान् संरक्ष्य सदैवोत्साहयेत्॥२॥

**पदार्थः**-हे **(क्षेत्रस्य)** अन्न के उत्पन्न होने की आधारभूमि के **(पते)** स्वामी जैसे **(ऋतस्य)** सत्य के **(पतयः)** स्वामी **(घृतमिव)** घृत के सदृश **(मधुश्चुतम्)** मधुर आदि गुणों से युक्त **(सुपूतम्)** उत्तम प्रकार पवित्र विज्ञान को प्राप्त होकर **(नः)** हम लोगों को **(मृळयन्तु)** सुख दीजिये तथा **(धेनुरिव)** गौ के सदृश **(मधुमन्तम्)** मधुर आदि गुणों से युक्त **(ऊर्मिम्)** जलधारा और **(पयः)** दुग्ध को **(अस्मासु)** हम लोगों में **(धुक्ष्व)** पूर्ण करो॥२॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे बुद्धिमान् खेती करने वाले जन सुन्दर शुद्ध अन्नों को उत्पन्न करके सब को आनन्द देते हैं, वैसे ही खेती करने वाले जनों की उत्तम प्रकार रक्षा करके सदा उत्साह युक्त करे॥२॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**मधुमतीरोषधीर्द्याव आपो मधुमन्नो भवत्वन्तरिक्षम्।**
**क्षेत्रस्य पतिर्मधुमान्नो अस्त्वरिष्यन्तो अन्वेनं चरेम॥३॥**

**मधुऽमतीः। ओषधीः। द्यावः। आपः। मधुऽमत्। नः। भवतु। अन्तरिक्षम्। क्षेत्रस्य। पतिः। मधुऽमान्। नः। अस्तु। अरिष्यन्तः। अनु। एनम्। चरेम॥३॥**

**पदार्थः-(मधुमतीः)** मधुरादिगुणयुक्ताः **(ओषधीः)** यवाद्या ओषधयः **(द्यावः)** सूर्य्यादिप्रकाशाः **(आपः)** जलानि **(मधुमत्)** मधुरादिगुणयुक्तम् **(नः)** अस्मभ्यम् **(भवतु) (अन्तरिक्षम्)** आकाशम् **(क्षेत्रस्य) (पतिः)** स्वामी **(मधुमान्) (नः)** अस्मभ्यम् **(अस्तु) (अरिष्यन्तः)** अन्यैरहिंसिष्यन्तः **(अनु) (एनम्) (चरेम)**॥३॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! न ओषधीर्द्याव आपश्च मधुमतीः सन्तु अन्तरिक्षं मधुमद्भवतु क्षेत्रस्य पतिर्नो मधुमानस्त्वरिष्यन्तो वयमेनमनु चरेम॥३॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-सर्वैर्मनुष्यैर्यथा स्वार्थमुत्तमाः पदार्था इष्यन्ते तथैवाऽन्यार्थमप्येष्टव्याः॥३॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(नः)** हम लोगों के लिये **(ओषधीः)** यव आदि ओषधियाँ **(द्यावः)** सूर्य्य आदि प्रकाश और **(आपः)** जल **(मधुमतीः)** मधुर आदि गुणों से युक्त हों **(अन्तरिक्षम्)** आकाश **(मधुमत्)** मधुर आदि गुणों से युक्त **(भवतु)** हो **(क्षेत्रस्य)** अन्न के उत्पन्न होने की भूमि का **(पतिः)** स्वामी **(नः)** हम लोगों के लिये **(मधुमान्)** मधुर गुण वाला **(अस्तु)** हो और **(अरिष्यन्तः)** अन्यों के साथ नहीं हिंसा करने वाले हम लोग **(एनम्)** इसको **(अनु, चरेम)** अनुकूल वर्त्तें॥३॥

**भावार्थः**-सब मनुष्यों को चाहिये कि वे जैसे अपने लिये उत्तम पदार्थ चाहते हैं, वैसे ही अन्य जनों के लिये भी इच्छा करें॥३॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**शुनं वाहाः शुनं नरः शुनं कृषतु लाङ्गलम्।**

**शुनं वरत्रा बध्यन्तां शुनमष्ट्रामुदिङ्गय॥४॥**

**शुनम्। वाहाः। शुनम्। नरः। शुनम्। कृषतु। लाङ्गलम्। शुनम्। वरत्राः। बध्यन्ताम्। शुनम्। अष्ट्राम्। उत्। इङ्गय॥४॥**

**पदार्थः**-**(शुनम्)** सुखम् **(वाहाः)** वृषभादयः **(शुनम्)** **(नरः)** नेतारः कृषीवलाः **(शुनम्)** **(कृषतु)** **(लाङ्गलम्)** हलावयवः **(शुनम्)** **(वरत्राः)** रश्मयः **(बध्यन्ताम्)** **(शुनम्)** **(अष्ट्राम्)** कृषिसाधनावयवम् **(उत्)** **(इङ्गय)** गमय॥४॥

**अन्वयः**-हे कृषीवल! यथा वाहाः शुनं गच्छन्तु नरः शुनं कुर्वन्तु लाङ्गलं शुनं कृषतु वरत्राः शुनं बध्यन्तां तथाऽष्ट्रां शुनमुदिङ्गय॥४॥

**भावार्थः**-कृषीवला उत्तमानि हलादिसामग्रीवृषभबीजानि सम्पाद्य क्षेत्राणि सुष्ठु निष्पाद्य तत्रोत्तमान्यन्नानि निष्पादयन्तु॥४॥

**पदार्थः**-हे खेती करने वाले जन! जैसे **(वाहाः)** बैल आदि पशु **(शुनम्)** सुख को प्राप्त हों **(नरः)** मुखिया कृषीवल **(शुनम्)** सुख को करें **(लाङ्गलम्)** हल का अवयव **(शुनम्)** सुख जैसे हो, वैसे **(कृषतु)** पृथिवी में प्रविष्ट हो और **(वरत्राः)** बैल की रस्सी **(शुनम्)** सुखपूर्वक **(बध्यन्ताम्)** बांधी जायें, वैसे **(अष्ट्राम्)** खेती के साधन के अवयव को **(शुनम्)** सुखपूर्वक **(उत्, इङ्गय)** ऊपर चलाओ॥४॥

**भावार्थः**-खेती करने वाले जन उत्तम हल आदि सामग्री, वृषभ और बीजों को इकट्ठे करके खेतों को उत्तम प्रकार जोत कर उनमें उत्तम अन्नों को उत्पन्न करें॥४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥



www.9009.co.in

**शुनासीराविमां वाचं जुषेथां यद्दिवि चक्रथुः पयः। तेनेमामुप सिञ्चतम्॥५॥**

**शुनासीरौ। इमाम्। वाचम्। जुषेथाम्। यत्। दिवि। चक्रथुः। पयः। तेन। इमाम्। उप। सिञ्चतम्॥५॥**

**पदार्थः**-(**शुनासीरौ**) क्षेत्रपतिभृत्यौ (**इमाम्**) कृषिविद्याप्रकाशिकां (**वाचम्**) वाणीम् (**जुषेथाम्**) सेवेथाम् (**यत्**) यम् (**दिवि**) कृषिविद्याप्रकाशे (**चक्रथुः**) (**पयः**) उदकम् (**तेन**) (**इमाम्**) भूमिम् (**उप**) (**सिञ्चतम्**)॥५॥

**अन्वयः**-हे शुनासीरौ! युवां यद्यामिमां वाचं पयश्च दिवि चक्रथुस्ते जुषेथां तेनेमामुप सिञ्चतम्॥५॥

**भावार्थः**-कृषीवलाः पूर्वं कृषिविद्यां गृहीत्वा पुनर्यथायोग्यां कृषिं कृत्वा धनधान्ययुक्ताः सदा भवन्तु॥५॥

**पदार्थः**-हे (**शुनासीरौ**) क्षेत्र के स्वामी और भृत्य! आप दोनों (**यत्**) जिस (**इमाम्**) इस कृषिविद्या की प्रकाश करने वाली (**वाचम्**) वाणी और (**पयः**) जल को (**दिवि**) कृषिविद्या के प्रकाश में (**चक्रथुः**) करते हैं उनकी (**जुषेथाम्**) सेवा करो (**तेन**) इससे (**इमाम्**) इस भूमि को (**उप, सिञ्चतम्**) सींचो॥५॥

**भावार्थः**-खेती करने वाले जन प्रथम खेती के करने की विद्या को ग्रहण करके पश्चात् यथायोग्य खेती कर धन और धान्य से युक्त सदा हों॥५॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अर्वाची सुभगे भव सीते वन्दामहे त्वा।**

**यथा नः सुभगाससि यथा नः सुफलाससि॥६॥**

**अर्वाची। सुऽभगे। भव। सीते। वन्दामहे। त्वा। यथा। नः। सुऽभगा। अससि। यथा। नः। सुऽफला। अससि॥६॥**

**पदार्थः**-(**अर्वाची**) याऽर्वागधोऽञ्चति (**सुभगे**) सुष्ठ्वैश्वर्य्यवर्द्धिके (**भव**) (**सीते**) हलादिकर्षणावयवायोनिर्मिता (**वन्दामहे**) कामयामहे (**त्वा**) त्वाम् (**यथा**) (**नः**) अस्माकम् (**सुभगा**) सौभाग्ययुक्ता (**अससि**) असि। अत्र **बहुलं छन्दसी**ति शपो लुगभावः। (**यथा**) (**नः**) अस्माकम् (**सुफला**) शोभनानि फलानि यस्यां सा (**अससि**)॥६॥

**अन्वयः**-हे सुभगे! यथाऽर्वाची सीते सीतास्ति तथा त्वं भव यथा भूमिः सुभगास्ति तथा त्वं नोऽससि यथा भूमिः सुफलास्ति तथा त्वं नोऽससि, अतो वयं त्वा वन्दामहे॥६॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-अत्रोपमावाचकलुप्तोपमालङ्कारौ। हे मनुष्या! यथा सुष्ठु सम्पादिता क्षेत्रभूमिरुत्तमानि शस्यानि जनयति तथैव ब्रह्मचर्य्येण प्राप्तविद्यः सुसन्तानान् सूते यथा भूमिराज्यमैश्वर्य्यकरं वर्त्तते तथा परस्परं प्रीतौ स्त्रीपुरुषौ महैश्वर्य्यौ भवतः॥६॥

**पदार्थः**-हे **(सुभगे)** उत्तम प्रकार ऐश्वर्य्य की बढ़ाने वाली **(यथा)** जैसे **(अर्वाची)** नीचे को चलने वाली **(सीते)** हल आदि के खींचने वाले अवयव लोहे से बनाई गयी सीता है, वैसे आप **(भव)** हूजिये और जैसे भूमि **(सुभगा)** सौभाग्य से युक्त है वैसे तू **(नः)** हम लोगों की **(असंसि)** है और **(यथा)** जैसे भूमि **(सुफला)** उत्तम फलों से युक्त है, वैसे तू **(नः)** हम लोगों की **(असंसि)** है, इससे हम लोग **(त्वा)** तेरी **(वन्दामहे)** कामना करते हैं॥६॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमा और वाचकलुप्तोपमालङ्कार हैं। हे मनुष्यो! जैसे उत्तम प्रकार सम्पादित खेत की धरती उत्तम अन्नों को उत्पन्न करती है, वैसे ही ब्रह्मचर्य्य से विद्या को प्राप्त हुआ जन उत्तम सन्तानों को उत्पन्न करता है और जैसे भूमि का राज्य ऐश्वर्य्यकारक है, वैसे परस्पर प्रसन्न स्त्री और पुरुष बड़े ऐश्वर्य्यवाले होते हैं॥६॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**इन्द्रः सीतां नि गृह्णातु तां पूषानु यच्छतु।**

**सा नः पयस्वती दुहामुत्तरामुत्तरां समाम्॥७॥**

**इन्द्रः। सीताम्। नि। गृह्णातु। ताम्। पूषा। अनु। यच्छतु। सा। नः। पयस्वती। दुहाम्। उत्तराम्ऽउत्तराम्। समाम्॥७॥**

**पदार्थः**-**(इन्द्रः)** भूमेर्दारयिता **(सीताम्)** भूमिकर्षिकाम् **(नि)** **(गृह्णातु)** **(ताम्)** **(पूषा)** पुष्टिकर्त्ता **(अनु)** **(यच्छतु)** अनुगृह्णातु **(सा)** **(नः)** अस्मभ्यम् **(पयस्वती)** बहूदकयुक्ता **(दुहाम्)** प्रापूरिकाम् **(उत्तरामुत्तराम्)** पुनः पुनर्निर्मिताम् **(समाम्)** शुद्धाम्॥७॥

**अन्वयः**-हे कृषीवला! या पयस्वती नोऽनु यच्छतु सा युष्मानपि प्राप्नोतु यां सीतामिन्द्रो नि गृह्णातु तां दुहामुत्तरामुत्तरां समां सीतां पूषानु यच्छतु तां यूयमपि सम्प्रयुङ्ध्वम्॥७॥

**भावार्थः**-सर्वे कृषीवला विदुषां कर्षकानामनुकरणं कृत्वा कृष्युन्नतिं निष्पादयेयुः॥७॥

**पदार्थः**-हे खेती करने वाले जनो! जो **(पयस्वती)** बहुत जल से युक्त **(नः)** हम लोगों के लिये **(अनु, यच्छतु)** अनुग्रह करे **(सा)** वह आप लोगों को भी प्राप्त हो और जिस **(सीताम्)** भूमि जुताने वाले वस्तु को **(इन्द्रः)** भूमि को दारण करानेवाला **(नि, गृह्णातु)** ग्रहण करे **(ताम्)** उस **(दुहाम्)** प्रपूरण



www.9009.co.in

करने वाली **(उत्तरामुत्तराम्)** फिर-फिर बनाई गई **(समाम्)** शुद्ध सीता अर्थात् भूमि जुताने वाले वस्तु को **(पूषा)** पुष्टि करनेवाला देवे, उसका आप लोग भी संयोग करें॥७॥

**भावार्थ:**-सब कृषिकर्म करने वाले जन विद्वान् क्षेत्र जोतने वालों का अनुकरण करके कृषि की वृद्धि को उत्पन्न करें॥७॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**शुनं नः फाला वि कृषन्तु भूमिं शुनं कीनाशा अभि यन्तु वाहैः।**
**शुनं पर्जन्यो मधुना पयोभिः शुनासीरा शुनमस्मासु धत्तम्॥८॥९॥**

**शुनम्। नः। फालाः। वि। कृषन्तु। भूमिम्। शुनम्। कीनाशाः। अभि। यन्तु। वाहैः। शुनम्। पर्जन्यः। मधुना। पयःऽभिः। शुनासीरा। शुनम्। अस्मासु। धत्तम्॥८॥**

**पदार्थ:-(शुनम्)** सुखम् **(नः)** अस्मभ्यम् **(फालाः)** अयोनिर्मिता भूमिविलेखनार्थाः **(वि) (कृषन्तु) (भूमिम्) (शुनम्)** सुखम् **(कीनाशाः)** कृषीवलाः **(अभि) (यन्तु) (वाहैः)** वृषभादिभिः **(शुनम्) (पर्जन्यः)** मेघः **(मधुना)** मधुरादिगुणेन **(पयोभिः)** उदकैः **(शुनासीरा)** सुखदस्वामिभृत्यौ कृषीवलौ **(शुनम्) (अस्मासु) (धत्तम्)** धरतम्॥८॥

**अन्वयः**-यथा फाला वाहैर्नो भूमिं शुनं वि कृषन्तु कीनाशाः शुनमभि यन्तु पर्जन्यो मधुना पयोभिः शुनमभिवर्षतु तथा शुनासीरास्मासु शुनं धत्तम्॥८॥

**भावार्थ:**-कृषीवला मनुष्या अत्युत्तमानि फालादीनि निर्माय हलादिना भूमिमुत्तमां निष्कृष्योत्तमं सुखं प्राप्नुवन्तु तथैवान्येभ्यो राजादिभ्यः सुखं प्रयच्छन्त्विति॥८॥

अत्र कृषिक्रियावर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति सप्तपञ्चाशत्ततमं सूक्तं नवमो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थ:**-जैसे **(फालाः)** लोहे से बनाई गई भूमि के खोदने के लिये वस्तुयें **(वाहैः)** बैल आदिकों के द्वारा **(नः)** हम लोगों के लिये **(भूमिम्)** भूमि को **(शुनम्)** सुखपूर्वक **(वि, कृषन्तु)** खोदें **(कीनाशाः)** कृषिकर्म्म करने वाले **(शुनम्)** सुख को **(अभि, यन्तु)** प्राप्त हों **(पर्जन्यः)** मेघ **(मधुना)** मधुर आदि गुण से **(पयोभिः)** और जलों से **(शुनम्)** सुख को वर्षावे, वैसे **(शुनासीरा)** अर्थात् सुख



www.9009.co.in

देने वाले स्वामी और भृत्य कृषिकर्म करनेवाले तुम दोनों **(अस्मासु)** हम लोगों में **(शुनम्)** सुख को **(धत्तम्)** धारण करो॥८॥

**भावार्थः**-कृषिकर्म्म करनेवाले मनुष्यों को चाहिये कि उत्तम फाल आदि वस्तुओं को बनाय के हल आदि से भूमि को उत्तम करके अर्थात् गोड़ के उत्तम सुख को प्राप्त हों, वैसे ही अन्य राजा आदि के लिये सुख देवें॥८॥

इस सूक्त में कृषिकर्म्म के वर्णन होने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ संगति जाननी चाहिये॥

**यह सत्तावनवां सूक्त और नवम वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

**अथैकादशर्चस्याष्टपञ्चाशत्तमस्य सूक्तस्य वामदेव ऋषिः। अग्निः सूर्यो वाऽपो वा गावो वा घृतं वा देवता:। १ निचृत्त्रिष्टुप्। २, ८-१० त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः। ३ भुरिक् पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः। ४ अनुष्टुप्। ६, ७ निचृदनुष्टुप् छन्दः। ११ स्वराट् त्रिष्टुप् छन्दः। गान्धारः स्वरः। ५ निचृदुष्णिक् छन्दः। ऋषभः स्वरः॥**

**अथोदकविषयमाह॥**

अब ग्यारह ऋचावाले अट्ठावनवें सूक्त का आरम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में उदकविषय को कहते हैं॥

**समुद्रादूर्मिर्मधुमाँ उदारदुपांशुना सममृतत्वमानट्।**
**घृतस्य नाम गुह्यं यदस्ति जिह्वा देवानाममृतस्य नाभिः॥ १॥**

**समुद्रात्। ऊर्मिः। मधुऽमान्। उत्। आरत्। उप। अंशुना। सम्। अमृतऽत्वम्। आनट्। घृतस्य। नाम। गुह्यम्। यत्। अस्ति। जिह्वा। देवानाम्। अमृतस्य। नाभिः॥ १॥**

**पदार्थः**-(**समुद्रात्**) अन्तरिक्षात् (**ऊर्मिः**) जलसमूहः (**मधुमान्**) मधुरगुणः (**उत्**) (**आरत्**) उत्कृष्टतया प्राप्नोति (**उप**) (**अंशुना**) सूर्य्येण (**सम्**) (**अमृतत्वम्**) (**आनट्**) व्याप्नोति (**घृतस्य**) उदकस्य (**नाम**) (**गुह्यम्**) गुप्तम् (**यत्**) (**अस्ति**) (**जिह्वा**) (**देवानाम्**) विदुषां दिव्यानां गुणानां वा (**अमृतस्य**) अमृतात्मकस्य कारणस्य (**नाभिः**) नाभिरिव॥ १॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! योंऽशुना समुद्रान्मधुमानूर्मिरुपोदारदमृतत्वं समानट् यद् घृतस्य गुह्यं नामास्ति तदमृतस्य नाभिर्देवानां जिह्वेवास्ति तद्विद्यां यूयं विजानीत॥ १॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! भूमेः सकाशात् सूर्यप्रतापेन वायुद्वारा यावदुदकमन्तरिक्षं गच्छति तत्रेश्वरसृष्टिक्रमेण मधुरादिगुणयुक्तं भूत्वा वर्षित्वाऽमृतात्मकं भवतीति विजानीत॥ १॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो (**अंशुना**) सूर्य से (**समुद्रात्**) अन्तरिक्ष से (**मधुमान्**) मधुरगुणयुक्त (**ऊर्मिः**) जल का समूह (**उप, उत्, आरत्**) उत्तमता से प्राप्त होता और (**अमृतत्वम्**) अमृतपन को (**सम्, आनट्**) व्याप्त होता है (**यत्**) जो (**घृतस्य**) जल की (**गुह्यम्**) गुप्त (**नाम**) संज्ञा (**अस्ति**) है, वह (**अमृतस्य**) अमृतात्मक कारण की (**नाभिः**) नाभि के सदृश और (**देवानाम्**) विद्वानों वा श्रेष्ठ गुणों की (**जिह्वा**) जिह्वा के सदृश है, उस विद्या को आप लोग जानो॥ १॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! भूमि के समीप से सूर्य्य के प्रताप से वायु के द्वारा जितना जल आकाश में जाता है, वहाँ ईश्वर की सृष्टि के क्रम से मधुर आदि गुणों से युक्त होके और वह वर्ष के अमृतस्वरूप होता है, यह जानो॥ १॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥



www.9009.co.in

**व॒यं नाम॒ प्र ब्र॑वामा घृ॒तस्या॒स्मिन् य॒ज्ञे धा॑रयामा॒ नमो॑भिः।**

**उप॑ ब्र॒ह्मा शृ॑णवच्छ॒स्यमा॑नं॒ चतुः॑शृङ्गोऽवमीद् गौ॒र ए॒तत्॥ २॥**

**व॒यम्। नाम॑। प्र। ब्र॒वा॒म॒। घृ॒तस्य॑। अ॒स्मिन्। य॒ज्ञे। धा॒र॒या॒म॒। नम॑ःऽभि। उप॑। ब्र॒ह्मा। शृ॒ण॒व॒त्। श॒स्यमा॑नम्। चतु॑ःऽशृङ्गः। अ॒व॒मी॒त्। गौ॒रः। ए॒तत्॥ २॥**

**पदार्थः**-(**वयम्**) (**नाम**) (**प्र**) (**ब्रवाम**) उपदिशेम। अत्र **संहितायामि**ति दीर्घः। (**घृतस्य**) उदकस्य (**अस्मिन्**) (**यज्ञे**) वर्षादिजलव्यवहारे (**धारयाम**) अत्र **संहितायामि**ति दीर्घः। (**नमोभिः**) अन्नादिभिः (**उप**) (**ब्रह्मा**) चतुर्वेदवित् (**शृणवत्**) शृणुयात् (**शस्यमानम्**) प्रशंसनीयम् (**चतुःशृङ्गः**) चत्वारो वेदाः शृङ्गाणीव यस्य (**अवमीत्**) उपदिशेत् (**गौरः**) यो गवि सुशिक्षितायां वाचि रमते सः (**एतत्**)॥ २॥

**अन्वयः**-चतुःशृङ्गो ब्रह्मा यं शस्यमानमुप शृणवद् गौरो यदवमीत्तदेतद् घृतस्य नाम वयं प्र ब्रवामास्मिन् यज्ञे नमोभिस्तं धारयाम॥ २॥

**भावार्थः**-हे मनुष्याश्चतुर्वेदविदाप्तो यादृशमुपदेशं कुर्य्याद् यं सिद्धान्तं निश्चिनुयात् तादृशमेव वयमप्युपदिशेम निश्चिनुयाम च॥ २॥

**पदार्थः**-(**चतुःशृङ्गः**) चारवेद शृङ्गों अर्थात् शिखरों के सदृश जिसके ऐसा (**ब्रह्मा**) चार वेदों का जानने वाला जिस (**शस्यमानम्**) प्रशंसा करने योग्य को (**उप, शृणवत्**) समीप में सुने और (**गौरः**) उत्तम प्रकार शिक्षित वाणी में रमने वाला जो (**अवमीत्**) उपदेश देवे सो (**एतत्**) इस (**घृतस्य**) जल की (**नाम**) संज्ञा को (**वयम्**) हम लोग (**प्र, ब्रवाम**) उपदेश देवें और (**अस्मिन्**) इस (**यज्ञे**) वर्षा आदि जलव्यवहार में (**नमोभिः**) अन्न आदि पदार्थों से उसको (**धारयाम**) धारण करावें॥ २॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! चारवेद का जानने वाला यथार्थवक्ता जन जैसा उपदेश करे और जिस सिद्धान्त का निश्चय करे, वैसे सिद्धान्त का हम लोग भी उपदेश और निश्चय करें॥ २॥

**अथेश्वरविज्ञानमाह॥**

अब अगले मन्त्र में ईश्वर के विज्ञान को कहते हैं॥

**च॒त्वारि॒ शृङ्गा॒ त्रयो॑ अस्य॒ पादा॒ द्वे शी॒र्षे स॒प्त हस्ता॑सो अस्य।**

**त्रि॒धा॑ ब॒द्धो वृ॑ष॒भो रो॑रवीति म॒हो दे॒वो मर्त्याँ॒ आ वि॑वेश॥ ३॥**

**च॒त्वारि॑। शृङ्गा॑। त्रयः॑। अ॒स्य॒। पादाः॑। द्वे इति॑। शी॒र्षे इति॑। स॒प्त। हस्ता॑सः। अ॒स्य॒। त्रि॒धा॑। ब॒द्धः। वृ॒ष॒भः। रो॒र॒वी॒ति॒। म॒हः। दे॒वः। मर्त्या॑न्। आ। वि॒वे॒श॥ ३॥**

**पदार्थः**-(**चत्वारि**) चत्वारो वेदाः (**शृङ्गा**) शृङ्गाणीव (**त्रयः**) कर्मोपासनाज्ञानानि (**अस्य**) धर्म्मव्यवहारस्य (**पादाः**) पत्तव्याः (**द्वे**) अभ्युदयनिःश्रेयसे (**शीर्षे**) शिरसी इव (**सप्त**) पञ्च ज्ञानेन्द्रियाणि



www.9009.co.in

वा कर्म्मेन्द्रियाण्यन्त:करणमात्मा च **(हस्तास:)** हस्तवद्वर्त्तमाना: **(अस्य)** धर्मयुक्तस्य नित्यनैमित्तिकस्य **(त्रिधा)** श्रद्धापुरुषार्थयोगाभ्यासै: **(बद्ध:)** **(वृषभ:)** सुखानां वर्षणात् **(रोरवीति)** भृशमुपदिशति **(मह:)** महान् पूजनीय: **(देव:)** स्वप्रकाश: सर्वसुखप्रदाता **(मर्त्यान्)** मरणधर्मान् मनुष्यादीन् **(आ)** समन्तात् **(विवेश)** व्याप्नोति॥३॥

**अन्वय:**-हे मनुष्या! यो महो देवो मर्त्याना विवेश यो वृषभस्त्रिधा बद्धो रोरवीति अस्य परमात्मनो बोधस्य द्वे शीर्षे त्रय: पादाश्चत्वारि शृङ्गा च युष्माभिर्वेदितव्यान्यस्य च सप्त हस्तासस्त्रिधा बद्धो व्यवहारश्च वेदितव्य:॥३॥

**भावार्थ:**-हे मनुष्या! अस्मिन् परमेश्वरव्याप्ते जगति यज्ञस्य चत्वारो वेदा नामाख्यातोपसर्गनिपाता विश्वतैजसप्राज्ञतुरीयधर्मार्थकाममोक्षाश्चेत्यादीनि शृङ्गाणि, त्रीणि सवनानि त्रय: काला: कर्म्मोपासनाज्ञानानि मनोवाक्छरीराणि चेत्यादीनि पादा:, द्वौ व्यवहारपरमार्थौ नित्यकार्यौ शब्दात्मानावुदगयनप्रायणीया अध्यापकोपदेशकौ चेत्यादीनि शिरांसि, गायत्र्यादीनि सप्त छन्दांसि सप्त विभक्तय: सप्त प्राणा: पञ्च कर्मेन्द्रियाणि शरीरमात्मा चेत्यादयो हस्तास्त्रिषु मन्त्रब्राह्मणकल्पेषूरसि कण्ठे शिरसि श्रवणमनननिदिध्यासनेषु ब्रह्मचर्य्यसुकर्मसुविचारेषु सिद्धोऽयं व्यवहारो महान् सत्कर्तव्यो मनुष्येषु प्रविष्टोऽस्तीति सर्वे विजानन्तु॥३॥

**पदार्थ:**-हे मनुष्यो! जो **(मह:)** बड़ा सेवा और आदर करने योग्य **(देव:)** स्वप्रकाशस्वरूप और सब को सुख देने वाला **(मर्त्यान्)** मरणधर्मवाले मनुष्य आदिकों को **(आ)** सब प्रकार से **(विवेश)** व्याप्त होता है **(वृषभ:)** और जो सुखों को वर्षाने वाला **(त्रिधा)** तीन श्रद्धा, पुरुषार्थ और योगाभ्यास से **(बद्ध:)** बँधा हुआ **(रोरवीति)** निरन्तर उपदेश देता है **(अस्य)** इस धर्म से युक्त नित्य और नैमित्तिक परमात्मा के बोध के **(द्वे)** दो उन्नति और मोक्षरूप **(शीर्षे)** शिरस्थानापन्न **(त्रय:)** तीन अर्थात् कर्म, उपासना और ज्ञानरूप **(पादा:)** चलने योग्य पैर **(चत्वारि)** और चार वेद **(शृङ्गा)** शृङ्गों के सदृश आप लोगों को जानने योग्य हैं और **(अस्य)** इस धर्म व्यवहार के **(सप्त)** पांच ज्ञानेन्द्रिय वा पांच कर्मेन्द्रिय अन्त:करण और आत्मा ये सात **(हस्तास:)** हाथों के सदृश वर्त्तमान हैं और उक्त तीन प्रकार से बँधा हुआ व्यवहार भी जानने योग्य है॥३॥

**भावार्थ:**-हे मनुष्यो! इस परमेश्वर से व्याप्त संसार में यज्ञ के चार वेद और नाम, आख्यात, उपसर्ग और निपात; विश्व, तैजस, प्राज्ञ, तुरीय और धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष आदि शृङ्ग हैं। तीन सवन अर्थात् त्रैकालिक यज्ञकर्म; तीन काल; कर्म, उपासना, ज्ञान; मन, वाणी, शरीर इत्यादि पाद हैं। दो व्यवहार और परमार्थ; नित्य, कार्य्य; शब्दस्वरूप उदगयन और प्रायणीय; अध्यापक और उपदेशक इत्यादि शिर हैं। गायत्री आदि सात छन्द सात विभक्तियाँ, सात प्राण, पांच कर्म्मेन्द्रिय शरीर और आत्मा इत्यादि [सात] हस्त हैं। तीन मन्त्र, ब्राह्मण, कल्प; और हृदय, कण्ठ, शिर में; श्रवण, मनन, निदिध्यासनों में; ब्रह्मचर्य्य, श्रेष्ठ कर्म, उत्तम विचारों के बीच सिद्ध यह व्यवहार महान् सत्कर्त्तव्य और मनुष्यों के बीच प्रविष्ट है, यह सब जानें॥३॥



www.9009.co.in

**अथ सूर्यदृष्टान्तेन विद्वद्विषयमाह॥**

अब सूर्यदृष्टान्त से विद्वद्विषय को कहते हैं॥

**त्रिधा॑ हि॒तं प॒णिभि॑र्गु॒ह्यमा॑नं॒ गवि॑ दे॒वासो॑ घृ॒तमन्व॑विन्दन्।**

**इन्द्र॒ एकं॒ सूर्य॒ एकं॑ जजान वे॒नादेकं॑ स्व॒धया॒ निष्ट॑तक्षुः॥४॥**

**त्रिधा॑। हि॒तम्। प॒णिऽभिः॑। गु॒ह्यमा॑नम्। गवि॑। दे॒वासः॑। घृ॒तम्। अनु॑। अ॒वि॒न्द॒न्। इन्द्रः॑। एक॑म्। सूर्यः॑। एक॑म्। ज॒जा॒न॒। वे॒नात्। एक॑म्। स्व॒धया॑। निः। त॒त॒क्षुः॥४॥**

**पदार्थः-(त्रिधा)** त्रिभिः प्रकारैः **(हितम्)** स्थितम् **(पणिभिः)** प्रशंसितैर्व्यवहर्त्तृभिः **(गुह्यमानम्)** गोप्यमानम् **(गवि)** वाचि **(देवासः)** विद्वांसः **(घृतम्)** घृतमिवानन्दप्रदं विज्ञानम् **(अनु) (अविन्दन्)** लभन्ते **(इन्द्रः)** विद्युत् **(एकम्) (सूर्यः)** सविता **(एकम्)** निःश्रेयसम् **(जजान)** जनयति **(वेनात्)** कमनीयात् परमात्मनः सकाशात् **(एकम्)** अव्यक्तम् **(स्वधया)** स्वकीयया धृतया प्रज्ञया **(निः)** नितराम् **(ततक्षुः)** विस्तृण्वन्ति॥४॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथा देवासः पणिभिः सह गवि गुह्यमानं त्रिधा हितं घृतमिवान्वविन्दन् स्वधया निष्टतक्षुर्यथेन्द्रो वेनादेकं सूर्यश्चैकं जजान तथा यूयमप्येकमनुतिष्ठत॥४॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यथा प्रशंसितैर्व्यवहारैः सह वर्त्तमाना विद्वांसः सुशिक्षितां वाचं प्रज्ञां च लब्ध्वा विद्युदादिविद्यां प्राप्य परमेश्वरं बुद्ध्वा तदाज्ञामनुसृत्य सुखं वितन्वन्ति तथैव सर्वे समाचरन्तु॥४॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे **(देवासः)** विद्वान् जन **(पणिभिः)** प्रशंसित व्यवहार करने वालों के साथ **(गवि)** वाणी में **(गुह्यमानम्)** गुप्त कराया जाता **(त्रिधा)** तीन प्रकारों से **(हितम्)** स्थित और **(घृतम्)** घृत के सदृश आनन्द देने वाले विज्ञान को **(अनु, अविन्दन्)** अनुकूल प्राप्त होते और **(स्वधया)** अपनी धारण की हुई बुद्धि से **(निः, ततक्षुः)** निरन्तर विस्तार करते हैं। और जैसे **(इन्द्रः)** बिजुली **(वेनात्)** सुन्दर परमात्मा के समीप से **(एकम्)** अव्यक्त अर्थात् प्रकृति को और **(सूर्यः)** सूर्य **(एकम्)** एक को **(जजान)** उत्पन्न करता है, वैसे आप लोग भी **(एकम्)** निरन्तर सुख अर्थात् मोक्ष को सिद्ध करो॥४॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जैसे श्रेष्ठ व्यवहारों के साथ वर्त्तमान विद्वान् जन, उत्तम प्रकार शिक्षित वाणी और बुद्धि को तथा बिजुली आदि की विद्या को प्राप्त हो परमेश्वर को जान और उसकी आज्ञा पालन करके सुख का विस्तार करते हैं, वैसे ही सब लोग अच्छा आचरण करें॥४॥

**अथ मेघविषयमाह॥**

अब मेघविषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥



www.9009.co.in

**ए॒ता अ॑र्षन्ति हृद्या॑त् समु॒द्राच्छ॒तव्र॑जा रि॒पुणा॒ नाव॒चक्षे॑।**

**घृ॒तस्य॒ धारा॑ अ॒भि चा॑कशीमि हिर॒ण्ययो॑ वे॒त॒सो मध्य॑ आसाम्॥५॥१०॥**

**ए॒ताः। अ॒र्ष॒न्ति॒। हृद्या॑त्। स॒मु॒द्रात्। श॒तऽव्र॑जाः। रि॒पुणा॑। न। अ॒व॒ऽचक्षे॑। घृ॒तस्य॑। धारा॑ः। अ॒भि। चा॒क॒शी॒मि॒। हि॒र॒ण्यय॑ः। वे॒त॒सः। मध्ये॑। आ॒सा॒म्॥५॥**

**पदार्थः**-(**एताः**) (**अर्षन्ति**) प्राप्नुवन्ति (**हृद्यात्**) हृदयस्य प्रियात् (**समुद्रात्**) अन्तरिक्षात् (**शतव्रजाः**) अपरिमितगतयः (**रिपुणा**) शत्रुणा (**न**) (**अवचक्षे**) प्रख्यातम् (**घृतस्य**) उदकस्य (**धाराः**) (**अभि, चाकशीमि**) प्रकाशयामि (**हिरण्ययः**) तेजोमयः सुवर्णमयो वा (**वेतसः**) कमनीयः (**मध्ये**) (**आसाम्**) धाराणाम्॥५॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथाऽऽसां मध्ये हिरण्ययो वेतसोऽहं या घृतस्यैताः शतव्रजा धारा हृद्यात् समुद्रादर्षन्ति ता अवचक्षेऽभि चाकशामि रिपुणा सह न वसामि तथा यूयं विजानीत॥५॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे विद्वांसो! यथाऽऽकाशात् पतिता वर्षा सर्वं जगत् पालयन्ति तथैव युष्मन्निसृता विज्ञानस्य वाचः सर्वं जगद्रक्षन्ति॥५॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे (**आसाम्**) इन धाराओं के (**मध्ये**) मध्य में (**हिरण्ययः**) तेजःस्वरूप वा सुवर्णस्वरूप (**वेतसः**) सुन्दर मैं जो (**घृतस्य**) जल की (**एताः**) ये (**शतव्रजाः**) अपरिमित [गति] वाली (**धाराः**) धारायें (**हृद्यात्**) हृदय के प्रिय (**समुद्रात्**) अन्तरिक्ष से (**अर्षन्ति**) प्राप्त होती हैं, उनको (**अवचक्षे**) कहने को (**अभि, चाकशीमि**) प्रकाश करता हूँ और (**रिपुणा**) शत्रु के साथ (**न**) नहीं वसता हूँ, वैसे आप लोग जानो॥५॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे विद्वानो! जैसे आकाश से गिरी हुई वर्षा सब जगत् का पालन करती हैं, वैसे ही आप लोगों से निकली हुई विज्ञान की वाणियाँ सब जगत् की रक्षा करती हैं॥५॥

**पुनरुदकविषयमाह॥**

फिर उदकविषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**स॒म्यक्स्र॑वन्ति स॒रितो॒ न धेना॑ अ॒न्तर्हृ॒दा मन॑सा पू॒यमा॑नाः।**

**ए॒ते अ॑र्षन्त्यू॒र्मयो॑ घृ॒तस्य॑ मृ॒गाइ॑व क्षिप॒णोरीष॑माणाः॥६॥**

**स॒म्यक्। स्र॒व॒न्ति॒। स॒रित॑ः। न। धेना॑ः। अ॒न्तः। हृ॒दा। मन॑सा। पू॒यमा॑नाः। ए॒ते। अ॒र्ष॒न्ति॒। ऊ॒र्मय॑ः। घृ॒तस्य॑। मृ॒गाःऽइ॑व। क्षि॒प॒णोः। ईष॑माणाः॥६॥**

**पदार्थः**-(**सम्यक्**) (**स्रवन्ति**) चलन्ति (**सरितः**) नद्यः (**न**) इव (**धेनाः**) विद्यायुक्ता वाचः (**अन्तः, हृदा**) अन्तःस्थितेनात्मना (**मनसा**) शुद्धेनान्तःकरणेन (**पूयमानाः**) पवित्रतां कुर्वाणाः (**एते**)



www.9009.co.in

(**अर्षन्ति**) गच्छन्ति (**ऊर्मयः**) तरङ्गाः (**घृतस्य**) उदकस्य (**मृगाइव**) (**क्षिपणोः**) प्रेषकात् (**ईषमाणाः**) गच्छन्तः॥६॥

**अन्वयः**-येषां विदुषामन्तर्हृदा मनसा पूयमाना धेनाः सरितो न सम्यक् स्रवन्ति त एते घृतस्योर्मयः क्षिपणोर्मृगाइवेषमाणाः सर्वां कीर्त्तिमर्षन्ति॥६॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। ये सत्यं वदन्ति त एव पवित्रात्मानो भूत्वा जलवच्छान्ताः सन्तो मृगा इव सद्य इष्टं सुखं प्राप्नुवन्ति॥६॥

**पदार्थः**-जिन विद्वानों के (**अन्तः, हृदा**) अन्तर्विराजमान आत्मा और (**मनसा**) शुद्ध अन्तःकरण से (**पूयमानाः**) पवित्रता करती हुई (**धेनाः**) विद्यायुक्त वाणियाँ (**सरितः**) नदियों के (**न**) सदृश (**सम्यक्**) उत्तम प्रकार (**स्रवन्ति**) चलती हैं सो (**एते**) ये विद्वान् (**घृतस्य**) जल की (**ऊर्मयः**) लहरियों और (**क्षिपणोः**) प्रेरणा देने वाले से (**मृगाइव**) हरिणों के सदृश (**ईषमाणः**) चलते हुए सब कीर्ति को (**अर्षन्ति**) प्राप्त होते हैं॥६॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जो सत्य कहते हैं वे ही पवित्रात्मा होके जल के सदृश शान्त होते हुए मृगों के सदृश शीघ्र ही अपेक्षित सुख को प्राप्त होते हैं॥६॥

**अथ जलदृष्टान्तेन वाग्विषयमाह॥**

अब जलदृष्टान्त से वाणीविषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**सिन्धोरिव प्राध्वने शूघनासो वातप्रमियः पतयन्ति यह्वाः।**

**घृतस्य धारा अरुषो न वाजी काष्ठा भिन्दन्नूर्मिभिः पिन्वमानः॥७॥**

**सिन्धोःऽइव। प्रऽअध्वने। शूघनासः। वातऽप्रमियः। पतयन्ति। यह्वाः। घृतस्य। धाराः। अरुषः। न। वाजी। काष्ठाः। भिन्दन्। ऊर्मिभिः। पिन्वमानः॥७॥**

**पदार्थः**-(**सिन्धोरिव**) नद्या इव (**प्राध्वने**) प्रकृष्टतया गन्तव्याय मार्गाय (**शूघनासः**) आशुगन्त्र्यः (**वातप्रमियः**) या वातं वायुं प्रमिन्वन्ति ताः (**पतयन्ति**) पतिरिवाचरन्ति (**यह्वाः**) महत्यः (**घृतस्य**) जलस्य (**धाराः**) (**अरुषः**) अरुणरूपः (**न**) इव (**वाजी**) अश्वः (**काष्ठाः**) दिश इव तटीः (**भिन्दन्**) विदृणन्ति (**ऊर्म्मिभिः**) तरङ्गैः (**पिन्वमानः**) प्रसादयन्॥७॥

**अन्वयः**-हे मनुष्याः! पिन्वमानोऽहं यथा शूघनासो यह्वा वातप्रमियः प्राध्वने सिन्धोरिव पतयन्त्यरुषो वाजी न घृतस्य धारा ऊर्म्मिभिः काष्ठा भिन्दँस्तथोपदेशान् वर्षयित्वाऽविद्यां भिनद्मि॥७॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। येषां विदुषां नदीप्रवाहा इव सदुपदेशाश्चलन्ति अश्व इव दुःखान्तं गमयन्ति ते एव महान्तः सन्तः सन्ति॥७॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! (**पिन्वमानः**) प्रसन्न करता हुआ मैं जैसे (**शूघनाशः**) शीघ्रगामिनी (**यह्वाः**) बड़ी (**वातप्रमियः**) वायु को मापने वाली और (**प्राध्वने**) उत्तम प्रकार से चलने योग्य मार्ग के लिये



www.9009.co.in

**(सिन्धोरिव)** नदियों के अर्थात् नदियों की तरङ्गों के समान **(पतयन्ति)** पति के सदृश आचरण करती हैं तथा **(अरुषः)** लाल रूप वाले **(वाजी)** घोड़ों के **(न)** सदृश **(घृतस्य)** जल की **(धाराः)** धारा **(ऊर्म्मिभिः)** तरङ्गों से **(काष्ठाः)** दिशाओं के समान तटों को **(भिन्दन्)** विदीर्ण करती हैं, वैसे उपदेशों की वृष्टि करके अविद्याओं का नाश करता हूँ॥७॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जिन विद्वानों के नदियों के प्रवाह सदृश उत्तम उपदेश प्रचरित होते और घोड़ों के समान दुःखों के पार कराते हैं, वे ही बड़े श्रेष्ठ पुरुष हैं॥७॥

**पुनर्विद्वद्विषयमाह॥**

फिर विद्वद्विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अभि प्रवन्त समनेव योषाः कल्याण्यः स्मयमानासो अग्निम्।**

**घृतस्य धाराः समिधो नसन्त ता जुषाणो हर्यति जातवेदाः॥८॥**

**अभि। प्रवन्त। समनाऽइव। योषाः। कल्याण्यः। स्मयमानासः। अग्निम्। घृतस्य। धाराः। सम्ऽइधः। नसन्त। ताः। जुषाणः। हर्यति। जातऽवेदाः॥८॥**

**पदार्थः**-**(अभि)** **(प्रवन्त)** गच्छन्तु **(समनेव)** समानमनस्का पतिव्रतेव **(योषाः)** स्त्रियः **(कल्याण्यः)** कल्याणकारिण्यः **(स्मयमानासः)** किञ्चिद्धसन्त्यो मितहासाः **(अग्निम्)** पावकम् **(घृतस्य)** आज्यस्य **(धाराः)** **(समिधः)** काष्ठानि **(नसन्त)** प्राप्नुवन्ति **(ता)** **(जुषाणः)** प्रीतः सन् **(हर्यति)** कामयते **(जातवेदाः)** जातविज्ञानः॥८॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथा घृतस्य धाराः समिधश्चाग्निं नसन्त तथा कल्याण्यः स्मयमानासो योषाः समनेवाभीष्टान् पत्नीनभि प्रवन्त यथा ताः सुखं लभन्ते तथा विद्याधर्म्मौ जुषाणो जातवेदाः सर्वं प्रियं हर्यति॥८॥

**भावार्थः**-अत्रोपमावाचकलुप्तोपमालङ्कारौ। यथाग्नीन्धनसंयोगेन प्रकाशो जायते तथोत्तमाऽध्यापकाऽध्येतृसम्बन्धेन विद्याप्रकाशो भवति। यथा स्वयंवरौ स्त्रीपुरुषौ परस्परस्य सुखं कामयेते तथैवोत्पन्नविद्यायोगिनः सर्वस्य सुखं भावयन्ति॥८॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे **(घृतस्य)** घृत की **(धाराः)** धारा और **(समिधः)** काष्ठ **(अग्निम्)** अग्नि को **(नसन्त)** प्राप्त होते हैं, वैसे **(कल्याण्यः)** कल्याण करने वाली **(स्मयमानासः)** कुछ हंसती हुई प्रमाणयुक्त हंसने वाली **(योषाः)** स्त्रियाँ **(समनेव)** तुल्य मन वाली पतिव्रता स्त्री के सदृश अभीष्ट पतियों को **(अभि, प्रवन्त)** सम्मुख प्राप्त हों और जैसे **(ताः)** वे सुख को प्राप्त होती हैं, वैसे विद्या और धर्म का **(जुषाणः)** सेवन करता हुआ **(जातवेदाः)** विज्ञान से युक्त विद्वान् सब के प्रिय की **(हर्यति)** कामना करता है॥८॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमा और वाचकलुप्तोमालङ्कार हैं। जैसे अग्नि और इन्धन के संयोग से प्रकाश होता है, वैसे उत्तम अध्यापक और पढ़ने वाले के सम्बन्ध से विद्या का प्रकाश होता है। और जैसे



www.9009.co.in

स्वयंवर जिन्होंने किया ऐसे स्त्री-पुरुष परस्पर के सुख की कामना करते हैं, वैसे ही उत्पन्न हुई विद्या जिनको ऐसे योगी जन सब का सुख उत्पन्न कराते हैं॥८॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**कन्याइव वहतुमेतवा उ अञ्ज्यञ्जाना अभि चाकशीमि।**

**यत्र सोमः सूयते यत्र यज्ञो घृतस्य धारा अभि तत्पवन्ते॥९॥**

**कन्याःऽइव। वहतुम्। एतवै। ऊम् इति। अञ्जि। अञ्जानाः। अभि। चाकशीमि। यत्र। सोमः। सूयते। यत्र। यज्ञः। घृतस्य। धाराः। अभि। तत्। पवन्ते॥९॥**

**पदार्थः**-(**कन्याइव**) यथा कुमार्य्यः (**वहतुम्**) वोढारम् (**एतवै**) प्राप्तुम् (उ) (**अञ्जि**) व्यक्तं सुलक्षणम् (**अञ्जानाः**) प्रकटयन्त्यः (**अभि**) (**चाकशीमि**) प्रकाशयामि (**यत्र**) (**सोमः**) ऐश्वर्यमोषधिगणो वा (**सूयते**) निष्पद्यते (**यत्र**) (**यज्ञः**) अनुष्ठातुमर्हो व्यवहारः (**घृतस्य**) प्रकाशस्य (**धाराः**) वाचः (**अभि**) (**तत्**) कर्म (**पवन्ते**) शोधयन्ति॥९॥

**अन्वयः**-या वहतुमेतवै कन्याइवाञ्ज्यञ्जाना घृतस्य धारा उ यत्र सोमो यत्र यज्ञः सूयते तत्कर्माभि पवन्ते ता अहमभि चाकशीमि॥९॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। यथा स्वयंवरा कन्या स्वसदृशं पतिं प्राप्तुमहर्निशं परीक्षयति पुरुषश्च तथाऽध्यापकोपदेशकौ परीक्षकौ स्याताम्, येन कर्म्मणैश्वर्य्यं क्रिया शुद्धिश्च जायते तदेव वचनं भाषितुं योग्यमस्ति॥९॥

**पदार्थः**-जो (**वहतुम्**) धारण करने वाले को (**एतवै**) प्राप्त होने की (**कन्याइव**) जैसे कुमारी वैसे (**अञ्जि**) व्यक्त उत्तम लक्षण को (**अञ्जानाः**) प्रकट करती हुई (**घृतस्य**) प्रकाशसम्बन्धिनी (**धाराः**) वाणियाँ (उ) और (**यत्र**) जहाँ (**सोमः**) ऐश्वर्य्य वा ओषधियों का समूह और (**यत्र**) जहाँ (**यज्ञः**) करने योग्य व्यवहार (**सूयते**) उत्पन्न होता है (**तत्**) उस कर्म्म को (**अभि, पवन्ते**) पवित्र कराती हैं, उनको मैं (**अभि, चाकशीमि**) प्रकाशित करता हूँ॥९॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जैसे स्वयंवर करने वाली कन्या अपने सदृश पति को प्राप्त होने की दिन-रात्रि परीक्षा करती है और ऐसे ही पुरुष परीक्षा करता है, वैसे अध्यापक और उपदेशक परीक्षक होवें और जिस कर्म्म से ऐश्वर्य्य और क्रिया की शुद्धि होवे, वही वचन कहने योग्य है॥९॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अभ्यर्षत सुष्टुतिं गव्यमाजिमस्मासु भद्रा द्रविणानि धत्त।**



www.9009.co.in

**इ॒मं य॒ज्ञं न॑यत दे॒वता॑ नो घृ॒तस्य॒ धारा॒ मधु॑मत्पवन्ते॥ १०॥**

**अ॒भि। अ॒र्ष॒त॒। सु॒ऽस्तु॒ति॒म्। गव्य॑म्। आ॒जि॒म्। अ॒स्मासु॑। भ॒द्रा। द्रवि॑णानि। ध॒त्त॒। इ॒मम्। य॒ज्ञम्। न॒य॒त॒। दे॒वता। न॒ः। घृ॒तस्य॑। धारा॑ः। मधु॑ऽमत्। प॒व॒न्ते॒॥ १०॥**

**पदार्थः**-(**अभि**) (**अर्षत**) प्राप्नुत (**सुष्टुतिम्**) शोभनां प्रशंसाम् (**गव्यम्**) गवे वाचे हितं व्यवहारम् (**आजिम्**) प्रसिद्धम् (**अस्मासु**) (**भद्रा**) भजनीयसुखप्रदानि (**द्रविणानि**) धनानि यशांसि वा (**धत्त**) (**इमम्**) (**यज्ञम्**) (**नयत**) प्रापयत (**देवता**) देव एव देवता विद्वानेव। **देवात्तल्** इति स्वार्थे तल् जातावेकवचनं च। (**नः**) अस्मान् (**घृतस्य**) प्रकाशितस्य बोधस्य (**धाराः**) प्रकाशिका वाचः (**मधुमत्**) प्रशस्तविज्ञानयुक्तं कर्म्म (**पवन्ते**) शोधयन्ति॥ १०॥

**अन्वयः**-हे विद्वांसो! यूयमस्मास्वाजिं गव्यं भद्रा द्रविणानि च धत्त देवता यूयमिमं यज्ञं नो नयत यथा घृतस्य धारा मधुमत्पवन्ते तथाऽस्मान् पवित्रान् कृत्वा सुष्टुतिमभ्यर्षत॥ १०॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। तेषामेव विदुषां प्रशंसा जायते ये सर्वेषु मनुष्येषूपदेशेनोत्तमान् गुणान् दधति॥ १०॥

**पदार्थः**-हे विद्वानो! आप लोग (**अस्मासु**) हम लोगों में (**आजिम्**) प्रसिद्ध (**गव्यम्**) वाणी के लिये हितकारक व्यवहार को और (**भद्रा**) सेवने योग्य अपेक्षित सुख देने वाले (**द्रविणानि**) धनों वा यशों को (**धत्त**) धारण करो (**देवता**) विद्वान् जन आप लोग (**इमम्**) इस (**यज्ञम्**) यज्ञ को (**नः**) हम लोगों के लिये (**नयत**) प्राप्त कराओ और जैसे (**घृतस्य**) प्रकाशित बोध के (**धाराः**) प्रकाश करने वाली वाणियाँ (**मधुमत्**) श्रेष्ठविज्ञान से युक्त कर्म्म को (**पवन्ते**) शुद्ध करती हैं, वैसे हम लोगों को पवित्र करके (**सुष्टुतिम्**) उत्तम प्रशंसा को (**अभि, अर्षत**) प्राप्त हूजिये॥ १०॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। उन्हीं विद्वानों की प्रशंसा होती है, जो सब मनुष्यों में उपदेश द्वारा उत्तम गुणों को धारण करते हैं॥ १०॥

**पुनरीश्वरविषयमाह॥**

फिर ईश्वर के विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**धाम॑न् ते॒ विश्वं॒ भुव॑न॒मधि॑ श्रि॒तम॒न्तः स॑मु॒द्रे हृ॒द्य१॒॑न्तरायु॑षि।**

**अ॒पामनी॑के समि॒थे य आभृ॑तस्तम॑श्याम॒ मधु॑मन्तं त ऊ॒र्मिम्॥ ११॥ ११॥ ५॥ ४॥**

**धाम॑न्। ते॒। विश्व॑म्। भुव॑नम्। अधि॑। श्रि॒तम्। अ॒न्तरिति॑। स॒मु॒द्रे। हृ॒दि। अ॒न्तः। आयु॑षि। अ॒पाम्। अनी॑के। स॒म्ऽइ॒थे। यः। आऽभृ॑तः। तम्। अ॒श्या॒म॒। मधु॑ऽमन्तम्। ते॒। ऊ॒र्मिम्॥ ११॥**

**पदार्थः**-(**धामन्**) आधारे (**ते**) तव (**विश्वम्**) सर्वम् (**भुवनम्**) जगत् (**अधि**) उपरि (**श्रितम्**) स्थितम् (**अन्तः**) (**समुद्रे**) अन्तरिक्षे (**हृदि**) हृदये (**अन्तः**) मध्ये (**आयुषि**) जीवननिमित्ते प्राणे (**अपाम्**)



www.9009.co.in

प्राणानाम् **(अभीके)** सैन्ये **(समिथे)** सङ्ग्रामे **(यः)** **(आभृतः)** समन्ताद् धृतः **(तम्)** **(अश्याम)** प्राप्नुयाम **(मधुमन्तम्)** माधुर्य्यगुणोपेतम् **(ते)** तव **(ऊर्मिम्)** रक्षणादिकम्॥११॥

**अन्वयः**-हे भगवन्! यस्य ते धामन्नन्तः समुद्रे हृद्यन्तरायुष्यपामनीके समिथे विश्वं भुवनमधि श्रितं यस्ते विद्वद्भिराभृतस्तं मधुमन्तमूर्मिमानन्दं वयमश्याम तदुपासनां सततं कुर्य्याम॥११॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यो जगदीश्वरो जगदभिव्याप्य सर्वं धृत्वा संरक्ष्यान्तर्यामिरूपेण सर्वत्र व्याप्तोऽस्ति यस्य कृपया विज्ञानं चिरजीवनं विजयश्च प्राप्यते तमेव सततं भजतेति॥११॥

अत्रोदकमेघसूर्यवाग्विद्वदीश्वरगुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिरस्तीति वेदितव्यम्॥

**इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्य्याणां परमविदुषां श्रीमद्विरजानन्दसरस्वतीस्वामिनां शिष्येण श्रीमद्दयानन्दसरस्वतीस्वामिना निर्मिते संस्कृतार्य्यभाषाभ्यां विभूषित ऋग्वेदभाष्ये चतुर्थमण्डले पञ्चमोऽनुवाकोऽष्टपञ्चाशत्तमं सूक्तमेकादशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे भगवन्! जिस **(ते)** आपके **(धामन्)** आधाररूप **(अन्तः)** मध्य **(समुद्रे)** अन्तरिक्ष और **(हृदि)** हृदय के **(अन्तः)** मध्य में **(आयुषि)** जीवन के निमित्त प्राण में **(अपाम्)** प्राणों की **(अभीके)** सेना में और **(समिथे)** संग्राम में **(विश्वम्)** सम्पूर्ण **(भुवनम्)** जगत् **(अधि)** ऊपर **(श्रितम्)** स्थित है तथा **(यः)** जो **(ते)** आप का विद्वानों से **(आभृतः)** सब प्रकार धारण किया गया **(तम्)** उस **(मधुमन्तम्)** माधुर्य्यगुण से युक्त **(उर्मिम्)** रक्षा आदि व्यवहार और आनन्द को हम लोग **(अश्याम)** प्राप्त होवें, उस आपकी उपासना को निरन्तर करें॥११॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो जगदीश्वर जगत् को अभिव्याप्त होके सब को धारण कर और उत्तम प्रकार रक्षा करके अन्तर्य्यामिरूप से सर्वत्र व्याप्त है और जिसकी कृपा से विज्ञान, बहुत कालपर्य्यन्त जीवन और विजय प्राप्त होता है, उसी की निरन्तर सेवा करो॥११॥

इस सूक्त में जल, मेघ, सूर्य्य, वाणी, विद्वान् और ईश्वर के गुणवर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की पिछले सूक्तार्थ के साथ सङ्गति है, यह जानना चाहिये॥

**यह श्रीमान् परमहंसपरिव्राजकाचार्य्य परम विद्वान् श्रीमद् विरजानन्द सरस्वती स्वामी जी के शिष्य श्रीमान् दयानन्द सरस्वती स्वामी जी के बनाये हुए, संस्कृत और आर्य्यभाषा से सुशोभित, ऋग्वेदभाष्य के चतुर्थ मण्डल में पञ्चम अनुवाक, अट्ठावनवाँ सूक्त और ग्यारहवाँ वर्ग समाप्त हुआ॥**

**इति चतुर्थं मण्डलम्॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

अथ पञ्चमं मण्डलम्॥

**विश्वा॑नि देव सवितर्दुरि॒तानि॒ परा॑ सुव। यद्भ॒द्रं तन्न॒ आ सु॑व॥ ऋ०५.८२.५॥**

**अथ द्वादशर्चस्य प्रथमस्य सूक्तस्य बुधगविष्ठिरावात्रेयावृषी। अग्निर्देवता। १, ३, ४, ६, ११, १२ निचृत्त्रिष्टुप्। २, ७, १० त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः। ५ भुरिक्पङ्क्तिः। ८ स्वराट्पङ्क्तिः। ९ पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः॥**

**अथोपदेश्योपदेशकगुणानाह॥**

अब बारह ऋचा वाले प्रथम सूक्त का आरम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में उपदेश देने योग्य और उपदेश देने वाले के गुणों को कहते हैं॥

**अबो॑ध्य॒ग्निः स॒मिधा॒ जना॑नां॒ प्रति॑ धे॒नुमि॑वाय॒तीमु॒षास॑म्।**

**य॒ह्वाइ॑व॒ प्र व॒यामु॒ज्जिहा॑ना॒ः प्र भा॒नव॑ः सिस्र॒ते नाक॒मच्छ॑॥ १॥**

**अबो॑धि। अ॒ग्निः। स॒म्ऽइधा॑। जना॑नाम्। प्रति॑। धे॒नुम्ऽइ॑व। आ॒ऽय॒तीम्। उ॒षास॑म्। य॒ह्वाःऽइ॑व। प्र। व॒याम्। उ॒त्ऽजिहा॑नाः। प्र। भा॒नव॑ः। सि॒स्र॒ते। नाक॑म्। अच्छ॑॥ १॥**

**पदार्थः-(अबोधि)** बुध्यते **(अग्निः)** पावकः **(समिधा)** इन्धनैर्घृतादिना **(जनानाम्)** मनुष्याणाम् **(प्रति) (धेनुमिव)** दुग्धप्रदां गामिव **(आयतीम्)** आगच्छन्तीम् **(उषासम्)** उषसम्। अत्रा**न्येषामपी**ति दीर्घः। **(यह्वाइव)** महान्तो वृक्षा इव **(प्र) (वयाम्)** शाखाम् **(उज्जिहानाः)** त्यजन्तः **(प्र) (भानवः)** दीप्तयः **(सिस्रते)** सरन्ति गच्छन्ति **(नाकम्)** अविद्यमानदुःखमन्तरिक्षम् **(अच्छ)** सम्यक्॥ १॥

**अन्वयः**-हे विद्वन्! यथा समिधाग्निरबोधि भानवो जनानामायतीं धेनुमिवोषासं प्रति प्र सिस्रते वयां प्रोज्जिहाना यह्वा इव नाकमच्छ सिस्रते तथा त्वं भव॥ १॥

**भावार्थः**-अत्रोपमावाचकलुप्तोपमालङ्कारौ। येऽग्न्यादिविद्यां गृहीत्वा कार्य्येषु प्रयुञ्जते दुःखविरहाः सन्तो वृक्षा इव वर्द्धन्ते॥ १॥

**पदार्थः**-हे विद्वन्! जैसे **(समिधा)** ईन्धन और घृत आदि से **(अग्निः)** अग्नि **(अबोधि)** जाना जाता अर्थात् प्रज्वलित किया जाता है **(भानवः)** कान्तियें **(जनानाम्)** मनुष्यों की **(आयतीम्)** आती हुई **(धेनुमिव)** दुग्ध देने वाली गौ के तुल्य **(उषासम्)** प्रातर्वेला के **(प्रति) (प्र, सिस्रते)** प्राप्त होती और **(वयाम्)** शाखा को **(प्र, उज्जिहानाः)** अच्छे प्रकार त्यागते हुए **(यह्वा इव)** बड़े वृक्षों के सदृश **(नाकम्)** दुःख से रहित अन्तरिक्ष को **(अच्छ)** उत्तम प्रकार प्राप्त होती है, वैसे आप हूजिये॥ १॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमा और वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो अग्न्यादि पदार्थों की विद्या को ग्रहण कर कार्य्यों में अच्छे प्रकार युक्त करते हैं, वे दुःख रहित हुए वृक्षों के समान बढ़ते हैं॥ १॥



www.9009.co.in

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**अबो॑धि॒ होता॑ य॒जथा॑य दे॒वानू॒र्ध्वो अ॒ग्निः सु॒मना॑ः प्रा॒तर॑स्थात्।**

**समि॑द्धस्य॒ रुश॑ददर्शि॒ पाजो॑ म॒हान् दे॒वस्तम॑सो॒ निर॑मोचि॥ २॥**

**अबो॑धि। होता॑। य॒जथा॑य। दे॒वान्। ऊ॒र्ध्वः। अ॒ग्निः। सु॒ऽमना॑ः। प्रा॒तः। अ॒स्था॒त्। सम्ऽइ॑द्धस्य। रुश॑त्। अ॒द॒र्शि॒। पाज॑ः। म॒हान्। दे॒वः। तम॑सः। निः। अ॒मो॒चि॒॥ २॥**

**पदार्थः-(अबोधि)** बुध्यते **(होता)** हवनकर्त्ता **(यजथाय)** यजनाय **(देवान्)** विदुषो दिव्यान् गुणान् वा **(ऊर्ध्वः)** ऊर्ध्वगामी **(अग्निः)** पावक इव **(सुमनाः)** शुद्धमनाः **(प्रातः)** **(अस्थात्)** तिष्ठति **(समिद्धस्य)** प्रदीप्तस्य **(रुशत्)** रूपम् **(अदर्शि)** दृश्यते **(पाजः)** बलम् **(महान्)** **(देवः)** देदीप्यमानः सूर्यः **(तमसः)** अन्धकरात् **(निः)** नितराम् **(अमोचि)** मुच्यते॥ २॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यः सुमना होता यजथायोर्ध्वोऽग्निरिव देवानबोधि प्रातरस्थात् स समिद्धस्य रुशदिवादर्शि महान् देवः पाजः तमसो निरमोचि तं यूयं सेवध्वम्॥ २॥

**भावार्थः-**अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। ये मनुष्या उत्तमाचरणेनाग्निवदूर्ध्वगामिनो भवन्ति तेऽविद्यातो निवृत्य यशस्विनो जायन्ते॥ २॥

**पदार्थः-**हे मनुष्यो! जो **(सुमनाः)** शुद्ध मन वाला **(होता)** हवनकर्त्ता पुरुष **(यजथाय)** यज्ञ करने के लिये **(ऊर्ध्वः)** ऊपर को चलने वाले **(अग्निः)** अग्नि के सदृश **(देवान्)** विद्वानों वा श्रेष्ठ गुणों को **(अबोधि)** जानता और **(प्रातः)** प्रातःकाल में **(अस्थात्)** स्थित होता है, वह **(समिद्धस्य)** प्रदीप्त अग्नि के **(रुशत्)** रूप के समान **(अदर्शि)** देखा जाता है और जो **(महान्)** बड़ा **(देवः)** प्रकाशमान सूर्य **(पाजः)** बल को प्राप्त होकर **(तमसः)** अन्धकार से **(निः)** **(अमोचि)** अत्यन्त छुटाया जाता है, उसकी आप लोग सेवा करो॥ २॥

**भावार्थः-**इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो मनुष्य उत्तम आचरण से अग्नि सदृश ऊपर को जाने वाले होते हैं, वे अविद्या से निवृत्त होकर यशस्वी होते हैं॥ २॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**यदीं॑ ग॒णस्य॑ रश॒नामजी॑गः॒ शुचि॑रङ्क्ते॒ शुचि॑भि॒र्गोभि॑र॒ग्निः।**

**आद्दक्षि॑णा युज्यते वाज॒यन्त्यु॑त्ता॒नामू॒र्ध्वो अ॑धयज्जु॒हूभि॑ः॥ ३॥**

**यत्। ई॒म्। ग॒णस्य॑। र॒श॒नाम्। अजी॑गरिति॑। शुचि॑ः। अ॒ङ्क्ते॒। शुचि॑ऽभिः। गोभि॑ः। अ॒ग्निः। आत्। दक्षि॑णा। यु॒ज्य॒ते॒। वा॒ज॒ऽयन्ती॑। उ॒त्ता॒नाम्। ऊ॒र्ध्वः। अ॒ध॒य॒त्। जु॒हूभि॑ः॥ ३॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-**(यत्)** यः **(ईम्)** प्राप्तम् **(गणस्य)** समूहस्य **(रशनाम्)** रज्जुम् **(अजीगः)** भृशं गिरति **(शुचिः)** पवित्रः सन् **(अङ्क्ते)** प्रसिद्धो भवति **(शुचिभिः)** पवित्रैः **(गोभिः)** किरणैः **(अग्निः)** पावक इव **(आत्)** **(दक्षिणा)** दक्षिणस्यां दिशि **(युज्यते)** **(वाजयन्ती)** प्रापयन्ती **(उत्तानाम्)** ऊर्ध्वगामिनीम् **(ऊर्ध्वः)** **(अधयत्)** पिबति **(जुहूभिः)** पानसाधनैः॥३॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यद्यः शुचिभिर्गोभिरग्निरिव गणस्य रशनामजीग आच्छुचिरूर्ध्वोऽङ्क्ते स दक्षिणा युज्यते या विदुषी वाजयन्त्युत्तानामजीगस्स ईं जुहूभिः पेयमधयत्॥३॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। ये समुदायस्य सन्तोषं जनयन्ति ते किरणैः सूर्य इव सर्वत्र यशसा प्रकाशिता जायन्ते॥३॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(यत्)** जो **(शुचिभिः)** पवित्र **(गोभिः)** किरणों से **(अग्निः)** अग्नि के सदृश **(गणस्य)** समूह की **(रशनाम्)** डोरी को **(अजीगः)** अत्यन्त निगलता अर्थात् ग्रहण करता **(आत्)** और **(शुचिः)** पवित्र होता हुआ **(ऊर्ध्वः)** ऊपर को उठा **(अङ्क्ते)** प्रसिद्ध होता है, वह **(दक्षिणा)** दक्षिणा दिशा में **(युज्यते)** युक्त किया जाता है, जो विद्यायुक्त स्त्री **(वाजयन्ती)** प्राप्ति कराती हुई **(उत्तानाम्)** ऊपर जाने वाली सामग्री को निरन्तर ग्रहण करती है, वह **(ईम्)** प्राप्त हुए **(जुहूभिः)** पान करने के साधनों से पीने योग्य पदार्थ को **(अधयत्)** पान करती है॥३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो समुदाय के संतोष को उत्पन्न करते हैं, वे किरणों से सूर्य जैसे वैसे सर्वत्र यश से प्रकाशित होते हैं॥३॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अग्निमच्छा देवयुतां मनांसि चक्षूंषीव सूर्ये सं चरन्ति।**

**यदीं सुवाते उषसा विरूपे श्वेतो वाजी जायते अग्रे अह्नाम्॥४॥**

**अग्निम्। अच्छ। देवऽयताम्। मनांसि। चक्षूंषिऽइव। सूर्ये। सम्। चरन्ति। यत्। ईम्। सुवाते इति। उषसा। विरूपे इति विऽरूपे। श्वेतः। वाजी। जायते। अग्रे। अह्नाम्॥४॥**

**पदार्थः**-**(अग्निम्)** पावकम् **(अच्छा)** सम्यक्। अत्र **संहितायामिति** दीर्घः। **(देवयताम्)** कामयमानानाम् **(मनांसि)** अन्तःकरणानि **(चक्षूंषीव)** **(सूर्ये)** सवितरीव सूर्ये **(सम्)** **(चरन्ति)** गच्छन्ति प्राप्नुवन्ति **(यत्)** यथा **(ईम्)** **(सुवाते)** उत्पादयतः **(उषसा)** रात्रिदिने **(विरूपे)** विरुद्धस्वरूपे **(श्वेतः)** **(वाजी)** विज्ञापको दिवसः **(जायते)** उत्पद्यते **(अग्रे)** **(अह्नाम्)** दिनानाम्॥४॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यद्यथाऽह्नामग्रे विरूपे उषसेम् सुवाते तयोः श्वेतो वाजी जायते तथाग्निं देवयतां सूर्ये चक्षूंषीव परमात्मनि मनांस्यच्छा सञ्चरन्ति॥४॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यथा दिनं तथा विद्वांसो यथा रात्रिस्तथाऽविद्वांसः सन्ति॥४॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(यत्)** जैसे **(अह्नाम्)** दिनों के **(अग्रे)** अग्रभाग में **(विरूपे)** विरुद्धस्वरूप **(उषसा)** रात्रि और दिन **(ईम्)** प्राप्त हुई क्रिया को **(सुवाते)** उत्पन्न कराते हैं और उन में **(श्वेतः)** श्वेतवर्ण **(वाजी)** जनाने वाला अर्थात् कार्य्यों की सूचना दिलाने वाला दिवस **(जायते)** उत्पन्न होता है, वैसे **(अग्निम्)** अग्नि की **(देवयताम्)** कामना करते हुए जनों के बीच **(सूर्ये)** सूर्य्य में **(चक्षूंषीव)** नेत्रों के सदृश परमात्मा में **(मनांसि)** अन्तःकरण **(अच्छा)** उत्तम प्रकार **(सम्, चरन्ति)** प्राप्त होते हैं॥४॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जैसे दिन वैसे विद्वान् जन और जैसे रात्रि वैसे अविद्वान् हैं॥४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**जनि॑ष्ट॒ हि जेन्यो॒ अग्रे॒ अह्नां॑ हि॒तो हि॒तेष्व॑रु॒षो वने॑षु।**

**दमे॑दमे स॒प्त रत्ना॒ दधा॑नो॒ऽग्निर्होता॒ नि ष॑सादा॒ यजी॑यान्॥५॥**

**जनि॑ष्ट। हि। जेन्यः॑। अग्रे॑। अह्ना॑म्। हि॒तः। हि॒तेषु॑। अ॒रु॒षः। वने॑षु। दमे॑ऽदमे। स॒प्त। रत्ना॑। दधा॑नः। अ॒ग्निः। होता॑। नि। स॒सा॒द॒। यजी॑यान्॥५॥**

**पदार्थः**-**(जनिष्ट)** जायते **(हि)** **(जेन्यः)** जेतुं शीलः **(अग्रे)** **(अह्नाम्)** दिनानाम् **(हितः)** हितकारी **(हितेषु)** सुखनिमित्तेषु **(अरुषः)** न मर्मव्यापी **(वनेषु)** जङ्गलेषु **(दमेदमे)** गृहेगृहे **(सप्त)** सप्तसङ्ख्याकान् किरणान् **(रत्ना)** रत्नानि धनानि **(दधानः)** धरन् **(अग्निः)** अग्निरिव **(होता)** सङ्गतक्रियाकर्त्ता **(नि)** **(ससाद)** निषीदेत्। अत्र **संहितायामिति** दीर्घः। **(यजीयान्)** अतिशयेन यज्ञकर्त्ता॥५॥

**अन्वयः**-हे विद्वन्! योऽह्नामग्रे हितेषु हितो वनेष्वरुषो दमेदमे सप्त किरणान् रत्ना दधानो जेन्योऽग्निरिव होता जनिष्ट सत्कर्मसु निषसाद स हि यजीयान् जायते॥५॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यथा दिवसाऽऽरम्भे प्रभातसमयः सर्वेषां हितकारी वर्त्तते तथैव सत्कर्मकर्त्ता यजमानः सर्वहितैषी जायते॥५॥

**पदार्थः**-हे विद्वन्! जो **(अह्नाम्)** दिनों के **(अग्रे)** अग्रभाग में **(हितेषु)** सुख के कारणों में **(हितः)** हित करने वाला **(वनेषु)** वनों में **(अरुषः)** मर्मस्थलों में न व्यापी **(दमेदमे)** गृह-गृह में **(सप्त)** सात किरणों और **(रत्ना)** धनों को **(दधानः)** धारण करता हुआ **(जेन्यः)** जीतने वाला **(अग्निः)** अग्नि के सदृश **(होता)** सङ्गत क्रियाओं का कर्त्ता **(जनिष्ट)** उत्पन्न होता है और श्रेष्ठ कर्म्मों में **(नि, ससाद)** प्रवृत्त होवे **(हि)** वही **(यजीयान्)** अत्यन्त यज्ञ करने वाला होता है॥५॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे दिन के आरम्भ में प्रभातसमय सब का हितकारी होता है, वैसे ही श्रेष्ठ कर्म करने वाला यजमान सब का हितैषी होता है॥५॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अग्निर्होता न्यसीददद् यजीयानुपस्थे मातुः सुरभा उ लोके।**

**युवा कविः पुरुनिःष्ठ ऋतावा धर्ता कृष्टीनामुत मध्य इद्धः॥६॥१२॥**

**अग्निः। होता। नि। असीदत्। यजीयान्। उपऽस्थे। मातुः। सुरभौ। ऊँ इति। लोके। युवा। कविः। पुरुनिःऽस्थः। ऋतऽवा। धर्ता। कृष्टीनाम्। उत। मध्ये। इद्धः॥६॥**

**पदार्थः**-(**अग्निः**) विद्युदिव (**होता**) यज्ञकर्ता (**नि**) (**असीदत्**) निषीदेत् (**यजीयान्**) अतिशयेन यष्टा (**उपस्थे**) समीपे (**मातुः**) (**सुरभौ**) सुगन्धिते (**उ**) (**लोके**) (**युवा**) बलिष्ठः (**कविः**) क्रान्तप्रज्ञो विपश्चित् (**पुरुनिःष्ठः**) पुरवो बहुविधा निष्ठा यस्य बहुस्थानो वा (**ऋतावा**) सत्यविभाजकः (**धर्त्ता**) (**कृष्टीनाम्**) मनुष्याणाम् (**उत**) अपि (**मध्ये**) (**इद्धः**) प्रदीप्तः॥६॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथा मध्य इद्धोऽग्निरिव यजीयान् युवा कविः पुरुनिःष्ठ ऋतावा धर्त्ता होता सुरभौ मातुरुपस्थे लोके न्यसीदत् स उ कृष्टीनामुत पश्वादीनां रक्षकः स्यात्॥६॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यथाग्निर्मातरि वायौ स्थितः सन् विद्युद्रूपेण सर्वान् सुखयति तथैव धार्मिको विद्वान् सर्वानानन्दयितुमर्हति॥६॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे (**मध्ये**) मध्य में (**इद्धः**) प्रदीप्त (**अग्निः**) बिजुली सदृश (**यजीयान्**) अत्यन्त यज्ञकर्त्ता (**युवा**) बलवान् (**कविः**) उत्तम बुद्धि वाला विद्वान् (**पुरुनिःष्ठः**) अनेक प्रकार की श्रद्धा व बहुत स्थानों वाला (**ऋतावा**) सत्य का विभाग [करने वाला] (**धर्त्ता**) और धारण करने वाला (**होता**) यज्ञकर्त्ता (**सुरभौ**) सुगन्धित (**मातुः**) माता के (**उपस्थे**) समीप में (**लोके**) लोक में (**नि, असीदत्**) निरन्तर स्थित होवे (**उ**) वही (**कृष्टीनाम्**) मनुष्यों का (**उत**) और पशु आदिकों का रक्षक होवे॥६॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे अग्नि मातारूप वायु में विराजता हुआ बिजुलीरूप से सब को सुख देता है, वैसे ही धार्मिक विद्वान् सब को आनन्द दिलाने के योग्य है॥६॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**प्र णु त्यं विप्रमध्वरेषु साधुमग्निं होतारमीळते नमोभिः।**

**आ यस्ततान रोदसी ऋतेन नित्यं मृजन्ति वाजिनं घृतेन॥७॥**



www.9009.co.in

**प्र। नु। त्यम्। विप्र॑म्। अ॒ध्व॒रेषु॑। सा॒धुम्। अ॒ग्निम्। होता॑रम्। ई॒ळ॒ते॒। नम॑ःऽभिः। आ। यः। त॒तान॑। रोद॑सी॒ इति॑। ऋ॒तेन॑। नित्य॑म्। मृ॒ज॒न्ति॒। वा॒जिन॑म्। घृ॒तेन॑॥७॥**

**पदार्थः-(प्र)** **(नु)** सद्यः **(त्यम्)** तम् **(विप्रम्)** मेधाविनम् **(अध्वरेषु)** अहिंसनीयेषु व्यवहारेषु **(साधुम्)** **(अग्निम्)** पावकम् **(होतारम्)** **(ईळते)** स्तुवन्ति **(नमोभिः)** अन्नादिभिः **(आ)** **(यः)** **(ततान)** विस्तृणोति **(रोदसी)** द्यावापृथिव्यौ **(ऋतेन)** सत्येन **(नित्यम्)** **(मृजन्ति)** शुन्धन्ति **(वाजिनम्)** **(घृतेन)** उदकेन॥७॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! योऽग्निर्नमोभिर्ऋतेन घृतेन वाजिनं रोदसी आ ततान तद्विद्यया ये नित्यं मृजन्ति त्यमग्निमिव होतारं साधुं विप्रमध्वरेषु नु प्र ईळते ते सुखिनो जायन्ते॥७॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यथा विद्वांसोऽग्निं कार्येषु सम्प्रयुज्य धनधान्ययुक्ता जायन्ते तथैतद् विद्यां कार्येषु संयोज्य प्रत्यक्षविद्या जायन्ते॥७॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(यः)** जो अग्नि **(नमोभिः)** अन्न आदिकों से **(ऋतेन)** सत्य से **(घृतेन)** और जल से **(वाजिनम्)** गति वाले पदार्थ को **(रोदसी)** अन्तरिक्ष और पृथिवी को **(आ, ततान)** विस्तृत करता अर्थात् अन्तरिक्ष और पृथिवी पर पहुंचाता है, उसकी विद्या से जो **(नित्यम्)** नित्य **(मृजन्ति)** शुद्ध करते और **(त्यम्)** उस **(अग्निम्)** अग्नि के सदृश **(होतारम्)** यज्ञ करने वाले **(साधुम्)** श्रेष्ठ **(विप्रम्)** बुद्धिमान् की **(अध्वरेषु)** नहीं हिंसा करने योग्य व्यवहारों में **(नु)** शीघ्र **(प्र, ईळते)** अच्छे प्रकार स्तुति करते हैं, वे सुखी होते है॥७॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे विद्वान् जन अग्नि को कार्य्यों में संप्रयुक्त अर्थात् काम में लाकर धन और धान्य से युक्त होते हैं, वैसे ही इसकी विद्या को कार्यों में संयुक्त करके प्रत्यक्ष विद्यायुक्त होते हैं॥७॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**मा॒र्जा॒ल्यो॑ मृज्यते॒ स्वे दमू॑नाः कविप्रश॒स्तो अति॑थिः शि॒वो न॑ः।**

**स॒हस्र॑शृङ्गो वृ॒ष॒भस्तदो॑जा॒ विश्वाँ॑ अग्ने॒ सह॑सा॒ प्रास्य॒न्यान्॥८॥**

**मा॒र्जा॒ल्य॑ः। मृ॒ज्य॒ते॒। स्वे। दमू॑नाः। क॒वि॒ऽप्र॒श॒स्तः। अति॑थिः। शि॒वः। न॒ः। स॒हस्र॑ऽशृङ्गः। वृ॒ष॒भः। तत्ऽओ॑जाः। विश्वा॑न्। अ॒ग्ने॒। सह॑सा। प्र। अ॒सि॒। अ॒न्यान्॥८॥**

**पदार्थः-(मार्जाल्यः)** संशोधकः **(मृज्यते)** शुद्ध्यते **(स्वे)** स्वकीये **(दमूनाः)** दमनशीलः **(कविप्रशस्तः)** कविभिः प्रशंसनीयः कविषु प्रशस्तो वा **(अतिथिः)** अविद्यमाननियततिथिः **(शिवः)** मङ्गलमयो मङ्गलकारी **(नः)** अस्मान् **(सहस्रशृङ्गः)** सहस्राणि शृङ्गाणीव तेजांसि यस्य सः **(वृषभः)**



www.9009.co.in

बलिष्ठो वर्षणशील: **(तदोजा:)** तदेवौज: पराक्रमो यस्य स: **(विश्वान्)** समग्रान् **(अग्ने)** अग्निरिव वर्त्तमान **(सहसा)** बलेन **(प्र)** **(असि)** **(अन्यान्)**॥८॥

**अन्वय:**-हे अग्ने! दमूना: कविप्रशस्त: शिवोऽतिथि: सहस्रशृङ्गो वृषभस्तदोजा मार्जाल्योऽग्निरिव भवान् स्वे प्र मृज्यते स सहसा विश्वान्नोऽस्मानन्यांश्च प्रक्षन्नसि तं वयं सेवेमहि॥८॥

**भावार्थ:**-त एवाऽतिथय: स्युर्ये दान्ता मङ्गलाचारा धर्मिष्ठा विद्वांसो जितेन्द्रिया: सर्वेषां प्रियसाधनरुचयो भवेयु:। यथाऽग्नि: सर्वशोधकोऽस्ति तथैव सर्वजगत्पवित्रकरा अतिथय: सन्ति॥८॥

**पदार्थ:**-हे **(अग्ने)** अग्नि के सदृश वर्तमान **(दमूना:)** इन्द्रियों को वश में रखने वाले **(कविप्रशस्त:)** विद्वानों से प्रशंसा करने योग्य अथवा विद्वानों में प्रशंसा को प्राप्त **(शिव:)** मङ्गलस्वरूप वा मङ्गल करने वाले **(अतिथि:)** जिनकी आने की कोई तिथि नियत विद्यमान न हो **(सहस्रशृङ्ग:)** जो हजारों शृङ्गों के तुल्य तेजों से युक्त **(वृषभ:)** बलिष्ठ और वृष्टि करने वाले **(तदोजा:)** जिनका वही पराक्रम **(मार्जाल्य:)** जो अत्यन्त शुद्ध करने वाले अग्नि के सदृश आप **(स्वे)** अपने में **(प्र, मृज्यते)** शुद्ध किये जाते हैं, वह **(सहसा)** बल से **(विश्वान्)** सम्पूर्ण **(न:)** हम लोगों की तथा **(अन्यान्)** अन्यों की रक्षा करते हुए **(असि)** विद्यमान हो, उनकी हम लोग सेवा करें॥८॥

**भावार्थ:**-वे ही अतिथि होवें जो इन्द्रियों के दमन करने और मङ्गलाचरण करने वाले धर्म्मिष्ठ विद्वान् और सब के प्रिय साधन में प्रीति करने वाले होवें और जैसे अग्नि सब का शुद्ध करने वाला है, वैसे ही सम्पूर्ण जगत् के पवित्र करने वाले अतिथि जन हैं॥८॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**प्र स॒द्यो अ॑ग्ने॒ अत्ये॑ष्य॒न्याना॒विर्यस्मै॒ चारु॑तमो ब॒भूथ॑।**

**ई॒ळेन्यो॑ वपु॒ष्यो॑ वि॒भावा॑ प्रि॒यो वि॒शामति॑थि॒र्मानु॑षीणाम्॥९॥**

**प्र। स॒द्यः। अ॒ग्ने॒। अति॑। ए॒षि॒। अ॒न्यान्। आ॒विः। यस्मै॑। चारु॑ऽतमः। ब॒भूथ॑। ई॒ळेन्यः॑। व॒पु॒ष्यः॑। वि॒भाऽवा॑। प्रि॒यः। वि॒शाम्। अति॑थिः। मानु॑षीणाम्॥९॥**

**पदार्थ:**-**(प्र)** **(सद्य:)** समानेऽहनि **(अग्ने)** विद्वन् **(अति)** उल्लङ्घने **(एषि)** **(अन्यान्)** पूर्वोपदिष्टान् **(आवि:)** प्राकट्ये **(यस्मै)** **(चारुतम:)** अतिशयेन सुशील: सुन्दर: **(बभूथ)** भवसि **(ईळेन्य:)** प्रशंसनीयधर्म्यकर्मा **(वपुष्य:)** वपुषि सुन्दरे रूपे भव: **(विभावा)** विशेषेण भानवान् **(प्रिय:)** कमनीय: सेवनीयो वा **(विशाम्)** प्रजानाम् **(अतिथि:)** सर्वत्र भ्रमणकर्त्ता **(मानुषीणाम्)** मनुष्यादि-रूपाणाम्॥९॥

**अन्वय:**-हे अग्ने! यस्मै त्वमाविर्बभूथ स ईळेन्यो वपुष्यो विभावा चारुतमो मानुषीणां विशां प्रियोऽतिथि: प्र भवति यतस्त्वमन्यान् सद्योऽत्येषि स भवानस्माभि: सत्कर्तव्योऽस्ति॥९॥

**भावार्थ:**-ये मनुष्या नित्यं भ्रमन्ति प्राप्तानुपदिश्याऽप्राप्तानुपदेशाय गच्छन्ति सर्वेषां हितैषिणो महाविद्वांस आप्ताः सन्ति त एवाऽतिथयो भवितुमर्हन्ति॥९॥

**पदार्थ:**-हे **(अग्ने)** विद्वन्! **(यस्मै)** जिसके लिये आप **(आविः)** प्रकट **(बभूथ)** होते हो वह **(ईळेन्यः)** प्रशंसा करने योग्य धर्म्मयुक्त कर्म्म करने वाला **(वपुष्यः)** सुन्दर रूप में प्रसिद्ध **(विभावा)** विशेष कान्तियुक्त **(चारुतमः)** अत्यन्त सुशील और सुन्दर और **(मानुषीणाम्)** मनुष्यादिरूप **(विशाम्)** प्रजाओं को **(प्रियः)** कामना वा सेवा करने योग्य **(अतिथिः)** सर्वत्र घूमने वाला **(प्र)** समर्थ होता है, जिस कारण आप **(अन्यान्)** प्रथम उपदेश दिये हुओं को **(सद्यः)** तुल्य दिन में **(अति, एषि)** उल्लङ्घन करके प्राप्त होते हो, वह आप हम लोगों से सत्कार करने योग्य हो॥९॥

**भावार्थ:**-जो मनुष्य नित्य भ्रमण करते और प्राप्त हुए जनों को उपदेश कर और नहीं प्राप्त हुओं को उपदेश के लिये प्राप्त होते तथा सब के हितैषी बड़े विद्वान् और यथार्थवादी हैं, वे ही अतिथि होने के योग्य हैं॥९॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**तुभ्यं॑ भरन्ति क्षि॒तयो॑ यविष्ठ ब॒लिम॑ग्ने॒ अन्ति॑त॒ ओत दू॒रात्।**

**भन्दि॑ष्ठस्य सुम॒तिं चि॑किद्धि बृ॒हत्ते॑ अग्ने॒ महि॒ शर्म॑ भ॒द्रम्॥१०॥**

**तुभ्य॑म्। भ॒र॒न्ति॒। क्षि॒तय॑ः। य॒वि॒ष्ठ॒। ब॒लिम्। अ॒ग्ने॒। अन्ति॑तः। आ। उ॒त। दू॒रात्। आ। भन्दि॑ष्ठस्य। सु॒ऽम॒तिम्। चि॒कि॒द्धि॒। बृ॒हत्। ते॒। अ॒ग्ने॒। महि॑। शर्म॑। भ॒द्रम्॥१०॥**

**पदार्थ:**-**(तुभ्यम्)** **(भरन्ति)** धरन्ति **(क्षितयः)** गृहस्था मनुष्याः **(यविष्ठ)** अतिशयेन युवन् **(बलिम्)** भक्ष्यभोज्यादिपदार्थसमुदायम् **(अग्ने)** विद्युद्वद्व्याप्तविद्य **(अन्तितः)** समीपतः **(आ)** **(उत)** **(दूरात्)** **(आ)** **(भन्दिष्ठस्य)** अतिशयेन कल्याणाचरणस्य **(सुमतिम्)** शोभनां प्रज्ञाम् **(चिकिद्धि)** विजानीहि **(बृहत्)** महत् **(ते)** तव **(अग्ने)** पवित्रकर्त्तः **(महि)** पूजनीयम् **(शर्म)** गृहं सुखं वा **(भद्रम्)** सेवनीयसुखप्रदम्॥१०॥

**अन्वयः**-हे यविष्ठाऽग्ने! यतस्त्वमन्तित उत दूरादागत्य सर्वान् सत्यमुपदिशसि तस्मात् क्षितयस्तुभ्यं बलिमाभरन्ति। हे अग्ने! त्वं भन्दिष्ठस्य सुमतिमा चिकिद्धीदं ते महि बृहद्भद्रं शर्मास्तु॥१०॥

**भावार्थ:**-यस्मादतिथयः सर्वेषां मनुष्याणां सत्योपदेशेन परममुपकारं कुर्वन्ति तस्मात्तेऽन्नपानस्थानप्रियवचनधनादिना सत्कर्त्तव्या भवन्ति॥१०॥

**पदार्थ:**-हे **(यविष्ठ)** अतिशय युवा **(अग्ने)** बिजली के सदृश विद्या में व्याप्त जिससे आप **(अन्तितः)** समीप से **(उत)** और **(दूरात्)** दूर से आकर सब को सत्य का उपदेश करते हो, इससे **(क्षितयः)** गृहस्थ मनुष्य **(तुभ्यम्)** आपके लिये **(बलिम्)** खाने और पीने योग्यादि पदार्थों के समूह को



www.9009.co.in

**(आ, भरन्ति)** धारण करते हैं और हे **(अग्ने)** पवित्र कार्य्य करने वाले! आप **(भन्दिष्ठस्य)** अत्यन्त श्रेष्ठ आचरण करने वाले की **(सुमतिम्)** श्रेष्ठ बुद्धि को **(आ, चिकिद्धि)** विशेष करके जानिये और यह **(ते)** आपका **(महि)** सत्कार करने योग्य **(बृहत्)** बड़ा **(भद्रम्)** सेवन करने योग्य सुख देने वाला **(शर्म)** गृह वा सुख हो॥१०॥

**भावार्थः**-जिससे अतिथि जन सब मनुष्यों के सत्य उपदेश से परम उपकार को करते हैं, इससे वे अन्न, पान, स्थान, प्रिय वचन और धन आदि से सत्कार करने योग्य होते हैं॥१०॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**आद्य रथं भानुमो भानुमन्तमग्ने तिष्ठ यजतेभिः समन्तम्।**

**विद्वान् पथीनामुर्व१न्तरिक्षमेह देवान् हविरद्याय वक्षि॥११॥**

**आ। अद्य। रथम्। भानुऽमः। भानुऽमन्तम्। अग्ने। तिष्ठ। यजतेभिः। सम्ऽअन्तम्। विद्वान्। पथीनाम्। उरु। अन्तरिक्षम्। आ। इह। देवान्। हविःऽअद्याय। वक्षि॥११॥**

**पदार्थः**-**(आ)** समन्तात् **(अद्य)** इदानीम् **(रथम्)** रमणीयं यानम् **(भानुमः)** भानवन् **(भानुमन्तम्)** दीप्तिमन्तम् **(अग्ने)** विद्वान् **(तिष्ठ)** **(यजतेभिः)** सङ्गतैरश्वादिभिः संयुक्तम् **(समन्तम्)** सर्वतो दृढाङ्गम् **(विद्वान्)** **(पथीनाम्)** मार्गाणाम् **(उरु)** व्यापकम् **(अन्तरिक्षम्)** **(आ)** **(इह)** **(देवान्)** विदुषोऽतिथीन् **(हविरद्याय)** अत्तुं योग्यायाऽन्नाद्याय **(वक्षि)** वहसि॥११॥

**अन्वयः**-हे भानुमोऽग्ने! त्वमिहाद्य यजतेभिस्सह समन्तं भानुमन्तं रथमा तिष्ठ तेन विद्वांस्त्वं पथीनामुर्वन्तरिक्षं हविरद्याय देवान् यत आ वक्षि तस्मादस्माभिः सत्कर्त्तव्योऽसि॥११॥

**भावार्थः**-गृहस्थैर्दूरस्थानप्युत्तमानतिथीनुत्तमेषु यानेषु संस्थाप्योपदेशायाऽऽनेया अन्नादिना सत्कर्त्तव्याश्च॥११॥

**पदार्थः**-हे **(भानुमः)** कान्ति वाले **(अग्ने)** विद्वन्! आप **(इह)** यहाँ **(अद्य)** इस समय **(यजतेभिः)** प्राप्त हुए घोड़े आदिकों से संयुक्त **(समन्तम्)** सब प्रकार दृढ़ अवयवों वाले **(भानुमन्तम्)** कान्तियुक्त **(रथम्)** सुन्दर वाहन पर **(आ)** अच्छे प्रकार **(तिष्ठ)** विराजिये इससे **(विद्वान्)** विद्यायुक्त आप **(पथीनाम्)** मार्गों के **(उरु)** व्यापक **(अन्तरिक्षम्)** अन्तरिक्ष को और **(हविरद्याय)** खाने योग्य अन्न आदि के लिये **(देवान्)** विद्वान् अतिथियों को जिससे **(आ, वक्षि)** अच्छे प्रकार पहुँचाते हो, इससे हम लोगों से सत्कार करने योग्य हो॥११॥

**भावार्थः**-गृहस्थों को चाहिये कि दूर स्थित भी उत्तम अतिथियों को उत्तम वाहनों पर बैठाकर उपदेश के लिये लावें और अन्न आदि से उनका सत्कार करें॥११॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**



www.9009.co.in

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अवो॑चाम क॒वये॒ मेध्या॑य॒ वचो॑ व॒न्दारु॑ वृष॒भाय॒ वृष्णे॑।**

**गवि॑ष्ठिरो॒ नम॑सा॒ स्तोम॑म॒ग्नौ दि॒वी॑व रु॒क्मम॑रु॒व्यञ्च॒मश्रे॑त्॥१२॥१३॥**

**अवो॑चाम। क॒वये॑। मेध्या॑य। वचः॑। व॒न्दारु॑। वृ॒ष॒भाय॑। वृष्णे॑। गवि॑ष्ठिरः। नम॑सा। स्तोम॑म्। अ॒ग्नौ। दि॒विऽइ॑व। रु॒क्मम्। उ॒रु॒ऽव्यञ्च॑म्। अ॒श्रे॒त्॥१२॥**

**पदार्थः**-(**अवोचाम**) उपदिशेम (**कवये**) विदुषे (**मेध्याय**) पवित्राय (**वचः**) (**वन्दारु**) प्रशंसनीयं धर्म्यम् (**वृषभाय**) बलिष्ठाय (**वृष्णे**) सत्योपदेशवर्षकाय (**गविष्ठिरः**) यो गवि सुशिक्षितायां वाचि तिष्ठति (**नमसा**) सत्कारेणान्नादिना वा (**स्तोमम्**) श्लाघनीयम् (**अग्नौ**) पावके (**दिवीव**) यथा सूर्ये (**रुक्मम्**) रुचिकरं भास्वरम् (**उरुव्यञ्चम्**) बहुव्याप्तिमन्तम् (**अश्रेत्**) आश्रयेत्॥१२॥

**अन्वयः**-हे राजादयो मनुष्या अतिथयो! वयं यो गविष्ठिरो नमसा दिवीवाग्नौ रुक्ममुरुव्यञ्चं स्तोममश्रेत् तस्मै वृष्णे वृषभाय मेध्याय कवये वन्दारु वचोऽवोचाम॥१२॥

**भावार्थः**-तानेव विद्वांसोऽतिथयो विशिष्टमुपदिशन्तु ये पवित्रात्मानो विद्याप्रियाः सत्क्रियां जिज्ञासवो भवेयुर्ये चातो विपरीतास्तानधिकारयोग्यतामुपदेशेन प्रापय्याऽधिकारिणः सम्पादयेयुरिति॥१२॥

अत्रोपदेश्योपदेष्टृगुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति प्रथम सूक्तं त्रयोदशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे राजा आदि मनुष्यो अतिथि! हम लोग जो (**गविष्ठिरः**) उत्तम प्रकार शिक्षित वाणी में स्थित (**नमसा**) सत्कार वा अन्न आदि से (**दिवीव**) जैसे सूर्य्य में वैसे (**अग्नौ**) अग्नि में (**रुक्मम्**) प्रीतिकारक और प्रकाशयुक्त (**उरुव्यञ्चम्**) बहुत व्यापक और (**स्तोमम्**) प्रशंसा करने योग्य का (**अश्रेत्**) आश्रय करें उस (**वृष्णे**) सत्य उपदेश की वृष्टि करने वाले (**वृषभाय**) बलिष्ठ (**मेध्याय**) पवित्र (**कवये**) विद्वान् जन के लिये (**वन्दारु**) प्रशंसा करने योग्य और धर्म्मसम्बन्धी (**वचः**) वचन का (**अवोचाम**) उपदेश करें॥१२॥

**भावार्थः**-उन पुरुषों को ही विद्वान् अतिथि जन विशेष उपदेश देवें कि जो पवित्रात्मा विद्या में प्रीति करने और उत्तम क्रियाओं के जानने की इच्छा करने वाले होवें और जो इन बातों से विपरीत अर्थात् रहित हों उनको अधिकार की योग्यता अर्थात् विशेष उपदेश के समझने का सामर्थ्य साधारण उपदेश के द्वारा प्राप्त करा के अधिकारी करें॥१२॥

इस सूक्त में उपदेश सुनने और उपदेश के सुनाने वाले का गुण-वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह प्रथम सूक्त और तेरहवां वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

**अथ द्वादशर्चस्य द्वितीयस्य सूक्तस्य १, ३-८, १०-१२ कुमार आत्रेयो वृशो वा जार उभौ वा। २, ९ वृशो जार ऋषिः। अग्निर्देवता। १, ३, ४, ७, ८ त्रिष्टुप्। ५, ९, १० निचृत्त्रिष्टुप्। ११ विराट्त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः। २ स्वराट्पङ्क्तिः। ६ भुरिक् पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः। १२ भुरिगतिजगती छन्दः। निषादः स्वरः॥**

**अथ युवावस्थायां विवाहविषयमाह॥**

अब बारह ऋचा वाले द्वितीय सूक्त का आरम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में युवावस्था में विवाह करने के विषय को कहते हैं॥

**कुमारं माता युवतिः समुब्धं गुहा बिभर्ति न ददाति पित्रे।**
**अनीकमस्य न मिनज्जनासः पुरः पश्यन्ति निहितमरतौ॥ १॥**

**कुमारम्। माता। युवतिः। सम्ऽउब्धम्। गुहा। बिभर्ति। न। ददाति। पित्रे। अनीकम्। अस्य। न। मिनत्। जनासः। पुरः। पश्यन्ति। निऽहितम्। अरतौ॥ १॥**

**पदार्थः**-(**कुमारम्**) (**माता**) (**युवतिः**) पूर्णावस्था सती कृतविवाहा (**समुब्धम्**) समत्वेन गूढम् (**गुहा**) गुहायां गर्भाशये (**बिभर्ति**) (**न**) (**ददाति**) (**पित्रे**) जनकाय (**अनीकम्**) बलं सैन्यम् (**अस्य**) (**न**) निषेधे (**मिनत्**) हिंसत् (**जनासः**) विद्वांसः (**पुरः**) (**पश्यन्ति**) (**निहितम्**) स्थितम् (**अरतौ**) अरमणवेलायाम्॥ १॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथा युवतिर्माता समुब्धं कुमारं गुहा बिभर्ति पित्रे न ददात्यस्यानीकं न मिनदरतौ निहितं जनासः पुरः पश्यन्ति तथैव यूयमाचरत॥ १॥

**भावार्थः**-यदि कुमाराः कुमार्यश्च ब्रह्मचर्य्येण विद्यामधीत्य सन्तानोत्पत्तिं विज्ञाय पूर्णायां युवावस्थायां स्वयंवरं विवाहं कृत्वा सन्तानोत्पत्तिं कुर्वन्ति तर्हि ते सदाऽऽनन्दिता भवन्ति॥ १॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे (**युवतिः**) पूर्ण अवस्था अर्थात् विवाह करने योग्य अवस्थावाली होकर जिस स्त्री ने विवाह किया ऐसी (**माता**) माता (**समुब्धम्**) तुल्यता से ढपे हुए (**कुमारम्**) कुमार को (**गुहा**) गर्भाशय में (**बिभर्ति**) धारण करती और (**पित्रे**) उस पुत्र के पिता के लिये (**न**) नहीं (**ददाति**) देती है (**अस्य**) इस पिता के (**अनीकम्**) समुदायबल को अर्थात् (**न**) जो नहीं (**मिनत्**) नाश करने वाला होता हुआ (**अरतौ**) रमणसमय से अन्यसमय में (**निहितम्**) स्थित उसको (**जनासः**) विद्वान् जन (**पुरः**) पहिले (**पश्यन्ति**) देखते हैं, वैसा ही आप लोग आचरण करो॥ १॥



www.9009.co.in

**भावार्थ:**-जो कुमार और कुमारी ब्रह्मचर्य्य से विद्या पढ़के और सन्तान के उत्पन्न करने की रीति को जान के पूर्ण अवस्था अर्थात् विवाह करने के योग्य अवस्था होने पर स्वयंवर नामक विवाह को करके सन्तान की उत्पत्ति करते हैं तो वे सदा आनन्दित होते हैं॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**कमे॒तं त्वं यु॑वते कुमा॒रं पेषी॑ बिभर्षि॒ महि॑षी जजान।**

**पू॒र्वीर्हि गर्भः॑ श॒रदो॑ व॒वर्धापश्यं॑ जा॒तं यदसू॑त मा॒ता॥२॥**

**कम्। ए॒तम्। त्वम्। यु॒व॒ते॒। कु॒मा॒रम्। पेषी॑। बि॒भ॒र्षि॒। महि॑षी। ज॒जा॒न॒। पू॒र्वीः। हि। गर्भः॑। श॒रदः॑। व॒वर्ध॑। अप॑श्यम्। जा॒तम्। यत्। असू॑त। मा॒ता॥२॥**

**पदार्थ:**-**(कम्)** **(एतम्)** कृतब्रह्मचर्य्यम् **(त्वम्)** **(युवते)** ब्रह्मचर्य्येणाधीतविद्ये पूर्णयुवावस्थे **(कुमारम्)** बालकम् **(पेषी)** पेष्याकारं गर्भाशयस्थं वीर्यं कृतवती **(बिभर्षि)** **(महिषी)** महारूपबलशीलादियोगेन पूजनीया **(जजान)** जायते **(पूर्वीः)** प्राचीनाः **(हि)** यतः **(गर्भः)** गर्भाशयं प्राप्तः **(शरदः)** शरदृतून् **(ववर्ध)** वर्धते **(अपश्यम्)** पश्यामि **(जातम्)** उत्पन्नम् **(यत्)** यम् **(असूत)** सूते **(माता)** जननी॥२॥

**अन्वयः**-हे युवते पेषी महिषी! त्वं कमेतं कुमारम् बिभर्षि माता यद्यमसूत जातमहमपश्यं स गर्भः पूर्वीः शरदो हि ववर्धातो जजान॥२॥

**भावार्थ:**-हे कन्या! यूयं बाल्यावस्थायामाशेषषोडशाद् वर्षात् प्रागापञ्चविंशाद् वर्षाच्च कुमारा विवाहं मा कुरुत। य एवं ब्रह्मचर्यानन्तरं विवाहं कुर्युस्तेषामपत्यानि रूपगुणान्वितानि चिरञ्जीवीनि शिष्टसम्मतानि जायन्ते॥२॥

**पदार्थ:**-हे **(युवते)** ब्रह्मचर्य्य से पढ़ी विद्या जिसने ऐसी पूर्ण अवस्था वाली **(पेषी)** पेष्याकार अर्थात् डिब्बी के आकार करि गर्भाशय मे वीर्य्य को स्थित करने वाली **(महिषी)** महान् रूप, बल और उत्तम स्वभाव आदि के योग से आदर करने योग्य **(त्वम्)** तू **(कम्)** किस **(एतम्)** किया है ब्रह्मचर्य्य जिसने ऐसे इस **(कुमारम्)** बालक का **(बिभर्षि)** पालन करती है और **(माता)** माता **(यत्)** जिसको **(असूत)** उत्पन्न करती तथा **(जातम्)** उत्पन्न हुए को मैं **(अपश्यम्)** देखता हूँ वह **(गर्भः)** गर्भाशय में प्राप्त **(पूर्वीः)** प्राचीन **(शरदः)** शरद् ऋतुओं तक निरन्तर **(हि)** जिससे **(ववर्ध)** बढ़ता है, उससे **(जजान)** उत्पन्न होता है॥२॥

**भावार्थ:**-हे कन्याओ! तुम बाल्यावास्था में सोलह वर्ष के प्रथम और पच्चीस वर्ष के प्रथम कुमारजनो! विवाह को न करो। जो इस प्रकार से ब्रह्मचर्य्य के करने के अनन्तर विवाह को करें उनके



www.9009.co.in

सन्तान उत्तम रूप और गुणों से युक्त बहुत कालपर्य्यन्त जीवने वाले और शिष्ट जनों से उत्तम प्रकार मान पाने वाले होते हैं॥२॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**हिरण्यदन्तं शुचिवर्णमारात् क्षेत्रादपश्यमायुधा मिमानम्।**

**ददानो अस्मा अमृतं विपृक्वत्किं मामनिन्द्राः कृणवन्ननुक्थाः॥३॥**

**हिरण्यऽदन्तम्। शुचिऽवर्णम्। आरात्। क्षेत्रात्। अपश्यम्। आयुधा। मिमानम्। ददानः। अस्मै। अमृतम्। विपृक्वत्। किम्। माम्। अनिन्द्राः। कृणवन्। अनुक्थाः॥३॥**

**पदार्थः-(हिरण्यदन्तम्)** हिरण्येन सुवर्णेन तेजसा वा तुल्या दन्ता यस्य तम् **(शुचिवर्णम्)** पवित्रस्वरूपमतिसुन्दरं वा **(आरात्)** समीपात् **(क्षेत्रात्)** संस्कृताया भार्यायाः **(अपश्यम्)** पश्येयम् **(आयुधा)** आयुधानि **(मिमानम्)** धर्त्तारम् **(ददानः)** दाता **(अस्मै) (अमृतम्)** मोक्षसुखम् **(विपृक्वत्)** विशेषेण सम्बद्धम् **(किम्) (माम्) (अनिन्द्राः)** अनैश्वर्य्याः **(कृणवन्)** कुर्युः **(अनुक्थाः)** अविद्वांसः॥३॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! योऽहं कृतब्रह्मचर्य्ययोः क्षेत्राज्जातं हिरण्यदन्तं शुचिवर्णमायुधा मिमानमारादपश्यमस्मै विपृक्वदमृतं ददानोऽहमस्मि तं मामनिन्द्रा अनुक्थाः किं कृणवन्॥३॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! पूर्णब्रह्मचर्य्यशिक्षाविद्यायुवावस्थापरस्परप्रीतिभिर्विना सन्तानानां विवाहं मा कुर्वन्त्वेवं कुर्वाणाः सर्वेऽत्युत्तमान्यपत्यानि प्राप्यातीवानन्दं लभन्ते य एवं जायन्ते तत्समीपे दारिद्र्यं मूर्खता दरिद्रा अविद्वांसो वा जनाः किमपि विघ्नं कर्त्तुं न शक्नुवन्ति॥३॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो मैं, किया ब्रह्मचर्य्य जिन्होंने ऐसे स्त्री पुरुषों में से **(क्षेत्रात्)** संस्कार की हुई भार्या स्त्री से उत्पन्न हुए **(हिरण्यदन्तम्)** सुवर्ण वा तेज के तुल्य दांत वाले **(शुचिवर्णम्)** पवित्र स्वरूपयुक्त अतिसुन्दर और **(आयुधा)** शस्त्र और अस्त्रों को **(मिमानम्)** धारण करने वाले को **(आरात्)** समीप से **(अपश्यम्)** देखूं और **(अस्मै)** इसके लिये **(विपृक्वत्)** विशेष करके सम्बद्ध **(अमृतम्)** मोक्षसुख को **(ददानः)** देता हुआ मैं हूँ उस **(माम्)** मुझ को **(अनिन्द्राः)** ऐश्वर्य्य से रहित **(अनुक्थाः)** अविद्वान् जन **(किम्)** क्या **(कृणवन्)** करें॥३॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! पूर्ण शास्त्र नियत ब्रह्मचर्य्य, शिक्षा, विद्या, युवावस्था और परस्पर प्रीति के बिना सन्तानों का विवाह न करें। इस प्रकार करते हुए सब जन अति उत्तम सन्तानों को प्राप्त होकर अति ही आनन्द को प्राप्त होते हैं, जो इस प्रकार प्रसिद्ध होते हैं, उनके समीप दारिद्र्य मूर्खता वा दरिद्री और अविद्वान् जन कुछ भी विघ्न नहीं कर सकते हैं॥३॥

**पुनर्विवाहसम्बन्धिसन्तानविषयमाह॥**

फिर विवाहसम्बन्धी सन्तानविषय को कहते हैं॥



www.9009.co.in

क्षेत्रादपश्यं सनुतश्चरन्तं सुमद्यूथं न पुरु शोभमानम्।

न ता अगृभ्रन्नजनिष्ट हि षः पलिक्नीरिद्युवतयो भवन्ति॥४॥

**क्षेत्रात्। अपश्यम्। सनुतरिति। चरन्तम्। सुऽमत्। यूथम्। न। पुरु। शोभमानम्। न। ताः। अगृभ्रन्। अजनिष्ट। हि। सः। पलिक्नीः। इत्। युवतयः। भवन्ति॥४॥**

**पदार्थः**-(**क्षेत्रात्**) संस्कृताया भार्यायाः (**अपश्यम्**) पश्यामि (**सनुतः**) सनातनात् (**चरन्तम्**) व्यवहरन्तम् (**सुमत्**) स्वयमेव (**यूथम्**) सेनासमूहम् (**न**) इव (**पुरु**) बहु (**शोभमानम्**) (**न**) (**ताः**) (**अगृभ्रन्**) गृह्णन्ति (**अजनिष्ट**) जायते (**हि**) (**सः**) (**पलिक्नीः**) श्वेतकेशाः (**इत्**) एव (**युवतयः**) (**भवन्ति**)॥४॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यद्यहं यं क्षेत्राज्जातं चरन्तं सुमत् पुरु शोभमानं न यूथं न बलिष्ठं सनुतोऽपश्यं स सुख्यजनिष्ट या ब्रह्मचारिण्यः कन्याः सुनियमाः सत्यो युवावस्थायाः प्राक् पतीनगृभ्रँस्ता हि युवतयः पुत्रपौत्रातिसुखयुक्ता इत् पलिक्नीर्भवन्ति॥४॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यदि भवन्तः स्वसन्तानान् दीर्घं ब्रह्मचर्य्यं कारयेयुस्तर्हि ते धर्मिष्ठाः प्रज्ञायुक्ताश्चिरञ्जीविनः सन्तो युष्मभ्यमतीव सुखं प्रयच्छेयुः॥४॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो मैं जिस (**क्षेत्रात्**) संस्कार की हुई स्त्री से उत्पन्न (**चरन्तम्**) व्यवहार करते हुए (**सुमत्**) आप ही (**पुरु**) बहुत (**शोभमानम्**) शोभायुक्त [के] (**न**) समान वा (**यूथम्**) सेनासमूह के (**न**) समान बलिष्ठ को (**सनुतः**) सनातन से (**अपश्यम्**) देखता हूं (**सः**) वह सुखी (**अजनिष्ट**) होता है और जो ब्रह्मचारिणी कन्यायें उत्तम नियमों वाली हुई युवावस्था के प्रथम पतियों को (**अगृभ्रन्**) ग्रहण करती हैं (**ताः**) वे (**हि**) ही (**युवतयः**) युवति हुईं पुत्र पौत्रों के अतिसुख के युक्त (**इत्**) और (**पलिक्नीः**) श्वेत केशों वाली अर्थात् वृद्धावस्थायुक्त (**भवन्ति**) होती हैं॥४॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! यदि आप लोग अपने सन्तानों को अतिकाल पर्यन्त ब्रह्मचर्य्य करावें तो वे धर्मिष्ठ बुद्धियुक्त और चिरञ्जीवी हुए आप लोगों के लिये अतीव सुख देवें॥४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

के मे मर्यकं वि यवन्त गोभिर्न येषां गोपा अरणश्चिदास।

य ईं जगृभुरव ते सृजन्त्वाजाति पश्व उप नश्चिकित्वान्॥५॥

**के। मे। मर्यकम्। वि। यवन्त। गोभिः। न। येषाम्। गोपाः। अरणः। चित्। आस। ये। ईम्। जगृभुः। अव। ते। सृजन्तु। आ। अजाति। पश्वः। उप। नः। चिकित्वान्॥५॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः-(के)** **(मे)** मम **(मर्यकम्)** मर्यम् **(वि)** **(यवन्त)** वियोजयेयुः **(गोभिः)** **(न)** इव **(येषाम्)** **(गोपाः)** गवां पालकाः **(अरणः)** सङ्गन्ता **(चित्)** अपि **(आस)** भवति **(ये)** **(ईम्)** विद्याम् **(जगृभुः)** गृह्णीयुः **(अव)** **(ते)** **(सृजन्तु)** **(आ)** **(अजाति)** समन्ताज्जातिर्जननं यस्मिन् कुले तत्। **(पश्वः)** पशून् **(उप)** **(नः)** अस्माकम् **(चिकित्वान्)**॥५॥

**अन्वयः**-हे विद्वांसः! के गोपा गोभिर्न मे मर्यकं वि यवन्त येषां स चिदरण आस ये पश्वो जगृभुस्त आजात्युप सृजन्तु य ईं जगृभुस्ते दुःखमव सृजन्तु यश्चिकित्वानुपसृजतु सो नोऽस्माकं हितैषी वर्त्तत इति विज्ञापयत॥५॥

**भावार्थः**-अत्रोमालङ्कारः। मनुष्यैर्विदुषः प्रतीदं तावत्प्रष्टव्यं केऽस्माकमल्पप्रज्ञानान् सन्तानान् विशालधियः कर्त्तुं शक्नुयुस्त इदं समादध्युर्य आप्तास्त एवैतत्कर्त्तुं शक्नुयुर्नेतरे॥५॥

**पदार्थः**-हे विद्वानो! **(के)** कौन **(गोपाः)** गौओं के पालन करने वाले **(गोभिः)** गौओं के **(न)** सदृश **(मे)** मेरे **(मर्यकम्)** अल्प मनुष्य को **(वि, यवन्त)** दूर करें और **(येषाम्)** जिनका वह **(चित्)** निश्चित **(अरणः)** मिलने वाला **(आस)** होता है और **(ये)** जो **(पश्वः)** पशुओं को **(जगृभुः)** ग्रहण करें **(ते)** वे **(आ, अजाति)** अच्छे प्रकार सन्तानों की उत्पत्ति जिस कुल में उसको **(उप, सृजन्तु)** उत्पन्न करें और जो **(ईम्)** विद्या ग्रहण करें, वे दुःख को **(अव)** दूर करें और जो **(चिकित्वान्)** बुद्धिमान् उत्पन्न करता है वह **(नः)** हम लोगों का हितैषी है, यह समझाओ॥५॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। मनुष्यों को चाहिये कि विद्वानों के प्रति यह पूछें कौन हम लोगों के थोड़े ज्ञान वाले सन्तानों को उत्तम बुद्धि वाले कर सकें, वे विद्वान् यह उत्तर देवें कि जो यथार्थवादी हों, वे ही उक्त काम को कर सकें, अन्य जन नहीं॥५॥

**अथ विद्वद्विषयमाह॥**

अब विद्वद्विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**व॒सां राजा॑नं वस॒तिं जना॑ना॒मरा॑तयो॒ नि द॑धु॒र्मर्त्ये॑षु।**

**ब्र॒ह्मा॒ण्यत्रे॒रव॒ तं सृ॑जन्तु नि॒न्दि॒तारो॒ निन्द्या॑सो भवन्तु॥६॥१४॥**

**व॒साम्। राजा॑नम्। व॒स॒तिम्। जना॑नाम्। अरा॑तयः। नि। द॒धुः। मर्त्ये॑षु। ब्रह्मा॑णि। अत्रेः॑। अव॑। तम्। सृ॒जन्तु॒। नि॒न्दि॒तारः॑। निन्द्या॑सः। भ॒व॒न्तु॒॥६॥**

**पदार्थः-(वसाम्)** वसतां प्राणिनाम् **(राजानम्)** न्यायकारिणम् **(वसतिम्)** निवासम् **(जनानाम्)** सज्जनानाम् **(अरातयः)** अन्यायेनादातारः शत्रवः **(नि)** **(दधुः)** दधीरन् **(मर्त्येषु)** **(ब्रह्माणि)** महान्ति धनानि **(अत्रेः)** अविद्यमानत्रिविधदुःखस्य **(अव)** निषेधे **(तम्)** **(सृजन्तु)** निःसारयन्तु **(निन्दितारः)** गुणेषु दोषान् दोषेषु गुणान् स्थापयन्तः **(निन्द्यासः)** अधर्माचरणेन निन्दितुं योग्याः **(भवन्तु)**॥६॥

**अन्वयः**-यो वसां जनानां राजानं वसतिं जनयतु तं विद्वांसोऽव सृजन्तु ये निन्दितारो निन्द्यासोऽरातयो मर्त्येषु ब्रह्माणि नि दधुस्तेऽत्रेरपि दूरस्था भवन्तु॥६॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-हे मनुष्या! ये कुत्सितकर्माचाराः परद्रव्यापहर्त्तारो द्वेष्टारः स्युस्तान् दण्डयित्वा निर्जने देशे बध्नन्तु। ये च स्तावका धर्मिष्ठाः स्युस्तान् समीपे निवास्य सदा सत्कुर्वन्तु॥६॥

**पदार्थः**-जो **(वसाम्)** वसते हुए प्राणियों और **(जनानाम्)** सज्जन पुरुषों के **(राजानम्)** न्याय करने वाले को और **(वसतिम्)** निवास को प्रकट करे। **(तम्)** उसको विद्वान् जन **(अव, सृजन्तु)** न निकाल दे और जो **(निन्दितारः)** गुणों में दोषों और दोषों में गुणों का स्थापन करने वाले **(निन्द्यासः)** अधर्म के आचरण से निन्दा करने योग्य और **(अरातयः)** अन्याय से ग्रहण करने वाले शत्रुजन **(मर्त्येषु)** मरणधर्म्मा मनुष्यों में **(ब्रह्माणि)** बड़े धनों को **(नि, दधुः)** स्थापन करें वे **(अत्रेः)** तीन प्रकार के दुःख से रहित के भी दूर स्थित **(भवन्तु)** हों॥६॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो निकृष्ट कर्म्म करने और दूसरे के द्रव्य के हरने वाले द्वेषकर्त्ता हों, उनको दण्ड देकर निर्जन देश में बांधो और जो स्तुति करने वाले धर्म्मिष्ठ होवें, उनको समीप में निवास देकर सदा सत्कार करो॥६॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**शुन॑श्चि॒च्छेपं॒ निदि॑तं स॒हस्रा॒द् यूपा॑दमुञ्चो॒ अश॑मिष्ट॒ हि षः।**

**ए॒वास्मद॑ग्ने॒ वि मु॑मुग्धि॒ पाशा॑न् होत॑श्चिकित्व इ॒ह तू नि॒षद्य॑॥७॥**

**शुन॑ः। चि॒त्। शेप॑म्। निऽदि॑तम्। स॒हस्रा॑त्। यूपा॑त्। अ॒मु॒ञ्चः॒। अश॑मिष्ट। हि। सः। ए॒व। अ॒स्मत्। अ॒ग्ने॒। वि। मु॒मु॒ग्धि॒। पाशा॑न्। होत॒रिति॑। चि॒कि॒त्वः॒। इ॒ह। तु। नि॒ऽसद्य॑॥७॥**

**पदार्थः**-**(शुनःशेपम्)** सुखस्य प्रापकमिन्द्रियारामम् **(चित्)** अपि **(निदितम्)** निन्दितम् **(सहस्रात्)** असङ्ख्यात् **(यूपात्)** मिश्रितादमिश्रिताद् बन्धनात् **(अमुञ्चः)** मुच्याः **(अशमिष्ट)** शाम्यति **(हि)** यतः **(सः)** **(एव)** **(अस्मत्)** **(अग्ने)** विद्वन् **(वि)** **(मुमुग्धि)** विमोचय **(पाशान्)** बन्धनानि **(होतः)** **(चिकित्वः)** बुद्धिमन् **(इह)** युक्ते धर्म्ये व्यवहारे **(तू)** पुनः। अत्र **ऋचि तुनुघे**ति दीर्घः। **(निषद्य)** निषण्णो भूत्वा॥७॥

**अन्वयः**-हे अग्ने विद्वँस्त्वं सहस्राद् यूपान्निदितं शुनःशेपं चिदमुञ्चो हि यतः सोऽशमिष्टैव। हे होतश्चिकित्व! इह निषद्याऽस्मत् पाशाँस्तू वि मुमुग्धि॥७॥

**भावार्थः**-विदुषामिदमेवावश्यकं कृत्यमस्ति यत्सर्वान् मनुष्यानविद्याऽधर्म्माचरणात् पृथक्कृत्य विदुषो धार्मिकान् सम्पाद्य तेषां दुःखबन्धनान्मोचनं सततं कर्त्तव्यमिति॥७॥

**पदार्थः**-हे **(अग्ने)** विद्वन्! आप **(सहस्रात्)** असंख्य **(यूपात्)** मिले वा न मिले हुए बन्धन से **(निदितम्)** निन्दित **(शुनःशेपम्)** सुख के प्राप्त कराने और इन्द्रियाराम अर्थात् इन्द्रियों में रमण रखने वाले को **(चित्)** भी **(अमुञ्चः)** त्याग करो **(हि)** जिससे **(सः)** वह **(अशमिष्ट)** शान्त होता **(एव)** ही है।



www.9009.co.in

हे (**होत:**) हवन करने वाले (**चिकित्व**) बुद्धिमान्! (**इह**) यहाँ युक्तधर्म्म सम्बन्धी व्यवहार में (**निषद्य**) प्रवृत्त होकर (**अस्मत्**) हम लोगों से (**पाशान्**) संसाररूप बन्धनों को (**तू**) फिर (**वि, मुमुग्धि**) काटिये॥७॥

**भावार्थ:**-विद्वानों का यही आवश्यक कर्म्म है, जो सब मनुष्यों को अविद्या और अधर्म्माचरण से अलग कर विद्वान् धार्मिक बना उनका दु:खबन्धन छुड़ाना निरन्तर करना चाहिये॥७॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**हृणीयमानो अप हि मदैयेः प्र मे देवानां व्रतपा उवाच।**

**इन्द्रो विद्वाँ अनु हि त्वा चचक्ष तेनाहमग्ने अनुशिष्ट आगाम्॥८॥**

**हृणीयमानः। अप। हि। मत्। ऐयेः। प्र। मे। देवानाम्। व्रतऽपाः। उवाच। इन्द्रः। विद्वान्। अनु। हि। त्वा। चचक्ष। तेन। अहम्। अग्ने। अनुऽशिष्टः। आ। अगाम्॥८॥**

**पदार्थ:**-(**हृणीयमान:**) क्रोधं कुर्वन् (**अप**) (**हि**) खलु (**मत्**) (**ऐये:**) गच्छे: (**प्र**) (**मे**) मह्यम् (**देवानाम्**) विदुषाम् (**व्रतपा:**) सत्यरक्षक: (**उवाच**) उच्यात् (**इन्द्र:**) विद्यैश्वर्य्ययुक्त: (**विद्वान्**) (**अनु**) (**हि**) यत: (**त्वा**) त्वाम् (**चचक्ष**) कथयेत् (**तेन**) (**अहम्**) (**अग्ने**) त्रिदोषदाहक (**अनुशिष्ट:**) प्राप्तशिक्ष: (**आ**) (**अगाम्**) प्राप्नुयाम्॥८॥

**अन्वय:**-हे अग्ने! हृणीयमानस्त्वं हि मदपैयेर्यो हीन्द्रो विद्वाँस्त्वानु चचक्ष यो मे देवानां व्रतपा: सन् सत्यं प्रोवाच तेनाऽनुशिष्टोऽहं सत्यं बोधमागाम्॥८॥

**भावार्थ:**-ये मनुष्या दुष्टगुणकर्मस्वभावा: स्युस्ते दूरं रक्षणीया:। ये च धर्मिष्ठा: सत्यमुपदिशेयुस्तत्सङ्गेन शिष्टा भूत्वा सुखमाप्नुत॥८॥

**पदार्थ:**-हे (**अग्ने**) तीन दोषों के नाश करनेवाले! (**हृणीयमान:**) क्रोध करते हुए आप (**हि**) ही (**मत्**) मेरे समीप से (**अप, ऐये:**) जाइये और जो (**हि**) निश्चय (**इन्द्र:**) विद्या और ऐश्वर्य्य से युक्त (**विद्वान्**) विद्वान् (**त्वा**) आपको (**अनु, चचक्ष**) अनुकूल कहे और जो (**मे**) मेरे लिये (**देवानाम्**) विद्वानों के बीच (**व्रतपा:**) सत्य की रक्षा करने वाला हुआ सत्य को (**प्र, उवाच**) कहे (**तेन**) इससे (**अनुशिष्ट:**) शिक्षा को प्राप्त (**अहम्**) मैं सत्यबोध को (**आ, अगाम्**) प्राप्त होऊं॥८॥

**भावार्थ:**-जो मनुष्य दुष्ट गुण, कर्म, स्वभाव वाले हों वे दूर रखने योग्य हैं और जो धर्मिष्ठ सत्य का उपदेश करें, उनके सङ्ग से शिष्ट अर्थात् श्रेष्ठ होके सुख को प्राप्त होवें॥८॥

**पुनर्विद्वद्विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**वि ज्योतिषा बृहता भात्यग्निराविर्विश्वानि कृणुते महित्वा।**



www.9009.co.in

**प्रादेवीर्मायाः सहते दुरेवाः शिशीते शृङ्गे रक्षसे विनिक्षे॥९॥**

**वि। ज्योतिषा। बृहता। भाति। अग्निः। आविः। विश्वानि। कृणुते। महिऽत्वा। प्र। अदेवीः। मायाः। सहते। दुःऽएवाः। शिशीते। शृङ्गे इति। रक्षसे। विऽनिक्षे॥९॥**

**पदार्थः-(वि)** विशेषेण **(ज्योतिषा)** प्रकाशेन **(बृहता)** महता **(भाति)** प्रकाशते **(अग्निः)** सूर्यादिरूपेण पावकः **(आविः)** प्राकट्ये **(विश्वानि)** सर्वाणि वस्तूनि **(कृणुते)** **(महित्वा)** महत्त्वेन **(प्र)** **(अदेवीः)** अशुद्धाः **(मायाः)** छलादियुक्ता प्रज्ञाः **(सहते)** **(दुरेवाः)** दुष्टमेवः प्रापणं कर्म यासां ताः **(शिशीते)** तेजते **(शृङ्गे)** **(रक्षसे)** दुष्टानां विनाशय **(विनिक्षे)** विनाशाय॥९॥

**अन्वयः**-हे विद्वांसो! यथाग्निर्बृहता ज्योतिषा महित्वा विश्वान्याविष्कृणुते वि भाति प्र सहते शृङ्गे रक्षसे विनिक्षे शिशीते तथा दुरेवा अदेवीर्मायाः सर्वतो निवारयतः॥९॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यथा सूर्योऽन्धकारं निवार्य प्रकाशं जनयित्वा भयं निवारयति तथैव विद्वांसो गाढमज्ञानं निवार्य विद्यार्कं जनयित्वा सर्वेषामात्मनः प्रकाशयन्तु॥९॥

**पदार्थः**-हे विद्वानो! जैसे **(अग्निः)** सूर्य्य आदि रूप से अग्नि **(बृहता)** बड़े **(ज्योतिषा)** प्रकाश से **(महित्वा)** बड़प्पन से **(विश्वानि)** सम्पूर्ण वस्तुओं को **(आविः)** प्रकट **(कृणुते)** करता है **(वि)** विशेष करके **(भाति)** प्रकाशित होता है और **(प्र)** अत्यन्त **(सहते)** सहन करता है **(शृङ्गे)** शृङ्ग के निमित्त **(रक्षसे)** दुष्टों के विनाश के लिये **(विनिक्षे)** वा अन्य विनाश के लिये **(शिशीते)** प्रतापयुक्त होता है, वैसे **(दुरेवाः)** दुष्ट प्राप्त कराने रूप कर्म वाली **(अदेवीः)** अशुद्ध **(मायाः)** छल आदि से युक्त बुद्धियों को सब प्रकार से वारण कीजिये॥९॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे सूर्य अन्धकार का वारण कर और प्रकाश को उत्पन्न करके भय का निवारण करता है, वैसे ही विद्वान् जन घोर अज्ञान का निवारण करके विद्यारूप सूर्य को उत्पन्न करके सब के आत्माओं को प्रकाशित करें॥९॥

**अथ धनुर्वेददृष्टान्तेनाविद्यानिवारणमाह॥**

अब धनुर्वेद के दृष्टान्त से अविद्यानिवारण को कहते हैं॥

**उत स्वानासो दिवि षन्त्वग्नेऽस्तिग्मायुधा रक्षसे हन्तवा उ।**
**मदे चिदस्य प्र रुजन्ति भामा न वरन्ते परिबाधो अदेवीः॥१०॥**

**उत। स्वानासः। दिवि। सन्तु। अग्नेः। तिग्मऽआयुधाः। रक्षसे। हन्तवै। ऊँ इति। मदे। चित्। अस्य। प्र। रुजन्ति। भामाः। न। वरन्ते। परिऽबाधः। अदेवीः॥१०॥**

**पदार्थः-(उत)** **(स्वानासः)** उपदेशकाः **(दिवि)** विद्याप्रकाशे **(सन्तु)** **(अग्नेः)** पावकात् **(तिग्मायुधाः)** तीक्ष्णायुधाः **(रक्षसे)** दुष्टविनाशय **(हन्तवै)** हन्तुम् (उ) **(मदे)** आनन्दाय **(चित्)** **(अस्य)**



www.9009.co.in

**(प्र)** **(रुजन्ति)** आभञ्जन्ति **(भामाः)** क्रोधाः **(न)** इव **(वरन्ते)** स्वीकुर्वन्ति **(परिबाधः)** सर्वतो बाधनानि **(अदेवीः)** अप्रमदाः क्रियाः॥१०॥

**अन्वयः**-हे विद्वांसोऽग्नेऽस्तिग्मायुधाः स्वानासो दिवि वर्त्तमाना भवन्तो रक्षसे हन्तवै समर्थाः सन्तु। उतापि मदे प्रवृत्ताः सन्तु चिद्वस्य भामा न परिबाधोऽदेवीः प्र रुजन्ति वरन्ते ता निवारयन्तु॥१०॥

**भावार्थः**-हे विद्वांसो! यूयं यथाऽधीतधनुर्वेदाः शस्त्रास्त्रप्रक्षेपयुद्धकुशला आग्नेयास्त्रादिभिश्शत्रून् निवार्य विजयं प्रकाशयन्ति तथैव तीव्रविद्याध्यापनोपदेशाभ्यामविद्याप्रमादान्निवार्य विद्याशुभगुणान् प्रकाशयत॥१०॥

**पदार्थः**-हे विद्वानो! **(अग्नेः)** अग्नि से **(तिग्मायुधाः)** तीक्ष्ण आयुधयुक्त **(स्वानासः)** उपदेश करने वाले **(दिवि)** विद्या के प्रकाश में वर्त्तमान **(रक्षसे)** दुष्टों के विनाश करने के लिये **(हन्तवै)** हनने को समर्थ **(सन्तु)** हूजिये और **(उत)** भी **(मदे)** आनन्द के लिये प्रवृत्त हूजिये **(चित्, उ)** और भी **(अस्य)** इसके **(भामाः)** क्रोधों के **(न)** तुल्य **(परिबाधः)** सब ओर से बन्धनों को **(अदेवीः)** प्रमादरहित क्रियायें **(प्र, रुजन्ति)** सब प्रकार भङ्ग करती और **(वरन्ते)** स्वीकार करती हैं, उनका निवारण करो॥१०॥

**भावार्थः**-हे विद्वानो! आप लोग जैसे धनुर्वेद को पढ़े हुए शस्त्र और अस्त्रों के प्रक्षेप अर्थात् चलाने रूप युद्ध में चतुर जन अग्निसम्बन्धी अस्त्रादिकों से शत्रुओं का निवारण करके विजय को प्रकाशित करते हैं, वैसे ही अत्यन्त विद्या के पढ़ाने और उपदेश करने से अविद्याकृत प्रमादों का निवारण करके विद्याकृत श्रेष्ठ गुणों का प्रकाश करो॥१०॥

**पुनर्विद्वद्गुणानाह॥**

फिर विद्वानों के गुणों को कहते हैं॥

**एतं ते स्तोमं तुविजात विप्रो रथं न धीरः स्वपा अतक्षम्।**
**यदीदग्ने प्रति त्वं देव हर्याः स्वर्वतीरप एना जयेम॥११॥**

**एतम्। ते। स्तोमम्। तुविऽजात। विप्रः। रथम्। न। धीरः। सुऽअपाः। अतक्षम्। यदि। इत्। अग्ने। प्रति। त्वम्। देव। हर्याः। स्वःऽवतीः। अपः। एना। जयेम॥११॥**

**पदार्थः**-**(एतम्)** शुभगुणप्रकाशकम् **(ते)** तव **(स्तोमम्)** प्रशंसितव्यव्यवहारम् **(तुविजात)** बहुषु विद्वत्सु प्रसिद्ध **(विप्रः)** मेधावी **(रथम्)** रमणीययानम् **(न)** इव **(धीरः)** क्षमादिगुणान्वितो ध्यानकृत् **(स्वपाः)** सुष्ठुकर्मा **(अतक्षम्)** निर्ममे **(यदि)** **(इत्)** **(अग्ने)** विद्वन् **(प्रति)** **(त्वम्)** **(देव)** सकलविद्याप्रदातः **(हर्याः)** कमनीयाः **(स्वर्वतीः)** प्रशस्तसुखयुक्ताः **(अपः)** प्राणान् **(एना)** एनेन **(जयेम)**॥११॥

**अन्वयः**-हे तुविजाताग्ने! यथाहं ते स्वपा धीरो विप्रो नैतं रथमतक्षं तथा त्वमाचर। हे देव! यदि त्वं रथं रचयेस्तर्हीत्स्तोमं प्राप्नुयाः। यथा वयमेना हर्याः स्वर्वतीरपः प्रति जयेम तथा त्वमेता जय॥११॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यथा विपश्चितो धर्म्याः कामनाः कृत्वा जयिनो भवन्ति तथैव यूयमप्याचरत॥११॥

**पदार्थः**-हे **(तुविजात)** बहुत विद्वानों में प्रसिद्ध **(अग्ने)** विद्वन्! जैसे मैं **(ते)** आपका **(स्वपाः)** उत्तम कर्म्म करने वाला **(धीरः)** क्षमा आदि गुणों से युक्त और ध्यान करने वाला **(विप्रः)** बुद्धिमान् जन के **(न)** सदृश **(एतम्)** इस श्रेष्ठ गुणों के प्रकाशक **(रथम्)** सुन्दर वाहन को **(अतक्षम्)** बनाता हूं, वैसे **(त्वम्)** आचारण कीजिये और हे **(देव)** सम्पूर्ण विद्या के देने वाले! **(यदि)** जो आप वाहन को रचिये तो **(इत्)** ही **(स्तोमम्)** प्रशंसित व्यवहार जिसमें ऐसे सुख को प्राप्त हूजिये और जैसे हम लोग **(एना)** इससे **(हर्याः)** कामना करने योग्य अर्थात् सुन्दर **(स्वर्वतीः)** अच्छे सुखों से युक्त **(अपः)** प्राणों से युक्त **(प्रति, जयेम)** प्रति जीतें, वैसे आप इनको जीतिये॥११॥

**भावार्थ**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जैसे विद्वान् जन धर्म्मयुक्त कामनाओं को करके विजयी होते हैं, वैसे ही आप लोग भी आचरण करो॥११॥

**पुनर्विद्वद्गुणानाह॥**

फिर विद्वानों के गुणों को कहते हैं॥

**तुविग्रीवो वृषभो वावृधानोऽशत्र्व१र्यः समजाति वेदः।**

**इतीममग्निममृता अवोचन् बर्हिष्मते मनवे शर्म**

**यंसद्धविष्मते मनवे शर्म यंसत्॥१२॥१५॥**

**तुविऽग्रीवः। वृषभः। वावृधानः। अशत्रु। अर्यः। सम्। अजाति। वेदः। इति। इमम्। अग्निम्। अमृताः। अवोचन्। बर्हिष्मते। मनवे। शर्म। यंसत्। हविष्मते। मनवे। शर्म। यंसत्॥१२॥**

**पदार्थः**-**(तुविग्रीवः)** बहुबलयुक्तः सुन्दरी वा ग्रीवा यस्य सः **(वृषभः)** अतीव बलिष्ठः **(वावृधानः)** भृशं वर्धमानः। अत्र **तुजादीनामि**ति दीर्घः। **(अशत्रु)** अविद्यमानाः शत्रवो यस्य तम् **(अर्य्यः)** स्वामी **(सम्)** **(अजाति)** प्राप्नुयात् **(वेदः)** धनम् **(इति)** अनेन प्रकारेण **(इमम्)** **(अग्निम्)** विद्युतम् **(अमृताः)** प्राप्तात्मविज्ञानाः **(अवोचन्)** वदन्तु **(बर्हिष्मते)** प्रवृद्धविज्ञानाय **(मनवे)** मनुष्याय **(शर्म)** सुखं गृहं वा **(यंसत्)** दद्यात् **(हविष्मते)** बहूत्तमपदार्थयुक्ताय **(मनवे)** मननशीलाय **(शर्म)** सुखम् **(यंसत्)** प्रदद्यात्॥१२॥

**अन्वयः**-हे विद्वांसो! यथा तुविग्रावो वावृधानो वृषभोऽर्य्योऽशत्रु वेदः समजाति बर्हिष्मते मनवे शर्म यंसद्धविष्मते मनवे शर्म यंसदितीममग्निममृता अवोचन्॥१२॥

**भावार्थः**-सर्वे विद्वांसो हि सर्वेभ्यो विद्यार्थिभ्यः सुशिक्षां दत्त्वा शत्रुतां त्याजयित्वा सर्वथा सुखं प्राप्नुवन्तु॥१२॥

अत्र युवावस्थाविवाहविद्वद्गुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥



www.9009.co.in

**इति द्वितीयं सूक्तं पञ्चदशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे विद्वानो! जैसे **(तुविग्रीवः)** बहुत बल वा सुन्दरी ग्रीवायुक्त **(वावृधानः)** अत्यन्त बढ़ता हुआ **(वृषभः)** अतीव बलवान् **(अर्य्यः)** स्वामी **(अशत्रु)** शत्रुओं से रहित **(वेदः)** धन को **(सम्, अजाति)** अच्छे प्रकार प्राप्त होवे और **(बर्हिष्मते)** ज्ञान की वृद्धि से युक्त **(मनवे)** मनुष्य के लिये **(शर्म)** सुख वा गृह को **(यंसत्)** देवे और **(हविष्मते)** बहुत उत्तम पदार्थों से युक्त **(मनवे)** विचारशील पुरुष के लिये **(शर्म)** सुख को **(यंसत्)** देवे **(इति)** इस प्रकार से **(इमम्)** इस **(अग्निम्)** बिजुली को **(अमृताः)** आत्मज्ञान जिनकी प्राप्त वे **(अवोचन्)** कहें॥१२॥

**भावार्थः**-सब विद्वान् जन ही सब विद्यार्थियों के लिये उत्तम शिक्षा देकर शत्रुता को छुड़ा के सब प्रकार के सुख को प्राप्त होवें॥१२॥

इस सूक्त में युवावस्था में विवाह और विद्वान् के गुणों का वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्तार्थ के साथ संगति जाननी चाहिये॥

**यह द्वितीय सूक्त और पन्द्रहवां वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

**अथ द्वादशर्चस्य तृतीयस्य सूक्तस्य वसुश्रुत आत्रेय ऋषिः। अग्निर्देवता। १ निचृत्पङ्क्तिः। ११ भुरिक् पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः। २, ३, ५, ९, १२ निचृत्त्रिष्टुप्। ४, १० त्रिष्टुप्। ६, ७, ८ विराट् त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः॥**

***अथ राजकर्त्तव्यकर्म्माह॥***

अब बारह ऋचा वाले तीसरे सूक्त का आरम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में राजा के कर्त्तव्य को कहते हैं॥

**त्वम॑ग्ने॒ वरु॑णो॒ जाय॑से॒ यत्त्वं मि॒त्रो भ॑वसि॒ यत्समि॑द्धः।**

**त्वे विश्वे॑ सहसस्पुत्र दे॒वास्त्वमिन्द्रो॑ दा॒शुषे॒ मर्त्या॑य॥ १॥**

**त्वम्। अ॒ग्ने॒। वरु॑णः। जाय॑से। यत्। त्वम्। मि॒त्रः। भ॒व॒सि॒। यत्। सम्ऽइ॑द्धः। त्वे इति॑। विश्वे॑। स॒ह॒सः॒। पु॒त्र॒। दे॒वाः। त्वम्। इन्द्रः॑। दा॒शुषे॑। मर्त्या॑य॥ १॥**

**पदार्थः**-(**त्वम्**) (**अग्ने**) कृतविद्याभ्यास (**वरुणः**) दुष्टानां बन्धकृच्छ्रेष्ठः (**जायसे**) (**यत्**) यस्य (**त्वम्**) (**मित्रः**) सखा (**भवसि**) (**यत्**) येन (**समिद्धः**) प्रदीप्तः (**त्वे**) त्वयि (**विश्वे**) सर्वे (**सहसः**) (**पुत्रः**) बलस्य पालक (**देवाः**) विद्वांसः (**त्वम्**) (**इन्द्रः**) ऐश्वर्यदाता (**दाशुषे**) दातुं योग्याय (**मर्त्याय**)॥ १॥

**अन्वयः**-हे सहसस्पुत्राग्ने! यत्त्वं मित्रो यत्समिद्धो भवसि यस्त्वं वरुणो जायसे यस्त्वमिन्द्रो दाशुषे मर्त्याय धनं ददासि तस्मिँस्त्वे विश्वे देवाः प्रसन्ना जायन्ते॥ १॥

**भावार्थः**-हे राजन्! यस्य त्वं सखा यस्माद्विरुद्ध उदासीनो वा भवसि स त्वया सह सदैव मित्रतां रक्षेत् त्वमपि॥ १॥

**पदार्थः**-हे (**सहसः**) बल के (**पुत्र**) पालन करने वाले (**अग्ने**) विद्या का अभ्यास किये हुए विद्वान्! (**यत्**) जिसके (**त्वम्**) आप (**मित्रः**) सखा और (**यत्**) जिससे (**समिद्धः**) प्रकाशयुक्त (**भवसि**) होते हो और जो (**त्वम्**) आप (**वरुणः**) दुष्टों के बन्ध करने वाले श्रेष्ठ (**जायसे**) होते हो और जो (**त्वम्**) आप (**इन्द्रः**) ऐश्वर्य्य के दाता (**दाशुषे**) देने योग्य (**मर्त्याय**) मनुष्य के लिये धन देते हो उन (**त्वे**) आप में (**विश्वे**) सम्पूर्ण (**देवाः**) विद्वान् जन प्रसन्न होते हैं॥ १॥

**भावार्थः**-हे राजन्! जिसके आप मित्र वा जिससे आप विरुद्ध और उदासीन होते हैं, वह आपके साथ सदैव मित्रता रक्खे और आप भी उसके साथ रक्खें॥ १॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥



www.9009.co.in

**त्वम॑र्य॒मा भ॑वसि॒ यत्क॒नीनां॒ नाम॑ स्वधाव॒न् गुह्यं॑ बिभर्षि।**

**अ॒ञ्जन्ति॑ मि॒त्रं सुधि॑तं॒ न गोभि॒र्यद्दम्प॑ती॒ सम॑नसा कृ॒णोषि॑॥२॥**

**त्वम्। अ॒र्य॒मा। भ॒व॒सि॒। यत्। क॒नीना॑म्। नाम॑। स्व॒धा॒ऽव॒न्। गुह्य॑म्। बि॒भ॒र्षि॒। अ॒ञ्जन्ति॑। मि॒त्रम्। सुऽधि॑तम्। न। गोभिः॑। यत्। दम्प॑ती॒ इति॒ दम्ऽप॑ती। सऽम॑नसा। कृ॒णोषि॑॥२॥**

**पदार्थः**-(**त्वम्**) (**अर्यमा**) न्यायाधीशः (**भवसि**) (**यत्**) यस्मात् (**कनीनाम्**) कामयमानाम् (**नाम**) (**स्वधावन्**) प्रशस्तान्नयुक्त (**गुह्यम्**) रहस्यम् (**बिभर्षि**) (**अञ्जन्ति**) व्यक्तीकुर्वन्ति (**मित्रम्**) सखायम् (**सुधितम्**) सुष्ठुप्रसन्नम् (**न**) इव (**गोभिः**) वागादिभिः (**यत्**) यः (**दम्पती**) विवाहितौ स्त्रीपुरुषौ (**समनसा**) समानमनस्कौ दृढप्रीती (**कृणोषि**)॥२॥

**अन्वयः**-हे स्वधावन् राजन्! यत् त्वं कनीनामर्यमा भवसि गुह्यं नाम बिभर्षि यद्दम्पती समनसा कृणोषि तं त्वां विश्वे देवा गोभिः सुधितं मित्रं नाञ्जन्ति॥२॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। स एव राजा श्रेष्ठोऽस्ति यः प्रजानां यथार्थं न्याय विधत्ते यथा मित्रं मित्रं प्रीणाति तथैव राजा प्रजाः प्रीणीत॥२॥

**पदार्थः**-हे (**स्वधावन्**) अच्छे अन्न से युक्त राजन्! (**यत्**) जिससे (**त्वम्**) आप (**कनीनाम्**) कामना करने वालों के (**अर्यमा**) न्यायाधीश (**भवसि**) होते हो और (**गुह्यम्**) गुप्त (**नाम**) नाम को (**बिभर्षि**) धारण करते हो और (**यत्**) जो (**दम्पती**) विवाहित स्त्री पुरुषों को (**समनसा**) तुल्य मन और दृढ़ प्रीतियुक्त (**कृणोषि**) करते हो उन आप को सम्पूर्ण विद्वान् जन (**गोभिः**) वाणी आदि पदार्थों से (**सुधितम्**) सुन्दर प्रसन्न (**मित्रम्**) मित्र के (**न**) सदृश (**अञ्जन्ति**) प्रकट करते हैं॥२॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। वही राजा श्रेष्ठ है, जो प्रजाओं का यथार्थ न्याय करता है और जैसे मित्र मित्र को प्रसन्न करता है, वैसे ही राजा प्रजाओं को प्रसन्न करे॥२॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र मे कहते हैं॥

**तव॑ श्रि॒ये म॒रुतो॑ मर्जयन्त॒ रुद्र॒ यत्ते॒ जनि॑म॒ चारु॑ चि॒त्रम्।**

**प॒दं यद्विष्णो॑रुप॒मं नि॒धायि॒ तेन॑ पासि॒ गुह्यं॒ नाम॒ गोना॑म्॥३॥**

**तव॑। श्रि॒ये। म॒रुतः॑। म॒र्ज॒य॒न्त॒। रुद्र॑। यत्। ते॒। जनि॑म। चारु॑। चि॒त्रम्। प॒दम्। यत्। विष्णोः॑। उ॒प॒ऽमम्। नि॒ऽधायि॑। तेन॑। पा॒सि॒। गुह्य॑म्। नाम॑। गोना॑म्॥३॥**

**पदार्थः**-(**तव**) (**श्रिये**) लक्ष्म्यै (**मरुतः**) मनुष्याः (**मर्जयन्त**) शोधयन्तु (**रुद्र**) दुष्टानां रोदयितः (**यत्**) (**ते**) तव (**जनिम**) जन्म (**चारु**) सुन्दरम् (**चित्रम्**) अद्भुतम् (**पदम्**) प्राप्तव्यम् (**यत्**) (**विष्णोः**)



www.9009.co.in

व्यापकस्येश्वरस्य **(उपमम्)** **(निधायि)** ध्रियेत **(तेन)** **(पासि)** **(गुह्यम्)** **(नाम)** **(गोनाम्)** इन्द्रियाणां किरणानां वा॥३॥

**अन्वयः**:-हे रुद्र! यो मरुतस्तव श्रिये मर्जयन्त ते यच्चारु चित्रं पदं जनिम तन्मर्जयन्त यत्त्वया विष्णोरुपमं गोनां गुह्यं नाम निधायि तेन ताँस्त्वं पासि तस्मात् सत्कर्त्तव्योऽसि॥३॥

**भावार्थः**:-हे राजँस्तेनैव तव जन्मसाफल्यं भवेद्येन त्वमीश्वरवत्पक्षपातं विहाय प्रजाः पालयेः॥३॥

**पदार्थः**:-हे **(रुद्र)** दुष्टों के रुलाने वाले! जो **(मरुतः)** मनुष्य **(तव)** आपकी **(श्रिये)** लक्ष्मी के लिये **(मर्जयन्त)** शुद्ध करें **(ते)** आपका **(यत्)** जो **(चारु)** सुन्दर **(चित्रम्)** अद्भुत **(पदम्)** प्राप्त होने योग्य **(जनिम)** जन्म उसको शुद्ध करें और **(यत्)** जो आप **(विष्णोः)** व्यापक ईश्वर का **(उपमम्)** उपमायुक्त और **(गोनाम्)** इन्द्रियों वा किरणों का **(गुह्यम्)** गुप्त **(नाम)** नाम **(निधायि)** धारण करें **(तेन)** इसी हेतु से उनका आप **(पासि)** पालन करते हो, इससे सत्कार करने योग्य हो॥३॥

**भावार्थः**:-हे राजन्! इसी से आपके जन्म का साफल्य होवे, जिससे आप ईश्वर के सदृश पक्षपात का त्याग करके प्रजाओं का पालन करो॥३॥

**अथ प्रजाकृत्यमाह॥**

अब प्रजाकृत्य को कहते हैं॥

**तव॑ श्रि॒या सु॒दृशो॑ देव दे॒वाः पु॒रू दधा॑ना अ॒मृतं॑ सपन्त।**

**होता॑रम॒ग्निं मनु॑षो॒ नि षे॑दुर्दश॒स्यन्त॑ उ॒शिजः॒ शंस॑मा॒योः॥४॥**

**तव॑। श्रि॒या। सु॒ऽदृशः॑। दे॒व॒। दे॒वाः। पु॒रु। दधा॑नाः। अ॒मृत॑म्। स॒प॒न्त॒। होता॑रम्। अ॒ग्निम्। मनु॑षः। नि। से॒दुः। द॒श॒स्यन्तः॑। उ॒शिजः॑। शंस॑म्। आ॒योः॥४॥**

**पदार्थः**:-**(तव)** **(श्रिया)** शोभया लक्ष्म्या वा **(सुदृशः)** ये सुष्ठु पश्यन्ति **(देव)** दातः **(देवाः)** विद्वांसः **(पुरू)** बहु **(दधानाः)** धरन्तः **(अमृतम्)** मृत्युरहितम् **(सपन्त)** आक्रोशन्ति **(होतारम्)** आदातारम् **(अग्निम्)** पावकम् **(मनुषः)** मनुष्याः **(नि, षेदुः)** निषीदेयुः **(दशस्यन्तः)** विस्तारयन्तः **(उशिजः)** कामयमानाः **(शंसम्)** शंसन्ति येन तम् **(आयोः)** जीवनस्य॥४॥

**अन्वयः**:-हे देव! राजंस्तव श्रिया सुदृशः पुर्वमृतं दधाना उशिज आयोः शंसं होतारमग्निं दशस्यन्त देवा मनुषः सपन्त तेऽमृतं नि षेदुः॥४॥

**भावार्थः**:-हे मनुष्या! यूयमाप्तानां विदुषां सङ्गेन विद्या सङ्गृह्य श्रीमन्तो भूत्वेह सुखं भुक्त्वाऽन्ते मुक्तिमपि लभध्वम्॥४॥

**पदार्थः**:-हे **(देव)** दानशील राजन्! **(तव)** आपकी **(श्रिया)** लक्ष्मी वा शोभा से **(सुदृशः)** उत्तम प्रकार देखने और **(पुरू)** बहुत **(अमृतम्)** मृत्युरहित अर्थात् अविनाशी पदवी को **(दधानाः)** धारण करते और **(उशिजः)** कामना करते हुए **(आयोः)** जीवन के **(शंसम्)** कहाने और **(होतारम्)** ग्रहण करने वाले



www.9009.co.in

**(अग्निम्)** अग्नि को **(दशस्यन्तः)** विस्तारते हुए **(देवाः)** विद्वान् **(मनुषः)** मनुष्य **(सपन्त)** आक्रोशी रहे अर्थात् चिल्ला-चिल्ला उसका उपदेश दे रहे हैं, वे मृत्युरहित पदवी को **(नि, षेदुः)** प्राप्त होवें॥४॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! आप यथार्थवक्ता विद्वानों के सङ्ग से विद्याओं को ग्रहण कर लक्ष्मीवान् हों और इस संसार में सुख भोगकर अन्त अर्थात् मरणसमय में मुक्ति को भी प्राप्त होओ॥४॥३

**पुना राजधर्ममाह॥**

फिर राजधर्म को कहते हैं॥

**न त्वद्धोता पूर्वो अग्ने यजीयान्न काव्यैः परो अस्ति स्वधावः।**

**विशश्च यस्या अतिथिर्भवासि स यज्ञेन वनवद्देव मर्तान्॥५॥**

**न। त्वत्। होता। पूर्वः। अग्ने। यजीयान्। न। काव्यैः। परः। अस्ति। स्वधाऽवः। विशः। च। यस्याः। अतिथिः। भवासि। सः। यज्ञेन। वनवत्। देव। मर्तान्॥५॥**

**पदार्थः**-**(न)** निषेधे **(त्वत्)** तव सकाशात् **(होता)** दाता **(पूर्वः)** **(अग्ने)** विद्वन् राजन् वा **(यजीयान्)** अतिशयेन यष्टा **(न)** निषेधे **(काव्यैः)** कविभिर्निर्मितैः **(परः)** श्रेष्ठः **(अस्ति)** **(स्वधावः)** बहुधनधान्ययुक्त **(विशः)** प्रजायाः **(च)** **(यस्याः)** **(अतिथिः)** पूजनीयः **(भवासि)** भवेः **(सः)** **(यज्ञेन)** प्रजापालनव्यवहारेण **(वनवत्)** सेवयसि **(देव)** सुखप्रदातः **(मर्त्तान्)** मनुष्यान्॥५॥

**अन्वयः**-हे स्वधावो देवाग्ने! त्वं यज्ञेन मर्त्तान् वनवन्न त्वत्पूर्वो होता यजीयानस्ति न काव्यैः परोऽस्ति यस्या विशश्चातिथिर्यस्त्वं भवासि स भवांस्तस्याः सत्कर्तुं योग्योऽस्ति॥५॥

**भावार्थः**-यो राजा धर्म्येण प्रजाः पालयेत् स एव राज्यं कर्त्तुमर्हति॥५॥

**पदार्थः**-हे **(स्वधावः)** बहुत धन और धान्य से युक्त **(देव)** सुख के देने वाले **(अग्ने)** विद्वान् वा राजन्! आप **(यज्ञेन)** प्रजापालनरूप व्यवहार से **(मर्त्तान्)** मनुष्यों का **(वनवत्)** सेवन करते हो **(न)** न **(त्वत्)** आपके समीप से **(पूर्वः)** प्राचीन **(होता)** दाता **(यजीयान्)** अत्यन्त यज्ञ करने वाला **(अस्ति)** है और **(न)** न **(काव्यैः)** कवियों के बनाये हुओं से **(परः)** श्रेष्ठ है **(यस्याः)** जिस **(विशः)** प्रजा के **(च)** भी **(अतिथिः)** आदर करने योग्य जो आप **(भवासि)** होवें **(सः)** वह आप उस प्रजा के सत्कार करने योग्य है॥५॥

**भावार्थः**-जो राजा धर्मयुक्त व्यवहार से प्रजाओं का पालन करे, वही राज्य करने के योग्य होता है॥५॥

**पुनः प्रजाविषयमाह॥**

फिर प्रजाविषय को कहते हैं॥

**वयमग्ने वनुयाम त्वोता वसूयवो हविषा बुध्यमानाः।**



www.9009.co.in

**व॒यं स॑म॒र्ये वि॒दथे॒ष्वह्नां॑ व॒यं रा॒या स॑हसस्पुत्र मर्ता॑न्॥६॥१६॥**

**व॒यम्। अ॒ग्ने। व॒नु॒या॒म॒। त्वाऽऊ॑ताः। व॒सु॒ऽयवः॑। ह॒विषा॑। बुध्य॑मानाः। व॒यम्। स॒ऽम॒र्ये। वि॒दथे॑षु। अह्ना॑म्। व॒यम्। रा॒या। स॒ह॒सः॒। पु॒त्र॒। मर्ता॑न्॥६॥**

**पदार्थः-(वयम्)** **(अग्ने)** अग्निरिव राजन् **(वनुयाम)** याचेमहि **(त्वोताः)** त्वया रक्षिताः **(वसूयवः)** आत्मनो धनमिच्छवः **(हविषा)** दानेन **(बुध्यमानाः)** **(वयम्)** **(समर्ये)** सङ्ग्रामे **(विदथेषु)** विज्ञानव्यवहारेषु **(अह्नाम्)** **(वयम्)** **(राया)** धनेन **(सहसस्पुत्र)** बलस्य पालक **(मर्त्तान्)** मनुष्यान्॥६॥

**अन्वयः**-हे सहसस्पुत्राग्ने! त्वोता वसूयवो हविषा बुध्यमाना वयं त्वत्तो रक्षणं वनुयाम वयमह्नां विदथेषु समर्ये प्रवर्त्तेमहि वयं राया मर्त्तान् वनुयाम॥६॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! विद्वद्भ्यः सद्‌गुणान् भवन्तो याचेरंस्तर्हि स्वयं प्रजा धनाढ्या भवेयुः॥६॥

**पदार्थः**-हे **(सहस्पुत्र)** बल की पालना करने वाले **(अग्ने)** अग्नि के सदृश तेजस्वी राजन्! **(त्वोताः)** आपसे रक्षा किये गये **(वसूयवः)** अपने धन की इच्छा करने वाले **(हविषा)** दान से **(बुध्यमानाः)** बोध को प्राप्त होते हुए **(वयम्)** हम लोग आपसे रक्षा की **(वनुयाम)** याचना करें और **(वयम्)** हम लोग **(अह्नाम्)** दिनों के **(विदथेषु)** विशेष ज्ञानसम्बन्धी व्यवहारों में **(समर्ये)** संग्राम के बीच प्रवृत्त होवें और **(वयम्)** हम लोग **(राया)** धन से **(मर्त्तान्)** मनुष्यों को याचें अर्थात् मनुष्यों से मांगें॥६॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! विद्वानों से श्रेष्ठ गुणों की आप लोग प्रार्थना करें तो स्वयं प्रजायें धनवती होवें॥६॥

**पुनश्चौर्य्याद्यपराधनिवारणप्रजापालनराजधर्ममाह॥**

फिर चोरी आदि अपराधनिवारण प्रजापालन राजधर्म को कहते हैं॥

**यो न॒ आगो॑ अ॒भ्येनो॒ भरा॒त्यधीद॒घम॒घशं॑से दधात।**

**ज॒ही चि॑कित्वो अ॒भिश॑स्तिमे॒तामग्ने॒ यो नो॑ म॒र्चय॑ति द्व॒येन॑॥७॥**

**यः। न॒ः। आगः॑। अ॒भि। एनः॑। भरा॑ति। अधि॑। इत्। अ॒घम्। अ॒घऽशं॑से। द॒धा॒त्। ज॒हि। चि॒कि॒त्वः॒। अ॒भिऽश॑स्तिम्। ए॒ताम्। अग्ने॑। यः। न॒ः। म॒र्चय॑ति। द्व॒येन॑॥७॥**

**पदार्थः-(यः)** **(नः)** अस्माकम् **(आगः)** अपराधम् **(अभि)** **(एनः)** पापम् **(भराति)** धरति **(अधि)** **(इत्)** **(अघम्)** किल्विषम् **(अघशंसे)** स्तेने **(दधात)** दध्यात् **(जही)** अत्र **द्व्यचोऽतस्तिङ** इति दीर्घः। **(चिकित्वः)** विज्ञानवन् **(अभिशस्तिम्)** अभितो हिंसाम् **(एताम्)** **(अग्ने)** पावक इव महीपते **(यः)** **(न)** अस्मान् **(मर्चयति)** बाधते **(द्वयेन)** पापापराधाभ्याम्॥७॥

**अन्वयः**-हे चिकित्वोऽग्ने! यो न आग एनोऽभि भराति तस्मिन्नघशंसे योऽघमिदधि दधात यो द्वयेन नोऽस्मान् मर्चयति। एतामभिशस्तिं विधत्ते तं त्वं जही॥७॥



www.9009.co.in

**भावार्थ:**-हे राजन्! ये प्रजादूषका: स्युस्तान् सदैव दण्डय, ये श्रेष्ठाचारा भवेयुस्तान् मानय॥७॥

**पदार्थ:**-हे **(चिकित्व:)** विज्ञानवान् **(अग्ने)** अग्नि के सदृश प्रतापी पृथिवी के पालने वाले! **(य:)** जो **(न:)** हम लोगों के **(आग:)** अपराध और **(एन:)** पाप को **(अभि, भराति)** सन्मुख धारण करता है उस **(अघशंसे)** चोरीरूप कर्म में जो **(अघम्)** पाप **(इत)** ही को **(अधि, दधात)** अधिस्थापन करे और **(य:)** जो **(द्वयेन)** पाप और अपराध से **(न:)** हम लोगों को **(मर्चयति)** बाधता है और **(एताम्)** इस **(अभिशस्तिम्)** सब ओर से हिंसा को करता है, उसका आप **(जही)** त्याग कीजिए॥७॥

**भावार्थ:**-हे राजन्! जो प्रजा को दोष देने वाले होवें, उनको सदा ही दण्ड दीजिये और जो श्रेष्ठ आचरण करने वाले होवें, उनको मानो अर्थात् सत्कार करो॥७॥

**पुना राजधर्म्ममाह॥**

फिर राजधर्म को कहते हैं॥

**त्वामस्या व्युषि देव पूर्वे दूतं कृण्वाना अयजन्त हव्यै:।**

**संस्थे यदग्न ईयसे रयीणां देवो मर्तैर्वसुभिरिध्यमान:॥८॥**

**त्वाम्। अस्या:। विऽउषि। देव। पूर्वे। दूतम्। कृण्वाना:। अयजन्त। हव्यै:। सम्ऽस्थे। यत्। अग्ने। ईयसे। रयीणाम्। देव:। मर्तै:। वसुऽभि:। इध्यमान:॥८॥**

**पदार्थ:**-**(त्वाम्)** **(अस्या:)** प्रजाया मध्ये **(व्युषि)** सेवसे **(देव)** दिव्यगुणसम्पन्न **(पूर्वे)** पालनकर्त्तार: **(दूतम्)** यो दुनोति शत्रूँस्तम् **(कृण्वाना:)** **(अयजन्त)** सङ्गच्छेरन् **(हव्यै:)** पूजितुमर्है: **(संस्थे)** सम्यक् तिष्ठन्ति यस्मिँस्तस्मिन् **(यत्)** यस्मात् **(अग्ने)** पावकवद्वर्त्तमान **(ईयसे)** प्राप्नोषि गच्छसि वा **(रयीणाम्)** धनानाम् **(देव:)** विद्वान् सन् **(मर्त्तै:)** मरणधर्म्मैर्मनुष्यै: **(वसुभि:)** धनादियुक्तै: **(इध्यमान:)** देदीप्यमान:॥८॥

**अन्वय:**-हे देवाग्ने! देवस्त्वं यदस्या: संस्थे रयीणां वसुभिर्मर्तैरिध्यमान ईयसे पालनं व्युषि तं त्वां हव्यैर्दूतं कृण्वाना: पूर्वे विद्वांसोऽयजन्त॥८॥

**भावार्थ:**-हे राजन्! यदि भवान् विद्याविनयाभ्यां न्यायेन प्रजा: सततं पालयेत्तर्हि त्वां कीर्त्तिर्धनं राज्योन्नतिरुत्तमा: पुरुषाश्च प्राप्नुयु:॥८॥

**पदार्थ:**-हे **(देव)** श्रेष्ठ गुणों से युक्त **(अग्ने)** अग्नि के सदृश वर्त्तमान! **(देव:)** विद्वान् होते हुए आप **(यत्)** जिससे **(अस्या:)** इस प्रजा के मध्य में **(संस्थे)** उत्तम प्रकार स्थित होते हैं, जिसमें उसमें **(रयीणाम्)** धनों के बीच **(वसुभि:)** धन आदि पदार्थों से युक्त **(मर्तै:)** मरणधर्म वाले मनुष्यों से **(इध्यमान:)** प्रकाशित किये गये **(ईयसे)** प्राप्त होते वा जाते हो और पालन का **(व्युषि)** सेवन करते हो उन **(त्वाम्)** आपको **(हव्यै:)** प्रशंसा करने योग्य पदार्थों से **(दूतम्)** शत्रुओं के नाश करने वाले **(कृण्वाना:)** करते हुए **(पूर्वे)** पालन करने वाले विद्वान् जन **(अयजन्त)** मिलें॥८॥



www.9009.co.in

**भावार्थ:**-हे राजन्! जो आप विद्या और विनय से न्यायपूर्वक प्रजाओं का निरन्तर पालन करें तो आप को यश, धन, राज्य की उन्नति और उत्तम पुरुष प्राप्त होवें॥८॥

**पुनः सन्तानशिक्षाविषयकं प्रजाधर्ममाह॥**

फिर सन्तानशिक्षाविषयक प्रजाधर्म को कहते हैं॥

**अव स्पृधि पितरं योधि विद्वान् पुत्रो यस्ते सहसः सून ऊहे।**

**कदा चिकित्वो अभि चक्षसे नोग्ने कदाँ ऋतचिद् यातयासे॥९॥**

**अव। स्पृधि। पितरम्। योधि। विद्वान्। पुत्रः। यः। ते। सहसः। सूनो इति। ऊहे। कदा। चिकित्वः। अभि। चक्षसे। नः। अग्ने। कदा। ऋतऽचित्। यातयासे॥९॥**

**पदार्थ:**-(**अव**) (**स्पृधि**) अभिकाङ्क्ष (**पितरम्**) पालकम् (**योधि**) वियोजय (**विद्वान्**) (**पुत्रः**) (**यः**) (**ते**) (**सहसः**) ब्रह्मचर्यबलयुक्तस्य (**सूनो**) अपत्य (**ऊहे**) वितर्कयामि (**कदा**) (**चिकित्वः**) (**अभि**) (**चक्षसे**) उपदिशेः (**नः**) अस्मान् (**अग्ने**) (**कदा**) (**ऋतचित्**) य ऋतं चिनोति सः (**यातयासे**) प्रेरयेः॥९॥

**अन्वयः**-हे सहसस्सूनो चिकित्वोऽग्ने! ते तुभ्यमहमूहे यस्त्वं विद्वान् पुत्रस्स पितरमव स्पृधि दुःखं योधि। ऋतचित्त्वं नोऽस्मान् कदाऽभि चक्षसे सत्कर्मसु कदा यातयासे॥९॥

**भावार्थ:**-यदि कन्या बालकाँश्च पितरौ ब्रह्मचर्य्येण विद्याः प्रापयेयुः पूर्णयुवावस्थायां विवाहयेयुस्तर्हि तेऽत्यन्तं सुखमाप्नुयुः॥९॥

**पदार्थ:**-हे (**सहसः**) ब्रह्मचर्य्यबल से युक्त पुरुष के (**सूनो**) पुत्र (**चिकित्वः**) बुद्धियुक्त (**अग्ने**) अग्नि के सदृश तेजस्विन् (**ते**) तेरे लिये मैं (**ऊहे**) विशेष तर्क करता हूँ (**यः**) जो तू (**विद्वान्**) विद्यावान् (**पुत्रः**) दुःख से रक्षा करने वाला है सो (**पितरम्**) पिता अर्थात् अपने पालने वाले की (**अव, स्पृधि**) अभिकांक्षा कर और दुःख को (**योधि**) दूर कर तथा (**ऋतचित्**) सत्य का संचय करने वाले तुम (**नः**) हम लोगों को (**कदा**) कब (**अभि, चक्षसे**) उपदेश दोगे और (**कदा**) कब अच्छे कामों में (**यातयासे**) प्रेरणा करोगे॥९॥

**भावार्थ:**-जो कन्या और बालकों को माता-पिता ब्रह्मचर्य से विद्या प्राप्त करावें और पूर्ण युवावस्था में विवाह करावें तो वे अत्यन्त सुख को प्राप्त होवें॥९॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**भूरि नाम वन्दमानो दधाति पिता वसो यदि तज्जोषयासे।**

**कुविद्देवस्य सहसा चकानः सुम्नमग्निर्वनते वावृधानः॥१०॥**



www.9009.co.in

**भूरि। नाम। वन्दमानः। दधाति। पिता। वसो इति। यदि। तत्। जोषयासे। कुवित्। देवस्य। सहसा। चकानः। सुम्नम्। अग्निः। वनते। ववृधानः॥ १०॥**

**पदार्थः**-(**भूरि**) बहु (**नाम**) संज्ञाम् (**वन्दमानः**) स्तुवन् (**दधाति**) (**पिता**) जनकः (**वसो**) वासयितः (**यदि**) (**तत्**) (**जोषयासे**) सेवयेः (**कुवित्**) महत् (**देवस्य**) विदुषः (**सहसा**) बलेन (**चकानः**) कामयमानः (**सुम्नम्**) सुखम् (**अग्निः**) पावक इव (**वनते**) सम्भजति (**वावृधानः**) अत्र **तुजादीनामि**त्यभ्यासदैर्घ्यम्॥ १०॥

**अन्वयः**-हे वसो! यस्ते वन्दमानो देवस्य सहसा सुम्नं चकानोऽग्निरिव वावृधानः पिता यदि भूरि कुविद्यन्नाम दधाति वनते तत्तर्हि त्वं जोषयासे॥ १०॥

**भावार्थः**-हे सन्ताना! ये युष्माकं पितरो द्वितीयं विद्याजन्माख्यं द्विजेति नाम विदधति तेषां सेवनं सततं यूयं कुरुत॥ १०॥

**पदार्थः**-हे (**वसो**) निवास करने वाले! जो आपकी (**वन्दमानः**) स्तुति करता हुआ (**देवस्य**) विद्वान् के (**सहसा**) बल से (**सुम्नम्**) सुख की (**चकानः**) कामना करता और (**अग्निः**) अग्नि के सदृश (**वावृधानः**) निरन्तर बढ़ता हुआ (**पिता**) उत्पन्न करने वाला (**यदि**) यदि (**भूरि**) बहुत (**कुवित्**) बड़े जिस (**नाम**) नाम को (**दधाति**) धारण करता और (**वनते**) सेवन करता है और (**तत्**) उसका तो आप (**जोषयासे**) सेवन करें॥ १०॥

**भावार्थः**-हे सन्तानो! जो आप लोगों के माता-पिता दूसरे विद्यारूप जन्म नामक द्विज ऐसा नाम विधान करते हैं, उनका सेवन निरन्तर तुम लोग करो॥ १०॥

**अथ चौर्यादिदोषनिवारणसन्तानशिक्षाकरणप्रजाधर्मविषयमाह॥**

अब चोरी आदि दोषनिवारण, सन्तानशिक्षाकरण, प्रजाधर्मविषय को कहते हैं॥

**त्वमङ्ग जरितारं यविष्ठ विश्वान्यग्ने दुरितातिं पर्षि।**

**स्तेना अदृश्रन् रिपवो जनासोऽज्ञातकेता वृजिना अभूवन्॥ ११॥**

**त्वम्। अङ्ग। जरितारम्। यविष्ठ। विश्वानि। अग्ने। दुःऽइता। अति। पर्षि। स्तेनाः। अदृश्रन्। रिपवः। जनासः। अज्ञातऽकेताः। वृजिनाः। अभूवन्॥ ११॥**

**पदार्थः**-(**त्वम्**) (**अङ्ग**) मित्र (**जरितारम्**) विद्यागुणस्तावकं पितरम् (**यविष्ठ**) अतिशयेन युवन् (**विश्वानि**) अखिलानि (**अग्ने**) (**दुरिता**) दुःखप्रापकाणि कर्माणि फलानि वा (**अति**) (**पर्षि**) अत्यन्तं पालयसि (**स्तेनाः**) चोराः (**अदृश्रन्**) पश्यन्ति (**रिपवः**) शत्रवः (**जनासः**) विद्वांसः (**अज्ञातकेताः**) अज्ञातः केतः प्रज्ञा यैस्ते मूढाः (**वृजिनाः**) पापाचारा वर्जनीयाः (**अभूवन्**) भवन्ति॥ ११॥

**अन्वयः**-हे यविष्ठाङ्गाग्ने! यतस्त्वं जरितारमति पर्षि विश्वानि दुरिता त्यजसि येऽज्ञातकेता वृजिनाः स्तेना रिपवोऽभूवन् याञ्जनासोऽदृश्रँस्तांस्त्वं परित्यज॥ ११॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-हे सुसन्ताना! यूयं दुष्टाचारं त्यक्त्वा पितॄन् सत्कृत्य स्तेनादीन्निवार्य पुण्यकीर्त्तयो भवत॥११॥

**पदार्थः**-हे **(यविष्ठ)** अतिशय करके युवा **(अङ्ग)** मित्र **(अग्ने)** अग्नि के सदृश वर्त्तमान जिससे **(त्वम्)** आप **(जरितारम्)** विद्या और गुण की स्तुति करने वाले पिता की **(अति, पर्षि)** अत्यन्त पालना करते हो **(विश्वानि)** सम्पूर्ण **(दुरिता)** दु:ख के प्राप्त कराने वाले कर्म्म वा फलों का त्याग करते हो और जो **(अज्ञातकेताः)** नहीं जानी बुद्धि जिन्होंने वे मूर्ख **(वृजिनाः)** पापाचरणयुक्त वर्जने योग्य **(स्तेनाः)** चोर **(रिपवः)** शत्रु **(अभूवन्)** होते हैं और जिनको **(जनासः)** विद्वान् जन **(अदृश्रन्)** देखते हैं, उनका आप परित्याग करो॥११॥

**भावार्थः**-हे उत्तम सन्तानो! आप लोग दुष्ट आचरणों का त्याग, माता-पितादि का सत्कार और चौरी कर्म्म आदि का निवारण करके पुण्य यश वाले हूजिये॥११॥

**पुनः प्रजाधर्मविषयमाह॥**

फिर प्रजाधर्मविषय को कहते हैं॥

**इ॒मे यामा॑सस्त्व॒द्रिग॑भूव॒न् वस॑वे वा॒ तदिदागो॑ अवाचि।**

**नाह॒ायम॒ग्निर॒भिश॑स्तये नो॒ न रीष॑ते वावृधा॒नः परा॑ दात्॥१२॥१७॥**

**इ॒मे। यामा॑सः। त्व॒द्रिक्। अ॒भू॒व॒न्। वस॑वे। वा॒। तत्। इत्। आग॑ः। अ॒वा॒चि॒। न। अह॑। अ॒यम्। अ॒ग्निः। अ॒भिऽश॑स्तये। न॒ः। न। रिष॑ते। व॒वृ॒धा॒नः। परा॑। दा॒त्॥१२॥**

**पदार्थः**-**(इमे)** **(यामासः)** यमनियमान्विताः **(त्वद्रिक्)** त्वां प्रति यतमानः **(अभूवन्)** भवन्ति **(वसवे)** धनाय **(वा)** **(तत्)** **(इत्)** एव **(आगः)** अपराधः **(अवाचि)** **(न)** **(अह)** **(अयम्)** **(अग्निः)** पावक इव **(अभिशस्तये)** अभितो हिंसनाय **(नः)** अस्मान् **(न)** **(रीषते)** हिनस्ति **(वावृधानः)** वर्धमानः **(परा, दात्)** दूरं गमयेत्॥१२॥

**अन्वयः**-हे सत्सन्तान! योऽयमग्निरिव नोऽभिशस्तये नाऽह परा दाद् वावृधानः सन्न रीषते त्वद्रिक् सन् वसवेऽवाचि वा तदाग इदवाचि तमिमे यामासोऽऽध्यापनोपदेशाभ्यां शोधयन्तु त आनन्दिता अभूवन्॥१२॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! ये विद्वांसः कश्चिदपि विनाऽपराधेन नाऽपराध्नुवन्ति तान् स्वसमीपाद्दूरे मा निःसारयेतेति॥१२॥

अत्र राजप्रजास्तेनापराधनिवारणाद्युक्तत्वादस्य पूर्वसक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति तृतीयं सूक्तं सप्तदशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे श्रेष्ठ सन्तान जो **(अयम्)** यह **(अग्निः)** अग्नि के सदृश वर्त्तमान **(नः)** हम लोगों को **(अभिशस्तये)** सब प्रकार के हिंसा करने के लिये **(न)** नहीं **(अह)** निश्चय **(परा, दात्)** दूर पहुँचावे और **(वावृधानः)** निरन्तर बढ़ता हुआ **(न)** नहीं **(रीषते)** हिंसा करता और **(त्वद्रिक्)** आपके प्रति यत्न कराता



www.9009.co.in

**(वसवे)** धन के लिए **(अवाचि)** कहा गया **(वा)** वा **(तत्)** वह **(आगः)** अपराध **(इत्)** ही कहा गया उसको **(इमे)** जो **(यामासः)** यम और नियमों से युक्त जन पढ़ाने और उपदेश से पवित्र करें, वे आनन्दित **(अभूवन्)** होते हैं॥१२॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जो विद्वान् जन किसी को भी बिना अपराध के नहीं दोष देते हैं, उनको अपने समीप से दूर मत निकालो॥१२॥

इस सूक्त में राजा और प्रजा को चोरी और अन्य अपराध आदि के निवारण आदि के कहने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह तीसरा सूक्त और सत्रहवाँ वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

अथैकादशर्चस्य चतुर्थस्य सूक्तस्य वसुश्रुत आत्रेय ऋषिः। अग्निर्देवता। १, १०, ११ भुरिक् पङ्क्तिः। ४, ७ स्वराट् पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः। २, ९ विराट् त्रिष्टुप्। ३, ६, ८ निचृत्त्रिष्टुप्। ५ त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः॥

*अथ राजविषयमाह॥*

अब ग्यारह ऋचा वाले चतुर्थ सूक्त का आरम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में राजविषय को कहते हैं॥

**त्वाम॑ग्ने वसु॑पतिं वसू॑नाम॒भि प्र म॑न्दे अध्व॒रेषु॑ राजन्।**

**त्वया॒ वाजं॑ वाज॒यन्तो॑ जयेमा॒भि ष्या॑म पृत्सु॒तीर्मर्त्या॑नाम्॥ १॥**

त्वाम्। अ॒ग्ने॒। वसु॑ऽपतिम्। वसू॑नाम्। अ॒भि। प्र। म॒न्दे॒। अ॒ध्व॒रेषु॑। रा॒ज॒न्। त्वया॑। वाज॑म्। वा॒ज॒ऽयन्तः॑। ज॒ये॒म॒। अ॒भि। स्या॒म॒। पृ॒त्सु॒तीः। मर्त्या॑नाम्॥ १॥

**पदार्थः**-(**त्वाम्**) (**अग्ने**) विद्युद्वद्व्याप्तविद्य (**वसुपतिम्**) धनस्वामिनम् (**वसूनाम्**) धनानाम् (**अभि**) (**प्र**) (**मन्दे**) आनन्दयेयमानन्दयामि वा (**अध्वरेषु**) अहिंसनीयेषु प्रजापालनन्यायव्यवहारेषु (**राजन्**) शुभगुणैः प्रकाशमान (**त्वया**) अधिष्ठात्रा (**वाजम्**) सङ्ग्रामम् (**वाजयन्तः**) कुर्वन्तः कारयन्तो वा (**जयेम**) (**अभि**) (**स्याम**) (**पृत्सुतीः**) सेनाः (**मर्त्यानाम्**) मरणधर्माणां शत्रूणाम्॥ १॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! राजन्नध्वरेषु वसूनां वसुपतिं त्वामहमभि प्र मन्दे। त्वया सह वाजं वाजयन्तो वयं मर्त्यानां पृत्सुतीरभि जयेमाऽनेन धनकीर्त्तियुक्ताः स्याम॥ १॥

**भावार्थः**-येषामधिष्ठातारो धार्मिका विद्वांसस्स्युस्तेषां सदैव विजयो राजवृद्धिरतुला श्रीश्च जायते॥ १॥

**पदार्थः**-हे (**अग्ने**) बिजुली के सदृश विद्या से व्याप्त (**राजन्**) उत्तम गुणों से प्रकाशमान राजन्! (**अध्वरेषु**) नहीं हिंसा करने योग्य प्रजापालन और न्यायव्यवहारों में (**वसूनाम्**) धनों के (**वसुपतिम्**) धनस्वामी (**त्वाम्**) आप को मैं (**अभि, प्र, मन्दे**) सब ओर से आनन्द देऊँ वा आनन्द देता हूँ और (**त्वया**) अधिष्ठातारूप आपके साथ (**वाजम्**) संग्राम को (**वाजयन्त**) करते वा कराते हुए हम लोग (**मर्त्यानाम्**) मरण धर्म वाले शत्रुओं की (**पृत्सुतीः**) सेनाओं को (**अभि, जयेम**) सब ओर से जीतें, इससे धन और यश से युक्त (**स्याम**) होवें॥ १॥

**भावार्थः**-जिनके अधिष्ठाता मुखिया धार्मिक और विद्वान् जन होवें, उनका सदा ही विजय, राज्य की वृद्धि और अतुल लक्ष्मी होती है॥ १॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**



www.9009.co.in

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**हव्यवाळग्निरजरः पिता नो विभुर्विभावा सुदृशीको अस्मे।**

**सुगार्हपत्याः समिषो दिदीह्यस्मद्र्यक् सं मिमीहि श्रवांसि॥२॥**

**हव्यऽवाट्। अग्निः। अजरः। पिता। नः। विऽभुः। विभाऽवा। सुऽदृशीकः। अस्मे इति। सुऽगार्हपत्याः। सम्। इषः। दिदीहि। अस्मद्र्यक्। सम्। मिमीहि। श्रवांसि॥२॥**

**पदार्थः**-(**हव्यवाट्**) यो हव्यानि द्रव्याणि देशान्तरं प्रापयति (**अग्निः**) शुद्धस्वरूपः (**अजरः**) अवृद्धः (**पिता**) पालकः (**नः**) अस्माकम् (**विभुः**) व्यापकः परमेश्वरवत् (**विभावा**) विविधभानवान् (**सुदृशीकः**) दर्शयिता वा (**अस्मे**) अस्मभ्यम् (**सुगार्हपत्याः**) शोभनो गार्हपत्योऽग्न्यादिपदार्थसमुदायो यासान्ताः (**सम्**) (**इषः**) अन्नानि (**दिदीहि**) देहि (**अस्मद्र्यक्**) योऽस्मानञ्चति जानाति ज्ञापयति वा (**सम्**) (**मिमीहि**) विधेहि (**श्रवांसि**) अध्ययनाध्यापनादीनि कर्माणि॥२॥

**अन्वयः**-हे राजन्! यथा हव्यवाट् सुदृशीकोऽग्निः पावको यथा विभुरीश्वरवत् सर्वं पाति प्रकाशते तथा विभावाऽजरो नः पिता सन्नस्मे सुगार्हपत्या इषः सन् दिदीहि अस्मद्र्यक् सन् श्रवांसि सं मिमीहि॥२॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे राजन्! यथा विद्युद्भौमरूपेणाग्निः सर्वानुपकरोति यथा च परमेश्वरोऽसङ्ख्यातपदार्थानामुत्पादनेन पितृवत्सर्वान् पालयति तथैव त्वं भव॥२॥

**पदार्थः**-हे राजन् जैसे (**हव्यवाट्**) द्रव्यों को एक स्थान से दूसरे स्थान में पहुँचाने वा (**सुदृशीकः**) उत्तम प्रकार देखने वा दिखाने वाला (**अग्निः**) शुद्धस्वरूप अग्नि जैसे (**विभुः**) व्यापक परमेश्वर के सदृश सब का पालन करता और प्रकाशित होता है, वैसे (**विभावा**) अनेक प्रकार के प्रकाश वा ज्ञान से युक्त (**अजरः**) वृद्धावस्थारहित (**नः**) हम लोगों के (**पिता**) पालन करने वाले होते हुए (**अस्मे**) हम लोगों के लिये (**सुगार्हपत्याः**) सुन्दर अग्नि आदि पदार्थ समुदाय वाले (**इषः**) अन्नों को (**सम्, दिदीहि**) अच्छे प्रकार दीजिये और (**अस्मद्र्यक्**) हम लोगों का आदर करने, जानने वा जनाने वाले होते हुए (**श्रवांसि**) पढ़ने और पढ़ाने आदि कर्म्मों का (**सम्, मिमीह**) विधान करिये॥२॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे राजन्! जैसे बिजुली और भूमि में प्रसिद्ध हुए रूप से अग्नि सब का उपकार करता है और जैसे परमेश्वर असंख्यात पदार्थों के उत्पन्न करने से पितरों के सदृश सब का पालन करता है, वैसे ही आप हूजिये॥२॥

**अथ प्रजाविषयमाह॥**

अब प्रजाविषय को कहते हैं॥

**विशां कविं विश्पतिं मानुषीणां शुचिं पावकं घृतपृष्ठमग्निम्।**

**नि होतारं विश्वविदं दधिध्वे स देवेषु वनते वार्याणि॥३॥**



www.9009.co.in

**वि॒शाम्। क॒विम्। वि॒श्पति॑म्। मानु॑षीणाम्। शुचि॑म्। पा॒व॒कम्। घृ॒तऽपृ॑ष्ठम्। अ॒ग्निम्। नि। होता॑रम्। वि॒श्व॒ऽविद॑म्। द॒धि॒ध्वे॒। सः। दे॒वेषु॑। व॒न॒ते॒। वार्या॑णि॥३॥**

**पदार्थ:-(विशाम्)** प्रजानाम् **(कविम्)** मेधाविनम् **(विश्पतिम्)** प्रजापालकम् **(मानुषीणाम्)** मनुष्यसम्बन्धिनीनाम् **(शुचिम्)** पवित्रम् **(पावकम्)** पवित्रकरं वह्निम् **(घृतपृष्ठम्)** घृतमुदकमाज्यं पृष्ठ आधारे यस्य तम् **(अग्निम्)** वह्निम् **(नि) (होतारम्)** दातारम् **(विश्वविदम्)** यो विश्वं वेत्ति तम् **(दधिध्वे) (सः) (देवेषु)** विद्वत्सु दिव्येषु पदार्थेषु वा **(वनते)** सम्भजति **(वार्य्याणि)** वरितुं स्वीकर्त्तुमर्हाणि॥३॥

**अन्वय:**-हे मनुष्या! यूयं घृतपृष्ठं पावकमग्निमिव विश्वविदमिव मानुषीणां विशां विश्पतिं शुचिं होतारं कविं यं राजानं यूयं नि दधिध्वे स देवेषु वार्य्याणि वनते॥३॥

**भावार्थ:**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यो हि पावकवत्प्रतापी जगदीश्वरवन्न्यायकारी विद्वाञ्छुभलक्षणो राजा भवति स एव सम्राट् भवितुमर्हति॥३॥

**पदार्थ:**-हे मनुष्यो! आप लोग **(घृतपृष्ठम्)** जल और घृत आधार में जिसके उस **(पावकम्)** पवित्र करने वाले **(अग्निम्)** अग्नि और **(विश्वविदम्)** संसार को जानने वाले के सदृश **(मानुषीणाम्)** मनुष्यसम्बन्धिनी **(विशाम्)** प्रजाओं के **(विश्पतिम्)** प्रजापालक **(शुचिम्)** पवित्र और **(होतारम्)** देने वाले **(कविम्)** मेधावी जिस राजा को आप लोग **(नि, दधिध्वे)** अच्छे स्वीकार करें **(सः)** वह **(देवेषु)** विद्वानों वा श्रेष्ठ पदार्थों में **(वार्य्याणि)** स्वीकार करने योग्यों का **(वनते)** सेवन करता है॥३॥

**भावार्थ:**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो अग्नि के सदृश प्रतापी, जगदीश्वर के सदृश न्यायकारी, विद्वान् और उत्तम लक्षणों वाला राजा होता है, वही चक्रवर्त्ती राजा होने योग्य है॥३॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहतेहैं॥

**जु॒षस्वा॑ग्न॒ इळ॑या स॒जोषा॒ यत॑मानो र॒श्मिभि॒ः सूर्य॑स्य।**

**जु॒षस्व॑ नः स॒मिधं॑ जातवेद॒ आ च॑ दे॒वान् ह॑वि॒रद्या॑य वक्षि॥४॥**

**जु॒षस्व॑। अ॒ग्ने॒। इळ॑या। स॒ऽजोषाः॑। यत॑मानः। र॒श्मिऽभिः॑। सूर्य॑स्य। जु॒षस्व॑। नः। स॒म्ऽइध॑म्। जा॒त॒ऽवे॒द॒ः। आ। च॒। दे॒वान्। ह॒वि॒ःऽअद्या॑य। व॒क्षि॒॥४॥**

**पदार्थ:-(जुषस्व)** सेवस्व **(अग्ने)** दुष्टप्रदाहक **(इळया)** प्रशंसितया वाचा **(सजोषाः)** समानप्रीतिसेवनः **(यतमानः)** प्रयतमानः **(रश्मिभिः) (सूर्य्यस्य) (जुषस्व) (नः)** अस्माकम् **(समिधम्)** काष्ठमिव शत्रुम् **(जातवेदः)** उत्पन्नप्रज्ञान **(आ) (च) (देवान्)** विदुषः **(हविरद्याय)** हविश्चाद्यमत्तव्यं च तस्मै **(वक्षि)** वहसि प्रापयसि॥४॥

**अन्वय:**-हे जातवेदोऽग्ने! यतमानः सजोषास्त्वं सूर्य्यस्य रश्मिभिरिवेळया नः समिधमिव शत्रुं जुषस्व हविरद्याय देवानां वक्षि तांश्च जुषस्व॥४॥



www.9009.co.in

**भावार्थ**:-अत्रोपमावाचकलुप्तोपमालङ्कारौ। हे मनुष्या! यथाऽऽदित्यस्य प्रकाशेन सर्वेषां जीवानां कर्त्तव्यानि कर्म्माणि सिध्यन्ति तथैवाप्तैः पुरुषैः राज्ञः सर्वाणि न्याययुक्तानि प्रजापालनादीनि कर्माणि भवन्ति॥४॥

**पदार्थ**:-हे **(जातवेदः)** ज्ञान की उत्पत्ति से विशिष्ट **(अग्ने)** दुष्टों के नाश करने वाले **(यतमानः)** प्रयत्न करते हुए **(सजोषाः)** तुल्य प्रीति सेवन करने वाले आप **(सूर्य्यस्य)** सूर्य्य की **(रश्मिभिः)** किरणों के सदृश **(इळया)** प्रशंसित वाणी से **(नः)** हम लोगों के **(समिधम्)** काष्ठ के तुल्य शत्रु की **(जुषस्व)** सेवा करो और **(हविरद्याय)** खाने योग्य पदार्थ के लिये **(देवान्)** विद्वानों को **(आ, वक्षि)** प्राप्त कराते अर्थात् पहुंचाते हो उनकी **(च)** और **(जुषस्व)** सेवा करो॥४॥

**भावार्थ**:-इस मन्त्र में उपमा और वाचकलुप्तोपमालङ्कार हैं। हे मनुष्यो! जैसे सूर्य्य के प्रकाश से सब जीवों के करने योग्य कर्म्म सिद्ध होते हैं, वैसे ही यथार्थवक्ता पुरुषों से राजा के सर्व न्याययुक्त प्रजापालन आदि कर्म्म होते हैं॥४॥

**पुना राजविषयमाह॥**

फिर राजविषय को कहते हैं॥

**जुष्टो दमूना अतिथिर्दुरोण इमं नो यज्ञमुप याहि विद्वान्।**

**विश्वा अग्ने अभियुजो विहत्या शत्रूयतामा भरा भोजनानि॥५॥१८॥**

**जुष्टः। दमूनाः। अतिथिः। दुरोणे। इमम्। नः। यज्ञम्। उप। याहि। विद्वान्। विश्वाः। अग्ने। अभिऽयुजः। विऽहत्य। शत्रुऽयताम्। आ। भर। भोजनानि॥५॥**

**पदार्थ**:-**(जुष्टः)** सेवितः प्रीतो वा **(दमूनाः)** शमदमादियुक्तः **(अतिथिः)** अकस्मादागतः **(दुरोणे)** गृहे **(इमम्)** प्रत्यक्षम् **(नः)** अस्माकम् **(यज्ञम्)** अन्नाद्युत्तमपदार्थदानम् **(उप)** **(याहि)** **(विद्वान्)** **(विश्वाः)** समग्राः **(अग्ने)** विद्युदिव शुभगुणाढ्य राजन् **(अभियुजः)** या आभिमुख्यं युञ्जते ताः शत्रुसेनाः **(विहत्या)** विविधवधैर्हत्वा। अत्र **संहितायामिति** दीर्घः। **(शत्रूयताम्)** शत्रूणामिवाचरताम् **(आ)** **(भरा)** धर। अत्र **द्व्यचोऽतस्तिङः** इति दीर्घः। **(भोजनानि)** प्रजापालनानि भोक्तव्यान्यन्नानि वा॥५॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! जुष्टो दमूना अतिथिर्दुरोणे प्राप्त इव विद्वांस्त्वं न इमं यज्ञमुप याहि शत्रूयतां विश्वा अभियुजो विहत्या भोजनान्या भरा॥५॥

**भावार्थ**:-यो राजा दुष्टान् हत्वा न्यायेन प्रजाः पालयति सोऽत्यन्तं प्रजाप्रियो भवति॥५॥

**पदार्थ**:-हे **(अग्ने)** बिजुली के सदृश श्रेष्ठ गुणों से सम्पन्न राजन्! **(जुष्टः)** सेवित वा प्रसन्न किये गये **(दमूनाः)** शम, दम आदि से युक्त **(अतिथिः)** अकस्मात् आये **(दुरोणे)** गृह में प्राप्त हुए से **(विद्वान्)** विद्वान् आप **(नः)** हम लोगों के **(इमम्)** इस प्रत्यक्ष **(यज्ञम्)** अन्न आदि उत्तम पदार्थों के दान को **(उप, याहि)** प्राप्त हूजिये और **(शत्रूयताम्)** शत्रुओं के सदृश आचरण करते हुओं की **(विश्वाः)**



www.9009.co.in

सम्पूर्ण **(अभियुजः)** सम्मुख प्राप्त हुई शत्रुसेनाओं का **(विहत्या)** अनेक प्रकार के वधों से नाश करके **(भोजनानि)** प्रजापालन वा खाने योग्य अन्नों को **(आ, भरा)** धारण कीजिये॥५॥

**भावार्थः**-जो राजा दुष्टों का नाश करके न्याय से प्रजाओं का पालन करता है, वह बहुत ही प्रजा का प्रिय होता है॥५॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**वधेन दस्युं प्र हि चातयस्व वयः कृण्वानस्तन्वे३ स्वायै।**

**पिपर्षि यत्सहसस्पुत्र देवान्त्सो अग्ने पाहि नृतम वाजे अस्मान्॥६॥**

**वधेन। दस्युम्। प्र। हि चातयस्व। वयः। कृण्वानः। तन्वे। स्वायै। पिपर्षि। यत्। सहसः। पुत्र। देवान्। सः। अग्ने। पाहि। नृऽतम। वाजे। अस्मान्॥६॥**

**पदार्थः**-**(वधेन)** **(दस्युम्)** साहसिकं चोरम् **(प्र)** **(हि)** **(चातयस्व)** हिंसय हिंधि वा **(वयः)** जीवनम् **(कृण्वानः)** **(तन्वे)** शरीराय **(स्वायै)** स्वकीयाय **(पिपर्षि)** **(यत्)** यः **(सहसः, पुत्र)** बलिष्ठस्य पुत्र **(देवान्)** विदुषः **(सः)** **(अग्ने)** **(पाहि)** रक्ष **(नृतम)** अतिशयेन नायक **(वाजे)** सङ्ग्रामे **(अस्मान्)**॥६॥

**अन्वयः**-हे सहसस्पुत्र नृतमाग्ने राजन्! यद्यस्त्वं स्वायै तन्वे वयः कृण्वानस्सन् वधेन दस्युं प्र चातयस्व। प्रजा हि पिपर्षि स त्वं वाजेऽस्मान् देवान् पाहि॥६॥

**भावार्थः**-हे राजन्! त्वं सदा दस्यून् हत्वा धार्मिकान् पालयेः शत्रून् विजयस्व॥६॥

**पदार्थः**-हे **(सहसः, पुत्र)** बलवान् के पुत्र **(नृतम)** अतिशय मुख्य **(अग्ने)** अग्नि के सदृश प्रतापी राजन्! **(यत्)** जो आप **(स्वायै)** अपने **(तन्वे)** शरीर के लिये **(वयः)** जीवन को **(कृण्वानः)** करते हुए **(वधेन)** वध से **(दस्युम्)** साहस कर्मकारी चोर का **(प्र, चातयस्व)** अत्यन्त नाश करो वा नाश कराओ तथा प्रजाओं को **(हि)** ही **(पिपर्षि)** प्रसन्न करते हो **(सः)** वह आप **(वाजे)** सङ्ग्रामों में **(अस्मान्)** हम लोगों **(देवान्)** विद्वानों की **(पाहि)** रक्षा कीजिये॥६॥

**भावार्थः**-हे राजन्! आप सदा चोर डाकुओं का नाश कर धार्मिकों का पालन करें और शत्रुओं को जीतें॥६॥

**अथ राजप्रजाविषयमाह॥**

अथ राजप्रजाविषय को कहते हैं॥

**वयं ते अग्न उक्थैर्विधेम वयं हव्यैः पावक भद्रशोचे।**

**अस्मे रयिं विश्ववारं समिन्वास्मे विश्वानि द्रविणानि धेहि॥७॥**



www.9009.co.in

**व॒यम्। ते॒। अ॒ग्ने॒। उ॒क्थैः। वि॒धे॒म॒। व॒यम्। ह॒व्यैः। पा॒व॒क॒। भ॒द्र॒ऽशो॒चे॒। अ॒स्मे इति॑। र॒यिम्। वि॒श्वऽवा॑रम्। सम्। इ॒न्व॒। अ॒स्मे इति॑। विश्वा॑नि। द्रवि॑णानि। धे॒हि॒॥७॥**

**पदार्थः**-(**वयम्**) (**ते**) तव (**अग्ने**) विद्युदिव वर्त्तमान (**उक्थैः**) प्रशंसितैर्वचनैः (**विधेम**) कुर्याम (**वयम्**) (**हव्यैः**) दातुमादातुमर्हैः (**पावक**) पवित्र (**भद्रशोचे**) कल्याणप्रकाशक (**अस्मे**) अस्मभ्यम् (**रयिम्**) श्रियम् (**विश्ववारम्**) आविवरपदार्थयुक्ताम् (**सम्**) (**इन्व**) व्याप्नुहि (**अस्मे**) अस्मभ्यम् (**विश्वानि**) अखिलानि (**द्रविणानि**) यशांसि (**धेहि**)॥७॥

**अन्वयः**-हे पावक भद्रशोचेऽग्ने विद्वन् राजन्! यथा वयं यस्य त उक्थैर्विश्वानि द्रविणानि विधेम तथाऽस्म एतानि सन् धेहि यथा वयं हव्यैस्ते विश्ववारं रयिं प्रापयेम तथा त्वमस्म एतमिन्व॥७॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यथा प्रजाऽमात्यजना राजश्रियं वर्धयेयुस्तथैव राजा एभ्यो धनं वर्धयेदेवं न्यायेन पितृपुत्रवद्वर्त्तित्वा कीर्त्तिमन्तो भवन्तु॥७॥

**पदार्थः**-हे (**पावक**) पवित्र (**भद्रशोचे**) कल्याण के प्रकाश करने वाले (**अग्ने**) बिजुली के सदृश वर्त्तमान विद्वान् राजन्! जैसे (**वयम्**) हम लोग जिन (**ते**) आपके (**उक्थैः**) प्रशंसित वचनों से (**विश्वानि**) सम्पूर्ण (**द्रविणानि**) यशों को (**विधेम**) सिद्ध करें वैसे (**अस्मे**) हम लोगों के लिये इनको (**सम्, धेहि**) अत्यन्त धारण कीजिये और जैसे (**वयम्**) हम लोग (**हव्यैः**) देने और लेने योग्यों से आपकी (**विश्ववारम्**) विवरपर्यन्त अर्थात् अति उत्तम पदार्थपर्यन्त पदार्थों से युक्त (**रयिम्**) लक्ष्मी को प्राप्त करावें, वैसे आप (**अस्मे**) हम लोगों के लिये इसको (**इन्व**) व्याप्त कीजिये॥७॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे प्रजा और मन्त्रीजन राजलक्ष्मी को बढ़ावें, वैसे ही राजा इन लोगों के लिये धन बढ़ावे। इस प्रकार न्याय से पिता और पुत्र के सदृश वर्त्ताव करके यशस्वी होवें॥७॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अ॒स्माक॑मग्ने अध्व॒रं जु॑षस्व॒ सह॑सः सूनो त्रिषधस्थ ह॒व्यम्।**

**व॒यं दे॒वेषु॑ सु॒कृतः॑ स्याम॒ शर्म॑णा नस्त्रि॒वरू॑थेन पाहि॥८॥**

**अ॒स्माक॑म्। अ॒ग्ने॒। अ॒ध्व॒रम्। जु॒ष॒स्व॒। सह॑सः। सू॒नो॒ इति॑। त्रि॒ऽस॒ध॒स्थ॒। ह॒व्यम्। व॒यम्। दे॒वेषु॑। सु॒ऽकृतः॑। स्या॒म॒। शर्म॑णा। नः॒। त्रि॒ऽवरू॑थेन। पा॒हि॒॥८॥**

**पदार्थः**-(**अस्माकम्**) (**अग्ने**) पावकवद्वर्त्तमान राजन् (**अध्वरम्**) पालनाख्यं व्यवहारम् (**जुषस्व**) (**सहसः**) बलिष्ठस्य कृतदीर्घब्रह्मचारिणः (**सूनो**) पुत्र (**त्रिषधस्थ**) त्रिभिः प्रजाभृत्यात्मीयैर्जनैः सह पक्षपातरहितस्तिष्ठति तत्सम्बुद्धौ (**हव्यम्**) दातुमर्हं सुखम् (**वयम्**) (**देवेषु**) विद्वत्सु (**सुकृतः**)



www.9009.co.in

धर्म्मकर्माचरणाः **(स्याम)** **(शर्मणा)** गृहेण **(नः)** **(त्रिवरूथेन)** त्रिषु वर्षाहेमन्तग्रीष्मसमयेषु वरूथेन वरेण **(पाहि)**॥८॥

**अन्वयः**-हे सहसः सूनो त्रिषधस्थाग्ने! त्वमस्माकं हव्यमध्वरं जुषस्व त्रिवरूथेन शर्मणा सह नोऽस्मान्त्सततं पाहि यतो वयं देवेषु सुकृतः स्याम॥८॥

**भावार्थः**-सर्वे जना राजानं प्रतीदं ब्रूयुर्हे राजँस्त्वमस्माकं पालनं यथावत्कुरु त्वद्रक्षिता वयं सततं धर्माचारिणो भूत्वा तवोन्नतिं यथा कुर्याम॥८॥

**पदार्थः**-हे **(सहसः, सूनो)** बलवान् और अतिकालपर्य्यन्त ब्रह्मचर्य्य को धारण किये हुए जन के पुत्र और **(त्रिषधस्थ)** तीन अर्थात् प्रजा, भृत्य और अपने कुटुम्ब के जनों के साथ पक्षपात छोड़ के रहने वाले **(अग्ने)** अग्नि के सदृश तेजस्वी वर्त्तमान राजन्! आप **(अस्माकम्)** हम लोगों के **(हव्यम्)** देने योग्य सुख और **(अध्वरम्)** पालनरूप व्यवहार का **(जुषस्व)** सेवन करो और **(त्रिवरूथेन)** वर्षा, शीत और ग्रीष्मकाल में श्रेष्ठ **(शर्मणा)** गृह के साथ **(नः)** हम लोगों का निरन्तर **(पाहि)** पालन करो जिससे **(वयम्)** हम लोग **(देवेषु)** विद्वानों में **(सुकृतः)** धर्म्मसम्बन्धी कर्म्म करने वाले **(स्याम)** होवें॥८॥

**भावार्थः**-सब जन राजा के प्रति यह कहें कि हे राजन्! आप हम लोगों का पालन यथावत् करिये, आपसे रक्षित हम लोग निरन्तर धर्माचरणयुक्त होकर आपकी उन्नति को जैसे [=जिस प्रकार] करें॥८॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**विश्वा॑नि नो दु॒र्गहा॑ जातवेदः॒ सिन्धुं॒ न ना॒वा दु॑रि॒ताति॑ पर्षि।**

**अग्ने॑ अत्रि॒वन्नम॑सा गृणा॒नो॒३॒॑स्माकं॑ बोध्यवि॒ता त॒नूना॑म्॥९॥**

**विश्वा॑नि। नः॒। दुः॒ऽगहा॑। जा॒तऽवे॒दः॒। सिन्धु॑म्। न। ना॒वा। दुः॒ऽइ॒ता। अति॑। प॒र्षि॒। अग्ने॑। अ॒त्रि॒ऽवत्। नम॑सा। गृ॒णा॒नः। अ॒स्माक॑म्। बो॒धि॒। अ॒वि॒ता। त॒नूना॑म्॥९॥**

**पदार्थः**-**(विश्वानि)** अखिलानि **(नः)** अस्माकम् **(दुर्गहा)** दुःखेन पारं गन्तुं योग्यानि **(जातवेदः)** जातविद्य **(सिन्धुम्)** नदीं समुद्रं वा **(न)** इव **(नावा)** नौकया **(दुरिता)** दुःखेन प्राप्तुं योग्यानि **(अति)** **(पर्षि)** पारयसि **(अग्ने)** धर्मिष्ठ राजन् **(अत्रिवत्)** अत्रयः सततं गन्तारो विद्यन्ते यस्य तत्सम्बुद्धौ **(नमसा)** सत्कारेणान्नादिना वा **(गृणानः)** स्तुवन् **(अस्माकम्)** **(बोधि)** बुध्यसे **(अविता)** रक्षकः **(तनूनाम्)** शरीराणाम्॥९॥

**अन्वयः**-हेऽत्रिवज्जातवेदोऽग्ने! यतस्त्वं नावा सिन्धुं न नो विश्वानि दुर्गहा दुरिताति पर्षि। नमसा गृणानोऽस्माकं तनूनामविता सन् बोधि तस्मात् सततं सेवनीयोऽसि॥९॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। ये राजाऽध्यापकोपदेशकाः सर्वान् जनान् दुःखात् पारयन्ति तेऽतुलं सुखं लभन्ते॥९॥

**पदार्थः**-हे **(अत्रिवत्)** निरन्तर चलने वालों से युक्त **(जातवेदः)** विद्याओं से सम्पन्न **(अग्ने)** धर्मिष्ठ राजन्! जिससे आप **(नावा)** नौका से **(सिन्धुम्)** नदी वा समुद्र को **(न)** जैसे वैसे **(नः)** हम लोगों के **(विश्वानि)** समस्त **(दुर्गहा)** दुःख से पार जाने को योग्य और **(दुरिता)** दुःख से प्राप्त होने योग्यों के भी **(अति, पर्षि)** पार जाते हो **(नमसा)** सत्कार वा अन्न आदि से **(गृणानः)** स्तुति करते हुए **(अस्माकम्)** हम लोगों के **(तनूनाम्)** शरीरों के **(अविता)** रक्षक होते हुए **(बोधि)** जानते हो, इससे निरन्तर सेवा करने योग्य हो॥९॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जो राजा अध्यापक और उपदेशक जन सब लोगों को दुःख से पार पहुँचाते हैं, वे अतुल सुख को प्राप्त होते हैं॥९॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**यस्त्वा हृदा कीरिणा मन्यमानोऽमर्त्यं मर्त्यो जोहवीमि।**

**जातवेदो यशो अस्मासु धेहि प्रजाभिरग्ने अमृतत्वमश्याम्॥१०॥**

**यः। त्वा। हृदा। कीरिणा। मन्यमानः। अमर्त्यम्। मर्त्यः। जोहवीमि। जातऽवेदः। यशः। अस्मासु। धेहि। प्रजाभिः। अग्ने। अमृतऽत्वम्। अश्याम्॥१०॥**

**पदार्थः**-**(यः)** **(त्वा)** त्वाम् **(हृदा)** **(कीरिणा)** स्तावकेन। **कीरिरिति स्तोतृनामसु पठितम्।** (निघं०३.१६)। **(मन्यमानः)** विजानन् **(अमर्त्यम्)** मरणधर्मरहितम् **(मर्त्यः)** मनुष्यः **(जोहवीमि)** भृशं स्पर्द्धे **(जातवेदः)** जातविज्ञान **(यशः)** कीर्त्तिम् **(अस्मासु)** **(धेहि)** **(प्रजाभिः)** पालनीयाभिस्सह **(अग्ने)** पावकवद्वर्त्तमान राजन् **(अमृतत्वम्)** मोक्षभावम् **(अश्याम्)** प्राप्नुयाम्॥१०॥

**अन्वयः**-हे जातवेदोऽग्ने! यो मन्यमानो मर्त्योऽहं हृदा कीरिणामर्त्यं त्वा जोहवीमि यथा प्रजाभिः सहाऽमृतत्वमश्यां तथाऽस्मासु यशो धेहि॥१०॥

**भावार्थः**-यथा प्रजा राजहितं साध्नुवन्ति तथैव राजा प्रजासुखमिच्छेदेवं परस्परप्रीत्याऽतुलं सुखं प्राप्नुवन्तु॥१०॥

**पदार्थः**-हे **(जातवेदः)** विज्ञान से युक्त **(अग्ने)** अग्नि के सदृश वर्तमान राजन्! **(यः)** जो **(मन्यमानः)** जानता हुआ **(मर्त्यः)** मनुष्य मैं **(हृदा)** अन्तःकरण और **(कीरिणा)** स्तुति करने वाले से **(अमर्त्यम्)** मरणधर्म्म से रहित **(त्वा)** आपकी **(जोहवीमि)** अत्यन्त स्पर्द्धा करूं और जैसे **(प्रजाभिः)** पालन करने योग्य प्रजाओं के साथ **(अमृतत्वम्)** मोक्षभाव को **(अश्याम्)** प्राप्त होऊँ, वैसे **(अस्मासु)** हम लोगों में **(यशः)** कीर्त्ति को **(धेहि)** धरिये, स्थापन कीजिये॥१०॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-जैसे प्रजायें राजा के हित को सिद्ध करती हैं, वैसे ही राजा प्रजा के सुख की इच्छा करें। इस प्रकार परस्पर प्रीति से अतुल सुख को प्राप्त होवें॥१०॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**यस्मै त्वं सुकृते जातवेद उ लोकमग्ने कृणवः स्योनम्।**

**अश्विनं स पुत्रिणं वीरवन्तं गोमन्तं रयिं नशते स्वस्ति॥११॥१९॥**

**यस्मै। त्वम्। सुऽकृते। जातऽवेदः। ऊँ इति। लोकम्। अग्ने। कृणवः। स्योनम्। अश्विनम्। सः। पुत्रिणम्। वीरऽवन्तम्। गोऽमन्तम्। रयिम्। नशते। स्वस्ति॥११॥**

**पदार्थः**-**(यस्मै)** **(त्वम्)** **(सुकृते)** धर्मात्मने **(जातवेदः)** जातप्रज्ञ **(उ)** **(लोकम्)** द्रष्टव्यम् **(अग्ने)** विद्वन् **(कृणवः)** करोषि **(स्योनम्)** सुखकारणम् **(अश्विनम्)** प्रशस्ताश्वादियुक्तम् **(सः)** **(पुत्रिणम्)** प्रशस्तपुत्रयुक्तम् **(वीरवन्तम्)** बहुवीराढ्यम् **(गोमन्तम्)** बहुगवादिसहितम् **(रयिम्)** धनम् **(नशते)** प्राप्नोति **(स्वस्ति)** सुखमयम्॥११॥

**अन्वयः**-हे जातवेदोऽग्ने! त्वं यस्मै सुकते स्योनं लोकं कृणवः स उ अश्विनं पुत्रिणं वीरवन्तं गोमन्तं स्वस्ति रयिं नशते॥११॥

**भावार्थः**-हे राजन्! यदि भवान् विद्याविनयाभ्यां प्रजाः पुत्राद्यैश्वर्ययुक्ताः कुर्यात् तर्हीमाः प्रजा भवन्तमतिमन्येरन्निति॥११॥

अत्र राजप्रजागुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति चतुर्थं सूक्तमेकोनविंशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे **(जातवेदः)** बुद्धि से युक्त **(अग्ने)** विद्वन् **(त्वम्)** आप **(यस्मै)** जिस **(सुकृते)** धर्मात्मा के लिये **(स्योनम्)** सुख का कारण **(लोकम्)** देखने योग्य **(कृणवः)** करते हो **(सः, उ)** वही **(अश्विनम्)** अच्छे घोड़े आदि पदार्थों **(पुत्रिणम्)** अच्छे पुत्रों **(वीरवन्तम्)** बहुत वीरों तथा **(गोमन्तम्)** बहुत गौ आदिकों के सहित **(स्वस्ति)** सुखस्वरूप **(रयिम्)** धन को **(नशते)** प्राप्त होता है॥११॥

**भावार्थः**-हे राजन्! जो आप विद्या और विनय से प्रजाओं को पुत्र आदि ऐश्वर्यों से युक्त करें तो ये प्रजायें आपका अति सत्कार करें॥११॥

इस सूक्त में राजा और प्रजा के गुण-वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह चौथा सूक्त और उन्नीसवाँ समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

**अथैकादशर्चस्य पञ्चमस्य सूक्तस्य वसुश्रुत आत्रेय ऋषिः। आप्री देवता। १, ५, ६, ७, ९, १० गायत्री। ३, ८ निचृद्गायत्री। ११ विराड्गायत्री। ४ पिपीलिकामध्या गायत्री छन्दः। षड्जः स्वरः। आर्च्युष्णिक् छन्दः। ऋषभः स्वरः॥**

***अथ विद्वद्विषयमाह॥***

अब ग्यारह ऋचा वाले पञ्चम सूक्त का आरम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में विद्वान् के विषय को कहते हैं॥

**सुसमिद्धाय शोचिषे घृतं तीव्रं जुहोतन। अग्नये जातवेदसे॥ १॥**

**सुऽसमिद्धाय। शोचिषे। घृतम्। तीव्रम्। जुहोतन। अग्नये। जातऽवेदसे॥ १॥**

**पदार्थः-(सुसमिद्धाय)** सुप्रदीप्ताय **(शोचिषे)** पवित्रकराय **(घृतम्)** आज्यम् **(तीव्रम्)** सुशोधितम् **(जुहोतन) (अग्नये)** पावकाय **(जातवेदसे)** जातेषु विद्यमानाय॥१॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यूयं जातवेदसे सुसमिद्धाय शोचिषेऽग्नये तीव्रं घृतं जुहोतन॥१॥

**भावार्थः**-येऽध्यापकाः शुद्धान्तःकरणेषु विद्यां वपन्ति ते सूर्य इव प्रतापयुक्ता भवन्ति॥१॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! आप लोग **(जातवेदसे)** उत्पन्न हुए पदार्थों में विद्यमान **(सुसमिद्धाय)** उत्तम प्रकार प्रदीप्त और **(शोचिषे)** पवित्र करने वाले **(अग्नये)** अग्नि के लिये **(तीव्रम्)** उत्तम प्रकार शुद्ध अर्थात् साफ किये **(घृतम्)** घृत का **(जुहोतन)** होम करो॥१॥

**भावार्थः**-जो अध्यापक जन पवित्र अन्तःकरण वालों में विद्या का संस्कार डालते हैं, वे सूर्य्य के सदृश प्रताप से युक्त होते हैं॥१॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय कहते हैं॥

**नराशंसः सुषूदतीमं यज्ञमदाभ्यः। कविर्हि मधुहस्त्यः॥ २॥**

**नराशंसः। सुसूदति। इमम्। यज्ञम्। अदाभ्यः। कविः। हि। मधुऽहस्त्यः॥ २॥**

**पदार्थः-(नराशंसः)** यो नरैः प्रशस्यते **(सुषूदति)** अमृतं क्षरति **(इमम्) (यज्ञम्)** विद्याप्रचाराख्यं व्यवहारम् **(अदाभ्यः)** निष्कपटः **(कविः)** मेधावी **(हि)** यतः **(मधुहस्त्यः)** मधुहस्तेषु साधुः॥२॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! योऽदाभ्यो मधुहस्त्यो नराशंसः कविर्जनो हीमं यज्ञं सुषूदत्यतः सोऽलंसुखो जायते॥२॥

**भावार्थः**-हे विद्वन्! यथा गौः सर्वेषां सुखाय दुग्धं क्षरति तथा सर्वेषां सुखाय सत्यविद्योपदेशान् सततं वर्षय॥२॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो **(अदाभ्यः)** निष्कपट **(मधुहस्त्यः)** मधुर हस्त वालों में श्रेष्ठ **(नराशंसः)** मनुष्यों से प्रशंसा किया गया **(कविः)** बुद्धिमान् जन **(हि)** जिस कारण **(इमम्)** इस **(यज्ञम्)** विद्या के



www.9009.co.in

प्रचारनामक व्यवहार को **(सुषूदति)** अमृत के सदृश टपकाता है, इस कारण वह पूर्ण सुखयुक्त होता है॥२॥

**भावार्थ:**-हे विद्वान्! जैसे गौ सब के सुख के लिये दुग्ध देती है, वैसे सब के सुख के लिये सत्यविद्या के उपदेशों को निरन्तर वर्षाइये॥२॥

**अथ राजविषयमाह॥**

अब राजविषय को कहते हैं॥

**ईळितो अग्न आ वहेन्द्रं चित्रमिह प्रियम्। सुखै रथेभिरूतये॥३॥**

**ईळितः। अग्ने। आ। वह। इन्द्रम्। चित्रम्। इह। प्रियम्। सुऽखैः। रथेभिः। ऊतये॥३॥**

**पदार्थ:**-**(ईळितः)** प्रशंसितः **(अग्ने)** प्रकाशात्मन् **(आ)** **(वह)** समन्तात् प्राप्नुहि **(इन्द्रम्)** परमैश्वर्यम् **(चित्रम्)** अद्भुतम् **(इह)** संसारे **(प्रियम्)** कमनीयम् **(सुखैः)** सुखकारकैः **(रथेभिः)** यानैः **(ऊतये)** रक्षणाद्याय॥३॥

**अन्वय:**-हे अग्ने! ईळितस्त्वमिह सुखै रथेभिरूतये चित्रं प्रियमिन्द्रमा वह॥३॥

**भावार्थ:**-राजँस्त्वं महैश्वर्य्यं प्राप्य प्रजारक्षणाय सर्वत्र भ्रम॥३॥

**पदार्थ:**-हे **(अग्ने)** आत्मप्रकाशस्वरूप **(ईळितः)** प्रशंसा किये गये आप **(इह)** इस संसार में **(सुखैः)** सुखकारक **(रथेभिः)** वाहनों से **(ऊतये)** रक्षण आदि के लिये **(चित्रम्)** अद्भुत **(प्रियम्)** मनोहर **(इन्द्रम्)** अत्यन्त ऐश्वर्य्य को **(आ, वह)** सब प्रकार से प्राप्त कीजिये॥३॥

**भावार्थ:**-हे राजन्! आप बड़े ऐश्वर्य्य को प्राप्त होके प्रजा के रक्षण के लिये सर्वत्र भ्रमण कीजिये॥३॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय कहते हैं॥

**ऊर्णम्रदा वि प्रथस्वाभ्य१र्का अनूषत। भवा नः शुभ्र सातये॥४॥**

**ऊर्णऽम्रदाः। वि। प्रथस्व। अभि। अर्काः। अनूषत। भव। नः। शुभ्र। सातये॥४॥**

**पदार्थ:**-**(ऊर्णम्रदाः)** य ऊर्णं रक्षकैर्मृद्नन्ति **(वि)** **(प्रथस्व)** प्रख्याहि **(अभि)** **(अर्काः)** मन्त्रार्थविदः **(अनूषत)** **(भवा)** अत्र **द्व्यचोऽतस्तिङ** इति दीर्घः। **(नः)** अस्मान् **(शुभ्र)** शुद्धाचरण **(सातये)** दायविभागाय॥४॥

**अन्वय:**-हे शुभ्र राजँस्त्वं सातये वि प्रथस्व नोऽस्मभ्यं सुखकारी भवा। हे ऊर्णम्रदा अर्का! यूयं नोऽस्मान्त्सर्वा विद्या अभ्यनूषत॥४॥

**भावार्थ:**-राजा राजपुरुषाश्च विभज्य स्वमंशं गृह्णीयुः प्रजाभागाँश्च प्रजाभ्यो दद्युः॥४॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-हे **(शुभ्र)** शुद्ध आचरण करने वाले राजन्! आप **(सातये)** दाय विभाग के लिये **(वि, प्रथस्व)** प्रसिद्ध कीजिये और हम लोगों के लिये सुखकारी **(भवा)** हूजिये। हे **(ऊर्णम्रदाः)** रक्षकों के सहित मर्दन करने और **(अर्काः)** मन्त्र और अर्थ के जानने वाले आप लोगो **(नः)** हम लोगों को सम्पूर्ण विद्याओं से सम्पन्न **(अभि, अनूषत)** कीजिये॥४॥

**भावार्थः**-राजा और राजपुरुष विभाग करके अपने-अपने अंश अर्थात् हिस्से को ग्रहण करें और प्रजाओं के भाग प्रजाओं के लिये देवें॥४॥

**अथ गृहाश्रमविषयमाह॥**

अब गृहाश्रमविषय को कहते हैं॥

**देवीर्द्वारो वि श्रयध्वं सुप्रायणा न ऊतये। प्रप्र यज्ञं पृणीतन॥५॥२०॥**

**देवीः। द्वारः। वि। श्रयध्वम्। सुऽप्रऽअयनाः। नः। ऊतये। प्रऽप्र। यज्ञम्। पृणीतन॥५॥**

**पदार्थः**-**(देवीः)** दिव्याः शुद्धाः **(द्वारः)** द्वाराणीव सुखनिमित्ताः **(वि)** **(श्रयध्वम्)** विशेषेण सेवध्वम् **(सुप्रायणाः)** सुष्ठु प्रकृष्टमयनं गमनं याभ्यस्ताः **(नः)** अस्माकम् **(ऊतये)** रक्षणाद्याय **(प्रप्र)** **(यज्ञम्)** गृहाश्रमव्यवहारम् **(पृणीतन)** अलं कुरुत॥५॥

**अन्वयः**-हे पुरुषा! यूयं सुप्रायणा देवीर्द्वार इवोत्तमाः पत्नीर्वि श्रयध्वं न ऊतये यज्ञं प्रप्र पृणीतन॥५॥

**भावार्थः**-यदि तुल्यगुणकर्म्मस्वभावाः स्त्रीपुरुषा विवाहं कृत्वा गृहाश्रमारभेरंस्तर्हि पूर्णं सुखं लभेरन्॥५॥

**पदार्थः**-हे पुरुषो! तुम **(सुप्रायणाः)** उत्तम प्रकार गृहों में प्रवेश हो जिनसे ऐसी **(देवीः)** श्रेष्ठ और शुद्ध **(द्वारः)** द्वारों के सदृश सुख की कारणभूत उत्तम स्त्रियों का **(वि, श्रयध्वम्)** विशेष करके सेवन करो और **(नः)** हम लोगों के **(ऊतये)** रक्षण आदि के लिये **(यज्ञम्)** गृहाश्रमव्यवहार को **(प्रप्र, पृणीतन)** पुष्ट करो॥५॥

**भावार्थः**-यदि तुल्य गुण, कर्म, स्वभाव वाले स्त्री-पुरुष विवाह करके गृहाश्रम का आरम्भ करें तो पूर्ण सुख पावें॥५॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**सुप्रतीके वयोवृधा यह्वी ऋतस्य मातरा। दोषामुषासमीमहे॥६॥**

**सुप्रतीके इति सुऽप्रतीके। वयःऽवृधा। यह्वी इति। ऋतस्य। मातरा। दोषाम्। उषसम्। ईमहे॥६॥**

**पदार्थः**-**(सुप्रतीके)** सुष्ठु प्रतीतिकरे **(वयोवृधा)** ये वयः कमनीयं जीवनं वर्धयतः **(यह्वी)** महत्यौ **(ऋतस्य)** सत्यस्य **(मातरा)** मान्यप्रदे **(दोषाम्)** रात्रीम् **(उषासम्)** दिनम्। अत्रा**न्येषामपी**ति दीर्घः। **(ईमहे)** याचामहे॥६॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथा वयं सुप्रतीके वयोवृधा यह्वी ऋतस्य मातरा दोषामुषासमीमहे तथैते यूयमपि याचध्वम्॥६॥

**भावार्थः**-यथा रात्रिदिने सहैव वर्त्तेते तथैव कृतविवाहौ स्त्रीपुरुषौ वर्त्तेयाताम्॥६॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे हम लोग **(सुप्रतीके)** उत्तम विश्वास करने **(वयोवृधा)** सुन्दर जीवन को बढ़ाने और **(यह्वी)** बड़े **(ऋतस्य)** सत्य के **(मातरा)** आदर देने वाले **(दोषाम्)** रात्रि और **(उषासम्)** दिन की **(ईमहे)** याचना करते हैं, वैसे इन की आप लोग भी याचना करो॥६॥

**भावार्थः**-जैसे रात्रि और दिन एक साथ ही वर्त्तमान हैं, वैसे ही जिन्होंने विवाह किया, ऐसे स्त्री पुरुष वर्त्ताव करें॥६॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**वात॑स्य॒ पत्म॑न्नीळि॒ता दैव्या॒ होता॑रा॒ मनु॑षः। इ॒मं नो॑ य॒ज्ञमा ग॑तम्॥७॥**

**वात॑स्य। पत्म॑न्। ई॒ळि॒ता। दैव्या॑। होता॑रा। मनु॑षः। इ॒मम्। नः॒। य॒ज्ञम्। आ। ग॒त॒म्॥७॥**

**पदार्थः**-**(वातस्य)** वायोः **(पत्मन्)** पतन्ति यस्मिन् मार्गे तस्मिन् **(ईळिता)** प्रशंसितौ **(दैव्या)** देवेषु दिव्यगुणेषु भवौ **(होतारा)** दातारौ **(मनुषः)** मनुष्यान् **(इमम्)** **(नः)** अस्माकम् **(यज्ञम्)** सङ्गन्तव्यं व्यवहारम् **(आ)** **(गतम्)** आगच्छतम्॥७॥

**अन्वयः**-हे ईळिता दैव्या होतारा! युवां वातस्य पत्मन्न इमं यज्ञं मनुषश्चाऽऽगतम्॥७॥

**भावार्थः**-हे स्त्रीपुरुषौ! युवां धर्म्यकर्माचरणेन प्रशंसितौ भूत्वेतं गृहाश्रमव्यवहारं साध्नुतम्॥७॥

**पदार्थः**-हे **(ईळिता)** प्रशंसित **(दैव्या)** श्रेष्ठ गुणों में उत्पन्न **(होतारा)** दाता जनो! आप दोनों **(वातस्य)** वायु के **(पत्मन्)** गिरते हैं जिसमें उस मार्ग में **(नः)** हम लोगों के **(इमम्)** इस **(यज्ञम्)** मिलने योग्य व्यवहार को **(मनुषः)** और मनुष्यों को **(आ, गतम्)** प्राप्त होवें॥७॥

**भावार्थः**-हे स्त्री-पुरुषो! आप दोनों धर्म्मसम्बन्धी कर्म्म के आचरण से प्रशंसित होकर इस गृहाश्रमव्यवहार को सिद्ध करो॥७॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**इळा॒ सर॑स्वती म॒ही ति॒स्रो दे॒वीर्म॑यो॒भुव॑ः। ब॒र्हिः सी॑दन्त्व॒स्रिध॑ः॥८॥**

**इळा॑। सर॑स्वती। म॒ही। ति॒स्रः। दे॒वीः। म॒यः॒ऽभुव॑ः। ब॒र्हिः। सी॒द॒न्तु॒। अ॒स्रिध॑ः॥८॥**

**पदार्थः**-**(इळा)** प्रशंसिता विद्या **(सरस्वती)** वाक् **(मही)** भूमिः **(तिस्रः)** **(देवीः)** दिव्यगुणाः **(मयोभुवः)** सुखं भावुकाः **(बर्हिः)** उत्तमं गृहाश्रमम् **(सीदन्तु)** प्राप्नुवन्तु **(अस्रिधः)** अहिंस्राः॥८॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथाऽस्निध इळा सरस्वती मही मयोभुवस्तिस्रो देवीर्बर्हिः सीदन्तु तथैव यूयमपि सीदत॥८॥

**भावार्थः**-हे स्त्रीपुरुषा! यूयं विद्यां सुशिक्षितां वाचं भूमिराज्यं च सुखाय प्राप्नुत॥८॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे **(अस्रिधः)** नहीं नाश करने वाली **(इळा)** प्रशंसित विद्या **(सरस्वती)** वाणी **(मही)** भूमि **(मयोभुवः)** सुख को कराने वाली **(तिस्रः)** तीन **(देवीः)** श्रेष्ठ गुणवती **(बर्हिः)** उत्तम गृहाश्रम को **(सीदन्तु)** प्राप्त हों, वैसे ही आप लोग भी प्राप्त होओ॥८॥

**भावार्थः**-हे स्त्री और पुरुषो! आप लोग विद्या उत्तम प्रकार शिक्षित वाणी और भूमि के राज्य को सुख के लिये प्राप्त हूजिये॥८॥

**अथ राजप्रजाविषयमाह॥**

अब राजप्रजाविषय को कहते हैं॥

**शिवस्त्वष्टरिहा गहि विभुः पोष उत त्मना। यज्ञेयज्ञे न उदव॥९॥**

**शिवः। त्वष्टः। इह। आ। गहि। विऽभुः। पोषे। उत। त्मना। यज्ञेऽयज्ञे। नः। उत्। अव॥९॥**

**पदार्थः**-**(शिवः)** मङ्गलकारी **(त्वष्टः)** सर्वदुःखछेत्तः **(इह)** अस्मिँस्थले **(आ)** **(गहि)** **(विभुः)** व्यापकः परमेश्वर इव **(पोषे)** पुष्यन्ति यस्मिँस्तस्मिन् **(उत)** **(त्मना)** आत्मना **(यज्ञेयज्ञे)** सङ्गन्तव्ये व्यवहारे **(नः)** अस्मान् **(उत्)** **(अव)** उत्कृष्टतया रक्ष॥९॥

**अन्वयः**-हे त्वष्टा राजन्निह पोषे विभुरिव शिवः सँस्त्मना यज्ञेयज्ञे आ गहि उत न उदव॥९॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यूयं परमेश्वरवद्वर्त्तित्वा सर्वेषां कल्याणं कुरुत॥९॥

**पदार्थः**-हे **(त्वष्टः)** सब दुःखों के नाश करने वाले राजन्! **(इह)** इस स्थल में **(पोषे)** कि जिसमें पुष्ट हों **(विभुः)** व्यापक परमेश्वर के सदृश **(शिवः)** मङ्गलकारी होते हुए **(त्मना)** आत्मा से **(यज्ञेयज्ञे)** मेल करने योग्य व्यवहार में **(आ, गहि)** प्राप्त होओ **(उत)** और **(नः)** हम लोगों की **(उत्, अव)** उत्तम प्रकार रक्षा करो॥९॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! आप लोग परमेश्वर के सदृश वर्त्ताव करके सब के कल्याण को करो॥९॥

**अथ विद्याग्रहणविषयमाह॥**

अब विद्याग्रहणविषय को कहते हैं॥

**यत्र वेत्थ वनस्पते देवानां गुह्या नामानि। तत्र हव्यानि गामय॥१०॥**

**यत्र। वेत्थ। वनस्पते। देवानाम्। गुह्या। नामानि। तत्र। हव्यानि। गमय॥१०॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**यत्र**) अस्मिन् (**वेत्थ**) जानासि (**वनस्पते**) वनस्य पालक (**देवानाम्**) (**गुह्या**) गुप्तानि (**नामानि**) (**तत्र**) (**हव्यानि**) दातुमादातुमर्हाणि वस्तूनि (**गामय**) प्रापय। अत्र **तुजादीनामि**ति दीर्घः॥१०॥

**अन्वयः**-हे वनस्पते! त्वं यत्र देवानां गुह्या नामानि वेत्थ तत्र हव्यानि गामय॥१०॥

**भावार्थः**-ये विदुषामन्तःस्थानि विद्याप्रभावेन जातानि नामानि जानन्ति ते पुष्कलं सुखं जनान् प्रापयन्ति॥१०॥

**पदार्थः**-हे (**वनस्पते**) वन के पालन करने वाले आप (**यत्र**) जिसमें (**देवानाम्**) विद्वानों के (**गुह्या**) गुप्त (**नामानि**) नाम (**वेत्थ**) जानते हैं (**तत्र**) वहाँ (**हव्यानि**) देने और लेने योग्य वस्तुओं को (**गामय**) पहुंचाइये॥१०॥

**भावार्थः**-जो विद्वानों के हृदयों में स्थित और विद्या के प्रभाव से उत्पन्न हुए नामों को जानते हैं, वे बहुत सुख मनुष्यों को प्राप्त कराते हैं॥१०॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**स्वाहाग्नये वरुणाय स्वाहेन्द्राय मुरुद्भ्यः। स्वाहा देवेभ्यो हुविः॥११॥२१॥**

**स्वाहा। अग्नये। वरुणाय। स्वाहा। इन्द्राय। मुरुत्ऽभ्यः। स्वाहा। देवेभ्यः। हुविः॥११॥**

**पदार्थः**-(**स्वाहा**) सत्या वाक् (**अग्नये**) विद्युदादिविद्यायै (**वरुणाय**) श्रेष्ठाय (**स्वाहा**) सत्या क्रिया (**इन्द्राय**) ऐश्वर्याय (**मरुद्भ्यः**) मनुष्येभ्यः (**स्वाहा**) सत्क्रिया (**देवेभ्यः**) विद्वद्भ्यः (**हविः**) दातव्यवस्तु॥११॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! युष्माभिर्वरुणायाग्नये स्वाहेन्द्राय मरुद्भ्यः स्वाहा देवेभ्यो हविः स्वाहा प्रयोक्तव्या॥११॥

**भावार्थः**-मनुष्या विद्यासत्क्रियाभ्यामग्निविद्यां गृहीत्वा विदुषः सत्कृत्य मनुष्याणां हितं सततं कुर्वन्त्विति॥११॥

अत्र विद्वद्राजगृहाश्रमराजप्रजाविषयविद्याग्रहणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति पञ्चमं सूक्तमेकविंशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! आप लोगों को चाहिये कि (**वरुणाय**) श्रेष्ठ के और (**अग्नये**) बिजुली आदि की विद्या के लिये (**स्वाहा**) सत्य वाणी (**इन्द्राय**) ऐश्वर्य्य और (**मरुद्भ्यः**) मनुष्यों के लिये (**स्वाहा**) सत्य क्रिया तथा (**देवेभ्यः**) विद्वानों के लिये (**हविः**) देने योग्य वस्तु और (**स्वाहा**) श्रेष्ठ कर्म्म का प्रयोग करो॥११॥

**भावार्थः**-मनुष्य विद्या और श्रेष्ठ कर्म्म से अग्नि की विद्या को ग्रहण कर विद्वानों का सत्कार करके मनुष्यों के हित को निरन्तर करें॥११॥ इस सूक्त में विद्वान्, राजा, गृहाश्रम, राजप्रजाविषय और



www.9009.co.in

विद्याग्रहण का वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ संगति जाननी चाहिये॥

**यह पांचवां सूक्त और इक्कीसवां वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

**अथ दशर्चस्य षष्ठस्य सूक्तस्य वसुश्रुत आत्रेय ऋषिः। अग्निर्देवता। १, ८, ९ निचृत्पङ्क्तिः। २, ५ पङ्क्तिः। ७ विराट्पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः। ३, ४ स्वराड्बृहती। ६, १० भुरिग्बृहतीछन्दः। मध्यमः स्वरः॥**

*अथाग्निविषयमाह॥*

अब दश ऋचा वाले छठे सूक्त का आरम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में अग्निविषय को कहते हैं॥

**अ॒ग्निं तं म॑न्ये॒ यो वसु॑र॒स्तं॒ यं यन्ति॑ धे॒नवः॑।**

**अस्त॒मर्व॑न्त आ॒शवोऽस्तं॒ नित्या॑सो वा॒जिन॒ इषं॑ स्तो॒तृभ्य॒ आ भ॑र॥१॥**

**अ॒ग्निम्। तम्। म॒न्ये॒। यः। वसुः॑। अस्त॑म्। यम्। यन्ति॑। धे॒नवः॑। अस्त॑म्। अर्व॑न्तः। आ॒शवः॑। अस्त॑म्। नित्या॑सः। वा॒जिनः॑। इष॑म्। स्तो॒तृऽभ्यः॑। आ। भ॒र॥१॥**

**पदार्थः**-(**अग्निम्**) (**तम्**) (**मन्ये**) (**यः**) (**वसुः**) सर्वत्र वस्ता (**अस्तम्**) प्रक्षिप्तं प्रेरितम् (**यम्**) (**यन्ति**) (**धेनवः**) गावः (**अस्तम्**) (**अर्वन्तः**) गच्छन्तः (**आशवः**) आशुगामिनः पदार्थाः (**अस्तम्**) (**नित्यासः**) अविनाशिनः (**वाजिनः**) वेगवन्तः (**इषम्**) अन्नम् (**स्तोतृभ्यः**) स्तावकेभ्यः (**आ**) (**भर**) धर॥१॥

**अन्वयः**-हे विद्वन्! यो वसुर्यमस्तमग्निं धेनवो यमस्तमर्वन्त आशवो नित्यासो वाजिनो यमस्तं यन्ति तमहं मन्ये तद्विद्यया त्वं स्तोतृभ्य इषमा भर॥१॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यदि भवन्तो विद्युदादिरूपं सर्वत्राऽभिव्याप्तमग्निं युक्त्या चालयेयुस्तर्ह्ययं स्वयं वेगवान् भूत्वाऽन्यान्यपि सद्यो गमयति॥१॥

**पदार्थः**-हे विद्वन्! (**यः**) जो (**वसुः**) सब स्थानों में रहने वाला (**यम्**) जिस (**अस्तम्**) फेंके अर्थात् काम में लाये गये (**अग्निम्**) अग्नि को और (**धेनवः**) गौएँ जिस (**अस्तम्**) प्रेरणा किये गये को तथा (**अर्वन्तः**) जाते हुए और (**आशवः**) शीघ्र चलने वाले पदार्थ और (**नित्यासः**) नहीं नाश होने वाले (**वाजिनः**) वेग से युक्त पदार्थ जिस (**अस्तम्**) प्रेरणा किये गये को (**यन्ति**) प्राप्त होते हैं (**तम्**) उसको मैं (**मन्ये**) मानता हूँ, उसकी विद्या से आप (**स्तोतृभ्यः**) स्तुति करने वालों के लिये (**इषम्**) अन्न को (**आ, भर**) अच्छे प्रकार धारण कीजिये॥१॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! यदि आप बिजुली आदि रूपवान् और सब कहीं अभिव्याप्त अग्नि को युक्ति से चलावें तो यह स्वयं वेगवान् होकर औरों को भी शीघ्र चलाता है॥१॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥



www.9009.co.in

**सो अ॒ग्निर्यो वसु॑र्गृ॒णे सं यमा॒यन्ति॑ धे॒नव॑:।**

**समर्व॑न्तो रघु॒द्रुव॒: सं सु॑जा॒तास॑: सू॒रय॒ इषं॑ स्तो॒तृभ्य॒ आ भ॑र॥२॥**

**स:। अ॒ग्नि:। य:। वसु॑:। गृ॒णे। सम्। यम्। आ॒ऽयन्ति॑। धे॒नव॑:। सम्। अर्व॑न्त:। र॒घु॒ऽद्रुव॑:। सम्। सु॒ऽजा॒ता॑स:। सू॒रय॑:। इष॑म्। स्तो॒तृ॒ऽभ्य॑:। आ। भ॒र॒॥२॥**

**पदार्थ:**-(**स:**) (**अग्नि:**) (**य:**) (**वसु:**) द्रव्यस्वरूप: (**गृणे**) स्तौमि (**सम्**) (**यम्**) (**आयन्ति**) आगच्छन्ति (**धेनव:**) वाच: (**सम्**) (**अर्वन्त:**) वेगवन्त: (**रघुद्रुव:**) ये लघु द्रवन्ति ते (**सम्**) (**सुजातास:**) सम्यक् प्रसिद्धा: (**सूरय:**) विद्वांस: (**इषम्**) (**स्तोतृभ्य:**) अध्यापकेभ्य: (**आ**) (**भर**)॥२॥

**अन्वय:**-हे विद्वन्! यो वसुर्यं धेनव: समायन्ति यं रघुद्रुवोऽर्वन्त: समायन्ति यं सुजातास: सूरय: समायन्ति यमहं गृणे सोऽग्निस्तत्प्रयोगेन स्तोतृभ्य इषमा भर॥२॥

**भावार्थ:**-हे मनुष्या! भवन्तोऽग्न्यादिपदार्थविज्ञानेन पण्डिता भूत्वाऽध्यापकेभ्य ऐश्वर्य्यमुन्नयन्तु॥२॥

**पदार्थ:**-हे विद्वन्! (**य:**) जो (**वसु:**) धनरूप (**यम्**) जिसको (**धेनव:**) वाणियाँ (**सम्, आयन्ति**) अच्छे प्रकार प्राप्त होती हैं और जिसको (**रघुद्रुव:**) थोड़ा दौड़ने वाले (**अर्वन्त:**) वेगवान् पदार्थ (**सम्**) अच्छे प्रकार प्राप्त होते हैं और जिसको (**सुजातास:**) उत्तम प्रकार प्रसिद्ध (**सूरय:**) विद्वान् जन (**सम्**) अच्छे प्रकार प्राप्त होते हैं और जिसकी मैं (**गृणे**) प्रशंसा करता हूं (**स:**) वह (**अग्नि:**) अग्नि है, उसके प्रयोग से (**स्तोतृभ्य:**) अध्यापकों के लिये (**इषम्**) अन्न को (**आ, भर**) सब प्रकार धारण कीजिये॥२॥

**भावार्थ:**-हे मनुष्यो! आप लोग अग्नि आदि पदार्थ के विज्ञान से चतुर होकर अध्यापकों के लिये ऐश्वर्य्य की प्राप्ति कराइये॥२॥

**पुनरग्निविषयमाह**

फिर अग्निविषय को कहते हैं॥

**अ॒ग्निर्हि वा॒जिनं॑ वि॒शे ददा॑ति वि॒श्वच॑र्षणि:।**

**अ॒ग्नी रा॒ये स्वा॒भुवं॒ स प्री॒तो या॑ति॒ वार्य॒मिषं॑ स्तो॒तृभ्य॒ आ भ॑र॥३॥**

**अ॒ग्नि:। हि। वा॒जिन॑म्। वि॒शे। ददा॑ति। वि॒श्वऽच॑र्षणि:। अ॒ग्नि:। रा॒ये। सु॒ऽआ॒भुव॑म्। स:। प्री॒त:। या॒ति॒। वार्य॑म्। इष॑म्। स्तो॒तृ॒ऽभ्य॑:। आ। भ॒र॒॥३॥**

**पदार्थ:**-(**अग्नि:**) पावक: (**हि**) यत: (**वाजिनम्**) बहुवेगवन्तम् (**विशे**) प्रजायै (**ददाति**) (**विश्वचर्षणि:**) विश्वप्रकाशक: (**अग्नि:**) (**राये**) धनाय (**स्वाभुवम्**) य: स्वयमाभवति तम् (**स:**) (**प्रीत:**) कमित: (**याति**) (**वार्यम्**) वरणीयम् (**इषम्**) अन्नादिकम् (**स्तोतृभ्य:**) (**आ**) (**भर**)॥३॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे विद्वन्! यो विश्वचर्षणिरग्निर्हि विशो वाजिनं ददाति योऽग्नी राये स्वाभुवं याति तद्विद्यया सः प्रीतः स्तोतृभ्यो वार्यमिषमा भर॥३॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! अग्निरेव सुसाधितः सन् सुखप्रदो भवति येन भवन्त ऐश्वर्यमुन्नयन्तु॥३॥

**पदार्थः**-हे विद्वन्! जो **(विश्वचर्षणिः)** संसार का प्रकाश करने वाला **(अग्निः)** अग्नि **(हि)** जिससे **(विशे)** प्रजा के लिये **(वाजिनम्)** बहुत वेग वाले को **(ददाति)** देता है और जो **(अग्निः)** अग्नि **(राये)** धन के लिये **(स्वाभुवम्)** स्वयं उत्पन्न होने वाले को **(याति)** प्राप्त होता है, उस विद्या से **(सः)** वह आप **(प्रीतः)** कामना किये गये **(स्तोतृभ्यः)** स्तुति करने वालों के लिये **(वार्यम्)** स्वीकार करने योग्य **(इषम्)** अन्न आदि का **(आ, भर)** धारण कीजिये॥३॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! अग्नि ही उत्तम प्रकार साधित किया गया सुख देने वाला होता है, जिससे आप लोग ऐश्वर्य की वृद्धि करो॥३॥

**अथाग्निविद्याविद्विद्वद्विषयमाह॥**

अब अग्निविद्या के जानने वाले विद्वान् के विषय को कहते हैं॥

**आ ते॑ अग्न इधीमहि द्युमन्तं॑ देवा॒जर॑म्।**

**यद्ध॒ स्या ते॒ पनी॑यसी स॒मिद्दी॒दय॑ति॒ द्यवीषं॑ स्तो॒तृभ्य॒ आ भ॑र॥४॥**

**आ। ते॒। अ॒ग्ने॒। इ॒धी॒म॒हि॒। द्यु॒ऽमन्त॑म्। दे॒व॒। अ॒जर॑म्। यत्। ह॒। स्या। ते॒। पनी॑यसी। स॒म्ऽइत्। दी॒दय॑ति। द्यवि॑। इष॑म्। स्तो॒तृऽभ्यः॑। आ। भ॒र॥४॥**

**पदार्थः**-**(आ)** **(ते)** तव **(अग्ने)** विद्वन् **(इधीमहि)** प्रदीपयेम **(द्युमन्तम्)** दीप्तिमन्तम् **(देव)** सुखप्रदातः **(अजरम्)** जरारहितम् **(यत्)** या **(ह)** किल **(स्या)** सा **(ते)** तव **(पनीयसी)** अतीव प्रशंसनीया **(समित्)** प्रदीप्ता **(दीदयति)** प्रदीप्यते **(द्यवि)** प्रकाशे **(इषम्)** अन्नादिकम् **(स्तोतृभ्यः)** **(आ)** **(भर)**॥४॥

**अन्वयः**-हे देवाऽग्ने! त्वं द्युमन्तमजरमग्निं प्रदीपयसि यद्या ते पनीयसी समित् स्या ते द्यवि दीदयति येन स्तोतृभ्य इषं ह वयमेधीमहि तया स्तोतृभ्य इषं त्वमा भर॥४॥

**भावार्थः**-हे विद्वन्! यामग्न्यादिविद्यां भवाञ्जानाति यया भवतः प्रशंसा जायते तामस्मान् बोधय॥४॥

**पदार्थः**-हे **(देव)** सुख के देने वाले **(अग्ने)** विद्वन् आप **(द्युमन्तम्)** प्रकाशित **(अजरम्)** जरावस्था से रहित अग्नि को प्रज्वलित करते हो और **(यत्)** जो **(ते)** आपकी **(पनीयसी)** अतीव प्रशंसा करने योग्य **(समित्)** समिध् है **(स्या)** वह **(ते)** आपके **(द्यवि)** प्रकाश में **(दीदयति)** प्रज्वलित की जाती है और जिससे **(स्तोतृभ्यः)** स्तुति करने वालों के लिये **(इषम्)** अन्न आदि को **(ह)** निश्चय से हम लोग **(आ, इधीमहि)** प्रकाशित करें, उससे स्तुति करने वालों के लिये अन्न आदि को आप **(आ, भर)** अच्छे प्रकार धारण कीजिये॥४॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-हे विद्वन्! जिस अग्नि आदि की विद्या को आप जानते हैं और जिस विद्या से आपकी प्रशंसा होती है, उसका हम लोगों को बोध दीजिये॥४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**आ ते॑ अग्न ऋ॒चा ह॒विः शु॒क्रस्य॑ शोचिषस्पते।**

**सुश्च॑न्द्र॒ दस्म॒ विश्प॑ते॒ हव्य॑वा॒ट् तुभ्यं॑ हूयत॒ इषं॑ स्तो॒तृभ्य॒ आ भ॑र॥५॥२२॥**

**आ। ते॒। अ॒ग्ने॒। ऋ॒चा। ह॒विः। शु॒क्रस्य॑। शो॒चि॒षः॒। प॒ते॒। सु॒ऽच॒न्द्र॒। दस्म॑। विश्प॑ते। हव्य॑ऽवाट्। तुभ्य॑म्। हू॒य॒ते॒। इष॑म्। स्तो॒तृऽभ्यः॑। आ। भ॒र॒॥५॥**

**पदार्थः**-**(आ)** समन्तात् **(ते)** तव **(अग्ने)** विद्वन् **(ऋचा)** प्रशंसया **(हविः)** होतव्यम् **(शुक्रस्य)** शुद्धस्य **(शोचिषः)** प्रकाशस्य **(पते)** स्वामिन् **(सुश्चन्द्र)** शोभनं चन्द्रं हिरण्यं यस्य तत्सम्बुद्धौ **(दस्म)** दुःखोपक्षयितः **(विश्पते)** प्रजापालक **(हव्यवाट्)** यो हव्यं दातव्यं वहति प्राप्नोति **(तुभ्यम्)** **(हूयते)** दीयते **(इषम्)** अन्नम् **(स्तोतृभ्यः)** **(आ)** **(भर)**॥५॥

**अन्वयः**-हे शोचिषस्पते सुश्चन्द्र दस्म विश्पतेऽग्ने राजञ्छुक्रस्य ते ऋचा हविराहूयते। हे हव्यवाट्! तुभ्यं सुखं दीयते स त्वं स्तोतृभ्य इषमा भर॥५॥

**भावार्थः**-ये विद्वांसोऽग्न्यादिभ्यः कार्य्याणि साध्नुवन्ति ते सिद्धाकामा जायन्ते॥५॥

**पदार्थः**-हे **(शोचिषः, पते)** प्रकाश के स्वामिन् **(सुश्चन्द्र)** अच्छे सुवर्ण से युक्त **(दस्म)** दुःख के नाश करने वाले **(विश्पते)** प्रजाओं के पालक **(अग्ने)** विद्वान् राजन्! **(शुक्रस्य)** शुद्ध **(ते)** आपकी **(ऋचा)** प्रशंसा से **(हविः)** देने योग्य पदार्थ **(आ)** सब प्रकार से **(हूयते)** दिया जाता है और हे **(हव्यवाट्)** देने योग्य वस्तु के देने वाले! **(तुभ्यम्)** आपके लिये सुख दिया जाता है, वह आप **(स्तोतृभ्यः)** स्तुति करने वालों के लिये **(इषम्)** अन्न को **(आ, भर)** अच्छे प्रकार धारण कीजिये॥५॥

**भावार्थः**-जो विद्वान् लोग अग्नि आदिकों से कार्य्यों को सिद्ध करते हैं, उनके काम सिद्ध होते हैं॥५॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**प्रो त्ये अ॒ग्नयो॒ऽग्निषु॒ विश्वं॑ पुष्यन्ति॒ वार्य॑म्।**

**ते हि॑न्वि॒रे॒ त इ॑न्वि॒रे॒ त इ॑षण्यन्त्यानु॒षगिषं॑ स्तो॒तृभ्य॒ आ भ॑र॥६॥**

**प्रो इति॑। त्ये। अ॒ग्नय॑ः। अ॒ग्निषु॑। विश्व॑म्। पु॒ष्य॒न्ति॒। वार्य॑म्। ते। हि॒न्वि॒रे॒। ते। इ॒न्वि॒रे॒। ते। इ॒ष॒ण्य॒न्ति॒। आ॒नु॒षक्। इष॑म्। स्तो॒तृऽभ्य॑ः। आ। भ॒र॒॥६॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**प्रो**) (**त्ये**) ते (**अग्नयः**) पावकाः (**अग्निषु**) अग्न्यादिपदार्थेषु (**विश्वम्**) सर्वं जगत् (**पुष्यन्ति**) (**वार्यम्**) वरणीयम् (**ते**) (**हिन्विरे**) वर्द्धयन्ति (**ते**) (**इन्विरे**) व्याप्नुवन्ति (**ते**) (**इषण्यन्ति**) अन्नादिकमिच्छन्ति (**आनुषक्**) आनुकूल्ये (**इषम्**) विज्ञानम् (**स्तोतृभ्यः**) (**आ**) (**भर**)॥६॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! येऽग्नयोऽग्निषु वर्त्तन्ते त्ये वार्यं विश्वं प्रो पुष्यन्ति ते वार्यं हिन्विरे त इन्विरे ते साधकाः सन्ति तान् विदित्वा य आनुषगिषण्यन्ति तद्विद्यया स्तोतृभ्यस्त्वमिषमा भर॥६॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! ये पृथिव्यादिष्वग्न्यादयः पदार्थाः सन्ति तान् विदित्वा पुनरीश्वरं विजानीत॥६॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो (**अग्नयः**) अग्नि (**अग्निषु**) अग्नि आदि पदार्थों में वर्त्तमान हैं (**त्ये**) वे (**वार्यम्**) स्वीकार करने योग्य (**विश्वम्**) सब जगत् को (**प्रो, पुष्यन्ति**) पुष्ट करते हैं (**ते**) वे स्वीकार करने योग्य पदार्थ की (**हिन्विरे**) वृद्धि कराते हैं (**ते**) वे (**इन्विरे**) व्याप्त होते हैं और (**ते**) वे कार्य्यों के सिद्ध करने वाले हैं, उनको जान के जो (**आनुषक्**) अनुकूलता से (**इषण्यन्ति**) अन्न आदि की इच्छा करते हैं, उनकी विद्या से (**स्तोतृभ्यः**) स्तुति करने वालों के लिये आप (**इषम्**) विज्ञान को (**आ, भर**) धारण कीजिये॥६॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो पृथिवी आदि में अग्नि आदि पदार्थ हैं, उनको जान के फिर ईश्वर को जानो॥६॥

**पुनरग्निविद्योपदेशमाह॥**

फिर अग्निविद्या के उपदेश को कहते हैं॥

**तव॒ त्ये अ॑ग्ने अ॒र्चयो॒ महि॑ व्राधन्त वा॒जिन॑ः।**

**ये पत्व॑भिः श॒फानां॑ व्र॒जा भु॒रन्त॒ गोना॒मिषं॑ स्तो॒तृभ्य॒ आ भ॑र॥७॥**

**तव॑। त्ये। अ॒ग्ने॒। अ॒र्चय॑ः। महि॑। व्रा॒ध॒न्त॒। वा॒जिन॑ः। ये। पत्व॑ऽभिः। श॒फना॑म्। व्र॒जा। भु॒रन्त॑। गोना॑म्। इष॑म्। स्तो॒तृऽभ्य॑ः। आ। भ॒र॒॥७॥**

**पदार्थः**-(**तव**) (**त्ये**) ते (**अग्ने**) विद्वन् (**अर्चयः**) दीप्तयः (**महि**) महान्तः (**व्राधन्त**) वर्द्धन्ते (**वाजिनः**) वेगवन्तः (**ये**) (**पत्वभिः**) गमनैः (**शफानाम्**) खुराणाम् (**व्रजा**) वेगान् (**भुरन्त**) धरन्ति (**गोनाम्**) गवाम् (**इषम्**) (**स्तोतृभ्यः**) (**आ**) (**भर**)॥७॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! ये गोनां शफानां पत्वभिर्व्रजा भुरन्त ये मह्यर्चयो वाजिनो व्राधन्त त्ये तव कार्यसाधकाः सन्ति तद्विज्ञानेन स्तोतृभ्य इषमा भर॥७॥

**भावार्थः**-यथाश्वा गावश्च पद्भिर्धावन्ति तथैवाग्नेर्ज्योतींषि सद्यो गच्छन्ति येऽग्न्यादीन् सम्प्रयोक्तुं जानन्ति ते सर्वतो वर्द्धन्ते॥७॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-हे **(अग्ने)** विद्वन्! **(ये)** जो **(गोनाम्)** गौओं के **(शफानाम्)** खुरों के **(पत्वभिः)** गमनों से **(व्रजा)** वेगों को **(भुरन्त)** धारण करते हैं और [जो] **(महि)** बड़े **(अर्चयः)** तेज **(वाजिनः)** वेग वाले **(व्राधन्त)** बढ़ते हैं **(त्ये)** वे **(तव)** आपके कार्य सिद्ध करने वाले हैं, उनके विज्ञान से **(स्तोतृभ्यः)** स्तुति करने वालों के लिये **(इषम्)** अन्न को **(आ, भर)** अच्छे प्रकार धारण कीजिये॥७॥

**भावार्थः**-जैसे घोड़े और गाएँ पैरों से दौड़ती हैं, वैसे ही अग्नि के तेज शीघ्र चलते हैं और जो अग्न्यादिकों के संप्रयोग करने को जानते हैं, उन की सब प्रकार वृद्धि होती है॥७॥

**अथ राजविषयमाह॥**

अब राजविषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**नवा नो अग्न आ भर स्तोतृभ्यः सुक्षितीरिषः।**

**ते स्याम य आनृचुस्त्वादूतासो दमेदम इषं स्तोतृभ्य आ भर॥८॥**

**नवाः। नः। अग्ने। आ। भर। स्तोतृऽभ्यः। सुऽक्षितीः। इषः। ते। स्याम। ये। आनृचुः। त्वाऽदूतासः। दमेऽदमे। इषम्। स्तोतृऽभ्यः। आ। भर॥८॥**

**पदार्थः**-**(नवाः)** नवीनाः **(नः)** अस्मभ्यम् **(अग्ने)** राजन् **(आ)** **(भर)** **(स्तोतृभ्यः)** धार्मिकेभ्यो विद्वद्भ्यः **(सुक्षितीः)** शोभना क्षितयः पृथिव्यो मनुष्या वा यासु ताः **(इषः)** अन्नाद्याः **(ते)** **(स्याम)** **(ये)** **(आनृचुः)** अर्चामः **(त्वादूतासः)** त्वं दूतो येषां ते **(दमेदमे)** गृहेगृहे **(इषम्)** उत्तमामिच्छाम् **(स्तोतृभ्यः)** सुपात्रेभ्यो विपश्चिद्भ्यः **(आ)** **(भर)**॥८॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! ये त्वादूतासो वयं त्वामानृचुस्तेभ्य नः स्तोतृभ्यस्त्वं सुक्षितीर्नवा इष आ भर येन ते वयमुत्साहिताः स्याम त्वं स्तोतृभ्यो दमेदम इषमा भर॥८॥

**भावार्थः**-स एव राजा श्रेयान् भवति य उत्तमान् भृत्यानतुलमैश्वर्यं सर्वसुखाय दधाति दूतचारैः सर्वस्य राजस्य सर्वं समाचारं विदित्वा यथायोग्यं प्रबन्धं करोति॥८॥

**पदार्थः**-हे **(अग्ने)** राजन्! **(ये)** जो **(त्वादूतासः)** त्वादूतास अर्थात् आप दूत जिनके ऐसे हम लोग आपका **(आनृचुः)** सत्कार करते हैं उन **(नः)** हम **(स्तोतृभ्यः)** धार्मिक विद्वानों के लिये आप **(सुक्षितीः)** सुन्दर पृथिवी वा मनुष्य विद्यमान जिनमें ऐसे **(नवाः)** नवीन **(इषः)** अन्न आदि को **(आ, भर)** धारण कीजिये जिससे **(ते)** वे हम लोग उत्साहित **(स्याम)** होवें और आप **(स्तोतृभ्यः)** सुपात्र अर्थात् सज्जन विद्वानों के लिये **(दमेदमे)** घर-घर में **(इषम्)** उत्तम इच्छा को **(आ, भर)** धारण कीजिये॥८॥

**भावार्थः**-वही राजा प्रशंसनीय होता है, जो [उत्तम] भृत्य और अतुल ऐश्वर्य्य को सब के सुख के लिये धारण करता है और दूत और चारों अर्थात् गुप्त संदेश देने वालों से सब राज्य का समाचार जान के यथायोग्य प्रबन्ध करता है॥८॥



www.9009.co.in

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**उभे सुश्चन्द्र सर्पिषो दर्वी श्रीणीष आसनि।**

**उतो न उत्पुपूर्या उक्थेषु शवसस्पत इषं स्तोतृभ्य आ भर॥९॥**

**उभे इति। सुऽचन्द्र। सर्पिषः। दर्वी इति। श्रीणीषे। आसनि। उतो इति। नः। उत्। पुपूर्याः। उक्थेषु। शवसः। पते। इषम्। स्तोतृऽभ्यः। आ। भर॥९॥**

**पदार्थः**-(**उभे**) (**सुश्चन्द्र**) सुष्ठुसुवर्णाद्यैश्वर्य्य (**सर्पिषः**) घृतादेः (**दर्वी**) दृणाति याभ्यां ते पाकसाधने (**श्रीणीषे**) पचसि (**आसनि**) आस्ये (**उतो**) (**नः**) अस्मान् (**उत्**) (**पुपूर्याः**) अलङ्कुर्याः पालयेः (**उक्थेषु**) प्रशंसितेषु धर्म्येषु कर्मसु (**शवसः, पते**) बलस्य सैन्यस्य स्वामिन् (**इषम्**) (**स्तोतृभ्यः**) अध्यापकाध्येतृभ्यः (**आ**) (**भर**)॥९॥

**अन्वयः**-हे सुश्चन्द्र शवसस्पते! यतस्त्वमुभे दर्वी घटयित्वाऽऽसनि सर्पिषः श्रीणीष उतो तेन नोऽस्मानुत्पुपूर्याः स त्वमुक्थेषु स्तोतृभ्य इषमा भर॥९॥

**भावार्थः**-यो राजा सैन्यस्य भोजनप्रबन्धमुत्तममारोग्याय वैद्यान् रक्षति स एव प्रशंसितो भूत्वा राज्यं वर्धयति॥९॥

**पदार्थः**-हे (**सुश्चन्द्र**) उत्तम सुवर्ण आदि ऐश्वर्य्य से युक्त (**शवसः, पते**) सेना के स्वामी! जो आप (**उभे**) दोनों (**दर्वी**) पाक करने के साधानों अर्थात् चम्मचों को इकट्ठे करके (**आसनि**) मुख में अर्थात् अग्निमुख में (**सर्पिषः**) घृत आदि का (**श्रीणीषे**) पाक करते हो (**उतो**) और उससे (**नः**) हम लोगों को (**उत्, पुपूर्याः**) उत्तमता से शोभित करें वा पालें वह आप (**उक्थेषु**) प्रशंसित धर्म्मसम्बन्धी कर्म्मों में (**स्तोतृभ्यः**) पढ़ाने और पढ़ने वालों के लिये (**इषम्**) अन्न का (**आ, भर**) धारण करें॥९॥

**भावार्थः**-जो राजा सेना के भोजन के उत्तम प्रबन्ध को आरोग्य के लिये वैद्यों को रखता है, वही प्रशंसित होकर राज्य बढ़ाता है॥९॥

**पुना राजविषयमाह॥**

फिर राजविषय को कहते हैं॥

**एवाँ अग्निमजुर्यमुर्गीर्भिर्यज्ञेभिरानुषक्।**

**दधदस्मे सुवीर्यमुत त्यदाश्वश्व्यमिषं स्तोतृभ्य आ भर॥१०॥२३॥**

**एव। अग्निम्। अजुर्यमुः। गीःऽभिः। यज्ञेभिः। आनुषक्। दधत्। अस्मे इति। सुऽवीर्यम्। उत। त्यत्। आशुऽअश्व्यम्। इषम्। स्तोतृऽभ्यः। आ। भर॥१०॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**एव**) (**अग्निम्**) पावकम् (**अजुर्यमुः**) प्रक्षिपेयुर्नियच्छेयुश्च (**गीर्भिः**) वाग्भिः (**यज्ञेभिः**) सङ्गतैः कर्मभिः (**आनुषक्**) आनुकूल्येन (**दधत्**) दधाति (**अस्मे**) अस्मासु (**सुवीर्यम्**) सुष्ठुपराक्रमम् (**उत**) (**त्यत्**) ताम् (**आश्वश्व्यम्**) आशवो वेगादयो गुणा अश्वा इव यस्मिँस्तम् (**इषम्**) (**स्तोतृभ्यः**) (**आ**) (**भर**)॥१०॥

**अन्वयः**-हे शवसस्पते! ये गीर्भिर्यज्ञेभिराश्वश्व्यं सुवीर्यमग्निमानुषगजुर्यमुस्तेष्वेवाऽस्मे भवान् सुवीर्यं दधदुतापि त्यदिषं स्तोतृभ्य आ भर॥१०॥

**भावार्थः**-हे राजन्! य अग्न्यादिविद्यां विदित्वाऽनेकानि विमानादीनि यानानि निर्मिमते तेभ्योऽन्नादिकं दत्त्वा सततं सत्कुर्या इति॥१०॥

अत्राग्निविद्वद्राजगुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति षष्ठं सूक्तं त्रयोविंशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे सेना के स्वामिन्! जो (**गीर्भिः**) वाणियों और (**यज्ञेभिः**) संगत कर्म्मों से (**आश्वश्व्यम्**) घोड़ों के सदृश वेग आदि गुणों से युक्त (**सुवीर्यम्**) उत्तम पराक्रम वाले (**अग्निम्**) अग्नि को (**आनुषक्**) अनुकूलता से (**अजुर्यमुः**) प्रेरणा दें और नियमयुक्त करें (**एव**) उन्हीं में (**अस्मे**) हम लोगों के निमित्त आप उत्तम पराक्रमयुक्त व्यवहार को (**दधत्**) धारण करते हैं (**उत**) और भी (**त्यत्**) उस (**इषम्**) इष्ट व्यवहार को (**स्तोतृभ्यः**) स्तुति करने वालों के लिये (**आ, भर**) अच्छे प्रकार धारण कीजिये॥१०॥

**भावार्थः**-हे राजन्! जो अग्नि आदि की विद्या को जान के अनेक विमान आदि वाहनों को बनाते हैं, उनके लिये अन्न आदि देकर निरन्तर सत्कार कीजिये॥१०॥

इस सूक्त में अग्नि, विद्वान् और राजा के गुणवर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ संगति जाननी चाहिये॥

**यह छठा सूक्त और तेईसवाँ वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

**अथ दशर्चस्य सप्तमस्य सूक्तस्येष आत्रेय ऋषिः। अग्निर्देवता। १, ९ विराडनुष्टुप्। २ अनुष्टुप्। ३, ४, ५, ८, निचृदनुष्टुप् छन्दः। गान्धारः स्वरः। ६, ७ स्वराडुष्णिक् छन्दः। ऋषभः स्वरः। १० निचृद् बृहती छन्दः। मध्यमः स्वरः॥**

***अथ मित्रभावमाह॥***

अब दश ऋचा वाले सातवें सूक्त का आरम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में मित्रता को कहते हैं॥

**सखा॑यः॒ सं व॒ः स॒म्यञ्च॒मिषं॒ स्तोमं॑ चा॒ग्नये॑।**

**वर्षि॑ष्ठाय क्षिती॒नामू॒र्जो नप्त्रे॒ सह॑स्वते॥ १॥**

**सखा॑यः। सम्। व॒ः। स॒म्यञ्च॑म्। इष॑म्। स्तोम॑म्। च॒। अ॒ग्नये॑। वर्षि॑ष्ठाय। क्षि॒ती॒नाम्। ऊ॒र्जः। नप्त्रे॑। सह॑स्वते॥ १॥**

**पदार्थः**-(**सखायः**) सुहृदः सन्तः (**सम्**) (**वः**) युष्मभ्यम् (**सम्यञ्चम्**) समीचीनम् (**इषम्**) अन्नादिकम् (**स्तोमम्**) प्रशंसाम् (**च**) (**अग्नये**) (**वर्षिष्ठाय**) अतिशयेन वृष्टिकराय (**क्षितीनाम्**) मनुष्याणाम् (**ऊर्जः**) पराक्रमयुक्तस्य (**नप्त्रे**) नप्त्र इव वर्त्तमानाय (**सहस्वते**) सहो बलं विद्यते यस्मिँस्तस्मै॥ १॥

**अन्वयः**-हे सखायो भवन्तो ये क्षितीनां वो वर्षिष्ठायोर्जो नप्त्रे सहस्वतेऽग्नये सम्यञ्चं स्तोममिषं च सन् दधति तान् सदा सत्कुर्वन्तु॥ १॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! इह संसारे भवन्तो मित्रभावेन वर्त्तित्वा मनुष्यादिप्रजाहितायाग्न्यादिविद्यां लब्ध्वान्येभ्यः प्रयच्छन्तु॥ १॥

**पदार्थः**-हे (**सखायः**) मित्र हुए आप लोग जो (**क्षितीनाम्**) मनुष्यों के बीच (**वः**) आप लोगों के लिये (**वर्षिष्ठाय**) अत्यन्त वृष्टि करने वाले के लिये और (**ऊर्जः**) पराक्रम युक्त के (**नप्त्रे**) नाती के सदृश वर्त्तमान (**सहस्वते**) बलयुक्त (**अग्नये**) अग्नि के लिये (**सम्यञ्चम्**) श्रेष्ठ (**स्तोमम्**) प्रशंसा और (**इषम्**) अन्न आदि को (**च**) भी (**सम्**) अच्छे प्रकार धारण करते हैं, उनका सदा सत्कार करो॥ १॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! इस संसार में आप लोग मित्रभाव से वर्ताव करके मनुष्य आदि प्रजा के हित के लिये अग्नि आदि की विद्या को प्राप्त होके अन्य जनों के लिये शिक्षा दीजिये॥ १॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**कुत्रा॑ चि॒द्यस्य॒ समृ॑तौ र॒ण्वा नरो॑ नृ॒षद॑ने।**

**अर्ह॑न्तश्चि॒द्यमि॑न्ध॒ते सं॑ज॒नय॑न्ति ज॒न्तव॑ः॥ २॥**



www.9009.co.in

**कुत्र॑। चि॒त्। यस्य॑। सम्ऽऋ॑तौ। र॒ण्वाः। नरः॑। नृ॒ऽसद॑ने। अर्ह॑न्तः। चि॒त्। यम्। इ॒न्धते॑। सम्ऽज॒नय॑न्ति। ज॒न्तवः॑॥ २॥**

**पदार्थः**-(**कुत्रा**) कस्मिन्। अत्र **ऋचि तुनुघेति** दीर्घः। (**चित्**) (**यस्य**) (**समृतौ**) सम्यग् यथार्थबोधयुक्तायां प्रज्ञायाम् (**रण्वाः**) रममाणाः (**नरः**) नायकाः (**नृषदने**) नृणां स्थाने (**अर्हन्तः**) सत्कुर्वन्तः (**चित्**) (**यम्**) (**इन्धते**) प्रकाशयन्ति (**सञ्जनयन्ति**) (**जन्तवः**) जीवाः॥ २॥

**अन्वयः**-हे नरो ये जन्तवो यस्य समृतौ रण्वा नृषदने चिदर्हन्तो यं समिन्धते सञ्जनयन्ति ते चित्कुत्रापि तिरस्कारं नाप्नुवन्ति॥ २॥

**भावार्थः**-ये जीवाः सर्वेषां मनुष्याणां हिते वर्त्तमाना यथाशक्ति परोपकारं कुर्वन्ति ते योग्याः सन्ति॥ २॥

**पदार्थः**-हे (**नरः**) नायक अर्थात् कार्य्यों में अग्रगामी मुख्यजनो! जो (**जन्तवः**) जीव (**यस्य**) जिसकी (**समृतौ**) अच्छे प्रकार यथार्थ बोध से युक्त बुद्धि में (**रण्वाः**) रमण करते और (**नृषदने**) मनुष्यों के स्थान में (**चित्**) भी (**अर्हन्तः**) सत्कार करते हुए (**यम्**) जिसको (**इन्धते**) [अच्छे प्रकार] प्रकाशित कराते और (**सञ्जनयन्ति**) उत्तम प्रकार उत्पन्न कराते हैं, वे (**चित्**) भी (**कुत्रा**) किसी में अनादर को नहीं प्राप्त होते हैं॥ २॥

**भावार्थः**-जो जीव सब मनुष्यों के हित में वर्त्तमान हुए यथाशक्ति परोपकार करते हैं, वे योग्य हैं॥ २॥

**अथ विद्वद्विषयमाह॥**

अब विद्वान् के विषय को कहते हैं॥

**सं यदि॒षो वना॑महे॒ सं ह॒व्या मानु॑षाणाम्।**

**उ॒त द्यु॒म्नस्य॒ शव॑स ऋ॒तस्य॑ र॒श्मिमा द॑दे॥ ३॥**

**सम्। यत्। इ॒षः। वना॑महे। सम्। ह॒व्या। मानु॑षाणाम्। उ॒त। द्यु॒म्नस्य॑। शव॑सा। ऋ॒तस्य॑। र॒श्मिम्। आ। द॒दे॒॥ ३॥**

**पदार्थः**-(**सम्**) (**यत्**) यथा (**इषः**) अन्नाद्याः सामग्रीः (**वनामहे**) सम्भजामः (**सम्**) (**हव्या**) दातुमादातुमर्हाः (**मानुषाणाम्**) मनुष्याणाम् (**उत**) (**द्युम्नस्य**) धनस्य यशसो वा (**शवसा**) (**ऋतस्य**) सत्यस्य (**रश्मिम्**) प्रकाशम् (**आ**) (**ददे**)॥ ३॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! मानुषाणां द्युम्नस्यर्तस्य शवसा यद्धव्या इषो वयं सं वनामहे। उत रश्मिं समा ददे तथा यूयमपि कुरुत॥ ३॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। यदि विद्वांसः पक्षपातं विहाय यथायोग्यं व्यवहारं कृत्वा मनुष्यात्मसु विद्याप्रकाशं सन्दध्युस्तर्हि सर्वे योग्या जायन्ते॥ ३॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(मानुषाणाम्)** मनुष्यों के बीच **(द्युम्नस्य)** धन वा यश तथा **(ऋतस्य)** सत्य का **(शवसा)** सेना से **(यत्)** जैसे **(हव्या)** देने और लेने योग्य **(इषः)** अन्न आदि सामग्रियों का हम लोग **(सम्, वनामहे)** अच्छे प्रकार सेवन करें **(उत)** वा **(रश्मिम्)** प्रकाश को मैं **(सम्, आ, ददे)** ग्रहण करता हूँ, वैसे आप लोग भी करो॥३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जो विद्वान् जन पक्षपात को छोड़ के यथायोग्य व्यवहार कर मनुष्यों के आत्माओं में विद्याप्रकाश को धारण करें तो सब योग्य होते हैं॥३॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**स स्मा कृणोति केतुमा नक्तं चिद्दूर आ सते।**

**पावको यद्वनस्पतीन् प्र स्मा मिनात्यजरः॥४॥**

**सः। स्म। कृणोति। केतुम्। आ। नक्तम्। चित्। दूरे। आ। सते। पावकः। यत्। वनस्पतीन्। प्र। स्म। मिनाति। अजरः॥४॥**

**पदार्थः**-**(सः)** **(स्मा)** एव **(कृणोति)** **(केतुम्)** प्रज्ञाम् **(आ)** **(नक्तम्)** रात्रौ **(चित्)** **(दूरे)** **(आ)** **(सते)** सत्पुरुषाय **(पावकः)** पवित्रकरः **(यत्)** यः **(वनस्पतीन्)** वनानां पालकान् **(प्र)** **(स्मा)** अत्रोभयत्र **निपातस्य चे**ति दीर्घः। **(मिनाति)** हिनस्ति **(अजरः)** नाशरहितः॥४॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यद्योऽजरः पावको वनस्पतीन् स्माऽऽकृणोति नक्तं चिद् दूरे सते केतुं प्रयच्छति दूरे सन् स्मा दुष्टान् दोषान् प्रा मिनाति स सर्वत्र सत्कृतो जायते॥४॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! ये विद्वांसो दूरेऽपि स्थिता अहर्निशमग्निवद्वनस्पतिवच्च परोपकारिणो जायन्ते त एव जगद्भूषणा भवन्ति॥४॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(यत्)** जो **(अजरः)** नाश से रहित **(पावकः)** पवित्र करने वाला **(वनस्पतीन्)** वनों के पालने वालों का **(स्मा)** ही **(आ, कृणोति)** अनुकरण करता **(नक्तम्)** रात्रि में **(चित्)** भी **(दूरे)** दूर देश में **(सते)** सत्पुरुष के लिये **(केतुम्)** बुद्धि देता और दूर स्थान में वर्त्तमान हुआ **(स्मा)** ही दुष्ट और दोषों का **(प्र, आ, मिनाति)** अच्छे प्रकार नाश करता है **(सः)** वह सर्वत्र सत्कृत होता है॥४॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! विद्वान् दूर भी वर्त्तमान हुए रात्रि दिन अग्नि वा वनस्पतियों के सदृश परोपकारी होते हैं, वे संसार के भूषण अंलकार होते हैं॥४॥

**पुनर्विद्वद्विषयमाह॥**

फिर विद्वानों के विषय को कहते हैं॥

**अव स्म यस्य वेषणे स्वेदं पथिषु जुह्वति।**



www.9009.co.in

**अ॒भीम॑ह॒ स्वजे॑न्यं॒ भूमा॑ पृ॒ष्ठेव॑ रुरुहुः॥५॥२४॥**

**अव॑। स्म॒। यस्य॑। वेष॑णे। स्वेद॑म्। प॒थिषु॑। जुह्व॑ति। अ॒भि। ई॒म्। अह॑। स्व॒ऽजेन्य॑म्। भूम॑। पृ॒ष्ठाऽइ॑व। रु॒रु॒हुः॥५॥**

**पदार्थः**-(**अव** ) (**स्म**) (**यस्य**) (**वेषणे**) व्याप्ते व्यवहारे (**स्वेदम्**) (**पथिषु**) (**जुह्वति**) क्षरन्ति (**अभि**) (**ईम्**) (**अह**) (**स्वजेन्यम्**) स्वेन जेतुं योग्यम् (**भूमा**) पृथिव्याः (**पृष्ठेव**) (**रुरुहुः**) वर्धन्ते॥५॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यस्य वेषणे पथिषु वीराः स्वेदं स्माव जुह्वति भूमाह स्वजेन्यं पृष्ठेवाभि रुरुहुस्तस्यान्वेषणं तथा यूयमपि कुरुत॥५॥

**भावार्थः**-ये मनुष्या मार्गेषु व्याप्तान् व्यवहारान् विज्ञाय कार्य्याणि साध्नुवन्ति ते सौख्यानि प्राप्नुवन्ति॥५॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! (**यस्य**) जिसके (**वेषणे**) व्याप्त व्यवहार के निमित्त (**पथिषु**) मार्गों में वीर (**स्वेदम्**) जल को (**स्म**) ही (**अव, जुह्वति**) बहाते और (**भूमा**) पृथिवी के (**अह**) निश्चित (**स्वजेन्यम्**) अपने से जीतने योग्य स्थान को (**पृष्ठेव**) पृष्ठ के सदृश (**अभि, रुरुहुः**) अभिवर्द्धन करते अर्थात् उस पर बढ़ते हैं उसकी खोज [करते हैं] (**ईम्**) वैसे ही आप लोग भी करो॥५॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य मार्ग में व्याप्त व्यवहारों को जान कर कार्यों को सिद्ध करते हैं, वे सुखों को प्राप्त होते हैं॥५॥

**पुनर्विद्वद्विषयमाह॥**

फिर विद्वानों के विषय को कहते हैं॥

**यं मर्त्यः॑ पुरु॒स्पृहं॑ वि॒दद्विश्व॑स्य॒ धाय॑से।**

**प्र स्वाद॑नं पितू॒नामस्त॑तातिं चिदा॒यवे॑॥६॥**

**यम्। मर्त्यः॑। पु॒रु॒ऽस्पृहं॑म्। वि॒दत्। विश्व॑स्य। धाय॑से। प्र। स्वाद॑नम्। पि॒तू॒नाम्। अस्त॑ऽतातिम्। चि॒त्। आ॒यवे॑॥६॥**

**पदार्थः**-(**यम्**) (**मर्त्यः**) (**पुरुस्पृहम्**) बहुभिः स्पर्हणीयम् (**विदत्**) लभेत (**विश्वस्य**) जगतः (**धायसे**) धारणाय (**प्र**) (**स्वादनम्**) (**पितूनाम्**) अन्नानाम् (**अस्ततातिम्**) गृहस्थम् (**चित्**) (**आयवे**) मनुष्याय॥६॥

**अन्वयः**-मर्त्य आयवे विश्वस्य धायसे यं पुरुस्पृहं पितूनां स्वादनमस्ततातिं चित्प्र विदत्तं सर्वोपकाराय दध्यात्॥६॥

**भावार्थः**-मनुष्येण यद्यदुत्तमं वस्तु ज्ञानं च लभ्येत तत्तत्सर्वेषां सुखाय दध्यात्॥६॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**मर्त्यः**) मनुष्य (**आयवे**) मनुष्य के लिये और (**विश्वस्य**) संसार के (**धायसे**) धारण के लिये (**यम्**) जिस (**पुरुस्पृहम्**) बहुतों से प्रशंसा करने योग्य (**पितूनाम्**) अन्नों के (**स्वादनम्**) स्वाद और (**अस्ततातिम्**) गृहस्थ को (**चित्**) भी (**प्र, विदत्**) प्राप्त होवे, उसको परोपकार के लिये धारण करे॥६॥

**भावार्थः**-मनुष्य को जिस उत्तम वस्तु और ज्ञान की प्राप्ति होवे, उस उसको सब के सुख के लिये धारण करे॥६॥

**अथ राजविषयमाह॥**

अब राजविषय को कहते हैं॥

**स हि ष्मा धन्वाक्षितं दाता न दात्या पशुः।**

**हिरिश्मश्रुः शुचिदन्नृभुरनिभृष्टतविषिः॥७॥**

**सः। हि। स्म। धन्व। आऽक्षितम्। दाता। न। दाति। आ। पशुः। हिरिऽश्मश्रुः। शुचिऽदन्। ऋभुः। अनिभृष्टऽतविषिः॥७॥**

**पदार्थः**-(**सः**) (**हि**) यतः (**स्मा**) एव। अत्र **निपातस्य चेति** दीर्घः। (**धन्व**) अन्तरिक्षम् (**आक्षितम्**) समन्तादनष्टमिव (**दाता**) (**न**) इव (**दाति**) ददाति (**आ**) (**पशुः**) (**हिरिश्मश्रुः**) हिरण्यमिव श्मश्रूणि यस्य सः (**शुचिदन्**) शुचयः पवित्रा दन्ता यस्य सः (**ऋभुः**) मेधावी (**अनिभृष्टतविषिः**) न निर्भृष्टा प्रदग्धा तविषी सेना यस्य सः॥७॥

**अन्वयः**-यो हिरिश्मश्रुः शुचिदन्ननिभृष्टतविषिर्ऋभुर्दाता पशुर्न धन्वाक्षितं दुष्टानां दाति स हि ष्मा सुखमेधते॥७॥

**भावार्थः**-अत्रोपमावाचकलुप्तोपमालङ्कारौ। यथा निदाता धान्यं खण्डयित्वा बुसं पृथक्कृत्यान्नं गृह्णाति यथा पशुश्च खुरैर्धान्यादिकं खण्डयति तथैव राजा साहसिकान् दुष्टान् मनुष्यान् भृशं ताडयेत्॥७॥

**पदार्थः**-जो (**हिरिश्मश्रुः**) सुवर्ण के तुल्य दाढ़ी और (**शुचिदन्**) पवित्र दाँतों से युक्त (**अनिभृष्टतविषिः**) नहीं जली सेना जिसकी ऐसा (**ऋभुः**) मेधावी (**दाता**) [देनेवाला] (**पशुः**) पशु (**न**) जैसे (**धन्व**) अन्तरिक्ष जो (**आक्षितम्**) सब ओर से अविनाशी उसको वैसे दुष्टों को (**आ, दाति**) ग्रहण करता है (**सः, हि, स्मा**) यही निश्चित सुखपूर्वक बढ़ता है॥७॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमा और वाचकलुप्तोपमालङ्कार हैं। जैसे नहीं देने वाला धान्य को कटवा कर भूसे को अलग करके अन्न का ग्रहण करता है और जैसे पशु खुरों से धान्य आदि को तोड़ता है, वैसे ही राजा साहस करने वाले दुष्ट मनुष्यों का निरन्तर ताड़न करे॥७॥

**अथ राजशासनविषयमाह॥**

अब राजशिक्षा विषय को कहते हैं॥

**शुचिः ष्म यस्मा अत्रिवत् प्र स्वधितीव रीयते।**



www.9009.co.in

**सुषूरसूत माता क्राणा यदानशे भगम्॥८॥**

**शुचिः। स्म। यस्मै। अत्रिऽवत्। प्र। स्वधितिःऽइव। रीयते। सुऽसूः। असूत। माता। क्राणा। यत्। आनशे। भगम्॥८॥**

**पदार्थः**-(**शुचिः**) पवित्रः (**स्म**) (**यस्मै**) (**अत्रिवत्**) (**प्र**) (**स्वधितीव**) वज्रधर इव (**रीयते**) शिलष्यति (**सुषूः**) सुष्ठु जनयित्री (**असूत**) सूते (**माता**) जननी (**क्राणा**) कुर्वती (**यत्**) या (**आनशे**) प्राप्नोति (**भगम्**) ऐश्वर्य्यम्॥८॥

**अन्वयः**-यद्या शुचिः क्राणा माता यस्मै स्वधितीवात्रिवत्सुषूरसूत प्र रीयते सा स्म भगमानशे॥८॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। यदि मातापितरौ कृतब्रह्मचर्य्यौ विधिवत्सन्तानानुत्पादयेतां तर्हि सुखैश्वर्य्यं लभेताम्॥८॥

**पदार्थः**-(**यत्**) जो (**शुचिः**) पवित्र (**क्राणाः**) करती हुई (**माता**) माता (**यस्मै**) जिसके लिये (**स्वधितीव**) वज्र के धारण करने वाले के सदृश और (**अत्रिवत्**) अविद्यमान तीन वाले के सदृश (**सुषूः**) उत्तम प्रकार उत्पन्न करने वाली (**असूत**) उत्पन्न करती और (**प्र, रीयते**) मिलती है (**स्म**) वही (**भगम्**) ऐश्वर्य्य को (**आनशे**) प्राप्त होती है॥८॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जो माता-पिता ब्रह्मचर्य्य किये हुए विधिपूर्वक सन्तानों को उत्पन्न करें तो सुख और ऐश्वर्य्य को प्राप्त होवें॥८॥

**अथाग्निशब्दार्थविद्वद्विषयमाह॥**

अब अग्निशब्दार्थ विद्वद्विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**आ यस्ते सर्पिरासुतेऽग्ने शमस्ति धायसे।**

**ऐषु द्युम्नमुत श्रव आ चित्तं मर्त्येषु धाः॥९॥**

**आ। यः। ते। सर्पिःऽआसुते। अग्ने। शम्। अस्ति। धायसे। आ। एषु। द्युम्नम्। उत। श्रवः। आ। चित्तम्। मर्त्येषु। धाः॥९॥**

**पदार्थः**-(**आ**) (**यः**) (**ते**) तव (**सर्पिरासुते**) सर्पिभिः सर्वतो जनिते (**अग्ने**) विद्वन् (**शम्**) सुखम् (**अस्ति**) (**धायसे**) धात्रे (**आ**) (**एषु**) (**द्युम्नम्**) यशो धनं वा (**उत**) (**श्रवः**) अन्नम् (**आ**) (**चित्तम्**) संज्ञानम् (**मर्त्येषु**) (**धाः**) दधाति॥९॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! यो धायसे ते सर्पिरासुते शमस्ति तद्धरत्येषु मर्त्येषु द्युम्नमा धाः श्रव आ धा उत चित्तमा धास्तस्मै त्वमैश्वर्यं देहि॥९॥

**भावार्थः**-यदि कश्चित् कस्मैचिद्विद्यां धनं विज्ञानञ्च दधाति तर्हि तस्मा उपकृतोऽपि प्रत्युपकाराय तादृशमेव सत्कारं कुर्यात्॥९॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-हे **(अग्ने)** विद्वन् **(यः)** जो **(धायसे)** धारण करने वाले के लिये **(ते)** आपका **(सर्पिरासुते)** घृतों से सब प्रकार उत्पन्न किये गये में **(शम्)** सुख **(अस्ति)** है उसको ग्रहण करता **(एषु)** इन **(मर्त्येषु)** मनुष्यों में **(द्युम्नम्)** यश वा धन को **(आ, धाः)** धारण करता **(श्रवः)** अन्न को **(आ)** धारण करता **(उत)** और **(चित्तम्)** संज्ञान को **(आ)** धारण करता है, उसके लिये आप ऐश्वर्य्य दीजिये॥९॥

**भावार्थः**-जो कोई किसी के लिये विद्या धन और विज्ञान को धारण करता है तो उसके लिये उपकार किया भी पुरुष प्रत्युपकार के लिये वैसे ही सत्कार को करे॥९॥

**अथाग्निशब्दार्थराजविषयमाह॥**

अब अग्निशब्दार्थ राजविषय को कहते हैं॥

**इति॑ चिन्म॒न्युम॒ध्रिज॒स्त्वादा॑त॒मा प॒शुं द॑दे।**

**आद॑ग्ने॒ अपृ॑ण॒तोऽत्रिः॑ सासह्या॒द्दस्यू॑नि॒षः सा॑सह्या॒न्नॄन्॥ १०॥ २५॥**

**इति॑। चित्। म॒न्युम्। अ॒ध्रिजः॑। त्वाऽदा॑तम्। आ। प॒शुम्। द॒दे। आत्। अ॒ग्ने॒। अपृ॑णतः। अत्रिः॑। स॒स॒ह्यात्। दस्यू॑न्। इ॒षः। स॒स॒ह्यात्। नॄन्॥ १०॥**

**पदार्थः**-**(इति)** अनेन प्रकारेण **(चित्)** अपि **(मन्युम्)** क्रोधम् **(अध्रिजः)** अध्रिषु धारकेषु जातः **(त्वादातम्)** त्वया दातव्यम् **(आ)** **(पशुम्)** **(ददे)** ददामि **(आत्)** **(अग्ने)** विद्वन् **(अपृणतः)** अपालयतः **(अत्रिः)** सततं पुरुषार्थी **(सासह्यात्)** भृशं सहेत् **(दस्यून्)** दुष्टान् साहसिकान् चोरान् **(इषः)** इच्छाः **(सासह्यात्)** अत्रोभयत्राभ्यासदीर्घः। **(नॄन्)** नीतियुक्तान् मनुष्यान्॥१०॥

**अन्वयः**-हे अग्नेऽध्रिजो भवान् मन्युं सासह्यादत्रिस्त्वमपृणतो दस्यून् सासह्यादादिषो नॄँश्च सासह्यादिति वर्त्तमानाच्चित्त्वत्त्वादातं पशुमहमा ददे॥१०॥

**भावार्थः**-ये राजानः क्रोधादीन् दुर्व्यसनानि च निवार्य दस्यूञ्जित्वा श्रेष्ठैः कृतमपमानं सहेरँस्तेऽखण्डितराज्या भवन्तीति॥१०॥

अत्र मित्रत्वविद्वद्राजाग्निगुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति सप्तमं सूक्तं पञ्चविंशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे **(अग्ने)** विद्वन्! **(अध्रिजः)** धारण करने वालों में उत्पन्न आप **(मन्युम्)** क्रोध को **(सासह्यात्)** निरन्तर सहें **(अत्रिः)** निरन्तर पुरुषार्थी आप **(अपृणतः)** नहीं पालन करते हुए **(दस्यून्)** दुष्ट साहस करने वाले चोरों को **(सासह्यात्)** निरन्तर सहें और **(आत्)** सब ओर से **(इषः)** इच्छाओं और **(नॄन्)** नीति से युक्त मनुष्यों को निरन्तर सहें **(इति)** इस प्रकार वर्त्तमान **(चित्)** भी **(त्वादातम्)** आपसे देने योग्य **(पशुम्)** पशु को मैं **(आ, ददे)** ग्रहण करता हूँ॥१०॥

**भावार्थः**-जो राजजन क्रोधादि और दुष्ट व्यसनों का निवारण करके चोर डाकुओं को जीत कर श्रेष्ठ पुरुषों से किये गये अपमान को सहें, वे अखण्डित राज्य युक्त होते हैं॥१०॥



www.9009.co.in

इस सूक्त में मित्रत्व विद्वान् राजा और अग्नि के गुणवर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह सप्तम सूक्त और पच्चीसवाँ वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

**अथ सप्तर्चस्याष्टमस्य सूक्तस्येष आत्रेय ऋषिः। अग्निर्देवता। १, ५ स्वराट् त्रिष्टुप्। २ भुरिक् त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः। ३, ४ निचृज्जगती। ६, ७ विराड्जगती छन्दः। निषादः स्वरः॥**

*अथाग्निशब्दार्थगृहाश्रमविषयमाह॥*

अब सात ऋचा वाले आठवें सूक्त का आरम्भ है। उसके प्रथम मन्त्र में अग्निशब्दार्थ गृहाश्रमी के विषय को कहते हैं॥

**त्वाम॑ग्न ऋ॒ताय॑वः॒ समी॑धिरे प्र॒त्नं प्र॒त्नास॑ ऊ॒तये॑ सहस्कृत।**

**पु॒रु॒श्च॒न्द्रं य॑ज॒तं वि॒श्वधा॑यसं॒ दमू॑नसं गृ॒हप॑तिं॒ वरे॑ण्यम्॥ १॥**

**त्वाम्। अ॒ग्ने॒। ऋ॒त॒ऽयवः॑। सम्। ई॒धि॒रे॒। प्र॒त्नम्। प्र॒त्नासः॑। ऊ॒तये॑। स॒हः॒ऽकृ॒त॒। पु॒रु॒ऽच॒न्द्रम्। य॒ज॒तम्। वि॒श्वऽधा॑यसम्। दमू॑नसम्। गृ॒हऽप॑तिम्। वरे॑ण्यम्॥ १॥**

**पदार्थः**-(**त्वाम्**) (**अग्ने**) कृतब्रह्मचर्य्यगृहाश्रमिन् (**ऋतायवः**) ऋतं सत्यमिच्छवः (**सम्, ईधिरे**) सम्यक् प्रदीपयेयुः (**प्रत्नम्**) प्राचीनम् (**प्रत्नासः**) प्राचीना विद्वांसः (**ऊतये**) रक्षणाद्याय (**सहस्कृत**) सहो बलं कृतं येन तत्सम्बुद्धौ (**पुरुश्चन्द्रम्**) बहुहिरण्यादियुक्तम् (**यजतम्**) पूजनीयम् (**विश्वधायसम्**) सर्वव्यवहारधनधर्त्तारम् (**दमूनसम्**) इन्द्रियान्तःकरणस्य दमकरम् (**गृहपतिम्**) गृहव्यवहारपालकम् (**वरेण्यम्**) अतिशयेन वर्त्तव्यम्॥ १॥

**अन्वयः**-हे सहस्कृताग्ने! प्रत्नास ऋतायव ऊतये यं प्रत्नं पुरुश्चन्द्रं यजतं विश्वधायसं [दमूनसं] वरेण्यं गृहपतिं त्वां समीधिरे स त्वमेतान् सत्कुरु॥ १॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! ये युष्मान् विद्यादानादिभिर्वर्धयन्ति तान् यूयं सततं सत्कुरुत॥ १॥

**पदार्थः**-हे (**सहस्कृत**) बल किये (**अग्ने**) और ब्रह्मचर्य्य किये हुए गृहाश्रमी! (**प्रत्नासः**) प्राचीन विद्वान् जन (**ऋतायवः**) सत्य की इच्छा करने वाले (**ऊतये**) रक्षण आदि के लिये जिस (**प्रत्नम्**) प्राचीन (**पुरुश्चन्द्रम्**) बहुत सुवर्ण आदि से युक्त (**यजतम्**) आदर करने योग्य (**विश्वधायसम्**) सब व्यवहार और धन के धारण तथा (**दमूनसम्**) इन्द्रिय और अन्तःकरण के दमन करने वाले (**वरेण्यम्**) अतीव स्वीकार करने योग्य और श्रेष्ठ (**गृहपतिम्**) गृहस्थ व्यवहार के पालन करने वाले (**त्वाम्**) आप को (**सम्, ईधिरे**) उत्तम प्रकार प्रकाशित करावें, वह आप इनका सत्कार करो॥ १॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो आप लोगों की विद्या और दान आदिकों से वृद्धि करते हैं, उनका आप लोग निरन्तर सत्कार करो॥ १॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥



www.9009.co.in

**त्वाम॑ग्ने अति॑थिं पू॒र्व्यं विश॑: शो॒चिष्के॑शं गृ॒हप॑तिं॒ नि षे॑दिरे।**

**बृ॒हत्के॑तुं पुरु॒रूप॑ं धन॒स्पृत॑ं सु॒शर्मा॑णं॒ स्वव॑सं जर॒द्विष॑म्॥ २॥**

**त्वाम्। अ॒ग्ने॒। अति॑थिम्। पू॒र्व्यम्। विश॑:। शो॒चिःऽके॑शम्। गृ॒हऽप॑तिम्। नि। से॒दि॒रे॒। बृ॒हत्ऽके॑तुम्। पु॒रु॒ऽरूप॑म्। ध॒न॒ऽस्पृत॑म्। सु॒ऽशर्मा॑णम्। सु॒ऽअव॑सम्। ज॒र॒त्ऽवि॑षम्॥ २॥**

**पदार्थः**-(**त्वाम्**) (**अग्ने**) गृहस्थ (**अतिथिम्**) सर्वदोपदेशाय भ्रमन्तम् (**पूर्व्यम्**) पूर्वैः कृतं विद्वांसम् (**विशः**) प्रजाः (**शोचिष्केशम्**) शोचींषि न्यायव्यवहारप्रकाशाः केशा इव यस्य तम् (**गृहपतिम्**) गृहव्यवहारपालकम् (**नि, षेदिरे**) निषीदन्ति (**बृहत्केतुम्**) महाप्रज्ञम् (**पुरुरूपम्**) बहुरूपयुक्तं सुन्दराकृतिम् (**धनस्पृतम्**) धनस्पृहायुक्तम् (**सुशर्म्माणम्**) प्रशंसितगृहम् (**स्ववसम्**) शोभनमवो रक्षणादिकं यस्य तम् (**जरद्विषम्**) जरद् विनष्टं शत्रुरूपं विषं यस्य तम्॥ २॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! या विशोऽतिथिमिव वर्त्तमानं पूर्व्यं शोचिष्केशं बृहत्केतुं पुरुरूपं धनस्पृतं सुशर्म्माणं स्ववसं जरद्विषं गृहपतिं त्वां नि षेदिरे तास्त्वं सततं सत्कुर्य्याः॥ २॥

**भावार्थः**-गृहस्थाः सदैव प्रजापालनमतिथिसेवामुत्तमगृहाणि विद्याप्रचारं प्रज्ञावर्द्धनं सर्वतो रक्षणं रागद्वेषराहित्यं च सततं कुर्युः॥ २॥

**पदार्थः**-हे (**अग्ने**) गृहस्थ जो (**विशः**) प्रजायें (**अतिथिम्**) सदा उपदेश देने के लिये घूमते हुए के सदृश वर्त्तमान (**पूर्व्यम्**) प्राचीनों से किये गये विद्वान् और (**शोचिष्केशम्**) केशों के सदृश न्यायव्यवहार के प्रकाशों से युक्त (**बृहत्केतुम्**) बड़ी बुद्धि वाले (**पुरुरूपम्**) बहुत रूपों से युक्त सुन्दर आकृतिमान् (**धनस्पृतम्**) धन की इच्छा से युक्त (**सुशर्म्माणम्**) प्रशंसित गृह वाले (**स्ववसम्**) श्रेष्ठ रक्षण आदि जिनके (**जरद्विषम्**) वा निवृत्त हुआ शत्रुरूपी विष जिनका ऐसे (**गृहपतिम्**) गृहव्यवहार के पालन करने वाले (**त्वाम्**) आप को (**नि, षेदिरे**) स्थित करते हैं, उनका आप निरन्तर सत्कार करें॥ २॥

**भावार्थः**-गृहस्थ जन सदा ही प्रजा का पालन, अतिथि की सेवा, उत्तम गृह तथा विद्या का प्रचार, बुद्धि की वृद्धि, सब प्रकार से रक्षा तथा राग और द्वेष का त्याग निरन्तर करें॥ २॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**त्वाम॑ग्ने मानु॑षीरीळते॒ विशो॑ होत्रा॒विदं॒ विवि॑चिं रत्न॒धात॑मम्।**

**गुहा॒ सन्त॑ं सुभग वि॒श्वद॑र्शतं तुविष्व॒णसं॑ सु॒यजं॑ घृत॒श्रिय॑म्॥ ३॥**

**त्वाम्। अ॒ग्ने॒। मानु॑षीः। ई॒ळ॒ते॒। विश॑:। हो॒त्रा॒ऽविद॑म्। विवि॑चिम्। र॒त्न॒ऽधात॑मम्। गुहा॑। सन्त॑म्। सु॒ऽभ॒ग॒। वि॒श्व॒ऽद॑र्शतम्। तु॒वि॒ऽस्व॒नस॑म्। सु॒ऽयज॑म्। घृ॒त॒ऽश्रिय॑म्॥ ३॥**



www.9009.co.in

**पदार्थ:**-**(त्वाम्)** **(अग्ने)** अग्निरिव वर्त्तमान **(मानुषी:)** मनुष्यसम्बन्धिन्य: **(ईळते)** स्तुवन्ति गुणै: प्रकाशितं कुर्वन्ति **(विश:)** प्रजा: **(होत्राविदम्)** होत्राणि हवनानि वेत्ति तम् **(विविचिम्)** विवेचकं विभागकर्त्तारम् **(रत्नधातमम्)** रत्नानामतिशयेन धर्त्तारम् **(गुहा)** गुहायामन्त:करणे **(सन्तम्)** अभिव्याप्य स्थितम् **(सुभग)** शोभनैश्वर्य्य **(विश्वदर्शतम्)** विश्वस्य प्रकाशकम् **(तुविष्वणसम्)** बहूनां सेवकम् **(सुयजम्)** सुष्ठु यजन्ति यस्मात्तम् **(घृतश्रियम्)** यो घृतं श्रयति घृतेन शुम्भमानस्तम्॥३॥

**अन्वय:**-हे सुभगाग्ने! मानुषीर्विशो यं होत्राविदं विविचिं रत्नधातमं विश्वदर्शतं तुविष्वणसं सुयजं घृतश्रियं गुहा सन्तं त्वामीळते ता वयमपि विजानीयाम॥३॥

**भावार्थ:**-हे मनुष्या! भवन्तो येन विद्युद्रूपेणाग्निना जीवनं चेतनता च जायते तद्वद्राजानं विज्ञाय सुखं वर्धयन्तु॥३॥

**पदार्थ:**-हे **(सुभग)** सुन्दर ऐश्वर्य्य से युक्त **(अग्ने)** अग्नि के सदृश वर्त्तमान! **(मानुषी:)** मनुष्यसम्बन्धिनी **(विश:)** प्रजायें जिस **(होत्राविदम्)** हवनों के गुणों को जानने वाले **(विविचिम्)** विवेचक विभाग करने **(रत्नधातमम्)** रत्नों के अतीव धारण करने **(विश्वदर्शतम्)** संसार के प्रकाश करने और **(तुविष्वणसम्)** बहुतों की सेवा करने वाले **(सुयजम्)** उत्तम प्रकार यज्ञ करते जिससे उस **(घृतश्रियम्)** घृत का आश्रय करते वा घृत से शोभते हुए **(गुहा)** अन्त:करण में **(सन्तम्)** अभिव्याप्त होकर स्थित **(त्वाम्)** आपको **(ईळते)** गुणों से प्रकाशित करती हैं, उनको हम लोग भी जानें॥३॥

**भावार्थ:**-हे मनुष्यो! आप लोग जिस बिजुली रूप अग्नि से जीवन और चेतनता होती है, तद्वत् राजा को जान के सुख बढ़ाओ॥३॥

**अथाग्निशब्दार्थविद्वद्विषयमाह॥**

अब अग्निशब्दार्थ विद्वद्विषय को कहते हैं॥

**त्वाम॑ग्ने धर्णसिं वि॒श्वधा॑ व॒यं गी॒र्भिर्गृ॒णन्तो॒ नम॒सोप॑ सेदिम।**
**स नो॑ जुषस्व समिधा॒नो अ॑ङ्गिरो दे॒वो मर्त॑स्य य॒शसा॑ सुदी॒तिभि॑:॥४॥**

**त्वाम्। अ॒ग्ने॒। ध॒र्ण॒सिम्। वि॒श्वधा॑। व॒यम्। गी॒:ऽभि:। गृ॒णन्त॑:। नम॑सा। उप॑। से॒दि॒म॒। स:। न॒:। जु॒ष॒स्व॒। स॒म्ऽइ॒धा॒न:। अ॒ङ्गि॒र॒:। दे॒व:। मर्त॑स्य। य॒शसा॑। सु॒दी॒तिऽभि॑:॥४॥**

**पदार्थ:**-**(त्वाम्)** **(अग्ने)** विद्वन् **(धर्णसिम्)** अन्यद्धारकम् **(विश्वधा)** विश्वस्य धर्त्तारम् **(वयम्)** **(गीर्भि:)** वाग्भि: **(गृणन्त:)** स्तुवन्त: **(नमसा)** सत्कारेण **(उप)** **(सेदिम)** उपतिष्ठेम **(स:)** **(न:)** अस्मान् **(जुषस्व)** सेवस्व **(समिधान:)** देदीप्यमान: **(अङ्गिर:)** अङ्गेषु रममाण: **(देव:)** दाता **(मर्त्तस्य)** मनुष्यस्य **(यशसा)** उदकेनान्नेन धनेन वा। **यश इति उदकनामसु पठितम्।** (निघ०१.१२) **अन्ननामसु पठितम्।** (निघ०२.७) **धननामसु पठितम्।** (निघं०२.१०)। **(सुदीतिभि:)** सुष्ठै दानै:॥४॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे अग्ने विद्वँस्त्वं यथा वयं गीर्भिर्गृणन्तो विश्वधा धर्णसिं त्वां नमसोप सेदिम। हे अङ्गिरः! स देवः समिधानस्त्वं मर्त्तस्य सुदीतिभिर्यशसा नोऽस्मान् जुषस्व तथा वयं त्वामुपतिष्ठेम॥४॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। सर्वथायं सर्वेषां स्वभावोऽस्ति यो यादृशेन भावेन यं प्राप्नुयात् सेवेत तादृश एव भावः सेवनं च तस्योपजायते॥४॥

**पदार्थः**-हे **(अग्ने)** विद्वन्! आप जैसे हम लोग **(गीर्भिः)** वाणियों से **(गृणन्तः)** स्तुति करते हुए **(विश्वधा)** संसार के धारण करने वा **(धर्णसिम्)** अन्य को धारण करने वाले **(त्वाम्)** आपके **(नमसा)** सत्कार से **(उप, सेदिम)** समीप प्राप्त होवें और हे **(अङ्गिरः)** अङ्गों में रमते हुए! **(सः)** वह **(देवः)** दाता **(समिधानः)** प्रकाशमान आप **(मर्त्तस्य)** मनुष्य के **(सुदीतिभिः)** उत्तम दानों से **(यशसा)** जल, अन्न वा धन से **(नः)** हम लोगों का **(जुषस्व)** सेवन करें, वैसे **(वयम्)** हम लोग आपके समीप स्थित होवें॥४॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। सब प्रकार से यह सब का स्वभाव है, जो जिस भाव से जिसको प्राप्त होवे सेवन करे, वैसा ही भाव और सेवन उसका होता है॥४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**त्वम॑ग्ने पुरुरूपो॑ विशेवि॑शे वयो॑ दधासि प्रत्नथा॑ पुरुष्टुत।**

**पुरूण्यन्ना सह॑सा वि रा॑जसि त्विषिः सा ते॑ तित्विषाणस्य नाधृषे॑॥५॥**

**त्वम्। अग्ने। पुरुऽरूपः। विशेऽवि॑शे। वयः॑। दधासि। प्रत्नऽथा॑। पुरुऽस्तुत। पुरूणि॑। अन्ना॑। सह॑सा। वि। राजसि। त्विषिः॑। सा। ते। तित्विषाणाय। न। आऽधृषे॑॥५॥**

**पदार्थः**-**(त्वम्)** **(अग्ने)** राजन् **(पुरुरूपः)** बहुरूपः **(विशेविशे)** प्रजायै प्रजायै **(वयः)** जीवनम् **(दधासि)** **(प्रत्नथा)** प्राचीनेनेव **(पुरुष्टुत)** बहुभिः प्रशंसित **(पुरूणि)** बहूनि **(अन्ना)** अन्नानि **(सहसा)** बलेन **(वि)** **(राजसि)** **(त्विषिः)** दीप्तिः **(सा)** **(ते)** **(तित्विषाणस्य)** अग्निज्वालयेव विद्यया प्रकाशमानस्य **(न)** इव **(आधृषे)** समन्ताद् धृषाय॥५॥

**अन्वयः**-हे पुरुष्टुताग्ने! यया त्वं वि राजसि सा तित्विषाणस्य ते त्विषिरस्ति साऽऽधृषे न विशेविशे पुरूण्यन्ना दधाति यया त्वं विशेविशे पुरुरूपस्त्वं प्रत्नथा सहसा वयो दधासि तां विजानीहि॥५॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! भवन्तो यथाऽग्निः सर्वं जगद्धाति तथा सर्वान् मनुष्यान् विद्याप्रकाशे धरन्तु॥५॥

**पदार्थः**-हे **(पुरुष्टुत)** बहुतों से प्रशंसित **(अग्ने)** राजन्! जिससे आप **(वि, राजसि)** विशेष प्रकाशमान हैं **(सा)** वह **(तित्विषाणस्य)** अग्निज वाला के समान विद्या से प्रकाशमान **(ते)** आपकी **(त्विषिः)** दीप्ति है और वह **(आधृषे)** सब प्रकार से धृष्ट के लिये **(न)** जैसे वैसे **(विशेविशे)** प्रजा-प्रजा



www.9009.co.in

के लिये **(पुरूणि)** बहुत **(अन्ना)** अन्नों को धारण करती है तथा जिससे **(त्वम्)** आप प्रजा-प्रजा के लिये **(पुरुरूप:)** बहुत रूप वाले आप **(प्रत्नथा)** प्राचीन के सदृश **(सहसा)** बल से **(वय:)** जीवन को **(दधासि)** धारण करते हो, उसको विशेषता से जानिये॥५॥

**भावार्थ:**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! आप लोग जैसे अग्नि सब जगत् को धारण करता है, वैसे सब मनुष्यों को विद्या के प्रकाश में धारण करो॥५॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**त्वाम॑ग्ने समिधा॒नं य॑विष्ठ्य दे॒वा दू॒तं च॑क्रिरे हव्य॒वाह॑नम्।**

**उ॒रु॒ज्रय॑सं घृ॒तयो॑नि॒माहु॑तं त्वे॒षं चक्षु॑र्दधिरे चोद॒यन्म॑ति॥६॥**

**त्वाम्। अ॒ग्ने॒। स॒म्ऽइ॒धा॒नम्। य॒वि॒ष्ठ्य॒। दे॒वाः। दू॒तम्। च॒क्रि॒रे॒। ह॒व्य॒ऽवाह॑नम्। उ॒रु॒ऽज्रय॑सम्। घृ॒तऽयो॑निम्। आऽहु॑तम्। त्वे॒षम्। चक्षुः॑। द॒धि॒रे॒। चो॒द॒यत्ऽम॑ति॥६॥**

**पदार्थ:**-**(त्वाम्)** **(अग्ने)** विद्वन् **(समिधानम्)** देदीप्यमानम् **(यविष्ठ्य)** अतिशयेन युवसु साधो **(देवा:)** विद्वांसः **(दूतम्)** सर्वतो व्यवहारसाधकम् **(चक्रिरे)** कुर्वन्ति **(हव्यवाहनम्)** यो हव्यान्यादातुमर्हाणि यानानि सद्यो वहति तम् **(उरुज्रयसम्)** बहुवेगवन्तम् **(घृतयोनिम्)** घृतमुदकं प्रदीप्तं कारणं वा योनिर्गृहं यस्य तम् **(आहुतम्)** स्पर्द्धितं समन्ताच्छब्दितम् **(त्वेषम्)** प्रदीप्तम् **(चक्षु:)** दर्शकम् **(दधिरे)** **(चोदयन्मति)** प्रज्ञाप्रेरकम्॥६॥

**अन्वय:**-हे यविष्ठ्याग्ने! यथा देवा हव्यवाहनमुरुज्रयसं घृतयोनिमाहुतं त्वेषं चोदयन्मति चक्षुस्समिधानमग्निं दधिरे दूतं चक्रिरे तथा त्वां दध्याम॥६॥

**भावार्थ:**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। नहि मनुष्या विद्वत्सङ्गेन विनाऽग्निगुणानग्न्यादिसंयोग-गुणाँश्च ज्ञातुमर्हन्ति॥६॥

**पदार्थ:**-हे **(यविष्ठ्य)** अत्यन्त युवाजनों में श्रेष्ठ **(अग्ने)** विद्वन् जैसे **(देवा:)** विद्वान् जन **(हव्यवाहनम्)** ग्रहण करने योग्य वाहनों को शीघ्र प्राप्त करने वाले **(उरुज्रयसम्)** बहुत वेगयुक्त **(घृतयोनिम्)** जल वा प्रदीप्त अथवा कारण है गृह जिसका **(आहुतम्)** जो सब ओर से शब्दयुक्त **(त्वेषम्)** प्रदीप्त तथा **(चोदयन्मति)** बुद्धि को प्रेरणा करने और **(चक्षु:)** पदार्थों को दिखाने वाले **(समिधानम्)** प्रकाशमान अग्नि को **(दधिरे)** धारण करते और **(दूतम्)** सब ओर से व्यवहारसाधक **(चक्रिरे)** करते हैं, वैसे **(त्वाम्)** आप को हम लोग धारण करें॥६॥

**भावार्थ:**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। मनुष्य विद्वानों के सङ्ग के बिना अग्नियों के गुण और अग्नि आदि संयोग के गुणों को जानने योग्य नहीं होते हैं॥६॥

**पुनर्विद्वद्विषयमाह॥**



www.9009.co.in

फिर विद्वद्विषय को कहते हैं॥

**त्वाम॑ग्ने प्र॒दिव॒ आहु॑तं घृ॒तैः सु॑म्ना॒यव॑ः सु॒षमि॒धा॒ समी॑धिरे।**

**स वा॑वृधा॒न ओष॑धीभिरुक्षि॒तो॒३॑भि ज्रयां॑सि॒ पार्थि॑वा॒ वि ति॑ष्ठसे॥७॥२६॥८॥३॥**

त्वाम्। अ॒ग्ने॒। प्र॒ऽदिव॑ः। आऽहु॑तम्। घृ॒तैः। सु॒म्न॒ऽयव॑ः। सु॒ऽस॒मिधा॑। सम्। ई॒धि॒रे॒। सः। व॒वृ॒धा॒नः। ओष॑धीभिः। उ॒क्षि॒तः। अ॒भि। ज्रयां॑सि। पार्थि॑वा। वि। ति॒ष्ठ॒से॒॥७॥

**पदार्थः**-(**त्वाम्**) शिल्पविद्योपदेशकम् (**अग्ने**) विद्वन् (**प्रदिवः**) प्रकृष्टात् प्रकाशात् (**आहुतम्**) गृहीतम् (**घृतैः**) प्रदीपकैः साधनैः (**सुम्नायवः**) य आत्मनः सुम्नमिच्छवः (**सुषमिधा**) सम्यक् प्रदीपकेनेन्धनेन (**सम्**) (**ईधिरे**) सम्यक् प्रदीपयन्ति (**सः**) (**वावृधानः**) भृशं वर्धनः (**ओषधीभिः**) सोमयवादिभिः (**उक्षितः**) संसिक्तः (**अभि**) (**ज्रयांसि**) वेगयुक्तानि कर्माणि (**पार्थिवा**) पृथिव्यां विदितानि (**वि**) (**तिष्ठसे**)॥७॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! यथा सुम्नायवो घृतैः सुषमिधा प्रदिव आहुतं यं समीधिरे स वावृधान उक्षितस्त्वमोषधीभिः पार्थिवा अभि ज्रयांसि वि तिष्ठसे तथा त्वां सततं वयं सुखयेम॥७॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यथा विद्वांसः सर्वेभ्यः पदार्थेभ्यो विद्युद्विद्यामुत्पादयन्ति तथा विद्वांसः सर्वतो गुणान् गृह्णन्तीति॥७॥

अत्राग्निविद्वद्गुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्य्याणां महाविदुषां श्रीमद्विरजानन्दसरस्वतीस्वामिनां शिष्येण श्रीदयानन्दसरस्वतीस्वामिना विरचिते सुप्रमाणयुक्ते संस्कृतार्य्यभाषाभ्यां विभूषिते ऋग्वेदभाष्ये तृतीयाष्टकेऽष्टमोऽध्यायः षड्विंशो वर्गस्तृतीयाष्टकश्च पञ्चमे मण्डलेऽष्टमं सूक्तं च समाप्तम्॥**

**पदार्थः**-हे (**अग्ने**) विद्वन् जैसे (**सुम्नायवः**) अपने सुख की इच्छा करने वाले जन (**घृतैः**) प्रकाशित करने वाले साधनों और (**सुषमिधा**) उत्तम प्रकार प्रकाश करने वाले इन्धन के साथ (**प्रदिवः**) अत्यन्त प्रकाश से (**आहुतम्**) ग्रहण किये गये जिनको (**सम्, ईधिरे**) उत्तम प्रकार प्रकाशित करते हैं (**सः**) वह (**वावृधानः**) निरन्तर बढ़ने वाले (**उक्षितः**) उत्तम प्रकार सींचे गये आप (**ओषधीभिः**) सोमलता और यवादिकों से (**पार्थिवा**) पृथिवी में विदित (**अभि**) सब ओर से (**ज्रयांसि**) वेगयुक्त कर्मों को (**वि, तिष्ठसे**) विशेष करके स्थित करते हो, वैसे (**त्वाम्**) आप को निरन्तर हम लोग सुख देवें॥७॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जैसे विद्वान् जन सब पदार्थों से बिजुली की विद्या को उत्पन्न करते हैं, वैसे विद्वान् जन सब से गुणों को ग्रहण करते हैं॥७॥

इस सूक्त में अग्नि और विद्वान् के गुण-वर्णन होने से इस सूक्त के अर्थ की इस पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गाति जाननी चाहिये॥

**यह श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्य महाविद्वान् श्रीमद्विरजानन्द सरस्वती स्वामीजी के शिष्य श्री दयानन्द सरस्वती स्वामिविरचित उत्तम प्रमाणयुक्त संस्कृत और आर्य्यभाषाविभूषित ऋग्वेदभाष्य में तृतीयाष्टक में**



www.9009.co.in

अष्टम अध्याय और छब्बीसवां वर्ग, तीसरा अष्टक तथा पञ्चम मण्डल में अष्टम सूक्त समाप्त हुआ।।



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

अथ चतुर्थाष्टकारम्भः॥

तत्र प्रथमाऽध्यायः॥

विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परा सुव। यद्भद्रं तन्न आ सुव॥ ऋ०५.८२.५॥

अथ सप्तर्चस्य नवमस्य सूक्तस्य गय आत्रेय ऋषिः। अग्निर्देवता। १ स्वराडुष्णिक्। ३, ४ भुरिगुष्णिक् छन्दः। ऋषभः स्वरः। २ निचृदनुष्टुप्। ६ विराडनुष्टप् छन्दः। गान्धारः स्वरः। ५ स्वराड् बृहती छन्दः। मध्यमः स्वरः। ७ पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः॥

*अथाग्न्यादिगुणानाह॥*

अब चतुर्थ अष्टक में सात ऋचा वाले नवम सूक्त का आरम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में अग्न्यादि पदार्थों के गुणों को कहते हैं॥

**त्वामग्ने हविष्मन्तो देवं मर्तास ईळते।**

**मन्ये त्वा जातवेदसं स हव्या वक्ष्यानुषक्॥ १॥**

**त्वाम्। अग्ने। हविष्मन्तः। देवम्। मर्तासः। ईळते। मन्ये। त्वा। जातऽवेदसम्। सः। हव्या। वक्षि। आनुषक्॥ १॥**

**पदार्थः**-(**त्वाम्**) विद्वांसम् (**अग्ने**) पावक इव वर्त्तमान (**हविष्मन्तः**) प्रशस्तदानादियुक्ताः (**देवम्**) देदीप्यमानम् (**मर्त्तासः**) मनुष्याः (**ईळते**) स्तुवन्ति (**मन्ये**) (**त्वा**) त्वाम् (**जातवेदसम्**) (**सः**) (**हव्या**) होतुमर्हाणि (**वक्षि**) (**आनुषक्**) आनुकूल्येन॥ १॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! यथा हविष्मन्तो मर्त्तासो जातवेदसं देवमग्निं प्रशंसन्ति तथा त्वामीळते। अहं यं त्वा मन्ये स त्वं हव्यानुषग्वक्षि॥ १॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। येऽग्न्यादिगुणानन्विच्छन्ति त एव विद्यानुकूलान् व्यवहारान् जनयन्ति॥ १॥

**पदार्थः**-हे (**अग्ने**) अग्नि के सदृश वर्त्तमान जैसे (**हविष्मन्तः**) अच्छे दान आदि से युक्त (**मर्त्तासः**) मनुष्य (**जातवेदसम्**) उत्पन्न हुए पदार्थों को जानने वाले (**देवम्**) प्रकाशमान अग्नि की प्रशंसा करते है, वैसे (**त्वाम्**) विद्वान् आपकी (**ईळते**) स्तुति करते हैं मैं जिन (**त्वा**) आप को (**मन्ये**) मानता हूं (**सः**) वह आप (**हव्या**) ग्रहण करने योग्य पदार्थों को (**आनुषक्**) अनुकूलता से (**वक्षि**) धारण करते हो॥ १॥



www.9009.co.in

**भावार्थ:**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो अग्नि आदि के गुणों को ढूंढ़ते हैं, वे ही विद्या के अनुकूल व्यवहारों को उत्पन्न करते हैं॥१॥

**अथ विद्वद्गुणानाह॥**

अब विद्वानों के गुणों को कहते हैं॥

**अ॒ग्निर्होता॑ दास्व॑तः॒ क्षय॑स्य वृ॒क्तब॑र्हिषः।**

**सं य॒ज्ञास॒श्चर॑न्ति॒ यं सं वाजा॑सः श्रव॒स्यव॑ः॥२॥**

**अ॒ग्निः। होता॑। दास्व॑तः। क्षय॑स्य। वृ॒क्तऽब॑र्हिषः। सम्। य॒ज्ञास॑ः। चर॑न्ति। यम्। सम्। वाजा॑सः। श्र॒व॒स्यव॑ः॥२॥**

**पदार्थ:**-(**अग्निः**) पावक इव (**होता**) दाता (**दास्वतः**) दातृस्वभावस्य (**क्षयस्य**) निवासस्य (**वृक्तबर्हिषः**) वृक्तं वर्जितं बर्हिर्यस्मिन् (**सम्**) (**यज्ञासः**) सङ्गन्तव्याः (**चरन्ति**) (**यम्**) (**सम्**) (**वाजासः**) वेगवन्तः (**श्रवस्यवः**) आत्मनः श्रवमिच्छवः॥२॥

**अन्वयः**-हे विद्वन्! यथा होताग्निर्दास्वतो वृक्तबर्हिषः क्षयस्य मध्ये वसति तथा यं श्रवस्यवो वाजासो यज्ञासः सं चरन्ति स संज्ञापको भवति॥२॥

**भावार्थ:**-मनुष्या विस्तीर्णावकाशानि गृहाणि निर्माय पुरुषार्थेन पदार्थविद्यां प्राप्नुवन्तु॥२॥

**पदार्थ:**-हे विद्वान्! जैसे (**होता**) दाता (**अग्निः**) अग्नि के सदृश पुरुष (**दास्वतः**) देने वाले के स्वभाव से युक्त (**वृक्तबर्हिषः**) जल से रहित (**क्षयस्य**) स्थान के मध्य में बसता है, वैसे (**यम्**) जिसको (**श्रवस्यवः**) अपने धन की इच्छा करने वाले (**वाजासः**) वेग से युक्त (**यज्ञासः**) मिलने योग्य जन (**सम्, चरन्ति**) उत्तम प्रकार संचार करते हैं, वह (**सम्**) उत्तम प्रकार जनाने वाला होता है॥२॥

**भावार्थ:**-मनुष्य बड़े अवकाश वाले गृहों को रच के पुरुषार्थ से पदार्थविद्या को प्राप्त हों॥२॥

**पुनरग्निविषयमाह॥**

फिर अग्निविषय को कहते हैं॥

**उ॒त स्म॒ यं शिशुं॑ य॒था॒ नवं॒ जनि॑ष्टा॒रणी॑।**

**ध॒र्तारं॒ मानु॑षीणां वि॒शाम॒ग्निं स्व॑ध्व॒रम्॥३॥**

**उ॒त। स्म॒। यम्। शिशु॑म्। य॒था॒। नव॑म्। जनि॑ष्ट। अ॒रणी॒ इति॑। ध॒र्तार॑म्। मानु॑षीणाम्। वि॒शाम्। अ॒ग्निम्। सु॒ऽअ॒ध्व॒रम्॥३॥**

**पदार्थ:**-(**उत**) अपि (**स्म**) (**यम्**) (**शिशुम्**) बालकम् (**यथा**) (**नवम्**) नवीनम् (**जनिष्ट**) जनयतः (**अरणी**) काष्ठविशेषाविव (**धर्त्तारम्**) (**मानुषीणाम्**) मनुष्यादीनाम् (**विशाम्**) प्रजानाम् (**अग्निम्**) (**स्वधरम्**) सुष्ठ्वहिंसाधर्मं प्राप्तम्॥३॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-यथा मातापितरौ नवं शिशुं जनिष्ट तथा स्म यमरणी मानुषीणां विशां धर्त्तारमुत स्वध्वरमग्निं विद्वांसो जनयन्तु॥३॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। यथा मातापितरौ श्रेष्ठं सन्तानं जनयित्वा सुखमाप्नुतस्तथा विद्वांसो विद्युतमग्निमुत्पाद्यैश्वर्य्यमाप्नुवन्ति॥३॥

**पदार्थः**-**(यथा)** जैसे माता और पिता **(नवम्)** नवीन **(शिशुम्)** बालक को **(जनिष्ट)** उत्पन्न करते हैं, वैसे **(स्म)** ही **(यम्)** जिसको **(अरणी)** काष्ठविशेषों के सदृश **(मानुषीणाम्)** मनुष्य आदि **(विशाम्)** प्रजाओं के **(धर्त्तारम्)** धारण करने वाले **(उत)** भी **(स्वध्वरम्)** उत्तम प्रकार अहिंसारूप धर्म को प्राप्त **(अग्निम्)** अग्नि को विद्वान् जन उत्पन्न करें॥३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जैसे माता-पिता श्रेष्ठ सन्तान को उत्पन्न करके सुख को प्राप्त होते हैं, वैसे विद्वान् जन बिजुलीरूप अग्नि को उत्पन्न करके ऐश्वर्य्य को प्राप्त होते हैं॥३॥

**पुनर्विद्वद्गुणानाह॥**

फिर विद्वानों के गुणों को कहते हैं॥

**उत स्म दुर्गृभीयसे पुत्रो न ह्वार्याणाम्।**

**पुरू यो दग्धासि वनाग्ने पशुर्न यवसे॥४॥**

**उत। स्म। दुःऽगृभीयसे। पुत्रः। न। ह्वार्याणाम्। पुरु। यः। दग्धा। असि। वना। अग्ने। पशुः। न। यवसे॥४॥**

**पदार्थः**-**(उत)** **(स्म)** **(दुर्गृभीयसे)** दुःखेन गृह्णासि **(पुत्रः)** **(न)** इव **(ह्वार्याणाम्)** कुटिलानाम् **(पुरू)** बहु। अत्र **संहितायामिति** दीर्घः। **(यः)** **(दग्धा)** **(असि)** **(वना)** वनानि **(अग्ने)** अग्निः **(पशुः)** **(न)** इव **(यवसे)** अद्याय घासाय॥४॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! विद्वन्! ह्वार्य्याणां पुत्रो न पुरू दुर्गृभीयसे स्म योऽग्निर्वना दग्धेवोत यवसे पशुर्नाऽसि तस्मात् पदार्थविदसि॥४॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। यो हि पदार्थविद्याग्रहणाय पुत्रवद्धेनुवच्च वर्त्तते स एवाग्न्यादिविद्यां ज्ञातुमर्हति॥४॥

**पदार्थः**-हे **(अग्ने)** अग्नि के सदृश तेजस्वी विद्वन्! **(ह्वार्याणाम्)** कुटिलों के **(पुत्रः)** पुत्र के **(नः)** सदृश **(पुरू)** बहुत को **(दुर्गृभीयसे)** दुःख से ग्रहण करते **(स्म)** ही हो **(यः)** जो अग्नि **(वना)** वनों को **(दग्धा)** जलाने वाले के सदृश **(उत)** भी **(यवसे)** खाने योग्य घास के लिये **(पशुः)** पशु के **(न)** सदृश है, उससे पदार्थों को जानने वाले **(असि)** हो॥४॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जो पदार्थविद्या के ग्रहण के लिये पुत्र और गौ के सदृश वर्त्तमान है, वही अग्नि आदि की विद्या को जान सकता है॥४॥



www.9009.co.in

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**अध॑ स्म॒ यस्या॒र्चय॑ः स॒म्यक् सं॒यन्ति॑ धू॒मिन॑ः।**

**यदी॒मह त्रि॒तो दि॒व्युप॒ ध्माते॑व॒ धम॑ति॒ शिशी॑ते ध्मा॒तरी॑ यथा॥५॥**

**अध॑। स्म॒। यस्य॑। अ॒र्चय॑ः। स॒म्यक्। स॒मऽयन्ति॑। धू॒मिन॑ः। यत्। ई॒म्। अह॑। त्रि॒तः। दि॒वि। उप॑। ध्माता॑ऽइव। धम॑ति। शिशी॑ते। ध्मा॒तरि॑। य॒था॥५॥**

**पदार्थः**-(**अध**) अथ (**स्म**) (**यस्य**) (**अर्चयः**) (**सम्यक्**) (**संयन्ति**) (**धूमिनः**) बहुर्धूमो विद्यते येषान्ते (**यत्**) यः (**ईम्**) सर्वतः (**अह**) विनिग्रहे (**त्रितः**) संप्लावकः (**दिवि**) अन्तरिक्षे (**उप**) (**ध्मातेव**) धमनकर्त्तेव (**धमति**) (**शिशीते**) तनूकरोति (**ध्मातरी**) अत्र **संहितायामि**ति दीर्घः। (**यथा**)॥५॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यस्याग्नेऽर्चयो धूमिनः संयन्त्यध यद्य ईमह त्रितः सन् दिवि ध्मातेवोप धमति यथा ध्मातरी सम्यक् शिशीते तेन तथा स्म कार्याणि साध्नुवन्तु॥५॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। हे मनुष्याः! सर्वाभ्यः पदार्थविद्याभ्यः पुराग्निविद्या वेदितव्या॥५॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! (**यस्य**) जिस अग्नि के (**अर्चयः**) तेज (**धूमिनः**) बहुत धूम से युक्त (**संयन्ति**) उत्तम प्रकार प्राप्त होते हैं (**अध**) इसके अनन्तर (**यत्**) जो (**ईम्**) सब ओर से (**अह**) निश्चय ग्रहण करने में (**त्रितः**) अच्छे प्रकार ले जाने वाला हुआ (**दिवि**) अन्तरिक्ष में (**ध्मातेव**) शब्द करने वाले के सदृश (**उप, धमति**) शब्द करता है और (**यथा**) जैसे (**ध्मातरी**) चलने वाले में (**सम्यक्**) उत्तम प्रकार (**शिशीते**) सूक्ष्म करता है, उससे वैसे (**स्म**) ही कार्यों को सिद्ध करो॥५॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! सब पदार्थविद्याओं से पहले अग्निविद्या जाननी चाहिये॥५॥

**पुनर्मित्रभावेनोक्तविषयमाह॥**

फिर मित्रभाव से उक्त विषय को कहते हैं॥

**तवा॒हम॑ग्न ऊ॒तिभि॑र्मि॒त्रस्य॑ च॒ प्रश॑स्तिभिः।**

**द्वे॒षो॒यु॒तो॒ न दु॑रि॒ता तु॒र्याम॒ मर्त्या॑नाम्॥६॥**

**तव॑। अ॒हम्। अ॒ग्ने॒। ऊ॒तिऽभि॑ः। मि॒त्रस्य॑। च॒। प्रश॑स्तिऽभिः। द्वे॒ष॒ःऽयुत॑ः। न। दुः॒ऽइ॒ता। तु॒र्याम॑। मर्त्या॑नाम्॥६॥**

**पदार्थः**-(**तव**) (**अहम्**) (**अग्ने**) विद्वन् (**ऊतिभिः**) रक्षादिभिः (**मित्रस्य**) (**च**) (**प्रशस्तिभिः**) प्रशंसाभिः (**द्वेषोयुतः**) द्वेषयुक्ताः (**न**) इव (**दुरिता**) दुःखेनेता प्राप्तानि (**तुर्याम**) हिंस्याम (**मर्त्यानाम्**) मनुष्याणाम्॥६॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे अग्ने! अहं मित्रस्य तवोतिभिः प्रशस्तिभिश्च प्रशंसितो भवेयं तथा त्वं भव सर्वे वयं मिलित्वा द्वेषोयुतो न मर्त्यानां दुरिता तुर्य्याम॥६॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यथा मित्रं मित्रस्य प्रशंसां करोति शत्रवो हितं घ्नन्ति तथैव मित्रतां कृत्वा मनुष्याणां दुःखानि वयं हिंस्येम॥६॥

**पदार्थः**-हे **(अग्ने)** विद्वन् **(अहम्)** मैं **(मित्रस्य)** मित्र **(तव)** आपकी **(ऊतिभिः)** रक्षा आदिकों से और **(प्रशस्तिभिः)** प्रशंसाओं से **(च)** भी प्रशंसित होऊं, वैसे आप हूजिये और सब हम लोग मिल कर **(द्वेषोयुतः)** द्वेषयुक्तों के **(न)** सदृश **(मर्त्यानाम्)** मनुष्यों के **(दुरिता)** दुःख से प्राप्त हुए दोषों की **(तुर्याम)** हिंसा करें॥६॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जैसे मित्र मित्र की प्रशंसा करता और शत्रुजन हित का नाश करते हैं, वैसे ही मित्रता करके मनुष्यों के दुःखों का हम नाश करें॥६॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**तं नो॑ अग्ने अ॒भी नरो॑ र॒यिं स॑हस्व॒ आ भ॑र।**

**स क्षे॑पय॒त्स पो॑षय॒द्भुव॒द्वाज॑स्य सा॒तय॑ उ॒तैधि॑ पृ॒त्सु नो॑ वृ॒धे॥७॥१॥**

**तम्। नः॒। अ॒ग्ने॒। अ॒भि। नरः॑। र॒यिम्। स॒ह॒स्वः॒। आ। भ॒र॒। सः। क्षे॒प॒य॒त्। सः। पो॒ष॒य॒त्। भुव॑त्। वाज॑स्य। सा॒तये॑। उ॒त। ए॒धि॒। पृत्ऽसु। नः॒। वृ॒धे॥७॥**

**पदार्थः**-**(तम्)** **(नः)** अस्माकम् **(अग्ने)** विद्वन् **(अभि)** आभिमुख्ये **(नरः)** नायकान्। व्यत्ययेन प्रथमा। **(रयिम्)** धनम् **(सहस्वः)** बहुसहनादिगुणयुक्त **(आ)** **(भर)** **(सः)** **(क्षेपयत्)** प्रेरयेत् **(सः)** **(पोषयत्)** पोषयेत् **(भुवत्)** भवेत् **(वाजस्य)** अन्नादेः **(सातये)** संविभागाय **(उत)** **(एधि)** भव **(पृत्सु)** सङ्ग्रामेषु **(नः)** अस्माकम् **(वृधे)** वर्धनाय॥७॥

**अन्वयः**-हे सहस्वोऽग्ने विद्वन्! यस्त्वं नो नरो रयिमभ्या भर तं वयं सत्कुर्याम स भवानस्मान् क्षेपयत् पोषयत् स वाजस्य सातये भुवदुत पृत्सु नो वृध एधि॥७॥

**भावार्थः**-जिज्ञासुभिर्विदुषः प्रतीयं प्रार्थना कार्य्या भवन्तोऽस्मान् सद्गुणेषु प्रेरयन्तु ब्रह्मचर्य्यादिना पोषयन्तु सत्यासत्ययोर्विभाजका युद्धविद्याकुशला अस्मान् सततं रक्षन्त्विति॥७॥

अत्राग्निविद्वद्गुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति नवमं सूक्तं प्रथमो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे **(सहस्वः)** बहुत सहन आदि गुणों से युक्त **(अग्ने)** विद्वन्! जो आप **(नः)** हम लोगों के **(नरः)** नायक अर्थात् कार्य्यों में अग्रगामियों और **(रयिम्)** धन को **(अभि)** सन्मुख **(आ, भर)** सब प्रकार धारण करें **(तम्)** उनका हम लोग सत्कार करें **(सः)** वह आप हम लोगों की **(क्षेपयत्)** प्रेरणा करें



www.9009.co.in

और **(पोषयत्)** पोषण पालन करें **(सः)** वह **(वाजस्य)** अन्न आदि के **(सातये)** संविभाग के लिये **(भुवत्)** होवें **(उत)** और **(पृत्सु)** सङ्ग्रामों में **(नः)** हम लोगों की **(वृधे)** वृद्धि के लिये **(एधि)** हूजिये॥७॥

**भावार्थः**-सुकर्म्मों के जानने की इच्छा करने वालों को चाहिये कि विद्वानों के प्रति यह प्रार्थना करें कि आप लोग हम लोगों को श्रेष्ठ गुणों में प्रेरित करो और ब्रह्मचर्य्य आदि से पुष्ट करो और सत्य और असत्य के विभाग करने वाले और युद्धविद्या में चतुर जन हम लोगों की निरन्तर रक्षा करें॥७॥

इस सूक्त में अग्नि और विद्वान् के गुण-वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ संगति जाननी चाहिये॥

**यह नवमा सूक्त और पहिला वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

**अथ सप्तर्चस्य दशमस्य सूक्तस्य गय आत्रेय ऋषिः। अग्निर्देवता। १, ६ निचृदनुष्टुप्। ५ अनुष्टुप् छन्दः। गान्धारः स्वरः। २ स्वराडुष्णिक्। ३ भुरिगुष्णिक् छन्दः। ऋषभः स्वरः। ४ स्वराड् बृहती छन्दः। मध्यमः स्वरः। ७ निचृत्पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः॥**

*अथाग्निशब्दार्थविद्वद्गुणानाह॥*

अब सात ऋचा वाले दशवें सूक्त का आरम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में अग्निशब्दार्थ विद्वद्विषय को कहते हैं॥

**अग्न॒ ओजि॑ष्ठ॒मा भ॑र द्यु॒म्नम॒स्मभ्य॑मध्रिगो।**

**प्र नो॑ रा॒या परी॑णसा॒ रत्सि॒ वाजा॑य॒ पन्था॑म्॥ १॥**

**अग्ने॑। ओजि॑ष्ठम्। आ। भ॒र॒। द्यु॒म्नम्। अ॒स्मभ्य॑म्। अ॒ध्रि॒गो॒ इत्य॑ध्रि॒ऽगो। प्र। न॒ः। रा॒या। परी॑णसा। रत्सि॑। वाजा॑य। पन्था॑म्॥ १॥**

**पदार्थः**-(**अग्ने**) विद्वन् (**ओजिष्ठम्**) अतिशयेन पराक्रमयुक्तम् (**आ**) (**भर**) समन्ताद्धर (**द्युम्नम्**) यशो धनं वा (**अस्मभ्यम्**) (**अध्रिगो**) योऽधृन् धारकान् गच्छन्ति तत्सम्बुद्धौ (**प्र**) (**नः**) अस्मान् (**राया**) धनेन (**परीणसा**) (**रत्सि**) रमसे (**वाजाय**) विज्ञानाय (**पन्थाम्**) मार्गम्॥ १॥

**अन्वयः**-हे अध्रिगोऽग्ने! त्वमस्मभ्यमोजिष्ठं द्युम्नमा भर नोऽस्मान् परीणसा राया वाजाय पन्थां प्राप्य रत्सि तस्मात् सत्कर्त्तव्योऽसि॥ १॥

**भावार्थः**-ये मनुष्या अन्येषां सदुपदेशेन पुण्यकीर्तिं वर्धयन्ति ते धर्मकीर्तयो भवन्ति॥ १॥

**पदार्थः**-हे (**अध्रिगो**) धारण करने वालों को प्राप्त होने वाले (**अग्ने**) विद्वन्! आप (**अस्मभ्यम्**) हम लोगों के लिये (**ओजिष्ठम्**) अत्यन्त पराक्रमयुक्त (**द्युम्नम्**) यश वा धन को (**आ, भर**) चारों ओर से धारण कीजिये और (**नः**) हम लागों को (**परीणसा**) बहुत (**राया**) धन से (**वाजाय**) विज्ञान के लिये (**पन्थाम्**) मार्ग को (**प्र**) प्राप्त होकर (**रत्सि**) रमते हो, इससे सत्कार करने योग्य हो॥ १॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य अन्य जनों के श्रेष्ठ उपदेश से पुण्यकीर्त्ति को बढ़ाते, वे धर्म्म सम्बन्धी यश वाले होते हैं॥ १॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**त्वं नो॑ अग्ने अद्भुत॒ क्रत्वा॒ दक्ष॑स्य मं॒हना॑।**

**त्वे अ॑सु॒र्य१॒॑मारु॑हत् क्रा॒णा मि॒त्रो न य॒ज्ञिय॑ः॥ २॥**



www.9009.co.in

**त्वम्। नः। अग्ने। अद्भुत। क्रत्वा। दक्षस्य। मंहना। त्वे इति। असुर्यम्। आ। अरुहत्। क्राणा। मित्रः। न। यज्ञियः॥ २॥**

**पदार्थः-(त्वम्)** **(नः)** अस्मान् **(अग्ने)** अध्यापकोपदेशक **(अद्भुत)** आश्चर्योत्तमगुणकर्मस्वभाव **(क्रत्वा)** प्रज्ञया **(दक्षस्य)** चतुरस्य विद्याबलयुक्तस्य **(मंहना)** महत्त्वेन **(त्वे)** त्वयि **(असुर्य्यम्)** असुरसम्बन्धिनम् **(आ, अरुहत्)** **(क्राणा)** कुर्वन् **(मित्रः)** **(न)** इव **(यज्ञियः)** यज्ञमनुष्ठातुमर्हः॥ २॥

**अन्वयः**-हे अद्भुताऽग्ने! त्वं क्रत्वा दक्षस्य मंहना यथा त्वेऽसुर्य्यं क्राणा मित्रो यज्ञियो नाऽऽरुहत्तथा नः वर्धय॥ २॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। स एवोत्तमो विद्वान् भवति यः सर्वेषां सत्काराय विद्योपदेशं ददाति॥ २॥

**पदार्थः**-हे **(अद्भुत)** आश्चर्ययुक्त उत्तम गुण, कर्म्म और स्वभाव वाले **(अग्ने)** अध्यापक और उपदेशक! **(त्वम्)** आप **(क्रत्वा)** बुद्धि से **(दक्षस्य)** चतुर विद्या और बल से युक्त पुरुष के **(मंहना)** महत्त्व से जैसे **(त्वे)** आप में **(असुर्य्यम्)** असुरसम्बन्धी कर्म **(क्राणा)** करता हुआ **(मित्रः)** मित्र **(यज्ञियः)** यज्ञ करने योग्य के **(न)** सदृश **(आ, अरुहत्)** बढ़ता है, वैसे **(नः)** हम लोगों को बढ़ाइये॥ २॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। वही उत्तम विद्वान् होता है, जो सब के सत्कार के लिये विद्या का उपदेश देता है॥ २॥

**पुनर्विद्वद्विषयमाह॥**

फिर विद्वद्विषय को मन्त्र में कहते हैं॥

**त्वं नो अग्न एषां गयं पुष्टिं च वर्धय।**

**ये स्तोमेभिः प्र सूरयो नरो मघान्यानशुः॥ ३॥**

**त्वम्। नः। अग्ने। एषाम्। गयम्। पुष्टिम्। च। वर्धय। ये। स्तोमेभिः। प्र। सूरयः। नरः। मघानि। आनशुः॥ ३॥**

**पदार्थः-(त्वम्)** **(नः)** अस्माकम् **(अग्ने)** विद्वन् **(एषाम्)** **(गयम्)** अपत्यं गृहं च। **गय इत्यपत्यनामसु पठितम्।** (निघं० २.२)। **धननामसु पठितम्।** (निघं० २.१०) **गृहनामसु पठितम्।** (निघं० ३.४) **(पुष्टिम्)** **(च)** **(वर्धय)** **(ये)** **(स्तोमेभिः)** वेदस्थैः प्रकरणैः स्तोत्रैः **(प्र)** **(सूरयः)** विपश्चितः **(नरः)** नेतारः **(मघानि)** मघानि धनानि **(आनशुः)** प्राप्नुयुः॥ ३॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! ये नरः सूरयः स्तोमेभिर्मघानि प्रानशुस्तैः सह त्वं न एषां गयं च पुष्टिं च वर्धय॥ ३॥

**भावार्थः**-विद्वद्भिराप्तैः सहितैः सर्वेषां मनुष्याणां सुखं बलं च वर्द्धयेत॥ ३॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-हे **(अग्ने)** विद्वन्! **(ये)** जो **(नरः)** नायक **(सूरयः)** विद्वान् जन **(स्तोमेभिः)** वेद में वर्त्तमान स्तुति के प्रकरणों से **(मघानि)** धनों को **(प्र, आनशुः)** प्राप्त होवें, उनके साथ **(त्वम्)** आप **(नः)** हम लोगों और **(एषाम्)** इनके **(गयम्)** सन्तान तथा गृह वा धन **(च)** और **(पुष्टिम्)** पुष्टि को **(वर्धय)** वृद्धि कीजिये॥३॥

**भावार्थः**-विद्वानों को चाहिये कि यथार्थवक्ताओं के सहित सब मनुष्यों के सुख और बल को बढ़ावें॥३॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर विद्वद्विषय को कहते हैं॥

**ये अग्ने चन्द्र ते गिरः शुम्भन्त्यश्वराधसः।**

**शुष्मेभिः शुष्मिणो नरो दिवश्चिद्येषां बृहत्सुकीर्त्तिर्बोधति त्मना॥४॥**

**ये। अग्ने। चन्द्र। ते। गिरः। शुम्भन्ति। अश्वऽराधसः। शुष्मेभिः। शुष्मिणः। नरः। दिवः। चित्। येषाम्। बृहत्। सुऽकीर्त्तिः। बोधति। त्मना॥४॥**

**पदार्थः**-**(ये)** **(अग्ने)** विद्वन् **(चन्द्र)** आह्लादप्रद **(ते)** तव **(गिरः)** धर्म्या वाचः **(शुम्भन्ति)** विराजन्ते **(अश्वराधसः)** विद्युदादिपदार्थसंसाधिकाः **(शुष्मेभिः)** बलैः **(शुष्मिणः)** बलिनः **(नरः)** नायकाः **(दिवः)** कामयमानाः **(चित्)** अपि **(येषाम्)** **(बृहत्, सुकीर्त्तिः)** महोत्तमप्रशंसः **(बोधति)** जानाति **(त्मना)** आत्मना॥४॥

**अन्वयः**-हे चन्द्राग्ने! तेऽश्वराधसो गिरो ये शुष्मेभिः सह शुष्मिणो दिवश्चिन्नरः शुम्भन्ति येषामेता गिरो बृहत्सुकीर्त्तिर्भवान् त्मना बोधति ते सखायो भवन्तु॥४॥

**भावार्थः**-ये विद्वांसस्तुल्यगुणकर्मस्वभावाः सखायो भूत्वाऽग्न्यादिपदार्थविद्यां परस्परं बोधयन्ति ते सिद्धकामा जायन्ते॥४॥

**पदार्थः**-हे **(चन्द्र)** आनन्द देने वाले **(अग्ने)** विद्वन्! **(ते)** आपकी **(अश्वराधसः)** बिजुली आदि पदार्थों की सिद्धि करने वाली **(गिरः)** धर्मसम्बन्धिनी वाणियों को **(ये)** जो **(शुष्मेभिः)** बलों के साथ **(शुष्मिणः)** बली **(दिवः)** कामना करते हुए **(चित्)** भी **(नरः)** मुख्य नायकजन **(शुम्भन्ति)** विराजते हैं और **(येषाम्)** जिनकी इन वाणियों को **(बृहत्, सुकीर्त्तिः)** बड़ी उत्तम प्रशंसायुक्त आप **(त्मना)** आत्मा से **(बोधति)** जानते हैं, वे मित्र हों॥४॥

**भावार्थः**-जो विद्वान् सदृश गुण, कर्म और स्वभाव वाले मित्र होकर अग्नि आदि पदार्थों की विद्याओं को परस्पर जनाते हैं, वे सिद्ध मनोरथ वाले होते हैं॥४॥

**अथ शिल्पविद्याविषयकविद्वद्गुणानाह॥**

अब शिल्पविद्यविषयक विद्वानों के गुणों को कहते हैं॥



www.9009.co.in

**तव त्ये अग्ने अर्चयो भ्राजन्तो यन्ति धृष्णुया।**

**परिज्मानो न विद्युतः स्वानो रथो न वाजयुः॥५॥**

**तव। त्ये। अग्ने। अर्चयः। भ्राजन्तः। यन्ति। धृष्णुऽया। परिऽज्मानः। न। विऽद्युतः। स्वानः। रथः। न। वाजऽयुः॥५॥**

**पदार्थः**-(**तव**) (**त्ये**) ते (**अग्ने**) विद्वन् (**अर्चयः**) विद्याविनयप्रकाशिताः (**भ्राजन्तः**) अन्यान् प्रकाशयन्तः (**यन्ति**) प्राप्नुवन्ति (**धृष्णुया**) प्रगल्भाः (**परिज्मानः**) परितो ज्मा भूमिराज्यं येषान्ते (**न**) इव (**विद्युतः**) (**स्वानः**) शब्दायमानः (**रथः**) विमानादियानसमूहः (**न**) इव (**वाजयुः**) आत्मनो वाजं वेगमिच्छुरिव॥५॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! तव सङ्गेन येऽर्चयो भ्राजन्तो धृष्णुया विद्वांसः परिज्मानो विद्युतो न वाजयुः स्वानो रथो न शिल्पविद्यां यन्ति त्ये सद्यः श्रीमन्तो जायन्ते॥५॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। ये नरो यथार्थां शिल्पविद्यां जानन्ति ते सर्वत्र व्याप्तविद्युदिव विमानादियानवत् सद्योगामिनो भूत्वा सर्वतो धनमाप्य बहुसुखं लभन्ते॥५॥

**पदार्थः**-हे (**अग्ने**) विद्वन्! (**तव**) आपके सङ्ग से जो (**अर्चयः**) विद्या और विनय से प्रकाशित (**भ्राजन्तः**) परस्पर एक-दूसरे को प्रकाशित करते हुए (**धृष्णुया**) न्यायपूर्वक बोलने में ढीठ विद्वान् जन (**परिज्मानः**) सब ओर से भूमि के राज्य से युक्त (**विद्युतः**) बिजुलियों के (**न**) सदृश (**वाजयुः**) अपने वेग की इच्छा करने वाले के सदृश और (**स्वानः**) शब्द करते हुए (**रथः**) विमान आदि वाहनसमूह के (**न**) सदृश शिल्पविद्या को (**यन्ति**) प्राप्त होते हैं (**त्ये**) वे शीघ्र धनवान् होते हैं॥५॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जो जन यथार्थ शिल्पविद्या को जानते हैं, वे सर्वत्र व्याप्त बिजुली के समान विमान आदि वाहनों के सदृश शीघ्रगामी हो और सब प्रकार से धन को प्राप्त होकर बहुत सुख को प्राप्त होते हैं॥५॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**नू नो अग्न ऊतये सबाधसश्च रातये।**

**अस्माकासश्च सूरयो विश्वा आशास्तरीषणि॥६॥**

**नू। नः। अग्ने। ऊतये। सऽबाधसः। च। रातये। अस्माकासः। च। सूरयः। विश्वाः। आशाः। तरीषणि॥६॥**

**पदार्थः**-(**नू**) सद्यः (**नः**) अस्माकम् (**अग्ने**) विद्वन् राजन् (**ऊतये**) रक्षाद्याय (**सबाधसः**) बाधेन सह वर्त्तमानाः (**च**) (**रातये**) दानाय (**अस्माकासः**) अस्माकमिमे (**च**) (**सूरयः**) (**विश्वाः**) सकलाः (**आशाः**) दिशः (**तरीषणि**) तरणे॥६॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे अग्ने! यो सबाधसश्चास्माकासः सूरयो न ऊतये रातये च विश्वा आशास्तरीषणि नोऽस्मान्नू प्रापयेयुस्ते परोपकारिणो जायन्ते॥६॥

**भावार्थः**-त एव पण्डिता ये विमानादीनि यानानि निर्माय भूगोलेऽभितो भ्रामयन्ति ते प्रशंसितदाना भवन्ति॥६॥

**पदार्थः**-हे **(अग्ने)** विद्वन् राजन्! जो **(सबाधसः)** बाध के सहित वर्त्तमान **(च)** और **(अस्माकासः)** हम लोगों के सम्बन्धी **(सूरयः)** विद्वान् जन **(नः)** हम लोगों की **(ऊतये)** रक्षा आदि के लिये और **(रातये)** दान के लिये **(च)** भी **(विश्वाः)** सम्पूर्ण **(आशाः)** दिशाओं को **(तरीषणि)** तरण में, हम लोगों को **(नू)** शीघ्र पहुंचावें, वे परोपकारी होते हैं॥६॥

**भावार्थः**-वे ही चतुर विद्वान् हैं जो विमान आदि वाहनों को रच के भूगोल में चारों ओर घुमाते हैं, वे प्रशंसित दान वाले होते हैं॥६॥

**अथ विद्यार्थिविषयमाह॥**

अब विद्यार्थिविषय को कहते हैं॥

**त्वं नो अग्ने अङ्गिरः स्तुतः स्तवान् आ भर।**

**होतर्विभ्वासहं रयिं स्तोतृभ्यः स्तवसे च न उतैधि पृत्सु नो वृधे॥७॥२॥**

**त्वम्। नः। अग्ने। अङ्गिरः। स्तुतः। स्तवानः। आ। भर। होतः। विभ्वऽसहम्। रयिम्। स्तोतृभ्यः। स्तवसे। च। नः। उत। एधि। पृत्ऽसु। नः। वृधे॥७॥**

**पदार्थः**-**(त्वम्)** **(नः)** अस्मान् **(अग्ने)** विद्वन् **(अङ्गिरः)** प्राण इव प्रियः **(स्तुतः)** प्रशंसितः **(स्तवानः)** प्रशंसन् **(आ)** **(भर)** **(होतः)** दातः **(विभ्वासहम्)** यो विभूनासहते तम् **(रयिम्)** **(स्तोतृभ्यः)** **(स्तवसे)** स्तावकाय **(च)** **(नः)** अस्मान् **(उत)** **(एधि)** **(पृत्सु)** सङ्ग्रामेषु **(नः)** **(वृधे)** वर्द्धनाय॥७॥

**अन्वयः**-हे होतरङ्गिरोऽग्ने! स्तुतः स्तवानः सँस्त्वं नो विभ्वासहं रयिमा भर स्तोतृभ्यः स्तवसे च नोऽस्मानाभरोत पृत्सु नो वृध एधि॥७॥

**भावार्थः**-विद्यार्थिनो विदुष एवं प्रार्थयेयुर्हे भगवन्तो यूयमस्मान् ब्रह्मचर्य्यं कारयित्वा सुशिक्षां विद्यां दत्त्वा सङ्ग्रामान् जित्वाऽस्माकं वृद्धिं सततं कुरुतेति॥७॥

अत्राग्निविद्वद्विद्यार्थिगुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति दशमं सूक्तं द्वितीयो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे **(होतः)** दाता और **(अङ्गिरः)** प्राण के सदृश प्रिय **(अग्ने)** विद्वन्! **(स्तुतः)** प्रशंसित **(स्तवानः)** प्रशंसा करते हुए **(त्वम्)** आप **(नः)** हम लोगों के लिये **(विभ्वासहम्)** व्यापकों के अच्छे प्रकार सहने वाले **(रयिम्)** धन को **(आ, भर)** धारण कीजिये तथा **(स्तोतृभ्यः)** स्तुति करने वालों और



www.9009.co.in

**(स्तवसे)** स्तुति करने वाले के लिये **(च)** भी **(नः)** हम लोगों को [धारण कीजिये **(उत)** और **(पृत्सु)** संग्रामों में] **(वृधे)** वृद्धि के लिये **(एधि)** प्राप्त हूजिये॥७॥

**भावार्थः**-विद्यार्थियों को चाहिये कि विद्वानों की इस प्रकार प्रार्थना करें कि हे भगवानो! अर्थात् विद्यारूप ऐश्वर्य्ययुक्त महाशयो! आप लोग हम लोगों को ब्रह्मचर्य्य करा और उत्तम शिक्षा तथा विद्या देके और संग्रामों को जीतकर हम लोगों की निरन्तर वृद्धि करिये॥७॥

इस सूक्त में अग्निशब्दार्थ विद्वान् और विद्यार्थी के गुण-वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ संगति जाननी चाहिये॥

**यह दशवां सूक्त और दूसरा वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

**अथ षड्चस्यैकादशस्य सूक्तस्य सुतम्भर आत्रेय ऋषिः। अग्निर्देवता। १, ३, ५ निचृज्जगती। २ जगती। ४, ६ विराड्जगती छन्दः। निषादः स्वरः॥**

***अथाग्निगुणानाह॥***

अब छः ऋचा वाले ग्याहवें सूक्त का आरम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में अग्नि के गुणों का उपदेश करते हैं॥

**जनस्य गोपा अजनिष्ट जागृविरग्निः सुदक्षः सुविताय नव्यसे।**

**घृतप्रतीको बृहता दिविस्पृशा द्युमद्वि भाति भरतेभ्यः शुचिः॥ १॥**

**जनस्य। गोपाः। अजनिष्ट। जागृविः। अग्निः। सुऽदक्षः। सुविताय। नव्यसे। घृतऽप्रतीकः। बृहता। दिविऽस्पृशा। द्युऽमत्। वि। भाति। भरतेभ्यः। शुचिः॥ १॥**

**पदार्थः**-(**जनस्य**) मनुष्यस्य (**गोपाः**) रक्षकः (**अजनिष्ट**) जायते (**जागृविः**) जागरूकः (**अग्निः**) पावकः (**सुदक्षः**) सुष्ठु बलं यस्मात् (**सुविताय**) ऐश्वर्य्याय (**नव्यसे**) अतिशयेन नवीनाय (**घृतप्रतीकः**) घृतमाज्यमुदकं वा प्रतीतिकरं यस्य सः (**बृहता**) महता (**दिविस्पृशा**) यो दिवि प्रकाशे स्पृशति तेन (**द्युमत्**) प्रकाशवत् (**वि**) विशेषेण (**भाति**) प्रकाशते (**भरतेभ्यः**) धारणपोषणकृद्भ्यो मनुष्येभ्यः (**शुचिः**) पवित्रः॥ १॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यो जनस्य गोपा जागृविः सुदक्षो घृतप्रतीकः शुचिरग्निर्बृहता दिविस्पृशा नव्यसे सुवितायाजनिष्ट भरतेभ्यो द्युमद्विभाति तं यथावद्विजानीत॥ १॥

**भावार्थः**-विद्वद्भिरग्न्यादिपदार्थगुणा अवश्यं विज्ञातव्याः॥ १॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो (**जनस्य**) मनुष्य की (**गोपाः**) रक्षा करने और (**जागृविः**) जागने वाला (**सुदक्षः**) अच्छे प्रकार बल जिससे (**घृतप्रतीकः**) और घृत वा जल प्रतीतिकर जिसका ऐसा (**शुचिः**) पवित्र (**अग्निः**) अग्नि (**बृहता**) बड़े (**दिविस्पृशा**) प्रकाश में स्पर्श करने वाले से (**नव्यसे**) अत्यन्त नवीन (**सुविताय**) ऐश्वर्य के लिये (**अजनिष्ट**) उत्पन्न होता तथा (**भरतेभ्यः**) धारण और पोषण करने वाले मनुष्यों के लिये (**द्युमत्**) प्रकाश के सदृश (**वि**) विशेष करके (**भाति**) प्रकाशित होता है, उसको यथावत् जानिये॥ १॥

**भावार्थः**-विद्वानों को चाहिये कि अग्नि आदि पदार्थों के गुण अवश्य जानें॥ १॥

**अथ विद्वद्विषयमाह॥**

अब विद्वद्विषय को कहते हैं॥

**यज्ञस्य केतुं प्रथमं पुरोहितमग्निं नरस्त्रिषधस्थे समीधिरे।**



www.9009.co.in

**इन्द्रे॑ण दे॒वैः स॒रथं॒ स ब॒र्हिषि॒ सीद॒न्नि होता॑ य॒जथा॑य सु॒क्रतुः॑॥२॥**

**य॒ज्ञस्य॑। के॒तुम्। प्र॒थ॒मम्। पु॒रःऽहि॑त॒म्। अ॒ग्निम्। नर॑ः। त्रि॒ऽस॒ध॒स्थे। सम्। ई॒धि॒रे॒। इन्द्रे॑ण। दे॒वैः। स॒ऽरथ॑म्। सः। ब॒र्हिषि॑। सीद॑त्। नि। होता॑। य॒जथा॑य। सु॒ऽक्रतुः॑॥२॥**

**पदार्थः-(यज्ञस्य)** सम्यग्ज्ञानस्य **(केतुम्)** प्रज्ञाम् **(प्रथमम्)** आदिमम् **(पुरोहितम्)** पुर एनं दधति **(अग्निम्)** पावकमिव प्रकाशमानम् **(नरः)** नायका विद्वांसः **(त्रिषधस्थे)** त्रिभिस्सह स्थाने **(सम्, ईधिरे)** सम्यक् प्रदीपयेयुः **(इन्द्रेण)** विद्युता **(देवैः)** पृथिव्यादिभिः **(सरथम्)** रथेन यानसमूहेन सहितम् **(सः)** **(बर्हिषि)** अन्तरिक्षे **(सीदत्)** सीद **(नि)** **(होता)** दाता **(यजथाय)** सङ्गमनाय **(सुक्रतुः)** सुष्ठुप्रज्ञः शोभनकर्मा वा॥२॥

**अन्वयः**-हे नरो विद्वांसो! यथा यूयं त्रिषधस्थे यजथाय यज्ञस्य केतुं प्रथमं पुरोहितमग्निं समीधिरे तथा स सुक्रतुर्होता त्वमिन्द्रेण देवैः सह बर्हिषि सरथं नि षीदत्॥२॥

**भावार्थः**-ये विद्वांसो विद्याधर्मपुरुषार्थेषु स्वयं वर्त्तित्वाऽन्यान् वर्त्तयन्ति त एव सर्वविज्ञापका भवन्ति॥२॥

**पदार्थः**-हे **(नरः)** श्रेष्ठ कार्य्यों में अग्रणी विद्वान् लोगो! जैसे आप लोग **(त्रिषधस्थे)** तीन पदार्थों के सहित स्थान में **(यजथाय)** मिलने के लिये **(यज्ञस्य)** उत्तम ज्ञान की **(केतुम्)** बुद्धि को तथा **(प्रथमम्)** प्रथम वर्त्तमान **(पुरोहितम्)** प्रथम इसको धारण करें ऐसे **(अग्निम्)** अग्नि के समान प्रकाशमान को **(सम्, इधिरे)** उत्तम प्रकार प्रकाशित करें, वैसे **(सः)** वह **(सुक्रतुः)** उत्तम बुद्धि वा उत्तम कर्म्म वाले **(होता)** दाता आप **(इन्द्रेण)** बिजुली और **(देवैः)** पृथिवी आदिकों के साथ **(बर्हिषि)** अन्तरिक्ष में **(सरथम्)** वाहनों के समूह के सहित **(नि, सीदत्)** स्थित हूजिये॥२॥

**भावार्थः**-जो विद्वान् जन विद्या, धर्म और पुरुषार्थ में स्वयं वर्त्ताव करके अन्यों का उसके अनुसार वर्त्ताव कराते हैं, वे ही सब को बोध देने वाले होते हैं॥२॥

**पुनस्तमेवविषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**अस॑म्मृष्टो जायसे मा॒त्रोः शुचि॑र्म॒न्द्रः क॒विरुद॑तिष्ठो वि॒वस्व॑तः।**

**घृ॒तेन॑ त्वावर्धयन्नग्न आहुत धू॒मस्ते॑ के॒तुर॑भवद्दि॒वि श्रि॒तः॥३॥**

**अस॑म्ऽमृष्टः। जा॒य॒से॒। मा॒त्रोः। शुचि॑ः। म॒न्द्रः। क॒विः। उत्। अ॒ति॒ष्ठः॒। वि॒वस्व॑तः। घृ॒तेन॑। त्वा॒। अ॒व॒र्ध॒य॒न्। अ॒ग्ने॒। आ॒ऽहु॒त॒। धू॒मः। ते॒। के॒तुः। अ॒भ॒व॒त्। दि॒वि। श्रि॒तः॥३॥**

**पदार्थः-(असंमृष्ट)** सम्यगशुद्धः **(जायसे)** उत्पद्यसे **(मात्रोः)** मातृवन्मान्यकारकयोर्विद्याचार्ययोः **(शुचिः)** **(मन्द्रः)** प्रशंसित आनन्दितः **(कविः)** विद्वान् **(उत्)** **(अतिष्ठः)** उत्तिष्ठते **(विवस्वतः)** सूर्यात् **(घृतेन)** विद्याप्रकाशेन **(त्वा)** त्वाम् **(अवर्धयन्)** वर्धयन्तु **(अग्ने)** पावकवद्वर्त्तमान **(आहुत)** सत्कारेण



www.9009.co.in

निमन्त्रित **(धूमः)** **(ते)** तव **(केतुः)** प्रज्ञापक इव प्रज्ञा **(अभवत्)** भवति **(दिवि)** प्रकाशमाने कमनीये सत्कर्त्तव्ये परमेश्वरे **(श्रितः)** सेवितः॥३॥

**अन्वयः**-हे आहुताग्ने विद्यार्थिन्! ये विद्वांसो विवस्वतो घृतेन त्वावर्धयन् यस्य तेऽग्नेर्धूम इव दिवि केतुः श्रितोऽभवन्मात्रोः शिक्षां प्राप्याऽसंमृष्टस्त्वं मन्द्रः शुचिर्जायसे कविरुदतिष्ठस्तं वयं सत्कुर्याम॥३॥

**भावार्थः**-यो बालकः कन्या वा विद्वद्भ्यो विदुषीभ्यो वा ब्रह्मचर्य्येण विद्यां प्राप्य पवित्रौ जायेते तौ जगतो भूषकौ भवतः॥३॥

**पदार्थः**-हे **(आहुत)** सत्कार से निमन्त्रित **(अग्ने)** अग्नि के सदृश वर्त्तमान विद्यार्थी! जो विद्वान् जन **(विवस्वतः)** सूर्य्य से **(घृतेन)** विद्या के प्रकाश से **(त्वा)** आपकी **(अवर्धयन्)** वृद्धि करें और जिन **(ते)** आपकी अग्नि के **(धूमः)** धूम के सदृश **(दिवि)** प्रकाशमान मनोहर और सत्कार करने योग्य परमेश्वर में **(केतुः)** जनाने वाले के सदृश बुद्धि **(श्रितः)** सेवन किई [=की गयी] **(अभवत्)** होती है तथा **(मात्रोः)** माता के सदृश आदर करने वाले विद्या और आचार्य्य की शिक्षा को प्राप्त होकर **(असंमृष्टः)** अच्छे प्रकार अशुद्ध आप **(मन्द्रः)** प्रशंसित और आनन्दित **(शुचिः)** पवित्र **(जायसे)** होते हो और **(कविः)** विद्वान् **(उत्, अतिष्ठः)** उठता है, उनका हम लोग सत्कार करें॥३॥

**भावार्थः**-जो बालक वा कन्या विद्वानों वा पढ़ी हुई स्त्रियों से ब्रह्मचर्य्यपूर्वक विद्या को प्राप्त होकर पवित्र होते, वे संसार को शोभित करने वाले होते हैं॥३॥

**पुनरग्न्यादिगुणानाह॥**

फिर अग्न्यादिकों के गुणों को मन्त्र में कहते हैं॥

**अ॒ग्निर्नो॑ य॒ज्ञमुप॑ वेतु साधु॒याग्निं नरो॒ वि भ॑रन्ते गृ॒हेगृ॑हे।**

**अ॒ग्निर्दू॒तो अ॑भवद्धव्य॒वाह॑नो॒ऽग्निं वृ॑णा॒ना वृ॑णते क॒विक्र॑तुम्॥४॥**

**अ॒ग्निः। नः॒। य॒ज्ञम्। उप॑। वे॒तु॒। सा॒धु॒ऽया। अ॒ग्निम्। नर॑ः। वि। भ॒र॒न्ते॒। गृ॒हेऽगृ॑हे। अ॒ग्निः। दू॒तः। अ॒भ॒व॒त्। ह॒व्य॒ऽवाह॑नः। अ॒ग्निम्। वृ॒णा॒नाः। वृ॒ण॒ते॒। क॒विऽक्र॑तुम्॥४॥**

**पदार्थः**-**(अग्निः)** पावकः **(नः)** अस्माकम् **(यज्ञम्)** सङ्गन्तव्यं व्यवहारम् **(उप)** **(वेतु)** व्याप्नोतु **(साधुया)** साधवः **(अग्निम्)** पावकम् **(नरः)** नेतारो मनुष्याः **(वि)** **(भरन्ते)** धरन्ति **(गृहेगृहे)** प्रतिगृहम् **(अग्निः)** **(दूतः)** दूतवत्कार्यसाधकः **(अभवत्)** भवति **(हव्यवाहनः)** आदातव्यान् पदार्थान् देशान्तरे प्रापकः **(अग्निम्)** **(वृणानाः)** स्वीकुर्वाणाः **(वृणते)** स्वीकुर्वन्ति **(कविक्रतुम्)** प्रज्ञप्रज्ञाम्॥४॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथाग्निर्नो यज्ञमुप वेतु यथा साधुया नरो गृहेगृहेऽग्निं वि भरन्ते यथा हव्यवाहनोऽग्निर्दूतोऽभवद् यथाऽग्निं वृणानाः कविक्रतुं वृणते तथैव यूयमाचरत॥४॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। येऽग्निवत्प्रतापिनः सज्जनवदुपकारकाः प्रतिजनाय मङ्गलप्रदाः सन्ति ते सर्वदा सत्कर्त्तव्या भवन्ति॥४॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे **(अग्निः)** अग्नि **(नः)** हम लोगों के **(यज्ञम्)** मिलने योग्य व्यवहार को **(उप, वेतु)** व्याप्त हो और जैसे **(साधुया)** श्रेष्ठ **(नरः)** अग्रणी मनुष्य **(गृहेगृहे)** गृहगृह में **(अग्निम्)** अग्नि के सदृश **(वि, भरन्ते)** धारण करते हैं और जैसे **(हव्यवाहनः)** ग्रहण करने योग्य पदार्थों को एक देश से दूसरे देशों में पहुँचाने वाला **(अग्निः)** अग्नि **(दूतः)** दूत के सदृश कार्य्यों का सिद्धकर्त्ता **(अभवत्)** होता है और जैसे **(अग्निम्)** अग्नि को **(वृणानाः)** स्वीकार करते हुए जन **(कविक्रतुम्)** बुद्धिमान् की बुद्धि का **(वृणते)** स्वीकार करते हैं, वैसे ही आप लोग आचरण करो॥४॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो अग्नि के सदृश तेजस्वी, सज्जनों के सदृश उपकार करने और प्रत्येक जन के लिये मङ्गल देने वाले हैं, वे सर्वदा सत्कार करने योग्य हैं॥४॥

**पुनर्विद्वद्विषयमाह॥**

फिर विद्वानों के विषय को कहते हैं॥

**तुभ्येदमग्ने मधुमत्तमं वचस्तुभ्यं मनीषा इयमस्तु शं हृदे।**

**त्वां गिरः सिन्धुमिवावनीर्महीरा पृणन्ति शवसा वर्धयन्ति च॥५॥**

**तुभ्य। इदम्। अग्ने। मधुमत्ऽतम्। वचः। तुभ्यम्। मनीषा। इयम्। अस्तु। शम्। हृदे। त्वाम्। गिरः। सिन्धुम्ऽइव। अवनीः। महीः। आ। पृणन्ति। शवसा। वर्धयन्ति। च॥५॥**

**पदार्थः**-**(तुभ्य)** तुभ्यम्। अत्र **सुपां सुलुगिति** भ्यसो लुक्। **(इदम्)** **(अग्ने)** **(मधुमत्तमम्)** अतिशयेन मधुरादिगुणयुक्तम् **(वचः)** वचनम् **(तुभ्यम्)** **(मनीषा)** प्रज्ञा **(इयम्)** **(अस्तु)** **(शम्)** सुखकरम् **(हृदे)** हृदयाय **(त्वाम्)** **(गिरः)** वाचः **(सिन्धुमिव)** समुद्रमिव **(अवनीः)** रक्षिकाः **(महीः)** श्रेष्ठा धरा इव पूज्याः **(आ)** **(पृणन्ति)** पालयन्ति विद्याः पूरयन्ति वा **(शवसा)** बलेन परिचरणेन वा। **शवतीति परिचरणकर्मा।** (निघं०३।५) अस्मादसुनि कृते रूपसिद्धिः। **(वर्धयन्ति)** **(च)**॥५॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! पावकवत्पवित्रान्तःकरण विद्यार्थिंस्तुभ्येदं मधुमत्तमं वचस्तुभ्यमियं मनीषा हृदे शमस्तु याः सिन्धुमिवावनीर्महीर्गिरः शवसा त्वामा पृणन्ति वर्धयन्ति च तास्त्वं गृहाण॥५॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। हे विद्यार्थिनो! यथा नद्यः सिन्धुमलंकुर्वन्ति तथैव विद्याविनययुक्ता वाचो युष्मानलं कुर्वन्तु यत्प्रतापेन युष्माकं मुखेभ्यः सत्यं सर्वहितकरं वचः सदैव निःसरेत्॥५॥

**पदार्थः**-हे **(अग्ने)** अग्नि के सदृश पवित्र अन्तःकरण वाले विद्यार्थी **(तुभ्य)** आपके लिये **(इदम्)** यह **(मधुमत्तमम्)** अतिशय मधुर आदि गुण से युक्त **(वचः)** वचन और **(तुभ्यम्)** आपके लिये **(इयम्)** यह **(मनीषा)** बुद्धि **(हृदे)** हृदय के लिये **(शम्)** सुखकारक **(अस्तु)** हो और जो **(सिन्धुमिव)** समुद्र को जैसे वैसे **(अवनीः)** रक्षा करने वाली **(महीः)** श्रेष्ठ भूमियों के सदृश आदर करने योग्य **(गिरः)** वाणियाँ **(शवसा)** बल वा सेवा से **(त्वाम्)** आपका **(आ, पृणन्ति)** अच्छे प्रकार पालन करतीं वा विद्याओं को पूर्ण करतीं **(वर्धयन्ति, च)** और वृद्धि करती हैं, उनका आप ग्रहण कीजिये॥५॥



www.9009.co.in

**भावार्थ:**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे विद्यार्थीजनो! जैसे नदियाँ समुद्र को शोभित करती हैं, वैसे ही विद्या और नम्रता से युक्त वाणियाँ आप लोगों को शोभित करें, जिनके प्रताप से आप लोगों के मुखों से सत्य और सब का हितकारक वचन सर्वदा ही निकले॥५॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**त्वाम॑ग्ने॒ अङ्गि॑रसो॒ गुहा॑ हि॒तमन्व॑विन्दच्छिश्रिया॒णं वने॑वने।**

**स जा॑यसे म॒थ्यमा॑नः॒ सहो॑ म॒हत्त्वामा॑हुः॒ सह॑सस्पु॒त्रम॑ङ्गिरः॥६॥३॥**

**त्वाम्। अ॒ग्ने॒। अङ्गि॑रसः। गुहा॑। हि॒तम्। अनु॑। अ॒वि॒न्द॒न्। शि॒श्रि॒या॒णम्। वने॑ऽवने। सः। जा॒य॒से॒। म॒थ्यमा॑नः। सहः॑। म॒हत्। त्वाम्। आ॒हुः॒। सह॑सः। पु॒त्रम्। अ॒ङ्गि॒रः॒॥६॥**

**पदार्थ:**-**(त्वाम्)** **(अग्ने)** विद्यां जिघृक्षो **(अङ्गिरसः)** प्राणा इव विद्यासु व्याप्ता जनाः **(गुहा)** बुद्धौ **(हितम्)** स्थितं परमात्मानम् **(अनु)** **(अविन्दन्)** अनुलभन्ते **(शिश्रियाणम्)** व्याप्तम् **(वनेवने)** जङ्गलेजङ्गलेऽग्नाविव जीवेजीवे **(सः)** **(जायसे)** **(मथ्यमानः)** विलोड्यमानः **(सहः)** बलम् **(महत्)** **(त्वाम्)** **(आहुः)** कथयेयुः **(सहसः)** विद्याशरीरबलयुक्तस्य **(पुत्रम्)** **(अङ्गिरः)** प्राण इव प्रियः॥६॥

**अन्वय:**-हे अग्ने! यथाङ्गिरसो वनेवने शिश्रियाणं गुहा हितमन्वविन्दन् यं त्वां प्रापयन्ति तथा स त्वं मथ्यमानो विद्वाञ्जायसे येन सहसस्पुत्रं सहो महत्प्राप्तं त्वामङ्गिरः विद्वांस आहुः॥६॥

**भावार्थ:**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यथा योगिनः संयमेन परमात्मानं प्राप्य नित्यं मोदन्ते तथैतं प्राप्य यूयमप्यानन्दतेति॥६॥

अत्राग्निविद्वद्गुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इत्येकादशं सूक्तं तृतीयो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थ:**-हे **(अग्ने)** विद्या की इच्छा करने वाले! जैसे **(अङ्गिरसः)** प्राणों के सदृश विद्याओं में व्याप्त जन **(वनेवने)** जंगल-जंगल में अग्नि के सदृश जीव-जीव में **(शिश्रियाणम्)** व्याप्त **(गुहा)** बुद्धि में **(हितम्)** स्थित परमात्मा को **(अनु, अविन्दन्)** प्राप्त होते हैं और जिन **(त्वाम्)** आप को प्राप्त कराते हैं, वैसे **(सः)** वह आप **(मथ्यमानः)** मथे गये विद्वान् **(जायसे)** होते हो और जिससे **(सहसः)** विद्या और शरीर के बल से युक्त के **(पुत्रम्)** पुत्र और **(सहः)** बल **(महत्)** बड़े को प्राप्त **(त्वाम्)** आप को **(अङ्गिरः)** प्राण के सदृश प्रिय विद्वान् जन **(आहुः)** कहें॥६॥

**भावार्थ:**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जैसे योगी जन संयम अर्थात् इन्द्रियों को अन्य विषयों से रोकने से परमात्मा को प्राप्त होकर नित्य आनन्दित होते हैं, वैसे इसको प्राप्त होकर आप लोग आनन्दित हूजिये॥६॥



www.9009.co.in

इस सूक्त में अग्नि और विद्वान् के गुण–वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह ग्यारहवां सूक्त और तृतीय वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

**अथ षड्चस्य द्वादशस्य सूक्तस्य सुतम्भर आत्रेय ऋषिः। अग्निर्देवता। १, २ स्वराट्पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः। ३, ४, ५ त्रिष्टुप् ६ निचृत्त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः॥**

*अथाग्निविषयमाह॥*

अब छः ऋचा वाले बारहवें सूक्त का प्रारम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में अग्निविषय को कहते हैं॥

**प्राग्नये॑ बृह॒ते य॒ज्ञिया॑य ऋ॒तस्य॒ वृष्णे॒ असु॑राय॒ मन्म॑।**

**घृ॒तं न य॒ज्ञ आ॒स्ये॒३॑ सुपू॑तं॒ गिरं॑ भरे वृष॒भाय॑ प्रती॒चीम्॥ १॥**

**प्र। अ॒ग्नये॑। बृ॒ह॒ते। य॒ज्ञिया॑य। ऋ॒तस्य॑। वृष्णे॑। असु॑राय। मन्म॑। घृ॒तम्। न। य॒ज्ञे। आ॒स्ये॑। सुऽपू॑तम्। गिर॑म्। भ॒रे॒। वृ॒ष॒भाय॑। प्र॒ती॒चीम्॥ १॥**

**पदार्थः-(प्र) (अग्नये)** पावकाय **(बृहते)** महते **(यज्ञियाय)** यज्ञार्हाय **(ऋतस्य)** जलस्य **(वृष्णे)** वर्षकाय **(असुराय)** असुषु प्राणेषु रममाणाय **(मन्म)** ज्ञानोत्पादकं कारणम् **(घृतम्)** आज्यम् **(न)** इव **(यज्ञे)** सङ्गन्तव्ये **(आस्ये)** मुखे **(सुपूतम्)** सुष्ठु पवित्रम् **(गिरम्)** वाचम् **(भरे)** धरामि **(वृषभाय)** बलिष्ठाय **(प्रतीचीम्)** पश्चिमां क्रियाम्॥ १॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथाहमास्ये यज्ञे सुपूतं घृतं न बृहते यज्ञियायर्त्तस्य वृष्णेऽसुराय वृषभायाग्नये मन्म प्रतीचीं गिरं प्र भरे तथैतस्मा एतां यूयमपि धरत॥ १॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। मनुष्यैर्यथाऽग्निज्ञानाय प्रयत्यते तथैव पृथिव्यादिपदार्थविज्ञानाय प्रयतितव्यम्॥ १॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे मैं **(आस्ये)** मुख में और **(यज्ञे)** मिलने योग्य व्यवहार में **(सुपूतम्)** उत्तम प्रकार पवित्र **(घृतम्)** घृत के **(न)** सदृश पदार्थ को तथा **(बृहते)** बड़े **(यज्ञियाय)** यज्ञ के योग्य और **(ऋतस्य)** जल के **(वृष्णे)** वर्षाने और **(असुराय)** प्राणों में रमने वाले **(वृषभाय)** बलिष्ठ **(अग्नये)** अग्नि के लिये **(मन्म)** ज्ञान के उत्पन्न कराने वाले कारण को **(प्रतीचीम्)** पिछली क्रिया और **(गिरम्)** वाणी को **(प्र, भरे)** अच्छे प्रकार धारण करता हूं, वैसे इसके लिये इसको आप लोग भी धारण करो॥ १॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। मनुष्यों से जैसे अग्निविद्या के ज्ञान के लिये प्रयत्न किया जाता है, उनको चाहिये कि वैसे ही पृथिवी आदि पदार्थों की विद्या के ज्ञान के लिये प्रयत्न करें॥ १॥

**अथ विद्वद्विषयमाह॥**

अब विद्वद्विषय को कहते हैं॥



www.9009.co.in

**ऋतं चिकित्व ऋतमिच्चिकिद्ध्यृतस्य धारा अनु तृन्धि पूर्वीः।**

**नाहं यातुं सहसा न द्वयेन ऋतं सपाम्यरुषस्य वृष्णः॥ २॥**

**ऋतम्। चिकित्वः। ऋतम्। इत्। चिकिद्धि। ऋतस्य। धाराः। अनु। तृन्धि। पूर्वीः। न। अहम्। यातुम्। सहसा। न। द्वयेन। ऋतम्। सपामि। अरुषस्य। वृष्णः॥ २॥**

**पदार्थः-(ऋतम्)** सत्यं कारणम् **(चिकित्वः)** विज्ञातव्यम् **(ऋतम्)** सत्यं ब्रह्म **(इत्)** एव **(चिकिद्धि)** विजानीहि **(ऋतस्य)** सत्यस्य विज्ञापिकाः **(धाराः)** वाचः **(अनु) (तृन्धि)** हिन्धि **(पूर्वीः)** प्राचीनाः **(न) (अहम्) (यातुम्)** गन्तुम् **(सहसा)** बलेन **(न)** इव **(द्वयेन)** कार्यकारणात्मकेन **(ऋतम्)** उदकम् **(सपामि)** आक्रुशामि **(अरुषस्य)** अहिंसकस्य **(वृष्णः)** बलिष्ठस्य॥ २॥

**अन्वयः**-हे ऋतं चिकित्वस्त्वमृतमिच्चिकिद्धि ऋतस्य पूर्वीर्धाराश्चिकिद्धि अविद्यामनु तृन्धि अहं सहसा यातुं नेच्छामि द्वयेन सहसारुषस्य वृष्ण ऋतं न सपामि॥ २॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यथा विद्वांसोऽसत्यं खण्डयित्वा सत्यं धरन्ति अविद्यां विहाय विद्यां धरन्ति तथैव यूयमपि कुरुत॥ २॥

**पदार्थः**-हे **(ऋतम्)** सत्य कारण को **(चिकित्वः)** जानने योग्य! आप **(ऋतम्)** सत्य ब्रह्म को **(इत्)** निश्चय से **(चिकिद्धि)** जानिये और **(ऋतस्य)** सत्य के जनाने वाली **(पूर्वीः)** प्राचीन **(धाराः)** वाणियों को जानिये और अविद्या का **(अनु, तृन्धि)** नाश करिये **(अहम्)** मैं **(सहसा)** बल से **(यातुम्)** जाने की **(न)** नहीं इच्छा करता हूं और **(द्वयेन)** कार्य्यकारणस्वरूप बल से **(अरुषस्य)** नहीं हिंसा करने वाले **(वृष्णः)** बलिष्ठ के **(ऋतम्)** जल के **(न)** सदृश पदार्थ को **(सपामि)** गम्भीर शब्द से क्रोशता हूँ॥ २॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे विद्वान् जन असत्य का खडन करके सत्य को धारण करते हैं और अविद्या का त्याग करके विद्या को धारण करते हैं, वैसे ही आप लोग भी करो॥ २॥

**पुनरग्निपदवाच्यविद्वद्विषयमाह॥**

फिर अग्निपदवाच्य विद्वद्विषय को कहते हैं॥

**कया नो अग्न ऋतयन्नृतेन भुवो नवेदा उचथस्य नव्यः।**

**वेदा मे देव ऋतुपा ऋतूनां नाहं पतिं सनितुरस्य रायः॥ ३॥**

**कया। नः। अग्ने। ऋतयन्। ऋतेन। भुवः। नवेदाः। उचथस्य। नव्यः। वेद। मे। देवः। ऋतुऽपाः। ऋतूनाम्। न। अहम्। पतिम्। सनितुः। अस्य। रायः॥ ३॥**

**पदार्थः-(कया)** विद्यया युक्तया वा **(नः)** अस्मान् **(अग्ने)** विद्वन् **(ऋतयन्)** सत्यमाचरन् **(ऋतेन)** सत्येन **(भुवः)** पृथिव्याः **(नवेदाः)** यो न विन्दति सः **(उचथस्य)** उचितस्य **(नव्यः)** नवेषु साधुः



www.9009.co.in

**(वेदा)** जानीहि **(मे)** माम् **(देवः)** विद्वान् **(ऋतुपाः)** य ऋतून् पाति **(ऋतूनाम्)** वसन्तादीनाम् **(न)** निषेधे **(अहम्)** **(पतिम्)** **(सनितुः)** विभाजकस्य **(अस्य)** **(रायः)** धनस्य॥३॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! त्वं कया युक्त्या नोऽस्मान् विज्ञापयेः ऋतेनर्त्तयन् सन् भुवो नवेदा उचथस्य नव्य ऋतुपा भुवो देवोऽहमृतूनामस्य सनितू रायः पतिं न नाशयामि तथा मे वेदा मा नाशय॥३॥

**भावार्थः**-हे मनुष्याः! सत्याचरणेनैव भूराज्यं प्राप्यते पृथिवीराज्येन श्रिया च सर्वेषां सुखं जायते॥३॥

**पदार्थः**-हे **(अग्ने)** विद्वन्! आप **(कया)** किस विद्या वा युक्ति से **(नः)** हम लोगों को जनावें **(ऋतेन)** सत्य से **(ऋतयन्)** सत्य का आचरण करता हुआ **(भुवः)** पृथिवी का **(नवेदाः)** नहीं प्राप्त होने वाला **(उचथस्य)** उचित का सम्बन्धी **(नव्यः)** नवीनों में श्रेष्ठ **(ऋतुपाः)** ऋतुओं का पालन करने वाला पृथ्वीसम्बन्धी **(देवः)** विद्वान् **(अहम्)** मैं **(ऋतूनाम्)** वसन्त आदि ऋतुओं और **(अस्य)** इस **(सनितुः)** विभाग करने वाले **(रायः)** धन के **(पतिम्)** स्वामी का **(न)** नहीं नाश कराता हूं, वैसे आप **(मे)** मुझ को **(वेदा)** जानिये और मुझ को नष्ट मत करिये॥३॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! सत्य के आचरण से ही पृथ्वी का राज्य प्राप्त होता है और पृथ्वी के राज्य और लक्ष्मी से सब को सुख होता है॥३॥

**पुनर्विद्वद्विषयमाह॥**

फिर विद्वद्विषय को कहते हैं॥

**के ते॑ अग्ने रि॒पवे॒ बन्ध॑नास॒ः के पा॒यव॑ः सनिषन्त द्यु॒मन्त॑ः।**

**के धा॒सिम॑ग्ने॒ अनृ॑तस्य पान्ति॒ क आस॑तो॒ वच॑सः सन्ति गो॒पाः॥४॥**

**के। ते॒। अ॒ग्ने॒। रि॒पवे॑। बन्ध॑नासः। के। पा॒यव॑ः। स॒नि॒ष॒न्त॒। द्यु॒ऽमन्त॑ः। के। धा॒सिम्। अ॒ग्ने॒। अनृ॑तस्य। पा॒न्ति॒। के। अस॑तः। वच॑सः। स॒न्ति॒। गो॒पाः॥४॥**

**पदार्थः**-**(के)** **(ते)** तव **(अग्ने)** राजन् **(रिपवे)** **(बन्धनासः)** बन्धकाः **(के)** **(पायवः)** पालकाः **(सनिषन्त)** विभजन्ते **(द्युमन्तः)** कामयमानाः प्रकाशवन्तो वा **(के)** **(धासिम्)** अन्नम् **(अग्ने)** विद्याविनयप्रकाशक **(अनृतस्य)** असत्यव्यवहारस्य **(पान्ति)** रक्षन्ति **(के)** **(असतः)** निन्द्यात् **(वचसः)** वचनात् **(सन्ति)** **(गोपाः)**॥४॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! ते रिपवे के बन्धनासः के ते राज्यस्य पायवः के द्युमन्तः सनिषन्त। हे अग्ने! के धासिं पान्ति केऽनृतस्यासतो वचसो गोपाः सन्ति॥४॥

**भावार्थः**-हे विद्वन् राजन्! त्वयैवं कर्मानुष्ठेयं येन रिपूणां विनाशः प्रजापालनं सम्भवेदस्योत्तरम्॥४॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-हे **(अग्ने)** राजन् **(ते)** आपके **(रिपवे)** शत्रु के लिये **(के)** कौन **(बन्धनासः)** बन्धक और **(के)** कौन आपके राज्य के **(पायवः)** पालन करने वाले **(के)** कौन **(द्युमन्तः)** कामना करने वाले वा प्रकाशयुक्त **(सनिषन्त)** विभाग करते हैं, और हे **(अग्ने)** विद्या और विनय के प्रकाशक कौन **(धासिम्)** अन्न की **(पान्ति)** रक्षा करते हैं **(के)** कौन **(अनृतस्य)** असत्य व्यवहार के **(आसतः)** निन्द्य **(वचसः)** वचन से **(गोपाः)** रक्षा करने वाले **(सन्ति)** हैं॥४॥

**भावार्थः**-हे विद्वन्! राजन्! आप को चाहिये कि इस प्रकार का कर्म्म करें जिससे शत्रुओं का नाश, प्रजा का पालन होवे, यह इस का उत्तर है॥४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**सखा॑यस्ते॒ विषु॑णा अग्न ए॒ते शि॒वास॒ः सन्तो॒ अशि॑वा अभूवन्।**

**अधू॑र्षत स्व॒यमे॒ते वचो॑भिर्ऋजू॒यते॑ वृजि॒नानि॑ ब्रु॒वन्त॑ः॥५॥**

**सखा॑यः। ते॒। विषु॑णाः। अ॒ग्ने॒। ए॒ते। शि॒वास॑ः। सन्त॑ः। अशि॑वाः। अ॒भू॒व॒न्। अधू॑र्षत। स्व॒यम्। ए॒ते। वच॑ःऽभिः। ऋ॒जु॒ऽय॒ते। वृ॒जि॒नानि॑। ब्रु॒वन्त॑ः॥५॥**

**पदार्थः**-**(सखायः)** सुहृदः सन्तः **(ते)** तव **(विषुणाः)** विद्यां व्याप्नुवन्तः **(अग्ने)** विद्वन् **(एते)** **(शिवासः)** मङ्गलाचरणाः **(सन्तः)** **(अशिवाः)** अमङ्गलाचरणाः **(अभूवन्)** भवेयुः **(अधूर्षत)** हिंसन्तु **(स्वयम्)** **(एते)** **(वचोभिः)** **(ऋजूयते)** ऋजूयन्ते **(वृजिनानि)** धनानि बलानि वा **(ब्रुवन्तः)** उपदिशन्तः॥५॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! य एते ते विषुणः सखायः शिवासः सन्तोऽशिवा अभूवँस्तांस्तव भृत्यास्त्वं चाऽधूर्षत घ्नन्तु हिन्धि, हे राजभृत्या! य एते स्वयं वचोभिर्वृजिनानि ब्रुवन्त ऋजूयते तान् सततं पालयत॥५॥

**भावार्थः**-मनुष्याणां योग्यतास्ति ये मित्रजना असुहृदो भवेयुस्ते तिरस्करणीया येऽरयस्सखायस्स्युस्ते सत्कर्त्तव्याः॥५॥

**पदार्थः**-हे **(अग्ने)** विद्वन्! जो **(एते)** ये **(ते)** आपके **(विषुणाः)** विद्या को व्याप्त **(सखायः)** मित्र हुए **(शिवासः)** मङ्गल अर्थात् अच्छे आचरण करते **(सन्तः)** हुए **(अशिवाः)** अमङ्गल आचरण करने वाले **(अभूवन्)** होवें उनका आपके नौकर और आप **(अधूर्षत)** नाश करो और हे राजा के नौकरो! जो **(एते)** ये **(स्वयम्)** अपने ही **(वचोभिः)** वचनों से **(वृजिनानि)** धनों और बलों का **(ब्रुवन्तः)** उपदेश देते हुए **(ऋजूयते)** सरल होते हैं, उनका निरन्तर पालन करो॥५॥

**भावार्थः**-मनुष्यों को यह योग्यता है कि जो मित्रजन शत्रु होवें, वे निरादर करने योग्य हैं और जो शत्रु मित्र होवें, वे सत्कार करने योग्य हैं॥५॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**



www.9009.co.in

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**यस्ते॑ अग्ने॒ नम॑सा य॒ज्ञमीट्ट॑ ऋ॒तं स पा॑त्यरु॒षस्य॒ वृष्णः॑।**

**तस्य॒ क्षयः॑ पृथुरा सा॒धुरे॑तु प्रसस्र्रा॑णस्य॒ नहु॑षस्य॒ शेषः॑॥६॥४॥**

**यः। ते॒। अ॒ग्ने॒। नम॑सा। य॒ज्ञम्। ईट्टे॑। ऋ॒तम्। सः। पा॒ति॒। अ॒रु॒षस्य॑। वृष्णः॑। तस्य॑। क्षयः॑। पृ॒थुः। आ। सा॒धुः। ए॒तु॒। प्र॒ऽसस्र्र्णास्य॑। नहु॑षस्य। शेषः॑॥६॥**

**पदार्थः**-(**यः**) (**ते**) तव (**अग्ने**) राजन् (**नमसा**) अन्नादिना (**यज्ञम्**) (**ईट्टे**) ऐश्वर्य्ययुक्तं करोति (**ऋतम्**) सत्यं न्यायम् (**सः**) (**पाति**) रक्षति (**अरुषस्य**) अहिंसकस्य (**वृष्णः**) सुखवर्षकस्य (**तस्य**) (**क्षयः**) निवासः (**पृथुः**) विस्तीर्णः (**आ**) (**साधुः**) श्रेष्ठः (**एतु**) प्राप्नोतु (**प्रसस्र्राणस्य**) भृशं धर्मं प्रापमाणस्य (**नहुषस्य**) मनुष्यस्य। **नहुष इति मनुष्यनामसु पठितम्।** (निघं०२.३) (**शेषः**) यः शिष्यते सः॥६॥

**अन्वयः**-हे अग्नेऽरुषस्य वृष्णस्तस्य ते यः पृथुः प्रसस्र्राणस्य नहुषस्य शेष इव साधुः क्षयो नमसा यज्ञमीट्टे स ऋतं पाति सोऽस्मानैतु॥६॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यो विद्वत्सेवां धर्म्मरक्षणं करोति तद्रक्षणं यूयं कृत्वा शिष्टं सुखं प्राप्नुतेति॥६॥

अत्राग्निविद्वद्गुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति द्वादशं सूक्तं चतुर्थो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे (**अग्ने**) राजन्! (**अरुषस्य**) नहीं हिंसा करने और (**वृष्णः**) सुख के वर्षाने वाले (**तस्य**) उन (**ते**) आपका (**यः**) जो (**पृथुः**) विस्तारयुक्त (**प्रसस्र्राणस्य**) अत्यन्त धर्म को प्राप्त हुए (**नहुषस्य**) मनुष्य के (**शेषः**) बाकी रहे के सदृश (**साधुः**) श्रेष्ठ (**क्षयः**) निवास (**नमसा**) अन्न आदि से (**यज्ञम्**) यज्ञ को (**ईट्टे**) ऐश्वर्ययुक्त करता है (**सः**) वह (**ऋतम्**) सत्य-न्याय की (**पाति**) रक्षा करता है, वह हम लोगों को (**आ, एतु**) सब प्रकार प्राप्त हो॥६॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो विद्वानों की सेवा और धर्म की रक्षा करता है, उसके रक्षण को आप लोग करके शेष सुख को प्राप्त हूजिये॥६॥

इस सूक्त में अग्नि और विद्वान् के गुण-वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ संगति जाननी चाहिये॥

**यह बारहवां सूक्त और चौथा वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

**अथ षड्चस्य त्रयोदशस्य सूक्तस्य सुतम्भर आत्रेय ऋषिः। अग्निर्देवता। १, ४, ५ निचृद्गायत्री। २, ६ गायत्री। ३ विराड् गायत्री छन्दः। षड्जः स्वरः॥**

**अथाग्निपदवाच्यविद्वद्गुणानाह॥**

अब छः ऋचा वाले तेरहवें सूक्त का आरम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में अग्निपदवाच्य विद्वान् के गुणों को कहते हैं॥

**अर्चन्तस्त्वा हवामहेऽर्चन्तः समिधीमहि। अग्ने अर्चन्त ऊतये॥ १॥**

**अर्चन्तः। त्वा। हवामहे। अर्चन्तः। सम्। इधीमहि। अग्ने। अर्चन्तः। ऊतये॥ १॥**

**पदार्थः-(अर्चन्तः)** सत्कुर्वन्तः **(त्वा)** त्वाम् **(हवामहे)** स्वीकुर्महे **(अर्चन्तः) (सम्, इधीमहि)** प्रकाशयेम **(अग्ने)** विद्वन् **(अर्चन्तः)** सत्कुर्वन्तः **(ऊतये)** रक्षणाद्याय॥ १॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! वयमूतये त्वार्चन्तो हवामहे त्वामर्चन्तः समिधीमहि त्वामर्चन्तो विपश्चितो भवेम॥ १॥

**भावार्थः**-हे विद्वांसो! वयं भवतां सत्कारेण सुशिक्षां विद्यां लब्ध्वाऽऽनन्दिताः स्याम॥ १॥

**पदार्थः**-हे **(अग्ने)** विद्वन्! हम लोग **(ऊतये)** रक्षण आदि के लिये **(त्वा)** आपका **(अर्चन्तः)** सत्कार करते हुए **(हवामहे)** स्वीकार करते हैं, और आपका **(अर्चन्तः)** सत्कार करते हुए **(सम्, इधीमहि)** प्रकाश करें और आपका **(अर्चन्तः)** सत्कार करते हुए विद्वान् होवें॥ १॥

**भावार्थः**-हे विद्वानो! हम लोग आप लोगों के सत्कार से उत्तम शिक्षा और विद्या को प्राप्त होकर आनन्दित होवें॥ १॥

**अथाग्निगुणानाह॥**

अब अग्निगुणों को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अग्नेः स्तोमं मनामहे सिध्रमद्य दिविस्पृशः। देवस्य द्रविणस्यवः॥ २॥**

**अग्नेः। स्तोमम्। मनामहे। सिध्रम्। अद्य। दिविऽस्पृशः। देवस्य। द्रविणस्यवः॥ २॥**

**पदार्थः-(अग्नेः)** पावकस्य **(स्तोमम्)** गुणकर्मस्वभावप्रशंसाम् **(मनामहे) (सिध्रम्)** साधकम् **(अद्य) (दिविस्पृशः)** यो दिवि परमात्मनि सुखं स्पृशति तस्य **(देवस्य)** द्योतमानस्य **(द्रविणस्यवः)** आत्मनो द्रविणमिच्छमानाः॥ २॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथा द्रविणस्यवो वयमद्य दिविस्पृशो देवस्याग्नेः सिध्रं स्तोमं मनामहे तथैतं यूयमपि विजानीत॥ २॥

**भावार्थः**-येषा धनेच्छा स्यात्तेऽग्न्यादिपदार्थविज्ञानं सङ्गृह्णन्तु॥ २॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे **(द्रविणस्यवः)** अपने धन की इच्छा करने वाले हम लोग **(अद्य)** आज **(दिविस्पृशः)** परमात्मा में सुख को स्पर्श करने वाले **(देवस्य)** प्रकाशमान **(अग्नेः)** अग्नि के **(सिध्रम्)** साधक **(स्तोमम्)** गुण, कर्म और स्वभाव की प्रशंसा को **(मनामहे)** मानते हैं, वैसे इसको आप लोग भी जानो॥२॥

**भावार्थः**-जिनकी धन की इच्छा होवे, वे अग्नि आदि पदार्थों के विज्ञान को ग्रहण करें॥२॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

### अग्निर्जुषत नो गिरो होता यो मानुषेष्वा। स यक्षद्दैव्यं जनम्॥३॥

**अग्निः। जुषत। नः। गिरः। होता। यः। मानुषेषु। आ। सः। यक्षत्। दैव्यम्। जनम्॥३॥**

**पदार्थः**-**(अग्निः)** पावक इव विद्वान् **(जुषत)** जुषते **(नः)** अस्माकम् **(गिरः)** वाचः **(होता)** दाता **(यः)** मानुषेषु **(आ)** **(सः)** **(यक्षत्)** सङ्गच्छेत् पूजयेद्वा **(दैव्यम्)** दिव्येषु गुणेषु भवम् **(जनम्)** विद्वांसम्॥३॥

**अन्वयः**-हे विद्वन्! यो होता यथाग्निर्नो गिरो जुषत यथा स मानुषेषु दैव्यं जनमा यक्षत्तथा त्वमनुतिष्ठ॥३॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यद्यग्निर्न स्यात्तर्हि कोऽपि जीवो जिह्वां चालयितुं न शक्नुयात्॥३॥

**पदार्थः**-हे विद्वन्! **(यः)** जो **(होता)** दाता **(अग्नि)** अग्नि के सदृश तेजस्वी विद्वान् **(नः)** हम लोगों की **(गिरः)** वाणियों का **(जुषत)** सेवन करता है और जैसे **(सः)** वह **(मानुषेषु)** मनुष्यों में **(दैव्यम्)** श्रेष्ठ गुणों में उत्पन्न **(जनम्)** विद्वान् जन को **(आ, यक्षत्)** प्राप्त हो वा सत्कार करे, वैसे आप करिये॥३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो अग्नि न हो तो कोई भी जीव जिह्वा न चला सके॥३॥

**पुनर्विद्वद्विषयमाह॥**

फिर विद्वद्विषय को कहते हैं॥

### त्वमग्ने सप्रथा असि जुष्टो होता वरेण्यः। त्वया यज्ञं वि तन्वते॥४॥

**त्वम्। अग्ने। सऽप्रथाः। असि। जुष्टः। होता। वरेण्यः। त्वया। यज्ञम्। वि। तन्वते॥४॥**

**पदार्थः**-**(त्वम्)** **(अग्ने)** विद्वन् **(सप्रथाः)** प्रसिद्धकीर्तिः **(असि)** **(जुष्टः)** सेवितः **(होता)** दाताऽऽदाता वा **(वरेण्यः)** अतिश्रेष्ठः **(त्वया)** **(यज्ञम्)** **(वि)** **(तन्वते)**॥४॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! यतो विद्वांसस्त्वया सह यज्ञं वि तन्वते तैः सह होता वरेण्यः सप्रथा जुष्टस्त्वमसि तस्मात् सत्कर्त्तव्योऽसि॥४॥



www.9009.co.in

**भावार्थ:**-मनुष्या आप्तविदुषां सङ्गेन धर्मार्थकाममोक्षसिद्धिकरं यज्ञं वितन्वन्तु॥४॥

**पदार्थ:**-हे **(अग्ने)** विद्वन्! जिससे विद्वान् जन **(त्वया)** आपके साथ **(यज्ञम्)** यज्ञ का **(वि, तन्वते)** विस्तार करते हैं उनके साथ **(होता)** दाता वा ग्रहण करने वाले **(वरेण्य:)** अतिश्रेष्ठ और **(सप्रथा:)** प्रसिद्ध यश वाले **(जुष्ट:)** सेवन किये गये **(त्वम्)** आप **(असि)** हो, इससे सत्कार करने योग्य हो॥४॥

**भावार्थ:**-मनुष्य लोग यथार्थवक्ता विद्वानों के संग से धर्म्म, अर्थ, काम और मोक्ष की सिद्धि करने वाले यज्ञ का विस्तार करें॥४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**त्वाम॑ग्ने वाज॒सात॑मं॒ विप्रा॑ वर्धन्ति॒ सुष्टु॑तम्। स नो॑ रास्व सु॒वीर्य॑म्॥५॥**

**त्वाम्। अ॒ग्ने। वा॒ज॒ऽसात॑मम्। विप्रा॑:। व॒र्धन्ति॒। सुऽस्तु॒त॑म्। स:। न॒:। रा॒स्व॒। सु॒ऽवीर्य॑म्॥५॥**

**पदार्थ:**-**(त्वाम्)** **(अग्ने)** महाविद्वन् **(वाजसातमम्)** वाजानां विज्ञानानां वेगानामतिशयेन विभाजकम् **(विप्रा:)** मेधाविन: **(वर्धन्ति)** वर्धयन्ति **(सुष्टुतम्)** शोभनकीर्त्तिम् **(स:)** **(न:)** अस्मभ्यम् **(रास्व)** देहि **(सुवीर्यम्)** सुष्ठुपराक्रमम्॥५॥

**अन्वय:**-हे अग्ने! विप्रा यं वाजसातमं सुष्टुतं सुवीर्य्यं त्वां वर्धन्ति स त्वं नस्सुवीर्यं रास्व॥५॥

**भावार्थ:**-हे मनुष्या! यदि युष्मानाप्ता विद्वांस: सर्वतो वर्धयेयुस्तर्हि युष्माकमतुल: प्रभावो वर्द्धेत॥५॥

**पदार्थ:**-हे **(अग्ने)** महाविद्वन्! **(विप्रा:)** बुद्धिमान् जन जिन **(वाजसातमम्)** विज्ञान और वेगों के विभाग करने वाले **(सुष्टुतम्)** उत्तम यश वाले और **(सुवीर्य्यम्)** उत्तम पराक्रमयुक्त **(त्वाम्)** आपकी **(वर्धन्ति)** वृद्धि करते हैं, **(स:)** वह आप **(न:)** हम लोगों के लिये उत्तम पराक्रम को **(रास्व)** दीजिये॥५॥

**भावार्थ:**-हे मनुष्यो! जो आप लोगों की यथार्थवक्ता विद्वान् जन सब प्रकार से वृद्धि करें तो आप लोगों का अतुल प्रताप बढ़े॥५॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**अग्ने॑ ने॒मिर॒राँ इ॑व दे॒वांस्त्वं प॑रि॒भूर॑सि। आ राध॑श्चि॒त्रमृ॑ञ्जसे॥६॥५॥**

**अग्ने। नेमि:। अ॒रान्ऽइ॑व। दे॒वान्। त्वम्। प॒रि॒ऽभू:। अ॒सि॒। आ। राध॑:। चि॒त्रम्। ऋ॒ञ्ज॒से॥६॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**अग्ने**) विद्वान् (**नेमिः**) रथाङ्गम् (**अरानिव**) चक्राङ्गानीव (**देवान्**) दिव्यान् गुणान् विदुषो वा (**त्वम्**) (**परिभूः**) सर्वतो भावयिता (**असि**) (**आ**) (**राधः**) धनम् (**चित्रम्**) (**ऋञ्जसे**) प्रसाध्नोसि॥६॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! त्वं नेमिरराविव देवान् परिभूरसि चित्रं राध आ ऋञ्जसे तस्मात् सत्कर्त्तव्योऽसि॥६॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। यथाऽरादिभिश्चक्रं सुशोभते तथैव विद्वद्भिः शुभैर्गुणैश्च मनुष्याः शोभन्त इति॥६॥

अत्राग्निविद्वद्गुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति त्रयोदशं सूक्तं पञ्चमो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे (**अग्ने**) विद्वन्! (**त्वम्**) आप जैसे (**नेमिः**) रथाङ्ग (**अरानिव**) चक्रों के अङ्गों को वैसे (**देवान्**) श्रेष्ठ गुणों वा विद्वानों को (**परिभूः**) सब प्रकार से हुवाने वाले (**असि**) हो और (**चित्रम्**) विचित्र (**राधः**) धन को (**आ, ऋञ्जसे**) सिद्ध करते हो, इससे सत्कार करने योग्य हो॥६॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जैसे अरादिकों से चक्र उत्तम प्रकार शोभित होता है, वैसे ही विद्वानों और उत्तम गुणों से मनुष्य शोभित होते हैं॥६॥

इस सूक्त में अग्नि और विद्वान् के गुण-वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह तेरहवां सूक्त और पांचवां वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

**अथ षड्टचस्य चतुर्दशस्य सूक्तस्य सुतम्भर आत्रेय ऋषिः। अग्निर्देवता। १, ४, ५, ६ निचृद्गायत्री। २ विराड् गायत्री। ३ गायत्री छन्दः। षड्जः स्वरः॥**

**अथाग्निगुणानाह॥**

अब छः ऋचा वाले चौदहवें सूक्त का आरम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में अग्निगुणों को कहते हैं॥

**अ॒ग्निं स्तोमे॑न बोधय समिधा॒नो अम॑र्त्यम्। ह॒व्या दे॒वेषु॑ नो दधत्॥१॥**

**अ॒ग्निम्। स्तोमे॑न। बो॒ध॒य॒। स॒म्ऽइ॒धा॒नः। अम॑र्त्यम्। ह॒व्या। दे॒वेषु॑। न॒ः। द॒ध॒त्॥१॥**

**पदार्थः**-**(अग्निम्)** **(स्तोमेन)** गुणप्रशंसनेन **(बोधय)** प्रदीपय **(समिधानः)** सम्यक् स्वयं प्रकाशमानः **(अमर्त्यम्)** मरणधर्मरहितम् **(हव्या)** दातुमादातुमर्हाणि वस्तूनि **(देवेषु)** विद्वत्सु दिव्यगुणपदार्थेषु वा **(नः)** अस्मभ्यम् **(दधत्)** दधाति॥१॥

**अन्वयः**-हे विद्वन्! यस्समिधानोऽग्निर्देवेषु नो हव्या दधत् तममर्त्यमग्निं स्तोमेन बोधय॥१॥

**भावार्थः**-हे मनुष्याः! प्रयत्नेनाऽग्न्यादिपदार्थविद्यां प्राप्नुत॥१॥

**पदार्थः**-हे विद्वन्! जो **(समिधानः)** उत्तम प्रकार स्वयं प्रकाशमान अग्नि **(देवेषु)** विद्वानों वा श्रेष्ठ गुणों वाले पदार्थों में **(नः)** हम लोगों के लिये **(हव्या)** देने और ग्रहण करने योग्य वस्तुओं को **(दधत्)** धारण करता है, उस **(अमर्त्यम्)** मरणधर्म से रहित **(अग्निम्)** अग्नि को **(स्तोमेन)** गुणों की प्रशंसा से **(बोधय)** प्रकाशित कीजिये॥१॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! प्रयत्न से अग्नि आदि पदार्थों की विद्या को प्राप्त होओ॥१॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**तम॑ध्व॒रेष्वी॑ळते दे॒वं मर्ता॒ अम॑र्त्यम्। यजि॑ष्ठं॒ मानु॑षे॒ जने॑॥२॥**

**तम्। अ॒ध्व॒रेषु॑। ई॒ळ॒ते॒। दे॒वम्। मर्ताः॑। अम॑र्त्यम्। यजि॑ष्ठम्। मानु॑षे। जने॑॥२॥**

**पदार्थः**-**(तम्)** **(अध्वरेषु)** अहिंसनीयेषु धर्म्येषु व्यवहारेषु **(ईळते)** स्तुवन्ति **(देवम्)** दिव्यगुणम् **(मर्त्ताः)** मनुष्याः **(अमर्त्यम्)** स्वरूपतो नित्यम् **(यजिष्ठम्)** अतिशयेन सङ्गन्तारम् **(मानुषे)** **(जने)**॥२॥

**अन्वयः**-ये मर्त्ता अध्वरेषु मानुषे जने तममर्त्यं यजिष्ठं देवमग्निमिव स्वप्रकाशं परमात्मानमीळते ते हि पुष्कलं सुखमश्नुवते॥२॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। ये मनुष्या अग्न्यादिपदार्थमिव पदार्थविद्यां गृह्णन्ति ते सर्वतः सुखिनो जायन्ते॥२॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-जो (**मर्ताः**) मनुष्य (**अध्वरेषु**) नहीं नाश करने योग्य धर्मयुक्त व्यवहारों में (**मानुषे**) विचारशील (**जने**) जन में (**तम्**) उस (**अमर्त्यम्**) स्वरूप से नित्य (**यजिष्ठम्**) अतिशय मेल करने वाले (**देवम्**) श्रेष्ठ गुण वाले अग्नि के सदृश स्वयं प्रकाशित परमात्मा की (**ईळते**) स्तुति करते हैं, वे ही बहुत सुख का भोग करते हैं॥२॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो मनुष्य अग्नि आदि पदार्थ के सदृश पदार्थविद्या को ग्रहण करते हैं, वे सब प्रकार सुखी होते हैं॥२॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**तं हि शश्व॑न्त॒ ईळ॑ते स्रु॒चा दे॒वं घृ॑त॒श्चुता॑। अ॒ग्निं ह॒व्याय॒ वोळ्ह॑वे॥३॥**

**तम्। हि। शश्व॑न्तः। ईळ॑ते। स्रु॒चा। दे॒वम्। घृ॒त॒ऽश्चुता॑। अ॒ग्निम्। ह॒व्याय॑। वोळ्ह॑वे॥३॥**

**पदार्थः**-(**तम्**) (**हि**) (**शश्वन्तः**) अनादिभूता जीवाः (**ईळते**) प्रशंसन्ति (**स्रुचा**) यज्ञसाधनेनेव योगाभ्यासेन (**देवम्**) देदीप्यमानम् (**घृतश्चुता**) घृतं श्चोतति तेन (**अग्निम्**) (**हव्याय**) दातुमादातुमर्हाय (**वोळहवे**) वोढुम्॥३॥

**अन्वयः**-शश्वन्तो जीवा यथा ऋत्विग्यजमाना घृतश्चुता स्रुचा हव्याय वोळ्हवेऽग्निमीळते तथा हि तं परमात्मानं देवमीळन्ताम्॥३॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यथा शिल्पिनोऽग्न्यादितत्त्वविद्यां प्राप्यानेकानि कार्य्याणि संसाध्य सिद्धप्रयोजना जायन्ते तथा मनुष्याः परमात्मानं यथावद्विज्ञाय सिद्धेच्छा भवन्तु॥३॥

**पदार्थः**-(**शश्वन्तः**) अनादि से वर्त्तमान जीव जैसे यज्ञ करने वाला और यजमान (**घृतश्चुता**) जो घृत वा जल चुआती उस (**स्रुचा**) यज्ञ सिद्ध कराने वाली स्रुच् उससे (**हव्याय**) देने और लेने के योग्य के लिये (**वोळहवे**) धारण करने को (**अग्निम्**) अग्नि की (**ईळते**) प्रशंसा करते हैं, वैसे (**हि**) ही योगाभ्यास से (**तम्**) उस परमात्मा (**देवम्**) देव अर्थात् निरन्तर प्रकाशमान की स्तुति करें॥३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे शिल्पीजन अग्नि आदि तत्वों की विद्या को प्राप्त होकर और अनेक कार्य्यों को सिद्ध करके प्रयोजनों को सिद्ध करते हैं, वैसे मनुष्य परमात्मा को यथावत् जान के अपनी इच्छाओं को सिद्ध करें॥३॥

**पुनरग्निविषयमाह॥**

फिर अग्निविषय को कहते हैं॥

**अ॒ग्निर्जा॒तो अ॑रोचत॒ घ्नन् दस्यू॒ञ्ज्योति॑षा॒ तम॑:। अवि॑न्दद् गा अ॒पः स्व॑:॥४॥**

**अ॒ग्निः। जा॒तः। अ॒रो॒च॒त॒। घ्नन्। दस्यू॑न्। ज्योति॑षा। तम॑:। अवि॑न्दत्। गाः। अ॒पः। स्व॒रिति॒ स्व॑:॥४॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-**(अग्निः)** पावकः **(जातः)** प्रकटः सन् **(अरोचत)** प्रकाशते **(घ्नन्)** **(दस्यून्)** दुष्टाँश्चोरान् **(ज्योतिषा)** प्रकाशेन **(तमः)** अन्धकाररूपां रात्रिम् **(अविन्दत्)** लभते **(गाः)** किरणान् **(अपः)** अन्तरिक्षम् **(स्वः)** आदित्यम्॥४॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! राजा यथा जातोऽग्निर्ज्योतिषां तमो घ्नन्नरोचत गा अपः स्वश्चाऽविन्दत् तथा जातविद्याविनयो दस्यून् घ्नन् न्यायेनाऽन्यायं निवार्य्य विजयं कीर्त्तिं च लभेत॥४॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यथाग्निरन्धकारं निवार्य्य प्रकाशते तथा राजा दुष्टान् चोरान् निवार्य्य विराजेत॥४॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! राजा जैसे **(जातः)** प्रकट हुआ **(अग्निः)** अग्नि **(ज्योतिषा)** प्रकाश से **(तमः)** अन्धकाररूप रात्रि का **(घ्नन्)** नाश करता हुआ **(अरोचत)** प्रकाशित होता और **(गाः)** किरणों **(अपः)** अन्तरिक्ष और **(स्वः)** सूर्य्य को **(अविन्दत्)** प्राप्त होता, वैसे प्राप्त हुए विद्या विनय जिसको वह **(दस्यून्)** दुष्ट चोरों का नाश करते हुए और न्याय से अन्याय का निवारण करके विजय और यश को प्राप्त हो॥४॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे अग्नि अन्धकार का निवारण करके प्रकाशित होता है, वैसे राजा दुष्ट चोरों का निवारण करके विशेष शोभित होवें॥४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**अ॒ग्निमी॒ळेन्यं॑ क॒विं घृ॒तपृ॑ष्ठं सपर्यत। वेतु॑ मे शृ॒णव॒द्धव॑म्॥५॥**

**अ॒ग्निम्। ई॒ळेन्य॑म्। क॒विम्। घृ॒तऽपृ॑ष्ठम्। स॒प॒र्य॒त॒। वेतु॑। मे॒। शृ॒णव॑त्। हव॑म्॥५॥**

**पदार्थः**-**(अग्निम्)** **(ईळेन्यम्)** प्रशंसनीयम् **(कविम्)** क्रान्तदर्शनम् **(घृतपृष्ठम्)** घृतं दीपनमाज्यमुदकं वा पृष्ठे यस्य तम् **(सपर्यत)** सेवध्वम् **(वेतु)** व्याप्नोतु **(मे)** मम **(शृणवत्)** शृणुयात् **(हवम्)**॥५॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथा विद्वान् मे हवं वेतु शृणवत् तथैवेळेन्यं कविं घृतपृष्ठमग्निं यूयं सपर्यत॥५॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। ये मनुष्या अग्न्यादिपदार्थविद्याभ्यासं कुर्य्युस्ते निरन्तरं सुखं सेवेरन्॥५॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे विद्वान् **(मे)** मेरे **(हवम्)** देने-लेने योग्य व्यवहार को **(वेतु)** व्याप्त हो और **(शृणवत्)** सुने वैसे **(ईळेन्यम्)** प्रशंसा करने योग्य **(कविम्)** प्रतापयुक्त दर्शन वाले **(घृतपृष्ठम्)** प्रकाश घृत वा जल पृष्ठ में जिसके उस **(अग्निम्)** अग्नि का **(सपर्यत)** सेवन करो॥५॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो मनुष्य अग्नि आदि पदार्थों की विद्या का अभ्यास करें, वे निरन्तर सुख को सेवें॥५॥



www.9009.co.in

**पुनरग्निविषयमाह॥**

फिर अग्निविषय को कहते हैं॥

**अ॒ग्निं घृ॒तेन॑ वावृधुः स्तोमे॑भिर्वि॒श्वच॑र्षणिम्। स्वा॒धीभि॑र्वच॒स्युभि॑ः॥६॥६॥१॥**

**अ॒ग्निम्। घृ॒तेन॑। व॒वृ॒धुः॒। स्तोमे॑भिः। वि॒श्वऽच॑र्षणिम्। सु॒ऽआ॒धीभि॑ः। व॒च॒स्यु॒ऽभि॑ः॥६॥**

**पदार्थः**-(**अग्निम्**) (**घृतेन**) आज्येन (**वावृधुः**) वर्धयेयुः (**स्तोमेभिः**) प्रशंसितैः कर्मभिः (**विश्वचर्षणिम्**) विश्वप्रकाशकम् (**स्वाधीभिः**) सुष्ठुध्यानयुक्तैः (**वचस्युभिः**) आत्मनो वचनमिच्छुभिः॥६॥

**अन्वयः**-ये स्तोमेभिर्घृतेन विश्वचर्षणिमग्निं वावृधुस्तैर्वचस्युभिः स्वाधीभिर्जनैः सह जना अग्न्यादिविद्यां गृह्णीयुः॥६॥

**भावार्थः**-यथेन्धनादिनाग्निर्वर्धते तथैव सत्सङ्गेन विज्ञानं वर्धत इति॥६॥

अत्राग्निगुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति चतुर्दशं सूक्तं पञ्चमे मण्डले प्रथमोऽनुवाकः षष्ठो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-जो (**स्तोमेभिः**) प्रशंसित कर्मों और (**घृतेन**) घृत से (**विश्वचर्षणिम्**) संसार के प्रकाश करने वाले (**अग्निम्**) अग्नि की (**वावृधुः**) वृद्धि करावें उन (**वचस्युभिः**) अपने वचन की इच्छा करने वाले (**स्वाधीभिः**) उत्तम प्रकार ध्यान से युक्त जनों के साथ सब मनुष्य अग्नि आदि पदार्थों की विद्या को ग्रहण करें॥६॥

**भावार्थः**-जैसे ईंधन आदि से अग्नि बढ़ता है, वैसे ही सत्सङ्ग से विज्ञान बढ़ता है॥६॥

इस सूक्त में अग्नि के गुण-वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के साथ संगति जाननी चाहिये॥

**यह चतुर्दश सूक्त और पञ्चम मण्डल में प्रथम अनुवाक और छठा वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

**अथ पञ्चर्चस्य पञ्चदशस्य सूक्तस्य धरुण अङ्गिरस ऋषिः। अग्निर्देवता। १, ५ स्वराट् पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः। २, ४ त्रिष्टुप्। ३ विराट् त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः॥**

***अथ विद्वदग्निगुणविषयमाह॥***

अब पांच ऋचा वाले पन्द्रहवें सूक्त का आरम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में विद्वान् और अग्निगुणविषय को कहते हैं॥

**प्र वेधसे कवये वेद्याय गिरं भरे यशसे पूर्व्याय।**

**घृतप्रसत्तो असुरः सुशेवो रायो धर्ता धरुणो वस्वो अग्निः॥१॥**

**प्र। वेधसे। कवये। वेद्याय। गिरम्। भरे। यशसे। पूर्व्याय। घृतऽप्रसत्तः। असुरः। सुऽशेवः। रायः। धर्ता। धरुणः। वस्वः। अग्निः॥१॥**

**पदार्थः-(प्र) (वेधसे)** मेधाविने **(कवये)** विपश्चिते **(वेद्याय)** वेदितुं योग्याय **(गिरम्)** वाचम् **(भरे)** धरामि **(यशसे)** प्रशंसिताय **(पूर्व्याय)** पूर्वेषु लब्धविद्याय **(घृतप्रसत्तः)** घृते प्रसत्तः **(असुरः)** प्राणेषु सुखदाता **(सुशेवः)** शोभनं शेवः सुखं यस्मात् **(रायः)** द्रव्यस्य **(धर्त्ता) (धरुणः)** धारकः **(वस्वः)** पृथिव्यादेः **(अग्निः)** पावकः॥१॥

**अन्वयः**-हे विद्वांसो! यथा मया घृतप्रसत्तोऽसुरः सुशेवो रायो धर्त्ता वस्वो धरुणोऽग्निर्ध्रियते तद्बोधाय कवये वेद्याय यशसे पूर्व्याय वेधसे गिरं प्र भरे तथा यूयमप्येनमेतदर्थं धरत॥१॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे विद्वांसो! याग्न्यादिविद्यासाधारणास्ति तां शुभलक्षणान् मेधाविनो विद्यार्थिनो ग्राहयत॥१॥

**पदार्थः**-हे विद्वानो! जैसे मुझ को **(घृतप्रसत्तः)** जल में प्रसक्त होने **(असुरः)** और प्राणों में सुख देने वाला तथा **(सुशेवः)** सुन्दर सुख जिसमें ऐसे **(रायः)** धन का **(धर्त्ता)** धारण करने और **(वस्वः)** पृथिवी आदि का **(धरुणः)** धारण करने वाला **(अग्निः)** अग्नि धारण किया जाता है, उसके बोध के लिये **(कवये)** विद्वान् और **(वेद्याय)** जानने योग्य के लिये और **(यशसे)** प्रशंसित **(पूर्व्याय)** प्राचीनों में प्राप्त विद्या वाले **(वेधसे)** बुद्धिमान् के लिये **(गिरम्)** वाणी को **(प्र, भरे)** धारण करता हूं, वैसे आप लोग भी इसको इसलिये धारण करो॥१॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे विद्वानो! जो अग्नि आदि पदार्थों की विद्या असाधारण अर्थात् विलक्षण है, उसको उत्तम लक्षण वाले बुद्धिमान् विद्यार्थियों के लिये ग्रहण कराइये॥१॥

**अथ विद्वद्विषयमाह॥**



www.9009.co.in

अब विद्वद्विषय को कहते हैं॥

**ऋ॒तेन॑ ऋ॒तं ध॒रुणं॑ धारयन्त य॒ज्ञस्य॑ शा॒के प॑र॒मे व्यो॑मन्।**

**दि॒वो धर्म॑न् ध॒रुणे॑ से॒दुषो॒ नॄञ्जा॒तैरजा॑ताँ अ॒भि ये न॑न॒क्षुः॥ २॥**

**ऋ॒तेन॑। ऋ॒तम्। ध॒रुण॑म्। धा॒र॒य॒न्त॒। य॒ज्ञस्य॑। शा॒के। प॒र॒मे। विऽओ॑मन्। दि॒वः। धर्म॑न्। ध॒रुणे॑। से॒दुषः॑। नॄन्। जा॒तैः। अजा॑तान्। अ॒भि। ये। न॒न॒क्षुः॥ २॥**

**पदार्थः**-(**ऋतेन**) सत्येन परमात्मना वा (**ऋतम्**) सत्यं कारणादिकम् (**धरुणम्**) सर्वस्य धर्त्तृ (**धारयन्त**) (**यज्ञस्य**) सर्वस्य व्यवहारस्य (**शाके**) शक्तिनिमित्ते (**परमे**) प्रकृष्टे (**व्योमन्**) व्यापके (**दिवः**) सूर्य्यादेः (**धर्मन्**) धर्मे (**धरुणे**) धारके (**सेदुषः**) ज्ञानवतः (**नॄन्**) मनुष्यान् (**जातैः**) (**अजातान्**) (**अभि**) (**ये**) (**ननक्षुः**) प्राप्नुवन्ति। **नक्षतिर्गतिकर्मासु पठितम्।** (निघं०२.१४)॥ २॥

**अन्वयः**-य ऋतेनर्त्तं धरुणं यज्ञस्य शाके परमे व्योमन् दिवो धर्मन् धरुणे जातैरजातान् सेदुषो नॄनभि ननक्षुस्ते सत्यां विद्यां धारयन्त॥ २॥

**भावार्थः**-त एव मनुष्या विद्वांसो ये पूर्वापरवर्त्तमानान् विदुषः सङ्गत्य परमेश्वरप्रकृतिजीवकार्यविद्यां जानन्ति॥ २॥

**पदार्थः**-(**ये**) जो (**ऋतेन**) सत्य वा परमात्मा से (**ऋतम्**) सत्य कारणादिक (**धरुणम्**) सब के धारण करने वाले को (**यज्ञस्य**) सम्पूर्ण व्यवहार के (**शाके**) सामर्थ्य के निमित्त (**परमे**) उत्तम (**व्योमन्**) व्यापक (**दिवः**) सूर्य्य आदि से (**धर्मन्**) धर्म (**धरुणे**) और धारण करने वाले में (**जातैः**) उत्पन्न हुए पदार्थों से (**अजातान्**) न उत्पन्न हुए (**सेदुषः**) ज्ञानवान् (**नॄन्**) मनुष्यों को (**अभि, ननक्षुः**) प्राप्त होते हैं, वे सत्यविद्या को (**धारयन्त**) धारण करें॥ २॥

**भावार्थः**-वे ही मनुष्य विद्वान् हैं जो पूर्व और आगे वर्त्तमान विद्वानों को मिलकर परमेश्वर, प्रकृति और जीव के कार्य्य की विद्या को जानते हैं॥ २॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**अं॒हो॒युव॑स्त॒न्व॑स्तन्वते॒ वि वयो॑ म॒हद्दु॒ष्टरं॑ पू॒र्व्याय॑।**

**स सं॒वतो॒ नव॑जातस्तुतुर्यात् सिं॒हं न क्रु॒द्धम॒भित॒ परि॑ ष्ठुः॥ ३॥**

**अं॒ह॒ःऽयुव॑ः। त॒न्व॑ः। त॒न्व॒ते॒। वि। वय॑ः। म॒हत्। दु॒स्तर॑म्। पू॒र्व्याय॑। सः। स॒म्ऽवत॑ः। नव॑ऽजातः। तु॒तु॒र्या॒त्। सिं॒हम्। न। क्रु॒द्धम्। अ॒भित॑ः। परि॑। स्थु॒ः॥ ३॥**

**पदार्थः**-(**अंहोयुवः**) येंऽहोऽपराधं युवन्ति पृथक्कुर्वन्ति ते (**तन्वः**) शरीरस्य मध्ये (**तन्वते**) विस्तृणन्ति (**वि**) (**वयः**) जीवनम् (**महत्**) (**दुष्टरम्**) दुःखेन तरितुं योग्यम् (**पूर्व्याय**) पूर्वेषु भवाय (**सः**)



www.9009.co.in

**(संवतः)** संसेवमानः **(नवजातः)** नवीनाभ्यासेन जातो विद्यावान् **(तुतुर्यात्)** हिंस्यात् **(सिंहम्)** **(न)** इव **(क्रुद्धम्)** **(अभितः)** सर्वतः **(परि)** सर्वतः **(स्थुः)** तिष्ठन्ति॥३॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यस्यांहोयुवस्तन्वस्तन्वते महद्दुष्टरं वयो वि तन्वते सुखं परि ष्ठुः स तत्सङ्गी संवतो नवजातः पूर्व्याय क्रुद्धं सिंहं नाऽभितस्तुतुर्यात्॥३॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। ये मनुष्याः पापं दूरीकृत्य धर्ममाचरन्ति ते शरीरात्मसुखं जीवनं च वर्धयन्ति। यथा क्रुद्धः सिंहः प्राप्तान् प्राणिनो हिनस्ति तथा प्राप्तान् दुर्गुणान् सर्वे घ्नन्तु॥३॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जिसके सम्बन्ध में **(अंहोयुवः)** जो अपराध को दूर करते वे **(तन्वः)** शरीर के मध्य में **(तन्वते)** विस्तार को प्राप्त होते और **(महत्)** बड़े **(दुष्टरम्)** दुःख से पार होने योग्य **(वयः)** जीवन को **(वि)** विशेष करके विस्तृत करते और सुख के **(परि)** सब ओर **(स्थुः)** स्थित होते हैं **(सः)** वह उनका सङ्गी **(संवतः)** उत्तम प्रकार सेवन किया गया **(नवजातः)** नवीन अभ्यास से उत्पन्न हुई विद्या जिसकी ऐसा पुरुष **(पूर्व्याय)** पूर्वज के लिये **(क्रुद्धम्)** क्रोधयुक्त **(सिंहम्)** सिंह के **(न)** सदृश अन्य को **(अभितः)** सब प्रकार से **(तुतुर्यात्)** नाश करे॥३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जो मनुष्य पाप को दूर करके धर्म का आचरण करते हैं, वे शरीर और आत्मा के सुख और जीवन की वृद्धि कराते हैं। और जैसे क्रुद्ध सिंह प्राप्त हुए प्राणियों का नाश करता है, वैसे प्राप्त हुए दुर्गुणों का सब जन नाश करें॥३॥

**पुनर्विद्वद्विषयमाह॥**

फिर विद्वद्विषय को कहते हैं॥

**मा॒तेव॒ यद्भर॑से पप्रथा॒नो जनं॑जनं॒ धाय॑से॒ चक्ष॑से च।**

**वयो॑वयो जरसे॒ यद्दधा॑नः॒ परि॒ त्मना॒ विषु॑रूपो जिगा॑सि॥४॥**

**मा॒ताऽइ॑व। यत्। भर॑से। प॒प्र॒था॒नः। जन॑म्ऽजनम्। धाय॑से। चक्ष॑से। च॒। वय॑ःऽवयः। ज॒र॒से॒। यत्। दधा॑नः। परि॑। त्मना॑। विषु॑ऽरूपः। जि॒गा॒सि॒॥४॥**

**पदार्थः**-**(मातेव)** यथा जननी **(यत्)** यतः **(भरसे)** **(पप्रथानः)** प्रख्यातविद्यः **(जनञ्जनम्)** मनुष्यं मनुष्यम् **(धायसे)** धातुम् **(चक्षसे)** ख्यापयितुम् **(च)** **(वयोवयः)** कमनीयं जीवनं जीवनम् **(जरसे)** स्तौषि **(यत्)** यतः **(दधानः)** **(परि)** सर्वतः **(त्मना)** आत्मना **(विषुरूपः)** प्राप्तविद्यः **(जिगासि)** प्रशंससि॥४॥

**अन्वयः**-हे विद्वन्! यद्यतः पप्रथानस्त्वं मातेव धायसे चक्षसे च जनञ्जनं भरसे त्मना यद्दधानो वयोवयो जरसे विषुरूपः सन् सर्वान् पदार्थान् परि जिगासि तस्माद्विद्वान् भवसि॥४॥

**भावार्थः**-ये विद्वांसो मातृवद्विद्यार्थिनो रक्षन्ति सर्वेषामुन्नतिं चिकीर्षन्ति ब्रह्मचर्य्यायुर्वर्धननिमित्तानि कर्म्माण्युपदिशन्ति ते जगत्पूज्या भवन्ति॥४॥



www.9009.co.in

**पदार्थ:**-हे विद्वन्! **(यत्)** जिस कारण **(पप्रथान:)** प्रसिद्ध विद्यायुक्त आप **(मातेव)** माता के सदृश **(धायसे)** धारण करने और **(चक्षसे)** कहाने को **(च)** भी **(जनञ्जनम्)** मनुष्य-मनुष्य का **(भरसे)** पोषण करते हो और **(त्मना)** आत्मा से **(यत्)** जिस कारण **(दधान:)** धारण करते हुए **(वयोवय:)** सुन्दर जीवन की **(जरसे)** स्तुति करते हो और **(विषुरूप:)** विद्या जिनको प्राप्त ऐसे हुए सम्पूर्ण पदार्थों की **(परि)** सब प्रकार से **(जिगासि)** प्रशंसा करते हो, इससे विद्वान् होते हो॥४॥

**भावार्थ:**-जो विद्वान् जन माता के सदृश विद्यार्थियों की रक्षा करते, सब की उन्नति करने की इच्छा करते और ब्रह्मचर्य तथा अवस्था के बढ़ने में कारणरूप कार्य्यों का उपदेश करते हैं, वे संसार के आदर करने योग्य होते हैं॥४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**वाजो नु ते शवसस्पात्वन्तमुरुं दोधं धरुणं देव राय:।**

**पदं न तायुर्गुहा दधानो महो राये चितयन्नत्रिमस्प:॥५॥७॥**

**वाज:। नु। ते। शवस:। पातु। अन्तम्। उरुम्। दोधम्। धरुणम्। देव। राय:। पदम्। न। तायु:। गुहा। दधान:। मह:। राये। चितयन्। अत्रिम्। अस्परित्यस्प:॥५॥**

**पदार्थ:**-**(वाज:)** वेग: **(नु)** सद्य: **(ते)** **(शवस:)** बलस्य **(पातु)** रक्षतु **(अन्तम्)** **(उरुम्)** बहुम् **(दोधम्)** प्रपूरकम् **(धरुणम्)** धर्त्तारम् **(देव)** **(राय:)** धनस्य **(पदम्)** पादचिह्नम् **(न)** इव **(तायु:)** चोर: **(गुहा)** बुद्धौ **(दधान:)** **(मह:)** महते **(राये)** धनाय **(चितयन्)** ज्ञापयन् **(अत्रिम्)** पालकम् **(अस्प:)** प्रीणय॥५॥

**अन्वय:**-हे देव! ते वाज: शवस उरुमन्तं दोधं रायो धरुणं नु पातु तायु: पदं न महो राये गुहा सत्यं दधानोऽत्रिं चितयन् सर्वास्त्वमस्प:॥५॥

**भावार्थ:**-हे मनुष्या! यथा चोरश्चोरस्य पदमन्विष्य गृह्णाति तथैवाऽऽत्मसु सत्यं धृत्वा कामपूर्त्तिं विधाय सर्वान् प्रीणयन्तु॥५॥

अत्र विद्वदग्निगुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति पञ्चदशं सूक्तं सप्तमो वर्गश्च समाप्त:॥**

**पदार्थ:**-हे **(देव)** विद्वन् **(ते)** आपका **(वाज:)** वेग **(शवस:)** बल के **(उरुम्)** बहुत **(अन्तम्)** अन्त की **(दोधम्)** तथा उत्तम पूर्ण करने वाले और **(राय:)** धन के **(धरुणम्)** धारण करने वाले की **(नु)** शीघ्र **(पातु)** रक्षा करे और **(तायु:)** चोर **(पदम्)** पैरों के चिह्न को **(न)** जैसे वैसे **(मह:)** बड़े **(राये)** धन के लिये **(गुहा)** बुद्धि में सत्य को **(दधान:)** धारण करते और **(अत्रिम्)** पालन करने वाले को **(चितयन्)** जनाते हुए आप सब को **(अस्प:)** प्रसन्न कीजिये॥५॥



www.9009.co.in

**भावार्थ:**-हे मनुष्यो! जैसे चोर, चोर के पाद के चिह्न को ढूढं के ग्रहण करता है, वैसे ही आत्माओं में सत्य को धारण कर और कामना की पूर्ति करके सब को प्रसन्न करें॥५॥

इस सूक्त में विद्वान् और अग्नि के गुण-वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ संगति जाननी चाहिये।

**यह पन्द्रहवां सूक्त और सप्तम वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

**अथ पञ्चस्य षोडशस्य सूक्तस्य पुरुरात्रेय ऋषिः। अग्निर्देवता। १, २, ३ विराडनुष्टुप् छन्दः। गान्धारः स्वरः। ४ भुरिगुष्णिक् छन्दः। ऋषभः स्वरः। ५ बृहती छन्दः। मध्यमः स्वरः॥**

**अथ विद्युद्विषयमाह॥**

अब पांच ऋचा वाले सोलहवें सूक्त का आरम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में बिजुली के विषय को कहते हैं॥

**बृहद्वयो हि भानवेऽर्चा देवायाग्नये। यं मित्रं न प्रशस्तिभिर्मर्तासो दधिरे पुरः॥१॥**

**बृहत्। वयः। हि। भानवे। अर्च। देवाय। अग्नये। यम्। मित्रम्। न। प्रशस्तिऽभिः। मर्तासः। दधिरे। पुरः॥१॥**

**पदार्थः**-(**बृहत्**) महत् (**वयः**) प्रदीपकं तेजः (**हि**) (**भानवे**) प्रकाशाय (**अर्चा**) पूजय। अत्र **द्व्यचोऽतस्तिङ** इति दीर्घः। (**देवाय**) दिव्यगुणाय (**अग्नये**) विद्युदाद्याय (**यम्**) (**मित्रम्**) सखायम् (**न**) इव (**प्रशस्तिभिः**) प्रशंसाभिः (**मर्त्तासः**) मनुष्याः (**दधिरे**) दधति (**पुरः**) पुरस्तात्॥१॥

**अन्वयः**-हे विद्वन्! मर्त्तासः प्रशस्तिभिर्यं मित्रं न पुरो दधिरे तं भानवे देवायाग्नये बृहद्वयो यथा स्यात् तथा ह्यर्चा॥१॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। यथा सखा सखायं धृत्वा सुखमेधते तथैवाग्न्यादिविद्यां प्राप्य विद्वांस आनन्देन वर्धन्ते॥१॥

**पदार्थः**-हे विद्वन्! (**मर्त्तासः**) मनुष्य (**प्रशस्तिभिः**) प्रशंसाओं से (**यम्**) जिसको (**मित्रम्**) मित्र के (**न**) समान (**पुरः**) प्रथम से (**दधिरे**) धारण करते हैं, उसको (**भानवे**) प्रकाश के लिये और (**देवाय**) श्रेष्ठ गुण वाले (**अग्नये**) बिजुली आदि के लिये (**बृहत्**) बड़ा (**वयः**) प्रदीप्त करने वाला तेज जैसे हो, वैसे (**हि**) ही (**अर्चा**) पूजिये, आदर करिये॥१॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जैसे मित्र, मित्र को धारण करके सुख की वृद्धि को प्राप्त होता है, वैसे ही अग्नि आदि पदार्थों की विद्या को प्राप्त होकर विद्वान् जन आनन्द से वृद्धि को प्राप्त होते हैं॥१॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**स हि द्युभिर्जनानां होता दक्षस्य बाह्वोः।**

**वि हव्यमग्निरानुषग्भगो न वारमृण्वति॥२॥**



www.9009.co.in

**सः। हि। द्युऽभिः। जनानाम्। होता। दक्षस्य। बाह्वोः। वि। हव्यम्। अग्निः। आनुषक्। भर्गः। न। वारम्। ऋण्वति॥ २॥**

**पदार्थः**-(**सः**) (**हि**) (**द्युभिः**) धर्म्यैः कामैः (**जनानाम्**) (**होता**) दाता (**दक्षस्य**) बलस्य (**बाह्वोः**) भुजयोः (**वि**) (**हव्यम्**) दातुमर्हम् (**अग्निः**) पावकः (**आनुषक्**) आनुकूल्येन (**भगः**) सूर्य्यः (**न**) इव (**वारम्**) वरणीयम् (**ऋण्वति**) साध्नोति॥ २॥

**अन्वयः**-यो जनानां बाह्वोर्दक्षस्य होताऽग्निर्भगो नानुषग्वारं हव्यं व्यृण्वति स हि द्युभिर्बलिष्ठो जायते॥ २॥

**भावार्थः**-ये विद्वांसः स्वात्मवत्सर्वान् जनान् विदित्वा विद्यां प्रापय्योन्नतिं कर्त्तुमिच्छन्ति त एव भाग्यशालिनो वर्त्तन्ते॥ २॥

**पदार्थः**-जो (**जनानाम्**) मनुष्यों की (**बाह्वोः**) भुजाओं के (**दक्षस्य**) बल का (**होता**) देने वाला (**अग्निः**) अग्नि (**भगः**) सूर्य्य के (**न**) सदृश (**आनुषक्**) अनुकूलता से (**वारम्**) स्वीकार करने और (**हव्यम्**) देने योग्य पदार्थ को (**वि, ऋण्वति**) विशेष सिद्ध करता है (**सः, हि**) वही (**द्युभिः**) धर्मयुक्त कामों से बलवान् होता है॥ २॥

**भावार्थः**-जो विद्वान् जन अपने आत्मा के सदृश सब मनुष्यों को जान और विद्या को प्राप्त करा के उन्नति करने की इच्छा करते हैं, वे ही भाग्यशाली वर्तमान हैं॥ २॥

**अथ सङ्ग्रामविजयविषयमाह॥**

अब संग्रामविजयविषय को कहते हैं॥

**अस्य स्तोमे मघोनः सख्ये वृद्धशोचिषः।**

**विश्वा यस्मिन् तुविष्वणि समर्ये शुष्ममादधुः॥ ३॥**

**अस्य। स्तोमे। मघोनः। सख्ये। वृद्धऽशोचिषः। विश्वा। यस्मिन्। तुविऽस्वनि। सम्। अर्ये। शुष्मम्। आऽदधुः॥ ३॥**

**पदार्थः**-(**अस्य**) (**स्तोमे**) प्रशंसायाम् (**मघोनः**) बहुधनयुक्तस्य (**सख्ये**) सख्युर्भावाय कर्मणे वा (**वृद्धशोचिषः**) वृद्धा शोचिर्दीप्तिर्यस्य सः (**विश्वा**) सर्वाणि (**यस्मिन्**) (**तुविष्वणि**) बलसेवने (**सम्**) सम्यक् (**अर्य्ये**) स्वामिनि वैश्ये वा (**शुष्मम्**) बलम् (**आदधुः**) समन्ताद्धरन्तु॥ ३॥

**अन्वयः**-ये मनुष्या अस्य वृद्धशोचिषो मघोनः स्तोमे सख्ये यस्मिन् तुविष्वणि समर्य्ये शुष्ममादधुस्ते विश्वा सुखानि प्राप्नुयुः॥ ३॥

**भावार्थः**-ये सखायो भूत्वा शरीरात्मबलं धृत्वा प्रयतन्ते ते सङ्ग्रामादिषु विजयं प्राप्य प्रशंसितश्रियो जायन्ते॥ ३॥

**पदार्थः**-जो मनुष्य (**अस्य**) इस (**वृद्धशोचिषः**) वृद्ध अर्थात् बढ़ी हुई कान्ति जिसकी ऐसे (**मघोनः**) बहुत धन से युक्त पुरुष की (**स्तोमे**) प्रशंसा में और (**सख्ये**) मित्रपन वा मित्र के कार्य्य के



www.9009.co.in

लिये **(यस्मिन्)** जिस **(तुविष्वणि)** बलसेवन तथा **(सम्, अर्य्ये)** अच्छे प्रकार स्वामी वा वैश्य में **(शुष्मम्)** बल को **(आदधुः)** सब प्रकार धारण करें, वे **(विश्वा)** सम्पूर्ण सुखों को प्राप्त होवें॥३॥

**भावार्थः**-जो मित्र होकर शरीर और आत्मा के बल को धारण करके प्रयत्न करते हैं, वे सङ्ग्रामादिकों में विजय को प्राप्त होकर प्रशंसित लक्ष्मीवान् होते हैं॥३॥

**अथ राज्यैश्वर्य्यवर्द्धनमाह॥**

अब राज्य और ऐश्वर्य्यवृद्धि को कहते हैं॥

**अधा ह्यंग्न एषां सुवीर्यस्य मंहना।**

**तमिद्यह्वं न रोदसी परि श्रवो बभूवतुः॥४॥**

**अर्ध। हि। अग्ने। एषाम्। सुऽवीर्यस्य। मंहना। तम्। इत्। यह्वम्। न। रोदसी इति। परि। श्रवः। बभूवतुः॥४॥**

**पदार्थः**-**(अधा)** अत्र **निपातस्य चेति** दीर्घः। **(हि)** **(अग्ने)** राजन् **(एषाम्)** वीराणाम् **(सुवीर्य्यस्य)** सुष्ठु पराक्रमस्य **(मंहना)** महत्त्वेन **(तम्)** **(इत्)** **(यह्वम्)** महान्तं सूर्य्यम् **(न)** इव **(रोदसी)** द्यावापृथिव्यौ **(परि)** सर्वतः **(श्रवः)** अन्नम् **(बभूवतुः)** भवतः॥४॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! एषां सुवीर्य्यस्य मंहना यौ तमिद्यह्वमधा रोदसी न श्रवो यथास्यात्तथा परि बभूवतुस्तौ हि विजयं प्राप्नुतः॥४॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! ये महतीं सुशिक्षितां सेनां लभन्ते तेषामेव राज्यैश्वर्य्यं वर्धते॥४॥

**पदार्थः**-हे **(अग्ने)** राजन् **(एषाम्)** इन वीरों और **(सुवीर्यस्य)** उत्तम पराक्रम वाले के **(मंहना)** बड़प्पन से जो **(तम्)** उसको **(इत्)** ही **(यह्वम्)** बड़े सूर्य्य **(अधा)** इसके अन्तर **(रोदसी)** अन्तरिक्ष और पृथिवी के **(न)** सदृश **(श्रवः)** अन्न जैसे हो, वैसे **(परि)** सब ओर से **(बभूवतुः)** होते हैं, वे **(हि)** ही विजय को प्राप्त होते हैं॥४॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जो बड़ी, उत्तम प्रकार शिक्षित सेना को प्राप्त होते हैं, उनके ही राज्य का ऐश्वर्य बढ़ता है॥४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**नू न एहि वार्यमग्ने गृणान आ भर।**

**ये वयं ये च सूरयः स्वस्ति धामहे सचोतैधि पृत्सु नो वृधे॥५॥८॥**



www.9009.co.in

**नु। नः। आ। इहि। वार्यम्। अग्ने। गृणानः। आ। भर। ये। वयम्। ये। च। सूरयः। स्वस्ति। धामहे। सचा। उत। एधि। पृत्ऽसु। नः। वृधे॥५॥**

**पदार्थः-(नू)** सद्यः **(नः)** अस्मान् **(आ)** **(इहि)** समन्तात् प्राप्नुहि **(वार्यम्)** वर्त्तुमर्हम् **(अग्ने)** विद्वन् **(गृणानः)** विद्वद्गुणान् स्तुवन् **(आ)** **(भर)** समन्तात् पुष्णीहि **(ये)** **(वयम्)** **(ये)** **(च)** **(सूरयः)** **(स्वस्ति)** सुखम् **(धामहे)** **(सचा)** सम्बद्धः **(उत)** **(एधि)** **(पृत्सु)** सङ्ग्रामेषु **(नः)** अस्माकम् **(वृधे)** वर्धनाय॥५॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! ये सूरयो ये च वयं स्वस्ति धामहे तैः सचा त्वं वार्यं नू गृणानो नोऽस्मानेहि। उत स्वस्ति चा भर पृत्सु नो वृध एधि॥५॥

**भावार्थः**-ये मनुष्येभ्यः सततं सुखं प्रयच्छन्ति तैः सह मनुष्याः सदोन्नतिं कुर्वन्त्विति॥५॥

अत्र विद्युद्विषयसङ्ग्रामविजयराज्यैश्वर्य्यवर्द्धनवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति षोडशं सूक्तमष्टमो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे **(अग्ने)** विद्वन् **(ये)** जो **(सूरयः)** विद्वान् **(ये, च)** और जो **(वयम्)** हम लोग **(स्वस्ति)** सुख को **(धामहे)** धारण करते हैं उनसे **(सचा)** सम्बद्ध आप **(वार्यम्)** स्वीकार करने योग्य की **(नू)** शीघ्र और **(गृणानः)** विद्वानों के गुणों की स्तुति करते हुए **(नः)** हम लोगों को **(आ, इहि)** सब प्रकार से प्राप्त हूजिये **(उत)** और सुख की **(आ, भर)** सब प्रकार पुष्टि कीजिये तथा **(पृत्सु)** संग्रामों में **(नः)** हम लागों की **(वृधे)** वृद्धि के लिये **(एधि)** प्राप्त हूजिये॥५॥

**भावार्थः**-जो मनुष्यों के लिये निरन्तर सुख देते हैं, उनके साथ मनुष्य सदा उन्नति करें॥५॥

इस सूक्त में बिजुली का विषय, संग्रामविजय और राज्यैश्वर्य के वर्धन का वर्णन होने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सक्त के अर्थ के साथ संगति जाननी चाहिये॥

**यह सोलहवां सूक्त और आठवां वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

**अथ पञ्चर्चस्य सप्तदशस्य सूक्तस्य पुरुरात्रेय ऋषिः। अग्निर्देवता। १ भुरिगुष्णिक् छन्दः। ऋषभः स्वरः। २ अनुष्टुप्। ३ निचृदनुष्टुप्। ४ विराडनुष्टुप् छन्दः। गान्धारः स्वरः। ५ भुरिग्बृहती छन्दः। मध्यमः स्वरः॥**

*अथाग्न्यादिविद्याविषयमाह॥*

अब पांच ऋचा वाले सत्रहवें सूक्त का आरम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में अग्न्यादि विद्याविषय को कहते हैं॥

**आ य॒ज्ञैर्दे॑व॒ मर्त्य॑ इ॒त्था तव्यां॑सम॒ूतये॑।**

**अ॒ग्निं कृ॒ते स्व॑ध्व॒रे पू॒रुरी॑ळी॒ताव॑से॥१॥**

**आ॒। य॒ज्ञैः। दे॒व॒। मर्त्यः॑। इ॒त्था। तव्यां॑सम्। ऊ॒तये॑। अ॒ग्निम्। कृ॒ते। सु॒ऽअ॒ध्व॒रे। पू॒रुः। ई॒ळी॒त॒। अव॑से॥१॥**

**पदार्थः**-(**आ**) (**यज्ञैः**) विद्वत्सत्काराद्यैर्व्यवहारैः (**देव**) विद्वन् (**मर्त्यः**) मनुष्यः (**इत्था**) अस्माद्धेतोः (**तव्यांसम्**) अतिशयेन वृद्धम् (**ऊतये**) रक्षणाद्याय (**अग्निम्**) पावकम् (**कृते**) (**स्वध्वरे**) शोभनेऽहिंसामये (**पूरुः**) मननशीलो मनुष्यः (**ईळीत**) स्तौति (**अवसे**) विद्यादिसद्गुणप्रवेशाय॥१॥

**अन्वयः**-हे देव! यथा पूरुर्मर्त्यः कृते स्वध्वरे यज्ञैरवसे तव्यांसमग्निमीळीतेत्थोतय आ प्रयुङ्क्ष्व॥१॥

**भावार्थः**-ये विद्वत्सङ्गरुचयो मनुष्या अग्न्यादिपदार्थविद्यां प्राप्य सत्क्रियां कुर्वन्ति ते सर्वतो रक्षिता भवन्ति॥१॥

**पदार्थः**-हे (**देव**) विद्वन् जैसे (**पूरुः**) मननशील (**मर्त्यः**) मनुष्य (**कृते**) किये हुए (**स्वध्वरे**) शोभन अहिंसामय यज्ञ में (**यज्ञैः**) विद्वानों के सत्कारादिक व्यवहारों से (**अवसे**) विद्या आदि श्रेष्ठ गुणों में प्रवेश होने के लिये (**तव्यांसम्**) अत्यन्त वृद्ध बड़े तेजयुक्त (**अग्निम्**) अग्नि की (**ईळीत**) प्रशंसा करता है (**इत्था**) इस कारण से (**ऊतये**) रक्षा आदि के लिये (**आ**) प्रयोग अर्थात् विशेष उद्योग करो॥१॥

**भावार्थः**-जो विद्वानों के सङ्ग में प्रीति करने वाले मनुष्य अग्नि आदि पदार्थों की विद्या को प्राप्त हो कर श्रेष्ठ कर्म को करते हैं, वे सब प्रकार से रक्षित होते हैं॥१॥

**अथ विद्वद्विषयमाह॥**

अब विद्वद्विषय को मन्त्र में कहते हैं॥

**अस्य॒ हि स्वय॑शस्तर आ॒सा वि॑धर्म॒न् मन्य॑से।**

**तं नाकं॑ चि॒त्रशो॑चिषं म॒न्द्रं प॒रो म॑नी॒षया॑॥२॥**

**अस्य॑। हि। स्वय॑शःतरः। आ॒सा। वि॒ऽध॒र्म॒न्। मन्य॑से। तम्। नाक॑म्। चि॒त्रऽशो॑चिषम्। म॒न्द्रम्। प॒रः। म॒नी॒षया॑॥२॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**अस्य**) (**हि**) (**स्वयशस्तरः**) अतिशयेन स्वकीयं यशो यस्य सः (**आसा**) मुखेनासनेन वा (**विधर्मन्**) विशेषधर्मानुचारिन् (**मन्यसे**) (**तम्**) (**नाकम्**) अविद्यमानदुःखम् (**चित्रशोचिषम्**) अद्भुत-प्रकाशम् (**मन्द्रम्**) आनन्दप्रदम् (**परः**) (**मनीषया**) प्रज्ञया॥२॥

**अन्वयः**-हे विधर्मन्! यो ह्यस्य स्वयशस्तर आसा वर्त्तते परः सन्मनीषया तं मन्द्रं चित्रशोचिषं नाकं त्वं मन्यसे तमहं मन्ये॥२॥

**भावार्थः**-हे विद्वन्! भवान् सदैव धर्म्यं कीर्त्तिकरं कर्म्म कुर्य्याद्येन परं सुखमाप्नुयात्॥२॥

**पदार्थः**-हे (**विधर्मन्**) विशेष धर्म के अनुगामी! जो (**हि**) निश्चय (**अस्य**) इसके सम्बन्ध में (**स्वयशस्तरः**) अत्यन्त अपना यश जिसका ऐसा पुरुष (**आसा**) मुख वा आसन से वर्त्तमान है और (**परः**) श्रेष्ठ हुए (**मनीषया**) बुद्धि से (**तम्**) उस (**मन्द्रम्**) आनन्द देने वाले और (**चित्रशोचिषम्**) अद्भुत प्रकाशयुक्त (**नाकम्**) दुःख से रहित को आप (**मन्यसे**) जानते हो, उसका मैं आदर करता हूं॥२॥

**भावार्थः**-हे विद्वन्! आप सदा ही धर्म्मयुक्त यश को बढ़ाने वाले कर्म्म को करें, जिससे अत्यन्त सुख को प्राप्त होवें॥२॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**अस्य वासा उ अर्चिषा य आयुक्त तुजा गिरा।**

**दिवो न यस्य रेतसा बृहच्छोचन्त्यर्चयः॥३॥**

**अस्य। वै। असौ। ऊँ इति। अर्चिषा। यः। अयुक्त। तुजा। गिरा। दिवः। न। यस्य। रेतसा। बृहत्। शोचन्ति। अर्चयः॥३॥**

**पदार्थः**-(**अस्य**) (**वै**) निश्चयेन (**असौ**) (**उ**) (**अर्चिषा**) विद्याप्रकाशेन (**यः**) (**आयुक्त**) युक्तो भवति (**तुजा**) प्रेरय। अत्र **द्व्यचोऽतस्तिङ** इति दीर्घः। (**गिरा**) वाण्या (**दिवः**) कमनीयार्थस्य (**न**) इव (**यस्य**) (**रेतसा**) (**बृहत्**) (**शोचन्ति**) (**अर्चयः**) सत्कृतयः॥३॥

**अन्वयः**-हे विद्वन्! योऽसावस्य वा अर्चिषा गिराऽऽयुक्त। उ यस्य रेतसा दिवो नार्चयो बृहच्छोचन्ति स त्वं दुःखानि तुजा॥३॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! येषां विदुषां सूर्यप्रकाशवद्विद्यायशःकीर्त्तयो विलसन्ति त एव बृहद्विज्ञानं प्रसृजन्ति॥३॥

**पदार्थः**-हे विद्वन्! (**यः**) जो (**असौ**) यह (**अस्य**) इसकी (**वै**) निश्चय से (**अर्चिषा**) विद्या की दीप्ति और (**गिरा**) वाणी से (**आयुक्त**) युक्त होता (**उ**) और (**यस्य**) जिसके (**रेतसा**) पराक्रम से (**दिवः**) जैसे मनोहर प्रयोजन के (**न**) वैसे (**अर्चयः**) उत्तम सत्कार (**बृहत्**) बड़े (**शोचन्ति**) शोभित होते हैं, वह आप दुःखों की (**तुजा**) हिंसा करो॥३॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जिन विद्वानों के सूर्य्य के प्रकाश के सदृश विद्या यशः और कीर्ति विलास को प्राप्त होते हैं, वे ही बड़े विज्ञान को उत्पन्न करते हैं॥३॥

**अथाग्निदृष्टान्तेन विद्याविषयमाह॥**

अब अग्निदृष्टान्त से विद्याविषय को कहते हैं॥

**अस्य क्रत्वा विचेतसो दस्मस्य वसु रथ आ।**

**अधा विश्वासु हव्योऽग्निर्विक्षु प्र शस्यते॥४॥**

**अस्य। क्रत्वा। विऽचेतसः। दस्मस्य। वसु। रथे। आ। अध। विश्वासु। हव्यः। अग्निः। विक्षु। प्र। शस्यते॥४॥**

**पदार्थः**-**(अस्य)** **(क्रत्वा)** प्रज्ञया **(विचेतसः)** विज्ञापकस्य **(दस्मस्य)** दुःखापक्षयितुः **(वसु)** द्रव्यम् **(रथे)** रमणीये याने **(आ)** **(अधा)** **(विश्वासु)** सर्वासु **(हव्यः)** आदातुमर्हः **(अग्निः)** पावकः **(विक्षु)** प्रजासु **(प्र)** **(शस्यते)**॥४॥

**अन्वयः**-हे विद्वन्! यस्य विश्वासु विक्षु हव्योऽग्निः प्र शस्यतेऽधास्य क्रत्वा विचेतसो दस्मस्य क्रत्वा रथे वस्वा प्रशस्यते॥४॥

**भावार्थः**-यथा प्रजायामग्निर्विराजते तथैव विद्याविनययुक्ता धीमन्तो पुरुषा विराजन्ते॥४॥

**पदार्थः**-हे विद्वन्! जिसकी **(विश्वासु)** सम्पूर्ण **(विक्षु)** प्रजाओं में **(हव्यः)** ग्रहण करने योग्य **(अग्निः)** अग्नि **(प्र, शस्यते)** प्रशंसा को प्राप्त होता है **(अधा)** इसके अनन्तर **(अस्य)** इसकी **(क्रत्वा)** बुद्धि तथा **(विचेतसः)** जनाने और **(दस्मस्य)** दुःख के नाश करने वाले की बुद्धि से **(रथे)** सुन्दर वाहन में **(वसु)** द्रव्य **(आ)** प्रशंसित होता है॥४॥

**भावार्थः**-जैसे प्रजा में अग्नि विराजता है, वैसे ही विद्या और विनय से युक्त बुद्धिमान् पुरुष शोभित होते हैं॥४॥

**पुनर्विद्वद्विषयमाह॥**

फिर विद्वद्विषय को कहते हैं॥

**नू न इद्धि वार्यमासा सचन्त सूरयः।**

**ऊर्जो नपादभिष्टये पाहि शग्धि स्वस्तय उतैधि पृत्सु नो वृधे॥५॥९॥**

**नु। नः। इत्। हि। वार्यम्। आसा। सचन्त। सूरयः। ऊर्जः। नपात्। अभिष्टये। पाहि। शग्धि। स्वस्तये। उत। एधि। पृत्ऽसु। नः। वृधे॥५॥**

**पदार्थः**-**(नू)** सद्यः **(नः)** अस्मान् **(इत्)** **(हि)** यतः **(वार्यम्)** वरेषु पदार्थेषु भवं विद्युदग्निम् **(आसा)** उपवेशनेन **(सचन्त)** सम्बध्नन्ति **(सूरयः)** विद्वांसः **(ऊर्जः)** पराक्रमान् **(नपात्)** यो न पतति



www.9009.co.in

**(अभिष्टये)** इष्टसुखाय **(पाहि)** **(शग्धि)** समर्थो भव **(स्वस्तये)** सुखाय **(उत)** अपि **(एधि)** भव **(पृत्सु)** सङ्ग्रामेषु **(नः)** अस्माकम् **(वृधे)** वृद्धये॥५॥

**अन्वयः**-हे विद्वन्! यथा सूरय आसा नो वार्यं सचन्त तथा नपात् त्वं नोऽभिष्टय ऊर्जः पाहि पृत्सु नो वृधे हि शग्धि स्वस्तये न्विदुतैधि॥५॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यदि मनुष्या विद्वदनुकरणं कुर्युस्तर्हि शुभगुणप्राप्तिबलवृद्धिं सुखेन विजयं कुर्वन्तीति॥५॥

अत्राग्निविद्वद्गुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति सप्तदशं सूक्तं नवमो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे विद्वन्! जैसे **(सूरयः)** विद्वान् जन **(आसा)** उपवेशन अर्थात् स्थिति से **(नः)** हम लोगों को और **(वार्यम्)** श्रेष्ठ पदार्थों में उत्पन्न बिजुलीरूप अग्नि को **(सचन्त)** सम्बद्ध करते हैं, वैसे **(नपात्)** नहीं गिरने वाले आप **(नः)** हम लोगों के **(अभिष्टये)** अपेक्षित सुख के लिये **(ऊर्जः)** पराक्रमों की **(पाहि)** रक्षा कीजिये और **(पृत्सु)** संग्रामों में हम लोगों की **(वृधे)** वृद्धि के लिये **(हि)** जिससे **(शग्धि)** समर्थ हूजिये और **(स्वस्तये)** सुख के लिये **(नू)** शीघ्र **(इत्)** ही **(उत)** निश्चय से **(एधि)** प्राप्त हूजिये॥५॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो मनुष्य विद्वानों के अनुकरण को करें तो उत्तम गुणों की प्राप्ति, बल की वृद्धि और सुखपूर्वक विजय को करते हैं॥५॥

इस सूक्त में अग्नि और विद्वान् के गुण-वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह सत्रहवां सूक्त और नववां वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

**अथ पञ्चर्चस्याष्टादशस्य सूक्तस्य द्वितो मृक्तवाहा आत्रेय ऋषिः। अग्निर्देवता। १, ४ विराडनुष्टुप्। २ निचृदनुष्टुप् छन्दः। गान्धारः स्वरः। ३ भुरिगुष्णिक् छन्दः। ऋषभः स्वरः। ५ भुरिग्बृहती छन्दः। मध्यमः स्वरः॥**

*अथाग्निवदतिथिविषयमाह॥*

अब पांच ऋचा वाले अठारहवें सूक्त का प्रारम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में अग्नि के सदृश अतिथि के विषय को कहते हैं॥

**प्रातरग्निः पुरुप्रियो विशः स्तवेतातिथिः।**

**विश्वानि यो अमर्त्यो हव्या मर्तेषु रण्यति॥१॥**

**प्रातः। अग्निः। पुरुऽप्रियः। विशः। स्तवेत। अतिथिः। विश्वानि। यः। अमर्त्यः। हव्या। मर्तेषु। रण्यति॥१॥**

**पदार्थः-(प्रातः) (अग्निः)** अग्निरिव पवित्रः **(पुरुप्रियः)** बहुभिः कमितः सेवितो वा **(विशः)** प्रजाः **(स्तवेत)** प्रशंसेत् **(अतिथिः)** पूजनीय आप्तो विद्वान् **(विश्वानि) (यः) (अमर्त्यः)** स्वभावेन मरणधर्मरहितः **(हव्या)** दातुमर्हाणि **(मर्तेषु)** मरणधर्मेषु कार्य्येषु **(रण्यति)** रमते॥१॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! योऽग्निरिव पुरुप्रियो मर्त्तेष्वमर्त्यो रण्यति विश्वानि हव्या स्तवेत यः प्रातरारभ्य विश उपदिशेत् सोऽतिथिः पूजनीयो भवति॥१॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! योऽतिथिरात्मवित्सत्योपदेशको विद्वान् विद्वत्प्रियः परमात्मेव सर्वहितैषी नित्यं क्रीडते स एव सत्कर्त्तव्योऽस्ति॥१॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(यः)** जो **(अग्निः)** अग्नि के सदृश पवित्र **(पुरुप्रियः)** बहुतों से कामना किया वा सेवन किया गया **(मर्त्तेषु)** नाश होने वाले कार्य्यों में **(अमर्त्यः)** स्वभाव से मरणधर्म्मरहित **(रण्यति)** रमता है **(विश्वानि)** सम्पूर्ण **(हव्या)** देने योग्यों की **(स्तवेत)** प्रशंसा करे और जो **(प्रातः)** प्रातःकाल के आरम्भ से **(विशः)** प्रजाओं को उपदेश देवे वह **(अतिथिः)** आदर करने योग्य यथार्थवक्ता विद्वान् सत्कार करने योग्य होता है॥१॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो अतिथि आत्मा का जानने वाला, सत्य का उपदेशक, विद्वान्, विद्वानों का प्रिय, परमात्मा के सदृश सब के हित को चाहने वाला नित्य क्रीड़ा करता है, वह ही सत्कार करने योग्य है॥१॥

**पुनरतिथिविषयमाह॥**

फिर अतिथिविषय को कहते हैं॥

**द्वितायं मृक्तवाहसे स्वस्य दक्षस्य मंहना।**



www.9009.co.in

**इन्दुं स धत्त आनुषक् स्तोता चित्ते अमर्त्य॥ २॥**

**द्विताय। मृक्तऽवाहसे। स्वस्य। दक्षस्य। मंहना। इन्दुम्। सः। धत्ते। आनुषक्। स्तोता। चित्। ते। अमर्त्य॥ २॥**

**पदार्थः-(द्विताय)** द्वाभ्यां जन्मभ्यां विद्यां प्राप्ताय **(मृक्तवाहसे)** शुद्धविज्ञानप्रापकाय **(स्वस्य)** **(दक्षस्य)** **(मंहना)** महत्त्वेन **(इन्दुम्)** ऐश्वर्यम् **(सः)** **(धत्ते)** **(आनुषक्)** आनुकूल्ये **(स्तोता)** सत्यविद्याप्रशंसकः **(चित्)** अपि **(ते)** तुभ्यम् **(अमर्त्य)** आत्मस्वरूपेण नित्य॥ २॥

**अन्वयः**-हे अमर्त्य! यः स्तोतानुषगिन्दुं चित्ते धत्ते स द्विताय मृक्तवाहसे स्वस्य दक्षस्य मंहना सह वर्त्तमानायाऽतिथये सुखं प्रयच्छेत्॥ २॥

**भावार्थः**-ये मनुष्या आप्तानतिथीन् सत्कुर्वन्ति ते सत्यं विज्ञानं प्राप्य सर्वदानन्दन्ति॥ २॥

**पदार्थः**-हे **(अमर्त्य)** अपने स्वरूप से नित्य! जो **(स्तोता)** सत्य विद्या की प्रशंसा करने वाला **(आनुषक्)** अनुकूलता से **(इन्दुम्)** ऐश्वर्य्य को **(चित्)** ही **(ते)** तेरे लिये **(धत्ते)** धारण करता है **(सः)** वह **(द्विताय)** दो जन्मों से विद्या को प्राप्त **(मृक्तवाहसे)** शुद्ध विज्ञान को प्राप्त कराने वाले **(स्वस्य)** और अपने **(दक्षस्य)** बल के **(मंहना)** बडप्पन के साथ वर्त्तमान अतिथि के लिये सुख देवे॥ २॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य यथार्थवक्ता अतिथियों का सत्कार करते हैं, वे सत्य विज्ञान को प्राप्त हो कर सर्वदा आनन्दित होते हैं॥ २॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**तं वो दीर्घायुशोचिषं गिरा हुवे मघोनाम्।**

**अरिष्टो येषां रथो व्यश्वदावन्नीयते॥ ३॥**

**तम्। वः। दीर्घायुऽशोचिषम्। गिरा। हुवे। मघोनाम्। अरिष्टः। येषाम्। रथः। वि। अश्वऽदावन्। ईयते॥ ३॥**

**पदार्थः-(तम्)** **(वः)** युष्माकम् **(दीर्घायुशोचिषम्)** दीर्घमायुः शोचिः पवित्रकरं यस्य तम् **(गिरा)** **(हुवे)** आह्वये **(मघोनाम्)** बहुधनयुक्तानाम् **(अरिष्टः)** अहिंसनीयः **(येषाम्)** अतिथीनाम् **(रथः)** यानम् **(वि)** **(अश्वदावन्)** योऽश्वान् व्याप्तिकरान् विज्ञानादिगुणान् ददाति तत्सम्बुद्धौ **(ईयते)** गच्छति॥ ३॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! येषां मघोनां वोऽरिष्टो रथो वीयते तानहं हुवे। हे अश्वदावन् गृहस्थ! त्वत्कल्याणाय तं दीर्घायुशोचिषमतिथिमहं गिरा हुवे॥ ३॥

**भावार्थः**-येऽहिंसादिधर्मयुक्ता मनुष्याश्चिरञ्जीविनो धार्मिकानतिथीन् सेवन्ते तेऽपि दीर्घायुषः श्रीमन्तो भूत्वाऽऽनन्दिता जायन्ते॥ ३॥



www.9009.co.in

**पदार्थ:**-हे मनुष्यो! **(येषाम्)** जिन अतिथियों और **(मघोनाम्)** बहुत धन से युक्त **(वः)** आप लोगों का **(अरिष्टः)** नहीं हिंसा करने योग्य **(रथः)** वाहन **(वि, ईयते)** विशेषता से चलता है, उनका मैं **(हुवे)** आह्वान करता हूं और हे **(अश्वदावन्)** व्याप्त करने वाले विज्ञान आदि गुणों के दाता गृहस्थ! आपके कल्याण के लिये **(तम्)** उस **(दीर्घायुशोचिषम्)** दीर्घ अर्थात् अधिक अवस्था पवित्र करनेवाली जिसकी ऐसे अतिथि विद्वान् का मैं **(गिरा)** वाणी से आह्वान करता हूं॥३॥

**भावार्थ:**-जो अहिंसादि धर्म से युक्त मनुष्य अतिकालपर्य्यन्त जीवने वाले धार्मिक अतिथियों की सेवा करते हैं, वे भी दीर्घायु और लक्ष्मीवान् होकर आनन्दित होते हैं॥३॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**चित्रा वा येषु दीधितिरासन्नुक्था पान्ति ये।**

**स्तीर्णं बर्हिः स्वर्णरे श्रवांसि दधिरे परि॥४॥**

**चित्रा। वा। येषु। दीधितिः। आसन्। उक्था। पान्ति। ये। स्तीर्णम्। बर्हिः। स्वःऽनरे। श्रवांसि। दधिरे। परि॥४॥**

**पदार्थ:**-**(चित्रा)** **(वा)** **(येषु)** अतिथिषु **(दीधितिः)** प्रकाशमाना विद्या **(आसन्)** आसन आस्ये वा **(उक्था)** प्रशंसनीयानि कर्माणि **(पान्ति)** रक्षन्ति **(ये)** **(स्तीर्णम्)** आच्छादितम् **(बर्हिः)** अन्तरिक्षमिव विज्ञानम् **(स्वर्णरे)** स्वः सुखेन युक्ते नरे **(श्रवांसि)** अन्नादीनि **(दधिरे)** दध्युः **(परि)** सर्वतः॥४॥

**अन्वय:**-हे मनुष्या! येषु चित्रा दीधितिरस्त्यासन्नुक्था सन्ति ये वा स्तीर्णं बर्हिरिव स्वर्णरे पान्ति श्रवांसि परि दधिरे त एवोत्तमा अतिथयः सन्ति॥४॥

**भावार्थ:**-ये विद्याशुभगुणपूर्णाः सर्वेषां हितं प्रेप्सवः पुरुषार्थिनः पक्षपातरहिता अतिथय उपदेशेन सर्वान् रक्षन्ति ते जगत्कल्याणकरा भवन्ति॥४॥

**पदार्थ:**-हे मनुष्यो! **(येषु)** जिन अतिथियों में **(चित्रा)** विचित्र **(दीधितिः)** प्रकाशमान विद्या है और **(आसन्)** आसन वा मुख में **(उक्था)** प्रशंसा करने योग्य कर्म हैं और **(ये, वा)** अथवा जो **(स्तीर्णम्)** आच्छादित अर्थात् अन्तःकरण में व्याप्त **(बर्हिः)** अन्तरिक्ष के सदृश विज्ञान की **(स्वर्णरे)** सुख से युक्त मनुष्य में **(पान्ति)** रक्षा करते हैं और **(श्रवांसि)** अन्नादिकों को **(परि)** सब ओर से **(दधिरे)** धारण करें, वे ही श्रेष्ठ अतिथि होते हैं॥४॥

**भावार्थ:**-जो विद्या के उत्तम गुणों से पूर्ण, सब के हित चाहने वाले, पुरुषार्थी अर्थात् उत्साही और पक्षपात से रहित अतिथिजन उपदेश से सब की रक्षा करते हैं, वे संसार के कल्याण करने वाले होते हैं॥४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**



www.9009.co.in

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**ये मे॑ पञ्चा॒शतं॑ द॒दुरश्वा॑नां स॒धस्तु॑ति।**

**द्यु॒मद॑ग्ने॒ महि॒ श्रवो॑ बृ॒हत्कृ॑धि म॒घोनां॑ नृ॒वद॑मृत नृ॒णाम्॥५॥१०॥**

ये। मे॒। प॒ञ्चा॒शत॑म्। द॒दुः। अश्वा॑नाम्। स॒धऽस्तु॑ति। द्यु॒ऽमत्। अ॒ग्ने॒। महि॑। श्रवः॑। बृ॒हत्। कृ॒धि॒। म॒घोना॑म्। नृ॒ऽवत्। अ॒मृ॒त॒। नृ॒णाम्॥५॥

**पदार्थः**-(**ये**) (**मे**) मह्यम् (**पञ्चाशतम्**) (**ददुः**) दत्तवन्तः स्युः (**अश्वानाम्**) वेगवतामग्न्यादि-पदार्थानाम् (**सधस्तुति**) सहप्रशंसितम् (**द्युमत्**) यथार्थज्ञानप्रकाशयुक्तम् (**अग्ने**) विद्वन् (**महि**) महत् (**श्रवः**) अन्नं श्रवणं वा (**बृहत्**) (**कृधि**) (**मघोनाम्**) बहुधनवताम् (**नृवत्**) नृभिस्तुल्यम् (**अमृत**) मरणधर्मरहित (**नृणाम्**) मनुष्याणाम्॥५॥

**अन्वयः**-येऽतिथयो मेऽश्वानां सधस्तुति द्युमत्पञ्चाशतं विज्ञानं ददुस्तैः सहाग्ने विद्वँस्त्वं सधस्तुति द्युमन्महि बृहच्छ्रवः कृधि। हे अमृत! तेषां मघोनां नृणां नृवदुन्नतिं विधेहीति॥५॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! येऽतिथयः पदार्थविद्यां प्रयच्छेयुस्तेषां सत्कारं यथावत्कुरुतेति॥५॥

अत्राग्निवदतिथिगुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इत्यष्टादशं सूक्तं दशमो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-(**ये**) जो अतिथि जन (**मे**) मेरे लिये (**अश्वानाम्**) वेग से युक्त अग्नि आदि पदार्थों के (**सधस्तुति**) साथ प्रशंसित (**द्युमत्**) यथार्थ ज्ञान के प्रकाश से युक्त (**पञ्चाशतम्**) पञ्चाशत् संख्यायुक्त विज्ञान को (**ददुः**) देने वाले हों, उनके साथ हे (**अग्ने**) विद्वन्! आप एक साथ प्रशंसित और यथार्थ ज्ञान के प्रकाश से युक्त (**महि**) बड़े (**बृहत्**) बहुत (**श्रवः**) अन्न वा श्रवण को (**कृधि**) करिये और हे (**अमृत**) मरणधर्म्म से रहित! उन (**मघोनाम्**) बहुत धनवान् (**नृणाम्**) मनुष्यों के (**नृवत्**) मनुष्यों के तुल्य उन्नति का विधान करो॥५॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो अतिथिजन पदार्थविद्या को देवें, उनका सत्कार यथायोग्य करो॥५॥

इस सूक्त में अग्निवत् अतिथि के गुण-वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ संगति जाननी चाहिये॥

**यह अठारहवां सूक्त और दशवां वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

**अथ पञ्चर्चस्यैकोनविंशतितमस्य सूक्तस्य वव्रिरात्रेय ऋषिः। अग्निर्देवता। १ गायत्री। २ निचृद्गायत्री छन्दः। षड्जः स्वरः। ३ अनुष्टुप् छन्दः। गान्धारः स्वरः। ४ भुरिगुष्णिक् छन्दः। ऋषभः स्वरः। ५ निचृत् पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः॥**

***अथ विद्वत्साध्योपदेशविषयमाह॥***

अब पांच ऋचा वाले उन्नीसवें सूक्त का आरम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में विद्वानों के सिद्ध करने योग्य उपदेश विषय को कहते हैं॥

**अ॒भ्य॑व॒स्थाः प्र जा॑यन्ते॒ प्र व॒व्रेर्व॒व्रिश्चि॑केत। उ॒पस्थे॑ मा॒तुर्वि च॑ष्टे॥ १॥**

**अ॒भि। अ॒व॒ऽस्थाः। प्र। जा॒य॒न्ते॒। प्र। व॒व्रेः। व॒व्रिः। चि॒के॒त॒। उ॒पऽस्थे॑। मा॒तुः। वि। च॒ष्टे॒॥ १॥**

**पदार्थः**-(**अभि**) आभिमुख्ये (**अवस्थाः**) अवतिष्ठन्ति विरुद्धं प्राप्नुवन्ति यासु ता वर्त्तमाना दशाः (**प्र**) (**जायन्ते**) उत्पद्यन्ते (**प्र**) (**वव्रेः**) स्वीकर्त्तुः (**वव्रिः**) अङ्गीकर्त्ता (**चिकेत**) विजानीयात् (**उपस्थे**) समीपे (**मातुः**) जनन्याः (**वि**) (**चष्टे**) विख्यायते॥१॥

**अन्वयः**-हे विद्वन्! वव्रेर्या अवस्थाः प्र जायन्ते ता वव्रिरभि प्र चिकेत मातुरुपस्थे वि चष्ट एता त्वमपि जानीहि॥१॥

**भावार्थः**-न कोऽपि प्राण्यस्ति यस्योत्तममध्यमाऽधमा अवस्था न जायेरन् यश्च मात्रा पित्राऽऽचार्य्येण शिक्षितोऽस्ति स एव स्वकीया अवस्थाः शोधयितुं शक्नोति॥१॥

**पदार्थः**-हे विद्वन्! (**वव्रेः**) स्वीकार करने वाले की जो (**अवस्थाः**) विरुद्ध वर्त्ताव को प्राप्त होते हैं, जिनमें ऐसी वर्त्तमान दशायें (**प्र, जायन्ते**) उत्पन्न होती हैं, उनका (**वव्रिः**) स्वीकार करने वाला (**अभि**) सन्मुख (**प्र, चिकेत**) विशेष करके जाने और (**मातुः**) माता के (**उपस्थे**) समीप में (**वि, चष्टे**) प्रसिद्ध होता है, इनको आप भी जानिये॥१॥

**भावार्थः**-ऐसा नहीं कोई भी प्राणी है कि जिसकी उत्तम, मध्यम और अधम दशायें न होवें और जो माता पिता और आचार्य से शिक्षित है, वही अपनी दशाओं को सुधार सकता है॥१॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**जु॒हु॒रे वि चि॒तय॒न्तोऽनि॑मिषं नृ॒म्णं पा॑न्ति। आ दृ॒ळ्हां पुरं॑ विविशुः॥ २॥**

**जु॒हु॒रे। वि। चि॒तय॑न्तः। अनि॑ऽमिषम्। नृ॒म्णम्। पा॒न्ति॒। आ। दृ॒ळ्हाम्। पुर॑म्। वि॒वि॒शुः॥ २॥**

**पदार्थः**-(**जुहुरे**) कुटिलयन्ति (**वि**) विरुद्धे (**चितयन्तः**) ज्ञापयन्तः (**अनिमिषम्**) अहर्निशम् (**नृम्णम्**) धनम् (**पान्ति**) रक्षन्ति (**आ**) (**दृळ्हाम्**) (**पुरम्**) नगरम् (**विविशुः**) आविशन्ति॥२॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-येऽनिमिषं चितयन्तो वि जुहुरे नृम्णं पान्ति ते दृळ्हां पुरमा विविशुः॥२॥

**भावार्थः**-ये सरलस्वभावाः सत्यविज्ञापकाः प्रतिक्षणं पुरुषार्थयन्ते ते राज्यैश्वर्य्यं लभन्ते॥२॥

**पदार्थः**-जो **(अनिमिषम्)** दिन-रात्रि **(चितयन्तः)** बोध कराते हुए **(वि)** विरुद्ध **(जुहुरे)** कुटिलता करते और **(नृम्णम्)** धन की **(पान्ति)** रक्षा करते हैं, वे **(दृळहाम्)** दृढ़ **(पुरम्)** नगर को **(आ, विविशुः)** सब प्रकार प्राप्त होते हैं॥२॥

**भावार्थः**-जो सरल स्वभाव वाले और सत्य के बोधक प्रतिक्षण पुरुषार्थ करते हैं, वे राज्य और ऐश्वर्य को प्राप्त होते हैं॥२॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**आ श्वैत्रेयस्य जन्तवो द्युमद्वर्धन्त कृष्टयः।**

**निष्कग्रीवो बृहदुक्थ एना मध्वा न वाजयुः॥३॥**

**आ। श्वैत्रेयस्य। जन्तवः। द्युऽमत्। वर्धन्त। कृष्टयः। निष्कऽग्रीवः। बृहत्ऽउक्थः। एना। मध्वा। न। वाजऽयुः॥३॥**

**पदार्थः**-**(आ)** **(श्वैत्रेयस्य)** श्वित्रास्वन्तरिक्षस्थासु दिक्षु भवस्य जलस्य **(जन्तवः)** जीवाः **(द्युमत्)** प्रकाशवत् **(वर्धन्त)** वर्धन्ते **(कृष्टयः)** मनुष्याः **(निष्कग्रीवः)** निष्कं चतुस्सौवर्णप्रमितमाभूषणं ग्रीवायां यस्य सः **(बृहदुक्थः)** महत् प्रशंसितः **(एना)** एनेन **(मध्वा)** मधुना **(न)** इव **(वाजयुः)** वाजमन्नं कामयमानः॥३॥

**अन्वयः**-हे विद्वांसो! यस्य श्वैत्रेयस्य मध्ये जन्तवः कृष्टयो वर्धन्तैना मध्वा वाजयुर्न बृहदुक्थो निष्कग्रीवो द्युमत् सुखमा लभते॥३॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! इह संसारे यावन्तः पदार्थास्सन्ति तावन्तो जलेनैव भवन्ति सर्वेषां बीजं जलमेवास्तीति विज्ञाय सर्वाणि सुखानि लभध्वम्॥३॥

**पदार्थः**-हे विद्वानो जिस **(श्वैत्रेयस्य)** अन्तरिक्ष में स्थित दिशाओं में उत्पन्न जल के मध्य में **(जन्तवः)** जीव और **(कृष्टयः)** मनुष्य **(वर्धन्त)** वृद्धि को प्राप्त होते हैं **(एना)** इस **(मध्वा)** मधुर जल से **(वाजयुः)** अन्न की कामना करते हुए के **(न)** सदृश **(बृहदुक्थः)** अत्यन्त प्रशंसित **(निष्कग्रीवः)** एक निष्क का जिसमें चार सुवर्ण प्रमाण से युक्त आभूषण जिसकी ग्रीवा में ऐसा पुरुष **(द्युमत्)** प्रकाश से युक्त सुख को **(आ)** प्राप्त होता है॥३॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! इस संसार में जितने पदार्थ हैं, वे सब जल ही से होते हैं अर्थात् सब का बीज जल ही है, ऐसा जान कर सब सुखों को प्राप्त होओ॥३॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**



www.9009.co.in

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**प्रियं दुग्धं न काम्यमजामि जाम्योः सचा।**

**घर्मो न वाजजठरोऽदब्धः शश्वतो दभः॥४॥**

**प्रियम्। दुग्धम्। न। काम्यम्। अजामि। जाम्योः। सचा। घर्मः। न। वाजऽजठरः। अदब्धः। शश्वतः। दभः॥४॥**

**पदार्थः-(प्रियम्) (दुग्धम्) (न)** इव **(काम्यम्)** कमनीयम् **(अजामि)** प्राप्नोमि **(जाम्योः)** अत्तव्यान्नप्रदयोर्द्यावापृथिव्योः **(सचा)** सम्बन्धेन **(घर्मः)** प्रतापः **(न)** इव **(वाजजठरः)** वाजो क्षुद्वेगो जठरे यस्मात्सः **(अदब्धः)** अहिंसनीयः **(शश्वतः)** निरन्तरोऽव्याप्तः **(दभः)** दम्नाति हिनस्ति येन सः॥४॥

**अन्वयः**-वाजजठरोऽदब्धः शश्वतो दभो घर्मो न प्रियं दुग्धं न सचा जाम्योः काम्यमजामि तेन मया सह यूयमप्येदं कुरुत॥४॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। ये सूर्य्यप्रकाशवद् व्याप्तविद्या दुग्धवत्प्रियवचसो धर्मं कामयमाना जनास्सन्ति ते भूमिवत्सर्वेषां रक्षका भवन्ति॥४॥

**पदार्थः-(वाजजठरः)** क्षुधा का वेग उदर में जिससे हो **(अदब्धः)** जो नहीं हिंसा करने योग्य **(शश्वतः)** निरन्तर व्याप्त **(दभः)** और जिससे नाश करता है उस **(घर्मः)** प्रताप के **(न)** सदृश वा **(प्रियम्)** प्रिय **(दुग्धम्)** दुग्ध के **(न)** सदृश **(सचा)** सम्बन्ध से **(जाम्योः)** खाने योग्य अन्न को देने वाले प्रकाश और पृथिवी के **(काम्यम्)** कामना करने योग्य पदार्थ को **(अजामि)** प्राप्त होता हूं, इससे मेरे साथ आप लोग भी इसको करो॥४॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जो सूर्य्य के प्रकाश के सदृश विद्या से व्याप्त, दुग्ध के सदृश प्रिय वचन वाले और धर्म्म की कामना करते हुए जन हैं, वे पृथ्वी के सदृश सब के रक्षक होते हैं॥४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**क्रीळन्नो रश्म आ भुवः सं भस्मना वायुना वेविदानः।**

**ता अस्य सन् धृषजो न तिग्माः सुसंशिता वक्ष्यो वक्षणेस्थाः॥५॥११॥**

**क्रीळन्। नः। रश्मे। आ। भुवः। सम्। भस्मना। वायुना। वेविदानः। ताः। अस्य। सन्। धृषजः। न। तिग्माः। सुऽसंशिताः। वक्ष्यः। वक्षणेऽस्थाः॥५॥**

**पदार्थः-(क्रीळन्) (नः)** अस्मान् **(रश्मे)** रश्मिवद्वर्त्तमान **(आ) (भुवः)** भवेः **(सम्) (भस्मना) (वायुना)** पवनेन **(वेविदानः)** विज्ञापयन् **(ताः) (अस्य) (सन्) (धृषजः)** धाष्टर्याज्जातान् **(न)** इव



www.9009.co.in

**(तिग्माः)** तीव्राः **(सुसंशिताः)** सुष्ठु प्रशंसिताः **(वक्ष्यः)** वोढ्यः **(वक्षणेस्थाः)** या वाहने तिष्ठन्ति ताः॥५॥

**अन्वयः**-हे रश्मे रश्मिवद्वर्त्तमान विद्वन्! यथा विद्युदग्निर्भस्मना वायुना वेविदानस्ता अस्य धृषजो न तिग्माः सुसंशिता वक्ष्यो वक्षणेस्था वहन् सन् सुखं सम्भावयति तथा क्रीळन्नोऽस्मान् सुखकार्या भुवः॥५॥

**भावार्थः**-अत्रोपमावाचकलुप्तोपमालङ्कारौ। हे विद्वांसो! यथा सूर्य्यस्य रश्मय सर्वत्र प्रसृताः सर्वान् सुखयन्ति तथैव सर्वत्र विहरन्त उपदिशन्तः सर्वानानन्दयन्त्विति॥५॥

अत्र विद्वत्साध्योपदेशविषयवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इत्येकोनविंशं सूक्तमेकादशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे **(रश्मे)** किरणों के सदृश वर्त्तमान विद्वन्! जैसे बिजुलीरूप अग्नि **(भस्मना)** भस्म और **(वायुना)** पवन से **(वेविदानः)** जनाता अर्थात् अपने को प्रकट करता हुआ **(ताः)** उन **(अस्य)** इसकी **(धृषजः)** धृष्टता से उत्पन्न हुओं के **(न)** सदृश **(तिग्माः)** तीव्र **(सुसंशिताः)** उत्तम प्रकार प्रशंसित **(वक्ष्यः)** ले चलनेवाली और **(वक्षणेस्थाः)** वाहन में स्थिर ऐसी लपटों को धारण करता **(सन्)** हुआ सुख की **(सम्)** संभावना कराता है, वैसे **(क्रीळन्)** क्रीड़ा करते हुए आप **(नः)** हम लोगों के सुखकारी **(आ, भुवः)** हूजिये॥५॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमा और वाचकलुप्तोपमालङ्कार हैं। हे विद्वानो! जैसे सूर्य की किरणें सर्वत्र फैली हुई सब को सुख देती हैं, वैसे ही सब स्थानों में भ्रमण तथा उपदेश करते हुए आप सब को आनन्द दीजिये॥५॥

इस सूक्त में विद्वानों के सिद्ध करने योग्य उपदेश विषय का वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह उन्नीसवां सूक्त और ग्यारहवां वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

**अथ चतुर्ऋचस्य विंशतितमस्य सूक्तस्य प्रयस्वन्त अत्रय ऋषयः। अग्निर्देवता। १, ३ विराडनुष्टुप्। २ निचृदनुष्टुप् छन्दः। गान्धारः स्वरः। ४ पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः॥**

*अथाग्निपदवाच्यविद्वद्विषयमाह॥*

अब चार ऋचा वाले बीसवें सूक्त का प्रारम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में अग्निपदवाच्य विद्वान् के गुणों का वर्णन करते हैं॥

**यमग्ने वाजसातम् त्वं चिन्मन्यसे र॒यिम्।**

**तं नो गी॒र्भिः श्र॒वाय्यं॑ देव॒त्रा पनया॒ युजम्॥ १॥**

**यम्। अ॒ग्ने॒। वा॒ज॒ऽसा॒त॒म॒। त्वम्। चि॒त्। मन्य॑से। र॒यिम्। तम्। न॒ः। गी॒ःऽभिः। श्र॒वाय्य॑म्। दे॒व॒ऽत्रा। प॒न॒य। युज॑म्॥ १॥**

**पदार्थः-(यम्)** **(अग्ने)** विद्वन् **(वाजसातम)** अतिशयेन वाजानां विज्ञानादिपदार्थानां विभाजक **(त्वम्)** **(चित्)** अपि **(मन्यसे)** **(रयिम्)** श्रियम् **(तम्)** **(नः)** अस्मान् **(गीर्भिः)** सूपदिष्टाभिर्वाग्भिः **(श्रवाय्यम्)** श्रोतुं योग्यम् **(देवत्रा)** देवेषु **(पनया)** व्यवहारेण प्रापय। अत्र **संहितायामिति** दीर्घः। **(युजम्)** यो युनक्ति तम्॥ १॥

**अन्वयः**-हे वाजसातमाग्ने! त्वं गीर्भिर्यं देवत्रा श्रवाय्यं युजं रयिं स्वार्थं मन्यसे तं चिन्नः पनया॥ १॥

**भावार्थः**-अयमेव धर्म्यो व्यवहारो यादृशीच्छा स्वार्था भवति तादृशीमेव परार्थां कुर्याद्यथा प्राणिनः स्वार्थं दुःखं नेच्छन्ति सुखं च प्रार्थयन्ते तथैवान्यार्थमपि तैर्वर्त्तितव्यम्॥ १॥

**पदार्थः**-हे **(वाजसातम)** अतिशय विज्ञान आदि पदार्थों के विभाजक **(अग्ने)** विद्वन्! **(त्वम्)** आप **(गीर्भिः)** उत्तम प्रकार उपदेशरूप हुई वाणियों से **(यम्)** जिस **(देवत्रा)** विद्वानों में **(श्रवाय्यम्)** सुनने योग्य **(युजम्)** योग करने वाले **(रयिम्)** धन को अपने लिये **(मन्यसे)** स्वीकार करते हो **(तम्)** उसको **(चित्)** भी **(नः)** हम लोगों को **(पनया)** व्यवहार से प्राप्त कराइये॥ १॥

**भावार्थः**-यही धर्मयुक्त व्यवहार है कि जैसे इच्छा अपने लिये होती है, वैसे ही दूसरे के लिये करे और जैसे प्राणी अपने लिये दुःख की नहीं इच्छा करते हैं और सुख की प्रार्थना करते हैं, वैसे ही अन्य के लिये भी उनको वर्त्ताव करना चाहिये॥ १॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**ये अ॑ग्ने॒ नेरय॑न्ति ते वृ॒द्धा उ॒ग्रस्य॒ शव॑सः।**

**अप॒ द्वेषो॒ अप॒ ह्वरो॒ऽन्यव्र॑तस्य सश्चिरे॥ २॥**



www.9009.co.in

**ये। अग्ने। न। ईरयन्ति। ते। वृद्धाः। उग्रस्य। शवसः। अप। द्वेषः। अप। ह्वरः। अन्यऽव्रतस्य। सश्चिरे॥ २॥**

**पदार्थः**-(**ये**) (**अग्ने**) विद्वन् (**न**) निषेधे (**ईरयन्ति**) (**ते**) तव (**वृद्धाः**) विद्यावयोभ्यां स्थविराः (**उग्रस्य**) उत्कृष्टस्य (**शवसः**) बलस्य (**अप**) (**द्वेषः**) ये द्विषन्ति ते (**अप**) (**ह्वरः**) कुटिलाचरणाः (**अन्यव्रतस्य**) धर्म्मविरुद्धाचरणस्य (**सश्चिरे**)॥ २॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! ये वृद्धा ते उग्रस्य शवसः सश्चिरे द्वेषोऽप सश्चिरेऽन्यव्रतस्य ह्वरोऽप सश्चिरे ते दुःखं नेरयन्ति॥ २॥

**भावार्थः**-त एव वृद्धा ये सत्यं वदन्ति सर्वानुपकृत्य स्वात्मवत्सुखयन्ति कदाचिद्धर्म्मविरुद्धं नाचरन्ति॥ २॥

**पदार्थः**-हे (**अग्ने**) विद्वन् (**ये**) जो (**वृद्धाः**) विद्या और अवस्था से वृद्ध जन (**ते**) आपके (**उग्रस्य**) उत्तम (**शवसः**) बल के सम्बन्ध में (**सश्चिरे**) गमन करने वाले हैं और (**द्वेषः**) द्वेष करने वाले (**अप**) दूर जाते हैं (**अन्यव्रतस्य**) धर्म से विरुद्ध आचरण वाले के सम्बन्ध में (**ह्वरः**) कुटिल आचरण वाले (**अप**) अलग जाते हैं, वे दुःख की (**न**) नहीं (**ईरयन्ति**) प्रेरणा करते हैं॥ २॥

**भावार्थः**-वे ही वृद्ध हैं, जो सत्य बोलते और सब का उपकार करके अपने सदृश सुख देते और कभी धर्म्म से विरुद्ध आचरण नहीं करते हैं॥ २॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**होतारं त्वा वृणीमहेऽग्ने दक्षस्य साधनम्।**

**यज्ञेषु पूर्व्यं गिरा प्रयस्वन्तो हवामहे॥ ३॥**

**होतारम्। त्वा। वृणीमहे। अग्ने। दक्षस्य। साधनम्। यज्ञेषु। पूर्व्यम्। गिरा। प्रयस्वन्तः। हवामहे॥ ३॥**

**पदार्थः**-(**होतारम्**) दातारम् (**त्वा**) त्वाम् (**वृणीमहे**) स्वीकुर्महे (**अग्ने**) विद्वन् (**दक्षस्य**) बलस्य (**साधनम्**) (**यज्ञेषु**) (**पूर्व्यम्**) पूर्वैराप्तैः कृतम् (**गिरा**) वाण्या (**प्रयस्वन्तः**) प्रयतमानाः (**हवामहे**)॥ ३॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! यथा प्रयस्वन्तो वयं गिरा यज्ञेषु दक्षस्य पूर्व्यं साधनं हवामहे होतारमग्निं वृणीमहे तथा त्वा स्वीकुर्य्याम॥ ३॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यथा मनुष्याः परोपकारिणं प्रीत्या बहु मन्यन्ते तथैव विद्वद्भिः सर्वाण्युत्तमानि कर्म्माणि क्रियन्ते॥ ३॥

**पदार्थः**-हे (**अग्ने**) विद्वान्! जैसे (**प्रयस्वन्तः**) प्रयत्न करते हुए लोग (**गिरा**) वाणी से (**यज्ञेषु**) यज्ञों में (**दक्षस्य**) बल के (**पूर्व्यम्**) प्राचीन यथार्थवक्ता पुरुषों से किये गये (**साधनम्**) साधन को (**हवामहे**) देते और (**होतारम्**) दाता अग्नि को (**वृणीमहे**) स्वीकार करते हैं, वैसे (**त्वा**) आपको स्वीकार करें॥ ३॥



www.9009.co.in

**भावार्थ:**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे मनुष्य परोपकारी का प्रीति से बहुत आदर करते हैं, वैसे ही विद्वान् जनों से सब उत्तम कर्म्म किये जाते हैं॥३॥

**पुनर्विद्वद्विषयमाह॥**

फिर विद्वद्विषय को कहते हैं॥

**इ॒त्था यथा॑ त ऊ॒तये॒ सह॑सावन् दि॒वेदि॑वे।**

**रा॒य ऋ॒ताय॑ सुक्रतो॒ गोभि॑: ष्याम सध॒मादो॑ वी॒रैः स्या॑म सध॒माद॑:॥४॥१२॥**

**इ॒त्था। यथा॑। ते॒। ऊ॒तये॑। सह॑साऽवन्। दि॒वेऽदि॑वे। रा॒ये। ऋ॒ताय॑। सु॒क्र॒तो॒ इति॑ सुऽक्रतो। गोभि॑:। स्या॒म॒:। स॒ध॒ऽमाद॑:। वी॒रैः। स्या॒म॒। स॒ध॒ऽमाद॑:॥४॥**

**पदार्थ:**-(**इत्था**) अस्माद्धेतोः (**यथा**) (**ते**) तव (**ऊतये**) रक्षणाद्याय (**सहसावन्**) बलेन तुल्य (**दिवेदिवे**) प्रतिदिनम् (**राये**) धनाय (**ऋताय**) धर्म्यव्यवहारेण प्राप्ताय (**सुक्रतो**) सुष्ठुप्रज्ञ (**गोभिः**) वाग्भिः (**स्याम**) (**सधमादः**) सहस्थानाः (**वीरैः**) शूरवीरैः (**स्याम**) (**सधमादः**)॥४॥

**अन्वयः**-हे सहसावन् सुक्रतो! यथा त ऊतये दिवेदिव ऋताय राये वयं गोभिः सधमादः स्याम वीरैः सधमादः स्यामेत्था त्वं भव॥४॥

**भावार्थ:**-अत्रोपमालङ्कारः। ये साहसेन पुरुषार्थयन्तः वीरसेनां गृहीत्वैश्वर्य्यप्राप्तये प्रयतन्ते त एव सुखिनो भवन्तीति॥४॥

अत्राग्निगुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति विंशतितमं सूक्तं द्वादशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थ:**-हे (**सहसावन्**) बल से तुल्य (**सुक्रतो**) उत्तम बुद्धि से युक्त! (**यथा**) जैसे (**ते**) आपके (**ऊतये**) रक्षण आदि के लिये (**दिवेदिवे**) प्रतिदिन (**ऋताय**) धर्मयुक्त व्यवहार से प्राप्त (**राये**) धन के लिये हम लोग (**गोभिः**) वाणियों से (**सधमादः**) साथ स्थान वाले (**स्याम**) होवें [(**वीरैः**) शूरवीरों से (**सधमादः**) साथ स्थान वाले (**स्याम**) होवें] (**इत्था**) इस कारण से आप हूजिये॥४॥

**भावार्थ:**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जो साहस से पुरुषार्थ करते हुए वीर जनों की सेना को ग्रहण करके ऐश्वर्य्य की प्राप्ति के लिये प्रयत्न करते हैं, वे ही सुखी होते हैं॥४॥

इस सूक्त में अग्नि के गुण-वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह बीसवां सूक्त और बारहवां वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

**अथ चतुर्ऋचस्यैकाधिकविंशतितमस्य सूक्तस्य सस आत्रेय ऋषिः। अग्निर्देवता। १ अनुष्टुप् छन्दः। गान्धारः स्वरः। २ भुरिगुष्णिक्। ३ स्वराडुष्णिक् छन्दः। ऋषभः स्वरः। ४ भुरिग्बृहती छन्दः। मध्यमः स्वरः॥**

*अथाग्निविषयमाह॥*

अब चार ऋचा वाले इक्कीसवें सूक्त का प्रारम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में अग्निविषय को कहते हैं॥

**मनुष्यवत्त्वा नि धीमहि मनुष्वत्समिधीमहि।**

**अग्ने मनुष्वदङ्गिरो देवान् देवयते यज॥ १॥**

**मनुष्वत्। त्वा। नि। धीमहि। मनुष्वत्। सम्। इधीमहि। अग्ने। मनुष्वत्। अङ्गिरः। देवान्। देवऽयते। यज॥ १॥**

**पदार्थः**-(**मनुष्वत्**) मनुष्येण तुल्यम् (**त्वा**) त्वाम् (**नि**) (**धीमहि**) निधिमन्तो भवेम (**मनुष्वत्**) (**सम्**) (**इधीमहि**) प्रकाशितान् कुर्याम (**अग्ने**) विद्वन् (**मनुष्वत्**) (**अङ्गिरः**) प्राणा इव प्रिय (**देवान्**) दिव्यविद्वद्विपश्चितः (**देवयते**) देवान् दिव्यगुणान् कामयमानाय (**यज**) सङ्गच्छस्व॥ १॥

**अन्वयः**-हे अङ्गिरोऽग्ने! यथा वयं कार्यसिद्धयेऽग्निं मनुष्यवन्नि धीमहि देवयते देवान् मनुष्वत् समिधीमहि तथा त्वा सत्यक्रियायां निधीमहि त्वं मनुष्वद्यज॥ १॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। ये नरा मननशीला भूत्वा दिव्यान् गुणान् कामयन्ते ते अग्न्यादिपदार्थविद्यां विजानन्तु॥ १॥

**पदार्थः**-हे (**अङ्गिरः**) प्राणों के सदृश प्रिय (**अग्ने**) विद्वन्! जैसे हम लोग कार्य्य की सिद्धि के लिये अग्नि को (**मनुष्वत्**) मनुष्य को जैसे वैसे (**नि, धीमहि**) निरन्तर धारण होवें और (**देवयते**) श्रेष्ठ गुणों की कामना करते हुए के लिये (**देवान्**) श्रेष्ठ विद्यायुक्त विद्वानों को (**मनुष्वत्**) मनुष्यों के समान (**सम्, इधीमहि**) प्रकाशित करें वैसे (**त्वा**) आपको उत्तम कर्म्म में स्थित करें और आप (**मनुष्वत्**) मनुष्य के तुल्य (**यज**) मिलिये अर्थात् कार्य्यों को प्राप्त हूजिये॥ १॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जो मनुष्य विचारशील होकर श्रेष्ठ गुणों की कामना करते हैं, वे अग्नि आदि पदार्थों की विद्या को जानें॥ १॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**त्वं हि मानुषे जनेऽग्ने सुप्रीत इध्यसे।**



www.9009.co.in

**स्रुच॑स्त्वा यन्त्यानु॒षक् सुजा॑त॒ सर्पि॑रासुते॥ २॥**

**त्वम्। हि। मानु॑षे। जने॑। अग्ने॑। सु॒ऽप्री॑तः। इ॒ध्यसे॑। स्रुच॑ः। त्वा॒। य॒न्ति॒। आ॒नु॒षक्। सु॒ऽजा॑त। सर्पि॑ःऽआसुते॥ २॥**

**पदार्थः**-(**त्वम्**) (**हि**) (**मानुषे**) (**जने**) प्रसिद्धे (**अग्ने**) पावकवद्वर्त्तमान (**सुप्रीतः**) सुष्ठु प्रसन्नः (**इध्यसे**) प्रदीप्यसे (**स्रुचः**) यज्ञसाधनानि पात्राणि (**त्वा**) त्वाम् (**यन्ति**) (**आनुषक्**) आनुकूल्येन (**सुजात**) सुष्ठुजात (**सर्पिरासुते**) सर्पिषा समन्तात् प्रदीपिते॥ २॥

**अन्वयः**-हे सुजाताग्ने! यथाऽग्निः सर्पिरासुते प्रदीप्यते तथा हि त्वं मानुषे जने सुप्रीत इध्यसे यथा त्वा स्रुच आनुषक् यन्ति तथैव त्वं सर्वान् प्रत्यनुकूलो भव॥ २॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! भवन्तो यथाग्निरिन्धनघृतादीनि प्राप्य वर्धते तथैव विद्यां शुभगुणाँश्च प्राप्य सततं वर्धन्ताम्॥ २॥

**पदार्थः**-हे (**सुजात**) उत्तम प्रकार उत्पन्न (**अग्ने**) अग्नि के सदृश प्रताप से वर्त्तमान! जैसे अग्नि (**सर्पिरासुते**) घृत से सब ओर से प्रकाशित हुए में प्रकाशित किया जाता है, वैसे (**हि**) ही (**त्वम्**) आप (**मानुषे, जने**) प्रसिद्ध मनुष्य में (**सुप्रीतः**) उत्तम प्रकार प्रसन्न हुए (**इध्यसे**) प्रकाशित होते हो और जैसे (**त्वा**) आपको (**स्रुचः**) यज्ञ के साधन पात्र (**आनुषक्**) अनुकूलता से (**यन्ति**) प्राप्त होते हैं, वैसे ही आप सबके प्रति अनुकूल हूजिये॥ २॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! आप लोग जैसे अग्नि इन्धन और घृत आदिकों को प्राप्त होकर वृद्धि को प्राप्त होता है, वैसे ही विद्या और उत्तम गुणों को प्राप्त होकर निरन्तर वृद्धि को प्राप्त हूजिये॥ २॥

**अथ शिल्पविद्याविद्विषयमाह॥**

अब शिल्पविद्यावेत्ता विद्वान् के विषय को कहते हैं॥

**त्वां विश्वे॑ स॒जोष॑सो दे॒वासो॑ दू॒तम॑क्रत।**

**स॒प॒र्यन्त॑स्त्वा कवे य॒ज्ञेषु॑ दे॒वमी॑ळते॥ ३॥**

**त्वाम्। विश्वे॑। स॒ऽजोष॑सः। दे॒वास॑ः। दू॒तम्। अ॒क्र॒त॒। स॒प॒र्यन्त॑ः। त्वा॒। क॒वे॒। य॒ज्ञेषु॑। दे॒वम्। ई॒ळ॒ते॒॥ ३॥**

**पदार्थः**-(**त्वाम्**) (**विश्वे**) सर्वे (**सजोषसः**) समानप्रीतिसेविनः (**देवासः**) विद्वांसः (**दूतम्**) दूतवद्वर्त्तमानवह्निम् (**अक्रत**) कुर्वते (**सपर्यन्तः**) परिचरन्तः (**त्वा**) त्वाम् (**कवे**) विपश्चित् (**यज्ञेषु**) सत्सङ्गेषु (**देवम्**) दिव्यगुणम् (**ईळते**) स्तुवन्ति॥ ३॥

**अन्वयः**-हे कवे! यथा विश्वे सजोषसो देवासो देवं दूतमक्रत सपर्यन्तो यज्ञेषु देवमीळते तथा त्वां वयं सेवेमहि त्वा सत्कुर्य्याम॥ ३॥



www.9009.co.in

**भावार्थ:**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। येऽग्निं दूतकर्म कारयन्ति ते सर्वत्र प्रशंसितैश्वर्य्या जायन्ते॥३॥

**पदार्थ:**-हे **(कवे)** विद्वन्! जैसे **(विश्वे)** सम्पूर्ण **(सजोषस:)** तुल्य प्रीति के सेवन करने वाले **(देवास:)** विद्वान् जन् **(देवम्)** श्रेष्ठ गुण वाले **(दूतम्)** दूत के सदृश वर्त्तमान अग्नि को **(अक्रत)** करते हैं और **(सपर्यन्त:)** सेवा करते हुए जन **(यज्ञेषु)** सत्संगो में श्रेष्ठ गुणों वाले विद्वान् की **(ईळते)** स्तुति करते हैं, वैसे **(त्वाम्)** आपकी हम लोग सेवा करें और **(त्वा)** आपका सत्कार करें॥३॥

**भावार्थ:**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो जन अग्नि से दूतकर्म अर्थात् नौकर के सदृश काम कराते हैं, वे सब स्थानों में प्रशंसित ऐश्वर्य्य वाले होते हैं॥३॥

**पुनर्विद्वद्विषयमाह॥**

फिर विद्वद्विषय को कहते हैं॥

**दे॒वं वो॑ देवय॒ज्यया॒ग्निमी॑ळीत॒ मर्त्यः॑।**

**समि॑द्धः शुक्र दीदिह्यृ॒तस्य॒ योनि॒मास॑दः स॒सस्य॒ योनि॒मास॑दः॥४॥१३॥**

**दे॒वम्। व॒ः। दे॒व॒ऽय॒ज्यया॑। अ॒ग्निम्। ई॒ळी॒त॒। मर्त्यः॑। सम्ऽइ॑द्धः। शु॒क्र॒। दी॒दि॒हि॒। ऋ॒तस्य॑। योनि॑म्। आ। अ॒स॒दः॒। स॒सस्य॑। योनि॑म्। आ। अ॒स॒दः॒॥४॥**

**पदार्थ:**-**(देवम्)** **(व:)** युष्माकम् **(देवयज्यया)** देवानां विदुषां सङ्गत्या **(अग्निम्)** **(ईळीत)** प्रशंस्येत् **(मर्त्य:)** मनुष्यः **(समिद्धः)** **(शुक्र)** शक्तिमन् **(दीदिहि)** प्रकाशय **(ऋतस्य)** सत्यस्य परमाण्वादेः **(योनिम्)** कारणम् **(आ)** **(असद:)** जानीयाः **(ससस्य)** कार्य्यस्य **(योनिम्)** कारणम् **(आ, असद:)** समन्ताज्जानीहि॥४॥

**अन्वय:**-हे विद्वांसो! वो देवयज्यया मर्त्यो देवमग्निमीळीत हे शुक्र समिद्धस्त्वं दीदिहि ऋतस्य योनिमासदः ससस्य योनिमासदः॥४॥

**भावार्थ:**-ये मनुष्या विद्वत्सङ्गेन कार्यकारणात्मिकां सृष्टिं विज्ञाय कार्य्यसिद्धिं समाचरन्ति ते सृष्टिक्रमं विज्ञाय दुःखं कदाचिन्न भजन्त इति॥४॥

अत्राग्निविद्वद्गुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इत्येकाधिकविंशतितमं सूक्तं त्रयोदशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थ:**-हे विद्वानो! **(व:)** आप लोगों के **(देवयज्यया)** विद्वानों के मेल से **(मर्त्य:)** मनुष्य **(देवम्)** प्रकाशित **(अग्निम्)** अग्नि की **(ईळीत)** प्रशंसा करे। हे **(शुक्र)** सामर्थ्य वाले **(समिद्ध:)** उत्तम गुणों से प्रकाशित! आप **(दीदिहि)** प्रकाश कराओ और **(ऋतस्य)** सत्य परमाणु आदि के **(योनिम्)**



www.9009.co.in

कारण को **(आ, असदः)** सब प्रकार जानिये और **(ससस्य)** कार्य्य के **(योनिम्)** कारण को **(आ, असदः)** सब प्रकार जानिये॥४॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य विद्वानों के संग से कार्य्य और कारणस्वरूप सृष्टि अर्थात् सत्त्व, रज और तमोगुण को साम्यावस्थारूप प्रधान को जान के कार्य को सिद्ध करते हैं, वे सृष्टि के क्रम को जान के दुःख को कभी नहीं प्राप्त होते हैं॥४॥

इस सूक्त में अग्नि और विद्वानों के गुण-वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह इक्कीसवां सूक्त और त्रयोदशवां वर्ग सम्पात हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

**अथ चतुर्ऋचस्य द्वाविंशतितमस्य सूक्तस्य विश्वसामात्रेय ऋषिः। अग्निर्देवता। १ विराडनुष्टुप् छन्दः। गान्धारः स्वरः। २, ३ स्वराडुष्णिक् छन्दः। ऋषभः स्वरः। ४ बृहती छन्दः। मध्यमः स्वरः॥**

*अथाग्निविषयमाह॥*

अब चार ऋचा वाले बाईसवें सूक्त का आरम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में अग्निविषय को कहते हैं॥

**प्र विश्वसामन्नत्रिवदर्चा पावकशोचिषे।**

**यो अध्वरेष्वीड्यो होता मन्द्रतमो विशि॥ १॥**

**प्र। विश्वऽसामन्। अत्रिऽवत्। अर्च। पावकऽशोचिषे। यः। अध्वरेषु। ईड्यः। होता। मन्द्रऽतमः। विशि॥ १॥**

**पदार्थः**-(**प्र**) (**विश्वसामन्**) विश्वानि सामानि यस्य तत्सम्बुद्धौ (**अत्रिवत्**) व्यापकविद्यावत् (**अर्चा**) सत्कुरु। अत्र **द्व्यचोऽतस्तिङ** इति दीर्घः। (**पावकशोचिषे**) पावकस्य शोचः प्रकाश इव प्रकाशो यस्य तस्मै (**यः**) (**अध्वरेषु**) (**ईड्यः**) प्रशंसनीयः (**होता**) दाता (**मन्द्रतमः**) अतिशयेनानन्दयुक्तः (**विशि**) प्रजायाम्॥ १॥

**अन्वयः**-हे विश्वसामन्! योऽध्वरेष्वीड्यो होता विशि मन्द्रतमो भवेत् तस्मै पावकशोचिषेऽत्रिवत् प्रार्चा॥ १॥

**भावार्थः**-मनुष्यैर्धार्मिकाणामेव सत्कारः कर्त्तव्यो नान्येषाम्॥ १॥

**पदार्थः**-हे (**विश्वसामन्**) सम्पूर्ण सामों वाले (**यः**) जो (**अध्वरेषु**) यज्ञों में (**ईड्यः**) प्रशंसा करने योग्य (**होता**) दाता (**विशि**) प्रजा में (**मन्द्रतमः**) अतिशय आनन्द युक्त होवे उस (**पावकशोचिषे**) अग्नि के प्रकाश के सदृश प्रकाश वाले पुरुष के लिये (**अत्रिवत्**) व्यापक विद्या वाले के सदृश (**प्र, अर्चा**) सत्कार कीजिये॥ १॥

**भावार्थः**-मनुष्यों को चाहिये कि धार्मिक जनों का ही सत्कार करें, अन्य जनों का नहीं॥ १॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**न्य१ग्निं जातवेदसं दधाता देवमृत्विजम्।**

**प्र यज्ञ एत्वानुषगद्या देवव्यचस्तमः॥ २॥**

**नि। अग्निम्। जातऽवेदसम्। दधात। देवम्। ऋत्विजम्। प्र। यज्ञः। एतु। आनुषक्। अद्य। देवव्यचःऽतमः॥ २॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**नि**) (**अग्निम्**) पावकम् (**जातवेदसम्**) जातेषु विद्यमानम् (**दधाता**) धरत। अत्र **संहितायामि**ति दीर्घः। (**देवम्**) दिव्यगुणकर्मस्वभावम् (**ऋत्विजम्**) य ऋतुषु यजति तद्वद्वर्त्तमानम् (**प्र**) (**यज्ञः**) सङ्गन्तव्यः (**एतु**) प्राप्नोतु (**आनुषक्**) आनुकूल्येन (**अद्या**) अत्र **संहितायामि**ति दीर्घः। (**देवव्यचस्तमः**) यो देवान् पृथिव्यादीन् धरति भिनत्ति च सोऽतिशयितः॥२॥

**अन्वयः**-हे विद्वांसो! यो देवव्यचस्तमो यज्ञ आनुषगद्यास्मानेतु तमृत्विजमिव जातवेदसं देवमग्निं प्र णि दधाता॥२॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यथर्त्विजो यज्ञं पूर्णं कुर्वन्ति तथैवाग्निः शिल्पविद्याकृत्यसिद्धिमलङ्करोति॥२॥

**पदार्थः**-हे विद्वानो! जो (**देवव्यचस्तमः**) पृथिव्यादिकों का धारण करने और अति तोड़ने वाला (**यज्ञः**) मिलने योग्य (**आनुषक्**) अनुकूलता से (**अद्या**) आज हम लोगों को (**एतु**) प्राप्त हो उस (**ऋत्विजम्**) ऋतुओं में यज्ञ करने वाले के सदृश (**जातवेदसम्**) उत्पन्न हुओं में विद्यमान (**देवम्**) श्रेष्ठ गुण, कर्म्म और स्वभाव वाले (**अग्निम्**) अग्नि को (**प्र, नि, दधाता**) उत्तमता से निरन्तर धारण करो॥२॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे यज्ञ करने वाले यज्ञ को पूर्ण करते हैं, वैसे ही अग्नि शिल्पविद्या के कृत्य की सिद्धि को पूर्ण करता है॥२॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**चि॒कि॒त्विन्म॑नसं त्वा दे॒वं मर्ता॑स ऊ॒तये॑।**

**वरे॑ण्यस्य॒ तेऽव॑स इया॒नासो॑ अमन्महि॥३॥**

**चि॒कि॒त्वित्ऽम॑नसम्। त्वा॒। दे॒वम्। मर्ता॑सः। ऊ॒तये॑। वरे॑ण्यस्य। ते॒। अव॑सः। इ॒या॒नासः॑। अ॒म॒न्म॒हि॒॥३॥**

**पदार्थः**-(**चिकित्विन्मनसम्**) चिकित्वितां विज्ञानवतां मन इव मनो यस्य तम् (**त्वा**) त्वाम् (**देवम्**) विद्वांसम् (**मर्त्तासः**) मनुष्याः (**ऊतये**) रक्षणाद्याय (**वरेण्यस्य**) वरितुमर्हस्य (**ते**) तव (**अवसः**) कमनीयस्य (**इयानासः**) प्राप्नुवन्तः (**अमन्महि**) विजानीयाम॥३॥

**अन्वयः**-हे विद्वन्! वरेण्यस्याऽवसस्ते सङ्गेनेयानासो मर्त्तासो वयमूतये चिकित्विन्मनसं देवं त्वाऽग्निमिवामन्महि॥३॥

**भावार्थः**-मनुष्यैः सदैव विद्वत्सङ्गेन पदार्थविद्यान्वेषणीया॥३॥

**पदार्थः**-हे विद्वन्! (**वरेण्यस्य**) स्वीकार करने और (**अवसः**) कामना करने योग्य (**ते**) आपके सङ्ग से (**इयानासः**) प्राप्त होते हुए (**मर्त्तासः**) मनुष्य हम लोग (**ऊतये**) रक्षा आदि के लिये



www.9009.co.in

**(चिकित्विन्मनसम्)** विज्ञानयुक्त पुरुषों के मन के सदृश मन से युक्त **(देवम्)** विद्वान् **(त्वा)** आपको अग्नि के सदृश **(अमन्महि)** विशेष करके जानें॥३॥

**भावार्थः**-मनुष्यों को चाहिये कि सदा ही विद्वानों के संग से पदार्थविद्या का खोज करें॥३॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**अग्ने॑ चिकि॒द्ध्य१॒॑स्य न॑ इ॒दं वचः॑ सहस्य।**

**तं त्वा॑ सुशिप्र दम्पते॒ स्तोमै॑र्वर्ध॒न्त्यत्र॑यो गी॒र्भिः शु॒म्भ॒न्त्यत्र॑यः॥४॥१४॥**

**अग्ने॑। चि॒कि॒द्धि। अ॒स्य। न॒ः। इ॒दम्। वचः॑। स॒ह॒स्य॒। तम्। त्वा। सु॒ऽशि॒प्र॒। द॒म्ऽप॒ते॒। स्तोमैः॑। व॒र्धन्ति॒। अत्र॑यः। गी॒ःऽभिः। शु॒म्भ॒न्ति॒। अत्र॑यः॥४॥**

**पदार्थः**-**(अग्ने)** विद्वन् **(चिकिद्धि)** विजानीहि **(अस्य)** **(नः)** अस्माकम् **(इदम्)** **(वचः)** **(सहस्य)** सहसि बले साधो **(तम्)** **(त्वा)** त्वाम् **(सुशिप्र)** शोभनहनुनासिक **(दम्पते)** स्त्रीपुरुष **(स्तोमैः)** प्रशंसितैर्व्यवहारैः वाग्भिः **(वर्धन्ति)** **(अत्रयः)** अविद्यमानत्रिविधदुःखा **(गीर्भिः)** **(शुम्भन्ति)** पवित्रयन्ति **(अत्रयः)** त्रिभिः कामक्रोधलोभदोषै रहिताः॥४॥

**अन्वयः**-हे सहस्य सुशिप्र दम्पतेऽग्ने! त्वं यथाऽत्रयः स्तोमैर्वर्धन्ति यथाऽत्रयो गीर्भिः शुम्भन्ति तथा न इदं वचोऽस्य च चिकिद्धि तं त्वा वयं सत्कुर्य्याम॥४॥

**भावार्थः**-यथा पुरुषार्थिनो मनुष्या सर्वान् वर्धयन्त्युपदेशकाः सर्वान् पवित्रयन्ति तथैव सर्वे मनुष्या आचरन्त्विति॥४॥

अत्राग्निगुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति द्वाविंशतितमं सूक्तं चतुर्दशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे **(सहस्य)** बल में श्रेष्ठ **(सुशिप्र)** सुन्दर ठुड्डी और नासिका वाले **(दम्पते)** स्त्री और पुरुष **(अग्ने)** विद्वन्! आप जैसे **(अत्रयः)** तीन प्रकार के दुःखों से रहित जन **(स्तोमैः)** प्रशंसित व्यवहारों से **(वर्धन्ति)** वृद्धि को प्राप्त होते हैं और जैसे **(अत्रयः)** काम, क्रोध, और लोभ इन तीन दोषों से रहित जन **(गीर्भिः)** वाणियों से **(शुम्भन्ति)** पवित्र करते हैं, वैसे **(नः)** हम लोगों के **(इदम्)** इस **(वचः)** वचन को और **(अस्य)** इसके वचन को **(चिकिद्धि)** जानिये **(तम्)** उन **(त्वा)** आपका हम लोग सत्कार करें॥४॥

**भावार्थः**-जैसे पुरुषार्थी मनुष्य सबकी वृद्धि करते हैं और उपदेशक जन सब जनों को पवित्र करती हैं, वैसे ही सब मनुष्य आचरण करें॥४॥

इस सूक्त में अग्नि के गुण-वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥



www.9009.co.in

यह बाईसवां सूक्त और चौदहवां वर्ग समाप्त हुआ।।



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

**अथ चतुर्ऋचस्य त्रयोविंशतितमस्य सूक्तस्य द्युम्नो विश्वचर्षणिर्ऋषिः। अग्निर्देवता। १, २ निचृदनुष्टुप् छन्दः। ३ विराडनुष्टुप् छन्दः। गान्धारः स्वरः। ४ निचृत्पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः॥**

*अथाग्निपदवाच्यवीरगुणानाह॥*

अब चार ऋचा वाले तेईसवें सूक्त का आरम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में अग्निपदवाच्य वीर के गुणों का उपदेश करते हैं॥

**अग्ने सहन्तमा भर द्युम्नस्य प्रासहा रयिम्।**

**विश्वा यश्चर्षणीरभ्या३सा वाजेषु सासहत्॥ १॥**

**अग्ने। सहन्तम्। आ। भर। द्युम्नस्य। प्रऽसहा। रयिम्। विश्वाः। यः। चर्षणीः। अभि। आसा। वाजेषु। ससहत्॥ १॥**

**पदार्थः**-(**अग्ने**) वीरपुरुष (**सहन्तम्**) (**आ**) (**भर**) (**द्युम्नस्य**) धनस्य यशसो वा (**प्रासहा**) याः प्रकर्षेण शत्रुबलानि सहन्ते ताः सेनाः। अत्र**ान्येषामपी**त्याद्यचो दीर्घः। (**रयिम्**) धनम् (**विश्वाः**) अखिलाः (**यः**) (**चर्षणीः**) प्रकाशमाना मनुष्यसेनाः (**अभि**) (**आसा**) आस्येन (**वाजेषु**) संग्रामेषु (**सासहत्**) भृशं सहेत। अत्र **तुजादीनामि**त्यभ्यासदैर्घ्यम्॥ १॥

**अन्वयः**-हे अग्ने वीर! यो विश्वाः प्रासहा चर्षणीर्वाजेषु सासहदासाभ्युपदिशेत्तं शत्रुबलं सहन्तं द्युम्नस्य रयिं त्वमा भर॥ १॥

**भावार्थः**-यस्य विजयेच्छा स्यात् स शूरवीरसेनां सुशिक्षितां रक्षेत् वीररसोपदेशेनोत्साह्य शत्रुभिः सह योधयेत्॥ १॥

**पदार्थः**-हे (**अग्ने**) वीरपुरुष! (**यः**) जो (**विश्वाः**) सम्पूर्ण (**प्रासहा**) अत्यन्त शत्रुओं के बलों को सहने वाली (**चर्षणीः**) पराक्रम से प्रकाशमान मनुष्यों की सेनाओं को (**वाजेषु**) संग्रामों में (**सासहत्**) अत्यन्त सहे और (**आसा**) मुख से (**अभि**) सब प्रकार से उपदेश देवे, उस शत्रुओं के बल को (**सहन्तम्**) सहते हुए (**द्युम्नस्य**) धन वा यश के सम्बन्ध में (**रयिम्**) धन को आप (**आ, भर**) सब प्रकार धारण करो॥ १॥

**भावार्थः**-जिसकी विजयी की इच्छा होवे, यह शूरवीरों की सेना उत्तम प्रकार शिक्षा की गई रक्खे और वीररस के उपदेश से उत्साह दिलाकर शत्रुओं के साथ लड़ावे॥ १॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥



www.9009.co.in

**तमग्ने पृतनाषहं रयिं सहस्व आ भर।**

**त्वं हि सत्यो अद्भुतो दाता वाजस्य गोमतः॥२॥**

**तम्। अग्ने। पृतनाऽसहम्। रयिम्। सहस्वः। आ। भर। त्वम्। हि। सत्यः। अद्भुतः। दाता। वाजस्य। गोऽमतः॥२॥**

**पदार्थः**-(**तम्**) (**अग्ने**) राजन् (**पृतनाषहम्**) यः पृतनां सेनां सहते तम् (**रयिम्**) धनम् (**सहस्वः**) बहु सहो बलं विद्यते यस्य तत्सम्बुद्धौ (**आ**) (**भर**) (**त्वम्**) (**हि**) (**सत्यः**) सत्सु साधुः (**अद्भुतः**) आश्चर्य्यगुणकर्मस्वभावः (**दाता**) (**वाजस्य**) सुखधनादेः (**गोमतः**) बह्व्यो गावो धेनुपृथिव्यादयो विद्यन्ते यस्मिँस्तस्य॥२॥

**अन्वयः**-हे सहस्वोऽग्ने! यो हि सत्योऽद्भुतो गोमतो वाजस्य दाता भवेत्तं पृतनाषहं रयिं च त्वमा भर॥२॥

**भावार्थः**-यो राजा सत्यवादिनो विदुषो विचित्रविद्यान् दृढानुदाराञ्छूरान् वीरान् बिभृयात् स एव विजयं श्रियं च लभेत॥२॥

**पदार्थः**-हे (**सहस्वः**) बहुत बल से युक्त (**अग्ने**) राजन्! जो (**हि**) निश्चय से (**सत्यः**) श्रेष्ठों में श्रेष्ठ (**अद्भुतः**) आश्चर्य्ययुक्त गुण, कर्म्म और स्वभाव वाला जन (**गोमतः**) बहुत धेनु और पृथिव्यादिकों से युक्त (**वाजस्य**) सुख और धन आदि का (**दाता**) देने वाला होवे (**तम्**) उस (**पृतनाषहम्**) सेना सहने वाले को और (**रयिम्**) धन को (**त्वम्**) आप (**आ, भर**) सब ओर से धारण कीजिये॥२॥

**भावार्थः**-जो राजा सत्यवादी विद्वानों और विचित्र विद्यायुक्त दृढ़ और उदार अर्थात् उत्तम आशययुक्त शूरवीरों का धारण पोषण करे, वही विजय और लक्ष्मी को प्राप्त होवे॥२॥

**पुनर्वीरगुणानाह॥**

फिर वीर गुणों को कहते हैं॥

**विश्वे हि त्वा सजोषसो जनासो वृक्तबर्हिषः।**

**होतारं सद्मसु प्रियं व्यन्ति वार्या पुरु॥३॥**

**विश्वे। हि। त्वा। सऽजोषसः। जनासः। वृक्तऽबर्हिषः। होतारम्। सद्मऽसु। प्रियम्। व्यन्ति। वार्या। पुरु॥३॥**

**पदार्थः**-(**विश्वे**) सर्वे (**हि**) (**त्वा**) त्वाम् राजानम् (**सजोषसः**) समानप्रीतिसेवनाः (**जनासः**) प्रसिद्धशुभाचरणाः (**वृक्तबर्हिषः**) श्रोत्रिया ऋत्विज इव सर्वविद्यासु कुशलाः (**होतारम्**) दातारम् (**सद्मसु**) राजगृहेषु (**प्रियम्**) कमनीयम् (**व्यन्ति**) प्राप्नुवन्ति (**वार्य्या**) वर्त्तुमर्हाणि धनादीनि (**पुरु**) बहूनि॥३॥

**अन्वयः**-हे राजन्! ये विश्वे सजोषसो जनासो वृक्तबर्हिषो इव हि सद्मसु होतारं प्रियं त्वाश्रयन्ति ते पुरु वार्य्या व्यन्ति॥३॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे राजन्! ये राज्योन्नतिप्रिया धर्म्मिष्ठा भृत्यास्त्वां प्राप्नुयुस्तान् सर्वान् सत्कृत्य सततं रक्षेः॥३॥

**पदार्थः**-हे राजन्! जो **(विश्वे)** सम्पूर्ण **(सजोषसः)** तुल्य प्रीति के सेवने वाले **(जनासः)** प्रसिद्ध उत्तम आचरणों से युक्त **(वृक्तबर्हिषः)** अग्निहोत्र करने वाले और यज्ञ करने वाले के सदृश सम्पूर्ण विद्याओं में कुशल जन **(हि)** ही **(सद्मसु)** राजगृहों अर्थात् राजदर्बारों में **(होतारम्)** दाता और **(प्रियम्)** सुन्दर **(त्वा)** आपका आश्रय करते हैं, वे **(पुरु)** बहुत **(वार्य्या)** स्वीकार करने योग्य धन आदिकों को **(व्यन्ति)** प्राप्त होते हैं॥३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे राजन्! जो राज्य की उन्नति में प्रीति करने वाले और धर्म्मिष्ठ भृत्य आपको प्राप्त होवें, उन सबका सत्कार करके निरन्तर रक्षा करो॥३॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**स हि ष्मा विश्वचर्षणिरभिमाति सहो दधे।**

**अग्ने एषु क्षयेष्वा रेवन्नः शुक्र दीदिहि द्युमत्पावक दीदिहि॥४॥१५॥**

**सः। हि स्म। विश्वऽचर्षणिः। अभिऽमाति। सहः। दधे। अग्ने। एषु। क्षयेषु। आ। रेवत्। नः। शुक्र। दीदिहि। द्युऽमत्। पावक। दीदिहि॥४॥**

**पदार्थः**-**(सः)** **(हि)** **(स्मा)** एव। अत्र **निपातस्य चे**ति दीर्घः। **(विश्वचर्षणिः)** अखिलविद्याप्रकाशः **(अभिमाति)** अभिमन्यते येन **(सहः)** बलम् **(दधे)** दधाति **(अग्ने)** पावकवद्वर्त्तमान **(एषु)** **(क्षयेषु)** निवासेषु **(आ)** **(रेवत्)** प्रशस्तधनयुक्तम् **(नः)** अस्मभ्यम् **(शुक्र)** शक्तिमन् **(दीदिहि)** देहि **(द्युमत्)** प्रकाशमत् **(पावक)** पवित्र **(दीदिहि)** प्रकाशय॥४॥

**अन्वयः**-हे शुक्राग्ने! यो विश्वचर्षणिरेषु क्षयेष्वभिमाति सहो दधे स हि ष्मा विजेता भवति तेन त्वं नो रेवद्दीदिहि। हे पावक! पवित्राचरणेनाऽस्मभ्यं द्युमदा दीदिहि॥४॥

**भावार्थः**-ये मनुष्याः पूर्णं शरीरात्मबलं दधति ते सर्वेभ्यः सुखं दातुं शक्नुवन्तीति॥४॥

अत्राग्निगुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति त्रयोविंशतितमं सूक्तं पञ्चदशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे **(शुक्र)** सामर्थ्ययुक्त **(अग्ने)** अग्नि के सदृश वर्तमान! जो **(विश्वचर्षणिः)** सम्पूर्ण विद्याओं का प्रकाश **(एषु)** इन **(क्षयेषु)** निवास स्थानों में **(अभिमाति)** अभिमान जिससे हो उस **(सहः)** बल को **(दधे)** धारण करता **(सः, हि)** वही **(स्मा)** निश्चय से जीतने वाला होता है, इससे आप **(नः)**



www.9009.co.in

हम लोगों के लिये **(रेवत्)** प्रशस्त धन से युक्त पदार्थ को **(दीदिहि)** दीजिये और हे **(पावक)** पवित्र, पवित्राचरण से हम लोगों के लिये **(द्युमत्)** प्रकाशयुक्त का **(आ, दीदिहि)** प्रकाश कीजिये॥४॥

**भावार्थ:-**जो मनुष्य पूर्ण शरीर और आत्मा के बल को धारण करते हैं, वे सब के लिये सुख दे सकते हैं॥४॥

इस सूक्त में अग्नि के गुण-वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह तेईसवाँ सूक्त और पन्द्रहवां वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

**अथ चतुर्ऋचस्य चतुर्विंशतितमस्य सूक्तस्य बन्धुः सुबन्धुः श्रुतबन्धुर्विप्रबन्धुश्च गोपायना लौपायना वा ऋषयः। अग्निर्देवता। १, २ पूर्वार्द्धस्य साम्नी बृहत्युत्तरार्द्धस्य भुरिक् साम्नी बृहती। ३, ४ पूर्वार्द्धस्योत्तरार्द्धस्य च भुरिक् साम्नी बृहती छन्दसी। मध्यमः स्वरः॥**

***अथाग्निपदवाच्यराजविषयमाह॥***

अब चार ऋचा वाले चौबीसवें सूक्त का प्रारम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में अग्निपदवाच्य राजविषय को कहते हैं॥

**अग्ने त्वं नो अन्तम उत त्राता शिवो भवा वरूथ्यः।**

**वसुरग्निर्वसुश्रवा अच्छा नक्षि द्युमत्तमं रयिं दाः॥१॥ २॥**

**अग्ने। त्वम्। नः। अन्तमः। उत। त्राता। शिवः। भव। वरूथ्यः। वसुः। अग्निः। वसुऽश्रवाः। अच्छ। नक्षि। द्युमतऽतमम्। रयिम्। दाः॥१॥ २॥**

**पदार्थः**-(**अग्ने**) राजन् (**त्वम्**) (**नः**) अस्मानस्मभ्यं वा (**अन्तमः**) समीपस्थः (**उत**) (**त्राता**) रक्षकः (**शिवः**) मङ्गलकारी (**भवा**) अत्र **द्व्यचोऽतस्तिङ** इति दीर्घः। (**वरूथ्यः**) वरूथेषुत्तमेषु गृहेषु भवः (**वसुः**) वासयिता (**अग्निः**) पावकः (**वसुश्रवाः**) धनधान्ययुक्तः (**अच्छा**) (**नक्षि**) व्याप्नुहि (**द्युमत्तमम्**) (**रयिम्**) धनम् (**दाः**) देहि॥१॥ २॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! त्वं नोऽन्तमः शिवो वरूथ्यो वसुर्वसुश्रवा अग्निरिव शिव उत त्राता भवा य द्युमत्तमं रयिं त्वमच्छा नक्षि तमस्मभ्यं दाः॥१॥ २॥

**भावार्थः**-हे राजन्! यथा परमात्मा सर्वाभिव्याप्तः सर्वरक्षकः सर्वेभ्यो मङ्गलप्रदः सर्वपदार्थदाता सुखकारी वर्त्तते तथैव राज्ञा भवितव्यम्॥१॥ २॥

**पदार्थः**-हे (**अग्ने**) राजन्! (**त्वम्**) आप (**नः**) हम लोगों के हम लोगों को वा हम लोगों के लिये (**अन्तमः**) समीप में वर्त्तमान (**शिवः**) मङ्गलकारी (**वरूथ्यः**) उत्तम गृहों में उत्पन्न (**वसुः**) वसाने वाले (**वसुश्रवाः**) धन और धान्य से युक्त (**अग्निः**) अग्नि के सदृश मङ्गलकारी (**उत**) और (**त्राता**) रक्षक (**भवा**) हूजिये और जिस (**द्युमत्तमम्**) अत्यन्त प्रकाशयुक्त (**रयिम्**) धन को आप (**अच्छा**) उत्तम प्रकार (**नक्षि**) व्याप्त हूजिये और उसको हम लोगों के लिये (**दाः**) दीजिये॥१॥ २॥

**भावार्थः**-हे राजन्! जैसे परमात्मा सब में अभिव्याप्त सबका रक्षक और सबके लिये मङ्गलदाता, सब पदार्थों का दाता और सुखकारी है, वैसे ही राजा को होना चाहिये॥१॥ २॥

**अथाग्निपदवाच्यविद्वद्गुणानाह॥**

अब अग्निपदवाच्य विद्वान् के गुणों को अगले मन्त्र में कहते हैं॥



www.9009.co.in

**स नो॑ बोधि श्रुधी हव॑मुरु॒ष्या णो॑ अघाय॒तः स॑मस्मात्।**

**तं त्वा॑ शोचिष्ठ दीदिवः सु॒म्नाय॑ नू॒नमी॑महे॒ सखि॑भ्यः॥३॥४॥१६॥**

**सः। न॒ः। बो॒धि॒। श्रु॒धि। हव॑म्। उ॒रु॒ष्य। न॒ः। अ॒घ॒ऽय॒तः। स॒म॒स्मा॒त्। तम्। त्वा॒। शो॒चि॒ष्ठ॒। दी॒दि॒ऽव॒ः। सु॒म्नाय॑। नू॒नम्। ई॒म॒हे॒। सखि॑ऽभ्यः॥३॥**

**पदार्थः**-(**सः**) (**नः**) अस्माकम् (**बोधि**) बोधय (**श्रुधी**) शृणु (**हवम्**) पठितम् (**उरुष्या**) रक्ष। अत्र **संहितायामि**ति दीर्घः। (**नः**) अस्मान् (**अघायतः**) आत्मनोऽघमाचरतः (**समस्मात्**) सर्वस्मात् (**तम्**) (**त्वा**) त्वाम् (**शोचिष्ठ**) अतिशयेन शोधक (**दीदिवः**) सत्यप्रद्योतक (**सुम्नाय**) सुखाय (**नूनम्**) निश्चितम् (**ईमहे**) याचामहे (**सखिभ्यः**) मित्रेभ्यः॥३॥४॥

**अन्वयः**-हे शोचिष्ठ दीदिवोऽग्निरिव राजन्! स त्वं नो बोधि नो हवं श्रुधी समस्मादघायतो न उरुष्या तं त्वा सखिभ्यः सुम्नाय वयं नूनमीमहे॥३॥४॥

**भावार्थः**-सर्वैः प्रजाराजजनै राजानं प्रत्येवं वाच्यं भवान् सर्वेभ्योऽपराधेभ्यः स्वयम्पृथग्भूत्वाऽस्मान् रक्षयित्वा विद्याप्रचारं धार्मिकेभ्यो मित्रेभ्यः सुखं वर्धयित्वा दुष्टान् सततं दण्डयेदिति॥३॥४॥

अत्राग्नीश्वरविद्वद्गुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति चतुर्विंशतितमं सूक्तं षोडशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे (**शोचिष्ठ**) अत्यन्त शुद्ध करने और (**दीदिवः**) सत्य के जनाने वाले अग्नि के सदृश तेजस्विजन! (**सः**) वह आप (**नः**) हम लोगों को (**बोधि**) बोध दीजिये और (**नः**) हम लोगों के (**हवम्**) पढ़े हुए विषय को (**श्रुधी**) सुनिये (**समस्मात्**) सब (**अघायतः**) आत्मा से पाप के आचरण करते हुए हम लोगों की (**उरुष्या**) रक्षा कीजिये (**तम्**) उन (**त्वा**) आप को (**सखिभ्यः**) मित्रों से (**सुम्नाय**) सुख के लिये हम लोग (**नूनम्**) निश्चित (**ईमहे**) याचना करते हैं॥३॥४॥

**भावार्थः**-सब प्रजा और राजजनों को चाहिये कि राजा के प्रति यह कहें कि आप सब अपराधों से स्वयं पृथक् हो के और हम लोगों की रक्षा करके विद्या का प्रचार और धार्मिक मित्रों के लिये सुख की वृद्धि करके दुष्टों को निरन्तर दण्ड दीजिये॥३॥४॥

इस सूक्त में अग्निपदवाच्य ईश्वर अर्थात् राजा और विद्वान् के गुण-वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह चौबीसवां सूक्त और सोलहवां वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

**अथ नवर्चस्य पञ्चविंशतितमस्य सूक्तस्य वसूयव आत्रेया ऋषयः। अग्निर्देवता। १, ८ निचृदनुष्टुप् २, ५, ६, ९ अनुष्टुप्। ३, ७ विराडनुष्टुप् छन्दः। गान्धारः स्वरः। ४ भुरिगुष्णिक् छन्दः। ऋषभः स्वरः॥**

***अथाग्निविषयमाह॥***

अब नव ऋचा वाले पच्चीसवें सूक्त का आरम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में अग्निविषय को कहते हैं॥

**अच्छा वो अग्निमवसे देवं गासि स नो वसुः।**

**रासत्पुत्र ऋषूणामृतावा पर्षति द्विषः॥ १॥**

**अच्छ। वः। अग्निम्। अवसे। देवम्। गासि। सः। नः। वसुः। रासत्। पुत्रः। ऋषूणाम्। ऋतऽवा। पर्षति। द्विषः॥ १॥**

**पदार्थः**-(**अच्छा**) सम्यक्। अत्र **संहितायामि**ति दीर्घः। (**वः**) युष्माकम् (**अग्निम्**) पावकम् (**अवसे**) रक्षणाद्याय (**देवम्**) देदीप्यमानम् (**गासि**) प्रशंससि (**सः**) (**नः**) अस्मभ्यम् (**वसुः**) द्रव्यप्रदः (**रासत्**) ददाति (**पुत्रः**) अपत्यम् (**ऋषूणाम्**) मन्त्रार्थविदाम्। अत्र वर्णव्यत्ययेन इकारस्य स्थान उत्वम् (**ऋतावा**) सत्यस्य विभाजकः (**पर्षति**) पारयति (**द्विषः**) शत्रून्॥ १॥

**अन्वयः**-हे विद्वंस्त्वं यं देवमग्निं वोऽवसेऽच्छा गासि स वसुर्ऋषूणामृतावा पुत्रो द्विषः पर्षतीव नो रासत्॥ १॥

**भावार्थः**-यथा विदुषां सत्पुत्रो विद्वान् भूत्वा लोभादीन् दोषान्निवार्य्य पित्रादीन् सुखयति तथैवाऽग्निः संसाधितः सन् सर्वान् सुखयति॥ १॥

**पदार्थः**-हे विद्वन्! आप जिस (**देवम्**) प्रकाशमान (**अग्निम्**) अग्नि की (**वः**) आप लोगों के (**अवसे**) रक्षण आदि के लिये (**अच्छा**) उत्तम प्रकार (**गासि**) प्रशंसा करते हो (**सः**) वह (**वसुः**) द्रव्यदाता (**ऋषूणाम्**) वेदमन्त्रार्थ जानने वालों के (**ऋतावा**) सत्य का विभाग करने वाला (**पुत्रः**) सन्तानरूप (**द्विषः**) शत्रुओं के (**पर्षति**) पार जाता है अर्थात् उनको जीतता है, वैसे ही (**नः**) हम लोगों के लिये (**रासत्**) देता है अर्थात् विजय दिलाता है॥ १॥

**भावार्थः**-जैसे विद्वानों का श्रेष्ठ पुत्र विद्वान् होकर तथा लोभ आदि दोषों का त्याग करके पितृ आदिकों को सुख देता है, वैसे ही अग्नि उत्तम प्रकार सिद्धि किया गया सबको सुख देता है॥ १॥

**अथाग्निदृष्टान्तेन राजविषयमाह॥**

अब अग्निदृष्टान्त से राजविषय को कहते हैं॥

**स हि सत्यो यं पूर्वे चिद्देवासश्चिद्यमीधिरे।**



www.9009.co.in

**होतारं मन्द्रजिह्वमित्सुदीतिभिर्विभावसुम्॥ २॥**

**सः। हि। सत्यः। यम्। पूर्वे। चित्। देवासः। चित्। यम्। ईधिरे। होतारम्। मन्द्रजिह्वम्। इत्। सुदीतिऽभिः। विभावसुम्॥ २॥**

**पदार्थः**-(**सः**) (**हि**) (**सत्यः**) सत्सु साधुः (**यम्**) (**पूर्वे**) प्राचीनाः (**चित्**) अपि (**देवासः**) विद्वांसः (**चित्**) (**यम्**) (**ईधिरे**) प्रदीपयन्ति (**होतारम्**) दातारम् (**मन्द्रजिह्वम्**) मन्द्रा प्रशंसनीया जिह्वा यस्य तम् (**इत्**) एव (**सुदीतिभिः**) सुष्ठु दीप्तिभिस्सहितम् (**विभावसुम्**) प्रकाशयुक्तं वसु धनं यस्य तम्॥ २॥

**अन्वयः**-पूर्वे देवासो यं होतारं मन्द्रजिह्वं सुदीतिभिस्सह वर्त्तमानं चिद् विभावसुमग्निमिव वर्त्तमानं यं राजानं चिदिदीधिरे स हि सत्यो राज्यं कर्त्तुमर्हति॥ २॥

**भावार्थः**-यं राजानमाप्ताः सत्कुर्युः स एव सततं राज्यं रक्षितुं वर्धितुं योग्यः स्यात्॥ २॥

**पदार्थः**-(**पूर्वे**) प्राचीन (**देवासः**) विद्वान् जन (**यम्**) जिस (**होतारम्**) देने वाले (**मन्द्रजिह्वम्**) प्रशंसनीय जिह्वा से युक्त (**सुदीतिभिः**) उत्तम प्रकाशों के सहित वर्त्तमान को (**चित्**) और (**विभावसुम्**) प्रकाशित धन से युक्त अग्नि के सदृश वर्त्तमान (**यम्**) जिस राजा को (**चित्**) निश्चय से (**इत्**) ही (**ईधिरे**) प्रकाशित करते हैं (**सः, हि**) वही (**सत्यः**) सज्जनों में श्रेष्ठ पुरुष राज्य करने को योग्य है॥ २॥

**भावार्थः**-जिस राजा का यथार्थवक्ता जन सत्कार करें, वही निरन्तर राज्य की रक्षा और वृद्धि करने को योग्य हो॥ २॥

**अथाग्निसादृश्येन विद्वद्विषयमाह॥**

अब अग्निसादृश्य से विद्वद्विषय को कहते हैं॥

**स नो धीती वरिष्ठया श्रेष्ठया च सुमत्या।**

**अग्ने रायो दिदीहि नः सुवृक्तिभिर्वरेण्य॥ ३॥**

**स। नः। धीती। वरिष्ठया। श्रेष्ठया। च। सुऽमत्या। अग्ने। रायः। दिदीहि। नः। सुवृक्तिऽभिः। वरेण्य॥ ३॥**

**पदार्थः**-(**सः**) (**नः**) अस्माकम् (**धीती**) धीत्या धारणवत्या (**वरिष्ठया**) अतिशयेन स्वीकर्त्तव्यया (**श्रेष्ठया**) अत्युत्तमया (**च**) (**सुमत्या**) शोभनया प्रज्ञया (**अग्ने**) (**रायः**) धनानि (**दिदीहि**) देहि (**नः**) अस्मभ्यम् (**सुवृक्तिभिः**) सुष्ठु वृक्तिर्वर्जनं यासां क्रियाभिः (**वरेण्य**) स्वीकर्त्तुमर्ह॥ ३॥

**अन्वयः**-हे वरेण्याग्ने! स त्वं धीती वरिष्ठया श्रेष्ठया सुमत्या नो रायो दिदीहि सुवृक्तिभिश्च नः सततं वर्धय॥ ३॥

**भावार्थः**-य उत्तमां प्रज्ञां चेच्छन्ति त एव सर्वैः सत्कर्त्तव्याः सन्ति॥ ३॥

**पदार्थः**-हे (**वरेण्य**) स्वीकार करने योग्य (**अग्ने**) अग्नि के सदृश वर्त्तमान! (**सः**) वह आप (**धीती**) धारणावाली (**वरिष्ठया**) अत्यन्त स्वीकार करने योग्य (**श्रेष्ठया**) अति उत्तम (**सुमत्या**) सुन्दर बुद्धि



www.9009.co.in

से **(नः)** हम लोगों के लिये **(रायः)** धनों को **(दिदीहि)** दीजिये **(सुवृक्तिभिः)** उत्तम वर्जनवाली क्रियाओं से **(च)** भी **(नः)** हम लोगों की निरन्तर वृद्धि कीजिये॥३॥

**भावार्थः**-जो उत्तम बुद्धि की इच्छा करते वा उत्तम बुद्धि को अन्य जनों के लिये देते हैं, वे ही सब लोगों से सत्कार करने योग्य हैं॥३॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**अ॒ग्निर्दे॒वेषु॒ राजत्य॒ग्निर्मर्ते॑ष्वावि॒शन्।**

**अ॒ग्निर्नो॑ हव्य॒वाह॑नो॒ऽग्निं धी॒भिः स॑पर्यत॥४॥**

**अ॒ग्निः। दे॒वेषु॑। रा॒ज॒ति॒। अ॒ग्निः। मर्ते॑षु। आ॒ऽवि॒शन्। अ॒ग्निः। न॒ः। ह॒व्य॒ऽवाह॑नः। अ॒ग्निम्। धी॒भिः। स॒प॒र्य॒त॒**॥४॥

**पदार्थः**-**(अग्निः)** पावक इव वर्त्तमानो विद्वान् **(देवेषु)** विद्वत्सु पृथिव्यादिषु वा **(राजति)** प्रकाशते **(अग्निः)** विद्युत् **(मर्त्तेषु)** मरणधर्मेषु मनुष्यादिषु **(आविशन्)** आविष्टः सन् **(अग्निः)** सूर्य्यादिरूपः **(नः)** अस्मान् **(हव्यवाहनः)** यो हव्यानि वहति सः **(अग्निम्)** पावकम् **(धीभिः)** प्रज्ञाभिः **(सपर्य्यत)** सेवध्वम्॥४॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! योऽग्निर्देवेषु योऽग्निर्मर्त्तेषु यो हव्यवाहनोऽग्निर्न आविशन् राजति तमग्निं धीभिर्यूयं सपर्य्यत॥४॥

**भावार्थः**-हे विद्वांसो! यद्यनेकविधोऽग्निर्युष्माभिर्विज्ञायेत तर्हि किं किं सुखं न लभ्येत॥४॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो **(अग्निः)** अग्नि के सदृश वर्त्तमान तेजस्वी विद्वान् **(देवेषु)** विद्वानों वा पृथिवी आदिकों में और जो **(अग्निः)** बिजुलीरूप अग्नि **(मर्त्तेषु)** मरणधर्म्म वाले मनुष्य आदिकों में और जो **(हव्यवाहनः)** हवन करने योग्य पदार्थों को धारण करने वाला **(अग्निः)** सूर्य्यादिरूप अग्नि **(नः)** हम लोग में **(आविशन्)** प्रविष्ट हुआ **(राजति)** प्रकाशित होता है, उस **(अग्निम्)** अग्नि को **(धीभिः)** बुद्धियों से आप लोग **(सपर्य्यत)** सेवो अर्थात् कार्य्य में लाओ॥४॥

**भावार्थः**-हे विद्वानो! जो अनेक प्रकार का अग्नि आप लोगों से जाना जाये अर्थात् अनेक प्रकार के अग्नि का आप लोगों को परिज्ञान हो तो क्या-क्या सुख न पाया जाये॥४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**अ॒ग्निस्तु॒विश्र॑वस्तमं तु॒विब्र॑ह्माणमु॒त्तमम्।**

**अ॒तूर्तं॑ श्रावयत्प॑तिं पु॒त्रं द॑दाति दा॒शुषे॑॥५॥१७॥**



www.9009.co.in

**अ॒ग्निः। तु॒वि॒श्र॑वःऽतमम्। तु॒वि॒ऽब्र॒ह्माणम्। उ॒त्ऽत॒मम्। अ॒तू॒र्त॑म्। श्र॒व॒यत्ऽप॑तिम्। पु॒त्रम्। द॒दा॒ति॒। दा॒शुषे॑॥५॥**

**पदार्थः**-(**अग्निः**) विद्वान् (**तुविश्रवस्तमम्**) अतिशयेन बह्वन्नश्रवणयुक्तम् (**तुविब्रह्माणम्**) बहवो ब्रह्माणश्चतुर्वेदविदो विद्वांसो यस्य तम् (**उत्तमम्**) अतिशयेन श्रेष्ठम् (**अतूर्त्तम्**) अहिंसितम् (**श्रावयत्पतिम्**) श्रावयन्पतिर्यस्य तम् (**पुत्रम्**) (**ददाति**) (**दाशुषे**) दानशीलाय॥५॥

**अन्वयः**-यो अग्निरिव दाशुषे तुविश्रवस्तमं तुविब्रह्माणमुत्तममतूर्त्तं श्रावयत्पतिं पुत्रं ददाति स एव पूजनीयतमो भवति॥५॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यास्तेषामेव यूयं सत्कारं कुरुत ये सर्वान् विदुषो धार्मिकान् कुर्वन्ति॥५॥

**पदार्थः**-जो (**अग्निः**) अग्नि के सदृश तेजस्वी विद्वान् (**दाशुषे**) दानशील जन के लिये (**तुविश्रवस्तमम्**) अत्यन्त बहुत अन्न और श्रवण से युक्त और (**तुविब्रह्माणम्**) चार वेद के जानने वाले बहुत विद्वानों के युक्त (**उत्तमम्**) अत्यन्त श्रेष्ठ (**अतूर्त्तम्**) नहीं हिंसित और (**श्रावयत्पतिम्**) सुनाते हुए पालन करने वाले से युक्त (**पुत्रम्**) सन्तान को (**ददाति**) देता है, वही अत्यन्त आदर करने योग्य होता है॥५॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! उन लोगों का ही आप लोग सत्कार करो, जो सबको विद्वान् और धार्मिक करते हैं॥५॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**अ॒ग्निर्द॑दाति॒ सत्प॑तिं सा॒साह॒ यो यु॒धा नृभिः॑।**

**अ॒ग्निरत्यं॑ रघु॒ष्यदं॑ जेता॑र॒मप॑राजितम्॥६॥**

**अ॒ग्निः। द॒दा॒ति॒। सत्ऽप॑तिम्। स॒साह॑। यः। यु॒धा। नृऽभिः॑। अ॒ग्निः। अत्य॑म्। र॒घु॒ऽस्यद॑म्। जेता॑रम्। अप॑राऽजितम्॥६॥**

**पदार्थः**-(**अग्निः**) परमेश्वरो विद्वान् वा (**ददाति**) (**सत्पतिम्**) सतां पालकम् (**सासाह**) सहते। अत्र लडर्थे लिट्। **तुजादीनामि**त्यभ्यासदैर्घ्यम्। (**यः**) (**युधा**) युध्यमानेन सैन्येन (**नृभिः**) नायकैर्मनुष्यैः (**अग्निः**) पावकः (**अत्यम्**) अतति व्याप्नोत्यध्वानमत्यमश्वम् (**रघुष्यदम्**) लघुगमनम् (**जेतारम्**) अपराजितम्॥६॥

**अन्वयः**-हे मनुष्याः! सोऽग्निः सत्पतिं ददाति योऽग्निर्युधा नृभी रघुष्यदं जेतारमपराजितं राजानमत्यमिव सासाह॥६॥

**भावार्थः**-हे विद्वांसो! यथेश्वरो धर्मिष्ठेभ्यो धर्म्मात्मानं राजानं ददाति यथा सुसेना विद्वांसं शूरवीरं धर्म्मात्मानं सेनाध्यक्षं प्राप्य शत्रून् विजयते तथैव स सर्वैर्बहु मन्तव्यः॥६॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! वह **(अग्निः)** परमेश्वर वा विद्वान् **(सत्पतिम्)** श्रेष्ठों के पालन करने वाले को **(ददाति)** देता है **(यः)** जो **(अग्निः)** अग्नि **(युधा)** युद्ध करती हुई सेना और **(नृभिः)** नायक अर्थात् अग्रणी मनुष्यों से **(रघुष्यदम्)** लघुगमनवान् **(जेतारम्)** जीतने और **(अपराजितम्)** नहीं हारने वाले राजा को **(अत्यम्)** मार्ग्ग को व्याप्त होते घोड़े को जैसे वैसे **(सासाह)** सहता है॥६॥

**भावार्थः**-हे विद्वानो! जैसे ईश्वर धर्मिष्ठ जनों के लिये धर्म्मात्मा राजा को देता है और जैसे उत्तम सेना विद्वान् शूरवीर और धर्म्मात्मा सेनाध्यक्ष को प्राप्त होकर शत्रुओं को जीतती है, वैसे ही वह सब लोगों को आदर करने योग्य है॥६॥

**अथाग्निपदवाच्यराजदृष्टान्तेन विद्वद्विषयमाह॥**

अब अग्निपदवाच्य राजदृष्टान्त से विद्वद्विषय को कहते हैं॥

**यद्वाहिष्ठं तदग्नये बृहदर्च विभावसो।**

**महिषीव त्वद्रयिस्त्वद्वाजा उदीरते॥७॥**

**यत्। वाहिष्ठम्। तत्। अग्नये। बृहत्। अर्च। विभावसो इति विभाऽवसो। महिषीऽइव। त्वत्। रयिः। त्वत्। वाजाः। उत्। ईरते॥७॥**

**पदार्थः**-**(यत्)** यम् **(वाहिष्ठम्)** अतिशयेन वोढारम् **(तत्)** तम् **(अग्नये)** राज्ञे **(बृहत्)** **(अर्च)** सत्कुरु **(विभावसो)** स्वप्रकाश **(महिषीव)** ज्येष्ठा राज्ञीव **(त्वत्)** **(रयिः)** धनम् **(त्वत्)** **(वाजाः)** अन्नाद्याः **(उत्)** **(ईरते)** उत्कृष्टतया जायन्ते॥७॥

**अन्वयः**-हे विभावसो! यद्यं वाहिष्ठमग्नये बृहदर्च तत्तम्महिषीव सेवस्व यस्त्वद्रयिस्त्वद् वाजा उदीरते तान् वयं लभेमहि॥७॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। यथा पतिव्रता राज्ञी स्वपतिं सततं सत्करोति तस्माज्जातं पुष्कलसुखं लभते तथैव मनुष्या विदुषः संसेव्य तेभ्यो जातां प्रज्ञां प्राप्य सततं सुखयन्तु॥७॥

**पदार्थः**-हे **(विभावसो)** स्वयं प्रकाशित! **(यत्)** जिस **(वाहिष्ठम्)** अतिशय प्राप्त करने वाले का **(अग्नये)** राजा के लिये **(बृहत्)** बड़ा **(अर्च)** सत्कार करो **(तत्)** उसकी **(महिषीव)** बड़ी अर्थात् पटरानी के सदृश सेवा करो और जो **(त्वत्)** आपसे **(रयिः)** धन और **(त्वत्)** आपसे **(वाजाः)** अन्न आदि **(उत्, ईरते)** उत्तमता से उत्पन्न होते हैं, उनको हम लोग प्राप्त होवें॥७॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जैसे पतिव्रता रानी अपने पति का निरन्तर सत्कार करती और उससे उत्पन्न हुए अत्यन्त सुख को प्राप्त होती है, वैसे ही मनुष्य विद्वानों का आदर करके उनसे उत्पन्न हुई अर्थात् उनके सम्बन्ध से प्रकट हुई बुद्धि को प्राप्त होकर निरन्तर सुखी हो॥७॥

**अथ मेघदृष्टान्तेन विद्वद्विषयमाह॥**

अब मेघदृष्टान्त से विद्वद्विषय को कहते हैं॥



www.9009.co.in

**तव॑ द्युमन्तो॑ अ॒र्चयो॒ ग्रावे॒वोच्यते बृ॒हत्।**

**उ॒तो ते॑ तन्य॒तुर्य॑था स्वा॒नो अ॑र्त॒ त्मना॑ दि॒वः॥८॥**

**तव॑। द्यु॒ऽमन्तः॑। अ॒र्चयः॑। ग्रावा॑ऽइव। उ॒च्य॒ते॒। बृ॒हत्। उ॒तो इति॑। ते॒। त॒न्य॒तुः। य॒था॒। स्वा॒नः। अ॒र्त॒। त्मना॑। दि॒वः॥८॥**

**पदार्थः**-(**तव**) (**द्युमन्तः**) बहुप्रकाशवन्तः (**अर्चयः**) किरणाः (**ग्रावेव**) मेघ इव (**उच्यते**) (**बृहत्**) महत्सत्यम् (**उतो**) अपि (**ते**) तव (**तन्यतुः**) विद्युत् (**यथा**) (**स्वानः**) शब्दः (**अर्त्त**) प्राप्नुत (**त्मना**) आत्मना (**दिवः**) कामयमानान् पदार्थान्॥८॥

**अन्वयः**-हे विद्वँस्तव द्युमन्तो येऽर्चयः सन्ति ताभिर्यद् ग्रावेव बृहदुच्यते उतो ते यथा तन्यतुस्तथा स्वानो वर्त्तते ततस्त्मना दिवो यूयं सर्वेऽर्त्त॥८॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। ये मेघवद् गम्भीरशब्देन गूढार्थानुपविशन्ति विद्युद्वत्पुरुषार्थयन्ति ते सर्वाणि सुखानि लभन्ते॥८॥

**पदार्थः**-हे विद्वन्! (**तव**) आपके (**द्युमन्तः**) बहुत प्रकाश वाली (**अर्चयः**) किरणें हैं उनसे जो (**ग्रावेव**) मेघ के सदृश (**बृहत्**) बहुत सत्य (**उच्यते**) कहा जाता (**उतो**) और (**ते**) आपका (**यथा**) जैसे (**तन्यतुः**) बिजुली वैसे (**स्वानः**) शब्द वर्त्तमान है, इस कारण (**त्मना**) आत्मा से (**दिवः**) प्रकाशयुक्त पदार्थों को तुम सब लोग (**अर्त्त**) प्राप्त होओ॥८॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जो मेघ के सदृश गम्भीर शब्द से गूढ़ अर्थों के उपदेश देते और बिजुली के सदृश पुरुषार्थ करते हैं, वे सम्पूर्ण सुखों को प्राप्त होते हैं॥८॥

**पुनर्विद्वद्विषयमाह॥**

फिर विद्वद्विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**ए॒वाँ अ॒ग्निं व॑सू॒यवः॑ सहसा॒नं व॑वन्दिम।**

**स नो॒ विश्वा॒ अति॒ द्विषः॒ पर्ष॑न्ना॒वेव॑ सु॒क्रतुः॑॥९॥१८॥**

**ए॒व। अ॒ग्निम्। व॒सु॒ऽयवः॑। स॒ह॒सा॒नम्। व॒व॒न्दि॒म॒। सः। नः॒। विश्वाः॑। अति॑। द्विषः॑। पर्ष॑त्। ना॒वाऽइ॑व। सु॒ऽक्रतुः॑॥९॥**

**पदार्थः**-(**एवा**) निश्चये (**अग्निम्**) विद्युतमिव विद्वांसम् (**वसूयवः**) आत्मनो वस्विच्छवः (**सहसानम्**) यः सर्वं सहते तम् (**ववन्दिम**) प्रशंसेम (**सः**) (**नः**) अस्माकम् (**विश्वाः**) समग्राः (**अति**) (**द्विषः**) द्वेषयुक्ताः क्रियाः (**पर्षत्**) पारयेत् (**नावेव**) यथा नौकया समुद्रम् (**सुक्रतुः**) सुष्ठुप्रज्ञः सुकर्मा वा॥९॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे विद्वन्! वसूयवो वयमग्निमिव सहसानं त्वां ववन्दिम स एवा सुक्रतुर्भवान्नावेव नो विश्वा द्विषोऽति पर्षत्॥९॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। यथा महत्या नौकया समुद्रादिपारं सुखेन गच्छन्ति तथैव विद्वत्सङ्गेन सर्वेभ्यो दोषेभ्यस्सहजतया दूरं प्राप्नुवन्तीति॥९॥

अत्राग्निविद्वद्गुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति पञ्चविंशतितमं सूक्तमष्टादशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे विद्वन्! **(वसूयवः)** अपने धन की इच्छा करते हुए हम लोग **(अग्निम्)** बिजुली के सदृश तेजस्वी विद्वान् और **(सहसानम्)** सबको सहने वाले आपकी **(ववन्दिम)** प्रशंसा करें **(सः, एवा)** वही **(सुक्रतुः)** उत्तम बुद्धि वा उत्तम कर्मों से युक्त आप **(नावेव)** जैसे नौका से समुद्र के वैसे **(न)** हम लोगों की **(विश्वाः)** सम्पूर्ण **(द्विषः)** द्वेषयुक्त क्रियाओं के **(अति, पर्षत्)** पार करें॥९॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जैसे बड़ी नौका से समुद्र आदि के पार सुखपूर्वक जाते हैं, वैसे ही विद्वानों के संग से सब दोषों से साधारणापन से दूर को प्राप्त होते हैं॥९॥

इस सूक्त में अग्नि और विद्वानों के गुणों का वर्णन होने से इस सूक्त के अर्थ की पिछले सूक्त के अर्थ के साथ संगति जाननी चाहिये॥

**यह पच्चीसवां सूक्त और अठारहवां वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

**अथ नवर्चस्य षड्विंशतितमस्य सूक्तस्य वसूयव आत्रेया ऋषयः। अग्निर्देवाता। १, ४, ९ गायत्री। २, ३, ५, ६, ८ निचृद्गायत्री। ७ विराड्गायत्री छन्दः। षड्जः स्वरः॥**

*अथाग्निपदवाच्यविद्वद्गुणानाह॥*

अब नव ऋचा वाले छब्बीसवें सूक्त का आरम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में अग्निपदवाच्य विद्वान् के गुणों को कहते हैं॥

**अग्ने पावक रोचिषा मन्द्रया देव जिह्वया। आ देवान् वक्षि यक्षि च॥ १॥**

**अग्ने। पावक। रोचिषा। मन्द्रया। देव। जिह्वया। आ। देवान्। वक्षि। यक्षि। च॥ १॥**

**पदार्थः**-**(अग्ने)** विद्वन् **(पावक)** पवित्रशुद्धिकर्त्तः **(रोचिषा)** अतिरुचियुक्तया **(मन्द्रया)** विज्ञानानन्दप्रदया **(देव)** विद्याप्रदातः **(जिह्वया)** वाण्या **(आ)** समन्तात् **(देवान्)** विदुषो दिव्यगुणान् पदार्थान् वा **(वक्षि)** प्राप्नोषि प्रापयसि वा **(यक्षि)** सत्करोषि सङ्गच्छसे **(च)**॥ १॥

**अन्वयः**-हे पावक देवाग्ने! यतस्त्वं रोचिषा मन्द्रया जिह्वयाऽत्र देवाना वक्षि यक्षि च तस्मादर्चनीयोऽसि॥ १॥

**भावार्थः**-ये प्रीत्या सत्योपदेशान् कृत्वा विदुषो दिव्यान् गुणांश्च प्राप्य प्रापयन्ति त एव पूजनीया भवन्ति॥ १॥

**पदार्थः**-हे **(पावक)** पवित्र और शुद्धि करने तथा **(देव)** विद्या के देने वाले **(अग्ने)** विद्वन्! जिससे आप **(रोचिषा)** अति प्रीति से युक्त **(मन्द्रया)** विज्ञान और आनन्द देने वाली **(जिह्वया)** वाणी से इस संसार में **(देवान्)** विद्वानों और श्रेष्ठ गुणों वा पदार्थों को **(आ, वक्षि)** सब ओर से प्राप्त होते वा प्राप्त कराते हो तथा **(यक्षि)** सत्कार करते और मिलते **(च)** भी हो, इससे सत्कार करने योग्य हो॥ १॥

**भावार्थः**-जो प्रीति से सत्य उपदेशों को कर और विद्वान् तथा श्रेष्ठ गुणों को प्राप्त होकर अन्यों को प्राप्त कराते हैं, वे ही आदर करने योग्य होते हैं॥ १॥

**अथाग्निगुणानाह॥**

अब अग्निगुणों को कहते हैं॥

**तं त्वा घृतस्नवीमहे चित्रभानो स्वर्दृशम्। देवाँ आ वीतये वह॥ २॥**

**तम्। त्वा। घृतस्नो इति घृतऽस्नो। ईमहे। चित्रभानो इति चित्रऽभानो। स्वःऽदृशम्। देवान्। आ। वीतये। वह॥ २॥**

**पदार्थः**-**(तम्)** **(त्वा)** त्वाम् **(घृतस्नो)** यो घृतं स्नाति शुन्धति तत्सम्बुद्धौ **(ईमहे)** याचामहे **(चित्रभानो)** अद्भुतदीप्ते **(स्वर्दृशम्)** यः स्वरादित्येन दृश्यते तम् **(देवान्)** दिव्यगुणान् विदुषो वा **(आ)** **(वीतये)** प्राप्तये **(वह)**॥ २॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**:-हे घृतस्नो चित्रभानो विद्वन्! यथा घृतशोधको विचित्रप्रकाशोऽग्निर्वीतये स्वर्दृशं त्वाऽऽवहति तं वयमीमहे तथा त्वं देवाना वह॥२॥

**भावार्थः**:-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यदि बहूत्तमगुणमग्निं मनुष्या विजानीयुस्तर्हि पुष्कलं सुखं लभन्ताम्॥२॥

**पदार्थः**:-हे **(घृतस्नो)** घृत को शुद्ध करने वाले **(चित्रभानो)** अद्भुतप्रकाशयुक्त विद्वन्! जैसे घृत को स्वच्छ करने वाला और अद्भुतप्रकाश से युक्त अग्नि **(वीतये)** प्राप्ति के लिये **(स्वर्दृशम्)** जो सूर्य्य से देखे गये उन **(त्वा)** आपको धारण करता है **(तम्)** उसको हम लोग **(ईमहे)** याचते हैं, वैसे आप **(देवान्)** दिव्य गुण वा विद्वानों को **(आ, वह)** सब ओर से प्राप्त कीजिये॥२॥

**भावार्थः**:-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो बहुत उत्तम गुणयुक्त अग्नि को मनुष्य विशेष करके जानें तो बहुत सुख को प्राप्त हों॥२॥

**पुनरग्निसादृश्येन विद्वद्गुणानाह॥**

फिर अग्नि के सादृश्य से विद्वान् के गुणों को कहते हैं॥

**वी॒तिहो॑त्रं त्वा कवे द्यु॒मन्तं॒ समि॑धीमहि। अग्ने॑ बृ॒हन्त॑मध्व॒रे॥३॥**

**वी॒तिऽहो॑त्रम्। त्वा॒। क॒वे॒। द्यु॒ऽमन्त॑म्। सम्। इ॒धी॒म॒हि॒। अग्ने॑। बृ॒हन्त॑म्। अ॒ध्व॒रे॥३॥**

**पदार्थः**:-**(वीतिहोत्रम्)** वीतेर्व्याप्तेर्होत्रं ग्रहणं यस्मात् तम् **(त्वा)** **(कवे)** विद्वन् **(द्युमन्तम्)** प्रकाशवन्तम् **(सम्)** **(इधीमहि)** सम्यक् प्रकाशयेम **(अग्ने)** पावकवद्वर्त्तमान **(बृहन्तम्)** महान्तम् **(अध्वरे)** अहिंसायज्ञे॥३॥

**अन्वयः**:-हे कवे अग्ने! वयमध्वरे [वीतिहोत्रं] द्युमन्तमग्निमिव यं बृहन्तं त्वा समिधीमहि स त्वमस्माञ्छुद्धविद्यया प्रकाशय॥३॥

**भावार्थः**:-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। मनुष्यैः शिल्पविद्यासिद्धयेऽग्निसम्प्रयोगोऽवश्यं कार्य्यः॥३॥

**पदार्थः**:-हे **(कवे)** विद्वन् **(अग्ने)** अग्नि के सदृश वर्त्तमान! हम लोग **(अध्वरे)** अहिंसारूप यज्ञ में **(वीतिहोत्रम्)** व्याप्ति का ग्रहण जिससे उस **(द्युमन्तम्)** प्रकाश वाले अग्नि के सदृश जिन **(बृहन्तम्)** महान् **(त्वा)** आपको **(सम्, इधीमहि)** उत्तम प्रकार प्रकाशित करें, वह आप हम लागों को शुद्ध विद्या से प्रकाशित करें॥३॥

**भावार्थः**:-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। मनुष्यों को चाहिये कि शिल्पविद्या की सिद्धि के लिये अग्नि का सम्प्रयोग अवश्य करें॥३॥

**पुनर्विद्वद्विषयमाह॥**

फिर विद्वद्विषय को कहते हैं॥



www.9009.co.in

**अग्ने विश्वेभिरा गहि देवेभिर्हव्यदातये। होतारं त्वा वृणीमहे॥४॥**

**अग्ने। विश्वेभिः। आ। गहि। देवेभिः। हव्यऽदातये। होतारम्। त्वा। वृणीमहे॥४॥**

**पदार्थः-(अग्ने)** विद्वन् **(विश्वेभिः)** समग्रैः **(आ) (गहि)** आगच्छ **(देवेभिः)** विद्वद्भिः **(हव्यदातये)** दातव्यदानाय **(होतारम्) (त्वा) (वृणीमहे)**॥४॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! यं होतारं त्वा वयं वृणीमहे स त्वं हव्यदातये विश्वेभिर्देवेभिः सहा गहि॥४॥

**भावार्थः**-मनुष्यैर्विदुषां स्वीकारं कृत्वा त आह्वातव्या, विद्वांसश्च विद्वद्भिः सहागत्य सततं सत्यमुपदिशन्तु॥४॥

**पदार्थः**-हे **(अग्ने)** विद्वन्! जिन **(होतारम्)** देने वाले **(त्वा)** आपका हम लोग **(वृणीमहे)** स्वीकार करते हैं, वह आप **(हव्यदातये)** देने योग्य दान के लिये **(विश्वेभिः)** सम्पूर्ण **(देवेभिः)** विद्वानों के साथ **(आ, गहि)** प्राप्त हूजिये॥४॥

**भावार्थः**-मनुष्यों को चाहिये कि विद्वानों का सत्कार कर उन्हें बुलावें और विद्वान् जन भी विद्वानों के साथ प्राप्त होकर निरन्तर सत्य का उपदेश करें॥४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**यजमानाय सुन्वत आग्ने सुवीर्यं वह। देवैरा सत्सि बर्हिषि॥५॥१९॥**

**यजमानाय। सुन्वते। आ। अग्ने। सुऽवीर्यम्। वह। देवैः। आ। सत्सि। बर्हिषि॥५॥**

**पदार्थः-(यजमानाय)** दात्रे **(सुन्वते)** यज्ञं निष्पादयते **(आ) (अग्ने)** विद्वन् **(सुवीर्यम्) (वह)** प्राप्नुहि **(देवैः)** विद्वद्भिः **(आ) (सत्सि)** सभायाम् **(बर्हिषि)** अत्युत्तमायाम्॥५॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! त्वं देवैः सह बर्हिषि सत्सि सुन्वते यजमानाय सुवीर्यमा वह यज्ञमा यज॥५॥

**भावार्थः**-हे मनुष्याः! पालकाय जनाय यूयं सुखं सदैव दत्त सर्वेषां सभया सर्वान् व्यवहारान् निश्चिनुत॥५॥

**पदार्थः**-हे **(अग्ने)** विद्वन्! आप **(देवैः)** विद्वानों के साथ **(बर्हिषि)** अति उत्तम **(सत्सि)** सभा में **(सुन्वते)** यज्ञ करते हुए **(यजमानाय)** दाता जन के लिये **(सुवीर्यम्)** उत्तम पराक्रम को **(आ, वह)** प्राप्त हूजिये और यज्ञ को **(आ)** अच्छे प्रकार करिये॥५॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! पालन करने वाले जन के लिये आप लोग सुख सदा ही दीजिये और सब [प्रजा] की सभा से सब व्यवहारों का निश्चय कीजिये॥५॥

**पुनरग्निसादृश्येन विद्वद्विषयमाह॥**

फिर अग्निसादृश्य से विद्वद्विषय को कहते हैं॥



www.9009.co.in

**स॒मि॒धा॒नः स॑हस्र॒जि॒दग्ने॒ धर्मा॑णि पुष्यसि। दे॒वाना॑ दू॒त उ॒क्थ्यः॑॥६॥**

**स॒म्ऽइ॒धा॒नः। स॒ह॒स्र॒ऽजि॒त्। अग्ने॑। धर्मा॑णि। पु॒ष्य॒सि॒। दे॒वाना॑म्। दू॒तः। उ॒क्थ्यः॑॥६॥**

**पदार्थः**-(**समिधानः**) देदीप्यमानः (**सहस्रजित्**) असङ्ख्यानां विजेता (**अग्ने**) अग्निरिव दुष्टदाहक (**धर्म्माणि**) धर्म्याणि कर्माणि (**पुष्यसि**) (**देवानाम्**) (**दूतः**) यो दुनोति समाचारं दूरं दूराद्वा गमयत्यागमयति (**उक्थ्यः**) प्रशंसनीयः॥६॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! यथा समिधानः पावको देवानां दूतोऽस्ति तथा सहस्रजिदुक्थ्यो देवानां समिधानो दूतः सन् यतो धर्म्माणि पुष्यसि तस्मात् सत्कर्तव्योऽसि॥६॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। मनुष्या विद्यया विज्ञाय कार्यसिद्धये यमग्निं सम्प्रयुञ्जते सोऽग्निर्मनुष्यवत् कार्यसिद्धिं करोति॥६॥

**पदार्थः**-हे (**अग्ने**) अग्नि के सदृश दुष्टों के जलाने वाले! जैसे (**समिधानः**) निरन्तर प्रकाशित हुआ अग्नि (**देवानाम्**) विद्वानों के (**दूतः**) समाचार को दूर व्यवहरता वा दूर पहुँचाता और ले आता है, वैसे (**सहस्रजित्**) असङ्ख्यों के जीतने वाले (**उक्थ्यः**) प्रशंसा करने योग्य विद्वानों का निरन्तर प्रकाश करने, समाचार को दूर व्यवहरने वा दूर पहुँचाने और लाने वाले होते हुए जिससे (**धर्म्माणि**) धर्म्मसम्बन्धी कर्म्मों को (**पुष्यसि**) पुष्ट करते हो, इससे सत्कार करने योग्य हो॥६॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। मनुष्य विद्या से अग्नि के गुणों को जान के कार्य्य की सिद्धि के लिये जिस अग्नि का सम्प्रयोग करते हैं, वह अग्नि मनुष्य के तुल्य कार्य्य की सिद्धि को करता है॥६॥

**अथाग्निधारणविषयमाह॥**

अब अग्निधारणविषय को कहते हैं॥

**न्य१॒ग्निं जा॒तवे॑दसं होत्र॒वाहं॒ यवि॑ष्ठ्यम्। दधा॑ता दे॒वमृ॒त्विज॑म्॥७॥**

**नि। अ॒ग्निम्। जा॒तऽवे॑दसम्। हो॒त्र॒ऽवाह॑म्। यवि॑ष्ठ्यम्। दधा॑त। दे॒वम्। ऋ॒त्विज॑म्॥७॥**

**पदार्थः**-(**नि**) (**अग्निम्**) पावकम् (**जातवेदसम्**) जातेषु विद्यमानम् (**होत्रवाहम्**) यो होत्राणि हुतानि द्रव्याणि वहति (**यविष्ठ्यम्**) योऽतिशयितेषु युवसु भवम् (**दधाता**) धरत। अत्र **संहितायामिति** दीर्घः। (**देवम्**) दिव्यगुणम् (**ऋत्विजम्**) यज्ञसाधकम्॥७॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यूयं यविष्ठ्यमृत्विजं देवमिव जातवेदसं होत्रवाहमग्निं नि दधाता॥७॥

**भावार्थः**-यथा शिल्पिनः स्वकार्य्यं साध्नुवन्ति तथैवाग्न्यादयोऽपि कार्य्यसिद्धिं कुर्वन्ति॥७॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! आप लोग (**यविष्ठ्यम्**) अतिशयित युवा जनों में प्रसिद्ध हुए (**ऋत्विजम्**) यज्ञसाधक और (**देवम्**) दिव्य **[गुण]** वाले के सदृश (**जातवेदसम्**) उत्पन्न हुए पदार्थों में विद्यमान



www.9009.co.in

**(होत्रवाहम्)** हवन की हुई वस्तुओं को धारण करने वाले **(अग्निम्)** अग्नि को **(नि, दधाता)** निरन्तर धारण करो॥७॥

**भावार्थः**-जैसे शिल्पविद्या के जानने वाले जन अपने कार्य्य को सिद्ध करते हैं, वैसे ही अग्नि आदि भी कार्य की सिद्धि करते हैं॥७॥

**पुनर्विद्वद्विषयमाह॥**

फिर विद्वद्विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**प्र यज्ञ एत्वानुषगद्या देवव्यचस्तमः। स्तृणीत बर्हिरासदे॥८॥**

**प्र। यज्ञः। एतु। आनुषक्। अद्य। देवव्यचःऽतमः। स्तृणीत। बर्हिः। आऽसदे॥८॥**

**पदार्थः**-**(प्र)** **(यज्ञः)** सत्यः सङ्गतो व्यवहारः **(एतु)** प्राप्नोतु **(आनुषक्)** आनुकूल्येन **(अद्या)** अत्र **संहितायामिति** दीर्घः। **(देवव्यचस्तमः)** यो देवेषु दिव्येषु पदार्थेष्वतिशयेन व्याप्तः **(स्तृणीत)** आच्छादयत **(बर्हिः)** अन्तरिक्षम् **(आसदे)** समन्तात् स्थित्यर्थं गमनार्थं वा॥८॥

**अन्वयः**-हे विद्वांसो! यो देवव्यचस्तमो यज्ञोऽद्याऽऽसदे बर्हिरानुषगेतु तं यूयं प्र स्तृणीत॥८॥

**भावार्थः**-ये मनुष्याः सत्सङ्गतिं कृत्वा शिल्पोन्नतिं विदधते ते सर्वहितैषिणो भवन्ति॥८॥

**पदार्थः**-हे विद्वानो! जो **(देवव्यचस्तमः)** उत्तम पदार्थों में अतिशय करके व्याप्त **(यज्ञः)** सत्य और संगत व्यवहार **(अद्या)** आज **(आसदे)** सब प्रकार से ठहरने वा जाने के अर्थ **(बर्हिः)** अन्तरिक्ष को **(आनुषक्)** अनुकूलता से **(एतु)** प्राप्त हो, उसको आप लोग **(प्र, स्तृणीत)** अच्छे प्रकार आच्छादित करो अर्थात् सुरक्षित रक्खो॥८॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य श्रेष्ठों की संगति करके शिल्पविद्या की उन्नति करते हैं, वे सबके हितैषी होते हैं॥८॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**एदं मरुतो अश्विना मित्रः सीदन्तु वरुणः। देवासः सर्वया विशा॥९॥२०॥**

**आ। इदम्। मरुतः। अश्विना। मित्रः। सीदन्तु। वरुणः। देवासः। सर्वया। विशा॥९॥**

**पदार्थः**-**(आ)** समन्तात् **(इदम्)** आसनम् **(मरुतः)** मनुष्याः **(अश्विना)** अध्यापकोपदेशकौ **(मित्रः)** सखा **(सीदन्तु)** आसताम् **(वरुणः)** सर्वोत्तमः **(देवासः)** विद्वांसः **(सर्वया)** **(विशा)** प्रजया॥९॥

**अन्वयः**-मरुतो मित्रो वरुणोऽश्विना देवासः सर्वया विशेदमा सीदन्तु॥९॥

**भावार्थः**-राजा सभ्या जनाश्च न्यायासनमधिष्ठायान्यायं पक्षपातं विहाय न्यायं कृत्वा प्रजानां प्रिया भवन्त्विति॥९॥



www.9009.co.in

अत्राग्निविद्वद्गुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति षड्विंशतितमं सूक्तं विंशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः-(मरुतः)** मनुष्य **(मित्रः)** मित्र **(वरुण)** सब में उत्तम **(अश्विना)** अध्यापक और उपदेशक तथा **(देवासः)** विद्वान् जन **(सर्वया)** सम्पूर्ण **(विशा)** प्रजा से **(इदम्)** इस आसन पर **(आ, सीदन्तु)** विराजें॥९॥

**भावार्थः**-राजा और श्रेष्ठ जन न्यायासन पर विराज के अन्याय और पक्षपात का त्याग और न्याय करके प्रजाओं के प्रिय होवें॥९॥

इस सूक्त में अग्नि और विद्वान् के गुण-वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह छब्बीसवां सूक्त और बीसवां वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

**अथ षड्चस्य सप्तविंशतितमस्य सूक्तस्य त्र्यरुणस्त्रैवृष्णस्त्रसदस्युश्च पौरुकुत्स्य अश्वमेधश्च भारतोऽत्रिर्वा ऋषयः। १-५ अग्निः। ६ इन्द्राग्नी देवते। १, ३ निचृत्त्रिष्टुप्। २ विराट् त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः। ४ निचृदनुष्टुप् छन्दः। गान्धारः स्वरः। ५, ६ भुरिगुष्णिक् छन्दः। ऋषभः स्वरः॥**

***अथाग्निसादृश्येन विद्वद्गुणानाह॥***

अब छः ऋचा वाले सत्ताईसवें सूक्त का आरम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में अग्निसादृश्य से विद्वान् के गुणों को कहते हैं॥

**अन॑स्वन्ता॒ सत्प॑तिर्मामहे मे॒ गावा॒ चेति॑ष्ठो॒ असु॑रो म॒घोनः॑।**

**त्रै॒वृ॒ष्णो अ॑ग्ने द॒शभिः॑ स॒हस्रै॒र्वैश्वा॑नर॒ त्र्य॑रुणश्चिकेत॥ १॥**

**अन॑स्वन्ता। सत्ऽप॑तिः। म॒म॒हे॒। मे॒। गावा॑। चेति॑ष्ठः। असु॑रः। म॒घोनः॑। त्रै॒वृ॒ष्णः। अ॒ग्ने॒। द॒शऽभिः॑। स॒हस्रैः॑। वैश्वा॑नर। त्रिऽअ॑रुणः। चि॒के॒त॒॥ १॥**

**पदार्थः-(अनस्वन्ता)** उत्तमशकटादियुक्तः **(सत्पतिः)** सतां पालकः **(मामहे)** सत्कुर्याम् **(मे)** **(गावा)** **(चेतिष्ठः)** अतिशयेन चेतिता ज्ञापकः **(असुरः)** असुषु प्राणेषु रममाणः **(मघोनः)** परमधनयुक्तान् **(त्रैवृष्णः)** यस्त्रिषु वर्षति स एव **(अग्ने)** **(दशभिः)** **(सहस्रैः)** **(वैश्वानर)** विश्वेषु राजमान **(त्र्यरुणः)** त्रयोऽरुणा गुणा यस्य सः **(चिकेत)** जानीयात्॥ १॥

**अन्वयः**-हे वैश्वानराग्ने! सत्पतिर्दशभिः सहस्रैरनस्वन्ता गावा सह चेतिष्ठोऽसुरस्त्रैवृष्णस्त्र्यरुणः संस्त्वं मे मघोनश्चिकेत तमहं मामहे॥ १॥

**भावार्थः**-ये मनुष्याः शकटादियानचालनकुशला अनेकैः सहस्रैः पुरुषैः सह सन्धिं कुर्वन्ति ते धनधान्यपशुयुक्ता जायन्ते॥ १॥

**पदार्थः**-हे **(वैश्वानर)** सब में प्रकाशमान **(अग्ने)** अग्नि के सदृश! **(सत्पतिः)** श्रेष्ठ जनों के पालने वाले **(दशभिः)** दश **(सहस्रैः)** सहस्रों के साथ **(अनस्वन्ता)** उत्तम शकट आदि वाहनों से युक्त **(गावा)** गौ अर्थात् वाणी के साथ **(चेतिष्ठः)** अत्यन्तता से बोध देने वाले **(असुरः)** प्राणों में रमते हुए **(त्रैवृष्णः)** जो तीन में वर्षते वही **(त्र्यरुणः)** तीन गुणों से युक्त हुए आप **(मे)** मेरे **(मघोनः)** अत्यन्त धनयुक्त पुरुषों को **(चिकेत)** जानें, उनका मैं **(मामहे)** सत्कार करूं॥ १॥

**भावार्थः**-जो पुरुष शकट आदि वाहनों के चलाने में चतुर और अनेक सहस्रों पुरुषों के साथ मेल करते हैं, वे धन-धान्य और पशुओं से युक्त होते हैं॥ १॥

**पुनर्विद्वद्गुणानाह॥**



www.9009.co.in

फिर विद्वान् के गुणों को कहते हैं॥

**यो मे॑ श॒ता च॑ विं॒श॒तिं च॒ गोनां॒ हरी॑ च यु॒क्ता सु॒धुरा॒ ददा॑ति।**

**वैश्वा॑नर॒ सुष्टु॑तो वावृधा॒नोऽग्ने॒ यच्छ॒ त्र्य॑रुणाय॒ शर्म॑॥२॥**

**यः। मे॒। श॒ता। च॒। विं॒श॒तिम्। च॒। गोना॑म्। हरी॒ इति॑। च॒। यु॒क्ता। सु॒ऽधुरा॑। ददा॑ति। वैश्वा॑नर। सु॒ऽस्तु॑तः। व॒वृ॒धा॒नः। अग्ने॑। यच्छ॑। त्रिऽअ॑रुणाय। शर्म॑॥२॥**

**पदार्थः**-(**यः**) (**मे**) (**शता**) शतानि (**च**) (**विंशतिम्**) (**च**) (**गोनाम्**) (**हरी**) हरणशीलावश्वौ (**च**) (**युक्ता**) युक्तौ (**सुधुरा**) शोभना धूर्ययोस्तौ (**ददाति**) (**वैश्वानर**) विश्वस्मिन् राजमान (**सुष्टुतः**) शोभनप्रशंसितः (**वावृधानः**) अत्यन्तं वर्धमानः (**अग्ने**) विद्वन् (**यच्छ**) देहि (**त्र्यरुणाय**) (**शर्म्म**) गृहं सुखं वा॥२॥

**अन्वयः**-हे वैश्वनराऽग्ने! यस्सुष्टुतो वावृधानो मे गोनां शता च विंशतिं [च] युक्ता सुधुरा हरी च ददाति तस्मै त्र्यरुणाय त्वं शर्म्म यच्छ॥२॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! ये गवाश्वहस्त्यादीनां पशूनां पालकाः स्युस्तेभ्यो यथायोग्यां भृतिं प्रयच्छन्तु॥२॥

**पदार्थः**-हे (**वैश्वानर**) सब में प्रकाशमान (**अग्ने**) विद्वन् (**यः**) जो (**सुष्टुतः**) उत्तम प्रकार प्रशंसा किया गया (**वावृधानः**) अत्यन्त बढ़ता अर्थात् वृद्धि को प्राप्त होता हुआ (**मे**) मेरे (**गोनाम्**) गौओं के (**शता**) सैकड़ौं (**च**) और (**विंशतिम्**) बीसों संख्या वाले समूह को (**च**) और (**युक्ता**) युक्त (**सुधुरा**) उत्तम धुरा जिनमें उन (**हरी**) ले चलने वाले घोड़ों को (**च**) भी (**ददाति**) देता है उस (**त्र्यरुणाय**) तीन गुणों वाले पुरुष के लिये आप (**शर्म्म**) गृह वा सुख को (**यच्छ**) दीजिये॥२॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो गौ, घोड़ा और हस्ति आदि पशुओं के पालन करने वाले होवें, उनके लिये यथायोग्य मासिक [वृत्ति] दीजिये॥२॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**ए॒वा ते॑ अग्ने सु॒म॒तिं च॑का॒नो नवि॑ष्ठाय न॒व॒मं त्र॒सद॑स्युः।**

**यो मे॒ गिर॑स्तुविजा॒तस्य॑ पू॒र्वीर्यु॒क्तेना॒भि त्र्य॑रुणो गृ॒णाति॑॥३॥**

**ए॒व। ते॒। अ॒ग्ने॒। सु॒ऽम॒तिम्। च॒का॒नः। नवि॑ष्ठाय। न॒व॒मम्। त्र॒सद॑स्युः। यः। मे॒। गिरः॑। तु॒वि॒ऽजा॒तस्य॑। पू॒र्वीः। यु॒क्तेन॑। अ॒भि। त्रिऽअ॑रुणः। गृ॒णाति॑॥३॥**

**पदार्थः**-(**एवा**) अत्र **निपातस्य चेति** दीर्घः। (**ते**) तव (**अग्ने**) (**सुमतिम्**) शोभनां प्रज्ञाम् (**चकानः**) कामयमानः (**नविष्ठाय**) अतिशयेन नवीनाय (**नवमम्**) नवानां पूरणम् (**त्रसदस्युः**) त्रस्यन्ति



www.9009.co.in

दस्यवो यस्मात्सः **(यः)** **(मे))** मम **(गिरः)** **(तुविजातस्य)** **(पूर्वीः)** सनातनीः **(युक्तेन)** कृतयोगाभ्यासेन मनसा **(अभि)** **(त्र्यरुणः)** त्रीणि मनःशरीरात्मसुखान्यृच्छति **(गृणाति)**॥ ३॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! यस्ते सुमतिं तुविजातस्य मे गिरश्चकानो नविष्ठाय नवमं चकानस्त्रसदस्युर्युक्तेन त्र्यरुणः सन् पूर्वीगिरोऽभि गृणाति तमेवा त्वमहं च सततं सत्कुर्य्याव॥ ३॥

**भावार्थः**-हे विद्वँस्त्वमहं च य आवयोः सकाशाद् गुणान् ग्रहीतुमिच्छति तमावां विद्यां ग्राहयेव॥ ३॥

**पदार्थः**-हे **(अग्ने)** अग्नि के सदृश तेजस्वी विद्वान्! **(यः)** जो **(ते)** आपकी **(सुमतिम्)** सुन्दर बुद्धि को और **(तुविजातस्य)** बहुतों में प्रकट हुए **(मे)** मेरी **(गिरः)** वाणियों की **(चकानः)** कामना करता तथा **(नविष्ठाय)** अतिशय नवीन जन के लिये **(नवमम्)** नव के पूर्ण करने वाले की कामना करता हुआ **(त्रसदस्युः)** त्रसदस्यु अर्थात् जिससे चोर डरते ऐसा **(युक्तेन)** किया योगाभ्यास जिससे ऐसे मन से **(त्र्यरुणः)** तीन मन, शरीर और आत्मा के सुखों को प्राप्त होता हुआ जन **(पूर्वीः)** अनादि काल से सिद्ध वाणियों को **(अभि, गृणाति)** सब ओर से कहता है **(एवा)** उसी का आप और हम निरन्तर सत्कार करें॥ ३॥

**भावार्थः**-हे विद्वन्! आप और मैं जो हमारे समीप से गुणों के ग्रहण करने की इच्छा करता है, उसको हम दोनों विद्याग्रहण करावें॥ ३॥

**अथोपदेशविषयमाह॥**

अब उपदेशविषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**यो म इति प्रवोचत्यश्वमेधाय सूरये। दददृचा सनिं यते ददन्मेधामृतायते॥ ४॥**

**यः। मे। इति। प्रऽवोचति। अश्वऽमेधाय। सूरये। ददत्। ऋचा। सनिम्। यते। ददत्। मेधाम्। ऋतऽयते॥ ४॥**

**पदार्थः**-**(यः)** **(मे)** मह्यम् **(इति)** अनेन प्रकारेण **(प्रवोचति)** उपदिशति **(अश्वमेधाय)** आशुपवित्राय **(सूरये)** विदुषे **(ददत्)** दद्यात् **(ऋचा)** ऋग्वेदादिना **(सनिम्)** सेवनीयां सत्याऽसत्ययो-र्विभाजिकां वाणीम् **(यते)** यत्नशीलाय **(ददत्)** दद्यात् **(मेधाम्)** प्रज्ञाम् **(ऋतायते)** ऋतं कामयमानाय॥ ४॥

**अन्वयः**-योऽश्वमेधाय सूरये म ऋचा सनिं दददृतायते यते मे मेधां ददत् तस्य सत्कारं त्वं कुर्विति मां प्रति यः प्रवोचति तस्योपकारमहं मन्ये॥ ४॥

**भावार्थः**-उपदेशका यदाऽन्यान् प्रत्युपदिशेयुस्तदैव वेदशास्त्रेषूक्तमाप्तैराचरितमिदं वयं युष्मभ्यमुपदिशामेति प्रत्युपदेशं ब्रूयुः॥ ४॥

**पदार्थः**-**(यः)** जो **(अश्वमेधाय)** शीघ्र पवित्र **(सूरये)** विद्वान् **(मे)** मेरे लिये **(ऋचा)** ऋग्वेदादि से **(सनिम्)** सेवन करने योग्य तथा सत्य और असत्य की विभाग करने वाली वाणी को **(ददत्)** देवे और



www.9009.co.in

**(ऋतायते)** सत्य की कामना करते हुए **(यते)** यत्न करने वाले मेरे लिये **(मेधाम्)** बुद्धि को **(ददत्)** देवे, उसका सत्कार आप करो **(इति)** इस प्रकार से मेरे प्रति जो **(प्रवोचति)** उपदेश देता है, उसका उपकार मैं मानता हूं॥४॥

**भावार्थ:**-उपदेशक जन जब अन्य जनों के प्रति उपदेश देवें, तब इस प्रकार वेद और शास्त्रों में कहे और यथार्थवक्ताओं से आचरण किये गये इस विषय का हम आप लोगों के लिये उपदेश देवें, इस प्रकार प्रत्युपदेश कहें॥४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**यस्य॑ मा पॠुषाः श॒तमु॑द्धर्षय॑न्त्यु॒क्षण॑ः। अश्व॑मेधस्य॒ दाना॒ः सोमा॑इव॒ त्र्या॑शिरः॥५॥**

**यस्य॑। मा॒। प॒रु॒षाः। श॒तम्। उ॒त्ऽह॒र्षय॑न्ति। उ॒क्षण॑ः। अश्व॑ऽमेधस्य। दाना॑ः। सोमा॑ःऽइव। त्रिऽआ॑शिरः॥५॥**

**पदार्थ:**-**(यस्य)** **(मा)** माम् **(परुषाः)** कठोराः **(शतम्)** असङ्ख्याः **(उद्धर्षयन्ति)** उत्साहयन्ति **(उक्षणः)** मधुरैरुपदेशैः सेचमानाः **(अश्वमेधस्य)** चक्रवर्तिराज्यपालनस्य विद्यायाः **(दानाः)** ददानाः **(सोमाइव)** सोमलतादय इव **(त्र्याशिरः)** यास्त्रिभिर्जीवाग्निवायुभिरश्यन्ते भुज्यन्ते ताः॥५॥

**अन्वय:**-यस्याश्वमेधस्य शतं परुषा उक्षणः सोमाइव दानास्त्र्याशिरो मा मामुद्धर्षयन्ति ता वाचो मया सोढव्याः॥५॥

**भावार्थ:**-ये विद्यामिच्छेयुस्ते सर्वेषां मर्मच्छिदो वाचः सहन्ताम्। चन्द्रवच्छान्ता भूत्वा विद्याविनयौ गृह्णन्तु॥५॥

**पदार्थ:**-**(यस्य)** जिस **(अश्वमेधस्य)** चक्रवर्त्तिराज्यपालन की विद्या की **(शतम्)** असङ्ख्य **(परुषाः)** कठोर **(उक्षणः)** मधुर उपदेशों से सींचती और **(सोमाइव)** सोमलतादिकों के सदृश **(दानाः)** देती हुई **(त्र्याशिरः)** जीव, अग्नि और पवनों से भोगी गईं **(मा)** मुझ को **(उद्धर्षयन्ति)** उत्साहित करती हैं, वे वाणियाँ मुझ से सहने योग्य हैं॥५॥

**भावार्थ:**-जो विद्या की इच्छा करें, वे सबकी मर्म्म भेदने वाली वाणियों को सहें और चन्द्रमा के सदृश शान्त होके विद्या और विनय को ग्रहण करें॥५॥

**अथोपदेशविषये राज्योपदेशविषयमाह॥**

अब उपदेशविषय में राज्योपदेशविषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**इन्द्रा॑ग्नी श॒त॒दाव्न्यश्व॑मेधे सु॒वीर्य॑म्।**

**क्ष॒त्रं धा॑रयतं बृ॒हद्दि॒वि सूर्य॑मिवा॒जर॑म्॥६॥२१॥**

इन्द्रा॑ग्नी॒ इति॑। श॒त॒ऽदा॑व्नि। अश्व॑ऽमेधे। सु॒ऽवीर्य॑म्। क्ष॒त्रम्। धा॒र॒य॒त॒म्। बृ॒हत्। दि॒वि। सूर्य॑म्ऽइव। अ॒जर॑म्॥६॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**इन्द्राग्नी**) वायुविद्युताविवाध्यापकोपदेशकौ (**शतदाव्नि**) असङ्ख्यदाने (**अश्वमेधे**) राज्यपालनाख्ये व्यवहारे (**सुवीर्य्यम्**) सुष्ठु वीर्य्यं पराक्रमो बलं च यस्मिंस्तत् (**क्षत्रम्**) क्षत्रियकुलं राष्ट्रं वा (**धारयतम्**) (**बृहत्**) महत् (**दिवि**) प्रकाशयुक्तेऽन्तरिक्षे (**सूर्य्यमिव**) (**अजरम्**) नाशरहितम्॥६॥

**अन्वयः**-हे इन्द्राग्नी इव वर्त्तमानावध्यापकौपदेशकौ! शतदाव्न्यश्वमेधे दिवि सूर्य्यमिव सुवीर्य्यमजरं बृहत् क्षत्रं धारयतं यथावदुपदिशेतम्॥६॥

**भावार्थः**-हे राजादयो जनाः! प्रयत्नेन भवन्त आप्तानध्यापकोपदेशकान् बहून् स्वपरराज्ये प्रचारयन्तु यतो युष्माकं राज्यमक्षयं भवेदिति॥६॥

अत्राग्निविद्वद्राजगुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति सप्तविंशतितमं सूक्तमेकविंशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे (**इन्द्राग्नी**) वायु और बिजुली के सदृश अध्यापक और उपदेशक जनो! (**शतदाव्नि**) असङ्ख्य पदार्थों को देने वाले (**अश्वमेधे**) राज्यपालन व्यवहार और (**दिवि**) प्रकाशयुक्त अन्तरिक्ष में (**सूर्य्यमिव**) सूर्य्य के सदृश (**सुवीर्य्यम्**) उत्तम पराक्रम तथा बलयुक्त और (**अजरम्**) नाश से रहित (**बृहत्**) बड़े (**क्षत्रम्**) क्षत्रियों के कुल वा राज्यदेश को (**धारयतम्**) धारण करो अर्थात् यथायोग्य उपदेश दीजिये॥६॥

**भावार्थः**-हे राजा आदि जनो! प्रयत्न से आप लोग यथार्थवक्ता, बहुत अध्यापक और उपदेशकों को अपने और दूसरे के राज्य में प्रचार कराइये जिससे आप लोगों का राज्य नाशरहित होवे॥६॥

इस सूक्त में अग्नि, विद्वान् और राजा के गुणों का वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह सत्ताईसवां सूक्त और इक्कीसवां वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

अथ षड्चस्याष्टविंशतितमस्य सूक्तस्य विश्ववारात्रेयी ऋषिः। अग्निर्देवता। १ त्रिष्टुप्। २ स्वराट् त्रिष्टुप्। ३ निचृत् त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः। ४ विराडनुष्टुप् छन्दः। गान्धारः स्वरः। ५, ६ विराड् गायत्री छन्दः। षड्जः स्वरः॥

*अथाग्निगुणानाह॥*

अब छः ऋचा वाले अट्ठाईसवें सूक्त का प्रारम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में अग्नि के गुणों को कहते हैं॥

**समि॑द्धो अ॒ग्निर्दि॒वि शो॒चिर॑श्रेत् प्र॒त्यङ्ङु॒षस॑मुर्वि॒या वि भा॑ति।**

**एति॒ प्राची॑ वि॒श्ववा॑रा॒ नमो॑भिर्दे॒वाँ ईळा॑ना ह॒विषा॑ घृ॒ताची॑॥ १॥**

**सम्ऽइ॑द्धः। अ॒ग्निः। दि॒वि। शो॒चिः। अ॒श्रे॒त्। प्र॒त्यङ्। उ॒षस॑म्। उ॒र्वि॒या। वि। भा॒ति॒। एति॑। प्राची॑। वि॒श्वऽवा॑रा। नम॑ःऽभिः। दे॒वान्। ईळा॑ना। ह॒विषा॑। घृ॒ताची॑॥ १॥**

**पदार्थः**-(**समिद्धः**) प्रदीप्तः (**अग्निः**) पावकः (**दिवि**) प्रकाशे (**शोचिः**) विद्युद्रूपां दीप्तिम् (**अश्रेत्**) श्रयति (**प्रत्यङ्**) प्रत्यञ्चतीति (**उषसम्**) प्रभातम् (**उर्विया**) बहुरूपया दीप्त्या (**वि**) (**भाति**) (**एति**) प्राप्नोति (**प्राची**) पूर्वा दिक् (**विश्ववारा**) या विश्वं वृणोति सा (**नमोभिः**) अन्नादिभिस्सह (**देवान्**) दिव्यगुणान् (**ईळाना**) प्रशंसन्ती (**हविषा**) दानेन (**घृताची**) रात्रिः। **घृताचीति रात्रिनामसु पठितम्।** (निघं०१. ७)॥१॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यस्समिद्धोऽग्निर्दिवि शोचिरश्रेदुर्वियोषसं प्रत्यङ् वि भाति विश्ववारा देवानीळाना घृताची प्राची च हविषा नमोभिश्चैति तं ताञ्च यूयं विजानीत॥१॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! योऽयं सूर्य्यो दृश्यते सोऽनेकैस्तत्त्वैरीश्वरेण निर्मितो विद्युतमाश्रितोऽस्ति यस्य प्रभावेन प्राच्यादयो दिशो विभज्यन्ते रात्रयश्च जायन्ते तमग्निरूपं विज्ञाय सर्वकृत्यं साध्नुत॥१॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो (**समिद्धः**) प्रज्वलित किया गया (**अग्निः**) अग्नि (**दिवि**) प्रकाश में (**शोचिः**) बिजुलीरूप प्रकाश का (**अश्रेत्**) आश्रय करता है और (**उर्विया**) अनेक रूप वाले प्रकाश से (**उषसम्**) प्रभातकाल के (**प्रत्यङ्**) प्रति चलने वाला (**वि, भाति**) विशेष करके शोभित होता है और (**विश्ववारा**) संसार को प्रकट करने वाली (**देवान्**) श्रेष्ठ गुणों को (**ईळाना**) प्रशंसित करती हुई (**घृताची**) रात्रि और (**प्राची**) पूर्व दिशा (**हविषा**) दान और (**नमोभिः**) अन्नादि पदार्थों के साथ (**एति**) प्राप्त होती है, उस अग्नि को और उस विश्ववारा को आप लोग विशेष करके जानो॥१॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो यह सूर्य्य देख पड़ता है, वह अनेक तत्त्वों के द्वारा ईश्वर से बनाया गया और बिजुली के आश्रित है और जिसके प्रभाव से पूर्व आदि दिशायें विभक्त की जाती हैं और रात्रियां होती हैं, उस अग्निरूप सूर्य को जान के सम्पूर्ण कृत्य सिद्ध करो॥१॥

**अथ विद्वद्विषयमाह॥**

अब विद्वद्विषय को कहते हैं॥

**स॒मि॒ध्यमा॑नो अ॒मृत॑स्य राजसि ह॒विष्कृ॒ण्वन्तं॑ सचसे स्व॒स्तये॑।**

**विश्वं॒ स ध॒त्ते द्रवि॑णं॒ यमिन्व॑स्याति॒थ्यम॑ग्ने॒ नि च॑ ध॒त्त इत्पु॒रः॥२॥**

**स॒म्ऽइ॒ध्यमा॑नः। अ॒मृत॑स्य। रा॒ज॒सि॒। ह॒विः। कृ॒ण्वन्त॑म्। स॒च॒से॒। स्व॒स्तये॑। विश्व॑म्। सः। ध॒त्ते॒। द्रवि॑णम्। यम्। इन्व॑सि। आ॒ति॒थ्यम्। अ॒ग्ने॒। नि। च॒। ध॒त्ते॒। इत्। पु॒रः॥२॥**

**पदार्थः**-(**समिध्यमानः**) सम्यग्देदीप्यमानः (**अमृतस्य**) कारणस्योदकस्य मध्ये वा (**राजसि**) प्रकाशसे (**हविः**) अत्तव्यं वस्तु (**कृण्वन्तम्**) कुर्वन्तम् (**सचसे**) समवैषि (**स्वस्तये**) सुखाय (**विश्वम्**) सर्वम् (**सः**) (**धत्ते**) धरति (**द्रविणम्**) धनं यशो वा (**यम्**) (**इन्वसि**) व्याप्नोति। **व्यत्ययो बहुलमिति** लकारव्यत्ययः। (**आतिथ्यम्**) अतिथिसत्कारम् (**अग्ने**) विद्वन् (**नि**) (**च**) (**धत्ते**) (**इत्**) एव (**पुरः**) पुरस्तात्॥२॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! यतस्समिध्यमानस्त्वममृतस्य मध्ये राजसि स्वस्तये हविष्कृण्वन्तं सचसे भवान् विश्वं द्रविणं धत्ते यमातिथ्यमिन्वसि पुरश्च नि धत्ते तस्मात् स इत् त्वं पूजनीयोऽसि॥२॥

**भावार्थः**-हे विद्वांसो! यूयं विद्याविनयाभ्यां प्रकाशमाना अतिथयस्सन्तः सर्वत्र भ्रमित्वा सर्वान् सत्यमुपदिशन्तः कीर्तिं प्रसारयत॥२॥

**पदार्थः**-हे (**अग्ने**) विद्वन्! जिससे (**समिध्यमानः**) उत्तम प्रकार निरन्तर प्रकाशमान आप (**अमृतस्य**) कारण वा जल के मध्य में (**राजसि**) प्रकाशित होते हो और (**स्वस्तये**) सुख के लिये (**हविः**) खाने योग्य वस्तु को (**कृण्वन्तम्**) करते हुए का (**सचसे**) सम्बन्ध करते हो और आप (**विश्वम्**) सम्पूर्ण (**द्रविणम्**) धन वा यश का (**धत्ते**) धारण करते हो तथा (**यम्**) जिनको (**आतिथ्यम्**) अतिथि सत्कार (**इन्वसि**) व्याप्त होता है और (**पुरः**) पहिले (**च**) भी आप (**नि, धत्ते**) निरन्तर धारण करते हो इससे (**सः, इत्**) वही आप सत्कार करने योग्य हो॥२॥

**भावार्थः**-हे विद्वान् जनो! आप लोग विद्या और विनय से प्रकाशमान अतिथियों की दशा को धारण किये हुए सब स्थानों में भ्रमण करके सम्पूर्ण जनों के लिये सत्य का उपदेश देते हुए यश को निरन्तर पसारिये॥२॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥



www.9009.co.in

**अग्ने शर्धं महते सौभगाय तव द्युम्नान्युत्तमानि सन्तु।**

**सं जास्पत्यं सुयममा कृणुष्व शत्रूयतामभि तिष्ठा महांसि॥ ३॥**

**अग्ने। शर्धं। महते। सौभगाय। तव। द्युम्नानि। उत्ऽतमानि। सन्तु। सम्। जाःऽपत्यम्। सुऽयमम्। आ। कृणुष्व। शत्रुऽयताम्। अभि। तिष्ठ। महांसि॥ ३॥**

**पदार्थः**-(**अग्ने**) विद्वन् (**शर्ध**) प्रशंसितबलयुक्त (**महते**) (**सौभगाय**) शोभनैश्वर्य्याय (**तव**) (**द्युम्नानि**) यशांसि धनानि वा (**उत्तमानि**) (**सन्तु**) (**सम्**) (**जास्पत्यम्**) जायायाः पतित्वम् (**सुयमम्**) शोभनो यमः सत्याचरणनिग्रहो यस्मिँस्तम् (**आ**) (**कृणुष्व**) (**शत्रूयताम्**) शत्रूणामिवाचरताम् (**अभि**) आभिमुख्ये (**तिष्ठा**) (**महांसि**) महान्ति सैन्यानि॥ ३॥

**अन्वयः**-हे शर्धाग्ने! तव महते सौभगायोत्तमानि द्युम्नानि सन्तु त्वं सुयमं जास्पत्यमा कृणुष्व शत्रूयतां महांसि समभितिष्ठ॥ ३॥

**भावार्थः**-हे धर्मिष्ठौ! वयं त्वदर्थं महदैश्वर्य्यमिच्छेम युवां स्त्रीपुरुषौ जितेन्द्रियौ धर्म्मात्मानौ बलिष्ठौ पुरुषार्थिनो भूत्वा सर्वां दुष्टसेनां विजयेथाम्॥ ३॥

**पदार्थः**-हे (**शर्ध**) प्रशंसित बल से युक्त (**अग्ने**) विद्वन्! (**तव**) आपके (**महते**) बड़े (**सौभगाय**) सुन्दर ऐश्वर्य्य के लिये (**उत्तमानि**) श्रेष्ठ (**द्युम्नानि**) यश वा धन (**सन्तु**) हों और तुम (**सुयमम्**) सुन्दर सत्य आचरणों का ग्रहण जिसमें ऐसे (**जास्पत्यम्**) स्त्री के पतिपने को (**आ, कृणुष्व**) अच्छे प्रकार करिये और (**शत्रूयताम्**) शत्रु के सदृश आचरण करते हुओं की (**महांसि**) बड़ी सेनाओं के (**सम्, अभि, तिष्ठा**) सन्मुख स्थित हूजिये॥ ३॥

**भावार्थः**-हे धर्म्मिष्ठो! हम लोग आपके लिये बड़े ऐश्वर्य्य की इच्छा करें और आप दोनों स्त्री और पुरुष जितेन्द्रिय, धर्म्मात्मा, बलवान् और पुरुषार्थी होकर सम्पूर्ण दुष्टों की सेना को जीतिये॥ ३॥

**अथ विद्वद्विषये राज्यप्रकारमाह॥**

अब विद्वद्विषय में राज्यप्रकार को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**समिद्धस्य प्रमहसोऽग्ने वन्दे तव श्रियम्।**

**वृषभो द्युम्नवाँ असि समध्वरेष्विध्यसे॥ ४॥**

**सम्ऽइद्धस्य। प्रऽमहसः। अग्ने। वन्दे। तव। श्रियम्। वृषभः। द्युम्नऽवान्। असि। सम्। अध्वरेषु। इध्यसे॥ ४॥**

**पदार्थः**-(**समिद्धस्य**) प्रकाशमानस्य (**प्रमहसः**) प्रकृष्टस्य महतः (**अग्ने**) राजन् (**वन्दे**) प्रशंसामि सत्करोमि वा (**तव**) (**श्रियम्**) धनम् (**वृषभः**) बलिष्ठ उत्तमो वा (**द्युम्नवान्**) यशस्वी (**असि**) (**सम्**) (**अध्वरेषु**) राज्यपालनादिषु व्यवहारेषु (**इध्यसे**) प्रदीप्यसे॥ ४॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे अग्ने राजन्! यस्त्वं वृषभो द्युम्नवानस्यध्वरेषु समिध्यसे तस्य समिद्धस्य प्रमहसस्तव श्रियमहं वन्दे॥४॥

**भावार्थः**-यो राजा अग्न्यादिगुणयुक्तः सन्न्यायं यथावत्करोति स यज्ञेषु पावक इव सर्वत्र प्रकाशितकीर्त्तिर्भवति॥४॥

**पदार्थः**-हे **(अग्ने)** राजन्! जो तुम **(वृषभः)** बलिष्ठ वा उत्तम और **(द्युम्नवान्)** यशस्वी **(असि)** हो और **(अध्वरेषु)** राज्य के पालन आदि व्यवहारों में **(सम्, इध्यसे)** प्रकाशित किये जाते हो उन **(समिद्धस्य)** प्रकाशमान और **(प्रमहसः)** और प्रकृष्ट बड़े **(तव)** आपके **(श्रियम्)** धन की मैं **(वन्दे)** प्रशंसा वा सत्कार करता हूँ॥४॥

**भावार्थः**-जो राजा अग्नि आदि के गुणों से युक्त हुआ अच्छे न्याय को यथावत् करता है, वह यज्ञों में अग्नि के सदृश सर्वत्र प्रकट यश वाला होता है॥४॥

**पुनरग्निदृष्टान्तेन पूर्वोक्तविषयमाह॥**

फिर अग्निदृष्टान्त से पूर्वोक्त विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**समिद्धो अग्न आहुत देवान् यक्षि स्वध्वर। त्वं हि हव्यवाळसि॥५॥**

**सम्ऽइद्धः। अग्ने। आऽहुत। देवान्। यक्षि। सुऽअध्वर। त्वम्। हि। हव्यऽवाट्। असि॥५॥**

**पदार्थः**-**(समिद्धः)** प्रदीप्तः **(अग्ने)** पावक इव **(आहुत)** सत्कृत **(देवान्)** दिव्यान् गुणान् विदुषो वा **(यक्षि)** पूजयसि **(स्वध्वर)** सुष्ठु अहिंसायुक्त **(त्वम्)** **(हि)** यतः **(हव्यवाट्)** पृथिव्यादिवोढा **(असि)**॥५॥

**अन्वयः**-हे स्वध्वराहुताऽग्ने! यथा समिद्धो हि हव्यवाडग्निरस्ति तथा त्वं देवान् यक्षि पालकोऽसि तस्मादुत्तमोऽसि॥५॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यथा सूर्य्यादिरूपेणाग्निः सर्वान् रक्षति तथैव राजा भवति॥५॥

**पदार्थः**-हे **(स्वध्वरः)** उत्तम प्रकार अहिंसा से युक्त **(आहुत)** सत्कृत **(अग्ने)** अग्नि के सदृश वर्त्तमान! जिस प्रकार से **(समिद्धः)** प्रज्वलित किया गया **(हि)** जिस कारण **(हव्यवाट्)** पृथिव्यादिकों की प्राप्ति करने वाला अग्नि है, वैसे **(त्वम्)** आप **(देवान्)** श्रेष्ठ गुणों वा विद्वानों का **(यक्षि)** सत्कार करते हो और पालन करने वाले **(असि)** हो, इससे श्रेष्ठ हो॥५॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे सूर्य्य आदि रूप से अग्नि सब की रक्षा करता है, वैसा ही राजा होता है॥५॥

**पुनर्विद्वद्विषयमाह॥**

फिर विद्वद्विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥



www.9009.co.in

**आ जु॒होता दुव॒स्यता॒ग्निं प्र॑य॒त्य॑ध्व॒रे। वृ॒णी॒ध्वं ह॑व्य॒वाह॑नम्॥६॥२२॥**

**आ। जु॒हो॒त॒। दु॒व॒स्यत॑। अ॒ग्निम्। प्र॒ऽय॒ति। अ॒ध्व॒रे। वृ॒णी॒ध्वम्। ह॒व्य॒ऽवाह॑नम्॥६॥**

**पदार्थः**-(**आ**) (**जुहोता**) दत्त। अत्र **संहितायामिति** दीर्घः। (**दुवस्यत**) परिचरत (**अग्निम्**) पावकम् (**प्रयति**) प्रयत्नसाध्ये (**अध्वरे**) शिल्पादिव्यवहारे (**वृणीध्वम्**) स्वीकुरुत (**हव्यवाहनम्**) उत्तम-पदार्थप्रापकम्॥६॥

**अन्वयः**-हे विद्वांसो! यूयं प्रयत्यध्वरे हव्यवाहनमग्निं दुवस्यत वृणीध्वमन्येभ्य आ जुहोता॥६॥

**भावार्थः**-विद्यार्थिनो, यथा विद्वांसः शिल्पविद्यां स्वीकुर्वन्ति तथैव स्वयमपि कुर्युरिति॥६॥

अत्राग्निविद्वद्गुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इत्यष्टाविंशतितमं सूक्तं द्वाविंशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे विद्वानो! आप लोग (**प्रयति**) प्रयत्न से साध्य (**अध्वरे**) शिल्पादि व्यवहार में (**हव्यवाहनम्**) उत्तम पदार्थों को प्राप्त कराने वाले (**अग्निम्**) अग्नि का (**दुवस्यत**) परिचरण करो अर्थात् युक्ति से उसको कार्य्य में लगाओ और (**वृणीध्वम्**) स्वीकार करो तथा अन्य जनों के लिये (**आ, जुहोता**) आदान करो अर्थात ग्रहण करो॥६॥

**भावार्थः**-विद्यार्थिजन, जैसे विद्वान् जन शिल्पविद्या को स्वीकार करते हैं, वैसे ही स्वयं भी स्वीकार करें॥६॥

इस सूक्त में अग्नि और विद्वान् के गुण-वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह अट्ठाईसवां सूक्त और बाईसवां वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

**अथ पञ्चदशर्चस्यैकोनत्रिंशत्तमस्य सूक्तस्य १-१५ गौरिवीतिः शाक्त्य ऋषिः। १-८, ९[२]-, १५ इन्द्रः। ९[१]- इन्द्र उशना वा देवता। १ भुरिक् पङ्क्तिः। ८ स्वराट् पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः। २, ४, ७ त्रिष्टुप्। ३, ५, ६, ९, १०, ११ निचृत् त्रिष्टुप्। १२, १३, १४, १५ विराट् त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः॥**

***अथेन्द्रपदवाच्यराजगुणानाह॥***

अब पन्द्रह ऋचा वाले उनतीसवें सूक्त का आरम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में इन्द्रपदवाच्य राजगुणों को कहते हैं॥

**त्र्यर्यमा मनुषो देवताता त्री रोचना दिव्या धारयन्त।**

**अर्चन्ति त्वा मरुतः पूतदक्षास्त्वमेषामृषिरिन्द्रासि धीरः॥ १॥**

**त्री। अर्यमा। मनुषः। देवऽताता। त्री। रोचना। दिव्या। धारयन्त। अर्चन्ति। त्वा। मरुतः। पूतऽदक्षाः। त्वम्। एषाम्। ऋषिः। इन्द्र। असि। धीरः॥ १॥**

**पदार्थः**-(**त्री**) त्रीणि (**अर्यमा**) व्यवस्थापकः (**मनुषः**) मनुष्याः (**देवताता**) विद्वत्कर्त्तव्ये व्यवहारे (**त्री**) त्रीणि (**रोचना**) प्रकाशकानि (**दिव्या**) दिव्यानि (**धारयन्त**) (**अर्चन्ति**) सत्कुर्वन्ति (**त्वा**) त्वाम् (**मरुतः**) मनुष्याः (**पूतदक्षाः**) पवित्रबलाः (**त्वम्**) (**एषाम्**) (**ऋषिः**) मन्त्रार्थवेत्ता (**इन्द्र**) परमैश्वर्य्ययोजक (**असि**) (**धीरः**)॥ १॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र राजन्! ये मनुषो देवताता दिव्या त्री रोचना धारयन्ताऽर्यमा त्री सुखानि धरति ये पूतदक्षा मरुतस्त्वार्चन्त्येषां त्वमृषिर्धीरोऽसि॥ १॥

**भावार्थः**-ये त्रीणि कर्मोपासनाज्ञानानि धृत्वा पवित्रा जायन्ते त एव बलवतो भूत्वा सत्कृता भवन्ति॥ १॥

**पदार्थः**-हे (**इन्द्र**) अत्यन्त ऐश्वर्य से युक्त करने वाले राजन्! जो (**मनुषः**) मनुष्य (**देवताता**) विद्वानों से करने योग्य व्यवहार में (**दिव्या**) श्रेष्ठ (**त्री**) तीन (**रोचना**) प्रकाशकों को (**धारयन्त**) धारण करते हैं (**अर्यमा**) व्यवस्थापक अर्थात् किसी कार्य्य को रीति से संयुक्त करने वाला (**त्री**) तीन सुखों को धारण करता है और जो (**पूतदक्षाः**) पवित्र बल से संयुक्त करने वाला (**त्री**) तीन सुखों को धारण करता है और जो (**पूतदक्षाः**) पवित्र बल वाले (**मरुतः**) मनुष्य (**त्वा**) आपका (**अर्चन्ति**) सत्कार करते हैं (**एषाम्**) इनके (**त्वम्**) आप (**ऋषिः**) मन्त्र और अर्थों के जानने वाले (**धीरः**) धीर (**असि**) हो॥ १॥

**भावार्थः**-जो तीन कर्म्म, उपासना और ज्ञान को धारण करके पवित्र होते हैं, वे ही बलवान् होकर सत्कृत होते हैं॥ १॥



www.9009.co.in

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**अनु यदीं मरुतो मन्दसानमार्चन्निन्द्रं पपिवांसं सुतस्य।**

**आदत्त वज्रमभि यदहिं हन्नपो यह्वीरसृजत्सर्तवा उ॥२॥**

**अनु। यत्। ईम्। मरुतः। मन्दसानम्। आर्चन्। इन्द्रम्। पपिऽवांसम्। सुतस्य। आ। अदत्त। वज्रम्। अभि। यत्। अहिम्। हन्। अपः। यह्वीः। असृजत्। सर्तवै। ऊम् इति॥२॥**

**पदार्थः**-(**अनु**) (**यत्**) यम् (**ईम्**) सर्वतः (**मरुतः**) मनुष्याः (**मन्दसानम्**) स्तूयमानम् (**आर्चन्**) सत्कुर्युः (**इन्द्रम्**) परमैश्वर्यवन्तम् (**पपिवांसम्**) रक्षकम् (**सुतस्य**) प्राप्तस्य राज्यस्य (**आ**) (**अदत्त**) ददाति (**वज्रम्**) (**अभि**) आभिमुख्ये (**यत्**) यम् (**अहिम्**) मेघम् (**हन्**) हन्ति (**अपः**) जलानि (**यह्वीः**) महतीर्नदीः (**असृजत्**) सृजति (**सर्त्तवै**) सर्त्तुं गन्तुम् (**उ**) वितर्के॥२॥

**अन्वयः**-हे राजन्! यन्मरुतो मन्दसानं सुतस्य पपिवांसं यदिन्द्रं त्वामार्चस्तान् भवान् सोऽन्वादत्त यथा सूर्यो वज्रमभि हत्वाहिं हन्त्सर्त्तवै यह्वीरपोऽसृजत् तथेमु त्वं न्यायं कुर्य्याः॥२॥

**भावार्थः**-ये मनुष्या राजानं सत्कुर्वन्ति तान् राजापि सत्कुर्याद् यथेन्द्रो मेघं हत्वा जलं प्रवाह्य सर्वं जगद्रक्षति तथा राजा दुष्टान् हत्वा श्रेष्ठान् रक्षेत्॥२॥

**पदार्थः**-हे राजन्! (**यत्**) जो (**मरुतः**) मनुष्य (**मन्दसानम्**) स्तुति किये गये (**सुतस्य**) प्राप्त राज्य की (**पपिवांसम्**) रक्षा करने वाले (**यत्**) जिन (**इन्द्रम्**) अत्यन्त ऐश्वर्य्य से युक्त आपका (**आर्चन्**) सत्कार करें, उनका वह आप (**अनु, आ, अदत्त**) अनुकूलता से ग्रहण करते हैं और जैसे सूर्य (**वज्रम्**) वज्ररूप किरण का (**अभि**) सम्मुख ताड़न करके (**अहिम्**) मेघ का (**हन्**) नाश करता है तथा (**सर्त्तवै**) जाने के लिये (**यह्वीः**) बड़ी नदियों को और (**अपः**) जलों को (**असृजत्**) उत्पन्न करता है, वैसे (**ईम्**) सब ओर से (**उ**) तर्क-वितर्क पूर्वक तुम न्याय करो॥२॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य राजा का सत्कार करते हैं, उनका राजा भी सत्कार करे और जैसे सूर्य मेघ का नाश कर और जल का प्रवाह करके सर्व जगत् की रक्षा करता है, वैसे राजा दुष्टों का नाश करके श्रेष्ठ की रक्षा करे॥२॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**उत ब्रह्माणो मरुतो मे अस्येन्द्रः सोमस्य सुषुतस्य पेयाः।**

**तद्धि हव्यं मनुषे गा अविन्ददहन्नहिं पपिवाँ इन्द्रो अस्य॥३॥**



www.9009.co.in

उत। ब्रह्माणः। मरुतः। मे। अस्य। इन्द्रः। सोमस्य। सुऽसुतस्य। पेयाः। तत्। हि। हव्यम्। मनुषे। गाः। अविन्दत्। अहन्। अहिम्। पपिऽवान्। इन्द्रः। अस्य॥३॥

**पदार्थः**-(**उत**) अपि (**ब्रह्माणः**) चतुर्वेदविदः (**मरुतः**) मनुष्याः (**मे**) मम (**अस्य**) (**इन्द्रः**) राजमानः (**सोमस्य**) ऐश्वर्य्यकारकस्य (**सुषुतस्य**) सुष्ठुतया साधुकृतस्य (**पेयाः**) पिबेः (**तत्**) (**हि**) किल (**हव्यम्**) अत्तुमर्हम् (**मनुषे**) जनाय (**गाः**) (**अविन्दत्**) लभेत (**अहन्**) हन्ति (**अहिम्**) मेघम् (**पपिवान्**) पानकरः सूर्यः (**इन्द्रः**) सूर्यः (**अस्य**) राष्ट्रस्य॥३॥

**अन्वयः**-यथेन्द्रः सूर्यो रसं पिबति तथा हे राजन् इन्द्रस्त्वं मेऽस्य च तद्धि सुषुतस्य हव्यं पेया येन मनुषे भवान् गा अविन्दद् यथा पपिवानहिमहँस्तथा भवानस्य राज्यस्य पालनं कुर्य्यादुत ब्रह्माणो मरुतो यूयमप्याचरत॥३॥

**भावार्थः**-ये मनुष्याः सर्वान् वेदानधीत्याऽभक्ष्याऽपेयं वर्जयित्वा न्यायाधीशवन्न्यायं सूर्य्यवत्सत्यासत्यप्रकाशं कुर्वन्ति ते महाशया भवन्ति॥३॥

**पदार्थः**-जिस प्रकार (**इन्द्रः**) सूर्य्य रस को पीता है, वैसे हे राजन् (**इन्द्रः**) प्रकाशमान! आप (**मे**) मेरे (**अस्य**) और इसके भी (**तत्, हि**) उसी (**सुषुतस्य**) अच्छे प्रकार श्रेष्ठ बनाये (**सोमस्य**) ऐश्वर्य्यकारक पदार्थ के (**हव्यम्**) खाने योग्य भाग को (**पेया**) पीजिये जिससे (**मनुषे**) मनुष्यमात्र के लिये आप (**गाः**) गौ वा उत्तम वाणियों को (**अविन्दत्**) प्राप्त हों और जैसे (**पपिवान्**) भूमिस्थजलादि को पान करने वाला सूर्य्य (**अहिम्**) मेघ का (**अहन्**) नाश करता है, वैसे आप (**अस्य**) इस राज्य के पालन को करिये (**उत**) इसी प्रकार हे (**ब्रह्माणः**) चार वेदों के जानने वाले (**मरुतः**) मनुष्यो! तुम लोग भी आचरण करो॥३॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य सब वेदों को पढ़कर नहीं खाने और नहीं पीने योग्य वस्तु का वर्ज्जन करके न्यायाधीश के सदृश न्याय और सूर्य्य के सदृश सत्य और असत्य का प्रकाश करते हैं, वे महाशय होते हैं॥३॥

**पुना राजविषयमाह॥**

फिर राजविषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**आद्रोदसी वितरं वि ष्कभायत् संविव्यानश्चिद्भियसे मृगं कः।**
**जिगर्तिमिन्द्रो अपजर्गुराणः प्रति श्वसन्तमव दानवं हन्॥४॥**

आत्। रोदसी इति। विऽतरम्। वि। स्कभायत्। सम्ऽविव्यानः। चित्। भियसे। मृगम्। कः। जिगर्तिम्। इन्द्रः। अपऽजर्गुराणः। प्रति। श्वसन्तम्। अव। दानवम्। हन्निति हन्॥४॥

**पदार्थः**-(**आत्**) आनन्तर्ये (**रोदसी**) द्यावापृथिव्यौ (**वितरम्**) विशेषेण प्लवनम् (**वि**) (**स्कभायत्**) विशेषेण स्कभ्नाति (**संविव्यानः**) सम्यग्व्याप्नुवन् (**चित्**) अपि (**भियसे**) भयाय (**मृगम्**) (**कः**) करोति (**जिगर्त्तिम्**) प्रशंसां निगलनं वा (**इन्द्रः**) सूर्य्यः (**अपजर्गुराणः**) आच्छादनात् पृथक्कुर्वन् (**प्रति**) (**श्वसन्तम्**) प्राणन्तम् (**अव**) (**दानवम्**) दुष्टप्रकृतिम् (**हन्**) हन्यात्॥४॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे राजन्! यथेन्द्रः सूर्य्यो रोदसी वितरं वि ष्कभायदात्संविव्यानः सन् भियसे चिन्मृगं को जिगर्त्तिमपजर्गुराणस्स दानवमव हन् तथा प्रतिश्वसन्तं प्राणिनं सततं प्रतिपालय॥४॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। ये राजानः सूर्य्यवद्राज्यं धरन्ति ते सिंहो मृगमिव दुष्टानुद्वेजयन्ति तथैव वर्त्तित्वा यशः प्रथयेयुः॥४॥

**पदार्थः**-हे राजन्! जैसे **(इन्द्रः)** सूर्य्य **(रोदसी)** अन्तरिक्ष और पृथिवी को **(वितरम्)** विशेष उलांघना जैसे हो, वैसे **(वि, स्कभायत्)** विशेष करके आकर्षित करता है **(आत्)** और **(संविव्यानः)** उत्तम प्रकार व्याप्त होता हुआ **(भियसे)** भय के लिये **(चित्)** भी **(मृगम्)** हरिण को **(कः)** करता तथा **(जिगर्त्तिम्)** प्रशंसा वा निगलने को **(अपजर्गुराणः)** आच्छादन से अलग करता हुआ [वह] **(दानवम्)** दुष्टप्रकृति मनुष्य को **(अव, हन्)** हनन करे, वैसे **(प्रति, श्वसन्तम्)** श्वास लेते हुए प्राणी का निरन्तर प्रतिपालन करो॥४॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो राजा सूर्य्य के सदृश राज्य को धारण करते हैं, जैसे सिंह मृग को व्याकुल करता है, वैसे दुष्टों को व्याकुल करते हैं, वैसा ही बर्त्ताव करके यश को प्रकट करें॥४॥

**अथ विद्वद्विषयमाह॥**

अब विद्वद्विषय को कहते हैं॥

**अध क्रत्वा मघवन् तुभ्यं देवा अनु विश्वे अददुः सोमपेयम्।**

**यत्सूर्यस्य हरितः पतन्तीः पुरः सतीरुपरा एतशे कः॥५॥२३॥**

**अध। क्रत्वा। मघऽवन्। तुभ्यम्। देवाः। अनु। विश्वे। अददुः। सोमऽपेयम्। यत्। सूर्यस्य। हरितः। पतन्तीः। पुरः। सतीः। उपराः। एतशे। करिति कः॥५॥**

**पदार्थः**-**(अध)** अथ **(क्रत्वा)** प्रज्ञया **(मघवन्)** बहुधननुक्त **(तुभ्यम्)** **(देवाः)** विद्वांसः **(अनु)** **(विश्वे)** सर्वे **(अददुः)** ददति **(सोमपेयम्)** सोमस्य पातव्यं रसम् **(यत्)** यः **(सूर्य्यस्य)** **(हरितः)** हरितवर्णाः किरणाः **(पतन्तीः)** गच्छन्तीः **(पुरः)** पालिकाः पुरस्ताद्वा **(सतीः)** विद्यमानाः **(उपराः)** समीपे रममाणाः **(एतशे)** अश्वेऽश्विक इव **(कः)** करोति॥५॥

**अन्वयः**-हे मघवन्! यत्सूर्यस्य पतन्तीः पुरः सतीरुपरा हरित एतशे कस्तस्य विद्यया तुभ्यं ये विश्वे देवाः सोमपेयमन्वददुस्तेऽध क्रत्वा विज्ञानिनो भवन्ति॥५॥

**भावार्थः**-हे मनुष्याः! सूर्य्यमण्डलेऽनेकेषां तत्त्वानां विद्यमानत्वादेनकानि रूपाणि दृश्यन्त इति विज्ञेयम्॥५॥

**पदार्थः**-हे **(मघवन्)** बहुत धन से युक्त! **(यत्)** जो **(सूर्यस्य)** सूर्य्य के **(पतन्तीः)** चलती हुई **(पुरः)** पालने वाली वा आगे से **(सतीः)** विद्यमान **(उपराः)** समीप में रमती हुई **(हरितः)** हरिद्वर्ण



www.9009.co.in

किरणों को **(एतशे)** घोड़े पर घोड़े के चढ़ने वाले के सदृश **(कः)** करता है, उसकी विद्या से **(तुभ्यम्)** आपके लिये जो **(विश्वे)** सम्पूर्ण **(देवाः)** विद्वान् जन **(सोमपेयम्)** सोम ओषधि के पान करने योग्य रस को **(अनु, अददुः)** अनुकूल देते हैं, वे **(अध)** इसके अनन्तर **(क्रत्वा)** बुद्धि से विशेष ज्ञानी होते हैं॥५॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! सूर्य्यमण्डल में अनेक तत्त्वों के विद्यमान होने से अनेक रूप देख पढ़ते हैं, यह जानना चाहिये॥५॥

**पुना राजविषयमाह॥**

फिर राजविषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**नव यदस्य नवतिं च भोगान्त्साकं वज्रेण मघवा विवृश्चत्।**

**अर्चन्तीन्द्रं मरुतः सधस्थे त्रैष्टुभेन वचसा बाधत द्याम्॥ ६॥**

**नव। यत्। अस्य। नवतिम्। च। भोगान्। साकम्। वज्रेण। मघऽवा। विऽवृश्चत्। अर्चन्ति। इन्द्रम्। मरुतः। सधऽस्थे। त्रैस्तुभेन। वचसा। बाधत। द्याम्॥ ६॥**

**पदार्थः**-**(नव)** **(यत्)** यान् **(अस्य)** सूर्य्यस्य **(नवतिम्)** **(च)** **(भोगान्)** **(साकम्)** **(वज्रेण)** **(मघवा)** बहुधनयुक्तः **(विवृश्चत्)** छिनत्ति **(अर्चन्ति)** सत्कुर्वन्ति **(इन्द्रम्)** परमैश्वर्य्यवन्तम् **(मरुतः)** मनुष्याः **(सधस्थे)** सहस्थाने **(त्रैष्टुभेन)** त्रिधा स्तुतेन **(वचसा)** **(बाधत)** **(द्याम्)** कामनाम्॥६॥

**अन्वयः**-हे राजन्! मघवा त्वं यथा सूर्य्यो वज्रेण साकमस्य जगतो मध्ये यद्यान् नव नवतिं भोगाञ्जनयत्यन्धकारादिकं विवृश्चद्यथा मरुतः सधस्थे त्रैष्टुभेन वचसेन्द्रमर्चन्ति द्यां च बाधत तथैव दुःखदारिद्र्यं विनाशय॥६॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे राजँस्त्वं कामासक्तिं विहाय न्यायेन सर्वान् सत्कृत्याऽसङ्ख्यान् भोगान् प्रजाभ्यो धेहि॥६॥

**पदार्थः**-हे राजन् **(मघवा)** बहुत धन से युक्त आप जैसे सूर्य्य **(वज्रेण)** वज्र के **(साकम्)** साथ **(अस्य)** इस सूर्य्य और जगत् के मध्य में **(यत्)** जिन **(नव)** नव और **(नवतिम्)** नब्बे **(भोगान्)** भोगों को उत्पन्न करता और अन्धकार आदि का **(विवृश्चत्)** नाश करता है तथा जैसे **(मरुतः)** मनुष्य **(सधस्थे)** समान स्थान में **(त्रैष्टुभेन)** तीन प्रकार स्तुति किये गये **(वचसा)** वचन से **(इन्द्रम्)** अत्यन्त ऐश्वर्य्य वाले का **(अर्चन्ति)** सत्कार करते हैं, और **(द्याम्)** कामना की **(च)** भी **(बाधत)** बाधा करते हैं, वैसे ही दुःख और द्रारिद्र्य का नाश करो॥६॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे राजन्! आप काम की आसक्ति का त्याग करके और न्याय से सबका सत्कार करके असङ्ख्य भोगों को प्रजाओं के लिये धारण कीजिये॥६॥

**पुनः सूर्य्यदृष्टान्तेन राजविषयमाह॥**

फिर सूर्य्यदृष्टान्त से राजविषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥



www.9009.co.in

**सखा॒ सख्ये॑ अपच॒त्तूय॑म॒ग्निर॒स्य क्रत्वा॑ महि॒षा त्री श॒तानि॑।**

**त्री सा॒कमिन्द्रो॒ मनु॑षः सरां॑सि सु॒तं पि॑बद् वृ॒त्रहत्या॑य॒ सोम॑म्॥७॥**

**सखा॑। सख्ये॑। अ॒प॒च॒त्। तूय॑म्। अ॒ग्निः। अ॒स्य। क्रत्वा॑। म॒हि॒षा। त्री। श॒तानि॑। त्री। सा॒कम्। इन्द्रः॑। मनु॑षः। सरां॑सि। सु॒तम्। पि॒ब॒त्। वृ॒त्र॒ऽहत्या॑य। सोम॑म्॥७॥**

**पदार्थः-(सखा)** मित्रम् **(सख्ये)** **(अपचत्)** पचति **(तूयम्)** तूर्णम् **(अग्निः)** पावकः **(अस्य)** **(क्रत्वा)** प्रज्ञया कर्म्मणा वा **(महिषा)** महिषाणां महताम् पशूनाम् **(त्री)** त्रीणि **(शतानि)** **(त्री)** **(साकम्)** **(इन्द्रः)** सूर्य्यः **(मनुषः)** मनुषस्य **(सरांसि)** तडागान् **(सुतम्)** वर्षितम् **(पिबत्)** पिबति **(वृत्रहत्याय)** मेघस्य हननाय **(सोमम्)** ऐश्वर्य्यम्॥७॥

**अन्वयः**-यथाग्निरिन्द्रस्तूयमस्य जगतो मध्ये त्री भुवनानि प्रकाशयन् सरांसि पिबद् वृत्रहत्याय सुतं सोममपचत् तथा सखा क्रत्वा सख्ये साकं मनुषो महिषा त्री शतानि रक्षेत्॥७॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यथा सूर्य्य ऊर्ध्वाऽधोमध्यस्थान् स्थूलान् पदार्थान् प्रकाशयति तथोत्तममध्याऽधमान् व्यवहारान् राजा प्रकटीकुर्य्यात् सर्वैः सह सुहृद्वद्वर्त्तेत॥७॥

**पदार्थः**-जैसे **(अग्निः)** अग्नि और **(इन्द्रः)** सूर्य्य **(तूयम्)** शीघ्र **(अस्य)** इस जगत् के मध्य में **(त्री)** तीन भुवनों को प्रकाशित करता हुआ **(सरांसि)** तडागों का **(पिबत्)** पान करता है और **(वृत्रहत्याय)** मेघ के नाश करने के लिये **(सुतम्)** वर्षाये गये **(सोमम्)** ऐश्वर्य्य को **(अपचत्)** पचाता है, वैसे **(सखा)** मित्र **(क्रत्वा)** बुद्धि वा कर्म्म से **(सख्ये)** मित्र के लिये **(साकम्)** सहित **(मनुषः)** मनुष्य के **(महिषा)** बड़े पशुओं के **(त्री)** तीन **(शतानि)** सैकड़ों की रक्षा करे॥७॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे सूर्य्य ऊपर, नीचे और मध्यभाग में वर्त्तमान स्थूल पदार्थों का प्रकाश करता है, वैसे उत्तम, मध्यम और अधम व्यवहारों को राजा प्रकट करे और सबके साथ मित्र के सदृश वर्त्ताव करे॥७॥

**पुना राजविषयमाह॥**

फिर राजविषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**त्री यच्छ॒ता म॑हि॒षाणा॒मघो॒ मास्त्री सरां॑सि म॒घवा॑ सो॒म्यापाः॑।**

**का॒रं न विश्वे॑ अह्वन्त दे॒वा भर॒मिन्द्रा॑य॒ यदहिं॑ ज॒घान॑॥८॥**

**त्री। यत्। श॒ता। म॒हि॒षाणा॑म्। अघः॑। माः॑। त्री। सरां॑सि। म॒घऽवा॑। सो॒म्याः। अपाः॑। का॒रम्। न। विश्वे॑। अ॒ह्व॒न्त॒। दे॒वाः। भर॑म्। इन्द्रा॑य। यत्। अहि॑म्। ज॒घान॑॥८॥**

**पदार्थः-(त्री)** **(यत्)** यः **(शता)** शतानि **(महिषाणाम्)** महतां पदार्थनाम् **(अघः)** अहन्तव्यः **(माः)** रचयेः **(त्री)** **(सरांसि)** मेघमण्डलभूम्यन्तरिक्षस्थानि **(मघवा)** बहुधनवान् **(सोम्या)**



www.9009.co.in

सोमगुणसम्पन्न **(अपाः)** पाहि **(कारम्)** कर्त्तारम् **(न)** इव **(विश्वे)** सर्वे **(अह्वन्त)** आह्वयन्ति **(देवाः)** विद्वांसः **(भरम्)** पालनम् **(इन्द्राय)** ऐश्वर्य्याय **(यत्)** यथा **(अहिम्)** मेघम् **(जघान)** हन्ति॥८॥

**अन्वयः**-हे राजन्! यद्यस्त्वमघः सन् महिषाणां त्री शता माः। हे सोम्या! मघवा सँस्त्री सरांसि सूर्य इव प्रजा अपाः सूर्यो यदहिं जघान यथा विश्वे देवा इन्द्राय कारं न भरमह्वन्त तथेन्द्राय प्रयतस्व॥८॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। यथा पुरुषार्थिनं जनं सर्वे स्वीकुर्वन्ति तथैव सूर्य्य ईश्वरनियमनियतजलरसं गृह्णाति यथा जना महतां पदार्थानां सकाशाच्छतशः कार्याणि साध्नुवन्ति तथैव राजा मरुद्भ्यः पुरुषेभ्यो महद्राजकार्य्यं साध्नुयात्॥८॥

**पदार्थः**-हे राजन्! **(यत्)** जो आप **(अघः)** नहीं मारने योग्य होते हुए **(महिषाणाम्)** बड़े पदार्थों के **(त्री)** तीन **(शता)** सैकड़ों को **(माः)** रचिये और हे **(सोम्या)** चन्द्रमा के गुणों से सम्पन्न! **(मघवा)** बहुत धनवान् होते हुए **(त्री)** तीन **(सरांसि)** मेघमण्डल, भूमि और अन्तरिक्ष में स्थित पदार्थों को सूर्य के सदृश प्रजाओं का **(अपाः)** पालन कीजिये और सूर्य्य **(यत्)** जैसे **(अहिम्)** मेघ का **(जघान)** नाश करता है और जैसे **(विश्वे)** सम्पूर्ण **(देवाः)** सम्पूर्ण **(देवाः)** विद्वान् जन **(इन्द्राय)** ऐश्वर्य्य के लिये **(कारम्)** कर्त्ता के **(न)** सदृश **(भरम्)** पालन को **(अह्वन्त)** कहते हैं, वैसे ऐश्वर्य्य के लिये प्रयत्न कीजिये॥८॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जैसे पुरुषार्थी जन को सब स्वीकार करते हैं, वैसे ही सूर्य ईश्वरीय नियमों से नियत जलरस का ग्रहण करता है, जैसे जन बड़े पदार्थों की उत्तेजना से सैकड़ों काम सिद्ध करते हैं, वैसे ही राजा प्रजाजनों से बड़े राजकार्य्य को सिद्ध करे॥८॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**उशना यत्सहस्यैरयातं गृहमिन्द्र जूजुवानेभिरश्वैः।**

**वन्वानो अत्र सरथं ययाथ कुत्सेन देवैरवनोर्ह शुष्णम्॥९॥**

**उशना। यत्। सहस्यैः। अयातम्। गृहम्। इन्द्र। जूजुवानेभिः। अश्वैः। वन्वानः। अत्र। सऽरथम्। ययाथ। कुत्सेन। देवैः। अवनोः। ह। शुष्णम्॥९॥**

**पदार्थः**-**(उशना)** कामयमानः **(यत्)** **(सहस्यैः)** सहस्सु बलेषु भवैः **(अयातम्)** प्राप्नुतम् **(गृहम्)** **(इन्द्र)** राजन् **(जूजुवानेभिः)** वेगवद्भिः। अत्र **तुजादीनामित्यभ्यासदैर्घ्यम्।** **(अश्वैः)** तुरङ्गैरग्न्यादिभिर्वा **(वन्वानः)** याचमानः **(अत्र)** अस्मिन् जगति **(सरथम्)** रथेन सह वर्त्तमानम् **(ययाथ)** प्राप्नुत **(कुत्सेन)** वज्रेणेव दृढेन कर्मणा **(देवैः)** विद्वद्भिः **(अवनोः)** रक्ष **(ह)** किल **(शुष्णम्)** बलम्॥९॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र त्वमुशना च! युवां सहस्यैः सह जूजुवानेभिरश्वैश्चालिते याने स्थित्वा यद् गृहमयातमत्र ह वन्वानस्त्वं कुत्सेन देवैः शुष्णमवनोः। हे मनुष्या! यूयमेताभ्यां सह सरथं ह ययाथ॥९॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-ये राजादयो मनुष्याः सुसभ्याः स्युस्ते विमानादीनि निर्मातुं शक्नुयुर्दुष्टान् हन्तुं समर्था भवेयुः॥९॥

**पदार्थः**-हे **(इन्द्र)** राजन् आप और **(उशना)** कामना करता हुआ जन! तुम दोनों **(सहस्यैः)** बलों में उत्पन्न हुए पदार्थों के साथ **(जूजुवानेभिः)** वेग वाले **(अश्वैः)** घोड़ों वा अग्नि आदिकों से चलाये गये वाहन पर स्थित हो के **(यत्)** जिस **(गृहम्)** गृह को **(अयातम्)** प्राप्त हूजिये और **(अत्र)** इस जगत् में **(ह)** निश्चय से **(वन्वानः)** याचना करते हुए आप **(कुत्सेन)** वज्र के सदृश दृढ़ कर्म्म से **(देवैः)** विद्वानों से **(शुष्णम्)** बल की **(अवनोः)** रक्षा करिये और हे मनुष्यो! आप लोग इन दोनों के साथ **(सरथम्)** रथ के साथ वर्त्तमान जैसे हो, वैसे निश्चय से **(यथाय)** प्राप्त होओ॥९॥

**भावार्थः**-जो राजा आदि मनुष्य उत्तम प्रकार श्रेष्ठ होवें, वे विमान आदि वाहनों को बना सकें और दुष्ट जनों के मारने को समर्थ होवें॥९॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**प्रान्यच्चक्रमवृहः सूर्यस्य कुत्सायान्यद्वरिवो यातवेऽकः।**

**अनासो दस्यूँरमृणो वधेन नि दुर्योण आवृणङ्मृध्रवाचः॥१०॥२४॥**

**प्र। अन्यत्। चक्रम्। अवृहः। सूर्यस्य। कुत्साय। अन्यत्। वरिवः। यातवे। अकरित्यकः। अनासः। दस्यून्। अमृणः। वधेन। नि। दुर्योणे। अवृणक्। मृध्रऽवाचः॥१०॥**

**पदार्थः**-**(प्र)** **(अन्यत्)** **(चक्रम्)** **(अवृहः)** वर्धयेः **(सूर्य्यस्य)** **(कुत्साय)** वज्राय **(अन्यत्)** **(वरिवः)** परिचरणम् **(यातवे)** यातुं गन्तुम् **(अकः)** कुर्य्याः **(अनासः)** अविद्यमानास्यान् **(दस्यून्)** दुष्टान् चोरान् **(अमृणः)** हिंस्याः **(वधेन)** **(नि)** नितराम् **(दुर्य्योणे)** गृहनयने **(आवृणक्)** वृङ्धि **(मृध्रवाचः)** हिंस्रावाचो जनान्॥१०॥

**अन्वयः**-हे राजंस्त्वं सूर्य्यस्येवाऽन्यच्चक्रं प्रावृहः कुत्सायाऽन्यद्वरिवो यातवेऽकरनासो दस्यून् वधेनामृणो दुर्य्योणे मृध्रवाचो जनान् न्यावृणक्॥१०॥

**भावार्थः**-हे राजन्! यथा सूर्य्यः स्वं चक्रमाकर्षणेन वर्त्तयति तथैव विमानादियानै राज्यमनुवर्त्तय दस्यून् दुष्टवाचश्च हत्वा राज्येऽचोरान् श्रेष्ठवचनांश्च सम्पादय॥१०॥

**पदार्थः**-हे राजन्! आप **(सूर्यस्य)** सूर्य के सदृश **(अन्यत्)** अन्य **(चक्रम्)** चक्र की **(प्र, अवृहः)** उत्तम वृद्धि करिये और **(कुत्साय)** वज्र के लिये **(अन्यत्)** अन्य **(वरिवः)** सेवन को **(यातवे)** प्राप्त होने को **(अकः)** करिये तथा **(अनासः)** मुखरहित **(दस्यून्)** दुष्ट चोरों का **(वधेन)** वध से **(अमृणः)** नाश करिये और **(दुर्य्योणे)** गृह के प्राप्त होने में **(मृध्रवाचः)** कुत्सित वाणियों वाले जनों को **(नि, आवृणक्)** निरन्तर वर्जिये॥१०॥



www.9009.co.in

**भावार्थ:**-हे राजन्! जैसे सूर्य्य अपने चक्र का आकर्षण से वर्त्ताव करता है, वैसे ही विमान आदि वाहनों से राज्य का अनुवर्त्तन करो और चोर तथा दुष्ट वाणीवालों का नाश करके राज्य में नहीं चोरी करने वाले और श्रेष्ठ वचनों वाले जनों का सम्पादन कीजिये॥१०॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**स्तोमा॑सस्त्वा गौरि॑वीतेरवर्धन्नर॑न्धयो वैदथि॒नाय॒ पिप्रु॑म्।**

**आ त्वामृ॒जिश्वा॑ स॒ख्याय॑ चक्रे॒ पच॑न् प॒क्तीरपि॑बः सोम॑मस्य॥११॥**

**स्तोमा॑सः। त्वा॒। गौरि॑ऽवीतेः। अ॒व॒र्ध॒न्। अर॑न्धयः। वै॒द॒थि॒नाय॑। पिप्रु॑म्। आ। त्वाम्। ऋ॒जिश्वा॑। स॒ख्याय॑। च॒क्रे॒। पच॑न्। प॒क्तीः। अपि॑बः। सोम॑म्। अ॒स्य॒॥११॥**

**पदार्थः**-(**स्तोमासः**) प्रशंसिताः (**त्वा**) त्वाम् (**गौरिवीतेः**) यो गौरीं वाचं व्येति सः। **गौरीति वाङ्नामसु पठितम्।** (निघं०१.११) (**अवर्धन्**) वर्धन्तम् (**अरन्धयः**) हिंसय (**वैदथिनाय**) विदिथिना सङ्ग्रामकर्त्रा निर्मिताय (**पिप्रुम्**) व्यापकम् (**आ**) (**त्वाम्**) (**ऋजिश्वा**) ऋजिः सरलश्चासौ श्वा च (**सख्याय**) मित्रत्वाय (**चक्रे**) (**पचन्**) (**पक्तीः**) पाकान् (**अपिबः**) पिबेः (**सोमम्**) ऐश्वर्य्यमोषधिरसं वा (**अस्य**) जगतो मध्ये॥११॥

**अन्वयः**-हे राजन्! गौरिवीतेस्तव सङ्गेन स्तोमासोऽवर्धंस्तैः सह वैदथिनाय शत्रूनरन्धयः। य ऋजिश्वेव पिप्रुं त्वा सख्यायाऽऽचक्रे तेन सहास्य पक्तीः पचंस्त्वं सोममपिबो ये त्वां पालयेयुस्तान् सर्वांस्त्वं सत्कुर्याः॥११॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे राजन्! ये शुभैर्गुणैस्त्वां वर्धयन्ति मित्रं जानन्ति तान् सखीकृत्य त्वमैश्वर्य्यं वर्धय॥११॥

**पदार्थ:**-हे राजन् (**गौरिविते:**) वाणी को विशेष प्राप्त अर्थात् जानने वाले आपके संग से (**स्तोमास:**) प्रशंसित (**अवर्धन्**) वृद्धि को प्राप्त हों, उनके साथ (**वैदथिनाय**) संग्राम करने वाले से बनाये गये के लिये शत्रुओं का (**अरन्धय:**) नाश करो और जो (**ऋजिश्वा**) सरल कुत्ते के सदृश ही मनुष्य (**पिप्रुम्**) व्यापक (**त्वा**) आपको (**सख्याय**) मित्रपने के लिये (**आ, चक्रे**) अच्छे प्रकार कर चुका, उसके साथ (**अस्य**) इस जगत् के मध्य में (**पक्ती:**) पाकों का (**पचन्**) पाक करते हुए आप (**सोमम्**) ऐश्वर्य वा ओषधि के रस का (**अपिब:**) पान करिये और जो (**त्वाम्**) आपकी रक्षा करें, उन सबका आप सत्कार करिये॥११॥

**भावार्थ:**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे राजन्! जो उत्तम गुणों से आपकी वृद्धि करते और आपको मित्र जानते हैं, उनको मित्र करके आप ऐश्वर्य की वृद्धि करो॥११॥

**अथ विद्वद्विषयमाह॥**

अब विद्वद्विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥



www.9009.co.in

**नवग्वासः सुतसोमास इन्द्रं दशग्वासो अभ्यर्चन्त्यर्कैः।**

**गव्यं चिदूर्वमपिधानवन्तं तं चिन्नरः शशमाना अप व्रन्॥१२॥**

**नवऽग्वासः। सुतसोमासः। इन्द्रम्। दशऽग्वासः। अभि। अर्चन्ति। अर्कैः। गव्यम्। चित्। ऊर्वम्। अपिधानऽवन्तम्। तम्। चित्। नरः। शशमानाः। अप। व्रन्॥१२॥**

**पदार्थः-(नवग्वासः)** नवीनगतयः **(सुतसोमासः)** निष्पादितैश्वर्यौषधयः **(इन्द्रम्)** विद्यैश्वर्ययुक्तम् **(दशग्वासः)** दश गाव इन्द्रियाणि जितानि यैस्ते **(अभि)** सर्वतः **(अर्चन्ति)** सत्कुर्वन्ति **(अर्कैः)** मन्त्रैर्विचारैः **(गव्यम्)** गोरिदम् **(चित्)** अपि **(ऊर्वम्)** अविद्याहिंसकम् **(अपिधानवन्तम्)** आच्छादनयुक्तम् **(तम्)** **(चित्)** **(नरः)** नेतारः **(शशमानाः)** अविद्या उल्लङ्घमानाः **(अप)** **(व्रन्)** वृण्वन्ति॥१२॥

**अन्वयः**-हे विद्वन्! सुतसोमासो नवग्वासो दशग्वासः शशमाना नरो यं गव्यं चिदूर्वमपिधानवन्त-मिन्द्रमर्कैरभ्यर्चन्ति तस्याऽविद्यामप व्रँस्तं चित् त्वमपि शिक्षय॥१२॥

**भावार्थः**-ये नूतनविद्याजिघृक्षव ऐश्वर्य्यमिच्छुका जितेन्द्रिया विद्वांसोऽज्ञानिनः प्रबोध्य विदुषः कुर्वन्ति त एव पूजनीया भवन्ति॥१२॥

**पदार्थः**-हे विद्वन्! **(सुतसोमासः)** संपादन की ऐश्वर्य और ओषधियां जिन्होंने **(नवग्वासः)** जो नवीन गति वाले **(दशग्वासः)** जिन्होंने दशों इन्द्रियों को जीता ऐसे **(शशमानाः)** अविद्याओं का उल्लंघन करते हुए **(नरः)** नायक जिन जिस **(गव्यम्)** गोसम्बन्धी **(चित्)** निश्चित **(ऊर्वम्)** अविद्या के नाश करने वाले **(अपिधानवन्तम्)** आच्छादन से युक्त गुप्त **(इन्द्रम्)** विद्या और ऐश्वर्य्यवान् का **(अर्कैः)** मन्त्र वा विचारों से **(अभि)** सब प्रकार **(अर्चन्ति)** सत्कार करते और उसकी अविद्या का **(अप, व्रन्)** अस्वीकार करते हैं **(तम्)** उसको **(चित्)** भी आप शिक्षा दीजिये॥१२॥

**भावार्थः**-जो नवीन विद्या का ग्रहण करना चाहते और ऐश्वर्य्य की इच्छा करने और इन्द्रियों के जीतने वाले विद्वान् जन अज्ञानी जनों को बोध देकर विद्वान् करते हैं, वे ही सत्कार करने योग्य होते हैं॥१२॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**कथो नु ते परि चराणि विद्वान् वीर्या मघवन् या चकर्थ।**

**या चो नु नव्या कृणवः शविष्ठ प्रेदु ता ते विदथेषु ब्रवाम॥१३॥**

**कथो इति। नु। ते। परि। चराणि। विद्वान्। वीर्या। मघऽवन्। या। चकर्थ। या। चो इति। नु। नव्या। कृणवः। शविष्ठ। प्र। इत्। ऊँ इति। ता। ते। विदथेषु। ब्रवाम॥१३॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः-(कथो)** कथम् **(नु)** **(ते)** तव **(परि)** सर्वतः **(चराणि)** गतिमन्ति प्राप्तव्यानि वा **(विद्वान्)** **(वीर्या)** वीर्ययुक्तानि सैन्यानि **(मघवन्)** पूजितधनयुक्त **(या)** यानि **(चकर्थ)** करोषि **(या)** यानि **(चो)** च **(नु)** **(नव्या)** नवेषु भवानि **(कृणवः)** करोषि **(शविष्ठ)** अतिशयेन बलिष्ठ **(प्र)** **(इत्)** एव **(उ)** **(ता)** तानि **(ते)** तव **(विदथेषु)** सङ्ग्रामेषु **(ब्रवाम)** उपदिशेम॥१३॥

**अन्वयः**-हे मघवन्! या ते परि चराणि वीर्या कथो नु चकर्थ विद्वांस्त्वं या चो नव्या नु कृणवः। हे शविष्ठ! ते यानि विदथेषु वयं प्र ब्रवाम ता तानीदु त्वं गृहाण॥१३॥

**भावार्थः**-मनुष्याः सदैव नवीना नवीना विद्या नूतनं नूतनं कार्य्यं संसाध्यैश्वर्य्यं प्राप्नुयुरेवमन्यान् प्रत्युपदिशन्तु॥१३॥

**पदार्थः**-हे **(मघवन्)** श्रेष्ठ धन से युक्त! **(या)** जो **(ते)** आपकी **(परि)** सब ओर से **(चराणि)** चलने वाली और प्राप्त होने योग्य **(वीर्या)** पराक्रमयुक्त सेनाओं को **(कथो)** किस प्रकार **(नु)** निश्चय से **(चकर्थ)** करते हो तथा **(विद्वान्)** विद्वान् आप **(या)** जिनको **(चो)** और **(नव्या)** नवीनों में उत्पन्नों को **(नु)** निश्चय से **(कृणवः)** सिद्ध करते हो। हे **(शविष्ठ)** अतिशय करके बलिष्ठ! **(ते)** आपके जिनको **(विदथेषु)** सङ्ग्रामों में हम लोग **(प्र, ब्रवाम)** उपदेश करें **(ता)** उनको **(इत्)** निश्चय से **(उ)** भी आप ग्रहण करो॥१३॥

**भावार्थः**-मनुष्यों को चाहिये कि सदा ही नवीन-नवीन विद्या और नवीन-[नवीन] कार्य्य को सिद्ध करके ऐश्वर्य्य को प्राप्त होवें, इसी प्रकार अन्यों के प्रति उपदेश करें॥१३॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**ए॒ता विश्वा॑ च॒कृवाँ इ॑न्द्र॒ भूर्यप॑रीतो ज॒नुषा॑ वी॒र्ये॑ण।**

**या चि॒न्नु व॑ज्रिन् कृ॒णवो॑ दधृ॒ष्वान्न ते॑ व॒र्ता तवि॑ष्या अस्ति॒ तस्याः॑॥१४॥**

**ए॒ता। विश्वा॑। च॒कृ॒ऽवान्। इ॒न्द्र॒। भूरि॑। अप॑रिऽइतः। ज॒नुषा॑। वी॒र्ये॑ण। या। चि॒त्। नु। व॒ज्रि॒न्। कृ॒णव॑ः। द॒धृ॒ष्वान्। न। ते॒। व॒र्ता। तवि॑ष्याः। अ॒स्ति॒। तस्याः॑॥१४॥**

**पदार्थः-(एता)** एतानि **(विश्वा)** सर्वाणि **(चकृवान्)** कृतवान् **(इन्द्र)** परमैश्वर्य्ययुक्त राजन् **(भूरि)** बहूनि बलानि **(अपरीतः)** अवर्जितः **(जनुषा)** द्वितीयेन जन्मना **(वीर्य्येण)** पराक्रमेण **(या)** यानि **(चित्)** अपि **(नु)** सद्यः **(वज्रिन्)** प्रशस्तशस्त्रास्त्रयुक्त **(कृणवः)** कुर्य्याः **(दधृष्वान्)** धर्षितवान् **(न)** निषेधे **(ते)** तव **(वर्त्ता)** स्वीकर्त्ता **(तविष्याः)** बलयुक्तायाः सेनायाः **(अस्ति)** **(तस्याः)**॥१४॥

**अन्वयः**-हे वज्रिन्निन्द्रापरीतस्त्वं जनुषा वीर्य्येण चिदेता विश्वा चकृवान् या च भूरि कृणवो हे राजँस्ते चित् तस्यास्तविष्या दधृष्वान्नु वर्त्ता वोऽपि नास्ति॥१४॥



www.9009.co.in

**भावार्थ:**-ये राजादयो जनास्ते ब्रह्मचर्य्येण विद्या: प्राप्य चत्वारिंशद्वर्षायुष्कास्सन्त: समावर्त्य स्वयंवरं विवाहं विधाय सेनां वर्धयित्वा प्रजाया: सर्वतोऽभिरक्षणं कुर्य्यु:॥१४॥

**पदार्थ:**-हे **(वज्रिन्)** उत्तम शस्त्र और अस्त्रों से और **(इन्द्र)** अत्यन्त ऐश्वर्य्य से युक्त राजन्! **(अपरीत:)** नहीं वर्ज्जित आप **(जनुषा)** दूसरे जन्म से और **(वीर्य्येण)** पराक्रम से **(चित्)** भी **(एता)** इन **(विश्वा)** सब को **(चकृवान्)** किये हुए हो और **(या)** जिन **(भूरि)** बहुत बलों को **(कृणव:)** करिये। हे राजन्! **(ते)** आपकी निश्चित **(तस्या:)** उस **(तविष्या:)** बलयुक्त सेना का **(दधृष्वान्)** धृष्ट अर्थात् हर्षित किया हुआ **(नु)** शीघ्र **(वर्त्ता)** स्वीकार करने वाला कोई भी **(न)** नहीं **(अस्ति)** है॥१४॥

**भावार्थ:**-जो राजा आदि जन हैं, वे ब्रह्मचर्य्य से विद्याओं को प्राप्त होकर चवालीस वर्ष की अवस्था से युक्त हुए समावर्त्तन करके अर्थात् गृहस्थाश्रम को विधिपूर्वक ग्रहण कर स्वयंवर विवाह कर और सेना की वृद्धि करके प्रजा की सब प्रकार से रक्षा करें॥१४॥

**अथ विद्वद्विषये पुरुषार्थरक्षणविषयमाह॥**

अब विद्वद्विषय में पुरुषार्थरक्षणविषय को कहते हैं॥

**इन्द्र॒ ब्रह्म॑ क्रि॒यमा॑णा जुषस्व॒ या ते॑ शविष्ठ॒ नव्या॒ अक॑र्म।**

**वस्त्रे॑व भ॒द्रा सुकृ॑ता वसू॒यू रथं॒ न धीर॑: स्वपा॑ अतक्षम्॥ १५॥ २५॥**

**इन्द्र॑। ब्रह्म॑। क्रि॒यमा॑णा। जु॒षस्व॑। या। ते॒। श॒वि॒ष्ठ॒। नव्या॑:। अक॑र्म। वस्त्रा॑ऽइव। भ॒द्रा। सुऽकृ॑ता। व॒सु॒ऽयु:। रथ॑म्। न। धीर॑:। सु॒ऽअपा॑:। अ॒त॒क्ष॒म्॥१५॥**

**पदार्थ:**-**(इन्द्र)** विद्यैश्वर्य्ययुक्त **(ब्रह्म)** अन्नानि धनानि वा। **ब्रह्मेत्यन्ननामसु पठितम्।** (निघं०२.७) **(क्रियमाणा)** वर्त्तमानेन पुरुषार्थेन सिद्धानि **(जुषस्व)** सेवस्व **(या)** यानि **(ते)** तव **(शविष्ठ)** अतिशयेन बलयुक्त **(नव्या:)** नवीना: श्रिय: **(अकर्म)** कुर्य्याम **(वस्त्रेव)** यथा वस्त्राणि प्राप्यन्ते तथा **(भद्रा)** कल्याणकराणि **(सुकृता)** धर्म्येण निष्पादितानि **(वसूयु:)** आत्मनो धनमिच्छु: **(रथम्)** रमणीयम् **(न)** इव **(धीर:)** ध्यानवान् योगी **(स्वपा:)** सत्यभाषणादिकर्मा **(अतक्षम्)** प्राप्नुयाम्॥१५॥

**अन्वय:**-हे शविष्ठेन्द्र! यस्य ते नव्या: श्रियो वयकर्म या क्रियमाणा ब्रह्म त्वं जुषस्व ता भद्रा सुकृता वस्त्रेव स्वपा धीरो वसूयू रथं न भद्रा सुकृता अहमतक्षम्॥१५॥

**भावार्थ:**-अत्रोपमालङ्कार:। हे मनुष्या! गोत्रधनस्याशया यूयमालस्येन पुरुषार्थं मा त्यजत, किन्तु नित्यं पुरुषार्थवर्धनेनैश्वर्यं वर्धयित्वा वस्त्रवद्रथवत्सुखं भुक्त्वा नूतनं यश: प्रथयतेति॥१५॥

अत्रेन्द्रविद्वद्गुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इत्येकोनत्रिंशत्तमं सूक्तं पञ्चविंशो वर्गश्च समाप्त:॥**

**पदार्थ:**-हे **(शविष्ठ)** अतिशय करके बल से और **(इन्द्र)** विद्या और ऐश्वर्य्य से युक्त! जिन **(ते)** आपके **(नव्या:)** नवीन धनों को हम लोग **(अकर्म)** करें और **(या)** जिन **(क्रियमाणा)** वर्त्तमान पुरुषार्थ



www.9009.co.in

से सिद्ध हुए **(ब्रह्म)** अन्न वा धनों का आप **(जुषस्व)** सेवन करो उन **(भद्रा)** कल्याणकारक **(सुकृता)** धर्म्म से उत्पन्न किये हुओं को **(वस्त्रेव)** जैसे वस्त्र प्राप्त होते वैसे तथा **(स्वपा:)** सत्यभाषण आदि कर्म्म करने वाला **(धीर:)** ध्यानवान् योगी और **(वसूयू:)** अपने को धन की इच्छा करने वाला **(रथम्)** उत्तम वाहन को **(न)** जैसे वैसे कल्याणकारक और धर्म्म जैसे उत्पन्न किये गयों को मैं **(अतक्षम्)** प्राप्त होऊँ॥१५॥

**भावार्थ:**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! वंश और धन की आशा से आप लोग आलस्य से पुरुषार्थ का न त्याग करो, किन्तु नित्य पुरुषार्थ की वृद्धि से ऐश्वर्य्य की वृद्धि करके वस्त्र और रथ से जैसे वैसे सुख का भोग करके नवीन यश प्रकट करो॥१५॥

इस सूक्त में इन्द्र और विद्वानों के गुणों का वर्णन होने से इस सूक्त के अर्थ की इनसे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह उनतीसवां सूक्त और पच्चीसवां वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

**अथ पञ्चदशर्चस्य त्रिंशत्तमस्य सूक्तस्य बभ्रुरात्रेय ऋषिः। इन्द्र ऋणञ्चयश्च देवता। १, २, ३, ४, ५, ८, ९ निचृत् त्रिष्टुप्। १० विराट् त्रिष्टुप्। ७, ११ १२ त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः। ६, १३ पङ्क्तिः। १४ स्वराट् पङ्क्तिः। १५ भुरिक्पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः॥**

***अथेन्द्रविषयमाह॥***

अब पन्द्रह ऋचा वाले तीसवें सूक्त का आरम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में इन्द्र के विषय को कहते हैं॥

**क्व१ स्य वीरः को अपश्यदिन्द्रं सुखरथमीयमानं हरिभ्याम्।**

**यो राया वज्री सुतसोममिच्छन् तदोको गन्ता पुरुहूत ऊती॥ १॥**

**क्व। स्यः। वीरः। कः। अपश्यत्। इन्द्रम्। सुखऽरथम्। ईयमानम्। हरिऽभ्याम्। यः। राया। वज्री। सुतऽसोमम्। इच्छन्। तत्। ओकः। गन्ता। पुरुऽहूतः। ऊती॥ १॥**

**पदार्थः**-(**क्व**) कस्मिन् (**स्यः**) सः (**वीरः**) शूरः (**कः**) (**अपश्यत्**) पश्यति (**इन्द्रम्**) विद्युतम् (**सुखरथम्**) सुखाय रथस्सुखरथस्तम् (**ईयमानम्**) गच्छन्तम् (**हरिभ्याम्**) वेगाकर्षणाभ्याम् (**यः**) (**राया**) धनेन (**वज्री**) शस्त्रास्त्रयुक्तः (**सुतसोमम्**) सुतः सोम ऐश्वर्यं यस्मिँस्तम् (**इच्छन्**) (**तत्**) (**ओकः**) गृहम् (**गन्ता**) (**पुरुहूतः**) बहुभिः स्तुतः (**ऊती**) रक्षणाद्याय॥ १॥

**अन्वयः**-हे विद्वन्! को वीर इन्द्रमपश्यत् क्व हरिभ्यां सुखरथमीयमानमपश्यत् यो वज्री गन्ता पुरुहूतः सतुसोमं तदोक इच्छन्नूती रायेन्द्रमपश्यत् स्यः सुखरथं प्राप्नुयात्॥ १॥

**भावार्थः**-हे विद्वन्! के विद्युदादिविद्यां प्राप्तुमधिकारिणः सन्तीति पृच्छामि ये विदुषां सङ्गेनाप्तरीत्या विद्यां हस्तक्रियां गृहीत्वा नित्यं प्रयतेरन्नित्युत्तरम्॥ १॥

**पदार्थः**-हे विद्वन्! (**कः**) कौन (**वीरः**) शूर (**इन्द्रम्**) बिजुली को (**अपश्यत्**) देखता है (**क्व**) किसमें (**हरिभ्याम्**) वेग और आकर्षण से (**सुखरथम्**) सुख के अर्थ (**ईयमानम्**) चलते हुए रथ को देखता है (**यः**) जो (**वज्री**) शस्त्र और अस्त्रों में युक्त (**गन्ता**) जाने वाला (**पुरुहूतः**) बहुतों से स्तुति किया गया (**सुतसोमम्**) इकट्ठा किया ऐश्वर्य्य जिसमें (**तत्**) उस (**ओकः**) गृह की (**इच्छन्**) इच्छा करता हुआ (**ऊती**) रक्षण आदि के लिये (**राया**) धन से बिजुली को देखता है (**स्यः**) वह सुख के लिये रथ को प्राप्त हो॥ १॥

**भावार्थः**-हे विद्वन्! कौन बिजुली आदि की विद्या के प्राप्त होने को अधिकारी हैं, इस प्रकार पूछता हूँ; जो विद्वानों के सङ्ग से यथार्थवक्ता जनों की रीति से विद्या और हस्तक्रिया को ग्रहण करके नित्य प्रयत्न करें, यह उत्तर है॥ १॥



www.9009.co.in

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**अवा॑चचक्षं प॒दम॑स्य स॒स्वरु॒ग्रं नि॑धा॒तुरन्वा॑यमि॒च्छन्।**

**अपृ॑च्छम॒न्याँ उ॒त ते म॑ आहु॒रिन्द्रं॒ नरो॑ बुबुधा॒ना अ॑शेम॥२॥**

**अव॑। अ॒च॒च॒क्ष॒म्। प॒दम्। अ॒स्य॒। स॒स्वः॑। उ॒ग्रम्। नि॒ऽधा॒तुः॑। अनु॑। आ॒य॒म्। इ॒च्छन्। अपृ॑च्छम्। अ॒न्यान्। उ॒त। ते। मे॒। आ॒हुः॒। इन्द्र॑म्। नरः॑। बु॒बु॒धा॒नाः॑। अ॒शे॒म॥२॥**

**पदार्थः**-**(अव)** **(अचचक्षम्)** कथयेयम् **(पदम्)** प्रापणीयं विज्ञानम् **(अस्य)** शिल्पस्य **(सस्वः)** गुप्तम् **(उग्रम्)** उग्रगुणकर्मस्वभावम् **(निधातुः)** धरतुः **(अनु)** **(आयम्)** प्राप्नुयाम् **(इच्छन्)** **(अपृच्छम्)** पृच्छेयम् **(अन्यान्)** विदुषः **(उत)** **(ते)** विद्वांसः **(मे)** मह्यम् **(आहुः)** कथयन्तु **(इन्द्रम्)** विद्युतम् **(नरः)** नायकाः **(बुबुधानाः)** सम्बोधयुक्ताः **(अशेम)** प्राप्नुयाम॥२॥

**अन्वयः**-शिल्पविद्यामिच्छन्नहं यावन्यान् विदुषोऽपृच्छं ते बुबुधाना नरो म इन्द्रमाहुस्तमस्य निधातुः सस्वरुग्रं पदमन्वायमन्यान् प्रत्यवाचचक्षमेवमुत मित्रवद्वर्त्तमाना वयं साङ्गोपाङ्गाः शिल्पविद्या अशेम॥२॥

**भावार्थः**-यदा जिज्ञासवो विदुषः प्रति पृच्छेयुस्तदा तान् प्रति यथार्थमुत्तरं प्रदद्युरेवं सखायः सन्तो विद्युदादिविद्यामुन्नयेयुः॥२॥

**पदार्थः**-शिल्पविद्या की **(इच्छन्)** इच्छा करता हुआ मैं जिन **(अन्यान्)** अन्य विद्वानों को **(अपृच्छम्)** पूछूं **(ते)** वे **(बुबुधानाः)** सम्बोधयुक्त **(नरः)** नायक जन विद्वान् **(मे)** मेरे लिये **(इन्द्रम्)** बिजुली को **(आहुः)** कहें, उसको **(अस्य)** इस शिल्पविद्या के **(निधातुः)** धारण करने वाले के **(सस्वः)** गुप्त **(उग्रम्)** उग्र गुण, कर्म्म और स्वभाव वाले **(पदम्)** प्राप्त होने योग्य विज्ञान को **(अनु, आयम्)** अनुकूल प्राप्त होऊं और अन्यों के प्रति **(अव, अचचक्षम्)** निश्शेष कहूँ, इस प्रकार **(उत)** भी मित्र के सदृश वर्त्तमान हम लोग अङ्ग और उपाङ्गों के सहित शिल्पविद्याओं को **(अशेम)** प्राप्त होवें॥२॥

**भावार्थः**-जब शिल्प आदि के जानने कि इच्छा करने वाले जन विद्वानों के प्रति पूछें, तब उनके प्रति यथार्थ उत्तर देवें, इस प्रकार परस्पर मित्र हुए बिजुली आदि की विद्या की उन्नति करें॥२॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**प्र नु व॒यं सु॒ते या ते॑ कृ॒तानी॑न्द्र॒ ब्रवा॑म॒ यानि॑ नो॒ जुजो॑षः।**

**वेद॒दवि॑द्वाञ्छृ॒णव॑च्च वि॒द्वान् वह॑ते॒ऽयं म॒घवा॒ सर्व॑सेनः॥३॥**

**प्र। नु। व॒यम्। सु॒ते। या। ते॒। कृ॒तानि॑। इ॒न्द्र॒। ब्रवा॑म। यानि॑। नः॒। जुजो॑षः। वेद॑त्। अवि॑द्वान्। शृ॒णव॑त्। च॒। वि॒द्वान्। वह॑ते। अ॒यम्। म॒घऽवा॑। सर्व॑ऽसेनः॥१॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**प्र**) (**नु**) सद्यः (**वयम्**) (**सुते**) उत्पन्ने जगति (**या**) यानि (**ते**) तव (**कृतानि**) (**इन्द्र**) विद्वन् (**ब्रवाम**) उपदिशेम (**यानि**) (**नः**) अस्माकम् (**जुजोषः**) जुषसे (**वेदत्**) विजानीयात् (**अविद्वान्**) (**शृणवत्**) शृणुयात् (**च**) विद्वान् (**वहते**) प्राप्नोति प्रापयति वा (**अयम्**) (**मघवा**) बहुधनवान् (**सर्वसेनः**) सर्वाः सेना यस्य सः॥३॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! या ते सुते कृतानि नः यानि त्वं जुजोषस्तानि वयं नु प्र ब्रवाम यदाऽयं मघवा सर्वसेनो विद्वान् विद्यां वहते तदायमविद्वाञ्छृणवद्वेदच्च॥३॥

**भावार्थः**-द्वावुपायौ विद्याप्राप्तये वेदितव्यौ तत्राद्यो विद्याऽध्यापक आप्तो भवेच्छ्रोताऽध्येता च पवित्रो निष्कपटी पुरुषार्थी स्यात्। द्वितीयः सतां विदुषां क्रियां दृष्ट्वा स्वयमपि तादृशीं कुर्य्यादेवं कृते सर्वेषां विद्यालाभो भवेत्॥३॥

**पदार्थः**-हे (**इन्द्र**) विद्वन्! (**या**) जिन (**ते**) आपके (**सुते**) उत्पन्न हुए संसार में (**कृतानि**) किये हुए कार्य्यों का (**नः**) हम लोगों के (**यानि**) जिन कार्य्यों को (**जुजोषः**) आप सेवते हो उनका (**वयम्**) हम लोग (**नु**) शीघ्र (**प्र, ब्रवाम**) उपदेश देवें और जब (**अयम्**) यह (**मघवा**) बहुत धन वाला और (**सर्वसेनः**) सम्पूर्ण सेनाओं से युक्त (**विद्वान्**) विद्वान् जन विद्या को (**वहते**) प्राप्त होता वा प्राप्त कराता है, तब यह (**अविद्वान्**) विद्या से रहित जन (**शृणवत्**) श्रवण करे और (**वेदत्**) विशेष करके जाने (**च**) भी॥३॥

**भावार्थः**-दो उपाय विद्या की प्राप्ति के लिए जानने चाहियें, उनमें प्रथम उपाय यह कि विद्या का अध्यापक यथार्थवक्ता होवे तथा सुनने और पढ़ने वाला पवित्र, कपटरहित और पुरुषार्थी होवे। दूसरा उपाय यह है कि श्रेष्ठ विद्वानों का कर्म्म देख कर आप भी वैसा ही कर्म्म करे, ऐसा करने पर सब को विद्या का लाभ होवे॥३॥

**अथ वीरकर्म्माह॥**

अब वीरों के कर्म्म को कहते हैं॥

**स्थिरं मनश्चकृषे जात इन्द्र वेषीदेको युधये भूयसश्चित्।**

**अश्मानं चिच्छवसा दिद्युतो वि विदो गवामूर्वमुस्रियाणाम्॥४॥**

**स्थिरम्। मनः। चकृषे। जातः। इन्द्र। वेषि। इत्। एकः। युधये। भूयसः। चित्। अश्मानम्। चित्। शवसा। दिद्युतः। वि। विदः। गवाम्। ऊर्वम्। उस्रियाणाम्॥४॥**

**पदार्थः**-(**स्थिरम्**) निश्चलम् (**मनः**) अन्तःकरणम् (**चकृषे**) करोति (**जातः**) प्रकटः सन् (**इन्द्र**) योगैश्वर्यमिच्छुक (**वेषि**) व्याप्नोषि (**इत्**) एव (**एकः**) (**युधये**) युद्धाय (**भूयसः**) बहून् (**चित्**) अपि (**अश्मानम्**) मेघम् (**चित्**) अपि (**शवसा**) बलेन (**दिद्युतः**) प्रकाशयतः (**वि**) (**विदः**) वेदय (**गवाम्**) गन्तॄणाम् (**ऊर्वम्**) हिंसकम् (**उस्रियाणाम्**) रश्मीनाम्॥४॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे इन्द्र! यथैकः सूर्य्यो युधये शवसाऽश्मानं भूयसश्चिद् घनाँश्च गवामुस्रियाणामूर्वं चकृषे द्वौ चिद्वि दिद्युतस्तथा त्वं विजयं विदः। एको जातस्त्वं यतो मनः स्थिरं चकृषे तस्मादिद् राज्यं वेषि॥४॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यथा सूर्य्यमेघौ युद्ध्येते तथा राजा शत्रुणा सह सङ्ग्रामं कुर्य्याद्यथा सूर्य्यः किरणैः सर्वं कार्यं साध्नोति तथा राजा सेनाऽमात्यैः सर्वं राजकृत्यं साधयेत्॥४॥

**पदार्थः**-हे (**इन्द्र**) योगजन्य ऐश्वर्य की इच्छा करने वाले जन! जिस प्रकार (**एकः**) एक सूर्य्य (**युधये**) युद्ध के लिये (**शवसा**) बल से (**अश्मानम्**) मेघ को और (**भूयसः**) बहुत (**चित्**) भी मेघों को तथा (**गवाम्**) चलने वाले (**उस्रियाणाम्**) किरणों के (**ऊर्वम्**) नाश करने वालों को (**चकृषे**) करता और दोनों (**चित्**) निश्चित (**वि, दिद्युतः**) प्रकाश करते हैं, वैसे आप विजय को (**विदः**) जनाइये, एक (**जातः**) प्रकट हुए आप जिससे (**मनः**) अन्तःकरण को (**स्थिरम्**) निश्चल करते हो (**इत्**) इसी से राज्य को (**वेषि**) प्राप्त होते हो॥४॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे सूर्य्य और मेघ परस्पर युद्ध करते हैं, वैसे राजा शत्रु के साथ संग्राम करे और जैसे सूर्य्य किरणों से सब कार्य्य को सिद्ध करता है, वैसे राजा सेना और मन्त्रीजनों से सम्पूर्ण राजकृत्य सिद्ध करे॥४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**पुरो यत्त्वं परम आजनिष्ठाः परावति श्रुत्यं नाम बिभ्रत्।**

**अतश्चिदिन्द्रादभयन्त देवा विश्वा अपो अजयद्दासपत्नीः॥५॥२६॥**

**पुरः। यत्। त्वम्। पुरमः। आऽजनिष्ठाः। पुराऽवति। श्रुत्यम्। नाम। बिभ्रत्। अतः। चित्। इन्द्रात्। अभयन्त। देवाः। विश्वाः। अपः। अजयत्। दासऽपत्नीः॥५॥**

**पदार्थः**-(**परः**) उत्कृष्टः (**यत्**) यः (**त्वम्**) (**परमः**) अतीव श्रेष्ठः (**आजनिष्ठाः**) समन्ताज्जायसे (**परावति**) दूरे देशे (**श्रुत्यम्**) श्रुतौ श्रवणे भवम् (**नाम**) संज्ञाम् (**बिभ्रत्**) (**अतः**) (**चित्**) अपि (**इन्द्रात्**) विद्युतः (**अभयन्त**) (**देवाः**) विद्वांसः (**विश्वाः**) सर्वाः (**अपः**) जलानि (**अजयत्**) जयति (**दासपत्नीः**) यो जलं ददाति स दासो मेघः स पतिः पालको यासां ताः॥५॥

**अन्वयः**-हे विद्वन्! यत्त्वं परः परमः श्रुत्यं नाम बिभ्रत्सन्नाजनिष्ठाः स यथा परावति देशे स्थितः सूर्य्यो विश्वा दासपत्नीरपोऽजयद्यथा देवा इन्द्रादभयन्त तथा वर्त्तमानेऽतश्चित्सुखं वर्धय॥५॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यथा दूरस्थोऽपि सूर्य्यः स्वप्रकाशेन प्रख्यातो वर्त्तते तथैव दूरे सन्तोऽप्याप्ताः प्रकाशितकीर्त्तयो भवन्ति॥५॥

**पदार्थः**-हे विद्वन्! (**यत्**) जो (**त्वम्**) आप (**परः**) उत्तम (**परमः**) अत्यन्त श्रेष्ठ (**श्रुत्यम्**) श्रवण में उत्पन्न (**नाम**) संज्ञा को (**बिभ्रत्**) धारण करते हुए (**आजनिष्ठाः**) सब प्रकार से प्रकट होते हो, वह



www.9009.co.in

जैसे **(परावति)** दूर देश में स्थित सूर्य्य **(विश्वा:)** सम्पूर्ण **(दासपत्नी:)** जल का देने वाला मेघ जिनका पालनकर्त्ता ऐसे **(अप:)** जलों को **(अजयत्)** जीतता है और जैसे **(देवा:)** विद्वान् जन **(इन्द्रात्)** बिजुली से **(अभयन्त)** नहीं डरते हैं, वैसे वर्त्तमान होने पर **(अत:)** इससे **(चित्)** भी सुख की वृद्धि करिये॥५॥

**भावार्थ:**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जैसे दूरस्थित भी सूर्य्य अपने प्रकाश से प्रसिद्ध होता है, वैसे ही दूर वर्त्तमान भी यथार्थवक्ता जन प्रकाशित यश वाले होते हैं॥५॥

**अथ विद्वद्विषयमाह॥**

अब विद्वद्विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**तुभ्येदेते मरुतः सुशेवा अर्चन्त्यर्कं सुन्वन्त्यन्धः।**
**अहिमोहानमप आशयानं प्र मायाभिर्मायिनं सक्षदिन्द्रः॥६॥**

**तुभ्य। इत्। एते। मरुतः। सुऽशेवाः। अर्चन्ति। अर्कम्। सुन्वन्ति। अन्धः। अहिम्। ओहानम्। अपः। आऽशयानम्। प्र। मायाभिः। मायिनम्। सक्षत्। इन्द्रः॥६॥**

**पदार्थ:-(तुभ्य)** तुभ्यम्। अत्र विभक्तेर्लुक् **(इत्)** एव **(एते)** **(मरुत:)** ऋत्विज: **(सुशेवा:)** सुष्ठुसुखा: **(अर्चन्ति)** सत्कुर्वन्ति **(अर्कम्)** सत्करणीयम् **(सुन्वन्ति)** निष्पादयन्ति **(अन्ध:)** अन्नम् **(अहिम्)** मेघम् **(ओहानम्)** त्यजन्तम् **(अप:)** जलानि **(आशयानम्)** य: समन्ताच्छेते तम् **(प्र)** **(मायाभि:)** प्रज्ञाभि: **(मायिनम्)** कुत्सिता माया प्रज्ञा विद्यते यस्य तम् **(सक्षत्)** समवैति **(इन्द्र:)** विद्युत्॥६॥

**अन्वय:**-हे विद्वन्! यथेन्द्रो मायाभिराशयानं मायिनमोहानमहिं सक्षद्धत्वाऽपो भूमौ निपातयति यथैते तुभ्य सुशेवा मरुतोऽर्कमर्चन्त्यन्ध: सुन्वन्ति तथेत् तुभ्यं सर्वे विद्वांसस्सुखं प्र यच्छन्तु॥६॥

**भावार्थ:**-त एव विद्वांसो जगत: सुखकरा भवन्ति ये सूर्य्यमेघवज्जगत: सुखकरा: सन्ति स्वात्मवदन्येषां सुखकरा भवन्ति॥६॥

**पदार्थ:**-हे विद्वन्! जैसे **(इन्द्र:)** बिजुली **(मायाभि:)** बुद्धियों से **(आशयानम्)** चारों ओर शयन करते हुए **(मायिनम्)** निकृष्ट बुद्धि वाले और **(ओहानम्)** त्याग करते हुए **(अहिम्)** मेघ को **(सक्षत्)** प्राप्त होता और ताड़न करके **(अप:)** जलों को भूमि में गिराता है और जैसे **(एते)** ये **(तुभ्य)** आपके लिये **(सुशेवा:)** उत्तम सुख वाले **(मरुत:)** ऋत्विक् मनुष्य **(अर्कम्)** सत्कार करने योग्य का **(अर्चन्ति)** सत्कार करते हैं और **(अन्ध:)** अन्न को **(सुन्वन्ति)** उत्पन्न करते हैं, वैसे **(इत्)** ही आपके लिये सम्पूर्ण विद्वान् जन सुख **(प्र)** देवें॥६॥

**भावार्थ:**-वे ही विद्वान् जन जगत् के सुख करने वाले होते हैं, जो सूर्य्य और मेघ के समान जगत् के सुख करने वाले हैं तथा अपने समान दूसरों के सुख करने वाले होते हैं॥६॥

**अथवीरविषयमाह॥**

अब वीर विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥



www.9009.co.in

**वि षू मृधो॑ जनुषा दान॒मिन्व॒न्नह॒न् गवा॑ मघवन्त्संचका॒नः।**

**अत्रा॑ दा॒सस्य॒ नमु॑चेः शिरो॒ यदव॑र्तयो॒ मन॑वे गातु॒मि॒च्छन्॥७॥**

**वि। सु। मृधः॑। जनुषा॑। दान॑म्। इन्व॑न्। अह॑न्। गवा॑। मघ॒ऽवन्। सम्ऽचकानः॑। अत्र॑। दा॒सस्य॑। नमु॑चेः। शिर॑ः। यत्। अव॑र्तयः। मन॑वे। गातुम्। इ॒च्छन्॥७॥**

**पदार्थः**-(**वि**) विशेषेण (**सु**) शोभने (**मृधः**) सङ्ग्रामान् (**जनुषा**) जन्मना (**दानम्**) (**इन्वन्**) प्राप्नुवन् (**अहन्**) हन्ति (**गवा**) किरणेन (**मघवन्**) धनैश्वर्य्याढ्य (**सञ्चकानः**) सम्यक् कामयमानः (**अत्रा**) अस्मिन् व्यवहारे। अत्र **ऋचि तुनुघे**ति दीर्घः। (**दासस्य**) सेवकवद् वर्त्तमानस्य मेघस्य (**नमुचेः**) यः स्वं रूपं न मुञ्चति तस्य (**शिरः**) उत्तमाङ्गम् (**यत्**) (**अवर्त्तयः**) वर्त्तयेः (**मनवे**) मननशीलाय धार्मिकाय मनुष्याय (**गातुम्**) भूमिं वाणीं वा (**इच्छन्**)॥७॥

**अन्वयः**-हे मघवन् राजंस्त्वं जनुषा दानमिन्वन् सन् यथा सूर्य्यो गवा मेघमंहस्तथा मृधो जहि। सञ्चकानः सन् यथात्रा सूर्य्यो नमुचेर्दासस्य मेघस्य शिरो व्यहँस्तथा त्वं मनवे यद्यां गातुमिच्छंस्तदर्थं शत्रुशिरः स्ववर्त्तयः॥७॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे राजानो! यः सूर्यो मेघं जित्वा जगत्सुखयति तथा दुष्टाञ्छत्रून् विजित्य प्रजाः सुखयन्तु॥७॥

**पदार्थः**-हे (**मघवन्**) धन और ऐश्वर्य से युक्त राजन्! आप (**जनुषा**) जन्म से (**दानम्**) दान को (**इन्वन्**) प्राप्त होते हुए जैसे सूर्य्य (**गवा**) किरण से मेघ का (**अहन्**) नाश करता है, वैसे (**मृघः**) संग्रामों को जीतिये और (**सञ्चकानः**) उत्तम प्रकार कामना करते हुए जैसे (**अत्रा**) इस व्यवहार में सूर्य (**नमुचेः**) अपने स्वरूप को नहीं त्यागने वाले (**दासस्य**) सेवक के सदृश वर्त्तमान मेघ के (**शिरः**) उत्तम अङ्ग का (**वि**) विशेष करके नाश करता है, वैसे आप (**मनवे**) विचारशील धार्मिक मनुष्य के लिये (**यत्**) जिस (**गातुम्**) भूमि वा वाणी की (**इच्छन्**) इच्छा करते हुए हो, उसके लिये शत्रु के शिर को (**सु**) उत्तम प्रकार (**अवर्त्तयः**) नाश करिये॥७॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे राजजनो! जो सूर्य मेघ को जीत कर जगत् को सुख देता है, वैसे दुष्ट शत्रुओं को जीत कर प्रजाओं को सुख दीजिये॥७॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**यु॒जं हि मामकृ॑था आदिदि॑न्द्र॒ शिरो॑ दा॒सस्य॒ नमु॑चेर्मथा॒यन्।**

**अश्मा॑नं चित्स्व॒र्यं१ वर्त॑मानं॒ प्र च॒क्रिये॑व॒ रोद॑सी म॒रुद्भ्यः॑॥८॥**

**युज॑म्। हि। माम्। अकृ॑थाः। आत्। इत्। इ॒न्द्र॒। शिर॑ः। दा॒सस्य॑। नमुचेः। म॒था॒यन्। अश्मा॑नम्। चि॒त्। स्व॒र्य॑म्। वर्त॑मानम्। प्र। च॒क्रिया॑ऽइव। रोद॑सी इति॑। म॒रुत्ऽभ्यः॑॥८॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः-(युजम्)** युक्तम् **(हि)** **(माम्)** **(अकृथाः)** कुर्याः **(आत्)** **(इत्)** **(इन्द्र)** राजन् **(शिरः)** शिरोवद्वर्त्तमानं धनम् **(दासस्य)** जलस्य दातुः **(नमुचेः)** प्रवाहरूपेणाऽविनाशिनो मेघस्य **(मथायन्)** मन्थनं कुर्वन् **(अश्मानम्)** अश्नुवन्तं मेघम् **(चित्)** अपि **(स्वर्यम्)** स्वरेषु शब्देषु साधुः **(वर्त्तमानम्)** **(प्र)** **(चक्रियेव)** यथा चक्राणि तथा **(रोदसी)** द्यावापृथिव्यौ **(मरुद्भ्यः)** वायुभ्यः॥८॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! यथा सूर्यो नमुचेर्दासस्य शिरो मथायञ्चिदपि स्वर्यं वर्त्तमानमश्मानं पृथिव्या सह युनक्ति चक्रियेव मरुद्भ्यो रोदसी भ्रामयति तथादिन्मां हि युजं प्राकृथाः॥८॥

**भावार्थः**-अत्रोपमावाचकलुप्तोपमालङ्कारौ। हे राजानो! यूयं यथा सूर्यो मेघं वर्षयित्वा जगत्सुखं वायुना भूगोलान् भ्रामयित्वाऽहर्निशं च करोति तथैव विद्याविनयौ राज्ये प्रवर्ष्य स्वे स्वे कर्मणि सर्वांश्चालयित्वा सुखविजयौ तनयत॥८॥

**पदार्थः**-हे **(इन्द्र)** राजन्! जैसे सूर्य्य **(नमुचेः)** प्रवाहरूप से नहीं नाश होने और **(दासस्य)** जल देने वाले मेघ के **(शिरः)** शिर के सदृश वर्त्तमान कठिन अङ्ग का **(मथायन्)** मन्थन करता हुआ **(चित्)** भी **(स्वर्यम्)** शब्दों में श्रेष्ठ **(वर्त्तमानम्)** वर्त्तमान **(अश्मानम्)** व्याप्त होते हुए मेघ को पृथिवी के साथ युक्त करता और **(चक्रियेव)** जैसे चक्र वैसे **(मरुद्भ्यः)** पवनों से **(रोदसी)** अन्तरिक्ष और पृथिवी को घुमाता है, वैसे **(आत्)** अनन्तर **(इत्)** ही **(माम्)** मुझ को **(हि)** ही **(युजम्)** युक्त **(प्र, अकृथाः)** अच्छे प्रकार करिये॥८॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमा और वाचकलुप्तोपमालङ्कार हैं। हे राजजनो! आप लोग जैसे सूर्य्य मेघ को वर्षाय जगत् के सुख को और पवन से भूगोलों को घुमा के दिन रात्रि करता है, वैसे ही विद्या और विनय की राज्य में वृष्टि कर अपने-अपने कर्म में सब को चलाय के सुख और विजय को उत्पन्न करो॥८॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**स्त्रियो हि दास आयुधानि चक्रे किं मा करन्नबला अस्य सेनाः।**

**अन्तर्ह्यख्यदुभे अस्य धेने अथोप प्रैद्युधये दस्युमिन्द्रः॥९॥**

**स्त्रियः। हि। दासः। आयुधानि। चक्रे। किम्। मा। करन्। अबलाः। अस्य। सेनाः। अन्तः। हि। अख्यत्। उभे इति। अस्य। धेने इति। अथ। उप। प्र। ऐत्। युधये। दस्युम्। इन्द्रः॥९॥**

**पदार्थः-(स्त्रियः)** **(हि)** **(दासः)** सेवक इव मेघः **(आयुधानि)** अस्यादीनि शस्त्राणीव **(चक्रे)** करोति **(किम्)** **(मा)** माम् **(करन्)** कुर्य्यात् **(अबलाः)** अविद्यमानं बलं यासां ताः **(अस्य)** **(सेनाः)** **(अन्तः)** **(हि)** किल **(अख्यत्)** प्रकटयति **(उभे)** मन्दतीव्रे **(अस्य)** मेघस्य **(धेने)** वाचौ **(अथ)** **(उप)** **(प्र)** **(ऐत्)** प्राप्नोति **(युधये)** सङ्ग्रामाय **(दस्युम्)** **(इन्द्रः)** सूर्य इव राजा॥९॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे राजन्! यथा दासः स्त्रिय आयुधानि चक्रेऽस्याबलाः सेनाः सन्तीन्द्रो हि मा किं करन्। योऽन्तरख्यद् यस्यास्योभे धेने वर्त्तेतेऽथ यमिन्द्रो युधय उप प्रैत् तद्वद्वर्त्तमानं हि दस्युं राजा वशं करन्॥९॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। त एव दासा येषां स्त्रिय एव शत्रुवद्विजयप्रदा वर्त्तेरन् यथा सूर्य्यमेघयोः सङ्ग्रामो वर्त्तते तथैव दुष्टैः सह राज्ञः सङ्ग्रामो वर्त्तताम्॥९॥

**पदार्थः**-हे राजन्! जैसे **(दासः)** सेवक के सदृश मेघ **(स्त्रियः)** स्त्रियों को **(आयुधानि)** तलवार आदि शस्त्रों के सदृश **(चक्रे)** करता है **(अस्य)** इसकी **(अबलाः)** बल से रहित **(सेनाः)** सेनायें है **(इन्द्रः)** सूर्य्य के सदृश राजा **(हि)** ही **(मा)** मुझ को **(किम्)** क्या **(करन्)** करे और जो **(अन्तः)** अन्तःकरण में **(अख्यत्)** प्रकट करता है और जिस **(अस्य)** इस मेघ की **(उभे)** दोनों अर्थात् मन्द और तीव्र **(धेने)** वाणी वर्तमान हैं **(अथ)** अनन्तर जिसको सूर्य्य **(युधये)** संग्राम के लिये **(उप, प्र, ऐत्)** समीप प्राप्त होता है, उसके सदृश वर्त्तमान **(हि)** निश्चित **(दस्युम्)** दुष्ट डाकू को राजा वश में करे॥९॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। वे ही जन दास हैं कि जिनकी स्त्रियाँ ही शत्रु के सदृश विजय को देने वाली वर्त्तमान होवें और जैसे सूर्य्य और मेघ का सङ्ग्राम है, वैसे ही दुष्टजनों के साथ राजा का सङ्ग्राम हो॥९॥

**अथ विद्वदुपदेशविषयमाह॥**

अब विद्वानों के उपदेश विषय को कहते हैं॥

**समत्र गावोऽभितोऽनवन्तेहेह वत्सैर्वियुता यदासन्।**

**सं ता इन्द्रो असृजदस्य शाकैर्यदीं सोमासः सुषुता अमन्दन्॥१०॥२७॥**

**सम्। अत्र। गावः। अभितः। अनवन्त। इहऽइह। वत्सैः। विऽयुताः। यत्। आसन्। सम्। ताः। इन्द्रः। असृजत्। अस्य। शाकैः। यत्। ईम्। सोमासः। सुऽसुताः। अमन्दन्॥१०॥**

**पदार्थः**-**(सम्)** **(अत्र)** **(गावः)** किरणाः **(अभितः)** **(अनवन्त)** स्तुवन्तु **(इहेह)** अस्मिञ्जगति **(वत्सैः)** [**(वियुताः)**] वियुक्ताः **(यत्)** याः **(आसन्)** भवन्ति **(सम्)** **(ताः)** **(इन्द्रः)** सूर्य्यः **(असृजत्)** सृजति **(अस्य)** मेघस्य **(शाकैः)** शक्तिभिः **(यत्)** ये **(ईम्)** सर्वतः **(सोमासः)** पदार्था ऐश्वर्यवन्तो जीवाः **(सुषुताः)** सुष्ठु निष्पन्नाः **(अमन्दन्)** आनन्दन्ति॥१०॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यदेहेह गावो वत्सैर्वियुता अभित आसँस्ता भवन्तोऽनवन्त। या अस्य शाकैरत्रेन्द्रो गाः समसृजदीं सुषुताः सोमासो यदमन्दँस्तानिन्द्रः समसृजत्॥१०॥

**भावार्थः**-यथा विवत्सा गावो न शोभन्ते तथैवापत्यवद्वर्त्तमानैर्घनैर्वियुक्तो मेघो न शोभते॥१०॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(यत्)** जो **(इहेह)** इस जगत् में **(गावः)** किरणें **(वत्सैः)** बछड़ों से **(वियुताः)** वियुक्त **(अभितः)** चारों ओर से **(आसन्)** होती हैं **(ताः)** उनकी आप लोग **(अनवन्त)** स्तुति प्रशंसा करें और जिसको **(अस्य)** इस मेघ के **(शाकैः)** सामर्थ्यों से **(अत्र)** इस संसार में **(इन्द्रः)** सूर्य्य



www.9009.co.in

**(सम्)** अच्छे प्रकार **(असृजत्)** उत्पन्न करता है वा **(ईम्)** सब ओर से **(सुषुताः)** उत्तम प्रकार उत्पन्न **(सोमासः)** पदार्थ वा ऐश्वर्य्य वाले जीव **(यत्)** जो **(अमन्दन्)** आनन्दित होते हैं, उनको सूर्य्य **(सम्)** एक साथ उत्पन्न करता है॥१०॥

**भावार्थः**-जैसे बछड़ों से वियुक्त गौएं नहीं शोभित होती हैं, वैसे ही सन्तानों के सदृश वर्त्तमान सघन अवयवों से रहित मेघ नहीं शोभित होता है॥१०॥

**अथ वीरराजविषयमाह॥**

अब वीरराजविषय को कहते हैं॥

**यदीं सोमा बभ्रुधूता अमन्दन्नरोरवीद् वृषभः सादनेषु।**

**पुरंदरः पपिवाँ इन्द्रो अस्य पुनर्गवामददादुस्रियाणाम्॥ ११॥**

**यत्। ईम्। सोमाः। बभ्रुऽधूताः। अमन्दन्। अरोरवीत्। वृषभः। सदनेषु। पुरम्ऽदरः। पपिऽवान्। इन्द्रः। अस्य। पुनः। गवाम्। अददात्। उस्रियाणाम्॥ ११॥**

**पदार्थः**-**(यत्)** यतः **(ईम्)** सर्वतः **(सोमाः)** सोमौषधिवद्वर्त्तमानाः **(बभ्रुधूताः)** बभ्रुभिर्धृतविद्यैर्धूताः पवित्रीकृताः **(अमन्दन्)** आनन्दन्ति। **(अरोरवीत्)** भृशं शब्दायते **(वृषभः)** वर्षकः **(सादनेषु)** स्थानेषु। अत्रान्येषामपीति दीर्घः। **(पुरन्दरः)** यः पुराणि दृणाति सः **(पपिवान्)** य पिबति सः **(इन्द्रः)** सूर्यः **(अस्य)** **(पुनः)** **(गवाम्)** **(अददात्)** ददाति **(उस्रियाणाम्)** किरणानाम्॥ ११॥

**अन्वयः**-हे राजन्! यथेन्द्रोऽस्य मेघस्य सादनेषु पपिवान् पुरन्दर उस्रियाणां गवां पुनस्तेजोऽददाद् वृषभः सन्नरोरवीद् यद्येन बभ्रुधूताः सोमा ईं जायन्ते यतः प्राणिनोऽमन्दँस्तथा त्वं प्रजासु वर्त्तस्व॥ ११॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यो राजा सूर्यमेघस्वभावः सन्नष्टौ मासान् प्रजाभ्यः करं गृह्णाति चतुरो मासान् यथेष्टान् पदार्थान् ददात्येवं सकलाः प्रजा रञ्जयति स एव सर्वत ऐश्वर्य्यवान् भवति॥ ११॥

**पदार्थः**-हे राजन्! जैसे **(इन्द्रः)** सूर्य **(अस्य)** इस मेघ के **(सादनेषु)** स्थानों में **(पपिवान्)** पीवने और **(पुरन्दरः)** पुरों को नाश करने वाला **(उस्रियाणाम्)** किरणों और **(गवाम्)** गौओं के **(पुनः)** फिर तेज को **(अददात्)** देता है **(वृषभः)** वृष्टि करने वाला हुआ **(अरोरवीत्)** अत्यन्त शब्द करता है **(यत्)** जिससे **(बभ्रुधूताः)** विद्या को धारण किये हुओं से पवित्र किये गये **(सोमाः)** सोम ओषधि के सदृश वर्त्तमान पदार्थ **(ईम्)** सब ओर से उत्पन्न होते हैं, जिससे प्राणी **(अमन्दन्)** आनन्दित होते हैं, वैसे आप प्रजाओं में वर्त्ताव कीजिये॥ ११॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो राजा सूर्य्य [और] मेघ के स्वभाव के सदृश स्वभाव वाला हुआ धर्म्मशास्त्र में कहे हुए अष्ट मास परिमाण परिमित प्रजाओं से कर लेता है और चार



www.9009.co.in

मास यथेष्ट पदार्थों को देता है, इस प्रकार सब प्रजाओं को प्रसन्न करता है, वही सब प्रकार से ऐश्वर्यवान् होता है॥११॥

**अथाग्निदृष्टान्तेन राजविषयमाह॥**

अब अग्निदृष्टान्त से राजविषय को कहते हैं॥

**भद्रमिदं रुशमा अग्ने अक्रन् गवां चत्वारि ददतः सहस्रा।**

**ऋणंचयस्य प्रयता मघानि प्रत्यग्रभीष्म नृतमस्य नृणाम्॥१२॥**

**भद्रम्। इदम्। रुशमाः। अग्ने। अक्रन्। गवाम्। चत्वारि। ददतः। सहस्रा। ऋणम्ऽचयस्य। प्रऽयता। मघानि। प्रति। अग्रभीष्म। नृऽतमस्य। नृणाम्॥१२॥**

**पदार्थः-(भद्रम्)** कल्याणम् **(इदम्)** **(रुशमाः)** ये रुशान् हिंसकान् मिन्वति **(अग्ने)** पावकवद्राजन् **(अक्रन्)** कुर्वन्ति **(गवाम्)** किरणानाम् **(चत्वारि)** **(ददतः)** **(सहस्रा)** सहस्राणि **(ऋणञ्चयस्य)** ऋणं चिनोति येन तस्य **(प्रयता)** प्रयत्नेन **(मघानि)** धनानि **(प्रति)** **(अग्रभीष्म)** गृह्णीयाम **(नृतमस्य)** **(नृणाम्)**॥१२॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! यस्यर्णञ्चयस्य गवां चत्वारि सहस्रा ददतः सूर्यस्येदं भद्रं रुशमा अक्रँस्तद्वद्वर्त्तमानस्य तस्य नृणां नृतमस्य तव मघानि वयं प्रयता प्रत्यग्रभीष्म॥१२॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यथा सूर्यः सहस्राणि किरणान् प्रदाय सर्वं जगदानन्दयति तथैव राजाऽसङ्ख्याञ्छुभान् गुणान् दत्त्वा प्रजाः सततं हर्षयेत्॥१२॥

**पदार्थः**-हे **(अग्ने)** अग्नि के सदृश तेजस्वी राजन्! जिस **(ऋणञ्चयस्य)** अर्थात् जिससे ऋण बटोरता है उसके और **(गवाम्)** किरणों के **(चत्वारि)** चार **(सहस्रा)** हजार को **(ददतः)** देते हुए सूर्य के **(इदम्)** इस **(भद्रम्)** कल्याण को **(रुशमाः)** हिंसा करने वालों के फेंकने वाले **(अक्रन्)** करते हैं, उसके सदृश वर्त्तमान उस **(नृणाम्)** मनुष्यों के **(नृतमस्य)** नृतम् अर्थात् अत्यन्त मनुष्यपनयुक्त श्रेष्ठ आपके **(मघानि)** धनों को हम लोग **(प्रयता)** प्रयत्न से **(प्रति, अग्रभीष्म)** प्रतीति से ग्रहण करें॥१२॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जैसे सूर्य सहस्रों किरणों को देकर सम्पूर्ण जगत् को आनन्दित करता है, वैसे ही राजा असंख्य उत्तम गुणों को देकर प्रजाओं को निरन्तर प्रसन्न करे॥१२॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**सुपेशसं माव सृजन्त्यस्तं गवां सहस्रै रुशमासो अग्ने।**

**तीव्रा इन्द्रममन्दुः सुतासोऽक्तोर्व्युष्टौ परितक्म्यायाः॥१३॥**



www.9009.co.in

**सुऽपेशसम्। मा। अव। सृजन्ति। अस्तम्। गवाम्। सहस्रैः। रुशमासः। अग्ने। तीव्राः। इन्द्रम्। अममन्दुः। सुतासः। अक्तोः। विऽउष्टौ। परिऽतक्म्यायाः॥ १३॥**

**पदार्थः-(सुपेशसम्)** अतीवसुन्दररूपम् **(मा)** माम् **(अव) (सृजन्ति) (अस्तम्)** गृहम् **(गवाम्)** किरणानाम् **(सहस्रैः) (रुशमासः)** हिंसकहिंसकाः **(अग्ने) (तीव्राः)** तीक्ष्णस्वभावाः **(इन्द्रम्)** सूर्यमिव राजानम् **(अममन्दुः)** आनन्दयेयुः **(सुतासः)** विद्यादिशुभगुणैर्निष्पन्नाः **(अक्तोः)** रात्रेः **(व्युष्टौ)** प्रभातवेलायाम् **(परितक्म्यायाः)** परितः सर्वतस्तकन्ति हसन्ति यैः कर्म्मभिस्तेषु भवायाः॥ १३॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! ये गवां सहस्रै रुशमासस्तीव्राः सुतासः परितक्म्याया अक्तोर्व्युष्टौ सुपेशसं माऽस्तं गृहमिवाव सृजन्तीन्द्रमममन्दुस्ताँस्त्वं विज्ञाय यथावत् सेवस्व॥ १३॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यदि विद्युत्सूर्यरूपोऽग्निर्युक्त्या युष्माभिः सेव्येत तर्ह्यहर्निशं सुखेनैव गच्छेत्॥ १३॥

**पदार्थः**-हे **(अग्ने)** अग्नि के सदृश वर्त्तमान राजन्! जो **(गवाम्)** किरणों के **(सहस्रैः)** सहस्रों समूहों से **(रुशमासः)** हिंसकों के नाश करने वाले **(तीव्राः)** तीक्ष्ण स्वभावयुक्त जो **(सुतासः)** विद्या आदि उत्तम गुणों से उत्पन्न हुए **(परितक्म्यायाः)** सब प्रकार हंसते हैं, जिन कर्म्मों से उनमें हुई **(अक्तोः)** रात्रि की **(व्युष्टौ)** प्रभातवेला में **(सुपेशसम्)** अत्यन्त सुन्दर रूप वाले **(मा)** मुझे को **(अस्तम्)** गृह के सदृश **(अव, सृजन्ति)** उत्पन्न करते हैं और **(इन्द्रम्)** सूर्य्य के सदृश तेजस्वी राजा को **(अममन्दुः)** आनन्दित करें, उनको आप जान के यथावत् सेवा करो॥ १३॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो बिजुली और सूर्यरूप अग्नि युक्तिपूर्वक आप लोगों से सेवन किया जाये तो दिन और रात्रि सुखपूर्वक व्यतीत होवे॥ १३॥

**अथ विद्वद्विषयमाह॥**

अब विद्वद्विषय को कहते हैं॥

**औच्छत्सा रात्री परितक्म्या याँ ऋणंचये राजनि रुशमानाम्।**

**अत्यो न वाजी रघुरज्यमानो बभ्रुश्चत्वार्यसनत् सहस्रा॥ १४॥**

**औच्छत्। सा। रात्री। परिऽतक्म्या। या। ऋणम्ऽचये। राजनि। रुशमानाम्। अत्यः। न। वाजी। रघुः। अज्यमानः। बभ्रुः। चत्वारि। असनत्। सहस्रा॥ १४॥**

**पदार्थः-(औच्छत्)** निवासयति **(सा) (रात्री) (परितक्म्या)** आनन्दप्रदा **(या) (ऋणञ्चये)** ऋणं चिनोति यस्मात्तस्मिन् **(राजनि) (रुशमानाम्)** हिंसकमन्त्रीणाम् **(अत्यः)** अतति मार्गं व्याप्नोति सः **(न)** इव **(वाजी)** वेगवान् **(रघुः)** लघुः **(अज्यमानः)** चाल्यमानः **(बभ्रुः)** धारकः पोषको वा **(चत्वारि) (असनत्)** विभजति **(सहस्रा)** सहस्राणि॥ १४॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे मनुष्या! या रुशमानामृणञ्चये राजनि रघुरज्यमानो बभ्रुरत्यो वाजी न चत्वारि सहस्रासनत् सा परितक्म्या रात्री सर्वानौच्छदिति विजानन्तु॥१४॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। हे विद्वांसो! यूयं रात्रिदिनकृत्यानि विज्ञाय स्वयमनुष्ठाय सुपरीक्ष्य राजादिभ्यः उपदिशत यत एते सर्वे सुखिनः स्युर्यथा सद्योगाम्यश्वो धावति तथैवाऽहर्निशं धावतीति विज्ञेयम्॥१४॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(या)** जो **(रुशमानाम्)** हिंसा करने वाले मन्त्रियों के **(ऋणञ्चये)** ऋण को इकट्ठा करता है, जिससे उस **(राजनि)** राजा में **(रघुः)** छोटा **(अज्यमानः)** चलाया गया **(बभ्रुः)** धारण वा पोषण करने वाले और **(अत्यः)** मार्ग को व्याप्त होने वाले **(वाजी)** वेगयुक्त के **(न)** सदृश **(चत्वारि)** चार **(सहस्रा)** सहस्रों का **(असनत्)** विभाग करता है **(सा)** वह **(परितक्म्या)** आनन्द देने वाली **(रात्री)** रात्री सम्पूर्णों को **(औच्छत्)** निवास देती है, यह जानो॥१४॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे विद्वानो! आप लोग रात्रि और दिन के कृत्यों को जान कर और स्वयं करके, उत्तम परीक्षा करके राजा आदिकों के लिये उन कृत्यों का उपदेश दीजिये, जिससे ये सब सुखी हों और जैसे शीघ्र चलने वाला घोड़ा दौड़ता है, वैसे ही दिन और रात्रि व्यतीत होता है, यह जानना चाहिये॥१४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**चतुं॒:सहस्रं॒ गव्य॑स्य प॒श्वः प्रत्य॑ग्रभीष्म रु॒शमे॑ष्वग्ने।**

**घ॒र्मश्चि॑त्त॒प्तः प्र॒वृजे॒ य आसी॑दय॒स्मय॒स्तम्वादा॑म॒ विप्रा॑:॥१५॥२८॥**

**चतु॑:ऽसहस्रम्। गव्य॑स्य। प॒श्वः। प्रति॑। अ॒ग्र॒भी॒ष्म॒। रु॒शमे॑षु। अ॒ग्ने॒। घ॒र्मः। चि॒त्। त॒प्तः। प्र॒ऽवृजे॑। यः। आसी॑त्। अ॒य॒स्मय॑:। तम्। ऊँ इति॑। आदा॑म। विप्रा॑:॥१५॥**

**पदार्थः**-**(चतुःसहस्रम्)** चत्वारि सहस्राणि सङ्ख्या यस्य तम् **(गव्यस्य)** गवां किरणानां विकारस्य **(पश्वः)** पशोः **(प्रति)** **(अग्रभीष्म)** प्रतिगृह्णीयाम **(रुशमेषु)** हिंसकमन्त्रिषु **(अग्ने)** अग्निरिव वर्त्तमान राजन् **(घर्मः)** प्रतापः **(चित्)** अपि **(तप्तः)** **(प्रवृजे)** प्रवृजते यस्मिँस्तस्मिन् **(यः)** **(आसीत्)** अस्ति **(अयस्मयः)** हिरण्यमिव तेजोमयः **(तम्)** **(उ)** **(आदाम)** समन्ताद् दद्याम **(विप्राः)** मेधाविनः॥१५॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! योऽयस्मयस्तप्तो घर्मः प्रवृजे रुशमेष्वासीत्तं चतुःसहस्रं गव्यस्य पश्वो यथा वयं प्रत्यग्रभीष्म तथा त्वं गृहाण। हे विप्रा! युष्मभ्यं तमु वयमादाम तमस्मभ्यं यूयं चिद् दत्त॥१५॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। ये मनुष्याः शीतोष्णसेवनं युक्त्या कर्त्तुं जानन्त्येतद्विद्यां परस्परं ददति ते सर्वदाऽरोगा भवन्तीति॥१५॥



www.9009.co.in

अत्रेन्द्रवीराग्निविद्वद्गुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति त्रिंशत्तमं सूक्तमष्टाविंशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः-(अग्ने)** अग्नि के सदृश वर्त्तमान राजन्! **(यः)** जो **(अयस्मयः)** सुवर्ण के सदृश तेजःस्वरूप **(तप्तः)** तापयुक्त **(घर्मः)** प्रताप **(प्रवृजे)** अच्छे प्रकार त्याग करते हैं जिसमें उसमें और **(रुशमेषु)** हिंसक मन्त्रियों में **(आसीत्)** वर्त्तमान है **(तम्)** उस **(चतुःसहस्रम्)** चार हजार संख्या युक्त को **(गव्यस्य)** किरणों के विकार और **(पश्वः)** पशु के सम्बन्ध में जैसे हम लोग **(प्रति, अग्रभीष्म)** ग्रहण करें, वैसे आप ग्रहण करो और हे **(विप्राः)** बुद्धिमान् जनो! आप लोगों के लिये उस **(उ)** ही को हम लोग **(आदाम)** सब प्रकार से देवें, उसको हम लोगों के लिये आप लोग **(चित्)** भी दीजिये॥१५॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो मनुष्य शीत और उष्ण का सेवन युक्ति से करने को जानते हैं और इसकी विद्या को परस्पर देते हैं, वे सर्वदा रोगरहित होते हैं॥१५॥

इस सूक्त में राजा, वीर, अग्नि और विद्वान् के गुण-वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह तीसवां सूक्त और अट्ठाईसवां वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

अथ त्रयोदशर्चस्यैकाधिकत्रिंशत्तमस्य सूक्तस्य अवस्युरात्रेय ऋषिः। १-८[२], १०-१३ इन्द्रः। ८[३] इन्द्रः कुत्सो वा। ८[४] इन्द्र उशना वा। ९ इन्द्रः कुत्सश्च देवताः। १, २, ५, ७, ९, ११ निचृत् त्रिष्टुप्। ३, ४, १० त्रिष्टुप्। ६ भुरिक् त्रिष्टुप्। १३ विराट् त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः। ८, १२ स्वराट् पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः॥

*अथेन्द्रगुणानाह॥*

अब तेरह ऋचा वाले इकतीसवें सूक्त का प्रारम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में इन्द्रगुणों को कहते हैं॥

**इन्द्रो॒ रथा॑य प्र॒वतं॑ कृणोति॒ यम॒ध्यस्था॒न्म॒घवा॑ वाज॒यन्त॑म्।**

**यू॒थेव॑ प॒श्वो व्यु॑नोति गो॒पा अरि॑ष्टो याति प्रथ॒मः सिषा॑सन्॥ १॥**

इन्द्रः॑। रथा॑य। प्र॒ऽवत॑म्। कृ॒णो॒ति॒। यम्। अ॒धि॒ऽअस्था॑त्। म॒घऽवा॑। वा॒ज॒ऽयन्त॑म्। यू॒थाऽइ॑व। प॒श्वः। वि। उ॒नो॒ति॒। गो॒पाः। अरि॑ष्टः। या॒ति॒। प्र॒थ॒मः। सिसा॑सन्॥ १॥

**पदार्थः**-(**इन्द्रः**) सूर्य्य इव सेनेशः (**रथाय**) (**प्रवतम्**) निम्नं स्थलम् (**कृणोति**) करोति (**यम्**) (**अध्यस्थात्**) अधितिष्ठति (**मघवा**) परमपूजितधननिमित्तः (**वाजयन्तम्**) भूगोलान् गमयन्तम् (**यूथेव**) समूहानिव (**पश्वः**) पशूनाम् (**वि**) विशेषेण (**उनोति**) प्रेरयति (**गोपाः**) गवां पालकः (**अरिष्टः**) अहिंसितः (**याति**) गच्छति (**प्रथमः**) (**सिषासन्**) इच्छन्॥ १॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथाऽरिष्टः प्रथमः सिषासन् मघवेन्द्रो गोपाः पश्वो यूथेव लोकान् व्युनोति वाजयन्तं याति यं लोकमध्यस्थात् तेन रथाय प्रवतं कृणोति तथा भवानाचरतु॥ १॥

**भावार्थः**-अत्र [उपमा]वाचकलुप्तोपमालङ्कारौ। यो राजा रथादिगमनाय मार्गान्निर्माय रथादीनि यानान्यारुह्य गत्वाऽऽगत्य पशुपालः पशूनिव शत्रून्निरोध्य प्रजा सततं पालयति स एव सर्वतो वर्धते॥ १॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे (**अरिष्टः**) नहीं मारा गया (**प्रथमः**) प्रथम (**सिषासन्**) इच्छा करता हुआ (**मघवा**) अत्यन्त श्रेष्ठ धनरूप कारणयुक्त (**इन्द्रः**) सूर्य्य के सदृश सेना का ईश (**गोपाः**) गौओं का पालन करने वाला (**पश्वः**) पशुओं के (**यूथेव**) समूहों के सदृश लोकों की (**वि**) विशेष करके (**उनोति**) प्रेरणा करता और (**वाजयन्तम्**) भूगोलों को चलाते हुए को (**याति**) जाता है और (**यम्**) जिस लोक का (**अध्यस्थात्**) अधिष्ठित होता, उससे (**रथाय**) वाहन के लिये (**प्रवतम्**) नीचे स्थल को (**कृणोति**) करता है, वैसे आप आचरण करिये॥ १॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में [उपमा और] वाचकलुप्तोपमालङ्कार हैं। जो राजा रथ आदि के चलने के लिये मार्गों को सुडौल बनाय के उन मार्गों से रथ आदि वाहनों पर चढ़ के तथा जाय और आय के



www.9009.co.in

पशुओं का पालन करने वाला पशुओं को जैसे वैसे शत्रुओं को रोक के प्रजाओं का निरन्तर पालन करता है, वही सब प्रकार वृद्धि को प्राप्त होता है॥१॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**आ प्र द्र॑व हरिवो॒ मा वि वे॑नः॒ पिश॑ङ्गराते अ॒भि नः॑ सचस्व।**

**न॒हि त्वदि॑न्द्र॒ वस्यो॑ अ॒न्यदस्त्य॑मे॒नांश्चिज्जनि॑वतश्चकर्थ॥२॥**

**आ। प्र। द्र॒व। ह॒रि॒ऽव॒ः। मा। वि॒। वे॒नः॒। पिश॑ङ्गऽराते। अ॒भि। नः॒। स॒च॒स्व॒। न॒हि। त्वत्। इ॒न्द्र॒। वस्य॑ः। अ॒न्यत्। अस्ति॑। अ॒मे॒नान्। चि॒त्। जनि॑ऽवतः। च॒क॒र्थ॒॥२॥**

**पदार्थः**-(**आ**) समन्तात् (**प्र**) (**द्रव**) धाव (**हरिवः**) प्रशस्ताश्वयुक्त (**मा**) (**वि**) (**वेनः**) कामयेः (**पिशङ्गराते**) यः पिशङ्गं सुवर्णादिकं राति ददाति तत्सम्बुद्धौ (**अभि**) (**नः**) अस्मान् (**सचस्व**) (**नहि**) (**त्वत्**) (**इन्द्र**) परमैश्वर्य्यप्रद (**वस्यः**) वसीयान् (**अन्यत्**) अन्यः (**अस्ति**) (**अमेनान्**) अविद्यमाना मेना प्रक्षेपकर्त्र्यः स्त्रियो येषां तान् (**चित्**) (**जनिवतः**) जन्मवतः (**चकर्थ**) कुरु॥२॥

**अन्वयः**-हे हरिवः पिशङ्गरात इन्द्र राजँस्त्वं मा वि वेनः कामी मा भवेरमेनांश्चिज्जनिवतश्चकर्थ नोऽभि सचस्व शत्रुविजयाय प्रा द्रव यतस्त्वद्वस्योऽन्यन्नह्यस्ति स त्वमस्मान् सुखेन सम्बध्नीहि॥२॥

**भावार्थः**-यो दीर्घं जीवितुं बलमुन्नेतुं राज्यं कर्त्तुं वर्धितुं च प्रयतते स एव कृतकृत्यो जायते॥२॥

**पदार्थः**-हे (**हरिवः**) श्रेष्ठ घोड़ों से युक्त (**पिशङ्गराते**) सुवर्ण आदि के और (**इन्द्र**) अत्यन्त ऐश्वर्य्य के देने वाले राजन्! आप (**मा, वि, वेनः**) कामना मत करें अर्थात् कामी न हों और (**अमेनान्**) नहीं विद्यमान हैं, प्रक्षेप करने वाली स्त्रियाँ जिनकी उनको (**चित्**) उन्हीं (**जनिवतः**) जन्म वाले (**चकर्थ**) करें और (**नः**) हम लोगों का (**अभि, सचस्व**) सब ओर से सम्बन्ध करें और शत्रु के विजय के लिये (**प्र, आ, द्रव**) अच्छे प्रकार दौड़े जिससे (**त्वत्**) आपसे (**वस्यः**) अत्यन्त वसने वाला (**अन्यत्**) दूसरा (**नहि**) नहीं (**अस्ति**) है, वह आप हम लोगों को सुख से सम्बन्ध कीजिये॥२॥

**भावार्थः**-जो अतिकालपर्य्यन्त जीवने, बल बढ़ाने, राज्य करने और वृद्धि करने के लिये यत्न करता है, वही कृतकृत्य होता है॥२॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**उद्यत्सह॒ः सह॑स॒ आज॑निष्ट॒ देदि॑ष्ट॒ इन्द्र॑ इन्द्रि॒याणि॒ विश्वा॑।**

**प्राचो॑दयत् सु॒दुघा॑ व॒व्रे अ॒न्तर्वि ज्योति॑षा संववृ॒त्वत् तमो॑ऽवः॥३॥**

**उत्। यत्। सहः। सहसः। आ। अजनिष्ट। देदिष्टे। इन्द्रः। इन्द्रियाणि। विश्वा। प्र। अचोदयत्। सुऽदुघाः। वव्रे। अन्तः। वि। ज्योतिषा। संऽववृत्वत्। तमः। अवरित्यव॥३॥**

**पदार्थः-(उत्) (यत्) (सहः)** बलम् **(सहसः)** बलात् **(आ) (अजनिष्ट)** जनयति **(देदिष्टे)** दिशत्युपदिशति **(इन्द्रः)** योगैश्वर्य्ययुक्तः **(इन्द्रियाणि)** श्रोत्रादीनि धनानि वा **(विश्वा)** सर्वाणि **(प्र, अचोदयत्)** प्रेरयति **(सुदुघाः)** सुष्ठा कामप्रपूरिकाः क्रियाः **(वव्रे)** वृणाति **(अन्तः)** मध्ये **(वि) (ज्योतिषा)** प्रकाशेन **(संववृत्वत्)** संवरणशीलम् **(तमः)** रात्री **(अवः)** रक्ष॥३॥

**अन्वयः**-हे राजन्! यथेन्द्रः सूर्य्यः सहसो यत्सह उदाजनिष्ट विश्वा इन्द्रियाणि देदिष्टे प्राचोदयत् सुदुघा वव्रे तथाऽन्तर्ज्योतिषा संववृत्वत्तमो व्यव॥३॥

**भावार्थः**-यो राजा बलाद् बलं धनाद्धनं जनयित्वा न्यायप्रकाशेनाऽन्यायाऽन्धकारं निवार्य्य पूर्णकामाः प्रजाः कृत्वा विद्यादिशुभगुणग्रहणाय प्रेरयति स एवाऽखण्डैश्वर्य्यः सदा भवति॥३॥

**पदार्थः**-हे राजन्! जैसे **(इन्द्रः)** योगरूप ऐश्वर्य से युक्त सूर्य्य **(सहसः)** बल से जिस **(सहः)** बल को **(उत्, आ, अजनिष्ट)** उत्पन्न करता **(विश्वा)** सम्पूर्ण **(इन्द्रियाणि)** श्रोत्र आदि इन्द्रियों वा धनों का **(देदिष्टे)** उपदेश देता और **(प्र, अचोदयत्)** प्रेरणा करता और **(सुदुघाः)** उत्तम प्रकार कामनाओं को पूर्ण करने वाली क्रियाओं का **(वव्रे)** स्वीकार करता है, वैसे **(अन्तः)** मध्य में **(ज्योतिषा)** प्रकाश से **(संववृत्वत्)** घेरने वाली **(तमः)** रात्रि की **(वि)** विशेष करके **(अवः)** रक्षा करो॥३॥

**भावार्थः**-जो राजा बल से बल और धन से धन को उत्पन्न करके, न्याय के प्रकाश से अन्यायरूप अन्धकार का निवारण कर, पूर्ण मनोरथों से युक्त प्रजाओं को करके विद्या आदि उत्तम गुणों के ग्रहण के लिये प्रेरणा करता है, वही अखण्ड ऐश्वर्य्य वाला सदा होता है॥३॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**अनवस्ते रथमश्वाय तक्षन् त्वष्टा वज्रं पुरुहूत द्युमन्तम्।**

**ब्रह्माण इन्द्रं महयन्तो अर्कैरवर्धयन्नहये हन्तवा उ॥४॥**

**अनवः। ते। रथम्। अश्वाय। तक्षन्। त्वष्टा। वज्रम्। पुरुऽहूत। द्युऽमन्तम्। ब्रह्माणः। इन्द्रम्। महयन्तः। अर्कैः। अवर्धयन्। अहये। हन्तवै। ऊँ इति॥४॥**

**पदार्थः-(अनवः)** मनुष्याः। **अनव इति मनुष्यनामसु पठितम्।** (निघं०२.३) **(ते)** तव **(रथम्) (अश्वाय)** सद्योगमनाय **(तक्षन्)** रचयन्तु **(त्वष्टा)** सर्वतो विद्यया प्रदीप्तः **(वज्रम्)** शस्त्रास्त्रसमूहम् **(पुरुहूत)** बहुभिः स्तुत **(द्युमन्तम्) (ब्रह्माणः)** चतुर्वेदविदः **(इन्द्रम्)** अखण्डैश्वर्यं राजानम् **(महयन्तः)** पूजयन्तः **(अर्कैः)** सत्कारसाधकतमैर्विचारैर्वचनैः कर्मभिर्वा **(अवर्धयन्)** वर्धयन्ति **(अहये)** मेघाय **(हन्तवै)** हन्तुम् **(उ)** वितर्के॥४॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे पुरुहूत राजन्! येऽनवस्तेऽश्वाय रथं तक्षन् त्वष्टा द्युमन्तं वज्रं निपातयति महयन्तो ब्रह्माणोऽर्कैस्त्वामिन्द्रमवर्धयन्नहये हन्तवैऽवर्धयंस्तानु त्वं सततं सत्कुरु॥४॥

**भावार्थः**-राज्ञां योग्यतास्ति येऽन्तःकरणेन राज्योन्नतिं कर्त्तुमिच्छेयुस्ते राज्ञा सदैव माननीयाः॥४॥

**पदार्थः**-हे **(पुरुहूत)** बहुतों से स्तुति किये गये राजन्! जो **(अनवः)** मनुष्य **(ते)** आपके **(अश्वाय)** शीघ्र गमन के लिये **(रथम्)** वाहन को **(तक्षन्)** रचें और **(त्वष्टा)** सब प्रकार से विद्या से प्रदीप्तजन **(द्युमन्तम्)** प्रकाशयुक्त **(वज्रम्)** शस्त्र और अस्त्र के समूह को गिराता है और **(महयन्तः)** प्रशंसा करते हुए **(ब्रह्माणः)** चारों वेदों के जानने वाले विद्वान् **(अर्कैः)** सत्कार के अत्यन्त सिद्ध करने वाले विचारों वचनों वा कर्मों से आप **(इन्द्रम्)** अखण्ड ऐश्वर्य्ययुक्त राजा की **(अवर्धयन्)** वृद्धि करते हैं और **(अहये)** मेघ के लिये **(हन्तवै)** नाश करने की वृद्धि करते हैं उनका **(उ)** तर्क पूर्वक आप निरन्तर सत्कार करिये॥४॥

**भावार्थः**-राजाओं की योग्यता है कि जो अन्तःकरण से राज्य की उन्नति करने की इच्छा करें, वे सदा ही सत्कार करने योग्य हैं॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**वृष्णे यत्ते वृषणो अर्कमर्चानिन्द्र ग्रावाणो अदितिः सजोषाः।**

**अनश्वासो ये पवयोऽरथा इन्द्रेषिता अभ्यवर्तन्त दस्यून्॥५॥२९॥**

**वृष्णे। यत्। ते। वृषणः। अर्कम्। अर्चान्। इन्द्र। ग्रावाणः। अदितिः। सऽजोषाः। अनश्वासः। ये। पवयः। अरथाः। इन्द्रऽइषिताः। अभि। अवर्तन्त। दस्यून्॥५॥**

**पदार्थः**-**(वृष्णे)** वृष्टिकराय **(यत्)** यस्मै **(ते)** तुभ्यम् **(वृषणः)** वृष्टिनिमित्ताः **(अर्कम्)** पूजनीयम् **(अर्चान्)** पूजयन्तु **(इन्द्र)** दुष्टदलहर **(ग्रावाणः)** मेघाः **(अदितिः)** अन्तरिक्षम् **(सजोषाः)** समानप्रीतिसेवी **(अनश्वासः)** अविद्यमाना अश्वा येषु ते **(ये)** **(पवयः)** चक्राणि **(अरथाः)** अविद्यमाना रथा येषान्ते **(इन्द्रेषिताः)** इन्द्रेण स्वामिना प्रेरिताः **(अभि)** **(अवर्त्तन्त)** वर्त्तन्ते **(दस्यून्)** दुष्टाञ्चोरान्॥५॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र राजन्! यद्यस्मै वृष्णे तेऽर्कं प्रजाजना अर्चान् स यथा वृषणो ग्रावाणः सजोषा अदितिश्च वर्त्तन्ते तथा भव येऽरथा अनश्वास इन्द्रेषिताः पवयो दस्यूनभ्यवर्त्तन्त तांस्त्वं सततं सत्कुर्याः॥५॥

**भावार्थः**-ये राजानो मेघवत्सुखवर्षका आकाशवदक्षोभा अग्न्यादियानानि रचयित्वेतस्ततो भ्रमणं विधाय दस्यून् हत्वा प्रजाः प्रसादयेयुस्ते भाग्यशालिनो जायन्ते॥५॥

**पदार्थः**-हे **(इन्द्र)** दुष्ट दलों के नाश करने वाले राजन्! **(यत्)** जिन **(वृष्णे)** वृष्टि करने वाले **(ते)** आपके लिये **(अर्कम्)** सत्कार करने योग्य का प्रजाजन **(अर्चान्)** सत्कार करें वह जैसे **(वृषणः)** वर्षा के निमित्त **(ग्रावाणः)** मेघ और **(सजोषाः)** समान प्रीति का सेवन करने वाला और **(अदितिः)** अन्तरिक्ष



www.9009.co.in

वर्त्तमान हैं, वैसे हूजिये और **(ये)** जो **(अरथाः)** वाहनों से रहित **(अनश्वासः)** घोड़ों से रहित **(इन्द्रेषिताः)** स्वामी से प्रेरणा किये गये **(पवयः)** चक्र **(दस्यून्)** दुष्ट चोरों के **(अभि)** सन्मुख **(अवर्त्तन्त)** वर्त्तमान हैं, उनका आप निरन्तर सत्कार कीजिये॥५॥

**भावार्थः**-जो राजाजन मेघ के सदृश सुख वर्षाने और आकाश के सदृश नहीं हिलने वाले, अग्नि आदिकों के वाहनों को रच के इधर-उधर भ्रमण करके दुष्ट चोरों का नाश करके प्रजाओं को प्रसन्न करें, वे भाग्यशाली होते हैं॥५॥

**अथ विद्वद्गुणानाह॥**

अब विद्वानों के गुणों को कहते हैं॥

**प्र ते पूर्वाणि करणानि वोचं प्र नूतना मघवन् या चकर्थ।**

**शक्तीवो यद्विभरा रोदसी उभे जयन्नपो मनवे दानुचित्राः॥६॥**

**प्र। ते। पूर्वाणि। करणानि। वोचम्। प्र। नूतना। मघऽवन्। या। चकर्थ। शक्तिऽवः। यत्। विऽभराः। रोदसी इति। उभे इति। जयन्। अपः। मनवे। दानुऽचित्राः॥६॥**

**पदार्थः**-**(प्र)** **(ते)** तुभ्यम् **(पूर्वाणि)** प्राचीनानि **(करणानि)** कुर्वन्ति यैस्तानि साधनानि **(वोचम्)** उपदिशेयम् **(प्र)** **(नूतना)** नवीनानि **(मघवन्)** पूजितैश्वर्य **(या)** यानि **(चकर्थ)** करोषि **(शक्तीवः)** शक्तिर्बहुविधं सामर्थ्यं विद्यते यस्य तत्सम्बुद्धौ **(यत्)** यथा **(विभराः)** ये विशेषेण विभरन्ति पोषयन्ति ते **(रोदसी)** द्यावापृथिव्यौ **(उभे)** **(जयन्)** **(अपः)** सूर्यो जलानीव शत्रुप्राणान् **(मनवे)** मनुष्याय **(दानुचित्राः)** चित्राण्यद्भुतानि दानानि येषान्ते॥६॥

**अन्वयः**-हे शक्तीवो मघवन् राजन्! विपश्चितो यद्या पूर्वाणि करणानि या नूतना प्र साध्नुवन्ति तान्यहं ते तथा प्र वोचं ये विभरा दानुचित्रा विद्वांसो मनव उभे रोदसी विज्ञापयन्ति तैः सह त्वं मनवेऽपो जयँस्तेषां सुखाय सत्कारं चकर्थ॥६॥

**भावार्थः**-हे राजादयो जना! ये विद्वांसो युष्मान् सनातनीं राजनीतिं विजयोपायाँश्च शिक्षेरँस्तान् स्वात्मवद्भवन्तः सत्कुर्वन्तु॥६॥

**पदार्थः**-हे **(शक्तीवः)** बहुत प्रकार [की] सामर्थ्य से युक्त **(मघवन्)** श्रेष्ठ ऐश्वर्य्य वाले राजन्! बुद्धिमान् जन **(यत्)** जैसे **(या)** जिन **(पूर्वाणि)** प्राचीन **(करणानि)** साधनों और जिन **(नूतना)** नवीनों को **(प्र)** सिद्ध करते हैं, उन साधनों का मैं **(ते)** आपके लिये वैसे **(प्र, वोचम्)** उपदेश करूं और जो **(विभराः)** विशेष करके पोषण करने और **(दानुचित्राः)** अद्भुत दान वाले विद्वान् जन **(मनवे)** मनुष्य के लिये **(उभे)** दोनों **(रोदसी)** अन्तरिक्ष और पृथिवी को जनाते हैं, उनके साथ आप मनुष्य के लिये **(अपः)** सूर्य्य जैसे जलों को वैसे शत्रुओं के प्राणों को **(जयन्)** जीतते हुए उनके सुख के लिये सत्कार को **(चकर्थ)** करते हैं॥६॥



www.9009.co.in

**भावार्थ:**-हे राजा आदि जनो! जो विद्वान् जन आप लोगों के लिये अनादिकाल से सिद्ध राजनीति और विजय के उपायों की शिक्षा करें, उनको अपने आत्मा के सदृश आप लोग सत्कार करें॥६॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**तदिन्नु ते करणं दस्म विप्राहिं यद् घ्नन्नोजो अत्रामिमीथाः।**

**शुष्णस्य चित्परि माया अगृभ्णाः प्रपित्वं यन्नप दस्यूँरसेधः॥७॥**

**तत्। इत्। नु। ते। करणम्। दस्म। विप्र। अहिम्। यत्। घ्नन्। ओजः। अत्र। अमिमीथाः। शुष्णस्य। चित्। परि। मायाः। अगृभ्णाः। प्रऽपित्वम्। यन्। अप। दस्यून्। असेधः॥७॥**

**पदार्थ:**-**(तत्)** **(इत्)** एव **(नु)** **(ते)** तव **(करणम्)** करोति येन तत् **(दस्म)** उपक्षेतः **(विप्र)** मेधाविन् **(अहिम्)** मेघमिव दोषान् **(यत्)** **(घ्नन्)** विनाशयन् **(ओजः)** जलमिव बलम् **(अत्र)** अस्मिन् जगति **(अमिमीथाः)** निर्माणं कुर्याः **(शुष्णस्य)** बलस्य **(चित्)** अपि **(परि)** **(मायाः)** प्रज्ञाः **(अगृभ्णाः)** गृहाण **(प्रपित्वम्)** प्राप्तिम् **(यन्)** **(अप)** **(दस्यून्)** दुष्टान् **(असेधः)** निवारयतु॥७॥

**अन्वयः**-हे दस्म विप्र! भवान् सूर्योऽहिं हन्ति अत्रौजो यन्निपातयति तत्करणं यथा तथा शत्रुबलं घ्नन्नत्र त्वं शुष्णस्य वृद्धिममिमीथाश्चिदपि मायाः पर्यगृभ्णाः प्रपित्वं यन् दस्यूनपासेधस्तस्मै ते तुभ्यं न्वित् सुखं प्राप्नुयात्॥७॥

**भावार्थ:**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे विद्वन्! यथेश्वरेण सूर्य्यमेघसम्बन्धी निर्मित-स्तथैवान्येऽपि बहवः सम्बन्धा रचिता इति वेद्यम्॥७॥

**पदार्थ:**-हे **(दस्म)** उपेक्षा करने वाले **(विप्र)** बुद्धिमान्! आप सूर्य्य **(अहिम्)** जैसे मेघ को वैसे दोषों को नाश करते हैं **(अत्र)** वा इस जगत् में **(ओजः, यत्)** जल के सदृश जो बल को गिराते हैं **(तत्)** वह **(करणम्)** साधन जैसे हो, वैसे शत्रु के बल का **(घ्नन्)** नाश करते हुए इस जगत् में तुम **(शुष्णस्य)** बल की वृद्धि का **(अमिमीथाः)** निर्माण करो **(चित्)** और **(मायाः)** बुद्धियों का **(परि, अगृभ्णाः)** सब ओर से ग्रहण करो और **(प्रपित्वम्)** प्राप्ति को **(यन्)** प्राप्त होते हुए **(दस्यून्)** दुष्टों का **(अप, असेधः)** निवारण करें उन **(ते)** आपके लिये **(नु)** तर्क-वितर्क के साथ **(इत्)** ही सुख प्राप्त होवे॥७॥

**भावार्थ:**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे विद्वन्! जैसे ईश्वर ने सूर्य्य और मेघ का सम्बन्ध रचा वैसे ही अन्य भी बहुत सम्बन्ध रचे, यह जानना चाहिये॥७॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**त्वमपो यदवे तुर्वशायारमयः सुदुघाः पार इन्द्र।**

**उग्रमयातमवहो ह कुत्सं सं ह यद्वामुशनारन्त देवाः॥८॥**



www.9009.co.in

**त्वम्। अपः। यदवे। तुर्वशाय। अरमयः। सुऽदुघाः। पारः। इन्द्र। उग्रम्। अयातम्। अवहः। ह। कुत्सम्। सम्। ह। यत्। वाम्। उशना। अरन्त। देवाः॥८॥**

**पदार्थः**-(**त्वम्**) (**अपः**) जलानीव कर्माणि (**यदवे**) मनुष्याय (**तुर्वशाय**) सद्यो वशकरणसमर्थाय (**अरमयः**) रमय (**सुदुघाः**) सुष्ठु दोग्धुमर्हाः (**पारः**) यः पारयिता (**इन्द्र**) परमैश्वर्य्यप्रद (**उग्रम्**) दुर्जयम् (**अयातम्**) अप्राप्तम् (**अवहः**) प्राप्नुहि (**ह**) किल (**कुत्सम्**) (**सम्**) (**ह**) (**यत्**) (**वाम्**) युवाम् (**उशना**) कामयमानाः (**अरन्त**) रमन्ताम् (**देवाः**) विद्वांसः॥८॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! पारः सँस्त्वं तुर्वशाय यदेव सुदुघा अपोऽरमय उग्रमयातं कुत्सं ह समवहः यद् यत्रोशना देवा अरन्त तत्र ह वां रमयेयुः॥८॥

**भावार्थः**-ऐश्वर्य्यवान् मनुष्योऽन्येभ्यो धनधान्यादिकं दद्याद्यत्र विद्वांसो रमेरंस्तत्रैव सर्वे क्रीडेरन्॥८॥

**पदार्थः**-हे (**इन्द्र**) अत्यन्त ऐश्वर्य्यदाता! (**पारः**)पार लगाने वाले होते हुए (**त्वम्**) आप (**तुर्वशाय**) शीघ्र वश करने में समर्थ (**यदवे**) मनुष्य के लिये (**सुदुघाः**) उत्तम प्रकार पूर्ण करने योग्य (**अपः**) जलों के सदृश कर्म्मों को (**अरमयः**) रमावें और (**उग्रम्**) बड़े कष्ट से जिसको जीत सकें उस (**अयातम्**) न आये हुए (**कुत्सम्**) कुत्सित को (**ह**) निश्चय (**सम्, अवहः**) अच्छे प्रकार प्राप्त होवें तथा (**यत्**) जिसमें (**उशना**) कामना करते हुए (**देवाः**) विद्वान् जन (**अरन्त**) रमें, उसमें (**ह**) निश्चय (**सम्, अवहः**) अच्छे प्रकार प्राप्त होवें तथा (**यत्**) जिसमें (**उशना**) कामना करते हुए (**देवाः**) विद्वान् जन (**अरन्त**) रमें उसमें (**ह**) निश्चय (**वाम्**) आप दोनों अर्थात् आप को और पूर्वोक्त मनुष्य को रमावें॥८॥

**भावार्थः**-ऐश्वर्य्य वाला मनुष्य अन्य जनों के लिये धन और धान्य आदिक देवें और जहाँ विद्वान् रमें, वहाँ ही सम्पूर्ण जन क्रीड़ा करें॥८॥

**अथ यन्त्रकलाविषयं शिल्पकर्माह॥**

अब यन्त्रकलाविषय शिल्पकर्म को कहते हैं॥

**इन्द्राकुत्सा वहमाना रथेना वामत्या अपि कर्णे वहन्तु।**

**निः षीमद्भ्यो धमथो निः षधस्थान्मघोनो हृदो वरथस्तमांसि॥९॥**

**इन्द्राकुत्सा। वहमाना। रथेन। आ। वाम्। अत्याः। अपि। कर्णे। वहन्तु। निः। सीम्। अत्ऽभ्यः। धमथः। निः। सधऽस्थात्। मघोनः। हृदः। वरथः। तमांसि॥९॥**

**पदार्थः**-(**इन्द्राकुत्सा**) इन्द्रश्चकुत्सश्चेन्द्राकुत्सौ विद्युदाघातौ (**वहमाना**) प्रापयन्तौ (**रथेन**) यानेन (**आ**) (**वाम्**) युवयोः (**अत्याः**) सततं गामिनोऽश्वाः (**अपि**) (**कर्णे**) कुर्वन्ति येन तस्मिन् (**वहन्तु**) गमयन्तु (**निः**) नितराम् (**सधस्थात्**) सह स्थानात् (**मघोनः**) धनाढ्यान् (**हृदः**) ह्रद इव प्रियान् (**वरथः**) स्वीकुरुथः (**तमांसि**) रात्रीः॥९॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे अध्यापकोपदेशकौ! यथेन्द्राकुत्सा रथेन वहमाना स्तः विद्वांसः कर्णे वामा वहन्तु तथाऽत्या अपि सर्वान् वोढुं शक्नुवन्ति यदि विद्युदग्नी अद्भ्यो निर्धमथस्तर्हि तौ सधस्थात् सीमावहतो यदि ह्रदो मघोनो निर्वरथस्तर्हि सुखेन तमांसि गमयितुं शक्नुयातम्॥९॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यद्यग्निजलसंयोगं कृत्वा सन्धम्य वाष्पेन यन्त्रकलाः संहत्य यानादीनि चालयेयुस्तर्हि स्वयं सखींश्च धनाढ्यान् कृत्वा दुःखेभ्यः पारं गच्छेयुर्गमयेयुर्वा॥९॥

**पदार्थः**-हे अध्यापको और उपदेशको! जैसे **(इन्द्राकुत्सा)** बिजुली और बिजुली का आघात **(रथेन)** वाहन से **(वहमाना)** प्राप्त कराते हुए वर्त्तमान हैं वा विद्वान् जन **(कर्णे)** करते हैं जिससे उसमें **(वाम्)** आप दोनों को **(आ, वहन्तु)** पहुंचावें वैसे **(अत्याः)** निरन्तर चलने वाले घोड़े **(अपि)** भी सब को प्राप्त कराने को समर्थ होते हैं और जो बिजुली और अग्नि **(अद्भ्यः)** जलों से **(निः, धमथः)** शब्द करते हैं तो वे दोनों **(सधस्थात्)** तुल्य स्थान से **(सीम्)** सब प्रकार प्राप्त कराते और जो **(ह्रदः)** हृदयों के सदृश प्रिय **(मघोनः)** धनाढ्य पुरुषों का **(निः)** अत्यन्त **(वरथः)** स्वीकार करते हैं तो सुख से **(तमांसि)** अन्धकारों को हटाने को समर्थ होओ॥९॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जो अग्नि और जल का संयोग कर शब्द कर और भाफ से यन्त्र कलाओं को ताड़ित करके वाहनादिकों को चलावें तो आप अपने को और मित्रों को धन से युक्त करके दुःखों के पार जावें और अन्यों को भी पार करें॥९॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**वातस्य युक्तान्सुयुजश्चिदश्वान् कविश्चिदेषो अजगन्नवस्युः।**

**विश्वे ते अत्र मरुतः सखाय इन्द्र ब्रह्माणि तविषीमवर्धन्॥१०॥३०॥**

**वातस्य। युक्तान्। सुऽयुजः। चित्। अश्वान्। कविः। चित्। एषः। अजगन्। अवस्युः। विश्वे। ते। अत्र। मरुतः। सखायः। इन्द्र। ब्रह्माणि। तविषीम्। अवर्धन्॥१०॥**

**पदार्थः**-**(वातस्य)** वायोर्वेगेन **(युक्तान्)** **(सुयुजः)** ये सुष्ठु युञ्जते तान् **(चित्)** अपि **(अश्वान्)** आशुगामिनोऽग्न्यादीन् **(कविः)** मेधावी **(चित्)** अपि **(एषः)** वर्त्तमानः **(अजगन्)** गमयेयुः **(अवस्युः)** आत्मनोऽवो रक्षणमिच्छुः **(विश्वे)** सर्वे **(ते)** तव **(अत्र)** अस्मिञ्छिल्पविद्याकर्मणि **(मरुतः)** ऋत्विजो विद्वांसः **(सखायः)** सुहृदः **(इन्द्र)** विद्वन् **(ब्रह्माणि)** धनान्यन्नानि वा **(तविषीम्)** सेनाम् **(अवर्धन्)** वर्धयन्ति॥१०॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! ये तेऽत्र सखायो विश्वे मरुतो ब्रह्माणि तविषीं चावर्धन् वातस्य युक्तान् सुयुजश्चिदश्वानजगन् गमयेयुस्तानेषोऽवस्युः कविश्चिद्भवान् सततं सत्कुर्यात्॥१०॥



www.9009.co.in

**भावार्थ:**-हे ऐश्वर्यमिच्छुक! येऽग्न्यादिपदार्थविद्ययाऽद्भुतानि यानादिकार्य्याणि साद्धुं शक्नुवन्ति तै: सह मैत्रीं कृत्वा विद्यां प्राप्याभीष्टानि कार्य्याणि साधयन् भवान् महदैश्वर्य्यं प्राप्नुयात्॥१०॥

**पदार्थ:**-हे **(इन्द्र)** विद्वन्! जो **(ते)** आपके **(अत्र)** इस शिल्पविद्या के जाननेरूप कार्य्य में **(सखाय:)** मित्र **(विश्वे)** सम्पूर्ण **(मरुत:)** ऋतु-ऋतु में यज्ञ करने वाले विद्वान् जन **(ब्रह्माणि)** धनों वा अन्नों की और **(तविषीम्)** सेना की **(अवर्धन्)** वृद्धि करते हैं और **(वातस्य)** वायु के वेग से **(युक्तान्)** युक्त हुए **(सुयुज:)** उत्तम प्रकार पदार्थों के मेल करने वाले **(चित्)** निश्चित **(अश्वान्)** शीघ्रगामी अर्थात् तीव्र वेगयुक्त अग्नि आदि पदार्थों को **(अजगन्)** चलावें उनको **(एष:)** यह वर्त्तमान **(अवस्यु:)** अपने को रक्षण की इच्छा रखने वाले **(कवि:, चित्)** निश्चित बुद्धिमान् आप निरन्तर सत्कार करें॥१०॥

**भावार्थ:**-हे ऐश्वर्य्य की इच्छा रखने वाले पुरुष! जो अग्नि आदि पदार्थों की विद्या से विचित्र आश्चर्य्यजनक वाहन आदि कार्य्यों की सिद्धि कर सकते हैं, उनके साथ मित्रता करके और उनसे विद्या को प्राप्त हो अभीष्ट कार्य्यों को सिद्धि करते हुए आप अत्यन्त ऐश्वर्य्य को प्राप्त होवें॥१०॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**सूरश्चिद्रथं परितक्म्यायां पूर्वं करदुपरं जूजुवांसम्।**

**भरच्चक्रमेतश: सं रिणाति पुरो दधत् सनिष्यति क्रतुं न:॥११॥**

**सूर:। चित्। रथम्। परिऽतक्म्यायाम्। पूर्वम्। करत्। उपरम्। जूजुऽवांसम्। भरत्। चक्रम्। एतश:। सम्। रिणाति। पुर:। दधत्। सनिष्यति। क्रतुम्। न:॥११॥**

**पदार्थ:**-**(सूर:)** सूर्य्य: **(चित्)** इव **(रथम्)** रमणीयं यानम् **(परितक्म्यायाम्)** परित: सर्वतस्तक्मानि भवन्ति यस्यां तस्या रात्रौ **(पूर्वम्)** प्रथमम् **(करत्)** कुर्य्यात् **(उपरम्)** मेघमिव। **उपरमिति मेघनामसु पठितम्।** (निघं०१.१०) **(जूजुवांसम्)** अतिशयेन वेगवन्तम् **(भरत्)** धरेत् **(चक्रम्)** कलाचालकम् **(एतश:)** अश्वोऽश्विकमिव **(सम्)** **(रिणाति)** गच्छति **(पुर:)** पुरस्तात् **(दधत्)** दधाति **(सनिष्यति)** सम्भजेत् **(क्रतुम्)** प्रज्ञां कर्माणि वा **(न:)** अस्माकम्॥११॥

**अन्वय:**-हे विद्वन्! य: सूरश्चित्परितक्म्यायां पूर्वं रथमुपरमिव करज्जूजुवांसं चक्रमेतश इवा भरत् पुरश्चक्रं सं रिणाति यानं दधन्न: क्रतुं सनिष्यति तं सर्वथा सत्कुर्य्या:॥११॥

**भावार्थ:**-अत्रोपमावाचकलुप्तोपमालङ्कारौ। यदि मनुष्या कलाकौशलेन यानयन्त्राणि विधाय जलाग्निप्रयोगेण चक्राणि सञ्चाल्य कार्याणि साध्नुयुस्तर्हि सूर्यवायु मेघमिव बहुभारं यानमन्तरिक्षे जले स्थले च गमयितुं शक्नुयु:॥११॥

**पदार्थ:**-हे विद्वन्! जो **(सूर:)** सूर्य्य के **(चित्)** सदृश **(परितक्म्यायाम्)** सर्व ओर से हर्ष होते हैं जिस रात्रि में उसमें **(पूर्वम्)** प्रथम **(रथम्)** सुन्दर वाहन को **(उपरम्)** मेघ के सदृश **(करत्)** करे और



www.9009.co.in

**(जूजुवांसम्)** अत्यन्त वेग से युक्त **(चक्रम्)** कलाओं के चलाने वाले चक्र को **(एतशः)** जैसे घोड़ा घोड़े वाले को वैसे सब प्रकार **(भरत्)** धारण करे **(पुरः)** पहिले चक्र को **(सम्, रिणाति)** प्राप्त होता, वाहन को **(दधत्)** धारण करता और **(नः)** हम लोगों की **(क्रतुम्)** बुद्धि वा कर्म्मों का **(सनिष्यति)** सेवन करे, उसका आप सब प्रकार सत्कार करें॥११॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमा और वाचकलुप्तोपमालङ्कार हैं। जो मनुष्य कलाकौशल से वाहनों के यन्त्रों को रच के जल और अग्नि के अत्यन्त योग से चक्रों को उत्तम प्रकार चलाय कार्य्यों को सिद्ध करें तो जैसे सूर्य्य और पवन मेघ को वैसे बहुत भारयुक्त वाहन को अन्तरिक्ष जल और स्थल में पहुंचाने को समर्थ होवें॥११॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**आयं जना अभिचक्षे जगामेन्द्रः सखायं सुतसोममिच्छन्।**

**वदन् ग्रावाव वेदिं भ्रियाते यस्य जीरमध्वर्यवश्चरन्ति॥१२॥**

**आ। अयम्। जनाः। अभिऽचक्षे। जगाम। इन्द्रः। सखायम्। सुतऽसोमम्। इच्छन्। वदन्। ग्रावा। अव। वेदिम्। भ्रियाते। यस्य। जीरम्। अध्वर्यवः। चरन्ति॥१२॥**

**पदार्थः**-(आ) **(अयम्)** **(जनाः)** प्रसिद्धा विद्वांसः **(अभिचक्षे)** अभितः ख्यातुम् **(जगाम)** गच्छेत् **(इन्द्रः)** ऐश्वर्य्यवान् **(सखायम्)** मित्रम् **(सुतसोमम्)** निष्पादितपदार्थविद्यम् **(इच्छन्)** **(वदन्)** उपदिशन् **(ग्रावा)** गर्जनायुक्तो मेघ इव **(अव)** **(वेदिम्)** अग्निस्थानम् **(भ्रियाते)** धरेताम् **(यस्य)** **(जीरम्)** वेगम् **(अध्वर्यवः)** विद्यायज्ञसम्पादकाः **(चरन्ति)**॥१२॥

**अन्वयः**-हे जना! योऽयमिन्द्रोऽभिचक्षे सुतसोमं सखायमिच्छन् ग्रावेव वदन् वेदिमवा जगाम यस्य जीरमध्वर्यवश्चरन्ति यौ द्वौ शिल्पविद्या भ्रियाते तौ सदैव भवन्तः सत्कुर्वन्तु॥१२॥

**भावार्थः**-ये मनुष्या विद्याप्राप्तये विद्यादानाय वा सर्वैः सह मैत्रीं कृत्वा सङ्गच्छेरँस्ते सर्वां विद्यां प्राप्तुं शक्नुयुः॥१२॥

**पदार्थः**-हे **(जनाः)** प्रसिद्ध विद्वान् जनो! जो **(अयम्)** यह **(इन्द्रः)** ऐश्वर्य्य वाला **(अभिचक्षे)** सब ओर से प्रसिद्ध होने को **(सुतसोमम्)** संपन्न की पदार्थविद्या जिसने ऐसे **(सखायम्)** मित्र की **(इच्छन्)** इच्छा करता और **(ग्रावा)** गर्जना से युक्त मेघ के सदृश **(वदन्)** उपदेश देता हुआ जन **(वेदिम्)** अग्नि के स्थान को **(अव, आ, जगाम)** प्राप्त होवे **(यस्य)** जिसके **(जीरम्)** वेग को **(अध्वर्यवः)** विद्यारूप यज्ञ के सम्पादक अर्थात् उक्त यज्ञ को प्रसिद्ध करने वाले जन **(चरन्ति)** प्राप्त होते हैं और जो दो शिल्पविद्या को **(भ्रियाते)** धारण करें, उन दोनों का सदा ही आप लोग सत्कार करें॥१२॥



www.9009.co.in

**भावार्थ:**-जो जन विद्या की प्राप्ति तथा विद्या देने के लिये सम्पूर्ण जनों के साथ मित्रता करके मिलें, वे सम्पूर्ण विद्या के प्राप्त होने को समर्थ होवें॥१२॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**ये चाकनन्त चाकनन्त नू ते मर्ता अमृत मो ते अंह आरन्।**

**वावन्धि यज्यूंरुत तेषु धेह्योजो जनेषु येषु ते स्याम॥१३॥३१॥**

**ये। चाकनन्त। चाकनन्त। नु। ते। मर्ताः। अमृत। मो इति। ते। अंहः। आ। अरन्। ववन्धि। यज्यून्। उत। तेषु। धेहि। ओजः। जनेषु। येषु। ते। स्याम॥१३॥**

**पदार्थ:**-**(ये)** **(चाकनन्त)** कामयन्ते **(चाकनन्त)** **(नू)** सद्यः **(ते)** **(मर्त्ताः)** मनुष्याः **(अमृत)** आत्मस्वरूपेण मरणधर्मरहित **(मो)** **(ते)** **(अंहः)** अपराधम् **(आ)** **(अरन्)** समन्तात् प्राप्नुयुः **(वावन्धि)** बध्नन्ति **(यज्यून्)** सत्यभाषणादियज्ञानुष्ठातॄन् **(उत)** अपि **(तेषु)** **(धेहि)** **(ओजः)** पराक्रमम् **(जनेषु)** सत्याचरणेषु मनुष्येषु **(येषु)** **(ते)** तव **(स्याम)** भवेम॥१३॥

**अन्वय:**-हे अमृत विद्वन्! ये विद्याविनयसत्याचाराश्चाकनन्तान्यार्थमपि चाकनन्त ते मर्त्ताः सत्यं नू चाकनन्त तेंऽहो मो आरन् त उत यज्यून् वावन्धि येषु जनेषु वयं ते तव सखायः स्याम तेष्वस्मासु त्वमोजो धेहि॥१३॥

**भावार्थ:**-हे विद्वांसो! ये विद्यासत्याचरणपरोपकारानधर्म्माचरणराहित्यं च कामयित्वा सर्वोपकारमिच्छेयुस्ते धन्याः सन्तु वयमपीदृशाः स्यामेतीच्छामेति॥१३॥

अत्रेन्द्रविद्वच्छिल्पगुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इत्येकत्रिंशत्तमं सूक्तमेकत्रिंशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थ:**-हे **(अमृत)** आत्मस्वरूप से मरणधर्म्मरहित विद्वान्! **(ये)** जो विद्या, विनय और सत्य आचरणों की **(चाकनन्त)** कामना करते हैं तथा अन्यों के लिये भी **(चाकनन्त)** कामना करते हैं, **(ते)** वे **(मर्त्ताः)** मनुष्य सत्य की **(नू)** शीघ्र कामना करते हैं और **(ते)** वे **(अंहः)** अपराध को **(मो)** नहीं **(आ, अरन्)** सब प्रकार से प्राप्त हों और वे **(उत)** ही **(यज्यून्)** सत्यभाषण आदि यज्ञ के अनुष्ठान करने वाले जनों को **(वावन्धि)** बन्धनयुक्त करते हैं तथा **(येषु)** जिन **(जनेषु)** सत्य आचरण करने वाले मनुष्यों में हम लोग **(ते)** आपके मित्र **(स्याम)** होवें **(तेषु)** उन हम लोगों में आप **(ओजः)** पराक्रम को **(धेहि)** धारण कीजिये॥१३॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-हे विद्वान् जनो! जो जन विद्या, सत्य आचरण तथा परोपकार की और अधर्म्म आचरण के त्याग की कामना करके सब के उपकार की इच्छा करें, वे धन्यवादयुक्त होवें और हम लोग भी ऐसे होवें, ऐसी इच्छा करें॥१३॥

इस सूक्त में इन्द्र और शिल्पविद्या के गुण-वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के साथ संगति जाननी चाहिये॥

**यह इकतीसवां सूक्त और इकतीसवां वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

**अथ द्वादशर्चस्य द्वात्रिंशत्तमस्य सूक्तस्य गातुरात्रेय ऋषिः। इन्द्रो देवता।१, ७, ९, ११ त्रिष्टुप्। २, ३, ४, १०, १२, निचृत् त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः। ५, ८ स्वराट् पङ्क्तिः। ६ भुरिक् पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः॥**

***अथेन्द्रगुणानाह॥***

अब बारह ऋचा वाले बत्तीसवें सूक्त का आरम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में इन्द्रपदवाच्य राजगुणों को कहते हैं॥

**अदर्दुरुत्समसृजो वि खानि त्वमर्णवान् बद्बधानाँ अरम्णाः।**

**महान्तमिन्द्र पर्वतं वि यद्वः सृजो वि धारा अव दानवं हन्॥१॥**

**अदर्दः। उत्सम्। असृजः। वि। खानि। त्वम्। अर्णवान्। बद्बधानान्। अरम्णाः। महान्तम्। इन्द्र। पर्वतम्। वि। यत्। वरिति वः। सृजः। वि। धाराः। अव। दानवम्। हन्निति हन्॥१॥**

**पदार्थः-(अदर्दः)** विदृणाति **(उत्सम्)** कूपमिव **(असृजः)** सृजति **(वि)** **(खानि)** इन्द्रियाणि **(त्वम्)** **(अर्णवान्)** नदीः समुद्रान् वा **(बद्बधानान्)** प्रबद्धान् **(अरम्णाः)** रमय **(महान्तम्)** **(इन्द्र)** शत्रूणां दारयिता राजन् **(पर्वतम्)** पर्वताकारं मेघम् **(वि)** **(यत्)** यः **(वः)** युष्मभ्यम् **(सृजः)** सृजति **(वि)** **(धाराः)** जलप्रवाहा इव वाचः **(अव)** **(दानवम्)** दुष्टजनम् **(हन्)** सन्ति॥१॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! यथा सूर्य उत्समिव महान्तं पर्वतं हत्वा बद्बधानानदर्दोऽर्णवान् सृजस्तथा त्वं खानि वि सृजास्मान् व्यरम्णा यद्यः सूर्यो धारा इव दानवमव हन् वो व्यसृजस्तं सत्कुरु॥१॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। राजा यथा सूर्य्यो निपातितमेघेन नदीसमुद्रादीन् पिपर्ति कूलानि विदारयति तथैवाऽन्यायं निपात्य न्यायेन प्रजाः प्रपूर्य दुष्टाञ्छिन्द्यात्॥१॥

**पदार्थः**-हे **(इन्द्र)** शत्रुओं के नाश करने वाले राजन्! जिस प्रकार सूर्य्य **(उत्सम्)** कूप के समान **(महान्तम्)** बड़े **(पर्वतम्)** पर्वताकार मेघ का नाश करके **(बद्बधानान्)** अत्यन्त बंधे हुओं को **(अदर्दः)** नाश कता है और **(अर्णवान्)** नदियों वा समुद्रों का **(सृजः)** त्याग करता है, वैसे **(त्वम्)** आप **(खानि)** इन्द्रियों को **(वि)** विशेष करके त्याग कीजिये और हम लोगों का **(वि, अरम्णाः)** विशेष रमण कराइये और **(यत्)** जो सूर्य्य **(धाराः)** जल के प्रवाहों के सदृश वाणियों का और **(दानवम्)** दुष्ट जन का **(अव, हन्)** नाश करता है **(वः)** आप लोगों के लिये **(वि, असृजः)** विशेषकर त्यागता अर्थात् जलादि का त्याग करता है, उसका सत्कार प्रशंसा उत्तम किया कीजिये॥१॥



www.9009.co.in

**भावार्थ:**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। राजा जैसे सूर्य्य गिराये हुए मेघ से नदी और समुद्र आदिकों को पूर्ण करता और तटों को तोड़ता है, वैसे ही अन्याय को गिरा और न्याय से प्रजा का पालन करके दुष्टों का नाश करें॥१॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**त्वमुत्साँ ऋतुभिर्बद्बधानाँ अरंहु ऊधः पर्वतस्य वज्रिन्।**

**अहिं चिदुग्र प्रयुतं शयानं जघन्वाँ इन्द्र तविषीमधत्थाः॥२॥**

**त्वम्। उत्सान्। ऋतुऽभिः। बद्बधानान्। अरंह। ऊधः। पर्वतस्य। वज्रिन्। अहिम्। चित्। उग्र। प्रऽयुतम्। शयानम्। जघन्वान्। इन्द्र। तविषीम्। अधत्थाः॥२॥**

**पदार्थ:**-**(त्वम्)** **(उत्सान्)** कूपानिव **(ऋतुभिः)** वसन्तादिभिः **(बद्बधानान्)** सम्बद्धान् **(अरंहः)** गमयति **(ऊधः)** जलाधारं घनसमूहम् **(पर्वतस्य)** मेघस्य **(वज्रिन्)** प्रशस्तवज्रवन् **(अहिम्)** मेघम् **(चित्)** **(उग्र)** तेजस्विन् **(प्रयुतम्)** बहुविधम् **(शयानम्)** शयानमिवाचरन्तम् **(जघन्वान्)** हन्ति **(इन्द्र)** सूर्यवद्वर्त्तमान **(तविषीम्)** बलयुक्तां सेनाम् **(अधत्थाः)** दध्याः॥२॥

**अन्वय:**-हे वज्रिन्नुग्रेन्द्र राजँस्त्वं यथा कृषीबला ऋतुभिर्बद्धानानुत्सानरंहो यथा सूर्य्यः पर्वतस्योधश्चित् प्रयुतं शयानमहिं जघन्वाँस्तथा त्वं तविषीमधत्थाः॥२॥

**भावार्थ:**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यथा कृषीबलाः कूपेभ्यो जलं क्षेत्राणि नीत्वा शस्यानुत्पाद्य सर्वर्त्तुषु सुखैश्वर्यमुन्नयन्ति तथैव त्वं प्रजा उन्नय॥२॥

**पदार्थ:**-हे **(वज्रिन्)** अच्छे वज्र वाले और **(उग्र)** तेजस्वी **(इन्द्र)** सूर्य्य के सदृश वर्त्तमान राजन्! **(त्वम्)** आप, जैसे खेती करने वाले जन **(ऋतुभिः)** वसन्त आदि ऋतुओं से **(बद्बधानान्)** अत्यन्त बद्ध हुओं को **(उत्सान्)** कूपों के सदृश **(अरंहः)** चलाता है और जैसे सूर्य्य **(पर्वतस्य)** मेघ के **(ऊधः)** जलाधार घनसमूह को **(चित्)** और **(प्रयुतम्)** बहुत प्रकार **(शयानम्)** शयन करते हुए के सदृश आचरण करते हुए **(अहिम्)** मेघ का **(जघन्वान्)** नाश करता है, वैसे आप **(तविषीम्)** बलयुक्त सेना का **(अधत्थाः)** धारण करिये॥२॥

**भावार्थ:**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे खेती करने वाले जन कूपों से जल को क्षेत्रों के प्रति प्राप्त कर अन्न उत्पन्न करके सब ऋतुओं में सुख और ऐश्वर्य्य की वृद्धि करते हैं, वैसे ही आप प्रजाओं की उन्नति कीजिये॥२॥

**अथ धनुर्वेदविद्राजगुणानाह॥**

अब इन्द्रपदवाच्य धनुर्वेदवित् राजगुणों को कहते हैं॥

**त्यस्य चिन्महतो निर्मृगस्य वधर्जघान तविषीभिरिन्द्रः।**



www.9009.co.in

**य एक इदप्रतिर्मन्यमान आदस्मादन्यो अजनिष्ट तव्यान्॥३॥**

**त्यस्य। चित्। महतः। निः। मृगस्य। वधः। जघान। तविषीभिः। इन्द्रः। यः। एकः। इत्। अप्रतिः। मन्यमानः। आत्। अस्मात्। अन्यः। अजनिष्ट। तव्यान्॥३॥**

**पदार्थः-(त्यस्य)** तस्य **(चित्)** **(महतः)** **(निः)** **(मृगस्य)** सद्योगामिनः **(वधः)** घ्नन्ति यस्मिन् सः **(जघान)** हन्ति **(तविषीभिः)** सेनादिबलैः **(इन्द्रः)** सेनेशः **(यः)** **(एकः)** **(इत्)** **(अप्रतिः)** अविद्यमाना प्रतिः प्रतीतिर्यस्य सः **(मन्यमानः)** **(आत्)** **(अस्मात्)** **(अन्यः)** भिन्नः **(अजनिष्ट)** जनयति **(तव्यान्)** ये तविषि बले भवास्तान्। अत्र **छान्दसो वर्णलोपो वे**ति सलोपः॥३॥

**अन्वयः**-हे विद्वन्! य एकोऽप्रतिर्मन्यमानस्त्वं तविषीभिर्यथेन्द्रस्त्यस्य महतो मृगस्य मेघस्य वधर्जघान तथाऽस्मांश्चिज्जनयादस्माद्यथाऽन्यो निरजनिष्ट तथेत्त्वमस्मान् तव्यान्निज्जनय॥३॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यथा सूर्यो मेघं विजित्य स्वप्रभावं जनयित्वा सर्वान् प्राणिनः पालयति तथैव धनुर्वेदविदेकोऽप्यनेकान् विजित्य प्रजाः पालयेत्॥३॥

**पदार्थः**-हे विद्वन्! **(यः)** जो **(एकः)** एक **(अप्रतिः)** नहीं है विश्वास जिनके वह **(मन्यमानः)** आदर किये गये आप **(तविषीभिः)** सेना आदि बलों से जैसे **(इन्द्रः)** सेना का स्वामी **(त्यस्य)** उस **(महतः)** बड़े **(मृगस्य)** शीघ्र चलने वाले मेघ का **(वधः)** नाश करते हैं जिसमें तदनुकूल **(जघान)** नाश करता है, वैसे हम लोगों को **(चित्)** भी प्रकट कीजिये **(आत्)** अनन्तर **(अस्मात्)** इससे जैसे **(अन्यः)** भिन्न और जन **(निः)** अत्यन्त **(अजनिष्ट)** उत्पन्न करता है, वैसे **(इत्)** ही आप **(तव्यान्)** बलों में उत्पन्न हम लोगों को ही उत्पन्न कीजिये अर्थात् प्रकट कीजिये॥३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे सूर्य्य मेघ को जीतकर अपने प्रताप को प्रकट करके सब प्राणियों का पालन करता है, वैसे ही धनुर्वेद की विद्या को जानने वाला एक भी अनेकों को जीतकर प्रजाओं का पालन करे॥३॥

**पुना राजविषयमाह॥**

फिर राजविषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**त्यं चिदेषां स्वधया मदन्तं मिहो नपातं सुवृधं तमोगाम्।**
**वृषप्रभर्मा दानवस्य भामं वज्रेण वज्री नि जघान शुष्णम्॥४॥**

**त्यम्। चित्। एषाम्। स्वधया। मदन्तम्। मिहः। नपातम्। सुऽवृधम्। तमःऽगाम्। वृषऽप्रभर्मा। दानवस्य। भामम्। वज्रेण। वज्री। नि। जघान। शुष्णम्॥४॥**

**पदार्थः-(त्यम्)** तम् **(चित्)** इव **(एषाम्)** वीराणां मध्ये **(स्वधया)** अन्नादिना **(मदन्तम्)** हर्षन्तम् **(मिहः)** वृष्टेः **(नपातम्)** अपतनशीलम् **(सुवृधम्)** सुष्ठुवर्धमानम् **(तमोगाम्)** प्राप्ताऽन्धकारम् **(वृषप्रभर्मा)**



www.9009.co.in

यो वर्षणशीलं मेघं प्रबिभर्ति सः **(दानवस्य)** दुष्टजनस्य **(भामम्)** क्रोधम् **(वज्रेण)** तीव्रेण शस्त्रेण **(वज्री)** प्रशस्तशस्त्रास्त्रयुक्तः **(नि)** **(जघान)** निहन्यात् **(शुष्णम्)** शोषकं बलवन्तम्॥४॥

**अन्वयः**-हे सेनेश वीर! भवानेषां स्वधया मदन्तं त्यं चित् यथा वृषप्रभर्मा सूर्यो मिहो नपातं सुवृधं तमोगां जघान तथा वज्री सन् वज्रेण दानवस्य शुष्णं भामं नि जघान॥४॥

**भावार्थः**-अत्र **[**उपमा**]**वाचकलुप्तोपमालङ्कारौ। हे राजन्! यथा सूर्य्योऽतिविस्तीर्णं मेघं विछिद्य भूमौ निपात्य जगद्रक्षति तथैवाऽतिप्रबलानापि शत्रून् विदार्याऽधो निपात्य न्यायेन प्रजाः पालय॥४॥

**पदार्थः**-हे सेना के ईश वीरपुरुष! आप **(एषाम्)** इन वीरों के मध्य में **(स्वधया)** अन्न आदि से **(मदन्तम्)** प्रसन्न होता हुआ जो जीव **(त्यम्)** उसके **(चित्)** समान जैसे **(वृषप्रभर्मा)** वर्षने वाले मेघ को धारण करने वाला सूर्य्य **(मिहः)** वृष्टि के **(नपातम्)** नहीं गिरने वाले **(सुवृधम्)** सुन्दर बढ़ते हुए **(तमोगाम्)** अन्धकार को प्राप्त अर्थात् सघनघन मेघ को **(जघान)** नाश करे, वैसे **(वज्री)** उत्तम शस्त्र और अस्त्रों से युक्त होते हुए **(वज्रेण)** तीव्र शस्त्र से **(दानवस्य)** दुष्टजन के **(शुष्णम्)** सुखाने वाले बलवान् **(भामम्)** क्रोध को **(नि)** निरन्तर नाश करिये॥४॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में **[**उपमा और**]** वाचकलुप्तोपमालङ्कार हैं। हे राजन्! जैसे सूर्य्य अति विस्तारयुक्त मेघ का नाश कर भूमि में गिरा के जगत् की रक्षा करता है, वैसे ही अतिप्रबल भी शत्रुओं का नाश कर नीचे गिरा के न्याय से प्रजाओं का पालन कीजिये॥४॥

**अथ शिल्पविद्याविद्गुणानाह॥**

अब शिल्पविद्या के जानने वाले विद्वान् के गुणों को कहते हैं॥

**त्यं चि॑दस्य॒ क्रतु॑भि॒र्निष॑त्तमम॒र्मणो॑ वि॒ददिद॑स्य॒ मर्म॑।**

**यदीं॑ सुक्षत्र॒ प्रभृ॑ता॒ मद॑स्य॒ युयु॑त्सन्तं॒ तम॑सि ह॒र्म्ये धाः॥५॥**

**त्यम्। चि॒त्। अ॒स्य॒। क्रतु॑ऽभिः। निऽस॑त्तम्। अ॒म॒र्मण॑ः। वि॒दत्। इत्। अ॒स्य॒। मर्म॑। यत्। ई॒म्। सु॒ऽक्ष॒त्र॒। प्रऽभृ॑ता। मद॑स्य। युयु॑त्सन्तम्। तम॑सि। ह॒र्म्ये। धाः॥५॥**

**पदार्थः**-**(त्यम्)** तम् **(चित्)** अपि **(अस्य)** शत्रोः **(क्रतुभिः)** प्रज्ञाभिः कर्मभिर्वा **(निषत्तम्)** निषण्णम् **(अमर्मणः)** अविद्यमानानि मर्माणि यस्य तस्य **(विदत्)** विन्देत **(इत्)** एव **(अस्य)** मेघस्य **(मर्म)** गुह्यावयवम् **(यत्)** यम् **(ईम्)** **(सुक्षत्र)** शोभनं क्षत्रं क्षत्रियकुलं धनं वा यस्य तत्सबुद्धौ। **क्षत्रमिति धननामसु पठितम्।** (निघं०२।१०) **(प्रभृता)** प्रकर्षेण धारणे पोषणे वा **(मदस्य)** हर्षस्य **(युयुत्सन्तम्)** योद्धुमिच्छन्तम् **(तमसि)** रात्रौ **(हर्म्ये)** प्रासादे **(धाः)** धेहि॥५॥

**अन्वयः**-हे सुक्षत्र राजन्! भवानस्यामर्मणः क्रतुभिर्निषत्तं त्यं चिदस्य मदस्य प्रभृता यन्मर्मेद्विदत्तमीं युयुत्सन्तं तमसि हर्म्ये त्वं धाः॥५॥



www.9009.co.in

**भावार्थ:**-ये पदार्थानां गुप्तानि स्वरूपाणि विज्ञाय प्रज्ञया शिल्पविद्यां वर्धयन्ति ते सुराज्यैश्वर्या भवन्ति॥५॥

**पदार्थ:**-हे **(सुक्षत्र)** श्रेष्ठ क्षत्रियकुल वा धन से युक्त राजन्! आप **(अस्य)** इस **(अमर्मण:)** मर्म की बातों से रहित शत्रु की **(क्रतुभि:)** बुद्धि वा कर्म्मों से **(निषत्तम्)** स्थित **(त्यम्)** उसको **(चित्)** तथा **(अस्य)** इस मेघ के और **(मदस्य)** आनन्द के **(प्रभृता)** अत्यन्त धारण करने वा पोषण करने में **(यत्)** जिस **(मर्म)** गुप्त अवयव को **(इत्)** ही **(विदत्)** प्राप्त होवे, उसको **(ईम्)** सब प्रकार प्राप्त हुए **(युयुत्सन्तम्)** युद्ध करने की इच्छा करते हुए को **(तमसि)** रात्रि में **(हर्म्ये)** प्रासाद के ऊपर आप **(धा:)** धारण कीजिये॥५॥

**भावार्थ:**-जो पदार्थों के गुप्त स्वरूपों को जान के बुद्धि से शिल्पविद्या की वृद्धि करते हैं, वे उत्तम राज्य और ऐश्वर्य्ययुक्त होते हैं॥

**पुना राजविषयमाह॥**

फिर राजविषय को कहते हैं॥

**त्यं चिदित्था कत्पयं शयानमसूर्ये तमसि वावृधानम्।**
**तं चिन्मन्दानो वृषभः सुतस्योच्चैरिन्द्रो अपगूर्या जघान॥६॥३२॥**

**त्यम्। चित्। इत्था। कत्पयम्। शयानम्। असूर्ये। तमसि। ववृधानम्। तम्। चित्। मन्दानः। वृषभः। सुतस्य। उच्चैः। इन्द्रः। अपऽगूर्य। जघान॥६॥**

**पदार्थ:**-**(त्यम्)** तम् **(चित्)** अपि **(इत्था)** अनेन प्रकारेण **(कत्पयम्)** कतिपयम्। अत्र **छान्दसो वर्णलोपो वे**तीलोप:। **(शयानम्)** **(असूर्ये)** अविद्यमान: सूर्यो यस्मिँस्तस्मिन् **(तमसि)** रात्रौ **(वावृधानम्)** **(तम्)** **(चित्)** **(मन्दान:)** आनन्दन् **(वृषभ:)** श्रेष्ठ: **(सुतस्य)** निष्पन्नस्य पदार्थस्य **(उच्चै:)** **(इन्द्र:)** सेनेश: **(अपगूर्या)** उद्यम्य **(जघान)** हन्ति॥६॥

**अन्वय:**-हे मनुष्या! य इन्द्र उच्चैरपगूर्या सुतस्य मन्दानो वृषभस्तं चित्कत्पयमसूर्ये तमसि शयानं वावृधानं चिन्मेघं जघानेत्था त्यं विच्छत्रुं हन्यात्॥६॥

**भावार्थ:**-अत्रोपमालङ्कार:। यथा सूर्य्येण मेघो हन्यते तमो निवार्य, तथैव राज्ञा दुष्टा हन्तव्या: श्रेष्ठा: पालनीया:॥६॥

**पदार्थ:**-हे मनुष्यो! जो **(इन्द्र:)** सेना का ईश **(उच्चै:)** उच्चता के साथ **(अपगूर्या)** उद्यम कर **(सुतस्य)** उत्पन्न हुए पदार्थ का **(मन्दान:)** आनन्द करता हुआ **(वृषभ:)** श्रेष्ठ पुरुष **(तम्)** उसको **(चित्)** भी **(कत्पयम्)** कितने को तथा **(असूर्ये)** जिसमें सूर्य्य विद्यमान नहीं उस **(तमसि)** रात्री में **(शयानम्)** शयन करते और **(वावृधानम्)** निरन्तर वृद्धि को प्राप्त होते हुए को **(चित्)** वा मेघ को **(जघान)** नाश करता है **(इत्था)** इस प्रकार से **(त्यम्)** उस शत्रु का भी नाश करे॥६॥



www.9009.co.in

**भावार्थ:**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जैसे सूर्य्य मेघ का नाश करता है अन्धकार का वारण करके, वैसे ही राजा को चाहिये कि दुष्टों का नाश और श्रेष्ठों का पालन करे॥६॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**उद्यदिन्द्रो महते दानवाय वधर्यमिष्ट सहो अप्रतीतम्।**

**यदीं वज्रस्य प्रभृतौ ददाभ विश्वस्य जन्तोरधमं चकार॥७॥**

**उत्। यत्। इन्द्रः। महते। दानवाय। वधः। यमिष्ट। सहः। अप्रतिऽइतम्। यत्। ईम्। वज्रस्य। प्रऽभृतौ। ददाभ। विश्वस्य। जन्तोः। अधमम्। चकार॥७॥**

**पदार्थ:**-**(उत्) (यत्)** यम् **(इन्द्रः) (महते) (दानवाय)** दानकर्त्रे **(वधः)** वधम् **(यमिष्ट)** नियच्छेत् **(सहः)** बलम् **(अप्रतीतम्)** अधर्मिभिरप्राप्तम् **(यत्)** यः **(ईम्)** सर्वतः **(वज्रस्य)** शस्त्रप्रहारस्य **(प्रभृतौ)** प्रकृष्टधारणे **(ददाभ)** हिनस्ति **(विश्वस्य)** समग्रस्य **(जन्तोः)** जीवमात्रस्य मध्ये **(अधमम्) (चकार)** करोति॥७॥

**अन्वय:**-हे विद्वन्! यद्य इन्द्रो महते दानवाय वधरुद्यमिष्ट यदप्रतीतं सह ईं वज्रस्य प्रभृतौ ददाभ विश्वस्य जन्तोरधमं चकार तं विज्ञाय संप्रयुङ्क्ष्व॥७॥

**भावार्थ:**-हे राजादयो जना यूयं सूर्य्यवद्वर्त्तित्वा राज्यस्याऽधमां दिशां निवारयत॥७॥

**पदार्थ:**-हे विद्वन्! **(यत्)** जो **(इन्द्रः)** राजा **(महते)** बड़े **(दानवाय)** दान करने वाले के लिये **(वधः)** वध को **(उत्, यमिष्ट)** उत्तम नियम करे और **(यत्)** जिस **(अप्रतीतम्)** अधर्मिजनों से नहीं प्राप्त हुए **(सहः)** बल को **(ईम्)** सब ओर से **(वज्रस्य)** शस्त्रप्रहार के **(प्रभृतौ)** उत्तम प्रकार धारण करने में **(ददाभ)** नाश करता और **(विश्वस्य)** सम्पूर्ण **(जन्तोः)** जीवमात्र के मध्य में **(अधमम्)** नीचा **(चकार)** करता अर्थात् जो सब पर अपना आक्रमण करता है, उसको जान के उत्तम प्रकार प्रयोग करो अर्थात् उससे प्रयोजन सिद्ध करो॥७॥

**भावार्थ:**-हे राजा आदि जनो! आप लोग सूर्य्य के सदृश वर्त्ताव करके राज्य की अधमदशा का निवारण करें॥७॥

**पुनर्विद्वद्विषयमाह॥**

फिर विद्वद्विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**त्वं चिदर्णं मधुपं शयानमसिन्वं वव्रं मह्याददुग्रः।**

**अपादमत्रं महता वधेन नि दुर्योण आवृणङ् मृध्रवाचम्॥८॥**



www.9009.co.in

**त्यम्। चित्। अर्णम्। मधुऽपम्। शयानम्। असिन्वम्। वव्रम्। महि। आदत्। उग्रः। अपादम्। अत्रम्। महता। वधेन। नि। दुर्योणे। अवृणक्। मृध्रऽवाचम्॥८॥**

**पदार्थः**-(**त्यम्**) (**चित्**) (**अर्णम्**) जलम् (**मधुपम्**) यन्मधूनि पाति तम् (**शयानम्**) शयानमिव वर्त्तमानम् (**असिन्वम्**) अबद्धम् (**वव्रम्**) वरणीयम् (**महि**) महत् (**आदत्**) आदद्यात् (**उग्रः**) तेजस्वी (**अपादम्**) अविद्यमानपादम् (**अत्रम्**) योऽतति सर्वत्र व्याप्नोति तम् (**महता**) (**वधेन**) (**नि**) नितराम् (**दुर्योणे**) गृहे (**आवृणक्**) वृणोति। अत्र **तुजादीनामि**ति दीर्घः। (**मृध्रवाचम्**) हिंसितवाचम्॥८॥

**अन्वयः**-हे विद्वन्! यथोग्रः सूर्यो महता वधेन दुर्योणे त्यं चिदर्णं मधुपं शयानमसिन्वं वव्रमपादमत्रं मृध्रवाचं मेघं मह्यादन्न्यावृणक् तथा त्वं वर्त्तस्व॥८॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यथा विद्युता मेघो भूमौ निपात्यते तथा भवन्तो दुष्टानधो निपातयन्तु॥८॥

**पदार्थः**-हे विद्वन्! जैसे (**उग्रः**) तेजस्वी सूर्य्य (**महता**) बड़े (**वधेन**) वध से (**दुर्योणे**) गृह में (**त्यम्**) उस (**चित्**) निश्चित (**अर्णम्**) जल का (**मधुपम्**) मधुर पदार्थों की रक्षा करने वाले का (**शयानम्**) और सोते हुए के सदृश वर्त्तमान (**असिन्वम्**) नहीं बद्ध (**वव्रम्**) स्वीकार करने योग्य (**अपादम्**) पादों से रहित और (**अत्रम्**) सर्वत्र व्याप्त होने वाले (**मृध्रवाचम्**) हिंसित वाणी से युक्त मेघ का (**महि**) अतीव (**आदत्**) ग्रहण करे वा (**नि**) अत्यन्त (**आवृणक्**) स्वीकार करता है, वैसे आप वर्त्ताव कीजिये॥८॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे मनुष्य! जैसे बिजुली मेघ को भूमि में गिराती है, वैसे आप दुष्टों के [=को] नीच दशा को प्राप्त करिये [=कराइये]॥८॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**को अस्य शुष्मं तविषीं वरात एको धना भरते अप्रतीतः।**

**इमे चिदस्य ज्रयसो नु देवी इन्द्रस्यौजसो भियसा जिहाते॥९॥**

**कः। अस्य। शुष्मम्। तविषीम्। वराते। एकः। धना। भरते। अप्रतिऽइतः। इमे इति। चित्। अस्य। ज्रयसः। नु। देवी इति। इन्द्रस्य। ओजसः। भियसा। जिहाते इति॥९॥**

**पदार्थः**-(**कः**) (**अस्य**) (**शुष्मम्**) बलम् (**तविषीम्**) सेनाम् (**वराते**) वृणुयाताम् (**एकः**) (**धना**) धनानि (**भरते**) (**अप्रतीतः**) अप्रत्यक्षः (**इमे**) (**चित्**) (**अस्य**) (**ज्रयसः**) (**नु**) (**देवी**) देदीप्यमाने (**इन्द्रस्य**) विद्युतः (**ओजसः**) बलस्य (**भियसा**) धारणेन (**जिहाते**) गच्छतः॥९॥

**अन्वयः**-हे विद्वांसः! कोऽस्य शुष्मन्तविषीं धरेदिमे देवी इन्द्रस्यौजसो भियसा नु जिहाते। अनयोरेको धना भरतेऽपरोऽप्रतीतोऽस्य चिज्ज्रयसो धर्त्ता वर्त्तते ताविमौ सर्वं वराते [यतो हि] इमे सर्वे ताभ्यां धृताः सन्ति॥९॥



www.9009.co.in

**भावार्थ:**-हे मनुष्या! यो द्विविधोऽग्निरेक: प्रसिद्ध: सूर्य्यभौमरूपो द्वितीयो गुप्तो विद्युद्रूप इमावेव सर्वं जगद्धृत्वा गमयत:॥९॥

**पदार्थ:**-हे विद्वान् जनो! **(क:)** कौन **(अस्य)** इसके **(शुष्मम्)** बल को और **(तविषीम्)** सेना को धारण करे और **(इमे)** ये **(देवी)** प्रकाशमान दो अग्नि **(इन्द्रस्य)** बिजुली के **(ओजस:)** बल के **(भियसा)** धारण से **(नु)** शीघ्र **(जिहाते)** चलते हैं, इन दोनों के मध्य में **(एक:)** एक तो **(धना)** धनों को **(भरते)** धारण करता है और दूसरा **(अप्रतीत:)** नहीं प्रत्यक्ष हुआ **(अस्य)** [इसके] **(चित्)** भी **(त्रयस:)** वेगवान् का धारण करने वाला वर्त्तमान है, वे ये दोनों सब को **(वराते)** स्वीकार को प्राप्त होवें, क्योंकि ये सब पदार्थ उन दोनों से धारण किये गये हैं॥९॥

**भावार्थ:**-हे मनुष्यो! जो दो प्रकार का अग्नि- एक तो प्रसिद्ध सूर्य्य पृथ्वी में प्रसिद्धरूप और दूसरा गुप्त बिजुलीरूप ये ही दोनों सब जगत् को धारण करके चलाते हैं॥९॥

**पुनर्विद्वद्विषयमाह॥**

फिर विद्वद्विषय को कहते हैं॥

**न्य१स्मै देवी स्वधितिर्जिहीत इन्द्राय गातुरुशतीव येमे।**

**सं यदोजो युवते विश्वमाभिरनु स्वधाव्ने क्षितयो नमन्त॥१०॥**

**नि। अस्मै। देवी। स्वऽधितिः। जिहीते। इन्द्राय। गातुः। उशतीऽइव। येमे। सम्। यत्। ओजः। युवते। विश्वम्। आभिः। अनु। स्वधाऽव्ने। क्षितयः। नमन्त॥१०॥**

**पदार्थ:**-**(नि) (अस्मै) (देवी) (स्वधिति:)** वज्र इव **(जिहीते)** गमयेते **(इन्द्राय)** ऐश्वर्य्याय **(गातु:)** भूमि: **(उशतीव)** कामयमाना स्त्रीव **(येमे) (सम्) (यत्)** यथा **(ओज:)** वीर्य्यम् **(युवते)** प्राप्तयुवावस्थे **(विश्वम्)** सर्वम् **(आभि:)** क्रियाभि: **(अनु) (स्वधाव्ने)** य: स्वं दधाति तस्मै **(क्षितय:)** मनुष्या: **(नमन्त)** नमन्ति॥१०॥

**अन्वय:**-हे युवते! स्वधितिरिव देवी त्वमस्मा इन्द्राय गातुरिवोशतीव इमे यदोज: सङ्गृह्य सन्नि येमे। आभि: स्वधाव्ने विश्वमनु जिहीते यथा वा क्षितयो नमन्त तथा त्वं भव॥१०॥

**भावार्थ:**-यथा कृतब्रह्मचर्य्या ब्रह्मचारिणी पूर्णचतुर्विंशतिवर्षा पतिं कामयमाना सदृशं हृद्यं स्वामिनं गृह्णाति तथैव विद्युदादिरूपोऽग्नि: सर्वं विश्वं धरति यथा गुणवतो जनान् मनुष्या नमन्ति तथैव सुलक्षणौ स्त्रीपुरुषौ सर्वे जना नमन्ति॥१०॥

**पदार्थ:**-हे **(युवते)** युवावस्था को प्राप्त हुई **(स्वधिति:)** वज्र के सदृश **(देवी)** विदुषी तुम **(अस्मै)** इस **(इन्द्राय)** ऐश्वर्य्य के लिये यह दो स्त्रियाँ **(गातु:)** भूमि और **(उशतीव)** कामना करती हुई स्त्री के समान **(यत्)** जैसे **(ओज:)** वीर्य को उत्तम प्रकार ग्रहण करके **(सम्, नि, येमे)** अच्छे प्रकार नियम में रखती और **(आभि:)** इन क्रियाओं से **(स्वधाव्ने)** धन को धारण करने वाले के लिये **(विश्वम्)**



www.9009.co.in

समस्त व्यवहार को **(अनु, जिहीते)** अनुकूल चलाती हैं तथा जैसे **(क्षितयः)** मनुष्य **(नमन्त)** नम्र होते हैं, वैसे आप होइये॥१०॥

**भावार्थः-**जैसे बह्मचर्य्य को धारण को हुई ब्रह्मचारिणी कन्या पूर्ण चौबीस वर्ष की अवस्था से युक्त हुई पति की कामना करती हुई गुण, कर्म्म और स्वभाव के सदृश और प्रिय स्वामी का ग्रहण करती है, वैसे ही बिजुली आदि रूप अग्नि सम्पूर्ण संसार को धारण करता है और जैसे गुणवान् जनों को मनुष्य नमते हैं, वैसे ही उत्तम लक्षणों से युक्त स्त्री-पुरुषों को सम्पूर्ण जन नमते हैं॥१०॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**एकं नु त्वा सत्पतिं पाञ्चजन्यं जातं शृणोमि यशसं जनेषु।**

**तं मे जगृभ्र आशसो नविष्ठं दोषा वस्तोर्हवमानास इन्द्रम्॥११॥**

**एकम्। नु। त्वा। सत्ऽपतिम्। पाञ्चऽजन्यम्। जातम्। शृणोमि। यशसम्। जनेषु। तम्। मे। जगृभ्रे। आऽशसः। नविष्ठम्। दोषा। वस्तोः। हवमानासः। इन्द्रम्॥११॥**

**पदार्थः-(एकम्)** असहायम् **(नु)** सद्यः **(त्वा)** त्वाम् **(सत्पतिम्)** सतां पालकम् **(पाञ्चजन्यम्)** पञ्चजनाः प्राणा बलवन्तो यस्य तदपत्यम् **(जातम्)** प्रसिद्धम् **(शृणोमि)** **(यशसम्)** यशस्विनम् **(जनेषु)** **(तम्)** **(मे)** मम **(जगृभ्रे)** गृह्णन्तु **(आशसः)** काममिच्छन्तः **(नविष्ठम्)** अतिशयेन नवम् **(दोषा)** रात्रीः **(वस्तोः)** दिनम् **(हवमानासः)** आदातुमिच्छन्तः **(इन्द्रम्)** परमैश्वर्य्यम्॥११॥

**अन्वयः-**हे विद्वांसः! कृताष्टाचत्वारिंशद् ब्रह्मचर्य्यमेकं सत्पतिं पाञ्चजन्यं जनेषु जातं यशसं त्वा त्वां शृणोमि तमिन्द्रं नविष्ठं मे स्वामिनं हवमानास आशसो जना दोषा वस्तोर्नु जगृभ्रे॥११॥

**भावार्थः-**ब्रह्मचारिणी प्रसिद्धकीर्तिं सत्पुरुषं सुशीलं शुभगुणरूपसमन्वितं प्रीतिमन्तं पतिं ग्रहीतुमिच्छेत्तथैव ब्रह्मचार्य्यपि स्वसदृशीमेव ब्रह्मचारिणी स्त्रियं गृह्णीयात्॥११॥

**पदार्थः-**हे विद्वानो! किया है अड़तालीस वर्ष ब्रह्मचर्य्य जिसने ऐसे **(एकम्)** द्वितीय सहाय से रहित **(सत्पतिम्)** श्रेष्ठों के पालन करने वाले **(पाञ्चजन्यम्)** प्राण आदि पांच पवन बलवान् जिसके उसके पुत्र और **(जनेषु)** मनुष्यों में **(जातम्)** प्रसिद्ध और **(यशसम्)** यशस्वी **(त्वा)** आपको **(शृणोमि)** सुनती हूं **(तम्)** उन **(इन्द्रम्)** अत्यन्त ऐश्वर्य्ययुक्त **(नविष्ठम्)** अत्यन्त नवीन **(मे)** मेरे स्वामी की **(हवमानासः)** ग्रहण करने की इच्छा करते और **(आशसः)** मनोरथ की इच्छा करते हुए जन **(दोषा)** रात्रियों और **(वस्तोः)** दिन का **(नु)** शीघ्र **(जगृभ्रे)** ग्रहण करें॥११॥

**भावार्थः-**ब्रह्मचर्य्य को वेदोक्त समयानुसार धारण किये हुई कन्या प्रसिद्ध जिसका यश ऐसे श्रेष्ठ पुरुष, उत्तम स्वभाव वाले और उत्तम गुण और रूप से युक्त, प्रीति करने वाले स्वामी के अर्थात् पति के



www.9009.co.in

ग्रहण करने की इच्छा करे, वैसे ही ब्रह्मचारी भी अपने सदृश ही जो ब्रह्मचारिणी स्त्री उसका ग्रहण करे॥११॥

**पुनर्विद्वद्विषयमाह॥**

फिर विद्वद्विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**एवा हि त्वामृतुथा यातयन्तं मघा विप्रेभ्यो ददतं शृणोमि।**

**किं ते ब्रह्माणो गृहते सखायो ये त्वाया निदधुः काममिन्द्र॥१२॥३३॥१॥२॥**

**एव। हि। त्वाम्। ऋतुऽथा। यातयन्तम्। मघा। विप्रेभ्यः। ददतम्। शृणोमि। किम्। ते। ब्रह्माणः। गृहते। सखायः। ये। त्वाऽया। निऽदधुः। कामम्। इन्द्र॥१२॥**

**पदार्थः-(एवा)** अत्र **निपातस्य चे**ति दीर्घः। **(हि) (त्वाम्) (ऋतुथा)** ऋतोर्ऋतोर्मध्ये **(यातयन्तम्)** सन्तानाय प्रयतन्तम् **(मघा)** मघानि धनानि **(विप्रेभ्यः)** मेधाविभ्यः **(ददतम्) (शृणोमि) (किम्) (ते)** तव **(ब्रह्माणः)** चतुर्वेदविदः **(गृहते)** गृह्णन्ति **(सखायः)** सुहृदः **(ये) (त्वाया)** त्वयि। अत्र विभक्तेः **सुपां सुलुगि**ति याजादेशः। **(निदधुः)** निदधति **(कामम्) (इन्द्र)** परमैश्वर्य्ययुक्त॥१२॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! विद्यैश्वर्ययुक्त पतिकामाहं हि विप्रेभ्यो मघा ददतमृतुथा यातयन्तं त्वामेवा शृणोमि ते तव ये ब्रह्माणः सखायस्ते त्वाया किं गृहते कं कामं निदधुः॥१२॥

**भावार्थः**-स्त्री ऋतुगामिकाममूर्ध्वरेतसं सुशीलं विद्वांसं प्रसिद्धकीर्त्तिं जनं पतित्वाय गृह्णीयात् तेन सह यथावद्वर्त्तित्वाऽलंकामा सौभाग्याढ्या भवेदिति॥१२॥

अत्रेन्द्रविद्वद्गुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति द्वात्रिंशत्तमं सूक्तं त्रयस्त्रिंशो वर्गश्चतुर्थाष्टके प्रथमोऽध्यायः पञ्चमे मण्डले द्वितीयोऽनुवाकश्च समाप्तः॥**

अस्मिन्नध्यायेऽग्निविद्वदिन्द्रादिगुणवर्णनादेतदध्यायोक्तार्थानां पूर्वाऽध्यायोक्तार्थैः सह सङ्गतिरस्तीति वेद्यम्॥

**पदार्थः**-हे **(इन्द्र)** परमैश्वर्य्ययुक्त! विद्या और ऐश्वर्य्य से युक्त पति की कामना करती हुई मैं **(हि)** निश्चय से **(विप्रेभ्यः)** बुद्धिमान् जनों के लिये **(मघा)** धनों को **(ददतम्)** देते और **(ऋतुथा)** ऋतु-ऋतु के मध्य में **(यातयन्तम्)** सन्तान के लिये प्रयत्न करते हुए **(त्वाम्)** आप को **(एवा)** ही **(शृणोमि)** सुनती हैं और **(ते)** आपके **(ये)** जो **(ब्रह्माणः)** चार वेद के जानने वाले **(सखायः)** मित्र वे **(त्वाया)** आप में **(किम्)** क्या **(गृहते)** ग्रहण करते और किस **(कामम्)** मनोरथ को **(निदधुः)** धारण करते हैं॥१२॥

**भावार्थः**-स्त्री, ऋतु-ऋतु के मध्य में जाने की कामना वाला है वीर्य्य जिसका ऐसे ऊर्ध्वरेता वीर्य्य को वृथा न छोड़ने वाले, ब्रह्मचर्य्य को धारण किये हुए, उत्तम स्वभाव वाले और विद्यायुक्त उत्तम



www.9009.co.in

यश वाले जन को पतिपने के लिये स्वीकार करे, उसके साथ यथावत् वर्त्ताव करके, पूर्ण मनोरथ करने वाली और सौभाग्य से युक्त होवे॥१२॥

इस सूक्त में इन्द्र और विद्वान् के गुण-वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह बत्तीसवां सूक्त और तेतीसवां वर्ग, चौथे अष्टक में प्रथम अध्याय और पञ्चम मण्डल में द्वितीय अनुवाक समाप्त हुआ॥**

इस अध्याय में अग्नि विद्वान् और इन्द्रादिकों के गुणों का वर्णन होने से इस अध्याय में कहे हुए अर्थों की पहिले अध्यायों में कहे हुए अर्थों के साथ सङ्गति है ऐसा जानना चाहिये॥



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

अथ द्वितीयाऽध्यायारम्भः॥

**विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परा सुव। यद्भद्रं तन्न आ सुव॥ ऋ०५.८२.५॥**

**अथ दशर्चस्य त्रयस्त्रिंशत्तमस्य सूक्तस्य संवरणः प्राजापत्य ऋषिः। इन्द्रो देवता। १, २, ७ पङ्क्तिः। ३ निचृत्पङ्क्तिः। ४, १० भुरिक् पङ्क्तिः। ५, ६ स्वराट् पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः। ८ त्रिष्टुप्। ९ निचृत् त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः॥**

***अथेन्द्रगुणानाह॥***

अब दूसरे अध्याय का प्रारम्भ है। दश ऋचा वाले तेतीसवें सूक्त का प्रारम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में इन्द्र के गुण को कहते हैं॥

**महिं मुहे तवसें दीध्ये नॄनिन्द्रायेत्था तवसे अतव्यान्।**

**यो अस्मै सुमतिं वाजसातौ स्तुतो जने समर्यश्चिकेत॥१॥**

**महिं। मुहे। तवसें। दीध्ये। नॄन्। इन्द्राय। इत्था। तवसें। अतव्यान्। यः। अस्मै। सुऽमतिम्। वाजऽसातौ। स्तुतः। जनें। सऽमर्यः। चिकेत॥१॥**

**पदार्थः**-(**महि**) महतः (**महे**) महते (**तवसे**) बलाय (**दीध्ये**) प्रकाशये (**नॄन्**) मनुष्यान् (**इन्द्राय**) परमैश्वर्य्याय (**इत्था**) (**तवसे**) बलिने (**अतव्यान्**) यतमानः (**यः**) (**अस्मै**) (**सुमतिम्**) शोभनां प्रज्ञाम् (**वाजसातौ**) सङ्ग्रामे (**स्तुतः**) (**जने**) (**समर्यः**) सङ्ग्राममिच्छुः (**चिकेत**) जानीयात्॥१॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! योऽतव्याँ स्तुतो जने समर्यो वाजसातौ सुमतिं महे तवसे चिकेतास्मै तवसे इन्द्रायेत्था महि नॄनहं दीध्ये॥१॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। यो मनुष्यो यस्मै सुखमुपकुर्य्यात् स तस्मै प्रत्युपकारं सततं कुर्यात्॥१॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! (**यः**) जो (**अतव्यान्**) प्रयत्न करता हुआ (**स्तुतः**) स्तुति किया गया (**जने**) मनुष्यों के समूह में (**समर्यः**) संग्राम की इच्छा करता हुआ (**वाजसातौ**) संग्राम में (**सुमतिम्**) उत्तम बुद्धि को (**महे**) बड़े (**तवसे**) बल के लिये (**चिकेत**) जाने (**अस्मै**) इस (**तवसे**) बली (**इन्द्राय**) अत्यन्त ऐश्वर्य्य से युक्त के लिये (**इत्था**) इस प्रकार (**महि**) बड़े (**नॄन्**) मनुष्यों का मैं (**दीध्ये**) प्रकाश करता हूं॥१॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जो मनुष्य जिस मनुष्य के लिये सुखविषयक उपकार करे, वह उसके लिये प्रत्युपकार निरन्तर करे॥१॥



www.9009.co.in

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**स त्वं न॑ इन्द्र धियसा॒नो अ॒र्कैर्हरी॑णां वृष॒न् योक्त्र॑मश्रेः।**

**या इ॒त्था म॑घव॒न्नु जोषं॒ वक्षो॑ अ॒भि प्रार्यः स॑क्षि जना॑न्॥ २॥**

**सः। त्वम्। नः। इ॒न्द्र॒। धि॒य॒सा॒नः। अ॒र्कैः। हरी॑णाम्। वृ॒ष॒न्। योक्त्र॑म्। अ॒श्रेः। याः। इ॒त्था। म॒घ॒ऽव॒न्। अनु॑। जोष॑म्। वक्षः॑। अ॒भि। प्र। अ॒र्यः। स॒क्षि॒। जना॑न्॥ २॥**

**पदार्थः**-(**सः**) (**त्वम्**) (**नः**) अस्मान् (**इन्द्र**) परमैश्वर्ययुक्त (**धियसानः**) ध्यानं कुर्वन् (**अर्कैः**) विचारैः (**हरीणाम्**) मनुष्याणाम् (**वृषन्**) सुखवृष्टिं कुर्वन् (**योक्त्रम्**) योजनम् (**अश्रेः**) सेवयेः (**याः**) (**इत्था**) (**मघवन्**) अत्युत्तमधनयुक्त (**अनु**) (**जोषम्**) प्रीतिम् (**वक्षः**) प्राप्नुहि (**अभि**) (**प्र**) (**अर्यः**) स्वामी राजा (**सक्षि**) सम्बध्नासि (**जनान्**) मनुष्यान्॥ २॥

**अन्वयः**-हे वृषन् मघवन्निन्द्र! स धियसानोऽर्यस्त्वमर्कैर्नोऽस्माकमस्मान् वा हरीणां योक्त्रमश्रेः। या उत्तमा नीतयः सन्ति तासां जोषमनु वक्षो इत्था जनानाभि प्र सक्षि॥ २॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। स एवोत्तमो विद्वान् यो मनुष्यान् प्रज्ञा योगाभ्यासादिना वर्धयेत् सर्वदा नीत्यनुसारं कर्म्म कृत्वा प्रजाः प्रसादयेत्॥ २॥

**पदार्थः**-हे (**वृषन्**) सुख की वृष्टि करते हुए (**मघवन्**) अत्युत्तम धन से युक्त और (**इन्द्र**) अत्यन्त ऐश्वर्य्य वाले (**सः**) वह (**धियसानः**) ध्यान करता हुआ (**अर्यः**) स्वामी राजा (**त्वम्**) आप (**अर्कैः**) विचारों से (**नः**) हम लोगों के वा हम लोगों को (**हरीणाम्**) मनुष्यों के सम्बन्ध में (**योक्त्रम्**) एकत्र करने का (**अश्रेः**) सेवन कीजिये और (**याः**) जो उत्तम नीतियां हैं उनकी (**जोषम्**) प्रीति को (**अनु, वक्षः**) अनुकूल प्राप्त हूजिये (**इत्था**) इस प्रकार से (**जनान्**) मनुष्यों को (**अभि, प्र, सक्षि**) अच्छे प्रकार सम्बन्धित करते हो॥ २॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। वही उत्तम विद्वान् है, जो मनुष्यों की बुद्धि को योगाभ्यास आदि से बढ़ावे और सब काल में नीति के अनुसार कर्म्म करके प्रजाओं को प्रसन्न करे॥ २॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**न ते त॑ इन्द्रा॒भ्य१॒॑स्मदृ॒ष्वायु॑क्तासो अब्र॒ह्मता॒ यदस॑न्।**

**तिष्ठा॒ रथ॒मधि॒ तं व॑ज्रहु॒स्ता र॒श्मिं दे॑व यमसे॒ स्वश्वः॑॥ ३॥**

**न। ते। ते॒। इ॒न्द्र॒। अ॒भि। अ॒स्मत्। ऋ॒ष्व॒। अयु॑क्तासः। अब्र॒ह्मता॑। यत्। अस॑न्। तिष्ठ॑। रथ॑म्। अधि॑। तम्। व॒ज्र॒ऽह॒स्त॒। आ। र॒श्मिम्। दे॒व॒। य॒म॒से॒। सु॒ऽअश्वः॑॥ ३॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः-(न)** निषेधे **(ते)** **(ते)** तव **(इन्द्र)** राजन् **(अभि)** आभिमुख्ये **(अस्मत्)** **(ऋष्व)** महापुरुष **(अयुक्तासः)** योगरहिताः **(अब्रह्मता)** अधनता **(यत्)** यदा **(असन्)** भवन्ति **(तिष्ठा)** अत्र **द्व्यचोऽतस्तिङ** इति दीर्घः। **(रथम्)** रमणीयं यानम् **(अधि)** उपरि **(तम्)** **(वज्रहस्त)** शस्त्रास्त्रबाहो **(आ)** **(रश्मिम्)** किरणम् **(देव)** दातः **(यमसे)** निगृह्णासि **(स्वश्वः)** शोभना अश्वा अस्य॥३॥

**अन्वयः**-हे वज्रहस्त ऋष्व देवेन्द्र! ये तेऽब्रह्मताऽयुक्तासो नाभ्यसन्। यद्यदा तेऽस्मद्दूरे निवसन्ति तदा स्वश्वस्त्वं रश्मिमिव तं रथमा यमसे तस्मादेतमधि तिष्ठा॥३॥

**भावार्थः**-हे ऐश्वर्य्ययुक्त! येऽयुक्तव्यवहाराः स्युस्तेऽस्मत्त्वच्च दूरे वसन्तु, यदि त्वं यानचालनविद्यां विजानीयास्तर्हि युद्धेऽपि सामर्थ्यं प्राप्नुयाः॥३॥

**पदार्थः**-हे **(वज्रहस्त)** शस्त्र और अस्त्रों को बाहुओं में धारण करने वाले **(ऋष्व)** महापुरुष **(देव)** दानशील **(इन्द्र)** राजन्! जो **(ते)** आपकी **(अब्रह्मता)** निर्धनता **(अयुक्तासः)** और योग से रहित पुरुष **(न)** नहीं **(अभि)** सम्मुख **(असन्)** होते हैं **(यत्)** जब **(ते)** वे **(अस्मत्)** हम लोगों से दूर वसते हैं तब **(स्वश्वः)** उत्तम घोड़ों से युक्त आप **(रश्मिम्)** किरण के सदृश **(तम्)** उस **(रथम्)** सुन्दर वाहन को **(आ, यमसे)** विस्तृत करते हो, इससे इसके **(अधि)** ऊपर **(तिष्ठा)** स्थित हूजिये॥३॥

**भावार्थः**-हे ऐश्वर्य्य से युक्त! जो अयोग्य व्यवहार वाले होवें वे हम लोगों के और आपके दूर वसें और आप वाहनों के चलाने की विद्या को विशेष करके जानें तो युद्ध में भी सामर्थ्य को प्राप्त होवें॥३॥

**पुनरिन्द्रगुणानाह॥**

फिर इन्द्र के गुणों को कहते हैं॥

**पुरु यत्त इन्द्र सन्त्युक्था गवे चकर्थोर्वरासु युध्यन्।**

**ततक्षे सूर्याय चिदोकसि स्वे वृषा समत्सु दासस्य नाम चित्॥४॥**

**पुरु। यत्। ते। इन्द्र। सन्ति। उक्था। गवे। चकर्थ। उर्वरासु। युध्यन्। ततक्षे। सूर्याय। चित्। ओकसि। स्वे। वृषा। समत्ऽसु। दासस्य। नाम। चित्॥४॥**

**पदार्थः-(पुरु)** बहूनि **(यत्)** यानि **(ते)** तव **(इन्द्र)** विद्यैश्वर्य्ययुक्त **(सन्ति)** **(उक्था)** प्रशंसितानि कर्म्माणि **(गवे)** गवादिपशुहिताय **(चकर्थ)** कुर्याः **(उर्वरासु)** भूमिषु **(युध्यन्)** **(ततक्षे)** तनूकरोषि **(सूर्य्याय)** सूर्यायेव वर्त्तमानाय **(चित्)** **(ओकसि)** गृहे **(स्वे)** स्वकीये **(वृषा)** बलिष्ठ सन् **(समत्सु)** सङ्ग्रामेषु **(दासस्य)** **(नाम)** संज्ञाम् **(चित्)** अपि॥४॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! वृषा त्वं ते यत्पुरूक्था गवे सन्ति तान्युर्वरासु समत्सु युध्यन् सँश्चकर्थ शत्रूँस्ततक्षे सूर्य्याय चिदिव स्व ओकसि दासस्य चिन्नाम प्रकटय॥४॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-हे राजन्! यावत्य उत्तमाः सामग्र्यः स्युस्ताः सेनायां युद्धाय स्थापय यानि च गृहार्थानि वस्तूनि भवेयुस्तानि गृहे निधेहि॥४॥

**पदार्थः**-हे **(इन्द्र)** विद्या और ऐश्वर्य्य से युक्त **(वृषा)** बलिष्ठ होते हुए आप **(ते)** आपके **(यत्)** जो **(पुरु)** बहुत **(उक्था)** प्रशंसित कर्म्म **(गवे)** गौ आदि पशुओं के हित के लिये **(सन्ति)** हैं उनको **(उर्वरासु)** भूमियों में और **(समत्सु)** सङ्ग्रामों में **(युध्यन्)** युद्ध करते हुए **(चकर्थ)** करें और शत्रुओं को **(ततक्षे)** सूक्ष्म अर्थात् निर्बल करते हो और **(सूर्य्याय)** सूर्य्य के सदृश वर्त्तमान के लिये **(चित्)** भी **(स्वे)** अपने **(ओकसि)** गृह में **(दासस्य)** दास के **(चित्)** निश्चित **(नाम)** नाम को प्रकट कीजिये॥४॥

**भावार्थः**-हे राजन्! जितनी उत्तम सामग्रियां होवें, उनको सेना में युद्ध के लिये स्थापित कीजिये और जो गृह के लिये वस्तु होवें, उनको गृह में स्थापित कीजिये॥४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**वयं ते त इन्द्र ये च नरः शर्धो जज्ञाना याताश्च रथाः।**

**आस्माञ्जगम्यादहिशुष्म सत्वा भगो न हव्यः प्रभृथेषु चारुः॥५॥१॥**

**वयम्। ते। ते। इन्द्र। ये। च। नरः। शर्धः। जज्ञानाः। याताः। च। रथाः। आ। अस्मान्। जगम्यात्। अहिऽशुष्म। सत्वा। भगः। न। हव्यः। प्रऽभृथेषु। चारुः॥५॥**

**पदार्थः**-**(वयम्)** **(ते)** **(ते)** तव **(इन्द्र)** राजन् **(ये)** **(च)** **(नरः)** नायकाः **(शर्धः)** बलानि **(जज्ञानाः)** जायमानाः **(याताः)** ये प्राप्तास्ते **(च)** **(रथाः)** यानादयः **(आ)** **(अस्मान्)** **(जगम्यात्)** यथावत्प्राप्नुयात् **(अहिशुष्म)** योऽहिं मेघं शोषयति स सूर्य्यस्तद्वद्वर्त्तमान **(सत्वा)** यः सीदति **(भगः)** ऐश्वर्य्ययोगः **(न)** इव **(हव्यः)** आदातुं योग्यः **(प्रभृथेषु)** प्रकर्षेण धर्त्तव्येषु **(चारुः)** सुन्दरः॥५॥

**अन्वयः**-हे अहिशुष्मेन्द्र! ये ते शर्धो जज्ञाना याता नरो रथाश्च सन्ति तेऽस्मान् प्राप्नुवन्तु। यो भगो न प्रभृथेषु हव्यश्चारुः सत्वा भवानस्माना जगम्यात्तं भवन्तं वयं च प्राप्नुयाम॥५॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। हे राजन्! यदा वयं तव त्वमस्माकं मित्रं भवेस्तदैवास्माकमैश्वर्य्यं प्रवर्धेत यथैश्वर्य्यं सर्वेषां प्रियं वर्त्तते तथैव धर्मः प्रियः सदा रक्षणीयः॥५॥

**पदार्थः**-हे **(अहिशुष्म)** मेघ को सुखाने वाले सूर्य्य के सदृश वर्त्तमान **(इन्द्र)** राजन्! **(ये)** जो **(ते)** आपके **(शर्धः)** बल और **(जज्ञानाः)** उत्पन्न तथा **(याताः)** प्राप्त हुए **(नरः)** नायक **(रथाः, च)** और वाहन आदि हैं **(ते)** वे **(अस्मान्)** हम लोगों को प्राप्त होवें और जो **(भगः)** ऐश्वर्य्य के योग के **(न)** सदृश **(प्रभृथेषु)** अत्यन्त धारण करने योग्यों में **(हव्यः)** ग्रहण करने योग्य **(चारुः)** सुन्दर **(सत्वा)** स्थिर होने वाले आप हम लोगों को **(आ, जगम्यात्)** यथावत् प्राप्त होवें, उन आप को **(वयम्)** हम लोग **(च)** भी प्राप्त होवें॥५॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे राजन्! जब हम लोग आपके और आप हम लोगों के मित्र होवें, तभी हम लोगों का ऐश्वर्य्य बड़े और जैसे ऐश्वर्य्य सब का प्रिय है, वैसे ही धर्म्म, प्रिय [=प्रिय धर्म] सदा रक्षा करने योग्य है॥५॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**पपृक्षेण्यमिन्द्र त्वे ह्योजो नृम्णानि च नृतमानो अमर्तः।**

**स नः एनीं वसवानो रयिं दाः प्रार्यः स्तुषे तुविमघस्य दानम्॥६॥**

**पपृक्षेण्यम्। इन्द्र। त्वे इति। हि। ओजः। नृम्णानि। च। नृतमानः। अमर्तः। सः। नः। एनीम्। वसवानः। रयिम्। दाः। प्र। अर्यः। स्तुषे। तुविऽमघस्य। दानम्॥६॥**

**पदार्थः**-**(पपृक्षेण्यम्)** प्रष्टुं योग्यम् **(इन्द्र)** विद्वन् **(त्वे)** त्वयि **(हि)** यतः **(ओजः)** पराक्रमः **(नृम्णानि)** नरै रमणीयानि धनानि **(च)** **(नृतमानः)** नृत्यन्। अत्र विकरणव्यत्ययेन शः। **(अमर्त्तः)** आत्मत्वेन मरणधर्मरहितः **(सः)** **(नः)** अस्मभ्यम् **(एनीम्)** प्राप्तुं योग्याम् **(वसवानः)** निवासयन् **(रयिम्)** धनम् **(दाः)** दद्याः **(प्र)** **(अर्यः)** स्वामी **(स्तुषे)** प्रशंससि **(तुविमघस्य)** बहुधनस्य **(दानम्)**॥६॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! यो नृतमानोऽमर्त्तस्त्वे पपृक्षेण्यमोजो नृम्णानि च दध्यात् स एनीं वसवानो रयिं दाः। हि यतस्तुविमघस्याऽर्यः सन्दानं प्र स्तुषे स त्वं नोऽस्मभ्यं सुखं प्रयच्छ॥६॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! भवन्तो विदुषः प्रति प्रष्टव्यान् प्रश्नान् कृत्वा बलं वर्धयित्वैश्वर्य्यमुन्नीय सन्मार्गे दानं दत्त्वा प्रशंसितविद्याचरणा भवन्तु॥६॥

**पदार्थः**-हे **(इन्द्र)** विद्वन्! जो **(नृतमानः)** नृत्य करता हुआ **(अमर्त्तः)** आत्मभाव से मरणधर्म्म-रहित जन **(त्वे)** आप में **(पपृक्षेण्यम्)** पूंछने योग्य **(ओजः)** पराक्रम **(नृम्णानि, च)** और मनुष्यों से रमने योग्य धनों को धारण करे **(सः)** वह **(एनीम्)** प्राप्त होने योग्य को **(वसवानः)** वसाता हुआ **(रयिम्)** धन को **(दाः)** दीजिये **(हि)** जिससे **(तुविमघस्य)** बहुत धन के **(अर्यः)** स्वामी होते हुए **(दानम्)** दान की **(प्र, स्तुषे)** प्रशंसा करते हो **(सः)** वह आप **(नः)** हम लोगों के लिये सुख दीजिये॥६॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! आप लोग विद्वानों के प्रति पूंछने योग्य प्रश्नों को कर, बल को बढ़ाय और ऐश्वर्य्य की वृद्धि करके उत्तम मार्ग में दान देकर प्रशंसित विद्या और आचरणयुक्त होवें॥६॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**एवा न इन्द्रोतिभिरव पाहि गृणतः शूर कारून्।**



www.9009.co.in

उत त्वचं दद॑तो वाज॑सातौ पिप्रीहि मध्वः सुषुतस्य चारोः॥७॥

एव। नः। इन्द्र। ऊतिऽभिः। अव। पाहि। गृणतः। शूर। कारून्। उत। त्वचम्। दद॑तः। वाज॑ऽसातौ। पिप्रीहि। मध्वः। सुऽसुतस्य। चारोः॥७॥

**पदार्थः**-(**एवा**) निश्चये। अत्र **निपातस्य चेति** दीर्घः। (**नः**) अस्मान् (**इन्द्र**) (**ऊतिभिः**) अन्वेक्षणादिरक्षादिभिः (**अव**) रक्ष (**पाहि**) (**गृणतः**) उपदेशकान् (**शूर**) निर्भय (**कारून्**) शिल्पिनः (**उत**) अपि (**त्वचम्**) त्वगाच्छादकं रक्षकवर्म (**ददतः**) (**वाजसातौ**) सङ्ग्रामे (**पिप्रीहि**) प्राप्नुहि (**मध्वः**) मधुरस्य (**सुषुतस्य**) सम्यक्संस्कृतस्य (**चारोः**) उत्तमस्य॥७॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! त्वमूतिभिरेवा गृणतः कारून्नोऽस्मानव। हे शूर! वाजसातौ त्वचं ददतः सुषुतस्य मध्वश्चारोर्जनस्यैश्वर्य्यं पाहि उत पिप्रीहि॥७॥

**भावार्थः**-हे राजँस्त्वं शूरान् प्राज्ञाञ्छिल्पिनो जनान् रक्षित्वा प्रजाः सततं सम्पाल्य सङ्ग्रामे शत्रूञ्जित्वा प्राप्नुहि॥७॥

**पदार्थः**-हे (**इन्द्र**) राजन्! आप (**ऊतिभिः**) अन्वेक्षण आदि रक्षा आदिकों से (**एवा**) ही (**गृणतः**) उपदेशक (**कारून्**) शिल्पी (**नः**) हम लोगों की (**अव**) रक्षा कीजिये और हे (**शूर**) भय से रहित! (**वाजसातौ**) सङ्ग्राम में (**त्वचम्**) त्वचा को आच्छादन करने और रक्षा करने वाले कवच को (**ददतः**) देते हुए (**सुषुतस्य**) उत्तम प्रकार संस्कार किये गये (**मध्वः**) मधुर और (**चारोः**) उत्तम जन के ऐश्वर्य्य का (**पाहि**) पालन कीजिये और (**उत**) भी (**पिप्रीहि**) प्राप्त हूजिये॥७॥

**भावार्थः**-हे राजन्! आप शूरवीर विद्वान् शिल्पीजनों की रक्षा कर प्रजाओं का निरन्तर पालन करके सङ्ग्राम में शत्रुओं को जीत कर प्राप्त हूजिये॥७॥

**अथ विद्वद्विषयमाह॥**

अब विद्वद्विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

उत त्ये मा पौरुकुत्स्यस्य सूरेस्त्रसदस्योर्हिरणिनो रराणाः।
वहन्तु मा दश श्येतासो अस्य गैरिक्षितस्य क्रतुभिर्नु सश्चे॥८॥

उत। त्ये। मा। पौरुऽकुत्स्यस्य। सूरेः। त्रसदस्योः। हिरणिनः। रराणाः। वहन्तु। मा। दश। श्येतासः। अस्य। गैरिऽक्षितस्य। क्रतुऽभिः। नु। सश्चे॥८॥

**पदार्थः**-(**उत**) अपि (**त्ये**) ते (**मा**) माम् (**पौरुकुत्स्यस्य**) बहुवज्रादिशस्त्राऽस्त्रविदोऽपत्यस्य (**सूरेः**) मेधाविनः (**त्रसदस्योः**) त्रस्यन्ति दस्यवो यस्मात् (**हिरणिनः**) हिरण्यादिधनयुक्तस्य (**रराणाः**) रममाणा ददमाना वा (**वहन्तु**) (**मा**) माम् (**दश**) (**श्येतासः**) श्वेतवर्णा अश्वाः (**अस्य**) (**गैरिक्षितस्य**) गिरौ पर्वते क्षितं निवसनं यस्य तस्य (**क्रतुभिः**) प्रज्ञाकर्मभिः (**नु**) सद्यः (**सश्चे**) सम्बध्नामि॥८॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-पौरुकुत्स्यस्य त्रसदस्योर्हिरणिनोऽस्य गैरिक्षितस्य सूरेः क्रतुभिस्सह रराणा मा वहन्तूत त्ये दश श्येतास इव मा वहन्तु तानहं नु सश्चे॥८॥

**भावार्थः**-ये सत्यसन्धाः सत्पुरुषमित्राः प्रज्ञां वर्धयन्तो दुष्टान्निवारयन्ति तैः सहाहमनुबध्नामि॥८॥

**पदार्थः**-**(पौरुकुत्स्यस्य)** बहुत वज्र आदि शस्त्र और अस्त्रों को जानने वाले के सन्तान **(त्रसदस्योः)** जिससे डाकू चोर आदि डरते हैं ऐसे **(हिरणिनः)** सुवर्ण धन आदि से युक्त **(अस्य)** इस **(गैरिक्षितस्य)** पर्वत में रहने वाले **(सूरेः)** बुद्धिमान् जन की **(क्रतुभिः)** बुद्धि और कर्म्मों के साथ **(रराणाः)** रमते वा देते हुए **(मा)** मुझ को **(वहन्तु)** प्राप्त हों **(उत)** और भी **(त्ये)** वे **(दश)** दश संख्या परिमित **(श्येतासः)** श्वेत वर्ण वाले घोड़े के सदृश **(मा)** मुझ को प्राप्त हों, उनका मैं **(नु)** शीघ्र **(सश्चे)** सम्बन्ध करता हूं॥८॥

**भावार्थः**-जो सत्य धारण करने वाले और सत्पुरुष जिनके मित्र ऐसे जन बुद्धि को बढ़ाते हुए दुष्टों का निवारण करते हैं, उनके साथ मैं मेल करता हूं॥८॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**उ॒त त्ये मा॑ मारु॒ताश्व॑स्य॒ शोणा॒: क्रत्वा॑मघासो वि॒दथ॑स्य रा॒तौ।**

**स॒हस्रा॑ मे॒ च्यव॑तानो॒ ददा॑न आनू॒कम॒र्यो वपु॑षे॒ नार्च॑त्॥९॥**

**उ॒त। त्ये। मा॒। मा॒रु॒तऽअ॑श्वस्य। शोणा॑:। क्रत्वा॑ऽमघासः। वि॒दथ॑स्य। रा॒तौ। स॒हस्रा॑। मे॒। च्यव॑तानः। ददा॑नः। आ॒नू॒कम्। अ॒र्यः। वपु॑षे। न। आ॒र्च॒त्॥९॥**

**पदार्थः**-**(उत)** अपि **(त्ये)** ते **(मा)** माम् **(मारुताश्वस्य)** मरुतामिवाश्वानामयं तस्य **(शोणाः)** रक्तगुणविशिष्टा अग्न्यादयः **(क्रत्वामघासः)** क्रतुः प्रज्ञा कर्म्मैव मघं धनं येषां ते **(विदथस्य)** लब्धुं योग्यस्य **(रातौ)** दाने **(सहस्रा)** सहस्राणि **(मे)** मम मह्यं वा **(च्यवतानः)** च्यावयन् सन् **(ददानः)** **(आनूकम्)** आनुकूल्यम् **(अर्य्यः)** स्वामी **(वपुषे)** सुरूपाय शरीराय **(न)** निषेधे **(आर्चत्)** सत्कुर्यात्॥९॥

**अन्वयः**-ये क्रत्वामघासः शोणा मारुताश्वस्य विदथस्य मे रातौ सहस्रा च्यवतानश्चोत सुखयितुं शक्नुयुस्त्ये यश्च ददानो वपुषे मा मामामानूकमार्चत् सोऽर्य्यश्चाऽभितस्तिरस्कृतो न भवति॥९॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! येऽस्माकमभीष्टं साध्नुवन्ति तेषामभीष्टं वयमपि साध्नुयाम एवं स्वामिसेवका अपि वर्त्तेरन्॥९॥

**पदार्थः**-जो **(क्रत्वामघासः)** बुद्धि वा कर्म्म ही है धन जिनका वे **(शोणाः)** रक्त गुण से विशिष्ट जन और **(मारुताश्वस्य)** पवनों के सदृश घोड़ों के सम्बन्धी **(विदथस्य)** प्राप्त होने योग्य **(मे)** मेरे वा मेरे लिये **(रातौ)** दान में **(सहस्रा)** हजारों को **(च्यवतानः)** प्राप्त होता हुआ जन **(उत)** भी सुख देने को समर्थ हों **(त्ये)** वे और जो **(ददानः)** देता हुआ **(वपुषे)** सुन्दर शरीर के लिये **(मा)** मुझ को **(आनूकम्)**



www.9009.co.in

अनुकूलतापूर्वक **(आर्चत्)** आदरयुक्त करे वह **(अर्य्यः)** स्वामी भी सब प्रकार से तिरस्कृत **(न)** नहीं होता है॥९॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो हम लोगों के अभीष्ट की सिद्धि करते हैं, उनके अभीष्ट की हम लोग भी सिद्धि करें, इस प्रकार स्वामी और सेवक भी वर्त्ताव करें॥९॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**उत त्ये मा ध्वन्यस्य जुष्टा लक्ष्मण्यस्य सुरुचो यतानाः।**

**मह्ना रायः संवरणस्य ऋषेर्व्रजं न गावः प्रयता अपि ग्मन्॥१०॥२॥**

**उत। त्ये। मा। ध्वन्यस्य। जुष्टाः। लक्ष्मण्यस्य। सुऽरुचः। यतानाः। मह्ना। रायः। संऽवरणस्य। ऋषेः। व्रजम्। न। गावः। प्रऽयताः। अपि। ग्मन्॥१०॥**

**पदार्थः**-**(उत)** **(त्ये)** **(मा)** माम् **(ध्वन्यस्य)** ध्वनिषु कुशलस्य **(जुष्टाः)** प्रीताः **(लक्ष्मण्यस्य)** सुलक्षणेषु भवस्य **(सुरुचः)** सुष्ठुप्रीतिमत्यः **(यतानाः)** **(मह्ना)** महत्त्वेन **(रायः)** धनस्य **(संवरणस्य)** स्वीकृतस्य **(ऋषेः)** मन्त्रार्थविदः **(व्रजम्)** व्रजन्ति यस्मिन् **(न)** इव **(गावः)** धेनवः **(प्रयताः)** प्रयतमानाः **(अपि)** **(ग्मन्)** गच्छन्ति॥१०॥

**अन्वयः**-ये ध्वन्यस्य संवरणस्य रायो मह्नोत लक्ष्मण्यस्यर्षेः प्रयतास्त्ये गावो व्रजन्नापि ग्मन् तथा मह्ना मा मामपि ग्मन्। या यतानाः सुरुचो मा जुष्टाः सन्ति ताः सर्वे प्राप्नुवन्तु॥१०॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। ये मनुष्याः प्रयत्नेनाऽप्राप्तस्य प्राप्तिं लब्धस्य रक्षणं कुर्वन्ति ते वत्सान् गाव इव धनमाप्नुवन्तीति॥१०॥

अत्रेन्द्रविद्वद्गुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति त्रयस्त्रिंशत्तमं सूक्तं द्वितीयो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-जो **(ध्वन्यस्य)** ध्वनियों में कुशल और **(संवरणस्य)** स्वीकार किये हुए **(रायः)** धन के **(मह्ना)** महत्त्व से **(उत)** और **(लक्ष्मण्यस्य)** श्रेष्ठ लक्षणों में उत्पन्न **(ऋषेः)** मन्त्रों के अर्थ जानने वाले के सम्बन्ध में **(प्रयताः)** प्रयत्न करते हुए जन हैं **(त्ये)** वे **(गावः)** गौवें **(व्रजम्)** गोष्ठ को **(न)** जैसे **(अपि)** निश्चित **(ग्मन्)** जाती हैं, वैसे महत्त्व से **(मा)** मुझ को भी प्राप्त होते हैं और जो **(यतानाः)** यत्न करती हुई **(सुरुचः)** उत्तम प्रीति वाली मुझ को **(जुष्टाः)** प्रसन्नतापूर्वक प्राप्त हैं, उनको सब प्राप्त होवें॥१०॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जो मनुष्य प्रयत्न से नहीं प्राप्त हुए की प्राप्ति और प्राप्त हुए की रक्षा करते हैं, वे जैसे बछड़ों को गौवें वैसे धन को प्राप्त होते हैं॥१०॥

इस सूक्त में इन्द्र और विद्वान् के गुण-वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥



www.9009.co.in

यह तेंतीसवां सूक्त और द्वितीय वर्ग समाप्त हुआ।।



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

**अथ नवर्चस्य चतुस्त्रिंशत्तमस्य सूक्तस्य संवरणः प्राजापत्य ऋषिः। इन्द्रो देवता। १ भुरिक् त्रिष्टुप्। ९ त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः। २, ४, ५ निचृज्जगती। ३, ७ जगती। ६, ८ विराड् जगती छन्दः। निषादः स्वरः॥**

***अथेन्द्रगुणयुक्तदम्पतीविषयमाह॥***

अब नव ऋचा वाले चौंतीसवें सूक्त का आरम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में इन्द्रगुणयुक्त स्त्री-पुरुष का वर्णन करते हैं॥

**अजातशत्रुमजरा स्वर्वत्यनु स्वधामिता दस्ममीयते।**

**सुनोतन पचत ब्रह्मवाहसे पुरुष्टुताय प्रतरं दधातन॥ १॥**

अजातऽशत्रुम्। अजरा। स्वःऽवती। अनु। स्वधा। अमिता। दस्मम्। ईयते। सुनोतन। पचत। ब्रह्मऽवाहसे। पुरुऽस्तुताय। प्रऽतरम्। दधातन॥ १॥

**पदार्थः**-(**अजातशत्रुम्**) न जाताः शत्रवो यस्य तम् (**अजरा**) जरारहिता (**स्वर्वती**) सुखवती (**अनु**) (**स्वधा**) या स्वं दधाति सा (**अमिता**) अतुलशुभगुणा (**दस्मम्**) दुष्टोपक्षेतारम् (**ईयते**) प्राप्नोति (**सुनोतन**) (**पचत**) (**ब्रह्मवाहसे**) धनप्रापकाय (**पुरुष्टुताय**) बहुभिः प्रशंसिताय (**प्रतरम्**) प्रतरन्ति दुःखं येन तम् (**दधातन**) धरत॥१॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! स्वर्वत्यमिता स्वधाजरा युवतिः स्त्री यमजातशत्रुं दस्ममन्वीयते तस्मै पुरुष्टुताय ब्रह्मवाहसे जनाय प्रतरं सुनोतन उत्तममन्नं पचत धनादिकं दधातन॥१॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! यो निर्वैरोऽमितशुभगुणः सर्वहितकारी पुरुषोऽथवेदृशी स्त्री भवेत्तयोः सत्कारः कर्त्तव्यः॥१॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! (**स्वर्वती**) सुखवाली (**अमिता**) अतुल उत्तम गुणों से युक्त (**स्वधा**) धन को धारण करने वाली (**अजरा**) वृद्धावस्था से रहित युवती स्त्री जिस (**अजातशत्रुम्**) शत्रुओं से रहित (**दस्मम्**) दुष्टों के नाश करने वाले जन को (**अनु, ईयते**) अनुकूला से प्राप्त होती है, उस (**पुरुष्टुताय**) बहुतों से प्रशंसा किये गये (**ब्रह्मवाहसे**) धन प्राप्त कराने वाले के लिये (**प्रतरम्**) अच्छे प्रकार पार होते हैं, दुःख के जिससे उसको (**सुनोतन**) उत्पन्न करो और उत्तम अन्न का (**पचत**) पाक करो और धन आदि को (**दधातन**) धारण करो॥१॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो वैररहित अत्यन्त उत्तम गुणों से युक्त और सब का हितकारी पुरुष अथवा इस प्रकार की स्त्री हो, उन दोनों का निरन्तर सत्कार करना योग्य है॥१॥

**अथ विद्वद्विषये पाकगुणानाह॥**



www.9009.co.in

अब विद्वद्विषय में पाक के गुणों को कहते हैं॥

**आ यः सोमेन जठरमपिप्रतामन्दत मघवा मध्वो अन्धसः।**

**यदीं मृगाय हन्तवे महावधः सहस्रभृष्टिमुशना वधं यमत्॥ २॥**

**आ। यः। सोमेन। जठरम्। अपिप्रत। अमन्दत। मघऽवा। मध्वः। अन्धसः। यत्। ईम्। मृगाय। हन्तवे। महाऽवधः। सहस्रऽभृष्टिम्। उशना। वधम्। यमत्॥ २॥**

**पदार्थः-(आ)** समन्तात् **(यः) (सोमेन)** सोमलतोद्भवेन **(जठरम्)** उदराग्निम् **(अपिप्रत)** पूरयेत् **(अमन्दत)** आनन्देत् **(मघवा)** बहुधनः **(मध्वः)** मधुरादिगुणयुक्तस्य **(अन्धसः)** अन्नादेः **(यत्)** यः **(ईम्)** सर्वतः **(मृगाय)** मृगम् **(हन्तवे)** हन्तुम् **(महावधः)** महान् वधो नाशनं येन **(सहस्रभृष्टिम्)** भृष्टयो भञ्जनानि दहनानि यस्मात्तम् **(उशना)** कामयमानः **(वधम्) (यमत्)** नियच्छेत्॥ २॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! य उशना मघवा सोमेन जठरमापिप्रत मध्वोऽन्धसो भुक्त्वामन्दत यद्यो महावधो मृगाय हन्तवे सहस्रभृष्टिं वधमीं यमत् सः सर्वं सुखं लभते॥ २॥

**भावार्थः-**ये मनुष्या वैद्यकशास्त्ररीत्या सोमलताद्योषधिरसेन सह संस्कृतान्यन्नानि भुञ्जते तेऽतुलं सुखमाप्नुवन्ति॥ २॥

**पदार्थः-**हे मनुष्यो! **(यः)** जो **(उशना)** कामना करता हुआ **(मघवा)** बहुत धन से युक्त **(सोमेन)** सोमलता से उत्पन्न रस से **(जठरम्)** उदर की अग्नि को **(आ, अपिप्रत)** अच्छे प्रकार पूर्ण करे और **(मध्वः)** मधुर आदि गुणों से युक्त **(अन्धसः)** अन्न आदि का भोग करके **(अमन्दत)** आनन्द करे और **(यत्)** जो **(महावधः)** अत्यन्त नाश करने वाला **(मृगाय)** हरिण को **(हन्तवे)** मारने के लिये **(सहस्रभृष्टिम्)** हजारों दहन जिससे उस **(वधम्)** वध को **(ईम्)** सब प्रकार से **(यमत्)** देवे, वह सब सुख को प्राप्त होता है॥ २॥

**भावार्थः-**जो मनुष्य वैद्यकशास्त्र की रीति से सोमलता आदि ओषधियों के रस के साथ संस्कारयुक्त किये गये अन्नों का भोग करते हैं, वे अतुल सुख को प्राप्त होते हैं॥ २॥

**पुनर्विद्वद्विषयमाह॥**

फिर विद्वद्विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**यो अस्मै घ्रंस उत वा य ऊधनि सोमं सुनोति भवति द्युमाँ अह।**

**अपाप शक्रस्ततनुष्टिमूहति तनूशुभ्रं मघवा यः कवासखः॥ ३॥**

**यः। अस्मै। घ्रंसे। उत। वा। यः। ऊधनि। सोमम्। सुनोति। भवति। द्युऽमान्। अह। अपऽअप। शक्रः। ततनुष्टिम्। ऊहति। तनूऽशुभ्रम्। मघऽवा। यः। कवऽसखः॥ ३॥**



www.9009.co.in

**पदार्थ:**-**(य:)** **(अस्मै)** **(घ्रंसे)** दिने। **घ्रंस इत्यहर्नामसु पठितम्।** (निघं०१।९) **(उत)** अपि **(वा)** पक्षान्तरे **(य:)** **(ऊधनि)** उष: समये **(सोमम्)** जलम् **(सुनोति)** पिबति **(भवति)** **(द्युमान्)** बहुविद्याप्रकाश: **(अह)** विशेषेण ग्रहणे **(अपाप)** दूरीकरणे **(शक्र:)** शक्तिमान् **(ततनुष्टिम्)** विस्तारम् **(ऊहति)** वितर्कयति **(तनूशुभ्रम्)** शुभ्रा शुद्धा तनूर्यस्य तम् **(मघवा)** प्रशंसितधनवान् **(य:)** **(कवासख:)** कवि: सखा यस्य॥३॥

**अन्वय:**-हे मनुष्या! योऽस्मै घ्रंस उत वोधनि सोमं सुनोत्यह द्युमान् भवति य: शक्र: ततनुष्टि- मूहति य: कवासखो मघवा तनूशुभ्रमूहति स सततं दु:खमपापोहति॥३॥

**भावार्थ:**-ये मनुष्या अहर्निशं पुरुषार्थयन्ति ते सततं सुखिनो जायन्ते॥३॥

**पदार्थ:**-हे मनुष्यो! **(य:)** जो **(अस्मै)** इसके लिये **(घ्रंसे)** दिन में **(उत)** भी **(वा)** अथवा **(ऊधनि)** प्रभातसमय में **(सोमम्)** जल का **(सुनोति)** पान करता और **(अह)** विशेष करके ग्रहण करने में **(द्युमान्)** बहुत विद्या प्रकाश वाला **(भवति)** होता तथा **(य:)** जो **(शक्र:)** शक्तिमान् **(ततनुष्टिम्)** विस्तार की **(ऊहति)** तर्कना करता और **(य:)** जो **(कवासख:)** विद्वान् जन मित्र जिसके ऐसा **(मघवा)** प्रशंसित धनयुक्त पुरुष **(तनूशुभ्रम्)** शुद्ध शरीर वाले की तर्कना करता है, वह निरन्तर दु:ख को **(अपाप)** दूर करने की तर्कना करता है॥३॥

**भावार्थ:**-जो मनुष्य दिन और रात्रि पुरुषार्थ करते हैं, वे निरन्तर सुखी होते हैं॥३॥

**अथ प्रजाविषयमाह॥**

अब प्रजाविषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**यस्यावधीत् पितरं यस्य मातरं यस्य शक्रो भ्रातरं नात ईषते।**

**वेतीद्वस्य प्रयता यतंकरो न किल्बिषादीषते वस्व आकर:॥४॥**

**यस्य। अवधीत्। पितरम्। यस्य। मातरम्। यस्य। शक्र:। भ्रातरम्। न। अत:। ईषते। वेति। इत्। ऊँ इति। अस्य। प्रऽयता। यतम्ऽकर:। न। किल्बिषात्। ईषते। वस्व:। आऽकर:॥४॥**

**पदार्थ:**-**(यस्य)** **(अवधीत्)** **(पितरम्)** **(यस्य)** **(मातरम्)** जननीम् **(यस्य)** **(शक्र:)** शक्तिमान् **(भ्रातरम्)** सहोदरम् **(न)** निषेधे **(अत:)** **(ईषते)** हिनस्ति **(वेति)** कामयते **(इत्)** **(उ)** **(अस्य)** **(प्रयता)** प्रकर्षेण दत्तानि **(यतङ्कर:)** य: प्रयत्नं करोति **(न)** इव **(किल्बिषात्)** पापात् **(ईषते)** **(वस्व:)** वसुनो धनस्य **(आकर:)** समूह:॥४॥

**अन्वय:**-शक्रो यस्य पितरं यस्य मातरं यस्य भ्रातरं नावधीदतोऽस्य नेषतेऽस्य यतङ्करो न प्रयता वेति उ वस्व आकर: किल्बिषात् पृथगिदीषते प्राप्नोति॥४॥

**भावार्थ:**-ये पितामाताभ्रात्रादय: पालयेयुस्तेषां पुत्रादिभि: सततं सत्कार: कर्त्तव्यो ये पापाचरणं विहाय धर्म्ममाचरन्ति ते सर्वदा सुखिनो जायन्ते॥४॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**शक्रः**) सामर्थ्यवान् जन (**यस्य**) जिसके (**पितरम्**) पिता का (**यस्य**) जिसकी (**मातरम्**) माता का और (**यस्य**) जिसके (**भ्रातरम्**) भ्राता का (**न**) नहीं (**अवधीत्**) नाश करे (**अतः**) इससे इसका (**न**) नहीं (**ईषते**) नाश करता और (**अस्य**) इसके (**यतङ्करः**) प्रयत्न करने वाले के (**न**) सदृश (**प्रयता**) अत्यन्त दिये हुओं की (**वेति**) कामना करता है (उ) और (**वस्वः**) धन का (**आकरः**) समूह (**किल्विषात्**) पाप से पृथक् (**इत्**) ही (**ईषते**) प्राप्त होता है॥४॥

**भावार्थः**-जो पिता, माता और भ्रातृ आदि पालन करें, उनके पुत्र आदि को चाहिये कि निरन्तर सत्कार करें और जो पापाचरण का त्याग करके धर्म्म का आचरण करते हैं, वे सब काल में सुखी होते हैं॥४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**न पञ्चभिर्दशभिर्वष्ट्यारभं नासुन्वता सचते पुष्यता चन।**

**जिनाति वेदमुया हन्ति वा धुनिरा देवयुं भजति गोमति व्रजे॥५॥३॥**

**न। पञ्चऽभिः। दशऽभिः। वष्टि। आऽरभम्। न। असुन्वता। सचते। पुष्यता। चन। जिनाति। वा। इत्। अमुया। हन्ति। वा। धुनिः। आ। देवऽयुम्। भजति। गोऽमति। व्रजे॥५॥**

**पदार्थः**-(**न**) निषेधे (**पञ्चभिः**) इन्द्रियैः (**दशभिः**) प्राणैः (**वष्टि**) कामयते (**आरभम्**) आरब्धुम् (**न**) निषेधे (**असुन्वता**) अपुरुषार्थिना (**सचते**) सम्बध्नाति (**पुष्यता**) पुष्टिमाचरता (**चन**) अपि (**जिनाति**) अभिभवति (**वा**) (**इत्**) (**अमुया**) (**हन्ति**) (**वा**) (**धुनिः**) कम्पकः (**आ**) समन्तात् (**देवयुम्**) देवान् कामयमानम् (**भजति**) (**गोमति**) बह्व्यो गावो विद्यन्ते यस्मिँस्तस्मिन् (**व्रजे**) गवां स्थित्यधिकरणे॥५॥

**अन्वयः**-योऽसुन्वता पञ्चभिर्दशभिरारभं न वष्टि स पुष्यता न सचते जिनाति चन वामुया हन्ति वा यो धुनिर्गोमति व्रजे देवयुमा भजति स सर्वमित् सुखमश्नुते॥५॥

**भावार्थः**-येऽलसा पुरुषार्थं न कुर्वन्ति तेऽभीष्टसिद्धिं न लभन्ते॥५॥

**पदार्थः**-जो (**असुन्वता**) नहीं पुरुषार्थ करने वाले से (**पञ्चभिः**) पांच इन्द्रियों और (**दशभिः**) दश प्राणों से (**आरभम्**) आरम्भ करने की (**न**) नहीं (**वष्टि**) कामना करता वह (**पुष्यता**) पुष्टि को करने वाले से (**न**) नहीं (**सचते**) सम्बन्धित होता (**जिनाति, चन**) और अपमान को प्राप्त होता है (**वा**) वा (**अमुया**) इससे (**हन्ति**) नाश करता है (**वा**) वा जो (**धुनिः**) कंपने वाला (**गोमति**) बहुत गौंवे विद्यमान जिसमें उस (**व्रजे**) गौवों के ठहरने के स्थान में (**देवयुम्**) विद्वानों की कामना करने वाले का (**आ**) सब प्रकार से (**भजति**) आदर करता और वह सब (**इत्**) ही सुख का भोग करता है॥५॥

**भावार्थः**-जो आलस्ययुक्त जन पुरुषार्थ को नहीं करते हैं, वे अभीष्ट सिद्धि को नहीं प्राप्त होते हैं॥५॥



www.9009.co.in

**अथेन्द्रसादृश्येन राजगुणानाह॥**

अब इन्द्र के सादृश्य से राजगुणों को कहते हैं॥

**वि॒त्वक्ष॑ण॒: सम॑ृतौ चक्रमास॒जोऽसु॑न्वतो॒ विषु॑ण॒: सुन्व॒तो वृ॒ध:।**

**इन्द्रो॒ विश्व॑स्य दमि॒ता वि॒भीष॑णो यथाव॒शं न॑यति॒ दास॒मार्य॑:॥६॥**

**वि॒ऽत्वक्ष॑ण॒:। सम्ऽऋ॑तौ। च॒क्र॒ऽआ॒स॒ज:। असु॑न्वत:। विषु॑ण:। सु॒न्व॒त:। वृ॒ध:। इन्द्र॑:। विश्व॑स्य। द॒मि॒ता। वि॒ऽभीष॑ण:। य॒था॒ऽव॒शम्। न॒य॒ति॒। दास॑म्। आर्य॑:॥६॥**

**पदार्थ:**-(**वित्वक्षण:**) विशेषेण दु:खस्य विच्छेता (**समृतौ**) संग्रामे (**चक्रमासज:**) यो चक्रस्य मासकालस्य मासास्तेभ्यो जात: (**असुन्वत:**) अयजमानस्य (**विषुण:**) व्याप्तविद्यस्य (**सुवन्त:**) यज्ञं कुर्वत: (**वृध:**) वर्धक: (**इन्द्र:**) विद्युदिव राजा (**विश्वस्य**) सर्वस्य जगत: (**दमिता**) (**विभीषण:**) भयप्रद: (**यथावशम्**) वशमनतिक्रम्य करोति (**नयति**) (**दासम्**) सेवकं शूद्रम् (**आर्य:**) ब्राह्मणक्षत्रियवैश्यवर्ण:॥६॥

**अन्वय:**-हे मनुष्या! यथा वृध: इन्द्रो विश्वस्य दमिता विभीषणोऽस्ति तथा वित्वक्षण: समृतौ चक्रमासजो विषुण: सुन्वतोऽसुन्वतश्च दमिता सन्नार्यो राजा यथावशं दासं नयति॥६॥

**भावार्थ:**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कार:। यथा ब्राह्मणक्षत्रियवैश्यानामार्याणां शुभगुणकर्म्मयुक्तानां शूद्र: सेवको भवति तथा शुभगुणकर्मयुक्तस्य राज्ञ: प्रजा सेविका भवति॥६॥

**पदार्थ:**-हे मनुष्यो! जैसे (**वृध:**) बढ़ाने वाला (**इन्द्र:**) बिजुली के सदृश राजा (**विश्वस्य**) सम्पूर्ण जगत् का (**दमिता**) दमन करने और (**विभीषण:**) भय देने वाला है, वैसे (**वित्वक्षण:**) विशेष करके दु:ख का नाश करने वाला (**समृतौ**) संग्राम में (**चक्रमासज:**) कालरूप चक्र के महीनों से उत्पन्न हुआ जन (**विषुण:**) विद्या में व्याप्त और (**सुन्वत:**) यज्ञ करने और (**असुन्वत:**) नहीं यज्ञ करने वाले का दमन करने वाला होता हुआ (**आर्य:**) ब्राह्मण, क्षत्रिय वा वैश्य वर्ण आर्य्य राजा (**यथावशम्**) यथाशक्ति (**दासम्**) सेवक शूद्र को (**नयति**) प्राप्त करता है॥६॥

**भावार्थ:**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य आर्यों तथा उत्तम गुण, कर्म्म और स्वभाव वालों का शूद्र सेवक होता है, वैसे ही उत्तम गुण और कर्म्म से युक्त राजा की प्रजा सेवन करने वाली होती है॥६॥

**पुना राजविषयमाह॥**

फिर राजविषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**समीं॑ प॒णेर॑जति॒ भोज॑नं मु॒षे वि दा॒शुषे॑ भजति सू॒नरं॒ वसु॑।**

**दु॒र्गे च॒न ध्रि॑यते॒ विश्व॒ आ पु॒रु जनो॒ यो अ॒स्य॒ तवि॑षी॒मचु॑क्रुधत्॥७॥**



www.9009.co.in

सम्। ईम्। पणेः। अजति। भोजनम्। मुषे। वि। दाशुषे। भजति। सूनरम्। वसु। दुःऽगे। चन। ध्रियते। विश्वः। आ। पुरु। जनः। यः। अस्य। तविषीम्। अचुक्रुधत्॥७॥

**पदार्थः-(सम्)** सम्यक् **(ईम्)** सर्वतः **(पणेः)** स्तूयमानस्य **(अजति)** प्राप्नोति **(भोजनम्)** पालनमन्नादिकं वा **(मुषे)** चोराय **(वि)** **(दाशुषे)** दानशीलाय **(भजति)** **(सूनरम्)** शोभना नरा यस्मिँस्तत् **(वसु)** धनम् **(दुर्गे)** दुःखेन गन्तुं योग्ये प्रकोटे वा **(चन)** **(ध्रियते)** **(विश्वः)** सर्वः **(आ)** **(पुरु)** बहु **(जनः)** मनुष्यः **(यः)** **(अस्य)** जनस्य **(तविषीम्)** बलम् **(अचुक्रुधत्)** भृशं क्रोधयति॥७॥

**अन्वयः**-हे राजन्! यः पणेर्भोजनमजति मुषे दण्डं दाशुषे दानं चन सं वि भजति योऽस्य शत्रोस्तविषीमचुक्रुधत् स ईं विश्वो जनो दुर्गे पुरु सूनरं वस्वा भजति राज्ञा ध्रियते॥७॥

**भावार्थः**-यो राजा दस्य्वादिभ्यः कठिनं दण्डं श्रेष्ठेभ्यः प्रतिष्ठां प्रयच्छति तस्य राज्यं धनादियुक्तं सद्वर्धते तस्येह यशोऽमुत्र सुखं च जायते॥७॥

**पदार्थः**-हे राजन्! जो **(पणेः)** स्तुति किये गये के **(भोजनम्)** पालन वा अन्न आदि को **(अजति)** प्राप्त होता और **(मुषे)** चोर के लिये दण्ड को और **(दाशुषे)** दानशील के लिये दान **(चन)** भी **(सम्)** उत्तम प्रकार **(वि, भजति)** बांटता है तथा **(यः)** जो **(अस्य)** इस शत्रुजन की **(तविषीम्)** सेना को **(अचुक्रुधत्)** अत्यन्त क्रुद्धित करता है वह **(ईम्)** सब प्रकार से **(विश्वः)** सम्पूर्ण **(जनः)** मनुष्य **(दुर्गे)** दुःख से प्राप्त होने योग्य व्यवहार वा उत्तम कोट में **(पुरु)** बहुत **(सूनरम्)** उत्तम मनुष्य जिसमें उस **(वसु)** धन का **(आ)** सेवन करता है और राजा से **(ध्रियते)** धारण किया जाता है॥७॥

**भावार्थः**-जो राजा चोर, डाकू आदि जनों के लिये कठिन दण्ड और श्रेष्ठ जनों के लिये प्रतिष्ठा देता है, उसका राज्य धन आदि से युक्त हुआ वृद्धि को प्राप्त होता और उसका इस संसार में यश और परलोक में सुख होता है॥७॥

**पुनः पूर्वोक्तविषयमाह॥**

फिर पूर्वोक्त विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**सं यज्जनौ सुधनौ विश्वशर्धसाववेदिन्द्रो मघवा गोषु शुभ्रिषु।**

**युजं ह्य१न्यमकृत प्रवेपन्युदीं गव्यं सृजते सत्वभिर्धुनिः॥८॥**

सम्। यत्। जनौ। सुऽधनौ। विश्वऽशर्धसौ। अवेत्। इन्द्रः। मघऽवा। गोषु। शुभ्रिषु। युजम्। हि। अन्यम्। अकृत। प्रऽवेपनी। उत्। ईम्। गव्यम्। सृजते। सत्वऽभिः। धुनिः॥८॥

**पदार्थः-(सम्)** **(यत्)** यौ **(जनौ)** **(सुधनौ)** धर्मेण जातश्रेष्ठधनौ **(विश्वशर्धसौ)** समग्रबलयुक्तौ **(अवेत्)** प्राप्नुयात् **(इन्द्रः)** राजा **(मघवा)** परमपूजितबहुधनः **(गोषु)** धेनुपृथिव्यादिषु **(शुभ्रिषु)** शुभगुणेषु **(युजम्)** युक्तम् **(हि)** यतः **(अन्यम्)** **(अकृत)** करोति **(प्रवेपनी)** गच्छन्ती **(उत्)** **(ईम्)** उदकम् **(गव्यम्)** गोभ्यो हितम् **(सृजते)** **(सत्वभिः)** पदार्थैः **(धुनिः)** कम्पकः॥८॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यो धुनिर्मघवेन्द्रो यत्सुधनौ विश्वशर्धसौ जनौ समवेच्छुभ्रिषु गोषु हि युजमन्यमकृत प्रवेपनी सती गव्यमीं सत्त्वभिरुत्सृजते स सुखकरो जायते॥८॥

**भावार्थः**-राज्ञा स्वराज्य उत्तमान् धनिनो विदुषोऽध्यापकोपदेशकाँश्च संरक्ष्यैतैर्व्यवहारधन-विद्योन्नतिः कार्य्या॥८॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो (**धुनिः**) कंपने वाला (**मघवा**) अत्यन्त श्रेष्ठ बहुत धन से युक्त (**इन्द्रः**) राजा और (**यत्**) जो (**सुधनौ**) धर्म्म से उत्पन्न हुए श्रेष्ठ धन से तथा (**विश्वशर्धसौ**) सम्पूर्ण बल से युक्त (**जनौ**) दो जनों को (**सम्, अवेत्**) अच्छे प्रकार प्राप्त होवे और (**शुभ्रिषु**) उत्तम गुण वाले (**गोषु**) धेनु और पृथिवी आदिकों में (**हि**) जिससे (**युजम्**) युक्त (**अन्यम्**) अन्य को (**अकृत**) करता है और (**प्रवेपनी**) चलती हुई (**गव्यम्**) गौओं के लिये हितकारक (**ईम्**) जल को (**सत्त्वभिः**) पदार्थों से (**उत्, सृजते**) उत्पन्न करता है, वह सुख करने वाला होता है॥८॥

**भावार्थः**-राजा को चाहिये कि अपने राज्य में उत्तम धनी, विद्वान् तथा अध्यापक और उपदेशकों की उत्तम प्रकार रक्षा करके उनसे व्यवहार धन और विद्या की उन्नति करे॥८॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**सहस्रसामाग्निंवेशिं गृणीषे शत्रिमग्न उपमां केतुमर्यः।**

**तस्मा आपः संयतः पीपयन्त तस्मिन् क्षत्रमंमवत्त्वेषमस्तु॥९॥४॥**

**सहस्रऽसाम्। आग्निंऽवेशिम्। गृणीषे। शत्रिम्। अग्ने। उपऽमाम्। केतुम्। अर्यः। तस्मै। आपः। संऽयतः। पीपयन्त। तस्मिन्। क्षत्रम्। अमऽवत्। त्वेषम्। अस्तु॥९॥**

**पदार्थः**-(**सहस्रसाम्**) यः सहस्रानसंख्यातान् पदार्थान् सनति विभजति तम् (**आग्निवेशिम्**) योऽग्निं प्रवेशयति तम् (**गृणीषे**) स्तौषि (**शत्रिम्**) दुःखविच्छेदकम् (**अग्ने**) पावक इव (**उपमाम्**) दृष्टान्तम् (**केतुम्**) प्रज्ञाम् (**अर्यः**) स्वामी (**तस्मै**) (**आपः**) जलानीव प्रजाः (**संयतः**) संयमयुक्ताः (**पीपयन्त**) तर्पयन्ति (**तस्मिन्**) (**क्षत्रम्**) धनं राज्यं वा (**अमवत्**) गृहेण तुल्यम् (**त्वेषम्**) प्रकाशयुक्तम् (**अस्तु**)॥९॥

**अन्वयः**-हे अग्ने राजन्! अर्यस्त्वं सहस्रसामाग्निवेशिं शत्रिमुपमां केतुं गृणीषे तस्मै त आप इव संयतः प्रजाः पीपयन्त तस्मिंस्त्वयि राज्ञि अमवत्त्वेषं क्षत्रमस्तु॥९॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यदि राजा भवितुमिच्छेत्तर्हि सर्वशास्त्रविशारदीं शुभगुणाढ्यां प्रज्ञां प्राप्य पितृवत्प्रजाः पालयेदेवं कृते सति प्रशस्तं राष्ट्रं वर्धेतेति॥९॥

अत्रेन्द्रविद्वत्प्रजागुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति चतुस्त्रिंशत्तमं सूक्तं चतुर्थो वर्गश्च समाप्तः॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-हे **(अग्ने)** अग्नि के सदृश तेजस्वी राजन्! **(अर्यः)** स्वामी आप **(सहस्रसाम्)** असङ्ख्य पदार्थों के विभाग करने **(आग्निवेशिम्)** अग्नि को प्रवेश कराने और **(शत्रिम्)** दुःख के नाश करने वाले **(उपमाम्)** दृष्टान्त और **(केतुम्)** बुद्धि की **(गृणीषे)** स्तुति करते हो **(तस्मै)** उन आपके लिये **(आपः)** जलों के सदृश प्रजायें **(संयतः)** इन्द्रियों के निग्रह से युक्त हुईं **(पीपयन्त)** तृप्ति करती हैं **(तस्मिन्)** उन आप राजा में **(अमवत्)** गृह के तुल्य **(त्वेषम्)** प्रकाश से युक्त **(क्षत्रम्)** धन वा राज्य **(अस्तु)** होवे॥९॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो राजा होने की इच्छा करे तो सर्व शास्त्रों में प्रविष्ट हुई स्वच्छ और उत्तम गुणों से युक्त बुद्धि को प्राप्त होकर जैसे पितृजन पुत्रों का पालन करते वैसे प्रजाओं का पालन करे, ऐसा करने पर श्रेष्ठ राज्य बढ़े॥९॥

इस सूक्त में इन्द्र, विद्वान् और प्रजा के गुण-वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ संगति जाननी चाहिये॥

**यह चौंतीसवां सूक्त और चौथा वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

**अथाष्टर्चस्य पञ्चत्रिंशत्तमस्य सूक्तस्य प्रभूवसुराङ्गिरसो ऋषिः। इन्द्रो देवता। १ निचृदनुष्टुप्। ३ विराडनुष्टुप्। ७ अनुष्टुप् छन्दः। गान्धारः स्वरः। २ भुरिगुष्णिक्। ४, ५ स्वराडुष्णिक् छन्दः। ऋषभः स्वरः। ८ भुरिग्बृहती छन्दः। मध्यमः स्वरः॥**

***अथेन्द्रगुणानाह॥***

अब आठ ऋचा वाले पैंतीसवें सूक्त का आरम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में इन्द्रपदवाच्य राजगुणों का वर्णन करते हैं॥

**यस्ते साधिष्ठोऽवस इन्द्र क्रतुष्टमा भर।**

**अस्मभ्यं चर्षणीसहं सस्निं वाजेषु दुष्टरम्॥ १॥**

**यः। ते। साधिष्ठः। अवसे। इन्द्र। क्रतुः। तम्। आ। भर। अस्मभ्यम्। चर्षणिऽसहम्। सस्निम्। वाजेषु। दुस्तरम्॥ १॥**

**पदार्थः**-(**यः**) (**ते**) तव (**साधिष्ठः**) अतिशयेन साधुः (**अवसे**) रक्षणाद्याय (**इन्द्र**) सूर्य्यवन्न्यायप्रकाशित राजन् (**क्रतुः**) प्रज्ञा (**तम्**) (**आ**) (**भर**) धर (**अस्मभ्यम्**) (**चर्षणीसहम्**) मनुष्याणां सोढारम् (**सस्निम्**) ब्रह्मचर्य्यव्रतविद्याग्रहणाभ्यां पवित्रम् (**वाजेषु**) सङ्ग्रामेषु (**दुष्टरम्**) दुःखेनोल्लङ्घयितुं योग्यम्॥ १॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! यस्तेऽवसे साधिष्ठः क्रतुरस्ति तं चर्षणीसहं सस्निं वाजेषु दुष्टरमस्मभ्यमा भर॥ १॥

**भावार्थः**-स एव राजोत्तमः स्याद्यो दीर्घेण ब्रह्मचर्य्येणाप्तेभ्यो विद्याविनयौ गृहीत्वा न्यायेन राज्यं शिष्यात्॥ १॥

**पदार्थः**-हे (**इन्द्र**) सूर्य्य के सदृश न्याय से प्रकाशित राजन् (**यः**) जो (**ते**) आपकी (**अवसे**) रक्षा आदि के लिये (**साधिष्ठः**) अत्यन्त श्रेष्ठ (**क्रतुः**) बुद्धि है (**तम्**) उस (**चर्षणीसहम्**) मनुष्यों को सहने वाले (**सस्निम्**) ब्रह्मचर्य्यव्रत और विद्या के ग्रहण से पवित्र (**वाजेषु**) और संग्रामों में (**दुष्टरम्**) दुःख से उल्लंघन करने योग्य को (**अस्मभ्यम्**) हम लोगों के लिये (**आ, भर**) सब प्रकार धारण करिये॥ १॥

**भावार्थः**-वही राजा उत्तम होवे जो दीर्घ ब्रह्मचर्य्य से यथार्थवक्ता जनों से विद्या और विनय को ग्रहण करके न्याय से राज्य की शिक्षा देवे॥ १॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**यदिन्द्र ते चतस्रो यच्छूर सन्ति तिस्रः।**

**यद्वा पञ्च क्षितीनामवस्तत्सु न आ भर॥ २॥**



www.9009.co.in

यत्। इन्द्र। ते। चतस्रः। यत्। शूर। सन्ति। तिस्रः। यत्। वा। पञ्च। क्षितीनाम्। अवः। तत्। सु। नः। आ। भर॥२॥

**पदार्थः**-(**यत्**) याः (**इन्द्र**) राजन् (**ते**) तव (**चतस्रः**) सामदामदण्डभेदाख्या वृत्तयः (**यत्**) (**शूर**) (**सन्ति**) (**तिस्रः**) सुशिक्षिता सभा सेना प्रजा (**यत्**) (**वा**) (**पञ्च**) भूम्यादीनि पञ्चतत्त्वानि (**क्षितीनाम्**) मनुष्याणाम् (**अवः**) रक्षणादिकम् (**तत्**) (**सु**) (**नः**) अस्मभ्यम् (**आ**) (**भर**) समन्ताद्धर पुष्णीहि वा॥२॥

**अन्वयः**-हे शूरेन्द्र राजन्! यत्ते चतस्रो यत्तिस्रः पञ्च च सन्ति वा यत् क्षितीनामवोऽस्ति तन्नः स्वा भर॥२॥

**भावार्थः**-स एव राज्यं वर्धयितुं शक्नुयाद्यो राज्याङ्गानि सर्वाणि पूर्णानि सङ्गृह्णीयात्॥२॥

**पदार्थः**-हे (**शूर**) वीर (**इन्द्र**) राजन्! (**यत्**) जो (**ते**) आपकी (**चतस्रः**) चार साम, दाम, दण्ड और भेद नामक वृत्ति और (**यत्**) जो (**तिस्रः**) तीन उत्तम प्रकार शिक्षित सभा, सेना और प्रजा और (**पञ्च**) पृथिवी, अप्, तेज, वायु, आकाश पांच तत्त्व (**सन्ति**) हैं (**वा**) वा (**यत्**) जो (**क्षितीनाम्**) मनुष्यों का (**अवः**) रक्षण आदि है (**तत्**) उसको (**नः**) हम लोगों के लिये (**सु**) उत्तमता से (**आ, भर**) सब प्रकार धारण करो वा पुष्ट करो॥२॥

**भावार्थः**-वही राज्य बढ़ाने को समर्थ होवे कि जो राज्य के अङ्ग सब पूर्ण उत्तम प्रकार ग्रहण करे॥२॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**आ तेऽवो वरेण्यं वृषन्तमस्य हूमहे।**

**वृषजूतिर्हि जज्ञिष आभूभिरिन्द्र तुर्वणिः॥३॥**

**आ। ते। अवः। वरेण्यम्। वृषन्ऽतमस्य। हूमहे। वृषऽजूतिः। हि। जज्ञिषे। आऽभूभिः। इन्द्र। तुर्वणिः॥३॥**

**पदार्थः**-(**आ**) समन्तात् (**ते**) तव (**अवः**) रक्षणादिकं कर्म्म (**वरेण्यम्**) अतीवोत्तमम् (**वृषन्तमस्य**) अतिशयेन बलिष्ठस्य (**हूमहे**) स्वीकुर्महे (**वृषजूतिः**) वृषस्येव जूतिर्वेगो यस्य सः (**हि**) यतः (**जज्ञिषे**) जायसे (**आभूभिः**) ये विद्याविनये समन्ताद्भवन्ति तैः सह (**इन्द्र**) परमैश्वर्य्ययुक्त राजन् (**तुर्वणिः**) यस्तुरः शीघ्रकारिणः शुभगुणानमात्यान् याचते सः॥३॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! हि यतो वृषजूतिस्तुर्वणिस्त्वमाभूभिस्सह जज्ञिषे तस्य वृषन्तमस्य ते वरेण्यमवो वयमा हूमहे॥३॥

**भावार्थः**-हे राजन्! यतो भवान् शुभगुणकर्मस्वभावोऽस्ति पितृवदस्मान् पालयति तस्माद्भवन्तं राजानं वयं मन्यामहे॥३॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-हे **(इन्द्र)** अत्यन्त ऐश्वर्य्य से युक्त राजन्! **(हि)** जिससे **(वृषजूतिः)** वृष के वेग से युक्त **(तुर्वणिः)** शीघ्रकारी और श्रेष्ठ गुणों से युक्त मंत्रियों की याचना करने वाले आप **(आभूभिः)** जो विद्या और विनय में सब ओर से प्रकट होते हैं, उनके साथ **(जज्ञिषे)** प्रकट होते हो, उन **(वृषन्तमस्य)** अत्यन्त बलिष्ठ **(ते)** आपके **(वरेण्यम्)** अतीव उत्तम **(अवः)** रक्षण आदि कर्म्म को हम लोग **(आ, हूमहे)** उत्तम प्रकार से स्वीकार करते हैं॥३॥

**भावार्थः**-हे राजन्! जिससे आप उत्तम गुण, कर्म्म और स्वभाव वाले हो और पितृजन जैसे सन्तानों को वैसे हम लोगों का पालन करते हो, इससे आपको राजा हम लोग मानते हैं॥३॥

**अथ प्रजाविषयमाह॥**

अब प्रजाविषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**वृषा ह्यसि राधसे जज्ञिषे वृष्णि ते शवः।**

**स्वक्षत्रं ते धृषन्मनः सत्राहमिन्द्र पौंस्यम्॥४॥**

**वृषा। हि। असि। राधसे। जज्ञिषे। वृष्णि। ते। शवः। स्वक्षत्रम्। ते। धृषत्। मनः। सत्राऽहम्। इन्द्र। पौंस्यम्॥४॥**

**पदार्थः**-**(वृषा)** बलिष्ठः सुखवर्षको वा **(हि)** यतः **(असि)** **(राधसे)** धनैश्वर्य्याय **(जज्ञिषे)** **(वृष्णि)** सुखवर्षकम् **(ते)** तव **(शवः)** बलम् **(स्वक्षत्रम्)** त्वं राज्यं स्वस्य क्षत्रियकुलं वा **(ते)** तव **(धृषत्)** प्रगल्भम् **(मनः)** चित्तम् **(सत्राहम्)** सत्यधर्म्माचरणदिनम् **(इन्द्र)** बलिष्ठ **(पौंस्यम्)** पुम्भ्यो हितं बलम्॥४॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! हि यतस्त्वं वृषासि राधसे जज्ञिषे यस्य ते वृष्णिः शवः स्वक्षत्रं यस्य ते धृषन्मनो यस्य ते सत्राहं पौंस्यं चास्ति तं त्वां वयं राजानं मन्यामहे॥४॥

**भावार्थः**-प्रजाभिर्यो बलिष्ठः पूर्णविद्याविनयबलः शौर्य्यादिगुणैर्धृष्टः सदा न्यायधर्म्माचरणो भवेत्स एव राजा मन्तव्यः॥४॥

**पदार्थः**-हे **(इन्द्र)** बलवान् पुरुष! **(हि)** जिससे आप **(वृषा)** बलिष्ठ वा सुख के वर्षाने वाले **(असि)** हैं और **(राधसे)** धनरूप ऐश्वर्य्य के लिये **(जज्ञिषे)** प्रकट होते हो, जिन **(ते)** आपका **(वृष्णिः)** सुख वर्षाने वाले **(शवः)** बल और **(स्वक्षत्रम्)** अपना राज्य वा अपना क्षत्रियकुल जिन **(ते)** आपका **(धृषत्)** प्रगल्भ अर्थात् धृष्ट **(मनः)** चित्त जिन आपका **(सत्राहम्)** सत्य धर्म्म के आचरण का प्रकट करने वाला दिन और **(पौंस्यम्)** पुरुषों के लिये हितकारक बल है, उन आप को हम लोग राजा मानते हैं॥४॥

**भावार्थः**-प्रजाओं को चाहिये कि जो बलवान्, पूर्ण विद्या, विनय और बल से युक्त, शूरता आदि गुणों से धृष्ट, सदा न्याय और धर्म्माचरणयुक्त हो, उसी को राजा मानें॥४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**



www.9009.co.in

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**त्वं तमि॑न्द्र मर्त्य॑ममित्र॒यन्त॑मद्रिवः।**

**स॒र्व॒र॒था श॑तक्रतो॒ नि या॑हि शवसस्पते॥५॥५॥**

**त्वम्। तम्। इ॒न्द्र॒। मर्त्य॑म्। अ॒मि॒त्र॒ऽयन्त॑म्। अ॒द्रि॒ऽव॒ः। स॒र्व॒ऽर॒था। श॒त॒क्र॒तो॒ इति॑ शतऽक्रतो। नि। या॒हि॒। श॒व॒स॒ः। प॒ते॒॥५॥**

**पदार्थः-(त्वम्)** **(तम्)** **(इन्द्र)** ऐश्वर्य्यमिच्छुक प्रजाजन **(मर्त्यम्)** मनुष्यशरीरधारिणम् **(अमित्रयन्तम्)** शत्रुवदाचरन्तम् **(अद्रिवः)** मेघयुक्तसूर्य्यवद्राजमान **(सर्वरथा)** सर्वे रथा यानानि यस्य सः **(शतक्रतो)** अमितप्रज्ञ **(नि)** नितराम् **(याहि)** गच्छ **(शवसः)** बलस्य सैन्यस्य **(पते)** पालक सेनेश॥५॥

**अन्वयः**-हे शवसस्पते! शतक्रतोऽद्रिव इन्द्र! सर्वरथा त्वं तममित्रयन्तं मर्त्यं विजयाय नि याहि॥५॥

**भावार्थः**- हे राजन्! यो ह्यन्यायेन तव शत्रुर्भवेत् तच्छासनाय सबलसत्वं नित्यं गच्छेः॥५॥

**पदार्थः-(शवसः)** बल अर्थात् सेना के **(पते)** पालक सेना के स्वामिन्! **(शतक्रतो)** अमित बुद्धि वाले **(अद्रिवः)** मेघयुक्त सूर्य्य के सदृश राजमान **(इन्द्र)** ऐश्वर्य्य की इच्छा करने वाले प्रजाजन! **(सर्वरथा)** सम्पूर्ण वाहनों से युक्त **(त्वम्)** आप **(तम्)** उस **(अमित्रयन्तम्)** शत्रु के सदृश आचरण करते हुए **(मर्त्यम्)** मनुष्यशरीरधारी को विजय करने के लिये **(नि)** अत्यन्त **(याहि)** प्राप्त हूजिये॥५॥

**भावार्थः**-हे राजन्! जो अन्याय से आपका शत्रु होवे, उसके शासन के लिये बल के सहित आप नित्य प्राप्त हूजिये॥५॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**त्वामिद्वृ॑त्रहन्तम॒ जना॑सो वृ॒क्तब॑र्हिषः।**

**उ॒ग्रं पू॒र्वीषु॑ पू॒र्व्यं हव॑न्ते॒ वाज॑सातये॥६॥**

**त्वाम्। इत्। वृ॒त्र॒ह॒न्ऽत॒म॒। जना॑सः। वृ॒क्तऽब॑र्हिषः। उ॒ग्रम्। पू॒र्वीषु॑। पू॒र्व्यम्। हव॑न्ते। वाज॑ऽसातये॥६॥**

**पदार्थः-(त्वाम्)** **(इत्)** **(वृत्रहन्तम)** यो वृत्रं धनं हन्ति प्राप्नोति सोऽतिशयितस्तत्सम्बुद्धौ **(जनासः)** प्रसिद्धाः पुण्यात्मानः **(वृक्तबर्हिषः)** वृक्तं विदीर्णीकृतं हुतपदार्थैरन्तरिक्षं यैस्त ऋत्विजः **(उग्रम्)** दुष्टेषु कठिनस्वभावम् **(पूर्वीषु)** प्राचीनासु प्रजासु **(पूर्व्यम्)** पूर्वै राजभिः कृतसत्कारम् **(हवन्ते)** स्तुवन्ति गृह्णन्ति वा **(वाजसातये)** सङ्ग्रामायान्नादीनां विभागाय वा॥६॥

**अन्वयः**-हे वृत्रहन्तम राजन्! वृक्तबर्हिषो जनासो वाजसातय उग्रं पूर्वीषु पूर्व्यं त्वां हवन्ते स त्वं तान् सर्वदेत्संरक्ष॥६॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यः प्रतिष्ठितक्षत्रियकुलजो विद्याविनयादिसम्पन्नः प्रजापालनतत्परेच्छो भवेत्तं राजानं मन्यध्वम्॥६॥

**पदार्थः**-हे **(वृत्रहन्तम)** अतिशय करके धन को प्राप्त होने वाले राजन्! **(वृक्तबर्हिषः)** विदीर्ण किया है हवन किये हुए पदार्थों से अन्तरिक्ष को जिन्होंने ऐसे ऋत्विक् **(जनासः)** प्रसिद्ध पुण्यात्मा जन **(वाजसातये)** संग्राम वा अन्न आदि के विभाग के लिये **(उग्रम्)** दुष्टों में कठिन स्वभाव वाले और **(पूर्वीषु)** प्राचीन प्रजाओं में **(पूर्व्यम्)** पूर्व राजाओं से किया गया सत्कार जिनका ऐसे **(त्वाम्)** आपकी **(हवन्ते)** स्तुति करते वा ग्रहण करते हैं, वह आप उनकी सर्वदा **(इत्)** ही उत्तम प्रकार रक्षा कीजिये॥६॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो प्रतिष्ठित क्षत्रियों के कुल में उत्पन्न हुआ, विद्या और विनय आदि से युक्त और प्रजा के पालन में तत्पर इच्छा जिसकी ऐसा होवे, उसको राजा मानो॥६॥

**पुनः प्रजाविषयमाह॥**

फिर प्रजाविषय को कहते हैं॥

**अस्माकमिन्द्र दुष्टरं पुरोयावानमाजिषु।**

**सयावानं धनेधने वाजयन्तमवा रथम्॥७॥**

**अस्माकम्। इन्द्र। दुस्तरम्। पुरःऽयावानम्। आजिषु। सऽयावानम्। धनेऽधने। वाजऽयन्तम्। अव। रथम्॥७॥**

**पदार्थः**-**(अस्माकम्)** **(इन्द्र)** राजन् **(दुष्टरम्)** शत्रुभिर्दुःखेन तरितुं योग्यम् **(पुरोयावानम्)** नगरम् यान्तम् **(आजिषु)** सङ्ग्रामेषु **(सयावानम्)** सेनादिना सह गच्छन्तम् **(धनेधने)** **(वाजयन्तम्)** कृताऽन्वेक्षणम् **(अवा)** अत्र **निपातस्य चे**ति दीर्घः। **(रथम्)** रमणीयं यानम्॥७॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! त्वमस्माकं दुष्टरं पुरोयावानमाजिषु धनेधने सयावानं वाजयन्तं रथञ्चाऽवा॥७॥

**भावार्थः**-हे राजन्! यदि त्वमस्माकं पुरं राष्ट्रं च यथावद्रक्षितुं शक्नुयास्तर्ह्यस्माकं राजा भव॥७॥

**पदार्थः**-हे **(इन्द्र)** राजन्! आप **(अस्माकम्)** हम लोगों के **(दुष्टरम्)** शत्रुओं से दुःख से पार होने योग्य **(पुरोयावानम्)** नगर को चलते हुए **(आजिषु)** संग्रामों में **(धनेधने)** धन-धन में **(सयावानम्)** सेना आदि के साथ चलते हुए **(वाजयन्तम्)** किया अन्वेक्षण जिसका ऐसे **(रथम्)** सुन्दर वाहन की **(अवा)** रक्षा करो॥७॥

**भावार्थः**-हे राजन्! जो आप लोग हम लोगों के नगर और राज्य की यथावत् रक्षा करने को समर्थ होवें तो हम लोगों के राजा होवें॥७॥

**अथ राजद्वारा विद्वद्विषयमाह॥**

अब राजद्वारा विद्वद्विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥



www.9009.co.in

**अस्माकमिन्द्रेहि नो रथमवा पुरंध्या।**

**वयं शविष्ठ वार्यं दिवि श्रवो दधीमहि दिवि स्तोमं मनामहे॥८॥६॥**

**अस्माकम्। इन्द्र। आ। इहि। नः। रथम्। अव। पुरम्ऽध्या। वयम्। शविष्ठ। वार्यम्। दिवि। श्रवः। दधीमहि। दिवि। स्तोमम्। मनामहे॥८॥**

**पदार्थः-(अस्माकम्) (इन्द्र) (आ, इहि)** प्राप्नुहि **(नः)** अस्मान् **(रथम्)** बहुविधं यानम् **(अवा)** पाहि **(पुरन्ध्या)** बहुविद्याधरित्र्या प्रज्ञया **(वयम्) (शविष्ठ)** अतिशयेन बलयुक्त **(वार्य्यम्)** वरणीयम् **(दिवि)** कमनीये राष्ट्रे **(श्रवः)** श्रवणमन्नं वा **(दधीमहि)** धरेम **(दिवि)** प्रशंसनीये राज्ये **(स्तोमम्)** सकलशास्त्राध्ययनाऽध्यापनम् **(मनामहे)** विजानीयाम॥८॥

**अन्वयः**-हे शविष्ठेन्द्र! त्वं पुरन्ध्याऽस्माकं रथमेहि नोऽस्माँश्च सततमवा येन वयं दिवि वार्य्यं श्रवो दधीमहि दिवि स्तोमं मनामहे॥८॥

**भावार्थः**-स एव प्रजाप्रियो भवति यो राजा न्यायेन प्रजाः सम्पाल्य विद्यासुशिक्षे प्रजासु प्रवर्त्तयेदिति॥८॥

अत्रेन्द्रराजप्रजाविद्वद्गुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति पञ्चत्रिंशत्तमं सूक्तं षष्ठो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे **(शविष्ठ)** अत्यन्त बल से युक्त **(इन्द्र)** राजन्! आप **(पुरन्ध्या)** बहुत विद्या को धारण करने वाली बुद्धि से **(अस्माकम्)** हम लोगों के **(रथम्)** बहुत प्रकार के वाहन को **(आ, इहि)** प्राप्त हूजिये और **(नः)** हम लोगों का निरन्तर **(अवा)** पालन कीजिये जिससे **(वयम्)** हम लोग **(दिवि)** मनोहर राज्य में **(वार्य्यम्)** स्वीकार करने योग्य **(श्रवः)** श्रवण वा अन्न को **(दधीमहि)** धारण करें और **(दिवि)** प्रशंसा करने योग्य राज्य में **(स्तोमम्)** सम्पूर्ण शास्त्र के पढ़ने और पढ़ाने को **(मनामहे)** जानें॥८॥

**भावार्थः**-वही प्रजा का प्रिय होता है, जो राजा न्याय से प्रजाओं का उत्तम प्रकार पालन करके विद्या और उत्तम शिक्षा की प्रजाओं में प्रवृत्ति करे॥८॥

इस सूक्त में इन्द्र, राजा, प्रजा और विद्वान् के गुण-वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह पैतीसवां सूक्त और छठा वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

**अथ षड्चस्य षट्त्रिंशत्तमस्य सूक्तस्य प्रभूवसुराङ्गिरस ऋषिः। इन्द्रो देवता। १, ४, ५ निचृत् त्रिष्टुप्। २, ६ त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः। ३ जगती छन्दः। निषादः स्वरः॥**

*अथेन्द्रपदवाच्यराजविषयमाह॥*

अब छः ऋचा वाले छत्तीसवें सूक्त का प्रारम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में इन्द्रपदवाच्य राजविषय को कहते हैं॥

**स आ गमदिन्द्रो यो वसूनां चिकेतद्दातुं दामनो रयीणाम्।**

**धन्वचरो न वंसगस्तृषाणश्चकमानः पिबतु दुग्धमंशुम्॥१॥**

**सः। आ। गमत्। इन्द्रः। यः। वसूनाम्। चिकेतत्। दातुम्। दामनः। रयीणाम्। धन्वऽचरः। न। वंसगः। तृषाणः। चकमानः। पिबतु। दुग्धम्। अंशुम्॥१॥**

**पदार्थः**-(**सः**) (**आ**) समन्तात् (**गमत्**) गच्छेत् (**इन्द्रः**) दाता (**यः**) (**वसूनाम्**) द्रव्याणाम् (**चिकेतत्**) जानाति (**दातुम्**) (**दामनः**) दात्रीः (**रयीणाम्**) (**धन्वचरः**) यो धन्वन्यन्तरिक्षे चरति (**न**) इव (**वंसगः**) यो वंसान् सत्याऽसत्यविभाजकान् गच्छति (**तृषाणः**) तृषातुर इव (**चकमानः**) कामयमानः (**पिबतु**) (**दुग्धम्**) (**अंशुम्**) प्राणप्रदम्॥१॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! य इन्द्रो वसूनां दातुं चिकेतद्रयीणां दामनश्चिकेतत्स तृषाणो धन्वचरो न वंसगश्चकमानोऽस्माना गमदंशुं दुग्धं पिबतु॥१॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। मनुष्यैर्यो धनप्रदो विवेचकः सत्यं कामयमान इष्टमर्य्यादो जनो भवेत् स एव राजा भावनीयः॥१॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! (**यः**) जो (**इन्द्रः**) दाता (**वसूनाम्**) द्रव्यों के (**दातुम्**) देने को (**चिकेतत्**) जानता और (**रयीणाम्**) धनों की (**दामनः**) देने वालियों को जानता है (**सः**) वह (**तृषाणः**) पिपासा से व्याकुल के सदृश और (**धन्वचरः**) अन्तरिक्ष में चलने वाले के (**न**) सदृश (**वंसगः**) सत्य और असत्य के विभाग करने वालों को प्राप्त होने वाला और (**चकमानः**) कामना करता हुआ हम लोगों को (**आ**) सब प्रकार से (**गमत्**) प्राप्त होवे और (**अंशुम्**) प्राणों के देने वाले (**दुग्धम्**) दुग्ध का (**पिबतु**) पान करे॥१॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। मनुष्यों को चाहिये कि जो धन देने, विचार करने, सत्य की कामना करने और मर्य्यादा को चाहने वाला होवे, उसी को राजा मानें॥१॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥



www.9009.co.in

**आ ते हनू॑ हरिवः शूर॒ शिप्रे॒ रुह॒त्सोमो॒ न पर्व॑तस्य पृष्ठे।**

**अनु॑ त्वा राज॒न्नर्व॑तो॒ न हि॒न्वन् गी॒र्भिर्म॑देम पुरुहू॒त विश्वे॑॥२॥**

**आ। ते॒। हनू॒ इति॑। ह॒रि॒ऽव॒ः। शू॒र॒। शिप्रे॒ इति॑। रुह॑त्। सोम॑ः। न। पर्व॑तस्य। पृ॒ष्ठे। अनु॑। त्वा। रा॒ज॒न्। अर्व॑तः। न। हि॒न्वन्। गी॒ःऽभिः। म॒दे॒म॒। पु॒रु॒ऽहू॒त। विश्वे॑॥२॥**

**पदार्थः**-(**आ**) (**ते**) तव (**हनू**) मुखनासिके (**हरिवः**) प्रशस्तमनुष्ययुक्त (**शूर**) शत्रूणां हिंसक (**शिप्रे**) सुशोभिते (**रुहत्**) रोहति (**सोमः**) सोमलता (**न**) इव (**पर्वतस्य**) शैलस्य (**पृष्ठे**) उपरि (**अनु**) (**त्वा**) त्वाम् (**राजन्**) (**अर्वतः**) अश्वान् (**न**) इव (**हिन्वन्**) गमयन् (**गीर्भिः**) सत्योज्ज्वलाभिर्वाग्भिः (**मदेम**) आनन्देम (**पुरुहूत**) बहुभिः कृतसत्कार (**विश्वे**) सर्वे॥२॥

**अन्वयः**-हे हरिवः शूर पुरुहूत राजन्! यस्य ते शिप्रे हनू गीर्भिर्हिन्वन्नर्वतो न पर्वतस्य पृष्ठे सोमो न व्यवहार आ रुहत् तं त्वा विश्वे वयमनु मदेम त्वमस्मानानन्दय॥२॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। यो राजा सत्सङ्गं विदधाति स पर्वते सोमलतेव सर्वतो वर्धते॥२॥

**पदार्थः**-हे (**हरिवः**) अच्छे मनुष्यों से युक्त (**शूर**) शत्रुओं के नाश करने वाले (**पुरुहूत**) बहुतों से सत्कार किये गये (**राजन्**) राजन्! जिन (**ते**) आप को (**शिप्रे**) उत्तम प्रकार शोभित (**हनू**) मुख और नासिका (**गीर्भिः**) सत्य से उज्ज्वल वाणियों से (**हिन्वन्**) चलवाता हुआ (**अर्वतः**) घोड़ों के (**न**) सदृश और (**पर्वतस्य**) पर्वत के (**पृष्ठे**) ऊपर (**सोमः**) सोमलता के (**न**) सदृश व्यवहार (**आ, रुहत्**) प्रकट होता है उन (**त्वा**) आप को (**विश्वे**) सब हम लोग (**अनु, मदेम**) आनन्दित करें तथा आप हम लोगों को आनन्दित करिये॥२॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जो राजा सत्सङ्ग करता है, वह पर्वत में सोमलता के सदृश सब ओर से वृद्धि को प्राप्त होता है॥२॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**च॒क्रं न वृ॒त्तं पु॑रुहूत वेपते॒ मनो॑ भि॒या मे॒ अम॑ते॒रिद॑द्रिवः।**

**रथा॒दधि॑ त्वा जरि॒ता स॑दावृध कु॒विन्नु स्तो॑षन्मघवन् पु॒रू॒वसु॑ः॥३॥**

**च॒क्रम्। न। वृ॒त्तम्। पु॒रु॒ऽहू॒त॒। वे॒प॒ते॒। मन॑ः। भि॒या। मे॒। अम॑तेः। इत्। अ॒द्रि॒ऽव॒ः। रथा॑त्। अधि॑। त्वा॒। ज॒रि॒ता। स॒दा॒ऽवृ॒ध॒। कु॒वित्। नु। स्तो॒ष॒त्। म॒घ॒ऽव॒न्। पु॒रु॒ऽवसु॑ः॥३॥**

**पदार्थः**-(**चक्रम्**) (**न**) इव (**वृत्तम्**) (**पुरुहूत**) बहुषु सत्कृत (**वेपते**) कम्पते (**मनः**) चित्तम् (**भिया**) भयेन (**मे**) मम (**अमतेः**) निर्बुद्धेः (**इत्**) एव (**अद्रिवः**) मेघवत्सूर्य इव (**रथात्**) यानात् (**अधि**)



www.9009.co.in

(त्वा) त्वाम् (जरिता) स्तावकः (सदावृध) सदैव वर्धक (कुवित्) महान् (नु) (स्तोषत्) स्तुयात् (मघवन्) बहुधनयुक्त (पुरूवसुः) असङ्ख्यधनः॥३॥

**अन्वयः**-हे अद्रिवः पुरुहूत मघवन् सदावृध राजन्! यस्मादमतेर्म इन्मनो रथाद् वृत्तं चक्रं न भिया वेपते तं त्वं निवारय यः कुवित्पुरूवसुर्जरिता त्वा न्वधि स्तोषत् तं त्वं सत्कुर्य्याः॥३॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। यदि राजा चोरान् साहसिकादीन् प्रयत्नेन न निरुन्ध्याच्छ्रेष्ठान् न सत्कुर्यात्तर्हि भयोद्भवेन प्रजा उद्विग्नाः स्युः॥३॥

**पदार्थः**-हे (अद्रिवः) मेघ और सूर्य्य के सदृश वर्त्तमान (पुरुहूत) बहुतों में सत्कार पाये हुए (मघवन्) बहुत धनों से युक्त (सदावृध) सदा वृद्धि करने वाले राजन्! जिस कारण (अमतेः, मे) मुझ निर्बुद्धि का (इत्) ही (मनः) चित्त (रथात्) वाहन से (वृत्तम्) वर्त्ते हुए (चक्रम्) चक्र के (न) सदृश (भिया) भय से (वेपते) कंपता है, उस कारण का आप निवारण कीजिये और जो (कुवित्) महान् (पुरूवसुः) असंख्यधन से युक्त (जरिता) स्तुति करने वाला (त्वा) आपकी (नु) निश्चय (अधि, स्तोषत्) स्तुति करे उसका आप सत्कार करें॥३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जो राजा चोर और साहस करने वाले जनों का प्रयत्न से न निवारण करे और श्रेष्ठ जनों का न सत्कार करे तो भय के उद्भव से प्रजायें व्याकुल होवें॥३॥

**अथ विद्वद्विषयमाह॥**

अब विद्वद्विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**एष ग्रावेव जरिता त इन्द्रेयर्ति वाचं बृहदाशुषाणः।**

**प्र सव्येन मघवन् यंसि रायः प्र दक्षिणिद्धरिवो मा वि वेनः॥४॥**

**एषः। ग्रावाऽइव। जरिता। ते। इन्द्र। इयर्ति। वाचम्। बृहत्। आशुषाणः। प्र। सव्येन। मघऽवन्। यंसि। रायः। प्र। दक्षिणित्। हरिऽवः। मा। वि। वेनः॥४॥**

**पदार्थः**-(एषः) (ग्रावेव) मेघ इव (जरिता) सकलविद्याप्रशंसकः (ते) तव (इन्द्र) शत्रुविदारक राजन्! (इयर्त्ति) प्राप्नोति (वाचम्) सुशिक्षितां वाणीम् (बृहत्) महत् (आशुषाणः) व्याप्नुवन् सन् (प्र) (सव्येन) वामपार्श्वेन (मघवन्) धनाढ्य (यंसि) प्राप्नोषि नियच्छसि वा (रायः) धनस्य (प्र, दक्षिणित्) दक्षिणेन पार्श्वेनैति गच्छतीति (हरिवः) उत्तमाऽमात्ययुक्त (मा) (वि) विगतार्थे (वेनः) कामयमानः॥४॥

**अन्वयः**-हे हरिवो मघवन्निन्द्र! यस्त एष जरिता ग्रावेव वाचमियर्त्ति स बृहदाशुषाणः सव्येन प्र दक्षिणित् सन् रायः प्र यंसि स त्वं वि वेनो मा भव॥४॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! ये महान्तो विद्वांसो वाचं गृहीत्वा ग्राहयित्वा संयतेन्द्रिया भवन्ति ते निष्कामा न भवन्ति, किन्तु सत्यकामा असत्यद्वेषिणः सततं वर्त्तन्ते॥४॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-हे **(हरिवः)** उत्तम मन्त्रियों से और **(मघवन्)** धन से युक्त **(इन्द्र)** शत्रुओं के नाश करने वाले राजन्! जो **(ते)** आपका **(एषः)** यह **(जरिता)** सम्पूर्ण विद्याओं की प्रशंसा करने वाला **(ग्रावेव)** मेघ के सदृश **(वाचम्)** उत्तम शिक्षायुक्त वाणी को **(इयर्त्ति)** प्राप्त होता है, वह **(बृहत्)** बड़े को **(आशुषाणः)** व्याप्त होता हुआ **(सव्येन)** वाम ओर से **(प्र, दक्षिणित्)** उत्तम प्रकार दहिने भाग से चलने वाला **(रायः)** धन के **(प्र, यंसि)** उत्तम प्रकार प्राप्त होने वा नियम करने वाले हो वह आप **(वि)** विशेष करके **(वेनः)** कामना करने वाले **(मा)** न हूजिये॥४॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जो बड़े विद्वान् जन वाणी को ग्रहण कर वा ग्रहण कराय के इन्द्रियों के निग्रह करने वाले होते हैं, वे निष्फल मनोरथ वाले नहीं होते हैं, किन्तु सत्यकाम और असत्य के द्वेषी निरन्तर वर्त्तमान हैं॥४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**वृषा त्वा वृषणं वर्धतु द्यौर्वृषा वृषभ्यां वहसे हरिभ्याम्।**

**स नो वृषा वृषरथः सुशिप्र वृषक्रतो वृषा वज्रिन् भरे धाः॥५॥**

**वृषा। त्वा। वृषणम्। वर्धतु। द्यौः। वृषा। वृषऽभ्याम्। वहसे। हरिऽभ्याम्। सः। नः। वृषा। वृषऽरथः। सुऽशिप्र। वृषक्रतो इति वृषऽक्रतो। वृषा। वज्रिन्। भरे। धाः॥५॥**

**पदार्थः**-**(वृषा)** सुखवर्षकः **(त्वा)** त्वाम् **(वृषणम्)** बलिष्ठम् **(वर्धतु)** वर्धताम् **(द्यौः)** सत्यकामः **(वृषा)** वृष इव बलिष्ठः **(वृषभ्याम्)** बलयुक्ताभ्याम् **(वहसे)** प्राप्नोषि प्रापयसि वा **(हरिभ्याम्)** हरणशीलाभ्यां हस्ताभ्याम् **(सः)** **(नः)** अस्मान् **(वृषा)** दुष्टानां शक्तिबन्धकः **(वृषरथः)** बलिष्ठा वृषभा रथे यस्य **(सुशिप्र)** सुमुखारविन्द **(वृषक्रतो)** वृषाणां बलवतां प्रज्ञाकर्म्माणीव प्रज्ञाकर्म्माणि यस्य सः **(वृषा)** विद्यावर्षकः **(वज्रिन्)** शस्त्रास्त्रवित् **(भरे)** सङ्ग्रामे **(धाः)** धर॥५॥

**अन्वयः**-हे सुशिप्र वृषक्रतो वज्रिन्निन्द्र राजन्! यो वृषा वृषणं त्वा वर्धतु यो वृषा त्वं द्यौरिव वृषभ्यां हरिभ्यां वहसे स वृषा त्वं च वृषरथो वृषा नो भरे धाः॥५॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! ये विद्वांसो युष्मान् सर्वदा वर्धयन्ति तांस्त्वं सङ्ग्रामे विजयाय प्रेर्ष्व॥५॥

**पदार्थः**-हे **(सुशिप्र)** उत्तम कमल के समान मुख वाले **(वृषक्रतो)** बलवानों की बुद्धि और कर्म्मों के सदृश बुद्धि और कर्म्म जिसके वह **(वज्रिन्)** शस्त्र और अस्त्र के ज्ञान से युक्त राजन्! जो **(वृषा)** सुख वर्षाने वाला **(वृषणम्)** बलिष्ठ **(त्वा)** आप को **(वर्धतु)** बढ़ावे और जो **(वृषा)** वृष के समान बलवान् आप **(द्यौः)** सत्य कामना वाले के सदृश **(वृषभ्याम्)** बल से युक्त **(हरिभ्याम्)** हरणशील हस्तों से **(वहसे)** प्राप्त होते वा प्राप्त कराते हो **(सः)** वह **(वृषा)** दुष्टों की शक्ति रोकने वाला और आप



www.9009.co.in

(**वृषरथ:**) बलिष्ठ बैल रथ में जिनके ऐसे (**वृषा**) विद्या के वर्षाने वाले (**न:**) हम लोगों को (**भरे**) संग्राम में (**धा:**) धरिये धारण कीजिये॥५॥

**भावार्थ:**-हे मनुष्यो! जो विद्वान् तुम लोगों को सर्वदा बढ़ाते हैं, उनको आप संग्राम में विजय के लिये प्रेरणा दीजिये॥५॥

**अथ शिल्पिकार्य्यविषयमाह॥**

अब शिल्पिकार्य्यविषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**यो रोहि॑तौ वा॒जिनौ॑ वा॒जिनी॑वान् त्रि॒भिः श॒तैः सच॑माना॒वदि॑ष्ट।**

**यूने॒ सम॑स्मै क्षि॒तयो॑ नमन्तां श्रु॒तर॑थाय मरुतो दुवो॒या॥६॥७॥**

**यः। रोहि॑तौ। वा॒जिनौ॑। वा॒जिनी॑ऽवान्। त्रि॒ऽभिः। श॒तैः। सच॑मानौ। अदि॑ष्ट। यूने॑। सम्। अ॒स्मै॒। क्षि॒तयः। न॒म॒न्ता॒म्। श्रु॒तऽर॑थाय। म॒रु॒तः। दु॒व॒ऽया॥६॥**

**पदार्थ:**-(**यः**) (**रोहितौ**) विद्युत्प्रसिद्धवह्नी (**वाजिनौ**) अतिवेगवन्तौ (**वाजिनीवान्**) वेगक्रिया-ज्ञानयुक्तः (**त्रिभिः**) (**शतैः**) (**सचमानौ**) सम्बद्धौ (**अदिष्ट**) दिशेत् (**यूने**) पूर्णयुवावस्थाय (**सम्**) (**अस्मै**) (**क्षितयः**) मनुष्याः (**नमन्ताम्**) (**श्रुतरथाय**) श्रुता रथा यस्य (**मरुतः**) मनुष्याः (**दुवोया**) यौ दुवः परिचरणं यातस्तौ॥६॥

**अन्वय:**-हे मरुतो! यो वाजिनीवाँस्त्रिभिः शतैरस्मै यूने सचमानौ दुवोया वाजिनौ रोहतावदिष्ट तस्मै श्रुतरथाय क्षितयः सन्नमन्ताम्॥६॥

**भावार्थ:**-ये विमानादियानकार्य्येष्वग्न्यादिपदार्थान् संप्रयोजयन्ति ते यावता त्रिभिः शतैरश्वैर्यानं सद्यो नयन्ति तावद्बलं तस्यां कलायां भवति। य एव शिल्पविद्याकृत्येषु प्रसिद्धा जायन्ते तेषां सत्कारः सर्वे कुर्वन्तीति॥६॥

अत्रेन्द्रविद्वच्छिल्पिकृत्यवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति षट्त्रिंशत्तमं सूक्तं सप्तमो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थ:**-हे (**मरुतः**) मनुष्यो! (**यः**) जो (**वाजिनीवान्**) वेग की क्रिया का जानने वाला (**त्रिभिः**) तीन (**शतैः**) सैकड़ों से (**अस्मै**) इस (**यूने**) युवा पुरुष के लिये (**सचमानौ**) मिले हुए (**दुवोया**) जो परिचरण को प्राप्त होते हैं उन (**वाजिनौ**) बड़े वेग वाले (**रोहितौ**) बिजुली और प्रसिद्ध अग्नि का (**अदिष्ट**) उपदेश देवे उस (**श्रुतरथाय**) सुने गये वाहन जिसके उसके लिये (**क्षितयः**) मनुष्य (**सम्, नमन्ताम्**) अच्छे प्रकार नम्र होवें॥६॥

**भावार्थ:**-जो विमान आदि वाहन के कार्य्यों में अग्नि आदि पदार्थों का संप्रयोग करते हैं, वे जितने तीन सौ घोड़ों से वाहन शीघ्र पहुंचाते हैं, उतना बल उस कला में होता है और जो इस प्रकार शिल्पविद्या के कृत्यों में प्रसिद्ध होते हैं, उनका सत्कार सब करते हैं॥६॥



www.9009.co.in

इस सूक्त में इन्द्र, विद्वान् और शिल्पी के कृत्य वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह छत्तीसवां सूक्त और सप्तम वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

**अथ पञ्चर्चस्य सप्तत्रिंशत्तमस्य सूक्तस्य अत्रिर्ऋषिः। इन्द्रो देवता। १ निचृत्पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः। २ विराट् त्रिष्टुप्। ३, ५ निचृत् त्रिष्टुप्। ४ त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः॥**

***अथेन्द्रविषयमाह॥***

अब पांच ऋचा वाले सैंतीसवें सूक्त का आरम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में इन्द्रविषय को कहते हैं॥

**सं भानुना यतते सूर्यस्याजुह्वानो घृतपृष्ठः स्वञ्चाः।**

**तस्मा अमृध्रा उषसो व्युच्छान् य इन्द्राय सुनवामेत्याह॥१॥**

**सम्। भानुना। यतते। सूर्यस्य। आऽजुह्वानः। घृतऽपृष्ठः। सुऽअञ्चाः। तस्मै। अमृध्राः। उषसः। वि। उच्छान्। यः। इन्द्राय। सुनवाम। इति। आह॥१॥**

**पदार्थः-(सम्)** **(भानुना)** किरणेन **(यतते)** **(सूर्य्यस्य)** **(आजुह्वानः)** कृताह्वानः **(घृतपृष्ठः)** घृतमुदकं पृष्ठे यस्य सः **(स्वञ्चाः)** यः सुष्ठ्वञ्चति **(तस्मै)** **(अमृध्राः)** अहिंसिकाः **(उषसः)** प्रभातवेलाः **(वि)** **(उच्छान्)** विवासयेत् **(यः)** **(इन्द्राय)** ऐश्वर्य्ययुक्ताय जनाय **(सुनवाम)** निष्पादयेत् **(इति)** **(आह)** उपदिशति॥१॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! य आजुह्वानो घृतपृष्ठः स्वञ्चा अग्निः सूर्य्यस्य भानुना सं यतते योऽमृध्रा उषसो व्युच्छान् य एतद्विद्यां जानाति तस्मा इन्द्राय य आहेति वयं तं सुनवाम॥१॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! या विद्युत्सूर्य्यप्रकाशेन सह वर्त्तते तदादिविद्यां य उपदिशेत् सोऽस्माकमुन्नतिकरो भवतीति वयं विजानीमः॥१॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(यः)** जो **(आजुह्वानः)** आह्वान किया गया **(घृतपृष्ठः)** जल जिसके पीठ पर ऐसा **(स्वञ्चाः)** उत्तम प्रकार चलने वाला अग्नि **(सूर्य्यस्य)** सूर्य्य की **(भानुना)** किरण से **(सम्)** उत्तम प्रकार **(यतते)** प्रयत्न करता और जो **(अमृध्राः)** नहीं हिंसा करनेवाली **(उषसः)** प्रभातवेलाओं को **(वि, उच्छान्)** वसावे और जो इस विद्या को जानता है **(तस्मै)** उस **(इन्द्राय)** ऐश्वर्ययुक्त जन के लिये जो **(आह)** उपदेश देता है **(इति)** इस प्रकार हम लोग उसको **(सुनवाम)** उत्पन्न करें॥१॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो बिजुली, सूर्य्य के प्रकाश के साथ वर्त्तमान है, उसको आदि लेकर विद्या का जो उपदेश देवे, वह हम लोगों की उन्नति करने वाला होता है, यह हम लोग जानें॥१॥

**अथ शिल्पिविद्वद्विषयमाह॥**

अब शिल्पी विद्वान् के विषय को कहते हैं॥

**समिद्धाग्निर्वनवत्स्तीर्णबर्हिर्युक्तग्रावा सुतसोमो जराते।**



www.9009.co.in

**ग्रावा॑णो॒ यस्ये॑षि॒रं व॒द॒न्त्यय॑द॒ध्व॒र्युर्ह॒विषाव॒ सिन्धु॑म्॥२॥**

**समि॑द्धऽअग्निः। व॒न॒व॒त्। स्ती॒र्णऽब॑र्हिः। यु॒क्तऽग्रा॑वा। सु॒तऽसो॑मः। ज॒रा॒ते॒। ग्रावा॑णः। यस्य॑। इ॒षि॒रम्। वद॑न्ति। अय॑त्। अ॒ध्व॒र्युः। ह॒विषा॑। अव॑। सिन्धु॑म्॥२॥**

**पदार्थः**-(**समिद्धाग्निः**) प्रदीप्तः पावकः (**वनवत्**) सम्भजते (**स्तीर्णबर्हिः**) स्तीर्णमाच्छादितं बर्हिरन्तरिक्षं येन सः (**युक्तग्रावा**) युक्तो ग्रावा मेघो येन (**सुतसोमः**) सुतः सोमो यस्मात् (**जराते**) स्तौति (**ग्रावाणः**) मेघाः (**यस्य**) (**इषिरम्**) गमनम् (**वदन्ति**) (**अयत्**) गच्छति (**अध्वर्युः**) अध्वरं शिल्पविद्यां कामयमानः (**हविषा**) अग्नौ प्रक्षेप्य सामग्र्या (**अव**) (**सिन्धुम्**) समुद्रम्॥२॥

**अन्वयः**-हे विद्वन्! यः स्तीर्णबर्हिर्युक्तग्रावा सुतसोमः समिद्धाग्निः सर्वान् पदार्थान् वनवद् यस्येषिरं ग्रावाणो वदन्ति यमध्वर्युर्हविषा सिन्धुमवायज्जराते च तमग्निं कार्य्येषु संप्रयुङ्क्ष्व॥२॥

**भावार्थः**-हे विद्वांसो! योऽग्निः सर्वेषु पदार्थेषु व्याप्तो बहूत्तमगुणक्रियावान् वर्त्तते तं विज्ञाय कार्य्याणि साध्नुत॥२॥

**पदार्थः**-हे विद्वन्! जो (**स्तीर्णबर्हिः**) अर्थात् आच्छादित किया अन्तरिक्ष जिसने ऐसा और (**युक्तग्रावा**) युक्त मेघ जिससे (**सुतसोमः**) तथा प्रकट हुआ चन्द्रमा जिससे (**समिद्धाग्निः**) वह प्रदीप्त हुआ अग्नि सम्पूर्ण पदार्थों का (**वनवत्**) सम्भोग करता है (**यस्य**) जिसके (**इषिरम्**) गमन को (**ग्रावाणः**) मेघ (**वदन्ति**) शब्द से सूचित करते हैं, जिसको (**अध्वर्युः**) शिल्पविद्या की कामना करता हुआ जन (**हविषा**) अग्नि में छोड़ने योग्य सामग्री से (**सिन्धुम्**) समुद्र को (**अव, अयत्**) प्राप्त होता और (**जराते**) स्तुति करता है, उस अग्नि का कार्य्यों में संप्रयोग करो॥२॥

**भावार्थः**-हे विद्वानो! जो अग्नि सम्पूर्ण पदार्थों में व्याप्त और बहुत उत्तम गुण और क्रियावान् है, उसको जानकर कार्य्यों को सिद्ध करो॥२॥

**अथ युवावस्थाविवाहविषयमाह॥**

अब युवावस्थाविवाहविषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**व॒धूरि॒यं पति॑मि॒च्छन्त्ये॑ति॒ य ईं॒ वहा॑ते॒ महि॑षीमिषि॒राम्।**
**आस्य॑ श्रवस्या॒द्रथ॒ आ च॑ घोषात्पु॒रू स॒हस्रा॒ परि॑ वर्तयाते॥३॥**

**व॒धूः। इ॒यम्। पति॑म्। इ॒च्छन्ती॑। ए॒ति॒। यः। ई॒म्। वहा॑ते। महि॑षीम्। इ॒षि॒राम्। आ। अ॒स्य॒। श्र॒व॒स्या॒त्। रथः॑। आ। च॒। घो॒षा॒त्। पु॒रु। स॒हस्रा॑। परि॑। व॒र्त॒या॒ते॒॥३॥**

**पदार्थः**-(**वधूः**) भार्य्या (**इयम्**) (**पतिम्**) (**इच्छन्ती**) (**एति**) प्राप्नोति (**यः**) (**ईम्**) उदकं सर्वान् पदार्थान् वा (**वहाते**) वहेताम् (**महिषीम्**) महाशुभगुणाम् (**इषिराम्**) प्राप्नुवन्तीम् (**आ**) (**अस्य**) (**श्रवस्यात्**) य आत्मनः श्रव इच्छति तस्मात् (**रथः**) (**आ**) (**च**) (**घोषात्**) शब्दद्वारया (**पुरू**) बहूनि



www.9009.co.in

**(सहस्रा)** सहस्राणि **(परि)** सर्वतः **(वर्त्तयाते)** वर्त्तयेत। लेट् प्रथमैकवचन आडागमे णिजन्तस्य वर्त्तेः प्रयोगः॥३॥

**अन्वयः**-हे विद्वांसो! यथेयं पतिमिच्छन्ती वधूर्हृद्यं स्वामिनमेति यो हि वधूयुः प्रियामिषिरां महिषीमेति यथा तौ सर्वं गृहकृत्यं वहाते तथेमग्निं संप्रयुक्तो रथो वाहयति सोऽस्याश्रवस्याद् घोषाच्च पुरू सहस्रा पर्या वर्त्तयाते॥३॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यथा कृतब्रह्मचर्य्यो स्त्रीपुरुषौ परस्परं पतिभार्ये इच्छतः परस्परं संप्रीतौ हृद्यौ संयुक्तौ सन्तौ गृहाश्रमव्यवहारमलंकुरुतस्तथैव जलाग्नी संप्रयुक्तौ सर्वं व्यवहारं साधयतो बहुभ्यः क्रोशेभ्य आमुहूर्त्तादपि रथादिकं सद्यो गमयत इति सर्वैर्वेद्यम्॥३॥

**पदार्थः**-हे विद्वानो! जैसे **(इयम्)** यह **(पतिम्)** पति की **(इच्छन्ती)** इच्छा करती हुई **(वधूः)** स्त्री प्रिय स्वामी को **(एति)** प्राप्त होती है और **(यः)** जो स्त्री को प्राप्त होने वाला प्रिय **(इषिराम्)** प्राप्त होती हुई **(महिषीम्)** बहुत श्रेष्ठ गुणवाली स्त्री को प्राप्त होता है और जैसे वे दोनों सम्पूर्ण गृहकृत्य को **(वहाते)** चलावें वैसे **(ईम्)** जल वा सम्पूर्ण पदार्थों को अग्नि से चलाया गया **(रथः)** वाहन चलाता है वह **(अस्य)** इसके **(आ, श्रवस्यात्)** आत्मा के श्रवण की इच्छा करने वाले से **(घोषात् च)** और शब्दद्वारा से **(पुरू)** बहुतों और **(सहस्रा)** हजारों के **(परि)** सब ओर **(आ, वर्त्तयाते)** अच्छे प्रकार वर्त्तमान है॥३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे किया ब्रह्मचर्य्य जिन्होंने ऐसे स्त्री और पुरुष परस्पर पति और स्त्रीभाव की इच्छा करते हैं तथा परस्पर प्रसन्न प्रिय होकर संयुक्त हुए गृहाश्रम के व्यवहार को उत्तम रीति से पूर्ण करते हैं, वैसे ही जल और अग्नि संप्रयुक्त किये गये सम्पूर्ण व्यवहार को सिद्ध करते हैं और बहुत कोशों से भी मुहूर्त्तमात्र से वाहन आदि को शीघ्र पहुंचाते हैं, यह सब को जानना चाहिये॥३॥

**अथ सद्यो यानचालनविषयमाह॥**

अब शीघ्र यानचालनविषय को कहते हैं॥

**न स राजा॑ व्यथते॒ यस्मि॒न्निन्द्र॒स्ती॒व्रं सोम॒ं पिब॑ति॒ गोस॑खायम्।**

**आ स॑त्व॒नैरज॑ति॒ हन्ति॑ वृ॒त्रं क्षेति॑ क्षि॒तीः सु॒भगो॒ नाम॒ पुष्य॑न्॥४॥**

**न। सः। राजा॑। व्य॒थ॒ते॒। यस्मि॑न्। इन्द्र॑ः। ती॒व्रम्। सोम॑म्। पिब॑ति। गोऽस॑खायम्। आ। स॒त्व॒नैः। अज॑ति। हन्ति॑। वृ॒त्रम्। क्षेति॑। क्षि॒तीः। सु॒ऽभग॑ः। नाम॑। पुष्य॑न्॥४॥**

**पदार्थः**-**(न)** निषेधे **(सः)** **(राजा)** **(व्यथते)** भयं पीडां प्राप्नोति **(यस्मिन्)** **(इन्द्रः)** विद्युत् **(तीव्रम्)** **(सोमम्)** जलम् **(पिबति)** **(गोसखायम्)** गौर्भूगोलः सखा यस्य तम् **(आ)** **(सत्वनैः)** रथादिद्रव्यैः **(अजति)** गच्छति **(हन्ति)** नाशयति **(वृत्रम्)** मेघम् **(क्षेति)** निवासयत्यैश्वर्य्यं करोति वा **(क्षितीः)** मनुष्यान् **(सुभगः)** शोभनो भग ऐश्वर्य्यं यस्मात्तम् **(नाम)** प्रसिद्धिम् **(पुष्यन्)**॥४॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-यस्मिन् राजनीन्द्रो गोसखायं तीव्रं सोमं पिबति सत्वनैराजति वृत्रं हन्ति स राजा सुभगो नाम पुष्यन् क्षिती: क्षेति न व्यथते॥४॥

**भावार्थः**-यस्य राज्ञो वशे भूमिजलाग्निवायवो वर्त्तन्ते यस्य राज्ञ: कुतश्चिदर्य्यादेर्भयं कदाचिन्न जायते यशस्वी प्रसिद्धश्चाऽस्मिञ्जगति भवति॥४॥

**पदार्थः**-**(यस्मिन्)** जिस राजा में **(इन्द्रः)** बिजुली **(गोसखायम्)** भूगोल है मित्र जिसका उस **(तीव्रम्)** तीव्र **(सोमम्)** जल का **(पिबति)** पान करती **(सत्वनैः)** और रथ आदि द्रव्यों से **(आ, अजति)** आती और **(वृत्रम्)** मेघ का **(हन्ति)** नाश करती है **(सः)** वह **(राजा)** राजा **(सुभगः)** सुन्दर ऐश्वर्य्य जिससे उस **(नाम)** प्रसिद्धि को **(पुष्यन्)** पुष्ट करता हुआ **(क्षितीः)** मनुष्यों को **(क्षेति)** वसाता है वा ऐश्वर्य्य करता और **(न)** न **(व्यथते)** भय वा पीड़ा को प्राप्त होता है॥४॥

**भावार्थः**-जिस राजा के वश में भूमि, जल, अग्नि और पवन हैं, उस राजा को किसी शत्रु आदि से भय कभी नहीं होता और वह राजा यशस्वी और प्रसिद्ध इस जगत् में होता है॥४॥

**अथ विद्युद्विषयमाह॥**

अब विद्युद्विद्याविषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**पुष्या॒त् क्षेमे॑ अ॒भि योगे॑ भवात्यु॒भे वृतौ॑ सं॒यती॒ सं ज॑याति।**

**प्रि॒यः सूर्ये॑ प्रि॒यो अ॒ग्ना भ॑वाति॒ य इन्द्रा॑य सु॒तसो॑मो॒ ददा॑शत्॥५॥८॥**

**पुष्या॑त्। क्षेमे॑। अ॒भि। योगे॑। भ॒वा॒ति॒। उ॒भे इति॑। वृतौ॑। सं॒य॒ती इति॑ स॒म्ऽय॒ती। सम्। ज॒या॒ति॒। प्रि॒यः। सूर्ये॑। प्रि॒यः। अ॒ग्ना। भ॒वा॒ति॒। यः। इन्द्रा॑य। सु॒तऽसो॑मः। ददा॑शत्॥५॥**

**पदार्थः**-**(पुष्यात्)** पुष्टिं कुर्य्यात् **(क्षेमे)** रक्षणे **(अभि)** आभिमुख्ये **(योगे)** अप्राप्तस्य प्राप्तिलक्षणे **(भवाति)** भवेत् **(उभे)** **(वृतौ)** संवृतौ आच्छादने **(संयती)** सम्मिलिते **(सम्)** **(जयाति)** जयेत् **(प्रियः)** **(सूर्य्ये)** सवितरि **(प्रियः)** कामयमानः **(अग्ना)** अग्नौ **(भवाति)** भवेत् **(यः)** **(इन्द्राय)** ऐश्वर्य्योन्नतये **(सुतसोमः)** निष्पादितैश्वर्य्यः **(ददाशत्)** दद्यात्॥५॥

**अन्वयः**-यः सूर्य्ये प्रियोऽग्ना प्रियो भवाति क्षेमे योगेऽभि पुष्याद् वृतावुभे संयती विज्ञाय भवाति सुतसोमः सन्निन्द्राय ददाशत् सः जनः शत्रून् सं जयाति॥५॥

**भावार्थः**-ये मनुष्या अग्न्यादिविद्यां कामयमाना योगक्षेमसाधने कुशला दातारो न्यायप्रिया भवेयुस्त एव दुष्टाञ्जेतुं शक्नुयुरिति॥५॥

अत्रेन्द्रशिल्पिविद्वद्युवावस्थाविवाहवर्णनं सद्यो यानचालनं विद्युद्विद्यावर्णनं च कृतमत एतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति सप्तत्रिंशत्तमं सूक्तमष्टमो वर्गश्च समाप्तः॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः-(यः)** जो **(सूर्य्ये)** सूर्य में **(प्रियः)** कामना करने वाला **(अग्ना)** अग्नि में **(प्रियः)** कामना करता हुआ **(भवाति)** प्रसिद्ध होवे तथा **(क्षेमे)** रक्षण में और **(योगे)** अप्राप्त वस्तु की प्राप्ति के लक्षण में **(अभि)** सन्मुख **(पुष्यात्)** पुष्टि करे तथा **(वृतौ)** आच्छादन करने में **(उभे)** दोनों **(संयती)** मिली हुइयों का जानकर **(भवाति)** प्रसिद्ध होवे और **(सुतसोमः)** एकत्र किया ऐश्वर्य्य जिसने ऐसा जन **(इन्द्राय)** ऐश्वर्य्य की वृद्धि के लिये **(ददाशत्)** देवे वह जन शत्रुओं को **(सम्, जयाति)** अच्छे प्रकार जीते॥५॥

**भावार्थः-**जो मनुष्य अग्नि आदि विद्या की कामना करते हुए योगक्षेम के साधन में चतुर, दाता और न्याय में प्रीति करने वाले होवें, वे ही दुष्टों को जीतने को समर्थ होवें॥५॥

इस सूक्त में इन्द्र, शिल्पी, विद्वान् और युवावस्था में विवाह का वर्णन, शीघ्र वाहन का चलाना और बिजुली की विद्या का वर्णन किया, इससे इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ संगति जाननी चाहिये॥

**यह सैंतीसवां सूक्त और आठवां वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

**अथ पञ्चर्चस्याष्टात्रिंशत्तमस्य सूक्तस्य अत्रिर्ऋषिः। इन्द्रो देवता। १ अनुष्टुप्। २, ३, ४ निचृदनुष्टुप्। ५ विराडनुष्टुप् छन्दः। गान्धारः स्वरः॥**

*अथेन्द्रगुणानाह॥*

अब पांच ऋचा वाले अड़तीसवें सूक्त का आरम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में इन्द्र के गुणों को कहते हैं॥

**उरोष्ट इन्द्र राधसो विभ्वी रातिः शतक्रतो।**

**अधा नो विश्वचर्षणे द्युम्ना सुक्षत्र मंहय॥१॥**

**उरोः। ते। इन्द्र। राधसः। विऽभ्वी। रातिः। शतक्रतो इति शतऽक्रतो। अध। नः। विश्वऽचर्षणे। द्युम्ना। सुऽक्षत्र। मंहय॥१॥**

**पदार्थः**-(**उरोः**) बहोः (**ते**) तव (**इन्द्र**) परमैश्वर्य्ययुक्त (**राधसः**) धनस्य (**विभ्वी**) व्यापिका (**रातिः**) दानम् (**शतक्रतो**) अमितप्रज्ञ (**अधा**) आनन्तर्य्ये। अत्र **निपातस्य चे**ति दीर्घः। (**नः**) अस्मान् (**विश्वचर्षणे**) समस्तद्रष्टव्यदर्शन (**द्युम्ना**) यशसा धनेन वा (**सुक्षत्र**) शोभनं क्षयं द्रव्यं वा यस्य तत्सम्बुद्धौ (**मंहय**) महतः कुरु॥१॥

**अन्वयः**-हे विश्वचर्षणे शतक्रतो सुक्षत्रेन्द्र! यस्य त उरो राधसो विभ्वी रातिरस्त्यधा न्यायेन प्रजाः पालयसि स त्वं नोऽस्मान् द्युम्ना मंहय॥१॥

**भावार्थः**-यः पूर्णविद्योऽसंख्य[धन]प्रदः सर्वव्यवहारवित्परमैश्वर्य्यः सुशीलो विनयवान् भवेत् स राजा प्रजाः पालयितुं शक्नुयात्॥१॥

**पदार्थः**-हे (**विश्वचर्षणे**) सम्पूर्ण देखने योग्य पदार्थों के देखने वाले (**शतक्रतो**) अनन्त बुद्धि से युक्त और (**सुक्षत्र**) सुन्दर क्षत्र वा द्रव्य वाले (**इन्द्र**) अत्यन्त ऐश्वर्य्य से युक्त! जिन (**ते**) आपके (**उरोः**) बहुत (**राधसः**) धन का (**विभ्वी**) व्याप्त होने वाला (**रातिः**) दान है (**अधा**) इसके अनन्तर न्याय से प्रजाओं का पालन करते हो वह आप (**नः**) हम लोगों को (**द्युम्ना**) यश वा धन से (**मंहय**) बड़े करिये॥१॥

**भावार्थः**-जो पूर्णविद्या से युक्त, असंख्य धन देने और सम्पूर्ण व्यवहारों को जाननेवाला, अत्यन्त ऐश्वर्य्य से युक्त उत्तम स्वभाव और नम्रता से युक्त होवे, वह राजा प्रजाओं के पालन करने को समर्थ होवे॥१॥

**अथ विद्वद्विषयमाह॥**

अब विद्वद्विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥



www.9009.co.in

**यदीमिन्द्र श्रवाय्यमिषं शविष्ठ दधिषे।**

**पप्रथे दीर्घश्रुत्तमं हिरण्यवर्ण दुष्टरम्॥ २॥**

**यत्। ईम्। इन्द्र। श्रवाय्यम्। इषम्। शविष्ठ। दधिषे। पप्रथे। दीर्घश्रुत्ऽतमम्। हिरण्यऽवर्ण। दुस्तरम्॥ २॥**

**पदार्थः**-(**यत्**) यः (**ईम्**) प्राप्तव्यम् (**इन्द्र**) दुःखविदारक (**श्रवाय्यम्**) श्रोतुं योग्यम् (**इषम्**) अन्नादिकम् (**शविष्ठ**) अतिबल[युक्त] (**दधिषे**) (**पप्रथे**) प्रथते (**दीर्घश्रुत्तमम्**) यो दीर्घेण कालेन शृणोति सोऽतिशयितस्तम् (**हिरण्यवर्ण**) यो हिरण्यं वृणोति तत्सम्बुद्धौ (**दुष्टरम्**) दुःखेन तरितुं योग्यम्॥ २॥

**अन्वयः**-हे शविष्ठ हिरण्यवर्णेन्द्र! यद्यः श्रवाय्यं दुष्टरमिषं पप्रथे तमीं दुष्टरं दीर्घश्रुत्तमं त्वं दधिषे॥ २॥

**भावार्थः**-हे राजन्! यः पूर्णविद्यो धनधान्यपशुप्रजानां वर्धको ब्रह्मचर्येण महावीर्य्योऽस्ति तमेव राजकर्मचारिणं कुरु॥ २॥

**पदार्थः**-हे (**शविष्ठ**) अतिबलयुक्त और (**हिरण्यवर्ण**) सुवर्ण को स्वीकार करने वाले (**इन्द्र**) दुःख के नाश करनेवाले! (**यत्**) जो (**श्रवाय्यम्**) सुनने के योग्य और (**दुष्टरम्**) दुःख से तरने योग्य (**इषम्**) अन्न आदि को (**पप्रथे**) प्रकट करता है उस (**ईम्**) प्राप्त होने योग्य और दुःख से तरने योग्य (**दीर्घश्रुत्तमम्**) अतिकाल से अधिकतर सुनने वाले को आप (**दधिषे**) धारण करते हो॥ २॥

**भावार्थः**-हे राजन्! जो पूर्णविद्या से युक्त, धन-धान्य, पशु और प्रजाओं का बढ़ाने और ब्रह्मचर्य्य से बड़ा पराक्रम वाला है, उसी को राजकर्म्मचारी कीजिये॥ २॥

**अथ राजप्रजाधर्मविषयमाह॥**

अब राजप्रजाधर्मविषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**शुष्मासो ये ते अद्रिवो मेहना केतसापः।**

**उभा देवावभिष्टये दिवश्च ग्मश्च राजथः॥ ३॥**

**शुष्मासः। ये। ते। अद्रिऽवः। मेहना। केतऽसापः उभा। देवौ। अभिष्टये। दिवः। च। ग्मः। च। राजथः॥ ३॥**

**पदार्थः**-(**शुष्मासः**) अतिबलवन्तः (**ये**) (**ते**) (**अद्रिवः**) अद्रयो मेघा इव शैला वर्त्तन्ते यस्य राज्ये तत्सम्बुद्धौ (**मेहना**) वर्षणेन (**केतसापः**) ये केतेन प्रज्ञया सपन्ति ते (**उभा**) उभौ (**देवौ**) दिव्यगुणकर्मस्वभावौ (**अभिष्टये**) इष्टसिद्धये (**दिवः**) अन्तरिक्षस्य (**च**) (**ग्मः**) पृथिव्याः (**च**) (**राजथः**) प्रकाशेते॥ ३॥

**अन्वयः**-हे अद्रिवो राजन्! यथोभा सूर्य्याचन्द्रमसौ देवौ दिवश्च ग्मश्च मध्ये राजेते तथा ये शुष्मासः केतसापस्तेऽभिष्टये मेहना प्रजासु सन्ति सा प्रजा त्वं च सततं राजथः॥ ३॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-यथा सूर्य्याचन्द्रमसौ सर्वं जगत्प्रकाशयतस्तथैव प्रजाराजानौ मिलित्वा सर्वं राजधर्म्मं दीपयेताम्॥३॥

**पदार्थः**-हे **(अद्रिवः)** मेघों के सदृश पर्वत हैं जिसके राज्य में ऐसे राजन्! जैसे **(उभा)** दोनों सूर्य और चन्द्रमा **(देवौ)** उत्तम गुण, कर्म्म और स्वभाव वाले **(दिवः)** अन्तरिक्ष **(च)** और **(ग्मः)** पृथिवी के **(च)** भी मध्य में प्रकाशित हैं, वैसे **(ये)** जो **(शुष्मासः)** अधिक बलयुक्त **(केतसापः)** बुद्धि से सम्बन्ध रखने वाले जन **(ते)** वे **(अभिष्टये)** इष्टसिद्धि के लिये **(मेहना)** वर्षण से प्रजाओं में हैं, वह प्रजा और आप निरन्तर **(राजथः)** प्रकाशित होते हैं॥३॥

**भावार्थः**-जैसे सूर्य्य और चन्द्रमा सम्पूर्ण जगत् को प्रकाशित करते हैं, वैसे ही प्रजा और राजा मिल के सम्पूर्ण राजधर्म्म को प्रकाशित करें॥३॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**उतो नो अस्य कस्य चिद्दक्षस्य तव वृत्रहन्।**

**अस्मभ्यं नृम्णमा भरास्मभ्यं नृमणस्यसे॥४॥**

**उतो इति। नः। अस्य। कस्य। चित्। दक्षस्य। तव। वृत्रऽहन्। अस्मभ्यम्। नृम्णम्। आ। भर। अस्मभ्यम्। नृऽमनस्यसे॥४॥**

**पदार्थः**-**(उतो)** अपि **(नः)** अस्माकम् **(अस्य)** **(कस्य)** **(चित्)** अपि **(दक्षस्य)** **(तव)** **(वृत्रहन्)** यथा सूर्य्यो वृत्रं हन्ति तद्वद्वर्त्तमान **(अस्मभ्यम्)** **(नृम्णम्)** नरो रमन्ते यस्मिँस्तद्धनम् **(आ)** भर **(अस्मभ्यम्)** **(नृमणस्यसे)** आत्मनो नृम्णमिच्छसि॥४॥

**अन्वयः**-हे वृत्रहन्! तव नोऽस्माकमुतो अस्य कस्यचिद्दक्षस्य नृमणस्यसे स त्वमस्मभ्यं नृम्णमा भरास्मभ्यमभयं देहि॥४॥

**भावार्थः**-स एव नरोत्तमः स्याद्यो राष्ट्रस्य रक्षणे तत्परो भूत्वा वर्तेत॥४॥

**पदार्थः**-हे **(वृत्रहन्)** जैसे सूर्य्य मेघ का नाश करता है, उसके सदृश वर्तमान **(तव)** आपका और **(नः)** हम लोगों के **(उतो)** भी **(अस्य)** इसके **(कस्य)** किसके **(चित्)** भी **(दक्षस्य)** बलसम्बन्धी **(नृमणस्यसे)** अपने धन की इच्छा करते हो वह आप **(अस्मभ्यम्)** हम लोगों के लिये **(नृम्णम्)** मनुष्य रमते हैं जिसमें उस धन का **(आ, भर)** धारण कीजिये और **(अस्मभ्यम्)** हम लोगों के लिये अभय दीजिये॥४॥

**भावार्थः**-वही श्रेष्ठ मनुष्यों में मुख्य हो जो राज्य के रक्षण में तत्पर होकर वर्त्ताव करे॥४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥



www.9009.co.in

**नू त॑ आ॒भिर॒भिष्टि॑भि॒स्तव॒ शर्म॑ञ्छतक्रतो।**

**इन्द्र॒ स्याम॑ सुगो॒पाः शूर॒ स्याम॑ सुगो॒पाः॥५॥९॥**

**नु। ते॒। आ॒भिः। अ॒भिष्टि॑ऽभिः। तव॑। शर्म॑न्। श॒त॒क्र॒तो॒ इति॑ शतऽक्रतो। इन्द्र॑। स्याम॑। सु॒ऽगो॒पाः। शूर॑। स्याम॑। सु॒ऽगो॒पाः॥५॥**

**पदार्थः-(नू)** **(ते)** तव **(आभिः)** वर्त्तमानाभिः **(अभिष्टिभिः)** इष्टेच्छाभिः **(तव)** **(शर्मन्)** शर्म्मणि गृहे **(शतक्रतो)** अतुलप्रज्ञ **(इन्द्र)** राजन् **(स्याम)** **(सुगोपाः)** सुष्ठु रक्षकाः **(शूर)** निर्भय **(स्याम)** **(सुगोपाः)** यथावत्प्रजापालकाः॥५॥

**अन्वयः**-हे शतक्रतो इन्द्र! त आभिरभिष्टिभिस्तव शर्मन् वयं सुगोपाः स्याम। हे शूर! तव राज्ये सङ्ग्रामे वा वयं सुगोपा नू स्याम॥५॥

**भावार्थः**-हे राजन्! वयं सत्यप्रतिज्ञया प्रीत्या च तव गृहस्य शरीरस्य राज्यस्य सेनायाश्च सदैव रक्षका भूत्वा कृतकृत्या भवेमेति॥५॥

अत्रेन्द्रविद्वद्राजप्रजागुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इत्यष्टात्रिंशत्तमं सूक्तं नवमो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे **(शतक्रतो)** अत्यन्त बुद्धि वाले **(इन्द्र)** राजन्! **(ते)** आपकी **(आभिः)** इन वर्त्तमान **(अभिष्टिभिः)** इष्ट पदार्थों की इच्छाओं से **(तव)** आपके **(शर्मन्)** गृह में हम लोग **(सुगोपाः)** उत्तम प्रकार रक्षा करने वाले **(स्याम)** होवें। और हे **(शूर)** भय से रहित राजन्! आपके राज्य वा संग्राम में हम लोग **(सुगोपाः)** यथावत् प्रजा के पालन करने वाले **(नू)** निश्चय **(स्याम)** होवें॥५॥

**भावार्थः**-हे राजन्! हम लोग सत्य प्रतिज्ञा और प्रीति से आपके गृह, शरीर, राज्य और सेना के सदा ही रक्षक होके कृतकृत्य होवें॥५॥

इस सूक्त में इन्द्र, विद्वान्, राजा और प्रजा के गुण-वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह अड़तीसवां सूक्त और नववां वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

**अथ पञ्चर्चस्यैकोनचत्वारिंशत्तमस्य सूक्तस्याऽत्रिर्ऋषिः। इन्द्रो देवता। १ विराडनुष्टुप्। २, ३ निचृदनुष्टुप् छन्दः। गान्धारः स्वरः। ४ स्वराडुष्णिक् छन्दः। ऋषभः स्वरः। ५ बृहती छन्दः। मध्यमः स्वरः॥**

***अथेन्द्रगुणानाह॥***

अब पांच ऋचा वाले उनचालीसवें सूक्त का प्रारम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में इन्द्र के गुणों को कहते हैं॥

**यदिन्द्र चित्र मेहनास्ति त्वादातमद्रिवः।**

**राधस्तन्नो विदद्वस उभयाहस्त्या भर॥ १॥**

**यत्। इन्द्र। चित्र। मेहना। अस्ति। त्वाऽदातम्। अद्रिऽवः। राधः। तत्। नः। विदद्वसो इति विदत्ऽवसो। उभयाहस्ति। आ। भर॥ १॥**

**पदार्थः**-(**यत्**) (**इन्द्र**) विद्यैश्वर्य्ययुक्त (**चित्र**) अद्भुतगुणकर्मस्वभाव (**मेहना**) वृष्टिः (**अस्ति**) (**त्वादातम्**) त्वया शोधितम् (**अद्रिवः**) सूर्य्य इव विद्याप्रकाशक (**राधः**) द्रव्यम् (**तत्**) (**नः**) अस्मभ्यम् (**विदद्वसो**) लब्धधन (**उभयाहस्ति**) उभये हस्ता प्रवर्त्तन्ते यस्मिँस्तत् (**आ, भर**)॥ १॥

**अन्वयः**-हे अद्रिवो विदद्वसो चित्रेन्द्र! यत्त्वादातं राधो मेहनेवास्ति तदुभयाहस्ति न आ भर॥ १॥

**भावार्थः**-स एव राजा धनाढ्यो वा सुकृती स्याद्यो वृष्टिवदन्येषां कामान् वर्षेत्॥ १॥

**पदार्थः**-हे (**अद्रिवः**) सूर्य के सदृश विद्या के प्रकाश करने वाले (**विदद्वसो**) धन को प्राप्त हुए (**चित्र**) अद्भुत गुण, कर्म्म और स्वभाव वाले (**इन्द्र**) विद्या और ऐश्वर्य्य से युक्त! (**यत्**) जो (**त्वादातम्**) आपसे शुद्ध किया (**राधः**) द्रव्य (**मेहना**) वृष्टि के सदृश (**अस्ति**) है (**तत्**) उस (**उभयाहस्ति**) उभयाहस्ति अर्थात् दो प्रकार के हाथ प्रवृत्त होते हैं जिसमें ऐसे को (**नः**) हम लोगों के लिये (**आ, भर**) सब प्रकार धारण कीजिये॥ १॥

**भावार्थः**-वही राजा धन से युक्त वा कुशली होवे, जो वृष्टि के सदृश अन्यों के मनोरथों को वर्षावे॥ १॥

**अथ विद्वद्विषयमाह॥**

अब विद्वद्विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**यन्मन्यसे वरेण्यमिन्द्र द्युक्षं तदा भर।**

**विद्याम तस्य ते वयमकूपारस्य दावने॥ २॥**

**यत्। मन्यसे। वरेण्यम्। इन्द्र। द्युक्षम्। तत्। आ। भर। विद्याम। तस्य। ते। वयम्। अकूपारस्य। दावने॥ २॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**यत्**) (**मन्यसे**) (**वरेण्यम्**) वरितुमर्हम् (**इन्द्र**) परमैश्वर्य्ययुक्त (**द्युक्षम्**) धर्मविद्याप्रकाशयुक्तम् (**तत्**) (**आ**) (**भर**) (**विद्याम**) जानीयाम (**तस्य**) (**ते**) (**वयम्**) (**अकूपारस्य**) अकुत्सितः पारो यस्य तस्य (**दावने**) दात्रे॥२॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! त्वं यद्वरेण्यं द्युक्षं मन्यसे तदस्मभ्यमा भर यतोऽकूपारस्य तस्य ते दावने वयं प्रयत्नं विद्याम॥२॥

**भावार्थः**-हे विद्वंस्त्वं यद्यदुत्तमं जानासि तदस्मान् प्रत्युपदिश येन वयं तव राजकार्य्यमलंकर्त्तुं शक्नुयाम॥२॥

**पदार्थः**-हे (**इन्द्र**) अत्यन्त ऐश्वर्य से युक्त! आप (**यत्**) जिस (**वरेण्यम्**) स्वीकार करने योग्य (**द्युक्षम्**) धर्म्म और विद्या के प्रकाश से युक्त को (**मन्यसे**) मानते हो (**तत्**) उसको हम लोगों के लिये (**आ, भर**) धारण कीजिये जिससे (**अकूपारस्य**) श्रेष्ठ है पार जिनका (**तस्य**) उन (**ते**) आपके (**दावने**) दाता के लिये (**वयम्**) हम लोग प्रयत्न को (**विद्याम**) जानें॥२॥

**भावार्थः**-हे विद्वन्! आप जिस-जिस उत्तम विषय को जानते हैं, उसका हम लोगों के प्रति उपदेश कीजिये, जिससे हम लोग आपके राजकार्य्य को पूर्णरूप से करने को समर्थ होवें॥२॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**यत्ते॑ दि॒त्सु प्र॒राध्यं॒ मनो॒ अस्ति॑ श्रु॒तं बृ॒हत्।**

**तेन॑ दृ॒ळहा चि॑दद्रिव॒ आ वाजं॑ दर्षि सा॒तये॑॥३॥**

**यत्। ते॒। दि॒त्सु। प्र॒ऽराध्य॑म्। मन॑ः। अस्ति॑। श्रु॒तम्। बृ॒हत्। तेन॑। दृ॒ळहा। चि॒त्। अ॒द्रि॒ऽव॒ः। आ। वाज॑म्। द॒र्षि। सा॒तये॑॥३॥**

**पदार्थः**-(**यत्**) (**ते**) तव (**दित्सु**) दातुमिच्छु (**प्रराध्यम्**) प्रकर्षेण साद्धुं योग्यम् (**मनः**) चित्तम् (**अस्ति**) (**श्रुतम्**) (**बृहत्**) महत् (**तेन**) (**दृळहा**) दृढानि (**चित्**) (**अद्रिवः**) सुशोभितशैलयुक्त (**आ**) (**वाजम्**) सङ्ग्रामम् (**दर्षि**) विदृणासि (**सातये**) धर्म्माधर्म्मविभागाय॥३॥

**अन्वयः**-हे अद्रिवो विद्वंस्ते यद्दित्सु प्राध्यं श्रुतं बृहन्मनोऽस्ति तेन चित्त्वं दृळहा रक्षसि सातये वाजमा दर्षि॥३॥

**भावार्थः**-यतो मनुष्यो ब्रह्मचर्य्यविद्यायोगाभ्याससत्यभाषणाद्याचरणेन सर्वविद्यायुक्तं मनः सम्पाद्य धर्मेण सार्वजनिकहिताय दुष्टान् दण्डयति तस्मात् सोऽत्युत्तमोऽस्ति॥३॥

**पदार्थः**-हे (**अद्रिवः**) उत्तम प्रकार शोभित पर्वत से युक्त विद्वन्! (**ते**) आपके (**यत्**) जो (**दित्सु**) देने की इच्छा करने वाला (**प्रराध्यम्**) अत्यन्त साधने योग्य (**श्रुतम्**) श्रवण और (**बृहत्**) बड़ा (**मनः**)



www.9009.co.in

चित्त **(अस्ति)** है **(तेन)** इससे **(चित्)** भी आप **(दृळ्हा)** दृढ़ वस्तुओं की रक्षा करते हो और **(सातये)** धर्म और अधर्म के [विभाग के] लिये **(वाजम्)** संग्राम का **(आ, दर्षि)** भङ्ग करते हो॥३॥

**भावार्थ:-**जिससे मनुष्य ब्रह्मचर्य्य, विद्या, योगाभ्यास और सत्यभाषण आदि के आचरण से सम्पूर्ण विद्याओं से युक्त मन को सिद्ध कर धर्म से सम्पूर्ण जनों के हित के लिये दुष्टों को दण्ड देता है, इससे वह अति उत्तम है॥३॥

**अथ राजप्रजाविषयमाह॥**

अब राजप्रजाविषय को कहते हैं॥

**मंहिष्ठं वो मघोनां राजानं चर्षणीनाम्।**

**इन्द्रमुप प्रशस्तये पूर्वीभिर्जुजुषे गिरः॥४॥**

**मंहिष्ठम्। वः। मघोनाम्। राजानम्। चर्षणीनाम्। इन्द्रम्। उप। प्रऽशस्तये। पूर्वीभिः। जुजुषे। गिरः॥४॥**

**पदार्थ:-(मंहिष्ठम्)** अतिशयेन महान्तम् **(वः)** युष्माकम् **(मघोनाम्)** बह्वैश्वर्य्ययुक्तानाम् **(राजानम्)** **(चर्षणीनाम्)** मनुष्याणाम् **(इन्द्रम्)** परमैश्वर्य्यपदम् **(उप)** **(प्रशस्तये)** प्रशंसायै **(पूर्वीभिः)** प्राचीनाभिः प्रजाभिः सह **(जुजुषे)** सेवसे प्रीणासि वा **(गिरः)** वाणीः॥४॥

**अन्वय:-**हे मनुष्या! यं वो मघोनां चर्षणीनां मंहिष्ठमिन्द्रं राजानं प्रशस्तये पूर्वीभिः सनातनीभिः सह गिर उप जुजुषे ते स च सर्वत्र सुखिनो जायन्ते॥४॥

**भावार्थ:-**हे मनुष्या! ये राजानो याः प्रजाश्च परस्परमानुकूल्ये वर्त्तन्ते ते सदैवाऽऽनन्दिता भवन्ति॥४॥

**पदार्थ:-**हे मनुष्यो! जिस **(वः)** आप लोगों और **(मघोनाम्)** बहुत ऐश्वर्य्यों से युक्त **(चर्षणीनाम्)** मनुष्यों के **(मंहिष्ठम्)** अत्यन्त बड़े और **(इन्द्रम्)** अत्यन्त ऐश्वर्य्य के देने वाले **(राजानम्)** राजा को **(प्रशस्तये)** प्रशंसा के लिये **(पूर्वीभिः)** प्राचीन प्रजाओं के साथ **(गिरः)** वाणियों को **(उप, जुजुषे)** समीप से सेवते वा प्रसन्नता करते हो, वे और वह सर्वत्र सुखी होते हैं॥४॥

**भावार्थ:-**हे मनुष्यो! जो राजा और जो प्रजाजन परस्पर अनुकूलता अर्थात् प्रीतिपूर्वक वर्त्ताव रखते, वे सदा आनन्दित होते हैं॥४॥

**पुनर्विद्वद्विषयमाह॥**

फिर विद्वद्विषय को कहते हैं॥

**अस्मा इत्काव्यं वच उक्थमिन्द्राय शंस्यम्।**

**तस्मा उ ब्रह्मवाहसे गिरो वर्धन्त्यत्रयो गिरः शुम्भन्त्यत्रयः॥५॥१०॥**



www.9009.co.in

**अस्मै॑। इत्। काव्य॑म्। वच॑:। उ॒क्थम्। इन्द्रा॑य। शंस्य॑म्। तस्मै॑। ऊँ॒ इति॑। ब्रह्म॑ऽवाहसे। गिर॑:। व॒र्ध॒न्ति॒। अत्र॑य:। गिर॑:। शु॒म्भ॒न्ति॒। अत्र॑य:॥५॥**

**पदार्थ:**-(**अस्मै**) (**इत्**) (**काव्यम्**) कविभि: कमनीयम् (**वच:**) (**उक्थम्**) प्रशंसितम् (**इन्द्राय**) परमैश्वर्य्याय (**शंस्यम्**) स्तोतुं योग्यम् (**तस्मै**) (उ) (**ब्रह्मवाहसे**) यो ब्रह्माणि धनानि वहति प्राप्नोति स: (**गिर:**) (**वर्धन्ति**) वर्धन्ते। अत्र व्यत्ययेन परस्मैपदम्। (**अत्रय:**) अविद्यमानत्रिविधदु:खा: (**गिर:**) वाण्य: (**शुम्भन्ति**) शुभाचरणयन्ति (**अत्रय:**) अविद्यमानत्रिविधगुणानां दोषा येषु॥५॥

**अन्वय:**-हे मनुष्या! य इन्द्राय काव्यमुक्थं शंस्यं वच: प्रयुङ्क्ते अस्मा इत्तस्मै ब्रह्मवाहसे जनायाऽत्रयो गिरो वर्धन्त्यु अत्रयो गिर: शुम्भन्ति॥५॥

**भावार्थ:**-हे मनुष्या! ये विद्वांसो गिर: शोधयन्ति ते कवित्वमैश्वर्य्यं च प्राप्नुवन्तीति॥५॥

अत्रेन्द्रराजप्रजाविद्वद्गुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इत्येकोनचत्वारिंशत्तमं सूक्तं दशमो वर्गश्च समाप्त:॥**

**पदार्थ:**-हे मनुष्यो! जो (**इन्द्राय**) अत्यन्त ऐश्वर्य्य के लिये (**काव्यम्**) कवियों विद्वानों से कामना करने योग्य (**उक्थम्**) प्रशंसित (**शंस्यम्**) स्तुति करने योग्य (**वच:**) वचन का प्रयोग करता है (**अस्मै**) इसके लिये (**इत्**) और (**तस्मै**) उस (**ब्रह्मवाहसे**) धनों को प्राप्त होने वाले जन के लिये (**अत्रय:**) नहीं है तीन प्रकार के दु:ख जिनमें वे (**गिर:**) वाणियां (**वर्धन्ति**) बढ़ती हैं (उ) और (**अत्रय:**) नहीं हैं तीन प्रकार के गुणों के दोष जिनमें व (**गिर:**) वाणियां (**शुम्भन्ति**) उत्तम आचरण कराती हैं॥५॥

**भावार्थ:**-हे मनुष्यो! जो विद्वान् जन वाणियों को विद्याभ्यास से शुद्ध करते हैं, वे कवित्व और ऐश्वर्य्य को प्राप्त होते हैं॥५॥

इस सूक्त में इन्द्र, राजा, प्रजा और विद्वानों के गुणों का वर्णन होने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ संगति जाननी चाहिये॥

**यह उनचालीसवां सूक्त और दशम वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

**अथ नवर्चस्य चत्वारिंशत्तमस्य सूक्तस्याऽत्रिर्ऋषिः। १-४ इन्द्रः। ५ सूर्य्यः। ६-९ अत्रिर्देवता। १ निचृदुष्णिक्। २, ३ उष्णिक्। ५, ९ स्वराडुष्णिक् छन्दः। ऋषभः स्वरः। ४ त्रिष्टुप्। ६, ८ निचृत्त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः। ७ भुरिक्पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः॥**

***अथेन्द्रगुणानाह॥***

अब नव ऋचा वाले चालीसवें सूक्त का आरम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में इन्द्र के गुणों को कहते हैं॥

**आ याह्यद्रिभिः सुतं सोमं सोमपते पिब।**

**वृषन्निन्द्र वृषभिर्वृत्रहन्तम॥ १॥**

**आ। याहि। अद्रिऽभिः। सुतम्। सोमम्। सोमऽपते। पिब। वृषन्। इन्द्र। वृषऽभिः। वृत्रहन्ऽतम॥ १॥**

**पदार्थः**-(**आ**) (**याहि**) आगच्छ (**अद्रिभिः**) मेघैः (**सुतम्**) निष्पन्नम् (**सोमम्**) सोमलतादिरसम् (**सोमपते**) ऐश्वर्य्यपालक (**पिब**) (**वृषन्**) वृष इवाचरन् (**इन्द्र**) ऐश्वर्य्यमिच्छुक (**वृषभिः**) बलिष्ठैस्सह (**वृत्रहन्तम**) यो वृत्रं धनं हन्ति प्राप्नोति सोऽतिशयितस्तत्सम्बुद्धौ॥ १॥

**अन्वयः**-हे सोमपते वृषन् वृत्रहन्तमेन्द्र! वृषभिस्सहितस्त्वमद्रिभिः सुतं सोमं पिब सङ्ग्राममा याहि॥ १॥

**भावार्थः**-य ऐश्वर्यमिच्छेयुस्तेऽवश्यं बलबुद्धिं वर्धयेयुः॥ १॥

**पदार्थः**-हे (**सोमपते**) ऐश्वर्य्य के स्वामिन् (**वृषन्**) बैल के सदृश आचरण करते हुए (**वृत्रहन्तम**) अत्यन्त धन को प्राप्त होने और (**इन्द्र**) ऐश्वर्य की इच्छा करने वाले जन! (**वृषभिः**) बलिष्ठों के साथ आप (**अद्रिभिः**) मेघों से (**सुतम्**) उत्पन्न हुए (**सोमम्**) सोमलता आदि ओषधियों के रस को (**पिब**) पान करिये और सङ्ग्राम को (**आ, याहि**) प्राप्त हूजिये॥ १॥

**भावार्थः**-जो ऐश्वर्य्य की इच्छा करें, वे अवश्य बल और बुद्धि की वृद्धि करें॥ १॥

**अथ मेघविषयमाह॥**

अब मेघविषय को कहते हैं॥

**वृषा ग्रावा वृषा मदो वृषा सोमो अयं सुतः।**

**वृषन्निन्द्र वृषभिर्वृत्रहन्तम॥ २॥**

**वृषा। ग्रावा। वृषा। मदः। वृषा। सोमः। अयम्। सुतः। वृषन्। इन्द्र। वृषऽभिः। वृत्रहन्ऽतम॥ २॥**

**पदार्थः**-(**वृषा**) वृष्टिकरः (**ग्रावा**) मेघः (**वृषा**) आनन्दकरः (**मदः**) हर्षः (**वृषा**) सुखवर्षकः (**सोमः**) ओषधिगणः (**अयम्**) (**सुतः**) निष्पादितः (**वृषन्**) बलमिच्छन् (**इन्द्र**) दुःखविदारक (**वृषभिः**) मेघादिभिः (**वृत्रहन्तम**) अतिशयेन शत्रुविनाशक॥ २॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे वृषन् वृत्रहन्तमेन्द्र! योऽयं वृषा वृषा ग्रावा मदो वृषा सोमः सुतोऽस्ति तैर्वृषभिः कार्य्याणि साध्नुहि॥२॥

**भावार्थः**-ये मेघादयः पदार्थाः सन्ति तैर्मनुष्या बहूनि कार्य्याणि साद्धुं शक्नुवन्ति॥२॥

**पदार्थः**-**(वृषन्)** बल की इच्छा करते हुए **(वृत्रहन्तम)** अतिशय करके शत्रुओं के और **(इन्द्र)** दुःखों के नाश करने वाले जन! जो **(अयम्)** यह **(वृषा)** आनन्द को उत्पन्न करने और **(वृषा)** वृष्टि करने वाला **(ग्रावा)** मेघ और **(मदः)** आनन्द तथा **(वृषा)** सुख का वर्षाने वाला **(सोमः)** ओषधियों का समूह **(सुतः)** उत्पन्न किया गया है उन **(वृषभिः)** मेघादिकों से कार्य्यों को सिद्ध कीजिये॥२॥

**भावार्थः**-जो मेघ आदि पदार्थ हैं, उनसे मनुष्य बहुत कार्य्यों को सिद्ध कर सकते हैं॥२॥

**पुनरिन्द्रपदवाच्यराजविषयमाह॥**

फिर इन्द्रपदवाच्य राजा के गुणों को कहते हैं॥

**वृषा॑ त्वा॒ वृष॑णं हुवे॒ वज्रि॑ञ्चि॒त्राभि॑रू॒तिभि॑ः।**

**वृष॑न्निन्द्र॒ वृष॑भिर्वृत्रहन्तम॥**

**वृषा॑। त्वा॒। वृष॑णम्। हु॒वे॒। वज्रि॑न्। चि॒त्राभि॑ः। ऊ॒तिऽभि॑ः। वृष॑न्। इ॒न्द्र॒। वृष॑ऽभिः। वृ॒त्र॒ह॒न्ऽत॒म॒॥३॥**

**पदार्थः**-**(वृषा)** वृष्टिकरः **(त्वा)** त्वाम् **(वृषणम्)** बलिष्ठम् **(हुवे)** **(वज्रिन्)** बहुशस्त्रास्त्रायुक्त **(चित्राभिः)** अद्भुताभिः **(ऊतिभिः)** रक्षादिभिः क्रियाभिः **(वृषन्)** सुखकर **(इन्द्र)** ऐश्वर्य्यमिच्छुक **(वृषभिः)** दुष्टशक्तिबन्धकैः **(वृत्रहन्तम)** अतिशयेन दुष्टविनाशक॥३॥

**अन्वयः**-हे वृषन् वज्रिन् वृत्रहन्तमेन्द्र! वृषाहं चित्राभिरूतिभिर्वृषभिश्च सह वर्त्तमानं वृषणं त्वा हुवे॥३॥

**भावार्थः**-मनुष्यैः सूर्य्यवद्वर्त्तमानः सर्वथा गुणसम्पन्नो बलिष्ठो न्यायकारी राजा स्वीकार्यो येन सर्वथा रक्षा स्यात्॥३॥

**पदार्थः**-हे **(वृषन्)** सुख करने वाले **(वज्रिन्)** बहुत शस्त्र और अस्त्रों से युक्त **(वृत्रहन्तम)** अत्यन्त दुष्टों के नाश करने वाले **(इन्द्र)** ऐश्वर्य्य की इच्छा करनेवाले! **(वृषा)** वृष्टि करने वाला मैं **(चित्राभिः)** अद्भुत **(ऊतिभिः)** रक्षादि क्रियाओं और **(वृषभिः)** दुष्टों के सामर्थ्य को बांधने वालों के साथ वर्त्तमान **(वृषणम्)** बलिष्ठ **(त्वा)** आप को **(हुवे)** बुलाता हूं॥३॥

**भावार्थः**-मनुष्यों को चाहिये कि सूर्य्य के सदृश वर्त्तमान और सब प्रकार गुणों से सम्पन्न बलिष्ठ, न्यायकारी राजा को स्वीकार करें, जिससे सब प्रकार से रक्षा होवे॥३॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**ऋ॒जी॒षी व॒ज्री वृ॑ष॒भस्तु॑रा॒षाट्छु॒ष्मी राजा॑ वृ॒त्र॒हा सोम॑पावा।**



www.9009.co.in

**युक्त्वा हरि॑भ्या॒मुप॑ यासद॒र्वाङ्माध्यं॑दिने॒ सव॑ने मत्स॒दिन्द्रः॑॥४॥**

**ऋ॒जी॒षी। व॒ज्री। वृ॒ष॒भः। तु॒रा॒षाट्। शु॒ष्मी। राजा॑। वृ॒त्र॒ऽहा। सो॒म॒ऽपावा॑। यु॒क्त्वा। हरि॑ऽभ्याम्। उप॑। या॒स॒त्। अ॒र्वाङ्। माध्यं॑दिने। सव॑ने। म॒त्स॒त्। इन्द्रः॑॥४॥**

**पदार्थः-(ऋजीषी)** सरलादियुक्तः **(वज्री)** शस्त्रास्त्राभृत् **(वृषभः)** बलिष्ठः **(तुराषाट्)** तुरान् हिंसकान् शत्रून् सहते **(शुष्मी)** शुष्मं बलिष्ठं सैन्यं विद्यते यस्य सः **(राजा)** विद्याविनयाभ्यां प्रकाशमानः **(वृत्रहा)** दुष्टशत्रुहन्ता **(सोमपावा)** श्रेष्ठौषधिरसस्य पाता **(युक्त्वा)** **(हरिभ्याम्)** अश्वाभ्याम् **(उप)** **(यासत्)** उपागच्छेत् **(अर्वाङ्)** पश्चात् **(माध्यन्दिने)** मध्याह्ने **(सवने)** भोजनसमये **(मत्सत्)** आनन्देत् **(इन्द्रः)** परमैश्वर्य्यकर्त्ता॥४॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! य ऋजीषी वज्री वृषभः शुष्मी तुराषाट् सोमपावा वृत्रहेन्द्रो राजा हरिभ्यां यानं युक्त्वाऽर्वाङुप यासन्माध्यन्दिने सवने मत्सत्तमेवाऽधिष्ठातारं कुर्वन्तु॥४॥

**भावार्थः**-स एव राजा प्रशस्तः स्याद्यो राज्याङ्गानि विद्याश्च गृहीत्वा प्रजापालनाय प्रयतेत॥४॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो **(ऋजीषी)** सरल आदि से युक्त **(वज्री)** शस्त्र और अस्त्रों का धारण करने वाला **(वृषभः)** बलिष्ठ **(शुष्मी)** बलिष्ठ सेना से युक्त **(तुराषाट्)** हिंसा करने वाले शत्रुओं को सहने **(सोमपावा)** श्रेष्ठ ओषधियों के रस को पीने **(वृत्रहा)** दुष्ट शत्रुओं के नाश करने और **(इन्द्रः)** अत्यन्त ऐश्वर्य्य का करने वाला **(राजा)** विद्या और विनय से प्रकाशमान **(हरिभ्याम्)** घोड़ों से वाहन को **(युक्त्वा)** युक्त करके **(अर्वाङ्)** पीछे **(उप, यासत्)** समीप प्राप्त होवे और **(माध्यन्दिने)** मध्याह्न में **(सवने)** भोजन के समय **(मत्सत्)** आनन्दित होवे, उसी को अधिष्ठाता करो॥४॥

**भावार्थः**-वही राजा प्रशंसित होवे जो राज्य के अङ्गों और विद्याओं को ग्रहण करके प्रजापालन के लिये प्रयत्न करे॥४॥

**अथ सूर्य्यविषयमाह॥**

अब सूर्य्यविषय को कहते हैं॥

**यत्त्वा॑ सूर्य॒ स्व॑र्भानु॒स्तम॒साविं॑ध्यदासु॒रः।**

**अक्षे॑त्रवि॒द्यथा॑ मु॒ग्धो भुव॑नान्यदीधयुः॥५॥११॥**

**यत्। त्वा॒। सू॒र्य॒। स्वः॑ऽभानुः। तम॑सा। अवि॑ध्यत्। आ॒सु॒रः। अक्षे॑त्रऽवित्। यथा॑। मु॒ग्धः। भुव॑नानि। अ॒दी॒ध॒युः॥५॥**

**पदार्थः-(यत्)** यः **(त्वा)** त्वाम् **(सूर्य्य)** सूर्य्य इव वर्त्तमान **(स्वर्भानुः)** यः स्वरादित्यं भाति स विद्युद्रूपः **(तमसा)** रात्र्यन्धकारेण **(अविध्यत्)** युक्तो भवति **(आसुरः)** अनुद्भूतरूपः **(अक्षेत्रवित्)** यः क्षेत्रं रेखागणितं न वेत्ति **(यथा)** **(मुग्धः)** मूढः **(भुवनानि)** लोकान् **(अदीधयुः)** दृश्यन्ते। अत्र व्यत्ययेन परस्मैपदम्॥५॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे सूर्य्य! यथाऽक्षेत्रविन्मुग्धः किमपि कर्त्तुं न शक्नोति तथा यद्यः स्वर्भानुरासुरस्तमसाविध्यद् येन सूर्य्येण भुवनान्यदीधयुस्तं विदन्तं त्वा वयमाश्रयेम॥५॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यथा विद्युद् गुप्ता सत्यन्धकारे न प्रकाशते तथैवाऽविदुषो मूढस्यात्मा न प्रदीप्यते यथा सूर्य्यप्रकाशेन सर्वे लोकाः प्रकाश्यन्ते तथैव विदुष आत्मा सर्वान्त्सत्याऽसत्यव्यवहारान् प्रकाशयति॥५॥

**पदार्थः**-हे **(सूर्य्य)** सूर्य्य के सदृश वर्तमान! **(यथा)** जैसे **(अक्षेत्रवित्)** क्षेत्र अर्थात् रेखागणित को नहीं जानने वाला **(मुग्धः)** मूर्ख कुछ भी नहीं कर सकता है, वैसे **(यत्)** जो **(स्वर्भानुः)** सूर्य्य से प्रकाशित होने वाला बिजुलीरूप **(आसुरः)** जिसका प्रकट रूप नहीं वह **(तमसा)** रात्रि के अन्धकार से **(अविध्यत्)** युक्त होता है, जिस सूर्य्य से **(भुवनानि)** लोक **(अदीधयुः)** देखे जाते हैं, उसके जानने वाले **(त्वा)** आपका हम लोग आश्रयण करें॥५॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जैसे बिजुली गुप्त हुई अन्धकार में नहीं प्रकाशित होती है, वैसे ही विद्यारहित मूर्खजन का आत्मा नहीं प्रकाशित होता है और जैसे सूर्य्य के प्रकाश से सम्पूर्ण लोक प्रकाशित होते हैं, वैसे ही विद्वान् का आत्मा सम्पूर्ण सत्य और असत्य व्यवहारों को प्रकाशित करता है॥५॥

**पुनः सूर्यविषयमाह॥**

फिर सूर्य्यविषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**स्वर्भानोरध यदिन्द्र माया अवो दिवो वर्तमाना अवाहन्।**

**गूळ्हं सूर्यं तमसापव्रतेन तुरीयेण ब्रह्मणाविन्ददत्रिः॥६॥**

**स्वःऽभानोः। अध। यत्। इन्द्र। मायाः। अवः। दिवः। वर्तमानाः। अवऽअहन्। गूळ्हम्। सूर्यम्। तमसा। अपऽव्रतेन। तुरीयेण। ब्रह्मणा। अविन्दत्। अत्रिः॥६॥**

**पदार्थः**-**(स्वर्भानोः)** आदित्यप्रकाशस्य **(अध)** आनन्तर्य्ये **(यत्)** याः **(इन्द्र)** विद्वन् **(मायाः)** प्रज्ञाः **(अवः)** अधस्थात् **(दिवः)** प्रकाशमानाः **(वर्त्तमानाः)** **(अवाहन्)** वहन्ति **(गूळ्हम्)** गुप्तं विद्युदाख्यम् **(सूर्य्यम्)** सवितुः सवितारम् **(तमसा)** अन्धकारेण **(अपव्रतेन)** अन्यथा वर्त्तमानेन **(तुरीयेण)** चतुर्थेन **(ब्रह्मणा)** धनेन **(अविन्दत्)** लभते **(अत्रिः)** सततं गामी॥६॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! यद्या स्वर्भानोर्दिवो वर्त्तमाना माया अपव्रतेन तमसा तुरीयेण ब्रह्मणा गूळ्हं सूर्य्यमवोऽवाहन्नधात्रिरविन्दत् तास्त्वं विजानीहि॥६॥

**भावार्थः**-यथा गुप्ता विद्युदीप्तयो महत्कार्य्यं साध्नुवन्ति तथैव विदुषां प्रज्ञाः सर्वाणि प्रज्ञानकृत्यानि साध्नुवन्ति॥६॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-हे **(इन्द्र)** विद्वन्! **(यत्)** जो **(स्वर्भानोः)** सूर्य्य के प्रकाशक के सम्बन्ध में **(दिवः)** प्रकाशमान **(वर्त्तमानाः)** स्थित **(मायाः)** बुद्धियां **(अपव्रतेन)** अन्यथा वर्त्तमान **(तमसा)** अन्धकार से और **(तुरीयेण)** चौथे **(ब्रह्मणा)** धन से **(गूळहम्)** गुप्त बिजलीनामक **(सूर्यम्)** सूर्य के उत्पन्न करने वाले को **(अवः)** नीचे **(अवाहन्)** प्राप्त करती हैं **(अध)** इसके अनन्तर **(अत्रिः)** निरन्तर चलने वाला **(अविन्दत्)** प्राप्त होता है, उनको आप जानिये॥६॥

**भावार्थः**-जैसे गुप्त बिजुली के प्रकाश बड़े कार्य को सिद्ध करते हैं, वैसे ही विद्वानों की बुद्धियां सम्पूर्ण विज्ञान कार्य्यों को सिद्ध करती हैं॥६॥

**अथोक्तविषये राजविषयमाह॥**

अब उक्तविषय में राजविषय को कहते हैं॥

**मा मामिमं तव सन्तमत्र इरस्या द्रुग्धो भियसा नि गारीत्।**

**त्वं मित्रो असि सत्यराधास्तौ मेहावतं वरुणश्च राजा॥७॥**

**मा। माम्। इमम्। तव। सन्तम्। अत्रे। इरस्या। द्रुग्धः। भियसा। नि। गारीत्। त्वम्। मित्रः। असि। सत्यऽराधाः। तौ। मा। इह। अवतम्। वरुणः। च। राजा॥७॥**

**पदार्थः**-**(मा)** निषेधे **(माम्)** **(इमम्)** **(तव)** **(सन्तम्)** **(अत्रे)** अविद्यमानत्रिविधदुःख **(इरस्या)** अन्नेच्छया **(द्रुग्धः)** प्राप्तद्रोहः **(भियसा)** भयेन **(नि)** **(गारीत्)** निगलेत् **(त्वम्)** **(मित्रः)** सखा **(असि)** **(सत्यराधाः)** सत्याचरणेन सत्यं वा राधो धनं यस्य **(तौ)** **(मा)** माम् **(इह)** **(अवतम्)** रक्षतम् **(वरुणः)** वरः सेनेशः **(च)** **(राजा)** सर्वाधिष्ठाता॥७॥

**अन्वयः**-हे अत्रे! इरस्या भियसा द्रुग्ध इमन्तवाश्रितं सन्तं मां मा नि गारीद्यस्त्वं मित्रः सत्यराधा असि स त्वं राजा वरुणश्च ताविह मावतम्॥७॥

**भावार्थः**-हे धर्मिष्ठौ राजसेनाध्यक्षावन्यायेन कस्यापि पदार्थं मा गृह्णीयातां भयन्यायप्रचालनाभ्यां राजधर्म्मान्मा चलेतां सदैव सत्यधर्मप्रियौ सन्तौ मित्रवत्प्रजाः पालयेताम्॥७॥

**पदार्थः**-हे **(अत्रे)** तीन प्रकार के दुःखों से रहित! **(इरस्या)** अन्न की इच्छा से तथा **(भियसा)** भय से **(द्रुग्धः)** द्रोह को प्राप्त **(इमम्)** इसको और **(तव)** आपके आश्रित **(सन्तम्)** हुए **(माम्)** मुझ को **(मा)** नहीं **(नि, गारीत्)** निगलिये और जो **(त्वम्)** आप **(मित्रः)** मित्र **(सत्यराधाः)** सत्य आचरण से वा सत्यधन जिनका ऐसे **(असि)** हो वह आप राजा सब के अधिष्ठाता और **(वरुणः)** श्रेष्ठ सेना का ईश **(च)** भी **(तौ)** वे दोनों **(इह)** इस संसार में **(मा)** मेरी **(अवतम्)** रक्षा करो॥७॥

**भावार्थः**-हे धर्मिष्ठ राजा और सेना के स्वामी! अन्याय से किसी के पदार्थ को भी न ग्रहण करें, भय और न्याय के अच्छे प्रकार चलाने से राजधर्म से पृथक् न होवें और सदा ही सत्य धर्म में प्रिय हुए मित्र के सदृश प्रजाओं का पालन करो॥७॥



www.9009.co.in

**अथ विद्वद्विषयमाह॥**

अब विद्वद्विषय को कहते हैं॥

**ग्राव्णो ब्रह्मा युयुजानः सपर्यन् कीरिणा देवान्नमसोपशिक्षन्।**

**अत्रिः सूर्यस्य दिवि चक्षुराधात्स्वर्भानोरप माया अघुक्षत्॥८॥**

**ग्राव्णः। ब्रह्मा। युयुजानः। सपर्यन्। कीरिणा। देवान्। नमसा। उपऽशिक्षन्। अत्रिः। सूर्यस्य। दिवि। चक्षुः। आ। अधात्। स्वःऽभानोः। अप। मायाः। अघुक्षत्॥८॥**

**पदार्थः**-**(ग्राव्णः)** मेघात् **(ब्रह्मा)** चतुर्वेदवित् **(युयुजानः)** **(सपर्यन्)** सेवमानः **(कीरिणा)** सकलविद्यास्तावकेन। **कीरिरिति स्तोतृनामसु पठितम्।** (निघं०३.१६) **(देवान्)** विदुषः **(नमसा)** सत्कारेणान्नादिना वा **(उपशिक्षन्)** उपगतां विद्यां ग्राहयन् **(अत्रिः)** सकलविद्याव्यापकः **(सूर्यस्य)** **(दिवि)** प्रकाशे **(चक्षुः)** **(आ, अधात्)** आदध्यात् **(स्वर्भानोः)** स्वरादित्यस्य भानुर्दीप्तिर्यस्य तस्य **(अप)** **(मायाः)** प्रज्ञाः **(अघुक्षत्)** अपशब्दयेत्॥८॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यो ब्रह्मा कीरिणा युयुजानो नमसा देवान् सपर्यन् विद्यार्थिन उपशिक्षन्नत्रिः सन् स्वर्भानोर्ग्राव्णः सूर्यस्य दिवि चक्षुराधात् स मायाः प्राप्नुयादविद्या अपाघुक्षत्॥८॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यो विद्वत्सेवी योगी विद्याप्रचारप्रियो विद्वान् भवेत्स यथा विद्युत्सूर्यमेघसम्बन्धेन सृष्टेः पालनं दुःखनिवारणं च भवति तथैवाऽध्यापकाध्येतृसम्बन्धेन विद्यारक्षणमविद्यानिवारणं च करोति॥८॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(ब्रह्मा)** चारों वेदों का जानने वाला **(कीरिणा)** सम्पूर्ण विद्याओं की स्तुति करने वाले से **(युयुजानः)** मिलता हुआ **(नमसा)** सत्कार वा अन्न आदि से **(देवान्)** विद्वानों की **(सपर्यन्)** सेवा करता और विद्यार्थियों को **(उपशिक्षन्)** समीप प्राप्त विद्या को ग्रहण कराता हुआ **(अत्रिः)** सम्पूर्ण विद्याओं में व्यापक **(स्वर्भानोः)** सूर्य्य की कान्ति के सदृश कान्ति जिसकी उसके **(ग्राव्णः)** मेघ से **(सूर्यस्य)** सूर्य के **(दिवि)** प्रकाश में **(चक्षुः)** नेत्र का **(आ, अधात्)** स्थापन करे वह **(मायाः)** बुद्धियों को प्राप्त होवे और अविद्याओं को **(अप, अघुक्षत्)** अपशब्दित करे॥८॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो विद्वानों की सेवा करने वाला, योगी, विद्या के प्रचार में प्रिय, विद्वान् होवे, वह जैसे बिजुली सूर्य और मेघ के सम्बन्ध से सृष्टि की पालना और दुःख का निवारण होता है, वैसे ही अध्यापक और अध्येता के सम्बन्ध से विद्या की रक्षा और अविद्या का निवारण करता है॥८॥

**अथ सूर्यान्धकारदृष्टान्तेन विद्वदविद्वद्विषयमाह॥**

अब सूर्य और अन्धकार के दृष्टान्त से विद्वान् और अविद्वान् के विषय को कहते हैं॥

**यं वै सूर्यं स्वर्भानुस्तमसाविध्यदासुरः।**



www.9009.co.in

**अत्र॑यु॒स्तम॒न्व॑विन्द॒न्नह्य१॒॑न्ये अश॑क्नुवन्॥९॥१२॥**

**यम्। वै। सूर्य॑म्। स्व॑ःऽभानुः। तम॑सा। अवि॑ध्यत्। आ॒सु॒रः। अत्र॑यः। तम्। अनु॑। अ॒वि॒न्द॒न्। न॒हि। अ॒न्ये। अश॑क्नुवन्॥९॥**

**पदार्थः-(यम्) (वै)** निश्चये **(सूर्यम्)** सवितारम् **(स्वर्भानुः)** आदित्येन प्रकाशितः **(तमसा)** अन्धकारेण **(अविध्यत्)** विध्यति **(आसुरः)** आसुरो मेघ एव **(अत्रयः)** विद्याविशालाः **(तम्) (अनु) (अविन्दन्)** लभेरन् **(नहि) (अन्ये) (अशक्नुवन्)** शक्नुयुः॥९॥

**अन्वयः**-हे विद्वांसः! स्वर्भानुरासुरस्तमसा यं सूर्यमविध्यत् तं वै अत्रयोऽन्वविन्दन्नह्यन्य एतं ज्ञातुमशक्नुवन्॥९॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यथा मेघः सूर्यमावृत्याऽन्धकारं जनयति तथैवाऽविद्यात्मानमावृत्याऽज्ञानं जनयति यथा सूर्यो मेघं हत्वाऽन्धकारं निवार्य प्रकाशमाविष्करोति तथैव प्राप्ता विद्याऽविद्यां विनाश्य विज्ञानप्रकाशं जनयति। एतद्विवेचनं विद्वांसो जानन्ति नेतर इति॥९॥

अत्रेन्द्रमेघसूर्यविद्वदविद्वद्गुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति चत्वारिंशत्तमं सूक्तं द्वादशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे विद्वानो! **(स्वर्भानुः)**! सूर्य से प्रकाशित **(आसुरः)** मेघ ही **(तमसा)** अन्धकार से **(यम्)** जिस **(सूर्यम्)** सूर्य्य को **(अविध्यत्)** ताड़ित करता है **(तम्)** उसको **(वै)** निश्चय करके **(अत्रयः)** विद्या में दक्ष जन **(अनु, अविन्दन्)** अनुकूल प्राप्त होवें **(नहि)** नहीं **(अन्ये)** अन्य इसके जानने को **(अशक्नुवन्)** समर्थ होवें॥९॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे मेघ सूर्य्य को ढाप के अन्धकार को उत्पन्न करता है, वैसे ही अविद्या आत्मा का आवरण करके अज्ञान को उत्पन्न करती है और जैसे सूर्य मेघ का नाश और अन्धकार का निवारण करके प्रकाश करता है, वैसे ही प्राप्त हुई विद्या अविद्या का नाश करके विज्ञान के प्रकाश को उत्पन्न करती है, इस विवेचन को विद्वान् जन जानते हैं, अन्य नहीं॥९॥

इस सूक्त में इन्द्र मेघ सूर्य विद्वान् अविद्वान् के गुण-वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ संगति जाननी चाहिये॥

**यह चालसीवां सूक्त और बारहवां वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

**अथ विंशत्यृचस्यैकचत्वारिंशत्तमस्य सूक्तस्याऽत्रिर्ऋषिः। विश्वेदेवा देवताः। १, २, ६, १५, १८ त्रिष्टुप्। ४, १३ विराट् त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः। ३, १४, १९ पङ्क्तिः। ५, ९, १०, ११, १२ भुरिक्पङ्क्तिः। ७, ८ स्वराट् पङ्क्तिश्छन्दः। २० याजुषी पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः। १६ जगती। १७ निचृदतिजगती छन्दः। निषादः स्वरः॥**

***अथ विश्वदेवगुणानाह॥***

अब बीस ऋचा वाले एकचालीसवें सूक्त का प्रारम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में विश्वदेवों के गुणों को कहते हैं॥

**को नु वां मित्रावरुणावृतायन् दिवो वां महः पार्थिवस्य वा दे।**

**ऋतस्य वा सदसि त्रासीथां नो यज्ञायते वां पशुषो न वाजान्॥ १॥**

**कः। नु। वाम्। मित्रावरुणौ। ऋतऽयन्। दिवः। वा। महः। पार्थिवस्य। वा। दे। ऋतस्य। वा। सदसि। त्रासीथाम्। नः। यज्ञऽयते। वा। पशुऽसः। न। वाजान्॥ १॥**

**पदार्थः-(कः)** **(नु)** सद्यः **(वाम्)** युवाम् **(मित्रावरुणौ)** प्राणोदानाविवाध्यापकाध्येतारौ **(ऋतायन्)** ऋतमाचरन् **(दिवः)** प्रकाशान् **(वा)** **(महः)** **(पार्थिवस्य)** पृथिव्यां विदितस्य **(वा)** **(दे)** देदीप्यमानौ देवौ। अत्र **छान्दसो वर्णलोपो वे**ति वलोपः, **सुपां सुलुगि**ति विभक्तेर्लुक्। **(ऋतस्य)** सत्यस्य **(वा)** **(सदसि)** सभायाम् **(त्रासीथाम्)** रक्षेतम् **(नः)** अस्मान् **(यज्ञायते)** यज्ञं कामयमानाय **(वा)** **(पशुषः)** पशून् **(न)** इव **(वाजान्)**॥ १॥

**अन्वयः**-हे मित्रावरुणौ! वां दिवः क ऋतायन् वा पार्थिवस्य महः को नु विजानीयाद्वा दे ऋतस्य सदसि त्रासीथां वा यज्ञायते नस्त्रासीथां वा पशुषो वाजान्नोऽस्मान् भोगान् प्रापयतम्॥ १॥

**भावार्थः**-हे विद्वांसो! यदि भवन्तः पृथिव्यादिपदार्थविद्यां जानन्ति तर्ह्यस्मभ्यमुपदिशन्तु सभायां निषद्य सत्यं न्यायं कुर्वन्तु॥ १॥

**पदार्थः**-हे **(मित्रावरुणौ)** प्राण और उदान वायु के सदृश वर्त्तमान पढ़ने और पढ़ाने वाले जनो! **(वाम्)** आप दोनों और **(दिवः)** प्रकाशों को **(कः)** कौन **(ऋतायन्)** सत्य का आचरण करता हुआ **(वा)** वा **(पार्थिवस्य)** पृथिवी में विदितजन के **(महः)** तेज को कौन **(नु)** शीघ्र जाने **(वा)** वा **(दे)** प्रकाशमान विद्वान् जनो **(ऋतस्य)** सत्य की **(सदसि)** सभा में **(त्रासीथाम्)** रक्षा करो **(वा)** वा **(यज्ञायते)** यज्ञ की कामना करते हुए के लिये **(नः)** हम लोगों की रक्षा करिये **(वा)** वा **(पशुषः)** पशुओं और **(वाजान्)** अन्नों के **(न)** सदृश हम लोगों के लिये भोगों को प्राप्त कराइये॥ १॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-हे विद्वानो! जो आप लोग पृथिवी आदि पदार्थों की विद्या को जानते हैं, तो हम लोगों को उपदेश देवें और सभा में बैठ के सत्य न्याय को करें॥१॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**ते नो मित्रो वरुणो अर्यमायुरिन्द्र ऋभुक्षा मरुतो जुषन्त।**

**नमोभिर्वा ये दधते सुवृक्तिं स्तोमं रुद्राय मीळ्हुषे सजोषाः॥२॥**

**ते। नः। मित्रः। वरुणः। अर्यमा। आयुः। इन्द्रः। ऋभुक्षाः। मरुतः। जुषन्त। नमःऽभिः। वा। ये। दधते। सुऽवृक्तिम्। स्तोमम्। रुद्राय। मीळ्हुषे। सऽजोषाः॥२॥**

**पदार्थः**-(**ते**) (**नः**) अस्मभ्यम् (**मित्रः**) सखा (**वरुणः**) श्रेष्ठाचारः (**अर्य्यमा**) न्यायेशः (**आयुः**) जीवनम् (**इन्द्रः**) परमैश्वर्य्यवान् (**ऋभुक्षाः**) महान् विद्वान् (**मरुतः**) मनुष्याः (**जुषन्त**) सेवन्ते (**नमोभिः**) सत्कारान्नादिभिः (**वा**) (**ये**) (**दधते**) (**सुवृक्तिम्**) सुष्ठुवर्जनम् (**स्तोमम्**) श्लाघाम् (**रुद्राय**) दुष्टाचाराणां रोदकाय (**मीळ्हुषे**) सुखं सिञ्चते (**सजोषाः**) समानप्रीतिसेविनः। अत्र वचनव्यत्ययेनैकवचनम्॥२॥

**अन्वयः**-ये मरुतो नमोभिर्मीळ्हुषे रुद्राय सजोषाः सन्तः सुवृक्तिं स्तोमं दधते वा जुषन्त ते मित्रो वरुणोऽर्य्यमेन्द्र ऋभुक्षाश्च न आयुर्जुषन्त॥२॥

**भावार्थः**-त एव विद्वांस उत्तमा विज्ञेया ये स्वात्मवत्सर्वेषु प्राणिषु वर्त्तेरन्॥२॥

**पदार्थः**-(**ये**) जो (**मरुतः**) मनुष्य (**नमोभिः**) सत्कार और अन्नादिकों से (**मीळ्हुषे**) सुख का सेचन करते हुए (**रुद्राय**) दुष्ट आचरणों के करने वाले जनों के रुलाने वाले के लिये (**सजोषाः**) तुल्य प्रीति के सेवन करने वाले हुए (**सुवृक्तिम्**) उत्तम प्रकार वर्जन होता है जिससे उस (**स्तोमम्**) प्रशंसा को (**दधते**) धारण करते (**वा**) वा (**जुषन्त**) सेवन करते हैं (**ते**) वे (**मित्रः**) मित्र (**वरुणः**) श्रेष्ठ आचरण करने वाला (**अर्य्यमा**) न्याय का ईश और (**इन्द्रः**) परमैश्वर्य्यवान् (**ऋभुक्षाः**) बड़ा विद्वान् (**नः**) हम लोगों के लिये (**आयुः**) जीवन का सेवन करें॥२॥

**भावार्थः**-उन्हीं विद्वानों को उत्तम समझना चाहिये जो अपने सदृश सब प्राणियों में वर्त्ताव करें॥२॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैंह॥

**आ वां येष्ठाश्विना हुवध्यै वातस्य पत्मन् रथ्यस्य पुष्टौ।**

**उत वा दिवो असुराय मन्म प्रान्धांसीव यज्यवे भरध्वम्॥३॥**



www.9009.co.in

**आ। वाम्। येष्ठा। अश्विना। हुवध्यै। वातस्य। पत्मन्। रथ्यस्य। पुष्टौ। उत। वा। दिवः। असुराय। मन्म। प्र। अन्धाँसिऽइव। यज्यवे। भरध्वम्॥३॥**

**पदार्थः**-(**आ**) (**वाम्**) युवाम् (**येष्ठा**) अतिशयेन नियन्तारौ (**अश्विना**) अध्यापकोपदेशकौ (**हुवध्यै**) ग्रहणाय (**वातस्य**) वायोः (**पत्मन्**) पत्मनि मार्गे (**रथ्यस्य**) रथे याने भवस्य (**पुष्टौ**) पोषणे (**उत**) (**वा**) (**दिवः**) कामयमानस्य (**असुराय**) मेघाय (**मन्म**) विज्ञानम् (**प्र**) (**अन्धांसीव**) यथान्नीदीनि (**यज्यवे**) यज्ञानुष्ठानाय यजमानाय वा (**भरध्वम्**)॥३॥

**अन्वयः**-हे येष्ठाश्विना! यथा वां रथ्यस्य वातस्य पत्मन् पुष्टौ उत वाऽसुराय दिवोऽन्धांसीव यज्यवे निमित्ते भवतस्तथा हुवध्यै मन्म प्रा भरध्वम्॥३॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यथाऽध्येताध्यापकौ विद्याप्रचाराय प्रयतेते तथैव सर्वैर्मनुष्यैः सततं प्रयततिव्यम्॥३॥

**पदार्थः**-हे (**येष्ठा**) अत्यन्त नियम के निर्वाहक (**अश्विना**) अध्यापक और उपदेशक जनो! जैसे (**वाम्**) आप दोनों (**रथ्यस्य**) रथ में उत्पन्न हुए (**वातस्य**) पवन के (**पत्मन्**) मार्ग में और (**पुष्टौ**) पोषण करने में (**उत, वा**) अथवा (**असुराय**) मेघ के लिये (**दिवः**) कामना करते हुए के (**अन्धांसीव**) अन्न आदिकों के सदृश (**यज्यवे**) यज्ञारम्भ वा यजमान के लिये कारण होते हो, वैसे (**हुवध्यै**) ग्रहण करने के लिये (**मन्म**) विज्ञान का (**प्र, आ, भरध्वम्**) प्रारम्भ करो॥३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे पढ़ने और पढ़ाने वाले विद्या के प्रचार के लिये प्रयत्न करते हैं, वैसे ही सब मनुष्यों को चाहिये कि निरन्तर प्रयत्न करें॥३॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**प्र सुक्षणो दिव्यः कण्वहोता त्रितो दिवः सजोषा वातो अग्निः।**

**पूषा भगः प्रभृथे विश्वभोजा आजिं न जग्मुराश्वश्वतमाः॥४॥**

**प्र। सुक्षणः। दिव्यः। कण्वऽहोता। त्रितः। दिवः। सऽजोषाः। वातः। अग्निः। पूषा। भगः। प्रऽभृथे। विश्वऽभोजाः। आजिम्। न। जग्मुः। आश्वश्वऽतमाः॥४॥**

**पदार्थः**-(**प्र**) (**सक्षणः**) सोढा (**दिव्यः**) शुद्धव्यवहारः (**कण्वहोता**) कण्वो मेधावी चासौ होता दाता च (**त्रितः**) त्रिषु क्षित्युदकान्तरिक्षेषु वर्धमानः (**दिवः**) दिव्याः कामनाः (**सजोषाः**) सहैव सेवमानः (**वातः**) वायुः (**अग्निः**) पावकः (**पूषा**) पुष्टिकर्ता (**भगः**) ऐश्वर्य्यप्रदः (**प्रभृथे**) शुद्धकरणे व्यवहारे (**विश्वभोजाः**) यो विश्वं भुनक्ति पालयति सः (**आजिम्**) सङ्ग्रामम् (**न**) इव (**जग्मुः**) प्राप्नुवन्ति (**आश्वश्वतमाः**) आशवः सद्योगामिनो अश्वा विद्यन्ते येषान्ते॥४॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे विद्वन्! दिव्यः कण्वहोतेव यः सक्षणस्त्रितो दिवः कामयमानः सजोषा वातोऽग्निः प्रभृथे पूषा भगो विश्वभोजा आश्वश्वतमा आजिं जग्मुर्न प्र यत्यते स एव पुष्कलं भोगं प्रापयति॥४॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! यूयमग्न्यादिकपदार्थैर्दारिद्र्यं विच्छिद्य श्रीमन्तो भवेयुः॥४॥

**पदार्थः**-हे विद्वन्! **(दिव्यः)** शुद्ध व्यवहारयुक्त **(कण्वहोता)** बुद्धिमान् तथा देने और ग्रहण करने वाले के सदृश जो **(सक्षणः)** सहने वाला **(त्रितः)** तीन पृथिवी, जल और अन्तरिक्ष में बढ़ता **(दिवः)** श्रेष्ठ कामनाओं की इच्छा करता और **(सजोषाः)** साथ ही सेवन **(वातः)** वायु और **(अग्निः)** अग्नि **(प्रभृथे)** शुद्ध करने वाले व्यवहार में **(पूषा)** पुष्टि करने वा **(भगः)** ऐश्वर्य का देने वा **(विश्वभोजाः)** संसार का पालन करने वाला और **(आश्वश्वतमाः)** शीघ्र चलने वाले घोड़े जिसके विद्यमान वे **(आजिम्)** सङ्ग्राम को **(जग्मुः)** जैसे प्राप्त होते हैं **(न)** वैसे **(प्र)** प्रयत्न किया जाता है, वही बहुत भोग की प्राप्ति कराता है॥४॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! आप लोग अग्नि आदि पदार्थों से दारिद्र्य का नाश करके धनवान् हूजिये॥४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**प्र वो॑ र॒यिं यु॒क्ताश्वं॑ भरध्वं रा॒य एषेऽव॑से दधीत॒ धीः।**

**सु॒शेव॒ एवै॑रौशि॒जस्य॒ होता॒ ये व॒ एवा॑ मरुतस्तु॒राणा॑म्॥५॥१३॥**

**प्र। व॒ः। र॒यिम्। यु॒क्तऽअ॑श्वम्। भ॒र॒ध्व॒म्। रा॒यः। एषे॑। अव॑से। द॒धी॒त॒। धीः। सु॒ऽशेव॑ः। एवै॑ः। औ॒शि॒जस्य॑। होता॑। ये। व॒ः। एवा॑ः। म॒रु॒तः। तु॒राणा॑म्॥५॥**

**पदार्थः**-**(प्र)** **(वः)** युष्मभ्यम् **(रयिम्)** धनम् **(युक्ताश्वम्)** युक्ता अश्वा येन तत् **(भरध्वम्)** **(रायः)** धनानि **(एषे)** एतुं प्राप्तुम् **(अवसे)** रक्षणाद्याय **(दधीत)** धरत **(धीः)** प्रज्ञाः **(सुशेवः)** शोभनं सुखं यस्य सः **(एवैः)** प्रापणैः **(औशिजस्य)** कामयमानस्यापत्यस्य **(होता)** **(ये)** **(वः)** युष्माकम् **(एवाः)** कामयमानाः **(मरुतः)** मनुष्याः **(तुराणाम्)** हिंसकानाम्॥५॥

**अन्वयः**-हे मरुतो मनुष्या! यूयं धीर्दधीत वो युक्ताश्वं रयिं प्रभरध्वम्। अवस एषे सुशेव एवैरौशिजस्य रायः होता भवति ये वस्तुराणां हिंसका एवाः सन्ति तान् यूयं सत्कुरुत॥५॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यूयमग्न्यादिपदार्थविद्यया श्रीमन्तो भूत्वा सत्यतयाऽनाथान् सर्वान् पालयत दुष्टान् ताडयत॥५॥

**पदार्थः**-हे **(मरुतः)** मनुष्यो! आप लोग **(धीः)** बुद्धियों को **(दधीत)** धारण करो और **(वः)** आप लोगों के लिये अर्थात् आप अपने लिये **(युक्ताश्वम्)** युक्त घोड़े जिससे उस **(रयिम्)** धन को **(प्र, भरध्वम्)** अत्यन्त धारण करो। तथा **(अवसे)** रक्षण आदि के लिये **(एषे)** प्राप्त होने को **(सुशेवः)** सुन्दर



www.9009.co.in

सुख से युक्त जन **(एवैः)** गमनों से **(औशिजस्य)** कामना करने वाले सन्तान का और **(रायः)** धनों का **(होता)** देने वाला होता है और **(ये)** जो **(वः)** आप लोगों के **(तुराणाम्)** नाश करनेवालों के नाश करने वाले **(एवाः)** और कामना करने वाले हैं, उनका आप लोग सत्कार करो॥५॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! आप लोग अग्नि आदि पदार्थों की विद्या से धनवान् होकर सत्यता से सब अनाथों का पालन करो और दुष्टों का ताड़न करो॥५॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**प्र वो वायुं रथयुजं कृणुध्वं प्र देवं विप्रं पनितारमर्कैः।**

**इषुध्यव ऋतसापः पुरंधीर्वस्वीर्नो अत्र पत्नीरा धिये धुः॥६॥**

**प्र। वः। वायुम्। रथऽयुजम्। कृणुध्वम्। प्र। देवम्। विप्रम्। पनितारम्। अर्कैः। इषुध्यवः ऋतऽसापः। पुरम्ऽधीः। वस्वीः। नः। अत्र। पत्नीः। आ। धिये। धुरिति धुः॥६॥**

**पदार्थः**-**(प्र)** **(वः)** युष्मभ्यम् **(वायुम्)** वेगवन्तम् **(रथयुजम्)** रथेन युक्तम् **(कृणुध्वम्)** **(प्र)** **(देवम्)** विद्वांसम् **(विप्रम्)** मेधाविनम् **(पनितारम्)** स्तावकं धर्म्मेण व्यवहर्त्तारम् **(अर्कैः)** अर्चनीयैः पदार्थैः **(इषुध्यवः)** य इषुभिर्युध्यन्ते **(ऋतसापः)** सत्यसम्बन्धाः **(पुरन्धीः)** द्यावापृथिव्यौ। **पुरन्धी इति द्यावापृथिवीनामसु पठितम्।** (निघं०३.३०)। **(वस्वीः)** बहुपदार्थयुक्ताः **(नः)** अस्मभ्यम् **(अत्र)** अस्मिञ्जगति **(पत्नीः)** पत्नीवद्वर्त्तमानाः **(आ)** **(धिये)** प्रज्ञायै **(धुः)** दध्युः॥६॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! येऽत्र इषुध्यव ऋतसापो विद्वांसो वो रथयुजं वायुं धुर्युष्मभ्यं नोऽस्मभ्यं पत्नीरिव धिये वस्वीः पुरन्धीरा धुस्तत्सङ्गेन वायुं रथयुजं प्र कृणुध्वमर्कैः पनितारं विप्रं देवं प्र कृणुध्वम्॥६॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! भवन्तो यथा पतिव्रता पत्न्यः पत्यादीन् सुखयन्ति तथैव वायुवद्वेगयुक्तं रथं धार्मिकान् विदुषश्च धृत्वा सर्वान् सुखयेयुः॥६॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो **(अत्र)** इस संसार में **(इषुध्यवः)** बाणों के द्वारा युद्ध करने वा **(ऋतसापः)** सत्य सम्बन्ध रखने वाले विद्वान् जन **(वः)** आप लोगों के लिये **(रथयुजम्)** वाहन से युक्त **(वायुम्)** वेग वाले वायु को **(धुः)** धारण करें वा आप लोगों और **(नः)** हम लोगों के लिये **(पत्नीः)** स्त्रियों के सदृश वर्त्तमानों को और **(धिये)** बुद्धि के लिये **(वस्वीः)** बहुत पदार्थों से युक्त **(पुरन्धीः)** अन्तरिक्ष और पृथिवी को **(आ)** सब प्रकार धारण करें उनके संग से वेगयुक्त वाहन से युक्त को **(प्र, कृणुध्वम्)** अच्छे प्रकार सिद्ध करें **(अर्कैः)** प्रशंसनीय पदार्थों से **(पनितारम्)** स्तुति करने और धर्म्म से व्यवहार करने वाले **(विप्रम्)** बुद्धिमान् **(देवम्)** विद्वान् को **(प्र)** अच्छे प्रकार प्रकट करो॥६॥



www.9009.co.in

**भावार्थ:**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जैसे पतिव्रता पत्नी पति आदि को सुख देती हैं, वैसे ही वायु के समान वेगयुक्त रथ को और धार्मिक विद्वानों को धारण कर सब को सुखयुक्त करो॥६॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**उप॑ व॒ एषे॒ वन्द्ये॑भिः शू॒षैः प्र य॒ह्वी दि॒वश्चि॒तय॑द्भिर॒र्कैः।**

**उ॒षासा॒नक्ता॑ वि॒दुषी॑व॒ विश्व॒मा हा॑ वहतो॒ मर्त्या॑य य॒ज्ञम्॥७॥**

**उप॑। व॒ः। एषे॑। वन्द्ये॑भिः। शू॒षैः। प्र। य॒ह्वी इति॑। दि॒वः। चि॒तय॑त्ऽभिः। अ॒र्कैः। उ॒षासा॒नक्ता॑। वि॒दुषी॑ऽइ॒वेति॑ वि॒दुषी॑ऽव। विश्व॑म्। आ। ह॒। व॒ह॒तः। मर्त्या॑य। य॒ज्ञम्॥७॥**

**पदार्थः**-**(उप)** **(वः)** युष्मान् **(एषे)** एतुं प्राप्तुम् **(वन्द्येभिः)** वन्दितुं स्तोतुं योग्यैः **(शूषैः)** बलैः **(प्र)** **(यह्वी)** महती **(दिवः)** विद्याप्रकाशान् **(चितयद्भिः)** ज्ञापयद्भिः **(अर्कैः)** पूजनीयैर्विद्वद्भिस्सह **(उषसानक्ता)** रात्रिदिने **(विदुषीव)** पूर्णविद्या स्त्रीव **(विश्वम्)** सर्वम् **(आ)** समन्तात् **(हा)** किल। अत्र **निपातस्य चे**ति दीर्घः। **(वहतः)** धरतः **(मर्त्याय)** मनुष्यसुखाय **(यज्ञम्)** विद्याप्रचारादिकम्॥७॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! दिवश्चितयद्भिरर्कैर्वन्द्येभिः शूषैश्च सह यह्वी विदुषीव ये उषासानक्ता व उपैषे मर्त्याय विश्वं यज्ञं हा प्रा वहतस्तत्सेवनविद्यां यूयं विजानीत॥७॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यथा महाविदुषी स्त्री सर्वत्र विदुषीषु विद्वत्सु च सत्कृता भूत्वा सर्वानुत्तमान् गुणान् धृत्वा विदुषः पत्यादीनुन्नयति तथैव रात्रिदिने सर्वान् व्यवहारान् धृत्वा सर्वं जगद्वर्धयतः॥७॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(दिवः)** विद्या के प्रकाशों के **(चितयद्भिः)** जनाते हुए **(अर्कैः)** सत्कार करने योग्य विद्वानों के साथ और **(वन्द्येभिः)** स्तुति करने योग्य **(शूषैः)** बलों के साथ **(यह्वी)** बड़ी **(विदुषीव)** पूर्णविद्यायुक्त स्त्री के तुल्य जो **(उषसानक्ता)** रात्रि और दिन **(वः)** आप लोगों के **(उप, एषे)** समीप प्राप्त होने को **(मर्त्याय)** मनुष्य के सुख के लिये **(विश्वम्)** सम्पूर्ण **(यज्ञम्)** विद्या के प्रचार आदि को **(हा)** निश्चय **(प्र, आ, वहतः)** सब प्रकार धारण करते हैं, उनकी सेवन की विद्या को आप लोग जानें॥७॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जैसे बड़ी विद्यायुक्त स्त्री सब जगह विद्यायुक्त स्त्रियों और विद्वानों में सत्कारयुक्त हो और सम्पूर्ण उत्तम गुणों को धारण करके विद्यायुक्त पति आदि की वृद्धि करती है, वैसे ही रात्रि और दिन सब व्यवहारों को धारण करके सब जगत् की वृद्धि करते हैं॥७॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**



www.9009.co.in

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**अभि वो अर्चे पोष्यावतो नॄन् वास्तोष्पतिं त्वष्टारं रराणः।**

**धन्या सजोषा धिषणा नमोभिर्वनस्पतीँरोषधी राय एषे॥८॥**

**अभि। वः। अर्चे। पोष्याऽवतः। नॄन्। वास्तोः। पतिम्। त्वष्टारम्। रराणः। धन्या। सऽजोषाः। धिषणा। नमःऽभिः। वनस्पतीन्। ओषधीः। रायः। एषे॥८॥**

**पदार्थः-(अभि)** आभिमुख्ये **(वः)** युष्मान् **(अर्चे)** सत्करोमि **(पोष्यावतः)** बहवः पोष्याः पोषणीया विद्यन्ते येषान्तान् **(नॄन्)** मनुष्यान् **(वास्तोः)** निवासस्थानस्य **(पतिम्)** पालकम् **(त्वष्टारम्)** तेजस्विनम् **(रराणः)** दाता **(धन्या)** धनं लब्ध्री **(सजोषाः)** समानप्रीतिसेविनी **(धिषणा)** प्रज्ञा **(नमोभिः)** सत्कारैरन्नादिभिर्वा **(वनस्पतीन्)** अश्वत्थादीन् **(ओषधीः)** यवसोमलतादीन् **(रायः)** धनानि **(एषे)** प्राप्तुम्॥८॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथा धन्या सजोषा धिषणा नमोभिर्वनस्पतीनोषधी राय एषे प्रभवति तथा वास्तोष्पतिं त्वष्टारं रराणोऽहं पोष्यावतो वो नॄन्नभ्यर्चे॥८॥

**भावार्थः-**अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यथा तीव्रया प्रज्ञया विद्यया च युक्ता नरो वैद्यकविद्यां विज्ञाय मनुष्यादीन् पालयन्ति तथैव सर्वहितमिच्छुकान् जनान् सदैव सत्कुर्वन्तु॥८॥

**पदार्थः-**हे मनुष्यो! जैसे **(धन्या)** धन को प्राप्त हुई **(सजोषाः)** तुल्य प्रीति की सेवने वाली **(धिषणा)** बुद्धि **(नमोभिः)** सत्कारों वा अन्न आदिकों से **(वनस्पतीन्)** अश्वत्थ आदि और **(ओषधीः)** यव सोमलतादिकों को तथा **(रायः)** धनों को **(एषे)** प्राप्त होने के लिये समर्थ होती है, वैसे **(वास्तोः)** निवास के स्थान के **(पतिम्)** पालने वाले **(त्वष्टारम्)** तेजस्वीजन को **(रराणः)** दाता मैं **(पोष्यावतः)** बहुत पोषण करने योग्य पदार्थ जिनके विद्यमान उन **(वः)** आप **(नॄन्)** मनुष्यों का **(अभि, अर्चे)** प्रत्यक्ष सत्कार करता हूँ॥८॥

**भावार्थः-**इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जैसे तीव्र बुद्धि और विद्या से युक्त मनुष्य वैद्यक विद्या को जान कर मनुष्य आदिकों का पालन करते हैं, वैसे ही सब के हित की इच्छा करने वाले मनुष्यों का सदा ही सत्कार करिये॥८॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**तुजे नस्तने पर्वताः सन्तु स्वैतवो ये वसवो न वीराः।**

**पनित आप्त्यो यजतः सदा नो वर्धान्नः शंसं नर्यो अभिष्टौ॥९॥**



www.9009.co.in

**तुजे। नः। तने। पर्वताः। सन्तु। स्वऽएतवः। ये। वसवः। न। वीराः। पनितः। आप्त्यः। यजतः। सदा। नः। वर्धात्। नः। शंसम्। नर्यः। अभिष्टौ॥९॥**

**पदार्थः-(तुजे)** दाने **(नः)** अस्मभ्यम् **(तने)** विस्तीर्णे **(पर्वताः)** जलप्रदा मेघा इव **(सन्तु)** **(स्वैतवः)** सुष्ठुगमनाः **(ये)** **(वसवः)** पृथिव्यादयः **(न)** इव **(वीराः)** प्रज्ञाशरीरबलयुक्ताः **(पनितः)** प्रशंसितः **(आप्त्यः)** आप्तेषु भवः **(यजतः)** सङ्गन्ता पूजनीयः **(सदा)** **(नः)** अस्मान् **(वर्धात्)** वर्धयेत् **(नः)** अस्मान् **(शंसम्)** प्रशंसाम् **(नर्यः)** नृषु साधुः **(अभिष्टौ)** इष्टसिद्धौ॥९॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! ये स्वैतवो वसवो वीरा न तने तुजे नः पर्वता मेघा दातार इव सन्तु योऽभिष्टौ पनित आप्त्यो यजतो नः सदा वर्धाद्यो नर्य्यो नः शंसं प्रापयेत्तान् सर्वान् वयं सत्कुर्याम॥९॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। ये वीरवच्छत्रुनिवारका मेघवद्दातारो वायुवद्वेगवन्तो विद्वांसोऽस्मान्नित्यं वर्धयेयुस्तान् वयमपि वर्धयेमहि॥९॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(ये)** जो **(स्वैतवः)** उत्तम गमन वाले **(वसवः)** पृथिवी आदि **(वीराः)** बुद्धि और शरीर के बल से युक्त जनों के **(न)** सदृश **(तने)** विस्तीर्ण **(तुजे)** दान में **(वः)** हम लोगों के लिये **(पर्वताः)** जल के देने वाले मेघ और दाता जनों के सदृश **(सन्तु)** होवें और जो **(अभिष्टौ)** इष्ट की सिद्धि में **(पनितः)** प्रशंसित **(आप्त्यः)** यथार्थवक्ता जनों में उत्पन्न **(यजतः)** मिलने वा सत्कार करने योग्य जन **(नः)** हम लोगों की **(सदा)** सदा **(वर्धात्)** वृद्धि करे और जो **(नर्य्यः)** मनुष्यों में श्रेष्ठ **(नः)** हम लोगों को **(शंसम्)** प्रशंसा को प्राप्त करावें, उन सब का हम लोग सत्कार करें॥९॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जो जन वीरजनों के सदृश शत्रुओं के निवारण करने, मेघ के सदृश देने वाले और वायु के सदृश वेगयुक्त विद्वान् हम लोगों की नित्य वृद्धि करें, उनकी हम लोग भी वृद्धि करें॥९॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**वृष्णो अस्तोषि भूम्यस्य गर्भं त्रितो नपातमपां सुवृक्ति।**

**गृणीते अग्निरेतरी न शूषैः शोचिष्केशो नि रिणाति वना॥१०॥१४॥**

**वृष्णः। अस्तोषि। भूम्यस्य। गर्भम्। त्रितः। नपातम्। अपाम्। सुऽवृक्ति। गृणीते। अग्निः। एतरि। न। शूषैः। शोचिःऽकेशः। नि। रिणाति। वना॥१०॥**

**पदार्थः-(वृष्णः)** सुखवर्षकान् **(अस्तोषि)** प्रशंससि **(भूम्यस्य)** भूमौ भवस्य **(गर्भम्)** **(त्रितः)** त्रिषु वर्द्धकः **(नपातम्)** न विद्यते पातो यस्य तम् **(अपाम्)** प्राणिनां जनानामिव **(सुवृक्ति)** सुष्ठु व्रजन्ति यस्मिंस्तम् **(गृणीते)** स्तौति **(अग्निः)** पावक इव **(एतरी)** प्राप्नुवन्ती **(न)** इव **(शूषैः)** बलैः **(शोचिष्केशः)** प्रदीप्तविज्ञानः **(नि)** **(रिणाति)** गच्छति प्राप्नोति वा **(वना)** किरणान्॥१०॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे विद्वँस्त्वं वृष्णोऽस्तोषि त्रितोऽपां नपातं भूम्यस्य गर्भं सुवृक्ति गृणीत एवं योऽग्निरेतरी शोचिष्केशो न शूषैर्वना नि रिणाति स एव सर्वं सृष्टिजन्यं सुखं प्राप्नोति॥१०॥

**भावार्थः**-स एव पुरुषो बहुधनं मान्यं च लभते यः सृष्टिक्रमविद्यां विज्ञाय कार्यसिद्धये प्रयतते॥१०॥

**पदार्थः**-हे विद्वन्! आप **(वृष्णः)** सुख की वृष्टि करनेवालों की **(अस्तोषि)** प्रशंसा करते हो **(त्रितः)** तीनों में वृद्धिकरने वाला **(अपाम्)** मनुष्यों के सदृश प्राणियों के **(नपातम्)** नहीं पतन जिसका उस **(भूम्यस्य)** पृथ्वी में हुए **(गर्भम्)** गर्भ की **(सुवृक्ति)** उत्तम गमन के सहित **(गृणीते)** स्तुति करता है, इस प्रकार जो **(अग्निः)** पवित्र करने वाले अग्नि के **(एतरी)** प्राप्त होती हुई के और **(शोचिष्केशः)** प्रकाशित विज्ञान वाले के **(न)** सदृश **(शूषैः)** बलों से **(वना)** किरणों को **(नि, रिणाति)** जाता वा प्राप्त होता है, वही सम्पूर्ण सृष्टि में उत्पन्न हुए सुख को प्राप्त होता है॥१०॥

**भावर्थः**-वही पुरुष बहुत धन और आदर को प्राप्त होता है कि जो सृष्टिक्रम की विद्या को जान कर कार्य्य की सिद्धि के लिये यत्न करता है॥१०॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**क॒था म॒हे रु॒द्रिया॑य ब्रवाम॒ कद्रा॒ये चि॑कि॒तुषे॒ भगा॑य।**

**आप॒ ओष॑धीरु॒त नो॑ऽवन्तु॒ द्यौर्वना॑ गि॒रयो॑ वृ॒क्षके॑शाः॥११॥**

**क॒था। म॒हे। रु॒द्रिया॑य। ब्र॒वा॒म॒। क॒त्। रा॒ये। चि॒कि॒तुषे॑। भगा॑य। आप॑ः। ओषधीः। उ॒त। न॒ः। अ॒व॒न्तु॒। द्यौः। वना॑। गि॒रय॑ः। वृ॒क्षऽके॑शाः॥११॥**

**पदार्थः**-**(कथा)** केन प्रकारेण **(महे)** महते **(रुद्रियाय)** रुद्रैर्लब्धाय **(ब्रवाम)** उपदिशेम **(कत्)** कदा **(राये)** धनाय **(चिकितुषे)** ज्ञातव्याय **(भगाय)** ऐश्वर्याय **(आपः)** जलानि **(ओषधीः)** सोमलताद्याः **(उत)** **(नः)** अस्मान् **(अवन्तु)** **(द्यौः)** सूर्य्यः **(वना)** किरणानीव **(गिरयः)** मेघाः **(वृक्षकेशाः)** वृक्षाः केशा इव येषां शैलानां ते॥११॥

**अन्वयः**-हे विद्वांसो! मनुष्या आप ओषधीर्वृक्षकेशा गिरय उत द्यौर्वनेव नोऽवन्तु तत्सहायेन वयं महे चिकितुषे रुद्रियाय कथा ब्रवाम राये भगाय कद् ब्रवाम॥११॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। सर्वे मनुष्याः स्वेषामन्येषां च रक्षणाय विदुषः सङ्गत्य प्रश्नोत्तराभ्यां सत्या विद्याः प्राप्यान्येभ्य उपदिश्यैश्वर्य्यवृद्धिं कदा करिष्याम इति नित्यं प्रोत्साहेरन्॥११॥

**पदार्थः**-हे विद्वान् जनो! मनुष्य **(आपः)** जल **(ओषधीः)** सोमलता आदि ओषधियां **(वृक्षकेशाः)** वृक्ष हैं केशों के समान जिनके वे पर्वत **(गिरयः)** मेघ **(उत)** और **(द्यौः)** सूर्य्य **(वना)** किरणों के सदृश **(नः)** हम लोगों की **(अवन्तु)** रक्षा करें, उनके सहाय से हम लोग **(महे)** बड़े



www.9009.co.in

(**चिकितुषे**) जानने योग्य और (**रुद्रियाय**) रुलाने वाले से प्राप्त हुए के लिये (**कथा**) किस प्रकार से (**ब्रवाम**) उपदेश देवें और (**राये**) धन और (**भगाय**) ऐश्वर्य्य के लिये (**कत्**) कब उपदेश देवें॥११॥

**भावार्थ:**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। सब मनुष्य अपने और अन्यों के रक्षण के लिये विद्वानों को मिल के प्रश्न और उत्तर से सत्य विद्याओं को प्राप्त हो और अन्यों के लिये उपदेश देकर ऐश्वर्य्य की वृद्धि कब करें, इस प्रकार नित्य उत्साह करें॥११॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**शृणोतु न ऊर्जां पतिर्गिरः स नभस्तरीयाँ इषिरः परिज्मा।**

**शृण्वन्त्वापः पुरो न शुभ्रा परि स्रुचो बबृहाणस्याद्रेः॥१२॥**

**शृणोतु। नः। ऊर्जाम्। पतिः। गिरः। सः। नभः। तरीयान्। इषिरः। परिऽज्मा। शृण्वन्तु। आपः। पुरः। न। शुभ्राः। परि। स्रुचः। बबृहाणस्य। अद्रेः॥१२॥**

**पदार्थ:**-(**शृणोतु**) (**नः**) अस्माकम् (**ऊर्जाम्**) बलयुक्तानां सेनानामन्नादीनां वा (**पतिः**) स्वामी पालकः (**गिरः**) सुशिक्षिता वाचः (**सः**) (**नभः**) जलम्। **नभ इति साधारणनामसु पठितम्।** (निघं०१.४) (**तरीयान्**) तरणीयः (**इषिरः**) गन्तव्यः (**परिज्मा**) यः परितः सर्वतो गच्छति सः (**शृण्वन्तु**) (**आपः**) जलानीव व्याप्तविद्या विद्वांसः (**पुरः**) नगराणि (**न**) इव (**शुभ्राः**) श्वेताः (**परि**) सर्वतः (**स्रुचः**) गमनशीलाः (**बबृहाणस्य**) प्रवृद्धस्य (**अद्रेः**) मेघस्य॥१२॥

**अन्वयः**-हे मनुष्याः! स नभस्तरीयां इषिरः परिज्मोर्जां पतिर्नो गिरः शृणोतु शुभ्राः पुरो नापो नोऽस्माकं गिरः शृण्वन्तु बबृहाणस्याऽद्रेः स्रुच इवास्माकं वाचः विद्वांसः परि शृण्वन्तु॥१२॥

**भावार्थ:**-अत्रोपमालङ्कारः। त एव विद्वांसो भवितुमर्हन्ति ये विद्वद्भ्योऽधीतपरीक्षां प्रसन्नतया ददति त एवाऽध्यापका विद्यार्थिनो विदुषः कर्त्तुं शक्नुवन्ति ये प्रीत्या सम्यगध्याप्य विरोधिवत्परीक्षयन्ति। य एवमुभये प्रयतन्ते ते नद्योन्नतिवत् प्रवर्धन्ते॥१२॥

**पदार्थ:**-हे मनुष्यो! (**सः**) वह (**नभः**) जल (**तरीयान्**) तैरने और (**इषिरः**) प्राप्त होने योग्य (**परिज्मा**) सर्वत्र प्राप्त होने वाला (**ऊर्जाम्**) बल से युक्त सेनाओं वा अन्नादिकों का (**पतिः**) स्वामी पालन करने वाला (**नः**) हम लोगों की (**गिरः**) उत्तम शिक्षा से युक्त वाणियों को (**शृणोतु**) सुने तथा (**शुभ्राः**) श्वेत वर्ण वाले (**पुरः**) नगरों के (**न**) सदृश (**आपः**) और जलों के सदृश विद्याओं से व्याप्त विद्वान् जन (**नः**) हम लोगों की वाणियों को सुनो (**बबृहाणस्य**) उत्तम प्रकार बढ़े (**अद्रेः**) मेघ के (**स्रुचः**) चलनेवालों के सदृश हम लोगों की वाणियों को विद्वान् जन (**परि, शृण्वणतु**) सुनें॥१२॥

**भावार्थ:**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। वे ही जन विद्वान् होने योग्य हैं जो विद्वानों से पढ़ी हुई विद्या की परीक्षा को प्रसन्नता से देते हैं और वे ही अध्यापक विद्यार्थियों को विद्वान् कर सकते हैं, जो



www.9009.co.in

प्रीति से उत्तम प्रकार पढ़ा के विरोधियों के सदृश परीक्षा लेते हैं। जो इस प्रकार दोनों प्रयत्न करते हैं, वे नदी की उन्नति के समान अच्छे प्रकार बढ़ते हैं॥१२॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**विदा चिन्नु महान्तो ये व एवा ब्रवाम दस्मा वार्यं दधानाः।**

**वयश्चन सुभ्व१ आव यन्ति क्षुभा मर्तमनुयतं वधस्नैः॥१३॥**

**विद। चित्। नु। महान्तः। ये। वः। एवाः। ब्रवाम। दस्माः। वार्यम्। दधानाः। वयः। चन। सुऽभ्वः। आ। अव। यन्ति। क्षुभा। मर्तम्। अनुऽयतम्। वधऽस्नैः॥१३॥**

**पदार्थः**-(**विदा**) विजानीत। अत्र **द्व्यचोऽतस्तिङ** इति दीर्घः। (**चित्**) अपि (**नु**) सद्यः (**महान्तः**) (**ये**) (**वः**) युष्मान् (**एवाः**) (**ब्रवाम**) वदेम (**दस्माः**) दुःखोपक्षेतारः (**वार्य्यम्**) वरणीयं सुखम् (**दधानाः**) (**वयः**) जीवनम् (**चन**) अपि (**सुभ्वः**) ये शोभनेषु कर्म्मसु भवन्ति (**आ**) (**अव**) (**यन्ति**) गच्छन्ति (**क्षुभा**) संचलनेन (**मर्त्तम्**) मनुष्यम् (**अनुयतम्**) आनुकूल्येन यतन्तम् (**वधस्नैः**) ये वधेन स्नान्ति पवित्रा भवन्ति ते॥१३॥

**अन्वयः**-हे दस्मा महान्तो जना! ये वार्य्यं वयश्चन दधानाः सुभ्वो वयं यद्वो ब्रवाम तदेवाश्चिन्नु यूयं विदा। ये वधस्नैः क्षुभाऽनुयतं मर्त्तमाव यन्ति तान् यूयं शिक्षध्वम्॥१३॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यथा विद्वांसः शुभकर्माचरेयुरुपदिशेयुश्च तथैव यूयमाचरत ये मनुष्यान् क्षोभयन्ति तान् दण्डयत॥१३॥

**पदार्थः**-हे (**दस्माः**) दुःख की उपेक्षा करने वाले (**महान्तः**) बड़े श्रेष्ठ जनो! (**ये**) जो (**वार्य्यम्**) स्वीकार करने योग्य सुख और (**वयः**) जीवन को (**चन**) भी (**दधानाः**) धारण करते हुए (**सुभ्वः**) श्रेष्ठ कर्म्मों में प्रवृत्त होने वाले हम लोग जो (**वः**) आप लोगों को (**ब्रवाम**) कहें, उसके (**एवाः**) ही (**चित्**) निश्चय (**नु**) शीघ्र आप लोग (**विदा**) जानिये जो (**वधस्नैः**) ताड़न से स्नान करते अर्थात् पवित्र होते हैं, उनके साथ (**क्षुभा**) उत्तम प्रकार चलने से (**अनुयतम्**) अनुकूलता से प्रयत्न करते हुए (**मर्त्तम्**) मनुष्य को (**आ, अव, यन्ति**) उत्तम प्रकार प्राप्त होते हैं, उनकी आप लोग शिक्षा करो॥१३॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे विद्वान् जन शुभ कर्म्म को करें और उपदेश देवें, वैसे ही आप लोग आचरण करो और जो मनुष्य को क्लेश देते हैं, उनको दण्ड दीजिये॥१३॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**आ दैव्यानि पार्थिवानि जन्मापश्चाच्छा सुमखाय वोचम्।**



www.9009.co.in

**वर्धन्तां द्यावो गिरश्चन्द्राग्रा उदा वर्धन्तामभिषाता अर्णाः॥ १४॥**

**आ। दैव्यानि। पार्थिवानि। जन्म। अपः। च। अच्छ। सुऽमखाय। वोचम्। वर्धन्ताम्। द्यावः। गिरः। चन्द्रऽअग्राः। उदा। वर्धन्ताम्। अभिऽसाताः। अर्णाः॥ १४॥**

**पदार्थः**-(**आ**) समन्तात् (**दैव्यानि**) देवेषु दिव्येषु गुणेषु भवानि (**पार्थिवानि**) पृथिव्यां विदितानि (**जन्म**) जन्मानि (**अपः**) अपांसि कर्म्माणि (**च**) (**अच्छा**) सुष्ठु। अत्र **संहितायामिति** दीर्घः। (**सुमखाय**) शोभना मखा यज्ञा यस्य तस्मै (**वोचम्**) उपदिशेयम् (**वर्धन्ताम्**) (**द्यावः**) सत्याः कामाः (**गिरः**) सुशिक्षिता वाचः (**चन्द्राग्राः**) चन्द्रं सुवर्णमानन्दो वाऽग्रे यासां ताः (**उदा**) उदकेन (**वर्धन्ताम्**) (**अभिषाताः**) अभितो विभक्ताः (**अर्णाः**) समुद्राः॥ १४॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! अहं यानि दैव्यानि पार्थिवानि जन्मापश्चाच्छाऽऽवोचं येनोदा अर्णा इवाऽस्माकं चन्द्राग्रा अभिषाता द्यावो गिरश्च वर्धन्ताम् यतः सुमखाय प्राणिनो वर्धन्ताम्॥ १४॥

**भावार्थः**-अत्र [वाचकलुप्तो]पमालङ्कारः। हे मनुष्या! यूयं धर्म्याणि कर्म्माणि शुभान् गुणांश्च गृहीत्वा स्वकीयाः कामना वाणीं चाऽलं कुरुत यथोदकेन नद्यः समुद्राश्च वर्धन्ते तथैव धर्म्मयुक्तेन पुरुषार्थेन मनुष्या वर्धन्ते॥ १४॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! मैं जिन (**दैव्यानि**) श्रेष्ठ गुणों में हुए (**पार्थिवानि**) पृथिवीं में विदित (**जन्म**) जन्मों और (**अपः**) कर्म्मों को (**च**) भी (**अच्छा**) उत्तम प्रकार (**आ, वोचम्**) सब ओर से उपदेश करूं जिस (**उदा**) जल से (**अर्णाः**) समुद्रों के सदृश हम लोगों की (**चन्द्राग्राः**) सुवर्ण वा आनन्द अग्रे अर्थात् परिणाम दशा में जिनके उन (**अभिषाताः**) चारों ओर से बँटी हुई (**द्यावः**) सत्य कामनाओं को और (**गिरः**) उत्तम प्रकार शिक्षित वाणियों की (**वर्धन्ताम्**) वृद्धि कीजिये जिससे (**सुमखाय**) शोभन यज्ञों वाले के लिये प्राणियों की (**वर्धन्ताम्**) वृद्धि हो॥ १४॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में [वाचकलुप्तो]पमालङ्कार है। हे मनुष्यो! आप लोग धर्म्मयुक्त कर्म्मों और श्रेष्ठ गुणों को ग्रहण करके अपनी कामनाओं और वाणी को शोभित करो, जैसे जल से नदियां और समुद्र बढ़ते हैं, वैसे ही धर्म्मयुक्त पुरुषार्थ से मनुष्य बढ़ते हैं॥ १४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**पदेपदे मे जरिमा नि धायि वरूत्री वा शक्रा या पायुभिश्च।**

**सिषक्तु माता मही रसा नः स्मत् सूरिभिर्ऋजुहस्त ऋजुवनिः॥ १५॥ १५॥**

**पदेऽपदे। मे। जरिमा। नि। धायि। वरूत्री। वा। शक्रा। या। पायुऽभिः। च। सिसक्तु। माता। मही। रसा। नः। स्मत्। सूरिऽभिः। ऋजुऽहस्ता। ऋजुऽवनिः॥ १५॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**पदेपदे**) प्राप्तव्ये प्राप्तव्ये वेदितव्ये वेदितव्ये गन्तव्ये गन्तव्ये वा पदार्थे (**मे**) मम (**जरिमा**) स्ताविका (**नि**) नितराम् (**धायि**) निधीयते (**वरूत्री**) वरसुखप्रदा (**वा**) (**शक्रा**) शक्तिनिमित्ता (**या**) (**पायुभिः**) रक्षणैः (**च**) (**सिषक्तु**) सम्बध्नातु (**माता**) जननी (**महा**) महती वाग्भूमिर्वा (**रसा**) रसादिगुणयुक्ता (**नः**) अस्मान् (**स्मत्**) एव (**सूरिभिः**) विद्वद्भिः (**ऋजुहस्ता**) ऋजू सरलौ हस्तौ यस्या यस्यां वा सा (**ऋजुवनिः**) ऋजूनामकुटिलानां पदार्थानां संविभाजिका॥१५॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! सूरिभिः पायुभिश्च या मे पदेपदे वरूत्री जरिमा वा शक्रा माता रसा मही ऋजुहस्ता ऋजुवनिर्नः सिषक्तु सा स्मन्निधायि॥१५॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यथा माताऽपत्यानि रक्षति तथैव विद्वत्सङ्गेन लब्धा सुशिक्षिता विद्या विदुषः सर्वतो रक्षति॥१५॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! (**सूरिभिः**) विद्वानों और (**पायुभिः**) रक्षकों से (**च**) और (**या**) जो (**मे**) मेरे (**पदेपदे**) प्राप्त होने प्राप्त होने, जानने जानने वा जाने जाने योग्य पदार्थ में (**वरूत्री**) श्रेष्ठ सुख की देने (**जरिमा**) और स्तुति कराने वाली (**वा**) वा (**शक्रा**) सामर्थ्य में कारण (**माता**) माता (**रस**) रस आदि गुणों से युक्त (**मही**) बड़ी वाणी वा भूमि (**ऋजुहस्ता**) ऋजु अर्थात् सरल हस्त जिसके वा जिसमें वह (**ऋजुवनिः**) ऋजु अर्थात् नहीं जो कुटिल उन पदार्थों के विभक्त करने वाली (**नः**) हम लोगों को (**सिषक्तु**) सम्बन्धित करे वह (**स्मत्**) ही (**नि**) निरन्तर (**धायि**) स्थित की जाती है॥१५॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे माता सन्तानों की रक्षा करती है, वैसे ही विद्वानों के संग से प्राप्त और उत्तम प्रकार शिक्षित विद्या विद्वानों की सब प्रकार रक्षा करती है॥१५॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**कथा दाशेम नमसा सुदानूनेवया मरुतो अच्छोक्तौ प्रश्रवसो मरुतो अच्छोक्तौ।**
**मा नोऽहिर्बुध्न्यो रिषे धादस्माकं भूदुपमातिवनिः॥ १६॥**

**कथा। दाशेम। नमसा। सुऽदानून्। एवऽया। मरुतः। अच्छऽउक्तौ। प्रऽश्रवसः। मरुतः। अच्छऽउक्तौ। मा। नः। अहिः। बुध्न्यः। रिषे। धात्। अस्माकम्। भूत्। उपमातिऽवनिः॥ १६॥**

**पदार्थः**-(**कथा**) केन प्रकारेण (**दाशेम**) दद्याम (**नमसा**) सत्कारेणान्नादिना वा (**सुदानून्**) उत्तमदानान् (**एवया**) गमनक्रियया (**मरुतः**) मनुष्याः (**अच्छोक्तौ**) सत्योक्तौ (**प्रश्रवसः**) प्रकृष्टं श्रवः श्रवणमन्नं वा येषान्ते (**मरुतः**) वायवः (**अच्छोक्तौ**) सम्यग्वचने (**मा**) निषेधे (**नः**) अस्मान् (**अहिः**) मेघः (**बुध्न्यः**) अन्तरिक्षे भवः (**रिषे**) अन्नाय (**धात्**) दध्यात् (**अस्माकम्**) (**भूत्**) भवेत् (**उपमातिवनिः**) उपमातेर्विभाजकः॥१६॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे विद्वांसः! प्रश्रवसो मरुतो वयमेवयाच्छोक्तौ नमसा सुदानून् कथा दाशेम यथा मरुतोच्छोक्तौ प्रवर्त्तयन्ति तथा नोऽस्मानत्र प्रवर्त्तयत। यथा बुध्न्योऽहिरस्माकमुपमातिवनिर्भूत् रिषेऽस्मान् मा धात्तथा यूयमप्यस्मान् हिंसायां मा प्रवर्त्तयत॥१६॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यूयं विदुषः प्रति पृष्ट्वा वयं कि दद्याम कस्मात् किं गृह्णीयामेति निश्चित्य व्यवहरत यथा मेघः स्वयं छिन्नो भिन्नो भूत्वाऽन्यान् रक्षति तथैव विद्वांसस्स्वयं पराऽपकारेण छिन्नो भिन्ना भूत्वाप्यन्यान् सदैवोपकुर्वन्ति॥१६॥

**पदार्थः**-हे विद्वानो! **(प्रश्रवसः)** उत्तम श्रवण वा अन्न जिनका वे **(मरुतः)** मनुष्य हम लोग **(एवया)** गमन क्रिया से **(अच्छोक्तौ)** सत्य कथन में **(नमसा)** सत्कार वा अन्न आदि से **(सुदानून्)** उत्तम दानों को **(कथा)** कैसे **(दाशेम)** देवें जैसे **(मरुतः)** पवन **(अच्छोक्तौ)** उत्तम वचन में प्रवृत्त कराते हैं, वैसे **(नः)** हम लोगों को इस विषय में प्रवृत्त करिये। जैसे **(बुध्न्यः)** अन्तरिक्ष में हुआ **(अहिः)** मेघ **(अस्माकम्)** हम लोगों का **(उपमातिवनिः)** उपमा का विभाग करने वाला **(भूत्)** हो और **(रिषे)** अन्न के लिये हम लोगों को **(मा)** नहीं **(धात्)** धारण करे, वैसे आप लोग भी हम लोगों को हिंसा में न प्रवृत्त कीजिये॥१६॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! आप लोग विद्वानों के प्रति प्रश्न करके कि हम लोग क्या देवें और किससे क्या ग्रहण करें, ऐसा निश्चय करके व्यवहार करो और जैसे मेघ स्वयं छिन्न-भिन्न होके अन्यों की रक्षा करता है, वैसे ही विद्वान् जन स्वयं दूसरे से अपकार किये हुये से छिन्न-भिन्न होकर भी अन्यों का सदा उपकार करते हैं॥१६॥

**पुनर्विद्वद्विषयमाह॥**

फिर विद्वद्विषय को कहते हैं॥

**इति॑ चिन्नु प्र॒जायै॑ पशु॒मत्यै॒ देवा॑सो॒ वन॑ते॒ मर्त्यो॑ व॒ आ दे॑वासो वनते॒ मर्त्यो॑ वः।**

**अत्रा॑ शि॒वां त॒न्वो॑ धा॒सिम॒स्या ज॒रां चि॑न्मे॒ निर्ऋ॑तिर्जग्रसीत॥१७॥**

**इति॑। चि॒त्। नु। प्र॒ऽजायै॑। प॒शु॒ऽमत्यै॑। देवा॑सः। वन॑ते। मर्त्यः॑। व॒ः। आ। दे॒वा॒स॒ः। व॒न॒ते॒। मर्त्यः॑। व॒ः। अत्र॑। शि॒वाम्। त॒न्वः॑। धा॒सिम्। अ॒स्याः। ज॒राम्। चि॒त्। मे॒। निः॒ऽऋ॑तिः। ज॒ग्र॒सी॒त॒॥१७॥**

**पदार्थः**-**(इति)** अनेन प्रकारेण **(चित्)** निश्चयेन **(नु)** सद्यः **(प्रजायै)** **(पशुमत्यै)** बहवः पशवो विद्यन्ते यस्यां तस्यै **(देवासः)** विद्वांसः **(वनते)** सम्भजसि **(मर्त्यः)** मनुष्यः **(वः)** युष्मान् **(आ)** समन्तात् **(देवासः)** विद्वांसः **(वनते)** सम्भजति **(मर्त्यः)** **(वः)** युष्माकम् **(अत्रा)** अस्यां प्रजायाम्। अत्र **ऋचि तुनुघेति** दीर्घः। **(शिवाम्)** मङ्गलमयीम् **(तन्वः)** शरीरस्य **(धासिम्)** अन्नम् **(अस्याः)** प्रजायाः **(जराम्)** वृद्धावस्थाम् **(चित्)** निश्चयेन **(मे)** मम **(निर्ऋतिः)** भूमिः। **निर्ऋतिरिति पृथिवीनामसु पठितम्।** (निघं०१।१) **(जग्रसीत)** ग्रसते॥१७॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे देवासो! यो मर्त्यो वः पशुमत्यै प्रजायै धासिं वनते यश्चिदित्यस्याः प्रजायास्तन्वः शिवां जरामा वनते यो मर्त्यश्चिन्मे तन्वः शिवां जरां वनते निर्ऋतिरिवात्रा वो धासिं जग्रसीतेति, हे देवासो! यूयमस्मभ्यमेतन्नु साध्नुत॥१७॥

**भावार्थः**-हे विद्वांसो! यूयमीदृशं प्रयत्नं कुरुत येन मनुष्याणामायुर्वर्द्धेत यावन्मनुष्या वृद्धा न भवन्ति तावदेते परीक्षका अपि न जायन्ते॥१७॥

**पदार्थः**-हे **(देवासः)** विद्वान् जनो! जो **(मर्त्यः)** मनुष्य **(वः)** आप लोगों को **(पशुमत्यै)** बहुत पशु विद्यमान जिसमें उस **(प्रजायै)** प्रजा के लिये **(धासिम्)** अन्न की **(वनते)** सेवा करता है और जो **(चित्)** निश्चय से **(इति)** इस प्रकार से **(अस्याः)** इस प्रजा के **(तन्वः)** शरीर की **(शिवाम्)** मंगलस्वरूप **(जराम्)** वृद्धावस्था की **(आ, वनते)** अच्छे प्रकार सेवा करता है और जो **(मर्त्यः)** मनुष्य **(चित्)** निश्चय से **(मे)** मेरे शरीर की मंगलस्वरूप वृद्धावस्था का सेवन करता है और **(निर्ऋतिः)** भूमि के सदृश **(अत्रा)** इस प्रजा में **(वः)** आप लोगों के अन्न को **(जग्रसीत)** खाता है, इस प्रकार हे **(देवासः)** विद्वान्! आप लोग हम लोगों के लिये इसको **(नु)** शीघ्र सिद्ध कीजिये॥१७॥

**भावार्थः**-हे विद्वान् जनो! आप लोग ऐसा प्रयत्न करो जिससे मनुष्यों की अवस्था बढ़े, जब तक मनुष्य वृद्ध नहीं होते, तब तक ये परीक्षक भी नहीं होते हैं॥१७॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**तां वो॑ देवाः सु॒म॒तिमू॒र्जय॑न्ती॒मिष॑मश्याम वसव॒: शसा॒ गोः।**

**सा नः॑ सु॒दानु॑र्मृ॒ळय॑न्ती दे॒वी प्रति॒ द्रव॑न्ती सुवि॒ताय॑ गम्याः॥ १८॥**

**ताम्। व॒:। दे॒वा॒:। सु॒ऽम॒तिम्। ऊ॒र्जय॑न्तीम्। इष॑म्। अ॒श्या॒म॒। व॒स॒व॒:। शसा॑। गोः। सा। न॒:। सु॒ऽदानु॑:। मृ॒ळय॑न्ती। दे॒वी। प्रति॑। द्रव॑न्ती। सु॒वि॒ताय॑। ग॒म्या॒:॥१८॥**

**पदार्थः**-**(ताम्)** **(वः)** युष्मान् **(देवाः)** धार्मिका विद्वांसः **(सुमतिम्)** श्रेष्ठां प्रज्ञाम् **(ऊर्जयन्तीम्)** पराक्रमादिदानेनोन्नयन्तीम् **(इषम्)** अन्नम् **(अश्याम)** भुञ्जीमहि **(वसवः)** शुभगुणेषु कृतनिवासाः **(शसा)** प्रशंसया **(गोः)** पृथिव्या मध्ये **(सा)** **(नः)** अस्मान् **(सुदानुः)** उत्तमदाना **(मृळयन्ती)** सुखयन्ती **(देवी)** विदुषी **(प्रति)** **(द्रवन्ती)** जानन्ती गच्छन्ती वा **(सुविताय)** ऐश्वर्य्याय **(गम्याः)** प्राप्नुयाः॥१८॥

**अन्वयः**-हे देवा या सुदानुर्मृळयन्ती प्रति द्रवन्ती देवी सुविताय वो याति तामूर्जयन्तीं सुमतिमिषं च वयमश्याम। हे वसवो! या गोः शसा सह वर्त्तते सा नोऽस्मान् प्राप्नोतु। हे विदुषि स्त्रि! त्वमेतान् प्रति गम्याः॥१८॥

**भावार्थः**-मनुष्याः सदा सुसंस्कृतं बुद्धिबलवर्धकमन्नं सदाऽदन्तु येन प्रज्ञा कीर्त्तिर्धनं च वर्धेत॥१८॥

**पदार्थः**-हे **(देवाः)** धार्मिक विद्वान् जनो! जो **(सुदानुः)** उत्तम दान से युक्त **(मृळयन्ती)** सुख देती **([प्रति] द्रवन्ती)** जानती वा चलती हुई **(देवी)** विद्यायुक्त स्त्री **(सुविताय)** ऐश्वर्य्य के लिये **(वः)**



www.9009.co.in

आप लोगों को प्राप्त होती है **(ताम्)** उसको **(ऊर्जयन्तीम्)** तथा पराक्रम आदि के दान से वृद्धि कराती हुई **(सुमतिम्)** श्रेष्ठ बुद्धि को और **(इषम्)** अन्न को हम लोग **(अश्याम)** भोगें। हे **(वसवः)** उत्तम गुणों में निवास किये हुए जनो! जो **(गोः)** पृथिवी के मध्य में **(शसा)** प्रशंसा के साथ वर्त्तमान है **(सा)** वह **(नः)** हम लोगों को प्राप्त हो। और हे विद्यायुक्त स्त्री! आप इन जनों के **(प्रति)** प्रति **(गम्याः)** प्राप्त हूजिये॥१८॥

**भावार्थः-**मनुष्य सदा उत्तम प्रकार घृत आदि के संस्कार से युक्त बुद्धि और बल के बढाने वाले अन्न का सदा भोग करें, जिससे बुद्धि यश और धन बढ़े॥१८॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**अभि न इळा यूथस्य माता स्मन्नदीभिरुर्वशी वा गृणातु।**
**उर्वशी वा बृहद्दिवा गृणानाभ्यूर्ण्वाना प्रभृथस्यायोः॥१९॥**

**अभि। नः। इळा। यूथस्य। माता। स्मत्। नदीभिः। उर्वशी। वा। गृणातु। उर्वशी। वा। बृहत्ऽदिवा। गृणाना। अभिऽऊर्ण्वाना। प्रऽभृथस्य। आयोः॥१९॥**

**पदार्थः-(अभि)** **(नः)** अस्मान् **(इळा)** प्रशंसनीया वाग्भूमिर्वा **(यूथस्य)** समूहस्य **(माता)** मान्यकर्त्री जननीव **(स्मत्)** एव **(नदीभिः)** सद्भिरिव नाडीभिः **(उर्वशी)** उरवो बहवो वशे भवन्ति यया सा वाणी। **उर्वशीति पदनामसु पठितम्।** (निघं०४.२) **(वा)** **(गृणातु)** स्तौतु **(उर्वशी)** बहुवशकर्त्री प्रज्ञा **(वा)** **(बृहद्दिवा)** बृहती द्यौः प्रकाशो यस्याः सा **(गृणाना)** स्ताविका **(अभ्यूर्ण्वाना)** आभिमुख्येनार्थानाच्छादयन्ती **(प्रभृथस्य)** प्रकर्षेण ध्रियमाणस्य **(आयोः)** जीवनस्य॥१९॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! येळा यूथस्य मातेव नोऽस्मानभि गृणातु वायोरुर्वशी नदीभिस्स्मद् गृणातु वा बृहद्दिवा गृणानोर्वश्यभ्यूर्ण्वाना प्रभृथस्यायोर्गृणातु॥१९॥

**भावार्थः-**अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यूयं यदि सत्यभाषणयुक्तां वाणीं धरत तर्हि युष्माकमायुर्वर्धेत॥१९॥

**पदार्थः-**हे मनुष्यो! जो **(इळा)** प्रशंसा करने योग्य वाणी वा भूमि **(यूथस्य)** समूह की **(माता)** आदर करने वाली माता के सदृश **(नः)** हम लोगों की **(अभि, गृणातु)** सब ओर से स्तुति करे **(वा)** वा **(आयोः)** जीवन की **(उर्वशी)** बहुत वश में होते हैं, जिससे ऐसी वाणी **(नदीभिः)** श्रेष्ठों के सदृश नाड़ियों से **(स्मत्)** ही स्तुति करे **(वा)** वा **(बृहद्दिवा)** बड़ा प्रकाश जिसका ऐसी **(गृणाना)** स्तुति करने वाली **(उर्वशी)** और बहुतों को वश में करने वाली बुद्धि **(अभ्यूर्ण्वाना)** संमुखता से अर्थों को ढांपती हुई **(प्रभृथस्य)** प्रकर्षता से धारण किये गये जीवन की स्तुति करे॥१९॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! आप लोग जो सत्यभाषण से युक्त वाणी को धारण करें तो आप लोगों की अवस्था बढ़े॥१९॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**सिषक्तु न ऊर्जव्यस्य पुष्टेः॥२०॥१६॥**

**सिषक्तु। नः। ऊर्जव्यस्य। पुष्टेः॥२०॥**

**पदार्थः**-(**सिषक्तु**) परिचरतु (**नः**) अस्मान् (**ऊर्जव्यस्य**) बहुबलप्राप्तस्य (**पुष्टेः**)॥२०॥

**अन्वयः**-यो विद्वान् भवेत् स न ऊर्जव्यस्य पुष्टेर्योगं सिषक्तु॥२०॥

**भावार्थः**-यो जगदुपकारी भवति स एव सर्वविद्यासम्बन्धं कर्त्तुमर्हति॥२०॥

अत्र विश्वेषां देवानां गुणवर्णनं कृतमतोऽस्य सूक्तस्यार्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इत्येकचत्वारिंशत्तमं सूक्तं षोडशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-जो विद्वान् होवे वह (**नः**) हम लोगों को (**ऊर्जव्यस्य**) बहुत बल से प्राप्त (**पुष्टेः**) पुष्टि के योग का (**सिषक्तु**) सेवन करे॥२०॥

**भावार्थः**-जो जगत् का उपकार करने वाला होता है, वही सम्पूर्ण विद्याओं के सम्बन्ध करने योग्य होता है॥२०॥

इस सूक्त में विश्वेदेवों के गुण-वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह इकतालीसवां सूक्त और सोलहवां वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

**अथाष्टादशर्चस्य द्विचत्वारिंशत्तमस्य सूक्तस्याऽत्रिर्ऋषिः। विश्वेदेवा देवताः। १, ४, ६, ९, ११, १२, १८ निचृत्त्रिष्टुप्। २, १५ विराट् त्रिष्टुप्। ३, ५, ७, ८, १०, १३, १४, १६ त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः। १७ याजुषी पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः॥**

***अथ विश्वेदेवगुणानाह॥***

अब अठारह ऋचा वाले बयालीसवें सूक्त का प्रारम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में विश्वेदेवों के गुणों को कहते हैं॥

**प्र शंत॑मा॒ वरु॑णं॒ दीधि॑ती॒ गीर्मि॒त्रं भग॒मदि॑तिं नू॒नम॑श्याः।**
**पृष॑द्योनि॒: पञ्च॑होता शृणो॒त्वतू॑र्तपन्था॒ असु॑रो मयो॒भुः॥ १॥**

**प्र। शम्ऽत॑मा। वरु॑णम्। दीधि॑ती। गीः। मि॒त्रम्। भग॑म्। अदि॑तिम्। नू॒नम्। अ॒श्या॒ः। पृष॑त्ऽयोनिः। पञ्च॑ऽहोता। शृ॒णो॒तु॒। अतू॑र्तऽपन्थाः। असु॑रः। म॒य॒ःऽभुः॥ १॥**

**पदार्थः**-(**प्र**) (**शन्तमा**) अतिशयेन सुखकरी (**वरुणम्**) उदानम् (**दीधिती**) प्रकाशयन्ती (**गीः**) वाक् (**मित्रम्**) प्राणम् (**भगम्**) ऐश्वर्य्यम् (**अदितिम्**) आकाशं भूमिं वा (**नूनम्**) (**अश्याः**) प्राप्नुयाः (**पृषद्योनिः**) पृषतिर्वृष्टिर्योनिर्यस्याः सा (**पञ्चहोता**) पञ्च प्राणा होता आदातारो यस्याः सा (**शृणोतु**) (**अतूर्त्तपन्थाः**) अतूर्त्तोऽहिंसितः पन्था यस्य सः। (**असुरः**) प्रकाशाऽऽवरको मेघः (**मयोभुः**) सुखं भावुकः॥ १॥

**अन्वयः**-हे विद्वन्! या वरुणं दीधिती शन्तमा पृषद्योनिः पञ्चहोता गीर्वर्त्तते तां मित्रं भगमदितिं च नूनं प्राश्याः। योऽतूर्त्तपन्थाः मयोभुरसुरो मेघोऽस्ति तत्रस्था या वाक् तां भवाञ्छृणोतु॥ १॥

**भावार्थः**-सर्वेषु चराचरेषु पदार्थेष्वाकाशसंयोगाद् वाणी वर्त्तते तां विद्वांस एव ज्ञातुं कार्य्येषु व्यवहर्त्तुं च शक्नुवन्ति॥ १॥

**पदार्थः**-हे विद्वन्! जो (**वरुणम्**) उदान वायु को (**दीधिती**) प्रकाशित करती हुई (**शन्तमा**) अत्यन्त सुख करने वाली (**पृषद्योनिः**) वृष्टि है कारण जिसका ऐसी तथा (**पञ्चहोता**) पांच प्राण ग्रहण करने वाले जिसके ऐसी (**गीः**) वाणी वर्त्तमान है उसको (**मित्रम्**) प्राण (**भगम्**) ऐश्वर्य और (**अदितिम्**) आकाश वा भूमि को (**नूनम्**) निश्चय करके (**प्र, अश्याः**) प्राप्त होवे और जो (**अतूर्त्तपन्थाः**) नहीं हिंसित है मार्ग जिसका ऐसा (**मयोभुः**) सुखकारक (**असुरः**) प्रकाश का आवरण करने वाले मेघ है, उसमें स्थित जो वाणी उसको आप (**शृणोतु**) सुनिये॥ १॥

**भावार्थः**-सब चर और अचर पदार्थों में आकाश के संयोग से वाणी वर्त्तमान है, उसको विद्वान् ही जान और कार्य्यों में व्यवहार में ला सकते हैं॥ १॥



www.9009.co.in

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**प्रति॑ मे॒ स्तोम॒मदि॑तिर्जगृभ्यात् सू॒नुं न मा॒ता हृद्यं॑ सु॒शेव॑म्।**

**ब्रह्म॑ प्रि॒यं दे॒वहि॑तं॒ यदस्त्य॒हं मि॒त्रे वरु॑णे॒ यन्म॑यो॒भु॥२॥**

**प्रति॑। मे॒। स्तोम॑म्। अदि॑तिः। ज॒गृ॒भ्या॒त्। सू॒नुम्। न। मा॒ता। हृद्य॑म्। सु॒ऽशेव॑म्। ब्रह्म॑। प्रि॒यम्। दे॒वऽहि॑तम्। यत्। अस्ति॑। अ॒हम्। मि॒त्रे। वरु॑णे। यत्। म॒यः॒ऽभु॥२॥**

**पदार्थः-(प्रति)** **(मे)** मम **(स्तोमम्)** स्तुतिम् **(अदितिः)** अखण्डसुखप्रदा **(जगृभ्यात्)** भृशं गृह्णीयात् **(सूनुम्)** अपत्यम् **(न)** इव **(माता)** **(हृद्यम्)** हृदयस्य प्रियम् **(सुशेवम्)** सुसुखकरम् **(ब्रह्म)** सच्चिदानन्दलक्षणं चेतनम् **(प्रियम्)** कमनीयं प्रीतिकरम् **(देवहितम्)** देवेभ्यो विद्वद्भ्यो हितकारि **(यत्)** **(अस्ति)** **(अहम्)** **(मित्रे)** प्राणे **(वरुणे)** उदाने **(यत्)** **(मयोभुः)** सुखं भावुकम्॥२॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! अदितिर्माता हृद्यं सूनुं न यो मे स्तोमं प्रति जगृभ्याद्यत्सुशेवं प्रियं देवहितं ब्रह्मास्ति यच्च मित्रे वरुणे मयोभ्वस्ति तदहमिष्टं मन्ये तथा यूयमपि मन्यध्वम्॥२॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यो जगदीश्वरः प्रेमभावेन स्तुतस्तदाऽऽज्ञासेवनं कृतं चेत्तर्हि स यथा कृपायमाणा माता सद्यो जातं बालकमिव धार्मिकमुपासकमनुगृह्णाति, यो जगदीश्वरः सर्वत्र व्याप्तोऽपि प्राणादिषु प्राप्यते तं सर्वदा सुखप्रदं वयमुपास्महि॥२॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(अदितिः)** पूर्ण सुख की देने वाली **(माता)** माता **(हृद्यम्)** हृदय के प्रिय **(सूनुम्)** सन्तान के **(न)** सदृश जो **(मे)** मेरी **(स्तोमम्)** स्तुति को **(प्रति, जगृभ्यात्)** अत्यन्त ग्रहण करे और **(यत्)** जिस **(सुशेवम्)** उत्तम प्रकार सुख देने वाले **(प्रियम्)** सुन्दर और प्रीतिकारक तथा **(देवहितम्)** देव अर्थात् विद्वानों के लिये हितकारक **(ब्रह्म)** सत्, चित् और आनन्दस्वरूप चेतन **(अस्ति)** है और **(यत्)** जो **(मित्रे)** प्राणवायु और **(वरुणे)** उदान वायु में **(मयोभु)** सुखकारक है, उसको **(अहम्)** मैं इष्ट मानता हूं, वैसे आप लोग भी मानिये॥२॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो जगदीश्वर प्रेमभाव से स्तुति किया गया और जो उसकी आज्ञा का सेवन किया हो तो वह जैसे कृपा करनेवाली माता शीघ्र उत्पन्न हुए बालक पर वैसे धार्मिक उपासक जन पर दया करता है, जो जगदीश्वर सर्वत्र व्याप्त हुआ भी प्राणादिकों में पाया जाता है, उस सब काल में सुख देने वाले परमात्मा की हम उपासना करें॥२॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**उदी॑रय क॒वित॑मं कवी॒नामु॒नत्तै॑नम॒भि मध्वा॑ घृ॒तेन॑।**



www.9009.co.in

**स नो॒ वसू॑नि॒ प्रय॑ता हि॒तानि॑ च॒न्द्राणि॑ दे॒वः स॑वि॒ता सु॑वाति॥३॥**

**उत्। ई॒र॒य॒। क॒वि॒ऽत॑मम्। क॒वी॒नाम्। उ॒नत्त॑। ए॒नम्। अ॒भि। मध्वा॑। घृ॒तेन॑। सः। न॒ः। वसू॑नि। प्र॒ऽय॑ता। हि॒तानि॑। च॒न्द्राणि॑। दे॒वः। स॒वि॒ता। सु॒वा॒ति॒॥३॥**

**पदार्थः**-(**उत्**) (**ईरय**) प्रेरयत (**कवितमम्**) अतिशयेन मेधाविनम् (**कवीनाम्**) मेधाविनाम् (**उनत्त**) विद्यासुशिक्षाभ्यां सिञ्चत (**एनम्**) (**अभि**) आभिमुख्ये (**मध्वा**) मधुरेण (**घृतेन**) उदकेनेव (**सः**) (**नः**) अस्मभ्यम् (**वसूनि**) द्रव्याणि (**प्रयता**) प्रयत्नसाध्यानि (**हितानि**) हितकराणि (**चन्द्राणि**) आनन्दप्रदानि सुवर्णादीनि (**देवः**) विद्वान् (**सविता**) विद्यैश्वर्य्यकारकः (**सुवाति**) सुवेत् प्रयच्छेत्॥३॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथा कृषीवला मध्वा घृतेन क्षेत्रादीनि सिक्त्वा शस्यादीनि लभन्ते तथैवैनं कवीनां कवितममुदीरयाभ्युदयायोनत्त। हे विद्वांसो! यं कवीनां कवितममुदीरय स सविता देवो नो प्रयता चन्द्राणि हितानि वसूनि सुवाति॥३॥

**भावार्थः**-हे विद्वांसोऽध्यापका यो हि सर्वेभ्य उत्तमोऽखिलविद्योऽनूचानो विद्वान् भवेत्तं गृहाश्रमं मा कुर्वित्युपदिशत। येन संसारस्थमनुष्याणां महत्सुखं वर्धेत, कुतो यो हि पूर्णविद्यो भूत्वा गृहाश्रमं बहुव्यापारवत्त्वेन वीर्य्यादिक्षयादल्पायुर्भूत्वा सततं मनुष्यहितं कर्त्तुं न शक्नुयात्॥३॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे खेत बोने वाले जन (**मध्वा**) मधुर (**घृतेन**) जल से क्षेत्र आदि सींच कर अन्नादिकों को प्राप्त होते हैं, वैसे ही (**एनम्**) इस (**कवीनाम्**) बुद्धिमानों के मध्य में (**कवितमम्**) अत्यन्त बुद्धिमान् को (**उत्, ईरय**) उत्तमता से प्रेरणा देओ तथा (**अभि, उनत्त**) अभ्युदय के अर्थ विद्या और उत्तम शिक्षा से सींचो और हे विद्वन्! जिस कवियों के मध्य में श्रेष्ठ कवि की प्रेरणा करो (**सः**) वह (**सविता**) विद्या और ऐश्वर्य्य का करने वाला (**देवः**) विद्वान् (**नः**) हम लोगों के लिये (**प्रयता**) प्रयत्न से सिद्ध होने योग्य (**चन्द्राणि**) आनन्द के देने वाले सुवर्ण आदि (**हितानि**) हितकारक (**वसूनि**) द्रव्यों को (**सुवाति**) देवे॥३॥

**भावार्थः**-हे विद्वान् अध्यापक पुरुषो! आप लोग जो निश्चय करके सब से उत्तम, सम्पूर्ण विद्याओं से युक्त, श्रेष्ठ विद्वान् होवे, उसको गृहाश्रम न कर, ऐसा उपदेश दीजिये। जिससे संसार में वर्त्तमान मनुष्यों का बड़ा सुख बढ़े, क्योंकि जो निश्चय करके पूर्ण विद्यायुक्त होकर गृहाश्रम को करे, वह बहुत व्यापारवान् होने से, वीर्य्य आदि के नाश होने से, थोड़ी अवस्थायुक्त होकर निरन्तर मनुष्यों के हित करने को नहीं समर्थ होवे॥३॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**समि॑न्द्र णो॒ मन॑सा नेषि॒ गोभि॒ः सं सू॒रिभि॑र्हरिवः॒ सं स्व॒स्ति।**

**सं ब्रह्म॑णा दे॒वहि॑तं॒ यदस्ति॒ सं दे॒वानां॑ सुम॒त्या य॒ज्ञिया॑नाम्॥४॥**



www.9009.co.in

**सम्। इन्द्र। नः। मनसा। नेषि। गोभिः। सम्। सूरिऽभिः। हरिऽवः। सम्। स्वस्ति। सम्। ब्रह्मणा। देवऽहितम्। यत्। अस्ति। सम्। देवानाम्। सुऽमत्या। यज्ञियानाम्॥४॥**

**पदार्थः**-(**सम्**) उत्तमप्रकारेण (**इन्द्र**) विद्यैश्वर्य्यसम्पन्न (**नः**) अस्मान् (**मनसा**) विज्ञानेन (**नेषि**) नयसि (**गोभिः**) इन्द्रियैर्वाग्भिर्वा (**सम्**) (**सूरिभिः**) विद्वद्भिस्सह (**हरिवः**) प्रशस्तमनुष्ययुक्त (**सम्**) (**स्वस्ति**) सुखम् (**सम्**) (**ब्रह्मणा**) वेदेन धनेनाऽन्नेन वा (**देवहितम्**) (**यत्**) (**अस्ति**) (**सम्**) (**देवानाम्**) विदुषाम् (**सुमत्या**) श्रेष्ठया प्रज्ञया (**यज्ञियानाम्**) यज्ञकर्तॄणाम्॥४॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! यतस्त्वं यद् गोभिः सह सं स्वस्त्यस्ति तन्नो मनसा सन्नेषि। हे हरिवो! यत्सूरिभिः सह स्वस्त्यस्ति तन्नः सन्नेषि। यद् ब्रह्मणा सह देवहितं स्वस्त्यस्ति तन्न सन्नेषि। यद्यज्ञियानां देवानां सुमत्या सह देवहितं स्वस्त्यस्ति तन्नः सन्नेषि तस्मात् सत्कर्त्तव्योऽसि॥४॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यूयं सत्यवाचा विद्वत्सङ्गेन वेदविद्यया श्रेष्ठप्रज्ञया च सहिताः सुभूषिताः सन्तोऽभीष्टं सुखं लभध्वम्॥४॥

**पदार्थः**-हे (**इन्द्र**) विद्या और ऐश्वर्य्य से युक्त जिससे आप (**यत्**) जो (**गोभिः**) इन्द्रियों वा वाणियों के साथ (**सम्, स्वस्ति**) उत्तम सुख (**अस्ति**) है वह (**नः**) हम लोगों को (**मनसा**) विज्ञान के साथ (**सम्, नेषि**) अच्छे प्रकार प्राप्त करते हैं और हे (**हरिवः**) श्रेष्ठ मनुष्यों से युक्त! जो (**सूरिभिः**) विद्वानों के साथ सुख है, वह हम लोगों को (**सम्**) एक साथ प्राप्त करते हैं और जो (**ब्रह्मणा**) वेद, धन वा अन्न के साथ (**देवहितम्**) विद्वानों का हितकारक सुख है, वह हम लोगों को (**सम्**) एक साथ प्राप्त करते हैं और जो (**यज्ञियानाम्**) यज्ञ करने वाले (**देवानाम्**) विद्वानों की (**सुमत्या**) श्रेष्ठ बुद्धि के साथ विद्वानों का हितकारक सुख है, वह हम लोगों के लिये (**सम्**) एक साथ प्राप्त करते हैं, इससे सत्कार करने योग्य हो॥४॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! आप लोग सत्यवाणी, विद्वानों का सङ्ग, वेदविद्या और श्रेष्ठ बुद्धि के सहित उत्तम प्रकार शोभित हुए अभीष्ट सुख को प्राप्त हूजिये॥४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

### देवो भर्गः सविता रायो अंश इन्द्रो वृत्रस्य संजितो धनानाम्।
### ऋभुक्षा वाज उत वा पुरंधिरवन्तु नो अमृतासस्तुरासः॥५॥१७॥

**देवः। भर्गः। सविता। रायः। अंशः। इन्द्रः। वृत्रस्य। सम्ऽजितः। धनानाम्। ऋभुक्षाः। वाजः। उत। वा। पुरम्ऽधिः। अवन्तु। नः। अमृतासः। तुरासः॥१५॥**

**पदार्थः**-(**देवः**) दाता (**भगः**) ऐश्वर्य्यसम्पन्नः (**सविता**) प्रेरकः (**रायः**) धनानि (**अंशः**) विभागः (**इन्द्रः**) सूर्यः (**वृत्रस्य**) मेघस्य (**संजितः**) सम्यग्जेता (**धनानाम्**) (**ऋभुक्षाः**) महान् (**वाजः**) ज्ञानवान्



www.9009.co.in

**(उत)** अपि **(वा)** **(पुरन्धिः)** पूर्वी बह्वी धीर्यस्य सः। **(अवन्तु)** **(नः)** अस्मान् **(अमृतासः)** स्वरूपेणाऽविनाशिनः **(तुरासः)** शीघ्रकारिणस्त्वरिताः॥५॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथा देवो भगः सविता रायोंऽशो वृत्रस्य धनानां संजित इन्द्र ऋभुक्षा वाज उत वा पुरन्धिस्तुरासोऽमृतासो नोऽस्मानवन्तु तथैते युष्मानपि रक्षन्तु॥५॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। ये मनुष्याः स्वात्मवदन्येषां सुखदुःखहानिलाभप्रतिष्ठाऽप्रतिष्ठा मन्यन्ते त एव प्रशंसार्हा जायन्ते॥५॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे **(देवः)** दाता **(भगः)** ऐश्वर्य्य से सम्पन्न **(सविता)** प्रेरणा करने वाला **(रायः)** धनों का **(अंशः)** विभाग तथा **(वृत्रस्य)** मेघ और **(धनानाम्)** धनों का **(संजितः)** उत्तम प्रकार जीतने वाला **(इन्द्रः)** सूर्य्य **(ऋभुक्षाः)** बड़ा **(वाजः)** ज्ञानवान् **(उत)** भी **(वा)** वा **(पुरन्धिः)** बहुत बुद्धिमान् और **(तुरासः)** शीघ्र कार्य्य करने वाले तथा **(अमृतासः)** अपने रूप में नहीं नाश होने वाले **(नः)** हम लोगों की **(अवन्तु)** रक्षा करें, वैसे ये आप लोगों की भी रक्षा करें॥५॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो मनुष्य अपने सदृश अन्यों के भी सुख-दुःख, हानि-लाभ, प्रतिष्ठा और अप्रतिष्ठा को मानते हैं, वे ही प्रशंसा के योग्य होते हैं॥५॥

**पुनर्विद्वद्विषयमाह॥**

फिर विद्वानों के विषय को कहते हैं॥

**मरुत्वतो अप्रतीतस्य जिष्णोरजूर्यतः प्र ब्रवामा कृतानि।**

**न ते पूर्वे मघवन्नापरासो न वीर्यं१ नूतनः कश्चनाप॥६॥**

**मरुत्वतः। अप्रतिऽइतस्य। जिष्णोः। अजूर्यतः। प्र। ब्रवाम। कृतानि। न। ते। पूर्वे। मघऽवन्। न। अपरासः। न। वीर्यम्। नूतनः। कः। चन। आप॥६॥**

**पदार्थः**-**(मरुत्वतः)** प्रशंसितविद्वद्युक्तस्य **(अप्रतीतस्य)** प्रतीत्यविषयस्य **(जिष्णोः)** जयशीलस्य **(अजूर्य्यतः)** अप्राप्तजीर्णावस्थस्य **(प्र)** **(ब्रवामा)** उपदिशेम। अत्र **संहितायामिति** दीर्घः। **(कृतानि)** अनुष्ठितानि **(न)** **(ते)** तव **(पूर्वे)** प्राचीनाः **(मघवन्)** परमपूजितधनयुक्त **(न)** **(अपरासः)** पश्चाद्भूताः **(न)** **(वीर्य्यम्)** पराक्रमं बलम् **(नूतनः)** **(कः)** **(चन)** अपि **(आप)** व्याप्नोति॥६॥

**अन्वयः**-हे मघवन्नतुलविद्य विद्वन्नतिबल राजन् वा! मरुत्वतोऽप्रतीतस्याऽजूर्य्यतो जिष्णोस्ते तव यानि कृतानि वयं प्र ब्रवामा तानि न पूर्वे नापरासो व्याप्नुवन्ति तथा नूतनः कश्चन तव वीर्य्यं नाप॥६॥

**भावार्थः**-विद्वद्भिस्तेषामेव प्रशंसितकर्म्मणां कृत्यान्यन्येभ्य उपदेश्यानि येषामप्रतिहतानि सन्ति॥६॥

**पदार्थः**-हे **(मघवन्)** अत्यन्त श्रेष्ठ धन से युक्त और अत्यन्त विद्या वाले विद्वान् वा अतिबलवान् राजन्! **(मरुत्वतः)** प्रशंसित विद्वानों से युक्त **(अप्रतीतस्य)** प्रतीति के अविषय **(अजूर्य्यतः)** जिसको



www.9009.co.in

जीर्ण अवस्था नहीं प्राप्त हुई ऐसे **(जिष्णोः)** जीतने वाले **(ते)** आपके जिन **(कृतानि)** कृत्यों का हम लोग **(प्र, ब्रवामा)** उपदेश देवें उनको **(न)** न **(पूर्वे)** प्राचीनजन **(न)** न **(अपरासः)** पीछे से हुए जन व्याप्त होते हैं और **(नूतनः)** नवीन **(कः, चन)** कोई भी, आपके **(वीर्य्यम्)** पराक्रम को **(न)** नहीं **(आप)** व्याप्त होता है॥६॥

**भावार्थः**-विद्वानों को चाहिये कि उन्हीं प्रशंसित कर्म वालों के कृत्यों को अन्य जनों के लिये उपदेश देवें, जिनके कर्म अप्रतिहत अर्थात् नष्ट नहीं होते हैं॥६॥

**पुनर्विद्वदुपदेशविषयमाह॥**

फिर विद्वानों के उपदेशविषय को कहते हैं॥

**उप॑ स्तुहि प्र॒थ॒मं र॑त्न॒धेयं॒ बृह॒स्पतिं॑ सनि॒तारं॒ धना॑नाम्।**

**यः शंस॑ते स्तुव॒ते शंभ॑विष्ठः पुरू॒वसु॑रा॒गम॒ज्जोहु॑वानम्॥७॥**

**उप॑। स्तु॒हि॒। प्र॒थ॒मम्। र॒त्न॒ऽधेय॑म्। बृह॒स्पति॑म्। स॒नि॒तार॑म्। धना॑नाम्। यः। शंस॑ते। स्तु॒व॒ते। शम्ऽभ॑विष्ठः। पु॒रु॒ऽवसुः॑। आ॒ऽगम॑त्। जोहु॑वानम्॥७॥**

**पदार्थः**-**(उप)** **(स्तुहि)** **(प्रथमम्)** आदिमम् **(रत्नधेयम्)** रत्नानि धेयानि तेन तम् **(बृहस्पतिम्)** बृहतां पालकम् **(सनितारम्)** संविभाजकम् **(धनानाम्)** **(यः)** **(शंसते)** प्रशंसकाय **(स्तुवते)** प्रशंसां कुर्वते **(शम्भविष्ठः)** योऽतिशयेन शम्भावयति सः **(पुरूवसुः)** पुरूणि बहूनि वसूनि धनानि यस्य सः **(आगमत्)** आगच्छेत् **(जोहुवानम्)** आहूयमानमाह्वयितारं वा॥७॥

**अन्वयः**-हे विद्यैश्वर्य्ययुक्त! यः पुरूवसुः शम्भविष्ठो जनः शंसते स्तुवते प्रथमं रत्नधेयं जोहुवानं बृहस्पतिं धनानां सनितारमागमत् तं त्वमुप स्तुहि॥७॥

**भावार्थः**-त एव प्रशंसनीया भवन्ति ये सर्वं सम्भज्य भुञ्जते॥७॥

**पदार्थः**-हे विद्या और ऐश्वर्य्य से युक्त! **(यः)** जो **(पुरूवसुः)** बहुत धनों से युक्त **(शम्भविष्ठः)** अत्यन्त सुखकारक जन **(शंसते)** प्रशंसा करने वाले और **(स्तुवते)** स्तुति करने वाले के लिये **(प्रथमम्)** पहिले **(रत्नधेयम्)** रत्न धरने योग्य जिससे उस **(जोहुवानम्)** पुकारे गये वा पुकारने वाले के लिये **(बृहस्पतिम्)** बड़ों के पालन करने और **(धनानाम्)** धनों के **(सनितारम्)** उत्तम प्रकार विभाग करने वाले को **(आगमत्)** प्राप्त हो, उसकी आप **(उप, स्तुहि)** समीप में स्तुति करो॥७॥

**भावार्थः**-वे ही जन प्रशंसा करने योग्य होते हैं, जो सब पदार्थ बांट अर्थात् विभाग करके खाते हैं॥७॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**तवो॒तिभि॒: सच॑माना॒ अरि॑ष्टा॒ बृह॑स्पते म॒घवा॑नः सु॒वीरा॑ः।**



www.9009.co.in

**ये अश्व॒दा उ॒त वा॒ सन्ति॒ गो॒दा ये व॑स्त्र॒दाः सु॒भगा॒स्तेषु॑ रा॒यः॥८॥**

**तव॑। ऊ॒तिऽभिः॑। सच॑मानाः। अरि॑ष्टाः। बृह॑स्पते। म॒घऽवा॑नः। सु॒ऽवीराः॑। ये। अ॒श्व॒ऽदाः। उ॒त। वा॒। सन्ति॑। गो॒ऽदाः। ये। व॒स्त्र॒ऽदाः। सु॒ऽभगाः॑। तेषु॑। रा॒यः॥८॥**

**पदार्थः**-**(तव)** **(ऊतिभिः)** रक्षादिभिः सह **(सचमानाः)** सम्बध्नन्तः **(अरिष्टाः)** अहिंसिताः **(बृहस्पते)** विद्याद्युत्तमपदार्थानां पालक **(मघवानः)** परमपूजितधनाः **(सुवीराः)** शोभनाश्च ते वीराश्च ते **(ये)** **(अश्वदाः)** अश्वानग्न्यादींस्तुरङ्गान् वा ददति **(उत)** अपि **(वा)** **(सन्ति)** **(गोदाः)** ये गाः सुशिक्षिता वाचो धेनुं ददति **(ये)** **(वस्त्रदाः)** ये वस्त्राणि ददति **(सुभगाः)** सुष्ठु भग ऐश्वर्य्यं धनं वा येषान्ते **(तेषु)** **(रायः)** धनानि॥८॥

**अन्वयः**-हे बृहस्पते! ये तवोतिभिररिष्टाः सचमाना मघवानः सुवीरा अश्वदा उत वा ये गोदा वस्त्रदाः सुभगाः सन्ति तेषु रायो भवन्ति॥८॥

**भावार्थः**-ये धार्मिका राज्ञा रक्षिताः प्रशंसितधनयुक्ता दातारः सन्ति त एव यशस्विनो भूत्वा धनाढ्या जायन्ते॥८॥

**पदार्थः**-हे **(बृहस्पते)** बृहत् अर्थात् विद्या आदि उत्तम पदार्थों की रक्षा करनेवाले! **(ये)** जो **(तव)** आपकी **(ऊतिभिः)** रक्षा आदिकों के साथ **(अरिष्टाः)** नहीं हिंसा किये गये **(सचमानाः)** सम्बन्ध करते हुए **(मघवानः)** अत्यन्त श्रेष्ठ धन से युक्त **(सुवीराः)** उत्तम वीरजन **(अश्वदाः)** अग्नि आदि वा घोड़ों को देने वाले **(उत)** भी **(वा)** वा **(ये)** जो **(गोदाः)** सुशिक्षित वाणी वा गौवों के देने वाले **(वस्त्रदाः)** वस्त्रों के देने वाले और **(सुभगाः)** सुन्दर ऐश्वर्य्य वा धन से युक्त **(सन्ति)** हैं **(तेषु)** उनमें **(रायः)** धन होते हैं॥८॥

**भावार्थः**-जो धार्मिक राजा से रक्षा किये गये प्रशंसित धनों से युक्त दाताजन हैं, वे ही यशस्वी होके धनाढ्य होते हैं॥८॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**वि॒स॒र्माणं॑ कृणुहि वि॒त्तमे॑षां॒ ये भु॒ञ्जते॒ अपृ॑णन्तो न उ॒क्थैः।**
**अप॑व्रतान् प्रस॒वे वा॑वृधा॒नान् ब्र॑ह्म॒द्विषः॒ सूर्या॑द् यावयस्व॥९॥**

**वि॒ऽस॒र्माण॑म्। कृ॒णु॒हि॒। वि॒त्तम्। ए॒षा॒म्। ये। भु॒ञ्जते॑। अपृ॑णन्तः। न॒ः। उ॒क्थैः। अप॑ऽव्रतान्। प्र॒ऽस॒वे। व॒वृ॒धा॒नान्। ब्र॒ह्म॒ऽद्विषः॑। सूर्या॑त्। य॒व॒य॒स्व॒॥९॥**

**पदार्थः**-**(विसर्माणम्)** यो विसृजति तम् **(कृणुहि)** **(वित्तम्)** धनं भोगं वा **(एषाम्)** **(ये)** **(भुञ्जते)** **(अपृणन्तः)** अपूर्णा अपालयन्तो वा **(नः)** अस्माकम् **(उक्थैः)** उत्तमैर्वाक्यैः **(अपव्रतान्)**



www.9009.co.in

ब्रह्मचर्यसत्यभाषणादिव्रताचाररहितान् **(प्रसवे)** उत्पन्ने जगति **(वावृधानान्)** विवर्धमानान् **(ब्रह्मद्विषः)** ये ब्रह्म वेदं परमात्मानं वा द्विषन्ति **(सूर्यात्)** सवितुः **(यावयस्व)** अमिश्रितान् कुरु॥९॥

**अन्वयः**-हे विद्वन्! येऽपृणन्तो भुञ्जते न उक्थैः प्रसवे वावृधानानपव्रतान् ब्रह्मद्विषो निवारयन्त्येषां विसर्म्माणं वित्तं कृणुहि सूर्यात्तान् यावयस्व॥९॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! येऽनाचारान् साचारानविदुषो विदुषः कृत्वा नास्तिकान् निरुध्याधर्माचरणात् पृथग्भूत्वा सततं सुखयन्ति ते माननीया भवन्ति॥९॥

**पदार्थः**-हे विद्वन्! **(ये)** जो **(अपृणन्तः)** नहीं पूर्ण वा नहीं पालन करते हुए **(भुञ्जते)** भोगते हैं और **(नः)** हमारे **(उक्थैः)** उत्तम वाक्यों से **(प्रसवे)** उत्पन्न हुए जगत् में **(वावृधानान्)** अत्यन्त बढ़ते हुए **(अपव्रतान्)** ब्रह्मचर्य्य, सत्यभाषणादि व्रताचाररहित **(ब्रह्मद्विषः)** वेद वा परमात्मा से द्वेष करने वालों को रोकते हैं **(एषाम्)** इन लोगों के **(विसर्म्माणम्)** उत्पन्न करने वाले **(वित्तम्)** धन वा भोग को **(कृणुहि)** करो और **(सूर्य्यात्)** सूर्य्य से उनको **(यावयस्व)** अमिश्रित करो॥९॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो लोग शुद्ध आचरणों से रहितों को शुद्ध आचरणों के सहित और अविद्वानों को विद्वान् करके नास्तिकों को रोक के अधर्म्म के आचरण से पृथक् होके निरन्तर सुखी करते, वे निरन्तर आदर करने योग्य होते हैं॥९॥

**पुनः शिक्षाविषयमाह॥**

फिर शिक्षाविषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**यः ओहते रक्षसो देववीतावचक्रेभिस्तं मरुतो नि यात।**

**यो वः शमीं शशमानस्य निन्दात् तुच्छ्यान् कामान् करते सिष्विदानः॥१०॥१८॥**

**यः। ओहते। रक्षसः। देवऽवीतौ। अचक्रेभिः। तम्। मरुतः। नि। यात। यः। वः। शमीम्। शशमानस्य। निन्दात्। तुच्छ्यान्। कामान्। करते। सिस्विदानः॥१०॥**

**पदार्थः**-**(यः)** **(ओहते)** वहति प्रापयति **(रक्षसः)** दुष्टाचारान् मनुष्यान् **(देववीतौ)** देवैर्विद्वद्भि-र्व्याप्तायां क्रियायाम् **(अचक्रेभिः)** अविद्यमानचक्रैः **(तम्)** **(मरुतः)** मनुष्याः **(नि)** **(यात)** प्राप्नुत **(यः)** **(वः)** युष्माकम् **(शमीम्)** कर्म्म **(शशमानस्य)** प्रशंसितस्य **(निन्दात्)** निन्देत् **(तुच्छ्यान्)** तुच्छेषु क्षुद्रेषु भवान् **(कामान्)** **(करते)** कुर्य्यात् **(सिष्विदानः)** स्निह्यमानः॥१०॥

**अन्वयः**-हे मरुतो! यो देववीतौ रक्षस ओहते यो वः शशमानस्य च शमीं निन्दात् सिष्विदानः सँस्तुच्छ्यान् कामान् करते तमचक्रेभिर्दण्डेन नि यात॥१०॥

**भावार्थः**-हे राजादयो मनुष्या भवन्तो ये कुशिक्षया मनुष्यान् दूषयन्ति निन्दायां विषयासक्तौ च प्रवर्त्तयन्ति तान् भृशं दण्डयन्तु॥१०॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-हे **(मरुतः)** मनुष्यो! **(यः)** जो **(देववीतौ)** देव अर्थात् विद्वानों से व्याप्त क्रिया में **(रक्षसः)** दुष्ट आचरणयुक्त मनुष्यों को **(ओहते)** प्राप्त कराता है **(यः)** जो **(वः)** आप लोगों और **(शशमानस्य)** प्रशंसा किये गये के **(शमीम्)** कर्म्म की **(निन्दात्)** निन्दा करे और **(सिष्विदानः)** संलग्न हुआ **(तुच्छ्यान्)** क्षुद्रों में हुए **(कामान्)** मनोरथों को **(करते)** करे **(तम्)** उसको **(अचक्रेभिः)** चक्रों से रहितों के द्वारा दण्ड से **(नि, यात)** निरन्तर प्राप्त हूजिये॥१०॥

**भावार्थः**-हे राजा आदि मनुष्यो! जो बुरी शिक्षा से मनुष्यों को दूषित करते और निन्दा तथा विषयों की आसक्ति में प्रवृत्त कराते हैं, उनको निरन्तर दण्ड दीजिये॥१०॥

**अथ रुद्रविषयमाह॥**

अब रुद्रविषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**तमु ष्टुहि यः स्विषुः सुधन्वा यो विश्वस्य क्षयति भेषजस्य।**

**यक्ष्वा महे सौमनसाय रुद्रं नमोभिर्देवमसुरं दुवस्य॥११॥**

**तम्। ऊँ इति। स्तुहि। यः। सुऽइषुः। सुऽधन्वा। यः। विश्वस्य। क्षयति। भेषजस्य। यक्ष्व। महे। सौमनसाय। रुद्रम्। नमःऽभिः। देवम्। असुरम्। दुवस्य॥११॥**

**पदार्थः**-**(तम्)** **(उ)** **(स्तुहि)** **(यः)** **(स्विषुः)** शोभना इषवो यस्य सः **(सुधन्वा)** शोभनं धनुर्यस्य सः **(यः)** **(विश्वस्य)** समग्रस्य जगतः **(क्षयति)** निवसति निवासयति वा **(भेषजस्य)** औषधस्य **(यक्ष्वा)** सङ्गमय प्राप्नुहि वा। अत्र **द्व्यचोऽतस्तिङ** इति दीर्घः। **(महे)** महते **(सौमनसाय)** शोभनस्य मनसो भावाय **(रुद्रम्)** दुष्टाना रोदयितारम् **(नमोभिः)** अन्नादिभिः **(देवम्)** दिव्यगुणम् **(असुरम्)** मेघम् **(दुवस्य)** सेवस्व॥११॥

**अन्वयः**-हे राजन् विद्वन् वा! यः स्विषुः सुधन्वा शत्रूञ्जयति यो विश्वस्य मध्ये भेषजस्य प्रवृत्तिं क्षयति निवासयति तं महे सौमनसाय स्तुहि सत्कर्माणि यक्ष्वा तमु देवं रुद्रमसुरं च महे सौमनसाय नमोभिर्दुवस्य॥११॥

**भावार्थः**-हे राजन्! ये शस्त्रास्त्रप्रक्षेपणाय युद्धविद्यायां कुशला वैद्यविद्यायां निपुणा दुष्टानां दण्डप्रदाश्च जनाः स्युस्तान् स्तुत्वा सत्कर्म्मसु नियोज्य सम्यक् परिचर्य सर्वाणि राजकृत्यान्यलङ्कुर्य्याः॥११॥

**पदार्थः**-हे राजन् अथवा विद्वान्! **(यः)** जो **(स्विषुः)** सुन्दर वाणों से युक्त **(सुधन्वा)** उत्तम धनुष् वाला शत्रुओं को जीतता है और **(यः)** जो **(विश्वस्य)** सम्पूर्ण जगत् के मध्य में **(भेषजस्य)** ओषधि की प्रवृति का **(क्षयति)** निवास करता वा निवास कराता है **(तम्)** उसकी **(महे)** बड़े **(सौमसनाय)** श्रेष्ठ मन के भाव के लिये **(स्तुहि)** स्तुति कीजिये और श्रेष्ठ कर्म्मों को **(यक्ष्वा)** मिलाइये वा प्राप्त हूजिये उस **(उ)** ही **(देवम्)** श्रेष्ठ गुणों से युक्त **(रुद्रम्)** और दुष्टों के रुलाने वाले **(असुरम्)** मेघ को बड़े श्रेष्ठ मन के भाव के लिये **(नमोभिः)** अन्नादिकों से **(दुवस्य)** सेवन कीजिये॥११॥

**भावार्थः**-हे राजन्! जो शस्त्र और अस्त्रों के चलाने के लिये युद्धविद्या में चतुर, वैद्यविद्या में निपुण और दुष्टों के दण्ड देने वाले जन होवें, उनकी स्तुति कर अच्छे कर्म्मों में नियुक्त कर और अच्छे प्रकार सेवन कर समस्त राजकृत्यों को पूर्ण करो॥११॥

**अथ विद्वत्कर्त्तव्यशिक्षाविषयमाह॥**

अब विद्वत्कर्त्तव्यशिक्षविषय को कहते हैं॥

**दमूनसो अपसो ये सुहस्ता वृष्णः पत्नीर्नद्यो विभ्वतष्टाः।**

**सरस्वती बृहद्दिवोत राका दशस्यन्तीर्वरिवस्यन्तु शुभ्राः॥१२॥**

**दमूनसः। अपसः। ये। सुऽहस्ताः। वृष्णः। पत्नीः। नद्यः। विभ्वऽतष्टाः। सरस्वती। बृहत्ऽदिवा। उत। राका। दशस्यन्तीः। वरिवस्यन्तु। शुभ्राः॥१२॥**

**पदार्थः**-**(दमूनसः)** दान्ताः **(अपसः)** सुकर्म्माणः **(ये)** **(सुहस्ताः)** शोभनेषु कर्म्मसु येषान्ते **(वृष्णः)** वीर्यवन्तः **(पत्नीः)** भार्याः **(नद्यः)** नद्य इव **(विभ्वतष्टाः)** विभुनेश्वरेण निर्मिताः **(सरस्वती)** विज्ञानवती वाक् **(बृहद्दिवा)** बृहती द्यौर्विद्याप्रकाशो यस्यां सा **(उत)** **(राका)** राति ददाति सुखं या सा। **राकेति पदनामसु पठितम्।** (निघं०५.५) **(दशस्यन्तीः)** इष्टान् कामान् कामान् ददति **(वरिवस्यन्तु)** सेवन्ताम् **(शुभ्राः)** शुद्धस्वरूपाचाराः॥१२॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! येऽपसो दमूनसः सुहस्ता वृष्णो विभ्वतष्टा नद्य इव उत बृहद्दिवा राका सरस्वतीव दशस्यन्तीः शुभ्राः पत्नीर्वरिवस्यन्तु तेऽतुलं सुखमाप्नुवन्तु॥१२॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। कन्या वराश्च यदा ब्रह्मचर्य्येण विद्याः पूर्णा युवावस्था च परस्परस्य परीक्षा च भवेत्तदा स्वयंवरेण विवाहेन पतिपत्न्यौ भूत्वा सौभाग्यवन्तो भवन्तु॥१२॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(ये)** जो **(अपसः)** उत्तम कर्म्म करने **(दमूनसः)** देने **(सुहस्ताः)** और उत्तम कर्म्मों में हाथ लगाने वाले **(वृष्णः)** पराक्रम से युक्त और **(विभ्वतष्टाः)** व्यापक ईश्वर से रचे गये जन **(नद्यः)** नदियों के सदृश **(उत)** और **(बृहद्दिवा)** बड़ा विद्या का प्रकाश जिसमें ऐसी **(राका)** सुख को देनेवाली **(सरस्वती)** विज्ञानयुक्त वाणी के सदृश **(दशस्यन्तीः)** अभीष्ट मनोरथ-मनोरथ को देती हुई और **(शुभ्राः)** सुन्दर स्वरूप तथा उत्तम आचरण करने वाली **(पत्नीः)** विवाहित स्त्रियों का **(वरिवस्यन्तु)** सेवन करें, वे अत्यन्त सुख को प्राप्त होवें॥१२॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। कन्या और वर जब ब्रह्मचर्य्य से विद्यायें पूर्ण, युवावस्था और परस्पर की परीक्षा होवे, तब स्वयंवर विवाह से पति और पत्नी होकर सौभाग्यवान् होते हैं॥१२॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥



www.9009.co.in

**प्र सू म॒हे सु॑शर॒णाय॑ मे॒धां गिरं॑ भरे॒ नव्य॑सीं॒ जाय॑मानाम्।**

**य आ॑ह॒ना दु॑हि॒तुर्व॒क्षणा॑सु रू॒पा मि॑ना॒नो अकृ॑णोदि॒दं नः॑॥१३॥**

**प्र। सु। म॒हे। सु॒ऽश॒र॒णाय॑। मे॒धाम्। गिर॑म्। भ॒रे॒। नव्य॑सीम्। जाय॑मानाम्। यः। आ॒ह॒ना। दु॒हि॒तुः। व॒क्षणा॑सु। रू॒पा। मि॒ना॒नः। अकृ॑णोत्। इ॒दम्। न॒ः॥१३॥**

**पदार्थः**-(**प्र**) (**सू**) अत्र **निपातस्य चे**ति दीर्घः। (**महे**) महते (**सुशरणाय**) शोभनायाऽऽश्रयाय (**मेधाम्**) प्रज्ञाम् (**गिरम्**) वाचम् (**भरे**) धरामि (**नव्यसीम्**) अतिशयेन नूतनाम् (**जायमानाम्**) प्रसिद्धाम् (**यः**) (**आहनाः**) या आहन्यन्ते ताः (**दुहितुः**) कन्यायाः (**वक्षणासु**) वहमानासु नदीषु (**रूपा**) सुन्दराणि रूपाणि (**मिनानः**) मानं कुर्वाणः (**अकृणोत्**) कुर्यात् (**इदम्**) वर्त्तमानं सुखम् (**नः**) अस्मान्॥१३॥

**अन्वयः**-हे विद्वन्! यो मनुष्यो वक्षणासु दुहितू रूपा आहना मिनानो न इदं प्राप्तानकृणोत्। तेनाहं महे सुशरणाय नव्यसीं जायमानां मेधां गिरं च प्र सू भरे॥१३॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यथा सरूपां दुहितरं दृष्ट्वैतस्याः सदृशं पतिं कारयित्वेव प्रज्ञां शिक्षितां वाचं वर्द्धयित्वा गृहाश्रमजन्यं सुखं सर्वान् मनुष्यान् यूयं प्रापयत॥१३॥

**पदार्थः**-हे विद्वन्! (**यः**) जो मनुष्य (**वक्षणासु**) बहती हुई नदियों के निमित्त (**दुहितुः**) कन्या के (**रूपा**) सुन्दर रूपों (**आहनाः**) और जो सब और से ताड़ित होती उनका (**मिनानः**) मान करता हुआ (**नः**) हम लोगों को (**इदम्**) इस वर्त्तमान सुख में पाये हुए (**अकृणोत्**) करे उसके साथ मैं (**महे**) बड़े (**सुशरणाय**) उत्तम आश्रय के लिये (**नव्यसीम्**) अत्यन्त नवीन (**जायमानाम्**) प्रसिद्ध (**मेधाम्**) उत्तम बुद्धि और (**गिरम्**) वाणी को (**प्र, सू, भरे**) उत्तम प्रकार धारण करता हूँ॥१३॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! समान रूप वाली कन्या को देखके ही उसका सदृश पति कराने के समान बुद्धि और शिक्षित वाणी को बढ़ाय के गृहाश्रम से उत्पन्न हुए सुख को सब मनुष्यों के लिये आप लोग प्राप्त कराओ॥१३॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**प्र सु॑ष्टु॒तिः स्त॒नय॑न्तं रु॒वन्त॑मि॒ळस्पतिं॑ जरित॒र्नू॒नम॑श्याः।**

**यो अ॑ब्दि॒माँ उ॑दनि॒माँ इय॑र्ति॒ प्र वि॒द्युता॒ रोद॑सी उ॒क्षमा॑णः॥१४॥**

**प्र। सु॒ऽस्तु॒तिः। स्त॒नय॑न्तम्। रु॒वन्त॑म्। इ॒ळः। पति॑म्। ज॒रि॒त॒रिति॑। नू॒नम्। अ॒श्या॒ः। यः। अ॒ब्दि॒ऽमान्। उ॒द॒नि॒ऽमान्। इय॑र्ति। प्र। वि॒ऽद्युता॑। रोद॑सी॒ इति॑। उ॒क्षमा॑णः॥१४॥**

**पदार्थः**-(**प्र**) प्रकर्षेण (**सुष्टुतिः**) शोभना प्रशंसा (**स्तनयन्तम्**) गर्जनां कुर्वन्तम् (**रुवन्तम्**) शब्दयन्तम् (**इळः**) पृथिव्याः (**पतिम्**) पालकम् (**जरितः**) स्तावकः (**नूनम्**) निश्चयेन (**अश्याः**) प्राप्नुयाः



www.9009.co.in

**(यः)** **(अब्दिमान्)** जलदवान् **(उदनिमान्)** बहूदकः **(इयर्त्ति)** प्राप्नोति **(प्र)** **(विद्युता)** तडिता सह **(रोदसी)** द्यावापृथिव्यौ **(उक्षमाणः)** सिञ्चमानः॥१४॥

**अन्वयः**-हे जरितस्त्वं योऽब्दिमानुदनिमान् रोदसी उक्षमाणो विद्युता सह मेघ इयर्त्ति यस्सुष्टुतिरस्ति तं स्तनयन्तं नूनं प्राश्यास्त्वं रुवन्तमिळस्पतिं प्र ज्ञापयेः॥१४॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यो मेघो भूमिस्थानां जीवानां पालकस्तथा विद्युता सह वर्षयञ्छब्दयन् भूमिं प्राप्नोति तं विदित्वाऽन्यान् विज्ञापयत॥१४॥

**पदार्थः**-हे **(जरितः)** स्तुति करने वाले! आप **(यः)** जो **(अब्दिमान्)** मेघों से युक्त और **(उदनिमान्)** बहुत जल वाला **(रोदसी)** अन्तरिक्ष और पृथिवी को **(उक्षमाणः)** सींचता हुआ **(विद्युता)** बिजली के साथ मेघ **(इयर्त्ति)** प्राप्त होता है और जो **(सुष्टुतिः)** उत्तम प्रशंसायुक्त है उस **(स्तनयन्तम्)** गर्जना करते हुए को **(नूनम्)** निश्चय से **(प्र, अश्याः)** प्राप्त होओ और आप **(रुवन्तम्)** शब्द करते हुए **(इळः)** पृथिवी के **(पतिम्)** पालन करने वाले की **(प्र)** उत्तम प्रकार जनाइये॥१४॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो मेघ भूमि में वर्त्तमान जीवों का पालन करनेवाला, बिजुली के साथ वृष्टि करता और शब्द करता हुआ भूमि को प्राप्त होता है, उसको जान के अन्यों को जनाइये॥१४॥

**अथ रुद्रविषयकं विद्वत्कर्त्तव्यशिक्षाविषयमाह॥**

अब रुद्रविषयक विद्वत्कर्त्तव्य शिक्षाविषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**एष स्तोमो मारुतं शर्धो अच्छा रुद्रस्य सूनूँर्युवन्यूँरुदश्याः।**
**कामो राये हवते मा स्वस्त्युप स्तुहि पृषदश्वाँ अयासः॥१५॥**

**एषः। स्तोमः। मारुतम्। शर्धः। अच्छ। रुद्रस्य। सूनून्। युवन्यून्। उत्। अश्याः। कामः। राये। हवते। मा। स्वस्ति। उप। स्तुहि। पृषत्ऽअश्वान्। अयासः॥१५॥**

**पदार्थः**-**(एषः)** **(स्तोमः)** श्लाघाविषयः **(मारुतम्)** मनुष्याणामिदम् **(शर्धः)** बलम् **(अच्छा)** अत्र **संहितायामिति** दीर्घः। **(रुद्रस्य)** प्राणादिरूपस्य वायोः **(सूनून्)** प्रसवगुणान् **(युवन्यून्)** आत्मनो मिश्रितानमिश्रितान् पदार्थानिच्छून् **(उत्)** **(अश्याः)** प्राप्नुयाः **(कामः)** इच्छा **(राये)** धनाय **(हवते)** गृह्णाति **(मा)** माम् **(स्वस्ति)** सुखम् **(उप)** **(स्तुहि)** **(पृषदश्वान्)** सिञ्चकानाशुगामिनः पदार्थान् वा **(अयासः)** गच्छन्तः॥१५॥

**अन्वयः**-हे विद्वन्! यः कामो मा राये स्वस्ति हवते तमुपस्तुहि येऽयासः पृषदश्वान् प्राप्नुवन्ति तान् युवन्यूँस्त्वमुदश्याः। य एषः स्तोमो मारुतं शर्धो हवते तं रुद्रस्य सूनूनच्छोदश्याः॥१५॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यूयं वह्निमेघविद्यां विज्ञायालङ्कामा भवत॥१५॥

**पदार्थः**-हे विद्वन्! जो **(कामः)** इच्छा **(मा)** मुझ को **(राये)** धन के लिये **(स्वस्ति)** सुख को **(हवते)** ग्रहण करती है उसकी **(उप, स्तुहि)** समीप में स्तुति प्रशंसा कीजिये और जो **(अयासः)** चलते



www.9009.co.in

हुए (**पृषदश्वान्**) सींचने वाले तथा शीघ्र चले वाले पदार्थों को प्राप्त होते हैं उन (**युवन्यून्**) अपने मिले और नहीं मिले हुए पदार्थों की इच्छा करते हुओं को आप (**उत्, अश्या:**) अत्यन्त प्राप्त हूजिये और जो (**एष:**) यह (**स्तोम:**) प्रशंसा का विषय (**मारुतम्**) मनुष्यों के इस (**शर्ध:**) बल को ग्रहण करता है उस (**रुद्रस्य**) प्राण आदि है रूप जिसका ऐसे वायु के (**सूनून्**) उत्पत्ति के गुणों को (**अच्छा**) उत्तम प्रकार प्राप्त हूजिये॥१५॥

**भावार्थ:**-हे मनुष्यो! आप लोग वह्नि और मेघविद्या को जानकर पूर्ण मनोरथ वाले हूजिये॥१५॥

**पुनर्विद्वद्विषयमाह॥**

फिर विद्वद्विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**प्रैष स्तोमः पृथिवीमन्तरिक्षं वनस्पतीँरोषधी राये अश्याः।**

**देवोदेवः सुहवो भूतु मह्यं मा नो माता पृथिवी दुर्मतौ धात्॥१६॥**

**प्र। एषः। स्तोमः। पृथिवीम्। अन्तरिक्षम्। वनस्पतीन्। ओषधीः। राये। अश्याः। देवःऽदेवः। सुऽहवः। भूतु। मह्यम्। मा। नः। माता। पृथिवी। दुःऽमतौ। धात्॥१६॥**

**पदार्थ:**-(**प्र**) (**एष:**) (**स्तोम:**) श्लाघनीयो मेघो वह्निर्वा (**पृथिवीम्**) भूमिम् (**अन्तरिक्षम्**) आकाशम् (**वनस्पतीन्**) वटाऽश्वत्थादीन् (**ओषधी:**) यवाद्याः (**राये**) धनाय (**अश्या:**) प्राप्नुयाः (**देवोदेव:**) विद्वान्विद्वान् (**सुहव:**) सुष्ठुग्रहणदानः (**भूतु**) भवतु (**मह्यम्**) (**मा**) निषेधे (**न:**) अस्मान् (**माता**) जननीव पालिका (**पृथिवी**) (**दुर्म्मतौ**) दुष्टायां बुद्धौ (**धात्**) दध्यात्॥१६॥

**अन्वय:**-हे विद्वन्! देवोदेवस्सुहवस्त्वं य एषः स्तोमो राये पृथिवीमन्तरिक्षमोषधीर्वनस्पतींश्च प्राप्नोति तं त्वं प्राश्याः स मह्यं सुखकरो भूतु यत इयं पृथिवी मातेव नो दुर्म्मतौ मा धात्॥१६॥

**भावार्थ:**-सर्वे स्त्रीपुरुषा विद्वांसो भूत्वा विद्युन्मेघादिविद्यां गृह्णीयुर्यत इयं युष्मान् मातृवत् पालयेद्यथा माता सुशिक्षया स्वसन्तानानुत्तमान् करोति तथैव मेघवृष्टिविद्यया युक्ता भूमिरुत्तमानि शस्यादीनि जनयति॥१६॥

**पदार्थ:**-हे विद्वन्! (**देवोदेव:**) विद्वान् विद्वान् (**सुहव:**) उत्तम प्रकार ग्रहण करने वाले और दाता आप और जो (**एष:**) यह (**स्तोम:**) प्रशंसा करने योग्य मेघ वा वह्नि (**राये**) धन के लिये (**पृथिवीम्**) भूमि (**अन्तरिक्षम्**) आकाश और (**ओषधी:**) यव आदि औषधियां तथा (**वनस्पतीन्**) वट और अश्वत्थ आदि वनस्पतियों को प्राप्त होता है उसको आप (**प्र, अश्या:**) अच्छे प्रकार प्राप्त हूजिये वह (**मह्यम्**) मेरे लिये सुखकारक (**भूतु**) होवे जिससे यह (**पृथिवी**) पृथिवी (**माता**) माता के सदृश पालन करने वाली (**न:**) हम लोगों को (**दुर्म्मतौ**) दुष्टबुद्धि में (**मा**) नहीं (**धात्**) धारण करे॥१६॥



www.9009.co.in

**भावार्थ:**-सब स्त्री और पुरुष विद्वान् होकर बिजुली और मेघ आदि की विद्या को ग्रहण करें जिससे यह विद्या आप लोगों की माता के सदृश पालना करे और जैसे माता उत्तम शिक्षा से अपने सन्तानों को उत्तम करती है, वैसे ही मेघवृष्टिविद्या से युक्त भूमि उत्तम अन्न आदिकों को उत्पन्न करती है॥१६॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**उरौ देवा अनिबाधे स्याम॥१७॥**

**उरौ। देवाः। अनिऽबाधे। स्याम॥१७॥**

**पदार्थ:**-(**उरौ**) बहुसुखकरे (**देवा:**) विद्वांसः (**अनिबाधे**) निर्विघ्ने सति (**स्याम**) भवेम॥१७॥

**अन्वय:**-हे देवा! यथा वयमनिबाध उरौ विद्वांसः स्याम तथा यूयं विधत्त॥१७॥

**भावार्थ:**-अध्यापकैर्विद्वद्भिः सर्वान् विद्याप्रतिबन्धकान् निवार्य सर्वे विद्वांसः सम्पादनीयाः॥१७॥

**पदार्थ:**-हे (**देवा:**) विद्वान् जनो! जैसे हम लोग (**अनिबाधे**) विघ्नरहित होने पर (**उरौ**) बहुत सुख करने वाले कार्य्य में विद्वान् (**स्याम**) होवें, वैसे आप लोग करिये॥१७॥

**भावार्थ:**-अध्यापक विद्वान् जनों को चाहिये कि सम्पूर्ण विद्या के प्रतिबन्धकों का निवारण करके सम्पूर्ण जनों को विद्वान् करें॥१७॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**सम॒श्विनो॒रव॑सा॒ नूत॑नेन मयो॒भुवा॑ सु॒प्रणी॑ती गमेम।**

**आ नो॑ र॒यिं व॑हत॒मोत वी॒राना विश्वा॑न्यमृता॒ सौभ॑गानि॥१८॥१९॥**

**सम्। अ॒श्विनोः॑। अव॑सा। नूत॑नेन। म॒यः॒ऽभुवा॑। सु॒ऽप्रनी॑ती। ग॒मे॒म॒। आ। नः॒। र॒यिम्। व॒ह॒त॒म्। आ। उ॒त। वी॒रान्। आ। विश्वा॑नि। अ॒मृ॒ता॒। सौभ॑गानि॥१८॥**

**पदार्थ:**-(**सम्**) (**अश्विनो:**) अध्यापकोपदेशकयोः (**अवसा**) रक्षणेन (**नूतनेन**) (**मयोभुवा**) सुखं भावुकौ (**सुप्रणीती**) सुष्ठु प्रगता नीतिर्याभ्यां तौ (**गमेम**) प्राप्नुयाम (**आ**) (**न:**) अस्मान् (**रयिम्**) श्रियम् (**वहतम्**) प्रापयतम् (**आ**) (**उत**) अपि (**वीरान्**) श्रेष्ठान् शूरान् शौर्यादिगुणोपेतान् (**आ**) (**विश्वानि**) समग्राणि (**अमृता**) नित्यानि (**सौभगानि**) शोभनानामैश्वर्याणां भावरूपाणि॥१८॥

**अन्वय:**-हे मयोभुवा सुप्रणीती अध्यापकोपदेशकौ! यौ युवां नो रयिमा वहतमुत वीराना वहतमपि च विश्वान्यमृता सौभागान्या वहतं तयोरश्विनोर्नूतनेनावसा वयं विश्वान्यमृता सौभगानि सङ्गमेम॥१८॥



www.9009.co.in

**भावार्थ:**-हे मनुष्या! विद्वद्रक्षिता बोधिताः सन्तो यूयं श्रियमुत्तममनुष्यसहायेन सर्वाण्यैश्वर्य्याणि प्राप्नुतेति॥१८॥

अत्र विश्वेदेवरुद्रविद्वद्गुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति द्विचत्वारिंशत्तमं सूक्तमेकोनविंशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थ:**-हे **(मयोभुवा)** सुख के करनेवालो **(सुप्रणीती)** उत्तम प्रकार वर्त्ती गई नीति जिनसे ऐसे अध्यापक और उपदेशक जनो! जो आप दोनों **(नः)** हम लोगों के लिये **(रयिम्)** लक्ष्मी को **(आ, वहतम्)** प्राप्त कराइये **(उत)** भी **(वीरान्)** श्रेष्ठ शूरता आदि गुणों से युक्त शूरवीर जनों को **(आ)** प्राप्त कराइये और भी **(विश्वानि)** सम्पूर्ण **(अमृता)** नित्य **(सौभगानि)** सुन्दर ऐश्वर्य्यों के भावरूप को **(आ)** प्राप्त कराइये उन **(अश्विनोः)** अध्यापक और उपदेशकों के **(नूतनेन)** नवीन **(अवसा)** रक्षण से हम लोग सम्पूर्ण नित्य सुन्दर ऐश्वर्य्यों के भावरूपों को **(सम्, गमेम)** उत्तम प्रकार प्राप्त होवें॥१८॥

**भावार्थ:**-हे मनुष्यो! विद्वानों से रक्षित और बोध को प्राप्त हुए आप लोग लक्ष्मी और मनुष्यों के सहाय से सम्पूर्ण ऐश्वर्य्यों को प्राप्त हूजिये॥१८॥

इस सूक्त में विश्वेदेव, रुद्र और विद्वानों के गुण-वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ संगति जाननी चाहिये॥

**यह बयालीसवां सूक्त और उन्नीसवां वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

**अथ सप्तदशर्चस्य त्रिचत्वारिंशत्तमस्य सूक्तस्याऽत्रिर्ऋषिः॥ विश्वेदेवा देवताः। १, ३, ६, ८, ९, १७ निचृत्त्रिष्टुप्। २, ४, ५, १०, ११, १२, १५ त्रिष्टुप्। ७, १३, विराट् त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः। १४ भुरिक्पङ्क्तिः। १६ याजुषी पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः॥**

***अथ विद्वद्विषयमाह॥***

अब सत्रह ऋचा वाले तेंतालीसवें सूक्त का प्रारम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में विद्वान् के विषय को कहते हैं॥

**आ धेनवः पयसा तूर्ण्यर्था अमर्धन्तीरुप नो यन्तु मध्वा।**

**महो राये बृहतीः सप्त विप्रो मयोभुवो जरिता जोहवीति॥१॥**

**आ। धेनवः। पयसा। तूर्णिऽअर्थाः। अमर्धन्तीः। उप। नः। यन्तु। मध्वा। महः। राये। बृहतीः। सप्त। विप्रः। मयःऽभुवः। जरिता। जोहवीति॥१॥**

**पदार्थः**-(**आ**) (**धेनवः**) गाव इव वाचः (**पयसा**) दुग्धदानेन (**तूर्ण्यर्थाः**) तूर्णयः सद्योगामिनोऽर्था यासु ताः (**अमर्धन्तीः**) अहिंसन्त्यः (**उप**) (**नः**) अस्मान् (**यन्तु**) प्राप्नुवन्तु (**मध्वा**) मधुरादिगुणेन सह (**महः**) महते (**राये**) धनाय (**बृहतीः**) महत्यः (**सप्त**) सप्तविधाः (**विप्रः**) मेधावी (**मयोभुवः**) सुखं भावुकाः (**जरिता**) सकलविद्याः स्तावकः (**जोहवीति**) भृशमुपदिशति॥१॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यो जरिता विप्रो महो राये सप्त बृहतीर्गिरो जोहवीति तत्प्रेरिता मध्वा पयसा सहाऽमर्धन्तीस्तूर्ण्यर्था मयोभुवो धेनवो न उपायन्तु॥१॥

**भावार्थः**-ये मनुष्या आप्तविद्वत्सङ्गेन सर्वशास्त्रविषया वाचो गृहीत्वैताः कृपयाऽन्येभ्योऽप्युपदिशेयुस्तेऽप्याप्ता जायन्ते॥१॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो (**जरिता**) सम्पूर्ण विद्याओं की स्तुति करने वाला (**विप्रः**) बुद्धिमान् जन (**महः**) बड़े (**राये**) धन के लिये (**सप्त**) सात प्रकार की (**बृहतीः**) बड़ी वाणियों का (**जोहवीति**) वार-वार उपदेश करता है और उससे प्रेरणा किये गये (**मध्वा**) मधुर आदि गुणों के साथ और (**पयसा**) दुग्धदान के साथ (**अमर्धन्तीः**) नहीं हिंसा करती हुई और (**तूर्ण्यर्थाः**) शीघ्र चलने वाले अर्थ जिनमें ऐसी (**मयोभुवः**) सुख की भावना कराने वाली (**धेनवः**) गौओं के सदृश वाणियां (**नः**) हम लोगों को (**उप, आ, यन्तु**) समीप में उत्तम प्रकार प्राप्त होवें॥१॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य यथार्थवक्ता विद्वानों के सङ्ग से शास्त्रों के विषय से युक्त वाणियों को ग्रहण करके उनकी कृपा से अन्यों के लिये उपदेश देवें, वे भी श्रेष्ठ होते हैं॥१॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**



www.9009.co.in

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**आ सुष्टुती नमसा वर्तयध्यै द्यावा वाजाय पृथिवी अमृध्रे।**

**पिता माता मधुवचाः सुहस्ता भरेभरे नो यशसावविष्टाम्॥२॥**

**आ। सुऽस्तुती। नमसा। वर्तयध्यै। द्यावा। वाजाय। पृथिवी इति। अमृध्रे इति। पिता। माता। मधुऽवचाः। सुऽहस्ता। भरेऽभरे। नः। यशसौ। अविष्टाम्॥२॥**

**पदार्थः-(आ)** समन्तात् **(सुष्टुती)** श्रेष्ठया प्रशंसया **(नमसा)** सत्कारेणान्नादिना वा **(वर्त्तयध्यै)** वर्त्तयितुम् **(द्यावा)** द्यौः **(वाजाय)** विज्ञानाय **(पृथिवी)** भूमी **(अमृध्रे)** अहिंसिते **(पिता)** जनक इव **(माता)** जननीव **(मधुवचाः)** मधुवचो यस्य यस्या वा स सा **(सुहस्ता)** शोभना हस्ता वर्त्तन्ते ययोस्ते **(भरेभरे)** सङ्ग्रामे सङ्ग्रामे **(नः)** अस्मान् **(यशसौ)** कीर्तिधनयुक्ते **(अविष्टाम्)** प्राप्नुयाताम्॥२॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! युष्माभिर्वाजाय सुष्टुती नमसाऽमृध्रे सुहस्ता यशसौ द्यावा पृथिवी मधुवचाः पिता माता चेव भरेभरे नोऽस्मानविष्टां ते आ वर्त्तयध्या अविष्टाम्॥२॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यथा मातापितरौ स्वसन्तानान् सुशिक्ष्य वर्धयित्वा विजयकारिणः सम्पादयतस्तथैव प्राप्ता सूर्य्यपृथिवीविद्या सर्वत्र विजयं प्रापयति॥२॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! आप लोगों से **(वाजाय)** विज्ञान के लिये **(सुष्टुती)** श्रेष्ठ प्रशंसा से **(नमसा)** सत्कार वा अन्न आदि आदि से **(अमृध्रे)** नहीं हिंसा किये गये में **(सुहस्ता)** सुन्दर हस्त जिनके वे **(यशसौ)** यश और धन से युक्त **(द्यावा)** अन्तरिक्ष और **(पृथिवी)** पृथिवी **(मधुवचाः)** मधुर वचन जिसका ऐसा वा **(पिता)** पिता और **(माता)** माता के सदृश **(भरेभरे)** संग्राम संग्राम में **(नः)** हम लोगों को **(अविष्टाम्)** प्राप्त होवें, वे **(आ, वर्त्तयध्यै)** उत्तम प्रकार वर्त्ताव करने को प्राप्त होवें॥२॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपालङ्कार है। हे मनुष्यो! जैसे माता और पिता अपने सन्तानों को उत्तम प्रकार शिक्षा देकर और वृद्धि करके विजयकारी करते हैं, वैसे ही प्राप्त हुई सूर्य्य और पृथिवी की विद्या सर्वत्र विजय को प्राप्त होती हैं॥२॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**अध्वर्यवश्चकृवांसो मधूनि प्र वायवे भरत चारु शुक्रम्।**

**होतेव नः प्रथमः पाह्यस्य देव मध्वो ररिमा ते मदाय॥३॥**

**अध्वर्यवः। चकृऽवांसः। मधूनि। प्र। वायवे। भरत। चारु। शुक्रम्। होताऽइव। नः। प्रथमः। पाहि। अस्य। देव। मध्वः। ररिम। ते। मदाय॥३॥**



www.9009.co.in

**पदार्थ:-(अध्वर्य्यव:)** आत्मनोऽध्वरमहिंसामिच्छव: **(चक्रवांस:)** कुर्वन्त: **(मधूनि)** विज्ञानानि **(प्र)** **(वायवे)** वायुविद्यायै **(भरत)** **(चारु)** सुन्दरम् **(शुक्रम्)** उदकम्। **शुक्रमित्युदकनामसु पठितम्।** (निघं०१।१२) **(होतेव)** यथा दाता **(न:)** अस्मान् **(प्रथम:)** **(पाहि)** **(अस्य)** **(देव)** विद्वन् **(मध्व:)** मधुरस्य **(ररिमा)** रमेमहि। अत्र **संहितायामि**ति दीर्घ:। **(ते)** तव **(मदाय)** आनन्दाय॥३॥

**अन्वय:-**हे देव! प्रथमस्त्वं होतेवाऽस्य मध्वो मध्ये न: पाहि यतो वयं ते मदाय ररिमा। हे चक्रिवांसोऽध्वर्यवो! यूयं वायवे मधूनि चारु शुक्रं च प्र भरत॥३॥

**भावार्थ:-**अत्रोपमालङ्कार:। हे मनुष्या! यथा होता होमेन सर्वहितं साध्नोति तथैव सर्वहिताय वायुजलविद्यां प्रसारयत येन सर्वे वयमानन्दिता वर्त्तेमहि॥३॥

**पदार्थ:-**हे **(देव)** विद्वन् **(प्रथम:)** पहिले आप **(होतेव)** दाता जन के सदृश **(अस्य)** इस **(मध्व:)** मधुर के मध्य में **(न:)** हम लोगों की **(पाहि)** रक्षा करिये, जिससे हम लोग **(ते)** आपके **(मदाय)** आनन्द के लिये **(ररिमा)** क्रीड़ा करें। हे **(चक्रिवांस:)** कार्य्य करते हुए और **(अध्वर्य्यव:)** अपनी अहिंसा की इच्छा करते हुए आप लोग **(वायवे)** वायुविद्या के लिये **(मधूनि)** विज्ञानों और **(चारु)** सुन्दर **(शुक्रम्)** जल को **(प्र, भरत)** उत्तम प्रकार धारण कीजिये॥३॥

**भावार्थ:-**इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जैसे हवन करने वाला होम से सब के हित को सिद्ध करता है, वैसे ही सब के हित के लिये वायु और जल की विद्या को विस्तारिये, जिससे सब हम लोग आनन्दित हुए वर्त्ताव करें॥३॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**दश क्षिपो युञ्जते बाहू अद्रिं सोमस्य या शमितारा सुहस्ता।**

**मध्वो रसं सुगभस्तिर्गिरिष्ठां चनिश्चदद् दुदुहे शुक्रमंशु:॥४॥**

**दश। क्षिप:। युञ्जते। बाहू इति। अद्रिम्। सोमस्य। या। शमितारा। सुऽहस्ता। मध्व:। रसम्। सुऽगभस्ति:। गिरिऽस्थाम्। चनिश्चदत्। दुदुहे। शुक्रम्। अंशु:॥४॥**

**पदार्थ:-(दश)** दशसंख्याका: **(क्षिप:)** क्षिपन्ति प्रेरयन्ति याभिस्ता अङ्गुलय:। **क्षिप इत्यङ्गुलिनामसु पठितम्।** (निघं०२.५) **(युञ्जते)** **(बाहू)** भुजौ **(अद्रिम्)** मेघम् **(सोमस्य)** ऐश्वर्य्यस्य **(या)** यौ **(शमितारा)** शान्त्या यज्ञकर्मकर्त्तारौ **(सुहस्ता)** शोभनौ हस्तौ ययोस्तौ **(मध्व:)** मधुरादिगुणयुक्तस्य **(रसम्)** **(सुगभस्ति:)** शोभना गभस्तय: किरणा यस्य सूर्यस्य स:। **(गिरिष्ठाम्)** गिरौ मेघे स्थितम्। **गिरिरिति मेघनामसु पठितम्।** (निघं०१.१०) **(चनिश्चदत्)** आह्लादयति **(दुदुहे)** दोग्धि **(शुक्रम्)** उदकम् **(अंशु:)** किरण:॥४॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथा सुगभस्तिरंशुश्चनिश्चदत् सन् मध्वः सोमस्य गिरिष्ठामद्रिं रसं शुक्रं दुदुहे तथा या दश क्षिपो या शमितारा सुहस्ता बाहू युञ्जते ताभिर्धर्म्याणि कृत्यानि कुरुत॥४॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यथा मनुष्यादयः प्राणिनोऽङ्गुलिभिः पदार्थान् गृह्णन्ति त्यजन्ति तथैव सूर्य्यः किरणैर्भूमेस्तलाज्जलं गृहीत्वा प्रक्षिपतीति वेद्यम्॥४॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे **(सुगभस्तिः)** सुन्दर किरणें जिसकी वह सूर्य्य और **(अंशुः)** किरण **(चनिश्चदत्)** प्रसन्न करता है और **(मध्वः)** मधुर आदि गुणों से युक्त **(सोमस्य)** ऐश्वर्य्य के सम्बन्धी **(गिरिष्ठाम्)** मेघ में वर्त्तमान **(अद्रिम्)** मेघ को **(रसम्)** रस को और **(शुक्रम्)** जल को **(दुदुहे)** दुहता है, वैसे जो **(दश)** दश संख्यावाली **(क्षिपः)** प्रेरणा करते हैं जिनसे वे अङ्गुलियां और **(या)** जो **(शमितारा)** शान्ति से यज्ञकर्म्म के करने वाले और **(सुहस्ता)** अच्छे हाथों वाले **(बाहू)** भुजाओं को **(युञ्जते)** युक्त करते हैं, उनसे धर्मसम्बन्धी कार्य्यों को करो॥४॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे मनुष्य आदि प्राणी अङ्गुलियों से पदार्थों को ग्रहण करते और त्यागते हैं, वैसे ही सूर्य्य किरणों से भूमि के नीचे से जल को ग्रहण करके फेंकता अर्थात् वृष्टि करता है, ऐसा जानो॥४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**असा॑वि ते जुजुषा॒णाय॒ सोमः॒ क्रत्वे॒ दक्षा॑य बृह॒ते मदा॑य।**

**हरी॒ रथे॑ सु॒धुरा॒ योगे॑ अ॒र्वागिन्द्र॑ प्रि॒या कृ॑णुहि हू॒यमा॑नः॥५॥२०॥**

**असा॑वि। ते॒। जु॒जु॒षा॒णाय॑। सोमः॑। क्रत्वे॑। दक्षा॑य। बृ॒ह॒ते। मदा॑य। हरी॒ इति॑। रथे॑। सु॒ऽधुरा॑। योगे॑। अ॒र्वाक्। इन्द्र॑। प्रि॒या। कृ॒णु॒हि॒। हू॒यमा॑नः॥५॥**

**पदार्थः**-**(असावि)** सूयते **(ते)** तुभ्यम् **(जुजुषाणाय)** प्रीत्या सेवमानाय **(सोमः)** महौषधिरस ऐश्वर्य्यं वा **(क्रत्वे)** प्रज्ञानाय **(दक्षाय)** चातुर्य्याय बलाय **(बृहते)** महते **(मदाय)** आनन्दाय **(हरी)** हरणशीलावश्वौ **(रथे)** याने **(सुधुरा)** शोभना धूर्ययोस्तौ **(योगे)** संयोजने **(अर्वाक्)** योऽर्वागधोगच्छतः **(इन्द्र)** परमैश्वर्य्ययुक्त **(प्रिया)** सेवनीयानि कमनीयानि वस्तूनि सुखानि वा **(कृणुहि)** **(हूयमानः)** स्पर्धमानः॥५॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र विद्वन्! यैस्ते बृहते जुजुषाणाय क्रत्वे दक्षाय मदाय सोमोऽसावि तेषां योगे सत्यर्वाक् सुधुरा हरी रथे युक्त्वा हूयमानः सन् प्रिया कृणुहि॥५॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! येन प्रज्ञाबलाऽऽन्दपुरुषार्था वर्धेरन्नग्नितुरङ्गादिचालनविद्या प्राप्नुयात् तत्कर्म्म सदाऽनुष्ठेयम्॥५॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-हे **(इन्द्र)** अत्यन्त ऐश्वर्य्य से युक्त विद्वान्! जिनसे **(ते)** आपके **(बृहते)** बड़े **(जुजुषाणाय)** प्रीति से सेवन किये गये **(क्रत्वे)** प्रज्ञान तथा **(दक्षाय)** चातुर्य्य बल और **(मदाय)** आनन्द के लिये **(सोमः)** बड़ी ओषधियों का रस वा ऐश्वर्य्य **(असावि)** उत्पन्न किया जाये और उनके **(योगे)** संयोग होने पर **(अर्वाक्)** नीचे वाले **(सुधुरा)** सुन्दर धुरा जिनकी ऐसे **(हरी)** हरणशील घोड़ों को **(रथे)** वाहन में जोड़ के **(हूयमानः)** स्पर्द्धा किये गये आप **(प्रिया)** सेवन करने योग्य सुन्दर वस्तुओं वा सुखों को **(कृणुहि)** सिद्ध करिये॥५॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जिससे बुद्धि, बल, आनन्द और पुरुषार्थ बढ़े और अग्नि और घोड़े आदि के चलाने की विद्या प्राप्त होवे, वह कर्म्म सदा करना चाहिये॥५॥

**पुनस्तमेव विद्वद्विषयमाह॥**

फिर उसी विद्वद्विषय को कहते हैं॥

**आ नो॑ म॒हीम॒रम॑तिं स॒जोषा॒ ग्नां दे॒वीं नम॑सा रा॒तह॑व्याम्।**

**मधो॒र्मदा॑य बृह॒तीमृ॒त॒ज्ञामाग्ने॒ वह प॒थिभि॑र्देव॒यानैः॑॥६॥**

**आ। न॒ः। म॒हीम्। अ॒रम॑तिम्। स॒ऽजोषाः॑। ग्नाम्। दे॒वीम्। नम॑सा। रा॒तऽह॑व्याम्। मधोः॑। मदा॑य। बृ॒ह॒तीम्। ऋ॒त॒ऽज्ञाम्। आ। अ॒ग्ने॒। व॒ह॒। प॒थिऽभिः॑। दे॒व॒ऽयानैः॑॥६॥**

**पदार्थः**-**(आ)** **(नः)** अस्मान् **(महीम्)** महतीं वाचम् **(अरमतिम्)** विषयेष्वरममाणाम् **(सजोषाः)** समानप्रीतिसेवी **(ग्नाम्)** गच्छन्ति ज्ञानं यया ताम् **(देवीम्)** देदीप्यमानां कमनीयाम् **(नमसा)** सत्कारेणान्नादिना वा **(रातहव्याम्)** रातानि हव्यानि दातव्यानि दानानि यया ताम् **(मधोः)** मधुरादिगुणयुक्तात् **(मदाय)** आनन्दाय **(बृहतीम्)** बृहत्पदार्थविषयाम् **(ऋतज्ञाम्)** ऋतं सत्यं जानाति यया ताम् **(आ)** **(अग्ने)** विद्वन् **(वह)** प्रापय **(पथिभिः)** मार्गैः **(देवयानैः)** देवा आप्ता विद्वांसो गच्छन्ति येषु तैः॥६॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! आ सजोषास्त्वं नमसा पथिभिर्देवयानैर्मधोर्मदाय नोऽरमतिं रातहव्यां ग्नामृतज्ञां बृहतीं देवीं महीं न आ वह॥६॥

**भावार्थः**-त एव विद्वांसो जायन्ते ये सर्वथा सर्वदा विद्यां याचन्ते त एव विद्वांसो ये धर्म्यात् पथो विरुद्धं किमप्याचरणं न कुर्वन्ति॥६॥

**पदार्थः**-हे **(अग्ने)** विद्वन्! **(आ)** सब ओर से **(सजोषाः)** तुल्य प्रीति के सेवन करने वाले आप **(नमसा)** सत्कार वा अन्न आदि से **(देवयानैः)** यथार्थवक्ता विद्वान् चलते हैं जिनसे उन **(पथिभिः)** मार्गों से **(मधोः)** मधुर आदि गुण युक्त से **(मदाय)** आनन्द के लिये **(नः)** हम लोगों को **(अरमतिम्)** विषयों में नहीं रमण करती हुई **(रातहव्याम्)** देने योग्य दान जिससे **(ग्नाम्)** प्राप्त होते हैं ज्ञान को जिससे तथा



www.9009.co.in

**(ऋतज्ञाम्)** सत्य को जानता है जिससे उस **(बृहतीम्)** बड़े पदार्थों के विषय से युक्त **(देवीम्)** देदीप्यमान मनोहर **(महीम्)** बड़ी वाणी को हम लोगों के लिये **(आ, वह)** प्राप्त कराइये॥६॥

**भावार्थ:**-वे ही विद्वान् होते हैं जो सब प्रकार से सब काल में विद्या की याचना करते हैं और वे ही विद्वान् हैं, जो धर्मयुक्त मार्ग से विरुद्ध कुछ भी आचरण नहीं करते हैं॥६॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**अ॒ञ्जन्ति॒ यं प्र॒थय॑न्तो॒ न विप्रा॑ व॒पाव॑न्तं॒ नाग्निना॒ तप॑न्तः।**

**पि॒तुर्न पु॒त्र उ॒पसि॒ प्रेष्ठ॒ आ घ॒र्मो अ॒ग्निमृ॒तय॑न्नसादि॥७॥**

**अ॒ञ्जन्ति॑। यम्। प्र॒थय॑न्तः। न। विप्रा॑ः। व॒पाऽव॑न्तम्। न। अ॒ग्निना॑। तप॑न्तः। पि॒तुः। न। पु॒त्रः। उ॒पसि॑। प्रेष्ठः॑। आ। घ॒र्मः। अ॒ग्निम्। ऋ॒तय॑न्। अ॒सा॒दि॒॥७॥**

**पदार्थ:**-**(अञ्जन्ति)** कामयन्ते प्रकटयन्ति वा **(यम्)** **(प्रथयन्तः)** प्रख्यापयन्तः **(न)** इव **(विप्राः)** मेधाविनः **(वपावन्तम्)** विद्याबीजं विस्तरन्तम् **(न)** इव **(अग्निना)** पावकेनेव ब्रह्मचर्य्येण **(तपन्तः)** सन्तापदुःखं सहमानाः **(पितुः)** जनकस्य **(न)** इव **(पुत्रः)** **(उपसि)** समीपे **(प्रेष्ठः)** अतिशयेन प्रियः **(आ)** समन्तात् **(घर्मः)** यज्ञस्तापो वा **(अग्निम्)** **(ऋतयन्)** सत्यमिवाचरन् **(असादि)** सीदेत्॥७॥

**अन्वय:**-हे विद्यार्थिन्! यं वपावन्तं न त्वामग्निना तपन्तो वपावन्तं न प्रथयन्तो विप्रा नाऽग्निना तपन्तोऽञ्जन्ति यः पितुः पुत्रो नोपसि प्रेष्ठो घर्मोऽग्निमृतयन्नासादि ताँस्तञ्च त्वं सततं सेवित्वा विद्यामुपादत्स्व॥७॥

**भावार्थ:**-अत्रोपमालङ्कारः। हे अध्यापकविद्वांसो यूयं ये जितेन्द्रिया आप्तस्वभावाः शीतोष्णसुख-दुःखहर्षशोकनिन्दास्तुत्यादिद्वन्द्वं सोढारो निरभिमानिनो निर्म्मोहाः सत्याचरणपरोपकारप्रिया ब्रह्मचारिणो विद्यार्थिनः स्युस्तान् पुरुषार्थेन विदुषः कुरुत॥७॥

**पदार्थ:**-हे विद्यार्थिन्! **(यम्)** जिस **(वपावन्तम्)** विद्या के बीज के विस्तार को करते हुए के **(न)** सदृश आप को **(अग्निना)** अग्नि के सदृश ब्रह्मचर्य्य से **(तपन्तः)** संताप दुःख को सहते और विद्या के बीज का विस्तार करते हुए के **(न)** सदृश **(प्रथयन्तः)** प्रसिद्ध करते हुए **(विप्राः)** बुद्धिमान जनों के **(न)** सदृश अग्नि के समान ब्रह्मचर्य्य से सन्ताप दुःख को सहते हुए **(अञ्जन्ति)** कामना करते वा प्रकट करते हैं और जो **(पितुः)** पिता के **(पुत्रः)** पुत्र के सदृश **(उपसि)** समीप में **(प्रेष्ठः)** अत्यन्त प्रिय **(घर्मः)** यज्ञ वा तप **(अग्निम्)** अग्नि को **(ऋतयन्)** सत्य के सदृश आचरण करते हुए **(आ, असादि)** उत्तम प्रकार स्थित होवे, उनको और उसको आप निरन्तर सेवन करके विद्या को ग्रहण करिये॥७॥

**भावार्थ:**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे अध्यापक विद्वानो! तुम लोग जो जितेन्द्रिय उत्तम स्वभावयुक्त शीत-उष्ण, सुख-दुःख, आनन्द, शोक, निन्दा-स्तुति आदि द्वन्द्व को सहने वाले अभिमान



www.9009.co.in

और मोह से रहित सत्य आचरणकर्त्ता और परोपकारप्रिय ब्रह्मचारी विद्यार्थी होवें, उनको पुरुषार्थ से विद्वान् करिये॥७॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विद्वद्विषय को कहते हैं॥

**अच्छा मही बृहती शंतमा गीर्दूतो न गन्त्वश्विना हुवध्यै।**

**मयोभुवा सरथा यातमर्वाग्गन्तं निधिं धुरमाणिर्न नाभिम्॥८॥**

**अच्छ। मही। बृहती। शम्ऽतमा। गीः। दूतः। न। गन्तु। अश्विना। हुवध्यै। मयःऽभुवा। सऽरथा। आ। यातम्। अर्वाक्। गन्तम्। निऽधिम्। धुरम्। आणिः। न। नाभिम्॥८॥**

**पदार्थः**-(**अच्छा**) अत्र **संहितायामि**ति दीर्घः। (**मही**) महती (**बृहती**) बृहद्ब्रह्मादिवस्तुप्रकाशिका (**शन्तमा**) अतिशयेन कल्याणकारिणी (**गीः**) गायन्ति पदार्थान् यया सा (**दूतः**) धार्म्मिको विद्वान् दक्षो राजदूतः (**न**) इव (**गन्तु**) प्राप्नोतु (**अश्विना**) अध्यापकोपदेशकौ (**हुवध्यै**) आह्वातुम् (**मयोभुवा**) सुखं भावुकौ (**सरथा**) रथादिभिः सह वर्त्तमानौ (**आ**) (**यातम्**) गच्छतम् (**अर्वाक्**) सत्यधर्ममनु (**गन्तम्**) गच्छन्तम् (**निधिम्**) (**धुरम्**) यानाधारकाष्ठम् (**आणिः**) कीलकम् (**न**) इव (**नाभिम्**) मध्यम्॥८॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! या बृहती शन्तमा मही गीर्मयोभुवा सरथाऽश्विना हुवध्यै दूतो न गन्तु ययाऽश्विना नाभिं धुरमाणिर्नार्वाग्गन्तं निधिमच्छाऽऽयातं तां यूयं प्राप्नुत॥८॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। त एव मनुष्या यान् राजानं दूत इव सर्वशास्त्रप्रवीणा वाक् प्राप्नुयात् त एव भाग्यवन्तो यान् धर्म्येण पुरुषार्थेनातुलमैश्वर्य्यमीयात्॥८॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो (**बृहती**) बड़े ब्रह्म आदि वस्तु को प्रकाश करने वाली और (**शन्तमा**) अत्यन्त कल्याणकारिणी (**मही**) बड़ी (**गीः**) गाते हैं पदार्थों को जिससे ऐसी वाणी और (**मयोभुवा**) सुख को उत्पन्न करने वाले (**सरथा**) वाहन आदिकों के साथ वर्त्तमान (**अश्विना**) अध्यापक और उपदेशक जनों को (**हुवध्यै**) बुलाने को जैसे (**दूतः**) धार्म्मिक विद्वान् चतुर राजा का दूत (**न**) वैसे (**गन्तु**) प्राप्त हूजिये तथा जिससे अध्यापक और उपदेशक जन (**नाभिम्**) मध्य (**धुरम्**) वाहन के आधार काष्ठ को (**आणिः**) कीले के (**न**) सदृश और (**अर्वाक्**) सत्य धर्म्म के पीछे (**गन्तम्**) चलते हुए (**निधिम्**) द्रव्यपात्र को (**अच्छा**) उत्तम प्रकार (**आ, यातम्**) प्राप्त हूजिये, उसको आप लोग प्राप्त होओ॥८॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। वे ही मनुष्य हैं जिनको जैसे राजा को दूत वैसे सम्पूर्ण शास्त्रों में प्रवीण वाणी प्राप्त होवे और वे ही भाग्यशाली हैं, जिनको धर्मयुक्त पुरुषार्थ से अतुल ऐश्वर्य्य प्राप्त होवे॥८॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥



www.9009.co.in

**प्र तव्यसो नमउक्तिं तुरस्याहं पूष्ण उत वायोरदिक्षि।**

**या राधसा चोदितारा मतीनां या वाजस्य द्रविणोदा उत त्मन्॥९॥**

**प्र। तव्यसः। नमःऽउक्तिम्। तुरस्य। अहम्। पूष्णः। उत। वायोः। अदिक्षि। या। राधसा। चोदितारा। मतीनाम्। या। वाजस्य। द्रविणःऽदौ। उत। त्मन्॥९॥**

**पदार्थः**-(**प्र**) (**तव्यसः**) बलस्य (**नमउक्तिम्**) नमस्सत्कारस्यान्नाऽऽदेर्वा वचनम् (**तुरस्य**) शीघ्रकारिणः (**अहम्**) (**पूष्णः**) पुष्टिकरस्य (**उत**) अपि (**वायोः**) (**अदिक्षि**) उपदिशामि (**या**) यौ (**राधसा**) धनेन (**चोदितारा**) प्रेरकौ (**मतीनाम्**) मनुष्याणाम् (**या**) यौ (**वाजस्य**) विज्ञानस्याऽन्नस्य वा (**द्रविणोदौ**) यौ द्रविणसौ दत्तस्तौ (**उत**) अपि (**त्मन्**) आत्मनि॥९॥

**अन्वयः**-हे विद्वांसो! यथाऽहं तुरस्य तव्यस उत पूष्णो वायोर्नमउक्तिमदिक्षि उत त्मन्या राधसा मतीनां प्र चोदितारा या वाजस्य द्रविणोदौ वर्त्तेते तावदिक्षि तथा यूयमप्युपदिशत॥९॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यथा विद्वांसो विद्योपदेशदानाभ्यां मनुष्यान् सुशिक्षितान् कुर्वन्ति तथैव यूयमप्यनुतिष्ठत॥९॥

**पदार्थः**-हे विद्वान् जनो! जैसे (**अहम्**) मैं (**तुरस्य**) शीघ्र कार्य्य करने वाले (**तव्यसः**) बलयुक्त (**उत**) और (**पूष्णः**) पुष्टिकारक (**वायोः**) वायु के (**नमउक्तिम्**) सत्कार वा अन्न आदि के वचन का (**अदिक्षि**) उपदेश करता हूं और (**उत**) भी (**त्मन्**) आत्मा में (**या**) जो (**राधसा**) धन से (**मतीनाम्**) मनुष्यों के (**प्र, चोदितारा**) अत्यन्त प्रेरणा करने वाले और (**या**) जो (**वाजस्य**) विज्ञान वा अन्न के (**द्रविणोदौ**) बल से देने वाले वर्त्तमान हैं, उनको उपदेश देता हूं, वैसे आप लोग भी उपदेश दीजिये॥९॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे विद्वान् जन विद्या के उपदेश और दान से मनुष्यों को उत्तम प्रकार शिक्षित करते हैं, वैसे ही तुम लोग भी करो॥९॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**आ नामभिर्मरुतो वक्षि विश्वाना रूपेभिर्जातवेदो हुवानः।**

**यज्ञं गिरो जरितुः सुष्टुतिं च विश्वे गन्त मरुतो विश्व ऊती॥१०॥२१॥**

**आ। नामऽभिः। मरुतः। वक्षि। विश्वान्। आ। रूपेभिः। जातऽवेदः। हुवानः। यज्ञम्। गिरः। जरितुः। सुऽस्तुतिम्। च। विश्वे। गन्त। मरुतः। विश्वे। ऊती॥१०॥**

**पदार्थः**-(**आ**) समन्तात् (**नामभिः**) संज्ञाभिः (**मरुतः**) मनुष्यान् (**वक्षि**) आवह (**विश्वान्**) समग्रान् (**आ**) (**रूपेभिः**) रूपैः (**जातवेदः**) प्रजातप्रज्ञः (**हुवानः**) ददन् (**यज्ञम्**) सङ्गतिकरणम् (**गिरः**)



www.9009.co.in

वाचः (**जरितुः**) स्तावकस्य (**सुष्टुतिम्**) स्तावकस्य उत्तमां प्रशंसाम् (**च**) (**विश्वे**) सर्वे (**गन्त**) गच्छन्तु प्राप्नुवन्तु (**मरुतः**) मनुष्यान् (**विश्वे**) सर्वे (**ऊती**) ऊत्या रक्षणादिक्रियया॥१०॥

**अन्वयः**-हे जातवेदो हुवानस्त्वं नामभी रूपेभिर्विश्वान् मरुत आ वक्षि जरितुः सुष्टुतिं गिरो यज्ञञ्च विश्वे गन्त विश्वे मरुत ऊत्याऽऽगन्त॥१०॥

**भावार्थः**-हे विद्वन्! भवान् सर्वैर्नामभी रूपादिभिश्चाऽखिलान् पदार्थान् सर्वान् मनुष्यान् साक्षात्कारयतु येन सर्वे मनुष्याः प्रशंसिता भूत्वा सर्वान् प्रशस्तविद्यान् सम्पादयन्तु॥१०॥

**पदार्थः**-हे (**जातवेदः**) बुद्धि से युक्त (**हुवानः**) दान करते हुए आप (**नामभिः**) संज्ञाओं और (**रूपेभिः**) रूपों से (**विश्वान्**) सम्पूर्ण (**मरुतः**) मनुष्यों को (**आ**) सब प्रकार (**वक्षि**) प्राप्त हूजिये (**जरितुः**) स्तुति करने वाले की (**सुष्टुतिम्**) स्तुति करने वाले की उत्तम प्रशंसा को (**गिरः**) वाणियों को (**यज्ञम्, च**) और संगति करने को (**विश्वे**) सम्पूर्ण (**गन्त**) प्राप्त होवें तथा (**विश्वे**) समस्त (**मरुतः**) मनुष्यों को (**ऊती**) रक्षण आदि क्रिया से (**आ**) प्राप्त होवें॥१०॥

**भावार्थः**-हे विद्वन्! आप सम्पूर्ण नाम और रूप आदिकों से सम्पूर्ण पदार्थों को सम्पूर्ण मनुष्यों के लिये साक्षात् कराओ, जिससे सब मनुष्य प्रशंसित होकर सब को प्रशंसित विद्यायुक्त सम्पादित करें॥१०॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**आ नो॑ दि॒वो बृ॑ह॒तः पर्व॑ता॒दा सर॑स्वती यज॒ता ग॑न्तु य॒ज्ञम्।**

**हवं॑ दे॒वी जु॑जुषा॒णा घृ॒ताची॑ श॒ग्मां नो॒ वाच॑मुश॒ती शृ॑णोतु॥११॥**

**आ। न॒ः। दि॒वः। बृ॒ह॒तः। पर्व॑तात्। आ। सर॑स्वती। य॒ज॒ता। ग॒न्तु। य॒ज्ञम्। हव॑म्। दे॒वी। जु॒जु॒षा॒णा। घृ॒ताची॑। श॒ग्माम्। न॒ः। वाच॑म्। उ॒श॒ती। शृ॒णो॒तु॒॥११॥**

**पदार्थः**-(**आ**) (**नः**) अस्मान् (**दिवः**) कामयमानान् (**बृहतः**) महाशयान् (**पर्वतात्**) मेघात् (**आ**) (**सरस्वती**) विज्ञानयुक्ता वाक् (**यजता**) सङ्गन्तव्या (**गन्तु**) प्राप्नोतु (**यज्ञम्**) विद्याव्यवहारम् (**हवम्**) वक्तव्यं श्रोतव्यं वा (**देवी**) दिव्यगुणशास्त्रबोधयुक्ता (**जुजुषाणा**) सम्यक् सेवमाना (**घृताची**) या घृतमुदकमञ्चति (**शग्माम्**) सुखमयीम् (**नः**) अस्माकम् (**वाचम्**) वाणीम् **[(उशती)]** कामयमाना (**शृणोतु**)॥११॥

**अन्वयः**-हे विद्यार्थिनो! यथेयं यजता सरस्वती दिवो बृहतो नोऽस्मान् पर्वताज्जलमिवाऽऽगन्तु घृताची जुजुषाणा देव्युशती कामयमाना विदुषी स्त्री नो यज्ञं हवं शग्मां वाचं नोऽस्मांश्चाऽऽशृणोतु तथैव युष्मानपि प्राप्ता सतीयं युष्माकं कृत्यं शृणुयात्॥११॥



www.9009.co.in

**भावार्थ:**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। तानेव दिव्या वाक् प्राप्नोति ये सत्यकामा महाशयाः परोपकारप्रिया धर्मिष्ठा विद्यार्थिनां परीक्षकाः स्युः॥११॥

**पदार्थ:**-हे विद्यार्थी जनो! जैसे यह **(यजता)** उत्तम प्रकार प्राप्त होने योग्य **(सरस्वती)** विज्ञानयुक्त वाणी **(दिवः)** कामना करते हुए **(बृहतः)** महदाशययुक्त **(नः)** हम लोगों को **(पर्वतात्)** मेघ से जल के सदृश **(आ, गन्तु)** सब प्रकार प्राप्त होवे **(घृताची)** घृत को प्राप्त होने वाली **(जुजुषाणा)** उत्तम प्रकार से सेवन की गई **(देवी)** श्रेष्ठ गुण और शास्त्र के बोध से युक्त **(उशती)** कामना करती हुई विद्यायुक्त स्त्री **(नः)** हम लोगों के **(यज्ञम्)** विद्याव्यवहार को **(हवम्)** कहने-सुनने योग्य व्यवहार को वा **(शग्माम्)** सुखमयी **(वाचम्)** वाणी को और हम लागों को **(आ, शृणोतु)** अच्छे प्रकार सुने, वैसे आप लोगों को भी प्राप्त हुई यह आप लोगों के कृत्य को सुने॥११॥

**भावार्थ:**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। उन्हीं को श्रेष्ठ वाणी प्राप्त होती है, जो सत्य की कामना करने वाले, महाशय, परोपकारप्रिय, धर्मिष्ठ और विद्यार्थियों के परीक्षक होवें॥११॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**आ वे॒धसं॒ नील॑पृष्ठं बृ॒हन्तं॒ बृह॒स्पतिं॒ सद॑ने सादयध्वम्।**

**सा॒दद्यो॑निं॒ दम॒ आ दी॑दि॒वांसं॒ हिर॑ण्यवर्णमरु॒षं स॑पेम॥१२॥**

**आ। वे॒धस॑म्। नील॑ऽपृष्ठम्। बृ॒हन्त॑म्। बृह॒स्पति॑म्। सद॑ने। सा॒द॒य॒ध्व॒म्। सा॒दत्ऽयो॑निम्। दमे॑। आ। दी॒दि॒ऽवांस॑म्। हिर॑ण्यऽवर्णम्। अ॒रु॒षम्। स॒पे॒म॒॥१२॥**

**पदार्थ:**-**(आ) (वेधसम्)** मेधाविनम् **(नीलपृष्ठम्)** नीलसंवृत्तं पृष्ठं यस्य तम् **(बृहन्तम्)** महान्तम् **(बृहस्पतिम्)** महतां पतिम् **(सदने)** सभास्थाने **(सादयध्वम्)** स्थापयत **(साद्द्योनिम्)** सीदन्तं धर्म्ये कारणे **(दमे)** गृहे **(आ) (दीदिवांसम्)** देदीप्यमानं दातारम् **(हिरण्यवर्णम्)** तेजस्विनम् **(अरुषम्)** मर्मविद्यायां सीदन्तम् **(सपेम)** सपथैर्नियमयेम॥१२॥

**अन्वयः**-हे धीमन्तो जना! यूयं नीलपृष्ठं बृहन्तं बृहस्पतिं वेधसं सदन आ सादयध्वम्। वयं साद्द्योनिं तं दीदिवांसं हिरण्यवर्णमरुषं दमे सभास्थान आ सपेम॥१२॥

**भावार्थ:**-त एव मनुष्या राज्यं कर्त्तुं वर्धयितुं च शक्नुयुर्ये धर्मिष्ठान् कृतज्ञान् कुलीनान् विदुषः सभायां स्थापयेयुस्तत्र स्थापनसमये सपथैर्यूयमन्यायं कदाचिन्मा करिष्यथेति प्रलम्भयेयुः॥१२॥

**पदार्थ:**-हे बुद्धिमान् जनो! आप लोग **(नीलपृष्ठम्)** नीलगुण से युक्त पृष्ठ जिसका उस **(बृहन्तम्)** बड़े **(बृहस्पतिम्)** बड़ों के स्वामी **(वेधसम्)** बुद्धिमान् को **(सदने)** सभा के स्थान में **(आ, सादयध्वम्)** उत्तम प्रकार स्थित कीजिये। और हम लोग **(साद्द्योनिम्)** धर्मसम्बन्धी कारण में स्थित होते और



www.9009.co.in

(**दीदिवांसम्**) निरन्तर प्रकाशमान देने वाले (**हिरण्यवर्णम्**) तेजस्वी (**अरुषम्**) मर्मविद्या में स्थित होते हुए को (**दमे**) गृह में अर्थात् सभास्थान में (**आ, सपेम**) अच्छे प्रकार सपथों से नियत करावें॥१२॥

**भावार्थः**-वे ही मनुष्य राज्य करने और बढ़ाने को समर्थ होवें, जो धर्मिष्ठ और किये हुए उपकारों को जानने वाले, कुलीन विद्वानों को सभा में स्थित करें तथा वहाँ स्थापनसमय में सपथों से आप लोग अन्याय को कभी मत करो, ऐसा प्रलम्भन करावें॥१२॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**आ धर्णसिर्बृहद्दिवो रराणो विश्वेभिर्गन्त्वोमभिर्हुवानः।**

**ग्ना वसान ओषधीरमृध्रस्त्रिधातुशृङ्गो वृषभो वयोधाः॥ १३॥**

**आ। धर्णसिः। बृहत्ऽदिवः। रराणः। विश्वेभिः। गन्तु। ओमऽभिः। हुवानः। ग्नाः। वसानः। ओषधीः। अमृध्रः। त्रिधातुऽशृङ्गः। वृषभः। वयःऽधाः॥१३॥**

**पदार्थः**-(**आ**) समन्तात् (**धर्णसिः**) धर्त्ता (**बृहद्दिवः**) बृहतः प्रकाशस्य (**रराणः**) ददन् (**विश्वेभिः**) सर्वैः (**गन्तु**) प्राप्नोतु (**ओमभिः**) रक्षणादिकारकैः सह (**हुवानः**) आददानः (**ग्नाः**) वाचः। **ग्नेति वाङ्नामसु पठितम्।** (निघं०१.११) (**वसानः**) आच्छादयन् (**ओषधीः**) सोमलताद्याः (**अमृध्रः**) अहिंसकः (**त्रिधातुशृङ्गः**) त्रयो धातवो शुल्करक्तकृष्णगुणाः शृङ्गवद्यस्य सः (**वृषभः**) वर्षकः (**वयोधाः**) यो वयः कमनीयमायुर्दधाति सः॥१३॥

**अन्वयः**-हे विद्वन्! यथा धर्णसिर्बृहद्दिवो रराणो विश्वेभिरोमभिर्हुवानो ग्ना वसान ओषधीरमृध्र- स्त्रिधातुशृङ्गो वयोधा वृषभस्सूर्य्यो जगदुपकारी वर्त्तते तथैव भवान् जगदुपकारायाऽऽगन्तु॥१३॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। ये विद्वांसः त्रिगुणयुक्तप्रकृतिबोधका वाग्विज्ञापका अहिंस्रा औषधै रोगनिवारका ब्रह्मचर्य्यादिबोधेनायुर्वर्धका भवन्ति त एव जगत्पूज्या जायन्ते॥१३॥

**पदार्थः**-हे विद्वन्! जैसे (**धर्णसिः**) धारण करने वाला (**बृहद्दिवः**) बड़े प्रकाश का (**रराणः**) दान करता हुआ (**विश्वेभिः**) सम्पूर्ण (**ओमभिः**) रक्षण आदि के करने वालों के साथ (**हुवानः**) ग्रहण करता और (**ग्नाः**) वाणियों को (**वसानः**) आच्छादित करता हुआ (**ओषधीः**) सोमलता आदि का (**अमृध्रः**) नहीं नाश करने वाला (**त्रिधातुशृङ्गः**) तीन धातु अर्थात् शुक्ल, रक्त, कृष्ण गुण शृङ्गों के सदृश जिसके और (**वयोधाः**) सुन्दर आयु को धारण करने वाला (**वृषभः**) वृष्टिकारक सूर्य्य संसार का उपकारी है, वैसे ही आप संसार के उपकार के लिये (**आ, गन्तु**) उत्तम प्रकार प्राप्त हूजिये॥१३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो विद्वान् तीन गुणों से युक्त प्रकृति के जानने, वाणी के जानने, नहीं हिंसा करने, औषधों से रोगों के निवारने और ब्रह्मचर्य्य आदि के बोध से अवस्था के बढ़ाने वाले होते हैं, वे ही संसार के पूज्य होते हैं॥१३॥



www.9009.co.in

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**मा॒तुष्प॒दे प॑र॒मे शु॒क्र आ॒योर्वि॑प॒न्यवो॑ रास्पि॒रासो॑ अग्मन्।**

**सु॒शेव्यं॒ नम॑सा रा॒तह॑व्याः॒ शिशुं॑ मृजन्त्या॒यवो॒ न वा॒से॥ १४॥**

**मा॒तुः। प॒दे। प॒र॒मे। शु॒क्रे। आ॒योः। वि॒प॒न्यवः॑। रा॒स्पि॒रासः॑। अ॒ग्म॒न्। सु॒ऽशेव्य॑म्। नम॑सा। रा॒तऽह॑व्याः। शिशु॑म्। मृ॒ज॒न्ति॒। आ॒यवः॑। न। वा॒से॥ १४॥**

**पदार्थः-(मातुः)** जननीव वर्त्तमानाया भूमेः **(पदे)** प्रापणीये **(परमे)** उत्कृष्टे **(शुक्रे)** शुद्धे **(आयोः)** जीवनस्य **(विपन्यवः)** विशेषेण स्तावकाः **(रास्पिरासः)** ये रा दानानि स्पृणन्ति ते **(अग्मन्)** गच्छन्ति **(सुशेव्यम्)** सुष्ठु सुखेषु भवम् **(नमसा)** सत्कारेणान्नादिना वा **(रातहव्याः)** दत्तदातव्याः **(शिशुम्)** शासनीयं बालकम् **(मृजन्ति)** शोधयन्ति **(आयवः)** मनुष्याः **(न)** इव **(वासे)**॥ १४॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! ये शुक्रे परमे मातुष्पद आयोर्विपन्यवो रास्पिरासो रातहव्या नमसा वास आयवः शिशुं मृजन्ति न सुशेव्यमग्मन् ते सुशेव्या जायन्ते॥ १४॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। यथा माता सद्योजातं बालकं संशोध्य सुवासे रक्षति तथैव ये योगाभ्यासे चित्तं शोधयन्ति ते सैश्वर्य्यं सुखं प्राप्नुवन्ति॥ १४॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो **(शुक्रे)** शुद्ध **(परमे)** उत्तम **(मातुः)** माता के सदृश वर्त्तमान भूमि के **(पदे)** प्राप्त होने योग्य स्थान में **(आयोः)** जीवन के **(विपन्यवः)** विशेषतया स्तुति करने और और **(रास्पिरासः)** दोनों की प्रीति करने वाले **(रातहव्याः)** दिये हुओं के देने योग्य **(नमसा)** सत्कार वा अन्न आदि से **(वासे)** वसने में **(आयवः)** मनुष्य **(शिशुम्)** शासन करने योग्य बालक को **(मृजन्ति)** शुद्ध करते हैं **(न)** जैसे वैसे **(सुशेव्यम्)** उत्तम सुखों में हुए व्यवहार को **(अग्मन्)** प्राप्त होते हैं, वे उत्तम प्रकार सुखों से युक्त होते हैं॥ १४॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जैसे माता शीघ्र उत्पन्न हुए बालक को उत्तम प्रकार शुद्ध करके उत्तम स्थान में रक्षा करती है, वैसे ही जो योगाभ्यास में चित्त को शुद्ध करते हैं, वे ऐश्वर्य्य के सहित सुख को प्राप्त होते हैं॥ १४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**बृ॒हद्वयो॑ बृह॒ते तुभ्य॑मग्ने धिया॒जुरो॑ मिथु॒नासः॑ सचन्त।**

**दे॒वोदे॑वः सु॒हवो॑ भूतु॒ मह्यं॒ मा नो॑ मा॒ता पृ॑थि॒वी दु॒र्म॒तौ धा॑त्॥ १५॥**



www.9009.co.in

**बृहत्। वयः। बृहते। तुभ्यम्। अग्ने। धियाऽजुरः। मिथुनासः। सचन्त। देवःऽदेवः। सुऽहवः। भूतु। मह्यम्। मा। नः। माता। पृथिवी। दुःऽमतौ। धात्॥ १५॥**

**पदार्थः-(बृहत्)** महत् **(वयः)** जीवनम् **(बृहते)** वृद्धाय **(तुभ्यम्) (अग्ने)** विद्वन् **(धियाजुरः)** धिया प्रज्ञया कर्म्मणा वा प्राप्तजरावस्थाः **(मिथुनासः)** सपत्नीकाः **(सचन्त)** समवयन्ति **(देवोदेवः)** विद्वान् विद्वान् **(सुहवः)** सुष्ठुप्रशंसनीयः **(भूतु)** भवतु **(मह्यम्) (मा)** निषेधे **(नः)** अस्मान् **(माता)** जननी **(पृथिवी)** भूमिरिव **(दुर्मतौ)** दुष्टायां प्रज्ञायाम् **(धात्)** दध्यात्॥ १५॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! ये धियाजुरो मिथुनासो बृहते तुभ्यं बृहद्वयः सचन्त सुहवो देवोदेवो मह्यं सुखकारी भूतु पृथिवीव माता नोऽस्मान् दुर्म्मतौ मा धात्॥ १५॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! ये वयोविद्यावृद्धा युष्मान् विद्याभिः सह सम्बध्नन्ति मातृवत् कृपया रक्षन्ति ते युष्माकं पूज्या भवन्तु॥ १५॥

**पदार्थः**-हे **(अग्ने)** विद्वन्! जो **(धियाजुरः)** बुद्धि वा कर्म्म से प्राप्त हुई वृद्धावस्था जिनको ऐसे **(मिथुनासः)** स्त्रियों के सहित वर्त्तमान जन **(बृहते)** वृद्ध **(तुभ्यम्)** आपके लिये **(बृहत्)** बड़े **(वयः)** जीवन को **(सचन्त)** उत्तम प्रकार प्राप्त होते हैं और **(सुहवः)** उत्तम प्रकार प्रशंसा करने योग्य **(देवोदेवः)** विद्वान् विद्वान् **(मह्यम्)** मेरे लिये सुखकारी **(भूतु)** हो और **(पृथिवी)** भूमि के सदृश **(माता)** माता **(नः)** हम लोगों को **(दुर्म्मतौ)** दुष्ट बुद्धि में **(मा)** नहीं **(धात्)** धारण करे॥ १५॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो अवस्था और विद्या में वृद्ध आप लोगों को विद्याओं से सम्बन्धित करते हैं और माता के सदृश कृपा से रक्षा करते हैं, वे आप लोगों के पूज्य हों॥ १५॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**उरौ देवा अनिबाधे स्याम॥ १६॥**

**उरौ। देवाः। अनिऽबाधे। स्याम॥ १६॥**

**पदार्थः-(उरौ)** बहौ **(देवाः)** विद्वांसः **(अनिबाधे)** व्यवहारे **(स्याम)** भवेम॥ १६॥

**अन्वयः**-हे देवा! यूयं यथा वयमुरावनिबाधे स्याम तथा विदधत॥ १६॥

**भावार्थः**-विद्वद्भिः सर्वे मनुष्या यथा निर्विघ्नाः स्युस्तथा विधेयम्॥ १६॥

**पदार्थः**-हे **(देवाः)** विद्वान् जनो! आप लोग जैसे हम लोग **(उरौ)** बहु **(अनिबाधे)** व्यवहार में **(स्याम)** होवें वैसे करिये॥ १६॥

**भावार्थः**-विद्वानों को चाहिये कि सब मनुष्य जैसे विघ्नरहित होवें, वैसा करें॥ १६॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥



www.9009.co.in

**समश्विनोरवसा नूतनेन मयोभुवा सुप्रणीती गमेम।**
**आ नो रयिं वहतमोत वीराना विश्वान्यमृता सौभगानि॥१७॥२२॥**

**सम्। अश्विनोः। अवसा। नूतनेन। मयःऽभुवा। सुऽप्रनीती। गमेम। आ। नः। रयिम्। वहतम्। आ। उत। वीरान्। आ। विश्वानि। अमृता। सौभगानि॥१७॥**

**पदार्थः**-(**सम्**) (**अश्विनोः**) अध्यापकोपदेशकयोः (**अवसा**) रक्षणाद्येन (**नूतनेन**) नवीनेन (**मयोभुवा**) सुखंभावुकौ (**सुप्रणीती**) धर्म्यनीतियुक्तौ (**गमेम**) प्राप्नुयाम (**आ**) (**नः**) अस्मान् (**रयिम्**) धनम् (**वहतम्**) प्रापयेतम् (**आ**) (**उत**) अपि (**वीरान्**) अत्युत्तमान् पुत्रपौत्रादीन् (**आ**) (**विश्वानि**) समग्राणि (**अमृता**) नाशरहितानि (**सौभगानि**) शोभनैश्वर्य्याणां भावान्॥१७॥

**अन्वयः**-हे अध्यापकोपदेशकौ! यौ मयोभुवा सुप्रणीती युवां नो रयिमुतापि वीराना वहतं ययोरश्विनोर्नूतनेनावसा वयं विश्वान्यमृता सौभगानि वयं सोमा गमेम तावस्माभिः सदैवा सेवनीयौ स्तः॥१७॥

**भावार्थः**-येऽध्यापकोपदेशकाः सर्वान् मनुष्यान् नूतनयाऽनूतनया विद्यया युक्तान् कृत्वैश्वर्य्यं प्रापयन्ति ते सदैव प्रशंसिता भवन्तीति॥१७॥

अत्र विश्वदेवगुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति त्रिचत्वारिंशत्तमं सूक्तं द्वाविंशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे अध्यापकोपदेशको! जो (**मयोभुवाः**) सुख के उत्पन्न करने वाले (**सुप्रणीती**) धर्मसन्बधी नीति से युक्त आप (**नः**) हम लोगों को (**रयिम्**) धन (**उत**) और (**वीरान्**) अति उत्तम पुत्र-पौत्र आदिकों को (**आ, वहतम्**) अच्छे प्रकार प्राप्त करावें और जिन (**अश्विनोः**) अध्यापक और उपदेशकों के (**नूतनेन**) नवीन (**अवसा**) रक्षण आदि से हम लोग (**विश्वानि**) सम्पूर्ण (**अमृता**) नाश से रहित (**सौभगानि**) सुन्दर ऐश्वर्य्यों के भावों को हम लोग (**सम्, आ गमेम**) उत्तम प्रकार प्राप्त होवें, वे दोनों हम लोगों से सदा (**आ**) उत्तम प्रकार सेवन करने योग्य हैं॥१७॥

**भावार्थः**-जो अध्यापक और उपदेशक जन सब मनुष्यों को नवीन और प्राचीन विद्या से युक्त कर ऐश्वर्य्य को प्राप्त कराते हैं, वे सदा ही प्रशंसित होते हैं॥१७॥

इस सूक्त में सम्पूर्ण विद्वानों के गुण-वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये।

**यह तेतालीसवां सूक्त और बाईसवां वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

अथ पञ्चदशर्चस्य चतुश्चत्वारिंशत्तमस्य सूक्तस्य अवत्सारः काश्यप अन्ये च ऋषयो दृष्टलिङ्गाः। विश्वेदेवा देवताः। १, ३, १३, विराड्जगती। २, ४, ५, ६, १२ निचृज्जगती। ८, ९ जगती छन्दः। निषादः स्वरः। ७ भुरिक् त्रिष्टुप्। १०, ११ स्वराट् त्रिष्टुप्। १४ विराट् त्रिष्टुप्। १५ त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः॥

*अथ सूर्यरूपतया राजगुणानाह॥*

अब पंद्रह ऋचा वाले चवालीसवें सूक्त का प्रारम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में सूर्यरूपता से राजगुणों को कहते हैं॥

**तं प्रत्नथा पूर्वथा विश्वथेमथा ज्येष्ठतातिं बर्हिषदं स्वर्विदम्।**

**प्रतीचीनं वृजनं दोहसे गिराशुं जयन्तमनु यासु वर्धसे॥ १॥**

**तम्। प्रत्नऽथा। पूर्वऽथा। विश्वऽथा। इमऽथा ज्येष्ठऽतातिम्। बर्हिऽसदम्। स्वःऽविदम्। प्रतीचीनम्। वृजनम्। दोहसे। गिरा। आशुम्। जयन्तम्। अनु। यासु। वर्धसे॥ १॥**

**पदार्थः-(तम्) (प्रत्नथा)** प्रत्नमिव **(पूर्वथा)** पूर्वमिव **(विश्वथा)** विश्वमिव **(इमथा)** इममिव **(ज्येष्ठतातिम्)** ज्येष्ठमेव **(बर्हिषदम्)** बर्हिष्युत्तमासनेऽन्तरिक्षे वा सीदन्तम् **(स्वर्विदम्)** स्वः सुखं विदन्ति येन तम् **(प्रतीचीनम्)** अस्मान् प्रत्यभिमुखं प्राप्नुवन्तम् **(वृजनम्)** बलम् **(दोहसे)** पिपरसि **(गिरा)** वाण्या **(आशुम्)** शीघ्रकारिणं सङ्ग्रामम् **(जयन्तम्)** विजयमानम् **(अनु) (यासु) (वर्धसे)**॥१॥

**अन्वयः**-हे राजन्! यस्त्वं गिरा प्रत्नथा पूर्वथा विश्वथेमथा ज्येष्ठतातिं बर्हिषदं स्वर्विदं प्रतीचीनं वृजनमाशुं जयन्तं दोहसे तं त्वां यास्वनु वर्धसे ताः सेना प्रजाश्च वयं सततं वर्धयेम॥१॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! ये सनातनरीत्या पूर्वोत्तमराजवत्पितृवद् राष्ट्रं सम्पाल्य पूर्णबलां सेनां कृत्वा सद्योविजयमानाः प्रजाः सुखानुकूला वर्त्तयन्तु तानेवोत्तमाऽधिकारे नियोजयत यतो राजप्रजानां सततं सुखं वर्धेत॥१॥

**पदार्थः**-हे राजन्! जो आप **(गिरा)** वाणी से **(प्रत्नथा)** पुराने के सदृश **(पूर्वथा)** पूर्व के सदृश **(विश्वथा)** सम्पूर्ण संसार के सदृश **(इमथा)** इसके सदृश **(ज्येष्ठतातिम्)** जेठे ही को **(बर्हिषदम्)** उत्तम आसन वा अन्तरिक्ष में स्थित होने वाले **(स्वर्विदम्)** सुख को जानते जिससे उस **(प्रतीचीनम्)** हम लोगों के सम्मुख प्राप्त होते हुए **(वृजनम्)** बल को तथा **(आशुम्)** शीघ्रकारी संग्राम को **(जयन्तम्)** जीतते हुए को **(दोहसे)** पूर्ण करते हो **(तम्)** उन आपको और **(यासु)** जिनमें **(अनु, वर्धसे)** वृद्धि को प्राप्त होते हो, उन सेनाओं और उन प्रजाओं की हम लोग निरन्तर वृद्धि करें॥१॥



www.9009.co.in

**भावार्थ:**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जो प्राचीन रीति से प्राचीन उत्तम राजाओं के तुल्य पिता के सदृश राज्य का उत्तम प्रकार पालन करके पूर्ण बलयुक्त सेना को कर शीघ्र विजय को प्राप्त हुई प्रजाओं को सुख के अनुकूल वर्त्तावें, उन्हीं को उत्तम अधिकार में नियुक्त करिये, जिससे राजा और प्रजा का निरन्तर सुख बढ़े॥१॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**श्रिये सुदृशीरुपरस्य याः स्वर्विरोचमानः ककुभामचोदते।**

**सुगोपा असि न दभाय सुक्रतो परो मायाभिर्ऋत आस नाम ते॥२॥**

**श्रिये। सुऽदृशीः। उपरस्य। याः। स्वः। विऽरोचमानः। ककुभाम्। अचोदते। सुऽगोपाः। असि। न। दभाय। सुक्रतो इति सुऽक्रतो। परः। मायाभिः। ऋते। आस। नाम। ते॥२॥**

**पदार्थः**-(**श्रिये**) धनाय शोभायै वा (**सुदृशीः**) शोभनं दृग्दर्शनं यासां ताः (**उपरस्य**) मेघस्य (**याः**) (**स्वः**) आदित्यः (**विरोचमानः**) प्रकाशमानः (**ककुभाम्**) दिशाम् (**अचोदते**) अप्रेरकाय (**सुगोपाः**) सुष्ठु रक्षकः (**असि**) (**न**) निषेधे (**दभाय**) हिंसकाय (**सुक्रतो**) उत्तमकर्म्मप्रज्ञायुक्त (**परः**) प्रकृष्टः (**मायाभिः**) प्रज्ञाभिः (**ऋते**) सत्ये (**आस**) वर्त्तते (**नाम**) (**ते**) तव॥२॥

**अन्वयः**-हे सुक्रतो विद्वँस्त्वं यथा विरोचमानः स्वः ककुभामुपरस्य प्रकाशक आस तथा श्रिये याः सुदृशीः प्रेरितवान् परः सुगोपा अस्यचोदते दभाय मायाभिर्न वर्त्तसे यस्य त ऋते नामाऽऽस तस्य ताः प्रजाः सर्वतो वर्धन्ते॥२॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यथा सूर्यो दिशाप्रकाशकः सन् सर्वाः प्रजाः शोभनाय वृष्टिकरो भवति, तथैव सर्वाः प्रजा न्यायेन प्रकाश्य विद्यासु वर्धको राजा भवेत्॥२॥

**पदार्थ:**-हे (**सुक्रतो**) उत्तम कर्म्म और बुद्धि से युक्त विद्वान्! आप जैसे (**विरोचमानः**) प्रकाशमान (**स्वः**) सूर्य्य (**ककुभाम्**) दिशाओं और (**उपरस्य**) मेघ का प्रकाशमान [=प्रकाशक] (**आस**) वर्त्तमान है, वैसे (**श्रिये**) धन वा शोभा के लिये (**याः**) जिन (**सुदृशीः**) दर्शनों वालियों को प्रेरणा करने वाले और (**परः**) उत्तम से उत्तम (**सुगोपाः**) उत्तम प्रकार रक्षा करने वाले (**असि**) हो और (**अचोदते**) नहीं प्रेरणा करने और (**दभाय**) हिंसा करने वाले जन के लिये (**मायाभिः**) बुद्धियों के साथ (**न**) नहीं वर्त्तमान हो जिन (**ते**) आपके (**ऋते**) सत्य में (**नाम**) नाम वर्त्तमान है, उसकी वे प्रजायें सब प्रकार वृद्धि को प्राप्त होती हैं॥२॥

**भावार्थ:**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे सूर्य्य दिशाओं का प्रकाशक हुआ सब प्रजाओं को सुख देने के लिये वृष्टि करने वाला होता है, वैसे ही सब प्रजाओं को न्याय से प्रकाशित करके विद्या और सुख का बढ़ाने वाला राजा होता है॥२॥

**अथ मेघविषयेण राजगुणानाह॥**



www.9009.co.in

अब मेघविषय से राजगुणों को कहते हैं॥

**अत्यं हविः सचते सच्च धातु चारिष्टगातुः स होता सहोभरिः।**

**प्रसर्स्राणो अनु बर्हिर्वृषा शिशुर्मध्ये युवाजरो विस्रुहा हितः॥३॥**

**अत्यम्। हविः। सचते। सत्। च। धातु। च। अरिष्टऽगातुः। सः। होता। सहःऽभरिः। प्रऽसर्स्राणः। अनु। बर्हिः। वृषा। शिशुः। मध्ये। युवा। अजरः। विऽस्रुहा। हितः॥३॥**

**पदार्थः-(अत्यम्)** अतति व्याप्नोति तत्र भवम् **(हविः)** होतव्यं द्रव्यम् **(सचते)** सम्बध्नाति **(सत्)** यद्वर्त्तते तत् **(च) (धातु)** यद्दधाति तत् **(च) (अरिष्टगातुः)** अरिष्टा अहिंसिता गातुर्वाग्यस्य सः **(सः) (होता)** दाता **(सहोभरिः)** यः सहो बलं बिभर्ति **(प्रसर्स्राणः)** प्रकर्षेण भृशं गच्छन् **(अनु) (बर्हिः)** अन्तरिक्षम् **(वृषा)** बलिष्ठः **(शिशुः)** बालकः **(मध्ये) (युवा)** प्राप्तयौवनावस्थः **(अजरः)** वृद्धावस्था-रहितः **(विस्रुहा)** यो विस्रून् रोगान् हन्ति **(हितः)** हितकारी॥३॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! योऽरिष्टगातुः सहोभरिर्होता प्रसर्स्राणो वृषा युवाजरो विस्रुहा हितो बर्हिरनु सच्च धातु चात्यं हविः सचते स शिशुर्मातरमिव जगतो मध्ये पुण्येन युज्यते॥३॥

**भावार्थः**-हे राजन्! यथा होता सुगन्ध्यादियुक्तेनाग्नौ हुतेन द्रव्येण वायुवृष्टिजलशुद्धिद्वारा जगति सुखमुपकरोति तथा न्यायकीर्तिवासनया दत्तया विद्यया च राष्ट्रं सुखी कुरु॥३॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो **(अरिष्टगातुः)** ऐसा है कि जिसकी नहीं हिंसित वाणी वह **(सहोभरिः)** बल को धारण करने वाला **(होता)** दाताजन **(प्रसर्स्राणः)** प्रकर्षता से अत्यन्त चलता हुआ **(वृषा)** बलिष्ठ **(युवा)** यौवन अवस्था को प्राप्त **(अजरः)** वृद्ध अवस्था से रहित **(विस्रुहा)** रोगों का नाश करने वाला **(हितः)** हितकारी **(बर्हिः)** अन्तरिक्ष को **(अनु)** पश्चात् **(सत्)** वर्त्तमान को **(च)** और **(धातु)** धारण करने वाले **(च)** और **(अत्यम्)** व्याप्त होने वाले में उत्पन्न **(हविः)** हवन करने योग्य द्रव्य को **(सचते)** सम्बन्धित करता है **(सः)** वह **(शिशुः)** बालक माता को जैसे वैसे संसार के **(मध्ये)** बीच में पुण्य से युक्त होता है॥३॥

**भावार्थः**-हे राजन्! जैसे हवन करने वाला सुगन्धि आदि से युक्त, अग्नि में हवन किये हुए द्रव्य से वायु, वृष्टि और जल की शुद्धि के द्वारा संसार में सुख का उपकार करता है, वैसे न्याय और कीर्ति की वासना से युक्त दी हुई विद्या से राज्य देश को सुखी करिये॥३॥

**अथ सूर्यसंयोगतो मेघदृष्टान्तेन राजगुणानाह॥**

अब सूर्य्यसंयोग से मेघदृष्टान्त से राजगुणों को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**प्र व एते सुयुजो यामन्निष्टये नीचीरमुष्मै यम्य ऋतावृधः।**

**सुयन्तुभिः सर्वशासैरभीशुभिः क्रिविर्नामानि प्रवणे मुषायति॥४॥**



www.9009.co.in

**प्र। वः। एते। सुऽयुजः। यामन्। इष्टये। नीचीः। अमुष्मै। यम्यः। ऋतऽवृधः। सुयन्तुऽभिः। सर्वऽशासैः। अभीशुऽभिः। क्रिविः। नामानि। प्रवणे। मुषायति॥४॥**

**पदार्थः-(प्र)** **(वः)** युष्माकम् **(एते)** राजादयो जनाः **(सुयुजः)** ये सुष्ठु धर्मेण युञ्जते **(यामन्)** यामनि मार्गे **(इष्टये)** इष्टसुखाय **(नीचीः)** निम्नगताः **(अमुष्मै)** परोक्षाय सुखाय **(यम्यः)** यमाय न्यायकारिणे हिताः **(ऋतावृधः)** या ऋतं सत्यं वर्धयन्ति ताः **(सुयन्तुभिः)** सुष्ठु यन्तवो नियन्तारो येषु तैः **(सर्वशासैः)** ये सर्वं राज्यं शासन्ति तैः **(अभीशुभिः)** रश्मिभिः। **अभीशव इति रश्मिनामसु पठितम्।** (निघं०१.५) **(क्रिविः)** प्रजापालनकर्त्ता **(नामानि)** जलानि **(प्रवणे)** निम्ने देशे **(मुषायति)** चोरयति॥४॥

**अन्वयः**-यथा क्रिविः सूर्योऽभीशुभिः प्रवणे नामानि प्र मुषायति तथैव हे मनुष्य! ये सुयुज एते व इष्टये यामन्नमुष्मै सुयन्तुभिः सर्वशासैर्यम्य ऋतावृधो नीचीः प्रजाः सम्पादयन्तु॥४॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यथा सूर्य्यस्सर्वसुखाय जलमाकर्षति तथैव राजा न्यायमार्गेण सर्वाः प्रजा ग्मन् सुष्ठु विज्ञानयुक्तैर्भृत्यैः सहितः सार्वजनिकहितं सम्पादयति॥४॥

**पदार्थः**-जैसे **(क्रिविः)** प्रजा का पालन करने वाला सूर्य्य **(अभीशुभिः)** किरणों से **(प्रवणे)** नीचे स्थल में **(नामानि)** जलों को **(प्र, मुषायति)** अत्यन्त चुराता है, वैसे ही हे मनुष्यो! जो **(सुयुजः)** अच्छे धर्म से युक्त होते वे **(एते)** राजा आदि जन **(वः)** आप लोगों के **(इष्टये)** इष्ट सुख के लिये **(यामन्)** मार्ग में और **(अमुष्मै)** परोक्ष सुख के लिये **(सुयन्तुभिः)** उत्तम नियन्ता जिनमें उन **(सर्वशासैः)** सम्पूर्ण राज्य के शासन करने वालों से **(यम्यः)** न्यायकारी के लिये हितकारक **(ऋतावृधः)** सत्य को बढ़ाने वाली **(नीचीः)** नीची हुई प्रजाओं को सम्पन्न करें॥४॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जैसे सूर्य्य सब के सुख के लिये जल को खींचता है, वैसे ही राजा न्यायमार्ग से सम्पूर्ण प्रजाओं को चलाता हुआ उत्तम विज्ञान से युक्त भृत्यों के सहित सब मनुष्यों के हित का सम्पादन करता है॥४॥

**अथ विद्वद्विषयमाह॥**

अब विद्वद्विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**संजर्भुराणस्तरुभिः सुतेगृभं वयाकिनं चित्तगर्भासु सुस्वरुः।**

**धारवाकेष्वृजुगाथ शोभसे वर्धस्व पत्नीरभि जीवो अध्वरे॥५॥२३॥**

**सम्ऽजर्भुराणः। तरुऽभिः। सुतेऽगृभम्। वयाकिनम्। चित्तऽगर्भासु। सुऽस्वरुः। धारऽवाकेषु। ऋजुऽगाथ। शोभसे। वर्धस्व। पत्नीः। अभि। जीवः। अध्वरे॥५॥**

**पदार्थः-(सञ्जर्भुराणः)** सम्यक् पालयन् धरन् **(तरुभिः)** वृक्षैः **(सुतेगृभम्)** उत्पन्ने जगति गृहीतम् **(वयाकिनम्)** व्यापिनम् **(चित्तगर्भासु)** चित्तं चेतनत्वं गर्भो यासु तासु **(सुस्वरुः)** सुष्ठूपदेशकः **(धारवाकेषु)** शास्त्रवागुपदेशकेषु **(ऋजुगाथ)** य ऋजुं सरलं व्यवहारं गाति स्तौति तत्सम्बुद्धौ **(शोभसे)**



www.9009.co.in

शोभां प्राप्नुयाः **(वर्धस्व)** **(पत्नीः)** स्त्रियः **(अभि)** आभिमुख्ये **(जीवः)** **(अध्वरे)** अहिंसायुक्ते व्यवहारे॥५॥

**अन्वयः**-हे ऋजुगाथ! त्वं तरुभिस्सञ्जर्भुराणो धारवाकेषु चित्तगर्भासु सुतेगृभं वयाकिनं प्रजासु सुस्वरुः सन्नध्वरे शोभसे जीवः सन् पत्नीरिव प्रजा अभि वर्धस्व॥५॥

**भावार्थः**-ये मनुष्याः स्थावरजङ्गमाभ्यः प्रजाभ्य उपकारं ग्रहीतुं शक्नुयुस्ते सदैवानन्दिता भवेयुः॥५॥

**पदार्थः**-हे **(ऋजुगाथ)** सरल व्यवहार के स्तुति करने वाले! आप **(तरुभिः)** वृक्षों से **(सञ्जर्भुराणः)** उत्तम प्रकार पालन और धारण करते हुए **(धारवाकेषु)** शास्त्रवाणी के उपदेश करने वालों में और **(चित्तगर्भासु)** चेतनतारूप गर्भ जिनमें उनके निमित्त **(सुतेगृभम्)** उत्पन्न जगत् में ग्रहण किये गये **(वयाकिनम्)** व्यापी को, प्रजाओं में **(सुस्वरुः)** उत्तम प्रकार उपदेश करने वाले हुए **(अध्वरे)** अहिंसायुक्त व्यवहार में **(शोभसे)** शोभा को प्राप्त हूजिये और **(जीवः)** जीवते हुए **(पत्नीः)** स्त्रियों को जैसे वैसे प्रजाओं के **(अभि)** सन्मुख **(वर्धस्व)** वृद्धि को प्राप्त हूजिये॥५॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य स्थावर, जङ्गमरूप प्रजाओं से उपकार ग्रहण कर सकें, वे सदा ही आनन्दित होवें॥५॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**या॒दृगे॒व द॑दृ॒शे ता॒दृगु॑च्यते॒ सं छा॒यया॑ दधिरे सि॒ध्रया॒प्स्वा।**

**म॒हीम॒स्मभ्य॑मुरु॒षामु॒रु त्रयो॑ बृ॒हत्सु॒वीर॒मन॑पच्युतं॒ सहः॑॥६॥**

**या॒दृक्। ए॒व। द॒दृ॒शे। ता॒दृक्। उ॒च्य॒ते॒। सम्। छा॒यया॑। द॒धि॒रे॒। सि॒ध्रया॑। अ॒प्ऽसु। आ। म॒हीम्। अ॒स्मभ्य॑म्। उ॒रु॒ऽसाम्। उ॒रु। त्रयः॑। बृ॒हत्। सु॒ऽवीर॑म्। अन॑पऽच्युतम्। सहः॑॥६॥**

**पदार्थः**-**(यादृक्)** **(एव)** **(ददृशे)** दृश्यते **(तादृक्)** **(उच्यते)** **(सम्)** **(छायया)** **(दधिरे)** दधति **(सिध्रया)** मङ्गलया **(अप्सु)** जलेषु प्राणेषु वा **(आ)** **(महीम्)** महतीं वाचम् **(अस्मभ्यम्)** **(उरुषाम्)** यो बहून् सनति विभजति तम् **(उरु)** बहु **(त्रयः)** वेगवन्तः **(बृहत्)** महत् **(सुवीरम्)** शोभना वीरा यस्मात्तम् **(अनपच्युतम्)** ह्रासरहितम् **(सहः)** बलम्॥६॥

**अन्वयः**-ये त्रयः सिध्रया छाययाप्स्वस्मभ्यमुरुषां महीमुरु बृहत्सुवीरमनपच्युतं सहः समा दधिरे यैर्यादृग्ददृशे तादृगेवोच्यते तेऽस्माभिः सततं सत्कर्त्तव्याः॥६॥

**भावार्थः**-येऽन्येषु विद्याबलं धनसञ्चयञ्च स्थापयन्ति यैर्यादृशमात्मनि वर्त्तते तादृङ् मनसि यादृङ् मनसि तादृग्वाचा भाष्यते त एव आप्ता विज्ञेयाः॥६॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-जो **(व्रयः)** वेग वाले **(सिध्रया)** मङ्गलस्वरूप **(छायया)** छाया से **(अप्सु)** जलों वा प्राणों में **(अस्मभ्यम्)** हम लोगों के लिये **(उरुषाम्)** बहुतों के विभाग करने वाले को **(महीम्)** बड़ी वाणी और **(उरु)** बहुत **(बृहत्)** बड़े **(सुवीरम्)** सुन्दर वीर पुरुष जिससे उस **(अनपच्युतम्)** नाश से रहित **(सहः)** बल को **(सम्, आ, दधिरे)** उत्तम प्रकार धारण करते हैं और जिन लोगों से **(यादृक्)** जैसा **(ददृशे)** देखा जाता है **(तादृक्)** वैसा **(एव)** ही **(उच्यते)** कहा जाता है, वे हम लोगों से निरन्तर सत्कार करने योग्य हैं॥६॥

**भावार्थः**-जो अन्य जनों में विद्या के बल और धन के संचय को स्थापित करते हैं और जिनसे जैसा आत्मा में वर्त्तमान है, वैसा मन में और जैसा मन में वैसा वाणी से कहा जाता है, वे ही यथार्थवक्ता जानने योग्य हैं॥६॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**वेत्यग्रुर्जनिवान् वा अति स्पृधः समर्यता मनसा सूर्यः कविः।**

**घ्रंसं रक्षन्तं परि विश्वतो गयमस्माकं शर्म वनवत् स्वावसुः॥७॥**

**वेति। अग्रुः। जनिऽवान्। वै। अति। स्पृधः। सुऽमर्यता। मनसा। सूर्यः। कविः। घ्रंसम्। रक्षन्तम्। परि। विश्वतः। गयम्। अस्माकम्। शर्म। वनवत्। स्वऽवसुः॥७॥**

**पदार्थः**-**(वेति)** प्राप्नोति **(अग्रुः)** अग्रगन्ता **(जनिवान्)** विद्यायां जन्मवान् **(वै)** निश्चयेन **(अति)** **(स्पृधः)** स्पर्द्धन्ते येषु तान् सङ्ग्रामान् **(समर्य्यता)** समरमिच्छता **(मनसा)** चित्तेन **(सूर्यः)** सवितेव **(कविः)** क्रान्तप्रज्ञः **(घ्रंसम्)** दिनम् **(रक्षन्तम्)** **(परि)** सर्वतः **(विश्वतः)** सर्वस्मात् **(गयम्)** श्रेष्ठमपत्यं धनं वा **(अस्माकम्)** **(शर्म)** गृहम् **(वनवत्)** संविभाजयेत् **(स्वावसुः)** स्वेषु यो वसति स्वान् वा वासयति॥७॥

**अन्वयः**-यः स्वावसुः सूर्य्य इव कविरग्रुर्जनिवान् विद्वान् समर्य्यता मनसा स्पृधोऽति वेति स वै सूर्य्यो घ्रंसमिवास्माकं विश्वतो रक्षन्तं गयं शर्म्म च परि वनवत् स वा अस्माभिः सत्कर्त्तव्यः॥७॥

**भावार्थः**-यो मनुष्यो विद्याविनयप्राप्तो दुष्टेषूग्रो धार्मिकेषु शान्तः सदैव दुष्टैः सह युद्धेन प्रजा रक्षन् सुखे वासयेत् स सूर्य्यवत् प्रकाशकीर्त्तिर्भवेत्॥७॥

**पदार्थः**-जो **(स्वावसुः)** अपनों में बसता वा अपनों को जो बसाता है वह **(सूर्य्यः)** सूर्य्य के सदृश **(कविः)** उत्तम बुद्धिमान् **(अग्रुः)** अग्रगन्ता **(जनिवान्)** विद्या में जन्मवान् विद्यायुक्त पुरुष **(समर्य्यता)** संग्राम की इच्छा करते हुए **(मनसा)** चित्त से **(स्पृधः)** स्पर्द्धा करते हैं जिनमें उन संग्रामो की इच्छा करते हुए **(अति, वेति)** अत्यन्त व्याप्त होता है, वह **(वै)** निश्चय से जैसे सूर्य्य **(घ्रंसम्)** दिन को वैसे **(अस्माकम्)** हम लोगों को **(विश्वतः)** सब से **(रक्षन्तम्)** रक्षा करते हुए **(गयम्)** श्रेष्ठ अपत्य वा धन



www.9009.co.in

और **(शर्म्म)** गृह का **(परि)** सब प्रकार से **(वनवत्)** संविभाग करे, वह हम लोगों से सत्कार करने योग्य है॥७॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य विद्या और विनय को प्राप्त, दुष्टों में उग्र और धार्मिको में शान्त और सदा ही दुष्टों के साथ युद्ध करने से प्रजाओं की रक्षा करता हुआ सुख में वास करावे, वह सूर्य्य के सदृश प्रकाशित यश वाला हो॥७॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**ज्यायांसमस्य यतुनस्य केतुन ऋषिस्वरं चरति यासु नाम ते।**

**यादृश्मिन् धायि तमपस्यया विदद्य उ स्वयं वहते सो अरं करत्॥८॥**

ज्यायांसम्। अस्य। यतुनस्य। केतुना। ऋषिऽस्वरम्। चरति। यासु। नाम। ते। यादृश्मिन्। धायि। तम्। अपस्यया। विदत्। यः। ऊँ इति। स्वयम्। वहते। सः। अरम्। करत्॥८॥

**पदार्थः**-**(ज्यायांसम्)** श्रेष्ठम् **(अस्य)** **(यतुनस्य)** यत्नशीलस्य **(केतुना)** प्रज्ञानेन **(ऋषिस्वरम्)** ऋषीणामुपदेशम् **(चरति)** प्राप्नोति **(यासु)** प्रजासु **(नाम)** **(ते)** तव **(यादृश्मिन्)** यादृशो व्यवहारे **(धायि)** ध्रियते **(तम्)** **(अपस्यया)** आत्मनः कर्मेच्छया **(विदत्)** लभते **(यः)** **(उ)** **(स्वयम्)** **(वहते)** प्राप्नोति **(सः)** **(अरम्)** अलम् **(करत्)** कुर्य्यात्॥८॥

**अन्वयः**-योऽस्य यतुनस्य विदुषः केतुना ज्यायांसमृषिस्वरं चरति यस्य ते यासु नामास्ति यादृश्मिन् योऽन्यैर्धायि तमपस्यया विददु स्वयं वहते सोऽस्मानरं करत्॥८॥

**भावार्थः**-ये मनुष्या आप्तस्य सकाशात् प्राप्तेन बोधेन स्वयमुत्तमा भूत्वाऽन्यान् सुभूषितान् कुर्य्युस्ते सुखं लभन्ते॥८॥

**पदार्थः**-**(यः)** जो **(अस्य)** इस **(यतुनस्य)** यत्न करने वाले विद्वान् के **(केतुना)** प्रज्ञान से **(ज्यायांसम्)** श्रेष्ठ **(ऋषिस्वरम्)** ऋषियों के उपदेश को **(चरति)** प्राप्त होता है और जिन **(ते)** आपका **(यासु)** जिन प्रजाओं में **(नाम)** नाम है और **(यादृश्मिन्)** जैसे व्यवहार में जो अन्य जनों से **(धायि)** धारण किया जाता है **(तम्)** उसको **(अपस्यया)** अपने कर्म्म की इच्छा से **(विदत्)** प्राप्त होता और **(उ)** भी **(स्वयम्)** स्वयम् **(वहते)** प्राप्त होता है **(सः)** वह हम लोगों को **(अरम्)** समर्थ **(करत्)** करे॥८॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य यथार्थवक्ता जन के समीप से प्राप्त हुए बोध से स्वयं उत्तम होकर अन्यों को उत्तम प्रकार भूषित करें, वे सुख को प्राप्त होते हैं॥८॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**समुद्रमासामव तस्थे अग्रिमा न रिष्यति सवनं यस्मिन्नायता।**



www.9009.co.in

**अत्रा न हार्दि क्रवणस्य रेजते यत्रा मतिर्विद्यते पूतबन्धनी॥९॥**

**समुद्रम्। आसाम्। अव। तस्थे। अग्रिमा। न। रिष्यति। सवनम्। यस्मिन्। आऽयता। अत्र। न। हार्दि। क्रवणस्य। रेजते। यत्र। मतिः। विद्यते। पूतऽबन्धनी॥९॥**

**पदार्थः-(समुद्रम्)** अन्तरिक्षम् **(आसाम्)** प्रज्ञानाम् **(अव)** **(तस्थे)** अवतिष्ठते **(अग्रिमा)** अतिश्रेष्ठः **(न)** निषेधे **(रिष्यति)** हिनस्ति **(सवनम्)** ऐश्वर्य्यम् **(यस्मिन्)** **(आयता)** विस्तृतानि **(अत्रा)** अत्र **ऋचि तुनुघेति** दीर्घः। **(न)** निषेधे **(हार्दि)** हृदयस्येदम् **(क्रवणस्य)** शब्दकर्त्तुः **(रेजते)** चलति **(यत्रा)** अत्रापि **ऋचि तुनुघेति** दीर्घः। **(मतिः)** प्रज्ञा **(विद्यते)** **(पूतबन्धनी)** या पूतान् पवित्रान् गुणान् बध्नाति गृह्णाति सा॥९॥

**अन्वयः**-हे विद्वन्! यस्मिन्नग्रिमा सवनं च न रिष्यत्यासां समुद्रमव तस्थे यत्रायता धनानि वर्धन्ते पूतबन्धनी मतिश्च विद्यते नात्रा क्रवणस्य हार्दि रेजते॥९॥

**भावार्थः**-ये प्रजानां मध्येऽन्तरिक्षमिव सुखाऽवकाशदा अहिंस्रा धीमन्त उपदेशका विद्यन्ते त एव सुखयुक्ता भवन्ति॥९॥

**पदार्थः**-हे विद्वन्! **(यस्मिन्)** जिसमें **(अग्रिमा)** अतिश्रेष्ठ **(सवनम्)** ऐश्वर्य्य का **(न)** नहीं **(रिष्यति)** नाश करता है और **(आसाम्)** इन प्रजाओं के बीच **(समुद्रम्)** अन्तिरक्ष को **(अव, तस्थे)** स्थित होता है और **(यत्रा)** जहाँ **(आयता)** बहुत धनों की वृद्धि होती है और **(पूतबन्धनी)** पवित्र गुणों को ग्रहण करने वाली **(मतिः)** बुद्धि **(विद्यते)** विद्यमान है **(न)** नहीं **(अत्रा)** इस में **(क्रवणस्य)** शब्द करने वाले का **(हार्दि)** हृदयसम्बन्धी कार्य **(रेजते)** चलता है॥९॥

**भावार्थः**-जो प्रजाओं के मध्य में अन्तरिक्ष के सदृश सुखरूपी अवकाश देने वाले और नहीं हिंसा करने वाले बुद्धिमान् उपदेशक विद्यमान हैं, वे ही सुखयुक्त होते हैं॥९॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**स हि क्षत्रस्य मनसस्य चित्तिभिरेवावदस्य यजतस्य सध्रेः।**

**अवत्सारस्य स्पृणवाम रण्वभिः शविष्ठं वाजं विदुषा चिदर्ध्यम्॥१०॥२४॥**

**सः। हि। क्षत्रस्य। मनसस्य। चित्तिऽभिः। एवऽवदस्य। यजतस्य। सध्रेः। अवऽत्सारस्य। स्पृणवाम। रण्वऽभिः। शविष्ठम्। वाजम्। विदुषा। चित्। अर्ध्यम्॥१०॥**

**पदार्थः-(सः)** **(हि)** **(क्षत्रस्य)** राजकुलस्य राष्ट्रस्य वा **(मनसस्य)** यन्मन्यते तस्य **(चित्तिभिः)** चयनक्रियाभिः **(एवावदस्य)** एवान् प्राप्तान् गुणान् वदन्ति येन तस्य **(यजतस्य)** यजन्ति सङ्गच्छन्ते येन तस्य **(सध्रेः)** सहस्थानस्य **(अवत्सारस्य)** योऽवतो रक्षकान् सरति प्राप्नोति तस्य **(स्पृणवाम)** अभीच्छेम



www.9009.co.in

**(रण्वभिः)** रमणीयैः **(शविष्ठम्)** अतिशयेन बलिष्ठम् **(वाजम्)** विज्ञानवन्तम् **(विदुषा)** **(चित्)** **(अर्ध्यम्)** अर्द्धे भवम्॥१०॥

**अन्वयः**-हे मनुष्याश्चित्तिभिर्यस्यैवावदस्य यजतस्याऽवत्सारस्य मनसस्य सध्रेः क्षत्रस्य सम्बन्धं स्पृणवाम विदुषा चिदर्ध्यं रण्वभिः शविष्ठं वाजं स्पृणवाम स ह्यस्मान् स्पृहेत्॥१०॥

**भावार्थः**-ये मनुष्या अहर्निशं राज्योन्नतिं चिकीर्षन्ति ते महाराजा जायन्ते॥१०॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(चित्तिभिः)** इकट्ठे करनेरूप क्रियाओं से जिस **(एवावदस्य)** एवावद अर्थात् प्राप्त गुणों को कहते हैं जिससे वा **(यजतस्य)** मिलते हैं जिससे वा जो **(अवत्सारस्य)** रक्षकों को प्राप्त होते और **(मनसस्य)** माना जाता और उस **(सध्रेः)** तुल्य स्थान वाले **(क्षत्रस्य)** राजकुल वा राज्य के सम्बन्ध की **(स्पृणवाम)** इच्छा करें तथा **(विदुषा)** विद्वान् से **(चित्)** भी **(अर्ध्यम्)** अर्द्ध में उत्पन्न की तथा **(रण्वभिः)** रमणीयों से **(शविष्ठम्)** अत्यन्त बलिष्ठ **(वाजम्)** विज्ञानवान् की हम इच्छा करें **(स, हि)** वही हम लोगों की इच्छा करे॥१०॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य दिन-रात्रि राज्य की उन्नति करने की इच्छा करते हैं, वे महाराज होते हैं॥१०॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**श्येन आसामदितिः कक्ष्यो३ मदो विश्ववारस्य यजतस्य मायिनः।**

**समन्यमन्यमर्थयन्त्येतवे विदुर्विषाणं परिपानमन्ति ते॥११॥**

**श्येनः। आसाम्। अदितिः। कक्ष्यः। मदः। विश्वऽवारस्य यजतस्य। मायिनः। सम्। अन्यम्ऽअन्यम्। अर्थयन्ति। एतवे। विदुः। विऽसानम्। परिऽपानम्। अन्ति। ते॥११॥**

**पदार्थः**-**(श्येनः)** प्रशंसनीयगतिरश्वः **(आसाम्)** प्रजानाम् **(अदितिः)** अविनाशिनी प्रकृतिः **(कक्ष्यः)** कक्षासु भवः **(मदः)** आनन्दः **(विश्ववारस्य)** समग्रस्वीकरणीयस्य **(यजतस्य)** सङ्गतस्य **(मायिनः)** कुत्सिता माया विद्यन्ते यस्य तस्य **(सम्)** **(अन्यमन्यम्)** **(अर्थयन्ति)** अर्थं कुर्वन्ति **(एतवे)** प्राप्तुम् **(विदुः)** जानन्ति **(विषाणम्)** प्रविष्टम् **(परिपानम्)** परितः सर्वतो पानम् **(अन्ति)** समीपे **(ते)**॥११॥

**अन्वयः**-यो मनुष्यः श्येन इवासामदितिः कक्ष्यो मदश्च विश्ववारस्य यजतस्य मायिनोऽन्यमन्यमर्थयन्त्येतवेऽन्ति परिपानं विषाणं सं विदुस्ते सुखिनो जायन्ते॥११॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। ये विद्वांसो दुष्टधियः श्रेष्ठप्रज्ञान् कुर्वन्ति श्येनपक्षीव दुष्टान् घ्नन्ति ते जना भद्राः सन्ति॥११॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-जो मनुष्य **(श्येनः)** प्रशंसनीय गमन वाले घोड़ें के सदृश **(आसाम्)** इन प्रजाओं की **(अदितिः)** नहीं नाश होने वाली प्रकृति और **(कक्ष्यः)** श्रेणियों में उत्पन्न **(मदः)** आनन्द **(विश्ववारस्य)** सम्पूर्ण स्वीकार करने योग्य **(यजतस्य)** मिले हुए **(मायिनः)** निकृष्ट बुद्धि वाले के **(अन्यमन्यम्)** अन्य अन्य को **(अर्थयन्ति)** अर्थ करते अर्थात् याचते हैं और **(एतवे)** प्राप्त होने को **(अन्ति)** समीप में **(परिपानम्)** सब ओर से पान और **(विषाणम्)** प्रवेश किये हुए को **(सम्, विदुः)** उत्तम प्रकार जानते हैं, **(ते)** वे सुखी होते हैं॥११॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो विद्वान् जन दुष्ट बुद्धिवालों को श्रेष्ठ बुद्धियुक्त करते हैं और श्येन पक्षी के सदृश दुष्टों का नाश करते हैं, वे जन कल्याणकारक हैं॥११॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**सदापृणो यजतो वि द्विषो वधीद् बाहुवृक्तः श्रुतवित्तर्यो वः सचा।**

**उभा स वरा प्रत्येति भाति च यदीं गणं भजते सुप्रयावभिः॥१२॥**

**सदाऽपृणः। यजतः। वि। द्विषः। वधीत्। बाहुऽवृक्तः। श्रुतऽवित्। तर्यः। वः। सचा। उभा। सः। वरा। प्रति। एति। भाति। च। यत्। ईम्। गणम्। भजते। सुप्रयावऽभिः॥१२॥**

**पदार्थः**-**(सदापृणः)** यः सदा पृणाति तर्पयति सः **(यजतः)** सत्कर्त्ता **(वि)** **(द्विषः)** धर्मद्वेष्टॄन् **(वधीत्)** हन्ति **(बाहुवृक्तः)** यो बाहुभ्यां दुष्टान् वृङ्क्ते छिनत्ति **(श्रुतवित्)** यः श्रुतं वेत्ति **(तर्य्यः)** यस्तीर्यते तरितुं योग्यः **(वः)** युष्मान् **(सचा)** सम्बन्धी **(उभा)** उभौ **(सः)** **(वरा)** श्रेष्ठौ श्रोताश्रावकौ **(प्रति)** **(एति)** प्राप्नोति विजानाति वा **(भाति)** प्रकाशते प्रकाशयति वा **(च)** **(यत्)** यः **(ईम्)** एव **(गणम्)** समूहम् **(भजते)** सेवते **(सुप्रयावभिः)** ये सुष्ठु प्रयान्ति तैः॥१२॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यद्यः श्रुतिवित्तर्य्यः सचा बाहुवृक्तो यजतः सदापृणस्सुप्रयावभिर्द्विषो वि वधीद्यश्च वः प्रत्येति सत्यं भाति गणं भजते स उभा वरें सत्कर्त्तुं शक्नोति॥१२॥

**भावार्थः**-ये बहुश्रुतो न्यायाचरणा दुष्टान् घ्नन्तः श्रेष्ठान् पालयन्ति ते सदा प्रसन्ना भवन्ति॥१२॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(यत्)** जो **(श्रुतवित्)** श्रुत को जानने वाला **(तर्य्यः)** जो तैरा जाता वा तैरने के योग्य **(सचा)** सम्बन्धी **(बाहुवृक्तः)** बाहुओं से दुष्टों का नाश करने वाला **(यजतः)** सत्कर्ता **(सदापृणः)** सदा तृप्ति करने वाला **(सुप्रयावभिः)** उत्तम प्रकार चलने वालों से **(द्विषः)** धर्म्म के द्वेष करने वालों का **(वि, वधीत्)** विशेष करके नाश करता है **(च)** और जो **(वः)** आप लोगों को **(प्रति, एति)** प्राप्त होता वा विशेष करके जानता है, सत्य **(भाति)** प्रकाशित होता वा सत्य को प्रकाशित करता और **(गणम्)** समूह का **(भजते)** सेवन करता है **(सः)** वह **(उभा)** दोनों **(वरा)** श्रेष्ठ सुनने और सुनाने वालों का **(ईम्)** ही सत्कार कर सकता है॥१२॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-जो बहुत शास्त्रों को सुननेवाले, न्याय का आचरण करने वाले जन दुष्टों का नाश करते हुए श्रेष्ठों का पालन करते हैं, वे सदा प्रसन्न होते हैं॥१२॥

**पुनर्विद्वान् किं कुर्य्यादित्युपदिश्यते॥**

फिर विद्वान् क्या करे, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**सुतंभरो यजमानस्य सत्पतिर्विश्वासामूधः स धियामुदञ्चनः।**

**भरद्धेनू रसवच्छिश्रिये पयोऽनुब्रुवाणो अध्येति न स्वपन्॥१३॥**

**सुतम्ऽभरः। यजमानस्य। सत्ऽपतिः। विश्वासाम्। ऊधः। सः। धियाम्। उत्ऽअञ्चनः। भरत्। धेनुः। रसऽवत्। शिश्रिये। पयः। अनुऽब्रुवाणः। अधि। एति। न। स्वपन्॥१३॥**

**पदार्थः**-(**सुतम्भरः**) य उत्पन्नं जगद् बिभर्ति (**यजमानस्य**) सत्कर्त्तुः (**सत्पतिः**) सत्पुरुषाणां पालकः (**विश्वासाम्**) सर्वासाम् (**ऊधः**) ऊर्ध्वं गमयिता (**सः**) (**धियाम्**) प्रज्ञानां कर्म्मणां वा (**उदञ्चनः**) उत्कृष्टतां प्रापकः (**भरत्**) धरति (**धेनुः**) (**रसवत्**) बहुरसयुक्तम् (**शिश्रिये**) श्रयति (**पयः**) दुग्धमिव (**अनुब्रुवाणः**) पठित्वाऽनूपदिशन् (**अधि**) (**एति**) स्मरति (**न**) निषेधे (**स्वपन्**) शयानः सन्॥१३॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यो विद्वान् यजमानस्य सुतम्भरो विश्वासां धियामुदञ्चन ऊधः सत्पती रसवत्पयो धेनुरिव विद्यां भरद्धर्मं शिश्रिये न स्वपन्नन्यान् प्रत्यनुब्रुवाणः सत्यस्याध्येति स एव सत्कर्त्तव्योऽस्ति॥१३॥

**भावार्थः**-स एवोत्तमः पुरुषोऽस्ति यः कृतज्ञ आप्तसेवाप्रियः समग्रमनुष्येभ्यो बुद्धिप्रदो धेनुवत्सत्योपदेशवर्षकोऽविद्यादिक्लेशेभ्यः पृथग्वर्त्तमानोऽस्ति स एव सर्वैः सङ्गन्तव्यः॥१३॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो विद्वान् (**यजमानस्य**) सत्कार करने वाला (**सुतम्भरः**) उत्पन्न जगत् को धारण करने वाला (**विश्वासाम्**) सम्पूर्ण (**धियाम्**) प्रज्ञान और कर्म्मों का (**उदञ्चनः**) उत्कृष्टता को प्राप्त कराने और (**ऊधः**) ऊपर को पहुंचाने और (**सत्पतिः**) सत्पुरुषों का पालन करने वाला (**रसवत्**) बहुत रस से युक्त (**पयः**) दुग्ध को जैसे (**धेनुः**) गौ वैसे विद्या को (**भरत्**) धारण करता और धर्म्म का (**शिश्रिये**) आश्रयण करता और (**न**) न (**स्वपन्**) शयन करता हुआ अन्यों के प्रति (**अनु, ब्रुवाणः**) पढ़कर पीछे उपदेश देता हुआ सत्य का (**अधि, एति**) स्मरण करता है (**सः**) वही सत्कार करने योग्य है॥१३॥

**भावार्थः**-वही उत्तम पुरुष है, जो कृतज्ञ और यथार्थवक्ता जनों की सेवा में प्रिय, सम्पूर्ण मनुष्यों के लिये बुद्धि देने और गो के सदृश सत्य उपदेश का वर्षाने वाला और अविद्या आदि क्लेशों से पृथक् वर्त्तमान है, वही सब से मेल करने योग्य है॥१३॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**यो जागार तमृचः कामयन्ते यो जागार तमु सामानि यन्ति।**



www.9009.co.in

**यो जा॒गार॒ तमु॒यं सोम॑ आह॒ तवा॒हम॑स्मि स॒ख्ये न्यो॑काः॥ १४॥**

**यः। जा॒गार॑। तम्। ऋच॑ः। का॒म॒य॒न्ते॒। यः। जा॒गार॑। तम्। ऊँ॒ इति॑। सामा॑नि। य॒न्ति॒। यः। जा॒गार॑। तम्। अ॒यम्। सोम॑ः। आ॒ह॒। तव॑। अ॒हम्। अ॒स्मि॒। स॒ख्ये। निऽओ॑काः॥ १४॥**

**पदार्थः-(यः) (जागार)** अविद्यानिद्राया उत्थाय जागर्ति **(तम्) (ऋचः)** ऋच्छुतयः **(कामयन्ते) (यः) (जागार) (तम्) (उ) (सामानि)** सामविभागाः **(यन्ति)** प्राप्नुवन्ति **(यः) (जागार) (तम्) (अयम्) (सोमः)** सोमलताद्योषधिगण ऐश्वर्य्यं वा **(आह)** वदति **(तव) (अहम्) (अस्मि) (सख्ये)** मित्रत्वे **(न्योकाः)** निश्चितस्थानः॥ १४॥

**अन्वयः**-यो जागार तमृच इव जनाः कामयन्ते यो जागार तमु सामानि यन्ति यो जागार तमयं सोम इव न्योकाः सख्ये तवाहमस्मीत्याह॥ १४॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। ये वेदविद्यां प्राप्तुमिच्छन्ति तानेव वेदविद्या प्राप्नोति यो मनुष्यादिभिः सह मैत्रीमाचरति स बहुसुखं लभते॥ १४॥

**पदार्थः-(यः)** जो **(जागार)** अविद्यारूप निद्रा से उठ के जागने वाला है **(तम्)** उसको **(ऋचः)** ऋचाओं के सदृश जन **(कामयन्ते)** कामना करते हैं और **(यः)** जो **(जागार)** अविद्यारूप निद्रा से उठ के जागने वाला है **(तम्)** उसको **(उ)** भी **(सामानि)** सामवेद के विभाग **(यन्ति)** प्राप्त होते हैं और **(यः)** जो **(जागार)** अविद्यारूप निद्रा से उठके जागने वाला **(तम्)** उसको **(अयम्)** यह **(सोमः)** सोमलता आदि ओषधियों का समूह वा ऐश्वर्य्य के सदृश **(न्योकाः)** निश्चित स्थान वाला **(सख्ये)** मित्रत्व में **(तव)** आपका **(अहम्)** मैं **(अस्मि)** हूं, इस प्रकार **(आह)** कहता है॥ १४॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो वेदविद्या को प्राप्त होने की इच्छा करते हैं, उनको ही वेदविद्या प्राप्त होती और जो मनुष्य आदिकों के साथ मित्रता करता है, वह बहुत सुख को प्राप्त होता है॥ १४॥

**ये सत्यं कामयन्ते ते प्राप्तसत्या जायन्ते॥**

जो सत्य की कामना करते हैं, वे सत्य को प्राप्त होते हैं॥

**अ॒ग्निर्जा॑गार॒ तमृच॑ः का॑मयन्ते॒ऽग्निर्जा॑गार॒ तमु॒ सामा॑नि यन्ति।**
**अ॒ग्निर्जा॑गार॒ तमु॒यं सोम॑ आह॒ तवा॒हम॑स्मि स॒ख्ये न्यो॑काः॥ १५॥ २५॥ ३॥**

**अ॒ग्निः। जा॒गा॒र॒। तम्। ऋच॑ः। का॒म॒य॒न्ते॒। अ॒ग्निः। जा॒गा॒र॒। तम्। ऊँ॒ इति॑। सामा॑नि। य॒न्ति॒। अ॒ग्निः। जा॒गा॒र॒। तम्। अ॒यम्। सोम॑ः। आ॒ह॒। तव॑। अ॒हम्। अ॒स्मि॒। स॒ख्ये। निऽओ॑काः॥ १५॥**

**पदार्थः-(अग्निः)** पावक इव **(जागार)** जागृतो भवति **(तम्) (ऋचः)** प्रशंसितबुद्धयो विद्यार्थिनः **(कामयन्ते) (अग्निः)** पावकवद्वर्त्तमानः **(जागार) (तम्) (उ) (सामानि)** सामवेदप्रतिपादितविज्ञानानि



www.9009.co.in

**(यन्ति)** प्राप्नुवन्ति **(अग्निः)** **(जागार)** **(तम्)** **(अयम्)** **(सोमः)** विद्यैश्वर्य्यमिच्छुः **(आह)** **(तव)** **(अहम्)** **(अस्मि)** **(सख्ये)** **(न्योकाः)** निश्चितस्थानः॥१५॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! योऽग्निरिव जागार तमृचः कामयन्ते योऽग्निर्जागार तमु सामानि यन्ति अग्निर्जागार तमयं न्योकाः सोमस्तव सख्येऽहमस्मीत्याह॥१५॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। ये मनुष्या निरलसाः पुरुषार्थिनो धार्मिका जायन्ते जितेन्द्रिया विद्यार्थिनश्च भवन्ति तानेव विद्यासुशिक्षे प्राप्नुतः॥१५॥

अत्र सूर्यमेघविद्वद्गुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति चतुश्चत्वारिंशत्तमं सूक्तं तृतीयोऽनुवाकः पञ्चविंशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो **(अग्निः)** अग्नि के सदृश **(जागार)** जागृत होता है **(तम्)** उसकी **(ऋचः)** प्रशंसित बुद्धि वाले विद्यार्थी जन **(कामयन्ते)** कामना करते हैं, और जो **(अग्निः)** अग्नि के सदृश वर्त्तमान **(जागार)** जागृत होता है **(तम्)** उसको **(उ)** भी **(सामानि)** सामवेद में कहे हुए विज्ञान **(यन्ति)** प्राप्त होते हैं **(अग्निः)** के सदृश वर्तमान **(जागार)** जागृत होता है **(तम्)** उसको **(अयम्)** यह **(न्योकाः)** निश्चित स्थान युक्त **(सोमः)** विद्या और ऐश्वर्य्य की इच्छा करने वाला **(तव)** आपकी **(सख्ये)** मित्रता में **(अहम्)** मैं **(अस्मि)** हूं ऐसा **(आह)** कहता है॥१५॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो मनुष्य आलस्य से रहित पुरुषार्थी धार्मिक होते और जितेन्द्रिय विद्यार्थी होते हैं, उन्हीं को विद्या और उत्तम शिक्षा प्राप्त होती है॥१५॥

इस सूक्त में सूर्य, मेघ और विद्वानों के गुणों का वर्णन होने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्तार्थ के साथ संगति जाननी चाहिये॥

**यह चवालीसवां सूक्त, तीसरा अनुवाक और पच्चीसवां वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

**अथैकादशर्चस्य पञ्चचत्वारिंशत्तमस्य सूक्तस्य सदापृण आत्रेय ऋषिः। विश्वेदेवा देवताः। १, २ पङ्क्तिः। ५, ९, ११ भुरिक् पङ्क्तिः। ८, १०, स्वराट्पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः। ३ विराट् त्रिष्टुप्। ४, ६, ७ निचृत्त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः॥**

***अथ सूर्य्यविषयमाह॥***

अब ग्यारह ऋचा वाले पैंतालीसवें सूक्त का प्रारम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में आदित्य विषय को कहते हैं॥

**वि॒दा दि॒वो वि॒ष्यन्नद्रि॑मु॒क्थैरा॑य॒त्या उ॒षसो॑ अ॒र्चिनो॑ गुः।**
**अपा॑वृत व्र॒जिनी॒रुत्स्व॑र्गा॒द् वि दुरो॒ मानु॑षीर्दे॒व आ॑वः॥ १॥**

**वि॒दाः। दि॒वः। वि॒ऽस्यन्। अद्रि॑म्। उ॒क्थैः। आ॒ऽय॒त्याः। उ॒षसः॑। अ॒र्चिनः॑। गुः॒। अप॑। अ॒वृ॒त॒। व्र॒जिनीः॑। उत्। स्वः॑। गा॒त्। वि। दुरः॑। मानु॑षीः। दे॒वः। आ॒व॒रित्या॑वः॥ १॥**

**पदार्थः**-(**विदाः**) विद्वांसः (**दिवः**) कामयमानाः (**विष्यन्**) व्याप्नुवन्ति (**अद्रिम्**) मेघम् (**उक्थैः**) वेदविद्याजन्यैरुपदेशैः (**आयत्याः**) पश्चाद्भवाः (**उषसः**) प्रभाताः (**अर्चिनः**) सत्कर्त्तारः (**गुः**) गच्छन्ति (**अप**) (**अवृत**) दूरीकुर्वन्ति (**व्रजिनीः**) वर्जनक्रियाः (**उत्**) (**स्वः**) आदित्यः (**गात्**) प्राप्नोति (**वि**) (**दुरः**) द्वाराणि (**मानुषीः**) मनुष्याणामिमाः (**देवः**) दिव्यगुणः (**आवः**) आवृणोति॥१॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथा स्वरादित्यो देवो मेघो वा मानुषीर्दुरो वि गादावोऽद्रिं व्रजिनीश्च उदपावृत तथैव दिवो विदा अर्चिन उक्थैरायत्या उषस इव विष्यन् गुस्तान् सततं सेवध्वम्॥१॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। य उषसादित्यवन्मनुष्यप्रजासु विद्याधर्मप्रकाशकाः स्युस्त एवाऽध्यापकोपदेशका भवन्तु॥१॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे (**स्वः, देवः**) श्रेष्ठ गुणों से विशिष्ट सूर्य्य वा मेघ (**मानुषीः**) मनुष्य सम्बन्धी (**दुरः**) द्वारों को (**वि, गात्**) विशेषतया प्राप्त होता और (**आवः**) ढांपता है और (**अद्रिम्**) मेघ को और (**व्रजिनीः**) वर्जन क्रियाओं को (**उद्, अप, अवृत**) अत्यन्त दूर करते हैं, वैसे ही (**दिवः**) कामना करते हुए (**विदाः**) विद्वान् जन (**अर्चिनः**) सत्कार करने वाले (**उक्थैः**) वेदविद्या से उत्पन्न हुए उपदेशों से (**आयत्याः**) पीछे से हुए (**उषसः**) प्रभात कालों के सदृश (**विष्यन्**) व्याप्त होते और (**गुः**) चलते हैं, उनकी निरन्तर सेवा करो॥१॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो प्रभातकाल और सूर्य्य के सदृश मनुष्यरूप प्रजाओं में विद्या और धर्म्म के प्रकाश करने वाले होवें, वे ही अध्यापक और उपदेशक होवें॥१॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**



www.9009.co.in

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**वि सूर्यो अमतिं न श्रियं सादोर्वाद् गवां माता जानती गात्।**

**धन्वर्णसो नद्य१: खादोअर्णाः स्थूणेव सुमिता दृंहत द्यौः॥२॥**

**वि। सूर्यः। अमतिम्। न। श्रियम्। सात्। आ। ऊर्वात्। गवाम्। माता। जानती। गात्। धन्वऽअर्णसः। नद्यः। खादःऽअर्णाः। स्थूणाऽइव। सुऽमिता। दृंहत। द्यौः॥२॥**

**पदार्थः**-(**वि**) (**सूर्य्यः**) (**अमतिम्**) रूपम् (**न**) इव (**श्रियम्**) (**सात्**) विभजति (**आ**) (**ऊर्वात्**) बहुरूपात् (**गवाम्**) किरणानाम् (**माता**) जननी (**जानती**) (**गात्**) अगाद् गच्छति (**धन्वर्णसः**) धन्वे स्थलेऽर्णांसि यासां ताः (**नद्यः**) या नदन्ति ताः (**खादोअर्णाः**) खादो भक्षणीयान्यन्नानि वा यान्यर्णांसि यासु ताः (**स्थूणेव**) स्थूणावत् (**सुमिता**) सुष्ठुकृतप्रमाणानि (**दृंहत**) वर्धयति धरति वा (**द्यौः**) कामयमानः॥२॥

**अन्वयः**-यो द्यौः सुमिता स्थूणेव विद्यादिसद्गुणान् दृंहत खादोअर्णा धन्वर्णसो नद्य इव जानती मातेव शिष्यानुपदेश्यान् गात् सूर्य्योऽमतिं न श्रियं वि षाद् गवामूर्वादैश्वर्यमा गात् स एव सर्वान् सुखयितुमर्हेत्॥२॥

**भावार्थः**-अत्र [उपमा]वाचकलुप्तोपमालङ्कारौ। ये सूर्यवद्विद्यां जननीवत्कृपां नदीवदुपकारं स्तम्भवद्धारणं कुर्वन्ति त एव श्रीमन्तः सदा सुखिनो भवन्ति॥२॥

**पदार्थः**-जो (**द्यौः**) कामना करता हुआ (**सुमिता**) उत्तम प्रकार किया प्रमाण जिनका (**स्थूणेव**) स्तम्भ के समान विद्या आदि सद्गुणों को (**दृंहत**) बढ़ाता या धारण करता तथा (**खादोअर्णाः**) भक्षण करने योग्य अन्न और जल जिनमें और (**धन्वर्णसः**) स्थल में जल जिनका ऐसी (**नद्यः**) शब्द करनेवाली नदियों के सदृश वा (**जानती**) जानती हुई (**माता**) माता के सदृश शिष्यों और उपदेश करने योग्यों को (**गात्**) प्राप्त होता है और (**सूर्यः**) सूर्य्य (**अमतिम्**) रूप के (**न**) सदृश (**श्रियम्**) लक्ष्मी का (**वि, सात्**) विशेष करके विभाग करता है (**गवाम्**) किरणों के (**ऊर्वात्**) बहुत रूप से ऐश्वर्य्य को (**आ**) अच्छे प्रकार प्राप्त होता है, वही सब को सुखी करने को योग्य होवे॥२॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमा और वाचकलुप्तोपमालङ्कार हैं। जो सूर्य्य के सदृश विद्या माता के सदृश कृपा, नदी के सदृश उपकार और खम्भ के सदृश धारणा करते हैं, वे ही श्रीमान् और सदा सुखी होते हैं॥२॥

**अथ विद्वद्विषयमाह॥**

अब विद्वद्विषय को कहते हैं॥

**अस्मा उक्थाय पर्वतस्य गर्भो महीनां जनुषे पूर्व्याय।**

**वि पर्वतो जिहीत साधत द्यौराविवासन्तो दसयन्त भूम॥३॥**



www.9009.co.in

**अ॒स्मै। उ॒क्थाय॑। पर्व॑तस्य। गर्भः॑। म॒हीना॑म्। ज॒नुषे॑। पू॒र्व्याय॑। वि। पर्व॑तः। जिही॑त। साध॑त। द्यौः। आ॒ऽविवा॑सन्तः। द॒स॒य॒न्त॒। भूम॑॥ ३॥**

**पदार्थः-(अस्मै)** **(उक्थाय)** प्रशंसिताय **(पर्वतस्य)** मेघस्य **(गर्भः)** कारणभूतः **(महीनाम्)** भूमीनाम् **(जनुषे)** जन्मने **(पूर्व्याय)** पूर्वेषु भवाय **(वि)** **(पर्वतः)** पक्षीव पर्ववान् मेघः **(जिहीत)** गच्छति **(साधत)** साध्नुवन्तु **(द्यौः)** कामयमान इव **(आविवासन्तः)** सर्वतः परिचरन्तः **(दसयन्त)** दोषानुपक्षयन्तु **(भूम)** भवेम॥ ३॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यो महीनां पर्वतस्य च पूर्व्याय जनुषेऽस्मा उक्थाय गर्भः पर्वत इव द्यौर्वि जिहीत यमाविवासन्तः साधत येन दुःखं दसयन्त तेन तुल्या वयं भूम॥ ३॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। ये विद्यार्थिषु विद्याया गर्भं दधति ते मेघवत्सर्वेषां सुखकारका भवन्ति॥ ३॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो **(महीनाम्)** भूमियों और **(पर्वतस्य)** मेघ के **(पूर्व्याय)** पूर्वों में उत्पन्न **(जनुषे)** जन्म के लिये तथा **(अस्मै)** इस **(उक्थाय)** प्रशंसित के लिये **(गर्भः)** कारणभूत **(पर्वतः)** पक्षी के समान पर्ववान् मेघ वा **(द्यौः)** कामना करते हुए के सदृश **(वि, जिहीत)** विशेष चलता है और जिसको **(आविवासन्तः)** सब ओर घूमते हुए **(साधत)** सिद्ध करें, जिससे दुःख का और **(दसयन्त)** दोषों का नाश करें, उसके तुल्य हम लोग **(भूम)** होवें॥ ३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो विद्यार्थियों में विद्या के गर्भ की धारण करते हैं, वे मेघ के सदृश सब के सुखकारक होते हैं॥ ३॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**सू॒क्तेभि॑र्वो॒ वचो॑भिर्दे॒वजु॑ष्टै॒रिन्द्रा॒ न्व१॒॑ग्नी अव॑से हु॒वध्यै॑।**

**उ॒क्थेभि॒र्हि ष्मा॑ क॒वयः॑ सु॒य॒ज्ञा आ॒विवा॑सन्तो म॒रुतो॒ यज॑न्ति॥ ४॥**

**सु॒ऽउ॒क्तेभिः॑। व॒ः। वचः॑ऽभिः। दे॒वऽजु॑ष्टैः। इन्द्रा॑। नु। अ॒ग्नी इति॑। अव॑से। हु॒वध्यै॑। उ॒क्थेभिः॑। हि। स्म॒। क॒वयः॑। सु॒ऽय॒ज्ञाः। आ॒ऽविवा॑सन्तः। म॒रुतः॑। यज॑न्ति॥ ४॥**

**पदार्थः-(सूक्तेभिः)** सुष्ठूच्यन्ते यानि तैः **(वः)** युष्मान् **(वचोभिः)** सुशिक्षितैर्वचनैः **(देवजुष्टैः)** विद्वद्भिः सेवितैः **(इन्द्रा)** विद्युतम् **(नु)** सद्यः **(अग्नी)** पावकौ **(अवसे)** रक्षणाद्याय **(हुवध्यै)** ग्रहीतुम् **(उक्थेभिः)** प्रशंसकैः **(हि)** निश्चयेन **(स्मा)** एव। अत्र **निपातस्य चे**ति दीर्घः। **(कवयः)** मेधाविनो विद्वांसः **(सुयज्ञाः)** शोभना यज्ञा विद्याधर्मप्रचारिका क्रिया येषान्ते **(आविवासन्तः)** सत्यं समन्तात् सेवमानाः **(मरुतः)** मनुष्याः **(यजन्ति)** सङ्गच्छन्ते॥ ४॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथा आविवासन्तः सुयज्ञाः कवयो मरुतः सूक्तेभिर्देवजुष्टैरुक्थेभिर्वचोभि- र्हीन्द्राग्नी वो युष्मांश्चावसे हुवध्यै नु यजन्ति तथा स्मा यूयमप्येवं यजत॥४॥

**भावार्थः**-ये विद्वांसः सर्वार्थं सुखं विद्यां विज्ञानं सेवमाना अग्न्यादिविद्यां सर्वेभ्यः प्रयच्छन्ति त एवोत्तमा भवन्ति॥४॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे **(आविवासन्तः)** सत्य का सब प्रकार से सेवन करते हुए **(सुयज्ञाः)** सुन्दर विद्या और धर्म के प्रचार करने वाली क्रिया जिनकी ऐसे **(कवयः)** बुद्धिमान् विद्वान् **(मरुतः)** मनुष्य **(सूक्तेभिः)** जो उत्तम प्रकार कहे जायें उन **(देवजुष्टैः)** विद्वानों से सेवित और **(उक्थेभिः)** प्रशंसा करने वाले **(वचोभिः)** उत्तम प्रकार शिक्षित वचनों से **(हि)** निश्चय से **(इन्द्रा)** बिजुली **(अग्नी)** और अग्नि को तथा **(वः)** आप लोगों को **(अवसे)** रक्षण आदि के लिये **(हुवध्यै)** ग्रहण करने को **(नु)** शीघ्र **(यजन्ति)** मिलते हैं, वैसे **(स्मा)** ही आप लोग भी इस प्रकार मिलो॥४॥

**भावार्थः**-जो विद्वान् जन सब के लिये सुख, विद्या और विज्ञान का सेवन करते हुए अग्नि आदि की विद्या को सब के लिये देते हैं, वे ही उत्तम होते हैं॥४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**एतो न्व१द्य सुध्यो३ भवाम प्र दुच्छुना मिनवामा वरीयः।**
**आरे द्वेषांसि सनुतर्दधामायाम प्राञ्चो यजमानमच्छ॥५॥२६॥**

**एतो इति। नु। अद्य। सुऽध्यः। भवाम। प्र। दुच्छुनाः। मिनवाम। वरीयः। आरे। द्वेषांसि। सनुतः। दधाम। अयाम। प्राञ्चः। यजमानम्। अच्छ॥५॥**

**पदार्थः**-**(एतो)** एते **(नु)** **(अद्य)** **(सुध्यः)** शोभना धीर्येषान्ते **(भवाम)** **(प्र)** **(दुच्छुनाः)** दुष्टाः श्वान इव वर्त्तमानाः **(मिनवामा)** हिंसेम। अत्र **संहितायामिति** दीर्घः। **(वरीयः)** अतिशयेन वरम् **(आरे)** समीपे दूरे वा **(द्वेषांसि)** द्वेषयुक्तानि कर्म्माणि **(सनुतः)** सदा **(दधाम)** **(अयाम)** गमयेम **(प्राञ्चः)** प्राक्तना चिरमायवः **(यजमानम्)** सङ्गन्तारम् **(अच्छ)**॥५॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथाऽद्यैतो वयं नु सुध्यो भवाम ये दुच्छुनास्तान् प्र मिनवामा द्वेषांस्यार अयाम प्राञ्चो वयं सनुतर्वरीयो यजमानं चाच्छ दधाम तथा यूयमपि धत्त॥५॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। ये मनुष्या विज्ञानं वर्धयन्तो दुष्टान् निवारयन्तो द्वेषादिदोषरहिताः सन्तस्सनातनं सत्यं धरन्ति तेऽतीव प्रशंसनीया भवन्ति॥५॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे **(अद्य)** आज **(एतो)** ये हम लोग **(नु)** शीघ्र **(सुध्यः)** अच्छी बुद्धि वाले **(भवाम)** हों और जो **(दुच्छुनाः)** दुष्ट कुत्तों के सदृश वर्त्तमान उनका **(प्र, मिनवामा)** अत्यन्त नाश करें और **(द्वेषांसि)** द्वेषयुक्त कर्म्मों को **(आरे)** समीप वा दूर में **(अयाम)** प्राप्त करावें **(प्राञ्चः)** प्राचीन काल



www.9009.co.in

में वर्त्तमान अधिक अवस्था वाले हम लोग **(सनुतः)** सदा **(वरीयः)** अत्यन्त श्रेष्ठ **(यजमानम्)** मिलने वाले को **(अच्छ)** उत्तम प्रकार **(दधाम)** धारण करें, वैसे आप लोग भी धारण करो॥५॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो मनुष्य विज्ञान को बढ़ाते, दुष्टों का निवारण करते और द्वेष आदि दोषों से रहित हुए सनातन सत्य को धारण करते हैं, वे अत्यन्त प्रशंसा के योग्य होते हैं॥

**पुनर्मनुष्यैः प्रज्ञा कथं प्राप्तव्येत्याह॥**

फिर मनुष्यों को उत्तम बुद्धि कैसे प्राप्त होनी चाहिये, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**एता धियं कृणवामा सखायोऽप या माताँ ऋणुत व्रजं गोः।**

**यया मनुर्विशिशिप्रं जिगाय यया वणिग्वङ्कुरापा पुरीषम्॥६॥**

**आ। इत। धियम्। कृणवाम। सखायः। अप। या। माता। ऋणुत। व्रजम्। गोः। यया। मनुः। विशिऽशिप्रम्। जिगाय। यया। वणिक्। वङ्कुः। आप। पुरीषम्॥६॥**

**पदार्थः**-**(आ)** समन्तात् **(इता)** प्राप्नुत। अत्र **द्व्यचोऽतस्तिङ** इति दीर्घः। **(धियम्)** प्रज्ञानम् **(कृणवामा)** कुर्याम। अत्र **संहितायामिति** दीर्घः। **(सखायः)** सुहृदः सन्तः **(अप)** **(या)** **(माता)** जननीव **(ऋणुत)** साध्नुत **(व्रजम्)** मेघम् **(गोः)** किरणात् **(यया)** **(मनुः)** मनुष्यः **(विशिशिप्रम्)** विशीशिप्रे शोभने हनुनासिके यस्य तम् **(जिगाय)** जयति **(यया)** **(वणिक्)** व्यापारी वैश्यः **(वङ्कुः)** धनेच्छुः **(आपा)** आप्नोति। अत्र **द्व्यचोऽतस्तिङ** इति दीर्घः। **(पुरीषम्)** पूर्तिकरमुदकम्। **पुरीषमित्युदकनामसु पठितम्।** (निघं०१।१२)॥६॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथा मनुर्विशिशिप्रं जिगाय यया वङ्कुर्वणिक् पुरीषमापा तां धियं सखायो वयं कृणवामा यथा या माता गोर्व्रजं करोति दुःखमप नयति तथैतं यूयमृणुत धियमेता॥६॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। मनुष्याणां योग्यमस्त्यन्योऽन्येषु सखायो भूत्वा बुद्धिं वर्धयित्वाऽन्येभ्यो विज्ञानं प्रददतु यथा वैश्यो धनं प्राप्यैधते तथा प्रज्ञां प्राप्य वर्द्धन्ताम्॥६॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(यया)** जिससे **(मनुः)** मनुष्य **(विशिशिप्रम्)** सुन्दर ठुड्ढी और नासिका जिसकी उसको **(जिगाय)** जीतता है **(यया)** जिससे **(वङ्कुः)** धन की इच्छा करने वाला **(वणिक्)** व्यापारी वैश्य **(पुरीषम्)** पूर्ण करने वाले जल को **(आपा)** प्राप्त होता है उस **(धियम्)** बुद्धि को **(सखायः)** मित्र होते हुए हम लोग **(कृणवामा)** करें और जैसे **(या)** जो **(माता)** माता के सदृश **(गोः)** किरण से **(व्रजम्)** मेघ को करता है और दुःख को **(अप)** दूर करता है, वैसे इसको आप लोग **(ऋणुत)** सिद्ध करिये और बुद्धि को **(आ)** सब प्रकार **(इता)** प्राप्त हूजिये॥६॥



www.9009.co.in

**भावार्थ:**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। मनुष्यों को योग्य है कि परस्पर में मित्र होकर बुद्धि को बढ़ाय औरों के लिये विशेष ज्ञान अच्छे प्रकार देवें, जैसे वैश्य धन को प्राप्त होकर बढ़ता है, वैसे उत्तम बुद्धि को पाकर बढ़े॥६॥

**पुनर्मनुष्यैः किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को क्या करना चाहिये, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अनूनोदत्र हस्तयतो अद्रिरार्चन् येन दश मासो नवग्वाः।**

**ऋतं यती सरमा गा अविन्दद् विश्वानि सत्याङ्गिराश्चकार॥७॥**

**अनूनोत्। अत्र। हस्तऽयतः। अद्रिः। आर्चन्। येन। दश। मासः। नवऽग्वाः। ऋतम्। यती। सरमा। गाः। अविन्दत्। विश्वानि। सत्या। अङ्गिराः। चकार॥७॥**

**पदार्थः**-**(अनूनोत्)** प्रेरयेत् **(अत्र)** **(हस्तयतः)** हस्ता यता निगृहीता वशीभूता यस्य सः **(अद्रिः)** मेघ इव **(आर्चन्)** सत्कुर्वन् **(येन)** **(दश)** **(मासः)** चैत्राद्याः **(नवग्वाः)** नवीनगतयः **(ऋतम्)** सत्यम् **(यती)** यतमाना **(सरमा)** समानरमणा **(गाः)** इन्द्रियाणि **(अविन्दत्)** प्राप्नोति **(विश्वानि)** सर्वाणि **(सत्या)** सत्यानि **(अङ्गिराः)** अङ्गानां रसरूपः प्राण इव **(चकार)** करोति॥७॥

**अन्वयः**-येनात्र नवग्वा दश मासो वर्त्तन्ते हस्तयतोऽद्रिरार्चन्ननूनोद्या सरमा ऋतं यती गा अविन्दत्। यश्चाङ्गिरा विश्वानि सत्या चकार ते सत्कर्त्तुमर्हाः सन्ति॥७॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। ये मनुष्याः सर्वदा सत्याचारा भूत्वा सर्वोपकारं साध्नुवन्ति तेऽत्र धर्मात्मानो गण्यन्ते॥७॥

**पदार्थ:**-**(येन)** जिससे **(अत्र)** इस संसार में **(नवग्वाः)** नवीन गमन वाले **(दश)** दश **(मासः)** चैत्र आदि महीने वर्तमान हैं और **(हस्तयतः)** हाथ निग्रह किये अर्थात् वशीभूत किये जिसके वह **(अद्रिः)** मेघ के सदृश **(आर्चन्)** सत्कार करता हुआ **(अनूनोत्)** प्रेरणा करे और जो **(सरमा)** तुल्य रमनेवाली **(ऋतम्)** सत्य का **(यती)** यत्न करती हुई **(गाः)** इन्द्रियों को **(अविन्दत्)** प्राप्त होती है और जो **(अङ्गिराः)** अङ्गों का रसरूप प्राण के सदृश **(विश्वानि)** सम्पूर्ण **(सत्या)** सत्य कार्य्यों को **(चकार)** करता है, वे सत्कार करने योग्य हैं॥७॥

**भावार्थ:**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो मनुष्य सर्वदा सत्य आचारण से युक्त होकर सब के उपकार को सिद्ध करते हैं, वे इस संसार में धर्मात्मा गिने जाते हैं॥७॥

**पुनर्मनुष्यैः कथं वर्त्तितव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को कैसे वर्तना चाहिये, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**विश्वे अस्या व्युषि माहिनायाः सं यद् गोभिरङ्गिरसो नवन्त।**



www.9009.co.in

उत्सं आसां परमे सधस्थं ऋतस्यं पथा सरमां विदुद्गाः॥८॥

विश्वे। अस्याः। विऽउर्षि। माहिनायाः। सम्। यत्। गोभिः। अङ्गिरसः। नवन्त। उत्सः। आसाम्। परमे। सधऽस्थे। ऋतस्य। पथा। सरमा। विदत्। गाः॥८॥

**पदार्थः**-(**विश्वे**) सर्वे (**अस्याः**) उषसः (**व्युषि**) विशिष्टे निवासे (**माहिनायाः**) महत्त्वयुक्तायाः (**सम्**) (**यत्**) यतः (**गोभिः**) किरणैः (**अङ्गिरसः**) वायवः (**नवन्त**) स्तुवन्ति (**उत्सः**) कूप इव (**आसाम्**) उषसाम् (**परमे**) प्रकृष्टे (**सधस्थे**) सहस्थाने (**ऋतस्य**) सत्यस्योदकस्य वा (**पथा**) मार्गेण (**सरमा**) या सरान् प्राप्तान् (**विदत्**) वेत्ति (**गाः**) किरणान्॥८॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथा विश्वे प्राणिनो माहिनाया अस्या व्युषि गोभिस्सहाङ्गिरसः सन्नवन्त यदासां परमे सधस्थ ऋतस्य पथा उत्स इव सरमा गा विदत् तांस्तांश्च यूयं विजानीत॥८॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यता प्रभातवेलायां प्राणिनो हर्षन्ति तथैव निःसन्देहा भूत्वा मनुष्या आनन्दन्ति॥८॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे (**विश्वे**) सम्पूर्ण प्राणी (**माहिनायाः**) महत्त्व से युक्त (**अस्याः**) प्रातर्वेला के (**व्युषि**) विशिष्ट निवास में (**गोभिः**) किरणों के साथ (**अङ्गिरसः**) पवन (**सम्, नवन्त**) अच्छे प्रकार स्तुति करते हैं (**यत्**) जिससे (**आसाम्**) इन प्रातर्वेलाओं के (**परमे**) प्रकृष्ट (**सधस्थे**) साथ के स्थान में (**ऋतस्य**) सत्य वा जल के (**पथा**) मार्ग से (**उत्सः**) कूप के सदृश (**सरमा**) प्राप्त हुओं का आदर करनेवाली (**गाः**) किरणों को (**विदत्**) जानती है, उन उनको आप लोग विशेष कर जानिये॥८॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे प्रभातवेला में प्राणी प्रसन्न होते हैं, वैसे ही सन्देहरहित होकर मनुष्य आनन्दित होते हैं॥८॥

**पुनः सूर्य्यवन्मनुष्याः किं कुर्य्युरित्युपदिश्यते॥**

फिर सूर्य्य के समान मनुष्य क्या करें, उसका उपदेश करते हैं॥

**आ सूर्यो यातु सप्ताश्वः क्षेत्रं यदस्योर्विया दीर्घयाथे।**

**रघुः श्येन पतयदन्धो अच्छा युवा कविर्दीदयद् गोषु गच्छन्॥९॥**

आ। सूर्यः। यातु। सप्तऽअश्वः। क्षेत्रम्। यत्। अस्य। उर्विया। दीर्घऽयाथे। रघुः। श्येनः। पतयत्। अन्धः। अच्छ। युवा। कविः। दीदयत्। गोषु। गच्छन्॥९॥

**पदार्थः**-(**आ**) समन्तात् (**सूर्य्यः**) सविता (**यातु**) गच्छतु (**सप्ताश्वः**) सप्तविधा अश्वा आशुगामिनः किरणा यस्य सः (**क्षेत्रम्**) निवासस्थानम् (**यत्**) (**अस्य**) (**उर्विया**) पृथिव्याः (**दीर्घयाथे**) यान्ति यस्मिन्त्स याथो मार्गः दीर्घश्चासौ याथस्तस्मिन् (**रघुः**) लघुः (**श्येनः**) अन्तरिक्षस्थः श्येन इव (**पतयत्**) पतिरिवाचरति (**अन्धः**) अन्नादिकम् (**अच्छा**) अत्र **संहितायामिति** दीर्घः। (**युवा**)



www.9009.co.in

मिश्रितामिश्रितकर्त्ता यौवनावस्थः **(कविः)** मेधावी विद्वान् **(दीदयत्)** प्रकाशयति **(गोषु)** पृथिवीषु **(गच्छन्)**॥९॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथा सप्ताश्वः सूर्य्यो यत् क्षेत्रमस्योर्विया दीर्घयाथे रघुः श्येन इवान्तरिक्षे याति तथा भवान् सेनाया मध्य आ यातु यथा गोषु गच्छन् दीदयत्तथा युवा कविरच्छान्धः पतयदिति विजानीत॥९॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यस्मिन् सूर्ये सप्त तत्त्वानि सन्ति यः स्वक्षेत्रं विहाय इतस्ततो नो गच्छति तथा बहूनां भूगोलानां मध्य एकः सन् प्रकाशते तथैव सर्वे पुरुषा भवन्तु॥९॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे **(सप्ताश्वः)** सात प्रकार शीघ्र चलनेवाली किरणें जिसकी ऐसा **(सूर्य्यः)** सूर्य्य **(यत्)** जिस **(क्षेत्रम्)** निवास के स्थान को **(अस्य)** इस जगत् सम्बन्धिनी **(उर्विया)** पृथिवी के **(दीर्घयाथे)** चलें जिसमें ऐसे बड़े मार्ग में **(रघुः)** लघु **(श्येनः)** अन्तरिक्षस्थ वाज पक्षी के सदृश अन्तरिक्ष में जाता है, वैसे आप सेना के मध्य में **(आ)** सब प्रकार से **(यातु)** प्राप्त हूजिये और जैसे **(गोषु)** पृथिवियों में **(गच्छन्)** चलता हुआ **(दीदयत्)** प्रकाश करता है, वैसे **(युवा)** मिले और नहीं मिले हुए को करने वाले यौवनावस्थायुक्त **(कविः)** बुद्धिमान् विद्वान् **(अच्छा)** उत्तम प्रकार **(अन्धः)** अन्न आदि का **(पतयत्)** स्वामी के सदृश आचरण करता है, यह जानो॥९॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जिस सूर्य्य में सात तत्त्व हैं और जो और जो अपने चक्र को छोड़ के इधर-उधर नहीं जाता है और बहुत भूगोलों के मध्य में एक ही प्रकाशित है, वैसे ही सब पुरुष होवें॥९॥

**पुनर्मनुष्यैः किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को क्या करना चाहिये, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**आ सूर्यो॑ अरुहच्छुक्रमर्णोऽयु॑क्त यद्धरि॑तो वी॒तपृ॑ष्ठाः।**

**उ॒द्ना न नाव॑मनयन्त॒ धीरा॑ आशृ॒ण्वतीरापो॑ अ॒र्वाग॑तिष्ठन्॥१०॥**

**आ। सूर्यः॑। अ॒रु॒ह॒त्। शु॒क्रम्। अर्णः॑। अयु॑क्त। यत्। ह॒रितः॑। वीतऽपृ॑ष्ठाः। उ॒द्ना। न। नाव॑म्। अ॒न॒य॒न्त॒। धीराः॑। आ॒ऽशृ॒ण्वतीः॑। आपः॑। अ॒र्वाक्। अ॒ति॒ष्ठ॒न्॥१०॥**

**पदार्थः**-**(आ)** **(सूर्य्यः)** **(अरुहत्)** रोहति **(शुक्रम्)** वीर्य्यम् **(अर्णः)** उदकम् **(अयुक्त)** युनक्ति **(यत्)** **(हरितः)** ये हरन्त्युदकादिकम् **(वीतपृष्ठाः)** वीतानि व्याप्तानि लोकलोकान्तराणां पृष्ठानि यैस्ते **(उद्ना)** उदकेन **(न)** इव **(नावम्)** **(अनयन्त)** नयन्ति **(धीराः)** ध्यानवन्तो मेधाविनः **(आशृण्वतीः)** याः समन्ताच्छ्रूयन्ते ताः **(आपः)** प्राणाः **(अर्वाक्)** पश्चात् **(अतिष्ठन्)** तिष्ठन्ति॥१०॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यत्सूर्यः शुक्रमारुहदर्णोऽयुक्त वीतपृष्ठा हरितो धीरा उद्ना नावं नानयन्तार्वागाशृण्वतीरापोऽतिष्ठन् तत्सर्वं यूयं विजानीत॥१०॥



www.9009.co.in

**भावार्थ:**-ये मनुष्या: सूर्य्यजलादिविद्यां विज्ञाय नावादिकं चालयेयुस्ते श्रीमन्तो जायन्ते॥१०॥

**पदार्थ:**-हे मनुष्यो! **(यत्)** जो **(सूर्य्य:)** सूर्य्य **(शुक्रम्)** वीर्य का **(आ, अरुहत्)** आरोहण करता और **(अर्ण:)** उदक का **(अयुक्त)** योग करता है और **(वीतपृष्ठा:)** व्याप्त हैं लोकान्तरों के पृष्ठ जिनसे वे **(हरित:)** जल आदि को हरने वाले **(धीरा:)** ध्यानवान् बुद्धिमान् जन **(उद्ना)** जल से **(नावम्)** नौका को **(न)** जैसे वैसे **(अनयन्त)** प्राप्त होते अर्थात् व्यवहार को पहुंचते हैं **(अर्वाक्)** पीछे **(आशृण्वती:)** जो चारों ओर से सुन पड़ते हैं वह **(आप:)** प्राण **(अतिष्ठन्)** स्थित होते हैं, उस सब को आप लोग जानें॥१०॥

**भावार्थ:**-जो मनुष्य सूर्य्य और जल आदि की विद्याओं को जान के नौका आदि को चलावें, वे लक्ष्मीवान् होते हैं॥१०॥

**ये मनुष्या: प्रज्ञां याचन्ते ते विद्वांसो जायन्त इत्याह॥**

जो मनुष्य उत्तम बुद्धि की याचना करते हैं, वे विद्वान् होते हैं,

इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**धियं॑ वो अ॒प्सु द॑धिषे स्व॒र्षा ययात॑र॒न् दश॑ मा॒सो नव॑ग्वा:।**

**अ॒या धि॒या स्या॑म दे॒वगो॑पा अ॒या धि॒या तु॑तु॒र्या॒मात्यंह॑:॥११॥२७॥**

**धियम्। व॒:। अ॒प्ऽसु। द॒धि॒षे। स्व॒:साम्। यया॑। अत॑रन्। दश॑। मा॒स:। नव॑ऽग्वा:। अ॒या। धि॒या। स्या॒म। दे॒वऽगो॑पा:। अ॒या। धि॒या। तु॒तु॒र्या॒म्। अति॑। अंह॑:॥११॥**

**पदार्थ:**-**(धियम्)** प्रज्ञां कर्म वा **(व:)** युष्माकम् **(अप्सु)** **(दधिषे)** धारयेयम् **(स्वर्षाम्)** स्व: सुखं सनति विभजति यया ताम् **(यया)** **(अतरन्)** तरन्ति **(दश)** **(मास:)** **(नवग्वा:)** नवीनगतय: **(अया)** अनया **(धिया)** **(स्याम)** **(देवगोपा:)** देवानां विदुषां रक्षका: **(अया)** **(धिया)** **(तुतुर्याम)** विनाशयेम **(अति)** **(अंह:)** पापं पापजन्यं दु:खं वा॥११॥

**अन्वय:**-हे मनुष्या! यया नवग्वा दश मासोऽतरन्नया धिया वयं देवगोपा: स्यामाऽया धियांऽहोऽति तुतुर्याम व: स्वर्षां तां धियमप्सु प्राणेष्वहं दधिषे॥११॥

**भावार्थ:**-ये धीमन्तो धनवन्तो बलाढ्या भूत्वा सर्वान् रक्षन्ति ते दु:खानि तरन्ति॥११॥

अत्र सूर्य्यविद्वद्गुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति पञ्चचत्वारिंशत्तमं सूक्तं सप्तविंशो वर्गश्च समाप्त:॥**

**पदार्थ:**-हे मनुष्यो! **(यया)** जिससे **(नवग्वा:)** नवीन गमन वाले **(दश)** दश **(मास:)** महीने **(अतरन्)** पार होते हैं **(अया)** इस **(धिया)** बुद्धि से हम लोग **(देवगोपा:)** विद्वानों के रक्षक **(स्याम)** होवें और **(अया)** इस **(धिया)** बुद्धि से **(अंह:)** पाप वा पाप से उत्पन्न दु:ख का **(अति, तुतुर्याम)** अत्यन्त



www.9009.co.in

विनाश करें **(वः)** आपकी **(स्वर्षाम्)** सुख का विभाग करता है जिससे उस **(धियम्)** बुद्धि को **(अप्सु)** प्राणों में मैं **(दधिषे)** धारण करूं॥११॥

**भावार्थः**-जो बुद्धिमान्, धनवान् और बल से युक्त होकर सब की रक्षा करते हैं, वे दुःखों के पार होते हैं॥११॥

इस सूक्त में सूर्य्य और विद्वान् के गुण-वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के संगति जाननी चाहिये॥

**यह पैंतालीसवां सूक्त और सत्ताईसवां वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

**अथाष्टर्चस्य षट्चत्वारिंशत्तमस्य सूक्तस्य प्रतिक्षत्र आत्रेय ऋषिः। १-६ विश्वेदेवाः। ७-८ देवपत्न्यो देवताः। १ भुरिग्जगती। ३, ४, ५, ६ निचृज्जगती। ७ जगती छन्दः। निषादः स्वरः। २ निचृत्त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः। ८ विराट्पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः॥**

*अथ शिल्पविद्याविद्वान् यानानि निर्माय सुखेन पन्थानं गच्छतीत्याह॥*

अब आठ ऋचा वाले छयालीसवें सूक्त का प्रारम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में शिल्पविद्या का विद्वान् रथों को रचकर सुख से मार्ग को जाता है, इस विषय को कहते हैं॥

**हयो न विद्वाँ अयुजि स्वयं धुरि तां वहामि प्रतरणीमवस्युवम्।**
**नास्या वश्मि विमुचं नावृतं पुनर्विद्वान् पथः पुरएत ऋजु नेषति॥१॥**

**हयः। न। विद्वान्। अयुजि। स्वयम्। धुरि। ताम्। वहामि। प्रऽतरणीम्। अवस्युवम्। न। अस्याः। वश्मि। विऽमुचम्। न। आऽवृतम्। पुनः। विद्वान्। पथः। पुरःऽएता। ऋजु। नेषति॥१॥**

**पदार्थः**-(**हयः**) सुशिक्षितोऽश्वः (**न**) इव (**विद्वान्**) (**अयुजि**) असंयुक्तायाम् (**स्वयम्**) (**धुरि**) मार्गे (**ताम्**) (**वहामि**) प्राप्नोमि प्रापयामि वा (**प्रतरणीम्**) प्रतरन्ति यया ताम् (**अवस्युवम्**) आत्मनोऽवमिच्छन्तीम् (**न**) (**अस्याः**) (**वश्मि**) कामये (**विमुचम्**) विमुचन्ति येन तम् (**न**) (**आवृतम्**) आच्छादितम् (**पुनः**) (**विद्वान्**) (**पथः**) (**पुरएता**) पूर्वं गन्ता (**ऋजु**) सरलम् (**नेषति**) नयेत्॥१॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! विद्वानहं स्वयमयुजि धुरि हयो न तां प्रतरणीमवस्युवं वहामि। अस्या विमुचं न वश्मि न आवृतं वश्मि पुनः पुरएता विद्वानृजु पथो नेषति॥१॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। यथा विद्वद्भिः सुशिक्षिता अश्वाः कार्य्याणि साध्नुवन्ति तथैव प्राप्तविद्याशिक्षा मनुष्याः कार्यसिद्धिमाप्नुवन्ति॥१॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! (**विद्वान्**) विद्यायुक्त मैं (**स्वयम्**) आप (**अयुजि**) नहीं संयुक्त (**धुरि**) मार्ग में (**हयः**) उत्तम प्रकार शिक्षायुक्त घोड़े के (**न**) सदृश (**ताम्, प्रतरणीम्**) पार होते हैं जिससे उस (**अवस्युवम्**) अपनी रक्षा की इच्छा करती हुई को (**वहामि**) प्राप्त होता वा प्राप्त कराता हूं और (**अस्याः**) इसके सम्बन्ध में (**विमुचम्**) त्यागते हैं जिससे उसकी (**न**) नहीं (**वश्मि**) कामना करता हूं और (**न**) नहीं (**आवृतम्**) ढँपे हुए की कामना करता हूं (**पुनः**) फिर (**पुरएता**) प्रथम जाने वाला (**विद्वान्**) विद्यायुक्त जन (**ऋजु**) सरलता जैसे हो, वैसे (**पथः**) मार्गों को (**नेषति**) प्राप्त करावे॥१॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जैसे विद्वानों से उत्तम प्रकार शिक्षित घोड़े कार्यों को सिद्ध करते हैं, वैसे ही प्राप्त हुई विद्या और शिक्षा जिनको ऐसे मनुष्य कार्य्य की सिद्धि को प्राप्त होते हैं॥१॥

**मनुष्यैर्विद्युदादिविद्यावश्यं स्वीकार्येत्याह॥**



www.9009.co.in

मनुष्यों को विद्युदादि विद्या अवश्य स्वीकार करने योग्य है, इस विषय को कहते हैं॥

**अग्न॒ इन्द्र॒ वरु॑ण॒ मित्र॒ देवा॒: शर्ध॒: प्र य॑न्त॒ मारु॑तो॒त वि॑ष्णो।**

**उ॒भा नास॑त्या रु॒द्रो अध॒ ग्ना: पू॒षा भग॒: सर॑स्वती जुषन्त॥ २॥**

**अग्ने॑। इन्द्र॑। वरु॑ण। मित्र॑। देवा॑:। शर्ध॑:। प्र। य॒न्त॒। मारु॑त। उ॒त। वि॒ष्णो॒ इति॑। उ॒भा। नास॑त्या। रु॒द्र:। अध॑। ग्ना:। पू॒षा। भग॑:। सर॑स्वती। जु॒ष॒न्त॒॥ २॥**

**पदार्थ:**-(**अग्ने**) विद्वन् (**इन्द्र**) परमैश्वर्य्ययुक्त (**वरुण**) श्रेष्ठ (**मित्र**) सुहृत् (**देवा:**) विद्वांस: (**शर्ध:**) बलम् (**प्र**) (**यन्त**) प्राप्नुवन्ति (**मारुत**) मरुतां मनुष्याणां मध्ये विदित (**उत**) अपि (**विष्णो**) व्यापनशीलम् (**उभा**) उभौ (**नासत्या**) अविद्यमानासत्याचरणौ (**रुद्र:**) दुष्टानां भयङ्कर: (**अध**) (**ग्ना:**) वाणी (**पूषा**) पुष्टिकर्त्ता: वायु: (**भग:**) ऐश्वर्यवान् (**सरस्वती**) सुशिक्षिता वाणी (**जुषन्त**) सेवन्ताम्॥ २॥

**अन्वय:**-हे इन्द्राग्ने वरुण मित्र मारुत देवा! भवन्त: शर्ध: प्र यन्त। उत हे विष्णो! उभा नासत्या रुद्रो भग: पूषाध सरस्वती च ग्ना जुषन्त॥ २॥

**भावार्थ:**-हे मनुष्या! भवद्भिर्विद्याशरीरबलयोगवृद्धिं कृत्वाऽग्न्यादिविद्या स्वीकार्य्या॥ २॥

**पदार्थ:**-हे (**इन्द्र**) अत्यन्त ऐश्वर्य से युक्त (**अग्ने**) विद्वन् (**वरुण**) श्रेष्ठ (**मित्र**) मित्र (**मारुत**) मनुष्यों में विदित और (**देवा:**) विद्वानो! आप (**शर्ध:**) बल को (**प्र, यन्त**) प्राप्त होते हैं (**उत**) और हे (**विष्णो:**) व्यापनशील! (**उभा**) दो (**नासत्या**) असत्य आचरण से रहित जन (**रुद्र:**) दुष्टों को भयंकर (**भग:**) ऐश्वर्य्यवान् (**पूषा**) पुष्टिकारक वायु (**अध**) इसके अनन्तर (**सरस्वती**) उत्तम प्रकार शिक्षित वाणी भी (**ग्ना:**) वाणियों का (**जुषन्त**) सेवन करें॥ २॥

**भावार्थ:**-हे मनुष्यो! आप लोगों को चाहिये कि विद्या, शरीर, बल और योग की वृद्धि करके अग्नि आदि विद्या को स्वीकार करें॥ २॥

**अत्र सृष्टौ मनुष्यै: किं किं वेदितव्यमित्याह॥**

इस सृष्टि में मनुष्यों को क्या क्या जानना योग्य है, इस विषय को कहते हैं॥

**इ॒न्द्रा॒ग्नी मि॒त्रावरु॒णादि॑ति॒ स्व॑: पृथि॒वीं द्यां म॒रुत॒: पर्व॑ताँ अ॒प:।**

**हु॒वे विष्णु॑ पू॒षणं॒ ब्रह्म॑ण॒स्पतिं॒ भगं॒ नु शंस॑ सवि॒तार॑मू॒तये॑॥ ३॥**

**इ॒न्द्रा॒ग्नी इति॑। मि॒त्रावरु॑णा। अदि॑तिम्। स्व॑रि॒ति॑ स्व॑:। पृ॒थि॒वीम्। द्याम्। म॒रुत॑:। पर्व॑तान्। अ॒प:। हु॒वे। विष्णु॑म्। पू॒षण॑म्। ब्र॒ह्मण॑:। पति॑म्। भग॑म्। नु। शंस॑म्। स॒वि॒तार॑म्। ऊ॒तये॑॥ ३॥**

**पदार्थ:**-(**इन्द्राग्नी**) सूर्य्यविद्युतौ (**मित्रावरुणा**) प्राणोदानौ (**अदितिम्**) अन्तरिक्षम् (**स्व:**) आदित्यम् (**पृथिवीम्**) भूमिम् (**द्याम्**) प्रकाशम् (**मरुत:**) वायून् मनुष्यान् वा (**पर्वतान्**) मेघान् शैलान् वा (**अप:**) जलानि (**हुवे**) आददे (**विष्णुम्**) व्यापकं धनं जयं वा (**पूषणम्**) पुष्टिकरं व्यानम् (**ब्रह्मण:**)



www.9009.co.in

ब्रह्माण्डस्य **(पतिम्)** पालकं सूत्रात्मानम् **(भगम्)** ऐश्वर्य्यम् **(नु)** सद्यः **(शंसम्)** प्रशंसनीयम् **(सवितारम्)** जगदुत्पादकं परमात्मानम् **(ऊतये)** रक्षादिव्यवहारसिद्धये॥३॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथाहमूतय इन्द्राग्नी मित्रावरुणादितिं स्वः पृथिवीं द्यां मरुतः पर्वतानपो विष्णुं पूषणं ब्रह्मणस्पतिं भगं शंसं सवितारं हुवे तथा यूयमपि न्वेतानाह्वयत॥३॥

**भावार्थः**-मनुष्यैर्विद्युदादिविद्यावश्यं स्वीकार्य्या॥३॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे मैं **(ऊतये)** रक्षा आदि व्यवहार की सिद्धि के लिये **(इन्द्राग्नी)** सूर्य्य और बिजुली **(मित्रावरुणा)** प्राण और उदान वायु तथा **(अदितिम्)** अन्तरिक्ष को **(स्वः)** सूर्य्य और **(पृथिवीम्)** भूमि को **(द्याम्)** प्रकाश को **(मरुतः)** पवनों वा मनुष्यों को **(पर्वतान्)** मेघों वा पर्वतों को **(अपः)** जलों को **(विष्णुम्)** व्यापक धन वा जय को **(पूषणम्)** पुष्टिकारक व्यान वायु और **(ब्रह्मणः)** ब्रह्माण्ड के **(पतिम्)** पालन करने वाले सूत्रात्मा को **(भगम्)** ऐश्वर्य और **(शंसम्)** प्रशंसा करने योग्य **(सवितारम्)** संसार के उत्पन्न करने वाले परमात्मा को **(हुवे)** ग्रहण करता हूं, वैसे आप लोग **(नु)** शीघ्र इनको ग्रहण करना चाहिये॥३॥

**भावार्थः**-मनुष्यों को विद्युद्विद्या अवश्य स्वीकार करनी चाहिये॥३॥

**अवश्यं मनुष्यैरीश्वरादिसेवनं कार्यमित्याह॥**

अवश्य मनुष्यों को ईश्वरादिकों का सेवन करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**उत नो विष्णुरुत वातो अस्रिधो द्रविणोदा उत सोमो मयस्करत्।**

**उत ऋभव उत राये नो अश्विनोत त्वष्टोत विभ्वानु मंसते॥४॥**

**उत। नः। विष्णुः। उत। वातः। अस्रिधः। द्रविणःऽदाः। उत। सोमः। मयः। करत्। उत। ऋभवः। उत। राये। नः। अश्विना। उत। त्वष्टा। उत। विऽभ्वा। अनु। मंसते॥४॥**

**पदार्थः**-**(उत)** अपि **(नः)** अस्मान् **(विष्णुः)** व्यापकेश्वरः **(उत)** **(वातः)** वायुः **(अस्रिधः)** अहिंसकः **(द्रविणोदाः)** धनप्रदः **(उत)** **(सोमः)** ऐश्वर्य्यवान् **(मयः)** **(करत्)** कुर्य्यात् **(उत)** **(ऋभवः)** मेधाविनः **(उत)** **(राये)** **(नः)** **(अश्विना)** अध्यापकोपदेशकौ **(उत)** **(त्वष्टा)** तनूकर्त्ता **(उत)** **(विभ्वा)** विभुना **(अनु)** **(मंसते)** मन्यताम्॥४॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! नो विष्णुरुत वात उतास्रिधो द्रविणोदा उत सोम उतर्भव उत राये नोऽस्मानुताश्विनोत त्वष्टा विभ्वाऽनु मंसते तैर्विद्वान् मयस्करत्॥४॥

**भावार्थः**-ये मनुष्या ईश्वरादीन् पदार्थान् सेवन्ते ते विदितवेदितव्या जायन्ते॥४॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(नः)** हम लोगों को **(विष्णुः)** व्यापक ईश्वर **(उत)** और **(वातः)** वायु **(उत)** और **(अस्रिधः)** नहीं हिंसा करने और **(द्रविणोदाः)** धन का देने वाला **(उत)** और **(सोमः)** ऐश्वर्य्यवान् **(उत)** और **(ऋभवः)** बुद्धिमान् जन **(उत)** और **(राये)** धन के लिये **(नः)** हम लोगों को **(उत)** और



www.9009.co.in

**(अश्विना)** अध्यापक और उपदेशक जन **(उत)** और **(त्वष्टा)** सूक्ष्म करने वाला **(विभ्वा)** समर्थ से **(अनु, मंसते)** अनुमान करें, उनसे विद्वान् **(मयः)** सुख को **(करत्)** सिद्ध करे॥४॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य ईश्वर आदि पदार्थों का सेवन करते हैं, वे जानने योग्य पदार्थों के जानने वाले होते हैं॥४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**उत त्यन्नो मारुतं शर्ध आ गमद्दिविक्षयं यजतं बर्हिरासदे।**

**बृहस्पतिः शर्म पूषोत नो यमद्वरूथ्यं वरुणो मित्रो अर्यमा॥५॥**

**उत। त्यत्। नः। मारुतम्। शर्धः। आ। गमत्। दिविऽक्षयम्। यजतम्। बर्हिः। आऽसदे। बृहस्पतिः। शर्म। पूषा। उत। नः। यमत्। वरूथ्यम्। वरुणः। मित्रः। अर्यमा॥५॥**

**पदार्थः**-**(उत)** अपि **(त्यत्)** तत् **(नः)** अस्मान् **(मारुतम्)** मरुतां मनुष्याणामिदम् **(शर्धः)** बलम् **(आ)** **(गमत्)** गच्छेत् **(दिविक्षयम्)** दिवि प्रकाशे क्षयो निवासो यस्य तम् **(यजतम्)** सङ्गतम् **(बर्हिः)** उत्तममासनम् **(आसदे)** आसत्तुमुपवेष्टुम् **(बृहस्पतिः)** बृहतां पालकः **(शर्म)** गृहम् **(पूषा)** पुष्टिकर्त्ता **(उत)** अपि **(नः)** अस्मानस्माकम् वा **(यमत्)** यच्छति **(वरूथ्यम्)** गृहेषु साधु **(वरुणः)** श्रेष्ठ उदान इव उत्तमः **(मित्रः)** प्राण इव प्रियः **(अर्यमा)** न्यायकारी॥५॥

**अन्वयः**-हे मनुष्यो! दिविक्षयं यजतं त्यन्मारुतं बर्हिः शर्धो न आ गमदुतापि बृहस्पतिः पूषा वरुणो मित्र उताऽऽर्यमाऽऽसदे वरूथ्यं शर्माऽऽसदे नो यमत्॥५॥

**भावार्थः**-ये मनुष्या वायुगुणान् विजानीयुस्ते सर्वतो धनं लभेरन्॥५॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(दिविक्षयम्)** जिसका प्रकाश में निवास **(यजतम्)** जो मिलता हुआ **(त्यत्)** वह **(मारुतम्)** मनुष्यसम्बन्धी **(बर्हिः)** उत्तम आसन और **(शर्धः)** बल **(नः)** हम लोगों को **(आ, गमत्)** प्राप्त होवे और **(उत)** भी **(बृहस्पतिः)** बड़ों का पालन करने और **(पूषा)** पुष्टि करने वाला **(वरुणः)** उदानवायु के सदृश उत्तम **(मित्रः)** प्राणवायु के सदृश प्रिय **(उत)** भी **(अर्यमा)** न्यायकारी और **(आसदे)** प्रवेश होने को **(वरूथ्यम्)** गृहों में श्रेष्ठ **(शर्म)** गृह को प्रवेश होने को **(नः)** हम लोगों को **(यमत्)** देता है॥५॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य वायु के गुणों को विशेषकर जानें, वे सब प्रकार से धन को प्राप्त होवें॥५॥

**पुनर्मनुष्याः किं कुर्युरित्याह॥**

फिर मनुष्य क्या करें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**उत त्ये नः पर्वतासः सुशस्तयः सुदीतयो नद्यस्त्रामणे भुवन्।**



www.9009.co.in

**भगो॑ वि॒भ॒क्ता शव॒सावसा॒ ग॑मदु॒रु॒व्यचा॒ अदि॑तिः श्रोतु मे॒ हव॑म्॥६॥**

**उ॒त। त्ये। न॒ः। पर्व॑तासः। सु॒ऽश॒स्तय॑ः। सु॒ऽदी॒तय॑ः। न॒द्य॑ः। त्राम॑णे। भु॒व॒न्। भग॑ः। वि॒ऽभ॒क्ता। शव॑सा। अव॑सा। आ। ग॒म॒त्। उ॒रु॒ऽव्यचा॑ः। अदि॑तिः। श्रो॒तु॒। मे॒। हव॑म्॥६॥**

**पदार्थः**-(**उत**) (**त्ये**) ते (**नः**) अस्मानस्माकं वा (**पर्वतासः**) मेघा इव (**सुशस्तयः**) शोभनप्रशंसाः (**सुदीतयः**) प्रशंसितप्रकाशाः (**नद्यः**) सरितः (**त्रामणे**) पालनव्यवहाराय (**भुवन्**) भवन्तु (**भगः**) भजनीय ऐश्वर्य्ययोगः (**विभक्ता**) विभज्य दाता (**शवसा**) बलेन (**अवसा**) रक्षणादिना (**आ**) (**गमत्**) आगच्छेत् समन्तात् प्राप्नुयात् (**उरुव्यचाः**) बहुषु व्याप्तः (**अदितिः**) अविद्यमानखण्डनः (**श्रोतु**) शृणोतु (**मे**) मम (**हवम्**) शब्दम्॥६॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! ये पर्वतास इव सुशस्तयो नद्य इव सुदीतयो नस्त्रामणे भुवन्। उत उरुव्यचा अदितिर्भगो विभक्ता शवसाऽवसाऽऽगमन्मे हवं श्रोतु त्ये स च सत्कर्त्तव्या भवेयुः॥६॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। ये मेघवज्जगत्पालकाः प्रशंसितं न्यायं विधाय सर्वस्याः प्रजाया विनतिं श्रुत्वा न्यायं कुर्य्युस्ते विनयवन्तो भवन्ति॥६॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो (**पर्वतासः**) मेघों के सदृश (**सुशस्तयः**) उत्तम प्रशंसायुक्त (**नद्यः**) नदियों के सदृश (**सुदीतयः**) प्रशंसित प्रकाश वाले (**नः**) हम लोगों को वा हमारे (**त्रामणे**) पालन व्यवहार के लिये (**भुवन्**) हों (**उत**) और (**उरुव्यचाः**) बहुतों में व्याप्त (**अदितिः**) खण्डन से रहित (**भगः**) आदर करने योग्य ऐश्वर्य का योग (**विभक्ता**) विभाग कर देने वाला (**शवसा**) बल और (**अवसा**) रक्षण आदि से (**आ, गमत्**) सब प्रकार प्राप्त होवे और (**मे**) मेरे (**हवम्**) शब्द को (**श्रोतु**) सुने (**त्ये**) वे और वह सत्कार करने योग्य होवें॥६॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो मेघ के सदृश संसार के पालन करने वाले प्रशंसित न्याय का विधान कर सम्पूर्ण प्रजा की विनती सुन के न्याय करें, वे विनययुक्त होते हैं॥६॥

**राजवद्राज्ञः स्त्री न्यायं करोत्वित्याह॥**

राजा के समान राजपत्नी न्याय करे, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**दे॒वानां॒ पत्नी॑रुश॒तीर॑वन्तु नः॒ प्राव॑न्तु नस्तु॒जये॒ वाज॑सातये।**

**याः पार्थि॑वासो॒ या अ॒पामपि॑ व्र॒ते ता नो॑ देवीः सुहवा॒ः शर्म॑ यच्छत॥७॥**

**दे॒वाना॑म्। पत्नी॑ः। उ॒श॒तीः। अ॒व॒न्तु॒। न॒ः। प्र। अ॒व॒न्तु॒। न॒ः। तु॒जये॑। वाज॑ऽसातये। याः। पार्थि॑वासः। याः। अ॒पाम्। अपि॑। व्र॒ते। ताः। न॒ः। दे॒वी॑ः। सु॒ऽह॒वा॒ः। शर्म॑। य॒च्छ॒त॒॥७॥**

**पदार्थः**-(**देवानाम्**) विदुषाम् (**पत्नीः**) स्त्रियः (**उशतीः**) कामयमानाः (**अवन्तु**) रक्षन्तु (**नः**) अस्मानस्माकं वा (**प्र, अवन्तु**) (**नः**) अस्मान् (**तुजये**) बलाय (**वाजसातये**) (**याः**) (**पार्थिवासः**)



www.9009.co.in

पृथिव्यां विदिताः **(याः)** अपां जलानाम् **(अपि)** **(व्रते)** शीले **(ताः)** **(नः)** अस्मभ्यम् **(देवीः)** देदीप्यमानाः **(सुहवाः)** शोभनाह्वानाः **(शर्म)** सुखकारकं गृहम् **(यच्छत)** ददत॥७॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! या देवानां राज्ञां न्यायमुशतीः पत्नीर्नोऽवन्तु तुजये वाजसातये प्रावन्तु याः पार्थिवासोऽपां व्रतेऽपि देवीः सुहवा नः शर्म प्रदद्युस्ता नो यूयं यच्छत॥७॥

**भावार्थः**-यथा राजानः पुरुषाणां न्यायं कुर्युस्तथैव स्त्रीणां न्यायं राज्यः कुर्य्युः॥७॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(याः)** जो **(देवानाम्)** विद्वानों वा राजाओं के न्याय की **(उशतीः)** कामना करती हुई **(पत्नीः)** स्त्रियां **(नः)** हम लोगों की वा हमारे सम्बन्धी पदार्थों की **(अवन्तु)** रक्षा करें और **(तुजये)** बल और **(वाजसातये)** संग्राम के लिये **(प्र, अवन्तु)** अच्छे प्रकार रक्षा करें और **(याः)** जो **(पार्थिवासः)** पृथिवी में विदित **(अपाम्)** जलों के **(व्रते)** स्वभाव में **(अपि)** भी **(देवीः)** प्रकाशमान **(सुहवाः)** उत्तम आह्वान वाली **(नः)** हम लोगों को **(शर्म)** सुखकारक गृह देवें और **(ताः)** उनको **(नः)** हम लोगों के लिये आप लोग **(यच्छत)** दीजिये॥७॥

**भावार्थः**-जैसे राजा लोग पुरुषों का न्याय करें, वैसे ही स्त्रियों के न्याय को रानियां करें॥७॥

**राजवद्राज्ञ्यः स्त्रीणां न्यायं कुर्य्युरित्याह॥**

राजा के समान रानी स्त्रियों का न्याय करें, इस विषय को कहते हैं॥

**उ॒त ग्ना व्य॑न्तु दे॒वप॑त्नीरिन्द्रा॒ण्य१॒॑ग्नाय्य॒श्विनी॒ राट्।**

**आ रोद॑सी वरुणा॒नी शृ॑णोतु॒ व्यन्तु॑ दे॒वीर्य ऋ॒तुर्जनी॑नाम्॥८॥२८॥२॥**

**उ॒त। ग्नाः। व्य॒न्तु॒। दे॒वऽप॑त्नीः। इ॒न्द्रा॒णी। अ॒ग्नायी॑। अ॒श्विनी॑। राट्। आ। रोद॑सी॒। इति॑। व॒रु॒णानी। शृ॒णो॒तु॒। व्यन्तु॑। दे॒वीः। यः। ऋ॒तुः। जनी॑नाम्॥८॥**

**पदार्थः**-**(उत)** **(ग्नाः)** वाणी **(व्यन्तु)** व्याप्नुवन्तु **(देवपत्नीः)** देवानां विदुषां स्त्रियः **(इन्द्राणी)** इन्द्रस्य परमैश्वर्ययुक्तस्य स्त्री **(अग्नायी)** अग्नेः पावकवद्वर्त्तमानस्य पत्नी **(अश्विनी)** आशुगामिनः स्त्री **(राट्)** या राजते **(आ)** **(रोदसी)** द्यावापृथिव्याविव **(वरुणानी)** वरस्य भार्य्या **(शृणोतु)** **(व्यन्तु)** कामयन्ताम् **(देवीः)** विदुष्यः **(यः)** **(ऋतुः)** **(जनीनाम्)** जनित्रीणां भार्य्याणाम्॥८॥

**अन्वयः**-यो राडिन्द्राण्यग्नाय्यश्विनी देवपत्नीर्न्यायकरणाय स्त्रीणां ग्ना व्यन्तु रोदसी इव वरुणानी जनीनां वाच आ शृणोतु उतापि देवीर्ऋतुरिव क्रमेण जनीनां यो न्यायस्तं व्यन्तु॥८॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यथा राज्ञां समीपे पुरुषा अमात्या भवन्ति तथा राज्ञीनां निकटे स्त्रियो भवन्तु॥८॥

अत्र विद्वदग्न्यादिराजराज्ञीकृत्यवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्य्याणां महाविदुषां विरजानन्दसरस्वतीस्वामिनां शिष्येण श्रीमद्दयानन्दसरस्वतीस्वामिना विरचिते सुप्रमाणयुक्त ऋग्वेदभाष्ये पञ्चमे मण्डले षट्चत्वारिंशत्तमं सूक्तं तथा**



www.9009.co.in

**चतुर्थाऽष्टके द्वितीयोऽध्यायोऽष्टाविंशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-**(यः)** जो **(राट्)** प्रकाशमान **(इन्द्राणी)** अत्यन्त ऐश्वर्य्य से युक्त पुरुष की स्त्री और **(अग्नायी)** अग्नि के सदृश तेजस्वी पुरुष की स्त्री **(अश्विनी)** शीघ्र चलने वाले की स्त्री और **(देवपत्नीः)** विद्वानों की स्त्रियाँ न्याय करने के लिये स्त्रियों की **(ग्नाः)** वाणियों को **(व्यन्तु)** व्याप्त हों और **(रोदसी)** अन्तरिक्ष तथा पृथिवी के सदृश **(वरुणानी)** श्रेष्ठ जन की स्त्री **(जनीनाम्)** उत्पन्न करनेवाली स्त्रियों की वाणियों को **(आ, शृणोतु)** सब प्रकार से सुने और **(उत)** भी **(देवीः)** विद्यायुक्त स्त्रियाँ **(ऋतुः)** ऋतु के सदृश क्रम से उत्पन्न करनेवाली स्त्रियों का जो न्याय उसकी **(व्यन्तु)** कामना करें॥८॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपालङ्कार है। जैसे राजाओं के समीप पुरुष मन्त्री होते हैं, वैसे रानियों के समीप स्त्रियाँ मन्त्री होवें॥८॥

**श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य महाविद्वान् विरजानन्द सरस्वती स्वामीजी के शिष्य श्रीमद्दयानन्द सरस्वती स्वामीजी से रचे हुए, उत्तम प्रमाणयुक्त ऋग्वेदभाष्य के पांचवें मण्डल में छयालीसवां सूक्त और चतुर्थ अष्टक में द्वितीय अध्याय और अट्ठाईसवां वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

अथ तृतीयाऽध्यायारम्भः॥

**विश्वा॑नि देव सवितर्दुरि॒तानि॒ परा॑ सुव। यद्भ॒द्रं तन्न॒ आ सु॑व॥ ऋ०५.८२.५॥**

**अथ सप्तर्चस्य सप्तचत्वारिंशत्तमस्य सूक्तस्य प्रतिरथ आत्रेय ऋषिः। विश्वेदेवा देवताः। १, २, ४, ७ त्रिष्टुप्। ३ निचृत् त्रिष्टुप्। ६ विराट् त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः। ५ भुरिक्पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः॥**

***अथ स्त्रीपुरुषगुणानाह॥***

अब सात ऋचा वाले सैंतालीसवें सूक्त का प्रारम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में स्त्री पुरुषों के गुणों को कहते हैं॥

**प्र॒यु॒ञ्ज॒ती दि॒व ए॑ति ब्रुवा॒णा म॒ही मा॒ता दु॑हि॒तुर्बो॒धय॑न्ती।**

**आ॒विवा॑सन्ती यु॒व॒तिर्म॑नी॒षा पि॒तृभ्य॒ आ सद॑ने॒ जोहु॑वाना॥ १॥**

**प्र॒ऽयु॒ञ्ज॒ती। दि॒वः। ए॒ति॒। ब्रु॒वा॒णा। म॒ही। मा॒ता। दु॒हि॒तुः। बो॒धय॑न्ती। आ॒ऽविवा॑सन्ती। यु॒व॒तिः। म॒नी॒षा। पि॒तृऽभ्यः॑। आ। सद॑ने। जोहु॑वाना॥ १॥**

**पदार्थः-(प्रयुञ्जती)** प्रयोगं कुर्वन्ती **(दिवः)** प्रकाशात् **(एति)** गच्छति प्राप्नोति वा **(ब्रुवाणा)** उपदिशन्ती **(मही)** पूजनीया **(माता)** मान्यकारिणी जननी **(दुहितुः)** कन्यायाः **(बोधयन्ती)** **(आविवासन्ती)** समन्तात् सेवमाना **(युवतिः)** युवावस्थायां विद्या अधीत्य कृतविवाहा **(मनीषा)** प्रज्ञया **(पितृभ्यः)** पालकेभ्यः **(आ)** **(सदने)** गृहे **(जोहुवाना)** भृशं प्राप्तप्रशंसा॥१॥

**अन्वयः**-या दिव उषा इव ब्रुवाणा प्रयुञ्जती दुहितुर्बोधयन्ती मही आविवासन्ती सदने जोहुवाना युवतिर्माता मनीषा पितृभ्यः प्राप्तशिक्षा गृहाश्रममैति सा मङ्गलकारिणी भवति॥१॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। या माता आपञ्चमाद्वर्षात् सन्तानान् बोधयित्वा पञ्चमे वर्षे पित्रे समर्पयति पितापि वर्षत्रयं शिक्षित्वाऽऽचार्याय पुत्रानाचार्यायै कन्या ब्रह्मचर्य्येण विद्याग्रहणाय समर्पयति तेऽपि यथाकालं ब्रह्मचर्यं समापयित्वा विद्याः प्रापय्य व्यवहारशिक्षां दत्त्वा समावर्त्तयन्ति ते ताश्च कुलस्य भूषका अलङ्कर्त्र्यश्च स्युः॥१॥

**पदार्थः**-जो **(दिवः)** प्रकाश से प्रातःकाल के सदृश **(ब्रुवाणा)** उपदेश देती **(प्रयुञ्जती)** उत्तम कर्म्म में अच्छे प्रकार योग करती **(दुहितुः)** कन्या का **(बोधयन्ती)** बोध देती और **(मही)** आदर करने योग्य **(आविवासन्ती)** सब प्रकार से सेवती हुई **(सदने)** गृह में **(जोहुवाना)** अत्यन्त प्रशंसा को प्राप्त **(युवतिः)** युवा अवस्था में विद्याओं को पढ़कर विवाह जिसने किया वह **(माता)** आदर करने वाली माता



www.9009.co.in

**(मनीषा)** बुद्धि से **(पितृभ्यः)** पालन करने वालों से शिक्षा को प्राप्त गृहाश्रम को **(आ)** सब प्रकार से **(एति)** जाती वा प्राप्त होती है, वह मंगलकारिणी होती है॥१॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो माता पांचवें वर्ष के प्रारम्भ होने तक सन्तानों को बोध देकर पांचवें वर्ष में पिता को सौंपती है और पिता भी तीन वर्ष पर्य्यन्त शिक्षा देकर आचार्य्य को पुत्रों को और आचार्य्य की स्त्री को कन्याओं को ब्रह्मचर्य से विद्याग्रहण के लिये सौंपता है और वे आचार्यादि भी नियत समयपर्य्यन्त ब्रह्मचर्य्य को समाप्त करा के और विद्याओं को प्राप्त करा के तथा व्यवहार की शिक्षा देकर गृहाश्रम में प्रविष्ट कराते हैं, वे आचार्य और आचार्य्या कुल के भूषक और शोभाकारक होते हैं॥१॥

**अथ मनुष्यैः कार्य्यकारणसन्तताऽनन्तपदार्थान् विज्ञाय कार्य्यसिद्धिः संपादनीया॥**

अब मनुष्यों का कार्य कारण से विस्तृत अनन्त पदार्थों को जान कर कार्यसिद्धि करनी चाहिये॥

**अजिरासस्तदप ईयमाना आतस्थिवांसो अमृतस्य नाभिम्।**

**अनन्तास उरवो विश्वतः सीं परि द्यावापृथिवी यन्ति पन्थाः॥२॥**

**अजिरासः। तत्ऽअपः। ईयमानाः आतस्थिऽवांसः। अमृतस्य। नाभिम्। अनन्तासः। उरवः। विश्वतः। सीम्। परि। द्यावापृथिवी इति। यन्ति। पन्थाः॥२॥**

**पदार्थः**-**(अजिरासः)** वेगवन्तः **(तदपः)** तेषां प्राणान् **(ईयमानाः)** प्राप्नुवन्तः **(आतस्थिवांसः)** समन्तात् स्थिताः **(अमृतस्य)** नाशरहितस्य कारणस्य **(नाभिम्)** मध्ये **(अनन्तासः)** अविद्यमानोऽन्तो येषान्ते **(उरवः)** बहवः **(विश्वतः)** सर्वतः **(सीम्)** आदित्यप्रकाश इव **(परि)** **(द्यावापृथिवी)** प्रकाशभूमी **(यन्ति)** प्राप्नुवन्ति **(पन्थाः)** मार्गः॥२॥

**अन्वयः**-येऽजिरास ईयमानास्तदपोऽमृतस्य नाभिमातस्थिवांसोऽनन्तास उरवो विश्वतो द्यावापृथिवी सीमिव परि यन्ति तेषां पन्था विज्ञातव्यः॥२॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपपमालङ्कारः। ये आकाशादयोऽनन्ताः पदार्थास्तत्रस्था असङ्ख्या परमाणवश्च कारणध्ये कारणतो जाता आदित्यप्रकाशवद्विस्तीर्णाः सन्ति॥२॥

**पदार्थः**-जो **(अजिरासः)** वेग से युक्त **(ईयमानाः)** प्राप्त होते हुए **(तदपः)** उनके प्राणों को **(अमृतस्य)** नाश से रहित कारण के **(नाभिम्)** मध्य में **(आतस्थिवांसः)** सब ओर से स्थित **(अनन्तासः)** नहीं विद्यमान अन्त जिनका वे **(उरवः)** बहुत **(विश्वतः)** सब ओर **(द्यावापृथिवी)** प्रकाश और भूमि **(सीम्)** सूर्य्य के प्रकाश के सदृश **(परि)** चारों और **(यन्ति)** प्राप्त होते हैं उनका **(पन्थाः)** मार्ग जानना चाहिये॥२॥



www.9009.co.in

**भावार्थ:**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो आकाश आदि अनन्त पदार्थ है, उनमें वर्त्तमान असंख्य परमाणु और [वे] कारण के मध्य में कारण से उत्पन्न हुए सूर्य्य और प्रकाश के सदृश विस्तीर्ण हैं॥२॥

**पुनर्मनुष्यैः किं विज्ञातव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को क्या जानना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**उ॒क्षा स॑मु॒द्रो अ॑रु॒षः सु॑प॒र्णः पूर्व॑स्य॒ योनिं॑ पि॒तुरा वि॑वेश।**

**मध्ये॑ दि॒वो निहि॑त॒ः पृश्नि॒रश्मा॒ वि च॑क्रमे॒ रज॑सस्पा॒त्यन्तौ॑॥३॥**

**उ॒क्षा। स॒मु॒द्रः। अ॒रु॒षः। सु॒ऽप॒र्णः। पूर्व॑स्य। योनि॑म्। पि॒तुः। आ। वि॒वे॒श। मध्ये॑। दि॒वः। निऽहि॑तः। पृश्नि॑ः। अश्मा॑। वि। च॒क्र॒मे॒। रज॑सः। पा॒ति॒। अन्तौ॑॥३॥**

**पदार्थ:**-**(उक्षा)** सेचकः **(समुद्रः)** सागरः **(अरुषः)** सुखप्रापकः **(सुपर्णः)** शोभनानि पर्णानि पालनानि यस्य सः **(पूर्वस्य)** पूर्णस्याऽऽकाशादेः **(योनिम्)** कारणम् **(पितुः)** पालकस्य **(आ)** **(विवेश)** प्रविशति **(मध्ये)** **(दिवः)** प्रकाशस्य **(निहितः)** स्थापितः **(पृश्निः)** अन्तरिक्षम् **(अश्मा)** मेघः **(वि)** **(चक्रमे)** क्रमते **(रजसः)** लोकजातस्य **(पाति)** **(अन्तौ)** समीपे॥३॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यः समुद्रोऽरुषः सुपर्णो दिवो मध्ये निहितः पृश्निरश्मोक्षा पूर्वस्य पितुर्योनिमा विवेश रजसो वि चक्रमेऽन्तौ पाति स सर्वैर्वेदितव्यः॥३॥

**भावार्थ:**-हे मनुष्या! यूयं कार्य्यकारणे विज्ञाय तत्संयोगजन्यानि वस्तूनि कार्य्येषूपयुज्य स्वाभीष्टसिद्धिं सम्पादयत॥३॥

**पदार्थ:**-हे मनुष्यो! जो **(समुद्रः)** सागर **(अरुषः)** सुख को प्राप्त कराने वाला **(सुपर्णः)** सुन्दर पालन जिसके ऐसा और **(दिवः)** प्रकाश के **(मध्ये)** मध्य में **(निहितः)** स्थापित किया गया **(पृश्निः)** अन्तरिक्ष और **(अश्मा)** मेघ **(उक्षा)** सींचने वाला **(पूर्वस्य)** पूर्ण आकाश आदि और **(पितुः)** पालन करने वाले के **(योनिम्)** कारण को **(आ, विवेश)** सब प्रकार प्रविष्ट होता है और **(रजसः)** लोक में उत्पन्न हुए का **(वि, चक्रमे)** विशेष करके क्रमण करता और **(अन्तौ)** समीप में **(पाति)** रक्षा करता है, वह सब को जानने योग्य है॥३॥

**भावार्थ:**-हे मनुष्यो! आप लोग कार्य्य और कारण को जानकर उनके संयोग से उत्पन्न हुए वस्तुओं को कार्य्यों में उपयुक्त करके अपने अभीष्ट की सिद्धि करें॥३॥

**मनुष्यैः पृथिव्यादीनि तत्वानि जगत्पालनानि सन्तीति वेद्यमित्याह॥**

मनुष्यों को चाहिये कि पृथिवी आदि तत्त्व जगत् के पालक हैं, ऐसा जानें,

इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**च॒त्वार॑ ईं बिभ्रति क्षेम॒यन्तो॒ दश॒ गर्भं॑ च॒रसे॑ धापयन्ते।**



www.9009.co.in

**त्रिधातवः परमा अस्य गावो दिवश्चरन्ति परि सद्यो अन्तान्॥४॥**

**चत्वारः। ईम्। बिभ्रति। क्षेमऽयन्तः। दश। गर्भम्। चरसे। धापयन्ते। त्रिऽधातवः। परमाः। अस्य। गावः। दिवः। चरन्ति। परि। सद्यः। अन्तान्॥४॥**

**पदार्थः**-(**चत्वारः**) पृथिव्यादयः (**ईम्**) सर्वतः (**बिभ्रति**) धरन्ति (**क्षेमयन्तः**) रक्षयन्तः (**दश**) दिशः (**गर्भम्**) सर्वजगदुत्पत्तिस्थानम् (**चरसे**) चरितुं गन्तुम् (**धापयन्ते**) धारयन्ति (**त्रिधातवः**) त्रयः सत्त्वरजस्तमांसि धातवो धारका येषान्ते (**परमाः**) प्रकृष्टाः (**अस्य**) गावः किरणाः (**दिवः**) प्रकाशस्य मध्ये (**चरन्ति**) गच्छन्ति (**परि**) (**सद्यः**) शीघ्रम् (**अन्तान्**) समीपस्थान् देशान्॥४॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! अस्य जगतो मध्ये चरसे क्षेमयन्तः परमास्त्रिधातवश्चत्वार ईं गर्भं बिभ्रति दश धापयन्ते सद्यो दिवोऽन्तान् गावः परि चरन्तीति वि जानीत॥४॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! अस्य जगतो धारकाः पृथिव्यप्तेजोवायवः सन्ति ते च कारणादुत्पद्य उपयुक्ता भवन्ति॥४॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! (**अस्य**) इस संसार के मध्य में (**चरसे**) चलने को (**क्षेमयन्तः**) रक्षा करते हुए (**परमाः**) प्रकृष्ट (**त्रिधातवः**) तीन सत्त्व, रज और तमोगुण धारण करने वाले जिनके वे और (**चत्वारः**) चार पृथिवी आदि (**ईम्**) सब ओर से (**गर्भम्**) समस्त जगत् उत्पत्ति के स्थान को (**बिभ्रति**) धारण करते हैं तथा (**दश**) दश दिशाओं को (**धापयन्ते**) धारण कराते हैं और (**सद्यः**) शीघ्र (**दिवः**) प्रकाश के मध्य में (**अन्तान्**) समीपवर्ती देशों के (**गावः**) किरणें (**परि, चरन्ति**) चारों और चलते हैं, ऐसा जानिये॥४॥

**भावार्थः**-ये मनुष्यो! इस संसार के धारण करने वाले पृथिवी, जल, तेज और पवन हैं और वे कारण से उत्पन्न हो के उपयुक्त होते हैं॥४॥

**पुनर्मनुष्यैः किं विज्ञातव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को क्या जानना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**इदं वपुर्निवचनं जनासश्चरन्ति यन्नद्यस्तस्थुरापः।**
**द्वे यदीं बिभृतो मातुरन्ये इहेह जाते यम्या३ सबन्धू॥५॥**

**इदम्। वपुः। निऽवचनम्। जनासः। चरन्ति। यत्। नद्यः। तस्थुः। आपः। द्वे इति। यत्। ईम्। बिभृतः। मातुः। अन्ये इति। इहऽइह। जाते इति। यम्या। सबन्धू इति सऽबन्धू॥५॥**

**पदार्थः**-(**इदम्**) (**वपुः**) शरीरम् (**निवचनम्**) निश्चितं वचनं यस्य तत् (**जनासः**) विद्वांसः (**चरन्ति**) (**यत्**) ये (**नद्यः**) सरित इव (**तस्थुः**) तिष्ठन्ति (**आपः**) जलानि (**द्वे**) (**यत्**) ये (**ईम्**) उदकम् (**बिभृतः**) (**मातुः**) जनन्याः (**अन्ये**) (**इहेह**) (**जाते**) (**यम्या**) रात्रिदिने (**सबन्धू**) समानो बन्धुर्ययोस्तद्वद्वर्त्तमाने॥५॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथेहेह द्वे यम्या सबन्धू मातुरन्ये जाते ईं बिभृतो यद्ये जगदुपकुरुतो यद्ये जनासो नद्य आप इवेदं निवचनं वपुश्चरन्ति तस्थुस्तथैतानि विजानीत॥५॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। मनुष्यैर्यथा रात्रिदिने क्रमेण व्यवहरतस्थैव क्रमेणाहारविहारौ कृत्वा शरीरं संरक्षणीयम्॥५॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे **(इहेह)** इसी संसार में **(द्वे)** दो **(यम्या)** रात्रि और दिन **(सबन्धू)** तुल्य बन्धु जिनका उनके सदृश वर्त्तमान और **(मातुः)** माता से **(अन्ये)** अन्य **(जाते)** उत्पन्न हुए **(ईम्)** जल को **(बिभृतः)** धारण करते हैं और **(यत्)** जो संसार का उपकार करते हैं और **(यत्)** जो **(जनासः)** विद्वान् जन जैसे **(नद्यः)** नदियां **(आपः)** जलों को वैसे **(इदम्)** इस **(निवचनम्)** निश्चित वचन जिसका उस **(वपुः)** शरीर को **(चरन्ति)** प्राप्त होते और **(तस्थुः)** स्थित होते हैं, वैसे इनको विशेष कर जानिये॥५॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। मनुष्यों को चाहिये कि जैसे रात्रि-दिन क्रम से व्यवहार करते हैं, वैसे क्रम से आहार-विहार करके शरीर की रक्षा करनी चाहिये॥५॥

**मनुष्यैर्युवावस्थायामेव स्वयंवरो विवाहः कर्त्तव्य इत्याह॥**

मनुष्यों को चाहिये कि युवा अवस्था ही में स्वयंवर विवाह करें, इस विषय को कहते हैं॥

**वि तन्वते धियो अस्मा अपांसि वस्त्रा पुत्राय मातरो वयन्ति।**

**उपप्रक्षे वृषणो मोदमाना दिवस्पथा वध्वो यन्त्यच्छ॥६॥**

**वि। तन्वते। धियः। अस्मै। अपांसि। वस्त्रा। पुत्राय। मातरः। वयन्ति। उपऽप्रक्षे। वृषणः। मोदमानाः। दिवः। पथा। वध्वः। यन्ति। अच्छ॥६॥**

**पदार्थः**-**(वि)** **(तन्वते)** विस्तारयन्ति **(धियः)** प्रज्ञाः **(अस्मै)** व्यवहारसिद्धाय **(अपांसि)** कर्म्माणि **(वस्त्रा)** वस्त्राणि **(पुत्राय)** **(मातरः)** **(वयन्ति)** निर्मिमते **(उपप्रक्षे)** सम्पर्के **(वृषणः)** यूनः **(मोदमानाः)** आनन्दन्त्यः **(दिवः)** कामयमानाः **(पथा)** गृहाश्रममार्गेण वर्त्तमानाः **(वध्वः)** युवत्यः स्त्रियः **(यन्ति)** प्राप्नुवन्ति **(अच्छ)**॥६॥

**अन्वयः**-या दिवो मोदमाना वध्वः स्त्रियः पथोपप्रक्षे वृषणोऽच्छ यन्ति ता मातरोऽस्मै पुत्राय धियोऽपांसि वि तन्वते वस्त्रा वयन्ति॥६॥

**भावार्थः**-ये स्त्रीपुरुषा ब्रह्मचर्य्येण विद्या अधीत्य युवावस्थास्थाः सन्तो गृहाश्रमं कामयमानाः परस्परस्मिन् प्रीत्या स्वयंवरं विवाहं विधाय धर्म्येण सन्तानानुत्पाद्य सुशिक्ष्य शरीरात्मबलं विस्तृणन्ति वस्त्रैः शरीरमिव गृहाश्रमव्यवहारमाच्छाद्यानन्दन्ति॥६॥

**पदार्थः**-जो **(दिवः)** कामना और **(मोदमानाः)** आनन्द करती हुई **(वध्वः)** युवावस्थायुक्त स्त्रियां **(पथा)** गृहाश्रम के मार्ग से वर्त्तमान **(उपप्रक्षे)** सम्बन्ध में **(वृषणः)** युवा पुरुषों को **(अच्छ)** उत्तम



www.9009.co.in

प्रकार **(यन्ति)** प्राप्त होती हैं, वे **(मातरः)** माता **(अस्मै)** इस व्यवहार से सिद्ध **(पुत्राय)** पुत्र के लिये **(धियः)** बुद्धियों और **(अपांसि)** कर्म्मों को **(वि, तन्वते)** विस्तार करती हैं और **(वस्त्रा)** वस्त्रों को **(वयन्ति)** बनाती हैं॥६॥

**भावार्थः**-जो स्त्री और पुरुष ब्रह्मचर्य्य से विद्याओं को पढ़ कर युवावस्था में वर्त्तमान गृहाश्रम की कामना करते हुए परस्पर प्रीति से स्वयंवर विवाह करके धर्म से सन्तानों को उत्पन्न कर और उत्तम प्रकार शिक्षा देकर शरीर और आत्मा के बल का विस्तार करते हैं और जैसे वस्त्रों से शरीर को वैसे गृहाश्रम के व्यवहार का आच्छादन करके आनन्द करते हैं॥६॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**तदस्तु मित्रावरुणा तदग्ने शं योरस्मभ्यमिदमस्तु शस्तम्।**
**अशीमहि गाधमुत प्रतिष्ठां नमो दिवे बृहते सादनाय॥७॥१॥**

**तत्। अस्तु। मित्रावरुणा। तत्। अग्ने। शम्। योः। अस्मभ्यम्। इदम्। अस्तु। शस्तम्। अशीमहि। गाधम्। उत। प्रतिऽस्थाम्। नमः। दिवे। बृहते। सादनाय॥७॥**

**पदार्थः**-**(तत्)** **(अस्तु)** **(मित्रावरुणा)** प्राणोदानाविव मातापितरौ **(तत्)** **(अग्ने)** पावक **(शम्)** सुखम् **(योः)** दुःखात्पृथग्भूतम् **(अस्मभ्यम्)** **(इदम्)** **(अस्तु)** **(शस्तम्)** प्रशंसनीयम् **(अशीमहि)** प्राप्नुयाम **(गाधम्)** गभीरम् **(उत)** **(प्रतिष्ठाम्)** **(नमः)** सत्कारम् **(दिवे)** कामयमानाय **(बृहते)** महते **(सादनाय)** स्थितिमते॥७॥

**अन्वयः**-हे मित्रावरुणा अध्यापकोपदेशकौ! युवयोः सङ्गेन तच्छं वयमशीमहि। हे अग्नेऽस्मभ्यं तदस्तु योरिदं शस्तमस्तु गाधमुत प्रतिष्ठां प्राप्य बृहते सादनाय दिवे नमोऽस्तु॥७॥

**भावार्थः**-ये मनुष्या आप्तान् विदुषोऽध्यापकान् सत्कुर्वन्ति त एव सुखं लभन्ते॥७॥

अत्र स्त्रीपुरुषादिगुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति सप्तचत्वारिंशत्तमं सूक्तं प्रथमो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे **(मित्रावरुणा)** प्राण और उदान वायु के सदृश वर्त्तमान माता-पिता तथा अध्यापक और उपदेशक जन! आप दोनों के सङ्ग से **(तत्)** उस **(शम्)** सुख को हम लोग **(अशीमहि)** प्राप्त होवें और **(अग्ने)** हे अग्ने! **(अस्मभ्यम्)** हम लोगों के लिये **(तत्)** वह **(अस्तु)** हो। **(योः)** दुःख से पृथग्भूत **(इदम्)** यह **(शस्तम्)** प्रशंसा करने योग्य **(अस्तु)** हो और **(गाधम्)** गम्भीर **(उत)** भी **(प्रतिष्ठाम्)** आदर को प्राप्त हो कर **(बृहते)** बड़े **(सादनाय)** स्थितिमान् के लिये और **(दिवे)** कामना करते हुए के लिये **(नमः)** सत्कार हो॥७॥



www.9009.co.in

**भावार्थ:**-जो मनुष्य यथार्थवक्ता विद्वानों और अध्यापकों का सत्कार करते हैं, वे ही सुख को प्राप्त होते हैं॥७॥

इस सूक्त में स्त्री-पुरुषादि के गुण-वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह सैंतालीसवां सूक्त और पहिला वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

**अथ पञ्चर्चस्याष्टचत्वारिंशत्तमस्य सूक्तस्य प्रतिभानुरात्रेय ऋषिः। विश्वेदेवाः देवताः। १, ३ स्वराट् त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः। २, ४, ५ निचृज्जगती छन्दः। निषादः स्वरः॥**

***पुनर्मनुष्यैः किमेष्टव्यमित्याह॥***

अब पांच ऋचा वाले अड़तालीसवें सूक्त का प्रारम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में फिर मनुष्यों को किसकी इच्छा करनी चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**कदु प्रियाय धाम्ने मनामहे स्वक्षत्राय स्वयशसे महे वयम्।**

**आमेन्यस्य रजसो यदभ्र आँ अपो वृणाना वितनोति मायिनी॥१॥**

**कत्। ऊँ इति। प्रियाय। धाम्ने। मनामहे। स्वऽक्षत्राय। स्वऽयशसे। महे। वयम्। आऽमेन्यस्य। रजसः। यत्। अभ्रे। आ। अपः। वृणाना। विऽतनोति। मायिनी॥१॥**

**पदार्थः**-**(कत्)** कदा (उ) **(प्रियाय)** कमनीयाय **(धाम्ने)** जन्मस्थाननामस्वरूपाय **(मनामहे)** जानीमहे **(स्वक्षत्राय)** स्वकीयराज्याय क्षत्रियकुलाय वा **(स्वयशसे)** स्वकीयं यशो यस्मात्तस्मै **(महे)** महते **(वयम्)** **(आमेन्यस्य)** समन्तान्मेयस्य **(रजसः)** लोकस्य **(यत्)** या **(अभ्रे)** घने [**(आ)**] **(अपः)** जलानि **(वृणाना)** स्वीकुर्वाणा **(वितनोति)** विस्तीर्णां करोति **(मायिनी)** माया प्रज्ञा विद्यते यस्यां सा॥१॥

**अन्वयः**-यद्या आमेन्यस्य रजसो मध्येऽभ्रेऽप आ वृणाना मायिनी सती वितनोति तामु वयं महे प्रियाय धाम्ने स्वक्षत्राय स्वयशसे कन्मनामहे॥१॥

**भावार्थः**-मनुष्यैः सततमेवमाशंसितव्यं येन राज्यं यशो धर्मश्च वर्धेत तथैव स्वीकृत्याऽनुष्ठातव्यम्॥१॥

**पदार्थः**-**(यत्)** जो **(आमेन्यस्य)** चारों और से ज्ञान के विषय **(रजसः)** लोक के मध्य में और **(अभ्रे)** मेघ में **(अपः)** जलों का **(आ, वृणाना)** उत्तम प्रकार स्वीकार करती हुई और **(मायिनी)** बुद्धि जिसमें विद्यमान वह नीति **(वितनोति)** विस्तारयुक्त करती है उसको (उ) भी **(वयम्)** हम लोग **(महे)** बड़े **(प्रियाय)** सुन्दर **(धाम्ने)** जन्म, स्थान और नाम स्वरूप के लिये **(स्वक्षत्राय)** अपने राज्य वा क्षत्रिय कुल के लिये और **(स्वयशसे)** अपना यश जिससे उसके लिये **(कत्)** कब **(मनामहे)** जानें॥१॥

**भावार्थः**-मनुष्यों को चाहिये कि निरन्तर इस प्रकार से इच्छा करें, जिससे राज्य, यश और धर्म्म बढ़े, वैसे ही स्वीकार करके अनुष्ठान करें॥१॥

**पुनर्मनुष्यैः किं कार्य्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**ता अत्नत वयुनं वीरवक्षणं समान्या वृतया विश्वमा रजः।**



www.9009.co.in

**अपो अपाचीरपरा अपेजते प्र पूर्वाभिस्तिरते देवयुर्जनः॥ २॥**

**ताः। अलत। वयुनम्। वीरऽवक्षणम्। समान्या। वृतया। विश्वम्। आ। रजः। अपो इति। अपाचीः। अपराः। अप। ईजते। प्र। पूर्वाभिः। तिरते। देवऽयुः। जनः॥ २॥**

**पदार्थः-(ताः)** आपः **(अलत)** निरन्तरं गच्छत **(वयुनम्)** कर्म प्रज्ञानं वा **(वीरवक्षणम्)** वीराणां वहनम् **(समान्या)** तुल्यया **(वृतया)** आवरकया क्रियया **(विश्वम्)** समग्रम् **(आ)** **(रजः)** लोकलोकान्तरम् **(अपो)** **(अपाचीः)** या अधोऽञ्चन्ति **(अपराः)** अन्याः **(अप)** **(ईजते)** कम्पते **(प्र)** **(पूर्वाभिः)** **(तिरते)** **(देवयुः)** देवान् विदुषः कामयमानः **(जनः)**॥ २॥

**अन्वयः**-देवयुर्जनो वीरवक्षणं वयुनं समान्या वृतया विश्वं रजो या अपाचीरपरा अपो अपेजते पूर्वाभिः प्र तिरते ता यूयमाऽलत॥ २॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यूयं विद्वत्सङ्गं कामयमाना विश्वा विद्या गृह्णीत॥ २॥

**पदार्थः-(देवयुः)** विद्वानों की कामना करता हुआ **(जनः)** जन **(वीरवक्षणम्)** वीरों के पहुंचाने को **(वयुनम्)** कर्म वा प्रज्ञान को तथा **(समान्या)** तुल्य **(वृतया)** आवरण करने वाली क्रिया से **(विश्वम्)** सम्पूर्ण **(रजः)** लोक-लोकान्तर और जिन **(अपाचीः)** नीचे चलने वाले **(अपराः)** अन्य **(अपः)** जलों को **(अप, ईजते)** चलाता है वा **(पूर्वाभिः)** प्राचीन जलों से **(प्र, तिरते)** पार होता है **(ताः)** उन जलों को आप लोग **(आ)** सब ओर से **(अलत)** निरन्तर प्राप्त होओ॥ २॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! आप लोग विद्वानों के सङ्ग की कामना करते हुए सम्पूर्ण विद्याओं को ग्रहण कीजिए॥ १॥

**पुनः स्त्रीपुरुषौ कथं वर्त्तेयातामित्याह॥**

फिर स्त्री-पुरुष कैसा वर्त्ताव करें, इस विषय को कहते हैं॥

**आ ग्रावभिरहन्येभिरक्तुभिर्वरिष्ठं वज्रमा जिघर्त्ति मायिनि।**
**शतं वा यस्य प्रचरन्त्स्वे दमे संवर्तयन्तो वि च वर्तयन्नहा॥ ३॥**

**आ। ग्रावऽभिः। अहन्येभिः। अक्तुऽभिः। वरिष्ठम्। वज्रम्। आ। जिघर्ति। मायिनि। शतम्। वा। यस्य। प्रऽचरन्। स्वे। दमे। सम्ऽवर्तयन्तः। वि। च। वर्तयन्। अहा॥ ३॥**

**पदार्थः-(आ)** समन्तात् **(ग्रावभिः)** मेघैः **(अहन्येभिः)** दिनैः **(अक्तुभिः)** रात्रिभिः **(वरिष्ठम्)** अतिश्रेष्ठम् **(वज्रम्)** शस्त्रविशेषम् **(आ)** **(जिघर्त्ति)** **(मायिनि)** माया प्रशंसिता प्रज्ञा विद्यते यस्य तत्सम्बुद्धौ **(शतम्)** **(वा)** **(यस्य)** **(प्रचरन्)** **(स्वे)** स्वकीये **(दमे)** गृहे **(संवर्त्तयन्तः)** सम्यग्वर्त्तमानाः **(वि)** **(च)** **(वर्तयन्)** **(अहा)** अहानि॥ ३॥

**अन्वयः**-हे मायिनि! यतो भवती ग्रावभिरहन्येभिरक्तुभिर्वरिष्ठं वज्रमा जिघर्ति शतं वा यस्य स्वे दमे प्रचरन्नहाऽऽवर्तयन् व्यवहारमाजिघर्त्ति यस्य च संवर्त्तयन्तः किरणा वि चरन्ति तं त्वं जानीहि॥ ३॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-यदि स्त्रीपुरुषौ निर्भयौ भवेतां तर्हि सूर्य्यविद्युद्वदहर्निशं पुरुषार्थं कृत्वैश्वर्य्येण प्रकाशितौ भवेताम्॥३॥

**पदार्थः**-हे **(मायिनि)** प्रशंसित बुद्धि से युक्त! जिससे आप **(ग्रावभिः)** मेघों **(अहन्येभिः)** दिनों और **(अक्तुभिः)** रात्रियों से **(वरिष्ठम्)** अति श्रेष्ठ **(वज्रम्)** शस्त्रविशेष को **(आ, जिघर्त्ति)** प्रदीप्त करती हो **(शतम्, वा)** अथवा सैकड़ों का दल **(यस्य)** जिसके **(स्वे)** अपने **(दमे)** गृह में **(प्रचरन्)** चलता और **(अहा)** दिनों को **(आ, वर्तयन्)** अच्छे प्रकार व्यतीत करता हुआ व्यवहार को प्रकाशित करता है **(च)** और जिसकी **(संवर्त्तयन्तः)** उत्तम प्रकार वर्त्तमान किरणें **(वि)** विशेष फैलती हैं, उसको तू विशेष करके जान॥३॥

**भावार्थः**-जो स्त्री और पुरुष भयरहित हों तो सूर्य्य और बिजुली के सदृश दिन-रात्रि पुरुषार्थ को करके ऐश्वर्य्य से प्रकाशित हों॥३॥

**राजा कथं राज्यं कुर्य्यादित्याह॥**

राजा कैसे राज्य को करे, इस विषय को कहते हैं॥

**तामस्य रीतिं परशोरिव प्रत्यनीकमख्यं भुजे अस्य वर्पसः।**

**सचा यदि पितुमन्तमिव क्षयं रत्नं दधाति भरहूतये विशे॥४॥**

**ताम्। अस्य। रीतिम्। परशोःऽइव। प्रति। अनीकम्। अख्यम्। भुजे। अस्य। वर्पसः। सचा। यदि। पितुमन्तम्ऽइव। क्षयम्। रत्नम्। दधाति। भरहूतये। विशे॥४॥**

**पदार्थः**-**(ताम्)** **(अस्य)** **(रीतिम्)** **(परशोरिव)** **(प्रति)** **(अनीकम्)** सैन्यम् **(अख्यम्)** कथनीयम् **(भुजे)** पालनाय **(अस्य)** **(वर्पसः)** रूपस्य **(सचा)** सम्बन्धि **(यदि)** **(पितुमन्तमिव)** **(क्षयम्)** निवासस्थानम् **(रत्नम्)** रमणीयम् **(दधाति)** **(भरहूतये)** भरा पालिका धारिका हूतयो यस्यास्तस्यै **(विशे)** प्रजायै॥४॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! योऽस्य भुजेऽख्यमनीकं प्रति परशोरिव तां रीतिं दधात्यस्य वर्पसः सचा पितुमन्तमिव यदि भरहूतये विशे रत्नं क्षयं दधाति तर्हि स एव राज्यं कर्त्तुमर्हति॥४॥

**भावार्थः**-प्रजापालनाय गूढनीत्या राजा व्यवहारान् व्यवहरेत् सर्वस्य च रक्षणं यथार्थतया कुर्य्यात्॥४॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो **(अस्य)** इसके **(भुजे)** पालन के लिये **(अख्यम्)** कहने योग्य **(अनीकम्)** सेनादल के **(प्रति)** प्रति **(परशोरिव)** परशु के सम्बन्ध को जैसे वैसे **(ताम्)** उस **(रीतिम्)** रीति को **(दधाति)** धारण करता है **(अस्य)** इस **(वर्पसः)** रूप के **(सचा)** सम्बन्धि **(पितुमन्तमिव)** अन्नवान् के सदृश **(यदि)** **(भरहूतये)** पालन-धारण करने वाली वाणी आह्वान के लिये जिसकी उस **(विशे)** प्रजा के



www.9009.co.in

लिये (**रत्नम्**) रमणीय (**क्षयम्**) निवासस्थान को धारण करता है तो वही राज्य करने के योग्य होता है॥१४॥

**भावार्थ:**-प्रजा की पालना के लिये गूढनीति से राजा व्यवहारों का अनुष्ठान करे और सब की पालना यथार्थभाव से करे॥१४॥

**प्रशंसितसेन एव राजा विजयी भवितुमर्हति॥**

प्रशंसित सेना जिसकी ऐसा ही राजा जीतने वाला होने को योग्य है॥

**स जिह्वया चतुरनीक ऋञ्जते चारु वसानो वरुणो यतन्नरिम्।**

**न तस्य विद्म पुरुषत्वता वयं यतो भगः सविता दाति वार्यम्॥५॥२॥**

**सः। जिह्वया। चतुःऽअनीकः। ऋञ्जते। चारु। वसानः। वरुणः। यतन्। अरिम्। न। तस्य। विद्म। पुरुषत्वता। वयम्। यतः। भगः। सविता। दाति। वार्यम्॥५॥**

**पदार्थ:**-(**सः**) (**जिह्वया**) वाण्या (**चतुरनीकः**) चतुर्विधान्यनीकानि अस्य सः (**ऋञ्जसे**) प्रसाध्नोति (**चारु**) सुन्दरं वस्त्रम् (**वसानः**) धरन् (**वरुणः**) श्रेष्ठः (**यतन्**) यत्नं कुर्वन् (**अरिम्**) शत्रुम् (**न**) (**तस्य**) (**विद्म**) जानीयाम (**पुरुषत्वता**) बहुपुरुषार्थेन सह (**वयम्**) (**यतः**) (**भगः**) ऐश्वर्य्यवान् (**सविता**) सत्ये प्रेरकः (**दाति**) ददाति (**वार्य्यम्**) वर्त्तुं योग्यमुपदेशम्॥५॥

**अन्वयः**-यो वरुणश्चारु वसानश्चतुरनीको जिह्वयाऽरिं यतन् पुरुषत्वता भगः सविता वार्यं दाति स ऋञ्जते यतो वयं तस्य पुरुषार्थान्तं न विद्म॥५॥

**भावार्थ:**-यस्योत्तमं सैन्यं स एव राजा प्रशंसितो भवति॥५॥

अत्र विद्वद्राजगुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इत्यष्टाचत्वारिंशत्तमं सूक्तं द्वितीयो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थ:**-जो (**वरुणः**) श्रेष्ठ (**चारु**) सुन्दर वस्त्र को (**वसानः**) धारण करता हुआ (**चतुरनीकः**) चार प्रकार की सेनायें जिसकी यह (**जिह्वया**) वाणी से (**अरिम्**) शत्रु का (**यतन्**) यत्न करता हुआ (**पुरुषत्वता**) बहुत पुरुषार्थ के साथ (**भगः**) ऐश्वर्य्य से युक्त (**सविता**) सत्य में प्रेरणा करने वाला (**वार्यम्**) स्वीकार करने योग्य उपदेश को (**दाति**) देता है (**सः**) वह (**ऋञ्जते**) उत्तम प्रकार सिद्ध करता है (**यतः**) जिससे (**वयम्**) हम लोग (**तस्य**) उसके पुरुषार्थ के अन्त को (**न**) नहीं (**विद्म**) जानें॥५॥

**भावार्थ:**-जिसकी उत्तम सेना है वही राजा प्रशंसित होता है॥५॥

इस सूक्त में विद्वान् और राजा के गुण-वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह अड़तालीसवां सूक्त और द्वितीय वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

**अथ पञ्चर्चस्यैकोनपञ्चाशत्तमस्य सूक्तस्य प्रतिप्रभ आत्रेय ऋषिः। विश्वेदेवा: देवताः। १, २, ४ त्रिष्टुप्। ३ निचृत्त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः। ५ स्वराट्पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः॥**

***मनुष्यैः परोपकार एव कर्त्तव्य इत्याह॥***

अब पांच ऋचा वाले उनचासवें सूक्त का प्रारम्भ किया जाता है, उसके प्रथम मन्त्र में मनुष्यों को चाहिये कि परोपकार ही करें, इस विषय को कहते हैं॥

**देवं वो अद्य सवितारमेषे भगं च रत्नं विभजन्तमायोः।**

**आ वां नरा पुरुभुजा ववृत्यां दिवेदिवे चिदश्विना सखीयन्॥१॥**

**देवम्। वः। अद्य। सवितारम्। आ। ईषे। भगम्। च। रत्नम्। विऽभजन्तम्। आयोः। आ। वाम्। नरा। पुरुऽभुजाः। ववृत्याम्। दिवेऽदिवे। चित्। अश्विना। सखिऽयन्॥१॥**

**पदार्थः**-(**देवम्**) विद्वांसम् (**वः**) युष्मदर्थम् (**अद्य**) (**सवितारम्**) ऐश्वर्य्यवन्तम् (**आ**) (**ईषे**) इच्छामि (**भगम्**) ऐश्वर्य्यम् (**च**) (**रत्नम्**) रमणीयं धनम् (**विभजन्तम्**) विभागं कुर्वन्तम् (**आयोः**) जीवनस्य (**आ**) (**वाम्**) युवाम् (**नरा**) नेतारौ (**पुरुभुजा**) यौ पुरून् बहून् पालयतस्तौ (**ववृत्याम्**) वर्त्तयेयम् (**दिवेदिवे**) प्रतिदिनम् (**चित्**) (**अश्विना**) राजप्रजाजनौ (**सखीयन्**) सखेवाचरन्॥१॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! अहमद्य व आयोर्विभजन्तं देवं सवितारं रत्नं भगञ्चेषे। हे पुरुभुजा नरा अश्विना! सखीयन्नहं चिद्दिवेदिवे वामा ववृत्याम्॥१॥

**भावार्थः**-ये मनुष्या सखायो भूत्वा परार्थं सुखमिच्छेयुस्ते सदैव माननीया भवेयुः॥१॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! मैं (**अद्य**) आज (**वः**) आप लोगों के लिये (**आयोः**) जीवन का (**विभजन्तम्**) विभाग करते हुए (**देवम्**) विद्वान् (**सवितारम्**) ऐश्वर्यवान् (**रत्नम्**) रमणीय धन (**भगम्**) और ऐश्वर्य्य को (**च**) भी (**आ, ईषे**) अच्छे प्रकार चाहता हूं और हे (**पुरुभुजा**) बहुतों का पालन करते हुए (**नरा**) अग्रणी (**अश्विना**) राजा और प्रजाजनो! (**सखीयन्**) मित्र के सदृश आचरण करता हुआ मैं (**चित्**) निश्चित (**दिवेदिवे**) प्रतिदिन (**वाम्**) आप दोनों को (**आ, ववृत्याम्**) अच्छे प्रकार वर्त्ताऊं॥१॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य मित्र होकर दूसरे के लिये सुख की इच्छा करें, वे सदा ही आदर करने योग्य होवें॥१॥

**मेघस्य कारणं किमस्तीत्याह॥**

मेघ का कारण क्या है, इस विषय को कहते हैं॥

**प्रति प्रयाणमसुरस्य विद्वान्त्सूक्तैर्देवं सवितारं दुवस्य।**

**उप ब्रुवीत नमसा विजानञ्ज्येष्ठं च रत्नं विभजन्तमायोः॥२॥**



www.9009.co.in

**प्रति। प्रऽयान॑म्। असु॑रस्य। विद्वान्। सुऽउक्तैः। देवम्। सवितार॑म्। दुवस्य। उप॑। ब्रुवीत। नम॑सा। विऽजानन्। ज्येष्ठ॑म्। च। रत्न॑म्। विऽभज॑न्तम्। आयोः॥ २॥**

**पदार्थः-(प्रति)** प्रत्यक्षे **(प्रयाणाम्)** यात्राम् **(असुरस्य)** मेघस्य **(विद्वान्) (सूक्तैः)** सुष्ठ्वर्थ-वाचकैर्वेदविभागैः **(देवम्)** देदीप्यमानम् **(सवितारम्)** मेघोत्पादकम् **(दुवस्य)** सेवस्व **(उप) (ब्रुवीत) (नमसा)** अन्नाद्येन सत्कारेण **(विजानन्) (ज्येष्ठम्)** अतिशयेन प्रशस्यम् **(च) (रत्नम्)** धनम् **(विभजन्तम्) (आयोः)** जीवनस्य॥ २॥

**अन्वयः**-हे जन विद्वांस्त्वं सूक्तैरसुरस्य प्रयाणं देव सवितारं प्रति दुवस्य नमसा ज्येष्ठं रत्नञ्च विजानन्नायोर्विभजन्तमुप ब्रुवीत॥ २॥

**भावार्थः**-हे मनुष्याः! सूर्य्य एव मेघादीनामुत्पादकोऽस्ति तद्विद्यामुपदिशत॥ २॥

**पदार्थः**-हे जन **(विद्वान्)** विद्वान्! आप **(सूक्तैः)** अच्छे अर्थों को कहने वाले वेद के विभागों से **(असुरस्य)** मेघ की **(प्रयाणम्)** यात्रा का और **(देवम्)** प्रकाशित होते हुए **(सवितारम्)** मेघ को उत्पन्न करने वाले का **(प्रति)** प्रत्यक्ष में **(दुवस्य)** सेवन करो और **(नमसा)** अन्न आदि के दानरूप सत्कार से **(ज्येष्ठम्)** अत्यन्त प्रशंसा करने योग्य **(रत्नम्)** धन को **(च)** भी **(विजानन्)** विशेष करके जानता हुआ **(आयोः)** जीवन के **(विभजन्तम्)** विभाग करते हुए को **(उप, ब्रुवीत)** कहें॥ २॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! सूर्य्य ही मेघ आदिकों का उत्पन्न करने वाला है, उसकी विद्या का उपदेश दीजिये॥ २॥

**पुनर्मनुष्यैः किं वेदितव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को क्या जानना चाहिये, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अदत्रया दयते वार्याणि पूषा भगो अदि॑तिर्वस्त॑ उस्रः।**

**इन्द्रो विष्णुर्वरु॑णो मित्रो अग्निरहा॑नि भद्रा जनयन्त दस्माः॥ ३॥**

**अदत्रऽया। दयते। वार्याणि। पूषा। भगः। अदि॑तिः। वस्तै। उस्रः। इन्द्रः। विष्णुः। वरु॑णः। मित्रः। अग्निः। अहा॑नि। भद्रा। जनयन्त। दस्माः॥ ३॥**

**पदार्थः-(अदत्रया)** अत्तुं योग्यान्यन्नादीनि **(दयते)** ददाति **(वार्य्याणि)** वरितुमर्हाणि **(पूषा)** पुष्टिकर्त्ता **(भगः)** भजनीयः **(अदितिः)** माता **(वस्ते)** आच्छादयति **(उस्रः)** किरणान्। **उस्रा इति रश्मिनामसु पठितम्।** (निघं० १। ५) **(इन्द्रः)** सूर्य्यः **(विष्णुः)** व्यापिका विद्युत् **(वरुणः** उदानः **(मित्रः)** प्राणः **(अग्निः)** प्रसिद्धो वह्निः **(अहानि)** दिनानि **(भद्रा)** भद्राणि **(जनयन्त)** जनयन्ति **(दस्मा)** दुःखोपक्षयितारः॥ ३॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! विद्वानदत्रया वार्य्याणि दयते पूषा भगोऽदितिरुस्रो वस्त इन्द्रो विष्णुर्वरुणो मित्रोऽग्निर्दस्मा भद्राऽहानि जनयन्त तानि व्यर्थानि मा नयत॥ ३॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-यथा माता कृपयान्नपानादिदानेनाऽपत्यानि पालयति तथैव सूर्य्यादयोऽहोरात्रिभ्यां सर्वान् रक्षन्ति॥३॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! विद्वान् **(अदत्रया, वार्य्याणि)** खाने और स्वीकार करने योग्य अन्नादिकों को **(दयते)** देता है और **(पूषा)** पुष्टिकर्त्ता **(भगः)** सेवन करने योग्य तथा **(अदितिः)** माता **(उस्रः)** किरणों का **(वस्ते)** आच्छादन करती है और **(इन्द्रः)** सूर्य्य **(विष्णुः)** व्यापक बिजुली **(वरुणः)** उदान **(मित्रः)** प्राण **(अग्निः)** प्रसिद्ध अग्नि **(दस्माः)** और दुःख के नाश करने वाले **(भद्रा)** कल्याणकारक **(अहानि)** दिनों को **(जनयन्त)** उत्पन्न करते हैं, उनको व्यर्थ मत व्यतीत करिये॥३॥

**भावार्थः**-जैसे माता अनुग्रह से अन्न-पान आदि के दान से सन्तानों का पालन करती है, वैसे ही सूर्य्य आदि पदार्थ दिन और रात्रि से सब की रक्षा करते हैं॥३॥

**पुनर्मनुष्यैः किं वर्त्तित्वा किं प्राप्तव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को क्या वर्त्ताव करके क्या प्राप्त करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**तन्नो॑ अ॒नर्वा॑ स॑वि॒ता वरू॑थं॒ तत्सिन्ध॑व इ॒षय॑न्तो॒ अनु॑ ग्मन्।**

**उप॒ यद्वोचे॑ अध्व॒रस्य॒ होता॑ रा॒यः स्या॑म॒ पत॑यो॒ वाज॑रत्नाः॥४॥**

**तत्। नः॒। अ॒नर्वा॑। स॒वि॒ता। वरू॑थम्। तत्। सिन्ध॑वः। इ॒षय॑न्तः। अनु॑। ग्म॒न्। उप॑। यत्। वोचे॑। अ॒ध्व॒रस्य॑। होता॑। रा॒यः। स्या॒म॒। पत॑यः। वाज॑ऽरत्नाः॥४॥**

**पदार्थः**-**(तत्)** **(नः)** अस्मान् **(अनर्वा)** अविद्यमानाश्वः **(सविता)** सूर्य्यः **(वरूथम्)** गृहम् **(तत्)** **(सिन्धवः)** नद्यः समुद्रा वा **(इषयन्तः)** प्राप्नुवन्तः प्रापयन्तो वा **(अनु)** **(ग्मन्)** अनुगच्छन्ति **(उप)** **(यत्)** **(वोचे)** उपदिशेयम् **(अध्वरस्य)** अहिंसामयस्य यज्ञस्य **(होता)** आदाता **(रायः)** धनस्य **(स्याम)** भवेम **(पतयः)** स्वामिनः **(वाजरत्नाः)** विज्ञानधनवन्तः॥४॥

**अन्वयः**-अध्वरस्य होताऽहं सर्वान् प्रति यदुप वोचे तन्नो वरूथमनर्वा सविता तदिषयन्तः सिन्धवोऽनु ग्मन्। येन वाजरत्ना वयं रायः पतयः स्यामः॥४॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यदि यूयं सूर्य्यादिवत् सततं पुरुषार्थिनः स्यात् तर्हि श्रीमन्तो भवेत॥४॥

**पदार्थः**-**(अध्वरस्य)** अहिंसारूप यज्ञ का **(होता)** ग्रहण करने वाला मैं सब के प्रति **(यत्)** जिसका **(उप, वोचे)** उपदेश करूं **(तत्)** उसके और **(नः)** हम लोगों के **(वरूथम्)** गृह **(अनर्वा)** घोड़े जिसके नहीं वह और **(सविता)** सूर्य्य तथा **(तत्)** उसको **(इषयन्तः)** प्राप्त होते वा प्राप्त कराते हुए। **(सिन्धवः)** नदियां वा समुद्र **(अनु, ग्मन्)** पीछे चलते हैं, जिससे **(वाजरत्नाः)** विज्ञान धन है जिनके ऐसे हम लोग **(रायः)** धन के **(पतयः)** स्वामी **(स्याम)** होवें॥४॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो तुम सूर्य्य आदि के सदृश निरन्तर पुरुषार्थी होओ तो लक्ष्मीवान् होओ॥४॥



www.9009.co.in

**मनुष्यैः किं कृत्वा किं प्राप्तव्यमित्याह॥**

मनुष्यों को क्या करके क्या प्राप्त करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**प्र ये वसुभ्य ईवदा नमो दुर्ये मित्रे वरुणे सूक्तवाचः।**

**अवैत्वभ्वं कृणुता वरीयो दिवस्पृथिव्योरवसा मदेम॥५॥३॥**

**प्र। ये। वसुऽभ्यः। ईवत्। आ। नमः। दुः। ये। मित्रे। वरुणे। सूक्तऽवाचः। अव। एतु। अभ्वम्। कृणुत। वरीयः। दिवःपृथिव्योः। अवसा। मदेम॥५॥**

**पदार्थः-(प्र) (ये) (वसुभ्यः)** धनेभ्यः **(ईवत्)** गतिरक्षणवत् **(आ) (नमः)** अन्नम् **(दुः)** दद्युः **(ये) (मित्रे)** सख्याम् **(वरुणे)** उत्तमतिथौ **(सूक्तवाचः)** सुस्तुता सुप्रशंसिता वाग्येषान्ते **(अव) (एतु)** प्राप्नोतु **(अभ्वम्)** महत् **(कृणुता)** कुरुत। अत्र **संहितायामिति** दीर्घः। **(वरीयः)** अत्युत्तमं धनादिकम् **(दिवः) (पृथिव्योः)** सूर्य्यभूम्योर्मध्ये **(अवसा)** रक्षणादिना **(मदेम)**॥५॥

**अन्वयः**-हे मनुष्यो! ये मित्रे वरुण ईवत्प्रा दुर्ये यूयं वसुभ्यो नमः कृणुता तद्युक्ता सूक्तवाचो वयं दिवस्पृथिव्योर्मध्ये येन वरीयोऽभ्वमवैतु तदवसा मदेम॥५॥

**भावार्थः**-हे मनुष्याः! पुरुषार्थेन श्रियं तस्या अन्नादिकं सञ्चित्य महत् सुखं प्राप्य सर्वेषां रक्षणं विदधत्विति॥५॥

अत्र सूर्य्यविद्वद्गुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इत्येकोनपञ्चाशत्तमं सूक्तं तृतीयो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(ये)** जो **(मित्रे)** मित्र **(वरुणे)** उत्तम तिथि के निमित्त **(ईवत्)** गतिमान् तथा रक्षणवान् पदार्थ को **(प्र, आ, दुः)** उत्तम प्रकार देवें वा **(ये)** जो तुम लोग **(वसुभ्यः)** धनों के लिये **(नमः)** अन्न को **(कृणुता)** सिद्ध करो उनसे युक्त **(सूक्तवाचः)** उत्तम प्रशंसित वाणी वाले हम लोग **(दिवः, पृथिव्योः)** प्रकाश सूर्य्य और भूमि के मध्य में जिससे **(वरीयः, अभ्वम्)** अत्युत्तम धनादि तथा अत्यन्त **(अव, एतु)** प्राप्त हो उसकी **(अवसा)** रक्षा से **(मदेम)** आनन्दित हों॥५॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! पुरुषार्थ से लक्ष्मी को और उससे अन्न आदि को इकट्ठा कर बड़े सुख को प्राप्त होकर सब का रक्षण करो॥५॥

इस सूक्त में सूर्य और विद्वानों के गुण-वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ संगति जाननी चाहिये॥

**यह उनचासवां सूक्त और तीसरा वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

**अथ पञ्चर्चस्य पच्चाशत्तमस्य सूक्तस्य स्वस्त्यात्रेय ऋषिः। विश्वेदेवा देवताः। १ स्वराडुष्णिक्। २ निचृदुष्णिक्। ४ भुरिगुष्णिक् छन्दः। ऋषभः स्वरः। ३ निचृदनुष्टुप् छन्दः। गान्धारः स्वरः। ५ भुरिग्बृहती छन्दः। मध्यमः स्वरः॥**

*मनुष्यैर्विद्वन्मित्रत्वेन विद्याश्वने प्राप्य यशः प्रथितव्यमित्याह॥*

अब पांच ऋचा वाले पचासवें सूक्त का प्रारम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में मनुष्यों को चाहिये कि विद्वानों के साथ मित्रता से विद्या और धन को प्राप्त होकर यज्ञ बढ़ावें, इस विषय को कहते हैं॥

**विश्वो॑ दे॒वस्य॑ ने॒तुर्मर्तो॑ वुरीत स॒ख्यम्।**

**विश्वो॑ रा॒य इ॑षुध्यति द्यु॒म्नं वृ॑णीत पु॒ष्यसे॑॥ १॥**

**विश्वः॑। दे॒वस्य॑। ने॒तुः। मर्तः॑। वु॒री॒त॒। स॒ख्यम्। विश्वः॑। रा॒ये। इ॒षु॒ध्य॒ति॒। द्यु॒म्नम्। वृ॒णी॒त॒। पु॒ष्यसे॑॥ १॥**

**पदार्थः-(विश्वः)** सर्वः **(देवस्य)** विदुषः **(नेतुः)** नायकस्य **(मर्त्तः)** मनुष्यः **(वुरीत)** स्वीकुर्य्यात् **(सख्यम्)** मित्रत्वम् **(विश्वः)** समग्रः **(राये)** धनाय **(इषुध्यति)** इषून् धरति **(द्युम्नम्)** यशः **(वृणीत)** **(पुष्यसे)** पुष्टो भवसि॥ १॥

**अन्वयः**-विश्वो मर्त्तो नेतुर्देवस्य सख्यं वुरीत विश्वो राय इषुध्यति येन त्वं पुष्यसे तत् द्युम्नं भवान् वृणीत॥ १॥

**भावार्थः**-सर्वैर्मनुष्यैर्विद्याधनशरीरपुष्टिप्राप्तये विद्वच्छिक्षा शरीरात्मपरिश्रमश्च सततं कर्त्तव्यः॥ १॥

**पदार्थः-(विश्वः)** सम्पूर्ण **(मर्त्तः)** मनुष्य **(नेतुः)** अग्रणी **(देवस्य)** विद्वान् की **(सख्यम्)** मित्रता को **(वुरीत)** स्वीकार करें और **(विश्वः)** सम्पूर्ण **(राये)** धन के लिये **(इषुध्यति)** वाणों को धारण करता है और जिससे आप **(पुष्यसे)** पुष्ट होते हैं, उस **(द्युम्नम्)** यश को आप **(वृणीत)** स्वीकार करिये॥ १॥

**भावार्थः**-सब मनुष्यों को चाहिये कि विद्या धन और शरीरपुष्टि की प्राप्ति के लिये विद्वानों की शिक्षा, शरीर और आत्मा से परिश्रम निरन्तर करें॥ १॥

**पुनर्मनुष्यैः किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को क्या करना चाहिये इस उस विषय को कहते हैं॥

**ते ते॑ देव नेत॒र्ये चे॒माँ अ॑नु॒शसे॑।**

**ते रा॒या ते ह्या॒३॑पृचे॒ सचे॑महि सच॒थ्यैः॑॥ २॥**

**ते। ते॒। दे॒व॒। ने॒त॒रिति॑। ये। च॒। इ॒मान्। अ॒नु॒ऽशसे॑। ते। रा॒या। ते। हि। आ॒ऽपृचे॑। सचे॑महि। स॒च॒थ्यैः॑॥ २॥**

**पदार्थः-(ते)** तव **(ते)** **(देव)** विद्वान् **(नेतः)** नायक **(ये)** **(च)** **(इमान्)** **(अनुशसे)** अनुशासनाय **(ते)** **(राया)** धनेन **(ते)** **(हि)** **(आपृचे)** समन्तात् सम्पर्काय **(सचेमहि)** संयुञ्जमहि **(सचथ्यैः)** सचथेषु समवायेषु भवैः॥ २॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे नेतर्देव! ये तेऽनुशस इमान् सम्बध्नन्ति ते ते सत्कर्त्तव्याः स्युः। ये च राया सर्वान् रक्षन्ति ते प्रीतिमन्तो जायन्ते। ये ह्यापृचे सचथ्यैर्वर्त्तन्ते तैः सह वयं सचेमहि॥२॥

**भावार्थः**-हे विद्वँस्त्वमिमान् वर्त्तमानान् समीपस्थान् जनाननुशाधि विद्वद्भिः सह सङ्गत्य विद्याः प्राप्नुहि॥२॥

**पदार्थः**-हे **(नेतः)** अग्रणी **(देव)** विद्वन्! **(ये)** जो **(ते)** आपके **(अनुशसे)** अनुशासन के लिये **(इमान्)** इनको सम्बन्धित करते हैं **(ते, ते)** वे वे सत्कार करने योग्य हों **(च)** और जो **(राया)** धन से सब की रक्षा करते हैं **(ते)** वे प्रीति से युक्त होते हैं और जो **(हि)** निश्चित **(आपृचे)** सब ओर से सम्बन्ध के लिये **(सचथ्यैः)** पूर्ण सम्बन्धों में उत्पन्न हुओं के साथ वर्त्तमान हैं, उनके साथ हम लोग **(सचेमहि)** मिलें॥२॥

**भावार्थः**-हे विद्वन्! आप इन वर्त्तमान और समीप में स्थित जनों को शिक्षा दीजिये और विद्वानों के साथ मिल के विद्याओं को प्राप्त हूजिये॥२॥

**मनुष्यैः किं सत्कर्त्तव्यं किं प्राप्तव्यमित्याह॥**

मनुष्यों को किस का सत्कार करना और क्या प्राप्त करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**अतो॑ न॒ आ नॄनति॑थी॒नत॒ः पत्नी॒र्दशस्यत।**

**आ॒रे विश्वं॑ पथे॒ष्ठां द्वि॒षो यु॑योतु॒ यूयु॑विः॥३॥**

**अत॑ः। न॒ः। आ। नॄन्। अति॑थीन्। अत॑ः। पत्नी॑ः। द॒श॒स्य॒त। आ॒रे। विश्व॑म्। प॒थे॒ऽस्थाम्। द्वि॒षः। यु॒यो॒तु॒। यूयु॑विः॥३॥**

**पदार्थः**-**(अतः)** कारणात् **(नः)** अस्मान् **(आ)** समन्तात् **(नॄन्)** अधर्माद्वियोज्य धर्म्मपथं गमयितॄन् **(अतिथीन्)** अनियततिथीन् **(अतः)** **(पत्नीः)** **(दशस्यत)** बलयत **(आरे)** **(विश्वम्)** सर्वञ्जनम् **(पथेष्ठाम्)** यो धर्मे पथि तिष्ठति तम् **(द्विषः)** द्वेष्ट्रीन् **(युयोतु)** वियोजयतु **(यूयुविः)** विभागकर्त्ता॥३॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! अतो नो नॄनतिथीनतोऽनन्तरं पत्नीरा दशस्यत। विश्वं पथेष्ठां जनमारे दशस्यत यूयुविर्द्विष आरे युयोतु॥३॥

**भावार्थः**-मनुष्यैर्धार्म्मिकानतिथीन्त्संसेव्य सङ्गत्य विवेकम्प्राप्य द्वेषादिदोषा आरे प्रक्षेपणीयाः॥३॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(अतः)** इस कारण से **(नः)** हम लोगों और **(नॄन्)** अधर्म्म से अलग कर धर्म्म के मार्ग को चलाने वाले **(अतिथीन्)** जिनके आगमन की तिथि नियत नहीं उनको **(अतः)** इसके अनन्तर **(पत्नीः)** स्त्रियों को **(आ)** सब प्रकार से **(दशस्यत)** प्रबल करिये और **(विश्वम्)** सम्पूर्ण जन को तथा **(पथेष्ठाम्)** जो धर्म्मयुक्त पथ में स्थित हो उसको **(आरे)** समीप में प्रबल करिये और **(यूयुविः)** विभाग करने वाला **(द्विषः)** द्वेष्टा जनों को दूर में **(युयोतु)** विशेष करके विभक्त करें॥३॥



www.9009.co.in

**भावार्थ:**-मनुष्यों को चाहिये कि धार्मिक अतिथियों की उत्तम प्रकार सेवा कर मिल के विवेक को प्राप्त होकर द्वेष आदि दोषों को दूर करें॥३॥

**ये वह्निवद्व्यवहारवोढारः स्युस्ते धीरा जायन्त इत्याह॥**

जो अग्नि के सदृश व्यवहार के धारण करने वाले होवें, वे धीर होते हैं, इस विषय को कहते हैं॥

**यत्र वह्निरभिहितो दुद्रवद् द्रोण्यः पशुः।**

**नृमणा वीरपस्त्योऽर्णा धीरेव सनिता॥४॥**

**यत्र। वह्निः। अभिऽहितः। दुद्रवत्। द्रोण्यः। पशुः। नृऽमनाः। वीरऽपस्त्यः। अर्णा। धीराऽइव। सनिता॥४॥**

**पदार्थ:**-**(यत्र)** यस्मिन् **(वह्निः)** वोढाऽग्निः **(अभिहितः)** कथितो धृतो वा **(दुद्रवत्)** भृशं गच्छति **(द्रोण्यः)** द्रोणेषु शीघ्रगामिषु भवः **(पशुः)** यो दृश्यते **(नृमणाः)** नृषु मनो यस्य सः **(वीरपस्त्यः)** वीरा पस्त्ये गृहे यस्य सः **(अर्णा)** प्रापिका **(धीरेव)** ध्यानवतीव **(सनिता)** विभक्ता॥४॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यत्र द्रोण्यः पशुरिवाऽभिहितो वह्निर्दुद्रवत् तत्रार्णा धीरेव नृमणा वीरपस्त्यस्तनयः सनिता भवेत्॥४॥

**भावार्थ:**-अत्र [उपमा]वाचकलुप्तोपमालङ्कारौ। येऽग्निवत्तेजस्विनो वेगवन्तो भवेयुस्ते सत्याऽसत्यविभाजका भवेयुः॥४॥

**पदार्थ:**-हे मनुष्यो! **(यत्र)** जिसमें **(द्रोण्यः)** शीघ्र चलने वालों में उत्पन्न **(पशुः)** जो देखा जाता है उसके सदृश **(अभिहितः)** कहा गया वा धारण किया गया **(वह्निः)** प्राप्त करने वाला अग्नि **(दुद्रवत्)** अत्यन्त चलता है वहाँ **(अर्णा)** प्राप्त कराने वाली **(धीरेव)** ध्यानवती के सदृश **(नृमणाः)** मनुष्यों में जिसका मन **(वीरपस्त्यः)** जिसके गृह में वीर वह पुत्र **(सनिता)** विभाग करने वाला होवे॥४॥

**भावार्थ:**-इस मन्त्र में [उपमा और] वाचकलुप्तोपमालङ्कार हैं। जो अग्नि के सदृश तेजस्वी और वेग से युक्त होवें, वे सत्य और असत्य के विभाग करने वाले होवें॥४॥

**मनुष्यैः किं याचनीयमित्याह॥**

मनुष्यों को क्या मांगना चाहिये, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**एष ते देव नेता रथस्पतिः शं रयिः।**

**शं राये शं स्वस्तय इषःस्तुतो मनामहे देवस्तुतो मनामहे॥५॥४॥**

**एषः। ते। देव। नेतरिति। रथःपतिः। शम्। रयिः। शम्। राये। शम्। स्वस्तये। इषःऽस्तुतः। मनामहे। देवऽस्तुतः। मनामहे॥५॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**एषः**) (**ते**) तव (**देव**) विद्वन् (**नेतः**) प्रापक (**रथस्पतिः**) रथस्य स्वामी (**शम्**) सुखरूपम् (**रयिः**) धनम् (**शम्**) (**राये**) धनाय (**शम्**) कल्याणम् (**स्वस्तये**) सुखाय (**इषःस्तुतः**) अन्नादेः स्तावकः (**मनामहे**) याचामहे (**देवस्तुतः**) देवैर्विद्वद्भिः प्रशंसितः (**मनामहे**) विजानीमः॥५॥

**अन्वयः**-हे नेतर्देव! त एषो रथस्पतिः शं रयिः शं राये स्वस्तये शमिषः स्तुतः देवस्तुतोऽस्ति तान् वयं मनामहे तान् वयं मनामहे॥५॥

**भावार्थः**-ये विद्वत्प्रशंसिताः कल्याणकराः पदार्थाः स्युस्तान् वयं गृह्णीयाम॥५॥

अत्र विद्वद्गुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति पञ्चाशत्तमं सूक्तं चतुर्थो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे (**नेतः**) प्राप्ति कराने वाले (**देव**) विद्वन्! (**ते**) आपका (**एषः**) यह (**रथस्पतिः**) वाहन का स्वामी (**शम्**) सुखरूप (**रयिः**) धन और (**शम्**) सुख (**राये**) धन के लिये वा (**स्वस्तये**) सुख के लिये (**शम्**) कल्याण (**इषःस्तुतः**) अन्न आदि की स्तुति करने वाला और जो (**देवस्तुतः**) विद्वानों से प्रशंसित है, उनकी हम लोग (**मनामहे**) याचना करते हैं और हम लोग (**मनामहे**) जानते हैं॥५॥

**भावार्थः**-जो विद्वानों में प्रशंसित और कल्याणकारक पदार्थ होवें उनको हम लोग ग्रहण करें॥५॥

इस सूक्त में विद्वानों के गुण-वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह पचासवां सूक्त और चतुर्थ वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

**अथ पञ्चदशर्चस्यैकपञ्चाशत्तमस्य सूक्तस्य स्वस्त्यात्रेय ऋषिः। विश्वेदेवा देवताः। १, २ गायत्री। ३, ४ निचृद्गायत्री छन्दः। षड्जः स्वरः। ५, ६, ८, ९, १० निचृदुष्णिक्। ७ विराडुष्णिक् छन्दः। ऋषभः स्वरः। ११ निचृत्त्रिष्टुप्। १२ त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः। १३ पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः। १४ विराडनुष्टुप्। १५ अनुष्टुप् छन्दः। गान्धारः स्वरः॥**

***विद्वान् विद्वद्भिस्सह किं कुर्य्यादित्युपदिश्यते॥***

अब पन्द्रह ऋचा वाले इक्यावनवें सूक्त का प्रारम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में विद्वान् जन विद्वानों के साथ क्या करे, यह उपदेश किया जाता है॥

**अग्ने॑ सु॒तस्य॑ पी॒तये॒ विश्वै॒रूमे॑भि॒रा ग॑हि। दे॒वेभि॑र्ह॒व्यदा॑तये॥ १॥**

**अग्ने॑। सु॒तस्य॑। पी॒तये॑। विश्वैः॑। ऊमे॑भिः। आ। ग॒हि॒। दे॒वेभिः॑। ह॒व्यऽदा॑तये॥ १॥**

**पदार्थः**-(**अग्ने**) विद्वन् (**सुतस्य**) निष्पादितस्यौषधिरसस्य (**पीतये**) पानाय (**विश्वैः**) सर्वैः (**ऊमेभिः**) रक्षणादिकर्त्तृभिस्सह (**आ**) (**गहि**) आगच्छ (**देवेभिः**) विद्वद्भिः (**हव्यदातये**) दातव्यदानाय॥१॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! त्वं विश्वैरूमेभिर्देवेभिः सह सुतस्य पीतये हव्यदातय आ गहि॥१॥

**भावार्थः**-यदि विद्वांसः परमविदुषा सह सर्वाञ्जनान् सम्बोधयेयुस्तर्हि सर्व आनन्दिताः स्युः॥१॥

**पदार्थः**-हे (**अग्ने**) विद्वन्! आप (**विश्वैः**) सम्पूर्ण (**ऊमेभिः**) रक्षा आदि करने वाले (**देवेभिः**) विद्वानों के साथ (**सुतस्य**) निकाले हुए ओषधिरस के (**पीतये**) पान करने के लिये और (**हव्यदातये**) देने योग्य वस्तु के देने के लिये (**आ, गहि**) प्राप्त हूजिये॥१॥

**भावार्थः**-जो विद्वान् जन अत्यन्त विद्वान् के साथ सम्पूर्ण जनों को उत्तम प्रकार बोध देवें तो सब आनन्दित होवें॥१॥

**कीदृशैर्मनुष्यैर्भवितव्यमित्याह॥**

कैसे मनुष्यों को होना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**ऋत॑धीतय॒ आ ग॑त॒ सत्य॑धर्माणो अध्व॒रम्। अ॒ग्नेः पि॑बत जि॒ह्वया॑॥ २॥**

**ऋत॑ऽधीतयः। आ। ग॒त॒। सत्य॑ऽधर्माणः। अ॒ध्व॒रम्। अ॒ग्नेः। पि॒ब॒त॒। जि॒ह्वया॑॥ २॥**

**पदार्थः**-(**ऋतधीतयः**) ऋतस्य सत्यस्य धीतिर्धारणं येषान्ते (**आ**) (**गत**) आगच्छत (**सत्यधर्म्माणः**) सत्यो धर्म्मो येषान्ते (**अध्वरम्**) अहिंसामयं व्यवहारम् (**अग्नेः**) पावकस्य (**पिबत**) (**जिह्वया**)॥२॥

**अन्वयः**-हे ऋतधीतयः! सत्यधर्म्माणो विद्वांसो यूयमध्वरमा गताग्नेर्जिह्वया रसं पिबत॥२॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यूयं सत्यधर्म्मस्य धारणेनातुलं सुखं प्राप्नुत॥२॥

**पदार्थः**-हे **(ऋतधीतयः)** सत्य के धारण करने वाले **(सत्यधर्म्माणः)** सत्य धर्म्म जिनका ऐसा विद्वानो! आप लोग **(अध्वरम्)** अहिंसारूप व्यवहार को **(आ, गत)** प्राप्त हूजिये और **(अग्नेः)** अग्नि की **(जिह्वया)** जिह्वा से रस को **(पिबत)** पीजिये॥२॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! आप लोग सत्यधर्म्म के धारण से अत्यन्त सुख को प्राप्त हूजिये॥२॥

**विद्वद्भिस्सह विद्वान् किङ्कुर्य्यादित्याह॥**

विद्वानों के साथ विद्वान् क्या करे, इस विषय को कहते हैं॥

**विप्रेभिर्विप्र सन्त्य प्रातर्यावभिरा गहि। देवेभिः सोमपीतये॥३॥**

**विप्रेभिः। विप्र। सन्त्य। प्रातर्यावऽभिः। आ। गहि। देवेभिः। सोमऽपीतये॥३॥**

**पदार्थः**-**(विप्रेभिः)** मेधाविभिः **(विप्र)** मेधाविन् **(सन्त्य)** सन्तौ वर्त्तमानो साधो **(प्रातर्यावभिः)** ये प्रातर्यान्ति तैः **(आ)** **(गहि)** आगच्छ **(देवेभिः)** विद्वद्भिस्सह **(सोमपीतये)** सोमस्य पानाय॥३॥

**अन्वयः**-हे सन्त्य विप्र! त्वं प्रातर्यावभिर्देवेभिर्विप्रेभिस्सह सोमपीतय आ गहि॥३॥

**भावार्थः**-यदा विद्वद्भिस्सह विदुषां सङ्गो जायते तदैश्वर्य्यस्य प्रादुर्भावो भवति॥३॥

**पदार्थः**-हे **(सन्त्य)** वर्त्तमान में श्रेष्ठ **(विप्र)** बुद्धिमान्! आप **(प्रातर्यावभिः)** प्रातःकाल में जाने वाले **(देवेभिः)** विद्वानों के और **(विप्रेभिः)** बुद्धिमानों के साथ **(सोमपीतये)** सोमलता नामक ओषधि के रस के पान के लिये **(आ, गहि)** प्राप्त हूजिये॥३॥

**भावार्थः**-जब विद्वानों के साथ विद्वानों का सङ्ग होता है, तब ऐश्वर्य्य का प्रादुर्भाव होता है॥३॥

**पुनर्मनुष्यैः किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**अयं सोमश्चमू सुतोऽमत्रे परि षिच्यते। प्रिय इन्द्राय वायवे॥४॥**

**अयम्। सोमः। चमू इति। सुतः। अमत्रे। परि। सिच्यते। प्रियः। इन्द्राय। वायवे॥४॥**

**पदार्थः**-**(अयम्)** **(सोमः)** ऐश्वर्य्ययोगः **(चमू)** द्विविधे सेने **(सुतः)** निष्पन्नः **(अमत्रे)** पात्रे **(परि)** सर्वतः **(सिच्यते)** **(प्रियः)** कमनीयः **(इन्द्राय)** परमैश्वर्य्ययुक्ताय **(वायवे)** बलवते॥४॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! योऽयं वायव इन्द्राय सुतः प्रियः सोमोऽमत्रे परि षिच्यते स चमू परि वर्धयति॥४॥

**भावार्थः**-यदि वैद्या ओषधिसारान्निस्सार्य्याऽरोगान् मनुष्यान् कुर्युस्तर्हि सर्व ऐश्वर्य्यवन्तो जायन्ते॥४॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो **(अयम्)** यह **(वायवे)** बलवान् **(इन्द्राय)** अत्यन्त ऐश्वर्य्य से युक्त पुरुष के लिये **(सुतः)** उत्पन्न किया गया **(प्रियः)** सुन्दर **(सोमः)** ऐश्वर्य्य का योग **(अमत्रे)** पात्र में **(परि)** सब



www.9009.co.in

ओर से **(सिच्यते)** सींचा जाता है वह **(चमू)** दो प्रकार की सेनाओं को सब प्रकार से वृद्धि करता है॥४॥

**भावार्थ:**-जो वैद्यजन ओषधियों के सारभागों को निकाल कर रोगरहित मनुष्यों को करें तो सब ऐश्वर्य्यों से युक्त होते हैं॥४॥

**मनुष्यैः किं भोक्तव्यं पेयं चेत्युपदिश्यते॥**

मनुष्यो को क्या भोजन करना और क्या पीना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**वायवा याहि वीतये जुषाणो हव्यदातये।**

**पिबा सुतस्यान्धसो अभि प्रयः॥५॥५॥**

**वायो इति। आ। याहि। वीतये। जुषाणः। हव्यऽदातये। पिब। सुतस्य। अन्धसः। अभि। प्रयः॥५॥**

**पदार्थ:**-**(वायो)** परमबलयुक्त **(आ)** **(याहि)** आगच्छ **(वीतये)** विज्ञानादिप्राप्तये **(जुषाणः)** सेवमानः **(हव्यदातये)** दातव्यदानाय **(पिबा)** अत्र **द्व्यचोऽतस्तिङ** इति दीर्घः। **(सुतस्य)** निष्पन्नस्य **(अन्धसः)** अन्नस्य रसान् **(अभि)** **(प्रयः)** कमनीयं जलम्॥५॥

**अन्वयः**-हे वायो! त्वं हव्यदातये वीतयेऽभि प्रयो जुषाण आ याहि सुतस्यान्धसः पिबा॥५॥

**भावार्थ:**-हे विद्वंस्त्वं रोगप्रमादनाशकं बुद्धिवर्द्धकमन्नं भुङ्क्ष्व रसं पिब॥५॥

**पदार्थ:**-हे **(वायो)** अत्यन्त बल से युक्त! आप **(हव्यदातये)** देने योग्य वस्तु के देने के लिये और **(वीतये)** विज्ञान आदि की प्राप्ति के लिये **(अभि, प्रयः)** सब ओर से सुन्दर जल का **(जुषाणः)** सेवन करते हुए **(आ, याहि)** प्राप्त हूजिये और **(सुतस्य)** उत्पन्न हुए **(अन्धसः)** अन्न के रस का **(पिबा)** पान करिये॥५॥

**भावार्थ:**-हे विद्वन्! आप रोग और प्रमाद के नाश करने और बुद्धि के बढ़ाने वाले अन्न को खाइये और रस को पीजिये॥५॥

**अथ राजामात्यौ किं कुर्य्यातामित्याह॥**

अब राजा और अमात्य क्या करें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**इन्द्रश्च वायवेषां सुतानां पीतिमर्हथः। तान् जुषेथामरेपसावभि प्रयः॥६॥**

**इन्द्रः। च। वायो इति। एषाम्। सुतानाम्। पीतिम्। अर्हथः। तान्। जुषेथाम्। अरेपसौ। अभि। प्रयः॥६॥**

**पदार्थ:**-**(इन्द्रः)** राजा **(च)** **(वायो)** प्रधानपुरुष **(एषाम्)** वर्त्तमानानाम् **(सुतानाम्)** निष्पालनानाम् **(पीतिम्)** पानम् **(अर्हथः)** **(तान्)** **(जुषेथाम्)** **(अरेपसौ)** दयालू **(अभि)** **(प्रयः)** कमनीयमन्नम्॥६॥

**अन्वयः**-हे वायो! इन्द्रश्च युवामेषां सुतानां पीतिमर्हथस्तानरेपसौ सन्तौ प्रयोऽभि जुषेथाम्॥६॥

**भावार्थ:**-यत्र राजामात्या धार्मिकाः स्युस्तत्र सर्वा योग्यता जायेत॥६॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-हे **(वायो)** मुख्य पुरुष! **(इन्द्रः, च)** और राजा आप दोनों **(एषाम्)** इन वर्त्तमान **(सुतानाम्)** पालना से छूटे अर्थात् सिद्ध हुए पदार्थों के **(पीतिम्)** पान के **(अर्हथः)** योग्य होते हैं **(तान्)** उनको और **(अरेपसौ)** दयालु हुए **(प्रयः)** सुन्दर अन्न को **(अभि, जुषेथाम्)** सेवन करें॥६॥

**भावार्थः**-जहाँ राजा और मन्त्री धार्मिक होवें, वहाँ सम्पूर्ण योग्यता होवे॥६॥

**पुनर्मनुष्याः किं कुर्युरित्याह॥**

फिर मनुष्य क्या करें, इस विषय को कहते हैं॥

**सुता इन्द्राय वायवे सोमासो दध्याशिरः।**

**निम्नं न यन्ति सिन्धवोऽभि प्रयः॥७॥**

**सुताः। इन्द्राय। वायवे। सोमासः। दधिऽआशिरः। निम्नम्। न। यन्ति। सिन्धवः। अभि। प्रयः॥७॥**

**पदार्थः**-**(सुताः)** निष्पन्नाः **(इन्द्राय)** परमैश्वर्याय **(वायवे)** वायुवद्बलाय **(सोमासः)** ऐश्वर्य्ययुक्ताः पदार्थाः **(दध्याशिरः)** ये धातुमशितुं योग्याः **(निम्नम्)** [निम्नं] देशम् **(न)** इव **(यन्ति)** प्राप्नुवन्ति **(सिन्धवः)** नद्यः **(अभि)** **(प्रयः)** अतीव प्रियम्॥७॥

**अन्वयः**-हे मनुष्याः! सिन्धवो निम्नं देशं न दध्याशिरः सुतास्सोमासो वायव इन्द्राय प्रयोऽभि यन्ति॥७॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। यथा नद्यः समुद्रं गच्छन्ति तथैव महौषधिसेविनः सुखं यान्ति॥७॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(सिन्धवः)** नदियां **(निम्नम्)** अर्थात् नीचे स्थल को **(न)** जैसे वैसे **(दध्याशिरः)** धारण करने और खाने योग्य **(सुताः)** उत्पन्न हुए **(सोमासः)** ऐश्वर्य्य से युक्त पदार्थ **(वायवे)** वायु के सदृश बलयुक्त **(इन्द्राय)** अत्यन्त ऐश्वर्य्य वाले के लिये **(प्रयः)** अत्यन्त प्रिय को **(अभि)** सब ओर से **(यन्ति)** प्राप्त होते हैं॥७॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जैसे नदियां समुद्र को प्राप्त होती हैं, वैसे ही बड़ी ओषधियों के सेवन करने वाले सुख को प्राप्त होते हैं॥७॥

**अथाग्निरिव विद्वान् कीदृशोऽस्तीत्याह॥**

अब अग्नि के समान विद्वान् कैसा है, इस विषय को कहते हैं॥

**सजूर्विश्वेभिर्देवेभिरश्विभ्यामुषसा सजूः। आ याह्यग्ने अत्रिवत्सुते रण॥८॥**

**सऽजूः। विश्वेभिः। देवेभिः। अश्विऽभ्याम्। उषसा। सऽजूः। आ। याहि। अग्ने। अत्रिऽवत्। सुते। रण॥८॥**

**पदार्थः**-**(सजूः)** संयुक्तः **(विश्वेभिः)** सर्वैः **(देवेभिः)** पृथिव्यादिभिः **(अश्विभ्याम्)** प्रकाशाऽप्रकाशलोकाभ्याम् **(उषसा)** प्रातर्वेलया **(सजूः)** संयुक्तः **(आ)** **(याहि)** आगच्छ **(अग्ने)** पावक इव विद्वान् **(अत्रिवत्)** व्यापकवत् **(सुते)** उत्पन्ने जगति **(रण)** उपदिश॥८॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे अग्ने विद्वन्! यथाऽग्निर्विश्वेभिर्देवेभिस्सजूरश्विभ्यामुषसा सजूः सुतेऽत्रिवदस्ति तथाऽऽयाहि रण॥८॥

**भावार्थः**-अत्र **[**उपमा**]**वाचकलुप्तोपमालङ्कारौ। हे मनुष्या! या विद्युत्सर्वेषु पदार्थेषु व्याप्ताऽस्ति तां विजानीत॥८॥

**पदार्थः**-हे **(अग्ने)** अग्नि के सदृश तेजस्वी विद्वन्! जैसे अग्नि **(विश्वेभिः)** सम्पूर्ण **(देवेभिः)** पृथिवी आदिकों से **(सजूः)** संयुक्त तथा **(अश्विभ्याम्)** प्रकाशित और अप्रकाशित लोकों तथा **(उषसा)** प्रातःकाल से **(सजूः)** संयुक्त **(सुते)** उत्पन्न जगत् में **(अत्रिवत्)** व्यापक के सदृश है, वैसे **(आ, याहि)** प्राप्त हूजिये और **(रण)** उपदेश करिये॥८॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमा और वाचकलुप्तोपमालङ्कार हैं। हे मनुष्यो! जो बिजुली सब पदार्थों में व्याप्त है, उसको विशेष करके जानिये॥८॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**सजूर्मित्रावरुणाभ्यां सजूः सोमेन विष्णुना। आ याह्यग्ने अत्रिवत्सुते रण॥९॥**

**सऽजूः। मित्रावरुणाभ्याम्। सऽजूः। सोमेन। विष्णुना। आ। याहि। अग्ने। अत्रिऽवत्। सुते। रण॥९॥**

**पदार्थः**-**(सजूः)** संयुक्तः **(मित्रावरुणाभ्याम्)** प्राणोदानाभ्याम् **(सजूः)** **(सोमेन)** ऐश्वर्य्येण चन्द्रेण वा **(विष्णुना)** व्यापकेनाकाशेन **(आ)** **(याहि)** **(अग्ने)** **(अत्रिवत्)** **(सुते)** **(रण)**॥९॥

**अन्वयः**-हे अग्ने विद्वन्! त्वं मित्रावरुणाभ्यां सजूः सोमेन विष्णुना सजूः सुतेऽत्रिवदस्ति तद्बोधनायाऽऽयाहि अस्मान् सत्यमुपदेशं रण॥९॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। यदि मनुष्याः प्राणापानादिस्थविद्युद्विद्यां विजानीयुस्तर्हि बहुसुखं लभेरन्॥९॥

**पदार्थः**-हे **(अग्ने)** विद्वन्! आप **(मित्रावरुणाभ्याम्)** प्राण और उदान पवनों से **(सजूः)** संयुक्त **(सोमेन)** ऐश्वर्य्य वा चन्द्र से और **(विष्णुना)** व्यापक आकाश से **(सजूः)** संयुक्त और **(सुते)** उत्पन्न हुए जगत् में **(अत्रिवत्)** व्यापक के सदृश है, उसके जानने के लिये **(आ, याहि)** प्राप्त हूजिये और हम लोगों के लिये सत्य का **(रण)** उपदेश कीजिये॥९॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जो मनुष्य प्राण और अपान आदि में स्थित बिजुली की विद्या को जानें तो बहुत सुख को प्राप्त होवें॥९॥

**पुनः स कीदृश इत्याह॥**

फिर वह कैसा है, इस विषय को कहते हैं॥

**सजूरादित्यैर्वसुभिः सजूरिन्द्रेण वायुना। आ याह्यग्ने अत्रिवत्सुते रण॥१०॥६॥**



www.9009.co.in

**स॒ऽजूः। आ॒दि॒त्यैः। वसु॑ऽभिः। स॒ऽजूः। इन्द्रे॑ण। वा॒युना॑। आ। या॒हि॒। अ॒ग्ने॒। अ॒त्रि॒ऽवत्। सु॒ते। र॒ण॒॥ १०॥**

**पदार्थः**-(**सजूः**) (**आदित्यैः**) मासैः (**वसुभिः**) पृथिव्यादिभिः (**सजूः**) (**इन्द्रेण**) जीवेन (**वायुना**) बलवता (**आ, याहि**) (**अग्ने**) पावकवद्विद्वन् (**अत्रिवत्**) (**सुते**) (**रण**) उपदिश॥ १०॥

**अन्वयः**-हे अग्ने विद्वन्नादित्यैर्वसुभिस्सह सजूर्वायुनेन्द्रेण सजूः सुतेऽत्रिवद् वर्त्तते तद्विज्ञापनायाऽऽयाहि रण च॥ १०॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यो मानसो विद्युदग्निराकाशस्थो वर्त्तते तं विज्ञाय कार्य्येषूपयुङ्ध्वम्॥ १०॥

**पदार्थः**-हे (**अग्नि**) अग्नि के समान विद्वन्! जो (**आदित्यैः**) महीनों और (**वसुभिः**) पृथिवी आदिकों के साथ (**सजूः**) संयुक्त और (**वायुना**) बलवान् (**इन्द्रेण**) जीव के साथ (**सजूः**) संयुक्त (**सुते**) उत्पन्न हुए जगत् में (**अत्रिवत्**) व्यापक के सदृश वर्त्तमान है, उसके जनाने के लिये (**आ, याहि**) प्राप्त हूजिये और (**रण**) उपदेश करिये॥ १०॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जो मन सम्बन्धी बिजुलीरूप अग्नि आकाश में स्थित हुआ वर्त्तमान है, उसको जान कर कार्य्यों में उपयोग करिये॥ १०॥

**पुनर्विद्वद्विषयमाह॥**

फिर विद्वद्विषय को कहतेहैं॥

**स्व॒स्ति नो॑ मिमीताम॒श्विना॒ भगः॑ स्व॒स्ति दे॒व्यदि॑तिरन॒र्वणः॑।**

**स्व॒स्ति पू॒षा असु॑रो दधातु नः स्व॒स्ति द्यावा॑पृथि॒वी सु॑चे॒तुना॑॥ ११॥**

**स्व॒स्ति। न॒ः। मि॒मी॒ता॒म्। अ॒श्विना॑। भगः॑। स्व॒स्ति। दे॒वी। अदि॑तिः। अ॒न॒र्वणः॑। स्व॒स्ति। पू॒षा। असु॑रः। द॒धा॒तु॒। न॒ः। स्व॒स्ति। द्यावा॑पृथि॒वी इति॑। सु॒ऽचे॒तुना॑॥ ११॥**

**पदार्थः**-(**स्वस्ति**) सुखम् (**नः**) अस्मभ्यम् (**मिमीताम्**) सृजेथाम् (**अश्विना**) अध्यापकोपदेशकौ (**भगः**) ऐश्वर्य्यकर्त्ता वायुः (**स्वस्ति**) (**देवी**) देदीप्यमाना (**अदितिः**) अखण्डिता (**अनर्वणः**) अनश्वस्य (**स्वस्ति**) (**पूषा**) पुष्टिकरो दुग्धादिः (**असुरः**) मेघः (**दधातु**) (**नः**) अस्मभ्यम् (**स्वस्ति**) (**द्यावापृथिवी**) प्रकाशभूमी (**सुचेतुना**) सुष्ठु विज्ञापनेन॥ ११॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथाश्विनानर्वणः स्वस्ति मिमीतां भगो नः स्वस्ति देव्यदितिर्विद्या नः स्वस्ति सुचेतुना द्यावापृथिवी नः स्वस्ति पूषाऽसुरो नः स्वस्ति दधातु तथा युष्मभ्यमपि ते दधतु॥ ११॥

**भावार्थः**-ये मनुष्याः पदार्थविद्यया यान् पदार्थान् उपयुञ्जीरन् त एभ्य उपकारं ग्रहीतुं शक्नुयुः॥ ११॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे (**अश्विना**) अध्यापक और उपदेशक जन (**अनर्वणः**) अश्वरहित का (**स्वस्ति**) सुख (**मिमीताम्**) रचें और (**भगः**) ऐश्वर्य्य को करने वाला वायु (**नः**) हम लोगों के लिये



www.9009.co.in

**(स्वस्ति)** सुख **(देवी)** प्रकाशित **(अदितिः)** अखण्डविद्या **(नः)** हम लोगों के लिये **(स्वस्ति)** सुख **(सुचेतुना)** उत्तम विज्ञापन से **(द्यावापृथिवी)** प्रकाश और भूमि हम लोगों के लिये **(स्वस्ति)** सुख और **(पूषा)** पुष्टि करने वाला दुग्धादि पदार्थ और **(असुरः)** मेघ हम लोगों के लिये सुख को **(दधातु)** धारण करे, वैसे आप लोगों के लिये भी वे सुख को धारण करें॥११॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य पदार्थविद्या से जिन पदार्थों को उपयुक्त करें अर्थात् काम में लावें, वे इनसे उपकार ग्रहण करने को समर्थ होवें॥११॥

**पुनर्मनुष्याः कथं विद्यावृद्धिं कुर्युरित्याह॥**

फिर मनुष्य कैसे विद्यावृद्धि करें, इस विषय को कहते हैं॥

**स्वस्तये वायुमुप ब्रवामहै सोमं स्वस्ति भुवनस्य यस्पतिः।**

**बृहस्पतिं सर्वगणं स्वस्तये स्वस्तय आदित्यासो भवन्तु नः॥१२॥**

**स्वस्तये। वायुम्। उप। ब्रवामहै। सोमम्। स्वस्ति। भुवनस्य। यः। पतिः। बृहस्पतिम्। सर्वऽगणम्। स्वस्तये। स्वस्तये। आदित्यासः। भवन्तु। नः॥१२॥**

**पदार्थः**-**(स्वस्तये)** सुखाय **(वायुम्)** वायुविद्याम् **(उप)** **(ब्रवामहै)** उपदिशेम **(सोमम्)** ऐश्वर्य्यम् **(स्वस्ति)** **(भुवनस्य)** लोकस्य **(यः)** **(पतिः)** पालकः **(बृहस्पतिम्)** बृहतीनां स्वामिनम् **(सर्वगणम्)** सर्वे गणाः समूहा यस्मिन् **(स्वस्तये)** निरुपद्रवाय **(स्वस्तये)** परमसुखाय **(आदित्यासः)** अष्टचत्वारिंशद्वर्ष-परिमितेन ब्रह्मचर्येण कृतविद्या मासा इव व्याप्ताखिलविद्या वा **(भवन्तु)** **(नः)** अस्मभ्यम्॥१२॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथा वयं स्वस्तये वायुं सोममुप ब्रवामहै तथा श्रुत्वा यूयमन्यान् प्रत्युप ब्रुवत। यो भुवनस्य पतिः सः स्वस्तये सर्वगणं बृहस्पतिं नः स्वस्ति च दधातु यथाऽऽदित्यासो नः स्वस्तये भवन्तु तथा युष्मभ्यमपि सन्तु॥१२॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। मनुष्याः परस्परं पदार्थविद्यां श्रुत्वाऽभ्यस्य च विद्वांसो भवन्तु॥१२॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे हम लोग **(स्वस्तये)** सुख के लिये **(वायुम्)** वायुविद्या और **(सोमम्)** ऐश्वर्य्य का **(उप, ब्रवामहै)** उपदेश देवें, वैसे सुनकर आप लोग अन्यों के प्रति उपदेश दीजिये और **(यः)** जो **(भुवनस्य** लोक का **(पतिः)** स्वामी है वह **(स्वस्तये)** उपद्रव दूर होने के लिये **(सर्वगणम्)** सम्पूर्ण समूह जिसमें उस **(बृहस्पतिम्)** बड़ी वेदवाणियों के स्वामी को और **(नः)** हम लोगों के लिये **(स्वस्ति)** सुख को धारण करे और जैसे **(आदित्यासः)** अड़तालीस वर्ष परिमित ब्रह्मचर्य्य से किया विद्याभ्यास जिन्होंने तथा जो मास के सदृश सम्पूर्ण विद्याओं में व्याप्त वे हम लोगों के अर्थ **(स्वस्तये)** अत्यन्त सुख के लिये **(भवन्तु)** होवें, वैसे आप लोगों के लिये भी हों॥१२॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। मनुष्य परस्पर पदार्थविद्या को सुन और अभ्यास करके विद्वान् होवें॥१२॥

**पुनर्विद्वांसः कि कुर्य्युरित्याह॥**

फिर विद्वान् जन क्या करें, इस विषय को कहते हैं॥

**विश्वे॑ दे॒वा नो॑ अ॒द्या स्व॒स्तये॑ वैश्वान॒रो वसु॑र॒ग्निः स्व॒स्तये॑।**

**दे॒वा अ॑वन्त्वृ॒भवः॑ स्व॒स्तये॑ स्व॒स्ति नो॑ रु॒द्रः पा॒त्वंह॑सः॥१३॥**

**विश्वे॑। दे॒वाः। नः॒। अ॒द्य। स्व॒स्तये॑। वै॒श्वा॒न॒रः। वसुः॑। अ॒ग्निः। स्व॒स्तये॑। दे॒वाः। अ॒व॒न्तु॒। ऋ॒भवः॑। स्व॒स्तये॑। स्व॒स्ति। नः॒। रु॒द्रः। पा॒तु॒। अंह॑सः॥१३॥**

**पदार्थः**-(**विश्वे**) सर्वे (**देवाः**) विद्वांसः (**नः**) अस्मान् (**अद्या**) अत्र **निपातस्य चे**ति दीर्घः। (**स्वस्तये**) सुखाय (**वैश्वानरः**) विश्वेषु नरेषु राजमानः (**वसुः**) यः सर्वत्र वसति (**अग्निः**) पावकः (**स्वस्तये**) आनन्दाय (**देवाः**) विद्वांसः (**अवन्तु**) (**ऋभवः**) मेधाविनः (**स्वस्तये**) विद्यासुखाय (**स्वस्ति**) सुखकरं वर्त्तमानम् (**नः**) अस्मान् (**रुद्रः**) दुष्टदण्डकः (**पातु**) (**अंहसः**) अपराधात्॥१३॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथाद्या विश्वे देवाः स्वस्तये नोऽवन्तु स्वस्तये वैश्वानरो वसुरग्निरवन्त्वृभवो देवाः स्वस्तयेऽवन्तु रुद्रः स्वस्ति भावयित्वा नोऽस्मानंहसः पातु॥१३॥

**भावार्थः**-विदुषां योग्यतास्ति उपदेशाध्यापनाभ्यां सर्वान् मनुष्यान् सततं रक्षयित्वा वर्धयन्तु॥१३॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे (**अद्या**) आज (**विश्वे, देवाः**) सम्पूर्ण विद्वान् जन (**स्वस्तये**) सुख के लिये (**नः**) हम लोगों की (**अवन्तु**) रक्षा करें और (**स्वस्तये**) सुख के लिये (**वैश्वानरः**) समस्त मनुष्यों में प्रकाशमान (**वसुः**) सर्वत्र वसने वाला (**अग्निः**) अग्नि रक्षा करे और (**ऋभवः**) बुद्धिमान् (**देवाः**) विद्वान् जन (**स्वस्तये**) विद्यासुख के लिये रक्षा करें और (**रुद्रः**) दुष्टों को दण्ड देने वाला (**स्वस्ति**) सुख की भावना करके (**नः**) हम लोगों की (**अंहसः**) अपराध से (**पातु**) रक्षा करे॥१३॥

**भावार्थः**-विद्वानों की योग्यता है कि उपदेश और अध्यापन से सब मनुष्यों की निरन्तर रक्षा करके वृद्धि करावें॥१३॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**स्व॒स्ति मि॑त्रावरुणा स्व॒स्ति प॑थ्ये रेवति।**

**स्व॒स्ति न॒ इन्द्र॑श्चा॒ग्निश्च॑ स्व॒स्ति नो॑ अदिते कृधि॥१४॥**



www.9009.co.in

**स्वस्ति। मित्रावरुणा। स्वस्ति। पथ्ये। रेवति। स्वस्ति। नः। इन्द्रः। च। अग्निः। च। स्वस्ति। नः। अदिते। कृधि॥ १४॥**

**पदार्थः**-(**स्वस्ति**) सुखम् (**मित्रावरुणा**) प्राणोदानौ (**स्वस्ति**) (**पथ्ये**) पथोनपेते कर्मणि (**रेवति**) बहुधनयुक्ते (**स्वस्ति**) (**नः**) अस्मभ्यम् (**इन्द्रः**) वायुः (**च**) (**अग्निः**) विद्युत् (**च**) (**स्वस्ति**) सुखम् (**नः**) अस्मभ्यम् (**अदिते**) अखण्डितविद्य (**कृधि**) कुरु॥१४॥

**अन्वयः**-हे अदिते रेवति! त्वं पथ्ये यथा मित्रावरुणा नः स्वस्ति इन्द्रश्च स्वस्ति अग्निश्च स्वस्ति नः करोति तथा स्वस्ति कृधि॥१४॥

**भावार्थः**-यः सर्वेभ्यः सुखं प्रयच्छति स एव विद्वान् प्रशंसितो भवति॥१४॥

**पदार्थः**-हे (**अदिते**) खण्डितविद्या से रहित (**रेवति**) बहुत धन से युक्त! आप (**पथ्ये**) मार्गयुक्त कर्म्म में जैसे (**मित्रावरुणा**) प्राण और उदान (**नः**) हम लोगों के लिये (**स्वस्ति**) सुख (**इन्द्रः, च**) और वायु (**स्वस्ति**) सुख को (**अग्निः, च**) और बिजुली (**स्वस्ति**) सुख (**नः**) हम लोगों के लिये करती है, वैसे (**स्वस्ति**) सुख (**कृधि**) करिये॥१४॥

**भावार्थः**-जो सब जीवों के लिये सुख देता है वही विद्वान् प्रशंसित होता है॥१४॥

**मनुष्यैर्विद्वत्सङ्गेन धर्ममार्गेण गन्तव्यमित्याह॥**

मनुष्यों को विद्वानों के संग से जो धर्ममार्ग उससे चलना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**स्वस्ति पन्थामनु चरेम सूर्याचन्द्रमसाविव।**

**पुनर्ददताघ्नता जानता सं गमेमहि॥ १५॥ ७॥**

**स्वस्ति। पन्थाम्। अनु। चरेम। सूर्याचन्द्रमसौऽइव। पुनः। ददता। अघ्नता। जानता। सम्। गमेमहि॥ १५॥**

**पदार्थः**-(**स्वस्ति**) सुखम् (**पन्थाम्**) पन्थानाम् (**अनु**) (**चरेम**) अनुगच्छेम (**सूर्याचन्द्रमसाविव**) (**पुनः**) (**ददता**) दानकर्त्रा (**अघ्नता**) अहिंसकेन (**जानता**) विदुषा (**सम्**) (**गमेमहि**) सङ्गच्छेमहि॥१५॥

**अन्वयः**-वयं सूर्याचन्द्रमसाविव स्वस्ति पन्थामनु चरेम पुनर्ददताघ्नता जानता सह सङ्गमेमहि॥१५॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यथा सूर्य्यश्चन्द्रश्च नियमेनाहर्निशं गच्छतस्तथा न्यायमार्गं गच्छत सज्जनैः सह समागमं कुरुतेति॥१५॥

अत्राग्निविद्वद्गुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या।

**इत्येकपञ्चाशत्तमं सूक्तं सप्तमो वर्गश्च समाप्तः॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-हम लोग **(सूर्याचन्द्रमसाविव)** सूर्य्य और चन्द्रमा के सदृश **(स्वस्ति)** सुख **(पन्थाम्)** मार्गों के **(अनु, चरेम)** अनुगामी हों और **(पुनः)** फिर **(ददता)** दान करने **(अघ्नता)** और नहीं नाश करने वाले **(जानता)** विद्वान् के साथ **(सम्, गमेमहि)** मिलें॥१५॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे सूर्य्य और चन्द्रमा नियम से दिनरात्रि चलते हैं, वैसे न्याय के मार्ग को प्राप्त हूजिये और सज्जनों के साथ समागम करिये॥१५॥

इस सूक्त में अग्नि और विद्वान् के गुण-वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ संगति जाननी चाहिये॥

**यह इक्यावनवां सूक्त और सप्तम वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

**अथ सप्तदशर्चस्य द्विपञ्चाशत्तमस्य सूक्तस्य श्यावाश्व आत्रेय ऋषिः। मरुतो देवताः। १, ४, ५, १५ विराडनुष्टुप्। २, ७, १० निचृदनुष्टुप्। ८, १२, १३ अनुष्टुप् छन्दः। गान्धारः स्वरः। ६ पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः। ३, ९, ११ भुरिगुष्णिक् छन्दः। ऋषभः स्वरः। १४ विराड् बृहती। १६ भुरिग्बृहती। १७ स्वराड्बृहती छन्दः। मध्यमः स्वरः॥**

***अथ मनुष्याः सत्कर्त्तव्यान् सत्कुर्युरित्याह॥***

अब सत्रह ऋचा वाले बावनवें सूक्त का प्रारम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में मनुष्य सत्कार करने योग्यों का सत्कार करें, इस विषय को कहते हैं॥

**प्र श्यावाश्व धृष्णुयार्चा मरुद्भिर्ऋक्वभिः।**
**ये अद्रोघमनुष्वधं श्रवो मदन्ति यज्ञियाः॥१॥**

**प्र। श्यावऽअश्व। धृष्णुऽया। अर्च। मरुत्ऽभिः। ऋक्वऽभिः। ये। अद्रोघम्। अनुऽस्वधम्। श्रवः। मदन्ति। यज्ञियाः॥१॥**

**पदार्थः**-(**प्र**) (**श्यावाश्व**) श्यावाः कृष्णशिखाऽग्नयोऽश्वा यस्य तत्सम्बुद्धौ (**धृष्णुया**) दृढत्वेन (**अर्चा**) सत्कुरु। अत्र **द्व्यचोऽतस्तिङ** इति दीर्घः। (**मरुद्भिः**) मनुष्यैः (**ऋक्वभिः**) सत्कर्त्तृभिः (**ये**) (**अद्रोघम्**) द्रोहरहितम् (**अनुष्वधम्**) स्वधामन्नमनुवर्त्तमानम् (**श्रवः**) श्रवणम् (**मदन्ति**) हर्षन्ति (**यज्ञियाः**) यज्ञकर्त्तारः॥१॥

**अन्वयः**-हे श्यावाश्व! ये यज्ञिया अद्रोघमनुश्वधं श्रवो मदन्ति तानृक्वभिर्मरुद्भिर्धृष्णुया प्रार्चा॥१॥

**भावार्थः**-ये मनुष्याः सत्कर्त्तव्यान्त्सत्कुर्वन्ति ते सर्वे सत्कृता भवन्ति॥१॥

**पदार्थः**-हे (**श्यावाश्व**) काली शिखा वाले अग्नि रूप घोड़ों से युक्त (**ये**) जो (**यज्ञियाः**) सत्कार करने वाले (**अद्रोघम्**) द्रोह से रहित (**अनुष्वधम्, श्रवः**) अन्न और श्रवण के अनुकूल वर्त्तमान (**मदन्ति**) आनन्दित होते हैं उनकी (**ऋक्वभिः**) सत्कार करने वाले (**मरुद्भिः**) मनुष्यों के साथ (**धृष्णुया**) दृढ़ता से (**प्र, अर्चा**) सत्कार करो॥१॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य सत्कार करने योग्यों का सत्कार करते हैं, वे सब सत्कृत होते हैं॥१॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**ते हि स्थिरस्य शवसः सखायः सन्ति धृष्णुया।**
**ते यामन्ना धृषद्विनस्त्मना पान्ति शश्वतः॥२॥**



www.9009.co.in

**ते। हि। स्थिरस्य॑। शव॑सः। सखा॑यः। सन्ति॑। धृष्णुऽया। ते। याम॑न्। आ। धृषत्ऽवि॑नः। त्मना॑। पान्ति॑। शश्व॑तः॥ २॥**

**पदार्थः**-(**ते**) (**हि**) (**स्थिरस्य**) (**शवसः**) बलस्य (**सखायः**) (**सन्ति**) (**धृष्णुया**) दृढत्वादिगुण-युक्ताः (**ते**) (**यामन्**) यामनि (**आ**) (**धृषद्विनः**) बहुदृढत्वादिगुणयुक्ताः (**त्मना**) आत्मना (**पान्ति**) (**शश्वतः**) निरन्तराः॥ २॥

**अन्वयः**-ये स्थिरस्य शवसो धृष्णुया सखायस्सन्ति ते हि त्मना यामन् धृषद्विन आ पान्ति ये यामन् प्रवृत्ताः सन्ति ते शश्वतः पथिकान् रक्षन्ति॥ २॥

**भावार्थः**-विदुषामेव मित्रत्वं रक्षणं स्थिरं भवति नान्यस्य॥ २॥

**पदार्थः**-जो (**स्थिरस्य**) स्थिर (**शवसः**) बल के (**धृष्णुया**) दृढ़त्वादि गुणों से युक्त (**सखायः**) मित्र (**सन्ति**) हैं (**ते**) वे (**हि**) ही (**त्मना**) आत्मा से (**यामन्**) मार्ग में (**धृषद्विनः**) बहुत दृढ़त्व आदि गुणों से युक्त (**आ, पान्ति**) अच्छे प्रकार पालन करते हैं और जो मार्ग में प्रवृत्त है (**ते**) वे (**शश्वतः**) निरन्तर पथिकों की रक्षा करते हैं॥ २॥

**भावार्थः**-विद्वानों का ही मित्रपन और रक्षण स्थिर होता है, अन्य किसी का नहीं॥ २॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**ते स्यन्द्रासो नोक्षणोऽति॑ ष्कन्दन्ति शर्व॑रीः।**

**मरुतामधा महो॑ दिवि क्षमा च॑ मन्महे॥ ३॥** [84]

**ते। स्यन्द्रास॑ः। न। उक्षण॑ः। अति॑। स्कन्दन्ति। शर्व॑रीः। मरुता॑म्। अध॑। मह॑ः। दिवि। क्षमा। च। मन्महे॥ ३॥**

**पदार्थः**-(**ते**) (**स्यन्द्रासः**) किञ्चिच्चेष्टमानाः (**न**) इव (**उक्षणः**) सेचकान् (**अति**) (**स्कन्दन्ति**) (**शर्वरीः**) रात्रीः (**मरुताम्**) मनुष्याणाम् (**अधा**) अत्र **निपातस्य चे**ति दीर्घः। (**महः**) महति (**दिवि**) प्रकाशे (**क्षमा**) (**च**) (**मन्महे**) विजानीमः॥ ३॥

**अन्वयः**-हे विद्वन्! ये महो दिवि मरुतां सन्निधौ क्षमाऽधा च स्यन्द्रासो नोक्षणः शर्वरीरति ष्कन्दन्ति तान्वयं मन्महे ते सर्वैर्मनुष्यैर्विज्ञातव्याः॥ ३॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। ये मनुष्या अहर्निशं पुरुषार्थमनुतिष्ठन्ति ते दुःखमुल्लङ्घन्ते॥ ३॥

**पदार्थः**-हे विद्वन्! जो (**महः**) बड़े (**दिवि**) प्रकाश और (**मरुताम्**) मनुष्यों के समीप में (**क्षमा**) (**अधा, च**) और इसके अनन्तर (**स्यन्द्रासः**) कुछ चेष्टा करते हुओं के (**न**) सदृश (**उक्षणः**) सेवन करने

८४. अन्यत्र 'स्पन्द्रासः' दृश्यते।



www.9009.co.in

वा **(शर्वरीः)** रात्रियों को **(अति, स्कन्दन्ति)** अत्यन्त प्राप्त होते हैं, उनको हम लोग **(मन्महे)** विशेष प्रकार से जानते हैं **(ते)** वे सब मनुष्यों को जानने योग्य हैं॥३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जो मनुष्य दिन-रात्रि पुरुषार्थ करते हैं, वे दुःख का उल्लंघन करते हैं॥३॥

**पुनर्मनुष्याः किं कुर्युरित्याह॥**

फिर मनुष्य क्या करें, इस विषय को कहते हैं॥

**मरुत्सु वो दधीमहि स्तोमं यज्ञं च धृष्णुया।**

**विश्वे ये मानुषा युगा पान्ति मर्त्यं रिषः॥४॥**

**मरुत्ऽसु। वः। दधीमहि। स्तोमम्। यज्ञम्। च। धृष्णुऽया। विश्वे। ये। मानुषा। युगा। पान्ति। मर्त्यम्। रिषः॥४॥**

**पदार्थः**-**(मरुत्सु)** मनुष्येषु **(वः)** युष्मान् **(दधीमहि)** **(स्तोमम्)** श्लाघनीयम् **(यज्ञम्)** पुरुषार्थम् **(च)** **(धृष्णुया)** दृढानि **(विश्वे)** सर्वे **(ये)** **(मानुषा)** मनुष्याणामिमानि **(युगा)** युगानि वर्षाणि **(पान्ति)** रक्षन्ति **(मर्त्यम्)** मनुष्यम् **(रिषः)** हिंसकात्॥४॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! ये विश्वे भवन्तो धृष्णुया मानुषा युगा स्तोमं यज्ञं मर्त्यं च रिषः पान्ति तान् वो वयं मरुत्सु दधीमहि॥४॥

**भावार्थः**-ये दैविकमानुषाणि युगानि वर्षाणि च जानन्ति ते गणितविद्याविदो जायन्ते॥४॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(ये)** जो **(विश्वे)** सब आप लोग **(धृष्णुया)** दृढ़ **(मानुषा)** मनुष्यों के सम्बन्धी **(युगा)** वर्षों को **(स्तोमम्)** प्रशंसा करने योग्य **(यज्ञम्)** पुरुषार्थ को **(मर्त्यम्, च)** और मनुष्य को **(रिषः)** हिंसक के **(पान्ति)** रखते अर्थात् बचाते हैं, उन **(वः)** आप लोगों को हम लोग **(मरुत्सु)** मनुष्यों में **(दधीमहि)** धारण करें॥४॥

**भावार्थः**-जो देव और मनुष्यसम्बन्धी युगों और वर्षों को जानते हैं, वे गणितविद्या के जानने वाले होते हैं॥४॥

**पुनर्मनुष्यैः किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

फिर मुष्यों को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**अर्हन्तो ये सुदानवो नरो असामिशवसः।**

**प्र यज्ञं यज्ञियेभ्यो दिवो अर्चा मरुद्भ्यः॥५॥८॥**

**अर्हन्तः। ये। सुऽदानवः। नरः। असामिऽशवसः। प्र। यज्ञम्। यज्ञियेभ्यः। दिवः। अर्च। मरुत्ऽभ्यः॥५॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**अर्हन्तः**) योग्यतां प्राप्नुवन्तः (**ये**) (**सुदानवः**) उत्तमदानाः (**नरः**) (**असामिशवसः**) अखण्डितबलाः (**प्र**) (**यज्ञम्**) सत्काराख्यं कर्म (**यज्ञियेभ्यः**) यज्ञसम्पादकेभ्यः (**दिवः**) कामयमानाः (**अर्चा**) सत्कुरु। अत्र **द्व्यचोऽतस्तिङ** इति दीर्घः। (**मरुद्भ्यः**) मनुष्येभ्यः॥५॥

**अन्वयः**-हे विद्वन्! यज्ञियेभ्यो यज्ञमर्हन्तः सुदानवोऽसामिशवसो नरो दिवो मरुद्भ्यो यज्ञं साध्नुवन्ति ताँस्त्वं प्रार्चा॥५॥

**भावार्थः**-मनुष्या यावद्बलं वर्द्धितुमिच्छेयुस्तावदेव वर्द्धितुं शक्यम्॥५॥

**पदार्थः**-हे विद्वन्! (**ये**) जो (**यज्ञियेभ्यः**) यज्ञ करनेवालों के लिये (**यज्ञम्**) सत्कार नामक कर्म्म की (**अर्हन्तः**) योग्यता को प्राप्त होते हुए (**सुदानवः**) उत्तम दान देने वाले (**असामिशवसः**) अखण्डित बलयुक्त (**नरः**) जन (**दिवः**) कामना करते हुए (**मरुद्भ्यः**) मनुष्यों के लिये सत्कार नामक कर्म्म को सिद्ध करते हैं, उनका आप (**प्र, अर्चा**) सत्कार करिये॥५॥

**भावार्थः**-मनुष्य जितने बल बढ़ाने की इच्छा करें, उतना ही बढ़ सकता है॥५॥

**पुनर्मनुष्यैः किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**आ रुक्मैरा युधा नर ऋष्वा ऋष्टीरसृक्षत।**

**अन्वेनाँ अह विद्युतो मरुतो जज्झतीरिव भानुरर्त त्मना दिवः॥६॥**

आ। रुक्मैः। आ। युधा। नरः। ऋष्वाः। ऋष्टीः। असृक्षत। अनु। एनान्। अह। विऽद्युतः। मरुतः। जज्झतीःऽइव। भानुः। अर्त। त्मना। दिवः॥६॥

**पदार्थः**-(**आ**) समन्तात् (**रुक्मैः**) रोचमानैः प्रदीप्तैः (**आ**) (**युधा**) युद्धेन (**नरः**) नायकाः (**ऋष्वाः**) महान्तः (**ऋष्टीः**) प्राप्ताः सेनाजनाः (**असृक्षत**) सृजन्तु (**अनु**) (**एनान्**) (**अह**) विनिग्रहे (**विद्युतः**) (**मरुतः**) वायो (**जज्झतीरिव**) शब्दकारिण्यः शीघ्रगतयो वा ता इव (**भानुः**) दीप्तिः (**अर्त्त**) प्राप्नुत (**त्मना**) आत्मना (**दिवः**) कामयमानाः॥६॥

**अन्वयः**-हे विद्वांसः! यथा ऋष्वा नरो युधर्ष्टीरान्वसृक्षत। एनानह जज्झतीरिव विद्युतो मरुतो दिवो भानुस्त्मना ज्ञातुं योग्याः सन्ति तान् यूयं रुक्मैराऽऽर्त्त॥६॥

**भावार्थः**-विद्वांसो मनुष्यान् विद्युदादिविद्याः प्रापयन्तु॥६॥

**पदार्थः**-हे विद्वानो! जैसे (**ऋष्वाः**) बड़े (**नरः**) अग्रणी जन (**युधा**) युद्ध से (**ऋष्टीः**) प्राप्त हुए सेनाओं के जन (**आ, अनु, असृक्षत**) सब प्रकार अनुकूल उत्पन्न करें और (**एनान्**) इनको (**अह**) ग्रहण करने में (**जज्झतीरिव**) शब्द करने वा शीघ्र चलनेवालियों के सदृश (**विद्युतः**) बिजुली और (**मरुतः**) पवन की (**दिवः**) कामना करते हुए जन और (**भानुः**) दीप्ति (**त्मना**) आत्मा से जानने योग्य हैं, उनको आप (**रुक्मैः**) रोचमान प्रदीप्तों से (**आ**) सब प्रकार (**अर्त्त**) प्राप्त हूजिये॥६॥



www.9009.co.in

**भावार्थ:**-विद्वान् जन मनुष्यों के लिये बिजुली आदि विद्याओं को प्राप्त करावें॥६॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**ये वा॑वृधन्त पार्थि॑वा य उ॒राव॒न्तरि॑क्ष॒ आ।**

**वृ॒जने॑ वा न॒दीनां॑ स॒धस्थे॑ वा म॒हो दि॒वः॥७॥**

**ये। व॒वृ॒धन्त॑। पार्थि॑वाः। ये। उ॒रौ। अ॒न्तरि॑क्षे। आ। वृ॒जने॑। वा॒। न॒दीना॑म्। स॒धऽस्थे॑। वा। म॒हः। दि॒वः॥७॥**

**पदार्थ:**-**(ये)** **(वावृधन्त)** भृशं वर्धन्ते **(पार्थिवा:)** पृथिव्यां विदिता: **(ये)** **(उरौ)** बहुरूपे **(अन्तरिक्षे)** आकाशे **(आ)** **(वृजने)** वृजन्ति यस्मिँस्तस्मिन् **(वा)** **(नदीनाम्)** **(सधस्थे)** समानस्थाने **(वा)** **(महः)** महान्त: **(दिवः)** कामयाना:॥७॥

**अन्वय:**-हे मनुष्या! य उरावन्तरिक्षे पार्थिवा वावृधन्त ये वा नदीनां सधस्थे वृजने वाऽऽवावृधन्त महो दिवो वावृधन्त तान् यूयं विजानीत॥७॥

**भावार्थ:**-ये पृथिव्यादिविद्यां जानन्ति ते सर्वतो वर्धन्ते॥७॥

**पदार्थ:**-हे मनुष्यो! **(ये)** जो **(उरौ)** बहुत रूप वाले **(अन्तरिक्षे)** आकाश में **(पार्थिव:)** पृथिवी में जाने गये पदार्थ **(वावृधन्त)** अत्यन्त वृद्धि को प्राप्त होते हैं **(ये, वा)** अथवा जो **(नदीनाम्)** नदियों के **(सधस्थे)** समान स्थान में **(वृजने, वा)** वा वर्जते हैं जिसमें उसमें **(आ)** सब प्रकार अत्यन्त वृद्धि को प्राप्त होते हैं और **(महः)** महान् **(दिवः)** कामना करने वाले वृद्धि को प्राप्त होते हैं, उनको आप लोग विशेष करके जानिये॥७॥

**भावार्थ:**-जो पृथिवी आदिकों की विद्या को जानते हैं, वे सब प्रकार वृद्धि को प्राप्त होते हैं॥७॥

**पुनर्विद्वान् किं कुर्यादित्याह॥**

फिर विद्वान् क्या करे, इस विषय को कहते हैं॥

**शर्धो॒ मारु॑त॒मुच्छं॑स स॒त्यश॑वस॒मृभ्व॑सम्।**

**उ॒त स्म॒ ते शु॒भे नर॒: प्र स्य॒न्द्रा यु॑जत॒ त्मना॑॥८॥**

**शर्धः॑। मारु॑तम्। उत्। शं॒स॒। स॒त्यऽश॑वसम्। ऋभ्व॑सम्। उ॒त। स्म॒। ते। शु॒भे। नर॑ः। प्र। स्य॒न्द्राः। यु॒ज॒त। त्मना॑॥८॥**

**पदार्थ:**-**(शर्धः)** बलम् **(मारुतम्)** मनुष्याणामिदम् **(उत्)** **(शंस)** स्तुहि **(सत्यशवसम्)** सत्यं शवो बलं यस्य **(ऋभ्वसम्)** ऋभुं मेधाविनमसते गृह्णाति तम्। **ऋभुरिति मेधाविनामसु पठितम्।** (निघं०३.१५) अस-गत्यादि:। **(उत)** **(स्म)** **(ते)** **(शुभे)** **(नरः)** नेतारो मनुष्या: **(प्र)** **(स्यन्द्राः)** धैर्य्यगतय: **(युजत)** **(त्मना)** आत्मना॥८॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे विद्वँस्त्व मारुतं शर्धः सत्यशवसमृभ्वसमुच्छंस। उत स्म ते स्यन्द्रा नरो यूयं शुभे त्मना परमात्मानं प्र युजत॥८॥

**भावार्थः**-मनुष्यैरुत्तमं बलं परमात्मा च सततं प्रशंसनीया:॥८॥

**पदार्थः**-हे विद्वन्! आप **(मारुतम्)** मनुष्यों के सम्बन्धी इस **(शर्धः)** बल और **(सत्यशवसम्)** सत्य बल जिसका उस **(ऋभ्वसम्)** बुद्धिमान् को ग्रहण करने वाले की **(उत्, शंस)** अच्छे प्रकार स्तुति करो **(उत)** और **(स्म)** निश्चित **(ते)** वे **(स्यन्द्राः)** धीरतायुक्त गमन वाले **(नरः)** नायक आप लोग **(शुभे)** उत्तम कार्य में **(त्मना)** आत्मा से परमात्मा को **(प्र, युजत)** प्रयुक्त करो॥८॥

**भावार्थः**-मनुष्यों को चाहिये कि उत्तम बल और परमात्मा की निरन्तर प्रशंसा करें॥८॥

**पुनर्मनुष्यैः किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**उत स्म ते परुष्ण्यामूर्णा वसत शुन्ध्यवः।**

**उत पव्या रथानामद्रिं भिन्दन्त्योजसा॥९॥**

**उत। स्म। ते। परुष्ण्याम्। ऊर्णाः। वसत। शुन्ध्यवः। उत। पव्या। रथानाम्। अद्रिम्। भिन्दन्ति। ओजसा॥९॥**

**पदार्थः**-**(उत)** अपि **(स्म)** एव **(ते)** **(परुष्ण्याम्)** पालनकर्त्र्याम् **(ऊर्णाः)** रक्षिताः **(वसत)** **(शुन्ध्यवः)** शोधिकाः **(उत)** **(पव्या)** रथचक्राणां रेखाः **(रथानाम्)** **(अद्रिम्)** मेघम् **(भिन्दन्ति)** **(ओजसा)** बलेन॥९॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! याः परुष्ण्यां शुन्ध्यवो रथानां पव्या इवौजसाऽद्रिं भिन्दन्ति। उत वर्षन्ति तास्ते स्युः। उत स्मोर्णाः सन्तोऽत्र सत्कृता यूयं वसत॥९॥

**भावार्थः**-यथा मेघा वर्षन्तः पृथिवीं विदीर्णन्ति तथैव सत्पुरुषसङ्गोऽशुद्धिं छिनत्ति॥९॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो **(परुष्ण्याम्)** पालन करने वाली में **(शुन्ध्यवः)** शोधन करने वाली **(रथानाम्)** वाहनों के **(पव्या)** रथों के चक्रों पहियों की लीकों के सदृश **(ओजसा)** बल से **(अद्रिम्)** मेघ को **(भिन्दन्ति)** तोड़ती हैं **(उत)** और वर्षाती हैं, वे **(ते)** तुम्हारे लिये हों **(उत)** और **(स्म)** निश्चित **(ऊर्णाः)** रक्षित हुए यहाँ सत्कार किये गये आप लोग **(वसत)** वसिये॥९॥

**भावार्थः**-जैसे मेघ वर्षते हुए पृथिवी को विदीर्ण करते हैं, वैसे ही श्रेष्ठ पुरुषों का सङ्ग अशुद्धि का नाश करता है॥९॥

**मनुष्यैः सर्वे विद्याधर्ममार्गा अन्वेषणीया इत्याह॥**

मनुष्यों को समस्त विद्या धर्ममार्ग ढूंढने चाहियें, इस विषय को कहते हैं॥



www.9009.co.in

**आप॑थयो॒ विप॑थ॒योन्त॑स्पथा॒ अनु॑पथाः।**

**ए॒तेभि॒र्मह्यं॒ नाम॑भिर्य॒ज्ञं वि॑ष्टा॒र ओ॑हते॥१०॥९॥**

**आऽप॑थयः। विऽप॑थयः। अन्त॑ःऽपथा। अनु॑ऽपथाः। ए॒तेभि॑ः। मह्य॑म्। नाम॑ऽभिः। य॒ज्ञम्। वि॒ऽस्ता॒रः। ओ॒ह॒ते॥१०॥**

**पदार्थः**-(**आपथयः**) समन्तादभिमुखः पन्था येषान्ते (**विपथयः**) विविधा विरुद्धा वा पन्थानो येषान्ते (**अन्तस्पथा**) अन्तराभ्यन्तरे पन्था येषान्ते (**अनुपथाः**) अनुकूलः पन्था येषान्ते (**एतेभिः**) मार्गैर्मार्गस्थैर्वा (**मह्यम्**) (**नामभिः**) संज्ञाभिः (**यज्ञम्**) विद्वत्सत्कारादिकम् (**विष्टारः**) प्रसारः (**ओहते**) प्राप्नोति॥१०॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! आपथयो विपथयोऽन्तस्पथाऽनुपथा एतेभिर्नामभिर्मह्यं यज्ञं विष्टार ओहते॥१०॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यूयं सर्वविद्यातज्जन्यक्रियाकौशलमार्गान् यथावत् साक्षात् कृत्याऽन्यानपि सम्यक् विज्ञापयत॥१०॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! (**आपथयः**) सब ओर अभिमुख मार्ग जिनका वे और (**विपथयः**) अनेक प्रकार के वा विरुद्ध मार्ग जिनके वे और (**अन्तस्पथा**) भीतर मार्ग जिनके वे और (**अनुपथाः**) अनुकूल मार्ग जिनका वे (**एतेभिः**) इन मार्गों में स्थित हुओं और (**नामभिः**) संज्ञाओं से (**मह्यम्**) मेरे लिये (**यज्ञम्**) विद्वानों के सत्कार आदि कर्म को (**विष्टारः**) विस्तार (**ओहते**) प्राप्त होता है॥१०॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! आप लोग सम्पूर्ण विद्याओं और उनसे उत्पन्न क्रिया हुए क्रिया कौशल मार्गों को यथावत् प्रत्यक्ष करके अन्यों को भी उत्तम प्रकार जनाओ सिखलाओ॥१०॥

**मनुष्याः क्रमेण विद्यादिव्यवहारं प्राप्नुयुरित्याह॥**

मनुष्य क्रम से विद्यादि व्यवहार को प्राप्त होवें, इस विषय को कहते हैं॥

**अधा॒ नरो॒ न्यो॑ह॒तेऽधा॑ नि॒युत॑ ओहते।**

**अधा॒ पारा॑वता॒ इति॑ चि॒त्रा रू॒पाणि॒ दर्श्या॑॥११॥**

**अध॑। नर॑ः। नि। ओ॒ह॒ते। अध॑। नि॒ऽयुत॑ः। ओ॒ह॒ते। अध॑। पारा॑वताः। इति॑। चि॒त्रा। रू॒पाणि॑। दर्श्या॑॥११॥**

**पदार्थः**-(**अधा**) अथ। अत्र सर्वत्र **निपातस्य चे**ति दीर्घः। (**नरः**) विद्यासु नायकः (**नि**) निश्चयेन (**ओहते**) प्राप्नोति प्रापयति वा (**अधा**) (**नियुतः**) निश्चितवाय्वादिगतिमान् (**ओहते**) (**अधा**) (**पारावताः**) पारावति दूरदेशे भवाः (**इति**) अनेन प्रकारेण (**चित्रा**) चित्राण्यद्भुतानि (**रूपाणि**) (**दर्श्या**) द्रष्टुं योग्यानि॥११॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! अधा यो नरो विद्याकार्य्याणि न्योहतेऽधा नियुत ओहतेऽधा पारावता दर्श्या चित्रा रूपाणीति साक्षात्करोति स कृतकृत्यो जायते॥११॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-मनुष्यैः पुरस्ताद्ब्रह्मचर्येण विद्या अधीत्य तदनन्तरं कार्य्यरचनकौशलं साक्षात्कृत्य पुनरनुमानेन दूरस्थानामदृश्यानां पदार्थानां विज्ञानं कृत्वाऽश्चर्य्याणि कर्माणि कर्त्तव्यानि॥११॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(अधा)** इसके अनन्तर जो **(नरः)** विद्याओं में अग्रणी जन विद्याओं के कार्यों को **(नि)** निश्चय करके **(ओहते)** प्राप्त होते हैं, और **(अधा)** इसके अनन्तर **(नियुतः)** निश्चित वायु आदि गमन वाला **(ओहते)** प्राप्त होता वा प्राप्त कराता है **(अधा)** इसके अनन्तर **(पारावता)** दूर देश में होने वालो **(दर्श्या)** देखने के योग्य **(चित्रा)** अद्भुत **(रूपाणि)** रूपों के **(इति)** इस प्रकार से प्रत्यक्ष करता है, वह कृत कृत्य होता है॥११॥

**भावार्थः**-मनुष्यों में चाहिये कि पहिले ब्रह्मचर्य्य से विद्याओं को पढ़कर उसके अनन्तर कार्य्यों के रचने में प्रवीणता को प्रत्यक्ष करके फिर अनुमान से दूर में स्थित अदृश्य पदार्थों के विज्ञान को करके आश्चर्य्ययुक्त कार्य्य करें॥११॥

**पुनर्मनुष्याः कथं वर्त्तेरन्नित्याह॥**

फिर मनुष्य कैसे वर्त्तें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**छ॒न्दुः॒स्तुभः॑ कु॒भ॒न्य॑व॒ उत्स॒मा की॒रिणो॑ नृतुः।**

**ते मे॒ के चि॒न्न ता॒यव॒ ऊमा॑ आसन् दृ॒शि त्वि॒षे॥१२॥**

**छ॒न्दुः॒स्तुभः॑। कु॒भ॒न्यवः॑। उत्स॑म्। आ। की॒रिणः॑। नृ॒तुः। ते। मे॒। के। चि॒त्। न। ता॒यवः॑। ऊमाः॑। आ॒स॒न्। दृ॒शि। त्वि॒षे॥१२॥**

**पदार्थः**-**(छन्दःस्तुभः)** ये छन्दोभिः स्तोभनं स्तवनं कुर्वन्ति **(कुभन्यवः)** आत्मनः कुभनमुन्दनमिच्छवः **(उत्सम्)** कूपमिव **(आ)** समन्तात् **(कीरिणः)** विक्षेपकाः **(नृतुः)** नर्त्तक इव **(ते)** **(मे)** मम **(के)** **(चित्)** अपि **(न)** **(तायवः)** स्तेनाः **(ऊमाः)** सर्वस्य रक्षणादिकर्त्तारः **(आसन्)** भवेयुः **(दृशि)** दर्शके **(त्विषे)** शरीरात्मदीप्तिबलाय॥१२॥

**अन्वयः**-ये के चिच्छन्दःस्तुभ उत्समिव कुभन्यव ऊमा दृशि मे त्विष आसँस्ते नृतुरिवाऽऽकीरिणस्तायवो न स्युः॥१२॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! येऽन्येषां विक्षेपं तायवं चाऽकृत्वा तृषातुराय जलमिव शान्तिप्रदा भूत्वा सर्वेषां शरीरात्मबलं वर्धयन्ति ते एवाप्ता भवन्ति॥१२॥

**पदार्थः**-जो **(के)** कोई **(चित्)** भी **(छन्दःस्तुभः)** छन्दों से स्तुति करने वाले **(उत्सम्)** कूप के सदृश **(कुभन्यवः)** अपने को आर्द्रपन की इच्छा करते हुए **(ऊमाः)** सब के रक्षण आदि करने वाले **(दृशि)** दर्शक में **(मे)** मेरे **(त्विषे)** शरीर और आत्मा के प्रकाश और बल के लिये **(आसन्)** होवें **(ते)** वे **(नृतुः)** नाचने वाले के सदृश **(आ)** सब ओर से **(कीरिणः)** विक्षेप व्याकुल करने वाले **(तायवः)** चोर जन **(न)** न होवें॥१२॥



www.9009.co.in

**भावार्थ:**-हे मनुष्यो! जो अन्य जनों के विक्षेप और चोरी न करके जैसे पिपासा से व्याकुल के लिये जल वैसे शान्ति के देने वाले होकर सब के शरीर और आत्मा के बल को बढ़ाते हैं, वे ही श्रेष्ठ यथार्थवक्ता होते हैं॥१२॥

**मनुष्यैः केषां सङ्गः कर्त्तव्य इत्याह॥**

मनुष्यों को किसका संग करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**य ऋ॒ष्वा ऋ॒ष्टिवि॑द्युतः क॒वयः॒ सन्ति॑ वे॒धसः॑।**

**तमृ॑षे॒ मारु॑तं ग॒णं न॑म॒स्या र॒मया॑ गि॒रा॥१३॥**

**ये। ऋ॒ष्वाः। ऋ॒ष्टिऽवि॑द्युतः। क॒वयः॑। सन्ति॑। वे॒धसः॑। तम्। ऋ॒षे॒। मारु॑तम्। ग॒णम्। न॒म॒स्य। र॒मय॑। गि॒रा॥१३॥**

**पदार्थ:**-(**ये**) (**ऋष्वाः**) महान्तो महाशयाः (**ऋष्टिविद्युतः**) विद्युति ऋष्टिर्विज्ञानं येषान्ते (**कवयः**) सकलशास्त्रेषु निपुणाः (**सन्ति**) (**वेधसः**) मेधाविनः (**तम्**) (**ऋषे**) वेदार्थवित् (**मारुतम्**) विदुषां मनुष्याणामिमम् (**गणम्**) समूहम् (**नमस्या**) सत्कुरु। अत्र **संहितायामि**ति दीर्घः। (**रमया**) क्रीडयाऽऽनन्दय। अत्रापि **संहितायामि**ति दीर्घः। (**गिरा**) सुशिक्षितया सत्यया कोमलया वाचा॥१३॥

**अन्वयः**-हे ऋषे! य ऋष्टिविद्युतः कवय ऋष्वा वेधसः सन्ति तान् गिरा नमस्याऽनेन तं मारुतं गणं रमया॥१३॥

**भावार्थ:**-ये महाशया आप्तान् सेवित्वा सत्कृत्य सुशिक्षां प्राप्य सत्यासत्यविवेकायोपदेशं कृत्वा सर्वान् मनुष्यानानन्दयन्ति ते सर्वैः सत्कर्त्तव्या भवन्ति॥१३॥

**पदार्थ:**-हे (**ऋषे**) वेदार्थ के जानने वाले! (**ये**) जो (**ऋष्टिविद्युतः**) ऋष्टिविद्युत् अर्थात् बिजुली में विज्ञान जिनका वे (**कवयः**) सम्पूर्ण शास्त्रों में निपुण (**ऋष्वाः**) बड़े महाशय (**वेधसः**) बुद्धिमान् जन (**सन्ति**) हैं उनका (**गिरा**) उत्तम प्रकार शिक्षित सत्य कोमल वाणी से (**नमस्या**) सत्कार करिये और इससे (**तम्**) उस (**मारुतम्**) विद्वान् मनुष्यों के (**गणम्**) समूह को (**रमया**) क्रीड़ा से आनन्दित करिये॥१३॥

**भावार्थ:**-जो महाशय यथार्थवक्त जनों की सेवा और सत्कार कर उत्तम शिक्षा को प्राप्त होकर सत्य और असत्य के विवेक के लिये उपदेश करके सब मनुष्यों को आनन्दित करते हैं, वे सब लोगों से सत्कार पाने योग्य होते हैं॥१३॥

**पुनर्मनुष्यैः किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**अच्छ॑ ऋषे॒ मारु॑तं ग॒णं दा॒ना मि॒त्रं न यो॒षणा॑।**

**दि॒वो वा॑ धृष्णव॒ ओज॑सा स्तु॒ता धी॒भिरि॑षण्यत॥१४॥**



www.9009.co.in

**अच्छ॑। ऋ॒षे॒। मारु॑तम्। ग॒णम्। दा॒ना। मि॒त्रम्। न। यो॒षणा॑। दि॒वः। वा॒। धृ॒ष्ण॒वः॒। ओज॑सा। स्तु॒ताः। धी॒भिः। इ॒ष॒ण्य॒त॒॥ १४॥**

**पदार्थः**-(**अच्छ**) (**ऋषे**) विद्वन् (**मारुतम्**) मरुतां मनुष्याणामिमम् (**गणम्**) समूहम् (**दाना**) दानानि (**मित्रम्**) सखायम् (**न**) इव (**योषणा**) स्त्री (**दिवः**) कामयमानाः (**वा**) (**धृष्णवः**) धृष्टाः प्रगल्भा दृढनिश्चयाः (**ओजसा**) बलादिना (**स्तुताः**) प्रशंसिताः (**धीभिः**) प्रज्ञाभिः (**इषण्यत**) प्राप्नुवन्ति॥ १४॥

**अन्वयः**-हे ऋषे! त्वं योषणा मित्रं न मारुतं गणमच्छ प्राप्नुहि वा यथा दिवो धृष्णवः स्तुता धीभिरोजसा दाना मारुतं गणमिषण्यत तथा सर्वे प्राप्नुवन्तु॥ १४॥

**भावार्थः**-अत्रोपमावाचकलुप्तोपमालङ्कारौ। सर्वेऽध्यापका अध्येतारश्च मित्रवद्वर्त्तित्वा वाय्वादि-पदार्थविद्यां सङ्गृह्णन्तु॥ १४॥

**पदार्थः**-हे (**ऋषे**) विद्वन्! आप (**योषणा**) स्त्री और (**मित्रम्**) मित्र के (**न**) सदृश (**मारुतम्**) मनुष्यसम्बन्धी (**गणम्**) समूह को (**अच्छ**) उत्तम प्रकार प्राप्त हूजिये (**वा**) वा जैसे (**दिवः**) कामना करते हुए (**धृष्णवः**) धृष्ट, प्रगल्भ, दृढ़ निश्चय वाले (**स्तुताः**) प्रशंसितजन (**धीभिः**) बुद्धियों और (**ओजसा**) बल आदि से (**दाना**) दानों को देकर मनुष्यसम्बन्धी समूह को (**इषण्यत**) प्राप्त होते हैं, वैसे सब प्राप्त हों॥ १४॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमा और वाचकलुप्तोपमालङ्कार हैं। सम्पूर्ण अध्यापक और पढ़ने वाले मित्र के सदृश परस्पर वर्त्ताव करके वायु आदि पदार्थों की विद्या का अच्छे प्रकार ग्रहण करें॥ १४॥

**पुनर्मनुष्या विद्वत्सङ्गेन विद्याः प्राप्नुवन्त्वित्याह॥**

फिर मनुष्य विद्वानों के संग से विद्याओं को प्राप्त हों, इस विषय को कहते हैं॥

**नू म॑न्वा॒न ए॑षां दे॒वाँ अच्छा॒ न व॒क्षणा॑।**

**दा॒ना स॑चेत सू॒रिभि॒र्याम॑श्रुतेभिर॒ञ्जिभि॑ः॥ १५॥**

**नु। म॒न्वा॒नः। ए॒षा॒म्। दे॒वान्। अच्छ॑। न। व॒क्षणा॑। दा॒ना। स॒चे॒त। सू॒रिऽभि॑ः। याम॑ऽश्रुतेभिः। अ॒ञ्जिऽभि॑ः॥ १५॥**

**पदार्थः**-(**नू**) (**मन्वानः**) मननशीलः (**एषाम्**) मनुष्याणां मध्ये (**देवान्**) दिव्यान् विदुषः पदार्थान् वा (**अच्छा**) अत्र **संहितायामि**ति दीर्घः। (**न**) निषेधे (**वक्षणा**) वहनेन (**दाना**) दानानि (**सचेत**) सम्बध्नीत (**सूरिभिः**) विद्वद्भिः (**यामश्रुतेभिः**) यामाः श्रुता यैस्तैः (**अञ्जिभिः**) विद्याशुभगुणप्रकटकारकैः॥ १५॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यो मन्वानो यामश्रुतेभिरञ्जिभिः सूरिभिः सहैषां मध्ये देवानच्छाऽऽप्नोति वक्षणा दाना करोति स नू दारिद्र्यमज्ञानञ्च नाप्नोति तं यूयं सचेत॥ १५॥

**भावार्थः**-ये मनुष्या विद्वत्सङ्गप्रिया विद्यादानरुचयः स्युस्त एव सद्यो विद्यामाप्नुयुः॥ १५॥



www.9009.co.in

**पदार्थ:**-हे मनुष्यो! जो **(मन्वानः)** मननशील पुरुष **(यामश्रुतेभिः)** याम प्रहर सुने गये जिनसे उन **(अञ्जिभिः)** विद्या और श्रेष्ठ गुणों के प्रकट करने वाले **(सूरिभिः)** विद्वानों के साथ **(एषाम्)** इन मनुष्यों के मध्य में **(देवान्)** श्रेष्ठ विद्वानों वा श्रेष्ठ पदार्थों को **(अच्छा)** उत्तम प्रकार प्राप्त होता और **(वक्षणा)** प्रवाह से **(दाना)** दानों को करता है वह **(नू)** निश्चय दारिद्र्य और अज्ञान को **(न)** नहीं प्राप्त होता है, उसको आप लोग **(सचेत)** सम्बन्धित करिये॥१५॥

**भावार्थ:**-जो मनुष्य विद्वानों के संग को प्रिय मानने और विद्या के दान में रुचि करने वाले होवें, वे ही शीघ्र विद्या को प्राप्त होवें॥१५॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**प्र ये मे बन्ध्वेषे गां वोचन्त सूरयः पृश्निं वोचन्त मातरम्।**

**अधा पितरमिष्मिणं रुद्रं वोचन्त शिक्वसः॥१६॥**

**प्र। ये। मे। बन्धुऽएषे। गाम्। वोचन्त। सूरयः। पृश्निम्। वोचन्त। मातरम्। अध। पितरम्। इष्मिणम्। रुद्रम्। वोचन्त। शिक्वसः॥१६॥**

**पदार्थ:**-**(प्र)** **(ये)** **(मे)** मम **(बन्ध्वेषे)** बन्धूनामिच्छायै **(गाम्)** वाचम् **(वोचन्त)** ब्रुवन्ति **(सूरयः)** विद्वांसः **(पृश्निम्)** अन्तरिक्षम् **(वोचन्त)** **(ब्रुवन्ति)** **(मातरम्)** जननीम् **(अधा)** अथ। अत्र **निपातस्य चे**ति दीर्घः। **(पितरम्)** पालकं जनकम् **(इष्मिणम्)** इष्मो बहुविधो **[**बलं**]** विद्यते यस्य तम् **(रुद्रम्)** दुष्टानां भयप्रदम् **(वोचन्त)** उपदिशेयुः **(शिक्वसः)** शक्तिमन्तः॥१६॥

**अन्वयः**-ये सूरयो मे बन्ध्वेषे गां प्र वोचन्त पृश्निं मातरं वोचन्त। अधा शिक्वस इष्मिणं पितरं रुद्रं वोचन्त ते मया सत्कर्त्तव्याः॥१६॥

**भावार्थ:**-मनुष्यैरेवं वेदितव्यं येऽस्मभ्यं विद्यां सुशिक्षां दद्युस्तेऽस्माभिः सदा माननीया भवेयुः॥१६॥

**पदार्थ:**-**(ये)** जो **(सूरयः)** विद्वान् जन **(मे)** मेरी **(बन्ध्वेषे)** बन्धुओं की इच्छा के लिये **(गाम्)** वाणी को **(प्र, वोचन्त)** उत्तम प्रकार उच्चारण करते हैं और **(पृश्निम्)** अन्तरिक्ष और **(मातरम्)** माता का **(वोचन्त)** उपदेश करते हैं **(अधा)** इसके अनन्तर **(शिक्वसः)** सामर्थ्य वाले **(इष्मिणम्)** बहुत प्रकार का बल जिसका उस **(पितरम्)** पालन करने वाले पिता और **(रुद्रम्)** दुष्टों के भय देने वाले का **(वोचन्त)** उपदेश करते हैं, वे मुझ से सत्कार करने योग्य हैं॥१६॥

**भावार्थ:**-मनुष्यों को इस प्रकार जानना चाहिये कि जो हम लोगों के लिये विद्या और उत्तम शिक्षा को देवें, वे हम लोगों से सदा आदर करने योग्य होवें॥१६॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**



www.9009.co.in

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**सप्त मे सप्त शाकिन एकमेका शता ददुः।**

**यमुनायामधि श्रुतमुद्राधो गव्यं मृजे नि राधो अश्व्यं मृजे॥१७॥१०॥**

**सप्त। मे। सप्त। शाकिनः। एकम्ऽएका। शता। ददुः। यमुनायाम्। अधि। श्रुतम्। उत्। राधः। गव्यम्। मृजे। नि। राधः। अश्व्यम्। मृजे॥१७॥**

**पदार्थः-(सप्त)** सप्तविधा मरुद्गणा मनुष्यभेदाः **(मे)** मम **(सप्त)** **(शाकिनः)** शक्तिमन्तः **(एकमेका)** एकमेकानि **(शता)** शतानि **(ददुः)** प्रयच्छेयुः **(यमुनायाम्)** यमनियमान्वितायां क्रियायाम् **(अधि)** **(श्रुतम्)** **(उत्)** **(राधः)** धनम् **(गव्यम्)** गोहितम् **(मृजे)** शुन्धामि **(नि)** नितराम् **(राधः)** द्रव्यम् **(अश्व्यम्)** अश्वेषु साधु **(मृजे)** शुन्धामि॥१७॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यद्राधो यमुनायां मयाधि श्रुतं यद्गव्यमुन्मृजे यदश्व्यं राधो नि मृजे तन्मे सप्त शाकिनः सप्तैकमेका शता ये ददुः तत्ताँश्च यूयं प्राप्नुत विजानीत॥१७॥

**भावार्थः**-अत्र जगति मूढो मूढतरो मूढतमो विद्वान् विद्वत्तरो विद्वत्तमोऽनूचानश्च सप्त सप्तविधा मनुष्या भवन्तीति॥१७॥

अत्र वायुविश्वेदेवगुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति द्विपञ्चाशत्तमं सूक्तं दशमो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जिस **(राधः)** धन को **(यमुनायाम्)** यम और नियमों से अन्वित क्रिया के बीच मैंने **(अधि, श्रुतम्)** सुना और जो **(गव्यम्)** गौओं के हित को **(उत्, मृजे)** उत्तमता से शुद्ध करता हूं और जो **(अश्व्यम्)** घोड़ों में श्रेष्ठ **(राधः)** द्रव्य को **(नि)** निरन्तर **(मृजे)** स्वच्छ करता हूं वह **(मे)** मेरे **(सप्त)** सात प्रकार के मनुष्यों के भेद और **(शाकिनः)** सामर्थ्य वाले **(सप्त)** सात **(एकमेका)** एक-एक **(शता)** सैकड़ों को जो **(ददुः)** देवें, उसको और उनको आप लोग प्राप्त हूजिये और विशेष करके जानिये॥१७॥

**भावार्थः**-इस संसार में मूढ, मूढतर, मूढतम, विद्वान्, विद्वत्तर, विद्वत्तम और अनूचान ये सात प्रकार के मनुष्य होते हैं॥१७॥

इस सूक्त में वायु और विश्वेदेव के गुण-वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ संगति जाननी चाहिये॥

**यह बावनवां सूक्त और दशवां वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

**अथ षोडशर्चस्य त्रिपञ्चाशत्तमस्य सूक्तस्य श्यावाश्व आत्रेय ऋषिः। मरुतो देवताः। १ भुरिग्गायत्री। ८, १२ गायत्री छन्दः। षड्जः स्वरः। २ निचृद्बृहती। ९ स्वराड्बृहती। १४ बृहतीच्छन्दः। मध्यमः स्वरः। ३ अनुष्टुप् छन्दः। गान्धारः स्वरः। ४, ५ उष्णिक्। १०, १५ विराडुष्णिक्। ११ निचृदुष्णिक्छन्दः। ऋषभः स्वरः। ६, १६ पङ्क्तिः। ७, १३ निचृत्पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः॥**

***अथ मनुष्याः किं जानीयुरित्याह॥***

अब सोलह ऋचा वाले त्रेपनवें सूक्त का आरम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में अब मनुष्य क्या जानें इस विषय को कहते हैं॥

**को वे॑द॒ जान॑मेषां॒ को वा॑ पु॒रा सु॒म्नेष्वा॑स म॒रुता॑म्। यद्यु॑यु॒ज्रे कि॑ला॒स्य॑:॥ १॥**

**कः। वे॒द॒। जान॑म्। ए॒षा॒म्। कः। वा॒। पु॒रा। सु॒म्नेषु॑। आ॒स॒। म॒रुता॑म्। यत्। यु॒यु॒ज्रे। कि॒ला॒स्य॑:॥ १॥**

**पदार्थः**-(**कः**) (**वेद**) जानाति (**जानम्**) प्रादुर्भावम् (**एषाम्**) मनुष्याणां वायूनां वा (**कः**) (**वा**) (**पुरा**) पुरस्तात् (**सुम्नेषु**) (**आस**) आस्ते (**मरुताम्**) मनुष्याणां वायूनां वा (**यत्**) (**युयुज्रे**) युञ्जते (**किलास्यः**) निश्चितमास्यं यस्य सः॥ १॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या विद्वांसो वा! यद्युयुज्रे तदेषां मरुतां जानं किलास्यः को वेद को वा सुम्नेषु पुरास॥ १॥

**भावार्थः**-मनुष्यवाय्वादिपदार्थलक्षणलक्ष्याणि विद्वांस एव ज्ञातुं शक्नुवन्ति नेतरे॥ १॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो वा विद्वानो! (**यत्**) जो (**युयुज्रे**) युक्त होता है, वह (**एषाम्**) इन (**मरुताम्**) मनुष्यों वा पवनों के (**जानम्**) प्रादुर्भाव को (**किलास्यः**) निश्चित सुख जिसका वह (**कः**) कौन (**वेद**) जानता है (**कः, वा**) अथवा कौन (**सुम्नेषु**) सुखों में (**पुरा**) प्रथम (**आस**) स्थित है॥ १॥

**भावार्थः**-मनुष्य और वायु आदि पदार्थों के लक्षण और लक्ष्यों को विद्वान् जन ही जानने को समर्थ हो सकते हैं, अन्य नहीं॥ १॥

**पुनर्मनुष्याः कथं पृष्ट्वा किं जानीयुरित्याह॥**

फिर मनुष्य कैसे पूँछ के क्या जानें, इस विषय को कहते हैं॥

**ऐतान् रथे॑षु त॒स्थुष॒: कः शु॑श्राव क॒था य॑युः।**

**कस्मै॑ सस्रुः सु॒दासे॒ अन्वा॒पय॒ इळा॑भिर्वृ॒ष्टय॑: स॒ह॥ २॥**

**आ। ए॒तान्। रथे॑षु। त॒स्थुष॑:। कः। शु॒श्रा॒व॒। क॒था। य॒यु॒:। कस्मै॑। स॒स्रु॒:। सु॒ऽदासे॑। अनु॑। आ॒पय॑:। इळा॑भिः। वृ॒ष्टय॑:। स॒ह॥ २॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**आ**) (**एतान्**) मनुष्यान् वाय्वादीन् (**रथेषु**) विमानादियानेषु (**तस्थुषः**) स्थावरान् काष्ठादिपदार्थान् (**कः**) (**शुश्राव**) श्रावयति (**कथा**) केन प्रकारेण (**ययुः**) यान्ति (**कस्मै**) (**सस्रुः**) प्राप्नुवन्ति (**सुदासे**) शोभना दासा यस्य तस्मिन् (**अनु**) (**आपयः**) य आप्नुवन्ति ते (**इळाभिः**) अन्नादिभिः (**वृष्टयः**) (**सह**)॥२॥

**अन्वयः**-हे विद्वांसो! रथेष्वेताँस्तस्थुषः क आ शुश्राव कथा मनुष्या ययुः। कस्मै सस्रुरिळाभि-र्वृष्टय आपयः सह सुदासेऽनुसस्रुः॥२॥

**भावार्थः**-कश्चिदेव मनुष्यः सर्वं शिल्पविद्याव्यवहारं कर्तुं शक्नोति यो व्याप्तान् बहूत्तमगुणान् विद्युदादीन् पदार्थान् यथावज्जानाति॥२॥

**पदार्थः**-हे विद्वानो! (**रथेषु**) विमान आदि वाहनों से (**एतान्**) इन (**तस्थुषः**) स्थावर काष्ठ आदि पदार्थों को (**कः**) कौन (**आ, शुश्राव**) अच्छे प्रकार सुनाता है और (**कथा**) कैसे मनुष्य (**ययुः**) प्राप्त होते हैं और (**कस्मै**) किस के लिये (**सस्रुः**) प्राप्त होते हैं (**इळाभिः**) अन्न आदिकों से (**वृष्टयः**) वृष्टियां और (**आपयः**) प्राप्त होने वाले पदार्थ (**सह**) एक साथ (**सुदासे**) सुन्दर दास जिसके उसमें (**अनु**) अनुकूल प्राप्त होते हैं॥२॥

**भावार्थः**-कोई ही मनुष्य सम्पूर्ण शिल्पविद्या के व्यवहार करने को समर्थ होता है, जो व्याप्त और बहुत उत्तम गुण वाले बिजुली आदि पदार्थों को यथावत् जानता है॥२॥

**पुनर्मनुष्याः किं कुर्युरित्याह॥**

फिर मनुष्य क्या करें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**ते म आहुर्य आययुरुप द्युभिर्विभिर्मदे।**

**नरो मर्या अरेपस इमान् पश्यन्निति ष्टुहि॥३॥**

**ते। मे। आहुः। ये। आऽययुः। उप। द्युऽभिः। विऽभिः। मदे। नरः। मर्याः। अरेपसः। इमान्। पश्यन्। इति। स्तुहि॥३॥**

**पदार्थः**-(**ते**) (**मे**) मम (**आहुः**) कथयेयुः (**ये**) (**आययुः**) जानीयुः प्राप्नुयुर्वा (**उप**) (**द्युभिः**) कामयमानैः (**विभिः**) पक्षिभिरिव (**मदे**) आनन्दाय (**नरः**) नेतारः (**मर्य्याः**) मरणधर्माणः (**अरेपसः**) दोषलेपरहिताः (**इमान्**) (**पश्यन्**) (**इति**) (**स्तुहि**) प्रशंस॥३॥

**अन्वयः**-येऽरेपसो मर्य्या नरो द्युभिर्विभिर्मदे मे सत्यमाहुराययुस्त इमाम् कामान् पश्यन्निवाऽऽहुरिति त्वं मामुप स्तुहि॥६॥

**भावार्थः**-ये विद्वांसोऽहर्निशं परिश्रमेण विद्यां प्राप्याऽन्यानुपदिशेयुस्त आप्ता विज्ञेयाः॥३॥

**पदार्थः**-(**ये**) जो (**अरेपसः**) दोषों के लेप से रहित (**मर्य्याः**) मरण धर्म्म वाले (**नरः**) नायक मनुष्य (**द्युभिः**) कामना करते हुए (**विभिः**) पक्षियों के सदृश (**मदे**) आनन्द के लिये (**मे**) मेरे सत्य को



www.9009.co.in

**(आहुः)** कहें और **(आययुः)** जानें वा प्राप्त होवें **(ते)** वे **(इमान्)** इन मनोरथों को **(पश्यन्)** देखते हुए के समान कहें **(इति)** इस प्रकार आप मेरी **(उप, स्तुहि)** समीप में स्तुति करिये॥३॥

**भावार्थः**-जो विद्वान् जन दिन-रात्रि परिश्रम से विद्या को प्राप्त होकर अन्यों को उपदेश देवें, उनको यथार्थवक्ता जानना चाहिये॥३॥

**मनुष्याः पुरुषार्थेन किं किं प्राप्नुयुरित्याह॥**

मनुष्य पुरुषार्थ से किस किसको प्राप्तहोवें इस विषय को कहते हैं॥

**ये अ॒ञ्जिषु॒ ये वाशी॑षु॒ स्वभा॑नवः स्र॒क्षु रु॒क्मेषु॑ खा॒दिषु॑। श्रा॒या रथे॑षु॒ धन्व॑सु॥४॥**

**ये। अ॒ञ्जिषु॑। ये। वाशी॑षु। स्वऽभा॑नवः। स्र॒क्षु। रु॒क्मेषु॑। खा॒दिषु॑। श्रा॒याः। रथे॑षु। धन्व॑ऽसु॥४॥**

**पदार्थः**-**(ये)** **(अञ्जिषु)** प्रकटेषु व्यवहारेषु **(ये)** **(वाशीषु)** वाणीषु **(स्वभानवः)** स्वकीया भानवः प्रकाशा येषान्ते **(स्रक्षु)** माल्येषु मणिषु **(रुक्मेषु)** सुवर्णादिषु **(खादिषु)** भक्षणादिषु **(श्रायाः)** ये शृण्वन्ति श्रावयन्ति वा ते **(रथेषु)** वाहनेषु **(धन्वसु)** स्थलेषु॥४॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! ये वाशीषु स्वभानवोऽञ्जिषु स्रक्षु रुक्मेषु ये खादिषु रथेषु धन्वसु श्रायाः सन्ति ते विख्याता भवन्ति॥४॥

**भावार्थः**-ये मनुष्या पुरुषार्थिनः स्युस्ते सर्वतः सत्कृताः सन्तः श्रीमन्तो भवन्ति॥४॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(ये)** जो **(वाशीषु)** वाणियों में **(स्वभानवः)** अपने प्रकाश जिनके वे **(अञ्जिषु)** प्रकट व्यवहारों में **(स्रक्षु)** माला के मणियों में और **(रुक्मेषु)** सुवर्ण आदिकों में वा **(ये)** जो **(खादिषु)** भक्षण आदिकों में **(रथेषु)** वाहनों में और **(धन्वसु)** स्थलों में **(श्रायाः)** सुनते वा सुनाते हैं, वे प्रसिद्ध होते हैं॥४॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य पुरुषार्थी होवें, वे सब प्रकार से सत्कार को प्राप्त हुए लक्ष्मीवान् होते हैं॥४॥

**पुनर्मनुष्यैः कि कर्त्तव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को क्या करना चाहिये, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**यु॒ष्माकं॑ स्मा॒ रथाँ॒ अनु॑ मु॒दे द॑धे मरुतो जीरदानवः। वृष्टी द्यावो॑ य॒तीरि॑व॥५॥११॥**

**यु॒ष्माक॑म्। स्म॒। रथा॑न्। अनु॑। मु॒दे। द॒धे। म॒रु॒तः॒। जी॒र॒ऽदा॒न॒वः॒। वृ॒ष्टी। द्याव॑ः। य॒तीःऽइ॑व॥५॥**

**पदार्थः**-**(युष्माकम्)** **(स्मा)** एव। अत्र **निपातस्य चेति** दीर्घः। **(रथान्)** विमानादियानान् **(अनु)** **(मुदे)** हर्षाय **(दधे)** दधामि **(मरुतः)** मनुष्याः **(जीरदानवः)** जीवन्ति ते **(वृष्टी)** वर्षाः **(द्यावः)** प्रकाशान् **(यतीरिव)** प्रयत्नसाध्या क्रिया इव॥५॥

**अन्वयः**-हे जीरदानवो मरुतोऽहं युष्माकं मुदे रथान् दधे वृष्टी द्यावो यतीरिव स्माऽनु मुदे दधे॥५॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यथाहमभ्यासेन विद्याप्रकाशम् यज्ञेन वृष्टिमनु दधे तथा यूयमप्येतान् धत्त॥५॥

**पदार्थः**-हे **(जीरदानवः)** जीवते हुए **(मरुतः)** मनुष्यो! मैं **(युष्माकम्)** आप लागों के **(मुदे)** आनन्द के लिये **(रथान्)** विमान आदि यानों को **(दधे)** धारण करता हूं और **(वृष्टी)** वर्षाओं तथा **(द्यावः)** प्रकाशों को **(यतीरिव)** प्रयत्न से सिद्ध होने वालीं क्रियाओं के समान **(स्मा)** ही **(अनु)** पीछे आनन्द के लिये धारण करता हूं॥५॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे मैं अभ्यास से विद्या के प्रकाशों को यज्ञ से वृष्टि को धारण करता हूं, वैसे आप लोग भी इनको धारण कीजिये॥५॥

**पुनर्मनुष्या किं कुर्युरित्याह॥**

फिर मनुष्य क्या करें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**आ यं नरः सुदानवो ददाशुषे दिवः कोशमचुच्यवुः।**

**वि पर्जन्यं सृजन्ति रोदसी अनु धन्वना यन्ति वृष्टयः॥६॥**

**आ। यम्। नरः। सुऽदानवः। ददाशुषे। दिवः। कोशम्। अचुच्यवुः। वि। पर्जन्यम्। सृजन्ति। रोदसी इति। अनु। धन्वना। यन्ति। वृष्टयः॥६॥**

**पदार्थः**-**(आ)** समन्तात् **(यम्)** **(नरः)** नेतारो मनुष्याः **(सुदानवः)** उत्तमविद्यादिशुभगुणदानाः **(ददाशुषे)** दात्रे **(दिवः)** कामयमानाः **(कोशम्)**। मेघम्। **कोश इति मेघनामसु पठितम्।** (निघं०१.१०) **(अचुच्यवुः)** च्यावयेयुः **(वि)** **(पर्जन्यम्)** मेघम् **(सृजन्ति)** **(रोदसी)** द्यावापृथिव्यौ **(अनु)** **(धन्वना)** **(यन्ति)** **(वृष्टयः)** वर्षाः॥६॥

**अन्वयः**-हे मनुष्याः! सुदानवो दिवो नरो ददाशुषे यं कोशमाऽचुच्यवू रोदसी पर्जन्यं वि सृजन्ति तमनु धन्वना वृष्टयो यन्ति तथा यूयमप्याचरत॥६॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। त एव मनुष्या उत्तमा दातारो ये यज्ञेन जङ्गलरक्षणेन जलाशयनिर्माणेन पुष्कला वर्षाः कारयन्ति॥६॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(सुदानवः)** उत्तमविद्या आदि श्रेष्ठ गुणों के दान से युक्त **(दिवः)** कामना करते हुए **(नरः)** नायक मनुष्य **(ददाशुषे)** देने वाले के लिये **(यम्)** जिस **(कोशम्)** मेघ को **(आ)** चारों ओर से **(अचुच्युवुः)** वर्षावें और **(रोदसी)** अन्तरिक्ष और पृथिवी को **(पर्जन्यम्)** मेघ को **(वि, सृजन्ति)** विशेषतया छोड़ते हैं उसके **(अनु)** अनुकूल **(धन्वना)** अन्तरिक्ष से **(वृष्टयः)** वर्षायें **(यन्ति)** प्राप्त होती हैं, वैसे आप लोग भी आचरण करो॥६॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। वे ही मनुष्य उत्तम दाता हैं जो यज्ञ, जङ्गलों की रक्षा और जलाशयों के निर्म्माण से बहुत वर्षाओं को कराते हैं॥६॥



www.9009.co.in

**पुनर्मनुष्यैः किं विज्ञातव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को क्या जानना चाहिये, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**तृतृदानाः सिन्धवः क्षोदसा रजः प्र सस्रुर्धेनवो यथा।**

**स्यन्ना अश्वाइवाध्वनो विमोचने वि यद्वर्तन्त एन्यः॥७॥**

**तृतृदानाः। सिन्धवः। क्षोदसा। रजः। प्र। सस्रुः। धेनवः। यथा। स्यन्नाः। अश्वाःऽइव। अध्वनः। विऽमोचने। वि। यत्। वर्तन्ते। एन्यः॥७॥**

**पदार्थः**-(**ततृदानाः**) भूमिं हिंसन्तः (**सिन्धवः**) नद्यः (**क्षोदसा**) जलेन (**रजः**) लोकम् (**प्र**) (**सस्रुः**) स्रवन्ति (**धेनवः**) दुग्धदात्र्यो गावः (**यथा**) येन प्रकारेण (**स्यन्नाः**) आशुगमनाः (**अश्वाइव**) यथा तुरङ्गं धावन्ति तथा (**अध्वनः**) मार्गान् (**विमोचने**) (**वि**) (**यत्**) याः (**वर्त्तन्ते**) (**एन्यः**) या यन्ति ता नद्यः। (निघं०१.१३)॥७॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथा धेनवस्तथा क्षोदसा ततृदानाः सिन्धवो रजः प्र सस्रुरश्वाइव यद्याः स्यन्ना एन्यो विमोचनेऽध्वनो वि वर्त्तन्ते ताभ्यस्सर्व उपकारा ग्राह्याः॥७॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। यथा धेनवो दुग्धं वषन्ति तथैव नदी सरः समुद्रादयो जलाशयाः पृथिव्यां वर्षन्ति॥७॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! (**यथा**) जिस प्रकार से (**धेनवः**) दुग्ध देने वाली गौएं वैसे (**क्षोदसा**) जल से (**ततृदानाः**) भूमि को तोड़ने वाली (**सिन्धवः**) नदियां (**रजः**) लोक को (**प्र, सस्रुः**) प्रस्रवित करती हैं। और (**अश्वाइव**) जैसे घोड़े दौड़ते हैं, वैसे (**यत्**) जो (**स्यन्नाः**) शीघ्र जाने वाली (**एन्यः**) नदियां (**विमोचने**) विमोचन में (**अध्वनः**) मार्गों को (**वि, वर्त्तन्ते**) बितातीं हैं उनसे सम्पूर्ण उपकार ग्रहण करने चाहियें॥७॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जैसे दुग्ध देने वाली गौवें दुग्ध की वृष्टि करती हैं, वैसे ही नदी, तड़ाग, समुद्र आदि और अन्य जलाशय पृथिवी में वृष्टि करते हैं॥७॥

**पुनर्मनुष्यैः किं प्राप्तव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को क्या प्राप्त करना योग्य है, इस विषय को कहते हैं॥

**आ यात मरुतो दिव आन्तरिक्षादमादुत। माव स्थात परावतः॥८॥**

**आ। यात। मरुतः। दिवः। आ। अन्तरिक्षात्। अमात्। उत। मा। अव। स्थात। पराऽवतः॥८॥**

**पदार्थः**-(**आ**) समन्तात् (**यात**) प्राप्नुत (**मरुतः**) मनुष्याः (**दिवः**) कामनाः (**आ**) (**अन्तरिक्षात्**) (**अमात्**) गृहात् (**उत**) अपि (**मा**) (**अव**) (**स्थात**) तिष्ठत (**परावतः**) दूरदेशात्॥८॥

**अन्वयः**-हे मरुतो! यूयमन्तरिक्षादुतामाद्दिव आ यात परावतो मावाऽऽस्थात॥८॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-त एव मनुष्याः कामसिद्धिमाप्नुवन्ति ये विरोधं त्यक्त्वा विद्यावन्तो भवन्ति॥८॥

**पदार्थः**-हे **(मरुतः)** मनुष्यो! आप लोग **(अन्तरिक्षात्)** अन्तरिक्ष **(उत)** और **(अमात्)** गृह से **(दिवः)** कामनाओं को **(आ)** सब प्रकार से **(यात)** प्राप्त हूजिये और **(परावतः)** दूर देश से **(मा)** नहीं **(अव, आ, स्थात)** अच्छे प्रकार से स्थित हूजिये॥८॥

**भावार्थः**-वे ही मनुष्य कामना की सिद्धि को प्राप्त होते हैं, जो विरोध का त्याग करके विद्वान् होते हैं॥८॥

**पुनर्विद्वद्भिः किमुपदेष्टव्यमित्याह॥**

फिर विद्वानों को क्या उपदेश देना योग्य है, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**मा वो रसानितभा कुभा क्रुमुर्मा वः सिन्धुर्नि रीरमत्।**

**मा वः परि ष्ठात्सरयुः पुरीषिण्यस्मे इत्सुम्नमस्तु वः॥९॥**

**मा। वः। रसा। अनितभा। कुभा। क्रुमुः। मा। वः। सिन्धुः। नि। रीरमत्। मा। वः। परि। स्थात्। सरयुः। पुरीषिणी। अस्मे इति। इत्। सुम्नम्। अस्तु। वः॥९॥**

**पदार्थः**-**(मा)** निषेधे **(वः)** युष्मान् **(रसा)** पृथिवी **(अनितभा)** अप्राप्तदीप्तिः **(कुभा)** कुत्सितप्रकाशा **(क्रुमुः)** क्रमिता **(मा)** **(वः)** युष्मान् **(सिन्धुः)** नदी समुद्रो वा **(नि)** निरताम् **(रीरमत्)** रमयेत् **(मा)** **(वः)** युष्मान् **(परि)** **(स्थात्)** तिष्ठेत् **(सरयुः)** यः सरति **(पुरीषिणी)** पुर इषिणी **(अस्मे)** अस्मभ्यम् **(इत्)** एव **(सुम्नम्)** सुखम् **(अस्तु)** भवतु **(वः)** युष्मभ्यम्॥९॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! अनितभा कुभा क्रुमू रसा मा वो नि रीरमत् सिन्धुर्मा वो नि रीरमत्। सरयुः पुरीषिणी मा वः परि ष्ठाद्येनाऽस्मे वश्च सुम्नमिदस्तु॥९॥

**भावार्थः**-मनुष्यैरेवं पुरुषार्थः कर्त्तव्यो यथा सर्वे पदार्थाः सुखप्रदाः स्युः॥९॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(अनितभा)** दीप्ति को न प्राप्त **(कुभा)** कुत्सित प्रकाशयुक्त **(क्रुमुः)** क्रमण करनेवाली **(रसा)** पृथिवी **(मा)** मत **(वः)** आप लोगों को **(नि)** अत्यन्त **(रीरमत्)** रमण करावे और **(सिन्धुः)** नदी वा समुद्र **(मा)** नहीं **(वः)** आप लोगों को निरन्तर रमण करावें तथा **(सरयुः)** चलने वाला और **(पुरीषिणी)** पुरों की इच्छा करने वाली **(मा)** मत **(वः)** आप लोगों को **(परि, स्थात्)** परिस्थित करावे अर्थात् मत आलसी बनावे जिससे **(अस्मे)** हम लोगों के लिये और **(वः)** आप लोगों के लिये **(सुम्नम्)** सुख **(इत्)** ही **(अस्तु)** हो॥९॥

**भावार्थः**-मनुष्यों को चाहिये कि इस प्रकार का पुरुषार्थ करें कि जिस प्रकार सम्पूर्ण पदार्थ सुख देने वाले होवें॥९॥

**पुनर्विदुषा मनुष्यार्थं किमेष्टव्यमित्याह॥**

फिर विद्वान् जन को मनुष्यों के अर्थ क्या इच्छा करनी चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥



www.9009.co.in

**तं वः शर्धं रथानां त्वेषं गणं मारुतं नव्यसीनाम्। अनु प्र यन्ति वृष्टयः॥१०॥१२॥**

**तम्। वः। शर्धम्। रथानाम्। त्वेषम्। गणम्। मारुतम्। नव्यसीनाम्। अनु। प्र। यन्ति। वृष्टयः॥१०॥**

**पदार्थः-(तम्)** **(वः)** युष्मभ्यम् **(शर्धम्)** बलम् **(रथानाम्)** यानानाम् **(त्वेषम्)** सद्गुणप्रकाशम् **(गणम्)** **(मारुतम्)** मरुतां मनुष्याणामिदम् **(नव्यसीनाम्)** नवीनानाम् **(अनु)** **(प्र)** **(यन्ति)** प्राप्नुवन्ति **(वृष्टयः)**॥१०॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यं रथानां नव्यसीनां मारुतं गणं त्वेषमुपदिशामि यं वृष्टयोऽनु प्र यन्ति तं शर्धं वः प्रापयामि॥१०॥

**भावार्थः**-ये विदुषां नवीनां नवीनां नीतिं प्राप्नुवन्ति ते बलं लभन्ते॥१०॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जिस **(रथानाम्)** वाहनों और **(नव्यसीनाम्)** नवीनाओं के बीच **(मारुतम्)** मनुष्यों के सम्बन्धी **(गणम्)** समूह का और **(त्वेषम्)** सद्गुणों के प्रकाश का उपदेश करता हूं और जिसको **(वृष्टयः)** वर्षायें **(अनु, प्र, यन्ति)** प्राप्त होती हैं **(तम्)** उस **(शर्धम्)** बल को **(वः)** आप लोगों के लिये प्राप्त करता हूं॥१०॥

**भावार्थः**-जो विद्वानों की नवीन-नवीन नीति को प्राप्त होते हैं, वे बल को प्राप्त होते हैं॥१०॥

**पुनर्मनुष्यैः किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**शर्धंशर्धं व एषां व्रातंव्रातं गणंगणं सुशस्तिभिः। अनु क्रामेम धीतिभिः॥११॥**

**शर्धम्ऽशर्धम्। वः। एषाम्। व्रातम्ऽव्रातम्। गणम्ऽगणम्। सुशस्तिऽभिः। अनु। क्रामेम। धीतिऽभिः॥११॥**

**पदार्थः-(शर्धंशर्धम्)** बलंबलम् **(वः)** युष्माकम् **(एषाम्)** **(व्रातंव्रातम्)** वर्त्तमानं वर्त्तमानम् **(गणंगणम्)** समूहंसमूहम् **(सुशस्तिभिः)** सुष्ठुप्रशंसाभिः **(अनु)** **(क्रामेम)** उल्लङ्घेम **(धीतिभिः)** अङ्गुलिभिः कर्माणीव॥११॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथा वयं धीतिभिः कर्माणीव सुशस्तिभिर्व एषाञ्च शर्धंशर्धं व्रातंव्रातं गणंगणमनु क्रामेम तथा युष्माभिरपि कर्त्तव्यम्॥११॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यदि मनुष्याः पूर्णं बलं कुर्युस्तर्हि बहून् बलिष्ठानप्युत्क्रामयेयुः॥११॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे हम लोग **(धीतिभिः)** जैसे अङ्गुलियों से कर्म्मों को वैसे **(सुशस्तिभिः)** अच्छी प्रशंसाओं से **(वः)** आप लोगों के और **(एषाम्)** इनके **(शर्धशर्धम्)** बल-बल और **(व्रातंव्रातम्)** वर्त्तमान-वर्त्तमान **(गणंगणम्)** समूह-समूह को **(अनु, क्रामेम)** उल्लंघन करें, वैसे आप लोगों को भी करना चाहिये॥११॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो मनुष्य पूर्ण बल को करें तो बहुत बलिष्ठों का भी उत्क्रमण करें॥११॥

**पुनर्मनुष्यैः किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**कस्मा॑ अ॒द्य सुजा॑ताय रा॒तह॑व्याय॒ प्र य॑यु॒ः। ए॒ना यामे॑न म॒रुत॑ः॥१२॥**

**कस्मै॑। अ॒द्य। सु॒ऽजा॑ताय। रा॒तह॑व्याय। प्र। य॒यु॒ः। ए॒ना। यामे॑न। म॒रुत॑ः॥१२॥**

**पदार्थः**-**(कस्मै)** **(अद्य)** **(सुजाताय)** सुष्ठुविद्यासु प्रसिद्धाय **(रातहव्याय)** दत्तदातव्याय **(प्र, ययुः)** प्राप्नुवन्ति **(एना)** एनेन **(यामेन)** उपरतेन **(मरुतः)** मनुष्याः॥१२॥

**अन्वयः**-ये मरुतोऽद्यैना यामेन कस्मै सुजाताय रातहव्याय प्र ययुस्ते विद्यादातारो भूत्वा प्रशंसिता जायन्ते॥१२॥

**भावार्थः**-विद्यादिशुभगुणदानेन विना विदुषां प्रशंसा नैव जायते॥२॥

**पदार्थः**-जो **(मरुतः)** मनुष्य **(अद्य)** आज **(एना)** इस **(यामेन)** विरक्त हुए से **(कस्मै)** किस **(सुजाताय)** उत्तम विद्याओं में प्रसिद्ध **(रातहव्याय)** दिया दातव्य जिसने उसके लिये **(प्र, ययुः)** प्राप्त होते हैं, वे विद्या के देने वाले होकर प्रशंसित होते हैं॥१२॥

**भावार्थः**-विद्या आदि उत्तम गुणों के दान के विना विद्वानों की प्रशंसा नहीं होती है॥१२॥

**पुनर्मनुष्यैः किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**येन॑ तो॒काय॒ तन॑याय धा॒न्यं१॒ बीजं॒ वह॑ध्वे॒ अक्षि॑तम्।**

**अ॒स्मभ्यं॒ तद्ध॑त्तन॒ यद्व॒ ईम॑हे॒ राधो॑ वि॒श्वायु॒ सौभ॑गम्॥१३॥**

**येन॑। तो॒काय॑। तन॑याय। धा॒न्य॑म्। बीज॑म्। वह॑ध्वे। अक्षि॑तम्। अ॒स्मभ्य॑म्। तत्। ध॒त्त॒न॒। यत्। व॒ः। ईम॑हे। राध॑ः। वि॒श्वऽआयु॑। सौभ॑गम्॥१३॥**

**पदार्थः**-**(येन)** कर्मणा **(तोकाय)** सद्यो जातायापत्याय **(तनयाय)** कुमाराय **(धान्यम्)** तण्डुलादिकम् **(बीजम्)** वपनार्हम् **(वहध्वे)** वहत **(अक्षितम्)** क्षयरहितम् **(अस्मभ्यम्)** **(तत्)** **(धत्तन)** धरत **(यत्)** **(वः)** युष्मदर्थम् **(ईमहे)** याचामहे **(राधः)** धनम् **(विश्वायु)** सम्पूर्णमायुष्करम् **(सौभगम्)** सौभाग्यवर्धकम्॥१३॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! येन तोकाय तनयायाक्षितं धान्यं बीजं च यूयं वहध्वे। यद्विश्वायु सौभगमक्षितं राधो वा ईमहे तदस्मभ्यं धत्तन॥१३॥

**भावार्थः**-ये मनुष्या अपत्यरक्षार्थं धान्यादिवस्तु संरक्षन्ति तेऽक्षयं सुखं लभन्ते॥१३॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(येन)** जिस कर्म्म से **(तोकाय)** तुरन्त उत्पन्न हुए सन्तान के और **(तनयाय)** कुमार के लिये **(अक्षितम्)** नाश से रहित **(धान्यम्)** तण्डुल आदि को और **(बीजम्)** बोने के योग्य को **(वहध्वे)** प्राप्त हूजिये और **(यत्)** जिस **(विश्वायु)** सम्पूर्ण आयु के करने और **(सौभगम्)** सौभाग्य को बढ़ाने वाले नाश से रहित **(राधः)** धन की **(वः)** आप लोगों के लिये **(ईमहे)** याचना करते हैं **(तत्)** उसको **(अस्मभ्यम्)** हम लोगों के लिये **(धत्तन)** धारण करिये॥१३॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य सन्तानों की रक्षा के लिये धान्य आदि वस्तु की उत्तम प्रकार रक्षा करते हैं, वे नाश रहित सुख को प्राप्त होते हैं॥१३॥

**पुनर्मनुष्यैः कथं वर्त्तितव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को कैसा वर्त्ताव करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**अतीयाम निदस्तिरः स्वस्तिभिर्हित्वावद्यमरातीः।**

**वृष्ट्वी शं योराप उस्रि भेषजं स्याम मरुतः सह॥१४॥**

**अति। इयाम। निदः। तिरः। स्वस्तिऽभिः। हित्वा। अवद्यम्। अरातीः। वृष्ट्वी। शम्। योः। आपः। उस्रि। भेषजम्। स्याम। मरुतः। सह॥१४॥**

**पदार्थः**-**(अति, इयाम)** उलङ्घेम त्यजेम **(निदः)** ये निन्दन्ति तान् मिथ्यावादिनः **(तिरः)** तिरश्चीनं कर्म्म **(स्वस्तिभिः)** सुखादिभिः **(हित्वा)** त्यक्त्वा **(अवद्यम्)** निन्दितं कर्म **(अरातीः)** शत्रून् **(वृष्ट्वी)** वृष्ट्वा वर्षित्वा **(शम्)** सुखम् **(योः)** मिश्रितम् **(आपः)** जलानि **(उस्रि)** गवादियुक्तम् **(भेषजम्)** औषधम् **(स्याम)** **(मरुतः)** मनुष्याः **(सह)**॥१४॥

**अन्वयः**-हे मरुतो! यथा वयं निदोऽतीयाम स्वस्तिभिस्तिरोऽवद्यमरातीश्च हित्वा शं वृष्ट्वी आपो योरुस्रि भेषजं स्वस्तिभिस्सह प्राप्ताः स्याम तथा युष्माभिर्भवितव्यम्॥१४॥

**भावार्थः**-मनुष्यैर्निन्दकान् निन्दां पापिनः पापं च त्यक्त्वा शत्रून् विजित्यौषधादिसेवनेन शरीरमरोगं विधाय विद्यायोगाभ्यासेनात्मानमुन्नीय सततं सुखमाप्तव्यम्॥१४॥

**पदार्थः**-हे **(मरुतः)** मनुष्यो! जैसे हम लोग **(निदः)** निन्दा करने वाले मिथ्यावादियों का **(अति, इयाम)** उल्लङ्घन करें अर्थात् त्याग करें और **(स्वस्तिभिः)** सुख आदिकों से **(तिरः)** तिरश्चीन कर्म्म और **(अवद्यम्)** निन्दित कर्म्म **(अरातीः)** और शत्रुओं का **(हित्वा)** त्याग और **(शम्)** सुख **(वृष्ट्वी)** वर्षा करके **(आपः)** जलों को और **(योः)** मिश्रित **(उस्रि)** गो आदि से युक्त **(भेषजम्)** ओषधि को सुख आदिकों के **(सह)** साथ प्राप्त **(स्याम)** होवें, वैसे आप लोगों को होना चाहिये॥१४॥

**भावार्थः**-मनुष्यों को चाहिये कि निन्दक, निन्दा और पापी [तथा] पाप को छोड़ शत्रुओं को जीतकर, ओषधि आदि के सेवन से शरीर रोगरहित कर, विद्या और योगाभ्यास से आत्मा की उन्नति करके निरन्तर सुख प्राप्त करें॥१४॥



www.9009.co.in

**पुनर्मनुष्यैः किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**सुदेवः समहासति सुवीरो नरो मरुतः स मर्त्यः। यं त्रायध्वे स्याम ते॥ १५॥**

**सुऽदेवः। समह। असति। सुऽवीरः। नरः। मरुतः। सः। मर्त्यः। यम्। त्रायध्वे। स्याम। ते॥ १५॥**

**पदार्थः**-(**सुदेवः**) शोभनश्चासौ विद्वान् (**समह**) सत्कारसहित (**असति**) भवति (**सुवीरः**) शोभनश्चासौ वीरः (**नरः**) नायकाः (**मरुतः**) मनुष्याः (**सः**) (**मर्त्यः**) (**यम्**) (**त्रायध्वे**) रक्षत (**स्याम**) (**ते**)॥ १५॥

**अन्वयः**-हे समह! स सुदेवः सुवीरो मर्त्योऽसति यं हे मरुतो नरस्ते यूयं त्रायध्वे वयं तेन सहिताः स्याम॥ १५॥

**भावार्थः**-मनुष्यैरत्युन्नतैर्भूत्वा निर्बलाः प्राणिनः सदैव रक्षणीयाः॥ १५॥

**पदार्थः**-हे (**समह**) सत्कार से सहित! (**सः**) वह (**सुदेवः**) सुन्दर विद्वान् (**सुवीरः**) सुन्दर वीर (**मर्त्यः**) मनुष्य (**असति**) है (**यम्**) जिसको हे (**मरुतः**) मनुष्यो (**नरः**) अग्रणीजनो! (**ते**) वे आप लोग (**त्रायध्वे**) रक्षा करो, हम लोग उसके साथ (**स्याम**) होवें॥ १५॥

**भावार्थः**-मनुष्यों को चाहिये कि अति उन्नत होकर निर्बल प्राणियों की सदा ही रक्षा करें॥ १५॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**स्तुहि भोजान्त्स्तुवतो अस्य यामनि रणन् गावो न यवसे।**

**यतः पूर्वाँइव सखीँरनु ह्वय गिरा गृणीहि कामिनः॥ १६॥ १३॥**

**स्तुहि। भोजान्। स्तुवतः। अस्य। यामनि। रणन्। गावः। न। यवसे। यतः। पूर्वान्ऽइव। सखीन्। अनु। ह्वय। गिरा। गृणीहि। कामिनः॥ १६॥**

**पदार्थः**-(**स्तुहि**) (**भोजान्**) पालकान् (**स्तुवतः**) प्रशंसकान् (**अस्य**) रक्षणस्य (**यामनि**) मार्गे (**रणन्**) उपदिशन् (**गावः**) धेनवः (**न**) इव (**यवसे**) बुसादौ (**यतः**) (**पूर्वानिव**) यथा पूर्वांस्तथा वर्त्तमानान् (**सखीन्**) मित्रान् (**अनु**) (**ह्वय**) निमन्त्रय (**गिरा**) वाण्या (**गृणीहि**) (**कामिनः**) प्रशस्तं कामो येषामस्ति तान्॥ १६॥

**अन्वयः**-हे विद्वन्! रणँस्त्वं स्तुवतो भोजान् स्तुहि। अस्य यामनि यतः पूर्वानिव सखीन् गिराऽनु ह्वय सखीन् यवसे गावो नाऽनु ह्वय कामिनो गृणीहि॥ १६॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। हे विद्वन्! ये प्रशंसनीयाः सर्वेषां सुहृदः सत्यकामाः स्युस्तान् सदैव सत्कुर्य्या इति॥ १६॥



www.9009.co.in

अत्र प्रश्नोत्तरविद्वद्गुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति त्रिपञ्चाशत्तमं सूक्तं त्रयोदशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे विद्वन्! **(रणन्)** उपदेश देते हुए आप **(स्तुवतः)** प्रशंसा करने वाले **(भोजान्)** पालकों की **(स्तुहि)** स्तुति कीजिये और **(अस्य)** इस रक्षण के **(यामनि)** मार्ग में **(यतः)** जिससे **(पूर्वनिव)** जैसे पूर्व वैसे वर्त्तमान **(सखीन्)** मित्रों का **(गिरा)** वाणी से **(अनु, ह्वय)** निमन्त्रण करो और मित्रों को **(यवसे)** बुस आदि में **(गावः)** गौओं के **(न)** सदृश निमन्त्रण करो और **(कामिनः)** श्रेष्ठ मनोरथ जिनका उनकी **(गृणीहि)** स्तुति करो॥१६॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे विद्वन्! जो प्रशंसा करने योग्य और सब के मित्र और सत्य की कामना करने वाले होवें, उनका सदा ही सत्कार करो॥१६॥

इस सूक्त में प्रश्न उत्तर और विद्वान् के गुण-वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ संगति जाननी चाहिये॥

**यह तिरपनवां सूक्त और तेरहवां वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

अथ पञ्चदशर्चस्य चतु:पञ्चाशत्तमस्य सूक्तस्य श्यावाश्व आत्रेय ऋषि:। मरुतो देवता:। १, ३, ७, १२ जगती। २ विराड् जगती। ६ भुरिग् जगती। ११, १५ निचृज्जगती छन्द:। निषाद: स्वर:। ४, ८, १० भुरिक् त्रिष्टुप्। ५, ९, १३, १४ त्रिष्टुप् छन्द:। गान्धार: स्वर:॥

*अथ विद्वद्भि: कथं वर्त्तितव्यमित्याह॥*

अब पन्द्रह ऋचा वाले चौवनवें सूक्त का प्रारम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में विद्वानों को कैसे वर्त्तना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**प्र शर्धा॑य॒ मारु॑ताय॒ स्वभा॑नव इ॒मां वाच॑मनजा पर्वत॒च्युते॑।**

**घ॒र्म॒स्तुभे॑ दि॒व आ पृ॑ष्ठ॒यज्व॑ने द्यु॒म्नश्र॑वसे॒ महि॑ नृ॒म्णम॑र्चत॥ १॥**

**प्र। शर्धा॑य। मारु॑ताय। स्वऽभा॑नवे। इ॒माम्। वाच॑म्। अ॒न॒ज॒। प॒र्व॒त॒ऽच्युते॑। घ॒र्म॒ऽस्तुभे॑ दि॒व:। आ। पृ॒ष्ठ॒ऽयज्व॑ने। द्यु॒म्नऽश्र॑वसे। महि॑। नृ॒म्णम्। अ॒र्च॒त॒॥ १॥**

**पदार्थ:**-(**प्र**) (**शर्धाय**) बलाय (**मारुताय**) मरुतामिदं तस्मै (**स्वभानवे**) स्वकीया भानवो दीप्तयो यस्य तस्मै (**इमाम्**) वर्त्तमानाम् (**वाचम्**) सुशिक्षितां वाणीम् (**अनज**) उच्चरतोपदिशत। अत्र **संहितायामि**ति दीर्घ:, व्यत्ययेनैकवचनं च। (**पर्वतच्युते**) पर्वतान्मेघाच्च्युतो य: पर्वतं मेघं च्यावयति वा तस्मै (**घर्मस्तुभे**) यो घर्मं यज्ञं स्तोभति स्तौति तस्मै (**दिव:**) कामयमाना: (**आ**) समन्तात् (**पृष्ठयज्वने**) य: पृष्ठेन यजति तस्मै (**द्युम्नश्रवसे**) द्युम्नं यश: श्रव: श्रुतं यस्य तस्मै (**महि**) महत् (**नृम्णम्**) नरोऽभ्यस्यन्ति यत्तत् (**अर्चत**) सत्कुरुत॥ १॥

**अन्वय:**-हे दिवो विद्वांसो! यूयं स्वभानवे मारुताय शर्धायेमां वाचं प्रानज पर्वतच्युते घर्मस्तुभे पृष्ठयज्वने द्युम्नश्रवसे महि नृम्णमार्चत॥ १॥

**भावार्थ:**-हे विद्वांसो! यूयं सदैवाज्ञान् विद्यादानेन ज्ञानवत: कुरुत सत्यासत्यं विविच्य सत्यं ग्राहयित्वाऽसत्यं त्याजयत सर्वसुखायैश्वर्य्यं सञ्चिनुत॥ १॥

**पदार्थ:**-हे (**दिव:**) कामना करते हुए विद्वानो! आप लोग (**स्वभानवे**) अपनी कान्ति विद्यमान जिसके उस (**मारुताय**) मनुष्यों के सम्बन्धी (**शर्धाय**) बल के लिये (**इमाम्**) इस वर्त्तमान (**वाचम्**) उत्तम प्रकार शिक्षित वाणी का (**प्रानज**) उच्चारण कीजिये अर्थात् उपदेश दीजिये और (**पर्वतच्युते**) मेघ से गिरे वा जो मेघ को वर्षाता (**घर्मस्तुभे**) यज्ञ की स्तुति करता और (**पृष्ठयज्वने**) पृष्ठ से यज्ञ करता (**द्युम्नश्रवसे**) वा यश सुना गया जिसका उसके लिये (**महि**) बड़े (**नृम्णम्**) मनुष्य अभ्यास करते हैं जिसका उसका (**आ, अर्चत**) सत्कार करो॥ १॥



www.9009.co.in

**भावार्थ:**-हे विद्वानो! आप लोग सदा ही ज्ञानरहित पुरुषों को विद्या के दान से ज्ञानवान् करो, सत्य और असत्य का विचार करके सत्य का ग्रहण कराय के असत्य का त्याग कराइये और सब के सुख के लिये ऐश्वर्य्य को इकट्ठा करो॥१॥

**पुनर्म्मनुष्यैः किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**प्र वो॑ मरुतस्तवि॒षा उ॑द॒न्यवो॑ वयो॒वृधो॑ अश्व॒युज॒: परि॑ज्रयः।**

**सं वि॒द्युता॒ दध॑ति॒ वाश॑ति त्रि॒तः स्वर॒न्त्यापो॒ऽवना॒ परि॑ज्रयः॥२॥**

**प्र। व॒ः। म॒रु॒तः॒। त॒वि॒षाः। उ॒द॒न्यव॑ः। व॒य॒ःऽवृध॑ः। अ॒श्व॒ऽयुज॑ः। परि॑ऽज्रयः। सम्। वि॒ऽद्युता॑। दध॑ति। वाश॑ति। त्रि॒तः। स्वर॑न्ति। आप॑ः। अ॒वना॑। परि॑ऽज्रयः॥२॥**

**पदार्थ:**-**(प्र)** **(वः)** युष्मान् **(मरुतः)** मनुष्याः **(तविषाः)** बलवन्तः **(उदन्यवः)** आत्मन उदकमिच्छवः **(वयोवृधः)** ये वयसा वर्धन्ते वयो वर्धयन्ति वा **(अश्वयुजः)** येऽश्वान् सद्योगामिनः पदार्थान् योजयन्ति **(परिज्रयः)** ये परितः सर्वतो गच्छन्ति ते **(सम्)** **(विद्युता)** **(दधति)** **(वाशति)** वाणीवाचरन्ति **(त्रितः)** त्रिभ्यः **(स्वरन्ति)** शब्दयन्ति **(आपः)** जलानि **(अवना)** अवनादीनि रक्षणदीनि **(परिज्रयः)** परितः सर्वतो ज्रयो गतिमन्तः॥२॥

**अन्वयः**-हे मरुतो! ये तविषा उदन्यवो वयोवृधोऽश्वयुजः परिज्रयो विद्युता सह वो युष्मान् सन्दधति वाशति। त्रितः परिज्रय आपोऽवना प्र स्वरन्ति तान् यूयं सत्कुरुत॥२॥

**भावार्थ:**-ये मनुष्या विद्युदादिविद्यां जानन्ति ते सर्वं सुखं सर्वार्थं दधति॥२॥

**पदार्थ:**-हे **(मरुतः)** मनुष्यो! जो **(तविषाः)** बलवान् **(उदन्यवः)** अपने को जल की इच्छा करने **(वयोवृधः)** अवस्था से बढ़ने वा अवस्था को बढ़ाने **(अश्वयुजः)** शीघ्रगामी पदार्थों को युक्त करने **(परिज्रयः)** और सब और जाने वाले जन **(विद्युता)** बिजुली के साथ **(वः)** आप लोगों को **(सम्, दधति)** उत्तम प्रकार धारण करते और **(वाशति)** वाणी के सदृश आचरण करते हैं और **(त्रितः)** तीन से **(परिज्रयः)** सब ओर जाने वाले **(आपः)** जल **(अवना)** रक्षण आदि का **(प्र, स्वरन्ति)** अच्छे प्रकार उच्चारण करते हैं, उनका आप लोग सत्कार करो॥२॥

**भावार्थ:**-जो मनुष्य बिजुली आदि की विद्या को जानते हैं, वे सम्पूर्ण सुख को सब के लिये धारण करते हैं॥२॥

**पुनर्मनुष्याः कीदृशा भवेयुरित्याह॥**

फिर मनुष्य कैसे हों, इस विषय को कहते हैं॥

**वि॒द्युन्म॑हसो॒ नरो॒ अश्म॑दिद्यवो॒ वात॑त्विषो म॒रुत॑ः पर्वत॒च्युत॑ः।**



www.9009.co.in

**अब्दया चिन्मुहुरा ह्रादुनीवृतः स्तनयदमा रभसा उदोजसः॥३॥**

**विद्युत्ऽमहसः। नरः। अश्मऽदिद्यवः। वातऽत्विषः। मरुतः। पर्वतऽच्युतः। अब्दऽया। चित्। मुहुः। आ। ह्रादुनिऽवृतः। स्तनयत्ऽअमाः। रभसाः। उत्ऽओजसः॥३॥**

**पदार्थः**-(**विद्युन्महसः**) ये विद्युद्विद्यायां महसो महान्तः (**नरः**) नायकाः (**अश्मदिद्यवः**) मेघविद्याप्रकाशकाः (**वातत्विषः**) वातविद्यया त्विषः कान्तयो येषान्ते (**मरुतः**) मानवाः (**पर्वतच्युतः**) ये पवतान्मेघान् च्यावयन्ति (**अब्दया**) येऽपो जलानि ददति ते (**चित्**) अपि (**मुहुः**) वारंवारम् (**आ**) (**ह्रादुनीवृतः**) ये ह्रादुन्या शब्दकर्त्र्या विद्युता युक्ताः (**स्तनयदमाः**) स्तनयन्ति शब्दयन्त्यमा गृहाणि येषान्ते (**रभसाः**) वेगवन्तः (**उदोजसः**) उत्कृष्टमोजः पराक्रमो येषां ते॥३॥

**अन्वयः**-हे नरो! ये विद्युन्महसोऽश्मदिद्यवो वातत्विषः पर्वतच्युतोऽब्दया स्तनयदमा रभसा उदोजसो मुहुरा ह्रादुनीवृतश्चिन्मरुतः सन्ति तैः सङ्गच्छस्व॥३॥

**भावार्थः**-ये विद्युन्मेघवायुशब्दादिविद्याविदः सन्ति ते सर्वतो श्रीमन्तो जायन्ते॥३॥

**पदार्थः**-हे (**नरः**) नायकजनो! जो (**विद्युन्महसः**) बिजुली की विद्या में विद्या में बड़े श्रेष्ठ (**अश्मदिद्यवः**) मेघ विद्या के प्रकाश करने वाले (**वातत्विषः**) वायुविद्या से कांतियां जिनकी ऐसे और (**पर्वतच्युतः**) मेघों को वर्षाने वा (**अब्दया**) जलों को देने वाले और (**स्तनयदमाः**) शब्द करते गृह जिनके वे (**रभसाः**) वेग से युक्त (**उदोजसः**) उत्कृष्ट पराक्रम जिनका वे (**मुहुः**) वार-वार (**आ**) सब प्रकार से (**ह्रादुनीवृतः**) शब्द करने वाली बिजुली से युक्त (**चित्**) भी (**मरुतः**) मनुष्य हैं, उनसे मिलिये॥३॥

**भावार्थः**-जो बिजुली, मेघ, वायु और शब्द आदि की विद्या को जानने वाले हैं, वे सब प्रकार से लक्ष्मीवान् होते हैं॥३॥

**पुनर्मनुष्यैः किं ज्ञातव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को क्या जानना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**व्य१क्तून् रुद्रा व्यहानि शिक्वसो व्य१न्तरिक्षं वि रजांसि धूतयः।**
**वि यदज्राँ अजथ नाव ईं यथा वि दुर्गाणि मरुतो नाह रिष्यथ॥४॥**

**वि। अक्तून्। रुद्राः। वि। अहानि। शिक्वसः। वि। अन्तरिक्षम्। वि। रजांसि। धूतयः। वि। यत्। अज्रान्। अजथ। नावः। ईम्। यथा। वि। दुःऽगानि। मरुतः। न। अह। रिष्यथ॥४॥**

**पदार्थः**-(**वि**) (**अक्तून्**) प्रसिद्धान् (**रुद्राः**) (**वायवः**) (**वि**) विशेषे (**अहानि**) दिनानि (**शिक्वसः**) शक्तिमन्तः (**वि**) (**अन्तरिक्षम्**) (**वि**) (**रजांसि**) लोकान् (**धूतयः**) ये धुन्वन्ति (**वि**) (**यत्**) (**अज्रान्**) सततगामिनः (**अजथ**) गच्छथ (**नावः**) महत्यो नौकाः (**ईम्**) जलम् (**यथा**) (**वि**) (**दुर्गाणि**) दुःखेन गन्तुं योग्यानि (**मरुतः**) मनुष्याः (**न**) (**अह**) विनिग्रहे (**रिष्यथ**) हिंस्यथ॥४॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे मरुतो! यद्ये शिक्वसो धूतयो रुद्रा अक्तून् प्रकटयन्त्यहानि वि मिमतेऽन्तरिक्षं प्रति रजांसि विदधति विचालयन्तीं नाव इव सर्वान् लोकानागमयन्ति तानज्रान् व्यजथ यथा दुर्गाणि नाह वि रिष्यथ तथा विचरत॥४॥

**भावार्थः**-मनुष्यैर्वायुविद्या अवश्यं ज्ञातव्या॥४॥

**पदार्थः**-हे **(मरुतः)** मनुष्यो! **(यत्)** जो **(शिक्वसः)** सामर्थ्य से युक्त **(धूतयः)** कांपने वाले **(रुद्राः)** पवन **(अक्तून्)** प्रसिद्धों को प्रकट करते हैं और **(अहानि)** दिनों का **(वि)** विशेष करके परिणाम करते अर्थात् गिनाते हैं **(अन्तरिक्षम्)** अन्तरिक्ष के प्रति **(रजांसि)** लोकों का **(वि)** विधान करते और **(वि)** विशेष करके चलाते हैं तथा **(ईम्)** जल को जैसे **(नावः)** बड़ी नौकायें, वैसे सम्पूर्ण लोकों को चलाते हैं उन **(अज्रान्)** निरन्तर चलाने वालों को **(वि, अजथ)** प्राप्त हूजिये और **(यथा)** जैसे **(दुर्गाणि)** दुःख से प्राप्त होने योग्यों को **(न)** नहीं **(अह)** ग्रहण करने में **(वि, रिष्यथ)** नाश करें वैसे **(वि)** विचरिये॥४॥

**भावार्थः**-मनुष्यों को चाहिये कि वायुविद्या को अवश्य जानें॥४॥

**पुनर्मनुष्यैः किं वेदितव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को क्या जानना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**तद्वीर्यं वो मरुतो महित्वनं दीर्घं ततान सूर्यो न योजनम्।**

**एता न यामे अगृभीतशोचिषोऽनश्वदां यन्न्ययातना गिरिम्॥५॥१४॥**

**तत्। वीर्यम्। वः। मरुतः। महिऽत्वनम्। दीर्घम्। ततान। सूर्यः। न। योजनम्। एताः। न। यामे। अगृभीतऽशोचिषः। अनश्वऽदाम्। यत्। नि। अयातन। गिरिम्॥५॥**

**पदार्थः**-**(तत्)** **(वीर्यम्)** **(वः)** युष्माकम् **(मरुतः)** वायुवद्वर्त्तमानाः **(महित्वनम्)** महत्त्वम् **(दीर्घम्)** विशालम् **(ततान)** तनयति **(सूर्यः)** **(नः)** इव **(योजनम्)** युजन्ति येन तदाकर्षणाख्यम् **(एताः)** गतयः **(न)** इव **(यामे)** प्रहर **(अगृभीतशोचिषः)** न गृहीतं शोचिस्तेजो यैस्ते **(अनश्वदाम्)** अविद्यमाना अश्वा तस्यां तां गतिम् **(यत्)** **(नि)** **(अयातना)** प्राप्नुत। अत्र **संहितायामिति** दीर्घः। **(गिरिम्)** मेघम्॥५॥

**अन्वयः**-हे मरुतः! सूर्यो योजनं न महित्वनं दीर्घं वस्तद्वीर्यं ततानागृभीतशोचिषो याम एता गतयो नानश्वदां गिरिं ददति। यद्यूयं न्ययातना तत्सर्वं वयं गृह्णीमः॥५॥

**भावार्थः**-ये सूर्यमेघगुणान्विदित्वा सामर्थ्यं धनं च वयन्ति ते परोपकारिणो भवन्ति॥५॥

**पदार्थः**-हे **(मरुतः)** वायु के सदृश वर्त्तमान मनुष्यो! **(सूर्यः)** सूर्य्य **(योजनम्)** युक्त करते हैं जिससे उस आकर्षण नामक के **(न)** सदृश और **(महित्वनम्)** बड़प्पन को जैसे वैसे **(दीर्घम्)** विशाल **(वः)** आपके **(तत्)** उस **(वीर्यम्)** पराक्रम को **(ततान)** विस्तृत करता है और **(अगृभीतशोचिषः)** नहीं ग्रहण किया तेज जिन्होंने वे **(यामे)** प्रहर में **(एताः)** ये गमन **(न)** जैसे **(अनश्वदाम्)** नहीं घोड़े जिसमें



www.9009.co.in

उस गमन और **(गिरिम्)** मेघ को देते हैं और **(यत्)** जिसको आप लोग **(नि, अयातना)** प्राप्त हूजिये, उस सब को हम लोग ग्रहण करें॥५॥

**भावार्थ:**-जो लोग सूर्य और मेघों के गुणों को जान कर सामर्थ्य और धन को इकट्ठा करते हैं, वे परोपकारी होते हैं॥५॥

**मनुष्यैः कथं वर्त्तितव्यमित्याह॥**

मनुष्यों को कैसे वर्त्तना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**अभ्राजि शर्धो मरुतो यदर्णसं मोषथा वृक्षं कपनेव वेधसः।**

**अध स्मा नो अरमतिं सजोषसश्चक्षुरिव यन्तमनु नेषथा सुगम्॥६॥**

**अभ्राजि। शर्धः। मरुतः। यत्। अर्णसम्। मोषथ। वृक्षम्। कपनाऽइव। वेधसः। अध। स्म। नः। अरमतिम्। सऽजोषसः। चक्षुःऽइव। यन्तम्। अनु। नेषथ। सुऽगम्॥६॥**

**पदार्थ:**-**(अभ्राजि)** प्रकाश्यते **(शर्धः)** बलम् **(मरुतः)** मनुष्याः **(यत्)** **(अर्णसम्)** जलम् **(मोषथ)** चोरयत। अत्र **संहितायामिति** दीर्घः। **(वृक्षम्)** वटादिकम् **(कपनेव)** कपना वायुगतय इव **(वेधसः)** मेधाविनः **(अध)** अथ **(स्म)** **(नः)** अस्माकम् **(अरमतिम्)** अरमणम् **(सजोषसः)** समानप्रीतिसेविनः **(चक्षुरिव)** यथा चक्षुः **(यन्तम्)** प्राप्नुवन्तम् **(अनु)** **(नेषथ)** नयथ। अत्र **संहितायामिति** दीर्घः। **(सुगम्)** सुष्ठु गच्छन्ति यस्मिन्॥६॥

**अन्वय:**-हे मरुतो! युष्माभिर्यच्छर्धोऽभ्राजि यदर्णसं यूयं मोषथ तर्हि युष्मान् वृक्षं कपनेव वयं दण्डयेयाध हे वेधसः! सजोषसो यूयं चक्षुरिव नोऽरमतिं यन्तं सुगं स्मानु नेषथ॥६॥

**भावार्थ:**-अत्रोपमालङ्कारः। ये सर्वेषां शरीरात्मबलं प्रकाशयन्ति ते धन्या सन्ति ये च सद्विद्यागुणाँश्चोरयन्ति तान् धिग्धिक्॥६॥

**पदार्थ:**-हे **(मरुतः)** मनुष्यो! आप लोगों से **(यत्)** जो **(शर्धः)** बल **(अभ्राजि)** प्रकाशित किया जाता और **(अर्णसम्)** जल को जो तुम लोग **(मोषथ)** चुराइये तो आप लोगों को जैसे **(वृक्षम्)** वट आदि वृक्ष को **(कपनेव)** पवनों के गमन वैसे हम लोग दण्ड देवें **(अध)** इसके अनन्तर हे **(वेधसः)** बुद्धिमान् जनो! **(सजोषसः)** तुल्य प्रीति के सेवन करने वाले आप लोग **(चक्षुरिव)** नेत्र को जैसे वैसे **(नः)** हम लोगों के **(अरमतिम्)** रमणरहित **(यन्तम्)** प्राप्त होने वाले **(सुगम्)** सुग अर्थात् उत्तमता से चलते हैं, जिसमें उसको **(स्म)** ही **(अनु, नेषथ)** अनुकूल प्राप्त कीजिये॥६॥

**भावार्थ:**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जो सब के शरीर और आत्मा के बल को प्रकाशित करते हैं, वे धन्य हैं और जो श्रेष्ठ विद्या और गुणों को चुराते, उनको धिक्कार धिक्कार॥६॥

**अथेश्वरः कीदृशोऽस्तीत्युपदिश्यते॥**

अब ईश्वर कैसा है, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥



www.9009.co.in

**न स जीयते मरुतो न हन्यते न स्रेधति न व्यथते न रिष्यति।**

**नास्य राय उप दस्यन्ति नोतय ऋषिं वा यं राजानं वा सुषूदथ॥७॥**

**न। सः। जीयते। मरुतः। न। हन्यते। न। स्रेधति। व्यथते। न। रिष्यति। न। अस्य। रायः। उप। दस्यन्ति। न। ऊतयः। ऋषिम्। वा। यम्। राजानम्। वा। सुसूदथ॥७॥**

**पदार्थः**-(**न**) (**सः**) जगदीश्वरः (**जीयते**) जितो भवति (**मरुतः**) मनुष्याः (**न**) (**हन्यते**) (**न**) (**स्रेधति**) न क्षीयते (**न**) (**व्यथते**) पीड्यते (**न**) (**रिष्यति**) हिनस्ति (**न**) (**अस्य**) (**रायः**) धनम् (**उप**) (**दस्यन्ति**) क्षयन्ति (**न**) (**ऊतयः**) रक्षणाद्याः (**ऋषिम्**) वेदार्थविदम् (**वा**) (**यम्**) (**राजानम्**) (**वा**) (**सुषूदथ**) रक्षथ॥७॥

**अन्वयः**-हे मरुतो! स न जीयते न हन्यते न स्रेधति न व्यथते न रिष्यति अस्य न रायो नोतय उप दस्यन्ति यमृषिं वा राजानं वा यूयं सुषूदथ॥७॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! योऽजरोऽमरः सच्चिदानन्दस्वरूपो नित्यगुणकर्मस्वभावो जगदीश्वरोऽस्ति तं सर्वे यूयमुपाध्वम्॥७॥

**पदार्थः**-हे (**मरुतः**) मनुष्यो! (**सः**) वह (**न**) न (**जीयते**) जीता जाता (**न**) न (**हन्यते**) नाश किया जाता (**न**) न (**स्रधेति**) नाश होता (**न**) न (**व्यथते**) पीड़ित होता और (**न**) न (**रिष्यति**) हिंसा करता है (**अस्य**) इस का (**न**) न (**रायः**) धन और (**न**) न (**ऊतयः**) रक्षण आदि व्यवहार (**उप, दस्यन्ति**) नाश होते हैं (**यम्**) जिस (**ऋषिम्**) वेदार्थ के जानने वाले (**वा**) अथवा (**राजानम्**) राजा को (**वा**) भी आप लोग (**सुषूदथ**) रखिये॥७॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो वृद्धावस्था वा मरणावस्था रहित, सत्, चित् और आनन्दस्वरूप, नित्य गुण, कर्म्म और स्वभाव वाला जगदीश्वर है, उसकी सब आप लोग उपासना करो॥७॥

**पुनर्मनुष्याः कीदृशा भवेयुरित्याह॥**

फिर मनुष्य कैसे हों, इस विषय को कहते हैं॥

**नियुत्वन्तो ग्रामजितो यथा नरोऽर्यमणो न मरुतः कबन्धिनः।**

**पिन्वन्त्युत्सं यदिनासो अस्वरन् व्युन्दन्ति पृथिवीं मध्वो अन्धसा॥८॥**

**नियुत्वन्तः। ग्रामऽजितः। यथा। नरः। अर्यमणः। न। मरुतः। कबन्धिनः। पिन्वन्ति। उत्सम्। यत्। इनासः। अस्वरन्। वि। उन्दन्ति। पृथिवीम्। मध्वः। अन्धसा॥८॥**

**पदार्थः**-(**नियुत्वन्तः**) निश्चयवन्तः (**ग्रामजितः**) ये ग्रामं जयन्ति ते (**यथा**) (**नरः**) नायकाः (**अर्यमणः**) न्यायेशाः (**नः**) (**मरुतः**) (**कबन्धिनः**) बहूदकाः (**पिन्वन्ति**) प्रीणन्ति (**उत्सम्**) कूपमिव



www.9009.co.in

**(यत्)** **(इनासः)** ईश्वराः समर्थाः **(अस्वरन्)** स्वरन्ति शब्दयन्ति **(वि)** **(उन्दन्ति)** क्लेदयन्ति **(पृथिवीम्)** **(मध्वः)** मधुरगुणयुक्ताः **(अन्धसा)** अन्नेन सह॥८॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथा नियुत्वन्तो ग्रामजितोऽर्यमणो न कबन्धिन इनासो नरो मरुतो यदुत्समिव पिन्वन्त्यस्वरन्नन्धसा सह मध्वस्सन्तः पृथिवीं व्युन्दन्ति ते भाग्यशालिनो भवन्ति॥८॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। ये जलवच्छान्तिकराः सामर्थ्यं वर्धयमाना विजयन्ते ते श्रियं लभन्ते॥८॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(यथा)** जैसे **(नियुत्वन्तः)** निश्चयवान् **(ग्रामजितः)** ग्राम को जीतने वाले **(अर्यमणः)** न्यायाधीशो के **(न)** सदृश **(कबन्धिनः)** बहुत जलों से युक्त **(इनासः)** समर्थ **(नरः)** नायक **(मरुतः)** मनुष्य **(यत्)** जिसको **(उत्सम्)** कूप के समान **(पिन्वन्ति)** तृप्त करते वा **(अस्वरन्)** शब्द करते हैं और **(अन्धसा)** अन्न के साथ **(मध्वः)** मधुर गुणयुक्त होते हुए **(पृथिवीम्)** पृथिवी को **(वि, उन्दन्ति)** विशेष गीला करते हैं, वे भाग्यशाली होते हैं॥८॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जो जल के सदृश शान्ति करने वाले और सामर्थ्य को बढ़ाते हुए विजय को प्राप्त होते हैं, वे लक्ष्मी को प्राप्त होते हैं॥८॥

**मनुष्यैः कथमुपकारो ग्रहीतव्य इत्याह॥**

मनुष्यों को कैसे उपकार लेना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**प्रवत्वतीयं पृथिवी मरुद्भ्यः प्रवत्वती द्यौर्भवति प्रयद्भ्यः।**

**प्रवत्वतीः पथ्या अन्तरिक्ष्याः प्रवत्वन्तः पर्वता जीरदानवः॥९॥**

**प्रवत्वती। इयम्। पृथिवी। मरुत्ऽभ्यः। प्रवत्वती। द्यौः। भवति। प्रयत्ऽभ्यः। प्रवत्वतीः। पथ्याः। अन्तरिक्ष्याः। प्रवत्वन्तः। पर्वताः। जीरऽदानवः॥९॥**

**पदार्थः**-**(प्रवत्वती)** निम्नदेशयुक्ता **(इयम्)** **(पृथिवी)** भूमिः **(मरुद्भ्यः)** मनुष्यादिभ्यः **(प्रवत्वती)** प्रणवती **(द्यौः)** प्रकाशः **(भवति)** **(प्रयद्भ्यः)** प्रयत्नं कुर्वद्भ्यः **(प्रवत्वतीः)** निम्नगामिनीः **(पथ्याः)** पथे हिताः **(अन्तरिक्ष्याः)** अन्तरिक्षे भवाः **(प्रवत्वन्तः)** प्रवणशीलाः **(पर्वताः)** मेघाः **(जीरदानवः)** जीवनप्रदाः॥९॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! येयं प्रवत्वती पृथिवी प्रवत्वती द्यौः प्रयद्भ्यो मरुद्भ्यो हितकारिणी भवति यस्यां प्रवत्वन्तो जीरदानवः पर्वता अन्तरिक्ष्याः प्रवत्वतीः पथ्याः वर्षाः कुर्वन्ति ते यथावद्वेदितव्याः॥९॥

**भावार्थः**-मनुष्यैः पृथिव्याः सकाशाद्यावाञ्छक्यस्तावानुपकारो ग्रहीतव्यः॥९॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो **(इयम्)** यह **(प्रवत्वती)** नीचे के स्थान से युक्त **(पृथिवी)** भूमि और **(प्रवत्वती)** फैलने वाला **(द्यौः)** प्रकाश और **(प्रयद्भ्यः)** प्रयत्न करते हुए **(मरुद्भ्यः)** मनुष्य आदिकों के लिये हितकारक **(भवति)** होता है जिसमें **(प्रवत्वन्तः)** गमनशील **(जीरदानवः)** जीवन को देने वाले



www.9009.co.in

(**पर्वताः**) मेघ (**अन्तरिक्ष्याः**) अन्तरिक्ष में उत्पन्न (**प्रवत्वतीः**) नीचे चलने वाले (**पथ्याः**) मार्ग के लिये हितकारक वृष्टियों को करते हैं, वे यथावत् जानने योग्य हैं॥९॥

**भावार्थः**-मनुष्यों को चाहिये कि पृथिवी के समीप से जितना हो सकता है, उतना उपकार ग्रहण करें॥९॥

**पुनर्मनुष्यैः कथं वर्त्तितव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को कैसे वर्त्तना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**यन्मरुतः सभरसः स्वर्णरः सूर्य उदिते मदथा दिवो नरः।**

**न वोऽश्वाः श्रथयन्ताह सिस्रतः सद्यो अस्याध्वनः पारमश्नुथ॥१०॥१५॥**

**यत्। मरुतः। सऽभरसः। स्वःऽनरः। सूर्ये। उत्ऽइते। मदथ। दिवः। नरः। न। वः। अश्वाः। श्रथयन्त। अह। सिस्रतः। सद्यः। अस्य। अध्वनः। पारम्। अश्नुथ॥१०॥**

**पदार्थः**-(**यत्**) ये (**मरुतः**) मनुष्याः (**सभरसः**) समानपालनपोषणाः (**स्वर्णरः**) ये स्वः सुखं नयन्ति ते (**सूर्ये**) (**उदिते**) उदयं प्राप्ते (**मदथ**) आनन्दथ (**दिवः**) कामयमानाः (**नरः**) सत्ये धर्मे नेतारः (**न**) (**वः**) युष्माकम् (**अश्वाः**) तुरङ्गाः (**श्रथयन्त**) हिंसन्ति (**अह**) विनिग्रहे (**सिस्रतः**) गन्तारः (**सद्यः**) शीघ्रम् (**अस्य**) (**अध्वनः**) मार्गस्य (**पारम्**) (**अश्नुथ**) प्राप्नुथ॥१०॥

**अन्वयः**-हे सभरसः स्वर्णरो दिवो नरो मरुतो! यूयमुदिते सूर्ये यत्प्राप्य मदथ तेन वः सिस्रतोऽश्वा न श्रथयन्ताह तैरस्याध्वनः पारं सद्योऽश्नुथ॥१०॥

**भावार्थः**-ये मनुष्याः सूर्य्योदयात् प्रागुत्थाय यावच्छयनं तावत्प्रयतन्ते दुःख दारिद्र्यान्तं गत्वा सुखिनः श्रीमन्तो जायन्ते॥१०॥

**पदार्थः**-हे (**सभरसः**) तुल्य पालन और पोषण करने वाले (**स्वर्णरः**) सुख को प्राप्त कराते और (**दिवः**) कामना करते हुए (**नरः**) सत्य धर्म्म में पहुंचाने वाले (**मरुतः**) जनो! आप लोग (**उदिते**) उदय को प्राप्त हुए (**सूर्ये**) सूर्य में (**यत्**) जिसको प्राप्त होकर (**मदथ**) आनन्दित होओ उससे (**वः**) आप लोगों के (**सिस्रतः**) चलने वाले (**अश्वाः**) घोड़े (**न**) नहीं (**श्रथयन्त, अह**) हिंसा करते रुकते हैं, उनसे (**अस्य**) इस (**अध्वनः**) मार्ग के (**पारम्**) पार को (**सद्यः**) शीघ्र (**अश्नुथ**) प्राप्त हूजिये॥१०॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य सूर्य्योदय से पहले उठ के जब तक सोवैं नहीं तब तक प्रयत्न करते हैं, दुःख और दारिद्र्य के अन्त को प्राप्त होकर सुखी और लक्ष्मीवान् होते हैं॥१०॥

**पुनर्मनुष्याः के कीदृशा भवेयुरित्याह॥**

फिर मनुष्य कौन कैसे हों, इस विषय को कहते हैं॥

**अंसेषु व ऋष्टयः पत्सु खादयो वक्षःसु रुक्मा मरुतो रथे शुभः।**



www.9009.co.in

**अग्निभ्राजसो विद्युतो गभस्त्योः शिप्राः शीर्षसु वितता हिरण्ययीः॥ ११॥**

**अंसेषु। वः। ऋष्टयः। पत्ऽसु। खादयः। वक्षःऽसु। रुक्माः। मरुतः। रथे। शुभः। अग्निऽभ्राजसः। विऽद्युतः। गभस्त्योः। शिप्राः। शीर्षऽसु। विऽतताः। हिरण्ययीः॥ ११॥**

**पदार्थः**-(**अंसेषु**) स्कन्धेषु (**वः**) युष्माकम् (**ऋष्टयः**) शस्त्रास्त्राणि (**पत्सु**) पादेषु (**खादयः**) भोक्तारः (**वक्षःसु**) (**रुक्माः**) सुवर्णालङ्काराः (**मरुतः**) मनुष्याः (**रथे**) रमणीये याने (**शुभः**) शुम्भमानाः (**अग्निभ्राजसः**) अग्निरिव प्रकाशमानाः (**विद्युतः**) तडितः (**गभस्त्योः**) हस्तयोर्मध्ये (**शिप्राः**) उष्णिषः (**शीर्षसु**) शिरस्सु (**वितताः**) विस्तृताः (**हिरण्ययीः**) सुवर्णप्रचुराः॥ ११॥

**अन्वयः**-हे मरुतो यदा वो वायुवद्वर्तमाना वीरा! यद् वोंऽसेष्वृष्टयः पृत्सु खादयो वक्षःसु रुक्मा रथे शुभो गभस्त्योरग्निभ्राजसो विद्युतः शीर्षसु वितता हिरण्ययीः शिप्राः स्युस्तदा हस्तगतो विजयो वर्त्तते॥ ११॥

**भावार्थः**-ये राजपुरुषा अहर्निशं राजकार्य्येषु प्रवीणा दुर्व्यसनेभ्यो विरक्ताः साङ्गोपाङ्गराजसामग्रीमन्तः स्युस्ते सदैव प्रतिष्ठां लभन्ते॥ ११॥

**पदार्थः**-हे (**मरुतः**) मनुष्यो जब (**वः**) आप लोगों के वायु के सदृश वर्त्तमान वीरजनो! जो आप लोगों के (**अंसेषु**) कन्धों में (**ऋष्टयः**) शस्त्र और अस्त्र (**पत्सु**) पैरों में (**खादयः**) भोक्ताजन (**वक्षःसु**) वक्षःस्थलों में (**रुक्माः**) सुवर्ण अलंकार (**रथे**) सुन्दर वाहन में (**शुभः**) शोभित पदार्थ (**गभस्त्योः**) हाथों के मध्य में (**अग्निभ्राजसः**) अग्नि के सदृश प्रकाशमान (**विद्युतः**) बिजुलियाँ (**शीर्षसु**) शिरों में (**वितताः**) विस्तृत (**हिरण्ययीः**) सुवर्ण जिनमें बहुत ऐसी (**शिप्राः**) पगड़ियाँ होवें, तब हस्तगत विजय होता है॥ ११॥

**भावार्थः**-जो राजपुरुष अहर्निश राजकार्य्यों में प्रवीण, दुर्व्यसनों से विरक्त और साङ्गोपाङ्ग राजसामग्री वाले हों, वे सदैव प्रतिष्ठा को प्राप्त होते हैं॥ ११॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**तं नाकमर्यो अगृभीतशोचिषं रुशत्पिप्पलं मरुतो वि धूनुथ।**
**समच्यन्त वृजनातित्विषन्त यत्स्वरन्ति घोषं विततमृतायवः॥ १२॥**

**तम्। नाकम्। अर्यः। अगृभीतऽशोचिषम्। रुशत्। पिप्पलम्। मरुतः। वि। धूनुथ। सम्। अच्यन्त। वृजना। अतित्विषन्त। यत्। स्वरन्ति। घोषम्। विऽततम्। ऋतऽयवः॥ १२॥**

**पदार्थः**-(**तम्**) (**नाकम्**) अविद्यमानदुःखम् (**अर्यः**) स्वामीश्वरः (**अगृभीतशोचिषम्**) न गृहीतं शोचिर्यस्मिंस्तम् (**रुशत्**) सुस्वरूपम् (**पिप्पलम्**) फलभोगम् (**मरुतः**) वायुरिव वर्त्तमानाः (**वि**) विशेषेण (**धूनुथ**) कम्पयथ (**सम्**) (**अच्यन्त**) सम्यक् प्राप्नुत (**वृजना**) वृजन्ति यैस्तानि (**अतित्विषन्त**) प्रदीपयत



www.9009.co.in

प्रकाशिता भवत **(यत्)** यम् **(स्वरन्ति)** उच्चरन्ति **(घोषम्)** वाचम् **(विततम्)** विस्तृतम् **(ऋतायवः)** आत्मन ऋतमिच्छवः॥१२॥

**अन्वयः**-हे मरुतो! यूयमर्य इव ऋतायवो यद्विततं घोषं स्वरन्ति तमगृभीतशोचिषं रुशत् पिप्पलं नाकं समच्यन्त दुःखं वि धूनुथ वृजनातित्विषन्त॥१२॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। ये मनुष्या ईश्वरवन्न्यायकारिणो जगदुपकारकाः उपदेशकाः सन्ति ते जगद्भूषका वर्त्तन्ते॥१२॥

**पदार्थः**-हे **(मरुतः)** वायु के सदृश वेगयुक्त वर्त्तमान जनो! आप लोग **(अर्यः)** स्वामी ईश्वर के सदृश **(ऋतायवः)** अपने सत्य की इच्छा करते हुए **(यत्)** जिस **(विततम्)** विस्तृत **(घोषम्)** वाणी का **(स्वरन्ति)** उच्चारण करते हैं **(तम्)** उस **(अगृभीतशोचिषम्)** अगृभीतशोचिषम् अर्थात् नहीं ग्रहण की स्वच्छता जिसमें ऐसे **(रुशत्)** अच्छे स्वरूप वाले **(पिप्पलम्)** फलभोगरूप **(नाकम्)** दुःखरहित आनन्द को **(सम्, अच्यन्त)** उत्तम प्रकार प्राप्त हूजिये दुःख को **(वि)** विशेष करके **(धूनुथ)** कम्पाइये और **(वृजना)** चलते हैं जिनसे उनको **(अतित्विषन्त)** प्रकाशित कीजिये तथा प्रकाशित हूजिये॥१२॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो मनुष्य ईश्वर के सदृश न्यायकारी सम्पूर्ण जगत् के उपकार करने वाले और उपदेशक हैं, वे संसार के भूषक हैं॥१२॥

**पुनर्मनुष्यैः किमेष्टव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को क्या इच्छा करनी चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**युष्मादत्तस्य मरुतो विचेतसो रायः स्याम रथ्यो३ वयस्वतः।**

**न यो युच्छति तिष्यो३ यथा दिवो३ऽस्मे रारन्त मरुतः सहस्रिणम्॥१३॥**

**युष्माऽदत्तस्य। मरुतः। विऽचेतसः। रायः। स्याम। रथ्यः। वयस्वतः। न। यः। युच्छति। तिष्यः। यथा। दिवः। अस्मे इति। ररन्त। मरुतः। सहस्रिणम्॥१३॥**

**पदार्थः**-**(युष्मादत्तस्य)** युष्माभिर्दत्तस्य **(मरुतः)** प्राणवत्प्रिया जनाः **(विचेतसः)** विविधं चेतः संज्ञानं येषान्ते **(रायः)** धनस्य **(स्याम)** **(रथ्यः)** बहुरथादियुक्ताः **(वयस्वतः)** प्रशस्तं वयो जीवनं विद्यते यस्य तस्य **(न)** **(यः)** **(युच्छति)** प्रमाद्यति **(तिष्यः)** आदित्यः पुष्यनक्षत्रं वा **(यथा)** **(दिवः)** प्रकाशमध्ये **(अस्मे)** अस्मभ्यमस्मासु वा **(रारन्त)** रमन्ते **(मरुतः)** मानवाः **(सहस्रिणम्)** सहस्राण्यसङ्ख्यानि वस्तूनि विद्यन्ते यस्य तम्॥१३॥

**अन्वयः**-हे विचेतसो रथ्यो मरुतो! वयं युष्मादत्तस्य वयस्वतो रायः पतयः स्याम। योऽस्मे न युच्छति यथा दिवो मध्ये तिष्योऽस्ति तथा प्रकाश्येत। हे मरुतो! यूयं सहस्रिणं रारन्त॥१३॥

**भावार्थः**-मनुष्यैः सदा धनाढ्यत्वमेषणीयं प्रमादो नैव कर्त्तव्यः॥१३॥



www.9009.co.in

**पदार्थ:**-हे **(विचेतस:)** अनेक प्रकार का संज्ञान जिनका वे **(रथ्य:)** बहुत रथ आदि से युक्त **(मरुत:)** प्राणों के सदृश प्रियजनो! हम लोग **(युष्मादत्तस्य)** आप लोगों से दिये गये **(वयस्वत:)** प्रशंसित जीवन जिसका उस **(राय:)** धन के स्वामी **(स्याम)** होवें और **(य:)** जो **(अस्मे)** हम लोगों के लिये वा हम लोगों में **(न)** नहीं **(युच्छति)** प्रमाद करता और **(यथा)** जैसे **(दिव:)** प्रकाश के मध्य में **(तिष्य:)** सूर्य्य वा पुष्य नक्षत्र है, वैसे प्रकाशित होवे और हे **(मरुत:)** जनो! आप लोग **(सहस्रिणम्)** असंख्य वस्तु है विद्यमान जिसके उसको **(रारन्त)** रमण करते हैं॥१३॥

**भावार्थ:**-मनुष्यों को चाहिये कि सदा धनाढ्यपन का खोज करें और प्रमाद न करें॥१३॥

**राजादिभि: के के रक्षणीया इत्याह॥**

राजादिकों से कौन-कौन रक्षा पाने योग्य हैं, इस विषय को कहते हैं॥

**यूयं रयिं मरुत: स्पार्हवीरं यूयमृषिमवथ सामविप्रम्।**

**यूयमर्वन्तं भरताय वाजं यूयं धत्थ राजानं श्रुष्टिमन्तम्॥१४॥**

**यूयम्। रयिम्। मरुत:। स्पार्हऽवीरम्। यूयम्। ऋषिम्। अवथ। सामऽविप्रम्। यूयम्। अर्वन्तम्। भरताय। वाजम्। यूयम्। धत्थ। राजानम्। श्रुष्टिऽमन्तम्॥१४॥**

**पदार्थ:**-**(यूयम्)** **(रयिम्)** श्रियम् **(मरुत:)** पुरुषार्थिनो मनुष्या: **(स्पार्हवीरम्)** स्पार्हा अभिकाङ्क्षिता वीरा यस्मिन् **(यूयम्)** **(ऋषिम्)** वेदार्थविदम् **(अवथ)** रक्षथ **(सामविप्रम्)** सामसु मेधाविनम् **(यूयम्)** **(अर्वन्तम्)** प्राप्नुवन्तम् **(भरताय)** धारणपोषणाय **(वाजम्)** वेगान्नविज्ञानादिकम् **(यूयम्)** **(धत्थ)** **(राजानम्)** न्यायविनयाभ्यां प्रकाशमानम् **(श्रुष्टिमन्तम्)** श्रुष्टी प्रशस्तं क्षिप्रकरं यस्मिँस्तम्॥१४॥

**अन्वय:**-हे मरुतो! यूयं स्पार्हवीरं रयिमवथ यूयं सामविप्रमृषिमवथ यूयं भरतायार्वन्तं वाजं धत्थ यूयं श्रुष्टिमन्तं राजानं धत्थ॥१४॥

**भावार्थ:**-मनुष्यै: सुसहायेन श्रीर्विद्वांस: सेना राजा च धर्त्तव्या:॥१४॥

**पदार्थ:**-हे **(मरुत:)** पुरुषार्थी मनुष्यो! **(यूयम्)** आप लोग **(स्पार्हवीरम्)** अभिकांक्षित वीर जिसमें उस **(रयिम्)** लक्ष्मी की **(अवथ)** रक्षा कीजिये और **(यूयम्)** आप लोग **(सामविप्रम्)** सामों में बुद्धिमान् **(ऋषिम्)** वेदार्थ के जानने वाले की रक्षा कीजिये और **(यूयम्)** आप लोग **(भरताय)** धारण और पोषण के लिये **(अर्वन्तम्)** प्राप्त होते हुए **(वाजम्)** वेग, अन्न और विज्ञान आदि को **(धत्थ)** धारण करो और **(यूयम्)** आप लोग **(श्रुष्टिमन्तम्)** अच्छा क्षिप्रकरण जिसमें उस **(राजानम्)** न्याय और विनय से प्रकाशमान को धारण कीजिये॥१४॥

**भावार्थ:**-मनुष्यों को चाहिये कि उत्तम सहाय से लक्ष्मी, विद्वान्, सेना और राजा को धारण करें॥१४॥



www.9009.co.in

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**तद्वो॑ यामि॒ द्रवि॑णं सद्यऊतयो॒ येना॒ स्व१॒र्ण त॒तना॑म॒ नॄँर॒भि।**

**इ॒दं सु मे॑ मरुतो हर्यता॒ वचो॒ यस्य॒ तरे॑म॒ तर॑सा श॒तं हिमा॑:॥ १५॥ १६॥**

**तत्। व॒:। या॒मि॒। द्रवि॑णम्। स॒द्य॒:ऽऊ॒त॒य॒:। येन॑। स्व॑:। न। त॒तना॑म। नॄन्। अ॒भि। इ॒दम्। सु। मे॒। म॒रु॒त॒:। ह॒र्य॒त॒। वच॑:। यस्य॑। तरे॑म। तर॑सा। श॒तम्। हिमा॑:॥ १५॥**

**पदार्थः-(तत्) (वः)** युष्माकं सकाशात् **(यामि)** प्राप्नोमि **(द्रविणम्)** धनं यशो वा **(सद्यऊतयः)** क्षिप्राणि रक्षणादीनि येषां ते **(येना) (स्वः)** सुखम् **(न)** इव **(ततनाम)** विस्तीर्णीयाम **(नॄन्)** मनुष्यान् **(अभि) (इदम्) (सु) (मे) (मरुतः)** मनुष्याः **(हर्यता)** कामयध्वम् **(वचः)** वचनम् **(यस्य) (तरेम) (तरसा)** बलेन (निघं०२.९) **(शतम्) (हिमाः)** वर्षाणि॥ १५॥

**अन्वयः**-हे सद्यऊतयो मरुतो! वो यद्द्रविणमहं यामि तद्यूयं प्रयच्छत येना स्वर्ण नॄनभि ततनाम यूयमिदं मे वचो सु हर्यत यस्य तरसा वयं शतं हिमास्तरेम तेन यूयममि तरत॥ १५॥

**भावार्थः**-हे विद्वांसो! भवन्तो यशो धनं सुखं सत्यं वचो बलं च वर्धयित्वा दुःखानि तरन्त्विति॥ १५॥

अत्र सूर्य्यविद्युन्सुखगुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति चतुःपञ्चाशत्तमं सूक्तं षोडशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे **(सद्यऊतयः)** शीघ्र रक्षण आदि वाले **(मरुतः)** मनुष्यो **(वः)** आप लोगों के समीप से जिस **(द्रविणम्)** धन वा यश को **(यामि)** प्राप्त होता हूं **(तत्)** उसको आप लोग दीजिये **(येना)** जिससे **(स्वः)** सुख के **(न)** सदृश **(नॄन्)** मनुष्यों को **(अभि, ततनाम)** सब प्रकार विस्तृत करें और आप लोग **(इदम्)** इस **(मे)** मेरे **(वचः)** वचन की **(सु, हर्यता)** अच्छे प्रकार कामना करिये और **(यस्य)** जिसके **(तरसा)** बल से हम लोग **(शतम्)** सौ **(हिमाः)** वर्ष **(तरेम)** पार होवें, उससे आप लोग भी पार हूजिये॥ १५॥

**भावार्थः**-हे विद्वानो! आप लोग यश, धन, सुख, सत्य, वचन और बल को बढ़ाय दुःखों के पार हूजिये॥ १५॥

इस सूक्त में बिजुली और सुख के गुण-वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ संगति जाननी चाहिये॥

**यह चौवनवां सूक्त और सोलहवां वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

**अथ दशर्चस्य पञ्चपञ्चाशत्तमस्य सूक्तस्य श्यावाश्व आत्रेय ऋषिः। मरुतो देवताः। १, ५ जगती। २, ४, ७, ८ निचृज्जगती। ९ विराड्जगती छन्दः। निषादः स्वरः। ३ स्वराट् त्रिष्टुप्। ६ त्रिष्टुप्। १० निचृत्त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः॥**

***पुनर्मनुष्याः कथं वर्त्तेरन्नित्याह॥***

अब दश ऋचा वाले पचपनवें सूक्त का प्रारम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में फिर मनुष्य कैसे वर्त्तें, इस विषय को कहते हैं॥

**प्रयज्यवो मरुतो भ्राजदृष्टयो बृहद्वयो दधिरे रुक्मवक्षसः।**

**ईयन्ते अश्वैः सुयमेभिराशुभिः शुभं यातामनु रथा अवृत्सत॥ १॥**

**प्रऽयज्यवः। मरुतः। भ्राजत्ऽऋष्टयः। बृहत्। वयः। दधिरे। रुक्मऽवक्षसः। ईयन्ते। अश्वैः। सुऽयमेभिः। आशुऽभिः। शुभम्। याताम्। अनु। रथाः। अवृत्सत॥ १॥**

**पदार्थः-(प्रयज्यवः)** प्रकृष्टयज्यवः सङ्गन्तारो मनुष्याः **(मरुतः)** प्राणा इव वर्त्तमानाः **(भ्राजदृष्टयः)** भ्राजन्त ऋष्टयो विज्ञानानि येषान्ते **(बृहत्)** महत् **(वयः)** कमनीयं जीवनम् **(दधिरे)** दध्यासुः **(रुक्मवक्षसः)** रुक्माणि सुवर्णादियुक्तान्याभूषणानि [वक्षःसु] येषान्ते **(ईयन्ते)** प्राप्यन्ते **(अश्वैः)** आशुकारिभिः **(सुयमेभिः)** शोभना यमा येषु तैः **(आशुभिः)** सद्योऽभिगामिभिः **(शुभम्)** धर्म्यं व्यवहारम् **(याताम्)** गच्छताम् **(अनु)** **(रथाः)** रमणीया विमानादयः **(अवृत्सत)** वर्त्तन्ते॥ १॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यैरश्वैराशुभिः सुयमेभिर्जनैः शुभं यातां रथा ईयन्ते प्रयज्यवो भ्राजदृष्टयो रुक्मवक्षसो मरुतो बृहद्वयो दधिरे ये चान्ववृत्सत तैस्सह यूयमप्येवं प्रयतध्वम्॥ १॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! भवन्तो ब्रह्मचर्य्यादिना चिरञ्जीविनो योगिनः पुरुषार्थिनः स्युः॥ १॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जिन **(अश्वैः)** शीघ्र करने वा **(आशुभिः)** शीघ्र जाने वाले **(सुयमेभिः)** सुन्दर यम इन्द्रियनिग्रह आदि जिनके उन जनों से **(शुभम्)** धर्मयुक्त व्यवहार को **(याताम्)** प्राप्त होते हुओं के **(रथाः)** सुन्दर वाहन आदि **(ईयन्ते)** प्राप्त किये जाते हैं और **(प्रयज्यवः)** उत्तम मिलाने वाले मनुष्य **(भ्राजदृष्टयः)** शोभित होते हैं विज्ञान जिनके वे **(रुक्मवक्षसः)** सुवर्ण आदि से युक्त आभूषण [वक्षःस्थलों पर] जिनके वे **(मरुतः)** प्राणों के सदृश वर्त्तमान **(बृहत्)** बड़े **(वयः)** सुन्दर जीवन को **(दधिरे)** धारण करें और जो **(अनु)** पश्चात् **(अवृत्सत)** वर्त्तमान होते हैं, उनके साथ आप लोग भी इस प्रकार प्रयत्न कीजिये॥ १॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! आप लोग ब्रह्मचर्य आदि से अति काल पर्य्यन्त जीवन वाले योगी पुरुषार्थी होइये॥ १॥



www.9009.co.in

**पुनर्मनुष्याः कीदृशा भवेयुरित्याह॥**

फिर मनुष्य कैसे हों, इस विषय को कहते हैं॥

**स्वयं दधिध्वे तविषीं यथा विद बृहन्महान्त उर्विया वि राजथ।**

**उतान्तरिक्षं ममिरे व्योजसा शुभं यातामनु रथा अवृत्सत॥ २॥**

**स्वयम्। दधिध्वे। तविषीम्। यथा। विद। बृहत्। महान्तः। उर्विया। वि। राजथ। उत। अन्तरिक्षम्। ममिरे। वि। ओजसा। शुभम्। याताम्। अनु। रथाः। अवृत्सत॥ २॥**

**पदार्थः**-(**स्वयम्**) (**दधिध्वे**) धरत (**तविषीम्**) बलेन युक्तां सेनाम् (**यथा**) (**विद**) विजानीत (**बृहत्**) महत् (**महान्तः**) महाशयाः (**उर्विया**) बहुना (**वि**) (**राजथ**) (**उत**) (**अन्तरिक्षम्**) आकाशम् (**ममिरे**) व्याप्नुवन्ति (**वि**) (**ओजसा**) बलेन (**शुभम्**) (**याताम्**) प्राप्नुताम् (**अनु**) (**रथाः**) (**अवृत्सत**)॥ २॥

**अन्वयः**-हे राजजना! यथा महान्तो यूयं तविषीं स्वयं दधिध्वे बृहद्विदोर्विया वि राजथ यथा शुभं यातां रथा अन्ववृत्सतोताप्यन्तिक्षं वि ममिरे तथा यूयमोजसा विराजथ॥ २॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! ब्रह्मचर्य्येण शरीरात्मबलं धृत्वा क्रियाकौशलं विज्ञाय यथेश्वरोऽन्तरिक्षे सर्वान् पदार्थान् सृजति तथैव यूयमनेकान् व्यवहारान् साध्नुत॥ २॥

**पदार्थः**-हे राजजनो! (**यथा**) जैसे (**महान्तः**) गम्भीर आशय वाले आप लोग (**तविषीम्**) बल युक्त सेना को (**स्वयम्**) अपने से (**दधिध्वे**) धारण कीजिये और (**बृहत्**) बड़े को (**विद**) जानिये (**उर्विया**) बहुत से (**वि**) विशेष करके (**राजथ**) शोभित हूजिये और जैसे (**शुभम्**) कल्याण को (**याताम्**) प्राप्त होते हुओं के (**रथाः**) वाहन (**अनु, अवृत्सत**) अनुकूल वर्तमान हैं (**उत**) और (**अन्तरिक्षम्**) आकाश को (**वि**) विशेष करके (**ममिरे**) व्याप्त होते हैं, वैसे आप लोग (**ओजसा**) बल से (**वि**) विशेष करके (**राजथ**) शोभित हूजिये॥ २॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! ब्रह्मचर्य्य से शरीर और आत्मा के बल को धारण करके और क्रियाकुशलता को जान के जैसे ईश्वर अन्तरिक्ष में सम्पूर्ण पदार्थों को उत्पन्न करता है, वैसे ही आप लोग अनेक व्यवहारों को सिद्ध कीजिये॥ २॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**साकं जाताः सुभ्वः साकमुक्षिताः श्रिये चिदा प्रतरं वावृधुर्नरः।**

**विरोकिणः सूर्यस्येव रश्मयः शुभं यातामनु रथा अवृत्सत॥ ३॥**



www.9009.co.in

साकम्। जाताः। सुऽभ्वः साकम्। उक्षिताः। श्रिये। चित्। आ। प्रऽतरम्। ववृधुः। नरः। विऽरोकिणः। सूर्यस्यऽइव। रश्मयः। शुभम्। याताम्। अनु। रथाः। अवृत्सत॥३॥

**पदार्थः-(साकम्)** सह **(जाताः)** उत्पन्नाः **(सुभ्वः)** ये शोभना भवन्ति **(साकम्)** सङ्गे **(उक्षिताः)** सिक्ताः **(श्रिये)** शोभायै धनाय वा **(चित्)** अपि **(आ)** **(प्रतरम्)** प्रकर्षेण दुःखात्तारकं व्यवहाराम् **(वावृधुः)** वर्धयन्तु **(नरः)** सत्यं नेतारः **(विरोकिणः)** विविधो रोको रुचिर्विद्यते येषु ते **(सूर्य्यस्येव)** **(रश्मयः)** किरणाः **(शुभम्)** कल्याणम् **(याताम्)** प्राप्नुवताम् **(अनु)** **(रथाः)** रमणीया यानादयः **(अवृत्सत)** वर्त्तन्ते॥३॥

**अन्वयः**-हे नरः! सूर्य्यस्येव साकं जाताः सुभ्वः साकमुक्षिता विरोकिणो रश्मय प्रतरमा वावृधुस्तथा चित्सखायः सन्तः श्रिये प्रवृत्ता भवत यथा शुभं यातां रथा अन्ववृत्सत तथा सर्वोपकारमनुवर्त्तध्वम्॥३॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यूयं सूर्यस्य रश्मय इव सहैव पुरुषार्थाय समुपतिष्ठध्वम्। यथा कल्याणकारिणा रथाननु भृत्या वर्त्तन्ते तथैव धर्ममनुवर्त्तध्वम्॥३॥

**पदार्थः**-हे **(नरः)** सत्य को पहुंचाने वाले मनुष्यो! **(सूर्य्यस्येव)** सूर्य के जैसे **(साकम्)** एक साथ **(जाताः)** उत्पन्न और **(सुभ्वः)** शोभित **(साकम्)** साथ में **(उक्षिताः)** सींचे हुए **(विरोकिणः)** अनेक प्रकार की रुचि वर्त्तमान जिनमें वे **(रश्मयः)** किरण **(प्रतरम्)** अत्यन्त दुःख से पार करने वाले व्यवहार को **(आ)** सब प्रकार **(वावृधुः)** बढ़ावें वैसे **(चित्)** भी मित्र होते हुए **(श्रिये)** शोभा वा धन के लिये प्रवृत्त हूजिये और जैसे **(शुभम्)** कल्याण को **(याताम्)** प्राप्त होते हुओं के **(रथाः)** सुन्दर वाहन आदि **(अनु, अवृत्सत)** पीछे वर्त्तमान हैं, वैसे सब के उपकार के पीछे वर्तिये॥३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! आप लोग सूर्य्य की किरणों के सदृश एक साथ ही पुरुषार्थ के लिये उद्यत हूजिये और जैसे कल्याण करने वालों के रथों के पीछे भृत्यजन वर्त्तमान होते हैं, वैसे ही धर्म के पीछे वर्त्तमान हूजिये॥३॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**आभूषेण्यं वो मरुतो महित्वनं दिदृक्षेण्यं सूर्यस्येव चक्षणम्।**

**उतो अस्माँ अमृतत्वे दधातन शुभं यातामनु रथा अवृत्सत॥४॥**

**आऽभूषेण्यम्। वः। मरुतः। महिऽत्वनम्। दिदृक्षेण्यम्। सूर्यस्यऽइव। चक्षणम्। उतो इति। अस्मान्। अमृतऽत्वे। दधातन। शुभम्। याताम्। अनु। रथाः। अवृत्सत॥४॥**

**पदार्थः-(आभूषेण्यम्)** अलङ्कर्त्तव्यम् **(वः)** युष्माकम् **(मरुतः)** प्राण इव प्रियाचरणाः **(महित्वनम्)** **(दिदृक्षेण्यम्)** द्रष्टुं योग्यम् **(सूर्यस्येव)** **(चक्षणम्)** प्रकाशनम् **(उतो)** अपि **(अस्मान्)**



www.9009.co.in

**(अमृतत्वे)** अमृतानां नाशरहितानां पदार्थानां भावे वर्त्तमाने **(दधातन)** **(शुभम्)** धर्म्यं मार्गम् **(याताम्)** गच्छताम् **(अनु)** **(रथाः)** **(अवृत्सत)**॥४॥

**अन्वयः**-हे मरुतो! येषां वस्सूर्य्यस्येवाऽऽभूषेण्यं दिदृक्षेण्यं चक्षणं महित्वनमस्ति येनोतो अस्मानमृतत्वे दधातन येषां शुभं यातां रथा अन्ववृत्सत तान् वयं सततं सत्कुर्य्याम॥४॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। ये मनुष्याः सूर्य्यवन्न्यायप्रकाशका अन्यायान्धकारनिरोधका धर्मपथामनुगामिनः स्युस्तान् सदैव यूयं प्रशंसत॥४॥

**पदार्थः**-हे **(मरुतः)** प्राण के सदृश प्रिय आचरण करने वालो! जिन **(वः)** आप लोगों का **(सूर्य्यस्येव)** सूर्य्य के सदृश **(आभूषेण्यम्)** शोभा करने और **(दिदृक्षेण्यम्)** देखने को योग्य **(चक्षणम्)** प्रकाश **(महित्वनम्)** और बड़प्पन है जिससे **(उतो)** निश्चित **(अस्मान्)** हम लोगों को **(अमृतत्वे)** नाशरहित पदार्थों के भाव अर्थात् नित्यपन के वर्त्तमान होने पर **(दधातन)** धारण कीजिये और जिन **(शुभम्)** धर्मयुक्त मार्ग को **(याताम्)** प्राप्त होते हुओं के **(रथाः)** वाहन **(अनु, अवृत्सत)** अनुकूल वर्त्तमान हैं, उनका हम लोग निरन्तर सत्कार करें॥४॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जो मनुष्य सूर्य्य के सदृश न्याय के प्रकाशक, अन्यायरूपी अन्धकार के रोकने वाले, धर्ममार्ग के अनुगामी होवें, उनकी सदा ही आप लोग प्रशंसा करो॥४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**उदी॑रयथा मरुतः समुद्रतो यू॒यं वृ॒ष्टिं व॑र्षयथा पुरीषिणः।**

**न वो॑ दस्रा॒ उप॑ दस्यन्ति धे॒नवः॒ शुभं॑ या॒ताम॒नु रथा॑ अवृत्सत॥५॥१७॥**

**उत्। ई॒र॒य॒थ॒। म॒रु॒तः॒। स॒मु॒द्र॒तः। यू॒यम्। वृ॒ष्टिम्। व॒र्ष॒य॒थ॒। पु॒री॒षि॒णः॒। न। वः॒। द॒स्रा॒ः। उप॑। द॒स्य॒न्ति॒। धे॒नवः॑। शुभ॑म्। या॒ताम्। अनु॑। रथाः॑। अ॒वृ॒त्स॒त॒॥५॥**

**पदार्थः**-**(उत्)** उत्कृष्टे **(ईरयथा)** प्रेरयथ। अत्र **संहितायामिति** दीर्घः। **(मरुतः)** मनुष्याः **(समुद्रतः)** अन्तरिक्षात् **(यूयम्)** **(वृष्टिम्)** **(वर्षयथा)** अत्र **संहितायामिति** दीर्घः। **(पुरीषिणः)** पुरीषं बहुविधं पोषणं विद्यते येषु ते **(न)** **(वः)** युष्मान् **(दस्राः)** उपक्षेतारः **(उप)** **(दस्यन्ति)** क्षयन्ति **(धेनवः)** वाचः **(शुभम्)** **(याताम्)** **(अनु)** **(रथाः)** **(अवृत्सत)**॥५॥

**अन्वयः**-हे पुरीषिणो मरुतो! यूयमस्मान् सत्कर्मसूदीरयथा यथा वायवः समुद्रतो वृष्टिं कुर्वन्ति तथा यूयं वर्षयथा यतो दस्रा धेनवो वो नोप दस्यन्ति यथा शुभं यातां रथा अन्ववृत्सत तथा धर्ममार्गमनुवर्त्तध्वम्॥५॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे विद्वांसो! यथा वायवोऽन्तरिक्षाद्वृष्टिं कृत्वा सर्वान् प्राणिनस्तर्प्पयित्वा दुःखक्षयं कुवन्ति तथैव सत्यविद्यापदेशवृष्ट्याऽविद्यान्धकारदुःखं निवारयन्तु॥५॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-हे **(पुरीषिणः)** बहुत प्रकार का पोषण विद्यमान जिनमें वे **(मरुतः)** मनुष्यो! **(यूयम्)** आप लोग हम लोगों की श्रेष्ठकर्मों में **(उत्, ईरयथा)** प्रेरणा कीजिये और जैसे पवन **(समुद्रतः)** अन्तरिक्ष से **(वृष्टिम्)** वर्षा करते हैं, वैसे आप लोग **(वर्षयथा)** वर्षाइये जिससे **(दस्राः)** नाश होने वाले और **(धेनवः)** वाणियाँ **(वः)** आप लोगों को **(न)** नहीं **(उप, दस्यन्ति)** उपक्षय करते जैसे **(शुभम्)** कल्याण को **(याताम्)** प्राप्त होते हुओं के **(रथाः)** वाहन **(अनु, अवृत्सत)** अनुकूल वर्त्तते हैं, वैसे धर्ममार्ग का अनुकूल वर्त्ताव कीजिये॥५॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमाङ्कार है। हे विद्वान् जनो! जैसे पवन अन्तरिक्ष से वृष्टि करके सम्पूर्ण प्राणियों को तृप्त करके दुःख का नाश करते हैं, वैसे ही सत्यविद्या के उपदेश की वृष्टि से अविद्यारूप अन्धकार से हुए दुःख का निवारण कीजिये॥५॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**यदश्वान् धूर्षु पृषतीरयुग्ध्वं हिरण्ययान् प्रत्यत्काँ अमुग्ध्वम्।**

**विश्वा इत्स्पृधो मरुतो व्यस्यथ शुभं यातामनु रथा अवृत्सत॥६॥**

**यत्। अश्वान्। धूःऽसु। पृषतीः। अयुग्ध्वम्। हिरण्ययान्। प्रति। अत्कान्। अमुग्ध्वम्। विश्वाः। इत्। स्पृधः। मरुतः। वि। अस्यथ। शुभम्। याताम्। अनु। रथाः। अवृत्सत॥६॥**

**पदार्थः**-**(यत्)** यान् **(अश्वान्)** अग्न्यादीन् **(धूर्षु)** विमानादियानावयवकोष्ठेषु **(पृषतीः)** वायुजलगतीः **(अयुग्ध्वम्)** संयोजयत **(हिरण्ययान्)** ज्योतिर्मयान् **(प्रति)** **(अत्कान्)** व्यक्तान् **(अमुग्ध्वम्)** मुञ्चत **(विश्वाः)** समग्राः **(इत्)** एव **(स्पृधः)** याः स्पर्ध्यन्ते ताः सङ्ग्रामा वा **(मरुतः)** वायुवद्वेगबलयुक्ताः **(वि)** विशेषेण **(अस्यथ)** प्रचालयत **(शुभम्)** **(याताम्)** **(अनु)** **(रथाः)** **(अवृत्सत)**॥६॥

**अन्वयः**-हे मरुतो! यथा शुभं यातां रथा अन्ववृत्सत तथा धूर्षु यद्धिरण्ययान् प्रत्यत्कान् पृषतीरश्वान् यूयमयुग्ध्वममुग्ध्वम्। तैर्विश्वाः स्पृध इद् व्यस्यथ॥६॥

**भावार्थः**-ये मनुष्या अग्निवायुजलादीन् यानेषु सम्प्रयुञ्जते ते विजयाय प्रभवो भूत्वा धर्म्यमार्गमनुगा जायन्ते॥६॥

**पदार्थः**-हे **(मरुतः)** वायु के सदृश वेग और बल से युक्त जनो! जैसे **(शुभम्)** कल्याण को **(याताम्)** प्राप्त होते हुओं के **(रथाः)** वाहन **(अनु, अवृत्सत)** अनुकूल वर्त्तमान हैं, वैसे **(धूर्षु)** विमान आदि यानों के अवयव कोष्ठों में **(यत्)** जिन **(हिरण्ययान्)** ज्योतिर्मय **(प्रति, अत्कान्)** स्पष्ट **(पृषतीः)** वायु और जल के गमनों और **(अश्वान्)** अग्नि आदिकों को आप लोग **(अयुग्ध्वम्)** संयुक्त कीजिये और **(अमुग्ध्वम्)** त्यागिये, उनसे **(विश्वाः)** सम्पूर्ण **(स्पृधः)** स्पर्धायें, रोष **(इत्)** ही **(वि)** विशेष करके **(अस्यथ)** चलाइये॥६॥

**भावार्थ:**-जो मनुष्य अग्नि, वायु और जल आदिकों को वाहनों में उत्तम प्रकार युक्त करते हैं, वे विजय के लिये समर्थ होकर धर्मसम्बन्धी मार्ग के अनुगामी होते हैं॥६॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**न पर्वता न नद्यो वरन्त वो यत्राचिध्वं मरुतो गच्छथेदु तत्।**

**उत द्यावापृथिवी याथना परि शुभं यातामनु रथा अवृत्सत॥७॥**

**न। पर्वताः। न। नद्यः। वरन्त। वः। यत्र। अचिध्वम्। मरुतः। गच्छथ। इत्। ऊँ इति। तत्। उत। द्यावापृथिवी इति। याथन। परि। शुभम्। याताम्। अनु। रथाः। अवृत्सत॥७॥**

**पदार्थ:**-**(न)** निषेधे **(पर्वताः)** मेघाः **(न)** **(नद्यः)** **(वरन्त)** वारयन्ति **(वः)** **(यत्र)** **(अचिध्वम्)** प्राप्नुत गच्छथ **(मरुतः)** मनुष्याः **(गच्छथ)** **(इत्)** एव (उ) **(तत्)** **(उत)** अपि **(द्यावापृथिवी)** प्रकाशभूमी **(याथना)** प्राप्नुत। अत्र **संहितायामि**ति दीर्घः। **(परि)** सर्वतः **(शुभम्)** **(याताम्)** **(अनु)** **(रथाः)** **(अवृत्सत)**॥७॥

**अन्वय:**-हे मरुतो! यूयं द्यावापृथिवी गच्छथेत्तदु परि याथना। उत यत्राऽचिध्वं यथा शुभं यातां रथान्ववृत्सत तत्रानुवर्त्तध्वम् यथा सूर्य्यस्य न पर्वता न नद्यो वरन्त तथा वो युष्मान् केऽपि रोद्धुं न शक्नुवन्ति॥७॥

**भावार्थ:**-ये मनुष्याः पृथिव्यादिविद्यया सृष्टिक्रमतः कार्य्याणि साधयेयुस्तान् दारिद्र्यं कदाचिन्नाप्नुयात्॥७॥

**पदार्थ:**-हे **(मरुतः)** मनुष्यो! आप लोग **(द्यावापृथिवी)** प्रकाश और भूमि को **(गच्छथ, इत्)** प्राप्त ही हूजिये **(तत्)** उनको (उ) और भी **(परि, याथना)** सब ओर से प्राप्त हूजिये **(उत)** और **(यत्र)** जहाँ **(अचिध्वम्)** प्राप्त हूजिये और जैसे **(शुभम्)** कल्याण को **(याताम्)** प्राप्त होते हुओं के **(रथाः)** वाहन **(अनु, अवृत्सत)** पश्चात् वर्त्तमान है, यहाँ वर्त्तमान हूजिये और जैसे सूर्य्य के सम्बन्ध को **(न)** न **(पर्वताः)** मेघ **(न)** न **(नद्यः)** नदियां **(वरन्त)** वारण करती हैं, वैसे **(वः)** आप लोगों को कोई भी रोक नहीं सकते हैं॥७॥

**भावार्थ:**-जो मनुष्य पृथिवी आदि की विद्या से तथा सृष्टि के क्रम से कार्य्यों को सिद्ध करें, उनको दारिद्र्य कभी प्राप्त नहीं होवे॥७॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**यत्पूर्व्यं मरुतो यच्च नूतनं यदुद्यते वसवो यच्च शस्यते।**

**विश्वस्य तस्य भवथा नवेदसः शुभं यातामनु रथा अवृत्सत॥८॥**



www.9009.co.in

**यत्। पूर्व्यम्। मरुतः। यत्। च। नूतनम्। यत्। उद्यते। वसवः। यत्। च। शस्यते। विश्वस्य। तस्य। भवथ। नवेदसः। शुभम्। याताम्। अनु। रथाः। अवृत्सत॥८॥**

**पदार्थः**-(**यत्**) (**पूर्व्यम्**) पूर्वैर्विद्वद्भिर्निष्पादितम् (**मरुतः**) मनुष्याः (**यत्**) (**च**) (**नूतनम्**) नवीनम् (**यत्**) (**उद्यते**) कथ्यते (**वसवः**) वासकर्त्तारः (**यत्**) (**च**) (**शस्यते**) स्तूयते (**विश्वस्य**) समग्रस्य संसारस्य (**तस्य**) (**भवथा**) (**नवेदसः**) न विद्यते वेदो वित्तं येषान्ते (**शुभम्**) (**याताम्**) (**अनु**) (**रथाः**) (**अवृत्सत**)॥८॥

**अन्वयः**-हे वसवो नवेदसो मरुतो! यत्पूर्व्यं यन्नूतनं यच्चोद्यते यच्च शस्यते तस्य विश्वस्य तथा रक्षितारो भवथा। यथा शुभं यातां रथा अन्ववृत्सत॥८॥

**भावार्थः**-ये शिक्षया विद्यादण्डेन जगद्रक्षन्ति त एव प्रशंसिता भूत्वा कल्याणमुपगच्छन्ति॥८॥

**पदार्थः**-हे (**वसवः**) वास करानेवाले! (**नवेदसः**) नहीं विद्यमान धन जिनके वे (**मरुतः**) मनुष्यो! (**यत्**) जो (**पूर्व्यम्**) प्राचीन विद्वानों से निष्पन्न किया हुआ (**यत्**) जो (**नूतनम्**) नवीन (**यत्, च**) जो (**उद्यते**) कहा जाता है (**यत्, च**) और जो (**शस्यते**) स्तुत किया जाता है (**तस्य**) उस (**विश्वस्य**) सम्पूर्ण संसार की वैसे रक्षा करने वाले (**भवथा**) हूजिये जैसे (**शुभम्**) कल्याण को (**याताम्**) प्राप्त होते हुओं के (**रथाः**) वाहन (**अनु, अवृत्सत**) वर्त्तमान होते हैं॥८॥

**भावार्थः**-जो शिक्षा और विद्या के दण्ड से संसार की रक्षा करते हैं, वे ही प्रशंसित होकर कल्याण को प्राप्त होते हैं॥८॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**मृळत नो मरुतो मा वधिष्टनास्मभ्यं शर्म बहुलं वि यन्तन।**
**अधि स्तोत्रस्य सख्यस्य गातन शुभं यातामनु रथा अवृत्सत॥९॥**

**मृळत। नः। मरुतः। मा। वधिष्टन। अस्मभ्यम्। शर्म। बहुलम्। वि। यन्तन। अधि। स्तोत्रस्य। सख्यस्य। गातन। शुभम्। याताम्। अनु। रथाः। अवृत्सत॥९॥**

**पदार्थः**-(**मृळत**) सुखयत (**नः**) अस्मान् (**मरुतः**) विद्वांसः (**मा**) (**वधिष्टन**) (**अस्मभ्यम्**) (**शर्म**) सुखं गृहं वा (**बहुलम्**) (**वि**) (**यन्तन**) वियच्छत (**अधि**) (**स्तोत्रस्य**) प्रशंसितस्य (**सख्यस्य**) सख्युर्भावस्य (**गातन**) प्रशंसत (**शुभम्**) (**याताम्**) (**अनु**) (**रथाः**) (**अवृत्सत**)॥९॥

**अन्वयः**-हे मरुतो! यूयं नो मूळत मा वधिष्टनास्मभ्यं बहुलं शर्म वि यन्तनाधि स्तोत्रस्य सख्यस्य शुभं गातन ये यातां रथा अवृत्सत माननु गच्छथ॥९॥

**भावार्थः**-मनुष्यैर्विद्वद्भ्यः प्रार्थयित्वा शुभा गुणा ग्राह्याः सर्वत्र मैत्रीं भावयित्वा सर्वार्थं सुखमनुगम्येत॥९॥



www.9009.co.in

**पदार्थ:**-हे **(मरुत:)** विद्वानो! आप लोग **(न)** हम लोगों को **(मृळत)** सुखी करिये किन्तु **(मा)** मत **(वधिष्टन)** नष्ट करिये और **(अस्मभ्यम्)** हम लोगों के लिये **(बहुलम्)** बहुत **(शर्म)** सुख वा गृह **(वि, यन्तन)** विशेष करके दीजिये और **(अधि, स्तोत्रस्य)** अधिक प्रशंसित **(सख्यस्य)** मित्रपने के **(शुभम्)** सुख की **(गातन)** प्रशंसा करिये और जो **(याताम्)** प्राप्त होते हुओं के **(रथा:)** वाहन **(अवृत्सत)** वर्त्तमान हैं, उनके **(अनु)** अनुगामी हूजिये॥९॥

**भावार्थ:**-मनुष्यों को चाहिये कि विद्वानों से प्रार्थना करके श्रेष्ठ गुणों को ग्रहण करें और सब जगह मित्रता करके सब के लिये सुख प्राप्त कराया जावे॥९॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**यूयमस्मान्नयत वस्यो अच्छा निरंहतिभ्यो मरुतो गृणाना:।**

**जुषध्वं नो हव्यदातिं यजत्रा वयं स्याम पतयो रयीणाम्॥१०॥१८॥**

**यूयम्। अस्मान्। नयत। वस्य:। अच्छ। नि:। अंहतिऽभ्य:। मरुत:। गृणाना:। जुषध्वम्। न:। हव्यऽदातिम्। यजत्रा:। वयम्। स्याम। पतय:। रयीणाम्॥१०॥**

**पदार्थ:**-**(यूयम्)** **(अस्मान्)** **(नयत)** **(वस्य:)** वसीयसोऽतिधनाढ्यान् **(अच्छा)** अत्र **संहितायामि**ति दीर्घ:। **(नि:)** नितराम् **(अंहतिभ्य:)** **(मरुत:)** विद्वांसो मनुष्या: **(गृणाना:)** स्तुवन्त: **(जुषध्वम्)** सेवध्वम् **(न:)** अस्मान् **(हव्यदातिम्)** दातव्यदानम् **(यजत्रा:)** सङ्गन्तार: **(वयम्)** **(स्याम)** भवेम **(पतय:)** पालका: **(रयीणाम्)** धनानाम्॥१०॥

**अन्वय:**-हे गृणाना मरुतो! यूयं वस्योऽस्मान् रक्षतांहतिभ्य: पृथगच्छा निर्नयत नोऽस्मान् जुषध्वम्। हे यजत्रा! नो हव्यदातिं नयत यतो वयं रयीणां पतय: स्याम॥१०॥

**भावार्थ:**-जिज्ञासवो विदुषां प्रार्थनामेवं कुर्युर्भवन्तोऽस्मान् दुष्टाचारात् पृथक्कृत्य धर्म्यं पन्थानं प्रापयन्तु॥१०॥

अत्र मरुद्विद्वदादिगुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति पञ्चपञ्चाशत्तमं सूक्तमष्टादशो वर्गश्च समाप्त:॥**

**पदार्थ:**-हे **(गृणाना:)** स्तुति करते हुए **(मरुत:)** विद्वान् मनुष्यो! **(यूयम्)** आप लोग **(वस्य:)** अति धन से युक्त **(अस्मान्)** हम लोगों की रक्षा कीजिये और **(अंहतिभ्य:)** मारते हैं जिनसे उन अस्त्रों से पृथक् **(अच्छा)** उत्तम प्रकार **(नि:, नयत)** निरन्तर पहुंचाइये और **(न:)** हम लोगों की **(जुषध्वम्)** सेवा करिये। और हे **(यजत्रा:)** मिलने वाले जनो! हम लोगों के लिये **(हव्यदातिम्)** देने योग्य दान को प्राप्त कराइये जिससे **(वयम्)** हम लोग **(रयीणाम्)** धनों के **(पतय:)** पालन करने वाले **(स्याम)** होवें॥१०॥



www.9009.co.in

**भावार्थः-**जिज्ञासुजन विद्वानों की प्रार्थना इस प्रकार करें कि आप लोग हम लोगों को दुष्ट आचरण से अलग करके धर्मयुक्त मार्ग को प्राप्त कराइये॥१०॥

इस सूक्त में मरुत नाम से विद्वान् आदि के गुणों का वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ संगति जाननी चाहिये॥

**यह पचपनवां सूक्त और अठारहवां वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

**अथ नवर्चस्य षट्पञ्चाशत्तमस्य सूक्तस्य श्यावाश्व आत्रेय ऋषिः। मरुतो देवताः। १, २, ६ निचृद्बृहती। ४ विराड्बृहती। ८, ९ बृहती छन्दः। मध्यमः स्वरः। ३ विराट्पङ्क्तिः। ७ निचृत्पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः। ५ अनुष्टुप् छन्दः। गान्धारः स्वरः॥**

***अथ विद्वदुपदेशेन मनुष्यगुणान् वायुगुणान् विदित्वा पुनर्मनुष्याः किं कुर्युरित्याह॥***

विद्वानों के उपदेश से मनुष्य और वायु के गुणों को जानकर फिर मनुष्य क्या करें, इस विषय को कहते हैं॥

**अग्ने शर्धन्तमा गणं पिष्टं रुक्मेभिरञ्जिभिः।**

**विशो अद्य मरुतामव ह्वये दिवश्चिद्रोचनादधि॥ १॥**

**अग्ने। शर्धन्तम्। आ। गणम्। पिष्टम्। रुक्मेभिः। अञ्जिभिः। विशः। अद्य। मरुताम्। अव। ह्वये। दिवः। चित्। रोचनात्। अधि॥ १॥**

**पदार्थः**-(**अग्ने**) विद्वन् (**शर्धन्तम्**) बलवन्तम् (**आ**) समन्तात् (**गणम्**) समूहम् (**पिष्टम्**) अवयवीभूतम् (**रुक्मेभिः**) रोचमानैः सुवर्णादिभिर्वा (**अञ्जिभिः**) कमनीयैः (**विशः**) (**अद्य**) (**मरुताम्**) मनुष्याणाम् (**अव**) (**ह्वये**) शब्दयेयम् (**दिवः**) प्रकाशमानात् (**चित्**) अपि (**रोचनात्**) रुचिविषयात् (**अधि**) उपरिभावे॥ १॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! यथाऽहं रुक्मेभिरञ्जिभिर्मरुतां पिष्टं शर्धन्तं गणमाह्वयेऽद्य दिवो रोचनाच्चिद्विशोऽध्यव ह्वये तथा त्वमप्याचर॥ १॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपालङ्कारः। ये पुरुषा वायूनां मनुष्याणाञ्च गुणान् जानन्ति ते सत्कर्त्तारो भवन्ति॥ १॥

**पदार्थः**-हे (**अग्ने**) विद्वन्! जैसे मैं (**रुक्मेभिः**) प्रकाशमान सुवर्ण आदि वा (**अञ्जिभिः**) सुन्दर पदार्थों से (**मरुताम्**) मनुष्यों के (**पिष्टम्**) अवयवीभूत (**शर्धन्तम्**) बलवान् (**गणम्**) समूह को (**आ**) सब ओर से (**ह्वये**) पुकारता हूँ और (**अद्य**) आज (**दिवः**) प्रकाशमान (**रोचनात्**) प्रीति के विषय से (**चित्**) भी (**विशः**) मनुष्यों को (**अधि**) ऊपर के भाव में (**अव**) अत्यन्त पुकारता हूँ, वैसे आप भी आचरण करिये॥ १॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो मनुष्य वायु और मनुष्यों के गुणों को जानते हैं, वे सत्कार करने वाले होते हैं॥ १॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥



www.9009.co.in

**यथा॑ चि॒न्मन्य॑से हृ॒दा तदिन्मे॑ जग्मुरा॒शस॑ः।**

**ये त॒ नेदि॑ष्ठं॒ हव॑नान्या॒गम॒न् तान् व॑र्ध भी॒मस॑न्दृशः॥ २॥**

**यथा॑। चि॒त्। मन्य॑से। हृ॒दा। तत्। इत्। मे॒। ज॒ग्मुः॒। आ॒ऽशस॑ः। ये। ते॒। नेदि॑ष्ठम्। हव॑नानि। आ॒ऽगम॑न्। तान्। व॒र्ध॒। भी॒मऽस॑न्दृशः॥ २॥**

**पदार्थः**-(**यथा**) येन प्रकारेण (**चित्**) अपि (**मन्यसे**) (**हृदा**) हृदयेन (**तत्**) (**इत्**) एव (**मे**) मह्यम् (**जग्मुः**) प्राप्नुवन्ति (**आशसः**) ये आशंसन्ति ते (**ये**) (**ते**) तुभ्यम् (**नेदिष्ठम्**) अतिशयेनान्तिकम् (**हवनानि**) दातुं ग्रहीतुं योग्यानि वस्तूनि (**आगमन्**) आगच्छन्तु (**तान्**) (**वर्ध**) वर्धय (**भीमसन्दृशः**) भीमं भयङ्करं सन् दृग्दर्शनं येषान्ते॥ २॥

**अन्वयः**-हे मनुष्य! ये ते नेदिष्ठमाशसो जग्मुस्ताँस्त्वं वर्ध। यथा चित् त्वं हृदा मे तन्मन्यसे तथा हवनान्यागमन्। भीमसन्दृश इज्जग्मुः॥ २॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। मनुष्याः परस्परस्योपकारेण सुखिनो भवन्तु॥ २॥

**पदार्थः**-हे मनुष्य! (**ये**) जो (**ते**) आपके लिये (**नेदिष्ठम्**) अत्यन्त सामीप्य को (**आशसः**) कहने वाले (**जग्मुः**) प्राप्त होते हैं (**तान्**) उनकी आप (**वर्ध**) वृद्धि करिये और (**यथा, चित्**) जिसी प्रकार से आप (**हृदा**) हृदय से (**मे**) मेरे लिये (**तत्**) उसको (**मन्यसे**) मानते हो, उस प्रकार (**हवनानि**) देने-लेने योग्य वस्तुयें (**आगमन्**) प्राप्त होवें और (**भीमसन्दृशः**) भयङ्कर दर्शन जिनका वे (**इत्**) ही प्राप्त होते हैं॥ २॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। मनुष्य लोग परस्पर के उपकार से सुखी हों॥ २॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**मी॒ळ्हुष्म॑तीव पृथि॒वी परा॑हता॒ मद॑न्त्येत्य॒स्मदा।**

**ऋ॒क्षो॒ न वो॑ मरुत॒ः शिमी॑वाँ॒ अमो॑ दु॒ध्रो गौरि॑व भीम॒युः॥ ३॥**

**मी॒ळ्हुष्म॑तीऽइव। पृ॒थि॒वी। परा॑ऽहता। मद॑न्ती। ए॒ति॒। अ॒स्मत्। आ। ऋ॒क्षः॑। न। व॒ः। म॒रु॒तः॒। शिमी॑ऽवान्। अम॑ः। दु॒ध्रः। गौः॒ऽइ॑व। भी॒म॒ऽयुः॥ ३॥**

**पदार्थः**-(**मीळहुष्मतीव**) मीढुः सेक्ता वीर्यप्रदः प्रशस्तः पतिर्विद्यते यस्यास्तत् (**पृथिवी**) भूमिः (**पराहता**) दूरं प्राप्ता (**मदन्ती**) हर्षन्ती (**एति**) प्राप्नोति (**अस्मत्**) (**आ**) (**ऋक्षः**) पशुविशेषः (**न**) इव (**वः**) युष्मान् (**मरुतः**) मनुष्याः (**शिमीवान्**) प्रशस्तकर्मवान् (**अमः**) गृहम् (**दुध्रः**) दुःखेन धर्त्तुं योग्यः (**गौरिव**) आदित्य इव (**भीमयुः**) यो भीमं भयङ्करं योद्धारं याति सः॥ ३॥



www.9009.co.in

**अन्वय:**-हे मरुतो! यथा: व: पृथिवी मीळ्हुष्मतीवास्मत् पराहता मदन्ती वर्त्तते तां शिमीवानृक्षो नैति गौरिव भीमयुर्दुध्रोऽम एति तथा यूयमप्याचरत॥३॥

**भावार्थ:**-अत्रोपमालङ्कार:। ये यतमाना: कर्माणि कुर्वन्ति ते सदा सुखिनो भवन्ति॥३॥

**पदार्थ:**-हे **(मरुत:)** मनुष्यो! जैसे **(व:)** आप लोगों को **(पृथिवी)** भूमि **(मीळ्हुष्मतीव)** वीर्य्य का देने वाला सुन्दर स्वामी जिसका उसके समान **(अस्मत्)** हम लोगों से **(पराहता)** दूर को प्राप्त **(मदन्ती)** प्रसन्न होती हुई वर्त्तमान है, उसको **(शिमीवान्)** अच्छे कर्म्मों वाला **(ऋक्ष:)** पशुविशेष के **(न)** समान **(आ, एति)** प्राप्त होता तथा **(गौरिव)** सूर्य्य के सदृश **(भीमयु:)** भयङ्कर युद्ध करने वाले को प्राप्त होने वाला **(दुध्र:)** दु:ख से धारण करने योग्य पुरुष **(अम:)** गृह को प्राप्त होता है, वैसे आप लोग भी आचरण करो॥३॥

**भावार्थ:**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जो प्रयत्न करते हुए कर्म्मों को करते हैं, वे सदा सुखी होते हैं॥३॥

**पुनर्विद्वद्विषयमाह॥**

फिर विद्वानों के विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**नि ये रिणन्त्योजसा वृथा गावो न दुर्धुर:।**

**अश्मानं चित्स्वर्यं१ पर्वतं गिरिं प्र च्यावयन्ति यामभि:॥४॥**

**नि। ये। रिणन्ति। ओजसा। वृथा। गाव:। न। दु:ऽधुर:। अश्मानम्। चित्। स्वर्यम्। पर्वतम्। गिरिम्। प्र। च्यावयन्ति। यामऽभि:॥४॥**

**पदार्थ:**-**(नि)** **(ये)** **(रिणन्ति)** प्राप्नुवन्ति गच्छन्ति वा **(ओजसा)** पराक्रमेण **(वृथा)** **(गाव:)** **(न)** इव **(दुर्धुर:)** दुर्गता धुरो येषान्ते **(अश्मानम्)** मेघम् **(चित्)** अपि **(स्वर्यम्)** स्वरेषु शब्देषु साधुम् **(पर्वतम्)** पर्वतमिवोच्छ्रितं **(गिरिम्)** यो गृणाति शब्दयति तम् **(प्र)** **(च्यावयन्ति)** निपातयन्ति **(यामभि:)** प्रहरै:॥४॥

**अन्वय:**-ये मनुष्या ओजसा नि रिणन्ति ये चिदपि यामभि: स्वर्यं पर्वतं गिरिमश्मानं दुर्धुरो न प्र च्यावयन्ति वृथा गावो न भवन्ति ते सर्वै: सत्कर्त्तव्या भवन्ति॥४॥

**भावार्थ:**-अत्रोपमालङ्कार:। हे मनुष्या! यथा सूर्यकिरणा: मेघमध: पातयन्ति तथा विद्वांसो दोषन्निपातयन्ति॥४॥

**पदार्थ:**-**(ये)** जो मनुष्य **(ओजसा)** पराक्रम से **(नि, रिणन्ति)** प्राप्त होते हैं **(चित्)** और जो **(यामभि:)** प्रहरों से **(स्वर्यम्)** शब्दों में श्रेष्ठ **(पर्वतम्)** पर्वत के सदृश ऊँचे **(गिरिम्)** शब्द कराने वाले **(अश्मानम्)** मेघ को **(दुर्धुर:)** दूरगत हैं धुरा जिनकी उनके **(न)** समान **(प्र, च्यावयन्ति)** गिराते हैं और



www.9009.co.in

**(वृथा)** व्यर्थ निज अर्थ के विना **(गावः)** गौओं के सदृश होते हैं, वे सब से सत्कार करने योग्य होते हैं॥४॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जैसे सूर्य की किरणें मेघ को नीचे गिराती हैं, वैसे विद्वान् लोग दोषों को दूर करते हैं॥४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**उत्तिष्ठ नूनमेषां स्तोमैः समुक्षितानाम्।**

**मरुतां पुरुतममपूर्व्यं गवां सर्गमिव ह्वये॥५॥१९॥**

**उत्। तिष्ठ। नूनम्। एषाम्। स्तोमैः। सम्ऽउक्षितानाम्। मरुताम्। पुरुऽतमम्। अपूर्व्यम्। गवाम्। सर्गम्ऽइव। ह्वये॥५॥**

**पदार्थः**-**(उत्)** **(तिष्ठ)** ऊर्ध्वं गच्छ **(नूनम्)** निश्चयेन **(एषाम्)** **(स्तोमैः)** प्रशंसाभिः **(समुक्षितानाम्)** सम्यक् सेक्तृणाम् **(मरुताम्)** मनुष्याणाम् **(पुरुतमम्)** बहुतमम् **(अपूर्व्यम्)** अपूर्वे भवम् **(गवाम्)** धेनूनाम् **(सर्गमिव)** उदकमिव **(ह्वये)**॥५॥

**अन्वयः**-हे विद्वन्! यथाहं गवां सर्गमिव पुरुतममपूर्व्यं ह्वये तथैषां समुक्षितानां मरुतां स्तोमैर्नूनमुत्तिष्ठ॥५॥

**भावार्थः**-मनुष्यैः सृष्टिक्रमं विज्ञाय सर्वानन्द आप्तव्यः॥५॥

**पदार्थः**-हे विद्वान्! जैसे मैं **(गवाम्)** गौओं के **(सर्गमिव)** जल के सदृश **(पुरुतमम्)** अत्यन्त बहुत **(अपूर्व्यम्)** अपूर्व में हुए को **(ह्वये)** पुकारता हूँ वैसे **(एषाम्)** इन **(समुक्षितानाम्)** उत्तम प्रकार से सींचने वाले **(मरुताम्)** मनुष्यों की **(स्तोमैः)** प्रशंसाओं से **(नूनम्)** निश्चय से **(उत्, तिष्ठ)** ऊपर पहुँचिये॥५॥

**भावार्थः**-मनुष्यों को चाहिये कि सृष्टि के क्रम को जानकर सम्पूर्ण आनन्द को प्राप्त हों॥५॥

**अथाग्निविद्योपदेशमाह॥**

अब अग्निविद्या के उपदेश को कहते हैं॥

**युङ्ग्ध्वं ह्यरुषी रथे युङ्ग्ध्वं रथेषु रोहितः।**

**युङ्ग्ध्वं हरी अजिरा धुरि वोळ्हवे वहिष्ठा धुरि वोळ्हवे॥६॥**

**युङ्ग्ध्वम्। हि। अरुषीः। रथे। युङ्ग्ध्वम्। रथेषु। रोहितः। युङ्ग्ध्वम्। हरी इति। अजिरा। धुरि। वोळ्हवे। वहिष्ठा। धुरि। वोळ्हवे॥६॥**

**पदार्थः**-**(युङ्ग्ध्वम्)** संयोजयत **(हि)** खलु **(अरुषीः)** रक्तगुणविशिष्टाः वडवा इव ज्वालाः **(रथे)** **(युङ्ध्वम्)** **(रथेषु)** **(रोहितः)** रक्तगुणविशिष्टान् **(युङ्ग्ध्वम्)** **(हरी)** धारणाकर्षणाख्यौ **(अजिरा)**



www.9009.co.in

गन्तारौ **(धुरि)** **(वोळ्हवे)** वहनाय **(वहिष्ठा)** अतिशयेन वोढार: **(धुरि)** **(वोळ्हवे)** स्थानान्तरं प्रापणाय॥६॥

**अन्वय:**-हे विद्वांस: शिल्पिनो! यूयं रथेऽरुषीर्युङ्ग्ध्वं रथेषु रोहितो युङ्ग्ध्वं धुरि वोळ्हवेऽजिरा हरी धुरि वोळ्हवे वहिष्ठा ह्यग्निवायू युङ्ध्वम्॥६॥

**भावार्थ:**-मनुष्यैरग्न्यादिपदार्था यानादिवहनाय नियोजनीया:॥६॥

**पदार्थ:**-हे विद्वान् कारीगरो! आप लोग **(रथे)** वाहन में **(अरुषी:)** रक्तगुणों में विशिष्ट घोड़ियों के सदृश ज्वालाओं को **(युङ्ग्ध्वम्)** युक्त कीजिये **(रथेषु)** रथों में **(रोहित:)** लाल गुण वाले पदार्थों को और **(युङ्ग्ध्वम्)** युक्त कीजिये और **(धुरि)** अग्रभाग में **(वोळ्हवे)** प्राप्त करने के लिये **(अजिरा)** जाने वाले **(हरी)** धारण और आकर्षण को तथा **(धुरि)** अग्रभाग में **(वोळ्हवे)** स्थानान्तर में प्राप्त होने के लिये **(वहिष्ठा)** अत्यन्त पहुँचाने वाले **(हि)** निश्चय अग्नि और पवन को **(युङ्ग्ध्वम्)** युक्त कीजिए॥६॥

**भावार्थ:**-मनुष्यों को चाहिये कि अग्नि आदि पदार्थों को वाहन आदि के चलाने के लिए निरन्तर युक्त करें॥६॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**उ॒त स्य वा॒ज्य॑रु॒षस्तु॑वि॒ष्वणि॑रि॒ह स्म॑ धायि दर्श॒त:।**

**मा वो॒ यामे॑षु मरुतश्चि॒रं क॑र॒त्प्र तं रथे॑षु चोदत॥७॥**

**उ॒त। स्य:। वा॒जी। अ॒रु॒ष:। तु॒वि॒ऽस्वनि॑:। इ॒ह। स्म॒। धा॒यि॒। द॒र्श॒त:। मा। व॒:। यामे॑षु। म॒रु॒त॒:। चि॒रम्। क॒र॒त्। प्र। तम्। रथे॑षु। चो॒द॒त॒॥७॥**

**पदार्थ:**-**(उत)** **(स्य:)** स: **(वाजी)** वेगवान् **(अरुष:)** मर्मण: **(तुविष्वणि:)** बलसेवी **(इह)** अस्मिन् **(स्म)** **(धायि)** ध्रियते **(दर्शत:)** द्रष्टव्य: **(मा)** **(व:)** युष्मान् **(यामेषु)** यमादियुक्तशुभव्यवहारेषु प्रहरेषु वा **(मरुत:)** मानवा: **(चिरम्)** **(करत्)** कुर्यात् **(प्र)** **(तम्)** **(रथेषु)** **(चोदत)**॥७॥

**अन्वय:**-हे मरुतो! यो वाजी इहाऽरुषस्तुविष्वणिर्दर्शतो धायि स्यो यामेषु वश्चिरं मा स्म करत्तमुत रथेषु प्र चोदत प्रेरयत॥७॥

**भावार्थ:**-येऽग्निविद्यां धरन्ति तान् सर्वदा सत्कुरुत॥७॥

**पदार्थ:**-हे **(मरुत:)** मनुष्यो! जो **(वाजी)** वेगवान् **(इह)** इस में **(अरुष:)** मर्मस्थल के **(तुविष्वणि:)** बल का सेवी **(दर्शत:)** देखने योग्य **(धायि)** धारण किया जाता है **(स्य:)** वह **(यामेषु)** यम आदि से युक्त उत्तम व्यवहारों वा प्रहरों में **(व:)** आप लोगों को **(चिरम्)** बहुत कालपर्य्यन्त **(मा)** मत **(स्म)** ही **(करत्)** करे अर्थात् न निषेध करे **(तम्, उत)** उसी को **(रथेषु)** रथों में **(प्र, चोदत)** प्रेरित करो॥७॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-जो अग्निविद्या को धारण करते हैं, उनका सब समय में सत्कार करो॥७॥

**पुनर्वायुगुणानाह॥**

फिर वायुगुणों को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**रथं नु मारुतं वयं श्रवस्युमा हुवामहे।**

**आ यस्मिन् तस्थौ सुरणानि बिभ्रती सचा मरुत्सु रोदसी॥८॥**

**रथम्। नु। मारुतम्। वयम्। श्रवस्युम्। आ। हुवामहे। आ। यस्मिन्। तस्थौ। सुऽरणानि। बिभ्रती। सचा। मरुत्ऽसु। रोदसी॥८॥**

**पदार्थः**-**(रथम्)** विमानादियानम् **(नु)** सद्यः **(मारुतम्)** मनुष्यवायुसम्बन्धिनम् **(वयम्)** **(श्रवस्युम्)** आत्मनः श्रव इच्छुम् **(आ)** **(हुवामहे)** स्पर्धामहे **(आ)** **(यस्मिन्)** **(तस्थौ)** **(सुरणानि)** सुष्ठु रमणीयानि **(बिभ्रती)** धरन्त्यौ **(सचा)** सम्बुद्धौ **(मरुत्सु)** वायुषु **(रोदसी)** भूमिसूर्य्यौ॥८॥

**अन्वयः**-यस्मिन् सुरणानि सन्ति वीर आ तस्थौ यत्र मरुत्सु सुरणानि बिभ्रती सचा रोदसी वर्त्तेते तं मारुतं श्रवस्युं रथं नु वयमा हुवामहे॥८॥

**भावार्थः**-यथा वायवो भूम्यादिकं धरन्ति तथैव विद्वांसः सर्वान् मनुष्यान् धरन्तु॥८॥

**पदार्थः**-**(यस्मिन्)** जिसमें **(सुरणानि)** सुन्दर रमण करने योग्य पदार्थ हैं और वीर **(आ)** सब प्रकार से **(तस्थौ)** स्थिर हैं तथा जिसमें **(मरुत्सु)** पवनों में सुन्दर पदार्थों को **(बिभ्रती)** धारण करते हुए **(सचा)** सम्बन्ध रखने वाले **(रोदसी)** पृथिवी और सूर्य्य वर्त्तमान हैं उस **(मारुतम्)** मनुष्य और वायुसम्बन्धी **(श्रवस्युम्)** अपनी श्रवण की इच्छा करने वाले की और **(रथम्)** विमान आदि वाहन की **(नु)** शीघ्र **(वयम्)** हम लोग **(आ, हुवामहे)** स्पर्द्धा करें॥८॥

**भावार्थः**-जैसे पवन भूमि आदि को धारण करते हैं, वैसे ही विद्वान् जन सब मनुष्यों को धारण करें॥८॥

**पुनर्विद्वदुपदेशविषयमाह॥**

फिर विद्वानों के उपदेश विषय को कहते हैं॥

**तं वः शर्धं रथेशुभं त्वेषं पनस्युमा हुवे।**

**यस्मिन्त्सुजाता सुभगा महीयते सचा मरुत्सु मीळ्हुषी॥९॥२०॥४॥**

**तम्। वः। शर्धम्। रथेऽशुभम्। त्वेषम्। पनस्युम्। आ। हुवे। यस्मिन्। सुऽजाता। सुऽभगा। महीयते। सचा। मरुत्ऽसु। मीळ्हुषी॥९॥**

**पदार्थः**-**(तम्)** **(वः)** युष्माकम् **(शर्धम्)** बलयुक्तम् **(रथेशुभम्)** यो रथे शुम्भते तम् **(त्वेषम्)** देदीप्यमानम् **(पनस्युम्)** आत्मनः पनः स्तवनमिच्छुम् **(आ)** **(हुवे)** **(यस्मिन्)** कुले **(सुजाता)** सम्यक्



www.9009.co.in

प्रसिद्धा (**सुभगा**) सौभाग्ययुक्ता (**महीयते**) सत्क्रियते (**सचा**) समवेता (**मरुत्सु**) मनुष्येषु (**मीळ्हुषी**) सेचनकर्त्री॥९॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यस्मिन् सुजाता सुभगा सचा मीळ्हुषी मरुत्सु महीयते यमियमाप्नोति तं पनस्युमा हुवे तं वो रथेशुभं त्वेषं शर्धमा हुवे॥९॥

**भावार्थः**-यस्मिन् कुले कृतब्रह्मचर्याः स्त्रीपुरुषा वर्त्तन्ते तदेव कुलं भाग्यशालि मन्तव्यमिति॥९॥

अत्र विद्वद्वायुगुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति षट्पञ्चाशत्तमं सूक्तं विंशो वर्गः [चतुर्थोऽनुवाकश्च] समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! (**यस्मिन्**) जिस कुल में (**सुजाता**) उत्तम प्रकार प्रसिद्ध (**सुभगा**) सौभाग्य से युक्त (**सचा**) सम्बद्ध (**मीळ्हुषी**) सेचन करने वाली (**मरुत्सु**) मनुष्यों में (**महीयते**) सत्कार की जाती और जिसको सेवन करने वाली प्राप्त होती है (**तम्**) उस (**पनस्युम्**) अपनी स्तुति की इच्छा करते हुए को (**आ, हुवे**) बुलाता हूँ, उसको (**वः**) आप लोगों के (**रथेशुभम्**) रथ के द्वारा कहते हुए (**त्वेषम्**) प्रकाशमान (**शर्धम्**) बलयुक्त को पुकारता हूँ॥९॥

**भावार्थः**-जिस कुल में किया ब्रह्मचर्य्य जिन्होंने ऐसे स्त्री और पुरुष वर्त्तमान हैं, उसी कुल को भाग्यशाली जानना चाहिये॥९॥

इस सूक्त में विद्वान् तथा वायु के गुण-वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह छप्पनवां सूक्त और बीसवां वर्ग [चतुर्थ अनुवाक] समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

**अथाष्टर्चस्य सप्तपञ्चाशत्तमस्य सूक्तस्य श्यावाश्व आत्रेय ऋषिः। मरुतो देवताः। १, ४, ५ जगती। २, ६ विराड् जगती। ३ निचृज्जगती छन्दः। निषादः स्वरः। ७ विराट् त्रिष्टुप्। ८ निचृत्त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः॥**

***अथ रुद्रगुणानाह॥***

अब आठ ऋचा वाले सत्तावन सूक्त का आरम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में रुद्रगुणों को कहते हैं॥

**आ रुद्रास इन्द्रवन्तः सजोषसो हिरण्यरथाः सुविताय गन्तन।**

**इयं वो अस्मत्प्रति हर्यते मतिस्तृष्णजे न दिव उत्सा उदन्यवे॥१॥**

आ। रुद्रासः। इन्द्रऽवन्तः। सऽजोषसः। हिरण्यऽरथाः। सुविताय। गन्तन। इयम्। वः। अस्मत्। प्रति। हर्यते। मतिः। तृष्णऽजे। न। दिवः। उत्साः। उदन्यवे॥१॥

**पदार्थः**-(**आ**) समन्तात् (**रुद्रासः**) दुष्टानां रोदयितारः (**इन्द्रवन्तः**) बह्विन्द्र ऐश्वर्य्यं विद्यन्ते येषान्ते (**सजोषसः**) समानप्रीतिसेविनः (**हिरण्यरथाः**) हिरण्यं सुवर्णं रथेषु येषान्ते यद्वा हिरण्यं तेज इव रथा येषान्ते (**सुविताय**) ऐश्वर्य्याय (**गन्तन**) गच्छथ (**इयम्**) (**वः**) युष्मान् (**अस्मत्**) अस्माकं सकाशात् (**प्रति**) (**हर्यते**) कामयते (**मतिः**) प्रज्ञा (**तृष्णजे**) यः तृष्णाति तस्मै (**न**) इव (**दिवः**) दिवः कामनाः (**उत्साः**) कूपाः (**उदन्यवे**) उदकानीच्छवे॥१॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथा हिरण्यरथा सजोषस इन्द्रवन्तो रुद्रासः सुवितायाऽऽगन्तन। येयमस्मन्मतिः सा वः प्रति हर्यते तृष्णज उदन्यव उत्सा न ये दिवः कामयन्ते तेऽस्माभिः सततं सत्कर्त्तव्याः॥१॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। यथा तृषातुराय जलं शान्तिकरं भवति तथा विद्वांसो जिज्ञासुभ्यः शान्तिप्रदा भवन्ति॥१॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे (**हिरण्यरथाः**) सुवर्ण रथों में जिनके अथवा तेज के सदृश रथ जिनके वे (**सजोषसः**) समान प्रीति सेवने और (**इन्द्रवन्तः**) बहुत ऐश्वर्य्य रखने और (**रुद्रासः**) दुष्टों को रुलाने वाले (**सुविताय**) ऐश्वर्य्य के लिए (**आ**) सब और (**गन्तन**) प्राप्त होवें और जो (**इयम्**) यह (**अस्मत्**) हम लोगों के समीप से (**मतिः**) बुद्धि है वह (**वः**) आप लोगों की (**प्रति, हर्यते**) कामना करती है और (**तृष्णजे**) तृष्णायुक्त (**उदन्यवे**) जल की इच्छा करने वाले के लिए (**उत्साः**) कूप (**न**) जैसे वैसे जो (**दिवः**) कामनाओं की कामना करते हैं, वे हम लोगों से निरन्तर सत्कार करने योग्य हैं॥१॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जैसे पिपासा से व्याकुल के लिये जल शान्तिकारक होता है, वैसे विद्वान् जन जानने की इच्छा करने वालों के लिए शान्ति के देने वाले होते हैं॥१॥

**अथ मरुद्गुणानाह॥**



www.9009.co.in

अब पवनों के गुणों को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**वाशीमन्त ऋष्टिमन्तो मनीषिणः सुधन्वान इषुमन्तो निषङ्गिणः।**

**स्वश्वाः स्थ सुरथाः पृश्निमातरः स्वायुधा मरुतो याथना शुभम्॥ २॥**

**वाशीऽमन्तः। ऋष्टिऽमन्तः। मनीषिणः। सुऽधन्वानः। इषुऽमन्तः। निषङ्गिणः। सुऽअश्वाः। स्थ। सुऽरथाः। पृश्निऽमातरः। सुऽआयुधाः। मरुतः। याथन। शुभम्॥ २॥**

**पदार्थः**-(**वाशीमन्तः**) प्रशस्ता वाग् विद्यते येषान्ते (**ऋष्टिमन्तः**) ज्ञानवन्तः (**मनीषिणः**) मनसा ईषिणः (**सुधन्वानः**) शोभनं धनुर्येषान्ते (**इषुमन्तः**) वाणवन्तः (**निषङ्गिणः**) निषङ्गाः प्रशस्ता अस्यादयो येषान्ते (**स्वश्वाः**) उत्तमाश्वाः (**स्थ**) भवथ (**सुरथाः**) शोभना रथा येषान्ते (**पृश्निमातरः**) पृश्निरन्तरिक्षं मातेव येषान्ते (**स्वायुधाः**) शोभनान्यायुधानि येषान्ते (**मरुतः**) सुशिक्षिता मानवाः (**याथना**) गच्छथ। अत्र **संहितायामि**ति दीर्घः। (**शुभम्**) कल्याणं सङ्ग्रामं वा॥ २॥

**अन्वयः**-हे पृश्निमातरो मरुतो! यूयं वाशीमन्त ऋष्टिमन्तो मनीषिणस्सुधन्वान इषुमन्तो निषङ्गिणः स्वश्वाः स्वायुधाः सुरथाश्च स्थ शुभं याथना॥ २॥

**भावार्थः**-मनुष्यैर्विद्यादिशुभान् गुणान् गृहीत्वा सदैव विजयेन युक्तैर्भवितव्यम्॥ २॥

**पदार्थः**-हे (**पृश्निमातरः**) अन्तरिक्ष माता के सदृश जिनका ऐसे (**मरुतः**) उत्तम प्रकार शिक्षित जनो! आप लोग (**वाशीमन्तः**) उत्तम वाणी जिनकी वा जो (**ऋष्टिमन्तः**) ज्ञान वाले (**मनीषिणः**) वा मन की इच्छा करने वाले (**सुधन्वानः**) सुन्दर धनुष जिनका (**इषुमन्तः**) वा वाणों वाले और (**निषङ्गिणः**) अच्छे तरवार आदि पदार्थ जिनके वा जो (**स्वश्वाः**) उत्तम घोड़ों से युक्त (**स्वायुधाः**) सुन्दर आयुधों वाले वा (**सुरथाः**) सुन्दर रथ जिनके ऐसे (**स्थ**) होओ और (**शुभम्**) कल्याणकारक व्यवहार वा संग्राम को (**याथना**) प्राप्त होओ॥ २॥

**भावार्थः**-मनुष्यों को चाहिये कि विद्या आदि श्रेष्ठ गुणों को ग्रहण करके सदा ही विजय से युक्त हों॥ २॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**धूनुथ द्यां पर्वतान् दाशुषे वसु नि वो वना जिहते यामनो भिया।**

**कोपयथ पृथिवीं पृश्निमातरः शुभे यदुग्राः पृषतीरयुग्ध्वम्॥ ३॥**

**धूनुथ। द्याम्। पर्वतान्। दाशुषे। वसु। नि। वः। वना। जिहते। यामनः। भिया। कोपयथ। पृथिवीम्। पृश्निऽमातरः। शुभे। यत्। उग्राः। पृषतीः। अयुग्ध्वम्॥ ३॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः-(धूनुथ)** कम्पयथ **(द्याम्)** विद्युतम् **(पर्वतान्)** मेघान् **(दाशुषे)** दात्रे **(वसु)** द्रव्यम् **(नि) (वः)** युष्मान् **(वना)** जङ्गलानि **(जिहते)** गच्छन्ति **(यामनः)** ये यान्ति ते **(भिया)** भयेन **(कोपयथ) (पृथिवीम्) (पृश्निमातरः)** अन्तरिक्षमातरः **(शुभे)** उदकाय। **शुभमित्युदकनामसु पठितम्।** (निघं०१.२) **(यत्) (उग्राः)** तेजस्विनः **(पृषतीः)** सेचनकर्त्रीरुदकधाराः **(अयुग्ध्वम्)** योजयत॥३॥

**अन्वयः**-हे उग्राः! पृश्निमातरो वायव इव यद्यूयं द्यां पर्वतान् धूनुथ तद्दाशुषे वसु धूनुथ यानि वो वना जिहते तानि यामनो यूयं भिया नि कोपयथ यथा वायवः पृथिवीं युञ्जते तथा शुभे पृषतीरयुग्ध्वम्॥३॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यथा वायवः पृथिवीं मेघं वनादीनि च कम्पयन्ते यथा शत्रवः शत्रून् कोपयन्ति तथैव विद्वांसः पदार्थान् विमथ्य विद्युदादीन् कम्पयन्ते कार्य्येषु योजयन्ति॥३॥

**पदार्थः**-हे **(उग्राः)** तेजस्वियो! **(पृश्निमातरः)** जिनकी माता के सदृश अन्तरिक्ष उन पवनों के सदृश वेग से युक्त **(यत्)** जो आप लोग **(द्याम्)** बिजुली और **(पर्वतान्)** मेघों को **(धूनुथ)** कँपाइये वह **(दाशुषे)** दाताजन के लिये **(वसु)** द्रव्य को कंपित कीजिये जो **(वः)** आप लोगों को **(वना)** जङ्गल **(जिहते)** प्राप्त होते हैं उनको **(यामनः)** जाने वाले आप लोग **(भिया)** भय से **(नि, कोपयथ)** निरन्तर कंपाइये और जैसे पवन **(पृथिवीम्)** पृथिवी को युक्त होते हैं, वैसे **(शुभे)** जल के लिये **(पृषतीः)** सेचन करने वाली जल की धाराओं को **(अयुग्ध्वम्)** युक्त कीजिये॥३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे पवन पृथिवी, मेघ और वन आदिकों को कंपाते हैं और जैसे शत्रुजन शत्रुओं को क्रुद्ध करते हैं, वैसे ही विद्वान् जन पदार्थों को मथकर बिजुली आदि को कंपाते हैं और कार्य्यों में युक्त करते हैं॥३॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**वार्तत्विषो मरुतो वर्षनिर्णिजो यमाइव सुसदृशः सुपेशसः।**

**पिशङ्गाश्वा अरुणाश्वा अरेपसः प्रत्वक्षसो महिना द्यौरिवोरवः॥४॥**

**वार्तऽत्विषः। मरुतः। वर्षऽनिर्निजः। यमाःऽइव। सुऽसदृशः। सुऽपेशसः। पिशङ्गऽअश्वाः। अरुणऽअश्वाः। अरेपसः। प्रऽत्वक्षसः। महिना। द्यौःऽइव। उरवः॥४॥**

**पदार्थः-(वातत्विषः)** वातस्य त्विट् कान्तिर्येषान्ते **(मरुतः)** मनुष्याः **(वर्षनिर्णिजः)** ये वर्षं निर्नेनिजन्ति ते **(यमाइव)** न्यायाधीशा इव **(सुसदृशः)** सम्यक्तुल्यगुणकर्मस्वभावाः **(सुपेशसः)** सुष्ठु पेशो रूपं सुवर्णं वा येषान्ते **(पिशङ्गाश्वाः)** आ पीतवर्णा अश्वा येषान्ते **(अरुणाश्वाः)** रक्तवर्णाऽश्वाः **(अरेपसः)** अनपराधिनः **(प्रत्वक्षसः)** प्रकर्षेण सूक्ष्मकर्त्तारः **(महिना)** महिम्ना **(द्यौरिव)** सूर्य्य इव **(उरवः)** बहवः॥४॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे विद्वांसो! ये यमाइव वातत्विषो वर्षनिर्णिजः सुसदृशः सुपेशसः पिशङ्गाश्वा अरेपसोऽरुणाश्वा प्रत्वक्षसो महिना द्यौरिवोरवो मरुतः स्युस्तान् सत्कुरुत॥४॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। ये मनुष्याः सूर्य्यवदात्मप्रकाशा न्यायाधीशवद् व्यवहर्त्तारो विमानादि-यानयुक्ताः सन्ति तान् सततं सत्कुरुत॥४॥

**पदार्थः**-हे विद्वान् जनो! जो **(यमाइव)** न्यायाधीशों के सदृश **(वातत्विषः)** वायु की कान्ति के समान कान्ति जिनकी ऐसे **(वर्षनिर्णिजः)** वर्ष का निर्णय करने वाले **(सुसदृशः)** उत्तम प्रकार तुल्य गुण, कर्म और स्वभाव युक्त **(सुपेशसः)** उत्तम तुल्य रूप वा सुवर्ण जिनका वे **(पिशङ्गाश्वाः)** सब ओर से पीले वर्ण के घोड़ों वाले **(अरेपसः)** अपराध से रहित **(अरुणाश्वाः)** रक्त वर्ण के घोड़ों वाले **(प्रत्वक्षसः)** अत्यन्त सूक्ष्म करने वाले **(महिना)** महिमा से **(द्यौरिव)** सूर्य्य के सदृश **(उरवः)** बहुत **(मरुतः)** मनुष्य होवें, उनका सत्कार करो॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जो मनुष्य सूर्य्य के सदृश आत्मा से प्रकाशित और न्यायाधीशों के सदृश व्यवहार करने वाले विमान आदि वाहन से युक्त हैं, उनका निरन्तर सत्कार करो॥४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**पुरुद्रप्सा अञ्जिमन्तः सुदानवस्त्वेषसंदृशो अनवभ्रराधसः।**

**सुजातासो जनुषा रुक्मवक्षसो दिवो अर्का अमृतं नाम भेजिरे॥५॥२१॥**

**पुरुऽद्रप्साः। अञ्जिऽमन्तः। सुऽदानवः। त्वेषऽसंदृशः। अनवभ्रऽराधसः। सुऽजातासः। जनुषा। रुक्मऽवक्षसः। दिवः। अर्काः। अमृतम्। नाम। भेजिरे॥५॥**

**पदार्थः**-**(पुरुद्रप्साः)** बहुमोहाः **(अञ्जिमन्तः)** प्रकृष्टा अञ्जयः कामना विद्यन्ते येषान्ते **(सुदानवः)** उत्तमदानाः **(त्वेषसन्दृशः)** ये त्वेषं सम्पश्यन्ति **(अनवभ्रराधसः)** न विद्यतेऽवभ्रो धननाशो येषान्ते **(सुजातासः)** सुष्ठु धर्म्येण व्यवहारेण प्रसिद्धाः **(जनुषा)** जन्मना **(रुक्मवक्षसः)** रुक्माणि जटितान्याभूषणानि वक्षःसु येषान्ते **(दिवः)** कामयमानाः **(अर्काः)** सत्कर्त्तव्याः **(अमृतम्)** नाशरहितम् **(नाम)** **(भेजिरे)** सेवन्ताम्॥५॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! ये पुरुद्रप्सा अञ्जिमन्तः सुदानवस्त्वेषसन्दृशोऽनवभ्रराधसो जनुषा सुजातासो रुक्मवक्षसो दिवोऽर्का अमृतं नाम भेजिरे तान् सर्वथा सत्कुरुत॥५॥

**भावार्थः**-ये मनुष्या उत्तमगुणकर्मस्वभावान् सर्वतो गृह्णन्ति ते सर्वथा सुखिनो जायन्ते॥५॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो **(पुरुद्रप्साः)** बहुत मोह वाले **(अञ्जिमन्तः)** अच्छी कामना विद्यमान जिनकी ऐसे वा **(सुदानवः)** उत्तम दोनों के करने और **(त्वेषसन्दृशः)** प्रकाशित रूप को देखने वाले



www.9009.co.in

(**अनवभ्रराधसः**) नहीं विद्यमान धन का नाश जिनके ऐसे और (**जनुषा**) जन्म से (**सुजातासः**) उत्तम प्रकार धर्म्मयुक्त व्यवहार से प्रसिद्ध (**रुक्मवक्षसः**) सुवर्ण आदि से जुड़े हुए आभूषण वक्षस्थलों में जिनके वे (**दिवः**) कामना करने वाले (**अर्काः**) सत्कार करने योग्य जन (**अमृतम्**) नाश से रहित (**नाम**) [नाम] का (**भेजिरे**) सेवन करें, उनका सब प्रकार सत्कार करिये॥५॥

**भावार्थः**-जो जन उत्तम गुण, कर्म्म और स्वभाव को सब प्रकार ग्रहण करते हैं, वे सब प्रकार से सुखी होते हैं॥५॥

**पुनर्मरुद्विषये यानचालनफलमाह॥**

फिर मरुद्विषय में यान चलाने के फल को कहते हैं॥

**ऋष्टयो वो मरुतो अंसयोरधि सह ओजो बाह्वोर्वो बलं हितम्।**

**नृम्णा शीर्षस्वायुधा रथेषु वो विश्वा वः श्रीरधि तनूषु पिपिशे॥६॥**

**ऋष्टयः। वः। मरुतः। अंसयोः। अधि। सहः। ओजः। बाह्वोः। वः। बलम्। हितम्। नृम्णा। शीर्षऽसु। आयुधा। रथेषु। वः। विश्वा। श्रीः। अधि। तनूषु। पिपिशे॥६॥**

**पदार्थः**-(**ऋष्टयः**) ज्ञानवन्तः (**वः**) युष्माकम् (**मरुतः**) मनुष्याः (**अंसयोः**) भुजदण्डमूलयोः (**अधि**) उपरि (**सहः**) सहनम् (**ओजः**) पराक्रमः (**बाह्वोः**) (**वः**) युष्माकम् (**बलम्**) (**हितम्**) स्थितम् (**नृम्णा**) नरो रमन्ते येषु तानि (**शीर्षसु**) मस्तकेषु (**आयुधा**) शस्त्रास्त्राणि (**रथेषु**) सङ्ग्रामार्थेषु यानेषु (**वः**) युष्माकम् (**विश्वा**) सर्वाणि (**वः**) (**श्रीः**) धनं शोभा वा (**अधि**) (**तनूषु**) शरीरेषु (**पिपिशे**) आश्रीयते॥६॥

**अन्वयः**-हे ऋष्टयो मरुतो! वोंऽसयोर्यत्सह ओजो बाह्वोर्वो बलं हितं शीर्षस्वधि नृम्णाऽऽयुधा रथेषु वो विश्वा श्रीरधि पिपिशे वस्तनूषु श्रीरधि पिपिशे ता यूयं सङ्गृह्णीत॥६॥

**भावार्थः**-ये मनुष्याः शरीरात्मबलिष्ठा भूत्वाऽऽयुधविद्यायां निपुणा भूत्वोत्तमयानादिसामग्री-सहिताः पुरुषार्थयन्ते ते श्रीमन्तो जायन्ते॥६॥

**पदार्थः**-हे (**ऋष्टयः**) ज्ञानवान् (**मरुतः**) मनुष्यो! (**वः**) आप लोगों के (**अंसयोः**) भुजारूप दण्डों के मूलों में जो (**सहः**) सहन और (**ओजः**) पराक्रम तथा (**बाह्वोः**) बाहु सम्बन्धी (**वः**) आप लोगों का (**बलम्**) बल (**हितम्**) स्थित (**शीर्षसु**) मस्तकों (**अधि**) पर (**नृम्णा**) और मनुष्य रमते हैं जिनमें ऐसे (**आयुधा**) शस्त्र और अस्त्र (**रथेषु**) संग्रामार्थ वाहनों में वा (**वः**) आप लोगों के (**विश्वा**) सम्पूर्ण (**श्रीः**) धन वा शोभा (**अधि, पिपिशे**) अधिक आश्रय की जाती और (**वः**) आप लोगों के (**तनूषु**) शरीरों में धन वा शोभा अधिक आश्रयण की जाती, उनका आप लोग संग्रहण कीजिये॥६॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य शरीर और आत्मा से बलिष्ठ और आयुधों की विद्या में निपुण होकर उत्तम वाहन आदि सामग्रियों से युक्त हुए पुरुषार्थ करते हैं, वे धनवान् होते हैं॥६॥



www.9009.co.in

**पुनर्मरुद्विषयमाह॥**

फिर मरुद्विषय को कहते हैं॥

**गोमदश्वावद्रथवत्सुवीरं चन्द्रवद्राधो मरुतो ददा नः।**

**प्रशस्तिं नः कृणुत रुद्रियासो भक्षीय वोऽवसो दैव्यस्य॥७॥**

**गोऽमत्। अश्वऽवत्। रथऽवत्। सुऽवीरम्। चन्द्रऽवत्। राधः। मरुतः। दद। नः। प्रऽशस्तिम्। नः। कृणुत। रुद्रियासः। भक्षीय। वः। अवसः। दैव्यस्य॥७॥**

**पदार्थः**-**(गोमत्)** बह्व्यो गावो विद्यन्ते यस्मिँस्तत् **(अश्वावत्)** बह्वश्वयुक्तम् **(रथवत्)** प्रशंसितरथसहितम् **(सुवीरम्)** उत्तमवीरनिमित्तम् **(चन्द्रवत्)** सुवर्णादियुक्तमानन्दादिप्रदं वा **(राधः)** धनम् **(मरुतः)** मनुष्याः **(ददा)** दत्त। अत्र **द्व्यचोऽतस्तिङ** इति दीर्घः। **(नः)** अस्मभ्यम् **(प्रशस्तिम्)** प्रशंसाम् **(नः)** अस्माकम् **(कृणुत)** कुरुत **(रुद्रियासः)** रुद्रेषु साधनकर्त्तृषु भवाः **(भक्षीय)** भजेयम् **(वः)** युष्माकम् **(अवसः)** रक्षादेः **(दैव्यस्य)** देवैः कृतस्य॥७॥

**अन्वयः**-हे रुद्रियासो मरुतो! यूयं नो गोमदश्वावद्रथवच्चन्द्रवत्सुवीरं राधो ददा। दैव्यस्यावसो नः प्रशस्तिं कृणुत येन वः सकाशादेकैकोऽहं सुखं भक्षीय॥७॥

**भावार्थः**-यदा मनुष्याः सत्पुरुषाणां सङ्गं कुर्युस्तदेह समग्रैश्वर्य्यं परत्र धर्मानुष्ठानं कर्त्तुं याचन्ताम्॥७॥

**पदार्थः**-हे **(रुद्रियासः)** साधन करने वालों में हुए **(मरुतः)** मनुष्यो! आप लोग **(नः)** हम लोगों के लिये **(गोमत्)** बहुत गौवें विद्यमान जिसमें वा **(अश्वावत्)** बहुत घोड़ों से युक्त **(रथवत्)** व प्रशंसित वाहनों के सहित **(चन्द्रवत्)** वा सुवर्ण आदि से युक्त वा आनन्द आदि के देने वाले **(सुवीरम्)** उत्तम वीर निमित्तक **(राधः)** धन को **(ददा)** दीजिये और **(दैव्यस्य)** विद्वानों से किये गये **(अवसः)** रक्षण आदि के सम्बन्ध में **(नः)** हम लोगों की **(प्रशस्तिम्)** प्रशंसा को **(कृणुत)** करिये जिससे **(वः)** आप लोगों के समीप से एक-एक मैं सुख का **(भक्षीय)** सेवन करूं॥७॥

**भावार्थः**-जब मनुष्य सत्पुरुषों का सङ्ग करें, तब इस लोक में सम्पूर्ण ऐश्वर्य और परलोक में धर्म्म के अनुष्ठान करने की याचना करें॥७॥

**पुनर्मरुद्विषयकविद्वद्गुणानाह॥**

फिर मरुद्विषयक विद्वानों के गुणों को कहते हैं॥

**हये नरो मरुतो मृळता नस्तुवीमघासो अमृता ऋतज्ञाः।**

**सत्यश्रुतः कवयो युवानो बृहद्गिरयो बृहदुक्षमाणाः॥८॥२२॥**



www.9009.co.in

**हये। नरः। मरुतः। मृळत। नः। तुविऽमघासः। अमृताः। ऋतऽज्ञाः। सत्यऽश्रुतः। कवयः। युवानः। बृहत्ऽगिरयः। बृहत्। उक्षमाणाः॥८॥**

**पदार्थः-(हये)** सम्बोधने **(नरः)** नायकाः **(मरुतः)** मरणशीलाः **(मृळता)** सुखयत। अत्र **संहितायामि**ति दीर्घः। **(नः)** अस्मान् **(तुवीमघासः)** बहुधनयुक्ताः **(अमृताः)** स्वस्वरूपेण मृत्युरहिताः **(ऋतज्ञाः)** ये ऋतं यथार्थं जानन्ति ते **(सत्यश्रुतः)** ये सत्यं श्रुतवन्तः शृण्वन्ति वा **(कवयः)** विद्वांसः **(युवानः)** प्राप्तयुवावस्थाः **(बृहद्गिरयः)** बहुप्रशंसाः **(बृहत्)** महत् **(उक्षमाणाः)** सेवमानाः॥८॥

**अन्वयः**-हये नरो मरुतो! तुवीमघासोऽमृता ऋतज्ञाः सत्यश्रुतो युवानो बृहद्गिरयो बृहदुक्षमाणाः कवयः सन्तो यूयं नो मृळता॥८॥

**भावार्थः**-ये मनुष्या आप्तान् विदुषः सेवन्ते ते सत्यां विद्यां प्राप्य सदैव मोदन्ते॥८॥

अत्र रुद्रमरुद्गुणवर्णानादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति सप्तपञ्चाशत्तमं सूक्तं द्वाविंशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः-(हये)** हे **(नरः)** नायक **(मरुतः)** मरणशील जनो! **(तुवीमघासः)** बहुत धनों से युक्त **(अमृताः)** अपने स्वरूप से मृत्युरहित **(ऋतज्ञाः)** यथार्थ को जानने वाले **(सत्यश्रुतः)** सत्य को सुने हुए वा सत्य को सुनने वाले **(युवानः)** युवावस्था को प्राप्त **(बृहद्गिरयः)** बहुत प्रशंसा वाले **(बृहत्)** बहुत **(उक्षमाणाः)** सेवन किये और **(कवयः)** विद्वान् होते हुए आप लोग **(नः)** हम लोगों को **(मृळता)** सुखी करो॥८॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य यथार्थवक्ता विद्वानों का सेवन करते हैं, वे सत्य विद्या को प्राप्त होकर सदा ही प्रसन्न होते हैं॥८॥

इस सूक्त में रुद्र और वायु के गुण-वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ संगति जाननी चाहिये॥

**यह सत्तावनवाँ सूक्त और बाईसवाँ वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

**अथाष्टर्चस्याष्टपञ्चाशत्तमस्य सूक्तस्य श्यावाश्व आत्रेय ऋषिः। मरुतो देवताः। १, ३, ४, ६, ८ निचृत्त्रिष्टुप्। २, ५ त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः। ७ भुरिक् पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः॥**

***अथ वायुगुणानाह॥***

अब आठ ऋचा वाले अठ्ठावनवें सूक्त का प्रारम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में वायुगुणों को कहते हैं॥

**तमु॒ नू॒नं तवि॑षीमन्तमेषां स्तु॒षे ग॒णं मारु॑तं॒ नव्य॑सीनाम्।**

**य आ॒श्व॑श्वा॒ अम॑व॒द्वह॑न्त उ॒तेशि॑रे अ॒मृत॑स्य स्व॒राजः॑॥ १॥**

**तम्। ऊँ इति॑। नू॒नम्। तवि॑षीऽमन्तम्। ए॒षा॒म्। स्तु॒षे। ग॒णम्। मारु॑तम्। नव्य॑सीनाम्। ये। आ॒शुऽअ॑श्वाः। अम॑ऽवत्। वह॑न्ते। उ॒त। ई॒शि॒रे॒। अ॒मृत॑स्य। स्व॒ऽराजः॑॥ १॥**

**पदार्थः**-**(तम्)** (उ) वितर्के **(नूनम्)** निश्चितम् **(तविषीमन्तम्)** प्रशस्ता तविषी सेना यस्य तम् **(एषाम्)** वीराणाम् **(स्तुषे)** स्तोतुम् **(गणम्)** समूहम् **(मारुतम्)** मरुतामिमम् **(नव्यसीनाम्)** अतिशयेन नवीनानां प्रजानाम् **(ये)** **(आश्वश्वाः)** आशुगामिनोऽग्न्यादयो अश्वा येषान्ते **(अमवत्)** गृहवत् **(वहन्ते)** प्राप्नुवन्ति **(उत)** अपि **(ईशिरे)** ऐश्वर्य्यं प्राप्नुवन्ति **(अमृतस्य)** नाशरहितस्य कारणस्य **(स्वराजः)** स्वः राजत इति स्वराट् तस्य॥ १॥

**अन्वयः**-अमृतस्य स्वराज आश्वश्वा येऽमवद्वहन्ते उतापि नव्यसीनां मारुतं गणं स्तुष ईशिर एषामु तविषीमन्तं तं नूनं वहन्ते ते विजयिनो जायन्ते॥ १॥

**भावार्थः**-ये कार्य्यकारणात्मकस्य जगतो गुणकर्म्मस्वभावाञ्जानन्ति ते गृहवत्सर्वान् सुखयितुं शक्नुवन्ति॥ १॥

**पदार्थः**-**(अमृतस्य)** नाश से रहित कारण **(स्वराजः)** जो कि आप प्रकाशवान् उसके सम्बन्ध में **(आश्वश्वाः)** शीघ्र चलने वाले अग्नि आदि अश्व जिनके वे **(ये)** जो **(अमवत्)** गृहों को प्राप्त हों, वैसे **(वहन्ते)** प्राप्त होते हैं **(उत)** और **(नव्यसीनाम्)** अत्यन्त नवीन प्रजाओं के **(मारुतम्)** पवनसम्बन्धी **(गणम्)** समूह की **(स्तुषे)** स्तुति करने के लिये **(ईशिरे)** ऐश्वर्य को प्राप्त होते हैं **(एषाम्)** इन वीरों के (उ) तर्क के साथ **(तविषीमन्तम्)** अच्छी सेना जिसकी **(तम्)** उसी को **(नूनम्)** निश्चय प्राप्त होते हैं, वे विजयी होते हैं॥ १॥

**भावार्थः**-जो कार्य्य और कारणस्वरूप संसार के गुण, कर्म्म और स्वभावों को जानते हैं, वे गृह के सदृश सब को सुखी कर सकते हैं॥

**पुनर्मनुष्याः किं कुर्युरित्याह॥**



www.9009.co.in

फिर मनुष्य क्या करें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**त्वेषं गणं तवसं खादिहस्तं धुनिव्रतं मायिनं दातिवारम्।**

**मयोभुवो ये अमिता महित्वा वन्दस्व विप्र तुविराधसो नॄन्॥ २॥**

**त्वेषम्। गणम्। तवसम्। खादिऽहस्तम्। धुनिऽव्रतम्। मायिनम्। दातिऽवारम्। मयःऽभुवः। ये। अमिताः। महिऽत्वा। वन्दस्व। विप्र। तुविऽराधसः। नॄन्॥ २॥**

**पदार्थः-(त्वेषम्)** दीप्तिमन्तम् **(गणम्)** गणनीयम् **(तवसम्)** बलवन्तम् **(खादिहस्तम्)** खादि हस्तयोर्यस्य तम् **(धुनिव्रतम्)** धुनिः कम्पनमिव व्रतं शीलं यस्य तम् **(मायिनम्)** प्रशस्ता माया प्रज्ञा विद्यते यस्य तम् **(दातिवारिम्)** यो दातिं दानं वृणोति तम् **(मयोभुवः)** सुखं भावुकाः **(ये)** **(अमिताः)** अतुलशुभगुणाः **(महित्वा)** महत्त्वं प्राप्य **(वन्दस्व)** **(विप्र)** मेधाविन् **(तुविराधसः)** बहुधनवतः **(नॄन्)** मनुष्यान्॥ २॥

**अन्वयः**-हे विप्र! त्वं त्वेषं तवसं खादिहस्तं धुनिव्रतं मायिनं दातिवारं वीराणां गणं वन्दस्व। ये महित्वाऽमिता मयोभुवः स्युस्ताँस्तुविराधसो नॄन् वन्दस्व॥ २॥

**भावार्थः**-मनुष्यैर्योग्यानां धार्मिकाणां विदुषामेव सत्कारः कर्त्तव्यो यतः सुखं वर्त्तेत॥ २॥

**पदार्थः**-हे **(विप्र)** बुद्धिमन्! आप **(त्वेषम्)** प्रकाशित **(तवसम्)** बलवान् **(खादिहस्तम्)** खाद्य हाथों में जिसके **(धुनिव्रतम्)** कंपन के सदृश स्वभाव जिसका वा **(मायिनम्)** उत्तम बुद्धि जिसकी उस **(दातिवारम्)** दान के स्वीकार करने वाले वीरों के **(गणम्)** गणन करने योग्य की **(वन्दस्व)** वन्दना करिये और **(ये)** जो **(महित्वा)** महत्त्व को प्राप्त होकर **(अमिताः)** अतुल शुभ गुण वाले **(मयोभुवः)** सुख को कराने वाले हों उन **(तुविराधसः)** बहुत धन वाले **(नॄन्)** मनुष्यों की वन्दना कीजिये॥ २॥

**भावार्थः**-मनुष्यों को चाहिये कि योग्य धार्मिक विद्वानों का ही सत्कार करें, जिससे सुख बढ़े॥ २॥

**पुनर्मनुष्याः किं कुर्य्युरित्याह॥**

फिर मनुष्य क्या करें, इस विषय को कहते हैं॥

**आ वो यन्तूदवाहासो अद्य वृष्टिं ये विश्वे मरुतो जुनन्ति।**

**अयं यो अग्निर्मरुतः समिद्ध एतं जुषध्वं कवयो युवानः॥ ३॥**

**आ। वः। यन्तु। उदऽवाहासः। अद्य। वृष्टिम्। ये। विश्वे। मरुतः। जुनन्ति। अयम्। यः। अग्निः। मरुतः। सम्ऽइद्धः। एतम्। जुषध्वम्। कवयः। युवानः॥ ३॥**

**पदार्थः-(आ)** समन्तात् **(वः)** युष्मान् **(यन्तु)** प्राप्नुवन्तु **(उदवाहासः)** य उदकं वहन्ति तानिव **(अद्य)** इदानीम् **(वृष्टिम्)** वर्षणम् **(ये)** **(विश्वे)** सर्वे **(मरुतः)** वायवः **(जुनन्ति)** प्रेरयन्ति **(अयम्)** **(यः)**



www.9009.co.in

**(अग्निः)** पावकः **(मरुतः)** मनुष्याः **(समिद्धः)** प्रदीप्तः **(एतम्)** **(जुषध्वम्)** **(कवयः)** मेधाविनः **(युवानः)** प्राप्तयौवनाः॥३॥

**अन्वयः**-हे कवयो युवानो मरुतो मनुष्या! ये विश्व उदवाहसो मरुतो वृष्टिं जुनन्ति तेऽद्य व आ यन्तु। योऽयं समिद्धोऽग्निरस्त्येतं यूयं जुषध्वम्॥३॥

**भावार्थः**-ये वृष्टिकरान् वाय्वग्न्यादीन् विजानन्ति त एतान् वृष्टये प्रेरयितुं शक्नुवन्ति॥३॥

**पदार्थः**-हे **(कवयः)** बुद्धिमान् **(युवानः)** युवावस्था को प्राप्त हुए **(मरुतः)** मनुष्यो! **(ये)** जो **(विश्वे)** सम्पूर्ण **(उदवाहासः)** जल को जो धारण करते हैं उनके सदृश **(मरुतः)** पवन **(वृष्टिम्)** वृष्टि की **(जुनन्ति)** प्रेरणा करते हैं, वे **(अद्य)** इस समय **(वः)** आप लोगों को **(आ, यन्तु)** प्राप्त हों और **(यः)** जो **(अयम्)** यह **(समिद्धः)** प्रदीप्त **(अग्निः)** अग्नि है **(एतम्)** इसको आप लोग **(जुषध्वम्)** सेवन करो॥३॥

**भावार्थः**-जो वृष्टि करने वाले वायु और अग्नि आदि को विशेष करके जानते हैं, वे इनको वृष्टि करने के लिये प्रेरणा करने को समर्थ होते हैं॥३॥

**पुनर्मरुद्गुणानाह॥**

फिर मरुद् के गुणों को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**यूयं राजानमिर्यं जनाय विभ्वतष्टं जनयथा यजत्राः।**

**युष्मदेति मुष्टिहा बाहुजूतो युष्मत्सदश्वो मरुतः सुवीरः॥४॥**

**यूयम्। राजानम्। इर्यम्। जनाय। विभ्वऽतष्टम्। जनयथ। यजत्राः। युष्मत्। एति। मुष्टिऽहा। बाहुऽजूतः। युष्मत्। सत्ऽअश्वः मरुतः। सुऽवीरः॥४॥**

**पदार्थः**-**(यूयम्)** **(राजानम्)** न्यायविनयाभ्यां प्रकाशमानम् **(इर्यम्)** प्रेरकम्। अत्र वर्णव्यत्ययेन दीर्घेकारस्य ह्रस्वः। **(जनाय)** मनुष्याय **(विभ्वतष्टम्)** विभूनां मेधाविनां मध्ये तष्टं तीव्रप्रज्ञम् **(जनयथा)** अत्र **संहितायामि**ति दीर्घः। **(यजत्राः)** सङ्गन्तारः **(युष्मत्)** युष्माकं सकाशात् **(एति)** प्राप्नोति **(मुष्टिहा)** यो मुष्टिना हन्ति **(बाहुजूतः)** बाहुभ्यां बलवान् **(युष्मत्)** **(सदश्वः)** सन्तः समीचीना अश्वा यस्य सः **(मरुतः)** सुशिक्षिता मानवाः **(सुवीरः)** शोभनश्चासौ वीरश्च॥४॥

**अन्वयः**-हे यजत्रा मरुतो! यो युष्मन्मुष्टिहा बाहुजूतो युष्मत्सदश्वः सुवीर एति तं जनायेर्यं विभ्वतष्टं राजानं यूयं जनयथा॥४॥

**भावार्थः**-मनुष्याः सर्वैरुपायैर्धर्म्यगुणकर्मस्वभावं राजानं तादृशान् सहायांश्च जनयेयुः॥४॥

**पदार्थः**-हे **(यजत्राः)** मिलने वाले **(मरुतः)** उत्तम प्रकार शिक्षित मनुष्यो! जो **(युष्मत्)** आप लोगों के समीप **(मुष्टिहा)** मुष्टि से मारने वाला **(बाहुजूतः)** बाहुओं से बलवान् वा **(युष्मत्)** आप लोगों के समीप **(सदश्वः)** अच्छे घोड़े जिसके ऐसा **(सुवीरः)** सुन्दर वीरजन **(एति)** प्राप्त होता है उसको



www.9009.co.in

**(जनाय)** मनुष्य के लिये **(इर्यम्)** प्रेरणा करने वाले **(विभ्वतष्टम्)** बुद्धिमानों के मध्य में तीव्र बुद्धि वाले **(राजानम्)** न्याय और विनय से प्रकाशमान राजा को **(यूयम्)** आप **(जनयथा)** प्रकट कीजिये॥४॥

**भावार्थः**-मनुष्य सम्पूर्ण उपायों से धर्मयुक्त गुण, कर्म और स्वभाव वाले राजा और उसी प्रकार के सहायों को उत्पन्न करें॥४॥

**अथ विद्वदुपदेशगुणानाह॥**

अब विद्वानों के उपदेशगुणों को कहते हैं॥

**अराइवेदचरमा अहेव प्रप्र जायन्ते अकवा महोभिः।**

**पृश्नेः पुत्रा उपमासो रभिष्ठाः स्वया मत्या मरुतः सं मिमिक्षुः॥५॥**

**अराःऽइव। इत्। अचरमाः। अहाऽइव। प्रऽप्र। जायन्ते। अकवाः। महःऽभिः। पृश्नेः। पुत्राः। उपऽमासः। रभिष्ठाः। स्वया। मत्या। मरुतः। सम्। मिमिक्षुः॥५॥**

**पदार्थः**-**(अराइव)** चक्रावयवा इव **(इत्)** एव **(अचरमाः)** नान्त्यावयवाः **(अहेव)** अहानीव **(प्रप्र)** **(जायन्ते)** **(अकवाः)** अशब्दायमानाः **(महोभिः)** महद्भिः **(पृश्नेः)** अन्तरिक्षस्य **(पुत्राः)** **(उपमासः)** **(रभिष्ठाः)** अतिशयेनाऽऽरब्धारः **(स्वया)** **(मत्या)** प्रज्ञया **(मरुतः)** वायवः **(सम्)** **(मिमक्षुः)** सिञ्चन्ति॥५॥

**अन्वयः**-हे विद्वांसो! ये मरुतोऽराइवाऽचरमा अहेवाऽकवाः पृश्नेः पुत्रा महोभिरित् प्रप्र जायन्ते सं मिमक्षुस्तथोपमासो रभिष्ठा यूयं स्वया मत्या प्रप्र जायध्वम्॥५॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। यथा रथचक्राङ्गानि दिनानि च क्रमेण वर्त्तन्ते यथा वायवो गत्वागत्य वर्षन्ति तथैव मनुष्यैः क्रमेण वर्त्तित्वा प्रज्ञया सुखवृष्टिः सर्वेषां सुखाय कर्त्तव्या॥५॥

**पदार्थः**-हे विद्वानो! जो **(मरुतः)** पवन **(अराइव)** चक्रों के अवयवों के सदृश **(अचरमाः)** नहीं अन्त्यावयव जिनके वे **(अहेव)** दिनों के सदृश **(अकवाः)** नहीं शब्द करते हुए **(पृश्नेः)** अन्तरिक्ष के **(पुत्राः)** पुत्र **(महोभिः, इत्)** बड़ों के ही साथ **(प्रप्र, जायन्ते)** अत्यन्त उत्पन्न होते और **(सम्, मिमिक्षुः)** अच्छे प्रकार सिञ्चन करते हैं, वैसे **(उपमासः)** प्रत्येक के तुल्य **(रभिष्ठाः)** अत्यन्त आरम्भ करने वाले आप लोग **(स्वया)** अपनी **(मत्या)** बुद्धि से अत्यन्त उत्पन्न होओ॥५॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जैसे वाहन के चक्रों के अङ्ग और दिन, क्रम से वर्त्तमान हैं और जैसे पवन जा, आकर वर्षाते हैं, वैसे ही मनुष्यों को चाहिये कि क्रम से वर्त्ताव करके बुद्धि से सुख की वृष्टि सब के सुख के लिये करें॥५॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**यत्प्रायासिष्ट पृषतीभिरश्वैर्वीळुपविभिर्मरुतो रथेभिः।**



www.9009.co.in

**क्षोदन्त आपो रिणते वनान्यवोस्त्रियो वृषभः क्रन्दतु द्यौः॥६॥**

**यत्। प्र। अयासिष्ट। पृषतीभिः। अश्वैः। वीळुपविऽभिः। मरुतः। रथेभिः। क्षोदन्ते। आपः। रिणते। वनानि। अव। उस्त्रियः। वृषभः। क्रन्दतु। द्यौः॥६॥**

**पदार्थः-(यत्)** **(प्र)** **(अयासिष्ट)** यातु **(पृषतीभिः)** वेगादिभिः **(अश्वैः)** आशुगामिभिः **(वीळुपविभिः)** दृढचक्रैः **(मरुतः)** विद्वांसो मनुष्याः **(रथेभिः)** विमानादियानैः **(क्षोदन्ते)** क्षरन्ति वर्षन्ति **(आपः)** जलानि **(रिणते)** गच्छन्ति **(वनानि)** किरणान् **(अव)** **(उस्त्रियः)** उस्त्रासु किरणेषु भवः **(वृषभः)** वर्षको मेघः **(क्रन्दतु)** आह्वयतु **(द्यौः)** कामयमानः॥६॥

**अन्वयः**-हे मरुतो! भवन्तः पृषतीभिरश्वै रथेभिर्यद्वीळुपविभिः क्षोदन्ते यथाऽऽपो वनानि रिणते तथैवोस्त्रियो वृषभो द्यौर्वनान्यव क्रन्दतु इष्टं प्रायासिष्ट॥६॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यदि यूयं वायुवत्सद्योगमनं जलवत्तृप्तिकरणं कुर्य्यात तर्हि सर्वणि सुखानि प्राप्नुयात॥६॥

**पदार्थः**-हे **(मरुतः)** विद्वान् मनुष्यो! आप लोग **(पृषतीभिः)** वेग आदिकों और **(अश्वैः)** शीघ्र चलने वाले **(रथेभिः)** विमान आदि वाहनों से **(यत्)** जो **(वीळुपविभिः)** दृढ़ चक्रों से **(क्षोदन्ते)** वृष्टि करते हैं और जैसे **(आपः)** जल **(वनानि)** किरणों को **(रिणते)** प्राप्त होते हैं, वैसे ही **(उस्त्रियः)** किरणों में उत्पन्न **(वृषभः)** वर्षाने वाला मेघ **(द्यौः)** कामना करता हुआ किरणों का **(अव, क्रन्दतु)** आह्वान करे और इष्ट को **(प्र, अयासिष्ट)** अत्यन्त प्राप्त हों॥६॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जो आप लोग वायु के सदृश शीघ्र गमन और जल के सदृश तृप्ति करने रूप कार्य को करें तो सम्पूर्ण सुखों को प्राप्त हों॥६॥

**पुनर्विद्वद्विषयमाह॥**

फिर विद्वद्विषय को कहते हैं॥

**प्रथिष्ट यामन् पृथिवी चिदेषां भर्तेव गर्भं स्वमिच्छवो धुः।**

**वातान् ह्यश्वान् धुर्यायुयुज्रे वर्षं स्वेदं चक्रिरे रुद्रियासः॥७॥**

**प्रथिष्ट। यामन्। पृथिवी। चित्। एषाम्। भर्ताऽइव। गर्भम्। स्वम्। इत्। शवः। धुः। वातान्। हि। अश्वान्। धुरि। आऽयुयुज्रे। वर्षम्। स्वेदम्। चक्रिरे। रुद्रियासः॥७॥**

**पदार्थः-(प्रथिष्ट)** प्रथते **(यामन्)** यामनि **(पृथिवी)** भूमिः **(चित्)** अपि **(एषाम्)** **(भर्त्तेव)** **(गर्भम्)** **(स्वम्)** **(इत्)** **(शवः)** गमनम् **(धुः)** दधति **(वातान्)** वायून् **(हि)** यतः **(अश्वान्)** सद्योगामिनः **(धुरि)** यानमध्ये **(आयुयुज्रे)** समन्तात् युञ्जते **(वर्षम्)** **(स्वेदम्)** प्रस्वेदमिव **(चक्रिरे)** **(रुद्रियासः)** रुद्रेषु दुष्टरोदयितृषु कुशलाः॥७॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथैषां मध्ये पृथिवी यामन् गर्भं भर्त्तेव प्रथिष्ट तथा भवन्तः स्वं शव इद् धुरि धुरश्वान् वातानायुयुज्रे चिदपि रुद्रियासः सन्त स्वेदमिव हि वर्षं चक्रिरे॥७॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। ये मनुष्याः पृथिवीवत् क्षमाशीला विस्तीर्णविद्या यानेषु वायूनश्वान् संयोज्य वर्षानिमित्तान् निर्माय कार्याणि साध्नुवन्ति ते सर्वं सुखं कर्त्तुं शक्नुवन्ति॥७॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे **(एषाम्)** इनके मध्य में **(पृथिवी)** भूमि **(यामन्)** प्रहर में **(गर्भम्)** गर्भ को **(भर्त्तेव)** स्वामी के सदृश **(प्रथिष्ट)** प्रकट करती है, वैसे आप लोग **(स्वम्)** सुख और **(शवः)** गमन को **(इत्)** ही **(धुरि)** वाहन के मध्य में **(धुः)** धारण करते और **(अश्वान्)** शीघ्र चलने वाले **(वातान्)** पवनों को **(आयुयुज्रे)** सब ओर से युक्त करते और **(चित्)** भी **(रुद्रियासः)** दुष्टों के रुलाने वालों में चतुर हुए **(स्वेदम्)** पसीने के सदृश **(हि)** निश्चय **(वर्षम्)** वृष्टि को **(चक्रिरे)** करते हैं॥७॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जो मनुष्य पृथिवी के सदृश क्षमाशील और विस्तीर्ण विद्या वाले वाहनों के पवन रूप घोड़ों को संयुक्त करके और वृष्टि के कारणों का निर्माण करके कार्य्यों को सिद्ध करते हैं, वे सम्पूर्ण सुख कर सकते हैं॥७॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**हये नरो मरुतो मृळता नस्तुवीमघासो अमृता ऋतज्ञाः।**

**सत्यश्रुतः कवयो युवानो बृहद्गिरयो बृहदुक्षमाणाः॥८॥२३॥**

**हये। नरः। मरुतः। मृळत। नः। तुविऽमघासः। अमृताः। ऋतऽज्ञाः। सत्यऽश्रुतः। कवयः। युवानः। बृहत्ऽगिरयः। बृहत्। उक्षमाणाः॥८॥**

**पदार्थः**-**(हये)** **(नरः)** नायकाः **(मरुतः)** मनुष्याः **(मृळता)** सुखयत। अत्र **संहितायामिति** दीर्घः। **(नः)** अस्मान् **(तुवीमघासः)** बहुधनाः **(अमृताः)** प्राप्तमोक्षाः **(ऋतज्ञाः)** य ऋतं परमात्मानं प्रकृतिं वा जानन्ति **(सत्यश्रुतः)** ये सत्यं यथार्थं शृण्वन्ति ते **(कवयः)** पूर्णविद्याः **(युवानः)** प्राप्ताऽत्मशरीरयौवनाः **(बृहद्गिरयः)** बृहन्तो गिरयो मेघा इवोपकारका गुणा येषान्ते **(बृहत्)** महद् ब्रह्म **(उक्षमाणाः)** सेवमानाः॥८॥

**अन्वयः**-हये नरो मरुतस्तुवीमघासोऽमृताः सत्यश्रुतः ऋतज्ञा युवानो बृहद्गिरयो बृहदुक्षमाणाः कवयो यूयं नो मृळता॥८॥

**भावार्थः**-ये मनुष्याः सर्वसत्यविद्याः प्राप्याप्तं परमात्मानं तदाज्ञां च सेवमाना महाशयाः पूर्णशरीरात्मबला अध्यापनोपदेशाभ्यामस्मानुन्नयन्ति तः एव सर्वदाऽस्माभिः सत्कर्त्तव्याः॥८॥

अत्र विद्वद्वायुगुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इत्यष्टपञ्चाशत्तमं सूक्तं त्रयोविंशो वर्गश्च समाप्तः॥**



www.9009.co.in

**पदार्थ:-(हये)** हे **(नर:)** नायक **(मरुत:)** जनो! **(तुवीमघास:)** बहुत धनवान् **(अमृता:)** मोक्ष को प्राप्त हुए **(सत्यश्रुत:)** सत्य को यथार्थ सुनने और **(ऋतज्ञा:)** परमात्मा वा प्रकृति को जानने वाले **(युवान:)** प्राप्त हुई अपने शरीर को यौवन अवस्था जिनको **(बृहद्गिरय:)** जिनके बड़े मेघों के सदृश उपकार करने वाले गुण वे **(बृहत्)** महत् ब्रह्म का **(उक्षमाणा:)** सेवन करते हुए **(कवय:)** पूर्णविद्या वाले आप लोग **(न:)** हम लोगों को **(मृळता)** सुखी करिये॥८॥

**भावार्थ:-**जो मनुष्य सम्पूर्ण सत्य विद्याओं को प्राप्त होकर यथार्थवक्ता, परमात्मा और उसकी आज्ञा का सेवन करते हुए महाशय पूर्ण शरीर और आत्मा के बल से युक्त अध्यापन और उपदेश से हम लोगों की वृद्धि करते हैं, वे ही सर्वदा हम लोगों से सत्कार करने योग्य हैं॥८॥

इस सूक्त में विद्वान् तथा वायु के गुण-वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के [साथ] संगति जाननी चाहिये॥

**यह अट्ठावनवां सूक्त तथा तेईसवां वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

**अथाष्टर्चस्यैकोनषष्टितमस्य सूक्तस्य श्यावाश्व आत्रेय ऋषिः। मरुतो देवताः। १, ४ विराड्जगती। २, ३, ६, निचृज्जगती। ५ जगती छन्दः। निषादः स्वरः। ७ स्वराट्त्रिष्टुप्। ८ निचृत् त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः॥**

***अथ विद्वद्गुणानाह॥***

अब आठ ऋचा वाले उनसठवें सूक्त का प्रारम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में विद्वद्गुणों को कहते हैं॥

**प्र वः स्पळक्रन्त्सुवितायं दावनेऽर्चा दिवे प्र पृथिव्या ऋतं भरे।**
**उक्षन्ते अश्वान् तरुषन्त आ रजोऽनु स्वं भानुं श्रथयन्ते अर्णवैः॥ १॥**

**प्र। वः। स्पट्। अक्रन्। सुवितायं। दावने। अर्च। दिवे। प्र। पृथिव्यै। ऋतम्। भरे। उक्षन्ते। अश्वान्। तरुषन्ते। आ। रजः। अनु। स्वम्। भानुम्। श्रथयन्ते। अर्णवैः॥ १॥**

**पदार्थः**-(**प्र**) (**वः**) युष्मभ्यम् (**स्पट्**) स्पष्टा (**अक्रन्**) कुर्वन्ति (**सुविताय**) ऐश्वर्य्यवते (**दावने**) दात्रे (**अर्चा**) सत्कुरु। अत्र **द्व्यचोऽतस्तिङ** इति दीर्घः। (**दिवे**) कामयमानाय (**प्र**) (**पृथिव्यै**) अन्तरिक्षाय भूमये वा (**ऋतम्**) सत्यम् (**भरे**) बिभ्रति यस्मिंस्तस्मिन् (**उक्षन्ते**) सेवन्ते (**अश्वान्**) वेगवतोऽग्न्यादीन् (**तरुषन्ते**) सद्यः प्लवन्ते (**आ**) (**रजः**) लोकम् (**अनु**) (**स्वम्**) स्वकीयम् (**भानुम्**) दीप्तिम् (**श्रथयन्ते**) शिथिलीकुर्वन्ति (**अर्णवैः**) समुद्रैर्नदीभिर्वा॥ १॥

**अन्वयः**-हे विद्वांसो! ये सुविताय दावने दिवे पृथिव्यै वो भर ऋतं प्राक्रन्नश्वानुक्षन्ते तरुषन्ते रजोऽनु स्वं भानुं चार्णवैः प्राश्रथयन्ते तान् यूयं सत्कुरुत। हे राजन् स्पट्! त्वमेतान् सततमर्चा॥ १॥

**भावार्थः**-हे राजन्! ये मनुष्या शिल्पविद्यया विमानादिकं निर्मायान्तरिक्षादिषु गत्वागत्य सर्वेषां सुखायैश्वर्य्यमाश्रयन्ति ते जगद्विभूषका भवन्ति॥ १॥

**पदार्थः**-हे विद्वानो! जो (**सुविताय**) ऐश्वर्य से युक्त और (**दावने**) देने वाले के लिए (**दिवे**) कामना करते हुए के लिए (**पृथिव्यै**) अन्तरिक्ष वा भूमि के लिये तथा (**वः**) आप लोगों के लिये (**भरे**) धारण करते हैं जिसमें उस व्यवहार में (**ऋतम्**) सत्य को (**प्र, अक्रन्**) अच्छे प्रकार करते हैं और (**अश्वान्**) वेग से युक्त अग्नि आदि को (**उक्षन्ते**) सेवते हैं तथा (**तरुषन्ते**) शीघ्र प्लवित होते हैं तथा (**रजः**) लोक के (**अनु**) पश्चात् (**स्वम्**) अपनी (**भानुम्**) कान्ति को (**अर्णवैः**) समुद्रों वा नदियों से (**प्र, आ, श्रथयन्ते**) सब प्रकार शिथिल करते हैं, उनका आप लोग सत्कार करिये और हे राजन् (**स्पट्**) स्पर्श करने वाले! आप इनका निरन्तर (**अर्चा**) सत्कार कीजिये॥ १॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-हे राजन्! जो मनुष्य शिल्पविद्या से विमानादि को रच के अन्तरिक्षादि मार्गों में जा आ कर सब के सुख के लिये ऐश्वर्य्य का आश्रयण करते हैं, वे संसार के विभूषक होते हैं॥१॥

**अथ वायुगुणानाह॥**

अब वायुगुणों को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अमा॑दे॒षां भि॒यसा॒ भूमि॑रेजति॒ नौर्न पू॒र्णा क्ष॑रति॒ व्यथि॑र्य॒ती।**

**दू॒रे॒दृशो॒ ये चि॒तय॑न्त॒ एम॑भिर॒न्तर्म॒हे वि॒दथे॑ येतिरे॒ नर॑ः॥२॥**

**अमा॑त्। ए॒षा॒म्। भि॒यसा॑। भूमि॑ः। ए॒ज॒ति॒। नौः। न। पू॒र्णा। क्ष॒र॒ति॒। व्यथि॑ः। य॒ती। दू॒रेऽदृ॑शः। ये। चि॒तय॑न्ते। एम॑ऽभिः। अ॒न्तः। म॒हे। वि॒दथे॑। ये॒ति॒रे॒। नर॑ः॥२॥**

**पदार्थः**-(**अमात्**) गृहात् (**एषाम्**) वाय्वग्न्यादीनाम् (**भियसा**) भयेन (**भूमिः**) पृथिवी (**एजति**) कम्पते (**नौः**) बृहती नौका (**न**) इव (**पूर्णा**)) (**क्षरति**) वर्षति (**व्यथिः**) या व्यथते सा (**यती**) गच्छन्ती (**दूरेदृशः**) ये दूरे दृश्यन्ते पश्यन्ति वा (**ये**) (**चितयन्ते**) प्रज्ञापयन्ति (**एमभिः**) प्रापकैर्गुणैः (**अन्तः**) मध्ये (**महे**) महते (**विदथे**) सङ्ग्रामे विज्ञानमये व्यवहारे वा (**येतिरे**) यतन्ते (**नरः**) नेतारो मनुष्याः॥२॥

**अन्वयः**-हे नरो नायका मनुष्या! या भूमिः पूर्णा नौर्न भियसा व्यथिर्यती स्त्रीवैजति एषाममात् क्षरति तां य एमभिरस्यान्तर्मध्ये दूरेदृशो महे चितयन्ते विदथे यतिरे त एव सर्वान् सुखयितुमर्हन्ति॥२॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। यथा शूराणां समीपाद् भीरवः पलायन्ते तथैव वायुसूर्य्याभ्यां भूमिः कम्पते चलति च यथा पदार्थैः पूर्णा नौरग्न्यादियोगेन समुद्रपारं सद्यो गच्छति तथा विद्यापारं मनुष्या गच्छन्तु यथा वीराः सङ्ग्रामे प्रयतन्ते तथैवेतरैर्मनुष्यैः प्रयतितव्यम्॥२॥

**पदार्थः**-हे (**नरः**) नायक मनुष्यो! जो (**भूमिः**) पृथिवी (**पूर्णा**) पूर्ण (**नौः**) बड़े नौका के (**न**) सदृश (**भियसा**) भय से (**व्यथिः**) पीड़ित होने वाली (**यती**) जाती हुई स्त्री के तुल्य (**एजति**) कांपती है और (**एषाम्**) इन वायु और अग्नि आदि के (**अमात्**) गृह से (**क्षरति**) वर्षाती है उसको (**ये**) जो (**एमभिः**) प्राप्त कराने वाले गुणों से इसके (**अन्तः**) मध्य में (**दूरेदृशः**) जो दूर देखे जाते वा दूर देखने वाले (**महे**) बड़े के लिये (**चितयन्ते**) उत्तमता से समझाते हैं और (**विदथे**) संग्राम वा विज्ञानयुक्त व्यवहार में (**येतिरे**) प्रयत्न करते हैं, वे ही सब को सुखी करने के योग्य होते हैं॥२॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जैसे शूरवीर जनों के समीप से डरने वाले जन भागते हैं, वैसे ही वायु और सूर्य से भूमि काँपती और चलती है और जैसे पदार्थों से पूर्ण नौका अग्नि आदि के योग से समुद्र के पार को शीघ्र जाती है, वैसे विद्या के पार मनुष्य जावें और जैसे वीर संग्राम में प्रयत्न करते हैं, वैसे ही अन्य मनुष्यों को प्रयत्न करना चाहिये॥२॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥



www.9009.co.in

**गवा॑मिव श्रि॒यसे॒ शृङ्ग॑मुत्त॒मं सूर्यो॒ न चक्षू॒ रज॑सो वि॒सर्ज॑ने।**

**अत्या॑इव सु॒भ्व१॒॑श्चार॑वः स्थन॒ मर्या॑इव श्रि॒यसे॑ चेतथा नरः॥३॥**

**गवा॑म्ऽइव। श्रि॒यसे॑। शृङ्ग॑म्। उ॒त्ऽत॒मम्। सूर्यः॑। न। चक्षुः॑। रज॑सः। वि॒ऽसर्ज॑ने। अत्याः॑ऽइव। सु॒ऽभ्वः॑। चार॑वः। स्थ॒न॒। मर्याः॑ऽइव। श्रि॒यसे॑। चे॒त॒थ॒। न॒रः॒॥३॥**

**पदार्थः**-(**गवामिव**) किरणानामिव (**श्रियसे**) सेवितुम् (**शृङ्गम्**) उपरिभागम् (**उत्तमम्**) (**सूर्यः**) सविता (**न**) इव (**चक्षुः**) प्रकाशकः (**रजसः**) लोकस्य (**विसर्जने**) त्यागे (**अत्याइव**) अश्ववत् (**सुभ्वः**) ये सुष्ठु भवन्ति (**चारवः**) सुन्दरस्वभावा गन्तारो वा (**स्थन**) भवत (**मर्य्याइव**) यथा विद्वांसो मनुष्याः (**श्रियसे**) श्रयितुमाश्रयितुम् (**चेतथा**) सञ्ज्ञानीध्वं ज्ञापयत वा। अत्र **संहितायामि**ति दीर्घः। (**नरः**) नेतारो मनुष्याः॥३॥

**अन्वयः**-हे सुभ्वश्चारवो नरः! शृङ्गमुत्तमं सूर्य्यो न गवामिव श्रियसे रजसो विसर्जने चक्षुरिव यूयं स्थनात्याइव मर्य्याइव श्रियसे यूयं चेतथा॥३॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। ये किरणवत्सूर्य्यवदश्ववन्मनुष्यवत्प्रकाशं दानं वेगं विवेकं च सेवन्ते त एवोत्तमं सुखं लभन्ते॥३॥

**पदार्थः**-हे (**सुभ्वः**) उत्तम प्रकार होने वाले (**चारवः**) सुन्दर स्वभाव युक्त वा जाने वाले (**नरः**) नायक मनुष्यो! (**शृङ्गम्**) ऊपर के (**उत्तमम्**) उत्तम भाग को (**सूर्य्यः**) सूर्य्य के (**न**) सदृश (**गवामिव**) किरणों के सदृश (**श्रियसे**) सेवने को (**रजसः**) लोक के (**विसर्जने**) त्याग में (**चक्षुः**) प्रकाश करने वाले के सदृश आप लोग (**स्थन**) हूजिये और (**अत्याइव**) घोड़े के सदृश (**मर्य्याइव**) वा विद्वानों के सदृश (**श्रियसे**) आश्रयण करने को आप लोग (**चेतथा**) उत्तम प्रकार जानिये वा जनाइये॥३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जो मनुष्य किरणों, सूर्य्य, घोड़े और मनुष्यों के सदृश प्रकाश, दान, वेग और विवेक को सेवते हैं, वे ही उत्तम सुख को प्राप्त होते हैं॥३॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**को वो॑ म॒हान्ति॑ मह॒तामुद॑श्नव॒त् कस्काव्या॑ मरुतः॒ को ह॒ पौंस्या॑।**

**यू॒यं ह॒ भूमिं॑ कि॒रणं॒ न रे॑जथ॒ प्र यद्भर॑ध्वे सुवि॒ताय॑ दा॒वने॑॥४॥**

**कः। व॒ः। म॒हान्ति॑। म॒ह॒ताम्। उत्। अ॒श्न॒व॒त्। कः। काव्या॑। म॒रु॒तः॒। कः। ह॒। पौंस्या॑। यू॒यम्। ह॒। भूमि॑म्। कि॒रण॑म्। न। रे॒ज॒थ॒। प्र। यत्। भर॑ध्वे। सु॒वि॒ताय॑। दा॒वने॑॥४॥**

**पदार्थः**-(**कः**) (**वः**) युष्माकं युष्मान् वा (**महान्ति**) विज्ञानादीनि (**महताम्**) (**उत्**) (**अश्नवत्**) प्राप्नोति (**कः**) (**काव्या**) कवीनां मेधाविनां कर्म्माणि (**मरुतः**) मननशीलाः (**कः**) (**ह**) किल (**पौंस्या**)

पुंसामिमानि बलानि **(यूयम्)** **(ह)** खलु **(भूमिम्)** **(किरणम्)** दीप्तिम् **(न)** इव **(रेजथ)** कम्पध्वम् **(प्र)** **(यत्)** यम् **(भरध्वे)** धरत **(सुविताय)** ऐश्वर्य्याय **(दावने)** दात्रे॥४॥

**अन्वयः**-हे मरुतो! महतां वो महान्ति क उदश्नवत् कः काव्योदश्नवत्को ह पौंस्योदश्नवद्यतो यूयं भूमिं किरणं न रेजथ यद्ध सुविताय दावने प्र भरध्वे तदेव सर्वैः प्राप्तव्यम्॥४॥

**भावार्थः**-अत्र प्रश्नोत्तराणि सन्ति-क आप्तानां सकाशान्महान्ति विज्ञानानि प्राप्नोति, कश्चाप्तानां कर्म्माणि, को वीराणां बलानि चेत्यतेषामुत्तरं ये पवित्रान्तःकरणाः शुश्रूषवो धर्मिष्ठाः पुरुषार्थिनो ब्रह्मचारिणश्चेति॥४॥

**पदार्थः**-हे **(मरुतः)** विचार करने वाले जनो! **(महताम्)** बड़े **(वः)** आप लोगों के वा आप लोगों को **(महान्ति)** बड़े विज्ञान आदिकों को **(कः)** कौन **(उत्, अश्नवत्)** उत्तमता से प्राप्त होता है **(कः)** कौन **(काव्या)** बुद्धिमानों के कामों को उत्तमता से प्राप्त होता है **(कः)** कौन **(ह)** निश्चय से **(पौंस्या)** पुरुषों के इन बलों को प्राप्त होता है जिससे **(यूयम्)** आप लोग **(भूमिम्)** पृथिवी को **(किरणम्)** दीप्ति के **(न)** समान **(रेजथ)** कंपावें और **(यत्)** जिसको **(ह)** निश्चय **(सुविताय)** ऐश्वर्य और **(दावने)** देने वाले के लिये **(प्र, भरध्वे)** धारण कीजिये, उसी को सब लोग प्राप्त होवें॥४॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में प्रश्न और उत्तर हैं-कौन यथार्थवक्ता जनों के समीप से बड़े विज्ञानों को प्राप्त होता है और कौन आप्तजनों के कर्म्मों को और कौन वीरों के बलों को प्राप्त होता है, इन प्रश्नों का उत्तर यह है कि पवित्र अन्तःकरण युक्त और धर्म्म के सुनने की इच्छा करने वाले धर्मिष्ठ पुरुषार्थी और ब्रह्मचारी हैं॥४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**अश्वाऽइवेदरुषासः सबन्धवः शूराइव प्रयुधः प्रोत युयुधुः।**
**मर्याइव सुवृधो वावृधुर्नरः सूर्यस्य चक्षुः प्र मिनन्ति वृष्टिभिः॥५॥**

**अश्वाःऽइव। इत्। अरुषासः। सऽबन्धवः। शूराऽइव। प्रऽयुधः। प्र। उत। युयुधुः। मर्याःऽइव। सुऽवृधः। ववृधुः। नरः। सूर्यस्य। चक्षुः। प्र। मिनन्ति। वृष्टिऽभिः॥५॥**

**पदार्थः**-**(अश्वाइव)** तुरङ्गा इव **(इत्)** **(अरुषासः)** रक्तादिगुणविशिष्टाः **(सबन्धवः)** समाना बन्धवो येषान्ते **(शूराइव)** शूरवत् **(प्रयुधः)** ये प्रकर्षेण युध्यन्ते **(प्र)** **(उत)** **(युयुधुः)** सङ्ग्रामं कुर्युः **(मर्याइव)** मनुष्यवत् **(सुवृधः)** ये सुष्ठु वर्धन्ते ते **(वावृधुः)** वर्धन्ताम् **(नरः)** नायकाः **(सूर्यस्य)** सवितृदेवस्य **(चक्षुः)** चष्टे येन तत् **(प्र)** **(मिनन्ति)** हिंसन्ति **(वृष्टिभिः)** वर्षाभिः॥५॥

**अन्वयः**-हे विद्वांसो! सबन्धवो नरो भवन्तोऽरुषासोऽश्वाइवेत् सद्यो गच्छन्तूत प्रयुधः शूराइव प्र युयुधुः सुवृधो मर्याइव वावृधुर्वायवः सूर्य्यस्य चक्षुर्वृष्टिभिरिव शत्रुसेनाः प्र मिनन्ति ते सत्कर्त्तव्याः सन्ति॥५॥



www.9009.co.in

**भावार्थ:**-अत्रोपमालङ्कारः। येऽश्ववद्बलिष्ठाः शूरवन्निर्भया मनुष्यवद्विचारशीलाः सूर्यवदविद्याऽन्धकारनिवारकाः सन्ति ते सर्वस्य कल्याणाय भवन्ति॥५॥

**पदार्थ:**-हे विद्वान् जनो! **(सबन्धवः)** तुल्य बन्धु जिनके ऐसे **(नरः)** नायक आप लोग **(अरुषासः)** रक्त आदि गुणों से विशिष्ट **(अश्वाइव, इत्)** घोड़ों के सदृश ही शीघ्र चलिये **(उत)** और **(प्रयुधः)** अत्यन्त युद्ध करने वाले **(शूराइव)** शूरवीरों के सदृश **(प्र, युयुधुः)** अत्यन्त युद्ध करिये तथा **(सुवृधः)** उत्तम प्रकार बढ़ने वाले **(मर्याइव)** मनुष्यों के सदृश **(वावृधुः)** बढ़िये और पवन **(सूर्यस्य)** सूर्य्य देव के **(चक्षुः)** देखता जिससे उसको **(वृष्टिभिः)** वर्षाओं से जैसे वैसे शत्रुओं की सेनाओं को **(प्र, मिनन्ति)** अत्यन्त नाश करते हैं, वे सत्कार करने योग्य हैं॥५॥

**भावार्थ:**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जो घोड़ों के सदृश बलिष्ठ, शूरवीरों के सदृश भयरहित, मनुष्यों के सदृश विचारशील और सूर्य के सदृश अविद्यारूपी अन्धकार के निवारक हैं, वे सब के कल्याण के लिये होते हैं॥५॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**ते अ॒ज्ये॒ष्ठा अक॑निष्ठास उ॒द्भिदो॑ऽम॑ध्यमासो॒ मह॑सा॒ वि वा॑वृधुः।**

**सु॒जा॒तासो॑ ज॒नुषा॒ पृश्नि॑मातरो दि॒वो मर्या॒ आ नो॒ अच्छा॑ जिगातन॥६॥**

**ते। अ॒ज्ये॒ष्ठाः। अक॑निष्ठासः। उ॒त्ऽभिदः॑। अम॑ध्यमासः। मह॑सा। वि। व॒वृ॒धुः॒। सु॒ऽजा॒तासः॑। ज॒नुषा॑। पृश्नि॑ऽमातरः। दि॒वः। मर्याः॑। आ। नः॒। अच्छ॑। जि॒गा॒त॒न॥६॥**

**पदार्थ:**-**(ते)** **(अज्येष्ठाः)** अविद्यमानो ज्येष्ठो येषान्ते **(अकनिष्ठासः)** अविद्यमानाः कनिष्ठा येषान्ते **(उद्भिदः)** ये पृथिवीं भित्त्वा प्ररोहन्ति **(अमध्यमासः)** अविद्यमानो मध्यमो येषां ते **(महसा)** महता बलादिना **(वि)** **(वावृधुः)** वर्धन्ते **(सुजातासः)** शोभनेषु व्यवहारेषु प्रसिद्धाः **(जनुषा)** जन्मना **(पृश्निमातरः)** पृश्निरन्तरिक्षं माता येषान्ते **(दिवः)** कामयमानाः **(मर्याः)** मनुष्याः **(आ)** समन्तात् **(नः)** अस्मान् **(अच्छा)** अत्र **संहितायामि**ति दीर्घः। **(जिगातन)** प्रशंसन्ति॥६॥

**अन्वयः**-हे विद्वांसो! येऽज्येष्ठा अकनिष्ठास उद्भिदोऽमध्यमासो जनुषा सुजातासः पृश्निमातरो दिवो मर्या महसा वि वावृधुस्ते नोऽच्छाऽऽजिगातन॥६॥

**भावार्थ:**-यदि मनुष्येषु यथावत्सुशिक्षा भवेत्तर्हि कनिष्ठा मध्यमोत्तमा जना विवेकिनो भूत्वा यथावज्जगदुन्नतिं कर्त्तुं शक्नुयुः॥६॥

**पदार्थ:**-हे विद्वानो! जो **(अज्येष्ठाः)** नहीं विद्यमान ज्येष्ठ जिनके वा **(अकनिष्ठासः)** नहीं विद्यमान छोटा जिनके वा **(उद्भिदः)** पृथिवी को फोड़कर उगने वाले तथा **(अमध्यमासः)** नहीं विद्यमान मध्यम जिनके वे **(जनुषा)** जन्म से **(सुजातासः)** उत्तम व्यवहारों में प्रसिद्ध वा **(पृश्निमातरः)** अन्तरिक्ष माता



www.9009.co.in

जिनका वे और **(दिवः)** कामना करते हुए **(मर्याः)** मनुष्य **(महसा)** बड़े बल आदि से **(वि, वावृधुः)** विशेष बढ़ते हैं **(ते)** वे **(नः)** हम लोगों की **(अच्छा)** उत्तम प्रकार **(आ, जिगातन)** सब ओर से प्रशंसा करते हैं॥६॥

**भावार्थः**-जो मनुष्यों में यथायोग्य उत्तम शिक्षा हो तो कनिष्ठ, मध्यम और उत्तम जन विचारशील होकर यथायोग्य जगत् की उन्नति कर सकें॥६॥

**पुनः शिक्षा विषयमाह॥**

फिर शिक्षविषय को कहते हैं॥

**वयो न ये श्रेणीः पप्तुरोजसान्तान् दिवो बृहतः सानुनस्परि।**

**अश्वास एषामुभये यथा विदुः प्र पर्वतस्य नभनूँरचुच्यवुः॥७॥**

**वयः। न। ये। श्रेणीः। पप्तुः। ओजसा। अन्तान्। दिवः। बृहतः। सानुनः। परि। अश्वासः। एषाम्। उभये। यथा। विदुः। प्र। पर्वतस्य। नभनून्। अचुच्यवुः॥७॥**

**पदार्थः**-**(वयः)** पक्षिणः **(न)** इव **(ये)** **(श्रेणीः)** पङ्क्तीः **(पप्तुः)** प्राप्नुवन्ति **(ओजसा)** पराक्रमेण **(अन्तान्)** समीपस्थान् **(दिवः)** व्यवहर्तॄन् **(बृहतः)** **(सानुनः)** शिखरस्येव **(परि)** **(अश्वासः)** सद्योगामिनः **(एषाम्)** **(उभये)** **(यथा)** **(विदुः)** जानन्ति **(प्र)** **(पर्वतस्य)** मेघस्य **(नभनून्)** धनान् **(अचुच्यवुः)** च्यावयेयुः॥७॥

**अन्वयः**-य ओजसा वयो न श्रेणीः पप्तुर्बृहतः सानुनोऽन्तान् दिवः परि पप्तुरेषां य उभयेऽश्वासः सन्ति तान् यथा विदुः पर्वतस्य नभनून् प्राचुच्यवुस्ते जगदाधाराः सन्ति॥७॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। यथा पक्षिणः श्रेणीभूताः सद्यो गच्छन्ति तथैव सुशिक्षिता भृत्या अश्वादयो यानानि त्रिषु मार्गेषु सद्यो गच्छन्ति॥७॥

**पदार्थः**-**(ये)** जो **(ओजसा)** पराक्रम से **(वयः)** पक्षियों के **(न)** सदृश **(श्रेणीः)** पङ्क्तियों को **(पप्तुः)** प्राप्त होते और **(बृहतः)** बड़े **(सानुनः)** शिखर के समान **(अन्तान्)** समीप में वर्त्तमान **(दिवः)** व्यवहार करने वालों को **(परि)** सब ओर से प्राप्त होते हैं **(एषाम्)** इनके जो **(उभये)** दो प्रकार के **(अश्वासः)** शीघ्र चलने वाले पदार्थ हैं उनको **(यथा)** जिस प्रकार से **(विदुः)** जानते हैं और **(पर्वतस्य)** मेघ के **(नभनून्)** समूहों को **(प्र, अचुच्यवुः)** अत्यन्त वर्षावें, वे संसार के आधार होते हैं॥७॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जैसे पक्षी पंक्तिबद्ध हुए शीघ्र जाते हैं, वैसे ही उत्तम प्रकार शिक्षा युक्त नौकर और घोड़े आदि वाहन तीनों मार्गों में शीघ्र जाते हैं॥७॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**मिमातु द्यौरदितिर्वीतये नः सं दानुचित्रा उषसो यतन्ताम्।**



www.9009.co.in

**आचुच्यवुर्दिव्यं कोशमेत ऋषे रुद्रस्य मरुतो गृणानाः॥८॥२४॥**

**मिमातु। द्यौः। अदितिः। वीतये। नः। सम्। दानुऽचित्राः। उषसः। यतन्ताम्। आ। अचुच्यवुः। दिव्यम्। कोशम्। एते। ऋषे। रुद्रस्य। मरुतः। गृणानाः॥८॥**

**पदार्थः**-**(मिमातु)** **(द्यौः)** प्रकाश इव **(अदितिः)** मातेव **(वीतये)** विज्ञानादिप्राप्तये **(नः)** अस्मान् **(सम्)** सम्यक् **(दानुचित्राः)** चित्रा अद्भुता दानवो दानानि यासु ताः **(उषसः)** प्रभातवेलाः **(यतन्ताम्)** **(आ, अचुच्यवुः)** आगच्छन्तु **(दिव्यम्)** दिवि कामनायां साधुम् **(कोशम्)** धनालयम् **(एते)** **(ऋषे)** विद्याप्रद **(रुद्रस्य)** अन्यायकारिणो रोदयितुः **(मरुतः)** मनुष्याः **(गृणानाः)** स्तुवन्तः॥८॥

**अन्वयः**-हे ऋषे! यथाऽदितिर्द्यौर्वीतये नो मिमातु तथा त्वमस्मान् मिमीहि। यथा दानुचित्रा उषसो व्यवहारान् निर्म्मापयन्ति यथैत रुद्रस्य दिव्यं कोशमाचुच्यवुस्तथा गृणाना मरुतः सं यतन्ताम्॥८॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। वे विद्युद्वदुषर्वदृषिवद्धनकोशं सञ्चिन्वन्ति ते प्रतिष्ठिता भवन्ति॥८॥

अत्र वायुविद्युद्गुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्याः॥

**इत्येकोनषष्टितमं सूक्तं चतुर्विंशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे **(ऋषे)** विद्या के देने वाले! जैसे **(अदितिः)** माता वा **(द्यौः)** प्रकाश के सदृश **(वीतये)** विज्ञान आदि की प्राप्ति के लिये **(नः)** हम लोगों का **(मिमातु)** आदर करे, वैसे आप आदर करिये जैसे **(दानुचित्राः)** अद्भुत दान जिनमें ऐसी **(उषसः)** प्रातर्वेलायें व्यवहारों को सिद्ध कराती हैं वा जैसे **(एते)** ये **(रुद्रस्य)** अन्यायकारियों को रुलाने वाले **(दिव्यम्)** कामना में श्रेष्ठ **(कोशम्)** धन के स्थान को **(आ, अचुच्यवुः)** प्राप्त होवें वैसे **(गृणानाः)** स्तुति करते हुए **(मरुतः)** मनुष्य **(सम्)** उत्तम प्रकार **(यतन्ताम्)** प्रयत्न करें॥८॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो जन बिजुली, प्रातःकाल और ऋषि के सदृश धन के कोश को इकट्ठा करते हैं, वे प्रतिष्ठित होते हैं॥८॥

इस सूक्त में पवन और बिजुली के गुण-वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्तार्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह उनसठवां सूक्त और चौबीसवां वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

**अथाष्टर्चस्य षष्टितमस्य सूक्तस्य श्यावाश्व आत्रेय ऋषिः। मरुतो वाग्निश्च देवता। ३, ४, ५ निचृत्त्रिष्टुप्। २ भुरिक् त्रिष्टुप्। ६ विराट् त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः। ७, ८ जगती छन्दः। निषादः स्वरः॥**

***अथ मनुष्यैः किं साध्नीयमित्याह॥***

अब मनुष्यों को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**ईळे॑ अ॒ग्निं स्वव॑सं॒ नमो॑भिरि॒ह प्र॑स॒त्तो वि च॑यत्कृ॒तं न॑:।**

**रथै॑रिव॒ प्र भ॑रे वा॒ज॒यद्भि॑: प्रदक्षि॒णिन्म॒रुतां॒ स्तोम॑मृध्याम्॥ १॥**

**ईळे॑। अ॒ग्निम्। सु॒ऽअव॑सम्। नम॑:ऽभिः। इ॒ह। प्र॒ऽस॒त्तः। वि। च॒य॒त्। कृ॒तम्। न॒:। रथै॑:ऽइव। प्र। भ॒रे। वा॒ज॒यत्ऽभि॑:। प्र॒ऽद॒क्षि॒णित्। म॒रुता॑म्। स्तोम॑म्। ऋ॒ध्या॒म्॥ १॥**

**पदार्थः**-(**ईळे**) अधीच्छामि (**अग्निम्**) विद्युतम् (**स्ववसम्**) सुष्ठ्ववो रक्षणं यस्मात्तम् (**नमोभिः**) सत्कारैः (**इह**) अस्मिन् संसारे (**प्रसत्तः**) प्रसन्नः (**वि**) (**चयत्**) विचिनोमि (**कृतम्**) (**नः**) अस्मान् (**रथैरिव**) (**प्र**) (**भरे**) (**वाजयद्भिः**) वेगवद्भिः (**प्रदक्षिणित्**) यः प्रदक्षिणां नयति (**मरुताम्**) मनुष्याणाम् (**स्तोमम्**) श्लाघाम् (**ऋध्याम्**) वर्धयेयम्॥ १॥

**अन्वयः**-यथा प्रसत्त इहाहं नमोभिरस्मि तथा नमोभिः स्ववसमग्निमीळे कृतं वि चयत्। ये मरुतां गणा वाजयद्भी रथैरिव नोऽस्मान् वहन्ति तानहं प्र भरे प्रदक्षिणिदहं मरुतां स्तोममृध्याम्॥ १॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। विदुषा विदुषां सङ्गेनाग्न्यादिविद्यामाविर्भाव्य प्रसन्नता सम्पादनीया॥ १॥

**पदार्थः**-जैसे (**प्रसत्तः**) प्रसन्न (**इह**) इस संसार में मैं (**नमोभिः**) सत्कारों से हूँ वैसे सत्कारों से (**स्ववसम्**) उत्तम रक्षण जिससे उस (**अग्निम्**) बिजुली की (**ईळे**) अधिक इच्छा करता और (**कृतम्**) किये काम को (**वि, चयत्**) विवेक करता हूँ और जो (**मरुताम्**) मनुष्यों के समूह (**वाजयद्भिः**) वेग वाले (**रथैरिव**) वाहनों के सदृश पदार्थों से (**नः**) हम लोगों को पहुँचाते हैं उनको मैं (**प्र, भरे**) धारण करता हूँ और (**प्रदक्षिणित्**) प्रदक्षिणा को प्राप्त कराने वाला मैं मनुष्यों की (**स्तोमम्**) प्रशंसा को (**ऋध्याम्**) बढाऊं॥ १॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। विद्वान् जन को चाहिये कि विद्वानों के सङ्ग से अग्नि आदि विद्या को प्रकट करा के प्रसन्नता सम्पादित करे॥ १॥

**पुनर्मनुष्यैः किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥



www.9009.co.in

**आ ये त॒स्थुः पृष॑तीषु श्रु॒तासु॑ सु॒खेषु॑ रु॒द्रा म॒रुतो॒ रथे॑षु।**

**वना॑ चिदुग्रा जिहते॒ नि वो॑ भि॒या पृ॑थि॒वी चि॑द्रेजते॒ पर्व॑तश्चित्॥ २॥**

**आ। ये। त॒स्थुः। पृष॑तीषु। श्रु॒तासु॑। सु॒ऽखेषु॑। रु॒द्राः। म॒रुतः॑। रथे॑षु। वना॑। चि॒त्। उ॒ग्राः। जि॒ह॒ते॒। नि। व॒ः। भि॒या। पृ॒थि॒वी। चि॒त्। रे॒ज॒ते॒। पर्व॑तः। चि॒त्॥ २॥**

**पदार्थः**-(**आ**) (**ये**) (**तस्थुः**) (**पृषतीषु**) सेचनकर्त्रीषु (**श्रुतासु**) विद्यासु (**सुखेषु**) (**रुद्राः**) प्राणादयः (**मरुतः**) मनुष्याः (**रथेषु**) विमानादिषु यानेषु (**वना**) किरणाः (**चित्**) अपि (**उग्राः**) तीव्रस्वभावाः (**जिहते**) गच्छन्ति (**नि**) नितराम् (**वः**) युष्माकम् (**भिया**) भयेन (**पृथिवी**) भूमिः (**चित्**) (**रेजते**) कम्पते (**पर्वतः**) मेघः (**चित्**) इव॥ २॥

**अन्वयः**-ये रुद्रा मरुतः श्रुतासु पृषतीषु सुखेषु रथेष्वा तस्थुश्चिदपि वनोग्रा इव नि जिहते। वो भिया पृथिवी चिद्रेजते पर्वतश्चिदिव रेजते तान् वयं सततं सत्कुर्याम॥ २॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! उत्तमासु विद्यासूत्तमेषु यानेषु च स्थित्वा शीघ्रगमनाय समर्था भवत॥ २॥

**पदार्थः**-(**ये**) जो (**रुद्राः**) प्राण आदि और (**मरुतः**) मनुष्य (**श्रुतासु**) विद्याओं में (**पृषतीषु**) सेचन करने वालियों में (**सुखेषु**) सुखों में और (**रथेषु**) विमानादि वाहनों में (**आ, तस्थुः**) स्थित होवें (**चित्**) और (**वना**) किरण (**उग्राः**) तीव्र स्वभाव वालों के सदृश (**नि, जिहते**) निरन्तर जाते हैं और (**वः**) आप लोगों के (**भिया**) भय से (**पृथिवी**) भूमि (**चित्**) भी (**रेजते**) कम्पित होती है (**पर्वतः**) मेघ के (**चित्**) समान पदार्थ कम्पित होता है, उनका हम लोग निरन्तर सत्कार करें॥ २॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! उत्तम विद्याओं और उत्तम वाहनों पर स्थित होकर शीघ्र जाने के लिये समर्थ हूजिये॥ २॥

**पुनर्मनुष्यैः किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**पर्व॑तश्चि॒न्महि॑ वृ॒द्धो बि॑भाय दि॒वश्चि॒त्सानु॑ रेजत स्व॒ने व॑ः।**

**यत्क्रीळ॑थ मरुत ऋष्टि॒मन्त॒ आप॑इव स॒ध्र्य॑ञ्चो धवध्वे॥ ३॥**

**पर्व॑तः। चि॒त्। महि॑। वृ॒द्धः। बि॒भा॒य॒। दि॒वः। चि॒त्। सानु॑। रे॒ज॒त॒। स्व॒ने। व॒ः। यत्। क्रीळ॑थ। म॒रु॒तः॒। ऋ॒ष्टि॒ऽमन्तः॑। आपः॑ऽइव। स॒ध्र्य॑ञ्चः। ध॒व॒ध्वे॒॥ ३॥**

**पदार्थः**-(**पर्वतः**) मेघः (**चित्**) इव (**महि**) महान् (**वृद्धः**) (**बिभाय**) बिभेति (**दिवः**) प्रकाशात् (**चित्**) (**सानु**) शिखरमिव (**रेजत**) कम्पते (**स्वने**) शब्दे (**वः**) युष्माकम् (**यत्**) यत्र (**क्रीळथ**) (**मरुतः**) मनुष्याः (**ऋष्टिमन्तः**) प्रशस्तविज्ञानवन्तः (**आपइव**) (**सध्र्यञ्चः**) सहाञ्चन्तः (**धवध्वे**) कम्पयध्वे॥ ३॥



www.9009.co.in

**अन्वय:**-हे ऋष्टिमन्तो मरुतो! यद्यूयं क्रीळथाऽऽपइव सध्र्यञ्चो धवध्वे व: स्वने पर्वतश्चिन्महि वृद्धो बिभाय दिवश्चित्सानु रेजत तत्रान्वेषणं कुरुत॥३॥

**भावार्थ:**-अत्रोपमालङ्कार:। ये मनुष्या विद्याव्यवहारसिद्धये क्रीडन्ते तथा सखायो भूत्वा कार्य्यसिद्धिं कुर्वन्ति ते सर्वथाऽऽनन्दिता जायन्ते॥३॥

**पदार्थ:**-हे **(ऋष्टिमन्त:)** अच्छे विज्ञान वाले **(मरुत:)** मनुष्यो! **(यत्)** जहाँ तुम **(क्रीळथ)** क्रीड़ा करते हो **(आपइव)** जलों के सदृश **(सध्र्यञ्च:)** एक साथ गमन करते हुए **(धवध्वे)** कंपाओ और **(व:)** आप लोगों के **(स्वने)** शब्द में **(पर्वत:)** मेघ के **(चित्)** सदृश **(महि)** बड़ा **(वृद्ध:)** वृद्ध **(बिभाय)** डरता है **(दिव:)** प्रकाश से **(चित्)** भी जैसे वैसे **(सानु)** शिखर के तुल्य **(रेजत)** कम्पित होता है, वहाँ अन्वेषण करो॥३॥

**भावार्थ:**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जो मनुष्य विद्या के व्यवहार की सिद्धि के लिये क्रीड़ा करते हैं तथा मित्र होकर कार्य की सिद्धि करते हैं, वे सब प्रकार आनन्दित होते हैं॥३॥

**पुनर्मनुष्या: किं कुर्युरित्याह॥**

फिर मनुष्य क्या करें, इस विषय को कहते हैं॥

**व॒राइ॒वेद् रै॑व॒तासो॒ हिर॑ण्यैर॒भि स्व॒धाभि॑स्त॒न्व॑: पिपिश्रे।**

**श्रि॒ये श्रेयां॑सस्त॒वसो॒ रथे॑षु स॒त्रा महां॑सि चक्रिरे त॒नूषु॑॥४॥**

**व॒रा:ऽइ॑व। इत्। रै॒व॒तास:। हिर॑ण्यै:। अ॒भि। स्व॒धाभि॑:। त॒न्व॑:। पि॒पि॒श्रे॒। श्रि॒ये। श्रेयां॑स:। त॒वस॑:। रथे॑षु। स॒त्रा। महां॑सि। च॒क्रि॒रे॒। त॒नूषु॑॥४॥**

**पदार्थ:**-**(वराइव)** वरैस्तुल्या: **(इत्)** एव **(रैवतास:)** रेवतीषु पशुषु भवा: **(हिरण्यै:)** सुवर्णैस्तेज आदिभि: **(अभि)** **(स्वधाभि:)** अन्नादिभि: **(तन्व:)** शरीराणि **(पिपिश्रे)** स्थूलावयवानि कुर्वन्ति **(श्रिये)** लक्ष्म्यै **(श्रेयांस:)** अतिशयेन श्रेय इच्छन्त: **(तवस:)** बलिष्ठा गतिमन्त: **(रथेषु)** यानेषु **(सत्रा)** सत्यानि **(महांसि)** **(चक्रिरे)** कुवन्ति **(तनूषु)** शरीरेषु॥४॥

**अन्वय:**-ये श्रेयांसस्तवसो रैवतासो मनुष्या वराइवेद्धिरण्यै: स्वधाभिस्तन्व: पिपिश्रे। श्रिये रथेषु तनूषु सत्रा महांस्यभि चक्रिरे ते भाग्यशालिनो भवन्ति॥४॥

**भावार्थ:**-ये मनुष्यशरीरमाश्रित्य श्रियमन्विच्छन्ति ते दारिद्र्यं घ्नन्ति॥४॥

**पदार्थ:**-जो **(श्रेयांस:)** अत्यन्त कल्याण की इच्छा करते हुए **(तवस:)** बलवान् गति वाले **(रैवतास:)** पशुओं में हुए मनुष्य **(वराइव)** श्रेष्ठों के तुल्य **(इत्)** ही **(हिरण्यै:)** सुवर्ण तेज आदिकों से और **(स्वधाभि:)** अन्न आदिकों से **(तन्व:)** शरीरों को **(पिपिश्रे)** स्थूल अवयव वाले करते हैं, और **(श्रिये)** लक्ष्मी के लिये **(रथेषु)** वाहनों और **(तनूषु)** शरीरों में **(सत्रा)** सत्य **(महांसि)** बड़े काम **(अभि, चक्रिरे)** करते हैं, वे भाग्यशाली होते हैं॥४॥



www.9009.co.in

**भावार्थ:**-जो मनुष्य के शरीर का आश्रय करके लक्ष्मी की इच्छा करते हैं, वे दारिद्र्य का नाश करते हैं॥४॥

**पुनर्मनुष्यैः कथं भवितव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को कैसे होना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**अज्येष्ठासो अकनिष्ठास एते सं भ्रातरो वावृधुः सौभगाय।**

**युवा पिता स्वपा रुद्र एषां सुदुघा पृश्निः सुदिना मरुद्भ्यः॥५॥**

**अज्येष्ठासः। अकनिष्ठासः। एते। सम्। भ्रातरः। ववृधुः। सौभगाय। युवा। पिता। सुऽअपाः। रुद्रः। एषाम्। सुऽदुघा। पृश्निः। सुऽदिना। मरुत्ऽभ्यः॥५॥**

**पदार्थ:**-**(अज्येष्ठासः)** ज्येष्ठभावरहिताः **(अकनिष्ठासः)** कनिष्ठभावमप्राप्ताः **(एते)** **(सम्)** **(भ्रातरः)** बन्धवः **(वावृधुः)** वर्धन्ते **(सौभगाय)** श्रेष्ठैश्वर्य्यस्य भावाय **(युवा)** **(पिता)** पालकः **(स्वपाः)** श्रेष्ठकर्मानुष्ठानः **(रुद्रः)** अन्येषां रोदयिता **(एषाम्)** **(सुदुघा)** सुष्ठु कामस्य प्रपूरिका **(पृश्निः)** अन्तरिक्षमिव बुद्धिः **(सुदिना)** उत्तमदिना **(मरुद्भ्यः)** वायुभ्यः॥५॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथा स्वपा युवा रुद्रः पितैषां सुदुघा सुदिना पृश्निर्मरुद्भ्यो मनुष्येभ्यो विद्यादिदानं ददाति तथाऽज्येष्ठासोऽकनिष्ठास एते भ्रातरः सौभगाय सं वावृधुः॥५॥

**भावार्थ:**-ये मनुष्याः पूर्णयुवावस्थायां विद्याः समाप्य सुशीलतां स्वीकृत्यातीवोत्तमाः सन्तः सुशीलाः स्त्रियः स्वीकृत्य च प्रयतन्ते त ऐश्वर्य्यं प्राप्यानन्दिता भवन्ति॥५॥

**पदार्थ:**-हे मनुष्यो! जैसे **(स्वपाः)** श्रेष्ठ कर्म का अनुष्ठान करने वाला **(युवा)** युवावस्थायुक्त और **(रुद्रः)** अन्यों को रुलाने वाला **(पिता)** पालक जन और **(एषाम्)** इन की **(सुदुघा)** उत्तम प्रकार मनोरथ को पूर्ण करने वाली **(सुदिना)** सुन्दर दिन जिससे वह **(पृश्निः)** अन्तरिक्ष के सदृश बुद्धि **(मरुद्भ्यः)** मनुष्यों के लिये विद्यादि दान देती है, वैसे **(अज्येष्ठासः)** जेठेपन से रहित **(अकनिष्ठासः)** कनिष्ठपन से रहित **(एते)** ये **(भ्रातरः)** बन्धु जन **(सौभगाय)** श्रेष्ठ ऐश्वर्य्य होने के लिये **(सम्, वावृधुः)** बढ़ते हैं॥५॥

**भावार्थ:**-जो मनुष्य पूर्ण युवावस्था में विद्याओं को समाप्त कर और सुशीलता को स्वीकार कर बहुत ही उत्तम हुए उत्तम स्वभावयुक्त स्त्रियों को विवाह द्वारा स्वीकार करके प्रयत्न करते हैं, वे ऐश्वर्य्य को प्राप्त होकर आनन्दित होते हैं॥५॥

**पुनर्मनुष्यैः परस्परं कथं वर्त्तितव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को परस्पर कैसे वर्त्तना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**यदुत्तमे मरुतो मध्यमे वा यद्वावमे सुभगासो दिवि ष्ठ।**



www.9009.co.in

**अतो॑ नो रुद्रा उ॒त वा॒ न्व१॒॑स्याग्ने॑ वि॒त्ताद्ध॒विषो॒ यद्यजा॑म॥६॥**

**यत्। उ॒त्ऽत॒मे। म॒रु॒तः॒। म॒ध्य॒मे। वा॒। यत्। वा॒। अ॒व॒मे। सु॒ऽभ॒गा॒सः॒। दि॒वि। स्थ। अत॑ः। न॒ः। रु॒द्राः॒। उ॒त। वा॒। नु। अ॒स्य॒। अग्ने॑। वि॒त्तात्। ह॒विषः॑। यत्। यजा॑म॥६॥**

**पदार्थः**-(**यत्**) यत्र (**उत्तमे**) [उत्तमे] व्यवहारे (**मरुतः**) मनुष्याः (**मध्यमे**) मध्यस्थे (**वा**) (**यत्**) यत्र (**वा**) (**अवमे**) निकृष्टे (**सुभगासः**) उत्तमैश्वर्याः (**दिवि**) शुद्धे व्यवहारे (**स्थ**) भवत (**अतः**) अस्मात् कारणात् (**नः**) अस्मान् (**रुद्राः**) मध्यस्था विद्वांसः (**उत**) (**वा**) (**नु**) (**अस्य**) (**अग्ने**) पावकवत् प्रकाशितात्मन् (**वित्तात्**) (**हविषः**) भोक्तुमर्हात् (**यत्**) यम् (**यजाम**) प्रेरयेम॥६॥

**अन्वयः**-हे सुभगासो रुद्रा मरुतो! यूयं यदुत्तमे मध्यमे वावमे यद्वान्यत्रावमे दिवि वा स्थ तत्रातो नोऽस्मानुत्तमे व्यवहारे स्थापयत। उत वा हे अग्नेऽस्य वित्ताद्धविषो यन्नु वयं यजाम तत्र त्वमपि यजस्व॥६॥

**भावार्थः**-ये मनुष्या उत्तममध्यमकनिष्ठेषु व्यवहारेषु यथावद्वर्त्तित्वोत्तमैश्वर्या जायन्ते तान् सर्वे सत्कुर्य्युः॥६॥

**पदार्थः**-हे (**सुभगासः**) उत्तम ऐश्वर्य्य वाले और (**रुद्राः**) मध्यस्थ विद्वान् (**मरुतः**) मनुष्यो! आप लोग (**यत्**) जिस (**उत्तमे**) उत्तम व्यवहार में (**मध्यमे**) मध्यस्थ व्यवहार में (**वा**) वा (**अवमे**) निकृष्ट व्यवहार में (**यत्**) जहाँ (**वा**) अथवा अन्यत्र निकृष्ट व्यवहार में (**दिवि**) शुद्ध व्यवहार में (**स्थ**) हूजिये वहाँ (**अतः**) इस कारण से (**नः**) हम लोगों को उत्तम व्यवहार में स्थापित कीजिये (**उत, वा**) और अथवा हे (**अग्ने**) अग्नि के सदृश प्रकाशित आत्मा वाले! (**अस्य**) इसके (**वित्तात्**) धन से और (**हविषः**) भोग करने योग्य से (**यत्**) जिसको (**नु**) निश्चय हम लोग (**यजाम**) प्रेरणा करें, वहाँ आप भी प्रेरणा करिये॥६॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य उत्तम, मध्यम और कनिष्ठ व्यवहारों में यथायोग्य वर्त्ताव करके उत्तम ऐश्वर्य्य वाले होते हैं, उनका सब लोग सत्कार करें॥६॥

**पुनर्मनुष्याः किं कुर्य्युरित्याह॥**

फिर मनुष्य क्या करें, इस विषय को कहते हैं॥

**अ॒ग्निश्च॒ यन्म॑रुतो विश्ववेदसो दि॒वो वह॑ध्व॒ उत्त॑रा॒दधि॒ ष्णुभि॑ः।**

**ते म॑न्दसा॒ना धुन॑यो रिशादसो वा॒मं ध॑त्त यज॑मानाय सुन्व॒ते॥७॥**

**अ॒ग्निः। च॒। यत्। म॒रु॒तः॒। वि॒श्व॒ऽवे॒द॒सः॒। दि॒वः। वह॑ध्वे। उत्ऽत॑रात्। अधि॑। स्नुऽभि॑ः। ते। म॒न्द॒सा॒नाः। धुन॑यः। रि॒शा॒द॒सः॒। वा॒मम्। ध॒त्त। यज॑मानाय। सु॒न्व॒ते॥७॥**

**पदार्थः**-(**अग्निः**) पावक इव (**च**) (**यत्**) ये (**मरुतः**) मननशीला मानवाः (**विश्ववेदसः**) समग्रैश्वर्य्याः (**दिवः**) कामयमानाः (**वहध्वे**) प्राप्नुत (**उत्तरात्**) पश्चात् (**अधि**) उपरिभावे (**स्नुभिः**)



www.9009.co.in

इच्छावद्भिः **(ते)** **(मन्दसानाः)** आनन्दन्तः **(धुनयः)** दुष्टानां कम्पकाः **(रिशादसः)** हिंसकानां नाशकाः **(वामम्)** प्रशस्यम् **(धत्त)** **(यजमानाय)** सङ्गन्त्रे **(सुन्वते)** यज्ञकर्त्रे॥७॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यद्येऽग्निरिव विश्ववेदसो दिवो रिशादसो मन्दसानो धुनयो मरुतो यूयं सुन्वते यजमानाय वामं धत्त। उत्तरादधि ष्णुभिर्वामं वहध्वे ते च यूयं सदा सर्वानुपकुरुत॥७॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। त एव महात्मानः सन्ति ये सर्वार्थं सत्यं दधति॥७॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(यत्)** जो **(अग्निः)** अग्नि के सदृश **(विश्ववेदसः)** सम्पूर्ण ऐश्वर्य्य से युक्त **(दिवः)** कामना करते हुए **(रिशादसः)** हिंसकों के नाश करने वाले **(मन्दसानाः)** आनन्द करते हुए **(धुनयः)** दुष्टों के कम्पाने वाले **(मरुतः)** विचारशील मनुष्य आप लोग **(सुन्वते)** यज्ञ करने और **(यजमानाय)** पदार्थों के मेल करने वाले जन के लिये **(वामम्)** प्रशंसा करने योग्य व्यवहार को **(धत्त)** धारण करो और **(उत्तरात्)** पीछे से **(अधि)** ऊपर के होने में **(स्नुभिः)** इच्छा वालों से प्रशंसा करने योग्य को **(वहध्वे)** प्राप्त हूजिये **(ते, च)** वे भी आप लोग सदा सब का उपकार करिये॥७॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। वे ही महात्मा हैं जो सब के लिये सत्य को धारण करते हैं॥७॥

**अथ विद्वत्सेवनमाह॥**

अब विद्वानों की सेवा करना अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अग्ने॑ म॒रुद्भिः॑ शु॒भय॑द्भि॒र्ऋक्व॑भि॒: सोमं॑ पिब मन्दसा॒नो ग॑ण॒श्रिभिः॑।**
**पा॒व॒केभि॑र्विश्वमि॒न्वेभि॑रा॒युभि॒र्वैश्वा॑नर प्र॒दिवा॑ के॒तुना॑ स॒जूः॥८॥२५॥**

**अग्ने॑। म॒रुत्ऽभिः॑। शु॒भय॑त्ऽभिः। ऋक्व॑ऽभिः। सोम॑म्। पि॒ब। म॒न्द॒सा॒नः। ग॒ण॒श्रि॒ऽभिः॑। पा॒व॒केभिः॑। वि॒श्व॒म्ऽइ॒न्वेभिः॑। आ॒यु॒ऽभिः॑। वैश्वा॑नर। प्र॒ऽदिवा॑। के॒तुना॑। स॒ऽजूः॥८॥**

**पदार्थः**-**(अग्ने)** विद्वन् **(मरुद्भिः)** मनुष्यैः **(शुभयद्भिः)** शुभमाचरद्भिः **(ऋक्वभिः)** सत्कर्त्तव्यैः **(सोमम्)** महौषधिरसम् **(पिब)** **(मन्दसानः)** आनन्दन् **(गणश्रिभिः)** समुदायलक्ष्मीभिः **(पावकेभिः)** पवित्रैः **(विश्वमिन्वेभिः)** सर्वं जगद्व्यवहारं प्रापयद्भिः **(आयुभिः)** जीवनैः **(वैश्वानर)** विश्वेषु सर्वेषु नायक **(प्रदिवा)** प्रकृष्टप्रकाशवता **(केतुना)** प्रज्ञया सह **(सजूः)** समानप्रीतिसेवी॥८॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! गणश्रिभिर्मन्दसानः प्रदिवा केतुना सजूर्वैश्वानर त्वं शुभयद्भिर्ऋक्वभिः पावकेभिर्विश्वमिन्वेभिरायुभिर्मरुद्भिः सह सोमं पिब॥८॥

**भावार्थः**-मनुष्याणां योग्यतास्ति सदाऽऽप्तैर्विद्वद्भिस्सह सङ्गत्य विद्यायुः प्रज्ञा वर्धयित्वौषधवदाहारविहारौ च विधाय शुभाचरणं सर्वदा कुर्युरिति॥८॥

अत्र वाय्वग्निविद्वद्गुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति षष्टितमं सूक्तं पञ्चविंशो वर्गश्च समाप्तः॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-हे **(अग्ने)** विद्वन्! **(गणश्रिभिः)** समुदाय की लक्ष्मियों से **(मन्दसानः)** आनन्द करता हुआ **(प्रदिवा)** अत्यन्त प्रकाश वाली **(केतुना)** बुद्धि के साथ **(सजूः)** तुल्य प्रीति को सेवने वाले **(वैश्वानर)** सब में मुख्य आप **(शुभयद्भिः)** उत्तम आचरण करने वाले **(ऋक्वभिः)** सत्कार करने योग्य **(पावकेभिः)** पवित्र **(विश्वमिन्वेभिः)** सम्पूर्ण संसार के व्यवहार को प्राप्त कराते हुए **(आयुभिः)** जीवनों में **(मरुद्भिः)** मनुष्यों के साथ **(सोमम्)** बड़ी औषधियों के रस का **(पिब)** पान करिये॥८॥

**भावार्थः**-मनुष्यों की योग्यता है कि सदा यथार्थवक्ता विद्वानों के साथ मिलकर विद्या, अवस्था और बुद्धि को बढ़ाकर औषध के सदृश आहार और विहार को करके उत्तम आचरण सर्वदा करें॥८॥

इस सूक्त में वायु, अग्नि और विद्वान् के गुण-वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्तार्थ के साथ संगति जाननी चाहिये॥

**यह साठवां सूक्त और पच्चीसवां वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

**अथैकोनविंशत्यृचस्यैकषष्टितमस्य सूक्तस्य श्यावाश्व आत्रेय ऋषिः। १-४, ११-१६ मरुतः। ५-८ शशीयसी तरन्तमहिषी। ९ पुरुमीळ्हो वैददश्विः। १० तरन्तो वैददश्विः। १७-१९ रथवीतिर्दाल्भ्यो देवताः। १, ४, ६, ७, ८, ११, १५, १६, १८ गायत्री। २, ३, १०, १२-१४, १९ निचृद्गायत्री। १७ विराड्गायत्री छन्दः। षड्जः स्वरः। ५ भुरिगुष्णिक् छन्दः। ऋषभः स्वरः। ९ सतोबृहती छन्दः। मध्यमः स्वरः॥**

***अथ प्रश्नोत्तरैर्मरुदादिगुणानाह॥***

अब उन्नीस ऋचा वाले एकसठवें सूक्त का प्रारम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में प्रश्नोत्तरों से मरुदादिकों के गुणों को कहते हैं॥

**के ष्ठा नरः श्रेष्ठतमा य एकएक आयय। परमस्याः परावतः॥ १॥**

**के। स्थ। नरः। श्रेष्ठऽतमाः। ये। एकःऽएकः। आऽयय। परमस्याः। पराऽवतः॥ १॥**

**पदार्थः-(के) (स्था)** तिष्ठत। अत्र **संहितायामिति** दीर्घः। **(नरः)** नायकाः **(श्रेष्ठतमाः)** अतिशयेन श्रेयस्कराः **(ये) (एकएकः) (आयय)** आयाथ **(परमस्याः)** अतिश्रेष्ठायाः [पारगन्तारः] **(परावतः)** दूरतः॥ १॥

**अन्वयः**-हे श्रेष्ठतमा नरः! परमस्याः पारगन्तारः के यूयं स्था ये परावत आगत्य उपदिशन्ति येषां मध्य एकएको यूयं परावतो देशादेकमायय॥ १॥

**भावार्थः**-के श्रेष्ठतमा मनुष्या भवन्ति? ये सर्वदा श्रेष्ठतमानि कर्माणि कुर्युः॥ १॥

**पदार्थः**-हे **(श्रेष्ठतमाः)** अत्यन्त कल्याण करने वाले **(नरः)** नायक जनो! **(परमस्याः)** अत्यन्त श्रेष्ठ के पार जाने वाले **(के)** कौन **(स्था)** ठहरें **(ये)** जो **(परावतः)** दूर से आकर उपदेश करते हैं और जिनके मध्य में **(एकएकः)** एकएक आप दूर देश से एक को **(आयय)** प्राप्त होवें॥ १॥

**भावार्थः**-कौन अत्यन्त श्रेष्ठ मनुष्य होते हैं? जो सर्वदा अत्यन्त श्रेष्ठ कर्म्मों को करें॥ १॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**क्व१ वोऽश्वाः क्वा३भीशवः कथं शेक कथा यय। पृष्ठे सदो नसोर्यमः॥ २॥**

**क्व। वः। अश्वाः। क्व। अभीशवः। कथम्। शेक। कथा। यय। पृष्ठे। सदः। नसोः। यमः॥ २॥**

**पदार्थः-(क्व)** कस्मिन् **(वः)** युष्माकम् **(अश्वाः)** आशुगामिनः **(क्व) (अभीशवः)** अङ्गुलय इव। **अभीशव इत्यङ्गुलिनामसु पठितम्।** (निघं०२.५) **(कथम्) (शेक)** सद्योगामिनो भवत **(कथा)** केन प्रकारेण **(यय)** गच्छत **(पृष्ठे)** पश्चाद्भागे **(सदः)** छेद्यं वस्तु **(नसोः)** नासिकयोः **(यमः)** नियन्ता॥ २॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे मनुष्या! वः क्वाश्वाः क्वाभीशवः सन्ति तान् यूयं कथं शेक कथा यय। यथा नसोः पृष्ठे सदो यमोऽस्ति तथा यूयं भवत॥२॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यदा कश्चित् विदुषः पृच्छेत्तदा त उत्तरं दद्युः पक्षपातञ्च विहाय न्यायाधीशा इव भवेयुस्तदा समग्रं बोधमाप्नुयुः॥२॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(वः)** आप लोगों के **(क्व)** कहाँ **(अश्वाः)** शीघ्र चलने वाले घोड़े और **(क्व)** कहाँ **(अभीशवः)** अङ्गुलियां हैं, उनको आप लोग **(कथम्)** किस प्रकार **(शेक)** शीघ्र पहुंचने वाले हूजिये और **(कथा)** किस प्रकार से **(यय)** जाइये और जैसे **(नसोः)** नासिकाओं के **(पृष्ठे)** पीछे के भाग में **(सदः)** छेदन करने योग्य वस्तु का **(यमः)** नियन्ता है, वैसे आप लोग हूजिये॥२॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जब कोई विद्वानों को पूछे तब वे उत्तर दें और पक्षपात को छोड़कर न्यायाधीशों के सदृश होवें, तब सम्पूर्ण बोध को प्राप्त होवें॥२॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**जघने चोद एषां वि सक्थानि नरो यमुः। पुत्रकृथे न जनयः॥३॥**

**जघने। चोदः। एषाम्। वि। सक्थानि। नरः। यमुः। पुत्रऽकृथे। न। जनयः॥३॥**

**पदार्थः**-**(जघने)** कट्यधोभागावयवे **(चोदः)** प्रेरकः **(एषाम्)** **(वि)** **(सक्थानि)** सक्थीनि **(नरः)** नेतारः **(यमुः)** नियच्छेयुः **(पुत्रकृथे)** पुत्रकरणे **(न)** इव **(जनयः)** मातापितरः॥३॥

**अन्वयः**-हे नरः! पुत्रकृथे जनयो नैषां जघने यश्चोदोऽस्ति ये सक्थानि वि यमुस्तान् यूयं सत्कुरुत॥३॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। यथा जनका मातापितरः सुनियमेन सन्तानोत्पत्तिं कृत्वैतान् सुनियम्य सुशिक्षितान् कुर्युस्तथा सर्वे कुर्वन्तु॥३॥

**पदार्थः**-हे **(नरः)** नायक जनो! **(पुत्रकृथे)** पुत्र करने में **(जनयः)** माता-पिता **(न)** जैसे वैसे **(एषाम्)** इनके **(जघने)** कटि के नीचे के भाग के अवयवों को जो **(चोदः)** प्रेरणा करने वाला है और जो **(सक्थानि)** घुटनों को **(वि, यमुः)** नियम में रक्खें, उनका आप लोग सत्कार करो॥३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जैसे उत्पन्न करने वाले माता-पिता सुन्दर नियम से सन्तानोत्पत्ति करके इनको उत्तम प्रकार नियम युक्त करके उत्तम प्रकार शिक्षित करें, वैसे सब करें॥३॥

**अथ विद्वदुपदेशविषयमाह॥**

अब विद्वानों के उपदेश विषय को कहते हैं॥

**परा वीरास एतन मर्यासो भद्रजानयः। अग्नितपो यथासथ॥४॥**

**परा। वीरासः। इतन। मर्यासः। भद्रऽजानयः। अग्निऽतपः। यथा। असथ॥४॥**



www.9009.co.in

**पदार्थ:-(परा)** दूरार्थे **(वीरास:)** व्याप्तविद्याबला: **(एतन)** प्राप्नुत। अत्रेण्गतावित्यस्माल्लोटि युष्मद्बहुवचने **तप्तनप्तनथनाश्च** (अष्टा०७.१.४५) इति तनबादेश:। **(मर्यास:)** मनुष्या: **(भद्रजानय:)** ये भद्रं कल्याणं जानन्ति ते **(अग्नितप:)** येऽग्निना तापयन्ति ते **(यथा) (असथ)** भवथ॥४॥

**अन्वय:**-हे मनुष्या! यूयं यथाऽग्नितपो वीरासो मर्यास: परैतन भद्रजानयोऽसथ तथा ते सत्कर्त्तव्यास्यु:॥४॥

**भावार्थ:**-अत्रोपमालङ्कार:। ये बन्धनसाधनं पापाचरणं त्यक्त्वा त्याजयित्वा मुक्तिसाधनं गृहीत्वा ग्राहयित्वा सर्वानानन्दयन्ति तान्सर्व आनन्दयन्तु॥४॥

**पदार्थ:**-हे मनुष्यो! आप लोग **(यथा)** जैसे **(अग्नितप:)** अग्नि से तपाने वाले **(वीरास:)** विद्या और बल से व्याप्त **(मर्यास:)** मनुष्य **(परा)** दूर के लिये **(एतन)** प्राप्त हों और **(भद्रजानय:)** कल्याण के जानने वाले **(असथ)** होवें, वैसे वे सत्कार करने योग्य होवें॥४॥

**भावार्थ:**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जो बन्धन के साधन और पाप के आचरण का त्याग कर और त्याग करा के और मुक्ति के साधन को ग्रहण कर और ग्रहण करा के सब को आनन्दित करते हैं, उनको सब आनन्दित करें॥४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**सनत्साश्व्यं पशुमुत गव्यं शतावयम्।**

**श्यावाश्वस्तुताय या दोर्वीरायोपबर्बृहत्॥५॥२६॥**

**सनत्। सा। अश्व्यम्। पशुम्। उत। गव्यम्। शतऽअवयम्। श्यावाश्वऽस्तुताय। या। दो:। वीराय। उपऽबर्बृहत्॥५॥**

**पदार्थ:-(सनत्)** सनातनम् **(सा)** विदुषी स्त्री **(अश्व्यम्)** अश्वेषु साधुम् **(पशुम्)** पश्यन्तम् **(उत)** अपि **(गव्यम्)** गोषु साधुम् **(शतावयम्)** शतान्यवयवा यस्मिँस्तम् **(श्यावाश्वस्तुताय)** श्यावैरश्वै: प्रशंसिताय **(या) (दो:)** भुजस्य बलम् **(वीराय)** शूराय **(उपबर्बृहत्)** भृशमुपबर्हयति॥५॥

**अन्वय:**-या श्यावाश्वस्तुताय वीराय दोरुपबर्बृहत् सा सनदश्व्यं गव्यमुत शतावयं पशुं वर्धयितुं शक्नोति॥५॥

**भावार्थ:**-सैव स्त्री प्रशंसिता भवति या स्वपतिं कामासक्तं कृत्वा बलं न नाशयति गृहस्थानश्वादीन् सम्पाल्य वर्धयति॥५॥

**पदार्थ:-(या)** जो **(श्यावाश्वस्तुताय)** घोड़ों से प्रशंसित **(वीराय)** वीर जन के लिये **(दो:)** भुजा का बल **(उपबर्बृहत्)** अत्यन्त समीप में देती है **(सा)** वह विद्यायुक्त स्त्री **(सनत्)** सनातन **(अश्व्यम्)** घोड़ों में श्रेष्ठ **(गव्यम्)** गौओं में श्रेष्ठ **(उत)** और **(शतावयम्)** सौ अवयव जिसमें उस **(पशुम्)** देखते हुए को बढ़ा सकती है॥५॥



www.9009.co.in

**भावार्थ:**-वही स्त्री प्रशंसित होती है, जो अपने पति को काम में आसक्त करके बल का नाश नहीं करती है और गृहस्थित घोड़े आदि का पालन करके बढ़ाती है॥५॥

**पुन: स्त्रीपुरुषार्थोपदेशमाह॥**

फिर स्त्री के पुरुषार्थ उपदेश को कहते हैं॥

**उ॒त त्वा॒ स्त्री शशी॑यसी पुं॒सो भ॑वति॒ वस्य॑सी। अदे॑वत्रादरा॒धस॑:॥६॥**

**उ॒त। त्वा॒। स्त्री। शशी॑यसी। पुं॒स:। भ॒व॒ति॒। वस्य॑सी। अदे॑वऽत्रात्। अ॒रा॒धस॑:॥६॥**

**पदार्थ:**-**(उत)** अपि **(त्वा)** त्वाम् **(स्त्री)** **(शशीयसी)** अतिशयेन दुखं प्लावयन्ती **(पुंस:)** पुरुषस्य **(भवति)** **(वस्यसी)** अतिशयेन वसुमती **(अदेवत्रात्)** देवान् त्रायते यस्मात्तद्विरुद्धात् **(अराधस:)** अधनात्॥६॥

**अन्वय:**-हे पुरुष! या स्त्री-अदेवत्रादराधस: पृथग्भूत्वा पुंसो वस्यस्युत शशीयसी भवति त्वा सुखयति तां त्वं सुखय॥६॥

**भावार्थ:**-सैव स्त्री पत्या माननीया भवति याऽन्यायाचरणादपूज्यपूजनाद्विरहा सती पतिं सुखयति सैव पत्या सततं सत्कर्त्तव्यास्ति॥६॥

**पदार्थ:**-हे पुरुष! जो **(स्त्री)** स्त्री **(अदेवत्रात्)** विद्वानों की रक्षा करता है जिससे उससे विरुद्ध **(अराधस:)** धनविरुद्ध पदार्थ से पृथक् होकर **(पुंस:)** पुरुष की **(वस्यसी)** अत्यन्त धनवाली **(उत)** और **(शशीयसी)** अत्यन्त दु:ख को दूर करने वाली **(भवति)** होती और **(त्वा)** आपको सुखी करती है, उसको आप सुखयुक्त करो॥६॥

**भावार्थ:**-वही स्त्री पति से आदर करने योग्य होती है जो अन्यायाचरण और नहीं आदर करने योग्य के आदर करने से रहित हुई पति को सुखी करती है, वही पति से निरन्तर आदर करने योग्य होती है॥६॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**वि या जा॒नाति॒ जसु॑रिं॒ वि तृष्य॑न्तं॒ वि का॒मिन॑म्। दे॒व॒त्रा कृ॑णु॒ते मन॑:॥७॥**

**वि। या। जा॒नाति॑। जसु॑रिम्। वि। तृष्य॑न्तम्। वि। का॒मिन॑म्। दे॒व॒ऽत्रा। कृ॒णु॒ते। मन॑:॥७॥**

**पदार्थ:**-**(वि)** विशेषेण **(या)** **(जानाति)** **(जसुरिम्)** प्रयतमानम् **(वि)** **(तृष्यन्तम्)** तृषातुरमिव **(वि)** **(कामिनम्)** कामातुरम् **(देवत्रा)** देवेषु **(कृणुते)** करोति **(मन:)** चित्तम्॥७॥

**अन्वय:**-हे मनुष्या! या जसुरिं वि जानाति तृष्यन्तं वि जानाति कामिनं वि जानाति सा देवत्रा मन: कृणुते॥७॥

**भावार्थ:**-या स्त्री पुरुषार्थिनं धार्मिकं लोभिनं कामातुरं च पतिं विज्ञाय दोषनिवारणाय गुणग्रहणाय च प्रेरयति सैव पत्यादिकल्याणकारिणी भवति॥७॥



www.9009.co.in

**पदार्थ:**-हे मनुष्यो! **(या)** जो **(जसुरिम्)** प्रयत्न करते हुए को **(वि)** विशेष करके **(जानाति)** जानती है **(तृष्यन्तम्)** पिपासा से व्याकुल हुए के तुल्य को **(वि)** विशेष करके जानती है और **(कामिनम्)** कामातुर पुरुष को **(वि)** विशेष करके जानती है वह **(देवत्रा)** विद्वानों में **(मनः)** चित्त **(कृणुते)** करती है॥७॥

**भावार्थ:**-जो स्त्री पुरुषार्थी, धार्मिक, लोभी और कामातुर पति को जानकर दोषों के निवारण और गुणों के ग्रहण करने के लिये प्रेरणा करती है, वही पति आदि की कल्याण करने वाली होती है॥७॥

**पुनर्विद्वद्विषयमाह॥**

फिर विद्वद्विषय को कहते हैं॥

**उत घा नेमो अस्तुतः पुमाँ इति ब्रुवे पणिः। स वैरदेय इत्समः॥८॥**

**उत। घ। नेमः। अस्तुतः। पुमान्। इति। ब्रुवे। पणिः। सः। वैरऽदेये। इत्। समः॥८॥**

**पदार्थ:**-**(उत)** अपि **(घा)** एव। अत्र **ऋचि तुनुघे**ति दीर्घः। **(नेमः)** अर्द्धाधिकारी **(अस्तुतः)** अप्रशंसितः **(पुमान्)** पुरुषः **(इति)** अनेन प्रकारेण **(ब्रुवे)** **(पणिः)** प्रशंसितः **(सः)** **(वैरदेये)** वैरं देयं येन तस्मिन् **(इत्)** एव **(समः)** तुल्यः॥८॥

**अन्वय:**-हे मनुष्या! योऽस्तुत उत नेमो घा वैरदेये पुमान् यश्च पणिर्वर्त्तते स इत्सम इत्यहं ब्रुवे॥८॥

**भावार्थ:**-योऽलसः सत्कर्मसु न प्रवर्त्तते द्वितीयो विद्वान् सत्याऽसत्यं विज्ञाय सत्यं नाचरति तौ द्वौ तुल्यावधर्मात्मानौ वर्त्तेते इति बोध्यम्॥८॥

**पदार्थ:**-हे मनुष्यो! जो **(अस्तुतः)** नहीं प्रशंसा किया गया **(उत)** और **(नेमः)** आधे का अधिकारी **(घा)** ही **(वैरदेये)** वैर देने योग्य जिससे उसमें **(पुमान्)** पुरुष और जो **(पणिः)** प्रशंसित वर्त्तमान है **(सः, इत्)** वही **(समः)** तुल्य है **(इति)** इस प्रकार से मैं **(ब्रुवे)** कहता हूं॥८॥

**भावार्थ:**-जो आलस्ययुक्त जन श्रेष्ठ कर्म्मों में नहीं प्रवृत्त होता है और दूसरा विद्वान् पुरुष सत्य और असत्य को जानकर सत्य का आचरण नहीं करता है, वे दोनों तुल्य अधर्मात्मा हैं, यह जानना चाहिये॥८॥

**पुनर्दम्पतीविषयमाह॥**

फिर स्त्री-पुरुष के विषय को कहते हैं॥

**उत मेऽरपद्युवतिर्ममन्दुषी प्रति श्यावाय वर्तनिम्।**
**वि रोहिता पुरुमीळ्हाय येमतुर्विप्राय दीर्घयशसे॥९॥**



www.9009.co.in

उत। मे। अरपत्। युवतिः। ममन्दुषी। प्रति। श्यावाय। वर्तनिम्। वि। रोहिता। पुरुऽमीळहाय। येमतुः। विप्राय। दीर्घऽयशसे॥९॥

**पदार्थः**-(**उत**) अपि (**मे**) मह्यम् (**अरपत्**) व्यक्तमुपदिशति (**युवतिः**) प्राप्तयौवनावस्था (**ममन्दुषी**) प्रशंसनीयानन्दकरी (**प्रति**) (**श्यावाय**) श्याववर्णयुक्तायाऽश्वाय (**वर्त्तनिम्**) मार्गम् (**वि**) (**रोहिता**) रोहणकर्त्री (**पुरुमीळहाय**) बहुवीर्यसेक्त्रे (**येमतुः**) नियच्छतः (**विप्राय**) मेधाविने (**दीर्घयशसे**) महद्यशसे॥९॥

**अन्वयः**-या प्रति श्यावाय पुरुमीळहाय दीर्घशयसे विप्राय मे ममन्दुषी वर्त्तनिं वि रोहिता युवतिररपदुताहमरपं तावावां यथा सद्गुणाढ्यौ स्त्रीपुरुषौ येमतुस्तथा वर्त्तावहै॥९॥

**भावार्थः**-यदि स्त्रीपुरुषौ तुल्यगुणकर्म्मस्वभावौ स्यातां तर्हि सन्मार्गं बृहत्कीर्त्तिमानन्दञ्च लभेताम्॥९॥

**पदार्थः**-जो (**प्रति, श्यावाय**) धूमिल वर्ण से युक्त अश्व और (**पुरुमीळहाय**) बहुत वीर्य्य के सींचने वाले (**दीर्घयशसे**) बड़े यशस्वी (**विप्राय**) बुद्धिमान् (**मे**) मेरे लिये (**ममन्दुषी**) प्रशंसा करने योग्य और आनन्द करने वाली (**वर्त्तनिम्**) मार्ग को (**वि, रोहिता**) जानेवाली (**युवतिः**) यौवनावस्था को प्राप्त स्त्री (**अरपत्**) स्पष्ट उपदेश देती है (**उत**) और मैं स्पष्ट उपदेश करूं, वे हम दोनों जैसे श्रेष्ठ गुणों से युक्त स्त्री और पुरुष (**येमतुः**) नियम करते हैं, वैसे वर्त्ताव करें॥९॥

**भावार्थः**-जो स्त्री-पुरुष परस्पर तुल्य गुण, कर्म और स्वभाव वाले हों तो श्रेष्ठ मार्ग, अत्यन्त कीर्त्ति और आनन्द को प्राप्त हों॥९॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**यो मे धेनूनां शतं वैददश्विर्यथा ददत्। तरन्तइव मंहना॥१०॥२७॥**

**यः। मे। धेनूनाम्। शतम्। वैदत्ऽअश्विः। यथा। ददत्। तरन्तःऽइव। मंहना॥१०॥**

**पदार्थः**-(**यः**) (**मे**) मम (**धेनूनाम्**) गवाम् (**शतम्**) (**वैददश्विः**) योऽश्वान् विन्दति स विददश्वस्तस्यापत्यं वैददश्विः (**यथा**) (**ददत्**) ददाति (**तरन्तइव**) तरन्त इव (**मंहना**) महत्या नौकया॥१०॥

**अन्वयः**-यो वैददश्विर्मे धेनूनां शतं ददद्यथा मंहना तरन्तइव दुःखपारं नयति स एव स्वामी भवितुमर्हति॥१०॥

**भावार्थः**-यो मनुष्यः शतदः सहस्रदो भवति दोग्ध्रीणां गवां रक्षणं करोति स नौकया नदीं समुद्रं वा तरति तथैव मेधाविनौ स्त्रीपुरुषौ दुःखसागरं धर्म्माचरणेन तरतः॥१०॥



www.9009.co.in

**पदार्थः-(यः)** जो **(वैददश्विः)** घोड़ों के ज्ञाता का पुत्र **(मे)** मेरी **(धेनूनाम्)** गौओं के **(शतम्)** सैकड़े को **(ददत्)** देता है **(यथा)** जैसे **(मंहना)** बड़ी नौका से **(तरन्तइव)** तैरते हुओं के समान दुःख के पार पहुंचाता है, वही स्वामी होने के योग्य होता है॥१०॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य सैकड़ों वा हजारों का देने वाला होता है और दुग्ध देनेवाली गौओं की रक्षा करता है, वह नौका से नदी वा समुद्र को तरता है, वैसे ही बुद्धिमान् स्त्री और पुरुष दुःखरूपी सागर को धर्म के आचरण से तरते हैं॥१०॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**य ईं वहन्त आशुभिः पिबन्तो मदिरं मधु। अत्र श्रवांसि दधिरे॥११॥**

**ये। ईम्। वहन्ते। आशुऽभिः। पिबन्तः। मदिरम्। मधु। अत्र। श्रवांसि। दधिरे॥११॥**

**पदार्थः-(ये) (ईम्)** उदकम् **(वहन्ते)** प्राप्नुवन्ति **(आशुभिः)** आशुकारिभिर्गुणैः **(पिबन्तः) (मदिरम्)** आनन्दकरम् **(मधु)** माधुर्यादिगुणोपेतम् **(अत्र) (श्रवांसि)** अन्नादीनि **(दधिरे)** धरन्ति॥११॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! या आशुभिर्मदिरमीं वहन्ते मधु पिबन्तोऽत्र श्रवांसि दधिरे त एव श्रीमन्तो जायन्ते॥११॥

**भावार्थः**-ये सद्यः सुखकराणि मेधावर्धकानि वस्तूनि सेवन्ते तेऽत्र श्रीमन्तो जायन्ते॥११॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(ये)** जो **(आशुभिः)** शीघ्रकारी गुणों से **(मदिरम्)** आनन्दकारक **(ईम्)** जल को **(वहन्ते)** प्राप्त होते हैं और **(मधु)** माधुर्य्य आदि गुणों से युक्त को **(पिबन्तः)** पीते हुए **(अत्र)** यहाँ **(श्रवांसि)** अन्न आदिकों को **(दधिरे)** धारण करते हैं, वे ही लक्ष्मीवान् होते हैं॥११॥

**भावार्थः**-जो शीघ्र सुखकारक और बुद्धिवर्धक वस्तुओं का सेवन करते हैं, वे यहाँ लक्ष्मीवान् होते हैं॥११॥

**पुनरुपदेशविषयमाह॥**

फिर उपदेश विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**येषां श्रियाधि रोदसी विभ्राजन्ते रथेष्वा। दिवि रुक्मइवोपरि॥१२॥**

**येषाम्। श्रिया। अधि। रोदसी इति। विऽभ्राजन्ते। रथेषु। आ। दिवि। रुक्मःऽइव। उपरि॥१२॥**

**पदार्थः-(येषाम्) (श्रिया)** शोभया लक्ष्म्या वा **(अधि) (रोदसी)** द्यावापृथिव्यौ **(विभ्राजन्ते) (रथेषु)** विमानादियानेषु **(आ) (दिवि)** कामनायाम् **(रुक्मइव)** रुचिकरः सुवर्णादिपदार्थो यथा **(उपरि)**॥१२॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! येषां विदुषां श्रिया धर्म्या व्यवहारा दिवि रुक्मइव विभ्राजन्ते। ये रथेष्वाऽधिष्ठिता स्युस्त उपरि रोदसी इव प्रकाशन्ते॥१२॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। ये धर्म्येण पुरुषार्थेन धनादिकं सञ्चिन्वन्ति ते सूर्य्यकिरणा इव प्रकाशितकीर्त्तयो भवन्ति॥१२॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(येषाम्)** जिन विद्वानों की **(श्रिया)** शोभा वा लक्ष्मी से, धर्मयुक्त व्यवहार **(दिवि)** कामना में **(रुक्मइव)** प्रीतिकारक सुवर्ण आदि पदार्थ जैसे वैसे **(विभ्राजन्ते)** शोभित होते हैं और जो **(रथेषु)** विमान आदि वाहनों में **(आ, अधि)** विराजित होवें वे **(उपरि)** ऊपर **(रोदसी)** अन्तरिक्ष और पृथिवी के सदृश प्रकाशित होते हैं॥१२॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जो धर्मयुक्त पुरुषार्थ से धन आदि को इकट्ठे करते हैं, वे सूर्य्य के किरणों के सदृश प्रकाशित यश वाले होते हैं॥१२॥

**पुनर्दम्पतीविषयमाह॥**

फिर स्त्री-पुरुष के विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**युवा स मारुतो गणस्त्वेषरथो अनेद्यः। शुभंयावाप्रतिष्कुतः॥१३॥**

**युवा। सः। मारुतः। गणः। त्वेषऽरथः। अनेद्यः। शुभम्ऽयावा। अप्रतिऽस्कुतः॥१३॥**

**पदार्थः-(युवा)** प्राप्तयौवनाः **(सः) (मारुतः)** वायूनां समूह इव मनुष्याणां **(गणः) (त्वेषरथः)** त्वेषः प्रकाशवान् रथो यस्य सः **(अनेद्यः)** अनिन्दनीयः **(शुभंयावा)** यः शुभं जलं याति **(अप्रतिष्कुतः)** अकम्पितो दृढः॥१३॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! योऽनेद्यस्त्वेषरथः शुभंयावाऽप्रतिष्कुतो युवा मारुतो गणोऽस्ति स बहूनि कार्य्याणि साद्धुं शक्नोति॥१३॥

**भावार्थः**-ये मनुष्याः सर्वान् स्त्रीपुरुषान् यूनो विदुषः सम्पादयन्ति ते प्रशंसनीयाः कल्याणकारिणो दृढा जायन्ते॥१३॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो **(अनेद्यः)** नहीं निन्दा करने योग्य **(त्वेषरथः)** प्रकाशवान् वाहन जिसका वह **(शुभंयावा)** जल को प्राप्त होने वाला **(अप्रतिष्कुतः)** नहीं कम्पित दृढ़ **(युवा)** यौवनावस्था को प्राप्त **(मारुतः)** पवनों के समूह के सदृश मनुष्यों का **(गणः)** समूह है **(सः)** वह बहुत कार्य्यों को सिद्ध कर सकता है॥१३॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य सम्पूर्ण स्त्रीपुरुषों को यौवनावस्थायुक्त और विद्वान् करते हैं, वे प्रशंसा करने योग्य, कल्याणकारी और दृढ़ होते हैं॥१३॥

**पुनरुपदेशार्थविषयमाह॥**

फिर उपदेशार्थ विषय को कहते हैं॥

**को वेद नूनमेषां यत्रा मदन्ति धूतयः। ऋतजाता अरेपसः॥१४॥**

**कः। वेद। नूनम्। एषाम्। यत्र। मदन्ति। धूतयः। ऋतऽजाताः। अरेपसः॥१४॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**कः**) (**वेद**) जानाति (**नूनम्**) निश्चितम् (**एषाम्**) वाय्वादीनाम् (**यत्रा**) (**मदन्ति**) हर्षन्ति (**धूतयः**) ये पापं धूनयन्ति ते (**ऋतजाताः**) य ऋते जायन्ते ते (**अरेपसः**) अनपराधिनः॥१४॥

**अन्वयः**-हे विद्वांसो! यत्रर्तजाता अरेपसो धूतयो मदन्ति तत्रैषां स्वरूपं नूनं को वेद॥१४॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! अपराधानपराधौ सत्यासत्ये च को वेत्तीति पृच्छामः। ये प्रमादविरहाः परमेश्वरभक्ता भवन्तीति॥१४॥

**पदार्थः**-हे विद्वानो! (**यत्रा**) जहाँ (**ऋतजाताः**) सत्य में उत्पन्न होने वाले (**अरेपसः**) अपराध से रहित (**धूतयः**) पाप को कम्पाने वाले (**मदन्ति**) प्रसन्न होते हैं वहाँ (**एषाम्**) इन वायु आदि के स्वरूप को (**नूनम्**) निश्चित (**कः**) कौन (**वेद**) जानता है॥१४॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! अपराध-अनपराध तथा सत्य और असत्य को कौन जानता है, यह हम पूछते हैं। जो प्रमाद से रहित और परमेश्वर भक्त होते हैं॥१४॥

**पुनर्विद्वद्विषयमाह॥**

फिर विद्वद्विषय को कहते हैं॥

**यूयं मर्तं विपन्यवः प्रणेतारं इत्था धिया। श्रोतारो यामहूतिषु॥१५॥२८॥**

**यूयम्। मर्तम्। विपन्यवः। प्रऽनेतारः। इत्था। धिया। श्रोतारः। यामऽहूतिषु॥१५॥**

**पदार्थः**-(**यूयम्**) (**मर्त्तम्**) मनुष्यम् (**विपन्यवः**) मेधाविनः (**प्रणेतारः**) प्रेरकाः (**इत्था**) अनेन प्रकारेण (**धिया**) प्रज्ञया कर्म्मणा वा (**श्रोतारः**) (**यामहूतिषु**) उपरमाऽऽह्वानरूपकर्म्मसु॥१५॥

**अन्वयः**-हे विपन्यवो! यूयं प्रणेतारः श्रोतारो धिया यामहूतिष्वित्था मर्त्तं प्रेरयत॥१५॥

**भावार्थः**-ये विद्वांसो धर्म्येषु व्यवहारेषु मनुष्यान् प्रेरयित्वा प्रज्ञान् कुर्वन्ति ते धन्या भवन्ति॥१५॥

**पदार्थः**-हे (**विपन्यवः**) बुद्धिमानो! (**यूयम्**) आप लोग (**प्रणेतारः**) प्रेरणा करने और (**श्रोतारः**) सुनने वाले जन (**धिया**) बुद्धि वा कर्म से (**यामहूतिषु**) उपरम अर्थात् निवृत्ति और आह्वानरूप कर्म्मों में (**इत्था**) इस प्रकार से (**मर्त्तम्**) मनुष्यों को प्रेरणा करो॥१५॥

**भावार्थः**-जो विद्वान् जन धर्मयुक्त व्यवहारों में मनुष्यों को प्रेरणा करके बुद्धिमान् करते हैं, वे धन्य होते हैं॥१५॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**ते नो वसूनि काम्या पुरुश्चन्द्रा रिशादसः। आ यज्ञियासो ववृत्तन॥१६॥**

**ते। नः। वसूनि। काम्या। पुरुऽचन्द्राः। रिशादसः। आ। यज्ञियासः। ववृत्तन॥१६॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**ते**) विद्वांसः (**नः**) अस्माकम् (**वसूनि**) धनानि (**काम्या**) कमनीयानि (**पुरुश्चन्द्राः**) बहुसुवर्णानि (**रिशादसः**) हिंसकहिंसकाः (**आ**) (**यज्ञियासः**) यज्ञसम्पादकाः (**ववृत्तन**) वर्त्तन्ते॥१६॥

**अन्वयः**-ये यज्ञियासो रिशादसो नः पुरुश्चन्द्राः काम्या वसून्याऽऽववृत्तन तेऽस्माकं कल्याणकारिणो भवन्ति॥१६॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यास्त एवात्र जगति परोपकाराय वर्त्तन्ते ये न्यायेन द्रव्योपार्जनमाचरन्ति॥१६॥

**पदार्थः**-जो (**यज्ञियासः**) यज्ञ के करने (**रिशादासः**) और हिंसकों के मारने वाले (**नः**) हम लोगों के (**पुरुश्चन्द्राः**) बहुत सुवर्ण और (**काम्या**) सुन्दर (**वसूनि**) धनों को (**आ, ववृत्तन**) प्राप्त होते हैं (**ते**) वे विद्वान् हम लोगों के कल्याणकारी होते हैं॥१६॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! वे ही इस संसार में परोपकार के लिये वर्त्तमान हैं, जो न्याय से द्रव्य को सङ्ग्रह करते हैं॥१६॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**एतं मे स्तोममूर्म्ये दार्भ्याय परा वह। गिरो देवि रथीरिव॥१७॥**

**एतम्। मे। स्तोमम्। ऊर्म्ये। दार्भ्याय। परा। वह। गिरः। देवि। रथीःऽइव॥१७॥**

**पदार्थः**-(**एतम्**) (**मे**) मम (**स्तोमम्**) श्लाघाम् (**ऊर्म्ये**) रात्रीव वर्त्तमाने (**दार्भ्याय**) दर्भेषु विदारकेषु भवाय (**परा**) (**वह**) (**गिरः**) वाणीः (**देवि**) देदीप्यमाने विदुषि (**रथीरिव**) प्रशंसितो रथवान्यथा॥१७॥

**अन्वयः**-हे देवि! ऊर्म्ये रात्रिवद्वर्त्तमाने त्वं म एतं स्तोमं शृणु दार्भ्याय वर्त्तमानं परा वह रथीरिव गिर आवह॥१७॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। यथा भूतानां सुखाय रात्री वर्त्तते तथैव पत्यादीनां सुखाय सत् स्त्री भवति॥१७॥

**पदार्थः**-हे (**देवि**) प्रकाशमान विद्यायुक्त स्त्री! (**ऊर्म्ये**) रात्रि के सदृश वर्त्तमान आप (**मे**) मेरी (**एतम्**) इस (**स्तोमम्**) प्रशंसा को सुनिये और (**दार्भ्याय**) विदारण करने वालों में हुए के लिये वर्त्तमान को (**परा, वह**) दूर कीजिये तथा (**रथीरिव**) प्रशंसित रथ वाला जैसे वैसे (**गिरः**) वाणियों को धारण कीजिये॥१७॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जैसे प्राणियों के सुख के लिये रात्रि है, वैसे ही पति आदिकों के सुख के लिये श्रेष्ठ स्त्री होती है॥१७॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥



www.9009.co.in

**उ॒त मे॑ वोचता॒दिति॑ सु॒तसो॑मे॒ रथ॑वीतौ। न कामो॒ अप॑ वेति मे॥१८॥**

**उ॒त। मे॒। वो॒च॒ता॒त्। इति॑। सु॒तऽसो॑मे। रथ॑ऽवीतौ। न। काम॑:। अप॑। वे॒ति॒। मे॒॥१८॥**

**पदार्थः**-(**उत**) अपि (**मे**) मह्यम् (**वोचतात्**) उपदिशतु (**इति**) (**सुतसोमे**) निष्पादितैश्वर्य्यादौ (**रथवीतौ**) रथानां गतौ (**न**) (**कामः**) कामना (**अप**) (**वेति**) नश्यति (**मे**) मम॥१८॥

**अन्वयः**-हे विद्वन्! भवान् मे रथवीतावुत सुतसोमे सत्यमुपदेश्यमिति वोचतात्। यतो मे कामो नाप वेति॥१८॥

**भावार्थः**-सर्वैर्मनुष्यैर्विदुषः प्रतीयं प्रार्थना कार्या भवन्तोऽस्मभ्यमीदृशानुपदेशान् कुर्वन्तु यतोऽस्माकमिच्छाः सिद्धाः स्युरिति॥१८॥

**पदार्थः**-हे विद्वन्! आप (**मे**) मेरे लिये (**रथवीतौ**) वाहनों के गमन में (**उत**) और (**सुतसोमे**) उत्पन्न किये हुए ऐश्वर्य्य आदि में सत्य का उपदेश देने योग्य हैं (**इति**) इस प्रकार (**वोचतात्**) उपदेश देवे जिससे (**मे**) मेरी (**कामः**) कामना (**न**) नहीं (**अप, वेति**) नष्ट होती है॥१८॥

**भावार्थः**-सब मनुष्यों को चाहिये कि विद्वान् जनों के प्रति यह प्रार्थना करें कि आप लोग हम लोगों को ऐसे उपदेश करो जिससे हम लोगों की इच्छायें सिद्ध होवें॥१८॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**ए॒ष क्षे॑ति॒ रथ॑वीतिर्म॒घवा॒ गोम॑ती॒रनु॑। पर्व॑ते॒ष्वप॑श्रितः॥१९॥१९॥**

**ए॒षः। क्षे॒ति॒। रथ॑ऽवीतिः। म॒घऽवा॑। गोऽम॑तीः। अनु॑। पर्व॑तेषु। अप॑ऽश्रितः॥१९॥**

**पदार्थः**-(**एषः**) (**क्षेति**) निवसति (**रथवीतिः**) यो रथेन व्याप्नोति मार्गम् (**मघवा**) परमधनवान् (**गोमतीः**) गावः किरणा विद्यन्ते यासु गतिषु ताः (**अनु**) (**पर्वतेषु**) मेघेषु (**अपश्रितः**) योऽपश्रयति सः॥१९॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथा पर्वतेष्वपश्रितः सूर्य्यो गोमतीरनु वर्त्तयति तथैवैष रथवीतिर्मघवा क्षेति॥१९॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यथा सूर्य्यो मेघनिमित्तं भूत्वा पृथक् स्वरूपोऽस्ति तथैव विद्वान् सर्वत्र वासं कुर्वन्नपि निर्म्मोहो भवतीति॥१९॥

अत्र प्रश्नोत्तरमरुदादिगुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इत्येकषष्टितमं सूक्तमेकोनत्रिंशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे (**पर्वतेषु**) मेघों में (**अपश्रितः**) आश्रित सूर्य्य (**गोमतीः**) किरणें विद्यमान जिनमें ऐसे गमनों को (**अनु**) अनुकूल वर्त्ताता है, वैसे (**एषः**) यह (**रथवीतिः**) रथ से मार्ग को व्याप्त होने वाला (**मघवा**) अत्यन्त धनवान् जन (**क्षेति**) निवास करता है॥१९॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे सूर्य्य मेघ का कारण होकर पृथक् स्वरूप है, वैसे ही विद्वान् सर्वत्र वास करता हुआ भी मोहरहित होता है॥१९॥

इस सूक्त में प्रश्न, उत्तर और वायु आदि के गुण-वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्तार्थ के साथ संगति जाननी चाहिये॥

**यह इकसठवाँ सूक्त और उनतीसवाँ वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

**अत्र नवर्चस्य द्विषष्टितमस्य सूक्तस्य श्रुतिविदात्रेय ऋषिः। मित्रावरुणौ देवते। १, २, ३ त्रिष्टुप्। ४, ५, ६ निचृत्त्रिष्टुप्। ७, ८, ९ विराट् त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः॥**

***अथ सूर्य्यगुणानाह॥***

अब नव ऋचा वाले बासठवें सूक्त का प्रारम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में सूर्य्यगुणों को कहते हैं॥

**ऋतेन॑ ऋ॒तमपि॑हितं ध्रु॒वं वां॒ सूर्य॑स्य॒ यत्र॑ विमु॒चन्त्यश्वा॑न्।**

**दश॑ श॒ता स॒ह त॑स्थु॒स्तदेकं॑ दे॒वानां॒ श्रेष्ठं॒ वपु॑षामपश्यम्॥ १॥**

**ऋ॒तेन॑। ऋ॒तम्। अपि॑ऽहितम्। ध्रु॒वम्। वा॒म्। सूर्य॑स्य। यत्र॑। वि॒ऽमु॒चन्ति॑। अश्वा॑न्। दश॑। श॒ता। स॒ह। त॒स्थुः। तत्। एक॑म्। दे॒वाना॑म्। श्रेष्ठ॑म्। वपु॑षाम्। अ॒प॒श्य॒म्॥**

**पदार्थः-(ऋतेन)** सत्येन कारणेन **(ऋतम्)** सत्यं स्वरूपम् **(अपहितिम्)** आच्छादितम् **(ध्रुवम्)** निश्चलम् **(वाम्)** युवयोः **(सूर्यस्य)** सवितुः **(यत्र)** **(विमुचन्ति)** त्यजन्ति **(अश्वान्)** किरणान् **(दश)** **(शता)** शतानि **(सह)** सार्धम् **(तस्थुः)** तिष्ठन्ति **(तत्)** **(एकम्)** अद्वितीयम् **(देवानाम्)** विदुषाम् **(श्रेष्ठम्)** **(वपुषाम्)** रूपवतां शरीराणाम् **(अपश्यम्)** पश्यामि॥ १॥

**अन्वयः**-हे अध्यापकोपदेशकौ! यत्र विद्वांसः सूर्यस्य दश शताऽश्वान् विमुचन्ति सह तस्थुर्वां युवयोर्ऋतेन ध्रुवमृतमपिहितमस्ति तेदकं देवानां वपुषां च श्रेष्ठमहमपश्यं तदेव यूयमपि पश्यत॥ १॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! योऽयं सूर्यलोकः स परमेश्वरेणानेकैस्तत्त्वैर्निर्मितत्वादनेकैर्गुणैर्युक्तोऽस्ति तं यथावद्विजानीत॥

**पदार्थः**-हे अध्यापक और उपदेश जनो! **(यत्र)** जहाँ विद्वान् जन **(सूर्यस्य)** सूर्य्य के **(दश)** दश **(शता)** सैकड़ों **(अश्वान्)** किरणों को **(विमुचन्ति)** छोड़ते और **(सह)** साथ **(तस्थुः)** स्थित होते हैं **(वाम्)** तुम दोनों के **(ऋतेन)** सत्य कारण से **(ध्रुवम्)** निश्चल **(ऋतम्)** सत्यस्वरूप **(अपिहितम्)** आच्छादित है **(तत्)** उस **(एकम्)** अद्वितीय **(देवानाम्)** विद्वानों के और **(वपुषाम्)** रूप वाले शरीरों के **(श्रेष्ठम्)** श्रेष्ठभाव को मैं **(अपश्यम्)** देखता हूं, उसको आप लोग भी देखिये॥ १॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो यह सूर्य्यलोक है वह परमेश्वर से अनेक तत्त्वों द्वारा रचा गया है, इस कारण अनेक गुणों से युक्त है, उसको तुम लोग यथावत् जानो॥ १॥

**अथ मित्रावरुणगुणानाह॥**

अब मित्रावरुण के गुणों को कहते हैं॥

**तत्सु वां॑ मित्रावरुणा महि॒त्वमी॒र्मा त॒स्थुषी॒रह॑भिर्दुदुह्रे।**

**विश्वाः॑ पिन्वथः॒ स्वस॑रस्य॒ धेना॒ अनु॑ वा॒मेकः॑ प॒विरा व॑वर्त॥ २॥**



www.9009.co.in

**तत्। सु। वाम्। मित्रावरुणा। महिऽत्वम्। ईर्मा। तस्थुषीः। अहऽभिः। दुदुह्रे। विश्वाः। पिन्वथः। स्वसरस्य। धेनाः। अनु। वाम्। एकः। पविः। आ। ववर्त॥२॥**

**पदार्थः-(तत्) (सु)** ( **(वाम्)** युवयोः **(मित्रावरुणा)** प्राणोदानवदध्यापकोपदेशकौ **(महित्वम्)** महत्त्वम् **(ईर्मा) (तस्थुषीः)** स्थिराः **(अहभिः)** दिनैः **(दुदुह्रे)** प्रपूरयन्ति **(विश्वाः)** सर्वाः **(पिन्वथः)** प्रीणयतम् **(स्वसरस्य)** दिनस्य **(धेनाः)** वाचः **(अनु) (वाम्)** युवाम् **(एकः)** असहायः **(पविः)** पवित्रो व्यवहारः **(आ) (ववर्त्त)**॥२॥

**अन्वयः**-हे मित्रावरुणा! वां यन्महित्वमीर्मा रक्षति तद्युवां पिन्वथो यथाऽहभिः किरणास्तस्थुषीः स दुदुह्रे स्वसरस्य मध्ये वां विश्वा धेनाः पिन्वथस्तथैकः पविरन्वाऽऽववर्त्त॥२॥

**भावार्थः**-हे अध्यापकोपदेशकौ! युवां मनुष्यान् रात्र्यहर्प्राणोदानविद्युद्विद्या ग्राहयतं यतः सर्वाः प्रजा आनन्दिताः स्युः॥२॥

**पदार्थः**-हे **(मित्रावरुणा)** प्राण और उदान वायु के सदृश अध्यापक और उपदेशक जनो! **(वाम्)** आप दोनों के जिस **(महित्वम्)** महत्त्व की **(ईर्मा)** निरन्तर चलने वाला रक्षा करता है **(तत्)** उसकी आप दोनों **(पिन्वथः)** तृप्ति कीजिये और जैसे **(अहभिः)** दिनों से किरणें **(तस्थुषीः)** स्थिर वेलाओं को **(सु)** उत्तम प्रकार **(दुदुह्रे)** पूर्ण करते हैं और **(स्वसरस्य)** दिन के मध्य में **(वाम्)** आप दोनों **(विश्वाः)** सम्पूर्ण **(धेनाः)** वाणियों को तृप्त कीजिये वैसे **(एकः)** सहायरहित केवल एक **(पविः)** पवित्र व्यवहार **(अनु)** अनुकूल **(आ) (ववर्त)** वर्तमान हो॥२॥

**भावार्थः**-हे अध्यापक और उपदेशक जनो! आप दोनों मनुष्यों को रात्रि-दिन, प्राण, उदान और बिजुली की विद्याओं को ग्रहण कराइये, जिससे सम्पूर्ण प्रजायें प्रजायें आनन्दित होवें॥२॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**अधारयतं पृथिवीमुत द्यां मित्रराजाना वरुणा महोभिः।**

**वर्धयतमोषधीः पिन्वतं गा अव वृष्टिं सृजतं जीरदानू॥३॥**

**अधारयतम्। पृथिवीम्। उत। द्याम्। मित्रऽराजाना। वरुणा। महःऽभिः। वर्धयतम्। ओषधीः। पिन्वतम्। गाः। अव। वृष्टिम्। सृजतम्। जीरदानू इति जीरऽदानू॥३॥**

**पदार्थः-(अधारयतम्)** धारयतम् **(पृथिवीम्)** भूमिम् **(उत) (द्याम्)** सूर्य्यम् **(मित्रराजाना)** प्राणविद्युतौ **(वरुणा)** श्रेष्ठौ **(महोभिः)** बृहद्भिर्गुणैः **(वर्धयतम्) (ओषधीः)** यवाद्याः **(पिन्वतम्)** तर्प्पयतम् **(गाः)** पृथिवीः **(अव) (वृष्टिम्) (सृजतम्) (जीरदानू)** यौ जीवनं दद्यातां तौ॥३॥

**अन्वयः**-हे जीरदानू वरुणा! मित्रराजाना यथा वायुविद्युतौ पृथिवीमुत द्यां धारयतस्तथाऽधारयतं यथेमौ महोभिरोषधीर्वर्धयतस्तथा युवां वर्धयतं गाः पिन्वतस्तथा युवां पिन्वतं तथैतौ वृष्टिमिव सृजतस्तथाऽव सृजतम्॥३॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे राजामात्यौ! युवां प्राणसूर्य्यवद्वर्त्तित्वा पृथिवीराज्यं सम्पाल्य वैद्योषधीर्वर्धयित्वा वृष्टिमुन्नीय सर्वेषां सुखाय वर्त्तेयाताम्॥३॥

**पदार्थः**-हे **(जीरदानू)** जीवन के देने वाले **(वरुणा)** श्रेष्ठ! **(मित्रराजाना)** जैसे वायु और बिजुली **(पृथिवीम्)** भूमि को **(उत)** और **(द्याम्)** सूर्य्य को धारण करते हैं, वैसे **(अधारयतम्)** धारण कीजिये और जैसे ये दोनों **(महोभिः)** बड़े गुणों से **(ओषधीः)** यव आदि ओषधियों को बढ़ाते हैं, वैसे आप दोनों **(वर्धयतम्)** बढ़ावें, **(गाः)** पृथिवियों को तृप्त करते हैं, वैसे आप दोनों **(पिन्वतम्)** तृप्त कीजिये और जैसे ये दोनों **(वृष्टिम्)** वृष्टि को उत्पन्न करते हैं, वैसे **(अव, सृजतम्)** उत्पन्न कीजिये॥३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे राजा और मन्त्रीजनो! आप दोनों प्राण और सूर्य्य के सदृश वर्त्ताव कर पृथिवी के राज्य का पालन कर वैद्य और ओषधियों की वृद्धि कर और वृष्टि की उन्नति करके सबके सुख के लिये वर्त्ताव कीजिये॥३॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**आ वामश्वासः सुयुजो वहन्तु यतरश्मय उप यन्त्वर्वाक्।**

**घृतस्य निर्णिगनु वर्तते वामुप सिन्धवः प्रदिवि क्षरन्ति॥४॥**

**आ। वाम्। अश्वासः। सुऽयुजः। वहन्तु। यतऽरश्मयः। उप। यन्तु। अर्वाक्। घृतस्य। निःऽनिक्। अनु। वर्तते। वाम्। उप। सिन्धवः। प्रऽदिवि। क्षरन्ति॥४॥**

**पदार्थः**-**(आ)** **(वाम्)** युवयोः **(अश्वासः)** अग्न्याद्यास्तुरङ्गा वा **(सुयुजः)** ये सुष्ठु युञ्जते ते **(वहन्तु)** गमयन्तु **(यतरश्मयः)** यता निगृहीता रश्मयः किरणा रज्जवो वा येषान्ते **(उप)** **(यन्तु)** गमयन्तु **(अर्वाक्)** अधस्तात् **(घृतस्य)** उदकस्य **(निर्णिक्)** यो निर्णेनेक्ति स सारथिः **(अनु)** **(वर्त्तते)** **(वाम्)** युवाम् **(उप)** **(सिन्धवः)** नद्यः **(प्रदिवि)** प्रद्योतनात्मकेऽग्नौ **(क्षरन्ति)** वर्षन्ति॥४॥

**अन्वयः**-हे याननिर्मातृचालकौ! ये यथा वां सुयुजो यतरश्मयोऽश्वासो घृतस्यार्वागा वहन्तु यानान्युप यन्तु यथा निर्णिगनु वर्त्तते प्रदिवि सिन्धवो वामुप क्षरन्ति तथा प्रयतेथाम्॥४॥

**भावार्थः**-यदि मनुष्या यानेषु यन्त्रकला रचयित्वाऽधोऽग्निमुपरि जलं संस्थाप्य प्रदीप्य मार्गेषु चालयेयुस्तर्हि पुष्कलाः श्रिय एतान् प्राप्नुयुः॥४॥

**पदार्थः**-हे वाहन के बनाने और चलाने वाले जनो! जो जैसे **(वाम्)** आप दोनों के **(सुयुजः)** उत्तम प्रकार मिलने वाले **(यतरश्मयः)** ग्रहण की गई किरणें वा रस्सियां जिनकी ऐसे **(अश्वासः)** अग्नि आदि पदार्थ वा घोड़े **(घृतस्य)** जल के **(अर्वाक्)** नीचे से **(आ, वहन्तु)** पहुंचावें और यानों को **(उप, यन्तु)** चलावें और **(निर्णिक्)** निर्णय करने वाला सारथी **(अनु, वर्त्तते)** प्रवृत्त होता है और **(प्रदिवि)**



www.9009.co.in

प्रकाशस्वरूप अग्नि में **(सिन्धवः)** नदियां **(वाम्)** आप दोनों को **(उप, क्षरन्ति)** जल किंछती हैं, वैसा प्रयत्न कीजिये॥४॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य वाहनों में यन्त्रकलाओं को रच के नीचे अग्नि और ऊपर जल स्थापित करके और फिर उस अग्नि को प्रदीप्त करके मार्गों में चलावें तो बहुत लक्ष्मियां इनको प्राप्त हों॥४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**अनु॑ श्रु॒ताम॒मतिं॒ वर्ध॑दु॒र्वीं ब॒र्हिरि॑व॒ यजु॑षा॒ रक्ष॑माणा।**

**नम॑स्वन्ता धृतद॒क्षाधि॒ गर्ते॒ मित्रास॑थे॒ वरु॒णेळा॑स्व॒न्तः॥५॥३०॥**

**अनु॑। श्रु॒ताम्। अ॒मति॑म्। वर्ध॑त्। उ॒र्वीम्। ब॒र्हिःऽइ॑व। यजु॑षा। रक्ष॑माणा। नम॑स्वन्ता। धृ॒त॒ऽद॒क्षा। अधि॑ ग॒र्ते॑। मित्र॑। आस॑थे इति॑। व॒रु॒ण॒। इळा॑सु। अ॒न्तरिति॑ अन्तः॥५॥**

**पदार्थः**-**(अनु)** **(श्रुताम्)** **(अमतिम्)** रूपम् **(वर्धत्)** वर्धयेत् **(उर्वीम्)** पृथिवीम् **(बर्हिरिव)** जलमिव। **बर्हिरित्युदकनामसु पठितम्।** (निघं०१.२) **(यजुषा)** सत्संगेन क्रियया वा **(रक्षमाणा)** यौ रक्षतस्तौ **(नमस्वन्ता)** बह्वन्नवन्तौ **(धृतदक्षा)** धृतं दक्षं बलं याभ्यां तौ **(अधि)** उपरिभावे **(गर्त्ते)** गृहे। **गर्त्त इति गृहनामसु पठितम्।** (निघं०३.४) **(मित्र)** **(आसाथे)** **(वरुण)** **(इळासु)** वाक्षु **(अन्तः)** मध्ये॥५॥

**अन्वयः**-हे मित्र वरुण! धृतदक्षा बर्हिरिव यजुषोर्वी रक्षमाणा नमस्वन्तेळास्वन्तर्गर्ते युवामासाथे सोऽनु श्रुताममतिमधि वर्धत् तान् वयं परिचरेम॥५॥

**भावार्थः**-हे विद्वांसो! यथा प्राणोदानादयो वायवः सर्वं जगद्रक्षन्ति तथा भवन्तो रक्षन्तु॥५॥

**पदार्थः**-हे **(मित्र)** प्राण के सदृश **(वरुण)** श्रेष्ठ **(धृतदक्षा)** धारण किया बल जिन्होंने वे **(बर्हिरिव)** जल के सदृश **(यजुषा)** सत्संग वा क्रिया से **(उर्वीम्)** पृथिवी की **(रक्षमाणा)** रक्षा करते हुए **(नमस्वन्ता)** बहुत अन्न वाले **(इळासु)** वाणियों में और **(अन्तः)** मध्य **(गर्त्ते)** गृह में आप दोनों **(आसाथे)** वर्त्तमान हैं और वह **(अनु, श्रुताम्)** पीछे श्रवण किये गये **(अमतिम्)** रूप को **(अधि)** ऊपर को **(वर्धत्)** बढ़ावे, उनकी हम लोग परिचर्य्या करें॥५॥

**भावार्थः**-हे विद्वानो! जैसे प्राण और उदान आदि पवन सब जगत् की रक्षा करते हैं, वैसे आप लोग रक्षा करें॥५॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**अक्र॑विहस्ता सु॒कृते॑ पर॒स्पा यं त्रासा॑थे वरु॒णेळा॑स्व॒न्तः।**

**राजा॑ना क्ष॒त्रमहृ॑णीयमाना स॒हस्र॑स्थूणं बिभृथः स॒ह द्वौ॥६॥**



www.9009.co.in

अक्रविऽहस्ता। सुऽकृते। परःऽपा। यम्। त्रासाथे इति। वरुणा। इळासु। अन्तरिति अन्तः। राजाना। क्षत्रम्। अहृणीयमाना। सहस्रऽस्थूणम्। बिभृथः। सह। द्वौ॥६॥

**पदार्थः-(अक्रविहस्ता)** अहिंसाहस्तौ दानशीलहस्तौ वा **(सुकृते)** धर्म्ये कर्मणि **(परस्पा)** यौ परां पातो रक्षतस्तौ **(यम्)** **(त्रासाथे)** भयं दद्यातम् **(वरुणा)** अतिश्रेष्ठौ **(इळासु)** पृथिवीषु **(अन्तः)** मध्ये **(राजाना)** राजमानौ **(क्षत्रम्)** राज्यं धनं वा **(अहृणीयमाना)** क्रोधरहिताचरणौ सन्तौ **(सहस्रस्थूणम्)** सहस्रमसंख्या वा स्थूणा यस्मिंस्तज्जगत् राज्यं यानं वा **(बिभृथः)** धरथः **(सह)** सार्धम् **(द्वौ)**॥६॥

**अन्वयः**-हे वरुणा सभासेनेशौ राजामात्यौ! वायुसूर्य्यवदक्रविहस्ता परस्पा राजाना क्षत्रमहृणीयमाना द्वौ युवामिळास्वन्तः सुकृते वर्त्तमानौ सह यं त्रासाथे तं सहस्रस्थूणं बिभृथः॥६॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे राजामात्या! भवन्तः स्वयं धर्मात्मानो भूत्वा सहस्रशाखस्य राज्यस्य रक्षणाय दुष्टान् दण्डयित्वा श्रेष्ठान् सत्कृत्य यशस्विनो भवन्तु॥६॥

**पदार्थः**-हे **(वरुणा)** अति श्रेष्ठ सभा और सेना के स्वामी राजा और मन्त्री जनो! वायु और सूर्य के सदृश **(अक्रविहस्ता)** नहीं हिंसा करने वाले हस्त जिनके वा दानशील हस्त जिनके वे **(परस्पा)** दूसरों की रक्षा करने वाले **(राजाना)** प्रकाशमान और **(क्षत्रम्)** राज्य वा धन को **(अहृणीयमाना)** क्रोध से रहित आचरण करते हुए **(द्वौ)** दोनों आप **(इळासु)** पृथिवियों के **(अन्तः)** मध्य में **(सुकृते)** धर्मयुक्त काम में वर्त्तमान **(सह)** साथ **(यम्)** जिसको **(त्रासाथे)** भय देवें उस **(सहस्रस्थूणम्)** सहस्र वा असंख्य थूनी वाले जगत्, राज्य वा वाहन को **(बिभृथः)** धारण करो॥६॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे राजा और मन्त्रीजन! आप स्वयं धर्मात्मा होकर सहस्र शाखा जिसकी ऐसे राज्य के रक्षण के लिये दुष्टों को दण्ड देकर और श्रेष्ठों का सत्कार करके यशस्वी होवें॥६॥

**पुनः प्रसङ्गाद्विद्युद्विद्याविषयमाह॥**

फिर प्रसङ्ग से विद्युद्विद्या विषय को कहते हैं॥

**हिरण्यनिर्णिगयो अस्य स्थूणा वि भ्राजते दिव्य१श्वाजनीव।**

**भद्रे क्षेत्रे निमिता तिल्विले वा सनेम मध्वो अधिगर्त्यस्य॥७॥**

**हिरण्यऽनिर्निक्। अयः। अस्य। स्थूणा। वि। भ्राजते। दिवि। अश्वाजनीऽइव। भद्रे। क्षेत्रे। निऽमिता। तिल्विले। वा। सनेम। मध्वः। अधिऽगर्त्यस्य॥७॥**

**पदार्थः-(हिरण्यनिर्णिक्)** यः पृथिव्या हिरण्यमग्नेस्तेजश्च नितरां नेनेक्ति **(अयः)** योऽयते गच्छति सः **(अस्य)** राज्यस्य **(स्थूणा)** स्तम्भ इव दृढा नीतिः **(वि)** **(भ्राजते)** प्रकाशते **(दिवि)** प्रकाशे **(अश्वाजनीव)** विद्युदिव **(भद्रे)** कल्याणकरे **(क्षेत्रे)** क्षियन्ति निवसन्ति यस्मिन् पुण्ये कर्म्मणि तत्र



www.9009.co.in

**(निमिता)** नितरां मिता **(तिल्विले)** स्नेहस्थाने **(वा)** **(सनेम)** विभजेम **(मध्व:)** मधुरादिपदार्थस्य **(अधिगर्त्यस्य)** अधिकसुन्दरे गर्त्ते गृहे भवस्य॥७॥

**अन्वय:**-अत्र यो हिरण्यनिर्णिगयोऽस्या जगतो मध्ये दिवि भद्रे तिल्विले क्षेत्रे वि भ्राजते या अश्वाजनीव निमिता वा स्थूणा वि भ्राजते तं तां चाधिगर्त्यस्य मध्वो मध्ये वयं सनेम॥७॥

**भावार्थ:**-अत्रोपमावाचकलुप्तोपमालङ्कारौ। ये मनुष्या दिव्ये व्यवहारे विराजमानां विद्युदादिविद्यां गृहीतवन्त: सन्तो गृहकृत्ये यथावत् न्यायं कुर्वन्ति विभज्य विभागञ्च दत्त्वा कृतकृत्या भवन्ति त एव नीतिमन्तो भवन्ति॥७॥

**पदार्थ:**-इस संसार में जो **(हिरण्यनिर्णिक्)** पृथिवी के सुवर्ण और अग्नि के तेज को अत्यन्त निश्चय करने और **(अय:)** जाने वाला **(अस्य)** इस राज्य और जगत् के मध्य में **(दिवि)** प्रकाश में **(भद्रे)** कल्याणकारक **(तिल्विले)** स्नेह के स्थान में **(क्षेत्रे)** निवास करते हैं जिस पुण्य कर्म्म में उसमें **(वि, भ्राजते)** विशेष प्रकाशित होता है और **(अश्वाजनीव)** बिजुली के सदृश **(निमिता)** अत्यन्त मापी अर्थात् जांची गई **(वा)** अथवा **(स्थूणा)** खंभे के सदृश दृढनीति विशेष प्रकाशित होती है उस और उसको **(अधिगर्त्यस्य)** अधिक सुन्दर गृह में हुए **(मध्व:)** मधुरादि पदार्थ के मध्य में हम लोग **(सनेम)** विभाग करें॥७॥

**भावार्थ:**-इस मन्त्र में उपमा और वाचकलुप्तोपमालङ्कार हैं। जो मनुष्य श्रेष्ठ व्यवहार में विराजमान बिजुली आदि की विद्या को ग्रहण करते हुए गृह के कृत्य में यथावत् न्याय को करते हैं, विभाग कर और विभाग देकर कृत्यकृत्य होते हैं, वे नीति वाले होते हैं॥७॥

**पुनर्मित्रावरुणगुणानाह॥**

फिर मित्रावरुण के गुणों को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**हिर॑ण्यरूपमु॒षसो॒ व्यु॑ष्टा॒वय॑:स्थूण॒मुदि॑ता॒ सूर्य॑स्य।**

**आ रो॑हथो वरुण मित्र॒ गर्त॒मत॑श्चक्षाथे॒ अदि॑तिं॒ दिति॑ं च॥८॥**

**हिर॑ण्यऽरूपम्। उ॒षस॑:। विऽउ॑ष्टौ। अय॑:ऽस्थूणम्। उत्ऽइ॑ता। सूर्य॑स्य। आ। रो॒ह॒थ॒:। व॒रु॒ण॒। मि॒त्र॒। गर्त॑म्। अत॑:। च॒क्षा॒थे॒ इति॑। अदि॑तिम्। दिति॑म्। च॒॥८॥**

**पदार्थ:**-**(हिरण्यरूपम्)** तेज:स्वरूपम् **(उषस:)** प्रातर्वेलाया: **(व्युष्टौ)** विशेषदाहे निवासे वा **(अय:स्थूणम्)** सुवर्णस्तम्भमिव **(उदिता)** उदये **(सूर्य्यस्य)** **(आ)** **(रोहथ:)** **(वरुण, मित्र)** प्राणोदानाविव वर्त्तमानौ राजामात्यौ **(गर्त्तम्)** गृहम् **(अत:)** कारणात् **(चक्षाथे)** उपदिशथ: **(अदितिम्)** अविनाशिकारणम् **(दितिम्)** नाशवत्कार्य्यम् **(च)**॥८॥

**अन्वय:**-हे मित्रवरुणद्वर्त्तमानौ राजामात्यौ! युवां यथा सूर्य्यस्योदितोषसो व्युष्टौ हिरण्यरूपमय:स्थूणमारोहथोऽतो गर्त्तमधिष्ठायाऽदितिं दितिं च चक्षाथे तो वयं सङ्गच्छेमहि॥८॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यथा सूर्य्योदयेऽन्धकारो निवर्त्तते प्रकाशः प्रवर्त्तते तथैव कार्य्यकारणात्मविद्याविदो राजाऽमात्या मित्रवद्वर्त्तित्वा दृढं न्यायं प्रचारयेयुः॥८॥

**पदार्थः**-हे **(मित्र)** **(वरुण)** प्राण और उदान वायु के सदृश वर्त्तमान राजा और मन्त्रीजनो! आप दोनों जैसे **(सूर्य्यस्य)** सूर्य्य के **(उदिता)** उदय में और **(उषसः)** प्रातःकाल के **(व्युष्टौ)** विशेष दाह वा निवास में **(अयःस्थूणम्)** सुवर्ण के खम्भे के सदृश **(हिरण्यरूपम्)** तेजःस्वरूप को **(आ, रोहथः)** आरोहण करते हैं, **(अतः)** इस कारण से **(गर्त्तम्)** गृह को अधिष्ठित हो के **(अदितिम्)** नहीं नष्ट होने वाले कारण **(दितिम्, च)** और नाश होने वाले कार्य्य का **(चक्षाथे)** उपदेश करते हैं, उन दोनों को हम लोग मिलें॥८॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे सूर्य्य के उदय होने पर अन्धकार निवृत्त होता और प्रकाश होता है, वैसे ही कार्य्य और कारणरूप विद्या के जानने वाले राजा और मन्त्रीजन मित्र के सदृश वर्त्ताव करके दृढ़ न्याय का प्रचार करावें॥८॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**यद् बंहिष्ठं नातिविधे सुदानू अच्छिद्रं शर्म भुवनस्य गोपा।**

**तेन नो मित्रावरुणावविष्टं सिषासन्तो जिगीवांसः स्याम॥९॥३१॥३॥**

**यत्। बंहिष्ठम्। न। अतिऽविधे। सुदानू इति सुऽदानू। अच्छिद्रम्। शर्म। भुवनस्य। गोपा। तेन। नः। मित्रावरुणौ। अविष्टम्। सिसासन्तः। जिगीवांसः। स्याम॥९॥**

**पदार्थः**-**(यत्)** **(बंहिष्ठम्)** अतिशयेन वृद्धम् **(न)** निषेधे **(अतिविधे)** अतिवेद्धुं योग्यौ **(सुदानू)** उत्तमदानकर्त्तारौ **(अच्छिद्रम्)** छिद्ररहितम् **(शर्म)** गृहम् **(भुवनस्य)** अखिलसंसारस्य **(गोपा)** रक्षकौ **(तेन)** **(नः)** अस्मान् **(मित्रावरुणौ)** प्राणोदानवद्वर्त्तमानौ राजामात्यौ **(अविष्टम्)** व्याप्नुतम् **(सिषासन्तः)** विभजन्तः **(जिगीवांसः)** शत्रुधनानि जेतुमिच्छन्तः **(स्याम)** भवेम॥९॥

**अन्वयः**-हे सुदानू भुवनस्य गोपा मित्रावरुणौ! युवां यथा नाऽतिविधे यद्बंहिष्ठमच्छिद्रं शर्म प्राप्नुतं तेन नोऽविष्टं येन वयं सिषासन्तो जिगीवांसः स्याम॥९॥

**भावार्थः**-विद्वांसोऽत्युत्तमानि गृहाणि निर्म्माय तत्र विचारं कृत्वा विजयं विद्यां क्रियां च प्राप्नुवन्ति॥९॥

अत्र सूर्यमित्रावरुणराजगुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्य्याणां श्रीमद्विरजानन्दसरस्वतीस्वामिनां शिष्येण श्रीमद्दयानन्दसरस्वतीस्वामिना विरचिते सुप्रमाणयुक्त ऋग्वेदभाष्ये चतुर्थोऽष्टके तृतीयोध्याय एकत्रिंशो वर्गः पञ्चमे मण्डले द्विषष्टितमं सूक्तं च समाप्तम्॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-हे **(सुदानू)** उत्तम दान करने वाले **(भुवनस्य)** सम्पूर्ण संसार के **(गोपा)** रक्षक **(मित्रावरुणौ)** प्राण और उदान के सदृश वर्त्तमान राजा और मन्त्रीजनो! आप दोनों जैसे **(न, अतिविधे)** अतिवेधन करने के अयोग्य **(यत्)** जिस **(बंहिष्ठम्)** अत्यन्त वृद्ध **(अच्छिद्रम्)** छिद्ररहित **(शर्म)** गृह को प्राप्त हूजिये **(तेन)** इससे **(नः)** हम लोगों को **(अविष्टम्)** व्याप्त हूजिये जिससे हम लोग **(सिषासन्तः)** विभाग करते हुए **(जिगीवांसः)** शत्रुओं के धनों को जीतने की इच्छा करने वाले **(स्याम)** होवें॥९॥

**भावार्थः**-विद्वान् जन अति उत्तम गृहों को रचकर और वहाँ विचार करके विजय, विद्या और क्रिया को प्राप्त होते हैं॥९॥

इस सूक्त में सूर्य, प्राण, उदान और राजा के गुण-वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्तार्थ के साथ संगति जाननी चाहिये॥

**यह श्रीत्परमहंसपरिव्राजकाचार्य श्रमद्विरजानन्दसरस्वती स्वामाजी के शिष्य श्रीमद्दयानन्दसरस्वतीस्वामिविरचित उत्तम प्रमाणयुक्त ऋग्वेदभाष्य में चतुर्थाष्टक में तीसरा अध्याय इकतीसवां वर्ग और पञ्चम मण्डल में बासठवाँ सूक्त समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

अथ चतुर्थाऽध्यायारम्भः॥

**विश्वा॑नि देव सवितर्दुरि॒तानि॒ परा॑ सुव। यद्भ॒द्रं तन्न॒ आ सु॑व॥ ऋ०५.८२.५॥**

**अथ सप्तर्चस्य त्रिषष्टितमस्य सूक्तस्यार्चनाना आत्रेय ऋषिः। मित्रावरुणौ देवते। १, २, ४, ७ निचृज्जगती। ३, ५, ६ जगती छन्दः। निषादः स्वरः॥**

***अथ मित्रावरुणविद्वद्विषयमाह॥***

अब चतुर्थाध्याय का आरम्भ है और पञ्चम मण्डल में सात ऋचा वाले त्रेसठवें सूक्त का आरम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में मित्रावरुण विद्वद्विषय को कहते हैं॥

**ऋत॑स्य गोपा॒वधि॑ तिष्ठथो॒ रथं॒ सत्य॑धर्माणा पर॒मे व्यो॑मनि।**

**यमत्र॑ मित्रावरु॒णाव॑थो यु॒वं तस्मै॑ वृ॒ष्टिर्मधु॑मत्पिन्वते दि॒वः॥ १॥**

**ऋत॑स्य। गो॒पौ॑। अधि॑। ति॒ष्ठ॒थः॒। रथ॑म्। सत्य॑ऽधर्माणा। प॒र॒मे। विऽओ॑मानि। यम्। अत्र॑। मि॒त्रा॒व॒रु॒णा॒। अव॑थः। यु॒वम्। तस्मै॑। वृ॒ष्टिः। मधु॑ऽमत्। पि॒न्व॒ते॒। दि॒वः॥ १॥**

**पदार्थः**-(**ऋतस्य**) सत्यस्य (**गोपौ**) रक्षकौ राजामात्यौ (**अधि**) (**तिष्ठथः**) (**रथम्**) (**सत्यधर्माणा**) सत्यो धर्मो ययोस्तौ (**परमे**) प्रकृष्टे (**व्योमनि**) व्योमवत्प्रकाशिते व्यापके परमात्मनि (**यम्**) (**अत्र**) राज्ये (**मित्रावरुणा**) (**अवथः**) (**युवम्**) युवाम् (**तस्मै**) (**वृष्टिः**) वर्षाः (**मधुमत्**) मधुरादिगुणयुक्तम् (**पिन्वते**) सिञ्चति (**दिवः**) अन्तरिक्षात्॥ १॥

**अन्वयः**-हे ऋतस्य गोपौ सत्यधर्माणा मित्रावरुणा राजामात्यौ! युवं परमे व्योमनि स्थित्वा रथमधि तिष्ठथोऽत्र यमवथस्तस्मै दिवो वृष्टिर्मधुमत्पिन्वते॥ १॥

**भावार्थः**-यत्र धार्मिका विद्वांसः पुत्रमिव प्रजां पालयितारो राजादयो भवन्ति तत्र काले वृष्टिः काले मृत्युश्च जायते॥ १॥

**पदार्थः**-हे (**ऋतस्य**) ऋत अर्थात् सत्य की (**गोपौ**) रक्षा करने वाले और (**सत्यधर्माणा**) सत्य है धर्म जिनका ऐसे (**मित्रावरुणा**) प्राण और उदान वायु के सदृश वर्त्तमान राजा और अमात्य जनो! (**युवम्**) आप दोनों (**परमे**) अति उत्तम (**व्योमनि**) आकाश के सदृश प्रकाशित व्यापक परमात्मा में स्थित होकर (**रथम्**) वाहन पर (**अधि, तिष्ठथः**) वर्त्तमान हूजिये और (**अत्र**) इस राज्य में (**यम्**) जिसकी (**अवथः**) रक्षा करते हैं (**तस्मै**) उसके लिये (**दिवः**) अन्तरिक्ष से (**वृष्टिः**) वर्षा (**मधुमत्**) मधुर आदि श्रेष्ठ गुणों से युक्त (**पिन्वते**) सिञ्चन करती है॥ १॥



www.9009.co.in

**भावार्थ:**-जहाँ धार्मिक विद्वान् पुत्र की जैसे वैसे प्रजा की पालना करने वाला राजा आदि होते हैं, वहाँ उचित काल में वृष्टि और उचित काल में मृत्यु होता है॥१॥

**पुनर्मित्रावरुणवाच्यराजामात्यविषयमाह॥**

फिर मित्रावरुणवाच्य राजा अमात्य विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**सम्राजा॑वस्य भुव॑नस्य राजथो मित्रा॑वरुणा वि॒दथे॑ स्व॒र्दृशा॑।**

**वृष्टिं वां राधो॑ अमृत॒त्वमी॑महे द्यावा॑पृथि॒वी वि च॑रन्ति त॒न्यव॑:॥२॥**

**स॒म्ऽराजौ॑। अ॒स्य। भुव॑नस्य। रा॒ज॒थ॒:। मित्रा॑वरुणा। वि॒दथे॑। स्व॒:ऽदृशा॑। वृ॒ष्टिम्। वा॒म्। राध॑:। अ॒मृ॒त॒ऽत्वम्। ई॒म॒हे॒। द्यावा॑पृथि॒वी इति॑। वि। च॒र॒न्ति॒। त॒न्यव॑:॥२॥**

**पदार्थ:**-**(सम्राजौ)** यौ सम्यग्राजेते तौ **(अस्य)** **(भुवनस्य)** जगतो मध्ये **(राजथ:)** प्रकाशेथे **(मित्रावरुणा)** वायुसूर्याविव **(विदथे)** सङ्ग्रामे **(स्वर्दृशा)** यौ स्व: सुखं दर्शयतस्तौ **(वृष्टिम्)** **(वाम्)** युवाभ्याम् **(राध:)** धनम् **(अमृतत्वम्)** उदकस्य भावम् **(ईमहे)** याचामहे **(द्यावापृथिवी)** प्रकाशभूमी **(वि)** विविधे **(चरन्ति)** गच्छन्ति **(तन्यव:)** विद्युत:॥२॥

**अन्वय:**-हे मित्रावरुणा स्वर्दृशा सम्राजौ राजामात्यौ! युवां यथा तन्यवो द्यावापृथिवी वि चरन्ति वृष्टिं जनयन्ति तथाऽस्य भुवनस्य मध्ये विदथे राजथो वयं वा राधोऽमृतत्वं चेमहे॥२॥

**भावार्थ:**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कार:। यथा वायुविद्युतौ वृष्टिं कृत्वा सर्वान् मनुष्यान् धनधान्याढ्यान् कुरुतस्तथा धार्मिकौ राजामात्यौ प्रजा ऐश्वर्य्ययुक्ता: कुर्याताम्॥२॥

**पदार्थ:**-हे **(मित्रावरुणा)** वायु और सूर्य्य के सदृश वर्त्तमान **(स्वर्दृशा)** सुख को दिखाने और **(सम्राजौ)** उत्तम प्रकार शोभित होने वाले राजा और मन्त्रीजनो! आप जैसे **(तन्यव:)** बिजुलियां **(द्यावापृथिवी)** प्रकाश और भूमि को **(वि, चरन्ति)** विचरती और **(वृष्टिम्)** वृष्टि को उत्पन्न करती हैं, वैसे **(अस्य)** इस **(भुवनस्य)** संसार के मध्य **(विदथे)** सङ्ग्राम में **(राजथ:)** प्रकाशित होते हैं, हम लोग **(वाम्)** आप दोनों से **(राय:)** धन और **(अमृतत्वम्)** जल होने की **(ईमहे)** याचना करते हैं॥२॥

**भावार्थ:**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे वायु और बिजुली वर्षा करके सब मनुष्यों को धन और धान्य से युक्त करते हैं, वैसे धार्मिक राजा और मन्त्री प्रजाओं को ऐश्वर्य्ययुक्त करें॥२॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**स॒म्राजा॑ उ॒ग्रा वृ॑ष॒भा दि॒वस्पती॑ पृथि॒व्या मि॒त्रावरु॑णा॒ विच॑र्षणी।**

**चि॒त्रेभि॑र॒भ्रैरुप॑ तिष्ठथो॒ रवं॒ द्यां व॑र्षयथो॒ असु॑रस्य मा॒यया॑॥३॥**



www.9009.co.in

सम्ऽराजौ। उग्रा। वृषभा। दिवः। पती इति। पृथिव्याः। मित्रावरुणा। विचर्षणी इति विऽचर्षणी। चित्रेभिः। अभ्रैः। उप। तिष्ठथः। रवम्। द्याम्। वर्षयथः। असुरस्य। मायया॥३॥

**पदार्थः**-(**सम्राजौ**) यौ सम्यक् राजेते तौ (**उग्रा**) तेजस्विनौ (**वृषभा**) बलिष्ठौ वृष्टिहेतू (**दिवः**) प्रकाशस्य (**पती**) पालयितारौ (**पृथिव्याः**) भूमेः (**मित्रावरुणा**) वायुसवितारौ (**विचर्षणी**) प्रकाशकौ (**चित्रेभिः**) अद्भुतैः (**अभ्रैः**) घनैः (**उप**) (**तिष्ठथः**) समीपस्थौ भवथः (**रवम्**) शब्दम् (**द्याम्**) प्रकाशम् (**वर्षयथः**) (**असुरस्य**) मेघस्य (**मायया**) आच्छादनादिना प्रज्ञया वा॥३॥

**अन्वयः**-हे राजामात्यौ! यथा वृषभा पृथिव्या दिवस्पती विचर्षणी मित्रावरुणा चित्रेभिरभ्रैः सहोप तिष्ठथोऽसुरस्य मायया रवं द्यां कुरुथस्तथोग्रा सम्राजौ युवां प्रजा उपतिष्ठथः कामैः प्रजाः वर्षयथः॥३॥

**भावार्थः**-हे प्रजाजना! ये राजाऽमात्यादयो न्यायविनयाभ्यां प्रकाशमाना दुष्टेषु तेजस्विनः कठोरदण्डप्रदाः सूर्य्यवायुवत्कामवर्षकाः सन्ति ते यशस्विनः प्रजाप्रियाश्च जायन्ते॥३॥

**पदार्थः**-हे राजा और मन्त्रीजनो! जैसे (**वृषभा**) बलिष्ठ वृष्टि के कारण (**पृथिव्याः**) भूमि के और (**दिवः**) प्रकाश के (**पती**) पालन करने वाले (**विचर्षणी**) प्रकाशक (**मित्रावरुणा**) वायु और सूर्य्य (**चित्रेभिः**) अद्भुत (**अभ्रैः**) मेघों के साथ (**उप, तिष्ठथः**) समीप में स्थित होते हैं और (**असुरस्य**) मेघ के (**मायया**) आच्छादन आदि से वा बुद्धि से (**रवम्**) शब्द को और (**द्याम्**) प्रकाश को करते हैं, वैसे (**उग्रा**) तेजस्वी (**सम्राजौ**) उत्तम प्रकार शोभित होने वाले आप दोनों प्रजाओं के समीप स्थित होते हैं, और कामनाओं से प्रजाओं को (**वर्षयथः**) वृष्टियुक्त करते हैं॥३॥

**भावार्थः**-हे प्रजाजनो! जो राजा और मन्त्री आदि जन न्याय और विनय से प्रकाशमान, दुष्टों में तेजस्वी और कठोर दण्ड के देने वाले, सूर्य्य और वायु के सदृश मनोरथों की वृष्टि करते वाले हैं, वे यशस्वी और प्रजाओं के प्रिय होते हैं॥३॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**माया वां मित्रावरुणा दिवि श्रिता सूर्यो ज्योतिश्चरति चित्रमायुधम्।**
**तमभ्रेण वृष्ट्या गूहथो दिवि पर्जन्य द्रप्सा मधुमन्त ईरते॥४॥**

माया। वाम्। मित्रावरुणा। दिवि। श्रिता। सूर्यः। ज्योतिः। चरति। चित्रम्। आयुधम्। तम्। अभ्रेण। वृष्ट्या। गूहथः। दिवि। पर्जन्य। द्रप्साः। मधुऽमन्तः। ईरते॥४॥

**पदार्थः**-(**माया**) प्रज्ञा (**वाम्**) युवयोः (**मित्रावरुणा**) प्राणोदानवद्राजामात्यौ (**दिवि**) विद्युति (**श्रिता**) (**सूर्य्यः**) सवितेव (**ज्योतिः**) प्रकाशस्वरूपम् (**चरति**) गच्छति (**चित्रम्**) अद्भुतम् (**आयुधम्**) आयुध्यन्ति येन तत् (**तम्**) (**अभ्रेण**) घनेन (**वृष्ट्या**) (**गूहथः**) संवृणुथः (**दिवि**) सूर्य्यप्रकाशे (**पर्जन्य**)



www.9009.co.in

मेघ इव वर्त्तमान (**द्रप्सा:**) विमोहकारका: (**मधुमन्त:**) बहूनि मधुराणि कर्माणि विद्यन्ते येषान्ते (**ईरते**) गच्छन्ति कम्पन्ते वा॥४॥

**अन्वय:**-हे मित्रावरुणा! या वां दिवि श्रिता माया सूर्य्यइव यं ज्योतिश्चित्रमायुधं चरति तमभ्रेण वृष्ट्या गूहथो हे पर्जन्य! दिवि मधुमन्तो द्रप्सा ईरते तथा यूयं विजानीत॥४॥

**भावार्थ:**-ये राजाऽमात्या: सूर्य्यचन्द्रवत्तीव्रशान्तस्वभावा मेधाविनो वृष्टिवत्प्रजा: पालयन्ति ते सर्वदा सुखमुन्नयन्ति॥४॥

**पदार्थ:**-हे (**मित्रावरुणा**) प्राण और उदान के सदृश वर्त्तमान राजा और मन्त्रीजनो! (**वाम्**) आप दोनों की (**दिवि**) बिजुली में (**श्रिता**) आश्रित (**माया**) बुद्धि (**सूर्य्य:**) सूर्य्य के सदृश जिस (**ज्योति:**) प्रकाश रूप (**चित्रम्**) अद्भुत (**आयुधम्**) युद्ध करते हैं जिससे उस शस्त्र को (**चरति**) प्राप्त होती है (**तम्**) उसको (**अभ्रेण**) मेघ से और (**वृष्ट्या**) वृष्टि से (**गूहथ:**) घेरते हो, हे (**पर्जन्य**) मेघ के समान वर्तमान जन! (**दिवि**) सूर्य्य के प्रकाश में (**मधुमन्त:**) बहुत मधुर कर्म्म विद्यमान जिनके वे (**द्रप्सा:**) विमोह के करने वाले (**ईरते**) चलते वा कंपते हैं, वैसे आप जानिये॥४॥

**भावार्थ:**-जो राजा और मन्त्री जन सूर्य्य और चन्द्रमा के सदृश तीव्र और शान्तस्वभाव वाले, बुद्धिमान्, वृष्टि के सदृश प्रजाओं का पालन करते हैं, वे सब काल में सुख की वृद्धि करते हैं॥४॥

**अथ मित्रावरुणवाच्यशिल्पविषयमाह॥**

अब मित्रावरुणवाच्य शिल्पविषय को कहते हैं॥

**रथं युञ्जते मरुतः शुभे सुखं शूरो न मित्रावरुणा गविष्टिषु।**

**रजांसि चित्रा वि चरन्ति तन्यवो दिवः सम्राजा पयसा न उक्षतम्॥५॥**

**रथम्। युञ्जते। मरुतः। शुभे। सुऽखम्। शूरः। न। मित्रावरुणा। गोऽइष्टिषु। रजांसि। चित्रा। वि। चरन्ति। तन्यवः। दिवः। सम्ऽराजा। पयसा। नः। उक्षतम्॥५॥**

**पदार्थ:**-(**रथम्**) विमानादियानम् (**युञ्जते**) (**मरुत:**) शिल्पिनो मनुष्या: (**शुभे**) कल्याणाय (**सुखम्**) सुखकरम् (**शूर:**) निर्भयो वीर: शत्रुहन्ता (**न**) इव (**मित्रावरुणा**) प्राणोदानाविव यज्ञशिल्पकारिणौ (**गविष्टिषु**) किरणानां सङ्गतिषु (**रजांसि**) लोका: (**चित्रा**) अद्भुतानि (**वि, चरन्ति**) विचलन्ति (**तन्यव:**) विद्युत: (**दिव:**) कामयमानान् (**सम्राजा**) यौ सम्यग् राजेते तौ (**पयसा**) उदकेन (**न:**) अस्मान् (**उक्षतम्**) सिञ्चतम्॥५॥

**अन्वय:**-हे दिव: सम्राजा मित्रावरुणा! ये मरुत: शूरो न शुभे सुखं रथं युञ्जते गविष्टिषु चित्रा रजांसि तन्यवश्च वि चरन्ति तै: पयसा नोऽस्मान् युवामुक्षतम्॥५॥

**भावार्थ:**-अत्रोपमालङ्कार:। हे मनुष्या! ये शूरवत्सुखं रथमधिष्ठाय यथेष्ठे स्थाने विहरन्ति तेऽभीष्टं प्राप्नुवन्ति॥५॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-हे **(दिवः)** कामना करने वालों के प्रति **(सम्राजा)** उत्तम प्रकार शोभित होने वाले **(मित्रावरुणा)** प्राण और उदान वायु के सदृश यज्ञ और शिल्प के करने वालो! जो **(मरुतः)** कारीगर मनुष्य **(शूरः)** भयरहित वीरशत्रु को मारने वाले के **(न)** सदृश **(शुभे)** कल्याण के लिये **(सुखम्)** सुखकारक **(रथम्)** विमान आदि वाहन को **(युञ्जते)** युक्त करते हैं और **(गविष्टिषु)** किरणों की सङ्गतियों में **(चित्रा)** अद्भुत **(रजांसि)** लोक और **(तन्यवः)** बिजुलियां **(वि)** विशेष करके **(चरन्ति)** चलती हैं उनके साथ **(पयसा)** जल से **(नः)** हम लोगों को आप दोनों **(उक्षतम्)** सींचिये॥५॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जो शूरवीर जनों के सदृश सुखकारक रथ पर चढ़कर यथेष्ट स्थान में घूमते हैं, वे अभीष्ट पदार्थ को प्राप्त होते हैं॥५॥

**पुनर्मित्रावरुणवाच्यविद्वद्विषयमाह॥**

फिर मित्रावरुणवाच्य विद्वद्विषय को कहते हैं॥

**वाचं सु मित्रावरुणाविरावतीं पर्जन्यश्चित्रां वदति त्विषीमतीम्।**
**अभ्रा वसत मरुतः सु मायया द्यां वर्षयतमरुणामरेपसम्॥६॥**

**वाचम्। सु। मित्रावरुणौ। इराऽवतीम्। पर्जन्यः। चित्राम्। वदति। त्विषिऽमतीम्। अभ्रा। वसत। मरुतः। सु। मायया। द्याम्। वर्षयतम्। अरुणाम्। अरेपसम्॥६॥**

**पदार्थः**-**(वाचम्)** **(सु)** सुष्ठु **(मित्रावरुणौ)** अध्यापकाऽध्येतारौ **(इरावतीम्)** इरा जलानि विद्यन्ते यस्यास्ताम् **(पर्जन्य)** मेघः **(चित्राम्)** अद्भुताम् **(वदति)** **(त्विषीमतीम्)** प्रशस्तविद्याप्रकाशयुक्ताम् **(अभ्रा)** अभ्राणि **(वसत)** **(मरुतः)** मानवाः **(सु, मायया)** शोभनया प्रज्ञया **(द्याम्)** कामनाम् **(वर्षयतम्)** **(अरुणाम्)** प्राप्तव्याम् **(अरेपसम्)** अनपराधिनीम्॥६॥

**अन्वयः**-हे मित्रावरुणौ! युवां यथा पर्जन्यो वदति तथेरावतीं त्विषीमतीं चित्रां वाचं वदतं यथाऽभ्राऽऽकाशे सन्ति तथैव मरुतः सु मायया सु वसत। हे मित्रावरुणावरुणामरेपसं द्यां युवां वर्षयतम्॥६॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। ये मनुष्या विद्यायुक्तां वाचं प्राप्य पर्जन्य इव कामान् वर्षयन्ति ते प्रज्ञया विदुषः सम्पाद्यानपराधिनः कुर्वन्ति॥६॥

**पदार्थः**-हे **(मित्रावरुणौ)** पढ़ाने और पढ़ने वाले जनो! आप दोनों जैसे **(पर्जन्यः)** मेघ **(वदति)** शब्द करता है, वैसे **(इरावतीम्)** जल विद्यमान जिसमें उस **(त्विषीमतीम्)** अच्छी विद्याओं के प्रकाश से युक्त **(चित्राम्)** अद्भुत **(वाचम्)** वाणी को कहो जैसे **(अभ्रा)** मेघ प्रकाश में हैं, वैसे ही **(मरुतः)** मनुष्य **(सु, मायया)** उत्तम बुद्धि से **(सु)** उत्तम प्रकार **(वसत)** बसें और हे मित्रावरुण! **(अरुणाम्)** प्राप्त होने योग्य **(अरेपसम्)** अपराधरहित **(द्याम्)** कामना की आप लोग **(वर्षयतम्)** वृष्टि करिये॥६॥



www.9009.co.in

**भावार्थ:**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो मनुष्य विद्या से युक्त वाणी को प्राप्त होकर मेघ के सदृश मनोरथों की वृष्टि करते हैं, वे बुद्धि से विद्वान् करके [=बनाके] अपराध रहित करते हैं॥६॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**धर्म॑णा मि॒त्रावरुणा विपश्चिता व्र॒ता र॑क्षेथे॒ असु॑रस्य मा॒यया॑।**

**ऋ॒तेन॒ विश्वं॒ भुव॑नं॒ वि रा॑जथ॒: सूर्य॒मा ध॑त्थो दि॒वि चित्र्यं॒ रथ॑म्॥७॥१॥**

**धर्म॑णा। मि॒त्रा॒व॒रु॒णा॒। वि॒प॒:ऽचि॒ता॒। व्र॒ता। र॒क्षे॒थे॒ इति॑। असु॑रस्य। मा॒यया॑। ऋ॒तेन॑। विश्व॑म्। भुव॑नम्। वि। रा॒ज॒थ॒:। सूर्य॑म्। आ। ध॒त्थ॒:। दि॒वि। चित्र्य॑म्। रथ॑म्॥७॥**

**पदार्थ:**-(**धर्मणा**) (**मित्रावरुणा**) प्राणोदानाविव (**विपश्चिता**) विद्वांसौ (**व्रता**) सत्यभाषणादीनि व्रतानि (**रक्षेथे**) (**असुरस्य**) मेघस्य (**मायया**) आडम्बरेण (**ऋतेन**) यथार्थेन (**विश्वम्**) विशन्ति परस्मिंस्तत्सर्वम् (**भुवनम्**) भवन्ति यस्मिन् (**वि, राजथ:**) विशेषेण प्रकाशेथे (**सूर्यम्**) (**आ**) (**धत्थ:**) (**दिवि**) प्रकाशे (**चित्र्यम्**) अद्भुते भवम् (**रथम्**) यानम्॥७॥

**अन्वय:**-हे विपश्चिता मित्रावरुणा! यतो युवामसुरस्य मायया धर्मणा व्रता रक्षेथे ऋतेन विश्वं भुवनं वि राजथो दिवि सूर्यमिव चित्र्यं रथमा धत्थस्तस्मात्सत्कर्त्तव्यौ भवथ:॥७॥

**भावार्थ:**-ये मनुष्या धर्म्मस्य सत्यभाषणादीनि व्रतानि कर्म्माणि वा कुर्वन्ति ते सूर्य्य इव सत्येन प्रकाशिता भवन्तीति॥७॥

अत्र मित्रावरुणविद्वद्गुणावर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति त्रिषष्टितमं सूक्तं प्रथमो वर्गश्च समाप्त:॥**

**पदार्थ:**-हे (**विपश्चिता:**) विद्वान् (**मित्रावरुणा**) प्राण और उदान वायु के सदृश वर्त्तमानो! जिससे आप दोनों (**असुरस्य**) मेघ के (**मायया**) आडम्बर से और (**धर्मणा**) धर्म से (**व्रता**) सत्यभाषण आदि व्रतों की (**रक्षेथे**) रक्षा करते हैं तथा (**ऋतेन**) यथार्थ से (**विश्वम्**) प्रविष्ट होते हैं (**भुवनम्**) वा होते हैं जिसमें उस सम्पूर्ण जगत् को (**वि, राजथ:**) विशेष करके प्रकाशित करते हैं और (**दिवि**) प्रकाश में (**सूर्यम्**) सूर्य के सदृश (**चित्र्यम्**) अद्भुत में हुए (**रथम्**) वाहन को (**आ, धत्थ:**) धारण करते हैं, इससे सत्कार करने के योग्य होते हैं॥७॥

**भावार्थ:**-जो मनुष्य धर्म सम्बन्धी सत्यभाषण आदि व्रत वा कर्मों को करते हैं, वे सूर्य के सदृश सत्य से प्रकाशित होते हैं॥७॥

इस सूक्त में मित्रावरुणा और विद्वानों के गुणों का वर्णन होने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पिछले सूक्तार्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥



www.9009.co.in

यह त्रेसठवां सूक्त और पहिला वर्ग समाप्त हुआ।।



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

**अथ सप्तर्चस्य चतुःषष्टितमस्य सूक्तस्य अर्चनाना ऋषिः। मित्रावरुणौ देवते। १, २ विराडनुष्टुप्। ६ निचृदनुष्टुप् छन्दः। गान्धारः स्वरः। ३, ५ भुरिगुष्णिक्। ४ उष्णिक् छन्दः। ऋषभः स्वरः। ७ निचृत्पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः॥**

*अथ मित्रावरुणपदवाच्यविद्वद्गुणानाह॥*

अब सात ऋचा वाले चौसठवें सूक्त का प्रारम्भ है, इसके प्रथम मन्त्र में मित्रावरुण पदवाच्य विद्वानों के गुणों को कहते हैं॥

**वरुणं वो रिशादसमृचा मित्रं हवामहे।**

**परि व्रजेव बाह्वोर्जगन्वांसा स्वर्णरम्॥१॥**

**वरुणम्। वः। रिशादसम्। ऋचा। मित्रम्। हवामहे। परि। व्रजाऽइव। बाह्वोः। जगन्वांसा। स्वःऽनरम्॥१॥**

**पदार्थः-(वरुणम्)** उत्तमं विद्वांसम् **(वः)** युष्मान् **(रिशादसम्)** शत्रुनिवारकम् **(ऋचा)** स्तुत्या **(मित्रम्)** सखायम् **(हवामहे)** स्वीकुर्महे **(परि)** सर्वतः **(व्रजेव)** व्रजन्ति यथा गत्या तद्वत् **(बाह्वोः)** भुजयोः **(जगन्वांसा)** गच्छन्तौ **(स्वर्णरम्)** यः स्वः सुखं नयति तम्॥१॥

**अन्वयः**-यथा जगन्वांसा मित्रावरुणौ स्वर्णरं बाह्वोर्व्रजेव वः स्वीकुरुतस्तथा वयं रिशादसं वरुणं मित्रमृचा परि हवामहे॥१॥

**भावार्थः**-अत्रोपमावाचकलुप्तोपमालङ्कारौ। हे मनुष्या! यथा विद्वांसः प्रीत्या युष्मान् गृह्णन्ति तथैतान् यूयमपि स्वीकुरुत॥१॥

**पदार्थः**-जैसे **(जगन्वांसा)** जाते हुए प्राण और उदान वायु के सदृश वर्त्तमान जन **(स्वर्णरम्)** सुख को प्राप्त कराने वाले को **(बाह्वोः)** भुजाओं की **(व्रजेव)** चलते हैं जिससे उस गति से जैसे वैसे **(वः)** आप लोगों को स्वीकार करते हैं, वैसे हम लोग **(रिशादसम्)** शत्रुओं के रोकने वाले **(वरुणम्)** उत्तम विद्वान् और **(मित्रम्)** मित्र का **(ऋचा)** स्तुति से **(परि)** सब ओर से **(हवामहे)** स्वीकार करते हैं॥१॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमा और वाचकलुप्तोपमालङ्कार हैं। हे मनुष्यो! जैसे विद्वान् जन प्रीति से आप लोगों का ग्रहण करते हैं, वैसे इनको आप लोग भी स्वीकार करिये॥१॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**ता बाहवा सुचेतुना प्र यन्तमस्मा अर्चते।**

**शेवं हि जार्यं वां विश्वासु क्षासु जोगुवे॥२॥**



www.9009.co.in

**ता। बाहवा। सुऽचेतुना। प्र। यन्तम्। अस्मै। अर्चते। शेवम्। हि। जार्यम्। वाम्। विश्वासु। क्षासु। जोगुवे॥ २॥**

**पदार्थः**-**(ता)** तौ **(बाहवा)** बाहुना **(सुचेतुना)** उत्तमविज्ञानेन **(प्र)** **(यन्तम्)** प्रयत्नं कुर्वन्तम् **(अस्मै)** **(अर्चते)** सत्कर्त्रे **(शेवम्)** सुखम् **(हि)** **(जार्यम्)** जरावस्थाजन्यम् **(वाम्)** युवयोः **(विश्वासु)** समग्रासु **(क्षासु)** भूमिषु **(जोगुवे)** उपदिशामि॥ २॥

**अन्वयः**-हे मित्रावरुणौ! ता युवां बाहवा सुचेतुनाऽस्मा अर्चते शेवं हि प्र यन्तं वां जार्यमहं विश्वासु क्षासु जोगुवे तथा तं प्रशंसतम्॥ २॥

**भावार्थः**-ये सर्वस्यां पृथिव्यां विद्याबाहुबलाभ्यामुत्तमेभ्यः सुखं प्रयच्छन्ति तेभ्यो वयमपि सुखं प्रयच्छेम॥ २॥

**पदार्थः**-हे प्राण और उदान वायु के सदृश वर्त्तमानो! **(ता)** वे दोनों आप **(बाहवा)** बाहु और **(सुचेतुना)** उत्तम विज्ञान से **(अस्मै)** इस **(अर्चते)** सत्कार करने वाले जन के लिये **(शेवम्)** सुख को **(हि)** ही **(प्र, यन्तम्)** प्रयत्न करते हुए **(वाम्)** आप दोनों का **(जार्यम्)** जरा वृद्धावस्था में उत्पन्न विषय का मैं **(विश्वासु)** सम्पूर्ण **(क्षासु)** भूमियों में **(जोगुवे)** उपदेश करता हूं, वैसे उसकी आप लोग प्रशंसा करो॥ २॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य सब पृथिवी पर विद्या और बाहुबल से उत्तम पुरुषों के लिये सुख देते हैं, उनके लिये हम लोग भी सुख देवें॥ २॥

**पुनर्विद्वद्विषयमाह॥**

फिर विद्वद्विषय को कहते हैं॥

**यन्नूनमश्यां गतिं मित्रस्य यायां पथा।**
**अस्य प्रियस्य शर्मण्यहिंसानस्य सश्चिरे॥ ३॥**

**यत्। नूनम्। अश्याम्। गतिम्। मित्रस्य। यायाम्। पथा। अस्य। प्रियस्य। शर्मणि। अहिंसानस्य। सश्चिरे॥ ३॥**

**पदार्थः**-**(यत्)** याम् **(नूनम्)** निश्चितम् **(अश्याम्)** प्राप्नुयाम् **(गतिम्)** **(मित्रस्य)** सख्युः **(यायाम्)** **(पथा)** मार्गेण **(अस्य)** **(प्रियस्य)** कमनीयस्य **(शर्मणि)** गृहे **(अहिंसानस्य)** हिंसारहितस्य **(सश्चिरे)** समवयन्ति प्राप्नुवन्ति॥ ३॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! अस्य प्रियस्याहिंसानस्य मित्रस्य शर्मणि यद्यां गतिं विद्वांसः सश्चिरे तामहं नूनमश्यां पथा यायाम्॥ ३॥

**भावार्थः**-सर्वे मनुष्या विद्वदनुकरणं कृत्वा धर्म्ममार्गेण गत्वा सद्गतिं प्राप्नुवन्तु॥ ३॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(अस्य)** इस **(प्रियस्य)** सुन्दर **(अहिंसानस्य)** हिंसा से रहित **(मित्रस्य)** मित्र के **(शर्मणि)** गृह में **(यत्)** जिस **(गतिम्)** गमन को विद्वान् जन **(सश्चिरे)** प्राप्त होते हैं, उस गमन को मैं **(नूनम्)** निश्चित **(अश्याम्)** प्राप्त होऊँ और **(पथा)** मार्ग से **(यायाम्)** जाऊँ॥३॥

**भावार्थः**-सब मनुष्य विद्वानों का अनुकरण कर और धर्ममार्ग से चलकर उत्तम गति को प्राप्त होवें॥३॥

**पुनर्मित्रावरुणपदवाच्यविद्वद्गुणानाह॥**

फिर मित्रावरुणपदवाच्य विद्वानों के गुणों को कहते हैं॥

**युवाभ्यां मित्रावरुणोपमं धेयामृचा।**

**यद्ध क्षये मघोनां स्तोतॄणां च स्पूर्धसे॥४॥**

**युवाभ्याम्। मित्रावरुणा। उपऽमम्। धेयाम्। ऋचा। यत्। ह। क्षये। मघोनाम्। स्तोतॄणाम्। च। स्पूर्धसे॥४॥**

**पदार्थः**-**(युवाभ्याम्)** **(मित्रावरुणा)** अध्यापकोपदेशकौ **(उपमम्)** उपमाम् **(धेयाम्)** दध्याम् **(ऋचा)** स्तुत्या **(यत्)** याम् **(ह)** किल **(क्षये)** गृहे **(मघोनाम्)** बहुधनवताम् **(स्तोतॄणाम्)** विदुषाम् **(च)** **(स्पूर्धसे)** स्पर्धायै॥४॥

**अन्वयः**-हे मित्रावरुणा! युवाभ्यामृचा स्पूर्धसे यन्मघोनां स्तोतॄणाञ्च क्षय उपमं यथाहं धेयां तथा तां ह युवां धरतम्॥४॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। सर्वैर्मनुष्यैर्विदुषामुपमा ग्राह्या॥४॥

**पदार्थः**-हे **(मित्रावरुणा)** अध्यापक और उपदेशक जनो! **(युवाभ्याम्)** आप दोनों से **(ऋचा)** स्तुति से **(स्पूर्धसे)** स्पर्धा के लिए **(यत्)** जिस **(मघोनाम्)** बहुत धन वालों के **(स्तोतॄणाम्, च)** और विद्वानों के **(क्षये)** गृह में **(उपमम्)** उपमा को जैसे मैं **(धेयाम्)** धारण करूं, वैसे उसको **(ह)** निश्चय आप धारण करो॥४॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। सब मनुष्यों को चाहिये कि विद्वानों की उपमा को ग्रहण करें॥४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**आ नो मित्र सुदीतिभिर्वरुणश्च सधस्थ आ।**

**स्वे क्षये मघोनां सखीनां च वृधसे॥५॥**

**आ। नः। मित्र। सुदीतिऽभिः। वरुणः। च। सधऽस्थे। आ। स्वे। क्षये। मघोनाम्। सखीनाम्। च। वृधसे॥५॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**आ**) समन्तात् (**नः**) अस्माकम् (**मित्र**) सखे (**सुदीतिभिः**) प्रशस्तप्रकाशैः (**वरुणः**) श्रेष्ठः (**च**) (**सधस्थे**) समानस्थाने (**आ**) (**स्वे**) स्वकीये (**क्षये**) निवासे (**मघोनाम्**) प्रशंसितधनानाम् (**सखीनाम्**) मित्राणाम् (**च**) (**वृधसे**) वर्धितुम्॥५॥

**अन्वयः**-हे मित्र त्वं वरुणश्च युवां सुदीतिभिर्मघोनां सखीनां नो वृधसे स्वे क्षय आ वसत सधस्थे चाऽऽवसतं वयं च युवयोः क्षये सधस्थे च वसेम॥५॥

**भावार्थः**-त एव सखायः श्रेष्ठाः ये परस्परोन्नतये सुखदुःखे सङ्गे च प्रयतन्ते॥५॥

**पदार्थः**-हे (**मित्र**) मित्र आप और (**वरुणः**) श्रेष्ठ जन! आप दोनों (**सुदीतिभिः**) अच्छे प्रकाशों से (**मघोनाम्**) प्रशंसित धन जिसके ऐसे (**सखीनाम्**) मित्रों और (**नः**) हम लोगों को (**वृधसे**) वृद्धि के लिये (**स्वे**) अपने (**क्षये**) निवास स्थान में (**आ**) सब और बसिये (**सधस्थे, च**) और तुल्यस्थान में (**आ**) सब ओर से बसिये तथा हम लोग भी आप दोनों के निवास स्थान (**च**) और तुल्यस्थान में बसें॥५॥

**भावार्थः**-वे ही मित्र श्रेष्ठ हैं, जो परस्पर की उन्नति के लिये सुख दुःख और सङ्ग में प्रयत्न करते हैं॥५॥

**पुनर्विरोधत्यागधनप्राप्तिविषयमाह॥**

फिर विरोध के त्याग और धनप्राप्ति विषय को कहते हैं॥

**युवं नो येषु वरुण क्षत्रं बृहच्च बिभृथः।**

**उरु णो वाजसातये कृतं राये स्वस्तये॥६॥**

**युवम्। नः। येषु। वरुण। क्षत्रम्। बृहत्। च। बिभृथः। उरु। नः। वाजऽसातये। कृतम्। राये। स्वस्तये॥६॥**

**पदार्थः**-(**युवम्**) युवाम् (**नः**) अस्मभ्यम् (**येषु**) (**वरुण**) उत्तम (**क्षत्रम्**) धनम् (**बृहत्**) महत् (**च**) मित्र (**बिभृथः**) (**उरु**) बहु (**नः**) अस्मान् (**वाजसातये**) सङ्ग्रामाय (**कृतम्**) (**राये**) धनाय (**स्वस्तये**) सुखाय॥६॥

**अन्वयः**-हे वरुण च! युवं येषु नो बृहदुरु क्षत्रं बिभृथो नो वाजसातये राये स्वस्तये कृतं तेषु तथैव भवतम्॥६॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। मनुष्यैर्विरोधं विहाय सम्प्रयोगेणोद्यमं कृत्वा विजयधनादिकं प्रापणीयम्॥६॥

**पदार्थः**-हे (**वरुण**) उत्तम (**च**) और हे मित्र! (**युवम्**) आप दोनों (**येषु**) जिनमें (**नः**) हम लोगों के लिये (**बृहत्**) बड़े और (**उरु**) बहुत (**क्षत्रम्**) धन को (**बिभृथः**) धारण करते हैं और (**नः**) हम लोगों को (**वाजसातये**) सङ्ग्राम के लिये (**राये**) धन के और (**स्वस्तये**) सुख के लिये (**कृतम्**) किया उनमें वैसे ही हूजिये॥६॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। मनुष्यों को चाहिये कि विरोध का त्याग कर और उत्तम प्रकार मिलने से उद्यम करके विजय और धन आदि को प्राप्त करें॥६॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**उ॒च्छन्त्यां॑ मे यज॒ता दे॒वक्ष॑त्रे॒ रुश॑द्गवि।**

**सु॒तं सोमं॒ न ह॒स्तिभि॒रा प॒ड्भिर्धा॑वतं नरा॒ बिभ्र॑तावर्च॒नान॑सम्॥७॥२॥**

**उ॒च्छन्त्या॑म्। मे॒। य॒ज॒ता। दे॒वऽक्ष॑त्रे। रुश॑त्ऽगवि। सु॒तम्। सोम॑म्। न। ह॒स्तिऽभिः॑। आ। प॒ट्ऽभिः। धा॒व॒त॒म्। न॒रा॒। बिभ्र॑तौ। अ॒र्च॒नान॑सम्॥७॥**

**पदार्थः**-**(उच्छन्त्याम्)** विवसन्त्याम् **(मे)** मम **(यजता)** सङ्गन्तारौ **(देवक्षत्रे)** देवानां धने राज्ये वा **(रुशद्गवि)** प्रकाशमानरश्मियुक्ते **(सुतम्)** निष्पादितम् **(सोमम्)** ऐश्वर्य्यम् **(न)** इव **(हस्तिभिः)** इभैः **(आ)** **(पड्भिः)** पादैः **(धावतम्)** गच्छन्तम् **(नरा)** नैतारौ **(बिभ्रतौ)** धरन्तौ **(अर्चनानसम्)** अर्चिता श्रेष्ठा नासिका यस्य तम्॥७॥

**अन्वयः**-हे मित्रावरुणौ यजता नरा राजाऽमात्यौ! युवामुच्छन्त्यां रुशद्गवि देवक्षत्रे सुतं सोमं हस्तिभिर्न पड्भिर्धावतमर्चनानसं बिभ्रतौ मे सुतं सोममा प्राप्नुतम्॥७॥

**भावार्थः**-हे पुरुषार्थिनो राजजनाः! प्रजा न्यायेन पालयित्वा विद्वद्धनं प्राप्नुतेति॥७॥

अत्र मित्रावरुणविद्वद्गुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति चतुःषष्टितमं सूक्तं द्वितीयो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे प्राण और उदान वायु के सदृश वर्त्तमान **(यजता)** मिलने वाले **(नरा)** नायक राजा और मन्त्रीजन! आप दोनों **(उच्छन्त्याम्)** विवास करती हुई में तथा **(रुशद्गवि)** प्रकाशमान किरणों से युक्त **(देवक्षत्रे)** विद्वानों के धन वा राज्य में **(सुतम्)** उत्पन्न किये गये **(सोमम्)** ऐश्वर्य को **(हस्तिभिः)** हाथियों से **(न)** जैसे वैसे **(पड्भिः)** पैरों से **(धावतम्)** प्राप्त होओ और **(अर्चनानसम्)** श्रेष्ठ नासिका जिसकी उसको **(बिभ्रतौ)** धारण करते हुए **(मे)** मेरे उत्पन्न किये गये ऐश्वर्य को **(आ)** अच्छे प्रकार प्राप्त हूजिये॥७॥

**भावार्थः**-हे पुरुषार्थी राजजनो! प्रजाओं का न्याय से पालन करके विद्वानों के धन को प्राप्त होओ॥७॥

इस सूक्त में प्राण और उदान के सदृश वर्त्तमान तथा विद्वान् के गुण-वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह चौसठवां सूक्त तथा द्वितीय वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

**अथ षडर्चस्य पञ्चषष्टितमस्य सूक्तस्य रातहव्यात्रेय ऋषिः। मित्रावरुणौ देवते। १, ४ अनुष्टुप्। २ निचृदनुष्टुप् छन्दः। गान्धारः स्वरः। ३ स्वराडुष्णिक्। ५ भुरिगुष्णिक्छन्दः। ऋषभः स्वरः। ६ विराट्पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः॥**

*अत्र मित्रावरुणपदवाच्याध्यापकाध्येत्रुपदेश्योपदेशकविषयमाह॥*

अब छः ऋचा वाले पैंसठवें सूक्त का आरम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में मित्रावरुण पदवाच्य पढ़ने पढ़ाने वाले वा उपदेश योग्य वा उपदेश देने वालों के विषय को कहते हैं॥

**यश्चिकेत स सुक्रतुर्देवत्रा स ब्रवीतु नः।**

**वरुणो यस्य दर्शतो मित्रो वा वनते गिरः॥ १॥**

**यः। चिकेत। सः। सुऽक्रतुः। देवऽत्रा। सः। ब्रवीतु। नः। वरुणः। यस्य। दर्शतः। मित्रः। वा। वनते। गिरः॥ १॥**

**पदार्थः**-(**यः**) (**चिकेत**) जानीयात् (**सः**) (**सुक्रतुः**) सुष्ठु बुद्धिमान् (**देवत्रा**) देवेषु (**सः**) (**ब्रवीतु**) (**नः**) अस्मान् (**वरुणः**) वरः (**यस्य**) (**दर्शतः**) द्रष्टव्यः (**मित्रः**) सखा (**वा**) (**वनते**) सम्भजति (**गिरः**) वाणीः॥ १॥

**अन्वयः**-यत्सुक्रतुर्वरुणोऽस्ति स चिकेत यो देवत्रा देवोऽस्ति स नो ब्रवीतु वा यस्य दर्शतो मित्रोऽस्ति स नो गिरो वनते॥ १॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! योऽस्माकं मध्येऽधिकविद्यो भवेत् स एवोपदिशेत् यो ज्ञानाऽधिकः स्यात् स सत्याऽसत्ये विविच्यात्॥ १॥

**पदार्थः**-(**यः**) जो (**सुक्रतुः**) उत्तम प्रकार बुद्धिमान् और (**वरुणः**) श्रेष्ठ है (**सः**) वह (**चिकेत**) जाने और जो (**देवत्रा**) विद्वानों में विद्वान् है (**सः**) वह (**नः**) हम लोगों को (**ब्रवीतु**) कहे (**वा**) वा (**यस्य**) जिसका (**दर्शतः**) देखने के योग्य (**मित्रः**) मित्र है वह हम लोगों की (**गिरः**) वाणियों को (**वनते**) पालन करता है॥ १॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो हम लोगों के मध्य में अधिक विद्वान् होवे, वही उपदेश करे और जो अधिक ज्ञानवान् होवे, वह सत्य और असत्य को अलग करे॥ १॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**ता हि श्रेष्ठवर्चसा राजाना दीर्घश्रुत्तमा।**

**ता सत्पती ऋतावृध ऋतावाना जनेजने॥ २॥**



www.9009.co.in

**ता। हि। श्रेष्ठऽवर्चसा। राजाना। दीर्घश्रुतऽतमा। ता। सत्पती इति सत्ऽपती। ऋतऽवृधा। ऋतऽवाना। जनेऽजने॥२॥**

**पदार्थः**-(**ता**) तौ (**हि**) यतः (**श्रेष्ठवर्चसा**) श्रेष्ठं वर्चोऽध्ययनं ययोस्तौ (**राजाना**) प्रकाशमानौ (**दीर्घश्रुत्तमा**) यौ दीर्घकालं शृणुतस्तावतिशयितौ (**ता**) तौ (**सत्पती**) सतां पालकौ (**ऋतावृधा**) यावृतं सत्यं वर्धयतस्तौ (**ऋतावाना**) ऋतं सत्यं विद्यते ययोस्तौ (**जनेजने**)॥२॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यौ दीर्घश्रुत्तमा श्रेष्ठवर्चसा राजाना वर्त्तेते ता यौ जनेजने सत्पती ऋतावृधा ऋतावाना वर्त्तेते ता हि वयं सततं सत्कुर्य्याम॥२॥

**भावार्थः**-ये मनुष्या बहुश्रुताः पूर्णविद्याः सत्यधर्म्मनिष्ठा विद्याप्रवृत्तिप्रियाश्च स्युस्त एवोपदेशका अध्यापकाश्च भवन्तु॥२॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो (**दीर्घश्रुत्तमा**) दीर्घकालपर्यन्त अत्यन्त शास्त्र को सुनने वाले (**श्रेष्ठवर्चसा**) श्रेष्ठ अध्ययन जिनका ऐसे (**राजाना**) प्रकाशमान जन वर्त्तमान हैं (**ता**) वे दोनों और जो (**जनेजने**) मनुष्य मनुष्य में (**सत्पती**) श्रेष्ठों के पालन करने और (**ऋतावृधा**) सत्य को बढ़ाने वाले (**ऋतावाना**) तथा सत्य विद्यमान जिनमें (**ता, हि**) उन्हीं दोनों का हम लोग निरन्तर सत्कार करें॥२॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य बहुश्रुत, पूर्ण विद्या वाले, सत्य धर्म्म में निष्ठा करने वाले और जो विद्या की प्रवृत्ति में प्रीति करने वाले हों, वे ही उपदेशक अध्यापक होवें॥२॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

### ता वामियानोऽवसे पूर्वा उप ब्रुवे सचा।
### स्वश्वासः सु चेतुना वाजाँ अभि प्र दावने॥३॥

**ता। वाम्। इयानः। अवसे। पूर्वौ। उप। ब्रुवे। सचा। सुऽअश्वासः। सु। चेतुना। वाजान्। अभि। प्र। दावने॥३॥**

**पदार्थः**-(**ता**) तौ (**वाम्**) युवाम् (**इयानः**) प्राप्नुवन् (**अवसे**) रक्षणाद्याय (**पूर्वौ**) प्रथमाधीतविद्यौ (**उप**) (**ब्रुवे**) (**सचा**) समवेतौ (**स्वश्वासः**) शोभना अश्वा येषान्ते (**सु**) सुष्ठु (**चेतुना**) विज्ञानवता सह (**वाजान्**) सङ्ग्रामान् (**अभि**) (**प्र**) (**दावने**) दात्रे॥३॥

**अन्वयः**-हे मित्रावरुणौ! स्वश्वासः सु चेतुना दावने वाजानभि प्र ब्रूयुस्तानहमुप ब्रुवे। हे अध्यापकोपदेशकौ! यौ पूर्वौ वामियानोऽवसे वर्त्ते ता सचाऽहमुपब्रुवे॥३॥

**भावार्थः**-यथोपदेशका उपदिशेयुस्तथैवोपदेश्या अन्यानप्युपदिशन्तु॥३॥

**पदार्थः**-हे प्राण और उदान के समान वर्तमानो! (**स्वश्वासः**) अच्छे घोड़े जिनके ये (**सु, चेतुना**) उत्तम ज्ञानवान् के साथ (**दावने**) देने वाले के लिये (**वाजान्**) संग्रामों के (**अभि, प्र**) सम्मुख अच्छे



www.9009.co.in

प्रकार कहें उनको मैं **(उप, ब्रुवे)** समीप में कहूँ। हे अध्यापक और उपदेशक जनो! जिन **(पूर्वौ)** प्रथम विद्या पढ़े हुए **(वाम्)** आप दोनों को **(इयानः)** प्राप्त होता हुआ **(अवसे)** रक्षा आदि के लिये वर्त्तमान हूं **(ता)** उन **(सचा)** मिले हुओं के मैं समीप में कहता हूँ॥३॥

**भावार्थः**-जैसे उपदेशक जन उपदेश देवें, वैसे ही जिनको उपदेश दिया जाये वे औरों को भी उपदेश करें॥३॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**मित्रो अंहोश्चिदादुरु क्षयाय गातुं वनते।**

**मित्रस्य हि प्रतूर्वतः सुमतिरस्ति विधतः॥४॥**

**मित्रः। अंहोः। चित्। आत्। उरु। क्षयाय। गातुम्। वनते। मित्रस्य। हि। प्रऽतूर्वतः। सुऽमतिः। अस्ति। विधतः॥४॥**

**पदार्थः**-**(मित्रः)** सखा **(अंहोः)** दुष्टाचारात् **(चित्)** **(आत्)** **(उरु)** बहु **(क्षयाय)** निवासाय **(गातुम्)** पृथिवीम् **(वनते)** सम्भजति **(मित्रस्य)** **(हि)** खलु **(प्रतूर्वतः)** शीघ्रं कर्त्तुः **(सुमतिः)** उत्तमप्रज्ञा **(अस्ति)** **(विधतः)** परिचरतः॥४॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यो मित्रोंऽहोश्चिद्वियोज्याऽऽदुरु क्षयाय गातुं वनते स हि प्रतूर्वतो विधतो मित्रस्य या सुमतिरस्ति तां गृह्णीयात्॥४॥

**भावार्थः**-त एव सखायः सन्ति ये निष्कापट्येन शुद्धभावेन परस्परैः सह वर्त्तन्ते॥४॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो **(मित्रः)** मित्र **(अंहोः)** दुष्ट आचरण से **(चित्)** भी वियुक्त करके **(आत्)** अनन्तर **(उरु)** बहुत **(क्षयाय)** निवास के लिये **(गातुम्)** पृथिवी को **(वनते)** सेवन करता है वह **(हि)** निश्चय से **(प्रतूर्वतः)** शीघ्र करने वाले **(विधतः)** परिचरण करते हुए **(मित्रस्य)** मित्र की जो **(सुमतिः)** श्रेष्ठ बुद्धि **(अस्ति)** है, उसको ग्रहण करे॥४॥

**भावार्थः**-वे ही मित्र हैं, जो निष्कपटता से और शुद्ध भाव से परस्पर के जनों के साथ वर्तमान हैं॥४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**वयं मित्रस्यावसि स्याम सप्रथस्तमे।**

**अनेहसस्त्वोतयः सत्रा वरुणशेषसः॥५॥**

**वयम्। मित्रस्य। अवसि। स्याम। सप्रथःऽतमे। अनेहसः। त्वाऽऊतयः। सत्रा। वरुणऽशेषसः॥५॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**वयम्**) (**मित्रस्य**) (**अवसि**) रक्षणादौ कर्मणि (**स्याम**) प्रवृत्ता भवेम (**सप्रथस्तमे**) अतिविस्तारयुक्ते (**अनेहसः**) अहिंसकाः सन्तः (**त्वोतयः**) त्वया रक्षिताः (**सत्रा**) सत्येन युक्ताः (**वरुणशेषसः**) वरुण उत्तमो जनः शेषो येषान्ते॥५॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथाऽनेहसस्त्वोतयो वरुणशेषसो वयं सत्रा मित्रस्य सप्रथस्तमेऽवसि स्याम॥५॥

**भावार्थः**-मनुष्यैः सर्वदा कृतज्ञता भाव्या कृतघ्नता च दूरतस्त्याज्या॥५॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे (**अनेहसः**) नहीं हिंसक होते हुए (**त्वोतयः**) आपसे रक्षित और (**वरुणशेषसः**) उत्तम जन शेष जिनके वे (**वयम्**) हम लोग (**सत्रा**) सत्य से युक्त (**मित्रस्य**) मित्र के (**सप्रथस्तमे**) अतिविस्तार युक्त (**अवति**) रक्षण आदि कर्म्म में (**स्याम**) प्रवृत्त होवें॥५॥

**भावार्थः**-मनुष्यों को चाहिये कि सदा कृतज्ञता करें और कृतघ्नता का दूर से त्याग करें॥५॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**युवं मित्रेमं जनं यतथः सं च नयथः।**

**मा मघोनः परि ख्यतं मो अस्माकमृषीणां गोपीथे न उरुष्यतम्॥६॥३॥**

**युवम्। मित्रा। इमम्। जनम्। यतथः। सम्। च। नयथः। मा। मघोनः। परि। ख्यतम्। मो इति। अस्माकम्। ऋषीणाम्। गोऽपीथे। नः। उरुष्यतम्॥६॥**

**पदार्थः**-(**युवम्**) युवाम् (**मित्रा**) (**इमम्**) (**जनम्**) उपदेश्यं मनुष्यम् (**यतथः**) प्रेरयथः (**सम्**) (**च**) (**नयथः**) प्रापयथः (**मा**) निषेधे (**मघोनः**) बहुधनयुक्तान् (**परि**) वर्जने (**ख्यतम्**) निराकुरुतम् (**मो**) निषेधे (**अस्माकम्**) (**ऋषीणाम्**) वेदार्थविदाम् (**गोपीथे**) गवां पेये दुग्धादौ (**नः**) अस्मान् (**उरुष्यतम्**) प्रेरयेतम्॥६॥

**अन्वयः**-हे मित्रा अध्यापकोपदेशकौ! युवमिमं जनं यतथः सन्नयथश्च मघोनो नो मा परि ख्यतमृषीणामस्माकं गोपीथे मो परिख्यतं शुभे कर्मण्यस्मानुरुष्यतम्॥६॥

**भावार्थः**-हे विद्वांसो! भवन्तः सर्वान् जनान् प्रयतमानान् कृत्वा सुखं प्रापयन्तु। हे विद्यार्थिनः श्रोतारो वा! यूयमस्मानध्यापकानुपदेशकान् कदाचिन्मावमन्यध्वमेव वर्त्तित्वा सत्यं धर्मं सेवेमहीति॥६॥

अत्र मित्रावरुणाध्यापकाध्येत्रुपदेशकोपदेश्यकर्मवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति पञ्चषष्टितमं सूक्तं तृतीयो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे (**मित्रा**) प्राण और उदान के समान वर्त्तमान अध्यापक और उपदेशक जनो! (**युवम्**) आप दोनों (**इमम्**) इस (**जनम्**) उपदेश देने योग्य जन को (**यतथः**) प्रेरणा करते और (**सम्, नयथः, च**) प्राप्त कराते हैं तथा (**मघोनः**) बहुत धनों से युक्त (**नः**) हम लोगों का (**मा**) मत (**परि, ख्यतम्**) निरादर कीजिये और (**ऋषीणाम्**) वेदार्थ के जानने वाले (**अस्माकम्**) हम लोगों का (**गोपीथे**) गौओं के



www.9009.co.in

पीने योग्य दुग्ध आदि में **(मो)** नहीं निरादर करिये और शुभ कर्म में हम लोगों को **(उरुष्यतम्)** प्रेरणा करिये॥६॥

**भावार्थ:-**हे विद्वानो! आप लोग सब लोगों को प्रयत्न से युक्त करके सुख को प्राप्त कराइये और हे विद्यार्थीजनो वा श्रोतृजनो! आप लोग हम अध्यापक और उपदेशकों का अपमान मत करो इस प्रकार वर्त्ताव कर सत्य धर्म का सेवन हम लोग करें॥६॥

इस सूक्त में मित्रावरुणपदवाच्य अध्यापक और अध्ययन करने तथा उपदेश करने और उपदेश देने योग्यों के कर्मों का वर्णन होने से इस सूक्त के अर्थ की पिछले सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह पैसठवां सूक्त और तीसरा वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

अथ षड्चस्य षट्षष्टितमस्य सूक्तस्य रातहव्य आत्रेय ऋषिः। मित्रावरुणौ देवते। १ भुरिगनुष्टुप्। २ निचृदनुष्टुप्। ३, ४, ५, ६ विराडनुष्टुप् छन्दः। गान्धारः स्वरः॥

*अथ मनुष्यः किं कुर्य्यादित्याह॥*

अब छः ऋचा वाले छासठवें सूक्त का आरम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र मे मनुष्य क्या करें, इस विषय को कहते हैं॥

**आ चिकितान सुक्रतू देवौ मर्त रिशादसा।**

**वरुणाय ऋतपेशसे दधीत प्रयसे महे॥ १॥**

आ। चिकितान। सुक्रतू इति सुऽक्रतू। देवौ। मर्त। रिशादसा। वरुणाय। ऋतऽपेशसे। दधीत। प्रयसे। महे॥ १॥

**पदार्थः**-(**आ**) समन्तात् (**चिकितान**) ज्ञानयुक्त (**सुक्रतू**) शोभनप्रज्ञौ (**देवौ**) विद्वांसौ (**मर्त्त**) मरणधर्मयुक्त (**रिशादसा**) दुष्टहिंसकौ (**वरुणाय**) उत्तमाय व्यवहाराय (**ऋतपेशसे**) सत्यस्वरूपाय (**दधीत**) दधेत (**प्रयसे**) प्रयतमानाय (**महे**) महते॥ १॥

**अन्वयः**-हे चिकितान मर्त्त! भवानृतपेशसे प्रयसे महे वरुणाय रिशादसा सुक्रतू देवावा दधीत॥ १॥

**भावार्थः**-स एव विद्वान् भवति यो विदुषां सङ्गं कृत्वा प्रज्ञां वर्धयति॥ १॥

**पदार्थः**-हे (**चिकितान, मर्त्त**) ज्ञान और मरण धर्मयुक्त! आप (**ऋतपेशसे**) सत्यस्वरूप और (**प्रयसे**) प्रयत्न करते हुए (**महे**) बड़े (**वरुणाय**) उत्तम व्यवहारयुक्त के लिये (**रिशादसा**) दुष्टों के मारने वाले (**सुक्रतू**) उत्तम बुद्धिमान् (**देवौ**) दो विद्वानों को (**आ**) सब प्रकार से (**दधीत**) धारण करिये॥ १॥

**भावार्थः**-वही विद्वान् होता है, जो विद्वानों का सङ्ग करके बुद्धि को बढ़ाता है॥ १॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**ता हि क्षत्रमविह्रुतं सम्यगसुर्य१माशाते।**

**अध व्रतेव मानुषं स्व१र्ण धायि दर्शतम्॥ २॥**

ता। हि। क्षत्रम्। अविऽह्रुतम्। सम्यक्। असुर्यम्। आशाते इति। अध। व्रताऽइव। मानुषम्। स्वः। न। धायि। दर्शतम्॥ २॥

**पदार्थः**-(**ता**) तौ (**हि**) एव (**क्षत्रम्**) धनं राज्यं वा (**अविह्रुतम्**) अकुटिलम् (**सम्यक्**) यत्समीचीनमञ्चति (**असुर्य्यम्**) असुरेभ्यो विद्वद्भ्यो हितम् (**आशाते**) व्याप्नुतः (**अध**) अथ (**व्रतेव**) कर्म्माणीव (**मानुषम्**) मनुष्याणामिदम् (**स्वः**) सुखम् (**न**) इव (**धायि**) ध्रियताम् (**दर्शतम्**) द्रष्टव्यम्॥ २॥



www.9009.co.in

**अन्वय:**-हे मनुष्या:! ता ह्यविह्रुतमसुर्य्यं सम्यक् क्षत्रमाशाते अथ याभ्यां हितम्मानुषं दर्शतं व्रतेव स्वर्ण धायि॥२॥

**भावार्थ:**-अत्रोपमालङ्कारः। सर्वे मनुष्या धर्मपथा सुखं कर्म्म च धरन्तु॥२॥

**पदार्थ:**-हे मनुष्यो! **(ता)** वे **(हि)** ही **(अविह्रुतम्)** नहीं कुटिल **(असुर्य्यम्)** विद्वानों के लिये हितकारक **(सम्यक्)** उत्तम प्रकार चलने वाले **(क्षत्रम्)** धन वा राज्य को **(आशाते)** व्याप्त होते हैं **(अध)** इसके अनन्तर जिन्होंने हित **(मानुषम्)** मनुष्य सम्बन्धी **(दर्शतम्)** देखने योग्य **(व्रतेव)** कर्म्मों के सदृश और **(स्वः)** सुख के **(न)** सदृश **(धायि)** धारण किया॥२॥

**भावार्थ:**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। सब मनुष्य धर्म पथ से सुख और कर्म्म को धारण करें॥२॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**ता वा॒मेषे॒ रथा॑नामु॒र्वीं गव्यू॑तिमेषाम्।**

**रा॒तह॑व्यस्य सुष्टु॒तिं द॒धृक् स्तोमै॑र्मनामहे॥३॥**

**ता। वा॒म्। एषे॑। रथा॑नाम्। उ॒र्वीम्। गव्यू॑तिम्। ए॒षा॒म्। रा॒तऽह॑व्यस्य। सु॒ऽस्तु॒तिम्। द॒धृक्। स्तोमैः॑। म॒ना॒म॒हे॒॥३॥**

**पदार्थ:**-**(ता)** तौ **(वाम्)** युवाम् **(एषे)** गन्तुम् **(रथानाम्)** विमानादियानानाम् **(उर्वीम्)** पृथिवीम् **(गव्यूतिम्)** मार्गम् **(एषाम्)** **(रातहव्यस्य)** दत्तदातव्यस्य **(सुष्टुतिम्)** शोभनां प्रशंसाम् **(दधृक्)** प्रागल्भ्यं प्राप्तौ **(स्तोमैः)** प्रशंसनैः **(मनामहे)** विजानीमः॥३॥

**अन्वय:**-हे अध्यापकोपदेशकौ! युवामेषां रथानां रातहव्यस्य सुष्टुतिं गव्यूतिमेषे प्रवर्त्तेथे यथा विद्वान् स्तोमैरेतेषामुर्वीं दधाति तथा ता दधृग् वां तं च वयं मनामहे॥३॥

**भावार्थ:**-हे मनुष्या! ये जगत्कल्याणाय सृष्टिक्रमेण पदार्थविद्यां प्रकाशयन्ति ते धन्या भवन्ति॥३॥

**पदार्थ:**-हे अध्यापक और उपदेशक जन! आप दोनों **(एषाम्)** इन **(रथानाम्)** विमान आदि वाहनों का **(रातहव्यस्य)** दिया है देने योग्य पदार्थ जिसने उसको **(सुष्टुतिम्)** उत्तम प्रशंसा को और **(गव्यूतिम्)** मार्ग को **(एषे)** प्राप्त होने को प्रवृत्त होते हैं, और जैसे विद्वान् जन **(स्तोमैः)** प्रशंसाओं से इन की **(उर्वीम्)** पृथिवी को धारण करता है, वैसे **(ता)** उन **(दधृक्)** प्रगल्भता को प्राप्त **(वाम्)** आप दोनों को और उस विद्वान् को हम लोग **(मनामहे)** अच्छे प्रकार जानते हैं॥३॥

**भावार्थ:**-हे मनुष्यो! जो जगत् के कल्याण के लिये सृष्टिक्रम से पदार्थविद्या को प्रकाशित करते हैं, वे धन्य होते हैं॥३॥



www.9009.co.in

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**अधा हि काव्या युवं दक्षस्य पूर्भिरद्भुता।**

**नि केतुना जनानां चिकेथे पूतदक्षसा॥४॥**

**अध। हि। काव्या। युवम्। दक्षस्य। पूःऽभिः। अद्भुता। नि। केतुना। जनानाम्। चिकेथे इति। पूतऽदक्षसा॥४॥**

**पदार्थः-(अधा)** अथ। अत्र **निपातस्य चे**ति दीर्घः। **(हि)** यतः **(काव्या)** कवीनां कर्माणि **(युवम्)** युवाम् **(दक्षस्य)** बलस्य **(पूर्भिः)** नगरैः **(अद्भुता)** आश्चर्य्यरूपाणि **(नि) (केतुना)** प्रज्ञया **(जनानाम्)** मनुष्याणाम् **(चिकेथे)** जानीथः **(पूतदक्षसा)** पूतं पवित्रं दक्षो बलं ययोस्तौ॥४॥

**अन्वयः**-हे अध्यापकोपदेशकौ! पूतदक्षसा युवं केतुनाऽद्भुता काव्या चिकेथे अधा हि जनानां दक्षस्य पूर्भिर्नि चिकेथे तौ वयं सदा सत्कुर्याम॥४॥

**भावार्थः**-विदुषामिदं योग्यमस्ति यत्स्वयं पूर्णा विद्वांसो भूत्वाऽज्ञजनानध्यापनोपदेशाभ्यामुपकृतान् कुर्य्युः॥४॥

**पदार्थः**-हे अध्यापक और उपदेशक जनो! **(पूतदक्षसा)** पवित्र बल जिनका ऐसे **(युवम्)** आप दोनों **(केतुना)** बुद्धि से **(अद्भुता)** आश्चर्य्य रूप **(काव्या)** कवियों के कर्म्मों को **(चिकेथे)** जानते हैं **(अधा)** इसके अनन्तर **(हि)** जिससे **(जनानाम्)** मनुष्यों के **(दक्षस्य)** बल सम्बन्धी **(पूर्भिः)** नगरों से **(नि)** निरन्तर करके जानते हैं, उनका हम लोग सदा सत्कार करें॥४॥

**भावार्थः**-विद्वानों को यह योग्य है कि स्वयं पूर्ण विद्वान् होके अज्ञजनों को अध्यापन और उपदेश से उपकृत करें॥४॥

**स्त्रियोऽपि विद्वद्वद्भूत्वोत्तमाचरणं कुर्य्युरित्याह॥**

स्त्री भी विद्वानों के समान होकर उत्तमाचरण करे, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**तदृतं पृथिवि बृहच्छ्रवएष ऋषीणाम्।**

**ज्रयसानावरं पृथ्वति क्षरन्ति यामभिः॥५॥**

**तत्। ऋतम्। पृथिवि। बृहत्। श्रवःऽएषे। ऋषीणाम्। ज्रयसानौ। अरम्। पृथु। अति। क्षरन्ति। यामऽभिः॥५॥**

**पदार्थः-(तत्) (ऋतम्)** सत्यं जलं वा **(पृथिवि)** भूमिरिव वर्त्तमाने **(बृहत्)** महत् **(श्रवः)** अन्नं श्रवणं वा **(एषे)** प्राप्तुम् **(ऋषीणाम्)** मन्त्रार्थविदाम् **(ज्रयसानौ)** गच्छन्तौ विजानन्तौ वा **(अरम्)** अलम् **(पृथु)** विस्तीर्णम् **(अति) (क्षरन्ति)** वर्षन्ति **(यामभिः)** प्रहरैर्यमोद्भवैः कर्म्मभिर्वा॥५॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे पृथिवि विदुषि स्त्रि! यथा मेघा योगिनो वा यामभिः पृथु जलमरमति क्षरन्ति यथा च व्रयसानौ वर्त्तेते यथर्षीणां तद् बृहदृतं श्रवश्चैषे प्रवर्त्तस्व॥५॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यदि स्त्रियो विदुष्यो भूत्वा सत्यं धर्म्मं शीलं च स्वीकृत्य मेघवत्सुखानि वर्षन्ति तर्हि ता महत्सुखमाप्नुवन्ति॥५॥

**पदार्थः**-हे **(पृथिवि)** पृथिवी के सदृश वर्त्तमान विद्या से युक्त स्त्री! जैसे मेघ वा योगी जन **(यामभिः)** प्रहरों वा प्रहर में उत्पन्न कर्म्मों से **(पृथु)** विस्तीर्ण जल को **(अरम्)** पूरा **(अति, क्षरन्ति)** वर्षाते हैं और जैसे **(व्रयसानौ)** जाते हुए वा विशेष करके जानते हुए वर्त्तमान हैं, वैसे **(ऋषीणाम्)** मन्त्रार्थ जानने वालों के **(तत्)** उस **(बृहत्)** बड़े **(ऋतम्)** सत्य को वा जल को **(श्रवः)** और अन्न वा श्रवण को **(एषे)** प्राप्त होने को प्रवृत्त होओ॥५॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो स्त्रियाँ विद्यायुक्त होकर सत्य, धर्म्म और उत्तम स्वभाव को स्वीकार करके मेघ के सदृश सुखों की वृष्टि करती हैं तो वे बड़े सुख को प्राप्त होती हैं॥५॥

**मनुष्यैर्न्यायेन राज्यं रक्षणीयमित्याह॥**

मनुष्यों को न्याय से राज्य की रक्षा करनी चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**आ यद्वामीयचक्षसा मित्रा वयं च सूरयः।**

**व्यचिष्ठे बहुपाय्ये यतेमहि स्वराज्ये॥६॥४॥**

**आ। यत्। वाम्। ईयऽचक्षसा। मित्रा। वयम्। च। सूरयः। व्यचिष्ठे। बहुऽपाय्ये। यतेमहि। स्वऽराज्ये॥६॥**

**पदार्थः**-**(आ)** समन्तात् **(यत्)** यस्मिन् **(वाम्)** युवाम् **(ईयचक्षसा)** ईयं प्राप्तव्यं ज्ञातव्यं वा चक्षो दर्शनं कथनं च ययोस्तौ **(मित्रा)** सखायौ **(वयम्)** **(च)** **(सूरयः)** विद्वांसः **(व्यचिष्ठे)** अतिशयेन व्याप्ते **(बहुपाय्ये)** बहुभी रक्षणीये **(यतेमहि)** **(स्वराज्ये)** स्वकीये राष्ट्रे॥६॥

**अन्वयः**-हे ईयचक्षसा मित्रा! वां युवयोर्यद् व्यचिष्ठे बहुपाय्ये राज्ये स्वराज्ये च सूरयो वयमा यतेमहि तस्मिन् यतेयाथाम्॥६॥

**भावार्थः**-मनुष्यैर्मैत्रीं कृत्वा स्वं परकीयं च राज्यं न्यायेन रक्षित्वा धर्म्मोन्नतिः कार्य्येति॥६॥

अत्र मित्रावरुणविद्वद्विदुषिगुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति षट्षष्टितमं सूक्तं चतुर्थो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे **(ईयचक्षसा)** प्राप्त होने वा जानने योग्य दर्शन वा कथन जिनका वे **(मित्रा)** मित्र **(वाम्)** आप दोनों के **(यत्)** जिस **(व्यचिष्ठे)** अत्यन्त व्याप्त और **(बहुपाय्ये)** बहुतों से रक्षा करने योग्य राज्य **(स्वराज्ये, च)** और अपने राज्य में **(सूरयः)** विद्वान् जन **(वयम्)** हम लोग **(आ)** सब प्रकार से **(यतेमहि)** यत्न करें, उसमें यत्न करो॥६॥



www.9009.co.in

**भावार्थ:**-मनुष्यों को चाहिये कि मित्रता करके अपने और दूसरे के राज्य की न्याय से रक्षा करके धर्म की उन्नति करें॥६॥

इस सूक्त में मित्र और श्रेष्ठ विद्वान् के और विद्यायुक्त स्त्री के गुण-वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिए॥

**यह छासठवां सूक्त और चौथा वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

**अथ पञ्चर्चस्य सप्तषष्टितमस्य सूक्तस्य यजत आत्रेय ऋषिः। मित्रावरुणौ देवते। १, २, ४ निचृदनुष्टुप्। ३, ५ विराडनुष्टुप् छन्दः। गान्धारः स्वरः॥**

*अथ मनुष्यैः किंवत् किं करणीयमित्याह॥*

अब पाँच ऋचा वाले सड़सठवें सूक्त का आरम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में मनुष्यों को किसके तुल्य क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**बळित्था देवा निष्कृतमादित्या यजतं बृहत्।**

**वरुण मित्रार्यमन् वर्षिष्ठं क्षत्रमाशाथे॥ १॥**

**बट्। इत्था। देवा। निःऽकृतम्। आदित्या। यजतम्। बृहत्। वरुण। मित्र। अर्यमन्। वर्षिष्ठम्। क्षत्रम्। आशाथे इति॥ १॥**

**पदार्थः-(बट्)** सत्यम् **(इत्था)** अनेन प्रकारेण **(देवा)** दिव्यस्वभावौ **(निष्कृतम्)** निष्पन्नम् **(आदित्या)** अविनाशिनौ **(यजतम्)** सङ्गच्छेताम् **(बृहत्)** महत् **(वरुण)** श्रेष्ठ **(मित्र)** सुहृत् **(अर्यमन्)** न्यायकारिन् **(वर्षिष्ठम्)** अतिशयेन वृद्धम् **(क्षत्रम्)** राज्यं धनं वा **(आशाथे)** प्राप्नुथः॥ १॥

**अन्वयः**-हे देवा आदित्या मित्र वरुण! युवां बृहन्निष्कृतं यजतं, हे अर्य्यमन्नित्था त्वं च यज। हे मित्रावरुण! युवां यथा बड् वर्षिष्ठं क्षत्रमाशाथे तथेदमर्यमन्नपि प्राप्नोतु॥ १॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। यथा विद्वांसोऽत्र धर्म्याणि कुर्युस्तथा राज्यं राजादयः पालयन्तु॥ १॥

**पदार्थः**-हे **(देवा)** श्रेष्ठ स्वभाव वाले **(आदित्या)** अविनाशी **(मित्र)** मित्र **(वरुण)** श्रेष्ठ! आप दोनों **(बृहत्)** बड़े **(निष्कृतम्)** उत्पन्न हुए को **(यजतम्)** उत्तम प्रकार मिलो, हे **(अर्य्यमन्)** न्यायकारी! **(इत्था)** इस प्रकार से आप भी मिलिये और हे मित्र श्रेष्ठ जनो! तुम जैसे **(बट्)** सत्य **(वर्षिष्ठम्)** अत्यन्त बढ़े हुए **(क्षत्रम्)** राज्य वा धन को **(आशाथे)** प्राप्त होते हो, वैसे इसको न्यायकारी भी प्राप्त हो॥ १॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जैसे विद्वान् जन इस संसार में धर्म्म युक्त कर्म्मों को करें, वैसे राज्य का राजा आदि पालन करें॥ १॥

**पुनर्मनुष्यैः किंवत् किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को किसके तुल्य क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**आ यद्योनिं हिरण्ययं वरुण मित्र सदथः।**

**धर्तारा चर्षणीनां यन्तं सुम्नं रिशादसा॥ २॥**

**आ। यत्। योनिम्। हिरण्ययम्। वरुण। मित्र। सदथः। धर्तारा। चर्षणीनाम्। यन्तम्। सुम्नम्। रिशादसा॥ २॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**आ**) समन्तात् (**यत्**) यत् (**योनिम्**) कारणम् (**हिरण्ययम्**) तेजोमयम् (**वरुण**) (**मित्र**) (**सदथः**) (**धर्त्तारा**) (**चर्षणीनाम्**) मनुष्याणाम् (**यन्तम्**) प्राप्नुवन्तम् (**सुम्नम्**) सुखम् (**रिशादसा**) दुष्टानां दण्डयितारौ॥२॥

**अन्वयः**- हे रिशादसा मित्र वरुण! चर्षणीनां युवा यत्सुम्नं यन्तं हिरण्ययं योनिमा सदथस्तं वयमप्याऽऽसीदेम॥२॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यथा विद्वांसस्तेजोमयं विद्युद्रूपं सूर्य्यादिकारणं विज्ञायोपकुर्वन्ति तथैवैतत्कृत्वा मनुष्याः सुखं प्राप्नुवन्तु॥२॥

**पदार्थः**-हे (**रिशादसा**) दुष्टों को दण्ड देने वाले (**मित्र**) (**वरुण**) श्रेष्ठ (**चर्षणीनाम्**) मनुष्यों के (**धर्त्तारा**) धारण करने वाले तुम (**यत्**) जिस (**सुम्नम्**) सुख को (**यन्तम्**) प्राप्त होते हुए और (**हिरण्ययम्**) तेजःस्वरूप (**योनिम्**) कारण को (**आ**) सब प्रकार से (**सदथः**) प्राप्त हो उसको हम लोग भी प्राप्त होवें॥२॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे विद्वान् जन तेजःस्वरूप बिजुलीरूप सूर्य्य आदि कारण को जान के उपकार करते हैं, वैसे ही इसको करके मनुष्य सुख को प्राप्त हों॥२॥

**पुनर्मनुष्यैः कथं वर्त्तितव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को कैसे वर्त्तना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**विश्वे॒ हि वि॒श्ववे॑दसो॒ वरु॑णो मि॒त्रो अ॒र्य॒मा।**

**व्र॒ता प॒देव॑ सश्चिरे॒ पान्ति॒ मर्त्यं॑ रि॒षः॥३॥**

**विश्वे॑। हि। वि॒श्वऽवे॑दसः। वरु॑णः। मि॒त्रः। अ॒र्य॒मा। व्र॒ता। प॒दाऽइ॑व। स॒श्चि॒रे॒। पान्ति॑। मर्त्य॑म्। रि॒षः॥३॥**

**पदार्थः**-(**विश्वे**) सर्वे (**हि**) (**विश्ववेदसः**) समग्रप्राप्तविद्यैश्वर्याः (**वरुणः**) श्रेष्ठः (**मित्रः**) सर्वेषां सखा (**अर्यमा**) न्यायकारी (**व्रता**) व्रतानि सत्याचरणरूपाणि कर्म्माणि (**पदेव**) पद्यन्ते यैस्तानि पदानि चरणानीव (**सश्चिरे**) प्राप्नुवन्ति गच्छन्ति वा। **सश्चतीति गतिकर्म्मसु पठितम्।** (निघं०२.२४) (**पान्ति**) रक्षन्ति (**मर्त्यम्**) मनुष्यम् (**रिषः**) हिंसकाद्धिंसाया वा॥३॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! ये विश्वे विश्ववेदसो वरुणो मित्रोऽर्यमा च पदेव व्रता सश्चिरे रिषो मर्त्यं पान्ति ते हि युष्माभिर्माननीयाः सन्ति॥३॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यथा प्राणिनः पदैरभीष्टं स्थानान्तरं गत्वा स्वप्रयोजनं साध्नुवन्ति तथैव सत्यभाषणादीनि कर्माणि धर्मार्थं प्राप्याऽभीष्टमानन्दं साध्नुत॥३॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो (**विश्वे**) सब (**विश्ववेदसः**) सम्पूर्ण विद्या और ऐश्वर्य्य पाये हुए (**वरुणः**) श्रेष्ठ (**मित्रः**) और सब का मित्र (**अर्यमा**) और न्यायकारी जन (**पदेव**) चलते हैं जिनसे उन चरणों के सदृश (**व्रता**) सत्याचरण रूप कर्म्मों को (**सश्चिरे**) प्राप्त होते वा जाते हैं और (**रिषः**) मारने



www.9009.co.in

वाले से वा हिंसा से **(मर्त्यम्)** मनुष्य की **(पान्ति)** रक्षा करते हैं वे **(हि)** ही आप लोगों से आदर करने योग्य हैं॥३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जैसे प्राणी पैरों से अभीष्ट एक स्थान से दूसरे स्थान को जाके अपने प्रयोजन को सिद्ध करते हैं वैसे ही सत्यभाषण आदि कर्म्मों को धर्म्ममार्ग के लिए प्राप्त होकर अभीष्ट आनन्द को सिद्ध करो॥३॥

**पुनर्विद्वांसः कीदृशा भूत्वा किं कुर्य्युरित्याह॥**

फिर विद्वान् कैसे होकर क्या करें, इस विषय को कहते हैं॥

**ते हि स॒त्या ऋ॑त॒स्पृश॑ ऋ॒तावा॑नो॒ जने॑जने।**

**सु॒नी॒थासः॑ सु॒दान॑वो॒ऽहोश्चि॑दु॒रु॒चक्र॑यः॥४॥**

**ते। हि। स॒त्याः। ऋ॒त॒ऽस्पृशः॑। ऋ॒त॒ऽवा॑नः। जने॑ऽजने। सु॒ऽनी॒थासः॑। सु॒ऽदान॑वः। अं॒होः। चि॒त्। उ॒रु॒ऽचक्र॑यः॥४॥**

**पदार्थः**-**(ते)** **(हि)** यतः **(सत्याः)** सत्सु साधवः **(ऋतस्पृशः)** य ऋतं सत्यं यथार्थं स्पृशन्ति स्वीकुर्वन्ति ते **(ऋतावानः)** ऋतं सत्यं मतं कर्म वा विद्यते येषु ते **(जनेजने)** मनुष्ये मनुष्ये **(सुनीथासः)** सुनीतिप्रदाः **(सुदानवः)** शोभनं सद्विद्यादिदानं येषान्ते **(अंहोः)** अपराधात् **(चित्)** अपि **(उरुचक्रयः)** बहुकर्त्तारो महापुरुषार्थिनः॥४॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! हि यतो जनेजने ये सत्या ऋतस्पृश ऋतावानः सुदानवस्सुनीथास उरुचक्रयोंऽहोश्चित्पृथग्भूताः स्युस्ते सर्वदा सर्वथा सत्कर्त्तव्या भवन्तु॥४॥

**भावार्थः**-ये स्वयं धर्म्यगुणकर्म्मस्वभावाः सन्तो दुष्टाचाराद् पृथग्वर्त्तित्वाऽन्यान्मनुष्यांस्तादृशान् कुर्वन्ति ते धन्यवादार्हाः सन्ति॥४॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(हि)** जिससे **(जनेजने)** मनुष्य मनुष्य में जो **(सत्याः)** श्रेष्ठों में श्रेष्ठ **(ऋतस्पृशः)** यथार्थ को स्वीकार करने वाले **(ऋतावानः)** सत्य मत वा कर्म्म विद्यमान जिनमें वे **(सुदानवः)** सुन्दर श्रेष्ठ विद्या आदि का दान जिनका और **(सुनीथासः)** उत्तम नीति के देने और **(उरुचक्रयः)** बहुत करने वाले बड़े पुरुषार्थी हुए **(अंहोः)** अपराध से **(चित्)** भी **(पृथक्)** हुए होवें **(ते)** वे सर्वदा सब प्रकार से सत्कार करने योग्य हों॥४॥

**भावार्थः**-जो स्वयं धर्मयुक्त गुण, कर्म और स्वभाव वाले हुए दुष्ट आचरण से पृथक् वर्त्ताव करके अन्य मनुष्यों को तादृश अर्थात् अपने समान करते हैं, वे धन्यवाद के योग्य हैं॥४॥

**मनुष्यैर्विद्वद्भ्यः कथं विद्यां ग्राह्येत्याह॥**

मनुष्य विद्वानों से किस प्रकार विद्या ग्रहण करें, इस विषय को कहते हैं॥

**को नु वां॑ मि॒त्रास्तु॑तो वरु॑णो वा त॒नूना॑म्।**



www.9009.co.in

**तत्सु वामेषते मतिरत्रिभ्य एषते मतिः॥५॥५॥**

**कः। नु। वाम्। मित्र। अस्तुतः। वरुणः। वा। तनूनाम्। तत्। सु। वाम्। आ। ईषते। मतिः। अत्रिऽभ्यः। आ। ईषते। मतिः॥५॥**

**पदार्थः-(कः)** **(नु)** सद्यः **(वाम्)** युवयोः **(मित्र)** सुहृत् **(अस्तुतः)** अप्रशंसितः **(वरुणः)** उत्तमस्वभावः **(वा)** **(तनूनाम्)** शरीराणाम् **(तत्)** ताम् **(सु)** **(वाम्)** **(आ)** **(ईषते)** अभिगच्छति **(मतिः)** प्रज्ञा **(अत्रिभ्यः)** व्याप्तविद्येभ्यः **(आ)** **(ईषते)** समन्तात्प्राप्नोति **(मतिः)** मननशीलान्तःकरणवृत्तिः॥५॥

**अन्वयः**-हे मित्र! वां तनूनां क एषते त्वं वा वरुणः को न्वस्तुतोऽस्ति या वां मतिरस्मानेषतेऽत्रिभ्यो मतिः स्वेषते तत्तां वयं स्वीकुर्य्याम॥५॥

**भावार्थः**-ये मनुष्या अध्यापकोपदेशकानभिगम्य तदुपदेशान् विद्यां च गृहीत्वैतेभ्यः प्रज्ञामुत्तमकृतिं च स्वीकुर्वन्ति ते प्रसिद्धस्तुतयो जायन्त इति॥५॥

अत्र मित्रावरुणविद्वत्कृत्यवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति सप्तषष्टितमं सूक्तं पञ्चमो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे **(मित्र)** मित्र **(वाम्)** आप दोनों के **(तनूनाम्)** शरीरों के **(कः)** कौन **(आ, ईषते)** सब प्रकार से प्राप्त होता है, आप **(वा)** वा **(वरुणः)** उत्तम स्वभावयुक्त कौन **(नु)** शीघ्र **(अस्तुतः)** नहीं प्रशंसित है और जो **(वाम्)** आप दोनों की **(मतिः)** बुद्धि हम लोगों को **(आ, ईषते)** सब प्रकार प्राप्त होती है और **(अत्रिभ्यः)** व्याप्त विद्या जिनमें उनके लिये **(मतिः)** मननशील अन्तःकरण की वृत्ति **(सु)** उत्तम प्रकार प्राप्त होती है **(तत्)** उसका हम लोग स्वीकार करें॥५॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य अध्यापक और उपदेशकों को प्राप्त होकर उनके उपदेश और विद्या को ग्रहण करके उनसे बुद्धि और उत्तम क्रिया का स्वीकार करते हैं, वे प्रसिद्ध स्तुति वाले होते हैं॥५॥

इस सूक्त में मित्रावरुण और विद्वानों के कृत्य का वर्णन होने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह सड़सठवां सूक्त और पांचवां वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

अथ पञ्चर्चस्याष्टषष्टितमस्य सूक्तस्य यजत आत्रेय ऋषिः। मित्रावरुणौ देवते। १, २ गायत्री। ४ निचृद्गायत्री। ५ विराड् गायत्री छन्दः। षड्जः स्वरः॥

*अथ मनुष्यैर्मिथः किं कर्त्तव्यमित्याह॥*

अब मनुष्यों को परस्पर क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**प्र वो॑ मि॒त्राय॑ गायत॒ वरु॑णाय वि॒पा गि॒रा। महि॑क्षत्रावृ॒तं बृ॒हत्॥ १॥**

**प्र। व॒ः। मि॒त्राय॑। गा॒य॒त॒। वरु॑णाय। वि॒पा। गि॒रा। महि॑ऽक्षत्रौ। ऋ॒तम्। बृ॒हत्॥ १॥**

**पदार्थः-(प्र) (वः)** युष्माकम् **(मित्राय)** सुहृदे **(गायत)** प्रशंसत **(वरुणाय)** उत्तमाचरणाय **(विपा)** यौ विविधप्रकारेण पातस्तौ **(गिरा)** वाण्या **(महिक्षत्रौ)** महत्क्षत्रं ययोस्तौ **(ऋतम्)** सत्याढ्यम् **(बृहत्)** महत्॥ १॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! वो यौ विपा महिक्षत्रौ बृहदृतं गृह्णीयातां ताभ्यां मित्राय वरुणाय यूयं गिरा प्र गायत॥ १॥

**भावार्थः**-यावाध्यापकोपदेशकौ सर्वान् मनुष्यान् विद्यादिना शोधयतस्तौ मनुष्यैः सर्वदा सत्कर्त्तव्यौ॥ १॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(वः)** तुम लोगों के जो **(विपा)** अनेक प्रकार से रक्षा करने वाले **(महिक्षत्रौ)** बड़े क्षत्र जिनके वे **(बृहत्)** बड़े **(ऋतम्)** सत्य से युक्त को ग्रहण करें, उन दोनों से **(मित्राय)** मित्र के और **(वरुणाय)** उत्तम आचरण के लिये तुम **(गिरा)** वाणी से **(प्र, गायत)** प्रशंसा करो॥ १॥

**भावार्थः**-जो अध्यापक और उपदेशक जन सब मनुष्यों को विद्यादि से पवित्र करते हैं, वे मनुष्यों से सर्वदा सत्कार करने योग्य हैं॥ १॥

**मनुष्यैरिह कथं भवितव्यमित्याह॥**

मनुष्यो को यहां कैसे होना चाहिए, इस विषय को कहते हैं॥

**स॒म्राजा॒ या घृ॒तयो॑नी मि॒त्रश्चो॒भा वरु॑णश्च। दे॒वा दे॒वेषु॑ प्रश॒स्ता॥ २॥**

**स॒म्ऽराजा॑। या। घृ॒तयो॑नी॒ इति॑ घृ॒तऽयो॑नी। मि॒त्रः। च॒। उ॒भा। वरु॑णः। च॒। दे॒वा। दे॒वेषु॑। प्र॒ऽश॒स्ता॥ २॥**

**पदार्थः-(सम्राजा)** यौ सम्यग्राजेते तौ **(या)** यौ **(घृतयोनी)** घृतमुदकं कारणं ययोस्तौ **(मित्रः)** सखा **(च) (उभा)** उभौ **(वरुणः)** वरणीयः **(च) (देवा)** देवौ **(देवेषु)** विद्वत्सु **(प्रशस्ता)** श्रेष्ठौ॥ २॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! या घृतयोनी देवेषु प्रशस्ता सम्राजा देवा मित्रश्च वरुणश्चोभा प्रवर्त्तेते तौ यूयं बहु मन्यध्वम्॥ २॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-ये विद्वत्सु विद्वांसो राजपुरुषाश्चक्रवर्त्तिराज्यं साद्धुं शक्नुवन्ति त एव कीर्त्तिमन्तो जायन्ते॥२॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(या)** जो **(घृतयोनी)** घृतयोनी अर्थात् जल कारण जिनका वे **(देवेषु)** विद्वानों में **(प्रशस्ता)** श्रेष्ठ **(सम्राजा)** उत्तम प्रकार शोभित होने वाले **(देवा)** दो विद्वान् अर्थात् **(मित्रः)** मित्र **(च)** और **(वरुणः)** स्वीकार करने योग्य **(च)** भी **(उभा)** दोनों प्रवृत्त होते हैं, उन दोनों को आप लोग बहुत आदर करिये॥२॥

**भावार्थः**-जो विद्वानों में विद्वान् राजपुरुष चक्रवर्त्तिराज्य को सिद्ध कर सकते हैं, वे ही यशस्वी होते हैं॥२॥

**पुना राज्यं कथमुन्नेयमित्याह॥**

फिर राज्य कैसे उन्नति को प्राप्त करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**ता नः शक्तं पार्थिवस्य महो रायो दिव्यस्य। महि वां क्षत्रं देवेषु॥३॥**

**ता। नः। शक्तम्। पार्थिवस्य। महः। रायः। दिव्यस्य। महि। वाम्। क्षत्रम्। देवेषु॥३॥**

**पदार्थः-(ता)** तौ **(नः)** अस्माकम् **(शक्तम्)** समर्थम् **(पार्थिवस्य)** पृथिव्यां विदितस्य **(महः)** महतः **(रायः)** धनस्य **(दिव्यस्य)** दिवि शुद्धे व्यवहारे भवस्य **(महि)** महत् **(वाम्)** युवयोः **(क्षत्रम्)** राज्यं धन वा **(देवेषु)** सत्यविद्यां प्राप्तेषु॥३॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! [यो] नः पार्थिवस्य महो रायो दिव्यस्य शक्तं ययोर्वां देवेषु महि क्षत्रं वर्त्तते ता युवां वयं सत्कुर्य्याम॥३॥

**भावार्थः**-हे राजपुरुषा! युष्माभिर्यदि स्वं राज्यं विद्वद्भी रक्ष्येत तर्हि तत्पृथिव्यां विदितं समर्थं जायेत॥३॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो **(नः)** हम लोगों के सम्बन्ध में **(पार्थिवस्य)** पृथिवी में विदित **(महः)** बड़े **(रायः)** धन के और **(दिव्यस्य)** शुद्ध व्यवहार में हुए का **(शक्तम्)** समर्थ, जिन **(वाम्)** आप दोनों का **(देवेषु)** सत्य विद्या को प्राप्त हुओं में **(महि)** बड़ा **(क्षत्रम्)** राज्य वा धन वर्त्तमान है **(ता)** उन आप दोनों का हम लोग सत्कार करें॥३॥

**भावार्थः**-हे राजपुरुषो! आप लोग जो अपने राज्य वा विद्वानों से रक्षा करें तो वह पृथिवी में विदित हुआ समर्थ होवे॥३॥

**विद्वद्वदितरैर्वर्त्तितव्यमित्याह॥**

विद्वानों के सदृश इतरजनों को वर्त्ताव करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**ऋतमृतेन सपन्तेषिरं दक्षमाशाते। अद्रुहा देवौ वर्धेते॥४॥**

**ऋतम्। ऋतेन। सपन्ता। इषिरम्। दक्षम्। आशाते इति। अद्रुहा। देवौ। वर्धेते इति॥४॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**ऋतम्**) सत्यम् (**ऋतेन**) सत्येन (**सपन्ता**) आक्रोशन्तौ (**इषिरम्**) प्राप्तव्यम् (**दक्षम्**) बलम् (**आशाते**) (**अद्रुहा**) द्रोहरहितौ (**देवौ**) विद्वांसौ (**वर्धेते**)॥४॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथर्त्तेनर्त्तं सपन्तेषिरं दक्षमाशातेऽद्रुहा देवौ वर्धेते तथा यूयमपि प्रयतध्वम्॥४॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। मनुष्यैर्विद्वद्वत् क्रियां कृत्वा सदैव वर्धितव्यम्॥४॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे (**ऋतेन**) सत्य से (**ऋतम्**) सत्य का (**सपन्ता**) आक्रोश करते हुए (**इषिरम्**) प्राप्त होने योग्य (**दक्षम्**) बल को (**आशाते**) व्याप्त होते हैं और (**अद्रुहा**) द्वेष से रहित (**देवौ**) दो विद्वान् जन (**वर्धते**) वृद्धि को प्राप्त होते हैं, वैसे आप लोग भी प्रयत्न करो॥४॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। मनुष्यों को चाहिये कि विद्वानों के सदृश क्रिया करके सदा ही वृद्धि करें॥४॥

**पुनर्मनुष्यैः किं विज्ञाय किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को क्या जान क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**वृष्टिद्यावा रीत्यापेषस्पती दानुमत्याः। बृहन्तं गर्तमाशाते॥५॥६॥**

**वृष्टिऽद्यावा रीतिऽआपा। इषः। पती इति। दानुऽमत्याः। बृहन्तम्। गर्तम्। आशाते इति॥५॥**

**पदार्थः**-(**वृष्टिद्यावा**) वृष्टिश्च द्यौश्च याभ्यां तौ (**रीत्यापा**) रीतिश्चापश्च ययोस्तौ (**इषः**) अन्नादेः (**पती**) पालकौ (**दानुमत्याः**) बहूनि दानवो दानानि विद्यन्ते यस्यां पृथिव्यां तस्या मध्ये (**बृहन्तम्**) महान्तम् (**गर्त्तम्**) गृहम् (**आशाते**) व्याप्नुतः॥५॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! वृष्टिद्यावा रीत्यापेषस्पती वायुविद्युतौ दानुमत्या बृहन्तं गर्त्तमाशाते तौ यूयं विज्ञायोपकुरुत॥५॥

**भावार्थः**-यदि मनुष्या वृष्ट्यादिनिमित्तानि सूर्य्यवायुविद्युदादीनि जानीयुस्तर्हि तत्तत्कार्य्यं कर्त्तुं शक्नुयुरिति॥५॥

अत्र मित्रावरुणविद्वद्गुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इत्यष्टषष्टितमं सूक्तं षष्ठो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो (**वृष्टिद्यावा**) वृष्टि और अन्तरिक्ष के कारण (**रीत्यापा**) रीति और जल जिनके सम्बन्ध में वह (**इषः**) अन्न आदि के (**पती**) पालक वायु और विद्युदग्नि (**दानुमत्याः**) बहुत दान विद्यमान जिसमें उस पृथिवी के मध्य में (**बृहन्तम्**) बड़े (**गर्त्तम्**) गृह को (**आशाते**) व्याप्त होते हैं, उन दोनों को आप लोग जान के उपकार करो॥५॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य वृष्टि आदि में कारण सूर्य्य, वायु और बिजुली आदि को जानें तो उस कार्य्य को कर सकें॥५॥



www.9009.co.in

इस सूक्त में मित्र, श्रेष्ठ और विद्वान् के गुण-वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह अड़सठवां सूक्त और छठवां वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

**त्री रोचनेति चतुर्ऋचस्यैकोनसप्ततितमस्य सूक्तस्य उरुचक्रिरात्रेय ऋषिः। मित्रावरुणौ देवते। १ निचृत्त्रिष्टुप्। २ त्रिष्टुप्। ३, ४ विराट् त्रिष्टुप् छन्दः। गान्धारः स्वरः॥**

***अत्र मनुष्यैः किं विज्ञाय किं कर्त्तव्यमित्याह॥***

अब चार ऋचा वाले उनहत्तरवें सूक्त का आरम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में इस संसार में मनुष्यों को क्या जान कर क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**त्री रो॑चना व॑रुण त्रीँरु॒त द्यून् त्रीणि॑ मित्र धारयथो॒ रजां॑सि।**

**वा॒वृ॒धा॒नाव॒मतिं॑ क्ष॒त्रिय॒स्यानु॑ व्र॒तं रक्ष॑माणावजु॒र्यम्॥ १॥**

**त्री। रो॒च॒ना। व॒रु॒ण॒। त्रीन्। उ॒त। द्यून्। त्रीणि॑। मि॒त्र॒। धा॒र॒य॒थः॒। रजां॑सि। व॒वृ॒धा॒नौ। अ॒मति॑म्। क्ष॒त्रिय॑स्य। अनु॑। व्र॒तम्। रक्ष॑माणौ। अ॒जु॒र्यम्॥ १॥**

**पदार्थः-(त्री)** त्रीणि भौमविद्युत्सूर्यादीनि **(रोचना)** प्रकाशनानि **(वरुण)** उदान इव वर्त्तमान **(त्रीन्) (उत) (द्यून्)** प्रकाशान् **(त्रीणि)** प्रकाशनीयानि **(मित्र)** प्राण इव **(धारयथः) (रजांसि)** लोकान् **(वावृधानौ)** वर्धमानौ **(अमतिम्)** रूपम् **(क्षत्रियस्य)** क्षत्रापत्यस्य राज्ञः **(अनु) (व्रतम्)** कर्म शीलं वा **(रक्षमाणौ) (अजुर्य्यम्)** अजीर्णम्॥ १॥

**अन्वयः**-हे मित्र वरुण! यथा प्राणोदानौ त्री रोचना त्रीन् द्यूनुत त्रीणि प्रकाशनीयानि रजांसि वावृधानौ सन्तौ क्षत्रियस्यामतिमजुर्य्यमनु व्रतं रक्षणाणौ सन्तौ धारयतस्तथैतो युवां धारयथः॥ १॥

**भावार्थः**-अस्मिञ्जगति त्रिविधा दीप्तिवर्त्तत एका सूर्य्यस्य, द्वितीया विद्युतस्तृतीया भूमिस्थस्याग्नेस्ताः सर्वा ये क्षत्रियादयो जानीयुस्तेऽक्षयं राज्यं कर्त्तुं शक्नुयुः॥ १॥

**पदार्थः**-हे **(मित्र)** प्राणवायु के और **(वरुण)** उदानवायु के सदृश वर्त्तमान! जैसे प्राण और उदानवायु वा **(त्री)** तीन अर्थात् भूमि, बिजुली और सूर्य्य रूप अग्नि जो **(रोचना)** प्रकाश होने योग्य उनको और **(त्रीन्)** तीन **(द्यून्)** प्रकाशों **(उत)** और **(त्रीणि)** प्रकाशित होने योग्य **(रजांसि)** लोकों को **(वावृधानौ)** बढ़ाते हुए **(क्षत्रियस्य)** राजपूत राजा के **(अमतिम्)** रूप को और **(अजुर्य्यम्)** नहीं जीर्ण हुए **(अनु, व्रतम्)** कर्म वा स्वभाव को **(रक्षमाणौ)** रक्षा करते हुए धारण करते हैं, वैसे इन दोनों को आप दोनों **(धारयथः)** धारण करते हैं॥ १॥

**भावार्थः**-इस संसार में तीन प्रकार का प्रकाश है-एक सूर्य का, दूसरा बिजुली का, तीसरा पृथिवी में वर्त्तमान अग्नि का उन तीनों को जो क्षत्रिय आदि जानें, वे अक्षय राज्य करने को समर्थ होवें॥ १॥

**पुनर्मनुष्यैः किं कर्त्तव्यमित्याह॥**



www.9009.co.in

फिर मनुष्यों को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**इरावतीर्वरुण धेनवो वां मधुमद्वां सिन्धवो मित्र दुह्रे।**

**त्रयस्तस्थुर्वृषभासस्तिसृणां धिषणानां रेतोधा वि द्युमन्तः॥२॥**

**इरावतीः। वरुण। धेनवः। वाम्। मधुऽमत्। वाम्। सिन्धवः। मित्र। दुह्रे। त्रयः। तस्थुः। वृषभासः। तिसृणाम्। धिषणानाम्। रेतःऽधाः। वि। द्युऽमन्तः॥२॥**

**पदार्थः**-(**इरावतीः**) बह्वन्नादिसामग्रीस्ताः (**वरुण**) उत्तमकर्मकारी (**धेनवः**) वाण्यो गाव इव (**वाम्**) युवाम् (**मधुमत्**) (**वाम्**) (**सिन्धवः**) नद्यः (**मित्र**) सखे (**दुह्रे**) प्रपूरयन्ति (**त्रयः**) (**तस्थुः**) तिष्ठन्ति (**वृषभासः**) वर्षकाः (**तिसृणाम्**) त्रिविधानाम् (**धिषणानाम्**) कर्म्मोपासनाज्ञानविदाम् (**रेतोधाः**) यो रेतो वीर्यं दधाति सः (**वि**) (**द्युमन्तः**) प्रशस्तकामनायुक्ताः॥२॥

**अन्वयः**-हे वरुण मित्र! वां या इरावतीर्धेनवो मधुमद् दुह्रे ये सिन्धवो वां दुह्रे तिसृणां धिषणानां त्रयो द्युमन्तो वृषभासो रेतोधाश्च वितस्थुस्तान् युवां सम्प्रयुञ्जतम्॥२॥

**भावार्थः**-हे सर्वमित्रा जना! यूयं धेनुवत्सुखप्रदा नदीवन्मलापहारकाः प्रज्ञाप्रदाः कामनासिद्धिदाश्च भवन्तु॥२॥

**पदार्थः**-हे (**वरुण**) उत्तम कर्म्म के करने वाले (**मित्र**) मित्र! (**वाम्**) आप दोनों की जो (**इरावतीः**) बहुत अन्न आदि सामग्रियां (**धेनवः**) और वाणियाँ गौओं के सदृश (**मधुमत्**) मधुमान् जैसे हो, वैसे (**दुह्रे**) अच्छे प्रकार पूरित करती हैं और जो (**सिन्धवः**) नदियाँ वे (**वाम्**) आप दोनों को उत्तम प्रकार पूरित करती हैं (**तिसृणाम्**) तीन प्रकार के (**धिषणानाम्**) कर्म्म, उपासना और ज्ञान के जानने वालों के (**त्रयः**) तीन (**द्युमन्तः**) उत्तम कामनाओं से युक्त (**वृषभासः**) वर्षाने वाले (**रेतोधाः**) और जो वीर्य्य को धारण करता है वह (**वि**) विशेष करके (**तस्थुः**) स्थित होते हैं, उनको आप दोनों संप्रयुक्त करिये॥२॥

**भावार्थः**-हे सब के मित्र जनो! आप लोग गौ के सदृश सुख के देने वाले, नदी के सदृश मल के दूर करने, बुद्धि के देने और कामनाओं की सिद्धि के देने वाले हूजिये॥२॥

**मनुष्यैः सततं प्रयततितव्यमित्याह॥**

मनुष्यों को निरन्तर प्रयत्न करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**प्रातर्देवीमदितिं जोहवीमि मध्यंदिन उदिता सूर्यस्य।**

**राये मित्रावरुणा सर्वतातेळे तोकाय तनयाय शं योः॥३॥**

**प्रातः। देवीम्। अदितिम्। जोहवीमि। मध्यंदिने। उत्ऽइता। सूर्यस्य। राये। मित्राऽवरुणा। सर्वऽताता। ईळे। तोकाय। तनयाय। शम्। योः॥३॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**प्रातः**) (**देवीम्**) दिव्यां प्रज्ञाम् (**अदितिम्**) अखण्डितबोधाम् (**जोहवीमि**) भृशं गृह्णामि (**मध्यन्दिने**) मध्याह्ने (**उदिता**) उदिते (**सूर्य्यस्य**) (**राये**) धनाद्याय (**मित्रावरुणा**) प्राणोदानवन्मातापितरौ (**सर्वताता**) सर्वेषां सुखप्रदे यज्ञे (**ईळे**) प्रशंसे (**तोकाय**) अल्पाय (**तनयाय**) कुमाराय (**शम्**) सुखम् (**योः**) संयुक्तम्॥३॥

**अन्वयः**-हे मित्रावरुणा! यथाहं सर्वताता राये तोकाय तनयाय प्रातर्देवीमदितिं सूर्य्यस्य मध्यन्दिन उदिता योः शं जोहवीमि योऽहमीळे योऽहमीळे तथा युवामाचरतम्॥३॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। ये मनुष्या कुटुम्बपालनाय सतां शिक्षायै वृद्धये सर्वदा प्रयतन्ते ते विद्वत्कुलं कुर्वन्ति॥३॥

**पदार्थः**-हे (**मित्रावरुणा**) प्राण और वायु के सदृश माता और पिता! जैसे मैं (**सर्वताता**) सब के सुख देने वाले यज्ञ में (**राये**) धन आदि के लिये (**तोकाय**) छोटे (**तनयाय**) कुमार के अर्थ (**प्रातः**) प्रातःकाल (**देवीम्**) श्रेष्ठ बुद्धि को (**अदितिम्**) अखण्डित बोध से युक्त को और (**सूर्य्यस्य**) सूर्य्य के (**मध्यन्दिने**) मध्याह्न (**उदिता**) उदित में (**योः**) संयुक्त (**शम्**) सुख को (**जोहवीमि**) अत्यन्त ग्रहण करता हूँ और मैं (**ईळे**) प्रशंसा करता हूँ, वैसे आप दोनों आचरण कीजिये॥३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो मनुष्य कुटम्ब के पालन के लिये श्रेष्ठ पुरुषों की शिक्षा और वृद्धि के लिये सर्वदा प्रयत्न करते हैं, वे विद्वानों के कुल को करते हैं॥३॥

**मनुष्यैः किं किं ज्ञातव्यमित्याह॥**

मनुष्यों को क्या क्या जानना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**या धर्तारा रजसो रोचनस्योतादित्या दिव्या पार्थिवस्य।**

**न वां देवा अमृता आ मिनन्ति व्रतानि मित्रावरुणा ध्रुवाणि॥४॥७॥**

**या। धर्तारा। रजसः। रोचनस्य। उत। आदित्या। दिव्या। पार्थिवस्य। न। वाम्। देवाः। अमृताः। आ। मिनन्ति। व्रतानि। मित्रावरुणा। ध्रुवाणि॥४॥**

**पदार्थः**-(**या**) यौ (**धर्त्तारा**) धर्त्तारौ (**रजसः**) लोकस्य (**रोचनस्य**) दीप्तिमतः (**उत**) (**आदित्या**) आदित्यानाम् (**दिव्या**) दिव्यानाम् (**पार्थिवस्य**) पृथिव्यां विदितस्य (**न**) निषेधे (**वाम्**) युवयोः (**देवाः**) विद्वांसः (**अमृताः**) प्राप्तजीवनमुक्तिसुखाः (**आ**) समन्तात् (**मिनन्ति**) हिंसन्ति (**व्रतानि**) कर्म्माणि (**मित्रावरुणा**) प्राणोदानवदध्यापकोपदेशकौ (**ध्रुवाणि**) निश्चलानि॥४॥

**अन्वयः**-हे मित्रावरुणा! येऽमृता देवा वां ध्रुवाणि व्रतानि नामिनन्ति या रोचनस्य रजस आदित्या दिव्या उत पार्थिवस्य रजसो धर्त्तारा वर्त्तेते तौ विजानीयातम्॥४॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यौ वायुविद्युत्सूर्यौ सर्वलोकधर्त्तारौ वर्त्तेते तौ परमेश्वरेण धृताविति मत्वा सर्वमीश्वरेणैव धृतमिति वेद्यम्॥४॥



www.9009.co.in

अत्र मित्रावरुणाविद्युद्गुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इत्येकोनसप्ततितमं सूक्तं सप्तमो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे **(मित्रावरुणा)** प्राण और उदान वायु के समान वर्त्तमान अध्यापक और उपदेशक जनो! जो **(अमृता)** प्राप्त हुआ जीवनमुक्तिसुख जिनको वे **(देवाः)** विद्वान् जन **(वाम्)** आप दोनों के **(ध्रुवाणि)** निश्चित **(व्रतानि)** कर्म्मों का **(न)** नहीं **(आ)** सब प्रकार से **(मिनन्ति)** नाश करते हैं और **(या)** जो **(रोचनस्य)** प्रकाश वाले **(रजसः)** लोक के **(आदित्या)** सूर्य्यों के **(दिव्या)** प्रकाशमानों के **(उत)** और **(पार्थिवस्य)** पृथिवी में विदित लोक के **(धर्त्तारा)** धारण करने वाले वर्त्तमान हैं, उनको जानिये॥४॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो वायु बिजुली और सूर्य्य सम्पूर्ण लोक के धारण करने वाले हैं, वे परमेश्वर से धारण किये गये हैं, ऐसा जानकर सम्पूर्ण ईश्वर ने ही धारण किया ऐसा जानना चाहिये॥४॥

इस सूक्त में प्राण, उदान और बिजुली के गुणवर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह उनहत्तरवां सूक्त और सप्तम वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

**पुरूरुणेति चतुर्ऋचस्य] सप्ततितमस्य सूक्तस्य उरुचक्रिरात्रेय ऋषिः। मित्रावरुणौ देवते। १, २ विराड्गायत्री। ३ गायत्री। ४ निचृद्गायत्री छन्दः। षड्जः स्वरः॥**

*अथ मनुष्यैः किं कर्त्तव्यमित्याह॥*

अब चार ऋचा वाले सत्तरवें सूक्त का आरम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में मनुष्यों को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**पुरूरुणा चिद्ध्यस्त्यवो नूनं वां वरुण। मित्र वंसि वां सुमतिम्॥ १॥**

**पुरुऽउरुणा। चित्। हि। अस्ति। अवः। नूनम्। वाम्। वरुण। मित्र। वंसि। वाम्। सुऽमतिम्॥ १॥**

**पदार्थः-(पुरूरुणा)** बहुतरम्। अत्र **सुपां सुलुगि**त्याकारादेशः। **(चित्)** अपि **(हि)** यतः **(अस्ति)** **(अवः)** रक्षणादिकम् **(नूनम्)** निश्चितम् **(वाम्)** युवयोः **(वरुण)** वर **(मित्र)** सखे **(वंसि)** सम्भजसि **(वाम्)** युवयोः **(सुमतिम्)** शोभनां प्रज्ञाम्॥ १॥

**अन्वयः**-हे मित्र वरुण! हि वां यत्पुरूरुणा नूनमवोऽस्ति यत् चित् त्वं वंसि यो वां सुमतिं गृह्णाति तौ युवां तं च वयं सेवेमहि॥ १॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! ये रक्षका राजपुरुषाः प्रजा अत्यन्तं रक्षन्ति त एव प्रजापुरुषैः सेव्याः सन्ति॥ १॥

**पदार्थः**-हे **(मित्र)** मित्र **(वरुण)** श्रेष्ठ! **(हि)** जिससे **(वाम्)** आप दोनों का जो **(पुरूरुणा)** अत्यन्त बहुत **(नूनम्)** निश्चित **(अवः)** रक्षण आदि **(अस्ति)** है और जिसको **(चित्)** निश्चित आप **(वंसि)** सेवन करते हैं और जो **(वाम्)** आप दोनों की **(सुमतिम्)** उत्तम बुद्धि को ग्रहण करता है, उन आप दोनों और उसकी हम लोग सेवा करें॥ १॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो रक्षक राजपुरुष प्रजाओं की अत्यन्त रक्षा करते हैं, वे ही प्रजापुरुषों से सेवा करने योग्य हैं॥ १॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**ता वां सम्यगद्रुह्वाणेषमश्याम धायसे। वयं ते रुद्रा स्याम॥ २॥**

**ता। वाम्। सम्यक्। अद्रुह्वाणा। इषम्। अश्याम। धायसे। वयम्। ते। रुद्रा। स्याम॥ २॥**

**पदार्थः-(ता)** तौ **(वाम्)** युवयोः **(सम्यक्)** **(अद्रुह्वाणा)** द्रोहरहितौ **(इषम्)** अन्नं विज्ञानं वा **(अश्याम)** प्राप्नुयाम **(धायसे)** धर्त्तुम् **(वयम्)** **(ते)** **(रुद्रा)** रुतो रोदनाद्रावयितारौ **(स्याम)** भवेम॥ २॥

**अन्वयः**-हे अद्रुह्वाणा रुद्रा! वयं वां धायस इष सम्यगश्याम ते वयं ता सेवन्तः सर्वस्य धायसे स्याम॥ २॥



www.9009.co.in

**भावार्थ:**-तावेवाध्यापकोपदेशकौ कृतक्रियौ भवतां यौ क्रोधलोभादिविरहौ स्यातां ये ताभ्यामधीयते ते विद्याधारणे प्रयतमानाः स्युः॥२॥

**पदार्थ:**-हे **(अद्रुह्वाणा)** द्वेष से रहित **(रुद्रा)** रोदन से शब्द कराने वाले! **(वयम्)** हम लोग **(वाम्)** आप दोनों के **(धायसे)** धारण करने को **(इषम्)** अन्न वा विज्ञान को **(सम्यक्)** उत्तम प्रकार **(अश्याम)** प्राप्त होवें **(ते)** वे हम लोग **(ता)** उन दोनों का सेवन करते हुए सब के धारण करने को **(स्याम)** होवें॥२॥

**भावार्थ:**-वे ही अध्यापक और उपदेशक कृतक्रिय होवें, जो क्रोध और लोभ आदि दोषों से रहित होवें और जो उनसे पढ़ते हैं, वे विद्या के धारण में प्रयत्न करते हुए होवें॥२॥

**पुनर्मनुष्याः कथं वर्त्तेरन्नित्याह॥**

फिर मनुष्य कैसे वर्त्तें, इस विषय को कहते हैं॥

**पातं नो रुद्रा पायुभिरुत त्रायेथां सुत्रात्रा। तुर्याम दस्यून् तनूभिः॥३॥**

**पातम्। नः। रुद्रा। पायुऽभिः। उत। त्रायेथाम्। सुऽत्रात्रा। तुर्याम। दस्यून्। तनूभिः॥३॥**

**पदार्थ:-(पातम्) (नः)** अस्मान् **(रुद्रा)** दुष्टानां रोदयितारौ **(पायुभिः)** रक्षणै रक्षकैर्वा **(उत)** अपि **(त्रायेथाम्) (सुत्रात्रा)** यः सुष्ठु त्रायते तेन **(तुर्याम)** हिंस्याम **(दस्यून्)** दुष्टान् स्तेनान् **(तनूभिः)** शरीरैः॥३॥

**अन्वय:**-हे रुद्रा सभासेनेशौ! युवां सुत्रात्रा सह पायुभिर्नः पातमुत त्रायेथाम्। यतो वयं तनूभिर्दस्यूंस्तुर्याम॥३॥

**भावार्थ:**-हे मनुष्या! यौ सभासेनेशौ सततं प्रजा रक्षेतां तयो रक्षणं प्रजाः कुर्युः॥३॥

**पदार्थ:**-हे **(रुद्रा)** दुष्टों के रुलाने वाले सभा और सेना के स्वामी! आप दोनों **(सुत्रात्रा)** उत्तम प्रकार पालन करने वाले के साथ **(पायुभिः)** रक्षणों वा रक्षकों से **(नः)** हम लोगों का **(पातम्)** पालन करिये और **(उत)** भी **(त्रायेथाम्)** रक्षा कीजिये जिससे हम लोग **(तनूभिः)** शरीरों से **(दस्यून्)** दुष्ट चोरों का **(तुर्याम)** नाश करें॥३॥

**भावार्थ:**-हे मनुष्यो! जो सभा और सेना के स्वामी निरन्तर प्रजाओं की रक्षा करें, उन का रक्षण प्रजा करें॥३॥

**उत्तमैः कस्माच्चिदपि पुरुषाद्दानं कदाचिन्न ग्रहीतव्यमित्याह॥**

उत्तमों को किसी पुरुष से भी दान कभी न ग्रहण करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**मा कस्याद्भुतक्रतू यक्षं भुजेमा तनूभिः। मा शेषसा मा तनसा॥४॥८॥**

**मा। कस्य। अद्भुतक्रतू इत्यद्भुतऽक्रतू। यक्षम्। भुजेम। तनूभिः। मा। शेषसा। मा। तनसा॥४॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-**(मा)** **(कस्य)** **(अद्भुतक्रतू)** अद्भुतां क्रतुः प्रज्ञा कर्म्म वां ययोस्तौ **(यक्षम्)** दानम् **(भुजेमा)** पालयेम। अत्र **संहितायामि**ति दीर्घः। **(तनूभिः)** शरीरैः **(मा)** **(शेषसा)** अपत्यैः सह वर्त्तमानाः **(मा)** **(तनसा)** पौत्रादिसहिता॥४॥

**अन्वयः**-हे अद्भुतक्रतू! वयं तनूभिः कस्यचिद्यक्षं मा भुजेम। शेषसा मा भुजेम तनसा मा भुजेम॥४॥

**भावार्थः**-विद्वांस एवमुपदेशं कुर्य्युर्येन कस्माच्चिद्दानं कोऽपि न गृह्णीयात्। तथैव मातापितृभ्यां पुत्रपौत्रादयोऽपि दानरुचिं न कुर्य्युरिति॥४॥

अत्र मित्रावरुणविद्वद्गुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति सप्ततितमं सूक्तमष्टमो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे **(अद्भुतक्रतू)** अद्भुत बुद्धि वा कर्म वालो! हम लोग **(तनूभिः)** शरीरों से **(कस्य)** किसी के **(यक्षम्)** दान का **(मा)** नहीं **(भुजेम)** सेवन करें और **(शेषसा)** अन्यों के साथ वर्त्तमान हुए **(मा)** नहीं पालन करें और **(तनसा)** पौत्र आदि के सहित **(मा)** नहीं पालन करें॥४॥

**भावार्थः**-विद्वान् जन ऐसा उपदेश करें जिससे कि किसी से दान कोई भी नहीं ग्रहण करे, वैसे ही माता और पिता से पुत्र, पौत्र आदि भी दान की रुचि न करें॥४॥

इस सूक्त में प्राण, उदान और विद्वान् के गुण-वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह सत्तरवां सूक्त और अष्टम वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

**आ नो गन्तमिति त्र्यृचस्यैकसप्ततितमस्य सूक्तस्य बाहुवृक्त आत्रेय ऋषिः। मित्रावरुणौ देवते। १, २, ३ गायत्री छन्दः। षड्जः स्वरः॥**

***पुनरध्यापकोपदेशकौ किं कुर्य्यातामित्याह॥***

अब तीन ऋचा वाले एकहत्तरवें सूक्त का आरम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में फिर अध्यापक और उपदेशक क्या करें, इस विषय को कहते हैं॥

**आ नो गन्तं रिशादसा वरुण मित्र बर्हणा। उपेमं चारुमध्वरम्॥१॥**

**आ। नः। गन्तम्। रिशादसा। वरुण। मित्र। बर्हणा। उप। इमम्। चारुम्। अध्वरम्॥१॥**

**पदार्थः**-(**आ**) समन्तात् (**नः**) अस्माकम् (**गन्तम्**) गच्छतम् (**रिशादसा**) दुष्टहिंसकौ (**वरुण**) श्रेष्ठ (**मित्र**) सुहृत् (**बर्हणा**) वर्धकौ (**उप**) (**इमम्**) (**चारुम्**) सुन्दरम् (**अध्वरम्**) यज्ञम्॥१॥

**अन्वयः**-हे रिशादसा वरुण मित्र! बर्हणा युवामिमं नश्चारुमध्वरमुपागन्तम्॥१॥

**भावार्थः**-यदि विद्वांसौ व्यवहाराख्यं यज्ञमकरिष्यंस्तर्ह्यस्माकमुन्नतये प्रभवोऽभविष्यन्॥१॥

**पदार्थः**-हे (**रिशादसा**) दुष्टों के मारने वाले (**वरुण**) श्रेष्ठ और (**मित्र**) मित्र! (**बर्हणा**) बढ़ाने वाले आप दोनों (**इमम्**) इस (**नः**) हम लोगों के (**चारुम्**) सुन्दर (**अध्वरम्**) यज्ञ के (**उप**) समीप (**आ**) सब प्रकार से (**गन्तम्**) प्राप्त होओ॥१॥

**भावार्थः**-जो विद्वान् जन व्यवहार नामक यज्ञ को करें तो हम लोगों की उन्नति के लिये समर्थ हों॥१॥

**पुनर्मनुष्यैः किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**विश्वस्य हि प्रचेतसा वरुण मित्र राजथः। ईशाना पिप्यतं धियः॥२॥**

**विश्वस्य। हि। प्रऽचेतसा। वरुण। मित्र। राजथः। ईशाना। पिप्यतम्। धियः॥२॥**

**पदार्थः**-(**विश्वस्य**) संसारस्य (**हि**) यतः (**प्रचेतसा**) प्रकृष्टज्ञानौ (**वरुण**) वरप्रद (**मित्र**) सर्वसुखकारक (**राजथः**) (**ईशाना**) समर्थौ (**पिप्यतम्**) वर्धयेतम् (**धियः**) बुद्धीः॥२॥

**अन्वयः**-हे प्रचेतसेशाना वरुण मित्र विश्वस्य मध्ये युवां राजथः धियो हि पिप्यतम्॥२॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यथान्तरिक्षे सूर्य्याचन्द्रमसौ प्रकाशेते तथा जनानां बुद्धीर्वर्द्धयन्तु॥२॥

**पदार्थः**-हे (**प्रचेतसा**) उत्तम ज्ञान वाले (**ईशाना**) समर्थ (**वरुण**) वर के देने और (**मित्र**) सब के सुख करने वालो! (**विश्वस्य**) संसार के मध्य में आप दोनों (**राजथः**) प्रकाशित होते हैं और (**धियः**) बुद्धियों को (**हि**) ही (**पिप्यतम्**) बढ़ाइये॥२॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे अन्तरिक्ष में सूर्य्य और चन्द्रमा प्रकाशित होते हैं, वैसे मनुष्यों की बुद्धियों को बढ़ाइये॥२॥

**अथ विद्वद्गुणानाह॥**

अब विद्वानों के गुणों को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**उप॑ नः सु॒तमा ग॑तं॒ वरु॑ण॒ मित्र॑ दा॒शुषः॑। अ॒स्य सोम॑स्य पी॒तये॑॥३॥९॥**

**उप॑। नः॒। सु॒तम्। आ। ग॒तम्। वरु॑ण। मित्र॑। दा॒शुषः॑। अ॒स्य। सोम॑स्य। पी॒तये॑॥३॥**

**पदार्थः**-**(उप)** समीपे **(नः)** अस्माकम् **(सुतम्)** निष्पन्नम् **(आ)** **(गतम्)** आगच्छतम् **(वरुण)** श्रेष्ठ **(मित्र)** मित्र **(दाशुषः)** दातुः **(अस्य)** **(सोमस्य)** महौषधिरसस्य **(पीतये)** पानाय॥३॥

**अन्वयः**-हे मित्र वा वरुण! युवामस्य दाशुषः सोमस्य पीतये नः सुतमुपागतम्॥३॥

**भावार्थः**-मनुष्या धार्मिकान् विदुष आहूय सदा सत्कुर्वन्त्विति॥३॥

अत्र मित्रावरुणविद्वद्गुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इत्येकसप्ततितमं सूक्तं नवमो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे **(मित्र)** मित्र **(वरुण)** श्रेष्ठ! आप दोनों **(अस्य)** इस **(दाशुषः)** देने वाले के **(सोमस्य)** बड़ी औषधियों के रस को **(पीतये)** पीने के लिये **(नः)** हम लोगों के **(सुतम्)** उत्पन्न किये हुए पदार्थ के **(उप)** समीप में **(आ, गतम्)** आइये॥३॥

**भावार्थः**-मनुष्य धार्मिक विद्वानों को बुलाकर सदा उनका सत्कार करें॥३॥

इस सूक्त में मित्र, श्रेष्ठ और विद्वानों के गुण-वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥३॥

**यह इकहत्तरवां सूक्त और नववां वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

**आमित्र इति त्र्यृचस्य द्विसप्ततितमस्य सूक्तस्य बाहुवृक्त आत्रेय ऋषिः। मित्रावरुणौ देवते। १, २, ३ उष्णिक् छन्दः। ऋषभः स्वरः॥**

***अथ मनुष्यान् प्रति कथं कथं वर्त्तितव्यमित्याह॥***

अब तीन ऋचा वाले बहत्तरवें सूक्त का आरम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में मनुष्यों के प्रति कैसे वर्त्तना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**आ मित्रे वरुणे वयं गीर्भिर्जुहुमो अत्रिवत्। नि बर्हिषि सदतं सोमपीतये॥१॥**

**आ। मित्रे। वरुणे। वयम्। गीःऽभिः। जुहुमः। अत्रिऽवत्। नि। बर्हिषि। सदतम्। सोमऽपीतये॥१॥**

**पदार्थः**-(**आ**) (**मित्रे**) (**वरुणे**) उत्तमे पुरुषे (**वयम्**) (**गीर्भिः**) वाग्भिः (**जुहुमः**) (**अत्रिवत्**) अविद्यमानत्रिविधदुःखेन तुल्यम् (**नि**) (**बर्हिषि**) उत्तमे गृहे आसने वा (**सदतम्**) सीदतम् (**सोमपीतये**) सोमस्य पानाय॥१॥

**अन्वयः**-हे अध्यापकोपदेशकौ! वयं गीर्भिरत्रिवन्मित्रे वरुण आ जुहुमः युवां सोमपीतये बर्हिषि उत्तमे नि सदतम्॥१॥

**भावार्थः**-ये मित्रवद्वर्त्तित्वा सर्वं जगत्सत्कुर्वन्ति तदनुसरणैः सर्वैर्वर्त्तितव्यम्॥१॥

**पदार्थः**-हे अध्यापक और उपदेशक जनो! जैसे (**वयम्**) हम लोग (**गीर्भिः**) वाणियों से (**अत्रिवत्**) नहीं विद्यमान तीन प्रकार का दुःख जिसको उसके तुल्य (**मित्रे**) मित्र और (**वरुणे**) उत्तम पुरुष के निमित्त (**आ, जुहुमः**) अच्छे प्रकार होम करते है और आप (**सोमपीतये**) सोम रस के पान करने के लिये (**बर्हिषि**) उत्तम गृह वा आसन में (**नि, सदतम्**) बैठिये॥१॥

**भावार्थः**-जो मित्र के सदृश वर्त्ताव करके संपूर्ण जगत् का सत्कार करते हैं, उनके अनुसार सबको वर्त्तना चाहिये॥१॥

**पुनर्मनुष्यैः कथं वर्त्तितव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को कैसे वर्त्तना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**व्रतेन स्थो ध्रुवक्षेमा धर्मणा यातयज्जना। नि बर्हिषि सदतं सोमपीतये॥२॥**[85]

**व्रतेन। स्थः। ध्रुवऽक्षेमा। धर्मणा। यातयत्ऽजना। नि। बर्हिषि। सदतम्। सोमऽपीतये॥२॥**

८५. अन्यत्र 'सदताम्' उपलभ्यते।



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**व्रतेन**) धर्मयुक्तेन कर्म्मणा (**स्थः**) भवथः (**ध्रुवक्षेमा**) ध्रुवं क्षेमं रक्षणं ययोस्तौ (**धर्म्मणा**) धर्म्मेण सह वर्त्तमानौ (**यातयज्जना**) यातयन्तो जना ययोस्तौ (**नि**) (**बर्हिषि**) उत्तमे व्यवहारे (**सदतम्**) तिष्ठतम् (**सोमपीतये**) सोमस्य पानाय॥२॥

**अन्वयः**-हे ध्रुवक्षेमा यातयज्जना! यौ युवां धर्म्मणा व्रतेन स्थस्तौ सोमपीतये बर्हिषि निषदतम्॥२॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य निश्चितधर्मव्रतशीलानि धरन्ति ते स्थिरसुखा जायन्ते॥२॥

**पदार्थः**-हे (**ध्रुवक्षेमा**) निश्चित रक्षण और (**यातयजना**) यत्न कराते हुए जनों वाले मनुष्यो! जो तुम (**धर्म्मणा**) धर्म्म के और (**व्रतेन**) धर्म्मयुक्त कर्म्म के साथ वर्त्तमान (**स्थः**) होते हो [वे दोनों आप] (**सोमपीतये**) सोम पीने के लिये (**बर्हिषि**) उत्तम व्यवहार में (**नि, सदतम्**) उपस्थित हूजिये॥२॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य निश्चित धर्म्म व्रत और शील को धारण करते हैं, वे दृढ़ सुख से युक्त होते हैं॥२॥

**मनुष्यैरिह कथं वर्त्तितव्यमित्याह॥**

मनुष्यों को यहां कैसे वर्त्तना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**मि॒त्रश्च॑ नो॒ वरु॑णश्च जु॒षेतां॑ य॒ज्ञमि॒ष्टये॑। नि ब॒र्हिषि॑ सदतं॒ सोम॑पीतये॥३॥१०॥५॥**

**मि॒त्रः। च॒। नः॒। वरु॑णः। च॒। जु॒षेता॑म्। य॒ज्ञम्। इ॒ष्टये॑। नि। ब॒र्हिषि॑। स॒द॒तम्। सोम॑ऽपीतये॥३॥**

**पदार्थः**-(**मित्रः**) सखा (**च**) (**नः**) अस्माकम् (**वरुणः**) वरणीयः (**च**) (**जुषेताम्**) (**यज्ञम्**) (**इष्टये**) इष्टसुखाय (**नि**) (**बर्हिषि**) उत्तमे व्यवहारे (**सदतम्**) निषीदतम् (**सोमपीतये**) सोमस्य पानाय॥३॥

**अन्वयः**-हे स्त्रीपुरुषौ! यथा मित्रश्च वरुणश्चेष्टये सोमपीतये नो यज्ञं जुषेतां बर्हिष्याशाते तथा युवां निषदतम्॥३॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। ये सखीवद्वर्त्तित्वेष्टसुखं सिषाधिषन्ति ते गणनीया जायन्ते॥३॥

अत्र मित्रवरुणविद्वद्गुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इत्यृग्वेदे द्विसप्ततितमं सूक्तं पञ्चमोऽनुवाकश्चतुर्थाष्टको दशमो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे स्त्री पुरुषो! जैसे (**मित्रः**) मित्र (**च**) और (**वरुणः**) स्वीकार करते योग्य जन (**च**) भी (**इष्टये**) इष्ट सुख के लिये और (**सोमपीतये**) सोमरस के पान के लिये (**नः**) हम लोगों के (**यज्ञम्**) यज्ञ का (**जुषेताम्**) सेवन करिये और (**बर्हिषि**) उत्तम व्यवहार में प्रवृत्त होते हैं, वैसे आप दोनों (**नि, सदतम्**) स्थिर हूजिये॥३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो मित्र के सदृश वर्त्ताव करके वांछित सुख से सिद्ध करने की इच्छा करते हैं, वे गणना करने योग्य होते हैं॥३॥



www.9009.co.in

इस सूक्त में मित्र और श्रेष्ठ विद्वान् के गुण–वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ संगति जाननी चाहिये।।

**यह ऋग्वेद में बहत्तरवां सूक्त पञ्चम अनुवाक और चतुर्थ अष्टक में दशवां वर्ग समाप्त हुआ।।**



www.9009.co.in

**॥ओ३म्॥**

**यदद्य स्थ इति दशर्चस्य त्रिसप्ततितमस्य सूक्तस्य पौर आत्रेय ऋषिः। अश्विनौ देवते। १, २, ५, ७, निचृदनुष्टुप्। ३, ४, ६, ८, ९ अनुष्टुप्। १० विराडनुष्टुप् छन्दः। गान्धारः स्वरः॥**

***पुनः स्त्रीपुरुषौ कथं वर्त्तेयातामित्याह॥***

अब दश ऋचा वाले तिहत्तरवें सूक्त का आरम्भ है, इसके प्रथम मन्त्र में फिर स्त्री-पुरुष कैसे वर्त्तें, इस विषय को कहते हैं॥

**यदद्य स्थः परावति यदर्वावत्यश्विना। यद्वा पुरू पुरुभुजा यदन्तरिक्ष आ गतम्॥ १॥**

**यत्। अद्य। स्थः। पराऽवति। यत्। अर्वाऽवति। अश्विना। यत्। वा। पुरु। पुरुऽभुजा। यत्। अन्तरिक्षे। आ। गतम्॥ १॥**

**पदार्थः**-(**यत्**) यौ (**अद्य**) (**स्थः**) तिष्ठथः (**परावति**) दूरदेशे (**यत्**) यौ (**अर्वावति**) निकटदेशे (**अश्विना**) वायुविद्युतौ (**यत्**) यौ (**वा**) (**पुरू**) बहु। अत्र **संहितायामिति** दीर्घः। (**पुरुभुजा**) बहुपालकौ (**यत्**) यौ (**अन्तरिक्षे**) आकाशे (**आ**) (**गतम्**) आगच्छतम्॥ १॥

**अन्वयः**-हे स्त्रीपुरुषा! यदश्विना परावति यदर्वावति यत् पुरुभुजा वा यदन्तरिक्षे पुरू स्थस्तयोर्विज्ञानायाऽद्यागतम्॥ १॥

**भावार्थः**-यौ ब्रह्मचर्य्येण विद्यामधीत्य परस्परप्रीत्या गृहारम्भं कुर्य्यातां तौ स्त्रीपुरुषौ शिल्पविद्यामपि साद्धुं शक्नुयाताम्॥ १॥

**पदार्थः**-हे स्त्री पुरुषो! (**यत्**) जो (**अश्विना**) वायु [और] बिजुली (**परावति**) दूर देश में और (**यत्**) जो (**अर्वावति**) निकट देश में (**यत्**) जो (**पुरुभुजा**) बहुतों के पालन करने वाले (**वा**) वा (**यत्**) जो (**अन्तरिक्षे**) आकाश में (**पुरू**) बहुत (**स्थः**) स्थित होते हैं, उनके विज्ञान के लिये (**अद्य**) आज (**आ, गतम्**) आइये॥ १॥

**भावार्थः**-जो ब्रह्मचर्य्य से विद्या को पढ़कर परस्पर प्रीति से गृहारम्भ करें, वे स्त्री-पुरुष शिल्प विद्या को भी सिद्ध कर सकें॥ १॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**इह त्या पुरुभूतमा पुरू दंसांसि बिभ्रता। वरस्या याम्यध्रिगू हुवे तुविष्टमा भुजे॥ २॥**

**इह। त्या। पुरुऽभूतमा। पुरु। दंसांसि। बिभ्रता। वरस्या। यामि। अध्रिगू इत्यध्रिऽगू। हुवे। तुविःऽतमा। भुजे॥ २॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**इह**) (**त्या**) तौ (**पुरुभूतमा**) अतिशयेन बहुव्यापकौ (**पुरू**) बहूनि (**दंसांसि**) कर्म्माणि (**बिभ्रता**) धरन्तौ (**वरस्या**) अतिशयेन वरौ (**यामि**) प्राप्नोमि (**अध्रिगू**) अधिकगन्तारौ (**हुवे**) स्वीकरोमि (**तुविष्टमा**) अतिशयेन बलिष्ठौ (**भुजे**) भोगाय॥२॥

**अन्वयः**-हे पत्नि! यौ पुरुभूतमा पुरु दंसांसि बिभ्रता वरस्या तुविष्टमाऽध्रिगू इह भुजे हुवे याभ्यामिष्टसिद्धिं यामि त्या त्वमपि संप्रयुङ्क्ष्व॥२॥

**भावार्थः**-यत्र स्त्रीपुरुषौ तुल्यगुणकर्म्मस्वभावसुरूपौ वर्त्तेते तत्र सकलपदार्थविद्या जायते॥२॥

**पदार्थः**-हे स्त्रि! जिन (**पुरुभूतमा**) अत्यन्त बहुत व्यापक (**पुरु**) बहुत (**दंसांसि**) कर्म्मों को (**बिभ्रता**) धारण करते हुए (**वरस्या**) अत्यन्त श्रेष्ठ और (**तुविष्टमा**) अत्यन्त बलिष्ठ (**अध्रिगू**) अधिक चलने वालों को (**इह**) इस संसार में (**भुजे**) भोग के लिये (**हुवे**) स्वीकार करता हूं, जिन दोनों से इष्टसिद्धि को (**यामि**) प्राप्त होता हूं (**त्या**) उन दोनों को तू भी संप्रयुक्त कर॥२॥

**भावार्थः**-जहां स्त्री और पुरुष तुल्य गुण, कर्म्म, स्वभाव और सुरूपवान् हैं, वहाँ सम्पूर्ण पदार्थविद्या होती है॥२॥

**मनुष्यैरतः परं किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

मनुष्यों को इसके आगे क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**ई॒र्मान्यद्वपु॑षे॒ वपु॑श्च॒क्रं रथ॑स्य येमथुः। पर्य॒न्या नाहु॑षा यु॒गा म॒ह्ना रजां॑सि दीयथः॥३॥**

**ई॒र्मा। अ॒न्यत्। वपु॑षे। वपुः॑। च॒क्रम्। रथ॑स्य। ये॒म॒थुः॒। परि॑। अ॒न्या। नाहु॑षा। यु॒गा। म॒ह्ना। रजां॑सि। दी॒य॒थः॒॥३॥**

**पदार्थः**-(**ईर्मा**) प्राप्तव्यं ज्ञातव्यं वा (**अन्यत्**) (**वपुषे**) सुरूपाय (**वपुः**) सुरूपम् (**चक्रम्**) चरति येन तत् (**रथस्य**) (**येमथुः**) गमयतम् (**परि**) सर्वतः (**अन्या**) अन्यानि (**नाहुषा**) मनुष्याणामिमानि (**युगा**) युगानि वर्षाणि वर्षसमूहा वा (**मह्ना**) महत्त्वेन (**रजांसि**) लोकान् (**दीयथः**) क्षयथः॥३॥

**अन्वयः**-हे स्त्रीपुरुषौ! वायुसूर्य्याविव यौ युवां रथस्य चक्रमिव वपुषेऽन्यदीर्मा वपुर्येमथुरन्या नाहुषा युगा परियेमथुर्मह्ना रजांसि दीयथस्तौ कालविद्यां ज्ञातुमर्हथः॥३॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यथा रथचक्राणि भ्रमन्ति तथाऽहर्निशं कालचक्रं भ्रमति येन क्षणादियुगकल्पमहाकल्पादिका गणितविद्या सिद्ध्यतीति वित्त॥३॥

**पदार्थः**-हे स्त्री और पुरुषो! वायु और सूर्य्य के सदृश जो तुम (**रथस्य**) वाहन के (**चक्रम्**) चलता है जिससे उस पहिये के सदृश (**वपुषे**) सुन्दर रूप के लिये (**अन्यत्**) अन्य (**ईर्मा**) प्राप्त होने वा जानने योग्य (**वपुः**) सुरूप को (**येमथुः**) प्राप्त होओ और (**अन्या**) अन्य (**नाहुषा**) मनुष्यों के सम्बन्धी (**युगा**) वर्ष वा वर्षों के समूहों को (**परि**) सब ओर से प्राप्त होओ और (**मह्ना**) महत्त्व से (**रजांसि**) लोकों का (**दीयथः**) नाश करते हो, वे कालविद्या के जानने योग्य हो॥३॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे रथ के पहिये घूमते हैं, वैसे दिन-रात्रि कालसम्बन्धी चक्र घूमता है, जिससे क्षण आदि तथा युग, कल्प और महाकल्प आदि सम्बन्धी गणितविद्या सिद्ध होती है, ऐसा जानो॥३॥

**पुनर्मनुष्याः किं विजानीयुरित्याह॥**

फिर मनुष्य क्या विशेष जानें, इस विषय को कहते हैं॥

**तदू षु वा॒मे॒ना कृ॒तं विश्वा॒ यद्वा॒मनु॒ ष्टवे॑।**

**नाना॑ जा॒तावरे॒पसा॒ सम॒स्मे बन्धु॒मेय॑थुः॥४॥**

**तत्। ऊँ॒ इति॑। सु। वा॒म्। ए॒ना। कृ॒तम्। विश्वा॑। यत्। वा॒म्। अनु॑। स्तवे॑। नाना॑। जा॒तौ। अ॒रे॒पसा॑। सम्। अ॒स्मे इति॑। बन्धु॑म्। आ। ई॒य॒थुः॥४॥**

**पदार्थः**-**(तत्)** **(उ)** **(सु)** **(वाम्)** युवाम् **(एना)** एनानि **(कृतम्)** निष्पादितम् **(विश्वा)** सर्वाणि **(यत्)** यानि **(वाम्)** युवाम् **(अनु)** **(स्तवे)** स्तौमि **(नाना)** **(जातौ)** प्रकटौ **(अरेपसा)** अनपराधिनौ **(सम्)** **(अस्मे)** अस्माकम् **(बन्धुम्)** **(आ)** **(ईयथुः)** प्राप्नुयातम्। अत्र पुरुषव्यत्ययः॥४॥

**अन्वयः**-हे अध्यापकोपदेशकौ! यद्युवाभ्यां कृतं तदेना विश्वाहमनुष्टवे यावरेपसा नाना जातौ वां प्राप्नुथ[स]तावस्मे बन्धुं समेयथुस्तदु अहं वां सुप्रेरयेयम्॥४॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यथाहं वायुविद्युद्विद्यां जानीयां तथैव यूयमपि विजानीत॥४॥

**पदार्थः**-हे अध्यापक और उपदेशक जनो! **(यत्)** जो आप दोनों ने **(कृतम्)** सिद्ध किया **(तत्)** उन **(एना)** इन **(विश्वा)** संपूर्णों की मैं **(अनु, स्तवे)** स्तुति करता हूँ और जो **(अरेपसा)** अपराधरहित **(नाना)** अनेक प्रकार **(जातौ)** प्रकट **(वाम्)** आप दोनों प्राप्त होते हैं वह [=आप दोनों] **(अस्मे)** हम लोगों के **(बन्धुम्)** बन्धु को **(सम्, आ, ईयथुः)** प्राप्त हूजिये **(उ)** और उसको मैं **(वाम्)** आप दोनों की **(सु)** उत्तम प्रकार प्रेरणा करूं॥४॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे मैं वायु और बिजुली की विद्या को जानूं, वैसे ही आप लोग भी जानिये॥४॥

**पुनः स्त्रियः कीदृशो भवेयुरित्याह॥**

फिर स्त्रियाँ कैसी हों, इस विषय को कहते हैं॥

**आ यद्वां॑ सू॒र्या रथं॒ तिष्ठ॑द्रघु॒ष्यदं॒ सदा॑।**

**परि॑ वामरु॒षा वयो॑ घृ॒णा व॑रन्त आ॒तपः॑॥५॥११॥**

**आ। यत्। वा॒म्। सू॒र्या। रथ॑म्। तिष्ठ॑त्। र॒घु॒ऽस्यद॑म्। सदा॑। परि॑। वा॒म्। अ॒रु॒षाः। वयः॑। घृ॒णा। व॒र॒न्ते॒। आ॒ऽतपः॑॥५॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**आ**) समन्तात् (**यत्**) या (**वाम्**) युवयोः (**सूर्या**) सूर्य्यसम्बन्धिन्युषा इव (**रथम्**) विमानादियानम् (**तिष्ठत्**) तिष्ठति (**रघुष्यदम्**) या लघु स्यन्दति सा (**सदा**) निरन्तरम् (**परि**) (**वाम्**) युवयोः (**अरुषाः**) रक्तभास्वरगुणाः (**वयः**) पक्षिणः (**घृणा**) दीप्तिः (**वरन्ते**) स्वीकुर्वन्ति (**आतपः**) समन्तात् प्रतापकः॥५॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यद्या घृणारुषा सूर्योषा इव स्त्री वां रघुष्यदं रथमातिष्ठत् वां वयः परि वरन्ते सा आतप इव सदोपकारिणी भवति॥५॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यथा प्रातर्वेला सर्वथा प्रिया सुखप्रदा वर्त्तते तथा परस्परं प्रीतौ स्त्रीपुरुषौ प्रसन्नौ वर्त्तेते॥५॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! (**यत्**) जो (**घृणा**) प्रकाशित (**अरुषाः**) लाल चमकते हुए गुणों वाली (**सूर्या**) सूर्य्यसम्बन्धिनी प्रातर्वेला के सदृश स्त्री (**वाम्**) तुम्हारे (**रघुष्यदम्**) थोड़े चलने वाले (**रथम्**) विमान आदि वाहन पर (**आ**) सब प्रकार से (**तिष्ठत्**) स्थित होती है, जिसको (**वाम्**) आप दोनों के (**वयः**) पक्षी (**परि, वरन्ते**) सब ओर से स्वीकार करते हैं, वह (**आतपः**) चारों और से उष्ण करने वाले घर्म्म के सदृश (**सदा**) सब काल में उपकार करने वाली होती है॥५॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे प्रातःकाल सब प्रकार से प्रिय और सुखकारक है, वैसे परस्पर प्रीतियुक्त स्त्री पुरुष प्रसन्न [रहते] हैं॥५॥

**पुनर्विद्वद्भिः किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

फिर विद्वानों को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**युवोरत्रिश्चिकेतति नरा सुम्नेन चेतसा।**

**घर्मं यद्वामरेपसं नासत्यास्ना भुरण्यति॥६॥**

**युवोः। अत्रिः। चिकेतति। नरा। सुम्नेन। चेतसा। घर्मम्। यत्। वाम्। अरेपसम्। नासत्या। आस्ना। भुरण्यति॥६॥**

**पदार्थः**-(**युवोः**) अध्यापकोपदेशकयोः (**अत्रिः**) अविद्यमानत्रिविधदुःखम् (**चिकेतति**) जानाति (**नरा**) नायकौ धर्म्मपथनेतारौ (**सुम्नेन**) सुखेन (**चेतसा**) चित्तेन (**घर्मम्**) यज्ञम् (**यत्**) यः (**वाम्**) युवयोः (**अरेपसम्**) अनपराधिनम् (**नासत्या**) अविद्यमानासत्यौ (**आस्ना**) आस्येन (**भुरण्यति**) धरति॥६॥

**अन्वयः**-हे नासत्या नरा! यद्योऽत्रिः सुम्नेन चेतसा युवोर्घर्मं चिकेतत्यास्ना वामरेपसं यज्ञं भुरण्यति तं युवां ज्ञापयेताम्॥६॥

**भावार्थः**-ये पुरुषा विद्वत्सङ्गेनाध्ययनाध्यापनं यज्ञं विस्तारयन्ति ते जगदुपकारकाः सन्ति॥६॥

**पदार्थः**-हे (**नासत्या**) असत्य से रहित (**नरा**) धर्म्म मार्ग में चलने वाले दो नायक जनो! (**यत्**) जो (**अत्रिः**) आध्यात्मिक, आधिभौतिक, आधिदैविक आदि तीन प्रकार के दुःख से रहित जन (**सुम्नेन**)



www.9009.co.in

सुख और **(चेतसा)** चित्त से **(युवोः)** आप दोनों अध्यापक और उपदेशकों के **(घर्मम्)** यज्ञ को **(चिकेतति)** जानता और **(आस्ना)** मुख से **(वाम्)** आप दोनों के **(अरेपसम्)** अपराध रहित यज्ञ को **(भुरण्यति)** धारण करता है, उसको आप जानिये॥६॥

**भावार्थः**-जो पुरुष विद्वानों के संग से अध्ययन और अध्यापन रूप यज्ञ का विस्तार करते हैं, वे संसार के उपकारक हैं॥६॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**उ॒ग्रो वां॑ ककु॒हो य॒यिः शृ॒ण्वे यामे॑षु सं॒त॒निः।**

**यद्वां॒ दंसो॑भिरश्विनात्रि॒र्नरा॑व॒वर्त॑ति॥७॥**

**उ॒ग्रः। वा॒म्। क॒कु॒हः। य॒यिः। शृ॒ण्वे। यामे॑षु। स॒म्ऽत॒निः। यत्। वा॒म्। दंस॑ःऽभिः। अ॒श्वि॒ना॒। अत्रिः॑। न॒रा॒। आ॒ऽव॒वर्त॑ति॥७॥**

**पदार्थः**-**(उग्रः)** तेजस्वी **(वाम्)** युवाम् **(ककुहः)** महान् **(ययिः)** यो याति सः **(शृण्वे)** **(यामेषु)** प्रहरेषु **(सन्तनिः)** सम्यक् विस्तारकः **(यत्)** यः **(वाम्)** युवयोः **(दंसोभिः)** कर्म्मभिः **(अश्विना)** अध्यापकोपदेशकौ **(अत्रिः)** अत्रिवारम् **(नरा)** नेतारौ **(आववर्तति)** भृशं वर्त्तते॥७॥

**अन्वयः**-हे नराश्विना! यद्यो ययिः ककुह उग्रः सन्तनिरहं यामेषु वां शृण्वे यश्च वां दंसोभिरत्रिराववर्त्तति ता आवां युवां बोधयतम्॥७॥

**भावार्थः**-ये मनुष्या सूर्य्यचन्द्रवन्नियमेन वर्त्तित्वा कार्य्याणि साध्नुवन्ति ते सर्वदोन्नता जायन्ते॥७॥

**पदार्थः**-हे **(नरा)** नायक **(अश्विना)** अध्यापक और उपदेशक जनो! **(यत्)** जो **(ययिः)** चलने वाला **(ककुहः)** बड़ा **(उग्रः)** तेजस्वी **(सन्तनिः)** उत्तम प्रकार विस्तारकर्त्ता मैं **(यामेषु)** प्रहरों में **(वाम्)** आप दोनों को **(शृण्वे)** सुनूं और जो **(वाम्)** आप दोनों के **(दंसोभिः)** कर्म्मों से **(अत्रिः)** न तीन वार **(आववर्त्तति)** अत्यन्त वर्त्तमान हैं, उन हम दोनों को आप दोनों बोध कराइये॥७॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य सूर्य्य और चन्द्रमा के सदृश नियम से वर्त्ताव करके कार्य्यों को सिद्ध करते हैं, वे सर्वदा उन्नत होते हैं॥७॥

**पुनर्मनुष्यै किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**मध्व॑ ऊ॒ षु म॑धूयुवा॒ रुद्रा॒ सिष॑क्ति पि॒प्युषी॑।**

**यत्स॑मु॒द्राति॒ पर्ष॑थः प॒क्वाः पृक्षो॑ भरन्त वाम्॥८॥**



www.9009.co.in

मध्वः। ऊँ इति। सु। मधुऽयुवा। रुद्रा। सिसक्ति। पिप्युषी। यत्। समुद्रा। अति। पर्षथः। पक्वाः। पृक्षः। भरन्त। वाम्॥८॥

**पदार्थः-(मध्वः)** मधुरस्य **(उ)** वितर्के **(सु)** **(मधूयुवा)** यौ मधूनि यावयतस्तौ **(रुद्रा)** दुष्टानां रोदयितारौ **(सिषक्ति)** सिञ्चति **(पिप्युषी)** प्यायन्ती **(यत्)** या **(समुद्रा)** यानि सम्यग्द्रवन्ति **(अति)** **(पर्षथः)** सिञ्चथः **(पक्वाः)** **(पृक्षः)** संपर्काः **(भरन्त)** भरन्ति **(वाम्)** युवयोः॥८॥

**अन्वयः**-हे मधूयुवा रुद्रा! यद्या पिप्युषी मध्व ऊ षु सिषक्ति तया युवां समुद्रातिपर्षथो यतः पक्वाः पृक्षो वां भरन्त॥८॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यथा सूर्य्यवायू वृष्ट्या सर्वान् सिञ्चतः पक्वानि फलानि जनयतस्तथा यूयमप्याचरत॥८॥

**पदार्थः**-हे **(मधूयुवा)** सोम आदि रस को मिलाने और **(रुद्रा)** दुष्टों के रुलाने वाले जनो! **(यत्)** जो **(पिप्युषी)** पान कराती हुई **(मध्वः)** सोमलता के रस को **(उ)** तर्क-वितर्क से **(सु, सिषक्ति)** अच्छे प्रकार सींचती है, उससे आप दोनों **(समुद्रा)** उत्तम प्रकार द्रवित होने वालों को **(अति, पर्षथः)** सींचते हैं जिससे **(पक्वाः)** पके **(पृक्षः)** सम्बन्ध हुए फल **(वाम्)** आप दोनों का **(भरन्त)** पोषण करते हैं॥८॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे सूर्य्य और वायु वृष्टि से सब को सींचते और पके हुए फलों को उत्पन्न करते हैं, वैसे आप लोग भी आचरण करो॥८॥

**पुनर्मनुष्यैः किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**सत्यमिद्वा उ अश्विना युवामाहुर्मयोभुवा।**

**ता यामन् यामहूतमा यामन्ना मृळयत्तमा॥९॥**

**सत्यम्। इत्। वै। ऊँ इति। अश्विना। युवाम्। आहुः। मयःऽभुवा। ता। यामन्। यामऽहूतमा। यामन्। आ। मृळयत्ऽतमा॥९॥**

**पदार्थ-(सत्यम्)** यथार्थं व्यवहारमुदकं वा **(इत्)** अपि **(वै)** निश्चये **(उ)** वितर्के **(अश्विना)** द्यावापृथिव्याविवाध्यापकोपदेशकौ **(युवाम्)** **(आहुः)** कथयन्ति **(मयोभुवा)** सुखं भावुकौ **(ता)** तौ **(यामन्)** यामनि प्रहरादौ **(यामहूतमा)** यौ यामानाह्वयतस्तावतिशयितौ **(यामन्)** यामनि **(आ)** **(मृळयत्तमा)** अत्यन्तसुखकारकौ॥९॥

**अन्वयः**-हे मयोभुवाऽश्विना! यौ युवां यामहूतमा यामन्नामृळयत्तमा आहुस्ता यामन् वै सत्यमु इत्प्रचारयेतम्॥९॥

**भावार्थः**-यथा भूमिमेघौ सर्वेषां प्राणिनां सुखकरौ वर्त्तेते तथैवाध्यापकोपदेशकौ भृशं सुखकरौ भवेताम्॥९॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-हे **(मयोभुवा)** सुखकारक **(अश्विना)** अन्तरिक्ष और पृथिवी के सदृश अध्यापक और उपदेशक जनो! जो **(युवाम्)** आप दोनों **(यामहूतमा)** प्रहरों को बुलाने वाले अत्यन्त **(यामन्)** प्रहर में **(आ, मृळयत्तमा)** सब ओर से अतीव सुखकारकों को **(आहुः)** कहते हैं **(ता)** वे दोनों **(यामन्)** प्रहर में **(वै)** निश्चय **(सत्यम्)** यथार्थ व्यवहार वा जल को **(उ)** तर्क के साथ **(इत्)** भी प्रचारित कीजिये॥९॥

**भावार्थः**-जैसे भूमि और मेघ सब प्राणियों के सुखकारक हैं, वैसे ही अध्यापक और उपदेशक जन अत्यन्त सुखकारक हों॥९॥

**पुनर्विद्वांसः किं कुर्य्युरित्याह॥**

फिर विद्वान् क्या करें, इस विषय को कहते हैं॥

**इमा ब्रह्माणि वर्धनाश्विभ्यां सन्तु शंतमा।**

**या तक्षाम रथाँइवावोचाम बृहन्नमः॥१०॥१२॥**

**इमा। ब्रह्माणि। वर्धना। अश्विऽभ्याम्। सन्तु। शम्ऽतमा। या। तक्षाम। रथान्ऽइव। अवोचाम। बृहत्। नमः॥१०॥**

**पदार्थः**-**(इमा)** इमानि **(ब्रह्माणि)** धनान्यन्नानि वा **(वर्धना)** वर्धन्ते तानि **(अश्विभ्याम्)** द्यावापृथिवीभ्याम् **(सन्तु)** **(शन्तमा)** अतिशयेन सुखकराणि **(या)** यानि **(तक्षाम)** संवृणुयामाऽऽच्छादयाम स्वीकुर्य्याम **(रथानिव)** **(अवोचाम)** उपदिशेम **(बृहत्)** महत् **(नमः)** सत्कारम्॥१०॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! अश्विभ्यां येमा वर्धना शन्तमा ब्रह्माणि रथानिव तक्षाम तानि युष्मभ्यं सुखकाराणि सन्तु तैर्बृहन्नमो वयमवोचाम॥१०॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! भवन्तो यथा वस्त्रादिना रथानावृत्य शृङ्गारयन्ति तथैव धनधान्यानि संगृह्य सुसंस्कृतानि कुर्य्युः शुद्धान्नभोगेन महद्विज्ञानं प्राप्यान्यानप्येतदुपपदिशेयुः॥१०॥

अत्राश्विविद्वद्गुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति त्रिसप्ततितमं सूक्तं द्वादशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(अश्विभ्याम्)** अन्तरिक्ष और पृथिवी से **(या)** जो **(इमा)** ये **(वर्धना)** वृद्धि को प्राप्त होते जिनसे उन **(शन्तमा)** अत्यन्त सुखकारक **(ब्रह्माणि)** धनों या अन्नों का **(रथानिव)** रथों के समान **(तक्षाम)** आच्छादन करें, वे आप लोगों के लिये सुखकारक **(सन्तु)** हों उनसे **(बृहत्)** बड़े **(नमः)** सत्कार का हम **(अवोचाम)** उपदेश करें॥१०॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! आप जैसे वस्त्र आदि से वाहनों को उढ़ाकर शृङ्गारयुक्त करते हैं, वैसे ही धन और धान्यों को उत्तम प्रकार ग्रहण करके उत्तम प्रकार संस्कारयुक्त करें और शुद्ध अन्न के भोग से बड़े विज्ञान को प्राप्त होकर अन्य जनों को भी इस का उपदेश करें॥१०॥



www.9009.co.in

इस सूक्त में अन्तरिक्ष पृथिवी और विद्वान् के गुण–वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इस से पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ संगति जाननी चाहिये।।

**यह तिहत्तरवां सूक्त और बारहवां वर्ग समाप्त हुआ।।**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

**कूष्ठ इति दशर्चस्य चतु:सप्ततितमस्य सूक्तस्य आत्रेय ऋषि:। अश्विनौ देवते। १, २, १० विराडनुष्टुप्। ३ अनुष्टुप्। ४, ५, ६, ९ निचृदनुष्टुप् छन्द:। गान्धार: स्वर:। ७ भुरिगुष्णिक्। ८ निचृदुष्णिक् छन्द:। ऋषभ: स्वर:॥**

***अथ मनुष्यै: किमनुष्ठेयमित्याह॥***

*[*अब दश ऋचा वाले चौहत्तरवें सूक्त का आरम्भ है, इसके प्रथम मन्त्र में*]* अब मनुष्यों को क्या अनुष्ठान करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**कूष्ठो देवावश्विनाद्या दिवो मनावसू।**

**तच्छ्रवथो वृषण्वसू अत्रिर्वामा विवासति॥ १॥**

**कूऽस्थ:। देवौ। अश्विना। अद्य। दिव:। मनावसू इति। तत्। श्रवथ:। वृषण्ऽवसू इति वृषण्ऽवसू। अत्रि:। वाम्। आ। विवासति॥ १॥**

**पदार्थ:**-(**कूष्ठ:**) य: कौ पृथिव्यां तिष्ठति (**देवौ**) विद्वांसौ (**अश्विना**) व्याप्तविद्यौ (**अद्य**) (**दिव:**) प्रकाशस्य (**मनावसू**) यौ मनो वासयतस्तौ (**तत्**) (**श्रवथ:**) शृणुथ: (**वृषण्वसू**) यौ वृषणो वासयतस्तौ (**अत्रि:**) आप्तविद्य: (**वाम्**) (**आ, विवासति**) समन्तात्सेवते॥ १॥

**अन्वय:**-हे मनावसू वृषण्वसू अश्विना देवौ! य: कूष्ठोऽत्रिरद्य दिवो वामाविवासति तद्युवां श्रवथ:॥ १॥

**भावार्थ:**-हे विद्वांसो! ये युष्मान् सेवन्ते ते बहुश्रुता मननशीला विद्वांस: सर्वाणि सत्कर्म्माणि सेवन्ते ते दु:खरहिता जायन्ते॥ १॥

**पदार्थ:**-हे (**मनावसू**) मन को वसाने वाले (**वृषण्वसू**) उत्तमों को वसाने वाले (**अश्विना**) विद्या से व्याप्त (**देवौ**) विद्वानो! जो (**कूष्ठ:**) पृथिवी में स्थित होने वाला (**अत्रि:**) विद्या प्राप्त जन (**अद्य**) इस समय (**दिव:**) प्रकाश के सम्बन्ध में (**वाम्**) आप दोनों का (**आ, विवासति**) सब प्रकार से सेवन करता है (**तत्**) उसको आप दोनों (**श्रवथ:**) सुनते हैं॥ १॥

**भावार्थ:**-हे विद्वानो! जो आप लोगों का सेवन करते हैं वे बहुश्रुत, विचारशील विद्वान् जन सम्पूर्ण श्रेष्ठ कर्म्मों का सेवन करते हैं और वे दु:ख से रहित होते हैं॥ १॥

**पुनर्मनुष्यैर्विदुष: प्रति कथं प्रष्टव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को विद्वानों के प्रति कैसे पूछना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**कुह त्या कुह नु श्रुता दिवि नासत्या।**

**कस्मिन्ना यतथो जने को वां नदीनां सचा॥ २॥**



www.9009.co.in

**कुह। त्या। कुह। नु। श्रुता। दिवि। देवा। नासत्या। कस्मिन्। आ। यतथः। जने। कः। वाम्। नदीनाम्। सचा॥२॥**

**पदार्थः-(कुह)** क्व **(त्या)** तौ **(कुह) (नु)** सद्यः **(श्रुता)** श्रुतौ **(दिवि)** दिव्ये व्यवहारे प्रकाशे वा **(देवा)** दिव्यगुणौ **(नासत्या)** सत्यस्वरूपौ **(कस्मिन्) (आ) (यतथः)** यतेथे। अत्र व्यत्ययेन परस्मैपदम्। **(जने) (कः) (वाम्)** युवाम् **(नदीनाम्) (सचा)** समवाये॥२॥

**अन्वयः**-हे अध्यापकोपदेशकौ! त्या नासत्या कुह वर्त्तेते कुह श्रुता देवा भवतो युवां कस्मिञ्जन आ यतथो वां तयोर्युवयोर्नदीनां सचा को न्वस्ति यौ दिव्या यतथः॥२॥

**भावार्थः**-जिज्ञासुभिर्विदुषां सनीडं गत्वा विद्युदादिविद्याः प्रष्टव्याः॥२॥

**पदार्थः**-हे अध्यापक और उपदेशक जनो! **(त्या)** ये **(नासत्या)** सत्यस्वरूप **(कुह)** कहाँ वर्त्तमान हैं और **(कुह)** कहाँ **(श्रुता)** सुने हुए **(देवा)** श्रेष्ठ गुण वाले होते हैं और तुम **(कस्मिन्)** किस **(जने)** जन में **(आ, यतथः)** सब ओर से यत्न करते हो **(वाम्)** उन आप दोनों की **(नदीनाम्)** नदियों के **(सचा)** सम्बन्ध से **(कः)** कौन **(नु)** शीघ्र है जो **(दिवि)** श्रेष्ठ व्यवहार वा प्रकाश में प्रयत्न करते हो॥२॥

**भावार्थः**-जिज्ञासु जनों को चाहिये कि विद्वानों के समीप जाकर बिजुली आदि की विद्याओं को पूछें॥२॥

**अथ मनुष्यैः किं प्रष्टव्यमित्याह॥**

अब मनुष्यों को क्या पूछना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**कं याथः कं ह गच्छथः कमच्छा युञ्जाथे रथम्।**

**कस्य ब्रह्माणि रण्यथो वयं वामुश्मसीष्टये॥३॥**

**कम्। याथः। कम्। ह। गच्छथः। कम्। अच्छ। युञ्जाथे इति। रथम्। कस्य। ब्रह्माणि। रण्यथः। वयम्। वाम्। उश्मसि। इष्टये॥३॥**

**पदार्थः-(कम्) (याथः)** प्राप्नुथः **(कम्) (ह)** किल **(गच्छथः) (कम्) (अच्छा)** अत्र **संहितायामिति** दीर्घः। **(युञ्जाथे) (रथम्)** रमणीयं यानम् **(कस्य) (ब्रह्माणि)** धनधान्यानि **(रण्यथः)** रमयथः **(वयम्) (वाम्)** युवाम् **(उश्मसि)** कामयेमहि **(इष्टये)**॥३॥

**अन्वयः**-हे अध्यापकोपदेशकौ! युवां कं याथः कं गच्छथः कं रथमच्छा युञ्जाथे कस्य ह ब्रह्माणि रण्यथो वयमिष्टये वामुश्मसि॥३॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! विद्वांसो यं प्राप्नुयुर्युञ्जते वाञ्छन्ति तमेव यूयमपीच्छत॥३॥

**पदार्थः**-हे अध्यापक और उपदेशक जनो! आप दोनों **(कम्)** किसको **(याथः)** प्राप्त होते हो और **(कम्)** किसको **(गच्छथः)** जाते हो **(कम्)** किस **(रथम्)** रमण करने योग्य वाहन को **(अच्छा)**



www.9009.co.in

उत्तम प्रकार **(युञ्जाथे)** युक्त होते हो और **(कस्य)** किसके **(ह)** निश्चय से **(ब्रह्माणि)** धन और धान्यों को **(रण्यथ:)** रमाते हो **(वयम्)** हम लोग **(इष्टये)** इच्छा के लिये **(वाम्)** आप दोनों की **(उश्मसि)** कामना करें॥३॥

**भावार्थ:**-हे मनुष्यो! विद्वान् जन जिसको प्राप्त होवें और युक्त होते तथा इच्छा करते हैं, उसी की आप लोग इच्छा करो॥३॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**पौरं चिद्ध्युदप्रुतं पौर पौराय जिन्वथः।**

**यदीं गृभीततातये सिंहमिव द्रुहस्पदे॥४॥**

**पौरम्। चित्। हि। उद्ऽप्रुतम्। पौर। पौराय। जिन्वथः। यत्। ईम्। गृभीतऽतातये। सिंहम्ऽइव। द्रुहः। पदे॥४॥**

**पदार्थ:**-**(पौरम्)** पुरि भवं मनुष्यम् **(चित्)** अपि **(हि)** यत: **(उदप्रुतम्)** उदकयुक्तम् **(पौर)** पुरोर्मनुष्यस्याऽपत्यं तत्सम्बुद्धौ **(पौराय)** पुरे भवाय **(जिन्वथ:)** प्राप्नुथ: **(यत्)** यम् **(ईम्)** सर्वत: **(गृभीततातये)** गृहीता तातिः सत्कर्म्मविस्तृतिर्येन **(सिंहमिव)** सिंहवत् **(द्रुह:)** शत्रो: **(पदे)** प्राप्तव्ये॥४॥

**अन्वय:**-हे पौर! त्वं ह्युदप्रुतं पौरं चित् प्राप्नुहि पौरायाऽध्यापकस्त्वं च जिन्वथो गृभीततातये द्रुहस्पदे सिंहमिव यदीं जिन्वथस्तं त्वं सन्तोषय॥४॥

**भावार्थ:**-हे मनुष्या! यथैकपुरवासिन: परस्परं सुखोन्नतिं कुर्वन्ति तथैव भिन्नदेशवासिनोऽप्याचरन्तु॥४॥

**पदार्थ:**-हे **(पौर)** पुर में हुए! आप **(हि)** ही **(उदप्रुतम्)** जल से युक्त **(पौरम्)** मनुष्य के सन्तान को **(चित्)** निश्चय से प्राप्त हूजिये और **(पौराय)** पुर में हुए मनुष्य के लिये अध्यापक और आप **(जिन्वथ:)** प्राप्त होते हो **(गृभीततातये)** ग्रहण किया श्रेष्ठ कर्म्मों का विस्तार जिसने उसके लिये **(द्रुह:)** शत्रु के **(पदे)** प्राप्त होने योग्य स्थान में **(सिंहमिव)** सिंह के सदृश **(यत्)** जिसको **(ईम्)** सब ओर से प्राप्त होते हो, उसको आप सन्तुष्ट कीजिये॥४॥

**भावार्थ:**-हे मनुष्यो! जैसे एक नगर के वासी जन परस्पर सुख की उन्नति करते हैं, वैसे ही अन्य देशवासी भी करें॥४॥

**पुनर्मनुष्या: कीदृशा भवेयुरित्याह॥**

फिर मनुष्य कैसे हों, इस विषय को कहते हैं॥

**प्रच्यवानाज्जुजुरुषो वव्रिमत्कं न मुञ्चथः।**



www.9009.co.in

**युवा यदी कृथः पुनरा काममृण्वे वध्वः॥५॥१३॥**

**प्र। च्यवानात्। जुजुरुषः। वव्रिम्। अत्कम्। न। मुञ्चथः। युवा। यदि। कृथः। पुनः। आ। कामम्। ऋण्वे। वध्वः॥५॥**

**पदार्थः-(प्र) (च्यवानात्)** गमनात् **(जुजुरुषः)** जीर्णावस्थां प्राप्तः **(वव्रिम्)** रूपम्। **वव्रिरिति रूपनामसु पठितम्।** (निघं०१.७)। **(अत्कम्)** व्याप्तम् **(न)** इव **(मुञ्चथः) (युवा)** प्राप्तयौवनावस्थः **(यदी)** अत्र **निपातस्य चे**ति दीर्घः। **(कृथः)** कुरुथः **(पुनः) (आ) (कामम्) (ऋण्वे)** प्रसाध्नोमि **(वध्वः)** भार्यायाः॥५॥

**अन्वयः**-हे स्त्रीपुरुषौ! जुजुरुषश्च्यवानादत्कं वव्रिं व्यभिचारं प्रमुञ्चथः यदी युवा न कार्यं कृथः पुनर्वध्वः कामं युवा सन्नहमृण्वे तथा युवामाकृथः॥५॥

**भावार्थः**-अत्रोपमावाचकलुप्तोपमालङ्कारौ। यथा वृद्धावस्थासु रूपं मुक्त्वा वृद्धावस्थां प्राप्नुवन्ति तथैव दोषज्ञा गुणांस्त्यक्त्वा दोषान् गृह्णन्ति॥५॥

**पदार्थः**-हे स्त्री-पुरुषो! **(जुजुरुषः)** वृद्धावस्था को प्राप्त जन **(च्यवानात्)** गमन से **(अत्कम्)** व्याप्त **(वव्रिम्)** रूप और व्यभिचार का **(प्र, मुञ्चथः)** त्याग करते हो और **(यदी)** जो **(युवा)** युवावस्था को प्राप्त पुरुष के **(न)** समान कार्य्य को **(कृथः)** करते हो **(पुनः)** फिर **(वध्वः)** स्त्री के **(कामम्)** मनोरथ को युवावस्था को प्राप्त हुआ मैं **(ऋण्वे)** सिद्ध करता हूं, वैसे आप दोनों **(आ)** सब ओर से करिये॥५॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमा और वाचकलुप्तोपमालङ्कार हैं। जैसे वृद्धावस्थाओं में रूप का त्याग करके वृद्धावस्था को प्राप्त होते हैं, वैसे ही दोषों के जानने वाले गुणों का त्याग कर के दोषों को ग्रहण करते हैं॥५॥

**पुनर्मनुष्यैः किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**अस्ति हि वामिह स्तोता स्मसि वां संदृशि श्रिये**

**नू श्रुतं म आ गतमवोभिर्वाजिनीवसू॥६॥**

**अस्ति। हि। वाम्। इह। स्तोता। स्मसि। वाम्। सम्ऽदृशि। श्रिये। नु। श्रुतम्। मे। आ। गतम्। अवःऽभिः। वाजिनीवसू इति वाजिनीऽवसू॥६॥**

**पदार्थः-(अस्ति) (हि)** यतः **(वाम्)** युवयोः **(इह) (स्तोता)** प्रशंसकः **(स्मसि) (वाम्)** युवाम् **(संदृशि)** सादृश्ये **(श्रिये)** धनाय **(नु)** सद्यः **(श्रुतम्) (मे)** मम **(आ) (गतम्)** आगच्छतम् **(अवोभिः)** रक्षणादिभिः **(वाजिनीवसू)** यौ वाजिनीं बह्वन्नादिक्रियां वासयतस्तौ॥६॥



www.9009.co.in

**अन्वय:**-हे वाजिनीवसू अध्यापकोपदेशकाविह यो वां स्तोतास्ति तं हि वयं प्राप्ताः स्मसि। वां संदृशि श्रिये नु श्रुतमवोभिर्मां प्राप्नुतं मे मम श्रुतमागतम्॥६॥

**भावार्थ:**-ये विदुषां गुणान्स्तुवन्ति ते गुणाढ्या भूत्वा विद्वत्सादृश्यं प्राप्य श्रीमन्तो भवन्ति॥६॥

**पदार्थ:**-हे **(वाजिनीवसु)** बहुत अन्नादि क्रिया को वसाने वाले अध्यापक और उपदेशक जनो! **(इह)** इस संसार में जो **(वाम्)** आप दोनों का **(स्तोता)** प्रशंसा करने वाला **(अस्ति)** है उसको **(हि)** जिससे हम लोग प्राप्त **(स्मसि)** होवें और **(वाम्)** आप दोनों को **(संदृशि)** सादृश्य में **(श्रिये)** धन के लिये **(नु)** शीघ्र **(श्रुतम्)** सुनिये और **(अवोभिः)** रक्षणादिकों से मुझ को प्राप्त हूजिये **(मे)** मेरे कथन को सुनने को **(आ, गतम्)** आइये॥६॥

**भावार्थ:**-जो विद्वानों के गुणों की स्तुति करते हैं, वे गुणों से युक्त हो और विद्वानों की समता को प्राप्त होकर श्रीमान् होते हैं॥६॥

**पुनर्मनुष्यैः किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**को वा॒म॒द्य पु॑रू॒णामा व॑व्ने॒ मर्त्या॑नाम्।**

**को विप्रो॑ विप्रवाहसा॒ को य॒ज्ञैर्वा॑जिनीवसू॥७॥**

**कः। वा॒म्। अ॒द्य। पु॒रू॒णाम्। आ। व॒व्ने॒। मर्त्या॑नाम्। कः। विप्रः॑। वि॒प्र॒ऽवा॒ह॒सा॒। कः। य॒ज्ञैः। वा॒जि॒नी॒व॒सू॒ इति॑ वाजिनीऽवसू॥७॥**

**पदार्थ:**-**(कः)** **(वाम्)** युवयोः **(अद्य)** **(पुरूणाम्)** बहूनाम् **(आ)** **(वव्ने)** संभजति **(मर्त्यानाम्)** मनुष्याणाम् **(कः)** **(विप्रः)** मेधावी **(विप्रवाहसा)** यौ विद्वद्भिः प्रापणीयौ **(कः)** **(यज्ञैः)** **(वाजिनीवसू)** धनधान्यप्रापकौ॥७॥

**अन्वय:**-हे विप्रवाहसा वाजिनीवसू! पुरूणां मर्त्यानां मध्ये को विप्रोऽद्य वामावव्ने को यज्ञैर्विद्यां कश्च प्रज्ञां वव्ने॥७॥

**भावार्थ:**-ये विद्यां याचन्ते ते विदुषः सनीडं प्राप्य प्रश्नोत्तरैरानन्द्य महान्तं लाभं प्राप्नुयुस्तेऽन्यानपि प्रापयितुं शक्नुयुः॥७॥

**पदार्थ:**-हे **(विप्रवाहसा)** विद्वानों से प्राप्त होने योग्य **(वाजिनीवसू)** धन धान्य प्राप्त कराने वालो! **(पुरूमाण्)** बहुत **(मर्त्यानाम्)** मनुष्यों के मध्य में **(कः)** कौन **(विप्रः)** बुद्धिमान् **(अद्य)** आज **(वाम्)** आप दोनों का **(आ, वव्ने)** अच्छे प्रकार आदर करता **(कः)** कौन **(यज्ञैः)** यज्ञों से विद्या को और **(कः)** कौन बुद्धि का आदर करता है॥७॥

**भावार्थ:**-जो विद्या की याचना करते हैं वे विद्वान् के समीप प्राप्त होकर प्रश्न और उत्तरों से आनन्द कर के लाभ को प्राप्त होवें, वे अन्यों को भी प्राप्त करा सकें॥७॥



www.9009.co.in

**पुनर्मनुष्यैः किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**आ वां रथो रथानां येष्ठो यात्वश्विना।**

**पुरू चिदस्मयुस्तिर आङ्गूषो मर्त्येष्वा॥८॥**

**आ। वाम्। रथः। रथानाम्। येष्ठः। यातु। अश्विना। पुरु। चित्। अस्मऽयुः। तिरः। आङ्गूषः। मर्त्येषु। आ॥८॥**

**पदार्थः**-(**आ**) समन्तात् (**वाम्**) युवयोः (**रथः**) यानम् (**रथानाम्**) यानानां मध्ये (**येष्ठः**) अतिशयेन याता (**यातु**) गच्छतु (**अश्विना**) अध्यापकोपदेशकौ (**पुरू**) पुरूणि (**चित्**) अपि (**अस्मयुः**) योऽस्मान् याति सः (**तिरः**) तिरस्करणे (**आङ्गूषः**) अङ्गेषु भवा प्रशंसा (**मर्त्येषु**) मनुष्येषु (**आ**) समन्तात्॥८॥

**अन्वयः**-हे अश्विना! यो वां रथानां येष्ठो रथो यात्वस्मयुश्चिन्मर्त्येष्वाङ्गूषः सन् पुरू पुरून् प्रायातु दुःखानि तिरस्कृत्य सुखमायाति तं युवामा प्राप्नुयातम्॥८॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यथाऽध्यापकोपदेशकाः शिल्पिन उत्तमानि यानानि निर्मिमते तथैव सुखसाधनानि यूयं सृजत॥८॥

**पदार्थः**-हे (**अश्विना**) अध्यापक और उपदेशक जनो! जो (**वाम्**) तुम्हारा (**रथानाम्**) वाहनों के मध्य में (**येष्ठः**) अतिशय चलने वाला (**रथः**) वाहन (**यातु**) चले (**अस्मयुः**) हम लोगों को प्राप्त होने वाली (**चित्**) भी (**मर्त्येषु**) मनुष्यों में (**आङ्गूषः**) अङ्गों में हुई प्रशंसा (**पुरू**) बहुतों को (**आ**) सब प्रकार से प्राप्त हो और दुःखों का (**तिरः**) तिरस्कार कर के सुख प्राप्त होता है, उसको आप दोनों (**आ**) प्राप्त हूजिये॥८॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे अध्यापक और उपदेशक, शिल्पी जन उत्तम वाहनों को रचते हैं, वैसे सुख के साधनों को आप लोग उत्पन्न कीजिये॥८॥

**पुनर्विद्वद्भिः किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

फिर विद्वानों को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**शमू षु वां मधूयुवास्माकमस्तु चर्कृतिः।**

**अर्वाचीना विचेतसा विभिः श्येनेव दीयतम्॥९॥**

**शम्। ऊँ इति। सु। वाम्। मधुऽयुवा। अस्माकम्। अस्तु। चर्कृतिः। अर्वाचीना। विऽचेतसा। विऽभिः। श्येनाऽइव। दीयतम्॥९॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः-(शम्)** सुखं कल्याणं वा **(उ)** **(सु)** **(वाम्)** युवयोः **(मधूयुवा)** माधुर्य्यगुणोपेतौ **(अस्माकम्)** **(अस्तु)** **(चर्कृतिः)** अत्यन्तक्रिया **(अर्वाचीना)** यावर्वागञ्चतस्तौ **(विचेतसा)** विविधविज्ञानौ **(विभिः)** पक्षिभिः सह **(श्येनेव)** श्येनः पक्षीव **(दीयतम्)** दद्यातम्॥९॥

**अन्वयः**-हे मधूयुवा विचेतसार्वाचीना वां युवयोर्या चर्कृतिरस्ति साऽस्माकमस्तु यतो युवामु विभिः श्येनेव शं सु दीयतम्॥९॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। त एव विद्वांसो ये त्वैश्वर्य्यं परसुखार्थं नियोजयन्ति यथा पक्षिभिः सह श्येनः सद्यो गच्छति तथैभिः सह विद्यार्थिनः पूर्णं गच्छन्तु॥९॥

**पदार्थः**-हे **(मधूयुवा)** माधुर्य्य गुण से युक्त **(विचेतसा)** अनेक प्रकार के विज्ञान वाले **(अर्वाचीना)** सन्मुख चलते हुए दो जनो! **(वाम्)** आप दोनों की जो **(चर्कृतिः)** अत्यन्त क्रिया है वह **(अस्माकम्)** हम लोगों की **(अस्तु)** हो जिससे आप दोनों **(उ)** ही **(विभिः)** पक्षियों के साथ **(श्येनेव)** वाज पक्षी के सदृश **(शम्)** सुख वा कल्याण को **(सु, दीयतम्)** उत्तम प्रकार देवें॥९॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। वे ही विद्वान् हैं जो अपने ऐश्वर्य्य को अन्य जनों के सुख के लिये नियुक्त करते हैं, जैसे पक्षियों के साथ श्येन पक्षी शीघ्र चलता है, वैसे इनके साथ विद्यार्थी जन पूर्ण रीति से चलें॥९॥

**पुनर्विद्वांसः किं कुर्य्युरित्याह॥**

फिर विद्वान् जन क्या करें, इस विषय को कहते हैं॥

**अश्विना यद्ध कर्हि चिच्छुश्रूयातमिमं हवम्।**

**वस्वीरू षु वां भुजः पृञ्चन्ति सु वां पृचः॥१०॥१४॥**

**अश्विना। यत्। ह। कर्हि। चित्। शुश्रूयातम्। इमम्। हवम्। वस्वीः। ऊँ इति। सु। वाम्। भुजः। पृञ्चन्ति। सु। वाम्। पृचः॥१०॥**

**पदार्थः-(अश्विना)** अध्यापकोपदेशकौ **(यत्)** यौ **(ह)** किल **(कर्हि)** कदा **(चित्)** अपि **(शुश्रूयातम्)** प्राप्नुयातम् **(इमम्)** वर्त्तमानम् **(हवम्)** प्रशंसनम् **(वस्वीः)** धनसम्बन्धिनीः **(उ)** **(सु)** **(वाम्)** युवयोः **(भुजः)** भोगक्रियाः **(पृञ्चन्ति)** सम्बध्नन्ति **(सु)** शोभने **(वाम्)** युवयोः **(पृचः)** कामनाः॥१०॥

**अन्वयः**-हे अश्विना! यद्यौ कर्हि चिदिममस्माकं हवं शुश्रूयातं या पृचो वस्वीर्भुजो वां सुपृञ्चन्ति ता हो वां वयं सुपृञ्चेम॥१०॥

**भावार्थः**-ये विद्वांसो विद्यार्थिनां परीक्षां कुर्वन्ति तान् विद्यार्थिनो विद्वांसो भूत्वा प्रीणयन्तीति॥१०॥

अत्राश्विविद्वद्गुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥



www.9009.co.in

**इति चतु:सप्ततितमं सूक्तं चतुर्दशो वर्गश्च समाप्त:॥**

**पदार्थ:**-हे **(अश्विना)** अध्यापक और उपदेशक जनो! **(यत्)** जो **(कर्हि, चित्)** कभी हम लोगों को **(इमम्)** इस वर्त्तमान **(हवम्)** प्रशंसा को **(शुश्रूयातम्)** प्राप्त होओ और जो **(पृच:)** कामना और **(वस्वी:)** धनसम्बन्धिनी **(भुज:)** भोग की क्रियाओं को **(वाम्)** आप दोनों के सम्बन्ध में **(सु)** उत्तम प्रकार **(पृञ्चन्ति)** सम्बन्धित करते हैं उनको **(ह)** निश्चय से **(उ)** और **(वाम्)** आप दोनों की हम लोग **(सु)** उत्तम प्रकार कामना करें॥१०॥

**भावार्थ:**-जो विद्वान् जन विद्यार्थियों की परीक्षा करते हैं, उनको विद्यार्थीजन विद्वान् होकर प्रसन्न करते हैं॥१०॥

इस सूक्त में अध्यापक, उपदेशक और विद्वान् के गुण-वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ संगति जाननी चाहिये॥

**यह चौहत्तरवां सूक्त और चौदहवां वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

**अथ नवर्चस्य पञ्चसप्ततितमस्य सूक्तस्य अवस्युरात्रेय ऋषिः। अश्विनौ देवते। १, ३, पङ्क्तिः। २, ४, ६, ७, ८ निचृत्पङ्क्तिः। ५, ९ विराट्पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः॥**

**अथ विद्वद्भिः किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

अब नव ऋचा वाले पचहत्तरवें सूक्त का प्रारम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में विद्वानों को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**प्रति॑ प्रि॒यत॑मं॒ रथं॒ वृष॑णं वसु॒वाह॑नम्।**

**स्तो॒ता वा॑मश्विना॒वृषि॒: स्तोमे॑न॒ प्रति॑ भूषति॒ माध्वी॒ मम॑ श्रु॒तं हव॑म्॥ १॥**

**प्रति॑। प्रि॒यऽत॑मम्। रथ॑म्। वृष॑णम्। व॒सु॒ऽवाह॑नम्। स्तो॒ता। वा॒म्। अ॒श्वि॒नौ॒। ऋषि॑ः। स्तोमे॑न। प्रति॑। भू॒ष॒ति॒। माध्वी॒ इति॑। मम॑। श्रु॒तम्। हव॑म्॥ १॥**

**पदार्थः**-(**प्रति**) (**प्रियतमम्**) अतिशयेन प्रियम् (**रथम्**) रमते येन तद् विमानादियानम् (**वृषणम्**) सुखवर्षकम् (**वसुवाहनम्**) वसूनां द्रव्याणां वाहनम् (**स्तोता**) स्तावकः (**वाम्**) युवयोः (**अश्विनौ**) अध्यापकपरीक्षकौ (**ऋषिः**) मन्त्रार्थवेत्ता (**स्तोमेन**) स्तवनेन (**प्रति**) (**भूषति**) अलङ्करोति (**माध्वी**) मधुरादिगुणप्रापकौ (**मम**) (**श्रुतम्**) शृणुतम् (**हवम्**)॥ १॥

**अन्वयः**-हे माध्वी अश्विनौ! यः स्तोता ऋषिः स्तोमेन वां प्रियतमं वृषणं वसुवाहनं रथं प्रति भूषति तस्य मम च हवं प्रति श्रुतम्॥ १॥

**भावार्थः**-येऽध्यापनोपदेशौ कुर्वन्ति ते यथासमयं परीक्षामपि कुर्य्युः॥ १॥

**पदार्थः**-हे (**माध्वी**) मधुर आदि गुणों को प्राप्त कराने वाले (**अश्विनौ**) अध्यापक परीक्षक जनो! जो (**स्तोता**) स्तुति करने और (**ऋषिः**) मन्त्र और अर्थ का जानने वाला (**स्तोमेन**) स्तवन से (**वाम्**) आप दोनों के (**प्रियतमम्**) अत्यन्त प्रिय (**वृषणम्**) सुख के वर्षाने और (**वसुवाहनम्**) द्रव्यों के पहुंचाने वाले (**रथम्**) रमते हैं, जिससे उस विमान आदि वाहन को (**प्रति, भूषति**) शोभित करता है, उसके और (**मम**) मेरे (**हवम्**) बुलाने को (**प्रति, श्रुतम्**) सुनिये॥ १॥

**भावार्थः**-जो अध्यापन और उपदेश करते हैं, वे योग्य समय में परीक्षा भी करें॥ १॥

**पुनर्मनुष्यैः किमेष्टव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को किस विषय की इच्छा करनी चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**अ॒त्याया॑तमश्विना ति॒रो विश्वा॑ अ॒हं सना॑।**

**दस्रा॒ हिर॑ण्यवर्तनी॒ सुषु॑म्ना॒ सिन्धु॑वाहसा॒ माध्वी॒ मम॑ श्रु॒तं हव॑म्॥ २॥**



www.9009.co.in

**अतिऽआयातम्। अश्विना। तिरः। विश्वाः। अहम्। सना। दस्रा। हिरण्यवर्तनी इति हिरण्यऽवर्तनी। सुऽसुम्ना। सिन्धुऽवाहसा। माध्वी इति। मम। श्रुतम्। हवम्॥ २॥**

**पदार्थः**-(**अत्यायातम्**) देशानतिक्रम्याऽऽगच्छतम् (**अश्विना**) शिल्पकार्य्यविदौ (**तिरः**) (**विश्वाः**) समग्राः (**अहम्**) (**सना**) सदा (**दस्रा**) दुःखनिवारकौ (**हिरण्यवर्त्तनी**) यौ हिरण्यं ज्योतिः सुवर्णं वा वर्त्तयतस्तौ (**सुषुम्ना**) सुष्ठु सुखयुक्तौ (**सिन्धुवाहसा**) यौ सिन्धुं वहतः प्रापयतस्तौ (**माध्वी**) मधुरगतिमन्तौ (**मम**) (**श्रुतम्**) शृणुतम् (**हवम्**) अधीतम्॥ २॥

**अन्वयः**-हे दस्रा हिरण्यवर्त्तनी सुषुम्ना सिन्धुवाहसा माध्वी अश्विना! यथाहं सना विश्वा विद्या गृह्णामि तथा युवामत्यायातं मम तिरो हवं श्रुतम्॥ २॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! येभ्यो विद्वद्भ्यो विद्या यूयमधीध्वं ते यदा यदा परीक्षां कुर्युस्तदा तदा तिरस्कारपुरःसरं वर्त्तमानं विदधीरन् यतः सर्वान् सम्यग्विद्या प्राप्नुयात्॥ २॥

**पदार्थः**-हे (**दस्रा**) दुःख के दूर करने और (**हिरण्यवर्त्तनी**) ज्योतिः वा सुवर्ण को वर्त्तने वाले! (**सुषुम्ना**) उत्तम सुख से युक्त तथा (**सिन्धुवाहसा**) नदियों को प्राप्त कराने वालो! (**माध्वी**) मधुर गति से युक्त और (**अश्विना**) शिल्प कार्य्यों के जानने वालो! जैसे (**अहम्**) मैं (**सना**) सदा (**विश्वाः**) सम्पूर्ण विद्याओं को ग्रहण करता हूं, वैसे आप दोनों (**अत्यायातम्**) देशों का अतिक्रमण करके आइये और (**मम**) मेरा (**तिरः**) तिरस्कारपूर्वक (**हवम्**) पठित (**श्रुतम्**) सुनिये॥ २॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जिन विद्वानों से विद्याओं को आप लोग पढ़ो, वे जब जब परीक्षा करें, तब-तब तिरस्कार के साथ वर्त्तमान को धारण करें, जिससे सब को अच्छे प्रकार विद्या प्राप्त होवे॥ २॥

**पुनर्मनुष्यैः कथं वर्त्तितव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को कैसे वर्त्तना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**आ नो रत्नानि बिभ्रताश्विना गच्छतं युवम्।**

**रुद्रा हिरण्यवर्तनी जुषाणा वाजिनीवसू माध्वी मम श्रुतं हवम्॥ ३॥**

**आ। नः। रत्नानि। बिभ्रतौ। अश्विना। गच्छतम्। युवम्। रुद्रा। हिरण्यवर्तनी इति हिरण्यऽवर्तनी। जुषाणा। वाजिनीवसू इति वाजिनीऽवसू। माध्वी इति। मम। श्रुतम्। हवम्॥ ३॥**

**पदार्थः**-(**आ**) समन्तात् (**नः**) अस्मान् (**रत्नानि**) रमणीयानि धनानि (**बिभ्रतौ**) धरन्तौ (**अश्विनौ**) विद्यायुक्तौ (**गच्छतम्**) (**युवम्**) युवाम् (**रुद्रा**) दुष्टानां भयङ्करौ (**हिरण्यवर्त्तनी**) यौ हिरण्यं ज्योतिर्वर्त्तयातां तौ (**जुषाणा**) सेवमानौ (**वाजिनीवसू**) यौ वाजिनीमन्नादियुक्तां सामग्रीं वासयतस्तौ (**माध्वी**) मधुरस्वभावौ (**मम**) (**श्रुतम्**) (**हवम्**)॥ ३॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे वाजिनीवसू हिरण्यवर्त्तनी रत्नानि जुषाणा बिभ्रतौ रुद्राश्विना माध्वी! युवं न आ गच्छतं मम हवं श्रुतम्॥३॥

**भावार्थः**-त एव भाग्यशालिनो भवेयुर्य आप्तान् विदुष उपगम्याऽऽहूय वा प्रयत्नेन विद्याभ्यासं कृत्वा परीक्षां प्रददति॥३॥

**पदार्थः**-हे **(वाजिनीवसू)** अन्न आदि से युक्त सामग्री को वसाने और **(हिरण्यवर्त्तनी)** सुवर्ण वा ज्योति को वर्त्ताने वाले **(रत्नानि)** रमणीय धनों को **(जुषाणा)** सेवन और **(बिभ्रतौ)** धारण करते हुए **(रुद्रा)** दुष्टों को भय देने वाले **(अश्विना)** विद्या से युक्त **(माध्वी)** मधुरस्वभाव वालो! **(युवम्)** आप दोनों **(नः)** हम लोगों को **(आ)** सब प्रकार से **(गच्छतम्)** प्राप्त होइये और **(मम)** मेरे **(हवम्)** आह्वान को **(श्रुतम्)** सुनिये॥३॥

**भावार्थः**-वे ही भाग्यशाली होवें, जो यथार्थवक्ता विद्वानों के समीप जाकर वा उनको बुलाकर प्रयत्न से विद्या का अभ्यास कर के परीक्षा देते हैं॥३॥

**पुनर्मनुष्यैः किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**सुष्टुभो वां वृषण्वसू रथे वाणीच्याहिता।**

**उत वां ककुहो मृगः पृक्षः कृणोति वापुषो माध्वी मम श्रुतं हवम्॥४॥**

**सुऽस्तुभः। वाम्। वृषण्वसू इति वृषण्ऽवसू। रथे। वाणीची। आऽहिता। उत। वाम्। ककुहः। मृगः। पृक्षः। कृणोति। वापुषः। माध्वी इति। मम। श्रुतम्। हवम्॥४॥**

**पदार्थः**-**(सुष्टुभः)** शोभनस्तोता **(वाम्)** **(वृषण्वसू)** यौ वृषणौ बलिष्ठान् वासयतस्तौ **(रथे)** **(वाणीची)** वाक् **(आहिता)** स्थापिता **(उत)** **(वाम्)** **(ककुहः)** महान् **(मृगः)** यो मार्ष्टि सः **(पृक्षः)** अन्नम्। **पृक्ष इत्यन्ननामसु पठितम्।** (निघं०२.७) **(कृणोति)** **(वापुषः)** वपुषि भवः **(माध्वी)** **(मम)** **(श्रुतम्)** **(हवम्)**॥४॥

**अन्वयः**-हे वृषण्वसू माध्वी अश्विनौ! यः सुष्टुभो वां रथं रमते येन वाणीच्याहितोत यो वां ककुहो मृगो वापुषः पृक्षः कृणोति तस्य मम च हवं श्रुतम्॥४॥

**भावार्थः**-स एव महान् भवति यो विदुषां सकाशाद्विद्यां सुशीलतां गृह्णाति॥४॥

**पदार्थः**-हे **(वृषण्वसू)** बलिष्ठों को बसाने वाले **(माध्वी)** मधुर स्वभाव वाले विद्यायुक्त जनो! जो **(सुष्टुभः)** उत्तम स्तुति करने वाला **(वाम्)** आप दोनों के **(रथे)** रथ में रमता है जिससे **(वाणीची)** वाणी **(आहिता)** स्थापित की गई **(उत)** और जो **(वाम्)** दोनों का **(ककुहः)** बड़ा **(मृगः)** शुद्ध करने वाला और **(वापुषः)** शरीर में हुआ **(पृक्षः)** अन्न को **(कृणोति)** करता है उसके और **(मम)** मेरे **(हवम्)** आह्वान को **(श्रुतम्)** सुनिये॥४॥



www.9009.co.in

**भावार्थ:**-वही बड़ा होता है जो विद्वानों के समीप से विद्या और सुशीलता को ग्रहण करता है॥४॥

**पुनर्मनुष्यैः किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**बोधिन्मनसा रथ्येषिरा हवनश्रुता।**

**विभिश्च्यवानमश्विना नि याथो अद्वयाविनं माध्वी मम श्रुतं हवम्॥५॥१५॥**

**बोधित्ऽमनसा। रथ्या। इषिरा। हवनऽश्रुता। विऽभिः। च्यवानम्। अश्विना। नि। याथः। अद्वयाविनम्। माध्वी इति। मम। श्रुतम्। हवम्॥५॥**

**पदार्थ:-(बोधिन्मनसा)** बोधितं मनो ययोस्तौ **(रथ्या)** रथेषु साधू **(इषिरा)** गन्तारौ **(हवनश्रुता)** हवनं श्रुतं ययोस्तौ **(विभिः)** पक्षिभिस्सह **(च्यवानम्)** पृच्छन्तम् **(अश्विना)** विद्याऽध्यापकोपदेशकौ **(नि)** नितराम् **(याथः)** प्राप्नुथः **(अद्वयाविनम्)** इन्द्रभावरहितम् **(माध्वी) (मम) (श्रुतम्) (हवम्)**॥५॥

**अन्वय:**-हे रथ्येषिरा हवनश्रुता बोधिन्मनसा माध्वी अश्विना! युवामद्वयाविनं विभिश्च्यवानं नि याथो मम हवं च श्रुतम्॥५॥

**भावार्थ:**-ये मनुष्याः शुद्धान्तःकरणाः प्राप्तशिल्पविद्या निष्कपटा विद्यार्थिनां परीक्षकाः सन्ति ते जगन्मङ्गलकरा भवन्ति॥५॥

**पदार्थ:**-हे **(रथ्या)** रथों में श्रेष्ठ **(इषिरा)** चलने वाले **(हवनश्रुता)** आह्वान सुना गया जिनका और **(बोधिन्मनसा)** बोधित मन जिनका ऐसे **(माध्वी)** मधुर स्वभाव वाले **(अश्विना)** विद्या के अध्यापक और उपदेशक! आप दोनों **(अद्वयाविनम्)** द्वन्द्वभाव से रहित **(विभिः)** पक्षियों के साथ **(च्यवानम्)** पूंछते हुए को **(नि)** अत्यन्त **(याथः)** प्राप्त होते हैं और **(मम)** मेरे **(हवम्)** आह्वान को भी **(श्रुतम्)** सुनिये॥५॥

**भावार्थ:**-जो मनुष्य शुद्ध अन्तःकरण वाले, प्राप्त हुई शिल्पविद्या जिनको ऐसे और कपटरहित होकर विद्यार्थियों के परीक्षक हैं, वे जगत् के मङ्गलकारक होते हैं॥५॥

**मनुष्यैः शिल्पविद्या कार्य्याणि साधनीयानीत्याह॥**

मनुष्यों को शिल्पविद्या से कार्य्य सिद्ध करने चाहियें, इस विषय को कहते हैं॥

**आ वां नरा मनोयुजोऽश्वासः प्रुषितप्सवः।**

**वयो वहन्तु पीतये सह सुम्नेभिरश्विना माध्वी मम श्रुतं हवम्॥६॥**

**आ। वाम्। नरा। मनःऽयुजः। अश्वासः। प्रुषितऽप्सवः। वयः। वहन्तु। पीतये। सह। सुम्नेभिः। अश्विना। माध्वी इति। मम। श्रुतम्। हवम्॥६॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**आ**) समन्तात् (**वाम्**) युवयोः (**नरा**) नेतारौ (**मनोयुजः**) ये मन इव युञ्जन्ते ते वेगवत्तराः (**अश्वासः**) वेगादयो गुणाः (**प्रुषितप्स्वः**) प्रुषितं दग्धं प्सु इन्धनान्नादिकं यैस्ते (**वयः**) व्याप्तिशीलाः (**वहन्तु**) (**पीतये**) पानाय (**सह**) (**सुम्नेभिः**) सुखैः (**अश्विना**) शिल्पविद्याविदौ (**माध्वी**) (**मम**) (**श्रुतम्**) (**हवम्**)॥६॥

**अन्वयः**-हे माध्वी नराऽश्विना! युवां सुम्नेभिः सह पीतये ये वां मनोयुजः प्रुषितप्सवो वयोऽश्वासः सन्ति ते यानान्या वहन्तु तदर्थं मम हवं श्रुतम्॥६॥

**भावार्थः**-यदि मनुष्याः पदार्थविद्यया शिल्पसिद्धानि कार्य्याणि साध्नुवन्तु तर्हि धनवत्तरा भवन्तु॥६॥

**पदार्थः**-हे (**माध्वी**) मधुर स्वभावयुक्त (**नरा**) नायक (**अश्विना**) शिल्पविद्या के जानने वालो! आप लोगो आप दोनों (**सुम्नेभिः**) सुखों के (**सह**) साथ (**पीतये**) पान के लिये जो (**वाम्**) आप दोनों के (**मनोयुजः**) मन के सदृश युक्त होने वाले अत्यन्त वेगवान् (**प्रुषितप्सवः**) जलाया ईंधन आदि जिन्होंने ऐसे (**वयः**) व्याप्तिशील (**अश्वासः**) वेग आदि गुण हैं वे वाहनों को (**आ**) सब प्रकार से (**वहन्तु**) पहुंचावें उनके लिये (**मम**) मेरे (**हवम्**) आह्वान को (**श्रुतम्**) सुनिये॥६॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य पदार्थविद्या से शिल्पसिद्ध कार्य्यों को सिद्ध करें तो अधिक धनी होवें॥६॥

**पुनर्मनुष्यैः कथं वर्त्तितव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को कैसे वर्त्ताव करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**अश्विनावेह गच्छतं नासत्या मा वि वेनतम्।**

**तिरश्चिदर्य्या परि वर्तिर्यातमदाभ्या माध्वी मम श्रुतं हवम्॥७॥**

**अश्विनौ। आ। इह। गच्छतम्। नासत्या। मा। वि। वेनतम्। तिरः। चित्। अर्य्ऽया। परि। वर्तिः। यातम्। अदाभ्या। माध्वी इति। मम। श्रुतम्। हवम्॥७॥**

**पदार्थः**-(**अश्विनौ**) व्याप्तविद्यौ (**आ**) (**इह**) अस्मिन् संसारे (**गच्छतम्**) (**नासत्या**) अविद्यमानासत्यव्यवहारौ (**मा**) (**वि**) (**वेनतम्**) कामयतम् (**तिरः**) तिरस्कारम् (**चित्**) अपि (**अर्य्यया**) अर्य्यस्य स्त्रिया (**परि**) (**वर्त्तिः**) मार्गम् (**यातम्**) (**अदाभ्या**) अहिंसनीयौ (**माध्वी**) (**मम**) (**श्रुतम्**) (**हवम्**)॥७॥

**अन्वयः**-हे नासत्याऽदाभ्या माध्वी अश्विनौ! युवामिहाऽऽगच्छतमर्य्यया वेनतं तिरश्चिन्मां कुर्य्यातं वर्त्तिः परि यातं मम हवं विश्रुतम्॥७॥

**भावार्थः**-हे स्त्रीपुरुषौ! युवां गृहस्थमार्गे वर्त्तित्वा धर्म्येण सन्तानानैश्वर्य्यं चेच्छतम्। अध्यापनपरीक्षे च सदैव कुर्य्यातम्॥७॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-हे **(नासत्या)** नहीं विद्यमान असत्य व्यवहार जिनके ऐसे **(अदाभ्या)** नहीं हिंसा करने योग्य **(माध्वी)** मधुर स्वभाव वाले **(अश्विनौ)** विद्या में व्याप्त! आप दोनों **(इह)** इस संसार में **(आ, गच्छतम्)** आइये तथा **(अर्य्यया)** वैश्य या स्वामी की स्त्री से **(वेनतम्)** कामना करो **(तिरः)** तिरस्कार को **(चित्)** भी **(मा)** मत करो **(वर्त्तिः)** मार्ग को **(परि, यातम्)** सब ओर से प्राप्त होओ और **(मम)** मेरे **(हवम्)** आह्वान को **(वि)** विशेष करके **(श्रुतम्)** सुनो॥७॥

**भावार्थः**-हे स्त्रीपुरुषो! आप दोनों गृहस्थ मार्ग में वर्त्ताव करके धर्म्म से सन्तान और ऐश्वर्य की इच्छा करो तथा अध्यापन और परीक्षा सदा ही करो॥७॥

**पुनः स्त्रीपुरुषौ किं कुर्य्यातामित्याह॥**

फिर स्त्रीपुरुष क्या करें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अस्मिन् यज्ञे अदाभ्या जरितारं शुभस्पती।**

**अवस्युमश्विना युवं गृणन्तमुप भूषथो माध्वी मम श्रुतं हवम्॥८॥**

**अस्मिन्। यज्ञे। अदाभ्या। जरितारम्। शुभः। पती इति। अवस्युम्। अश्विना। युवम्। गृणन्तम्। उप। भूषथः। माध्वी इति। मम। श्रुतम्। हवम्॥८॥**

**पदार्थः**-**(अस्मिन्)** गृहाश्रमाख्ये **(यज्ञे)** सम्यग्गन्तव्ये **(अदाभ्या)** अहिंसनीयौ **(जरितारम्)** स्तोतारम् **(शुभः, पती)** कल्याणकरव्यवहारस्य पालकौ **(अवस्युम्)** आत्मनोऽवं रक्षणमिच्छुं कामयमानं वा **(अश्विना)** ब्रह्मचर्य्येण प्राप्तविद्यौ स्त्रीपुरुषौ **(युवम्)** युवाम् **(गृणन्तम्)** स्तुवन्तम् **(उप)** **(भूषथः)** **(माध्वी)** **(मम)** **(श्रुतम्)** **(हवम्)**॥८॥

**अन्वयः**-हे अदाभ्या माध्वी शुभस्पती अश्विना! युवस्मिन् यज्ञे जरितारमवस्युं गृणन्तं जनमुपभूषथो मम हवं च श्रुतम्॥८॥

**भावार्थः**-ये स्त्रीपुरुषा गृहाश्रमे वर्त्तमानाः शुभाचरणाः स्तुतिभिः स्तावका गृहकृत्यान्यलङ्कुर्वन्ति। अध्यापनपरीक्षाभ्यां विद्यां चोन्नयन्ति त एवेह प्रशंसिता भवन्ति॥८॥

**पदार्थः**-हे **(अदाभ्या)** नहीं हिंसा करने योग्य **(माध्वी)** मधुर स्वभाव वाले **(शुभः, पती)** कल्याणकारक व्यवहार के पालन करने वाले **(अश्विना)** ब्रह्मचर्य्य से प्राप्त हुई विद्या जिनको ऐसे स्त्री पुरुषो! **(युवम्)** आप दोनों **(अस्मिन्)** इस गृहाश्रम नामक **(यज्ञे)** उत्तम प्रकार प्राप्त होने योग्य यज्ञ में **(जरितारम्)** स्तुति करने और **(अवस्युम्)** अपने कल्याण की इच्छा वा कामना करने वाले **(गृणन्तम्)** स्तुति करते हुए जन को **(उप, भूषथः)** शोभित करते हो **(मम)** मेरे **(हवम्)** आह्वान को भी **(श्रुतम्)** सुनिये॥८॥



www.9009.co.in

**भावार्थ:**-जो स्त्री पुरुष गृहाश्रम में वर्त्तमान उत्तम आचरण वाले स्तुतियों से स्तुति करने वाले गृह के कृत्यों को शोभित करते हैं तथा अध्यापन और परीक्षा से विद्या का उन्नति करते हैं, वे ही इस जगत् में प्रशंसित होते हैं॥८॥

**पुन: स्त्रीपुरुषौ कथं वर्त्तेयातामित्याह॥**

फिर स्त्री-पुरुष कैसा वर्त्ताव करें, इस विषय को कहते हैं॥

**अभू॑दु॒षा रुश॑त्पशु॒राग्निर॑धाय्यृ॒त्विय॑:।**

**अयो॑जि वां वृषण्वसू॒ रथो॑ दस्रा॒वम॑र्त्यो॒ माध्वी॒ मम॑ श्रु॒तं हव॑म्॥९॥१६॥**

**अभू॑त्। उ॒षा:। रुश॑त्ऽपशु॒:। आ। अ॒ग्नि:। अ॒धा॒यि॒। ऋ॒त्विय॑:। अयो॑जि। वा॒म्। वृ॒ष॒ण्व॒सू॒ इति॑ वृषण्ऽवसू। रथ॑:। द॒स्रौ॒। अम॑र्त्य:। माध्वी॒ इति॑। मम॑। श्रु॒त॒म्। हव॑म्॥९॥**

**पदार्थ:-(अभूत्)** भवेत् **(उषा:)** प्रातर्वेलेव **(रुशत्पशु:)** पालित: पशुर्येन स:। **रुशदिति पशुनामसु पठितम्।** (निघं०४.३) **(आ) (अग्नि:)** पावक: **(अधायि)** ध्रियते **(ऋत्विय:)** ऋतुयाजक: **(अयोजि)** योज्यते **(वाम्)** युवयो: **(वृषण्वसू)** यौ वृषणौ बलिष्ठौ देहौ वासयतस्तौ **(रथ:)** यानम् **(दस्रौ)** दु:खनाशकौ **(अमर्त्य:)** अविद्यमाना मर्त्या यस्मिन् स: **(माध्वी) (मम) (श्रुतम्) (हवम्)**॥९॥

**अन्वय:**-हे वृषण्वसू दस्रौ माध्वी स्त्रीपुरुषौ! ययोर्वां रुशत्पशुर्ऋत्वियोऽग्निराऽधाय्युषा अभूत्। अमर्त्यो रथोऽयोजि तौ युवां मम हवं श्रुतम्, हे पते! या पत्न्युषा इवाभूतां सततं प्रसादय॥९॥

**भावार्थ:**-सदा स्त्रीपुरुषावृतुगामिनौ भवेतां सर्वदा शरीरस्यारोग्यं पुष्टिं च सम्पादयेतां विद्योन्नतिञ्च विधायाऽऽनन्दमुन्नयतामिति॥९॥

अत्राश्विविद्वद्स्त्रीपुरुषगुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति पञ्चसप्ततितमं सूक्तं षोडशो वर्गश्च समाप्त:॥**

**पदार्थ:**-हे **(वृषण्वसू)** बलिष्ठ दो देहों को वसाने और **(दस्रौ)** दु:ख के नाश करने वाले **(माध्वी)** मधुर स्वभाव वाले स्त्री-पुरुषो! जिन **(वाम्)** आप दोनों को **(रुशत्पशु:)** पाला पशु जिसने वह **(ऋत्विय:)** ऋतु-ऋतु में यज्ञ कराने वाला **(अग्नि:)** अग्नि **(आ, अधायि)** स्थापन किया जाता है और **(उषा:)** प्रात:काल के सदृश **(अभूत्)** होवे और **(अमर्त्य:)** नहीं विद्यमान मनुष्य जिसमें ऐसा **(रथ:)** वाहन **(अयोजि)** युक्त किया जाता वे आप दोनों **(मम)** मेरे **(हवम्)** आह्वान को **(श्रुतम्)** सुनिये और हे स्त्री के पति! जो पत्नी प्रात:काल के सदृश होवे, उसको निरन्तर प्रसन्न करो॥९॥

**भावार्थ:**-सदा स्त्री-पुरुष ऋतुगामी होवें, सदा शरीर के आरोग्य और पुष्टि को करें तथा विद्या की उन्नति करके आनन्द की उन्नति करें॥९॥

इस सूक्त में अश्विपदवाच्य विद्वान्, स्त्री-पुरुष के गुण-वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ संगति जाननी चाहिये॥



www.9009.co.in

**यह पचहत्तरवां सूक्त और सोलहवां वर्ग समाप्त हुआ।।**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

**अथ पञ्चर्चस्य षट्सप्ततितमस्य सूक्तस्य अत्रिर्ऋषिः। अश्विनौ देवते। १, २ स्वराट् पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः। ३, ४, ५ निचृत्त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः॥**

***पुनः स्त्रीपुरुषौ कथं वर्त्तेयातामित्याह॥***

अब पाँच ऋचा वाले छहत्तरवें सूक्त का प्रारम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में फिर स्त्री-पुरुष कैसे वर्त्तें, इस विषय को कहते हैं॥

**आ भात्यग्निरुषसामनीकमुद्विप्राणां देवया वाचो अस्थुः।**

**अर्वाञ्चा नूनं रथ्येह यातं पीपिवांसमश्विना घर्ममच्छ॥१॥**

**आ। भाति। अग्निः। उषसाम्। अनीकम्। उत्। विप्राणाम्। देवऽयाः। वाचः। अस्थुः। अर्वाञ्चा। नूनम्। रथ्या। इह। यातम्। पीपिऽवांसम्। अश्विना। घर्मम्। अच्छ॥१॥**

**पदार्थः-(आ)** समन्तात् **(भाति)** **(अग्निः)** सूर्य्यरूपेण परिणतः **(उषसाम्)** प्रभातवेलानाम् **(अनीकम्)** सैन्यम् **(उत्)** **(विप्राणाम्)** मेधाविनाम् **(देवयाः)** या देवान् विदुषो यान्ति ताः **(वाचः)** वाण्यः **(अस्थुः)** सन्ति **(अर्वाञ्चा)** यावर्वागञ्चतो गच्छतस्तौ **(नूनम्)** निश्चितम् **(रथ्या)** रथेषु यानेषु साधू **(इह)** **(यातम्)** **(पीपिवांसम्)** सम्यग्वर्धमानम् **(अश्विना)** स्त्रीपुरुषौ **(घर्मम्)** गृहाश्रमकृत्याख्यं यज्ञम् **(अच्छ)** सम्यक्॥१॥

**अन्वयः**-हे रथ्याऽर्वाञ्चाऽश्विना! या विप्राणां देवया वाचोऽस्थुर्यं उषसामनीकमग्निरुद्भाति तैरिह पीपिवांसं घर्मं नूनमच्छाऽऽयातम्॥१॥

**भावार्थः**-हे धीमन्तो! यथा विद्युदादिरग्निर्बहूनि कार्य्याणि साध्नोति तथैव स्त्रीपुरुषौ मिलित्वा गृहकृत्यानि साध्नुयाताम्॥१॥

**पदार्थः**-हे **(रथ्या)** वाहनों में प्रवीण **(अर्वाञ्चा)** नीचे चलने वाले **(अश्विना)** स्त्रीपुरुषो! जो **(विप्राणाम्)** बुद्धिमानों की **(देवयाः)** विद्वानों को प्राप्त होने वाली **(वाचः)** वाणियां **(अस्थुः)** हैं और जो **(उषसाम्)** प्रभात वेलाओं की **(अनीकम्)** सेनारूप **(अग्नि)** सूर्य्यरूप से परिणत हुआ अग्नि **(उत्)** ऊपर को **(भाति)** प्रकाशित होता है उनसे **(इह)** इस संसार में **(पीपिवांसम्)** उत्तम प्रकार बढ़ते हुए **(घर्मम्)** गृहाश्रम के कृत्य नामक यज्ञ को **(नूनम्)** निश्चित **(अच्छ)** अच्छे प्रकार **(आ)** सब प्रकार से **(यातम्)** प्राप्त होओ॥१॥

**भावार्थः**-हे बुद्धिमान् जनो! जैसे बिजुली आदि अग्नि बहुत कार्य्यों को सिद्ध करता है, वैसे ही स्त्रीपुरुष मिलकर गृहकृत्यों को सिद्ध करें॥१॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**



www.9009.co.in

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**न सं॑स्कृ॒तं प्र मि॑मीतो॒ गमि॑ष्ठान्ति॑ नू॒नम॒श्विनोप॑स्तुते॒ह।**

**दिवा॑भिपि॒त्वेऽव॒सागमि॑ष्ठा॒ प्रत्यव॑र्तिं दा॒शुषे॒ शंभ॑विष्ठा॥ २॥**

**न। सं॒स्कृ॒तम्। प्र। मि॒मी॒तः॒। गमि॑ष्ठा। अन्ति॑। नू॒नम्। अ॒श्विना॑। उप॑ऽस्तुता। इ॒ह। दिवा॑। अ॒भि॒ऽपि॒त्वे। अव॑सा। आऽगमि॑ष्ठा। प्रति॑। अव॑र्त्तिम्। दा॒शुषे॑। शम्ऽभ॑विष्ठा॥ २॥**

**पदार्थः**-(**न**) निषेधे (**संस्कृतम्**) कृतसंस्कारम् (**प्र**) (**मिमीतः**) जनयतः (**गमिष्ठा**) अतिशयेन गन्तारौ (**अन्ति**) समीपे (**नूनम्**) निश्चितम् (**अश्विना**) स्त्रीपुरुषौ (**उपस्तुता**) उपगतप्रशंसया कीर्त्तितौ (**इह**) अस्मिन् (**दिवा**) दिवसेन (**अभिषित्वे**) अभितः प्राप्ते (**अवसा**) रक्षणाद्येन (**आगमिष्ठा**) समन्तादतिशयेन गन्तारौ (**प्रति**) (**अवर्त्तिम्**) अमार्गम् (**दाशुषे**) दात्रे (**शम्भविष्ठा**) अतिशयेन सुखस्य भावयितारौ॥ २॥

**अन्वयः**-हे गमिष्ठा शम्भविष्ठा नूनमुपस्तुताऽश्विनेह संस्कृतं न प्र मिमीतः। अभिपित्वेऽवसाऽवर्तिं प्रति मिमीतो दाशुषे दिवान्त्यागमिष्ठा भवेताम्॥ २॥

**भावार्थः**-ये गृहस्थाः कृतसंस्कारान् पदार्थान् वृथा न हिंसन्ति ते श्रीमन्तो जायन्ते॥ २॥

**पदार्थः**-हे (**गमिष्ठा**) अतिशय चलने वाले (**शम्भविष्ठा**) अतिशय सुखकारक और (**नूनम्**) निश्चित (**उपस्तुता**) प्राप्त हुई प्रशंसा से कीर्त्ति को पाये हुए (**अश्विना**) स्त्रीपुरुषो! आप (**इह**) इस संसार में (**संस्कृतम्**) किया संस्कार जिसका उसको (**न**) नहीं (**प्र, मिमीतः**) उत्पन्न करते हो और (**अभिपित्वे**) सब ओर से प्राप्त होने पर (**अवसा**) रक्षण आदि से (**अवर्त्तिम्**) अमार्ग के (**प्रति**) प्रतिकूल उत्पन्न करते हो और (**दाशुषे**) दान करने वाले के लिये (**दिवा**) दिवस से (**अन्ति**) समीप में (**आगमिष्ठा**) चारों और अतिशय चलने वाले होओ॥ २॥

**भावार्थः**-जो गृहस्थ जन-किया है संस्कार जिनका ऐसे पदार्थों का वृथा नहीं नाश करते हैं, वे लक्ष्मीवान् होते हैं॥ २॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**उ॒ता या॑तं संग॒वे प्रा॒तरह्नो॑ म॒ध्यंदि॑न॒ उदि॑ता॒ सूर्य॑स्य।**

**दिवा॒ नक्त॒मव॑सा॒ शंत॑मेन॒ नेदानीं॑ पी॒तिर॒श्विना त॑तान॥ ३॥**

**उ॒त। आ। या॒त॒म्। स॒म्ऽग॒वे। प्रा॒तः। अह्नः॑। म॒ध्यंदि॑ने। उत्ऽइ॑ता। सूर्य॑स्य। दिवा॑। नक्त॑म्। अव॑सा। शम्ऽत॑मेन। न। इ॒दानी॑म्। पी॒तिः। अ॒श्विना॑। आ। त॒ता॒न॥ ३॥**

**पदार्थः**-(**उत**) अपि (**आ**) (**यातम्**) आगच्छतम् (**सङ्गवे**) सङ्गच्छन्ति गावो यस्मिन् सायं समये तस्मिन् (**प्रातः**) प्रभाते (**अहः**) दिवसस्य (**मध्यन्दिने**) मध्याह्ने (**उदिता**) उदिते (**सूर्य्यस्य**) (**दिवा**) दिवसे



www.9009.co.in

**(नक्तम्)** रात्रौ **(अवसा)** रक्षणादिना **(शन्तमेन)** अतिशयितेन सुखेन **(न)** **(इदानीम्)** **(पीतिः)** पानम् **(अश्विना)** व्याप्तसुखौ **(आ)** **(ततान)** आतनोति॥३॥

**अन्वयः**-हे अश्विना स्त्रीपुरुषौ! युवमह्नो मध्यन्दिने प्रातः सूर्य्यस्योदिताऽह्नः सङ्गवे च दिवा नक्तं शन्तमेनावसा सहाऽऽयातम्। उत युवयोर्या पीतिराऽऽततान तामिदानीन्न हिंस्यातम्॥३॥

**भावार्थः**-कृतविवाहाः स्त्रीपुरुषाः प्रातर्मध्यसायंसमयेष्वहर्निशं कल्याणकरैः कर्म्मभिः सुखानि प्राप्नुवन्तु कदाचिदालस्यं मा कुर्वन्तु॥३॥

**पदार्थः**-हे **(अश्विना)** व्याप्तसुख स्त्रीपुरुषो! तुम **(अह्नः)** दिवस के **(मध्यन्दिने)** मध्याह्न भाग में और **(प्रातः)** प्रभातसमय में **(सूर्य्यस्य)** सूर्यमण्डल के **(उदिता)** उदय होने में और दिन के **(सङ्गवे)** सायं समय में जिसमें गौएँ संगत होतीं अर्थात् चर के आतीं **(दिवा)** दिन **(नक्तम्)** रात्रि **(शन्तमेन)** अत्यन्त सुख से **(अवसा)** रक्षा आदि के साथ **(आ, यातम्)** आओ **(उत)** और तुम दोनों की जो **(पीतिः)** पिआवट **(आ, ततान)** विस्तृत होती है उसको **(इदानीम्)** अब **(न)** नहीं नाश करो॥३॥

**भावार्थः**-किया विवाह जिन्होंने वे स्त्री-पुरुष प्रातः, मध्याह्न, सायं समयों में दिन-रात्रि को कल्याण करने वाले कर्म्मों को सुखों से प्राप्त हों, कभी आलस्य मत करें॥३॥

**पुनर्गृहस्थैः कथं वर्त्तितव्यमित्याह॥**

फिर गृहस्थों को कैसा वर्त्ताव करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**इदं हि वां प्रदिवि स्थानमोक इमे गृहा अश्विनेदं दुरोणम्।**

**आ नो दिवो बृहतः पर्वतादाद्भ्यो यातमिषमूर्जं वहन्ता॥४॥**

**इदम्। हि। वाम्। प्रऽदिवि। स्थानम्। ओकः। इमे। गृहाः। अश्विना। इदम्। दुरोणम्। आ। नः। दिवः। बृहतः। पर्वतात्। आ। अत्ऽभ्यः। यातम्। इषम्। ऊर्जम्। वहन्ता॥४॥**

**पदार्थः**-**(इदम्)** **(हि)** यतः **(वाम्)** युवयोः **(प्रदिवि)** प्रकृष्टप्रकाशे **(स्थानम्)** तिष्ठन्ति यस्मिन् **(ओकः)** गृहम् **(इमे)** **(गृहाः)** ये गृह्णन्ति ते गृहस्थाः **(अश्विना)** स्त्रीपुरुषौ **(इदम्)** **(दुरोणम्)** गृहम् **(आ)** समन्तात् **(नः)** अस्मानस्माकं वा **(दिवः)** प्रकाशात् **(बृहतः)** महतः **(पर्वतात्)** मेघात् **(आ)** **(अद्भ्यः)** **(यातम्)** प्राप्नुतम् **(इषम्)** अन्नम् **(ऊर्जम्)** पराक्रमम् **(वहन्ता)**॥४॥

**अन्वयः**-हे दिवो बृहतः पर्वतादद्भ्य इषमूर्जमाऽऽवहन्ताश्विना! न इदं दुरोणमाऽऽयातं हीदं वां प्रदिवि स्थानमोक इमे गृहाः प्राप्नुवन्ति तानायातम्॥४॥

**भावार्थः**-ये गृहस्था गृहाश्रमकर्माण्यलङ्कुर्वन्ति ते सर्वाणि सुखानि प्राप्नुवन्ति॥४॥

**पदार्थः**-हे **(दिवः)** प्रकाश से **(बृहतः)** बड़े **(पर्वतात्)** मेघ और **(अद्भ्यः)** जलों से **(इषम्)** अन्न और **(ऊर्जम्)** पराक्रम को **(आ)** सब प्रकार से **(वहन्ता)** प्राप्त करने वाले **(अश्विना)** स्त्रीपुरुषो! **(नः)** हम लोगों को वा हम लोगों के **(इदम्)** इस **(दुरोणम्)** गृह को **(आ)** सब प्रकार से **(यातम्)** प्राप्त



www.9009.co.in

होओ **(हि)** जिससे **(इदम्)** यह **(वाम्)** आप दोनों के **(प्रदिवि)** उत्तम प्रकाश में **(स्थानम्)** स्थित होते हैं जिस में उस **(ओक:)** गृह को **(इमे)** ये **(गृहा:)** ग्रहण करने वाले गृहस्थ जन प्राप्त होते हैं, उनको सब प्रकार से प्राप्त होओ॥४॥

**भावार्थ:**-जो गृहस्थ जन गृहाश्रम के कर्म्मों को पूर्ण रीति से करते हैं, वे सब सुखों को प्राप्त होते हैं॥४॥

**मनुष्यैः पुरुषार्थविद्वत्सङ्गेनैश्वर्य्यं प्राप्तव्यमित्याह॥**

मनुष्यों को चाहिये कि पुरुषार्थ और विद्वानों के संग से ऐश्वर्य्य को प्राप्त करें,

इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**सम॒श्विनो॒रव॑सा॒ नूत॑नेन मयो॒भुवा॑ सु॒प्रणी॑ती गमेम।**

**आ नो॑ र॒यिं व॑हत॒मोत वी॒राना विश्वा॑न्यमृता॒ सौभ॑गानि॥५॥ १७॥**

**सम्। अ॒श्विनो॑ः। अव॑सा। नूत॑नेन। म॒यः॒ऽभुवा॑। सु॒ऽप्रनी॑ती। ग॒मे॒म॒। आ। न॒ः। र॒यिम्। व॒ह॒त॒म्। आ। उ॒त। वी॒रान्। आ। विश्वा॑नि। अ॒मृ॒ता॒। सौभ॑गानि॥५॥**

**पदार्थ:**-**(सम्)** सम्यक् **(अश्विनो:)** द्यावापृथिव्योरिव राजोपदेशकयो: **(अवसा)** अन्नादिना। **अव इत्यन्ननामसु पठितम्।** (निघं०२.७) **(नूतनेन)** नवीनेन **(मयोभुवा)** सुखं भावुकेन **(सुप्रणीती)** शोभनयोत्तमया नीत्या **(गमेम)** प्राप्नुयाम **(आ)** **(न:)** अस्मभ्यम् **(रयिम्)** धनम् **(वहतम्)** प्रापयतम् **(आ)** **(उत)** अपि **(वीरान्)** शौर्यादिगुणोपेतान् **(आ)** **(विश्वानि)** सर्वाणि **(अमृता)** स्वादून्युदकानि **(सौभगानि)** सुभगानामुत्तमधनाद्यैश्वर्याणां भावरूपाणि॥५॥

**अन्वय:**-हे मनुष्या! यथाऽश्विनोर्नूतनेनावसा मयोभुवा सुप्रणीती नो रयिमाऽऽवहतं वीरानुत विश्वान्यमृता सौभगान्या वहतं वयं समाऽऽगमेम तथा यूयमप्युपगच्छत॥५॥

**भावार्थ:**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कार:। य आप्तोपदेशेन राजन्यायव्यवस्थया सह वर्त्तित्वा न्यायेनोत्तमपुरुषानखिलान्यैश्वर्याणि च प्राप्नुवन्ति तेऽभीष्टसिद्धा भवन्तीति॥५॥

अत्राग्न्यश्विराजोपदेशकगुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति षट्सप्ततितमं सूक्तं सप्तदशो वर्गश्च समाप्त:॥**

**पदार्थ:**-हे मनुष्यो! जैसे **(अश्विनो:)** अन्तरिक्ष और पृथिवी के सदृश राजा और उपदेशक के **(नूतनेन)** नवीन **(अवसा)** अन्न आदि और **(मयोभुवा)** सुखकारक से और **(सुप्रणीती)** उत्तम नीति से **(न:)** हम लोगों के लिये **(रयिम्)** धन को **(आ)** सब प्रकार **(वहतम्)** प्राप्त कराते हुए को **(वीरान्)** वीरों को **(उत)** और **(विश्वानि)** सम्पूर्ण **(अमृता)** स्वादु जलों और **(सौभगानि)** उत्तम धनादि ऐश्वर्यों के भावरूपों को **(आ)** सब प्रकार प्राप्त कराते हुए को हम लोग **(सम्, आ, गमेम)** उत्तम प्रकार से प्राप्त होवें, वैसे आप लोग भी प्राप्त होओ॥५॥



www.9009.co.in

**भावार्थ:**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो लोग यथार्थवक्ताओं के उपदेश से राजा की न्यायव्यवस्था के साथ वर्त्ताव करके न्याय से उत्तम पुरुषों को और सम्पूर्ण ऐश्वर्यों को प्राप्त होते हैं, वे अभीष्ट पदार्थों की सिद्धि को प्राप्त होते हैं॥५॥

इस सूक्त में अग्नि, अश्वि, राजा और उपदेशक के गुण-वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इस से पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ संगति जाननी चाहिये॥

**यह छहत्तरवां सूक्त और सत्रहवां वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

**अथ पञ्चर्चस्य सप्तसप्ततितमस्य सूक्तस्य अत्रिर्ऋषिः। अश्विनौ देवते। १, २, ३, ४ त्रिष्टुप्। ५ निचृत् त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः॥**

***अथ मनुष्यैः किं कर्त्तव्यमित्याह॥***

अब पांच ऋचा वाले सतहत्तरवें सूक्त का प्रारम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में मनुष्यों को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**प्रातर्यावाणा प्रथमा यजध्वं पुरा गृध्रादररुषः पिबातः।**

**प्रातर्हि यज्ञमश्विना दधाते प्र शंसन्ति कवयः पूर्वभाजः॥ १॥**

**प्रातःऽयावाना। प्रथमा। यजध्वम्। पुरा। गृध्रात्। अररुषः। पिबातः। प्रातः। हि। यज्ञम्। अश्विना। दधाते इति। प्र। शंसन्ति। कवयः। पूर्वऽभाजः॥ १॥**

**पदार्थः**-(**प्रातर्यावाणा**) यौ सूर्य्योषसौ प्रातर्यातस्तौ (**प्रथमा**) आदिमौ विस्तीर्णस्वरूपौ (**यजध्वम्**) सङ्गच्छध्वम् (**पुरा**) पुरस्तात् (**गृध्रात्**) अभिकाङ्क्षया (**अररुषः**) अदातुः (**पिबातः**) पिबतः (**प्रातः**) (**हि**) (**यज्ञम्**) राज्यपालनम् (**अश्विना**) अध्यापकोपदेशकौ (**दधाते**) (**प्र**) (**शंसन्ति**) प्रशंसन्ति (**कवयः**) मेधाविनः (**पूर्वभाजः**) ये पूर्वान् भजन्ति ते॥ १॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यूयं यथा पुरा प्रातर्यावाणा प्रथमाऽश्विना यजध्वं तथा तावररुषो गृध्राद् रसं पिबातः प्रातर्हि यज्ञं दधाते तौ पूर्वभाजः कवयः प्र शंसन्ति तथा तौ यूयं विजानीत॥ १॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यौ राजोपदेशकौ दिवास्वापरहितौ तथा यौ विद्वांसः तत्सङ्गेन यूयं काङ्क्षासिद्धिं कुरुत॥ १॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! तुम जैसे (**पुरा**) पहिले (**प्रातर्यावाणा**) जो सूर्य्य और उषा प्रातर्वेला में चलते हैं उन (**प्रथमा**) प्रथम और विस्तीर्ण स्वरूप वालों को और (**अश्विना**) अध्यापक और उपदेशक जनों को (**यजध्वम्**) मिलाओ और (**अररुषः**) नहीं देने वाले की (**गृध्रात्**) अभिकांक्षा से रस को (**पिबातः**) पीते और (**प्रातः हि**) प्रातःकाल ही (**यज्ञम्**) राज्यपालन को (**दधाते**) धारण करते हैं उनकी (**पूर्वभाजः**) पूर्वजनों के आदर करने वाले (**कवयः**) बुद्धिमान् जन (**प्र, शंसन्ति**) प्रशंसा करते हैं, वैसे उनको आप लोग जानो॥ १॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जो राजा और उपदेशक जन दिन में शयनरहित और जिनकी विद्वान् जन स्तुति करते हैं, उनके सत्सङ्ग से आप लोग कांक्षासिद्धि करो॥ १॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**



www.9009.co.in

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**प्रातर्यजध्वमश्विना हिनोत न सायमस्ति देवया अजुष्टम्।**

**उतान्यो अस्मद्यजते वि चावः पूर्वःपूर्वो यजमानो वनीयान्॥ २॥**

**प्रातः। यजध्वम्। अश्विना। हिनोत। न। सायम्। अस्ति। देवऽयाः। अजुष्टम्। उत। अन्यः। अस्मत्। यजते। वि। च। आवः। पूर्वःऽपूर्वः। यजमानः। वनीयान्॥ २॥**

**पदार्थः**-(**प्रातः**) प्रभातसमये (**यजध्वम्**) सङ्गच्छध्वम् (**अश्विना**) सूर्योषसौ (**हिनोत**) वर्धयत (**न**) निषेधे (**सायम्**) सन्ध्यासमयः (**अस्ति**) (**देवयाः**) ये देवान् दिव्यगुणान् विदुषो यान्ति (**अजुष्टम्**) सेवेध्वम् (**उत**) अपि (**अन्यः**) (**अस्मत्**) (**यजते**) सङ्गच्छते (**वि**) (**च**) (**आवः**) रक्षति (**पूर्वःपूर्वः**) आदिम आदिमः (**यजमानः**) यो यजते (**वनीयान्**) अतिशयेन विभाजकः॥ २॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यूयं प्रातरश्विना यजध्वं हिनोत यत्र न सायमस्ति तत्र मे देवयास्तानजुष्टं योऽन्योऽस्मद्यजते यश्च व्यावः स उत पूर्वःपूर्वो यजमानो वनीयान् भवति तमपि सत्कुरुत॥ २॥

**भावार्थः**-मनुष्यैः प्रत्यहं रात्रेश्चतुर्थे याम उत्थाय यथा नियमेन द्यावापृथिव्यौ वर्त्तेते तथा वर्त्तित्वा सर्वे रक्षितव्याः॥ २॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! आप लोग (**प्रातः**) प्रभातकाल में (**अश्विना**) सूर्य्य और उषा को (**यजध्वम्**) उत्तम प्रकार प्राप्त हूजिये और (**हिनोत**) वृद्धि कीजिये जहां (**न**) नहीं (**सायम्**) सन्ध्याकाल (**अस्ति**) है वहाँ जो (**देवयाः**) श्रेष्ठ गुण और विद्वानों को प्राप्त होने वाले हैं उनका (**अजुष्टम्**) सेवन करिये और जो (**अन्यः**) अन्य (**अस्मत्**) हम लोगों से (**यजते**) मिलता है (**च**) और जो (**वि, आवः**) विशेष रक्षा करता है वह (**उत**) भी (**पूर्वःपूर्वः**) पहिला पहिला (**यजमानः**) यज्ञ करने वाला (**वनीयान्**) अतिशय विभाग करने वाला होता है, उसका भी सत्कार करो॥ २॥

**भावार्थः**-मनुष्यों को चाहिये कि प्रतिदिन रात्रि के चोथे शेष प्रहर में उठकर जैसे नियम से अन्तरिक्ष और पृथिवी वर्त्तमान हैं, वैसे वर्त्ताव करके सब की रक्षा करें॥ २॥

**पुनर्मनुष्यैः किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**हिरण्यत्वङ् मधुऽवर्णो घृतस्नुः पृक्षो वहन्ना रथो वर्तते वाम्।**

**मनोजवा अश्विना वातरंहा येनातियाथो दुरितानि विश्वा॥ ३॥**

**हिरण्यऽत्वक्। मधुऽवर्णः। घृतऽस्नुः। पृक्षः। वहन्। आ। रथः। वर्तते। वाम्। मनःऽजवाः। अश्विना। वातऽरंहाः। येन। अतिऽयाथः। दुःऽइतानि। विश्वा॥ ३॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**हिरण्यत्वक्**) हिरण्यं तेजः सुवर्णं चेव त्वगुपरिवर्णं यस्य सः। (**मधुवर्णः**) मधुर्द्रष्टव्यो वर्णो यस्य सः (**घृतस्नुः**) यो घृतमुदकं स्नाति (**पृक्षः**) अन्नादिकम् (**वहन्**) प्राप्नुवन् प्रापयन् वा (**आ**) (**रथः**) विमानादियानम् (**वर्त्तते**) (**वाम्**) युवयोः (**मनोजवाः**) मन इव वेगवन्तः (**अश्विना**) शिल्पविद्याविदौ (**वातरंहाः**) वायुवद्वेगवन्तोऽग्न्यादयः (**येन**) रथेन (**अतियाथः**) अत्यन्तं गच्छन्तः (**दुरितानि**) दुःखैनैतुं प्राप्तुं योग्यानि स्थानान्तराणि (**विश्वा**) सर्वाणि॥३॥

**अन्वयः**-हे अश्विना! वां हिरण्यत्वङ् मधुवर्णो घृतस्नुः पृक्षो वहन् रथ आ वर्त्तते यं मनोजवा वातरंहा वहन्ति येन विश्वा दुरितान्यतियाथस्तं युवां रचयेतम्॥३॥

**भावार्थः**-यदि मनुष्या विमानादियानान्यग्न्युदकादिभिश्चालयेयुस्तर्ह्येतानि मनोवद्वायुवच्छीघ्रं गत्वाऽऽगच्छेयुः॥३॥

**पदार्थः**-हे (**अश्विना**) शिल्पविद्या के जानने वालो! (**वाम्**) आप दोनों का (**हिरण्यत्वक्**) तेज और सुवर्ण के सदृश त्वचा पर का वर्ण और (**मधुवर्णः**) देखने योग्य वर्ण जिसका वह (**घृतस्नुः**) जल को शुद्ध करने वाला (**पृक्षः**) अन्न आदि को (**वहन्**) प्राप्त होता वा प्राप्त कराता हुआ (**रथः**) विमान आदि वाहन को (**आ, वर्त्तते**) सब प्रकार वर्त्तमान है और जिसको (**मनोजवाः**) मन के सदृश वेग वाले (**वातरंहाः**) वायु के सदृश वेगयुक्त अग्नि आदि पदार्थ प्राप्त होते हैं और (**येन**) जिस रथ से (**विश्वा**) सम्पूर्ण (**दुरितानि**) दुःख से प्राप्त होने योग्य स्थानान्तरों को (**अतियाथः**) अत्यन्त प्राप्त होते हैं, उसको आप दोनों रचिये॥३॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य विमानादिकों को अग्नि और जलादिकों से चलावें तो वे विमान आदि मन और वायु के सदृश शीघ्र जा कर लौट आवें॥३॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**यो भूयिष्ठं नासत्याभ्यां विवेष चनिष्ठं पित्वो ररते विभागे।**

**स तोकमस्य पीपरच्छमीभिरनूर्ध्वभासः सदमित्तुतुर्यात्॥४॥**

**यः। भूयिष्ठम्। नासत्याभ्याम्। विवेष। चनिष्ठम्। पित्वः। ररते। विऽभागे। सः। तोकम्। अस्य। पीपरत्। शमीभिः। अनूर्ध्वऽभासः। सदम्। इत्। तुतुर्यात्॥४॥**

**पदार्थः**-(**यः**) (**भूयिष्ठम्**) अतिशयेन बहु (**नासत्याभ्याम्**) अविद्यमानासत्याभ्याम् (**विवेष**) वेवेष्टि (**चनिष्ठम्**) अतिशयेनान्नम् (**पित्वः**) अन्नस्य (**ररते**) राति ददाति (**विभागे**) (**सः**) (**तोकम्**) अपत्यम् (**अस्य**) (**पीपरत्**) पालयेत् (**शमीभिः**) कर्म्मभिः (**अनूर्ध्वभासः**) न ऊर्द्ध्वा भासो दीप्तिर्यस्य (**सदम्**) प्राप्तं दुःखम् (**इत्**) (**तुतुर्यात्**) हिंस्यात्॥४॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यो नासत्याभ्यां शमीभिर्भूयिष्ठं चनिष्ठं विवेष पित्वो विभागे ररते सोऽनूर्ध्वभासोऽस्य तोकं पीपरत् स इत्सदं तुतुर्यात्॥४॥

**भावार्थः**-येऽग्न्युदकाभ्यां बहूनि कार्य्याणि साध्नुवन्ति ते जगतो रक्षणं कृत्वा सर्वं विषादं हन्तुमर्हन्ति॥४॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(यः)** जो **(नासत्याभ्याम्)** नहीं विद्यमान असत्य जिनके उनसे **(शमीभिः)** कर्म्मों के द्वारा **(भूयिष्ठम्)** अतीव बहुत **(चनिष्ठम्)** अतिशय अन्न को **(विवेष)** व्याप्त होता है और **(पित्वः)** अन्न के **(विभागे)** विभाग में **(ररते)** देता है **(सः)** वह **(अनूर्ध्वभासः)** नहीं ऊपर कान्तियां जिसकी **(अस्य)** इसके **(तोकम्)** सन्तान का **(पीपरत्)** पालन करे वह **(इत्)** ही **(सदम्)** प्राप्त दुःख का **(तुतुर्यात्)** नाश करे॥४॥

**भावार्थः**-जो अग्नि और जल से बहुत कार्य्यों को सिद्ध करते हैं, वे जगत् का रक्षण करके सम्पूर्ण दुःख के नाश करने योग्य हैं॥४॥

**पुनर्मनुष्यैः कथं वर्त्तितव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को कैसा वर्त्ताव करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**सम॒श्विनो॒रव॑सा॒ नूत॑नेन मयो॒भुवा॑ सु॒प्रणी॑ती गमेम।**

**आ नो॑ र॒यिं व॑हत॒मोत वी॒राना विश्वा॑न्यमृता॒ सौभ॑गानि॥५॥१८॥**

**सम्। अ॒श्विनोः॑। अव॑सा। नूत॑नेन। म॒य॒ःऽभुवा॑। सु॒ऽप्रनी॑ती। ग॒मे॒म॒। आ। न॒ः। र॒यिम्। व॒ह॒त॒म्। आ। उ॒त। वी॒रान्। आ। विश्वा॑नि। अ॒मृ॒ता॒। सौभ॑गानि॥५॥**

**पदार्थः**-**(सम्)** एकीभावे **(अश्विनोः)** अग्न्युदकयोस्सकाशात् **(अवसा)** रक्षणादिना **(नूतनेन)** **(मयोभुवा)** सुखसाधकेन **(सुप्रणीती)** शोभनया नीत्या **(गमेम)** प्राप्नुयाम **(आ)** **(नः)** अस्मभ्यम् **(रयिम्)** धनम् **(वहतम्)** प्रापयन्तम् **(आ)** **(उत)** अपि **(वीरान्)** शौर्यादिगुणोपेतान् **(आ)** **(विश्वानि)** सर्वाणि **(अमृता)** उदकानि सुखकराणि **(सौभगानि)** शोभनैश्वर्य्याणि॥५॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथा वयमश्विनोर्नूतनेन मयोभुवऽवसा सुप्रणीती नो रयिमाऽऽवहतं नो वीरानुत विश्वान्यमृता सौभगान्यावहतं समाऽऽगमेम तथैतानि यूयमपि समागच्छध्वम्॥५॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यथाप्ताः सर्वैः सह वर्त्तेरन् तथैतैः सर्वैर्वर्त्तितव्यमिति॥५॥

अत्राश्विविद्वद्राजकृत्यवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति सप्तसप्ततितमं सूक्तमष्टादशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे हम लोग **(अश्विनोः)** अग्नि और जल के समीप से **(नूतनेन)** नवीन **(मयोभुवा)** सुख के साधक **(अवसा)** रक्षण आदि और **(सुप्रणीती)** श्रेष्ठ नीति से **(नः)** हम अपने लिये



www.9009.co.in

**(रयिम्)** धन को **(आ, वहतम्)** प्राप्त कराते हुए को और हमारे लिये **(वीरान्)** शूरता आदि गुणों से युक्त पुरुषों को **(उत)** और **(विश्वानि)** संपूर्ण **(अमृता)** जलों के सदृश सुखकारक **(सौभगानि)** सुन्दर ऐश्वर्य्यों को प्राप्त कराते हुए को **(सम्, आ, गमेम)** मिलें, वैसे उनको आप लोग भी **(आ)** उत्तम प्रकार मिलिये॥५॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे यथार्थवक्ता जन सब के साथ वर्त्ताव करें वैसे इन सब लोगों को वर्त्ताव करना चाहिये॥५॥

इस सूक्त में अग्नि, जल, विद्वान् और राजा के कृत्य वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ संङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह सतहत्तरवां सूक्त और अठारहवां वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

अथ नवर्चस्याष्टसप्ततितमस्य सूक्तस्य सप्तवध्रिरात्रेय ऋषिः। अश्विनौ देवते। १, २, ३ उष्णिक् छन्दः। ऋषभः स्वरः। ४ निचृत्त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः। ५, ७, ८, ९ निचृदनुष्टुप्। ६ अनुष्टुप् छन्दः। गान्धारः स्वरः।

*पुनर्मनुष्यैः किं कर्त्तव्यमित्याह॥*

अब नव ऋचा वाले अठहत्तरवें सूक्त का आरम्भ किया है, उसके प्रथम मन्त्र में फिर मनुष्यों को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**अश्विनावेह गच्छतं नासत्या मा वि वेनतम्। हंसाविव पततमा सुताँ उप॥ १॥**

**अश्विनौ। आ। इह। गच्छतम्। नासत्या। मा। वि। वेनतम। हंसौऽइव। पततम्। आ। सुतान्। उप॥ १॥**

**पदार्थः**-(**अश्विनौ**) वायूदके इवोपदेष्टृयुपदेश्यौ (**आ**) (**इह**) अस्मिन् संसारे (**गच्छतम्**) (**नासत्या**) सत्यव्यवहारयुक्तौ (**मा**) निषेधे (**वि**) विरोधे (**वेनतम्**) कामयेथाम् (**हंसाविव**) हंसवत् (**पततम्**) (**आ**) (**सुतान्**) निष्पन्नान् पदार्थान् (**उप**)॥ १॥

**अन्वयः**-हे नासत्याऽश्विनौ! युवामिह हंसाविवाऽऽगच्छतं सुतानुपाऽऽपततं मा वि वेनतं विरुद्धं मा कामयेथाम्॥ १॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। ये विमानेन हंसवदन्तरिक्षे गत्वाऽऽगत्य विरुद्धाचरणं त्यक्त्वा सत्यं कामयन्ते ते बहुसुखं लभन्ते॥ १॥

**पदार्थः**-हे (**नासत्या**) सत्य व्यवहार से युक्त तथा (**अश्विनौ**) वायु और जल के सदृश उपदेश देने वा ग्रहण करने वाले! आप दोनों (**इह**) इस संसार में (**हंसाविव**) दो हंसों के सदृश (**आ, गच्छतम्**) आइये और (**सुतान्**) उत्पन्न हुए पदार्थों के (**उप**) समीप (**आ**) सब प्रकार (**पततम्**) प्राप्त हूजिये तथा (**मा, वि, वेनतम्**) विरुद्ध कामना मत कीजिये॥ १॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो विमान से हंस के सदृश अन्तरिक्ष में जा आकर विरुद्ध आचरण का त्याग करके सत्य की कामना करते हैं, वे बहुत सुख को प्राप्त होते हैं॥ १॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**अश्विना हरिणाविव गौराविवानु यवसम्। हंसाविव पततमा सुताँ उप॥ २॥**

**अश्विना। हरिणौऽइव। गौरौऽइव। अनु। यवसम्। हंसौऽइव। पततम्। आ। सुतान्। उप॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**अश्विना**) यजमानर्त्विजौ (**हरिणाविव**) यथा हरिणौ धावतः (**गौराविव**) यथा गौरौ मृगौ धावतः (**अनु**) (**यवसम्**) सोमलताम् (**हंसाविव**) (**पततम्**) (**आ**) (**सुतान्**) निष्पन्नानैश्वर्य्यादीन् (**उप**)॥२॥

**अन्वयः**-हे अश्विना! युवां हंसाविव सुतानुपाऽऽपततं यवसमनु हरिणाविव गौराविवाऽऽपततम्॥२॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। ये जलविद्युतौ साध्नुवन्ति ते हरिणवत्सद्यो गन्तुमर्हन्ति॥२॥

**पदार्थः**-हे (**अश्विना**) यजमान और यज्ञ कराने वाले आप दोनों (**हंसाविव**) दो हंसों के सदृश (**सुतान्**) उत्पन्न हुए ऐश्वर्य्य आदिकों के (**उप**) समीप (**आ, पततम्**) आइये तथा (**यवसम्**) सोमलता के (**अनु**) पश्चात् (**हरिणाविव**) जैसे हरिण दौड़ते हैं, वैसे और (**गौराविव**) जैसे दो मृग दौड़ते हैं, वैसे आइये॥२॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जो मनुष्य जल और बिजुली को सिद्ध करते हैं, वे हरिण के सदृश शीघ्र जाने के योग्य हैं॥२॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**अश्विना वाजिनीवसू जुषेथां यज्ञमिष्टये। हंसाविव पततमा सुताँ उप॥३॥**

**अश्विना। वाजिनीवसू इति वाजिनीऽवसू। जुषेथाम्। यज्ञम्। इष्टये। हंसौऽइव। पततम्। आ। सुतान्। उप॥३॥**

**पदार्थः**-(**अश्विना**) अध्यापकोपदेशकौ (**वाजिनीवसू**) यौ विज्ञानक्रियां वासयतस्तौ (**जुषेथाम्**) (**यज्ञम्**) विज्ञानसङ्गतिमयम् (**इष्टये**) इष्टसुखप्राप्तये (**हंसाविव**) (**पततम्**) (**आ**) (**सुतान्**) पुत्रवद्वर्त्तमानान् शिक्षणीयान् शिष्यान् (**उप**)॥३॥

**अन्वयः**-हे वाजिनीवसू अश्विना! युवामिष्टये यज्ञमा जुषेथां हंसाविव सुतानुप पततम्॥३॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। उपदेशकाः सर्वान् शिक्षणीयान् मनुष्यान् पुत्रवन्मत्वा सर्वत्र भ्रमित्वा सत्योपदेशेन कृतकृत्यान् कुर्वन्तु॥३॥

**पदार्थः**-हे (**वाजिनीवसू**) विज्ञानक्रिया को वसाने वाले (**अश्विना**) अध्यापक और उपदेशक जनो! आप लोग (**इष्टये**) इष्ट सुख की प्राप्ति के लिये (**यज्ञम्**) विज्ञान की संगतिमय यज्ञ का (**आ**) सब प्रकार से (**जुषेथाम्**) सेवन करिये तथा (**हंसाविव**) दो हंसों के समान (**सुतान्**) पुत्र के सदृश वर्त्तमान शिक्षा करने योग्य शिष्यों के (**उप**) समीप (**पततम्**) प्राप्त हूजिये॥३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। उपदेशक जन सम्पूर्ण शिक्षा करने योग्य मनुष्यों को पुत्र के सदृश मान कर और सब जगह भ्रमण कर के सत्य उपदेश से कृतकृत्य करें॥३॥

**पुनः स्त्रीपुरुषैः किं कर्त्तव्यमित्याह॥**



www.9009.co.in

फिर स्त्रीपुरुष क्या करें, इस विषय को कहते हैं॥

**अत्रिर्यद्वामवरोहन्नृबीसमजोहवीन्नाधमानेव योषा।**

**श्येनस्य चिज्जवसा नूतनेनागच्छतमश्विना शंतमेन॥४॥१९॥**

**अत्रिः। यत्। वाम्। अवऽरोहन्। ऋबीसम्। अजोहवीत्। नाधमानाऽइव। योषा। श्येनस्य। चित्। जवसा। नूतनेन। आ। अगच्छतम्। अश्विना। शम्ऽतमेन॥४॥**

**पदार्थः-(अत्रिः)** अविद्यमानत्रिविधदुःखः **(यत्)** यः **(वाम्)** युवाम् **(अवरोहन्)** अवरोहं कुर्वन् **(ऋबीसम्)** सरलम् **(अजोहवीत्)** भृशमाह्वयति **(नाधमानेव)** याचमानेव **(योषा)** **(श्येनस्य)** **(चित्)** अपि **(जवसा)** वेगेन **(नूतनेन)** **(आ)** **(अगच्छतम्)** गच्छतम् **(अश्विना)** सूर्य्याचन्द्रमसाविवाध्यापकोपदेशकौ **(शन्तमेन)** अतिशयेन सुखकरेण॥४॥

**अन्वयः**-हे अश्विना! यद्योऽत्रिर्वामवरोहन् योषा नाधमानेव ऋबीसमजोहवीत् तेन सह श्येनस्य नूतनेन [शन्तमेन] जवसा चिन्मानेनाऽऽगच्छतम्॥४॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। ये विद्वदनुकरणेन सरलभावं स्वीकृत्य प्रयतन्ते ते सर्वदा सुखिनो भवन्ति॥४॥

**पदार्थः**-हे **(अश्विना)** सूर्य्य और चन्द्रमा के सदृश वर्त्तमान अध्यापक और उपदेशक जनो! **(यत्)** जो **(अत्रिः)** त्रिविध दुःखरहित **(वाम्)** आप दोनों को **(अवरोहन्)** प्राप्त होता हुआ **(योषा)** स्त्री **(नाधमानेव)** जो याचना करती उसके समान **(ऋबीसम्)** सरल को **(अजोहवीत)** अत्यन्त आह्वान करता है उसके साथ **(श्येनस्य)** वाज पक्षी के **(नूतनेन)** नवीन **(शन्तमेन)** अतिशय सुखकारक **(जवसा)** वेग के **(चित्)** सदृश मान से **(आ, अगच्छतम्)** आइये॥४॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जो विद्वानों के अनुकरण से सरल स्वभाव को स्वीकार करके प्रयत्न करते हैं, वे सर्वदा सुखी होते हैं॥४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**वि जिहीष्व वनस्पते योनिः सूष्यन्त्याइव।**

**श्रुतं मे अश्विना हवं सप्तवध्रिं च मुञ्चतम्॥५॥**

**वि। जिहीष्व। वनस्पते। योनिः। सूष्यन्त्याःऽइव। श्रुतम्। मे। अश्विना। हवम्। सप्तऽवध्रिम्। च। मुञ्चतम्॥५॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**वि**) (**जिहीष्व**) त्यज (**वनस्पते**) (**योनिः**) कारणम् (**सूष्यन्त्याइव**) प्रसवन्त्याः स्त्रिया इव (**श्रुतम्**) (**मे**) मम (**अश्विना**) विद्याव्यापिनावध्यापकपरीक्षकौ (**हवम्**) (**सप्तवध्रिम्**) हतसप्तेन्द्रियम् (**च**) (**मुञ्चतम्**)॥५॥

**अन्वयः**-हे अश्विना! मे हवं श्रुतं सप्तवध्रिं च मुञ्चतम्। हे वनस्पते! सूष्यन्त्याइव योनिस्त्वं वि जिहीष्व॥५॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। यूयमाप्तानध्यापकोपदेशकानिच्छत तथा प्रसववती स्त्री बालकं त्यजति तथैवान्तःकरणादविद्या दूरतोऽस्यत॥५॥

**पदार्थः**-हे (**अश्विना**) विद्या से व्याप्त अध्यापक और परीक्षकजनो! (**मे**) मेरे (**हवम्**) शब्द को (**श्रुतम्**) श्रवण को और (**सप्तवध्रिम्**) नष्ट हुए सात इन्द्रिय जिसके उसका (**च**) और (**मुञ्चतम्**) त्याग करो और (**वनस्पते**) हे वनस्पति! (**सूष्यन्त्याइव**) गर्भवती स्त्री के सदृश (**योनिः**) कारण आप (**वि**) विशेष करके (**जिहीष्व**) त्याग करो॥५॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। आप लोग यथार्थवक्ता अध्यापक और उपदेशकों की इच्छा करिये और जैसे गर्भवती स्त्री बालक का त्याग करती है, वैसे ही अन्तःकरणः से अविद्या को दूर करिये॥५॥

**अथ विद्वांसः किं कुर्य्युरित्याह॥**

इसके अनन्तर विद्वान् जन क्या करें, इस विषय को कहते हैं॥

**भीताय नाधमानाय ऋषये सप्तवध्रये।**

**मायाभिरश्विना युवं वृक्षं सं च वि चाचथः॥६॥**

**भीताय। नाधमानाय। ऋषये। सप्तऽवध्रये। मायाभिः। अश्विना। युवम्। वृक्षम्। सम्। च। वि। च। अचथः॥६॥**

**पदार्थः**-(**भीताय**) प्राप्तभयाय (**नाधमानाय**) उपतप्यमानाय (**ऋषये**) वेदार्थविदे (**सप्तवध्रये**) पञ्चज्ञानेन्द्रियाणि मनो बुद्धिश्च सप्त हता यस्य तस्मै (**मायाभिः**) प्रज्ञाभिः (**अश्विना**) अध्यापकोपदेशकौ (**युवम्**) युवाम् (**वृक्षम्**) यो वृश्च्यते तम् (**सम्**) (**च**) (**वि**) (**च**) (**अचथः**)॥६॥

**अन्वयः**-हे अश्विना! युवं मायाभिर्भीताय नाधमानाय सप्तवध्रये ऋषये च समचथः वृक्षं च व्यचथः॥६॥

**भावार्थः**-विदुषां योग्यतास्ति प्रज्ञादानेनाविद्यादिभयभीतान्निर्भयान् कृत्वा संसारे मोहाऽधर्म्मयोगात् वियोज्य सुखिनः सम्पादयन्तु॥६॥

**पदार्थः**-हे (**अश्विना**) अध्यापक और उपदेशकजनो! (**युवम्**) आप दोनों (**मायाभिः**) बुद्धियों से (**भीताय**) भय को प्राप्त (**नाधमानाय**) उपतप्यमान और (**सप्तवध्रये**) पांच ज्ञानेन्द्रियां मन और बुद्धि ये सात नष्ट हुईं जिसकी अर्थात् इनकी प्रबलता से रहित उसके लिये और (**ऋषये**) वेदार्थ के जानने वाले के



www.9009.co.in

लिये **(च)** भी **(सम्, अचथ:)** उत्तम प्रकार जाइये **(वृक्षम्, च)** और जो काटा जाता उस वृक्ष को **(वि)** उत्तम प्रकार प्राप्तहूजिये॥६॥

**भावार्थ:**-विद्वानों की योग्यता है कि बुद्धि के देने से अविद्यादि भय के कारण डरे हुओं को भयरहित करके तथा संसार में मोह और अधर्म्म के योग से वियुक्त करके सुखी करें॥६॥

**कीदृशो गर्भो जन्म चेत्याह॥**

कैसा गर्भ और जन्म इस विषय को कहते हैं॥

**यथा वातः पुष्करिणीं समिङ्गयति सर्वतः।**

**एवा ते गर्भ एजतु निरैतु दशमास्यः॥७॥**

**यथा। वातः। पुष्करिणीम्। सम्ऽइङ्गयति। सर्वतः। एव। ते। गर्भः। एजतु। निःऽऐतु। दशऽमास्यः॥७॥**

**पदार्थ:-(यथा)** येन प्रकारेण **(वातः)** वायुः **(पुष्करिणीम्)** अल्पान् तडागान् **(समिङ्गयति)** सम्यक् चालयति **(सर्वतः)** **(एवा)** अत्र **निपातस्य चे**ति दीर्घः। **(ते)** तव **(गर्भः)** यो गृह्यते **(एजतु)** कम्पताम् **(निरैतु)** निर्गच्छतु **(दशमास्यः)** दशसु मासेषु भवः॥७॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथा वातः पुष्करिणीं सर्वतः समिङ्गयति तथैवा ते गर्भ एजतु दशमास्यो निरैत्विति विजानीत॥७॥

**भावार्थ:**-अत्रोपमालङ्कारः। यदि स्त्रीपुरुषा ब्रह्मचर्येण विद्यामधीत्य विवाहं कुर्युस्तदा दशमे मासे प्रसवः स्यादिति वेदितव्यम्॥७॥

**पदार्थ:**-हे मनुष्यो! **(यथा)** जिस प्रकार से **(वातः)** पवन **(पुष्करिणीम्)** छोटे तालाबों को **(सर्वतः)** सब ओर से **(समिङ्गयति)** उत्तम प्रकार हिलाता है, वैसे **(एवा)** ही **(ते)** आपका **(गर्भः)** जो धारण किया जाता वह गर्भ **(एजतु)** कंपित होवे और **(दशमास्यः)** दश महीनों में हुआ **(निरैतु)** निकले, ऐसा जानो॥७॥

**भावार्थ:**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जो स्त्रीपुरुष ब्रह्मचर्य्य से विद्या को पढ़ के विवाह करें तो दशवें मास में प्रसव हो, ऐसा जानना चाहिये॥७॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**यथा वातो यथा वनं यथा समुद्र एजति।**

**एवा त्वं दशमास्य सहावेहि जरायुणा॥८॥**

**यथा। वातः। यथा। वनम्। यथा। समुद्रः। एजति। एव। त्वम्। दशऽमास्य। सह। अव। इहि। जरायुणा॥८॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**यथा**) येन प्रकारेण (**वातः**) वायुः (**यथा**) (**वनम्**) जङ्गलम् (**यथा**) (**समुद्रः**) उदधिः (**एजति**) कम्पते चलति वा (**एवा**) अत्र **निपातस्य चे**ति दीर्घः। (**त्वम्**) (**दशमास्य**) दशसु मासेषु जातः (**सह**) (**अव**) (**इहि**) आगच्छ (**जरायुणा**) देहावरणेन॥८॥

**अन्वयः**-हे दशमास्य! यथा वातो यथा वनं यथा समुद्र एजति तथैवा त्वं जरायुणा सहाऽवेहि॥८॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। स एव गर्भस्तत्स्थो बालकश्चोत्तमो जायते यो दशमे मासे जायते॥८॥

**पदार्थः**-हे (**दशमास्य**) दश महीनों में उत्पन्न हुए! (**यथा**) जिस प्रकार से (**वातः**) वायु और (**यथा**) जिस प्रकार से (**वनम्**) जङ्गल (**यथा**) जिस प्रकार से (**समुद्रः**) समुद्र (**एजति**) कम्पित होता वा चलता है वैसे (**एवा**) ही (**त्वम्**) आप (**जरायुणा**) देह के ढांपने वाले के (**सह**) सहित (**अव, इहि**) आइये॥८॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। वही गर्भ और उसमें स्थित बालक उत्तम होता है, जो दशवें महीने में होता है॥८॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**दश मासाञ्छशयानः कुमारो अधि मातरि।**

**निरैतु जीवो अक्षतो जीवो जीवन्त्या अधि॥९॥२०॥**

**दश। मासान्। शशयानः। कुमारः। अधि। मातरि। निःऐतु। जीवः। अक्षतः। जीवः। जीवन्त्याः। अधि॥९॥**

**पदार्थः**-(**दश**) (**मासान्**) (**शशयानः**) कृतशयनः (**कुमारः**) (**अधि**) उपरि (**मातरि**) (**निरैतु**) निर्गच्छतु (**जीवः**) यः प्राणान् धरति (**अक्षतः**) क्षतवर्जितः (**जीवः**) (**जीवन्त्याः**) (**अधि**)॥९॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यो जीवोऽधि मातरि दश मासाञ्छशयानोऽक्षतः कुमारो निरैतु स जीवो जीवन्त्या अधि जीवति॥९॥

**भावार्थः**-त एव सन्ताना उत्तमा भवन्ति ये दश मासा यावत्तावद् गर्भे स्थित्वा जायन्ते॥९॥

अत्राश्विस्त्रीपुरुषगुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इत्यष्टसप्ततितमं सूक्तं विंशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो (**जीवः**) प्राण आदि का धारण करने वाला (**अधि**) ऊपर (**मातरि**) माता में (**दश**) दश (**मासान्**) महीनों तक (**शशयानः**) शयन करता हुआ (**अक्षतः**) घाव से रहित (**कुमारः**) बालक (**निरैतु**) निकले वह (**जीवः**) जीव (**जीवन्त्याः**) जीवती हुई के (**अधि**) ऊपर जीवता है॥९॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-वे ही सन्तान उत्तम होते हैं कि जो दश महीने पूर्ण हों, जबतक तबतक गर्भ में स्थित होकर प्रकट होते हैं॥९॥

इस सूक्त में अश्विपदवाच्य स्त्रीपुरुष के गुणों का वर्णन होने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पिछले सूक्त के अर्थ के साथ संगति जाननी चाहिये॥

**यह अठहत्तरवां सूक्त और बीसवां वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

**अथ दशर्चस्यैकोनाऽशीतितमस्य सूक्तस्य सत्यश्रवा आत्रेय ऋषिः। उषा देवता। १ स्वराड्ब्राह्मी गायत्री छन्दः। षड्जः स्वरः। २, ३, ७ भुरिक् बृहती। १० स्वराड्बृहती छन्दः। मध्यम स्वरः। ४, ५, ८ पङ्क्तिः। ६, ९ निचृत्पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः॥**

***अथ स्त्री कीदृशी भवेदित्याह॥***

अब दश ऋचा वाले उनासी*[वें]* सूक्त का प्रारम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में स्त्री कैसी हो, इस विषय को कहते हैं॥

**म॒हे नो॑ अ॒द्य बो॑ध॒योषो॑ रा॒ये दि॒वित्म॑ती।**

**यथा॑ चिन्नो॒ अबो॑धयः स॒त्यश्र॑वसि वा॒य्ये सुजा॑ते॒ अश्व॑सूनृते॥ १॥**

**म॒हे। न॒ः। अ॒द्य। बो॒ध॒य॒। उष॑ः। रा॒ये। दि॒वित्म॑ती। यथा॑। चि॒त्। न॒ः। अबो॑धयः। स॒त्यऽश्र॑वसि। वा॒य्ये। सुऽजा॑ते। अश्व॑ऽसूनृते॥ १॥**

**पदार्थः-(महे)** महते **(नः)** अस्मान् **(अद्य)** **(बोधय)** **(उषः)** उषर्वद्वर्त्तमाने **(राये)** धनाय **(दिवित्मती)** प्रकाशयुक्ता **(यथा)** **(चित्)** अपि **(नः)** अस्मान् **(अबोधयः)** बोधय **(सत्यश्रवसि)** सत्यानां श्रवणे सत्येऽन्ने वा **(वाय्ये)** तन्तुसदृशे सन्ताननीये विस्तारणीये सन्ततिरूपे **(सुजाते)** सुष्ठुरीत्योत्पन्ने **(अश्वसूनृते)** अश्वा महती सूनृता प्रिया वाग्यस्यास्तत्सम्बुद्धौ। **अश्व इति महन्नामसु पठितम्।** (निघं०३।६)॥१॥

**अन्वयः**-हे उषर्वद्वर्त्तमाने वाय्ये सुजातेऽश्वसूनृते स्त्रि! यथा दिवित्मत्युषा महे राये बोधयति तथाऽद्य नो बोधय चिदपि सत्यश्रवसि नोऽस्मानबोधयः॥१॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। यथा प्रातर्वेला दिनं जनयित्वा सर्वाञ्जागरयति तथैव विदुषी स्त्री स्वसन्तानानविद्यानिद्रात उत्थाप्य विद्यां बोधयति॥१॥

**पदार्थः**-हे **(उषः)** श्रेष्ठ गुणों से प्रातःकालः के सदृश वर्त्तमान **(वाय्ये)** डोरे के सदृश फैलाने योग्य सन्ततिरूप **(सुजाते)** उत्तम रीति से उत्पन्न **(अश्वसूनृते)** बड़ी प्रिय वाणी जिसकी ऐसी हे स्त्रि! **(यथा)** जैसे **(दिवित्मती)** प्रकाश से युक्त प्रातर्वेला **(महे)** बड़े **(राये)** धन के लिये प्रबोध देती है, वैसे **(अद्य)** आज **(नः)** हम लोगों को **(बोधय)** जनाइये और **(चित्)** भी **(सत्यश्रवसि)** सत्यों के श्रवण, सत्य वा अन्न में **(नः)** हम लोगों को **(अबोधयः)** जनाइये॥१॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जैसे प्रातर्वेला दिन को उत्पन्न कर के सब को जगाती है, वैसे ही विद्यायुक्त स्त्री अपने सन्तानों को अविद्या के सदृश वर्त्तमान निद्रा से उठा कर विद्या को जनाती है॥१॥



www.9009.co.in

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**या सुनीथे शौचद्रथे व्यौच्छो दुहितर्दिवः।**

**सा व्युच्छ सहीयसि सत्यश्रवसि वाय्ये सुजाते अश्वसूनृते॥ २॥**

**या। सुऽनीथे। शौचत्ऽरथे। वि। औच्छः। दुहितः। दिवः। सा। वि। उच्छ। सहीयसि। सत्यऽश्रवसि। वाय्ये। सुऽजाते। अश्वऽसूनृते॥ २॥**

**पदार्थः**-(**या**) (**सुनीथे**) शोभने न्याये (**शौचद्रथे**) पवित्रे रथे (**वि**) (**औच्छः**) विवासयति (**दुहितः**) पुत्रीव (**दिवः**) सूर्य्यस्य (**सा**) (**वि**) (**उच्छ**) (**सहीयसि**) यातिशयेन सोढ्रि (**सत्यश्रवसि**) सत्यस्य श्रवो यस्मिन् (**वाय्ये**) ज्ञापनीये (**सुजाते**) शोभनैः संस्कारैरुत्पन्ने (**अश्वसूनृते**) महदन्नयुक्ते॥ २॥

**अन्वयः**-हे अश्वसूनृते सुजाते वाय्ये सहीयसि दिवो दुहितरिव वर्त्तमाने स्त्रि! या त्वं शौचद्रथे सुनीथे सत्यश्रवसि व्यौच्छः सा त्वमस्मान् सुखे व्युच्छ॥ २॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यथोषाः सर्वान् सुखे वासयति तथैव साध्वी स्त्र्यानन्दयुक्ते गृहाश्रमे सर्वान् निवासयति॥ २॥

**पदार्थः**-हे (**अश्वसूनृते**) बड़े अन्न से युक्त (**सुजाते**) उत्तम संस्कारों से उत्पन्न (**वाय्ये**) जनाने योग्य (**सहीयसि**) अतिशय सहने वाली (**दिवः**) सूर्य्य की (**दुहितः**) पुत्री के समान वर्त्तमान स्त्री! (**या**) जो तू (**शौचद्रथे**) पवित्र रथ में (**सुनीथे**) श्रेष्ठ न्याय में (**सत्यश्रवसि**) सत्य का श्रवण जिसमें उसमें (**वि, औच्छः**) विशेष वसाती है (**सा**) वह तू हम लोगों को सुख में (**वि, उच्छ**) विशेष बसावे॥ २॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे प्रातर्वेला सब को सुख में वसाती है, वैसे ही श्रेष्ठ स्त्री आनन्दयुक्त गृहाश्रम में सबको वसाती है॥ २॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**सा नो अद्याभरद्वसुर्व्युच्छा दुहितर्दिवः।**

**यो व्यौच्छः सहीयसि सत्यश्रवसि वाय्ये सुजाते अश्वसूनृते॥ ३॥**

**सा। नः। अद्य। आभरत्ऽवसुः। वि। उच्छ। दुहितः। दिवः। यो इति। वि। औच्छः। सहीयसि। सत्यऽश्रवसि। वाय्ये। सुऽजाते। अश्वऽसूनृते॥ ३॥**

**पदार्थः**-(**सा**) (**नः**) अस्मान् (**अद्य**) (**आभरद्वसुः**) या समन्ताद्वसूनि बिभर्त्ति सा (**वि**) (**उच्छ**) विवासय (**दुहितः**) दुहितरिव (**दिवः**) कामयमानस्य (**यो**) या (**वि**) (**औच्छः**) निवासितवती वर्त्तते



www.9009.co.in

**(सहीयसि)** अतिशयेन सोढ्रि **(सत्यश्रवसि)** सत्येन व्यवहारेण प्राप्तान्नाद्यैश्वर्य्ये **(वाय्ये)** गमनीये **(सुजाते)** शोभनया विद्यया प्रकटीभूते **(अश्वसूनृते)** महाज्ञानयुक्ते॥३॥

**अन्वयः**-हे सत्यश्रवसि सुजाते वाय्येऽश्वसूनृते सहीयसि दिवो दुहितरिव विदुषि स्त्रि! यो या त्वमाभरद्वसुः सती नोऽस्मान् व्यौच्छः सा त्वमद्य सुसुखे व्युच्छ॥३॥

**भावार्थः**-यदि स्त्रियः प्रातर्वेलावच्छुभगुणाः स्युस्तर्हि सर्वानानन्दे निवासयितुमर्हन्ति॥३॥

**पदार्थः**-हे **(सत्यश्रवसि)** सत्य व्यवहार से प्राप्त अन्न आदि ऐश्वर्य्य वाली **(सुजाते)** अच्छी विद्या से प्रकट हुई **(वाय्ये)** प्राप्त होने योग्य **(अश्वसूनृते)** बड़े ज्ञान से युक्त **(सहीयसि)** अतिशय सहनशील और **(दिवः)** कामना करते हुए की **(दुहितः)** कन्या के सदृश विदुषी स्त्री **(यो)** जो तू **(आभरद्वसुः)** सब प्रकार से धनों को धारण करने वाली हुई **(नः)** हम लोगों को **(वि)** विशेष करके **(औच्छः)** निवास कराने वाली है **(सा)** वह आप **(अद्य)** आज उत्तम सुख में **(वि)** विशेष करके **(उच्छ)** निवास कराओ॥३॥

**भावार्थः**-जो स्त्रियाँ प्रातर्वेला के सदृश श्रेष्ठ गुण वाली हों तो सब को आनन्द में वसाने के योग्य होती हैं॥३॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**अ॒भि ये त्वा॑ विभावरि॒ स्तोमै॑र्गृ॒णन्ति॒ वह्न॑यः।**

**म॒घैर्म॑घोनि सु॒श्रियो॒ दाम॑न्वन्तः सु॒रा॒तय॑ः सुजा॑ते॒ अश्व॑सूनृते॥४॥**

**अ॒भि। ये। त्वा॒। वि॒भा॒ऽव॒रि॒। स्तोमै॑ः। गृ॒णन्ति॑। वह्न॑यः। म॒घैः। म॒घो॒नि॒। सु॒ऽश्रिय॑ः। दाम॑न्ऽवन्तः। सु॒ऽरा॒तय॑ः। सु॒ऽजा॑ते। अश्व॑ऽसूनृते॥४॥**

**पदार्थः**-**(अभि)** आभिमुख्ये **(ये)** विद्वांसः **(त्वा)** त्वाम् **(विभावरि)** प्रकाशयुक्तोषर्वद्वर्त्तमाने **(स्तोमैः)** **(गृणन्ति)** स्तुवन्ति **(वह्नयः)** वोढारोऽग्नय इव वर्त्तमानाः **(मघैः)** धनैः **(मघोनि)** बहुधनयुक्ते **(सुश्रियः)** शोभना लक्ष्म्यो येषान्ते **(दामन्वन्तः)** बहुदानक्रियायुक्ताः **(सुरातयः)** शोभना रातिर्दानेच्छा येषान्ते **(सुजाते)** **(अश्वसूनृते)**॥४॥

**अन्वयः**-हे मघोनि सुजातेऽश्वसूनृते विभावरीव विदुषि स्त्रि! ये सुश्रियो दामन्वन्तः सुरातयो वह्नयो विद्वांसो मघैः स्तोमैस्त्वाऽभि गृणन्ति ते त्वया सत्कर्त्तव्याः॥४॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यथाऽग्नय उषसः कर्त्तारः सन्ति तथैव शिक्षका विद्याप्राप्तिकर्त्तारः स्युः॥४॥

**पदार्थः**-हे **(मघोनि)** बहुत धन से युक्त **(सुजाते)** उत्तम विद्या से प्रकट हुई **(अश्वसूनृते)** बड़े ज्ञान से युक्त और **(विभावरि)** प्रकाशवती प्रातर्वेला के सदृश वर्त्तमान विद्यायुक्त स्त्री! **(ये)** जो विद्वान्



www.9009.co.in

जन (**सुश्रियः**) सुन्दर लक्ष्मी जिनकी ऐसे (**दामन्वन्तः**) बहुत दान क्रिया से युक्त (**सुरातयः**) सुन्दर दान की इच्छा जिनकी वे (**वह्नयः**) पहुंचाने वाले अग्नियों के समान वर्त्तमान विद्वान् जन (**मघैः**) धनों से और (**स्तोमैः**) स्तोत्रों से (**त्वा**) आप को (**अभि**) सन्मुख (**गृणन्ति**) स्तुति करते हैं, वे आप से सत्कार करने योग्य हैं॥४॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे अग्नि प्रातर्वेलाओं के कर्त्ता हैं, वैसे ही शिक्षक जन विद्या की प्राप्ति करने वाले हों॥४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**यच्चिद्धि ते गणा इमे छदयन्ति मघत्तये।**

**परि चिद्वष्टयो दधुर्ददतो राधो अह्रयं सुजाते अश्वसूनृते॥५॥२१॥**

**यत्। चित्। हि। ते। गणाः। इमे। छदयन्ति। मघत्तये। परि। चित्। वष्टयः। दधुः। ददतः। राधः। अह्रयम्। सुऽजाते। अश्वऽसूनृते॥५॥**

**पदार्थः**-(**यत्**) ये (**चित्**) अपि (**हि**) एव (**ते**) तव (**गणाः**) समूहाः (**इमे**) (**छदयन्ति**) ऊर्जयन्ति (**मघत्तये**) धनदानाय (**परि**) (**चित्**) (**वष्टयः**) कामयमानाः (**दधुः**) धरन्तु (**ददतः**) दानशीलान् (**राधः**) धनम् (**अह्रयम्**) लज्जादिदोषरहितम् (**सुजाते**) (**अश्वसूनते**)॥५॥

**अन्वयः**-हे अश्वसूनृते सुजाते विदुषि स्त्रि! यद्य इमे वष्टयस्ते गणा मघत्तयेऽह्रयं चिद्राधो ददतश्चिच्छदयन्ति ते चिद्धि सुखानि परि दधुः॥५॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यथोषसः किरणगणाः स्वतेजसा सर्वाञ्छादयन्ति तथैव शुभगुणस्त्रियः स्वैः शुभैर्गुणैः सर्वाञ्छादयन्ति॥५॥

**पदार्थः**-हे (**अश्वसूनृते**) बड़े ज्ञान से युक्त (**सुजाते**) उत्तम विद्या से प्रकट हुई विदुषि स्त्रि! (**यत्**) जो (**इमे**) ये (**वष्टयः**) कामना करते हुए (**ते**) आप के (**गणाः**) समूह (**मघत्तये**) धनदान के लिये (**अह्रयम्**) लज्जा आदि दोष से रहित को (**चित्**) और (**राधः**) धन को (**ददतः**) देने वालों को (**चित्**) निश्चय (**छदयन्ति**) प्रबल करते हैं, वे निश्चय (**हि**) ही सुखों की (**परि, दधुः**) धारण करें॥५॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे प्रातःकाल के किरणसमूह अपने तेज से सब को ढांपते हैं, वैसे ही शुभगुण वाली स्त्रियाँ अपने शुभगुणों से सब को आच्छादित करती हैं॥५॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**ऐषु धा वीरवद्यश उषो मघोनि सूरिषु।**



www.9009.co.in

**ये नो राधांस्यह्रया मघवानो अरासत सुजाते अश्वसूनृते॥६॥**

**आ। एषु। धाः। वीरऽवत्। यशः। उषः। मघोनि। सूरिषु। ये। नः। राधांसि। अह्रया। मघऽवानः। अरासत। सुऽजाते। अश्वऽसूनृते॥६॥**

**पदार्थः**-(**आ**) समन्तात् (**एषु**) स्त्रीपुरुषेषु (**धाः**) धेहि (**वीरवत्**) वीरा विद्यन्ते यस्मिँस्तत् (**यशः**) कीर्त्तिम् (**उषः**) उषर्वद्वत्तमाने (**मघोनि**) प्रशंसितधनयुक्ते (**सूरिषु**) विद्वत्सु (**ये**) (**नः**) अस्मान् (**राधांसि**) अन्नानि (**अह्रया**) अलज्जया प्रतिपादितानि (**मघवानः**) बहुधनयुक्ताः (**अरासत**) दद्युः (**सुजाते**) (**अश्वसूनृते**)॥६॥

**अन्वयः**-हे अश्वसूनृते सुजाते मघोन्युषर्वद्वर्त्तमान उत्तमे स्त्रि! त्वमेषु सूरिषु वीरवद्यश आ धाः। ये मघवानो नोऽह्रया राधांस्यरासत तांस्त्वं सत्कुर्य्याः॥६॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। सैव प्रशंसिता स्त्री या पितृपतिकुले शुभाचरणेन पितृपतिकुलं प्रकाशयेत्॥६॥

**पदार्थः**-हे (**अश्वसूनृते**) बड़े ज्ञानवाली (**सुजाते**) उत्तम विद्या से प्रकट हुई (**मघोनि**) प्रशंसित धन से युक्त और (**उषः**) प्रातःकाल के सदृश वर्त्तमान उत्तम स्त्री! तू (**एषु**) इन स्त्री-पुरुषों और (**सूरिषु**) विद्वानों में (**वीरवत्**) वीरजन विद्यमान जिसमें उस (**यशः**) यश को (**आ**) सब प्रकार से (**धाः**) धारण कर और (**ये**) जो (**मघवानः**) बहुत धनों से युक्त जन (**नः**) हम लोगों को (**अह्रया**) विना लज्जा से कहे गये (**राधांसि**) अन्नों को (**अरासत**) देवें, उनका तू सत्कार कर॥६॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। वही प्रशंसित स्त्री है जो पिता और पति के कुल में श्रेष्ठ आचरण से पिता और पति के कुल को प्रकाशित करे॥६॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**तेभ्यो द्युम्नं बृहद्यश उषो मघोन्या वह।**

**ये नो राधांस्यश्व्या गव्या भजन्त सूरयः सुजाते अश्वसूनृते॥७॥**

**तेभ्यः। द्युम्नम्। बृहत्। यशः। उषः। मघोनि। आ। वह। ये। नः। राधांसि। अश्व्या। गव्या। भजन्त। सूरयः। सुऽजाते। अश्वऽसूनृते॥७॥**

**पदार्थः**-(**तेभ्यः**) विद्वद्भ्यः (**द्युम्नम्**) धनम् (**बृहत्**) महत् (**यशः**) कीर्त्तिम् (**उषः**) उषर्वद्वर्त्तमाने (**मघोनि**) बहुधनयुक्ते (**आ**) (**वह**) समन्तात्प्रापय (**ये**) (**नः**) अस्माकम् (**राधांसि**) (**अश्व्या**) अश्वेभ्यो हितानि (**गव्या**) गोभ्यो हितानि (**भजन्त**) सेवन्ते (**सूरयः**) विद्वांसः (**सुजाते**) (**अश्वसूनृते**)॥७॥

**अन्वयः**-हे अश्वसूनृते सुजाते मघोन्युषर्वद्विदुषि स्त्रि! ये नः सूरयोऽश्व्या गव्या राधांसि भजन्त तेभ्यो बृहद् द्युम्नं यशश्चाऽऽवह॥७॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-ये विद्वांसो सर्वसुखाय पदार्थानुन्नयन्ति त उषर्वत्प्रकाशकीर्त्तयो भूत्वा सुखिनो जायन्ते॥७॥

**पदार्थः**-हे **(अश्वसूनृते)** बड़े ज्ञान से युक्त और **(सुजाते)** उत्तम विद्या से प्रकट हुई **(मघोनि)** बहुत धनवती **(उषः)** प्रातःकाल के सदृश वर्त्तमान विदुषि स्त्रि! **(ये)** जो **(नः)** हम लोगों में **(सूरयः)** विद्वान् जन **(अश्व्या)** घोड़ों के लिये और **(गव्या)** गौओं के लिये हितकारक **(राधांसि)** धनों का **(भजन्त)** सेवन करते हैं **(तेभ्यः)** उन विद्वानों के लिये **(बृहत्)** बड़े **(द्युम्नम्)** धन और **(यशः)** यश को **(आ, वह)** सब प्रकार से प्राप्त कराओ॥७॥

**भावार्थः**-जो विद्वान् जन सब के सुख के लिये पदार्थों की वृद्धि करते हैं, वे प्रातःकाल के सदृश प्रकाशित यश वाले होकर सुखी होते हैं॥७॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**उ॒त नो॒ गोम॑ती॒रिष॒ आ व॑हा दुहितर्दिवः।**

**सा॒कं सूर्य॑स्य र॒श्मिभि॑ः शु॒क्रैः शोच॑द्भिर॒र्चिभि॑ः सुजा॑ते॒ अश्व॑सूनृते॥८॥**

**उ॒त। नः॒। गोऽम॑तीः। इष॑ः। आ। व॒ह॒। दु॒हि॒तः॒। दि॒वः॒। सा॒कम्। सूर्य॑स्य। र॒श्मिऽभि॑ः। शु॒क्रैः। शोच॑त्ऽभिः। अ॒र्चिऽभिः। सुऽजा॑ते। अश्व॑ऽसूनृते॥८॥**

**पदार्थः**-**(उत)** अपि **(नः)** अस्मान् **(गोमतीः)** गावो विद्यन्ते यासु ताः **(इषः)** अन्नाद्याः **(आ) (वहा)** समन्तात्प्रापय। अत्र **द्व्यचोऽतस्तिङ** इति दीर्घः। **(दुहितः)** कन्येव **(दिवः)** प्रकाशमानस्य **(साकम्)** सार्धम् **(सूर्य्यस्य) (रश्मिभिः) (शुक्रैः)** शुद्धैः **(शोचद्भिः)** पवित्रकारकैः **(अर्चिभिः)** पूजितैर्गुणकर्मस्वभावैः **(सुजाते) (अश्वसूनृते)**॥८॥

**अन्वयः**-हे सुजाते अश्वसूनृते दिवो दुहितरिव स्त्रि! सूर्य्यस्य रश्मिभिः साकमुत शुक्रैः शोचद्भिरर्चिभिः सह नो गोमतीरिष आ वहा॥८॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यथा सूर्य्यस्य किरणैरुत्पन्नोषा उपकारिणी भवति तथैव शुभगुणकर्मस्वभावैः सहिता स्त्र्यानन्दोपकारिणी जायते॥८॥

**पदार्थः**-हे **(सुजाते)** उत्तम विद्या से प्रकट हुई **(अश्वसूनृते)** बड़े ज्ञान से युक्त और **(दिवः)** प्रकाशमान की **(दुहितः)** कन्या के सदृश वर्त्तमान स्त्रि! **(सूर्य्यस्य)** सूर्य्य के **(रश्मिभिः)** किरणों के **(साकम्)** साथ **(उत)** और **(शुक्रैः)** शुद्ध **(शोचद्भिः)** पवित्र करने वाले **(अर्चिभिः)** श्रेष्ठ गुण, कर्म्म और स्वभाव के साथ **(नः)** हम लोगों को **(गोमतीः)** गौवें विद्यमान जिनमें उन **(इषः)** अन्न आदिकों को **(आ, वह)** सब प्रकार से प्राप्त कराइये॥८॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे सूर्य्य की किरणों से उत्पन्न उषा उपकार करने वाली होती है, वैसे ही शुभ गुण, कर्म और स्वभावों के सहित स्त्री आनन्द की उपकार करने वाली होती है॥८॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**व्युच्छा दुहितर्दिवो मा चिरं तनुथा अपः।**

**नेत्त्वा स्तेनं यथा रिपुं तपाति सूरो अर्चिषा सुजाते अश्वसूनृते॥९॥**

**वि। उच्छ। दुहितः। दिवः। मा। चिरम्। तनुथाः। अपः। नः। इत्। त्वा। स्तेनम्। यथा। रिपुम्। तपाति। सूरः। अर्चिषा। सुऽजाते। अश्वऽसूनृते॥९॥**

**पदार्थः**-(**वि**) (**उच्छा**) निवासय। अत्र **द्व्यचोऽतस्तिङ** इति दीर्घः। (**दुहितः**) कन्येव (**दिवः**) प्रकाशस्य (**मा**) (**चिरम्**) (**तनुथाः**) विस्तारयेः (**अपः**) कर्म्म (**न**) निषेधे (**इत्**) एव (**त्वा**) त्वाम् (**स्तेनम्**) चोरम् (**यथा**) (**रिपुम्**) शत्रुम् (**तपाति**) तापयति (**सूरः**) सूर्य्यः (**अर्चिषा**) तेजसा (**सुजाते**) (**अश्वसूनृते**)॥९॥

**अन्वयः**-हे सुजाते अश्वसूनृते दिवो दुहितरिव वर्त्तमाने शुभाचारे स्त्रि! त्वमपश्चिरं मा तनुथाः। यथा रिपुं तपाति तथा स्तेनं तापय त्वा कोऽपि न तापयतु यथार्चिषा सूरः सर्वान् तापयति तथेत्त्वं दुष्टान् तापयित्वाऽस्मान् व्युच्छा॥९॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। ये स्त्रीपुरुषा दीर्घसूत्रिणोऽलसाः स्तेनाश्च न भवन्ति ते सूर्य्यवत्प्रकाशिता भवन्ति॥९॥

**पदार्थः**-हे (**सुजाते**) उत्तम विद्या से प्रकट हुई (**अश्वसूनृते**) बड़े ज्ञान से युक्त (**दिवः**) प्रकाश की (**दुहितः**) कन्या के सदृश वर्त्तमान उत्तम आचरण वाली स्त्रि! तू (**अपः**) कर्म को (**चिरम्**) बहुत काल पर्यन्त (**मा**) नहीं (**तनुथाः**) विस्तार कर (**यथा**) जैसे (**रिपुम्**) शत्रु को (**तपाति**) संतापित करती है, वैसे (**स्तेनम्**) चोर को सन्तापित कर और (**त्वा**) तुझको कोई भी (**न**) नहीं सन्तापयुक्त करे और जैसे (**अर्चिषा**) तेज से (**सूरः**) सूर्य सब को तपाता है, वैसे (**इत्**) ही तू दुष्टजनों को सन्तापित करके हम लोगों को (**वि, उच्छा**) अच्छे प्रकार वसाओ॥९॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो स्त्री और पुरुष मन्द, आलसी और चोर नहीं होते हैं, वे सूर्य्य के सदृश प्रकाशित होते हैं॥९॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**एतावद्वेदुषस्त्वं भूयो वा दातुमर्हसि।**



www.9009.co.in

**या स्तोतृभ्यो विभावर्युच्छन्ती न प्रमीयसे सुजाते अश्वसूनृते॥१०॥२२॥**

**एतावत्। वा। इत्। उषः। त्वम्। भूयः। वा। दातुम्। अर्हसि। या। स्तोतृऽभ्यः। विभाऽवरि। उच्छन्ती। न। प्रऽमीयसे। सुऽजाते। अश्वऽसूनृते॥१०॥**

**पदार्थः**-(**एतावत्**) (**वा**) (**इत्**) एव (**उषः**) उषर्वद्वर्त्तमाने (**त्वम्**) (**भूयः**) अधिकम् (**वा**) वा (**दातुम्**) (**अर्हसि**) (**या**) (**स्तोतृभ्यः**) स्तावकेभ्यः (**विभावरि**) प्रकाशमाने (**उच्छन्ती**) निवसन्ती (**न**) निषेधे (**प्रमीयसे**) म्रियसे (**सुजाते**) (**अश्वसूनृते**)॥१०॥

**अन्वयः**-हे अश्वसूनृते सुजाते विभावर्युषर्वद्वर्त्तमाने स्त्रि! त्वमेतावद्वा भूयो वा दातुमर्हसि या त्वं स्तोतृभ्य उच्छन्ती निवसन्ती वर्त्तसे सा त्वमात्मस्वरूपेणेन्न प्रमीयसे॥१०॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे स्त्रियो! यथोषाः स्वल्पा महत आनन्दान् प्रयच्छति तथा त्वं भवेति॥१०॥

अत्रोषःस्त्रीगुणवर्णानादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इत्येकोनाऽशीतितमं सूक्तं द्वाविंशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे (**अश्वसूनृते**) बड़े ज्ञान से युक्त (**सुजाते**) उत्तम विद्या से प्रकट हुई (**विभावरि**) प्रकाशमान और (**उषः**) प्रातर्वेला के सदृश वर्त्तमान स्त्री! (**त्वम्**) तू (**एतावत्**) इतने को (**वा**) वा (**भूयः**) अधिक को (**वा**) भी (**दातुम्**) देने को (**अर्हसि**) योग्य है और (**या**) जो तू (**स्तोतृभ्यः**) स्तुति करने वालों के लिये (**उच्छन्ती**) निवास करती हुई वर्त्तमान है, वह तू अपने स्वरूप से (**इत्**) ही (**न**) नहीं (**प्रमीयसे**) मरती है॥१०॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे स्त्रीजनो! जैसे उषर्वेला थोड़ी भी बड़े आनन्दों को देती है, वैसे तुम होओ॥१०॥

इस सूक्त में प्रातः और स्त्री के गुण-वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ संगति जाननी चाहिये॥

**यह उनासीवां सूक्त और बाईसवां वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

**अथ षडर्चस्याऽशीतितमस्य सूक्तस्य सत्यश्रवा आत्रेय ऋषिः। उषा देवता। १, ३ निचृत्त्रिष्टुप्। ६ विराट् त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः। २, ४, ५ भुरिक्पङ्क्तिश्छन्दः पञ्चमः स्वरः॥**

***अथ स्त्रीगुणानाह॥***

अब छः ऋचा वाले अस्सीवें सूक्त का प्रारम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में स्त्रियों के गुणों को कहते हैं॥

**द्युतद्या॑मानं बृह॒तीमृ॒तेन॑ ऋ॒ताव॑रीम॒रु॒णप्सुं॑ विभा॒तीम्।**

**दे॒वीमु॒षसं॒ स्व॑रा॒वह॑न्तीं॒ प्रति॒ विप्रा॑सो म॒तिभि॑र्जरन्ते॥ १॥**

**द्यु॒तत्ऽया॑मानम्। बृ॒ह॒तीम्। ऋ॒तेन॑। ऋ॒तऽव॑रीम्। अ॒रु॒णऽप्सु॑म्। वि॒ऽभा॒तीम्। दे॒वीम्। उ॒षस॑म्। स्व॑ः। आ॒ऽवह॑न्तीम्। प्रति॑। विप्रा॑सः। म॒तिऽभि॑ः। ज॒र॒न्ते॒॥ १॥**

**पदार्थः-(द्युतद्यामानम्)** प्रहरान् द्योतयन्तीम् **(बृहतीम्)** **(ऋतेन)** जलेनेव सत्येन **(ऋतावरीम्)** बहुसत्याचरणयुक्ताम् **(अरुणप्सुम्) प्सु इति रूपनामसु पठितम्।** (निघं०३.७) **(विभातीम्)** प्रकाशयन्तीम् **(देवीम्)** देदीप्यमानाम् **(उषसम्)** प्रातर्वेलाम् **(स्वः)** आदित्यमिव विद्याप्रकाशम् **(आवहन्तीम्)** प्रापयन्तीम् **(प्रति)** **(विप्रासः)** **(मतिभिः)** प्रज्ञाभिः **(जरन्ते)** स्तुवन्ति॥१॥

**अन्वयः**-हे स्त्रि! यथा विप्रासो मतिभिर्ऋतेन द्युतद्यामानं बृहतीमृतावरीमरुणप्सुं विभातीं देवीं स्वरावहन्तीमुषहं प्रति जरन्ते तांस्त्वं प्रशंस॥१॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यथा मेधाविनः पतय उषसादिपदार्थविद्यां विज्ञाय क्षणमपि कालं व्यर्थं न नयन्ति तथैव स्त्रियोऽपि निरर्थकं समयन्न गमयेयुः॥१॥

**पदार्थः**-हे स्त्रि! जैसे **(विप्रासः)** बुद्धिमान् जन **(मतिभिः)** बुद्धियों से और **(ऋतेन)** जल के सदृश सत्य से **(द्युतद्यामानम्)** प्रहरों को प्रकाश करती और **(बृहतीम्)** बढ़ती हुई **(ऋतावरीम्)** बहुत सत्य आचरण से युक्त **(अरुणप्सुम्)** लालरूप वाली **(विभातीम्)** प्रकाश करती हुई **(देवीम्)** प्रकाशमान और **(स्वः)** सूर्य्य के सदृश विद्या के प्रकाश को **(आवहन्तीम्)** धारण करती हुई **(उषसम्)** उषर्वेला की **(प्रति)** उत्तम प्रकार **(जरन्ते)** स्तुति करते हैं, उनकी तू प्रशंसा कर॥१॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे बुद्धिमान् पति उषःकाल आदि पदार्थों की विद्या को जान कर क्षणभर भी काल व्यर्थ नहीं व्यतीत करते हैं, वैसे ही स्त्रियाँ भी व्यर्थ समय न व्यतीत करें॥१॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥



www.9009.co.in

**एषा जनं दर्शता बोधयन्ती सुगान् पथः कृण्वती यात्यग्रे।**

**बृहद्रथा बृहती विश्वमिन्वोषा ज्योतिर्यच्छत्यग्रे अह्नाम्॥ २॥**

**एषा। जनम्। दर्शता। बोधयन्ती। सुऽगान्। पथः। कृण्वती। याति। अग्रे। बृहत्ऽरथा। बृहती। विश्वम्ऽइन्वा। उषाः। ज्योतिः। यच्छति। अग्रे। अह्नाम्॥ २॥**

**पदार्थः**-(**एषा**) (**जनम्**) (**दर्शता**) द्रष्टव्या भूमीः (**बोधयन्ती**) (**सुगान्**) सुखेन गच्छन्ति येषु तान् (**पथः**) मार्गान् (**कृण्वती**) प्रकाशं कुर्वती (**याति**) गच्छति (**अग्रे**) दिवसात्पुरः (**बृहद्रथा**) महान्तो रथा यस्याः सा (**बृहती**) महती (**विश्वमिन्वा**) या विश्वं सर्वं जगन्मिनोति (**उषाः**) प्रातर्वेला (**ज्योतिः**) प्रकाशम् (**यच्छति**) ददाति (**अग्रे**) प्रथमतः (**अह्नाम्**) दिवसानाम्॥ २॥

**अन्वयः**-हे सुशीलाः स्त्रियो! यथैषा बृहद्रथा बृहती विश्वमिन्वा जनं दर्शता बोधयन्ती सुगान् पथः कृण्वत्युषा अग्रे यात्यह्नामग्रे ज्योतिर्यच्छति तथा यूयं भवत॥ २॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। याः स्त्रियः प्रभातवेलावत्स्वकीयान् पत्यादीन् सूर्योदयात्प्राक् चेतयन्त्यो गृहस्थान् बाह्यांश्च मार्गांश्छोधयन्त्य आगच्छतां पत्यादीनां कृताञ्जलयोऽग्रे तिष्ठन्ति सर्वदा विज्ञानं च प्रयच्छन्ति ता एव देशकुलभूषणानि भवन्ति॥ २॥

**पदार्थः**-हे उत्तम स्वभाववाली स्त्रियो! जैसे (**एषा**) यह (**बृहद्रथा**) बड़े रथ जिसके ऐसी (**बृहती**) बड़ी (**विश्वमिन्वा**) संपूर्ण जगत् को प्रक्षेप करती अलग करती और (**जनम्**) मनुष्य को और (**दर्शता**) देखने योग्य भूमियों को (**बोधयन्ती**) जनाती हुई (**सुगान्**) सुखपूर्वक जिनमें चलें उन (**पथः**) मार्गों को (**कृण्वती**) प्रकाशित करती हुई (**उषाः**) प्रातर्वेला (**अग्रे**) दिन से आगे (**याति**) चलती है और (**अह्नाम्**) दिनों के (**अग्रे**) पहिले से (**ज्योतिः**) प्रकाश को (**यच्छति**) देती है, वैसे तुम होओ॥ २॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो स्त्रियाँ प्रभातवेला के सदृश अपने पति आदि को सूर्योदय से पहिले जगातीं, गृह और बाहर के मार्गों को साफ करतीं, आते हुए पतियों के हाथ जोड़ के आगे खड़ी होतीं और सब काल में विज्ञान को देती हैं, वे ही देश और कुल को शोभन करने वाली हैं॥ २॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**एषा गोभिररुणेभिर्युजानास्रेधन्ती रयिमप्रायु चक्रे।**

**पथो रदन्ती सुविताय देवी पुरुष्टुता विश्ववारा वि भाति॥ ३॥**

**एषा। गोभिः। अरुणेभिः। युजाना। अस्रेधन्ती। रयिम्। अप्रऽआयु। चक्रे। पथः। रदन्ती। सुविताय। देवी। पुरुऽस्तुता। विश्वऽवारा। वि। भाति॥ ३॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**एषा**) उषाः (**गोभिः**) किरणैः (**अरुणेभिः**) आरक्तवर्णैः सह (**युजाना**) युक्ता (**अस्त्रेधन्ती**) साधयन्ती (**रयिम्**) धनम् (**अप्रायु**) यन्न प्रैति नश्यति तत् (**चक्रे**) करोति (**पथः**) मार्गान् (**रदन्ती**) लिखन्ती (**सुविताय**) ऐश्वर्य्याय (**देवी**) द्योतमाना (**पुरुष्टुता**) बहुभिः प्रशंसिता (**विश्ववारा**) विश्वैः सर्वैर्मनुष्यैर्वरणीया (**वि, भाति**) विशेषेण प्रकाशते॥३॥

**अन्वयः**-हे विदुषि स्त्रि! यथैषोषा अरुणेभिर्गोभिर्युजाना रयिमस्त्रेधन्ती अप्रायु चक्रे पथो रदन्ती पुरुष्टुता विश्ववारा देवी सुविताय वि भाति तथा त्वं भव॥३॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यथा पतिव्रता विदुषी विचक्षणा स्त्री गृहस्य प्रकाशिका वर्त्तते तथैवोषा ब्रह्माण्डस्य प्रकाशिका वर्त्तते॥३॥

**पदार्थः**-हे विद्यायुक्त स्त्रि! जैसे (**एषा**) यह प्रातर्वेला (**अरुणेभिः**) चारों ओर रक्त वर्ण वाले (**गोभिः**) किरणों के साथ (**युजाना**) युक्त और (**रयिम्**) धन को (**अस्त्रेधन्ती**) सिद्ध करती हुई (**अप्रायु**) नहीं नष्ट होने वाले को (**चक्रे**) करती है और (**पथः**) मार्गों को (**रदन्ती**) खोदती हुई (**पुरुष्टुता**) बहुतों से प्रशंसा की गई (**विश्ववारा**) सम्पूर्ण मनुष्यों से स्वीकार करने योग्य (**देवी**) प्रकाशित होती हुई (**सुविताय**) ऐश्वर्य्य के लिये (**वि, भाति**) विशेष करके प्रकाशित होती है, वैसे आप होओ॥३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे पतिव्रता, विद्यायुक्त और चतुर स्त्री गृह को प्रकाशित करने वाली होती है, वैसे ही प्रातर्वेला ब्रह्माण्ड को प्रकाशित करने वाली है॥३॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**एषा व्येनी भवति द्विबर्हा आविष्कृण्वाना तन्वं पुरस्तात्।**

**ऋतस्य पन्थामन्वेति साधु प्रजानतीव न दिशो मिनाति॥४॥**

**एषा। विऽएनी। भवति। द्विऽबर्हाः। आविःऽकृण्वाना। तन्वम्। पुरस्तात्। ऋतस्य। पन्थाम्। अनु। एति। साधु। प्रजानतीऽइव। न। दिशः। मिनाति॥४॥**

**पदार्थः**-(**एषा**) (**व्येनी**) या विशिष्टमृगीवद्वेगवती (**भवति**) (**द्विबर्हाः**) या द्वाभ्यां रात्रिदिनाभ्यां बृंहयति वर्धयति (**आविष्कृण्वाना**) सर्वेषां मूर्तिमतां द्रव्याणां प्राकट्यं सम्पादयन्ती (**तन्वम्**) शरीरम् (**पुरस्तात्**) (**ऋतस्य**) सत्यस्य (**पन्थाम्**) मार्गम् (**अनु**) (**एति**) अनुगच्छति (**साधु**) उत्तमं विज्ञानम् (**प्रजानतीव**) (**न**) निषेधे (**दिशः**) (**मिनाति**) हिनस्ति॥४॥

**अन्वयः**-हे विदुषि स्त्रि! यथैषोषाः पुरस्तात्तन्वमाविष्कृण्वाना द्विबर्हा व्येनी भवति। ऋतस्य पन्थामन्वेति साधु प्रजानतीव दिशो न मिनाति तथा त्वं वर्त्तस्व॥४॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यथा सती स्त्री गृहाश्रमस्य मार्गं प्रकाश्य सर्वाणि सुखानि प्रकटयति तथैवोषा वर्त्तते॥४॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-हे विद्यायुक्त स्त्रि! जैसे **(एषा)** यह प्रातर्वेला **(पुरस्तात्)** प्रथम **(तन्वम्)** शरीर को **(आविष्कृण्वाना)** और संपूर्ण रूप वाले द्रव्यों की प्रकटता करती हुई **(द्विबर्हाः)** दिन और रात्रि से बढ़ाने वाली **(व्येनी)** विशेष हरिणी के सदृश वेगयुक्त **(भवति)** होती है और **(ऋतस्य)** सत्य के **(पन्थाम्)** मार्ग की **(अनु, एति)** अनुगामिनी होती है और **(साधु)** उत्तम विज्ञान को **(प्रजानतीव)** विशेष करके जानती हुई सी **(दिशः)** दिशाओं का **(न)** नहीं **(मिनाति)** नाश करती है, वैसा तू वर्त्ताव कर॥४॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे सती स्त्री गृहाश्रम के मार्ग को प्रकाशित करके सम्पूर्ण सुखों को प्रकट करती है, वैसे ही प्रातर्वेला वर्त्तमान है॥४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**एषा शुभ्रा न तन्वो॑ विदानोर्ध्वेव॑ स्नाती दृशये॑ नो अस्थात्।**

**अप द्वेषो बाध॑माना तमां॑स्युषा दिवो दु॑हिता ज्योति॑षागा॑त्॥५॥**

**एषा। शुभ्रा। न। तन्वः॑। विदाना। ऊर्ध्वाऽइ॑व। स्नाती। दृशये॑। नः। अस्थात्। अप॑। द्वेषः॑। बाध॑माना। तमां॑सि। उषाः। दिवः। दुहिता। ज्योति॑षा। आ। अगात्॥५॥**

**पदार्थः**-**(एषा)** **(शुभ्रा)** श्वेतवर्णा **(न)** इव **(तन्वः)** शरीराणि **(विदाना)** ज्ञापयन्ती **(ऊर्ध्वेव)** ऊर्ध्वेव स्थिता **(स्नाती)** शुद्धा **(दृशये)** दर्शनाय **(नः)** अस्माकम् **(अस्थात्)** तिष्ठति **(अप)** **(द्वेषः)** द्वेष्टॄन् **(बाधमाना)** निवारयन्ती **(तमांसि)** रात्रीः **(उषाः)** प्रातर्वेला **(दिवः)** सूर्य्यस्य **(दुहिता)** कन्येव **(ज्योतिषा)** प्रकाशेन **(आ)** **(अगात्)** आगच्छति॥५॥

**अन्वयः**-हे शुभलक्षणे स्त्रि! यथैषोषाः शुभ्रा विद्युन्न तन्वो विदानोर्ध्वेव स्नाती नो दृशयेऽस्थाद् द्वेषस्तमांसि चाप बाधमाना दिवो दुहिता ज्योतिषाऽऽगात्तथा त्वं भवेः॥५॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यथा कुलीना स्त्री जलादीन्द्रियसंयमाभ्यां बाह्याऽऽभ्यन्तरे शुद्धा गृहस्थाऽन्धकारं निवारयन्ती सर्वेषां शरीररक्षां विदधाति गृहकृत्येषु दक्षा वर्त्तते तथैवोषा भवति॥५॥

**पदार्थः**-हे श्रेष्ठ लक्षणों वाली स्त्रि! जैसे **(एषा)** यह **(उषाः)** प्रातर्वेला **(शुभ्रा)** श्वेतवर्णवाली बिजुली के **(न)** सदृश **(तन्वः)** शरीरों को **(विदाना)** जनाती हुई **(ऊर्ध्वेव)** ऊपर सी स्थित **(स्नाती)** शुद्ध और **(नः)** हम लोगों के **(दृशये)** दर्शन के लिये **(अस्थात्)** स्थित होती है और **(द्वेषः)** द्वेष करने वाले जनों और **(तमांसि)** रात्रियों को **(अप, बाधमाना)** निवारण करती हुई **(दिवः)** सूर्य्य की **(दुहिता)** कन्या के सदृश वर्त्तमान **(ज्योतिषा)** प्रकाश से **(आ, अगात्)** प्राप्त होती है, वैसे तू हो॥५॥



www.9009.co.in

**भावार्थ:**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे कुलीन स्त्री जलादिकों और इन्द्रियों के निग्रहों से बाहर और भीतर से शुद्ध, गृहस्थान्धकार को निवृत्त करती हुई, सब के शरीर की रक्षा करती है और गृह के कृत्यों में चतुर है, वैसे ही प्रातर्वेला होती है॥५॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**एषा प्रतीची दुहिता दिवो नॄन् योषेव भद्रा नि रिणीते अप्सः।**

**व्यूर्ण्वती दाशुषे वार्याणि पुनर्ज्योतिर्युवतिः पूर्वथाकः॥६॥२३॥**

**एषा। प्रतीची। दुहिता। दिवः। नॄन्। योषाऽइव। भद्रा। नि। रिणीते। अप्सः। विऽऊर्ण्वती। दाशुषे। वार्याणि। पुनः। ज्योतिः। युवतिः। पूर्वऽथा। अकरित्यकः॥६॥**

**पदार्थ:**-(**एषा**) (**प्रतीची**) पश्चिमदिशां प्राप्ता (**दुहिता**) कन्येव (**दिवः**) सूर्य्यस्य (**नॄन्**) नायकान् श्रेष्ठान् पुरुषान् (**योषेव**) (**भद्रा**) कल्याणकारिणी (**नि**) (**रिणीते**) गच्छति (**अप्सः**) सुरूपम् (**व्यूर्ण्वती**) विशेषणाच्छादयन्ती (**दाशुषे**) दात्रे (**वार्याणि**) वर्त्तुमर्हाणि धनादीनि (**पुनः**) (**ज्योतिः**) (**युवतिः**) प्राप्तयौवनावस्थेव (**पूर्वथा**) पूर्वा इव (**अकः**) करोति॥६॥

**अन्वयः**-हे शुभलक्षणे स्त्रि! यथैषोषा दिवो दुहिता नॄन् योषेव भद्रा प्रतीच्यप्सो नि रिणीते दाशुषे वार्याणि व्यूर्ण्वती पूर्वथा पुनर्ज्योतियुवतिरिवाकस्तथा त्वं भव॥६॥

**भावार्थ:**-अत्रोपमावाचकलुप्तोपमालङ्कारौ। याः स्त्रियो भद्राचाराः प्राप्तयुवावस्थाः स्वसदृशान् पतीन् प्राप्य सर्वाणि गृहकृत्यानि व्यवस्थापयन्ति ता उषर्वत्सुशोभन्त इति॥६॥

अत्रोषःस्त्रीगुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इत्यशीतितमं सूक्तं त्रयोविंशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थ:**-हे शुभ लक्षणों वाली स्त्रि! जैसे (**एषा**) यह प्रातर्वेला (**दिवः**) सूर्य्य की (**दुहिता**) कन्या के सदृश (**नॄन्**) अग्रणी श्रेष्ठ पुरुषों को (**योषेव**) स्त्री के सदृश (**भद्रा**) कल्याण करने वाली (**प्रतीची**) पश्चिम दिशा को प्राप्त (**अप्सः**) सुन्दर रूप को (**नि, रिणीते**) अत्यन्त प्राप्त होती है और (**दाशुषे**) देने वाले के लिये (**वार्याणि**) स्वीकार करने योग्य धन आदि को (**व्यूर्ण्वती**) विशेष करके आच्छादित करती हुई (**पूर्वथा**) पहिली के सदृश (**पुनः**) फिर (**ज्योतिः**) ज्योतिःरूप को (**युवतिः**) प्राप्त यौवनावस्था वाली के सदृश (**अकः**) करती है, वैसी तुम होओ॥६॥

**भावार्थ:**-इस मन्त्र में उपमा और वाचकलुप्तोपमालङ्कार हैं। जो स्त्रियाँ शुभ आचरण वालीं और युवावस्था को प्राप्त हुईं अपने सदृश पतियों को प्राप्त होकर सम्पूर्ण गृहकृत्यों को व्यवस्थापित करती हैं वे प्रातर्वेला के सदृश अत्यन्त शोभित होती हैं॥६॥



www.9009.co.in

इस सूक्त में प्रातर्वेला और स्त्री के गुण–वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ संगति जाननी चाहिये।।

**यह अस्सीवां सूक्त और तेईसवां वर्ग समाप्त हुआ।।**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

**अथ पञ्चर्चस्यैकाऽशीतितमस्य सूक्तस्य श्यावाश्व आत्रेय ऋषिः। सविता देवता। १, ५ जगती। २ विराड्जगती। ३, ४ निचृज्जगती छन्दः। निषादः स्वरः।**

***अथ योगिनः किं कुर्वन्तीत्याह॥***

अब पांच ऋचा वाले इक्यासीवें सूक्त का प्रारम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में योगीजन क्या करते हैं, इस विषय को कहते हैं॥

**युञ्जते मन उत युञ्जते धियो विप्रा विप्रस्य बृहतो विपश्चितः।**

**वि होत्रा दधे वयुनाविदेक इन्मही देवस्य सवितुः परिष्टुतिः॥ १॥**

**युञ्जते। मनः। उत। युञ्जते। धियः। विप्राः। विप्रस्य। बृहतः। विपःऽचितः। वि। होत्राः। दधे। वयुनऽवित्। एकः। इत्। मही। देवस्य। सवितुः। परिऽस्तुतिः॥ १॥**

**पदार्थः-(युञ्जते)** समादधाति **(मनः)** मननात्मकम् **(उत)** अपि **(युञ्जते) (धियः)** प्रज्ञाः **(विप्राः)** मेधाविनो योगिनः **(विप्रस्य)** विशेषेण प्राति व्याप्नोति तस्य **(बृहतः)** महतः **(विपश्चितः)** अनन्तविद्यस्य **(वि) (होत्राः)** आदातारो दातारो वा **(दधे)** दधाति **(वयुनावित्)** यो वुयनानि प्रज्ञानानि वेत्ति। अत्रा**न्येषामपी**त्युपधाया दीर्घः। **(एकः)** अद्वितीयोऽसहायः **(इत्)** एव **(मही)** महती पूज्या **(देवस्य)** सर्वस्य जगतः प्रकाशकस्य **(सवितुः)** सकलजगदुत्पादकस्य **(परिष्टुतिः)** परितो व्याप्ता चासौ स्तुतिश्च॥ १॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथा होत्रा विप्रा विप्रस्य बृहतो विपश्चितः सवितुर्देवस्य परमात्मनो मध्ये मनो युञ्जत उत धियो युञ्जते यो वयुनाविदेक इदेव सर्वं जगद्वि दधे यस्य मही परिष्टुतिरस्ति तथा तस्मिन्यूयमपि चित्तं धत्त॥ १॥

**भावार्थः**-अनेकविद्याबृंहितस्य बुद्ध्यादिपदार्थाधिष्ठानस्य जगदीश्वरस्य मध्ये ये मनो बुद्धिं वा निदधति ते सर्वमैहिकं पारलौकिकं सुखं चाप्नुवन्ति॥ १॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे **(होत्राः)** लेने वा देने वाले **(विप्राः)** बुद्धिमान् योगीजन **(विप्रस्य)** विशेष कर के व्याप्त होने वाले **(बृहतः)** बड़े **(विपश्चितः)** अनन्त विद्यावान् **(सवितुः)** सम्पूर्ण जगत् के उत्पन्न करने वाले **(देवस्य)** सम्पूर्ण जगत् के प्रकाशक परमात्मा के मध्य में **(मनः)** मननस्वरूप मन को **(युञ्जते)** युक्त करते **(उत)** और **(धियः)** बुद्धियों को **(युञ्जते)** युक्त करते हैं और जो **(वयुनावित्)** प्रज्ञानों को जानने वाला **(एकः)** सहायरहित अकेला **(इत्)** ही संपूर्ण जगत् को **(वि, दधे)** रचता और जिसकी **(मही)** बड़ी आदर करने योग्य **(परिष्टुतिः)** सब और व्याप्त स्तुति है, वैसे उस में आप लोग भी चित्त को धारण करो॥ १॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-अनेक विद्याबृंहित, बुद्धि आदि पदार्थों के अधिष्ठान, जगदीश्वर के बीच जो मन और बुद्धि को निरन्तर स्थापन करते हैं, वे समस्त ऐहिक और पारलौकिक सुख को प्राप्त होते हैं॥१॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**विश्वा॑ रू॒पाणि॒ प्रति॑ मुञ्चते क॒विः प्रासा॑वीद्भ॒द्रं द्वि॒पदे॒ चतु॑ष्पदे।**

**वि नाक॑मख्यत्सवि॒ता वरे॒ण्योऽनु॑ प्र॒याण॑मु॒षसो॒ वि रा॑जति॥२॥**

**विश्वा॑। रू॒पाणि॑। प्रति॑। मु॒ञ्च॒ते॒। क॒विः। प्र। अ॒सा॒वी॒त्। भ॒द्रम्। द्वि॒ऽपदे॑। चतु॑ःऽपदे। वि। नाक॑म्। अ॒ख्य॒त्। स॒वि॒ता। वरे॑ण्यः। अनु॑। प्र॒ऽयान॑म्। उ॒षसः॑। वि। रा॒ज॒ति॒॥२॥**

**पदार्थः**-(**विश्वा**) सर्वाणि (**रूपाणि**) सूर्यादीनि (**प्रति**) (**मुञ्चते**) त्यजति (**कविः**) सर्वेषां क्रान्तप्रज्ञः सर्वज्ञः (**प्र**) (**असावीत्**) उत्पादयति (**भद्रम्**) कल्याणम् (**द्विपदे**) मनुष्याद्याय (**चतुष्पदे**) गवाद्याय (**वि**) (**नाकम्**) अविद्यमानदुःखम् (**अख्यत्**) ख्याति प्रकाशयति (**सविता**) सकलैश्वर्य्यप्रदः (**वरेण्यः**) वरितुमर्हः (**अनु**) (**प्रयाणम्**) (**उषसः**) (**वि**) (**राजति**) प्रकाशते॥२॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यः कविर्वरेण्यः सवितेश्वरो द्विपदे चतुष्पदे भद्रं प्रासावीत्। विश्वा रूपाणि प्रति मुञ्चते नाकं व्यख्यत् स यथोषसोऽनु प्रयाणं सूर्यो वि राजति तथा सूर्य्यादिकं प्रकाशयति तं सर्वे यूयमुपाध्वम्॥२॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! येन जगदीश्वरेण विचित्रं विविधं जगत्सर्वेषां प्राणिनां सुखाय निर्मितं तमेव यूयं भजध्वम्॥२॥

**पदार्थः**-हे मनुष्या! जो (**कविः**) सर्व पदार्थों का जानने वाला सर्वज्ञ (**वरेण्यः**) स्वीकार करने योग्य और (**सविता**) सम्पूर्ण ऐश्वर्य्यों का देने वाला ईश्वर (**द्विपदे**) मनुष्य आदि और (**चतुष्पदे**) गौ आदि के लिये (**भद्रम्**) कल्याण को (**प्र, असावीत्**) उत्पन्न करता और (**विश्वा**) सम्पूर्ण (**रूपाणि**) सूर्य्य आदिकों का (**प्रति, मुञ्चते**) त्याग करता है तथा (**नाकम्**) नहीं विद्यमान दुःख जिसमें उसका (**वि, अख्यत्**) प्रकाश करता है, वह जैसे (**उषसः**) प्रातःकाल के (**अनु, प्रयाणम्**) पीछे गमन को सूर्य्य (**वि, राजति**) विशेष करके शोभित करता है, वैसे सूर्य्य आदि को प्रकाशित करता है, उसकी तुम सब उपासना करो॥२॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जिस जगदीश्वर ने विचित्र और अनेक प्रकार के जगत् को सम्पूर्ण प्राणियों के सुख के लिये रचा उसी जगदीश्वर की आप लोग उपासना करो॥२॥

**पुनरीश्वरः कीदृशोऽस्तीत्याह॥**

फिर ईश्वर कैसा है, इस विषय को कहते हैं॥

**यस्य॑ प्र॒याण॒मन्व॒न्य इद्य॒युर्दे॒वा दे॒वस्य॑ महि॒मान॒मोज॑सा।**



www.9009.co.in

**यः पार्थिवानि विमुमे स एतंशो रजांसि देवः संविता महित्वना॥ ३॥**

**यस्यं। प्रऽयानंम्। अनुं। अन्ये। इत्। युयुः। देवाः। देवस्यं। महिमानंम्। ओजंसा। यः। पार्थिवानि। विऽमुमे। सः। एतंशः। रजांसि। देवः। सुविता। महिऽत्वना॥ ३॥**

**पदार्थः**-**(यस्य)** जगदीश्वरस्य **(प्रयाणम्)** प्रकर्षेण याति गच्छति येन तत् **(अनु)** **(अन्ये)** **(इत्)** एव **(ययुः)** गच्छन्ति **(देवाः)** सूर्य्यादयः **(देवस्य)** सर्वेषां प्रकाशस्य **(महिमानम्)** **(ओजसा)** पराक्रमेण बलेन **(यः)** **(पार्थिवानि)** अन्तरिक्षे विदितानि कार्य्याणि। **पृथिवीत्यन्तरिक्षनामसु पठितम्।** (निघं०१.३) **(विममे)** विशेषेण मिमीते विधत्ते **(सः)** **(एतशः)** सर्वत्र प्राप्तः **(रजांसि)** लोकान् **(देवः)** सर्वसुखदाता **(सविता)** सकलैश्वर्य्यविधाता **(महित्वना)** महिम्ना॥ ३॥

**अन्वयः**-हे विद्वांसो! यस्य देवस्य प्रयाणं महिमानमन्वन्य इत् वस्वादयो देवा ययुः। य एतशस्सविता देवो महित्वनैजसा पार्थिवानि रजांसि विममे स एव सर्वैर्ध्येयोऽस्ति॥ ३॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यः सूर्य्यादीनां धर्तॄणां धर्त्ता दातॄणां दाता महतां महान् प्रकृत्याख्यात् कारणात् सर्वं जगद्विधत्ते यमनु सर्वे जीवन्ति तिष्ठन्ति च स एव सर्वजगद्विधाता ध्यातव्योऽस्ति॥ ३॥

**पदार्थः**-हे विद्वानो! **(यस्य)** जिस जगदीश्वर **(देवस्य)** सब के प्रकाशक के **(प्रयाणम्)** अच्छी तरह चलते हैं, जिससे उस मार्ग और **(महिमानम्)** महिमा को **(अनु)** पश्चात् **(अन्ये, इत्)** और ही वसु आदि **(देवाः)** प्रकाश करने वाले सूर्य्य आदि **(ययुः)** चलते अर्थात् प्राप्त होते हैं और **(यः)** जो **(एतशः)** सर्वत्र व्याप्त **(सविता)** सम्पूर्ण ऐश्वर्य्यों का करने और **(देवः)** सम्पूर्ण सुखों का देने वाला **(महित्वना)** महिमा से **(ओजसा)** पराक्रम से और बल से **(पार्थिवानि)** अन्तरिक्ष में विदित कार्यों और **(रजांसि)** लोकों को **(विममे)** विशेष करके रचता है **(सः)** वही सब से ध्यान करने योग्य है॥ ३॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो सूर्य्य आदिकों के धारण करने वालों का धारण करने वाला और देने वालों का देने वाला, बड़ों और प्रकृतिरूप कारण से सम्पूर्ण जगत् को रचता है और जिसके पीछे अर्थात् आश्रय से सब जीवते और स्थित हैं, वही सम्पूर्ण जगत् का रचने वाला ईश्वर ध्यान करने योग्य है॥ ३॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**उत यासि सवितुस्त्रीणि रोचुनोत सूर्यस्य रश्मिभिः समुच्यसि।**

**उत रात्रीमुभयतः परीयस उत मित्रो भवसि देव धर्मभिः॥ ४॥**

**उत। यासि। सवितुरिति। त्रीणि। रोचना। उत। सूर्यस्य। रश्मिऽभिः। सम्। उच्यसि। उत। रात्रीम्। उभयतः। परि। ईयसे। उत। मित्रः। भवसि। देव। धर्मऽभिः॥ ४॥**

**पदार्थः**-**(उत)** अपि **(यासि)** प्राप्नोषि **(सवितः)** सकलजगदुत्पादक **(त्रीणि)** सूर्य्याचन्द्रविद्युदाख्यानि **(रोचना)** प्रकाशकानि **(उत)** **(सूर्य्यस्य)** **(रश्मिभिः)** किरणैः **(सम्)** **(उच्यसि)**



www.9009.co.in

वदसि **(उत) (रात्रीम्) (उभयत:) (परि, ईयसे) (उत) (मित्र:)** सखा **(भवसि) (देव)** विद्वन् **(धर्मभि:)** धर्म्माचरणै:॥४॥

**अन्वय:**-हे सवितर्देव! यस्त्वमुत त्रीणि रोचना यास्युत सूर्य्यस्य रश्मिभि: समुच्यसि। उतोभयतो रात्रीं परीयस उत धर्म्मभिर्मित्रो भवसि स त्वमस्माभि: सत्कर्त्तव्योऽसि॥४॥

**भावार्थ:**-हे मनुष्या! यस्सर्वेश्वरस्त्रीन् विद्युत्सूर्य्याचन्द्रान् महतो दीपान्निर्माय सर्वत्र व्याप्त: सर्वस्य सुहृत् सन् सूर्य्यादीनभिव्याप्य धृत्वा प्रकाशयति स एव सर्वथा पूज्योऽस्ति॥४॥

**पदार्थ:**-हे **(सवित:)** सम्पूर्ण जगत् को उत्पन्न करने वाले **(देव)** विद्वन्! जो आप **(उत)** निश्चय से **(त्रीणि)** सूर्य्य, चन्द्रमा और बिजुली नामक **(रोचना)** प्रकाशकों को **(यासि)** प्राप्त होते **(उत)** और **(सूर्य्यस्य)** सूर्य की **(रश्मिभि:)** किरणों से **(सम्, उच्यसि)** उत्तम प्रकार कहते हो **(उत)** और **(उभयत:)** दोनों ओर से **(रात्रीम्)** अन्धकार को **(परि, ईयसे)** दूर करते हो **(उत)** और **(धर्म्मभि:)** धर्म्माचरणों से **(मित्र:)** मित्र **(भवसि)** होते हो, वह आप हम लोगों से सत्कार करने योग्य हो॥४॥

**भावार्थ:**-हे मनुष्यो! जो सब का स्वामी, ईश्वर तीन-बिजुली, सूर्य्य और चन्द्रमा रूप बड़े दीपों को रच के सर्वत्र व्याप्त और सब का मित्र हुआ और सूर्य्य आदि को अभिव्याप्त हो और धारण कर के प्रकाशित करता है, वही सब प्रकार पूज्य है अर्थात् उपासना करने योग्य है॥४॥

**पुनरीश्वरविषयमाह॥**

फिर ईश्वरविषय को कहते हैं॥

**उतेशिषे प्रसवस्य त्वमेक इदुत पूषा भवसि देव यामभि:।**

**उतेदं विश्वं भुवनं वि राजसि श्यावाश्वस्ते सवित: स्तोममानशे॥५॥२४॥**

**उत। ईशिषे। प्रऽसवस्य। त्वम्। एक:। इत्। उत। पूषा। भवसि। देव। यामऽभि:। उत। इदम्। विश्वम्। भुवनम्। वि। राजसि। श्यावऽअश्व:। ते। सवितरिति। स्तोमम्। आनशे॥५॥**

**पदार्थ:-(उत) (ईशिषे)** ऐश्वर्य्यं विदधासि **(प्रसवस्य)** प्रसूतस्य जगत: **(त्वम्) (एक:)** अद्वितीय: **(इत्)** एव **(उत)** अपि **(पूषा)** पुष्टिकर्ता **(भवसि) (देव)** सकलसुखप्रदात: **(यामभि:)** प्रहरै: **(उत) (इदम्) (विश्वम्) (भुवनम्) (वि) (राजसि) (श्यावाश्व:)** सूर्य्यलोक: **(ते)** तव **(सवित:)** सत्यव्यवहारे प्रेरक **(स्तोमम्)** प्रशंसाम् **(आनशे)** व्याप्नोति॥५॥

**अन्वय:**-हे सवितर्देव! ते य: श्यावाश्वो यामभि: स्तोममानशे तद्दृष्टान्तेनोतेदं विश्वं भुवनं त्वं वि राजसि उत पूषा भवसि उतैक इदेव प्रसवस्येशिषे॥५॥

**भावार्थ:**-हे मनुष्या! यस्य महिमज्ञापनाय सूर्य्यादयो लोका दृष्टान्ता: सन्ति तमेवाखिलं परमैश्वर्य्यप्रदं यूयं ध्याययेति॥५॥

अत्र सवित्रीश्वरगुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥



www.9009.co.in

**इत्येकाशीतितमं सूक्तं चतुर्विंशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे **(सवितः)** सत्य व्यवहार में प्रेरणा करने और **(देव)** सम्पूर्ण सुखों के देने वाले **(ते)** आपका जो **(श्यावाश्वः)** सूर्यलोक **(यामभिः)** प्रहरों से **(स्तोमम्)** प्रशंसा को **(आनशे)** व्याप्त होता है, उसके दृष्टान्त से **(उत)** भी **(इदम्)** इस **(विश्वम्)** समस्त **(भुवनम्)** भुवन को **(त्वम्)** आप **(वि, राजसि)** प्रकाशित करते हो **(उत)** और **(पूषा)** पुष्टि करने वाले **(भवसि)** होते हो **(उत)** और **(एकः)** द्वितीयरहित **(इत्)** ही **(प्रसवस्य)** उत्पन्न हुए जगत् के **(ईशिषे)** ऐश्वर्य का विधान करते हो॥५॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जिसके महत्त्व के जनाने के लिये सूर्य्य आदि लोक दृष्टान्त हैं, उसी सम्पूर्ण परमैश्वर्य के देने वाले का तुम ध्यान करो॥५॥

इस सूक्त में सत्यव्यवहार में प्रेरणा करने वाले ईश्वर के गुणों का वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ संगति जाननी चाहिये॥

**यह इक्यासीवां सूक्त और चौबीसवां वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

**अथ नवर्चस्य द्व्यशीतितमस्य सूक्तस्य श्यावाश्व आत्रेय ऋषिः। सविता देवता। १ निचृदनुष्टुप् छन्दः। गान्धारः स्वरः। २, ४, ९ निचृद्गायत्री। ३, ५, ६, ७ गायत्री। ८ विराड्गायत्री छन्दः। षड्जः स्वरः॥**

***अथ मनुष्यैः क उपास्य इत्याह॥***

अब नव ऋचा वाले बयासीवें सूक्त का प्रारम्भ है उसके प्रथम मन्त्र में मनुष्यों को किसकी उपासना करनी चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**तत्स॒वि॒तुर्वृ॑णीमहे व॒यं दे॒वस्य॒ भोज॑नम्। श्रेष्ठं॑ सर्व॒धात॑मं॒ तुरं॒ भग॑स्य धीमहि॥ १॥**

**तत्। स॒वि॒तुः। वृ॒णी॒म॒हे॒। व॒यम्। दे॒वस्य॑। भोज॑नम्। श्रेष्ठ॑म्। स॒र्व॒ऽधात॑मम्। तुर॑म्। भग॑स्य। धी॒म॒हि॒॥ १॥**

**पदार्थः-(तत्) (सवितुः)** अन्तर्य्यामिणो जगदीश्वरस्य **(वृणीमहे)** स्वीकुर्महे **(वयम्) (देवस्य)** सकलप्रकाशकस्य **(भोजनम्)** पालनं भोक्तव्यं वा **(श्रेष्ठम्)** अतिशयेन प्रशस्तम् **(सर्वधातमम्)** यः सर्वं दधाति सोऽतिशयितस्तम् **(तुरम्)** अविद्यादिदोषनाशकं सामर्थ्यम् **(भगस्य)** सकलैश्वर्य्ययुक्तम् **(धीमहि)** दधीमहि॥१॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! वयं भगस्य सवितुर्देवस्य यच्छ्रेष्ठं भोजनं सर्वधातमं तुरं वृणीमहे धीमहि तद्यूयं स्वीकुरुत॥१॥

**भावार्थः**-ये मनुष्याः सर्वोत्तमजगदीश्वरमुपास्यान्यस्योपासनं त्यजन्ति ते सर्वैश्वर्य्या भवन्ति॥१॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(वयम्)** हम लोग **(भगस्य)** सम्पूर्ण ऐश्वर्य्य से युक्त **(सवितुः)** अन्तर्य्यामी **(देवस्य)** सम्पूर्ण के प्रकाशक जगदीश्वर का जो **(श्रेष्ठम्)** अतिशय उत्तम और **(भोजनम्)** पालन वा भोजन करने योग्य **(सर्वधातमम्)** सब को अत्यन्त धारण करने वाले **(तुरम्)** अविद्या आदि दोषों के नाश करने वाले सामर्थ्य को **(वृणीमहे)** स्वीकार करते और **(धीमहि)** धारण करते हैं **(तत्)** उसको तुम लोग स्वीकार करो॥१॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य सबसे उत्तम जगदीश्वर की उपासना करके अन्य की उपासना का त्याग करते हैं, वे सम्पूर्ण ऐश्वर्य्य से युक्त होते हैं॥१॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**अस्य॒ हि स्वय॑शस्तरं सवि॒तुः कच्च॒न प्रि॒यम्। न मि॒नन्ति॒ स्व॒राज्य॑म्॥ २॥**

**अस्य॑। हि। स्वय॑शःऽतरम्। स॒वि॒तुः। कत्। च॒न। प्रि॒यम्। न। मि॒नन्ति॑। स्व॒ऽराज्य॑म्॥ २॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः-(अस्य)** परमात्मनः **(हि)** **(स्वयशस्तरम्)** स्वकीयं यशं कीर्त्तिर्यस्य तदतिशयितम् **(सवितुः)** जगदीश्वरस्य **(कत्)** कदा **(चन)** अपि **(प्रियम्)** **(न)** निषेधे **(मिनन्ति)** हिंसन्ति **(स्वराज्यम्)** स्वकीयं राष्ट्रम्॥२॥

**अन्वयः**-ये ह्यस्य सवितुरीश्वरस्य स्वयशस्तरं प्रियं स्वराज्यं कच्चन न मिनन्ति ते धार्मिका जायन्ते॥२॥

**भावार्थः**-ये परमात्माज्ञानं हिंसन्ति ते यशस्विनो भूत्वा राज्यमाप्नुवन्ति॥२॥

**पदार्थः**-जो **(हि)** निश्चय से **(अस्य)** इस परमात्मा **(सवितुः)** जगदीश्वर का **(स्वयशस्तरम्)** अपना यश जिसका वह अतिशयित **(प्रियम्)** अत्यन्त प्रिय **(स्वराज्यम्)** अपने राज्य को **(कत्, चन)** कभी **(न)** नहीं **(मिनन्ति)** नष्ट करते हैं, वे धार्म्मिक होते हैं॥२॥

**भावार्थः**-जो परमात्मा के बीच अज्ञान का नाश करते हैं, वे यशस्वी होकर राज्य को प्राप्त होते हैं॥२॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**स हि रत्नानि दाशुषे सुवाति सविता भर्गः। तं भागं चित्रमीमहे॥३॥**

**सः। हि। रत्नानि। दाशुषे। सुवाति। सविता। भर्गः। तम्। भागम्। चित्रम्। ईमहे॥३॥**

**पदार्थः-(सः)** **(हि)** **(रत्नानि)** धनानि **(दाशुषे)** दात्रे **(सुवाति)** जनयति **(सविता)** प्रसवकर्त्ता **(भगः)** ऐश्वर्य्यवान् **(तम्)** **(भागम्)** भगानामिमम् **(चित्रम्)** अद्भुतम् **(ईमहे)** प्राप्नुयाम जानीम वा॥३॥

**अन्वयः**-यः सविता भगो दाशुषे रत्नानि सुवाति तं भागं चित्रमीमहे स हि दातोदारोऽस्ति॥३॥

**भावार्थः**-ये मनुष्याः सर्वरत्नप्रदं परमात्मानं सेवन्ते तेऽद्भुतमैश्वर्य्यमाप्नुवन्ति॥३॥

**पदार्थः**-जो **(सविता)** उत्पन्न करने वाला **(भगः)** ऐश्वर्य्यवान् परमात्मा **(दाशुषे)** दाताजन के लिये **(रत्नानि)** धनों को **(सुवाति)** उत्पन्न करता है **(तम्)** उस **(भागम्)** ऐश्वर्य्यसम्बन्धी **(चित्रम्)** अद्भुत को **(ईमहे)** प्राप्त होवें वा जानें और **(सः, हि)** वही उदार दाता है॥३॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य सम्पूर्ण रत्नों के देने वाले परमात्मा की सेवा करते हैं वे अद्भुत ऐश्वर्य्य को प्राप्त होते हैं॥३॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**अद्या नो देव सवितः प्रजावत्सावीः सौभगम्। परा दुःष्वप्न्यं सुव॥४॥**

**अद्य। नः। देव। सवितरिति। प्रजाऽवत्। सावीः। सौभगम्। परा। दुःऽस्वप्न्यम्। सुव॥४॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-**(अद्या)** अद्य। अत्र **निपातस्य चे**ति दीर्घः। **(नः)** अस्मभ्यमस्माकं वा **(देव)** प्रकाशमान **(सवितः)** सर्वैश्वर्य्यप्रदेश्वर **(प्रजावत्)** बह्व्यः प्रजा विद्यन्ते यस्य तत् **(सावीः)** जनय **(सौभगम्)** शौभनैश्वर्य्यस्य भागम् **(परा)** **(दुःष्वप्न्यम्)** दुष्टेषु स्वप्नेषु भवं दुःखम् **(सुव)** प्रेरय॥४॥

**अन्वयः**-हे सवितर्देव! त्वं कृपया नोऽद्या प्रजावत्सौभगं सावीर्दुःष्वप्न्यं परा सुव दूरं गमय॥४॥

**भावार्थः**-ये परमेश्वरं प्रार्थयित्वा धर्म्यं पुरुषार्थं कुर्वन्ति ते महदैश्वर्या भूत्वा दुःखदारिद्र्यविरहा जायन्ते॥४॥

**पदार्थः**-हे **(सवितः)** सम्पूर्ण ऐश्वर्य्य के देने वाले स्वामिन् **(देव)** शोभित! आप कृपा से **(नः)** हम लोगों के लिये वा हम लोगों के **(अद्या)** आज **(प्रजावत्)** बहुत प्रजायें विद्यमान जिसके उस **(सौभगम्)** सुन्दर ऐश्वर्य के भाग को **(सावीः)** उत्पन्न कीजिये और **(दुःष्वप्न्यम्)** दुष्ट स्वप्नों में उत्पन्न दुःख को **(परा, सुव)** दूर कीजिये॥४॥

**भावार्थः**-जो परमेश्वर की प्रार्थना करके धर्म्मयुक्त पुरुषार्थ करते हैं, वे बहुत ऐश्वर्य्य वाले होकर दुःख और दारिद्र्य से रहित होते हैं॥४॥

**मनुष्यैः किमर्थमीश्वरः प्रार्थनीय इत्याह॥**

मनुष्य किसलिये ईश्वर की प्रार्थना करें, इस विषय को कहते हैं॥

**विश्वा॑नि देव सवितर्दुरि॒ताति॒ परा॑ सुव। यद्भ॒द्रं तन्न॒ आ सु॑व॥५॥२५॥**

**विश्वा॑नि। दे॒व॒। स॒वि॒त॒रिति॑। दु॒रि॒तानि॑। परा॑। सु॒व॒। यत्। भ॒द्रम्। तत्। नः॒। आ। सु॒व॒॥५॥**

**पदार्थः**-**(विश्वानि)** सर्वाणि **(देव)** सकलजगत्प्रकाशक **(सवितः)** सर्वविश्वोत्पादक **(दुरितानि)** दुष्टाचरणानि **(परा)** **(सुव)** दूरे प्रक्षिप **(यत्)** **(भद्रम्)** कल्याणकरम् **(तत्)** **(नः)** अस्मभ्यम् **(आ)** **(सुव)** समन्तात् प्रापय॥५॥

**अन्वयः**-हे सवितर्देव जगदीश्वर! विश्वानि दुरितानि त्वं परा सुव यद्भद्रं तन्न आ सुव॥५॥

**भावार्थः**-हे परमेश्वर! भवान् कृपया यावन्त्यस्मासु दुष्टाचरणानि सन्ति तावन्ति पृथक्कृत्य धर्म्यगुणकर्म-स्वभावान् स्थापयतु॥५॥

**पदार्थः**-हे **(सवितः)** संपूर्ण संसार के उत्पन्न करने वाले **(देव)** और संपूर्ण संसार को प्रकाशित करने वाले जगदीश्वर! **(विश्वानि)** संपूर्ण **(दुरितानि)** दुष्ट आचरणों को आप **(परा, सुव)** दूर कीजिये और **(यत्)** जो **(भद्रम्)** कल्याणकारक है **(तत्)** उसको **(नः)** हम लोगों के लिये **(आ, सुव)** सब प्रकार से प्राप्त कीजिये॥५॥

**भावार्थः**-हे परमेश्वर! आप कृपा से जितने हम लोगों में दुष्ट आचरण हैं, उनको अलग करके धर्म्मयुक्त गुण, कर्म्म और स्वभावों को स्थापित कीजिये॥५॥

**अस्मिन् जगति मनुष्यैः किं कर्त्तव्यमित्याह॥**



www.9009.co.in

इस जगत् में मनुष्यों को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**अनागसो अदितये देवस्य सवितुः सवे। विश्वा वामानि धीमहि॥६॥**

**अनागसः। अदितये। देवस्य। सवितुः। सवे। विश्वा। वामानि। धीमहि॥६॥**

**पदार्थः-(अनागसः)** अनपराधाः **(अदितये)** मात्राद्याय **(देवस्य)** सर्वसुखदातुः **(सवितुः)** सकलैश्वर्य्यसम्पन्नस्य **(सवे)** जगद्रूपैश्वर्य्ये **(विश्वा)** सर्वाणि **(वामानि)** वननीयानि सम्भजनीयानि धनानि **(धीमहि)** धरेम॥६॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथाऽनागसो वयमदितये देवस्य सवितुः सवे विश्वा वामानि धीमहि तथा यूयमपि धरत॥६॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यथा विद्वांसोऽस्मिन्नीश्वररचिते जगति सृष्टिक्रमेण विद्यया कार्य्याणि साध्नुवन्ति तथैवान्यैरपि साधनीयानि॥६॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे **(अनागसः)** अपराध से रहित हम लोग **(अदितये)** माता आदि के लिये **(देवस्य)** सर्व सुख देने वाले **(सवितुः)** सम्पूर्ण ऐश्वर्य से युक्त परमात्मा के **(सवे)** जगद्रूप ऐश्वर्य्य में **(विश्वा)** सम्पूर्ण **(वामानि)** संभोग करने योग्य धनों को **(धीमहि)** धारण करें, वैसे आप लोग भी धारण करो॥६॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे विद्वान् जन इस ईश्वर से रचे हुए संसार में सृष्टिक्रम से विद्या के द्वारा कार्य्यों को सिद्ध करते हैं, वैसे ही अन्य जनों को भी चाहिये कि सिद्ध करें॥६॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**आ विश्वदेवं सत्पतिं सूक्तैरद्या वृणीमहे। सत्यसवं सवितारम्॥७॥**

**आ। विश्वऽदेवम्। सत्ऽपतिम्। सुऽउक्तैः। अद्य। वृणीमहे। सत्यऽसवम्। सवितारम्॥७॥**

**पदार्थः-(आ)** समन्तात् **(विश्वदेवम्)** विश्वस्य प्रकाशकम् **(सत्पतिम्)** सतां प्रकृत्यादीनां सत्पुरुषाणां पतिं पालकम् **(सूक्तैः)** सुष्ठु सत्यैर्वचनैर्वेदोक्तैर्वा **(अद्या)** अद्य। अत्र **संहितायामिति** दीर्घः। **(वृणीमहे)** स्वीकुर्महे **(सत्यसवम्)** सत्योऽविनाशी सवः सामर्थ्ययोगो यस्य तम् **(सवितारम्)** सकलपदार्थनिर्मातारम्॥७॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथा वयमद्या सूक्तैर्विश्वदेवं सत्पतिं सत्यसवं सवितारं परमात्मानमाऽऽवृणीमहे तथा यूयमपि वृणुत॥७॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। मनुष्यैः परमेश्वरं विहाय कस्याप्यन्यस्याश्रयो नैव कर्त्तव्यः॥७॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे हम लोग **(अद्या)** आज **(सूक्तैः)** उत्तम प्रकार कहे गये सत्य वचनों वा वेदोक्त वचनों से **(विश्वदेवम्)** संसार के प्रकाश करने और **(सत्पतिम्)** प्रकृति आदि पदार्थ और सत्पुरुषों के पालन करने वाले **(सत्यसवम्)** नहीं नाश होने वाला सामर्थ्ययोग्य जिसका उस **(सवितारम्)** सम्पूर्ण पदार्थों के बनाने वाले परमात्मा का **(आ, वृणीमहे)** स्वीकार करते हैं, वैसे आप लोग भी स्वीकार कीजिये॥७॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। मनुष्यों को चाहिये कि परमेश्वर को छोड़कर किसी अन्य का आश्रय नहीं करें॥७॥

**पुनर्मनुष्यैः कथं वर्त्तितव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्य कैसा वर्त्ताव करें, इस विषय को कहते हैं॥

**य इमे उभे अहनी पुर एत्यप्रयुच्छन्। स्वाधीर्देवः सविता॥८॥**

**यः। इमे। उभे इति। अहनी इति। पुरः। एति। अप्रऽयुच्छन्। सुऽआधीः। देवः। सविता॥८॥**

**पदार्थः**-**(यः)** **(इमे)** **(उभे)** **(अहनी)** रात्रिदिने **(पुरः)** **(एति)** प्राप्नोति **(अप्रयुच्छन्)** प्रमादमकुर्वन् **(स्वाधीः)** सुष्ठ्वाधीयते येन सः **(देवः)** द्योतमानः **(सविता)** सत्कर्मसु प्रेरकः॥८॥

**अन्वयः**-योऽप्रयुच्छन् मनुष्यो यथा स्वाधीर्देवः सविता सत्ये वर्त्तते तथेमे उभे अहनी सत्येन पुर एति स एव भाग्यशाली भवति॥८॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यथा परमेश्वरः स्वकीयान्नियमान् यथावद्रक्षति तथैव मनुष्या अपि सुनियमान् यथावद्रक्षन्तु॥८॥

**पदार्थः**-**(यः)** जो **(अप्रयुच्छन्)** प्रमाद को नहीं करता हुआ मनुष्य जैसे **(स्वाधीः)** उत्तम प्रकार स्थापन किया जाता है जिससे वह **(देवः)** प्रकाशमान **(सविता)** श्रेष्ठ कर्म्मों में प्रेरणा करने वाला सत्य में वर्त्तमान है, वैसे **(इमे)** इन **(उभे)** दोनों **(अहनी)** रात्रि और दिनों को सत्य से **(पुरः)** आगे **(एति)** प्राप्त होता है, वही भाग्यशाली होता है॥८॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे परमेश्वर अपने नियमों की यथायोग्य रक्षा करता है, वैसे ही मनुष्य भी श्रेष्ठ नियमों की यथावत् रक्षा करें॥८॥

**मनुष्यैः कः परमगुरुर्मन्यत इत्याह॥**

मनुष्यों से कौन परम गुरु माना जाता है, इस विषय को कहते है॥

**य इमा विश्वा जातान्याश्रावयति श्लोकेन। प्र च सुवाति सविता॥९॥२६॥**

**यः। इमा। विश्वा। जातानि। आऽश्रवयति। श्लोकेन। प्र। च। सुवाति। सविता॥९॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः-(यः) (इमा)** इमानि **(विश्वा)** सर्वाणि प्रज्ञानानि **(जातानि) (आश्रावयति) (श्लोकेन)** वाचा। **श्लोक इति वाङ्नामसु पठितम्।** (निघं०१.११) **(प्र) (च) (सुवाति)** प्रेरयेत् **(सविता)** प्रेरकः॥९॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यः श्लोकेनेमा विश्वा जातान्याश्रावयति स च सविताऽस्मान् प्र सुवाति॥९॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यो जगदीश्वरो वेदद्वारा मनुष्येभ्यः सर्वा विद्या उपदिशति स एव परमगुरुर्मन्तव्यः॥९॥

अत्रेश्वरविद्वद्गुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति द्व्यशीतितमं सूक्तं षड्विंशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(यः)** जो **(श्लोकेन)** वाणी से **(इमा)** इन **(विश्वा)** सम्पूर्ण प्रज्ञानों और **(जातानि)** उत्पन्न हुओं को **(आश्रावयति)** सब प्रकार से सुनाता है वह **(च)** और **(सविता)** प्रेरणा करने वाला हम लोगों को **(प्र, सुवाति)** प्रेरणा करे॥९॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो जगदीश्वर वेद के द्वारा मनुष्यों के लिये सम्पूर्ण विद्याओं का उपदेश करता है, वही परमगुरु मानने योग्य है॥९॥

इस सूक्त में ईश्वर और विद्वानों के गुणों का वर्णन होने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्तार्थ के साथ संगति जाननी चाहिये॥

**यह बयासीवां सूक्त और छब्बीसवां वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

**अथ दशर्चस्य त्र्यशीतितमस्य सूक्तस्य अत्रिर्ऋषिः। पृथिवी देवता। १, ६ निचृत्त्रिष्टुप्। २ स्वराट् त्रिष्टुप्। ३ भुरिक्त्रिष्टुप्। ५ त्रिष्टुप्। ७ विराट्त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः। ४ निचृज्जगती छन्दः। निषादः स्वरः। ८, १० भुरिक्पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः। ९ अनुष्टुप् छन्दः। गान्धारः स्वरः॥**

***अथ मेघः कीदृशोऽस्तीत्याह॥***

अब दश ऋचा वाले तिरासीवें सूक्त का आरम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में मेघ कैसा है, इस विषय को कहते हैं॥

**अच्छा॑ वद त॒वसं॑ गी॒र्भिरा॒भिः स्तु॒हि प॒र्जन्यं॒ नम॒सा वि॑वास।**

**कनि॑क्रदद् वृष॒भो जी॒रदा॑नू॒ रेतो॑ दधा॒त्योष॑धीषु॒ गर्भ॑म्॥ १॥**

**अच्छ॑। व॒द॒। त॒वस॑म्। गी॒ऽःभिः। आ॒भिः। स्तु॒हि। प॒र्जन्य॑म्। नम॑सा। आ। वि॒वा॒स॒। कनि॑क्रदत्। वृ॒ष॒भः। जी॒रऽदा॑नुः। रेतः॑। द॒धा॒ति॒। ओष॑धीषु। गर्भ॑म्॥ १॥**

**पदार्थः-(अच्छा)** अत्र **संहितायामिति** दीर्घः। **(वद) (तवसम्)** बलम् **(गीर्भिः)** वाग्भिः **(आभिः)** वर्त्तमानाभिः **(स्तुहि)** प्रशंस **(पर्जन्यम्)** मेघम् **(नमसा)** अन्नाद्येन **(आ) (विवास)** विवसति **(कनिक्रदत्)** शब्दयन् **(वृषभः)** बलीवर्द इव **(जीरदानुः)** यो जीवयति **(रेतः)** उदकम्। **रेत इत्युदकनामसु पठितम्।** (निघं०१.१२) **(दधाति) (ओषधीषु) (गर्भम्)**॥१॥

**अन्वयः**-हे विद्वन्! यो वृषभ इव जीरदानुः कनिक्रदन्नमसाऽऽविवासौषधीषु रेतो गर्भं दधाति तं पर्जन्यमाभिर्गीर्भिरच्छा वद तवसं च स्तुहि॥१॥

**भावार्थः**-मनुष्यैर्विद्वद्भ्यो मेघविद्या यथावद्विज्ञातव्या॥१॥

**पदार्थः**-हे विद्वान्! जो **(वृषभः)** थूहे वाले बैल के सदृश **(जीरदानुः)** जीवाने वाला **(कनिक्रदत्)** शब्द करता हुआ **(नमसा)** अन्न आदि के साथ **(आ, विवास)** सब ओर से बसता और **[(ओषधीषु)]** ओषधियों में **(रेतः)** जल रूप **(गर्भम्)** गर्भ को **(दधाति)** धारण करता है उस **(पर्जन्यम्)** मेघ को **(आभिः)** इन वर्त्तमान **(गीर्भिः)** वाणियों से **(अच्छा)** उत्तम प्रकार **(वद)** कहिये और **(तवसम्)** बल की **(स्तुहि)** प्रशंसा करिये॥१॥

**भावार्थः**-मनुष्यों को चाहिये कि विद्वानों से मेघविद्या का यथावत् विज्ञान करें॥१॥

**पुनर्मनुष्यैः किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**वि वृ॒क्षान् ह॑न्त्यु॒त ह॑न्ति र॒क्षसो॒ विश्वं॑ बिभाय॒ भुव॑नं म॒हाव॑धात्।**



www.9009.co.in

**उ॒ताना॑गा ईषते॒ वृष्ण्या॑वतो॒ यत्प॒र्जन्यः॑ स्त॒नय॒न् हन्ति॑ दु॒ष्कृतः॑॥ २॥**

**वि। वृ॒क्षान्। ह॒न्ति॒। उ॒त। ह॒न्ति॒। र॒क्षसः॑। विश्व॑म्। बि॒भा॒य॒। भुव॑नम्। म॒हाऽव॑धात्। उ॒त। अना॑गाः। ई॒ष॒ते॒। वृष्ण्य॑ऽवतः। यत्। प॒र्जन्यः॑। स्त॒नय॑न्। हन्ति॑। दुः॒ऽकृतः॑॥ २॥**

**पदार्थः**-(**वि**) (**वृक्षान्**) छेत्तुमर्हान् (**हन्ति**) (**उत**) अपि (**हन्ति**) (**रक्षसः**) दुष्टाचारान् (**विश्वम्**) (**बिभाय**) बिभेति (**भुवनम्**) उदकम्। **भुवनमित्युदकनामसु पठितम्।** (निघं०१.१२) (**महावधात्**) महतो हननात् (**उत**) (**अनागाः**) न विद्यत आगोऽपराधो यस्मिन् (**ईषते**) हिनस्ति (**वृष्ण्यावतः**) वृष्ण्यानि वर्षितुं योग्यान्यभ्राणि विद्यन्ते येषु तान् (**यत्**) यः (**पर्जन्यः**) (**स्तनयन्**) शब्दयन् (**हन्ति**) (**दुष्कृतः**) दुष्टाचारान्॥ २॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथा तक्षा वृक्षान् वि हन्त्युत न्यायकारी राजा येभ्यो विश्वं बिभाय तान् रक्षसो हन्ति यद्यः पर्जन्यः स्तनयन्महावधाद् भुवनं वर्षयति यथा चाऽनागा वृष्ण्यावत ईषत उत दुष्कृतो हन्ति तथैव मनुष्या वर्त्तन्ताम्॥ २॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। ये मनुष्याः पालनीयान् पालयन्ति हन्तव्यान् घ्नन्ति ते राजसत्तावन्तो जायन्ते॥ २॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे बढ़ई (**वृक्षान्**) काटने योग्य वृक्षों को (**वि, हन्ति**) विशेष कर के काटता है (**उत**) और न्यायकारी राजा जिनसे (**विश्वम्**) सम्पूर्ण संसार (**बिभाय**) भय करता है, उन (**रक्षसः**) दुष्ट आचरण वालों का (**हन्ति**) नाश करता है और (**यत्**) जो (**पर्जन्यः**) मेघ (**स्तनयन्**) शब्द करता हुआ (**महावधात्**) बड़े हनन से (**भुवनम्**) जल को वर्षाता है और जैसे (**अनागाः**) नहीं अपराध जिसमें वह (**वृष्ण्यावतः**) वर्षने योग्य मेघ जिनमें उन का (**ईषते**) नाश करता है (**उत**) और (**दुष्कृतः**) दुष्ट कर्मों के करने वालों का (**हन्ति**) नाश करता है, वैसा ही मनुष्य वर्ताव करें॥ २॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो मनुष्य पालन करने योग्यों का पालन करते हैं और नाश करने योग्यों का नाश करते हैं, वे राजसत्ता से युक्त होते हैं॥ २॥

**पुनर्मनुष्यैः किं वेदितव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को क्या जानना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**र॒थीव॒ कश॒याश्वाँ॑ अभिक्षि॒पन्ना॒विर्दू॒तान् कृ॑णुते व॒र्ष्याँ३॑ अह॑।**

**दू॒रात् सिं॒हस्य॑ स्त॒नथा॒ उदी॑रते॒ यत्प॒र्जन्यः॑ कृणु॒ते व॒र्ष्यं१॑ नभः॑॥ ३॥**

**र॒थीऽइ॑व। कश॑या। अश्वा॑न्। अ॒भि॒ऽक्षि॒पन्। आ॒विः। दू॒तान्। कृ॒णु॒ते॒। व॒र्ष्या॑न्। अह॑। दू॒रात्। सिं॒हस्य॑। स्त॒नथाः॑। उत्। ई॒र॒ते॒। यत्। प॒र्जन्यः॑। कृ॒णु॒ते। व॒र्ष्य॑म्। नभः॑॥ ३॥**

**पदार्थः**-(**रथीव**) बहवो रथा विद्यन्ते यस्य तद्वत् (**कशया**) ताडनार्थरज्वा (**अश्वान्**) तुरङ्गान् (**अभिक्षिपन्**) आभिमुख्ये प्रेरयन् (**आविः**) प्राकट्ये (**दूतान्**) (**कृणुते**) करोति (**वर्ष्यान्**) वर्षासु साधून्



www.9009.co.in

**(अह)** विनिग्रहे **(दूरात्)** **(सिंहस्य)** **(स्तनथाः)** शब्दयेः **(उत्)** **(ईरते)** कम्पयन्ति गच्छन्ति वा **(यत्)** यः **(पर्जन्यः)** मेघः **(कृणुते)** **(वर्ष्यम्)** वर्षासु भवम् **(नभः)** अन्तरिक्षम्॥३॥

**अन्वयः**-हे विद्वन्! यद्यः पर्जन्यः कशयाऽश्वानभिक्षिपन् रथीव वर्ष्यान् दूतानाविष्कृणुतेऽह ते दूरात् सिंहस्येवोदीरते पर्जन्यो वर्ष्यन्नभः कृणुते तं त्वं स्तनथाः॥३॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। यथा सारथिरश्वान् यथेष्टं स्थानं नेतुं शक्नोति तथैव मेघो घनानीतस्ततो नयति॥३॥

**पदार्थः**-हे विद्वन्! **(यत्)** जो **(पर्जन्यः)** मेघ **(कशया)** मारने के लिये रस्सी अर्थात् कोड़े से **(अश्वान्)** घोड़ों को **(अभिक्षिपन्)** सन्मुख लाता हुआ **(रथीव)** बहुत रथ वाले के सदृश **(वर्ष्यान्)** वर्षाओं में श्रेष्ठ **(दूतान्)** दूतों को **(आवि, कृणुते)** प्रकट करता है **(अह)** परतन्त्र करने में वे **(दूरात्)** दूर से **(सिंहस्य)** सिंह के सदृश **(उत्, ईरते)** कम्पाते वा चलते हैं और पर्जन्य **(वर्ष्यम्)** वर्षाओं में हुए **(नभः)** अन्तरिक्ष को **(कृणुते)** करता अर्थात् प्रकट करता है, उसको आप वर्षाओं में हुए **(नभः)** अन्तरिक्ष को **(कृणुते)** करता अर्थात् प्रकट करता है, उसको आप **(स्तनथाः)** पुकारिये॥३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जैसे सारथी घोड़ों को यथेष्ट स्थान में ले जाने को समर्थ होता है, वैसे ही मेघ जलों को इधर-उधर ले जाता है॥३॥

**पुनर्मनुष्यैः किं वेदितव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को क्या जानना योग्य है, इस विषय को कहते हैं॥

**प्र वाता वान्ति पतयन्ति विद्युत उदोषधीर्जिहते पिन्वते स्वः।**

**इरा विश्वस्मै भुवनाय जायते यत्पर्जन्यः पृथिवीं रेतसावति॥४॥**

**प्र। वाताः। वान्ति। पतयन्ति। विऽद्युतः। उत्। ओषधीः। जिहते। पिन्वते। स्वरिति स्वः। इरा। विश्वस्मै। भुवनाय। जायते। यत्। पर्जन्यः। पृथिवीम्। रेतसा। अवति॥४॥**

**पदार्थः**-**(प्र)** प्रकर्षेण **(वाताः)** वायवः **(वान्ति)** गच्छन्ति **(पतयन्ति)** **(विद्युतः)** **(उत्)** **(ओषधीः)** **(जिहते)** प्राप्नुवन्ति **(पिन्वते)** सेवन्ते **(स्वः)** अन्तरिक्षम् **(इरा)** अन्नादिकम्। **इरेत्यन्ननामसु पठितम्।** (निघं० १। ७) **(विश्वस्मै)** सर्वस्मै **(भुवनाय)** **(जायते)** **(यत्)** यः **(पर्जन्यः)** पालनजनकः **(पृथिवीम्)** **(रेतसा)** जलेन **(अवति)** रक्षति॥४॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यत्पर्जन्यो रेतसा पृथिवीमवति येन विश्वस्मै भुवनायेरा जायते घनाः स्वः पिन्वते येनौषधीरुज्जिहते यस्माद् विद्युतः पतयन्ति यत्र वाताः प्र वान्ति तं मेघं यथावद्यूयं विजानीत॥४॥

**भावार्थः**-मनुष्यैर्येन मेघेन सर्वस्य पालनं जायते तस्योन्नतिर्वृक्षप्रवापणेन वनरक्षणेन होमेन च संसाधनीया यतः सर्वस्य पालनं सुखेन जायेत॥४॥



www.9009.co.in

**पदार्थ:**-हे मनुष्यो! **(यत्)** जो **(पर्जन्यः)** पालनों को उत्पन्न करने वाला मेघ **(रेतसा)** जल से **(पृथिवीम्)** भूमि की **(अवति)** रक्षा करता है जिससे **(विश्वस्मै)** सम्पूर्ण **(भुवनाय)** भुवन के लिये **(इरा)** अन्न आदिक **(जायते)** उत्पन्न होता है और बादल **(स्वः)** अन्तरिक्ष का **(पिन्वते)** सेवन करते हैं और जिससे **(ओषधीः)** ओषधियों को **(उत्, जिहते)** उत्तमता से प्राप्त होते हैं जिससे **(विद्युतः)** बिजुलियां **(पतयन्ति)** पतन होती है, जहाँ **(वाताः)** पवन **(प्र)** अत्यन्त **(वान्ति)** चलते हैं, उस मेघ को यथावत् तुम विशेष जानो॥४॥

**भावार्थ:**-मनुष्य लोगों को चाहिये कि जिस मेघ से सबका पालन होता है, उसकी वृद्धि वृक्षों के लगने, वनों की रक्षा करने और होम करने से सिद्ध करें, जिससे सब का पालन सुख से होवे॥४॥

**पुनः स मेघः कीदृश इत्याह॥**

फिर वह मेघ कैसा है, इस विषय को कहते हैं॥

**यस्य॑ व्रते पृ॑थि॒वी नन्न॑मीति॒ यस्य॑ व्र॒ते श॒फव॒ज्जर्भु॑रीति।**

**यस्य॑ व्र॒त ओष॑धीर्वि॒श्वरू॑पा॒: स न॑: पर्जन्य॒ महि॒ शर्म॑ यच्छ॥५॥२७॥**

**यस्य॑। व्र॒ते। पृ॒थि॒वी। नन्न॑मीति। यस्य॑। व्र॒ते। श॒फऽव॑त्। जर्भु॑रीति। यस्य॑। व्र॒ते। ओष॑धीः। वि॒श्वऽरू॑पाः। सः। न॒ः। प॒र्ज॒न्य॒। महि॑। शर्म॑। य॒च्छ॒॥५॥**

**पदार्थ:**-**(यस्य) (व्रते)** कर्म्मणि **(पृथिवी) (नंनमीति)** भृशं नमति **(यस्य) (व्रते) (शफवत्)** शफेन तुल्यम् **(जर्भुरीति)** भृशं धरति **(यस्य) (व्रते) (ओषधीः)** सोमाद्याः **(विश्वरूपाः) (सः) (नः)** अस्मभ्यम् **(पर्जन्य)** पर्जन्यवद्वर्त्तमान **(महि)** महत् **(शर्म्म)** गृहम् **(यच्छ)**॥५॥

**अन्वय:**-हे पर्जन्य तद्वद्वर्त्तमान विद्वन्! यस्य मेघस्य व्रते पृथिवी नंनमीति यस्य व्रते शफवज्जर्भुरीति यस्य व्रते विश्वरूपा ओषधीर्जायन्ते तद्विद्यया युक्तः स त्वं नो महि शर्म्म यच्छ॥५॥

**भावार्थ:**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यदि वर्षा न भवेयुस्तर्हि कस्यापि जीवनं न भवेत्॥५॥

**पदार्थ:**-हे **(पर्जन्य)** मेघ के सदृश वर्तमान विद्वन्! **(यस्य)** जिस मेघ के **(व्रते)** कर्म्म में **(पृथिवी)** भूमि **(नंनमीति)** अत्यन्त नम्र होती और **(यस्य)** जिस मेघ के **(व्रते)** कर्म्म में **(शफवत्)** खुर के तुल्य **(जुर्भुरीति)** निरन्तर धारण करती है और **(यस्य)** जिस मेघ के **(व्रते)** कर्म में **(विश्वरूपाः)** अनेक प्रकार की **(ओषधीः)** सोमलता आदि ओषधियां उत्पन्न होती हैं, उस मेघ की विद्या से युक्त **(सः)** वह आप **(नः)** हम लोगों के लिये **(महि)** बड़े **(शर्म)** गृह को **(यच्छ)** दीजिये॥५॥

**भावार्थ:**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो वृष्टियां न होवें तो किसी का भी जीवन न होवे॥५॥

**पुनः सः मेघः कीदृश इत्याह॥**

फिर वह मेघ कैसा है, इस विषय को कहते हैं॥



www.9009.co.in

**दिवो नो वृष्टिं मरुतो ररीध्वं प्र पिन्वत वृष्णो अश्वस्य धाराः।**

**अर्वाङेतेन स्तनयित्नुनेह्यपो निषिञ्चन्नसुरः पिता नः॥६॥**

**दिवः। नः। वृष्टिम्। मरुतः। ररीध्वम्। प्र। पिन्वत। वृष्णः। अश्वस्य। धाराः। अर्वाङ्। एतेन। स्तनयित्नुना। आ। इहि। अपः। निऽसिञ्चन्। असुरः। पिता। नः॥६॥**

**पदार्थः-(दिवः)** सूर्य्यात् **(नः)** अस्मभ्यम् **(वृष्टिम्)** **(मरुतः)** वायुवद्वर्त्तमाना मनुष्याः **(ररीध्वम्)** दत्त **(प्र)** **(पिन्वत)** सिञ्चत **(वृष्णः)** वर्षकस्य **(अश्वस्य)** महतः। **अश्व इति महन्नामसु पठितम्।** (निघं०३.३) **(धाराः)** प्रवाहान् **(अर्वाङ्)** अधो वर्त्तमानः **(एतेन)** **(स्तनयित्नुना)** विद्युद्रूपेण **(आ)** **(इहि)** आगच्छन्ति। अत्र व्यत्ययः। **(अपः)** जलानि **(निषिञ्चन्)** नितरां सेचनं कुर्वन् **(असुरः)** मेघः। **असुर इति मेघनामसु पठितम्।** (निघं०१.१०) **(पिता)** जनक इव पालकः **(नः)** अस्माकम्॥६॥

**अन्वयः**-हे मरुतो! यूयं नो दिवो वृष्टिं ररीध्वं वृष्णोऽश्वस्य धाराः प्र पिन्वत योऽर्वाङ् वर्त्तमान एतेन स्तनयित्नुनाऽपो निषिञ्चन्नसुरो नः पितेव पालको मेघ एहि तं यूयं विजानीत॥६॥

**भावार्थः**-हे विद्वांसो! यैः कर्मभिर्वृष्टिरधिका भवेत्तानि कर्म्माणि सेवध्वम्॥६॥

**पदार्थः**-हे **(मरुतः)** वायुवद्वर्त्तमान मनुष्यो! आप लोग **(नः)** हम लोगों के लिये **(दिवः)** सूर्य्य से **(वृष्टिम्)** वृष्टि को **(ररीध्वम्)** दीजिये तथा **(वृष्णः)** वर्षने वाले **(अश्वस्य)** बड़े मेघ के **(धाराः)** प्रवाहों को **(प्र, पिन्वत)** सींचिये और जो **(अर्वाङ्)** नीचे वर्त्तमान और **(एतेन)** इस **(स्तनयित्नुना)** बिजुली रूप से **(अपः)** जलों को **(निषिञ्चन्)** अत्यन्त सेचन करता हुआ **(असुरः)** मेघ **(नः)** हम लोगों के **(पिता)** उत्पन्न करने वाले पिता के सदृश पालन करने वाला **(आ, इहि)** प्राप्त होता है, उसको आप लोग विशेष करके जनिये॥६॥

**भावार्थः**-हे विद्वानो! जिन कर्म्मों से वृष्टि अधिक होवे, उन कर्म्मों का सेवन कीजिये॥६॥

**पुनः स मेघः किं करोतीत्याह॥**

फिर वह मेघ क्या करता है, इस विषय को कहते हैं॥

**अभि क्रन्द स्तनय गर्भमा धा उदन्वता परि दीया रथेन।**

**दृतिं सु कर्ष विषितं न्यञ्चं समा भवन्तूद्वतो निपादाः॥७॥**

**अभि। क्रन्द। स्तनय। गर्भम्। आ। धाः। उदन्ऽवता। परि। दीय। रथेन। दृतिम्। सु। कर्ष। विऽसितम्। न्यञ्चम्। समाः। भवन्तु। उत्ऽवतः। निऽपादाः॥७॥**

**पदार्थः-(अभि)** आभिमुख्ये **(क्रन्द)** क्रन्दति। अत्र सर्वत्र व्यत्ययः। **(स्तनय)** गर्जति **(गर्भम्)** **(आ)** **(धाः)** समन्ताद्दधाति **(उदन्वता)** बहूदकसहितेन **(परि)** सर्वतः **(दीया)** उपक्षयति। अत्र व्यत्ययेन परस्मैपदं, **द्व्यचोऽतस्तिङ** इति दीर्घश्च। **(रथेन)** रमणीयेन स्वरूपेण **(दृतिम्)** यो दृणाति तं दृतिरिव जलेन



www.9009.co.in

पूर्णम् **(सु, कर्ष)** विलिखति **(विषितम्)** **(न्यञ्चम्)** यो निश्चितमञ्चति तम् **(समाः)** वर्षाणि **(भवन्तु)** **(उद्वतः)** ऊर्ध्वदेशस्थाः **(निपादाः)** निश्चिता निम्ना वा पादा अंशा येषान्ते॥७॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यो मेघो गर्भमाऽऽधा उदन्वता रथेनाऽभि क्रन्द स्तनय दृतिं सु कर्ष दुःखानि परि दीया विषितं न्यञ्चं सु कर्ष येनोद्वतो निपादाः समा भवन्तु तं विजानीत॥७॥

**भावार्थः**-यो हि जलेन विश्वं पुष्यति दुःखं नाशयति फलानि जनयति स मेघो विश्वम्भरोऽस्तीति वेद्यम्॥७॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो मेघ **(गर्भम्)** गर्भ को **(आ, धाः)** चारों ओर से धारण करता और **(उदन्वता)** बहुत जल के सहित **(रथेन)** सुन्दर स्वरूप से **(अभि)** सम्मुख **(क्रन्द)** शब्द करता और **(स्तनय)** गर्जता है **(दृतिम्)** फाड़ने वाले के सदृश जल से पूर्ण को **(सु, कर्ष)** विशेष करके खोदता और दुःखों का **(परि)** सब प्रकार से **(दीया)** नाश करता और **(विषितम्)** बंधे **(न्यञ्चम्)** निश्चित सेवा करते हुए को विशेष करके लिखता अर्थात् चेष्टा में लाता है तथा जिससे हम लोगों के **(उद्वतः)** ऊर्ध्वस्थान में वर्त्तमान **(निपादाः)** निश्चित वा नाचे हैं अंश जिनके ऐसे **(समाः)** वर्ष **(भवन्तु)** होवें, उसको जानिये॥७॥

**भावार्थः**-जो निश्चय[पूर्वक] जल से संसार को पुष्ट करता है और दुःख का नाश करता तथा फलों को उत्पन्न करता है, वह मेघ विश्वंभर है, ऐसा जानना चाहिये॥७॥

**अथ मेघनिमित्तानि कानि सन्तीत्याह॥**

अब मेघनिमित्त कौन हैं, इस विषय को कहते हैं॥

**म॒हान्तं॒ कोश॒मुद॑चा॒ नि षि॑ञ्च॒ स्यन्द॑न्तां कु॒ल्या विषि॑ताः पु॒रस्ता॑त्।**

**घृ॒तेन॒ द्यावा॑पृथि॒वी व्यु॑न्धि सुप्रपा॒णं भ॑वत्व॒घ्न्याभ्यः॑॥८॥**

**म॒हान्त॑म्। कोश॑म्। उत्। अ॒च॒। नि। सि॒ञ्च॒। स्यन्द॑न्ताम्। कु॒ल्याः॑। विऽसि॑ताः। पु॒रस्ता॑त्। घृ॒तेन॑। द्यावा॑पृथि॒वी इति॑। वि। उ॒न्धि॒। सु॒ऽप्र॒पा॒नम्। भ॒व॒तु॒। अ॒घ्न्याभ्यः॑॥८॥**

**पदार्थः**-**(महान्तम्)** महत्परिमाणम् **(कोशम्)** धनादीनां कोश इव जलेन पूर्णं मेघम्। **कोश इति मेघनामसु पठितम्।** (निघं०१.१०) **(उत्)** **(अचा)** ऊर्ध्वं गच्छति **(नि)** नितराम् **(सिञ्च)** सिञ्चति। अत्र सर्वत्र व्यत्ययः। **(स्यन्दन्ताम्)** प्रस्रवन्तु **(कुल्याः)** निर्म्मिता जलगमनमार्गाः **(विषिताः)** व्याप्ताः **(पुरस्तात्)** **(घृतेन)** जलेन। **घृतमित्युदकनामसु पठितम्।** (निघं०१.१२) **(द्यावापृथिवी)** भूम्यन्तरिक्षे **(वि)** **(उन्धि)** विशेषेणोन्दयति क्लेदयति **(सुप्रपाणम्)** सुष्ठु प्रकर्षेण पिबन्ति यस्मिन् स जलाशयः **(भवतु)** **(अघ्न्याभ्यः)** गोभ्यः॥८॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यः सूर्य्यो महान्तं कोशमुदचा येन पृथिवीं नि षिञ्च पुरस्ताद्विषिताः कुल्याः स्यन्दन्तां यो घृतेन द्यावापृथिवी व्युन्धि सोऽघ्न्याभ्यः सुप्रपाणं भवत्विति वित्त॥८॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-हे मनुष्या! या विद्युत् सूर्य्यो वायुश्च मेघनिमित्तानि सन्ति तानि यथवत्प्रयोजयत यतो वर्षणेन गवादीनां यथावत् पालनं स्यात्॥८॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो सूर्य्य **(महान्तम्)** बड़े परिमाण वाले **(कोशम्)** घनादिकों के कोश के समान जल से परिपूर्ण मेघ को **(उत्)** **(अचा)** ऊपर प्राप्त होता है और जिससे पृथिवी को **(नि, सिञ्च)** निरन्तर सींचता है और **(पुरस्तात्)** प्रथम **(विषिताः)** व्याप्त **(कुल्याः)** रचे गये जल के निकलने के मार्ग **(स्यन्दन्ताम्)** बहें और जो **(घृतेन)** जल से **(द्यावापृथिवी)** पृथिवी और अन्तरिक्ष को **(वि, उन्धि)** अच्छे प्रकार गीला करता है वह **(अघ्न्याभ्यः)** गौओं के लिये **(सुप्रपाणम्)** उत्तम प्रकार प्रकर्षता से पीते हैं जिसमें ऐसा जलाशय **(भवतु)** हो, यह जानो॥८॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो बिजुली, सूर्य्य और वायु मेघ के कारण हैं, उनको यथायोग्य प्रयुक्त कीजिये जिससे वृष्टि द्वारा गौ आदि पशुओं का यथावत् पालन होवे॥८॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**यत्पर्जन्य कनिक्रदत् स्तनयन् हंसि दुष्कृतः।**

**प्रतीदं विश्वं मोदते यत्किं च पृथिव्यामधि॥९॥**

**यत्। पर्जन्य। कनिक्रदत्। स्तनयन्। हंसि। दुःऽकृतः। प्रति। इदम्। विश्वम्। मोदते। यत्। किम्। च। पृथिव्याम्। अधि॥९॥**

**पदार्थः-(यत्)** यः **(पर्जन्य)** पर्जन्यो मेघः **(कनिक्रदत्)** भृशं शब्दयन् **(स्तनयन्)** गर्जनं कुर्वन् **(हंसि)** अत्र पुरुषव्यत्ययः। **(दुष्कृतः)** ये दुःखेन कुर्वन्ति तान् **(प्रति)** **(इदम्)** वर्त्तमानम् **(विश्वम्)** सर्वं जगत् **(मोदते)** **(यत्)** **(किम्)** **(च)** **(पृथिव्याम्)** **(अधि)** उपरि॥९॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यद्यः पर्जन्य कनिक्रदत् स्तनयन् दुष्कृतो हंसि यत्किं चेदं पृथिव्यामधि विश्वं वर्त्तते तत्सर्वं येन मेघेन प्रति मोदते स महानुपकार्य्यस्ति॥९॥

**भावार्थः**-मेघेनैव सर्वाणि भूतान्यानन्दन्ति तस्मादिदं मेघनिर्माणाख्यं कर्म परमेश्वरस्य धन्यवादार्हमस्तीति सर्वे विजानन्तु॥९॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(यत्)** जो **(पर्जन्य)** मेघ **(कनिक्रदत्)** अत्यन्त शब्द करता तथा **(स्तनयन्)** गर्जन करता हुआ **(दुष्कृतः)** दुःख से करने वालों का **(हंसि)** नाश करता है **(यत्)** जो **(किम्)** कुछ **(च)** भी **(इदम्)** यह वर्त्तमान **(पृथिव्याम्)** पृथिवी **(अधि)** पर **(विश्वम्)** सम्पूर्ण जगत् वर्त्तमान है वह जिस मेघ से **(प्रति, मोदते)** आनन्दित होता है, वह बड़ा उपकारी है॥९॥

**भावार्थः**-मेघ से ही सम्पूर्ण प्राणी आनन्दित होते हैं, इससे यह मेघ को बनानारूप कर्म्म परमेश्वर का धन्यवाद के योग्य है, यह सब लोग जानो॥९॥



www.9009.co.in

**पुनर्मनुष्याः किं कुर्युरित्याह॥**

फिर मनुष्य क्या करें, इस विषय को कहते हैं॥

**अवर्षीर्वर्षमुदु षू गृभायाकर्धन्वान्यत्येतवा उ।**

**अजीजन ओषधीर्भोजनाय कमुत प्रजाभ्योऽविदो मनीषाम्॥ १०॥ २८॥**

**अवर्षीः। वर्षम्। उत्। ऊँ इति। सु। गृभाय। अकः। धन्वानि। अतिऽएतवै। ऊँ इति। अजीजनः। ओषधीः। भोजनाय। कम्। उत। प्रऽजाभ्यः। अविदः। मनीषाम्॥ १०॥**

**पदार्थः-(अवर्षीः)** वर्षयति **(वर्षम्) (उत्) (उ) (सु)** शोभने **(गृभाय)** गृहाण **(अकः)** कुर्याः **(धन्वानि)** अविद्यमानोदकादिदेशान् **(अत्येतवै)** एतुं प्राप्तुम् **(उ) (अजीजनः)** जनयः **(ओषधीः)** सोमाद्याः **(भोजनाय) (कम्) (उत) (प्रजाभ्यः) (अविदः)** वेत्सि **(मनीषाम्)** प्रज्ञाम्॥ १०॥

**अन्वयः**-हे विद्वन् वैद्य! यथा सूर्य्यो वर्षमवर्षीस्तथा त्वमुद् गृभाय धन्वान्यत्येतवै स्वकः। उ ओषधीर्भोजनायाऽजीजनः। उत प्रजाभ्यः कमविद उ मनीषाम्॥ १०॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यथा जगदीश्वरो वर्षाभ्यः प्रजाहितं जनयति तथैव धार्मिको राजा प्रजाभ्यः सुखमध्यापकश्च प्रज्ञां जनयेदिति॥ १०॥

अत्र पर्जन्यविद्वद्गुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति त्र्यशीतितमं सूक्तमष्टाविंशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे विद्वन् वैद्य! जैसे सूर्य्य **(वर्षम्)** वृष्टि को **(अवर्षीः)** वर्षाता है, वैसे आप **(उत्, गृभाय)** उत्कृष्टता से ग्रहण कीजिये तथा **(धन्वानि)** जल आदि से रहित देशों को **(अत्येतवै)** प्राप्त होने के लिये **(सु)** उत्तम प्रकार **(अकः)** करिये (उ) और **(ओषधीः)** सोमलता आदि ओषधियों को **(भोजनाय)** भोजन के लिये **(अजीजनः)** उत्पन्न कीजिये **(उत)** और भी **(प्रजाभ्यः)** प्रजाओं के लिये **(कम्)** किसको **(अविदः)** जानते हो (उ) क्या **(मनीषाम्)** बुद्धि को॥ १०॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे जगदीश्वर वर्षाओं से प्रजा के हित को सिद्ध करता है, वैसे ही धार्मिक राजा प्रजाओं के लिये सुख और अध्यापक बुद्धि को उत्पन्न करे॥ १०॥

इस सूक्त में मेघ और विद्वान् के गुण-वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इस से पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ संगति जाननी चाहिये॥

**यह तिरासीवां सूक्त और अट्ठाईसवां वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

**अथ त्र्यृचस्य चतुरशीतितमस्य सूक्तस्याऽत्रिर्ऋषिः पृथिवी देवता। १, ३ निचृदनुष्टुप् छन्दः। २ विराडनुष्टुप् छन्दः। गान्धारः स्वरः।**

***अथ मनुष्यैः किं कर्त्तव्यमित्याह॥***

अब तीन ऋचा वाले चौरासीवें सूक्त का प्रारम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में मनुष्यों को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**बळि॒त्था पर्व॑तानां खि॒द्रं बि॑भर्षि पृथिवि।**

**प्र या भूमि॑ प्रवत्वति म॒ह्ना जि॒नोषि॑ महिनि॥ १॥**

**बट्। इ॒त्था। पर्व॑तानाम्। खि॒द्रम्। बि॒भ॒र्षि॒। पृ॒थि॒वि॒। प्र। या। भूमि॑म्। प्र॒व॒त्व॒ति॒। म॒ह्ना। जि॒नोषि॑। म॒हि॒नि॒॥ १॥**

**पदार्थः-(बट्)** सत्यम्। **बडिति सत्यनामसु पठितम्।** (निघं०३.१०) **(इत्था)** अनेन प्रकारेण **(पर्वतानाम्)** मेघानाम् **(खिद्रम्)** दैन्यम् **(बिभर्षि) (पृथिवी)** भूमिवद्वर्त्तमाने **(प्र) (या) (भूमिम्) (प्रवत्वति)** प्रवणदेशयुक्ते **(मह्ना)** महत्त्वेन **(जिनोषि) (महिनि)** पूज्ये॥ १॥

**अन्वयः**-हे प्रवत्वति महिनि पृथिवीव वर्त्तमाने! या त्वं पर्वतानां मह्ना भूमिं धरसीत्था बट् सत्यं यतो बिभर्षि खिद्रं प्र जिनोषि तस्मात् सत्कर्त्तव्याऽसि॥ १॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यथा भूमौ शैलाः स्थिरा वर्त्तन्ते तथा येषां हृदि धर्म्मादयः सद्व्यवहारा वर्त्तन्ते ते पूज्या जायन्ते॥ १॥

**पदार्थः**-हे **(प्रवत्वति)** अत्यन्त नीचे स्थान से युक्त **(महिनि)** आदर करने योग्य **(पृथिवि)** भूमि के सदृश वर्त्तमान! **(या)** जो तुम **(पर्वतानाम्)** मेघों के **(मह्ना)** महत्त्व से **(भूमिम्)** भूमि को धारण करती **(इत्था)** इस प्रकार से **(बट्)** सत्य को जिस कारण **(बिभर्षि)** धारण करती हो तथा **(खिद्रम्)** दीनता को **(प्र, जिनोषि)** विशेष करके नष्ट करती हो, इससे सत्कार करने योग्य हो॥ १॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे भूमि पर पर्वत स्थिर होकर वर्त्तमान हैं, वैसे जिनके हृदय में धर्म आदि श्रेष्ठ व्यवहार हैं, वे आदर करने योग्य होते हैं॥ १॥

**पुनः स्त्री कीदृशी भवेदित्याह॥**

फिर स्त्री कैसी हो, इस विषय को कहते हैं॥

**स्तोमा॑सस्त्वा विचारिणि॒ प्रति॑ ष्टोभन्त्य॒क्तुभि॑ः।**

**प्र या वाज॒ं न हेष॑न्तं पे॒रुमस्य॑स्यर्जुनि॥ २॥**

**स्तोमा॑सः। त्वा॒। वि॒ऽचा॒रि॒णि॒। प्रति॑। स्तो॒भ॒न्ति॒। अ॒क्तुऽभि॑ः। प्र। या। वाज॑म्। न। हेष॑न्तम्। पे॒रुम्। अस्य॑सि। अ॒र्जु॒नि॒॥ २॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**स्तोमासः**) स्तुतिकर्त्तारः (**त्वा**) त्वाम् (**विचारिणि**) विचारितुं शीलं यस्यास्तत्सम्बुद्धौ (**प्रति**) (**स्तोभन्ति**) स्तुवन्ति (**अक्तुभिः**) रात्रिभिः (**प्र**) (**या**) (**वाजम्**) वेगम् (**न**) इव (**हेषन्तम्**) शब्दं कुर्वन्तम् (**पेरुम्**) पूरकम् (**अस्यसि**) प्रक्षिपसि (**अर्जुनि**) उषर्वद्वर्त्तमाने॥२॥

**अन्वयः**-हे अर्जुनि विचारिणि! या त्वं वाजं न हेषन्तं पेरुं प्राऽस्यसि तां त्वा स्तोमासोऽक्तुभिः प्रति ष्टोभन्ति॥२॥

**भावार्थः**-अत्रोपमावाचकलुप्तोपमालङ्कारौ। यथा विद्वांसः स्तुत्यान् स्तुवन्ति तथैव विदुषी स्त्री प्रशंसनीयं प्रशंसति॥२॥

**पदार्थः**-हे (**अर्जुनि**) उषा के समान वर्त्तमान (**विचारिणि**) विचार करने वाली स्त्री! (**या**) जो तू (**वाजम्**) वेग के (**न**) समान (**हेषन्तम्**) शब्द करते हुए (**पेरुम्**) पूर्ण करने वाले को (**प्र, अस्यसि**) फेंकती है उस (**त्वा**) तेरी (**स्तोमासः**) स्तुति करने वाले जन (**अक्तुभिः**) रात्रियों से (**प्रति, स्तोभन्ति**) सब प्रकार स्तुति करते हैं॥२॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमा और वाचकलुप्तोपमालङ्कार हैं। जैसे विद्वान् जन स्तुति करने योग्य जनों की स्तुति करते हैं, वैसे ही विद्यायुक्त स्त्री प्रशंसा करने योग्य की प्रशंसा करती है॥२॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**दृ॒ळ्हा चि॒द्या व॒नस्पती॑न् क्ष्म॒या दर्ध॒र्ष्योज॑सा।**

**यत्ते॑ अ॒भ्रस्य॑ वि॒द्युतो॑ दि॒वो वर्ष॑न्ति वृ॒ष्टय॑ः॥३॥२९॥**

**दृ॒ळ्हा। चि॒त्। या। व॒नस्पती॑न्। क्ष्म॒या। दर्धर्षि। ओज॑सा। यत्। ते॒। अ॒भ्रस्य॑। वि॒ऽद्युत॑ः। दि॒वः। वर्ष॑न्ति। वृ॒ष्टय॑ः॥३॥**

**पदार्थः**-(**दृळ्हा**) (**चित्**) (**या**) (**वनस्पतीन्**) (**क्ष्मया**) पृथिव्या (**दर्धर्षि**) भृशं दधासि (**ओजसा**) (**यत्**) या (**ते**) तव (**अभ्रस्य**) घनस्य (**विद्युतः**) (**दिवः**) दिव्याः (**वर्षन्ति**) (**वृष्टयः**)॥३॥

**अन्वयः**-हे स्त्रि! या दृळ्हा त्वं क्ष्मया वनस्पतीन् दर्धर्षि यद्याश्चित्तेऽभ्रस्य दिवो विद्युतो वृष्टयो वर्षन्ति तास्त्वमोजसा धर॥३॥

**भावार्थः**-या स्त्री पृथिवीवत् क्षमान्विता पुत्रपौत्रादियुक्ता भवति सा वृष्टिवत्सुखवर्षिका भवतीति॥३॥

अत्र मेघविद्वत्स्त्रीगुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति चतुरशीतितमं सूक्तमेकोनत्रिंशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे स्त्रि! (**या**) जो (**दृळ्हा**) दृढ़ तुम (**क्ष्मया**) पृथिवी से (**वनस्पतीन्**) वृक्षादिकों को (**दर्धर्षि**) अत्यन्त धारण करती हो और (**यत्**) जो (**चित्**) निश्चित (**ते**) आप के (**अभ्रस्य**) घन की



www.9009.co.in

**(दिवः)** अन्तरिक्ष में हुई **(विद्युतः)** बिजुली और **(वृष्टयः)** वर्षायें **(वर्षन्ति)** वर्षती हैं, उनको तुम **(ओजसा)** बल से धारण करो॥३॥

**भावार्थः**-जो स्त्री पृथिवी के सदृश क्षमा से युक्त और पुत्र-पौत्रादि से युक्त होती है, वह वृष्टि के सदृश सुखों को वर्षाने वाली होती है॥३॥

इस सूक्त में मेघ, विद्वान् और स्त्री के गुण-वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह चौरासीवां सूक्त और उनतीसवां वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

**अथाष्टर्चस्य पञ्चाशीतितमस्य सूक्तस्य अत्रिर्ऋषिः। वरुणो देवता। १, २ विराड्त्रिष्टुप्। ३, ४, ६, ८ निचृत्त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः। ५ स्वराट् पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः। ७ ब्राह्म्युष्णिक् छन्दः ऋषभः स्वरः॥**

***अथ मनुष्यैः किं कर्त्तव्यमित्याह॥***

अब आठ ऋचा वाले पचासीवें सूक्त का आरम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में मनुष्यों को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**प्र स॒म्राजे॑ बृ॒हद॑र्चा गभी॒रं ब्रह्म॑ प्रि॒यं वरु॑णाय श्रु॒ताय॑।**

**वि यो ज॒घान॑ शमि॒तेव॒ चर्मो॑प॒स्तिरे॑ पृथि॒वीं सूर्या॑य॥ १॥**

**प्र। स॒म्ऽराजे॑। बृ॒हत्। अ॒र्च॒। ग॒भी॒रम्। ब्रह्म॑। प्रि॒यम्। वरु॑णाय। श्रु॒ताय॑। वि। यः। ज॒घान॑। श॒मि॒ताऽइ॑व। चर्म॑। उ॒प॒ऽस्तिरे॑। पृ॒थि॒वीम्। सूर्या॑य॥ १॥**

**पदार्थः**-(**प्र**) (**सम्राजे**) यः सम्यग्राजते तस्मै (**बृहत्**) महत् (**अर्चा**) सत्कुरु। अत्र **द्व्यचोऽतस्तिङ** इति दीर्घः। (**गभीरम्**) अगाधम् (**ब्रह्म**) धनमन्नं वा (**प्रियम्**) यत्पृणाति (**वरुणाय**) श्रेष्ठाय (**श्रुताय**) विषिद्धकीर्तये (**वि**) (**यः**) (**जघान**) हन्ति (**शमितेव**) यथा यज्ञमयः (**चर्म**) (**उपस्तिरे**) आस्तरणे (**पृथिवीम्**) (**सूर्य्याय**) सवित्रे॥ १॥

**अन्वयः**-हे मनुष्य! यः सवितेव दुष्टान् वि जघान सूर्य्यायोपस्तिरे चर्म पृथिवीं शमितेव प्राप्नोति तथा त्वं वरुणाय श्रुताय सम्राजे बृहद्गभीरं प्रियं ब्रह्म प्रार्चा॥ १॥

**भावार्थः**-ये मनुष्या यजमानवद्राजानं सुखयन्ति ते महदैश्वर्य्यं लभन्ते॥ १॥

**पदार्थः**-हे मनुष्य! (**यः**) जो रचने वाले के सदृश दुष्टों का (**वि, जघान**) नाश करता और (**सूर्य्याय**) रचने वाले के लिये (**उपस्तिरे**) बिछौने पर (**चर्म**) चमड़े और (**पृथिवीम्**) पृथिवी को (**शमितेव**) जैसे यज्ञमय व्यवहार प्राप्त होता है, वैसे आप (**वरुणाय**) श्रेष्ठ (**श्रुताय**) विशेष करके सिद्ध यश वाले तथा (**सम्राजे**) उत्तम प्रकार शोभित के लिये (**बृहत्**) बड़े (**गभीरम्**) थाहरहित (**प्रियम्**) जो प्रसन्न करता उस (**ब्रह्म**) धन वा अन्न का (**प्र, अर्चा**) सत्कार करो॥ १॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य यजमान के सदृश राजा को सुखी करते हैं, वे बड़े ऐश्वर्य्य को प्राप्त होते हैं॥ १॥

**पुनस्स परमेश्वरः किं कृतवानित्याह॥**

फिर उस परमेश्वर ने क्या किया इस विषय को कहते हैं॥

**वने॑षु॒ व्य१॒॑न्तरि॑क्षं ततान॒ वाज॒मर्व॑त्सु॒ पय॑ उ॒स्रिया॑सु।**



www.9009.co.in

**हृत्सु क्रतुं वरुणो अप्स्वग्निं दिवि सूर्यमदधात्सोममद्रौ॥२॥**

**वनेषु। वि। अन्तरिक्षम्। ततान। वाजम्। अर्वत्ऽसु। पयः। उस्रियासु। हृत्ऽसु। क्रतुम्। वरुणः। अप्ऽसु। अग्निम्। दिवि। सूर्यम्। अदधात्। सोमम्। अद्रौ॥२॥**

**पदार्थः**-(**वनेषु**) किरणेषु जङ्गलेषु वा (**वि**) (**अन्तरिक्षम्**) जलम् (**ततान**) तनोति (**वाजम्**) वेगम् (**अर्वत्सु**) अश्वेषु (**पयः**) उदकं रसं वा (**उस्रियासु**) पृथिवीषु (**हृत्सु**) हृदयेषु (**क्रतुम्**) प्रज्ञानम् (**वरुणः**) श्रेष्ठः (**अप्सु**) आकाशप्रदेशेषु (**अग्निम्**) पावकम् (**दिवि**) प्रकाशे (**सूर्य्यम्**) (**अदधात्**) दधाति (**सोमम्**) रसम् (**अद्रौ**) मेघे॥२॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यो जगदीश्वरो वनेष्वन्तरिक्षमर्वत्सु वाजमुस्रियासु पयो हृत्सु क्रतुमप्स्वग्निं दिवि सूर्य्यमद्रौ सोममदधात्स वरुणः सर्वं जगद्वि ततान॥२॥

**भावार्थः**-हे विद्वांसो! येन जगदीश्वरेण सर्वं जगद् विस्तारितं तमेव सततं ध्यायन्तु॥२॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो जगदीश्वर (**वनेषु**) किरणों वा जंगलों में (**अन्तरिक्षम्**) जल को (**अर्वत्सु**) घोड़ों में (**वाजम्**) वेग को और (**उस्रियासु**) पृथिवियों में (**पयः**) जल वा रस को (**हृत्सु**) हृदयों में (**क्रतुम्**) विशेष ज्ञान को (**अप्सु**) आकाश प्रदेशों में (**अग्निम्**) अग्नि को (**दिवि**) प्रकाश में (**सूर्य्यम्**) सूर्य्य को (**अद्रौ**) मेघ में (**सोमम्**) रस को (**अदधात्**) धारण करता है वह (**वरुणः**) श्रेष्ठ परमात्मा सम्पूर्ण जगत् को (**वि, ततान**) विस्तृत करता है॥२॥

**भावार्थः**-हे विद्वानो! जिस जगदीश्वर ने सम्पूर्ण जगत् को विस्तृत किया, उसी का निरन्तर ध्यान करो॥२॥

**पुनरीश्वरः किं करोतीत्याह॥**

फिर ईश्वर क्या करता है, इस विषय को कहते हैं॥

**नीचीनबारं वरुणः कवन्धं प्र ससर्ज रोदसी अन्तरिक्षम्।**
**तेन विश्वस्य भुवनस्य राजा यवं न वृष्टिर्व्युनत्ति भूम॥३॥**

**नीचीनऽबारम्। वरुणः। कवन्धम्। प्र। ससर्ज। रोदसी इति। अन्तरिक्षम्। तेन। विश्वस्य। भुवनस्य। राजा। यवम्। न। वृष्टिः। वि। उनत्ति। भूम॥३॥**

**पदार्थः**-(**नीचीनबारम्**) यो नीचप्रदेशे वृष्टिं करोति तम् (**वरुणः**) परमेश्वरः (**कवन्धम्**) मेघम् (**प्र**) (**ससर्ज**) सृजति (**रोदसी**) द्यावापृथिव्यौ (**अन्तरिक्षम्**) जलम् (**तेन**) (**विश्वस्य**) सर्वस्य (**भुवनस्य**) ब्रह्माण्डस्य (**राजा**) प्रकाशकः (**यवम्**) यवादिधान्यम् (**न**) इव (**वृष्टिः**) (**वि**) (**उनत्ति**) क्लेदयति (**भूम**) भवेम॥३॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यो वरुणो नीचीनबारं कवन्धं रोदसी अन्तरिक्षं प्र ससर्ज विश्वस्य भुवनस्य राजा वृष्टिर्यवं न व्युनत्ति तेन सह वयं सुखिनो भूम॥३॥



www.9009.co.in

**भावार्थ:**-अत्रोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यूयं जगत्स्रष्टारं जगदीश्वरमुपास्य राजानो भूत्वा शस्यादि मेघवत्प्रजाः पालयत॥३॥

**पदार्थ:**-हे मनुष्यो! जो **(वरुण:)** श्रेष्ठ परमेश्वर **(नीचीनबारम्)** नीचे के स्थानों में वृष्टि करने वाले **(कवन्धम्)** मेघ को और **(रोदसी)** अन्तरिक्ष और पृथिवी तथा **(अन्तरिक्षम्)** जल को **(प्र, ससर्ज)** उत्तमता से उत्पन्न करता है और **(विश्वस्य)** सम्पूर्ण **(भुवनस्य)** ब्रह्माण्ड का **(राजा)** प्रकाशक परमात्मा **(वृष्टि:)** वृष्टि **(यवम्)** यव आदि धान्य को **(न)** जैसे वैसे **(वि, उनत्ति)** विशेष करके गीला करता है **(तेन)** उससे हम लोग सुखी **(भूम)** होवें॥३॥

**भावार्थ:**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! आप लोग जगत् के रचने वाले जगदीश्वर की उपासना करके और राजा होकर जैसे धान्य आदि का मेघ वैसे प्रजाओं का पालन कीजिये॥३॥

**अथ राजानः कथं वर्त्तेरन्नित्याह॥**

अब राजाजन कैसा वर्त्ताव करें, इस विषय को कहते हैं॥

**उनत्ति भूमिं पृथिवीमुत द्यां यदा दुग्धं वरुणो वष्ट्यादित्।**

**समभ्रेण वसत पर्वतासस्तविषीयन्तः श्रथयन्त वीराः॥४॥**

**उनत्ति। भूमिम्। पृथिवीम्। उत। द्याम्। यदा। दुग्धम्। वरुणः। वष्टि। आत्। इत्। सम्। अभ्रेण। वसत। पर्वतासः। तविषीऽयन्तः। श्रथयन्त। वीराः॥४॥**

**पदार्थ:**-**(उनत्ति)** आर्द्रीकरोति **(भूमिम्)** **(पृथिवीम्)** विस्तीर्णम् **(उत)** **(द्याम्)** प्रकाशम् **(यदा)** **(दुग्धम्)** **(वरुण:)** वायुरिव राजा **(वष्टि)** कामयते **(आत्)** **(इत्)** एव **(सम्)** **(अभ्रेण)** मेघेन। **अभ्र इति मेघनामसु पठितम्।** (निघं०१.१०) **(वसत)** **(पर्वतास:)** मेघाः **(तविषीयन्त:)** सेनां कामयमानाः **(श्रथयन्त)** हिंसत **(वीरा:)**॥४॥

**अन्वय:**-हे राजन्! यदा वरुणेऽभ्रेण पृथिवीं भूमिमुत द्यां समुनत्त्यादिद्वरुणो दुग्धं वष्टि। हे तविषीयन्तो वीरा! यूयं पर्वतास इवात्र वसत श्रथयन्त॥४॥

**भावार्थ:**-त एव राजानः श्रेष्ठाः सन्ति ये प्रजाहितं कामयन्ते यथा मेघाः सर्वेषां सुखानि वर्षयन्ति तथैव नृपाः प्रजानां कामानलङ्कुर्य्युः॥४॥

**पदार्थ:**-हे राजन्! **(यदा)** जब **(वरुण:)** वायु के सदृश राजा **(अभ्रेण)** मेघ से **(पृथिवीम्)** विस्तीर्ण **(भूमिम्)** भूमि को और **(उत)** भी **(द्याम्)** प्रकाश को **(सम्, उनत्ति)** गीला करता है **(आत्)** उसके अनन्तर **(इत्)** ही वायु के सदृश राजा **(दुग्धम्)** दुग्ध की **(वृष्टि)** कामना करता है और हे **(तविषीयन्त:)** सेना की कामना करते हुए **(वीरा:)** शूरवीरो! आप लोग **(पर्वतास:)** मेघों के सदृश यहाँ **(वसत)** वास करिये और **(श्रथयन्त)** अर्थात् शत्रुओं का नाश करिये॥४॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-वे ही राजा श्रेष्ठ हैं, जो प्रजा के हित की कामना करते हैं और जैसे मेघ सब के सुखों की वृष्टि करते हैं, वैसे ही राजा लोग प्रजाओं की कामनाओं को पूर्ण करें॥४॥

**अथ विद्वदीश्वरौ किं कुरुत इत्याह॥**

अब विद्वान् और ईश्वर क्या करते हैं, इस विषय को कहते हैं॥

**इमामू ष्वासुरस्य श्रुतस्य महीं मायां वरुणस्य प्र वोचम्।**

**मानेनेव तस्थिवाँ अन्तरिक्षे वि यो ममे पृथिवीं सूर्येण॥५॥३०॥**

**इमाम्। ऊँ इति। सु। आसुरस्य। श्रुतस्य। महीम्। मायाम्। वरुणस्य। प्र। वोचम्। मानेनऽइव। तस्थिऽवान्। अन्तरिक्षे। वि। यः। ममे। पृथिवीम्। सूर्येण॥५॥**

**पदार्थः-(इमाम्)** **(उ)** **(सु)** **(आसुरस्य)** मेघभवस्य **(श्रुतस्य)** **(महीम्)** पूज्यां वाणीम्। **महीति वाङ्नामसु पठितम्।** (निघं०१.११) **(मायाम्)** प्रज्ञाम् **(वरुणस्य)** श्रेष्ठस्य **(प्र)** **(वोचम्)** उपदिशेयम् **(मानेनेव)** सत्कारेणेव **(तस्थिवान्)** यस्तिष्ठति **(अन्तरिक्षे)** आकाशे **(वि)** **(यः)** **(ममे)** सृजति **(पृथिवीम्)** **(सूर्य्येण)** सवित्रा सह॥५॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथाहमिमां श्रुतस्याऽऽसुरस्य वरुणस्य महीं मायां युष्मदर्थं सु प्र वोचमु यस्तस्थिवान् मानेनेवान्तरिक्षे सूर्य्येण सह पृथिवीं वि ममे तमीश्वरं वि जानीत॥५॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यो मेघविद्याविदो वाणीं प्रज्ञां च प्रशंसति यश्च परमेश्वरो सर्वं जगद्रचयति तौ सदा सत्कुरुत॥५॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे मैं **(इमाम्)** इस **(श्रुतस्य)** सुने गये **(आसुरस्य)** मेघ में उत्पन्न हुए और **(वरुणस्य)** श्रेष्ठ की **(महीम्)** आदर करने योग्य वाणी और **(मायाम्)** बुद्धि का आप लोगों के लिये **(सु, प्र, वोचम्)** उत्तम प्रकार उपदेश करूं **(उ)** और **(यः)** जो **(तस्थिवान्)** ठहरने वाला **(मानेनेव)** सत्कार से जैसे वैसे **(अन्तरिक्षे)** आकाश में **(सूर्य्येण)** सूर्य्य के साथ **(पृथिवीम्)** पृथिवी को **(वि,ममे)** विस्तारता है, उसको ईश्वर जानो॥५॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जो मेघ की विद्या के जानने वाले की वाणी और बुद्धि की प्रशंसा करता है और जो परमेश्वर सम्पूर्ण जगत् को रचता है, उन दोनों का सदा सत्कार करो॥५॥

**पुनर्मनुष्याः किङ्कुर्युरित्याह॥**

फिर मनुष्य क्या करें, इस विषय को कहते हैं॥

**इमामू नु कवितमस्य मायां महीं देवस्य नकिरा दधर्ष।**

**एकं यदुद्ना न पृणन्त्येनीरासिञ्चन्तीरवनयः समुद्रम्॥६॥**

इमाम्। ॐ इति। नु। कविऽतमस्य। मायाम्। महीम्। देवस्य। नकिः। आ। दुधर्ष। एकम्। यत्। उद्ना। न। पृणन्ति। एनीः। आऽसिञ्चन्तीः। अवनयः। समुद्रम्॥६॥

**पदार्थः**-(**इमाम्**) (उ) (**नु**) (**कवितमस्य**) अतिशयेन कवेः (**मायाम्**) मेघाम् (**महीम्**) वाणीम् (**देवस्य**) (**नकिः**) (**आ**) (**दधर्ष**) आधृष्णोति (**एकम्**) (**यत्**) याः (**उद्ना**)[86] उदकेन (**न**) इव (**पृणन्ति**) पूरयन्ति (**एनीः**) एन्यो मृगस्त्रिय इव धावन्त्यः (**आसिञ्चन्तीः**) समन्तात् सिञ्चन्त्यः (**अवनयः**) अवन्ति यास्ता नद्यः। **अवनय इति नदीनामसु पठितम्।** (निघं०१.१३) (**समुद्रम्**) सागरम्॥६॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! य इमां कवितमस्य देवस्य मायामु महीं कोऽपि नु नकिराऽऽदधर्ष यद्या उद्ना नैनीरासिञ्चन्तीरवनय एकं समुद्रं पृणन्ति ता यूयं यथावद्विजानीत॥६॥

**भावार्थः**-ये मनुष्या महाविदुषां सकाशान्महतीं प्रज्ञां वाचं च प्राप्यान्यान् प्रापयन्ति त एव जगति धन्याः सन्ति॥६॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो (**इमाम्**) इस (**कवितमस्य**) अतिशय कविजन (**देवस्य**) विद्वान् की (**मायाम्**) बुद्धि को (उ) और (**महीम्**) वाणी को कोई भी (**नु**) शीघ्र (**नकिः**) नहीं (**आ, दधर्ष**) दबाता है और (**यत्**) जो (**उद्ना**) जल से (**न**) जैसे वैसे (**एनीः**) हरिणियों के सदृश दौड़तीं और (**आसिञ्चन्तीः**) चारों और सींचती हुईं (**अवनयः**) रक्षा करने वाली नदियां (**एकम्**) एक (**समुद्रम्**) समुद्र को (**पृणन्ति**) पूर्ण करती हैं, उनको आप लोग यथावत् जानिये॥६॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य बड़े विद्वानों के समीप से बड़ी बुद्धि और वाणी को प्राप्त होकर अन्यों के लिये प्राप्त कराते हैं, वे ही संसार में धन्य होते हैं॥६॥

**मनुष्यैः प्रमादात् कस्यापि प्रमादं कृत्वा सद्य एव निवारणीयः॥**

मनुष्यों को चाहिये कि प्रमाद से किसी के प्रमाद को करके शीघ्र निवृत्त करावें॥

**अर्यम्यं वरुण मित्र्यं वा सखायं वा सदमिद् भ्रातरं वा।**
**वेशं वा नित्यं वरुणारणं वा यत्सीमागश्चकृमा शिश्रथस्तत्॥७॥**

**अर्यम्यम्। वरुण। मित्र्यम्। वा। सखायम्। वा। सदम्। इत्। भ्रातरम्। वा। वेशम्। वा। नित्यम्। वरुण। अरणम्। वा। यत्। सीम। आगः। चकृम। शिश्रथः। तत्॥७॥**

**पदार्थः**-(**अर्य्यम्यम्**) अर्य्यमसु न्यायाधीशेषु भवम् (**वरुण**) श्रेष्ठ विद्वन् (**मित्र्यम्**) मित्रेषु भवम् (**वा**) (**सखायम्**) (**वा**) (**सदम्**) सीदन्ति यस्मिंस्तद्गृहम् (**इत्**) एव (**भ्रातरम्**) (**वा**) (**वेशम्**) यो विशति तम् (**वा**) (**नित्यम्**) (**वरुण**) (**अरणम्**) उदकम् (**वा**) अथवा (**यत्**) (**सीम्**) सर्वतः (**आगः**) अपराधम् (**चकृमा**) कुर्य्याम (**शिश्रथः**) प्रयतस्व हिन्धि वा (**तत्**)॥७॥

८६. अन्यत्र भाष्येषु 'उद्गा' उपलभ्यते।



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे वरुण! अर्य्यम्यं मित्र्यं वा सखायं सदमिद् वा भ्रातरं वा वेशं वा हे वरुण! नित्यमरणं वा सीं यदागो वयं चकृमा तत्सर्वं त्वं शिश्रथः॥७॥

**भावार्थः**-हे विद्वांसोऽज्ञानात्प्रमादाद्वा श्रेष्ठेषु पुरुषेषु वयं यद् प्रमादं कुर्य्याम तत्सर्वं भवन्तो निवारयन्तु॥७॥

**पदार्थः**-हे **(वरुण)** श्रेष्ठ विद्वन्! **(अर्य्यम्यम्)** न्यायधीशों में हुए और **(मित्र्याम्)** मित्रों में हुए **(वा)** अथवा **(सखायम्)** मित्र और **(सदम्)** स्थित होते हैं जिसमें उस गृह **(इत्)** ही **(वा)** वा **(भ्रातरम्)** भ्राता **(वा)** अथवा **(वेशम्)** प्रविष्ट होने वाले को **(वा)** अथवा हे **(वरुण)** श्रेष्ठ विद्वन्! **(नित्यम्)** नित्य **(अरणम्)** जल को **(वा)** वा **(सीम्)** सब ओर से **(यत्)** जिस **(आगः)** अपराध को हम लोग **(चकृमा)** करें **(तत्)** उस सबका आप **(शिश्रथः)** प्रयत्न करिये वा नाश करिये॥७॥

**भावार्थः**-हे विद्वान् जनो! अज्ञान वा प्रमाद से श्रेष्ठ पुरुषों से हम लोग जो प्रमाद करें, उस सम्पूर्ण को आप निवृत्त कीजिये॥७॥

**के मनुष्याः सत्कर्त्तव्यास्तिरस्करणीयाश्चेत्याह॥**

कौन से मनुष्य सत्कार और कौन तिरस्कार करने योग्य हैं, इस विषय को कहते हैं॥

**कितवासो यद्रिरिपुर्न दीवि यद्वा घा सत्यमुत यन्न विद्म।**

**सर्वा ता वि ष्य शिथिरेव देवाधा ते स्याम वरुण प्रियासः॥८॥३१॥**

**कितवासः। यत्। रिरिपुः। न। दीवि। यत्। वा। घ। सत्यम्। उत। यत्। न। विद्म। सर्वा। ता। वि। स्य। शिथिराऽइव। देव। अध। ते। स्याम। वरुण। प्रियासः॥८॥**

**पदार्थः**-**(कितवासः)** द्यूतकाराः **(यत्)** ये **(रिरिपुः)** आरोपयन्ति **(न)** निषेधे **(दीवि)** द्यूतकर्म्मणि **(यत्)** **(वा)** **(घा)** एव। अत्र **ऋचि तुनुघेति** दीर्घः। **(सत्यम्)** सत्सु साधुम् **(उत)** **(यत्)** **(न)** **(विद्म)** **(सर्वा)** सर्वाणि **(ता)** तानि **(वि)** **(स्य)** अन्तं कुरु **(शिथिरेव)** यथा शिथिलाः **(देव)** विद्वन् **(अधा)** अत्र **निपातस्य चेति** दीर्घः। **(ते)** तव **(स्याम)** **(वरुण)** **(प्रियासः)** प्रसन्नाः॥८॥

**अन्वयः**-हे वरुण देव! यद्ये कितवासो दीवि न रिरिपुर्यद्वा सत्यमुत न विद्म यद् घा न विद्म ता सर्वा शिथिरेव त्वं विष्य यतोऽधा वयं ते प्रियासः स्याम॥८॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! ये छलिनो मनुष्या द्यूतादिकर्म्म कुर्य्युस्ते ताडनीया ये च सत्यमाचरणं कुर्य्युस्ते सत्कर्त्तव्या इति॥८॥

अत्र राजेश्वरमेघविद्वद्गुणकर्मवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति पञ्चाशीतितमं सूक्तमेकत्रिंशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे **(वरुण)** श्रेष्ठ **(देव)** विद्वन्! **(यत्)** जो **(कितवासः)** जुआ करने वाले **(दीवि)** जुआरूप कर्म्म में **(न)** नहीं **(रिरिपुः)** आरोपित करते हैं **(वा)** अथवा **(यत्)** जिस **(सत्यम्)** श्रेष्ठों में श्रेष्ठ



www.9009.co.in

को **(उत)** तर्क वितर्क से **(न)** न **(विद्म)** जानें और **(यत्)** जिसे **(घा)** ही नहीं जानें **(ता)** उन **(सर्वा)** सम्पूर्णों को **(शिथिरेव)** जैसे शिथिल वैसे आप **(वि, स्य)** अन्त करिये जिससे **(अधा)** इसके अनन्तर हम लोग **(ते)** आपके **(प्रियासः)** प्रसन्न प्यारे **(स्याम)** होवें॥८॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो छली मनुष्य जुआ आदि कर्म्म करें वे ताड़ना करने योग्य और जो सत्य आचरण करें वे सत्कार करने योग्य हैं॥८॥

इस सूक्त में राजा, ईश्वर, मेघ और विद्वान् के गुण [और] कर्म [का] वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ संगति जाननी चाहिये॥

**यह पच्चासीवां सूक्त और एकतीसवां वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

**अथ षड्चस्य षडशीतितमस्य सूक्तस्य अत्रिर्ऋषिः। इन्द्राग्नी देवते। १, ४, ५ स्वराडुष्णिक् छन्दः। ऋषभः स्वरः। २, ३ विराडनुष्टुप् छन्दः। ६ विराट्पूर्वानुष्टुप् छन्दः। गान्धारः स्वरः॥**

***अथ विद्वांसः किं कुर्वन्तीत्याह॥***

अब छः ऋचा वाले छियासीवें सूक्त का आरम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में विद्वान् जन क्या करते हैं, इस विषय को कहते हैं॥

**इन्द्राग्नी यमवथ उभा वाजेषु मर्त्यम्।**

**दृळ्हा चित्स प्र भेदति द्युम्ना वाणीरिव त्रितः॥ १॥**

**इन्द्राग्नी इति। यम्। अवथः। उभा। वाजेषु। मर्त्यम्। दृळ्हा। चित्। सः। प्र। भेदति। द्युम्ना। वाणीःऽइव। त्रितः॥ १॥**

**पदार्थः-(इन्द्राग्नी)** वायुविद्युताविवाध्यापकोपदेशकौ **(यम्) (अवथः)** रक्षथः **(उभा) (वाजेषु)** सङ्ग्रामेषु **(मर्त्यम्)** मनुष्यम् **(दृळ्हा)** स्थिराणि **(चित्)** अपि **(सः) (प्र) (भेदति)** भिनत्ति **(द्युम्ना)** धनानि यशांसि वा **(वाणीरिव) (त्रितः)** त्रिभ्योऽध्यापनोपदेशनरक्षणेभ्यः॥ १॥

**अन्वयः**-हे इन्द्राग्नी इवाऽध्यापकोपदेशकौ! युवामुभा वाजेषु यं मर्त्यमवथः स चित्त्रितो वाणीरिव दृळ्हा द्युम्ना प्र भेदति॥ १॥

**भावार्थः**-यत्र धार्मिका विद्वांसः शूरा बलिष्ठाः शिक्षकाश्च सन्ति तत्र कोऽपि न दुःखं प्राप्नोतीति॥ १॥

**पदार्थः**-हे **(इन्द्राग्नी)** वायु और बिजुली के सदृश अध्यापक और उपदेशको! तुम **(उभा)** दोनों **(वाजेषु)** संग्रामों में **(यम्)** जिस **(मर्त्यम्)** मनुष्य की **(अवथः)** रक्षा करते हो **(सः)** वह **(चित्)** भी **(त्रितः)** तीन अर्थात् अध्यापन, उपदेशन और रक्षण से **(वाणीरिव)** जैसे वाणियों का वैसे **(दृळ्हा)** स्थिर **(द्युम्ना)** धनों वा यशों का **(प्र, भेदति)** अत्यन्त भेद करता है॥ १॥

**भावार्थः**-जहाँ धार्मिक, विद्वान्, शूरवीर, बलिष्ठ और शिक्षक हैं, वहाँ पर कोई भी नहीं दुःख को प्राप्त होता है॥ १॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**या पृतनासु दुष्टरा या वाजेषु श्रवाय्या।**

**या पञ्च चर्षणीरभीन्द्राग्नी ता हवामहे॥ २॥**

**या। पृतनासु। दुस्तरा। या। वाजेषु। श्रवाय्या। या। पञ्च। चर्षणीः। अभि। इन्द्राग्नी इति। ता। हवामहे॥ २॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**या**) यौ सेनाशिक्षकयोधयितारौ (**पृतनासु**) सेनासु (**दुष्टरा**) दुःखेन तरितुमुल्लङ्घयितुं योग्यौ (**या**) (**वाजेषु**) अन्नादिषु सङ्ग्रामेषु वा (**श्रवाय्या**) प्रशंसनीयौ (**या**) (**पञ्च**) (**चर्षणीः**) प्राणान् मनुष्यान् वा (**अभि**) अभिमुख्ये (**इन्द्राग्नी**) वायुविद्युताविव (**ता**) तौ (**हवामहे**) स्वीकुर्य्याम प्रशंसेम वा॥२॥

**अन्वयः**-हे इन्द्राग्नी वायुविद्युद्वद्वर्त्तमानौ सेनापत्यध्यक्षौ! या पृतनासु दुष्टरा या वाजेषु श्रवाय्या या पञ्च चर्षणीरभि रक्षतस्ता वयं हवामहे॥२॥

**भावार्थः**-नरेशसेनापतिभ्यां सुपरीक्ष्य सेनायामध्यक्षा भृत्याः संरक्षणीया यतस्सर्वदा विजयः सम्भवेत्॥२॥

**पदार्थः**-हे (**इन्द्राग्नी**) वायु और बिजुली के समान वर्त्तमान सेनापति और अध्यक्ष! (**या**) जो सेना के शिक्षक और लड़ाने वाले (**पृतनासु**) सेनाओं में (**दुष्टरा**) दुःख से उल्लंघन करने योग्य (**या**) जो (**वाजेषु**) अन्नादिकों वा संग्रामों में (**श्रवाय्या**) प्रशंसा करने योग्य (**या**) जो (**पञ्च**) पांच (**चर्षणीः**) प्राणों वा मनुष्यों को (**अभि**) सम्मुख रक्षा करते हैं (**ता**) उन दोनों को हम लोग (**हवामहे**) स्वीकार करें वा प्रशंसा करें॥२॥

**भावार्थः**-राजा और सेनापति को चाहिये कि उत्तम प्रकार परीक्षा करके सेना के अध्यक्ष भृत्यों को रक्खें, जिससे सर्वदा विजय होवे॥२॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**तयोरिदमवच्छवस्तिग्मा दिद्युन्मघोनोः।**

**प्रति द्रुणा गभस्त्योर्गवां वृत्रघ्न एषते॥३॥**

**तयोः। इत्। अमऽवत्। शवः। तिग्मा। दिद्युत्। मघोनोः। प्रति। द्रुणा। गभस्त्योः। गवाम्। वृत्रऽघ्ने। आ। ईषते॥३॥**

**पदार्थः**-(**तयोः**) पूर्वोक्तयोः सेनापत्यध्यक्षयोः (**इत्**) एव (**अमवत्**) गृहवत् (**शवः**) बलम् (**तिग्मा**) तीव्रा (**दिद्युत्**) (**मघोनोः**) बहुधनयुक्तयोः (**प्रति**) (**द्रुणा**) गन्तारौ (**गभस्त्योः**) भुजयोः (**गवाम्**) किरणानाम् (**वृत्रघ्ने**) मेघहन्त्रे (**आ**) (**ईषते**) हिनस्ति॥३॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथा सूर्य्यो वृत्रघ्ने गवामेषते यौ द्रुणा वर्त्तेते तयोरिन्मघोनोर्गभस्त्यो- रमवच्छवस्तिग्मा दिद्युद्वर्त्तते तथा तां यूयं प्रति गृह्णीत॥३॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे राजपुरुषा! यथा सूर्य्यो मेघं हत्वा प्रजाः पालयति तथैव यूयं दुष्टान् हत्वा प्रजाः सततं रक्षत॥३॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे सूर्य्य **(वृत्रघ्ने)** मेघ के नाश करने वाले के लिये **(गवाम्)** किरणों का **(आ, ईषते)** सब प्रकार नाश करता है और जो दोनों **(द्रुणा)** चलने वाले वर्त्तमान हैं **(तयोः, इत्)** उन्हीं सेनापति और सेनाध्यक्ष और **(मघोनोः)** बहुत धन से युक्त **(गभस्त्योः)** भुजाओं के **(अमवत्)** गृह के सदृश **(शवः)** बलयुक्त **(तिग्मा)** तीव्र **(दिद्युत्)** बिजुली है, वैसे उसको आप लोग **(प्रति)** ग्रहण करें॥३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे राजपुरुषो! जैसे सूर्य्य मेघ का नाश करके प्रजाओं का पालन करता है, वैसे ही आप लोग दुष्टों का नाश करके प्रजाओं की निरन्तर रक्षा कीजिये॥३॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**ता वामेषे रथानामिन्द्राग्नी हवामहे।**

**पती तुरस्य राधसो विद्वांसा गिर्वणस्तमा॥४॥**

**ता। वाम्। एषे। रथानाम्। इन्द्राग्नी इति। हवामहे। पती इति। तुरस्य। राधसः। विद्वांसा। गिर्वणःऽतमा॥४॥**

**पदार्थः**-**(ता)** तौ **(वाम्)** युवाम् **(एषे)** एतुम् **(रथानाम्)** **(इन्द्राग्नी)** वायुविद्युतौ **(हवामहे)** प्राप्तुमिच्छेम **(पती)** पालकौ **(तुरस्य)** शीघ्रं सुखकरस्य **(राधसः)** धनस्य **(विद्वांसा)** विद्यायुक्तौ **(गिर्वणस्तमा)** अतिशयेन सुशिक्षितां वाचं सेवमानौ॥४॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यौ रथानां तुरस्य राधसः पती गिर्वणस्तमा विद्वांसेन्द्राग्नी वामेषे वयं हवामहे ता यूयमपि प्राप्नुत॥४॥

**भावार्थः**-मनुष्यैर्वायुविद्युद्वच्छुभगुणव्यापिनां विदुषां सङ्गेन विद्याशिक्षे प्राप्य प्रजासु मित्रवद्वर्त्तितव्यम्॥४॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो **(रथानाम्)** वाहनों और **(तुरस्य)** शीघ्र सुखकारक **(राधसः)** धन के **(पती)** पालन करने वाले **(गिर्वणस्तमा)** अतिशय उत्तम प्रकार शिक्षित वाणी का सेवन करते हुए **(विद्वांसा)** विद्या से युक्त **(इन्द्राग्नी)** वायु और बिजुली **(वाम्)** और आप दोनों को **(एषे)** प्राप्त होने के लिये हम लोग **(हवामहे)** प्राप्त होने की इच्छा करें **(ता)** उन दोनों को आप लोग भी प्राप्त होओ॥४॥

**भावार्थः**-मनुष्यों को चाहिये कि वायु और बिजुली के सदृश श्रेष्ठ गुणों से व्याप्त विद्वानों के सङ्ग से विद्या और शिक्षा को प्राप्त होकर प्रजाओं में मित्र के सदृश वर्त्ताव करें॥४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥



www.9009.co.in

**ता वृधन्तावनु द्यून् मर्ताय देवावदभा।**

**अर्हन्ता चित्पुरो दधेंऽशेव देवावर्वते॥५॥**

**ता। वृधन्तौ। अनु। द्यून्। मर्ताय। देवौ। अदभा। अर्हन्ता। चित्। पुरः। दधे। अंशाऽइव। देवौ। अर्वते॥५॥**

**पदार्थः**-(**ता**) तौ (**वृधन्तौ**) वर्धमानौ वर्धयन्तौ वा (**अनु**) (**द्यून्**) दिनान्यनु (**मर्त्ताय**) मनुष्याय (**देवौ**) दातारौ (**अदभा**) अहिंसकौ (**अर्हन्ता**) पूज्यौ (**चित्**) (**पुरः**) (**दधे**) (**अंशेव**) भागमिव (**देवौ**) देदीप्यमानौ (**अर्वते**) विज्ञानाय॥५॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यावंशेव सत्कर्त्तव्यौ मर्त्तायाऽनु द्यून् वृधन्तावदभाऽर्हन्ता देवावहं पुरो दधे यौ देवौ चिदर्वते वर्त्तेते ता यूयं सत्कुरुत॥५॥

**भावार्थः**-ये मनुष्या अहर्निशं मनुष्यहिताय प्रयतन्ते त एव सर्वैः पूज्या वर्त्तन्ते॥५॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो (**अंशेव**) भाग के सदृश सत्कार करने योग्य (**मर्त्ताय**) मनुष्य के लिये (**अनु, द्यून्**) प्रतिदिन (**वृधन्तौ**) बढ़ते वा बढ़ाते हुए (**अदभा**) नहीं हिंसा करने वाले (**अर्हन्ता**) आदर करने योग्य (**देवौ**) देने वाले को मैं (**पुरः**) आगे (**दधे**) धारण करता हूँ और जो (**देवौ**) प्रकाशमान दोनों (**चित्**) भी (**अर्वते**) विज्ञान के लिये वर्त्तमान हैं (**ता**) उन दोनों का आप लोग सत्कार करें॥५॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य दिनरात्रि मनुष्यों के हित के लिये प्रयत्न करते हैं, वे ही सब से आदर करने योग्य हैं॥५॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**एवेन्द्राग्निभ्यामहा वि हव्यं शूष्यं घृतं न पूतमद्रिभिः।**

**ता सूरिषु श्रवो बृहद्रयिं गृणत्सु दिधृतमिषं गृणत्सु दिधृतम्॥६॥३२॥**

**एव। इन्द्राग्निऽभ्याम्। अहा। वि। हव्यम्। शूष्यम्। घृतम्। न। पूतम्। अद्रिऽभिः। ता। सूरिषु। श्रवः। बृहत्। रयिम्। गृणत्ऽसु। दिधृतम्। इषम्। गृणत्ऽसु। दिधृतम्॥६॥**

**पदार्थः**-(**एव**) (**इन्द्राग्निभ्याम्**) सूर्य्याग्निभ्याम् (**अहा**) अहानि (**वि**) (**हव्यम्**) हव्यं ग्रहीतुमर्हम् (**शूष्यम्**) शूषे बले भवम् (**घृतम्**) आज्यम् (**न**) इव (**पूतम्**) पवित्रम् (**अद्रिभिः**) मेघैः (**ता**) तौ (**सूरिषु**) विद्वत्सु (**श्रवः**) अन्नम् (**बृहत्**) महत् (**रयिम्**) (**गृणत्सु**) स्तुवत्सु (**दिधृतम्**) धरतम् (**इषम्**) विज्ञानम् (**गृणत्सु**) (**दिधृतम्**)॥६॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! याभ्यामिन्द्राग्निभ्यामहाऽद्रिभिर्घृतन्न पूतं हव्यं शूष्यं श्रवो जायते गृणत्सु सूरिषु बृहद्रयिं यौ दिधृतं सूरिषु गृणत्स्विषं वि दिधृतं ता एव यथावद्वेदितव्यौ॥६॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यदि विद्वत्सु यूयं निवसतः तर्हि विद्युन्मेघादिविद्यां विजानीत॥६॥

अत्रेन्द्राग्निविद्युद्गुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति षडशीतितमं सूक्तं द्वात्रिंशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जिन **(इन्द्राग्निभ्याम्)** सूर्य्य और अग्नि से **(अहा)** दिनों को और **(अद्रिभिः)** मेघों से **(घृतम्)** घृत जैसे **(न)** वैसे **(पूतम्)** पवित्र **(हव्यम्)** ग्रहण करने योग्य **(शूष्यम्)** बल में उत्पन्न **(श्रवः)** अन्न होता है तथा **(गृणत्सु)** प्रशंसा करते हुए **(सूरिषु)** विद्वानों में **(बृहत्)** बड़े **(रयिम्)** धन को जो दोनों **(दिधृतम्)** धारण करें तथा **(गृणत्सु)** स्तुति करते हुए विद्वानों में **(इषम्)** विज्ञान को **(वि, दिधृतम्)** विशेष धारण करें **(ता)** वे दोनों **(एव)** ही यथावत् जानने के योग्य हैं॥६॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जो विद्वानों में आप लोग निवास करें तो बिजुली और मेघ आदि की विद्या को जानें॥६॥

इस सूक्त में इन्द्र, अग्नि और बिजुली के गुण-वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ संगति जाननी चाहिये।

**यह छियासीवां सूक्त और बत्तीसवां वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

**अथ नवर्चस्य सप्ताऽशीतितमस्य सूक्तस्य एवयामरुदात्रेय ऋषिः। मरुतो देवताः। १ अतिजगती। २, ५, ८, ९ स्वराड्जगती। ३, ६, ७ भुरिग्जगती। ४ निचृदतिजगती छन्दः। निषादः स्वरः॥**

*अथ मनुष्यान् कथं किं प्राप्नोतीत्याह॥*

अब नव ऋचा वाले सत्तासीवें सूक्त का प्रारम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में मनुष्यों को कैसे क्या प्राप्त होता है, इस विषय को कहते हैं॥

**प्र वो॑ म॒हे म॒तयो॑ यन्तु॒ विष्ण॑वे म॒रुत्व॑ते गिरि॒जा ए॑व॒याम॑रुत्।**
**प्र शर्धा॑य॒ प्रय॑ज्यवे सुखा॒दये॑ त॒वसे॑ भ॒न्ददि॑ष्टये धुनि॑व्रताय॒ शव॑से॥ १॥**

**प्र। व॒ः। म॒हे। म॒तय॑ः। य॒न्तु॒। विष्ण॑वे। म॒रुत्व॑ते। गि॒रि॒ऽजाः। ए॒व॒याम॑रुत्। प्र। शर्धा॑य। प्रऽय॑ज्यवे। सु॒ऽखा॒दये॑। त॒वसे॑। भ॒न्दत्ऽइ॑ष्टये। धुनि॑ऽव्रताय। शव॑से॥ १॥**

**पदार्थः-(प्र)** **(वः)** युष्मान् **(महे)** महते **(मतयः)** मनुष्या बुद्धयो वा **(यन्तु)** प्राप्नुवन्तु **(विष्णवे)** व्यापकाय **(मरुत्वते)** प्रशंसिता मनुष्या यस्मिँस्तस्मै **(गिरिजाः)** ये गिरौ मेघे जाताः **(एवयामरुत्)** य एवान् प्रापकान् यान्ति तेषां यो मरुन्मनुष्यः **(प्र)** **(शर्धाय)** बलाय **(प्रयज्यवे)** प्रयजन्ति येन तस्मै **(सुखादये)** यस्सुष्ठु खादति तस्मै **(तवसे)** बलिष्ठाय **(भन्ददिष्टये)** कल्याणसुखसङ्गतये **(धुनिव्रताय)** धुनानि कम्पितानि व्रतानि यस्य तस्मै **(शवसे)** बलाय॥ १॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथा मरुत्वते महे विष्णवे विद्युद्रूपाग्नये गिरिजा यन्ति तथा वो मतयः प्र यन्तु यथैवयामरुच्छर्धाय प्रयज्यवे सुखादये तवसे भन्ददिष्टये धुनिव्रताय शवसे प्र भवति तथा यूयमप्येतस्मै प्र भवत॥ १॥

**भावार्थः**-यथा विद्युद्रूपाग्निं मेघोत्पन्ना गर्जनादिप्रभावा गच्छन्ति यतोऽग्नीवायुसाध्यास्ते तथा धीमतः पुरुषानन्ये सम्प्राप्नुवन्ति गुणप्रापको गुणिनमन्विच्छत्यत्युत्तमं बलं चाप्नोति॥ १॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे **(मरुत्वते)** प्रशंसित मनुष्य जिसमें उस **(महे)** बड़े **(विष्णवे)** व्यापक बिजुलीरूप अग्नि के लिये **(गिरिजाः)** मेघ में उत्पन्न हुए प्राप्त होते हैं, वैसे **(वः)** आप लोगों को **(मतयः)** मनुष्य वा बुद्धियां **(प्र, यन्तु)** प्राप्त होवें और जैसे **(एवयामरुत्)** प्राप्त कराने वालों को प्राप्त होने वालों का मनुष्य **(शर्धाय)** बल के और **(प्रयज्यवे)** अत्यन्त यजन करते हैं जिससे उस **(सुखादये)** उत्तम प्रकार खाने वाले **(तवसे)** बलिष्ठ के लिये तथा **(भन्ददिष्टये)** कल्याण और सुख की संगति के लिये **(धुनिव्रताय)** और कंपित व्रत जिसका उस **(शवसे)** बल के लिये **(प्र)** समर्थ होता है, वैसे आप लोग भी इसके लिये समर्थ हूजिये॥ १॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-जैसे बिजुलीरूप अग्नि को मेघोत्पन्न गर्जनादि प्रभाव प्राप्त होते हैं, क्योंकि वे गर्जनादि प्रभाव अग्नि और वायु से सिद्ध होने योग्य हैं, वैसे बुद्धिमान् पुरुषों को अन्य पुरुष प्राप्त होते हैं। और गुण प्राप्त कराने वाला पुरुष गुणी पुरुष को ढूंढता है और अति उत्तम बल को भी प्राप्त होता है॥१॥

**पुनर्विद्वद्भिः किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

फिर विद्वानों को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**प्र ये जा॒ता म॑हि॒ना ये च॒ नु स्व॒यं प्र वि॒द्मना॑ ब्रु॒वत॑ एव॒याम॑रुत्।**

**क्रत्वा॒ तद्वो॑ मरुतो॒ नाधृषे॒ शवो॑ दा॒ना म॒ह्ना तदे॑षा॒मधृ॑ष्टासो॒ नाद्र॑यः॥२॥**

**प्र। ये। जा॒ताः। म॒हि॒ना। ये। च॒। नु। स्व॒यम्। प्र। वि॒द्मना॑। ब्रु॒वते॑। ए॒व॒याम॑रुत्। क्रत्वा॑। तत्। व॒ः। म॒रु॒तः। न। आ॒ऽधृषे॑। शव॑ः। दा॒ना। म॒ह्ना। तत्। ए॒षा॒म्। अधृ॑ष्टासः। न। अद्र॑यः॥२॥**

**पदार्थः**-**(प्र) (ये) (जाताः)** उत्पन्नाः **(महिना)** महत्त्वेन **(ये) (च) (नु)** सद्यः **(स्वयम्) (प्र) (विद्मना)** विज्ञानेन **(ब्रुवते)** उपदिशन्ति **(एवयामरुत्)** विज्ञानवान् मनुष्यः **(क्रत्वा)** प्रज्ञया कर्मणा वा **(तत्) (वः)** युष्माकम् **(मरुतः)** मनुष्याः **(न)** निषेधे **(आधृषे)** आधर्षितुम् **(शवः)** बलम् **(दाना)** दानेन **(मह्ना)** महत्त्वेन **(तत्) (एषाम्) (अधृष्टासः)** अप्रगल्भाः **(न)** इव **(अद्रयः)** मेघाः॥२॥

**अन्वयः**-हे मरुतो! मनुष्या ये महिना जाता ये विद्मना प्र ब्रुवते ये च स्वयं नु प्र ब्रुवते एवयामरुदहं क्रत्वा तेषां वस्तच्छवो दाना मह्ना वा नाऽऽधृषे प्र भवामि। अद्रयो नाऽधृष्टासो यदेषां शवोऽस्ति तन्नाऽऽधृषे प्र भवामि॥२॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। ये मनुष्याः सर्वेषामुपकारं कृत्वा प्राणवत्प्रिया भवन्ति त एव जगदुपकारका भवन्ति॥२॥

**पदार्थः**-हे **(मरुतः)** मनुष्यो! **(ये)** जो **(महिना)** महत्त्व से **(जाताः)** उत्पन्न हुए तथा **(ये)** जो **(विद्मना)** विज्ञान से **(प्र, ब्रुवते)** उपदेश देते हैं **(च)** और जो **(स्वयम्)** अपने से **(नु)** शीघ्र **(प्र)** विशेष करके उपदेश देते हैं और **(एवयामरुत्)** विज्ञान वाला मनुष्य मैं **(क्रत्वा)** बुद्धि वा कर्म्म से उन **(वः)** आप लोगों के **(तत्)** उस **(शवः)** बल को **(दाना)** देने से वा **(मह्ना)** महत्त्व से **(न)** नहीं **(आधृषे)** दबाने को समर्थ होता हूं तथा **(अद्रयः)** मेघों के **(न)** समान **(अधृष्टासः)** नहीं धर्षण किये गये जो **(एषाम्)** इनका बल है **(तत्)** उसको नहीं दबाने को समर्थ होता हूं॥२॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जो मनुष्य सब के उपकार को करके प्राणवत् प्रिय होते हैं, वे ही जगत् के उपकार करने वाले होते हैं॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**प्र ये दि॒वो बृ॑ह॒तः शृ॑ण्वि॒रे गि॒रा सु॒शुक्वा॑नः सु॒भ्व॑ एव॒याम॑रुत्।**



www.9009.co.in

**न येषामिरी सधस्थ ईष्ट आँ अग्नयो न स्वविद्युतः प्र स्यन्द्रासो धुनीनाम्॥३॥**

**प्र। ये। दिवः। बृहतः। शृण्विरे। गिरा। सुऽशुक्वानः। सुऽभ्वः। एवयामरुत्। न। येषाम्। इरी। सधऽस्थे। ईष्टे। आ। अग्नयः। न। स्वऽविद्युतः। प्र। स्यन्द्रासः। धुनीनाम्॥३॥**

**पदार्थः**-(**प्र**) (**ये**) (**दिवः**) कामयमानान् विद्युदादीन् वा (**बृहतः**) महतः (**शृण्विरे**) शृण्वन्ति (**गिरा**) वाण्या (**सुशुक्वानः**) सुष्ठु शुद्धाः (**सुभ्वः**) ये शोभने धर्म्ये व्यवहारे भवन्ति (**एवयामरुत्**) (**न**) निषेधे (**येषाम्**) (**इरी**) प्रेरकः (**सधस्थे**) समानस्थे (**ईष्टे**) ईशनं करोति (**आ**) समन्तात् (**अग्नयः**) पावकाः (**न**) इव (**स्वविद्युतः**) स्वेन रूपेण व्याप्तः (**प्र**) (**स्यन्द्रासः**) प्रस्रवन्तः प्रस्रावयन्तो वा (**धुनीनाम्**) कम्पनक्रियावतीनाम् भूम्यादीनाम्॥३॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! ये सुशुक्वानः सुभ्वो दिवः स्वविद्युतो धुनीनां स्यन्द्रासोऽग्नयो न गिरा बृहतः प्र शृण्विरे येषामेवयामरुदिरी सधस्थे न प्रेष्टे तान् यूयमा विजानीत॥३॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! ये विद्याकामा महतीर्विद्याः प्राप्य विद्युदादिपदार्थान् स्वाधीनान् कुर्वन्ति ते एव सिद्धेच्छा जायन्ते॥३॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! (**ये**) जो (**सुशुक्वानः**) उत्तम प्रकार शुद्ध (**सुभ्वः**) और सुन्दर धर्मयुक्त व्यवहार में होने वाले (**दिवः**) कामना करते हुओं वा बिजुली आदिकों को जैसे (**स्वविद्युतः**) अपने स्वरूप से व्याप्त और (**धुनीनाम्**) कम्पन क्रिया से युक्त भूमि आदिकों के (**स्यन्द्रासः**) पिघलते हुए वा पिघलाते हुए (**अग्नयः**) अग्नियां (**न**) वैसे (**गिरा**) वाणी से (**बृहतः**) बड़े (**प्र, शृण्विरे**) सुनते हैं और (**येषाम्**) जिनका (**एवयामरुत्**) विज्ञान वाला मनुष्य (**इरी**) प्रेरणा करने वाला (**सधस्थे**) समान स्थान में (**न**) जैसे वैसे (**प्र, ईष्टे**) स्वामी होता है, उनको आप लोग (**आ**) अच्छे प्रकार जानिये॥३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जो विद्या की कामना करने वाले जन बड़ी विद्याओं को प्राप्त होकर बिजुली आदि पदार्थों को स्वाधीन करते हैं, वे ही सिद्ध इच्छा वाले होते हैं॥३॥

**अथेश्वरोपासनविषयमाह॥**

अब ईश्वर के उपासनाविषय को कहते हैं॥

**स चक्रमे महतो निरुरुक्रमः समानस्मात्सदस एवयामरुत्।**
**यदायुक्त त्मना स्वादधि ष्णुभिर्विष्पर्धसो विमहसो जिगाति शेवृधो नृभिः॥४॥**

**सः। चक्रमे। महतः। निः। उरुऽक्रमः। समानस्मात्। सदसः। एवयामरुत्। यदा। अयुक्त। त्मना। स्वात्। अधि। स्नुऽभिः। विऽस्पर्धसः। विऽमहसः। जिगाति। शेऽवृधः। नृऽभिः॥४॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**सः**) (**चक्रमे**) क्रमते (**महतः**) (**निः**) नितराम् (**उरुक्रमः**) उरवो बहवः क्रमा यस्य (**समानस्मात्**) तुल्यात् (**सदसः**) गृहात् (**एवयामरुत्**) (**यदा**) (**अयुक्त**) युङ्क्ते (**त्मना**) आत्मना (**स्वात्**) (**अधि**) (**स्नुभिः**) पवित्रैर्गुणैः (**विष्पर्धसः**) ये विशेषेण स्पर्धन्ते तान् (**विमहसः**) विशेषेण महागुणविशिष्टान् (**जिगाति**) गच्छति (**शेवृधः**) सुखवर्धकान् (**नृभिः**) नेतृभिः॥४॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! य एवयामरुदुरुक्रमः समानस्मान्महतः सदसो निश्चक्रमे तं यस्त्मना यदाऽयुक्त स्नुभिर्नृभिश्च सह वर्तमानः स्वाद् विष्पर्धसो विमहसः शेवृधोऽधि जिगाति स परमेश्वर उपासनीयो योगी च सेवनीयः॥४॥

**भावार्थः**-ये मनुष्या विदुषः सकाशात् परमेश्वरयोगमभ्यस्यन्ति ते सुखधरा जायन्ते॥४॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो (**एवयामरुत्**) विज्ञान वाला मनुष्य (**उरुक्रमः**) जो बहुत क्रम वाला (**समानस्मात्**) तुल्य (**महतः**) बड़े (**सदसः**) गृह से (**निः**) निरन्तर (**चक्रमे**) क्रमण करता है उसको जो (**त्मना**) आत्मा से (**यदा**) जब (**अयुक्त**) युक्त होता है (**स्नुभिः**) तथा पवित्र गुणों और (**नृभिः**) नायकों के साथ वर्त्तमान (**स्वात्**) अपने से (**विष्पर्धसः**) विशेष करके स्पर्द्धा करने वाले (**विमहसः**) विशेष करके बड़े गुणों से विशिष्ट और (**शेवृधः**) सुख के बढ़ाने वालों को (**अधि, जिगाति**) प्राप्त होता है (**सः**) वह परमेश्वर उपासना करने योग्य और योगीजन सेवन करने योग्य है॥४॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य विद्वान् पुरुष के द्वारा परमेश्वर के योग का अभ्यास करते हैं, वे सुख के धारण करने वाले होते हैं॥४॥

**पुनर्विद्वांसो राजजनाः कीदृशा भवन्तीत्याह॥**

फिर विद्वान् राजाजन कैसे होते हैं, इस विषय को कहते हैं॥

**स्वनो न वोऽमवान् रेजयद् वृषा त्वेषो ययिस्तविष एवयामरुत्।**

**येना सहन्त ऋञ्जत स्वरोचिषः स्थारश्मानो हिरण्ययाः स्वायुधास इष्मिणः॥५॥३३॥**

**स्वनः। न। वः। अमऽवान्। रेजयत्। वृषा। त्वेषः। ययिः। तविषः। एवयामरुत्। येन। सहन्तः। ऋञ्जत। स्वऽरोचिषः। स्थाःऽरश्मानः। हिरण्ययाः। सुऽआयुधासः। इष्मिणः॥५॥**

**पदार्थः**-(**स्वनः**) शब्दः (**न**) इव (**वः**) युष्माकम् (**अमवान्**) गृहवन् (**रेजयत्**) कम्पयते (**वृषा**) बलिष्ठः (**त्वेषः**) दीप्तिमान् (**ययिः**) याता (**तविषः**) बलात् (**एवयामरुत्**) (**येना**) अत्र **संहितायामिति** दीर्घः। (**सहन्तः**) सोढारः (**ऋञ्जत**) प्रसाध्नुत (**स्वरोचिषः**) स्वयं रोची रोचनमेषान्ते (**स्थारश्मानः**) स्थिरा रश्मानः किरणा इव व्यवहारा येषान्ते (**हिरण्ययाः**) तेजोमयाः (**स्वायुधासः**) स्वकीयान्यायुधानि येषान्ते (**इष्मिणः**) बहुविधमिष्मेच्छा येषान्ते॥५॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! स वः स्वनो नाऽमवान् वृषा त्वेषस्तविषो ययिरेवयामरुत् व्यवहारान् रेजयत् येना सहन्तः स्वरोचिषः स्थारश्मानो हिरण्ययाः स्वायुधास इष्मिणो जना यूयं स्वप्रयोजनान्यृञ्जत॥५॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। ये प्रकाशितधर्म्यव्यवहारा शमदमान्वितास्तेजस्विनो बलिष्ठा युद्धविद्याकुशलाः स्युस्त एव विजयिनो भवन्ति॥५॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! वह **(वः)** आप लोगों के मध्य में **(स्वनः)** शब्द के **(न)** समान **(अमवान्)** गृह वाला **(वृषा)** बलिष्ठ और **(त्वेषः)** प्रकाशवान् **(तविषः)** बल से **(ययिः)** प्राप्त होने वाला **(एवयामरुत्)** बुद्धिमान् मनुष्य व्यवहारों को **(रेजयत्)** कंपित कराता है **(येना)** जिस पुरुष से **(सहन्तः)** सहन करने वाले **(स्वरोचिषः)** अपने से प्रकाश जिनका ऐसे और **(स्थारश्मानः)** स्थिर किरणों के सदृश व्यवहार जिनके तथा **(हिरण्ययाः)** तेजस्वरूप **(स्वायुधासः)** अपने आयुधों वाले और **(इष्मिणः)** बहुत प्रकार की इच्छा वाले जन आप लोग अपने प्रयोजनों को **(ऋञ्जत)** सिद्ध करें॥५॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जो प्रकाशित धर्म्मयुक्त व्यवहार वाले तथा शम, दम आदि से युक्त, तेजस्वी, बल वाले और युद्धविद्या में कुशल होवें, वे ही विजयी होते हैं॥५॥

**अथ विद्वद्भिः कान्निवार्य के सत्कर्त्तव्या इत्याह॥**

अब विद्वानों को किनका निवारण करके किनका सत्कार करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**अपारो वो महिमा वृद्धशवसस्त्वेषं शवोऽवत्वेवयामरुत्।**

**स्थातारो हि प्रसितौ संदृशि स्थन ते न उरुष्यता निदः शुशुक्वांसो नाग्नयः॥६॥**

**अपारः। वः। महिमा। वृद्धऽशवसः। त्वेषम्। शवः। अवतु। एवयामरुत्। स्थातारः। हि। प्रऽसितौ। सम्ऽदृशि। स्थन। ते। नः। उरुष्यत। निदः। शुशुक्वांसः। न। अग्नयः॥६॥**

**पदार्थः**-**(अपारः)** पाररहितः **(वः)** युष्माकम् **(महिमा)** **(वृद्धशवसः)** वृद्धं शवो बलं येषां तत्सम्बुद्धौ **(त्वेषम्)** प्रकाशितम् **(शवः)** बलम् **(अवतु)** **(एवयामरुत्)** **(स्थातारः)** ये तिष्ठन्ति **(हि)** यतः **(प्रसितौ)** प्रकृष्टे बन्धने **(संदृशि)** समानदर्शने **(स्थन)** तिष्ठत **(ते)** **(नः)** अस्मान् **(उरुष्यता)** सेवध्वम्। अत्र **संहितायामिति** दीर्घः। **(निदः)** ये निन्दन्ति **(शुशुक्वांसः)** शोकयुक्ताः **(न)** इव **(अग्नयः)** पावकाः॥६॥

**अन्वयः**-हे वृद्धशवसः स्थातारोऽग्नयो न वो योऽपारो महिमैवयामरुत्त्वेषं शवश्चावतु हि प्रसितौ निदः शुशुक्वांसः सन्तु ते यूयं संदृशि स्थन नोऽस्मानुरुष्यता॥६॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! ये निन्दका अर्थान्मिथ्यावादिनः स्युस्तान् सदा बन्धने प्रवेशयत। ये च महाशयाः परोपकारिणः स्तावकाः सत्यवादिनः स्युस्तान् सर्वदा सत्कुरुत॥६॥

**पदार्थः**-हे **(वृद्धशवसः)** बढ़े हुए बल वालो! **(स्थातारः)** स्थित होने वाले **(अग्नयः)** अग्नियां **(न)** जैसे वैसे **(वः)** आप लोगों का जो **(अपारः)** अपार **(महिमा)** बड़प्पन और **(एवयामरुत्)** बुद्धिमान् मनुष्य **(त्वेषम्)** प्रकाशित **(शवः)** बल की **(अवतु)** रक्षा करे **(हि)** जिससे कि **(प्रसितौ)** प्रकृष्ट बन्धन के



www.9009.co.in

रहने पर (**निदः**) निन्दा करने वाले (**शुशुक्वांसः**) शोक से युक्त होवें (**ते**) वे आप लोग (**संदृशि**) तुल्य दर्शन में (**स्थन**) स्थित हूजिये और (**नः**) हम लोगों का (**उरुष्यता**) सेवन करिये॥६॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जो निन्दक अर्थात् मिथ्यावादी होवें, उनको सदा बन्धन में प्रविष्ट करिये और जो महाशय, परोपकारी स्तुति करने और सत्य बोलने वाले होवें, उनका सदा सत्कार करिये॥६॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**ते रुद्रासः सुमखा अग्नयो यथा तुविद्युम्ना अवन्त्वेवयामरुत्।**

**दीर्घं पृथु पप्रथे सद्म पार्थिवं येषामज्मेष्वा महः शर्धांस्यद्भुतैनसाम्॥७॥**

**ते। रुद्रासः। सुऽमखाः। अग्नयः। यथा। तुविऽद्युम्नाः। अवन्तु। एवयामरुत्। दीर्घम्। पृथु। पप्रथे। सद्म। पार्थिवम्। येषाम्। अज्मेषु। आ। महः। शर्धांसि। अद्भुतऽएनसाम्॥७॥**

**पदार्थः**-(**ते**) (**रुद्रासः**) मध्यमा विद्वांसः (**सुमखाः**) शोभनन्यायाचरणयज्ञानुष्ठातारः (**अग्नयः**) अग्निवद्वर्त्तमानाः (**यथा**) येन प्रकारेण (**तुविद्युम्नाः**) बहुधनयशोन्विताः (**अवन्तु**) (**एवयामरुत्**) (**दीर्घम्**) (**पृथु**) विस्तीर्णं प्रख्यातं वा (**पप्रथे**) प्रख्यापयति (**सद्म**) सीदन्ति यस्मिन् (**पार्थिवम्**) पृथिव्यां विदितम् (**येषाम्**) (**अज्मेषु**) अजन्ति गच्छन्ति येषु सङ्ग्रामेषु (**आ**) (**महः**) (**शर्धांसि**) बलानि (**अद्भुतैनसाम्**) अद्भुतानि महान्त्येनांसि पापानि येषान्ते॥७॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! ते सुमखा रुद्रासो यथाऽग्नयस्तुविद्युम्ना अस्मानवन्तु येषामद्भुतैनसामज्मेषु शर्धांसि महो दीर्घं पृथु पार्थिवं सद्मैवयामरुदाऽऽपप्रथे॥७॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। ये मनुष्या अग्निवत्पापप्रणाशकाः सत्यप्रकाशकाः दुष्टानां रोदयितारः श्रेष्ठानां पालकाः सन्ति त एवातुलकीर्त्तयो भवन्ति॥७॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! (**ते**) वे (**सुमखाः**) सुन्दर न्यायाचरण और यज्ञ के करने वाले (**रुद्रासः**) मध्यम विद्वान् जन (**यथा**) जैसे (**अग्नयः**) अग्नि के सदृश वर्त्तमान (**तुविद्युम्नाः**) बहुत धन और यश से युक्त हुए हम लोगों की (**अवन्तु**) रक्षा करें (**येषाम्**) जिन (**अद्भुतैनसाम्**) अद्भुत बड़े पाप वालों के (**अज्मेषु**) संग्रामों में (**शर्धांसि**) बलों और (**महः**) बड़े (**दीर्घम्**) लम्बे (**पृथु**) विस्तृत वा प्रसिद्ध (**पार्थिवम्**) पृथिवी में विदित (**सद्म**) ठहरते हैं जिसमें उस स्थान को (**एवयामरुत्**) बुद्धिमान् पुरुष (**आ, प्रपथे**) अच्छे प्रकार प्रसिद्ध करता है॥७॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जो मनुष्य अग्नि के सदृश पाप के नाश करने, सत्य के प्रकाश करने और दुष्टों के रुलाने वाले, श्रेष्ठों के पालक हैं, वे ही अधिक कीर्त्ति वाले होते हैं॥७॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**



www.9009.co.in

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**अद्वेषो नो मरुतो गातुमेतन श्रोता हवं जरितुरेवयामरुत्।**

**विष्णोर्महः समन्यवो युयोतन स्मद्रथ्यो३ न दंसनाप द्वेषांसि सनुतः॥८॥**

**अद्वेषः। नः। मरुतः। गातुम्। आ। इतन। श्रोत। हवम्। जरितुः। एवयामरुत्। विष्णोः। महः। सऽमन्यवः। युयोतन। स्मत्। रथ्यः। न। दंसना। अप। द्वेषांसि। सनुतरिति॥८॥**

**पदार्थः**-(**अद्वेषः**) द्वेषरहितान् (**नः**) अस्माकम् (**मरुतः**) मानवाः (**गातुम्**) पृथिवीम् (**आ**) (**इतन**) प्राप्नुत (**श्रोता**) शृणुत। अत्र **द्व्यचोऽतस्तिङ** इति दीर्घः। (**हवम्**) प्रशंसनीयं व्यवहारम् (**जरितुः**) स्तुत्यस्य (**एवयामरुत्**) (**विष्णोः**) व्यापकस्य (**महः**) महत्त्वम् (**समन्यवः**) समानो मन्युः क्रोधो येषां ते (**युयोतन**) संयोजयत (**स्मत्**) एव (**रथ्यः**) रथेषु साधवः (**न**) इव (**दंसना**) कर्म्माणि (**अप**) दूरीकरणे (**द्वेषांसि**) द्वेषयुक्तानि कर्म्माणि (**सनुतः**) सनातनान्॥८॥

**अन्वयः**-हे समन्यवो मरुतो! यूयमेवयामरुदिव नोऽद्वेषः कुरुत गातुमेतन नो हवं श्रोता जरितुर्विष्णोर्महः स्मद्युयोतन रथ्यो न सनुतर्दंसनाऽप द्वेषांसि युयोतन॥८॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। ये विद्वांस उपदेशका मनुष्यान् द्वेषादिदोषरहितान् कुर्वन्ति ते व्यापकस्येश्वरस्य पदं प्राप्नुवन्ति॥८॥

**पदार्थः**-हे (**समन्यवः**) समान क्रोध वाले (**मरुतः**) मनुष्यो! आप लोग (**एवयामरुत्**) बुद्धिमान् मनुष्य के सदृश (**नः**) हम लोगों को (**अद्वेषः**) द्वेष से रहित करिये। और (**गातुम्**) पृथिवी को (**आ, इतन**) प्राप्त हूजिये तथा हम लोगों के (**हवम्**) श्रेष्ठ व्यवहार को (**श्रोता**) सुनिये (**जरितुः**) स्तुति करने योग्य (**विष्णोः**) व्यापक के (**महः**) महत्त्व को (**स्मत्**) ही (**युयोतन**) संयुक्त कीजिये और (**रथ्यः**) वाहनों के चलाने में कुशलों के (**न**) सदृश (**सनुतः**) सनातन (**दंसना**) कर्म्मों को और (**अप**) दूरीकरण के निमित्त (**द्वेषांसि**) द्वेषयुक्त कर्मों को संयुक्त कीजिये॥८॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जो विद्वान् और उपदेशक जन मनुष्यों को द्वेष आदि दोष से रहित करते हैं, वे व्यापक ईश्वर के पद को प्राप्त होते हैं॥८॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**गन्ता नो यज्ञं यज्ञियाः सुशमि श्रोता हवमरक्ष एवयामरुत्।**

**ज्येष्ठासो न पर्वतासो व्योमनि यूयं तस्य**

**प्रचेतसः स्यात दुर्धर्तवो निदः॥६॥३४॥६॥५॥**



www.9009.co.in

**गन्त॑। न॒ः। य॒ज्ञम्। य॒ज्ञि॒या॒ः। सु॒ऽशमि॑। श्रोत॑। हव॑म्। अ॒रक्षः॑। एव॑यामरुत्। ज्येष्ठा॑सः। न। पर्व॑तासः। विऽओ॑मानि। यू॒यम्। तस्य॑। प्र॒ऽचे॒त॒सः॒। स्यात॑। दु॒ःऽधर्त॑वः। नि॒दः॥९॥**

**पदार्थः-(गन्ता)** प्राप्नुत। अत्र **द्व्यचोऽतस्तिङ** इति दीर्घः। **(नः)** अस्मानस्माकं वा **(यज्ञम्)** सत्यजनकं व्यवहारं **(यज्ञियाः)** यज्ञं सम्पादितुमर्हाः **(सुशमि)** शोभनं कर्म्म **(श्रोता)** शृणुत। अत्र **द्व्यचोऽतस्तिङ** इति दीर्घः। **(हवम्)** पठनपरीक्षाख्यम् **(अरक्षः)** अरक्षणीयम् **(एवयामरुत्)** **(ज्येष्ठासः)** विद्यावयोवृद्धाः प्रशस्तवाचः **(न)** इव **(पर्वतासः)** मेघाः **(व्योमनि)** व्योमवद्व्यापके परमेश्वरे **(यूयम्)** **(तस्य)** **(प्रचेतसः)** प्रज्ञापकाः **(स्यात)** **(दुर्धर्त्तवः)** दुःखेन धर्त्तारः **(निदः)** निन्दकाः॥९॥

**अन्वयः**-हे यज्ञियाः! यूयमेवयामरुदिव नोऽस्मानस्माकं यज्ञञ्च गन्ता, सुशमि हवं श्रोताऽरक्षो निवारयत व्योमनि पर्वतासो न ज्येष्ठासो भवत यो व्योमवद्व्यापक ईश्वरोऽस्ति तस्य प्रचेतसः स्यात ते दुर्धर्त्तवो निदः सन्ति तेषां निवारकाः स्यात॥९॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। हे विद्वांसो! यूयं विद्याप्रचारव्यवहारप्रचारेण धर्म्याणि कर्म्माणि कृत्वाऽन्यैः कारयत, निन्दादिदोषेभ्यश्च मनुष्यान् पृथक्कृत्य परमेश्वरे प्रवर्त्तयत स्वयमप्येवं भवतेति॥९॥

अत्र मरुद्विद्वद्परमेश्वरोपासनावर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्य्याणां श्रीमद्विरजानन्दसरस्वतीस्वामिनां शिष्येण श्रीमद्दयानन्दसरस्वतीस्वामिना विरचिते संस्कृतार्यभाषाविभूषिते सुप्रमाणयुक्त ऋग्वेदभाष्ये सप्ताशीतितमं सूक्तं चतुस्त्रिंशो वर्गः पञ्चमे मण्डले षष्ठोऽनुवाकः पञ्चमं मण्डलञ्च समाप्तम्॥**

**पदार्थः**-हे **(यज्ञियाः)** यज्ञ करने योग्य **(यूयम्)** आप लोगो **(एवयामरुत्)** बुद्धिमान् मनुष्य के सदृश **(नः)** हम लोगों को वा हम लोगों के **(यज्ञम्)** सत्य को प्रकट करने वाले व्यवहार को **(गन्ता)** प्राप्त हूजिये और **(सुशमि)** श्रेष्ठ कर्म्म और **(हवम्)** पठन की परीक्षा नामक कर्म्म को **(श्रोता)** सुनिये तथा **(अरक्षः)** नहीं रक्षा करने योग्य का निवारण करिये और **(व्योमनि)** आकाश के सदृश व्यापक परमेश्वर में **(पर्वतासः)** मेघ **(न)** जैसे वैसे **(ज्येष्ठासः)** विद्या और अवस्था से वृद्ध और प्रशंसायुक्त वाणी वाले हूजिये और जो आकाश के सदृश व्यापक ईश्वर है **(तस्य)** उसके **(प्रचेतसः)** जनाने वाले **(स्यात)** हूजिये और जो **(दुर्धर्तवः)** दुःख से धारण करने वाले **(निदः)** निन्दक जन हैं, उनके निवारण करने वाले हूजिये॥९॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे विद्वान् जनो! आप लोग विद्या के प्रचारनामक व्यवहार के प्रचार से धर्मसम्बन्धी कार्यों को करके अन्यों से भी कराओ और निन्दा आदि दोषों से मनुष्यों को पृथक् करके परमेश्वर की ओर प्रवृत्त करो और स्वयं भी ऐसे होओ॥९॥

इस सूक्त में वायु, विद्वान् और परमेश्वर की उपासना का वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ संगति जाननी चाहिये॥



www.9009.co.in

यह श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्य्य श्रीमद्विरजानन्द सरस्वती स्वामी जी के शिष्य श्रीमद्दयानन्द सरस्वती स्वामी विरचित संस्कृतार्य्यभाषाविभूषित सुप्रमाणयुक्त ऋग्वेदभाष्य में सतासीवां सूक्त चौंतीसवां वर्ग्ग तथा पञ्चम मण्डल में छठा अनुवाक और पञ्चम मण्डल भी समाप्त हुआ॥



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

अथ षष्ठं मण्डलम्॥

**ओ३म् विश्वा॑नि देव सवितर्दुरि॒तानि॒ परा॑ सुव। यद्भ॒द्रं तन्न॒ आ सु॑व॥ ऋ०५.८२.५॥**

**अथ त्रयोदशर्चस्य प्रथमस्य सूक्तस्य भरद्वाजो बार्हस्पत्य ऋषिः। अग्निर्देवता। १, ७, १३ भुरिक्पङ्क्तिः। २ स्वराट्पङ्क्तिः। ५ पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः। ३, ४, ६९, ११, १२ निचृत्त्रिष्टुप्। ८, १० त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः॥**

***अथ विद्वानग्निरिव किं कुर्य्यादित्याह॥***

अब छठे मण्डल में तेरह ऋचा वाले प्रथम सूक्त का आरम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में विद्वान् जन अग्नि के सदृश क्या-क्या करें? इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**त्वं ह्य॑ग्ने प्रथ॒मो म॒नोता॒स्या धि॒यो अभ॑वो दस्म॒ होता॑।**

**त्वं सीं॑ वृषन्नकृणोर्दुष्टरी॑तु सहो॒ विश्व॑स्मै॒ सह॑से॒ सह॑ध्यै॥१॥**

**त्वम्। हि। अ॒ग्ने॒। प्र॒थ॒मः। म॒नोता॑। अ॒स्याः। धि॒यः। अभ॑वः। द॒स्म॒। होता॑। त्वम्। सी॒म्। वृ॒ष॒न्। अ॒कृ॒णोः। दु॒स्तरी॑तु। सह॑ः। विश्व॑स्मै। सह॑से। सह॑ध्यै॥ १॥**

**पदार्थः**-(**त्वम्**) (**हि**) (**अग्ने**) अग्निरिव वर्त्तमान (**प्रथमः**) आदिमः (**मनोता**) मनोवद्गन्ता (**अस्याः**) (**धियः**) प्रज्ञायाः (**अभवः**) भवसि (**दस्म**) दुःखोपक्षयितः (**होता**) दाता (**त्वम्**) (**सीम्**) सर्वतः (**वृषन्**) वीर्यसेक्तः (**अकृणोः**) (**दुष्टरीतु**) दुःखेन तरीतुमुल्लङ्घयितुं योग्यम् (**सहः**) यस्सहते (**विश्वस्मै**) सर्वस्मै (**सहसे**) बलाय (**सहध्यै**) सोढुम्॥१॥

**अन्वयः**-हे अग्ने दस्म विद्वन्! यथा प्रथमो मनोता होता संस्त्वं ह्यस्या धियो वृद्धिं कुर्वन् सुख्यभवः। हे वृषँस्त्वं सीं विश्वस्मै सहः सहसे सहध्यै दुष्टरीत्वकृणोस्तथा विद्युदग्निः करोति॥१॥

**भावार्थः**-ये विद्वांसो मूर्खैः कृतानपराधान् सोढ्वा सर्वेषां सुखाय प्रयतन्ते त एव सर्वेषां हितकारिणः सन्ति॥१॥

**पदार्थः**-हे (**अग्ने**) अग्नि के सदृश तेजस्वी (**दस्म**) दुःख के नाश करने वाले विद्वान् जन जैसे (**प्रथमः**) आदिम (**मनोता**) मन के समान जाने वाले और (**होता**) दान करने वाले हुए (**त्वम्**) आप (**हि**) निश्चय से (**अस्याः**) इस (**धियः**) बुद्धि की वृद्धि करते हुए सुखयुक्त (**अभवः**) होते हो। और हे (**वृषन्**) वीर्य्य के सींचने वाले (**त्वम्**) आप (**सीम्**) सब ओर से (**विश्वस्मै**) सम्पूर्ण प्राणियों के लिये (**सहः**) सहनशील (**सहसे**) बल के लिये (**सहध्यै**) सहने का (**दुष्टरीतु**) दुःख से उल्लंघन करने योग्य (**अकृणोः**) करते हो, वैसे बिजुलीरूप अग्नि करता है॥१॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-जो विद्वान् जन मूर्ख लोगों से किये हुए अपराधों को सहकर सम्पूर्ण जनों के सुख के लिये प्रयत्न करते हैं, वही सब के हितकारी होते हैं॥१॥

**मनुष्याः कथं विद्यां प्राप्नुयुरित्याह॥**

मनुष्य किस रीति से विद्या को प्राप्त होवें, इस विषय को कहते हैं॥

**अधा होता न्यसीदो यजीयानिळस्पद इषयन्नीड्यः सन्।**

**तं त्वा नरः प्रथमं देवयन्तो महो राये चितयन्तो अनु ग्मन्॥२॥**

**अध। होता। नि। असीदः। यजीयान्। इळः। पदे। इषयन्। ईड्यः। सन्। तम्। त्वा। नरः। प्रथमम्। देवऽयन्तः। महः। राये। चितयन्तः। अनु। ग्मन्॥२॥**

**पदार्थः**-(**अधा**) आनन्तर्ये। अत्र **निपातस्य चे**ति दीर्घः। (**होता**) आदाता (**नि**) (**असीदः**) तिष्ठेः (**यजीयान्**) अतिशयेन यष्टा (**इळः**) पृथिव्या वाचो वा (**पदे**) (**इषयन्**) प्रापयन् (**ईड्यः**) स्तोतुमर्हः (**सन्**) (**तम्**) (**त्वा**) त्वाम् (**नरः**) मनुष्याः (**प्रथमम्**) आदिमम् (**देवयन्तः**) कामयमानाः (**महः**) महते (**राये**) धनाय (**चितयन्तः**) ज्ञापयन्तः (**अनु**) (**ग्मन्**) अनुगच्छन्ति॥२॥

**अन्वयः**-हे विद्वन्! यथा होता यजीयानिषयन्नीड्यः सन्नग्निरिळस्पदे वर्त्तते तथा भूत्वा त्वं न्यसीदः। यथा देवयन्तश्चितयन्तो नरः प्रथममग्निमनु ग्मँस्तथाऽधा महो राये तं त्वैतेऽनुगच्छन्तु॥२॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। ये मनुष्या विदुषः कामयित्वाऽग्न्यादिविद्यां जिघृक्षन्ति ते विज्ञानवन्तो जायन्ते॥२॥

**पदार्थः**-हे विद्वन्! जिस प्रकार से (**होता**) ग्रहण करने और (**यजीयान्**) अत्यन्त यज्ञ करने वाला पुरुष (**इषयन्**) प्राप्त कराता और (**ईड्यः**) स्तुति करने योग्य (**सन्**) होता हुआ अग्नि (**इळः**) पृथिवी वा वाणी के (**पदे**) स्थान में वर्त्तमान है, वैसे होकर आप (**नि, असीदः**) निरन्तर स्थिर हूजिये और जैसे (**देवयन्तः**) कामना करते और (**चितयन्तः**) जनाते हुए (**नरः**) मनुष्य (**प्रथमम्**) आदिम अग्नि को (**अनु, ग्मन्**) पश्चात् चलते हैं, वैसे (**अधा**) अनन्तर (**महः**) बड़े (**राये**) धन के लिये (**तम्**) उस (**त्वा**) आपको ये सब पश्चात् प्राप्त होवें॥२॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो मनुष्य विद्वानों की कामना करके अग्नि आदि की विद्या को ग्रहण करने की इच्छा करते हैं, वे विज्ञानयुक्त होते हैं॥२॥

**पुनर्विद्वांसः किं जानीयुरित्याह॥**

फिर विद्वान् जन क्या जानें, इस विषय को कहते हैं॥

**वृतेव यन्तं बहुभिर्वसव्यै३स्त्वे रयिं जागृवांसो अनु ग्मन्।**

**रुशन्तमग्निं दर्शतं बृहन्तं वपावन्तं विश्वहा दीदिवांसम्॥३॥**



www.9009.co.in

**वृताऽइव। यन्तम्। बहुऽभिः। वसव्यैः। त्वे इति। रयिम्। जागृऽवांसः। अनु। ग्मन्। रुशन्तम्। अग्निम्। दर्शतम्। बृहन्तम्। वपाऽवन्तम्। विश्वहा। दीदिऽवांसम्॥३॥**

**पदार्थः-(वृतेव)** वर्त्तन्ते यस्मिँस्तेन मार्गेण **(यन्तम्)** गच्छतम् **(बहुभिः) (वसव्यैः)** वसुषु पृथिव्यादिषु भवैः पदार्थैः **(त्वे)** त्वयि **(रयिम्)** धनम् **(जागृवांसः)** जागरूकाः **(अनु) (ग्मन्)** अनुगच्छन्ति **(रुशन्तम्)** हिंसन्तम् **(अग्निम्)** विद्यादिरूपम् **(दर्शतम्)** दर्शकं द्रष्टव्यं वा **(बृहन्तम्)** महान्तम् **(वपावन्तम्)** बहूनि वपनाधिकरणानि विद्यन्ते यस्मिँस्तम् **(विश्वहा)** सर्वाणि दिनानि **(दीदिवांसम्)** प्रकाशमानं प्रकाशयन्तं वा॥३॥

**अन्वयः**-हे विद्वन्! जागृवांसो विद्वांसो यं बहुभिर्वसव्यैः सह वृतेव यन्तं रुशन्तं दर्शतं बृहन्तं वपावन्तं विश्वहा दीदिवांसमग्निमनु ग्मन् यस्त्वे रयिं दधाति तं त्वमनुविद्धि॥३॥

**भावार्थः**-ये सततं सर्वत्र गच्छन्तं सर्वस्य प्रकाशकं सर्वेषु पदार्थेषु व्यापकं विच्छेदकं विद्युदादिस्वरूपं पावकं विदित्वा कार्य्येष्वनुनयन्ति ते पुष्कलां श्रियं लभन्ते॥३॥

**पदार्थः**–हे विद्वन्! **(जागृवांसः)** विद्या से जागृत विद्वान् जन जिसको **(बहुभिः)** बहुत **(वसव्यैः)** पृथिवी आदिकों में हुए पदार्थों के साथ **(वृतेव)** वर्त्तमान होते हैं जिसमें उस मार्ग से **(यन्तम्)** जाते **(रुशन्तम्)** हिंसा करते **(दर्शतम्)** देखने वाले वा देखने योग्य **(बृहन्तम्)** बड़े **(वपावन्तम्)** बहुत कार्य्यों के संस्कार जमाने के अधिकरण विद्यमान जिसमें उस **(विश्वहा)** सब दिनों वा सब दिनों की **(दीदिवांसम्)** प्रकाशमान वा प्रकाश करते हुए **(अग्निम्)** अग्नि के सदृश विद्यादिरूप के **(अनु ग्मन्)** पीछे चलते हैं और जो **(त्वे)** आप में **(रयिम्)** धन को धारण करे, उसको आप पश्चात् जानिये॥३॥

**भावार्थः**-जो निरन्तर सर्वत्र चलते हुए सब के प्रकाशक और सम्पूर्ण पदार्थों में व्यापक और पदार्थों के जलाने वाले बिजुली आदि स्वरूप अग्नि को जानकर कार्य्यों में उपयुक्त करते हैं, वे अत्यन्त लक्ष्मी को प्राप्त होते हैं॥३॥

**पुनर्मनुष्यैः किं विज्ञातव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को क्या जानना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**पदं देवस्य नमसा व्यन्तः श्रवस्यवः श्रव आपन्नमृक्तम्।**

**नामानि चिद्दधिरे यज्ञियानि भद्रायां ते रणयन्त संदृष्टौ॥४॥**

**पदम्। देवस्य। नमसा। व्यन्तः। श्रवस्यवः। श्रवः। आपन्। अमृक्तम्। नामानि। चित्। दधिरे। यज्ञियानि। भद्रायाम्। ते। रणयन्त। सम्ऽदृष्टौ॥४॥**

**पदार्थः-(पदम्)** प्रापणीयम् **(देवस्य)** सर्वेषु प्रकाशमानस्य **(नमसा)** अन्नादिना वज्रवच्छेदकत्वेन गुणेन वा **(व्यन्तः)** व्याप्तविद्याक्रियाः **(श्रवस्यवः)** आत्मनः श्रवोऽन्नमिच्छवः **(श्रवः)** पृथिव्यन्नादिकम् **(आपन्)** आप्नुवन्ति **(अमृक्तम्)** शुद्धिरहितम् **(नामानि)** जलानि संज्ञा वा **(चित्)** अपि **(दधिरे)** धरेयुः



www.9009.co.in

**(यज्ञियानि)** यज्ञसिद्धयेऽर्हाणि **(भद्रायाम्)** कल्याणकर्याम् **(ते)** **(रणयन्त)** रमेरन् रमेयुर्वा **(सन्दृष्टौ)** सम्यग्दर्शने॥४॥

**अन्वयः**-हे विद्वांसो! व्यन्तः श्रवस्यवो भवन्तो नमसा सह वर्त्तमानस्य देवस्याग्नेः पदममृक्तं श्रव आपन्। अस्य देवस्य यज्ञियानि नामानि चिद्दधिरे ते भद्रायां सन्दृष्टौ रणयन्त॥४॥

**भावार्थः**-ये मनुष्या अग्न्यादिपदार्थस्य गुणकर्म्मस्वभावान् विदित्वा कार्य्याणि साध्नुवन्ति तेऽतुलमानन्दं प्राप्य सुखे रमन्ते॥४॥

**पदार्थः**-हे विद्वान् जनो! **(व्यन्तः)** व्याप्त हैं विद्या और क्रियायें जिनमें ऐसे और **(श्रवस्यवः)** अपने अन्न की इच्छा करने वाले आप लोग **(नमसा)** अन्न आदि वा वज्रवच्छेदकत्वगुण से **(देवस्य)** सब में प्रकाशमान अग्नि के **(पदम्)** प्राप्त होने योग्य **(अमृक्तम्)** शुद्धि से रहित **(श्रवः)** पृथिवी के अन्न आदि को **(आपन्)** प्राप्त होते हैं तथा इस सब में प्रकाशक के **(यज्ञियानि)** यज्ञ की सिद्धि के लिये योग्य **(नामानि)** जलों वा संज्ञाओं को **(चित्)** निश्चय से **(दधिरे)** धारण करें और **(ते)** वे **(भद्रायाम्)** कल्याणकारक **(सन्दृष्टौ)** उत्तम दर्शन में **(रणयन्त)** रमें वा रमण करावें॥४॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य अग्नि आदि पदार्थों के गुण कर्म्म और स्वभावों को जान कर कार्यों को सिद्ध करते हैं, वे अतुल आनन्द को प्राप्त कर सुख के विषय में रमते हैं॥४॥

**पुनर्मनुष्यैः कः प्रयोक्तव्य इत्याह॥**

फिर मनुष्यों को क्या प्रयोग करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**त्वां वर्धन्ति क्षितयः पृथिव्यां त्वां राय उभयासो जनानाम्।**

**त्वं त्राता तरणे चेत्यो भूः पिता माता सदमिन्मानुषाणाम्॥५॥३५॥**

**त्वाम्। वर्धन्ति। क्षितयः। पृथिव्याम्। त्वाम्। रायः। उभयासः। जनानाम्। त्वम्। त्राता। तरणे। चेत्यः। भूः। पिता। माता। सदम्। इत्। मानुषाणाम्॥५॥**

**पदार्थः**-**(त्वाम्)** तम् **(वर्धन्ति)** वर्धयन्ति। अत्र व्यत्ययेन परस्मैपदम् **(क्षितयः)** निवासन्तो मनुष्याः **(पृथिव्याम्)** भूमौ **(त्वाम्)** तम् **(रायः)** धनानि **(उभयासः)** **(जनानाम्)** **(त्वम्)** सः। अत्र सर्वत्र व्यत्ययः। **(त्राता)** रक्षकः **(तरणे)** दुःखादुद्धरणे **(चेत्यः)** चितिषु भवः **(भूः)** **(पिता)** पितेव पालकः **(माता)** मातेव मान्यप्रदः **(सदम्)** सीदन्ति यस्मिंस्तत् **(इत्)** एव **(मानुषाणाम्)** मनुष्याणाम्॥५॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! जनानामुभयासो विद्वांसोऽविद्वांसश्च क्षितयः पृथिव्यां रायस्त्वाञ्च वर्धन्ति त्वां सम्प्रयोजयन्ति त्वं तरणे त्राता चेत्यः पितेव मातेव मानुषाणां पालको भूः सदं व्याप्तस्तमित् सर्वे विजानन्तु॥५॥

**भावार्थः**-ये पृथिव्यादिषु स्थितं विद्युदग्निं सम्प्रयुञ्जते ते सर्वेषां सुखप्रदा जायन्ते॥५॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(जनानाम्)** मनुष्यों के **(उभयासः)** दोनों प्रकार के अर्थात् विद्वान् और अविद्वान् जन और **(क्षितयः)** निवास वाले मनुष्य **(पृथिव्याम्)** भूमि में **(रायः)** धनों की और **(त्वाम्)**



www.9009.co.in

आपकी **(वर्धन्ति)** वृद्धि करते हैं और **(त्वाम्)** उन आपको उत्तम प्रकार प्रयुक्त करते हैं **(त्वम्)** वह आप **(तरणे)** दु:खों से उद्धार के निमित्त **(त्राता)** रक्षा करने वाले **(चेत्य:)** चयन समूहों में हुए **(पिता)** पिता के सदृश पालनकर्त्ता और **(माता)** माता के सदृश आदर करने वाले **(मानुषाणाम्)** मनुष्यों के पालक **(भू:)** होओ और **(सदम्)** स्थिर होते हैं, जिसमें उस गृह को व्याप्त हुए उन आपको **(इत्)** ही सब लोग विशेष करके जानें॥५॥

**भावार्थ:**-जो पृथिवी आदिकों में वर्त्तमान बिजुलीरूप अग्नि का उत्तम प्रकार प्रयोग करते हैं, वे सब के सुख देने वाले होते हैं॥५॥

**पुनर्मनुष्यै: क: सेवनीय इत्याह॥**

फिर मनुष्यों को किसकी सेवा करनी चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**सपर्येण्य स प्रियो विक्ष्वग्निर्होता मन्द्रो नि षसादा यजीयान्।**

**तं त्वा वयं दम आ दीदिवांसमुप ज्ञुबाधो नमसा सदेम॥६॥**

**सपर्येण्य:। स:। प्रिय:। विक्षु। अग्नि:। होता। मन्द्र:। नि। ससाद। यजीयान्। तम्। त्वा। वयम्। दमे। आ। दीदिऽवांसम्। उप। ज्ञुऽबाध:। नमसा। सदेम॥६॥**

**पदार्थ:**-**(सपर्य्येण्य:)** सेवितुमर्ह: **(स:)** **(प्रिय:)** कमनीय: **(विक्षु)** प्रजासु **(अग्नि:)** पावक: **(होता)** आदाता **(मन्द्र:)** आनन्दप्रद: **(नि)** नितराम् **(ससादा)** निषीदति। अत्र **संहितायामि**ति दीर्घ:। **(यजीयान्)** अतिशयेन यष्टा **(तम्)** **(त्वा)** त्वाम् **(वयम्)** **(दमे)** गृहे **(आ)** **(दीदिवांसम्)** प्रकाशमानम् **(उप)** **(ज्ञुबाध:)** जानुनी बाधमाना: **(नमसा)** सत्कारेणान्नादिना वा **(सदेम)** सीदेम॥६॥

**अन्वय:**-हे विद्वन्! यो विक्षु सपर्य्येण्य: प्रियो होता मन्द्रो यजीयानग्निर्नि षसादा येन त्वया स प्रयुज्यते तं दमे दीदिवांसं त्वा ज्ञुबाधो वयं नमसोपाऽऽसदेम॥६॥

**भावार्थ:**-येऽग्न्यादिविद्यां जानन्ति ते सुखमाप्नुवन्ति॥६॥

**पदार्थ:**-हे विद्वान्! जो **(विक्षु)** प्रजाओं में **(सपर्य्येण्य:)** सेवा करने योग्य और **(प्रिय:)** कामना करने योग्य अर्थात् सुन्दर **(होता)** ग्रहण करने और **(मन्द्र:)** आनन्द देने वाला **(यजीयान्)** अतिशय यज्ञकर्त्ता **(अग्नि:)** अग्नि **(नि)** अत्यन्त **(ससादा)** स्थित होता है जिन आप से **(स:)** वह प्रयोग किया जाता है **(तम्)** उस **(दमे)** गृह में **(दीदिवांसम्)** प्रकाशमान **(त्वा)** आपको **(ज्ञुबाध:)** जंघाओं को बाधते हुए **(वयम्)** हम लोग **(नमसा)** सत्कार वा अन्न आदि से **(उप, आ, सदेम)** समीप होवें॥६॥

**भावार्थ:**-जो अग्नि आदि की विद्या को जानते हैं, वे सुख को प्राप्त होते हैं॥६॥

**पुनर्मनुष्यै: कीदृशैर्भूत्वा किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को कैसे होकर क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**तं त्वा वयं सुध्यो३ नव्यमग्ने सुम्नायव ईमहे देवयन्त:।**



www.9009.co.in

**त्वं विशो अनयो दीद्यानो दिवो अग्ने बृहता रोचनेन॥७॥**

**तम्। त्वा। वयम्। सुऽध्यः। नव्यम्। अग्ने। सुम्नऽयवः। ईमहे। देवऽयन्तः। त्वम्। विशः। अनयः। दीद्यानः। दिवः। अग्ने। बृहता। रोचनेन॥७॥**

**पदार्थः**-(**तम्**) (**त्वा**) त्वाम् (**वयम्**) (**सुध्यः**) शोभना धियो येषान्ते (**नव्यम्**) नवीनेषु पदार्थेषु भवम् (**अग्ने**) अग्निरिव वर्त्तमान विद्वन् (**सुम्नायवः**) आत्मनस्सुम्नं सुखमिच्छवः (**ईमहे**) व्याप्नुयाम (**देवयन्तः**) कामयमानाः (**त्वम्**) (**विशः**) प्रजाः (**अनयः**) नयसि (**दीद्यानः**) देदीप्यमानः (**दिवः**) कमनीयान् पदार्थान् (**अग्ने**) पावक इव विद्याप्रकाशित (**बृहता**) महता (**रोचनेन**) प्रकाशेन॥७॥

**अन्वयः**-हे अग्ने विद्वन्! यथा सुध्यः सुम्नायवो देवयन्तो वयं तं नव्यमग्निमीमहे तथा त्वा प्राप्नुयाम। हे अग्ने! यथा सूर्यो बृहता रोचनेन दीद्यानो दिवो विशोऽनयस्तथा त्वमेतान्नय॥७॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोमालङ्कारः। ये विद्वद्वदग्निमनुचरन्ति ते कृतकार्य्या जायन्ते॥७॥

**पदार्थः**-हे (**अग्ने**) अग्नि के सदृश वर्त्तमान विद्वन्! जैसे (**सुध्यः**) उत्तम बुद्धियुक्त (**सुम्नायवः**) अपने सुख की इच्छा करने वाले (**देवयन्तः**) कामना करते हुए (**वयम्**) हम लोग (**तम्**) उस (**नव्यम्**) नवीन पदार्थों में हुए अग्नि को (**ईमहे**) व्याप्त होवें, वैसे (**त्वा**) आपको प्राप्त होवें और हे (**अग्ने**) अग्नि के सदृश विद्या से प्रकाशित! जैसे सूर्य्य (**बृहता**) बड़े (**रोचनेन**) प्रकाश से (**दीद्यानः**) प्रकाशित होता हुआ (**दिवः**) कामना करने के योग्य पदार्थों को (**विशः**) प्रजाओं को (**अनयः**) पहुँचाता है, वैसे (**त्वम्**) आप इनको प्राप्त कराइये॥७॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो विद्वान् जनों के सदृश अग्नि का अनुचरण करते हैं, वे कृतकार्य्य होते हैं॥७॥

**पुनर्मनुष्याः किं प्राप्नुयुरित्याह॥**

फिर मनुष्य किस को प्राप्त होवें, इस विषय को कहते हैं॥

**विशां कविं विश्पतिं शश्वतीनां नितोशनं वृषभं चर्षणीनाम्।**

**प्रेतीषणिमिषयन्तं पावकं राजन्तमग्निं यजतं रयीणाम्॥८॥**

**विशाम्। कविम्। विश्पतिम्। शश्वतीनाम्। निऽतोशनम्। वृषभम्। चर्षणीनाम्। प्रेतिऽइषणिम्। इषयन्तम्। पावकम्। राजन्तम्। अग्निम्। यजतम्। रयीणाम्॥८॥**

**पदार्थः**-(**विशाम्**) प्रजानाम् (**कविम्**) क्रान्तदर्शनम् (**विश्पतिम्**) प्रजापालकम् (**शश्वतीनाम्**) अनादिभूतानाम् (**नितोशनम्**) पदार्थानां हिंसकम् (**वृषभम्**) बलिष्ठम् (**चर्षणीनाम्**) मनुष्याणाम् (**प्रेतीषणिम्**) प्रकर्षेण प्राप्तानामेषितारम् (**इषयन्तम्**) प्रापयन्तम् (**पावकम्**) (**राजन्तम्**) (**अग्निम्**) (**यजतम्**) सङ्गन्तव्यम् (**रयीणाम्**) धनानाम्॥८॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथा वयं शश्वतीनां विशां मध्ये कविं विश्पतिं नितोशनं वृषभं चर्षणीनां रयीणां प्रेतीषणिमिषयन्तं यजतं राजन्तं पावकमग्निं सम्प्रयुञ्ज्महि तथा यूयमपि सम्प्रयुङ्ध्वम्॥८॥

**भावार्थः**-ये मनुष्या अग्निं शरीरवत्सेवन्ते ते प्रजापतयो जायन्ते॥८॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे हम लोग **(शश्वतीनाम्)** अनादिभूत **(विशाम्)** प्रजाओं के मध्य में **(कविम्)** तेजयुक्त दर्शन जिसका ऐसे **(विश्पतिम्)** प्रजा के पालने वाले **(नितोशनम्)** पदार्थों के नाश करने वाले **(वृषभम्)** बलिष्ठ और **(चर्षणीनाम्)** मनुष्यों और **(रयीणाम्)** धनों और **(प्रेतीषणिम्)** अच्छे प्रकार से प्राप्त हुओं को प्राप्त होने वाले **(इषयन्तम्)** प्राप्त कराते हुए और **(यजतम्)** प्राप्त होने योग्य **(राजन्तम्)** प्रकाशित होते हुए **(पावकम्)** पवित्र करने वाले **(अग्निम्)** अग्नि को उत्तम प्रकार कार्य्यों में युक्त करें, वैसे आप लोग भी संप्रयुक्त करो॥८॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य अग्नि का शरीर के सदृश सेवन करते हैं, वे प्रजा के स्वामी होते हैं॥८॥

**पुनः सोऽग्निः कीदृश इत्याह॥**

फिर वह अग्नि कैसा है, इस विषय को कहते हैं॥

**सो अ॑ग्न ईजे शश॒मे च॒ मर्तो॒ यस्त॒ आन॑ट् स॒मिधा॑ ह॒व्यदा॑तिम्।**

**य आहु॑तिं॒ परि॒ वेदा॒ नमो॑भि॒र्विश्वेत्स वा॒मा द॑धते॒ त्वोतः॑॥९॥**

**सः। अ॒ग्ने॒। ई॒जे॒। श॒श॒मे। च॒। मर्तः॑। यः। ते॒। आन॑ट्। स॒म्ऽइधा॑। ह॒व्यऽदा॑तिम्। यः। आ॒ऽहु॑तिम्। परि॑। वेद॑। नम॑ःऽभिः। विश्वा॑। इत्। सः। वा॒मा। द॒ध॒ते। त्वाऽऊ॑तः॥९॥**

**पदार्थः**-**(सः)** **(अग्ने)** पावकवद्वर्त्तमान विद्वन् **(ईजे)** सङ्गच्छ **(शशमे)** प्रशंसामि। **शशमान इति अर्चतिकर्म्मा** (निघं०३.१४) **(च)** **(मर्त्तः)** मनुष्य **(यः)** **(ते)** तव **(आनट्)** व्याप्नोति **(समिधा)** **(हव्यदातिम्)** यो हव्यानि ददाति तम् **(यः)** **(आहुतिम्)** या समन्ताद्धूयते ताम् **(परि)** सर्वतः **(वेदा)** जानाति। अत्र **द्व्यचोऽतस्तिङ** इति दीर्घः। **(नमोभिः)** अन्नादिभिः **(सत्कारैर्वा)** **(विश्वा)** सर्वाणि **(इत्)** एव **(सः)** **(वामा)** प्रशस्यानि कर्म्माणि **(दधते)** **(त्वोतः)** त्वया रक्षितः॥९॥

**अन्वयः**-हे अग्ने विद्वन्! ते यो मर्त्तः समिधा हव्यदातिमानट् तद्वेत्ता सोऽहं तमीजे शशमे च। य आहुतिं परि वेदा स त्वोतो नमोभिर्विश्वा वामेद्दधते॥९॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यः प्रशंसितकार्य्यकगोऽग्निरसति तं विजानीत॥९॥

**पदार्थः**-हे **(अग्ने)** अग्नि के सदृश वर्त्तमान विद्वन्! **(ते)** आप का **(यः)** जो **(मर्त्तः)** मनुष्य **(समिधा)** समिध् से **(हव्यदातिम्)** हवन करने योग्य वस्तुओं के देने वाले को **(आनट्)** व्याप्त होता है उसको जानने वाला **(सः)** वह मैं उसको **(ईजे)** उत्तम प्रकार प्राप्त होता और **(शशमे)** प्रशंसा करता हूँ **(च)** और **(यः)** जो **(आहुतिम्)** आहुति को अर्थात् जो चारों ओर होमी जाती उस सामग्री को **(परि)** सब



www.9009.co.in

प्रकार से **(वेदा)** जानता है **(सः)** वह **(त्वोतः)** आप से रक्षित हुआ **(नमोभिः)** अन्न आदिकों वा सत्कारों से **(विश्वा)** सम्पूर्ण **(वामा)** प्रशंसा करने योग्य कर्म्मों को **(इत्)** ही **(दधते)** धारण करता है॥९॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो प्रशंसित कार्य्यों का करने वाला अग्नि है, उसको विशेष कर जानिये॥९॥

**ये पदार्थविद्याप्राप्तये प्रयतन्ते ते भाग्यशालिनो जायन्त इत्याह॥**

जो पदार्थविद्याप्राप्ति के लिये प्रयत्न करते हैं, वे भाग्यशाली होते हैं,

इस विषय को कहते हैं॥

**अ॒स्मा उ॑ ते॒ महि॑ म॒हे वि॑धेम॒ नमो॑भिरग्ने स॒मिधो॒त ह॒व्यैः।**

**वेदी॑ सूनो सहसो गी॒र्भिरु॒क्थैरा ते॑ भ॒द्रायां॑ सुम॒तौ य॑तेम॥ १०॥**

**अ॒स्मै। ऊँ इति॑। ते॒। महि॑। म॒हे। वि॒धे॒म॒। नम॑ःऽभिः। अ॒ग्ने॒। स॒म्ऽइधा॑। उ॒त। ह॒व्यैः। वेदी॑। सू॒नो॒ इति॑। स॒ह॒स॒ः। गी॒ःऽभिः। उ॒क्थैः। आ। ते॒। भ॒द्राया॑म्। सु॒म॒तौ। य॒ते॒म॒॥ १०॥**

**पदार्थः**-**(अस्मै)** **(उ)** **(ते)** तुभ्यम् **(महि)** महत् **(महे)** महते **(विधेम)** सत्कुर्य्याम **(नमोभिः)** अन्नादिभिः **(अग्ने)** विद्वन् **(समिधा)** इन्धनादिनेव विद्यया **(उत)** अपि **(हव्यैः)** अत्तुमर्हैः **(वेदी)** विदन्ति सुखानि यस्यां सा **(सूनो)** अपत्य **(सहसः)** बलवतः **(गीर्भिः)** वाग्भिः **(उक्थैः)** कीर्त्तनीयैर्वचनैः **(आ)** **(ते)** तव **(भद्रायाम्)** **(सुमतौ)** उत्तमायां प्रज्ञायाम् **(यतेम)** प्रयत्नं कुर्य्याम॥१०॥

**अन्वयः**-हे सहसः सूनोऽग्ने! यथा समिधा नमोभिर्विश्वा वामा ये दधते य आहुतिं दृष्ट्वा परिवेद। या वेदी भवति तां गीर्भिरुक्थैर्हव्यैरस्मै महे ते मह्याविधेम ताभिर्वाग्भिस्सहिता यूयमु उत वयं च ते भद्रायां सुमतौ यतेम॥१०॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! युष्माभिरस्मै प्राणिसमुदायाय सामग्र्या यज्ञो विधेयः॥१०॥

**पदार्थः**-हे **(सहसः)** बलवान् के **(सूनो)** पुत्र **(अग्ने)** विद्वज्जन! जैसे **(समिधा)** ईंधन आदि के सदृश विद्या और **(नमोभिः)** अन्न आदिकों से संपूर्ण स्त्रियों को जो धारण करते हैं और जो आहुति को देखकर जानता है और जो **(वेदी)** जानते हैं सुखों को जिसमें वह होती है, उसका **(गीर्भिः)** वाणियों और **(उक्थैः)** कीर्त्तन करने योग्य वचनों से और **(हव्यैः)** भोजन करने योग्य पदार्थों से **(अस्मै)** इस **(महे)** बड़े **(ते)** आपके लिये **(महि)** बहुत **(आ)** सब प्रकार से **(विधेम)** सत्कार करें, उन वाणियों के सहित आप लोग **(उ)** भी **(उत)** और हम भी **(ते)** आपकी **(भद्रायाम्)** कल्याणकारिणी **(सुमतौ)** उत्तम बुद्धि में **(यतेम)** प्रयत्न करें॥१०॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! आप लोग इस प्राणियों के समुदाय के लिये सामग्री से यज्ञ करें॥१०॥

**पुनर्मनुष्याः किं प्राप्नुयुरित्याह॥**

फिर मनुष्य किस को प्राप्त होवें, इस विषय को कहते हैं॥

**आ यस्त॒तन्थ॒ रोद॑सी॒ वि भा॒सा श्रवो॑भिश्च श्रव॒स्य१॒॑स्तरु॑त्रः।**

**बृ॒हद्भि॒र्वाजैः॒ स्थवि॑रेभिर॒स्मे रे॒वद्भि॑रग्ने वित॒रं वि भा॑हि॥ ११॥**



www.9009.co.in

आ। यः। ततन्थ। रोदसी इति। वि। भासा। श्रवःऽभिः। च। श्रवस्यः। तरुत्रः। बृहत्ऽभिः। वाजैः। स्थविरेभिः। अस्मे इति। रेवत्ऽभिः। अग्ने। विऽतरम्। वि। भाहि॥११॥

**पदार्थः**-(**आ**) (**यः**) (**ततन्थ**) विस्तृणोति (**रोदसी**) द्यावापृथिव्यौ (**वि**) (**भासा**) दीप्त्या (**श्रवोभिः**) श्रवणाद्यैरन्नादिभिर्वा (**च**) (**श्रवस्यः**) श्रोतुमर्हः (**तरुत्रः**) दुःखात्तारकः (**बृहद्भिः**) महद्भिः (**वाजैः**) सङ्ग्रामैः सह वर्त्तमानैः (**स्थविरेभिः**) स्थूलैः (**अस्मै**) (**रेवद्भिः**) बहुधनयुक्तैः (**अग्ने**) विद्वन् (**वितरम्**) विविधतया तरन्ति येन तम् (**वि**) (**भाहि**)॥११॥

**अन्वयः**-हे अग्ने विद्वन्! योऽग्निर्भासा श्रवोभिश्च श्रवस्यस्तरुत्रो बृहद्भिः स्थविरेभिर्वाजै रेवद्भिः सह रोदसी व्या ततन्थाऽस्मे तं वितरं वि भाहि॥११॥

**भावार्थः**-यदि विद्वांसः सुविद्ययाऽग्नेः प्रभावं विजानीयुस्तर्हि विस्मयं प्राप्य चकिता जायेरन्॥११॥

**पदार्थः**-हे (**अग्ने**) विद्वन्! (**यः**) जो अग्नि (**भासा**) प्रकाश से और (**श्रवोभिः**) श्रवण आदि वा अन्न आदि से (**च**) भी (**श्रवस्यः**) सुनने के योग्य और (**तरुत्रः**) दुःख से पार करने वाला (**बृहद्भिः**) बड़े और (**स्थविरेभिः**) स्थूल अर्थात् भारी (**वाजैः**) संग्रामों के सहित वर्त्तमान (**रेवद्भिः**) बहुत धनों से युक्त जनों के साथ (**रोदसी**) द्यावापृथिवी को (**वि, आ, ततन्थ**) विशेष कर सब प्रकार विस्तार करता है तथा (**अस्मे**) हम लोगों के लिये उस (**वितरम्**) वितर अर्थात् विविध प्रकार से तरते हैं जिससे उसको (**वि, भाहि**) उत्तम प्रकार प्रकाशित कीजिये॥११॥

**भावार्थः**-जो विद्वान् जन उत्तम विद्या से अग्नि के प्रभाव को जानें तो विस्मय को प्राप्त होकर चकित होवें॥११॥

**पुनर्विद्वद्भिः किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

फिर विद्वज्जन क्या करें, इस विषय को कहते हैं॥

**नृवद्वसो सदमिद्धेह्यस्मे भूरि तोकाय तनयाय पश्वः।**

**पूर्वीरिषो बृहतीरारेअघा अस्मे भद्रा सौश्रवसानि सन्तु॥१२॥**

नृऽवत्। वसो इति। सदम्। इत्। धेहि। अस्मे इति। भूरि। तोकाय। तनयाय। पश्वः। पूर्वीः। इषः। बृहतीः। आरेऽअघाः। अस्मे इति। भद्रा। सौश्रवसानि। सन्तु॥१२॥

**पदार्थः**-(**नृवत्**) मनुष्यवत् (**वसो**) यो वसति तत्सम्बुद्धौ (**सदम्**) सीदन्ति यस्मिंस्तत् (**इत्**) एव (**धेहि**) (**अस्मे**) अस्मासु (**भूरि**) (**तोकाय**) (**तनयाय**) (**पश्वः**) पशून् गवादीन् (**पूर्वीः**) प्राचीनाः (**इषः**) अन्नादिसामग्री (**बृहतीः**) महतीः (**आरेअघाः**) आरे दूरेऽघानि पापानि यासान्ताः (**अस्मे**) अस्मभ्यम् (**भद्रा**) भद्राणि कल्याणकराणि (**सौश्रवसानि**) सुश्रवसि संस्कृतेऽन्ने भवानि (**सन्तु**)॥१२॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे वसो विद्वन्! त्वमस्मे तोकाय तनयाय पश्वस्सदं बृहतीः पूर्वीरारेऽघा इषश्च भूरि धेहि। यतोऽस्मे इन्नृवद्भद्रा सौश्रवसानि सन्तु॥१२॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। त एव विद्वांसो ये मातापितृवञ्जगज्जनेभ्यो हितानि वस्तूनि ददति॥१२॥

**पदार्थः**-हे **(वसो)** वसने वाले विद्वज्जन! आप **(अस्मे)** हम लोगों में **(तोकाय)** कन्या और **(तनयाय)** पुत्र के लिये **(पश्वः)** पशु गौ आदि को तथा **(सदम्)** वर्त्तमान होते हैं जिसमें उस गृह और **(बृहतीः)** बड़ी **(पूर्वीः)** प्राचीन **(आरेअघाः)** दूर पाप जिनके उन **(इषः)** अन्न आदि सामग्रियों को **(भूरि)** बहुत **(धेहि)** धारण करिये जिससे **(अस्मे)** हम लोगों के लिये **(इत्)** ही **(नृवत्)** मनुष्यों के सदृश **(भद्रा)** कल्याणकारक **(सौश्रवसानि)** उत्तम प्रकार संस्कार से युक्त अन्न में हुए पदार्थ **(सन्तु)** हों॥१२॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। वे ही विद्वान् हैं, जो मातापिताओं के समान सांसारिक जनों के लिये हितकारक वस्तुओं को देते हैं॥१२॥

**अथेश्वरवत्प्रजापालनविषयमाह॥**

अब ईश्वर के तुल्य प्रजापालन विषय को कहते हैं॥

**पुरूण्य॑ग्ने पुरुधा त्वा॒या वसू॑नि राजन्वसुता॑ ते अश्याम्।**

**पु॒रूणि॒ हि त्वे पु॑रुवार॒ सन्त्यग्ने॒ वसु॑ विध॒ते राज॑नि॒ त्वे॥१३॥३६॥४॥**

**पु॒रूणि॑। अ॒ग्ने॒। पु॒रु॒धा। त्वा॒ऽया। वसू॑नि। रा॒ज॒न्। व॒सु॒ता॑। ते॒। अ॒श्या॒म्। पु॒रूणि॑। हि। त्वे इति॑। पु॒रु॒ऽवा॒र॒। सन्ति॑। अग्ने॑। वसु॑। विध॒ते। राज॑नि। त्वे इति॑॥१३॥३६॥४॥**

**पदार्थः**-**(पुरूणि)** बहूनि **(अग्ने)** विद्वन् **(पुरुधा)** बहुभिः प्रकारैर्धारितानि **(त्वाया)** त्वया सह **(वसूनि)** द्रव्याणि **(राजन्)** विद्याविनयाभ्यां प्रकाशमान **(वसुता)** वसूनां द्रव्याणां भावः **(ते)** तव **(अश्याम्)** प्राप्नुयाम् **(पुरूणि)** बहूनि **(हि)** खलु **(त्वे)** त्वयि **(पुरुवार)** बहुभिर्वरणीय **(सन्ति)** **(अग्ने)** विद्याविनयाभ्यां प्रकाशमान **(वसु)** द्रव्यम् **(विधते)** विधानं कुर्वते **(राजनि)** **(त्वे)** त्वयि॥१३॥

**अन्वयः**-हे अग्ने राजन्! ते या वसुता तत्रस्थानि पुरूणि पुरुधा वसूनि त्वाया सहाऽहमश्याम्। हे पुरुवाराग्ने! हि त्वे पुरूणि वसूनि सन्ति राजनि त्वे सति विधते कल्याणं जायते स त्वमस्माकं राजा भव॥१३॥

**भावार्थः**-त एव राजान उत्तमाः सन्ति ये परमेश्वरवत्पक्षपातं विहाय पुत्रवत्प्रजाः पालयन्ति ता एव प्रजाः श्रेष्ठाः सन्ति या राजेश्वरभक्ता वर्त्तन्त इति॥१३॥

अत्राग्निविद्वदीश्वरगुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

अस्मिन्नध्याये मित्रावरुणाश्विसवितृमरुदग्न्यादिगुणवर्णनादेतदध्यायोक्तर्थस्य पूर्वाध्यायार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्य्याणां श्रीमद्विरजानन्दसरस्वतीस्वामिनां शिष्येण श्रीमद्दयानन्दसरस्वतीस्वामिना विरचिते संस्कृताऽऽर्य्याभाषाविभूषित ऋग्वेदभाष्ये चतुर्थाष्टके चतुर्थोऽध्यायः षट्त्रिंशो वर्गश्च षष्ठे मण्डले प्रथमं**



www.9009.co.in

**सूक्तं च समाप्तम्॥**

**पदार्थ:**-हे **(अग्ने)** विद्वन्! **(राजन्)** विद्या और विनय से प्रकाशमान **(ते)** आपके समीप जो **(वसुता)** द्रव्यों का होना उसमें वर्त्तमान **(पुरूणि)** बहुत और **(पुरुधा)** बहुत प्रकारों से धारण किये हुए **(वसूनि)** द्रव्यों को **(त्वाया)** आपके साथ मैं **(अश्याम्)** प्राप्त होऊँ और हे **(पुरुवार)** बहुतों से स्वीकार करने योग्य **(अग्ने)** विद्या और विनय से प्रकाशमान **(हि)** निश्चय से **(त्वे)** आप में **(पुरूणि)** बहुत द्रव्य **(सन्ति)** हैं **(राजनि)** राजा **(त्वे)** आपके होने पर **(वसु)** द्रव्य का **(विधते)** विधान करने वाले के लिये कल्याण होता है, वह आप हमारे राजा हूजिये॥१३॥

**भावार्थ:**-वे ही राजा उत्तम हैं जो परमेश्वर के सदृश पक्षपात का त्याग करके पुत्र के सदृश प्रजाओं का पालन करते हैं और वे ही प्रजाजन श्रेष्ठ होते हैं जो राजा और ईश्वर के भक्त हैं॥१३॥

इस सूक्त में अग्नि, विद्वान् और ईश्वर के गुणों का वर्णन होने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ संगति जाननी चाहिये॥

इस अध्याय में मित्रावरुणा, अश्वि सूर्य, वायु और अग्नि आदि के गुणवर्णन करने से इस अध्याय में कहे हुए अर्थ की इससे पूर्व अध्याय के अर्थ के साथ संगति जाननी चाहिये॥

**यह श्रीमत्परहंसपरिव्राजकाचार्य श्रीमद्विरजानन्द सरस्वती स्वामी जी के शिष्य श्रीमद्दयानन्द सरस्वती स्वामिविरचित संस्कृतार्य्यभाषाविभूषित ऋग्वेदभाष्य में चतुर्थ अष्टक में चतुर्थ अध्याय, छत्तीसवां वर्ग और छठे मण्डल में प्रथम सूक्त भी समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

अथ पञ्चमोऽध्याय:॥

**ओ३म् विश्वा॑नि देव सवितर्दुरि॒तानि॒ परा॑ सुव। यद्भ॒द्रं तन्न॒ आ सु॑व॥ ऋ०५.८२.५॥**

**अथैकादशर्चस्य द्वितीयस्य सूक्तस्य भरद्वाजो बार्हस्पत्य ऋषि:। अग्निर्देवता। १, ९ भुरिगुष्णिक्। २ स्वराडुष्णिक्। ७ निचृदुष्णिक्। ८ उष्णिक् छन्द:। ऋषभ: स्वर:। ३, ४ अनुष्टुप्। ५, ६, १० निचृदनुष्टुप् छन्द:। गान्धार: स्वर:। ११ भुरिगतिजगती छन्द:। निषाद: स्वर:॥**

***अथाग्नि: कीदृशोऽस्तीत्याह॥***

अभ पञ्चमाध्याय का आरम्भ है और छठे मण्डल में ग्यारह ऋचावाले दूसरे सूक्त का आरम्भ किया जाता है, उसके प्रथम मन्त्र में अग्नि कैसा होता है, इस विषय को कहते हैं॥

**त्वं हि क्षैत॑व॒द्यशोऽग्ने॑ मि॒त्रो न पत्य॑से।**

**त्वं वि॑चर्षणे॒ श्रवो॒ वसो॑ पु॒ष्टिं न पु॑ष्यसि॥ १॥**

त्वम्। हि। क्षैत॑ऽवत्। यश॑:। अग्ने॑। मि॒त्र:। न। पत्य॑से। त्वम्। वि॒ऽच॒र्ष॒णे॒। श्रव॑:। वसो॒ इति॑। पु॒ष्टिम्। न। पु॒ष्य॒सि॒॥ १॥

**पदार्थ:**-(**त्वम्**) (**हि**) यत: (**क्षैतवत्**) क्षितौ भववत् (**यश:**) धनमन्नं कीर्तिं वा (**अग्ने**) पावक इव वर्त्तमान (**मित्र:**) सखा (**न**) इव (**पत्यसे**) पतिरिवाचरसि (**त्वम्**) (**विचर्षणे**) प्रकाशक (**श्रव:**) अन्नं श्रवणं वा (**वसो**) वासयित: (**पुष्टिम्**) धातुसाम्याद् बलादियोगम् (**न**) इव (**पुष्यसि**)॥ १॥

**अन्वय:**-हे विचर्षणेऽग्ने! हि त्वं क्षैतवद्यशो मित्रो न पत्यसे। हे वसो! त्वं पुष्टिं न श्रव: पुष्यसि तस्मात्सुखी भवसि॥ १॥

**भावार्थ:**-अत्रोपमालङ्कार:। यथा पार्थिवानि शुष्कानि वस्तूनि नीरसानि भवन्ति तथाऽविद्वांसोऽधार्मिका निष्ठुरा जायन्ते॥ १॥

**पदार्थ:**-हे (**विचर्षणे**) प्रकाश करते वाले (**अग्ने**) अग्नि के सदृश वर्त्तमान! (**हि**) जिस कारण (**त्वम्**) आप (**क्षैतवत्**) पृथिवी में हुए के समान (**यश:**) धन अन्न वा कीर्त्ति को (**मित्र:**) मित्र (**न**) जैसे वैसे (**पत्यसे**) पति के सदृश आचरण करते हो ओर हे (**वसो**) वसाने वाले! (**त्वम्**) आप (**पुष्टिम्**) धातु के साम्य से बल आदि के योग को (**न**) जैसे वैसे (**श्रव:**) अन्न वा श्रवण का (**पुष्यसि**) पालन करते हो, इससे सुखी होते हो॥ १॥



www.9009.co.in

**भावार्थ:**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जैसे पृथिवी में उत्पन्न हुए शुष्क वस्तु रस से रहित होते हैं, वैसे विद्यारहित और धर्म्मरहित जन दयारहित और कोमलतारहित होते हैं॥२॥

**विद्वद्भिरत्र कथं वर्त्तितव्यमित्याह॥**

विद्वानों को इस संसार में कैसा वर्त्ताव करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**त्वां हि ष्मा चर्षणयो यज्ञेभिर्गीर्भिरीळते।**

**त्वां वाजी यात्यवृको रजस्तूर्विश्वचर्षणि:॥२॥**

**त्वाम्। हि। स्म। चर्षणय:। यज्ञेभि:। गी:ऽभि:। ईळते। त्वाम्। वाजी। याति। अवृक:। रज:ऽतू:। विश्वऽचर्षणि:॥२॥**

**पदार्थ:**-**(त्वाम्)** **(हि)** यत: **(स्मा)** एव। अत्र **निपातस्य चे**ति दीर्घ:। **(चर्षणय:)** मनुष्या: **(यज्ञेभि:)** अध्ययनाध्यापनादिभि: **(गीर्भि:)** वाग्भि: **(ईळते)** स्तुवन्ति **(त्वाम्)** **(वाजी)** वेगवान् **(याति)** **(अवृक:)** चोरादिसङ्गरहित: **(रजस्तू:)** यो रजांसि लोकान् वर्धयति **(विश्वचर्षणि:)** विश्वे चर्षणयो मननशीला मनुष्या यस्य स:॥२॥

**अन्वय:**-हे विद्वन्! ये चर्षणयो यज्ञेभिर्गीर्भिस्त्वां हीळते स्मा रजस्तूर्विश्वचर्षणिरवृको वाजी त्वां याति॥२॥

**भावार्थ:**-ये मनुष्या यं विद्वांसं सेवन्ते स तान् विद्यां प्रदद्यात्॥२॥

**पदार्थ:**-हे विद्वन्! जो **(चर्षणय:)** मनुष्य **(यज्ञेभि:)** अध्ययन-अध्यापन आदिकों और **(गीर्भि:)** वाणियों से **(त्वाम्)** आपकी **(हि)** निश्चित **(ईळते)** स्तुति करते **(स्मा)** ही हैं **(रजस्तू:)** लोकों का बढ़ाने वाला **(विश्वचर्षणि:)** सम्पूर्ण विचारशील मनुष्य जिसके वह **(अवृक:)** चोर आदिकों के संग से रहित **(वाजी)** वेग से युक्त हुआ **(त्वाम्)** आपको **(याति)** प्राप्त होता है॥२॥

**भावार्थ:**-जो मनुष्य जिस विद्वान् का सेवन करते हैं, वह उनके लिये विद्या देवे॥२॥

**पुनर्मनुष्यै: किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**सजोषस्त्वा दिवो नरो यज्ञस्य केतुमिन्धते।**

**यद्ध स्य मानुषो जन: सुम्नायुर्जुह्वे अध्वरे॥३॥**

**सऽजोष:। त्वा। दिव:। नर:। यज्ञस्य। केतुम्। इन्धते। यत्। ह। स्य:। मानुष:। जन:। सुम्नऽयु:। जुह्वे। अध्वरे॥३॥**

**पदार्थ:**-**(सजोष:)** समानप्रीतिसेविन: **(त्वा)** त्वाम् **(दिव:)** सत्यं कामयमाना: **(नर:)** नेतार: **(यज्ञस्य)** न्यायव्यवहारस्य **(केतुम्)** प्रज्ञाम् **(इन्धते)** प्रकाशन्ते **(यत्)** यत: **(ह)** खलु **(स्य:)** स: **(मानुष:)** मननशील: **(जन:)** प्रसिद्ध: **(सुम्नायु:)** सुखं कामुक: **(जुह्वे)** स्पर्द्धे **(अध्वरे)** अहिंसामये॥३॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे विद्वन्! सजोषो दिवो नरो यज्ञस्य केतुं त्वा त्वामिन्धते यद्ध स्यो मानुषः सुम्नायुर्जनस्त्वमध्वरे वर्त्तसे तमहं जुह्वे॥३॥

**भावार्थः**-तस्यैव सङ्गो मनुष्यैः कर्त्तव्यो यं धार्म्मिका विद्वांसः प्रशंसेयुः॥३॥

**पदार्थः**-हे विद्वान्! **(सजोषः)** तुल्य प्रीति के सेवन करने वाले **(दिवः)** सत्य की कामना करते हुए **(नरः)** नायक जन **(यज्ञस्य)** न्यायव्यवहार की **(केतुम्)** बुद्धि को और **(त्वा)** आपको **(इन्धते)** प्रकाशित करते हैं और **(यत्)** जिससे **(ह)** निश्चय करके **(स्यः)** वह **(मानुषः)** विचारशील और **(सुम्नायुः)** सुख की कामना करने वाले **(जनः)** प्रसिद्ध मनुष्य आप **(अध्वरे)** अहिंसारूप में वर्त्तमान होते हो, उसकी मैं **(जुह्वे)** स्पर्द्धा करता हूँ॥३॥

**भावार्थः**-उसी का संग मनुष्यों को करना चाहिये, जिसकी धार्मिक विद्वान् जन प्रशंसा करें॥३॥

**पुनर्मनुष्यैः किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**ऋधद्यस्ते सुदानवे धिया मर्तः शशमते।**

**ऊती ष बृहतो दिवो द्विषो अंहो न तरति॥४॥**

**ऋधत्। यः। ते। सुऽदानवे। धिया। मर्तः। शशमते। ऊती। सः। बृहतः। दिवः। द्विषः। अंहः। न। तरति॥४॥**

**पदार्थः**-**(ऋधत्)** ऋध्नुयात् समर्द्धयेत् **(यः)** **(ते)** तुभ्यम् **(सुदानवे)** उत्तमदानकर्त्रे **(धिया)** प्रज्ञया **(मर्त्तः)** मनुष्यः **(शशमते)** शाम्येत् **(ऊती)** ऊत्या रक्षादिकर्म्मणा **(सः)** **(बृहतः)** **(दिवः)** कामयमानान् **(द्विषः)** शत्रोः **(अंहः)** अपराधः **(न)** इव **(तरति)**॥४॥

**अन्वयः**-हे विद्वन्! यो मर्त्तो धिया सुदानवे त ऋधच्छशमते स ऊती बृहतो दिवो द्विषोऽहो न तरति॥४॥

**भावार्थः**-ये मनुष्या धर्म्मात्मभ्यः सुखप्रदाः स्युस्ते यथा धार्मिकाः पापं त्यजन्ति तथैव शत्रूनुल्लङ्घयन्ति॥४॥

**पदार्थः**-हे विद्वन्! **(यः)** जो **(मर्त्तः)** मनुष्य **(धिया)** बुद्धि से **(सुदानवे)** उत्तम दान करने वाले **(ते)** आपके लिये **(ऋधत्)** उत्तम प्रकार ऋद्धि करे तथा **(शशमते)** शान्त हो **(सः)** वह **(ऊती)** रक्षण आदि कर्म्म से **(बृहतः)** बड़े **(दिवः)** कामना करते हुओं के **(द्विषः)** शत्रु का **(अंहः)** अपराध **(न)** जैसे वैसे **(तरति)** पार होता है॥४॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य धर्मात्मा जनों के लिये सुख देने वाले होवें, वे जैसे धार्मिक जन पाप का नाश करते हैं, वैसे ही शत्रुओं का उल्लघंन करते हैं॥४॥

**पुनर्मनुष्यैः किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥



www.9009.co.in

**स॒मिधा॒ यस्त॒ आहु॑तिं॒ निशि॑तिं॒ मर्त्यो॑ नश॑त्।**

**व॒याव॑न्तं॒ स पु॑ष्यति॒ क्षय॑मग्ने श॒तायु॑षम्॥५॥१॥**

**स॒म्ऽइधा॑। यः। ते॒। आऽहु॑तिम्। निऽशि॑तिम्। मर्त्यः॑। नश॑त्। व॒याऽव॑न्तम्। सः। पु॒ष्य॒ति॒। क्षय॑म्। अ॒ग्ने॒। श॒तऽआ॑युषम्॥५॥१॥**

**पदार्थः**-(**समिधा**) प्रदीपिकया (**यः**) (**ते**) तुभ्यम् (**आहुतिम्**) (**निशितिम्**) तीक्ष्णाम् (**मर्त्यः**) मनुष्यः (**नशत्**) व्याप्नोति। **नशदिति व्याप्तिकर्म्मा।** (निघं०२.१८) (**वयावन्तम्**) बहुपदार्थयुक्तम् (**सः**) (**पुष्यति**) (**क्षयम्**) गृहम् (**अग्ने**) विद्वन् (**शतायुषम्**) शतवर्षजीविनम्॥५॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! यो मर्त्यः समिधा ते निशितिमाहुतिं नशत् स वयावन्तं क्षयं शतायुषं प्राप्य पुष्यति॥५॥

**भावार्थः**-ये मनुष्या विद्वत्सेवया शुभगुणकर्मस्वभावान् प्राप्नुवन्ति ते वृद्धसुखा चिरञ्जीविनः सुन्दरगृहाश्च भूत्वा शरीरात्मभ्यां पुष्टा जायन्ते॥५॥

**पदार्थः**-हे (**अग्ने**) विद्वन् जन! (**यः**) जो (**मर्त्यः**) मनुष्य (**समिधा**) अग्नि को प्रदीप्त करने वाले वस्तु से (**ते**) आपके लिये (**निशितिम्**) तीक्ष्ण अतितीव्र (**आहुतिम्**) आहुति को (**नशत्**) व्याप्त होता है (**सः**) वह (**वयावन्तम्**) बहुत पदार्थों से युक्त (**क्षयम्**) और गृह (**शतायुषम्**) सौ वर्ष पर्य्यन्त जीवनेवाले को प्राप्त होकर (**पुष्यति**) पुष्ट होता है॥५॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य विद्वानों की सेवा से उत्तम गुण, कर्म्म और स्वभाववालों को प्राप्त होते हैं, वे सुख की वृद्धि और अतिकाल पर्य्यन्त जीवन से युक्त और अच्छे गृहों वाले होकर शरीर और आत्मा से पुष्ट होते हैं॥५॥

**पुनः सोऽग्निः कीदृश इत्याह॥**

फिर वह अग्नि कैसा है, इस विषय को कहते हैं॥

**त्वे॒षस्ते॑ धू॒म ऋ॑ण्वति दि॒वि षञ्छु॒क्र आत॑तः।**

**सूरो॒ न हि द्यु॒ता त्वं कृ॒पा पा॑वक॒ रोच॑से॥६॥**

**त्वे॒षः। ते॒। धू॒मः। ऋ॒ण्व॒ति॒। दि॒वि। सन्। शु॒क्रः। आऽत॑तः। सूरः॑। न। हि। द्यु॒ता। त्वम्। कृ॒पा। पा॒व॒क॒। रोच॑से॥६॥**

**पदार्थः**-(**त्वेषः**) प्रदीप्तः (**ते**) तस्य। अत्र पुरुषव्यत्ययः। (**धूमः**) (**ऋण्वति**) गच्छति। **ऋण्वतीति गतिकर्मा।** (निघं०२.४) (**दिवि**) प्रकाशे (**सन्**) वर्त्तमानः (**शुक्रः**) शुद्धिकरः (**आततः**) व्याप्तः (**सूरः**) सूर्यः (**न**) इव (**हि**) एव (**द्युता**) प्रकाशेन (**त्वम्**) (**कृपा**) कृपया (**पावक**) पावक इव वर्त्तमान (**रोचसे**) प्रकाशसे॥६॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथा ते सूरो न त्वेषो धूमः शुक्र आततः सन् दिव्यृण्वति तथा हि त्वं द्युता कृपा पावक इव वर्त्तमानः सन् रोचसे॥६॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-अत्रोपमावाचकलुप्तोपमालङ्कारौ। हे विद्वांसो! यस्याग्नेर्धूमेन वाय्वादयः पदार्थाः शुद्धा जायन्ते यत् सूर्य्यादिः कारणमस्ति तद्विद्यां प्राप्य शुभगुणेषु भवन्तः प्रकाशन्ताम्॥६॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे **(ते)** उसका **(सूरः)** सूर्य्य **(न)** जैसे वैसे **(त्वेषः)** प्रदीप्त **(धूमः)** धूम **(शुक्रः)** शुद्धि का करने वाला **(आततः)** व्याप्त **(सन्)** होता हुआ **(दिवि)** प्रकाश में **(ऋण्वति)** चलता है, वैसे **(हि)** ही **(त्वम्)** आप **(द्युता)** प्रकाश और **(कृपा)** कृपा से **(पावक)** अग्नि के सदृश वर्त्तमान हुए **(रोचसे)** प्रकाशित होते हो॥६॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमा और वाचकलुप्तोपमालङ्कार हैं। हे विद्वान् जनो! जिस अग्नि के धूम से वायु आदि पदार्थ शुद्ध होते हैं और जो सूर्य्य आदि का कारण है, उसकी विद्या को प्राप्त होकर उत्तम गुणों में आप लोग प्रकाशित हूजिये॥६॥

**पुनर्मनुष्यैः कथं वर्त्तितव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को कैसा वर्त्ताव करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**अधा हि विक्ष्वीड्योऽसि प्रियो नो अतिथिः।**

**रण्वः पुरीव जूर्यः सूनुर्न त्रययाय्यः॥७॥**

**अध। हि। विक्षु। ईड्यः। असि। प्रियः। नः। अतिथिः। रण्वः। पुरिऽइव। जूर्यः। सूनुः। न। त्रययाय्यः॥७॥**

**पदार्थः**-**(अधा)** अथ। अथ **निपातस्य चे**ति दीर्घः। **(हि)** यतः **(विक्षु)** प्रजासु **(ईड्यः)** स्तोतुमर्हः **(असि)** **(प्रियः)** कमनीयः **(नः)** अस्माकम् **(अतिथिः)** अनियततिथिः **(रण्वः)** रममाणः **(पुरीव)** यथा रमणीया नगरी **(जूर्य्यः)** जीर्णः **(सूनुः)** अपत्यम् **(न)** इव **(त्रययाय्यः)** यस्त्रयं रक्षकं याति प्राप्नोति सः॥७॥

**अन्वयः**-हे विद्वन्! हि त्वं विक्ष्वीड्यो नः प्रियः पुरीव रण्वो जूर्य्यस्त्रययाय्यः सूनुर्नाऽतिथिरसि तस्मादधा सत्कर्त्तव्योऽसि॥७॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। यथाऽतिथयः प्रजाजनैः सत्कर्त्तव्याः सन्ति यथात्र मातापितृभ्यां सन्तानाः पालनीया भवन्ति तथाहि धार्मिका विद्वांसोऽर्चनीया भवन्ति॥७॥

**पदार्थः**-हे विद्वन्! **(हि)** जिस कारण से आप **(विक्षु)** प्रजाओं में **(ईड्यः)** स्तुति करने के योग्य और **(नः)** हम लोगों के **(प्रियः)** कामना करने योग्य **(पुरीव)** रमणीयपुरी के समान **(रण्वः)** रमण करता हुआ **(जूर्य्यः)** जीर्ण **(त्रययाय्यः)** रक्षक को प्राप्त होने वाला **(सूनुः)** सन्तान **(न)** जैसे वैसे **(अतिथिः)** नहीं नियत तिथि जिसकी ऐसे **(असि)** हो, तिससे **(अधा)** इसके अनन्तर सत्कार करने योग्य हो॥७॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जैसे अतिथिजन प्रजाजनों से सत्कार करने योग्य होते और जैसे यहाँ माता और पिता से सन्तान पालन करने योग्य होते हैं, वैसे ही धार्म्मिक विद्वान् जन सत्कार करने योग्य होते हैं॥७॥

**पुनर्विदुषा किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

फिर विद्वान् को क्या करना चाहिये विषय को कहते हैं॥

**क्रत्वा हि द्रोणे अज्यसेऽग्ने वाजी न कृत्व्यः।**

**परिज्मेव स्वधा गयोऽत्यो न ह्वार्यः शिशुः॥८॥**

**क्रत्वा। हि। द्रोणे। अज्यसे। अग्ने। वाजी। न। कृत्व्यः। परिज्माऽइव। स्वधा। गयः। अत्यः। न। ह्वार्यः। शिशुः॥८॥**

**पदार्थः**-(**क्रत्वा**) प्रज्ञया कर्म्मणा वा (**हि**) यतः (**द्रोणे**) गन्तव्ये मार्गे (**अज्यसे**) गम्यसे (**अग्ने**) पावक इव वर्त्तमान (**वाजी**) वेगवान् (**न**) इव (**कृत्व्यः**) करणीयं कर्म्म। **कृत्त्वीति कर्मनाम।** (निघं०२.१) (**परिज्मेव**) यः परितः सर्वतो गच्छति स वायुः (**स्वधा**) अन्नम् (**गयः**) गृहम् (**अत्यः**) अतति व्याप्नोत्यध्वानम् (**न**) इव (**ह्वार्य्यः**) कुटिलं मार्गं गन्तुं योग्यः (**शिशुः**) बालकः॥८॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! त्वं हि क्रत्वा वाजी न कृत्व्यः परिज्मेव स्वधा गयोऽत्यो न ह्वार्यः शिशुर्द्रोणेऽज्यसे तस्मात् कृतकृत्योऽसि॥८॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। ये विद्वांसः सर्वाज्ञजनेभ्यो बुद्धिं प्रदाय सन्मार्गं नयन्ति मातापितरौ बालमिव शिक्षयन्ति त अन्नादिना सत्कर्त्तव्या भवन्ति॥८॥

**पदार्थः**-हे (**अग्ने**) अग्नि के सदृश वर्त्तमान प्रतापी जन आप (**हि**) जिस कारण (**क्रत्वा**) बुद्धि वा कर्म से (**वाजी**) वेग से युक्त (**न**) जैसे वैसे (**कृत्व्यः**) करने योग्य कर्म्म को (**परिज्मेव**) सब ओर जाने वाला वह वायु (**स्वधा**) अन्न (**गयः**) गृह और (**अत्यः**) मार्ग को व्याप्त होने वाला (**न**) जैसे वैसे (**ह्वार्य्यः**) कुटिल मार्ग में जाने योग्य (**शिशुः**) बालक (**द्रोणे**) जाने योग्य मार्ग में (**अज्यसे**) प्राप्त किये जाते हो, इस कारण से कृतकृत्य हो॥८॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जो विद्वान् जन सम्पूर्ण अज्ञ जनों के लिये बुद्धि देकर श्रेष्ठ मार्ग में प्राप्त कराते हैं और माता-पिता बालक को जैसे वैसे शिक्षा करते हैं, वे अन्न आदि से सत्कार करने योग्य होते हैं॥८॥

**पुनर्मनुष्यैः कथं वर्त्तितव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को कैसा वर्त्ताव करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**त्वं त्या चिदच्युताग्ने पशुर्न यवसे।**

**धामा ह यत्ते अजर वना वृश्चन्ति शिक्वसः॥९॥**



www.9009.co.in

त्वम्। त्या। चित्। अच्युता। अग्ने। पशुः। न। यवसे। धाम। ह। यत्। ते। अजर। वना। वृश्चन्ति। शिक्वसः॥ ९॥

**पदार्थः**-(**त्वम्**) (**त्या**) तानि (**चित्**) अपि (**अच्युता**) नाशरहितानि (**अग्ने**) विद्वन् (**पशुः**) गवादिः (**न**) इव (**यवसे**) बुसाद्याय (**धामा**) धामानि। अत्र **संहितायामि**ति दीर्घः। (**ह**) किल (**यत्**) यस्य (**ते**) तव (**अजर**) जरारोगरहित (**वना**) वनानि जङ्गलानि (**वृश्चन्ति**) छिन्दन्ति (**शिक्वसः**) प्रकाशमानस्य॥ ९॥

**अन्वयः**-हे अजराऽग्ने! यद्यस्य शिक्वसस्ते गुणा वना किरणा इव दोषान् वृश्चन्ति त्या चिदच्युता धामा यवसे पशुर्न त्वं ह प्राप्नुहि॥ ९॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। यानध्यापकान् गा वत्सा इव प्राप्य दुग्धमिव विद्यां गृह्णन्ति ये विद्वांसोऽग्निरिव दोषान् दहन्ति ते जगत्कल्याणकरा भवन्ति॥ ९॥

**पदार्थः**-हे (**अजर**) जरारूप रोग से रहित (**अग्ने**) विद्वन्! (**यत्**) जिन (**शिक्वसः**) प्रकाशमान (**ते**) आपके गुण (**वना**) जङ्गलों को जैसे किरण, वैसे दोषों को (**वृश्चन्ति**) काटते हैं और (**त्या, चित्**) उन्हीं (**अच्युता**) नाश से रहित (**धामा**) स्थानों को (**यवसे**) भूसे आदि के लिये (**पशुः**) गौ आदि पशु (**न**) जैसे वैसे (**त्वम्**) आप (**ह**) निश्चय प्राप्त होते हो॥ ९॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जिन अध्यापकों को गौओं को जैसे बछड़े प्राप्त होकर दुग्ध के सदृश विद्या को ग्रहण करते हैं और जो विद्वान् जन अग्नि के सदृश दोषों का नाश करते हैं, वे संसार के कल्याण करने वाले होते हैं॥ ९॥

**पुनर्मनुष्यैः कथं वर्त्तितव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को कैसा वर्त्तना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**वेषि ह्यध्वरीयतामग्ने होता दमे विशाम्।**

**समृधो विश्पते कृणु जुषस्व हव्यमङ्गिरः॥ १०॥**

वेषि। हि। अध्वरिऽयताम्। अग्ने। होता। दमे। विशाम्। सम्ऽऋधः। विश्पते। कृणु। जुषस्व। हव्यम्। अङ्गिरः॥ १०॥

**पदार्थः**-(**वेषि**) व्याप्नोषि (**हि**) यतः (**अध्वरीयताम्**) आत्मनोऽध्वरमिच्छताम् (**अग्ने**) पावक इव विद्वन् (**होता**) दाता (**दमे**) गृहे (**विशाम्**) प्रजानाम् (**समृधः**) सम्यगृद्धिमन्तः (**विश्पते**) प्रजास्वामिन् (**कृणु**) कुरु (**जुषस्व**) (**हव्यम्**) प्राप्तुं गृहीतुमर्हम् (**अङ्गिरः**) अङ्गानां मध्ये रसरूप॥ १०॥

**अन्वयः**-हे अङ्गिरोऽग्ने विश्पते विद्वन्! यो हि होता त्वमध्वरीयतां विशां दमे वेषि स त्वं समृधः कृणु हव्यं जुषस्व॥ १०॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यथाग्निर्ऋत्विजां प्रजानां च कार्य्याणि साध्नोति तथैव विद्वांसः सर्वेषां प्रयोजनानि निष्पादयन्ति॥ १०॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-हे **(अङ्गिरः)** अङ्गों के मध्य में रसरूप **(अग्ने)** अग्नि के सदृश तेजस्वी **(विश्पते)** प्रजा के स्वामिन् विद्वन्! जो **(हि)** जिस कारण से **(होता)** दाता आप **(अध्वरीयताम्)** अपने अध्वर की इच्छा करते हुए **(विशाम्)** प्रजाजनों के **(दमे)** गृह में **(वेषि)** व्याप्त होते हो वह आप **(समृधः)** उत्तम प्रकार से ऋद्धिवाले **(कृणु)** करिये और **(हव्यम्)** ग्रहण करने योग्य का **(जुषस्व)** सेवन करिये॥१०॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे अग्नि यज्ञ करने वालों और प्रजाओं के कार्य्यों को सिद्ध करता है, वैसे ही विद्वान् जन सब के प्रयोजनों को सिद्ध करते हैं॥१०॥

**अथ विद्वद्विषयमाह॥**

अब विद्वानों के विषय को कहते हैं॥

**अच्छा नो मित्रमहो देव देवानग्ने वोचः सुमतिं रोदस्योः। वीहि स्वस्तिं सुक्षितिं दिवो नॄन् द्विषो अंहांसि दुरिता तरेम ता तरेम तवावसा तरेम॥११॥२॥**

**अच्छ। नः। मित्रऽमहः। देव। देवान्। अग्ने। वोचः। सुऽमतिम्। रोदस्योः। वीहि। स्वस्तिम्। सुऽक्षितिम्। दिवः। नॄन्। द्विषः। अंहांसि। दुःऽइता। तरेम। ता। तरेम। तव। अवसा। तरेम॥११॥**

**पदार्थः**-**(अच्छा)** सम्यक्। अत्र **संहितायामि**ति दीर्घः। **(नः)** अस्माकम् **(मित्रमहः)** मित्रं सखा महः पूजनीयो यस्य तत्सम्बुद्धौ **(देव)** दातः **(देवान्)** विदुषो दातॄन् **(अग्ने)** अग्निरिव वर्त्तमान **(वोचः)** उपदिशेः **(सुमतिम्)** श्रेष्ठां प्रज्ञाम् **(रोदस्योः)** द्यावापृथिव्योर्मध्ये **(वीहि)** व्याप्नुहि **(स्वस्तिम्)** सुखं शान्तिं वा **(सुक्षितिम्)** शोभनां पृथिवीं सुनिवासं वा **(दिवः)** कामयमानान् **(नॄन्)** नायकान् **(द्विषः)** द्वेष्टॄन् **(अंहांसि)** पापानि **(दुरिता)** दुःखस्य प्रापकाणि **(तरेम)** उल्लङ्घयेम **(ता)** तानि **(तरेम)** **(तव)** **(अवसा)** रक्षणाद्येन **(तरेम)**॥११॥

**अन्वयः**-हे मित्रमहो देवाग्ने! त्वं नो देवान् रोदस्योः सुमतिमच्छा वोचो येन स्वस्तिं सुक्षितिं दिवो नॄन् वीहि द्विषो जहि दुरिताऽहांसि वयं तरेम वा तरेम तवावसा तरेम॥११॥

**भावार्थः**-मनुष्यैर्विदुषः सङ्गत्य बलं प्राप्य शत्रून् विजित्य दुःखसागरात् तरणीयमिति॥११॥

अत्राग्निविद्वद्गुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति द्वितीयं सूक्तं द्वितीयो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे **(मित्रमहः)** मित्र आदर करने योग्य जिसके ऐसे **(देव)** दान करनेवाले **(अग्ने)** अग्नि के सदृश वर्त्तमान जन! आप **(नः)** हम लोगों के **(देवान्)** विद्वान् दाता जनों को **(रोदस्योः)** अन्तरिक्ष और पृथिवी के मध्य में **(सुमतिम्)** श्रेष्ठ बुद्धि का **(अच्छा)** उत्तम प्रकार **(वोचः)** उपदेश करें जिस कारण से **(स्वस्तिम्)** सुख वा शान्ति तथा **(सुक्षितिम्)** उत्तम पृथिवी वा उत्तम निवास को **(दिवः)** कामना करते हुए और **(नॄन्)** नायक जनों को **(वीहि)** व्याप्त हूजिये और **(द्विषः)** द्वेष करने वालों का



www.9009.co.in

त्याग करो तथा **(दुरिता)** दु:ख के प्राप्त कराने वाले **(अंहासि)** पापों के हम लोग **(तरेम)** पार होवें **(ता)** उनको **(तरेम)** फिर भी पार हों और **(तव)** आपके **(अवसा)** रक्षण आदि से **(तरेम)** पार होवें॥११॥

**भावार्थ:-**मनुष्यों को चाहिये कि विद्वानों को मिल कर और बल को प्राप्त होकर शत्रुओं को जीत कर दु:खरूप सागर से पार हों॥११॥

इस सूक्त में अग्नि और विद्वान् के गुणवर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ संगति जाननी चाहिये॥

**यह द्वितीय सूक्त और द्वितीय वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

**अथाष्टर्चस्य तृतीयस्य सूक्तस्य भारद्वाजो बार्हस्पत्य ऋषिः। अग्निर्देवता। १, ३, ४ त्रिष्टुप्। २, ५, ६, ७ निचृत्त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः। ८ भुरिक्पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः॥**

*पुनर्विद्वद्भिः किं कर्त्तव्यमित्याह॥*

अब आठ ऋचावाले तीसरे सूक्त का आरम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में फिर विद्वानों को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**अग्ने स क्षेषदृतपा ऋतेजा उरु ज्योतिर्नशते देवयुष्टे।**
**यं त्वं मित्रेण वरुणः सजोषा देव पासि त्यजसा मर्तमंहः॥ १॥**

**अग्ने। सः। क्षेषत्। ऋतऽपाः। ऋतेऽजाः। उरु। ज्योतिः। नशते। देवऽयुः। ते। यम्। त्वम्। मित्रेण। वरुणः। सऽजोषाः। देव। पासि। त्यजसा। मर्तम्। अंहः॥ १॥**

**पदार्थः-(अग्ने)** विद्युदिव तेजस्विन् विद्वन् **(सः)** **(क्षेषत्)** निवसति **(ऋतपाः)** य ऋतं सत्यं पाति **(ऋतेजाः)** य ऋते सत्ये जायते **(उरु)** बहु **(ज्योतिः)** प्रकाशम् **(नशते)** प्राप्नोति **(देवयुः)** देवान् कामयमानः **(ते)** तव **(यम्)** **(त्वम्)** **(मित्रेण)** सख्या **(वरुणः)** वरः **(सजोषाः)** समानप्रीतिसेवी **(देव)** सुखप्रदातः **(पासि)** रक्षसि **(त्यजसा)** त्यागेन **(मर्त्तम्)** मनुष्यम् **(अंहः)** पापम्। अपराधरूपम्॥१॥

**अन्वयः**-हे देवाग्ने! यथर्तपा ऋतेजाः सूर्य उरु ज्योतिर्नशते तथा देवयुस्संस्ते मित्रेण सहितो वरुणः सजोषा वर्त्तते यमंहो मर्त्तं त्वं त्यजसा पासि स पुण्यात्मा सन् क्षेषत्॥१॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यथेश्वरेण सृष्टः सूर्य्यः सर्वं जगत् प्रकाशयति तथैव विदुषां सङ्गेन जाता विद्वांसो सर्वेषामात्मनः प्रकाशयन्ति यथा सूर्य्यस्तमो हत्वा दिनं जनयति तथैव जातविद्यो धार्मिको विद्वानविद्यां हत्वा विद्यां प्रकटयति॥१॥

**पदार्थः**-हे **(देव)** सुख के देने वाले **(अग्ने)**बिजुली के सदृश तेजस्वी विद्वान् जैसे **(ऋतपाः)** सत्य का पालन करने और **(ऋतेजाः)** सत्य में प्रकट होने वाला सूर्य्य **(उरु)** बड़े **(ज्योतिः)** प्रकाश को **(नशते)** प्राप्त होता है, वैसे **(देवयुः)** विद्वानों की कामना करता हुआ **(ते)** आपके **(मित्रेण)** मित्र के सहित **(वरुणः)** श्रेष्ठ **(सजोषाः)** तुल्य प्रीति का सेवन करने वाला वर्त्तमान है और **(यम्)** जिस **(अंहः)** अपराधी **(मर्त्तम्)** मनुष्य की **(त्वम्)** आप **(त्यजसा)** त्याग से **(पासि)** रक्षा करते हो **(सः)** वह पुण्यात्मा होता हुआ **(क्षेषत्)** निवास करता है॥१॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे ईश्वर से रचा गया सूर्य्य सम्पूर्ण जगत् को प्रकाशित करता है वैसे ही विद्वानों के संग से हुए विद्वान् सब के आत्माओं को प्रकाशित करते हैं और जैसे सूर्य्य अन्धकार का नाश करके दिन को प्रकट करता है, वैसे ही विद्या को प्राप्त हुआ धार्मिक विद्वान् अविद्या का नाश करके विद्या को प्रकट करता है॥१॥



www.9009.co.in

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**ई॒जे य॒ज्ञेभि॑ः शश॒मे शमी॑भिर्ऋ॒धद्वा॑राया॒ग्नये॑ ददाश।**

**ए॒वा च॒न तं य॒शसा॒मजु॑ष्टि॒र्नांहो॒ मर्तं॑ नशते॒ न प्रदृ॑प्तिः॥२॥**

**ई॒जे। य॒ज्ञेभि॑ः। श॒श॒मे। शमी॑भिः। ऋ॒धत्ऽवा॑राय। अ॒ग्नये॑। द॒दा॒श। ए॒व। च॒न। तम्। य॒शसा॑म्। अजु॑ष्टिः। न। अंह॑ः। मर्त॑म्। न॒श॒ते। न। प्रऽदृ॑प्तिः॥२॥**

**पदार्थः**-(**ईजे**) सङ्गच्छते (**यज्ञेभिः**) विद्वत्सेवासत्यभाषणादिभिः (**शशमे**) शाम्याति (**शमीभिः**) शुभैः कर्मभिः (**ऋधद्वाराय**) ऋधत्संवर्धकः सत्यो वारस्स्वीकरणीयो व्यवहारो यस्य तस्मै (**अग्नये**) अग्निरिव वर्त्तमानाय सुपात्राय (**ददाश**) ददाति (**एवा**) अत्र **निपातस्य चे**ति दीर्घः। (**चन**) अपि (**तम्**) (**यशसाम्**) धनानामन्नानां वा (**अजुष्टिः**) असेवनम् (**न**) इव (**अंहः**) अपराधः पापम् (**मर्त्तम्**) मनुष्यम् (**नशते**) प्राप्नोति (**न**) निषेधे (**प्रदृप्तिः**) प्रकृष्टो मोहः॥२॥

**अन्वयः**-यो विद्वान् यज्ञेभिरीजे शमीभिः शशमे। ऋधद्वारायाऽग्नये ददाश तमेवा चन मर्त्तं यशसामजुष्टिर्नांहो न नशते प्रदृप्तिः प्राप्नोति॥२॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। ये सत्यभाषणादिधर्मानुष्ठाना योगिनोऽभयदातारः सन्ति ते पापं मोहं च त्यक्त्वा विज्ञानं प्राप्य सुखिनो भवन्ति॥२॥

**पदार्थः**–जो विद्वान् (**यज्ञेभिः**) विद्वानों की सेवा और सत्य भाषण आदिकों के साथ (**ईजे**) उत्तम प्रकार मिलता है और (**शमीभिः**) शुभ कर्म्मों से (**शशमे**) शान्त होता है (**ऋधद्वाराय**) उत्तम प्रकार बढ़ाने वाला सत्य स्वीकार करने योग्य व्यवहार जिसका उस (**अग्नये**) अग्नि के सदृश वर्त्तमान सुपात्र के लिये (**ददाश**) देता है (**तम्**) उसको (**एवा**) ही (**चन**) निश्चय से (**मर्त्तम्**) मनुष्य को और (**यशसाम्**) धनों वा अन्नों का (**अजुष्टिः**) असेवन (**न**) जैसे वैसे (**अंहः**) अपराध (**न**) नहीं (**नशते**) प्राप्त होता है और (**प्रदृप्तिः**) अत्यन्त मोह प्राप्त होता है॥२॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जो सत्यभाषण आदि धर्म्म के अनुष्ठान करने वाले योगी अभय देने वाले हैं, वे पाप और मोह का त्याग करके विज्ञान को प्राप्त होकर सुखी होते हैं॥२॥

**पुनर्विदुषां बुद्धिः कीदृशी भवतीत्याह॥**

फिर विद्वानों को बुद्धि कैसी होती है, इस विषय को कहते हैं॥

**सूरो॒ न यस्य॑ दृश॒तिर॑रे॒पा भी॒मा यदेति॑ शु॒चत॒स्त आ धीः।**

**हेष॑स्वतः शु॒रुधो॒ नायम॒क्तोः कुत्रा॑ चिद्र॒ण्वो व॑स॒तिर्व॑ने॒जाः॥३॥**

**सूर॑ः। न। यस्य॑। दृ॒श॒तिः। अ॒रे॒पाः। भी॒मा। यत्। एति॑। शु॒च॒तः। ते॒। आ। धीः। हेष॑स्वतः। शु॒रुध॑ः। न। अ॒यम्। अ॒क्तोः। कुत्र॑। चि॒त्। र॒ण्वः। व॒स॒तिः। व॒ने॒ऽजाः॥३॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**सूरः**) सूर्य्यः (**न**) इव (**यस्य**) (**दृशातिः**) दर्शनम् (**अरेपाः**) निष्पापः (**भीमा**) भयङ्करीः (**यत्**) या (**एति**) प्राप्नोति (**शुचतः**) शोकातुरस्य (**ते**) (**आ**) (**धीः**) प्रज्ञाः (**हेषस्वतः**) हेषाः प्रसिद्धाः शब्दा विद्यन्ते यस्य तस्य (**शुरुधः**) यः शुरुमन्धकारहिंसकं तेजो दधाति स सूर्य्यः (**न**) इव (**अयम्**) (**अक्तोः**) रात्रेः (**कुत्रा**) (**चित्**) अपि (**रण्वः**) रमणीयः (**वसतिः**) यो निवसति सः (**वनेजाः**) किरणसमुदाये जायते सः॥३॥

**अन्वयः**-हे विद्वन्! यस्य हेषस्वतः शुचतस्ते यद्या दृशतिररेपा भीमा धीस्सूरो न आ एति तस्याऽयं शुरुधोऽक्तोर्निवर्त्तको न कुत्रा चिद्रण्वो वनेजा वसतिर्वर्त्तते तं वयं सेवेमहि॥३॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। यस्य विदुषः सूर्य्यस्य ज्योतिरिव वा विद्युदिव प्रज्ञा वर्त्तते स एव समग्रं यावद्योग्यं तावद्विज्ञानं प्राप्नोति॥३॥

**पदार्थः**-हे विद्वन्! (**यस्य**) जिन (**हेषस्वतः**) प्रसिद्ध शब्द विद्यमान जिसके उन (**शुचतः**) शोक से व्याकुल (**ते**) आपका (**यत्**) जो (**दृशातिः**) दर्शन और (**अरेपाः**) पाप से रहित और (**भीमा**) भयकारक (**धीः**) बुद्धि (**सूरः**) सूर्य्य के (**न**) जैसे वैसे (**आ, एति**) प्राप्त होती है उसका (**अयम्**) यह (**शुरुधः**) अन्धकार को नाश करने वाले तेज का धारण करने वाला सूर्य्य (**अक्तोः**) रात्रि का दूर करने वाला (**न**) जैसे वैसे (**कुत्रा**) (**चित्**) कहीं भी (**रण्वः**) सुन्दर (**वनेजाः**) किरणों के समुदाय में उत्पन्न होने और (**वसतिः**) निवास करने वाला वर्त्तमान है, उसकी हम लोग सेवा करें॥३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जिस विद्वान् की सूर्य्य की ज्योति वा बिजुली के सदृश बुद्धि है, वही सम्पूर्ण, जितना योग्य उतने, विज्ञान को प्राप्त होता है॥३॥

**पुनर्विद्वद्भिः कथं वर्त्तितव्यमित्याह॥**

फिर विद्वानों को कैसा वर्त्ताव करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**तिग्मं चिदेम महि वर्पो अस्य भसदश्वो न यमसान आसा।**

**विजेहमानः परशुर्न जिह्वां द्रविर्न द्रावयति दारु धक्षत्॥४॥**

**तिग्मम्। चित्। एम। महि। वर्पः। अस्य। भसत्। अश्वः। न। यमसानः। आसा। विऽजेहमानः। परशुः। न। जिह्वाम्। द्रविः। न। द्रवयति। दारु। धक्षत्॥५॥**

**पदार्थः**-(**तिग्मम्**) तीव्रम् (**चित्**) अपि (**एम**) प्राप्नुयाम (**महि**) महत् (**वर्पः**) रूपम् (**अस्य**) विदुषः (**भसत्**) भासयति (**अश्वः**) आशुगन्ता तुरङ्गः (**न**) इव (**यमसानः**) नियन्ता सन् (**आसा**) आस्येन। (**विजेहमानः**) शब्दायमानः (**परशुः**) कुठारः (**न**) इव (**जिह्वाम्**) वाणीम् (**द्रविः**) द्रवीभूत्वोच्चारणक्रिया (**न**) इव (**द्रावयति**) (**दारु**) काष्ठम् (**धक्षत्**)॥४॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यस्यास्य तिग्मं महि वर्पो यमसानो विजेहमानोऽश्वो नाऽऽसा भसत् परशुर्न जिह्वां द्रविर्न द्रावयति दारु धक्षत् तं चिद्वयमेम॥४॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। हे विद्वन्! यथा सुशिक्षितोऽश्वो जनं मार्गं नयति तथा धर्म्मपथमस्मान्नय। यथा तक्षा परशुना काष्ठं छिनत्ति तथास्माकं दोषाञ्छिन्धि यथा तालुज आर्द्रो रसो जिह्वां प्राप्नोति तथा विद्यारसं प्रापय। यथाग्निः काष्ठानि दहति तथैवास्माकं दुर्व्यसनानि दह॥४॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जिस **(अस्य)** इस विद्वान् के **(तिग्मम्)** तीव्र **(महि)** बड़े **(वर्पः)** रूप का **(यमसानः)** नियम करता और **(विजेहमानः)** शब्द करता हुआ **(अश्वः)** शीघ्र चलने वाला घोड़ा **(न)** जैसे वैसे **(आसा)** मुख से **(भसत्)** प्रकाशित करता है और **(परशुः)** कुठार **(न)** जैसे वैसे **(जिह्वाम्)** वाणी को **(द्रविः)** द्रवी होकर उच्चारण की क्रिया **(न)** जैसे वैसे **(द्रावयति)** गीला करता है और **(दारु)** काष्ठ को **(धक्षत्)** जलावे उसको **(चित्)** निश्चय से हम लोग **(एम)** प्राप्त होवें॥४॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे विद्वन्! जैसे उत्तम प्रकार से शिक्षित घोड़ा मनुष्य को मार्ग में पहुंचाता है, वैसे धर्ममार्ग को हम लोगों को पहुंचाइये और जैसे बढ़ई परशु से काष्ठ को काटता है, वैसे हम लोगों के दोषों को काटिये और जैसे तालु से उत्पन्न आर्द्ररस जिह्वा को प्राप्त होता है, वैसे विद्या के रस को प्राप्त कराइये तथा जैसे अग्नि काष्ठों को जलाता है, वैसे ही हमारे दुर्व्यसनों को जलाइये॥४॥

**पुनर्मनुष्याः कथं वर्त्तेरन्नित्याह॥**

फिर मनुष्य कैसा वर्त्ताव करें, इस विषय को कहते हैं॥

**स इदस्तेव प्रति धादसिष्यञ्छिशीत तेजोऽयसो न धाराम्।**

**चित्रध्रजतिररतिर्यो अक्तोर्वेर्न द्रुषद्वा रघुपत्मजंहाः॥५॥३॥**

**सः। इत्। अस्ताऽइव। प्रति। धात्। असिष्यन्। शिशीत। तेजः। अयसः। न। धाराम्। चित्रऽध्रजतिः। अरतिः। यः। अक्तोः। वेः। न। द्रुऽसद्वा। रघुपत्मऽजंहाः॥५॥३॥**

**पदार्थः**-**(सः)** अग्निः **(इत्)** एव **(अस्तेव)** प्रक्षेप्ता इव **(प्रति)** **(धात्)** दधाति **(असिष्यन्)** बन्धनमप्राप्नुवन् **(शिशीत)** तीक्ष्णीकरोति **(तेजः)** **(अयसः)** सुवर्णस्य **(न)** इव **(धाराम्)** वाचम्। **(चित्रध्रजतिः)** विचित्रगतिः **(अरतिः)** अरमणः **(यः)** **(अक्तोः)** रात्रेः **(वेः)** पक्षिणः **(न)** इव **(द्रुषद्वा)** यो द्रुषद्द्रवीभूतादिषु पदार्थेषु सीदति **(रघुपत्मजंहाः)** यो लघुपतनं जहाति सः॥५॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यश्चित्रध्रजतिररतिरक्तोर्वेर्न द्रुषद्वा रघुपत्मजंहा इत्तज्ञायते। सोऽस्तेवासिष्यन्नयसो न तेजो धारां प्रतिधात् स इत्तेजः शिशीत॥५॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। यदि मनुष्या अग्निं बद्ध्वा तीक्ष्णीकृत्य युद्धादिकार्येषु प्रयुञ्जते तर्हि पक्षिवदाकाशे गन्तुं शक्नुयुः॥५॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(यः)** जो **(चित्रध्रजतिः)** विचित्र गमन वाला **(अरतिः)** नहीं रमण करता हुआ **(अक्तोः)** रात्रि से और **(वेः)** पक्षी से **(न)** जैसे वैसे **(द्रुषद्वा)** द्रवीभूत आदि पदार्थों में स्थित होने और **(रघुपत्मजंहाः)** लघुपतन का त्याग करने वाला ही प्रकट होता है **(सः)** वह अग्नि **(अस्तेव)** फूँकने



www.9009.co.in

वाले के सदृश **(असिष्वन्)** बन्धन को नहीं प्राप्त होता हुआ **(अयसः)** सुवर्ण के **(न)** जैसे **(तेजः)** तेज को वैसे **(धाराम्)** वाणी को **(प्रति, धात्)** धारण करता है, वह **(इत्)** ही तेज को **(शिशीत)** तीक्ष्ण करता है॥५॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जो मनुष्य अग्नि को बांध और तीक्ष्ण करके युद्ध आदि कार्य्यों में प्रयुक्त करते हैं तो पक्षि के सदृश आकाश में जाने को समर्थ होवें॥५॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**स ईं रेभो न प्रति वस्त उस्राः शोचिषा रारपीति मित्रमहाः।**

**नक्तं य ईमरुषो यो दिवा नॄनमर्त्यो अरुषो यो दिवा नॄन्॥६॥**

**सः। ईम्। रेभः। न। प्रति। वस्ते। उस्राः। शोचिषा। रारपीति। मित्रऽमहाः। नक्तम्। यः। ईम्। अरुषः। यः। दिवा। नॄन्। अमर्त्यः। अरुषः। यः। दिवा। नॄन्॥६॥**

**पदार्थः**-**(सः)** **(ईम्)** उदकम् **(रेभः)** पूजनीयो विद्वान् विदुषां सत्कर्त्ता वा। **रेभतीत्यर्चतिकर्म्मा।** (निघं०३.१४) **(न)** इव **(प्रति)** **(वस्ते)** आच्छादयति **(उस्राः)** किरणान् **(शोचिषा)** दीप्त्या सह **(रारपीति)** भृशं शब्दयति **(मित्रमहाः)** यो मित्राणि पूजयति **(नक्तम्)** रात्रिम् **(यः)** **(ईम्)** सर्वतः **(अरुषः)** रक्तगुणविशिष्टः **(यः)** **(दिवा)** कामनया **(नॄन्)** नायकान् **(अमर्त्यः)** स्वरूपेण मृत्युरहितः **(अरुषः)** योऽरुष्षु मर्मसु सीदति सः **(यः)** **(दिवा)** कामनया प्रीत्या सह वा **(नॄन्)** नेतॄन्॥६॥

**अन्वयः**-योऽरुषो नक्तमीं योऽमर्त्यो दिवा नॄन् योऽरुषो दिवा नॄन् सङ्गच्छते स ईं रेभो न शोचिषोस्राः प्रति वस्ते मित्रमहा रारपीति॥६॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यथा सूर्यो जलमाकृष्य वर्षयित्वा प्राणिभ्यः सुखं ददाति तथा विद्वान् गुणानाकृष्य प्रदाय सर्वान् जिज्ञासून् सुखयति॥६॥

**पदार्थः**-**(यः)** जो **(अरुषः)** रक्तगुण के सहित वर्त्तमान **(नक्तम्)** रात्रि को **(ईम्)** सब ओर से **(यः)** जो **(अमर्त्यः)** अपने रूप से मृत्युरहित **(दिवा)** कामना से **(नॄन्)** नायक मनुष्यों को **(यः)** जो **(अरुषः)** मर्मस्थलों में वर्त्तमान हुआ **(दिवा)** कामना वा प्रीति के साथ **(नॄन्)** नायक जनों के साथ मिलता है **(सः)** वह **(ईम्)** जल और **(रेभः)** आदर करने योग्य विद्वान् वा विद्वानों का सत्कार करने वाला **(न)** जैसे वैसे **(शोचिषा)** दीप्ति के सहित वर्त्तमान **(उस्राः)** किरणों को **(प्रति, वस्ते)** आच्छादित करता है और **(मित्रमहाः)** मित्रों का आदर करने वाला **(रारपीति)** अत्यन्त शब्द करता है॥६॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जैसे सूर्य जल का आकर्षण कर और उस जल को वर्षाय के प्राणियों के लिये सुख देता है, वैसे विद्वान् पुरुष गुणों का आकर्षण कर और गुणों को दे करके सब जिज्ञासु जनों को सुख देता है॥६॥



www.9009.co.in

**पुनः स कीदृश इत्याह॥**

फिर वह कैसा है, इस विषय को कहते हैं॥

**दिवो न यस्य विधतो नवीनोद् वृषा रुक्ष ओषधीषु नूनोत्।**

**घृणा न यो ध्रजसा पत्मना यन्ना रोदसी वसुना दं सुपत्नी॥७॥**

**दिवः। न। यस्य। विधतः। नवीनोत्। वृषा। रुक्षः। ओषधीषु। नूनोत्। घृणा। न। यः। ध्रजसा। पत्मना। यन्। आ। रोदसी इति। वसुना। दम्। सुपत्नी इति सुऽपत्नी॥७॥**

**पदार्थः-(दिवः)** प्रकाशस्य **(न)** इव **(यस्य)** वैद्यस्य **(विधतः)** विधानं कुर्वतः **(नवीनोत्)** भृशं स्तुतीभवति **(वृषा)** बलिष्ठः **(रुक्षः)** तेजस्वी **(ओषधीषु)** **(नूनोत्)** भृशं स्तौति **(घृणा)** दीप्तिः **(न)** इव **(यः)** **(ध्रजसा)** गमनेन **(पत्मना)** उद्गमनेन **(यन्)** य एति **(आ)** समन्तात् **(रोदसी)** द्यावापृथिव्यौ **(वसुना)** धनेन **(दम्)** यो दमयति तम् **(सुपत्नी)** शोभनः पतिर्ययोस्ते॥७॥

**अन्वयः**-यस्य दिवो न विधतो वृषा रुक्षो नवीनोदोषधीषु नूनोद्यो घृणा न ध्रजसा पत्मना वसुना सुपत्नी रोदसी यन्दमाऽऽनूनोत् सोऽग्निः सर्वैर्वेदितव्यः॥७॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। योऽग्निः पृथिव्यादिषु पूर्णो घर्षणादिना प्रकाश्येत स मनुष्याणामनेकविधकार्य्यकारी भवति॥७॥

**पदार्थः-(यस्य)** जिस वैद्य के **(दिवः)** प्रकाश का **(न)** जैसे वैसे **(विधतः)** विधान करते हुए का **(वृषा)** बलिष्ठ **(रुक्षः)** तेजस्वी जन **(नवीनोत्)** अत्यन्त स्तुति युक्त होता है तथा **(ओषधीषु)** ओषधियों के निमित्त **(नूनोत्)** अत्यन्त स्तुति करता है और **(यः)** जो **(घृणा)** दीप्ति **(न)** जैसे वैसे **(ध्रजसा)** गमन और **(पत्मना)** उद्गमन से **(वसुना)** और धन से **(सुपत्नी)** सुन्दर स्वामी वाली **(रोदसी)** अन्तरिक्ष और पृथिवी को **(यन्)** प्राप्त होने वाला वह **(दम्)** इन्द्रियों के निग्रह करने वाले की **(आ)** सब ओर से अत्यन्त स्तुति करता है, वह अग्नि सब से जानने के योग्य है॥७॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जो अग्नि पृथिवी आदिकों में पूर्ण हुआ घिसने आदि से प्रकाशित होवे, वह मनुष्यों के अनेक प्रकार के कार्य्यों को करने वाला होता है॥७॥

**अथ कीदृशो नरो राजा भवितुं योग्यः स्यादित्याह॥**

अब कैसा मनुष्य राजा होने के योग्य है, इस विषय को कहते हैं॥

**धायोभिर्वा यो युज्येभिरर्कैर्विद्युन्न दविद्योत्स्वेभिः शुष्मैः।**

**शर्धो वा यो मरुतां ततक्ष ऋभुर्न त्वेषो रभसानो अद्यौत्॥८॥४॥**

**धायःऽभिः। वा। यः। युज्येभिः। अर्कैः। विऽद्युत्। न। दविद्योत्। स्वेभिः। शुष्मैः। शर्धः। वा। यः। मरुताम्। ततक्ष। ऋभुः। न। त्वेषः। रभसानः। अद्यौत्॥८॥४॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-**(धायोभिः)** धारकैर्गुणैर्वा **(वा)** **(यः)** **(युज्येभिः)** योक्तव्यैः **(अर्कैः)** अर्चनीयैस्सत्कारहेतुभिः **(विद्युत्)** **(न)** इव **(दविद्योत्)** प्रकाशते **(स्वेभिः)** स्वकीयैः **(शुष्मैः)** बलैः **(शर्धः)** बलम् **(वा)** **(यः)** **(मरुताम्)** मनुष्याणाम् **(ततक्ष)** तीक्ष्णीकरोति **(ऋभुः)** मेधावी **(न)** इव **(त्वेषः)** देदीप्यमानः **(रभसानः)** वेगवान् **(अद्यौत्)** प्रकाशते॥८॥

**अन्वयः**-हे विद्वन्! यो धायोभिर्युज्येभिः स्वेभिः शुष्मैर्गुणैर्वा विद्युन्न स्वेभिरर्कैर्दविद्योद्यो वा मरुतां शर्ध ऋभुर्न ततक्ष त्वेषो रभसानो नाद्यौत्स एव राजा संस्थापनीयः॥८॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यो विद्युद्वत्प्रतापी बलिष्ठः संयोग-वियोगविद्यायां विचक्षणो मेधावी विद्वान् धर्म्मात्मा जितेन्द्रियः पितृवत्प्रजापालनप्रियः क्षत्रियः स्यात्स एव राजा भवितुमर्हेत्॥८॥

अत्राग्निविद्वद्गुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति तृतीयं सूक्तं चतुर्थो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे विद्वन्! **(यः)** जो **(धायोभिः)** धारण करने वालों वा गुणों से और **(युज्येभिः)** युक्त करने योग्य **(स्वेभिः)** अपने **(शुष्मैः)** बलों और गुणों से **(वा)** वा **(विद्युत्)** बिजुली **(न)** जैसे वैसे **(स्वेभिः)** अपने **(अर्कैः)** सत्कारों योग्य कारणों से **(दविद्योत्)** प्रकाशित होता है **(यः)** जो **(वा)** वा **(मरुताम्)** मनुष्यों के **(शर्धः)** बल को **(ऋभुः)** बुद्धिमान् जन **(न)** जैसे वैसे **(ततक्ष)** तीक्ष्ण करता है तथा **(त्वेषः)** प्रकाशयुक्त और **(रभसानः)** वेगयुक्त जैसे **(अद्यौत्)** प्रकाशित होता है, वही राजा संस्थापित करने योग्य है॥८॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जो बिजुली के सदृश प्रतापी, बलवान्, पदार्थों के संयोग और वियोग की विद्या में चतुर, बुद्धिमान्, विद्वान्, धर्मात्मा, इन्द्रियों को जीतने वाला और प्रजापालनप्रिय क्षत्रिय होवे, वही राजा होने के योग्य होवे॥८॥

इस सूक्त में अग्नि और विद्वान् के गुणवर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह तीसरा सूक्त और चौथा वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

**अथाष्टर्चस्य चतुर्थस्य सूक्तस्य भरद्वाजो बार्हस्पत्य ऋषिः। अग्निर्देवता। १ त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः। २, ५, ७ भुरिक्पङ्क्तिः। ६ स्वराट्पङ्क्ति। ३, ४ निचृत्पङ्क्तिः। ८ पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः॥**

***अथ मनुष्यैः किं कर्त्तव्यमित्याह॥***

अब आठ ऋचा वाले चौथे सूक्त का आरम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में मनुष्यों को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**यथा॑ होत॒र्मनु॑षो दे॒वता॑ता य॒ज्ञेभि॑ः सूनो सहसो॒ यजा॑सि।**
**ए॒वा नो॑ अ॒द्य स॑म॒ना स॑मा॒नानु॒शन्न॑ग्न उश॒तो य॑क्षि दे॒वान्॥ १॥**

**यथा॑। हो॒तः॒। मनु॑षः। दे॒वऽता॑ता। य॒ज्ञेभि॑ः। सू॒नो॒ इति॑। स॒ह॒सः॒। यजा॑सि। ए॒व। नः॒। अ॒द्य। स॒म॒ना। स॒मा॒नान्। उ॒शन्। अ॒ग्ने॒। उ॒श॒तः। य॒क्षि॒। दे॒वान्॥ १॥**

**पदार्थः**-(**यथा**) (**होतः**) दातः (**मनुषः**) मनुष्यः (**देवताता**) दिव्ये यज्ञे (**यज्ञेभिः**) सङ्गतैः साधनोपसाधनैः (**सूनो**) अपत्य (**सहसः**) बलिष्ठस्य (**यजासि**) यजेत् (**एवा**) अत्र **निपातस्य चे**ति दीर्घः। (**नः**) अस्मान् (**अद्य**) (**समना**) सङ्ग्रामे। विभक्तेराकारादेशः। **समनमिति सङ्ग्रामनाम।** (निघं०२.१७) (**समानान्**) सदृशान् (**उशन्**) कामयमान (**अग्ने**) अग्निरिव विद्वन् (**उशतः**) कामयमानान् (**यक्षि**) सङ्गच्छस्व (**देवान्**) विदुषः॥ १॥

**अन्वयः**-हे सहसः सूनो होतरुशन्नग्ने! यथा मनुषो यज्ञेभिर्देवताता यजासि तथा त्वमद्य समानानुशतो नोऽस्मान् देवान् समनैवा यक्षि॥ १॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। यथा विद्वांस ऋत्विजः साङ्गोपाङ्गैः साधनैर्यज्ञमलङ्कुर्वन्ति तथैव शूरवीरैर्बलिष्ठैर्योद्धृभिर्विद्वद्भी राजानः सङ्ग्रामं विजयेरन्॥ १॥

**पदार्थः**-हे (**सहसः**) बलवान् के (**सूनो**) सन्तान और (**होतः**) दान करने वाले (**उशन्**) कामना करते हुए (**अग्ने**) अग्नि के समान विद्वन्! (**यथा**) जैसे (**मनुषः**) मनुष्य आप (**यज्ञेभिः**) मिले हुए साधनों और उपसाधनों से (**देवताता**) श्रेष्ठ यज्ञ में (**यजासि**) यजन करें, वैसे आप (**अद्य**) इस समय (**समानान्**) सदृशों और (**उशतः**) कामना करते हुए (**नः**) हम (**देवान्**) विद्वानों को (**समना**) संग्राम में (**एवा**) ही (**यक्षि**) उत्तम प्रकार मिलिये॥ १॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जैसे विद्वान् यज्ञ के करने वाले जन अंग और उपांगों के सहित साधनों से यज्ञ को शोभित करते हैं, वैसे ही शूरवीर बलवान् योद्धा और विद्वान् जनों से राजा संग्राम को जीतें॥ १॥



www.9009.co.in

**पुनर्जगदीश्वरः कीदृशोऽस्तीत्याह॥**

फिर जगदीश्वर कैसा है, इस विषय को कहते हैं॥

**स नो॑ वि॒भावा॑ च॒क्षणि॒र्न वस्तो॑र॒ग्निर्व॒न्दारु॒ वेद्य॒श्चनो॑ धात्।**

**वि॒श्वायु॒र्यो अ॒मृतो॒ मर्त्ये॑षूष॒र्भुद् भूदति॑थिर्जा॒तवे॑दाः॥ २॥**

**सः। न॒ः। वि॒भाऽवा॑। च॒क्षणि॑ः। न। वस्तो॑ः। अ॒ग्निः। व॒न्दारु॑। वेद्य॑ः। चनः॑। धा॒त्। वि॒श्वऽआ॑यु॒ः। यः। अ॒मृत॑ः। म॒र्त्ये॑षु। उ॒ष॒ऽभुत्। भूत्। अति॑थि॒ः। जा॒तऽवे॑दाः॥ २॥**

**पदार्थः-(सः)** परमेश्वरः **(नः)** अस्माकम् **(विभावा)** विशेषभानवान् **(चक्षणिः)** प्रकाशकः सूर्यः **(न)** इव **(वस्तोः)** दिनम् **(अग्निः)** पावक इव स्वप्रकाशः **(वन्दारु)** प्रशंसनीयम् **(वेद्यः)** वेदितुं योग्यः **(चनः)** अन्नादिकम् **(धात्)** दधाति **(विश्वायुः)** पूर्णायुः **(यः)** **(अमृतः)** नाशरहितः **(मर्त्येषु)** मरणधर्मेषु **(उषर्भुत्)** य उषसि बुध्यते **(भूत्)** भवेत् **(अतिथिः)** अविद्यमानतिथिः **(जातवेदाः)** यो जातेषु विद्यते जातान् सर्वान् वेत्ति वा॥ २॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यो वस्तोश्चक्षणिरग्निर्न नो विभावो वेद्यो विश्वायुर्मर्त्येष्वमृत उषर्भुदतिथिरिव जातवेदा वन्दारु चनो धात्स नो मङ्गलकरो भूत्॥ २॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यो जगदीश्वरः सूर्य्यवत्स्वप्रकाशो वेदितुं योग्योऽजरामरोऽतिथिरिव सत्कर्त्तव्यः सर्वत्र व्याप्तोऽस्ति तं सर्वे उपासीरन्॥ २॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(यः)** जो **(वस्तोः)** दिन और **(चक्षणिः)** प्रकाशक सूर्य और **(अग्निः)** अग्नि के सदृश स्वयं प्रकाशयुक्त **(न)** जैसे वैसे **(नः)** हम लोगों के बीच **(विभावा)** अत्यन्त प्रकाश वाला और **(वेद्यः)** जानने योग्य **(विश्वायुः)** पूर्णावस्था वाला **(मर्त्येषु)** मरणधर्मयुक्त मनुष्यों में **(अमृतः)** नाशरहित और **(उषर्भुत्)** प्रातःकाल में जाना जाता है ऐसा और **(अतिथिः)** जिसके प्राप्त होने की कोई तिथि विद्यमान नहीं उसके समान वर्त्तमान और **(अतिथिः)** जिसके प्राप्त होने की कोई तिथि विद्यमान नहीं उसके समान वर्त्तमान और **(जातवेदाः)** उत्पन्न हुओं में विद्यमान वा उत्पन्न हुए पदार्थों को जानने वाला **(वन्दारु)** प्रशंसा करने योग्य **(चनः)** अन्न आदि को **(धात्)** धारण करता है **(सः)** वह परमेश्वर हम लोगों का मङ्गल करने वाला **(भूत्)** हो॥ २॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जो जगदीश्वर सूर्य्य के सदृश अपने से प्रकाशित, जानने योग्य, अजर, अमर, अतिथि के सदृश सत्कार करने योग्य और सर्वत्र व्याप्त है, उसकी सब उपासना करें॥ २॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**द्यावो॒ न यस्य॑ प॒नय॒न्त्यभ्वं॒ भासां॑सि वस्ते॒ सूर्यो॒ न शु॒क्रः।**



www.9009.co.in

**वि य इनोत्यजरः पावकोऽश्नस्य चिच्छिश्नथत्पूर्व्याणि॥३॥**

**द्यावः। न। यस्य। पनयन्ति। अभ्वम्। भासांसि। वस्ते। सूर्यः। न। शुक्रः। वि। यः। इनोति। अजरः। पावकः। अश्नस्य। चित्। शिश्नथत्। पूर्व्याणि॥३॥**

**पदार्थः**-(**द्यावः**) कामयमाना विद्वांसः (**न**) इव (**यस्य**) परमेश्वरस्य (**पनयन्ति**) स्तावयन्ति (**अभ्वम्**) महान्तं महिमानम् (**भासांसि**) प्रकाशान् (**वस्ते**) आच्छादयति (**सूर्य्यः**) (**न**) इव (**शुक्रः**) (**वि**) विशेषेण (**यः**) (**इनोति**) प्राप्नोति। **इन्वतिर्व्याप्तिकर्म्मा।** (निघं०२.१८) (**अजरः**) जरादोषरहितः (**पावकः**) पवित्रः पवित्रकर्त्ता वा (**अश्नस्य**) व्यापकस्य (**चित्**) (**शिश्नथत्**) प्रलयं करोति (**पूर्व्याणि**) पूर्वनिर्म्मितानि वस्तूनि॥३॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! द्यावो न जना यस्याऽभ्वं पनयन्ति सूर्य्यो न शुक्रः सन् भासांसि वस्ते योऽजरः पावको वीनोत्यश्नस्य मध्ये पूर्व्याणि चिच्छिश्नथत् स एव जगदीश्वरी ज्ञेयोऽस्ति॥३॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यः परमेश्वरः प्रकाशकानां प्रकाशको नित्यानां नित्यश्चेतनानां चेतनोऽस्ति तमेव भजत॥३॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! (**द्यावः**) कामना करते हुए विद्वान् जन (**न**) जैसे वैसे जन (**यस्य**) जिस परमेश्वर की (**अभ्वम्**) बड़ी महिमा की (**पनयन्ति**) स्तुति कराते हैं और (**सूर्य्यः**) सूर्य्य (**न**) जैसे वैसे (**शुक्रः**) शुद्ध, पवित्र वा बलिष्ठ जन (**भासांसि**) तेजों को (**वस्ते**) आच्छादित करता है और (**यः**) जो (**अजरः**) जरादोष से रहित (**पावकः**) पवित्र और सब को पवित्र करने वाला (**वि, इनोति**) विशेष व्याप्त होता है और (**अश्नस्य**) व्यापक के मध्य में (**पूर्व्याणि**) पहिले निर्मित वस्तुओं का (**चित्**) भी (**शिश्नथत्**) प्रलय करता है, वही जगदीश्वर जानने योग्य है॥३॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो परमेश्वर प्रकाशकों का प्रकाशक, नित्यों का नित्य और चेतनों का चेतन है, उसी का भजन करो॥३॥

**पुनर्मनुष्यैः किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**वद्मा हि सूनो अस्यद्मसद्वा चक्रे अग्निर्जनुषाज्मान्नम्।**
**स त्वं न ऊर्जसन ऊर्जं धा राजेव जेरवृके क्षेष्यन्तः॥४॥**

**वद्मा। हि। सूनो इति। असि। अद्मऽसद्वा। चक्रे। अग्निः। जनुषा। अज्म। अन्नम्। सः। त्वम्। नः। ऊर्जऽसने। ऊर्जम्। धाः। राजाऽइव। जेः। अवृके। क्षेषि। अन्तरिति॥४॥**

**पदार्थः**-(**वद्मा**) यो वदति (**हि**) (**सूनो**) यत्सूते सकलं जगत् तत्सम्बुद्धौ (**असि**) (**अद्मसद्वा**) यो अद्मेषु भोक्तव्येषु सीदति (**चक्रे**) करोति (**अग्निः**) पावकः (**जनुषा**) जन्मना (**अज्म**) प्राप्तव्यम् (**अन्नम्**)



www.9009.co.in

अत्तव्यम् **(सः)** **(त्वम्)** **(नः)** अस्मान् **(ऊर्जसने)** पराक्रमस्य प्रक्षेपणे **(ऊर्जम्)** पराक्रमम् **(धाः)** धेहि **(राजेव)** प्रकाशमानो नृपइव **(जेः)** जयेः **(अवृके)** अचोरे **(क्षेषि)** निवसेः **(अन्तः)** मध्ये॥४॥

**अन्वयः**-हे सूनो! वद्माऽद्मसद्वाग्निर्जनुषाऽज्मान्नं प्राप्तवानसि शुद्धं चक्रे स हि त्वं न ऊर्जसने राजेवोर्जं धा अवृकेऽन्तर्जेः क्षेषि च॥४॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! ये विद्वांसस्त ईश्वरवत्पक्षपातरहिता धर्म्मे निवसन्तः परमेश्वरं भजन्तु॥४॥

**पदार्थः**–हे **(सूनो)** सम्पूर्ण जगत् के रचने वाले! **(वद्मा)** कहने और **(अद्मसद्वा)** भोग्य पदार्थों में प्राप्त रहने वाले **(अग्निः)** पवित्र **(जनुषा)** जन्म से **(अज्म)** प्राप्त होने और **(अन्नम्)** खाने योग्य पदार्थ को प्राप्त हुए **(असि)** हो और शुद्ध **(चक्रे)** करते हो **(सः)** वह **(हि)** निश्चय से **(त्वम्)** आप **(नः)** हम लोगों के लिये **(ऊर्जसने)** पराक्रम के प्रक्षेपण में **(राजेव)** जैसे प्रकाशमान राजा, वैसे **(ऊर्जम्)** पराक्रम क्रो **(धाः)** धारण करिये **(अवृके)** चोर से रहित के **(अन्तः)** मध्य में **(जेः)** जीतिये और **(क्षेषि)** निवास करिये॥४॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। मनुष्यो! जो विद्वान् जन हैं, वे ईश्वर के सदृश पक्षपात से रहित और धर्म्ममार्ग में निवास करते हुए परमेश्वर का भजन करें॥४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**निति॑क्ति॒ यो वा॑र॒णमन्न॒मत्ति॑ वा॒युर्न राष्ट्र्य॒त्ये॑त्य॒क्तून्।**

**तु॒र्याम॒ यस्त॑ आ॒दिशा॒मरा॑ती॒रत्यो॒ न ह्रु॒तः पत॑तः परि॒ह्रुत्॥५॥५॥**

**निऽति॑क्ति। यः। वा॒र॒णम्। अन्न॑म्। अत्ति॑। वा॒युः। न। राष्ट्री॑। अ॒ति॑। ए॒ति॑। अ॒क्तू॒न्। तु॒र्याम॑। यः। ते॒। आ॒ऽदिशा॑म्। अरा॑तीः। अत्यः॑। न। ह्रु॒तः॑। पत॑तः। प॒रि॒ऽह्रुत्॥५॥५॥**

**पदार्थः**-**(नितिक्ति)** यन्नितरां तीव्रीकृतम् **(यः)** **(वारणम्)** वरणीयम् **(अन्नम्)** अत्तव्यम् **(अत्ति)** भक्षयति **(वायुः)** यो वाति सः **(न)** इव **(राष्ट्री)** ईश्वरः। **राष्ट्रीतीश्वरनाम।** (निघं०२.२२) **(अति)** व्याप्तिम् **(एति)** गच्छति **(अक्तून्)** प्रसिद्धान् पदार्थान् **(तुर्याम)** हिंसेम **(यः)** **(ते)** **(आदिशाम्)** समन्ताद् दीयमानानाम् **(अरातीः)** शत्रून् **(अत्यः)** अतति व्याप्नोत्यध्वानमित्यत्योऽश्वः **(न)** इव **(ह्रुतः)** कुटिलत्वं गतः **(पततः)** पतनशीलस्य **(परिह्रुत्)** यः परितः सर्वतो ह्वरति कुटिलां गतिं गच्छति॥५॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यो विद्वान्नितिक्ति वारणमन्नमत्ति वायुर्नाक्तूनत्येति यः पततस्ते ह्रुतोऽत्यो न परिह्रुदस्ति यस्य वयमादिशामरातीस्तुर्याम राष्ट्रीव न्याये वर्त्तेमहि तं वयं सेवेमहि॥५॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यः शुद्धं भोज्यं पेयं च सेवते वायुवद्बलिष्ठ ईश्वरवत्पक्षपातरहितो न्यायाद् वक्रतां गतान् परिहन्ता भवेत्तमेव राजानं मन्यध्वम्॥५॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(यः)** जो विद्वान् **(नितिक्ति)** अत्यन्त तीक्ष्ण किये **(वारणम्)** स्वीकार करने और **(अन्नम्)** खाने योग्य पदार्थ को **(अत्ति)** भक्षण करता और **(वायुः)** पवन **(न)** जैसे **(अक्तून्)** प्रसिद्ध पदार्थों को **(अति, एति)** व्याप्त होता है और **(यः)** जो **(पततः)** पतनशील **(ते)** आप का **(ह्रुतः)** कुटिलता को प्राप्त हुआ **(अत्यः)** मार्ग को व्याप्त हुए घोड़े के **(न)** समान **(परिह्रुत्)** सब ओर से कुटिल गमन करने वाला है और जिसके हम लोग **(आदिशाम्)** सब प्रकार से दिये हुओं के **(अरातीः)** शत्रुओं का **(तुर्याम)** नाश करें और **(राष्ट्री)** ईश्वर जैसे वैसे न्याय में वर्त्ताव करें, उसका हम लोग सेवन करें॥५॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो शुद्ध खाने और पीने योग्य पदार्थ का सेवन करता है, वायु के सदृश बलिष्ठ और ईश्वर के सदृश पक्षपात से रहित होकर न्याय की अपेक्षा से विपरीत दशा को प्राप्त हुओं का मारने वाला हो, उसी को राजा मानो॥५॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**आ सूर्यो न भानुमद्भिरर्कैरग्ने ततन्थ रोदसी वि भासा।**

**चित्रो नयत्परि तमांस्यक्तः शोचिषा पत्मन्नौशिजो न दीयन्॥६॥**

**आ। सूर्यः। न। भानुमत्ऽभिः। अर्कैः। अग्ने। ततन्थ। रोदसी इति। वि। भासा। चित्रः। नयत्। परि। तमांसि। अक्तः। शोचिषा। पत्मन्। औशिजः। न। दीयन्॥६॥**

**पदार्थः**-**(आ)** समन्तात् **(सूर्यः)** सविता **(न)** इव **(भानुमद्भिः)** बहवो भानवः किरणा विद्यन्ते येषु तैः **(अर्कैः)** वज्रवच्छेदकैः। **अर्क इति वज्रनाम।** (निघं०२.२०) **(अग्ने)** पावकवद्वर्त्तमान **(ततन्थ)** तनोसि **(रोदसी)** द्यावापृथिव्यौ **(वि)** **(भासा)** प्रकाशेन **(चित्रः)** नानावर्णोऽद्भुतः **(नयत्)** नयति **(परि)** सर्वतः **(तमांसि)** **(अक्तः)** प्रसिद्धः **(शोचिषा)** प्रकाशेन **(पत्मन्)** पतन्ति गच्छन्ति यस्मिन् मार्गे तस्मिन् **(औशिजः)** कामयमानस्य पुत्रः **(न)** **(दीयन्)** गच्छन्। **दीयतीति गतिकर्म्मा।** (निघ०२.१४)॥६॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! त्वं भानुमद्भिर्कैः सूर्य्यो न भासा वि ततन्थ यथा चित्रस्सविता रोदसी प्रकाशयञ्छोचिषाक्तः संस्तमांसि परि णयत् तथा पत्मन् दीयन्नौशिजौ न सत्ये मार्गे गच्छंस्त्वं धर्ममाततन्थ॥६॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यथा सूर्यः स्वप्रकाशेन सन्निहितान् पदार्थान् प्रकाश्य रात्रिं निवर्त्तयति तथैव शुभान् गुणान् प्रदीप्याज्ञानान्धकारं निवारयत॥६॥

**पदार्थः**-हे **(अग्ने)** अग्नि के समान वर्त्तमान आप **(भानुमद्भिः)** बहुत प्रकाश वाले **(अर्कैः)** वज्र के सदृश छेदक किरणों से **(सूर्यः)** सूर्य्य के **(न)** जैसे वैसे **(भासा)** प्रकाश से **(वि, ततन्थ)** अत्यन्त विस्तारयुक्त करते हो और जैसे **(चित्रः)** अनेक प्रकार के वर्णों से अद्भुत सूर्य्य **(रोदसी)** अन्तरिक्ष और पृथिवी को प्रकाशित करता और **(शोचिषा)** प्रकाश से **(अक्तः)** प्रसिद्ध हुआ **(तमांसि)** अन्धकारों को



www.9009.co.in

**(परि)** सब ओर से **(नयत्)** दूर करता है, वैसे **(पत्मन्)** चलते हैं जन जिसमें उस मार्ग में **(दीयन्)** चलते हुए **(औशिजः)** कामना करते हुए के पुत्र के **(न)** समान सत्य मार्ग में चलते हुए आप धर्म कर्म का **(आ)** सब प्रकार से विस्तार करें॥६॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जैसे सूर्य्य अपने प्रकाश से समीप में वर्त्तमान पदार्थों को प्रकाशित करके रात्रि का निवारण करता है, वैसे ही उत्तम गुणों को प्रकाशित करके अज्ञानान्धकार का निवारण करिये॥६॥

**अन्नादिदानाः प्रशंसनीयाः स्युरित्याह॥**

अन्नादि देने वाले प्रशंसनीय होते हैं, इस विषय को कहते हैं॥

**त्वां हि मन्द्रतममर्कशोकैर्ववृमहे महि नः श्रोष्यग्ने।**

**इन्द्रं न त्वा शवसा देवता वायुं पृणन्ति राधसा नृतमाः॥७॥**

**त्वाम्। हि। मन्द्रऽतमम्। अर्कऽशोकैः। ववृमहे। महि। नः। श्रोषि। अग्ने। इन्द्रम्। न। त्वा। शवसा। देवता। वायुम्। पृणन्ति। राधसा। नृऽतमाः॥७॥**

**पदार्थः**-**(त्वाम्)** **(हि)** यतः **(मन्द्रतमम्)** अतिशयेनानन्दकरम् **(अर्कशोकैः)** अन्नादीनां शोधनैः **(ववृमहे)** स्वीकुर्म्महे **(महि)** महत् **(नः)** अस्माकम् **(श्रोषि)** शृणोषि **(अग्ने)** पावक इव वर्त्तमान **(इन्द्रम्)** विद्युतम् **(न)** इव **(त्वा)** त्वाम् **(शवसा)** बलेन **(देवता)** जगदीश्वरः **(वायुम्)** प्राणादिकम् **(पृणन्ति)** सुखयन्ति **(राधसा)** धनेन **(नृतमाः)** अतिशयेन नायकाः॥७॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! यस्त्वं नो महि वचः श्रोषि तमर्कशोकैर्मन्द्रतमं त्वां वयं ववृमहे। हे नृतमा! भवन्तो हि यथा देवता सर्वं जगत्पृणाति तथा शवसा राधसा वायुं पृणान्ति तं त्वेन्द्रं न वयं ववृमहे॥७॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। येऽन्नादिभिः परमानन्दप्रदातारो नरेषूत्तमाः सर्वं जगद्बोधयन्ति ते सत्कर्त्तव्या भवन्ति॥७॥

**पदार्थः**-हे **(अग्ने)** अग्नि के समान वर्त्तमान जो आप **(नः)** हम लोगों के **(महि)** बड़े वचन को **(श्रोषि)** सुनते हैं उन **(अर्कशोकैः)** अन्न आदिकों के शोधनों से **(मन्द्रतमम्)** अत्यन्त आनन्द देने वाले **(त्वाम्)** आप का हम लोग **(ववृमहे)** स्वीकार करते हैं और हे **(नृतमाः)** अत्यन्त अग्रणी जनो! आप लोग **(हि)** जिस कारण से जैसे **(देवता)** जगदीश्वर सम्पूर्ण जगत् को प्रसन्न करता है, वैसे **(शवसा)** बल और **(राधसा)** धन से **(वायुम्)** प्राण आदि को **(पृणन्ति)** सुखी करते हैं उन **(त्वा)** आपको **(इन्द्रम्)** बिजुली को **(न)** जैसे वैसे हम लोग स्वीकार करते हैं॥७॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जो अन्नादिकों से अत्यन्त आनन्द देनेवाले, मनुष्यों में उत्तम मनुष्य, सम्पूर्ण संसार को उत्तम बुद्धियुक्त करते हैं, वे सत्कार करने के योग्य होते हैं॥७॥

**अथ विद्वद्गुणानाह॥**



www.9009.co.in

अब विद्वानों के गुणों को कहते हैं॥

**नू नो॑ अग्नेऽवृके॑भिः स्व॒स्ति वेषि॑ रा॒यः प॒थिभि॒ः पर्ष्यंह॑ः।**

**ता सू॒रिभ्यो॑ गृण॒ते रा॑सि सु॒म्नं मदे॑म श॒तहि॑माः सु॒वीरा॑ः॥८॥६॥**

**नु। न॒ः। अ॒ग्ने॒। अ॒वृके॑भिः। स्व॒स्ति। वेषि॑। रा॒यः। प॒थिऽभि॑ः। पर्षि॑। अंह॑ः। ता। सू॒रिऽभ्य॑ः। गृ॒ण॒ते। रा॒सि॒। सु॒म्नम्। मदे॑म। श॒तऽहि॑माः। सु॒ऽवीरा॑ः॥८॥६॥**

**पदार्थः-(नू)** सद्यः **(नः)** अस्मान् **(अग्ने)** विद्वन् **(अवृकेभिः)** अचोरैः सह **(स्वस्ति)** सुखम् **(वेषि)** व्याप्नोषि **(रायः)** धनानि **(पथिभिः)** सुमार्गैः **(पर्षि)** पालयसि **(अंहः)** अपराधम् **(ता)** तानि **(सूरिभ्यः)** विद्वद्भ्यः **(गृणते)** स्तुतिं कुर्वते **(रासि)** ददासि **(सुम्नम्)** सुखम् **(मदेम)** आनन्देम **(शतहिमाः)** यावच्छतं वर्षाणि तावत् **(सुवीराः)** शोभनाश्च ते वीराश्च॥८॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! यस्त्वमवृकेभिर्नः स्वस्ति वेषि पथिभी रायो नू पर्षि सूरिभ्यो गृणते च सुम्नं रासि। अंहो दूरीकरोषि तेन सह ता प्राप्य शतहिमाः सुवीरा वयं मदेम॥८॥

**भावार्थः**-हे मनुष्याश्चौर्यं चोरसङ्गमन्यायात् पापाचरणं च विहाय सुखं प्राप्य शतायुषो भवेतेति॥८॥

अत्राग्नीश्वरविद्वद्गुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति चतुर्थं सूक्तं षष्ठो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे **(अग्ने)** विद्वन्! जो आप **(अवृकेभिः)** चोरों से भिन्न जनों के साथ **(नः)** हम लोगों को **(स्वस्ति)** सुख **(वेषि)** व्याप्त करते हो तथा **(पथिभिः)** उत्तम मार्गों से **(रायः)** धनों को **(नू)** शीघ्र **(पर्षि)** पालन करते हो और **(सूरिभ्यः)** विद्वानों के लिये और **(गृणते)** स्तुति करते हुए के लिये **(सुम्नम्)** सुख को **(रासि)** देते हो तथा **(अंहः)** अपराध को दूर करते हो उन आपके साथ **(ता)** उक्त पदार्थों को प्राप्त होकर **(शतहिमाः)** सौ वर्ष पर्य्यन्त **(सुवीराः)** श्रेष्ठ वीर हम लोग **(मदेम)** आनन्द करें॥८॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! चोरी और चोर के संग और अन्याय से पाप के आचरण का त्याग करके सुख को प्राप्त होकर सौ वर्ष युक्त होओ॥८॥

इस सूक्त में अग्नि, ईश्वर और विद्वान् के गुणवर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के साथ संगति जाननी चाहिये॥

**यह चौथा सूक्त और छठा वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

**अथ सप्तर्चस्य पञ्चमस्य सूक्तस्य भरद्वाजो बार्हस्पत्य ऋषिः। अग्निर्देवता। १, ४ त्रिष्टुप्। २, ६, ७ निचृत्त्रिष्टुप्। ५ विराट्त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः। ३ भुरिक्पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः॥**

***अथ मनुष्यैः किं ग्राह्यमित्याह॥***

अब सात ऋचा वाले पांचवें सूक्त का आरम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में मनुष्यों को क्या ग्रहण करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**हुवे वः सूनुं सहसो युवानमद्रोघवाचं मतिभिर्यविष्ठम्।**

**य इन्वति द्रविणानि प्रचेता विश्ववाराणि पुरुवारो अध्रुक्॥ १॥**

**हुवे। वः। सूनुम्। सहसः। युवानम्। अद्रोघऽवाचम्। मतिऽभिः। यविष्ठम्। यः। इन्वति। द्रविणानि। प्रऽचेताः। विश्वऽवाराणि। पुरुऽवारः। अध्रुक्॥ १॥**

**पदार्थः-(हुवे)** आददे **(वः)** युष्मभ्यम् **(सूनुम्)** अपत्यम् **(सहसः)** बलस्य **(युवानम्)** प्राप्तयौवनम् **(अद्रोघवाचम्)** अद्रोघा द्रोहरहिता वाग्यस्य तम् **(मतिभिः)** मनुष्यैः प्रज्ञाभिर्वा **(यविष्ठम्)** अतिशयेन युवानम् **(यः)** **(इन्वति)** व्याप्नोति **(द्रविणानि)** द्रव्याणि **(प्रचेताः)** प्रकृष्टं चेतः प्रज्ञा यस्य सः **(विश्ववाराणि)** विश्वैः सर्वैर्वरणीयानि **(पुरुवारः)** बहुभिर्वृतः स्वीकृतः **(अध्रुक्)** यो न दुह्यति॥ १॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यः प्रचेताः पुरुवारोऽध्रुग् विश्ववाराणि द्रविणानीन्वति तं मतिभिः सह वर्त्तमानं सहसः सूनुं युवानमद्रोघवाचं यविष्ठं वो हुवे॥ १॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! युष्माभिर्ये पक्षपातरहितवादा द्रोहरहिता बुद्धिमतां सङ्गसेविनो बहुभिर्विद्वद्भिः पूजिता ब्रह्मचर्य्येण पूर्णयुवावस्था विद्वांसः स्युस्तेषामेवोपदेशो ग्रहीतव्यः॥ १॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(यः)** जो **(प्रचेताः)** उत्तम बुद्धियुक्त **(पुरुवारः)** बहुतों से स्वीकार किया गया **(अध्रुक्)** नहीं द्रोह करने वाला जन **(विश्ववाराणि)** सम्पूर्ण जनों से स्वीकार करने योग्य **(द्रविणानि)** द्रव्यों को **(इन्वति)** व्याप्त होता है उस **(मतिभिः)** मनुष्यों वा बुद्धियों के सहित वर्त्तमान **(सहसः)** बल के **(सूनुम्)** सन्तान **(युवानम्)** युवावस्था को प्राप्त **(अद्रोघवाचम्)** द्रोहरहित वाणी जिसकी ऐसे **(यविष्ठम्)** अतिशय युवावस्था को प्राप्त हुए को **(वः)** आप लोगों के लिये मैं **(हुवे)** ग्रहण करता हूँ॥ १॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! आप लोगों को चाहिये कि जो पक्षपात से रहित वादयुक्त, द्रोह से रहित और बुद्धिमानों के संग का सेवन करने वाले और बहुत विद्वानों से आदर किये गये और और ब्रह्मचर्य्य से पूर्ण युवावस्था वाले विद्वान् हों, उन्हीं का उपदेश ग्रहण करें॥ १॥



www.9009.co.in

**मनुष्यैः कस्मिन् सति किं प्राप्तव्यमित्याह॥**

मनुष्यों को किसके होने पर क्या प्राप्त होना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**त्वे वसूनि पुर्वणीक होतर्दोषा वस्तोरेरिरे यज्ञियासः।**

**क्षामेव विश्वा भुवनानि यस्मिन्त्सं सौभगानि दधिरे पावके॥ २॥**

**त्वे इति। वसूनि। पुरुऽअनीक। होतः। दोषा। वस्तोः। आ। ईरिरे। यज्ञियासः। क्षामऽइव। विश्वा। भुवनानि। यस्मिन्। सम्। सौभगानि। दधिरे। पावके॥ २॥**

**पदार्थः**-(**त्वे**) त्वयि रक्षके (**वसूनि**) धनानि (**पुर्वणीक**) पुरूण्यनेकानि सैन्यानि यस्य तत्सम्बुद्धौ (**होतः**) दातः (**दोषा**) रात्रौ (**वस्तोः**) दिने (**आ, ईरिरे**) प्रेरयन्ति (**यज्ञियासः**) यज्ञानुष्ठानं कर्तुं योग्याः (**क्षामेव**) यथा पृथिवी (**विश्वा**) सर्वाणि (**भुवनानि**) लोकजातानि भूताधिकरणानि (**यस्मिन्**) (**सम्**) (**सौभगानि**) श्रेष्ठानामैश्वर्य्याणां भावान् (**दधिरे**) धरन्ति (**पावके**) वह्निरिव पवित्रस्तस्मिन्॥ २॥

**अन्वयः**-हे पुर्वणीक होतर्भूपते! यस्मिन् पावके त्वे रक्षके सति यज्ञियासो दोषा वस्तोः क्षामेव विश्वा भुवनानि वसून्येरिरे सौभगानि सं दधिरे तं वयं सत्कुर्याम॥ २॥

**भावार्थः**-राजनि रक्षके सत्येव प्रजाजनाः प्रतिदिनं वर्धन्त ऐश्वर्यं लब्ध्वा सुखिनो भवन्ति॥ २॥

**पदार्थः**-हे (**पुर्वणीक**) अनेक सेनाओं से युक्त (**होतः**) दान करने वाले राजन्! (**यस्मिन्**) जिन (**पावके**) अग्नि के सदृश पवित्र (**त्वे**) आपके रक्षक रहने पर (**यज्ञियासः**) यज्ञ के अनुष्ठान करने के योग्य प्रजाजन (**दोषा**) रात्रि में और (**वस्तोः**) दिन में (**क्षामेव**) जैसे पृथिवी, वैसे (**विश्वा**) सम्पूर्ण (**भुवनानि**) लोकों में प्रकट और पञ्चभूत अधिकरण जिनके उन प्राणियों की और (**वसूनि**) धनों को (**आ, ईरिरे**) प्रेरणा करते और (**सौभगानि**) श्रेष्ठ ऐश्वर्य्यों के भावों को (**सम्, दधिरे**) सम्यक् धारण करते हैं, उनका हम लोग सत्कार करें॥ २॥

**भावार्थः**-राजा के रक्षक रहने पर ही प्रजाजन प्रतिदिन वृद्धि को प्राप्त होते और ऐश्वर्य्य को प्राप्त होकर सुखयुक्त होते हैं॥ २॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**त्वं विक्षु प्रदिवः सीद आसु क्रत्वा रथीरभवो वार्याणाम्।**

**अत इनोषि विधते चिकित्वो व्यानुषग्जातवेदो वसूनि॥ ३॥**

**त्वम्। विक्षु। प्रऽदिवः। सीदः। आसु। क्रत्वा। रथीः। अभवः। वार्याणाम्। अतः। इनोषि। विधते। चिकित्वः। वि। आनुषक्। जातऽवेदः। वसूनि॥ ३॥**

**पदार्थः**-(**त्वम्**) (**विक्षु**) प्रजासु (**प्रदिवः**) प्रकृष्टस्य प्रकाशस्य मध्ये (**सीदः**) सीद (**आसु**) (**क्रत्वा**) प्रज्ञया (**रथीः**) बहुरथवान् (**अभवः**) भवसि (**वार्य्याणाम्**) स्वीकर्त्तुमर्हाणाम् (**अतः**) अस्मात्



www.9009.co.in

**(इनोषि)** प्रेरयसि **(विधते)** सत्कर्त्रे **(चिकित्वः)** शुद्धबहुप्रज्ञायुक्त **(वि)** **(आनुषक्)** योऽनुसजति **(जातवेदः)** उत्पन्नविज्ञान **(वसूनि)** धनानि॥३॥

**अन्वयः**-हे चिकित्वो जातवेदो राजन्! यतस्त्वमानुषक् सन् वसूनि विधते वीनोषी। आसु विक्षु क्रत्वा वार्य्याणां रथीरभवोऽतः प्रदिवस्सीदः॥३॥

**भावार्थः**-स एव राजा भवितुमर्हेद्यो राजविद्यां यथावद्विजानीयात्॥३॥

**पदार्थः**-हे **(चिकित्वः)** शुद्ध बहुत बुद्धि से युक्त और **(जातवेदः)** उत्पन्न हुआ विज्ञान जिनको ऐसे हे राजन्! जिस कारण **(त्वम्)** आप **(आनुषक्)** संग करने वाले होते हुए **(वसूनि)** धनों की **(विधते)** सत्कार करने वाले के लिये **(वि, इनोषि)** प्रेरणा करते हो और **(आसु)** इन **(विक्षु)** प्रजाओं में **(क्रत्वा)** बुद्धि से **(वार्य्याणाम्)** स्वीकार करने योग्यों के **(रथीः)** बहुत रथों वाले **(अभवः)** होते हो **(अतः)** इस कारण से **(प्रदिवः)** उत्तम प्रकाश के मध्य में **(सीदः)** स्थित होइये॥३॥

**भावार्थः**-वही राजा होने के योग्य होवे, जो राजविद्या को अच्छे प्रकार जाने॥३॥

**पुनर्म्मनुष्यैः किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**यो नः सनुत्यो अभिदासदग्ने यो अन्तरो मित्रमहो वनुष्यात्।**

**तमजरेभिर्वृषभिस्तव स्वैस्तपा तपिष्ठ तपसा तपस्वान्॥४॥**

**यः। नः। सनुत्यः। अभिऽदासत्। अग्ने। यः। अन्तरः। मित्रऽमहः। वनुष्यात्। तम्। अजरेभिः। वृषऽभिः। तव। स्वैः। तप। तपिष्ठ। तपसा। तपस्वान्॥४॥**

**पदार्थः**-**(यः)** **(न)** अस्मान् **(सनुत्यः)** निर्णितान्तर्हितेषु सिद्धान्तेषु भवः साधुर्वा। **सनुतरिति निर्णितान्तर्हितनाम।** (निघं०३.२५) **(अभिदासत्)** अभिक्षियति **(अग्ने)** विद्वन् **(यः)** **(अन्तरः)** भिन्नः **(मित्रमहः)** महान्ति मित्राणि यस्य तत्सम्बुद्धौ **(वनुष्यात्)** याचेत **(तम्)** **(अजरेभिः)** जरारहितैः **(वृषभिः)** बलिष्ठैर्युवभिः **(तव)** **(स्वैः)** स्वकीयैः **(तपा)** तापय तपस्वी भव वा **(तपिष्ठ)** अतिशयेन तप्त **(तपसा)** ब्रह्मचर्य्यप्राणायामादिकर्म्मणा **(तपस्वान्)** बहुतपोयुक्तः॥४॥

**अन्वयः**-हे तपिष्ठ मित्रमहोऽग्ने! यः सनुत्यो नोऽभिदासद्योऽन्तरो नो वनुष्यात् तमजरेभिर्वृषभिस्तव स्वैः सह तपा तपसा तपस्वान्॥४॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यो युष्मान् याचेत तस्मै सुपात्राय यथाशक्ति देयम्। यश्च पीडयेत्तं पीडयत तपस्विनो भूत्वा धर्म्ममेवाचरत॥४॥

**पदार्थः**-हे **(तपिष्ठ)** अत्यन्त तप करने वाले और **(मित्रमहः)** बड़े मित्रों से युक्त **(अग्ने)** विद्वन्! **(यः)** जो **(सनुत्यः)** निश्चित अन्तर्हित अर्थात् मध्य के सिद्धान्तों में प्रकट हुआ अथवा श्रेष्ठ **(नः)** हम लोगों का **(अभिदासत्)** चारों ओर से नाश करता है और **(यः)** जो **(अन्तरः)** भिन्न हम लोगों से



www.9009.co.in

**(वनुष्यात्)** याचना करे **(तम्)** उसको **(अजरेभिः)** वृद्धावस्था से रहित **(वृषभिः)** बलिष्ठ युवा **(तव)** आपके **(स्वैः)** अपने जनों के साथ **(तपा)** तपयुक्त करो वा तपस्वी होओ। और **(तपसा)** ब्रह्मचर्य और प्राणायामादि कर्म्म से **(तपस्वान्)** बहुत तपयुक्त हूजिये॥४॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो आप लोगों से याचना करे, उस सुपात्र के लिये यथाशक्ति दान करिये और जो पीड़ा देवे उसको पीड़ित करो और तपस्वी होकर धर्म का ही आचरण करो॥४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**यस्ते॑ य॒ज्ञेन॑ स॒मिधा॒ य उ॒क्थैर॒र्केभिः सूनो सहसो॒ ददा॑शत्।**

**स मर्त्ये॑ष्वमृत॒ प्रचे॑ता रा॒या द्युम्नेन॒ श्रव॑सा॒ वि भा॑ति॥५॥**

**यः। ते॒। य॒ज्ञेन॑। स॒म्ऽइधा॑। यः। उ॒क्थैः। अ॒र्केभिः॑। सू॒नो॒ इति॑। स॒ह॒सः॒। ददा॑शत्। सः। मर्त्ये॑षु। अ॒मृ॒त॒। प्रऽचे॑ताः। रा॒या। द्यु॒म्नेन॑। श्रव॑सा। वि। भा॒ति॒॥५॥**

**पदार्थः**-**(यः)** **(ते)** तुभ्यम् **(यज्ञेन)** विद्वत्सत्काराख्येन **(समिधा)** सत्यप्रकाशकेनेन्धनेन वा **(यः)** **(उक्थैः)** वक्तुमर्हैः **(अर्केभिः)** अर्चनीयैः **(सूनो)** अपत्य **(सहसः)** बलवतः **(ददशत्)** ददाति **(सः)** **(मर्त्येषु)** मनुष्येषु **(अमृत)** मरणधर्मरहित **(प्रचेताः)** प्रकृष्टं चेतो विज्ञानं यस्य **(राया)** धनेन **(द्युम्नेन)** यशसा **(श्रवसा)** अन्नेन श्रवणेन वा **(वि)** **(भाति)**॥५॥

**अन्वयः**-हे सहसः सूनोऽमृत! यो यज्ञेन समिधा योऽर्केभिरुक्थैस्ते ददाशत् स मर्त्येषु प्रचेता राया द्युम्नेन श्रवसा वि भातीति विजानीहि॥५॥

**भावार्थः**-ये प्रशस्तैः कर्म्मभिर्गुणैः सहिता अत्र प्रयतन्ते ते विद्यायशोधनयुक्ता भूत्वा जगति प्रख्यायन्ते॥५॥

**पदार्थः**–हे **(सहसः)** बलवान् के **(सूनो)** पुत्र और **(अमृत)** मरणधर्म्म से रहित! **(यः)** जो **(यज्ञेन)** विद्वानों के सत्कारनामक यज्ञ और **(समिधा)** सत्य के प्रकाशक वा ईंधन से तथा **(यः)** जो **(अर्केभिः)** आदर करने योग्य और **(उक्थैः)** कहने के योग्य पदार्थों से **(ते)** आपके लिये **(ददाशत्)** देता है **(सः)** वह **(मर्त्येषु)** मनुष्यों में **(प्रचेताः)** उत्तम ज्ञानवान् **(राया)** धन **(द्युम्नेन)** यश और **(श्रवसा)** अन्न वा श्रवण से **(वि, भाति)** प्रकाशित होता है, इस प्रकार विशेष करके जानो॥५॥

**भावार्थः**-जो प्रशंसित कर्म्म और गुणों के सहित जन इस संसार में प्रयत्न करते हैं, वे विद्या, यश और धन से युक्त होकर संसार में प्रसिद्ध होते हैं॥५॥

**पुनर्मनुष्यैः किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**स तत्कृ॑धीषि॒तस्तूय॑मग्ने॒ स्पृधो॑ बाधस्व॒ सह॑सा॒ सह॑स्वान्।**



www.9009.co.in

**यच्छ॒स्यसे॑ द्युभि॑र॒क्तो वचो॑भि॒स्तज्जु॑षस्व जरि॒तुर्घोषि॒ मन्म॑॥६॥**

**सः। तत्। कृ॒धि॒। इ॒षि॒तः। तूय॑म्। अग्ने॑। स्पृधः॑। बा॒ध॒स्व॒। सह॑सा। सह॑स्वान्। यत्। श॒स्यसे॑। द्युऽभिः॑। अ॒क्तः। वचः॑ऽभिः। तत्। जु॒ष॒स्व॒। ज॒रि॒तुः। घोषि॑। मन्म॑॥६॥**

**पदार्थः**-(**सः**) (**तत्**) (**कृधि**) कुरु (**इषितः**) प्रेरितः (**तूयम्**) क्षिप्रम्। **तूयमिति क्षिप्रनाम**। (निघं०२.१५) (**अग्ने**) अग्निरिव प्रतापवन् (**स्पृधः**) स्पर्धन्ते यासु ताः सङ्ग्रामसेनाः (**बाधस्व**) (**सहसा**) बलेन (**सहस्वान्**) सहनकर्त्ता (**यत्**) यः (**शस्यसे**) स्तूयसे (**द्युभिः**) द्योतमानैर्दिनैः (**अक्तः**) रात्रिः (**वचोभि**) वचनैः (**तत्**) (**जुषस्व**) सेवस्व (**जरितुः**) स्तावकस्य (**घोषि**) घोषो यस्मिन्नस्ति तत् (**मन्म**) विज्ञानम्॥६॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! यद्यस्त्वं द्युभिरक्त इव शस्यसे स त्वं यद् वचोभिर्जरितुर्घोषि मन्मास्ति तज्जुषस्व। सः सहस्वांस्त्वं सहसा स्पृधो बाधस्व तूयमिषितः संस्तत्कृधि॥६॥

**भावार्थः**-ये विद्वदीश्वरप्रेरिताः सद्य आलस्यं विहायाऽहर्निशं धर्म्मार्थमोक्षसिद्धये प्रयतन्ते ते योग्या भूत्वा दुःखानि बाधन्ते॥६॥

**पदार्थः**-हे (**अग्ने**) अग्नि के सदृश प्रतापयुक्त (**यत्**) जो आप (**द्युभिः**) प्रकाशमान दिनों से (**अक्तः**) रात्रि जैसे वैसे (**शस्यसे**) स्तुति किये जाते हो वह आप (**वचोभिः**) वचनों से (**जरितुः**) स्तुति करने वाले का (**घोषि**) वाणी जिसमें ऐसा (**मन्म**) विज्ञान है (**तत्**) उसका (**जुषस्व**) सेवन करो (**सः**) वह (**सहस्वान्**) सहन करने वाले आप (**सहसा**) बल से (**स्पृधः**) स्पर्धा करते हैं जिनमें उन सङ्ग्राम सेनाओं की (**बाधस्व**) बाधा करते हो तथा (**तूयम्**) शीघ्र (**इषितः**) प्रेरित हुए (**तत्**) उसको (**कृधि**) करो॥६॥

**भावार्थः**-जो विद्वान् और ईश्वर से प्रेरित हुए शीघ्र आलस्य का त्याग करके दिन रात्रि धर्म्म, अर्थ और मोक्ष की सिद्धि के लिये प्रयत्न करते हैं, वे योग्य होकर दुःखों को बाधित करते हैं॥६॥

**मनुष्यैः कस्य सङ्गेन किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

मनुष्यों को किसके संग से क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**अ॒श्याम॒ तं काम॑मग्ने॒ तवो॒ती अ॒श्याम॑ र॒यिं र॑यिवः सु॒वीर॑म्।**

**अ॒श्याम॒ वाज॑म॒भि वा॒जय॑न्तोऽश्या॑म द्यु॒म्नम॑जरा॒जरं॑ ते॥७॥७॥**

**अ॒श्याम॑। तम्। काम॑म्। अ॒ग्ने॒। तव॑। ऊ॒ती। अ॒श्याम॑। र॒यिम्। र॒यि॒ऽवः॒। सु॒ऽवीर॑म्। अ॒श्याम॑। वाज॑म्। अ॒भि। वा॒जय॑न्तः। अ॒श्याम॑। द्यु॒म्नम्। अ॒ज॒र॒। अ॒जर॑म्। ते॒॥७॥**

**पदार्थः**-(**अश्याम**) प्राप्नुयाम (**तम्**) (**कामम्**) इच्छाम् (**अग्ने**) विद्वन् राजन् (**तव**) (**ऊती**) रक्षणाद्येन कर्मणा (**अश्याम्**) प्राप्नुयाम (**रयिम्**) श्रियम् (**रयिवः**) बहुधनयुक्त (**सुवीरम्**)



www.9009.co.in

उत्तमवीरप्रापकम् **(अश्याम)** **(वाजम्)** अन्नादिकम् **(अभि)** आभिमुख्ये **(वाजयन्तः)** विज्ञापयन्तः **(अश्याम)** **(द्युम्नम्)** यशो धनं वा **(अजर)** **(अजरम्)** जरारहितम् **(ते)** तव॥७॥

**अन्वयः**-हे अजर रयिवोऽग्ने! तवोती वयं तं काममश्याम सुवीरं रयिमश्याम वाजयन्तो वयं वाजमभ्यश्याम तेऽजरं द्युम्नमश्याम॥७॥

**भावार्थः**-मनुष्यैरिदमेषितव्यं वयमाप्तस्योपदेशेनेच्छासिद्धिं पुष्कलं धनं वीरपुरुषानविनाशियशश्चाप्नुयामेति॥७॥

अत्राग्निविद्वद्गुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति पञ्चमं सूक्तं सप्तमो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे **(अजर)** वृद्धावस्थारहित **(रयिवः)** बहुत धन और **(अग्ने)** विद्या से युक्त राजन्! **(तव)** आपके **(ऊती)** रक्षण आदि कर्म्म से हम लोग **(तम्)** उस **(कामम्)** मनोरथ को **(अश्याम)** प्राप्त होवें और **(सुवीरम्)** उत्तम वीरों की प्राप्ति करने वाले **(रयिम्)** धन को **(अश्याम)** प्राप्त होवें तथा **(वाजयन्तः)** जानते हुए हम लोग **(वाजम्)** अन्न आदि को **(अभि)** सन्मुख **(अश्याम)** प्राप्त होवें और **(ते)** आपके **(अजरम्)** जीर्ण होने से रहित **(द्युम्नम्)** यश वा धन को **(अश्याम)** प्राप्त होवें॥७॥

**भावार्थः**-मनुष्यों को ऐसी इच्छा करनी चाहिये कि हम लोग यथार्थ वक्ता जन के उपदेश से इच्छा की सिद्धि, बहुत धन, वीर पुरुषों और नहीं नष्ट होने वाले यश को प्राप्त होवें॥७॥

इस सूक्त में अग्नि और विद्वान् के गुणों का वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ संगति जाननी चाहिये॥

**यह पाँचवां सूक्त और सातवाँ वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

**अथ सप्तर्चस्य षष्ठस्य सूक्तस्य भरद्वाजो बार्हस्पत्य ऋषि:। अग्निर्देवता। १, २, ३, ४, ५, ६ निचृत्त्रिष्टुप्। ७ त्रिष्टुप् छन्द:। धैवत: स्वर:॥**

*अथ मनुष्यैस्सन्तान: कथमुत्पादनीय इत्याह॥*

अब सात ऋचा वाले छठे सूक्त का प्रारम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में अब मनुष्यों को सन्तान किस प्रकार करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**प्र नव्य॑सा सह॑स: सू॒नुमच्छा॑ य॒ज्ञेन॑ गा॒तुमव॑ इ॒च्छमा॑न:।**

**वृ॒श्चद्व॑नं कृ॒ष्णया॑मं॒ रुश॑न्तं वी॒ती होता॑रं दि॒व्यं जि॑गाति॥ १॥**

**प्र। नव्य॑सा। सह॑स:। सू॒नुम्। अच्छ॑। य॒ज्ञेन॑। गा॒तुम्। अव॑:। इ॒च्छमा॑न:। वृ॒श्चत्ऽव॑नम्। कृ॒ष्णऽया॑मम्। रुश॑न्तम्। वी॒ती। होता॑रम्। दि॒व्यम्। जि॒गा॒ति॥ १॥**

**पदार्थ:-(प्र) (नव्यसा)** अतिशयेन नवीनेन **(सहस:)** बलवत: **(सूनुम्)** अपत्यम् **(अच्छा)** सम्यक्। अत्र **संहितायामि**ति दीर्घ:। **(यज्ञेन)** सङ्गतिमयेन **(गातुम्)** पृथिवीम् **(अव:)** रक्षणम् **(इच्छमान:)** अत्र व्यत्ययेनात्मनेपदम्। **(वृश्चद्वनम्)** वृश्चच्छिन्दद् वनं यस्मिन् **(कृष्णयामम्)** कृष्णा कर्षिता यामा येन तम् **(रुशन्तम्)** हिंसन्तम् **(वीती)** वीत्या व्याप्त्या **(होतारम्)** दातारम् **(दिव्यम्)** शुद्धेषु व्यवहारेषु भवम् **(जिगाति)** गच्छति॥ १॥

**अन्वय:**-हे मनुष्या! यज्ञेन गातुमव इच्छमानो नव्यसा सहस: सूनुं कृष्णयामं रुशन्तं वृश्चद्वनमिव वीती होतारं दिव्यमच्छा प्र जिगाति॥ १॥

**भावार्थ:**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कार:। हे मनुष्या! यूयं ब्रह्मचर्य्येण बलिष्ठा भूत्वा सन्तानान् जनयत यतोऽरोगाणि बलवन्ति सुशीलान्यपत्यानि भूत्वा युष्मान् सुखयेयु:॥ १॥

**पदार्थ:**-हे मनुष्यो! **(यज्ञेन)** संगतिरूप यज्ञ से **(गातुम्)** पृथिवी और **(अव:)** रक्षण की **(इच्छमान:)** इच्छा करता हुआ **(नव्यसा)** अत्यन्त नवीन व्यवहार से **(सहस:)** बलवान् के **(सूनुम्)** सन्तान को और **(कृष्णयामम्)** आकर्षित किया मार्ग जिससे ऐसे **(रुशन्तम्)** हिंसा करते हुए **(वृश्चद्वनम्)** काटता है वन जिसमें उसके समान **(वीती)** व्याप्ति से **(होतारम्)** देने वाले **(दिव्यम्)** शुद्धव्यवहारों में प्रकट हुए को **(अच्छ)** अच्छे प्रकार **(प्र, जिगाति)** प्राप्त होता है॥ १॥

**भावार्थ:**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! आप लोग ब्रह्मचर्य्य से बलिष्ठ होकर सन्तानों को उत्पन्न करो जिससे रोगरहित, बलयुक्त और उत्तम स्वभावयुक्त सन्तान होकर आप लोगों को निरन्तर सुखयुक्त करें॥ १॥

**पुन: सोऽग्नि: कीदृशोऽस्तीत्याह॥**



www.9009.co.in

फिर वह अग्नि कैसा है, इस विषय को कहते हैं॥

**स श्वितानस्तन्यतू रोचनस्था अजेरेभिर्नानदद्भिर्यविष्ठः।**

**यः पावकः पुरुतमः पुरूणि पृथून्यग्निरनुयाति भर्वन्॥ २॥**

**सः। श्वितानः। तन्यतुः। रोचनऽस्थाः। अजरेभिः। नानदत्ऽभिः। यविष्ठः। यः। पावकः। पुरुऽतमः। पुरूणि। पृथूनि। अग्निः। अनुऽयाति। भर्वन्॥ २॥**

**पदार्थः**-(**सः**) (**श्वितानः**) शुभ्रवर्णः (**तन्यतुः**) विद्युतः (**रोचनस्थाः**) रोचने दीपने तिष्ठतीति (**अजरेभिः**) जरादिरोगरहितैः (**नानदद्भिः**) भृशं शब्दायमानैः (**यविष्ठः**) अतिशयेन युवावस्थः (**यः**) (**पावकः**) (**पुरुतमः**) (**पुरूणि**) बहूनि (**पृथूनि**) विस्तीर्णानि (**अग्निः**) पावकः (**अनुयाति**) अनुगच्छति (**भर्वन्**) भर्जनं दहनं कुर्वन्॥ २॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यो यविष्ठ इव बलिष्ठः पावकः पुरुतमः श्वितानोऽजरेभिर्नानदद्भिस्तन्यतू रोचनस्था अग्निर्भर्वन् सन्पुरूणि पृथून्यनुयाति स युष्माभिः सम्प्रयोक्तव्यः॥ २॥

**भावार्थः**-हे विद्वन्! यदि साङ्गोपाङ्गतो विद्युद्विद्यां जानीयास्तर्हि बहूनि सुखानि लभस्व॥ २॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो (**यः**) जो (**यविष्ठः**) अत्यन्त युवावस्था से युक्त जैसे वैसे अत्यन्त बली (**पावकः**) पवित्र और पवित्र करने वाला (**पुरुतमः**) अतीव बहुरूप (**श्वितानः**) शुभ्रवर्ण (**अजरेभिः**) जीर्णपन आदि रोगरहित (**नानदद्भिः**) निरन्तर गर्जनाओं से (**तन्यतुः**) बिजुलीरूप (**रोचनस्थाः**) दीपन में स्थिर (**अग्निः**) अग्नि (**भर्वन्**) दहन करता हुआ (**पुरूणि**) बहुत (**पृथूनि**) विस्तीर्णों के (**अनुयाति**) पश्चात् जाता है (**सः**) वह आप लोगों को उत्तम प्रकार प्रयोग करने योग्य है॥ २॥

**भावार्थः**-हे विद्वन्! जो आप अंग और उपांग के सहित बिजुली की विद्या को जानें तो बहुत सुख को प्राप्त होवें॥ ३॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**वि ते विष्वग्वातजूतासो अग्ने भामासः शुचे शुचयश्चरन्ति।**

**तुविम्रक्षासो दिव्या नवग्वा वना वनन्ति धृषता रुजन्तः॥ ३॥**

**वि। ते। विष्वक्। वातऽजूतासः। अग्ने। भामासः। शुचे। शुचयः। चरन्ति। तुविऽम्रक्षासः। दिव्याः। नवऽग्वाः। वना। वनन्ति। धृषता। रुजन्तः॥ ३॥**

**पदार्थः**-(**वि**) विशेषेण (**ते**) तव (**विष्वक्**) यो विष्वक् सर्वमञ्चति (**वातजूतासः**) वायुरिव वेगवन्तः (**अग्ने**) विद्वन् (**भामासः**) क्रोधाः (**शुचे**) पवित्र (**शुचयः**) पवित्राः (**चरन्ति**) गच्छन्ति (**तुविम्रक्षासः**) बहुभिः सह सङ्गताः (**दिव्याः**) दिवि भवाः (**नवग्वाः**) नवीनगतयः (**वना**) सम्भजनीयानि (**वनन्ति**) संसेवन्ते (**धृषता**) प्रगल्भतया (**रुजन्तः**) शत्रून् भग्नान् कुर्वन्तः॥ ३॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे शुचेऽग्ने! ते ये विष्वग्वातजूतासो भामासः शुचयो वि चरन्ति तुविम्रक्षासो दिव्या नवग्वा धृषता रुजन्तो वना वनन्ति ते पवित्रा जायन्ते॥३॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! ये विद्युद्वत्पवित्रा दुष्टेषु क्रोधकराः श्रेष्ठैः सह सङ्गन्तारो नूतनां नूतनां विद्यां प्राप्नुवन्तः स्युस्ते सर्वत्र विचरन्तः सन्तोऽन्यान् विज्ञापयेयुः॥३॥

**पदार्थः**-हे **(शुचे)** पवित्र **(अग्ने)** विद्वन्! **(ते)** आपके जो **(विष्वक्)** सब का आदर करने वाला और **(वाजूतासः)** वायु के सदृश वेगयुक्त **(भामासः)** क्रोध **(शुचयः)** पवित्र **(वि, चरन्ति)** विशेष करके चलते हैं **(तुविम्राक्षासः)** बहुतों के साथ मिले हुए **(दिव्याः)** अन्तरिक्ष में हुए **(नवग्वाः)** नवीन गमन वाले **(धृषता)** प्रगल्भता से **(रुजन्तः)** शत्रुओं को भग्न करते हुए **(वना)** आदर करने योग्य पदार्थों का **(वनन्ति)** उत्तम प्रकार सेवन करते हैं, वे पवित्र होते हैं॥३॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो बिजुली के सदृश पवित्र, दुष्टों में क्रोध करने वाले, श्रेष्ठों के साथ मेल करने और नवीन विद्या को प्राप्त होने वाले होवें, वे सब स्थानों में विचरते हुए अन्यों को जनावें॥३॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**ये ते॑ शु॒क्रासः॒ शुच॑यः शुचिष्म॒ क्षां वप॑न्ति॒ विषि॑तासो॒ अश्वाः॑।**

**अध॑ भ्र॒मस्त॑ उर्वि॒या वि भा॑ति या॒तय॑मानो॒ अधि॒ सानु॒ पृश्नेः॑॥४॥**

**ये। ते॒। शु॒क्रासः॑। शुच॑यः। शु॒चि॒ष्म॒। क्षाम्। वप॑न्ति। विऽसि॑तासः। अश्वाः॑। अध॑। भ्र॒मः। ते॒। उ॒र्वि॒या। वि। भा॒ति॒। या॒तय॑मानः। अधि॑। सानु॑। पृश्नेः॑॥४॥**

**पदार्थः**-**(ये)** **(ते)** तव **(शुक्रासः)** वीर्यवन्तः **(शुचयः)** पवित्राः **(शुचिष्मः)** दीप्तिमन् **(क्षाम्)** भूमिम् **(वपन्ति)** **(विषितासः)** व्याप्ताः **(अश्वाः)** आशुगामिनः **(अध)** **(भ्रमः)** भ्रमणम् **(ते)** तव **(उर्विया)** बहुरूपया दीप्त्या **(वि)** **(भाति)** **(यातयमानः)** दण्डं प्रयच्छन् **(अधि)** **(सानु)** विभागे **(पृश्नेः)** अन्तरिक्षस्य मध्ये॥४॥

**अन्वयः**-हे शुचिष्मोऽग्ने विद्वन्! ये ते शुक्रासः शुचयो विषितासोऽश्वाः क्षां वपन्ति। अध ते यातयमानो भ्रम उर्विया पृश्नेरधि सानु वि भाति तान् सर्वांस्त्वं सुशिक्षय॥४॥

**भावार्थः**-मनुष्यैः स्वसमीपे पवित्रा आप्ताः पुरुषाः सदैव रक्षणीयाः, स्वयं वा तत्सङ्गं कुर्य्युः॥४॥

**पदार्थः**-हे **(शुचिष्मः)** प्रकाशयुक्त विद्वान्! **(ये)** जो **(ते)** आपके **(शुक्रासः)** पराक्रमयुक्त **(शुचयः)** पवित्र **(विषितासः)** व्याप्त **(अश्वाः)** शीघ्र चलने वाले **(क्षाम्)** भूमि को **(वपन्ति)** बोते हैं **(अध)** इसके अनन्तर **(ते)** आप का **(यातयमानः)** दण्ड देता हुआ **(भ्रमः)** भ्रमण **(उर्विया)** बहुत प्रकार



www.9009.co.in

के प्रकाश से **(पृश्नेः)** अन्तरिक्ष के मध्य में **(अधि)** ऊपर के **(सानु)** विभाग में **(वि, भाति)** विशेष शोभित होता है, उन सब को आप उत्तम प्रकार शिक्षा दीजिये॥४॥

**भावार्थः**-मनुष्यों को चाहिये कि अपने समीप में पवित्र और यथार्थ वक्ता पुरुषों की सदा रक्षा करें अथवा आप भी उनका संग करें॥४॥

**पुनर्मनुष्यैः कथं वर्त्तितव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को कैसा वर्त्ताव करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**अध॑ जि॒ह्वा पा॑पतीति॒ प्र वृष्णो॑ गोषु॒युधो॒ नाशनिः॑ सृजा॒ना।**

**शूर॑स्येव॒ प्रसि॑तिः क्षा॒तिर॒ग्नेर्दु॒र्वर्तु॑र्भी॒मो द॑यते॒ वना॑नि॥५॥**

**अध॑। जि॒ह्वा। पा॒प॒ती॒ति॒। प्र। वृष्णः॑। गो॒षु॒ऽयुधः॑। न। अ॒शनिः॑। सृ॒जा॒नाः। शूर॑स्यऽइव। प्रऽसि॑तिः। क्षा॒तिः। अ॒ग्नेः। दुः॒ऽवर्तुः॑। भी॒मः। द॒य॒ते॒। वना॑नि॥५॥**

**पदार्थः**-**(अध)** आनन्तर्य्ये **(जिह्वा)** वाणी **(पापतीति)** प्रकर्षेण पुनः पुनः पतति गच्छन्ति **(प्र)** **(वृष्णः)** बलिष्ठान् **(गोषुयुधः)** ये गोषु युध्यन्ते तान् **(न)** निषेधे **(अशनिः)** विद्युत् **(सृजाना)** निष्पादिता **(शूरस्येव)** **(प्रसितिः)** प्रकृष्टं बन्धनम् **(क्षातिः)** क्षयः **(अग्नेः)** पावकवत्प्रकाशमानस्य **(दुर्वर्त्तुः)** दुःखेन वर्त्तमानयुक्तस्य **(भीमः)** भयङ्करः **(दयते)** हिनस्ति **(वनानि)**॥५॥

**अन्वयः**-हे विद्वन्! गोषुयुधो वृष्णो जिह्वा न पापतीत्यधाऽशनिरिव सृजाना शूरस्येवाऽग्नेर्दुर्वर्त्तुः प्रसितिः क्षातिर्भीमो वनानि प्र दयते॥५॥

**भावार्थः**-अत्रोपमावाचकलुप्तोपमालङ्कारौ। ये मनुष्या धर्मात् पतिता न भूत्वा धार्मिकेषु शान्ता दुष्टेष्वग्निरिव भयङ्करा जायन्ते त एव बलवन्तो गण्यन्ते॥५॥

**पदार्थः**-हे विद्वान्! **(गोषुयुधः)** वाणियों में युद्ध करने वाले **(वृष्णः)** बलिष्ठों को **(जिह्वा)** वाणी **(न)** नहीं **(पापतीति)** अत्यन्त वारवार प्राप्त होती है **(अध)** इसके अनन्तर **(अशनिः)** बिजुली जैसे वैसे **(सृजाना)** उत्पन्न किया गया **(शूरस्येव)** शूरवीर के सदृश **(अग्नेः)** अग्नि के समान प्रकाशमान **(दुर्वर्त्तुः)** दुःख के साथ वर्त्तमान से युक्त का **(प्रसितिः)** प्रकृष्ट बन्धन **(क्षातिः)** और नाश **(भीमः)** भयंकर हुआ **(वनानि)** वनों को **(प्र, दयते)** नष्ट करता है॥५॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमा और वाचकलुप्तोपमालङ्कार हैं। जो मनुष्य धर्म्म से पतित न होकर धार्म्मिकों में शान्त और दुष्टों में अग्नि के सदृश भयंकर होते हैं, वे ही बलवान् गिने जाते हैं॥५॥

**मनुष्यैः किंवत् किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

मनुष्यों को किस के सदृश क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**आ भा॒नुना॒ पार्थि॑वानि॒ ज्रयां॑सि म॒हस्तो॒दस्य॑ धृ॒ष॒ता त॑तन्थ।**

**स बा॑ध॒स्वाप॑ भ॒या सहो॑भिः॒ स्पृधो॑ वनु॒ष्यन् व॒नुषो॒ नि जू॑र्व॥६॥**



www.9009.co.in

आ। भानुना। पार्थिवानि। ज्रयांसि। महः। तोदस्य। धृषता। ततन्थ। सः। बाधस्व। अप। भया। सहःऽभिः। स्पृधः। वनुष्यन्। वनुषः। नि। जूर्व॥६॥

**पदार्थः**-**(आ)** समन्तात् **(भानुना)** किरणेन **(पार्थिवानि)** पृथिव्यां विदितानि कार्य्याणि पृथिव्यादिकृतानि वा **(ज्रयांसि)** ज्ञातव्यानि। **ज्रयतीति गतिकर्म्मा।** (निघं०२.१४) **(महः)** महांसि **(तोदस्य)** प्रेरणस्य **(धृषता)** प्रगल्भेन **(ततन्थ)** विस्तृणोषि **(सः)** **(बाधस्व)** **(अप)** **(भया)** भयानि **(सहोभिः)** बलैः **(स्पृधः)** सङ्ग्रामान् **(वनुष्यन्)** सेवयन् **(वनुषः)** सेवनीयान् **(नि)** **(जूर्व)** हिन्धि॥६॥

**अन्वयः**-हे विद्वन् राजन्! यथा भानुना तोदस्य धृषता महः पार्थिवानि ज्रयांस्याऽऽततन्थ तथा स त्वं सहोभिर्भयाऽप बाधस्व वनुषो वनुष्यन् स्पृधो नि जूर्व॥६॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुसोपमालङ्कारः। ये प्रेम्णा सखायो भूत्वा सूर्य्यस्तम इव भयानि निःसार्य्य सङ्ग्रामाञ्जयन्ति ते प्रतिष्ठिता भवन्ति॥६॥

**पदार्थः**-हे विद्वन् राजन्! जैसे आप **(भानुना)** किरण से **(तोदस्य)** प्रेरण के **(धृषता)** ढीठ से **(महः)** बड़े **(पार्थिवानि)** पृथिवी में विदित कार्य्य वा पृथिवी आदि से कृत **(ज्रयांसि)** जानने योग्यों का **(आ)** चारों ओर से **(ततन्थ)** विस्तार करते हैं, वैसे **(सः)** वह आप **(सहोभिः)** बलों से **(भया)** भयों की **(अप, बाधस्व)** अतीव बाधा करो और **(वनुषः)** सेवन करने योग्यों का **(वनुष्यन्)** सेवन कराते हुए **(स्पृधः)** संग्रामों का **(नि, जूर्व)** नाश करिये॥६॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुसोपमालङ्कार है। जो प्रेम से मित्र होकर जैसे सूर्य्य अन्धकार को, वैसे भयों को दूर करके संग्रामों को जीतते हैं, वे प्रतिष्ठित होते हैं॥६॥

**पुनर्मनुष्यैः किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**स चित्र चित्रं चितयन्तमस्मे चित्रक्षत्र चित्रतमं वयोधाम्।**
**चन्द्रं रयिं पुरुवीरं बृहन्तं चन्द्र चन्द्राभिर्गृणते युवस्व॥७॥८॥**

सः। चित्र। चित्रम्। चितयन्तम्। अस्मे इति। चित्रऽक्षत्र। चित्रऽतमम्। वयःऽधाम्। चन्द्रम्। रयिम्। पुरुऽवीरम्। बृहन्तम्। चन्द्र। चन्द्राऽभिः। गृणते। युवस्व॥७॥८॥

**पदार्थः**-**(सः)** **(चित्र)** अद्भुतगुणकर्म्मस्वभाव **(चित्रम्)** आश्चर्य्यभूतम् **(चितयन्तम्)** ज्ञापयन्तम् **(अस्मे)** अस्मभ्यम् **(चित्रक्षत्र)** चित्रमद्भुतं क्षत्रं राज्यं धनं वा यस्य **(चित्रतमम्)** अत्यन्ताश्चर्य्ययुक्तं रूपम् **(वयोधाम्)** यो वयो जीवनं दधाति [**(चन्द्रम्)** **(रयिम्)** **(पुरुवीरम्)** बहुवीरप्रदम् **(बृहन्तम्)** महान्तम् **(चन्द्र)** आह्लादकारक **(चन्द्राभिः)** आनन्दधनकरीभिः प्रजाभिः **(गृणते)** स्तौति **(युवस्व)** संयोजय॥७॥

**अन्वयः**-हे चित्र चित्रक्षत्र चन्द्र! यथा स विद्वान् चन्द्राभिरस्मे चित्रं चन्द्रं चितयन्तं चित्रतमं वयोधां बृहन्तं पुरुवीरं रयिं गृणते तं त्वं युवस्व॥७॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-ये मनुष्या अद्भुगुणकर्म्मस्वभावान् स्वीकृत्यान्यान् ग्राहयित्वा धनाढ्यान् कारयन्ति तेऽद्भुतस्तुतयो भवन्तीति॥७॥

अत्राग्निविद्वद्गुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति षष्ठं सूक्तमष्टमो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे **(चित्र)** अद्भुत गुण कर्म्म और स्वभाव वाले **(चित्रक्षत्र)** अद्भुत राज्य वा धन से युक्त **(चन्द्र)** आह्लादकारक! जैसे **(सः)** वह विद्वान् **(चन्द्राभिः)** आनन्द और धन करने वाली प्रजाओं से **(अस्मे)** हम लोगों के लिये **(चित्रम्)** आश्चर्यभूत **(चन्द्रम्)** आनन्द देने वाले सुवर्ण आदि को **(चितयन्तम्)** जनाते हुए तथा **(चित्रतमम्)** अत्यन्त आश्चर्य्ययुक्त रूप और **(वयोधाम्)** जीवन के धारण करने और **(बृहन्तम्)** बड़े **(पुरुवीरम्)** बहुत वीरों के देने वाले **(रयिम्)** धन की **(गृणते)** स्तुति करता है, उसको आप **(युवस्व)** उत्तम प्रकार युक्त करिये॥७॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य अद्भुत गुण, कर्म्म और स्वभावों का स्वीकार करके तथा अन्य जनों को ग्रहण कराय के धनाढ्य कराते हैं, वे अद्भुत स्तुति वाले होते हैं॥७॥

इस सूक्त में अग्नि तथा विद्वान् के गुणों का वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ संगति जाननी चाहिये॥

**यह छठा सूक्त और आठवाँ वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

**अथ सप्तर्चस्य सप्तमस्य सूक्तस्य भरद्वाजो बार्हस्पत्य ऋषिः। वैश्वानरो देवता। १ त्रिष्टुप्। २ निचृत्त्रिष्टुप्। ७ स्वराट् त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः। ३ निचृत्पङ्क्तिः। ४ स्वराट् पङ्क्तिः। ५ पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः। ६ जगती छन्दः। निषादः स्वरः॥**

***अथ मनुष्यैः कीदृशोऽग्निर्वेदितव्य इत्याह॥***

अब सात ऋचावाले सातवें सूक्त का आरम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में मनुष्यों को कैसा अग्नि जानना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**मूर्धानं दिवो अरतिं पृथिव्या वैश्वानरमृत आ जातमग्निम्।**

**कविं सम्राजमतिथिं जनानामासन्ना पात्रं जनयन्त देवाः॥ १॥**

**मूर्धानम्। दिवः। अरतिम्। पृथिव्याः। वैश्वानरम्। ऋते। आ। जातम्। अग्निम्। कविम्। सम्ऽराजम्। अतिथिम्। जनानाम्। आसन्। आ। पात्रम्। जनयन्त। देवाः॥ १॥**

**पदार्थः-(मूर्द्धानम्)** सर्वोपरि विराजमानम् **(दिवः)** प्रकाशस्य सूर्य्यस्य वा **(अरतिम्)** प्राप्तिम् **(पृथिव्याः) (वैश्वानरम्)** विश्वेषु नरेषु नायकम् **(ऋते)** सत्ये **(आ) (जातम्)** प्रसिद्धम् **(अग्निम्)** अग्निमिव वर्त्तमानम् **(कविम्)** क्रान्तप्रज्ञं विद्वांसं वा **(सम्राजम्)** भूगोलस्य राजानम् **(अतिथिम्)** पूजनीयम् **(जनानाम्)** मनुष्याणाम् **(आसन्)** सन्ति **(आ) (पात्रम्)** यः पतिस्तम् **(जनयन्त) (देवाः)** विद्वांसः॥ १॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! ये देवा दिवो मूर्द्धानं पृथिव्या अरतिमृते जातं कविं सम्राजं जनानामतिथिं पात्रं वैश्वानरमग्निमाऽऽजनयन्त ते सुखिन आऽऽसन्॥ १॥

**भावार्थः**-ये मनुष्याः परमात्मवन्न्यायकारिणो भूत्वा वह्निरिव विद्याविनयप्रकाशिताः सम्राज्यं प्राप्नुवन्ति ते सर्वान् सुखयितुमर्हन्ति॥ १॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो **(देवाः)** विद्वान् जन **(दिवः)** प्रकाश वा सूर्य्य के **(मूर्द्धानम्)** सर्वोपरि विराजमान **(पृथिव्याः)** पृथिवी की **(अरतिम्)** प्राप्ति को **(ऋते)** सत्य में **(जातम्)** प्रसिद्ध **(कविम्)** स्वच्छ बुद्धियुक्त वा विद्वान् **(सम्राजम्)** भूगोल के राजा **(जनानाम्)** मनुष्यों के **(अतिथिम्)** आदर करने योग्य **(पात्रम्)** पालन करने वाले **(वैश्वानरम्)** सम्पूर्ण मनुष्यों में अग्रणी **(अग्निम्)** अग्नि के सदृश वर्त्तमान को **(आ, जनयन्त)** प्रकट करते हैं, वे सुखी **(आ, आसन्)** अच्छे प्रकार हैं॥ १॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य परमात्मा के सदृश न्यायकारी होकर तथा अग्नि के सदृश विद्या और विनय से प्रकाशित हुए चकवर्त्तित्व को प्राप्त होते हैं, वे सुख देने को योग्य होते हैं॥ १॥

**पुनस्तमेवाग्निविषयमाह॥**

फिर उसी अग्नि के विषय को कहते हैं॥



www.9009.co.in

**नाभिं यज्ञानां सदनं रयीणां महामाहावमभि सं नवन्त।**

**वैश्वानरं रथ्यमध्वराणां यज्ञस्य केतुं जनयन्त देवाः॥ २॥**

**नाभिम्। यज्ञानाम्। सदनम्। रयीणाम्। महाम्। आऽहावम्। अभि। सम्। नवन्त। वैश्वानरम्। रथ्यम्। अध्वराणाम्। यज्ञस्य। केतुम्। जनयन्त। देवाः॥ २॥**

**पदार्थः**-(**नाभिम्**) मध्यभागम् (**यज्ञानाम्**) सत्यक्रियामयानाम् (**सदनम्**) स्थानम् (**रयीणाम्**) धनानाम् (**महाम्**) महताम् (**आहावम्**) समन्तात् स्पर्द्धनीयम् (**अभि**) आभिमुख्ये (**सम्**) (**नवन्त**) स्तुवन्ति (**वैश्वानरम्**) विश्वस्मिन् राजमानम् (**रथ्यम्**) रथं वोढुमर्हम् (**अध्वराणाम्**) अहिंसनीयानाम् (**यज्ञस्य**) सङ्गन्तव्यस्य (**केतुम्**) प्रज्ञापकम् (**जनयन्त**) जनयन्ति (**देवाः**) विद्वांसः॥ २॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! देवा यं यज्ञानां नाभिं महाँ रयीणां सदनमाहावं वैश्वानरं रथ्यमध्वराणां यज्ञस्य केतुं सं जनयन्त नवन्त तं यूयमभि प्रशंसत॥ २॥

**भावार्थः**-ये मनुष्याः सर्वतो व्याप्तं सर्वकार्य्यसिद्धिकरमग्निं विज्ञाय यानानि जनयन्ते ते कार्यसिद्धिं लभन्ते॥ २॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! (**देवाः**) विद्वान् जन जिस (**यज्ञानाम्**) सत्यक्रियामय यज्ञों के (**नाभिम्**) बीच के भाग को और (**महाम्**) महान् (**रयीणाम्**) धनों के (**सदनम्**) स्थान और (**आहावम्**) चारों ओर से स्पर्द्धा करने योग्य (**वैश्वानरम्**) सर्वत्र प्रकाशमान (**रथ्यम्**) रथ को बहाने के योग्य (**अध्वराणाम्**) नहीं नष्ट करने योग्यों के (**यज्ञस्य**) प्राप्त होने योग्य व्यवहार के (**केतुम्**) जनाने वाले को (**सम्, जनयन्त**) अच्छे प्रकार प्रकट करते हैं और (**नवन्त**) स्तुति करते हैं उसकी आप लोग (**अभि**) सम्मुख प्रशंसा करिये॥ २॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य सर्वत्र व्याप्त और सम्पूर्ण कार्य्यों की सिद्धि के करने वाले अग्नि को अच्छे प्रकार जान कर वाहनों को प्रकट करते हैं, वे कार्य्यसिद्धि को प्राप्त होते हैं॥ २॥

**पुनः स राजा कीदृशो भवेदित्याह॥**

फिर वह राजा कैसा होवे, इस विषय को कहते हैं॥

**त्वद्विप्रो जायते वाज्यग्ने त्वद्वीरासो अभिमातिषाहः।**

**वैश्वानर त्वमस्मासु धेहि वसूनि राजन्त्स्पृहयाय्याणि॥ ३॥**

**त्वत्। विप्रः। जायते। वाजी। अग्ने। त्वत्। वीरासः। अभिमातिऽसहः। वैश्वानर। त्वम्। अस्मासु। धेहि। वसूनि। राजन्। स्पृहयाय्याणि॥ ३॥**

**पदार्थः**-(**त्वत्**) तव सकाशात् (**विप्रः**) मेधावी (**जायते**) (**वाजी**) वेगवान् (**अग्ने**) पावकवत्प्रतापिन् विद्वन् (**त्वत्**) (**वीरासः**) शूरवीराः (**अभिमातिषाहः**) येऽभिमात्याऽभिमानेन



www.9009.co.in

युक्ताञ्छत्रून् सहन्ते **(वैश्वानर)** विश्वेषु नरेषु नायक **(त्वम्)** **(अस्मासु)** **(धेहि)** **(वसूनि)** **(राजन्)** **(स्पृहयाय्याणि)** स्पृहणीयानि॥३॥

**अन्वयः**-हे वैश्वानराऽग्ने राजन्! यस्मात् त्वद्विप्रो वाजी जायते त्वदभिमातिषाहो वीरासो जायन्ते ततस्त्वमस्मासु स्पृहयाय्याणि वसूनि धेहि॥३॥

**भावार्थः**-स एव राजा भवितुं योग्यो यस्य सङ्गेन दुष्टा अपि श्रेष्ठाः कातरा अपि शूरवीराः कृपणा अपि दातारो भवन्ति॥३॥

**पदार्थः**-हे **(वैश्वानर)** संपूर्ण जनों में अग्रणी **(अग्ने)** अग्नि के सदृश प्रतापी विद्वन् **(राजन्)** राजन्! जिस कारण से **(त्वत्)** आपके समीप से **(विप्रः)** बुद्धिमान् **(वाजी)** वेगयुक्त **(जायते)** होता है और **(त्वत्)** आपके समीप से **(अभिमातिषाहः)** अभिमानयुक्त शत्रुओं के सहने वाले **(वीरासः)** शूरवीर जन प्रकट होते हैं इससे **(त्वम्)** आप **(अस्मासु)** हम लोगों में **(स्पृहयाय्याणि)** इच्छा के विषय होने योग्य **(वसूनि)** धनों को **(धेहि)** धारण करिये॥३॥

**भावार्थः**-वही राजा होने को योग्य है जिसके संग दुष्ट जन भी श्रेष्ठ, कायर भी शूरवीर और कृपण भी दाता होते हैं॥३॥

**अथ द्वितीयजन्मविषयमाह॥**

अब द्वितीय जन्म के विषय को कहते हैं॥

**त्वां विश्वे॑ अमृत॒ जाय॑मानं॒ शिशुं॒ न दे॒वा अ॒भि सं न॑वन्ते।**

**तव॒ क्रतु॑भिरमृत॒त्वमा॑य॒न् वैश्वा॑नर॒ यत्पि॒त्रोरदी॑देः॥४॥**

**त्वाम्। विश्वे॑। अ॒मृ॒त॒। जाय॑मानम्। शिशु॑म्। न। दे॒वाः। अ॒भि। सम्। न॒व॒न्ते॒। तव॑। क्रतु॑ऽभिः। अ॒मृ॒त॒ऽत्वम्। आ॒य॒न्। वैश्वा॑नर। यत्। पि॒त्रोः। अदी॑देः॥४॥**

**पदार्थः**-**(त्वाम्)** **(विश्वे)** सर्वे **(अमृत)** मरणधर्म्मरहित **(जायमानम्)** उत्पद्यमानम् **(शिशुम्)** बालकम् **(न)** इव **(देवाः)** विद्वांसः **(अभि)** **(सम्)** सम्यक् **(नवन्ते)** स्तुवन्ति **(तव)** **(क्रतुभिः)** प्रज्ञाकर्म्मभिः **(अमृतत्वम्)** मोक्षस्य भावम् **(आयन्)** प्राप्नुवन्ति **(वैश्वानर)** यो विश्वान्नरान् धर्मकार्य्येषु नयति तत्सम्बुद्धौ **(यत्)** यः **(पित्रोः)** मातपित्रोरिव विद्याऽऽचार्ययोः **(अदीदेः)** प्रकाशयेः॥४॥

**अन्वयः**-हे वैश्वानराऽमृताप्त विद्वन्! यं त्वां शिशुं न जायमानं विश्वे देवा अभि सन्नवन्ते यस्य तव क्रतुभिर्मनुष्या अमृतत्वमायन् यत्त्वं पित्रोरदीदेः स त्वं धन्योऽसि॥४॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। ये मनुष्या मातापितृभ्यां जन्म प्राप्याऽष्टमं वर्षमारभ्याऽऽचार्य्याद्विद्याग्रहणेन द्वितीयं जन्म प्राप्नुवन्ति ते स्तुत्याः सन्तो धर्म्मार्थकाममोक्षान् साद्धुं शक्नुवन्ति॥४॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-हे **(वैश्वानर)** संपूर्ण जनों को धर्म्म के कार्य्यों में ले चलने वाले **(अमृत)** मरणधर्म्म से रहित यथार्थवक्ता विद्वान्! जिन **(त्वाम्)** आपको **(शिशुम्)** बालक को **(न)** जैसे वैसे **(जायमानम्)** उत्पन्न हुए को **(विश्वे)** सम्पूर्ण **(देवाः)** विद्वान् जन **(अभि)** सब ओर से **(सम्)** उत्तम प्रकार **(नवन्ते)** स्तुति करते हैं और जिन **(तव)** आपके **(क्रतुभिः)** बुद्धि के कर्म्मों से मनुष्य लोग **(अमृतत्वम्)** मोक्षपन को **(आयन्)** प्राप्त होते हैं और **(यत्)** जो आप **(पित्रोः)** माता और पिता के सदृश विद्या और आचार्य्य के **(अदीदेः)** प्रकाशक हो, वह आप धन्य हो॥४॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जो मनुष्य माता और पिता से जन्म को प्राप्त होकर आठवें वर्ष से प्रारम्भ करके आचार्य से विद्या के ग्रहण से द्वितीय जन्म को प्राप्त होते हैं, वे स्तुति करने योग्य हुए धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को सिद्ध करने को समर्थ होते हैं॥४॥

**पुनर्मनुष्यैः किं प्रापणीयमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को क्या प्राप्त कराना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**वैश्वा॑नर॒ तव॒ तानि॑ व्र॒तानि॑ म॒हान्य॑ग्ने॒ नकि॒रा द॑धर्ष।**

**यज्जाय॑मानः पि॒त्रोरु॒पस्थेऽवि॑न्दः के॒तुं व॒युने॒ष्वह्ना॑म्॥५॥**

**वैश्वा॑नर। तव॑। तानि॑। व्र॒तानि॑। म॒हानि॑। अ॒ग्ने॒। नकि॑ः। आ। द॒ध॒र्ष॒। यत्। जाय॑मानः। पि॒त्रोः। उ॒पऽस्थे॑। अवि॑न्दः। के॒तुम्। व॒युने॑षु। अह्ना॑म्॥५॥**

**पदार्थः**-**(वैश्वानर)** विश्वस्मिन् विद्याधर्म्मप्रकाशनेन नायक **(तव)** **(तानि)** ब्रह्मचर्य्यविद्याग्रहणसत्यभाषणादीनि **(व्रतानि)** कर्म्माणि **(महानि)** महान्ति **(अग्ने)** पावकवत्प्रकाशात्मन् **(नकिः)** निषेधे **(आ)** **(दधर्ष)** तिरस्कुर्य्यात् **(यत्)** यः **(जायमानः)** **(पित्रोः)** जनकयोरिव विद्याऽऽचार्य्ययोः **(उपस्थे)** समीपे **(अविन्दः)** विन्दसि प्राप्नोषि **(केतुम्)** प्रज्ञाम् **(वयुनेषु)** पृथिवीमारभ्य परमेश्वरपर्य्यन्तानां विज्ञानेषु **(अह्नाम्)** दिनानां मध्ये॥५॥

**अन्वयः**-हे वैश्वानराऽग्ने! यद्यस्त्वं पित्रोरुपस्थे जायमानोऽह्नां वयुनेषु केतुमविन्दस्तमस्य तव तानि महानि व्रतानि कोऽपि नकिराऽऽदधर्ष॥५॥

**भावार्थः**-यदि मनुष्या द्वितीयं विद्याजन्म प्राप्नुयुस्तर्हि तेषामामोघानि कर्म्माणि भवन्तीति वेद्यम्॥५॥

**पदार्थः**-हे **(वैश्वानर)** सम्पूर्ण संसार में विद्या और धर्म्म के प्रकाश से अग्रणी **(अग्ने)** अग्नि के सदृश प्रकाशस्वरूप **(यत्)** जो आप **(पित्रोः)** माता-पिता के सदृश विद्या और आचार्य्य के **(उपस्थे)** समीप में **(जायमानः)** प्रकट हुआ **(अह्नाम्)** दिनों के मध्य में **(वयुनेषु)** पृथिवी से लेकर परमेश्वर पर्य्यन्त पदार्थों के विज्ञानों में **(केतुम्)** बुद्धि को **(अविन्दः)** प्राप्त होते हो उन **(तव)** आपके **(तानि)** उक्त



www.9009.co.in

ब्रह्मचर्य्य, विद्याग्रहण, सत्यभाषण आदि **(महानि)** बड़े **(व्रतानि)** कर्म्मों को कोई भी **(नकिः)** नहीं **(आ, दधर्ष)** तिरस्कार करे॥५॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य दूसरे विद्यारूप जन्म को प्राप्त होवें, तो उनके सफल कर्म्म होते हैं, ऐसा जानना चाहिये॥५॥

**पुनर्मनुष्यैः किं वेदितव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को क्या जानना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**वैश्वानरस्य विमितानि चक्षसा सानूनि दिवो अमृतस्य केतुना।**

**तस्येदु विश्वा भुवनाधि मूर्धनि वयाइव रुरुहुः सप्त विस्रुहः॥६॥**

**वैश्वानरस्य। विऽमितानि। चक्षसा। सानूनि। दिवः। अमृतस्य। केतुना। तस्य। इत्। ऊँ इति। विश्वा। भुवना। अधि। मूर्धनि। वयाःऽइव। रुरुहुः। सप्त। विऽस्रुहः॥६॥**

**पदार्थः-(वैश्वानरस्य)** विश्वेषु नरेषु विद्याविनयाभ्यां प्रकाशमानस्य **(विमितानि)** विशेषेण परिमितानि **(चक्षसा)** प्रज्ञानेन **(सानूनि)** प्रान्तदेशान् **(दिवः)** प्रकाशमानस्य **(अमृतस्य)** नाशरहितस्य **(केतुना)** प्रज्ञया **(तस्य)** **(इत्)** एव **(उ)** **(विश्वा)** सर्वाणि **(भुवना)** भुवनानि लोकाः **(अधि)** **(मूर्द्धनि)** **(वयाइव)** पक्षिण इव **(रुरुहुः)** प्रादुर्भवन्ति **(सप्त)** सप्तविधाः **(विस्रुहः)** विसरन्ति विशेषेण गच्छन्ति॥६॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यस्य वैश्वानरस्य चक्षसा विमितानि सानूनि दिवोऽमृतस्य केतुना विश्वा भुवना सप्त विस्रुहो मूर्द्धनि वयाइवाऽधि रुरुहुस्तस्येदु सङ्गं कुरुत॥६॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। यो विद्वान् जगदीश्वरनिर्मितान् पक्षिवदन्तरिक्षे चलतो लोकानेतेषां गतिं च विजानीयात् स विदुषां मूर्द्धेव प्रशंसनीयो जायते॥६॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जिस **(वैश्वानरस्य)** संपूर्ण नरों में विद्या और विनय से प्रकाशमान के **(चक्षसा)** प्रज्ञान से **(विमितानि)** विशेष करके परिमित **(सानूनि)** प्रान्त स्थानों को **(दिवः)** प्रकाशमान **(अमृतस्य)** नाश से रहित की **(केतुना)** बुद्धि से **(विश्वा)** सम्पूर्ण **(भुवना)** लोक **(सप्त)** सात प्रकार के **(विस्रुहः)** विशेष करके सरकते जाते और **(मूर्द्धनि)** शिर पर अर्थात् ऊपर **(वयाइव)** पक्षियों के सदृश **(अधि)** अधिकतर **(रुरुहुः)** प्रकट होते हैं **(तस्य)** उसका **(इत्)** ही **(उ)** तर्क-वितर्क से संग करो॥६॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जो विद्वान् जन परमेश्वर से रचे गए, पक्षियों सदृश अन्तरिक्ष में चलते हुए लोकों और उनकी गति को बुद्धि से विशेष करके जाने, वह विद्वानों के मस्तक के सदृश प्रशंसा करने योग्य होता है॥६॥

**पुनर्जगदीश्वरः कीदृशोऽस्तीत्याह॥**

फिर जगदीश्वर कैसा है, इस विषय को कहते हैं॥



www.9009.co.in

**वि यो रजां॑स्यमि॑मीत सुक्रतु॑र्वैश्वान॒रो वि दि॒वो रो॑च॒ना क॒विः।**

**परि॒ यो विश्वा॒ भुव॑नानि पप्र॒थेऽद॑ब्धो गो॒पा अ॒मृत॑स्य रक्षि॒ता॥७॥९॥**

**विः। यः। रजां॑सि। अमि॑मीत। सु॒ऽक्रतुः॑। वै॒श्वा॒न॒रः। वि। दि॒वः। रो॒च॒ना। क॒विः। परि॑। यः। विश्वा॑। भुव॑नानि। प॒प्र॒थे। अद॑ब्धः। गो॒पाः। अ॒मृत॑स्य। र॒क्षि॒ता॥७॥९॥**

**पदार्थः**-(**वि**) विशेषेण (**यः**) जगदीश्वरः (**रजांसि**) (**अमिमीत**) निर्मिमीते (**सुक्रतुः**) शोभनानि प्रज्ञानानि कर्म्माणि यस्य सः (**वैश्वानरः**) (**वि**) (**दिवः**) प्रकाशमानस्य सूर्य्यस्य (**रोचना**) रोचनानि प्रदीपनानि (**कविः**) क्रान्तप्रज्ञः (**परि**) सर्वतः (**यः**) (**विश्वा**) अखिलानि (**भुवनानि**) (**पप्रथे**) प्रथयति विस्तृणाति (**अदब्धः**) अहिंसनीयः (**गोपाः**) पालकः (**अमृतस्य**) मोक्षस्य (**रक्षिता**)॥७॥

**अन्वयः**-हे विद्वांसो! यो वैश्वानरः सुक्रतुः कविरीश्वरो दिवो रोचना रजांसि व्यमिमीत यो विश्वा भुवनानि परि पप्रथे सोऽमृतस्य गोपा अदब्धो रक्षिता व्यमिमीत॥७॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! येन जगदीश्वरेण सर्वे लोका निर्मिता यः सर्वेषां रक्षिताऽस्ति तं सर्वे उपासीरन्निति॥७॥

अत्र वैश्वानरविद्वदीश्वरगुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति सप्तमं सूक्तं नवमो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे विद्वान् जनो! (**यः**) जो जगदीश्वर (**वैश्वानरः**) सम्पूर्ण मनुष्यों का हित करने वाला (**सुक्रतुः**) उत्तम कर्म जिसके वह (**कविः**) उत्तम बुद्धि वाला ईश्वर (**दिवः**) प्रकाशमान सूर्य्य के (**रोचना**) प्रकाशरूप (**रजांसि**) लोकों को (**वि**) विशेष करके (**अमिमीत**) निर्मित करता तथा (**यः**) जो (**विश्वा**) सम्पूर्ण (**भुवनानि**) भुवनों को (**परि**) सब ओर से (**पप्रथे**) विस्तारयुक्त करता है वह (**अमृतस्य**) मोक्ष का (**गोपाः**) पालन करने वाला (**अदब्धः**) अहिंसनीय और (**रक्षिता**) रक्षा करने वाला (**वि**) विशेष करके निर्माण करता है॥७॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जिस जगदीश्वर ने सम्पूर्ण लोक निर्मित किये हैं तथा जो सब का रक्षक है, उसकी सब उपासना करें॥७॥

इस सूक्त में सब के हित करने वाला, विद्वान् और ईश्वर के गुणवर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ संगति जाननी चाहिये॥

**यह सातवाँ सूक्त और नवमा वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

**अथ सप्तर्चस्याष्टमस्य सूक्तस्य भरद्वाजो बार्हस्पत्य ऋषिः। वैश्वानरो देवता। १, ४ जगती। ६ विराड्जगती छन्दः। निषादः स्वरः। २, ३, ५ भुरिक्त्रिष्टुप्। ७ निचृत् त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः॥**

*अथ मनुष्यैः किं विज्ञाय किमुपदेष्टव्यमित्याह॥*

अब सात ऋचावाले आठवें सूक्त का प्रारम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में अब मनुष्यों को क्या जान कर क्या उपदेश करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**पृक्षस्य वृष्णो अरुषस्य नू सहः प्र नु वोचं विदथा जातवेदसः।**
**वैश्वानराय मतिर्नव्यसी शुचिः सोमइव पवते चारुरग्नये॥१॥**

**पृक्षस्य। वृष्णः। अरुषस्य। नु। सहः। प्र। नु। वोचम्। विदथा। जातऽवेदसः। वैश्वानराय। मतिः। नव्यसी। शुचिः। सोमःऽइव। पवते। चारुः। अग्नये॥१॥**

**पदार्थः-(पृक्षस्य)** सर्वत्र सम्बद्धस्य सम्पृक्तस्य **(वृष्णः)** सेचकस्य **(अरुषस्य)** अहिंसकस्य **(नूः)** सद्यः। अत्र **ऋचि तुनुघेति** दीर्घः। **(सहः)** बलम् **(प्र)** **(नु)** क्षिप्रम् **(वोचम्)** उपदिशेयम् **(विदथा)** विज्ञानानि **(जातवेदसः)** जातेषु विद्यमानस्य **(वैश्वानराय)** सर्वस्य विश्वस्य प्रकाशकाय **(मतिः)** प्रज्ञा **(नव्यसी)** अतिशयेन नवीना **(शुचिः)** पवित्रा **(सोमइव)** सोमलतेव **(पवते)** पवित्रा भवति **(चारुः)** सुन्दरा **(अग्नये)** विदुषे॥१॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यस्य पृक्षस्यारुषस्य वृष्णो जातवेदसः सहो नू प्र वोचं विदथा नु प्रवोचं यस्य सोमइव नव्यसी शुचिश्चारुर्मतिः पवते तस्मै वैश्वानरायाऽग्नये प्रज्ञां धरेयम्॥१॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। येषां मनुष्याणां सोमौषधिवत्पवित्रकरी प्रज्ञाऽतुलं बलमग्निविद्या च भवति त एवाऽऽनन्दन्ति॥१॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जिस **(पृक्षस्य)** सर्वत्र सम्बद्ध अर्थात् संयुक्त **(अरुषस्य)** नहीं हिंसा करने और **(वृष्णः)** सेचन करनेवाले **(जातवेदसः)** उत्पन्न हुओं में विद्यमान के **(सहः)** बल का **(नु)** शीघ्र **(प्र, वोचम्)** उपदेश देऊँ और **(विदथा)** विज्ञानों का **(नू)** शीघ्र उपदेश देऊँ और जिसकी **(सोमइव)** सोमलता जैसे वैसे **(नव्यसी)** अत्यन्त नवीन **(शुचिः)** पवित्र **(चारुः)** सुन्दर **(मतिः)** बुद्धि **(पवते)** पवित्र होती है उस **(वैश्वानराय)** सम्पूर्ण विश्व के प्रकाशक **(अग्नये)** विद्वान् जन के लिये बुद्धि को धारण करूँ॥१॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जिन मनुष्यों की सोमलतारूप ओषधि के सदृश पवित्र करने वाली बुद्धि, अतुल बल और अग्निविद्या होती है, वे ही आनन्दित होते हैं॥१॥



www.9009.co.in

**पुनर्मनुष्यैः किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**स जायमानः परमे व्योमनि व्रतान्यग्निर्व्रतपा अरक्षत।**

**व्य१न्तरिक्षममिमीत सुक्रतुर्वैश्वानरो महिना नाकमस्पृशत्॥२॥**

**सः। जायमानः। परमे। विऽओमनि। व्रतानि। अग्निः। व्रतऽपाः। अरक्षत। वि। अन्तरिक्षम्। अमिमीत। सुऽक्रतुः। वैश्वानरः। महिना। नाकम्। अस्पृशत्॥२॥**

**पदार्थः**-(**सः**) सूर्य्यरूपेण (**जायमानः**) उत्पद्यमानः (**परमे**) प्रकृष्टे (**व्योमनि**) व्योमवद्व्यापके (**व्रतानि**) सत्यभाषणादीनि कर्म्माणि (**अग्निः**) पावकः (**व्रतपाः**) यो व्रतानि कर्म्माणि रक्षति सः (**अरक्षत**) रक्षति (**वि**) (**अन्तरिक्षम्**) उदकम् (**अमिमीत**) रचयति (**सुक्रतुः**) शोभनकर्म्मा (**वैश्वानरः**) विश्वेषु नरेषु प्रकाशमानः (**महिना**) महत्त्वेन (**नाकम्**) अविद्यमानदुःखम् (**अस्पृशत्**) स्पृशति॥२॥

**अन्वयः**-हे विद्वांसो! युष्माभिर्यो व्रतपा अग्निः परमे व्योमनि जायमानो व्रतान्यरक्षतान्तरिक्षं व्यमिमीत सुक्रतुर्वैश्वानरो महिना नाकमस्पृशत् स वेदितव्यः॥२॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! येन परमेश्वरेण स्वस्मिन् सूर्य्यादिलोकनिर्म्माणेन सर्वेषामुपकारः कृतस्तस्य सत्यानि कर्म्माण्यनुष्ठायोपासनां कुर्वन्तु॥२॥

**पदार्थः**-हे विद्वान् जनो! आप लोगों को जो (**व्रतपाः**) कर्म्मों की रक्षा करने वाला (**अग्निः**) अग्नि (**परमे**) श्रेष्ठ और (**व्योमनि**) आकाश के सदृश व्यापक परमेश्वर में (**जायमानः**) उत्पन्न होता हुआ (**व्रतानि**) सत्यभाषण आदि कर्म्मों की (**अरक्षत**) रक्षा करता तथा (**अन्तरिक्षम्**) जल की (**वि**) विशेष करके (**अमिमीत**) रक्षा करता और (**सुक्रतुः**) अच्छे कर्म्मोंवाला (**वैश्वानरः**) सम्पूर्ण मनुष्यों में प्रकाशमान होता हुआ (**महिना**) महत्त्व से (**नाकम्**) दुःखरहित का (**अस्पृशत्**) स्पर्श करता है (**सः**) वह जानने योग्य है॥२॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जिस परमेश्वर ने अपने में सूर्य्य आदि लोकों के निर्म्माण से सब का उपकार किया, उसके सत्य कर्म्मों का अनुष्ठान करके उपासना करो अर्थात् उसी का भजन करो॥२॥

**पुनः सूर्य्यः कीदृशोऽस्तीत्याह॥**

फिर सूर्य्य कैसा है, इस विषय को कहते हैं॥

**व्यस्तभ्नाद्रोदसी मित्रो अद्भुतोऽन्तर्वावदकृणोज्ज्योतिषा तमः।**

**वि चर्मणीव धिषणे अवर्तयद्वैश्वानरो विश्वमधत्त वृष्ण्यम्॥३॥**

**वि। अस्तभ्नात्। रोदसी इति। मित्रः। अद्भुतः। अन्तःऽवावत्। अकृणोत्। ज्योतिषा। तमः। वि। चर्मणी इवेति चर्मणीऽइव। धिषणे इति। अवर्तयत्। वैश्वानरः। विश्वम्। अधत्त। वृष्ण्यम्॥३॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**वि**) (**अस्तभ्नात्**) स्तभ्नाति धरति (**रोदसी**) द्यावापृथिव्यौ (**मित्रः**) सर्वस्य सुहृदिव (**अद्भुतः**) आश्चर्य्यगुणकर्म्मस्वभावः (**अन्तर्वावत्**) यो अन्तर्भृशं वाति गच्छति (**अकृणोत्**) करोति (**ज्योतिषा**) प्रकाशेन (**तमः**) रात्रिम् (**वि**) (**चर्म्मणीव**) यथा चर्म्मणि लोमानि धृतानि (**धिषणे**) सर्वस्य धारिके (**अवर्त्तयत्**) वर्त्तयति (**वैश्वानरः**) विश्वेषु नरेषु विराजमानः (**विश्वम्**) सर्वं जगत् (**अधत्त**) धरति (**वृष्ण्यम्**) वृषसु भवं साधुं वा॥३॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! योऽद्भुतो मित्रो वैश्वानरः सूर्यो रोदसी व्यस्तभ्नाज्ज्योतिषा तमोऽकृणोदन्तर्वावच्चर्म्मणीव धिषणे व्यवर्त्तयद् वृष्ण्यं विश्वमधत्त तं यूयं सम्प्रयुङ्ध्वम्॥३॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यो जगदीश्वरनिर्मितोऽयं सूर्यश्चर्मलोमानीवाऽऽकर्षणेन लोकान् धरति नियमेन चालयति स्वयं चलति स एव जगदुपकाराय प्रभवति॥३॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो (**अद्भुतः**) आश्चर्यजनक गुण, कर्म और स्वभाववाला (**मित्रः**) सब के मित्र के समान वर्त्तमान (**वैश्वानरः**) संपूर्ण मनुष्यों में विराजमान सूर्य्य (**रोदसी**) अन्तरिक्ष और पृथिवी को (**वि, अस्तभ्नात्**) धारण करता तथा (**ज्योतिषा**) प्रकाश से (**तमः**) रात्रि को (**अकृणोत्**) करता (**अन्तर्वावत्**) अन्तः अर्थात् ब्रह्माण्ड के भीतर अत्यन्त चलता (**चर्म्मणीव**) जैसे चर्म में रोम धारण किये गये, वैसे (**धिषणे**) सब के धारण करने वालियों को (**वि, अवर्त्तयत्**) विशेष करके वर्ताता (**वृष्ण्यम्**) वृषों में उत्पन्न वा श्रेष्ठ (**विश्वम्**) सम्पूर्ण जगत् को (**अधत्त**) धारण करता है, उसको तुम लोग प्रयोग करो॥३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमावाचकलुप्तोपमालङ्कार हैं।[87] हे मनुष्यो! जो जगदीश्वर से बनाया गया यह सूर्य्य चर्म्म रोगों को, वैसे आकर्षण से लोकों को धारण करता है तथा नियम से चलाता और चलता है, वही जगत् के उपकार के लिये समर्थ होता है॥३॥

**पुनः स वायुः कीदृशः किं करोतीत्याह॥**

फिर वह वायु कैसा है और क्या करता है, इस विषय को कहते हैं॥

**अपामुपस्थे महिषा अगृभ्णत विशो राजानमुप तस्थुर्ऋग्मियम्।**

**आ दूतो अग्निमभरद्विवस्वतो वैश्वानरं मातरिश्वा परावतः॥४॥**

**अपाम्। उपऽस्थे। महिषाः। अगृभ्णत। विशः। राजानम्। उप। तस्थुः। ऋग्मियम्। आ। दूतः। अग्निम्। अभरत्। विवस्वतः। वैश्वानरम्। मातरिश्वा। पराऽवतः॥४॥**

**पदार्थः**-(**अपाम्**) प्राणानां जलानां वा (**उपस्थे**) समीपे (**महिषाः**) महान्तः (**अगृभ्णत**) गृह्णन्ति (**विशः**) (**राजानम्**) राजानमिव सूर्य्यम् (**उप**) (**तस्थुः**) तिष्ठन्ति (**ऋग्मियम्**) य ऋग्भिर्मीयते तम् (**आ**)

८७. संस्कृत भावार्थ में केवल उपमालङ्कार दिया है।



www.9009.co.in

समन्तात् (**दूतः**) यो दुनोति परितापयति सः (**अग्निम्**) पावकम् (**अभरत्**) भरति (**विवस्वतः**) सूर्य्यस्य (**वैश्वानरम्**) विश्वस्मिन् प्रकाशमानम् (**मातरिश्वा**) यो मातर्य्यन्तरिक्षे शेते सः वायुः (**परावतः**) दूरे स्थितस्य॥४॥

**अन्वयः**-हे विद्वांसो! यो दूतो मातरिश्वा परावतो विवस्वतो वैश्वानरमग्निमभरद् यमृग्मियं राजानं विश उपाऽऽतस्थुरिव सूर्य्यमुपतिष्ठति यमपामुपस्थे वर्त्तमानं महिषा अगृभ्णत तं वायुं यूयं विजानीत॥४॥

**भावार्थः**-यथा वार्युदूरस्थस्याऽपि सूर्य्यस्य तेजो बिभर्त्ति तथोत्तमो राजा दूरस्था अपि प्रजां बिभृयात्॥४॥

**पदार्थः**-हे विद्वान् जनो! जो (**दूतः**) सन्तापित कराने वाला (**मातरिश्वा**) अन्तरिक्ष में शयन करने वाला वायु (**परावतः**) दूर स्थित (**विवस्वतः**) सूर्य्य के (**वैश्वानरम्**) सर्वत्र प्रकाशमान (**अग्निम्**) अग्नि को (**अभरत्**) धारण करता और जिस (**ऋग्मियम्**) ऋचाओं द्वारा प्रमाण किया जाता उस (**राजानम्**) जैसे राजा का, वैसे सूर्य को (**विशः**) प्रजायें (**उप**) समीप में (**आ**) चारों ओर से (**तस्थुः**) प्राप्त होती हैं, वैसे सूर्य्य उपस्थित होता है और जिस (**अपाम्**) प्राणों वा जलों के (**उपस्थे**) समीप में वर्त्तमान का (**महिषाः**) बड़े जन (**अगृभ्णत**) ग्रहण करते हैं, उस वायु को आप लोग जानिये॥४॥

**भावार्थः**-जैसे वायु दूर वर्त्तमान भी सूर्य्य के तेज को धारण करता है, वैसे उत्तम राजा दूर स्थित भी प्रजाओं का पोषण करे॥४॥

**पुनर्नृपः किं कुर्य्यादित्याह॥**

फिर राजा क्या करे, इस विषय को कहते हैं॥

**युगेयुगे विदथ्यं गृणद्भ्योऽग्ने रयिं यशसं धेहि नव्यसीम्।**

**पव्येव राजन्नघशंसमजर नीचा नि वृश्च वनिनं न तेजसा॥५॥**

**युगेऽयुगे। विदथ्यम्। गृणत्ऽभ्यः। अग्ने। रयिम्। यशसम्। धेहि। नव्यसीम्। पव्याऽइव। राजन्। अघऽशंसम्। अजर। नीचा। नि। वृश्च। वनिनम्। न। तेजसा॥५॥**

**पदार्थः**-(**युगेयुगे**) वर्षे वर्षे वर्षसमुदाये वर्षसमुदाये वा (**विदथ्यम्**) विदथेषु सङ्ग्रामविज्ञानादिषु भवम् (**गृणद्भ्यः**) स्तुवद्भ्यः (**अग्ने**) (**रयिम्**) धनम् (**यशसम्**) कीर्तिमन्नं वा (**धेहि**) (**नव्यसीम्**) अतिशयेन नूतनां विद्यां क्रियां वा (**पव्येव**) वज्रेणेव (**राजन्**) (**अघशंसम्**) स्तेनम् (**अजर**) जरादोषरहित (**नीचा**) नीचम् (**नि**) नितराम् (**वृश्च**) छिन्धि (**वनिनम्**) वनानि किरणा विद्यन्ते यस्मिंस्तत् (**न**) इव (**तेजसा**)॥५॥

**अन्वयः**-हे अजर राजन्नग्ने! त्वं तेजसा वनिनं न शूरः पव्येव नीचाऽघशंसं नि वृश्च गृणद्भ्यो युगेयुगे विदथ्यं रयिं यशसं नव्यसीं च धेहि॥५॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। यथा सूर्य्यो किरणसंयुक्तं मेघं छिनत्ति यथा वज्रो विदारणीयं विदृणाति तथा राजा स्तेनादीन् दुष्टान् छित्त्वा भित्त्वा धार्मिकेभ्यो धनाद्यैश्वर्य्यं दधातु॥५॥

**पदार्थः**-हे **(अजर)** वृद्धावस्थारूप दोष से रहित **(राजन्)** प्रकाशमान **(अग्ने)** अग्नि के सदृश वर्त्तमान! आप **(तेजसा)** तेज से **(वनिनम्)** किरण विद्यमान जिसमें उसको **(न)** जैसे वैसे वा शूरवीर जन **(पव्येव)** वज्र से जैसे **(नीचा)** नीच को वैसे **(अघशंसम्)** चोर को **(नि)** अत्यन्त **(वृश्च)** काटो और **(गृणद्भ्यः)** स्तुति करने वालों के लिये **(युगेयुगे)** वर्ष-वर्ष वा वर्षसमुदाय वर्षसमुदाय में **(विदथ्यम्)** संग्राम और विज्ञानादिकों में **(रयिम्)** धन **(यशसम्)** कीर्ति वा अन्न को और **(नव्यसीम्)** अतिशय नवीन विद्या वा क्रिया को **(धेहि)** धारण करो॥५॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जैसे सूर्य्य किरणों से संयुक्त मेघ का नाश करता है और जैसे वज्र विदारण करने योग्य पदार्थ को विदारण करता, वैसे राजा चोर आदि दुष्ट जनों का छेदन करके धार्मिक जनों के लिये धन आदि ऐश्वर्य्य को धारण करे॥५॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**अस्माकमग्ने मघवत्सु धारयानामि क्षत्रमजरं सुवीर्यम्।**

**वयं जयेम शतिनं सहस्रिणं वैश्वानर वाजमग्ने तवोतिभिः॥६॥**

**अस्माकम्। अग्ने। मघवत्ऽसु। धारय। अनामि। क्षत्रम्। अजरम्। सुऽवीर्यम्। वयम्। जयेम। शतिनम्। सहस्रिणम्। वैश्वानर। वाजम्। अग्ने। तव। ऊतिऽभिः॥६॥**

**पदार्थः**-**(अस्माकम्)** **(अग्ने)** अग्निरिव विद्वन् राजन् **(मघवत्सु)** बहुधनयुक्तेषु प्रजाजनेषु **(धारय)** **(अनामि)** नम्येत **(क्षत्रम्)** राष्ट्रं धनं वा **(अजरम्)** नाशरहितम् **(सुवीर्य्यम्)** उत्तमं बलम् **(वयम्)** **(जयेम)** **(शतिनम्)** शतधा योद्धृसेनासहितम् **(सहस्रिणम्)** सहस्रैर्योद्धृभिः संयुक्तम् **(वैश्वानर)** विश्वस्य नायक **(वाजम्)** सङ्ग्रामम् **(अग्ने)** तेजस्विन् **(तव)** **(ऊतिभिः)** रक्षाभिः सह॥६॥

**अन्वयः**-हे वैश्वानराऽग्ने विद्वन् राजन्! वयं तवोतिभिः सह शतिनं सहस्रिणं वाजं जयेम। हे अग्ने! यथाऽस्माकं मघवत्सु सुवीर्य्यमजरं क्षत्रमनामि तथा धारय॥६॥

**भावार्थः**-यदि राजा सेनाध्यक्षा धार्म्मिका विद्वांसो न्यायकारिणो जितेन्द्रियाः स्युस्तर्हि तेषां सर्वत्र विजयो भवति॥६॥

**पदार्थः**-हे **(वैश्वानर)** संसार के अग्रणी **(अग्ने)** अग्नि के सदृश विद्वन् राजन्! **(वयम्)** हम लोग **(तव)** आपकी **(ऊतिभिः)** रक्षा आदि के साथ **(शतिनम्)** सैकड़ों प्रकार से योद्धाओं से और **(सहस्रिणम्)** सहस्रों योद्धाओं से संयुक्त **(वाजम्)** संग्राम को **(जयेम)** जीतें। तथा हे **(अग्ने)** तेजस्विन्!



www.9009.co.in

जैसे **(अस्माकम्)** हम लोगों के **(मघवत्सु)** बहुत धनों से युक्त प्रजाजनों में **(सुवीर्य्यम्)** उत्तम बल **(अजरम्)** नाशरहित **(क्षत्रम्)** राज्य वा धन **(अनामि)** नम्र होवे वैसा **(धारय)** धारण करो॥६॥

**भावार्थ:**-जो राजा और सेना के अध्यक्ष धार्मिक, विद्वान्, न्यायकारी और जितेन्द्रिय हों तो उनका सर्वत्र विजय होता है॥६॥

**पुना राजादिजनैः किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

फिर राजा आदि जनों को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**अदब्धेभिस्तव गोपाभिरिष्टेऽस्माकं पाहि त्रिषधस्थ सूरीन्।**

**रक्षा च नो ददुषां शर्धो अग्ने वैश्वानर प्र च तारीः स्तवानः॥७॥१०॥**

**अदब्धेभिः। तव। गोपाभिः। इष्टे। अस्माकम्। पाहि। त्रिऽसधस्थ। सूरीन्। रक्ष। च। नः। ददुषाम्। शर्धः। अग्ने। वैश्वानर। प्र। च। तारीः। स्तवानः॥७॥**

**पदार्थ:**-**(अदब्धेभिः)** अहिंसकैः **(तव)** **(गोपाभिः)** रक्षाभिः **(इष्टे)** सङ्गन्तव्ये **(अस्माकम्)** **(पाहि)** **(त्रिषधस्थ)** त्रिषु समानस्थानेषु वर्त्तमान **(सूरीन्)** विदुषः **(रक्षा)** अत्र **द्व्यचोऽतस्तिङ** इति दीर्घः। **(च)** **(नः)** अस्मान् **(ददुषाम्)** दातॄणाम् **(शर्धः)** बलम् **(अग्ने)** **(वैश्वानर)** विद्याविनयप्रकाशमान **(प्र)** **(च)** **(तारीः)** तारय **(स्तवानः)** प्रशंसन्॥७॥

**अन्वयः**-हे त्रिषधस्थेष्टे वैश्वानराग्ने! स्तवानस्त्वमदब्धेभिर्गोपाभिर्नोऽस्मान् सूरीन् पाहि। अस्माकं सम्बन्धिनश्च रक्षा यतस्तव ददुषामस्माकं च शर्धो वर्धेत। अस्माभिः सह त्वं शत्रून् प्र तारीरुल्लङ्घय॥७॥

**भावार्थ:**-हे राजजन! यथा सूर्य्य उपर्यधोमध्यस्थांल्लोकान् प्रकाशयति तथाविधं प्रजाजनांस्त्वं सर्वतो रक्ष। यथाऽत्र राज्ये विद्वांसो वर्धेरंस्तथा विधानं विधेहि॥७॥

अत्र वैश्वानरविद्वत्सूर्य्यराजादिगुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इत्यष्टमं सूक्तं दशमो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थ:**-हे **(त्रिषधस्थ)** तीन तुल्य स्थानों में वर्त्तमान **(इष्टे)** मेल करने योग्य **(वैश्वानर)** विद्या और विनय से प्रकाशमान **(अग्ने)** अग्नि के समान वर्त्तमान! **(स्तवानः)** प्रशंसा करते हुए आप **(अदब्धेभिः)** अहिंसक जनों से **(गोपाभिः)** रक्षाओं के द्वारा **(नः)** हम लोगों [के] **(सूरीन्)** विद्वानों का **(पाहि)** पालन करिये और **(अस्माकम्)** हम लोगों के सम्बन्धियों की **(च)** भी **(रक्षा)** रक्षा करिये तथा **(तव)** आपका और **(ददुषाम्)** देने वालों का **(च)** और हमारा **(शर्धः)** बल बढ़े और हम लोगों के साथ आप शत्रुओं का **(प्र, तारीः)** उल्लंघन करो॥७॥

**भावार्थ:**-हे राजजन! जैसे सूर्य्य ऊपर, नीचे और मध्यस्थ लोकों को प्रकाशित करता है, वैसे ही प्रजाजनों की आप सब प्रकार से रक्षा कीजिये और जैसे इस राज्य में विद्वान् बढ़ें, वैसे कार्य करिये॥७॥



www.9009.co.in

इस सूक्त में विद्या और विनय से प्रकाशमान, विद्वान्, सूर्य्य और राजा आदि के गुणों का वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह आठवाँ सूक्त और दशवाँ वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

**अथ सप्तर्चस्य नवमस्य सूक्तस्य भरद्वाजो बार्हस्पत्य ऋषिः। वैश्वानरो देवता। १ विराट् त्रिष्टुप्। ५ निचृत्त्रिष्टुप्। ६ त्रिष्टुप्छन्दः। धैवतः स्वरः। २, ३ भुरिक् पङ्क्तिः। ४ पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः। ७ भुरिगार्चीजगतीछन्दः। निषादः स्वरः॥**

***अथ राजप्रजे परस्परं कथं वर्त्तेयातामित्याह॥***

अब सात ऋचावाले नवम सूक्त का प्रारम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में राजा प्रजा परस्पर कैसे वर्त्ताव करें, इस विषय को कहते हैं॥

**अह॑श्च कृ॒ष्णमह॒रर्जु॑नं च॒ वि व॑र्तेते॒ रज॑सी वे॒द्याभि॑:।**

**वै॒श्वा॒न॒रो जाय॑मानो॒ न राजावा॑तिरज्ज्योति॑षा॒ग्निस्तमां॑सि॥ १॥**

**अह॒रिति॑। च॒। कृ॒ष्णम्। अह॑:। अर्जु॑नम्। च॒। वि। व॒र्ते॒ते इति॑। रज॑सी॒ इति॑। वे॒द्याभि॑:। वै॒श्वा॒न॒रः। जाय॑मानः। न। राजा॑। अव॑। अ॒ति॒र॒त्। ज्योति॑षा। अ॒ग्निः। तमां॑सि॥ १॥**

**पदार्थः**-(**अहः**) दिनम् (**च**) (**कृष्णम्**) रात्रिः (**अहः**) व्याप्तिशीलम् (**अर्जुनम्**) ऋजुगत्यादिगुणम् (**च**) (**वि**) विरोधे (**वर्त्तेते**) (**रजसी**) रात्र्यहनी (**वेद्याभिः**) वेदितव्याभिः (**वैश्वानरः**) विश्वस्मिन् नरे नेतव्ये प्रकाशमानः (**जायमानः**) उत्पद्यमानः (**न**) इव (**राजा**) (**अव**) (**अतिरत्**) तरति (**ज्योतिषा**) प्रकाशेन (**अग्निः**) (**तमांसि**) रात्रीः॥ १॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! अहः कृष्णं चाऽहरर्जुनं च रजसी वेद्याभिस्सह वि वर्त्तेते राजा न जायमानो वैश्वानरोऽग्निर्ज्योतिषा तमांस्यवातिरत्॥ १॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। यथा रात्रिदिने संयुक्ते वर्त्तेते तथैव राजप्रजे अनुकूले भवेतां यथा सूर्य्यः प्रकाशेनाऽन्धकारं निवर्त्तयति तथैव राजा विद्याविनयप्रकाशेनाऽन्धकारं निवर्त्तयेत्॥ १॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो (**अहः**) दिन (**कृष्णम्**) रात्रि (**च**) और (**अहः**) व्याप्तिशील (**अर्जुनम्**) सरलगमन आदि गुणों को (**च**) भी (**रजसी**) रात्रिदिन (**वेद्याभिः**) जानने योग्यों के साथ (**वि, वर्त्तेते**) विविध प्रकार वर्त्तते हैं और (**राजा**) राजा के (**न**) समान (**जायमानः**) उत्पन्न हुआ (**वैश्वानरः**) सम्पूर्ण करने योग्य कामों में प्रकाशमान (**अग्निः**) अग्नि (**ज्योतिषा**) प्रकाश से (**तमांसि**) रात्रियों का (**अव, अतिरत्**) उल्लङ्घन करता है॥ १॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जैसे रात्रिदिन संयुक्त हैं, वैसे ही राजा और प्रजा अनुकूल हों और जैसे सूर्य्य प्रकाश से अन्धकार को निवृत्त करता है, वैसे ही राजा विद्या और विनय के प्रकाश से अविद्यारूप अन्धकार को निवृत्त करे॥ १॥

**अथाऽपत्यं कस्य भवतीत्याह॥**



www.9009.co.in

अब अपत्य किसका होता है, इस विषय को कहते हैं॥

**नाहं तन्तुं न वि जानाम्योतुं न यं वयन्ति समरेऽतमानाः।**

**कस्य स्वित्पुत्र इह वक्त्वानि परो वदात्यवरेण पित्रा॥२॥**

**न। अहम्। तन्तुम्। न। वि। जानामि। ओतुम्। न। यम्। वयन्ति। सम्ऽअरे। अतमानाः। कस्य। स्वित्। पुत्रः। इह। वक्त्वानि। परः। वदाति। अवरेण। पित्रा॥२॥**

**पदार्थः-(न) (अहम्) (तन्तुम्)** विस्तारम् **(न)** इव **(वि) (जानामि) (ओतुम्)** रचयितुम् **(न) (यम्) (वयन्ति)** व्याप्नुवन्ति **(समरे)** सङ्ग्रामे **(अतमानाः)** अतन्तः। अत्र व्यत्ययेनात्मनेपदम् **(कस्य) (स्वित्) (पुत्रः)** पवित्रः सुखप्रदो वा **(इह) (वक्त्वानि)** वक्तुं योग्यानि **(परः) (वदाति)** वदेत् **(अवरेण)** द्वितीयेन **(पित्रा)** पालकेनाऽऽचार्य्येण वा॥२॥

**अन्वयः**-हे विद्वांसो! यं समरेऽतमाना न वयन्ति। अयमिह कस्य स्वित्पुत्रः परोऽवरेण पित्रा सह वक्त्वानि वदाति यमतमानाः समरे न वयन्ति तं तन्तुमोतुं चाहन्न वि जानामि॥२॥

**भावार्थः**-विदुषामयं सिद्धान्तोऽस्ति योऽयं द्वाभ्यां जायते यस्य द्वे मातरौ द्वौ च पितरौ वर्तेते स कस्य पुत्र इति वयं न विजानीमः। अत्रायं सिद्धान्तो यथोत्पादकयोः पुत्रोऽस्ति तथाऽऽचार्यविद्ययोरपि द्विजो वर्त्तत इति सर्वे विजानन्तु॥२॥

**पदार्थः**-हे विद्वान् जनो! **(यम्)** जिसको **(समरे)** संग्राम में **(अतमानाः)** घूमते हुए जन **(न)** जैसे वैसे **(वयन्ति)** व्याप्त होते हैं, यह **(इह)** यहाँ **(कस्य)** किसका **(स्वित्)** भी **(पुत्रः)** पवित्र और सुख देने वाला है **(परः)** अन्य **(अवरेण)** द्वितीय **(पित्रा)** पालक वा आचार्य के साथ **(वक्त्वानि)** कहने के योग्यों को **(वदाति)** कहे और जिसको घूमते हुए जन सङ्ग्राम में **(न)** नहीं व्याप्त होते हैं, उस **(तन्तुम्)** विस्तार को **(ओतुम्)** रचने को **(अहम्)** मैं **(न)** नहीं **(वि)** विशेष करके **(जानामि)** जानता हूँ॥२॥

**भावार्थः**-विद्वानों का यह सिद्धान्त है कि जो दो से उत्पन्न होता है, जिसके दो माता और दो पिता हैं, वह किसका पुत्र है, यह हम लोग नहीं जानते हैं, ऐसा प्रश्न है। इस में सिद्धान्त यह है कि जैसे उत्पन्न करने वाले माता पिता का पुत्र है, वैसे ही आचार्य और विद्या का भी वह द्विज पुत्र है, ऐसा सब लोग जानो॥२॥

**पुनरपत्यविषमाह॥**

फिर अपत्य विषय को कहते हैं॥

**स इत्तन्तुं स वि जानात्योतुं स वक्त्वान्यृतुथा वदाति।**

**य ईं चिकेतदमृतस्य गोपा अवश्चरन्परो अन्येन पश्यन्॥३॥**

**सः। इत्। तन्तुम्। सः। वि। जानाति। ओतुम्। सः। वक्त्वानि। ऋतुऽथा। वदाति। यः। ईम्। चिकेतत्। अमृतस्य। गोपाः। अवः। चरन्। परः। अन्येन। पश्यन्॥३॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**सः**) (**इत्**) एव (**तन्तुम्**) कारणम् (**सः**) (**वि**) (**जानाति**) (**ओतुम्**) रक्षकम् (**सः**) (**वक्त्वानि**) वक्तव्यानि (**ऋतुथा**) ऋतुष्विव (**वदाति**) वदेत् (**यः**) (**ईम्**) उदकमिव शुक्रम् (**चिकेतत्**) विजानाति (**अमृतस्य**) नित्यस्य पदार्थस्य (**गोपाः**) रक्षकः (**अवः**) अधस्तात् (**चरन्**) (**परः**) उपरिष्ठो द्वितीयः (**अन्येन**) (**पश्यन्**) समीक्षमाणः॥३॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! योऽमृतस्य गोपा अन्येन पश्यन्नवः परश्चरन्नीं चिकेतत्स इत्तन्तुं स ओतुं वि जानाति स ऋतुथा वक्त्वानि वदाति॥३॥

**भावार्थः**-ये ब्रह्मचर्य्येणाप्तेभ्यो विद्याशिक्षे प्राप्नुवन्ति त एवास्य जगतः पूर्णं कारणं ज्ञातुं ज्ञापयितुञ्च शक्नुवन्ति॥३॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! (**यः**) जो (**अमृतस्य**) नित्य पदार्थ का (**गोपाः**) रक्षक (**अन्येन**) अन्य से (**पश्यन्**) देखता हुआ (**अवः**) नीचे (**परः**) ऊपर स्थित दूसरा (**चरन्**) चलाता हुआ (**ईम्**) जल के सदृश शुक्र को (**चिकेतत्**) जानता है (**सः, इत्**) वही (**तन्तुम्**) कारण को (**सः**) वह (**ओतुम्**) रक्षक को (**वि, जानाति**) विशेष करके जानता है (**सः**) वह (**ऋतुथा**) जैसे काल-काल में, वैसे (**वक्त्वानि**) कथन करने योग्यों को (**वदाति**) कहे॥३॥

**भावार्थः**-जो ब्रह्मचर्य्य के द्वारा यथार्थवक्ताओं से विद्या और शिक्षा को प्राप्त होते हैं, वे ही इस जगत् के पूर्ण कारण के पूर्ण कारण को जानने को समर्थ होते हैं॥३॥

**अथास्मिन् देहे द्वौ जीवात्मपरमात्मानौ वर्तेते इत्याह॥**

अब इस देह में दो जीवात्मा और परमात्मा वर्त्तमान हैं,

इस विषय को कहते हैं॥

**अ॒यं होता॑ प्रथ॒मः पश्य॑ते॒मम्इ॒दं ज्योति॑र॒मृतं॒ मर्त्ये॑षु।**

**अ॒यं स ज॑ज्ञे ध्रु॒व आ निषत्तोऽम॑र्त्यस्त॒न्वा॒३॑ वर्ध॑मानः॥४॥**

**अ॒यम्। होता॑। प्र॒थ॒मः। पश्य॑त। इ॒मम्। इ॒दम्। ज्योति॑ः। अ॒मृत॑म्। मर्त्ये॑षु। अ॒यम्। सः। ज॒ज्ञे। ध्रु॒वः। आ। निऽस॑त्तः। अम॑र्त्यः। त॒न्वा॑। वर्ध॑मानः॥४॥**

**पदार्थः**-(**अयम्**) (**होता**) दाता ग्रहीता वा (**प्रथमः**) आदिमः (**पश्यत**) (**इमम्**) (**इदम्**) प्रत्यक्षम् (**ज्योतिः**) सूर्य्य इव स्वप्रकाशं चेतनं परमात्मानम् (**अमृतम्**) नाशरहितम् (**मर्त्येषु**) मरणधर्मेषु शरीरेषु (**अयम्**) (**सः**) (**जज्ञे**) जायते (**ध्रुवः**) निश्चलो दृढः (**आ**) (**निषत्तः**) निषण्णः (**अमर्त्यः**) मरणधर्मरहितः (**तन्वा**) शरीरेण (**वर्धमानः**) यो वर्धते सः॥४॥

**अन्वयः**-हे विद्वांसो! यो ध्रुवो निषत्तः प्रथमो होताऽयं मर्त्त्येष्विदममृतं ज्योतिः परमात्मास्ति तमिमं पश्यत योऽयममर्त्यस्तन्वा वर्धमाना आ जज्ञे स जीवोऽस्तीति पश्यत॥४॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-हे मनुष्या! अस्मिञ्छरीरे द्वौ चेतनौ नित्यौ जीवात्मपरमात्मानौ वर्त्तेते तयोरेकोऽल्पोऽल्पज्ञोऽल्पदेशस्थो जीवः शरीरं धृत्वा जायते वर्धते परिणमते चाऽपक्षीयते पापपुण्यफलं च भुङ्क्ते अपरः परमेश्वरो ध्रुवः सर्वज्ञः कर्म्मफलसम्बन्धरहितोऽस्तीति निश्चिनुत॥४॥

**पदार्थः**-हे विद्वान् जनो! जो **(ध्रुवः)** निश्चल दृढ़ **(निषत्तः)** स्थित **(प्रथमः)** पहिला **(होता)** देने वा ग्रहण करने वाला **(अयम्)** यह और **(मर्त्येषु)** मरणधर्म्मयुक्त शरीरों में **(इदम्)** इस प्रत्यक्ष **(अमृतम्)** नाश से रहित **(ज्योतिः)** सूर्य्य के सदृश अपने से प्रकाशित चेतन परमात्मा है उस **(इमम्)** इस को **(पश्यत)** देखिये और जो **(अयम्)** यह **(अमर्त्यः)** मरणधर्म्म से रहित **(तन्वा)** शरीर से **(वर्धमानः)** बढ़ता हुआ **(आ)** चारों ओर से **(जज्ञे)** प्रकट होता है **(सः)** वह जीव है, ऐसा देखो॥४॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! इस शरीर में दो चेतन नित्य हुए जीवात्मा और परमात्मा वर्त्तमान हैं। उन दोनों में एक अल्प, और अल्पदेशस्थ जीव है, वह शरीर को धारण करके प्रकट होता, वृद्धि को प्राप्त होता और परिणाम को प्राप्त होता तथा हीन दशा को प्राप्त होता, पाप और पुण्य के फल का भोग करता है। द्वितीय परमेश्वर ध्रुव, निश्चल, सर्वज्ञ, कर्म्मफल के सम्बन्ध से रहित है, ऐसा तुम लोग निश्चय करो॥४॥

**अस्मिञ्छरीरे किं किं विज्ञेयमित्याह॥**

इस शरीर में क्या-क्या जानने योग्य है, इस विषय को कहते हैं॥

**ध्रुवं ज्योतिर्निहितं दृशये कं मनो जविष्ठं पतयत्स्वन्तः।**

**विश्वे देवाः समनसः सकेता एकं क्रतुमभि वि यन्ति साधु॥५॥**

**ध्रुवम्। ज्योतिः। निऽहितम्। दृशये। कम्। मनः। जविष्ठम्। पतयत्ऽसु। अन्तरिति। विश्वे। देवाः। सऽमनसः। सऽकेताः। एकम्। क्रतुम्। अभि। वि। यन्ति। साधु॥५॥**

**पदार्थः**-**(ध्रुवम्)** निश्चलम् **(ज्योतिः)** स्वप्रकाशं सर्वप्रकाशकं वा **(निहितम्)** स्थितम् **(दृशये)** दर्शनाय **(कम्)** सुखस्वरूपम् **(मनः)** अन्तःकरणवृत्तिः **(जविष्ठम्)** वेगवत्तमम् **(पतयत्सु)** पतिरिवाचरत्सु **(अन्तः)** आभ्यन्तरे **(विश्वे)** सर्वे **(देवाः)** स्वस्वविषयप्रकाशकानि श्रोत्रादीनीन्द्रियाणि **(समनसः)** समानं सहकारि साधनं मनो येषान्ते **(सकेताः)** समानं केतः प्रज्ञा येषान्ते **(एकम्)** असहायम् **(क्रतुम्)** जीवस्य प्रज्ञानम् **(अभि)** आभिमुख्ये **(वि)** **(यन्ति)** प्राप्नुवन्ति **(साधु)**॥५॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यद्दृशये ध्रुवं निहितं कं ज्योतिर्ब्रह्मास्ति तदाधारे यज्जविष्ठं पतयत्स्वन्तर्वर्त्तमानं मनोऽस्ति तदाश्रयेण समनसः सकेता विश्वे देवा एकं क्रतुं साध्वभि वि यन्तीति यूयं विजानीत॥५॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! अस्मिञ्छरीरे सच्चिदानन्दलक्षणं स्वप्रकाशं ब्रह्म द्वितीयो जीवस्तृतीयं मनश्चतुर्थानीन्द्रियाणि पञ्चमाः प्राणाः षष्ठं शरीरञ्च वर्त्तत एवं सति सर्वे व्यवहाराः सिद्धा जायन्ते येषां मध्यात्सर्वाधार ईश्वरो देहान्तःकरणप्राणेन्द्रियधर्त्ता जीवादीनामधिष्ठानं शरीरमिति विजानीत॥५॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो **(दृशये)** दर्शन के लिये **(ध्रुवम्)** निश्चल **(निहितम्)** स्थित **(कम्)** सुखस्वरूप **(ज्योतिः)** अपने से प्रकाशित और सब का प्रकाशक ब्रह्म है, उसके आधार में जो **(जविष्ठम्)** अतिवेगयुक्त **(पतयत्सु)** पति सदृश के आचरण करते हुओं में **(अन्तः)** मध्य में वर्त्तमान **(मनः)** अन्तःकरण का व्यापार है, उसके आश्रय से **(समनसः)** सहकारि साधन मन जिनका और **(सकेताः)** तुल्य बुद्धि जिनकी वे **(विश्वे)** संपूर्ण **(देवाः)** अपने अपने विषयों को प्रकाशित करने वाली श्रोत्र आदि इन्द्रियाँ **(एकम्)** सहायरहित **(क्रतुम्)** जीव के प्रज्ञान को **(साधु)** उत्तम प्रकार **(अभि)** सन्मुख **(वि)** विशेष करके **(यन्ति)** प्राप्त होते हैं, यह आप लोग जानो॥५॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! इस शरीर में सच्चिदानन्दस्वरूप अपने से प्रकाशित ब्रह्म, द्वितीय जीव, तृतीय मन, चौथी इन्द्रियाँ, पांचवें प्राण, छठा शरीर वर्त्तमान है, ऐसा होने पर सम्पूर्ण व्यवहार सिद्ध होते हैं। जिनके मध्य से सब का आधार ईश्वर, देह, अन्तःकरण प्राण और इन्द्रियों का धारण करने वाला और जीवादिकों का अधिष्ठान शरीर है, यह जानो॥५॥

**अथ मनुष्यशरीरे किं किं विज्ञातव्यमित्याह॥**

अब मनुष्य के शरीर में क्या-क्या जानने योग्य है, इस विषय को कहते हैं॥

**वि मे कर्णा पतयतो वि चक्षुर्वी३दं ज्योतिर्हृदय आहितं यत्।**
**वि मे मनश्चरति दूरआधीः किं स्विद्वक्ष्यामि किमु नू मनिष्ये॥६॥**

**वि। मे। कर्णा। पतयतः। वि। चक्षुः। वि। इदम्। ज्योतिः। हृदये। आऽहितम्। यत्। वि। मे। मनः। चरति। दूरेऽआधीः। किम्। स्वित्। वक्ष्यामि। किम्। ऊँ इति। नु। मनिष्ये॥६॥**

**पदार्थः**-**(वि) (मे)** मम **(कर्णा)** कर्णौ **(पतयतः)** पतिरिवाऽऽचरतः **(वि) (चक्षुः)** चष्टे येन तच्चक्षुः **(वि) (इदम्) (ज्योतिः)** प्रकाशकम् **(हृदये) (आहितम्)** स्थितम् **(यत्) (वि) (मे)** मम **(मनः)** अन्तःकरणम् **(चरति)** गच्छति **(दूरआधीः)** दूरस्थानां पदार्थानां समन्ताच्चिन्तकम् **(किम्) (स्वित्)** अपि **(वक्ष्यामि) (किम्) (उ) (नू)** सद्यः। अत्र **ऋचि तुनुघेति** दीर्घः। **(मनिष्ये)** विचारं करिष्ये॥६॥

**अन्वयः**-हे विद्वांसो! यद्यौ मे कर्णा वि पतयतो यन्मे चक्षुर्वि चरति यन्मे हृदय इदमाहितं ज्योतिर्वि चरति यन्मे दूरआधीर्मनो वि चरति येन तदहं किं स्विद्वक्ष्यामि किमु नू मनिष्य इति विचारयामि तत्सर्वं यूयं विज्ञापयत॥६॥

**भावार्थः**-हे विद्वांसो! योऽहं यानि च मम साधनानि तत्सर्वं मां बोधयत॥६॥

**पदार्थः**-हे विद्वान् जनो! **(यत्)** जो **(मे)** मेरे **(कर्णा)** श्रोत्र **(वि)** विशेष करके **(पतयतः)** स्वामी के सदृश आचरण करते हुए और जो मेरा **(चक्षुः)** देखने की चेष्टा करता है जिससे वह चक्षु **(वि)** विशेष करके **(चरति)** चलता है और जो **(मे)** मेरे **(हृदये)** हृदय में **(इदम्)** यह **(आहितम्)** स्थित **(ज्योतिः)** प्रकाशक **(वि)** विशेष करके चलाता है और जो मेरा **(दूर आधीः)** दूरस्थ पदार्थों का सब प्रकार से चिन्तक **(मनः)** अन्तःकरण **(वि)** विशेष करके चलता है, जिससे उसको मैं **(किम्)** क्या **(स्वित्)** भी



www.9009.co.in

(**वक्ष्यामि**) कहूँगा और (**किम्**) क्या (**उ**) और (**नू**) शीघ्र (**मनिष्ये**) विचार करूँगा यह विचारता हूँ, उस सब को आप लोग जनाइये॥६॥

**भावार्थ:**-हे विद्वान् जनो! मैं और जो मेरे साधन हैं, उस सब व्यवहार को मेरे लिये जनाइये॥६॥

**मनुष्यैः कस्माद्भीत्वा पापाचरणं नाचरणीयमित्याह॥**

मनुष्यों को किससे डर कर पापाचरण का आचरण न करना चाहिये, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**विश्वे॑ दे॒वा अ॑नमस्यन् भिया॒नास्त्वाम॑ग्ने॒ तम॑सि तस्थि॒वांस॑म्।**

**वै॒श्वा॒न॒रो॑ऽवतू॒तये॒ नोऽम॑र्त्यो॑ऽवतू॒तये॑ नः॥७॥११॥**

**विश्वे॑। दे॒वाः। अ॒न॒म॒स्य॒न्। भि॒या॒नाः। त्वाम्। अ॒ग्ने॒। तम॑सि। त॒स्थि॒ऽवांस॑म्। वै॒श्वा॒न॒रः। अ॒व॒तु॒। ऊ॒तये॑। न॒ः। अम॑र्त्यः। अ॒व॒तु॒। ऊ॒तये॑। नः॥७॥**

**पदार्थः**-(**विश्वे**) सर्वे (**देवाः**) विद्वांसः (**अनमस्यन्**) प्रह्वीभूता भवन्ति (**भियानाः**) भयं प्राप्ताः (**त्वाम्**) परमात्माननिव विद्युद्युक्तं प्राणमिव परमात्मनम् (**अग्ने**) पावकेश्वर (**तमसि**) अन्धकारे (**तस्थिवांसम्**) प्रतिष्ठन्तम् (**वैश्वानरः**) विश्वस्य संसारस्य प्रकाशकः (**अवतु**) रक्षतु (**ऊतये**) रक्षणाद्याय (**नः**) अस्मान् (**अमर्त्यः**) मृत्युधर्मरहितः (**अवतु**) (**ऊतये**) (**नः**) अस्मान्॥७॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! परमात्मँस्तमसि तस्थिवांसं त्वां पृथिव्यादय इव विश्वे देवा भियाना अनमस्यन्त्स वैश्वानरोऽमर्त्यो भवानूतये नोऽस्मानवतूतये नोऽस्मानवतु॥७॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यथा प्राणविद्युतौ प्राप्य सर्वेषां पृथिव्यादीनां स्थितिर्वर्त्तते यथाग्नेः सर्वे प्राणिनोः बिभ्यति तथैव सर्वव्यापिनं सर्वान्तर्यामिणं परमात्मानं मत्वा पापाचरणाद्विद्वांसो बिभ्यतीति सर्वेऽस्माद् बिभ्यत्विति॥७॥

अत्राऽहोरात्र्यपत्यजीवपरमात्मादीनां स्थितिवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति नवमं सूक्तमेकादशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे (**अग्ने**) प्रकाशक परमात्मन्! (**तमसि**) अन्धकार में (**तस्थिवांसम्**) स्थित (**त्वाम्**) परमात्मा के सदृश बिजुली से युक्त को वा प्राण के सदृश परमात्मा को जैसे पृथिवी आदि, वैसे (**विश्वे**) सम्पूर्ण (**देवाः**) विद्वान् जन (**भियानाः**) भय को प्राप्त हुए (**अनमस्यन्**) नम्र होते हैं वह (**वैश्वानरः**) सम्पूर्ण संसार के प्रकाशक (**अमर्त्यः**) मृत्यु धर्म से रहित आप (**ऊतये**) रक्षा आदि के लिये (**नः**) हम लोगों की (**अवतु**) रक्षा कीजिये और (**ऊतये**) रक्षा आदि के लिये (**नः**) हम लोगों की (**अवतु**) रक्षा कीजिये॥७॥



www.9009.co.in

**भावार्थ:-**हे मनुष्यो! जैसे प्राण और बिजुली को प्राप्त होकर सम्पूर्ण पृथिवी आदिकों की स्थिति है और जैसे अग्नि से सम्पूर्ण प्राणी डरते हैं, वैसे ही सर्वत्र व्यापी और सब के अन्तर्यामी परमात्मा को मान के पाप के आचरण से विद्वान् जन डरते हैं, इस निमित्त से सब जन इससे डरें॥७॥

इस सूक्त में दिनरात्रि, अपत्य, जीव, परमात्मादिकों की स्थिति का वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ संगति जाननी चाहिये॥

**यह नवम सूक्त और ग्यारहवाँ वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

**अथ सप्तर्चस्य दशमस्य सूक्तस्य भरद्वाजो बार्हस्पत्य ऋषिः। अग्निर्देवता। १ त्रिष्टुप्। २, ३, ६ निचृत्त्रिष्टुप्। ५ विराट् त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः। ४ आर्षी पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः। ७ प्राजापत्या बृहती छन्दः। मध्यमः स्वरः॥**

***अथ मनुष्यैः किं कर्त्तव्यमित्याह॥***

अब मनुष्यों को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**पुरो वो मन्द्रं दिव्यं सुवृक्तिं प्रयति यज्ञे अग्निमध्वरे दधिध्वम्।**

**पुर उक्थेभिः स हि नो विभावा स्वध्वरा करति जातवेदाः॥ १॥**

**पुरः। वः। मन्द्रम्। दिव्यम्। सुऽवृक्तिम्। प्रऽयति। यज्ञे। अग्निम्। अध्वरे। दधिध्वम्। पुरः। उक्थेभिः। सः। हि। नः। विभाऽवा। सुऽअध्वरा। करति। जातऽवेदाः॥ १॥**

**पदार्थः**-(**पुरः**) पुरस्तात् (**वः**) युष्माकम् (**मन्द्रम्**) आनन्दप्रदं प्रशंसनीयं वा (**दिव्यम्**) शुद्धम् (**सुवृक्तिम्**) सुष्ठु व्रजन्ति येन तम् (**प्रयति**) प्रयत्नसाध्ये (**यज्ञे**) सङ्गतिमये (**अग्निम्**) विद्युदादिस्वरूपम् (**अध्वरे**) अहिंसनीये (**दधिध्वम्**) (**पुरः**) पुरस्तात् (**उक्थेभिः**) वक्तुमर्हैः (**सः**) (**हि**) यतः (**नः**) अस्मान् (**विभावा**) विशेषेण प्रकाशकः (**स्वध्वरा**) सुष्ठु अहिंसादिधर्मयुक्तान् (**करति**) कुर्य्यात् (**जातवेदाः**) यो जातान् सर्वान् वेत्ति सः॥ १॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यूयं वः प्रयत्यध्वरे यज्ञ उक्थेभिः पुरो मन्द्रं दिव्यं सुवृक्तिमग्निं दधिध्वं यो हि विभावा जातवेदा नोऽस्मान् पुरः स्वध्वरा करति स ह्यस्माभिः सत्कर्तव्योऽस्ति॥ १॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यथर्त्त्विजो यज्ञेऽग्निं पुरस्तात् संस्थाप्य तत्राहुतिं दत्त्वा जगदुपकुर्वन्ति तथैवात्मनः पुरः परमात्मानं संस्थाप्य तत्र मनआदीनि हुत्वा साक्षात्कृत्य तदुपदेशेन जगदुपकारं कुर्वन्तु॥ १॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! आप लोग (**वः**) आप लोगों के (**प्रयति**) प्रयत्न से साध्य (**अध्वरे**) अहिंसनीय (**यज्ञे**) सङ्गतिस्वरूप यज्ञ में (**उक्थेभिः**) कहने के योग्यों से (**पुरः**) प्रथम (**मन्द्रम्**) आनन्द देनेवाले वा प्रशंसनीय (**दिव्यम्**) शुद्ध (**सुवृक्तिम्**) उत्तम प्रकार चलते हैं जिससे उस (**अग्निम्**) विद्युदादिस्वरूप अग्नि को (**दधिध्वम्**) धारण करिये और जो (**हि**) निश्चय करके (**विभावा**) विशेष करके प्रकाशक (**जातवेदाः**) प्रकट हुओं को जाननेवाला (**नः**) हम लोगों को (**पुरः**) प्रथम (**स्वध्वरा**) उत्तम प्रकार अहिंसा आदि धर्मों से युक्त (**करति**) करे (**सः**) वही हम लोगों से सत्कार करने योग्य है॥ १॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे यज्ञ करने वाले यज्ञ में अग्नि को प्रथम उत्तम प्रकार स्थापित करके उस अग्नि में आहुति देकर संसार का उपकार करते हैं, वैसे ही आत्मा के आगे परमात्मा को संस्थापित करके वहाँ मन आदि का हवन करके और प्रत्यक्ष करके उसके उपदेश से जगत् का उपकार करो॥१॥

**पुनर्मनुष्यैः किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**तमु द्युमः पुर्वणीक होतरग्ने अग्निभिर्मनुष इधानः।**

**स्तोमं यमस्मै ममतेव शूषं घृतं न शुचि मतयः पवन्ते॥२॥**

**तम्। ऊँ इति। द्युऽमः। पुरुऽअनीक। होतः। अग्ने। अग्निऽभिः। मनुषः। इधानः। स्तोमम्। यम्। अस्मै। ममताऽइव। शूषम्। घृतम्। न। शुचि। मतयः। पवन्ते॥२॥**

**पदार्थः**-(**तम्**) अग्निम् (**उ**) (**द्युमः**) प्रकाशवान् (**पुर्वणीक**) बहूनां सम्भाजक (**होतः**) धातः (**अग्ने**) अग्निरिव विद्वन् (**अग्निभिः**) पावकैः (**मनुषः**) मनुष्यान् (**इधानः**) दीपयन् (**स्तोमम्**) प्रशंसाम् (**यम्**) (**अस्मै**) (**ममतेव**) (**शूष्म**) बलम् (**घृतम्**) (**न**) इव (**शुचि**) (**मतयः**) मनुष्याः (**पवन्ते**)॥२॥

**अन्वयः**-हे पुर्वणीक द्युमो होतरग्ने! मनुष इधानस्त्वं मतयश्च ममतेवऽग्निभिरस्मै शुचि घृतं शूषं न यं पवन्ते तमु स्तोमं शृणु॥२॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। मनुष्या येन पदार्थान् सेधयन्ति सोऽग्निः सर्वैः कार्य्यसाधको वेदितव्यः॥२॥

**पदार्थः**-हे (**पुर्वणीक**) बहुतों को संविभाग करने और (**द्युमः**) प्रकाशवान् (**होतः**) धारण करने वाले (**अग्ने**) अग्नि के सदृश विद्वन्! (**मनुषः**) मनुष्यों को (**इधानः**) प्रकाशित करते हुए आप और (**मतयः**) मननशील अन्य मनुष्य (**ममतेव**) ममता के समान (**अग्निभिः**) अग्नियों से (**अस्मै**) इसके लिये (**शुचि**) पवित्र (**घृतम्**) घृत वा (**शूषम्**) बल के (**न**) समान (**यम्**) जिसको (**पवन्ते**) पवित्र करते हैं (**तम्, उ**) उसी अग्नि की (**स्तोमम्**) प्रशंसा को सुनिये॥२॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। मनुष्य जिससे पदार्थों को सिद्ध करते हैं, वह कार्य्यसाधक अग्नि सब को जानने योग्य है॥२॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**पीपाय सः श्रवसा मर्त्येषु यो अग्नये ददाश विप्र उक्थैः।**

**चित्राभिस्तमूतिभिश्चित्रशोचिर्व्रजस्य साता गोमतो दधाति॥३॥**

**पीपाय। सः। श्रवसा। मर्त्येषु। यः। अग्नये। ददाश। विप्रः। उक्थैः। चित्राभिः। तम्। ऊतिऽभिः। चित्रऽशोचिः। व्रजस्य। साता। गोऽमतः। दधाति॥३॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**पीपाय**) वर्धयति (**सः**) (**श्रवसा**) अन्नाद्येन (**मर्त्येषु**) मनुष्यादिषु (**यः**) (**अग्नये**) (**ददाश**) ददाति (**विप्रः**) मेधावी (**उक्थैः**) प्रशंसितैः कर्म्मभिः (**चित्राभिः**) अद्भुताभिः (**तम्**) (**ऊतिभिः**) रक्षादिभिः (**चित्रशोचिः**) चित्रं विविधं शोचिः प्रकाशो यस्य सः (**व्रजस्य**) व्रजन्ति घना यस्मिंस्तस्य मेघस्य (**साता**) सङ्ग्रामेण (**गोमतः**) अतिशयितस्तोता (**दधाति**)॥३॥

**अन्वयः**-हे विद्वांसो! यो गोमतश्चित्रशोचिर्विप्र उक्थैश्चित्राभिरूतिभिश्च मर्त्येष्वग्नये श्रवसा पीपाय ददाश स व्रजस्य साता दधाति तं यूयं विजानीत॥३॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यस्मिन्नग्नावद्भुता गुणकर्म्मस्वभावाः सन्ति तं यथावद्विदित्वा सम्प्रयुङ्ध्वम्॥३॥

**पदार्थः**-हे विद्वान् जनो! (**यः**) जो (**गोमतः**) अतिशय स्तुति करनेवाला और (**चित्रशोचिः**) अनेक प्रकार का प्रकाश जिसका ऐसा (**विप्रः**) बुद्धिमान् (**उक्थैः**) प्रशंसित कर्मों और (**चित्राभिः**) अद्भुत (**ऊतिभिः**) रक्षादिकों से (**मर्त्येषु**) मनुष्य आदिकों में (**अग्नये**) अग्नि के लिये (**श्रवसा**) अन्नादि से (**पीपाय**) बढ़ाता और (**ददाश**) देता है (**सः**) वह (**व्रजस्य**) चलते हैं सघन जल जिसमें उस मेघ के (**साता**) संग्राम से (**दधाति**) धारण करता है (**तम्**) उसको आप लोग जानिये॥३॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जिस अग्नि में अद्भुत गुण, कर्म्म, स्वभाव हैं, उसको अच्छे प्रकार जान कर संप्रयोग करो अर्थात् काम में लाओ॥३॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**आ यः पप्रौ जायमान उर्वी दूरेदृशा भासा कृष्णाध्वा।**

**अध बहु चित्तम ऊर्म्यायास्तिरः शोचिषा ददृशे पावकः॥४॥**

**आ। यः। पप्रौ। जायमानः। उर्वी इति। दूरेऽदृशा। भासा। कृष्णऽअध्वा। अध। बहु। चित्। तमः। ऊर्म्यायाः। तिरः। शोचिषा। ददृशे। पावकः॥४॥**

**पदार्थः**-(**आ**) समन्तात् (**यः**) (**पप्रौ**) व्याप्नोति (**जायमानः**) प्रकटः सन् (**ऊर्वी**) द्यावापृथिव्यौ (**दूरेदृशा**) यया दूरे पश्यन्ति तया (**भासा**) दीप्त्या (**कृष्णाध्वा**) कृष्णः कर्षितोऽध्वा मार्गो येन (**अध**) आनन्तर्ये (**बहु**) (**चित्**) अपि (**तमः**) अन्धकारः (**ऊर्म्यायाः**) रात्र्याः। **ऊर्म्येति रात्रिनाम।** (निघं०१.७) (**तिरः**) तिरोभावे (**शोचिषा**) प्रकाशेन (**ददृशे**) दृश्यते (**पावकः**) पवित्रकर्त्ता॥४॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यो जायमानो कृष्णाध्वा दूरेदृशा भासोर्वी आ पप्रावध ऊर्म्याया बहु चित्तमः शोचिषा तिरस्करोति पावक सन् ददृशे तं यूयं विजानीत॥४॥

**भावार्थः**-मनुष्यैरवश्यं विद्युदग्निर्वेदितव्यः॥४॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(यः)** जो **(जायमानः)** प्रकट हुआ **(कृष्णाध्वा)** कर्षित किया अर्थात् जिसे हल से जोतें, वैसे पहियों से सतीरा मार्ग जिसने वह **(दूरेदृशा)** जिससे दूर देखते हैं उस **(भासा)** प्रकाश से **(उर्वी)** अन्तरिक्ष और पृथिवी को **(आ)** चारों ओर से **(पप्रौ)** व्याप्त होता है और **(अध)** इसके अनन्तर **(ऊर्म्यायाः)** रात्रि का **(बहु)** बहुत **(चित्)** भी **(तमः)** अन्धकार **(शोचिषा)** प्रकाश से **(तिरः)** तिरस्कार करता है और **(पावकः)** पवित्रकर्त्ता हुआ **(ददृशे)** देखा जाता है, उसको आप लोग जानिये॥४॥

**भावार्थः**-मनुष्यों को चाहिये कि अवश्य बिजुलीरूप अग्नि को जानें॥४॥

**पुनर्विद्वद्भिः किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

फिर विद्वानों को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**नू नश्चित्रं पुरुवाजाभिरूती अग्ने रयिं मघवद्भ्यश्च धेहि।**

**ये राधसा श्रवसा चात्यन्यान्त्सुवीर्येभिश्चाभि सन्ति जनान्॥५॥**

**नु। नः। चित्रम्। पुरुऽवाजाभिः। ऊती। अग्ने। रयिम्। मघवत्ऽभ्यः। च। धेहि। ये। राधसा। श्रवसा। च। अति। अन्यान्। सुऽवीर्येभिः। च। अभि। सन्ति। जनान्॥५॥**

**पदार्थः**-**(नू)** सद्यः **(नः)** अस्मभ्यम् **(चित्रम्)** अद्भुतम् **(पुरुवाजाभिः)** बहुज्ञानपुरुषार्थयुक्ताभिः **(ऊती)** रक्षादिक्रियाभिः **(अग्ने)** आप्तविद्वन् **(रयिम्)** धनम् **(मघवद्भ्यः)** धनाढ्येभ्यः **(च)** **(धेहि)** **(ये)** **(राधसा)** धनेन **(श्रवसा)** अन्नादिना **(च)** **(अति)** **(अन्यान्)** **(सुवीर्य्येभिः)** सुष्ठु वीर्य्यं बलं पराक्रमो वा येषान्तैः **(च)** **(अभि)** आभिमुख्ये **(सन्ति)** **(जनान्)** मनुष्यान्॥५॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! त्वं पुरुवाजाभिरूती नो मघवद्भ्यश्च चित्रं रयिं नू धेहि ये सुवीर्य्येभिः राधसा श्रवसा चान्याञ्जनान्दधमाना अभि सन्ति तेऽति प्रतिष्ठां च लभन्ते॥५॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! ये युष्मभ्यं विद्यां श्रियं च दधति तेषां यूयमतिप्रतिष्ठां कुरुत॥५॥

**पदार्थः**-हे **(अग्ने)** यथार्थवक्ता विद्वन्! आप **(पुरुवाजाभिः)** बहुत ज्ञान और पुरुषार्थ से युक्त **(ऊती)** रक्षा आदि क्रियाओं से **(नः)** हम लोगों और **(मघवद्भ्यः)** धन से युक्त जनों के लिये **(च)** भी **(चित्रम्)** अद्भुत **(रयिम्)** धन को **(नू)** शीघ्र **(धेहि)** धारण कीजिये **(ये)** जो **(सुवीर्य्येभिः)** श्रेष्ठ बल वा पराक्रम जिनके उन और **(राधसा)** धन और **(श्रवसा)** अन्न आदि से **(च)** भी **(अन्यान्)** अन्य **(जनान्)** मनुष्यों को धारण करते हुए **(अभि)** सन्मुख **(सन्ति)** हैं, वे **(अति)** अत्यन्त प्रतिष्ठा को **(च)** भी प्राप्त होते हैं॥५॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो आप लोगों के लिये विद्या और लक्ष्मी को धारण करते हैं, उनकी आप लोग अत्यन्त प्रतिष्ठा करो॥५॥

**पुनर्विद्वद्भिः किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

फिर विद्वानों को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥



www.9009.co.in

**इ॒मं य॒ज्ञं चनो॑ धा अग्न उ॒शन्यं॑ त॑ आसा॒नो जु॑हु॒ते ह॒विष्मा॑न्।**

**भ॒रद्वा॑जेषु दधिषे सुवृ॒क्तिमवी॒र्वाज॑स्य॒ गध्य॑स्य सा॒तौ॥६॥**

**इ॒मम्। य॒ज्ञम्। चनः॑। धाः॒। अग्ने॒। उ॒शन्। यम्। ते॒। आ॒सा॒नः। जु॒हु॒ते। ह॒विष्मा॑न्। भ॒रत्ऽवा॑जेषु। द॒धि॒षे। सु॒ऽवृ॒क्तिम्। अवीः॑। वाज॑स्य। गध्य॑स्य। सा॒तौ॥६॥**

**पदार्थः-(इमम्) (यज्ञम्)** परोपकाराख्यम् **(चनः)** अन्नादिकम् **(धाः)** धेहि **(अग्ने)** पुरुषार्थिन् विद्वन् **(उशन्)** कामयमानः **(यम्) (ते)** तव **(आसानः)** आसीनः **(जुहुते)** जुहोति **(हविष्मान्)** बहूनि हवींषि दातव्यानि भोक्तव्यानि विद्यन्ते येषु **(भरद्वाजेषु)** ये वाजानन्नादीन् भरन्ति तेषु **(दधिषे) (सुवृक्तिम्)** सुष्ठु व्रजन्ति यस्मिन्मार्गे तम् **(अवीः)** रक्षेः **(वाजस्य)** विज्ञानादेः **(गध्यस्य)** अभिकाङ्क्षितुं योग्यस्य **(सातौ)** सङ्ग्रामे॥६॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! त्वं यं यज्ञमुशञ्चनो धा आसानो हविष्मान्त्सम्भवाञ्जुहुत इमं गध्यस्य वाजस्य सातावववीर्भरद्वाजेषु सुवृक्तिं दधिषे तस्य ते सर्वं सुखं सुगमं जायेत॥६॥

**भावार्थः**-ये परोपकारं कुर्वन्ति तेषामेवाभीष्टा स्वार्थसिद्धिर्जायते॥६॥

**पदार्थः**-हे **(अग्ने)** पुरुषार्थी विद्वन्! आप **(यम्)** जिस **(यज्ञम्)** परोपकार नामक यज्ञ की **(उशन्)** कामना करते हुए **(चनः)** अन्न आदि को **(धाः)** धारण करें और **(आसानः)** बैठे हुए **(हविष्मान्)** बहुत देने और भोग करने योग्य पदार्थ जिनमें वह आप **(जुहुते)** हवन करते हैं **(इमम्)** इसकी **(गध्यस्य)** अभिकांक्षा करने योग्य **(वाजस्य)** विज्ञान आदि के **(सातौ)** संग्राम में **(अवीः)** रक्षा कीजिये और **(भरद्वाजेषु)** अन्न आदि को धारण करने वालों में **(सुवृक्तिम्)** उत्तम प्रकार चलते हैं जिसमें उस मार्ग को **(दधिषे)** धारण कीजिये उन **(ते)** आपका सम्पूर्ण सुख सुगम होजाये॥६॥

**भावार्थः**-जो परोपकार करते हैं, उनको ही अभीष्ट स्वार्थसिद्धि होती है॥६॥

**पुनर्विद्वद्विषयमाह॥**

फिर विद्वद्विषय को कहते हैं॥

**वि द्वेषां॑सीनु॒हि व॒र्धयेळां॒ मदे॑म श॒तहि॑माः सु॒वीराः॑॥७॥१२॥**

**वि। द्वेषां॑सि। इ॒नु॒हि। व॒र्धय॑। इळा॑म्। मदे॑म। श॒तऽहि॑माः। सु॒ऽवीराः॑॥७॥**

**पदार्थः-(वि)** विशेषे **(द्वेषांसि)** द्वेषयुक्तानि कर्म्माणि **(इनुहि)** व्याप्नुहि **(वर्धय) (इळाम्)** वाचमन्नं वा **(मदेम)** आनन्देम **(शतहिमाः)** शतं वर्षाणि **(सुवीराः)** शोभना वीरा येषान्ते॥७॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! विद्वंस्त्वं द्वेषांसि त्यज त्याजयेळा वीनुहि। अस्मान् वर्धय यतो वयं शतहिमाः सुवीराः सन्तो मदेम॥७॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-विद्वद्भिस्तत्कर्म्म कर्त्तव्यं कारयितव्यं च येन मनुष्याणां दोषनिवृत्तिर्बुद्धिबलायूंषि च वर्धेरन्॥७॥

अत्राग्निविद्वद्गुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति दशमं सूक्तं द्वादशो वर्ग्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**–हे अग्नि के समान परोपकारसाधक विद्वन्! आप **(द्वेषांसि)** द्वेष से युक्त कर्म्मों का त्याग करिये कराइये और **(इळाम्)** वाणी वा अन्न को **(वि)** विशेष करके **(इनुहि)** व्याप्त होओ और हम लोगों की **(वर्धय)** वृद्धि कीजिये जिससे हम लोग **(शतहिमाः)** सौ वर्ष पर्यन्त **(सुवीराः)** अच्छे वीर पुरुषों से युक्त होकर **(मदेम)** आनन्द करें॥७॥

**भावार्थः**-विद्वानों को चाहिये कि वह कर्म्म करें और करावें, जिससे मनुष्यों के दोषों की निवृत्ति और बुद्धि, बल तथा अवस्था की वृद्धि होवे॥७॥

इस सूक्त में अग्नि और विद्वानों के गुणों का वर्णन होने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ संगति जाननी चाहिये॥

**यह दशवां सूक्त और बारहवाँ वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

**अथ षड्चस्यैकादशस्य सूक्तस्य भरद्वाजो बार्हस्पत्य ऋषिः। अग्निर्देवता। १, ३, ५ निचृत्त्रिष्टुप्। ४, ६ विराट्त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः। २ निचृत्पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः॥**

*पुनर्विद्वद्भिः किं कर्त्तव्यमित्याह॥*

अब छः ऋचावाले ग्यारवें सूक्त का आरम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में फिर विद्वानों को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**यजस्व होतरिषितो यजीयानग्ने बाधो मरुतां न प्रयुक्ति।**
**आ नो मित्रावरुणा नासत्या द्यावा होत्राय पृथिवी ववृत्याः॥ १॥**

**यजस्व। होतः। इषितः। यजीयान्। अग्ने। बाधः। मरुताम्। न। प्रऽयुक्ति। आ। नः। मित्रावरुणा। नासत्या। द्यावा। होत्राय। पृथिवी इति। ववृत्याः॥ १॥**

**पदार्थः-(यजस्व)** सङ्गमय **(होतः)** दातः **(इषितः)** प्रेरितः **(यजीयान्)** अतिशयेन यष्टा **(अग्ने)** अग्निरिव विद्वन् **(बाधः)** निरोधः **(मरुताम्)** वायूनामिव मनुष्याणाम् **(न)** इव **(प्रयुक्ति)** प्रयुञ्जते यस्मिंस्तत् कर्म्म **(आ)** **(नः)** अस्मान् **(मित्रावरुणा)** प्राणोदानाविवाऽध्यापकोपदेशकौ **(नासत्या)** अविद्यमानासत्याचरणौ **(द्यावा)** **(होत्राय)** आदानाय दानाय वा **(पृथिवी)** **(ववृत्याः)** वर्त्तयेः॥ १॥

**अन्वयः**-हे होतरग्ने! यजीयानिषितस्त्वं यथा नासत्या मित्रावरुणा होत्राय द्यावा पृथिवी सङ्गमयतस्तथा नोऽस्मान् प्रयुक्ति आ ववृत्या मरुतां बाधो न वर्त्तमानं दिनं निवर्त्य यजस्व॥ १॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। ये विद्वांसः प्राणोदानवत् प्रियाः पुरुषार्थिनश्च भवन्ति ते सर्वार्थं सुखं सङ्गमयितुमर्हन्ति॥ १॥

**पदार्थः**-हे **(होतः)** दाता और **(अग्ने)** अग्नि के समान तेजस्वी विद्वज्जन! **(यजीयान्)** अतिशय यज्ञ करने वाले **(इषितः)** प्रेरणा लिये गये जैसे **(नासत्या)** असत्य आचरण से रहित **(मित्रावरुणा)** प्राण और उदान वायु के समान अध्यापक और उपदेशक जन **(होत्राय)** ग्रहण करने और देने वाले के लिये **(द्यावा)** अन्तरिक्ष और **(पृथिवी)** पृथिवी मिलाते हैं, वैसे **(नः)** हम लोगों को **(प्रयुक्ति)** प्रयोग करते हैं पदार्थों का जिसमें वह कर्म्म **(आ)** सब प्रकार से **(ववृत्याः)** प्रवृत्त कराइये और **(मरुताम्)** वायु के सदृश मनुष्यों की **(बाधः)** रुकावट **(न)** जैसे वैसे वर्तमान दिन को निवृत्त कर **(यजस्व)** उत्तम प्रकार मिलाइये॥ १॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो विद्वान् जन प्राण और उदान वायु के सदृश प्रिय और पुरुषार्थी होते हैं, वे सब के लिये सुख प्राप्त कराने योग्य होते हैं॥ १॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**



www.9009.co.in

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**त्वं होता मन्द्रतमो नो अध्रुगन्तर्देवो विदथा मर्त्येषु।**

**पावकया जुह्वा३ वह्निरासाग्ने यजस्व तन्वं१ तव स्वाम्॥२॥**

**त्वम्। होता। मन्द्रऽतमः। नः। अध्रुक्। अन्तः। देवः। विदथा। मर्त्येषु। पावकया। जुह्वा। वह्निः। आसा। अग्ने। यजस्व। तन्वम्। तव। स्वाम्॥२॥**

**पदार्थः-(त्वम्) (होता)** दाता **(मन्द्रतमः)** अतिशयेनानन्दयिता **(नः)** अस्मान् **(अध्रुक्)** यः कश्चिन्न द्रोग्धि **(अन्तः)** मध्ये **(देवः)** देदीप्यमानः **(विदथा)** विदथे यज्ञे **(मर्त्येषु)** मनुष्येषु **(पावकया)** पवित्रकारिकया ज्वालया **(जुह्वा)** जुहोति गृह्णाति ददाति वा यया **(वह्निः)** वोढा **(आसा)** मुखेनेव **(अग्ने)** अग्निरिव परोपकारिन् **(यजस्व)** सङ्गच्छस्व **(तन्वम्) (तव) (स्वाम्)** स्वकीयाम्॥२॥

**अन्वयः**-हे अग्ने विद्वन्! यथा मन्द्रतमो होता विदथाऽन्तर्देवो वह्निरासेव पावकया जुह्वा नस्तव स्वां तन्वं सङ्गमयति तथा त्वं मर्त्येष्वध्रुक्सन्नस्मानस्माकं शरीराणि च यजस्व॥२॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यथा विद्युत्सूर्यभौमरूपेणाग्निः सर्वजगदुपकरोति तथैव विद्वांसो जगदानन्दयन्ति॥२॥

**पदार्थः**-हे **(अग्ने)** अग्नि के समान परोपकार के सहित वर्त्तमान विद्वन् जन! जैसे **(मन्द्रतमः)** अतिशय आनन्द कराने वाले **(होता)** दाताजन **(विदथा)** यज्ञ के **(अन्तः)** मध्य में **(देवः)** प्रकाशमान **(वह्निः)** धारण करने वाला अग्नि **(आसा)** मुख के सदृश **(पावकया)** पवित्र करने वाली ज्वाला से **(जुह्वा)** ग्रहण करता वा देता जिससे उससे **(नः)** हम लोगों को और **(तव)** आपके सम्बन्ध में **(स्वाम्)** अपने **(तन्वम्)** शरीर को मिलाता है, वैसे **(त्वम्)** आप **(मर्त्येषु)** मनुष्यों में **(अध्रुक्)** किसी से न द्रोह करने वाले होते हुए हम लोगों वा हम लोगों के शरीरों को **(यजस्व)** उत्तम प्रकार मिलिये॥२॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे बिजुली, सूर्य्य और भूमि में हुए तेजस्वी पदार्थों के रूप से अग्नि सम्पूर्ण जगत् का उपकार करता है, वैसे ही विद्वान् जन जगत् को आनन्दित करते हैं॥२॥

**पुनस्ते कीदृशा भूत्वा किं कुर्युरित्याह॥**

फिर वे कैसे होकर क्या करें, इस विषय को कहते हैं॥

**धन्या चिद्धि त्वे धिषणा वष्टि प्र देवाञ्जन्म गृणते यजध्यै।**

**वेपिष्ठो अङ्गिरसां यद्ध विप्रो मधुच्छन्दो भनति रेभ इष्टौ॥३॥**

**धन्या। चित्। हि। त्वे इति। धिषणा। वष्टि। प्र। देवान्। जन्म। गृणते। यजध्यै। वेपिष्ठः। अङ्गिरसाम्। यत्। ह। विप्रः। मधु। छन्दः। भनति। रेभः। इष्टौ॥३॥**

**पदार्थः-(धन्या)** धनं लब्धा **(चित्)** अपि **(हि) (त्वे)** त्वयि **(धिषणा)** प्रज्ञा द्यौः पृथिवी वा **(वष्टि)** कामयते **(प्र) (देवान्)** विदुषः **(जन्म) (गृणते)** स्तुवन्ति **(यजध्यै)** यष्टुं सङ्गन्तुम् **(वेपिष्ठः)**



www.9009.co.in

अतिशयेन कम्पकः **(अङ्गिरसाम्)** प्राणानामिव विदुषाम् **(यत्)** यः **(ह)** किल **(विप्रः)** मेधावी **(मधु)** माधुर्य्यगुणोपेतं विज्ञानम् **(छन्दः)** स्वातन्त्र्यम् **(भनति)** वदति **(रेभः)** स्तोता **(इष्टौ)** विज्ञानवर्धके यज्ञे॥३॥

**अन्वयः**-हे विद्वन्! या हि त्वे धन्या धिषणा देवान् प्र वष्टि तेषामङ्गिरसां जन्म यजध्यै ये गृणते यद्ध वेपिष्ठो विप्रो रेभ इष्टौ [मधुच्छन्दः] भनति तांश्चित् सर्वान् वयं गृह्णीयाम्॥३॥

**भावार्थः**-ये प्रज्ञया विद्वत्सङ्गेन विद्या कामयन्तेऽन्यानुपदिशन्ति च ते धन्याः सन्ति॥३॥

**पदार्थः**–हे विद्वन्! जो **(हि)** निश्चित **(त्वे)** आपके रहते **(धन्या)** धन को प्राप्त हुई **(धिषणा)** बुद्धि, अन्तरिक्ष वा पृथिवी **(देवान्)** विद्वानों की **(प्र, वष्टि)** कामना करती है उन **(अङ्गिरसाम्)** प्राणों के सदृश विद्वनों के **(जन्म)** जन्म को **(यजध्यै)** उत्तम प्रकार प्राप्त होने को जो **(गृणते)** स्तुति करते हैं और **(यत्)** जो **(ह)** निश्चित **(वेपिष्ठः)** अतिशय कम्पानेवाला **(विप्रः)** बुद्धिमान् **(रेभः)** स्तुतिकर्त्ता **(इष्टौ)** विज्ञान के बढ़ाने वाले यज्ञ में **(मधु)** माधुर्य गुण से युक्त विज्ञान और **(छन्दः)** स्वतन्त्रता को **(भनति)** कहता है **(चित्)** उन्हीं सब को हम लोग ग्रहण करें॥३॥

**भावार्थः**-जो बुद्धि और विद्वानों के सङ्ग से विद्या की कामना करते और अन्यों को उपदेश देते हैं, वे धन्य हैं॥२॥

**पुनर्विद्वांसः कीदृशा भवेयुरित्याह॥**

फिर विद्वान् जन कैसे हों, इस विषय को कहते हैं॥

**अदि॑द्युत॒त् स्वपा॑को वि॒भावाग्ने॒ यज॑स्व॒ रोद॑सी उरू॒ची।**

**आ॒युं न यं नम॑सा रा॒तह॑व्या अ॒ञ्जन्ति॑ सु॒प्रय॒सं॒ पञ्च॒ जना॑ः॥४॥**

**अदि॑द्युतत्। सु। अपा॑कः। वि॒ऽभावा॑। अग्ने॑। यज॑स्व। रोद॑सी॒ इति॑। उ॒रु॒ची॒ इति॑। आ॒युम्। न। यम्। नम॑सा। रा॒तऽह॑व्याः। अ॒ञ्जन्ति॑। सु॒ऽप्र॒यस॑म्। पञ्च॑। जना॑ः॥४॥**

**पदार्थः**-**(अदिद्युतत्)** द्योतते **(सु)** शोभने **(अपाकः)** अपरिपक्वः **(विभावा)** विशेषदीप्तिमान् **(अग्ने)** पावकवद्वर्त्तमान विद्वन् **(यजस्व)** सङ्गच्छस्व **(रोदसी)** भूमिप्रकाशौ **(उरूची)** ये बहूनञ्चतस्ते **(आयुम्)** जीवनम् **(न)** इव **(यम्)** **(नमसा)** अन्नाद्येन **(रातहव्याः)** दत्ता दातव्याः **(अञ्जन्ति)** सुप्रकटयन्ति **(सुप्रयसम्)** सुष्ठु प्रयत्नवन्तम् **(पञ्च)** **(जनाः)** प्राणा इव वर्त्तमानाः॥५॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! रातहव्याः पञ्च जना नमसा यं सुप्रयसमञ्जन्ति स स्वपाको विभावाऽऽयुन्नादिद्युतदेवं त्वमुरूची रोदसी यजस्व॥४॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। यथा पञ्च प्राणाः शरीरं धरन्ति तथैव युक्ताहारविहाराः शरीरं चिरं रक्षन्ति तथैव विद्वदुपदेशा विद्यां चिरं स्थायिनीं कुर्वन्ति॥४॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-हे **(अग्ने)** अग्नि के समान वर्तमान विद्वज्जन! **(रातहव्याः)** दिये गये देने योग्य **(पञ्च)** पांच **(जनाः)** प्राणों के सदृश वर्त्तमान जन **(नमसा)** अन्न आदि से **(यम्)** जिस **(सुप्रयसम्)** उत्तम प्रकार प्रयत्न करने वाले को **(अञ्जन्ति)** अच्छे प्रकार प्रकट करते हैं वह **(सु)** उत्तम प्रकार **(अपाकः)** नहीं परिपक्व **(विभावा)** अत्यन्त दीप्तिमान् जन **(आयुम्)** जीवन को **(न)** जैसे वैसे **(अदिद्युतत्)** प्रकाशित होता है, इस प्रकार आप **(उरूची)** बहुतों को प्राप्त होने वाले **(रोदसी)** अन्तरिक्ष और पृथिवी को **(यजस्व)** उत्तम प्रकार प्राप्त हों॥४॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जिस प्रकार से पांच प्राण शरीर को धारण करते हैं, वैसे ही नियमित आहार और विहार करने वाले जन शरीर की अति कालपर्य्यन्त रक्षा करते हैं, वैसे ही विद्वानों के उपदेश विद्या को अतिकाल पर्य्यन्त स्थिर होने वाली करते हैं॥४॥

**पुनर्मनुष्यैः किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**वृ॒ञ्जे ह॒ यन्नम॑सा ब॒र्हिर॒ग्नावया॑मि॒ स्रुग्घृ॒तव॑ती सुवृ॒क्तिः।**

**अम्य॑क्षि॒ सद्म॒ सद॑ने पृथि॒व्या अश्रा॑यि य॒ज्ञः सूर्ये॒ न चक्षुः॑॥५॥**

**वृ॒ञ्जे। ह॒। यत्। नम॑सा। ब॒र्हिः। अ॒ग्नौ। अया॑मि। स्रु॒क्। घृ॒तऽव॑ती। सु॒ऽवृ॒क्तिः। अम्य॑क्षि। सद्म॑। सद॑ने। पृ॒थि॒व्याः। अश्रा॑यि। य॒ज्ञः। सूर्ये॑। न। चक्षुः॑॥५॥**

**पदार्थः**-**(वृञ्जे)** त्यजामि **(ह)** किल **(यत्)** **(नमसा)** अन्नादिना **(बर्हिः)** घृतम् **(अग्नौ)** पावके **(अयामि)** प्राप्नोमि **(स्रुक्)** या स्रवति सा **(घृतवती)** बहूदकयुक्ता नदी **(सुवृक्तिः)** सुष्ठु व्रजन्ति यस्यां सा **(अम्यक्षि)** गच्छति **(सद्म)** सीदन्ति यस्मिंस्तत् **(सदने)** स्थाने **(पृथिव्याः)** भूमेः **(अश्रायि)** आश्रयति **(यज्ञः)** सङ्गन्तव्यः **(सूर्य्ये)** **(न)** इव **(चक्षुः)** नेत्रम्॥५॥

**अन्वयः**-हे विद्वांसोऽहं नमसाऽग्नौ यद्बर्हिर्ह वृञ्जे या सुवृक्तिर्घृतवती स्रुगम्यक्षि तामयामि यो यज्ञः सूर्य्ये चक्षुर्न पृथिव्याः सदने सद्म अश्रायि तं सर्वेऽनुतिष्ठन्तु॥५॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। यथा होतारोऽग्नौ स्रुचा घृतं त्यजन्ति तथा विद्वांसोऽन्यबुद्धौ विद्यां त्यजन्तु यथा सूर्य्यप्रकाशे चक्षुर्व्याप्नोति तथैव हुतं द्रव्यमन्तरिक्षे व्याप्नोति॥५॥

**पदार्थः**-हे विद्वानो! मैं **(नमसा)** अन्न आदि से **(अग्नौ)** अग्नि में **(यत्)** जिस **(बर्हिः)** घृत का **(ह)** निश्चय करके **(वृञ्जे)** त्याग करता हूँ और जो **(सुवृक्तिः)** सुवृक्ति अर्थात् उत्तम प्रकार चलते हैं जिसमें वह **(घृतवती)** बहुत जल से युक्त नदी **(स्रुक्)** बहने वाली **(अम्यक्षि)** चलती है उसको **(अयामि)** प्राप्त होता हूँ और जो **(यज्ञः)** प्राप्त होने योग्य यज्ञ **(सूर्य्ये)** सूर्य्य में **(चक्षुः)** नेत्र **(न)** जैसे वैसे **(पृथिव्याः)** पृथिवी के **(सदने)** स्थान में **(सद्म)** रहने का स्थान अर्थात् गृह का **(अश्रायि)** आश्रयण करता है, उसका सब लोग अनुष्ठान करो॥५॥



www.9009.co.in

**भावार्थ:**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जैसे हवन करने वाले जन अग्नि में स्रुवा से घृत छोड़ते हैं, वैसे विद्वान् जन अन्य की बुद्धि में विद्या को छोड़ें और जैसे सूर्य्य के प्रकाश में नेत्र व्याप्त होता है, वैसे ही हवन किया गया द्रव्य अन्तरिक्ष मे व्याप्त होता है॥५॥

**पुनर्मनुष्यैः कथं वर्त्तितव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को कैसा वर्त्ताव करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**दुशस्या नः पुर्वणीक होतर्देवेभिरग्ने अग्निभिरिधानः।**

**रायः सूनो सहसो वावसाना अति स्रसेम वृजनं नांहः॥६॥१३॥**

**दुशस्य। नः। पुरुऽअनीक। होतः। देवेभिः। अग्ने। अग्निऽभिः। इधानः। रायः। सूनो इति। सहसः। ववसानाः। अति। स्रसेम। वृजनम्। न। अंहः॥६॥**

**पदार्थ:**-(**दशस्या**) दाशति ददति येन तद्दशस्तदात्मानमिच्छ। अत्र **संहितायामि**ति दीर्घः। (**नः**) अस्मान् (**पुर्वणीक**) पुरूण्यनीकानि सैन्यानि यस्य तत्सम्बुद्धौ (**होतः**) दातः (**देवेभिः**) देदीप्यमानैः (**अग्ने**) पावक इव राजन् (**अग्निभिः**) अग्निवद्वर्त्तमानैर्वीरैः (**इधानः**) देदीप्यमानः (**रायः**) धनानि (**सूनो**) सन्तान (**सहसः**) बलवतः (**वावसानाः**) आच्छाद्यमानाः (**अति**) (**स्रसेम**) गच्छेम (**वृजनम्**) वर्जनीयं बलम् (**न**) इव (**अंहः**) अपराधं पापं वा॥६॥

**अन्वयः**-हे पुर्वणीक होतः सहसः सूनोऽग्ने! देवेभिरग्निभिरिधानोऽग्निरिव त्वं नो रायो दशस्या यतो वावसाना वयं वृजनं नांऽहोऽति स्रसेम॥६॥

**भावार्थ:**-हे मनुष्या! यथाग्निरिन्धनैर्वर्धते तथा यूयं पुरुषार्थेन वर्धध्वं यथा मनुष्याः शत्रुं सद्यस्त्यजन्ति तथाऽन्यायाचरणं पापं क्षिप्रं त्यजतेति॥६॥

अत्राग्निविद्वद्‌गुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इत्येकादशं सूक्तं त्रयोदशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थ:**-हे (**पुर्वणीक**) अनेक सेनाओं से युक्त (**होतः**) दान करने वाले (**सहसः**) बलवान् के (**सूनो**) सन्तान (**अग्ने**) अग्नि के समान वर्त्तमान राजन्! (**देवेभिः**) निरन्तर प्रकाशमान (**अग्निभिः**) अग्नि के समान वर्त्तमान वीरजनों से (**इधानः**) प्रकाशमान अग्नि जैसे वैसे आप (**नः**) हम लोगों के लिये (**रायः**) धनों को (**दशस्या**) देते हैं जिससे वह दशस् है उस अपने की इच्छा करिये, जिससे (**वावसानाः**) ढाँपे गये हम लोग (**वृजनम्**) वर्जने योग्य बल को (**न**) जैसे वैसे (**अंहः**) अपराध को (**अति**) (**स्रसेम**) अतिक्रमण करें॥६॥

**भावार्थ:**-हे मनुष्यो! जैसे अग्नि इन्धनों से बढ़ता है, वैसे आप लोग पुरुषार्थ से बढ़िये और जैसे मनुष्य शत्रु का शीघ्र त्याग करते हैं, वैसे अन्यायाचरणरूप पाप का शीघ्र त्याग करो॥६॥

इस सूक्त में अग्नि और विद्वान् के गुणवर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ संगति जाननी चाहिये॥

**यह ग्यारहवाँ सूक्त और तेरहवाँ वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

**अथ षड्ऋचस्य द्वादशस्य सूक्तस्य भरद्वाजो बार्हस्पत्य ऋषिः। अग्निर्देवता। १ त्रिष्टुप्। २ निचृत्त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः। ३ भुरिक्पङ्क्तिः। ४, ६ निचृत्पङ्क्तिः। ५ स्वराट्पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः॥**

***अथ मनुष्यैः किं कर्त्तव्यमित्याह॥***

अब छः ऋचावाले बारहवें सूक्त का प्रारम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में मनुष्यों को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**मध्ये होता दुरोणे बर्हिषो राळग्निस्तोदस्य रोदसी यजध्यै।**

**अयं स सूनुः सहस ऋतावा दूरात्सूर्यो न शोचिषा ततान॥१॥**

**मध्ये। होता। दुरोणे। बर्हिषः। राट्। अग्निः। तोदस्य। रोदसी इति। यजध्यै। अयम्। सः। सूनुः। सहसः। ऋतऽवा। दूरात्। सूर्यः। न। शोचिषा। ततान॥१॥**

**पदार्थः**-(**मध्ये**) (**होता**) (**दुरोणे**) गृहे (**बर्हिषः**) अवकाशस्य (**राट्**) यो राजते (**अग्निः**) पावकः (**तोदस्य**) व्यथायाः (**रोदसी**) द्यावापृथिव्यौ (**यजध्यै**) यष्टुं सङ्गन्तुम् (**अयम्**) (**सः**) (**सूनुः**) अपत्यम् (**सहसः**) सहनशीलस्य (**ऋतावा**) य ऋतं सत्यं वनुते याचते सः (**दूरात्**) (**सूर्य्यः**) (**न**) इव (**शोचिषा**) प्रकाशेन (**ततान**) विस्तृणोति॥१॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथा दुरोणे बर्हिषो मध्ये होता तोदस्य राळग्नी रोदसी यजध्यै ततान तथा सोऽयं सहसः सूनुर्ऋतावा दूराच्छोचिषा सूर्यो न विद्याप्रकाशं ततान॥१॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। ये कर्म्मठाः सूर्य्यवत्सुकर्म्मप्रकाशकाः स्युस्ते सर्वेषां सुखानि वर्धयितुं शक्नुवन्ति॥१॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे (**दुरोणे**) गृह में (**बर्हिषः**) अवकाश के (**मध्य**) मध्य में (**होता**) आदान वा ग्रहण करने वाला (**तोदस्य**) व्यथा के सम्बन्ध में (**राट्**) प्रकाशमान (**अग्निः**) अग्नि (**रोदसी**) अन्तरिक्ष और पृथिवी को (**यजध्यै**) मिलने को (**ततान**) विस्तृत करता है, वैसे (**सः**) सो (**अयम्**) यह (**सहसः**) सहनशील का (**सूनुः**) अपत्य (**ऋतावा**) सत्य की याचना करने वाला (**दूरात्**) दूर से (**शोचिषा**) प्रकाश से (**सूर्य्यः**) सूर्य्य (**न**) जैसे वैसे विद्या के प्रकाश को विस्तृत करता है॥१॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो वेदविहित यज्ञ आदि कर्म्मों के करने वाले जन सूर्य्य के सदृश उत्तम कर्म्मों के प्रकाशक होवें, वे सब के सुख बढ़ाने को समर्थ हो सकते हैं॥१॥

**पुनर्मनुष्यैः किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥



www.9009.co.in

**आ यस्मिन् त्वे स्वपाके यजत्र यक्षद्राजन्त्सर्वतातेव नु द्यौः।**

**त्रिषधस्थस्ततरुषो न जंहो हव्या मघानि मानुषा यजध्यै॥२॥**

**आ। यस्मिन्। त्वे इति। सु। अपाके। यजत्र। यक्षत्। राजन्। सर्वताताऽइव। नु। द्यौः। त्रिऽसधस्थः। ततरुषः। न। जंहः। हव्या। मघानि। मानुषा। यजध्यै॥२॥**

**पदार्थः**-(**आ**) समन्तात् (**यस्मिन्**) (**त्वे**) त्वयि (**सु**) (**अपाके**) अपरिपक्वे (**यजत्र**) सङ्गन्तुमर्ह (**यक्षत्**) यजेत् (**राजन्**) (**सर्वतातेव**) सर्वेषां वर्धको यज्ञ इव (**नु**) सद्यः (**द्यौः**) विद्युदादिप्रकाशः (**त्रिषधस्थः**) त्रिषु भूम्यन्तरिक्षसूर्य्यलोकेषु त्रिविधेषु समानस्थानेषु वर्त्तमानः (**ततरुषः**) तारकः (**न**) इव (**जंहः**) सद्यो गन्ता (**हव्या**) आदातुं दातुमर्हाणि (**मघानि**) धनानि (**मानुषा**) मनुष्याणामिमानि (**यजध्यै**) सङ्गन्तुम्॥२॥

**अन्वयः**-हे यजत्र राजन्! यस्मिन्नपाके त्वे सर्वतातेव द्यौः स्वाऽऽयक्षत् स भवान्नु त्रिषधस्थस्ततरुषो जंहो न हव्या मानुषा मघानि यजध्यै यक्षत्॥२॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। यत्र सूर्य्यवद्राजा प्रतापी भवति तत्र सर्वाणि सुखानि जायन्ते॥२॥

**पदार्थः**-हे (**यजत्र**) मेल करने योग्य (**राजन्**) राजा! (**यस्मिन्**) जिन (**अपाके**) बुद्धि के परिपाक अर्थात् पूर्णता से रहित (**त्वे**) आप में (**सर्वतातेव**) सब की वृद्धि करने वाला यज्ञ जैसे वैसे (**द्यौः**) बिजुली आदि का प्रकाश (**सु**) उत्तम प्रकार (**आ, यक्षत्**) सब ओर से मेल करे वह आप (**नु**) शीघ्र (**त्रिषधस्थः**) तीन पृथिवी, अन्तरिक्ष और सूर्य्यलोक में तुल्य स्थान में वर्त्तमान (**ततरुषः**) तारने और (**जंहः**) शीघ्र चलने वाला (**न**) जैसे वैसे (**हव्या**) देने और ग्रहण करने योग्य (**मानुषा**) मनुष्य सम्बन्धी (**मघानि**) धनों को (**यजध्यै**) प्राप्त होने को यजन कीजिये॥२॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जहाँ सूर्य्य के सदृश प्रतापी राजा होता है, वहाँ सम्पूर्ण सुख होते हैं॥२॥

**पुना राजा कीदृशो भवेदित्याह॥**

फिर राजा कैसा होवे, इस विषय को कहते हैं॥

**तेजिष्ठा यस्यारतिर्वनेराट् तोदो अध्वन्न वृधसानो अद्यौत्।**

**अद्रोघो न द्रविता चेतति त्मन्नमर्त्योऽवर्त्र ओषधीषु॥३॥**

**तेजिष्ठा। यस्य। अरतिः। वनेऽराट्। तोदः। अध्वन्। न। वृधसानः। अद्यौत्। अद्रोघः। न। द्रविता। चेतति। त्मन्। अमर्त्यः। अवर्त्रः। ओषधीषु॥३॥**

**पदार्थः**-(**तेजिष्ठा**) अतिशयेन तेजस्विनी (**यस्य**) अग्नेरिव राज्ञः (**अरतिः**) प्राप्तिः (**वनेराट्**) या वने सेवनीये किरणे वा राजते (**तोदः**) व्यथनम् (**अध्वन्**) अध्वनि (**न**) इव (**वृधसानः**) वर्धमानः



www.9009.co.in

**(अद्यौत्)** द्योतते **(अद्रोघः)** द्रोहरहितः **(न)** इव **(द्रविता)** गन्ता **(चेतति)** सञ्ज्ञापयति **(त्मन्)** आत्मनि **(अमर्त्यः)** मरणधर्म्मरहितः **(अवर्त्रः)** अनिवारणीयः **(ओषधीषु)** सोमलतादिषु॥३॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यस्याग्नेस्तेजिष्ठाऽरतिर्वनेराडध्वन् वृधसानस्तोदो नाद्यौत् सोऽद्रोघो न द्रविता त्मन्नमर्त्योऽवर्त्र ओषधीषु चेतति॥३॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। यस्य तेजस्विनी प्रकृतिः प्रेरणा च भवेत् स द्रोहरहितः सन्नौषधानि दुःखमिव सर्वस्य दुःखं निवारयति स एव कृतकृत्यो भवति॥३॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(यस्य)** जिस अग्नि के सदृश राजा की **(तेजिष्ठा)** अतिशय तेजस्विनी **(अरतिः)** प्राप्ति **(वनेराट्)** सेवन करने योग्य वा किरण में शोभित होने वाली **(अध्वन्)** मार्ग में **(वृधसानः)** बढ़ती हुई **(तोदः)** पीड़ा **(न)** जैसे वैसे **(अद्यौत्)** प्रकाशित होती हैं वह **(अद्रोघः)** द्रोह से रहित **(न)** जैसे वैसे **(द्रविता)** चलने वाला **(त्मन्)** आत्मा में **(अमर्त्यः)** मरणधर्म्म से रहित **(अवर्त्रः)** नहीं निवारण करने योग्य **(ओषधीषु)** सोमलता आदि ओषधियों में **(चेतति)** जनाता है॥३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जिस राजा की तेजस्विनी प्रकृति और प्रेरणा होवे वह द्रोहरहित हुआ जैसे ओषधियाँ दुःख को, वैसे सब के दुःख का निवारण करता है, वही कृतकृत्य होता है॥३॥

**पुनर्विद्वद्भिः कथं वर्त्तितव्यमित्याह॥**

फिर विद्वानों को कैसा वर्त्ताव करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**सास्माकेभिरेतरी न शूषैरग्निः ष्टवे दम आ जातवेदाः।**

**द्रुवन्नो वन्वन् क्रत्वा नार्वोस्रः पितेव जारयायि यज्ञैः॥४॥**

**सः। अस्माकेभिः। एतरि। न। शूषैः। अग्निः। स्तवे। दमे। आ। जातऽवेदा। द्रुऽअन्नः। वन्वन्। क्रत्वा। न। अर्वा। उस्रः। पिताऽइव। जारयायि। यज्ञैः॥४॥**

**पदार्थः**-**(सः)** राजा **(अस्माकेभिः)** अस्माभिः सह **(एतरी)** प्राप्तव्ये **(न)** इव **(शूषैः)** बलादिभिः **(अग्निः)** पावक इव **(स्तवे)** प्रशंसनीये **(दमे)** गृहे **(आ)** **(जातवेदाः)** यो जातानि वेद **(द्रुवन्नः)** द्रु द्रवीभूतमन्नं यस्मात् **(वन्वन्)** सम्भजन् **(क्रत्वा)** प्रज्ञया कर्मणा वा **(न)** इव **(अर्वा)** वाजी **(उस्रः)** गाः **(पितेव)** जनक इव **(जारयायि)** जारं जरावस्थां यातुं शीलं यस्य तच्छरीरम् **(यज्ञैः)** विद्वत्सेवादिभिः॥४॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथाऽस्माकेभिस्सह द्रुवन्नो जारयायि वन्वन् पितेवाऽर्वा न क्रत्वोस्रः सेवते तथा यज्ञैः शूषैः सहाग्निर्जातवेदाः स्तवे दम एतरी नाऽऽप्नोति सोऽस्माभिस्सेवनीयः॥४॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। यथा प्रशंसनीये गृहे सुखेन निवासो भवति तथैव पितृवत्पालके राजनि प्रजा सुखं वसति यथा प्रज्ञया जितेन्द्रियो भूत्वा पृथिवीराज्यं प्राप्याऽनाथान् रक्षति तथैव विद्वद्भिः सत्योपदेशेन सर्वं जगद्रक्षणीयम्॥४॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे **(अस्माकेभिः)** हम लोगों के साथ **(द्रवन्नः)** द्रवीभूत अन्न जिससे वह **(जारयायि)** वृद्धावस्था को प्राप्त होने का स्वभाव जिसका उस शरीर का **(वन्वन्)** सेवन करता हुआ **(पितेव)** जैसे पिता, वैसे **(अर्वा)** घोड़ा **(न)** जैसे वैसे **(क्रत्वा)** बुद्धि वा कर्म्म से **(उस्रः)** गौओं का सेवन करता है, वैसे **(यज्ञैः)** विद्वानों की सेवा आदि **(शूषैः)** बल आदिकों के साथ **(अग्निः)** अग्नि के समान **(जातवेदाः)** प्रकट हुओं को जानने वाला **(स्तवे)** प्रशंसा करने योग्य **(दमे)** गृह में और **(एतरी)** प्राप्त होने योग्य में **(न)** जैसे वैसे **(आ)** प्राप्त होता है **(सः)** वह राजा हम लोगों से सेवन करने योग्य है॥४॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जैसे प्रशंसा करने योग्य गृह में सुख से निवास होता है, वैसे ही पिता के सदृश पालन करने वाले राजा के होने पर प्रजा सुखपूर्वक निवास करती है और जैसे बुद्धि से जितेन्द्रिय होकर और पृथिवी के राज्य को प्राप्त होकर अनाथों की रक्षा करता है, वैसे ही विद्वानों को चाहिये कि सत्य उपदेश से सब जगत् की रक्षा करें॥४॥

**अथ कीदृशी विद्युदस्तीत्याह॥**

अब कैसी बिजुली है, इस विषय को कहते हैं॥

**अध॑ स्मास्य पनयन्ति भासो॒ वृथा॒ यत्तक्ष॑दनु॒याति॑ पृ॒थ्वीम्।**

**स॒द्यो यः स्य॒न्द्रो विषि॑तो॒ धवी॑यानृ॒णो न ता॒युरति॒ धन्वा॑ राट्॥५॥**

**अध॑। स्म॒। अ॒स्य॒। प॒न॒य॒न्ति॒। भासः॑। वृथा॑। यत्। तक्ष॑त्। अ॒नु॒ऽयाति॑। पृ॒थ्वीम्। स॒द्यः। यः। स्य॒न्द्रः। विऽसि॑तः। धवी॑यान्। ऋ॒णः। न। ता॒युः। अति॑। धन्व॑। रा॒ट्॥५॥**

**पदार्थः**-**(अध)** अनन्तरम् **(स्म)** एव **(अस्य)** राज्ञः **(पनयन्ति)** स्तुवन्ति **(भासः)** दीप्तीः **(वृथा)** **(यत्)** याः **(तक्षत्)** तनूकरोति **(अनुयाति)** अनुगच्छति **(पृथ्वीम्)** भूमिम् **(सद्यः)** **(यः)** **(स्यन्द्रः)** प्रस्रावकः **(विषितः)** व्याप्तः **(धवीयान्)** अतिशयेन कम्पकः **(ऋणः)** प्रापकः **(न)** इव **(तायुः)** स्तेनः। **तायुरिति स्तेननाम।** (निघं०३.२४) **(अति)** **(धन्वा)** धनुर्वेदम् **(राट्)** यो राजते॥५॥

**अन्वयः**-हे विद्वांसो! यः स्यन्द्रो विषितः धवीयान् वृथर्णस्तायुर्न वर्त्तमानोऽग्निर्यद्या भासस्तक्षत्पृथ्वीं सद्योऽनुयात्यध स्मास्य गुणान् विद्वांसः पनयन्ति तं विदित्वा तस्य विद्यां प्राप्य राडति धन्वाऽनुजानाति॥५॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। हे विद्वांसो! यदि भवन्तो विद्युद्विद्यां विज्ञाय यन्त्रैर्घर्षयित्वैनामुत्पाद्यैतया सह मनुष्यादीन् योजयेयुस्तर्हीयमतिकम्पिका वेगवती स्यात्। यदि काचाभ्रपटलान्तर्मनुष्यं पृथक्कारयेयुस्तर्हीयं क्षिप्रं भूमिं गच्छति सेयं सर्वत्र व्याप्ता प्रशंसनीयगुणास्ति यया राजानः शत्रून् सहजतया जित्वा श्रीमन्तो जायन्ते॥५॥

**पदार्थः**-हे विद्वान् जनो! **(यः)** जो **(स्यन्द्रः)** बहानेवाला **(विषितः)** व्याप्त **(धवीयान्)** अतिशय कम्पाने और **(वृथा)** व्यर्थ **(ऋणः)** प्राप्त कराने वाला **(तायुः)** चोर **(न)** जैसे वैसे वर्त्तमान अग्नि **(यत्)**



www.9009.co.in

जिन **(भासः)** प्रकाशों को **(तक्षत्)** सूक्ष्म करता है **(पृथ्वीम्)** पृथिवी के **(सद्यः)** शीघ्र **(अनुयाति)** पीछे चलता है **(अध)** इसके अनन्तर **(स्म)** ही **(अस्य)** इस राजा के गुणों की विद्वान् जन **(पनयन्ति)** स्तुति करते हैं, उसको जान कर और उसकी विद्या को प्राप्त होकर **(राट्)** राजा **(अति, धन्वा)** धनुर्वेद का अत्यन्त जाननेवाला होता है॥५॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे विद्वान् जनो! जो आप लोग बिजुली की विद्या को जानकर यन्त्रों से घर्षित कर इस को उत्पन्न करके इस बिजुली के साथ मनुष्य आदिकों को युक्त करें तो यह अति कम्पानेवाली और वेगवती होवे और स्वच्छ काच के स्वभ्र पट्टे के अन्तर्गत मनुष्य को अलग करावें तो यह बिजुली शीघ्र भूमि में प्राप्त होती हैं, सो यह सर्वत्र व्याप्त और प्रशंसा करने योग्य गुणवाली है, जिससे राजा लोग शत्रुओं को सहज से जीतकर धनवान् होते हैं॥५॥

**पुनर्मनुष्याः कीदृशा भवेयुरित्याह॥**

फिर मनुष्य कैसे होवें, इस विषय को कहते हैं॥

**स त्वं नो अर्वन्निदाया विश्वेभिरग्ने अग्निभिरिधानः।**

**वेषि रायो वि यासि दुच्छुना मदेम शतहिमाः सुवीराः॥६॥१४॥**

**सः। त्वम्। नः। अर्वन्। निदायाः। विश्वेभिः। अग्ने। अग्निऽभिः। इधानः। वेषि। रायः। वि। यासि। दुच्छुनाः। मदेम। शतऽहिमाः। सुऽवीराः॥६॥**

**पदार्थः**-**(सः)** **(त्वम्)** **(नः)** अस्मान् **(अर्वन्)** अश्वेव [अश्व इव] शीघ्रं गमयन् **(निदायाः)** निन्दिकायाः प्रजायाः **(विश्वेभिः)** समग्रैः **(अग्ने)** पावक इव प्रतापिन् **(अग्निभिः)** विद्युदादिभिः **(इधानः)** देदीप्यमानः **(वेषि)** व्याप्नोषि **(रायः)** धनानि **(वि)** **(यासि)** प्राप्नोषि **(दुच्छुनाः)** दुष्टः श्वेव वर्त्तमानाः सेनाः **(मदेम)** हर्षेम **(शतहिमाः)** शतं हिमानि येषान्ते **(सुवीराः)** शोभनाश्च ते वीराः॥६॥

**अन्वयः**-हे अर्वन्नग्ने! यतस्त्वं विश्वेभिरग्निभिरिधानो नो निदाया रायो वेषि दुच्छुना वि यासि स त्वं वयं च शतहिमाः सुवीरा मदेम॥६॥

**भावार्थः**-मनुष्यैः समग्रैरग्न्यादिभिः पदार्थैः कार्य्याणि संसाध्य या न्यायाज्ञा विरुद्धाः प्रजास्ता दण्डयित्वा शान्ताः सम्पादनीया एवं हि न्यायाचरणेन सर्वे शतायुषो भवन्ति॥६॥

अत्र विद्वद्राजप्रजागुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति द्वादशं सूक्तं चतुर्दशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे **(अर्वन्)** घोड़े की सदृश शीघ्र चलाते हुए **(अग्ने)** अग्नि के सदृश प्रतापी जिस कारण से **(त्वम्)** आप **(विश्वेभिः)** सम्पूर्ण **(अग्निभिः)** बिजुली आदिकों से **(इधानः)** निरन्तर प्रकाशमान



www.9009.co.in

**(नः)** हम लोगों की **(निदायाः)** निन्दा करते हुए प्रजाजन के **(रायः)** धनों को **(वेषि)** व्याप्त होते हो और **(दुच्छुनाः)** दुष्ट श्वा के सदृश वर्त्तमान सेनाओं को **(वि, यासि)** विशेष प्राप्त होते हो **(सः)** वह आप और हम लोग **(शतहिमाः)** सौ हिम वर्ष जिनके वे **(सुवीराः)** सुन्दर वीर जन **(मदेम)** हर्षित होवें॥६॥

**भावार्थः**-मनुष्यों को चाहिये कि सम्पूर्ण अग्नि आदि पदार्थों से कार्य्यों को सिद्ध करके जो न्याय की आज्ञा से विरुद्ध प्रजाजन हैं, उनको ताड़न करके शान्त सम्पादित करें, क्योंकि इस प्रकार न्याय के आचरण से सम्पूर्ण जन सौ वर्ष युक्त होते हैं॥६॥

इस सूक्त में विद्वान्, राजा और प्रजा के गुणवर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ संगति जाननी चाहिये॥

**यह बारहवाँ सूक्त और चौदहवां वर्ग्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

**अथ षड्चस्य त्रयोदशस्य सूक्तस्य भरद्वाजो बार्हस्पत्य ऋषिः। अग्निर्देवता। १ पङ्क्तिः। २ स्वराट्पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः। ३, ४ विराट्त्रिष्टुप्। ५, ६ निचृत्त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः॥**

*पुनर्नृपात् किं प्राप्नोतीत्याह॥*

फिर राजा से क्या प्राप्त होता है, इस विषय को कहते हैं॥

**त्वद्विश्वा॑ सुभग॒ सौभ॑गा॒न्यग्ने॒ वि य॑न्ति व॒निनो॒ न व॒याः।**

**श्रु॒ष्टी र॒यिर्वाजो॑ वृत्र॒तूर्ये॑ दि॒वो वृष्टि॒रीड्यो॑ री॒तिर॒पाम्॥ १॥**

**त्वत्। विश्वा॑। सु॒ऽभ॒ग॒। सौभ॑गानि। अग्ने॑। वि। य॒न्ति॒। व॒निन॑ः। न। व॒याः। श्रु॒ष्टी। र॒यिः। वाज॑ः। वृ॒त्र॒ऽतूर्ये॑। दि॒वः। वृ॒ष्टिः। ईड्य॑ः। री॒तिः। अ॒पाम्॥ १॥**

**पदार्थः**-(**त्वत्**) (**विश्वा**) सर्वाणि (**सुभग**) शोभनैश्वर्य्य (**सौभगानि**) सुभगानामैश्वर्य्याणां भावान् (**अग्ने**) वह्निरिव विद्वन् (**वि**) (**यन्ति**) प्राप्नुवन्ति (**वनिनः**) वनसम्बन्धिनः (**न**) इव (**वयाः**) पक्षिणः (**श्रुष्टी**) क्षिप्रम्। अत्र **संहितायामिति** दीर्घः। (**रयिः**) धनम् (**वाजः**) अन्नम् (**वृत्रतूर्य्ये**) वृत्रस्य मेघस्य तूर्य्यं हननं यत्र तद्वद्वर्त्तमाने सङ्ग्रामे (**दिवः**) अन्तरिक्षात् (**वृष्टिः**) (**ईड्यः**) स्तोतुमर्हः (**रीतिः**) श्लिष्टो गन्ता गमयिता वा (**अपाम्**) जलानाम्॥ १॥

**अन्वयः**-हे सुभगाऽग्ने राजन्! वनिनो वया न जनास्त्वद्विश्वा सौभगानि वि यन्ति वृत्रतूर्य्ये दिवोऽपां वृष्टिरिव रीतिरीड्यो रयिर्वाजश्च श्रुष्टी यन्ति तस्माद्भवान्त्सत्कर्त्तव्यो भवति॥ १॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। यथा सूर्य्योऽन्तरिक्षाद् वृष्टिं कृत्वा सर्वं जगत् तर्पयति तथैव राजा न्याययुक्तात्पुरुषार्थादैश्वर्य्याणि वर्धयित्वा प्रजाः सततं तर्पयेत्॥ १॥

**पदार्थः**-हे (**सुभग**) सुन्दर ऐश्वर्य्यवाले (**अग्ने**) अग्नि के सदृश विद्वज्जन वा राजन्! (**वनिनः**) वनसम्बन्धी (**वयाः**) पक्षी (**न**) जैसे वैसे जन (**त्वत्**) आप से (**विश्वा**) सम्पूर्ण (**सौभगानि**) ऐश्वर्यों के भावों को (**वि, यन्ति**) विशेष कर प्राप्त होते हैं (**वृत्रतूर्य्ये**) मेघ का हनन जिसमें उसके सदृश वर्त्तमान संग्राम में (**दिवः**) अन्तरिक्ष से (**अपाम्**) जलो की (**वृष्टिः**) वृष्टि के सदृश (**रीतिः**) श्लिष्ट जानने वा प्रकाश कराने वाला (**ईड्यः**) स्तुति करने योग्य (**रयिः**) धन और (**वाजः**) अन्न (**श्रुष्टी**) शीघ्र प्राप्त होते हैं, इससे आप सत्कार करने योग्य हैं॥ १॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जैसे सूर्य्य अन्तरिक्ष से वृष्टि करके सम्पूर्ण जगत् को तृप्त करता है, वैसे ही राजा न्याय से युक्त पुरुषार्थ से ऐश्वर्य्यों को बढ़ा कर प्रजाओं को निरन्तर तृप्त करे॥ १॥

**पुनर्विद्वद्भिरत्र कथं वर्त्तितव्यमित्याह॥**



www.9009.co.in

फिर विद्वानों को इस संसार में कैसा वर्त्ताव करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**त्वं भर्गो न आ हि रत्नमिषे परिज्मेव क्षयसि दुस्मवर्चाः।**

**अग्ने मित्रो न बृहत ऋतस्यासि क्षत्ता वामस्य देव भूरेः॥ २॥**

**त्वम्। भर्गः। नः। आ। हि। रत्नम्। इषे। परिज्माऽइव। क्षयसि। दुस्मऽवर्चाः। अग्ने। मित्रः। न। बृहतः। ऋतस्य। असि। क्षत्ता। वामस्य। देव। भूरेः॥ २॥**

**पदार्थः-(त्वम्) (भगः)** भजनीयैश्वर्यः **(नः)** अस्मान् **(आ) (हि) (रत्नम्)** धनम् **(इषे)** प्राप्तुम् **(परिज्मेव)** परितः सर्वन्तो गन्ता वायुरिव **(क्षयसि)** निवससि निवासयसि वा **(दस्मवर्चाः)** दस्ममुपक्षयितं निवासयितं निवासितं वर्चो दीप्तिर्येन सः **(अग्ने)** पावक इव वर्त्तमान **(मित्रः)** सखा **(न)** इव **(बृहतः)** महतः **(ऋतस्य)** सत्यस्योदकस्य वा **(असि) (क्षत्ता)** छेदकः **(वामस्य)** प्रशस्यस्य **(देव)** दातर्विद्वन् **(भूरेः)** बहोः॥ २॥

**अन्वयः**-हे देवाग्ने! यतस्त्वं मित्रो न बृहतो वामस्य भूरेर्ऋतस्य क्षत्ताऽसि तस्माद्दस्मवर्चाः स त्वं परिज्मेव भगः सन् नो हि रत्नमिष आ क्षयसि तस्मान्माननीयोऽसि॥ २॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। ये विद्वांसः प्राणवद्धनैश्वर्य्यशोभां दधति ते मित्रवद्वर्त्तित्वा सर्वान्त्सुखयन्तु॥ २॥

**पदार्थः**-हे **(देव)** देने वाले **(अग्ने)** अग्नि के समान वर्त्तमान विद्वन्! जिस कारण से **(त्वम्)** आप **(मित्रः) (न)** जैसे वैसे **(बृहतः)** बड़े **(वामस्य)** श्रेष्ठ **(भूरेः)** बहुत **(ऋतस्य)** सत्य वा जल के **(क्षत्ता)** छेदक **(असि)** हैं, इस कारण से **(दस्मवर्चाः)** उपक्षयित अर्थात् निवास कराई वा निवास की कान्ति जिन्होंने तथा **(परिज्मेव)** जो सब ओर से चलने वाले वायु के सदृश **(भगः)** सेवन करने योग्य ऐश्वर्य्य जिनका ऐसे हुए **(नः)** हम लोगों को **(हि)** जिस कारण से **(रत्नम्)** धन को **(इषे)** प्राप्त होने को **(आ)** सब ओर से **(क्षयसि)** निवास करते वा निवास कराते हो, इस कारण आदर करने योग्य हो॥ २॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जो विद्वान् जन प्राणों के सदृश धन और ऐश्वर्य्य की शोभा को धारण करते हैं, वे मित्र के सदृश वर्त्ताव करके सब को सुखी करें॥ २॥

**पुनर्विद्वांसः कथं वर्त्तेरन्नित्याह॥**

फिर विद्वान् जन कैसा वर्त्ताव करें, इस विषय को कहते हैं॥

**स सत्पतिः शवसा हन्ति वृत्रमग्ने विप्रो वि पणेर्भर्ति वाजम्।**

**यं त्वं प्रचेत ऋतजात राया सजोषा नप्त्रापां हिनोषि॥ ३॥**

**सः। सत्ऽपतिः। शवसा। हन्ति। वृत्रम्। अग्ने। विप्रः। वि। पणेः। भर्ति। वाजम्। यम्। त्वम्। प्रऽचेतः। ऋतऽजात। राया। सजोषाः। नप्त्रा। अपाम्। हिनोषि॥ ३॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः-(सः) (सत्पतिः)** सत उदकस्य पालकः। **सदित्युदकनाम।** (निघं०१.१२) **(शवसा)** बलेन **(हन्ति) (वृत्रम्)** मेघम् **(अग्ने)** प्रकाशस्वरूप **(विप्रः)** मेधावी **(वि) (पणेः)** व्यवहर्त्तुः **(भर्त्ति)** दधाति **(वाजम्)** अन्नं विज्ञानं वा **(यम्) (त्वम्) (प्रचेतः)** प्रकृष्टविज्ञान **(ऋतजात)** य ऋते सत्ये जायते तत्सम्बुद्धौ **(राया)** धनेन **(सजोषाः)** समानप्रीतिसेवी **(नप्त्रा)** यो न पतति तेन **(अपाम्)** जलानाम् **(हिनोषि)** वर्धयसि॥३॥

**अन्वयः**-हे ऋतजात प्रचेतरग्ने! विप्रस्त्वं यथा सत्पतिः सूर्य्यः शवसा वृत्रं हन्ति पणेर्वाजं वि भर्ति तथा यं त्वं सजोषा रायाऽपां नप्त्रा सह हिनोषि सोऽयं सर्वतो वर्धते॥३॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। ये मेधाविनः सूर्य्यवद्विद्यां प्रकाश्याविद्यां घ्नन्ति तेऽतुलं सुखं लभन्ते॥३॥

**पदार्थः**-हे **(ऋतजात)** सत्य में प्रकट होने वाले **(प्रचेतः)** अच्छे ज्ञान से युक्त **(अग्ने)** प्रकाशस्वरूप **(विप्रः)** बुद्धिमान् जन **(त्वम्)** आप जैसे **(सत्पतिः)** जल का पालक सूर्य्य **(शवसा)** बल से **(वृत्रम्)** मेघ का **(हन्ति)** नाश करता है और **(पणेः)** व्यवहारकर्त्ता के **(वाजम्)** अन्न वा विज्ञान को **(वि, भर्ति)** विशेष कर धारण करता है, वैसे **(यम्)** जिसको **(सजोषाः)** तुल्य प्रीति से सेवन करने वाले आप **(राया)** धन से **(अपाम्)** जलों के **(नप्त्रा)** नहीं गिरने वाले के साथ **(हिनोषि)** वृद्धि करे हो **(सः)** सो यह सब प्रकार से वृद्धि को प्राप्त होता है॥३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो बुद्धिमान् जन सूर्य्य के सदृश विद्या को प्रकाशित करके अविद्या का नाश करते हैं, वे अतुल सुख को प्राप्त होते हैं॥३॥

**पुनर्मनुष्यैः किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**यस्ते॑ सूनो सहसो गी॒र्भिरु॒क्थैर्य॒ज्ञैर्मर्तो॒ निशि॑तिं वे॒द्यान॑ट्।**

**विश्वं॒ स दे॑व॒ प्रति॒ वार॑मग्ने ध॒त्ते धा॒न्यं१॒॑ पत्य॑ते वस॒व्यैः॑॥४॥**

**यः। ते॒। सू॒नो॒ इति॑। स॒ह॒सः॒। गीः॒ऽभिः। उ॒क्थैः। य॒ज्ञैः। मर्तः॑। निऽशि॑तिम्। वे॒द्या। आन॑ट्। विश्व॑म्। सः। दे॒व॒। प्रति॑। वा॒। अर॑म्। अ॒ग्ने॒। ध॒त्ते। धा॒न्य॑म्। पत्य॑ते। व॒स॒व्यैः॑॥४॥**

**पदार्थः-(यः) (ते)** तव **(सूनो) (सहसः)** बलिष्ठस्य **(गीर्भिः)** वाग्भिः **(उक्थैः)** वक्तुमर्हैर्वेदितव्यैर्वेदवचनैः **(यज्ञैः)** विद्वत्सत्कारादिभिः **(मर्त्तः)** मनुष्यः **(निशितिम्)** नितरां तीक्ष्णम् **(वेद्या)** सुखप्रापिकया **(आनट्)** व्याप्नोति **(विश्वम्)** समग्रम् **(सः)** सुख प्रदाता **(देव) (प्रति) (वा) (अरम्)** अलम् **(अग्ने)** अग्निवद्वर्त्तमान विद्वन् **(धत्ते) (धान्यम्) (पत्यते)** पतिरिवाचरति **(वसव्यैः)** वसुषु धनेषु भवैः॥४॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे सहसस्सूनो देवाग्ने! ते यो मर्त्तो गीर्भिरुक्थैर्वेद्या निशितिमानढ् वसव्यैर्यज्ञैर्विश्वं धान्यं वारं प्रति धत्ते पत्यते स त्वया सङ्गन्तव्यः॥४॥

**भावार्थः**-हे मनुष्याः! पूर्णेन ब्रह्मचर्य्येण शरीरात्मबलमलं कृत्वा सन्तानोत्पत्तिं कुरुत॥४॥

**पदार्थः**-हे **(सहसः)** बलिष्ठ के **(सूनोः)** पुत्र **(देव)** दीप्तिमान् **(अग्ने)** अग्नि के समान वर्त्तमान विद्वन्! **(ते)** आप का **(यः)** जो **(मर्त्तः)** मनुष्य **(गीर्भिः)** वाणियों और **(उक्थैः)** कहने और जानने योग्य वेद के वचनों से और **(वेद्या)** सुख को प्राप्त कराने वाली वेदी से **(निशितिम्)** निरन्तर तीक्ष्णता के साथ **(आनट्)** व्याप्त होता है **(वसव्यैः)** धनों में प्रकट हुए पदार्थों के साथ **(यज्ञैः)** विद्वानों के सत्कारादिकों से **(विश्वम्)** समग्र पदार्थ को **(धान्यम्)** धान्य को **(वा)** वा **(अरम्)** पूर्ण **(प्रति, धत्ते)** धारण करता और **(पत्यते)** स्वामी के सदृश आचरण करता है **(सः)** वह आप से मेल करने योग्य है॥४॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! पूर्ण ब्रह्मचर्य्य से शरीर और आत्मा के बल को पूर्ण करके सन्तानों की उत्पत्ति करो॥४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**ता नृभ्य आ सौश्रवसा सुवीराग्ने सूनो सहसः पुष्यसे धाः।**

**कृणोषि यच्छवसा भूरि पश्वो वयो वृकायारये जसुरये॥५॥**

**ता। नृऽभ्यः। आ। सौश्रवसा। सुऽवीरा। अग्ने। सूनो इति। सहसः। पुष्यसे। धाः। कृणोषि। यत्। शवसा। भूरि। पश्वः। वयः। वृकाय। अरये। जसुरये॥५॥**

**पदार्थः**-**(ता)** तानि **(नृभ्यः)** नायकेभ्यः **(आ)** **(सौश्रवसा)** सुश्रवसा विदुषा निर्वृत्तानि **(सुवीरा)** शोभना वीरा येभ्यस्तानि **(अग्ने)** पावकवद्वर्त्तमान **(सूनो)** बलवन् **(सहसः)** बलस्य **(पुष्यसे)** पुष्टये **(धाः)** दधासि **(कृणोषि)** **(यत्)** येन **(शवसा)** बलेन **(भूरि)** **(पश्वः)** पशोः **(वयः)** जीवनम् **(वृकाय)** वृकवद्वर्त्तमानाय **(अरये)** शत्रवे **(जसुरये)** हिंसकाय॥५॥

**अन्वयः**-हे सहसस्सूनोऽग्ने! त्वं यच्छवसा पुष्यसे नृभ्यस्सुवीरा ता सौश्रवसाऽऽधः पश्वो भूरि वयो कृणोषि जसुरये वृकायाऽरये दण्डं ददासि तस्मात्त्वं न्यायकार्य्यसि॥५॥

**भावार्थः**-यो नृपो दुष्टान् चोरादीन्निवार्य्य प्रजाः पुष्टाः करोति स सर्वहितैषी वर्त्तते॥५॥

**पदार्थः**-हे **(सहसः)** बल के सम्बन्ध में **(सूनो)** बलवान् सन्तान **(अग्ने)** अग्नि के समान वर्त्तमान आप **(यत्)** जिस **(शवसा)** बल से **(पुष्यसे)** पुष्टि के लिये **(नृभ्यः)** नायक जनों से **(सुवीरा)** सुन्दर वीर जिनके लिये **(ता)** उन **(सौश्रवसा)** विद्वान् से सिद्ध किये नये कर्म्मों को **(आ, धाः)** धारण करते **(पश्वः)** पशु के **(भूरि)** बड़े **(वयः)** जीवन को **(कृणोषि)** करते हो और **(जसुरये)** हिंसा करने



www.9009.co.in

वाले **(वृकाय)** वृक के सदृश वर्त्तमान **(अरये)** शत्रु के लिये दण्ड देते हो, इस कारण से आप न्यायकारी हो॥५॥

**भावार्थः**-जो राजा दुष्ट चोरादिकों का निवारण करके प्रजाओं को पुष्ट करता है, वह सब का हितैषी होता है॥५॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**व॒द्मा सू॑नो सहसो नो॒ विहा॑या॒ अग्ने॑ तो॒कं तन॑यं वा॒जिनो॑ दाः।**

**विश्वा॑भिर्गी॒र्भिर॒भि पू॒र्तिम॑श्यां॒ मदे॑म श॒तहि॑माः सु॒वीरा॑ः॥६॥१५॥**

**व॒द्मा। सू॒नो॒ इति॑। स॒ह॒सः॒। नः॒। वि॒ऽहा॑याः। अग्ने॑। तो॒कम्। तन॑यम्। वा॒जिनः॑। दाः॒। विश्वा॑भिः। गी॒ःऽभिः। अ॒भि। पू॒र्तिम्। अ॒श्या॒म्। मदे॑म। श॒तऽहि॑माः। सु॒ऽवीरा॑ः॥६॥**

**पदार्थः**-**(वद्मा)** सत्यहितोपदेष्टा **(सूनो)** अपत्य **(सहसः)** बलिष्ठस्य **(नः)** **(विहायाः)** महान्। **विहायेति महन्नाम।** (निघं०३.३) **(अग्ने)** पावकवद्विद्वन् **(तोकम्)** वर्धकम् **(तनयम्)** सुखविस्तारकमपत्यम् **(वाजिनः)** अन्नादियुक्तस्य **(दाः)** देहि **(विश्वाभिः)** समग्राभिः **(गीर्भिः)** वाग्भिः **(अभि)** सर्वतः **(पूर्त्तिम्)** **(अश्याम्)** प्राप्नुयाम् **(मदेम)** आनन्देम **(शतहिमाः)** शतायुषः **(सुवीराः)** उत्तमवीरवन्तः॥६॥

**अन्वयः**-हे सहसस्सूनोऽग्ने! विहाया वद्मा त्वं नो विश्वाभिर्गीर्भिर्वाजिनस्तोकं तनयं दाः। येनाहं पूर्तिमश्यां यतो वयं शतहिमाः सुवीरा अभि मदेम॥६॥

**भावार्थः**-हे विद्वांसोऽध्यापनोदेशाभ्यां सर्वेषां गृहस्थानां पुत्रान् पुत्रींश्च सुशिक्ष्य विद्यया सुखयुक्तान् कुर्वन्तु येन दीर्घायुषो भूत्वैतेऽप्येवमेवाऽऽचरेयुरिति॥६॥

अत्राग्निविद्वद्राजगुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति त्रयोदशं सूक्तं पञ्चदशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे **(सहसः)** बलिष्ठ के **(सूनो)** सन्तान **(अग्ने)** अग्नि के सदृश विद्वन्! **(विहायाः)** बड़े **(वद्मा)** सत्य हित के उपदेष्टा आप **(नः)** हम को **(विश्वाभिः)** संपूर्ण **(गीर्भिः)** वाणियों से **(वाजिनः)** अन्न आदि युक्त के **(तोकम्)** वृद्धि करने और **(तनयम्)** सुख के बढ़ाने वाले के अपत्य को **(दाः)** दीजिये जिससे मैं **(पूर्तिम्)** पूर्णता को **(अश्याम्)** प्राप्त होऊँ और जिससे हम लोग **(शतहिमाः)** सौ वर्ष की अवस्था युक्त **(सुवीराः)** उत्तम वीरों वाले **(अभि, मदेम)** सब ओर से आनन्द करें॥६॥

**भावार्थः**-हे विद्वान् जनो! आप अध्यापन और उपदेश से सम्पूर्ण गृहस्थों के पुत्र और पुत्रियों को उत्तम प्रकार शिक्षित करके विद्या से सुखयुक्त करो, जिससे दीर्घ अवस्थावाले होकर ये सन्तान भी ऐसा ही आचरण करें॥६॥

इस सूक्त में अग्नि, विद्वान् और राजा के गुणों का वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥



www.9009.co.in

यह तेरहवाँ सूक्त और पन्द्रहवाँ वर्ग समाप्त हुआ॥



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

**अथ षड्चस्य चतुर्दशस्य सूक्तस्य भरद्वाजो बार्हस्पत्य ऋषिः। अग्निर्देवता। १, ३ भुरिगुष्णिक् छन्दः। ऋषभः स्वरः। २ निचृदनुष्टुप्। ४ अनुष्टुप्। ५ विराडनुष्टुप् छन्दः। गान्धारः स्वरः। ६ भुरिगतिजगती छन्दः। निषादः स्वरः॥**

***अथ मनुष्यैः किं कर्त्तव्यमित्याह॥***

अब: छः ऋचावाले चौदहवें सूक्त का प्रारम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में अब मनुष्यों को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**अ॒ग्ना यो मर्त्यो॒ दुवो॒ धियं॑ जु॒जोष॑ धी॒तिभिः॑।**

**भस॒न्नु ष प्र पू॒र्व्य इषं॑ वुरी॒तावसे॥ १॥**

**अ॒ग्ना। यः। मर्त्यः॑। दुवः॑। धियं॑म्। जु॒जोष॑। धी॒तिऽभिः॑। भस॑त्। नु। सः। प्र। पू॒र्व्यः॑। इषं॑म्। वु॒री॒त। अवसे॥ १॥**

**पदार्थः**-(**अग्ना**) अग्नौ (**यः**) (**मर्त्यः**) मनुष्यः (**दुवः**) परिचरणम् (**धियम्**) प्रज्ञां कर्म वा (**जुजोष**) (**धीतिभिः**) अङ्गुल्याद्यवयैः (**भसत्**) प्रकाशेत (**नु**) सद्यः (**सः**) (**प्र**) (**पूर्व्यः**) पूर्वैर्निष्पादितः (**इषम्**) अन्नं विज्ञानं वा (**वुरीत**) स्वीकुर्य्यात् (**अवसे**) रक्षणाद्याय॥१॥

**अन्वयः**-हे विद्वांसो! यो मर्त्यो धीतिभिरग्ना दुवो धियं जुजोषाऽवसे पूर्व्यः प्र भसदिषं नु वुरीत स भाग्यशाली भवति॥१॥

**भावार्थः**-ये मनुष्या आलस्यादिदोषान् विहाय धर्मेण पुरुषार्थं कुर्वन्ति ते सर्वमिष्टं सुखं लभन्ते॥१॥

**पदार्थः**-हे विद्वान् जनो! (**यः**) जो (**मर्त्यः**) मनुष्य (**धीतिभिः**) अंगुली आदि अवयवों से (**अग्ना**) अग्नि में (**दुवः**) सेवन और (**धियम्**) बुद्धि वा कर्म्म का (**जुजोष**) सेवन करता है और (**अवसे**) रक्षण आदि के लिये (**पूर्व्यः**) पूर्वजनों से प्रकाशित किया गया (**प्र, भसत्**) प्रकाशित होवे और (**इषम्**) अन्न वा विज्ञान की (**नु**) शीघ्र (**वुरीत**) स्वीकार करे (**सः**) वह भाग्यशाली होता है॥१॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य आलस्य आदि दोषों का त्याग कर धर्म्म से पुरुषार्थ करते हैं, वे सम्पूर्ण इष्ट सुख को प्राप्त होते हैं॥१॥

**अथ मनुष्याः किं कुर्वन्तीत्याह॥**

अब मनुष्या क्या करते हैं, इस विषय को कहते हैं॥

**अ॒ग्निरिद्धि प्रचे॑ता अ॒ग्निर्वे॒धस्त॑म॒ ऋषिः॑।**

**अ॒ग्निं होता॑रमीळते य॒ज्ञेषु॒ मनु॑षो॒ विशः॑॥ २॥**



www.9009.co.in

अ॒ग्निः। इत्। हि। प्रऽचे॑ताः। अ॒ग्निः। वे॒धःऽत॑मः। ऋषिः॑। अ॒ग्निम्। होता॑रम्। ई॒ळ॒ते॒। य॒ज्ञेषु॑। मनु॑षः। विशः॑॥ २॥

**पदार्थः**-(**अग्निः**) विद्युदिव (**इत्**) एव (**हि**) (**प्रचेताः**) प्रज्ञापकः (**अग्नि**) पवित्रः (**वेधस्तमः**) विद्वत्तमः (**ऋषिः**) मन्त्रार्थवेत्ता (**अग्निम्**) परमात्मानम् (**होतारम्**) सर्वस्य धर्त्तारं दातारं वा (**ईळते**) स्तुवन्ति (**यज्ञेषु**) सन्ध्योपासनादिषु सत्कर्मसु (**मनुषः**) मननशीलाः (**विशः**) मनुष्याः। **विश इति मनुष्यनाम।** (निघं०२.३)॥ २॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यं होतारमग्निं प्रचेता अग्निर्वेधस्तमोऽग्निर्ऋषिर्मनुषो विशश्च यज्ञेष्वीळते तमिद्धि यूयं प्रशंसत॥ २॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! सर्वेषां युष्माकं परमेश्वर एव स्तोतव्यो मन्तव्यो निदिध्यासितव्य उपासनीयोऽस्तीति सर्वे निश्चिन्वन्तु॥ २॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जिस (**होतारम्**) सब को धारण करने वा देनेवाले (**अग्निम्**) परमात्मा को (**प्रचेताः**) जानने वाला (**अग्निः**) बिजुली जैसे वैसे (**वेधस्तमः**) अतीव विद्वान् (**अग्निः**) पवित्र (**ऋषिः**) मन्त्र और अर्थों को जानने वाला और (**मनुषः**) विचार करने वाले (**विशः**) मनुष्य (**यज्ञेषु**) सन्ध्योपासन आदि श्रेष्ठ कर्म्मों में (**ईळते**) स्तुति करते हैं उस (**इत्**) ही की (**हि**) निश्चित आप लोग प्रशंसा करो॥ २॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! सब आप लोगों का परमेश्वर ही स्तुति करने, मानने, हृदय में धारण करने और उपासना करने योग्य है, ऐसा सब लोग निश्चय करो॥ २॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**नाना॒ ह्य॑ग्नेऽव॑से॒ स्पर्ध॑न्ते॒ रायो॑ अ॒र्यः।**

**तूर्व॑न्तो॒ दस्यु॑मा॒यवो॑ व्र॒तैः सीक्ष॑न्तो अव्र॒तम्॥ ३॥**

**नाना॑। हि। अ॒ग्ने॒। अव॑से। स्पर्ध॑न्ते। राय॑ः। अ॒र्यः। तूर्व॑न्तः। दस्यु॑म्। आ॒यव॑ः। व्र॒तैः। सीक्ष॑न्तः। अ॒व्र॒तम्॥ ३॥**

**पदार्थः**-(**नाना**) अनेके (**हि**) खलु (**अग्ने**) विद्वन् (**अवसे**) रक्षणाद्याय (**स्पर्धन्ते**) परोत्कर्षं न सहन्ते (**रायः**) धनस्य (**अर्य्यः**) स्वामी (**तूर्वन्तः**) हिंसन्तः (**दस्युम्**) दुष्टम् (**आयवः**) मनुष्याः (**व्रतैः**) कर्मभिः (**सीक्षन्तः**) सोढुमिच्छन्तः (**अव्रतम्**) धर्म्यकर्म्मरहितम्॥ ३॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! ये हि नानाऽव्रतं दस्युं तूर्वन्तो व्रतैः सीक्षन्त आयवोऽवसे स्पर्धन्ते तान् रायोऽर्य्यः स्वामी सत्कुर्य्यात्॥ ३॥

**भावार्थः**-ये दुष्टानां निवारणे प्रयतन्ते ते मनुष्याः श्रीपतयो भवन्ति॥ ३॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-हे **(अग्ने)** विद्वन्! जो **(हि)** निश्चय **(नाना)** अनेक **(अव्रतम्)** धर्म्मयुक्त कर्म्म से रहित **(दस्युम्)** दुष्ट जन की **(तूर्वन्तः)** हिंसा करते और **(व्रतैः)** कर्म्मों से **(सीक्षन्तः)** सहने की इच्छा करते हुए **(आयवः)** मनुष्य **(अवसे)** रक्षण आदि के लिये **(स्पर्धन्ते)** दूसरे की बड़ाई को नहीं सहते हैं, उनके **(रायः)** धन का **(अर्य्यः)** स्वामी सत्कार करे॥३॥

**भावार्थः**-जो दुष्टों के निवारण में प्रयत्न करते हैं, वे मनुष्य धनवान् होते हैं॥३॥

**पुनरुत्तमो मनुष्यः किं करोतीत्याह॥**

फिर उत्तम मनुष्य क्या करता है, इस विषय को कहते हैं॥

**अ॒ग्निर॒प्सामृ॑ती॒षहं॑ वी॒रं द॑दाति॒ सत्प॑तिम्।**

**यस्य॒ त्रस॑न्ति॒ शव॑सः सं॒चक्षि॒ शत्र॑वो भि॒या॥४॥**

**अ॒ग्निः। अ॒प्साम्। ऋ॒ति॒ऽसहं॑म्। वी॒रम्। द॒दा॒ति॒। सत्ऽप॑तिम्। यस्य॑। त्रस॑न्ति। शव॑सः। स॒म्ऽचक्षि॑। शत्र॑वः। भि॒या॥४॥**

**पदार्थः**-**(अग्निः)** महाबलिष्ठो वीरपुरुषः **(अप्साम्)** सत्कर्म्मणां विभक्तारम् **(ऋतीषहम्)** य ऋतीन् परपदार्थप्रापकाञ्छत्रून्त्सहते। अत्र **संहितायामि**ति दीर्घः। **(वीरम्)** शूरपुरुषम् **(ददाति)** **(सत्पतिम्)** सतां पालकम् **(यस्य)** **(त्रसन्ति)** उद्विजन्ति **(शवसः)** बलात् **(सञ्चक्षि)** समक्षे **(शत्रवः)** **(भिया)** भयेन॥४॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यस्य शवसः सञ्चक्षि भिया शत्रवस्त्रसन्ति सोऽग्निरप्सामृतीषहं सत्पतिं वीरं ददाति॥४॥

**भावार्थः**-ये ब्रह्मचारिणो जितेन्द्रिया विद्वांसो भूत्वा शरीरात्मसामर्थ्यं नापनयन्ति तेभ्योऽरयो भीत्वा पलायन्तेऽथवा वशमाप्नुवन्ति॥४॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(यस्य)** जिसके **(शवसः)** बल से **(सञ्चक्षि)** सम्मुख **(भिया)** भय से **(शत्रवः)** शत्रुजन **(त्रसन्ति)** व्याकुल होते हैं वह **(अग्निः)** बड़ा बलिष्ठ वीर पुरुष **(अप्साम्)** श्रेष्ठ कर्म्मों के विभाग करने और **(ऋतीषहम्)** दूसरे के पदार्थों के प्राप्त कराने वाले शत्रुओं को सहनकर्त्ता **(सत्पतिम्)** श्रेष्ठों के पालक **(वीरम्)** वीर पुरुष को **(ददाति)** देता है॥४॥

**भावार्थः**-जो ब्रह्मचारी जितेन्द्रिय और विद्वान् होकर शरीर और आत्मा के सामर्थ्य को नहीं दूर करते हैं, उनसे शत्रुजन डर के भागते हैं अथवा वश को प्राप्त होते हैं॥४॥

**पुनर्मनुष्याः किं कुर्य्युरित्याह॥**

फिर मनुष्य क्या करें, इस विषय को कहते हैं॥

**अ॒ग्निर्हि वि॒द्मना॑ नि॒दो दे॒वो मर्त॑मुरु॒ष्यति॑।**

**स॒हावा॒ यस्यावृ॑तो र॒यिर्वाजे॒ष्ववृ॑तः॥५॥**



www.9009.co.in

**अग्निः। हि। विद्मना। निदः। देवः। मर्तम्। उरुष्यति। सहऽवा। यस्य। अवृतः। रयिः। वाजेषु। अवृतः॥५॥**

**पदार्थः-(अग्निः)** पावक इव पवित्रोपचितो मुनिः **(हि)** यतः **(विद्मना)** ज्ञानेन **(निदः)** निन्दकान् **(देवः)** देदीप्यमानः **(मर्त्तम्)** मनुष्यम् **(उरुष्यति)** सेवते **(सहावा)** यः सहते सः **(यस्य) (अवृतः)** अस्वीकृतः **(रयिः)** धनम् **(वाजेषु)** सङ्ग्रामेषु **(अवृतः)** अनाच्छादितः॥५॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! योऽवृतस्सहावा देवोऽग्निर्मर्त्तमुरुष्यति तं हि विद्मना विजानन्तु यस्य वाजेष्ववृतो रयिर्भवति तेन निदो निवारयन्तु॥५॥

**भावार्थः**-सर्वान् पदार्थान्त्सवन्तीं विद्युतं मनुष्या जानन्तु यद्विज्ञानेनाग्नेयादीन्यस्त्राणि सिद्ध्यन्ति तत्सर्वदाऽन्विष्यध्वम्॥५॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो **(अवृतः)** नहीं स्वीकार किया गया **(सहावा)** सहने वाला **(देवः)** निरन्तर प्रकाशमान **(अग्निः)** अग्नि के सदृश पवित्रों से बढ़ा हुआ मुनि **(मर्त्तम्)** मनुष्य को **(उरुष्यति)** सेवता है उसको **(हि)** जिससे **(विद्मना)** ज्ञान से विशेष करके जानें और **(यस्य)** जिसके **(वाजेषु)** सङ्ग्रामों में **(अवृतः)** नहीं आच्छादित किया गया **(रयिः)** धन होता है, उससे **(निदः)** निन्दा करने वालों का निवारण कीजिये॥५॥

**भावार्थः**-सब पदार्थों को उत्पन्न करती हुई बिजुली को मनुष्य जानें, जिस विज्ञान से आग्नेयादि नामक अस्त्र सिद्ध होते हैं, उसका सब काल में खोज करो॥५॥

**पुनर्विद्वद्भिः प्रत्यहं किं करणीयमित्याह॥**

फिर विद्वानों को प्रतिदिन क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

## अच्छा नो मित्रमहो देव देवानग्ने वोचः सुमतिं रोदस्योः। वीहि स्वस्तिं सुक्षितिं दिवो नॄन् द्विषो अंहांसि दुरिता तरेम ता तरेम तवावसा तरेम॥६॥१६॥

**अच्छ। नः। मित्रऽमहः। देव। देवान्। अग्ने। वोचः। सुऽमतिम्। रोदस्योः। वीहि। स्वस्तिम्। सुऽक्षितिम्। दिवः। नॄन्। द्विषः। अंहांसि। दुःऽइता। तरेम। ता। तरेम। तव। अवसा। तरेम॥६॥**

**पदार्थः-(अच्छा)** सम्यक्। अत्र **संहितायामि**ति दीर्घः। **(नः)** अस्मान् **(मित्रमहः)** मित्रैः पूजनीय **(देव)** सुखदातः **(देवान्)** विदुषः **(अग्ने)** पावक इव प्रकाशमान विद्वन् **(वोचः)** ब्रूहि **(सुमतिम्)** शोभनां प्रज्ञाम् **(रोदस्योः)** अग्निपृथिव्योः **(वीहि)** व्याप्नुहि **(स्वस्तिम्)** सुखम् **(सुक्षितिम्)** शोभना क्षितिर्भूमियस्यां ताम् **(दिवः)** कामयामानान् **(नॄन्)** मनुष्यान् **(द्विषः)** द्वेष्टॄन् **(अंहांसि)** पापानि **(दुरिता)** दुष्टाचरणानि दुर्व्यसनानि **(तरेम)** उल्लङ्घेम **(ता)** तानि निन्दादीनि **(तरेम) (तव) (अवसा)** रक्षणाद्येन **(तरेम)**॥६॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे मित्रमहो देवाऽग्ने! त्वं नो देवान् रोदस्योः सुमतिमच्छा वोचः सुक्षितिं स्वस्तिं वीहि दिवो नॄन् पदार्थविद्यां ब्रूहि यतस्तवाऽवसा द्विषोंऽहांसि दुरिता तरेम ता तरेम कुसङ्गदोषांश्च तरेम॥६॥

**भावार्थः**-हे विद्वांसो! यावतीं विद्यां यूयं प्राप्नुयात तावतीमन्येभ्यो यथावदुपदिशत सत्योपदेशेन मनुष्याणां दुर्व्यसनानि दूरीकुरुत स्वयमधर्म्माचरणात् पृथग्वर्त्तध्वं सत्सङ्गेन पुरुषार्थेन च शुद्धा भूत्वा दुःखानि तीर्त्वा सुखमाप्नुतेति॥६॥

अत्राऽग्निविद्वद्गुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति चतुर्दशं सूक्तं षोडशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे **(मित्रमहः)** मित्रों से आदर करने योग्य **(देव)** सुख के देनेवाले **(अग्ने)** अग्नि के सदृश विद्या के प्रकाश से युक्त विद्वन्! आप **(नः)** हम लोगों **(देवान्)** विद्वानों को तथा **(रोदस्योः)** अग्नि और पृथिवी सम्बन्धिनी **(सुमतिम्)** उत्तम बुद्धि को **(अच्छा)** उत्तम प्रकार **(वोचः)** कहिये **(सुक्षितिम्)** उत्तम भूमि जिसमें उस **(स्वस्तिम्)** सुख को **(वीहि)** प्राप्त हूजिये और **(दिवः)** कामना करते हुए **(नॄन्)** मनुष्यों से पदार्थविद्या को कहिये जिससे **(तव)** आपके **(अवसा)** रक्षण आदि से **(द्विषः)** द्वेष से युक्त जनों **(अंहांसि)** पापों और **(दुरिता)** दुष्ट आचरणों दुर्व्यसनों का **(तरेम)** उल्लङ्घन करें तथा **(ता)** उन निन्दादिकों का **(तरेम)** उल्लंघन करें और कुसङ्ग से हुए दोषों का **(तरेम)** उल्लङ्घन करें॥६॥

**भावार्थः**-हे विद्वान् जनो! जितनी विद्या को आप लोग प्राप्त होओ उतनी का अन्य जनों के लिये यथावत् उपदेश करो और सत्य उपदेश से मनुष्यों के दुष्ट व्यसनों को दूर करो और आप अधर्म्म के आचरण से पृथक् वर्त्ताव करो और सत्संग तथा पुरुषार्थ से शुद्ध होकर दुःखों से पार होकर सुख को प्राप्त होओ॥६॥

इस सूक्त में अग्नि और विद्वानों के गुणों का वर्णन होने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ संगति जाननी चाहिये॥

**यह चौदहवाँ सूक्त और सोलहवाँ वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

**अथैकोनविंशत्यृचस्य पञ्चदशस्य सूक्तस्य भरद्वाजो बार्हस्पत्यो वीतहव्यो वा ऋषिः। अग्निर्देवता। १, ८ विराड्जगती छन्दः। २, ५, ९ निचृज्जगती। ३ निचृदतिजगती। ७ जगती। निषादः स्वरः। ४, १४ भुरिक् त्रिष्टुप्। १०, ११, १६ निचृत् त्रिष्टुप्। १३ विराट् त्रिष्टुप्। १९ त्रिष्टुप्। धैवतः स्वरः। ६ निचृदतिशक्वरी छन्दः। १२ पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः। १५ ब्राह्मी बृहती छन्दः। मध्यमः स्वरः। १७ विराडनुष्टुप्। १८ स्वराडनुष्टुप् छन्दः। गान्धारः स्वरः॥**

***अथ मनुष्यैः किं वेदितव्यमित्याह॥***

अब उन्नीस ऋचावाले सूक्त का प्रारम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में अब मनुष्यों को क्या जानना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**इममू षु वो अतिथिमुषर्बुधं विश्वासां विशां पतिमृञ्जसे गिरा।**

**वेतीद्दिवो जनुषा कच्चिदा शुचिर्ज्योक् चिदत्ति गर्भो यदच्युतम्॥ १॥**

**इमम्। ऊँ इति। सु। वः। अतिथिम्। उषःऽबुधम्। विश्वासाम्। विशाम्। पतिम्। ऋञ्जसे। गिरा। वेति। इत्। दिवः। जनुषा। कत्। चित्। आ। शुचिः। ज्योक्। चित्। अत्ति। गर्भः। यत्। अच्युतम्॥ १॥**

**पदार्थः**-(**इमम्**) (उ) वितर्के (**सु**) शोभने (**वः**) युष्माकम् (**अतिथिम्**) अतिथिमिव वर्त्तमानम् (**उषर्बुधम्**) य उषसि बोधयति तम् (**विश्वासाम्**) सर्वासाम् (**विशाम्**) मनुष्यादिप्रजानाम् (**पतिम्**) पालकम् (**ऋञ्जसे**) प्रसाध्नोषि (**गिरा**) वाचा (**वेति**) व्याप्नोति (**इत्**) एव (**दिवः**) दिवसस्य पदार्थबोधस्य (**जनुषा**) जन्मना (**कत्**) कदापि (**चित्**) अपि (**आ**) (**शुचिः**) पवित्रः (**ज्योक्**) निरन्तरम् (**चित्**) अपि (**अत्ति**) भुङ्क्ते (**गर्भः**) अन्तःस्थ (**यत्**) (**अच्युतम्**) नाशरहितम्॥ १॥

**अन्वयः**-हे विद्वन्! यतस्त्वमिमं विश्वासां विशां पतिमतिथिमुषर्बुधमृञ्जसे गर्भ इव य उ दिवो जनुषा सु वेतीत् कच्चिद्यच्छुचिरच्युतं वस्तु ज्योगत्ति वो गिरा चिदाऽऽजानाति स विद्वान् भवति॥ १॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यथाऽतिथिः पूजनीयोऽस्ति तथैव पदार्थविद्यावित्सत्कर्त्तव्योऽस्ति ये सर्वान्तःस्थं नित्यं विद्युज्ज्योतिर्जानन्ति तेऽभीप्सितं सुखं लभन्ते॥ १॥

**पदार्थः**-हे विद्वन्! जिस कारण से आप (**इमम्**) इस (**विश्वासाम्**) सम्पूर्ण (**विशाम्**) मनुष्य आदि प्रजाओं के (**पतिम्**) पालक (**अतिथिम्**) अतिथि के समान वर्त्तमान (**उषर्बुधम्**) प्रातःकाल में जगानेवाले को (**ऋञ्जसे**) सिद्ध करते हैं (**गर्भः**) अन्तःस्थ के समान जो (उ) तर्कनासहित (**दिवः**) पदार्थबोध की (**जनुषा**) उत्पत्ति से (**सु, वेति**) अच्छे प्रकार व्याप्त होता (**इत्**) ही है तथा (**कत्**) कभी (**चित्**) भी (**यत्**) जो (**शुचिः**) पवित्र (**अच्युतम्**) नाश से रहित वस्तु को (**ज्योक्**) निरन्तर (**अत्ति**)



www.9009.co.in

भोगता है और **(वः)** आप लोगों की **(गिरा)** वाणी से **(चित्)** निश्चित **(आ)** आज्ञा करता है, वह विद्वान् होता है॥१॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे अतिथि सत्कार करने योग्य है, वैसे ही पदार्थविद्या का जानने वाला सत्कार करने योग्य है, जो सब के अन्तःस्थ नित्य बिजुली की ज्योति को जानते हैं, वे अभीप्सित सुख को प्राप्त होते हैं॥१॥

**पुनर्मनुष्यैः किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**मि॒त्रं न यं सुधि॑तं॒ भृग॑वो द॒धुर्वन॒स्पता॒वीड्य॑मू॒र्ध्वशो॑चिषम्।**

**स त्वं सुप्री॑तो वी॒तह॑व्ये अद्भुत प्रश॑स्तिभिर्महयसे दि॒वेदि॑वे॥२॥**

**मि॒त्रम्। न। यम्। सुऽधि॑तम्। भृग॑वः। द॒धुः। वन॒स्पतौ॑। ईड्य॑म्। ऊ॒र्ध्वऽशो॑चिषम्। सः। त्वम्। सुऽप्री॑तः। वी॒तऽह॑व्ये। अ॒द्भु॒त। प्रश॑स्तिऽभिः। म॒ह॒य॒से॒। दि॒वेऽदि॑वे॥२॥**

**पदार्थः**-**(मित्रम्)** सखायम् **(न)** इव **(यम्)** **(सुधितम्)** सुष्ठु स्थितम् **(भृगवः)** विद्वांसो मनुष्याः **(दधुः)** दधति **(वनस्पतौ)** वनानां किरणानां पालके सूर्य्ये **(ईड्यम्)** उत्तमैर्गुणैः प्रशंसनीयम् **(ऊर्ध्वशोचिषम्)** ऊर्ध्वज्वालम् **(सः)** **(त्वम्)** **(सुप्रीतः)** सुष्ठु प्रसन्नः **(वीतहव्ये)** वीतं व्याप्तं ग्रहीतव्यं वस्तु येन तस्मिन् **(अद्भुत)** महाशय। **अद्भुतमिति महन्नाम।** (निघं०३.३) **(प्रशस्तिभिः)** प्रशंसनीयाभिर्धर्म्याभिः क्रियाभिः **(महयसे)** सत्क्रियसे **(दिवेदिवे)** प्रतिदिनम्॥२॥

**अन्वयः**-हे अद्भुत! यं मित्रं न सुधितं वनस्पतावीड्यमूर्ध्वशोचिषं भृगवो दधुः स त्वं प्रशस्तिभिर्दिवेदिवे सुप्रीतः सन् वीतहव्ये महयसे तस्मात्सेवनीयोऽसि॥२॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यथा सखा कार्य्याणि साध्नोति तथैवाग्निः सुसम्प्रयुक्तः कार्य्याणि साध्नोति॥२॥

**पदार्थः**-हे **(अद्भुत)** महाशय! **(यम्)** जिस **(मित्रम्)** मित्र को **(न)** जैसे वैसे **(सुधितम्)** उत्तम प्रकार स्थित को **(वनस्पतौ)** किरणों के पालक सूर्य्य में **(ईड्यम्)** उत्तम गुणों से प्रशंसा करने योग्य **(ऊर्ध्वशोचिषम्)** ऊपर को ज्वाला जिसकी उसको **(भुगवः)** विद्वान् मनुष्य **(दधुः)** धारण करते हैं **(सः)** वह **(त्वम्)** आप **(प्रशस्तिभिः)** प्रशंसा करने योग्य धर्म्मयुक्त क्रियाओं से **(दिवेदिवे)** प्रतिदिन **(सुप्रीतः)** उत्तम प्रकार प्रसन्न हुए **(वीतहव्ये)** व्याप्त हुआ ग्रहण करने योग्य वस्तु जिससे उसमें **(महयसे)** सत्कार किये जाते हो, इससे सेवन करने योग्य हो॥२॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जैसे मित्र कार्य्यों को सिद्ध करता है, वैसे ही अग्नि उत्तम प्रकार प्रयोग किया कार्य्यों को सिद्ध करता है॥२॥

**पुनर्मनुष्याः कीदृशा भवेयुरित्याह॥**



www.9009.co.in

फिर मनुष्य कैसे होवैं, इस विषय को कहते हैं॥

**स त्वं दक्षस्यावृको वृधो भूरर्यः परस्यान्तरस्य तरुषः।**

**रायः सूनो सहसो मर्त्येष्वा छर्दिर्यच्छ वीतहव्याय सप्रथो भरद्वाजाय सप्रथः॥ ३॥**

**सः। त्वम्। दक्षस्य। अवृकः। वृधः। भूः। अर्यः। परस्य। अन्तरस्य। तरुषः। रायः। सूनो इति। सहसः। मर्त्येषु। आ। छर्दिः। यच्छ। वीतऽहव्याय। सऽप्रथः। भरत्ऽवाजाय। सऽप्रथः॥ ३॥**

**पदार्थः**-(**सः**) (**त्वम्**) (**दक्षस्य**) बलस्य (**अवृकः**) अस्तेनः (**वृधः**) वर्धकः (**भूः**) भवेः (**अर्य्यः**) स्वामी (**परस्य**) प्रकृष्टस्य (**अन्तरस्य**) भिन्नस्य (**तरुषः**) तारकस्य (**रायः**) धनस्य (**सूनो**) अपत्य (**सहसः**) बलवतः (**मर्त्येषु**) मनुष्येषु (**आ**) समन्तात् (**छर्दिः**) गृहम् (**यच्छ**) देहि (**वीतहव्याय**) प्राप्तप्राप्तव्याय (**सप्रथः**) समानप्रख्यातिः (**भरद्वाजाय**) धृतविज्ञानाय (**सप्रथः**) विस्तृतविज्ञानेन सहितः॥ ३॥

**अन्वयः**-हे सहसस्सूनो! यस्त्वं दक्षस्यावृको वृधः परस्यान्तरस्य तरुषो रायोऽर्यो मर्त्येषु सप्रथो वीतहव्याय भरद्वाजाय दाता भूः स सप्रथस्त्वं छर्दिराऽऽयच्छ॥ ३॥

**भावार्थः**-यदि मनुष्याः सर्वतो बलं वर्धयेयुस्तर्हि श्रीमन्तः कथं न स्युः॥ ३॥

**पदार्थः**-हे (**सहसः**) बलवान् के (**सूनो**) सन्तान! जो (**त्वम्**) आप (**दक्षस्य**) बल के (**अवृकः**) नहीं चोर (**वृधः**) बढ़ाने वाले (**परस्य**) अत्यन्त (**अन्तरस्य**) भिन्न (**तरुषः**) तारने वाले (**रायः**) धन के (**अर्यः**) स्वामी (**मर्त्येषु**) मनुष्यों में (**सप्रथः**) तुल्य प्रसिद्धि वाले (**वीतहव्याय**) प्राप्त हुआ प्राप्त होने योग्य जिसको उस (**भरद्वाजाय**) धारण किया विज्ञान जिसने उसके लिये दाता (**भूः**) होओ (**सः**) वह (**सप्रथः**) विस्तृत विज्ञान के सहित आप (**छर्दिः**) गृह को (**आ, यच्छ**) आदान कीजिये अर्थात् लीजिये॥ ३॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य सब प्रकार से बल के वृद्धि करें तो लक्ष्मीयुक्त कैसे न हों॥ ३॥

**पुनर्मनुष्यैः किं ज्ञातव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को क्या जानना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**द्युतानं वो अतिथिं स्वर्णरमग्निं होतारं मनुषः स्वध्वरम्।**

**विप्रं न द्युक्षवचसं सुवृक्तिभिर्हव्यवाहमरतिं देवमृञ्जसे॥ ४॥**

**द्युतानम्। वः। अतिथिम्। स्वःऽनरम्। अग्निम्। होतारम्। मनुषः। सुऽअध्वरम्। विप्रम्। न। द्युक्षऽवचसम्। सुवृक्तिऽभिः। हव्यऽवाहम्। अरतिम्। देवम्। ऋञ्जसे॥ ४॥**

**पदार्थः**-(**द्युतानम्**) सत्यार्थद्योतकम् (**वः**) युष्माकम् (**अतिथिम्**) अतिथिमिव (**स्वर्णरम्**) यः स्वः सुखं नयति तम् (**अग्निम्**) पावकम् (**होतारम्**) आदातारम् (**मनुषः**) मनुष्यस्य (**स्वध्वरम्**) सुष्ठ्वध्वरा यस्मात्तम् (**विप्रम्**) मेधाविनम् (**न**) इव (**द्युक्षवचसम्**) द्योतकवचनस्य प्रकाशकम्



www.9009.co.in

**(सुवृक्तिभिः)** सुष्ठु व्रजन्ति याभिः क्रियाभिस्ताभिस्सहितम् **(हव्यवाहम्)** धर्त्तव्यवाहकम् **(अरतिम्)** प्रापकम् **(देवम्)** द्योतमानम् **(ऋञ्जसे)** प्रसाध्नोषि॥४॥

**अन्वयः**-हे विद्वन्! यस्त्वं वो युष्माकमतिथिमिव द्युतानं स्वर्णरं मनुषो होतारं स्वध्वरमग्निं सुवृक्तिभिर्न द्युक्षवचसं हव्यवाहमरतिं देवं विप्रं न ऋञ्जसे तं वयं सत्कुर्य्याम॥४॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। यथा विपश्चिद्यथायोग्यानि कार्य्याणि कर्त्तुं शक्नोति तथैव युक्त्या सम्प्रयुक्तोऽग्निः सर्वं व्यापारं साद्धुं शक्नोति॥४॥

**पदार्थः**–हे विद्वन्! जो आप **(वः)** आप लोगों के **(अतिथिम्)** अतिथि के समान **(द्युतानम्)** सत्यार्थ के प्रकाशक **(स्वर्णरम्)** सुख को प्राप्त कराने और **(मनुषः)** मनुष्य के **(होतारम्)** ग्रहण करने वाले **(स्वध्वरम्)** उत्तम प्रकार यज्ञ जिससे उस **(अग्निम्)** अग्नि को **(सुवृक्तिभिः)** अच्छे प्रकार चलते हैं जिन क्रियाओं से उनके सहित जैसे वैसे **(द्युक्षवचसम्)** द्योतकवचन के प्रकाशक **(हव्यवाहम्)** धारण करने योग्य को वहन करने और **(अरतिम्)** प्राप्ति कराने वाले **(देवम्)** प्रकाशमान **(विप्रम्)** बुद्धिमान् को **(न)** जैसे वैसे **(ऋञ्जसे)** सिद्ध करते हो उसका हम लोग सत्कार करें॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जैसे बुद्धिमान् जन यथायोग्य कर्म्मों को करने को समर्थ होता है, वैसे ही युक्ति से अच्छे प्रकार प्रयोग किया अग्नि सम्पूर्ण व्यापार सिद्ध करने को समर्थ होता है॥४॥

**पुनर्मनुष्यैः किं प्रकाशनीयमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को क्या प्रकाशित करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**पावकया यश्चितयन्त्या कृपा क्षामन् रुरुच उषसो न भानुना।**

**तूर्वन्न यामन्नेतशस्य नू रण आ यो घृणे न ततृषाणो अजरः॥५॥१७॥**

**पावकया। यः। चितयन्त्या। कृपा। क्षामन्। रुरुचे। उषसः। न। भानुना। तूर्वन्। न। यामन्। एतशस्य। नु। रणे। आ। यः। घृणे। न। ततृषाणः। अजरः॥५॥**

**पदार्थः**-**(पावकया)** पावकस्य क्रियया **(यः)** **(चितयन्त्या)** ज्ञापयन्त्या **(कृपा)** कृपया **(क्षामन्)** पृथिव्याम् **(रुरुचे)** प्रदीप्यते **(उषसः)** प्रभातवेला **(न)** इव **(भानुना)** किरणेन **(तूर्वन्)** हिंसन् **(न)** इव **(यामन्)** यान्ति यस्मिंस्तस्मिन्मार्गे **(एतशस्य)** अश्वस्य **(नू)** सद्यः **(रणे)** संग्रामे **(आ)** **(यः)** **(घृणे)** प्रदीप्ते **(न)** इव **(ततृषाणः)** तृषातुरः **(अजरः)** जरारहितः॥५॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यो भानुनोषसो न पावकया चितयन्त्या कृपा क्षामन् रुरुचे घृणे न रणे ततृषाणोऽजरो यो यामन्नेतशस्य प्रेरकस्तूर्वन्न न्वाऽऽरुरुचे सः सेवनीयोऽस्ति॥५॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यथा सूर्य्यकिरणा उषसं प्रकाशन्ते तथैव विद्वांसः सर्वान्तःकरणानि प्रकाशयेयुः॥५॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(यः)** जो **(भानुना)** किरण से **(उषसः)** प्रभातवेला **(न)** जैसे वैसे **(पावकया)** अग्नि की क्रिया से और **(चितयन्त्या)** जनाती हुई **(कृपा)** कृपा से **(क्षामन्)** पृथिवी में **(रुरुचे)** प्रकाशित किया जाता है **(घृणे)** प्रदीप्त में **(न)** जैसे वैसे **(रणे)** संग्राम में **(ततृषाणः)** पिपासा से व्याकुल **(अजरः)** जरा से रहित **(यः)** जो **(यामन्)** चलते हैं जिसमें उस मार्ग में **(एतशस्य)** घोड़े का चलाने वाला **(तूर्वन्)** हिंसन करता हुआ **(न)** जैसे वैसे **(नू)** शीघ्र **(आ)** प्रकाशित होता है, वह सेवा करने योग्य है॥५॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जैसे सूर्य्य के किरण प्रातःकाल को प्रकाशित करते हैं, वैसे ही विद्वान् जन सब के अन्तः करणों को प्रकाशित करें॥५॥

**पुनर्मनुष्यैः किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**अ॒ग्निम॑ग्निं वः स॒मिधा॑ दुवस्यत प्रि॒यंप्रि॑यं वो॒ अति॑थिं गृणी॒षणि॑। उप॑ वो गी॒र्भिर॒मृतं॑ विवासत दे॒वो दे॒वेषु॒ वन॑ते॒ हि वार्यं॑ दे॒वो दे॒वेषु॒ वन॑ते॒ हि नो॒ दुवः॑॥६॥**

**अ॒ग्निम्ऽअ॑ग्निम्। व॒ः। स॒म्ऽइधा॑। दु॒व॒स्य॒त॒। प्रि॒यम्ऽप्रि॑यम्। व॒ः। अति॑थिम्। गृ॒णी॒षणि॑। उप॑। व॒ः। गी॒ःऽभिः। अ॒मृत॑म्। वि॒वा॒स॒त॒। दे॒वः। दे॒वेषु॑। वन॑ते। हि। वार्य॑म्। दे॒वः। दे॒वेषु॑ः वन॑ते। हि। न॒ः। दुव॑ः॥६॥**

**पदार्थः**-**(अग्निमग्निम्)** प्रत्यग्निम् **(वः)** युष्माकम् **(समिधा)** इन्धनैः। **(दुवस्यत)** परिचरत **(प्रियम्प्रियम्)** कमनीयं कमनीयम् **(वः)** युष्माकम् **(अतिथिम्)** **(गृणीषणि)** स्तोतव्ये व्यवहारे **(उप)** **(वः)** युष्मान् **(गीर्भिः)** वाग्भिः **(अमृतम्)** कारणरूपेण नाशरहितम् **(विवासत)** परिचरत। **विवासतीति परिचरणकर्म्मा।** (निघं०३.५) **(देवः)** द्योतमानः **(देवेषु)** दिव्यगुणेषु **(वनते)** सम्भजति **(हि)** **(वार्य्यम्)** वरणीयं व्यवहारम् **(देवः)** दाता **(देवेषु)** पितृषु विद्वत्सु **(वनते)** सम्भजते **(हि)** खलु **(नः)** अस्मभ्यम् **(दुवः)** परिचरणम्॥६॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यो गृणीषणि समिधा वोऽग्निमग्निं वः प्रियम्प्रियमतिथिमुप वनते हि यो देवेषु देवो गीर्भिर्वो वार्य्यममृतं सेवते यो हि देवेषु देवो नो दुवो वनते तं दुवस्यत तं विवासत॥६॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यूयं विद्वांसमिवाग्निं सङ्गमयत यतोऽभीष्टं कार्यं सिद्ध्येत्॥६॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो **(गृणीषणि)** स्तुति करने योग्य व्यवहार में **(समिधा)** इन्धनों से **(वः)** आप लोगों के **(अग्निमग्निम्)** अग्नि अग्नि का और **(वः)** आप लोगों के **(प्रियम्प्रियम्)** कामना करने योग्य कामना करने योग्य **(अतिथिम्)** अतिथि का **(उप, वनते)** समीप में सेवन करता **(हि)** ही है और जो **(देवेषु)** श्रेष्ठ गुणयुक्तों में **(देवः)** प्रकाशमान **(गीर्भिः)** वाणियों से **(वः)** आप लोगों को **(वार्यम्)** स्वीकार करने योग्य व्यवहार **(अमृतम्)** कारणरूप से नाशरहित का सेवन करता है और जो **(हि)**



www.9009.co.in

निश्चित **(देवेषु)** पितृरूप विद्वानों में **(देवः)** दाता जन **(नः)** हम लोगों के लिये **(दुवः)** सेवन को **(वनते)** स्वीकार करता है उसका **(दुवस्यत)** सेवन करो उसका **(विवासत)** सेवन करो॥६॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! आप लोग जैसे विद्वान् का, वैसे अग्नि का भी मेल करावें, जिससे अभीष्ट कार्य्य सिद्ध होवे॥६॥

**पुनर्मनुष्यैः किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**समि॑द्धम॒ग्निं स॒मिधा॑ गि॒रा गृ॑णे॒ शुचिं॑ पाव॒कं पु॒रो अ॑ध्व॒रे ध्रु॒वम्।**

**विप्रं॒ होता॑रं पुरु॒वार॑म॒द्रुहं॑ क॒विं सु॒म्नैरी॑महे जा॒तवे॑दसम्॥७॥**

**सम्ऽइ॑द्धम्। अ॒ग्निम्। स॒म्ऽइधा॑। गि॒रा। गृ॒णे। शुचि॑म्। पा॒व॒कम्। पु॒रः। अ॒ध्व॒रे। ध्रु॒वम्। विप्र॑म्। होता॑रम्। पु॒रु॒ऽवार॑म्। अ॒द्रुह॑म्। क॒विम्। सु॒म्नैः। ई॒म॒हे॒। जा॒तऽवे॑दसम्॥७॥**

**पदार्थः**-**(समिद्धम्)** देदीप्यमानम् **(अग्निम्)** **(समिधा)** इन्धनेनेव **(गिरा)** वाण्या **(गृणे)** **(शुचिम्)** पवित्रम् **(पावकम्)** पवित्रकर्त्तारम् **(पुरः)** पुरस्तात् **(अध्वरे)** अहिंसामये यज्ञे **(ध्रुवम्)** निश्चलम् **(विप्रम्)** विद्याविनयाभयां धीमन्तम् **(होतारम्)** **(पुरुवारम्)** पुरुभिर्बहुभिर्विद्वद्भिः सत्कृतम् **(अद्रुहम्)** द्रोहरहितम् **(कविम्)** पूर्णविद्यम् **(सुम्नैः)** सुखैः **(ईमहे)** याचामहे **(जातवेदसम्)** जातविद्यम्॥७॥

**अन्वयः**-हे मनुष्याः! समिधा समिद्धमग्निमिव वर्त्तमानमध्वरे ध्रुवं शुचिं पावकं होतारं पुरुवारमद्रुहं जातवेदसं विप्रं गिरा पुरो गृणे कविमिव सुम्नैर्वयमीमहे तथा यूयमपि याचध्वम्॥७॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यूयं सत्यप्रकाशकेभ्यो विद्वद्भ्यो विद्यां याचध्वम्, एतां प्राप्यान्येभ्यो दत्त॥७॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(समिधा)** इन्धन के समान पदार्थ से **(समिद्धम्)** प्रकाशित हुए **(अग्निम्)** अग्नि को जैसे वैसे वर्त्तमान को **(अध्वरे)** अहिंसारूप यज्ञ में **(ध्रुवम्)** बहुत विद्वानों से सत्कार किये गये **(अद्रुहम्)** द्रोह से रहित **(जातवेदसम्)** प्रकट हुई विद्या जिसकी ऐसे **(विप्रम्)** विद्या और विनय से बुद्धिमान् को **(गिरा)** वाणी से **(पुरः)** आगे **(गृणे)** स्तुति करता हूँ **(कविम्)** पूर्ण विद्या से युक्त को जैसे वैसे **(सुम्नैः)** सुखों से हम लोग **(ईमहे)** याचना करें, वैसे आप लोग भी याचना करो॥७॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! आप लोग सत्य के प्रकाशक विद्वानों से विद्या की याचना करो तथा इस विद्या को प्राप्त होकर अन्यों को देओ॥७॥

**मनुष्यैः क उपासनीय इत्याह॥**

मनुष्यों से [=को] किसकी उपासना करने योग्य है, इस विषय को कहते हैं॥

**त्वां दू॒तम॑ग्ने अ॒मृतं॑ यु॒गेयु॑गे हव्य॒वाहं॑ दधिरे पा॒युमीड्य॑म्।**

**दे॒वास॑श्च॒ मर्ता॑सश्च॒ जागृ॑विं वि॒भुं वि॒श्पतिं॒ नम॑सा॒ नि षे॑दिरे॥८॥**



www.9009.co.in

त्वाम्। दूतम्। अग्ने। अमृतम्। युगेऽयुगे। हव्यऽवाहम्। दधिरे। पायुम्। ईड्यम्। देवासः। च। मर्त्तासः। च। जागृविम्। विऽभुम्। विश्पतिम्। नमसा। नि। सेदिरे॥८॥

**पदार्थः**-(**त्वाम्**) (**दूतम्**) यो दुःखानि दुनोति दूरीकरोति तम् (**अग्ने**) अग्निरिव स्वप्रकाशमान (**अमृतम्**) नाशरहितम् (**युगेयुगे**) वर्षे वर्षे सत्ययुगादौ वा (**हव्यवाहम्**) यो हव्यान्यादातुमर्हाणि वहति तत् (**दधिरे**) (**पायुम्**) पालकम् (**ईड्यम्**) स्तोतुमर्हम् (**देवासः**) विद्वांसः (**च**) योगिनः (**मर्त्तासः**) मरणधर्माणः (**च**) (**जागृविम्**) सदा जागरूकम् (**विभुम्**) व्यापकम् (**विश्पतिम्**) मनुष्यादिप्रजापालकम् (**नमसा**) (**नि**) (**सेदिरे**) निषीदन्ति॥८॥

**अन्वयः**-हे अग्ने भगवन्! युगेयुगे यं हव्यवाहमीड्यं पायुं विश्पतिं जागृविममृतं दूतं विभुं परमात्मानं त्वां देवासश्च मर्त्तासश्च नमसा दधिरे नि षेदिरे तं वयं दधीमहि तस्मिन्निषीदेम॥८॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यूयं प्रत्यहं सर्वव्यापिनं न्यायेशं दयालुं सर्वधन्यवादार्हं परमात्मानमेवोपासीध्वम्॥८॥

**पदार्थः**-हे (**अग्ने**) अग्नि के सदृश स्वयं प्रकाशमान भगवन्! (**युगेयुगे**) वर्ष वर्ष वा सत्ययुग आदि में जिस (**हव्यवाहम्**) ग्रहण करने योग्य पदार्थों को धारण करने वाले (**ईड्यम्**) स्तुति करने योग्य (**पायुम्**) पालन करने वाले (**विश्पतिम्**) मनुष्य आदि प्रजाओं के पालक (**जागृविम्**) सदा जागने वाले (**अमृतम्**) नाश से रहित (**दूतम्**) दुःखों के दूर करने वाले (**विभुम्**) व्यापक परमात्मा (**त्वाम्**) आपको (**देवासः**) विद्वान् (**च**) और योगी (**मर्त्तासः**) मरण धर्म्मवाले (**च**) भी (**नमसा**) सत्कार से (**दधिरे**) धारण और योगी (**मर्त्तासः**) मरण धर्म्मवाले (**च**) भी (**नमसा**) सत्कार से (**दधिरे**) धारण करें (**नि, सेदिरे**) स्थित होते हैं, उसको हम लोग धारण करें तथा उसमें स्थित होवें॥८॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! आप लोग प्रतिदिन सर्वव्यापी, न्यायेश, दयालु, सब धन्यवादों के योग्य, परमात्मा ही की उपासना करो॥८॥

**पुनः स ईश्वर उपासितः किं करोतीत्याह॥**

फिर वह उपासित ईश्वर क्या करता है, इस विषय को कहते हैं॥

**विभूषन्नग्न उभयाँ अनु व्रता दूतो देवानां रजसी समीयसे।**
**यत्ते धीतिं सुमतिमावृणीमहेऽध स्मा नस्त्रिवरूथः शिवो भव॥९॥**

विऽभूषन्। अग्ने। उभयान्। अनु। व्रता। दूतः। देवानाम्। रजसी इति। सम्। ईयसे। यत्। ते। धीतिम्। सुऽमतिम्। आऽवृणीमहे। अध। स्म। नः। त्रिऽवरूथः। शिवः। भव॥९॥

**पदार्थः**-(**विभूषन्**) अलं कुर्वन् (**अग्ने**) सर्वदुःखदाहक परमेश्वर (**उभयान्**) विद्वदविद्वन्मनुष्यान् (**अनु**) (**व्रता**) कर्म्माणि (**दूतः**) यो दोषान् दुनोति दूरीकरोति धर्म्मार्थमोक्षान् प्रापयति वा (**देवानाम्**) विदुषाम् (**रजसी**) द्यावापृथिव्यौ (**सम्**) (**ईयसे**) व्याप्नोषि (**यत्**) यस्य (**ते**) तव (**धीतिम्**) धारणां धियं



www.9009.co.in

वा **(सुमतिम्)** शोभनां प्रज्ञाम्। **(आवृणीमहे)** स्वीकुर्महे **(अध)** अथ **(स्मा)** एव। अत्र **निपातस्य चे**ति दीर्घः। **(नः)** अस्मभ्यम् **(त्रिवरूथः)** त्रीण्युत्तममध्यमनिकृष्टानि वरूथा गृहाणीव निवासस्थानानि यस्य सः। **(शिवः)** मङ्गलकारी **(भव)**॥९॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! यस्त्वं रजसी देवानां दूतः सन् व्रता विभूषन्नुभयान् मनुष्याननु विभूषन् रजसी समीयसे यत्ते धीतिं सुमतिं वयमावृणीमहे सोऽध त्रिवरूथस्त्वं नः शिवः स्मा भव॥९॥

**भावार्थः**-ये मनुष्या जगत्स्रष्टुरीश्वरस्याज्ञामनुवर्त्तन्ते तस्य गुणकर्म्मस्वभावैः सदृशान्स्वगुणकर्म्मस्वभावान् कुर्वन्ति तान् स दूत इव सर्वविद्यासमाचारं बोधयन् सहजतया मुक्तिपदं नयति तस्मात् सर्वदेवाऽयमुपासनीयोऽस्ति॥९॥

**पदार्थः**-हे **(अग्ने)** सम्पूर्ण दुःखों को जलाने अर्थात् दूर करने वाले परमेश्वर! जो आप **(रजसी)** अन्तरिक्ष और पृथिवी को **(देवानाम्)** विद्वानों के **(दूतः)** दोषों को दूर करने अथवा धर्म्म, अर्थ और मोक्ष को प्राप्त करानेवाले होते हुए **(व्रता)** कर्मों को **(विभूषन्)** शोभित करते और **(उभयान्)** विद्वान् और अविद्वान् मनुष्यों को **(अनु)** पीछे शोभित करते हुए अन्तरिक्ष और पृथिवी को **(सम्, ईयसे)** व्याप्त होते हैं और **(यत्)** जिस **(ते)** आपकी **(धीतिम्)** धारणा वा बुद्धि को **(सुमतिम्)** श्रेष्ठ बुद्धि को हम लोग **(आवृणीमहे)** स्वीकार करें वह **(अध)** इसके अनन्तर **(त्रिवरूथः)** तीन उत्तम, मध्यम, निकृष्ट गृहों के सदृश निवासस्थान वाले आप **(नः)** हम लोगो के लिये **(शिवः)** कल्याणकारी **(स्मा)** ही **(भव)** हूजिये॥९॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य जगत् के रचनेवाले ईश्वर की आज्ञा के अनुकूल वर्त्ताव करते हैं तथा उसके गुण, कर्म्म और स्वभावों के सदृश अपने गुण, कर्म्म और स्वभावों को करते हैं, उनको वह जैसे दूत, वैसे सब विद्या के समाचार को जनाता हुआ सहज से मुक्ति के पद को प्राप्त कराता है, इससे सब काल में ही इसकी उपासना करनी चाहिये॥९॥

**पुनस्तज्ज्ञानोपासने आवश्यके भवत इत्याह॥**

फिर उसका ज्ञान और उपासना आवश्यक है, इस विषय को कहते हैं॥

**तं सुप्रतीकं सुदृशं स्वञ्चमविद्वांसो विदुष्टरं सपेम।**

**स यक्षद्विश्वा वयुनानि विद्वान् प्र हव्यमग्निरमृतेषु वोचत्॥१०॥१८॥**

**तम्। सुऽप्रतीकम्। सुऽदृशम्। सुऽअञ्चम्। अविद्वांसः। विदुःऽतरम्। सपेम। सः। यक्षत्। विश्वा। वयुनानि। विद्वान्। प्र। हव्यम्। अग्निः। अमृतेषु। वोचत्॥१०॥**

**पदार्थः**-**(तम्)** **(सुप्रतीकम्)** शोभनानि प्रतीकानि कृतानि येन तम् **(सुदृशम्)** योगाभ्यासेन द्रष्टुं योग्यं सुष्ठु दर्शकं वा **(स्वञ्चम्)** यः सुष्ठ्वञ्चति जानाति प्रापयति वा तम् **(अविद्वांसः)** **(विदुष्टरम्)** अतिशयितमीश्वरम् **(सपेम)** आक्रुश्येम **(सः)** **(यक्षत्)** सङ्गमयेत् **(विश्वा)** सर्वाणि **(वयुनानि)** प्रज्ञानानि



www.9009.co.in

**(विद्वान्)** आविर्विद्यः **(प्र)** **(हव्यम्)** दातुमर्हं विज्ञानम् **(अग्निः)** अग्निरिव प्रकाशमानः **(अमृतेषु)** नाशरहितेषु कारणजीवेषु **(वोचत्)** वक्ति॥१०॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! येऽविद्वांसस्तं सुप्रतीकं सुदृशं स्वञ्चं विदुष्टरं न विजानन्ति नोपासन्ते तान् वयं सपेम। यो विद्वानग्निर्विश्वा वयुनान्यमृतेषु हव्यञ्च प्र वोचत् सोऽस्मान् यक्षत्॥१०॥

**भावार्थः**-ये परमात्मानं नो जानन्ति तदाज्ञानुकूलं नाचरन्ति तान् धिग्धिग्ये च तमुपासते ते धन्याः। योऽस्मान् वेदद्वारा सर्वाणि विज्ञानान्युपदिशति तमेव वयं सर्व उपासीमहि॥१०॥

**पदार्थः**–हे मनुष्यो! जो **(अविद्वांसः)** विद्या से रहित जन **(तम्)** उस **(सुप्रतीकम्)** सुन्दर कर्म्म किये जिसने तथा **(सुदृशम्)** योगाभ्यास से देखने योग्य वा उत्तम प्रकार दिखाने और **(स्वञ्चम्)** अच्छे प्रकार जानने वा प्राप्त करानेवाले **(विदुष्टरम्)** अत्यन्त विद्वान् ईश्वर को नहीं विशेष करके जानते और न उपासना करते हैं उनको हम लोग **(सपेम)** शाप देते हैं और जो **(विद्वान्)** प्रकट विद्याओं से युक्त **(अग्निः)** अग्नि के समान स्वयं प्रकाशित हुआ **(विश्वा)** सम्पूर्ण **(वयुनानि)** प्रज्ञानों और **(अमृतेषु)** नाशरहित कारण जीवों में **(हव्यम्)** देने योग्य विज्ञान को **(प्र, वोचत्)** अत्यन्त कहता है **(सः)** वह हम लोगों को **(यक्षत्)** प्राप्त करावे॥१०॥

**भावार्थः**-जो परमात्मा को नहीं जानते और उसकी आज्ञा के अनुकूल आचरण नहीं करते हैं, उनको धिक् है धिक् है और जो उसकी उपासना करते हैं, वे धन्य हैं। और जो हम लोगों के लिये वेदद्वारा सम्पूर्ण विज्ञानों का उपदेश देता है, उसी की हम सब लोग उपासना करें॥१०॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**तमग्ने पास्युत तं पिपर्षि यस्त आनट् कवये शूर धीतिम्।**

**यज्ञस्य वा निशितिं वोदितिं वा तमित्पृणक्षि शवसोत राया॥११॥**

**तम्। अग्ने। पासि। उत। तम्। पिपर्षि। यः। ते। आनट्। कवये। शूर। धीतिम्। यज्ञस्य। वा। निऽशितिम्। वा। उत्ऽइतिम्। वा। तम्। इत्। पृणक्षि। शवसा। उत। राया॥११॥**

**पदार्थः**-**(तम्)** **(अग्ने)** अविद्यान्धकारविनाशक **(पासि)** रक्षसि **(उत)** अपि **(तम्)** **(पिपर्षि)** पालयसि सद्गुणैः पूरयसि वा **(यः)** **(ते)** तव **(आनट्)** व्याप्नोति **(कवये)** विदुषे **(शूर)** निर्भय दुष्टदोषविनाशक **(धीतिम्)** धारणाम् **(यज्ञस्य)** **(वा)** **(निशितिम्)** नितरां तीक्ष्णताम् **(वा)** **(उदितिम्)** उदयम् **(वा)** **(तम्)** **(इत्)** एव **(पृणक्षि)** सम्बध्नासि **(शवसा)** बलेन **(उत)** अपि **(राया)** धनेन॥११॥

**अन्वयः**-हे शूराग्ने! यस्त आज्ञामानट् तस्मै कवये धीतिं ददासि तं पास्युत तं पिपर्षि वा यज्ञस्य निशितिम् [उदितिम्] वा पृणक्षि तं वा शवसोत राया सह पृणक्षि स इद्भवानुपास्योऽस्ति॥११॥



www.9009.co.in

**भावार्थ:**-ये सत्यभावेन जगदीश्वरमुपासते तानीश्वर: सर्वत: संरक्ष्य धर्म्यगुणकर्म्मस्वभावेषु प्रेरयित्वा शरीरात्मबलं प्रदाय मोक्षं नयति॥११॥

**पदार्थ:**−हे **(शूर)** भयरहित दुष्ट दोषों के विनाश करने और **(अग्ने)** अविद्यारूप अन्धकार के नाश करने वाले **(य:)** जो **(ते)** आपकी आज्ञा को **(आनट्)** व्याप्त होता है उस **(कवये)** विद्वान् के लिये **(धीतिम्)** धारणा को देते हो **(तम्)** उसकी **(पासि)** रक्षा करते हो **(उत)** और **(तम्)** उसकी **(पिपर्षि)** पालना करते वा श्रेष्ठ गुणों से पूरित करते हो **(वा)** वा **(यज्ञस्य)** यज्ञ की **(निशितिम्)** अत्यन्त तीक्ष्णता का वा **(उदितिम्)** उदय का **(वा)** वा **(पृणक्षि)** सम्बन्ध करते हो **(तम्)** उसका **(वा)** वा **(शवसा)** बल से **(उत)** और **(राया)** धन से भी सम्बन्ध करते हो वह **(इत्)** ही आप उपासना करने योग्य हैं॥११॥

**भावार्थ:**-जो सत्यभाव से जगदीश्वर की उपासना करते हैं, उनकी ईश्वर सब प्रकार से रक्षा कर धर्म्मयुक्त गुण, कर्म और स्वभावों में प्रेरणा कर तथा शरीर और आत्मा का बल अच्छे प्रकार देकर मोक्ष को प्राप्त कराता है॥११॥

**पुनरीश्वर: किमर्थमुपासनीय इत्याह॥**

फिर ईश्वर किस निमित्त उपासना करने योग्य है, इस विषय को कहते हैं॥

**त्वम॑ग्ने वनुष्य॒तो नि पा॑हि॒ त्वमु॑ न: सहसावन्नव॒द्यात्।**

**सं त्वा॑ ध्वस्म॒न्वद॒भ्ये॑तु॒ पाथ॒: सं र॒यि: स्पृ॑ह॒याय्य॑: सह॒स्री॥१२॥**

त्वम्। अ॒ग्ने॒। व॒नु॒ष्य॒त:। नि। पा॒हि। त्वम्। ऊँ इति॑। न॒:। स॒ह॒सा॒ऽव॒न्। अ॒व॒द्यात्। सम्। त्वा॒। ध्व॒स्म॒न्ऽवत्। अ॒भि। ए॒तु॒। पाथ॑:। सम्। र॒यि:। स्पृ॒ह॒याय्य॑:। स॒ह॒स्री॥१२॥

**पदार्थ:**-**(त्वम्)** **(अग्ने)** शुभगुणप्रदात: **(वनुष्यत:)** याचमानान् **(नि)** **(पाहि)** नित्यं रक्ष **(त्वम्)** **(उ)** **(न:)** अस्मान् **(सहसावन्)** अमितबलयुक्त **(अवद्यात्)** निन्द्याचरणात् **(सम्)** **(त्वा)** त्वाम् **(ध्वस्मन्वत्)** ध्वंसवन् **(अभि)** **(एतु)** प्राप्नोतु **(पाथ:)** अन्नादिकम् **(सम्)** **(रयि:)** श्री: **(स्पृहयाय्य:)** **(सहस्री)** सहस्रं सर्वं सुखमस्मिन्निति स:॥१२॥

**अन्वय:**-हे सहसावन्नग्ने! त्वं वनुष्यतो नोऽस्मानवद्यात्त्वं नि पाहि य: स्पृहयाय्य: सहस्री रयिर्यद्ध्वस्मन्वत् पाथश्चाऽस्मान्त्समभ्येतु तद्वन्तो वयमु त्वा त्वां समुपास्महि॥१२॥

**भावार्थ:**-हे मनुष्या! यो धर्मेण याचितो जगदीश्वरोऽधर्म्माचरणात् पृथक्कृत्य धर्मं प्रापयति यो ह्यनित्यमपि सुखं प्रयच्छति तमेव रक्षकं सर्वैश्वर्य्यप्रदमिष्टदेवं विजानीत॥१२॥

**पदार्थ:**−हे **(सहसावन्)** अत्यन्त बलयुक्त **(अग्ने)** श्रेष्ठ गुणों के देनेवाले **(त्वम्)** आप **(वनुष्यत:)** याचना करते हुए **(न:)** हम लोगों की **(अवद्यात्)** निन्द्य आचरण से **(त्वम्)** आप **(नि, पाहि)** नित्य रक्षा करिये और जो **(स्पृहयाय्य:)** स्पृहा कराने योग्य **(सहस्री)** सम्पूर्ण सुख जिसमें वह



www.9009.co.in

(**रयिः**) धन और जो (**ध्वस्मन्वत्**) नाशवाला (**पाथः**) अन्न आदि हम लोगों को (**सम्, अभि, एतु**) उत्तम प्रकार प्राप्त हो, उससे युक्त हम लोग (**उ**) भी (**त्वा**) आपको (**सम्**) अच्छे प्रकार उपासना करें॥१२॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो धर्म्म से याचना किया गया जगदीश्वर अधर्म के आचरण से अलग करके धर्म्म को प्राप्त कराता है और जो अनित्य सुख को भी देता है, उसी को रक्षक, सब ऐश्वर्य्य देनेवाला तथा इष्ट देव जानो॥१२॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**अ॒ग्निर्होता॑ गृ॒हप॑ति॒: स राजा॒ विश्वा॑ वेद॒ जनि॑मा जा॒तवे॑दाः।**
**दे॒वाना॑मु॒त यो मर्त्या॑नां॒ यजि॑ष्ठ॒: स प्र य॑जतामृ॒तावा॑॥१३॥**

**अ॒ग्निः। होता॑। गृ॒हऽप॑तिः। सः। राजा॑। विश्वा॑। वे॒द॒। जनि॑मा। जा॒तऽवे॑दाः। दे॒वाना॑म्। उ॒त। यः। मर्त्या॑नाम्। यजि॑ष्ठः। सः। प्र। य॒ज॒ता॒म्। ऋ॒तऽवा॑॥१३॥**

**पदार्थः**-(**अग्निः**) सर्वप्रकाशकः (**होता**) धर्त्ता (**गृहपतिः**) गृहस्य पालक इव ब्रह्माण्डस्य प्रबन्धकर्त्ता (**सः**) (**राजा**) सर्वेषां न्यायकर्त्ता (**विश्वा**) सर्वाणि (**वेद**) जानाति (**जनिमा**) जन्मानि (**जातवेदाः**) यो जातान्त्सर्वान् वेत्ति सः (**देवानाम्**) दिव्यानां पदार्थानां विदुषां वा मध्ये (**उत**) अपि (**यः**) (**मर्त्यानाम्**) सङ्गमयतु (**ऋतावा**) सत्यासत्ययोर्विभाजकः॥१३॥

**अन्वयः**-हे विद्वांसो! यो गृहपतिरिव होता जातवेदाः सर्वस्य राजा ऋतावा यजिष्ठोऽग्निर्देवानामुत मर्त्यानां विश्वा जनिमा वेद सोऽस्मान् प्र यजतां सोऽस्माकं राजास्त्विति वयं निश्चिनुमस्तथा यूयमप्यवगच्छत॥१३॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! योऽखिलस्य जगतो जीवानां च कर्म्माणि विदित्वा फलानि प्रयच्छति स एव सत्यो राजास्तीति वेदितव्यम्॥१३॥

**पदार्थः**-हे विद्वानो! (**यः**) जो (**गृहपतिः**) गृह का पालक जैसे वैसे ब्रह्माण्ड का प्रबन्ध करने (**होता**) धारण करने तथा (**जातवेदाः**) प्रकट हुए पदार्थों को जाननेवाला और सब का (**राजा**) न्याय करने तथा (**ऋतावा**) सत्य और असत्य का विभाग करने (**यजिष्ठः**) अतिशय यज्ञ करने वा पदार्थों का मेल करनेवाला (**अग्निः**) सब का प्रकाशक (**देवानाम्**) दिव्य पदार्थों वा विद्वानों के मध्य में (**उत**) (**मर्त्यानाम्**) मनुष्यों के (**विश्वा**) सम्पूर्ण (**जनिमा**) जन्मों को (**वेद**) जानता है (**सः**) वह हम लोगों को (**प्र, यजताम्**) अत्यन्त प्राप्त करावे (**सः**) वह हम लोगों का राजा होवे, ऐसा हम लोग निश्चय करते हैं, वैसे आप लोग भी जानो॥१३॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो सम्पूर्ण जगत् और जीवों के कर्म्मों को जानकर फलों को देता है, वही सत्य राजा है, ऐसा जानना चाहिये॥१३॥

**पुनः स जगदीश्वरः कीदृशोऽस्तीत्याह॥**



www.9009.co.in

फिर वह जगदीश्वर कैसा है, इस विषय को कहते हैं॥

**अग्ने यद॒द्य वि॒शो अ॑ध्वरस्य होत॒: पाव॑कशोचे॒ वेष्ट्वं हि यज्वा॑।**

**ऋ॒ता य॑जासि महि॒ना वि यद्भूर्ह॒व्या व॑ह यविष्ठ॒ या ते॑ अ॒द्य॥ १४॥**

**अग्ने॑। यत्। अ॒द्य। वि॒शः। अ॒ध्व॒रस्य॒। हो॒त॒रिति॑। पाव॑कऽशोचे। वेः। त्वम्। हि। यज्वा॑। ऋ॒ता। य॒जा॒सि॒। म॒हि॒ना। वि। यत्। भूः। ह॒व्या। व॒ह॒। य॒वि॒ष्ठ॒। या। ते॒। अ॒द्य॥ १४॥**

**पदार्थः**-(**अग्ने**) सर्वप्रजापीडानिवारक (**यत्**) यः (**अद्य**) इदानीम् (**विशः**) मनुष्यादिप्रजायाः (**अध्वरस्य**) अहिंसामयस्य (**होतः**) दातः (**पावकशोचे**) पवित्र प्रकाशक (**वेः**) विहगस्य पक्षिण इव (**त्वम्**) (**हि**) (**यज्वा**) सङ्गन्ता (**ऋता**) ऋते सत्यसुखप्रापके यज्ञे (**यजासि**) यजेः (**महिना**) महिम्ना (**वि**) (**यत्**) यः (**भूः**) भवेः (**हव्या**) दातुमर्हाणि (**वह**) (**यविष्ठ**) अतिशयेन सङ्गमयिता विभाजको वा (**या**) यानि (**वस्तूनि**) (**ते**) तव (**अद्य**)॥ १४॥

**अन्वयः**-हे पावकशोचे होतर्यविष्ठाग्ने! यद्यो यज्वा त्वं ह्यद्य विशो वेरध्वरस्यर्त्ता यजासि यद्यस्त्वं महिना वि भूर्या ते वर्त्तमानेऽद्य सन्ति तानि हव्याऽस्मदर्थं वह॥ १४॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यः सर्वां सृष्टिं सङ्गतां करोति यो विभुरहिंसादिधर्म्मस्याऽनुष्ठानायाऽऽज्ञां ददाति स हि सर्वैरुपास्योऽस्तीति॥ १४॥

**पदार्थः**-हे (**पावकशोचे**) पवित्र प्रकाश और (**होतः**) दान करने तथा (**यविष्ठ**) अतिशय मिलाने वा विभाग कराने और (**अग्ने**) सम्पूर्ण प्रजा की पीड़ाओं के दूर करनेवाले (**यत्**) जो (**यज्वा**) मेल करनेवाले (**त्वम्**) आप (**हि**) निश्चय से (**अद्य**) इस समय (**विशः**) मनुष्य आदि प्रजा के (**वेः**) आकाशगन्ता पक्षी के समान (**अध्वरस्य**) अहिंसामय के (**ऋता**) सत्य सुख के प्राप्त करानेवाले यज्ञ में (**यजासि**) यजन करते हो (**यत्**) जो आप (**महिना**) महत्त्व से (**वि**) विशेष करके (**भूः**) होवें और (**या**) जो वस्तुएँ (**ते**) आपके वर्त्तमान में (**अद्य**) इस समय हैं उन (**हव्या**) देने योग्यों को हम लोगों के लिये (**वह**) प्राप्त करिये॥ १४॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो सम्पूर्ण सृष्टि को एकत्रित करता है और जो व्यापक अहिंसा आदि धर्म्म के अनुष्ठान के लिये आज्ञा देता है, वह ही सब से उपासना करने योग्य है॥ १४॥

**पुनर्मनुष्यैः किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**अ॒भि प्रयां॑सि सु॒धि॑ताननि॒ हि ख्यो नि त्वा॑ दधीत॒ रोद॑सी॒ यज॑ध्यै। अवा॑ नो मघव॒न् वाज॑साताव॒ग्ने॒ विश्वा॑नि दु॒रि॒ता त॑रेम॒ ता त॑रेम॒ तवाव॑सा तरेम॥ १५॥ १९॥**

**अ॒भि। प्रयां॑सि। सुऽधि॑तानि। हि। ख्यः। नि। त्वा॒। द॒धी॒त॒। रोद॑सी॒ इति॑। यज॑ध्यै। अव॑। न॒ः। म॒घ॒ऽव॒न्। वाज॑ऽसातौ। अग्ने॑। विश्वा॑नि। दु॒ऽइ॒ता। त॒रे॒म॒। ता। त॒रे॒म॒। तव॑। अव॑सा त॒रे॒म॒॥ १५॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**अभि**) (**प्रयांसि**) कमनीयान्यन्नादीनि वस्तूनि (**सुधितानि**) सुष्ठु तृप्तिकराणि (**हि**) (**ख्यः**) प्रकथयसि (**नि**) (**त्वा**) (**दधीत**) धरेत् (**रोदसी**) द्यावापृथिव्यौ (**यजध्यै**) सङ्गन्तुम् (**अवा**) अत्र **निपातस्य चेति** दीर्घः। (**नः**) अस्मान् (**मघवन्**) परमपूजितधनयुक्त (**वाजसातौ**) सङ्ग्रामे (**अग्ने**) अतितेजस्विन् (**विश्वानि**) सर्वाणि (**दुरिता**) दुःखस्य प्रापकाणि पापानि (**तरेम**) उल्लङ्घेमहि (**ता**) तानि (**तरेम**) दुःखसागरस्य पारं गच्छेम (**तव**) (**अवसा**) रक्षणादिना (**तरेम**) सर्वान् दोषाँस्त्यजेम॥१५॥

**अन्वयः**-हे मघवन्नग्ने! यो भवान् सुधितानि प्रयांसि हि निदधीत त्वं विज्ञानान्यभि ख्यो भवान् यजध्यै रोदसी दधीत वाजसातौ नोऽस्मानवा यं त्वाऽऽश्रित्य वयं ता विश्वानि दुरिता तरेम तवावसा दुःखात् तरेम सततं तरेम॥१५॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! योऽन्नपानादीनि जीवनहितानि विदधात्यन्तर्य्यमितया सत्यमुपदिशति तदाश्रयेणैव सर्वेभ्यो दुःखेभ्यः पारं गच्छत॥१५॥

**पदार्थः**-हे (**मघवन्**) अत्यन्त श्रेष्ठ धन से युक्त (**अग्ने**) अतितेजस्वी जो आप (**सुधितानि**) उत्तम प्रकार तृप्ति करनेवाले (**प्रयांसि**) कामना करने योग्य अन्न आदि वस्तुओं को (**हि**) निश्चित (**नि, दधीत**) अच्छे प्रकार धारण करें और आप विज्ञानों को (**अभि, ख्यः**) सम्मुख कहते हो और आप (**यजध्यै**) मेल करने को (**रोदसी**) अन्तरिक्ष और पृथिवी को धारण करिये तथा (**वाजसातौ**) संग्राम में (**नः**) हम लोगों की (**अवा**) रक्षा करिये जिन (**त्वा**) आप का आश्रय करके हम लोग (**ता**) उन (**विश्वानि**) सम्पूर्ण (**दुरिता**) दुःख के प्राप्त कराने वाले पापों का (**तरेम**) उल्लंघन करें (**तव**) आपके (**अवसा**) रक्षण आदि से (**तरेम**) दुःखसागर के पार जावें और निरन्तर (**तरेम**) सम्पूर्ण दोषों का त्याग करें॥१५॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो अन्न और पानादिक जीवन के हितकारक पदार्थों को धारण करता अन्तर्यामी होने से सत्य का उपदेश करता, उसके आश्रय से ही सम्पूर्ण दुःखों के पार प्राप्त होओ॥१५॥

**पुनर्मनुष्यैः किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**अग्ने॒ विश्वे॑भिः स्वनीक दे॒वैरूर्णा॑वन्तं प्रथ॒मः सी॑द॒ योनि॑म्।**

**कु॒ला॒यिनं॑ घृ॒तव॑न्तं सवि॒त्रे य॒ज्ञं न॑य॒ यज॑मानाय सा॒धु॥१६॥**

**अग्ने॑। विश्वे॑भिः। सु॒ऽअ॒नी॒क॒। दे॒वैः। ऊर्णा॑ऽवन्तम्। प्र॒थ॒मः। सी॒द॒। योनि॑म्। कु॒ला॒यिन॑म्। घृ॒तऽव॑न्तम्। स॒वि॒त्रे। य॒ज्ञम्। न॒य॒। यज॑मानाय। सा॒धु॥१६॥**

**पदार्थः**-(**अग्ने**) विद्वन् (**विश्वेभिः**) सर्वैः (**स्वनीक**) शोभनान्यनीकानि सैन्यानि यस्य तत्सम्बुद्धौ (**देवैः**) विद्वद्भिर्वीरैर्वा (**ऊर्णावन्तम्**) बहूर्णादिवस्त्रयुक्तम् (**प्रथमः**) प्रख्यातः (**सीद**) (**योनिम्**) गृहम् (**कुलायिनम्**) गृहादिसामग्रीयुक्तम् (**घृतवन्तम्**) बहुघृतादिवन्तम् (**सवित्रे**) जगदुत्पादकाय (**यज्ञम्**) सङ्गतिमयं व्यवहारम् (**नय**) प्रापय (**यजमानाय**) सङ्गतिकरणविद्याविदे (**साधु**)॥१६॥



www.9009.co.in

**अन्वय:**-हे स्वनीकाग्ने राजन्! प्रथमस्त्वं विश्वेभिर्देवैस्सहोर्णावन्तं योनिं सीद सवित्रे यजमानाय कुलायिनं घृतवन्तं यज्ञं साधु नय॥१६॥

**भावार्थ:**-हे विद्वांसो! राजजना यूयं विद्वत्सहायेन न्यायगृहेषु स्थित्वा न्यायं कुरुत सर्वान् मनुष्यान् न्यायपथं नयत येन सर्वे सन्मार्गस्था: सन्त: परोपकारिण: स्यु:॥१६॥

**पदार्थ:**-हे **(स्वनीक)** सुन्दर सेना वाले **(अग्ने)** विद्वन् राजन् **(प्रथम:)** प्रसिद्ध आप **(विश्वेभि:)** सम्पूर्ण **(देवै:)** विद्वानों वा वीर पुरुषों के साथ **(ऊर्णावन्तम्)** बहुत ऊर्णा के वस्त्रों से युक्त **(योनिम्)** गृह में **(सीद)** वर्त्तमान हो **(सवित्रे)** संसार को उत्पन्न करने और **(यजमानाय)** पदार्थों के मिलानेरूप विद्या को जानने वाले के लिये **(कुलायिनम्)** गृह आदि सामग्री से और **(घृतवन्तम्)** बहुत घृत आदि पदार्थों से युक्त **(यज्ञम्)** संगतिस्वरूप व्यवहार को साधु उत्तम प्रकार **(नय)** प्राप्त कराइये॥१६॥

**भावार्थ:**-हे विद्यायुक्त राजजनो! आप लोग विद्वानों के सहाय से न्याय के गृहों में ठहर के न्याय करिये और सब मनुष्यों को न्यायमार्ग पर चलाइये, जिससे सब श्रेष्ठ मार्ग में स्थित होकर परोपकारी होवें॥१६॥

**पुनर्विद्युतं कस्मान्निस्सारयेयुरित्याह॥**

फिर बिजुली को किससे निकालें, इस विषय को कहते हैं॥

**इ॒मम॑ु॒ त्यम॑थर्व॒वद॒ग्निं म॑न्थन्ति वे॒धस॑:।**

**यम॑ङ्कू॒यन्त॒मान॑य॒न्नमू॑रं श्या॒व्या॑भ्य:॥१७॥**

**इ॒मम्। ऊँ॒ इति॑। त्यम्। अ॒थ॒र्व॒ऽवत्। अ॒ग्निम्। म॒न्थ॒न्ति॒। वे॒धस॑:। यम्। अ॒ङ्कु॒ऽयन्त॑म्। आ। अन॑यन्। अमू॑रम्। श्या॒व्या॑भ्य:॥१७॥**

**पदार्थ:**-**(इमम्)** प्रत्यक्षम् **(उ)** **(त्यम्)** परोक्षम् **(अथर्ववत्)** यथाऽथर्ववेदे मन्थनं विहितम् **(अग्निम्)** विद्युतम् **(मन्थन्ति)** **(वेधस:)** मेधाविनो विपश्चित: **(यम्)** **(अङ्कूयन्तम्)** यस्मिन्नङ्कूनि प्रसिद्धानि चिह्नानि प्राप्नुवन्ति। अत्र **संहितायामि**ति दीर्घ:। **(आ)** **(अनयन्)** नयन्ति **(अमूरम्)** अमूढम् **(श्याव्याभ्य:)** श्यावीषु रात्रिषु भवाभ्य: क्रियाभ्य:। **श्यावीति रात्रिनाम।** (निघं०१.७)॥१७॥

**अन्वय:**-हे मनुष्या! वेधस: श्याव्याभ्यो यमङ्कूयन्तमिममु त्यमग्निमथर्ववदमूरं मन्थन्ति कार्य्यसिद्धिमाऽऽनयंस्त यूयमपि मथित्वा कार्य्याणि साध्नुत॥१७॥

**भावार्थ:**-ये विद्वांसो भूम्यन्तरिक्षवाय्वाकाशसूर्य्यादिभ्यो मथित्वा विद्युतं नि:सारयन्ति तेऽनेकानि कार्य्याण्यलङ्कर्तुं शक्नुवन्ति॥१७॥

**पदार्थ:**-हे मनुष्यो! **(वेधस:)** बुद्धिमान् विद्वान् जन **(श्याव्याभ्य:)** रात्रियों में हुई क्रियाओं से **(यम्)** जिस **(अङ्कूयन्तम्)** प्रसिद्ध चिह्न प्राप्त होते जिसमें **(इमम्)** इस **(उ)** और **(त्यम्)** जो नहीं प्रत्यक्ष हुआ उस **(अग्निम्)** बिजुलीरूप अग्नि का **(अथर्ववत्)** जैसा अथर्ववेद में मन्थन कहा है, वैसे **(अमूरम्)**



www.9009.co.in

मूढ़ से भिन्न का **(मन्थन्ति)** मन्थन करते और कार्य्य की सिद्धि को **(आ, अनयन्)** अच्छे प्रकार प्राप्त करते हैं, उसका आप लोग भी मन्थन करके कार्य्यों को सिद्ध करिये॥१७॥

**भावार्थः**-जो विद्वान् जन भूमि, अन्तरिक्ष, वायु, आकाश और सूर्य्य आदि से मन्थन करके बिजुली को निकालते हैं, वे अनेक कार्य्यों के सिद्ध करने को समर्थ होते हैं॥१७॥

**मनुष्यैः सृष्टेः कः क उपकारो ग्रहीतव्य इत्याह॥**

मनुष्यों को सृष्टि से कौन-कौन उपकार ग्रहण करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**जनि॑ष्वा दे॒ववी॑तये स॒र्वता॑ता स्व॒स्तये॑।**

**आ दे॒वान् व॑क्ष्य॒मृताँ॑ ऋता॒वृधो॑ य॒ज्ञं दे॒वेषु॑ पिस्पृशः॥१८॥**

**जनि॑ष्व। दे॒वऽवी॑तये। स॒र्वऽता॑ता। स्व॒स्तये॑। आ। दे॒वान्। व॒क्षि। अ॒मृता॑न्। ऋ॒त॒ऽवृधः॑। य॒ज्ञम्। दे॒वेषु॑। पि॒स्पृ॒शः॥१८॥**

**पदार्थः**-**(जनिष्वा)** जनय। अत्र **संहितायामिति** दीर्घः। **(देववीतये)** दिव्यगुणप्राप्तये **(सर्वताता)** सर्वसुखकरे शिल्पमये यज्ञे **(स्वस्तये)** सुखलब्धये **(आ)** **(देवान्)** दिव्यान् गुणान् भोगान् वा **(वक्षि)** वह **(अमृतान्)** नाशरहितान् **(ऋतावृधः)** सत्यव्यवहारवर्धकान् **(यज्ञम्)** सुखप्रदम् **(देवेषु)** विद्वत्सु **(पिस्पृशः)** स्पर्शय॥१८॥

**अन्वयः**-हे विद्वंस्त्वं देववीतये स्वस्तये सर्वताताऽमृतानृतावृधो देवानाऽऽवक्षि देवेषु यज्ञं पिस्पृशोऽनेन सुखानि जनिष्वा॥१८॥

**भावार्थः**-विद्वद्भिः सृष्टिस्थपदार्थेभ्यो विद्यया दिव्यान् भोगान् प्राप्य स्वार्थं बहुविधं सुखं जननीयम्॥१८॥

**पदार्थः**-हे विद्वन्! आप **(देववीतये)** श्रेष्ठ गुणों की प्राप्ति के लिये और **(स्वस्तये)** सुख की प्राप्ति के लिये **(सर्वताता)** सम्पूर्ण सुख के करने वाले शिल्प=कारीगरीरूप यज्ञ में **(अमृतान्)** नाशरहित **(ऋतावृधः)** सत्यव्यवहार के बढ़ाने वाले **(देवान्)** श्रेष्ठ गुणों वा भोगों को **(आ, वक्षि)** प्राप्त कराइये और **(देवेषु)** विद्वानों में **(यज्ञम्)** सुख के देनेवाले यज्ञ का **(पिस्पृशः)** स्पर्श कराइये, इससे सुखों को **(जनिष्वा)** प्रकट कीजिये॥१८॥

**भावार्थः**-विद्वानों को चाहिये कि सृष्टि में वर्त्तमान पदार्थों से विद्या के द्वारा श्रेष्ठ भोगों को प्राप्त होकर अपने लिये अनेक प्रकार के सुख को उत्पन्न करें॥१८॥

**पुनर्गृहस्थैः कथं प्रयतितव्यमित्याह॥**

फिर गृहस्थों को कैसा प्रयत्न करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**व॒यमु॑ त्वा गृहपते जनाना॒मग्ने॒ अक॑र्म स॒मिधा॑ बृ॒हन्त॑म्।**

**अ॒स्थू॒रि नो॒ गार्ह॑पत्यानि सन्तु ति॒ग्मेन॑ न॒स्तेज॑सा॒ सं शि॑शाधि॥१९॥२०॥१॥**



www.9009.co.in

**वयम्। ॐ इति। त्वा। गृहऽपते। जनानाम्। अग्ने। अकर्म। सम्ऽइध्दा। बृहन्तम्। अस्थूरि। नः। गार्हऽपत्यानि। सन्तु। तिग्मेन। नः। तेजसा। सम्। शिशाधि॥ १९॥**

**पदार्थः**-(**वयम्**) (उ) (**त्वा**) त्वाम् (**गृहपते**) गृहस्य पालक (**जनानाम्**) मनुष्याणां मध्ये (**अग्ने**) अग्निवद्वर्त्तमान (**अकर्म्म**) कुर्य्याम (**समिधा**) प्रदीपकेन साधनेन (**बृहन्तम्**) महान्तम् (**अस्थूरि**) अस्थिरं यानम् (**नः**) अस्माकम् (**गार्हपत्यानि**) गृहपतिना संयुक्तानि कर्म्माणि (**सन्तु**) (**तिग्मेन**) तीव्रेण (**नः**) अस्मान् (**तेजसा**) (**सम्**) (**शिशाधि**) सम्यक्तया शिक्षय॥ १९॥

**अन्वयः**-हे गृहपतेऽग्ने! वयं जनानां मध्ये त्वाऽऽश्रित्य समिधाऽग्निं बृहन्तमकर्म्म। उ नोऽस्थूरि गार्हपत्यानि च यथा सिद्धानि सन्तु तथा तिग्मेन तेजसा त्वं नः सं शिशाधि॥ १९॥

**भावार्थः**-हे गृहस्था जना! यूयमालस्यं विहाय सृष्टिक्रमेण विद्योन्नतिं कृत्वाऽन्यान् विद्यार्थिनो विद्यां ग्राहयत येन सर्वाणि सुखानि वर्धेरन्निति॥ १९॥

अत्राऽग्निविद्वदीश्वरगृहस्थकृत्यवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति पञ्चदशं सूक्तं विंशो वर्गः षष्ठे मण्डले प्रथमोऽनुवाकश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे (**गृहपते**) गृहस्थों के पालन करने वाले (**अग्ने**) अग्नि के समान वर्त्तमान (**वयम्**) हम लोग (**जनानाम्**) मनुष्यों के मध्य में (**त्वा**) आपका आश्रय करके (**समिधा**) प्रदीपक साधन से अग्नि को (**बृहन्तम्**) बड़ा (**अकर्म्म**) करें (उ) और (**नः**) हम लोगों का (**अस्थूरि**) चलनेवाला वाहन और (**गार्हपत्यानि**) गृहपति से संयुक्त कर्म्म जिस प्रकार से सिद्ध (**सन्तु**) हों उस प्रकार से (**तिग्मेन**) तीव्र (**तेजसा**) तेज से आप (**नः**) हम लोगों को (**सम्, शिशाधि**) उत्तम प्रकार शिक्षा दीजिये॥ १९॥

**भावार्थः**-हे गृहस्थजनो! आप लोग आलस्य का त्याग करके सृष्टिक्रम से विद्या की उन्नति करके अन्य विद्यार्थियों को विद्या ग्रहण कराइये, जिससे सब सुख बढ़े॥ १९॥

इस सूक्त में अग्नि, विद्वान्, ईश्वर और गृहस्थ के कार्य्यों का वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह पन्द्रहवाँ सूक्त बीसवां वर्ग और छठे मण्डल का पहिला अनुवाक समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

**अथाष्टचत्वारिंशत्तमस्य षोडशस्य सूक्तस्य भरद्वाजो बार्हस्पत्य ऋषिः। अग्निर्देवता। १, ६, ७ आर्ची उष्णिक्छन्दः। ऋषभः स्वरः। २, ३, ४, ५, ९, ११, १३, १४, १५, १७, १८, २१, २४, २५, २८, ३१, ३२, ४०, ४३, ४५ निचृद्गायत्री। ८, १०, १९, २०, २२, २३, २९, ३४, ३५, ३६, ३७, ३८, ३९, ४१, गायत्री। २६, ३० विराड्गायत्रीछन्दः। षड्जः स्वरः। १२, १६, ३३, ४२, ४४ साम्नीत्रिष्टुप्। २७ आर्चीपङ्क्तिः। ४६ भुरिक्पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः। ४७, ४८ निचृदनुष्टुप् छन्दः। गान्धारः स्वरः॥**

***अथ विद्वान् किं कुर्य्यादित्याह॥***

अब अड़तालीस ऋचावाले सोलहवें सूक्त का प्रारम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में अब विद्वान् क्या करे, इस विषय को कहते हैं॥

**त्वम॑ग्ने य॒ज्ञानां॒ होता॒ विश्वे॑षां हि॒तः। दे॒वेभि॒र्मानु॑षे॒ जने॑॥१॥**

**त्वम्। अ॒ग्ने॒। य॒ज्ञाना॑म्। होता॑। विश्वे॑षाम्। हि॒तः। दे॒वेभिः॑। मानु॑षे। जने॑॥१॥**

**पदार्थः**-**(त्वम्)** **(अग्ने)** जगदीश्वर **(यज्ञानाम्)** सङ्गन्तव्यानां व्यवहाराणाम् **(होता)** दाता **(विश्वेषाम्)** सर्वेषाम् **(हितः)** हितकारी **(देवेभिः)** विद्वद्भिः सह **(मानुषे)** मनुष्याणामस्मिन् **(जने)** मनुष्ये॥१॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! यतस्त्वं यज्ञानां होता विश्वेषां हितोऽसि तस्माद्देवेभिर्मानुषे जने प्रेरको भव॥१॥

**भावार्थः**-हे विद्वांसो! यथेश्वरः सर्वेषां हितकारी सकलसुखदाता विद्वत्सङ्गेन ज्ञातव्योऽस्ति तथा यूयमप्यनुतिष्ठत॥१॥

**पदार्थः**-हे **(अग्ने)** जगदीश्वर! जिस कारण से **(त्वम्)** आप **(यज्ञानाम्)** प्राप्त होने योग्य व्यवहारों के **(होता)** देने वाले और **(विश्वेषाम्)** सब के **(हितः)** हितकारी हो इससे **(देवेभिः)** विद्वानों के साथ **(मानुषे)** मनुष्य-सम्बन्धी **(जने)** मनुष्य में प्रेरणा करने वाले होओ॥१॥

**भावार्थः**-हे विद्वानो! जैसे ईश्वर सब का हितकारी और सम्पूर्ण सुखों का देनेवाला तथा विद्वानों के संग से जानने योग्य है, वैसे आप लोग भी अनुष्ठान करो॥१॥

**पुनर्विद्वान् किं कुर्य्यादित्याह॥**

फिर विद्वान् क्या करें, इस विषय को कहते हैं॥

**स नो॑ म॒न्द्राभि॑रध्व॒रे जि॒ह्वाभि॑र्यजा म॒हः। आ दे॒वान् व॑क्षि॒ यक्षि॑ च॥२॥**

**सः। नः॒। म॒न्द्राभिः॑। अ॒ध्व॒रे। जि॒ह्वाभिः॑। य॒ज॒ इति॑। म॒हः। आ। दे॒वान्। व॒क्षि॒। यक्षि॑। च॒॥२॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-**(सः)** **(नः)** अस्मान् **(मन्द्राभिः)** आनन्दकारिकाभिः **(अध्वरे)** सर्वथाऽनुष्ठातव्ये धर्म्ये व्यवहारे **(जिह्वाभिः)** विद्याविनययुक्ताभिर्वाग्भिः। **जिह्वेति वाङ्नाम।** (निघं०१.११) **(यजा)** सङ्गमय। अत्र **द्व्यचोऽतस्तिङ** इति दीर्घः। **(महः)** महतः सत्कर्त्तव्यान् वा **(आ)** **(देवान्)** दिव्यान् गुणान् विदुषो वा **(वक्षि)** वह **(यक्षि)** सङ्गमय **(च)**॥२॥

**अन्वयः**-हे विद्वन्नग्ने! स त्वमध्वरे मन्द्राभिर्जिह्वाभिर्नोऽस्मान् यजा। महो देवानाऽऽवक्षि सर्वान् यक्षि च॥२॥

**भावार्थः**-विद्वांसो विद्याप्राप्तये सर्वान् सदोपदिशेयुर्येन प्राप्तदिव्यगुणा मनुष्या भवेयुः॥२॥

**पदार्थः**-हे विद्वन्! अग्नि के सदृश तेजस्वी **(सः)** वह आप **(अध्वरे)** सब प्रकार अनुष्ठान करने योग्य धर्म्मयुक्त व्यवहार में **(मन्द्राभिः)** आनन्द करने वाली **(जिह्वाभिः)** विद्या और विनय से युक्त वाणियों से **(नः)** हम लोगों को **(यजा)** प्राप्त कराइये और **(महः)** बड़े अथवा सत्कार करने योग्यों को और **(देवान्)** श्रेष्ठ गुणों वा विद्वानों को **(आ, वक्षि)** प्राप्त कराइये और सब को **(यक्षि, च)** भी प्राप्त कराइये॥२॥

**भावार्थः**-विद्वान् जन विद्या की प्राप्ति के लिये सब को सदा उपदेश देवें, जिससे श्रेष्ठ गुणों वाले मनुष्य होवें॥२॥

**क उपदेशं कर्त्तुमर्हेदित्याह॥**

कौन उपदेश करने योग्य होवे, इस विषय को कहते हैं॥

**वेत्था हि वेधो अध्वनः पथश्च देवाञ्जसा। अग्ने यज्ञेषु सुक्रतो॥३॥**

**वेत्थ। हि। वेधः। अध्वनः। पथः। च। देव। अञ्जसा। अग्ने। यज्ञेषु। सुक्रतो इति सुऽक्रतो॥३॥**

**पदार्थः**-**(वेत्था)** अत्र **द्व्यचोऽतस्तिङ** इति दीर्घः। **(हि)** यतः **(वेधः)** मेधाविन् **(अध्वनः)** मार्गान् **(पथः)** **(च)** **(देव)** विज्ञानप्रद **(अञ्जसा)** स्वच्छन्देन वेगवत्त्वेन **(अग्ने)** प्रकाशात्मन् **(यज्ञेषु)** विद्याधर्म्मप्रचाराख्येषु व्यवहारेषु **(सुक्रतो)** सुष्ठुप्रज्ञ उत्तमकर्म्मन् वा॥३॥

**अन्वयः**-हे सुक्रतो देव वेधोऽग्ने! हि त्वं यज्ञेष्वञ्जसाऽध्वनः पथश्च वेत्था तस्मादस्मान् वेदय॥३॥

**भावार्थः**-अस्मिन्त्संसारे ये धर्मार्थकाममोक्षमार्गाञ्जानीयुस्त एवान्यानुपदिशेयुर्नेतरेऽज्ञा जनाः॥३॥

**पदार्थः**-हे **(सुक्रतो)** उत्तम ज्ञान वा उत्तम कर्म्मयुक्त **(देव)** विज्ञान के देने वाले **(वेधः)** मेधावी **(अग्ने)** प्रकाशात्मा! **(हि)** जिससे आप **(यज्ञेषु)** विद्या और धर्म के प्रचार नामक व्यवहारों में **(अञ्जसा)** स्वतन्त्रतायुक्त वेगवालेपन से **(अध्वनः)** मार्गों को और **(पथः)** मार्गों को **(च)** भी **(वेत्था)** जानते हो इससे हम लोगों को जनाइये॥३॥

**भावार्थः**-इस संसार में जो मनुष्य धर्म्म, अर्थ, काम और मोक्ष के मार्गों को जानें, वे ही अन्यों को भी उपदेश देवें, न कि इतर अज्ञ जन॥३॥

**पुनर्मनुष्यैः किं कर्त्तव्यमित्याह॥**



www.9009.co.in

फिर मनुष्यों को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**त्वामी॑ळे॒ अध॑ द्वि॒ता भ॑र॒तो वा॒जिभि॑: शु॒नम्। ई॒जे य॒ज्ञेषु॑ य॒ज्ञिय॑म्॥४॥**

**त्वाम्। ई॒ळे॒। अध॑। द्वि॒ता। भ॒र॒तः। वा॒जिऽभि॑:। शु॒नम्। ई॒जे। य॒ज्ञेषु॑। य॒ज्ञिय॑म्॥४॥**

**पदार्थः**-(**त्वाम्**) विद्वांसम् (**ईळे**) प्रशंसामि (**अध**) आनन्तर्य्ये (**द्विता**) द्वयोरध्यापकाध्येत्रोरुपदेष्टुपदेश्ययोर्भावः (**भरतः**) धर्ता पोषकः (**वाजिभिः**) विज्ञानादिभिः (**शुनम्**) सुखम् (**ईजे**) यजामि (**यज्ञेषु**) सङ्गतिमयेषु (**यज्ञियम्**) यज्ञं कर्त्तुमर्हम्॥४॥

**अन्वयः**-हे विद्वन्! यथाऽहं यज्ञेषु यज्ञियं त्वामीळेऽध द्विता भरतोऽहं वाजिभिः शुनमीजे तथा त्वं यज॥४॥

**भावार्थः**-विद्वद्भिः परस्परैर्विद्योन्नतिं विधायाऽन्येभ्यो ग्राहयितव्या॥४॥

**पदार्थः**-हे विद्वन्! जैसे मैं (**यज्ञेषु**) समागमरूप यज्ञों में (**यज्ञियम्**) यज्ञ करने योग्य (**त्वाम्**) आप विद्वान् की (**ईळे**) प्रशंसा करता हूँ (**अध**) इसके अनन्तर (**द्विता**) दो पढ़ाने और पढ़ने वाले वा उपदेश करने वा उपदेश पाने योग्यों का (**भरतः**) धारण और पोषण करने वाला मैं (**वाजिभिः**) विज्ञानादिकों से (**शुनम्**) सुख की (**ईजे**) सङ्गति करता हूँ, वैसे आप सङ्गति कीजिये॥४॥

**भावार्थः**-विद्वानों को चाहिये कि परस्पर विद्या की उन्नति करके अन्यों को ग्रहण करावें॥४॥

**मनुष्याः कं सत्कुर्युरित्याह॥**

मनुष्य किसका सत्कार करें, इस विषय को कहते हैं॥

**त्वमि॒मा वार्या॑ पु॒रु दिवो॑दासाय सु॒न्व॒ते। भ॒रद्वा॑जाय दा॒शुषे॑॥५॥२१॥**

**त्वम्। इ॒मा। वार्या॑। पु॒रु। दिवः॑ऽदासाय। सु॒न्व॒ते। भ॒रत्ऽवा॑जाय। दा॒शुषे॑॥५॥**

**पदार्थः**-(**त्वम्**) (**इमा**) इमानि (**वार्य्या**) वार्य्याणि स्वीकर्त्तुमर्हाणि (**पुरु**) बहूनि (**दिवोदासाय**) कमनीयस्य पदार्थस्य दात्रे (**सुन्वते**) सोमौषध्यादिसिद्धिसम्पादकाय (**भरद्वाजाय**) धृतविज्ञानाय (**दाशुषे**) विज्ञानस्य दात्रे॥५॥

**अन्वयः**-हे विद्वन्! यतस्त्वं दिवोदासाय सुन्वते भरद्वाजाय दाशुष इमा पुरु वार्य्या ददासि तस्मात् प्रशंसनीयोऽसि॥५॥

**भावार्थः**-मनुष्यैस्सत्योपदेशका विद्याप्रचारकाश्च सदैव सत्कर्त्तव्या नेतरे॥५॥

**पदार्थः**-हे विद्वन्! जिस कारण से (**त्वम्**) आप (**दिवोदासाय**) कामना करने योग्य पदार्थ के देने और (**सुन्वते**) सोमलतारूप ओषधि आदि की सिद्धि करने वाले और (**भरद्वाजाय**) धारण किया विज्ञान जिसने उसके और (**दाशुषे**) विज्ञान के देने वाले के लिये (**इमा**) इन (**पुरु**) बहुत (**वार्य्या**) स्वीकार करने योग्यों को देते हो, इससे प्रशंसा करने योग्य हो॥५॥

**भावार्थः**-मनुष्यों को चाहिये कि सत्य के उपदेशकों और विद्या के प्रचारकों का सदा ही सत्कार करें, अन्य जनों का नहीं॥५॥



www.9009.co.in

**पुनर्विद्वद्भिः किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

फिर विद्वानों को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**त्वं दूतो अमर्त्य आ वहा दैव्यं जनम्। शृण्वन् विप्रस्य सुष्टुतिम्॥६॥**

**त्वम्। दूतः। अमर्त्यः। आ। वह। दैव्यम्। जनम्। शृण्वन्। विप्रस्य। सुऽस्तुतिम्॥६॥**

**पदार्थः**-(**त्वम्**) (**दूतः**) सर्वपदार्थविद्यासमाचारप्रज्ञापकः (**अमर्त्यः**) साधारणमनुष्यस्वभावविरुद्धः (**आ**) (**वहा**) समन्तात्प्रापय। अत्र **द्व्यचोऽतस्तिङ** इति दीर्घः (**दैव्यम्**) देवैः सम्पादितं विद्वांसम् (**जनम्**) प्रसिद्धम् (**शृण्वन्**) (**विप्रस्य**) मेधाविनः (**सुष्टुतिम्**) शोभनां प्रशंसाम्॥६॥

**अन्वयः**-हे विद्वनमर्त्यो दूतस्त्वं विप्रस्य सुष्टुतिं शृण्वन् दैव्यं जनमाऽऽवहा॥६॥

**भावार्थः**-हे परीक्षका! यूयं पक्षपातं विहाय विद्यार्थिनां यथावत्परीक्षां कृत्वा विदुषः सम्पादयत॥६॥

**पदार्थः**-हे विद्वन्! (**अमर्त्यः**) साधारण मनुष्यों के स्वभाव से विरुद्ध (**दूतः**) सम्पूर्ण पदार्थविद्याओं के समाचार के जनाने वाले (**त्वम्**) आप (**विप्रस्य**) बुद्धिमान् की (**सुष्टुतिम्**) सुन्दर प्रशंसा को (**शृण्वन्**) सुनते हुए (**दैव्यम्**) विद्वानों से सिद्ध किये गये विद्वान् (**जनम्**) जन को (**आ, वहा**) सब प्रकार से प्राप्त कराइये॥६॥

**भावार्थः**-हे परीक्षा करने वाले! आप लोग पक्षपात का त्याग करके विद्यार्थियों की यथावत् परीक्षा करके विद्यायुक्त कीजिये॥६॥

**पुनर्मनुष्यैः किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**त्वामग्ने स्वाध्यो३ मर्तासो देववीतये। यज्ञेषु देवमीळते॥७॥**

**त्वाम्। अग्ने। सुऽआध्यः। मर्तासः। देवऽवीतये। यज्ञेषु। देवम्। ईळते॥७॥**

**पदार्थः**-(**त्वाम्**) पूर्णविद्यमाप्तम् (**अग्ने**) विद्याविनयाभ्यां प्रकाशात्मन् (**स्वाध्यः**) ये सुष्ठु समन्ताद् ध्यायन्ति (**मर्त्तासः**) मनुष्याः (**देववीतये**) विद्यादिदिव्यगुणप्राप्तये (**यज्ञेषु**) अध्यापनाध्ययनोपदेशाख्येषु व्यवहारेषु (**देवम्**) विज्ञानप्रदम् (**ईळते**) स्तुवन्ति॥७॥

**अन्वयः**-हे अग्ने विद्वन्! यथा स्वाध्यो मर्त्तासो देववीतये यज्ञेषु त्वां देवमीळते तथा वयं प्रशंसेम॥७॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। विद्यार्थिभिर्विद्याप्राप्तये विद्वांसः सेवनीयाः। यथा सृष्टिपदार्थेष्वग्निः प्रशंसितोऽस्ति तथैव मनुष्येषु धार्मिका विद्वांसः सन्तीति वेद्यम्॥७॥

**पदार्थः**-हे (**अग्ने**) विद्या और विनय से प्रकाशात्मा विद्वन्! जैसे (**स्वाध्यः**) उत्तम प्रकार चारों ओर से ध्यान करने वाले (**मर्त्तासः**) मनुष्य (**देववीतये**) विद्या आदि श्रेष्ठ गुणों की प्राप्ति के लिये (**यज्ञेषु**)



www.9009.co.in

पढ़ाने पढ़ने और उपदेश नामक व्यवहारों में **(त्वाम्)** पूर्ण विद्यायुक्त यथार्थवक्ता आप **(देवम्)** विज्ञान के देने वाले की **(ईळते)** स्तुति करते हैं, उस प्रकार से हम लोग प्रशंसा करें॥७॥

**भावार्थ:**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। विद्यार्थियों को चाहिये कि विद्या की प्राप्ति के लिये विद्वानों का सेवन करें और जैसे सृष्टि के पदार्थों में अग्नि प्रशंसित है, वैसे ही मनुष्यों में धार्मिक विद्वान् हैं, यह जानना चाहिये॥७॥

**पुनरध्यापकाऽध्येतार: परस्परं कथं वर्त्तेरन्नित्याह॥**

फिर अध्यापक और पढ़नेवाले परस्पर कैसा वर्त्ताव करें, इस विषय को कहते हैं॥

**तव॒ प्र य॑क्षि सं॒दृश॑मु॒त क्रतुं॑ सु॒दान॑व:। विश्वे॑ जुषन्त का॒मिन॑:॥८॥**

**तव॑। प्र। य॒क्षि॒। स॒म्ऽदृश॑म्। उ॒त। क्रतु॑म्। सु॒ऽदान॑व:। विश्वे॑। जु॒ष॒न्त॒। का॒मिन॑:॥८॥**

**पदार्थ:**-**(तव)** विदुष: **(प्र)** **(यक्षि)** यज सङ्गमय **(सन्दशम्)** सम्यग्दर्शनम् **(उत)** **(क्रतुम्)** प्रज्ञां कर्म्म वा **(सुदानव:)** शोभनदाना: **(विश्वे)** सर्वे **(जुषन्त)** सेवन्ते **(कामिन:)** कामयितुं शीला:॥८॥

**अन्वय:**-हे विद्वन्! ये सुदानवो विश्वे कामिनो जनास्तव सन्दृशमुत क्रतुं जुषन्त तांस्त्वं तद्दानेन प्र यक्षि॥८॥

**भावार्थ:**-हे विद्वांसो! यथा विद्याकामा भवत: कामयन्ते तथैव भवन्तो विद्यार्थिन: कामयन्ताम्॥८॥

**पदार्थ:**–हे विद्वन्! जो **(सुदानव:)** श्रेष्ठ दान के दाता **(विश्वे)** सब **(कामिन:)** कामना करने वाले जन **(तव)** विद्वान् आपके **(सन्दृशम्)** अच्छे दर्शन **(उत)** और **(क्रतुम्)** बुद्धि वा कर्म्म का **(जुषन्तु)** सेवन करते हैं, उन का आप उसके दान से **(प्र, यक्षि)** मेल कराइये॥८॥

**भावार्थ:**-हे विद्वानो! जैसे विद्या की कामना करने वाले आप लोगों की कामना करते हैं, वैसे ही आप लोग विद्यार्थियों की कामना करो॥८॥

**पुना राजा प्रजासु कथं वर्तेतेत्याह॥**

फिर राजा प्रजाओं में कैसे वर्त्ताव करे, इस विषय को कहते हैं॥

**त्वं होता॒ मनु॑र्हितो॒ वह्नि॑रा॒सा वि॒दुष्ट॑र:। अग्ने॒ यक्षि॑ दि॒वो विश॑:॥९॥**

**त्वम्। होता॑। मनु॑:ऽहित:। वह्नि॑:। आ॒सा। वि॒दु:ऽत॑र:। अग्ने॑। यक्षि॑। दि॒व:। विश॑:॥९॥**

**पदार्थ:**-**(त्वम्)** **(होता)** दाता **(मनुर्हित:)** मनुष्याणां हितकारी **(वह्नि:)** वोढा पावक इव **(आसा)** मुखेन **(विदुष्टर:)** विज्ञानवत्तम: **(अग्ने)** विपश्चित् **(यक्षि)** यज सुखं सङ्गमय **(दिव:)** कामयमाना: **(विश:)** प्रजा:॥९॥

**अन्वय:**-हे अग्ने राजन्! वह्निरिव होता मनुर्हितो विदुष्टरस्त्वमासा दिवो विशो यक्षि॥९॥

**भावार्थ:**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कार:। हे प्रजाजना! यथा पार्थिवो युष्मान् कामयते सुखं दातुमिच्छति तथा यूयमपि तं कामयित्वा तस्मै सततं सुखं प्रयच्छत॥९॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-हे **(अग्ने)** विद्वन्! राजन् **(वह्निः)** प्राप्त करने वाला अग्नि जैसे वैसे **(होता)** दाता **(मनुर्हितः)** मनुष्यों के हितकारी **(विदुष्टरः)** अत्यन्त विज्ञानवाले **(त्वम्)** आप **(आसा)** मुख से **(दिवः)** कामना करती हुई **(विशः)** प्रजाओं को **(यक्षि)** सुखयुक्त करिये॥९॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे प्रजाजनो! जैसे राजा आप लोगों की कामना करता और सुख देने की इच्छा करता है, वैसे आप लोग भी उस राजा की कामना करके उसके लिये निरन्तर सुख दीजिये॥९॥

**पुनर्विद्वद्भिः किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

फिर विद्वानों को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**अग्न आ याहि वीतये गृणानो हव्यदातये। नि होता सत्सि बर्हिषि॥१०॥२२॥**

**अग्ने। आ। याहि। वीतये। गृणानः। हव्यऽदातये। नि। होता। सत्सि। बर्हिषि॥१०॥**

**पदार्थः**-**(अग्ने)** विद्वन् **(आ)** **(याहि)** आगच्छ **(वीतये)** विद्यादिशुभगुणव्याप्तये **(गृणानः)** स्तुवन् **(हव्यदातये)** दातव्यदानाय **(नि)** **(होता)** दाता **(सत्सि)** समवैषि **(बर्हिषि)** उत्तमायां सभायाम्॥१०॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! यतस्त्वं गृणानो होता बर्हिषि वीतये हव्यदातये निषत्सि तस्मादस्माकं समिधमाऽऽयाहि॥१०॥

**भावार्थः**-यत्र विद्वांसो विद्यावृद्धिं चिकीर्षन्ति तत्र सर्वे सुखिनो भवन्ति॥१०॥

**पदार्थः**-हे **(अग्ने)** विद्वन्! जिस कारण से आप **(गृणानः)** स्तुति करते हुए **(होता)** दाता **(बर्हिषि)** उत्तम सभा में **(वीतये)** विद्या आदि श्रेष्ठ गुणों की व्याप्ति के लिये और **(हव्यदातये)** देने योग्य के दान के लिये **(नि, सत्सि)** उत्तम प्रकार जानते हो इससे [हम] लोगों की उत्तम दीप्ति को **(आ, याहि)** सब प्रकार प्राप्त होओ॥१०॥

**भावार्थः**-जहाँ विद्वान् जन विद्या की वृद्धि करने की इच्छा करते हैं, वहाँ सब सुखी होते हैं॥१०॥

**पुनर्मनुष्याः परस्परं किं कुर्य्युरित्याह॥**

फिर मनुष्य परस्पर क्या करें, इस विषय को कहते हैं॥

**तं त्वा समिद्भिरङ्गिरो घृतेन वर्धयामसि। बृहच्छोचा यविष्ठ्य॥११॥**

**तम्। त्वा। समित्ऽभिः। अङ्गिरः। घृतेन। वर्धयामसि। बृहत्। शोच। यविष्ठ्य॥११॥**

**पदार्थः**-**(तम्)** **(त्वा)** त्वाम् **(समिद्भिः)** सम्यक्प्रदीपकैः **(अङ्गिरः)** विद्युदिव वर्त्तमान **(घृतेन)** आज्येन **(वर्धयामसि)** वर्धयामः **(बृहत्)** महत् **(शोचा)** विचारय। अत्र **द्व्यचोऽतस्तिङ** इति दीर्घः। **(यविष्ठ्य)** अतिशयेन युवसु साधो॥११॥

**अन्वयः**-हे यविष्ठयाङ्गिरो! यथर्त्विजः समिद्भिर्घृतेनाग्निं वर्धयन्ति तथा ज्ञानकारणोपदेशेन तं त्वा वयं वर्धयामसि त्वं बृहच्छोचा॥११॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। ये राजादयो जना घृतेनाग्निमिव शिक्षासत्काराभ्यां शूरान् वर्धयन्ति ते सदा विजयमाप्नुवन्ति॥११॥

**पदार्थः**-हे **(यविष्ठ्य)** अत्यन्त युवा जनों में साधु **(अङ्गिरः)** बिजुली के समान वर्त्तमान! जैसे यज्ञ करनेवाले जन **(समिद्भिः)** उत्तम प्रकार प्रकाशक समिध्‌रूप काष्ठों और **(घृतेन)** घृत से अग्नि की वृद्धि करते हैं, वैसे ज्ञान के कारण उपदेश से **(तम्)** उन **(त्वा)** आपकी हम लोग **(वर्धयामसि)** वृद्धि करते हैं और आप **(बृहत्)** बहुत **(शोचा)** विचारिये॥११॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार हैं। जो राजा आदि जन जैसे घृत से अग्नि की, वैसे शिक्षा और सत्कार से शूर जनों की वृद्धि करते हैं, वे सदा विजय को प्राप्त होते हैं॥११॥

**पुनर्मनुष्यैः परस्परं कथं वर्त्तितव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को परस्पर कैसा वर्त्ताव करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**स नः पृथु श्रवाय्यमच्छा देव विवासति। बृहदग्ने सुवीर्यम्॥१२॥**

**सः। नः। पृथु। श्रवाय्यम्। अच्छ। देव। विवासति। बृहत्। अग्ने। सुऽवीर्यम्॥१२॥**

**पदार्थः**-**(सः)** **(नः)** अस्मभ्यम् **(पृथु)** विस्तीर्णम् **(श्रवाय्यम्)** श्रोतुमर्हम् **(अच्छा)** अत्र **संहितायामिति** दीर्घः। **(देव)** विद्यादातः **(विवाससि)** परिचरसि **(बृहत्)** **(अग्ने)** अग्निरिव कार्य्यसाधक **(सुवीर्य्यम्)** सुबलम्॥१२॥

**अन्वयः**-हे देवोऽग्नेऽग्निरिव यतस्त्वं नः पृथु श्रवाय्यं बृहत्सुवीर्य्यमच्छा विवाससि तस्मात् स त्वं सत्कर्त्तव्योऽसि॥१२॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। ये यस्योपकारं कुर्वन्ति ते तस्य सत्कर्त्तव्या भवन्ति॥१२॥

**पदार्थः**-हे **(देव)** विद्या के देने वाले **(अग्ने)** अग्नि के समान कार्य्य के साधक! जैसे अग्नि वैसे जिस कारण से आप **(नः)** हम लोगों के लिये **(पृथु)** विस्तारयुक्त **(श्रवाय्यम्)** सुनने योग्य **(बृहत्)** बड़े **(सुवीर्य्यम्)** श्रेष्ठ बलयुक्त **(अच्छा)** अच्छे प्रकार **(विवाससि)** सेवा करते हो इससे **(सः)** वह आप सत्कार करने योग्य हो॥१२॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो जिसका उपकार करते हैं, वे उनके सत्कार करने योग्य होते हैं॥१२॥

**मनुष्यैः कस्मात्कस्माद्विद्युत्सङ्ग्राह्येत्याह॥**

मनुष्य किस-किससे बिजुली का ग्रहण करें, इस विषय को कहते हैं॥

**त्वामग्ने पुष्करादध्यथर्वा निरमन्थत। मूर्ध्नो विश्वस्य वाघतः॥१३॥**

**त्वाम्। अग्ने। पुष्करात्। अधि। अथर्वा। निः। अमन्थत। मूर्ध्नः। विश्वस्य। वाघतः॥१३॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः-(त्वाम्)** **(अग्ने)** **(पुष्करात्)** अन्तरिक्षात् **(अधि)** उपरि **(अथर्वा)** अहिंसकः **(निः)** **(अमन्थत)** मन्थन्ति **(मूर्ध्नः)** उपरि वर्त्तमानस्य **(विश्वस्य)** सर्वस्य जगतः **(वाघतः)** मेधाविनः॥१३॥

**अन्वयः**-हे अग्ने विद्वन्! यथा वाघतो विश्वस्य मूर्ध्नः पुष्करादध्यग्निं निरमन्थत तथाऽथर्वाऽहं त्वां प्रदीपयामि॥१३॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे विद्वांसो! यथा पदार्थविद्याविदो जनाः सूर्य्यादेः सकाशाद् विद्युतं गृहीत्वा कार्य्याणि साध्नुवन्ति तथैव यूयमपि साध्नुत॥१३॥

**पदार्थः**-हे **(अग्ने)** अग्नि के समान वर्त्तमान विद्वन्! जैसे **(वाघतः)** बुद्धिमान् जन **(विश्वस्य)** सम्पूर्ण जगत् के **(मूर्ध्नः)** ऊपर वर्त्तमान के **(पुष्करात्)** अन्तरिक्ष से **(अधि)** ऊपर अग्नि को **(निः, अमन्थत)** मथते हैं, वैसे **(अथर्वा)** अहिंसक मैं **(त्वाम्)** आपको प्रकाशित करता हूँ॥१३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे विद्वान् जनो! जैसे पदार्थविद्या के जाननेवाले जन सूर्य्य आदि के समीप से बिजुली को ग्रहण करके कार्य्यों को सिद्ध करते हैं, वैसे ही आप लोग भी सिद्ध करो॥१३॥

**पुनर्विद्वद्भिः किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

फिर विद्वानों को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**तमु॑ त्वा द॒ध्यङ् ऋषि॑: पु॒त्र ई॑धे॒ अथ॑र्वणः। वृ॒त्र॒हणं॑ पुरंद॒रम्॥१४॥**

**तम्। ऊँ इति॑। त्वा॒। द॒ध्यङ्। ऋषि॑:। पु॒त्रः। ई॒धे॒। अथ॑र्वणः। वृ॒त्र॒ऽहन॑म्। पु॒र॒म्ऽद॒रम्॥१४॥**

**पदार्थः-(तम्)** **(उ)** **(त्वा)** त्वाम् **(दध्यङ्)** यो धारकान् विदुषोऽञ्चति प्राप्नोति **(ऋषिः)** मन्त्रार्थवेत्ता **(पुत्रः)** तनयः **(ईधे)** प्रदीपयति **(अथर्वणः)** अहिंसकस्य **(वृत्रहणम्)** मेघहन्तारम् **(पुरन्दरम्)** यो मेघस्य पुराणि दृणाति॥१४॥

**अन्वयः**-हे विद्वन् राजंस्तमु वृत्रहणं पुरन्दरं सूर्य्यमिव त्वाऽथर्वणः पुत्रो दध्यङ् ऋषिरीधे तथा त्वं मां कुरु॥१४॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे विद्वांसो! यथेश्वरेण प्रकाशमयः सकलोपकारकः सूर्यो निर्मितस्तत्था विद्यया प्रकाशिताञ्जनान् विदुषः सम्पादयन्तु॥१४॥

**पदार्थः**-हे विद्वन् राजन् **(तम्, उ)** उन्हीं **(वृत्रहणम्)** मेघों के नाश करनेवाले **(पुरन्दरम्)** मेघों के पुरों को नाश करनेवाले सूर्य्य को जैसे वैसे **(त्वा)** आपको **(अथर्वणः)** नहीं हिंसा करनेवाले का **(पुत्रः)** पुत्र **(दध्यङ्)** धारण करनेवाले विद्वानों को प्राप्त होने और **(ऋषिः)** मन्त्र और अर्थ जानने वाला **(ईधे)** प्रदीप्त करता है, वैसे आप मुझ को करिये॥१४॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे विद्वान् जनो! जैसे ईश्वर ने प्रकाशस्वरूप और सम्पूर्ण जगत् का उपकारक सूर्य्य रचा है, वैसे विद्या से प्रकाशित जनों को विद्वान् करो॥१४॥



www.9009.co.in

**पुनर्मनुष्यैः किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**तमु त्वा पाथ्यो वृषा समीधे दस्युहन्तमम्। धनञ्जयं रणेरणे॥१५॥२३॥**

**तम्। ऊँ इति। त्वा। पाथ्यः। वृषा। सम्। ईधे। दस्युहन्ऽतमम्। धनम्ऽजयम्। रणेऽरणे॥१५॥**

**पदार्थः-(तम्)** (उ) **(त्वा)** त्वाम् **(पाथ्यः)** पथिषु भवः **(वृषा)** वर्षकस्सूर्य्य इव वीर्य्यसेचकः **(सम्) (ईधे)** प्रापयति **(दस्युहन्तमम्)** यो दस्यूनतिशयेन हन्ति तम् **(धनञ्जयम्)** धनं जयति तम् **(रणेरणे)** सङ्ग्रामे सङ्ग्रामे॥१५॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथा पाथ्यो वृषा दस्युहन्तमं रणेरणे धनञ्जयं तं त्वा समीधे तथा त्वं मामु समीधय॥१५॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यदि यूयं विद्युद्विद्यां प्राप्य युध्यध्वं तर्हि युष्माकं बहूधनैश्वर्य्यप्रदोऽहं विद्युदादिना विजयं कारयेयम्॥१५॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे **(पाथ्यः)** मार्गों में हुए **(वृषा)** वर्षानेवाले सूर्य्य के समान वीर्य्य का सींचने वाला **(दस्युहन्तमम्)** डाकुओं को अतिशय मारने वाले **(रणेरणे)** प्रत्येक संग्राम में **(धनञ्जयम्)** धन को जीते **(तम्)** उन **(त्वा)** आपको **(सम्, ईधे)** प्राप्त कराता है, वैसे आप मुझे को **(उ)** भी प्राप्त कराइये॥१५॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! यदि आप लोग बिजुली की विद्या को प्राप्त होकर युद्ध करो तो आप लोगों का बहुत धन और ऐश्वर्य्यों का देने वाला मैं बिजुली आदि से विजय कराऊँ॥१५॥

**पुनर्मनुष्यैः किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**एह्यू षु ब्रवाणि तेऽग्न इत्थेतरा गिरः। एभिर्वर्धास इन्दुभिः॥१६॥**

**आ। इहि। ऊँ इति। सु। ब्रवाणि। ते। अग्ने। इत्था। इतराः। गिरः। एभिः। वर्धासे। इन्दुऽभिः॥१६॥**

**पदार्थः-(आ) (इहि)** आगच्छ **(उ) (सु) (ब्रवाणि)** उपदिशानि **(ते)** तव **(अग्ने)** विद्वन् **(इत्था)** अनेन प्रकारेण **(इतराः)** अर्वाचीनाः **(गिरः)** वाचः **(एभिः) (वर्धासे)** वर्द्धसे **(इन्दुभिः)** सोमलताभिश्चन्द्रकिरणैर्वा॥१६॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! यैरेभिरिन्दुभिस्त्वं वर्धासे तैरेहीत्थेतरास्ते गिरस्सु ब्रवाणि त्वमु शृणु॥१६॥

**भावार्थः**-ये मनुष्या वयं विद्या अधीत्य सर्वानुपदिशेमेतीच्छन्ति तेऽस्मान् प्राप्नुवन्तु॥१६॥

**पदार्थः**-हे **(अग्ने)** विद्वन् जन **(एभिः)** इन **(इन्दुभिः)** सोमलताओं वा चन्द्रकिरणों से आप **(वर्धासे)** वृद्धि को प्राप्त होते हो उनसे **(आ, इहि)** प्राप्त हूजिये **(इत्था)** इस प्रकार से **(इतराः)** पीछे की **(ते)** आपकी **(गिरः)** वाणियों को **(सु, ब्रवाणि)** उत्तम प्रकार उपदेश करूं और आप **(उ)** तर्क वितर्क से सुनें॥१६॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-जो मनुष्य, हम लोग विद्याओं को पढ़कर सब को उपदेश देवें, इस प्रकार इच्छा करते हैं, वे हम लोगों को प्राप्त होवें॥१६॥

**मनुष्यैः कुत्र मनो धेयमित्याह॥**

मनुष्यों को कहाँ मन स्थित करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**यत्र क्वं च ते मनो दक्षं दधस उत्तरम्। तत्रा सदः कृणवसे॥१७॥**

**यत्रं। क्वं। च। ते। मनः। दक्षम्। दधसे। उत्ऽतरम्। तत्रं। सदः। कृणवसे॥१७॥**

**पदार्थः**-**(यत्र)** **(क्व)** कस्मिन् **(च)** **(ते)** तव **(मनः)** मननात्मकं चित्तम् **(दक्षम्)** बलम् **(दधसे)** **(उत्तरम्)** उत्तरन्ति येन तत् **(तत्रा)**। अत्र **ऋचि तुनुघे**ति दीर्घः। **(सदः)** सीदन्ति यस्मिंस्तत् **(कृणवसे)** करोषि॥१७॥

**अन्वयः**-हे विद्वन्! यत्र ते मन उत्तरं दक्षं च त्वं दधसे तत्रा सदः कृणवसे क्व वससीत्युत्तराणि वद॥१७॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यत्र जगदीश्वरे योगाभ्यासे वा युष्माकमन्तःकरणं पवित्रं भूत्वा कार्य्यसिद्धिं करोति तत्रैव यूयमपि प्रवर्त्तध्वम्॥१७॥

**पदार्थः**-हे विद्वन्! **(यत्र)** जहाँ **(ते)** आप का **(मनः)** विचारात्मक चित्त है और **(उत्तरम्)** पार होते हैं जिससे उस **(दक्षम्)** बल को **(च)** भी आप **(दधसे)** धारण करते हो **(तत्र)** वहाँ **(सदः)** स्थित होते हैं, जिसमें उसको **(कृणवसे)** करते हो तथा **(क्व)** कहाँ निवास करते हो, इस का उत्तर कहिये॥१७॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जहाँ जगदीश्वर वा योगाभ्यास में आप लोगों का अन्तःकरण पवित्र होकर कार्य्य की सिद्धि को करता है, वहाँ ही आप लोग भी प्रवृत्ति करिये॥१७॥

**मनुष्याणां कथमिच्छा सिध्यतीत्याह॥**

मनुष्यों की किस प्रकार से इच्छा सिद्ध होती है, इस विषय को कहते हैं॥

**नहि ते पूर्तमक्षिपद्भुवन्नेमानां वसो। अथा दुवो वनवसे॥१८॥**

**नहि। ते। पूर्तम्। अक्षिऽपत्। भुवत्। नेमानाम्। वसो इति। अथ। दुवः। वनवसे॥१८॥**

**पदार्थः**-**(नहि)** निषेधे **(ते)** तव **(पूर्त्तम्)** पूर्त्तिकरम् **(अक्षिपत्)** क्षिपति **(भुवत्)** भवेत् **(नेमानाम्)** अन्नानाम्। **नेम इत्यन्ननाम।** (निघं०२.७) **(वसो)** वासयितः **(अथा)** अत्र **निपातस्य चे**ति दीर्घः। **(दुवः)** परिचरणम् **(वनवसे)** सम्भज॥१८॥

**अन्वयः**-हे वसो! ते नेमानां पूर्तं कश्चिदपि नह्यक्षिपत्। नहि भुवत्तस्मादथा दुवो वनवसे॥१८॥

**भावार्थः**-ये मनुष्याः सत्याचारं कुर्वन्ति तेषां कामपूर्तिं कदापि न हन्यते॥१८॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-हे **(वसो)** वसाने वाले **(ते)** आपके **(नेमानाम्)** अन्नों के **(पूर्त्तम्)** पूर्ण करने वाले को मैं भी **(नहि)** नहीं **(अक्षिपत्)** फेंकता और नहीं **(भुवत्)** होवे, इससे **(अथा)** इसके अनन्तर **(दुवः)** सेवा को **(वनवसे)** स्वीकार करिये॥१८॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य सत्य आचरण को करते हैं, उनकी कामना की पूर्ति कभी भी नहीं नष्ट की जाती है॥१८॥

**अथाग्निः कीदृशोऽस्तीत्याह॥**

अब अग्नि कैसा है, इस विषय को कहते हैं॥

**आग्निरंगामि भारतो वृत्रहा पुरुचेतनः। दिवोदासस्य सत्पतिः॥१९॥**

**आ। अग्निः। अगामि। भारतः। वृत्रऽहा। पुरुऽचेतनः। दिवःऽदासस्य। सत्ऽपतिः॥१९॥**

**पदार्थः**-**(आ)** समन्तात् **(अग्निः)** अग्निरिव तेजस्वी **(अगामि)** गम्यते **(भारतः)** धर्ता पोषको वा **(वृत्रहा)** यो वृत्रं हन्ति सः **(पुरुचेतनः)** बहवश्चेतना यस्मिन् **(दिवोदासस्य)** प्रकाशदातुः **(सत्पतिः)**॥१९॥

**अन्वयः**-हे विद्वांसो! यो दिवोदासस्य भारतो वृत्रहा पुरुचेतनः सत्पतिरग्निः सूर्य्य आऽगामि तं वयं सेवेमहि॥१९॥

**भावार्थः**-यथाऽस्मिन् देहे साधनोपसाधनैः सहितो जीवो बहूनि कर्म्माणि करोति तथैव विद्वानखिलानि कर्म्माणि साध्नोति॥१९॥

**पदार्थः**-हे विद्वान् जनो! जो **(दिवोदासस्य)** प्रकाश के देनेवाले का **(भारतः)** धारण करने वा पोषण करने और **(वृत्रहा)** मेघ को नाश करने वाला **(पुरुचेतनः)** बहुत चेतन जिसमें वह **(सत्पतिः)** श्रेष्ठ स्वामी **(अग्निः)** अग्नि के सदृश तेजस्वी सूर्य्य **(आ, अगामि)** प्राप्त किया जाता है, उसका हम लोग सेवन करें॥१९॥

**भावार्थः**-जैसे इस देह में साधन और उपसाधनों के सहित जीव बहुत कर्म्मों को करता है, वैसे ही विद्वान् सम्पूर्ण कर्म्मों को सिद्ध करता है॥१९॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**स हि विश्वाति पार्थिवा रयिं दाशन्महित्वना। वन्वन्नवातो अस्तृतः॥२०॥२४॥**

**सः। हि। विश्वा। अति। पार्थिवा। रयिम्। दाशत्। महिऽत्वना। वन्वन्। अवातः। अस्तृतः॥२०॥**

**पदार्थः**-**(सः)** **(हि)** **(विश्वा)** सर्वाणि **(अति)** **(पार्थिवा)** पृथिव्यां विदितानि वस्तूनि **(रयिम्)** धनम् **(दाशत्)** **(महित्वना)** महत्त्वेन **(वन्वन्)** सम्भजन् **(अवातः)** वायुवर्जितः **(अस्तृतः)** अहिंसितः॥२०॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे मनुष्या! योऽस्तृतोऽवातो महित्वना वन्वन्नग्निर्विश्वा पार्थिवा रयिमति दाशत्स हि सर्वैर्वेदितव्योऽस्ति॥२०॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! योऽग्निर्बहु सुखं ददाति सः कथन्न सेव्येत॥२०॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो **(अस्तृतः)** नहीं हिंसित **(अवातः)** पवन से वर्जित **(महित्वना)** महत्त्व से **(वन्वन्)** सेवन करता हुआ अग्नि **(विश्वा)** सम्पूर्ण **(पार्थिवा)** पृथिवी में विदित वस्तुओं और **(रयिम्)** धन को **(अति, दाशत्)** अत्यन्त देता है **(सः, हि)** वह सब लोगों से जानने योग्य है॥२०॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो अग्नि बहुत सुख को देता है, उसका क्यों नहीं सेवन किया जावे॥२०॥

**पुनर्मनुष्यैः किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**स प्रत्नवन्नवीयसाग्ने द्युम्नेन संयता। बृहत्ततन्थ भानुना॥२१॥**

**सः। प्रत्नऽवत्। नवीयसा। अग्ने। द्युम्नेन। सम्ऽयता। बृहत्। ततन्थ। भानुना॥२१॥**

**पदार्थः**-**(सः)** **(प्रत्नवत्)** प्राचीनवत् **(नवीयसा)** अतिशयेन नवीनेन **(अग्ने)** अग्निरिव विद्वन् **(द्युम्नेन)** धनेन यशसा वा **(संयता)** संयच्छन्ति येन तेन **(बृहत)** महत् **(ततन्थ)** तनोति **(भानुना)** किरणेन॥२१॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! यथा सूर्य्यो भानुना प्रत्नवद्बृहत्ततन्थ तथा स त्वं नवीयसा संयता द्युम्नेनास्मांस्तनु॥२१॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। ये सूर्य्यवद्यशस्विनो भवन्ति ते नूतनां प्रतिष्ठां लभन्ते॥२१॥

**पदार्थः**-हे **(अग्ने)** अग्नि के समान तेजस्वी विद्वन्! जैसे सूर्य्य **(भानुना)** किरण से **(प्रत्नवत्)** प्राचीन के सदृश **(बृहत्)** बड़े को **(ततन्थ)** विस्तृत करता है, वैसे **(सः)** वह आप **(नवीयसा)** अत्यन्त नवीन **(संयता)** उत्तम प्रकार देते हैं जिससे उस **(द्युम्नेन)** धन वा यश से हम लोगों को विस्तृत करो॥२१॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो सूर्य्य के सदृश यशस्वी होते हैं, वे नवीन-नवीन प्रतिष्ठा को प्राप्त होते हैं॥२१॥

**मनुष्यैः कथं वर्त्तितव्यमित्याह॥**

मनुष्यों को कैसा वर्त्ताव करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**प्र वः सखायो अग्नये स्तोमं यज्ञं च धृष्णुया। अर्च गाय च वेधसे॥२२॥**

**प्र। वः। सखायः। अग्नये। स्तोमम्। यज्ञम्। च। धृष्णुऽया। अर्च। गाय। च। वेधसे॥२२॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**प्र**) (**वः**) युष्माकम् (**सखायः**) (**अग्नये**) अग्निवद्वर्त्तमानाय। अत्र तादर्थ्ये चतुर्थी। (**स्तोमम्**) स्तुतिम् (**यज्ञम्**) सत्यं व्यवहारम् (**च**) (**धृष्णुया**) दृढत्वेन (**अर्च**) सत्कुरु (**गाय**) प्रशंस (**च**) (**वेधसे**) मेधाविने॥२२॥

**अन्वयः**-हे सखायो! योः वः स्तोमं यज्ञं च निष्पादयति तं यूयं सत्कुरुत। हे विद्वन्! यस्त्वयि मित्रवद्वर्त्तते तस्मै वेधसेऽग्नये त्वं धृष्णुया प्रार्च गाय च॥२२॥

**भावार्थः**-सूर्य्य एव यज्ञफलावाप्तिसाधकोऽस्ति तथाऽऽप्ता धर्म्मात्मानः परोपकारकुशला भवन्तीति विज्ञाय जगति वर्त्तेत॥२२॥

**पदार्थः**-हे (**सखायः**) मित्रो! जो (**वः**) आप लोगों की (**स्तोमम्**) स्तुति और (**यज्ञम्**) सत्य व्यवहार को (**च**) भी उत्पन्न करता है, उसका आप लोग सत्कार करो और हे विद्वन्! जो आप में जैसे मित्र, वैसे वर्त्तता है उस (**वेधसे**) बुद्धिमान् (**अग्नये**) अग्नि के समान वर्त्तमान के लिये आप (**धृष्णुया**) दृढ़ता के साथ (**प्र, अर्च**) अच्छे प्रकार सत्कार करिये (**गाय, च**) और प्रशंसा करिये॥२२॥

**भावार्थः**-सूर्य्य ही यज्ञफलों की प्राप्ति का साधक है, वैसे यथार्थ कहने और करनेवाले धर्म्मात्मा जन परोपकार में कुशल होते हैं, ऐसा जानकर संसार में वर्त्ताव करे॥२२॥

**पुनः सोऽग्निः कीदृशोऽस्तीत्याह॥**

फिर वह अग्नि कैसा है, इस विषय को कहते हैं॥

**स हि यो मानु॑षा यु॒गा सीद॑द्धोता॑ क॒विक्र॑तुः। दू॒तश्च॑ ह॒व्य॒वाह॑नः॥२३॥**

**सः। हि। यः। मानु॑षा। यु॒गा। सीद॑त्। होता॑। क॒विऽक्र॑तुः। दू॒तः। च॒। ह॒व्य॒ऽवाह॑नः॥२३॥**

**पदार्थः**-(**सः**) (**हि**) यतः (**यः**) (**मानुषा**) मनुष्यसम्बन्धीनि (**युगा**) युगानि वर्षाणि वर्षसमुदितानि वा (**सीदत्**) सीदति (**होता**) दाता (**कविक्रतुः**) महान् विद्वान् (**दूतः**) (**च**) (**हव्यवाहनः**) यो हव्यानि हुतानि द्रव्याणि वहति॥२३॥

**अन्वयः**-यो हव्यवाहनो दूतश्चाग्निर्मानुषा युगा सीदत् स हि होता कविक्रतुरिव कार्य्यसाधको भवति॥२३॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। योऽग्निर्धार्मिकविद्वत्कार्य्यकरो भवति स हि विद्वद्भिः कार्य्यसिद्धये सम्प्रयोक्तव्यः॥२३॥

**पदार्थः**-(**यः**) जो (**हव्यवाहनः**) हनव किये गये द्रव्यों को प्राप्त कराने पहुँचाने वाला और (**दूतः**) दूतवत् वर्त्तमान (**च**) भी अग्नि (**मानुषा**) मनुष्य-सम्बन्धी (**युगा**) वर्ष वा वर्षसमुदायों को (**सींदत्**) प्राप्त होती है (**सः**) (**हि**) वही (**होता**) दाता (**कविक्रतुः**) बड़ा विद्वान् जैसे वैसे कार्य का साधक होता है॥२३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो अग्नि धार्मिक और विद्वानों के कार्य्यों का करने वाला होता है, उसको विद्वान् जन कार्य्यों की सिद्धि के लिये सम्प्रयुक्त करें॥२३॥



www.9009.co.in

**पुनर्मनुष्यै किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहेत हैं॥

**ता राजा॑ना॒ शुचि॑व्रतादि॒त्यान् मारु॑तं ग॒णम्। वसो॒ यक्षी॒ह रोद॑सी॥२४॥**

**ता। राजा॑ना। शुचि॑ऽव्रता। आ॒दि॒त्यान्। मारु॑तम्। ग॒णम्। वसो॒ इति॑। यक्षि॑। इ॒ह। रोद॑सी॒ इति॑॥२४॥**

**पदार्थः**-(**ता**) तौ मित्रद्वर्त्तमानौ (**राजाना**) प्रकाशमानौ (**शुचिव्रता**) पवित्रकर्म्माणौ (**आदित्यान्**) द्वादश मासान् (**मारुतम्**) मरुतां मनुष्याणामिमम् (**गणम्**) समूहम् (**वसो**) शुभगुणवासयितः (**यक्षि**) सङ्गमय (**इह**) अस्मिन् संसारे (**रोदसी**) द्यावापृथिव्यौ॥२४॥

**अन्वयः**-हे वसो! त्वमिह ता शुचिव्रता राजानाऽऽदित्यान् मारुतं गणं रोदसी च यक्षि॥२४॥

**भावार्थः**-ये मनुष्या अध्यापकाऽध्येत्रादीन् सेवित्वा पदार्थविद्यां गृह्णन्ति ते सुखिनो भवन्ति॥२४॥

**पदार्थः**-हे (**वसो**) श्रेष्ठ गुणों के वसाने वाले! आप (**इह**) इस संसार में (**ता**) उन दोनों मित्र के सदृश वर्त्तमान (**शुचिव्रता**) पवित्र कर्म्मवाले (**राजाना**) प्रकाशमान हुए तथा (**आदित्यान्**) बारह महीनों और (**मारुतम्**) मनुष्य सम्बन्धी इस (**गणम्**) समहू को (**रोदसी**) अन्तरिक्ष और पृथिवी को (**यक्षि**) उत्तम प्रकार प्राप्त कराइये॥२४॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य पढ़ाने और पढ़ने वाले आदिकों की सेवा करके पदार्थविद्या को ग्रहण करते हैं, वे सुखी होते हैं॥२४॥

**उत्तमस्य व्यवहारः सङ्गो वा निष्फलो न भवतीत्याह॥**

उत्तम जन का व्यवहार वा सङ्ग निष्फल नहीं होता, इस विषय को कहते हैं॥

**वस्वी॑ ते अग्ने॒ संदृ॑ष्टिरिषय॒ते मर्त्या॑य। ऊर्जो॑ नपादमृत॑स्य॥२५॥२५॥**

**वस्वी॑। ते॒। अ॒ग्ने॒। सम्ऽदृ॑ष्टिः। इ॒ष॒ऽय॒ते। मर्त्या॑य। ऊर्जः॑। न॒पा॒त्। अ॒मृत॑स्य॥२५॥**

**पदार्थः**-(**वस्वी**) पृथिव्यादिवसुसम्बन्धिनी (**ते**) तव (**अग्ने**) पावक इव (**सन्दृष्टिः**) सम्यक् पश्यन्ति यथा सा (**इषयते**) इषमन्नं विज्ञान वां कामयमानाय (**मर्त्याय**) मनुष्याय (**ऊर्जः**) बलादियुक्तस्य (**नपात्**) या न पतति (**अमृतस्य**) नाशरहितस्य॥२५॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! ते वस्वी सन्दृष्टिरिषयते मर्त्यायाऽमृतस्योर्जो नपाद्भवति॥२५॥

**भावार्थः**-यस्य विदुषो विद्यादर्शनं निष्फलं न जायते, यस्मादधीत्य विद्वांसो भवन्ति तं सदा सत्कुरुत॥२५॥

**पदार्थः**-हे (**अग्ने**) अग्नि के समान वर्त्तमान (**ते**) आपकी (**वस्वी**) पृथिवी आदि वसुसम्बन्धिनी (**सन्दृष्टिः**) उत्तम प्रकार देखते जिससे वह दृष्टि (**इषयते**) अन्न वा विज्ञान की कामना करते हुए (**मर्त्याय**) मनुष्य के लिये (**अमृतस्य**) नाशरहित और (**ऊर्जः**) बल आदि युक्त की (**नपात्**) नहीं गिरने वाली होती है॥२५॥



www.9009.co.in

**भावार्थ:-**जिस विद्वान् का विद्यादर्शन-विद्या निष्फल नहीं होता और जिससे पढ़कर विद्यार्थी जन विद्वान् होते हैं, उसका सदा सत्कार करो॥२५॥

**पुनर्विदुषा किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

फिर विद्वान् को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**क्रत्वा दा अस्तु श्रेष्ठोऽद्य त्वा वन्वन् सुरेक्णाः। मर्त आनाश सुवृक्तिम्॥२६॥**

**क्रत्वा। दाः। अस्तु। श्रेष्ठः। अद्य। त्वा। वन्वन्। सुऽरेक्णाः। मर्तः। आनाश। सुऽवृक्तिम्॥२६॥**

**पदार्थ:-(क्रत्वा)** प्रज्ञया कर्म्मणा वा **(दाः)** यो ददाति **(अस्तु) (श्रेष्ठः)** धर्म्यगुणकर्म्मस्वभावातिशययुक्तः **(अद्य) (त्वा)** त्वाम् **(वन्वन्)** सम्भजन् **(सुरेक्णाः)** शोभनं रेक्णः धनं यस्य सः। **रेक्ण इति धननाम।** (निघं०२.१०) **(मर्त्तः)** मनुष्यः **(आनाश)** व्याप्नुयात् **(सुवृक्तिम्)** सुष्ठु व्रजन्ति दुःखानि यया ताम्॥२६॥

**अन्वय:-**श्रेष्ठः सुरेक्णा मर्त्तोऽद्य क्रत्वा सुवृक्तिमानाश त्वा वन्वन् सुख्यस्तु त्वं विद्यां दाः॥२६॥

**भावार्थ:-**त एवोत्तमा गणनीया ये विज्ञानं प्रयच्छन्ति॥२६॥

**पदार्थ:-(श्रेष्ठः)** धर्मयुक्त गुण कर्म्म और स्वभाव से अतिशय युक्त **(सुरेक्णाः)** सुन्दर धन वाला **(मर्त्तः)** मनुष्य **(अद्य)** आज **(क्रत्वा)** बुद्धि वा कर्म्म से **(सुवृक्तिम्)** उत्तम प्रकार जाते हैं, दुःख जिसके द्वार उसको **(आनाश)** व्याप्त हो और **(त्वा)** आप का **(वन्वन्)** सेवन करता हुआ सुखी **(अस्तु)** हो और आप विद्या के **(दाः)** देनेवाले होओ॥२६॥

**भावार्थ:-**वे ही उत्तम जन गणनीय हैं, जो विज्ञान को देते हैं॥२६॥

**पुनर्मनुष्यैः किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को क्या करना चाहिए, इस विषय को कहते हैं॥

**ते ते अग्ने त्वोता इषयन्तो विश्वमायुः।**
**तरन्तो अर्यो अरातीर्वन्वन्तो अर्यो अरातीः॥२७॥**

**ते। ते। अग्ने। त्वाऽऊताः। इषयन्तः। विश्वम्। आयुः। तरन्तः। अर्यः। अरातीः। वन्वन्तः। अर्यः। अरातीः॥२७॥**

**पदार्थ:-(ते) (ते)** तव **(अग्ने)** अग्निरिव विद्यया प्रकाशमान **(त्वोताः)** त्वया रक्षिताः **(इषयन्तः)** इषमन्नं कामयमानाः **(विश्वम्)** सर्वम् **(आयुः)** जीवनम् **(तरन्तः)** उल्लङ्घयन्तः **(अर्य्यः)** स्वामी **(अरातीः)** न विद्यते रातिर्दानं येषु तान् कृपणान् विरोधिनः **(वन्वन्तः)** विभजन्तः **(अर्य्यः) (अरातीः)**॥२७॥

**अन्वय:-**हे अग्ने! यस्तेऽर्य आज्ञापयेत्तत्त्वं कुरु। ये च त्वोता इषयन्तो विश्वमायुस्तरन्तोऽरातीर्वन्वतोऽरातीर्विजयन्ते ते तव सम्बन्धिनः सन्तु त्वमेषामर्य्यो भव॥२७॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-ये ब्रह्मचर्य्यादिना रोगन्निवार्य्य चिरञ्जीविनः स्युस्ते धार्मिकाः सर्वकार्य्येष्वध्यक्षा भवन्तु॥२७॥

**पदार्थः**-हे **(अग्ने)** अग्नि के समान विद्या से प्रकाशमान! जो **(ते)** आप का **(अर्य्यः)** स्वामी आज्ञा देवे उसको आप करिये और जो **(त्वोताः)** आप से रक्षित **(इषयन्तः)** अन्न की कामना करते और **(विश्वम्)** सम्पूर्ण **(आयुः)** जीवन के **(तरन्तः)** पार होते हुए **(अरातीः)** नहीं विद्यमान दान जिनमें उन कृपण विरोधियों का **(वन्वन्तः)** विभाग करते हुए तथा **(अरातीः)** जिनमें दान नहीं उन शत्रुओं को विशेष करके जीतते हैं, वे **(ते)** आपके सम्बन्धी होवें, आप इनके **(अर्य्यः)** स्वामी होओ॥२७॥

**भावार्थः**-जो ब्रह्मचर्य आदि से रोगों को दूर करके चिरञ्जीवी होवें, वे धार्मिक सम्पूर्ण कार्य्यों में अध्यक्ष हों॥२७॥

**पुना राज्ञा किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

फिर राजा को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**अ॒ग्निस्ति॒ग्मेन॑ शो॒चिषा॒ यास॒द्विश्वं॒ न्य१॒॑त्रिण॑म्। अ॒ग्निर्नो॑ वनते र॒यिम्॥२८॥**

**अ॒ग्निः। ति॒ग्मेन॑। शो॒चिषा॑। यास॑त्। विश्व॑म्। नि। अ॒त्रिण॑म्। अ॒ग्निः। न॒ः। व॒न॒ते॒। र॒यिम्॥२८॥**

**पदार्थः**-**(अग्निः)** पावकः **(तिग्मेन)** तीव्रेण **(शोचिषा)** ज्योतिषा **(यासत्)** प्रयतेत **(विश्वम्)** समग्रम् **(नि)** **(अत्रिणम्)** शत्रुम् **(अग्निः)** पावक इव **(नः)** अस्मभ्यम् **(वनते)** सम्भजति **(रयिम्)** द्रव्यम्॥१८॥

**अन्वयः**-हे राजन्! यथाऽग्निस्तिग्मेन शोचिषा प्राप्तं वस्तु वहति तथा यो विश्वमत्रिणं नि यासत्तथा च योऽग्निर्नो रयिं वनते तमध्यक्षं कुरु॥२८॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। राज्ञाऽधिकारिस्थापने प्रजासम्मतिरपि ग्राह्यैवं सति कदाप्युपद्रवो न जायते॥२८॥

**पदार्थः**-हे राजन्! जैसे **(अग्निः)** अग्नि **(तिग्मेन)** तीव्र **(शोचिषा)** प्रकाश से प्राप्त हुए वस्तु को जलाता है, वैसे जो **(विश्वम्)** सम्पूर्ण **(अत्रिणम्)** शत्रु के प्रति **(नि यासत्)** प्रयत्न करे और वैसे जो **(अग्निः)** अग्नि के सदृश **(नः)** हम लोगों के लिये **(रयिम्)** द्रव्य का **(वनते)** सेवन करता है, उसको अध्यक्ष करिये॥२८॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। राजा को चाहिये कि अधिकारियों के नियत करने में प्रजा की सम्मति भी ग्रहण करे, ऐसा होने पर कभी भी उपद्रव नहीं होता है॥२८॥

**पुना राज्ञं किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

फिर राजा को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**सु॒वीरं॑ र॒यिमा भ॑र॒ जात॑वेदो॒ विच॑र्षणे। ज॒हि रक्षां॑सि सुक्रतो॥२९॥**



www.9009.co.in

**सुऽवीर॑म्। र॒यिम्। आ। भ॒र॒। जात॑ऽवेदः। विऽच॑र्षणे। ज॒हि। रक्षां॑सि। सु॒क्र॒तो॒ इति॑ सुऽक्रतो॥ २९॥**

**पदार्थः-(सुवीरम्)** शोभना वीरा येन भवन्ति तम् **(रयिम्)** धनम् **(आ) (भर) (जातवेदः)** जातप्रज्ञानबल **(विचर्षणे)** तेजस्विन् **(जहि) (रक्षांसि)** दुष्टाचारान् **(सुक्रतो)** सुष्ठु प्रज्ञाकर्म्मयुक्त॥ २९॥

**अन्वयः**-हे जातवेदो विचर्षणे सुक्रतो! राजँस्त्वं सुवीरं रयिमाऽऽभर रक्षांसि जहि॥ २९॥

**भावार्थः**-राज्ञा सदैव धनादिना धार्मिका विपश्चितः क्षत्रियकुलोद्भवा वीरा संरक्ष्य दुष्टाः सदा तिरस्करणीयाः॥ २९॥

**पदार्थः**-हे **(जातवेदः)** उत्पन्न हुआ प्रज्ञानबल जिनके उन **(विचर्षणे)** तेजस्वी तथा **(सुक्रतो)** उत्तम बुद्धि और कर्म्म से युक्त राजन्! आप **(सुवीरम्)** सुन्दर वीर जिससे होते हैं उस **(रयिम्)** धन को **(आ, भर)** सब ओर से धारण करिये और **(रक्षांसि)** दुष्टाचारियों को **(जहि)** नष्ट करिये॥ २९॥

**भावार्थः**-राजा को चाहिये कि सदा ही धन आदि से धार्मिक विद्वान् और क्षत्रिय कुल में हुए वीरों की उत्तम प्रकार रक्षा करे और दुष्टों का सदा तिरस्कार करे॥ २९॥

**पुना राजविद्वद्भ्यां किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

फिर राजा और विद्वान् क्या करें, इस विषय को कहते हैं॥

**त्वं न॑ः पाह्यंह॑सो॒ जात॑वेदो अघाय॒तः। रक्षा॑ णो ब्रह्मणस्कवे॥ ३०॥ २६॥**

**त्वम्। न॒ः। पा॒हि॒। अंह॑सः। जात॑ऽवेदः। अ॒घा॒ऽय॒तः। रक्ष॑। न॒ः। ब्र॒ह्म॒ण॒ः। क॒वे॒॥ ३०॥**

**पदार्थः-(त्वम्) (नः)** अस्मान् **(पाहि) (अंहसः)** अधर्माचरणात् **(जातवेदः)** जातविद्य **(अघायतः)** आत्मनोऽघमाचरतः **(रक्षा)** अत्र **द्व्यचोऽतस्तिङ** इति दीर्घः। **(नः)** अस्मान् **(ब्रह्मणः)** वेदस्य **(कवे)** वक्तः॥ ३०॥

**अन्वयः**-हे जातवेदो ब्रह्मणस्कवे! त्वं नोंऽहसः पाहि नोऽघायतो रक्षा॥ ३०॥

**भावार्थः**-हे राजन् विद्वन् वा! युवामस्मानधर्माचरणादधर्म्ममाचरतश्च पृथग्रक्ष्य सुखं वर्धयतम्॥ ३०॥

**पदार्थः**-हे **(जातवेदः)** विद्या से युक्त **(ब्रह्मणः)** वेद के **(कवे)** कहने वाले! **(त्वम्)** आप **(नः)** हम लोगों की **(अंहसः)** अधर्माचरण से **(पाहि)** रक्षा कीजिये और **(नः)** हम लोगों की **(अघायतः)** अपने पाप करते हुए से **(रक्षा)** रक्षा कीजिये॥ ३०॥

**भावार्थः**-हे राजन् वा विद्वन्! आप दोनों हम लोगों का अधर्म्माचरण और अधर्म्म का आचरण करते हुए से अलग करके सुख को बढ़ाइये॥ ३०॥

**पुनर्न्यायाधीशः किं कुर्य्यादित्याह॥**

फिर न्यायाधीश क्या करे, इस विषय को कहते हैं॥

**यो नो॑ अग्ने दु॒रेव॒ आ मर्तो॑ व॒धाय॒ दाश॑ति। तस्मा॑न्नः पा॒ह्यंह॑सः॥ ३१॥**



www.9009.co.in

यः। नः। अग्ने। दुःऽएवः। आ। मर्तः। वधाय। दाशति। तस्मात्। नः। पाहि। अंहसः॥३१॥

**पदार्थः**-(**यः**) (**नः**) अस्मान् (**अग्ने**) न्यायाधीश (**दुरेवः**) दुष्टाचरणम् (**आ**) (**मर्त्तः**) मनुष्यः (**वधाय**) हननाय (**दाशति**) ददाति (**तस्मात्**) (**नः**) अस्मान् (**पाहि**) (**अंहसः**) अधर्माचरणम्॥३१॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! यो मर्त्तो नो वधाय दुरेवो दाशति तस्मादंहसो न आ पाहि॥३१॥

**भावार्थः**-हे न्यायाधीश! ये विना कृतेनाऽपराधं स्थापयन्ति तेभ्यः तीव्रं दण्डं देहि॥३१॥

**पदार्थः**-हे (**अग्ने**) न्यायाधीश (**यः**) जो (**मर्त्तः**) मनुष्य (**नः**) हम लोगों को (**वधाय**) मारने के लिये (**दुरेवः**) दुष्ट आचरण को (**दाशति**) देता है (**तस्मात्**) उस (**अंहसः**) अधर्म्माचरण से (**नः**) हम लोगों की (**आ, पाहि**) रक्षा कीजिये॥३१॥

**भावार्थः**-हे न्यायाधीश! जो करने के विना अपराध को स्थापित करते हैं, उनके लिये तीव्र दण्ड को दीजिये॥३१॥

**पुना राजा किं कुर्य्यादित्याह॥**

फिर राजा को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**त्वं तं देव जिह्वया परि बाधस्व दुष्कृतम्। मर्तो यो नो जिघांसति॥३२॥**

त्वम्। तम्। देव। जिह्वया। परि। बाधस्व। दुःऽकृतम्। मर्तः। यः। नः। जिघांसति॥३२॥

**पदार्थः**-(**त्वम्**) (**तम्**) (**देव**) विद्वन् न्यायेश (**जिह्वया**) वाचा (**परि**) सर्वतः (**बाधस्व**) (**दुष्कृतम्**) यो दुष्टं कर्म करोति तम् (**मर्त्तः**) मनुष्यः (**यः**) (**नः**) अस्मान् (**जिघांसति**) हन्तुमिच्छति॥३२॥

**अन्वयः**-हे देव! त्वं यो मर्त्तो नो जिघांसति तं दुष्कृतं जिह्वया परि बाधस्व॥३२॥

**भावार्थः**-हे राजन् विद्वन् वा! यो न्यायधर्म्मं विहाय पक्षपातेनाधर्म्मं करोति तं सद्यो भृशं दण्डय॥३२॥

**पदार्थः**-हे (**देव**) विद्यायुक्त न्यायाधीश! (**त्वम्**) आप (**यः**) जो (**मर्त्तः**) मनुष्य (**नः**) हम लोगों की (**जिघांसति**) मारने की इच्छा करता है (**तम्**) उस (**दुष्कृतम्**) दुष्ट कर्म्म करने वाले को (**जिह्वया**) वाणी से (**परि**) सब ओर से (**बाधस्व**) पीड़ित करिये॥३२॥

**भावार्थः**-हे राजन् वा विद्वन्! जो न्यायधर्म का त्याग करके पक्षपात से अधर्म्म करता है, उसको शीघ्र निरन्तर दण्ड दीजिये॥३२॥

**पुन राज्ञा किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

फिर राजा को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**भरद्वाजाय सप्रथः शर्म यच्छ सहन्त्य। अग्ने वरेण्यं वसु॥३३॥**

भरत्ऽवाजाय। सऽप्रथः। शर्म। यच्छ। सहन्त्य। अग्ने। वरेण्यम्। वसु॥३३॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**भरद्वाजाय**) धृतविज्ञानाऽन्नाय (**सप्रथः**) प्रख्यात्या सह वर्त्तमानः (**शर्म**) गृहम् (**यच्छ**) देहि (**सहन्त्य**) सहन्तेषु शान्तेषु भव (**अग्ने**) दातः (**वरेण्यम्**) स्वीकर्त्तुमर्हम् (**वसु**) द्रव्यम्॥३३॥

**अन्वयः**-हे सहन्त्यग्ने! त्वं भरद्वाजाय सप्रथः शर्म्म वरेण्यं वसु च यच्छ॥३३॥

**भावार्थः**-हे सद्गृहस्थ! त्वं सदैव सुपात्राय धार्मिकाय जनाय दानं देहि॥३३॥

**पदार्थः**-हे (**सहन्त्य**) शान्त जनों में हुए (**अग्ने**) दाता जन! आप (**भरद्वाजाय**) विज्ञान और अन्न को धारण किये हुए जन के लिये (**सप्रथः**) प्रसिद्धि के सहित वर्त्तमान (**शर्म**) गृह को और (**वरेण्यम्**) स्वीकार करने योग्य (**वसु**) द्रव्य को (**यच्छ**) दीजिये॥३३॥

**भावार्थः**-हे श्रेष्ठ गृहस्थ! आप सदा ही सुपात्र धार्मिकजन के लिये दान दीजिये॥३३॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

## अ॒ग्निर्वृ॒त्राणि॑ जङ्घनद् द्रविण॒स्युर्वि॑प॒न्यया॑। समि॑द्धः शु॒क्र आहु॑तः॥३४॥

**अ॒ग्निः। वृ॒त्राणि॑। ज॒ङ्घ॒न॒त्। द्र॒वि॒ण॒स्युः। वि॒प॒न्यया॑। सम्ऽइ॑द्धः। शु॒क्रः। आऽहु॑तः॥३४॥**

**पदार्थः**-(**अग्निः**) विद्युत् (**वृत्राणि**) धनानि। **वृत्रमिति धननाम।** (निघं०२.१०) (**जङ्घनत्**) भृशं हन्ति प्राप्नोति (**द्रविणस्युः**) आत्मनो द्रविणमिच्छुः (**विपन्यया**) विशिष्टोद्यमेन (**समिद्धः**) प्रदीप्तः (**शुक्रः**) आशुकारी (**आहुतः**) समन्तात् कृतसत्कारः॥३४॥

**अन्वयः**-हे विद्वन्नुद्यमिन्! यथा शुक्रः समिद्धोऽग्निर्वृत्राणि जङ्घनत् तथा द्रविणस्युराहुतस्त्वं विपन्यया वृत्राणि प्राप्नुहि॥३४॥

**भावार्थः**-ये सततमुद्यमं कुर्वन्ति ते दारिद्र्यं घ्नन्ति॥३४॥

**पदार्थः**-हे विद्वन्! उद्योगवाले जैसे (**शुक्रः**) शीघ्रकारिणी (**समिद्धः**) प्रदीप्त (**अग्निः**) बिजुली (**वृत्राणि**) धनों को (**जङ्घनत्**) अत्यन्त प्राप्त होती है, वैसे (**द्रविणस्युः**) अपने धन की इच्छा करने वाले (**आहुतः**) सब प्रकार सत्कार को प्राप्त आप (**विपन्यया**) विशिष्ट उद्यम से धनों को प्राप्त होओ॥३४॥

**भावार्थः**-जो निरन्तर उद्यम करते वे दारिद्र्य का नाश करते हैं॥३४॥

**पुनरीश्वरः कीदृशोऽस्तीत्याह॥**

फिर ईश्वर कैसा है, इस विषय को कहते हैं॥

## गर्भे॑ मा॒तुः पि॒तुष्पि॒ता वि॑दिद्यु॒ता॒नो अ॒क्षरे॑। सीद॑न्नृ॒तस्य॒ योनि॒मा॥३५॥२७॥

**गर्भे॑। मा॒तुः। पि॒तुः। पि॒ता। वि॒ऽदि॒द्यु॒ता॒नः। अ॒क्षरे॑। सीद॑न्। ऋ॒तस्य॑। योनि॑म्। आ॥३५॥**

**पदार्थः**-(**गर्भे**) आभ्यन्तरे (**मातुः**) जनन्या इव भूमेः (**पितुः**) जनक इव सवितुः (**पिता**) पालकः (**विदिद्युतानः**) विशेषेण प्रकाशमानः (**अक्षरे**) अविनाशिनि स्वरूपे कारणे जीवे वा (**सीदन्**) (**ऋतस्य**) सत्यस्य (**योनिम्**) गृहम् (**आ**) समन्तात्॥३५॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे विद्वांसो! योऽक्षर ऋतस्य योनिमाऽऽसीदन्मातुः पितुश्च पिता गर्भे विदिद्युतानोऽस्ति तं सर्वस्य विश्वस्य जनकं विजानन्तु॥३५॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यो जनकानां जनकः प्रकाशकानां प्रकाशकोऽस्ति तं सर्वं उपासीरन्॥३५॥

**पदार्थः**-हे विद्वान् जनो! जो **(अक्षरे)** नहीं नाश होने वाले अपने रूप, कारण वा जीव में **(ऋतस्य)** सत्य के **(योनिम्)** गृह को **(आ)** सब ओर से **(सीदन्)** प्राप्त होता हुआ **(मातुः)** माता का जैसै, वैसे भूमि का और **(पितुः)** पिता का जैसै सूर्य्य का **(पिता)** पालक और **(गर्भे)** गर्भ में **(विदिद्युतानः)** विशेष करके प्रकाशमान है, उसको सम्पूर्ण संसार का जनक जानो॥३५॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो उत्पन्न करने वालों का उत्पादक, प्रकाशकों का प्रकाशक है, उसकी सब लोग उपासना करें॥३५॥

**पुनर्मनुष्यैः किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**ब्रह्म॑ प्र॒जाव॑दा भ॑र॒ जात॑वेदो॒ विच॑र्षणे। अग्ने॒ यद्दी॒दय॑द्दि॒वि॥३६॥**

**ब्रह्म॑। प्र॒जाऽव॑त्। आ। भ॒र॒। जात॑ऽवेदः। वि॒ऽच॑र्षणे। अग्ने॑। यत्। दी॒दय॑त्। दि॒वि॥२६॥**

**पदार्थः**-**(ब्रह्म)** धनमन्नं वा **(प्रजावत्)** प्रजा विद्यन्ते यस्मिंस्तत् **(आ)** **(भर)** **(जातवेदः)** जातवित्त **(विचर्षणे)** विचक्षण **(अग्ने)** अग्निरिव गृहस्थ **(यत्)** ज्योतिः **(दीदयत्)** द्योतयति **(दिवि)** प्रकाशे॥३६॥

**अन्वयः**-हे जातवेदो विचर्षणेऽग्ने! यद्दिवि दीदयत् तेन प्रजावद् ब्रह्माऽऽभर॥३६॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यदग्नौ यत्सूर्य्ये यद्विद्युति च तेजोऽस्ति तद्विज्ञानेन धनधान्यमुन्नेयम्॥६॥

**पदार्थः**-हे **(जातवेदः)** धन से युक्त **(विचर्षणे)** बुद्धिमान् **(अग्ने)** अग्नि के समान गृहस्थ! **(यत्)** जो ज्योति **(दिवि)** प्रकाश में **(दीदयत्)** प्रकाशित करती है, उससे **(प्रजावत्)** प्रजा में विद्यमान जिसमें उस **(ब्रह्म)** धन वा अन्न को **(आ, भर)** सब प्रकार से धारण वा पोषण करिये॥३६॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो अग्नि में, जो सूर्य्य में और जो बिजुली में तेज है, उसके विज्ञान से धन और धान्य की उन्नति करिये॥३६॥

**मनुष्यैः कीदृशी वाक् प्रयोक्तव्येत्याह॥**

मनुष्य कैसे वाणी को प्रयुक्त करें, इस विषय को कहते हैं॥

**उप॑ त्वा॒ र॒ण्वसं॑दृशं॒ प्रय॑स्वन्तः सहस्कृत। अग्ने॑ ससृ॒ज्महे॒ गिर॑ः॥३७॥**

**उप॑। त्वा॒। र॒ण्वऽसं॑दृशम्। प्रय॑स्वन्तः। स॒ह॒ःऽकृ॒त॒। अग्ने॑। स॒सृ॒ज्महे॑। गिर॑ः॥३७॥**

**पदार्थः**-**(उप)** **(त्वा)** त्वाम् **(रण्वसन्दृशम्)** रमणीयसदृशम् **(प्रयस्वन्तः)** प्रयतमानाः **(सहस्कृत)** यः सहसा करोति तत्सम्बुद्धौ **(अग्ने)** पावक इव विद्वान् **(ससृज्महे)** भृशं सृजेम **(गिरः)** वाचः॥३७॥

**अन्वयः**-हे सहस्कृताग्ने! प्रयस्वन्तो वयं या गिरः ससृज्महे ताभी रण्वसन्दृशं त्वोप ससृज्महे॥३७॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-मनुष्यैर्यथा स्वार्थप्रिया वाग्घृद्या भवति तथैवान्यार्थापि वेद्या॥३७॥

**पदार्थः**–हे **(सहस्कृत)** सहसा कार्य्यकर्ता **(अग्ने)** अग्नि के सदृश तेजस्वी विद्वन्! **(प्रयस्वन्तः)** प्रयत्न करते हुए हम लोग जिन **(गिरः)** वाणियों को **(ससृज्महे)** अत्यन्त प्रकट करें उनसे **(रण्वसन्दृशम्)** रमणीय के तुल्य **(त्वा)** आपको **(उप)** समीप में अत्यन्त प्रकट करें॥३७॥

**भावार्थः**-मनुष्यों को चाहिये कि जैसे अपने प्रयोजन की प्रिय वाणी हृदय को प्रिय होती है, वैसे अन्य जनों के प्रयोजन को भी समझें॥३७॥

**पुनर्मनुष्यैः किं प्राप्तव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को क्या प्राप्त करने योग्य है, इस विषय को कहते हैं॥

**उप छायामिव घृणेरगन्म शर्म ते वयम्। अग्ने हिरण्यसंदृशः॥३८॥**

**उप। छायाम्ऽइव। घृणेः। अगन्म। शर्म। ते। वयम्। अग्ने। हिरण्यऽसंदृशः॥३८॥**

**पदार्थः**-**(उप)** **(छायामिव)** **(घृणेः)** प्रदीप्तात्सूर्य्यात् **(अगन्म)** प्राप्नुयाम **(शर्म)** गृहम् **(ते)** तव **(वयम्)** **(अग्ने)** विद्वन् **(हिरण्यसन्दृशः)** हिरण्यं तेज इव सन्दृक् समानं दर्शनं येषान्ते॥३८॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! ते तव घृणेश्छायामिव शर्म हिरण्यसन्दृशो वयमुपाऽगन्म॥३८॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। हे विद्वन्! वयं सर्वर्त्तुकं सूर्य्यमिव प्रकाशमानं तव गृहं प्राप्य छायामिव सेवेमहि॥३८॥

**पदार्थः**–हे **(अग्ने)** विद्वन्! **(ते)** आपके **(घृणेः)** प्रदीप्त सूर्य्य से **(छायामिव)** छाया को जैसे वैसे **(शर्म)** गृह को **(हिरण्यसन्दृशः)** तेज के सदृश समान दर्शन जिनका ऐसे **(वयम्)** हम लोग **(उप)** समीप **(अगन्म)** प्राप्त होवें॥३८॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे विद्वन्! हम लोग सब ऋतुओं में हुए सूर्य्य को जैसे वैसे प्रकाशमान आपके गृह को प्राप्त होकर छाया के सदृश सेवन करें॥३८॥

**पुनर्मनुष्यैः किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**य उग्रइव शर्यहा तिग्मशृङ्गो न वंसगः। अग्ने पुरो रुरोजिथ॥३९॥**

**यः। उग्रःऽइव। शर्यऽहा। तिग्मऽशृङ्गः। न। वंसगः। अग्ने। पुरः। रुरोजिथ॥३९॥**

**पदार्थः**-**(यः)** **(उग्रइव)** तेजस्वीव **(शर्यहा)** हन्तव्यहन्ता **(तिग्मशृङ्गः)** तिग्मानि तीव्राणि शृङ्गाणीव किरणा यस्य सूर्य्यस्य सः **(न)** **(वंसगः)** यो वंसं सम्भजनीयं व्यवहारं गच्छति सः **(अग्ने)** **(पुरः)** पुरस्तात् **(रुरोजिथ)** भनक्षि॥३९॥

**अन्वयः**-हे अग्ने यस्त्वं वंसगः शर्यहा तिग्मशृङ्गो न शत्रूणां पुर उग्रइव रुरोजिथ तं वयं सत्कुर्याम॥३९॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। ये राजादयोऽधिकारिणः सूर्य्य इव तेजस्विनस्स्युस्ते शत्रून् विजेतुं शक्नुयुः॥३९॥

**पदार्थः**–हे **(अग्ने)** अग्नि के सदृश तेजस्वी **(यः)** जो आप **(वंसगः)** सेवन करने योग्य व्यवहार को प्राप्त होने और **(शर्यहा)** मारने योग्य को मारने वाले **(तिग्मशृङ्गः)** तीव्र शृङ्गों के सदृश किरणों वाले सूर्य्य के **(न)** समान शत्रुओं के **(पुरः)** आगे **(उग्रइव)** तेजस्वी जन जैसे वैसे **(रुरोजिथ)** भग्न करते हो, उन आप का हम लोग सत्कार करें॥३९॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जो राजा आदि अधिकारी जन सूर्य्य जैसे वैसे तेजस्वी होवें, वे शत्रुओं के जीतने को समर्थ होवें॥३९॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**आ यं हस्ते न खादिनं शिशुं जातं न बिभ्रति। विशामग्निं स्वध्वरम्॥४०॥२८॥**

**आ। यम्। हस्ते। न। खादिनम्। शिशुम्। जातम्। न। बिभ्रति। विशाम्। अग्निम्। सुऽअध्वरम्॥४०॥**

**पदार्थः**-**(आ)** समन्तात् **(यम्)** **(हस्ते)** **(न)** इव **(खादिनम्)** खादितुं भक्षयितुं शीलम् **(शिशुम्)** बालम् **(जातम्)** उत्पन्नम् **(न)** इव **(बिभ्रति)** भरन्ति **(विशाम्)** मनुष्यादिप्रजानाम् **(अग्निम्)** प्रकाशमानम् **(स्वध्वरम्)** शोभना अध्वरा यस्मात्तम्॥४०॥

**अन्वयः**-ये यं हस्ते खादिनं न जातं शिशुं न विशां स्वध्वरमग्निमाऽऽबिभ्रति ते तेन कृतकृत्या जायन्ते॥४०॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! ये हस्तामलकवत् क्रोडे शिशुमिवाग्निविद्यां जानन्ति ते प्रजापतयो भवन्ति॥४०॥

**पदार्थः**–जो **(यम्)** जिसको **(हस्ते)** हाथ में **(खादिनम्)** भक्षण करने वाले के **(न)** समान और **(जातम्)** उत्पन्न हुए **(शिशुम्)** बालक के **(न)** समान **(विशाम्)** मनुष्यादि प्रजाओं के **(स्वध्वरम्)** सुन्दर यज्ञ जिससे हों उस **(अग्निम्)** प्रकाशमान अग्नि को **(आ, बिभ्रति)** सब ओर से धारण करते हैं, वे उससे कृतकृत्य होते हैं॥४०॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जो हाथ में आँवले को जैसे वैसे, गोदी में लड़के को जैसे वैसे अग्निविद्या को जानते हैं, वे प्रजा के स्वामी होते हैं॥४०॥

**पुनर्मनुष्यैः किं प्राप्तव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को क्या प्राप्त करने योग्य है, इस विषय को कहते हैं॥

**प्र देवं देववीतये भरता वसुवित्तमम्। आ स्वे योनौ नि षीदतु॥४१॥**

**प्र। देवम्। देवऽवीतये। भरत। वसुवित्ऽतमम्। आ। स्वे। योनौ। नि। सीदतु॥४१॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-**(प्र)** **(देवम्)** दातारम् **(देववीतये)** दिव्यगुणप्राप्तये **(भरता)** धरत हरत वा **(वसुवित्तमम्)** अतिशयेन वसु वेत्ति तम् **(आ)** **(स्वे)** स्वकीये **(योनौ)** गृहे **(नि)** **(सीदतु)**॥४१॥

**अन्वयः**-हे विद्वांसो! यूयं देववीतये वसुवित्तमं देवं स्वे योनौ प्राऽऽभरता येन मनुष्यः सुखेन निषीदतु॥४१॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! भवन्तो दिव्यगुणप्राप्तयेऽग्न्यादिपदार्थान् विजानन्तु॥४१॥

**पदार्थः**-हे विद्वान् जनो! आप लोग **(देववीतये)** श्रेष्ठ गुणों की प्राप्ति के लिये **(वसुवित्तमम्)** अतिशय धन को जानने और **(देवम्)** देने वाले को **(स्वे)** अपने **(योनौ)** गृह में **(प्र, आ, भरता)** उत्तमता से अच्छे प्रकार धारण करिये वा हरिये, जिससे मनुष्य सुख से **(नि, षीदतु)** निरन्तर स्थिर होवे॥४१॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! आप श्रेष्ठ गुणों की प्राप्ति के लिये अग्नि आदि पदार्थों को जानिये॥४१॥

**विद्वद्भिः सद्गृहस्थाः सत्कर्त्तव्या इत्याह॥**

विद्वानों को चाहिये कि श्रेष्ठ गृहस्थों का सत्कार करें, इस विषय को कहते हैं॥

**आ जातं जातवेदसि प्रियं शिशीतातिथिम्। स्योन आ गृहपतिम्॥४२॥**

**आ। जातम्। जातऽवेदसि। प्रियम्। शिशीत। अतिथिम्। स्योने। आ। गृहऽपतिम्॥४२॥**

**पदार्थः**-**(आ)** **(जातम्)** प्रसिद्धम् **(जातवेदसि)** जातविद्ये **(प्रियम्)** कमनीयम् **(शिशीत)** तीक्ष्णीकुरुत **(अतिथिम्)** अतिथिवद्वर्त्तमानम् **(स्योने)** सुखे **(आ)** **(गृहपतिम्)** गृहस्वामिनम्॥४२॥

**अन्वयः**-हे विद्वांसो! जातवेदस्याऽऽजातं प्रियमतिथिमिव स्योने गृहपतिमा शिशीत॥४२॥

**भावार्थः**-ये व्याप्तां विद्युतं प्रज्वालयन्ति ते सर्वत्र विजयादिकमाप्नुवन्ति॥४२॥

**पदार्थः**-हे विद्वान् जनो! **(जातवेदसि)** प्राप्त हुई विद्या जिसमें उसमें **(आ, जातम्)** अच्छे प्रकार प्रसिद्ध **(प्रियम्)** प्रिय **(अतिथिम्)** अतिथि के समान वर्त्तमान को **(स्योने)** सुख में **(गृहपतिम्)** गृह के स्वामी को **(आ, शिशीत)** अच्छे प्रकार तीक्ष्ण करिये॥४२॥

**भावार्थः**-जो व्याप्त बिजली को प्रज्वलित कराते हैं, वे सब स्थानों में विजय आदि को प्राप्त होते हैं॥४२॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी को कहते हैं॥

**अग्ने युक्ष्वा हि ये तवाश्वासो देव साधवः। अरं वहन्ति मन्यवे॥४३॥**

**अग्ने। युक्ष्व। हि। ये। तव। अश्वासः। देव। साधवः। अरम्। वहन्ति। मन्यवे॥४३॥**

**पदार्थः**-**(अग्ने)** शिल्पविद्याविद्विद्वन् **(युक्ष्वा)** संयोजय। अत्र **द्व्यचोऽतस्तिङ** इति दीर्घः। **(हि)** **(ये)** **(तव)** **(अश्वासः)** वेगादयो गुणाः **(देव)** दिव्यसुखप्रद **(साधवः)** साधुगतयः **(अरम्)** अलम् **(वहन्ति)** प्राप्नुवन्ति **(मन्यवे)** क्रोधाय॥४३॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे देवाग्ने! ये साधवस्तवाश्वासो मन्यवेऽरं वहन्ति तान् हि त्वं यानेषु युक्ष्वा॥४३॥

**भावार्थः**-ये विद्वांसोऽग्न्यादियोजनं यानेषु कुर्वन्ति ते पूर्णकामा भवन्ति॥४३॥

**पदार्थः**-हे **(देव)** श्रेष्ठ सुख के देने और **(अग्ने)** शिल्प क्रिया की कुशलता को जानने वाले विद्वन्! **(ये)** जो **(साधवः)** श्रेष्ठ गमन वाले **(तव)** आपके **(अश्वासः)** वेग आदि गुण **(मन्यवे)** क्रोध के लिये **(अरम्)** समर्थ को **(वहन्ति)** प्राप्त होते हैं उनको **(हि)** ही आप वाहनों में **(युक्ष्वा)** संयुक्त करिये॥४३॥

**भावार्थः**-जो विद्वान् जन अग्नि आदि का योजन वाहनों में करते हैं, वे पूर्ण मनोरथ वाले होते हैं॥४३॥

**मनुष्यैः केषां सत्कारः कर्त्तव्य इत्याह॥**

मनुष्यों को किसका सत्कार करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**अच्छा॑ नो याह्या व॑हा॒भि प्रयां॑सि वी॒तये॑। आ दे॒वान्त्सोम॑पीतये॥४४॥**

**अच्छा॑। न॒ः। या॒हि॒। आ। व॒ह॒। अ॒भि। प्रयां॑सि। वी॒तये॑। आ। दे॒वान्। सोम॒ऽपीतये॥४४॥**

**पदार्थः**-**(अच्छा)** अत्र **संहितायामि**ति दीर्घः। **(नः)** अस्मान् **(याहि)** प्राप्नुहि **(आ)** **(वह)** प्राप्नुहि **(अभि)** **(प्रयांसि)** प्रियतमानि **(वीतये)** ज्ञानाय **(आ)** समन्तात् **(देवान्)** विदुषः **(सोमपीतये)** सोमस्य पानाय॥४४॥

**अन्वयः**-हे विद्वंस्त्वन्नोऽच्छा सोमपीतय आ याहि। प्रयांस्यभ्याऽऽवह वीतये देवानाऽऽयाहि॥४४॥

**भावार्थः**-मनुष्यैः सत्काराय विदुषामाह्वानं कर्त्तव्यम्॥४४॥

**पदार्थः**-हे विद्वन्! आप **(नः)** हम लोगों को **(अच्छा)** उत्तम प्रकार **(सोमपीतये)** सोमलतारूप ओषधि के रस के पान के लिये **(आ, याहि)** सब ओर से प्राप्त होओ और **(प्रयांसि)** अत्यन्त प्रिय वस्तुओं को **(अभि)** चारों ओर से **(आ)** सब प्रकार **(वह)** प्राप्त होओ और **(वीतये)** ज्ञान के लिये **(देवान्)** विद्वानों को सब ओर से प्राप्त होओ॥४४॥

**भावार्थः**-मनुष्यों को चाहिये कि सत्कार के लिये विद्वानों का आह्वान करें॥४४॥

**पुनर्मनुष्यैः किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**उद॑ग्ने भारत द्यु॒मदज॑स्रेण॒ दवि॑द्युतत्। शोचा॒ वि भा॑ह्यजर॥४५॥२९॥**

**उत्। अ॒ग्ने॒। भा॒र॒त॒। द्यु॒ऽमत्। अज॑स्रेण। दवि॑द्युतत्। शोच॑। वि। भा॒हि॒। अ॒ज॒र॒॥४५॥**

**पदार्थः**-**(उत्)** **(अग्ने)** विद्वन् **(भारत)** धर्त्तः **(द्युमत्)** प्रकाशवत् **(अजस्रेण)** निरन्तरेण **(दविद्युतत्)** द्योतयति **(शोचा)** अत्र **द्व्यचोऽतस्तिङ** इति दीर्घः। **(वि)** **(भाहि)** **(अजर)** जरादोषरहित॥४५॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे भारताजराग्ने! भवानजस्रेण द्युमद्दविद्युतत् तदर्थं त्वमुच्छोचा वि भाहि॥४५॥

**भावार्थः**-यथा ब्रह्माण्डे सूर्य्यः सततं प्रकाशते तथैव विद्वांसः सत्यव्यवहारे प्रकाशयन्ताम्॥४५॥

**पदार्थः**-हे **(भारत)** धारण करने वाले **(अजर)** जरा दोष से रहित **(अग्ने)** विद्वन्! आप **(अजस्रेण)** निरन्तर **(द्युमत्)** प्रकाश वाले को **(दविद्युतत्)** प्रकाशित करते हो, उसके लिये आप **(उत्, शोचा)** अत्यन्त प्रकाशित हूजिये और **(वि, भाहि)** विशेष करके प्रकाशित करिये॥४५॥

**भावार्थः**-जैसे ब्रह्माण्ड में सूर्य्य निरन्तर प्रकाशित होता है, वैसे ही विद्वान् जन सत्य व्यवहार में प्रकाशित हों॥४५॥

**मनुष्यैः क उपासनीय इत्याह॥**

मनुष्यों को किस की उपासता करनी चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**वीती यो देवं मर्तो दुवस्येदग्निमीळीताध्वरे हविष्मान्।**

**होतारं सत्ययजं रोदस्योरुत्तानहस्तो नमसाऽऽविवासेत्॥४६॥**

**वीती। यः। देवम्। मर्तः। दुवस्येत्। अग्निम्। ईळीत। अध्वरे। हविष्मान्। होतारम्। सत्यऽयजम्। रोदस्योः। उत्तानऽहस्तः। नमसा। आ। विवासेत्॥४६॥**

**पदार्थः**-**(वीती)** कामनया **(यः)** **(देवम्)** कमनीयम् **(मर्त्तः)** मनुष्यः **(दुवस्येत्)** सेवेत **(अग्निम्)** पावकमिव स्वप्रकाशं परमात्मानम् **(ईळीत)** प्रशंसत **(अध्वरे)** अहिंसादिलक्षणे योगे **(हविष्मान्)** बहूनि हवींषि दानानि विद्यन्ते यस्य सः **(होतारम्)** दातारम् **(सत्ययजम्)** यस्सत्यं यजति सङ्गमयति तम् **(रोदस्योः)** द्यावापृथिव्योः **(उत्तानहस्तः)** उत्तानावुपरिस्थौ हस्तौ यस्य सः **(नमसा)** सत्कारेण **(आ)** समन्तात् **(विवासेत्)** सेवेत॥४६॥

**अन्वयः**-हे विद्वांसो! यो हविष्मानुत्तानहस्तो मर्त्तो वीत्यध्वरे यं होतारं सत्ययजं देवमग्निं दुवस्येत् रोदस्योर्नमसाऽऽविवासेत् तद्वत्तं परमात्मानं यूयमीळीत॥४६॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यं जगदीश्वरं योगिन उपासते तं यूयमप्युपाध्वम्॥४६॥

**पदार्थः**-हे विद्वान् जनो! **(यः)** जो **(हविष्मान्)** बहुत दान करने वाला **(उत्तानहस्तः)** ऊपर स्थित हाथ जिसके ऐसा **(मर्त्तः)** मनुष्य **(वीती)** कामना से **(अध्वरे)** अहिंसा आदि लक्षण युक्त योग में जिस **(होतारम्)** दान करने वाले **(सत्ययजम्)** सत्य प्राप्त कराने वाले **(देवम्)** मनोहर **(अग्निम्)** अग्नि के सदृश स्वयं प्रकाशित परमात्मा का **(दुवस्येत्)** सेवन करे और **(रोदस्योः)** अन्तरिक्ष और पृथिवी के **(नमसा)** सत्कार से **(आ, विवासेत्)** अच्छे प्रकार सेवन करे, उस परमात्मा की आप लोग **(ईळीत)** प्रशंसा करो॥४६॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जिस जगदीश्वर की योगी जन उपासना करते हैं, उसकी आप लोग भी उपासना करो॥४६॥



www.9009.co.in

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**आ ते॑ अग्न ऋ॒चा ह॒विर्हृ॒दा त॒ष्टं भ॑रामसि।**

**ते ते॑ भवन्तू॒क्षण॑ ऋ॒ष॒भासो॑ व॒शा उ॒त॥४७॥**

आ। ते॒। अ॒ग्ने॒। ऋ॒चा। ह॒विः। हृ॒दा। त॒ष्टम्। भ॒रा॒म॒सि॒ ते। ते॒। भ॒व॒न्तु॒। उ॒क्षण॑ः। ऋ॒ष॒भास॑ः। व॒शाः। उ॒त॥४७॥

**पदार्थः**-(**आ**) समन्तात् (**ते**) तव (**अग्ने**) जगदीश्वर (**ऋचा**) प्रशंसया ऋग्वेदादिना (**हविः**) अन्तःकरणम् (**हृदा**) हृदयेन (**तष्टम्**) तीक्ष्णं शोधितम् (**भरामसि**) भरामः (**ते**) (**ते**) तव (**भवन्तु**) (**उक्षणः**) सेचकाः (**ऋषभासः**) उत्तमाः (**वशाः**) कामयमानाः (**उत**)॥४७॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! यस्य ते तव हविस्तष्टं स्वरूपं वयमृचा हृदाऽऽभरामसि ते कृपयाऽस्माकं ते सम्बन्धिन उक्षण ऋषभास उत वशा भवन्तु॥४७॥

**भावार्थः**-ये सत्यभावेनान्तःकरणेन जगदीश्वराज्ञां सेवन्ते ते सर्वथोत्कृष्टा भवन्ति॥४७॥

**पदार्थः**-हे (**अग्ने**) जगदीश्वर! जिन (**ते**) आपके (**हविः**) अन्तःकरण और (**तष्टम्**) अत्यन्त शुद्ध किये गये स्वरूप को हम लोग (**ऋचा**) प्रशंसारूप ऋग्वेद आदि से और (**हृदा**) हृदय से (**आ, भरामसि**) अच्छे प्रकार पोषण करते हैं उन (**ते**) आपकी कृपा से हमारे और (**ते**) आपके संबन्धी (**उक्षणः**) सेचन करने वाले (**ऋषभासः**) उत्तम (**उत**) भी (**वशाः**) कामना करते हुए (**भवन्तु**) होवें॥४७॥

**भावार्थः**-जो सत्यभाव से और अन्तःकरण से जगदीश्वर की आज्ञा का सेवन करते हैं, वे सब प्रकार से उत्कृष्ट होते हैं॥४७॥

**अथेश्वरविषयमाह॥**

अब ईश्वरविषय को कहते हैं॥

**अ॒ग्निं दे॒वासो॑ अग्रि॒यमि॒न्धते॑ वृत्र॒हन्त॑मम्।**

**येना॒ वसू॒न्याभृ॑ता तृ॒ळ्हा रक्षा॑ंसि वा॒जिना॑॥४८॥३०॥५॥**

अ॒ग्निम्। दे॒वास॑ः। अ॒ग्रि॒यम्। इ॒न्धते॑। वृ॒त्र॒हन्ऽत॑मम्। येन॑। वसू॑नि। आऽभृ॑ता। तृ॒ळ्हा। रक्षा॑ंसि। वा॒जिना॑॥४८॥

**पदार्थः**-(**अग्निम्**) पावकम् (**देवासः**) विद्वांसः (**अग्रियम्**) अग्रे भवम् (**इन्धते**) प्रकाशयन्ति (**वृत्रहन्तमम्**) यो वृत्रं मेघं हन्ति तमतिशयितम् (**येना**) अत्र **संहितायामिति** दीर्घः। (**वसूनि**) धनानि (**आभृता**) समन्ताद्धृतानि (**तृळ्हा**) हिंसितानि (**रक्षांसि**) दुष्टाञ्जनान् (**वाजिना**) वेगेन विज्ञानेन वा॥४८॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथा देवासो वृत्रहन्तममग्रियमग्निमिन्धते येन वाजिनाऽऽभृता वसूनीन्धते रक्षांसि तृळ्हा कुर्वन्ति तथा दोषान् हत्वा परमात्मानं प्रकाशयन्त्येवं यूयमपि कुरुत॥४८॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यथर्त्विजो यज्ञे वेद्यामग्निं प्रज्वाल्य हविः प्रक्षिप्य जगदुपकुर्वन्ति तथैव योगयुक्ताः सन्न्यासिनः परमात्मानं सर्वेषां हृदयेऽभिप्रकाश्य दोषान्नाशयन्तीति॥४८॥

अत्राग्निविद्वदीश्वरगुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

अस्मिन्नध्यायेऽग्निविश्वेदेवसूर्येन्द्रवैश्वानरमरुद्यज्ञराजधर्म्मविद्वदीश्वरगुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वाध्यायार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्य्याणां श्रीमद्विरजानन्दसरस्वतीस्वामिनां शिष्येण परमविदुषा श्रीमद्दयानन्दसरस्वतीस्वामिना विरचित ऋग्वेदभाष्ये चतुर्थेऽष्टके पञ्चमोऽध्यायस्त्रिंशो वर्गः षष्ठे मण्डले षोडशं सूक्तञ्च समाप्तम्॥**

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे **(देवासः)** विद्वान् जन **(वृत्रहन्तमम्)** मेघ के अत्यन्त नाश करने वाले और **(अग्रियम्)** आगे प्रकट हुए **(अग्निम्)** अग्नि को **(इन्धते)** प्रकाशित करते हैं और **(येन)** जिन **(वाजिना)** वेग वा विज्ञान से **(आभृता)** चारों ओर से धारण किये गये **(वसूनि)** धनों को प्रकाशित करते हैं और **(रक्षांसि)** दुष्ट जनों को **(तृळ्हा)** हिंसित करते हैं, वैसे ही दोषों का नाश करके परमात्मा को प्रकाशित करते हैं, इस प्रकार आप लोग भी करो॥४८॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे यज्ञ करने वाले जन यज्ञ में वेदी पर अग्नि को प्रज्वलित करके हवन की सामग्री छोड़ के संसार का उपकार करते हैं, वैसे ही योग से युक्त संन्यासी जन परमात्मा को सब के हृदय मे अच्छे प्रकार प्रकाशित करके दोषों का नाश करते हैं॥४८॥

इस सूक्त में अग्नि, विद्वान् और ईश्वर के गुणवर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

इस अध्याय में अग्नि, विश्वेदेव, सूर्य्य, इन्द्र, वैश्वानर, वायु, यज्ञ, राजधर्म्म, विद्वान् और ईश्वर के गुणवर्णन करने से इस अध्याय के अर्थ की इससे पूर्व अध्याय के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्य श्रीमद्विरजानन्दसरस्वती स्वामी जी के शिष्य परम विद्वान् श्रीमद्दयानन्द सरस्वती स्वामी से रचे गये ऋग्वेदभाष्य में चतुर्थ अष्टक में पाँचवाँ अध्याय, तीसवाँ वर्ग और छठे मण्डल में सोलहवाँ सूक्त भी समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

अथ षष्ठाध्यायारम्भः॥

ओ३म् विश्वा॑नि देव सवितर्दुरि॒तानि॒ परा॑ सुव। यद्भ॒द्रं तन्न॒ आ सु॑व॥ ऋ०५.८२.५॥

अथ पञ्चदशर्चस्य सप्तदशस्य सूक्तस्य भरद्वाजो बार्हस्पत्य ऋषिः। इन्द्रो देवता। १, २,३, ४, ११ त्रिष्टुप्। ५, ६,८ विराट्त्रिष्टुप्। ७, ९, १०, १२, १४ निचृत्त्रिष्टुप्छन्दः। धैवतः स्वरः। १३ स्वराट् पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः। १५ आर्च्युष्णिक् छन्दः। ऋषभः स्वरः॥

*पुनर्म्मनुष्यैः किं कर्त्तव्यमित्याह॥*

अब चतुर्थ अष्टक में छठे अध्याय और छठे मण्डल में पन्द्रह ऋचा वाले सत्रहवें सूक्त का प्रारम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में फिर मनुष्यों को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**पिबा॒ सोम॑म॒भि यमु॑ग्र॒ तर्द॑ ऊ॒र्वं गव्यं॒ महि॑ गृणा॒न इ॑न्द्र।**

**वि यो धृ॑ष्णो॒ वधि॑षो वज्रहस्त॒ विश्वा॑ वृ॒त्रम॑मि॒त्रिया॒ शवो॑भिः॥ १॥**

**पिब॑। सोम॑म्। अ॒भि। यम्। उ॒ग्र॒। तर्दः॑। ऊ॒र्वम्। गव्य॑म्। महि॑। गृ॒णा॒नः। इ॒न्द्र॒। वि। यः। धृ॒ष्णो॒ इति॑। वधि॑षः। व॒ज्र॒ऽह॒स्त॒। विश्वा॑। वृ॒त्रम्। अ॒मि॒त्रिया॑। शवः॑ऽभिः॥ १॥**

**पदार्थः**-(**पिबा**) अत्र **द्व्यचोऽतस्तिङ** इति दीर्घः (**सोमम्**) महौषधिरसम् (**अभि**) (**यम्**) (**उग्र**) तेजस्विन् (**तर्दः**) (**ऊर्वम्**) हिंस्यम् (**गव्यम्**) गवामिदम् (**महि**) महत् (**गृणानः**) स्तुवन् (**इन्द्र**) परमैश्वर्यमिच्छो (**वि**) (**यः**) (**धृष्णो**) प्रगल्भ (**वधिषः**) हन्याः (**वज्रहस्त**) शस्त्रपाणे (**विश्वा**) सर्वाणि (**वृत्रम्**) मेघम् (**अमित्रिया**) अमित्राणि (**शवोभिः**) बलैः॥१॥

**अन्वयः**-हे वज्रहस्त धृष्णो इन्द्र! यः शवोभिर्वृत्रं सूर्य्य इव विश्वाऽमित्रिया त्वं वि वधिषः। हे उग्र! महि गव्यं गृणानो यमूर्वमभि तर्दस्तत्सम्बन्धे स त्वं सोमं पिबा॥१॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। ये मनुष्या ब्रह्मचर्य्येण विद्यया सत्कर्म्मणा दुष्टान्निवार्य्य श्रेष्ठान् स्वीकुर्वन्ति ते शत्रून् घ्नन्ति॥१॥

**पदार्थः**-हे (**व्रजहस्त**) शस्त्र है हस्त में जिनके ऐसे (**धृष्णो**) अत्यन्त दृढ़ (**इन्द्र**) अत्यन्त ऐश्वर्य की इच्छा करने वाले! (**यः**) जो (**शवोभिः**) बलों से (**वृत्रम्**) मेघों को सूर्य्य जैसे वैसे (**विश्वा**) सम्पूर्ण (**अमित्रिया**) शत्रुओं को आप (**वि**) विशेष करके (**वधिषः**) नाश करिये और हे (**उग्र**) तेजस्विन् (**महि**) बड़े (**गव्यम्**) गौओं के घृत की (**गृणानः**) स्तुति करते हुए (**यम्**) जिस (**ऊर्वम्**) हिंसा करने योग्य की (**अभि**) (**तर्दः**) हिंसा करिये, उसके सम्बन्ध में वह आप (**सोमम्**) महौषधि के रस (**पिबा**) पीजिये॥१॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो मनुष्य ब्रह्मचर्य्य, विद्या और सत्कर्म्म से दुष्टों को दूर करके श्रेष्ठों को स्वीकार करते हैं, वे शत्रुओं का नाश करते हैं॥१॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**स ईं पाहि य ऋजीषी तरुत्रो यः शिप्रवान् वृषभो यो मतीनाम्।**

**यो गोत्रभिद्वज्रभृद्यो हरिष्ठाः स इन्द्र चित्राँ अभि तृन्धि वाजान्॥२॥**

**सः। ईम्। पाहि। यः। ऋजीषी। तरुत्रः। यः। शिप्रऽवान्। वृषभः। यः। मतीनाम्। यः। गोत्रऽभित्। वज्रऽभृत्। यः। हरिऽस्थाः। सः। इन्द्र। चित्रान्। अभि। तृन्धि। वाजान्॥२॥**

**पदार्थः**-(**सः**) (**ईम्**) प्राप्तं वस्तु (**पाहि**) (**यः**) (**ऋजीषी**) सरलस्वभावः (**तरुत्रः**) सर्वदुःखादुत्तीर्णः (**यः**) (**शिप्रवान्**) शिप्रे सुन्दरे हनुनासिके विद्यते यस्य (**वृषभः**) बलिष्ठः (**यः**) (**मतीनाम्**) मनुष्याणाम् (**यः**) (**गोत्रभित्**) यो गोत्रं भिनत्ति (**वज्रभृत्**) यो वज्रं बिभर्त्ति (**यः**) (**हरिष्ठाः**) अतिशयेन हर्त्ता (**सः**) (**इन्द्र**) दुष्टविदारक (**चित्रान्**) अद्भुतान् (**अभि**) (**तृन्धि**) हिन्धि (**वाजान्**) हिंसकान्॥२॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! य ऋजीषी तरुत्रस्त्वमसि स ईं पाहि यः शिप्रवान् वृषभो यो मतीनां वृषभो यो वज्रभृद् गोत्रभिदसि यो हरिष्ठा असि स त्वं चित्रान् वाजानभि तृन्धि॥२॥

**भावार्थः**-हे राजन्! ये प्रजारक्षका दुष्टहिंसका जनाः स्युस्ताँस्त्वं सत्कुर्य्याः॥२॥

**पदार्थः**-हे (**इन्द्र**) दुष्टों के विदीर्ण करने वाले! (**यः**) जो (**ऋजीषी**) सरलस्वभाव (**तरुत्रः**) सम्पूर्ण दुःख से उत्तीर्ण हुए आप हैं (**सः**) वह आप (**ईम्**) प्राप्त वस्तु का (**पाहि**) पालन करिये और (**यः**) जो (**शिप्रवान्**) सुन्दर ठुड्डी और नासिका वाले (**वृषभः**) बलिष्ठ और (**यः**) जो (**मतीनाम्**) मनुष्यों के मध्य में बलिष्ठ (**यः**) जो (**वज्रभृत्**) वज्र को धारण करने वाले (**गोत्रभित्**) गोत्र के नाश करने वाले हैं (**यः**) जो (**हरिष्ठाः**) अतिशय हरने वाले हैं (**सः**) वह आप (**चित्रान्**) अद्भुत (**वाजान्**) हिंसकों का (**अभि, तृन्धि**) सब ओर से नाश करिये॥२॥

**भावार्थः**-हे राजन्! जो प्रजा के रक्षक, दुष्टों के हिंसक जन होवें, उनका आप सत्कार करिये॥२॥

**पुनर्मनुष्यैः किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**एवा पाहि प्रत्नथा मन्दतु त्वा श्रुधि ब्रह्म वावृधस्वोत गीर्भिः।**

**आविः सूर्यं कृणुहि पीपिहीषो जहि शत्रूँरभि गा इन्द्र तृन्धि॥३॥**

**एव। पाहि। प्रत्नऽथा। मन्दतु। त्वा। श्रुधि। ब्रह्म। ववृधस्व। उत। गीःऽभिः। आविः। सूर्यम्। कृणुहि। पीपिहि। इषः। जहि। शत्रून्। अभि। गाः। इन्द्र। तृन्धि॥३॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**एवा**) अत्र **निपातस्य चे**ति दीर्घः। (**पाहि**) (**प्रत्नथा**) प्रत्नः प्राचीन इव (**मन्दतु**) प्रशंसतु (**त्वा**) त्वाम् (**श्रुधि**) शृणु (**ब्रह्म**) वेदम् (**वावृधस्व**) वृद्धो भव (**उत**) अपि (**गीर्भिः**) (**आविः**) प्राकट्ये (**सूर्य्यम्**) परमेश्वरम् (**कृणुहि**) कुरु (**पीपिहि**) पिब (**इषः**) अन्नम् (**जहि**) (**शत्रून्**) (**अभि**) (**गाः**) पृथिवीः (**इन्द्र**) दुष्टविदारक (**तृन्धि**) हिन्धि॥३॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! प्रत्नथा त्वं ब्रह्म पाहि यद्ब्रह्म त्वा मन्दतु यत्त्वं श्रुधि तेन वावृधस्वोत गीर्भिः सूर्य्यमाविष्कृणुहीषः पीपीहि शत्रूनभि तृन्धि दोषान् जहि गा एवा प्राप्नुहि॥३॥

**भावार्थः**-ये श्रद्धया परमेश्वरमुपास्य विद्यार्थिनां परीक्षां कुर्वन्ति ते जगत्प्रिया भवन्ति॥३॥

**पदार्थः**-हे (**इन्द्र**) दुष्टों के नाश करने वाले! (**प्रत्नथा**) प्राचीन जन जैसे वैसे आप (**ब्रह्म**) वेद की (**पाहि**) रक्षा कीजिये और जो वेद (**त्वा**) आपकी (**मन्दतु**) प्रशंसा करे, उसको आप (**श्रुधि**) सुनिये उससे (**वावृधस्व**) बढ़िये और (**उत**) भी (**गीर्भिः**) वाणियों से (**सूर्य्यम्**) परमेश्वर का (**आविः**) प्राकट्य (**कृणुहि**) करिये तथा (**इषः**) अन्न का (**पीपिहि**) पान करिये और (**शत्रून्**) शत्रुओं का (**अभि, तृन्धि**) सब प्रकार से नाश करिये और दोषों का (**जहि**) त्याग करिये और (**गाः**) पृथिवियों को (**एवा**) ही प्राप्त हूजिये॥३॥

**भावार्थः**-जो श्रद्धा से परमेश्वर की उपासना करके विद्यार्थियों की परीक्षा करते हैं, वे जगत् के प्रिय होते हैं॥३॥

**पुना राजप्रजाजनाः परस्परं कथं वर्त्तेयुरित्याह॥**

फिर राजा और प्रजा जन परस्पर कैसा वर्त्ताव करें, इस विषय को कहते हैं॥

**ते त्वा मदा बृहदिन्द्र स्वधाव इमे पीता उक्षयन्त द्युमन्तम्।**

**महामनूनं तवसं विभूतिं मत्सरासो जर्हषन्त प्रसाहम्॥४॥**

ते। त्वा। मदाः। बृहत्। इन्द्र। स्वधाऽवः। इमे। पीताः। उक्षयन्त। द्युऽमन्तम्। महाम्। अनूनम्। तवसम्। विऽभूतिम्। मत्सरासः। जर्हषन्त। प्रऽसहम्॥४॥

**पदार्थः**-(**ते**) (**त्वा**) त्वाम् (**मदाः**) हर्षाः (**बृहत्**) महत् (**इन्द्र**) ऐश्वर्ययुक्त (**स्वधावः**) स्वधा बह्वन्नं विद्यते यस्य तत् सम्बुद्धौ (**इमे**) (**पीताः**) (**उक्षयन्त**) सिञ्चन्ति (**द्युमन्तम्**) बहुकामयुक्तम् (**महाम्**) महान्तम् (**अनूनम्**) ऊनतारहितम् (**तवसम्**) बलिष्ठम् (**विभूतिम्**) महदैश्वर्य्यम् (**मत्सरासः**) आनन्दन्तः सन्तः (**जर्हषन्त**) भृशं हृष्यन्तु (**प्रसाहम्**) प्रकर्षेण सोढारम्। अत्र **संहितायामि**ति दीर्घः॥४॥

**अन्वयः**-हे स्वधाव इन्द्र! य इमे पीता मदा मत्सरासो द्युमन्तं महामनूनं तवसं विभूतिं प्रसाहं बृहदुक्षयन्त जर्हषन्त ते त्वा सत्कुर्वन्तु॥४॥

**भावार्थः**-यान् सज्जनान् राजानः सत्कुर्य्युस्ते राज्ञः प्रसादयेयुः॥४॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-हे **(स्वधावः)** बहुत अन्न से युक्त और **(इन्द्र)** ऐश्वर्य्ययुक्त! जो **(इमे)** ये **(पीताः)** पान किये गये **(मदाः)** आनन्द और **(मत्सरासः)** आनन्द करते हुए जन **(द्युमन्तम्)** बहुत मनोरथों से युक्त **(महाम्)** बड़े **(अनूनम्)** न्यूनता से रहित **(तवसम्)** बलिष्ठ **(विभूतिम्)** बड़े ऐश्वर्य्य से युक्त **(प्रसाहम्)** अत्यन्त सहने वाले को **(बृहत्)** बहुत **(उक्षयन्त)** सेचन करते हैं और **(जर्हषन्त)** अत्यन्त प्रसन्न हों **(ते)** वे **(त्वा)** आप का सत्कार करें॥४॥

**भावार्थः**-जिन सज्जनों का राजा सत्कार करें, वे राजाओं को भी प्रसन्न करें॥४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**येभिः सूर्यमुषसं मन्दसानोऽवासयोऽप दृळ्हानि दर्द्रत्।**

**महामद्रिं परि गा इन्द्र सन्तं नुत्था अच्युतं सदसस्परि स्वात्॥५॥१॥**

**येभिः। सूर्यम्। उषसम्। मन्दसानः। अवासयः। अप। दृळ्हानि। दर्द्रत्। महाम्। अद्रिम्। परि। गाः। इन्द्र। सन्तम्। नुत्थाः। अच्युतम्। सदसः। परि। स्वात्॥५॥१॥**

**पदार्थः**-**(येभिः)** **(सूर्य्यम्)** **(उषसम्)** प्रभातम् **(मन्दसानः)** कामयमानः **(अवासयः)** वासयेः **(अप)** **(दृळहानि)** **(दर्द्रत्)** दृणीहि **(महाम्)** महान्तम् **(अद्रिम्)** मेघम् **(परि)** सर्वतः **(गाः)** पृथिवीः **(इन्द्र)** परमैश्वर्य्ययुक्त राजन् **(सन्तम्)** वर्त्तमानम् **(नुत्थाः)** प्रेरयेः **(अच्युतम्)** नाशरहितम् **(सदसः)** सभायाः **(परि)** **(स्वात्)** स्वकीयात्॥५॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! मन्दसानस्त्वं येभिस्सूर्य्यमुषसमिव गाः पर्यवासयः। दृळ्हान्यपदर्द्रत् तेभिर्महामद्रिमिव सन्तमच्युतं स्वात् सदसः परि नुत्थाः॥५॥

**भावार्थः**-स एव राजा श्रेष्ठो भवति यो दुष्टान् विदार्य्य श्रेष्ठानां सभया सर्वाः प्रजाः शास्ति॥५॥

**पदार्थः**-हे **(इन्द्र)** अत्यन्त ऐश्वर्य से युक्त राजन्! **(मन्दसानः)** कामना करते हुए आप **(येभिः)** जिन से **(सूर्य्यम्)** सूर्य्य और **(उषसम्)** प्रातर्वेला को जैसे वैसे **(गाः)** पृथिवियों को **(परि, अवासयः)** सब प्रकार बसाइये तथा **(दृळहानि)** दृढ़ पदार्थों को **(अप, दर्द्रत्)** पुष्ट करिये उनसे **(महाम्)** बड़े **(अद्रिम्)** मेघ के समान **(सन्तम्)** वर्त्तमान **(अच्युतम्)** नाश से रहित को **(स्वात्)** अपने से **(सदसः)** सभा से **(परि)** चारों ओर **(नुत्थाः)** प्रेरित करिये॥५॥

**भावार्थः**-वही राजा श्रेष्ठ होता है, जो दुष्टों को विदीर्ण करके श्रेष्ठों की सभा से सम्पूर्ण प्रजाओं का शासन करता है॥५॥

**पुनर्मनुष्याः किं कुर्य्युरित्याह॥**

फिर मनुष्य क्या करें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**तव क्रत्वा तव तद्दंसनाभिरामासु पक्वं शच्या नि दीधः।**



www.9009.co.in

**और्णोर्दुर उस्रियाभ्यो वि दृळ्होदूर्वाद्गा असृजो अङ्गिरस्वान्॥६॥**

**तव। क्रत्वा। तव। तत्। दंसनाभिः। आमासु। पक्वम्। शच्या। नि। दीधरिति दीधः। और्णोः। दुरः। उस्रियाभ्यः। वि। दृळ्हा। उत्। ऊर्वात्। गाः। असृजः। अङ्गिरस्वान्॥६॥**

**पदार्थः-(तव)** **(क्रत्वा)** प्रज्ञया **(तव)** **(तत्)** **(दंसनाभिः)** कर्म्मभिः **(आमासु)** अपरिपक्वासु **(पक्वम्)** सुसंस्कृतम् **(शच्या)** प्रज्ञया प्रजया वा **(नि)** **(दीधः)** धारयसि **(और्णोः)** आच्छादयतु **(दुरः)** गृहद्वाराणि **(उस्रियाभ्यः)** किरणेभ्यः **(वि)** **(दृळ्हा)** दृढानि **(उत्)** **(ऊर्वात्)** हिंसनात् **(गाः)** भूमीः **(असृजः)** सृजेत् **(अङ्गिरस्वान्)** अङ्गिरसो बहुविधाः प्राणा विद्यन्ते यस्मिन्॥६॥

**अन्वयः**-हे विद्वंस्तव क्रत्वा तव दंसनाभिर्वयमामासु तत्पक्वं विज्ञानं प्राप्नुयाम त्वमेतच्छच्या नि दीधः। य उस्रियाभ्यो दुर और्णोरूर्वाद् गा उदसृजोऽङ्गिरस्वान् दृळ्हा व्यसृजस्तं वयं सत्कुर्याम॥६॥

**भावार्थः**-ये मनुष्या विद्वद्भ्यः शिक्षां प्राप्य सर्वान्त्सत्कुर्वन्ति ते राज्यं प्राप्य सूर्य्यवत्प्रकाशन्ते॥६॥

**पदार्थः**-हे विद्वन्! **(तव)** आपकी **(क्रत्वा)** बुद्धि से और **(तव)** आपके **(दंसनाभिः)** कर्म्मों से हम लोग **(आमासु)** नहीं पाकदशा को प्राप्त हुओं में **(तत्)** उस **(पक्वम्)** उत्तम प्रकार संस्कारयुक्त विज्ञान को प्राप्त होवें और आप इस को **(शच्या)** बुद्धि वा प्रजा से **(नि, दीधः)** धारण कराते हो और जो **(उस्रियाभ्यः)** किरणों से **(दुरः)** गृहद्वारों को **(और्णोः)** आच्छादित करे तथा **(ऊर्वात्)** हिंसन से **(गाः)** भूमियों को **(उत्, असृजः)** अच्छे प्रकार रचे और **(अङ्गिरस्वान्)** बहुत प्रकार के प्राण विद्यमान जिसमें वह **(दृळ्हा)** दृढ़ों को **(वि)** विशेष करके रचे उसका हम लोग सत्कार करें॥६॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य विद्वानों से शिक्षा को प्राप्त होकर सब का सत्कार करते हैं, वे राज्य को प्राप्त होकर सूर्य्य के सदृश प्रकाशित होते हैं॥६॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**पप्राथ क्षां महि दंसो व्यु१र्वीमुप द्यामृष्वो बृहदिन्द्र स्तभायः।**
**अधारयो रोदसी देवपुत्रे प्रत्ने मातरा यह्वी ऋतस्य॥७॥**

**पप्राथ। क्षाम्। महि। दंसः। वि। उर्वीम्। उप। द्याम्। ऋष्वः। बृहत्। इन्द्र। स्तभायः। अधारयः। रोदसी इति। देवपुत्रे इति देवऽपुत्रे। प्रत्ने इति। मातरा। यह्वी इति। ऋतस्य॥७॥**

**पदार्थः-(पप्राथ)** प्राति पूरयति **(क्षाम्)** भूमिम् **(महि)** महत् **(दंसः)** कर्म्म **(वि)** **(उर्वीम्)** विस्तृताम् **(उप)** **(द्याम्)** प्रकाशम् **(ऋष्वः)** महान् **(बृहत्)** **(इन्द्र)** सूर्य इवैश्वर्य्यकारक **(स्तभायः)** स्तभ्नाति **(अधारयः)** धारयसि **(रोदसी)** भूमिसूर्य्यलोकौ **(देवपुत्रे)** देवानां विदुषां पुत्र इव वर्त्तमाने **(प्रत्ने)** पुरातन्यौ **(मातरा)** मातृवन्मान्यकर्त्र्यौ **(यह्वी)** महत्यौ **(ऋतस्य)** सत्यस्य कारणस्य सकाशात्॥७॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे इन्द्र! यथा सूर्य्यो महि दंस उर्वी क्षां द्याञ्च व्युप पप्राथ ऋष्वः सन् बृहत् स्तभायस्तथा त्वं प्राहि यथायं सूर्य्य ऋतस्य जाते देवपुत्रे प्रत्ने मातरा यह्वी रोदसी धारयति तथा त्वमधारयः॥७॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यथा सूर्य्यो भूगोलान् धृत्वा पितृवत्सर्वाः प्रजाः पालयति तथैव यूयमत्र वर्त्तध्वम्॥७॥

**पदार्थः**-हे **(इन्द्र)** सूर्य्य के सदृश ऐश्वर्य्य करने वाले! जैसे सूर्य्य **(महि)** बड़े **(दंसः)** कर्म्म को **(उर्वीम्)** विस्तृत **(क्षाम्)** भूमि को और **(द्याम्)** प्रकाश को **(वि, उप, पप्राथ)** विशेष कर समीप में पूरित करता है और **(ऋष्वः)** बड़ा महात्मा जन **(बृहत्)** बड़े को **(स्तभाय)** स्तम्भित करता है, वैसे आप पूरित कीजिये और जैसे यह सूर्य्य **(ऋतस्य)** सत्य कारण के समीप से प्रकट हुए **(देवपुत्रे)** विद्वानों के पुत्र के समान वर्त्तमान **(प्रत्ने)** प्राचीन **(मातरा)** माता के सदृश आदर करने वाले **(यह्वी)** बड़े **(रोदसी)** भूमि और सूर्य्य लोक को धारण करता है, वैसे आप **(अधारयः)** धारण करते हो॥७॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जैसे सूर्य्य भूगोलों को धारण करके पिता के सदृश सम्पूर्ण प्रजाओं का पालन करता है, वैसे ही आप लोग यहाँ वर्त्ताव करो॥७॥

**पुनर्मनुष्यैः क उपास्य इत्याह॥**

फिर मनुष्यों को कौन उपासना करने योग्य है, इस विषय को कहते हैं॥

**अध॑ त्वा॒ विश्वे॑ पु॒र इ॑न्द्र दे॒वा एकं॑ त॒वसं॑ दधिरे॒ भरा॑य।**

**अदे॑वो॒ यद॒भ्यौहि॑ष्ट दे॒वान् स्व॑र्षाता वृणत॒ इन्द्र॒मत्र॑॥८॥**

**अध॑। त्वा॒। विश्वे॑। पु॒रः। इ॒न्द्र॒। दे॒वाः। एक॑म्। त॒वस॑म्। द॒धि॒रे॒। भरा॑य। अदे॑वः। यत्। अ॒भि। औहि॑ष्ट। दे॒वान्। स्वः॑ऽसाता। वृ॒ण॒ते॒। इन्द्र॑म्। अत्र॑॥८॥**

**पदार्थः**-**(अध)** अथ **(त्वा)** त्वाम् **(विश्वे)** सर्वे **(पुरः)** पुरस्तात् **(इन्द्र)** परमैश्वर्य्यप्रदेश्वर **(देवाः)** विद्वांसः **(एकम्)** अद्वितीयम् **(तवसम्)** बलादिवर्धकम् **(दधिरे)** दधाति **(भराय)** पालनाय **(अदेवः)** प्रकाशरहितः **(यत्)** **(अभि)** आभिमुख्ये **(औहिष्ट)** वितर्कयति **(देवान्)** विदुषः **(स्वर्षाता)** सुखानां विभाजकः **(वृणते)** स्वीकुर्वन्ति **(इन्द्रम्)** परमैश्वर्य्यम् **(अत्र)** अस्मिञ्जगति॥८॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र जगदीश्वर! ये विश्वे देवा भराय त्वैकं तवसं पुरो दधिरे तांस्त्वं विज्ञानेन दधासि यद्यो देवो यद्यः स्वर्षाता अदेवो देवानभ्यौहिष्ट सञ्ज्ञानं नाप्नोति। येऽत्रेन्द्रं वृणते तेऽध सर्वमानन्दं लभन्ते॥८॥

**भावार्थः**-ये मनुष्याः परमात्मानमेवोपासते ते परमैश्वर्य्यं लभन्ते यो हि विद्याहीनो भूत्वा विद्वद्भिः सह कुतर्कयति स किमप्यत्र नाप्नोति॥८॥

**पदार्थः**-हे **(इन्द्र)** अत्यन्त ऐश्वर्य्य के देने वाले स्वामिन् जगदीश्वर! जो **(विश्वे)** सम्पूर्ण **(देवाः)** विद्वान् जन **(भराय)** पालन के लिये **(त्वा)** आप **(एकम्)** जिनके समान दूसरा नहीं उन **(तवसम्)** बल आदि के बढ़ाने वाले को **(पुरः)** आगे **(दधिरे)** धारण करते हैं उनको आप विज्ञान से धारण करते हो



www.9009.co.in

और **(यत्)** जो विद्वान् जन और जो **(स्वर्षाताः)** सुखों का विभाग करने वाला **(अदेवः)** प्रकाश से रहित **(देवान्)** विद्वानों के **(अभि)** सम्मुख **(औहिष्ट)** विशेष करके तर्कित करता और सञ्ज्ञान को नहीं प्राप्त होता है और जो **(अत्र)** इस संसार में **(इन्द्रम्)** अत्यन्त ऐश्वर्य्ययुक्त का **(वृणते)** स्वीकार करते हैं, वे **(अध)** इसके अनन्तर सम्पूर्ण आनन्द को प्राप्त होते हैं॥८॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य परमात्मा ही की उपासना करते हैं, वे अत्यन्त ऐश्वर्य्य को प्राप्त होते हैं और जो विद्या से हीन होकर विद्वानों के साथ कुतर्क करता है, वह कुछ भी यहाँ नहीं पाता है॥८॥

**पुनर्म्मनुष्याः किं कुर्य्युरित्याह॥**

फिर मनुष्य क्या करें, इस विषय को कहते हैं॥

**अध द्यौश्चित्ते अप सा नु वज्राद् द्वितानमद्भियसा स्वस्य मन्योः।**

**अहिं यदिन्द्रो अभ्योहसानं नि चिद्विश्वायुः शयथे जघान॥९॥**

**अध। द्यौः। चित्। ते। अप। सा। नु। वज्रात्। द्विता। अनमत्। भियसा। स्वस्य। मन्योः। अहिम्। यत्। इन्द्रः। अभि। ओहसानम्। नि। चित्। विश्वऽआयुः। शयथे। जघान॥९॥**

**पदार्थः**-**(अध)** अथ **(द्यौः)** कामयमाना **(चित्)** अपि **(ते)** तव **(अप)** **(सा)** **(नु)** **(वज्रात्)** विद्युत्प्रहारात् **(द्विता)** द्वयोर्भावः **(अनमत्)** नमति **(भियसा)** भयेन **(स्वस्य)** **(मन्योः)** क्रोधात् **(अहिम्)** मेघम् **(यत्)** यः **(इन्द्रः)** सूर्य्यः **(अभि)** **(ओहसानम्)** तर्कगम्यम् **(नि)** **(चित्)** अपि **(विश्वायुः)** समग्रायुः **(शयथे)** **(जघाने)** हन्ति॥९॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यद्य इन्द्र ओहसानामहिमभि जघानेव यश्चिद्विश्वायुर्नि शयथेऽध या द्यौश्चिद्वज्राद्भियसा द्विताऽनमत् तथा हे विद्वन्! स्वस्य मन्योः सा नु ते दुःखमप सारयतु॥९॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यूयं सूर्य्यमेघवद्वर्त्तित्वा परस्परं पालनं कुरुत॥९॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(यत्)** जो **(इन्द्रः)** सूर्य्य **(ओहसानम्)** तर्क से जानने योग्य **(अहिम्)** मेघ का **(अभि)** सब ओर से **(जघान)** नाश करता है, वैसे जो **(चित्)** कोई **(विश्वायुः)** सम्पूर्ण अवस्था से युक्त **(नि)** निरन्तर **(शयथे)** शयन करता है **(अध)** इसके अनन्तर जो **(द्यौः)** कामना करती हुई **(चित्)** भी **(वज्रात्)** बिजुली के प्रहार से **(भियसा)** भय से **(द्विता)** दो प्रकार **(अनमत्)** नमती है, वैसे हे विद्वन्! **(स्वस्य)** अपने **(मन्योः)** क्रोध से **(सा)** वह **(नु)** निश्चय से **(ते)** आपका दुःख **(अप)** दूर करे॥९॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! आप लोग सूर्य्य और मेघ सदृश वर्त्ताव करके परस्पर पालन करो॥९॥

**अथ राजपुरुषाः कथं वर्त्तेरन्नित्याह॥**

अब राजपुरुष कैसा वर्त्ताव करें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अध त्वष्टा ते मह उग्र वज्रं सहस्रभृष्टिं ववृतच्छताश्रिम्।**

**निकाममरमणसं येन नवन्तमहिं सं पिणगृजीषिन्॥१०॥२॥**



www.9009.co.in

अध॑। त्वष्टा॑। ते॒। म॒हः। उ॒ग्र॒। वज्र॑म्। स॒हस्र॑ऽभृष्टिम्। व॒वृ॒त॒त्। श॒तऽअ॑श्रिम्। निऽका॑मम्। अ॒रऽम॑नसम्। येन॑। नव॑न्तम्। अहि॑म्। सम्। पि॒ण॒क्। ऋ॒जी॒षि॒न्॥ १०॥

**पदार्थः**-(**अध**) आनन्तर्य्ये (**त्वष्टा**) छेदकः (**ते**) तव (**महः**) महान्तम् (**उग्र**) तेजस्विन् (**वज्रम्**) शस्त्रविशेषम् (**सहस्रभृष्टिम्**) सहस्राणां भृज्जकं छेदकम् (**ववृतत्**) वर्त्तते (**शताश्रिम्**) यः शतान्याश्रयति तम् (**निकामम्**) यो नित्यं कम्यते तम् (**अरमणसम्**) यस्मिन्न रमन्ते शत्रवस्तम् (**येन**) (**नवन्तम्**) स्तुवन्तं नम्रमिव (**अहिम्**) मेघम् (**सम्**) (**पिणक्**) पिनष्टि (**ऋजीषिन्**) ऋजीषि सरलत्वं यस्यास्ति तत्सम्बुद्धौ॥ १०॥

**अन्वयः**-हे ऋजीषिन्नुग्र! ते हस्ते महः सहस्रभृष्टिं शताश्रिं निकाममरमणसं वज्रं धारयाम्यध येन त्वष्टा भवान्नवन्तमहिं सूर्य्य इव सम्पिणक् ववृतत् तं वयमपि धरेम॥ १०॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे वीरपुरुषा यथा धनुर्वेदविदो वीरपुरुषाः शस्त्राणि धरेयुस्तथा यूयमपि धरत॥ १०॥

**पदार्थः**-हे (**ऋजीषिन्**) सरल स्वाभाव वाले (**उग्र**) तेजस्विन् (**ते**) आपके हस्त में (**महः**) बड़े (**सहस्रभृष्टिम्**) हजारों का छेदन करने और (**शताश्रिम्**) सैकड़ों का आश्रयण करने वाले और (**निकामम्**) नित्य कामना किये जाते (**अरमणसम्**) जिसमें नहीं रमते हैं शत्रु उस (**वज्रम्**) शस्त्रविशेष को धारण कराता हूँ (**अध**) इसके अनन्तर (**येन**) जिससे (**त्वष्टा**) छेदन करने वाले आप (**नवन्तम्**) स्तुति करते हुए नम्र के सदृश को (**अहिम्**) मेघ को जैसे सूर्य्य, वैसे (**सम्, पिणक्**) अच्छे प्रकार पीसते हैं तथा (**ववृतत्**) वर्त्ताव करते हैं, उन आपको हम लोग भी धारण करें॥ १०॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार हैं। हे वीरपुरुषो! जैसे धनुर्वेद के जानने वाले वीरपुरुष शस्त्रों को धारण करें, वैसे आप लोग भी धारण करो॥ १०॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**वर्धा॒न् यं विश्वे॑ म॒रुतः॑ स॒जोषाः॒ पच॑च्छ॒तं म॑हि॒षाँ इ॑न्द्र॒ तुभ्य॑म्।**

**पू॒षा विष्णु॒स्त्रीणि॒ सरां॑सि धावन् वृ॒त्र॒हणं॑ मदि॒रमं॒शुम॑स्मै॥ ११॥**

**वर्धा॑न्। यम्। विश्वे॑। म॒रुतः॑। स॒ऽजोषाः॑। पच॑त्। श॒तम्। म॒हि॒षान्। इ॒न्द्र॒। तुभ्य॑म्। पू॒षा। विष्णुः॑। त्रीणि॑। सरां॑सि। धा॒व॒न्। वृ॒त्र॒ऽहन॑म्। म॒दि॒रम्। अं॒शुम्। अ॒स्मै॥ ११॥**

**पदार्थः**-(**वर्धान्**) वर्धयेरन् (**यम्**) (**विश्वे**) सर्वे (**मरुतः**) मनुष्याः (**सजोषाः**) समानप्रीतिसेविनः (**पचत्**) पचेत् (**शतम्**) शतसङ्ख्याकान् (**महिषान्**) महतः। **महिष इति महन्नाम।** (निघं० ३.३) (**इन्द्र**) सूर्य्य इव वर्त्तमान राजन् (**तुभ्यम्**) (**पूषा**) पुष्टिकर्त्ता (**विष्णुः**) व्यापको विद्युद्रूपः (**त्रीणि**) (**सरांसि**)



www.9009.co.in

सरन्ति येषु तान्यन्तरिक्षादीनि **(धावन्)** धावन् सन् **(वृत्रहणम्)** यो वृत्रं मेघं सूर्य्य इव शत्रून् हन्ति **(मदिरम्)** हर्षकरम् **(अंशुम्)** विभक्तम् **(अस्मै)**॥११॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! सजोषा विश्वे मरुतो यं त्वां वर्धान् यः पूषा धावन् विष्णुस्त्रीणि सरांसि व्याप्नोति तथा धावन्नस्मै मदिरमंशुं वृत्रहणमिव शत्रून् हन्ति यस्तुभ्यं शतं महिषान् ददाति यश्च परोकारार्थं पचत्तं यूयं विजानीत॥११॥

**भावार्थः**-यथा प्रजाजना राजानं राज्यं च वर्धयेयुस्तथा राजैतान् सततं वर्धयेत्॥११॥

**पदार्थः**-हे **(इन्द्र)** सूर्य्य के समान वर्त्तमान राजन्! **(सजोषाः)** तुल्य प्रीति के सेवने वाले **(विश्वे)** सम्पूर्ण **(मरुतः)** मनुष्य **(यम्)** जिन आपकी **(वर्धान्)** वृद्धि करें और जो **(पूषा)** पुष्टि करने वाला **(धावन्)** दौड़ता हुआ **(विष्णुः)** व्यापक बिजुलीरूप **(त्रीणि)** तीन **(सरांसि)** चलते हैं जिनमें उन अन्तरिक्ष आदिकों को व्याप्त होता है, वैसे दौड़ते हुए **(अस्मै)** इसके लिये **(मदिरम्)** आनन्द करने वाले **(अंशुम्)** विभक्त **(वृत्रहणम्)** मेघ को जैसे सूर्य्य, वैसे शत्रुओं का मारता है और जो **(तुभ्यम्)** आपके लिये **(शतम्)** सौ **(महिषान्)** बड़े पदार्थों को देता है और जो परोपकार के लिये **(पचत्)** पाक करे, उसको आप लोग जानिये॥११॥

**भावार्थः**-जैसे प्रजाजन राजा और राज्य को बढ़ावें, वैसे राजा इनकी निरन्तर वृद्धि करे॥११॥

**अब राजादयः किं कुर्य्युरित्याह॥**

अब राजा आदि क्या करें, इस विषय को कहते हैं॥

**आ क्षोदो महि वृतं नदीनां परिष्ठितमसृज ऊर्मिमपाम्।**

**तासामनु प्रवत इन्द्र पन्थां प्रार्दयो नीचीरपसः समुद्रम्॥१२॥**

**आ। क्षोदः। महि। वृतम्। नदीनाम्। परिऽस्थितम्। असृजः। ऊर्मिम्। अपाम्। तासाम्। अनु। प्रऽवतः। इन्द्र। पन्थाम्। प्र। आर्दयः। नीचीः। अपसः। समुद्रम्॥१२॥**

**पदार्थः**-**(आ)** **(क्षोदः)** उदकम्। **क्षोद इत्युदकनाम**। (निघं०१.१२) **(महि)** महत् **(वृतम्)** स्वीकृतम् **(नदीनाम्)** **(परिष्ठितम्)** परितः सर्वतः स्थितम् **(असृजः)** सृजति **(ऊर्मिम्)** तरङ्गम् **(अपाम्)** जलानाम् **(तासाम्)** **(अनु)** **(प्रवतः)** निम्नोद्देशात् **(इन्द्र)** सूर्य्य इव राजन् **(पन्थाम्)** **(प्र)** **(आर्दय)** आर्दयति नयति **(नीचीः)** निम्ने देशे वर्त्तमानाः भूमीः **(अपसः)** कर्म्मणः **(समुद्रम्)** अन्तरिक्षं महोदधिं वा॥१२॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! यथा सूर्य्यो नदीनां महि वृतं परिष्ठितं क्षोदोऽपामूर्मिं चाऽसृजस्तासां प्रवतोऽनु पन्थामपसो नीचीः समुद्रं प्राऽऽर्दयस्तथा त्वं सेनां प्रजां च सुखं नीत्वा शत्रूनधोगतिं नय॥१२॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। ये राजादयो जनाः सूर्यवद्वर्त्तन्ते ते प्रजापालनं शत्रुनिवारणं च कर्तुं शक्नुवन्ति॥१२॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-हे **(इन्द्र)** सूर्य्य के समान वर्त्तमान राजन्! जैसे सूर्य्य **(नदीनाम्)** नदियों के **(महि)** बड़े **(वृतम्)** स्वीकार किये गये **(परिष्ठितम्)** सब ओर से वर्त्तमान **(क्षोदः)** जल की और **(अपाम्)** जलों की **(ऊर्मिम्)** तरंग को **(असृजः)** उत्पन्न करता **(तासाम्)** उनके **(प्रवतः)** नीचे स्थान से **(अनु)** पश्चात् **(पन्थाम्)** मार्ग को **(अपसः)** कर्म्म की **(नीचीः)** निचली भूमियों को और **(समुद्रम्)** अन्तरिक्ष वा बड़े समुद्र को **(प्र, आ, आर्दयः)** प्राप्त कराता है, वैसे आप सेना और प्रजा को सुख प्राप्त करा के शत्रुओं को नीची दशा को प्राप्त कराइये॥१२॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो राजा आदि जन सूर्य्य के सदृश वर्त्तमान हैं, वे प्रजापालन और शत्रु के निवारण करने को समर्थ होते हैं॥१२॥

**पुना राजप्रजाजनाः कथं वर्त्तेयुरित्याह॥**

फिर राजा और प्रजाजन कैसा वर्त्ताव करें, इस विषय को कहते हैं॥

**एवा ता विश्वा चकृवांसमिन्द्रं महामुग्रमजुर्यं सहोदाम्।**

**सुवीरं त्वा स्वायुधं सुवज्रमा ब्रह्म नव्यमवसे ववृत्यात्॥१३॥**

**एव। ता। विश्वा। चकृऽवांसम्। इन्द्रम्। महाम्। उग्रम्। अजुर्यम्। सहःऽदाम्। सुऽवीरम्। त्वा। सुऽआयुधम्। सुऽवज्रम्। आ। ब्रह्म। नव्यम्। अवसे। ववृत्यात्॥१३॥**

**पदार्थः**-**(एवा)** **(ता)** तानि **(विश्वा)** सर्वाणि **(चकृवांसम्)** कुर्वन्तम् **(इन्द्रम्)** परमैश्वर्य्यवन्तं शत्रुविदारकं वा **(महाम्)** महान्तम् **(उग्रम्)** तेजस्विनम् **(अजुर्य्यम्)** अजीर्णम् **(सहोदाम्)** बलप्रदम् **(सुवीरम्)** उत्तमवीरावृतम् **(त्वा)** त्वाम् **(स्वायुधम्)** उत्तमायुधप्रक्षेपकुशलम् **(सुवज्रम्)** प्रशस्तवज्रास्त्रचालनसमर्थम् **(आ)** **(ब्रह्म)** महद्धनमन्नं वा **(नव्यम्)** नवेषु भवम् **(अवसे)** रक्षणाद्याय **(ववृत्यात्)** वर्त्तयेत्॥१३॥

**अन्वयः**-हे राजन्! यस्ता विश्वा चकृवांसं महामुग्रमजुर्य्यं सहोदां स्वायुधं सुवज्रं सुवीरमिन्द्रं त्वैवाऽवसे न्यायकरणायाऽऽववृत्यात् स नव्यं ब्रह्म वर्धयितुं शक्नुयात्॥१३॥

**भावार्थः**-पितृवत्प्रजापालकं धनुर्वेदराजनीतियुद्धविद्याकुशलं राजानं सर्वे वर्धयन्तु तथैतानयं राजा सततं वर्धयेत्॥१३॥

**पदार्थः**-हे राजन्! जो **(ता)** उन **(विश्वा)** सम्पूर्णों को और **(चकृवांसम्)** करते हुए **(महाम्)** बड़े **(उग्रम्)** तेजस्वी **(अजुर्य्यम्)** नहीं जीर्ण हुए **(सहोदाम्)** बल के देनेवाले **(स्वायुधम्)** उत्तम शस्त्र के चलाने में चतुर **(सुवज्रम्)** प्रशस्त वज्ररूप अस्त्र के चलाने में समर्थ **(सुवीरम्)** उत्तम वीरों से युक्त **(इन्द्रम्)** अत्यन्त ऐश्वर्य्य वाले शत्रु के नाशक **(त्वा)** आपको **(एवा)** ही **(अवसे)** रक्षण आदि के लिये और न्याय करने के लिये **(आ, ववृत्यात्)** सब ओर से वर्त्ताव करे वह **(नव्यम्)** नवीनों में हुए **(ब्रह्म)** बड़े धन वा अन्न को बढ़ाने को समर्थ होवे॥१३॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-पिता के सदृश प्रजाओं के पालन, धनुर्वेद, राजनीति और युद्धविद्या में कुशल राजा की सब लोग वृद्धि करें और इन लोगों की यह राजा निरन्तर वृद्धि करे॥१३॥

**पुनर्नृपेण किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

फिर राजा क्या करे, इस विषय को कहते हैं॥

**स नो॒ वाजा॑य॒ श्रव॑स इ॒षे च॑ रा॒ये धे॑हि द्यु॒मत॑ इन्द्र॒ विप्रा॑न्।**

**भ॒रद्वा॑जे नृ॒वत॑ इन्द्र सू॒रीन् दि॒वि च॑ स्मैधि॒ पार्ये॑ न इन्द्र॥१४॥**

**सः। नः॒। वाजा॑य। श्रव॑से। इ॒षे। च॒। रा॒ये। धे॒हि॒। द्यु॒ऽमतः॑। इ॒न्द्र॒। विप्रा॑न्। भ॒रत्ऽवा॑जे। नृ॒ऽवतः॑। इ॒न्द्र॒। सू॒रीन्। दि॒वि। च॒। स्म॒। ए॒धि॒। पार्ये॑। नः॒। इ॒न्द्र॒॥१४॥**

**पदार्थः**-(**सः**) राजा (**नः**) अस्मान् (**वाजाय**) वेगाय विज्ञानाय वा (**श्रवसे**) श्रवणाय (**इषे**) अन्नाय (**च**) (**राये**) धनाय (**धेहि**) (**द्युमतः**) विज्ञानप्रकाशयुक्तान् (**इन्द्र**) परमैश्वर्य्यप्रापक (**विप्रान्**) मेधाविनो विपश्चितः (**भरद्वाजे**) राज्यस्य पोषके पालके वा व्यवहारे (**नृवतः**) प्रशस्तजनयुक्तान् (**इन्द्र**) दुःखदारिद्र्यविनाशक (**सूरीन्**) विदुषः (**दिवि**) कमनीये न्यायप्रकाशे (**च**) (**स्म**) एव (**एधि**) भव (**पार्य्ये**) पारयितव्ये (**नः**) अस्माकम् (**इन्द्र**) विद्यैश्वर्य्यवर्धक॥१४॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! स त्वं द्युमतो नो विप्रान् वाजाय श्रवस इषे राये च धेहि, हे इन्द्र! त्वं नृवतोऽस्मान्त्सूरीन् भरद्वाजे दिवि च धेहि। हे इन्द्र! त्वं पार्य्ये च नोऽस्माकं वर्धकः स्मैधि॥१४॥

**भावार्थः**-राज्ञां योग्यमस्ति सर्वेष्वधिकारेषु सर्वविद्याकुशलान् धार्मिकान् कुलीनान् राजभक्तान् संस्थाप्य सर्वतो राज्योन्नतिं विदध्युः॥१४॥

**पदार्थः**-हे (**इन्द्र**) अत्यन्त ऐश्वर्य्य के प्राप्त कराने वाले! (**सः**) वह राजा आप (**द्युमतः**) विज्ञान के प्रकाश से युक्त (**नः**) हम लोगों (**विप्रान्**) बुद्धिमान् विद्वानों को (**वाजाय**) वेग वा विज्ञान के लिये (**श्रवसे**) श्रवण के लिये (**इषे**) अन्न के लिये और (**राये**) धन के लिये (**च**) भी (**धेहि**) धारण करिये और हे (**इन्द्र**) दुःख और दारिद्र्य के विनाशक! आप (**नृवतः**) अच्छे मनुष्यों से युक्त हम (**सूरीन्**) विद्वानों को (**भरद्वाजे**) राज्य के पुष्ट करने वा पालन करने वाले व्यवहार में और (**दिवि**) सुन्दर न्याय के प्रकाश में (**च**) भी धारण करिये और हे (**इन्द्र**) विद्या और ऐश्वर्य के बढ़ाने वाले! आप (**पार्य्ये**) पार करने योग्य में भी (**नः**) हम लोगों के बढ़ाने वाले (**स्म**) ही (**एधि**) होओ॥१४॥

**भावार्थः**-राजाओं को योग्य है कि सम्पूर्ण अधिकारों में सम्पूर्ण विद्याओं में चतुर, धार्म्मिक, कुलीन और राजभक्तों को संस्थापित करके सब प्रकार से राज्य की उन्नति करें॥१४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**अ॒या वाजं॑ दे॒वहि॑तं सनेम॒ मदे॑म श॒तहि॑माः सु॒वीराः॑॥१५॥३॥**



www.9009.co.in

**अ॒या। वाज॑म्। दे॒वऽहि॑तम्। स॒ने॒म॒। मदे॑म। श॒तऽहि॑माः। सु॒ऽवीराः॑॥ १५॥**

**पदार्थः-(अया)** अनया नीत्या **(वाजम्)** विज्ञानम् **(देवहितम्)** देवेभ्यो हितकारिणम् **(सनेम)** विभजेम **(मदेम)** आनन्देम **(शतहिमाः)** शतवर्षजीविनः **(सुवीराः)** उत्तमवीरयुक्ताः॥ १५॥

**अन्वयः**-हे राजन्! यथा शतहिमाः सुवीराः सन्तो वयं देवहितं वाजं सनेम मदेम॥ १५॥

**भावार्थः**-राज्ञा विद्वत्सङ्गो विनयेन राज्यपालनायोत्तमवीरा अधिकर्त्तव्या॥ १५॥

अत्राग्निविद्वद्राजामात्यप्रजाकृत्यवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति सप्तदशं सूक्तं तृतीयो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे राजन्! **(अया)** इस नीति से **(शतहिमाः)** सौ वर्ष पर्य्यन्त जीवने वाले **(सुवीराः)** उत्तम वीर जनों से युक्त हुए हम लोग **(देवहितम्)** विद्वानों के लिये हितकारी **(वाजम्)** विज्ञान का **(सनेम)** विभाग करें और **(मदेम)** आनन्द करें॥ १५॥

**भावार्थः**-राजा को चाहिये कि विद्वानों का संग और विनय से राज्यपालन के लिये उत्तम वीर जनों को अधिकृत करें॥ १५॥

इस सूक्त में अग्नि, विद्वान्, राजा, मन्त्री और प्रजा के कृत्य वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये।

**यह सत्रहवां सूक्त और तीसरा वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

**अथ पञ्चदशर्चस्याष्टादशस्य सूक्तस्य भरद्वाजो बार्हस्पत्य ऋषिः। इन्द्रो देवता। १, ४,९, १४ निचृत्त्रिष्टुप्। २, ८, ११, १३ त्रिष्टुप्। ७, १० विराट्त्रिष्टुप्। १२ भुरिक्त्रिष्टुप्छन्दः। धैवतः स्वरः। ३, १५ भुरिक्पङ्क्तिः। ५ स्वराट्पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः ६ ब्राह्म्युष्णिक्छन्दः। ऋषभः स्वरः॥**

***पुना राजा किं कुर्य्यादित्याह॥***

अब पन्द्रह ऋचा वाले अठारहवें सूक्त का प्रारम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में फिर राजा क्या करे, इस विषय को कहते हैं॥

**तमु ष्टुहि यो अभिभूत्योजा वन्वन्नवातः पुरुहूत इन्द्रः।**

**अषाळहमुग्रं सहमानमाभिर्गीर्भिर्वर्ध वृषभम् चर्षणीनाम्॥ १॥**

**तम्। ऊँ इति। स्तुहि। यः। अभिभूतिऽओजाः। वन्वन्। अवातः। पुरुऽहुतः। इन्द्रः। अषाळहम्। उग्रम्। सहमानम्। आभिः। गीःऽभिः। वर्ध। वृषभम्। चर्षणीनाम्॥ १॥**

**पदार्थः**-**(तम्)** **(उ)** **(स्तुहि)** **(यः)** **(अभिभूत्योजाः)** अभिभूतये शत्रूणां पराभवायौजः पराक्रमो यस्य सः **(वन्वन्)** विभजन् **(अवातः)** अहिंसितः **(पुरुहूतः)** बहुभिः प्रशंसितः **(इन्द्रः)** दुःखविदारकः **(अषाळहम्)** असोढव्यम् **(उग्रम्)** तीव्रस्वभावम् **(सहमानम्)** शत्रूणां वेगस्य सोढारम् **(आभिः)** **(गीभिः)** वाग्भिः **(वर्ध)** वर्धस्व। अत्र व्यत्ययेन परस्मैपदम्। **(वृषभम्)** अतिश्रेष्ठम् **(चर्षणीनाम्)** मनुष्याणाम्॥ १॥

**अन्वयः**-हे राजन्! योऽभिभूत्योजा अवातः पुरुहूतो वन्वन्निन्द्रोऽस्ति तमषाळहमुग्रं चर्षणीनां वृषभं सहमानमाभिर्गीभिः स्तुह्यु तेन वर्ध॥ १॥

**भावार्थः**-हे राजंस्त्वं सदा स्तोतव्यं स्तुहि निन्दनीयं निन्द सत्कर्त्तव्यं सत्कुरु दण्डनीयं दण्डय॥ १॥

**पदार्थः**-हे राजन्! **(यः)** जो **(अभिभूत्योजाः)** अभिभव अर्थात् शत्रुओं के पराजय करने के लिये पराक्रम से युक्त **(अवातः)** नहीं हिंसित **(पुरुहूतः)** बहुतों से प्रशंसित **(वन्वन्)** विभाग करता हुआ **(इन्द्रः)** दुःख को विदीर्ण करनेवाला है **(तम्)** उस **(अषाळहम्)** नहीं सहने योग्य **(उग्रम्)** तीव्र स्वभाववाले और **(चर्षणीनाम्)** मनुष्यों में **(वृषभम्)** अतिश्रेष्ठ और **(सहमानम्)** शत्रुओं के वेग को सहने वाले की **(आभिः)** इन **(गीर्भिः)** वाणियों से **(स्तुहि)** स्तुति करिये **(उ)** और उससे **(वर्ध)** वृद्धि को प्राप्त हूजिये॥ १॥

**भावार्थः**-हे राजन्! आप सदा स्तुति करने योग्य की स्तुति करिये, निन्दा करने योग्य की निन्दा करिये तथा सत्कार करने योग्य का सत्कार करिये और दण्ड देने योग्य को दण्ड दीजिये॥ १॥



www.9009.co.in

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**स युध्मः सत्वा खजकृत्समद्वा तुविम्रक्षो नदनुमाँ ऋजीषी।**

**बृहद्रेणुश्च्यवनो मानुषीणामेकः कृष्टीनामभवत् सहावा॥२॥**

**सः। युध्मः। सत्वा। खजऽकृत्। समत्ऽवा। तुविऽम्रक्षः। नदनुऽमान्। ऋजीषी। बृहत्ऽरेणुः। च्यवनः। मानुषीणाम्। एकः। कृष्टीनाम्। अभवत्। सहऽवा॥२॥**

**पदार्थः**-(**सः**) (**युध्मः**) योद्धा (**सत्वा**) बलवान् (**खजकृत्**) यः खजं सङ्ग्रामं करोति। **खज इति सङ्ग्रामनाम।** (निघं०१.१७) (**समद्वा**) सम्यगत्ति स्वादुः भुङ्क्ते सः (**तुविम्रक्षः**) बहुस्नेहः (**नदनुमान्**) नदनवो बहवः शब्दा विद्यन्ते यस्मिँत्सः (**ऋजीषी**) ऋजुगामी (**बृहद्रेणुः**) बृहन्तो रेणवो यस्मिँत्सः (**च्यवनः**) गन्ता (**मानुषीणाम्**) मनुष्यसम्बन्धिनीनां सेनानाम् (**एकः**) असहायः (**कृष्टीनाम्**) मनुष्याणाम् (**अभवत्**) भवेत् (**सहावा**) सहनकर्त्ता॥२॥

**अन्वयः**-हे राजन्! यो युध्मः सत्वा समद्वा तुविम्रक्षो नदनुमानृजीषी बृहद्रेणुश्च्यवनो मानुषीणां कृष्टीनामेकस्सहावा खजकृद्वीरोऽभवत् स एव त्वया राज्यरक्षणाय नियोक्तव्यः॥२॥

**भावार्थः**-राज्ञा राजकर्म्मचारी सम्परीक्ष्य राज्यव्यवहारे नियोक्तव्यः येन प्रजायाः सुखं वर्धेत॥२॥

**पदार्थः**-हे राजन्! जो (**युध्मः**) युद्ध करने वाला (**सत्वा**) बलवान् (**समद्वा**) अच्छे प्रकार स्वादु भोजन करने वाला (**तुविम्रक्षः**) बहुत स्नेहयुक्त (**नदनुमान्**) बहुत शब्द विद्यमान जिसमें ऐसा और (**ऋजीषी**) सरल चलने वाला (**बृहद्रेणुः**) बड़ी धूलि जिसमें वह (**च्यवनः**) जानेवाला (**मानुषीणाम्**) मनुषीष्यसम्बन्धिनी सेनाओं (**कृष्टीनाम्**) मनुष्यों के मध्य में (**एकः**) सहायरहित (**सहावा**) सहनशील (**खजकृत्**) संग्राम करने वाला वीर (**अभवत्**) होवे (**सः**) वही आप से राज्य की रक्षा के निमित्त नियुक्त करने योग्य है॥२॥

**भावार्थः**-राजा को चाहिये कि राजकर्म्मचारी को उत्तम प्रकार परीक्षा करके राज्य व्यवहार में नियुक्त करे, जिससे प्रजा के सुख की वृद्धि हो॥२॥

**पुना राज्ञा किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

फिर राजा को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**त्वं ह नु त्यददमयो दस्यूँरेकः कृष्टीरवनोरार्याय।**

**अस्ति स्विन्नु वीर्यं१ तत्त इन्द्र न स्विदस्ति तदृतुथा वि वोचः॥३॥**

**त्वम्। ह। नु। त्यत्। अदमयः। दस्यून्। एकः। कृष्टीः। अवनोः। आर्याय। अस्ति। स्वित्। नु। वीर्यम्। तत्। ते। इन्द्र। न। स्वित्। अस्ति। तत्। ऋतुऽथा। वि। वोचः॥३॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**त्वम्**) (**ह**) किल (**नु**) सद्यः (**त्यत्**) तत् (**अदमयः**) दमय (**दस्यून्**) दुष्टान् चोरान् (**एकः**) असहायः (**कृष्टीः**) मनुष्यान् (**अवनोः**) सम्भज (**आर्य्याय**) द्विजाय (**अस्ति**) (**स्वित्**) (**नु**) सद्यः (**वीर्य्यम्**) बलम् (**तत्**) (**ते**) तव (**इन्द्र**) राजन् (**न**) निषेधे (**स्वित्**) अपि (**अस्ति**) (**तत्**) (**ऋतुथा**) ऋतुरिव (**वि**) (**वोचः**)॥३॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र राजन्! यत्ते वीर्य्यमस्ति स्विन्नु यन्नास्ति स्विदृतुथा यद्वि वोचस्तत्त्वमवनोस्तन्ममास्तु दस्यूनेकः सन्नदमयः स त्वं ह कृष्टीरार्य्याय न्ववनोस्त्यद्वयप्येवं कुर्य्याम॥३॥

**भावार्थः**-राज्ञामिदं मुख्यं कर्म्मास्ति यत्सर्वान् दस्यून् निवार्य्य प्रजापालनं कुर्य्युः॥३॥

**पदार्थः**-हे (**इन्द्र**) राजन्! जो (**ते**) आप का (**वीर्य्यम्**) बल (**अस्ति**) है (**स्वित्**) क्या? (**नु**) शीघ्र जो (**न**) नहीं (**अस्ति**) है और (**स्वित्**) भी (**ऋतुथा**) ऋतु जैसे वैसे जो (**वि, वोचः**) कहते हो (**तत्**) उसका (**त्वम्**) आप (**अवनोः**) सेवन करिये (**तत्**) वह मेरा हो और (**दस्यून्**) दुष्ट चोरों को (**एकः**) सहायरहित हुए आप (**अदमयः**) दमन करिये वह आप (**ह**) निश्चय (**कृष्टीः**) मनुष्यों को (**आर्य्याय**) द्विज के लिये (**नु**) शीघ्र उत्तम प्रकार सेवन करिये (**त्यत्**) उसको हम लोग भी ऐसे करें॥३॥

**भावार्थः**-राजाओं का यह मुख्य कर्म्म है कि सम्पूर्ण दुष्ट चोरों का निवारण करके प्रजाओं का पालन करें॥३॥

**पुनः स राजा कीदृशो भवेदित्याह॥**

फिर वह राजा कैसा होवे, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**सदिद्धि ते तुविजातस्य मन्ये सहः सहिष्ठ तुरतस्तुरस्य।**

**उग्रमुग्रस्य तवसस्तवीयोऽरध्रस्य रध्रतुरो बभूव॥४॥**

**सत्। इत्। हि। ते। तुविऽजातस्य। मन्ये। सहः। सहिष्ठ। तुरतः। तुरस्य। उग्रम्। उग्रस्य। तवसः। तवीयः। अरध्रस्य। रध्रऽतुरः। बभूव॥४॥**

**पदार्थः**-(**सत्**) (**इत्**) एव (**हि**) निश्चयेन (**ते**) तव (**तुविजातस्य**) बहुषु प्रसिद्धस्य (**मन्ये**) (**सहः**) बलम् (**सहिष्ठ**) अतिशयेन सोढः (**तुरतः**) सद्यः कर्त्तुः (**तुरस्य**) सद्योऽनुष्ठातुः (**उग्रम्**) तीव्रम् (**उग्रस्य**) तीव्रस्य (**तवसः**) बलात् (**तवीयः**) अतिशयेन बलम् (**अरध्रस्य**) अहिंसकस्य (**रध्रतुरः**) हिंसकहिंसकः (**बभूव**) भवेत्॥४॥

**अन्वयः**-हे सहिष्ठ! तुविजातस्य यस्य ते यद्धि सहस्तत्सदहं मन्ये तुरतस्तुरस्योग्रस्यारध्रस्य तवस उग्रं तवीयोऽहं मन्ये स भवान् रध्रतुर इद्बभूव॥४॥

**भावार्थः**-सर्वैर्मनुष्यैः यस्मिन् यादृशा गुणकर्म्मस्वभावाः स्युस्तादृशा एव मन्तव्याः॥४॥

**पदार्थः**-हे (**सहिष्ठ**) अतिशय सहने वाले (**तुविजातस्य**) बहुतों में प्रसिद्ध जिन (**ते**) आप का जो (**हि**) निश्चित (**सहः**) बल है उसको (**सत्**) नित्य होने वाला पदार्थ मैं (**मन्ये**) मानता हूँ तथा (**तुरतः**)



www.9009.co.in

शीघ्र करने वाले (**तुरस्य**) शीघ्र आरम्भ करने वाले (**उग्रस्य**) तीव्र और (**अरध्रस्य**) नहीं हिंसा करने वाले के (**तवसः**) बल से (**उग्रम्**) तीव्र (**तवीयः**) अतिशय बल को मैं मानता हूँ वह आप (**रध्रतुरः**) हिंसकों के हिंसक (**इत्**) ही (**बभूव**) होवें॥४॥

**भावार्थः**-सब मनुष्यों को चाहिये कि जिसमें जैसे गुण, कर्म्म और स्वभाव होवें, वैसे ही मानें॥४॥

**पुनर्मनुष्यैः परस्परं कथं वर्त्तितव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को परस्पर कैसा वर्त्ताव करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**तन्नः प्रत्नं सख्यमस्तु युष्मे इत्था वदद्भिर्वलमङ्गिरोभिः।**

**हन्नच्युतच्युद्दस्मेषयन्तमृणोः पुरो वि दुरो अस्य विश्वाः॥५॥४॥**

**तत्। नः। प्रत्नम्। सख्यम्। अस्तु। युष्मे इति। इत्था। वदत्ऽभिः। वलम्। अङ्गिरःऽभिः। हन्। अच्युतऽच्युत्। दस्म। इषयन्तम्। ऋणोः। पुरः। वि। दुरः। अस्य। विश्वाः॥५॥**

**पदार्थः**-(**तत्**) (**नः**) अस्माकम् (**प्रत्नम्**) पुरातनम् (**सख्यम्**) सखीनां कर्म्म (**अस्तु**) (**युष्मे**) युष्माकम् (**इत्था**) अस्मादिव (**वदद्भिः**) (**बलम्**) मेघम्। **बल इति मेघनाम**। (निघं०१.१०) (**अङ्गिरोभिः**) वायुभिः (**हन्**) हन्ति (**अच्युतच्युत्**) योऽच्युतमचलन्तं च्यावयति (**दस्म**) दुःखोपक्षयितः (**इषयन्तम्**) प्राप्नुवन्तं गच्छन्तं वा (**ऋणोः**) प्रसाध्नुयाः (**पुरः**) (**वि**) (**दुरः**) द्वाराणि (**अस्य**) जगतः (**विश्वाः**) सर्वाः॥५॥

**अन्वयः**-हे न्यायकारिणो राजादयो जना युष्माभिः सह नोऽस्माकं यथा यत्प्रत्नं सख्यमस्त्वित्था युष्मे वदद्भिः सहास्माकं सख्यमस्तु। यथाऽङ्गिरोभिस्सहाऽच्युतच्युत्सूर्य्यो वलं हंस्तथा हे दस्मेषयन्तं त्वमृणोर्यथास्य जगतो दुरः सविता प्रकाशयति तथा त्वं विश्वाः पुरो वृणोः॥५॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। मनुष्यैर्य्यावच्छक्यं तावदुत्तमैः सह मित्रतैव कार्य्या, सा कदाचिन्न नश्येदेवं प्रयतितव्यं यथा च सूर्य्यः सर्वं प्रकाशयति तथा राजा न्यायेन सर्वं राज्यं प्रकाशयेत्॥५॥

**पदार्थः**-हे न्यायकारी राजा आदि जनो! आप लोगों के साथ (**नः**) हम लोगों की जैसे (**तत्**) वह (**प्रत्नम्**) प्राचीन (**सख्यम्**) मित्रता (**अस्तु**) हो (**इत्था**) इससे जैसे (**युष्मे**) आप लोगों के (**वदद्भिः**) कहते हुओं के साथ हम लोगों की मित्रता हो और जैसे (**अङ्गिरोभिः**) पवनों के साथ (**अच्युतच्युत्**) नहीं चञ्चल अर्थात् स्थिर को चञ्चल करने वाला सूर्य्य (**वलम्**) मेघ का (**हन्**) नाश करता है, वैसे हे (**दस्म**) दुःख के नाश करने वाले (**इषयन्तम्**) प्राप्त हुए वा जाते हुए को आप (**ऋणोः**) सिद्ध करिये और जैसे (**अस्य**) इस जगत् के (**दुरः**) द्वारों को सूर्य्य प्रकाशित करता है, वैसे आप (**विश्वाः**) सम्पूर्ण (**पुरः**) नगरियों को (**वि**) विशेष करके सिद्ध करिये॥५॥



www.9009.co.in

**भावार्थ:**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। मनुष्यों को चाहिये कि यथाशक्ति उत्तमों के साथ मित्रता ही करें, वह कभी नष्ट न होवे, ऐसा प्रयत्न करें और जैसे सूर्य्य सब को प्रकाशित करता है, वैसे राजा न्याय से सम्पूर्ण राज्य को प्रकाशित करे॥५॥

**पुना राज्ञा किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

फिर राजा को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**स हि धीभिर्हव्यो अस्त्युग्र ईशानकृन्महति वृत्रतूर्ये।**

**स तोकसाता तनये स वज्री वितन्तसाय्यो अभवत्समत्सु॥६॥**

**सः। हि। धीभिः। हव्यः। अस्ति। उग्रः। ईशानऽकृत्। महति। वृत्रऽतूर्ये। सः। तोकऽसाता। तनये। सः। वज्री। वितन्तसाय्यः। अभवत्। समत्ऽसु॥६॥**

**पदार्थ:**-**(सः)** **(हि)** **(धीभिः)** प्रज्ञाभिर्बुद्धिभिर्वा **(हव्यः)** आदातुमर्हः **(अस्ति)** **(उग्रः)** तेजस्वी **(ईशानकृत्)** य ईशानानीशनशीलान् पुरुषार्थिनः करोति **(महति)** **(वृत्रतूर्य्ये)** सङ्ग्रामे **(सः)** **(तोकसाता)** तोकानामपत्यानां विभाजने **(तनये)** पुत्राय **(सः)** **(वज्री)** शस्त्रबाहुः **(वितन्तसाय्यः)** भृशं विस्तारणीयः **(अभवत्)** भवति **(समत्सु)** संग्रामेषु॥६॥

**अन्वयः**-हे राजन्! यथा स धीभिर्हव्यो महति वृत्रतूर्य्ये ईशानकृदस्ति स तोकसाता तनय उग्रः स हि वितन्तसाय्यो वज्री समत्स्वभवत् तथा त्वं विधेहि॥६॥

**भावार्थ:**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। राज्ञा सर्वे राजकर्म्मचारिणो योग्याः सम्पादनीया यतः सर्वदा विजयः स्यात्॥६॥

**पदार्थ:**-हे राजन्! जैसे **(सः)** वह **(धीभिः)** ज्ञान व बुद्धियों से **(हव्यः)** ग्रहण करने योग्य **(महति)** बड़े **(वृत्रतूर्य्ये)** संग्राम में **(ईशानकृत्)** ईश्वरता करने वालों को पुरुषार्थी करने वाला **(अस्ति)** है और **(सः)** वह **(तोकसाता)** सन्तानों के विभाग होने में **(तनये)** पुत्र के लिये **(उग्रः)** तेजस्वी और **(सः)** वह **(हि)** ही **(वितन्तसाय्यः)** अत्यन्त विस्तार करने योग्य **(वज्री)** शस्त्र हैं बाहुओं में जिसके ऐसा **(समत्सु)** संग्रामों में **(अभवत्)** होता है, वैसे आप करिये॥६॥

**भावार्थ:**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। राजा को चाहिये कि सब कर्म्मचारियों को योग सिद्ध करे, जिससे सर्वदा विजय होवे॥६॥

**पुना राज्ञा किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

फिर राजा को क्यो करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**स मज्मना जनिम मानुषाणाममर्त्येन नाम्नाति प्र सर्स्रे।**

**स द्युम्नेन स शवसोत राया स वीर्येण नृतमः समोकाः॥७॥**



www.9009.co.in

सः। मज्मना। जनिम। मानुषाणाम्। अमर्त्येन। नाम्ना। अति। प्र। सर्स्रे। सः। द्युम्नेन। सः। शवसा। उत। राया। सः। वीर्येण। नृऽतमः। सम्ऽओकाः॥७॥

**पदार्थः**-(**सः**) (**मज्मना**) बलेन (**जनिम**) जन्म प्रादुर्भावम् (**मानुषाणाम्**) मनुष्याणाम् (**अमर्त्येन**) मरणधर्म्मरहितेन कारणेन (**नाम्ना**) सञ्ज्ञया (**अति**) (**प्र**) (**सर्स्रे**) प्राप्नोति (**सः**) (**द्युम्नेन**) धनेन यशसा वा (**सः**) (**शवसा**) विशिष्टेन बलेन (**उत**) अपि (**राया**) धनेन (**सः**) (**वीर्य्येण**) पराक्रमेण (**नृतमः**) नृणां मध्येऽतिशयेनोत्तमः (**समोकाः**) एकस्थानः॥७॥

**अन्वयः**-हे राजन्! यथाऽयं भृत्यो मज्मना स द्युम्नेन स शवसा स रायोत स वीर्य्येण मानुषाणाममर्त्येन नाम्ना जनिम प्रादुर्भावमति प्र सर्स्रे सः समोका नृतमः स्यात्तथा विधेहि॥७॥

**भावार्थः**-राज्ञा तथा प्रजा राजजनाश्च प्रसिद्धिं बलं धनं कीर्तिं पराक्रमञ्च प्राप्नुयुस्तथा प्रयतितव्यम्॥७॥

**पदार्थः**-हे राजन्! जैसे यह सेवक (**मज्मना**) बल से (**सः**) वह (**द्युम्नेन**) धन वा यश से (**सः**) वह (**शवसा**) विशेष बल से (**सः**) वह (**राया**) धन से और (**उत**) भी (**सः**) वह (**वीर्य्येण**) पराक्रम से (**मानुषाणाम्**) मनुष्यों के (**अमर्त्येन**) मरणधर्म्म से रहित कारण से और (**नाम्ना**) संज्ञा से (**जनिम**) जन्म अर्थात् प्रकट होने को (**अति, प्र, सर्स्रे**) अत्यन्त प्राप्त होता है वह (**समोकाः**) एक स्थान वाला (**नृतमः**) मनुष्यों के मध्य में अतिशय उत्तम होवे, वैसे आप करिये॥७॥

**भावार्थः**-राजा को चाहिये कि जैसे प्रजा और राजा के जन प्रसिद्धि, बल, धन, यश और पराक्रम को प्राप्त होवें, वैसे प्रयत्न करें॥७॥

**पुनर्मनुष्याः कथं वर्त्तेयुरित्याह॥**

फिर मनुष्य कैसा वर्त्ताव करें, इस विषय को कहते हैं॥

**स या न मुहे न मिथू जनो भूत्सुमन्तुनामा चुमुरिं धुनिं च।**
**वृणक् पिप्रुं शम्बरं शुष्णमिन्द्रः पुरां च्यौत्नाय शयथाय नू चित्॥८॥**

सः। यः। न। मुहे। न। मिथु। जनः। भूत्। सुमन्तुऽनामा। चुमुरिम्। धुनिम्। च। वृणक्। पिप्रुम्। शम्बरम्। शुष्णम्। इन्द्रः। पुराम्। च्यौत्नाय। शयथाय। नु। चित्॥८॥

**पदार्थः**-(**सः**) (**यः**) (**न**) निषेधे (**मुहे**) मुग्धो भवति (**न**) (**मिथू**) परस्परम् (**जनः**) मनुष्यः (**भूत्**) भवति (**सुमन्तुनामा**) सुष्ठु मन्तु मन्तव्यं ज्ञातव्यं नाम यस्य (**चुमुरिम्**) अत्तारम् (**धुनिम्**) ध्वनितारम् (**च**) (**वृणक्**) छिनत्ति (**पिप्रुम्**) व्यापनशीलम् (**शम्बरम्**) शं सुखं वृणोति येन तं मेघम् (**शुष्णम्**) शोषकम् (**इन्द्रः**) सूर्य्यः (**पुराम्**) पूर्णानां धनानाम् (**च्यौत्नाय**) च्यवनाय गमनाय (**शयथाय**) शयनाय (**नू**) सद्यः (**चित्**) अपि॥८॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे विद्वन्! यथेन्द्रश्चुमुरिं पिप्रुं धुनिं शुष्णं शम्बरं मेघं पुरां च्यौत्लाय शयथाय नू वृणक् तथा च यः सुमन्तुनामा जनो न मुहे न मिथू भूत्स चित्सत्कर्त्तव्योऽस्ति॥८॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यथा सूर्य्यो मेघं निर्माय वर्षयित्वा बद्धो न भवति तथैव मनुष्या धर्म्याणि कार्य्याणि कृत्वा सज्जनैः सह वर्त्तित्वा मोहिता न भवन्ति किन्तु सुखिनो भवन्ति॥८॥

**पदार्थः**-हे विद्वन्! जैसे **(इन्द्रः)** सूर्य्य **(चुमुरिम्)** भोजन करने **(प्रिपुम्)** व्याप्त होने **(धुनिम्)** शब्द करने **(शुष्णम्)** सुखाने और **(शम्बरम्)** सुख को स्वीकार कराने वाले मेघ को **(पुराम्)** पूर्ण धनों के **(च्यौत्लाय)** गमन और **(शयथाय)** शयन के लिये **(नू)** शीघ्र **(वृणक्)** काटता है, वैसे **(च)** और **(यः)** जो **(सुमन्तुनामा)** उत्तम प्रकार जानने योग्य नाम जिसका वह **(जनः)** मनुष्य **(न)** नहीं **(मुहे)** मोह को प्राप्त होता और **(न)** न **(मिथू)** परस्पर **(भूत्)** होता है **(सः)** वह **(चित्)** भी सत्कार करने योग्य है॥८॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे सूर्य्य मेघ का निर्म्माण करके और वर्षाय के **[**=बरसा कर**]** बद्ध नहीं होता है, वैसे ही मनुष्य धर्म्मयुक्त कार्य्यों को करके सज्जनों के साथ वर्त्ताव करके मोहित नहीं होते, किन्तु सुखी होते हैं॥८॥

**पुना राजजनाः किं कुर्य्युरित्याह॥**

फिर राजजन क्या करें, इस विषय को कहते हैं॥

**उदावता त्वक्षसा पन्यसा च वृत्रहत्याय रथमिन्द्र तिष्ठ।**

**धिष्व वज्रं हस्त आ दक्षिणत्राभि प्र मन्द पुरुदत्र मायाः॥९॥**

**उत्ऽअवता। त्वक्षसा। पन्यसा। च। वृत्रऽहत्याय। रथम्। इन्द्र। तिष्ठ। धिष्व। वज्रम्। हस्ते। आ। दक्षिणऽत्रा। अभि। प्र। मन्द। पुरुऽदत्र। मायाः॥९॥**

**पदार्थः**-**(उदावता)** ऊर्ध्वगमनेन **(त्वक्षसा)** सूक्ष्मीकरणेन **(पन्यसा)** शुद्धेन व्यवहारेण **(च)** **(वृत्रहत्याय)** संग्रामाय **(रथम्)** **(इन्द्र)** राजन् **(तिष्ठ)** **(धिष्व)** धरस्व **(वज्रम्)** शस्त्रास्त्रम् **(हस्ते)** **(आ)** समन्तात् **(दक्षिणत्रा)** दक्षिणे **(अभि)** **(प्र)** **(मन्द)** प्रशंसय **(पुरुदत्र)** बहुदानकृत् **(मायाः)** प्रज्ञाः॥९॥

**अन्वयः**-हे पुरुदत्रेन्द्र! त्वमुदावता पन्यसा त्वक्षसा वृत्रहत्याय रथमाऽऽतिष्ठ दक्षिणत्रा हस्ते वज्रं धिष्व। मायाश्च प्राप्याभि प्र मन्द॥९॥

**भावार्थः**-य उत्कृष्टतया सकलविषयाः प्रज्ञाः प्राप्य शास्त्राऽस्त्राणि धृत्वा युद्धाय गच्छन्ति ते विजयं प्राप्नुवन्ति॥९॥

**पदार्थः**-हे **(पुरुदत्र)** बहुत दान करने वाले **(इन्द्र)** राजन्! आप **(उदावता)** ऊर्ध्व गमन और **(पन्यसा)** शुद्ध व्यवहार तथा **(त्वक्षसा)** सूक्ष्मीकरण से **(वृत्रहत्याय)** संग्राम के लिये **(रथम्)** रथ पर **(आ)** सब प्रकार से **(तिष्ठ)** स्थित हो और **(दक्षिणत्रा)** दाहिने **(हस्ते)** हाथ में **(वज्रम्)** शस्त्र और अस्त्र



www.9009.co.in

को **(धिष्व)** धारण करिये **(मायाः)** बुद्धियों को **(च)** और प्राप्त होकर **(अभि, प्र, मन्द)** सब प्रकार से प्रशंसा करिये॥९॥

**भावार्थः**-जो उत्कृष्टता से सम्पूर्ण विषयों को जानने वाली बुद्धियों को प्राप्त होकर शस्त्र और अस्त्रों को धारण करके युद्ध के लिये जाते हैं, वे विजय को प्राप्त होते हैं॥९॥

**पुना राजा किं कुर्य्यादित्याह॥**

फिर राजा क्या करे, इस विषय को कहते हैं॥

**अ॒ग्निर्न शुष्कं॒ वन॑मिन्द्र हे॒ती रक्षो॒ नि ध॑क्ष्य॒शनि॒र्न भी॒मा।**

**ग॒म्भी॒रय॑ ऋ॒ष्वया॒ यो रु॒रोजाध्वा॑नयद् दुरि॒ता द॒म्भय॑च्च॥१०॥५॥**

**अ॒ग्निः। न। शुष्क॑म्। वन॑म्। इ॒न्द्र॒। हे॒तिः। रक्षः॑। नि। ध॒क्षि॒। अ॒शनिः॑। न। भी॒मा। ग॒म्भी॒रया॑। ऋ॒ष्वया॑। यः। रु॒रोज॑। अध्व॑नयत्। दुः॒ऽइ॒ता। द॒म्भय॑त्। च॒॥१०॥**

**पदार्थः**-**(अग्निः)** पावकः **(न)** इव **(शुष्कम्)** **(वनम्)** जङ्गलम् **(इन्द्र)** दुष्टताविदारक **(हेतिः)** वज्रः **(रक्षः)** दुष्टं जनम् **(नि)** नितराम् **(धक्षि)** दहसि **(अशनिः)** स्तनयित्नुः **(न)** इव **(भीमा)** बिभेति यस्याः सा **(गम्भीरया)** अगाधबलया **(ऋष्वया)** महत्या **(यः)** **(रुरोज)** शत्रून् रुजति **(अध्वानयत्)** धुनयति **(दुरिता)** दुष्टाचरणानि **(दम्भयत्)** दम्भयति हिंसयति **(च)**॥१०॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र राजन्! योऽग्निर्यथा शुष्कं वनं न रक्षो धक्षि यस्य ते हेतिरशनिर्न भीमा सेनास्ति तया भवान् ऋष्वया गम्भीरया शत्रून् रुरोज तमध्वानयद् दुरिता च दम्भयत् तेन यतो रक्षो नि धक्षि तस्मादपराजितोऽसि॥१०॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। हे राजादयो जना! यथाग्निर्ज्वालया शुष्कमार्द्रमपि वनं दहति तथा सुशिक्षियया महत्या सेनया शत्रूणां भयं कुर्य्यात् दुष्टाञ्छत्रून् दहत॥१०॥

**पदार्थः**-हे **(इन्द्र)** दुष्टता के नाशक राजन्! **(यः)** जो **(अग्निः)** अग्नि जैसे **(शुष्कम्)** सूखे **(वनम्)** वन को **(न)** वैसे **(रक्षः)** दुष्ट जन को **(धक्षि)** जलाते हो और जिन आपका **(हेतिः)** वज्र **(अशनिः)** बिजुली **(न)** जैसे वैसे **(भीमा)** जिनसे जन भय करते वह सेना है उस **(ऋष्वया)** बड़ी **(गम्भीरया)** अथाह बलयुक्त सेना से आप शत्रुओं को **(रुरोज)** रोगयुक्त करते हो उसको **(अध्वानयत्)** कंपाते हो और **(दुरिता)** दुष्ट आचरणों को **(च)** भी **(दम्भयत्)** नष्ट करते हो उससे जिस कारण दुष्टजन को **(नि)** अत्यन्त जलाते हो, इससे अपराजित हो॥१०॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे राजा आदि जनो! जैसे अग्नि ज्वाला से सूखे और गीले भी वन को जलाता है, वैसे उत्तम प्रकार शिक्षित तथा बड़ी सेना से शत्रुओं को भय करिये और शत्रुओं को जलाइये॥१०॥

**पुना राजा किं कुर्यादित्याह॥**

फिर राजा क्या करे, इस विषय को कहते हैं॥



www.9009.co.in

**आ सहस्रं पथिभिरिन्द्र राया तुविद्युम्न तुविवाजेभिरर्वाक्।**

**याहि सूनो सहसो यस्य नू चिददेव ईशे पुरुहूत योतोः॥११॥**

**आ। सहस्रम्। पथिऽभिः। इन्द्र। राया। तुविऽद्युम्न। तुविऽवाजेभिः। अर्वाक्। याहि। सूनो इति। सहसः। यस्य। नु। चित्। अदेवः। ईशे। पुरुऽहूत। योतोः॥११॥**

**पदार्थः**-(**आ**) समन्तात् (**सहस्रम्**) असंख्यातम् (**पथिभिः**) मार्गैः (**इन्द्र**) (**राया**) धनेन (**तुविद्युम्न**) बहुप्रशंस (**तुविवाजेभिः**) बहुवेगैर्बहुसङ्ग्रामैर्वा (**अर्वाक्**) पश्चात् (**याहि**) गच्छ (**सूनो**) अपत्य (**सहसः**) बलवतः (**यस्य**) (**नू**) सद्यः (**चित्**) अपि (**अदेवः**) अविद्वान् (**ईशे**) ईष्टे (**पुरुहूत**) बहुभिः कृताह्वान (**योतोः**) मिश्रिताऽमिश्रितकर्त्तुः॥११॥

**अन्वयः**-हे तुविद्युम्न पुरुहूत सहसः सूनो इन्द्र! त्वं पथिभी राया तुविवाजेभिस्सहार्वाक् सहस्रमाऽऽयाहि यस्य योतोश्चिददेव ईशे तन्नू प्राप्नुहि॥११॥

**भावार्थः**-हे राजँस्त्वं विद्याविनयमार्गेण प्रजाः पितृवत्पालयित्वा यशस्वी भूत्वा सत्याऽसत्ययोर्यथावन्निर्णयं कुरु॥११॥

**पदार्थः**-हे (**तुविद्युम्न**) बहुत प्रशंसा से युक्त (**पुरुहूत**) बहुतों से आह्वान किये गये (**सहसः**) बलवान् के (**सूनो**) पुत्र (**इन्द्र**) दुष्टता के नाशक राजन्! आप (**पथिभिः**) मार्गों (**राया**) धन और (**तुविवाजेभिः**) बहुत वेग वा बहुत संग्रामों के साथ (**अर्वाक्**) पीछे से (**सहस्रम्**) अनेकों को (**आ**) सब ओर से (**याहि**) प्राप्त हूजिये और (**यस्य**) जिस (**योतोः**) मिश्रित और अमिश्रित करने वाले का (**चित्**) भी (**अदेवः**) विद्वान् से भिन्न जन (**ईशे**) इच्छा करता है, उसको (**नू**) शीघ्र प्राप्त होओ॥११॥

**भावार्थः**-हे राजन्! आप विद्या और विनय के मार्ग से प्रजाओं का पिता के सदृश पालन करके यशस्वी होकर सत्य और असत्य का यथावत् निर्णय करिये॥११॥

**पुनः कोऽजातशत्रुर्भवतीत्याह॥**

फिर कौन [अजात]शत्रुवाला होता है, इस विषय को कहते हैं॥

**प्र तुविद्युम्नस्य स्थविरस्य घृष्वेर्दिवो ररप्शे महिमा पृथिव्याः।**

**नास्य शत्रुर्न प्रतिमानमस्ति न प्रतिष्ठिः पुरुमायस्य सह्योः॥१२॥**

**प्र। तुविऽद्युम्नस्य। स्थविरस्य। घृष्वेः। दिवः। ररप्शे। महिमा। पृथिव्याः। न। अस्य। शत्रुः। न। प्रतिऽमानम्। अस्ति। न। प्रतिऽस्थिः। पुरुऽमायस्य। सह्योः॥१२॥**

**पदार्थः**-(**प्र**) (**तुविद्युम्नस्य**) बहुप्रशंसाधनस्य (**स्थविरस्य**) विद्यया वयसा च वृद्धस्य (**घृष्वेः**) घर्षकस्य (**दिवः**) कमनीयस्य (**ररप्शे**) अतिरिणक्ति (**महिमा**) (**पृथिव्याः**) भूमेः (**न**) (**अस्य**) (**शत्रुः**) (**न**) (**प्रतिमानम्**) परिमाणं सादृश्ये वा (**अस्ति**) (**न**) (**प्रतिष्ठिः**) प्रतिष्ठितः प्रतिष्ठावान् (**पुरुमायस्य**) बहुशुभकर्मप्रज्ञस्य (**सह्योः**) सहनशीलस्य॥१२॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यस्य तुविद्युम्नस्य स्थविरस्य घृष्वेर्दिवः पुरुमायस्य सह्योर्महिमा पृथिव्याः प्र ररप्शेऽस्य न शत्रुर्न प्रतिमानं न प्रतिष्ठिश्चास्ति॥१२॥

**भावार्थः**-ये विद्यावृद्धा अमितप्रशंसामहिमानः सत्यं कामयमाना बहुप्रज्ञाः शमदमादिगुणान्विताः स्युस्तेषां कोऽपि शत्रुः सदृशः प्रतिष्ठितो वा न जायते॥१२॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जिस **(तुविद्युम्नस्य)** बहुत प्रशंसारूप धन से युक्त **(स्थविरस्य)** विद्या और अवस्था से वृद्ध **(घृष्वेः)** दुष्टों के घिसनेवाले **(दिवः)** सुन्दर **(पुरुमायस्य)** बहुत श्रेष्ठ कर्म्मों में बुद्धि जिसकी उस **(सह्योः)** सहनशील का **(महिमा)** महत्त्व **(पृथिव्याः)** भूमि से **(प्र, ररप्शे)** अलग फैलता है **(अस्य)** इसका **(न)** न **(शत्रुः)** वैरी **(न)** न **(प्रतिमानम्)** मान वा सादृश्य और **(न)** न **(प्रतिष्ठिः)** प्रतिष्ठित **(अस्ति)** है॥१२॥

**भावार्थः**-जो विद्या में वृद्ध, अमित प्रशंसा और महिमा वाले, सत्य की कामना करते हुए, बहुत बुद्धिमान् और शम, दम आदि गुणों से युक्त होवें, उनका कोई भी न शत्रु, न बराबर और न उनसे अधिक प्रतिष्ठित होता है॥१२॥

**पुना राजा किं कुर्य्यादित्याह॥**

फिर राजा क्या करे, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**प्र तत्ते अद्या करणं कृतं भूत् कुत्सं यदायुमतिथिग्वमस्मै।**

**पुरू सहस्रा नि शिशा अभि क्षामुत्तूर्वयाणं धृषता निनेय॥१३॥**

**प्र। तत्। ते। अद्य। करणम्। कृतम्। भूत्। कुत्सम्। यत्। आयुम्। अतिथिऽग्वम्। अस्मै। पुरु। सहस्रा। नि। शिशाः। अभि। क्षाम्। उत्। तूर्वयाणम्। धृषता। निनेथ॥१३॥**

**पदार्थः**-**(प्र)** **(तत्)** **(ते)** तव **(अद्या)** अत्र **निपातस्य चे**ति दीर्घः। **(करणम्)** साधनम् **(कृतम्)** **(भूत्)** भवेत् **(कुत्सम्)** वज्रमिव दृढम् **(यत्)** **(आयुम्)** जीवनम् **(अतिथिग्वम्)** योऽतिथीन् गच्छति तम् **(अस्मै)** **(पुरू)** बहूनि **(सहस्रा)** सहस्राणि **(नि)** **(शिशाः)** शिक्षय **(अभि)** **(क्षाम्)** पृथिवीम् **(उत्)** **(तूर्वयाणम्)** तूर्वं शीघ्रगामि यानं यस्यास्ताम् **(धृषता)** दृढत्वेन **(निनेथ)** नय॥१३॥

**अन्वयः**-हे राजन्! यत्कुत्समतिथिग्वमायुमस्मै त्वमुन्निनेथ येन धृषता तूर्वयाणं क्षां पुरू सहस्राऽभि नि शिशास्तत्तेऽद्या करणं कृतं प्र भूत्॥१३॥

**भावार्थः**-यत्र राजादयो जना दीर्घायुषोऽतिथिसेवकाः पक्षपातं विहाय प्रजापालकाः सन्ति तत्र सर्वाणि कार्य्याणि सिद्धानि जायन्ते॥१३॥

**पदार्थः**-हे राजन्! **(यत्)** जिस **(कुत्सम्)** वज्र के सदृश दृढ़ **(अतिथिग्वम्)** अतिथियों को प्राप्त होने वाले **(आयुम्)** जीवन को **(अस्मै)** इसके लिये आप **(उत्)** **(निनेथ)** उन्नति प्राप्त करिये जिस **(धृषता)** दृढ़त्व से **(तूर्वयाणम्)** शीघ्रगामी वाहन जिसका उस **(क्षाम्)** पृथिवी को **(पुरू)** बहुत **(सहस्रा)** हजारों



www.9009.co.in

की **(अभि)** चारों ओर से **(नि, शिशाः)** शिक्षा दीजिये **(तत्)** वह **(ते)** आप का **(अद्या)** आज **(करणम्)** साधन **(कृतम्)** किया गया **(प्र, भूत्)** होवे॥१३॥

**भावार्थः**-जहाँ राजा आदि जन अधिक अवस्था वाले अतिथि जनों के सेवक, पक्षपात का त्याग करके प्रजा के पालक हैं, वहाँ सम्पूर्ण कार्य्य सिद्ध होते हैं॥१३॥

**पुनर्विद्वांसः किं कुर्य्युरित्याह॥**

फिर विद्वान् जन क्या करें, इस विषय को कहते हैं॥

**अनु त्वाहिघ्ने अध देव देवा मदन् विश्वे कवितमं कवीनाम्।**

**करो यत्र वरिवो बाधिताय दिवे जनाय तन्वे गृणानः॥१४॥**

**अनु। त्वा। अहिऽघ्ने। अध। देव। देवाः। मदन्। विश्वे। कविऽतमम्। कवीनाम्। करः। यत्र। वरिवः। बाधिताय। दिवे। जनाय। तन्वे। गृणानः॥१४॥**

**पदार्थः**-**(अनु)** **(त्वा)** त्वाम् **(अहिघ्ने)** योऽहिं हन्ति तस्मै सूर्य्याय **(अध)** अथ **(देव)** विद्वन् **(देवाः)** विद्वांसः **(मदन्)** आनन्दयन्ति **(विश्वे)** सर्वे **(कवितमम्)** अतिशयेन विद्वांसम् **(कवीनाम्)** विदुषाम् **(करः)** यः करोति सः **(यत्र)** **(वरिवः)** परिचरणम् **(बाधिताय)** विलोडिताय **(दिवे)** कामयमानाय **(जनाय)** **(तन्वे)** शरीराय **(गृणानः)** स्तुवन्॥१४॥

**अन्वयः**-हे देव! यत्र बाधिताय दिवे जनाय तन्वो वरिवो गृणानः करोऽस्ति तत्राहिघ्ने सूर्य्यायेव यं कवीनां कवितमं त्वा विश्वे देवा अनु मदन् तं त्वामाश्रित्याध सततं वयं सुखिनः स्याम॥१४॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। ये मनुष्या उत्तमानाप्तान् विदुषः संसेव्य विद्याः प्राप्यान्यान् बोधयन्ति ते मोदिता अनुजायन्ते॥१४॥

**पदार्थः**-हे **(देव)** विद्वन्! **(यत्र)** जहाँ **(बाधिताय)** विलोडित हुए **(दिवे)** कामना करते हुए **(जनाय)** जन के और **(तन्वे)** शरीर के लिये **(वरिवः)** सेवन की **(गृणानः)** स्तुति करता हुआ जन **(करः)** कार्य्यों को करने वाला है वहाँ **(अहिघ्ने)** मेघ को नष्ट करने वाले सूर्य के लिये जैसे वैसे जिस **(कवीनाम्)** विद्वानों के मध्य में **(कवितमम्)** अत्यन्त विद्वान् **(त्वा)** आपको **(विश्वे)** सब **(देवाः)** विद्वान् जन **(अनु, मदन्)** आनन्दित करते हैं, उन आप का आश्रयण करके **(अध)** इसके अनन्तर निरन्तर हम लोग सुखी होवें॥१४॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो मनुष्य उत्तम, यथार्थवक्ता, विद्वानों का उत्तम प्रकार सेवन कर विद्याओं को प्राप्त होकर अन्यों को जानते हैं, वे प्रसन्न होते हैं॥१४॥

**पुनर्मनुष्यैः किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**अनु द्यावापृथिवी तत्त ओजोऽमर्त्या जिहत इन्द्र देवाः।**



www.9009.co.in

**कृष्वा कृत्नो अकृतं यत्ते अस्त्युक्थं नवीयो जनयस्व यज्ञैः॥१५॥६॥**

**अनु। द्यावापृथिवी इति। तत्। ते। ओजः। अमर्त्याः। जिहते। इन्द्र। देवाः। कृष्व। कृत्नो इति। अकृतम्। यत्। ते। अस्ति। उक्थम्। नवीयः। जनयस्व। यज्ञैः॥१५॥**

**पदार्थः**-(**अनु**) (**द्यावापृथिवी**) भूमिसूर्य्यौ (**तत्**) (**ते**) तव (**ओजः**) पराक्रमम् (**अमर्त्याः**) साधारणमनुष्यस्वभावाद्विलक्षणाः (**जिहते**) प्राप्नुवन्ति (**इन्द्र**) राजन् (**देवाः**) (**कृष्वा**) कुरुष्व। अत्र **द्व्यचोऽतस्तिङ** इति दीर्घः। (**कृत्नो**) कर्त्तः (**अकृतम्**) अक्रियमाणं कर्म्म (**यत्**) (**ते**) तव (**अस्ति**) (**उक्थम्**) वक्तुमर्हम् (**नवीयः**) अतिशयेन नूतनं वचनम् (**जनयस्व**) (**यज्ञैः**) सङ्गतिमयैर्व्यवहारैः॥१५॥

**अन्वयः**-हे कृत्नो इन्द्र! ते तव सकाशाद्येऽमर्त्या देवा यदकृतं नवीय उक्थमस्ति तत्ते जिहते द्यावापृथिवी अनु जिहते तास्त्वं यज्ञैर्जनयस्वोजः कृष्वा॥१५॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यूयं भूमिविद्युदादिविद्यया नवीनं नवीनं कार्यं साध्नुतेति॥१५॥

अत्रेन्द्रविद्वद्राजगुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इत्यष्टादशं सूक्तं षष्ठो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे (**कृत्नो**) करने वाले (**इन्द्र**) राजन्! (**ते**) आपके समीप से जो (**अमर्त्याः**) साधारण मनुष्यों के स्वभाव से विलक्षण स्वभाव वाले (**देवाः**) विद्वान् जन (**यत्**) जो (**अकृतम्**) नहीं किया गया कर्म और (**नवीयः**) अतिशय नवीन वचन (**उक्थम्**) कहने योग्य (**अस्ति**) है (**तत्**) उस (**ते**) आपके वचन को (**जिहते**) प्राप्त होते और (**द्यावापृथिवी**) भूमि और सूर्य को (**अनु**) पश्चात् प्राप्त होते हैं उनको आप (**यज्ञैः**) मेल करनेरूप व्यवहारों से (**जनयस्व**) प्रकट कीजिये और (**ओजः**) पराक्रम को (**कृष्वा**) करिये॥१५॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! आप लोग भूमि और बिजुली आदि की विद्या से नवीन-नवीन कार्य को सिद्ध करिये॥१५॥

इस सूक्त में इन्द्र, विद्वान् और राजा के गुणवर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह अठाहरहवाँ सूक्त और छठा वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

अथ त्रयोदशर्चस्यैकोनविंशतितमस्य सूक्तस्य भरद्वाजो बार्हस्पत्य ऋषिः। इन्द्रो देवता। १, ३, १३ भुरिक्पङ्क्तिः। ९ पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः। २, ४, ५, ६, ७ निचृत्त्रिष्टुप्। १०, ११, १२ विराट्त्रिष्टुप् छन्दः। ८ त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः॥

*अथ सूर्यः कीदृशोऽस्तीत्याह॥*

अब तेरह ऋचावाले उन्नीसवें सूक्त का प्रारम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में अब सूर्य कैसा है, इस विषय को कहते हैं॥

**म॒हाँ इन्द्रो॑ नृ॒वदा च॑र्षणि॒प्रा उ॒त द्वि॒बर्हा॑ अमि॒नः सहो॑भिः।**

**अ॒स्म॒द्र्य॑ग्वावृधे वी॒र्या॑यो॒रुः पृ॒थुः सुकृ॑तः क॒र्तृभि॑र्भू॒त्॥ १॥**

म॒हान्। इन्द्रः॑। नृ॒ऽवत्। आ। च॒र्ष॒णि॒ऽप्राः। उ॒त। द्वि॒ऽबर्हाः॑। अ॒मि॒नः। सहः॑ऽभिः। अ॒स्म॒द्र्य॑क्। व॒वृ॒धे। वी॒र्या॑य। उ॒रुः। पृ॒थुः। सु॒ऽकृ॒तः। क॒र्तृऽभिः॑। भू॒त्॥ १॥

**पदार्थः**-(**महान्**) (**इन्द्रः**) सूर्यः (**नृवत्**) मनुष्यवत् (**आ**) (**चर्षणिप्राः**) यश्चर्षणिषु मनुष्येषु विद्युद्रूपेण व्याप्नोति (**उत**) (**द्विबर्हाः**) योऽन्तरिक्षवायुभ्यां द्वाभ्यां वर्धते (**अमिनः**) अहिंसकः (**सहोभिः**) बलैः (**अस्मद्र्यक्**) अस्माकं सम्मुखीभूतः (**वावृधे**) वर्धते (**वीर्याय**) पराक्रमाय (**उरूः**) बहुः (**पृथुः**) विस्तीर्णः (**सुकृतः**) सुष्ठु उत्पादितः (**कर्तृभिः**) कर्मकारकैः (**भूत्**) भवेत्॥ १॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यो महानिन्द्रश्चर्षणिप्रा उत द्विबर्हा अमिनोऽस्मद्र्यगुरुः पृथुः सुकृतो भूत् सहोभिः कर्तृभिस्सह वीर्याय नृवदा वावृधे तं विज्ञायेष्टसिद्धिं कुरुत॥ १॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। यथा सखा सख्या सह कार्यसिद्धये प्रयतते तथैवेश्वरनिर्मिता विद्युत्सूर्यो वा सर्वेषां कर्मकारिणां सहयोगी वर्तते॥ १॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो (**महान्**) बड़ा (**इन्द्रः**) सूर्य (**चर्षणिप्राः**) मनुष्यों में बिजुली रूप में व्याप्त होने (**उत**) और (**द्विबर्हाः**) अन्तरिक्ष और वायु से बढ़ने और (**अमिनः**) नहीं हिंसा करने वाला (**अस्मद्र्यक्**) हम लोगों के सम्मुख हुआ (**उरुः**) बहुत (**पृथुः**) विस्तीर्ण (**सुकृतः**) उत्तम प्रकार उत्पन्न किया गया (**भूत्**) हो तथा (**सहोभिः**) बलों और (**कर्तृभिः**) कर्म करने वालों के साथ (**वीर्याय**) पराक्रम के लिये (**नृवत्**) मनुष्य जैसे वैसे (**आ, वावृधे**) सब ओर से बढ़ता है, उसको जान कर इष्टसिद्धि करिये॥ १॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जैसे मित्र-मित्र के साथ कार्य की सिद्धि के निमित्त प्रयत्न करता है, वैसे ही ईश्वर से निर्मित बिजुली वा सूर्य सम्पूर्ण कर्मकारियों का सहयोगी होता है॥ १॥

**मनुष्यैः कथमुन्नतिः कार्येत्याह॥**



www.9009.co.in

मनुष्यों को किस प्रकार से उन्नति करनी चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**इन्द्रमेव धिषणा सातये धाद् बृहन्तमृष्वमजरं युवानम्।**

**अषाळ्हेन शवसा शूशुवांसं सद्यश्चिद्यो वावृधे असामि॥ २॥**

**इन्द्रम्। एव। धिषणा। सातये। धात्। बृहन्तम्। ऋष्वम्। अजरम्। युवानम्। अषाळ्हेन। शवसा। शूशुऽवांसम्। सद्यः। चित्। यः। ववृधे। असामि॥ २॥**

**पदार्थः-(इन्द्रम्)** सूर्यमिव परमैश्वर्यवन्तम् **(एव)** **(धिषणा)** प्रज्ञया कर्मणा वा **(सातये)** संविभागाय **(धात्)** दधाति **(बृहन्तम्)** पृथिव्याः सकाशादतिविस्तीर्णम् **(ऋष्वम्)** गन्तारम् **(अजरम्)** जरारहितम् **(युवानम्)** **(अषाळ्हेन)** शत्रुभिरसोढव्येन **(शवसा)** **(शूशुवांसम्)** व्याप्नुवन्तम् **(सद्यः)** **(चित्)** **(यः)** **(वावृधे)** वर्धते **(असामि)** अनल्पम्॥ २॥

**अन्वयः**-यो धिषणा सातये बृहन्तमृष्वमजरं युवानमिवाषाळ्हेन शवसा शूशुवांसमिन्द्रं धात् स एव सद्योऽसामि चित् वावृधे॥ २॥

**भावार्थः**-यथा महन्मित्रं प्राप्य मनुष्या वर्धन्ते तथैव विद्युद्विद्यां लब्ध्वाऽतुलां वृद्धिं प्राप्नुवन्ति॥ २॥

**पदार्थः-(यः)** जो **(धिषणा)** बुद्धि वा कर्म से **(सातये)** संविभाग के लिये **(बृहन्तम्)** पृथिवी के समीप से अतिविस्तीर्ण **(ऋष्वम्)** जाने वाले **(अजरम्)** वृद्धावस्था से रहित **(युवानम्)** युवाजन को जैसे वैसे **(अषाळ्हेन)** शत्रुओं से नहीं सहने योग्य **(शवसा)** बल से **(शूशुवांसम्)** व्याप्तिमान् **(इन्द्रम्)** सूर्य के सदृश अत्यन्त ऐश्वर्य वाले को **(धात्)** धारण करता है वह **(एव)** ही **(सद्यः)** शीघ्र **(असामि)** अत्यन्त **(चित्)** निश्चित **(वावृधे)** वृद्धि की प्राप्त होता है॥ २॥

**भावार्थः**-जैसे बड़े मित्र को प्राप्त होकर मनुष्य वृद्धि को प्राप्त होते हैं, वैसे ही बिजुली की विद्या को प्राप्त होकर अतुल वृद्धि को प्राप्त होते हैं॥ २॥

**पुनः स राजा कीदृशो भवेदित्याह॥**

फिर वह राजा कैसा होवे, इस विषय को कहते हैं॥

**पृथू करस्ना बहुला गभस्ती अस्मद्र्य१क् सं मिमीहि श्रवांसि।**

**यूथेव पश्वः पशुपा दमूना अस्माँ इन्द्राभ्या ववृत्स्वाजौ॥ ३॥**

**पृथू इति। करस्ना। बहुला। गभस्ती इति। अस्मद्र्यक्। सम्। मिमीहि। श्रवांसि। यूथाऽइव। पश्वः। पशुऽपाः। दमूनाः। अस्मान्। इन्द्र। अभि। आ। ववृत्स्व। आजौ॥ ३॥**

**पदार्थः-(पृथू)** विस्तीर्णौ **(करस्ना)** यौ करान् कर्त्तॄन् स्नापयतश्शोधयतस्तौ **(बहुला)** याभ्यां बहूँल्लाति तौ **(गभस्ती)** हस्तौ। **गभस्ती इति बाहुनाम।** (निघं०२.४) **(अस्मद्र्यक्)** योऽस्मानञ्चति सः **(सम्)** **(मिमीहि)** मन्यस्व **(श्रवांसि)** अन्नानि श्रवणानि वा **(यूथेव)** समूह इव **(पश्वः)** पशोः **(पशुपाः)**



www.9009.co.in

यः पशून् पाति **(दमूनाः)** दमनशीलः **(अस्मान्)** **(इन्द्र)** परमैश्वर्यप्रद न्यायेश **(अभि)** **(आ)** **(ववृत्स्व)** अभ्यावर्तस्व **(आजौ)** संग्रामे॥३॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! यौ ते पृथू करस्ना बहुला गभस्ती वर्तेते ताभ्यां पशुपाः पश्वो यूथेवाऽस्मद्र्यक् सञ्छ्वांसि सं मिमीहि। दमूनाः सनाजावस्मानभ्याऽऽववृत्स्व॥३॥

**भावार्थः**अत्रोपमालङ्कारः। त एव श्रीमन्तो य आलस्यं विहाय सदा सत्कर्मणे प्रयतन्ते यथा पशुपालाः पशून् पालयित्वा समृद्धा भवन्ति तथैव पुरुषार्थिनो जना दारिद्र्यं विनाश्य श्रीपतयो जायन्ते॥३॥

**पदार्थः**-हे **(इन्द्र)** अत्यन्त ऐश्वर्य के देनवाले और न्याय के ईश! जो आपके **(पृथू)** विस्तीर्ण **(करस्ना)** जो करने वालों को शुद्ध करने वाले **(बहुला)** जिन से बहुतों को ग्रहण करते वे **(गभस्ती)** दोनों हाथ वर्त्तमान हैं उन दोनों से **(पशुपाः)** पशुओं के रखने वाले **(पश्वः)** पशु के **(यूथेव)** समूह जैसे वैसे **(अस्मद्र्यक्)** हम लोगों की सेवा करने वाले होते हुए **(श्रवांसि)** अन्नों वा श्रवणों का **(सम्, मिमीहि)** उत्तम प्रकार ग्रहण करिये और **(दमूनाः)** इन्द्रियों का निग्रह करने वाले हुए **(आजौ)** सङ्ग्राम में **(अस्मान्)** हम लोगों के **(अभि)** चारों ओर से **(आ, ववृत्स्व)** अच्छे प्रकार वर्ताव करिये॥३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। वे ही लक्ष्मीवान् होते हैं, जो आलस्य का त्याग करके सदा सत्कर्म के लिये प्रयत्न करते हैं और जैसे पशुओं के पालने वाले पशुओं का पालन करके समृद्ध अर्थात् धनवान् होते हैं, वैसे ही पुरुषार्थी जन दारिद्र्य का विनाश करके धन के स्वामी होते हैं॥३॥

**पुनर्मनुष्याः कीदृशा भवेयुरित्याह॥**

फिर मनुष्य कैसे होवें, इस विषय को कहते हैं॥

**तं व॒ इन्द्रं॑ च॒तिनं॑मस्य शा॒कैरि॒ह नू॒नं वा॑ज॒यन्तो॑ हुवेम।**

**यथा॑ चि॒त्पूर्वे॑ जरि॒तार॑ आ॒सुरने॑द्या अनव॒द्या अरि॑ष्टाः॥४॥**

**तम्। व॒ः। इन्द्र॑म्। च॒तिन॑म्। अ॒स्य। शा॒कैः। इ॒ह। नू॒नम्। वा॒ज॒ऽयन्तः॑। हु॒वे॒म। यथा॑। चि॒त्। पूर्वे॑। ज॒रि॒तारः॑। आ॒सुः। अने॑द्याः। अ॒न॒व॒द्याः। अरि॑ष्टाः॥४॥**

**पदार्थः**-**(तम्)** **(वः)** युष्मान् **(इन्द्रम्)** परमैश्वर्यप्रदम् **(चतिनम्)** आनन्दप्रदम् **(अस्य)** **(शाकैः)** शक्तिविशेषैः **(इह)** अस्मिन् संसारे **(नूनम्)** निश्चितम् **(वाजयन्तः)** ज्ञापयन्तः **(हुवेम)** **(यथा)** **(चित्)** **(पूर्वे)** आदिमाः **(जरितारः)** स्तावकाः **(आसुः)** भवन्ति **(अनेद्याः)** अनिन्दनीयाः **(अनवद्याः)** प्रशंसनीयाः **(अरिष्टाः)** अहिंसिताः॥४॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथेह पूर्वेऽनेद्या अनवद्या अरिष्टा जरितार आसुस्तथा चिदस्य शाकैस्तं चतिनमिन्द्रं वो नूनं वाजयन्तो वयं हुवेम॥४॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यथा प्रशंसनीया आप्ताः पुरुषा धर्म्येषु कर्मसु वर्त्तित्वा कृतकृत्या भवन्ति तथैव वर्त्तित्वा सर्वे मनुष्या कृतकार्या भवन्तु॥४॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(यथा)** जैसे **(इह)** इस संसार में **(पूर्वे)** प्राचीन **(अनेद्याः)** नहीं करने योग्य **(अनवद्याः)** प्रशंसनीय **(अरिष्टाः)** नहीं हिंसित **(जरितारः)** स्तुति करने वाले **(आसुः)** होते हैं, वैसे **(चित्)** भी **(अस्य)** इसके **(शाकैः)** सामर्थ्यविशेषों से **(तम्)** उस **(चतिनम्)** आनन्द और **(इन्द्रम्)** अत्यन्त ऐश्वर्य्य के देने वाले को तथा **(वः)** तुम लोगों को **(नूनम्)** **(वाजयन्तः)** जनाते हुए हम लोग **(हुवेम)** ग्रहण करें॥४॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जैसे प्रशंसा करने योग्य यथार्थवक्ता पुरुष धर्मयुक्त कर्मों में वर्ताव करके कृतकृत्य होते हैं, वैसे ही वर्ताव करके सब मनुष्य कृतकार्य होवें॥४॥

**पुनर्मनुष्यैः कथं भवितव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को कैसा होना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**धृतव्रतो धनदाः सोमवृद्धः स हि वामस्य वसुनः पुरुक्षुः।**

**सं जग्मिरे पथ्या३ रायो अस्मिन्त्समुद्रे न सिन्धवो यादमानाः॥५॥७॥**

**धृतऽव्रतः। धनऽदाः। सोमऽवृद्धः। सः। हि। वामस्य। वसुनः। पुरुऽक्षुः। सम्। जग्मिरे। पथ्याः। रायः। अस्मिन्। समुद्रे। न। सिन्धवः। यादमानाः॥५॥**

**पदार्थः**-**(धृतव्रतः)** धृतानि व्रतानि कर्म्माणि येन **(धनदाः)** यो धनं ददाति **(सोमवृद्धः)** सोमेनैश्वर्येणौषध्या वा प्रवृद्धः **(सः)** **(हि)** यतः **(वामस्य)** प्रशस्यस्य **(वसुनः)** धनस्य **(पुरुक्षुः)** पुरूणि बहून्यन्नानि यस्य सः **(सम्)** **(जग्मिरे)** सङ्गच्छन्ते **(पथ्याः)** पथि साधवः **(रायः)** श्रियः **(अस्मिन्)** **(समुद्रे)** सागरे **(न)** इव **(सिन्धवः)** नद्यः **(यादमानः)** अभिगच्छन्त्यः॥५॥

**अन्वयः**-हे विद्वांसो! यमस्मिन् व्यवहारे यादमानाः सिन्धवः समुद्रे न पथ्या रायः सं जग्मिरे स हि धृतव्रतः सोमवृद्धो धनदाः पुरुक्षुर्वामस्य वसुनः प्रभुर्भवति॥५॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। यथा नद्यो वेगेन समुद्रं प्राप्य स्थिरा भवन्ति तथैव धार्मिकमुद्योगिनं श्रियं सेवन्ते॥५॥

**पदार्थः**-हे विद्वानो! जिसको **(अस्मिन्)** इस व्यवहार में **(यादमानाः)** चारों ओर से जाती हुई **(सिन्धवः)** नदियाँ **(समुद्रे)** समुद्र में **(न)** जैसे वैसे **(पथ्याः)** मार्ग में श्रेष्ठ **(रायः)** धन **(सम्, जग्मिरे)** प्राप्त होते हैं **(सः, हि)** वही **(धृतव्रतः)** धारण किये कर्म जिसने वह **(सोमवृद्धः)** ऐश्वर्य वा ओषधि से बढ़ा हुआ **(धनदाः)** धन का देने वाला **(पुरुक्षुः)** बहुत अन्न से युक्त **(वामस्य)** प्रशंसा करने योग्य **(वसुनः)** धन का स्वामी होता है॥५॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जैसे नदियाँ वेग से समुद्र को प्राप्त होकर स्थिर होती हैं, वैसे ही धार्मिक तथा उद्योगी पुरुष की लक्ष्मी सेवा करती हैं॥५॥

**पुना राजा किं कुर्य्यादित्याह॥**

फिर राजा क्या करे, इस विषय को कहते हैं॥

**शविष्ठं न आ भर शूर शव ओजिष्ठमोजो अभिभूत उग्रम्।**

**विश्वा द्युम्ना वृष्ण्या मानुषाणामस्मभ्यं दा हरिवो मादयध्यै॥६॥**

**शविष्ठम्। नः। आ। भर। शूर। शवः। ओजिष्ठम्। ओजः। अभिऽभूते। उग्रम्। विश्वा। द्युम्ना। वृष्ण्या। मानुषाणाम्। अस्मभ्यम्। दाः। हरिऽवः। मादयध्यै॥६॥**

**पदार्थः**-(**शविष्ठम्**) अतिशयेन बलिष्ठम् (**नः**) अस्मान् (**आ**) (**भर**) धर (**शूर**) निर्भय (**शवः**) बलम् (**ओजिष्ठम्**) अतिशयेन पराक्रमयुक्तम् (**ओजः**) प्राणधारणम् (**अभिभूते**) दुष्टानामभिभवकर्त्तः (**उग्रम्**) तीव्रम् (**विश्वा**) सर्वाणि (**द्युम्ना**) द्योतमानानि यशांसि धनानि वा (**वृष्ण्या**) वृषभ्यो हितानि (**मानुषाणाम्**) मनुष्यजातिस्थानाम् (**अस्मभ्यम्**) (**दाः**) देहि (**हरिवः**) प्रशस्ता हरयो मनुष्या विद्यन्ते यस्य तत्सम्बुद्धौ (**मादयध्यै**) मादयितुम्॥६॥

**अन्वयः**-हे हरिवः शूराऽभिभूते! त्वं नः शविष्ठमुग्रमोज ओजिष्ठं शव आ भराऽनेन मानुषाणां विश्वा वृष्ण्या द्युम्नाऽस्मभ्यं मादयध्यै दाः॥६॥

**भावार्थः**-हे राजंस्त्वं राज्यपालनार्हान् गुणान् धृत्वा न्यायेन राज्यं पालय॥६॥

**पदार्थः**-हे (**हरिवः**) प्रशंसनीय मनुष्यों वाले (**शूर**) भयरहित (**अभिभूते**) दुष्टों के अभिभव करने वाले! आप (**नः**) हम लोगों को और (**शविष्ठम्**) अतिशय बलिष्ठ (**उग्रम्**) तीव्र (**ओजः**) प्राणधारण को और (**ओजिष्ठम्**) अत्यन्त पराक्रमयुक्त (**शवः**) बल को (**आ, भर**) सब प्रकार से धारण करो और इससे (**मानुषाणाम्**) मनुष्य जाति में वर्त्तमानों के सम्बन्ध में (**विश्वा**) सम्पूर्ण (**वृष्ण्या**) उत्तम जनों के लिये हितकारक (**द्युम्ना**) प्रकाशित यशों वा धनों को (**अस्मभ्यम्**) हम लोगों के लिये (**मादयध्यै**) आनन्द देने को (**दाः**) दीजिये॥६॥

**भावार्थः**-हे राजन्! आप राज्य के पालने योग्य गुणों को धारण करके न्याय से राज्य का पालन करिये॥६॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**यस्ते मदः पृतनाषाळमृध्र इन्द्र तं न आ भर शूशुवांसम्।**

**येन तोकस्य तनयस्य सातौ मंसीमहि जिगीवांसस्त्वोताः॥७॥**



www.9009.co.in

यः। ते। मदः। पृतनाषाट्। अमृध्रः। इन्द्र। तम्। नः। आ। भर। शूशुऽवांसम्। येन। तोकस्य। तनयस्य। सातौ। मंसीमहि। जिगीवांसः। त्वाऽऊताः॥७॥

**पदार्थः**-(**यः**) (**ते**) तव (**मदः**) अतिहर्षः (**पृतनाषाट्**) यः पृतनाः सेनाः सहते सः (**अमृध्रः**) अहिंस्रः (**इन्द्र**) राजन् (**तम्**) (**नः**) अस्मभ्यम् (**आ**) (**भर**) (**शूशवांसम्**) शुभगुणव्यापिनम् (**येन**) (**तोकस्य**) अपत्यस्य (**तनयस्य**) सुकुमारस्य (**सातौ**) संविभागे (**मंसीमहि**) विजानीयाम (**जिगीवांसः**) जेतुं शीलाः (**त्वोताः**) त्वया रक्षिताः॥७॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र राजन्! ते योऽमृध्रः पृतनाषाण्मदोऽस्ति येन जिगीवांसस्त्वोता वयं तोकस्य तनयस्य सातौ रक्षां विद्यादानं च मंसीमहि त्वं तं शूशुवांसं न आ भर॥७॥

**भावार्थः**-हे प्रजाजना! राजानं प्रत्येवं ब्रुवन्तु नोऽस्माकं सन्ताना यथा सुशिक्षिताः स्युस्तथा नियमान् विधेहि यतो विजयानन्दौ वर्धेयाताम्॥७॥

**पदार्थः**-हे (**इन्द्र**) राजन् (**ते**) आप का (**यः**) जो (**अमृध्रः**) नहीं हिंसा करने और (**पृतनाषाट्**) सेनाओं को सहनेवाला (**मदः**) आनन्द है (**येन**) जिससे (**जिगीवांसः**) जीतनेवाले (**त्वोताः**) आप से रक्षित हम लोग (**तोकस्य**) सन्तान (**तनयस्य**) सुकुमार के (**सातौ**) संविभाग में रक्षा और विद्यावान् को (**मंसीमहि**) जानें और आप (**तम्**) उस (**शूशुवांसम्**) श्रेष्ठ गुणों से व्याप्त को (**नः**) हम लोगों के लिये (**आ, भर**) सब प्रकार से धारण करिये॥७॥

**भावार्थः**-हे प्रजाजनो! आप लोग राजा के प्रति यह कहो कि हम लोगों के सन्तान जिस प्रकार उत्तम शिक्षित हों, वैसे नियमों को करिये जिससे विजय और आनन्द बढ़े॥७॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**आ नो भर वृषणं शुष्ममिन्द्र धनस्पृतं शूशुवांसं सुदक्षम्।**

**येन वंसाम पृतनासु शत्रून् तवोतिभिरुत जामींरजामीन्॥८॥**

आ। नः। भर। वृषणम्। शुष्मम्। इन्द्र। धनऽस्पृतम्। शूशुऽवांसम्। सुऽदक्षम्। येन। वंसाम। पृतनासु। शत्रून्। तव। ऊतिऽभिः। उत। जामीन्। अजामीन्॥८॥

**पदार्थः**-(**आ**) समन्तात् (**नः**) अस्मभ्यम् (**भर**) धर (**वृषणम्**) शत्रुसामर्थ्यप्रतिबन्धकम् (**शुष्मम्**) बलम् (**इन्द्र**) दुष्टबलविदारक (**धनस्पृतम्**) धनं स्पृणन्ति येन तम् (**शूशुवांसम्**) शुभगुणव्यापिनम् (**सुदक्षम्**) उत्तमबलचातुर्यम् (**येन**) (**वंसाम**) विभजेम (**पृतनासु**) मनुष्यसेनासु (**शत्रून्**) (**तव**) (**ऊतिभिः**) रक्षादिभिः (**उत**) (**जामीन्**) सम्बन्धिनो बन्ध्वादीन् (**अजामीन्**) असम्बन्धिनो दुष्टान्॥८॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! त्वं नो वृषणं शुष्मं धनस्पृतं शूशुवांसं सुदक्षमाऽऽभर। येन वयं तवोतिभिर्जामीनुताप्यजामीञ्छत्रून् पृतनासु वंसाम॥८॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-राजभिरेवं प्रयत्नो विधेयो येन मित्राणि शत्रवश्च विभक्ता भवेयुस्तथैवं बलं विधेयं येन शत्रवो विलीयेरन्॥८॥

**पदार्थः**-हे **(इन्द्र)** दुष्टों के बल नाशक! आप **(नः)** हम लोगों के लिये **(वृषणम्)** शत्रुओं के सामर्थ्य को रोकने वाली **(शुष्मम्)** सेना और **(धनस्पृतम्)** धन को पूरण करते जिससे उस **(शूशुवांसम्)** शुभगुणव्यापिनी **(सुदक्षम्)** उत्तम बल की चतुराई को **(आ)** सब ओर से **(भर)** धारण करिये **(येन)** जिससे हम लोग **(तव)** आपके **(ऊतिभिः)** रक्षण आदिकों से **(जामीन्)** सम्बन्धी बन्धु आदिकों का **(उत)** और **(अजामीन्)** असम्बन्धी दुष्ट **(शत्रून्)** शत्रुओं का **(पृतनासु)** मनुष्यों की सेनाओं में **(वंसाम)** विभाग करें॥८॥

**भावार्थः**-राजाओं को चाहिये कि ऐसा प्रयत्न करें जिससे मित्र और शत्रु पृथक्-पृथक् प्रतीत होवें और वैसी ही सेना रखनी चाहिये जिससे शत्रु नष्ट होवें॥८॥

**पुनस्सर्वैर्जनैः किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

फिर सम्पूर्ण जनों को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**आ ते शुष्मो वृषभ एतु पश्चादोत्तरादधरादा पुरस्तात्।**

**आ विश्वतो अभि समेत्वर्वाङिन्द्र द्युम्नं स्वर्वद्धेह्यस्मे॥९॥**

**आ। ते। शुष्मः। वृषभः। एतु। पश्चात्। आ। उत्तरात्। अधरात्। आ। पुरस्तात्। आ। विश्वतः। अभि। सम्। एतु। अर्वाङ्। इन्द्र। द्युम्नम्। स्वः᳡वत्। धेहि। अस्मे इति॥९॥**

**पदार्थः**-**(आ)** समन्तात् **(ते)** तव **(शुष्मः)** उत्तमबलः **(वृषभः)** बलिष्ठः **(एतु)** प्राप्नोतु **(पश्चात्)** **(आ)** **(उत्तरात्)** **(अधरात्)** **(आ)** **(पुरस्तात्)** **(आ)** **(विश्वतः)** सर्वतः **(अभि)** **(सम्)** **(एतु)** प्राप्नोतु **(अर्वाङ्)** योऽर्वागञ्चति **(इन्द्र)** परमैश्वर्यकारक **(द्युम्नम्)** प्रकाशमयं यशोधनं वा **(स्वर्वत्)** स्वर्बहुविधं सुखं विद्यते यस्मिंस्तत् **(धेहि)** **(अस्मे)** अस्मभ्यम्॥९॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! यथास्मे पश्चात् स्वर्वद् द्युम्नमेतूत्तरात् स्वर्वद् द्युम्नमैतु। अधरात् स्वर्वद् द्युम्नमैतु विश्वतो द्युम्नमाभ्येतु, अर्वाङ् स्वर्वद् द्युम्नं समेतु पुरस्तात् स्वर्वद् द्युम्नं समेतु तथा ते शुष्मो वृषभ ऐतु। त्वमस्मभ्यमेतद्धेहि॥९॥

**भावार्थः**-हे राजप्रजाजना यथा सर्वाभ्यो दिग्भ्यस्सर्वान्त्सुखकीर्ती प्राप्नुयातां तथा यत्नमातिष्ठत॥९॥

**पदार्थः**-हे **(इन्द्र)** अत्यन्त ऐश्वर्य के करने वाले! जैसे **(अस्मे)** हम लोगों के लिये **(पश्चात्)** पीछे से **(स्वर्वत्)** बहुत प्रकार सुख विद्यमान जिसमें उस **(द्युम्नम्)** प्रकाशस्वरूप यश वा धन को **(एतु)** प्राप्त हूजिये और **(उत्तरात्)** बाईं ओर से बहुत प्रकार सुख जिसमें उस प्रकाशस्वरूप यश वा धन को **(आ)** सब ओर से प्राप्त हूजिये और **(अधरात्)** नीचे से बहुविध सुखवाले प्रकाशस्वरूप यश वा धन को **(आ)** सब ओर से प्राप्त हूजिये तथा **(विश्वतः)** सब ओर से प्रकाशस्वरूप यश वा धन के **(आ)** सब प्रकार से



www.9009.co.in

**(अभि, एतु)** सम्मुख हूजिये और **(अर्वाङ्)** नीचे से बहुत सुखवाले सम्पूर्ण प्रकाशस्वरूप यश वा धन को **(सम्)** उत्तम प्रकार प्राप्त हूजिये तथा **(पुरस्तात्)** आगे से बहुत प्रकार सुख जिसमें उस प्रकाशस्वरूप यश वा धन को अच्छे प्रकार प्राप्त हूजिये, वैसे **(ते)** आप का **(शुष्मः)** उत्तम बलयुक्त **(वृषभः)** बलिष्ठ **(आ)** सब ओर से प्राप्त होवे और आप हम लोगों के लिये इसको **(धेहि)** धारण करिये॥९॥

**भावार्थः**-हे राजा और प्रजाजनो! जैसे सब दिशाओं से सम्पूर्ण जनों को सुख और यश प्राप्त होवें, वैसे यत्न का अनुष्ठान करिये॥९॥

**पुनर्मनुष्यैः किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**नृवत्त इन्द्र नृतमाभिरूती वंसीमहि वामं श्रोमतेभिः।**

**ईक्षे हि वस्व उभयस्य राजन् धा रत्नं महि स्थूरं बृहन्तम्॥१०॥**

**नृऽवत्। ते। इन्द्र। नृऽतमाभिः। ऊती। वंसीमहि। वामम्। श्रोमतेभिः। ईक्षे। हि। वस्वः। उभयस्य। राजन्। धाः। रत्नम्। महि। स्थूरम्। बृहन्तम्॥१०॥**

**पदार्थः**-**(नृवत्)** नृभिस्तुल्यम् **(ते)** तव **(इन्द्र)** परमैश्वर्यप्रद **(नृतमाभिः)** अत्युत्तमा नरो विद्यन्ते यासु ताभिः **(ऊती)** रक्षादिभिः **(वंसीमहि)** विभजेम **(वामम्)** प्रशस्यं कर्म **(श्रोमतेभिः)** श्रावणीयैर्वचनैः **(ईक्षे)** पश्यामि **(हि)** यतः **(वस्वः)** धनस्य **(उभयस्य)** राजप्रजास्थस्य **(राजन्)** विद्याविनायाभ्यां प्रकाशमान **(धाः)** धेहि **(रत्नम्)** रमणीयं धनम् **(महि)** महत्पूजनीयम् **(स्थूरम्)** स्थिरम् **(बृहन्तम्)** महान्तम्॥१०॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र राजन्! यथा वयं ते नृतमाभिरूती नृवद्वामं वंसीमहि श्रोमतेभिरुभयस्य वस्व ईक्षे तथा त्वं बृहन्तम्महि स्थूरं रत्नं हि धाः॥१०॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। राजप्रजाजनै राज्ञा च प्रयत्नैः प्रशंसिता विद्या महती श्रीश्च सततं वर्धनीया॥१०॥

**पदार्थः**-हे **(इन्द्र)** अत्यन्त ऐश्वर्य के देने वाले **(राजन्)** विद्या और विनय से प्रकाशमान! जैसे हम लोग **(ते)** आपके **(नृतमाभिः)** अति उत्तम मनुष्य विद्यमान जिनमें उन **(ऊती)** रक्षण आदिकों से **(नृवत्)** मनुष्यों के तुल्य **(वामम्)** प्रशंसा करने योग्य कर्म का **(वंसीमहि)** विभाग करें और **(श्रोमतेभिः)** सुनाने योग्य वचनों से **(उभयस्य)** दोनों राजा और प्रजा में वर्त्तमान **(वस्वः)** धन का मैं **(ईक्षे)** दर्शन करता हूँ, वैसे आप **(बृहन्तम्)** बड़े **(महि)** आदर करने योग्य **(स्थूरम्)** स्थिर **(रत्नम्)** सुन्दर धन को **(हि)** ही **(धाः)** धारण करिये॥१०॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। राजजनों तथा प्रजाजनों और राजा को चाहिये कि प्रशस्तों से प्रशंसित विद्या और बहुत धन की निरन्तर वृद्धि करें॥१०॥



www.9009.co.in

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**मरुत्वन्तं वृषभं वावृधानमकवारिं दिव्यं शासमिन्द्रम्।**

**विश्वासाहमवसे नूतनायोग्रं सहोदामिह तं हुवेम॥११॥**

**मरुत्वन्तम्। वृषभम्। वावृधानम्। अकवऽअरिम्। दिव्यम्। शासम्। इन्द्रम्। विश्वऽसहम्। अवसे। नूतनाय। उग्रम्। सहःऽदाम्। इह। तम्। हुवेम॥११॥**

**पदार्थः-(मरुत्वन्तम्)** प्रशस्ता मरुतो मनुष्या विद्यन्ते यस्य तम् **(वृषभम्)** अत्युत्तमं पूर्णबलम् **(वावृधानम्)** अतिवर्धमानम् **(अकवारिम्)** न विद्यन्ते कवा शब्दायमाना अरयो यस्य तम् **(दिव्यम्)** कमनीयम् **(शासम्)** पक्षपातं विहाय शासनकर्तारम् **(इन्द्रम्)** शरीरात्मराजश्रिया सुशुम्भमानम् **(विश्वासाहम्)** यो विश्वं समग्रं कष्टं सहते तम् **(अवसे)** रक्षणाद्याय **(नूतनाय)** नवीनाय **(उग्रम्)** तेजस्विनम् **(सहोदाम्)** बलप्रदम् **(हि)** अस्मिन् राज्यकर्मणि **(तम्)** **(हुवेम)** स्वीकुर्याम॥११॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! वयमिह यं नूतनायाऽवसे मरुत्वन्तं वृषभं वावृधानमकवारिं दिव्यं शासं विश्वासाहमुग्रं सहोदामिन्द्रं हुवेम तं यूयमप्याह्वयत॥११॥

**भावार्थः**-राजप्रजाजनैः सर्वेषां रक्षणाय सर्वेभ्य उत्तमगुणकर्मस्वभावो राजा मन्तव्यः स च राजा सर्वेषां सम्मत्या सत्यं न्यायं सततं कुर्यात्॥११॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! हम लोग **(इह)** इस राज्यकर्म में जिसको **(नूतनाय)** नवीन **(अवसे)** रक्षण आदि के लिये **(मरुत्वन्तम्)** श्रेष्ठ मनुष्य विद्यमान जिसके उस **(वृषभम्)** अतिश्रेष्ठ पूर्ण बल वाले **(वावृधानम्)** अत्यन्त वृद्धि को प्राप्त होते हुए **(अकवारिम्)** नहीं विद्यमान हैं शब्द करते हुए शत्रु जिसके उस **(दिव्यम्)** सुन्दर **(शासम्)** पक्षपात का त्याग करके शासन करने वाले **(विश्वासाहम्)** सम्पूर्ण कष्ट को सहने वाले **(उग्रम्)** तेजस्वी **(सहोदाम्)** बल देने वाले **(इन्द्रम्)** शरीर, आत्मा और राजशोभा से अत्यन्त शोभित का **(हुवेम)** हम स्वीकार करें **(तम्)** उसका आप लोग भी आह्वान कर स्वीकार कीजिये॥११॥

**भावार्थः**-राजजनों और प्रजाजनों को चाहिये कि सब के रक्षण के लिये सब से उत्तम गुण, कर्म और स्वभाव वाले राजा को स्वीकार करें और वह राजा सब की सम्मति से सत्य, न्याय का निरन्तर आचरण करे॥११॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**जनं वज्रिन् महि चिन्मन्यमानमेभ्यो नृभ्यो रन्धया येष्वस्मि।**

**अधा हि त्वा पृथिव्यां शूरसातौ हवामहे तनये गोष्वप्सु॥१२॥**



www.9009.co.in

**जन॑म्। व॒ज्रि॒न्। महि॑। चि॒त्। मन्य॑मानम्। ए॒भ्यः। नृऽभ्यः॑। र॒न्धय॑। येषु॑। अस्मि॑। अध॑। हि। त्वा॒। पृ॒थि॒व्याम्। शूर॑ऽसातौ। हवा॑महे। तन॑ये। गोषु॑। अ॒प्ऽसु॥१२॥**

**पदार्थः-(जनम्)** **(वज्रिन्)** प्रशस्तशस्त्रास्त्रधारिन् **(महि)** महान्तम् **(चित्)** अपि **(मन्यमानम्)** अभिमानिनम् **(एभ्यः)** **(नृभ्यः)** सुशिक्षितेभ्यो नायकेभ्यः **(रन्धया)** हिंसय। अत्र **संहितायामि**ति दीर्घः। **(येषु)** **(अस्मि)** **(अधा)** अत्र **निपातस्य चे**ति दीर्घः। **(हि)** यतः **(त्वा)** त्वाम् **(पृथिव्याम्)** विस्तीर्णायां भूमौ **(शूरसातौ)** शूराः सनन्ति विभजन्ति यस्मिन्त्संग्रामे तस्मिन् **(हवामहे)** आदद्महि **(तनये)** अपत्याय **(गोषु)** पृथिवीषु धनेषु वा **(अप्सु)** जलेषु प्राणेषु वा॥१२॥

**अन्वयः**-हे वज्रिन् राजंस्त्वमेभ्यो नृभ्यस्तं महि मन्यमानं जनं रन्धयाऽधा येषु शूरसातावहमस्मि तं रक्षा, हि पृथिव्यां गोष्वप्सु तनये यं त्वा हवामहे स त्वं चिदस्मान्त्सत्कुरु॥१२॥

**भावार्थः**-हे राजजना यो मिथ्याभिमानी सत्पुरुषान् पीडयेत्तं दण्डयत, युद्धविद्यया सर्वेषां रक्षणं विधत्त यतो भूमौ युष्माकं प्रशंसा प्रसिद्धा भवेत्॥१२॥

**पदार्थः**-हे **(वज्रिन्)** अच्छे शस्त्र और अस्त्र के धारण करने वाले राजन्! आप **(एभ्यः)** इन **(नृभ्यः)** उत्तम प्रकार शिक्षित अग्रणी मनुष्यों के लिये उस **(महि)** महान् **(मन्यमानम्)** अभिमान करने वाले **(जनम्)** मनुष्य का **(रन्धया)** नाश करिये और **(अधा)** इसके अनन्तर **(येषु)** जिनके निमित्त **(शूरसातौ)** शूरवीर विभक्त होते हैं जिस संग्राम में उसमें **(अस्मि)** हूँ उसकी रक्षा कीजिये **(हि)** जिससे **(पृथिव्याम्)** विस्तीर्ण भूमि में **(गोषु)** पृथिवियों वा धनों में और **(अप्सु)** जलों वा प्राणों में **(तनये)** सन्तान के लिये जिन **(त्वा)** आपको **(हवामहे)** स्वीकार करते हैं, वह आप **(चित्)** भी हम लोगों का सत्कार कीजिये॥१२॥

**भावार्थः**-हे राजसम्बन्धी जनो! जो मिथ्या अभिमान करने वाला जन श्रेष्ठ पुरुषों को पीड़ा देवे, उसको दण्ड दीजिये और युद्धविद्या से सम्पूर्ण जनों का रक्षण करिये, जिससे भूमि में आप लोगों की प्रशंसा प्रसिद्ध होवे॥१२॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**व॒यं त॑ ए॒भिः पु॑रुहूत स॒ख्यैः शत्रो॑ःशत्रो॒रुत्त॑र॒ इत्स्या॑म।**

**घ्नन्तो॑ वृ॒त्राण्यु॒भया॑नि शूर रा॒या म॑देम बृह॒ता त्वोता॑ः॥१३॥८॥**

**व॒यम्। ते॒। ए॒भिः। पु॒रु॒ऽहू॒त॒। स॒ख्यैः। शत्रोः॑ऽशत्रोः। उत्ऽत॑रे। इत्। स्या॒म॒। घ्नन्तः॑। वृ॒त्राणि॑। उ॒भया॑नि। शू॒र॒। रा॒या। म॒दे॒म॒। बृ॒ह॒ता। त्वाऽऊ॑ताः॥१३॥८॥**

**पदार्थः-(वयम्)** **(ते)** तव **(एभिः)** वर्तमानैः पूर्वोक्तैरुत्तरप्रतिपादितैः **(पुरुहूत)** बहुभिः प्रशंसित **(सख्यैः)** मित्रकर्मभिः **(शत्रोःशत्रोः)** **(उत्तरे)** विजयानन्तरसमये **(इत्)** एव **(स्याम)** **(घ्नन्तः)** **(वृत्राणि)**



www.9009.co.in

धनानि **(उभयानि)** राजप्रजास्थानि **(शूर) (राया)** राज्यश्रिया **(मदेम)** आनन्देम **(बृहता)** महता **(त्वोताः)** त्वया पालिताः॥१३॥

**अन्वयः**-हे पुरुहूत शूर राजन्! वयं त एभिः सख्यैः शत्रोःशत्रोः सेना घ्नन्त उत्तरे स्यामोभयानि वृत्राणि लब्ध्वा तव बृहता राया त्वोताः सन्त इन्मदेम॥१३॥

**भावार्थः**-यदि राजा राजप्रजाजनाश्च सुहृद्वत् स्युस्तर्हि सर्वाञ्छत्रून् विजित्य महत्या राजश्रिया प्रकाशेरन्निति॥१३॥

अत्रेन्द्रराजप्रजाजनकृत्यवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इत्येकोनविंशं सूक्तमष्टमो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे **(पुरुहूत)** बहुतों से प्रशंसित **(शूर)** वीर राजन्! **(वयम्)** हम लोग **(ते)** आपके **(एभिः)** इन वर्त्तमान, पहिले कहे गये और उत्तरों से प्रतिपादित **(सख्यैः)** मित्र के कर्मों से **(शत्रोःशत्रोः)** शत्रु-शत्रु की सेनाओं का **(घ्नन्तः)** नाश करते हुए **(उत्तरे)** विजय के अनन्तर समय में **(स्याम)** प्रकट होवें और **(उभयानि)** राजा और प्रजाजन में वर्त्तमान **(वृत्राणि)** धनों को प्राप्त होकर आपकी **(बृहता)** बड़ी **(राया)** राज्यलक्ष्मी से तथा **(त्वोताः)** आप से पालना किये हुए **(इत्)** ही **(मदेम)** आनन्द को प्राप्त होवें॥१३॥

**भावार्थः**-जो राजा और राजप्रजाजन मित्र के सदृश होवें तो सम्पूर्ण शत्रुओं को जीत कर बड़ी राज्यलक्ष्मी से प्रकाशित होवें॥१३॥

इस सूक्त में इन्द्र, राजा और प्रजाजनों के कृत्य वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह उन्नीसवाँ सूक्त और आठवाँ वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

**अथ त्रयोदशर्चस्य विंशतितमस्य सूक्तस्य भरद्वाजो बार्हस्पत्य ऋषिः। इन्द्रो देवता। १, १०, १३ स्वराट्पङ्क्तिः। २, ३,७, १२ पङ्क्तिः। ४, ६ भुगिक्पङ्क्तिः। ११ निचृत्पङ्क्तिः। पञ्चमः स्वरः। ५, ८,९ निचृत्त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः॥**

***अथ मनुष्यैः किमेष्टव्यमित्याह॥***

अब तेरह ऋचावाले बीसवें सूक्त का प्रारम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में अब मनुष्यों को किसकी इच्छा करनी चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**द्यौर्न य इ॑न्द्राभि भूमा॒र्यस्त॒स्थौ र॒यिः शव॑सा पृ॒त्सु जना॑न्।**

**तं नः॑ स॒हस्र॑भरमुर्वरा॒सां द॒द्धि सू॑नो स॒हसो वृत्र॒तुर॑म्॥ १॥**

**द्यौः। न। यः। इन्द्र॒। अ॒भि। भूम॑। अ॒र्यः। त॒स्थौ। र॒यिः। शव॑सा। पृ॒त्ऽसु। जना॑न्। तम्। नः॒। स॒हस्र॑ऽभरम्। उ॒र्व॒रा॒ऽसाम्। द॒द्धि। सू॒नो॒ इति॑। स॒ह॒सः। वृ॒त्र॒ऽतुर॑म्॥ १॥**

**पदार्थः**-(**द्यौः**) विद्युत् सूर्यो वा (**न**) इव (**यः**) (**इन्द्र**) परमपूजित धनयुक्त (**अभि**) आभिमुख्ये (**भूम**) भवेम (**अर्यः**) स्वामी (**तस्थौ**) तिष्ठेत् (**रयिः**) धनम् (**शवसा**) बलेन (**पृत्सु**) सङ्ग्रामेषु (**जनान्**) (**तम्**) (**नः**) अस्मभ्यम् (**सहस्रभरम्**) यः सहस्रमसङ्ख्यं बिभर्त्ति तम् (**उर्वरासाम्**) बहुश्रेष्ठानां भूमीनाम् (**दद्धि**) देहि (**सूनो**) सत्पुत्र (**सहसः**) बलात् (**वृत्रतुरम्**) वृत्रानिव शत्रूंस्तुर्वति हिनस्ति येन तम्॥ १॥

**अन्वयः**-हे सहसः सूनो इन्द्र! यो द्यौर्न रयिरस्त्यस्यार्यः शवसा पृत्सु जनानभि तस्थौ तं सहस्रभरं वृत्रतुरमुर्वरासां मध्ये श्रेष्ठं विजयं नो दद्धि येन वयं श्रीमन्तो भूम॥ १॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः ये मनुष्या विद्युद्वत्पराक्रमिणोऽर्कवद्दीप्तिमन्तः सङ्ग्रामेषु साहसिकाः स्युस्ते विजयवन्तो भवेयुः॥ १॥

**पदार्थः**-हे (**सहसः**) बल से (**सूनो**) श्रेष्ठ पुत्र (**इन्द्र**) अत्यन्त श्रेष्ठ धन से युक्त! (**यः**) जो (**द्यौः**) बिजुली वा सूर्य के (**न**) समान प्रकाशित (**रयिः**) धन है इस का (**अर्यः**) स्वामी (**शवसा**) बल से (**पृत्सु**) सङ्ग्रामों में (**जनान्**) मनुष्यों के प्रति (**अभि**) सम्मुख (**तस्थौ**) वर्त्तमान होवे (**तम्**) उस (**सहस्रभरम्**) असंख्य को धारण करने वाले (**वृत्रतुरम्**) जैसे मेघों को, वैसे शत्रुओं को नाश करता है जिससे उस तथा (**उर्वरासाम्**) बहुत श्रेष्ठ भूमियों में श्रेष्ठ विजय को (**नः**) हम लोगों के लिये (**दद्धि**) दीजिये जिससे हम लोग लक्ष्मीवान् (**भूम**) होवें॥ १॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जो मनुष्य बिजुली के सदृश पराक्रमी और सूर्य के सदृश प्रतापयुक्त हुए सङ्ग्रामों में साहसिक होवें, वे विजयवान् होवें॥ १॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**



www.9009.co.in

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**दिवो न तुभ्यमन्विन्द्र सत्रासुर्यं देवेभिर्धायि विश्वम्।**

**अहिं यद्वृत्रमपो वव्रिवांसं हन्नृजीषिन् विष्णुना सचानः॥ २॥**

**दिवः। न। तुभ्यम्। अनु। इन्द्र। सत्रा। असुर्यम्। देवेभिः। धायि। विश्वम्। अहिम्। यत्। वृत्रम्। अपः। वव्रिऽवांसम्। हन्। ऋजीषिन्। विष्णुना। सचानः॥ २॥**

**पदार्थः-(दिवः)** कामयमानाः **(न)** इव **(तुभ्यम्) (अनु) (इन्द्र)** राजन् **(सत्रा)** सत्येन **(असुर्यम्)** असुराणां मूढानां पापिनामिदमैश्वर्यम् **(देवेभिः) (धायि)** ध्रियते **(विश्वम्)** समग्रम् **(अहिम्)** मेघम् **(यत्)** यम् **(वृत्रम्)** आच्छादकम् **(अपः)** जलानि **(वव्रिवांसम्) (हन्)** हन्ति **(ऋजीषिन्)** ऋजुधर्मयुक्त **(विष्णुना)** व्यापकेन जगदीश्वरेण विद्युता वा **(सचानः)** समवेतः॥ २॥

**अन्वयः**-हे ऋजीषिन्निन्द्र! यथा सूर्य्यो विष्णुना सचानो यद्यमपो वव्रिवांसं वृत्रमहिं हंस्तथा देवेभिस्तुभ्यं सत्रा दिवो न विश्वमसुर्यमनु धायि॥ २॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यथा सूर्य्योऽष्टसु मासेषु जलरसाननुकर्ष्य चातुर्मास्ये वर्षयति तथैव राजाऽष्टसु मासेषु करान् गृहीत्वाऽभयवृष्टिं कृत्वा प्रजां पालयेत्॥ २॥

**पदार्थः**-हे **(ऋजीषिन्)** सरल धर्म से युक्त **(इन्द्र)** राजन्! जैसे सूर्य **(विष्णुना)** व्यापक जगदीश्वर वा बिजुली से **(सचानः)** मिलने वाला **(यत्)** जिसको **(अपः)** जलों के **(वव्रिवांसम्)** विभाग करते हुए **(वृत्रम्)** आच्छादन करने वाले **(अहिम्)** मेघ को **(हन्)** नाश करता है, वैसे **(देवेभिः)** विद्वानों से **(तुभ्यम्)** आपके लिये **(सत्रा)** सत्य से **(दिवः)** कामना करते हुए **(न)** जैसे वैसे **(विश्वम्)** सम्पूर्ण **(असुर्यम्)** मूर्ख पापी जनों का ऐश्वर्य **(अनु, धायि)** पीछे धारण किया जाता है॥ २॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जैसे सूर्य आठ महीने में जल के रसों को आकर्षण के द्वारा हरण करके चातुर्मास्य में वर्षाता है, वैसे ही राजा आठ महीने करों को ग्रहण कर अभय की वृष्टि करके प्रजा का पालन करे॥ २॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**तूर्वन्नोजीयान् तवसस्तवीयान् कृतब्रह्मेन्द्रो वृद्धमहाः।**

**राजाभवन् मधुनः सोम्यस्य विश्वासां यत्पुरां दर्त्नुमावत्॥ ३॥**

**तूर्वन्। ओजीयान्। तवसः। तवीयान्। कृतऽब्रह्मा। इन्द्रः। वृद्धऽमहाः। राजा। अभवत्। मधुनः। सोम्यस्य। विश्वासाम्। यत्। पुराम्। दर्त्नुम्। आवत्॥ ३॥**

**पदार्थः-(तूर्वन्)** हिंसन् **(ओजीयान्)** अतिशयेन पराक्रमी **(तवसः)** बलस्य **(तवीयान्)** अतिशयेन प्रशंसितः **(कृतब्रह्मा)** कृतं ब्रह्म धनमन्नं वा येन सः **(इन्द्रः)** ऐश्वर्यवर्द्धकः **(वृद्धमहाः)** वृद्धा महान्तः



www.9009.co.in

सहाया यस्य सः **(राजा)** प्रकाशमानः **(अभवत्)** भवेत् **(मधुनः)** मधुरादिगुणयुक्तस्य **(सोम्यस्य)** सोमेषु रसादिषु भवस्य **(विश्वासाम्)** सर्वासाम् **(यत्)** **(पुराम्)** नगरीणाम् **(दर्त्तुम्)** विदारकम् **(आवत्)** रक्षेत्॥३॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यद्यः शत्रूँस्तूर्वन्नोजीयांस्तवसस्तवीयान् कृतब्रह्मा वृद्धमहा इन्द्रो राजाऽभवत् सोम्यस्य मधुनो विश्वासां पुरां दर्त्तुमावत् तमेव राजानं कुरुध्वम्॥३॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यः पराक्रमी बलिनां बली विदुषां विद्वान् वृद्धानां वृद्धो विजयमानानां भृत्यानां सत्कर्त्ता स्यात्तमेव राज्येऽभिषिक्तं कृत्वा सुखिनो भवत॥३॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(यत्)** जो शत्रुओं का **(तूर्वन्)** नाश करता हुआ **(ओजीयान्)** अतिशय पराक्रमयुक्त जन **(तवसः)** बल का **(तवीयान्)** अत्यन्त प्रशंसित **(कृतब्रह्मा)** किया धन वा अन्न जिसने वह **(वृद्धमहाः)** बड़े सहायक जिसके ऐसा **(इन्द्रः)** ऐश्वर्य का बढ़ाने वाला **(राजा)** प्रकाशमान राजा **(अभवत्)** होवे और **(सोम्यस्य)** रस आदिकों में हुए **(मधुनः)** मधुर आदि गुणों से युक्त के और **(विश्वासाम्)** सम्पूर्ण **(पुराम्)** नगरियों के **(दर्त्तुम्)** नाश करने वाले की **(आवत्)** रक्षा करे, उसी को राजा करिये॥३॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो पराक्रमी, बली जनों में बली, विद्वानों में विद्वान्, वृद्ध जनों में वृद्ध और जीतते हुए भृत्यों का सत्कार करने वाला होवे, उसी का राज्य में अभिषिक्त करके सुखी हूजिये॥३॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**श॒तैर॑पद्रन् प॒णय॑ इ॒न्द्रात्र॒ दशो॑णये क॒वये॒ऽर्कसा॑तौ।**

**व॒धैः शुष्ण॑स्या॒शुष॑स्य मा॒याः पि॒त्वो नारि॑रेची॒त् किं च॒न प्र॥४॥**

**श॒तैः। अ॒प॒द्र॒न्। प॒णयः॑। इ॒न्द्र॒। अत्र॑। दश॑ऽओणये। क॒वये॑। अ॒र्कऽसा॑तौ। व॒धैः। शुष्ण॑स्य। अ॒शुष॑स्य। मा॒याः। पि॒त्वः। न। अ॒रि॒रे॒ची॒त्। किम्। च॒न। प्र॥४॥**

**पदार्थः**-**(शतैः)** शतसङ्ख्याकैरसंख्यैर्वा **(अपद्रन्)** अपद्रवन्ति **(पणयः)** व्यवहारज्ञाः **(इन्द्र)** अन्नदाता राजन् **(अत्र)** अस्मिन् राजव्यवहारे **(दशोणये)** दशोनयः परिहाणानि यस्मात्तस्मै **(कवये)** विपश्चिते **(अर्कसातौ)** अन्नादिविभागे। **अर्क इत्यन्ननाम।** (निघं०२.७) **(वधैः)** हननैः **(शुष्णस्य)** बलिष्ठस्य **(अशुषस्य)** शोषणरहितस्य **(मायाः)** प्रज्ञाः **(पित्वः)** अन्नादिकम् **(न)** **(अरिरेचीत्)** रिणक्ति **(किम्)** **(चन)** **(प्र)**॥४॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! त्वं ये पणयश्शतैर्वधैरत्रापद्रन्नर्कसातौ दशोणये कवये या अशुषस्य शुष्णस्य मायाः पित्वः किञ्चन न प्रारिरेचीत् ताः सत्कुर्याः॥४॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-हे मनुष्या! ये धर्मपथं विहायोत्पथं चलन्ति तान् राजा नित्यं दण्डयेत् ये च दशेन्द्रियैरधर्मं विहाय धर्ममाचरन्ति तान् सततं सत्कुर्यात्॥४॥

**पदार्थः**-हे **(इन्द्र)** देनेवाले राजन्! आप जो **(पणयः)** व्यवहारों के जाननेवाले **(शतैः)** सौ सङ्ख्या से परिमित वा असङ्ख्य **(वधैः)** वधों से **(अत्र)** इस राजव्यवहार में **(अपद्रन्)** नहीं द्रवित होते हैं और **(अर्कसातौ)** अन्न आदि के विभाग में **(दशोणये)** दश न्यून जिससे उस **(कवये)** विद्वान् के लिये **(अशुषस्य)** शोषण से रहित **(शुष्णस्य)** बलिष्ठ की **(मायाः)** बुद्धियों को **(पित्वः)** अन्न आदि **(किम्, चन)** कुछ भी **(न)** नहीं **(प्र, अरिरेचीत्)** अच्छे प्रकार अलग करता है, उनका सत्कार करिये अर्थात् प्रशंसा करिये॥४॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो धर्ममार्ग का त्याग करके उन्मार्ग में चलते हैं, उनको राजा नित्य दण्ड देवे और दो दश इन्द्रियों से अधर्म का त्याग करके धर्म का आचरण करते हैं, उन का निरन्तर सत्कार करे॥४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**म॒हो द्रु॒हो अप॑ वि॒श्वायु॑ धायि॒ वज्र॑स्य॒ यत्पत॑ने॒ पादि॒ शुष्णः॑।**

**उ॒रु ष स॒रथं॒ सार॑थये क॒रिन्द्रः॒ कुत्सा॑य॒ सूर्य॑स्य सा॒तौ॥५॥९॥**

**म॒हः। द्रु॒हः। अप॑। वि॒श्वऽआ॑यु। धा॒यि॒। वज्र॑स्य। यत्। पत॑ने। पादि॑। शुष्णः॑। उ॒रु। सः। स॒ऽरथ॑म्। सार॑थये। क॒ः। इन्द्रः॑। कुत्सा॑य। सूर्य॑स्य। सा॒तौ॥५॥**

**पदार्थः**-**(महः)** महत् **(द्रुहः)** द्रोग्धॄन् **(अप)** **(विश्वायु)** सर्वं जीवनम् **(धायि)** **(वज्रस्य)** शस्त्रास्त्रविशेषस्य **(यत्)** **(पतने)** **(पादि)** पाद्येत **(शुष्णः)** बलिष्ठस्य **(उरु)** बहु **(सः)** **(सरथम्)** रथेन सह वर्त्तमानम् **(सारथये)** रथचालकाय **(कः)** कुर्यात् **(इन्द्रः)** शस्त्रविदारक सेनेशः **(कुत्साय)** वज्रप्रहाराय। **कुत्स इति वज्रनाम।** (निघं०२.२०) **(सूर्य्यस्य)** सवितुः **(सातौ)** संविभागे॥५॥

**अन्वयः**-हे राजन्! त्वया वज्रस्य पतने यो दुहोऽप पादि येन महो विश्वायु धायि यद्य इन्द्रः सारथये सरथं सूर्यस्य सातौ कुत्सायोरु कः स शुष्णः सत्कर्त्तव्यः॥५॥

**भावार्थः**-राज्ञा द्रोहादिदोषान्निवार्य ब्रह्मचर्यादिना सर्वान् चिरायुषः सम्पाद्य रथादीन् सेनाङ्गान्त्सूर्यवत् प्रकाशितान् कृत्वा सत्यासत्ययोर्विभागेन प्रजाः पालयितव्याः॥५॥

**पदार्थः**-हे राजन्! आप से **(वज्रस्य)** शस्त्र और अस्त्र विशेष के **(पतने)** गिरने में जो **(द्रुहः)** द्रोह करने वालों को **(अप, पादि)** दूर करे जिससे **(महः)** अत्यन्त **(विश्वायु)** सम्पूर्ण जीवन **(धायि)** धारण किया जाये और **(यत्)** जो **(इन्द्रः)** शत्रुओं का नाशक सेना का स्वामी **(सारथये)** वाहन चलाने वाले के लिये **(सरथम्)** वाहन के सहित वर्त्तमान को **(सूर्यस्य)** सूर्य के **(सातौ)** उत्तम प्रकार विभाग में



www.9009.co.in

**(कुत्साय)** वज्र के प्रहार के लिये **(उरु)** बहुत **(कः)** करे **(सः)** वह **(शुष्णः)** बलिष्ठ का सम्बन्धी सत्कार करने योग्य है॥५॥

**भावार्थः**-राजा को चाहिये कि द्रोह आदि दोषों का त्याग करके ब्रह्मचर्य आदि से सम्पूर्ण जनों को अधिक अवस्था वाले करके, रथ आदि सेना के अङ्गों को सूर्य के तुल्य प्रकाशित करके, सत्य और असत्य के विभाग से प्रजाओं का पालन करे॥५॥

**पुना राज्ञा किं निषेधनीयमित्याह॥**

फिर राजा को किसका निषेध करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**प्र श्येनो न मदिरमंशुमस्मै शिरो दासस्य नमुचेर्मथायन्।**

**प्रावन्नमीं साप्यं ससन्तं पृणग् राया समिषा सं स्वस्ति॥६॥**

**प्र। श्येनः। न। मदिरम्। अंशुम्। अस्मै। शिरः। दासस्य। नमुचेः। मथायन्। प्र। आवत्। नमीम्। साप्यम्। ससन्तम्। पृणक्। राया। सम्। इषा। सम्। स्वस्ति॥६॥**

**पदार्थः**-**(प्र)** **(श्येनः)** **(नः)** इव **(मदिरम्)** मादकं द्रव्यम् **(अंशुम्)** वैद्यकविद्यारीत्या विभक्तम् **(अस्मै)** **(शिरः)** मस्तकम् **(दासस्य)** सेवकस्य **(नमुचेः)** यो नमुञ्चति तस्य **(मथायन्)** **(प्र)** **(आवत्)** रक्षेत् **(नमीम्)** नम्रम् **(साप्यम्)** कर्मान्तकारिणम् **(ससन्तम्)** शयानम् **(पृणक्)** पृणक्ति **(राया)** धनेन **(सम्)** **(इषा)** अन्नादिना **(सम्)** **(स्वस्ति)** सुखम्॥६॥

**अन्वयः**-यो राजा मदिरमंशुं सेवमानस्य नमुचेर्दासस्य शिरः श्येनो न प्र मथायन्नस्मै कठिनं शिष्यन्नमीं साप्यं ससन्तं कृत्वा प्राऽऽवत्। राया स्वस्ति सम्पृणगिषा स्वस्ति सम्पृणक् स सम्राड् भवितुमर्हेत्॥६॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। राज्ञामिदमुचितं कर्मास्ति ये मादकद्रव्यं सेवेरँस्तान् भृशं दण्डयित्वा यथायोग्यसत्कारेणऽप्रमादिनः सत्कुर्य्युस्ते साम्राज्यं कर्तुमर्हेयुः॥६॥

**पदार्थः**-जो राजा **(मदिरम्)** मादक द्रव्य और **(अंशुम्)** वैद्यकविद्या की रीति से विभाग किये गये का सेवन करते हुए और **(नमुचेः)** नहीं त्याग करने वाले **(दासस्य)** सेवक के **(शिरः)** मस्तक को **(श्येनः)** बाज पक्षी **(न)** जैसे वैसे **(प्र, मथायन्)** अत्यन्त मथन करता हुआ **(अस्मै)** इसके लिये कठिन शिष्य को **(नमीम्)** नम्र **(साप्यम्)** कर्म के अन्त करने वाले को **(ससन्तम्)** सोते हुए को करके **(प्र, आवत्)** रक्षा करे और **(राया)** धन से **(स्वस्ति)** सुख को **(सम्, पृणक्)** उत्तम प्रकार पूर्ण करता है तथा **(इषा)** अन्न आदि से सुख को **(सम्)** अच्छे प्रकार पूर्ण करता है, वह सम्राट् होने के योग्य होवे॥६॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। राजाओं का यह उचित कर्म है कि जो मादक द्रव्य का सेवन करें उनको अत्यन्त दण्ड देके, यथायोग्य सत्कार से अप्रमादियों का सत्कार करें, वे साम्राज्य करने को योग्य होवें॥६॥

**पुना राजा किं कुर्यादित्याह॥**



www.9009.co.in

फिर राजा क्या करे, इस विषय को कहते हैं॥

**वि पिप्रोरहिमायस्य दृळ्हाः पुरो वज्रिञ्छवसा न दर्दः।**

**सुदामन् तद् रेक्णो अप्रमृष्यमृजिश्वने दात्रं दाशुषे दाः॥७॥**

**वि। पिप्रोः। अहिऽमायस्य। दृळ्हाः। पुरः। वज्रिन्। शवसा। न। दुर्दुरिति दर्दः। सुऽदामन्। तत्। रेक्णः। अप्रऽमृष्यम्। ऋजिश्वने। दात्रम्। दाशुषे। दाः॥७॥**

**पदार्थः**-(वि) **(पिप्रोः)** व्यापकस्य **(अहिमायस्य)** अहेर्मेघस्य मायाच्छादनमिव कापट्यं यस्य तस्य **(दृळ्हाः)** **(पुरः)** नगरीः **(वज्रिन्)** शस्त्रास्त्रभृत् **(शवसा)** बलेन **(न)** निषेधे **(दर्दः)** विदारयेः **(सुदामन्)** सुष्ठु दातः **(तत्)** **(रेक्णः)** धनम् **(अप्रमृष्यम्)** अप्रसह्यम् **(ऋजिश्वने)** ऋज्वादिगुणवर्धकाय **(दात्रम्)** दानम् **(दाशुषे)** दातुं योग्याय **(दाः)** देहि॥७॥

**अन्वयः**-हे वज्रिन्त्सुदामन् राजँस्त्वमहिमायस्य पिप्रोर्दृळ्हाः पुरः शवसा न वि दर्दः। यदप्रमृष्यं दात्रमृजिश्वने दाशुषे दास्तद्रेक्णोऽस्मभ्यमपि देहि॥७॥

**भावार्थः**-राज्ञा छलादिकं विहाय स्वकीयानि नगराणि दृढानि निर्माय कदाचिच्छेदनं नैव कार्यं सुपात्राय दानं देयं कुपात्रश्च तिरस्करणीयः॥७॥

**पदार्थः**-हे **(वज्रिन्)** शस्त्र और अस्त्रों को धारण करनेवाले **(सुदामन्)** उत्तम प्रकार से दाता राजन्! आप **(अहिमायस्य)** मेघ का ढाँप लेना जैसे वैसे कपटता जिसकी उस **(पिप्रोः)** व्यापक की **(दृळ्हाः)** दृढ़ **(पुरः)** नगरियों को **(शवसा)** बल से **(न)** नहीं **(वि, दर्दः)** विशेष नष्ट कीजिये और जो **(अप्रमृष्यम्)** नहीं सहने योग्य **(दात्रम्)** दान को **(ऋजिश्वने)** सरलता आदि गुणों के बढ़ानेवाले **(दाशुषे)** दान देने योग्य पुरुष के लिये **(दाः)** दीजिये **(तत्)** उस **(रेक्णः)** धनदान को हम लोगों के लिये भी दीजिये॥७॥

**भावार्थः**-राजा को चाहिये कि छल आदि का त्याग कर और अपने नगरों को दृढ़ करके कभी छेदन न करे और सुपात्र के लिये दान दे और कुपात्र का तिरस्कार करे॥७॥

**पुना राज्ञा किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

फिर राजा क्या करे, इस विषय को कहते हैं॥

**स वेतसुं दशमायं दशोणिं तूतुजिमिन्द्रः स्वभिष्टिसुम्नः।**

**आ तुग्रं शश्वदिभं द्योतनाय मातुर्न सीमुप सृजा इयध्यै॥८॥**

**सः। वेतसुम्। दशऽमायम्। दशऽओणिम्। तूतुजिम्। इन्द्रः। स्वभिष्टिऽसुम्नः। आ। तुग्रम्। शश्वत्। इभम्। द्योतनाय। मातुः। न। सीम्। उप। सृज। इयध्यै॥८॥**

**पदार्थः**-**(सः)** **(वेतसुम्)** व्यापनशीलम् **(दशमायम्)** दशङ्गुलय इव माया मानं यस्य तम् **(दशोणिम्)** दशधोणिः परिहाणं यस्य तम् **(तूतुजिम्)** बलवन्तम् **(इन्द्रः)** परमैश्वर्यो राजा **(स्वभिष्टिसुम्नः)**



www.9009.co.in

सुष्ठु अभिष्टि सुम्नं सुखं यस्य यस्माद्वा **(आ)** **(तुग्रम्)** आदातारम् **(शश्वत्)** निरन्तरम् **(इभम्)** हस्तिनमिव **(द्योतनाय)** प्रकाशनाय **(मातुः)** जनन्याः **(न)** इव **(सीम्)** सर्वतः **(उप)** **(सृजा)** अत्र **द्व्यचोऽतस्तिङ** इति दीर्घः। **(इयध्यै)** एतुं प्राप्तुम्॥८॥

**अन्वयः**-हे राजन्! यः स्वभिष्टिसुम्न इन्द्रस्स त्वं द्योतनाय वेतसुं दशमायं दशोणिं तूतुजिं तुग्रमिभमियध्यै मातुर्न सीं शश्वदोप सृजा॥८॥

**भावार्थः**-स एव राजा श्रीमान् भवेद्यो दशोन्द्रियैरुत्तमं कर्मविज्ञानं वर्धयित्वाऽभीष्टसुखं सततमुन्नयेन् मातृवत्प्रजाः पालयेत्॥८॥

**पदार्थः**-हे राजन्! जो **(स्वभिष्टिसुम्नः)** उत्तम प्रकार अभीष्ट सुखवाले **(इन्द्रः)** अत्यन्त ऐश्वर्ययुक्त राजा **(सः)** वह आप **(द्योतनाय)** प्रकाश के लिये **(वेतसुम्)** व्यापनशील **(दशमायम्)** दश अंगुलियों के तुल्य प्रमाण जिसका उस **(दशोणिम्)** दश प्रकार से परित्याग जिसका और **(तूतुजिम्)** बल से युक्त **(तुग्रम्)** ग्रहण करने वाले **(इभम्)** हाथी को **(इयध्यै)** प्राप्त होने के लिये **(मातुः)** माता से **(नः)** जैसे वैसे **(सीम्)** सब ओर से **(शश्वत्)** निरन्तर **(आ, उप, सृजा)** समीप प्रकट कीजिये॥८॥

**भावार्थः**-वही राजा धनवान् होवे कि जो दश इन्द्रियों से उत्तम कर्म और विज्ञान को बढ़ा के अभीष्ट सुख की निरन्तर उन्नति करे और माता के सदृश प्रजाओं का पालन करे॥८॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**स ईं॒ स्पृधो॑ वनते॒ अप्र॑तीतो॒ बिभ्र॒द्वज्रं॑ वृत्र॒हणं॒ गभ॑स्तौ।**

**तिष्ठ॒द्धरी॒ अध्य॑स्तेव॒ गर्ते॑ वचो॒युजा॑ वहत॒ इन्द्र॑मृ॒ष्वम्॥९॥**

**सः। ई॒म्। स्पृध॑ः। व॒न॒ते॒। अप्र॑तिऽइतः। बिभ्र॑त्। वज्र॑म्। वृ॒त्र॒ऽहन॑म्। गभ॑स्तौ। तिष्ठ॑त्। ह॒री॒ इति॑। अधि॑। अस्ता॑ऽइव। गर्ते॑। व॒च॒ःऽयुजा॑। व॒ह॒त॒ः। इन्द्र॑म्। ऋ॒ष्वम्॥९॥**

**पदार्थः**-**(सः)** **(ईम्)** जलम् **(स्पृधः)** स्पर्द्धन्ते येषु तान् **(वनते)** सम्भजति **(अप्रतीतः)** शत्रुभिरज्ञातः **(बिभ्रत्)** धरन् **(वज्रम्)** **(वृत्रहणम्)** येन वृत्रं हन्ति तत् **(गभस्तौ)** किरणे **(तिष्ठत्)** तिष्ठति **(हरी)** अश्वाविव धारणाकर्षणे **(अधि)** **(अस्तेव)** प्रेरकः सारथिरिव **(गर्ते)** गृहे। **गर्त इति गृहनाम।** (निघं०३.४) **(वचोयुजा)** यौ वचसा युङ्क्तस्तौ **(वहतः)** **(इन्द्रम्)** विद्युतमिव राजानम् **(ऋष्वम्)** महान्तम्॥९॥

**अन्वयः**-स इन्द्रो वृत्रहणं वज्रं गभस्तौ सूर्य इव बिभ्रदप्रतीतः स्पृध ईं वनते हरी अस्तेव गर्तेऽधि तिष्ठत् तथा त्वं यौ वचोयुजा ऋष्वमिन्द्रं वहतस्तौ यानेषु युङ्क्ष्व॥९॥

**भावार्थः**-राजा सदैव स्वमन्त्रं गोपयेद् यदा कार्यं सिद्धेत् तदैव जना प्रसिद्धं जानीयुः शस्त्राणि धृत्वा सेनाः सुशिक्ष्य महदैश्वर्यं प्राप्नुयात्॥९॥



www.9009.co.in

**पदार्थ:-(स:)** वह प्रताप से युक्त राजा **(वृत्रहणम्)** जिससे मेघ का नाश करता है उस **(वज्रम्)** वज्र को **(गभस्तौ)** किरण में सूर्य जैसे **(बिभ्रत्)** धारण करता हुआ **(अप्रतीत:)** शत्रुओं से नहीं जाना गया **(स्पृध:)** स्पर्द्धा करते हैं जिनमें उनका और **(ईम्)** जल का **(वनते)** सेवन करता है और **(हरी)** घोड़े जैसे धारण और आकर्षण को, वैसे वा **(अस्तेव)** प्रेरणा करने वाला सारथि जैसे वैसे **(गर्ते)** गृह में **(अधि, तिष्ठत्)** स्थित होता है, वैसे आप जो **(वचोयुजा)** वचन से युक्त करते वे दोनों **(ऋष्वम्)** बड़े **(इन्द्रम्)** बिजुली के सदृश राजा को **(वहत:)** पहुँचाते हैं, उनको वाहनों में युक्त करिये॥९॥

**भावार्थ:-**राजा सदा ही अपने विचार को छिपावे, जब कार्य सिद्ध होवे तभी लोग प्रकट जानें और शस्त्रों को धारण कर सेनाओं को उत्तम प्रकार शिक्षा देकर बड़े ऐश्वर्य को प्राप्त होवे॥९॥

**पुनर्मनुष्या: किं कुर्य्युरित्याह॥**

फिर मनुष्य क्या करें, इस विषय को कहते हैं॥

**सनेम तेऽवसा नव्य इन्द्र प्र पूरव: स्तवन्त एना यज्ञै:।**

**सप्त यत्पुर: शर्म शारदीर्दर्द्धन् दासी: पुरुकुत्साय शिक्षन्॥ १०॥**

**सनेम। ते। अवसा। नव्य:। इन्द्र। प्र। पूरव:। स्तवन्ते। एना। यज्ञै:। सप्त। यत्। पुर:। शर्म। शारदी:। दर्त्। हन्। दासी:। पुरुऽकुत्साय। शिक्षन्॥ १०॥**

**पदार्थ:-(सनेम)** विभजेम **(ते)** तव **(अवसा)** रक्षणादिना **(नव्य:)** नवीनेषु भव: **(इन्द्र)** परमैश्वर्यसुखप्रद **(प्र)** **(पूरव:)** मनुष्या: **(स्तवन्ते)** **(एना)** एनेन **(यज्ञै:)** सद्व्यवहारमयै: **(सप्त)** **(यत्)** य: **(पुर:)** नगरी: **(शर्म)** गृहम् **(शारदी:)** शरदि भवा: **(दर्त्)** विदृणाति **(हन्)** हन्ति **(दासी:)** सेविका: **(पुरुकुत्साय)** बहुशस्त्राय **(शिक्षन्)**॥१०॥

**अन्वय:-**हे इन्द्र! तेऽवसा वयं सप्त पुर: सनेम यथा पूरव एनाऽवसा यज्ञै: स्तवन्ते तेन नव्यस्त्वं तै: स्तुहि यद्य: शर्म शारदीर्दासी: प्राप्य पुरुकुत्साय शिक्षन् सन् दु:खानि प्र दर्त्, शत्रून् हन्त्स सर्वै: सत्कर्तव्य:॥१०॥

**भावार्थ:-**हे मनुष्या! यथा राजा विनयेन वर्तते तथैव सर्वे वर्त्तन्ताम्, पुरुषार्थेन सुन्दराणि पुराणि च निर्माय तेषु सर्वर्त्तु सुप्रखदेषु निवसन्तो दु:खानि दूरे प्रक्षिपन्तु॥१०॥

**पदार्थ:**-हे **(इन्द्र)** अत्यन्त ऐश्वर्य और सुख के देने वाले! **(ते)** आपके **(अवसा)** रक्षण आदि से हम लोग **(सप्त)** सात **(पुर:)** नगरियों का **(सनेम)** विभाग करें और जैसे **(पूरव:)** मनुष्य **(एना)** इस **(अवसा)** रक्षण आदि से और **(यज्ञै:)** श्रेष्ठ व्यवहाररूप यज्ञों से **(स्तवन्ते)** स्तुति करते हैं इससे **(नव्य:)** नवीनों में हुए आप उनसे स्तुति करिये और **(यत्)** जो **(शर्म)** गृह और **(शारदी:)** शरत्काल में हुई **(दासी:)** सेविकाओं को प्राप्त होके **(पुरुकुत्साय)** बहुत शस्त्र वाले के लिये **(शिक्षन्)** शिक्षा देता हुआ दु:खों को **(प्र, दर्त्)** नष्ट करता है और शत्रुओं को **(हन्)** मारता है, वह सब से सत्कार करने योग्य है॥१०॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे राजा विनय से वर्त्तमान है, वैसे ही सब वर्त्तमान होवें और पुरुषार्थ से सुन्दर पुरों का निर्माण करके उन सब ऋतुओं में सुख देनेवालों में निवास करते हुए दुःखों को दूर फेंकें॥१०॥

**पुना राजा किं कुर्यादित्याह॥**

फिर राजा क्या करे, इस विषय को कहते हैं॥

**त्वं वृध इन्द्र पूर्व्यो भूर्वरिवस्यन्नुशने काव्याय।**

**परा नववास्त्वमनुदेयं महे पित्रे ददाथ स्वं नपातम्॥११॥**

**त्वम्। वृधः। इन्द्र। पूर्व्यः। भूः। वरिवस्यन्। उशने। काव्याय। परा। नवऽवास्त्वम्। अनुऽदेयम्। महे। पित्रे। ददाथ। स्वम्। नपातम्॥११॥**

**पदार्थः**-(**त्वम्**) (**वृधः**) वर्धकान् (**इन्द्र**) विद्यैश्वर्ययुक्त (**पूर्व्यः**) पूर्वैः कृतो विद्वान् (**भूः**) भवेः (**वरिवस्यन्**) सेवमानः (**उशने**) कामयमानाय (**काव्याय**) कविभिः सुशिक्षिताय (**परा**) (**नववास्त्वम्**) नवीनं निवासम् (**अनुदेयम्**) अनुदातुं योग्यम् (**महे**) महते (**पित्रे**) पालकाय (**ददाथ**) देहि (**स्वम्**) स्वकीयम् (**नपातम्**) पातरहितम्॥११॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! पूर्व्यस्त्वं वृधो वरिवस्यन्नुशने काव्याय दाता भूः स्वं नपातमनुदेयं नववास्त्वं महे पित्रे ददाथ न पराऽऽददाथ॥११॥

**भावार्थः**-यो राजा सर्वेषां यथायोग्यं सत्कारं करोति स पितृवद् भवति॥११॥

**पदार्थः**-हे (**इन्द्रः**) विद्या और ऐश्वर्य से युक्त (**पूर्व्यः**) प्राचीन से किये गये विद्वान् (**त्वम्**) आप (**वृधः**) वृद्धि करने वालों की (**वरिवस्यन्**) सेवा करते हुए (**उशने**) कामना करते हुए (**काव्याय**) विद्वानों से उत्तम प्रकार शिक्षित के लिये दाता (**भूः**) हूजिये (**स्वम्**) अपने (**नपातम्**) पतन से रहित (**अनुदेयम्**) पश्चात् देने योग्य (**नववास्त्वम्**) नवीन निवास को (**महे**) बड़े (**पित्रे**) पालन करने वाले के लिये (**ददाथ**) दीजिये और नहीं (**परा**) पीछे लीजिये अर्थात् न लौटाइये॥११॥

**भावार्थः**-जो राजा सब का यथायोग्य सत्कार करता है, वह पिता के तुल्य होता है॥११॥

**पुनाः स किं कुर्यादित्याह॥**

फिर वह क्या करे, इस विषय को कहते हैं॥

**त्वं धुनिरिन्द्र धुनिमतीर्ऋणोरपः सीरा न स्रवन्तीः।**

**प्र यत्समुद्रमति शूर पर्षि पारया तुर्वशं यदुं स्वस्ति॥१२॥**

**त्वम्। धुनिः। इन्द्र। धुनिऽमतीः। ऋणोः। अपः। सीराः। न। स्रवन्तीः। प्र। यत्। समुद्रम्। अति। शूर। पर्षि। पारय। तुर्वशम्। यदुम्। स्वस्ति॥१२॥**

**पदार्थः**-(**त्वम्**) (**धुनिः**) शत्रूणां कम्पकः (**इन्द्र**) सर्वपालक (**धुनिमतीः**) शब्दायमानाः प्रजाः (**ऋणोः**) प्रसाध्नुयाः (**अपः**) जलानि (**सीराः**) नाड्यः (**न**) इव (**स्रवन्तीः**) नद्यः (**प्र**) (**यत्**) यः



www.9009.co.in

**(समुद्रम्)** सागरमन्तरिक्षं वा **(अति)** **(शूर)** **(पर्षि)** पालयसि **(पारया)** दु:खात् परं देशं गमय **(तुर्वशम्)** सद्यो वशगमनम् **(यदुम्)** यत्नशीलं मनुष्यम् **(स्वस्ति)** सुखम्॥१२॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! धुनिस्त्वं धुनिमतीः सीरा अपः स्रवन्तीः समुद्रं न स्वस्त्यृणोः। हे शूर! यद् यस्त्वं तुर्वशं यदुं प्रति पर्षि स त्वमस्मान् पारया॥१२॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। हे राजंस्त्वं मङ्गलसुखशब्दयुक्ता आनन्दिताः प्रजाः कुर्या यथा नद्यः समुद्रं प्राप्य स्थिरा भवन्ति तथा प्रजा भवन्तं प्राप्य निश्चलाः स्युरेवं कुर्याः॥१२॥

**पदार्थः**–हे **(इन्द्र)** सब के पालन करने वाले **(धुनिः)** शत्रुओं के कम्पाने वाले **(त्वम्)** आप **(धुनिमतीः)** शब्द करती हुई प्रजायें **(सीराः)** नाडियाँ तथा **(अपः)** जल और **(स्रवन्तीः)** नदियाँ **(समुद्रम्)** समुद्र वा अन्तरिक्ष को **(न)** जैसे **(स्वस्ति)** सुख को **(ऋणोः)** प्रसिद्ध कीजिये और हे **(शूर)** वीर! **(यत्)** जो आप **(तुर्वशम्)** शीघ्र वश को प्राप्त होनेवाले **(यदुम्)** यत्नशील मनुष्य का **(प्र, अति पर्षि)** प्रसिद्ध अत्यन्त पालन करते हो, वह आप हम लोगों को **(पारया)** दु:ख से पार कीजिये॥१२॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे राजन्! आप मङ्गल और सुख के देने वाले शब्दों से युक्त और आनन्दित प्रजाओं को करें, जैसे नदियाँ समुद्र को प्राप्त होकर स्थिर होती हैं, वैसे प्रजायें आपको प्राप्त होकर निश्चल होवें, ऐसा करिये॥१२॥

**पुनः स किं कुर्यादित्याह॥**

फिर वह क्या करे, इस विषय को कहते हैं॥

**तव॑ ह॒ त्यदि॑न्द्र॒ विश्व॑मा॒जौ स॒स्तो धु॒नीचु॒मुरी॒ या ह॒ सिष्व॑प्।**

**दी॒दय॒दित्तुभ्यं॒ सोमे॑भिः सु॒न्वन् द॒भीति॑रि॒ध्मभृ॑तिः प॒क्थ्य१॑र्कैः॥१३॥१०॥**

**तव॑। ह॒। त्यत्। इ॒न्द्र॒। विश्व॑म्। आ॒जौ। स॒स्तः। धु॒नीचु॒मुरी॒ इति॑। या। ह॒। सिस्व॑प्। दी॒दय॑त्। इत्। तुभ्य॑म्। सोमे॑भिः। सु॒न्वन्। द॒भीति॑ः। इ॒ध्मऽभृ॑तिः। प॒क्थी। अ॒र्कैः॥१३॥**

**पदार्थः**-**(तव)** **(ह)** किल **(त्यत्)** तत् **(इन्द्र)** सुखधर्तः **(विश्वम्)** समग्रम् **(आजौ)** सङ्ग्रामे **(सस्तः)** श्यानः **(धुनीचुमुरी)** ध्वनिः शब्दश्चमुरिर्भोगश्च तौ **(या)** यौ **(ह)** **(सिष्वप्)** स्वपन् **(दीदयत्)** प्रकाशयति **(इत्)** एव **(तुभ्यम्)** **(सोमेभिः)** ऐश्वर्यौषध्यादिभिः **(सुन्वत्)** निष्पादयन् **(दभीतिः)** हिंसकः **(इध्मभृतिः)** इध्मानां धारकः **(पक्थी)** पाचकः **(अर्कैः)** अन्नैः॥१३॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! तव या धुनीचुमुरी आजौ विश्वं पालयतो यः सस्तो ह सिष्वब् दीदयद्यो दभीतिरिध्मभृतिः पक्थ्यर्कैः सोमेभिः सुन्वँस्तुभ्यमित् सुखं प्रयच्छेत्त्यद्ध तान्त्सर्वान्त्सदा सत्कुर्याः॥१३॥

**भावार्थः**-हे राजँस्त्वं वावदूकान् भोक्तॄन् वीराञ्जनान् सत्कृत्य सेनाः प्रबलाः कुर्याः॥१३॥

अत्रेन्द्रविद्वद्राजप्रजागुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति विंशतितमं सूक्तं दशमो वर्गश्च समाप्तः॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-हे **(इन्द्र)** सुख के धारण करने वाले **(तव)** आपके **(या)** जो **(धुनीचुमुरी)** शब्द और भोग **(आजौ)** संग्राम में **(विश्वम्)** सम्पूर्ण का पालन करते हैं ओर जो **(सस्तः)** शयन करता हुआ **(ह)** निश्चय से **(सिष्वप्)** सोता हुआ **(दीदयत्)** प्रकाश करता है और जो **(दभीतिः)** हिंसा करने और **(इध्मभृतिः)** काष्ठ का धारण करने वाला **(पक्थी)** पाचक **(अर्कैः)** अन्नों से और **(सोमेभिः)** ऐश्वर्य और ओषधि आदिकों से **(सुन्वन्)** उत्पन्न करता हुआ **(तुभ्यम्)** आपके लिये **(इत्)** ही सुख को देवे **(त्यत्)** उसको **(ह)** निश्चय से और उन सबों को सदा सत्कार करिये॥१३॥

**भावार्थः**-हे राजन्! आप बहुत बोलनेवाले, भोक्ता, वीर जनों का सत्कार करके सेनाओं को प्रबल करिये॥१३॥

इस सूक्त में इन्द्र, विद्वान्, राजा और प्रजा के गुणवर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह बीसवाँ सूक्त और दशवाँ वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

**अथ द्वादशर्चस्यैकविंशतितमस्य सूक्तस्य भरद्वाजो बार्हस्पत्य ऋषिः। इन्द्रो देवता। १, २,९, १०, १२ विराट् त्रिष्टुप्। ४, ५, ११ त्रिष्टुप्। ७ निचृत्त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः। ३ भुरिक्पङ्क्तिः। ६ पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः। ८ स्वराड् बृहतीच्छन्दः। मध्यमः स्वरः॥**

*पुनस्तं राजानं किमर्थमाश्रयेरन्नित्याह॥*

अब बारह ऋचावाले इक्कीसवें सूक्त का प्रारम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में फिर उस राजा का किस अर्थ आश्रय करें, इस विषय को कहते हैं॥

**इ॒मा उ॑ त्वा पुरु॒तम॑स्य का॒रोर्हव्यं॑ वीर॒ हव्या॑ हवन्ते।**

**धियो॑ रथे॒ष्ठाम॒जरं॒ नवी॑यो र॒यिर्विभू॑तिरीयते वच॒स्या॥ १॥**

**इ॒माः। ऊँ॒ इति॑। त्वा॒। पु॒रु॒ऽतम॑स्य। का॒रोः। हव्य॑म्। वी॒र॒। हव्याः॑। ह॒व॒न्ते॒। धियः॑। र॒थे॒ऽस्थाम्। अ॒जर॑म्। नवी॑यः। र॒यिः। विऽभू॑तिः। ई॒य॒ते॒। व॒च॒स्या॥ १॥**

**पदार्थः**-(**इमाः**) वर्तमानाः प्रजाः (**उ**) (**त्वा**) त्वाम् (**पुरुतमस्य**) अतिशयेन बहुगुणस्य (**कारोः**) शिल्पिनः (**हव्यम्**) दातुमर्हम् (**वीर**) निर्भय (**हव्याः**) दातुं योग्याः (**हवन्ते**) आददति (**धियः**) प्रज्ञाः (**रथेष्ठाम्**) यो रथे तिष्ठति (**अजरम्**) जरारहितं शरीरम् (**नवीयः**) अतिशयेन नवीनम् (**रयिः**) श्रीः (**विभूतिः**) ऐश्वर्यम् (**ईयते**) प्राप्नोति (**वचस्या**) वचसि भवा॥ १॥

**अन्वयः**-हे वीर! ये पुरुतमस्य कारोर्हव्यं हवन्ते या इमा हव्या धियो रथेष्ठां नवीयोऽजरं रयिर्वचस्या विभूतिरीयते ताभिर्युक्तं त्वा उ वयं सत्कुर्याम॥ १॥

**भावार्थः**-यः पुरुषः प्रशंसनीयां बुद्धिं स्वीकृत्य तया जरारोगरहितां पुष्कलां श्रियमैश्वर्यं चाप्नोति तस्य शिल्पिप्रियस्य राज्ञः सत्कारः कर्त्तव्यः॥ १॥

**पदार्थः**-हे (**वीर**) भय से रहित जो (**पुरुतमस्य**) अतिशय बहुत गुणों से विशिष्ट (**कारोः**) कारीगर के (**हव्यम्**) देने योग्य को (**हवन्ते**) ग्रहण करते हैं और जो (**इमाः**) ये वर्त्तमान प्रजायें (**हव्याः**) देने योग्य (**धियः**) बुद्धियों को और जो (**रथेष्ठाम्**) रथ में स्थित होने वाले (**नवीयः**) अतिशय नवीन (**अजरम्**) वृद्धावस्था से रहित शरीर को (**रयिः**) धन और (**वचस्या**) वचन में हुआ (**विभूतिः**) ऐश्वर्य (**ईयते**) प्राप्त होता है, उनसे युक्त (**त्वा**) आपका (**उ**) तर्क-वितर्क से हम लोग सत्कार करें॥ १॥

**भावार्थः**-जो पुरुष प्रशंसा करने योग्य बुद्धि को स्वीकार करके उससे वृद्धावस्था और रोग से रहित अत्यन्त लक्ष्मी और ऐश्वर्य को प्राप्त होता है, उस शिल्पीजनप्रिय राजा का सत्कार करना चाहिये॥ १॥

**पुनर्मनुष्यैः किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥



www.9009.co.in

**तमु॒ स्तु॒ष इन्द्रं॒ यो विदा॑नो॒ गिर्वा॑हसं गी॒र्भिर्य॒ज्ञवृ॑द्धम्।**

**यस्य॒ दिव॒मति॑ म॒ह्ना पृ॑थि॒व्याः पु॑रुमा॒यस्य॑ रिरि॒चे म॑हि॒त्वम्॥ २॥**

**तम्। ऊँ इति॑। स्तु॒षे॒। इन्द्र॑म्। यः। विदा॑नः। गिर्वा॑हसम्। गी॒ःऽभिः। य॒ज्ञऽवृ॑द्धम्। यस्य॑। दिव॑म्। अति॑। म॒ह्ना। पृ॒थि॒व्याः। पु॒रु॒ऽमा॒यस्य॑। रि॒रि॒चे। म॒हि॒ऽत्वम्॥ २॥**

**पदार्थः-(तम्)** (उ) **(स्तुषे)** प्रशंससि **(इन्द्रम्)** परमैश्वर्यप्रदम् **(यः)** **(विदानः)** जानन् **(गिर्वाहसम्)** सुशिक्षितवाक्प्रापकम् **(गीर्भिः)** वाग्भिः **(यज्ञवृद्धम्)** यज्ञे पूज्यं विद्वांसम् **(यस्य)** **(दिवम्)** कामयमानम् **(अति)** **(मह्ना)** महत्त्वेन **(पृथिव्याः)** **(पुरुमायस्य)** बहुकपटस्य दुष्टस्य **(रिरिचे)** अतिरिणक्ति **(महित्वम्)** महिमानम्॥ २॥

**अन्वयः**-हे राजन्! यो विदानो गीर्भिर्गिर्वाहसं यज्ञवृद्धं दिवमिन्द्रं लब्ध्वा पृथिव्या यस्य पुरुमायस्य मह्ना महित्वमति रिरिचे यं त्वमु स्तुषे तं वयं स्वीकुर्याम॥ २॥

**भावार्थः**-ये मनुष्याः परमैश्वर्यवर्धकं सूर्यमिव प्रकाशमानं राजानं सत्यमुपदिशेयुस्ते महिमानं प्राप्य दुःखाऽतिरिक्ता जायन्ते॥ २॥

**पदार्थः**-हे राजन्! **(यः)** जो **(विदानः)** जानता हुआ **(गीर्भिः)** वाणियों से **(गिर्वाहसम्)** उत्तम प्रकार शिक्षित वाणी के प्राप्त कराने वाले **(यज्ञवृद्धम्)** यज्ञ में आदर करने योग्य विद्वान् और **(दिवम्)** कामना करते हुए **(इन्द्रम्)** परमैश्वर्य्यप्रद जन को प्राप्त होकर **(पृथिव्याः)** पृथिवी और **(यस्य)** जिस **(पुरुमायस्य)** बहुत कपट से युक्त दुष्ट जन की **(मह्ना)** महिमा से **(महित्वम्)** महिमा को **(अति, रिरिचे)** बढ़ाता है और जिसकी आप **(उ)** तर्क-वितर्क से **(स्तुषे)** प्रशंसा करते हो **(तम्)** उस जन को हम लोग स्वीकार करें॥ २॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य अत्यन्त ऐश्वर्य के बढ़ानेवाले सूर्य के सदृश प्रकाशमान राजा को सत्य का उपदेश करें, वे महिमा को प्राप्त होकर दुःख से अतिरिक्त होते हैं॥ २॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**स इत्तमो॑ऽवयु॒नं त॑त॒न्वत् सूर्ये॑ण व॒युन॑वच्चकार।**

**क॒दा ते॒ मर्ता॑ अ॒मृत॑स्य॒ धामेय॑क्षन्तो॒ न मि॑नन्ति स्वधावः॥ ३॥**

**सः। इत्। तमः॑। अ॒व॒यु॒नम्। त॒त॒न्वत्। सूर्ये॑ण। व॒युन॑ऽवत्। च॒का॒र॒। क॒दा। ते॒। मर्ताः॑। अ॒मृत॑स्य। धाम॑। इय॑क्षन्तः। न। मि॒न॒न्ति॒। स्व॒धा॒ऽव॒ः॥ ३॥**

**पदार्थः-(सः)** **(इत्)** एव **(तमः)** रात्रिः **(अवयुनम्)** अज्ञानमन्धकाररूपम् **(ततन्वत्)** विस्तृणन्। तनुधातोः शतृप्रत्यये **बहुलं छन्दसि।** (अ०२.४.७६) अनेन बहुलं शपः श्लुः **(सूर्येण)** **(वयुनवत्)** प्रज्ञावत् **(चकार)** करोति **(कदा)** **(ते)** **(मर्त्ताः)** मनुष्याः **(अमृतस्य)** मरणरहितस्य जगदीश्वरस्य **(धाम)**



www.9009.co.in

दधाति येन तत् **(इयक्षन्तः)** यष्टुं सङ्गमयितुमिच्छन्तः **(न)** निषेधे **(मिनन्ति)** हिंसन्ति **(स्वधावः)** बह्वन्नयुक्त॥३॥

**अन्वयः**-हे जगदीश्वर! यो भवान्त्सूर्येण तम इव ज्ञानप्रकाशेनावयुनं नष्टं चकार वयुनवत्प्रज्ञां ततन्वदस्ति स इत्सेवनीयः। हे स्वधावो मर्त्ता! अमृतस्य ते धामेयक्षन्तः कदा न मिनन्ति॥३॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। ये मनुष्या अहिंसाधर्मं स्वीकृत्य विज्ञानं वर्धयित्वा परमेश्वरप्राप्तिं चिकीर्षन्ति ते विस्तीर्णं सुखं लभन्ते॥३॥

**पदार्थः**-हे जगदीश्वर! जो आप **(सूर्येण)** सूर्य से **(तमः)** रात्रि जैसे वैसे ज्ञानप्रकाश से **(अवयुनम्)** अज्ञानान्धकार को नष्ट **(चकार)** करते हैं और **(वयुनवत्)** बुद्धि के सदृश और बुद्धि का **(ततन्वत्)** विस्तार करते हुए हैं **(सः) (इत्)** वही सेवा करने योग्य हैं। हे **(स्वधावः)** बहुत अन्न से युक्त **(मर्त्ताः)** मनुष्य! **(अमृतस्य)** मरणरहित जगदीश्वर के **(ते)** आपके सम्बन्ध में **(धाम)** धारण करते जिससे उसको **(इयक्षन्तः)** मिलाने की इच्छा करते हुए **(कदा)** कब **(न)** नहीं **(मिनन्ति)** नष्ट करते हैं अर्थात् दोष के कारण को दूर करते हैं॥३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जो मनुष्य अहिंसा धर्म को स्वीकार कर और विज्ञान बढ़ाय के परमेश्वर की प्राप्ति की चिकीर्षा करते हैं, वे विस्तीर्ण सुख को प्राप्त होते हैं॥३॥

**पुनर्विदुषः प्रति किं प्रष्टव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को विद्वानों के प्रति क्या-क्या पूँछना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**यस्ता चकार स कुह स्विदिन्द्रः कमा जनं चरति कासु विक्षु।**

**कस्ते यज्ञो मनसे शं वराय को अर्क इन्द्र कतमः स होता॥४॥**

**यः। ता। चकार। सः। कुह। स्वित्। इन्द्रः। कम्। आ। जनम्। चरति। कासु। विक्षु। कः। ते। यज्ञः। मनसे। शम्। वराय। कः। अर्कः। इन्द्र। कतमः। सः। होता॥४॥**

**पदार्थः**-**(यः) (ता)** तानि **(चकार)** करोति **(सः) (कुह) (स्वित्)** अपि **(इन्द्रः)** परमैश्वर्यकर्ता **(कम्)** सुखम् **(आ) (जनम्) (चरति) (कासु) (विक्ष)** प्रजासु **(कः) (ते)** तव **(यज्ञः)** सङ्गतिमयः **(मनसे)** मननशीलाय **(शम्)** सुखम् **(वराय)** श्रेष्ठाय **(कः) (अर्कः)** अर्चनीयः **(इन्द्र)** दुःखविदारक **(कतमः) (सः) (होता)** दाता॥४॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! य इन्द्रः कुह स्वित्ता चकार कासु विक्षु स कं जनमाऽऽचरति ते वराय मनसे को यज्ञः शं चकार कोऽर्कः कतमः स होता भवतीत्युत्तराणि वद॥४॥

**भावार्थः**-हे विद्वांस्तानि प्रज्ञावर्धनानि कः कर्तुं शक्नुयादुपकाराय प्रज्ञासु कश्चरति कः पूजनीयः कश्च दाता भवतीति समाधानानि वद॥४॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-हे **(इन्द्र)** दुःखविदारक विद्वान्! **(यः)** जो **(इन्द्रः)** अत्यन्त ऐश्वर्य का करने वाला **(कुह)** **(स्वित्)** कहीं **(ता)** उनको **(चकार)** करता है और **(कासु)** किन **(विक्षु)** प्रजाओं में **(सः)** वह **(कम्)** सुख को और **(जनम्)** मनुष्य को **(आ, चरति)** आचरण करता अर्थात् प्राप्त होता है और **(ते)** आपके **(वराय)** श्रेष्ठ **(मनसे)** विचारशील चित्त के लिये **(कः)** कौन **(यज्ञः)** मेल करना रूप यज्ञ **(शम्)** सुख को करता है और **(कः)** कौन **(अर्कः)** आदर करने योग्य और **(कतमः)** कौनसा **(सः)** वह **(होता)** दाता होता है, इनके उत्तरों को कहिये॥४॥

**भावार्थः**-हे विद्वान्! उन बुद्धि की वृद्धियों को कौन कर सके, उपकार के लिये बुद्धियों में कौन चलता है, कौन आदर करने योग्य और कौन दाता होता है, इन प्रश्नों के समाधानों को कहिये॥४॥

**पुनर्मनुष्यैः किं कर्त्तव्यमित्याह**

फिर मनुष्यों को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**इदा हि ते वेविषतः पुराजाः प्रत्नास आसुः पुरुकृत्सखायः।**

**ये मध्यमास उत नूतनास उतावमस्य पुरुहूत बोधि॥५॥११॥**

**इदा। हि। ते। वेविषतः। पुराऽजाः। प्रत्नासः। आसुः। पुरुऽकृत्। सखायः। ये। मध्यमासः। उत। नूतनासः। उत। अवमस्य। पुरुऽहूत। बोधि॥५॥**

**पदार्थः**-**(इदा)** इदानीम् **(हि)** **(ते)** तव **(वेविषतः)** व्याप्नुवतः **(पुराजाः)** ये पूर्वं जाता **(प्रत्नासः)** प्राचीनाः **(आसुः)** सन्ति **(पुरुकृत्)** बहुकृत् **(सखायः)** सुहृदः **(ये)** **(मध्यमासः)** मध्ये भवाः **(उत)** अपि **(नूतनासः)** नवीनाः **(उत)** **(अवमस्य)** अर्वाचीनस्य **(पुरुहूत)** बहुभिः कृतप्रशंस **(बोधि)** बोधय॥५॥

**अन्वयः**-हे पुरुहुत पुरुकृद् बहुकृदिन्द्र राजन्! ये हि पुराजाः प्रत्नासो मध्यमास उत नूतनासस्ते सखाय आसुस्तानिदा वेविषत उतावमस्य सम्बन्धिनस्त्वं बोधि॥५॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! ये युष्माभिः सह मैत्रीमाचरन्ति ते वृद्धा वृद्धतरा मध्यमा उतापि तुल्यवयसः स्युस्तेषु सख्यं ध्रुवं रक्षेयुरेवं सति ध्रुवो राज्याभ्युदयो भवति। इदमेव पूर्वमन्त्रप्रश्नानामुत्तरम्॥५॥

**पदार्थः**-हे **(पुरुहूत)** बहुतों से प्रशंसा किये गये **(पुरुकृत्)** बहुतों को करने वाले प्रतापयुक्त राजन्! **(ये)** जो **(हि)** निश्चित **(पुराजाः)** पूर्व प्रकट हुए **(प्रत्नासः)** प्राचीन **(मध्यमासः)** मध्य अवस्था में हुए और **(उत)** भी **(नूतनासः)** नवीन **(ते)** आपके **(सखायः)** मित्र **(आसुः)** हैं उनको **(इदा)** इस समय तथा **(वेविषतः)** व्याप्त हुए और **(उत)** भी **(अवमस्य)** आधुनिक के सम्बन्धियों को आप **(बोधि)** चेतन करिये॥५॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो आप लोगों के साथ मैत्री का आचरण करते हैं, वे वृद्ध, वृद्धतर तथा मध्यम और भी तुल्य अवस्थावाले, होवें उन में मित्रता की निश्चय रक्षा करिये, ऐसा होने पर निश्चित राज्य की वृद्धि होती है, यह ही पूर्वमन्त्र में कहे हुए प्रश्नों का उत्तर है॥५॥

**पुनर्मनुष्यैः किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**तं पृच्छन्तोऽवरासः पराणि प्रत्ना त इन्द्र श्रुत्यानु येमुः।**

**अर्चामसि वीर ब्रह्मवाहो यादेव विद्म तात्त्वा महान्तम्॥६॥**

**तम्। पृच्छन्तः। अवरासः। पराणि। प्रत्ना। ते। इन्द्र। श्रुत्या। अनु। येमुः। अर्चामसि। वीर। ब्रह्मऽवाहः। यात्। एव। विद्म। तात्। त्वा। महान्तम्॥६॥**

**पदार्थः**-(**तम्**) (**पृच्छन्तः**) (**अवरासः**) अर्वाचीना जिज्ञासवः (**पराणि**) उत्तरकालस्थानि (**प्रत्ना**) पूर्वकालीनि (**ते**) तव (**इन्द्र**) विद्वन् (**श्रुत्या**) श्रुतौ भवानि (**अनु**) (**येमुः**) नियच्छन्ति (**अर्चामसि**) अर्चामः सत्कुर्मः (**वीर**) शौर्यादिगुणोपेत (**ब्रह्मवाहः**) ये ब्रह्म धनं धान्यं प्रापयन्ति ते (**यात्**) यावन्ति। अत्र **छान्दसो वर्णलोपो वे**ति वलोपः **शेश्छन्दसि बहुलमि**ति शेर्लोपः। (**एव**) (**विद्म**) जानीयाम (**तात्**) तावन्ति (**त्वा**) त्वाम् (**महान्तम्**) महाशयम्॥६॥

**अन्वयः**-हे वीरेन्द्र! येऽवरासस्तं महान्तं त्वा पृच्छन्तस्ते पराणि प्रत्ना श्रुत्याऽनु येमुस्तान् वयमर्चामसि। हे ब्रह्मवाहो विद्वांसो! वयं याद्विद्म तादेव यूयं विजानीत॥६॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! युष्माभिर्मित्रत्वेन मिलित्वा पूर्वापराणि विज्ञानानि प्राप्य पुष्कलं सुखं प्राप्तव्यम्॥६॥

**पदार्थः**-हे (**वीर**) शूरता आदि गुणों से युक्त (**इन्द्र**) विद्वन्! जो (**अवरासः**) आधुनिक जिज्ञासु अर्थात् ब्रह्म को जानने की इच्छा करने वाले जन (**तम्**) उन (**महान्तम्**) महाशय (**त्वा**) आपको (**पृच्छन्तः**) पूंछते हुए हैं (**ते**) वे (**पराणि**) उत्तरकाल में वर्त्तमान और (**प्रत्ना**) पूर्वकाल में स्थित (**श्रुत्या**) वेद में प्रतिपादित विषयों को (**अनु, येमुः**) अनुकूल नियम में लाते हैं, उनका हम लोग (**अर्चामसि**) सत्कार करते हैं और हे (**ब्रह्मवाहः**) धन और धान्य को प्राप्त कराने वाले विद्वान्! हम लोग (**यात्**) जितनों को (**विद्म**) जानें (**तात्**) उतनों (**एव**) ही को आप लोग जानिये॥६॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! आप लोगों को मित्रतापूर्वक मेल कर तथा पूर्व और पर विज्ञानों को प्राप्त होकर अत्यन्त सुख को प्राप्त होना चाहिये॥६॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**अभि त्वा पाजो रक्षसो वि तस्थे महि जज्ञानमभि तत्सु तिष्ठ।**



www.9009.co.in

**तव॑ प्र॒त्नेन॑ यु॒ज्ये॑न॒ सख्या॒ वज्रे॑ण धृष्णो॒ अप॒ ता नु॑दस्व॥७॥**

**अ॒भि। त्वा॒। पाजः॑। र॒क्षसः॑। वि। त॒स्थे॒। महि॑। ज॒ज्ञानम्। अ॒भि। तत्। सु। ति॒ष्ठ॒। तव॑। प्र॒त्नेन॑। यु॒ज्ये॑न। सख्या॑। वज्रे॑ण। धृ॒ष्णो॒ इति॑। अप॑। ता। नु॒द॒स्व॒॥७॥**

**पदार्थः**-(**अभि**) आभिमुख्ये (**त्वा**) त्वाम् (**पाजः**) बलम् (**रक्षसः**) दुष्टान् मनुष्यान् (**वि**) (**तस्थे**) वितिष्ठते (**महि**) महत् (**जज्ञानम्**) सुखजनकम् (**अभि**) (**तत्**) (**सु**) (**तिष्ठ**) (**तव**) (**प्रत्नेन**) प्राचीनेन (**युज्येन**) योक्तुमर्हेण (**सख्या**) मित्रेण (**वज्रेण**) शस्त्रास्त्रसमूहेन (**धृष्णो**) दृढ (**अप**) (**ता**) तानि शत्रूणां सैन्यानि (**नुदस्व**) दूरीकुरु॥७॥

**अन्वयः**-हे धृष्णो राजँस्तव यन्महि जज्ञानं पाजो रक्षसोऽभि वि तस्थे तत्त्वा प्राप्नोतु तत्वमभि सु तिष्ठ तेन प्रत्नेन युज्येन सख्या वज्रेण त्वं ता अप नुदस्व॥७॥

**भावार्थः**-हे राजजन! ये राजपुरुषा दुष्टेभ्यो दण्डं ददति श्रेष्ठानां पालनं कुर्वन्ति तांस्त्वं सत्कुर्याः॥७॥

**पदार्थः**-हे (**धृष्णो**) दृढ़ राजन्! (**तव**) आपका जो (**महि**) बड़ा (**जज्ञानम्**) सुखजनक (**पाजः**) बल (**रक्षसः**) दुष्ट मनुष्यों के (**अभि, वि, तस्थे**) सम्मुख विशेषकर स्थित होता है (**तत्**) वह (**त्वा**) आपको प्राप्त होवे और आप उसके (**अभि, सु तिष्ठ**) सम्मुख स्थित हूजिये उस (**प्रत्नेन**) प्राचीन (**युज्यते**) युक्त करने के योग्य (**सख्या**) मित्र और (**वज्रेण**) शस्त्र और अस्त्रों के समूह से आप (**ता**) उन शत्रुसेनाओं को (**अप, नुदस्व**) दूर करिये॥७॥

**भावार्थः**-हे राजजन! जो राजपुरुष दुष्टों के लिये दण्ड देते और श्रेष्ठों को पालन करते हैं, उनका आप सत्कार करिये॥७॥

**पुनर्विद्वद्भिः किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

फिर विद्वानों को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**स तु श्रु॑धीन्द्र॒ नूत॑नस्य ब्रह्मण्य॒तो वी॑र कारुधायः।**

**त्वं ह्या॒३॑पिः प्र॒दिवि॑ पितॄ॒णां शश्व॑द् ब॒भूथ॑ सु॒हव॒ एष्टौ॑॥८॥**

**सः। तु। श्रु॒धि॒। इ॒न्द्र॒। नूत॑नस्य। ब्र॒ह्म॒ण्य॒तः। वी॒र॒। का॒रु॒ऽधा॒य॒ः। त्वम्। हि। आ॒पिः। प्र॒ऽदिवि॑। पि॒तॄ॒णाम्। शश्व॑त्। ब॒भूथ॑। सु॒ऽहवः॑। आऽइ॑ष्टौ॥८॥**

**पदार्थः**-(**सः**) (**तु**) (**श्रुधि**) (**इन्द्र**) न्यायेश विद्वन् (**नूतनस्य**) (**ब्रह्मण्यतः**) ब्रह्म धनं प्राप्तुमिच्छतः (**वीर**) दुष्टानां विनाशक (**कारुधायः**) कारूणां विदुषां धर्तः (**त्वम्**) (**हि**) खलु (**आपिः**) यः प्राप्नोति (**प्रदिवि**) प्रकृष्टायां कामनायाम् (**पितॄणाम्**) पालकानाम् (**शश्वत्**) निरन्तरम् (**बभूथ**) भवेः (**सुहवः**) सुष्ठु ज्ञानविज्ञानः (**एष्टौ**) समन्ताद् यज्ञक्रियायाम्॥८॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे वीर कारुधाय इन्द्र! त्वं नूतनस्यैष्टौ सुहवः शश्वद् बभूथ स त्वं तु हि पितॄणां प्रदिव्यापिः सन् ब्रह्मण्यतः सत्कुरु तेषां वचांसि श्रुधि॥८॥

**भावार्थः**-स एवोत्तमो विद्वान् यो ज्ञानवृद्धेभ्यो विद्यावचांसि श्रुत्वोत्तमाञ्छिल्पिनो रक्षित्वा सदेष्टसुखी भवति॥८॥

**पदार्थः**-हे (**वीर**) दुष्टों के नाश करने और (**कारुधायः**) शिल्पी विद्वानों के धारण करने वाले (**इन्द्र**) न्याय के स्वामी विद्वन्! (**त्वम्**) आप (**नूतनस्य**) नवीन की (**एष्टौ**) सब प्रकार से यज्ञक्रिया में (**सुहवः**) उत्तम प्रकार ज्ञान और विज्ञान वाले (**शश्वत्**) निरन्तर (**बभूथ**) हूजिये (**सः**) वह आप (**तु**) तो (**हि**) निश्चय से (**पितॄणाम्**) पितृओं अर्थात् पालकों की (**प्रदिवि**) प्रकृष्ट कामना में (**आपिः**) व्याप्त होने वाले हुए (**ब्रह्मण्यतः**) धन प्राप्ति की इच्छा करने हुओं का सत्कार करिये और उनके वचनों को (**श्रुधि**) सुनिये॥८॥

**भावार्थः**-वही उत्तम विद्वान् है जो ज्ञानवृद्ध जनों से विद्यासम्बन्धी वचनों को सुन के उत्तम शिल्पजनों की रक्षा करके सदा अपेक्षित पदार्थ की प्राप्ति से सुखी होता है॥८॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**प्रोतये वरुणं मित्रमिन्द्रं मरुतः कृष्वावसे नो अद्य।**

**प्र पूषणं विष्णुमग्निं पुरंधिं सवितारमोषधीः पर्वतांश्च॥९॥**

**प्र। ऊतये। वरुणम्। मित्रम्। इन्द्रम्। मरुतः। कृष्व। अवसे। नः। अद्य। प्र। पूषणम्। विष्णुम्। अग्निम्। पुरन्धिम्। सवितारम्। ओषधीः। पर्वतान्। च॥९॥**

**पदार्थः**-(**प्र**) (**ऊतये**) रक्षाद्याय (**वरुणम्**) उदानम् (**मित्रम्**) प्राणम् (**इन्द्रम्**) विद्युतम् (**मरुतः**) वायून् (**कृष्व**) कुरु (**अवसे**) ज्ञानाद्याय (**नः**) अस्मान् (**अद्य**) (**प्र**) (**पूषणम्**) पोषकं समानम् (**विष्णुम्**) व्यापकं व्यानं धनञ्जयं वा हिरण्यगर्भम् (**अग्निम्**) प्रसिद्धम् (**पुरन्धिम्**) सर्वधरं सूत्रात्मानम् (**सवितारम्**) सूर्यमण्डलम् (**ओषधीः**) सोमाद्याः (**पर्वतान्**) मेघान् (**च**) शैलान् वा॥९॥

**अन्वयः**-हे विद्वँस्त्वमद्य न ऊतये वरुणं मित्रमिन्द्रं मरुतः प्र कृष्वावसे पूषणं विष्णुमग्निं पुरन्धिं सवितारमोषधीः पर्वतांश्च प्र कृष्व॥९॥

**भावार्थः**-हे विद्वांसो जना! अस्मदर्थं यथा पृथिव्यादयः पदार्थाः सुखकराः स्युस्तथा विधत्त॥९॥

**पदार्थः**-हे विद्वन्! आप (**अद्य**) इस समय (**नः**) हम लोगों को (**ऊतये**) रक्षा आदि के लिये (**वरुणम्**) उदान और (**मित्रम्**) प्राण वायु (**इन्द्रम्**) बिजुली को (**मरुतः**) पवनों को (**प्र, कृष्व**) अच्छे प्रकार करिये और (**अवसे**) ज्ञान आदि के लिये (**पूषणम्**) पुष्टि करने वाले समान वायु (**विष्णुम्**) व्यापक व्यान और धनञ्जय वायु को वा हिरण्गर्भ परमात्मा को और (**अग्निम्**) प्रसिद्ध अग्नि (**पुरन्धिम्**) सब को



www.9009.co.in

धारण करनेवाले सूत्रात्मा **(सवितारम्)** सूर्यमण्डल **(ओषधीः)** सोमलता आदि ओषधियों और **(पर्वतान्, च)** मेघों वा पर्वतों को **(प्र)** अच्छे प्रकार करिये॥९॥

**भावार्थः**-हे विद्वान् जनो! हम लोगों के लिये जैसे पृथिवी आदि पदार्थ सुखकारक होवें, वैसे करिये॥९॥

**पुनर्मनुष्यैः क उपासनीय इत्याह॥**

फिर मनुष्यों को किसकी उपासना करनी चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**इम उ त्वा पुरुशाक प्रयज्यो जरितारो अभ्यर्चन्त्यर्कैः।**

**श्रुधी हवमा हुवतो हुवानो न त्वावाँ अन्यो अमृत त्वदस्ति॥१०॥**

**इमे। ऊँ इति। त्वा। पुरुऽशाक। प्रयज्यो इति प्रऽयज्यो। जरितारः। अभि। अर्चन्ति। अर्कैः। श्रुधि। हवम्। आ। हुवतः। हुवानः। न। त्वाऽवान्। अन्यः। अमृत। त्वत्। अस्ति॥१०॥**

**पदार्थः**-**(इमे)** **(उ)** **(त्वा)** त्वाम् **(पुरुशाक)** बहुशक्ते **(प्रयज्यो)** यो यत्नेन यष्टुं सङ्गन्तुं योग्यस्तत्सम्बुद्धौ **(जरितारः)** विद्यालाभस्तोतारः **(अभि)** **(अर्चन्ति)** सत्कुर्वन्ति **(अर्कैः)** सत्करणैः **(श्रुधी)** शृणु। अत्र **द्व्यचोऽतस्तिङ** इति दीर्घः। **(हवम्)** उच्चारितशब्दम् **(आ)** **(हुवतः)** स्तुवतः **(हुवानः)** स्तुवन् **(न)** निषेधे **(त्वावान्)** त्वया सदृशः **(अन्यः)** इतरः **(अमृत)** नाशरहित **(त्वत्)** तव सकाशात् **(अस्ति)**॥१०॥

**अन्वयः**-हे प्रयज्यो पुरुशाक परमेश्वर! य इमे जरितारोऽर्कैस्त्वाऽभ्यर्चन्ति, हे अमृत! यतस्त्वत् त्वावानन्यो नास्ति स त्वं हुवानस्तान् हुवतो हवमाऽश्रुधी उताननुगृहाण॥१०॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यथा विद्वांसः परमात्मानं स्तुत्वा प्रार्थ्योपासते तथा यूयमप्युपाध्वं तत्सदृशस्तदधिको वा कोऽपि नास्तीति विजानीत॥१०॥

**पदार्थः**–हे **(प्रयज्यो)** यत्न से मेल करने को योग्य **(पुरुशाक)** बहुत सामर्थ्य से युक्त परमेश्वर! जो **(इमे)** ये **(जरितारः)** विद्या के लाभ की स्तुति करने वाले जन **(अर्कैः)** सत्कारों से **(त्वा)** आपको **(अभि, अर्चन्ति)** सब ओर से सत्कार करते हैं। हे **(अमृत)** नाशरहित! जिन **(त्वत्)** आप से **(त्वावान्)** आपके सदृश **(अन्यः)** अन्य दूसरा **(न)** नहीं **(अस्ति)** है वह **(हुवानः)** प्रशंसा करते हुए आप उन **(हुवतः)** स्तुति करते हुओं को और **(हवम्)** उच्चारित शब्द को **(आ)** सब प्रकार **(श्रुधि)** सुनिये **(उ)** और उन को स्वीकार करिये॥१०॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे विद्वान् जन परमात्मा की स्तुति और प्रार्थना करके उपासना करते हैं, वैसे आप भी उपासना करो और उसके सदृश वा उससे अधिक कोई भी नहीं है, ऐसा जानो॥१०॥

**पुनर्मनुष्यैः किं कर्तव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥



www.9009.co.in

**नू म आ वाचमुप याहि विद्वान् विश्वेभिः सूनो सहसो यजत्रैः।**

**ये अग्निजिह्वा ऋतसाप आसुर्ये मनुं चक्रुरुपरं दसाय॥ ११॥**

**नु। मे। आ। वाचम्। उप। याहि। विद्वान्। विश्वेभिः। सूनो इति। सहसः। यजत्रैः। ये। अग्निऽजिह्वाः। ऋतऽसापः। आसुः। ये। मनुम्। चक्रुः। उपरम्। दसाय॥ ११॥**

**पदार्थः**-(**नु**) सद्यः (**मे**) मम (**आ**) समन्तात् (**वाचम्**) उपदेशम् (**उप**) (**याहि**) प्राप्नुहि (**विद्वान्**) (**विश्वेभिः**) सर्वैः (**सूनो**) अपत्य (**सहसः**) बलवतः (**यजत्रैः**) सङ्गन्तुमर्हैः (**ये**) (**अग्निजिह्वाः**) अग्निरिव तीव्रा प्रज्वलिता जिह्वा येषां ते (**ऋतसापः**) य ऋतेन सत्येन सपन्ति (**आसुः**) भवन्ति (**ये**) (**मनुम्**) मननशीलं मनुष्यम् (**चक्रुः**) कुर्वन्ति (**उपरम्**) मेघमिव (**दसाय**) शत्रूणामुपक्षयाय॥ ११॥

**अन्वयः**-हे सहसः सूनो विद्वांस्त्वं मे वाचमुपाऽऽयाहि येऽग्निजिह्वा ऋतसाप आसुस्तैर्विश्वेभिर्यजत्रैस्सह नु मदीयं वचनमुपायाहि। य उपरमिव दसाय मनुं चक्रुस्तान्त्सदा सत्कुर्याः॥ ११॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। मनुष्याः सदैव सत्यवादिनो विदुषः सङ्गच्छेरन् प्रतिज्ञया च सत्यमाचरेयुः॥ ११॥

**पदार्थः**-हे (**सहसः**) बलवान् के (**सूनो**) सन्तान (**विद्वान्**) विद्यायुक्त जन! आप (**मे**) मेरी (**वाचम्**) वाणी को (**उप, आ, याहि**) अच्छे प्रकार प्राप्त हूजिये और (**ये**) जो (**अग्निजिह्वाः**) अग्नि के समान तीव्र प्रज्वलित जिह्वा जिन की (**ऋतसापः**) सत्य से युक्त होने वाले (**आसुः**) होते हैं जिन (**विश्वेभिः**) सम्पूर्ण (**यजत्रैः**) मिलने योग्यों के साथ (**नु**) शीघ्र मेरे उपदेश को प्राप्त हूजिये और (**ये**) जो (**उपरम्**) मेघ को जैसे वैसे (**दसाय**) शत्रुओं के नाश होने के लिये (**मनुम्**) विचारशील मनुष्य को (**चक्रुः**) करते हैं, उनका सदा सत्कार करिये॥ ११॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। मनुष्य सदा ही सत्यवादी विद्वानों को उत्तम प्रकार मिलें और प्रतिज्ञा से सत्य का आचरण करें॥ ११॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**स नो बोधि पुरएता सुगेषूत दुर्गेषु पथिकृद्विदानः।**

**ये अश्रमास उरवो वहिष्ठास्तेभिर्न इन्द्राभि वक्षि वाजम्॥ १२॥ १२॥**

**सः। नः। बोधि। पुरःऽएता। सुऽगेषु। उत। दुःऽगेषु। पथिऽकृत्। विदानः। ये। अश्रमासः। उरवः। वहिष्ठाः। तेभिः। नः। इन्द्र। अभि। वक्षि। वाजम्॥ १२॥**

**पदार्थः**-(**सः**) (**नः**) अस्मानस्माकं वा (**बोधि**) (**पुरएता**) यः पुर एति गच्छति सः (**सुगेषु**) सुगमेषु व्यवहारेषु (**उत**) अपि (**दुर्गेषु**) दुःखेन गन्तुं योग्येषु (**पथिकृत्**) यः पन्थानं करोति (**विदानः**)



www.9009.co.in

विजानन् **(ये)** **(अश्रमासः)** श्रमरहिताः **(उरवः)** बहवः **(वहिष्ठाः)** अतिशयेन वोढारः **(तेभिः)** तैः **(नः)** अस्मान् **(इन्द्र)** सुखैश्वर्यप्रापक **(अभि)** **(वक्षि)** प्रापय **(वाजम्)** विज्ञानम्॥१२॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! स त्वं पुरएता सुगेषूत दुर्गेषु पथिकृद्विदानो नोऽस्मान् बोधि। य अश्रमास उरवो वहिष्ठाः सन्ति तेभिस्सह नो वाजमभि वक्षि॥१२॥

**भावार्थः**-स एवास्ति विद्वान्त्सर्वेषां मङ्गलकारी यः स्वयं धर्ममार्गं गत्वाऽन्यान् धर्ममार्गगन्तॄन् कुर्यात् यः सदा सत्सङ्गं करोति स एव सर्वेभ्य उत्तमो भूत्वा विज्ञानं दातुमर्हतीति॥१२॥

अत्रेन्द्रविद्वदीश्वरराजगुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इत्येकविंशतितमं सूक्तं द्वादशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे **(इन्द्र)** सुख और ऐश्वर्य के प्राप्त करानेवाले **(सः)** वह आप **(पुरएता)** अग्रगामी **(सुगेषु)** सुगम व्यवहारों में **(उत)** और **(दुर्गेषु)** दुःख से प्राप्त होने योग्यों में **(पथिकृत्)** मार्ग के करने वाले **(विदानः)** जानते हुए **(नः)** हम लोगों को **(बोधि)** जानें और **(ये)** जो **(अश्रमासः)** थकावट से रहित **(उरवः)** बहुत **(वहिष्ठाः)** अतिशय पहुँचाने वाले हैं **(तेभिः)** उनके साथ **(नः)** हम लोगों के वा हम लोगों के लिये **(वाजम्)** विज्ञान को **(अभि, वक्षि)** प्राप्त कराइये॥१२॥

**भावार्थः**-वही विद्वान् है जो सबका मङ्गलकारी, स्वयं धर्ममार्ग को प्राप्त होकर औरों को धर्ममार्ग में चलनेवाले करे, जो सदा सत्संग करता है, वही सब से उत्तम होकर विज्ञान देने को योग्य होता है॥१२॥

इस सूक्त में इन्द्र, विद्वान्, ईश्वर और राजा के गुणों का वर्णन होने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ संगति जाननी चाहिये॥

**यह इक्कीसवाँ सूक्त और बारहवाँ वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

**अथैकादशर्चस्य द्वाविंशतितमस्य सूक्तस्य भरद्वाजो बार्हस्पत्य ऋषिः। इन्द्रो देवता। १, ७ भुरिक्पङ्क्तिः। ३ स्वराट् पङ्क्तिः। १० पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः। २, ४, ५ त्रिष्टुप्। ६, ८ विराट्त्रिष्टुप्। ९, ११ निचृत्त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः॥**

***अथ मनुष्यैः क उपासनीय इत्याह॥***

अब ग्यारह ऋचावाले बाईसवें सूक्त का प्रारम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में अब मनुष्यों को किसकी उपासना करनी चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**य एक इद्धव्यश्चर्षणीनामिन्द्रं तं गीर्भिरभ्यर्च आभिः।**

**यः पत्यते वृषभो वृष्ण्यावान्त्सत्यः सत्वा पुरुमायः सहस्वान्॥१॥**

**यः। एकः। इत्। हव्यः। चर्षणीनाम्। इन्द्रम्। तम्। गीःऽभिः। अभि। अर्चे। आभिः। यः। पत्यते। वृषभः। वृष्ण्यऽवान्। सत्यः। सत्वा। पुरुऽमायः। सहस्वान्॥१॥**

**पदार्थः**-(**यः**) (**एकः**) (**इत्**) एव (**हव्यः**) स्तोतुमादातुमर्हः (**चर्षणीनाम्**) मनुष्याणाम् (**इन्द्रम्**) परमैश्वर्यप्रदम् (**तम्**) (**गीर्भिः**) (**अभि**) (**अर्चे**) सत्करोमि (**आभिः**) (**यः**) (**पत्यते**) पतिरिवाचरति (**वृषभः**) श्रेष्ठः (**वृष्ण्यावान्**) बलादिबहुप्रिययुक्तः (**सत्यः**) त्रैकाल्याबाध्यः (**सत्वा**) सर्वत्र स्थितः (**पुरुमायः**) बहूनां निर्माता (**सहस्वान्**) अत्यन्तबलयुक्त॥१॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यश्चर्षणीनामेक इद्धव्योऽस्ति तमिन्द्रमाभिर्गीर्भिरहमभ्यर्चे। यो वृषभो वृष्ण्यावान् सत्यः सत्वा पुरुमायः सहस्वान् पत्यते तमभ्यर्चे तं परमेश्वरं यूयमभ्यर्चत॥१॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! योऽद्वितीयः सर्वोत्कृष्टः सच्चिदानन्दस्वरूपो न्यायकारी सर्वस्वामी वर्तते तं विहायाऽन्यस्योपासनं कदापि मा कुरुत॥१॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! (**यः**) जो (**चर्षणीनाम्**) मनुष्यों के मध्य में (**एकः**) अकेला (**इत्**) ही (**हव्यः**) स्तुति करने और ग्रहण करने योग्य है (**तम्**) उस (**इन्द्रम्**) ऐश्वर्य को देने वाले का (**आभिः**) इन (**गीर्भिः**) वाणियों से मैं (**अभि, अर्चे**) सब प्रकार से सत्कार करता हूँ और (**यः**) जो (**वृषभः**) श्रेष्ठ (**वृष्ण्यावान्**) बल आदि बहुत प्रियगुणों से युक्त (**सत्यः**) तीनों कालों में अबाध्य (**सत्वा**) सर्वत्र स्थित (**पुरुमायः**) बहुतों को रचने वाला (**सहस्वान्**) अत्यन्त बल से युक्त हुआ (**पत्यते**) स्वामी के सदृश आचरण करता है, उसका सत्कार करता हूँ, उस परमेश्वर का आप लोग सत्कार करिये॥१॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो अद्वितीय, सब से उत्तम, सच्चिदानन्दस्वरूप, न्यायकारी और सब का स्वामी है, उसका त्याग करके अन्य की उपासना कभी न करो॥१॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**



www.9009.co.in

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**तमु नः पूर्वे पितरो नवग्वाः सप्त विप्रासो अभि वाजयन्तः।**

**नक्षद्दाभं ततुरिं पर्वतेष्ठामद्रोघवाचं मतिभिः शविष्ठम्॥ २॥**

**तम्। ऊँ इति। नः। पूर्वे। पितरः। नवऽग्वाः। सप्त। विप्रासः। अभि। वाजयन्तः। नक्षत्ऽदाभम्। ततुरिम्। पर्वतेऽस्थाम्। अद्रोघऽवाचम्। मतिऽभिः। शविष्ठम्॥ २॥**

**पदार्थः**-(**तम्**) (उ) (**नः**) अस्माकम् (**पूर्वे**) (**पितरः**) (**नवग्वाः**) नवीनगतयः (**सप्त**) सप्तसङ्ख्याकाः पञ्चप्राणमनोबुद्धयश्चेव (**विप्रासः**) मेधाविनः (**अभि**) आभिमुख्ये (**वाजयन्तः**) ज्ञापयन्तः (**नक्षद्दाभम्**) नक्षतानां प्राप्तानां दोषाणां हिंसितारम् (**ततुरिम्**) दुःखात्तारयितारम् (**पर्वतेष्ठाम्**) पर्वते मेघे स्थितां विद्युतमिव शुद्धस्वरूपम् (**अद्रोघवाचम्**) द्रोहरहिता वाग्यस्य तम् (**मतिभिः**) मननशीलैर्मनुष्यैः (**शविष्ठम्**) अतिशयेन बलयुक्तम्॥ २॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यं नक्षद्दाभं ततुरिं पर्वतेष्ठामद्रोघवाचं शविष्ठं परमात्मानं नः पूर्वे नवग्वा विप्रासः सप्तेव पितरोऽभिवाजयन्त उपदिशन्ति तमु यूयमुपाध्वम्। मतिभिरयमेव सेवनीयः॥ २॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यूयं, योगिनो यं योगेनोपासते तमेव योगाभ्यासेन ध्यायत॥ २॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जिस (**नक्षद्दाभम्**) प्राप्त दोषों के नाश करने और (**ततुरिम्**) दुःख से पार करने वाले (**पर्वतेष्ठाम्**) मेघ में वर्त्तमान बिजुली के समान शुद्धस्वरूप और (**अद्रोघवाचम्**) द्रोहरहित वाणी वाले (**शविष्ठम्**) अत्यन्त बल से युक्त परमात्मा का (**नः**) हम लोगों के (**पूर्वे**) पहिले (**नवग्वाः**) नवीन गमन करने वाले (**विप्रासः**) बुद्धिमान् और (**सप्त**) सात संख्या से युक्त अर्थात् पाँच प्राण और मन बुद्धि इनके सदृश वर्त्तमान (**पितरः**) पितृजन (**अभि**) सम्मुख (**वाजयन्तः**) बुद्धि को देते हुए उपदेश देते हैं (**तम्**) उसकी (उ) और आप लोग उपासना करो और (**मतिभिः**) मननशील मनुष्यों से यही सेवा करने योग्य है॥ २॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! तुम, जिसकी योगीजन योग से उपासना करते हैं, उसी का योगाभ्यास से ध्यान करो॥ २॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**तमीमह इन्द्रमस्य रायः पुरुवीरस्य नृवतः पुरुक्षोः।**

**यो अस्कृधोयुरजरः स्वर्वान् तमा भर हरिवो मादयध्यै॥ ३॥**

**तम्। ईमहे। इन्द्रम्। अस्य। रायः। पुरुऽवीरस्य। नृऽवतः। पुरुऽक्षोः। यः। अस्कृधोयुः। अजरः। स्वःऽवान्। तम्। आ। भर। हरिऽवः। मादयध्यै॥ ३॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**तम्**) (**ईमहे**) याचामहे (**इन्द्रम्**) परमैश्वर्यप्रदम् (**अस्य**) (**रायः**) धनस्य (**पुरुवीरस्य**) बहुवीरप्रापकस्य (**नृवतः**) प्रशस्ता नरो विद्यन्ते यस्मिंस्तस्य (**पुरुक्षोः**) बहुध्यानयुक्तस्य (**यः**) (**अस्कृधोयुः**) अपरिच्छिन्नः (**अजरः**) जरादिरोगरहितः (**स्वर्वान्**) बहु सुखं विद्यते यस्मिन्त्सः (**तम्**) (**आ**) (**भर**) समन्ताद्धर (**हरिवः**) प्रशस्ता हरयो मनुष्या विद्यन्ते यस्य तत्सम्बुद्धौ (**मादयध्यै**) मादयितुमानन्दयितुम्॥३॥

**अन्वयः**-हे हरिवो विद्वान्! योऽस्कृधोयुरजरः स्वर्वान् वर्त्तते तं मादयध्यै आ भर तमस्य पुरुवीरस्य नृवतः पुरुक्षो राय इन्द्रं वयमीमहे॥३॥

**भावार्थः**-सर्वे मनुष्या विज्ञानादिप्राप्तये परमात्मानमेव याचन्ताम्॥३॥

**पदार्थः**-हे (**हरिवः**) अच्छे मनुष्यों के सहित वर्त्तमान विद्वान्! (**यः**) जो (**अस्कृधोयुः**) व्यापक (**अजरः**) जरा आदि रोग से रहित (**स्वर्वान्**) बहुत सुख विद्यमान जिसमें वह वर्त्तमान है (**तम्**) उसको (**मादयध्यै**) आनन्दित करने के लिये (**आ, भर**) सब प्रकार से धारण करिये और (**तम्**) उसको (**अस्य**) इस (**पुरुवीरस्य**) बहुत वीरों को प्राप्त कराने वाले (**नृवतः**) अच्छे मनुष्य विद्यमान जिसमें उस (**पुरुक्षोः**) बहुत ध्यान से युक्त (**रायः**) धन के (**इन्द्रम्**) अत्यन्त ऐश्वर्य के देने वाले की हम लोग (**ईमहे**) याचना करते हैं॥३॥

**भावार्थः**-सब मनुष्य विज्ञान आदि की प्राप्ति के लिये परमात्मा से ही याचना करें॥३॥

**पुनर्विद्वान् किं कुर्यादित्याह॥**

फिर विद्वान् क्या करे, इस विषय को कहते हैं॥

**तन्नो॒ वि वो॑चो॒ यदि॑ ते पु॒रा चि॑ज्जरि॒तार॑ आन॒शुः सु॒म्नमि॑न्द्र।**

**कस्ते॑ भा॒गः किं वयो॑ दुध्र खिद्वः पुरु॑हूत पुरूवसोऽसुर॒घ्नः॥४॥**

**तत्। नः॒। वि। वो॒चः॒। यदि॑। ते॒। पु॒रा। चि॒त्। ज॒रि॒तारः॑। आ॒न॒शुः। सु॒म्नम्। इ॒न्द्र॒। कः। ते॒। भा॒गः। किम्। वयः॑। दु॒ध्र॒। खि॒द्वः॒। पुरु॑ऽहूत। पु॒रु॒व॒सो॒ इति॑ पुरुऽवसो। अ॒सु॒र॒ऽघ्नः॥४॥**

**पदार्थः**-(**तत्**) (**नः**) अस्मान् (**वि**) (**वोचः**) अवोचो वदेः (**यदि**) (**ते**) (**पुरा**) (**चित्**) अपि (**जरितारः**) विद्यागुणस्तावकाः (**आनशुः**) अश्नन्ति (**सुम्नम्**) सुखम् (**इन्द्र**) विद्योपदेशकर्त्तः (**कः**) (**ते**) तव (**भागः**) (**किम्**) (**वयः**) जीवनम् (**दुध्र**) दुःखेन धर्त्तुं योग्य (**खिद्वः**) दीनः (**पुरुहूत**) बहुभिः सत्कृत (**पुरूवसो**) बहुधन (**असुरघ्नः**) दुष्टकर्मकारिणां हन्ता॥४॥

**अन्वयः**-हे दुध्र पुरुहूत पुरूवसो इन्द्र! यदि त्वं नस्तद्वि वोचो यच्चित्ते पुरा जरितारः सुम्नमानशुस्ते कोऽसुरघ्नो भागः खिद्वः किं वयोऽस्तीति त्वं वोचः॥४॥

**भावार्थः**-हे विद्वन्! त्वया तद्विज्ञानमस्मभ्यं देयं येन विद्वांस आनन्दन्ति॥४॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-हे **(दुध्र)** दुःख से धारण करने योग्य और **(पुरुहूत)** बहुतों से सत्कार किये गये **(पुरूवसो)** बहुत धनों से युक्त **(इन्द्र)** विद्या और गुणों की स्तुति करने वाले! **(यदि)** जो आप **(नः)** हम लोगों के लिये **(तत्)** उसको **(वि, वोचः)** विशेष कहिये जिसको **(चित्)** निश्चित **(ते)** आपके **(पुरा)** पहिले भी **(जरितारः)** विद्या और गुणों की स्तुति करने वाले **(सुम्नम्)** सुख का **(आनशुः)** भोग करते हैं **(ते)** आपका **(कः)** कौन **(असुरघ्नः)** दुष्ट कर्मकारियों का नाश करने वाला **(भागः)** अंश **(खिद्वः)** दीन और **(किम्)** कौन **(वयः)** जीवन है, इसको आप कहिये॥४॥

**भावार्थः**-हे विद्वन्! आपको वह विज्ञान हम लोगों के लिये देने योग्य है, जिससे विद्वान् जन आनन्द करते हैं॥४॥

**पुनः स्त्री कीदृशं पतिं गृह्णीयादित्याह॥**

फिर स्त्री कैसे पति का ग्रहण करे, इस विषय को कहते हैं॥

**तं पृच्छन्ती वज्रहस्तं रथेष्ठामिन्द्रं वेपी वक्वरी यस्य नू गीः।**

**तुविग्राभं तुविकूर्मिं रभोदां गातुमिषे नक्षते तुम्रमच्छ॥५॥१३॥**

**तम्। पृच्छन्ती। वज्रऽहस्तम्। रथेऽस्थाम्। इन्द्रम्। वेपी। वक्वरी। यस्य। नु। गीः। तुविऽग्राभम्। रभःऽदाम्। गातुम्। इषे। नक्षते। तुम्रम्। अच्छ॥५॥**

**पदार्थः**-**(तम्)** **(पृच्छन्ती)** **(वज्रहस्तम्)** शस्त्राऽस्त्रपाणिम् **(रथेष्ठाम्)** रथे तिष्ठन्तम् **(इन्द्रम्)** परमैश्वर्यवन्तं पुरुषम् **(वेपी)** धीमती **(वक्वरी)** वचशक्तिमती **(यस्य)** **(नू)** **(गीः)** वाक् **(तुविग्राभम्)** बहूनां ग्रहीतारम् **(तुविकूर्मिम्)** बहुकर्माणम् **(रभोदाम्)** वेगयुक्तबलस्य दातारम् **(गातुम्)** भूमिम् **(इषे)** अन्नाद्याय **(नक्षते)** प्राप्नोति। **नक्षतिर्गतिकर्मा।** (निघं०२.१४) **(तुम्रम्)** ग्लातारम् **(अच्छ)**॥५॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यस्येषे गीस्तुविग्राभं तुविकूर्मिं रभोदां तुम्रं गातुमच्छा नक्षते तं वज्रहस्तं रथेष्ठामिन्द्रं पृच्छन्ती वेपी वक्वरी नू स्यात्तं वयमप्याश्रयेम॥५॥

**भावार्थः**-कन्यया सर्वा वार्ताः पृष्ट्वा हृद्यः पतिः स्वीकर्त्तव्यः॥५॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(यस्य)** जिसके **(इषे)** अन्न आदि के लिये **(गीः)** वाणी **(तुविग्राभम्)** बहुतों को ग्रहण करने **(तुविकूर्मिम्)** बहुत कामों के करने और **(रभोदाम्)** वेग से युक्त बल के देनेवाले **(तुम्रम्)** ग्लानि से युक्त जन को और **(गातुम्)** भूमि को **(अच्छ)** अच्छे प्रकार **(नक्षते)** प्राप्त होती है **(तम्)** उस **(वज्रहस्तम्)** शस्त्र और अस्त्रों से युक्त हाथों वाले **(रथेष्ठाम्)** रथ में स्थित होते हुए **(इन्द्रम्)** अत्यन्त ऐश्वर्य्यवान् पुरुष को **(पृच्छन्ती)** पूँछती हेई **(वेपी)** बुद्धिवाली और **(वक्वरी)** वचन-शक्ति वाली स्त्री **(नू)** निश्चय होवे, उसका हम लोग भी आश्रयण करें॥५॥

**भावार्थः**-कन्या को चाहिये कि सब बातों को पूँछ कर हृदयप्रिय पति को स्वीकार करे॥५॥

**पुनर्दम्पती परस्परं कथं वर्तेयातामित्याह॥**



www.9009.co.in

फिर स्त्री और पुरुष परस्पर कैसे वर्ताव करें, इस विषय को कहते हैं॥

**अया ह त्यं मायया वावृधानं मनोजुवा स्वतवः पर्वतेन।**

**अच्युता चिद्वीळिता स्वोजो रुजो वि दृळ्हा धृषता विरप्शिन्॥६॥**

**अया। ह। त्यम्। मायया। वावृधानम्। मनःऽजुवा। स्वऽतवः। पर्वतेन। अच्युता। चित्। वीळिता। सुऽओजः। रुजः। वि। दृळ्हा। धृषता। विऽरप्शिन्॥६॥**

**पदार्थः-(अया)** अनया **(ह)** किल **(त्यम्)** तं पतिम् **(मायया)** प्रज्ञया **(वावृधानम्)** वर्धमानम् **(मनोजुवा)** मनोवद्वेगेन **(स्वतवः)** स्वकीयं तवो बलं यस्य तत्सम्बुद्धौ **(पर्वतेन)** मेघेन **(अच्युता)** अविनाशिना **(चित्)** अपि **(वीळिता)** स्तुतानि **(स्वोजः)** सुष्ठु पराक्रमो यस्य तत्सम्बुद्धौ **(रुजः)** रोगान् **(वि)** **(दृळ्हा)** दृढानि **(धृषता)** प्रागल्भेन **(विरप्शिन्)** महागुणयुक्त॥६॥

**अन्वयः**-हे स्वतवो विरप्शिन् स्वोज इन्द्र! त्वमया माययेवं स्त्रिया रमस्व सा वावृधानं त्यं प्राप्य मनोजुवा पर्वतेन विद्युदिव रमताम्। द्वौ धृषता रुजो हत्वा हाऽच्युता वीळिता वि दृळ्हा चित्कर्माणि कुरुताम्॥६॥

**भावार्थः**-हे स्त्रीपुरुषौ! द्वौ प्रेम्णा मिलित्वा गृहाश्रमकृत्येषु हर्षेण रोगनिवारणेन प्रीत्या सङ्गत्य सुसन्तानाञ्जनयेताम्॥६॥

**पदार्थः**-हे **(स्वतवः)** अपना बल जिसके ऐसे **(विरप्शिन्)** महागुणों से युक्त **(स्वोजः)** उत्तम पराक्रमयुक्त प्रतापी आप **(अया)** इस **(मायया)** बुद्धि से जैसे वैसे स्त्री से रमण करिये वह स्त्री **(वावृधानम्)** बढ़े हुए **(त्यम्)** उस पति को प्राप्त होकर **(मनोजुवा)** मन के सदृश वेगयुक्त **(पर्वतेन)** मेघ से बिजुली जैसे वैसे रमण करे और ये दोनों **(धृषता)** ढीठपन से **(रुजः)** रोगों का नाश करके **(ह)** निश्चय से युक्त **(अच्युता)** अविनाशी से **(वीळिता)** स्तुतिरूप **(वि)** विशेष करके **(दृळ्हा)** दृढ़ **(चिद्)** भी कर्म्मों को करें॥६॥

**भावार्थः**-हे स्त्री पुरुषो! आप दोनों प्रेम से मिल के गृहाश्रम के कृत्यों में हर्ष से रोग निवृत्ति तथा प्रीति से मेल करके सन्तानों को उत्पन्न करो॥६॥

**पुनर्मनुष्यैः को नित्यं ध्येय इत्याह॥**

फिर मनुष्यों को किसका नित्य ध्यान करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**तं वो धिया नव्यस्या शविष्ठं प्रत्नं प्रत्नवत् परितंसयध्यै।**

**स नो वक्षदनिमानः सुवह्नेन्द्रो विश्वान्यति दुर्गहाणि॥७॥**

**तम्। वः। धिया। नव्यस्या। शविष्ठम्। प्रत्नम्। प्रत्नऽवत्। परिऽतंसयध्यै। सः। नः। वक्षत्। अनिऽमानः। सुऽवह्मा। इन्द्रः। विश्वानि। अति। दुःऽगहानि॥७॥**

**पदार्थः-(तम्)** **(वः)** युष्मान् **(धिया)** प्रज्ञया कर्मणा वा **(नव्यस्या)** अतिशयेन नूतनया **(शविष्ठम्)** अतिशयेन बलिष्ठम् **(प्रत्नम्)** पुरातनम् **(प्रत्नवत्)** प्राचीनवत् **(परितंसयध्यै)** सर्वतः भूषयितुम्



www.9009.co.in

**(सः)** **(नः)** अस्मान् **(वक्षत्)** वहत् प्रापयेत् **(अनिमानः)** अपरिमाणः **(सुवह्ना)** सुष्ठु वोढा **(इन्द्रः)** परमैश्वर्यवान् **(विश्वानि)** सर्वाणि **(अति)** **(दुर्गहाणि)** यानि दुर्गाणि दुःखेन गन्तुं योग्यानि घ्नन्ति तानि धर्म्याणि कर्माणि॥७॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! योऽनिमानः सुवह्नेन्द्रो जगदीश्वरो नव्यस्या धिया वो नोऽस्मान् विश्वानि दुर्गहाणि परितंसयध्यै अति वक्षत्तं शविष्ठं प्रत्नं प्रत्नवन्मत्वा वयं सेवेमहि स चाऽस्माकं गुरुः स्यात्॥७॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यः परमात्मा सर्वेषामस्माकं सर्वाणि दुःखानि प्रज्ञादानेन निवार्याऽधर्माचरणात् सङ्कोचयति तं परमात्मानमात्मना सततं ध्यायत॥७॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो **(अनिमानः)** परिमाण से रहित **(सुवह्ना)** उत्तम प्रकार चलाने वाला **(इन्द्रः)** अत्यन्त ऐश्वर्य से युक्त जगदीश्वर **(नव्यस्या)** अतिशय नवीन **(धिया)** बुद्धि वा कर्म से **(वः)** आप लोगों और **(नः)** हम लोगों के लिये **(विश्वानि)** सम्पूर्ण **(दुर्गहाणि)** दुःख से प्राप्त होने योग्यों को नाश करने वाले धर्मयुक्त कर्मों को **(परितंसयध्यै)** चारों ओर से सुशोभा करने के लिये **(अति, वक्षत्)** अत्यन्त प्राप्त करावे **(तम्)** उस **(शविष्ठम्)** अत्यन्त बलवान् **(प्रत्नम्)** पुरातन को **(प्रत्नवत्)** प्राचीन के सदृश मान कर हम लोग सेवा करें और **(सः)** वह भी हम लोग का गुरु हो॥७॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो परमात्मा हम सब लोगों के सम्पूर्ण दुःखों को बुद्धिदान से दूर करके अधर्माचरण से संकोचित करता है, उस परमात्मा का आत्मा से निरन्तर ध्यान करो॥७॥

**पुनर्विद्वद्भिः किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

फिर विद्वान् जनों को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**आ जना॑य॒ द्रुह्व॑णे॒ पार्थि॑वानि दि॒व्यानि॑ दीपयो॒ऽन्तरि॑क्षा।**

**तपा॑ वृषन् वि॒श्वतः॑ शो॒चिषा॒ तान् ब्र॑ह्म॒द्विषे॑ शोचय॒ क्षाम॒पश्च॑॥८॥**

**आ। जना॑य। द्रुह्व॑णे। पार्थि॑वानि। दि॒व्यानि॑। दी॒प॒यः॒। अ॒न्तरि॑क्षा। तप॑। वृ॒ष॒न्। वि॒श्वतः॑। शो॒चिषा॑। तान्। ब्र॒ह्म॒ऽद्विषे॑। शो॒च॒य॒। क्षाम्। अ॒पः॒। च॒॥८॥**

**पदार्थः**-**(आ)** **(जनाय)** **(द्रुह्वणे)** द्रोग्ध्रे **(पार्थिवानि)** पृथिव्यां भवानि **(दिव्यानि)** दिव्यगुणकर्मस्वभावानि वस्तूनि **(दीपयः)** प्रकाशय **(अन्तरिक्षा)** अन्तरिक्षेण सहचराणि **(तपा)** अत्र **द्व्यचोऽतस्तिङ** इति दीर्घः। **(वृषन्)** बलिष्ठ **(विश्वतः)** सर्वतः **(शोचिषा)** प्रकाशेन **(तान्)** **(ब्रह्मद्विषे)** यो ब्रह्मेश्वरं वेदं वा द्वेष्टि तस्मै **(शोचय)** शोकं प्रापय **(क्षाम्)** पृथिवीम् **(अपः)** जलानि **(च)**॥८॥

**अन्वयः**-हे वृषन् विद्वन्! त्वं शोचिषा विश्वतो दिव्यान्यन्तरिक्षा पार्थिवान्याऽऽदीपयः। ब्रह्मद्विषे द्रुह्वणे जनाय विश्वतस्तपा, ये सज्जनान् परितापयन्ति ताञ्छोचय क्षामपश्च दीपयः॥८॥

**भावार्थः**-हे विद्वांसो! यूयं पृथिव्यादीन् पदार्थान् विदित्वाऽन्यान् वेदयत। दुष्टाञ्जनानुपदेशेन पवित्रीकुरुत॥८॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-हे **(वृषन्)** बलिष्ठ विद्वन्! आप **(शोचिषा)** प्रकाश से **(विश्वतः)** सब ओर से **(दिव्यानि)** श्रेष्ठ गुण, कर्म और स्वभाव वाले वस्तुओं **(अन्तरिक्षा)** अन्तरिक्ष के सहचारी **(पार्थिवानि)** पृथिवी में हुए पदार्थों को **(आ, दीपयः)** सब प्रकार से प्रकाशित कीजिये और **(ब्रह्मद्विषे)** ईश्वर वा वेद से द्वेष करने वाले और **(द्रुह्वणे)** द्रोह करने वाले **(जनाय)** जन के लिये सब प्रकार से **(तपा)** सन्ताप करिये और जो सज्जनों को सन्तापयुक्त करते हैं **(तान्)** उनको **(शोचय)** शोक कराइये तथा **(क्षाम्)** पृथिवी को **(अपः, च)** और जलों को प्रकाशित करिये॥८॥

**भावार्थः**-हे विद्वान् जनो! आप लोग पृथिवी आदि पदार्थों को जानकर अन्यों को जनाइये और दुष्ट जनों को उपदेश से पवित्र करिये॥८॥

**पुनः स राजा किं कुर्यादित्याह॥**

फिर वह राजा क्या करे, इस विषय को कहते हैं॥

**भुवो जनस्य दिव्यस्य राजा पार्थिवस्य जगतस्त्वेषसंदृक्।**

**धिष्व वज्रं दक्षिण इन्द्र हस्ते विश्वा अजुर्य दयसे वि मायाः॥९॥**

**भुवः। जनस्य। दिव्यस्य। राजा। पार्थिवस्य। जगतः। त्वेषऽसंदृक्। धिष्व। वज्रम्। दक्षिणे। इन्द्र। हस्ते। विश्वाः। अजुर्य। दयसे। वि। मायाः॥९॥**

**पदार्थः**-**(भुवः)** पृथिव्याः **(जनस्य)** मनुष्यस्य **(दिव्यस्य)** शुद्धस्य कमनीयस्य **(राजा)** **(पार्थिवस्य)** पृथिव्यां भवस्य **(जगतः)** संसारस्य **(त्वेषसन्दृक्)** यस्त्वेषं न्यायप्रकाशं सम्पश्यति दर्शयति वा **(धिष्व)** धर **(वज्रम्)** शस्त्रास्त्रम् **(दक्षिणे)** **(इन्द्र)** परमेश्वर्यप्रद **(हस्ते)** **(विश्वाः)** समग्राः **(अजुर्य)** अजीर्ण **(दयसे)** देहि **(वि)** **(मायाः)** प्रज्ञाः॥९॥

**अन्वयः**-हे अजुर्येन्द्र! राजा त्वं भुवः पार्थिवस्य जगतो दिव्यस्य जनस्य त्वेषसन्दृक् सन् दक्षिणे हस्ते वज्रं धिष्व। विश्वा माया वि दयसे॥९॥

**भावार्थः**-स एव राजोत्तमोऽस्ति यो न्यायशीलो धार्मिको जितेन्द्रियो भूत्वा सर्वं जगत् पितृवत्सम्पाल्य समग्रा विद्याः प्रददाति॥९॥

**पदार्थः**-हे **(अजुर्य)** जीर्ण अवस्था से रहित **(इन्द्र)** अत्यन्त ऐश्वर्य के देने वाले **(राजा)** प्रकाशमान आप **(भुवः)** पृथिवी और **(पार्थिवस्य)** पृथिवी में हुए **(जगतः)** संसार और **(दिव्यस्य)** शुद्ध कामना करने योग्य सुन्दर **(जनस्य)** मनुष्य के **(त्वेषसन्दृक्)** न्यायप्रकाश को देखने वाले होते हुए **(दक्षिणे)** दाहिने **(हस्ते)** हाथ में **(वज्रम्)** शस्त्र और अस्त्र को **(धिष्व)** धारण करिये और **(विश्वाः)** सम्पूर्ण **(मायाः)** बुद्धियों को **(वि, दयसे)** विशेष करके दीजिये॥९॥

**भावार्थः**-वही राजा उत्तम है जो न्यायशील, धार्मिक, जितेन्द्रिय होकर सम्पूर्ण जगत् का पिता के समान पालन करके सम्पूर्ण विद्याओं को अच्छे प्रकार देता है॥९॥



www.9009.co.in

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**आ सं॒यत॑मिन्द्र णः स्व॒स्तिं श॑त्रु॒तूर्या॑य बृह॒तीममृ॑ध्राम्।**

**यया॑ दासा॒न्यार्या॑णि वृ॒त्राकरो॑ वज्रिन्त्सु॒तका॑ नाहु॑षाणि॥ १०॥**

**आ। स॒म्ऽयत॑म्। इ॒न्द्र॒। नः॒। स्व॒स्तिम्। श॒त्रु॒ऽतूर्या॑य। बृ॒ह॒तीम्। अमृ॑ध्राम्। यया॑। दासा॑नि। आर्या॑णि। वृ॒त्रा। कर॑ः। व॒ज्रि॒न्। सु॒ऽतुका॑। नाहु॑षाणि॥ १०॥**

**पदार्थः**-(**आ**) समन्तात् (**संयतम्**) कृतसंयमम् (**इन्द्र**) परमैश्वर्यकारक (**नः**) अस्मभ्यम् (**स्वस्तिम्**) सुखम् (**शत्रुतूर्याय**) शत्रूणां हिंसनाय (**बृहतीम्**) महतीम् (**अमृध्राम्**) अहिंसिकाम् (**यया**) (**दासानि**) दासकुलानि (**आर्याणि**) द्विजकुलानि (**वृत्रा**) धनानि (**करः**) करोति (**वज्रिन्**) शस्त्रास्त्रभृत् (**सुतुका**) सुष्ठु वर्धकानि (**नाहुषाणि**) मनुष्यसम्बन्धीनि॥ १०॥

**अन्वयः**-हे वज्रिन्निन्द्र! त्वं यया दासान्यार्याणि सुतुका नाहुषाणि वृत्राऽऽकरस्ताममृध्रां बृहतीं सेनां शत्रुतूर्याय कुर्यास्तया नः संयतं स्वस्तिं कुर्याः॥ १०॥

**भावार्थः**-हे राजंस्त्वं सत्यविद्यादानोपदेशाभ्यां शूद्रकुलोत्पन्नानपि द्विजान् कुर्याः सर्वत ऐश्वर्यं प्रापय्य शत्रून्निवार्य सुखं वर्धय॥ १०॥

**पदार्थः**-हे (**वज्रिन्**) शस्त्र और अस्त्र के धारण करने वाले (**इन्द्र**) अत्यन्त ऐश्वर्य के करने वाले! आप (**यया**) जिससे (**दासानि**) शूद्र के कुलों को (**आर्याणि**) द्विजकुल और (**सुतुका**) उत्तम प्रकार बढ़ने वाले (**नाहुषाणि**) मनुष्यसम्बन्धी (**वृत्रा**) धनों को (**आ**) सब प्रकार (**करः**) करती हैं उस (**अमृध्राम्**) नहीं हिंसा करने वाली (**बृहतीम्**) बड़ी सेना को (**शत्रुतूर्याय**) शत्रुओं के नाश के लिये करिये और उससे (**नः**) हम लोगों के लिये (**संयतम्**) किया है संयम जिसके निमित्त उस (**स्वस्तिम्**) सुख को करिये॥ १०॥

**भावार्थः**-हे राजन्! आप सत्यविद्या के दान और उपदेश से शूद्र के कुल में उत्पन्न हुओं को भी द्विज करिये और सब प्रकार से ऐश्वर्य को प्राप्त कराय तथा शत्रुओं का निवारण करके सुख की वृद्धि कीजिये॥ १०॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**स नो॑ नि॒युद्भिः॑ पुरुहूत वेधो वि॒श्ववा॑राभि॒रा ग॑हि प्रयज्यो।**

**न या अदे॑वो॒ वर॑ते॒ न दे॒व आभि॑र्याहि॒ तूय॒मा म॑द्र्य॒द्रिक्॥ ११॥ १४॥**

**सः। न॒ः। नि॒युत्ऽभिः॑। पु॒रु॒ऽहू॒त॒। वे॒धः॒। वि॒श्वऽवा॑राभिः। आ। ग॒हि॒। प्र॒य॒ज्यो॒ इति॑ प्रऽयज्यो। न। याः। अदे॑वः। व॑रते। न। दे॒वः। आ। आ॒भि॒ः। या॒हि॒। तूय॑म्। आ। म॒द्र्य॒द्रिक्॥ ११॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**सः**) (**नः**) अस्मान् (**नियुद्भिः**) निश्चिद्गतिभिरश्वैरिव (**पुरुहूत**) बहुभिः पूजित (**वेधः**) मेधाविन् (**विश्ववाराभिः**) सर्वैः स्वीकरणीयाभिर्गतिभिः (**आ**) (**गहि**) आगच्छ (**प्रयज्यो**) प्रकर्षेण यज्ञकर्त्तः (**न**) निषेधे (**याः**) (**अदेवः**) अविद्वान् (**वरते**) स्वीकरोति (**न**) (**देवः**) विद्वान् (**आ**) (**आभिः**) (**याहि**) (**तूयम्**) तूर्णम् (**आ**) (**मद्र्याद्रिक्**) मदभिमुखः॥११॥

**अन्वयः**-हे प्रयज्यो पुरुहूत वेधः! स त्वं देवो न विश्ववाराभिराभिर्नियुद्भिर्न आ गहि या रीतिरदेवो नाऽऽवरते मद्र्यद्रिक् सँस त्वं तूयमायाहि॥११॥

**भावार्थः**-या रीतिर्विदुषां भवति तामविद्वांसो न स्वीकुर्वन्ति तस्माद्विदुषामविदुषां च पृथक् प्रस्थानमस्तीति वेद्यम्॥११॥

अत्रेन्द्रविद्वदीश्वरराजप्रजाधर्मवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति द्वाविंशतितमं सूक्तं चतुर्दशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**–हे (**प्रयज्यो**) अत्यन्त यज्ञ करने वाले (**पुरुहूत**) बहुतों से आदर किये गये (**वेधः**) बुद्धियुक्त (**सः**) वह आप (**देवः**) विद्वान् के (**न**) समान (**विश्ववाराभिः**) सब से स्वीकार करने योग्य गमनों से और (**आभिः**) इन (**नियुद्भिः**) निश्चित गमनवाले घोड़ों से जैसे वैसे (**नः**) हम लोगों को (**आ, गहि**) प्राप्त हूजिये और (**याः**) जिन रीतियों को (**अदेवः**) विद्वान् जन से भिन्न (**न**) नहीं (**आ, वरते**) अच्छे प्रकार स्वीकार करता है (**मद्र्यद्रिक्**) मेरे सन्मुख हुए आप (**तूयम्**) शीघ्र (**आ, याहि**) प्राप्त हूजिये॥११॥

**भावार्थः**-जो रीति विद्वानों की है उसको अविद्वान् जन नहीं स्वीकार करते हैं, इससे विद्वानों और अविद्वानों का पृथक् प्रस्थान है, यह जानना चाहिये॥११॥

इस सूक्त में इन्द्र, विद्वान्, ईश्वर, राजा और प्रजा के धर्म का वर्णन होने से इस सूक्त के अर्थ की पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह बाईसवाँ सूक्त और चौदहवाँ वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

**अथ दशर्चस्य त्रयोविंशतितमस्य सूक्तस्य भरद्वाजो बार्हस्पत्य ऋषिः। इन्द्रो देवता। १, ३, ८, ९ निचृत्त्रिष्टुप्। ५, ६, १० त्रिष्टुप्। ७ विराट्त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः। २, ४ स्वराट् पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः॥**

***अथेन्द्रविषयमाह॥***

अब दश ऋचावाले तेईसवें सूक्त का प्रारम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में इन्द्रविषय को कहते हैं॥

**सुत इत्त्वं निमिश्ल इन्द्र सोमे स्तोमे ब्रह्मणि शस्यमान उक्थे।**

**यद्वा युक्ताभ्यां मघवन् हरिभ्यां बिभ्रद्वज्रं बाह्वोरिन्द्र यासि॥ १॥**

**सुते। इत्। त्वम्। निऽमिश्लः। इन्द्र। सोमे। स्तोमे। ब्रह्मणि। शस्यमाने। उक्थे। यत्। वा। युक्ताभ्याम्। मघऽवन्। हरिऽभ्याम्। बिभ्रत्। वज्रम्। बाह्वोः। इन्द्र। यासि॥ १॥**

**पदार्थः**-(**सुते**) निष्पन्ने (**इत्**) एव (**त्वम्**) (**निमिश्लः**) नितरां मिश्रः (**इन्द्र**) शत्रुविदारक (**सोमे**) ऐश्वर्ये (**स्तोमे**) प्रशंसायाम् (**ब्रह्मणि**) धने (**शस्यमाने**) प्रशंसनीये (**उक्थे**) श्रोतुं वक्तुमर्हे वा (**यत्**) यः (**वा**) (**युक्ताभ्याम्**) (**मघवन्**) बहुधनयुक्त (**हरिभ्याम्**) हरणशीलाभ्यां मनुष्याभ्याम् (**बिभ्रत्**) धरन् (**वज्रम्**) (**बाह्वोः**) भुजयोः (**इन्द्र**) परमैश्वर्यप्रद (**यासि**) गच्छसि॥ १॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! यस्त्वं स्तोमे ब्रह्मणि निमिश्लः सोमे सुते शस्यमान उक्थे युक्ताभ्यां हरिभ्यां बाह्वोर्वज्रं बिभ्रद् यासि यद्वा हे मघवन्निन्द्र! त्वमायासि स त्वमित् सत्कर्त्तव्योऽसि॥ १॥

**भावार्थः**-ये राजानोऽप्रमाद्यन्तः पितृवत्प्रजाः पालयन्तः शस्त्रभृतः सन्तो दुष्टान्निवारयन्तः सन्ति तेषां राज्यं स्थिरं भवति॥ १॥

**पदार्थः**-हे (**इन्द्र**) शत्रुओं के नाशक! जो (**त्वम्**) आप (**स्तोमे**) प्रशंसा के निमित्त (**ब्रह्मणि**) धन में (**निमिश्लः**) अत्यन्त मिले हुए (**सोमे**) ऐश्वर्य के (**सुते**) उत्पन्न होने पर (**शस्यमाने**) प्रशंसा करने योग्य और (**उक्थे**) सुनने वा कहने योग्य में (**युक्ताभ्याम्**) जुड़े हुए (**हरिभ्याम्**) हरणशील मनुष्यों से (**बाह्वोः**) भुजाओं में (**वज्रम्**) वज्र को (**बिभ्रत्**) धारण करते हुए (**यासि**) जाते हो और (**यत्**) जो (**वा**) वा हे (**मघवन्**) बहुत धनों से युक्त (**इन्द्र**) परमश्वर्य्यप्रद! आप प्राप्त होते हैं, वह आप (**इत्**) ही सत्कार करने योग्य हैं॥ १॥

**भावार्थः**-जो राजा नहीं प्रमाद करते, पिता के सदृश प्रजाओं का पालन करते और शस्त्रों को धारण करते हुए तथा दुष्टों का निवारण करते हुए हैं, उनका राज्य स्थिर होता है॥ १॥

**पुनः स राजा किं कुर्य्यादित्याह॥**

फिर वह राजा क्या करे, इस विषय को कहते हैं॥



www.9009.co.in

**यद्वा दिवि पार्ये सुष्विमिन्द्र वृत्रहत्येऽवसि शूरसातौ।**

**यद्वा दक्षस्य बिभ्युषो अबिभ्यदरन्धयः शर्धत इन्द्र दस्यून्॥ २॥**

**यत्। वा। दिवि। पार्ये। सुस्विम्। इन्द्र। वृत्रऽहत्ये। अवसि। शूरऽसातौ। यत्। वा। दक्षस्य। बिभ्युषः। अबिभ्यत्। अरन्धयः। शर्धतः। इन्द्र। दस्यून्॥ २॥**

**पदार्थः**-(**यत्**) (**वा**) विकल्पे (**दिवि**) कमनीये (**पार्ये**) पारभवे (**सुष्विम्**) सुष्ठु सोतारम् (**इन्द्र**) दुष्टविदारक (**वृत्रहत्ये**) मेघस्य हननमिव (**अवसि**) रक्षसि (**शूरसातौ**) शूरैर्विभक्तव्ये सङ्ग्रामे (**यत्**) यः (**वा**) (**दक्षस्य**) बलयुक्तस्य (**बिभ्युषः**) यो बिभेति तस्य (**अबिभ्यत्**) बिभेति (**अरन्धयः**) हिंसय (**शर्धतः**) बलतः (**इन्द्र**) (**दस्यून्**) बलात् परस्वाऽऽदातॄन्॥ २॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! यद्यस्त्वं पार्ये दिवि वृत्रहत्ये वा शूरसातौ सुष्विमवसि यद्यो वा भवान् दक्षस्य बिभ्युषोऽबिभ्यत् स त्वं हे इन्द्र! शर्धतो दस्यूनरन्धयः॥ २॥

**भावार्थः**-स एव राजा भवितुमर्हेद्यो युद्धे स्वसेनां संरक्षेच्छत्रूंस्तेनांश्च हन्यात्॥ २॥

**पदार्थः**-हे (**इन्द्र**) दुष्ट जनों के नाश करने वाले (**यत्**) जो आप (**पार्ये**) पार में हुए (**दिवि**) कामना करने योग्य के निमित्त (**वृत्रहत्ये**) मेघ के हनन (**वा**) वा (**शूरसातौ**) शूर जनों से विभाग करने योग्य संग्राम में (**सुष्विम्**) उत्तम प्रकार उत्पन्न करने वाले की (**अवसि**) रक्षा करते हो और (**यत्**) जो (**वा**) वा आप (**दक्षस्य**) बली (**बिभ्युषः**) भय करने वाले का (**अबिभ्यत्**) भय करते हैं वह आप हे (**इन्द्र**) प्रतापी जन (**शर्धतः**) बलयुक्त से (**दस्यून्**) हठ से दूसरे के पदार्थ ग्रहण करने वालों का (**अरन्धयः**) नाश करिये॥ २॥

**भावार्थः**-वही राजा होने को योग्य होवे कि जो युद्ध में अपनी सेना की रक्षा करे और शत्रु तथा चोरों का नाश करे॥ २॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**पाता सुतमिन्द्रो अस्तु सोमं प्रणेनीरुग्रो जरितारमूती।**

**कर्ता वीराय सुष्वय उ लोकं दाता वसु स्तुवते कीरये चित्॥ ३॥**

**पाता। सुतम्। इन्द्रः। अस्तु। सोमम्। प्रऽनेनीः। उग्रः। जरितारम्। ऊती। कर्ता। वीराय। सुस्वये। ऊँ इति। लोकम्। दाता। वसु। स्तुवते। कीरये। चित्॥ ३॥**

**पदार्थः**-(**पाता**) रक्षकः (**सुतम्**) निष्पादितम् (**इन्द्रः**) ऐश्वर्यकारी राजा (**अस्तु**) (**सोमम्**) सोमलताद्योषध्यादिरसम् (**प्रणेनीः**) प्रकर्षेण न्यायकृत् (**उग्रः**) तेजस्वी (**जरितारम्**) स्तोतारम् (**ऊती**) ऊत्या रक्षणादिक्रियया (**कर्त्ता**) (**वीराय**) (**सुष्वये**) सुष्ठ्वभिषोत्रे (**उ**) (**लोकम्**) (**दाता**) (**वसु**) (**स्तुवते**) (**कीरये**) स्तावकाय (**चित्**) अपि॥ ३॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे मनुष्या! य ऊती प्रणेनीः पातोग्र इन्द्रस्सुतं सोमं जरितारं करोति स नो राजास्तु। य उ वीराय सुष्वये स्तुवते कीरये दाता कर्त्ता लोकं वसु चित् करोति सोऽस्माकमधिष्ठाताऽस्तु॥३॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! तमेव राजानं मन्यध्वं यः सर्वशास्त्रावित् पुरुषार्थी धार्मिको जितेन्द्रियो भवेत्॥३॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो **(ऊती)** रक्षण आदि क्रिया से **(प्रणेनीः)** अत्यन्त न्याय करने और **(पाता)** रक्षा करने वाला **(उग्रः)** तेजस्वी **(इन्द्रः)** ऐश्वर्यकारी राजा **(सुतम्)** उत्पन्न किये गये **(सोमम्)** सोमलता आदि ओषधियों के रस को और **(जरितारम्)** स्तुति करने वाले को करता है, वह हम लोगों का राजा हो और जो **(उ)** तर्क-वितर्क से **(वीराय)** पराक्रमयुक्त **(सुष्वये)** उत्तम प्रकार अच्छे पदार्थों के उत्पन्न करने वाले **(स्तुवते)** स्तुति करते हुए **(कीरये)** स्तुति करनेवाले के लिये **(दाता)** दाता और **(कर्त्ता)** कार्य करने वाला **(लोकम्)** लोक को **(वसु)** और धन को **(चित्)** भी करता है, वह हम लोगों का अग्रणी **(अस्तु)** हो॥३॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! उसी को राजा मानो, जो सम्पूर्ण शास्त्रों का जानने वाला, पुरुषार्थी, धार्मिक और इन्द्रियों को वश में रखने वाला होवे॥३॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**गन्तेयान्ति सवना हरिभ्यां बभ्रिर्वज्रं पपिः सोमं ददिर्गाः।**

**कर्ता वीरं नर्यं सर्ववीरं श्रोता हवं गृणतः स्तोमवाहाः॥४॥**

**गन्ता। इयन्ति। सवना। हरिऽभ्याम्। बभ्रिः। वज्रम्। पपिः। सोमम्। ददिः। गाः। कर्ता। वीरम्। नर्यम्। सर्वऽवीरम्। श्रोता। हवम्। गृणतः। स्तोमऽवाहाः॥४॥**

**पदार्थः**-**(गन्ता)** **(इयान्ति)** एतावन्ति। अत्र **संहितायामिति** दीर्घः। **(सवना)** सवनान्यैश्वर्यकारकाणि कर्माणि **(हरिभ्याम्)** अध्यापकोपदेशकाभ्यां मनुष्याभ्यां सह **(बभ्रिः)** भर्त्ता धर्त्ता वा **(वज्रम्)** **(पपिः)** पाता **(सोमम्)** **(ददिः)** दाता **(गाः)** **(कर्त्ता)** **(वीरम्)** **(नर्यम्)** नृषु श्रेष्ठम् **(सर्ववीरम्)** सर्वे वीरा यस्मात्तम् **(श्रोता)** **(हवम्)** प्रशंसनीयम् **(गृणतः)** स्तुवतः **(स्तोमवाहाः)** ये स्तोमान् वहन्ति॥४॥

**अन्वयः**-हे स्तोमवाहा मनुष्या! यो हरिभ्यामियान्ति सवना गन्ता वज्रं बभ्रिः सोमं पपिर्गा ददिर्गृणतो हवं श्रोता सर्ववीरं नर्यं वीरं कर्त्ता भवेत्तं राजानं मन्यध्वम्॥४॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यः सर्वेषु राजकर्मसु कुशलः स्यात्तं नृपं कृत्वा न्यायेन राज्यं पालयत॥४॥

**पदार्थः**-हे **(स्तोमवाहाः)** समूहों को धारण करने वाले मनुष्यो! जो **(हरिभ्याम्)** अध्यापक और उपदेशक मनुष्यों के साथ **(इयान्ति)** इतने **(सवना)** ऐश्वर्यकारक कर्म्मों को **(गन्ता)** प्राप्त होने वाला



www.9009.co.in

**(वज्रम्)** अस्त्रविशेष को **(बभ्रिः)** पुष्ट करने वा धारण करने तथा **(सोमम्)** सोमलता के रस का **(पपिः)** पान करने और **(गाः)** गौओं को **(ददिः)** देने वाला **(गृणतः)** स्तुति करते हुओं को और **(हवम्)** प्रशंसा करने योग्य को **(श्रोता)** सुनने वाला **(सर्ववीरम्)** सम्पूर्ण वीर जिससे उस **(नर्यम्)** मनुष्यों में श्रेष्ठ **(वीरम्)** वीरजन को **(कर्त्ता)** करने वाला होवे, उसको राजा मानो॥४॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो सम्पूर्ण राजकर्मों में निपुण हो, उसको राजा करके न्याय से राज्य का पालन करो॥४॥

**पुनर्मनुष्यैः परस्परं कथं वर्त्तितव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को परस्पर कैसा वर्त्ताव करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**अस्मै वयं यद्वावान तद्विविष्म इन्द्राय यो नः प्रदिवो अपस्कः।**

**सुते सोमे स्तुमसि शंसदुक्थेन्द्राय ब्रह्म वर्धनं यथासत्॥५॥१५॥**

**अस्मै। वयम्। यत्। ववान। तत्। विवष्मः। इन्द्राय। यः। नः। प्रऽदिवः। अपः। करिति कः। सुते। सोमे। स्तुमसि। शंसत्। उक्था। इन्द्राय। ब्रह्म। वर्धनम्। यथा। असत्॥५॥**

**पदार्थः**-**(अस्मै)** पूर्वमन्त्रोक्ताय **(वयम्)** **(यत्)** **(वावान)** वनते। अत्र **तुजादीनामि**त्यभ्यासदैर्घ्यम् **(तत्)** **(विविष्मः)** व्याप्नुमः **(इन्द्राय)** ऐश्वर्याय **(यः)** **(नः)** अस्मान् **(प्रदिवः)** प्रकर्षेण कामयमानान् **(अपः)** कर्म **(कः)** करोति **(सुते)** निष्पादिते **(सोमे)** ऐश्वर्ये **(स्तुमसि)** स्तुमः **(शंसत्)** शंसेत् **(उक्था)** प्रशंसनीयानि कर्माणि **(इन्द्राय)** परमैश्वर्याय **(ब्रह्म)** धनम् **(वर्धनम्)** वर्धते येन **(यथा)** **(असत्)** भवेत्॥५॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यः प्रदिवो नोऽपस्क इन्द्रायोक्था शंसद्यथा ब्रह्म वर्धनमसदस्मा इन्द्राय वयं यद्विविष्मस्तद्यो वावान तथा तं सुते सोमे वयं स्तुमसि॥५॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। ये धनवत्सर्ववर्धकाः सन्ति ते परमैश्वर्यं लब्ध्वा प्रयतन्ते॥५॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(यः)** जो **(प्रदिवः)** अत्यन्तपन से कामना करते हुओं **(नः)** हम लोगों और **(अपः)** कर्म को **(कः)** करता है और **(इन्द्राय)** अत्यन्त ऐश्वर्ययुक्त जन के लिये **(उक्था)** प्रशंसा करने योग्य कर्मों को **(शंसत्)** कहे और **(यथा)** जैसे **(ब्रह्म)** धन **(वर्धनम्)** बढ़ता है जिससे वह **(असत्)** होवे और **(अस्मै)** पूर्व मन्त्र में कहे हुए **(इन्द्राय)** ऐश्वर्य के लिये **(वयम्)** हम लोग **(यत्)** जिसको **(विविष्मः)** व्याप्त होते हैं **(तत्)** उसका जो **(वावान)** उत्तम प्रकार सेवन करता है, वैसे उसकी **(सुते)** उत्पन्न किये गये **(सोम)** ऐश्वर्य में हम लोग **(स्तुमसि)** स्तुति करते हैं॥५॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जो धन के सदृश सब के बढ़ानेवाले हैं, वे अत्यन्त ऐश्वर्य को प्राप्त होकर प्रयत्न करते हैं॥५॥

**पुनर्मनुष्यैः किं कर्तव्यमित्याह॥**



www.9009.co.in

फिर मनुष्यों को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**ब्रह्मा॑णि॒ हि च॑कृ॒षे वर्ध॑नानि॒ ताव॑त्त इन्द्र म॒तिभि॑र्विविष्मः।**

**सु॒ते सोमे॑ सुत॒पाः शंत॑मानि॒ राण्ड्र्या॑ क्रियास्म॒ वक्ष॑णानि य॒ज्ञैः॥६॥**

**ब्रह्मा॑णि। हि। च॒कृ॒षे। वर्ध॑नानि। ताव॑त्। ते॒। इ॒न्द्र॒। म॒तिऽभिः॑। वि॒वि॒ष्मः॒। सु॒ते। सोमे॑। सु॒त॒ऽपाः॒। शम्ऽत॑मानि। राण्ड्र्या॑। क्रि॒यास्म॒। वक्ष॑णानि। य॒ज्ञैः॥६॥**

**पदार्थः-(ब्रह्माणि)** धनानि **(हि)** **(चकृषे)** करोषि **(वर्धनानि)** वृद्धिकराणि **(तावत्)** **(ते)** तुभ्यम् **(इन्द्र)** **(मतिभिः)** उत्तमैर्मनुष्यैः सह **(विविष्मः)** व्याप्नुमः **(सुते)** **(सोमे)** ऐश्वर्ये **(सुतपाः)** यः सुतान् पदार्थान् पाति **(शन्तमानि)** अतिशयेन सुखकराणि **(राण्ड्र्या)** राण्ड्र्याणि रन्तुं योग्यानि **(क्रियास्म)** **(वक्षणानि)** प्रापकाणि **(यज्ञैः)** धनप्रापकैर्व्यवहारैः॥६॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! यावन्ति वर्धनानि ब्रह्माणि त्वं चकृषे तावत्ते मतिभिस्सहिता वयं विविष्मः। सुतपा हि वयञ्च सुते सोमे यज्ञैः शन्तमानि राण्ड्र्या वक्षणानि क्रियास्म॥६॥

**भावार्थः**-मनुष्यैरुत्तमाचरणं दृष्ट्वा तादृशमेवाऽऽचरणीयम्। सर्वैर्मिलित्वैश्वर्यं प्राप्य न्यायेन प्रजा रक्षणीया॥६॥

**पदार्थः**-हे **(इन्द्र)** प्रतापयुक्त! जितने **(वर्धनानि)** वृद्धि करने वाले **(ब्रह्माणि)** धनों को आप **(चकृषे)** करते हो **(तावत्)** उतने **(ते)** आपके लिये **(मतिभिः)** उत्तम मनुष्यों के साथ हम लोग **(विविष्मः)** व्याप्त होवें तथा **(सुतपाः)** पदार्थों की रक्षा करने वाला तथा **(हि)** निश्चय कर हम लोग **(सुते)** उत्पन्न हुए **(सोमे)** ऐश्वर्य में **(यज्ञैः)** धनप्रापक व्यवहारों से निश्चय कर **(शन्तमानि)** अत्यन्त सुखकारक **(राण्ड्र्या)** रमण करने योग्यों को **(वक्षणानि)** प्राप्त कराने वाले **(क्रियास्म)** करें॥६॥

**भावार्थः**-मनुष्यों को चाहिये कि उत्तम आचरण को देख के वैसा ही आचरण करें और सब मिल के ऐश्वर्य को प्राप्त होकर न्याय से प्रजा की रक्षा करें॥६॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**स नो॑ बोधि पु॒रो॒ळाशं॒ ररा॑णः पिबा॒ तु सोमं॒ गोऋ॑जीकमिन्द्र।**

**एदं ब॒र्हिर्यज॑मानस्य सीदो॒रुं कृ॑धि त्वाय॒त उ लो॒कम्॥७॥**

**सः। नः॒। बो॒धि॒। पु॒रो॒ळाश॑म्। ररा॑णः। पिब॑। तु। सोम॑म्। गोऽऋ॑जीकम्। इ॒न्द्र॒। आ। इ॒दम्। ब॒र्हिः। यज॑मानस्य। सी॒द॒। उ॒रुम्। कृ॒धि॒। त्वा॒ऽय॒तः। ऊँ इति॑। लो॒कम्॥७॥**

**पदार्थः-(सः)** **(नः)** अस्मान् **(बोधि)** बुध्यस्व **(पुरोळाशम्)** सुसंस्कृतमन्नम् **(रराणः)** ददन् **(पिबा)** अत्र **द्व्यचोऽतस्तिङ** इति दीर्घः। **(तु)** **(सोमम्)** महौषधिरसम् **(गोऋजीकम्)** गाव इन्द्रियाणि



www.9009.co.in

ऋजीकानि सरलानि येन तम् **(इन्द्र)** ऐश्वर्य्यधर्त्तः **(आ)** **(इदम्)** **(बर्हिः)** उत्तमासनम् **(यजमानस्य)** **(सीद)** **(उरुम्)** बहुम् **(कृधि)** **(त्वायतः)** त्वां कामयमानान् (उ) **(लोकम्)** द्रष्टव्यम्॥७॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! स त्वं पुरोळाशं रराणो गोऋजीकं सोमं पिबा [नो] बोधि यजमानस्येदं बर्हिरासीदोरुं लोकमु त्वायतस्तु कृधि॥७॥

**भावार्थः**-ये रोगहराणि भोजनानि पानानि च ददति परोपकारं कुर्वन्ति तेऽत्र प्रशंसनीयाः सन्ति॥७॥

**पदार्थः**-हे **(इन्द्र)** ऐश्वर्य के धारण करने वाले **(सः)** वह आप **(पुरोळाशम्)** उत्तम प्रकार संस्कारयुक्त अन्न को **(रराणः)** देते हुए **(गोऋजीकम्)** इन्द्रिय सरल जिससे उस **(सोमम्)** बड़ी ओषधियों के रस को **(पिबा)** पीजिये और **(नः)** हम लोगों को **(बोधि)** जानिये और **(यजमानस्य)** यजमान के **(इदम्)** इस **(बर्हिः)** उत्तम आसन पर **(आ, सीद)** सब प्रकार से विराजिये तथा **(उरुम्)** बहुत **(लोकम्)** देखने योग्य को (उ) और **(त्वायतः)** आपकी कामना करते हुओं को **(तु)** तो **(कृधि)** करिये॥७॥

**भावार्थः**-जो लोग रोग के हरनेवाले भोजनों और जलपानादि को देते हैं और परोपकार करते हैं, वे प्रशंसा करने योग्य हैं॥७॥

**पुनर्मनुष्यैः किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**स म॑न्दस्वा ह्यनु॒ जोष॑मुग्र॒ प्र त्वा॑ य॒ज्ञास॑ इ॒मे अ॑श्नुवन्तु।**

**प्रेमे ह॒वास॑: पुरुहू॒तम॒स्मे आ त्वे॒यं धीरव॑स इन्द्र यम्याः॥८॥**

**सः। म॒न्द॒स्व॒। हि। अनु॑। जोष॑म्। उ॒ग्र॒। प्र। त्वा॒। य॒ज्ञास॑:। इ॒मे। अ॒श्नु॒व॒न्तु॒। प्र। इ॒मे। ह॒वास॑:। पु॒रु॒ऽहू॒तम्। अ॒स्मे इति॑। आ। त्वा॒। इ॒यम्। धीः। अव॑से। इ॒न्द्र॒। य॒म्याः॒॥८॥**

**पदार्थः**-**(सः)** **(मन्दस्वा)** आनन्द। अत्र **संहितायामि**ति दीर्घः। **(हि)** यतः **(अनु)** **(जोषम्)** प्रीतिम् **(उग्र)** तेजस्विन् **(प्र)** **(त्वा)** त्वाम् **(यज्ञासः)** सर्वे धर्म्या व्यवहाराः **(इमे)** **(अश्नुवन्तु)** प्राप्नुवन्तु **(प्र)** **(इमे)** **(हवासः)** दानाऽऽदानाऽदनाख्याः **(पुरुहूतम्)** बहुभिः प्रशंसितम् **(अस्मे)** अस्माकमस्मासु वा **(आ)** समन्तात् **(त्वा)** त्वाम् **(इयम्)** **(धीः)** **(अवसे)** **(इन्द्रः)** विद्याक्रियाकुशल **(यम्याः)**॥८॥

**अन्वयः**-हे उग्रेन्द्र! ययेमे यज्ञासस्त्वाऽश्नुवन्तु य इमे हवासः पुरुहूतं त्वा प्राश्नुवन्तु सेयं धीरस्मे अवसेऽस्तु त्वं तामा यम्याः। अस्मासु प्र यम्यास्तैर्हि जोषमनु स त्वं मन्दस्वा॥८॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यैः कर्मभिर्यया च प्रज्ञया विज्ञानानन्दौ वर्धेते तानि यूयमुन्नयत॥८॥

**पदार्थः**-हे **(उग्र)** तेजस्विन् **(इन्द्र)** विद्या और क्रिया में कुशल! जिस बुद्धि से **(इमे)** ये **(यज्ञासः)** सम्पूर्ण धर्मयुक्त व्यवहार **(त्वा)** आपको **(अश्नुवन्तु)** प्राप्त हों और जो **(इमे)** ये **(हवासः)**



www.9009.co.in

दान, आदान और अदन नामक अर्थात् देना, लेना, खाना **(पुरुहूतम्)** बहुतों से प्रशंसितम् **(त्वा)** आपको **(प्र)** प्राप्त हों सो **(इयम्)** यह **(धीः)** बुद्धि **(अस्मे)** हम लोगों की वा हम लोगों में **(अवसे)** रक्षा के लिये हो आप उसको **(आ, यम्याः)** अच्छे प्रकार विस्तारिये तथा हम लोगों में **(प्र)** अच्छे प्रकार दीजिये उनके साथ **(हि)** जिससे **(जोषम्)** प्रीति को **(अनु)** अनुकूल **(सः)** वह आप **(मन्दस्वा)** आनन्द करिये॥८॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जिन कर्मों और जिस बुद्धि से विज्ञान और आनन्द बढ़ते हैं, उनकी आप लोग वृद्धि करिये॥८॥

**पुनर्मनुष्यैः कथं वर्तितव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को कैसा वर्त्ताव करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**तं वः सखायः सं यथा सुतेषु सोमेभिरीं पृणता भोजमिन्द्रम्।**

**कुवित्तस्मा असति नो भराय न सुष्विमिन्द्रोऽवसे मृधाति॥९॥**

**तम्। वः। सखायः। सम्। यथा। सुतेषु। सोमेभिः। ईम्। पृणत। भोजम्। इन्द्रम्। कुवित्। तस्मै। असति। नः। भराय। न। सुष्विम्। इन्द्रः। अवसे। मृधाति॥९॥**

**पदार्थः**-**(तम्)** **(वः)** युष्माकम् **(सखायः)** सुहृदः **(सम्)** **(यथा)** **(सुतेषु)** निष्पन्नेषु **(सोमेभिः)** ऐश्वर्यप्रेरणादिक्रियाभिः **(ईम्)** उदकेन **(पृणता)** सुखयत। अत्र **संहितायामिति** दीर्घः। **(भोजम्)** पालकम् **(इन्द्रम्)** शत्रुविनाशकं राजानम् **(कुवित्)** महत् **(तस्मै)** **(असति)** भवेत् **(नः)** अस्माकम् **(भराय)** पालनाय **(न)** निषेधे **(सुष्विम्)** सोतारमैश्वर्यकारकम् **(इन्द्रः)** राजा **(अवसे)** रक्षणाद्याय **(मृधाति)** हिंस्यात्॥९॥

**अन्वयः**-हे सखायो! यथा सोमेभिः सुतेषु वो नश्च भरायावसे य इन्द्रो न मृधाति तं भोजं सुष्विमिन्द्रं यूयं सं पृणता तस्मा ईं कुविदसति॥९॥

**भावार्थः**-ये मनुष्या रागद्वेषौ विहाय परस्परं रक्षणं विदधति ते महत्सुखमाप्नुवन्ति॥९॥

**पदार्थः**-हे **(सखायः)** मित्र जनो! **(यथा)** जैसे **(सोमेभिः)** ऐश्वर्य की प्रेरणा आदि क्रियाओं से **(सुतेषु)** उत्पन्न हुओं में **(वः)** आप लोग और **(नः)** हम लोगों के **(भराय)** पालन के लिये **(अवसे)** रक्षण आदि के लिये जो **(इन्द्रः)** राजा **(न)** नहीं **(मृधाति)** हिंसा करे **(तम्)** उस **(भोजम्)** पालन करने वाले **(सुष्विम्)** उत्पन्न करने वा ऐश्वर्य्य करने वाले **(इन्द्रम्)** शत्रु के विनाश करने वाले राजा को आप लोग **(सम्, पृणता)** उत्तम प्रकार सुखी करिये **(तस्मै)** उसके लिये **(ईम्)** जल से **(कुवित्)** बड़ा **(असति)** होवे॥९॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य राग और द्वेष का त्याग करके परस्पर रक्षण करते हैं, वे सुख को प्राप्त होते हैं॥९॥



www.9009.co.in

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**एवेदिन्द्रः सुते अस्तावि सोमे भरद्वाजेषु क्षयदिन्मघोनः।**

**असद्यथा जरित्र उत सूरिरिन्द्रो रायो विश्ववारस्य दाता॥ १०॥ १६॥ २॥**

**एव। इत्। इन्द्रः। सुते। अस्तावि। सोमे। भरत्ऽवाजेषु। क्षयत्। इत्। मघोनः। असत्। यथा। जरित्रे। उत। सूरिः। इन्द्रः। रायः। विश्वऽवारस्य। दाता॥ १०॥**

**पदार्थः-(एव) (इत्)** अपि **(इन्द्रः)** परमैश्वर्यः **(सुते)** निष्पन्नेऽस्मिञ्जगति **(अस्तावि)** स्तूयते **(सोमे)** ऐश्वर्ये **(भरद्वाजेषु)** धृतविज्ञानेषु **(क्षयत्)** निवसेत् **(इत्)** अपि **(मघोनः)** धनाढ्यान् **(असत्)** भवेत् **(यथा) (जरित्रे)** स्तावकाय **(उत)** अपि **(सूरिः)** विद्वान् **(इन्द्रः) (रायः)** धनस्य **(विश्ववारस्य)** विश्वे सर्वे वारा स्वीकारा यस्मिंस्तस्य **(दाता)**॥ १०॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथेन्द्रः सुते सोम इद्भरद्वाजेष्वस्तावि यथा सूरिरिन्द्रो जरित्रे विश्ववारस्य रायो दातोत क्षयदिन्मघोनो रक्षमाणोऽस्ति स इदेव तथा सुख्यसत्॥ १०॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। ये मनुष्या अस्मिञ्जगति धर्म्याणि कर्माणि कुर्वन्ति ते सर्वदा स्तूयन्ते यथा दानं प्रियकारकं भवति तथा ह्यादानं न भवतीति॥ १०॥

अत्रेन्द्रविद्वद्राजप्रजागुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इत्यृग्वेदभाष्ये षष्ठे मण्डले द्वितीयोऽनुवाकस्त्रयोविंशं सूक्तं षोडशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे मनुष्यो **(यथा)** जैसे **(इन्द्रः)** अत्यन्त ऐश्वर्य वाला जन **(सुते)** उत्पन्न हुए इस संसार में **(सोमे)** ऐश्वर्य में **(इत्)** निश्चय **(भरद्वाजेषु)** विज्ञान को धारण किए हुओं में **(अस्तावि)** स्तुति किया जाता है और जैसे **(सूरिः)** विद्वान् और **(इन्द्र)** अत्यन्त ऐश्वर्य से युक्त जन **(जरित्रे)** स्तुति करने वाले जन के लिये **(विश्ववारस्य)** सम्पूर्ण स्वीकार जिसमें उस **(रायः)** धन का **(दाता)** देने वाला **(उत)** निश्चय से **(क्षयत्)** निवास करे और **(इत्)** निश्चय कर **(मघोनः)** धन से युक्त जनों की रक्षा करता हुआ हो वह **(एव)** ही उस प्रकार का सुखी **(असत्)** होवे॥ १०॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जो मनुष्य इस संसार में धर्मयुक्त कर्म्म करते हैं, वे सर्वदा स्तुति किये जाते हैं, जैसा देना प्रियकारक होता है, वैसा लेना नहीं प्रियकारक होता है॥ १०॥

इस सूक्त में इन्द्र, विद्वान्, राजा और प्रजा के गुणवर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह ऋग्वेदभाष्य में छठें मण्डल में दूसरा अनुवाक, तेईसवाँ सूक्त और सोलहवाँ वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

**अथ दशर्चस्य चतुर्विंशतितमस्य सूक्तस्य भरद्वाजो बार्हस्पत्य ऋषिः। इन्द्रो देवता। १, २ भुरिक् पङ्क्तिः। ३, ५, ९ पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः। ४, ७ निचृत्त्रिष्टुप्। ८ त्रिष्टुप्। ६, १० विराट् त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः॥**

***अथ राज्ञा किं कर्त्तव्यमित्याह॥***

अब दश ऋचावाले चौबीसवें सूक्त का प्रारम्भ किया जाता है, उसके प्रथम मन्त्र में अब राजा को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**वृषा मद इन्द्रे श्लोक उक्था सचा सोमेषु सुतपा ऋजीषी।**
**अर्चत्र्यो मघवा नृभ्य उक्थैर्द्युक्षो राजा गिरामक्षितोतिः॥१॥**

**वृषा। मदः। इन्द्रे। श्लोकः। उक्था। सचा। सोमेषु। सुतऽपाः। ऋजीषी। अर्चत्र्यः। मघऽवा। नृभ्यः। उक्थैः। द्युक्षः। राजा। गिराम्। अक्षितऽऊतिः॥१॥**

**पदार्थः**-(**वृषा**) बलिष्ठः (**मदः**) आनन्दितः (**इन्द्रे**) ऐश्वर्यवति (**श्लोकः**) वाक् (**उक्था**) प्रशंसितानि कर्माणि (**सचा**) समवेताः (**सोमेषु**) ऐश्वर्येषु (**सुतपाः**) सुष्ठु तपस्वी (**ऋजीषी**) सरलगुणकर्मस्वभावः (**अर्चत्र्यः**) सत्कारं कुर्वत्यः प्रजाः (**मघवा**) न्यायोपार्जितधनः (**नृभ्यः**) मनुष्येभ्यः (**उक्थैः**) प्रशंसनीयैः कर्मभिः (**द्युक्षः**) द्युतिमान् (**राजा**) (**गिराम्**) न्यायविद्यायुक्तानां वाचाम् (**अक्षितोतिः**) नित्यरक्षः॥१॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! य इन्द्रे श्लोको वृषा मदः सचा सुतपा ऋजीषी मघवाक्षितोतिः द्युक्षा राजोक्थैः सोमेषूक्था गिरां नृभ्यो या अर्चत्र्यः प्रजास्तासां श्रोता भवेत् स एव राज्यं कर्तुमर्हेदिति विजानीत॥१॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! य उत्तमानि कर्माणि कृत्वा सत्यवादी जितेन्द्रियः पितृवत्प्रजापालको वर्तेत स एव सर्वत्र प्रकाशितकीर्तिर्भवेत्॥१॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो (**इन्द्रे**) ऐश्वर्य्यवान् पदार्थ में (**श्लोकः**) वाणी (**वृषा**) बलिष्ठ (**मदः**) आनन्दित (**सचा**) मेल किये हुए (**सुतपाः**) अच्छा तपस्वी (**ऋजीषी**) सरल गुण, कर्म स्वभाव वाला (**मघवा**) न्याय से इकट्ठे किये हुए धन से युक्त (**अक्षितोतिः**) नित्य रक्षित (**द्युक्षः**) दीप्तिमान् (**राजा**) प्रकाश करता हुआ (**उक्थैः**) प्रशंसनीय कर्म्मों से (**सोमेषु**) ऐश्वर्य्यों में (**उक्था**) प्रशंसित कर्मों को (**गिराम्**) न्याय और विद्यायुक्त वाणियों के संबन्ध में (**नृभ्यः**) मनुष्यों के किये जो (**अर्चत्र्यः**) सत्कार करती हुई प्रजा हैं, उनका सुनने वाला हो, वही राज्य करने योग्य हो, यह जानो॥१॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो उत्तम कामों को करके सत्यवादी, इन्द्रियों को जीतने वाला, पिता के समान प्रजापालक वर्त्तमान हो, वही सर्वत्र प्रकाशित कीर्त्ति वाला हो॥१॥



www.9009.co.in

**पुना राज्ञा प्रजाजनैश्च किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

फिर राजा और प्रजाजनों को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**ततुरिर्वीरो नर्यो विचेताः श्रोता हवं गृणत उर्व्यूतिः।**

**वसु शंसो नरां कारुधाया वाजी स्तुतो विदथे दाति वाजम्॥२॥**

**ततुरिः। वीरः। नर्यः। विऽचेताः। श्रोता। हवम्। गृणतः। उर्विऽऊतिः। वसुः। शंसः। नराम्। कारुऽधायाः। वाजी। स्तुतः। विदथे। दाति। वाजम्॥२॥**

**पदार्थः**-(**ततुरिः**) शत्रूणां हिंसकः (**वीरः**) शौर्यादिगुणोपेतः (**नर्यः**) नृषु साधुः (**विचेताः**) विविधप्रज्ञः (**श्रोता**) विवादानां वचनानां श्रवणकर्त्ता (**हवम्**) प्रशंसनीयं व्यवहारम् (**गृणतः**) प्रशंसकान् (**उर्व्यूतिः**) ऊर्व्याः पृथिव्या ऊती रक्षा येन सः (**वसुः**) वासयिता (**शंसः**) प्रशंसकः (**नराम्**) नराणां नायकः (**कारुधायाः**) कारवो ध्रियन्ते येन सः (**वाजी**) विज्ञानवान् (**स्तुतः**) प्रशंसितः (**विदथे**) सङ्ग्रामे (**दाति**) ददाति (**वाजम्**) विज्ञानम्॥२॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यस्ततुरिर्वीरो नर्यो विचेता हवं गृणतश्श्रोतोर्व्यूतिर्नरां वसुः शंसः कारुधाया वाजी स्तुतो विदथे वाजं दाति तं यूयं सेवध्वम्॥२॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यूयं यो नरोत्तमोऽधिकबलप्रज्ञो यथार्थस्य श्रोता सङ्ग्रामे युद्धविद्याप्रदोऽस्ति तमेव सदा सत्कुरुत॥२॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो (**ततुरिः**) शत्रुओं का मारने वाला (**वीरः**) वीरता आदि गुणों से युक्त (**नर्यः**) मनुष्यों में श्रेष्ठ (**विचेताः**) अनेक प्रकार की बुद्धि वाला और (**हवम्**) प्रशंसा करने योग्य व्यवहार की (**गृणतः**) प्रशंसा करते हुओं के (**श्रोता**) विवादविषयक वचनों का सुनने वाला (**उर्व्यूतिः**) पृथिवी की रक्षा जिससे (**नराम्**) मनुष्यों का अग्रणी (**वसुः**) वास कराने और (**शंसः**) प्रशंसा करने वाला (**कारुधायाः**) कारीगर धारण किये जाते जिससे वह (**वाजी**) विज्ञान वाला (**स्तुतः**) प्रशंसित हुआ (**विदथे**) संग्राम में (**वाजम्**) विज्ञान को (**दाति**) देता है, उसकी आप लोग सेवा करो॥२॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! तुम लोग जो मनुष्यों में उत्तम, अधिक बल और बुद्धि युक्त, यथार्थ का सुनने वाला तथा संग्राम में युद्धविद्या का देने वाला है, उस ही का सदा सत्कार करो॥२॥

**पुनः सूर्यपृथिव्योः कीदृशं वर्त्तमानमस्तीत्याह॥**

फिर सूर्य और पृथिवी का कैसा वर्त्ताव है, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अक्षो न चक्र्योः शूर बृहन्प्र ते मह्ना रिरिचे रोदस्योः।**

**वृक्षस्य नु ते पुरुहूत वया व्यू३तयो रुरुहुरिन्द्र पूर्वीः॥३॥**

**अक्षः। न। चक्र्योः। शूर। बृहन्। प्र। ते। मह्ना। रिरिचे। रोदस्योः। वृक्षस्य। नु। ते। पुरुऽहूत। वयाः। वि। ऊतयः। रुरुहुः। इन्द्र। पूर्वीः॥३॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**अक्षः**) (**न**) इव (**चक्र्योः**) (**शूर**) (**बृहन्**) महान् (**प्र**) (**ते**) तव (**मह्ना**) महत्त्वेन महिम्ना (**रिरिचे**) अतिरिणक्ति (**रोदस्योः**) द्यावापृथिव्योः (**वृक्षस्य**) (**नु**) (**ते**) तव (**पुरुहूत**) बहुभिः पूजित (**वयाः**) (**वि**) (**ऊतयः**) रक्षणाद्याः क्रियाः (**रुरुहुः**) प्रादुर्भवेयुः (**इन्द्र**) राजन् (**पूर्वीः**) प्राचीनाः॥ ३॥

**अन्वयः**-हे शूर पुरुहूतेन्द्र! यथा ते मह्ना रोदस्योर्मध्ये पूर्वीर्व्यूतयश्चक्र्योरक्षो न प्र रुरुहुः। हे बृहन्! वृक्षस्य नु ते वया रिरिचे तं सर्वे जानन्तु॥ ३॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यथा चक्राणां धर्त्र्यो धुरो वृक्षस्य शाखा इव वर्धन्तेऽन्तरिक्षे तिष्ठन्ति तथा सूर्याभितः सर्वे भूगोला भ्रमन्ति तथैव न्यायस्य मार्गेण प्रजाश्चलन्ति॥ ३॥

**पदार्थः**-हे (**शूर**) वीर पुरुष (**पुरुहूत**) बहुतों से आदर किये गये (**इन्द्र**) राजन्! जैसे (**ते**) आपके (**मह्ना**) महत्त्व से (**रोदस्योः**) अन्तरिक्ष और पृथिवी के मध्य में (**पूर्वीः**) प्राचीन (**वि, ऊतयः**) विविध रक्षण आदि क्रियायें (**चक्र्योः**) पहियों की (**अक्षः**) धुरी के (**न**) समान (**प्र, रुरुहुः**) अच्छे प्रकार प्रकट होवें और हे (**बृहन्**) महान् (**वृक्षस्य**) वृक्ष की बढ़वार (**नु**) जैसे वैसे (**ते**) आपकी (**वयः**) अवस्था (**रिरिचे**) प्रकट होती है, उसको सब लोग जानें॥ ३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जैसे पहियों की धारण करने वाली धुरी वृक्ष की शाखाओं के समान बढ़ती है और अन्तरिक्ष में स्थित होती हैं, वैसे सूर्य के चारों ओर सम्पूर्ण भूगोल घूमते हैं और वैसे ही न्याय के मार्ग से प्रजायें चलती हैं॥ ३॥

**पुना राज्ञा प्रजाभिश्च कथं वर्तितव्यमित्याह॥**

फिर राजा और प्रजा को कैसा वर्त्ताव करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**शचीवतस्ते पुरुशाक शाका गवामिव स्रुतयः संचरणीः।**

**वत्सानां न तन्तयस्त इन्द्र दामन्वन्तो अदामानः सुदामन्॥ ४॥**

**शचीऽवतः। ते। पुरुऽशाक। शाकाः। गवाम्ऽइव। स्रुतयः। सम्ऽचरणीः। वत्सानाम्। न। तन्तयः। ते। इन्द्र। दामन्ऽवन्तः। अदामानः। सुऽदामन्॥ ४॥**

**पदार्थः**-(**शचीवतः**) प्रज्ञाप्रजायुक्तस्य (**ते**) तव (**पुरुशाक**) बहुशक्त (**शाकाः**) शक्तिमत्यः (**गवामिव**) (**स्रुतयः**) स्रुवन्त्यः (**सञ्चरणीः**) याः सम्यक् चरन्ति ता भूमयः (**वत्सानाम्**) (**न**) इव (**तन्तयः**) विस्तीर्णाः (**ते**) तव (**इन्द्र**) दुःखविदारक (**दामन्वन्तः**) बहुबन्धनाः (**अदामानः**) निर्बन्धनाः (**सुदामन्**) सुनियमबद्ध॥ ४॥

**अन्वयः**-हे पुरुशाकेन्द्र! शचीवतस्ते गवामिव स्रुतयः सञ्चरणीः शाका वत्सानां तन्तयो न ते प्रजाः सन्ति। हे सुदामन्! ये दामन्वन्तः स्युस्तेऽदामानस्त्वया कार्याः॥ ४॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। त एव राजानः प्रशंसितप्रभावा भवन्ति येऽन्यायपीडादिबन्धनात् प्रजा विमोच्य धर्मपथे प्रचालयन्ति यथा वत्सानां वर्धिका गावो भवन्ति तथैव प्रजानां वर्धका राजपुरुषाः स्युः॥४॥

**पदार्थः**-हे **(पुरुशाक)** बहुत सामर्थ्यवान् **(इन्द्र)** दुःख के नाश करने वाले! **(शचीवतः)** बुद्धि और प्रजा से युक्त **(ते)** आपकी **(गवामिव, स्रुतयः)** गौओं की गतियों के सदृश **(सञ्चरणीः)** अच्छे प्रकार चलने वाली भूमियाँ **(शाकाः)** और सामर्थ्य वाली **(वत्सानाम्)** बछड़ों की **(तन्तयः)** विस्तृत पङ्क्तियों के **(न)** सदृश **(ते)** आपकी प्रजा हैं। हे **(सुदामन्)** अच्छे नियमों में बँधे हुए! जो **(दामन्वन्तः)** बहुत बन्धनों वाले होवें वे आप से **(अदामानः)** बन्धनरहित करने योग्य हैं॥४॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। वे ही राजजन प्रशंसित प्रतापवाले होते हैं जो अन्याय और पीड़ा आदि के बन्धन से प्रजाओं को छुड़ा कर धर्ममार्ग में चलाते हैं और जैसे बछड़ों की बढ़ाने वाली गौ होती हैं, वैसे ही प्रजा के बढ़ानेवाले राजपुरुष हों॥४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अ॒न्यद॒द्य कर्व॑रम॒न्यदु॒ श्वोऽस॑च्च॒ सन्मुहु॑राच॒क्रिरिन्द्रः॑।**

**मि॒त्रो नो॒ अत्र वरु॑णश्च पू॒षार्यो वश॑स्य प॒र्ये॒तास्ति॑॥५॥१७॥**

**अ॒न्यत्। अ॒द्य। कर्व॑रम्। अ॒न्यत्। ऊँ॒ इति॑। श्वः। अस॑त्। च॒। सत्। मुहुः। आ॒ऽच॒क्रिः। इन्द्रः॑। मि॒त्रः। न॒ः। अत्र॑। वरु॑णः। च॒। पू॒षा। अ॒र्यः। वश॑स्य। प॒रि॒ऽए॒ता। अ॒स्ति॒॥५॥**

**पदार्थः**-**(अन्यत्)** **(अद्य)** **(कर्वरम्)** कर्त्तव्यं कर्म **(अन्यत्)** (उ) **(श्वः)** आगामिनि दिने **(असत्)** भवेत् **(च)** **(सत्)** **(मुहुः)** वारंवारम् **(आचक्रिः)** समन्तात् कर्त्ता **(इन्द्रः)** राजा **(मित्रः)** **(नः)** अस्माकम् **(अत्र)** **(वरुणः)** श्रेष्ठः **(च)** **(पूषा)** पुष्टिकर्त्ता **(अर्यः)** स्वामी **(वशस्य)** वशवर्तिनः **(पर्य्येता)** सर्वतः प्राप्तः **(अस्ति)**॥५॥

**अन्वयः**-य इन्द्रो राजाऽद्यान्यदु श्वोऽन्यत् कर्वरमाचक्रिस्सन्मुहुरसत् स चात्र नो मित्रो वरुणः पूषाऽर्य्यश्च वशस्य पर्येतास्ति सोऽलंसुखो भवति॥५॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यो राजा प्रतिदिनं पुनः पुनः सत्कर्माचरति स सर्वेषां न्यायकरणे पक्षपातं विहाय मित्रवद्भवति सर्वे चास्य वशे भवन्ति॥५॥

**पदार्थः**-जो **(इन्द्रः)** राजा **(अद्य)** आज **(अन्यत्)** अन्य (उ) और **(श्वः)** आने वाले दिन में **(अन्यत्)** अन्य **(कर्वरम्)** करने योग्य कर्म को **(आचक्रिः)** सब प्रकार से करने वाला **(सत्)** हुआ **(मुहुः)** वारंवार **(असत्)** होवे वह **(च)** और **(अत्र)** इस संसार में **(नः)** हम लोगों का **(मित्रः)** मित्र



www.9009.co.in

**(वरुण:)** श्रेष्ठ **(पूषा)** पुष्टि करने वाला **(अर्य:)** स्वामी **(च)** और **(वशस्य)** वशवर्ती का **(पर्येता)** सब ओर से प्राप्तजन **(अस्ति)** है, वह पूर्ण सुख वाला होता है॥५॥

**भावार्थ:**-हे मनुष्यो! जो राजा प्रतिदिन बारबार सत्य कर्म का आचरण करता है, वह सब के न्याय करने में पक्षपात का त्याग करके मित्र के सदृश होता है और सब इसके वश में होते हैं॥५॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**वि त्वदापो न पर्वतस्य पृष्ठादुक्थेभिरिन्द्रानयन्त यज्ञैः।**

**तं त्वाभिः सुष्टुतिभिर्वाजयन्त आजिं न जग्मुर्गिर्वाहो अश्वाः॥६॥**

**वि। त्वत्। आपः। न। पर्वतस्य। पृष्ठात्। उक्थेभिः। इन्द्र। अनयन्त। यज्ञैः। तम्। त्वा। आभिः। सुस्तुतिऽभिः। वाजयन्तः। आजिम्। न। जग्मुः। गिर्वाहः। अश्वाः॥६॥**

**पदार्थ:**-**(वि)** विशेषे **(त्वत्)** **(आप:)** जलानि **(न)** इव **(पर्वतस्य)** शैलस्य **(पृष्ठात्)** **(उक्थेभि:)** प्रशंसनीयैः कर्मभिः **(इन्द्र)** राजन् **(अनयन्त)** नयन्ति **(यज्ञै:)** सत्कर्मानुष्ठानैः **(तम्)** **(त्वा)** त्वाम् **(आभि:)** प्रत्यक्षाभिः **(सुष्टुतिभि:)** **(वाजयन्त:)** हर्षयन्तः **(आजिम्)** सङ्ग्रामम् **(न)** इव **(जग्मु:)** गच्छेयुः **(गिर्वाह:)** ये गिरो वहन्ति प्रापयन्ति ते **(अश्वा:)** महान्तो विद्वांसः। **अश्व इति महन्नामसु पठितम्।** (निघं०१.१४)॥६॥

**अन्वय:**-हे इन्द्र! ये त्वद्रक्षिताः पर्वतस्य पृष्ठादापो नोक्थेभिर्यज्ञैर्यं त्वा गिर्वाहोऽश्वा व्यनयन्त तं त्वामाभिस्सुष्टुतिभिर्वाजयन्तः शूरा आजिन्न जग्मुः॥६॥

**भावार्थ:**-अत्रोपमालङ्कारः। हे राजन्! यथा पर्वतोपरिष्टाज्जलं सद्यो गत्वा जलाशयं प्राप्नोति तथा ये भवत्प्रजाहितैषिणो भवन्तं प्राप्नुवन्ति तैस्सहित एव सदोन्नतो भवेः॥६॥

**पदार्थ:**–हे **(इन्द्र)** राजन्! जो **(त्वत्)** आप से रक्षित हुए **(पर्वतस्य)** पर्वत के **(पृष्ठात्)** पीठ से **(आप:)** जल **(न)** जैसे वैसे **(उक्थेभि:)** प्रशंसा करने योग्य कर्मों के अनुष्ठानों से और **(यज्ञै:)** अच्छे कर्मों के अनुष्ठानों से जिन **(त्वा)** आपको **(गिर्वाह:)** वाणियों के प्राप्त कराने वाले **(अश्वा:)** बड़े विद्वान् जन **(वि)** विशेष करके **(अनयन्त)** पहुँचाते हैं **(तम्)** उन आपको **(आभि:)** इन प्रत्यक्ष **(सुष्टुतिभि:)** उत्तम स्तुतियों से **(वाजयन्त:)** प्रसन्न कराते हुए शूरवीर जन **(आजिम्)** सङ्ग्राम को **(न)** जैसे वैसे **(जग्मु:)** प्राप्त होवें॥६॥

**भावार्थ:**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे राजन्! जैसे पर्वत के ऊपर वर्त्तमान जल शीघ्र जाकर जलाशय को प्राप्त होता है, वैसे जो आपकी प्रजाओं के हित के चाहने वाले जन आपको प्राप्त होते हैं, उनके सहित ही आप सदा उन्नत हूजिये॥६॥

**पुनर्मनुष्याः किं कुर्य्युरित्याह॥**



www.9009.co.in

फिर मनुष्य क्या करें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**न यं जरन्ति शरदो न मासा न द्याव इन्द्रमवकर्शयन्ति।**

**वृद्धस्य चिद्वर्धतामस्य तनूः स्तोमेभिरुक्थैश्च शस्यमाना॥७॥**

**न। यम्। जरन्ति। शरदः। न। मासाः। न। द्यावः। इन्द्रम्। अवऽकर्शयन्ति। वृद्धस्य। चित्। वर्धताम्। अस्य। तनूः। स्तोमेभिः। उक्थैः। च। शस्यमाना॥७॥**

**पदार्थः**-(**न**) निषेधे (**यम्**) (**जरन्ति**) जीर्णं कुर्वन्ति (**शरदः**) शरदाद्या ऋतवः (**न**) (**मासाः**) चैत्राद्याः (**न**) (**द्यावः**) सूर्यादयः (**इन्द्रम्**) परमात्मानम् (**अवकर्शयन्ति**) कृशं कर्तुं शक्नुवन्ति (**वृद्धस्य**) (**चित्**) अपि (**वर्धताम्**) (**अस्य**) जीवस्य (**तनूः**) शरीरम् (**स्तोमेभिः**) स्तुत्यैः (**उक्थैः**) वक्तुमर्हैः (**च**) (**शस्यमाना**) स्तवनीया॥७॥

**अन्वयः**-हे विद्वांसो! यस्यास्य वृद्धस्य तनूः स्तोमेभिरुक्थैश्च शस्यमाना चिद्वर्धतां यमिन्द्रं परमात्मानं शरदो न जरन्ति मासा न जरन्ति द्यावो नाऽवकर्शयन्ति तं विद्वांसं परमात्मानं च यूयं सेवध्वम्॥७॥

**भावार्थः**-स एव विद्वान् वृद्धो भूत्वा वर्धते यः सर्वान्त्सुप्रज्ञान् सुशीलान् धर्माचारान् करोति ये निर्विकारं जन्मरणजरादिदोषरहितं परमात्मानमुपासते ते प्रशंसनीया जायन्ते॥७॥

**पदार्थः**-हे विद्वान् जनो! जिस (**अस्य**) इस जीव (**वृद्धस्य**) वृद्ध विद्वान् का (**तनूः**) शरीर (**स्तोमेभिः**) स्तुति करने के योग्यों और इन (**उक्थैः**) कहने के योग्य पदार्थों से (**च**) भी (**शस्यमाना**) प्रशंसा करने योग्य (**चित्**) भी (**वर्धताम्**) बढ़े और (**यम्**) जिस (**इन्द्रम्**) परमात्मा को (**शरदः**) शरद् आदि ऋतुयें (**न**) नहीं (**जरन्ति**) जीर्ण करती हैं और (**मासाः**) चैत्र आदि महीने (**न**) नहीं जीर्ण करते हैं तथा (**द्यावः**) सूर्य आदि (**न**) नहीं (**अवकर्शयन्ति**) दुर्बल कर सकते हैं, उस विद्वान् और परमात्मा का आप लोग सेवन करिये॥७॥

**भावार्थः**-वही विद्वान् वृद्ध होकर वृद्धि को प्राप्त होता है जो सब को अच्छे, बुद्धिमान्, सुशील तथा धर्म्माचरण करने वाला करता है और जो निर्विकार और जन्म, मरण, बुढ़ापा आदि दोषों से रहित परमात्मा की उपासना करते हैं, वे प्रशंसा करने योग्य होते हैं॥७॥

**पुनर्मनुष्यैः किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को क्या करना चाहिये, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**न वीळवे नमते न स्थिराय न शर्धते दस्युजूताय स्तवान्।**

**अज्रा इन्द्रस्य गिरयश्चिदृष्वा गम्भीरे चिद्भवति गाधमस्मै॥८॥**

**न। वीळवे। नमते। न। स्थिराय। न। शर्धते। दस्युऽजूताय स्तवान्। अज्राः। इन्द्रस्य। गिरयः। चित्। ऋष्वाः। गम्भीरे। चित्। भवति। गाधम्। अस्मै॥८॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**न**) निषेधे (**वीळवे**) प्रशंसनीयाय बलाय (**नमते**) (**न**) (**स्थिराय**) (**न**) (**शर्धते**) बलाय (**दस्युजूताय**) दुष्टसङ्गाय (**स्तवान्**) स्तुयात् (**अज्राः**) प्रक्षेप्तारः (**इन्द्रस्य**) विद्युतः (**गिरयः**) मेघाः (**चित्**) इव (**ऋष्वाः**) महान्तः (**गम्भीरे**) (**चित्**) अपि (**भवति**) (**गाधम्**) गृहीतपरिमाणम् (**अस्मै**)॥८॥

**अन्वयः**-हे विद्वांसो! यो दस्युजूताय वीळवे न नमते स्थिराय न नमते शर्धते न स्तवान् यस्य चिदिन्द्रस्य ऋष्वा अज्रा गिरयश्चिदस्मै गाधं गम्भीरे चिद् भवति तं प्रशंसत॥८॥

**भावार्थः**-यथा विद्युतोऽगाधगुणाः सन्ति तथैव परमात्मनोऽसङ्ख्यगुणा वर्तन्ते ये तं परमात्मानमाप्ताँश्च विहाय दुष्टसङ्गतिं कुर्वन्ति ते सर्वदा दुःखिनो जायन्ते॥८॥

**पदार्थः**-हे विद्वानो! जो (**दस्युजूताय**) दुष्टों के सङ्ग के लिये (**वीळवे**) प्रशंसा करने योग्य बल के लिये (**न**) नहीं (**नमते**) नम्र होता (**स्थिराय**) स्थिर गम्भीर पुरुष के लिये (**न**) नहीं नम्र होता तथा (**शर्द्धते**) बल के लिये (**न**) नहीं (**स्तवान्**) स्तुति करे जिस (**इन्द्रस्य**) बिजुली के (**ऋष्वाः**) बड़े (**अज्राः**) फेंकने वाले गुण (**गिरयः**) मेघों के (**चित्**) सदृश हैं (**अस्मै**) इसके लिये (**गाधम्**) ग्रहण किया परिमाण (**गम्भीरे**) गुरुपन में (**चित्**) भी (**भवति**) होता है, उसकी प्रशंसा करिये॥८॥

**भावार्थः**-जैसे बिजुलियाँ अथाह गुण वाली हैं, वैसे ही परमात्मा के असङ्ख्य गुण हैं और जो परमात्मा और यथार्थवक्ता जनों को त्याग करके दुष्टों का संग करते हैं, वे सब काल में दुःखी होते हैं॥८॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उस ही विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**गम्भीरेण न उरुणामत्रिन् प्रेषो यन्धि सुतपावन् वाजान्।**

**स्था ऊ षु ऊर्ध्व ऊती अरिषण्यन्नक्तोर्व्युष्टौ परितक्म्यायाम्॥९॥**

**गम्भीरेण। नः। उरुणा। अमत्रिन्। प्र। इषः। यन्धि। सुतऽपावन्। वाजान्। स्थाः। ऊँ इति। सु। ऊर्ध्वः। ऊती। अरिषण्यन्। अक्तोः। विऽउष्टौ। परिऽतक्म्यायाम्॥९॥**

**पदार्थः**-(**गम्भीरेण**) अगाधेन (**नः**) अस्मभ्यम् (**उरुणा**) बहुना (**अमत्रिन्**) बहुबलयुक्त (**प्र**) (**इषः**) अन्नादीन् (**यन्धि**) नियच्छ (**सुतपावन्**) यः सुतान्निष्पन्नान् पदार्थान् पुनाति (**वाजान्**) विज्ञानादीनि (**स्थाः**) तिष्ठेः (**उ**) (**सु**) (**ऊर्ध्वः**) (**ऊती**) रक्षणाद्यायाः (**अरिषण्यन्**) अहिंसयन् (**अक्तोः**) रात्रेः (**व्युष्टौ**) प्रभाते (**परितक्म्यायाम्**) निशि॥९॥

**अन्वयः**-हे अमत्रिन्त्सुतपावंस्त्वं गम्भीरेणोरुणा न इषो यन्धि। उ ऊती उर्ध्वोऽरिषण्यन्नक्तोर्व्युष्टौ परितक्म्यायां वाजान् सु प्र स्थाः॥९॥

**भावार्थः**-ये यमनियमान्विताः कार्यसिद्धयेऽहर्निशं प्रयत्नमातिष्ठेयुस्त उत्कृष्टा जायन्ते॥९॥

**पदार्थः**-हे (**अमत्रिन्**) बहुत बल से युक्त और (**सुतपावन्**) उत्पन्न पदार्थों के पवित्र करने वाले आप (**गम्भीरेण**) गम्भीर और (**उरुणा**) बहुत से (**नः**) हम लोगों को (**इषः**) अन्न आदिक (**यन्धि**)



www.9009.co.in

दीजिये **(उ)** और **(ऊती)** रक्षण आदि क्रिया से **(ऊर्ध्वः)** ऊपर वर्तमान **(अरिषण्यन्)** नहीं हिंसा करते हुए **(अक्तोः)** रात्रि से **(व्युष्टौ)** प्रभातकाल में और **(परितक्म्यायाम्)** रात्रि में **(वाजान्)** विज्ञान आदिकों को **(सु, प्र)** अति उत्तम प्रकार **(स्थाः)** स्थित हूजिये॥९॥

**भावार्थः**-जो यम और नियमों से युक्त हुए कार्य की सिद्धि के लिये दिन-रात्रि प्रयत्न करें, वे उत्तम होते हैं॥९॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**सच॑स्व ना॒यमव॑से अ॒भीक॑ इ॒तो वा॒ तमि॑न्द्र पाहि रि॒षः।**

**अ॒मा चैन॒मर॑ण्ये पाहि रि॒षो मदे॑म श॒तहि॑माः सु॒वीराः॑॥१०॥१८॥**

**सच॑स्व। ना॒यम्। अव॑से। अ॒भीके॑। इ॒तः। वा॒। तम्। इ॒न्द्र॒। पा॒हि॒। रि॒षः। अ॒मा। च॒। ए॒न॒म्। अर॑ण्ये। पा॒हि॒। रि॒षः। मदे॑म। श॒तऽहि॑माः। सु॒ऽवीराः॑॥१०॥**

**पदार्थः**-**(सचस्व)** प्राप्नुहि **(नायम्)** न्यायम् **(अवसे)** रक्षणाद्याय **(अभीके)** समीपे **(इतः)** **(वा)** **(तम्)** **(इन्द्र)** राजन् विद्वन् वा **(पाहि)** **(रिषः)** हिंसकात् **(अमा)** गृहे **(च)** **(एनम्)** **(अरण्ये)** **(पाहि)** **(रिषः)** दुष्टाचारात् **(मदेम)** आनन्देम **(शतहिमाः)** शतं वर्षाणि यावत् **(सुवीराः)** शोभना वीरा येषान्ते॥१०॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! त्वमवसेऽभीके नायं सचस्व, इतो वा रिषः पाह्येनममाऽरण्ये पाहि रिषश्च यतः सुवीरा वयं शतहिमा मदेम॥१०॥

**भावार्थः**-ये विद्वांसः सन्ति ते दूरे समीपे वा स्थिता न्यायाचरणयोगाभ्यासाभ्यां वर्द्धितप्रज्ञाः सन्तः वसतिषु जङ्गलेषु च पुरुषार्थेन प्रजा रक्षन्त्विति॥१०॥

अत्रेन्द्रविद्वदीश्वरगुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति चतुर्विंशतितमं सूक्तमष्टादशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे **(इन्द्र)** राजन् वा विद्वान्! आप **(अवसे)** रक्षण आदि के लिये **(अभीके)** समीप में **(नायम्)** न्याय को **(सचस्व)** प्राप्त हूजिये **(इतः)** यहाँ से **(वा)** वा **(रिषः)** हिंसा करने वाले से **(पाहि)** रक्षा कीजिये और **(एनम्)** इसकी **(अमा)** गृह में और **(अरण्ये)** वन में **(पाहि)** रक्षा कीजिये **(रिषः, च)** और दुष्ट आचरण से भी, जिससे **(सुवीराः)** सुन्दर वीर जिनके ऐसे हम लोग **(शतहिमाः)** सौ वर्ष पर्यन्त **(मदेम)** आनन्द करें॥१०॥

**भावार्थः**-जो विद्वान् जन हैं, वे दूर वा समीप में वर्त्तमान हुए न्यायचरण और योगाभ्यास से बुद्धि को बढ़ाये हुए बस्ती और जङ्गलों में पुरुषार्थ से प्रजाजनों की रक्षा करें॥१०॥



www.9009.co.in

इस सूक्त में राजा, विद्वान् और ईश्वर के गुणवर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ संगति जाननी चाहिये॥

**यह चौबीसावाँ सूक्त और अठारहवाँ वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

**अथ नवर्चस्य पञ्चविंशतितमस्य सूक्तस्य भरद्वाजो बार्हस्पत्य ऋषिः। इन्द्रो देवता। १, ५ पङ्क्तिः। ३ भुरिक् पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः। २, ७, ८, ९ निचृत्त्रिष्टुप्। ४, ६ त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः॥**

***अथ राजा किं कुर्यादित्याह॥***

अब नव ऋचा वाले पच्चीसवें सूक्त का आरम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में अब राजा क्या करे, इस विषय को कहते हैं॥

**या त ऊतिरवमा या परमा या मध्यमेन्द्र शुष्मिन्नस्ति।**
**ताभिरू षु वृत्रहत्येऽवीर्न एभिश्च वाजैर्महान्न उग्र॥ १॥**

**या। ते। ऊतिः। अवमा। या। परमा। या। मध्यमा। इन्द्र। शुष्मिन्। अस्ति। ताभिः। ऊँ इति। सु। वृत्रऽहत्ये। अवीः। नः। एभिः। च। वाजैः। महान्। नः। उग्र॥ १॥**

**पदार्थः**-(**या**) (**ते**) तव (**ऊतिः**) रक्षा (**अवमा**) निकृष्टा (**या**) (**परमा**) उत्कृष्टा (**या**) (**मध्यमा**) (**इन्द्र**) न्यायाधीश राजन् (**शुष्मिन्**) प्रशंसितबलयुक्त (**अस्ति**) (**ताभिः**) (**ऊ**) (**सु**) (**वृत्रहत्ये**) मेघस्य हत्येव हननं यस्मिन्त्सङ्ग्रामे (**अवीः**) रक्षेः (**नः**) अस्मान् (**एभिः**) (**च**) (**वाजैः**) वेगादिभिः शुभैर्गुणैः (**महान्**) (**नः**) अस्मान् (**उग्र**) तेजस्विन्॥ १॥

**अन्वयः**-हे शुष्मिन्नुग्रेन्द्र! ते याऽवमा या मध्यमा या परमोतिरस्ति ताभिर्वृत्रहत्ये नः स्ववीरू एभिर्वाजैश्च महान्त्सन्नोऽवीः॥ १॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे राजन्! यदि त्वं प्रजाः सर्वथा रक्षेस्तर्हि प्रजा अपि त्वां सर्वतो रक्षिष्यन्ति॥ १॥

**पदार्थः**-हे (**शुष्मिन्**) प्रशंसित बल से युक्त (**उग्र**) तेजस्विन् (**इन्द्र**) न्यायाधीश राजन्! (**ते**) आपकी (**या**) जो (**अवमा**) निकृष्ट-खराब और (**या**) जो (**मध्यमा**) मध्यम और (**या**) जो (**परमा**) उत्तम (**ऊतिः**) रक्षा (**अस्ति**) है (**ताभिः**) उनसे (**वृत्रहत्ये**) मेघ के नाश के समान नाश जिसमें उस सङ्ग्राम में (**नः**) हम लोगों की (**सु**) उत्तम प्रकार (**अवीः**) रक्षा कीजिये (**ऊ**) और (**एभिः**) इन (**वाजैः**) वेग आदि उत्तम गुणों से (**च**) भी (**महान्**) बड़े हुए (**नः**) हम लोगों की रक्षा कीजिये॥ १॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे राजन्! जो आप प्रजाओं की सब प्रकार से रक्षा करें तो प्रजा भी आपकी सब प्रकार से रक्षा करेगी॥ १॥

**पुनः सेनेशः किं कुर्यादित्याह॥**

फिर सेना का स्वामी क्या करे, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥



www.9009.co.in

**आभि॒: स्पृधो॑ मिथ॒तीररि॑षण्यन्न॒मित्र॑स्य व्यथया म॒न्युमि॑न्द्र।**

**आभि॒र्विश्वा॑ अभि॒युजो॒ विषू॑ची॒रार्या॑य॒ विशोऽव॑ तारी॒र्दासीः॑॥ २॥**

**आभि:। स्पृध॑:। मि॒थ॒ती:। अरि॑षण्यन्। अ॒मित्र॑स्य। व्य॒थ॒य॒। म॒न्युम्। इ॒न्द्र॒। आभि॑:। विश्वा॑:। अ॒भि॒ऽयुज॑:। विषू॑ची:। आर्या॑य। विश॑:। अव॑। ता॒रि॒:। दासी॑:॥ २॥**

**पदार्थ:-(आभि:)** रक्षाभिस्सेनाभिर्वा **(स्पृध:)** सङ्ग्रामान् **(मिथती:)** शत्रुसेना: हिंसन्ती: **(अरिषण्यन्)** अहिंसन् **(अमित्रस्य)** शत्रो: **(व्यथया)** पीडय। अत्र **संहितायामि**ति दीर्घ:। **(मन्युम्)** क्रोधम् **(इन्द्र)** सेनाध्यक्ष **(आभि:)** रक्षाभि: सेनाभिर्वा **(विश्वा:)** समग्रा: **(अभियुज:)** या अभियुञ्जते ता: **(विषूची:)** व्याप्नुवती: **(आर्याय)** उत्तमाय जनाय **(विश:)** प्रजा: **(अव)** **(तारी:)** दु:खात्तारय **(दासी:)** सेविका:॥ २॥

**अन्वय:**-हे इन्द्र सेनेश! त्वमाभिर्मिथती: स्पृधोऽरिषण्यन्नमित्रस्य सेना मन्युं कृत्वा व्यथया। आभिरार्याय विश्वा अभियुजो विषूचीर्दासीर्विशोऽवतारी:॥ २॥

**भावार्थ:**-त एव सेनाध्यक्षा: सत्कर्तव्या ये स्वसेना: सुशिक्ष्य संरक्ष्य सत्कृत्य युद्धविद्यायां कुशलीकृत्य दस्यूनन्यायकारिण: शत्रूँश्च निवार्य भद्रा: प्रजा: सततं रक्षेयु:॥ २॥

**पदार्थ:**–हे **(इन्द्र)** सेना के स्वामी आप **(आभि:)** इन रक्षाओं वा सेनाओं से **(मिथती:)** शत्रुओं की सेनाओं का नाश करते हुए **(स्पृध:)** संग्रामों की **(अरिषण्यन्)** नहीं हिंसा करते हुए **(अमित्रस्य)** शत्रु की सेनाओं को **(मन्युम्)** क्रोध करके **(व्यथया)** पीड़ा दीजिये और **(आभि:)** इन रक्षा और सेनाओं से **(आर्याय)** उत्तम जन के लिये **(विश्वा:)** सम्पूर्ण **(अभियुज:)** अभियुक्त होने और **(विषूची:)** व्याप्त होने वाली **(दासी:)** सेविकाओं को और **(विश:)** प्रजाओं को **(अव, तारी:)** दु:ख से पार करिये॥ २॥

**भावार्थ:**-वे ही सेना के स्वामी सत्कार करने योग्य हैं, जो अपनी सेना को उत्तम प्रकार शिक्षा दें तथा उत्तम प्रकार रक्षा कर और सत्कार करके युद्धविद्या में चतुर करके डाकुओं और अन्यायकारी शत्रुओं को निवारण करके अच्छी प्रजाओं की निरन्तर रक्षा करें॥ २॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**इन्द्र॑ जा॒मय॑ उ॒त येऽजा॑मयोऽर्वाची॒नासो॑ व॒नुषो॑ युयु॒ज्रे।**

**त्वमे॑षां विथु॒रा शवां॑सि ज॒हि वृष्ण्या॑नि कृणु॒ही परा॑च:॥ ३॥**

**इन्द्र॑। जा॒मय॑:। उ॒त। ये। अजा॑मय:। अ॒र्वा॒ची॒नास॑:। व॒नुष॑:। यु॒यु॒ज्रे। त्वम्। ए॒षा॒म्। वि॒थु॒रा। शवां॑सि। ज॒हि। वृष्ण्या॑नि। कृ॒णु॒हि। परा॑च:॥ ३॥**

**पदार्थ:-(इन्द्र)** सेनेश **(जामय:)** पतिव्रता भार्या इव **(उत)** अपि **(ये)** **(अजामय:)** सपत्न्य इव शत्रव: **(अर्वाचीनास:)** इदानीन्तना: **(वनुष:)** संविभाजकान् **(युयुज्रे)** युञ्जन्ति **(त्वम्)** **(एषाम्)** **(विथुरा)**



www.9009.co.in

व्यथकानि (**शवांसि**) बलानि (**जहि**) (**वृष्ण्यानि**) बलिष्ठानि (**कृणुही**) अत्र **संहितायामि**ति दीर्घः। (**पराचः**) पराङ्मुखान्॥३॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! त्वं येऽर्वाचीनासो जामय इवोताजामयो वनुषो युयुज्रे एषां शत्रूणां विथुरा शवांसि त्वं जहि स्वसैन्यानि वृष्ण्यानि कृणुही शत्रून् पराचश्च॥३॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। त एव सचिवा उत्तमा ये धार्मिकीः प्रजाः पुत्रवद्रक्षन्ति दुष्टांश्च दण्डयन्ति स्वसैन्यानि वर्धयित्वा शत्रुसेनां पराजयन्ति॥३॥

**पदार्थः**–हे (**इन्द्र**) सेना के स्वामी (**त्वम्**) आप (**ये**) जो (**अर्वाचीनासः**) इस काल में हुए (**जामयः**) पतिव्रता स्त्रियों के सदृश और (**उत**) भी (**अजामयः**) सौतियाँ जैसे वैसे शत्रु जन (**वनुषः**) संविभाग करने वालों को (**युयुज्रे**) युक्त होते अर्थात् मिलते हैं (**एषाम्**) इन शत्रुओं की (**विथुरा**) पीड़ा देने वाली (**शवांसि**) सेनाओं को (**त्वम्**) आप (**जहि**) नष्ट कीजिये और अपनी सेनाओं को (**वृष्ण्यानि**) बलिष्ठ (**कृणुही**) करिये और शत्रुओं को (**पराचः**) पराङ्मुख कीजिये अर्थात् हटाइये॥३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। वे ही मन्त्री उत्तम हैं, जो धार्मिक प्रजाओं की पुत्र के सदृश रक्षा करते हैं और दुष्टों को दण्ड देते हैं और अपनी सेनाओं को बढ़ाय के शत्रुओं की सेना को पराजित करते हैं॥३॥

**पुना राजामात्याश्च किं कुर्युरित्याह॥**

फिर राजा और मन्त्रीजन क्या करें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**शूरो॑ वा॒ शूरं॑ वनते॒ शरी॑रैस्तनू॒रुचा॒ तरु॑षि॒ यत्कृ॒ण्वैते॑।**

**तो॒के वा॒ गोषु॒ तन॑ये॒ यद॒प्सु वि क्रन्द॑सी उ॒र्वरा॑सु॒ ब्रवै॑ते॥४॥**

**शूरः॑। वा॒। शूर॑म्। व॒न॒ते॒। शरी॑रैः। त॒नू॒ऽरुचा॑। तरु॑षि। यत्। कृ॒ण्वैते॒ इति॑। तो॒के। वा॒। गोषु॑। तन॑ये। यत्। अ॒प्ऽसु। वि। क्रन्द॑सी॒ इति॑। उ॒र्वरा॑सु। ब्रवै॑ते॒ इति॑॥४॥**

**पदार्थः**-(**शूरः**) (**वा**) (**शूरम्**) (**वनते**) सम्भजति (**शरीरैः**) (**तनूरुचा**) या तनूषु रुक् प्रीतिस्तया (**तरुषि**) दुःखात्तारके सङ्ग्रामे (**यत्**) (**कृण्वैते**) कुर्याताम् (**तोके**) सद्यो जातेऽपत्ये (**वा**) (**गोषु**) वाणीषु (**तनये**) सुकुमारे (**यत्**) (**अप्सु**) जलेषु (**वि**) (**क्रन्दसी**) क्रन्दमानौ विक्रोशन्तौ (**उर्वरासु**) पृथिव्यादिनिमित्तेषु (**ब्रवैते**) ब्रूयाताम्॥४॥

**अन्वयः**-हे राजजना! यथा शूरस्तनूरुचा शरीरैस्तरुषि शूरं वनते वा द्वौ यत्कृण्वैते क्रन्दसी सन्तौ यत्तोके तनय उर्वरासु गोषु वाप्सु वि ब्रवैते तथा यूयमपि भवत॥४॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यथा सङ्ग्रामे शूराः शूरान् विभज्य युध्यन्ति तथैव राजाऽमात्यांश्च श्रेष्ठानधमांश्च विभज्याऽधिकारेषु नियोज्याज्ञापयेद्यथा कृषिविद्यया कृषीवलान् बोधयेत् तथैव स्वसन्तानान् सुशिक्षया विद्याग्रहणाय ब्रह्मचर्ये प्रवर्त्तयेत्॥४॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-हे राजजनो! जैसे **(शूरः)** शूरवीर पुरुष **(तनूरुचा)** शरीरों में हुई प्रीति से और **(शरीरैः)** शरीरों से **(तरुषि)** दुःख से पार करने वाले सङ्ग्राम में **(शूरम्)** शूरवीर जन का **(वनते)** आदर करता है **(वा)** वा दोनों **(यत्)** जिसको **(कृण्वैते)** करें और **(क्रन्दसी)** क्रोशते हुए **(यत्)** जो **(तोके)** शीघ्र उत्पन्न हुए **(तनये)** सुकुमार बालक के होने पर **(उर्वरासु)** पृथिवी आदि के कारणों में **(गोषु)** वाणियों में **(वा)** अथवा **(अप्सु)** जलों में **(वि, ब्रवैते)** कहें, वैसे आप लोग भी हूजिये॥४॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जैसे सङ्ग्राम में शूरजन शूरवीरों का विभाग करके युद्ध करते हैं, वैसे ही राजा और अमात्य श्रेष्ठ और अधमों का विभाग करके अधिकारों में युक्त करके आज्ञा देवें और जैसे खेती की विद्या से खेतीहारों को जनावें, वैसे ही अपने सन्तानों को उत्तम शिक्षा से विद्या ग्रहण के लिये ब्रह्मचर्य में प्रवृत्त करावें॥४॥

**पुनः स राजा कीदृशो भवेदित्याह॥**

फिर वह राजा कैसा हो, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**नहि त्वा शूरो न तुरो न धृष्णुर्न त्वा योधो मन्यमानो युयोध।**

**इन्द्र नकिष्ट्वा प्रत्यस्त्येषां विश्वा जातान्यभ्यसि तानि॥५॥१९॥**

**नहि। त्वा। शूरः। न। तुरः। न। धृष्णुः। न। त्वा। योधः। मन्यमानः। युयोध। इन्द्र। नकिः। त्वा। प्रति। अस्ति। एषाम्। विश्वा। जातानि। अभि। असि। तानि॥५॥**

**पदार्थः**-**(नहि)** निषेधे **(त्वा)** त्वाम् **(शूरः)** **(न)** **(तुरः)** हिंसकः शीघ्रकारी **(न)** **(धृष्णुः)** धृष्टः **(न)** **(त्वा)** त्वाम् **(योधः)** युद्धकर्ता **(मन्यमानः)** अभिमानी सन् **(युयोध)** युद्ध्येत् **(इन्द्र)** सेनापते **(नकिः)** निषेधे **(त्वा)** त्वाम् **(प्रति)** **(अस्ति)** **(एषाम्)** **(विश्वा)** सर्वाणि **(जातानि)** प्रसिद्धानि **(अभि)** **(असि)** **(तानि)**॥५॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! यथा त्वा मन्यमानश्शूरो त्वा नहि युयोध न तुरो न धृष्णुर्न योधो त्वाभि युयोध त्वा प्रति कोऽपि नकिरस्ति एषां यानि विश्वा जातानि बलादीनि सन्ति यतस्तानि त्वं जित्वा विजयमानोऽसि तस्मात् प्रशंसां लभसे॥५॥

**भावार्थः**-राज्ञा राजपुरुषैर्विशेषतः सेनाजनैरीदृशं बलं विज्ञानं च वर्त्तनीयं येन कोऽपि योद्धुं नेच्छेत्॥५॥

**पदार्थः**-हे **(इन्द्र)** सेना के स्वामिन्! जैसे **(त्वा)** आपको **(मन्यमानः)** मानता हुआ **(शूरः)** शूरवीर जन **(त्वा)** आपसे **(नहि)** नहीं **(युयोध)** युद्ध करता और **(न)** न **(तुरः)** हिंसा वा शीघ्र करने वाला **(न)** न **(धृष्णुः)** ढीठ **(न)** और न **(योधः)** प्रतियोधा **(त्वा)** आपसे **(अभि)** सब प्रकार से युद्ध करता है, किन्तु आपके **(प्रति)** प्रति कोई भी **(नकिः)** नहीं **(अस्ति)** है और **(एषाम्)** इन की जो **(विश्वा)**



www.9009.co.in

सम्पूर्ण **(जातानि)** प्रसिद्ध सेना हैं, जिस कारण **(तानि)** उनको आप जीत कर जीतते हुए **(असि)** हैं, इससे प्रशंसा को प्राप्त होते हैं॥५॥

**भावार्थः**-राजा और राजपुरुषों को चाहिए कि विशेष करके सेनाजनों से ऐसा पराक्रम और विज्ञान बढ़ावें, जिससे कोई भी युद्ध करने की इच्छा न करे॥५॥

**पुनस्स राजा किं कुर्यादित्याह॥**

फिर वह राजा क्या करे, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**स पत्यत उभयोर्नृम्णमयोर्यदी वेधसः समिथे हवन्ते।**

**वृत्रे वा महो नृवति क्षये वा व्यचस्वन्ता यदि वितन्तसैते॥६॥**

**सः। पत्यते। उभयोः। नृम्णम्। अयोः। यदि। वेधसः। सम्ऽइथे। हवन्ते। वृत्रे। वा। महः। नृऽवति। क्षये। वा। व्यचस्वन्ता। यदि। वितन्तसैते इति॥६॥**

**पदार्थः-(सः) (पत्यते)** पतिरिवाचरति **(उभयोः)** द्वयोः प्रजासेनयोः **(नृम्णम्)** नरा रमन्ते यस्मिंस्तद्धनम् **(अयोः)** वियोजय संयोजय वा **(यदी)** अत्र **निपातस्य चे**ति दीर्घः। **(वेधसः)** मेधाविनः **(समिथे)** सङ्ग्रामे। **समिथ इति सङ्ग्रामनामसु पठितम्।** (निघं०२.१७) **(हवन्ते)** स्पर्द्धन्ते **(वृत्रे)** धने **(वा)** **(महः)** महति **(नृवति)** प्रशंसिता नरा विद्यन्ते यस्मिंस्तस्मिन् **(क्षये)** गृहे **(वा)** **(व्यचस्वन्ता)** व्याप्नुवन्तौ **(यदि)** **(वितन्तसैते)** भृशं युध्येताम्॥६॥

**अन्वयः**-हे राजन्! यो भवानुभयोर्मध्ये पत्यते स त्वं यदी नृम्णमयोः शूरवीरो वृत्रे वा महो नृवति क्षये व्यचस्वन्ता सन्तौ वितन्तसैते तर्ह्युभयोर्मध्य इतरो विजयमाप्नुयात्। यदि वा ये वेधसः समिथे हवन्ते तेऽवश्यं विजयमाप्नुवन्ति॥६॥

**भावार्थः**-यो राजा पक्षपातं विहाय शत्रुमित्रयोः सत्यं न्यायं करोति सर्वेष्वधिकारेषु धार्मिकान् धीमतो रक्षति सर्वथा सेनायां कुलीनान् दृढान् राजभक्तान्नियोजयति स एव सर्वदा विजयी भवति॥६॥

**पदार्थः**-हे राजन्! जो आप **(उभयोः)** दोनों अर्थात् प्रजा और सेना के मध्य में **(पत्यते)** स्वामी के सदृश आचरण करते हो **(सः)** वह आप **(यदी)** यदि **(नृम्णम्)** मनुष्य रमते हैं जिसमें उस धन को **(अयोः)** मिलावें वा अलग करें और [शूरवीर] **(वृत्रे)** धन **(वा)** वा **(महः)** बड़े **(नृवति)** प्रशंसायुक्त नर विद्यमान जिसमें उस **(क्षये)** गृह में **(व्यचस्वन्ता)** व्याप्त होने वाले [होते हुए] **(वितन्तसैते)** अत्यन्त युद्ध करें तो दोनों अर्थात् प्रजा और सेना के मध्य में एक विजय को प्राप्त होवे और **(यदि, वा)** अथवा जो **(वेधसः)** बुद्धिमान् के **(समिथे)** सङ्ग्राम में **(हवन्ते)** स्पर्द्धा करते हैं, वे अवश्य विजय को प्राप्त होते हैं॥६॥



www.9009.co.in

**भावार्थ:**-जो राजा पक्षपात का त्याग करके शत्रु और मित्र का सत्य न्याय करता है और सब अधिकारों में धार्मिक, बुद्धिमानों जनों को रखता है और सब प्रकार से सेना में कुलीन, दृढ़ राजभक्तों को नियुक्त करता है, वही सर्वदा विजयी होता है॥६॥

**पुना राजा किं कुर्यादित्याह॥**

फिर राजा क्या करे, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अध स्मा ते चर्षणयो यदेजानिन्द्र त्रातोत भवा वरूता।**

**अस्माकासो ये नृतमासो अर्य इन्द्र सूरयो दधिरे पुरो नः॥७॥**

**अध। स्म। ते। चर्षणयः। यत्। एजान्। इन्द्र। त्राता। उत। भव। वरूता। अस्माकासः। ये। नृऽतमासः। अर्यः। इन्द्र। सूरयः। दधिरे। पुरः। नः॥७॥**

**पदार्थ:-(अध)** अनन्तरम् **(स्मा)** एव। अत्र **निपातस्य चे**ति दीर्घः। **(ते)** तव **(चर्षणयः)** सर्वव्यवहारविचक्षणा मनुष्याः **(यत्)** **(एजान्)** भीरून् कम्पकान् **(इन्द्र)** परमैश्वर्यप्रद राजन् **(त्राता)** रक्षकः **(उत)** अपि **(भव)** अत्र **द्व्यचोऽतस्तिङ** इति दीर्घः। **(वरूता)** श्रेष्ठः **(अस्माकासः)** अस्मदीयाः **(ये)** **(नृतमासः)** अतिशयेन नायकाः **(अर्यः)** ईश्वरो वा स्वामी **(इन्द्र)** दुष्टानां विदारक **(सूरयः)** विपश्चितः **(दधिरे)** दधतु **(पुरः)** नगराणि **(नः)** अस्माकम्॥७॥

**अन्वय:**-हे इन्द्र! ये तेऽस्माकासो नृतमासः सूरयश्चर्षणयो नः पुरो दधिरे तेषामर्यः सन्नध त्राता भव। हे इन्द्र! यत्त्वमेजान् कुर्या उत वरूता स्मा भव॥७॥

**भावार्थ:**-हे राजन्! विश्वस्तान् कुलीनान् मूलराज्ये भवानस्य राष्ट्रस्य सेनायाश्च मध्ये रक्षायै युञ्जीयाः तेषां रक्षां सततं कुर्याः॥७॥

**पदार्थ:**-हे **(इन्द्र)** अत्यन्त ऐश्वर्य के देने वाले राजन्! **(ये)** जो **(ते)** आपके **(अस्माकासः)** हमारे **(नृतमासः)** अतिशय मुखिया और **(सूरयः)** विद्वान् जन **(चर्षणयः)** सम्पूर्ण व्यवहारों में चतुर मनुष्य **(नः)** हम लोगों के **(पुरः)** नगरों को **(दधिरे)** धारण करें और उनके **(अर्यः)** स्वामी होते हुए **(अध)** अनन्तर **(त्राता)** रक्षा करने वाले **(भव)** हूजिये ओर हे **(इन्द्र)** दुष्टों के नाश करने वाले! **(यत्)** जिससे आप **(एजान्)** भयभीतों को कम्पाने वाले करिये और **(उत)** भी **(वरूता)** श्रेष्ठ **(स्मा)** ही हूजिये॥७॥

**भावार्थ:**-हे राजन्! विश्वासयुक्त, कुलीन, मुख्य राज्य में हुए जनों को इस राज्य और सेना के मध्य में रक्षा के निमित्त नियुक्त करिये और उनकी रक्षा निरन्तर करिये॥७॥

**पुनः स राजा किं कुर्यादित्याह॥**

फिर वह राजा क्या करे, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अनु ते दायि मह इन्द्रियाय सत्रा ते विश्वमनु वृत्रहत्ये।**

**अनु क्षत्रमनु सहो यजत्रेन्द्र देवेभिरनु ते नृषह्ये॥८॥**



www.9009.co.in

**अनु। ते। दायि। महे। इन्द्रियाय। सत्रा। ते। विश्वम्। अनु। वृत्रऽहत्ये। अनु। क्षत्रम्। अनु। सहः। यजत्र। इन्द्र। देवेभिः। अनु। ते। नृऽसह्ये॥८॥**

**पदार्थः**-(**अनु**) (**ते**) तव (**दायि**) दीयते (**महे**) महत् (**इन्द्रियाय**) धनाय (**सत्रा**) सत्येन (**ते**) तव (**विश्वम्**) सर्वं जगत् (**अनु**) (**वृत्रहत्ये**) मेघहननमिव सङ्ग्रामे (**अनु**) (**क्षत्रम्**) राज्यं धनं वा (**अनु**) (**सहः**) बलम् (**यजत्र**) पूजनीयतम (**इन्द्र**) शत्रुविदारक राजन् (**देवेभिः**) विद्वद्भिः सह (**अनु**) (**ते**) तव (**नृषह्ये**) नृभिः सोढव्ये सङ्ग्रामे॥८॥

**अन्वयः**-हे यजत्रेन्द्र! त्वया नृषह्ये देवेभिस्सह महेऽनुदायि त इन्द्रियाय ते सत्रा विश्वमनु दायि वृत्रहत्ये क्षत्रमनुदायि सहोऽनुदायि ते नृषह्ये सुखमनुदायि॥८॥

**भावार्थः**-हे राजन्य! त्वमुत्तमानि कर्माणि कुर्यास्तैरनुकूलः संस्तान् धनादिभिः सततं सत्कुर्याः सदैव सत्योपदेशकानां विदुषां सङ्गेनाऽखिलां राजविद्यां विज्ञाय सततं प्रचारय॥८॥

**पदार्थः**-हे (**यजत्र**) अत्यन्त श्रेष्ठ (**इन्द्र**) शत्रुओं के नाश करने वाले राजन्! आपको चाहिये कि (**नृषह्ये**) मनुष्यों से सहने योग्य संग्राम में (**देवेभिः**) विद्वानों के साथ (**महे**) बृहत् को (**अनु, दायि**) देवें और (**ते**) आपके (**इन्द्रियाय**) धन के लिये (**ते**) आपके (**सत्रा**) सत्य से (**विश्वम्**) सम्पूर्ण जगत् को (**अनु**) पश्चात् देवें और (**वृत्रहत्ये**) मेघ के नाश करने के समान सङ्ग्राम में (**क्षत्रम्**) राज्य वा धन को (**अनु**) पश्चात् देवें और (**सहः**) बल को (**अनु**) पश्चात् देवें और (**ते**) आपके मनुष्यों से सहने योग्य सङ्ग्राम में सुख को (**अनु**) पश्चात् देवें॥८॥

**भावार्थः**-हे क्षत्रियकुल में उत्पन्न हुए जन! आप उत्तम कर्मों को करिये और उनके साथ अनुकूल हुए उनका धन आदि से निरन्तर सत्कार करिये और सदा ही सत्य के उपदेशक विद्वानों के सङ्ग से सम्पूर्ण राजविद्या को जानकर निरन्तर प्रचार करिये॥८॥

**पुनः स राजा किं कुर्यादित्याह॥**

फिर वह राजा क्या करे, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**एवा नः स्पृधः समजा समत्स्विन्द्र रारन्धि मिथतीरदेवीः।**

**विद्याम वस्तोरवसा गृणन्तो भरद्वाजा उत त इन्द्र नूनम्॥९॥२०॥**

**एव। नः। स्पृधः। सम्। अज। समत्ऽसु। इन्द्र। ररन्धि। मिथतीः। अदेवीः। विद्याम। वस्तोः। अवसा। गृणन्तः। भरत्ऽवाजाः। उत। ते। इन्द्र। नूनम्॥९॥**

**पदार्थः**-(**एवा**) अत्र **निपातस्य चे**ति दीर्घः। (**नः**) अस्मान् (**स्पृधः**) स्पर्द्धमानान् (**सम्**) (**अजा**) विज्ञापय। अत्र **द्व्यचोऽतस्तिङ** इति दीर्घः। (**समत्सु**) सङ्ग्रामेषु (**इन्द्र**) शत्रुबलविदारक (**रारन्धि**) रन्धय हिंधि। अत्र **तुजादीनामि**त्यभ्यासदैर्घ्यम्। (**मिथतीः**) हिंसतीः (**अदेवीः**) अदिव्याः (**विद्याम**) (**वस्तोः**)



www.9009.co.in

दिवसस्य मध्ये **(अवसा)** रक्षणादिना **(गृणन्त:)** स्तुवन्तः **(भरद्वाजा:)** धृतशुद्धविज्ञानाः **(उत)** **(ते)** तव **(इन्द्र)** सर्वसुखप्रद **(नूनम्)** निश्चयेन॥९॥

**अन्वय:**-हे इन्द्र! त्वं स्पृधो नोऽस्मान्त्समत्स्वेवा समजाऽदेवीर्मिथतीः शत्रुसेनाः समत्सु रारन्धि। हे इन्द्र! येन ते तवाऽवसा वस्तोर्नूनं गृणन्त उत भरद्वाजा वयं विजयं विद्याम॥९॥

**भावार्थ:**-यो राजा सुभटान् वीरान् पुरस्तादेव सुशिक्ष्य युद्धेषु प्रेरयति तं सर्वथा रक्षकं सर्वे शूरा आश्रयन्तीति॥९॥

अत्रेन्द्रशूरवीरसेनापतिराजकृत्यवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति पञ्चविंशतितमं सूक्तं विंशो वर्गश्च समाप्त:॥**

**पदार्थ:**-हे **(इन्द्र)** सम्पूर्ण सुखों के देने वाले! आप **(स्पृध:)** ईर्ष्या करते हुए **(न:)** हम लोगों को **(समत्सु)** संग्रामों में **(एवा)** ही **(सम्, अजा)** विशेष करके जनाइये और **(अदेवी:)** श्रेष्ठ गुणों से नहीं विशिष्ट **(मिथती:)** नाश करती हुई शत्रुओं की सेनाओं को सङ्ग्रामों में **(रारन्धि)** नष्ट करिये और हे **(इन्द्र)** शत्रुओं के बल को दूर करने वाले! **(ते)** आपकी **(अवसा)** रक्षा आदि से **(वस्तो:)** दिन के मध्य में **(नूनम्)** निश्चय से **(गृणन्त:)** स्तुति करते हुए **(उत)** भी **(भरद्वाजा:)** शुद्ध विज्ञान को धारण किये हुए हम लोग विजय को **(विद्याम)** जानें॥९॥

**भावार्थ:**-जो राजा अच्छे योद्धा वीरों को प्रथम ही उत्तम प्रकार शिक्षा देकर युद्धों में प्रेरणा करता है, उस सब प्रकार से रक्षा करने वाले राजा का सब शूरवीर जन आश्रय करते **[हैं]**॥९॥

इस सूक्त में इन्द्र, शूरवीर, सेनापति और राजा के कृत्य का वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये।

**यह पच्चीसवाँ सूक्त और बीसवाँ वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

**अथाष्टर्चस्य षड्विंशतितमस्य सूक्तस्य भरद्वाजो बार्हस्पत्य ऋषिः। इन्द्रो देवता। १ पङ्क्तिः। २, ४, ६ भुरिक्पङ्क्तिः। ३ निचृत्पङ्क्तिः। ५ स्वराट्पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः। ७ त्रिष्टुप्। ८ निचृत् त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः॥**

***अथ राजा प्रजाजनाः परस्परं कथं वर्तेरन्नित्याह॥***

अब आठ ऋचावाले छब्बीसवें सूक्त का प्रारम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में राजा और प्रजाजन परस्पर कैसा बर्ताव करें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**श्रुधी न इन्द्र ह्वयामसि त्वा महो वाजस्य सातौ वावृषाणाः।**
**सं यद्विशोऽयन्त शूरसाता उग्रं नोऽवः पार्ये अहन् दाः॥ १॥**

**श्रुधि। नः। इन्द्र। ह्वयामसि। त्वा। महः। वाजस्य। सातौ। वावृषाणाः। सम्। यत्। विशः। अयन्त। शूरऽसातौ। उग्रम्। नः। अवः। पार्ये। अहन्। दाः॥ १॥**

**पदार्थः-(श्रुधि)** शृणु। अत्र **द्व्यचोऽतस्तिङ** इति दीर्घः। **(नः)** अस्मान् **(इन्द्र)** राजन् **(ह्वयामसि)** प्रज्ञापयेम **(त्वा)** **(महः)** महतः **(वाजस्य)** वेगादिगुणयुक्तस्य **(सातौ)** शूराणां सातिर्विभागो यस्मिंस्तस्मिन्त्संग्रामे **(वावृषाणाः)** वृषं बलं कुर्वाणाः। अत्र **तुजादीनामि**त्यभ्यासदीर्घः। **(सम्)** **(यत्)** यतः **(विशः)** मनुष्यादिप्रजाः **(अयन्त)** प्राप्नुवन्ति **(शूरसातौ)** शूराणां सातिर्विभागो यस्मिंस्तस्मिन्त्संग्रामे **(उग्रम्)** तेजस्विनम् **(नः)** अस्मभ्यम् **(अवः)** रक्षणम् **(पार्ये)** पालयितव्ये **(अहन्)** दिने **(दाः)** देहि॥ १॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! वावृषाणा विशो वयं महो वाजस्य सातौ यत्त्वा ह्वयामसि तत्त्वं नो वचांसि श्रुधी ये शूरसातौ नः समयन्त तत्र पार्येऽहन्नुग्रमवो दाः॥ १॥

**भावार्थः**-राज्ञामिदमतिसमुचितमस्ति यत्प्रजा ब्रूयात् तद्ध्यानेन शृणुयुः। यतो राजप्रजाजनानां विरोधो न स्यात् प्रत्यहं सुखं वर्धेत॥ १॥

**पदार्थः**-हे **(इन्द्र)** राजन्! **(वावृषाणाः)** बल को करते हुए **(विशः)** मनुष्य आदि प्रजा हम लोग **(महः)** बड़े **(वाजस्य)** वेग आदि गुणों से युक्त के **(सातौ)** शूरों का विभाग जिसमें उस संग्राम में **(यत्)** जिससे **(त्वा)** आपको **(ह्वयामसि)** जनावें, जिससे आप **(नः)** हम लोगों के लिये वचनों को **(श्रुधी)** सुनिये और जो **(शूरसातौ)** शूरों का विभाग जिसमें उस संग्राम में **(नः)** हम लोगों को **(सम्, अयन्त)** प्राप्त होते हैं, उस **(पार्ये)** पालन करने योग्य **(अहन्)** दिन में **(उग्रम्)** तेजस्वी को **(अवः)** रक्षण **(दाः)** दीजिये॥ १॥

**भावार्थः**-राजाओं को यह अतियोग्य है कि **[**जो**]** प्रजा कहे उसको ध्यान से सुनें, जिससे राजा और प्रजाजनों का विरोध न होवे और प्रतिदिन सुख बढ़े॥ १॥



www.9009.co.in

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**त्वां वाजी हवते वाजिनेयो महो वाजस्य गध्यस्य सातौ।**

**त्वां वृत्रेष्विन्द्र सत्पतिं तरुत्रं त्वां चष्टे मुष्टिहा गोषु युध्यन्॥ २॥**

**त्वाम्। वाजी। हवते। वाजिनेयः। महः। वाजस्य। गध्यस्य। सातौ। त्वाम्। वृत्रेषु। इन्द्र। सत्ऽपतिम्। तरुत्रम्। त्वाम्। चष्टे। मुष्टिऽहा। गोषु। युध्यन्॥ २॥**

**पदार्थः-(त्वाम्)** राजानम् **(वाजी)** वेगवान् ज्ञानी जनः **(हवते)** श्रावयेत् **(वाजिनेयः)** वाजिन्या ज्ञानवत्या अपत्यम् **(महः)** महान्तम् **(वाजस्य)** विज्ञानस्य **(गध्यस्य)** सर्वैः प्राप्तुं योग्यस्य **(सातौ)** संविभागे **(त्वाम्) (वृत्रेषु)** धनेषु **(इन्द्र)** दुष्टानां विनाशक **(सत्पतिम्)** सतां पात्रम् **(तरुत्रम्)** तारकम् **(त्वाम्) (चष्टे)** कथयामि **(मुष्टिहा)** यो मुष्ट्या हन्ति **(गोषु)** प्राप्तव्यासु भूमिषु **(युध्यन्)**॥ २॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! यथा वाजिनेयो वाजी गध्यस्य वाजस्य सातौ त्वां हवते तथा वृत्रेषु सत्पतिं त्वां महश्चष्टे गोषु युध्यन् मुष्टिहा घ्नन् वृत्रेषु त्वां तरुत्रं चष्टे॥ २॥

**भावार्थः-**अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे राजन्! यत्र प्रजाजना त्वामुपस्थातुमिच्छन्ति तत्र तत्र त्वमुपस्थितो भव॥ २॥

**पदार्थः**-हे **(इन्द्र)** दुष्टों के नाश करने वाले जैसे **(वाजिनेयः)** ज्ञानवती की सन्तान और **(वाजी)** वेगयुक्त ज्ञानीजन **(गध्यस्य)** सबसे प्राप्त होने योग्य **(वाजस्य)** विज्ञान के **(सातौ)** उत्तम प्रकार विभाग में **(त्वाम्)** आपको **(हवते)** सुनावे, वैसे **(वृत्रेषु)** धनों में **(सत्पतिम्)** श्रेष्ठों के पालन करने वाले **(त्वाम्)** आपको मैं **(महः)** बड़ा **(चष्टे)** कहता हूँ और **(गोषु)** प्राप्त होने योग्य भूमियों में **(युध्यन्)** युद्ध करता हुआ **(मुष्टिहा)** मुष्टि से मारने वाला मारता हुआ **[(वृत्रेषु)]** धनों में **(त्वाम्)** आपको मैं **(तरुत्रम्)** पार करने वाला कहता हूँ॥ २॥

**भावार्थः-**इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे राजन्! जहाँ-जहाँ प्रजाजन आपको प्राप्त होने की इच्छा करते हैं, वहाँ-वहाँ आप उपस्थित हूजिये॥ २॥

**पुना राजा किं कुर्यादित्याह॥**

फिर राजा क्या करे, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**त्वं कविं चोदयोऽर्कसातौ त्वं कुत्साय शुष्णं दाशुषे वर्क्।**

**त्वं शिरो अमर्मणः पराहन्नतिथिग्वाय शंस्यं करिष्यन्॥ ३॥**

**त्वम्। कविम्। चोदयः। अर्कऽसातौ। त्वम्। कुत्साय। शुष्णम्। दाशुषे। वर्क्। त्वम्। शिरः। अमर्मणः। परा। अहन्। अतिथिऽग्वाय। शंस्यम्। करिष्यन्॥ ३॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**त्वम्**) (**कविम्**) विद्वांसम् (**चोदयः**) प्रेरय (**अर्कसातौ**) अन्नादिविभागे (**त्वम्**) (**कुत्साय**) वज्राय (**शुष्णम्**) बलम् (**दाशुषे**) दात्रे (**वर्क्**) छिनत्सि (**त्वम्**) (**शिरः**) (**अमर्मणः**) अविद्यमानानि मर्माणि यस्मिँस्तस्य (**परा**) (**अहन्**) दूरीकुर्याः (**अतिथिग्वाय**) योऽतिथीनागच्छति तस्मै (**शंस्यम्**) प्रशंसनीयं कर्म (**करिष्यन्**)॥३॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र राजँस्त्वमर्कसातौ कविं चोदयस्त्वं कुत्साय दाशुषे च शुष्णं वर्क् त्वममर्मणः शिरः पराऽहन्, अतिथिग्वाय शंस्यं करिष्यन् वर्तसे तस्मात् सत्कर्तव्योऽसि॥३॥

**भावार्थः**-राजा विद्याविनयादिशुभगुणान् राजकार्येषु योजयेत्, उन्नतिञ्च करिष्यन् विद्यादीनां दाता भूत्वा प्रशंसां प्राप्नुयात्॥३॥

**पदार्थः**-हे तेजस्वि राजन्! (**त्वम्**) आप (**अर्कसातौ**) अन्न आदि के विभाग में (**कविम्**) विद्वान् की (**चोदयः**) प्रेरणा करिये और (**त्वम्**) आप (**कुत्साय**) वज्र के लिये और (**दाशुषे**) दान करने वाले के लिये (**शुष्णम्**) बल को (**वर्क्**) काटते हो और (**त्वम्**) आप (**अमर्मणः**) नहीं विद्यमान मर्म जिसमें उसके (**शिरः**) शिर को (**परा, अहन्**) दूर करिये और (**अतिथिग्वाय**) अतिथियों को प्राप्त होने वाले के लिये (**शंस्यम्**) प्रशंसा करने योग्य कर्म को (**करिष्यन्**) करते हुए वर्तमान हो, इससे आप सत्कार करने योग्य हो॥३॥

**भावार्थः**-राजा विद्या और विनय आदि श्रेष्ठ गुणों से युक्त जनों को राजकार्यों में युक्त करे और उन्नति को करता हुआ विद्या आदि का दाता होकर प्रशंसा को प्राप्त होवे॥३॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**त्वं रथं॒ प्र भ॑रो यो॒धमृ॒ष्वमावो॒ युध्य॑न्तं वृ॒ष॒भं दश॑द्युम्।**

**त्वं तुग्र॑ं वेत॒सवे॒ सचा॑ह॒न् त्वं तुजि॑ं गृ॒णन्त॑मिन्द्र तूतोः॥४॥**

**त्वम्। रथ॑म्। प्र। भ॒रः॒। यो॒धम्। ऋ॒ष्वम्। आव॑ः। युध्य॑न्तम्। वृ॒ष॒भम्। दश॑ऽद्युम्। त्वम्। तुग्र॑म्। वे॒त॒सवे॑। सचा॑। अ॒ह॒न्। त्वम्। तुजि॑म्। गृ॒णन्त॑म्। इ॒न्द्र॒। तू॒तो॒रिति॑ तूतोः॥४॥**

**पदार्थः**-(**त्वम्**) (**रथम्**) रमणीयं यानम् (**प्र**) (**भरः**) धर (**योधम्**) युद्धकर्तारम् (**ऋष्वम्**) महान्तम् (**आवः**) रक्ष (**युध्यन्तम्**) (**वृषभम्**) बलिष्ठम् (**दशद्युम्**) दशभिरङ्गुलिभिः प्रकाशप्रदम् (**त्वम्**) (**तुग्रम्**) तेजस्विनम् (**वेतसवे**) व्याप्तैश्वर्ये (**सचा**) सम्बन्धेन (**अहन्**) (**त्वम्**) (**तुजिम्**) बलिष्ठम् (**गृणन्तम्**) स्तुवन्तम् (**इन्द्र**) सेनाध्यक्ष (**तूतोः**) वर्धय॥४॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! त्वं रथं प्र भरो वृषभं दशद्युं योधं युध्यन्तमृष्वमावस्त्वं वेतसवे सचा तुग्रमहंस्त्वं गृणन्तं तुजिं तूतोः॥४॥

**भावार्थः**-यो राजा रथं युद्धकुशलान् वीराँश्च वर्धयति स महत्सुखमाप्नोति॥२॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-हे **(इन्द्र)** सेना के स्वामिन्! **(त्वम्)** आप **(रथम्)** सुन्दर वाहन को **(प्र, भरः)** धारण करिये तथा **(वृषभम्)** बलिष्ठ **(दशद्युम्)** दश अंगुलियों से प्रकाश देने वाले और **(योधम्)** युद्ध करने वाले से **(युध्यन्तम्)** युद्ध करते हुए **(ऋष्वम्)** बड़े की **(आवः)** रक्षा करिये और **(त्वम्)** आप **(वेतसवे)** व्याप्त ऐश्वर्य वाले में **(सचा)** सम्बन्ध से **(तुग्रम्)** तेजस्वी को **(अहन्)** दूर करिये और **(त्वम्)** आप **(गृणन्तम्)** स्तुति करते हुए **(तुजिम्)** बलिष्ठ को **(तूतोः)** बढ़ाइये॥४॥

**भावार्थः**-जो राजा रथ और युद्धकुशल वीरों को बढ़ाता है, वह अत्यन्त सुख को प्राप्त होता है॥४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**त्वं तदुक्थमिन्द्र बर्हणा कः प्र यच्छता सहस्रा शूर दर्षि।**

**अव गिरेर्दासं शम्बरं हन् प्रावो दिवोदासं चित्राभिरूती॥५॥२१॥**

**त्वम्। तत्। उक्थम्। इन्द्र। बर्हणा। करिति कः। प्र। यत्। शता। सहस्रा। शूर। दर्षि। अव। गिरेः। दासम्। शम्बरम्। हन्। प्र। आवः। दिवःऽदासम्। चित्राभिः। ऊती॥५॥**

**पदार्थः**-**(त्वम्)** **(तत्)** **(उक्थम्)** प्रशंसनीयं वचनम् **(इन्द्र)** सुखप्रद **(बर्हणा)** वर्धनेन **(कः)** कुर्याः **(प्र)** **(यत्)** यतः **(शता)** शतानि **(सहस्रा)** सहस्राणि **(शूर)** शत्रूणां हिंसक **(दर्षि)** विदृणासि **(अव)** **(गिरेः)** मेघस्य **(दासम्)** सेवकम् **(शम्बरम्)** शङ्करम् **(हन्)** हंसि **(प्र)** **(आवः)** रक्ष **(दिवोदासम्)** प्रकाशवज्ञातदानशीलम् **(चित्राभिः)** अद्भुताभिः **(ऊती)** रक्षाभिः॥५॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र राजन्! यद्यतस्त्वं चित्राभिरूती तदुक्थं बर्हणा कः। हे शूर! शता सहस्रा प्र दर्षि गिरेर्दासं शम्बरमव हन्त्सूर्य इव हंसि तथा दिवोदासं प्रावः॥५॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे राजन्! भवान्त्सर्वदा प्रजावर्धनं दुष्टनिक्रन्दनं विद्वत्सेवां च करोतु यतोऽसङ्ख्यं सुखं स्यात्॥५॥

**पदार्थः**-हे **(इन्द्र)** सुख के देने वाले राजन्! **(यत्)** जिससे **(त्वम्)** आप **(चित्राभिः)** अद्भुत **(ऊती)** रक्षाओं से **(तत्)** उस **(उक्थम्)** प्रशंसनीय वचन को **(बर्हणा)** बढ़ने से **(कः)** करें और हे **(शूर)** शत्रुओं के नाश करने वाले! **(शता)** सैकड़ों और **(सहस्रा)** हजारों का **(प्र, दर्षि)** नाश करते हो और **(गिरेः)** मेघ के **(दासम्)** सेवक और **(शम्बरम्)** कल्याण करने वाले का **(अव, हन्)** और सूर्य जैसे वैसे नाश करते हो वह आप **(दिवोदासम्)** प्रकाश के समान उत्पन्न दानशील अर्थात् दान देने वाले की **(प्र, आवः)** रक्षा करो॥५॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे राजन्! आप सर्वदा प्रजा की वृद्धि, दुष्टों का नाश और विद्वानों की सेवा करो, जिससे असङ्ख्य सुख होवे॥५॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**



www.9009.co.in

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**त्वं श्र॒द्धाभि॒र्मन्दसा॒नः सोमै॑र्द॒भीत॑ये॒ चुमु॑रिमिन्द्र सिष्वप्।**

**त्वं र॒जिं पिठी॑नसे दश॒स्यन् ष॒ष्टिं स॒हस्रा॒ शच्या॒ सचा॑हन्॥६॥**

**त्वम्। श्र॒द्धाभिः॑। म॒न्द॒सा॒नः। सोमैः॑। द॒भीत॑ये। चुमु॑रिम्। इ॒न्द्र॒। सि॒स्व॒प्। त्वम्। र॒जिम्। पिठी॑नसे। द॒श॒स्यन्। ष॒ष्टिम्। स॒हस्रा॑। शच्या॑। सचा॑। अ॒ह॒न्॥६॥**

**पदार्थः**-(**त्वम्**) (**श्रद्धाभिः**) सत्यस्य धारणाभिः (**मन्दसानः**) आनन्दन् (**सोमैः**) ऐश्वर्यैः (**दभीतये**) दुःखहिंसनाय (**चुमुरिम्**) अत्तारम् (**इन्द्र**) राजन् (**सिष्वप्**) स्वापय (**त्वम्**) (**रजिम्**) (**पिठीनसे**) पिठीव नासिका यस्य तस्मै (**दशस्यन्**) प्रयच्छन् (**षष्टिम्**) (**सहस्रा**) सहस्राणि (**शच्या**) प्रज्ञया कर्मणा वा (**सचा**) (**अहन्**) हन्ति॥६॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र राजँस्त्वं श्रद्धाभिः सोमैर्मन्दसानो दभीतये चुमुरिं सिष्वप् त्वं शच्या सचा पिठीनसे रजिं षष्टिं सहस्रा दशस्यन् यथा सूर्य्यो मेघमहँस्तथा शत्रून् जहि॥६॥

**भावार्थः**-हे राजन्त्सदैव पूर्णप्रीत्या न्यायेन च प्रजापालनं कुर्य्याः सहस्राणि धार्मिकान् विदुषोऽधिकारेषु संस्थाप्य कीर्तिं वर्धय॥६॥

**पदार्थः**-हे (**इन्द्र**) राजन्! (**त्वम्**) आप (**श्रद्धाभिः**) सत्य की धारणाओं से और (**सोमैः**) ऐश्वर्यों से (**मन्दसानः**) आनन्द करते हुए (**दभीतये**) दुःख के नाश के लिये (**चुमुरिम्**) भोजन करने वाले को (**सिष्वप्**) सुलाइये और (**त्वम्**) आप (**शच्या**) बुद्धि वा कर्म के (**सचा**) साथ (**पिठीनसे**) पिठी के सदृश नासिका जिसकी उसके लिये (**रजिम्**) पङ्क्ति (**षष्टिम्**) साठ (**सहस्रा**) हजार (**दशस्यन्**) देता हुआ जैसे सूर्य मेघ का (**अहन्**) नाश करता है, वैसे शत्रुओं का हनन कीजिये॥६॥

**भावार्थः**-हे राजन्! सदा ही पूर्ण प्रीति और न्याय से प्रजापालन करो और हजारों धार्मिक विद्वानों को अधिकारों में स्थापित करके यश बढ़ाओ॥६॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**अ॒हं च॒न तत्सू॒रिभि॑रानश्यां॒ तव॒ ज्याय॑ इन्द्र सु॒म्नमोज॑ः।**

**त्वया॒ यत्स्तव॑न्ते सधवीर वी॒रास्त्रि॒वरू॑थेन॒ नहु॑षा शविष्ठ॥७॥**

**अ॒हम्। च॒न। तत्। सू॒रिऽभिः॑। आ॒न॒श्या॒म्। तव॑। ज्याय॑ः। इ॒न्द्र॒। सु॒म्नम्। ओज॑ः। त्वया॑। यत्। स्तव॑न्ते। स॒ध॒ऽवी॒र॒। वी॒राः। त्रि॒ऽवरू॑थेन। नहु॑षा। श॒वि॒ष्ठ॒॥७॥**

**पदार्थः**-(**अहन्**) (**चन्**) अपि (**तत्**) (**सूरिभिः**) विद्वद्भिः सह (**आनश्याम्**) प्राप्नुयाम् (**तव**) (**ज्यायः**) प्रशस्यम् (**इन्द्र**) सुखप्रद (**सुम्नम्**) सुखम् (**ओजः**) पराक्रमः (**त्वया**) (**यत्**) (**स्तवन्ते**)



www.9009.co.in

प्रशंसन्ति **(सधवीर)** समानस्थाने वर्त्तमान वीरपुरुष **(वीराः)** **(त्रिवरूथेन)** त्रीणि त्रिविधानि शीतोष्णवर्षासुखकराणि वरूथानि गृहाणि यस्य तेन **(नहुषा)** मनुष्याः **(शविष्ठ)** बलिष्ठ॥७॥

**अन्वयः**-हे शविष्ठ सधवीरेन्द्र! वीरा नहुषा विद्वांसो यत्स्तवन्ते तत्त्रिवरूथेन त्वया सूरिभिश्च सहाऽहमानश्यां चनाऽपि तव यज्ज्यायः सुम्नमोजोऽस्ति तदानश्याम्॥७॥

**भावार्थः**-ये विदुषां सङ्गेन पुरुषार्थिनो भूत्वा प्रशंसनीयं धर्म्यं कर्म कुर्वन्ति ते बलिनो भूत्वोत्तमं सुखं लभन्ते॥७॥

**पदार्थः**-हे **(शविष्ठ)** बलिष्ठ और **(सधवीर)** तुल्य स्थान में वर्त्तमान वीर जन **(इन्द्र)** सुख के देने वाले! **(वीराः)** वीर **(नहुषा)** मनुष्य विद्वान् **(यत्)** जिसकी **(स्तवन्ते)** प्रशंसा करते हैं **(तत्)** उसको **(त्रिवरूथेन)** तीन प्रकार के शीत, उष्ण और वर्षा में सुखकारक गृह जिनके उन **(त्वया)** आपके और **(सूरिभिः)** विद्वानों के साथ **(अहम्)** मैं **(आनश्याम्)** प्राप्त होऊँ और **(चन)** भी **(तव)** आपका जो **(ज्यायः)** प्रशंसा करने योग्य **(सुम्नम्)** सुख और **(ओजः)** पराक्रम है, उसको प्राप्त होऊँ॥७॥

**भावार्थः**-जो विद्वानों के सङ्ग से पुरुषार्थी होकर प्रशंसा करने योग्य, धर्मयुक्त कर्म को करते हैं, वे बली होकर उत्तम सुख को प्राप्त होते हैं॥७॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**वयं ते अस्यामिन्द्र द्युम्नहूतौ सखायः स्याम महिन प्रेष्ठाः।**

**प्रातर्दनिः क्षत्रश्रीरस्तु श्रेष्ठो घने वृत्राणां सनये धनानाम्॥८॥२२॥**

**वयम्। ते। अस्याम्। इन्द्र। द्युम्नऽहूतौ। सखायः। स्याम। महिन। प्रेष्ठाः। प्रातर्दनिः। क्षत्रऽश्रीः। अस्तु। श्रेष्ठः। घने। वृत्राणाम्। सनये। धनानाम्॥८॥**

**पदार्थः**-**(वयम्)** **(ते)** तव **(अस्याम्)** **(इन्द्र)** सर्वसुखप्रद **(द्युम्नहूतौ)** द्युम्नेन धनेन यशसा वा हूतिराह्वानं यस्यां तस्याम् **(सखायः)** **(स्याम)** **(महिन)** महत्तम **(प्रेष्ठाः)** अतिशयेन प्रियाः **(प्रातर्दनिः)** प्रातःकाले दनिर्दानं यस्य **(क्षत्रश्रीः)** राज्यलक्ष्मीः **(अस्तु)** **(श्रेष्ठः)** अतिशयेन प्रशस्तः **(घने)** हनने **(वृत्राणाम्)** धर्मावरकाणाम् **(सनये)** विभागाय **(धनानाम्)**॥८॥

**अन्वयः**-हे महिनेन्द्र! वयं तेऽस्यां द्युम्नहूतौ प्रेष्ठाः सखायः स्याम। भवान् प्रातर्दनिर्वृत्राणां घने धनानां सनये श्रेष्ठः क्षत्रश्रीरस्तु॥८॥

**भावार्थः**-यो राजा गुणग्राही पुरुषार्थी श्रेष्ठानां पालको दुष्टानां निवर्त्तकः सर्वस्य मित्रं स्यात्तेन सह सज्जनैः सख्यं विधेयमिति॥८॥

अत्रेन्द्रपरीक्षकसभ्यराजप्रजाकृत्यर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति षड्विंशं सूक्तं द्वाविंशो वर्गश्च समाप्तः॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-हे **(महिन)** बड़े श्रेष्ठ **(इन्द्र)** सब के सुख देने वाले! **(वयम्)** हम लोग **(ते)** आपकी **(अस्याम्)** इस **(द्युम्नहूतौ)** धन वा यश से आह्वान जिसमें उसमें **(प्रेष्ठाः)** अतिशय प्रिय **(सखायः)** मित्र **(स्याम)** होवें और आप **(प्रातर्दनिः)** प्रातःकाल में देना जिनका वह **(वृत्राणाम्)** धर्म के आवरण करने वालों के **(घने)** नाश करने में **(धनानाम्)** धनों के **(सनये)** विभाग के लिये **(श्रेष्ठः)** अत्यन्त प्रशंसनीय **(क्षत्रश्रीः)** राज्यलक्ष्मीवान् **(अस्तु)** होवें॥८॥

**भावार्थः**-जो राजा गुणग्राही, पुरुषार्थी, श्रेष्ठ जनों का पालन करने और दुष्ट जनों का निवारण करने वाला तथा सबका मित्र होवे, उसके साथ सज्जनों को चाहिये कि मित्रता करें॥८॥

इस सूक्त में इन्द्र, परीक्षक, श्रेष्ठ, राजा और प्रजा के कृत्य का वर्णन होने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये।

**यह छब्बीसवाँ सूक्त और बाईसवाँ वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

**अथाष्टर्चस्य सप्तविंशतितमस्य सूक्तस्य भरद्वाजो बार्हस्पत्य ऋषिः। १-७ इन्द्रः। ८ अभ्यावर्त्तिनश्चायमानस्य दानस्तुतिर्देवता। १, २ स्वराट् पङ्क्तिःछन्दः। पञ्चमः स्वरः। ३, ४ निचृत्त्रिष्टुप्। ५, ७, ८ त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः। ६ ब्राह्मी उष्णिक् छन्दः।**

***अथात्र प्रश्नानाह॥***

अब आठ ऋचावाले सत्ताईसवें सूक्त का प्रारम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में प्रश्नों को कहते हैं॥

**किम॑स्य॒ मदे॒ किम्व॑स्य पी॒ताविन्द्रः॒ किम॑स्य स॒ख्ये च॑कार।**

**रणा॑ वा॒ ये नि॒षदि॒ किं ते अ॑स्य पु॒रा वि॑विद्रे॒ किमु॒ नूत॑नासः॥ १॥**

**किम्। अ॒स्य॒। मदे॑। किम्। ऊँ॒ इति॑। अ॒स्य॒। पी॒तौ। इन्द्रः॑। किम्। अ॒स्य॒। स॒ख्ये। च॒का॒र॒। रणाः॑। वा॒। ये। नि॒ऽसदि॑। किम्। ते। अ॒स्य॒। पु॒रा। वि॒वि॒द्रे॒। किम्। ऊँ॒ इति॑। नूत॑नासः॥ १॥**

**पदार्थः**-(**किम्**) (**अस्य**) (**मदे**) आनन्दे (**किम्**) (उ) (**अस्य**) (**पीतौ**) (**इन्द्रः**) दुःखविदारकः (**किम्**) (**अस्य**) (**सख्ये**) मित्रत्वे (**चकार**) (**रणाः**) रममाणाः (**वा**) (**ये**) (**निषदि**) (**किम्**) (**ते**) (**अस्य**) (**पुरा**) (**विविद्रे**) विदन्ति (**किम्**) (उ) (**नूतनासः**)॥१॥

**अन्वयः**-हे वैद्यराजेन्द्रोऽस्य मदे किं चकार। अस्य पीतौ किमु चकारास्य सख्ये किं चकार ये वा निषदि रणा अस्य पुरा किं विविद्रे किमु नूतनासो विविद्रे ते किमनुतिष्ठन्ति॥१॥

**भावार्थः**-अत्र सोमलतादिरसपानविषयाः प्रश्नाः सन्ति तेषामुत्तराण्युत्तरस्मिन् मन्त्रे ज्ञेयानि॥१॥

**पदार्थः**-हे वैद्यराज! (**इन्द्रः**) दुःख के नाश करने वाले ने (**अस्य**) इसके (**मदे**) आनन्द में (**किम्**) क्या (**चकार**) किया (**अस्य**) इसके (**पीतौ**) पान करने में (**किम्**) क्या (उ) ही किया (**अस्य**) इसके (**सख्ये**) मित्रपने में क्या किया और (ये) जो (**वा**) वा (**निषदि**) बैठते हैं जिसमें उस गृह में (**रणाः**) रमते हुए (**अस्य**) इसके (**पुरा**) सम्मुख (**किम्**) क्या (**विविद्रे**) जानते हैं और (**किम्**) क्या (उ) और (**नूतनासः**) नवीन जन जानते हैं (**ते**) वे (**किम्**) क्या अनुष्ठान करते हैं॥१॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में सोमलता आदि के रस के पानविषयक प्रश्न हैं, उनके उत्तर अगले मन्त्र में जानने चाहिये॥१॥

**अथ किं किं द्रव्यं सेवनीयमित्याह॥**

अब किस किस द्रव्य का सेवन करना चाहिये, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**सद॑स्य॒ मदे॒ सद्व॑स्य पी॒ताविन्द्रः॒ सद॑स्य स॒ख्ये च॑कार।**

**रणा॑ वा॒ ये नि॒षदि॒ सत्ते अ॑स्य पु॒रा वि॑विद्रे॒ सदु॒ नूत॑नासः॥ २॥**



www.9009.co.in

**सत्। अस्य। मदे। सत्। ऊँ इति। अस्य। पीतौ। इन्द्रः। सत्। अस्य। सख्ये। चकार। रणाः। वा। ये। निऽसदि। सत्। ते। अस्य। पुरा। विविद्रे। सत्। ऊँ इति। नूतनासः॥ २॥**

**पदार्थः**-(**सत्**) प्रमादरहितं सत्यं ज्ञानम् (**अस्य**) सोमलतादिमहौषधिगणस्य (**मदे**) आनन्दे (**सत्**) यथार्थम् (उ) (**अस्य**) (**पीतौ**) पाने (**इन्द्रः**) पूर्णविद्यो वैद्यः (**सत्**) (**अस्य**) (**सख्ये**) (**चकार**) (**रणाः**) रममाणाः (**वा**) (**ये**) (**निषदि**) निषीदन्ति यस्मिंस्तस्मिन् गृहे (**सत्**) (**ते**) (**अस्य**) (**पुरा**) (**विविद्रे**) लभन्ते (**सत्**) (उ) (**नूतनासः**)॥ २॥

**अन्वयः**-हे जिज्ञासवः! इन्द्रोऽस्य मदे सच्चकार। अस्य पीतौ सदु चकार। अस्य सख्ये सच्चकार। ये वा निषदि रणाः सन्तोऽस्य सद्विविद्रे ते पुरा नूतनासः सदु विविद्रे॥ २॥

**भावार्थः**-मनुष्यैर्मादकद्रव्यसेवनं विहाय सर्वदा बुद्धिबलायुःपराक्रमवर्धकानि सेव्यन्तां येन सदैव सुखं वर्द्धेत॥ २॥

**पदार्थः**-हे जिज्ञासु जनो! (**इन्द्रः**) पूर्ण विद्यावला वैद्य (**अस्य**) इस सोमलता आदि बड़ी ओषधि समूह के (**मदे**) आनन्द में (**सत्**) प्रमाद से रहित सत्य ज्ञान (**चकार**) करे और (**अस्य**) इसके (**पीतौ**) पान करने में (**सत्**) प्रमाद से रहित सत्य ज्ञान को (**उ**) भी करे और (**अस्य**) इसके (**सख्ये**) मित्रपने में (**सत्**) प्रमादरहित सत्य ज्ञान को करे (**ये, वा**) अथवा जो (**निषदि**) बैठते हैं जिसमें उस गृह अर्थात् बैठक में (**रणाः**) रमते हुए (**अस्य**) इसके (**सत्**) प्रमादरहित सत्य ज्ञान को (**विविद्रे**) प्राप्त होते हैं (**ते**) वे (**पुरा**) पहिले (**नूतनासः**) नवीन जन (**सत्**) प्रमादरहित सत्य ज्ञान को (**उ**) ही प्राप्त होते हैं॥ २॥

**भावार्थः**-मनुष्य लोग मादक द्रव्य के सेवन का त्याग करके सर्वदा बुद्धि, बल, आयु और पराक्रम के बढ़ाने वालों का सेवन करें, जिससे सदा ही सुख बढ़े॥ २॥

**पुनर्मनुष्यैः किं ध्येयमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को किसका ध्यान करना चाहिये, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**नहि नु ते महिमनः समस्य न मघवन्मघवत्त्वस्य विद्म।**

**न राधसोराधसो नूतनस्येन्द्र नकिर्ददृश इन्द्रियं ते॥ ३॥**

**नहि। नु। ते। महिमनः। समस्य। न। मघऽवन्। मघवत्ऽत्वस्य। विद्म। न। राधसःऽराधसः। नूतनस्य। इन्द्र। नकिः। ददृशे। इन्द्रियम्। ते॥ ३॥**

**पदार्थः**-(**नहि**) (**नु**) (**ते**) (**महिमनः**) (**समस्य**) तुल्यस्य (**न**) (**मघवन्**) न्यायोपार्जितधनयुक्त (**मघवत्त्वस्य**) बहुधनयुक्तानां भावस्य (**विद्म**) विजानीयाम (**न**) (**राधसोराधसः**) धनस्य धनस्य (**नूतनस्य**) नवीनस्य (**इन्द्र**) परमैश्वर्यप्रदेश्वर (**नकिः**) (**ददृशे**) दृश्यते (**इन्द्रियम्**) (**ते**) तव॥ ३॥

**अन्वयः**-हे मघवन्निन्द्र! यस्य ते महिमनः समस्य कश्चिन्नु नहि ददृशे वयं मघवत्त्वस्य तुल्यं किंचिदपि न विद्म नूतनस्य राधसोराधसः समः नकिर्ददृशे ते तवेन्द्रियं न ददृशे तस्योपासनं वयं कुर्वीमहि॥ ३॥



www.9009.co.in

**भावार्थ:**-हे मनुष्या! यस्य महिम्नः समो महिमैश्वर्यसामर्थ्येन समं सामर्थ्यमाकृतिश्च न विद्यते तमेव सर्वव्यापकं सर्वान्तर्यामिनं जगदीश्वरं सततं ध्यायत॥३॥

**पदार्थ:**-हे **(मघवन्)** न्याय से इकट्ठे किये हुए धन से युक्त **(इन्द्र)** अत्यन्त ऐश्वर्य के देने वाले! जिन **(ते)** आपकी **(महिमनः)** महिमा का और **(समस्य)** तुल्यता का कोई **(नु)** भी **(नहि)** नहीं **(ददृशे)** देखा जाता है तथा हम लोग **(मघवत्त्वस्य)** बहुत धन से युक्तपने के तुल्य कुछ भी **(न)** नहीं **(विद्म)** जानें और **(नूतनस्य)** नवीन **(राधसोराधसः)** धन-धन के तुल्य **(नकिः)** नहीं देखा जाता है और **(ते)** आपका **(इन्द्रियम्)** इन्द्रिय **(न)** नहीं देखा जाता है, उनकी उपासना को हम लोग करें॥३॥

**भावार्थ:**-हे मनुष्यो! जिसकी महिमा के समान महिमा, ऐश्वर्यसामर्थ्य के समान सामर्थ्य और स्वरूप नहीं विद्यमान है, उसी सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, जगदीश्वर का निरन्तर ध्यान करो॥३॥

**पुनाराजप्रजाः कथं वर्तेरन्नित्याह॥**

फिर राजा और प्रजा को कैसा वर्त्ताव करना चाहिये, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**एतत्त्यत्त इन्द्रियमचेति येनावधीर्वरशिखस्य शेषः।**

**वज्रस्य यत्ते निहतस्य शुष्मात् स्वनाच्चिदिन्द्र परमो ददार॥४॥**

**एतत्। त्यत्। ते। इन्द्रियम्। अचेति। येन। अवधीः। वरऽशिखस्य। शेषः। वज्रस्य। यत्। ते। निऽहतस्य। शुष्मात्। स्वनात्। चित्। इन्द्र। परमः। ददार॥४॥**

**पदार्थ:**-**(एतत्)** **(त्यत्)** तत् **(ते)** तव **(इन्द्रियम्)** **(अचेति)** चेतयति **(येन)** **(अवधीः)** हन्यात् **(वरशिखस्य)** वरा श्रेष्ठा शिखा यस्य तस्य **(शेषः)** **(वज्रस्य)** विद्युतः **(यत्)** **(ते)** तव **(निहतस्य)** निपतितस्य **(शुष्मात्)** बलाच्छोषणात् **(स्वनात्)** शब्दात् **(चित्)** इव **(इन्द्र)** सूर्य इव राजन् **(परमः)** श्रेष्ठः **(ददार)** विदृणाति॥४॥

**अन्वय:**-हे इन्द्र! परमो भवान् यद्ददार त्यदेतत्ते वज्रस्य सकाशान्निहतस्येन्द्रियमचेति येन वरशिखस्य ते शेषस्त्वमवधीर्विद्युच्चिच्छुष्मात् स्वनाद्भाययति तथैव त्वं दुष्टान्त्सभयान् कुर्याः॥४॥

**भावार्थ:**-अत्रोपमालङ्कारः। यो राजा विद्युद्वत्पराक्रमी विज्ञानवर्धको न्यायव्यवहारे सूर्यवत्प्रकाशते स एव राजशिरोमणिर्विज्ञेयः॥४॥

**पदार्थ:**-हे **(इन्द्र)** सूर्य के समान राजन्! **(परमः)** श्रेष्ठ आप **(यत्)** जिसको **(ददार)** विदीर्ण करते हैं **(त्यत्)** उस **(एतत्)** इसको **(ते)** आपकी **(वज्रस्य)** बिजुली के समीप से **(निहतस्य)** गिराये गए का **(इन्द्रियम्)** मन **(अचेति)** जनाता है **(येन)** जिससे **(वरशिखस्य)** श्रेष्ठ शिखा वाले **(ते)** आपका **(शेषः)** शेष है और आप **(अवधीः)** नाश करें और बिजुली **(चित्)** जैसे **(शुष्मात्)** बल और शोषण से **(स्वनात्)** शब्द से भय देती है, वैसे ही आप दुष्टों को भयभीत करिये॥४॥



www.9009.co.in

**भावार्थ:**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जो राजा बिजुली के समान पराक्रमी, विज्ञान को बढ़ाने वाला, न्याय के व्यवहार में सूर्य के सदृश प्रकाशित होता है, वही राजाओं में शिरोमणि समझना चाहिए॥४॥

**पुनः स कीदृश इत्याह॥**

फिर वह कैसा है, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**वधीदिन्द्रो वरशिखस्य शेषोऽभ्यावर्तिने चायमानाय शिक्षन्।**

**वृचीवतो यद्धरियूपीयायां हन् पूर्वे अर्धे भियसापरो दर्त्॥५॥२३॥**

**वधीत्। इन्द्रः। वरऽशिखस्य। शेषः। अभिऽआवर्तिने। चायमानाय। शिक्षन्। वृचीवतः। यत्। हरिऽयूपीयायाम्। हन्। पूर्वे। अर्धे। भियसा। अपरः। दर्त्॥५॥**

**पदार्थः**-(**वधीत्**) हन्यात् (**इन्द्रः**) (**वरशिखस्य**) वरा शिखा यस्य तद्वत् मेघस्य (**शेषः**) यः शिष्यते (**अभ्यावर्त्तिने**) अभ्यावर्त्तितुं शीलं यस्य तस्मै (**चायमानाय**) सत्कर्त्रे (**शिक्षन्**) विद्यां ददन् (**वृचीवतः**) वृचिरविद्याछेदनं प्रशस्तं यस्य तस्य (**यत्**) यः (**हरियूपीयायाम्**) हरीन् मुनीनिच्छतां पीयायां पानक्रियायाम् (**हन्**) हन्ति (**पूर्वे**) सम्मुखे (**अर्द्धे**) (**भियसा**) भयेन (**अपरः**) (**दर्त्**) दृणाति॥५॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यद्यः शेष इन्द्रस्सूर्यो वृचीवतो वरशिखस्याऽभ्यावर्त्तिन इव चायमानाय शिक्षन् भियसा हरियूपीयायां पूर्वेऽर्द्धे हन् वधीत्, अपरो विद्युदग्निस्तं दर्त् दृणाति तथा वर्त्तमानमुपदेशकं वयं सत्कुर्याम॥५॥

**भावार्थः**-ये मनुष्याः पूर्वे वयसि विद्वद्भ्यो विद्यां गृहीत्वा दुर्व्यसनानि हत्वा सुशीला भवन्ति तेऽधर्माचरणाद् बिभ्यति॥५॥

**पदार्थ:**-हे मनुष्यो! (**यत्**) जो (**शेषः**) अवशिष्ट (**इन्द्रः**) सूर्य (**वृचीवतः**) अविद्या का छेदन प्रशंसित जिसके उस (**वरशिखस्य**) श्रेष्ठ शिखा वाले के समान मेघ के (**अभ्यावर्त्तिने**) चारों ओर घूमनेवाले के लिये जैसे वैसे (**चायमानाय**) सत्कार करने वाले के लिये (**शिक्षन्**) विद्या देता हुआ (**भियसा**) भय से (**हरियूपीयायाम्**) विचारशील मनुष्यों की इच्छा करते हुओं की पान क्रिया में (**पूर्वे**) सन्मुख (**अर्द्धे**) अर्द्धभाग में (**हन्**) नाश करता वा (**वधीत्**) नाश करे (**अपरः**) अन्य बिजुलीरूप अग्नि उसको (**दर्त्**) विदीर्ण करता है, वैसे वर्त्तमान उपदेश का हम लोग सत्कार करें॥५॥

**भावार्थ:**-जो मनुष्य पूर्व अवस्था में विद्वानों से विद्या ग्रहण करके बुरे व्यसनों का त्याग करके उत्तमस्वभावयुक्त होते हैं, वे अधर्माचरण से डरते हैं॥५॥

**पुना राज्ञा किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

फिर राजा को क्या करना चाहिये, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**त्रिंशच्छतं वर्मिण इन्द्र साकं यव्यावत्यां पुरुहूत श्रवस्या।**

**वृचीवन्तः शरवे पत्यमानाः पात्रा भिन्दाना न्यर्थान्यायन्॥६॥**



www.9009.co.in

**त्रिं॒शत्ऽश॑तम्। व॒र्मिण॑ः। इन्द्र॑। सा॒कम्। य॒व्याऽव॑त्याम्। पु॒रु॒ऽहू॒त॒। श्र॒व॒स्या। वृ॒चीव॑न्तः। शर॑वे। पत्य॑मानाः। पात्रा। भि॒न्दा॒नाः। न्य॒ऽअ॒र्था॒नि॑। आ॒य॒न्॥६॥**

**पदार्थः**-(**त्रिंशच्छतम्**) त्रिंशच्छतानि यस्मिन् (**वर्मिणः**) कवचिनः (**इन्द्र**) सेनेश (**साकम्**) (**यव्यावत्याम्**) यवे भवा यव्याः पाका विद्यन्ते यस्यां सेनायाम् (**पुरुहूत**) बहुभिः स्तुत (**श्रवस्या**) श्रवस्यन्ते भवानि (**वृचीवन्तः**) रोगाच्छादितवन्तः (**शरवे**) हिंसनाय (**पत्यमानाः**) पतिरिवाचरन्तः (**पात्रा**) शत्रूणां यानानि (**भिन्दानाः**) विदृणन्तः (**न्यर्थानि**) निश्चिता अर्था येषु प्रयोजनेषु तानि (**आयन्**) प्राप्नुवन्ति॥६॥

**अन्वयः**-हे पुरुहूतेन्द्र! ये त्रिंशच्छतं वर्मिणो वृचीवन्तः शरवे पात्रा भिन्दानाः पत्यमानाः साकं व्यव्यावत्यां सर्वे श्रवस्या न्यर्थान्यायँस्तांस्त्वं सत्कुरु॥६॥

**भावार्थः**-हे राजन्! ये वीरपुरुषा राजविद्याकुशला दृढारम्भप्रयोजनाः सिद्धवसनाः स्युस्ते भवता सेनायां सत्कृत्य रक्षितव्याः॥६॥

**पदार्थः**-(**पुरुहूत**) बहुतों से स्तुति किये गये (**इन्द्र**) सेना के स्वामिन्! (**त्रिंशच्छतम्**) तीस सैकड़े (**वर्मिणः**) कवच को धारण किये हुए (**वृचीवन्तः**) रोग से आच्छादित करते हुए (**शरवे**) हिंसन के लिये (**पात्रा**) शत्रुओं के वाहनों को (**भिन्दानाः**) विदीर्ण करते और (**पत्यमानाः**) पति के सदृश आचरण करते हुए (**साकम्**) साथ (**यव्यावत्याम्**) यवों से बने पदार्थों के पाक जिसमें उस सेना में सब लोग (**श्रवस्या**) अन्त में होने वाले (**न्यर्थानि**) निश्चित अर्थ जिनमें उन प्रयोजनों को नहीं (**आयन्**) प्राप्त होते हैं, उनका आप सत्कार करिये॥६॥

**भावार्थः**-हे राजन्! जो वीरपुरुष, राजविद्या में निपुण, कार्यों के आरम्भ में दृढ़प्रयोजन सिद्धवस्त्रों वाले होवें, वे आपसे सेना में सत्कारपूर्वक रखने योग्य हैं॥६॥

**पुना राजा किं कुर्यादित्याह॥**

फिर राजा क्या करे, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**यस्य॒ गावा॑वरु॒षा सू॑यव॒स्यू अ॒न्तरू॒ षु चर॑तो॒ रेरि॑हाणा।**

**स सृञ्ज॑याय तु॒र्वशं॒ परा॑दाद् वृ॒चीव॑तो दैववा॒ताय॒ शिक्ष॑न्॥७॥**

**यस्य॑। गावौ॑। अ॒रु॒षा। सु॒य॒व॒स्यू इति॑ सु॒ऽय॒व॒स्यू। अ॒न्तः। ऊँ इति॑। सु। चर॑तः। रेरि॑हाणा। सः। सृञ्ज॑याय। तु॒र्वश॑म्। परा॑। अ॒दा॒त्। वृ॒चीव॑तः। दै॒व॒ऽवा॒ताय॑। शिक्ष॑न्॥७॥**

**पदार्थः**-(**यस्य**) (**गावौ**) गावौ किरणाविव सेनाराजनीती (**अरुषा**) आरक्ते (**सूयवस्यू**) आत्मनस्सुयवसानिच्छू (**अन्तः**) मध्ये (**उ**) (**सु**) (**चरतः**) (**रेरिहाणा**) आस्वादयन्त्यौ (**सः**) सः (**सृञ्जयाय**) उत्पादनाय (**तुर्वशम्**) मनुष्यम् (**परा**) (**अदात्**) दूरी कुर्यात् (**वृचीवतः**) छेदनवतः (**दैववाताय**) दिव्यवायुविज्ञानाय (**शिक्षन्**)॥७॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे राजन्! यस्याऽरुषा सूयवस्यू रेरिहाणा गावाविव सेनानीती प्रजाया अन्तः सु चरतः स दैववाताय सृञ्जयाय वृचीवतस्तुर्वशं च शिक्षन्नु दुरितं पराऽदादखण्डितं राज्यं प्राप्नुयात्॥७॥

**भावार्थः**-यो राजा नीतिसेने उन्नयति सोऽखण्डितं राज्यं प्राप्नोति॥७॥

**पदार्थः**-हे राजन्! **(यस्य)** जिसके **(अरुषा)** चारों ओर से रक्त **(सूयवस्यू)** अपने उत्तम यवों की इच्छा करती और **(रेरिहाणा)** आस्वादन करती हुई **(गावौ)** किरणों के सदृश सेना और राजनीति प्रजा के **(अन्तः)** मध्य में **(सु, चरतः)** उत्तम प्रकार चलती हैं **(सः)** वह **(दैववाताय)** श्रेष्ठ वायु के विज्ञान और **(सृञ्जयाय)** उत्पादन के लिये **(वृचीवतः)** छेदन वाले के **(तुर्वशम्)** मनुष्य को **(शिक्षन्)** शिक्षा देता **(उ)** और दुर्गुण को **(परा, अदात्)** दूर करे और अखण्डित राज्य को प्राप्त होवे॥७॥

**भावार्थः**-जो राजा नीति और सेना की वृद्धि करता है, वह अखण्डित राज्य को प्राप्त होता है॥७॥

**पुना राजा किं कुर्यादित्याह॥**

फिर वह राजा क्या करे, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**द्वयाँ अग्ने रथिनो विंशतिं गा वधूमन्तो मघवा मह्यं सम्राट्।**

**अभ्यावर्ती चायमानो ददाति दूणाशेयं दक्षिणा पार्थवानाम्॥८॥२४॥**

**द्वयान्। अग्ने। रथिनः। विंशतिम्। गाः। वधूऽमन्तः। मघऽवा। मह्यम्। सम्ऽराट्। अभिऽआवर्ती। चायमानः। ददाति। दुःऽनशा। इयम्। दक्षिणा। पार्थवानाम्॥८॥**

**पदार्थः**-**(द्वयान्)** प्रजासेनाजनान् **(अग्ने)** **(रथिनः)** प्रशस्ता रथा येषां सन्ति ते **(विंशतिम्)** **(गाः)** धेनूरिव **(वधूमन्तः)** प्रशस्ता वध्वो विद्यन्ते येषान्ते **(मघवा)** प्रशस्तधनवान् **(मह्यम्)** **(सम्राट्)** यः सम्यग्राजते **(अभ्यावर्ती)** यो विजेतुमभ्यावर्त्तते सः **(चायमानः)** पूज्यमानः **(ददाति)** **(दूणाशा)** दुर्लभो नाशो यस्याः सा **(इयम्)** **(दक्षिणा)** **(पार्थवानाम्)** पृथौ विस्तीर्णायां विद्यायां भवानां राज्ञाम्॥८॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! ये वधूमन्तो रथिनस्स्युर्यान् द्वयान् मघवा सम्राडभ्यावर्त्ती चायमानो भवान् विंशतिं गा ददाति स त्वं मह्यं या पार्थवानामियं दूणाशा दक्षिणा भवता दत्तास्ति तया तान् प्रीणीहि॥८॥

**भावार्थः**-यो राजा कुलीनान् विद्याव्यवहारविचक्षणान् धार्मिकान् राजप्रजाजनानभयान् करोति सोऽतुलां प्रतिष्ठां प्राप्नोतीति॥८॥

अत्रेन्द्रेश्वराजप्रजागुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति सप्तविंशतितमं सूक्तं चतुर्विंशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे **(अग्ने)** अग्नि के समान वर्त्तमान! जो **(वधूमन्तः)** अच्छी श्रेष्ठ वधुयें और **(रथिनः)** श्रेष्ठ रथों वाले होवें जिन **(द्वयान्)** प्रजा और सेना के जनों को **(मघवा)** प्रशंसित धन वाले **(सम्राट्)** उत्तम प्रकार से शोभित और **(अभ्यावर्ती)** जीतने को चारों ओर से वर्त्तमान **(चायमानः)** आदर किये गये आप **(विंशतिम्)** बीस **(गाः)** गौओं को जैसे वैसे **(ददाति)** देते वह आप **(मह्यम्)** मेरे लिये जो



www.9009.co.in

**(पार्थवानाम्)** राजाओं की **(इयम्)** यह **(दूणाशा)** दुर्लभ नाश जिसका ऐसी **(दक्षिणा)** दक्षिणा आपसे दी गई है, उससे उनको प्रसन्न करिये॥८॥

**भावार्थः**-जो राजा कुलीन, विद्या और व्यवहार में निपुण, धार्मिक राजा और प्रजाजनों को भय रहित करता है वह अतुल प्रतिष्ठा को प्राप्त होता है॥८॥

इस सूक्त में इन्द्र, ईश्वर, राजा और प्रजा के गुणवर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह सत्ताईसवां सूक्त और चौबीसवां वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

**अथाष्टर्चस्याष्टविंशतितमस्य सूक्तस्य भरद्वाजो बार्हस्पत्य ऋषिः। १, ३-८ गावः। २, ८ गाव इन्द्रो वा देवता। १, ७ निचृत्त्रिष्टुप्। २ स्वराट्त्रिष्टुप्। ५, ६ त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः। ३, ४ जगती छन्दः। निषादः स्वरः। ८ निचृदनुष्टुप् छन्दः। गान्धारः स्वरः।**

*अथ मनुष्याः किरणगुणान् विजानीयुरित्याह॥*

अब मनुष्य किरणों के गुणों को जानें इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**आ गावो॑ अग्मन्नु॒त भ॒द्रम॑क्र॒न्त्सीद॑न्तु गो॒ष्ठे र॒णय॑न्त्व॒स्मे।**

**प्र॒जाव॑तीः पुरु॒रूपा॑ इ॒ह स्यु॒रिन्द्रा॑य पू॒र्वीरु॒षसो॒ दुहा॑नाः॥१॥**

**आ। गावः॑। अ॒ग्म॒न्। उ॒त। भ॒द्रम्। अ॒क्र॒न्। सीद॑न्तु। गो॒ऽस्थे। र॒णय॑न्तु। अ॒स्मे इति॑। प्र॒जाऽव॑तीः। पु॒रु॒ऽरूपाः॑। इ॒ह। स्यु॒ः। इन्द्रा॑य। पू॒र्वीः। उ॒षसः॑। दुहा॑नाः॥१॥**

**पदार्थः**-(**आ**) समन्तात् (**गावः**) किरणाः (**अग्मन्**) आगच्छन्ति (**उत**) (**भद्रम्**) कल्याणम् (**अक्रन्**) कुर्वन्ति (**सीदन्तु**) प्राप्नुवन्तु (**गोष्ठे**) गावस्तिष्ठन्ति यस्मिंत्स्थले (**रणयन्तु**) शब्दयन्तु (**अस्मे**) अस्मभ्यम् (**प्रजावतीः**) बहुप्रजाः विद्यन्ते यासु ताः (**पुरुरूपाः**) बहुरूपाः (**इह**) (**स्युः**) (**इन्द्राय**) परमैश्वर्याय (**पूर्वीः**) प्राचीनाः (**उषसः**) प्रभातवेलाः (**दुहानाः**) काममलंकुर्वाणाः॥१॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथेहाऽस्मे गाव आऽग्मन्नुत रणयन्तु भद्रमक्रंस्ता गोष्ठे सीदन्तु, यथा पुरुरूपाः पूर्वीर्दुहाना उषस इन्द्राय प्रजावतीः स्युस्तथा युष्मभ्यमपि भवन्तु॥१॥

**भावार्थः**-यदि वृक्षारोपणसुगन्धादियुक्तहोमधूमेन वायुकिरणाञ्छुन्धेयुस्तर्ह्येते सर्वान्त्सुखयन्ति॥१॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे (**इह**) यहाँ (**अस्मे**) हम लोगों के लिये (**गावः**) किरणें (**आ, अग्मन्**) प्राप्त होती हैं (**उत**) और (**रणयन्तु**) शब्द करावें तथा (**भद्रम्**) कल्याण को (**अक्रन्**) करती हैं, वे (**गोष्ठे**) गौओं के बैठने के स्थान में (**सीदन्तु**) प्राप्त हों और जैसे (**पुरुरूपाः**) बहुत रूपवाली (**पूर्वीः**) प्राचीन (**दुहानाः**) मनोरथ को पूर्ण करती हुई (**उषसः**) प्रभात वेलाएं (**इन्द्राय**) अत्यन्त ऐश्वर्य से युक्त के लिये (**प्रजावतीः**) बहुत प्रजाओं वाली (**स्युः**) होवें, वैसे आप लोगों के लिये भी हों॥१॥

**भावार्थः**-जो वृक्षों के लगाने और सुगन्ध आदि से युक्त धूम से पवन के किरणों को शुद्ध करें तो ये सब को सुखयुक्त करते हैं॥१॥

**पुना राजा किं कुर्यादित्याह॥**

फिर राजा क्या करे, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**इन्द्रो॒ यज्व॑ने पृण॒ते च॑ शिक्ष॒त्युपेद्द॑दाति॒ न स्वं मु॑षायति।**



www.9009.co.in

**भूयोभूयो र॒यिमिद॑स्य व॒र्धय॒न्नभि॑न्ने खि॒ल्ये नि द॑धाति देव॒युम्॥२॥**

**इन्द्रः॑। यज्व॑ने। पृ॒ण॒ते। च॒। शि॒क्ष॒ति॒। उप॑। इत्। द॒दा॒ति॒। न। स्वम्। मु॒षा॒य॒ति॒। भूय॑ःऽभूयः। र॒यिम्। इत्। अ॒स्य। व॒र्धय॑न्। अभि॑न्ने। खि॒ल्ये। नि। द॒धा॒ति॒। दे॒व॒ऽयुम्॥२॥**

**पदार्थः**-(**इन्द्रः**) राजा (**यज्वने**) यज्ञस्य कर्त्रे (**पृणते**) सुखयते (**च**) (**शिक्षति**) विद्यां ददाति। अत्र व्यत्ययेन परस्मैपदम् (**उप**) (**इत्**) (**ददाति**) (**न**) निषेधे (**स्वम्**) स्वकीयं बोधम् (**मुषायति**) चोरयति (**भूयोभूयः**) (**रयिम्**) विद्याधनम् (**इत्**) एव (**अस्य**) संसारस्य मध्ये (**वर्धयन्**) (**अभिन्ने**) एकीभूते व्यवहारे (**खिल्ये**) खण्डेषु भवे (**नि**) (**दधाति**) (**देवयुम्**) देवान् विदुषः कामयमानं विद्वांसम्॥२॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! य इन्द्रोऽस्य संसारस्य मध्ये रयिमिद् वर्धयन्नभिन्ने खिल्ये च देवयुं भूयोभूयो नि दधाति स्वं न मुषायति यज्वन उपशिक्षति पृणते च ददाति स इदेव सर्वान् वर्धयितुं शक्नोति॥२॥

**भावार्थः**-त एव विद्वांस आप्ताः सन्ति ये निष्कपटत्वेन पुनः पुनः प्रतिदिनं विद्यानिधिं योग्याय ददति॥२॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो (**इन्द्रः**) राजा (**अस्य**) इस संसार के मध्य में (**रयिम्**) विद्यारूप धन को (**इत्**) (**वर्धयन्**) बढ़ाता हुआ (**अभिन्ने**) इकट्ठे हुए व्यवहार में और (**खिल्ये**) टुकड़ों में हुए के बीच (**च**) भी (**देवयुम्**) विद्वानों की कामना करते हुए विद्वान् को (**भूयोभूयः**) वारंवार (**नि, दधाति**) निरन्तर धारण करता है और (**स्वम्**) अपने ज्ञान को (**न**) नहीं (**मुषायति**) चुराता है और (**यज्वने**) यज्ञ के करने वाले के लिये (**उप, शिक्षति**) विद्या देता है और (**पृणते**) सुखयुक्त करता है (**च**) और (**ददाति**) देता है, वह (**इत्**) ही सबको बढ़ा सकता है॥२॥

**भावार्थः**-वे ही विद्वान् यथार्थवक्ता हैं जो निष्कपटता से वार-वार प्रतिदिन विद्याकोश को योग्य के लिये देते हैं॥२॥

**अथ किमुत्तमं दानमित्याह॥**

अब कौन उत्तम दान है, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**न ता न॑शन्ति॒ न द॑भाति॒ तस्क॑रो॒ नासा॑माभि॒त्रो व्यथि॒रा द॑धर्षति।**

**दे॒वांश्च॒ याभि॒र्यज॑ते॒ ददा॑ति च॒ ज्योगित्ताभि॑ः सचते॒ गोप॑तिस्स॒ह॥३॥**

**न। ताः। न॒श॒न्ति॒। न। द॒भा॒ति॒। तस्क॑रः। न। आ॒सा॒म। आ॒मि॒त्रः। व्यथि॑ः। आ। द॒धर्ष॒ति॒। दे॒वान्। च॒। याभि॑ः। यज॑ते। ददा॑ति। च॒। ज्योक्। इत्। ताभि॑ः। स॒च॒ते॒। गोऽप॑तिः। स॒ह॥३॥**

**पदार्थः**-(**न**) निषेधे (**ताः**) विद्याः (**नशन्ति**) (**न**) (**दभाति**) हिनस्ति (**तस्करः**) चोरः (**न**) (**आसाम्**) विद्यानाम् (**आमित्रः**) शत्रुः (**व्यथिः**) व्यथा (**आ**) (**दधर्षति**) तिरस्करोति (**देवान्**) विदुषः (**च**) (**याभिः**) विद्याभिः (**यजते**) (**ददाति**) (**च**) (**ज्योक्**) निरन्तरम् (**इत्**) एव (**ताभिः**) विद्याभिः (**सचते**) समवैति (**गोपतिः**) गवां स्वामी (**सह**)॥३॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे मनुष्या! याभिर्यजमानो देवान् यजते ददाति च ज्योगित्ताभिस्सह गोपतिः सचते नासामामित्रो व्यथिश्चाऽऽदधर्षति ता न नशन्ति तस्करो ता न दभाति ता यूयं ब्रह्मचर्यादिना गृह्णीत॥३॥

**भावार्थः**-हे मनुष्याः सर्वेभ्योऽधिकसुखकरमविनाशि सततं वर्धमानं चोरादिभिर्हर्तुमनर्हं विद्यादानमेवास्तीति विजानीत॥३॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(याभिः)** जिन विद्याओं से यजमान **(देवान्)** विद्वानों को **(यजते)** मिलता और **(ददाति)** देता **(च)** भी है तथा **(ज्योक्)** निरन्तर **(इत्)** ही **(ताभिः)** उन विद्याओं के **(सह)** साथ **(गोपतिः)** गौओं का स्वामी **(सचते)** मिलता है **(न)** न **(आसाम्)** इनका **(आमित्रः)** शत्रु और **(व्यथिः)** पीड़ा **(च)** भी **(आ, दधर्षति)** तिरस्कार करती है **(ताः)** वे विद्याएं **(न)** नहीं **(नशन्ति)** नष्ट होती हैं तथा **(तस्करः)** चोर उनका **(न)** नहीं **(दभाति)** नाश करता है, उन विद्याओं को आप लोग ब्रह्मचर्यादि से ग्रहण करिये॥३॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! सब के लिये अधिक सुख करने, नहीं नष्ट होने और निरन्तर बढ़ने वाले और चोर आदिकों से हरने के अयोग्य विद्यादान ही है, यह जानो॥३॥

**सा विद्या कं प्राप्नोति कं न प्राप्नोतीत्याह॥**

वह विद्या किस को प्राप्त होती और किस को नहीं प्राप्त होती है, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

## न ता अर्वा रेणुककाटो अश्नुते न संस्कृतत्रमुप यन्ति ता अभि।
## उरुगायमभयं तस्य ता अनु गावो मर्तस्य वि चरन्ति यज्वनः॥४॥

**न। ताः। अर्वा। रेणुऽककाटः। अश्नुते। न। संस्कृतऽत्रम्। उप। यन्ति। ताः। अभि। उरुऽगायम्। अभयम्। तस्य। ताः। अनु। गावः। मर्तस्य। वि। चरन्ति। यज्वनः॥४॥**

**पदार्थः**-**(न)** निषेधे **(ताः)** **(अर्वा)** अश्व इव बुद्धिहीनो विषयासक्तः **(रेणुककाटः)** रेणुकाकूप इवान्धकारहृदयः **(अश्नुते)** प्राप्नोति **(न)** **(संकृतत्रम्)** यः संस्कृतं त्रायते रक्षति तम् **(उप)** **(यन्ति)** प्राप्नुवन्ति **(ताः)** **(अभि)** आभिमुख्ये **(उरुगायम्)** बहुभिः प्रशंसनीयम् **(अभयम्)** अविद्यमानं भयं यस्य यस्माद्वा **(तस्य)** **(ताः)** **(अनु)** **(गावः)** किरणा इव **(मर्त्तस्य)** मननशीलस्य नरस्य **(वि)** **(चरन्ति)** **(यज्वनः)** विदुषां सेवकस्य सङ्गच्छमानस्य॥४॥

**अन्वयः**-हे मनुष्यास्ता रेणुककाटोऽर्वा नाश्नुते मूढाः संस्कृतत्रं प्राप्य ता नाऽभ्युप यन्ति किन्तु ता उरुगायमभयं जनमभ्युपयन्ति ता गाव इव तस्य यज्वनो मर्त्तस्यानु वि चरन्ति विशेषेण प्राप्नुवन्ति॥४॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! येऽशुद्धाहाराविहारा लम्पटाः पिशुनाः कुसङ्गिनः सन्ति तान् विद्या कदाचिदपि नाप्नोति ये च पवित्राहारविहारा जितेन्द्रिया यथार्थवक्तारः सत्सङ्गिनः पुरुषार्थिनः सन्ति तान् विद्याऽभिगच्छतीति विजानीत॥४॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(ताः)** उन विद्याओं को **(रेणुककाटः)** रेणुकाओं के कूप के समान अन्धकार हृदय वाला **(अर्वा)** घोड़े के समान बुद्धिहीन विषयासक्त जन **(न)** नहीं **(अश्नुते)** प्राप्त होता है और मूढ़जन **(संस्कृत्रम्)** संस्कारयुक्त की रक्षा करने वाले को प्राप्त होकर **(ताः)** उनके **(न)** नहीं **(अभि)** सन्मुख **(उप, यन्ति)** समीप प्राप्त होते हैं, किन्तु वे **(उरुगायम्)** बहुतों से प्रशंसनीय **(अभयम्)** निर्भय जन के सम्मुख समीप प्राप्त होती हैं और **(ताः)** वे विद्यायें **(गावः)** किरणों के समान **(तस्य)** उस **(यज्वनः)** विद्वानों के सेवक और प्राप्त होते हुए **(मर्त्तस्य)** विचारशील मनुष्य के **(अनु, वि, चरन्ति)** पश्चात् चलती हैं तथा विशेष करके प्राप्त होती हैं॥४॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो अशुद्ध व्यवहार और विहार करने वाले, लम्पट, चुगुल और कुसङ्गी हैं, उनको विद्या कभी नहीं प्राप्त होती है और जो पवित्र आहार और विहार करने वाले, जितेन्द्रिय, यथार्थवक्ता, सत्सङ्गी, पुरुषार्थी हैं, उनको विद्या प्राप्त होती है, ऐसा जानिये॥४॥

**मनुष्यैरवश्यं विद्याप्राप्तीच्छा कार्य्येत्याह॥**

मनुष्यों को चाहिये कि अवश्य विद्या की इच्छा करें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**गावो भगो गाव इन्द्रो मे अच्छान् गावः सोमस्य प्रथमस्य भक्षः।**

**इमा या गावः स जनास इन्द्र इच्छामीद् धृदा मनसा चिदिन्द्रम्॥५॥**

**गावः। भगः। गावः। इन्द्रः। मे। अच्छान्। गावः। सोमस्य। प्रथमस्य। भक्षः। इमाः। याः। गावः। सः। जनासः। इन्द्रः। इच्छामि। इत्। हृदा। मनसा। चित्। इन्द्रम्॥५॥**

**पदार्थः**-**(गावः)** किरणा इव **(भगः)** ऐश्वर्यमिच्छुः **(गावः)** सुशिक्षिता वाचः **(इन्द्रः)** विद्यैश्वर्ययुक्तः **(मे)** मम **(अच्छान्)** यच्छन्तु प्रददतु। अत्र **छान्दसो वर्णलोपो वे**ति यलोपः **(गावः)** धेनवः **(सोमस्य)** ऐश्वर्यस्य **(प्रथमस्य)** आदिमस्य **(भक्षः)** सेवनीयः **(इमाः)** **(याः)** **(गावः)** वाचः **(सः)** **(जनासः)** विद्वांसः **(इन्द्रः)** **(इच्छामि)** **(इत्)** एव **(हृदा)** आत्मना **(मनसा)** विज्ञानेन **(चित्)** अपि **(इन्द्रम्)**॥५॥

**अन्वयः**-हे जनासो विद्वांसो! यथा प्रथमस्य सोमस्य सेवमाना गावो वत्सान् दुग्धं प्रयच्छन्ति तथा गावो जना भगो गाव इन्द्रो भक्षश्च मेऽच्छान् या इमा गावो यस्य सन्ति स इन्द्रो मां शिक्षतु। अहं हृदा मनसा चिदिन्द्रमिदिच्छामि॥५॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। ये मनुष्या आत्मनाऽन्तःकरणेन च विद्यां प्राप्तुमिच्छन्ति ते सर्वं सुखमश्नुवते॥५॥

**पदार्थः**-हे **(जनासः)** विद्वान् मनुष्यो! जैसे **(प्रथमस्य)** पहिले **(सोमस्य)** ऐश्वर्य की सेवने वाली **(गावः)** गौएं बछड़ों को दूध देती हैं, वैसे **(गावः)** किरणों के समान जन और **(भगः)** ऐश्वर्य की इच्छा करने वाला **(गावः)** उत्तम प्रकार शिक्षित वाणियों को और **(इन्द्रः)** विद्या और ऐश्वर्य से युक्त **(भक्षः)** सेवा करने योग्य जन **(मे)** मेरे लिये **(अच्छान्)** देवें और **(याः)** जो **(इमाः)** ये **(गावः)** वाणियां जिसकी



www.9009.co.in

हैं **(सः)** वह **(इन्द्रः)** विद्या और ऐश्वर्य से युक्त मुझ को शिक्षा देवे और मैं **(हृदा)** आत्मा तथा **(मनसा)** विज्ञान से **(चित्)** भी **(इन्द्रम्)** ऐश्वर्ययुक्त जन की **(इत्)** ही **(इच्छामि)** इच्छा करता हूं॥५॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो मनुष्य आत्मा और अन्तःकरण से विद्या की प्राप्ति की इच्छा करते हैं, वे सब सुख का भोग करते हैं॥५॥

**पुनर्मनुष्यैः किमवश्यं कर्त्तव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों का क्या अवश्य कर्त्तव्य है, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**यूयं गावो मेदयथा कृशं चिदश्रीरं चित्कृणुथा सुप्रतीकम्।**

**भद्रं गृहं कृणुथ भद्रवाचो बृहद्वो वय उच्यते सभासु॥६॥**

**यूयम्। गावः। मेदयथ। कृशम्। चित्। अश्रीरम्। चित्। कृणुथ। सुऽप्रतीकम्। भद्रम्। गृहम्। कृणुथ। भद्रऽवाचः। बृहत्। वः। वयः। उच्यते। सभासु॥६॥**

**पदार्थः**-**(यूयम्)** **(गावः)** वाचः **(मेदयथा)** स्नेहयथ स्निग्धा मधुराः कुरुत। अत्र **संहितायामि**ति दीर्घः। **(कृशम्)** क्षीणम् **(चित्)** **(अश्रीरम्)** अश्लीलममङ्गलमधर्माचरणम् **(चित्)** अपि **(कृणुथा)** कुरुथ। अत्रापि **संहितायामि**ति दीर्घः। **(सुप्रतीकम्)** शोभनानि प्रतीकानि प्रतीतिकराणि द्वारादीनि यस्मिंस्तम् **(भद्रम्)** भन्दनीयं कल्याणकरं शुद्धवायूदकवृक्षम् **(गृहम्)** **(कृणुथ)** **(भद्रवाचः)** या भद्राः कल्याणकर्यः सत्यभाषणान्विता वाचश्च ताः **(बृहत्)** महत् **(वः)** युष्माकम् **(वयः)** जीवनम् **(उच्यते)** **(सभासु)** आप्तैर्विद्वद्भिः प्रकाशमानासु॥६॥

**अन्वयः**-हे विद्वांसो! यूयं या गावस्ता मेदयथा चिदश्रीरं कृशं कृणुथा चिदपि सुप्रतीकं भद्रं गृहं कृणुथ सभासु भद्रवाचो वरथ यद्वो बृहद्वय उच्यते तत्कृणुथ॥६॥

**भावार्थः**-हे मनुष्याः कोमलां सत्यां धर्म्यां वाचं सर्वर्त्तुसुखकरं गृहं सभां दीर्घमायुश्च कुर्वन्ति ते जगति कल्याणकरा भवन्ति॥६॥

**पदार्थः**-हे विद्वानो! **(यूयम्)** आप लोग जो **(गावः)** वाणियां हैं उनको **(मेदयथा)** मधुर करिये **(चित्)** और **(अश्रीरम्)** अमङ्गलस्वरूप और अधर्माचरण करने वाले को **(कृशम्)** क्षीण **(कृणुथा)** करिये और **(चित्)** भी **(सुप्रतीकम्)** उत्तम प्रतीति कराने वाले द्वार आदि जिसमें उस **(भद्रम्)** कल्याण करने शुद्ध वायु जल और वृक्ष वाले **(गृहम्)** गृह को **(कृणुथ)** करिये और **(सभासु)** आप्त विद्वानों से प्रकाशमान सभाओं में **(भद्रवाचः)** जो कल्याण करने वाली सत्यभाषण से युक्त वाणियां उनको स्वीकार करिये और जो **(वः)** आप लोगों का **(बृहत्)** बड़ा **(वयः)** जीवन **(उच्यते)** कहा जाता है, उसको करिये॥६॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य कोमल, सत्य, धर्मयुक्त वाणी तथा सर्व ऋतुओं में सुख करने वाले घर को, सभा को और अधिक अवस्था को करते हैं, वे संसार में कल्याण करने वाले होते हैं॥६॥



www.9009.co.in

**अथ प्रजाः कथं पालेयदित्याह॥**

अब प्रजाओं का कैसे पालन करे, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**प्रजावतीः सूयवसं रिशन्तीः शुद्धा अपः सुप्रपाणे पिबन्तीः।**

**मा वः स्तेन ईशत माघशंसः परि वो हेती रुद्रस्य वृज्याः॥७॥**

**प्रजाऽवतीः। सुऽयवसम्। रिशन्तीः। शुद्धाः। अपः। सुऽप्रपाने। पिबन्तीः। मा। वः। स्तेनः। ईशत। मा। अघऽशंसः। परि। वः। हेतिः। रुद्रस्य। वृज्याः॥७॥**

**पदार्थः**-(**प्रजावतीः**) प्रशस्ताः प्रजा विद्यन्ते यासान्ताः (**सूयवसम्**) शोभनं घासादिकम्। अत्रा**न्येषामपी**त्युकारदैर्घ्यम्। (**रिशन्तीः**) भक्षयन्तीः (**शुद्धाः**) निर्मलाः (**अपः**) जलानि (**सुप्रपाणे**) सुन्दरे जलपानस्थाने (**पिबन्तीः**) (**मा**) (**वः**) युष्माकम् (**स्तेनः**) चोरः (**ईशत**) हनने समर्थो भवेत् (**मा**) (**अघशंसः**) हिंस्रः पापकृत् (**परि**) सर्वतः (**वः**) युष्माकम् (**हेतिः**) वज्रम् (**रुद्रस्य**) रौद्रकर्मकर्त्तुः (**वृज्याः**) वृणक्तु॥७॥

**अन्वयः**-हे राजन्! यथा गोपः सूयवसं रिशन्तीः सुप्रपाणे शुद्ध अपः पिबन्तीः प्रजावतीर्गाः पालयति तथा त्वं प्रजाः पालय यथा वः प्रजाः स्तेनोऽघशंसश्च मेशत तथा वो रुद्रस्य हेतिरेतान्मा परि वृज्याः॥७॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। ये पितृवत्प्रजाः पालयन्ति शुद्धाऽहारविहाराश्च कृत्वा पुरुषार्थयन्ति स्तेनादीन् दुष्टाञ्छिन्दन्ति ते राजामात्यभृत्याः प्रशंसनीया भवन्ति॥७॥

**पदार्थः**-हे राजन्! जैसे गौवों का पालन करने वाला (**सूयवसम्**) सुन्दर घास आदि को (**रिशन्तीः**) भक्षण करती हुई (**सुप्रपाणे**) सुन्दर जलपान के स्थान में (**शुद्धाः**) निर्मल (**अपः**) जलों को (**पिबन्तीः**) पीती हुई (**प्रजावतीः**) श्रेष्ठ सन्तान वाली गौवों का पालन करता है, वैसे आप प्रजाओं का पालन करिये और जैसे (**वः**) आप लोगों की प्रजाओं को (**स्तेनः**) चोर और (**अघशंसः**) पाप करने वाला डाकू (**मा**) नहीं (**ईशत**) मारने में समर्थ होवे, वैसे (**वः**) आप लोगों के सम्बन्ध में (**रुद्रस्य**) रौद्र कर्म के करने वाले का (**हेतिः**) वज्र इनको (**मा**) मत (**परि, वृज्याः**) परिवर्जन करे॥७॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो पिता के सदृश प्रजाओं का पालन करते और शुद्ध भोजन और विहार वाली करके पुरुषार्थ करते और चोर आदि दुष्टों का छेदन करते हैं, वे राजा, अमात्य और भृत्य प्रशंसा करने योग्य होते हैं॥७॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**उपेदमुपपर्चनमासु गोषूप पृच्यताम्।**

**उप ऋषभस्य रेतस्युपेन्द्र तव वीर्ये॥८॥२५॥६॥**

**उप। इदम्। उपऽपर्चनम्। आसु। गोषु। उप। पृच्यताम्। उप। ऋषभस्य। रेतसि। उप। इन्द्र। तव। वीर्ये॥८॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**उप**) (**इदम्**) (**उपपर्चनम्**) उपसम्बन्धः (**आसु**) (**गोषु**) पृथिवीषु वाक्षु वा (**उप**) (**पृच्यताम्**) सम्बध्यताम् (**उप**) (**ऋषभस्य**) श्रेष्ठस्य (**रेतसि**) वीर्ये (**उप**) (**इन्द्र**) परमैश्वर्यकारक (**तव**) (**वीर्ये**) पराक्रमे॥८॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! ऋषभस्य तव वीर्ये प्रजाभिरुप पृच्यताम् रेतसि च त्वयोप पृच्यतामासु गोषूयपर्चनमुप पृच्यतामिदं राजनयमुप पृच्यताम्॥८॥

**भावार्थः**-ये राजादयो मनुष्या विद्वांसो भूत्वा सभायां परस्परस्यैकां सम्मतिं कृत्वा विरोधविनाशेनैकतायां प्रयतन्ते तेऽखण्डितसामर्थ्या जायन्त इति॥८॥

अत्र गवेन्द्रविद्याप्रजाराजधर्म वर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

अस्मिन्नध्याय इन्द्रसोमसूर्य्योषाराज्यविश्वेदेवयोधृमित्रत्वजगदीश्वराग्निद्यावापृथिवीराजप्रजामरुच्छिल्पि-न्यायेशोपदेशकवाग्विद्यागुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वाध्यायार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्याणां महाविदुषां विरजानन्दसरस्वतीस्वामिनां शिष्येण श्रीमद्दयानन्दसरस्वतीस्वामिना विरचिते सुप्रमाणयुक्त ऋग्वेदभाष्ये चतुर्थाष्टके षष्ठोऽध्यायः पञ्चविंशो वर्गः, षष्ठे मण्डलेऽष्टाविंशं सूक्तं च समाप्तम्॥**

**पदार्थः**-हे (**इन्द्र**) अत्यन्त ऐश्वर्य के करने वाले (**ऋषभस्य**) श्रेष्ठ (**तव**) आपके (**वीर्ये**) पराक्रम में प्रजाओं के साथ (**उप, पृच्यताम्**) सम्बन्ध करिये तथा (**रेतसि**) पराक्रम में आपको (**उप**) सम्बन्ध करना चाहिये और (**आसु**) इन (**गोषु**) पृथिवियों वा वाणियों में (**उपपर्चनम्**) समीप सम्बन्ध (**उप**) सम्बन्ध करना चाहिये और (**इदम्**) इस राजनीति का (**उप**) सम्बन्ध करना चाहिये॥८॥

**भावार्थः**-जो राजा आदि मनुष्य विद्वान् होकर सभा में परस्पर की एक सम्मति करके विरोध के नाश करने से एकता में प्रयत्न करते हैं, वे अखण्डित सामर्थ्यवाले होते हैं॥८॥

इस सूक्त में गो, इन्द्र, विद्या, प्रजा और राजा के धर्म का वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

इस अध्याय में इन्द्र, सोम, सूर्य, प्रातःकाल, राज्य, विश्वेदेव, योधा, मित्रत्व, जगदीश्वर, अग्नि, अन्तरिक्ष, पृथिवी, राजा, प्रजा, पवन, कारीगर, न्यायेश, उपदेशक, वाणी और विद्या के गुणवर्णन करने से इस अध्याय के अर्थ की इससे पूर्व अध्याय के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह श्रीमन्परमहंस परिव्राजकाचार्य विरजानन्द सरस्वती स्वामी जी के शिष्य श्रीमान् दयानन्द सरस्वती स्वामी से रचित उत्तम प्रमाणों से युक्त, ऋग्वेदभाष्य के चतुर्थ अष्टक में छठा अध्याय, पच्चीसवां वर्ग और छठे मण्डल में अट्ठाईसवां सूक्त समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

**अथ षडर्चस्यैकोनत्रिंशत्तमस्य सूक्तस्य भरद्वाजो बार्हस्पत्य ऋषिः। इन्द्रो देवता। १, ३, ५, निचृत्त्रिष्टुप्। ४ त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः। २ भुरिक्पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः। ६ ब्राह्मी उष्णिक् छन्दः। ऋषभः स्वरः॥**

***अथ मनुष्यैः कथं वर्त्तितव्यमित्याह॥***

अब छः ऋचा वाले उनतीसवें सूक्त का प्रारम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में मनुष्यों को कैसा वर्त्ताव करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**इन्द्रं॑ वो॒ नरः॑ स॒ख्याय॑ सेपुर्म॒हो यन्तः॑ सुम॒तये॑ चका॒नाः।**
**म॒हो हि दा॒ता वज्र॑हस्तो॒ अस्ति॑ म॒हामु॑ र॒ण्वमव॑से यजध्वम्॥ १॥**

**इन्द्र॑म्। व॒ः। नरः॑। स॒ख्याय॑। से॒पु॒ः। म॒हः। यन्तः॑। सु॒ऽम॒तये॑। च॒का॒नाः। म॒हः। हि। दा॒ता। वज्र॑ऽहस्तः। अस्ति॑। म॒हाम्। ऊँ इति॑। र॒ण्वम्। अव॑से। य॒ज॒ध्व॒म्॥ १॥**

**पदार्थः**-(**इन्द्रम्**) (**वः**) युष्माकम् (**नरः**) नायकाः (**सख्याय**) मित्रभावाय (**सेपुः**) शपथं कुर्युः (**महः**) महद्विज्ञानम् (**यन्तः**) (**सुमतये**) उत्तमप्रज्ञायै (**चकानाः**) कामयमानाः (**महः**) महतो विज्ञानस्य (**हि**) यतः (**दाता**) (**वज्रहस्तः**) शस्त्रास्त्रपाणिः (**अस्ति**) (**महाम्**) महान्तं महाशयं सर्वाध्यक्षम् (उ) (**रण्वम्**) रमणीयमुपदेशकम् (**अवसे**) रक्षणाद्याय (**यजध्वम्**) सङ्गच्छध्वं सत्कुरुत॥ १॥

**अन्वयः**-हे नरो! ये महो यन्तः सुमतये चकाना वः सख्यायेन्द्रं सेपुर्हि यो महो दाता वज्रहस्तोऽस्ति तं रण्वं महामु अवसे रण्वं यजध्वम्॥ १॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! ये युष्माकं मित्रत्वाय दृढं शपथं कृत्वा तनुमनोधनैरुपकाराय यतन्ते तान् यूयं सर्वदा सत्कुरुत तैः सह सखित्वे वर्त्तध्वम्॥ १॥

**पदार्थः**-हे (**नरः**) नायक जनो! जो (**महः**) बड़े विज्ञान को (**यन्तः**) प्राप्त होते और (**सुमतये**) उत्तम बुद्धि के लिये (**चकानाः**) कामना करते हुए (**वः**) आप लोगों के (**सख्याय**) मित्रपने के लिये (**इन्द्रम्**) ऐश्वर्य के करने वाले को (**सेपुः**) शपथ करते हैं तथा (**हि**) जिस कारण जो (**महः**) बड़े विज्ञान का (**दाता**) देने वाले और (**वज्रहस्तः**) शस्त्र और अस्त्रों से युक्त हाथों वाला (**अस्ति**) है उस (**रण्वम्**) रमणीय उपदेशक (**महाम्**) महान् महाशय सर्वाध्यक्ष का (उ) ही (**अवसे**) रक्षण आदि के लिये (**यजध्वम्**) मिलिये वा सत्कार करिये॥ १॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो आप लोगों के साथ मित्रत्व के लिये दृढ़ शपथ करके तन, मन और धनों से उपकार के लिये प्रयत्न करते हैं, उनका आप लोग सर्वदा सत्कार करिये तथा इनके साथ मित्रपन में बर्ताव करिये॥ १॥



www.9009.co.in

**पुनः स राजा किं कुर्यादित्याह॥**

फिर वह राजा क्या करे, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**आ यस्मिन् हस्ते नर्या मिमिक्षुरा रथे हिरण्यये रथेष्ठाः।**

**आ रश्मयो गभस्त्योः स्थूरयोराध्वन्नश्वासो वृषणो युजानाः॥२॥**

**आ। यस्मिन्। हस्ते। नर्याः। मिमिक्षुः। आ। रथे। हिरण्यये। रथेऽस्थाः। आ। रश्मयः। गभस्त्योः। स्थूरयोः। आ। अध्वन्। अश्वासः। वृषणः। युजानाः॥२॥**

**पदार्थः**-(**आ**) समन्तात् (**यस्मिन्**) (**हस्ते**) (**नर्याः**) नृभ्यो हितानि (**मिमिक्षुः**) सिञ्चन्ति सम्बध्नन्ति (**आ**) (**रथे**) (**हिरण्यये**) तेजोमये (**रथेष्ठाः**) ये रथे तिष्ठन्ति ते (**आ**) (**रश्मयः**) किरणा इव (**गभस्त्योः**) बाह्वोर्मध्ये (**स्थूरयोः**) स्थूलयोः। अत्र वर्णव्यत्येन लस्य स्थाने रः। (**आ**) (**अध्वन्**) अध्वनि मार्गे (**अश्वासः**) अश्वा इव महान्तो विद्युदादयः पदार्थाः (**वृषणः**) बलिष्ठाः (**युजानाः**) युक्ताः॥२॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! इन्द्रस्य यस्मिन् हस्ते रश्मय आ मिमिक्षुरिव नर्याः शस्त्रास्त्राणि यस्य हिरण्यये रथे रथेष्ठा रथे रथेष्ठा स्थूरयोर्गभस्त्योः शस्त्रास्त्राणि सन्ति यस्य यानेषु वृषणोऽश्वास आ युजाना अध्वन् यानान्या गमयन्ति ते सुखैर्जनाना मिमिक्षुः॥२॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यो राजा शस्त्राशस्त्रविदो वरान् धार्मिकाञ्छूरान् विमानादियाननिर्मातॄञ्छिल्पिनो विद्युदादिविद्याविदुषः सत्कृत्य रक्षति तस्यैव सूर्यरश्मय इव यशांसि प्रथन्ते॥२॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! ऐश्वर्य करने वाले के (**यस्मिन्**) जिस (**हस्ते**) हस्त में (**रश्मयः**) किरणों के समान (**आ**) सब ओर से (**मिमिक्षुः**) सिञ्चन करते सम्बन्ध करते हैं तथा (**नर्याः**) मनुष्यों के लिये हितकारक शस्त्र और अस्त्र जिसके (**हिरण्यये**) तेज के विकार से बने हुए (**रथे**) रथ में और (**रथेष्ठाः**) रथ पर स्थित होने वाले जन और (**स्थूरयोः**) स्थूल (**गभस्त्योः**) बाहुओं के मध्य में शस्त्र और अस्त्र हैं तथा जिसके वाहनों में (**वृषणः**) बलिष्ठ (**अश्वासः**) घोड़ों के समान बड़े बिजुली आदि पदार्थ (**आ**) सब ओर से (**युजानाः**) युक्त (**अध्वन्**) मार्ग में यानों को (**आ**) लाते हैं, वे सुखों से जनों का (**आ**) अच्छे प्रकार सम्बन्ध करते हैं॥२॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो राजा शस्त्र और अस्त्र के जानने वाले, श्रेष्ठ धार्मिक, शूर तथा विमान आदि वाहनों के बनाने वाले शिल्पियों और बिजुली आदि की विद्या को जानने वाले विद्वानों का सत्कार करके रक्षा करता है, उसी के सूर्य के किरणों के समान यश बढ़ते हैं॥२॥

**पुनः स राजा कीदृश इत्याह॥**

फिर वह राजा कैसा है, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**श्रिये ते पादा दुव आ मिमिक्षुर्धृष्णुर्वज्री शवसा दक्षिणावान्।**



www.9009.co.in

**वसा॑नो॒ अत्कं॑ सुर॒भिं दृ॒शे कं स्व१॒र्ण नृ॑तविषि॒रो ब॑भूथ॥ ३॥**

**श्रि॒ये। ते॒। पादा॑। दुवः॑। आ। मि॒मि॒क्षुः॒। धृ॒ष्णुः॒। व॒ज्री। शव॑सा। दक्षि॑ण॒ऽवान्। वसा॑नः। अत्क॑म्। सु॒र॒भिम्। दृ॒शे। कम्। स्वः॑। न। नृ॒तो॒ इति॑। इ॒षि॒रः॒। ब॒भू॒थ॒॥ ३॥**

**पदार्थः**-(**श्रिये**) लक्ष्म्यै (**ते**) तव (**पादा**) पादौ (**दुवः**) कार्यसेवनम् (**आ**) (**मिमिक्षुः**) आसिञ्चतः (**धृष्णुः**) प्रगल्भः (**वज्री**) शस्त्रास्त्रधारी (**शवसा**) बलेन (**दक्षिणावान्**) प्रशस्ता दक्षिणा विद्यते यस्य सः (**वसानः**) धारयन् (**अत्कम्**) व्याप्तशीलं वस्त्रम् (**सुरभिम्**) सुगन्धम् (**दृशे**) द्रष्टुम् (**कम्**) सुखकरं सुन्दरम् (**स्वः**) सुखम् (**न**) इव (**नृतो**) नेतः (**इषिरः**) ज्ञानवान् (**बभूथ**) भवेः॥ ३॥

**अन्वयः**-हे नृतो! यस्य ते पादा दुवः श्रिय आ मिमिक्षुः शवसा धृष्णुर्वज्री दक्षिणावान् दृशे कं सुरभिमत्कं वसानः स्वर्ण इषिरो यस्त्वं बभूथ तं त्वा वयं सेवेमहि॥ ३॥

**भावार्थः**-हे राजन्! यस्य तावश्रयेण पुष्कलश्रीर्घासाच्छादनयानानि सुखं प्रतिष्ठा च प्राप्नोति सोऽस्माभिर्भवान् कथन्न सेव्यते॥ ३॥

**पदार्थः**-हे (**नृतो**) नायक अग्रणी जन जिन (**ते**) आपके (**पादा**) पाद (**दुवः**) कार्य सेवन को (**श्रिये**) लक्ष्मी के लिये (**आ, मिमिक्षुः**) चारों ओर सींचते हैं और (**शवसा**) बल से (**धृष्णुः**) ढीठ (**वज्री**) शस्त्र और अस्त्रों को धारण करने वाले (**दक्षिणावान्**) उत्तम दक्षिणावान् (**दृशे**) देखने के लिये (**कम्**) सुख करने वाले सुन्दर (**सुरभिम्**) सुगन्ध को और (**अत्कम्**) व्याप्तिशील वस्त्र को (**वसानः**) धारण करते हुए (**स्वः**) सुख को (**न**) जैसे (**इषिरः**) ज्ञानवान्, वैसे जो आप (**बभूथ**) प्रसिद्ध हो, उन आपकी हम लोग सेवा करें॥ ३॥

**भावार्थः**-हे राजन्! जिन आपके आश्रय से अत्यन्त लक्ष्मी, घास, ओढ़ना, वाहन, सुख और प्रतिष्ठा प्राप्त होती है, वह आप हम लोगों से कैसे नहीं सेवन करने योग्य हैं॥ ३॥

**पुनः स कीदृशो भवेदित्याह॥**

फिर वह कैसा होवे, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**स सोम॒ आमि॑श्लतमः सु॒तो भू॒द्यस्मि॑न् प॒क्तिः प॒च्यते॒ सन्ति॑ धा॒नाः।**

**इन्द्रं॒ नरः॑ स्तु॒वन्तो॑ ब्रह्मका॒रा उ॒क्था शंस॑न्तो दे॒ववा॑ततमाः॥ ४॥**

**सः। सोमः॑। आमि॑श्लऽतमः। सु॒तः। भू॒त्। यस्मि॑न्। प॒क्तिः। प॒च्यते॑। सन्ति॑। धा॒नाः। इन्द्र॑म्। नरः॑। स्तु॒वन्तः॑। ब्र॒ह्म॒ऽका॒राः। उ॒क्था। शंस॑न्तः। दे॒ववा॑तऽतमाः॥ ४॥**

**पदार्थः**-(**सः**) (**सोमः**) ऐश्वर्ययोग ओषधिरसो वा (**आमिश्लतमः**) समन्तादतिशयेन मिश्रितः (**सुतः**) निष्पन्नः (**भूत्**) भवति (**यस्मिन्**) (**पक्तिः**) पाकः (**पच्यते**) (**सन्ति**) (**धानाः**) भ्रष्टान्यन्नानि (**इन्द्रम्**) (**नरः**) विद्वत्सु नायकाः (**स्तुवन्तः**) प्रशंसन्तः (**ब्रह्मकाराः**) ये ब्रह्म धनमन्नं वा कुर्वन्ति ते



www.9009.co.in

**(उक्था)** उक्तानि वक्तव्यानि **(शंसन्तः)** उपदिशन्तः **(देववाततमाः)** येऽतिशयेन देवान् विदुषः पदार्थान् वा प्राप्नुवन्ति ते॥४॥

**अन्वयः**-हे नरो! यस्मिन् राजनि पक्तिः पच्यते धानाः सन्त्यामिश्लतमः सुतः सोमो भूद्यमिन्द्रं स्तुवन्तो ब्रह्मकारा देववाततमा उक्था शंसन्तः सन्ति स भवानस्माकं राजा भवतु॥४॥

**भावार्थः**-यदि स धार्मिको राजा न स्यात्तर्हि सर्वे व्यवहारा विलुप्येरन्। यस्मिन्त्सति धनधान्यैश्वर्यं दधति ता धार्मिक्यः प्रजाः सन्ति॥४॥

**पदार्थः**-हे **(नरः)** विद्वानों में अग्रणी जनो! **(यस्मिन्)** जिस राजा के होने पर **(पक्तिः)** पाक **(पच्यते)** पकाया जाता है **(धानाः)** भूंजे हुए अन्न हैं **(आमिश्लतमः)** चारों ओर से अत्यन्त मिला हुआ **(सुतः)** उत्पन्न **(सोमः)** ऐश्वर्य का योग वा ओषधि का रस **(भूत्)** होता है और जिस **(इन्द्रम्)** ऐश्वर्यकारक की **(स्तुवन्तः)** प्रशंसा करते हुए **(ब्रह्मकाराः)** धन वा अन्न को करने वाले **(देववाततमाः)** अतिशय विद्वानों वा पदार्थों को प्राप्त होने वाले **(उक्था)** कहने योग्य वचनों का **(शंसन्तः)** उपदेश देते हुए **(सन्ति)** हैं **(सः)** वह आप हम लोगों के राजा हूजिये॥४॥

**भावार्थः**-जो वह धार्मिक राजा न होवे तो सब व्यवहार लोप होवें। जिसके होने पर धन-धान्य और ऐश्वर्य को धारण करती हैं, वे धर्मयुक्त प्रजायें होती हैं॥४॥

**अथेश्वरः कीदृशोऽस्तीत्याह॥**

अब ईश्वर कैसा है, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**न ते अन्तः शवसो धाय्यस्य वि तु बाबधे रोदसी महित्वा।**

**आ ता सूरिः पृणति तूतुजानो यूथेवाप्सु समीजमान ऊती॥५॥**

**न। ते। अन्तः। शवसः। धायि। अस्य। वि। तु। बाबधे। रोदसी इति। महिऽत्वा। आ। ता। सूरिः। पृणति। तूतुजानः। यूथाऽइव। अप्ऽसु। सम्ऽईजमानः। ऊती॥५॥**

**पदार्थः**-**(न)** निषेधे **(ते)** तवेश्वरस्य **(अन्तः)** सीमा **(शवसः)** बलस्य **(धायि)** ध्रियते **(अस्य)** **(वि)** **(तु)** **(बाबधे)** बध्नाति **(रोदसी)** द्यावापृथिव्यौ **(महित्वा)** महत्त्वेन **(आ)** **(ता)** तानि **(सूरिः)** विद्वान् **(पृणति)** सुखयति **(तूतुजानः)** क्षिप्रकारी **(यूथेव)** समूह इव **(अप्सु)** प्राणेषु जलेषु वा **(समीजमानः)** सम्यक्सङ्गच्छमानः **(ऊती)** ऊत्या रक्षणाद्यया क्रियया॥५॥

**अन्वयः**-हे जगदीश्वर! यस्याऽस्य ते शवसोऽन्तः केनापि न धायि यस्तु महित्वा रोदसी वि बाबधे यस्य ते ता ऊती समीजमानस्तूतुजानः सूरिरप्सु यूथेव सर्वाना पृणाति स भवानस्माभिरीड्योऽस्ति॥५॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! योऽनन्तगुणकर्मस्वभावः सर्वस्य प्रबन्धकर्तोपासितः सन्त्सुखप्रदातेश्वरोऽस्ति स एव सर्वैरुपासनीयः॥५॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-हे जगदीश्वर! जिस **(अस्य)** इस **(ते)** आप ईश्वर के **(शवसः)** बल की **(अन्तः)** सीमा किसी से भी **(न)** नहीं **(धायि)** धारण की जाती है **(तु)** और जो **(महित्वा)** बड़प्पन से **(रोदसी)** अन्तरिक्ष और पृथिवी को **(वि, बाबधे)** बांधता है और जिन आपके **(ता)** उन कर्मों को **(ऊती)** रक्षण आदि क्रिया से **(समीजमानë)** उत्तम प्रकार मिलता हुआ **(तूतुजानः)** शीघ्र कार्य करने वाला **(सूरिः)** विद्वान् **(अप्सु)** प्राणों वा जलों में **(यूथेव)** समूह के सदृश सब को **(आ, पृणति)** सुखी करता है, वह आप लोगों से स्तुति करने योग्य है॥५॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो अनन्त गुण, कर्म और स्वभावयुक्त और सब का प्रबन्ध करने वाला, उपासना किया हुआ सुख का देने वाला ईश्वर है, वही सब से उपासना करने योग्य है॥५॥

**अथेश्वरत्वे राजविषयमाह॥**

अब ईश्वरत्व में राजविषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**एवेदिन्द्रः सुहव ऋष्वो अस्तूती अनूती हिरिशिप्रः सत्वा।**

**एवा हि जातो असमात्योजाः पुरू च वृत्रा हनति नि दस्यून्॥६॥१॥**

**एव। इत्। इन्द्रः। सुऽहवः। ऋष्वः। अस्तु। ऊती। अनूती। हिरिऽशिप्रः। सत्वा। एव। हि। जातः। असमातिऽओजाः। पुरु। च। वृत्रा। हनति। नि। दस्यून्॥६॥१॥**

**पदार्थः**-**(एव)** **(इत्)** अपि **(इन्द्रः)** ईश्वरोपासको राजा **(सुहवः)** शोभन इव आह्वानं यस्य **(ऋष्वः)** महान् **(अस्तु)** **(ऊती)** रक्षया **(अनूती)** अरक्षया **(हिरिशिप्रः)** हिरी हरिते शिप्रे हनुनासिके यस्य सः **(सत्वा)** यः सीदति स पुरुषार्थी **(एवा)** अत्र **निपातस्य चे**ति दीर्घः। **(हि)** खलु **(जातः)** प्रसिद्ध **(असमात्योजाः)** असमाति अतुल्यमोजो यस्य सः **(पुरू)** बहु। अत्र **संहितायामि**ति दीर्घः। **(च)** **(वृत्रा)** धनानि **(हनति)** हन्ति **(नि)** नित्यम् **(दस्यून्)** दुष्टाँस्तेनान्॥६॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यः सुहव ऋष्वो हिरिशिप्रस्सत्वेन्द्र ऊत्यनूती सुखकर्त्ता जातश्चाऽस्तु स एवेदानन्दप्रदो भवतु। यो ह्यसमात्योजाः पुरू वृत्रोन्नयति दस्यूँश्च नि हनति स एवा सम्राड् भवितुमर्हति॥६॥

**भावार्थः**-स एव महान् राजा यो नीतिज्ञान् रक्षित्वा धार्मिकीः प्रजाः सम्पाल्य स्तेनादीन् पापान्न गृह्णाति स एव सज्जनैः सेवनीयोऽस्ति॥६॥

अत्रेन्द्रसखित्वदातृयोधीश्वरगुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इत्येकोनत्रिंशत्तमं सूक्तं प्रथमो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे मनुष्यो जो **(सुहवः)** सुन्दर पुकारना जिसका ऐसा **(ऋष्वः)** बड़ा **(हिरिशिप्रः)** हरे रंग की ठुड्ढी और नासिका युक्त **(सत्वा)** परिश्रम से पुरुषार्थ करने और **(इन्द्रः)** ईश्वर की उपासना



www.9009.co.in

करने वाला राजा **(ऊती)** रक्षा वा **(अनूती)** अरक्षा से सुख करने वाला **(जातः, च)** और प्रसिद्ध **(अस्तु)** हो वह **(एव)** ही **(इत्)** निश्चय से आनन्द देने वाला होवे और जो **(हि)** निश्चय से **(असमात्योजाः)** नहीं तुल्य पराक्रम जिसका वह **(पुरू)** बहुत **(वृत्रा)** धनों की वृद्धि करता है और **(दस्यून्)** दुष्ट चोरों का **(नि, हनति)** नित्य नाश करता है वह **(एवा)** ही चक्रवर्ती राजा होने के योग्य है॥६॥

**भावार्थः**-वही बड़ा राजा है जो नीति के जानने वालों की रक्षा करके धर्मिष्ठ प्रजाओं का पालन करके चोर आदि पापियों को नहीं ग्रहण करता है, वही सज्जनों से सेवन करने योग्य है॥६॥

इस सूक्त में इन्द्र, मित्रपन, देने वाले और युद्ध करने वाले तथा ईश्वर के गुणों का वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह उनतीसवाँ सूक्त और पहिला वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

**अथ पञ्चर्चस्य त्रिंशत्तमस्य सूक्तस्य भरद्वाजो बार्हस्पत्य ऋषिः। इन्द्रो देवता। १, ३ निचृत्त्रिष्टुप्। २ विराट्त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः। ४ पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः। ५ ब्राह्मी उष्णिक् छन्दः। ऋषभः स्वरः॥**

***अथ राजा कीदृशो भवेदित्याह॥***

अब पांच ऋचावाले तीसवें सूक्त का प्रारम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में राजा कैसा होवे, इस विषय को कहते हैं॥

**भूय॒ इद्वा॑वृधे वी॒र्या॑यँ॒ एको॑ अ॒जु॒र्यो द॑यते॒ वसू॑नि।**

**प्र रि॑रिचे दि॒व इन्द्रः॑ पृथि॒व्या अ॒र्धमिद॑स्य॒ प्रति॒ रोद॑सी उ॒भे॥१॥**

**भूयः॑। इत्। वा॒वृ॒धे॒। वी॒र्या॑य। एकः॑। अ॒जु॒र्यः॑। द॒य॒ते॒। वसू॑नि। प्र। रि॒रि॒चे॒। दि॒वः। इन्द्रः॑। पृ॒थि॒व्याः। अ॒र्धम्। इत्। अ॒स्य॒। प्रति॑। रोद॑सी॒ इति॑। उ॒भे इति॑॥१॥**

**पदार्थः**-(**भूयः**) (**इत्**) एव (**वावृधे**) वर्धते (**वीर्याय**) पराक्रमाय (**एकः**) असहायः (**अजुर्यः**) अजीर्णो युवा (**दयते**) ददाति (**वसूनि**) धनानि (**प्र**) (**रिरिचे**) रिणक्त्यतिरिक्तो भवति (**दिवः**) प्रकाशमानात् पदार्थान्तरात् (**इन्द्रः**) सूर्य इव (**पृथिव्याः**) भूमेः (**अर्द्धम्**) भूगोलार्द्धम् (**इत्**) इव (**अस्य**) (**प्रति**) (**रोदसी**) द्यावापृथिव्यौ (**उभे**)॥१॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथेन्द्रो दिवः पृथिव्याः अर्द्धमुभे रोदसी प्रत्यर्द्धं च प्रकाशते सर्वेभ्यः प्र रिरिचेऽश्येदेवाऽऽकर्षणेन सर्वे लोका वर्त्तन्ते तदिद्यो राजा वीर्याय भूयो वावृध एकोऽजुर्यः सन् वसूनि दयते स एव वरो जायते॥१॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यो राजा सूर्यवच्छुभगुणैः सुसहायैः सुसामग्र्या च प्रकाशमानो यशस्वी जायते यथा सूर्यः सर्वेषां भूगोलानां सम्मुखे स्थितानां भूगोलार्धानां प्रकाशं करोति तथैव न्यायाऽन्याययोर्मध्ये न्यायमेव प्रकाशयेत् सर्वेभ्य उभयं च दद्यात्॥१॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे (**इन्द्रः**) सूर्य के समान वर्त्तमान जन (**दिवः**) प्रकाशमान पदार्थान्तर और (**पृथिव्याः**) भूमि से (**अर्द्धम्**) भूगोल का अर्द्ध भाग (**उभे**) दोनों (**रोदसी**) अन्तरिक्ष और पृथिवीभूगोल के (**प्रति**) प्रति अर्द्धभाग प्रकाशित होता है और सब से (**प्र, रिरिचे**) समर्थ होता है तथा (**अस्य**) इसके (**इत्**) ही आकर्षण से सम्पूर्ण लोक वर्त्तमान हैं उस (**इत्**) ही प्रकार से जो राजा (**वीर्याय**) पराक्रम के लिये (**भूयः**) फिर (**वावृधे**) बढ़ता और (**एकः**) सहायरहित (**अजुर्य्यः**) युवा हुआ (**वसूनि**) धनों को (**दयते**) देता है, वही श्रेष्ठ होता है॥१॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो राजा सूर्य के समान श्रेष्ठ गुणों, श्रेष्ठ सहायों और उत्तम सामग्री से प्रकाशमान यशस्वी होता है और जैसे सूर्य सम्पूर्ण भूगोलों के सम्मुख स्थित भूगोल के अर्द्धभागों का प्रकाश करता है, वैसे ही न्याय और अन्याय के बीच में से न्याय का ही प्रकाश करे और सब के लिये दोनों को देवे॥१॥

**पुनः स राजा कीदृशो भवेदित्याह॥**

फिर वह राजा कैसा होवे, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अधा॑ मन्ये बृ॒हद॑सु॒र्य॑मस्य॒ यानि॑ दा॒धार॒ नकि॒रा मि॑नाति।**

**दि॒वेदि॑वे॒ सूर्यो॑ दर्श॒तो भू॒द्वि सद्मा॑न्युर्वि॒या सु॒क्रतु॑र्धात्॥२॥**

**अध॑। म॒न्ये॒। बृ॒हत्। अ॒सु॒र्य॑म्। अ॒स्य॒। यानि॑। दा॒धार॑। नकिः॑। आ। मि॒ना॒ति॒। दि॒वेऽदि॑वे। सूर्यः॑। द॒र्श॒तः। भू॒त्। वि। सद्मा॑नि। उ॒र्वि॒या। सु॒ऽक्रतुः॑। धा॒त्॥२॥**

**पदार्थः**-(**अधा**) आनन्तर्ये। अत्र **निपातस्य चे**ति दीर्घः। (**मन्ये**) (**बृहत्**) महत् (**असुर्यम्**) असुरस्य मेघस्येदम् (**अस्य**) (**यानि**) वायुदलानि (**दाधार**) दधाति (**नकिः**) न (**आ**) (**मिनाति**) हिनस्ति (**दिवेदिवे**) प्रतिदिनम् (**सूर्यः**) सविता (**दर्शतः**) द्रष्टव्यः प्रष्टव्यो वा (**भूत्**) भवति (**वि**) (**सद्मानि**) स्थानानि (**उर्विया**) पृथिव्या सह (**सुक्रतुः**) शोभनकर्मा (**धात्**) दधाति॥२॥

**अन्वयः**-हे राजन्! यथा दर्शतः सुक्रतुः सूर्यो दिवेदिवे यदस्य बृहदसुर्यं यानि च दाधारैनं नकिरा मिनाति। उर्विया सह सद्मानि धात् तथा भवान् वि भूत्। अधैवम्भूतं त्वां राजानमहं मन्ये॥२॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यथा सविता प्रतिदिनं मेघं धृत्वा वर्षित्वा पृथिवीं तत्रस्थान् पदार्थांश्चाऽहिंसित्वा धरति तथैव राज्यं धृत्वा सुखं वर्षित्वा प्रजया सह न्यायकर्माणि राजा दधीत॥२॥

**पदार्थः**-हे राजन्! जैसे (**दर्शतः**) देखने वा पूछने योग्य (**सुक्रतुः**) शुभ कर्म करने वाला (**सूर्यः**) सूर्य (**दिवेदिवे**) प्रतिदिन जो (**अस्य**) इसके (**बृहत्**) बड़े (**असुर्यम्**) मेघ के सम्बन्धी का और (**यानि**) जिन वायुदलों का (**दाधार**) धारण करता है और इसको (**नकिः**) नहीं (**आ, मिनाति**) नष्ट करता है और (**उर्विया**) पृथिवी के साथ (**सद्मानि**) स्थानों को (**धात्**) धारण करता है, वैसे आप (**वि, भूत्**) होते हैं (**अधा**) इसके अनन्तर ऐसे हुए आपको राजा मैं (**मन्ये**) मानता हूँ॥२॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे सूर्य प्रतिदिन मेघ को धारण करके वर्षा के पृथिवी और पृथिवीस्थ पदार्थों के नाश नहीं करके धारण करता है, वैसे ही राज्य को धारण करके सुख को वर्षा के प्रजा के साथ न्यायकर्मों को राजा धारण करे॥२॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥



www.9009.co.in

**अ॒द्या चि॒न्नू चि॒त्तदपो॑ न॒दीनां॒ यदा॑भ्यो॒ अर॑दो गा॒तुमि॑न्द्र।**

**नि पर्व॑ता अद्म॒सदो॒ न से॑दु॒स्त्वया॑ दृ॒ळ्हानि॑ सुक्रतो॒ रजां॑सि॥ ३॥**

**अ॒द्य। चि॒त्। नु। चि॒त्। तत्। अपः॑। न॒दीना॑म्। यत्। आ॒भ्यः॒। अर॑दः। गा॒तुम्। इ॒न्द्र॒। नि। पर्व॑ताः। अ॒द्म॒ऽसदः॑। न। से॒दुः॒। त्वया॑। दृ॒ळ्हानि॑। सु॒क्र॒तो॒ इति॑ सुऽक्रतो। रजां॑सि॥ ३॥**

**पदार्थः**-(**अद्या**) अत्र **संहितायामि**ति दीर्घः। (**चित्**) इव (**नू**) सद्यः। अत्र **ऋचि तुनुघे**ति दीर्घः। (**चित्**) अपि (**तत्**) तानि (**अपः**) जलानि (**नदीनाम्**) (**यत्**) (**आभ्यः**) नदीभ्यः (**अरदः**) विलिखत्याकर्षति (**गातुम्**) भूमिम् (**इन्द्र**) सूर्य इव वर्तमान (**नि**) (**पर्वताः**) मेघाः (**अद्मसदः**) येऽद्मस्वत्तव्येषु सीदन्ति (**न**) इव (**सेदुः**) सीदन्ति (**त्वया**) रक्षकेण पतिना सह (**दृळ्हानि**) धृतानि (**सुक्रतो**) सुष्ठुकर्मप्रज्ञ (**रजांसि**) लोकविशेषाणि॥ ३॥

**अन्वयः**-हे सुक्रतो इन्द्र! चित् सूर्यो गातुमरदो नदीनां सकाशादपोऽरदो यदाभ्योऽरदस्तच्चिद्वर्षति तथाऽद्या त्वं नू विधेहि। यथा सूर्येण रजांसि दृळ्हानि धृतानि तथाऽद्याऽद्मसदः पर्वता न त्वया प्रजा राजजनाश्च निषेदुः॥ ३॥

**भावार्थः**-अत्रोपमावाचकलुप्तोपमालङ्कारौ। हे राजन्! यथा सूर्योऽखिलेभ्यः पदार्थेभ्योऽष्टौ मासान् रसं धृत्वा मेघमण्डले संस्थाप्य वर्षासु वर्षयित्वा प्रजाः सुखयति तथा त्वमष्टसु मासेषु प्रजाभ्यः करं हृत्वा चातुर्मास्ये दद्याः॥ ३॥

**पदार्थः**-हे (**सुक्रतो**) श्रेष्ठ कर्मों को उत्तम प्रकार जानने वाले (**इन्द्र**) सूर्य के समान वर्त्तमान (**चित्**) जैसे सूर्य (**गातुम्**) भूमि का (**अरदः**) आकर्षण करता है तथा (**नदीनाम्**) नदियों के समीप से (**अपः**) जलों का आकर्षण करता है और (**यत्**) जो (**आभ्यः**) इन नदियों से खैंचता (**तत्**) वह (**चित्**) भी वर्षता है, वैसे (**अद्याः**) आज आप (**नू**) शीघ्र करिये और जैसे सूर्य से (**रजांसि**) लोकविशेष (**दृळ्हानि**) धारण किये गये, वैसे आज (**अद्मसदः**) उत्तम प्रकार खाने योग्य में स्थित होने वाले (**पर्वताः**) मेघ (**न**) जैसे वैसे (**त्वया**) रक्षक वा स्वामी आपसे प्रजा और राजजन (**नि, सेदुः**) स्थित होते हैं॥ ३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमा और वाचकलुप्तोपमालङ्कार हैं। हे राजन्! जैसे सूर्य सम्पर्ण पदार्थों से आठ महीने रस धारण करके मेघमण्डल में स्थापित करके वर्षाओं में वर्षाकि प्रजाओं को सुखी करता है, वैसे आप आठ मासों में प्रजाओं से कर लेकर वर्षाकाल में देवें॥ ३॥

**पुनरीश्वरः कीदृशोऽस्तीत्याह॥**

फिर ईश्वर कैसा है, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**स॒त्यमित्तन्न त्वावाँ॑ अ॒न्यो अ॒स्तीन्द्र॑ दे॒वो न मर्त्यो॒ ज्याया॑न्।**

**अह॒न्नहिं॑ परि॒शया॑न॒मर्णोऽवा॑सृजो अ॒पो अच्छा॑ समु॒द्रम्॥ ४॥**



www.9009.co.in

**स॒त्यम्। इत्। तत्। न। त्वाऽवा॑न्। अ॒न्यः। अ॒स्ति॒। इन्द्र॑। दे॒वः। न। मर्त्यः। ज्याया॑न्। अह॑न्। अहि॑म्। प॒रि॒ऽशया॑नम्। अर्णः॑। अवा॑। अ॒सृ॒ज॒ः। अ॒पः। अच्छ॑। स॒मु॒द्रम्॥४॥**

**पदार्थः**-(**सत्यम्**) सत्सु साधु (**इत्**) एव (**तत्**) (**न**) निषेधे (**त्वावान्**) त्वया सदृशः (**अन्यः**) भिन्नः (**अस्ति**) (**इन्द्र**) सूर्य्य इव स्वप्रकाशमान जगदीश्वर (**देवः**) विद्वान् प्रकाशमानो लोको वा (**न**) (**मर्त्यः**) (**ज्यायान्**) महान् (**अहन्**) हन्ति (**अहिम्**) व्याप्नुवन्तं मेघम् (**परिशयानम्**) सर्वतः शयानमिव (**अर्णः**) उदकम् (**अव**) (**असृजः**) सृजति (**अपः**) जलानि (**अच्छा**) सम्यक्। अत्र **संहितायामि**ति दीर्घः। (**समुद्रम्**) सागरमन्तरिक्षं वा॥४॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! यतस्त्वया निर्मितस्सविता परिशयानमहिमहन्नर्णोऽपः समुद्रमच्छाऽवाऽसृजस्तस्मादन्यस्त्वावान् कोऽप्यन्यो ज्यायान्नास्ति न देवो न मर्त्यश्चास्तीति तत्सत्यमिदेवास्ति॥४॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! येन जगत्पालनायाकर्षको वृष्टिप्रकाशकरः सूर्यो निर्मितो मेघश्च तस्माज्जगदीश्वरेण तुल्यः कोऽपि नास्ति कुतोऽधिक इति तथ्यं विजानीत॥४॥

**पदार्थः**-हे (**इन्द्र**) सूर्य्य के सदृश अपने से प्रकाशमान जगदीश्वर! जिससे आपसे बनाया गया सूर्य्य (**परिशायनम्**) चारों ओर से सोते हुए से (**अहिम्**) व्याप्त होने वाले मेघ का (**अहन्**) नाश करता है और (**अर्णः**) भ्रमर पड़ते जल वा अन्य (**अपः**) जलों और (**समुद्रम्**) सागर वा अन्तरिक्ष को (**अच्छा**) उत्तम प्रकार (**अव, असृजः**) उत्पन्न करता है, इससे (**अन्यः**) और (**त्वावान्**) आपके सदृश कोई भी दूसरा (**ज्यायान्**) बड़ा नहीं है (**न**) न (**देवः**) विद्वान् वा प्रकाशमान और (**न**) न (**मर्त्यः**) साधारण मनुष्य (**अस्ति**) है (**तत्**) वह (**सत्यम्**) श्रेष्ठों में श्रेष्ठ (**इत्**) ही है॥४॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जिस जगदीश्वर ने जगत् के पालन के लिये आकर्षण करने और वृष्टि तथा प्रकाश करने वाला सूर्य्य और मेघ बनाया, इस कारण से जगदीश्वर के तुल्य कोई भी नहीं है, फिर अधिक कहाँ से हो, यह सत्य जानिये॥४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**त्वम॒पो वि दुरो॒ विषू॑चीरिन्द्र॑ दृ॒ळ्हम॑रुज॒ः पर्व॑तस्य।**

**राजा॑भवो॒ जग॑तश्चर्ष॒णीनां सा॒कं सूर्यं॑ ज॒नय॑न् द्यामु॒षास॑म्॥५॥२॥**

**त्वम्। अ॒पः। वि। दुर॑ः। विषू॑चीः। इन्द्र॑। अ॒रु॒जः। पर्व॑तस्य। राजा॑। अ॒भ॒वः। जग॑तः। च॒र्ष॒णी॒नाम्। सा॒कम्। सूर्य॑म्। ज॒नय॑न्। द्याम्। उ॒षस॑म्॥५॥**

**पदार्थः**-(**त्वम्**) (**अपः**) जलानि प्राणान् वा (**वि**) (**दुरः**) द्वाराणि (**विषूचीः**) व्याप्तानि (**इन्द्र**) परमैश्वर्यप्रद जगदीश्वर (**दृळ्हम्**) ध्रुवम् (**अरुजः**) रुज (**पर्वतस्य**) मेघस्य (**राजा**) (**अभवः**) भवसि



www.9009.co.in

**(जगतः)** संसारस्य **(चर्षणीनाम्)** मनुष्याणाम् **(साकम्)** सह **(सूर्य्यम्)** **(जनयन्)** उत्पादयन् **(द्याम्)** प्रकाशम् **(उषासम्)** दिनमुखं प्रभातम्॥५॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! यथा सूर्य्यः पर्वतस्य दृळ्हं रुजति विषूचीर्दुरः प्रकाशयन्नपो वि वर्षयति जगतश्चर्षणीनां राजा भवति तथा त्वं सूर्य्यं द्यामुषासं च जनयन्त्सर्वैः साकं व्याप्तः सन् दुःखमरुजो जगतश्चर्षणीनाञ्च राजाऽभवः॥५॥

**भावार्थः-**अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यः सूर्यादीनामुत्पादकः प्रकाशको धर्त्ता सर्वेषु व्याप्तो जगदीश्वरोऽस्ति तमात्मना सह सततमुपासीध्वमिति॥५॥

अत्रेन्द्रराजसूर्य्येश्वरगुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति त्रिंशत्तमं सूक्तं द्वितीयो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे **(इन्द्र)** अत्यन्त ऐश्वर्य्य के देने वाले जगदीश्वर! जैसे सूर्य्य **(पर्वतस्य)** मेघ के **(दृळ्हम्)** दृढ़ भाग को भङ्ग करता और **(विषूचीः)** व्याप्त **(दुरः)** द्वारों को प्रकाशित करता हुआ **(अपः)** जलों वा प्राणों को **(वि)** विशेष कर वर्षाता है तथा **(जगतः)** संसार के **(चर्षणीनाम्)** मनुष्यों का **(राजा)** राजा होता है, वैसे **(त्वम्)** आप **(सूर्य्यम्)** सूर्य्य और **(द्याम्)** प्रकाश को और **(उषासम्)** दिन के मुख प्रभात को **(जनयन्)** उत्पन्न करते हुए सबके **(साकम्)** साथ व्याप्त हुए दुःख को **(अरुजः)** नष्ट कीजिये और संसार के मनुष्यों के राजा **(अभवः)** हूजिये॥५॥

**भावार्थः-**इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जो सूर्य आदि का उत्पन्न करने वाला, प्रकाशक और धारण करने वाला तथा सम्पूर्ण पदार्थों में व्याप्त जगदीश्वर है उसकी आत्मा के साथ निरन्तर उपासना करो॥५॥

इस सूक्त में इन्द्र, राजा, सूर्य, और ईश्वर के गुणों का वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह तीसवाँ सूक्त और दूसरा वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

**अथ पञ्चर्चस्यैकत्रिंशत्तमस्य सूक्तस्य सुहोत्र ऋषिः। इन्द्रो देवता। १ निचृत्त्रिष्टुप्। ५ त्रिष्टुप्छन्दः। धैवतः स्वरः। २ स्वराट् पङ्क्तिः। ३ पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः। ४ निचृदतिजगती छन्दः। निषादः स्वरः॥**

***अथेश्वरः कीदृशोऽस्तीत्याह॥***

अब पांच ऋचावाले इकतीसवें सूक्त का प्रारम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में ईश्वर कैसा है, इस विषय को कहते हैं॥

**अभूरेको रयिपते रयीणामा हस्तयोरधिथा इन्द्र कृष्टीः।**

**वि तोके अप्सु तनये च सूरेऽवोचन्त चर्षणयो विवाचः॥ १॥**

**अभूः। एकः। रयिऽपते। रयीणाम्। आ। हस्तयोः। अधिथाः। इन्द्र। कृष्टीः। वि। तोके। अप्ऽसु। तनये। च। सूरे। अवोचन्त। चर्षणयः। विऽवाचः॥ १॥**

**पदार्थः**-(**अभूः**) भवेः (**एकः**) असहायः (**रयिपते**) धनस्वामिन् (**रयीणाम्**) द्रव्याणाम् (**आ**) (**हस्तयोः**) (**अधिथाः**) दध्याः (**इन्द्र**) ऐश्वर्यप्रद राजन् (**कृष्टीः**) मनुष्यादिप्रजाः (**वि**) (**तोके**) सद्यो जाते (**अप्सु**) प्राणेष्वन्तरिक्षे वा (**तनये**) ब्रह्मचारिणि कुमारे (**च**) (**सूरे**) सूर्ये (**अवोचन्त**) वदन्ति (**चर्षणयः**) मनुष्याः (**विवाचः**) विविधविद्याशिक्षायुक्ता वाचो येषान्ते॥ १॥

**अन्वयः**-हे रयीणां रयिपत इन्द्र! त्वं ये विवाचश्चर्षणयोऽप्सु तोके तनये च सूरे च विद्या व्यवोचन्त ताः कृष्टीर्हस्तयोरामलकमिवाऽऽधिथा एकस्सन् प्रजापालकोऽभूः॥ १॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। परमेश्वरस्य स्वभावोऽस्ति ये सत्यमुपदिशन्ति तान्त्सदोत्साहाय्ये रक्षणे च दधात्यैश्वर्यं च प्रापयति यथा विनययुक्त एकोऽपि राजा राज्यं पालयितुं शक्नोति तथैव सर्वशक्तिमान् परमात्माऽखिलां सृष्टिं सदा रक्षति॥ १॥

**पदार्थः**-हे (**रयीणाम्**) द्रव्यों के बीच (**रयिपते**) धन के स्वामिन् (**इन्द्र**) ऐश्वर्य्य के देने वाले राजन्! आप जो (**विवाचः**) अनेक प्रकार की विद्या और शिक्षा से युक्त वाणियों वाले (**चर्षणयः**) मनुष्य (**अप्सु**) प्राणों वा अन्तरिक्ष तथा (**तोके**) शीघ्र उत्पन्न हुए सन्तान (**तनये, च**) और ब्रह्मचारी कुमार और (**सूरे**) सूर्य्य में विद्याओं को (**वि, अवोचन्त**) विशेष कहते हैं उन (**कृष्टीः**) मनुष्य आदि प्रजाओं को (**हस्तयोः**) हाथों में आंवले के सदृश (**आ, अधिथाः**) अच्छे प्रकार धारण करिये और (**एकः**) सहायरहित हुए प्रजा के पालन करने वाले (**अभूः**) हूजिये॥ १॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। परमेश्वर का स्वभाव है कि जो सत्य का उपदेश देते हैं उनको सदा उत्साहित करता और रक्षा में धारण करता और ऐश्वर्य्य को प्राप्त कराता है और जैसे विनय से युक्त



www.9009.co.in

एक भी राजा राज्यपालन करने को समर्थ होता है, वैसे ही सर्व शक्तिमान् परमात्मा सम्पूर्ण सृष्टि की सदा रक्षा करता है॥१॥

**पुनर्मनुष्याः किं जानीयुरित्याह॥**

फिर मनुष्य क्या जानें, इस विषय को कहते हैं॥

**त्वद्भियेन्द्र पार्थिवानि विश्वाच्युता च्चियावयन्ते रजांसि।**

**द्यावाक्षामा पर्वतासो वनानि विश्वं दृळहं भयते अज्मन्ना ते॥२॥**

**त्वत्। भिया। इन्द्र। पार्थिवानि। विश्वा। अच्युता। चित्। च्यवयन्ते। रजांसि। द्यावाक्षामा। पर्वतासः। वनानि। विश्वम्। दृळहम्। भयते। अज्मन्। आ। ते॥२॥**

**पदार्थः**-(**त्वत्**) (**भिया**) (**इन्द्र**) विद्युदिव वर्त्तमान (**पार्थिवानि**) पृथिव्यां विदितानां जन्तुविशेषाणि (**विश्वा**) सर्वाणि (**अच्युता**) क्षयरहितानि (**चित्**) (**च्यावयन्ते**) गमयन्ति (**रजांसि**) लोकान् (**द्यावाक्षामा**) द्यावापृथिव्यौ (**पर्वतासः**) शैलाः (**वनानि**) जङ्गलानि (**विश्वम्**) सर्वं जगत् (**दृळहम्**) (**भयते**) (**अज्मन्**) मार्गे (**आ**) (**ते**) तव॥२॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! ते भिया विश्वाच्युता पार्थिवानि रजांसि चित् च्यावयन्ते यथा सूर्येण द्यावाक्षामा पर्वतासो वनानि विश्वञ्च तथा त्वद्दृळहमज्मन्नाऽऽभयते॥२॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यथा न्यायकारिणो वीरपुरुषात् कातरा बिभ्यति तथैव विद्युतः सर्वे प्राणिनो बिभ्यति॥२॥

**पदार्थः**-हे (**इन्द्र**) बिजुली के सदृश वर्त्तमान (**ते**) आपके (**भिया**) भय से (**विश्वा**) सम्पूर्ण (**अच्युता**) नाश से रहित (**पार्थिवानि**) पृथिवी में विदित जन्तु विशेष (**रजांसि**) लोकों को (**चित्**) निश्चित (**च्यावयन्ते**) चलाते हैं तथा जैसे सूर्य्य से (**द्यावाक्षामा**) अन्तरिक्ष और पृथिवी तथा (**पर्वतासः**) पर्वत और (**वनानि**) जंगल (**विश्वम्**) सम्पूर्ण जगत् को चलाते हैं, वैसे (**त्वत्**) आपसे (**दृळहम्**) दृढ़ विश्व (**अज्मन्**) मार्ग में (**आ, भयते**) अच्छे प्रकार भय करता है॥२॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे न्यायकारी वीरपुरुष से कायर जन डरते हैं, वैसे ही बिजुली से सब प्राणी डरते हैं॥२॥

**पुना राज्ञा किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

फिर राजा क्या करे, इस विषय को कहते हैं॥

**त्वं कुत्सेनाभि शुष्णमिन्द्राशुषं युध्य कुयवं गविष्टौ।**

**दश प्रपित्वे अध सूर्यस्य मुषायश्चक्रमविवे रपांसि॥३॥**

**त्वम्। कुत्सेन। अभि। शुष्णम्। इन्द्र। अशुषम्। युध्य। कुयवम्। गोऽइष्टौ। दश। प्रऽपित्वे। अध। सूर्यस्य। मुषायः। चक्रम्। अविवेः। रपांसि॥३॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**त्वम्**) (**कुत्सेन**) वज्रेण (**अभि**) (**शुष्णम्**) बलम् (**इन्द्र**) परमैश्वर्यप्रद राजन् (**अशुषम्**) अशुष्कम् (**युध्य**) (**कुयवम्**) कुत्सिता यवा यस्मिंस्तत् (**गविष्टौ**) किरणसमागमे (**दश**) (**प्रपित्वे**) प्राप्तौ (**अध**) (**सूर्यस्य**) (**मुषायः**) चोरय (**चक्रम्**) चक्रमिव (**अविवेः**) व्याप्नुहि (**रपांसि**) हिंसनानि॥३॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! त्वं शुष्णमशुषं कुत्सेन गविष्टौ कुयवमभि युध्याध प्रपित्वे दश रपांसि मुषायः सूर्यस्य चक्रमविवेः॥३॥

**भावार्थः**-हे राजंस्त्वमधर्मिणा शत्रुणा सहैव युध्यस्व न धर्मात्मना, एवं कृते यथा सूर्यस्याऽभितो भूगोलाश्चकवद् भ्रमन्ति तथैव प्रजाजनास्त्वां दृष्ट्वा पुरुषार्थेन प्रचलिष्यन्ति॥३॥

**पदार्थः**-हे (**इन्द्र**) अत्यन्त ऐश्वर्य्य के देने वाले राजन्! (**त्वम्**) आप (**शुष्णम्**) बल और (**अशुषम्**) शुष्करहित को (**कुत्सेन**) वज्र से (**गविष्टौ**) किरणों के समागम में (**कुयवम्**) कुत्सित यव जिसमें उसको (**अभि, युध्य**) अभियोधन करो (**अध**) इसके अनन्तर (**प्रपित्वे**) प्राप्ति में (**दश**) दश (**रपांसि**) हिंसनों को (**मुषायः**) चुराओ और (**सूर्यस्य**) सूर्य्य के (**चक्रम्**) चक्र को (**अविवेः**) व्याप्त होओ॥३॥

**भावार्थः**-हे राजन्! आप अधर्मी शत्रु के साथ ही युद्ध करिये, धर्मात्मा के साथ न करिये, ऐसा करने पर जिस प्रकार सूर्य्य के चारों ओर भूगोल चक्र के समान घूमते हैं, वैसे ही प्रजाजन आपको देखकर पुरुषार्थ से चलेंगे॥३॥

**पुना राजा किं कुर्यादित्याह॥**

फिर राजा क्या करे, इस विषय को कहते हैं॥

**त्वं शतान्यव शम्बरस्य पुरो जघन्थाप्रतीनि दस्योः।**

**अशिक्षो यत्र शच्या शचीवो दिवोदासाय सुन्वते सुतक्रे भरद्वाजाय गृणते वसूनि॥४॥**

**त्वम्। शतानि। अव। शम्बरस्य। पुरः। जघन्थ। अप्रतीनि। दस्योः। अशिक्षः। यत्र। शच्या। शचीऽवः। दिवःऽदासाय। सुन्वते। सुतऽक्रे। भरत्ऽवाजाय। गृणते। वसूनि॥४॥**

**पदार्थः**-(**त्वम्**) (**शतानि**) (**अव**) (**शम्बरस्य**) मेघस्येव शत्रोः (**पुरः**) पुराणि (**जघन्थ**) हंसि (**अप्रतीनि**) अप्रतीतान्यपि (**दस्योः**) परद्रव्यापहारकस्य दुष्टस्य (**अशिक्षः**) शिक्षय (**यत्र**) (**शच्या**) सुशिक्षितया वाचोत्तमेन कर्मणा वा (**शचीवः**) शची प्रशस्ता प्रज्ञा विद्यते यस्य सः (**दिवोदासाय**) विज्ञानस्य दात्रे (**सुन्वते**) सारनिष्पादकाय (**सुतक्रे**) सुष्ठुप्रसन्न (**भरद्वाजाय**) विज्ञानधर्त्रे (**गृणते**) स्तुवते (**वसूनि**) द्रव्याणि॥४॥

**अन्वयः**-हे शचीवः सुतक्र इन्द्र! राजँस्त्वं यथा सूर्यः शम्बरस्य शतानि पुरोऽव जघन्थ तथा दस्योरप्रतीनि शतानि पुरो जघन्थ शच्यैतानशिक्षो यत्र दिवोदासाय सुन्वते गृणते भरद्वाजाय वसूनि दद्यास्तत्रैतेन विद्याप्रचारं कारय॥४॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यो राजा सूर्य्यवन्न्यायप्रकाशको मेघवद्विद्यादिप्रचाराय पुष्कलधनदाता भवति स एव विजयमाप्नोति॥४॥

**पदार्थः**-हे **(शचीवः)** उत्तम बुद्धि वाले **(सुतक्रे)** उत्तम प्रकार प्रसन्न अत्यन्त ऐश्वर्य के देने वाले राजन्! **(त्वम्)** आप जैसे सूर्य्य **(शम्बरस्य)** मेघ के समान शत्रु के **(शतानि)** सैकड़ों **(पुरः)** नगरों का **(अव, जघन्थ)** नाश करते हो, वैसे **(दस्योः)** दूसरे के द्रव्य चुराने वाले दुष्टजन के **(अप्रतीनि)** नहीं जाने गये भी सैकड़ों नगरों का नाश करिये और **(शच्या)** उत्तमशिक्षायुक्त वाणी वा उत्तम कर्म्म से इनको **(अशिक्षः)** शिक्षा दीजिये और **(यत्र)** जहाँ **(दिवोदासाय)** विज्ञान के देने तथा **(सुन्वते)** सार के निकालने वाले **(गृणते)** स्तुति करते हुए **(भरद्वाजाय)** विज्ञान के धारण करने वाले के लिये **(वसूनि)** द्रव्यों को दीजिये वहाँ इससे विद्या का प्रचार कराइये॥४॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो राजा सूर्य्य के सदृश न्याय का प्रकाश करने वाला और मेघ के सदृश विद्या आदि के प्रचार के लिये बहुत धन का देने वाला होता है, वही सर्वत्र विजय को प्राप्त होता है॥४॥

**पुनस्स राजा किं कुर्यादित्याह॥**

फिर वह राजा क्या करे, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**स स॒त्यस॑त्वन् म॒ह॒ते रणा॑य॒ रथ॒मा ति॑ष्ठ तुविनृम्ण भी॒मम्।**

**या॒हि प्र॑पथि॒न्नव॒सोप॑ म॒द्रिक् प्र च॑ श्रुत श्रावय चर्ष॒णिभ्यः॑॥५॥३॥**

**सः। स॒त्य॒ऽस॒त्व॒न्। म॒ह॒ते। रणा॑य। रथ॑म्। आ। ति॒ष्ठ॒। तु॒वि॒ऽनृ॒म्ण॒। भी॒मम्। या॒हि। प्र॒ऽप॒थि॒न्। अव॑सा। उप॑। म॒द्रिक्। प्र। च॒ श्रु॒त॒। श्रा॒व॒य॒। च॒र्ष॒णि॒ऽभ्यः॑॥५॥**

**पदार्थः**-**(सः)** **(सत्यसत्वन्)** सत्यानि सत्वान्यन्तःकरणादीनि यस्य तत्सम्बुद्धौ **(महते)** **(रणाय)** सङ्ग्रामाय **(रथम्)** रमणीयं यानम् **(आ)** **(तिष्ठ)** **(तुविनृम्ण)** बहुधनयुक्त **(भीमम्)** भयङ्करम् **(याहि)** **(प्रपथिन्)** प्रकृष्टः पन्था विद्यते यस्य तत्सम्बुद्धौ **(अवसा)** रक्षणादिना **(उप)** **(मद्रिक्)** यो मामञ्चति मदभिमुखः **(प्र)** **(च)** **(श्रुत)** शृणु **(श्रावय)** **(चर्षणिभ्यः)** मनुष्येभ्यः॥५॥

**अन्वयः**-हे सत्यसत्वन् प्रपथिंस्तुविनृम्ण! स त्वं महते रणाय रथमा तिष्ठाऽवसा भीमं सङ्ग्राममुप याहि मद्रिक् सन् विद्वद्भ्यः श्रुत चर्षणिभ्यश्च प्र श्रावय॥५॥

**भावार्थः**-यो राजा सत्यवादिभ्यो राजनीतिकृत्यं श्रुत्वाऽन्येभ्यः श्रावयित्वा शुद्धात्मा सन्त्सर्वस्य रक्षणाय दुष्टपराजयं करोति स एवातुलश्रीको भवतीति॥५॥

अत्रेन्द्रराजकृत्यवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इत्येकत्रिंशत्तमं सूक्त तृतीयो वर्गश्च समाप्तः॥**



www.9009.co.in

**पदार्थ:**-हे **(सत्यसत्वन्)** शुद्ध अन्त:करण आदि इन्द्रियों युक्त **(प्रपथिन्)** उत्तम मार्ग वाले और **(तुविनृम्ण)** बहुत धन से युक्त **(स:)** वह आप **(महते)** बड़े **(रणाय)** सङ्ग्राम के लिये **(रथम्)** सुन्दर वाहन पर **(आ, तिष्ठ)** स्थित हूजिये और **(अवसा)** रक्षण आदि से **(भीमम्)** भयङ्कर सङ्ग्राम को **(उप, याहि)** प्राप्त हूजिये तथा **(मद्रिक्)** मेरे सम्मुख हुए विद्वानों से **(श्रुत)** सुनिये **(चर्षणिभ्य:, च)** और मनुष्यों के लिये **(प्र, श्रावय)** सुनाइये॥५॥

**भावार्थ:**-जो राजा सत्यवादियों से राजनीति के कृत्य को सुनकर अन्यों को सुना कर शुद्धचित्त वाला सब के रक्षण के लिये दुष्टों का पराजय करता है, वही बहुत लक्ष्मी वाला होता है॥५॥

इस सूक्त में इन्द्र और राजा के कृत्य का वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह इकतीसवाँ सूक्त और तृतीय वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

**अथ पञ्चर्चस्य द्वात्रिंशत्तमस्य सूक्तस्य सुहोत्र ऋषिः। इन्द्रो देवता। १ भुरिक्पङ्क्तिः। २ स्वराट्पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः। ३, ५ त्रिष्टुप्। ४ निचृत्त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः॥**

*अथ विद्वांसः किं कुर्युरित्याह॥*

अब पाँच ऋचावाले बत्तीसवें सूक्त का प्रारम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में विद्वान् जन क्या करें, इस विषय को कहते हैं॥

**अपूर्व्या पुरुतमान्यस्मै महे वीराय तवसे तुराय।**

**विरप्शिने वज्रिणे शंतमानि वचांस्यासा स्थविराय तक्षम्॥ १॥**

**अपूर्व्या। पुरुऽतमानि। अस्मै। महे। वीराय। तवसे। तुराय। विऽरप्शिने। वज्रिणे। शम्ऽतमानि। वचांसि। आसा। स्थविराय। तक्षम्॥ १॥**

**पदार्थः**-(**अपूर्व्या**) न विद्यते पूर्वो यस्मात् सोऽपूर्वस्तत्र भवानि (**पुरुतमानि**) अतिशयेन बहूनि (**अस्मै**) (**महे**) महते (**वीराय**) बलपराक्रमविद्यायुक्ताय (**तवसे**) बलाय (**तुराय**) क्षिप्रं कारिणे (**विरप्शिने**) प्रशंसिताय (**वज्रिणे**) प्रशस्तशस्त्रास्त्रयुक्ताय (**शन्तमानि**) अतिशयेन कल्याणकराणि (**वचांसि**) वचनानि (**आसा**) मुखेन (**स्थविराय**) वृद्धाय (**तक्षम्**) उपदिशेयम्॥ १॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथाऽहमासाऽस्मै महे वीराय तवसे तुराय विरप्शिने वज्रिणे स्थविरायाऽपूर्व्या पुरुतमानि शन्तमानि वचांसि तक्षं तथा यूयमप्यन्यानुपदिशत॥ १॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। विद्वद्भिः सदैव सर्वेभ्यः सत्योपदेशः कर्त्तव्यः येनातुलं सुखं जायेत॥ १॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे मैं (**आसा**) मुख से (**अस्मै**) इस (**महे**) बड़े (**वीराय**) बल पराक्रम तथा विद्यायुक्त के लिये और (**तवसे**) बल के लिये (**तुराय**) शीघ्र कार्य करने वाले तथा (**विरप्शिने**) प्रशंसित (**वज्रिणे**) प्रशंसित शस्त्र और अस्त्रों से युक्त (**स्थविराय**) वृद्धजन के लिये (**अपूर्व्या**) नहीं विद्यमान हैं पूर्व जिससे उसमें हुए (**पुरुतमानि**) अतिशय बहुत (**शन्तमानि**) अतीव कल्याण करने वाले (**वचांसि**) वचनों का (**तक्षम्**) उपदेश करूं, वैसे आप लोग भी अन्यों को उपदेश दीजिये॥ १॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। विद्वानों को चाहिये कि सदा ही सब के लिये सत्य उपदेश करना चाहिये, जिससे अतुल सुख होवे॥ १॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**स मातरा सूर्येणा कवीनामवासयद् रुजदद्रिं गृणानः।**



www.9009.co.in

**स्वा॒धीभि॒र्ऋक्व॑भिर्वावशा॒न उदु॒स्रिया॑णामसृजन्नि॒दान॑म्॥२॥**

**सः। मा॒तरा॑। सूर्ये॑ण। क॒वी॒नाम्। अवा॑सयत्। रु॒जत्। अद्रि॑म्। गृ॒णा॒नः। सु॒ऽआ॒धीभिः॑। ऋक्व॑ऽभिः। वा॒व॒शा॒नः। उत्। उ॒स्रिया॑णाम्। अ॒सृ॒ज॒त्। नि॒ऽदान॑म्॥२॥**

**पदार्थः**-(**सः**) (**मातरा**) मातापितरौ (**सूर्येण**) सवित्रा। अत्र **संहितायामि**ति दीर्घः। (**कवीनाम्**) विदुषाम् (**अवासयत्**) वासयति (**रुजत्**) रुजति (**अद्रिम्**) मेघम् (**गृणानः**) स्तुवन् (**स्वाधीभिः**) शोभना आधयस्सन्ति यासां ताभिर्नीतिभिः (**ऋक्वभिः**) प्रशंसनीयैः (**वावशानः**) कामयमानः (**उत्**) अपि (**उस्रियाणाम्**) किरणानामिव (**असृजत्**) सृजति (**निदानम्**) निश्चयम्॥२॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथा सूर्येणा सहितो विद्युदग्निरद्रिं रुजत् कवीनां च मातराऽवासयत् तथैव स्वाधीभिर्ऋक्वभिस्सह गृणानो वावशानो यथा सवितोस्रियाणां निदानमिव निदानमुदसृजत् स राजा सर्वैः सत्कर्त्तव्यः॥२॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे राजन्! यथा सूर्यो रश्मिभिः सर्वं प्रकाशयति तथैव विनयादीभिः सर्वं राज्यं प्रकाशय यथा सत्पुत्रा मातापितरौ सेवन्ते तथैव राजधर्मं सेवस्व॥२॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे (**सूर्येण**) सूर्य्य के सहित बिजुलीरूप अग्नि (**अद्रिम्**) मेघ को (**रुजत्**) स्थिर करता और (**कवीनाम्**) विद्वानों के (**मातरा**) माता-पिता को (**अवासयत्**) वसाता है, वैसे ही जो राजा (**स्वाधीभिः**) सुन्दर स्थान जिनके उन नीतियों और (**ऋक्वभिः**) प्रशंसा के योग्य व्यवहारों के साथ (**गृणानः**) स्तुति करता और (**वावशानः**) कामना करता हुआ जैसे सूर्य्य (**उस्रियाणाम्**) किरणों के (**निदानम्**) निश्चय को, वैसे निश्चय को (**उत्, असृजत्**) उत्पन्न करता है (**स**) वह राजा सब से सत्कार करने योग्य है॥२॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे राजन्! जैसे सूर्य्य किरणों से सबको प्रकाशित करता है, वैसे ही विनय आदिकों से सम्पूर्ण राज्य को प्रकाशित करिये और जैसे श्रेष्ठ पुत्र माता-पिता की सेवा करते हैं, वैसे ही राजधर्म का सेवन करिये॥२॥

**राजा कीदृशैः सह मित्रतां कुर्य्यादित्याह॥**

राजा कैसे जनों के साथ मित्रता करे, इस विषय को कहते हैं॥

**स वह्नि॑भि॒र्ऋक्व॑भि॒र्गोषु॒ शश्व॑न्मि॒तज्ञु॑भिः पु॒रु॒कृत्वा॑ जिगाय।**

**पुरः॑ पु॒रो॒हा सखि॑भिः सखी॒यन् दृ॒ळ्हा रु॑रोज क॒विभिः॑ क॒विः सन्॥३॥**

**सः। वह्नि॑ऽभिः। ऋक्व॑ऽभिः। गोषु॑। शश्व॑त्। मि॒तज्ञु॑ऽभिः। पु॒रु॒ऽकृत्वा॑। जि॒गा॒य॒। पुरः॑। पु॒रः॒ऽहा। सखि॑ऽभिः। स॒खि॒ऽयन्। दृ॒ळ्हा। रु॒रोज॒। क॒विऽभिः॑। क॒विः। सन्॥३॥**

**पदार्थः**-(**सः**) (**वह्निभिः**) वोढृभिः (**ऋक्वभिः**) प्रशंसितैः (**गोषु**) सुशिक्षितासु वाक्षु (**शश्वत्**) निरन्तरम् (**मितज्ञुभिः**) सङ्कुचितजानुभिरासीनैर्विद्वद्भिः (**पुरुकृत्वा**) (**जिगाय**) जयति (**पुरः**) शत्रूणां



www.9009.co.in

नगराणि (**पुरोहा**) पुराणां हन्ता (**सखिभिः**) मित्रैः (**सखीयन्**) सखेवाचरन् (**दृळहाः**) निष्कम्पाः (**रुरोज**) रुजति भनक्ति (**कविभिः**) विपश्चिद्भिः (**कविः**) विद्वान् (**सन्**)॥३॥

**अन्वयः**-हे सज्जना! यो मितज्ञुभिर्ऋक्वभिर्वह्निभिः कविभिः कविः सन् सखिभिः सखीयन् सन् पुरोहा दृळ्हाः पुरो रुरोज गोषु शश्वत् पुरुकृत्वा शत्रून् जिगाय स एव युष्माभिर्मन्तव्यः॥३॥

**भावार्थः**-ये मनुष्याः प्रशंसितैर्बलिष्ठैर्मितभाषिभिर्विद्वद्भिर्मित्रैस्सह मैत्रीं कृत्वा राज्यं प्राप्य दुष्टान् हत्वा धार्मिकान् रक्षन्ति ते कृतकृत्या भवन्ति॥३॥

**पदार्थः**-हे सज्जनो! जो (**मितज्ञुभिः**) सङ्कुचित जांघ वाले बैठे हुए विद्वानों और (**ऋक्वभिः**) प्रशंसित (**वह्निभिः**) धारण करने वाले (**कविभिः**) विद्वानों से (**कविः**) विद्वान् (**सन्**) हुआ और (**सखिभिः**) मित्रों से (**सखीयन्**) मित्र के सदृश आचरण करता हुआ (**पुरोहा**) नगरों का नाश करने वाला (**दृळहाः**) कम्पन क्रिया से रहित (**पुरः**) शत्रुओं के नगरों का (**रुरोज**) भङ्ग करता है और (**गोषु**) उत्तम प्रकार शिक्षित वाणियों में (**शश्वत्**) निरन्तर (**पुरुकृत्वा**) बहुत करके शत्रुओं को (**जिगाय**) जीतता है (**सः**) वही आप लोगों से मानने योग्य है॥३॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य प्रशंसित, बलिष्ठ, थोड़े बोलने वाले, विद्वान् मित्रों के साथ मित्रता कर राज्य को प्राप्त होकर दुष्टों का नाश करके धार्मिकों की रक्षा करते हैं, वे कृतकृत्य होते हैं॥३॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**स नीव्याभिर्जरितारमच्छा महो वाजेभिर्महद्भिश्च शुष्मैः।**

**पुरुवीराभिर्वृषभ क्षितीनामा गिर्वणः सुविताय प्र याहि॥४॥**

**सः। नीव्याभिः। जरितारम्। अच्छ। महः। वाजेभिः। महत्ऽभिः। च। शुष्मैः। पुरुऽवीराभिः। वृषभ। क्षितीनाम्। आ। गिर्वणः। सुविताय। प्र। याहि॥४॥**

**पदार्थः**-(**सः**) (**नीव्याभिः**) नीविषु प्रापणीयेषु भवाभिः (**जरितारम्**) स्तावकम् (**अच्छा**) अत्र **संहितायामि**ति दीर्घः। (**महः**) महान्तम् (**वाजेभिः**) वेगविज्ञानादिगुणवद्भिः (**महद्भिः**) महाशयैः (**च**) (**शुष्मैः**) प्रशंसितबलैः (**पुरुवीराभिः**) पुरवो बहवो वीरा यासु सेनासु ताभिः (**वृषभ**) बलिष्ठ (**क्षितीनाम्**) मनुष्याणाम् (**आ**) (**गिर्वणः**) य उत्तमाभिर्वाग्भिः सेव्यते तत्सम्बुद्धौ (**सुविताय**) प्रेरणाय (**प्र**) (**याहि**) प्रयाणं कुरु॥४॥

**अन्वयः**-हे वृषभ गिर्वण इन्द्र राजन्त्स त्वं नीव्याभिर्वाजेभिर्महद्भिः शुष्मैर्युक्ताभिः पुरुवीराभिः सेनाभिस्सह क्षितीनां सुविताय प्राऽऽयाहि महो जरितारं चाऽच्छा याहि॥४॥

**भावार्थः**-यो मनुष्यो धार्मिकाणां बलिष्ठानां सुशिक्षितानां सेनाभिर्विजयाय प्रयतेत स ध्रुवं विजयमाप्नुयात्॥४॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-हे **(वृषभ)** बलयुक्त **(गिर्वणः)** उत्तम वाणियों से सेवा किये गये अत्यन्त ऐश्वर्य्य के करने वाले राजन्! **(सः)** वह आप **(नीव्याभिः)** प्राप्त कराने योग्य पदार्थों में होने वाली तथा **(वाजेभिः)** वेग और विज्ञान आदि गुण वालों तथा **(महद्भिः)** महाशयों और **(शुष्मैः)** प्रशंसित बल वालों से युक्त **(पुरुवीराभिः)** बहुत वीर जिनमें उन सेनाओं के साथ **(क्षितीनाम्)** मनुष्यों की **(सुविताय)** प्रेरणा के लिये **(प्र, आ, याहि)** अच्छे प्रकार यात्रा करिये और **(महः)** बड़े **(जरितारम्, च)** और स्तुति वाले को **(अच्छा)** उत्तम प्रकार प्राप्त हूजिये॥४॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य धार्मिक, बलिष्ठ और उत्तम प्रकार से शिक्षित पुरुषों की सेनाओं से विजय के लिये प्रयत्न करे, वह निश्चय कर विजय को प्राप्त होवे॥४॥

**पुनः स राजा किं कुर्यादित्याह॥**

फिर वह राजा क्या करे, इस विषय को कहते हैं॥

**स सर्गेण शवसा तक्तो अत्यैरप इन्द्रो दक्षिणतस्तुराषाट्।**

**इत्था सृजाना अनपावृदर्थं दिवेदिवे विविषुरप्रमृष्यम्॥५॥४॥**

**सः। सर्गेण। शवसा। तक्तः। अत्यैः। अपः। इन्द्रः। दक्षिणतः। तुराषाट्। इत्था। सृजानाः। अनपऽवृत्। अर्थम्। दिवेऽदिवे। विविषुः। अप्रऽमृष्यम्॥५॥**

**पदार्थः**-**(सः)** **(सर्गेण)** संसर्जनीयेन **(शवसा)** बलेन **(तक्तः)** प्रसन्नः **(अत्यैः)** अश्वैरिव वेगवद्भिः **(अपः)** जलानि **(इन्द्रः)** परमैश्वर्यप्रदः **(दक्षिणतः)** दक्षिणपार्श्वात् **(तुराषाट्)** यस्तुरान् हिंसकान्त्सहते **(इत्था)** अस्माद्धेतोः **(सृजानाः)** सुशिक्षिताः **(अनपावृत्)** यो नापवृणोति **(अर्थम्)** द्रव्यम् **(दिवेदिवे)** प्रतिदिनम् **(विविषुः)** व्याप्नुवन्ति **(अप्रमृष्यम्)** अविचारणीयम्॥५॥

**अन्वयः**-हे राजन्! स त्वं यथा सूर्योऽपः सृजति तथा तक्त इन्द्रोऽत्यैर्दक्षिणतः सर्गेण शवसा तुराषाडनपावृत् सन् दिवेदिवेऽप्रमृष्यमर्थमा स्वीकुरु यथा सृजानाः कृत्यं विविषुरित्था कर्त्तव्यानि कर्माणि प्रविश॥५॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यो मनुष्योऽधर्मेण कर्त्तव्यमनर्थं न करोति स सूर्य्यवत्प्रकाशितकीर्तिर्भवति यथाऽऽदित्यो वृष्टिं कृत्वा सर्वान् हर्षयति तथैव राजा शुभगुणान् वर्षयित्वा सर्वानानन्दयेदिति॥५॥

अत्रेन्द्रविद्वद्राजगुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति द्वात्रिंशत्तमं सूक्तं चतुर्थो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे राजन् **(सः)** वह आप जैसे सूर्य्य **(अपः)** जलों को प्रकट करता है, वैसे **(तक्तः)** प्रसन्न **(इन्द्रः)** अत्यन्त ऐश्वर्य के देने वाले **(अत्यैः)** घोड़ों के समान वेग वाले पदार्थों से और **(दक्षिणतः)** दहिने पसवाड़े से **(सर्गेण)** उत्तम प्रकार प्रकट करने योग्य **(शवसा)** बल से **(तुराषाट्)** हिंसकों को सहने वाले तथा **(अनपावृत्)** असत्य को नहीं स्वीकार करने वाले हुए आप **(दिवेदिवे)** प्रतिदिन **(अप्रमृष्यम्)**



www.9009.co.in

नहीं विचारने योग्य **(अर्थम्)** द्रव्य को सब ओर से स्वीकार करिये और जैसे **(सृजानाः)** उत्तम प्रकार शिक्षित जन कृत्य को **(विविषुः)** व्याप्त होते हैं **(इत्था)** इस हेतु से कर्त्तव्य कर्म्मों में प्रविष्ट हूजिये॥५॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो मनुष्य अधर्म्म से करने योग्य अनर्थ को नहीं करता है, वह सूर्य्य के सदृश प्रकाशित यश वाला होता है और जैसे सूर्य्य वृष्टि करके सब को हर्षित करता, वैसे ही राजा शुभगुणों की वर्षा करके सब को आनन्दित करे॥५॥

इस सूक्त में इन्द्र, विद्वान् और राजा के गुणों का वर्णन होने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह बत्तीसवां सूक्त और चौथा वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

**अथ पञ्चर्चस्य त्रयस्त्रिंशत्तमस्य सूक्तस्य शुनहोत्र ऋषिः। इन्द्रो देवता। १, २, ३ निचृत्पङ्क्तिः। ४ भुरिक्पङ्क्तिः। ५ स्वराट् पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः॥**

*अथ नृपः किं कृत्वा किं कारयेदित्याह॥*

अब पाँच ऋचावाले तेंतीसवें सूक्त का प्रारम्भ किया जाता है उसके प्रथम मन्त्र में राजा क्या करके क्या करावे, इस विषय को कहते हैं॥

**य ओजिष्ठ इन्द्र तं सु नो दा मदो वृषन्त्स्वभिष्टिर्दास्वान्।**
**सौवश्व्यं यो वनवत् स्वश्वो वृत्रा समत्सु सासहदमित्रान्॥१॥**

यः। ओजिष्ठः। इन्द्र। तम्। सु। नः। दाः। मदः। वृषन्। सुऽअभिष्टिः। दास्वान्। सौवश्व्यम्। यः। वनवत्। सुऽअश्वः। वृत्रा। समत्ऽसु। ससहत्। अमित्रान्॥१॥

**पदार्थः**-(**यः**) (**ओजिष्ठः**) अतिशयेन बली (**इन्द्र**) ऐश्वर्यप्रद (**तम्**) (**सु**) (**नः**) (**अस्मभ्यम्**) (**दाः**) देहि (**मदः**) हर्षितः (**वृषन्**) तेजस्विन् (**स्वभिष्टिः**) सुष्ठ्वभिनता सङ्गतिर्यस्य सः (**दास्वान्**) दाता (**सौवश्व्यम्**) शोभनेष्वश्वेषु महत्सु पदार्थेषु वा भवम् (**यः**) (**वनवत्**) याचते (**स्वश्वः**) शोभना अश्वा यस्य सः (**वृत्रा**) धनानि (**समत्सु**) सङ्ग्रामेषु (**सासहत्**) भृशं सहते (**अमित्रान्**) शत्रून्॥१॥

**अन्वयः**-हे वृषन्निन्द्र! य ओजिष्ठो मदः स्वभिष्टिर्दास्वान् स त्वं नः सौवश्व्यं सु दाः। यः स्वश्वः सन् वृत्रा वनवत् समत्स्वमित्रान्त्सासहत् तं वयं सत्कुर्याम॥१॥

**भावार्थः**-योऽभयदाता सङ्ग्रामेषु विजेता स्वं बलमहर्निशं वर्धयति स एव सर्वान् सुखयितुमर्हति॥१॥

**पदार्थः**-हे (**वृषन्**) तेजस्वी (**इन्द्र**) ऐश्वर्य्य के देने वाले (**यः**) जो (**ओजिष्ठः**) अतिशय बली (**मदः**) हर्षित हुए (**स्वभिष्टिः**) अच्छी सङ्गति वाले (**दास्वान्**) दाता वह आप (**नः**) हम लोगों के लिये (**सौवश्व्यम्**) सुन्दर घोड़ों और बड़े पदार्थों में हुए को (**सु**) उत्तम प्रकार (**दाः**) दीजिये और (**यः**) जो (**स्वश्वः**) अच्छे घोड़ों वाला हुआ (**वृत्रा**) धनों की (**वनवत्**) याचना करता है तथा (**समत्सु**) संग्रामों में (**अमित्रान्**) शत्रुओं को (**सासहत्**) अत्यन्त सहता है (**तम्**) उसका हम लोग सत्कार करें॥१॥

**भावार्थः**-जो अभय देने वाला और सङ्ग्रामों में जीतने वाला तथा दिन-रात अपने बल को बढ़ाता है, वही सब को सुखी करने को योग्य है॥१॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**त्वां हीन्द्रावसे विवाचो हवन्ते चर्षणयः शूरसातौ।**



www.9009.co.in

**त्वं विप्रे॑भि॒र्वि प॒णीँरे॑शाय॒स्त्वोत॒ इत्सनि॑ता॒ वाज॒मर्वा॑॥२॥**

**त्वाम्। हि। इ॒न्द्र॒। अव॑से। वि॒ऽवा॑चः। हव॑न्ते। च॒र्ष॒णय॑ः। शूर॑ऽसातौ। त्वम्। विप्रे॑भिः। वि। प॒णीन्। अ॒शा॒य॒ः। त्वाऽऊ॑तः। इत्। सनि॑ता। वाज॑म्। अर्वा॑॥२॥**

**पदार्थः**-(**त्वाम्**) (**हि**) यतः (**इन्द्र**) दुःखविदारक राजन् (**अवसे**) रक्षणाद्याय (**विवाचः**) विविधविद्यायुक्ता वाचो येषान्ते (**हवन्ते**) स्तुवन्ति (**चर्षणयः**) विद्वांसः (**शूरसातौ**) शूराणां विभागरूपे सङ्ग्रामे (**त्वम्**) (**विप्रेभिः**) मेधाविभिः (**वि**) (**पणीन्**) प्रशंसितान् (**अशायः**) शायय (**त्वोतः**) त्वया रक्षितः (**इत्**) एव (**सनिता**) विभाजकः (**वाजम्**) विज्ञानम् (**अर्वा**) अश्व इव शुभगुणग्रहणे वेगवान्॥२॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! यो ह्यर्वेव सनिता त्वोतो वाजमाप्नोति तेन सहितस्त्वं विप्रेभिः पणीन् व्यशायस्तमित्त्वामवसे शूरसातौ विवाचश्चर्षणयो हवन्ते॥२॥

**भावार्थः**-यदि राजा धार्मिकैर्विद्वद्भिः सह राज्यपालनं कुर्यात्तर्हि तं को न प्रशंसेत्॥२॥

**पदार्थः**-हे (**इन्द्र**) दुःख के नाश करने वाले राजन्! जो (**हि**) जिससे (**अर्वा**) घोड़े के समान श्रेष्ठ गुणों के ग्रहण करने वाले वेग वाले (**सनिता**) विभाग करने वाले (**त्वोतः**) आप से रक्षित जन (**वाजम्**) विज्ञान को प्राप्त होता है, उसके सहित (**त्वम्**) आप (**विप्रेभिः**) मेधावी जनों के साथ (**पणीन्**) प्रशंसितों को (**वि, अशायः**) सुलाइये उस (**इत्**) ही (**त्वाम्**) आपकी (**अवसे**) रक्षा आदि के लिये (**शूरसातौ**) शूरवीर जनों के विभागरूप सङ्ग्राम में (**विवाचः**) अनेक प्रकार की विद्या से युक्त वाणियों वाले (**चर्षणयः**) विद्वान् जन (**हवन्ते**) स्तुति करते हैं॥२॥

**भावार्थः**-जो राजा धार्मिक विद्वानों के साथ राज्य का पालन करे तो उसकी कौन नहीं प्रशंसा करे॥२॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**त्वं ताँ इ॑न्द्रो॒भयाँ॑ अ॒मित्रा॒न् दासा॑ वृ॒त्राण्यार्या॑ च शूर।**
**वधी॒र्वनै॑व॒ सुधि॑तेभि॒रत्कै॒रा पृ॒त्सु द॑र्षि नृ॒णां नृ॑तम॥३॥**

**त्वम्। तान्। इ॒न्द्र॒। उ॒भया॑न्। अ॒मित्रा॑न्। दासा॑। वृ॒त्राणि॑। आर्या॑। च॒। शू॒र॒। वधी॑ः। वना॑ऽइव। सु॒ऽधि॑तेभिः। अत्कै॑ः। आ। पृ॒त्ऽसु। द॒र्षि॒। नृ॒णाम्। नृ॒ऽत॒म॒॥३॥**

**पदार्थः**-(**त्वम्**) (**तान्**) (**इन्द्र**) राजन् (**उभयान्**) द्विविधान् (**अमित्रान्**) दुष्टान्त्सर्वपीडकान् (**दासा**) दातव्यानि (**वृत्राणि**) धनानि (**आर्या**) धर्मिष्ठानुत्तमान् जनान् (**च**) (**शूर**) तुष्टानां हिंसक (**वधीः**) हन्याः (**वनेव**) अग्निर्वनानीव (**सुधितेभिः**) सुष्ठुतृप्तैः (**अत्कैः**) अश्वैः (**आ**) (**पृत्सु**) सङ्ग्रामेषु (**दर्षि**) विदारयसि (**नृणाम्**) नायकानां मध्ये (**नृतम**) अतिशयेन नायक॥३॥

**अन्वयः**-हे नृणां नृतम शूरेन्द्र! त्वं तानमित्रानार्या चोभयान् विभज्याऽमित्रान् पृत्सु वनेव वधीः सुधितेभिरत्कैरा दर्ष्यार्या च रक्षसि दासा वृत्राण्याप्नोषि तस्माद्विवेक्यसि॥३॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-यो राजोत्तमाननुत्तमान् धार्मिकानधार्मिकांश्च समीक्षया विभज्योत्तमान् रक्षति दुष्टान् दण्डयति स एव सर्वमैश्वर्यमाप्नोति॥३॥

**पदार्थः**-हे **(नृणाम्)** मुखियाजनों में **(नृतम)** अत्यन्त मुखिया **(शूर)** दुष्टों के नाशक **(इन्द्र)** राजन्! **(त्वम्)** आप **(तान्)** उन **(अमित्रान्)** दुष्ट सब को पीड़ा देने वाले और **(आर्या)** धर्मिष्ठ उत्तम जनों को **(च)** और **(उभयान्)** दो प्रकार के विभाग करके दुष्ट और पीड़ा देने वालों का **(पृत्सु)** सङ्ग्रामों में **(वनेव)** अग्नि जैसे वनों का, वैसे **(वधीः)** नाश करिये और **(सुधितेभिः)** उत्तम प्रकार से तृप्त किये गये **(अत्कैः)** घोड़ों से **(आ, दर्षि)** विदीर्ण करते हो और धर्म्मिष्ठ उत्तम जनों की रक्षा करते हो तथा **(दासा)** देने योग्य **(वृत्राणि)** धनों को प्राप्त होते हो, इससे विवेकी हो॥३॥

**भावार्थः**-जो राजा उत्तम, अनुत्तम, धार्मिक और अधार्मिकों का परीक्षा से विभाग करके उत्तमों की रक्षा करता और दुष्टों को दण्ड देता है, वही सम्पूर्ण ऐश्वर्य्य को प्राप्त होता है॥३॥

**पुनः स कीदृशः स्यादित्याह॥**

फिर वह राजा कैसा हो, इस विषय को कहते हैं॥

**स त्वं न॑ इन्द्राक॑वाभिरू॒ती सखा॑ वि॒श्वायु॑रवि॒ता वृ॒धे भूः।**

**स्व॑र्षाता॒ यद्ध्वया॑मसि त्वा॒ युध्य॑न्तो ने॒मधि॑ता पृ॒त्सु शू॑र॥४॥**

**सः। त्वम्। नः॒। इन्द्र। अक॑वाभिः। ऊ॒ती। सखा॑। वि॒श्वऽआयुः॑। अ॒वि॒ता। वृ॒धे। भूः। स्व॑ःऽसाता। यत्। ह्वया॑मसि। त्वा॒। युध्य॑न्तः। ने॒मऽधि॑ता। पृ॒त्ऽसु। शू॒र॥४॥**

**पदार्थः**-**(सः)** राजा **(त्वम्)** **(नः)** अस्माकम् **(इन्द्र)** सुखप्रद **(अकवाभिः)** अनिन्दितृभिः **(ऊती)** रक्षाभिः **(सखा)** सुहृद् **(विश्वायुः)** सर्वायुः **(अविता)** रक्षकः **(वृधे)** वृद्धये **(भूः)** भवेः **(स्वर्षाता)** सुखस्य दाता **(यत्)** यः **(ह्वयामसि)** आह्वयेम **(त्वा)** **(युध्यन्तः)** **(नेमधिता)** धार्मिकाऽधार्मिकयोर्मध्ये धार्मिकाणां ग्रहीतारः **(पृत्सु)** सङ्ग्रामेषु सेनासु वा **(शूर)** शत्रूणां हिंसक॥४॥

**अन्वयः**-हे शूरेन्द्र! यद्यस्त्वमकवाभिरूती नः सखा विश्वायुरविता वृधे भूः स त्वं स्वर्षाता सन् विजेता भूस्तं त्वा नेमधिता पृत्सु युध्यन्तो वयं ह्वयामसि॥४॥

**भावार्थः**-हे राजन्! यथा सखा सख्ये प्रियमाचरति तथैव प्रजायै हितमाचर यत्र यत्र प्रजास्त्वामाह्वयेयुस्तत्र तत्रोपस्थितो भव शत्रुविजये च प्रयतस्व॥४॥

**पदार्थः**-हे **(शूर)** शूरवीर शत्रुजनों के नाश करने और **(इन्द्र)** सुख के देने वाले! **(यत्)** जो **(त्वम्)** आप **(अकवाभिः)** नहीं निन्दा करने वालों और **(ऊती)** रक्षाओं से **(नः)** हमारे **(सखा)** मित्र **(विश्वायुः)** सम्पूर्ण अवस्था से युक्त **(अविता)** रक्षक **(वृधे)** वृद्धि के लिये **(भूः)** होवें **(सः)** वह आप **(स्वर्षाता)** सुख के देने वाले हुए जीतने वाले हूजिये उन **(त्वा)** आपको **(नेमधिता)** धार्मिक और



www.9009.co.in

अधार्मिक के मध्य में धार्मिकों के ग्रहण करने वाले **(पृत्सु)** सङ्ग्रामों वा सेनाओं से **(युध्यन्तः)** युद्ध करते हुए हम लोग **(ह्वयामसि)** पुकारें॥४॥

**भावार्थः**-हे राजन्! जैसे मित्र मित्र के लिये प्रिय आचरण करता है, वैसे ही प्रजा के लिये हित धारण करिये और जहाँ-जहाँ प्रजायें पुकारें वहाँ-वहाँ उपस्थित हूजिये और शत्रुओं के जीतने में प्रयत्न करिये॥४॥

**पुनः स राजा कथं वर्तेत इत्याह॥**

फिर वह राजा कैसा वर्त्ताव करे, इस विषय को कहते हैं॥

**नूनं न इन्द्रापराय च स्या भवा मृळीक उत नो अभिष्टौ।**

**इत्था गृणन्तो महिनस्य शर्मन् दिवि ष्याम पार्ये गोषतमाः॥५॥५॥**

**नूनम्। नः। इन्द्र। अपराय। च। स्याः। भव। मृळीकः। उत। नः। अभिष्टौ। इत्था। गृणन्तः। महिनस्य। शर्मन्। दिवि। स्याम। पार्ये। गोसऽतमाः॥५॥**

**पदार्थः**-**(नूनम्)** निश्चितम् **(नः)** अस्माकम् **(इन्द्र)** दुःखविदारक **(अपराय)** अन्यस्मै **(च)** **(स्याः)** भूयाः **(भवा)** अत्र **द्व्यचोऽतस्तिङ** इति दीर्घः। **(मृळीकः)** सुखकर्त्ता **(उत)** अपि **(नः)** अस्माकम् **(अभिष्टौ)** इच्छितसुखे **(इत्था)** अस्मात्कारणात् **(गृणन्तः)** स्तुवन्तः **(महिनस्य)** महतः **(शर्मन्)** शर्मणि गृहे **(दिवि)** कमनीये **(स्याम)** भवेम **(पार्ये)** पूरयितव्ये **(गोषतमाः)** ये गा वाचः सनन्ति सेवन्ते ततोऽतिशयिताः॥५॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! त्वां नो मृळीको भवा, उतापराय नूनं मृळीकः स्या नोऽभिष्टौ च प्रवृत्तो भवेत्था गृणन्तो गोषतमा वयं महिनस्य ते पार्ये दिवि शर्मन्त्स्याम॥५॥

**भावार्थः**-यदि राजा स्वस्य परस्य वा पक्षपात्यभूत्वा प्रजारक्षणे यत्नवान् भवेत्तर्हि सर्वाः प्रजाः प्रेमास्पदबद्धाः सत्यो राजानमहर्निशं स्तूयुरिति॥५॥

अत्रेन्द्रराजप्रजागुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति त्रयस्त्रिंशत्तमं सूक्तं पञ्चमो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे **(इन्द्र)** दुःखों के नाश करने वाले आप **(नः)** हम लोगों के **(मृळीकः)** सुखकारक **(भवा)** हूजिये और **(उत)** भी **(अपराय)** अन्य के लिये **(नूनम्)** निश्चय कर सुखकारक **(स्याः)** हूजिये और **(नः)** हम लोगों के **(अभिष्टौ)** अपेक्षित सुख में **(च)** भी प्रवृत्त हूजिये **(इत्था)** इस कारण से **(गृणन्तः)** स्तुति करते हुए **(गोषतमाः)** वाणियों को अत्यन्त सेवने वाले हम लोग **(महिनस्य)** बड़े आपके **(पार्ये)** पूर्ण करने और **(दिवि)** कामना करने योग्य **(शर्मन्)** गृह में **(स्याम)** होवें॥५॥



www.9009.co.in

**भावार्थ:**-जो राजा अपने और दूसरे का पक्षपाती न होकर प्रजा के रक्षण में यत्न करने वाला होवे तो सम्पूर्ण प्रजा प्रेम के स्थान में बँधी हुई होकर राजा की दिन-रात स्तुति करे॥५॥

इस सूक्त में इन्द्र, राजा और प्रजा के गुणवर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह तेंतीसवाँ सूक्त और पाँचवाँ वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

**अथ पञ्चर्चस्य चतुस्त्रिंशत्तमस्य सूक्तस्य शुनहोत्र ऋषिः। इन्द्रो देवता। भुरिक्पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः। २, ४ विराट् त्रिष्टुप्। ३ त्रिष्टुप्। ५ निचृत्त्रिष्टुप् छन्द। धैवतः स्वरः॥**

***अथ राजा किं कुर्यादित्याह॥***

अब पाँच ऋचावाले चौंतीसवें सूक्त का आरम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में राजा क्या करे, इस विषय को कहते हैं॥

**सं च॒ त्वे ज॒ग्मुर्गिर॑ इन्द्र पू॒र्वीर्वि च॒ त्वद्य॑न्ति वि॒भ्वो॑ मनी॒षाः।**

**पु॒रा नू॒नं च॑ स्तु॒तय॒ ऋषी॑णां पस्पृ॒ध्र इ॒न्द्रे अध्यु॑क्था॒र्का॥ १॥**

**सम्। च॒। त्वे॒ इति॑। ज॒ग्मुः। गिर॑ः। इ॒न्द्र॒। पू॒र्वीः। वि। च॒। त्वत्। य॒न्ति॒। वि॒ऽभ्व॑ः। म॒नी॒षाः। पु॒रा। नू॒नम्। च॒। स्तु॒तय॑ः। ऋषी॑णाम्। प॒स्पृ॒ध्रे। इन्द्रे॑। अधि॑। उ॒क्थ॒ऽअ॒र्का॥ १॥**

**पदार्थः**-(**सम्**) सम्यक् (**च**) (**त्वे**) केचित् (**जग्मुः**) गच्छन्ति (**गिरः**) सुशिक्षितवाचः (**इन्द्र**) विद्याप्रद (**पूर्वीः**) प्राचीनाः सनातनीः (**वि**) (**च**) (**त्वत्**) तव सकाशात् (**यन्ति**) प्राप्नुवन्ति (**विभ्वः**) विभवो व्याप्तशुभगुणाः (**मनीषाः**) मनस ईषिणो गमनकर्त्तारः (**पुरा**) (**नूनम्**) निश्चयेन (**च**) (**स्तुतयः**) प्रशंसाः (**ऋषीणाम्**) वेदमन्त्रार्थविदां यथार्थमुपदेष्टॄणाम् (**पस्पृध्रे**) स्पर्द्धन्ते (**इन्द्रे**) परमैश्वर्ये (**अधि**) (**उक्थार्का**) उक्थानि प्रशंसितानि वचनान्यर्काणि पूजनीयानि च॥ १॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! ये त्वे त्वत् पूर्वीर्गिरश्च यन्ति शुभैश्च गुणैः सं जग्मुर्विभ्वो मनीषाः सन्तः परस्परं वि यन्ति। ऋषीणां पुरा स्तुतयश्च नूनं पस्पृध्रे, इन्द्र उक्थार्काऽधि पस्पृध्रे ते सुखमाप्नुवन्ति॥ १॥

**भावार्थः**-हे राजन्नस्मिन्त्संसारे केचिद्योग्याः केचिदनर्हा जना भवन्ति तेषां मध्यात् प्रशंसनीयैः सज्जनैस्सह सन्धिं कृत्वा सुसहायः सन् धर्म्मेण राज्यपालनं सततं विधेहि॥ १॥

**पदार्थः**-हे (**इन्द्र**) विद्या के देने वाले जो (**त्वे**) कोई (**त्वत्**) आपके समीप से (**पूर्वीः**) प्राचीन (**गिरः**) उत्तम प्रकार शिक्षित वाणियों को (**च**) भी (**यन्ति**) प्राप्त होते हैं (**च**) और श्रेष्ठ गुणों से (**सम्**) उत्तम प्रकार (**जग्मुः**) मिलते हैं तथा (**विभ्वः**) श्रेष्ठ गुणों से व्याप्त (**मनीषाः**) गमन करने वाले हुए परस्पर (**वि**) विशेष करके प्राप्त होते हैं और (**ऋषीणाम्**) वेद के मन्त्रों के अर्थ जानने वालों और यथार्थ उपदेश करने वालों के (**पुरा**) आगे (**स्तुतयः, च**) प्रशंसाओं की भी (**नूनम्**) निश्चय से (**पस्पृध्रे**) स्पर्द्धा करते हैं और (**इन्द्रे**) अत्यन्त ऐश्वर्य्य देने वाले के लिये (**उक्थार्का**) प्रशंसित और आदर करने योग्य वचनों की (**अधि**) अधिक स्पर्धा करते हैं, वे सुख को प्राप्त होते हैं॥ १॥

**भावार्थः**-हे राजन्! इस संसार में कोई योग्य, कोई अयोग्य जन होते हैं, उनमें प्रशंसा करने योग्य सज्जनों के साथ मेल करके उत्तम सहाय वाले हुए धर्म्म से राज्यपालन निरन्तर करिये॥ १॥



www.9009.co.in

**पुनः स राजा कीदृशो भवेदित्याह॥**

फिर वह राजा कैसा होवे, इस विषय को कहते हैं॥

**पुरुहूतो यः पुरुगूर्त ऋभ्वाँ एकः पुरुप्रशस्तो अस्ति यज्ञैः।**
**रथो न महे शवसे युजानो३स्माभिरिन्द्रो अनुमाद्यो भूत्॥ २॥**

**पुरुऽहूतः। यः। पुरुऽगूर्तः। ऋभ्वा। एकः। पुरुऽप्रशस्तः। अस्ति। यज्ञैः। रथः। न। महे। शवसे। युजानः। अस्माभिः। इन्द्रः। अनुमाद्यः। भूत्॥ २॥**

**पदार्थः**-(**पुरुहूतः**) बहुभिः सत्कृतः (**यः**) (**पुरुगूर्त्तः**) बहुभिरुद्यमितः कृतपुरुषार्थकः (**ऋभ्वा**) महता मेधाविना (**एकः**) असहायः (**पुरुप्रशस्तः**) बहुषूत्तमः (**अस्ति**) (**यज्ञैः**) विद्वत्सत्कारसङ्गदानैः (**रथः**) विमानादियानम् (**न**) इव (**महे**) महते (**शवसे**) बलाय (**युजानः**) (**अस्माभिः**) (**इन्द्रः**) परमैश्वर्यदाता (**अनुमाद्यः**) अनुहर्षितुं योग्यः (**भूत्**) भवेत्॥ २॥

**अन्वयः**-हे विद्वांसो! यः पुरुहूतः पुरुगूर्त्तः पुरुप्रशस्त एको रथो न महे शवसे यज्ञैर्ऋभ्वा युजान इन्द्रोऽस्माभिस्सहाऽनुमाद्यो भूत् सोऽस्माकं हर्षकोऽस्ति तं राजानं यूयमपि मन्यध्वम्॥ २॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यथाश्वैरग्न्यादिभिश्च युक्तो रथोऽभीष्टानि कार्याणि करोति, तथैव सुसहायो राजा राज्यकार्याण्यलङ्कर्त्तुं शक्नोति॥ २॥

**पदार्थः**-हे विद्वज्जनो! (**यः**) जो (**पुरुहूतः**) बहुतों से सत्कार किया गया (**पुरुगूर्त्तः**) बहुतों से उत्तम कराया गया (**पुरुप्रशस्तः**) बहुतों में उत्तम (**एकः**) सहायरहित (**रथः**) विमान आदि वाहन (**न**) जैसे वैसे (**महे**) बड़े (**शवसे**) बल के लिये (**यज्ञैः**) विद्वानों के सत्कार और सङ्ग तथा दोनों से और (**ऋभ्वा**) बड़े बुद्धिमान् से (**युजानः**) युक्त हुआ (**इन्द्रः**) अत्यन्त ऐश्वर्य्य का देने वाला (**अस्माभिः**) हम लोगों के साथ (**अनुमाद्यः**) पीछे से प्रसन्न होने योग्य (**भूत्**) होवे, वह हम लोगों का आनन्दकारक (**अस्ति**) है, उस राजा को आप लोग भी मानिये॥ २॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जैसे घोड़ों और अग्नि आदिकों से युक्त रथ अभीष्ट कार्य्यों को करता है, वैसे ही उत्तम सहायों के सहित राजा राज्य के कार्य्यों को पूर्ण करने को समर्थ होता है॥ २॥

**पुनः स राजा कीदृशो भवतीत्याह॥**

फिर वह राजा कैसा होता है, इस विषय को कहते हैं॥

**न यं हिंसन्ति धीतयो न वाणीरिन्द्रं नक्षन्तीदभि वर्धयन्तीः।**
**यदि स्तोतारः शतं यत्सहस्रं गृणन्ति गिर्वणसं शं तदस्मै॥ ३॥**

**न। यम्। हिंसन्ति। धीतयः। न। वाणीः। इन्द्रम्। नक्षन्ति। इत्। अभि। वर्धयन्तीः। यदि। स्तोतारः। शतम्। यत्। सहस्रम्। गृणन्ति। गिर्वणसम्। शम्। तत्। अस्मै॥ ३॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**न**) निषेधे (**यम्**) (**हिंसन्ति**) (**धीतयः**) अङ्गुलयः (**न**) (**वाणीः**) (**इन्द्रम्**) पूर्णविद्यं परमैश्वर्य्यं राजानम् (**नक्षन्ति**) गच्छन्ति प्राप्नुवन्ति। **नक्षतीति गतिकर्मा।** (निघं०२.१४) (**इत्**) एव (**अभि**) (**वर्धयन्तीः**) उन्नयन्त्यः (**यदि**) (**स्तोतारः**) (**शतम्**) (**यत्**) (**सहस्रम्**) असंख्यम् (**गृणन्ति**) स्तुवन्ति (**गिर्वणम्**) यो गीर्भिर्वनति संभजति वनुते याचते वा तम् (**शम्**) सुखम् (**तत्**) (**अस्मै**) स्तोत्रे॥३॥

**अन्वयः**-हे विद्वांसो! यमिन्द्रमिद् धीतयो न हिंसन्ति यमिन्द्रं वाणीर्न हिंसन्ति यमिन्द्रं वर्धयन्तीर्धीतयो वाणीश्चाभि नक्षन्ति यदि तं गिर्वणसमिन्द्रं स्तोतारो गृणन्ति तर्हि यदस्मै शतं सहस्रं शं प्राप्नोति तदस्मानपि प्राप्नोतु॥३॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यं शत्रुकृता विरुद्धाः क्रिया निन्दिता वाचश्च न व्यथयन्ति तं हर्षशोकरहितं राजानमतुलं सुखं प्राप्नोति॥३॥

**पदार्थः**-हे विद्वानो! (**यम्**) जिस (**इन्द्रम्**) पूर्ण विद्या वाले और अत्यन्त ऐश्वर्य्य वाले राजा को (**इत्**) ही (**धीतयः**) अङ्गुलियाँ (**न**) नहीं (**हिंसन्ति**) नष्ट करती हैं और जिस पूर्णविद्या और अत्यन्त ऐश्वर्य्य वाले राजा को (**वाणीः**) वाणियाँ (**न**) नहीं नष्ट करती हैं और जिस पूर्ण विद्यावाले और अत्यन्त ऐश्वर्य्ययुक्त राजा को (**वर्धयन्तीः**) बढ़ाती हुई अङ्गुलियाँ और वाणियाँ (**अभि, नक्षन्ति**) प्राप्त होती हैं और (**यदि**) जो उस (**गिर्वणसम्**) वाणियों से सेवा करने और मांगने वाले पूर्ण विद्या और अत्यन्त ऐश्वर्य्ययुक्त राजा की (**स्तोतारः**) स्तुति करने वाले जन (**गृणन्ति**) स्तुति करते हैं तो (**यत्**) जो (**अस्मै**) इस स्तुति करने वाले के लिये (**शतम्**) सैकड़ों और (**सहस्रम्**) असंख्य प्रकार का (**शम्**) सुख प्राप्त होता है (**तत्**) वह हम लोगों को भी प्राप्त हो॥३॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जिसको शत्रु से की हुई विरुद्ध क्रियायें और निन्दित वाणियाँ नहीं पीड़ित करती हैं, उस हर्ष और शोक से सहित राजा को अतुल सुख प्राप्त होता है॥३॥

**पुनः स राजा किं कुर्य्यादित्याह॥**

फिर वह राजा क्या करे, इस विषय को कहते हैं॥

**अस्मा॑ ए॒तद्दि॒व्य१॒॑र्चेव॑ मा॒सा मि॑मि॒क्ष इन्द्रे॒ न्य॑यामि॒ सोमः॑।**

**जनं॒ न धन्व॑न्न॒भि सं यदापः॑ स॒त्रा वा॑वृधु॒र्हव॑नानि य॒ज्ञैः॥४॥**

**अस्मै॑। ए॒तत्। दि॒वि। अ॒र्चाऽइ॑व। मा॒सा। मि॒मि॒क्षः। इन्द्रे॑। नि। अ॒या॒मि॒। सोमः॑। जनम्। न। धन्व॑न्। अ॒भि। सम्। यत्। आपः॑। स॒त्रा। व॒वृ॒धुः। हव॑नानि। य॒ज्ञैः॥४॥**

**पदार्थः**-(**अस्मै**) (**एतत्**) (**दिवि**) कमनीये शुद्धे व्यवहारे (**अर्चेव**) सत्क्रियेव (**मासा**) चैत्राद्याः (**मिमिक्षः**) संसिञ्च (**इन्द्रे**) दुष्टविदारके राजनि (**नि**) नितराम् (**अयामि**) प्राप्नोमि (**सोमः**) यः सुनोति सः (**जनम्**) (**न**) इव (**धन्वन्**) बालुकायुक्ते स्थले (**अभि**) (**सम्**) (**यत्**) यानि (**आपः**) जलानि (**सत्रा**) सत्येन कारणेन (**वावृधुः**) वर्धन्ते। अत्र व्यत्ययेन परस्मैपदम्। (**हवनानि**) दानादीनि कर्माणि (**यज्ञैः**) विद्वत्सत्क्रियाभिः॥४॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे विद्वन्! यस्मिन् दिवीन्द्रे मासा वावृधुर्यज्ञैरर्चेव सत्रा यद्धवनानि वावृधुर्धन्वन्नापो जनं न समभि वावृधुरेतदस्मै सोमोऽहं यथा न्ययामि तथा त्वमेनं मिमिक्षः॥४॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यथा सत्कर्त्तव्यस्य सत्कारो निर्जलदेशे भवस्योदकप्राप्तिः सुखकारिणी भवति तथैव यज्ञानुष्ठानं दिव्यमैश्वर्यं च सर्वेषामानन्दकरे भवतः॥४॥

**पदार्थः**-हे विद्वन्! जिस **(दिवि)** सुन्दर शुद्ध व्यवहार में **(इन्द्रे)** दुष्टों के नाश करने वाले राजा के होने पर **(मासा)** चैत्र आदि महीने **(वावृधुः)** बढ़ते हैं और **(यज्ञैः)** विद्वानों के सत्कारों से **(अर्चेव)** सत्क्रिया के समान **(सत्रा)** सत्य कारण से **(यत्)** जो **(हवनानि)** दान आदि कर्म्म बढ़ते हैं तथा **(धन्वन्)** बालुका से युक्त स्थान में **(आपः)** जल **(जनम्)** मनुष्य को **(न)** जैसे वैसे **(सम्, अभि)** उत्तम प्रकार चारों ओर से बढ़ते हैं **(एतत्)** यह **(अस्मै)** इसके लिये **(सोमः)** उत्पन्न करने वाला मैं जैसे **(नि, अयामि)** निरन्तर प्राप्त होता हूँ, वैसे आप इसको **(मिमिक्षः)** सींचिये॥४॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जैसे सत्कार करने योग्य का सत्कार और निर्जल स्थान में हुए को जल का मिलना सुखकारक होता है, वैसे ही यज्ञ का अनुष्ठान और श्रेष्ठ ऐश्वर्य्य सब के आनन्दकारक होते हैं॥४॥

**पुनर्विद्वद्भिः कथं वर्त्तितव्यमित्याह॥**

फिर विद्वानों को कैसा वर्त्ताव करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**अस्मा एतन्मह्याङ्गूषमस्मा इन्द्राय स्तोत्रं मतिभिरवाचि।**

**असद्यथा महति वृत्रतूर्ये इन्द्रो विश्वायुरविता वृधश्च॥५॥६॥**

**अस्मै। एतत्। महि। आङ्गूषम्। अस्मै। इन्द्राय। स्तोत्रम्। मतिऽभिः। अवाचि। असत्। यथा। महति। वृत्रऽतूर्ये। इन्द्रः। विश्वऽआयुः। अविता। वृधः। च॥५॥**

**पदार्थः**-**(अस्मै)** **(एतत्)** **(महि)** महत् **(आङ्गूषम्)** प्राप्तव्यम् **(अस्मै)** **(इन्द्राय)** ऐश्वर्यकराय राज्ञे **(स्तोत्रम्)** स्तुवन्ति येन तत् **(मतिभिः)** मननशीलैर्मनुष्यैः **(अवाचि)** उच्यते **(असत्)** भवेत् **(यथा)** **(महति)** **(वृत्रतूर्ये)** सङ्ग्रामे **(इन्द्रः)** शत्रूणां विदारको योद्धा **(विश्वायुः)** पूर्णायुः **(अविता)** रक्षकः **(वृधः)** वर्धकः **(च)**॥५॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथा मतिभिरस्मा उपदेशकायैतन्मह्याङ्गूषं स्तोत्रमवाचि यथाऽस्मा इन्द्रायैतन्मह्याङ्गूषं स्तोत्रमवाचि यथेन्द्रो महति वृत्रतूर्ये वृधोऽविता विश्वायुश्चासत्तथा युष्माभिरप्यनुष्ठेयम्॥५॥

**भावार्थः**-येऽविद्वांसः स्युस्ते विद्वदनुकरणेन स्वकीयवर्त्तमानमुत्तमं कुर्य्युरिति॥५॥

अत्रेन्द्रराजप्रजागुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति चतुस्त्रिंशत्तमं सूक्तं षष्ठो वर्गश्च समाप्तः॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(यथा)** जैसे **(मतिभिः)** विचारशील मनुष्यों से **(अस्मै)** इस उपदेशक के लिये **(एतत्)** यह **(महि)** बड़ा **(आङ्गूषम्)** प्राप्त होने योग्य **(स्तोत्रम्)** स्तोत्र **(अवाचि)** कहा जाता है और जैसे **(अस्मै)** इस **(इन्द्राय)** ऐश्वर्य्य के करने वाले राजा के लिये यह बड़ा प्राप्त होने योग्य स्तोत्र कहा जाता है और जैसे **(इन्द्रः)** शत्रुओं का नाश करने वाला योद्धा **(महति)** बड़े **(वृत्रतूर्ये)** सङ्ग्राम में **(वृधः)** बढ़ाने और **(अविता)** रक्षा करने वाला **(विश्वायुः च)** और पूर्ण अवस्थायुक्त **(असत्)** होवे, वैसे आप लोगों को भी करना चाहिये॥५॥

**भावार्थः**-जो अविद्वान् हों, वे विद्वानों के अनुकरण से अपना वर्त्ताव उत्तम करें॥५॥

इस सूक्त में इन्द्र, राजा और प्रजा के गुणवर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह चौंतीसवाँ सूक्त और छठा वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

**अथ पञ्चर्चस्य पञ्चत्रिंशत्तमस्य सूक्तस्य नर ऋषिः। इन्द्रो देवता। १ विराट् त्रिष्टुप्। ३ निचृत्त्रिष्टुप्। ४, ५ त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतःस्वरः। २ पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः॥**

***अथ राजानं प्रति कथमुपदिशेयुरित्याह॥***

अब पाँच ऋचावाले पैंतीसवें सूक्त का प्रारम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में राजा के प्रति कैसा उपदेश करें, इस विषय को कहते हैं॥

**कुदा भुवन् रथक्षयाणि ब्रह्म कुदा स्तोत्रे सहस्रपोष्यं दाः।**

**कुदा स्तोमं वासयोऽस्य राया कुदा धियः करसि वाजरत्नाः॥ १॥**

**कुदा। भुवन्। रथऽक्षयाणि। ब्रह्म। कुदा। स्तोत्रे। सहस्रऽपोष्यम्। दाः। कुदा। स्तोमम्। वासयः। अस्य। राया। कुदा। धियः। करसि। वाजऽरत्नाः॥ १॥**

**पदार्थः**-(**कदा**) (**भुवन्**) भवन्ति (**रथक्षयाणि**) रथस्य निवासरूपाणि गृहाणि (**ब्रह्म**) धनम् (**कदा**) (**स्तोत्रे**) प्रशंसासाधने (**सहस्रपोष्यम्**) असङ्ख्यैः पोषणीयम् (**दाः**) दद्याः (**कदा**) (**स्तोमम्**) प्रशंसाम् (**वासयः**) वासयेः (**अस्य**) (**राया**) धनेन (**कदा**) (**धियः**) प्रज्ञा उत्तमानि कर्माणि वा (**करसि**) कुर्याः (**वाजरत्नाः**) धनधान्योन्नतिकरीः॥ १॥

**अन्वयः**-हे राजँस्त्वं कदा रथक्षयाणि भुवन् कदा स्तोत्रे सहस्रपोष्यं ब्रह्म दाः। कदास्य राया स्तोमं वासयः कदा वाजरत्ना धियः करसि॥ १॥

**भावार्थः**-सर्वे सभ्या विद्वांस उपदेशकाश्च राजानं प्रत्येवं ब्रूयुर्भवान् कदा सेनाङ्गानि पुष्टिकरमैश्वर्य्यमुत्तमाः प्रज्ञाश्च करिष्यतीति॥ १॥

**पदार्थः**-हे राजन्! आपके (**कदा**) कब (**रथक्षयाणि**) वाहन के रहने के स्थान (**भुवन्**) होते हैं और (**कदा**) कब (**स्तोत्रे**) प्रशंसा के साधन में (**सहस्रपोष्यम्**) असङ्ख्य जनों के पुष्ट करने योग्य (**ब्रह्म**) धन को (**दाः**) दीजिये और (**कदा**) कब (**अस्य**) इसके (**राया**) धन से (**स्तोमम्**) प्रशंसा को (**वासयः**) बसाइये और आप (**कदा**) कब (**वाजरत्नाः**) धन और धान्य की बढ़ाने वाली (**धियः**) उत्तम बुद्धियों वा उत्तम कर्म्मों को (**करसि**) करें॥ १॥

**भावार्थः**-सब सभा में बैठने वाले, विद्वान् जन और उपदेशक जन राजा से यह कहें कि आप कब सेना के अङ्गों और पुष्टि करने वाले ऐश्वर्य्य और उत्तम बुद्धियों को करेंगे॥ १॥

**पुनः स राजा किं कुर्यादित्याह॥**

फिर वह राजा क्या करे, इस विषय को कहते हैं॥

**कर्हि स्वित्तदिन्द्र यन्नृभिर्नॄन् वीरैर्वीरान्नीळयासे जयाजीन्।**



www.9009.co.in

**त्रिधातु गा अधि जयासि गोष्विन्द्र द्युम्नं स्वर्वद्धेह्यस्मे॥ २॥**

**कर्हि। स्वित्। तत्। इन्द्र। यत्। नृऽभिः। नॄन्। वीरैः। वीरान्। नीळयासे। जय। आजीन्। त्रिऽधातु। गाः। अधि। जयासि। गोषु। इन्द्र। द्युम्नम्। स्वःऽवत्। धेहि। अस्मे इति॥ २॥**

**पदार्थः**-(**कर्हि**) कस्मिन् समये (**स्वित्**) प्रश्ने (**तत्**) (**इन्द्र**) सेनाधारक (**यत्**) (**नृभिः**) उत्तमैर्नरैः (**नॄन्**) प्रशस्तान्नरान् (**वीरैः**) शौर्यबलादियुक्तैः (**वीरान्**) धृष्टत्वादिगुणयुक्तान् (**नीळयासे**) प्रशंसय (**जय**) (**आजीन्**) सङ्ग्रामान् (**त्रिधातु**) सुवर्णरजतताम्राणि त्रयो धातवो विद्यन्ते यस्मिंस्तत् (**गाः**) पृथिवीः (**अधि**) (**जयासि**) जय (**गोषु**) पृथिवीषु (**इन्द्र**) प्रतापिन् सेनेश (**द्युम्नम्**) धनं यशो वा (**स्वर्वत्**) बहुसुखयुक्तम् (**धेहि**) (**अस्मे**) अस्मासु॥ २॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! त्वं कर्हि स्विद्वीरैर्नृभिर्वीरान्नॄन् नीळयासे गाः कर्ह्यधि जयसि। हे इन्द्र! त्वं गोष्वस्मे यत्स्वर्वत् त्रिधातु द्युम्नमस्ति तदस्मे धेहि एवं विधाऽऽजीन् जय॥ २॥

**भावार्थः**-हे राजँस्त्वं विद्वद्भिः सह विदुषः शूरैः सह शूरान् सङ्गृह्य सङ्ग्रामान् जित्वा पृथिवीराज्यं प्राप्य न्यायाचरणेन प्रजाः पालयित्वा महद्यशो धनं च वर्धय॥ २॥

**पदार्थः**-हे (**इन्द्र**) सेना के धारण करने वाले! आप (**कर्हि**) किस समय में (**स्वित्**) कहिये (**वीरैः**) शूरता और बल आदि से युक्त (**नृभिः**) उत्तम मनुष्यों से (**वीरान्**) धृष्टता आदि गुणों से युक्त (**नॄन्**) श्रेष्ठ मनुष्यों को (**नीळयासे**) प्रशंसा कीजिये और (**गाः**) पृथिवियों को कब (**अधि**) (**जयासि**) जीतिये और हे (**इन्द्र**) प्रतापी तथा सेना के धारण करने वाले! आप (**गोषु**) पृथिवियों में और (**अस्मे**) हम लोगों में (**यत्**) जो (**स्वर्वत्**) बहुत सुख से युक्त (**त्रिधातु**) सोना, चाँदी और ताँबा ये तीन धातु जिसमें ऐसा (**द्युम्नम्**) धन वा यश है (**तत्**) उसको हम लोगों में (**धेहि**) धारण करिये सो ऐसा करके (**आजीन्**) सङ्ग्रामों को (**जय**) जीतिये॥ २॥

**भावार्थः**-हे राजन्! आप विद्वानों के साथ विद्वानों का तथा शूरवीर जनों के साथ शूरवीरों का अच्छे प्रकार ग्रहण करके तथा सङ्ग्रामों को जीत कर और पृथिवी के राज्य को प्राप्त कर न्यायाचरण से प्रजाओं का पालन करके बड़े यश वा धन को बढ़ाइये॥ २॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**कर्हि स्वित्तदिन्द्र यज्जरित्रे विश्वप्सु ब्रह्म कृणवः शविष्ठ।**

**कदा धियो न नियुतो युवासे कदा गोमघा हवनानि गच्छाः॥ ३॥**

**कर्हि। स्वित्। तत्। इन्द्र। यत्। जरित्रे। विश्वऽप्सु। ब्रह्म। कृणवः। शविष्ठ। कदा। धियः। न। निऽयुतः। युवासे। कदा। गोऽमघा। हवनानि। गच्छाः॥ ३॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**कर्हि**) कदा (**स्वित्**) प्रश्ने (**तत्**) (**इन्द्र**) विद्यैश्वर्ययुक्त राजन् (**यत्**) (**जरित्रे**) स्तावकाय (**विश्वप्सु**) विविधरूपम् (**ब्रह्म**) धनम् (**कृणवः**) कुर्याः (**शविष्ठ**) अतिशयेन बलिन् (**कदा**) (**धियः**) प्रज्ञाः (**न**) इव (**नियुतः**) नितरां शुभगुणयुक्ताः (**युवासे**) मिश्रय (**कदा**) (**गोमघा**) पृथिवीराज्येन सत्कृतानि धनानि (**हवनानि**) ग्रहीतव्यानि (**गच्छाः**) प्राप्नुयाः॥३॥

**अन्वयः**-हे शविष्ठेन्द्र! त्वं कर्हि स्विज्जरित्रे यद्विश्वप्सु ब्रह्म कृणवस्तदस्मै वयमपि कुर्याम नियुतो न धियः कदा युवासे गोमघा हवनानि कदा गच्छाः॥३॥

**भावार्थः**-हे राजँस्त्वमखिलं धनं पूर्णा धिय उत्तमाः क्रियाश्च कदा करिष्यस्यर्थात् सद्य एतानि कुर्विति॥३॥

**पदार्थः**-हे (**शविष्ठ**) अतिशय बली (**इन्द्र**) विद्या और ऐश्वर्य्य से युक्त राजन्! आप (**कर्हि**) कब (**स्वित्**) कहिये! (**जरित्रे**) स्तुति करने वाले के लिये (**यत्**) जो (**विश्वप्सु**) अनेक रूप (**ब्रह्म**) धन (**कृणवः**) करेंगे (**तत्**) उसको इसके लिये हम लोग भी करें तथा (**नियुतः**) अत्यन्त श्रेष्ठ गुणों से युक्त (**न**) जैसे वैसे (**धियः**) बुद्धियों को (**कदा**) कब (**युवासे**) मिलाइयेगा और (**गोमघा**) पृथिवी के राज्य से सत्कृत धनों तथा (**हवनानि**) ग्रहण करने योग्यों को (**कदा**) कब (**गच्छाः**) प्राप्त हूजियेगा॥३॥

**भावार्थः**-हे राजन्! आप सम्पूर्ण धन, पूर्ण बुद्धियाँ और उत्तम क्रियाओं को कब करियेगा? अर्थात् शीघ्र इनको करिये॥३॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**स गोम॑घा जरि॒त्रे अश्व॑श्चन्द्रा॒ वाज॑श्रवसो॒ अधि॑ धेहि॒ पृक्षः॑।**

**पी॒पि॒हीषः॑ सु॒दुघा॑मिन्द्र धे॒नुं भ॒रद्वा॑जेषु सु॒रुचो॑ रुरुच्याः॥४॥**

**सः। गोऽम॑घाः। ज॒रि॒त्रे। अश्व॑ऽचन्द्राः। वाज॑ऽश्रवसः। अधि॑। धे॒हि॒। पृक्षः॑। पी॒पि॒हि॒। इषः॑। सु॒ऽदुघा॑म्। इ॒न्द्र॒। धे॒नुम्। भ॒रत्ऽवा॑जेषु। सु॒ऽरुचः॑। रु॒रु॒च्या॒ः॥४॥**

**पदार्थः**-(**सः**) (**गोमघाः**) भूमिराज्यधनाः (**जरित्रे**) विद्यागुणप्रकाशकाय (**अश्वश्चन्द्राः**) अश्वाश्चन्द्राणि सुवर्णानि येषान्ते (**वाजश्रवसः**) वाजोऽन्नं विद्याश्रवणं च पूर्णं येषान्ते (**अधि**) (**धेहि**) (**पृक्षः**) सम्पर्चनीयाः (**पीपिहि**) पिब (**इषः**) प्राप्तव्यान् रसान् (**सुदुघाम्**) सुष्ठुकामपूर्णकर्त्रीम् (**इन्द्र**) विद्यैश्वर्यप्रद (**धेनुम्**) विद्याशिक्षायुक्तां वाचम् (**भरद्वाजेषु**) धृतविज्ञानेषु विद्वत्सु (**सुरुचः**) शोभना रुग् रुचिः प्रीतिर्येषां तान् (**रुरुच्याः**) रुचितान् कुर्य्याः॥४॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र राजन्त्स त्वं जरित्रे ये गोमघा अश्वश्चन्द्रा वाजश्रवसः पृक्षस्तानस्मास्वधि धेहि। इषः पीपिहि भरद्वाजेषु सुदुघां धेनुं सुरुचश्च रुरुच्याः॥४॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-हे राजन्! स्वप्रजासु पूर्णां विद्यामखिलं धनं धृत्वा शरीरारोग्यं वर्धयित्वा धर्म्मे रुचिं कुर्य्याः॥४॥

**पदार्थः**-हे **(इन्द्र)** विद्या और ऐश्वर्य्य के देनेवाले राजन्! **(सः)** वह आप **(जरित्रे)** विद्या और गुण के प्रकाश करने वाले के लिये जो **(गोमघाः)** पृथिवी के राज्यरूप धन वाले **(अश्वश्चन्द्राः)** घोड़े हैं सुवर्ण जिनके वे **(वाजश्रवसः)** अन्न और विद्याश्रवण युक्त **(पृक्षः)** सम्बन्ध करने योग्य हैं उनको हम लोगों में **(अधि, धेहि)** धारण करिये और **(इषः)** प्राप्त होने योग्य रसों को **(पीपिहि)** पीजिये और **(भरद्वाजेषु)** धारण किया विज्ञान जिन्होंने उन विद्वानों में **(सुदुघाम्)** उत्तम प्रकार कामना पूर्ण करने वाली **(धेनुम्)** विद्या और शिक्षा से युक्त वाणी को **(सुरुचः)** तथा उत्तम प्रीति वालों को **(रुरुच्याः)** प्रीतियुक्त करिये॥४॥

**भावार्थः**-हे राजन्! अपनी प्रजाओं में पूर्ण विद्या और सम्पूर्ण धन को धारण कर और शरीर के आरोग्यपन को बढ़ा के धर्म्म में रुचि करिये॥४॥

**पुनर्मनुष्यैः किं कर्तव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को क्या करना चाहिये, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**तमा नूनं वृजनमन्यथा चिच्छूरो यच्छक्र वि दुरो गृणीषे।**

**मा निररं शुक्रदुघस्य धेनोराङ्गिरसान् ब्रह्मणा विप्र जिन्व॥५॥७॥**

**तम्। आ। नूनम्। वृजनम्। अन्यथा। चित्। शूरः। यत्। शक्र। वि। दुरः। गृणीषे। मा निः। अरम्। शुक्रऽदुघस्य। धेनोः। आङ्गिरसान्। ब्रह्मणा। विप्र। जिन्व॥५॥**

**पदार्थः**-**(तम्)** **(आ)** **(नूनम्)** निश्चितम् **(वृजनम्)** व्रजन्ति येन यस्मिन् वा **(अन्यथा)** **(चित्)** अपि **(शूरः)** निर्भयः शत्रुहन्ता **(यत्)** **(शक्र)** शक्तिमन् **(वि)** **(दुरः)** द्वाराणि **(गृणीषे)** प्रशंससि **(मा)** **(निः)** नितराम् **(अरम्)** अलम् **(शुक्रदुघस्य)** आशुपूर्तिकर्त्र्याः **(धेनोः)** वाचः **(आङ्गिरसान्)** अङ्गिरःसु प्राणेषु साधून् **(ब्रह्मणा)** महता धनेनान्नेन वा **(विप्र)** मेधाविन् **(जिन्व)** प्रीणीहि॥५॥

**अन्वयः**-हे विप्रशक्रेन्द्र! यद् वृजनं नूनमाऽऽगृणीषे तच्चिन्निर्गृणीषे शूरस्त्वं दुरो जिन्व। शुक्रदुघस्य धेनोश्चाङ्गिरसान् ब्रह्मणाऽरं वि जिन्व। कदाचिदन्यथा मा कुर्याः॥५॥

**भावार्थः**-ये राजादयो जनाः प्रजाः सुखेनालङ्कृत्यान्यायादन्यथाचरणं न कुर्वन्ति ते समग्रैश्वर्येण युक्ता जायन्ते॥५॥

अत्रेन्द्रविद्वद्राजप्रजागुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति पञ्चत्रिंशत्तमं सूक्तं सप्तमो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे **(विप्र)** बुद्धिमान् जन **(शक्र)** सामर्थ्य और अत्यन्त ऐश्वर्य से युक्तराजन् **(यत्)** जो **(वृजनम्)** चलते हैं जिससे वा जिसमें उनकी **(नूनम्)** निश्चित **(आ, गृणीषे)** प्रशंसा करते हो **(तम्)**



www.9009.co.in

उसकी **(चित्)** भी **(निः)** निरन्तर प्रशंसा करते हो और **(शूरः)** भयरहित और शत्रुओं के मारने वाले आप **(दुरः)** द्वारों को **(जिन्व)** पुष्ट करिये तथा **(शुक्रदुघस्य)** शीघ्र पूर्ण करने वाली **(धेनोः)** वाणी के **(आङ्गिरसान्)** प्राणों में श्रेष्ठों को **(ब्रह्मणा)** बड़े धन वा अन्न से **(अरम्)** अच्छे प्रकार से **(वि)** प्रसन्न कीजिये और कभी **(अन्यथा)** अन्यथा **(मा)** न करिये॥५॥

**भावार्थः**-जो राजा आदि जन प्रजाओं को सुख से शोभित कर अन्याय से अन्यथा आचरण नहीं करते, वे सम्पूर्ण ऐश्वर्य्य से युक्त होते हैं॥५॥

इस सूक्त में इन्द्र, विद्वान्, राजा और प्रजा के गुणवर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह पैतीसवां सूक्त और सातवाँ वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

**अथ पञ्चर्चस्य षट्त्रिंशत्तमस्य सूक्तस्य नर ऋषिः। इन्द्रो देवता। १ निचृत्त्रिष्टुप्। धैवतः स्वरः। २, ५ भुरिक् पङ्क्तिः। ३, ४ स्वराट् पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः॥**

***अथ राजा कीदृशो भूत्वा किं धरेदित्याह॥***

अब पाँच ऋचावाले छत्तीसवें सूक्त का प्रारम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में राजा कैसा होकर क्या धारण करे, इस विषय को कहते हैं॥

**स॒त्रा मदा॑स॒स्तव॑ वि॒श्वज॑न्याः स॒त्रा रायोऽध॒ ये पार्थि॑वासः।**

**स॒त्रा वाजा॑नामभवो विभ॒क्ता यद्दे॒वेषु॑ धा॒रय॑था असु॒र्य॑म्॥ १॥**

**स॒त्रा। मदा॑सः। तव॑। वि॒श्वऽज॑न्याः। स॒त्रा। राय॑ः। अध॑। ये। पार्थि॑वासः। स॒त्रा। वाजा॑नाम्। अ॒भ॒व॒ः। वि॒ऽभ॒क्ता। यत्। दे॒वेषु॑। धा॒रय॑थाः। अ॒सु॒र्य॑म्॥ १॥**

**पदार्थः**-(**सत्रा**) सत्याः (**मदासः**) आनन्दकाः (**तव**) (**विश्वजन्या**) विश्वानि जन्यानि सुखानि येषु ते (**सत्रा**) सत्यानि (**रायः**) धनानि (**अध**) अथ (**ये**) (**पार्थिवासः**) पृथिव्यां विदिताः (**सत्रा**) सत्याः (**वाजानाम्**) अन्नादीनाम् (**अभवः**) भव (**विभक्ता**) विभागं प्राप्ताः (**यत्**) (**देवेषु**) विद्वत्सु (**धारयथाः**) (**असुर्यम्**) असुरेष्वविद्वत्सु भवम्॥ १॥

**अन्वयः**-हे राजन्! तव ये विश्वजन्याः सत्रा मदासस्सत्रा रायस्सत्रा पार्थिवासो वाजानां सत्रा विभक्ता सन्ति तेषां त्वं धारकोऽभवोऽध यद्देवेष्वसुर्यमस्ति तद्धारयथाः॥ १॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! येऽत्र बुद्ध्यानन्दवर्धका विद्याधनादियोगाः विद्वत्सङ्गाः सन्ति तान् धृत्वा सत्याऽसत्योर्विभाजका भवन्तु॥ १॥

**पदार्थः**-हे राजन्! (**तव**) आपके (**ये**) जो (**विश्वजन्याः**) सम्पूर्ण जन्य सुख जिनमें वे (**सत्रा**) सत्य (**मदासः**) आनन्द देने वाले और (**सत्रा**) सत्य (**रायः**) धन (**सत्रा**) सत्य (**पार्थिवासः**) पृथिवी में विदित और (**वाजानाम्**) अन्न आदिकों के सत्य (**विभक्ता**) विभागों को प्राप्त हुए हैं उनके आप धारण करने वाले (**अभवः**) हूजिये (**अध**) इसके अनन्तर (**यत्**) जो (**देवेषु**) विद्वानों में (**असुर्यम्**) अविद्वानों में हुआ है उसको (**धारयथाः**) धारण कराइये॥ १॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो इस संसार में बुद्धि और आनन्द के बढ़ानेवाले, विद्या और धनादि से युक्त और विद्वानों के साथ सत्सङ्ग करने वाले हैं, उनको धारण करके सत्य और असत्य के विभाग करने वाले हूजिये॥ १॥

**पुनर्मनुष्याः कथं वर्त्तेरन्नित्याह॥**

फिर मनुष्य कैसा वर्त्ताव करें, इस विषय को कहते हैं॥



www.9009.co.in

**अनु प्र येजे जन ओजो अस्य सत्रा दधिरे अनु वीर्याय।**

**स्यूमगृभे दुधयेऽर्वते च क्रतुं वृञ्जन्त्यपि वृत्रहत्ये॥२॥**

**अनु। प्र। येजे। जनः। ओजः। अस्य। सत्रा। दधिरे। अनु। वीर्याय। स्यूमऽगृभे। दुधये। अर्वते। च। क्रतुम्। वृञ्जन्ति। अपि। वृत्रऽहत्ये॥२॥**

**पदार्थः**-(**अनु**) (**प्र**) (**येजे**) यजति (**जनः**) (**ओजः**) बलम् (**अस्य**) संसारस्य मध्ये (**सत्रा**) सत्यम् (**दधिरे**) दधति (**अनु**) (**वीर्याय**) पराक्रमाय (**स्यूमगृभे**) स्यूमाननुस्यूनान् गृह्णाति तस्मै (**दुधये**) हिंसकाय (**अर्वते**) प्राप्ताय (**च**) (**क्रतुम्**) प्रज्ञाम् (**वृञ्जन्ति**) त्यजन्ति। अत्र व्यत्ययेन परस्मैपदम् (**अपि**) (**वृत्रहत्ये**) सङ्ग्रामे॥२॥

**अन्वयः**-हे राजन्! यो जनो यथा शूरवीरा अस्य सत्रौजो दधिरे वृत्रहत्ये स्यूमगृभे वीर्याय क्रतुमनु दधिरे दुधयेऽर्वते च क्रतुमपि वृञ्जन्ति तथाऽनु प्र येजे तं तांश्च त्वं गृहाण हिंसकान् वर्जय॥२॥

**भावार्थः**-ये मनुष्या न्यायदयाभ्यां युक्तां प्रज्ञां धृत्वा धर्म्याणि कर्माणि कृत्वा दुष्टतां निवार्य युद्धे विजयं प्राप्य सत्सङ्गतिं कुर्वन्ति ते प्रत्यहं बुद्धिं वर्धयितुं शक्नुवन्ति॥२॥

**पदार्थः**-हे राजन्! जो (**जनः**) मनुष्य जैसे शूरवीर जन (**अस्य**) इस संसार के मध्य में (**सत्रा**) सत्य (**ओजः**) बल को (**दधिरे**) धारण करते हैं और (**वृत्रहत्ये**) सङ्ग्राम में (**स्यूमगृभे**) एक दूसरे को मिले हुए के ग्रहण करने वाले (**वीर्याय**) पराक्रम के लिये (**क्रतुम्**) बुद्धि को (**अनु**) पीछे धारण करते हैं (**च**) और (**दुधये**) मारने वाले (**अर्वते**) प्राप्त हुए के लिये बुद्धि का (**अपि**) भी (**वृञ्जन्ति**) त्याग करते हैं, वैसे (**अनु, प्र, येजे**) यज्ञ करता है, उसको और उनको आप ग्रहण करिये और हिंसकों को वर्जिये॥२॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य न्याय और दया से युक्त बुद्धि को धारण कर, धर्म्मयुक्त कर्म्मों को कर, दुष्टता को दूर कर और युद्ध में विजय प्राप्त करके श्रेष्ठों की सङ्गति करते हैं, वे दिनरात्रि बुद्धि को बढ़ा सकते हैं॥२॥

**पुनस्तमुत्तमं जनं किमाप्नोतीत्याह॥**

फिर उस उत्तम मनुष्यों को क्या प्राप्त होता है, इस विषय को कहते हैं॥

**तं सध्रीचीरूतयो वृष्ण्यानि पौंस्यानि नियुतः सश्चुरिन्द्रम्।**

**समुद्रं न सिन्धव उक्थशुष्मा उरुव्यचसं गिर आ विशन्ति॥३॥**

**तम्। सध्रीचीः। ऊतयः। वृष्ण्यानि। पौंस्यानि। निऽयुतः। सश्चुः। इन्द्रम्। समुद्रम्। न। सिन्धवः। उक्थऽशुष्माः। उरुऽव्यचसम्। गिरः। आ। विशन्ति॥३॥**

**पदार्थः**-(**तम्**) (**सध्रीचीः**) याः सहाऽञ्चन्ति (**ऊतयः**) रक्षाद्याः क्रियाः (**वृष्ण्यानि**) दुष्टशक्तिनिरोधकानि (**पौंस्यानि**) वचनानि (**नियुतः**) वायोर्निश्चिता गतय इव क्रियाः (**सश्चुः**) प्राप्नुयुः। **सश्चतीति गतिकर्मा।** (निघं०२.१४) (**इन्द्रम्**) सत्यं धर्म्मं न्यायं यो दधाति तम् (**समुद्रम्**) (**न**) इव



www.9009.co.in

(**सिन्धवः**) नद्यः (**उक्थशुष्माः**) उक्थान्युक्तानि शुष्माणि बलानि याभिस्ताः (**उरुव्यचसम्**) बहुषु सद्गुणेषु व्यापकम् (**गिरः**) वाचः (**आ**) (**विशन्ति**) समन्तात् प्राप्नुवन्ति॥३॥

**अन्वयः**-हे विद्वांसो! यमुरुव्यचसमिन्द्रमुक्थशुष्मा गिरः समुद्रं सिन्धवो नाऽऽविशन्ति तं सध्रीचीर्नियुत ऊतयो वृष्ण्यानि पौंस्यानि च सश्चुः॥३॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। यथा निम्नगाः सरितः सागरं सर्वतो गच्छन्ति तथैव धार्मिकं राजानं सर्वं बलं सर्वाः रक्षाः सुशिक्षिता वाचश्च प्राप्नुवन्ति॥३॥

**पदार्थः**-हे विद्वानो! जिस (**उरुव्यचसम्**) बहुत श्रेष्ठ गुणों में व्यापक (**इन्द्रम्**) सत्य धर्म और न्याय के धारण करनेवाले को (**उक्थशुष्माः**) कहे बल जिनसे वे (**गिरः**) वाणियां (**समुद्रम्**) समुद्र को (**सिन्धवः**) नदियाँ (**न**) जैसे वैसे (**आ, विशन्ति**) सब प्रकार से प्राप्त होती हैं (**तम्**) उसको (**सध्रीचीः**) एक साथ गमन करने वाली (**नियुतः**) वायु की निश्चित गतियों के समान क्रिया और (**ऊतयः**) रक्षण आदि क्रियायें (**वृष्ण्यानि**) दुष्टों के सामर्थ्य को रोकने वाले (**पौंस्यानि**) वचन भी (**सश्चुः**) प्राप्त होवें॥३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जैसे नीचे चलने वाली नदियाँ समुद्र को सब ओर से प्राप्त होती हैं, वैसे ही धार्मिक राजा को सम्पूर्ण बल, सब रक्षायें और उत्तम प्रकार शिक्षित वाणियाँ भी प्राप्त होती हैं॥३॥

**पुना राजा कीदृशो भवेदित्याह॥**

फिर राजा कैसा होवे, इस विषय को कहते हैं॥

**स रायस्खामुप सृजा गृणानः पुरुश्चन्द्रस्य त्वमिन्द्र वस्वः।**

**पतिर्बभूथासमो जनानामेको विश्वस्य भुवनस्य राजा॥४॥**

**सः। रायः। खाम्। उप। सृज। गृणानः। पुरुऽचन्द्रस्य। त्वम्। इन्द्र। वस्वः। पतिः। बभूथ। असमः। जनानाम्। एकः। विश्वस्य। भुवनस्य। राजा॥४॥**

**पदार्थः**-(**सः**) (**रायः**) श्रियः (**खाम्**)। **खेति नदीनाम।** (निघं०१.१३) (**उप**) (**सृजा**) निर्मिमीहि। अत्र **द्व्यचोऽतस्तिङ** इति दीर्घः। (**गृणानः**) स्तुवन् (**पुरुश्चन्द्रस्य**) बहु चन्द्रं सुवर्णं यस्मिंस्तस्य (**त्वम्**) (**इन्द्र**) धनेश (**वस्वः**) धनस्य (**पतिः**) स्वामी (**बभूथ**) भव (**असमः**) नान्यः समः सदृशो यस्य (**जनानाम्**) धार्मिकाणां मनुष्याणाम् (**एकः**) असहायः (**विश्वस्य**) सम्पूर्णस्य (**भुवनस्य**) संसारस्य (**राजा**) प्रकाशमानः॥४॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र राजन्! यथा विश्वस्य भुवनस्येश्वरोऽसमः स एको राजास्ति तथा त्वं जनानां पुरुश्चन्द्रस्य रायो वस्वः पतिर्बभूथ गृणानस्त्वं खामिव धनस्य कोशमुप सृजा॥४॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे राजानो! यथेश्वरः पक्षपातं विहाय सर्वस्य न्यायेन पालकोऽस्ति तथैव भूत्वा यूयं धनस्वामिनो भवत॥४॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-हे **(इन्द्र)** धन के स्वामिन् राजन्! जैसे **(विश्वस्य)** सम्पूर्ण **(भुवनस्य)** संसार का स्वामी **(असमः)** जिसके समान और नहीं **(सः)** वह **(एकः)** सहायरहित **(राजा)** प्रकाशमान राजा है, वैसे आप **(जनानाम्)** धार्मिक मनुष्यों और **(पुरुश्चन्द्रस्य)** बहुत सुवर्ण जिसमें उसके **(रायः)** लक्ष्मी के **(वस्वः)** धन के **(पतिः)** स्वामी **(बभूथ)** हूजिये और **(गृणानः)** स्तुति करते हुए **(त्वम्)** आप **(खाम्)** नदी के समान धन के कोश को **(उपसृजा)** बनाइये॥४॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे राजा लोगो! जैसे ईश्वर पक्षपात का त्याग करके सब का न्याय से पालन करने वाला है, वैसे ही होकर आप लोग धन के स्वामी हूजिये॥४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**स तु श्रुधि श्रुत्या यो दुवोयुर्द्यौर्न भूमाभि रायो अर्यः।**

**असो यथा नः शवसा चकानो युगेयुगे वयसा चेकितानः॥५॥८॥**

**सः। तु। श्रुधि। श्रुत्या। यः। दुवःऽयुः। द्यौः। न। भूम। अभि। रायः। अर्यः। असः। यथा। नः। शवसा। चकानः। युगेऽयुगे। वयसा। चेकितानः॥५॥**

**पदार्थः**-**(सः)** **(तु)** **(श्रुधि)** शृणु **(श्रुत्या)** श्रवणेन **(यः)** **(दुवोयुः)** परिचरणं कामयमानः **(द्यौः)** प्रकाशः **(न)** इव **(भूम)** भवेम **(अभि)** **(रायः)** धनानि **(अर्यः)** स्वामी **(असः)** भवेत् **(यथा)** **(नः)** अस्माकम् **(शवसा)** बलेन **(चकानः)** कामयमानः **(युगेयुगे)** प्रतिवर्षम् **(वयसा)** आयुषा **(चेकितानः)** विजानन्॥५॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! यो द्यौर्न दुवोयुरर्यः शवसा चकानो युगेयुगे वयसा चेकितानः श्रुत्या यथा नः समाचारं शृणोति यथा सोऽसो रायः प्राप्ता वयं द्यौर्न भूम तथा तु त्वं सर्वेषां वार्तामभि श्रुधि॥५॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। यथा परीक्षको विद्यार्थिनामध्ययनपरीक्षां कृत्वा विदुषः सम्पादयति तथैव राजा यथार्थं न्यायं कृत्वा प्रजा रञ्जयेदिति॥५॥

अत्रेन्द्रविद्वद्राजकृत्यवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति षट्त्रिंशत्तमं सूक्तमष्टमो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे ऐश्वर्य से युक्त! **(यः)** जो **(द्यौः)** प्रकाश **(न)** जैसे वैसे **(दुवोयुः)** सेवा की कामना करता हुआ **(अर्यः)** स्वामी **(शवसा)** बल से **(चकानः)** कामना करता हुआ **(युगेयुगे)** प्रतिवर्ष **(वयसा)** अवस्था में **(चेकितानः)** जानता हुआ **(श्रुत्या)** श्रवण से **(यथा)** जैसे **(नः)** हम लोगों के समाचार को सुनता है और जैसे **(सः)** वह **(असः)** हो तथा **(रायः)** धनों को प्राप्त हुए हम लोग प्रकाश जैसे वैसे **(भूम)** होवें, वैसे **(तु)** तो आप सब की बात को **(अभि, श्रुधि)** सुनें॥५॥



www.9009.co.in

**भावार्थ:-**इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जैसे परीक्षक विद्यार्थियों के अध्ययन की परीक्षा करके विद्वान् करता है, वैसे ही राजा यथार्थ न्याय को करके प्रजाओं को प्रसन्न करे॥५॥

इस सूक्त में इन्द्र, विद्वान् और राजा के कृत्य का वर्णन होने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह छत्तीसवाँ सूक्त आठवाँ वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

**अथ पञ्चर्चस्य सप्तत्रिंशत्तमस्य सूक्तस्य भरद्वाजो बार्हस्पत्य ऋषिः। इन्द्रो देवता। १, ४, ५ विराट्त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः। २ निचृत्पङ्क्तिः। ३ भुरिक्पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः॥**

***अथ मनुष्याः किं कुर्युरित्याह॥***

अब पाँच ऋचावाले सैंतीसवें सूक्त का प्रारम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में मनुष्य क्या करें, इस विषय को कहते हैं॥

**अ॒र्वाग् रथं॑ वि॒श्ववा॑रं त उ॒ग्रेन्द्र॑ यु॒क्तासो॒ हर॑यो वहन्तु।**

**की॒रिश्चि॒द्धि त्वा॒ हव॑ते॒ स्व॑र्वानृधी॒महि॑ सध॒माद॑स्ते अ॒द्य॥ १॥**

**अ॒र्वाक्। रथ॑म्। वि॒श्वऽवा॑रम्। ते। उ॒ग्र। इन्द्र॑। यु॒क्तास॑ः। हर॑यः। व॒ह॒न्तु॒। की॒रिः। चि॒त्। हि। त्वा॒। हव॑ते। स्व॑ःऽवान्। ऋ॒धी॒महि॑। स॒ध॒ऽमाद॑ः। ते॒। अ॒द्य॥ १॥**

**पदार्थः**-(**अर्वाक्**) पश्चात् (**रथम्**) रमणीयं यानम् (**विश्ववारम्**) यो विश्वं सर्वं सुखं करोति तम् (**ते**) तव (**उग्र**) तेजस्विन् (**इन्द्र**) प्रजापते (**युक्तासः**) नियोजिताः (**हरयः**) अश्वा इव शिल्पिनो मनुष्याः (**वहन्तु**) प्रापयन्तु (**कीरिः**) स्तोता विद्वान् (**चित्**) अपि (**हि**) (**त्वा**) त्वाम् (**हवते**) आह्वयति (**स्वर्वान्**) स्वर्बहु सुखं विद्यते यस्य सः (**ऋधीमहि**) समृद्धा भवेम (**सधमादः**) समानस्थानाः (**ते**) तव (**अद्य**) अधुना॥ १॥

**अन्वयः**-हे उग्रेन्द्र! ये युक्तासो हरयस्ते विश्ववारं रथं वहन्तु यः स्वर्वान् कीरिर्हि त्वा हवते तैस्सधमादो वयं चिदृधीमहि। यस्य तेऽर्वागद्य ये सुखं वहन्ति ते चिदद्य सुखैर्भूषिता जायन्ते॥ १॥

**भावार्थः**-यो राजा धार्मिकाननुकूलान् जनान्सत्करोति तं सर्वे धर्मिष्ठा विद्वांसः सदा सेवन्ते॥ १॥

**पदार्थः**-हे (**उग्र**) तेजस्विन् (**इन्द्र**) प्रजा के स्वामिन्! जो (**युक्तासः**) नियुक्त किये गये (**हरयः**) घोड़ों के तुल्य शिल्पी मनुष्य (**ते**) आपके (**विश्ववारम्**) सम्पूर्ण सुख स्वीकार करने वाले (**रथम्**) सुन्दर वाहन को (**वहन्तु**) प्राप्त करावें और जो (**स्वर्वान्**) बहुत सुख विद्यमान जिसमें वह (**कीरिः**) स्तुति करने वाला विद्वान् (**हि**) ही (**त्वा**) आपको (**हवते**) पुकारता है उनके (**सधमादः**) तुल्य स्थान वाले हम लोग (**ऋधीमहि**) समृद्ध होवें। और जिन (**ते**) आपके (**अर्वाक्**) पीछे (**अद्य**) इस समय जो सुख को प्राप्त होते हैं, वे (**चित्**) भी इस समय सुखों से भूषित होते हैं॥ १॥

**भावार्थः**-जो राजा धार्मिक और अनुकूल मनुष्यों को सत्कार करता है, उसकी सब धर्मिष्ठ विद्वान् सदा सेवा करते हैं॥ १॥

**पुनर्मनुष्याः परस्परं कथं वर्त्तेरन्नित्याह॥**

फिर मनुष्य परस्पर कैसा वर्त्ताव करें, इस विषय को कहते हैं॥



www.9009.co.in

**प्रो द्रोणे हरयः कर्माग्मन् पुनानास ऋज्यन्तो अभूवन्।**

**इन्द्रो नो अस्य पूर्व्यः पपीयाद् द्युक्षो मदस्य सोम्यस्य राजा॥२॥**

**प्रो इति। द्रोणे। हरयः। कर्म। अग्मन्। पुनानासः। ऋज्यन्तः। अभूवन्। इन्द्रः। नः। अस्य। पूर्व्यः। पपीयात्। द्युक्षः। मदस्य। सोम्यस्य। राजा॥२॥**

**पदार्थः**-(**प्रो**) प्रकर्षे (**द्रोणे**) परिमाणे (**हरयः**) मनुष्याः (**कर्म**) (**अग्मन्**) प्राप्नुवन्ति (**पुनानासः**) पवित्राः। (**ऋज्यन्तः**) ऋजुरिवाचरन्तः (**अभूवन्**) प्रसिद्धा भवन्ति (**इन्द्रः**) परमैश्वर्यः (**नः**) अस्माकम् (**अस्य**) (**पूर्व्यः**) पूर्वैर्निष्पादितः (**पपीयात्**) वर्धेत (**द्युक्षः**) द्यौरिव क्षा भूमिर्यस्य (**मदस्य**) आनन्दस्य (**सोम्यस्य**) सोम ऐश्वर्ये भवस्य (**राजा**) प्रकाशमानः॥२॥

**अन्वयः**-य इन्द्रोऽस्य सोम्यस्य मदस्य द्युक्षः पपीयात् पूर्व्यो नो राजा भवेद्ये पुनानास ऋज्यन्तो हरयो द्रोणे कर्म प्रो अग्मन्नभूवँस्तेऽन्यानपि पवित्रयन्ति॥२॥

**भावार्थः**-ये राजादयः सभ्याः स्वयं पवित्राः सुशीलाः सरला भूत्वा शुभानि कर्माणि कृत्वा न्यायेनाऽस्मान् रक्षन्ति तेऽस्माभिः सत्कर्त्तव्याः सन्ति॥२॥

**पदार्थः**-जो (**इन्द्रः**) अत्यन्त ऐश्वर्य्य वाला (**अस्य**) इस (**सोम्यस्य**) ऐश्वर्य्य में हुए (**मदस्य**) आनन्द का (**द्युक्षः**) अन्तरिक्ष के सदृश भूमि जिसकी वह (**पपीयात्**) बढ़े और (**पूर्व्यः**) पूर्वजनों से उत्पन्न किया गया (**नः**) हम लोगों का (**राजा**) प्रकाशमान राजा होवे और जो (**पुनानासः**) पवित्र (**ऋज्यन्तः**) सरल के सदृश आचरण करते हुए (**हरयः**) मनुष्य (**द्रोणे**) परिमाण में (**कर्म**) कर्म्म को (**प्रो**) अच्छे प्रकार (**अग्मन्**) प्राप्त होते हैं और (**अभूवन्**) प्रसिद्ध होते हैं, वे अन्यों को भी पवित्र करते हैं॥२॥

**भावार्थः**-जो राजा आदि श्रेष्ठ जन स्वयं पवित्र और श्रेष्ठ स्वभाव वाले और सरल होकर श्रेष्ठ कर्म्मों को करके न्याय से हम लोगों की रक्षा करते हैं, वे हम लोगों से सत्कार करने योग्य हैं॥२॥

**पुनर्मनुष्याः किं कुर्युरित्याह॥**

फिर मनुष्या क्या करें, इस विषय को कहते हैं॥

**आसस्राणासः शवसानमच्छेन्द्रं सुचक्रे रथ्यासो अश्वाः।**

**अभि श्रव ऋज्यन्तो वहेयुर्नू चिन्नु वायोरमृतं वि दस्येत्॥३॥**

**आऽसस्राणासः। शवसानम्। अच्छ। इन्द्रम्। सुऽचक्रे। रथ्यासः। अश्वाः। अभि। श्रवः। ऋज्यन्तः। वहेयुः। नु। चित्। नु। वायोः। अमृतम्। वि। दस्येत्॥३॥**

**पदार्थः**-(**आसस्राणासः**) समन्ताद्गतिमन्तः (**शवसानम्**) बलवन्तम् (**अच्छ**) (**इन्द्रम्**) राजानम् (**सुचक्रे**) शोभनं करोति (**रथ्यासः**) रथेषु साधवः (**अश्वाः**) तुरङ्गाः (**अभि**) सर्वतः (**श्रवः**) ये शृण्वन्ति ते



www.9009.co.in

**(ऋज्यन्तः)** ऋजुरिवाचरन्तः **(वहेयुः)** प्राप्नुवन्तु **(नू)** सद्यः। अत्र **ऋचि तुनुघे**ति दीर्घः। **(चित्)** अपि **(नु)** क्षिप्रम् **(वायोः)** पवनस्य **(अमृतस्य)** नाशरहितं स्वरूपम् **(वि)** **(दस्येत्)** उपक्षाययेत्॥३॥

**अन्वयः**-य आसस्राणासः रथ्यासोऽश्वा इवाऽभि श्रव ऋज्यन्तो विद्वांसः शवसानमिन्द्रन्नू वहेयुर्यश्चिदेतानच्छ सुचक्रे स वायोरमृतं प्राप्य दुःखानि नु वि दस्येत्॥३॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे प्रजाजना! यथा राजा युष्मान् वर्धयेत्तथा यूयमप्येनं वर्धयत, सर्वे योगाभ्यासं कृत्वा प्राणस्थं परमात्मानं विदित्वा दुःखानि दहन्तु॥३॥

**पदार्थः**-जो **(आसस्राणासः)** चारों ओर से गमन करने वाले **(रथ्यासः)** वाहनों में श्रेष्ठ **(अश्वाः)** घोड़े जैसे वैसे **(अभि, श्रवः)** चारों ओर से सुनने वाले **(ऋज्यन्तः)** सरल के समान आचरण करते हुए विद्वान् जन **(शवसानम्)** बलयुक्त **(इन्द्रम्)** राजा को **(नू)** शीघ्र **(वहेयुः)** प्राप्त होवें और जो **(चित्)** भी इन को **(अच्छ)** अच्छे प्रकार **(सुचक्रे)** सुन्दर करता है वह **(वायोः)** पवन के **(अमृतम्)** नाशरहित स्वरूप को प्राप्त होकर दुखों की **(नु)** शीघ्र ही **(वि, दस्येत्)** उपेक्षा करे॥३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे प्रजाजनो! जैसे राजा आप लोगों की वृद्धि करे, वैसे आप लोग भी इसकी वृद्धि करिये और सब योगाभ्यास करके प्राणों में वर्त्तमान परमात्मा को जान कर दुःखों का नाश करो॥३॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**वरिष्ठो अस्य दक्षिणामियर्तीन्द्रो मघोनां तुविकूर्मितमः।**

**यया वज्रिवः परियास्यंहो मघा च धृष्णो दयसे वि सूरीन्॥४॥**

**वरिष्ठः। अस्य। दक्षिणाम्। इयर्ति। इन्द्रः। मघोनाम्। तुविकूर्मिऽतमः। यया। वज्रिऽवः। परिऽयासि। अंहः। मघा। च। धृष्णो इति। दयसे। वि। सूरीन्॥४॥**

**पदार्थः**-**(वरिष्ठः)** अतिशयेन वरिता **(अस्य)** राज्यस्य **(दक्षिणाम्)** वर्द्धिकाम् **(इयर्ति)** प्राप्नोति **(इन्द्रः)** राजा **(मघोनाम्)** बहुधनयुक्तानाम् **(तुविकूर्मितमः)** अतिशयेन बहुकर्त्ता **(यया)** दक्षिणया **(वज्रिवः)** प्रशस्तशस्त्राऽस्त्रयुक्त **(परियासि)** सर्वतः परित्यजसि **(अंहः)** अपराधम् **(मघा)** धनानि **(च)** **(धृष्णो)** दृढोत्साह **(दयसे)** ददासि **(वि)** **(सूरीन्)** विदुषः॥४॥

**अन्वयः**-हे वज्रिवो धृष्णो! यया त्वमंहः परियासि सूरीन् मघा च वि दयसे तामस्य मघोनां दक्षिणां तुविकूर्मितमो वरिष्ठ इन्द्रः सन् भवानियर्ति तस्मात् सत्कर्त्तव्योऽस्ति॥४॥

**भावार्थः**-स एव राजा स्थिरं राज्यं कर्त्तुमर्हति यो विदुषां धार्मिकाणां चोपरि दयां करोति दुर्व्यसनानि जहाति पुरुषार्थी भूत्वा चारचक्षुः सन् प्रजापालने यत्नवान् भवति॥४॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-हे **(वज्रिवः)** प्रशंसित शस्त्र और अस्त्र से तथा **(धृष्णो)** दृढ़ उत्साह से युक्त! **(यया)** जिस दक्षिणा से आप **(अंहः)** अपराध का **(परियासि)** सब प्रकार से परित्याग करते हो **(सूरीन्)** विद्वानों **(मघा, च)** और धनों को **(वि)** विशेष करके **(दयसे)** देते हो उस **(अस्य)** इस राज्य के **(मघोनाम्)** बहुत धनों से युक्तों की **(दक्षिणाम्)** बढ़ाने वाली दक्षिणा को **(तुविकूर्मितमः)** अत्यन्त बहुत करने और **(वरिष्ठः)** अत्यन्त स्वीकार करने वाले **(इन्द्रः)** राजा हुए आप **(इयर्त्ति)** प्राप्त होते हैं, इससे सत्कार करने योग्य हैं॥४॥

**भावार्थः**-वही राजा स्थिर राज्य करने योग्य है जो विद्वानों और धार्मिक जनों पर दया करता और दुष्ट व्यसनों का त्याग करता है तथा पुरुषार्थी होकर दूतरूप चक्षु वाला हुआ प्रजा के पालन में यत्न वाला होता है॥४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**इन्द्रो॒ वाज॑स्य॒ स्थवि॑रस्य दा॒तेन्द्रो॑ गी॒र्भिर्व॑र्धतां वृ॒द्धम॑हाः।**

**इन्द्रो॑ वृ॒त्रं हनि॑ष्ठो अस्तु॒ सत्वा ता सू॒रिः पृ॑णति॒ तूतु॑जानः॥५॥९॥**

**इन्द्रः॑। वाज॑स्य। स्थवि॑रस्य। दा॒ता। इन्द्रः॑। गी॒ःऽभिः। व॒र्ध॒ता॒म्। वृ॒द्धऽम॑हाः। इन्द्रः॑। वृ॒त्रम्। हनि॑ष्ठः। अ॒स्तु॒। सत्वा। आ। ता। सू॒रिः। पृ॒ण॒ति॒। तूतु॑जानः॥५॥**

**पदार्थः**-**(इन्द्रः)** राजा **(वाजस्य)** अन्नादेः **(स्थविरस्य)** स्थूलस्य **(दाता)** **(इन्द्रः)** विद्यैश्वर्य्ययुक्तः **(गीर्भिः)** वाग्भिः **(वर्धताम्)** **(वृद्धमहाः)** वृद्धैः पूजितः **(इन्द्रः)** सूर्य्यः **(वृत्रम्)** मेघमिव **(हनिष्ठः)** अतिशयेन हन्ता **(अस्तु)** **(सत्वा)** सत्वगुणोपेतः **(आ)** **(ता)** तानि धनानि **(सूरिः)** विद्वान् **(पृणति)** सुखयति **(तूतुजानः)** सद्यः कर्त्ता॥५॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! य इन्द्रः स्थविरस्य वाजस्य दाता य इन्द्रो गीर्भिर्वर्धतां वृद्धमहा इन्द्रो वृत्रमिव शत्रूणां हनिष्ठोऽस्तु यस्तूतुजानः सत्वा सूरिस्ताऽऽपृणति तं सर्वे यूयं सत्कुरुत॥५॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! योऽभयस्य दाता विद्यावृद्धाप्तानां सेवको दुष्टानां हन्ता क्षिप्रकारी विद्वान् मनुष्यो भवेत्तमेव यूयं राजानं मन्यध्वमिति॥५॥

अत्रेन्द्रराजप्रजाकर्मवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति सप्तत्रिंशत्तमं सूक्तं नवमो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो **(इन्द्रः)** विद्या और ऐश्वर्य्य से युक्त और **(स्थविरस्य)** स्थूल **(वाजस्य)** अन्न आदि का **(दाता)** देने वाला और जो **(इन्द्रः)** विद्या और ऐश्वर्य्य से युक्त राजा **(गीर्भिः)** वाणियों से



www.9009.co.in

**(वर्धताम्)** बड़े और **(वृद्धमहाः)** वृद्धों से सत्कार किया **(इन्द्रः)** सूर्य्य **(वृत्रम्)** मेघ का जैसे वैसे शत्रुओं का **(हनिष्ठः)** अत्यन्त मारने वाला **(अस्तु)** हो और जो **(तूतुजानः)** शीघ्र करने वाला **(सत्वा)** सतोगुण से युक्त **(सूरिः)** विद्वान् **(ता)** उन धनों को **(आ, पृणति)** अच्छे प्रकार सुखयुक्त करता है, उसका तुम सब लोग सत्कार करो॥५॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो अभय का देने वाला, विद्या में वृद्धों और आप्तों का सेवक, दुष्टों का मारने वाला, शीघ्रकर्त्ता, विद्वान् मनुष्य हो उसी को तुम लोग राजा मानो॥५॥

इस सूक्त में इन्द्र, राजा और प्रजा के कर्म्मों का वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह सैंतीसवां सूक्त और नवां वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

**अथ पञ्चर्चस्याष्टत्रिंशत्तमस्य सूक्तस्य भरद्वाजो बार्हस्पत्य ऋषिः। इन्द्रो देवता। १, २,३, ५ निचृत्त्रिष्टुप्। ४ त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः॥**

***अथ मनुष्यैः कीदृशो विद्वान्त्सेवनीय इत्याह॥***

अब पाँच ऋचावाले अड़तीसवें सूक्त का प्रारम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में मनुष्यों को कैसे विद्वान् की सेवा करनी चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**अपादित उदु नश्चित्रतमो महीं भर्षद् द्युमतीमिन्द्रहूतिम्।**
**पन्यसीं धीतिं दैव्यस्य यामन् जनस्य रातिं वनते सुदानुः॥१॥**

**अपात्। इतः। उत्। ऊँ इति। नः। चित्रऽतमः। महीम्। भर्षत्। द्युऽमतीम्। इन्द्रऽहूतिम्। पन्यसीम्। धीतिम्। दैव्यस्य। यामन्। जनस्य। रातिम्। वनते। सुऽदानुः॥१॥**

**पदार्थः**-(**अपात्**) अविद्यमानाः पादा यस्य सः (**इतः**) प्राप्तः (**उत्**) (उ) (**नः**) अस्माकम् (**चित्रतमः**) अतिशयेनाद्भुतगुणकर्मस्वभावः (**महीम्**) महतीं वाचम्। **महीति वाङ्नाम।** (निघं०१.११ (**भर्षत्**) बिभर्ति (**द्युमतीम्**) विद्याप्रकाशवतीम् (**इन्द्रहूतिम्**) परमैश्वर्य्यप्रकाशिकाम् (**पन्यसीम्**) प्रशंसनीयाम् (**धीतिम्**) धारणायुक्तां धियम् (**दैव्यस्य**) देवेषु दिव्यगुणेषु विद्वत्सु वा भवस्य (**यामन्**) यान्ति यस्मिन् मार्गे तस्मिन् (**जनस्य**) मनुष्यस्य (**रातिम्**) दानम् (**वनते**) सम्भजति (**सुदानुः**) शोभनदानः॥१॥

**अन्वयः**-योऽपादितश्चित्रतमस्सुदानुर्नो द्युमतीमिन्द्रहूतिं पन्यसीं दैव्यस्य जनस्य धीतिं महीं यामन् रातिमुद्भर्षदु वनते स विद्वन्मङ्गलकारी भवति॥१॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यस्याप्तस्य विदुषः सर्वेषामुपरि दया विद्यादानं निष्कपटता सुदृष्टिश्च वर्त्तते स एव सर्वैः सत्कर्त्तव्योऽस्ति॥१॥

**पदार्थः**-जो (**अपात्**) पैरों से रहित (**इतः**) प्राप्त हुआ (**चित्रतमः**) अत्यन्त अद्भुत गुण, कर्म्म और स्वभाव वाला (**सुदानुः**) उत्तम दान वाला (**नः**) हम लोगों के लिये (**द्युमतीम्**) विद्या के प्रकाश वाली (**इन्द्रहूतिम्**) अत्यन्त ऐश्वर्य्य की प्रकाशिका (**पन्यसीम्**) प्रशंसा करने योग्य (**दैव्यस्य**) श्रेष्ठ गुण अथवा विद्वानों में हुए (**जनस्य**) मनुष्य की (**धीतिम्**) धारणा से युक्त बुद्धि को और (**महीम्**) महती वाणी को तथा (**यामन्**) चलते हैं जिसमें उस मार्ग में (**रातिम्**) दान को (**उत्, भर्षत्**) धारण करता (**उ**) और (**वनते**) सेवन करता है, वह विद्वान् मङ्गल करने वाला होता है॥१॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जिस यथार्थवक्ता विद्वान् की सब के ऊपर दया, विद्यादान, निष्कपटता और उत्तम दृष्टि वर्त्तमान है, वही सब से सत्कार करने योग्य होता है॥१॥

**पुनर्मनुष्याः किं गृहीत्वा सेवेयुरित्याह॥**



www.9009.co.in

फिर मनुष्य क्या ग्रहण करके सेवा करें, इस विषय को कहते हैं॥

**दूराच्चिदा वसतो अस्य कर्णा घोषादिन्द्रस्य तन्यति ब्रुवाणः।**

**एयमेनं देवहूतिर्ववृत्यान्मद्र्य१गिन्द्रमियमृच्यमाना॥ २॥**

**दूरात्। चित्। आ। वसतः। अस्य। कर्णा। घोषात्। इन्द्रस्य। तन्यति। ब्रुवाणः। आ। इयम्। एनम्। देवऽहूतिः। ववृत्यात्। मद्र्यक्। इन्द्रम्। इयम्। ऋच्यमाना॥ २॥**

**पदार्थः**-(**दूरात्**) (**चित्**) अपि (**आ**) समन्तात् (**वसतः**) निवसतः (**अस्य**) (**कर्णा**) श्रोत्रे (**घोषात्**) सुशिक्षिताया वाचः (**इन्द्रस्य**) राज्ञः (**तन्यति**) शब्दायते (**ब्रुवाणः**) उपदिशन् (**आ**) (**इयम्**) वाक् (**एनम्**) विद्वांसम् (**देवहूतिः**) देवैविद्वद्भिः प्रशंसिता (**ववृत्यात्**) वर्त्तयेत् (**मद्र्यक्**) मत्सदृशः (**इन्द्रम्**) परमैश्वर्यम् (**इयम्**) (**ऋच्यमाना**) स्तूयमाना॥ २॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यस्यास्येन्द्रस्य दूराच्चिद्वसतः कर्णा घोषाद्य आतन्यति या देवहूतिरियमेनमिन्द्रमाऽऽववृत्यादियमृच्यमाना यश्च मद्र्यग् ब्रुवाणस्तं ववृत्यात् तं ताञ्च यूयं सेवध्वम्॥ २॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यस्यात्मा श्रोत्रद्वारा विद्यातृप्तो भवेद्यं सर्वा विद्यायुक्ता वाक् प्राप्नुयात् तमेव संसेव्य पूर्णां विद्यां प्राप्नुत॥ २॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जिस (**अस्य**) इस (**इन्द्रस्य**) राजा के (**दूरात्**) दूर से (**चित्**) भी (**वसतः**) निवास करते हुए के (**कर्णा**) दोनों कान (**घोषात्**) उत्तम प्रकार शिक्षित वाणी से जो (**आ, तन्यति**) अच्छे प्रकार शब्दित करता है और जो (**देवहूतिः**) विद्वानों से प्रशंसा की गई (**इयम्**) यह वाणी (**एनम्**) इस (**इन्द्रम्**) ऐश्वर्य्य से युक्त विद्वान् को (**आ**) चारों से (**ववृत्यात्**) वर्त्तित करे और (**इयम्**) यह (**ऋच्यमाना**) स्तुति की गई और जो (**मद्र्यक्**) मुझ सरीका (**ब्रुवाणः**) उपदेश करता हुआ उसको वर्त्ते, उसकी और उसकी आप लोग सेवा करो॥ २॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जिसका आत्मा श्रोत्रों के द्वारा विद्या से तृप्त होवे और जिसको सम्पूर्ण विद्या से युक्त वाणी प्राप्त होवे, उसी का उत्तम प्रकार सेवन करके पूर्ण विद्या को प्राप्त हूजिये॥ २॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**तं वो धिया परमया पुराजामजरमिन्द्रमभ्यनूष्यर्कैः।**

**ब्रह्मा च गिरो दधिरे समस्मिन् महांश्च स्तोमो अधि वर्धदिन्द्रे॥ ३॥**

**तम्। वः। धिया। परमया। पुराऽजाम्। अजरम्। इन्द्रम्। अभि। अनूषि। अर्कैः। ब्रह्म। च। गिरः। दधिरे। सम्। अस्मिन्। महान्। च। स्तोमः। अधि। वर्धत्। इन्द्रे॥ ३॥**

**पदार्थः**-(**तम्**) (**वः**) युष्माकम् (**धिया**) प्रज्ञया कर्मणा वा (**परमया**) अत्युत्कृष्टयाऽत्युत्कृष्टेन वा (**पुराजाम्**) पूर्वजातम् (**अजरम्**) हानिरहितम् (**इन्द्रम्**) विद्युतम् (**अभि**) (**अनूषि**) स्तौमि (**अर्कैः**) सूर्यैः



www.9009.co.in

**(ब्रह्मा)** वेदम् **(च)** **(गिरः)** वेदवाचः **(दधिरे)** दधति **(सम्)** **(अस्मिन्)** **(महान्)** **(च)** **(स्तोमः)** श्लाध्यगुणकर्मस्वभावः **(अधि)** **(वर्धत्)** वर्धते। अत्र व्यत्ययेन परस्मैपदम् **(इन्द्रे)** परमैश्वर्ये॥३॥

**अन्वयः**-हे विद्वांसो! यथा यूयं ब्रह्मा वः परमया धिया तं पुराजामजरमिन्द्रञ्च प्रशंसत तथाऽर्कैरहमेनमभ्यनूषि। यथाऽस्मिन्निन्द्रे च महाँ स्तोमोऽधि वर्धद्यथा च भवन्तो विदुषां य गिरः सं दधिरे तथा वयमनुष्ठेयाम॥३॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। ये मनुष्या विद्वदुपदेशपुरुषार्थाभ्यां विद्युदादिविद्यायुक्तां प्रज्ञां स्वीकुर्वन्ति तेऽत्र श्लाघनीया भवन्ति॥३॥

**पदार्थः**-हे विद्वानो! जैसे तुम **(ब्रह्मा)** वेद की और **(वः)** आप लोगों की **(परमया)** अत्यन्त उत्तम **(धिया)** बुद्धि वा कर्म से **(तम्)** उस **(पुराजाम्)** पहिले प्रकट हुए **(अजरम्)** जीर्ण होने से रहित **(इन्द्रम्)** बिजुली की भी प्रशंसा करो, वैसे **(अर्कैः)** सूर्य्यों से मैं इसकी **(अभि, अनूषि)** स्तुति करता हूँ और जैसे **(च)** भी **(अस्मिन्)** इस **(इन्द्रे)** अत्यन्त ऐश्वर्य्य में **(च)** भी **(महान्)** बड़ा **(स्तोमः)** प्रशंसा करने योग्य गुण कर्म्म, और स्वभाव वाला **(अधि, वर्धत्)** बढ़ता है और जैसे आप विद्वानों की **(गिरः)** वेदवाणियों को **(सम्)** **(दधिरे)** उत्तम प्रकार धारण करते हैं, वैसे हम लोग अनुष्ठान करें॥३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो मनुष्य विद्वानों के उपदेश और पुरुषार्थ से बिजुली आदि की विद्यायुक्त बुद्धि की स्वीकार करते हैं, वे यहाँ स्तुति करने योग्य होते हैं॥३॥

**अथ मनुष्याः किं वर्धयेयुरित्याह॥**

अब मनुष्य क्या बढ़ावें, इस विषय को कहते हैं॥

**वर्धाद्यं यज्ञ उत सोम इन्द्रं वर्धाद् ब्रह्म गिर उक्था च मन्म।**

**वर्धाहैनमुषसो यामन्नक्तोर्वर्धान् मासाः शरदो द्याव इन्द्रम्॥४॥**

**वर्धात्। यम्। यज्ञः। उत। सोमः। इन्द्रम्। वर्धात्। ब्रह्म। गिरः। उक्था। च। मन्म। वर्ध। अह। एनम्। उषसः। यामन्। अक्तोः। वर्धान्। मासाः। शरदः। द्यावः। इन्द्रम्॥४॥**

**पदार्थः**-**(वर्धात्)** वर्धयेत् **(यम्)** **(यज्ञः)** सत्सङ्गत्यादिस्वरूपः **(उत)** अपि **(सोमः)** प्रेरको विद्वान् **(इन्द्रम्)** विद्युदादिविद्याम् **(वर्धात्)** **(ब्रह्म)** धनम् **(गिरः)** वाचः **(उक्था)** प्रशंसनीयानि वचांसि **(च)** **(मन्म)** विज्ञानादि **(वर्ध)** **(अह)** **(एनम्)** **(उषसः)** प्रभातात् **(यामन्)** यान्ति यस्मिंस्तस्मिन् मार्गे **(अक्तोः)** रात्रेः **(वर्धान्)** वर्धयेरन् **(मासाः)** **(शरदः)** ऋतवः **(द्यावः)** प्रकाशयुक्ता दिवसाः प्रकाशा वा **(इन्द्रम्)** परमैश्वर्यम्॥४॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यमिन्द्रं यज्ञ उत सोमो वर्धाद् ब्रह्म वर्धादुक्था मन्म गिरश्च वर्धाहैनमुषसोऽक्तोर्यामन् मासाः शरदो द्यावश्चेन्द्रं वर्धान् तेऽस्मान् वर्धयन्तु॥४॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यथा विद्वत्सत्कारसङ्गतिमयो व्यवहारो विद्युदादिविद्यां परमैश्वर्य्यं पुष्कलमायुश्च वर्धयति तथैव यूयं सर्वाञ्छुभान् व्यवहारानहर्निशं वर्धयत॥४॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(यम्)** जिस **(इन्द्रम्)** बिजुली आदि की विद्या को **(यज्ञः)** श्रेष्ठों की सङ्गति आदि स्वरूप और **(उत)** भी **(सोमः)** प्रेरणा करने वाला विद्वान् **(वर्धात्)** बढ़ावे और **(ब्रह्म)** धन को **(वर्धात्)** बढ़ावे तथा **(उक्था)** प्रशंसा करने योग्य वचनों और **(मन्म)** विज्ञानों और **(गिरः)** वाणियों को **(च)** भी **(वर्ध)** बढ़ावे और **(अह)** इसके अनन्तर **(एनम्)** इस **(उषसः)** प्रभात से और **(अक्तोः)** रात्रि से **(यामन्)** चलते हैं जिसमें उस मार्ग में **(मासाः)** महीने **(शरदः)** ऋतुयें और **(द्यावः)** प्रकाशयुक्त दिन वा प्रकाश **(इन्द्रम्)** अत्यन्त ऐश्वर्य को **(वर्धान्)** बढ़ावें, वे हम लोगों को बढ़ावें॥४॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे विद्वानों का सत्कार और सङ्गतिस्वरूप व्यवहार, बिजुली आदि की विद्या को तथा अत्यन्त ऐश्वर्य्य और पूर्ण आयु को बढ़ाता है, वैसे ही आप लोग सम्पूर्ण श्रेष्ठ व्यवहारों को दिनरात्रि बढ़ाइये॥४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**एवा जज्ञानं सहसे असामि वावृधानं राधसे च श्रुताय।**

**महामुग्रमवसे विप्र नूनमा विवासेम वृत्रतूर्येषु॥५॥१०॥**

**एव। जज्ञानम्। सहसे। असामि। ववृधानम्। राधसे। च। श्रुताय। महाम्। उग्रम्। अवसे। विप्र। नूनम्। आ। विवासेम। वृत्रऽतूर्येषु॥५॥**

**पदार्थः**-**(एवा)** निश्चये। अत्र **निपातस्य चे**ति दीर्घः। **(जज्ञानम्)** विद्याविनयेषु जायमानम् **(सहसे)** बलाय **(असामि)** अतुलम् **(वावृधानन्)** वर्धमानम् **(राधसे)** असंख्यधनाय **(च)** **(श्रुताय)** अखिलविद्यानां कृतश्रवणाय **(महाम्)** महान्तम् **(उग्रम्)** तेजस्विनम् **(अवसे)** रक्षणाद्याय **(विप्र)** मेधाविन् **(नूनम्)** निश्चितम् **(आ)** समन्तात् **(विवासेम)** नित्यं परिचरेम **(वृत्रतूर्येषु)** शत्रुहिंसनीयेषु सङ्ग्रामेषु॥५॥

**अन्वयः**-हे विप्र! असामि सहसे जज्ञानं राधसे श्रुताय च वावृधानं वृत्रतूर्येष्ववसे महामुग्रं वयं नूनमाऽऽविवासेम तमेवा त्वमपि सेवस्व॥५॥

**भावार्थः**-यदा मनुष्याः सर्वेषु शुभगुणकर्मस्वभावेषु प्रतिष्ठितं शूरवीरं विद्वांसं संसेव्य विद्यां गृहीत्वा बलादिकं वर्धेयुस्तर्हि ते किमुत्तमं कार्य्यं न साध्नुयुरिति॥५॥

अत्रेन्द्रविद्वदुत्तमप्रज्ञावाग्गुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इत्यष्टत्रिंशत्तमं सूक्तं दशमो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे **(विप्र)** बुद्धियुक्त **(असामि)** उपमारहित को **(सहसे)** बल के लिये **(जज्ञानम्)** विद्या और विनयों में प्रकट हुए को **(राधसे)** असंख्य धनयुक्त के लिये **(श्रुताय)** सम्पूर्ण विद्याओं का किया श्रवण जिसने उसके लिये **(च)** भी **(वावृधानम्)** बढ़ते हुए को **(वृत्रतूर्येषु)** शत्रुओं में हिंसा करने योग्य



www.9009.co.in

संग्रामों में **(अवसे)** रक्षण आदि के लिये **(महाम्)** बड़े **(उग्रम्)** तेजस्वी को हम लोग **(नूनम्)** निश्चित **(आ)** सब प्रकार से **(विवासेम)** नित्य सेवा करें उस **(एवा)** ही की आप भी सेवा करो॥५॥

**भावार्थः**-जब मनुष्य सम्पूर्ण श्रेष्ठ गुण, कर्म्म और स्वभावों में वर्त्तमान शूरवीर विद्वान् की सेवा कर और विद्या को ग्रहण करके बल आदि को बढ़ावें तो वे कौन सा उत्तम कार्य्य न सिद्ध कर सकें॥५॥

इस सूक्त में इन्द्र, विद्वान्, उत्तम बुद्धि और वाणी के गुण वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये

**यह अड़तीसवां सूक्त और दशवां वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

**अथ पञ्चर्चस्यैकोनचत्वारिंशत्तमस्य सूक्तस्य भरद्वाजो बार्हस्पत्य ऋषिः। इन्द्रो देवता। १ विराट् त्रिष्टुप्। २, ३ निचृत्त्रिष्टुप्। ५ त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः। ४ भुरिक्पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः॥**

***अथ विदुषा किं कर्त्तव्यमित्याह॥***

अब पाँच ऋचा वाले उनचालीसवें सूक्त का प्रारम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में विद्वान् को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**मन्द्रस्य कवेर्दिव्यस्य वह्नेर्विप्रमन्मनो वचनस्य मध्वः।**

**अपा नस्तस्य सचनस्य देवेषो युवस्य गृणते गोअग्राः॥१॥**

**मन्द्रस्य। कवेः। दिव्यस्य। वह्नेः। विप्रऽमन्मनः। वचनस्य। मध्वः। अपाः। नः। तस्य। सचनस्य। देव। इषः। युवस्य। गृणते। गोऽअग्राः॥१॥**

**पदार्थः**-(**मन्द्रस्य**) आनन्दत आनन्दयतः (**कवेः**) विदुषः (**दिव्यस्य**) कमनीयास्विच्छासु साधोः (**वह्नेः**) सकलविद्यानां वोढुरग्नेरिव (**विप्रमन्मनः**) विप्रस्य मन्म विज्ञानं यस्मिँस्तस्य (**वचनस्य**) (**मध्वः**) माधुर्य्यादिगुणोपेतस्य (**अपाः**) पाहि (**नः**) अस्मभ्यम् (**तस्य**) (**सचनस्य**) समवेतस्य (**देव**) परमविद्वन् (**इषः**) अन्नादीनिच्छा वा (**युवस्व**) संयोजय (**गृणते**) स्तुवते (**गोअग्राः**) गौर्वागग्रा उत्तमा यासु ताः॥१॥

**अन्वयः**-हे देव! त्वं वह्नेः कवेर्दिव्यस्य मन्द्रस्य विप्रमन्मनो मध्वो वचनस्य व्यवहारमपास्तस्य सचनस्य गृणते गोअग्रा इषश्च नो युवस्व॥१॥

**भावार्थः**-हे विद्वँस्त्वमेव प्रयत्नं विधेहि यतोऽस्मान् दिव्यं सुखं दिव्यविद्या दिव्यमैश्वर्यं चाप्नुयात्॥१॥

**पदार्थः**-हे (**देव**) अत्यन्त विद्वन्! आप (**वह्नेः**) सम्पूर्ण विद्याओं के धारण करने वाले अग्नि के सदृश (**कवेः**) विद्वान् और (**दिव्यस्य**) सुन्दर इच्छाओं में श्रेष्ठ (**मन्द्रस्य**) आनन्दित होते और आनन्दित करते हुए (**विप्रमन्मनः**) विद्वान् का विज्ञान जिसमें उस (**मध्वः**) माधुर्य आदि गुण से युक्त (**वचनस्य**) वचन के व्यवहार का (**अपाः**) पालन करिये और (**तस्य**) उस (**सचनस्य**) सम्बद्ध हुए की (**गृणते**) स्तुति करते हुए के लिये (**गोअग्राः**) वाणी उत्तम जिनमें उन (**इषः**) अन्न आदि वा इच्छाओं को (**नः**) हम लोगों के लिये (**युवस्व**) संयुक्त कीजिये॥१॥

**भावार्थः**-हे विद्वन्! आप ऐसा प्रयत्न करिये जिससे हम लोगों को दिव्य सुख, दिव्य विद्या और दिव्य ऐश्वर्य्य प्राप्त होवे॥१॥

**पुनर्विद्वद्भिः किं कर्त्तव्यमित्याह॥**



www.9009.co.in

फिर विद्वानों को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**अयमुशानः पर्यद्रिमुस्रा ऋतधीतिभिर्ऋतयुग्युजानः।**

**रुजदरुग्णं वि वलस्य सानुं पणींर्वचोभिरभि योधदिन्द्रः॥ २॥**

**अयम्। उशानः। परि। अद्रिम्। उस्राः। ऋतधीतिऽभिः। ऋतऽयुक्। युजानः। रुजत्। अरुग्णम्। वि। वलस्य। सानुम्। पणीन्। वचःऽभिः। अभि। योधत्। इन्द्रः॥ २॥**

**पदार्थः**-(**अयम्**) (**उशानः**) कामयमानः (**परि**) सर्वतः (**अद्रिम्**) मेघम् (**उस्राः**) किरणान् (**ऋतधीतिभिः**) जलधारकैर्गुणैः (**ऋतयुक्**) य ऋतेन सत्येन युनक्ति (**युजानः**) धारयन् (**रुजत्**) भनक्ति (**अरुग्णम्**) रोगरहितम् (**वि**) (**वलस्य**) मेघस्य। **वल इति मेघनाम।** (निघं०१.१०) (**सानुम्**) शिखराकारं घनम् (**पणीन्**) प्रशंसनीयान् व्यवहारान् (**वचोभिः**) वचनैः (**अभि**) (**योधत्**) युध्यते (**इन्द्रः**) सूर्य्यः॥ २॥

**अन्वयः**-हे विद्वन्! यथाऽयमृतधीतिभिरुस्रा युजान इन्द्रोऽद्रिं परि रुजद्वलस्य सानुं हन्तुमभि वि योधत् तथर्तयुगुशानो वचोभिरुत्तमं जनमरुग्णं पणींश्च साध्नुहि॥ २॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे विद्वांसो! यथा सूर्यः स्वरश्मिभिर्भूमेर्जलमाकृष्य धृत्वा मेघाकारं हत्वा पृथिव्यां निपात्य सर्वान् व्यवहारान्त्साध्नोति तथैव विद्वद्भ्यः शुभा विद्या आकृष्य धृत्वोत्तमेषु विद्यार्थिषु वर्षित्वाऽविद्यां हत्वा विज्ञानेन धर्मार्थकाममोक्षव्यवहारान्निष्पादयत॥ २॥

**पदार्थः**-हे विद्वन्! जैसे (**अयम्**) यह (**ऋतधीतिभिः**) जल के धारण करने वाले गुणों से (**उस्राः**) किरणों को (**युजानः**) धारण करता हुआ (**इन्द्रः**) सूर्य्य (**अद्रिम्**) मेघ को (**परि, रुजत्**) विभाग करता है और (**वलस्य**) मेघ के (**सानुम्**) शिखर के आकार मेघ को नाश करने को (**अभि, वि, योधत्**) सब ओर से विशेष कर युद्ध करता है, वैसे (**ऋतयुक्**) सत्य से युक्त होने वाला (**उशानः**) कामना करता हुआ (**वचोभिः**) वचनों से उत्तम जनों को (**अरुग्णम्**) रोगरहित और (**पणीन्**) प्रशंसा करने योग्य व्यवहारों को सिद्ध कीजिये॥ २॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे विद्वान् जनो! जैसे सूर्य्य अपनी किरणों से भूमि से जल का आकर्षण कर धारण कर और मेघ के आकार का नाश करके पृथिवी के ऊपर गिराय सम्पूर्ण व्यवहारों को सिद्ध करता है, वैसे ही विद्वानों से श्रेष्ठ विद्याओं का आकर्षण कर, धारण करके उत्तम विद्यार्थियों में वर्षाय और अविद्या का नाश करके विज्ञान से धर्म्म, अर्थ काम और मोक्ष के व्यवहारों को सिद्ध करो॥ २॥

**पुनर्विद्वांसः कथं वर्त्तेरन्नित्याह॥**

फिर विद्वान् जन कैसा वर्त्ताव करें, इस विषय को कहते हैं॥

**अयं द्योतयदद्युतो व्य१क्तून् दोषा वस्तोः शरदः इन्दुरिन्द्र।**

**इमं केतुमदधुर्नू चिदह्नां शुचिजन्मन उषसश्चकार॥ ३॥**



www.9009.co.in

अयम्। द्योतयत्। अद्युतः। वि। अक्तून्। दोषा। वस्तोः। शरदः। इन्दुः। इन्द्र। इमम्। केतुम्। अदधुः। नु। चित्। अह्नाम्। शुचिऽजन्मनः। उषसः। चकार॥३॥

**पदार्थः**-(**अयम्**) (**द्योतयत्**) प्रकाशयति (**अद्युतः**) अप्रकाशकान् भूम्यादीन् (**वि**) (**अक्तून्**) रात्रीः (**दोषा**) प्रभातवेलाः (**वस्तोः**) दिनम् (**शरदः**) शरदादीन् ऋतून् (**इन्दुः**) आर्द्रीकरः (**इन्द्र**) सूर्यवद्वर्त्तमान (**इमम्**) (**केतुम्**) प्रज्ञाम् (**अदधुः**) दधतु (**नू**) क्षिप्रम्। अत्र **ऋचि तुनुघे**ति चेति दीर्घः। (**चित्**) अपि (**अह्नाम्**) दिनानाम् (**शुचिजन्मनः**) शुचे रवेर्जन्म यस्यास्तस्याः (**उषसः**) प्रभातवेलायाः (**चकार**) करोति॥३॥

**अन्वयः**-हे विद्वन्! यथाऽयमिन्दुः सूर्योऽद्युतोऽक्तून् दोषा वस्तोः शरदो वि द्योतयदह्नां चिच्छुचिजन्मन उषसः प्रादुर्भावं चकार तथेमं केतुं द्योतय यथेमं प्रकाशमयं सूर्य्यमुषसोऽदधुस्तथा नू विद्याप्रकाशं धेहि॥३॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे विद्वांसो! यूयं यथा सूर्य्योऽन्येषामप्रकाशकानां भूम्यादीनां प्रकाशक आनन्दकरः पवित्रक्षणादीन्त्समयान्निर्निमीते तथा जनानामात्मनां प्रकाशकाः सन्तो विद्यावृद्धिकराणि कर्माणि निष्पादयत कर्माणि च प्रचारयत॥३॥

**पदार्थः**-हे (**इन्द्र**) सूर्य्य के सदृश वर्त्तमान विद्वन्! जैसे (**अयम्**) यह (**इन्दुः**) गीला करने वाला सूर्य्य (**अद्युतः**) नहीं प्रकाश करने वाले भूमि आदिकों को और (**अक्तून्**) रात्रियों को (**दोषा**) प्रभातकालों को (**वस्तोः**) दिन को (**शरदः**) शरद् आदि ऋतुओं को (**वि, द्योतयत्**) प्रकाशित करता है और (**अह्नाम्**) दिनों के (**चित्**) भी (**शुचिजन्मनः**) सूर्य्य से जन्म जिसका उस (**उषसः**) प्रभात वेला की प्रकटता को (**चकार**) करता है, वैसे (**इमम्**) इस (**केतुम्**) बुद्धि को प्रकाशित कीजिये और जैसे इस प्रकाशस्वरूप सूर्य्य को प्रभात वेलायें (**अदधुः**) धारण करें, वैसे (**नू**) शीघ्र विद्या के प्रकाश को धारण करिये॥३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे विद्वान् जनो! आप लोग जैसे सूर्य्य, अप्रकाशक भूमि आदि का प्रकाश करने और आनन्द करने वाला पवित्र क्षण आदि समयों का निर्म्माण करता है, वैसे मनुष्यों के आत्माओं के प्रकाशक हुए विद्या की वृद्धि करने वाले कर्म्मों को निष्पन्न कीजिये और कर्मों का प्रचार कराइये॥३॥

**पुनर्विद्वांसः किं कुर्य्युरित्याह॥**

फिर वह विद्वान् जन क्या करें, इस विषय को कहते हैं॥

**अयं रोचयदरुचो रुचानो३यं वासयद् व्यृ१तेन पूर्वीः।**

**अयमीयत ऋतयुग्भिरश्वैः स्वर्विदा नाभिना चर्षणिप्राः॥४॥**

अयम्। रोचयत्। अरुचः। रुचानः। अयम्। वासयत्। वि। ऋतेन। पूर्वीः। अयम्। ईयते। ऋतयुक्ऽभिः। अश्वैः। स्वःऽविदा। नाभिना। चर्षणिऽप्राः॥४॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**अयम्**) (**रोचयत्**) प्रकाशयति (**अरुचः**) प्रकाशरहिताँश्चन्द्रादीन् (**रुचानः**) प्रकाशयन् (**अयम्**) (**वासयत्**) (**वि**) (**ऋतेन**) जलेनेव सत्येन (**पूर्वीः**) प्रागुत्पन्नाः प्रजाः (**अयम्**) (**ईयते**) गच्छति (**ऋतयुग्भिः**) जलस्य योजकैः (**अश्वैः**) महद्भिराशुगामिभिः किरणैः (**स्वर्विदा**) स्वः सुखं विदन्ति येन तेन (**नाभिना**) मध्याऽऽकर्षणादिबन्धनेन (**चर्षणिप्राः**) यो विद्यादिभिर्गुणैश्चर्षणीन् मनुष्यान् प्राति व्याप्नोति॥४॥

**अन्वयः**-हे विद्वांसो! यथाऽयमरुचो रुचानः सूर्य्यः सर्वं जगद्रोचयत्, तथा विद्यया सर्वान् मनुष्यान् प्रकाशयत। यथायं सवितर्त्तेन पूर्वीर्वि वासयत्तथा सकलाः प्रजा सत्येन विज्ञानेन संयोजयत, यथायं रविर्ऋतयुग्भिरश्वैः स्वर्विदा नाभिना चर्षणिप्राः सन्नीयते तथा सत्ययोजकैर्महद्भिर्गुणैः सुखप्रदानेनात्माऽऽकर्षणेन वक्तृत्वेन श्रोतॄन् व्याप्नुवन्तो यत्र तत्र गच्छत॥४॥

**भावार्थः**-ये विद्वांसः सूर्य्यवत्प्रकाशात्मानो भूत्वाऽविद्यां विनाश्य जनान् विद्यया प्रकाशयन्ति सत्याचरणं प्रत्याकर्षन्ति ते धन्याः सन्ति॥४॥

**पदार्थः**-हे विद्वन् जनो! जैसे (**अयम्**) यह (**अरुचः**) प्रकाश से रहित चन्द्र आदिकों को (**रुचानः**) प्रकाशित करता हुआ सूर्य्य सम्पूर्ण जगत् को (**रोचयत्**) प्रकाशित करता है, वैसे विद्या से सब मनुष्यों को प्रकाशित करिये जैसे (**अयम्**) यह सूर्य्य (**ऋतेन**) जल के सदृश सत्य से (**पूर्वीः**) पहिले उत्पन्न हुए प्रजाओं को (**वि, वासयत्**) विशेष वसाता है, वैसे सम्पूर्ण प्रजाओं को सत्य विज्ञान से संयुक्त करिये और जैसे (**अयम्**) यह सूर्य्य (**ऋतयुग्भिः**) जल के युक्त करने वालों से (**अश्वैः**) महान् शीघ्रगामी किरणों और (**स्वर्विदा**) सुखको जानते हैं जिससे उस (**नाभिना**) मध्य के आकर्षण आदि बन्धन से (**चर्षणिप्राः**) विद्या आदि गुणों से मनुष्यों के प्रति व्याप्त होने वाला हुआ (**ईयते**) जाता है, वैसे सत्य के युक्त कराने वाले बड़े गुणों से सुख देने वाले आत्मा के आकर्षण से और वक्तृत्व से श्रोताओं को व्याप्त होते हुए जहाँ तहाँ जाइये॥४॥

**भावार्थः**-जो विद्वान् जन सूर्य्य के सदृश प्रकाशात्मा होकर और अविद्या का विनाश कर मनुष्यों को विद्या से प्रकाशित करते हैं और सत्य आचरण के प्रति आकर्षित करते हैं, वे धन्य हैं॥४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**नू गृ॑णा॒नो गृ॑ण॒ते प्र॑त्न राज॒न्निषः॑ पिन्व वसु॒देया॑य पू॒र्वीः।**

**अ॒प ओष॑धीरवि॒षा वना॑नि॒ गा अर्व॑तो॒ नॄनृ॒चसे॑ रिरीहि॥५॥११॥**

**नु। गृ॒णा॒नः। गृ॒ण॒ते। प्र॒त्न॒। रा॒ज॒न्। इषः॑। पि॒न्व॒। व॒सु॒ऽदेया॑य। पू॒र्वीः। अ॒पः। ओष॑धीः। अ॒वि॒षा। वना॑नि। गाः। अर्व॑तः। नॄन्। ऋ॒चसे॑। रि॒री॒हि॒॥५॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**नू**) क्षिप्रम्। अत्र **ऋचि तुनुघे**ति चेति दीर्घः। (**गृणानः**) स्तुवन् (**गृणते**) स्तुवते (**प्रत्न**) प्राचीन दीर्घायुष्क (**राजन्**) विद्याविनयाभ्यां प्रकाशमान (**इषः**) अन्नादीन् (**पिन्व**) सेवस्व (**वसुदेयाय**) वसूनि द्रव्याणि देयानि येन तस्मै (**पूर्वीः**) पूर्णसुखान् (**अपः**) जलानि (**ओषधीः**) यवादीन् (**अविषा**) अविद्यमानं विषं येषु तानि (**वनानि**) जङ्गलानि (**गाः**) धेन्वादीन् (**अर्वतः**) अश्वादीन् (**नॄन्**) मनुष्यादीन् (**ऋचसे**) प्रशंसिताय कर्मणे (**रिरीहि**) याचस्व। **रिरीहीति याच्ञाकर्मा।** (निघं०३.१९)॥५॥

**अन्वयः**-हे राजन् प्रत्न! त्वं गृणते गृणानो वसुदेयाय पूर्वीरिष अप ओषधीरविषा वनानि गा अर्वतो नॄनृचसे पिन्व नू रिरीहि॥५॥

**भावार्थः**-यो राजा सत्यवादी सत्यवक्तॄन् प्रीणाति विद्वद्भ्यो विद्याविनयौ प्राप्य सदैव प्रजासुखमिच्छति यज्ञेनोत्तमैः सुगन्धितफलपुष्पयुक्तैर्वृक्षैर्लतादिभिः सर्वान्त्सुखयन् जलौषधिवृक्षगोऽश्वमनुष्यसुखवृद्धये परमेश्वरं विदुषो वा याचते स चेहाऽमुत्राऽनन्तमानन्दं प्राप्नोतीति॥५॥

अत्रेन्द्रविद्वत्सूर्य्यराजगुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥ इत्येकोनचत्वारिंशत्तमं सूक्तमेकादशो वर्गश्च समाप्तः॥

**पदार्थः**-हे (**राजन्**) विद्या और विनय से प्रकाशमान (**प्रत्न**) प्राचीन तथा दीर्घ आयु युक्त आप (**गृणते**) स्तुति करते हुए के लिये (**गृणानः**) स्तुति करते हुए (**वसुदेयाय**) द्रव्य देने योग्य जिससे उसके लिये (**पूर्वीः**) पूर्ण सुख वाले (**इषः**) अन्न आदिकों को (**अपः**) जलों को (**ओषधीः**) यव आदिकों को (**अविषा**) नहीं विद्यमान विष जिनमें उन (**वनानि**) जंगलों को (**गाः**) धेनु आदिकों को (**अर्वतः**) अश्व आदिकों को और (**नॄन्**) मनुष्य आदिकों को (**ऋचसे**) प्रशंसित कर्म्म के लिये (**पिन्व**) सेवन करिये और (**नू**) शीघ्र (**रिरीहि**) याचना करिये॥५॥

**भावार्थः**-जो राजा सत्यवादी है और सत्य बोलने वालों को प्रसन्न करता है और विद्वानों से विद्या और विनय को प्राप्त होकर सदा ही प्रजा के सुख चाहता है तथा यज्ञ और उत्तम सुगन्धित फल पुष्प से युक्त वृक्षों से और लता आदिकों से सब को सुखयुक्त करता हुआ, जल, ओषधि वृक्ष, गौ, घोड़ा और मनुष्यों के सुख की वृद्धि के लिये परमेश्वर वा विद्वानों से याचना करता है, वही इस लोक और परलोक के अनन्त आनन्द को प्राप्त होता है॥५॥

इस सूक्त में इन्द्र, विद्वान्, सूर्य और राजा के गुणवर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह उनचालीसवां सूक्त और ग्यारहवाँ वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

**अथ पञ्चर्चस्य चत्वारिंशत्तमस्य सूक्तस्य भरद्वाजो बार्हस्पत्य ऋषिः। इन्द्रो देवता। १, ३ विराट् त्रिष्टुप्। २ त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः। ४ भुरिक् पङ्क्तिः। ५ स्वराट्पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः।**

***अथ राज्ञा किं कर्तव्यमित्याह॥***

अब पाँच ऋचावाले चालीसवें सूक्त का प्रारम्भ किया जाता है, उसके प्रथम मन्त्र में राजा को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**इन्द्र पिब तुभ्यं सुतो मदायाव स्य हरी वि मुचा सखाया।**

**उत प्र गाय गण आ निषद्याथा यज्ञाय गृणते वयो धाः॥ १॥**

**इन्द्र। पिब। तुभ्यम्। सुतः। मदाय। अव। स्य। हरी इति। वि। मुच। सखाया। उत। प्र। गाय। गणे। आ। निऽसद्य। अथ। यज्ञाय। गृणते। वयः। धाः॥ १॥**

**पदार्थः**-(**इन्द्र**) राजन् (**पिब**) (**तुभ्यम्**) त्वदर्थम् (**सुतः**) निष्पादितः (**मदाय**) हर्षाय (**अव**) (**स्य**) निश्चिनुहि (**हरी**) संयुक्तावश्वाविव राजप्रजाजनौ (**वि**) (**मुचा**) यौ दुःखं विमुञ्चतस्तौ (**सखाया**) सुहृदौ सन्तौ (**उत**) (**प्र**) (**गाय**) स्तुहि (**गणे**) गणनीये विद्वत्सङ्घे (**आ**) (**निषद्य**) (**अथा**) अत्र **निपातस्य चे**ति दीर्घः। (**यज्ञाय**) यो यजति सत्येन सङ्गच्छते (**गृणते**) सत्यविद्याधर्मप्रशंसकाय (**वयः**) कमनीयमायुः (**धाः**) धेहि॥ १॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! यस्तुभ्यं मदाय सुतः सोमोऽस्ति तं पिब तेनाऽव स्योत हरी इव वि मुचा सखाया प्र गाय गणे निषद्याथा गृणते यज्ञाय वयश्चाऽऽधाः॥ १॥

**भावार्थः**-हे राजंस्त्वं सोमादिमहौषधिरसं पीत्वाऽरोगो भूत्वा सत्याऽसत्यं निर्णीय सर्वामित्राणि स्तुत्वा विद्वत्सभायां स्थित्वा सत्यं न्यायं प्रचार्य दीर्घब्रह्मचर्येण विद्याग्रहणाय सर्वा बालिका बालकांश्च प्रवर्त्य सर्वाः प्रजा दीर्घायुषः सम्पादय॥ १॥

**पदार्थः**-हे (**इन्द्र**) राजन्! जो (**तुभ्यम्**) आपके लिये (**मदाय**) हर्ष के अर्थ (**सुतः**) उत्पन्न किया गया सोमलता का रस है उसको (**पिब**) पीजिये उससे (**अव, स्य**) विनाश को अन्त करिये अर्थात् निश्चित रहिये और (**उत**) भी (**हरी**) संयुक्त घोड़ों के सदृश वर्त्तमान राजा और प्रजाजन (**वि, मुचा**) जो कि दुःख का त्याग करने वाले (**सखाया**) मित्र होते हुए हैं उनकी (**प्र, गाय**) स्तुति करिये और (**गणे**) गणना करने योग्य विद्वानों के समूह में (**निषद्य**) स्थित होकर (**अथा**) इसके अनन्तर (**गृणते**) सत्यविद्या और धर्म की प्रशंसा करने वाले के लिये तथा (**यज्ञाय**) सत्य से संयुक्त होने वाले के लिये (**वयः**) कामना करने योग्य अवस्था को (**आ**) सब प्रकार से (**धाः**) धारण कीजिये॥ १॥



www.9009.co.in

**भावार्थ:-**हे राजन्! आप सोमलता आदि बड़ी ओषधियों के रस का पान कर, रोगरहित होकर, सत्य और असत्य का निर्णय कर, सब मित्रों की स्तुति करके, विद्वानों की सभा में स्थित होकर और सत्य, न्याय का प्रचार करके, दीर्घ ब्रह्मचर्य्य से विद्याग्रहण के लिये सम्पूर्ण बालिका और बालकों को प्रवृत्त कराके सम्पूर्ण प्रजाओं को अधिक अवस्था वाली करिये॥१॥

**अथ नरैः किं भोक्तव्यं किं च पेयमित्याह॥**

अब मनुष्यों को क्या खाना और क्या पीना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**अस्य॑ पिब॒ यस्य॑ जज्ञा॒न इ॑न्द्र॒ मदा॑य॒ क्रत्वे॒ अपि॑बो विरप्शिन्।**

**तमु॑ ते॒ गावो॒ नर॒ आपो॒ अद्रि॒रिन्दुं॒ सम॑ह्यन् पी॒तये॒ सम॑स्मै॥२॥**

**अस्य॑। पि॒ब॒। यस्य॑। ज॒ज्ञा॒नः। इ॒न्द्र॒। मदा॑य। क्रत्वे॑। अपि॑बः। वि॒ऽर॒प्शि॒न्। तम्। ऊँ इति॑। ते॒। गाव॑ः। नर॑ः। आप॑ः। अद्रि॑ः। इन्दु॑म्। सम्। अ॒ह्य॒न्। पी॒तये॑। सम्। अ॒स्मै॒॥२॥**

**पदार्थः**-(**अस्य**) (**पिब**) (**यस्य**) (**जज्ञानः**) जायमानः (**इन्द्र**) राजन् (**मदाय**) आनन्दप्रदाय (**क्रत्वे**) प्रज्ञानाय (**अपिबः**) (**विरप्शिन्**) महान् (**तम्**) (उ) (**ते**) तव (**गावः**) किरणा इव (**नरः**) नेतारः (**आपः**) जलानि (**अद्रिः**) मेघः (**इन्दुम्**) जलम् (**सम्**) (**अह्यन्**) व्याप्नुवन् (**पीतये**) पानाय (**सम्**) (**अस्मै**)॥२॥

**अन्वयः**-हे विरप्शिन्निन्द्र! यस्यास्य मदाय क्रत्वे रसमपिबस्तस्य रसं त्वं पुनर्जज्ञानः पिब। यस्य ते गावो नर आपोऽद्रिरिन्दुं तमु प्राप्नुवन्ति, अस्मै पीतये समह्यन्त्सँस्त्वं सम्पिब॥२॥

**भावार्थः-**अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे राजन्! येन भुक्तेन पीतेन बुद्धिबले वर्धेयातां तं भुङ्क्ष्व पिब भोजय पायय च तस्य पानं मा कुर्या न कारयेर्येन बुद्धिभ्रंशः स्यात्॥२॥

**पदार्थ:**-हे (**विरप्शिन्**) बड़े गुण से विशिष्ट (**इन्द्र**) राजन्! (**यस्य**) जिस (**अस्य**) इसके (**मदाय**) आनन्द देने वाले (**क्रत्वे**) प्रज्ञान के लिये रस को (**अपिबः**) पान किया उस रस को आप फिर (**जज्ञानः**) प्रसिद्ध होते हुए (**पिब**) पान करिये और जिन (**ते**) आपके (**गावः**) किरणों के सदृश (**नरः**) मनुष्य और (**आपः**) जल और (**अद्रिः**) मेघ (**इन्दुम्**) जल को जैसे वैसे (**तम्, उ**) उसको ही प्राप्त होते हैं और (**अस्मै**) इस (**पीतये**) पान के लिये (**सम्, अह्यन्**) अच्छे प्रकार व्याप्त होते हुए आप (**सम्**) उत्तम प्रकार पान करिये॥२॥

**भावार्थ:-**इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे राजन्! जिस भोजन और पान से बुद्धि और बल बढ़े उसका भोजन और उसका पान करिए और उसका भोजन और पान कराइये और उसका पान न करिये और न कराइये जिससे बुद्धिभ्रंश होवे॥२॥

**पुना राजा राजजनाश्च किं कुर्युरित्याह॥**

फिर राजा और राजा के जन क्या करें, इस विषय को कहते हैं॥



www.9009.co.in

**समिद्धे अग्नौ सुत इन्द्र सोम आ त्वा वहन्तु हरयो वहिष्ठाः।**

**त्वायता मनसा जोहवीमीन्द्रा याहि सुविताय महे नः॥ ३॥**

**सम्ऽइद्धे। अग्नौ। सुते। इन्द्र। सोमे। आ। त्वा। वहन्तु। हरयः। वहिष्ठाः। त्वाऽयता। मनसा। जोहवीमि। इन्द्र। आ। याहि। सुविताय। महे। नः॥ ३॥**

**पदार्थः**-(**समिद्धे**) सम्यक् प्रदीप्ते (**अग्नौ**) पावके (**सुते**) निष्पन्ने (**इन्द्र**) परमैश्वर्यप्रद (**सोमे**) उक्ते महौषधिरसे (**आ**) (**त्वा**) त्वाम् (**वहन्तु**) प्रापयन्तु (**हरयः**) अश्वा इव मनुष्याः (**वहिष्ठाः**) अतिशयेन वोढारः (**त्वायता**) त्वां प्राप्तेन (**मनसा**) विज्ञानेन (**जोहवीमि**) भृशमाह्वयामि (**इन्द्र**) दुःखदारिद्र्यविदारक (**आ**) (**याहि**) समन्तादागच्छ (**सुविताय**) प्रेरणायै (**महे**) महते (**नः**) अस्मान्॥ ३॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! वहिष्ठा हरयो समिद्धेऽग्नौ सुते सोमे त्वा त्वामाऽऽवहन्तु। हे इन्द्र! यं त्वायता मनसाऽहं त्वां जोहवीमि स त्वं महे सुविताय न आ याहि॥ ३॥

**भावार्थः**-हे राजन्! त्वमुत्तमैर्मनुष्यैस्सह वैद्यान् सुपरीक्ष्योत्तमान् रसानन्नानि च सम्पाद्य भुक्त्वैक्यमतं कृत्वा प्रजाजनान् रक्षित्वा महदैश्वर्यं प्राप्याऽस्मानपि श्रीमतः सम्पादय॥ ३॥

**पदार्थः**-हे (**इन्द्र**) अत्यन्त ऐश्वर्य्य के देने वाले (**वहिष्ठाः**) अतिशय प्राप्त कराने वाले (**हरयः**) घोड़ों के सदृश मनुष्य (**समिद्धे**) उत्तम प्रकार प्रदीप्त (**अग्नौ**) अग्नि में और (**सुते**) उत्पन्न हुए (**सोमे**) बड़ी औषधी के रस में (**त्वा**) आपको (**आ, वहन्तु**) सब प्रकार से प्राप्त करावें और हे (**इन्द्र**) दुःख दारिद्र्य के विदारने वाले! जिन (**त्वायता**) आपको प्राप्त हुए (**मनसा**) विज्ञान से मैं आपको (**जोहवीमि**) अत्यन्त पुकारता हूँ वह आप (**महे**) बड़ी (**सुविताय**) प्रेरणा के लिये (**नः**) हम लोगों को (**आ, याहि**) सब प्रकार से प्राप्त हूजिये॥ ३॥

**भावार्थः**-हे राजन्! आप उत्तम मनुष्यों के साथ वैद्यों की उत्तम प्रकार परीक्षा कर, उत्तम रसों और अन्नों को सम्पन्न कर उनका भोजन कर, एकमत कर और प्रजाजनों की रक्षा करके अत्यन्त ऐश्वर्य्य को प्राप्त होकर हम लोगों को भी धनयुक्त करिये॥ ३॥

**पुना राजादिभिः किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

फिर राजा आदिकों को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**आ याहि शश्वदुशता ययाथेन्द्र महा मनसा सोमपेयम्।**

**उप ब्रह्माणि शृणव इमा नोऽथा ते यज्ञस्तन्वे३ वयो धात्॥ ४॥**

**आ। याहि। शश्वत्। उशता। ययाथ। इन्द्र। महा। मनसा। सोमऽपेयम्। उप। ब्रह्माणि। शृणवः। इमा। नः। अथ। ते। यज्ञः। तन्वे। वयः। धात्॥ ४॥**

**पदार्थः**-(**आ**) (**याहि**) आगच्छ (**शश्वत्**) निरन्तरम् (**उशता**) कामयमानेन विदुषा सह (**ययाथ**) गच्छ (**इन्द्र**) परमधनप्रद (**महा**) महता (**मनसा**) विज्ञानयुक्तेन चित्तेन (**सोमपेयम्**) सोमश्चासौ पेयश्च तम्



www.9009.co.in

**(उप)** **(ब्रह्माणि)** धनानि वेदान् वा **(शृणव:)** शृणुया: **(इमा)** इमानि **(न:)** अस्माकम् **(अथा)** अनन्तरम्। अत्र **निपातस्य चे**ति दीर्घ:। **(यज्ञ:)** सद्विद्याव्यवहारवर्धको व्यवहार: **(तन्वे)** शरीराय **(वय:)** जीवनम् **(धात्)** दधाति॥४॥

**अन्वय:**- हे इन्द्र! यो यज्ञो नस्ते च तन्वे वयो धात्तेनाथेमा ब्रह्माणि त्वं महा मनसोशता शृणव: शश्वद्ययाथ सोमपेयं पातुमुपायाहि॥४॥

**भावार्थ:**-हे विद्वांसो राजादयो जना! यूयं विद्वद्भि: सह सङ्गत्य बुद्धिबलवर्द्धकावाहारविहारौ सदा कृत्वा परस्परं विचार्य्य ब्रह्मचर्यादिनाऽऽयुर्वर्द्धयत येन सर्वे महाशया आप्ता भवेयु:॥४॥

**पदार्थ:**-हे **(इन्द्र)** अत्यन्त धन के देने वाले! जो **(यज्ञ:)** सद्विद्या और व्यवहार को बढ़ाने वाला व्यवहार **(न:)** हम लोगों के और **(ते)** आपके **(तन्वे)** शरीर के लिये **(वय:)** जीवन को **(धात्)** धारण करता है उससे **(अथा)** इसके अनन्तर **(इमा)** इन **(ब्रह्माणि)** धनों को वेदों को आप **(महा)** बड़े **(मनसा)** विज्ञानयुक्त चित्त से **(उशता)** कामना करते हुए विद्वान् के साथ **(शृणव:)** सुनिये और **(शश्वत्)** निरन्तर **(ययाथ)** प्राप्त हूजिये तथा **(सोमपेयम्)** पीने योग्य सोमलता के रस को पीने के लिये **(उप, आ, याहि)** समीप प्राप्त हूजिये॥४॥

**भावार्थ:**-हे विद्वान् राजा आदि जनो! आप लोग विद्वानों के साथ मेल कर, बुद्धि और बल के बढ़ाने वाले आहार और विहार को कर, परस्पर विचार करके ब्रह्मचर्य्य आदि से अवस्था को बढ़ावें, जिससे सब महाशय आप्त होवें॥४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**यदिन्द्र दिवि पार्ये यदृधग्यद्वा स्वे सदने यत्र वासि।**

**अतो नो यज्ञमवसे नियुत्वान् सजोषा: पाहि गिर्वणो मरुद्भि:॥५॥१२॥**

**यत्। इन्द्र। दिवि। पार्ये। यत्। ऋधक्। यत्। वा। स्वे। सदने। यत्र। वा। असि। अत:। न:। यज्ञम्। अवसे। नियुत्वान्। सऽजोषा:। पाहि। गिर्वण:। मरुत्ऽभि:॥५॥**

**पदार्थ:**-**(यत्)** **(इन्द्र)** विद्वन् **(दिवि)** कमनीये **(पार्ये)** पालयितव्ये राज्ये **(यत्)** **(ऋधक्)** यथार्थम् **(यत्)** **(वा)** **(स्वे)** स्वकीये **(सदने)** स्थाने **(यत्र)** **(वा)** **(असि)** **(अत:)** **(न:)** अस्माकम् **(यज्ञम्)** सत्कर्त्तव्यं न्यायव्यवहारम् **(अवसे)** रक्षणाद्याय **(नियुत्वान्)** नियन्तेश्वर इव। **नियुत्वानितीश्वरनाम।** (निघं०२.२१) **(सजोषा:)** समानप्रीतिसेवी **(पाहि)** **(गिर्वण:)** सुशिक्षवाचा स्तुत **(मरुद्भि:)** उत्तमैर्मनुष्यै:॥५॥

**अन्वय:**-हे गिर्वण इन्द्र! यत्पार्ये दिवि यदृधग्यद्वा स्वे सदने यत्र वा त्वमसि। अतो नोऽवसे नियुत्वानिव सजोषा: सन्मरुद्भि: सह यज्ञं पाहि॥५॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-हे राजंस्त्वया सदैव राष्ट्रसंरक्षणं सत्यप्रचारः स्वात्मवत्सर्वेषां ज्ञानमीश्वरवत्पक्षपातं विहाय महाशयैर्धार्मिकैः सभ्यैः सह प्रजापालनं सततं क्रियतामिति॥५॥

अत्रेन्द्रसोमौषधिराजप्रजाकृत्यवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति चत्वारिंशत्तमं सूक्तं द्वादशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे **(गिर्वणः)** उत्तम शिक्षित वाणी से स्तुति किये गये **(इन्द्र)** विद्वन्! **(यत्)** जो **(पार्ये)** पालन करने योग्य राज्य में **(दिवि)** कामना करने योग्य में **(यत्)** जो **(ऋधक्)** यथार्थ और **(यत्)** जो **(वा)** वा **(स्वे)** अपने **(सदने)** स्थान में **(यत्र)** जहाँ **(वा)** वा आप **(असि)** हो **(अतः)** इस कारण से **(नः)** हम लोगों के **(अवसे)** रक्षण आदि के लिये **(नियुत्वान्)** नियत करने वाले ईश्वर के सदृश **(सजोषाः)** तुल्य प्रीति के सेवन करने वाले हुए **(मरुद्भिः)** उत्तम मनुष्यों के साथ **(यज्ञम्)** सत्कार करने योग्य न्याय व्यवहार की **(पाहि)** रक्षा कीजिये॥५॥

**भावार्थः**-हे राजन्! आपको चाहिये कि सदा ही राज्य का उत्तम प्रकार रक्षण, सत्य का प्रचार और अपने सदृश सब का ज्ञान और ईश्वर के सदृश पक्षपात का त्याग करके महाशय धार्म्मिक श्रेष्ठ जनों के साथ प्रजा का पालन निरन्तर करें॥५॥

इस सूक्त में इन्द्र, सोम, ओषधि, राजा और प्रजा के कृत्य का वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह चालीसवाँ सूक्त और बारहवाँ वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

**अथ पञ्चर्चस्यैकचत्वारिंशत्तमस्य सूक्तस्य भरद्वाजो बार्हस्पत्य ऋषिः। इन्द्रो देवता। १ विराट् त्रिष्टुप्। २, ३,४ त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः। ५ भुरिक् पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः॥**

***अथ राज्ञा किं कर्त्तव्यमित्याह॥***

अब पाँच ऋचावाले एकतालीसवें सूक्त का प्रारम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में राजा को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**अहे॑ळमान॒ उप॑ याहि य॒ज्ञं तुभ्य॑ं पवन्त॒ इन्द॑वः सु॒तास॑ः।**
**गावो॒ न व॑ज्रि॒न्त्स्वमोको॒ अच्छेन्द्रा ग॑हि प्रथ॒मो य॒ज्ञिया॑नाम्॥ १॥**

**अहे॑ळमानः। उप॑। या॒हि॒। य॒ज्ञम्। तुभ्य॑म्। प॒व॒न्ते॒। इन्द॑वः। सु॒तास॑ः। गाव॑ः। न। व॒ज्रि॒न्। स्वम्। ओक॑ः। अच्छ॑। इन्द्र॑। आ। ग॒हि॒। प्र॒थ॒मः। य॒ज्ञिया॑नाम्॥ १॥**

**पदार्थः**-(**अहेळमानः**) सत्कृतः (**उप**) (**याहि**) समीपमागच्छ (**यज्ञम्**) आहारविहाराख्यम् (**तुभ्यम्**) (**पवन्ते**) पवित्रीकुर्वन्ति (**इन्दवः**) सोमलताद्युदकादीनि (**सुतासः**) निष्पादिताः (**गावः**) धेनवः (**न**) इव (**वज्रिन्**) शस्त्रास्त्रधारिन् (**स्वम्**) स्वकीयम् (**ओकः**) निवासस्थानम् (**अच्छ**) सम्यक् (**इन्द्र**) परमैश्वर्यप्रद (**आ**) (**गहि**) आगच्छ (**प्रथमः**) आदिमः (**यज्ञियानाम्**) यज्ञं सम्पालितुमर्हाणाम्॥ १॥

**अन्वयः**-हे वज्रिन्निन्द्र! यज्ञियानां प्रथमोऽहेळमानो यं यज्ञं तुभ्यं सुतास इन्दवः पवन्ते तमुप याहि गावो न स्वमोकोऽच्छागहि॥ १॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। हे राजन्! प्रजाजनैरुत्तमगुणयोगात् सर्वतः सत्कृतः सन् राज्यपालनाख्यं व्यवहारं यथावत्प्राप्नुहि। यथा धेनवः स्ववत्सान्त्स्वकीयस्थानानि च प्राप्नुवन्ति तथा प्रजापालनाय विनयं याहि॥ १॥

**पदार्थः**-हे (**वज्रिन्**) शस्त्र और अस्त्र को धारण करने और (**इन्द्र**) अत्यन्त ऐश्वर्य्य के देने वाले (**यज्ञियानाम्**) यज्ञ का पालन करने के योग्यों का (**प्रथमः**) पहिला (**अहेळमानः**) सत्कार किया गया जिस (**यज्ञम्**) आहार-विहार नामक यज्ञ को (**तुभ्यम्**) आपके लिये और (**सुतासः**) उत्पन्न किये गये (**इन्दवः**) सोमलता आदि के जल (**पवन्ते**) पवित्र करते हैं उसके (**उप, याहि**) समीप आइये और (**गावः**) गौवें (**न**) जैसे (**स्वम्**) अपने (**ओकः**) निवासस्थान को वैसे (**अच्छ, आ, गहि**) अच्छे प्रकार सब ओर से प्राप्त हूजिये॥ १॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे राजन्! प्रजाजनों से उत्तम गुणों के योग के कारण सब से सत्कार किये गये राज्य-पालन नामक व्यवहार को यथावत् प्राप्त हूजिये और जैसे गौवें अपने बछड़े और स्थानों को प्राप्त होती हैं, वैसे प्रजा के पालन के लिये विनय को प्राप्त हूजिये॥ १॥



www.9009.co.in

**पुनस्ते किं कुर्य्युरित्याह॥**

फिर वे क्या करें, इस विषय को कहते हैं॥

**या ते॑ का॒कुत् सुकृ॑ता॒ या वरि॑ष्ठा॒ यया॒ शश्व॒त् पिब॑सि॒ मध्व॑ ऊ॒र्मिम्।**

**तया॑ पाहि॒ प्र ते॑ अध्व॒र्युर॑स्था॒त् सं ते॒ वज्रो॑ वर्ततामिन्द्र ग॒व्युः॥२॥**

**या। ते॒। का॒कुत्। सुऽकृ॑ता। या। वरि॑ष्ठा। यया॑। शश्व॑त्। पिब॑सि। मध्व॑ः। ऊ॒र्मिम्। तया॑। पा॒हि॒। प्र। ते॒। अ॒ध्व॒र्युः। अ॒स्था॒त्। सम्। ते॒। वज्र॑ः। व॒र्त॒ता॒म्। इ॒न्द्र॒। ग॒व्युः॥२॥**

**पदार्थः**-(**या**) (**ते**) तव (**काकुत्**) सुशिक्षिता वाक्। काकुरिति वाङ्नाम। (निघं०१.११) (**सुकृता**) सत्यभाषणादिशुभक्रियायुक्ता (**या**) (**वरिष्ठा**) अतिशयेनोत्तमा (**यया**) (**शश्वत्**) निरन्तरम् (**पिबसि**) (**मध्वः**) मधुरादिगुणयुक्तस्य (**ऊर्मिम्**) तरङ्गमिव (**तया**) (**पाहि**) रक्ष (**प्र**) (**ते**) तव (**अध्वर्युः**) आत्मनोऽध्वरमहिंसाव्यवहारं कामयमानः (**अस्थात्**) तिष्ठति (**सम्**) (**ते**) तव (**वज्रः**) शस्त्रास्त्रसमूहः (**वर्त्तताम्**) (**इन्द्र**) धर्मधर (**गव्युः**) गां पृथिवीराज्यमिच्छुः॥२॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र नरेश! या सुकृता या वरिष्ठा काकुद्यया त्वमूर्म्मिमिव मध्वो रसं शश्वत् पिबसि यया तेऽध्वर्युः प्रास्थात्। ते वज्रो संवर्त्ततां तया गव्युः सन् सर्वाः प्रजाः पाहि॥२॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। राजा राजसभ्याश्च सुसंस्कृता विद्यायुक्ताः सत्भाषणोज्ज्वलिता वाचः प्राप्य ताभिः प्रजापालनादीन् व्यवहारान्त्सततं संसाध्नुयुः॥२॥

**पदार्थः**-हे (**इन्द्र**) धर्म्म के धारण करने वाले मनुष्यों के स्वामिन्! (**ते**) आपकी (**या**) जो (**सुकृता**) सत्य भाषण आदि उत्तम किया से युक्त और (**या**) जो (**वरिष्ठा**) अतिशय उत्तम (**काकुत्**) उत्तम प्रकार शिक्षा की गई वाणी (**यया**) जिससे आप (**ऊर्मिम्**) तरंग को जैसे वैसे (**मध्वः**) मधुर आदि गुणों से युक्त के रस को (**शश्वत्**) निरन्तर (**पिबसि**) पान करते हो और जिससे (**ते**) आपका (**अध्वर्युः**) अपने अहिंसारूप व्यवहार की कामना करते हुए अच्छे प्रकार से (**प्र, अस्थात्**) स्थित होते हो और जिससे (**ते**) आपका (**वज्रः**) शस्त्र और अस्त्रों का समूह (**सम्, वर्त्तताम्**) उत्तम प्रकार वर्त्तमान होवे (**तया**) उससे (**गव्युः**) पृथिवी राज्य की इच्छा करने वाले हुए सम्पूर्ण प्रजाओं का (**पाहि**) पालन करिये॥२॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। राजा और राजा के सभासद् उत्तम प्रकार संस्कार की विद्या से युक्त, सत्यभाषण से उज्ज्वलित वाणियों को प्राप्त होकर उनसे प्रजापालन आदि व्यवहारों को निरन्तर सिद्ध करें॥२॥

**पुनस्ते किं कुर्य्युरित्याह॥**

फिर वे क्या करें, इस विषय को कहते हैं॥

**ए॒ष द्र॒प्सो वृ॑ष॒भो वि॒श्वरू॑प॒ इन्द्रा॑य॒ वृष्णे॒ सम॑कारि॒ सोम॑ः।**



www.9009.co.in

**एतं पिब हरिवः स्थातरुग्र यस्येशिषे प्रदिवि यस्ते अन्नम्॥३॥**

**एषः। द्रप्सः। वृषभः। विश्वरूपः। इन्द्राय। वृष्णे। सम्। अकारि। सोमः। एतम्। पिब। हरिऽवः। स्थातः। उग्र। यस्य। ईशिषे। प्रऽदिवि। यः। ते। अन्नम्॥३॥**

**पदार्थः**-(**एषः**) (**द्रप्सः**) दुष्टानां विमोहनम् (**वृषभः**) सुखवर्षकः (**विश्वरूपः**) विविधस्वरूपः (**इन्द्राय**) परमैश्वर्यप्रापणाय (**वृष्णे**) बलादिगुणकराय (**सम्**) (**अकारि**) क्रियते (**सोमः**) महौषधिजन्यो रसः (**एतम्**) (**पिब**) (**हरिवः**) प्रशस्तमनुष्ययुक्त (**स्थातः**) यस्तिष्ठति तत्सम्बुद्धौ (**उग्र**) तेजस्विन् (**यस्य**) (**ईशिषे**) ईश्वरो भवसि (**प्रदिवि**) प्रकर्षेण कमनीये व्यवहारे (**यः**) (**ते**) तव (**अन्नम्**) अत्तव्यम्॥३॥

**अन्वयः**- हे हरिवः स्थातरुग्र नृप! यस्य ते तवैष द्रप्सो वृषभो विश्वरूपः सोमो वृष्ण इन्द्राय समकारि यः प्रदिव्यन्नं प्रापयत्येतं त्वं पिबाऽस्येशिषे॥३॥

**भावार्थः**-यस्य राज्ञो विविधा उत्तमा प्रबन्धा उत्तमान्यौषधानि उत्तमाः सेना धार्मिका विद्वांसोऽधिकारिणः सन्ति स एव सर्वां प्रतिष्ठां लभते॥३॥

**पदार्थः**-हे (**हरिवः**) अच्छे मनुष्यों से युक्त (**स्थातः**) स्थित होने वाले (**उग्र**) तेजस्विन् राजन्! (**यस्य**) जिस (**ते**) आपका (**एषः**) यह (**द्रप्सः**) दुष्टों का विमोह करना (**वृषभः**) सुख का वर्षाने वाला (**विश्वरूपः**) अनेक प्रकार के स्वरूप वाला (**सोमः**) बड़ी-बड़ी ओषधियों से उत्पन्न हुआ रस (**वृष्णे**) बल आदि गुण के करने और (**इन्द्राय**) अत्यन्त ऐश्वर्य्य को प्राप्त कराने वाले के लिये (**सम्, अकारि**) किया जाता है (**यः**) जो (**प्रदिवि**) अच्छे प्रकार सुन्दर व्यवहार में (**अन्नम्**) भोजन करने योग्य पदार्थ को प्राप्त कराता (**एतम्**) इस का आप (**पिब**) पान करिये और इसके (**ईशिषे**) स्वामी हूजिये॥३॥

**भावार्थः**-जिस राजा के अनेक प्रकार के उत्तम प्रबन्ध, उत्तम ओषधियाँ, उत्तम सेना और धार्मिक विद्वान् अदिकारी हैं, वही सम्पूर्ण प्रतिष्ठा को प्राप्त होता है॥३॥

**पुनः स राजा किं कुर्य्यादित्याह॥**

फिर वह राजा क्या करे, इस विषय को कहते हैं॥

**सुतः सोमो असुतादिन्द्र वस्यानयं श्रेयाञ्चिकितुषे रणाय।**
**एतं तितिर्व उप याहि यज्ञं तेन विश्वास्तविषीरा पृणस्व॥४॥**

**सुतः। सोमः। असुतात्। इन्द्र। वस्यान्। अयम्। श्रेयान्। चिकितुषे। रणाय। एतम्। तितिर्वः। उप। याहि। यज्ञम्। तेन। विश्वाः। तविषीः। आ। पृणस्व॥४॥**

**पदार्थः**-(**सुतः**) निष्पादितः (**सोमः**) महैश्वर्ययोगः (**असुतात्**) अनुत्पादितात् (**इन्द्र**) परमैश्वर्ययुक्त (**वस्यान्**) अतिशयेन वासकर्त्ता (**अयम्**) (**श्रेयान्**) अतिशयेन श्रेयःप्राप्तः (**चिकितुषे**) चिकित्सितुं विचारयितुमिष्टाय (**रणाय**) सङ्ग्रामाय (**एतम्**) (**तितिर्वः**) शत्रूणां बलं तरति उल्लङ्घयितः



www.9009.co.in

**(उप)** **(याहि)** **(यज्ञम्)** सुसङ्गमनीयम् **(तेन)** **(विश्वाः)** समग्राः **(तविषीः)** बलयुक्ताः सेनाः **(आ)** **(पृणस्व)** समन्तात् सुखय॥४॥

**अन्वयः**-हे तितिर्व इन्द्र! योऽयं चिकितुषे रणाय श्रेयान् वस्यानसुतात् सोमः सुतोऽस्ति, एतं यज्ञं त्वमुप याहि तेन विश्वास्तविषीरा पृणस्व॥४॥

**भावार्थः**-ये राजानः स्वल्पायापि सङ्ग्रामाय महतीं सामग्रीं सञ्चिन्वन्ति ते शत्रून् विजयमानाः सन्तः सर्वाः प्रजाः सततं सुखयितुमर्हन्ति॥४॥

**पदार्थः**-हे **(तितिर्वः)** शत्रुओं के बल को उल्लङ्घन करने वाले **(इन्द्र)** अत्यन्त ऐश्वर्य्य से युक्त! जो **(अयम्)** यह **(चिकितुषे)** विचार करने को इष्ट **(रणाय)** सङ्ग्राम के लिये **(श्रेयान्)** अतिशय कल्याण को प्राप्त **(वस्यान्)** अतिशय वास करने वाला **(असुतात्)** नहीं उत्पन्न किये गये पदार्थों से **(सोमः)** बड़े ऐश्वर्य्यों का योग **(सुतः)** उत्पन्न किया गया है **(एतम्)** इस **(यज्ञम्)** उत्तम प्रकार प्राप्त होने योग्य के आप **(उप, याहि)** समीप प्राप्त हूजिये ( **तेन)** उससे **(विश्वाः)** सम्पूर्ण **(तविषीः)** बलयुक्त सेनाओं को **(आ, पृणस्व)** सब प्रकार से सुखी करिये॥४॥

**भावार्थः**-जो राजा छोटे भी सङ्ग्राम के लिये बड़ी सामग्री को इकट्ठी करते हैं, वे शत्रुओं को जीतते हुए सम्पूर्ण प्रजाओं को निरन्तर सुखी करने के योग्य हैं॥४॥

**पुनः स कीदृशः सन् किं कुर्य्यादित्याह॥**

फिर वह कैसा हुआ क्या करे, इस विषय को कहते हैं॥

**ह्वया॑मसि॒ त्वेन्द्र॑ याह्य॒र्वाङरं॑ ते॒ सोम॑स्त॒न्वे॑ भवाति।**

**शत॑क्रतो मा॒दय॑स्वा सु॒तेषु॒ प्रास्माँ अ॑व॒ पृत॑नासु॒ प्र वि॒क्षु॥५॥१३॥**

**ह्वया॑मसि। त्वा॒। आ। इ॒न्द्र॒। या॒हि॒। अ॒र्वाङ्। अर॑म्। ते॒। सोम॑ः। त॒न्वे॑। भ॒वा॒ति॒। शत॑क्रतो॒ इति॒ शत॑ऽक्रतो। मा॒दय॑स्व। सु॒तेषु॑। प्र। अ॒स्मान्। अ॒व॒। पृत॑नासु। प्र। वि॒क्षु॥५॥**

**पदार्थः**-**(ह्वयामसि)** आह्वयामः **(त्वा)** त्वाम् **(आ)** **(इन्द्र)** सर्वतो रक्षक **(याहि)** गच्छ **(अर्वाङ्)** योऽर्वाग् गच्छति सः **(अरम्)** अलम्। अत्र वर्णव्यत्ययेन लस्य स्थाने रः। **(ते)** तव **(सोमः)** महौषध्यादिरसः **(तन्वे)** शरीराय **(भवाति)** भवेत् **(शतक्रतो)** असंख्यप्रज्ञ उत्तमकर्मन् वा **(मादयस्वा)** आनन्दाऽऽनन्दय वा। अत्र **संहितायामिति** दीर्घः। **(सुतेषु)** निष्पन्नेष्वैश्वर्येषु **(प्र)** **(अस्मान्)** **(अव)** रक्ष **(पृतनासु)** मनुष्येषु सेनासु वा। **पृतना इति मनुष्यनाम।** (निघं०२.३) **(प्र)** **(विक्षु)** प्रजासु॥५॥

**अन्वयः**-हे शतक्रतो इन्द्र! ते तन्वे यस्सोमोऽर्वाङ् प्र भवाति तं त्वं याहि। यन्त्वा वयमाह्वयामसि स त्वं सुतेष्वस्मान् प्राव पृतनासु विक्ष्वरं मादयस्वा॥५॥

**भावार्थः**-यो राजा स्वैश्वर्येण सर्वाः प्रजा न्यायेन रक्षति स प्रशंसितश्चिरायुरानन्दित आनन्दयिता च भवतीति॥५॥



www.9009.co.in

अत्रेन्द्रराजसोमगुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इत्येकचत्वारिंशत्तमं सूक्तं त्रयोदशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे **(शतक्रतो)** असङ्ख्य बुद्धियुक्त तथा उत्तम कर्म्म करने और **(इन्द्र)** सब प्रकार से रक्षा करने वाले **(ते)** आपके **(तन्वे)** शरीर के लिये जो **(सोमः)** बड़ी ओषधि आदि का रस **(अर्वाङ्)** नीचे चलने वाला **(प्र, भवति)** प्रभाव को प्राप्त होता है उसको आप **(याहि)** प्राप्त हूजिये और जिन **(त्वा)** आपको हम लोग **(आ, ह्वयामसि)** पुकारते हैं वह आप **(सुतेषु)** उत्पन्न हुए ऐश्वर्य्यों में **(अस्मान्)** हम लोगों की **(प्र, अव)** उत्तम प्रकार रक्षा करो और **(पृतनासु)** मनुष्यों वा सेनाओं में और **(विक्षु)** प्रजाओं में **(अरम्)** अच्छे प्रकार **(मादयस्वा)** आनन्द करो वा आनन्द कराओ॥५॥

**भावार्थः**-जो राजा अपने ऐश्वर्य्य से सम्पूर्ण प्रजाओं की न्याय से रक्षा करता है वह प्रशंसित, अधिक अवस्था वाला और आनन्दयुक्त वा आनन्द कराने वाला भी होता है॥५॥

इस सूक्त में इन्द्र, राजा और सोम के रस का गुणवर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह इकतालीसवाँ सूक्त और तेरहवाँ वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

**अथ चतुर्ऋचस्य द्विचत्वारिंशत्तमस्य सूक्तस्य भरद्वाजो बार्हस्पत्य ऋषिः। इन्द्रो देवता। १ स्वराडुष्णिक्छन्दः। ऋषभः स्वरः। २ निचृदनुष्टुप्। ३ अनुष्टुप्। भुरिगनुष्टुप् छन्दः। गान्धारः स्वरः॥**

***अथ राजप्रजाजनाः परस्परं कथं वर्त्तेरन्नित्याह॥***

अब चार ऋचा वाले बयालीसवें सूक्त का आरम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में राजा और प्रजाजन परस्पर कैसा वर्त्ताव करे, इस विषय को कहते हैं॥

**प्रत्य॑स्मै पिपी॑षते॒ विश्वा॑नि वि॒दुषे॑ भर।**

**अ॒र॒म्ऽग॒माय॒ जग्म॒येऽप॑श्चाद्दध्वने॒ नरे॑॥ १॥**

**प्रति॑। अ॒स्मै॑। पिपी॑षते। विश्वा॑नि। वि॒दुषे॑। भ॒र॒। अ॒र॒म्ऽग॒माय॑। जग्म॑ये। अप॑श्चात्ऽदध्वने। नरे॑॥ १॥**

**पदार्थः**-(**प्रति**) (**अस्मै**) (**पिपीषते**) पातुमिच्छवे (**विश्वानि**) सर्वाण्युत्तमानि वस्तूनि (**विदुषे**) आप्ताय विपश्चिते (**भर**) धर (**अरङ्गमाय**) यो विद्यायां अरं पारं गच्छति तस्मै (**जग्मये**) विज्ञानाधिक्याय (**अपश्चाद्दध्वने**) उत्तमेषु व्यवहारेष्वग्रगामिने (**नरे**) नायकाय॥१॥

**अन्वयः**-हे विद्वन् राजंस्त्वं जग्मयेऽपश्चाद्दध्वनेऽरङ्गमाय पिपीषते विदुषेऽस्मै नरे विश्वानि भराऽयमपि तुभ्यमेतानि प्रति भरतु॥१॥

**भावार्थः**-यो राजा विद्वदर्थे सर्वं धनं सामर्थ्यं वा धरति ये च विद्वांसो राजादिहिताय प्रयतन्ते ते सर्वदोन्नता जायन्ते॥१॥

**पदार्थः**-हे विद्वन्! आप (**जग्मये**) विज्ञान की अधिकता के लिये (**अपश्चाद्दध्वने**) उत्तम व्यवहारों में आगे चलने तथा (**अरङ्गमाय**) विद्या के पार जाने और (**पिपीषते**) पान करने की इच्छा करने वाले (**विदुषे**) यथार्थवक्ता विद्वान् के लिये और (**अस्मै**) इस (**नरे**) अग्रणी मनुष्य के लिये (**विश्वानि**) सम्पूर्ण उत्तम वस्तुओं को (**भर**) धारण करिये और यह भी आपके लिये इनको (**प्रति**) धारण करे॥१॥

**भावार्थः**-जो राजा विद्वानों के लिये सम्पूर्ण धन वा सामर्थ्य को धारण करता है और जो विद्वान् राजा आदि के हित के लिये प्रयत्न करते हैं, वे सर्वदा उन्नत होते हैं॥१॥

**पुनर्मनुष्याः किं कुर्युरित्याह॥**

फिर मनुष्य क्या करें, इस विषय को कहते हैं॥

**एमे॑नं प्र॒त्येत॑न॒ सोमे॑भिः सोम॒पात॑मम्।**

**अम॑त्रेभिर्ऋजी॒षिण॒मिन्द्रं॑ सु॒तेभि॒रिन्दु॑भिः॥ २॥**



www.9009.co.in

**आ। ईम्। एनम्। प्रतिऽएतन। सोमेभिः। सोमऽपातमम्। अमत्रेभिः। ऋजीषिणम्। इन्द्रम्। सुतेभिः। इन्दुऽभिः॥ २॥**

**पदार्थः**-(**आ**) समन्तात् (**ईम्**) सर्वतः (**एनम्**) राजानम् (**प्रत्येतन**) प्रतीतिं कुरुत (**सोमेभिः**) ऐश्वर्यैरोषधिगणैर्वा (**सोमपातमम्**) अतिशयेन सोमपातारम् (**अमत्रेभिः**) उत्तमैः पात्रैः (**ऋजीषिणम्**) ऋजूनां सरलानां धार्मिकानां जनानामीषितुं शीलम् (**इन्द्रम्**) ऐश्वर्यप्रदम् (**सुतेभिः**) निष्पादितैः (**इन्दुभिः**) आनन्दकरैरुदकैः॥ २॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यूयं सुतेभिः सोमेभिरिन्दुभिरमत्रेभिः सोमपातममृजीषिणमेनमिन्द्रमीमा प्रत्येतन॥ २॥

**भावार्थः**-हे राजप्रजाजना! यूयमाप्तेषु राजादिविद्वत्सु च विश्वासं कुरुत ते च युष्मासु विश्वसेयुरेवमुभयत्राऽऽनन्दो वर्धेत॥ २॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! आप लोग (**सुतेभिः**) उत्पन्न किये गये (**सोमेभिः**) ऐश्वर्य्यों वा ओषधियों के समूहों से (**इन्दुभिः**) आनन्दकारक जलों से तथा (**अमत्रेभिः**) उत्तम पात्रों से (**सोमपातमम्**) अतिशय सोमरस के पीने वाले (**ऋजीषिणम्**) सरल धार्मिक जनों की इच्छा करने के स्वभाव वाले (**एनम्**) इस (**इन्द्रम्**) ऐश्वर्य्य के देने वाले राजा की (**ईम्**) सब ओर से (**प्रत्येतन**) प्रतीति करिये॥ २॥

**भावार्थः**-हे राजा और प्रजाजनो! आप लोग यथार्थवक्ता तथा राजा आदि विद्वानों में विश्वास करिये और वे आप लोगों में विश्वास करें, इस प्रकार दोनों और आनन्द बढ़े॥ २॥

**पुनस्ते परस्परं किं कुर्युरित्याह॥**

फिर वे परस्पर क्या करें, इस विषय को कहते हैं॥

**यदी सुतेभिरिन्दुभिः सोमेभिः प्रतिभूषथ।**

**वेदा विश्वस्य मेधिरो धृषत् तन्तमिदेषते॥ ३॥**

**यदि। सुतेभिः। इन्दुऽभिः। सोमेभिः। प्रतिऽभूषथ। वेद। विश्वस्य। मेधिरः। धृषत्। तम्ऽतम्। इत्। आ। ईषते॥ ३॥**

**पदार्थः**-(**यदी**) अत्र **निपातस्य चे**ति दीर्घः। (**सुतेभिः**) निष्पादितैः (**इन्दुभिः**) आनन्दकरैः (**सोमेभिः**) ऐश्वर्यैः (**प्रतिभूषथ**) (**वेदा**) जानाति। अत्र **द्व्यचोऽतस्तिङ** इति दीर्घः। (**विश्वस्य**) सर्वस्य राज्यस्य (**मेधिरः**) सङ्गन्ता (**धृषत्**) दुष्टानां धर्षकः (**तन्तम्**) (**इत्**) एव (**आ**) (**ईषते**) प्राप्नोति। **ईषतीति गतिकर्मा।** (निघं०२.१४)॥ ३॥

**अन्वयः**-हे विद्वांसो! यो यो विश्वस्य मेधिरो धृषदेषते राजव्यवहारं वेदा तन्तमिद्यदी सुतेभिरिन्दुभिस्सोमेभिर्यूयं प्रतिभूषथ तर्ह्ययमपि युष्मान् सम्भूषेत्॥ ३॥

**भावार्थः**-य उत्तमानुत्तमान् जनान्त्सत्कुर्वन्ति ते सर्वाञ्छुभैर्गुणैरलं कुर्वन्ति॥ ३॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-हे विद्वान् जनो! जो जो **(विश्वस्य)** सम्पूर्ण राज्य का **(मेधिरः)** मेल करने और **(धृषत्)** दुष्टों का दबाने वाला **(आ, ईषते)** प्राप्त होता और राजा के व्यवहार को **(वेदा)** जानता है **(तन्तम्, इत्)** उसी उसको **(यदी)** जो **(सुतेभिः)** उत्पन्न किये **(इन्दुभिः)** आनन्दकारक **(सोमेभिः)** ऐश्वर्य्यों से आप लोग **(प्रतिभूषथ)** सुशोभित कीजिये तो यह भी आप लोगों को उत्तम प्रकार शोभित करे॥३॥

**भावार्थः**-जो उत्तम-उत्तम मनुष्यों का सत्कार करते हैं, वे सबको श्रेष्ठ गुणों से शोभित करते हैं॥३॥

**पुनर्मनुष्यैः कथं वर्त्तितव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को कैसा वर्त्ताव करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**अस्माअस्मा इदन्धसोऽध्वर्यो प्र भरा सुतम्।**

**कुवित्समस्य जेन्यस्य शर्धतोऽभिशस्तेरवस्परत्॥४॥१४॥**

**अस्मैऽअस्मै। इत्। अन्धसः। अध्वर्यो इति। प्र। भर। सुतम्। कुवित्। समस्य। जेन्यस्य। शर्धतः। अभिऽशस्तेः। अवऽस्परत्॥४॥**

**पदार्थः**-**(अस्माअस्मै)** **(इत्)** एव **(अन्धसः)** अन्नादेः **(अध्वर्यो)** अहिंसक **(प्र)** **(भरा)** धर। अत्र **द्व्यचोऽतस्तिङ** इति दीर्घः। **(सुतम्)** निष्पादितम् **(कुवित्)** महत् **(समस्य)** तुल्यस्य **(जेन्यस्य)** जेतुं योग्यस्य **(शर्धतः)** बलस्य **(अभिशस्तेः)** अभितः प्रशंसितस्य **(अवस्परत्)** पालयति॥४॥

**अन्वयः**-हे अध्वर्यो! त्वमस्माअस्मा अन्धसः समस्य जेन्यस्य शर्धतोऽभिशस्तेः कुवित्सुतं प्र भरा तेनेदस्मान् भवानवस्परत्॥४॥

**भावार्थः**-ये विद्वांसः सर्वार्थं सर्वानुत्तमान् पदार्थान्त्समर्पयन्ति यावत्सामर्थ्यं धरन्ति तावत्सर्वं परेषां रक्षणाय कुर्वन्ति ते सर्वदा भाग्यशालिनो गणनीया इति॥४॥

अत्रेन्द्रराजविद्वत्प्रजाकृत्यवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति द्विचत्वारिंशत्तमं सूक्तं चतुर्दशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे **(अध्वर्य्यो)** नहीं हिंसा करने वाले आप! **(अस्माअस्मै)** इस इसके लिये **(अन्धसः)** अन्न आदि के **(समस्य)** तुल्य **(जेन्यस्य)** जीतने योग्य **(शर्धतः)** बल के और **(अभिशस्तेः)** चारों ओर से प्रशंसित **(कुवित्)** महान् **(सुतम्)** उत्पन्न किये गये को **(प्र, भरा)** धारण करिये इससे **(इत्)** ही हम लोगों का आप **(अवस्परत्)** पालन करते हैं॥४॥

**भावार्थः**-जो विद्वान् सब के लिये सम्पूर्ण उत्तम पदार्थों को समर्पित करते हैं और जितने सामर्थ्य का धारण करते हैं, उतना सब औरों के रक्षण के लिये करते हैं, उन सब को भाग्यशाली गिनना चाहिये॥४॥ इस सूक्त में इन्द्र, राजा, विद्वान् और प्रजा के कृत्य का वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह बयालीसवाँ सूक्त और चौदहवाँ वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

**अथ चतुर्ऋचस्य त्रिचत्वारिंशत्तमस्य सूक्तस्य भरद्वाजो बार्हस्पत्य ऋषिः। इन्द्रो देवता। १, २,३, ४ उष्णिक्छन्दः। ऋषभः स्वरः॥**

***अथ मनुष्याः किं कुर्य्युरित्याह॥***

अब चार ऋचा वाले तैंतालीसवें सूक्त का प्रारम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में मनुष्य क्या करें, इस विषय को कहते हैं॥

**यस्य॒ त्यच्छम्ब॑रं॒ मदे॒ दिवो॑दासाय र॒न्धय॑ः।**

**अ॒यं स सोम॑ इन्द्र ते सु॒तः पिब॑॥१॥**

**यस्य॑। त्यत्। शम्ब॑रम्। मदे॑। दिव॑ःऽदासाय। र॒न्धय॑ः। अ॒यम्। सः। सोम॑ः। इ॒न्द्र॒। ते॒। सु॒तः। पिब॑॥१॥**

**पदार्थः**-(**यस्य**) (**त्यत्**) तत् (**शम्बरम्**) मेघमिव (**मदे**) आनन्दकाय (**दिवोदासाय**) विज्ञानप्रदाय (**रन्धयः**) हिंसय (**अयम्**) (**सः**) (**सोमः**) बुद्धिबलवर्धको रसः (**इन्द्र**) परमैश्वर्यप्रापक (**ते**) तुभ्यम् (**सुतः**) निष्पादितः (**पिब**)॥१॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! सोऽयं सोमस्ते सुतोऽस्ति तं त्वं पिब। शम्बरं सूर्य्य इव मदे दिवोदासाय दुःखप्रदं दुष्टं रन्धयः। यस्य कुकर्मानुष्ठान इच्छा भवेत् त्यत् तं रन्धयः॥१॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे राजादयो जना! यूयं धार्मिकाणां पीडकान् जनान् यथावद्दण्डयत वैद्यकशास्त्रोक्तरीत्या महौषधिरसं निष्पाद्य संसेव्यारोगा भूत्वा सर्वाः प्रजा अरोगाः कुरुत॥१॥

**पदार्थः**-हे (**इन्द्र**) अत्यन्त ऐश्वर्य्य के प्राप्त कराने वाले (**सः**) वह (**अयम्**) यह (**सोमः**) बुद्धि और बल का बढ़ाने वाला रस (**ते**) आपके लिये (**सुतः**) उत्पन्न किया गया है उसका आप (**पिब**) पान करिये और (**शम्बरम्**) मेघ को सूर्य्य जैसे वैसे (**मदे**) आनन्दकारक (**दिवोदासाय**) विज्ञान के देने वाले के लिये, दुःख के देने वाले दुष्ट का (**रन्धयः**) नाश करिये और (**यस्य**) जिसकी कुकर्म के अनुष्ठान में इच्छा होवे (**त्यत्**) उसका नाश करिये॥१॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे राजा आदि जनो! आप धार्म्मिक जनों को पीड़ा देने वाले मनुष्यों को यथावत् दण्ड दीजिये और वैद्यकशास्त्र में कही हुई रीति से बड़ी ओषधियों के रस को निकाल कर उसका सेवन कर रोगरहित होकर सम्पूर्ण प्रजाओं को रोगरहित करिये॥१॥

**पुना राजा किं कुर्य्यादित्याह॥**

फिर राजा क्या करे, इस विषय को कहते हैं॥

**यस्य॑ ती॒व्रसु॑तं॒ मदं॒ मध्य॒मन्तं॑ च॒ रक्ष॑से।**



www.9009.co.in

**अयं स सोम इन्द्र ते सुतः पिब॥२॥**

**यस्य। तीव्रऽसुतम्। मदम्। मध्यम्। अन्तम्। च। रक्षसे। अयम्। सः। सोमः। इन्द्र। ते। सुतः। पिब॥२॥**

**पदार्थः**-(**यस्य**) (**तीव्रसुतम्**) तीव्रैस्तेजस्विभिः कर्मभिर्निष्पादितम् (**मदम्**) आनन्दकरम् (**मध्यम्**) मध्ये भवम् (**अन्तम्**) अवसानस्थम् (**च**) (**रक्षसे**) (**अयम्**) (**सः**) (**सोमः**) उत्तमौषधिरसः (**इन्द्र**) बलप्रद (**ते**) तुभ्यम् (**सुतः**) निष्पादितः (**पिब**)॥२॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! त्वं यस्य तीव्रसुतं मदं मध्यमन्तं च रक्षसे सोऽयं सोमस्ते सुतस्तं त्वं पिब॥२॥

**भावार्थः**-हे विद्वन् राजँस्त्वं तादृशान्येवौषधानि प्रकटीकुरु यैः सर्वेषां सुखं वर्धेत॥२॥

**पदार्थः**-हे (**इन्द्र**) बल के देने वाले (**यस्य**) जिसके (**तीव्रसुतम्**) तेजस्वियों से कर्म्मों द्वारा उत्पन्न किये (**मदम्**) आनन्द के देने वाले (**मध्यम्**) मध्य में हुए (**अन्तम्**) और अन्त में वर्त्तमान की (**च**) भी (**रक्षसे**) रक्षा करते हो (**सः**) वह (**अयम्**) यह (**सोमः**) उत्तम ओषधियों का रस (**ते**) आपके लिये (**सुतः**) उत्पन्न किया उसका आप (**पिब**) पान करिये॥२॥

**भावार्थः**-हे विद्यायुक्त राजन्! आप वैसी ही ओषधियों को प्रकट करिये जिससे सब का सुख बढ़े॥२॥

**पुनर्मनुष्यैः किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहत हैं॥

**यस्य गा अन्तरश्मनो मदे दृळ्हा अवासृजः।**

**अयं स सोम इन्द्र ते सुतः पिब॥३॥**

**यस्य। गाः। अन्तः। अश्मनः। मदे। दृळ्हाः। अवऽअसृजः। अयम्। सः। सोम। इन्द्र। ते। सुतः। पिब॥३॥**

**पदार्थः**-(**यस्य**) (**गाः**) किरणान् (**अन्तः**) मध्ये (**अश्मनः**) मेघस्य (**मदे**) आनन्दाय (**दृळ्हाः**) ध्रुवान् (**अवासृजः**) अवसृजति (**अयम्**) (**सः**) (**सोमः**) रोगनाशकौषधिरसः (**इन्द्र**) सर्वरोगविदारक (**ते**) तुभ्यम् (**सुतः**) निर्मितः (**पिब**)॥३॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! यस्याश्मनोऽन्तर्दृळ्हा गा मदेऽवासृजस्तस्य सम्बन्धेन सोऽयं सोमस्ते सुतस्तं त्वं पिब॥३॥

**भावार्थः**-हे विद्वांसो! यस्य परमाणवो मेघमण्डलेऽपि स्थिता ओषधिभ्यस्तस्य निष्पादनं वैद्यकरीत्या कृत्वा तं सेवित्वाऽरोगा भवत॥३॥

**पदार्थः**-हे (**इन्द्र**) सम्पूर्ण रोगों के नाश करने वाले (**यस्य**) जिस (**अश्मनः**) मेघ के (**अन्तः**) मध्य में (**दृळ्हाः**) दृढ़ (**गाः**) किरणों को (**मदे**) आनन्द के लिये (**अवासृजः**) उत्पन्न करता है उसके सम्बन्ध से (**सः**) वह (**अयम्**) यह (**सोमः**) रोगों को नाश करने वाला ओषधियों का रस (**ते**) आपके लिये (**सुतः**) निर्म्माण किया गया उसको आप (**पिब**) पीजिये॥३॥



www.9009.co.in

**भावार्थ:**-हे विद्वानो! जिनके परमाणु मेघमण्डल में भी वर्त्तमान हैं, ओषधियों से उसका निर्म्माण वैद्यक रीति से कर और उसका सेवन करके रोगरहित हूजिये॥३॥

**पुनस्ते किं कुर्य्युरित्याह॥**

फिर वे क्या करें, इस विषय को कहते हैं॥

**यस्य॑ मन्दा॒नो अन्ध॑सो॒ माघो॑नं दधि॒षे शव॑:।**

**अ॒यं स सोम॑ इन्द्र ते सु॒तः पिब॑॥४॥१५॥३॥**

**यस्य॑। म॒न्दा॒न:। अन्ध॑स:। माघो॑नम्। द॒धि॒षे। शव॑:। अ॒यम्। स:। सोम॑:। इ॒न्द्र॒। ते॒। सु॒त:। पिब॑॥४॥**

**पदार्थ:**-(**यस्य**) (**मन्दान:**) स्तुवन् आनन्दन् (**अन्धस:**) अन्नादे: (**माघोनम्**) बहुधनवन्तम् (**दधिषे**) धरसि (**शव:**) बलहेतुम् (**अयम्**) (**स:**) (**सोम:**) ऐश्वर्यकरो रस: (**इन्द्र**) वैद्यराज (**ते**) तुभ्यम् (**सुत:**) (**पिब**)॥४॥

**अन्वय:**-हे इन्द्र! यस्यान्धसो मन्दानस्त्वं माघोनं शवश्च दधिषे सोऽयं सोमस्ते सुतस्तं पिब॥४॥

**भावार्थ:**-हे मनुष्या! येन बलबुद्धिसुखानि वर्धेरंस्तमेव रसमन्नं च सततं सेवध्वमिति॥४॥

अत्रेन्द्रसोमविद्वद्गुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इत्यृग्वेदे षष्ठे मण्डले तृतीयोऽनुवाकस्त्रिचत्वारिंशत्तमं सूक्तं चतुर्थेऽष्टके सप्तमेऽध्याये पञ्चदशो वर्गश्च समाप्त:॥**

**पदार्थ:**-हे (**इन्द्र**) वैद्यराज! (**यस्य**) जिस (**अन्धस:**) अन्न आदि की (**मन्दान:**) स्तुति करते हुए आप (**माघोनम्**) बहुधनयुक्त को और (**शव:**) बल का हेतु उसको (**दधिषे**) धारण करते हो (**स:**) वह (**अयम्**) यह (**सोम:**) ऐश्वर्य करने वाला रस (**ते**) आपके लिये (**सुत:**) उत्पन्न किया गया उसको आप (**पिब**) पीजिये॥४॥

**भावार्थ:**-हे मनुष्यो! जिससे बल, बुद्धि और सुख बढ़े, उसी रस और अन्न का निरन्तर सेवन करो॥४॥

इस सूक्त में इन्द्र, सोम और विद्वान् के गुणवर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जानी चाहिये॥

**यह ऋग्वेद के छठे मण्डल में तृतीय अनुवाक, तेंतीसवाँ सूक्त और चौथे अष्टक में सातवें अध्याय में पन्द्रहवाँ वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

**अथ चतुर्विंशत्यृचस्य चतुश्चत्वारिंशत्तमस्य सूक्तस्य शंयुबार्हस्पत्य ऋषिः। इन्द्रो देवता। १, ३, ४ निचृदनुष्टुप् छन्दः। गान्धारः स्वरः। २, ५ स्वराडुष्णिक्छन्दः। ऋषभः स्वरः। ६ आर्ची पङ्क्तिः। ७ भुरिक्पङ्क्तिः। ८ निचृत्पङ्क्तिः। ९, १२, १६ पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः। १०, ११, १३, २२ विराट्त्रिष्टुप्। १४, १५, १७, १८, २०, २४ निचृत्त्रिष्टुप्। १९, २१, २३ त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः॥**

***अथ राजादिभिः किं कर्त्तव्यमित्याह॥***

अब चौबीस ऋचा वाले चवालीसवें सूक्त का प्रारम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में राजा आदि को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**यो र॒यिवो र॒यिन्त॑मो॒ यो द्यु॒म्नैर्द्यु॒म्नव॑त्तमः।**

**सोम॑ः सु॒तः स इ॑न्द्र॒ तेऽस्ति॑ स्वधापते॒ मद॑ः॥ १॥**

**यः। र॒यि॒ऽवः॒। र॒यिम्ऽत॑मः। यः। द्यु॒म्नैः। द्यु॒म्नव॑त्ऽतमः। सोम॑ः। सु॒तः। सः। इ॒न्द्र॒। ते॒। अस्ति॑। स्व॒धा॒ऽप॒ते॒। मद॑ः॥ १॥**

**पदार्थः**-(**यः**) (**रयिवः**) प्रशस्ता रायो विद्यन्ते यस्य तत्सम्बुद्धौ (**रयिन्तमः**) अतिशयेन धनाढ्यः (**यः**) (**द्युम्नैः**) धनैर्यशोभिर्वा (**द्युम्नवत्तमः**) अतिशयेन यशोधनयुक्तः (**सोमः**) ऐश्वर्यम् (**सुतः**) निर्मितः (**सः**) (**इन्द्र**) धनन्धर (**ते**) तव (**अस्ति**) (**स्वधापते**) अन्नस्वामिन् (**मदः**) आनन्ददः॥१॥

**अन्वयः**-हे स्वधापते रयिव इन्द्र! यो रयिन्तमो यो द्युम्नैर्द्युम्नवत्तमः सुतः सोमो मदस्तेऽस्ति स त्वया सत्कृत्या स्वीकर्त्तव्यः॥१॥

**भावार्थः**-हे राजादयो जना! युष्माभिः स्वकीयराज्ये बहवो धनाढ्या विद्वांसः सत्कृत्य रक्षणीया येन सततं श्रीर्वर्धेत॥१॥

**पदार्थः**-हे (**स्वधापते**) अन्न के स्वामिन् (**रयिवः**) अच्छे धनों वाले (**इन्द्र**) धन के धारण करने वाले! (**यः**) जो (**रयिन्तमः**) अत्यन्त धनाढ्य और (**यः**) जो (**द्युम्नैः**) धनों वा यशों से (**द्युम्नवत्तमः**) अत्यन्त यशोधन युक्त (**सुतः**) निर्म्माण किया गया (**सोमः**) ऐश्वर्य्य (**मदः**) आनन्द देने वाला (**ते**) आपका (**अस्ति**) है (**सः**) वह आपसे सत्कार करके स्वीकार करने योग्य है॥१॥

**भावार्थः**-हे राजा आदि जनो! आप लोगों को चाहिये कि अपने राज्य में बहुत धनाढ्य विद्वानों का सत्कार करके रक्षा करें, जिससे निरन्तर लक्ष्मी बढ़े॥१॥

**पुनर्मनुष्याः किं कुर्य्युरित्याह॥**

फिर मनुष्य क्या करें, इस विषय को कहते हैं॥



www.9009.co.in

**यः शग्मस्तुविशग्म ते रायो दामा मतीनाम्।**

**सोमः सुतः स इन्द्र तेऽस्ति स्वधापते मदः॥ २॥**

**यः। शग्मः। तुविऽशग्म। ते। रायः। दामा। मतीनाम्। सोमः। सुतः। सः। इन्द्र। ते। अस्ति। स्वधाऽपते। मदः॥ २॥**

**पदार्थः**-(**यः**) (**शग्मः**) शग्मं सुखं विद्यते यस्य सः। **अर्श आदिभ्योऽच्। शग्ममिति सुखनाम।** (निघं० ३.६) (**तुविशग्म**) तुवि बहुविधानि शग्मानि सुखानि यस्य तत्सम्बुद्धौ (**ते**) तव (**रायः**) धनानि (**दामा**) दातुं योग्यः (**मतीनाम्**) मननशीलानाम् (**सोमः**) ऐश्वर्य्यसमूहः (**सुतः**) निष्पन्नः प्राप्तः (**सः**) (**इन्द्र**) महैश्वर्य्ययुक्त (**ते**) तव (**अस्ति**) (**स्वधापते**) अन्नादीनां स्वामिन् (**मदः**) आनन्दकरः॥ २॥

**अन्वयः**-हे तुविशग्म स्वधापत इन्द्र! यस्ते शग्मो रायो मतीनां दामा सुतो मदः सोमोऽस्ति स ते धर्मकीर्तिङ्करोतु॥ २॥

**भावार्थः**-ये मनुष्या धनाद्यैश्वर्येण धर्मविद्ये उन्नयन्ति त एव बहुसुखधना भवन्ति॥ २॥

**पदार्थः**-हे (**तुविशग्म**) अनेक प्रकार के सुखों वाले (**स्वधापते**) अन्न आदिकों के स्वामिन् (**इन्द्र**) अत्यन्त ऐश्वर्य्य से युक्त! (**यः**) जो (**ते**) आपका (**शग्मः**) सुखयुक्त (**रायः**) धनों को (**मतीनाम्**) विचारशीलों को (**दामा**) देने योग्य (**सुतः**) उत्पन्न किया गया (**मदः**) आनन्दकारक (**सोमः**) ऐश्वर्य्यों का समूह (**अस्ति**) है (**सः**) वह (**ते**) आपके धर्म्म की कीर्ति करने वाला हो॥ २॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य धन आदि ऐश्वर्य्य से धर्म्म और विद्या की उन्नति करते हैं, वे ही बहुत सुख और धन वाले होते हैं॥ २॥

**पुनर्मनुष्यैः किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**येन वृद्धो न शवसा तुरो न स्वाभिरूतिभिः।**

**सोमः सुतः स इन्द्र तेऽस्ति स्वधापते मदः॥ ३॥**

**येन। वृद्धः। न। शवसा। तुरः। न। स्वाभिः। ऊतिऽभिः। सोमः। सुतः। सः। इन्द्र। ते। अस्ति। स्वधाऽपते। मदः॥ ३॥**

**पदार्थः**-(**येन**) ऐश्वर्येण (**वृद्धः**) स्थविरः (**न**) इव (**शवसा**) बलेन (**तुरः**) हिंसकः (**न**) इव (**स्वाभिः**) स्वकीयाभिः (**ऊतिभिः**) रक्षाभिः (**सोमः**) ओषधिरसः (**सुतः**) निष्पादितः (**सः**) (**इन्द्र**) राजन् (**ते**) तव (**अस्ति**) (**स्वधापते**) स्वकीयपदार्थानां धर्त्तः (**मदः**) आनन्ददः॥ ३॥

**अन्वयः**-हे स्वधापत इन्द्र! त्वं येन शवसा वृद्धो न तुरो न स्वाभिरूतिभिर्मदः स सोमः सुतस्तेऽस्ति तं त्वं वर्धय॥ ३॥



www.9009.co.in

**भावार्थ:**-हे मनुष्या! येन पुरुषार्थेन विद्वांसो भूत्वा युवानोऽपि वृद्धा जायन्ते तं सततं संचिनुत॥३॥

**पदार्थ:**-हे **(स्वधापते)** अपने पदार्थों के धारण करने वाले **(इन्द्र)** राजन्! आप **(येन)** जिस ऐश्वर्य से और **(शवसा)** बल से **(वृद्धः)** **(न)** जैसे वैसे वा **(तुरः)** हिंसक **(न)** जैसे वैसे **(स्वाभिः)** अपनी **(ऊतिभिः)** रक्षाओं से **(मदः)** आनन्द देने वाला **(सः)** वह **(सोमः)** ओषधियों का रस **(सुतः)** उत्पन्न किया गया **(ते)** आपका **(अस्ति)** है, उसकी आप वृद्धि कीजिये॥३॥

**भावार्थ:**-हे मनुष्यो! जिस पुरुषार्थ से विद्वान् होकर युवा भी वृद्ध होते हैं, उसको निरन्तर सञ्चित कीजिये अर्थात् सङ्ग्रह कीजिये॥३॥

**पुनर्मनुष्यैः कः स्तोतव्योऽस्तीत्याह॥**

फिर मनुष्यों को किसकी स्तुति करनी चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**त्यमु॑ वो॒ अप्र॑हणं गृणी॒षे शव॑स॒स्पति॑म्।**

**इन्द्रं॑ विश्वा॒साहं॒ नरं॒ मंहि॑ष्ठं वि॒श्वच॑र्षणिम्॥४॥**

**त्यम्। ऊँ॒ इति॑। व॒ः। अप्र॑ऽहनम्। गृ॒णी॒षे। शव॑सः। पति॑म्। इन्द्र॑म्। वि॒श्व॒ऽसह॑म्। नर॑म्। मंहि॑ष्ठम्। वि॒श्वऽच॑र्षणिम्॥४॥**

**पदार्थ:**-**(त्यम्)** तम् **(उ)** वितर्के **(वः)** युष्मान् **(अप्रहणम्)** योऽन्यायेन कञ्चिन्न प्रहन्ति **(गृणीषे)** स्तौमि। अत्र तिङ्व्यत्ययेनेट्स्थाने से। **(शवसः)** बलस्य सैन्यस्य **(पतिम्)** स्वामिनम् **(इन्द्रम्)** दुष्टाचारिशत्रुविनाशकम् **(विश्वासाहम्)** यो विश्वानि सर्वाणि शत्रुसैन्यानि सहते **(नरम्)** नेतारं नायकम् **(मंहिष्ठम्)** अतिशयेन महान्तम् **(विश्वचर्षणिम्)** विश्वचर्षणयो धार्मिका मनुष्या कार्यद्रष्टारो यस्य तम्॥४॥

**अन्वय:**-हे मनुष्या! अहं वस्त्यमु अप्रहणं शवसस्पतिं विश्वासाहं मंहिष्ठं विश्वचर्षणिं नरमिन्द्रं गृणीषे प्रशंसामि यं त्वं स्तौषि॥४॥

**भावार्थ:**-हे मनुष्या! युष्माभिस्तस्य प्रशंसा कार्या यो नित्यं न्यायकारी सर्वसहो महाशयो युद्धादिराजकर्मसु निपुणो दुष्टविदारको दृढोत्साही नरः स्यात्॥४॥

**पदार्थ:**-हे मनुष्यो! मैं **(वः)** आप लोगों और **(त्यम्)** उसको **(उ)** वितर्कपूर्वक **(अप्रहणम्)** अन्याय से नहीं किसी को मारने वाले **(शवसः)** सेना के **(पतिम्)** स्वामी **(विश्वासाहम्)** सम्पूर्ण शत्रुओं की सेनाओं को सहने वाले **(मंहिष्ठम्)** अत्यन्त महान् और **(विश्वचर्षणिम्)** धार्मिक मनुष्य काम देखने वाले जिसके उस **(नरम्)** अग्रणी **(इन्द्रम्)** दुष्टाचारी शत्रुओं के विनाशक मनुष्य की **(गृणीषे)** प्रशंसा करता हूँ, जिसकी आप स्तुति करते हो॥४॥

**भावार्थ:**-हे मनुष्यो! आप लोगों को उसकी प्रशंसा करनी चाहिये जो नित्य न्यायकारी, सबका सहने वाला, महाशय, युद्ध आदि राजकर्म्मों में निपुण, दुष्टों का विदारक, दृढ़ उत्साही, मनुष्य होवे॥४॥



www.9009.co.in

**पुनर्मनुष्यैः किं कर्तव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**यं वर्धयन्तीद्गिरः पतिं तुरस्य राधसः।**

**तमिन्वस्य रोदसी देवी शुष्मं सपर्यतः॥५॥१६॥**

**यम्। वर्धयन्ति। इत्। गिरः। पतिम्। तुरस्य। राधसः। तम्। इत्। नु। अस्य। रोदसी इति। देवी इति। शुष्मम्। सपर्यतः॥५॥**

**पदार्थः**-(**यम्**) (**वर्धयन्ति**) (**इत्**) एव (**गिरः**) सुशिक्षिता वाचः (**पतिम्**) स्वामिनम् (**तुरस्य**) दुःखहिंसकस्य (**राधसः**) धनस्य (**तम्**) (**इत्**) (**नु**) सद्यः (**अस्य**) (**रोदसी**) द्यावापृथिव्यौ (**देवी**) कमनीये देदीप्यमाने (**शुष्मम्**) बलम् (**सपर्यतः**) सेवेते॥५॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यं तुरस्य राधसः पतिमिन्द्रमिद् गिरो वर्धयन्त्यस्य देवी रोदसी शुष्मन्नु सपर्यतस्तमिद्यूयं वर्धयित्वा सेवध्वम्॥५॥

**भावार्थः**-ये मनुष्याः शुभगुणकर्मस्वभावे वर्धमानं जनं वर्धयन्ति ते पञ्चतत्त्वमयं राज्यं भुञ्जते॥५॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! (**यम्**) जिस (**तुरस्य**) दुःख के नाश करने वाले (**राधसः**) धन के (**पतिम्**) स्वामी, ऐश्वर्य्य से युक्त को (**इत्**) ही (**गिरः**) उत्तम प्रकार शिक्षित वाणियाँ (**वर्धयन्ति**) बढ़ाती हैं और (**अस्य**) इसके (**देवी**) सुन्दर प्रकाशमान (**रोदसी**) अन्तरिक्ष और पृथिवी (**शुष्मम्**) बल का (**नु**) शीघ्र (**सपर्यतः**) सेवन करते हैं (**तम्, इत्**) उसी की आप लोग वृद्धि करके सेवा करो॥५॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य श्रेष्ठ गुण, कर्म्म और स्वभावों में वृद्धि को प्राप्त जन की वृद्धि करते हैं, वे पञ्चतत्त्वमय राज्य का भोग करते हैं॥५॥

**पुनर्मनुष्यैः किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**तद्व उक्थस्य बर्हणेन्द्रायोपस्तृणीषणि।**

**विपो न यस्योतयो वि यद्रोहन्ति सक्षितः॥६॥**

**तत्। वः। उक्थस्य। बर्हणा। इन्द्राय। उपऽस्तृणीषणि। विपः। न। यस्य। ऊतयः। वि। यत्। रोहन्ति। सऽक्षितः॥६॥**

**पदार्थः**-(**तत्**) (**वः**) युष्माकम् (**उक्थस्य**) प्रशंसितस्य कर्मणः (**बर्हणा**) वर्धनेन (**इन्द्राय**) परमैश्वर्याय (**उपस्तृणीषणि**) उपाच्छादनीयम् (**विपः**) मेधावी। **विप इति मेधाविनाम।** (निघं०३.१५) (**न**) इव (**यस्य**) (**ऊतयः**) रक्षणादीनि कर्माणि (**वि**) विशेषेण (**यत्**) (**रोहन्ति**) (**सक्षितः**) समाननिवासाः॥६॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यस्य सक्षित ऊतयो विपो न यद्विरोहन्ति तद्व उक्थस्य बर्हणेन्द्रोयोपस्तृणीषणि वयं वर्धयेम॥६॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! ये विपश्चिद्वत्प्रजारक्षणेनैश्वर्य्यं वर्धयन्ति ते सर्वतो वर्धन्ते॥६॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(यस्य)** जिसके **(सक्षितः)** तुल्य निवास और **(ऊतयः)** रक्षण आदि कर्म **(विपः)** बुद्धिमान् जन **(न)** जैसे वैसे **(यत्)** जिसको **(वि)** विशेष करके **(रोहन्ति)** जमाते हैं **(तत्)** उसको **(वः)** आप लोगों के **(उक्थस्य)** प्रशंसित कर्म्म के **(बर्हणा)** बढ़ाने से **(इन्द्राय)** अत्यन्त ऐश्वर्य्य के लिये **(उपस्तृणीषणि)** ढाँपने योग्य को हम लोग बढ़ावें॥६॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जो विद्वानों के सदृश प्रजा के रक्षण से ऐश्वर्य्य को बढ़ाते हैं, वे सब प्रकार से बढ़ते हैं॥६॥

**पुना राजा किं कृत्वा किमनुतिष्ठेदित्याह॥**

फिर राजा क्या करके क्या करे, इस विषय को कहते हैं॥

**अविदद् दक्षं मित्रो नवीयान् पपानो देवभ्यो वस्यो अचैत्।**

**ससवान्स्तौलाभिर्धौतरीभिरुरुष्या पायुरभवत्सखिभ्यः॥७॥**

**अविदत्। दक्षम्। मित्रः। नवीयान्। पपानः। देवेभ्यः। वस्यः। अचैत्। ससऽवान्। स्तौलाभिः। धौतरीभिः। उरुष्या। पायुः। अभवत्। सखिऽभ्यः॥७॥**

**पदार्थः**-**(अविदत्)** विन्दति **(दक्षम्)** बलम् **(मित्रः)** सर्वस्य सुहृत् **(नवीयान्)** अतिशयेन नूतनवयस्कः **(पपानः)** पालयन् **(देवेभ्यः)** विद्वद्भ्यः **(वस्यः)** अतिशयेन वासहेतुम् **(अचैत्)** चिनुयात् **(ससवान्)** प्रशस्तानि ससानि विद्यन्ते यस्य सः। **ससमित्यन्ननाम।** (निघं०२.७) **(स्तौलाभिः)** स्थूले भवानि। अत्र वर्णव्यत्ययेन थस्य स्थाने तः। **(धौतरीभिः)** शत्रूणां कम्पयित्रीभिः सेनाभिः **(उरुष्या)** रक्षेत् **(पायुः)** रक्षकः सन् **(अभवत्)** भवेत् **(सखिभ्यः)** मित्रेभ्यः॥७॥

**अन्वयः**-हे राजन्! यो नवीयान् पपानो मित्रस्ससवान् पायुः स्तौलाभिर्धौतरीभिर्देवेभ्यः सखिभ्यो वस्योऽचैदुरुष्या मित्रोऽभवत् सोऽतुलं दक्षमविदत्॥७॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यः सर्वसुहृद्युवा धनधान्यादियुक्तः सर्वरक्षको महासेनो विद्वान् राजा भवेत्स एव धार्मिकरक्षणाय सत्यं बलं लभेत॥७॥

**पदार्थः**-हे राजन्! जो **(नवीयान्)** अतिशय थोड़ी अवस्था वाला **(पपानः)** पालन करता हुआ **(मित्रः)** सब का मित्र **(ससवान्)** अच्छे अन्न वाला **(पायुः)** रक्षक हुआ **(स्तौलाभिः)** स्थूल में हुई **(धौतरीभिः)** शत्रुओं को कम्पाने वाली सेनाओं से **(देवेभ्यः)** विद्वानों के और **(सखिभ्यः)** मित्रों के लिये



www.9009.co.in

**(वस्यः)** अत्यन्त वास का कारण **(अचैत्)** बटोरे और **(उरुष्या)** रक्षा करे और सब का मित्र **(अभवत्)** हो, वह अतुल **(दक्षम्)** बल को **(अविदत्)** पाता है॥७॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो सब का मित्र, युवा, धन-धान्य आदि से युक्त, सब का रक्षक, बड़ी सेना वाला, विद्वान् राजा होवे, वही धार्म्मिकों के रक्षण के लिये सत्य बल को प्राप्त होवे॥७॥

**मनुष्यैः कथं वर्त्तित्वा किं प्राप्य किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

अब मनुष्यों को कैसा वर्त्ताव करके क्या प्राप्त करके क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**ऋतस्य॑ प॒थि वे॒धा अ॑पायि श्रि॒ये मना॑सि दे॒वासो॑ अक्रन्।**

**दधा॑नो॒ नाम॑ म॒हो वचो॑भि॒र्वपु॑र्दृ॒शये॑ वे॒न्यो व्या॑वः॥८॥**

**ऋतस्य॑। प॒थि। वे॒धाः। अ॒पा॒यि॒। श्रि॒ये। मना॑सि। दे॒वासः॑। अ॒क्र॒न्। दधा॑नः। नाम॑। म॒हः। वचः॑ऽभिः। वपुः॑। दृ॒शये॑। वे॒न्यः। वि। आ॒व॒रित्याव॑ः॥८॥**

**पदार्थः**-(**ऋतस्य**) सत्यस्य (**पथि**) मार्गे (**वेधाः**) मेधावी (**अपायि**) पाति (**श्रिये**) (**मनांसि**) (**देवासः**) विद्वांसः (**अक्रन्**) कुर्वन्ति (**दधानः**) (**नाम**) प्रख्यातिम् (**महः**) कीर्त्तियोगान्महत् (**वचोभिः**) वचनैः (**वपुः**) सुरूपं शरीरम्। **वपुरिति रूपनाम।** (निघं०३.७) (**दृशये**) दर्शनाय (**वेन्यः**) कमनीयः (**वि**) (**आवः**) रक्षति॥८॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथा वेधा ऋतस्य पथि श्रियेऽपायि देवासो मनांस्यक्रन् वचोभिर्महो नाम दृशये वपुश्च दधानो वेन्यः सन् व्यावस्तथा यूयमपि प्रयतध्वम्॥८॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। मनुष्यैः सर्वदा धर्मपथि गत्वा धनोन्नतये मनांसि निश्चेतव्यानि तथा धनप्राप्तेन धनेनानाथपालनं विद्याधर्मवृद्धिमौषधदानं मार्गशुद्धिं च कृत्वा प्रशंसा सर्वासु दिक्षु प्रसारणीया॥८॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे (**वेधाः**) बुद्धिमान् (**ऋतस्य**) सत्य के (**पथि**) मार्ग में (**श्रिये**) लक्ष्मी के लिये (**अपायि**) रक्षा करता है और (**देवासः**) विद्वान् जन (**मनांसि**) मनों को (**अक्रन्**) करते हैं और (**वचोभिः**) वचनों से (**महः**) कीर्ति के योग से बड़ी (**नाम**) प्रसिद्धि को (**दृशये**) दिखाने के लिये (**वपुः**) अच्छे रूप वाले शरीर को (**दधानः**) धारण करता (**वेन्यः**) सुन्दर होता और (**वि, आवः**) रक्षा करता है, वैसे आप लोग भी यत्न करो॥८॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। मनुष्यों को चाहिये कि सर्वदा धर्ममार्ग में चलकर धन की उन्नति के लिये मनों को निश्चित करें और धन से प्राप्त हुए धन से अनाथों का पालन, विद्या और धन की वृद्धि तथा औषधदान और मार्ग शुद्धि करके सब दिशाओं में प्रशंसा विस्तारें॥८॥

**अथ राजप्रजाजनाः परस्परस्य हितं कथं कुर्य्युरित्याह॥**



www.9009.co.in

अब राजा और प्रजाजन का हित कैसे करें, इस विषय को कहते हैं॥

**द्युमत्तमं दक्षं धेह्यस्मे सेधा जनानां पूर्वीररातीः।**

**वर्षीयो वयः कृणुहि शचीभिर्धनस्य सातावस्माँ अविड्ढि॥९॥**

**द्युमत्ऽतमम्। दक्षम्। धेहि। अस्मे इति। सेध। जनानाम्। पूर्वीः। अरातीः। वर्षीयः। वयः। कृणुहि। शचीभिः। धनस्य। सातौ। अस्मान्। अविऽड्ढि॥९॥**

**पदार्थः**-(**द्युमत्तमम्**) प्रशस्ता द्यौर्विद्याप्रकाशो विद्यते यस्य यस्मिंस्तदतिशयितम् (**दक्षम्**) बलम् (**धेहि**) (**अस्मे**) अस्मासु (**सेधा**) साध्नुहि। अत्र **द्व्यचोऽतस्तिङ** इति दीर्घः। (**जनानाम्**) मनुष्याणाम् (**पूर्वीः**) प्राचीनाः (**अरातीः**) अदानक्रियाः (**वर्षीयः**) अतिशयेन श्रेष्ठम् (**वयः**) कमनीयमायुः (**कृणुहि**) (**शचीभिः**) प्रज्ञाभिः कर्मभिर्वा प्रजाभिः सह (**धनस्य**) (**सातौ**) संविभागे (**अस्मान्**) (**अविड्ढि**) प्रवेशय॥९॥

**अन्वयः**-हे राजन्! त्वं शचीभिरस्मे द्युमत्तमं दक्षं धेहि कार्य्यं सेधा जनानां पूर्वीररातीर्निवर्तय वर्षीयो वयः कृणुहि धनस्य सातावस्मानविड्ढि॥९॥

**भावार्थः**-प्रजाजनै राजैवं प्रार्थनीयो हे राजंस्त्वं यद्यस्मान् बलवत्तमान् कृपणतारहितान् ब्रह्मचर्य्यादिना दीर्घायुषः पुरुषार्थिनः सर्वतो रक्षयित्वाऽभयान् कृत्वा धर्मार्थकाममोक्षसाधने प्रवेशयेस्तर्हि भवन्तं वयं सर्वदा वर्धयेम॥९॥

**पदार्थः**-हे राजन्! आप (**शचीभिः**) बुद्धियों वा कर्मों वा प्रजाओं के साथ (**अस्मे**) हम लोगों में (**द्युमत्तमम्**) प्रशंसित अत्यन्त विद्या के प्रकाश से युक्त (**दक्षम्**) बल को (**धेहि**) धारण करिये और कार्य्य को (**सेधा**) सिद्ध कीजिये और (**जनानाम्**) मनुष्यों की (**पूर्वीः**) प्राचीन (**अरातीः**) नहीं दान करने की क्रियाओं को दूर कीजिये तथा (**वर्षीयः**) अतिशय श्रेष्ठ (**वयः**) सुन्दर अवस्था को (**कृणुहि**) करिये और (**धनस्य**) धन के (**सातौ**) संविभाग में (**अस्मान्**) हम लोगों का (**अविड्ढि**) प्रवेश कराइये॥९॥

**भावार्थः**-प्रजाजनों को राजा की ऐसी प्रार्थना करनी चाहिये कि हे राजन्! आप जो हम लोगों को बलयुक्त, कृपणता से रहित और ब्रह्मचर्य्य आदि से दीर्घ अवस्था वाले पुरुषार्थी और सब प्रकार से रक्षा करके भयरहित करके धर्म्म, अर्थ, काम और मोक्ष के साधन में प्रवेश कराइये तो आपकी हम लोग सर्वदा वृद्धि करें॥९॥

**अथ राजप्रजाजनाः परस्परं कुत्र प्रेरयेयुरित्याह॥**

अब राजा और प्रजाजन परस्पर कहाँ प्रेरणा करें, इस विषय को कहते हैं॥

**इन्द्र तुभ्यमिन्मघवन्नभूम वयं दात्रे हरिवो मा वि वेनः।**

**नकिरापिर्ददृशे मर्त्यत्रा किमङ्ग रध्रचोदनं त्वाहुः॥१०॥१७॥**



www.9009.co.in

इन्द्रं। तुभ्यम्। इत्। मघ॒ऽवन्। अभूम। वयम्। दात्रे। हरि॒ऽवः। मा। वि। वेनः। नकिः। आपिः। दृदृशे। मर्त्य॒ऽत्रा। किम्। अङ्ग। रध्रऽचोदनम्। त्वा। आहुः॥ १०॥

**पदार्थः**-(**इन्द्र**) पूर्णविद्य राजन् (**तुभ्यम्**) (**इत्**) एव (**मघवन्**) बहुधनयुक्त (**अभूम**) भवेम (**वयम्**) (**दात्रे**) दानकरणशीलाय (**हरिवः**) प्रशंसितमनुष्ययुक्त (**मा**) (**वि**) विरोधे (**वेनः**) कामयथाः (**नकिः**) निषेधे (**आपिः**) य आप्नोति सः (**ददृशे**) पश्यामि (**मर्त्यत्रा**) मर्त्येषु (**किम्**) (**अङ्ग**) अङ्गवद्वर्तमान (**रध्रचोदनम्**) धनस्य प्राप्तये प्रेरकम् (**त्वा**) (**आहुः**) कथयन्ति॥ १०॥

**अन्वयः**-हे अङ्ग हरिवो मघवन्निन्द्र! दात्रे तुभ्यमिद्दातारो वयमभूम त्वमस्मान्मा वि वेन आपिः सन्नहं भवन्तं विरुद्धदृष्ट्या नकिर्ददृशे मर्त्यत्रा किमिच्छसि यतो रध्रचोदनं त्वा विद्वांस आहुस्तस्माद् वयं त्वाश्रयेम॥ १०॥

**भावार्थः**-हे राजप्रजाजना यथा यूयं परस्परस्मै धनादिना सुखदानेन सर्वान्त्सत्कर्मसु प्रेरयेत तथा मिलित्वा सत्यं न्यायपालनानुष्ठानं कुर्यात्॥ १०॥

**पदार्थः**-हे (**अङ्ग**) अङ्ग के तुल्य वर्त्तमान (**हरिवः**) प्रशंसित मनुष्यों से और (**मघवन्**) बहुत धनों से युक्त (**इन्द्र**) पूर्णविद्या वाले राजन्! (**दात्रे**) दान करने के स्वभाव वाले (**तुभ्यम्**) आपके लिये (**इत्**) ही देने वाले (**वयम्**) हम लोग (**अभूम**) होवें आप हम लोगों की (**मा**) मत (**वि, वेनः**) कामना करिये और (**आपिः**) व्याप्त होने वाला हुआ मैं आपको विरुद्ध दृष्टि से (**नकिः**) नहीं (**ददृशे**) देखता हूँ तथा (**मर्त्यत्रा**) मनुष्यों में आप (**किम्**) किस की इच्छा करते हो जिससे (**रध्रचोदनम्**) धन की प्राप्ति के लिये प्रेरणा करने वाले आपको विद्वान् जन (**आहुः**) कहते हैं, इससे हम लोग आपका आश्रयण करें॥ १०॥

**भावार्थः**-हे राजा और प्रजा जनो! जैसे आप लोग आपस के लिये धन आदि से और सुख दान से सबको श्रेष्ठ कर्म्मों में प्रेरणा करिये, वैसे मिल के सत्य, न्यायपालन का अनुष्ठान करिये॥ १०॥

**मनुष्यैः किमकृत्वा किमनुष्ठेयमित्याह॥**

मनुष्यों को क्या नहीं करके क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**मा जस्वने वृषभ नो ररीथा मा ते रेवतः सख्ये रिषाम।**
**पूर्वीष्ट इन्द्र निःषिधो जनेषु जह्यसुष्वीन् प्र वृहापृणतः॥ ११॥**

**मा। जस्वने। वृषभ। नः। ररीथाः। मा। ते। रेवतः। सख्ये। रिषाम। पूर्वीः। ते। इन्द्र। निःऽसिधः। जनेषु। जहि। असुस्वीन्। प्र। वृह। अपृणतः॥ ११॥**

**पदार्थः**-(**मा**) निषेधे (**जस्वने**) अन्यायेन परस्वप्रापकाय दुष्टाय राज्ञे। **जसतीति गतिकर्मा।** (निघं० २.१४) (**वृषभ**) बलिष्ठ (**नः**) अस्मान् (**ररीथाः**) दद्याः (**मा**) (**ते**) तव (**इन्द्र**) दुःखविदारक राजन् (**निःषिधः**) निःश्रेयसकर्यः क्रियाः (**जनेषु**) (**जहि**) (**असुष्वीन्**) अभिषवस्याकर्तॄन् (**प्र**) (**वृह**) पृथक्कुरु (**अपृणतः**) दुःखदातुर्दुर्जनात्॥ ११॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे वृषभेन्द्र! त्वं जस्वने नोऽस्मान्मा ररीथा वयं ते रेवतः सख्ये मा रिषाम यास्ते जनेषु पूर्वीर्निःषिधस्सन्ति ता ररीथा असुष्वीन् जह्यपृणतोऽस्मान् प्र वृह॥११॥

**भावार्थः**-हे राजन्! येऽस्मान् पीडयेयुस्तदधीनान्मा कुर्य्याः श्रेयसि क्रियाः प्रापयेस्तथा वयमप्येतत्सर्वं त्वदर्थमनुतिष्ठेम, एवं सखायो भूत्वाऽभीष्टान् कामान्त्सर्वे वयं प्राप्नुयाम॥११॥

**पदार्थः**-हे **(वृषभ)** बलयुक्त **(इन्द्र)** दुःखों के नाश करने वाले राजन्! आप **(जस्वने)** अन्याय से दूसरे के धन को अन्यत्र प्राप्त कराने वाले दुष्ट राजा के लिये **(नः)** हम लोगों को **(मा)** मत **(ररीथाः)** दीजिये और हम लोग **(ते)** आप **(रेवतः)** बहुत धन वाले के **(सख्ये)** मित्रपने के लिये **(मा)** नहीं **(रिषाम)** क्रुद्ध होवें और जो **(ते)** आपके **(जनेषु)** मनुष्यों में **(पूर्वीः)** प्राचीन **(निःषिधः)** सुखकारक क्रियायें हैं उनको दीजिये **(असुष्वीन्)** उत्पत्ति के नहीं करने वालों का **(जहि)** त्याग करिये और **(अपृणतः)** दुःख के देने वाले दुर्जन से हम लोगों के **(प्र, वृह)** पृथक् करिये॥११॥

**भावार्थः**-हे राजन्! जो हम लोगों को पीड़ा देवें उनके आधीन मत करिये और कल्याण में क्रियाओं को प्राप्त कराइये, वैसे हम लोग भी इस सब को आपके लिये करें। इस प्रकार मित्र होकर अभीष्ट मनोरथों को सब हम लोग प्राप्त होवें॥११॥

**पुनः स राजा किंवत्किं कुर्यादित्याह॥**

फिर वह राजा किसके सदृश क्या करे, इस विषय को कहते हैं॥

**उदुभ्राणीव स्तनयन्नियर्तीन्द्रो राधांस्यश्व्यानि गव्या।**

**त्वमसि प्रदिवः कारुधाया मा त्वादामान आ दभन् मघोनः॥१२॥**

उत्। अभ्राणिऽइव। स्तनयन्। इयर्ति। इन्द्रः। राधांसि। अश्व्यानि। गव्या। त्वम्। असि। प्रऽदिवः। कारुऽधायाः। मा। त्वा। अदामानः। आ। दभन्। मघोनः॥१२॥

**पदार्थः**-**(उद्)** अपि **(अभ्राणीव)** वायुदलानीव **(स्तनयन्)** शब्दयन् **(इयर्त्ति)** प्राप्नोति **(इन्द्रः)** विद्युदिव **(राधांसि)** सर्वसुखकराणि धनानि **(अश्व्यानि)** अश्वेषु हितानि **(गव्या)** गोषु हितानि **(त्वम्)** **(असि)** **(प्रदिवः)** प्रकर्षेण कमनीयान् **(कारुधायाः)** विदुषां शिल्पानां धारयिता **(मा)** निषेधे **(त्वा)** त्वाम् **(अदामानः)** अदातारः **(आ)** **(दभन्)** हिंसेयुः **(मघोनः)** धनाढ्यान्॥१२॥

**अन्वयः**-हे राजन्! यतः स्तनयन् कारुधाया इन्द्रोऽभ्राणीवाश्व्यानि गव्या राधांस्युदियर्त्ति प्रदिवो मघोनः स ग्रहीतास्ति यथाऽदामानस्त्वा मा आ दभन्मघोनो मा आदभंस्तथा त्वं यदि कृतवानसि तर्हि त्वयि को नतो भवति॥१२॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। यस्याभ्रघटावत्सेना बलवती विद्युद्वत्पराक्रमयुक्ता वर्त्तते येन सर्वे गुणिनः सङ्गृह्यन्ते स एव धनधान्यराज्यपश्वादीन् प्राप्नोति॥१२॥

**पदार्थः**-हे राजन्! जिससे **(स्तनयन्)** शब्द करता हुआ **(कारुधायाः)** विद्वान् शिल्पी जनों का धारण करने वाला **(इन्द्रः)** बिजुली के सदृश वा **(अभ्राणीव)** वायु के दलों के सदृश **(अश्व्यानि)** घोड़ों



www.9009.co.in

में हितकारक **(गव्या)** गौओं में हितकारक **(राधांसि)** सम्पूर्ण सुखों के करने वाले धनों को **(उत्)** भी **(इयर्त्ति)** प्राप्त होता है और **(प्रदिव:)** अत्यन्त सुन्दर **(मघोन:)** धन से युक्त जनों को वह ग्रहण करने वाला है और [जैसे] **(अदामान:)** आदाता जन **(त्वा)** आपकी **(मा)** मत **(आ, दभन्)** हिंसा करें और धन से युक्त जनों की मत हिंसा करें, वैसे **(त्वम्)** आप जो कर चुके **(असि)** हैं तो आप में कौन नम्र होता है॥१२॥

**भावार्थ:**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जिसकी मेघों की घटाओं के समान बलवती सेना, बिजुली के समान पराक्रमयुक्त वर्त्तमान है और जिससे सब गुणी सङ्ग्रह किये जाते हैं; वही धन, धान्य, राज्य और पशु आदि पदार्थों को प्राप्त होता है॥१२॥

**कोऽत्र राजा भवितुं योग्य इत्याह॥**

कौन इस पृथिवी पर राजा होने के योग्य है, इस विषय को कहते हैं॥

**अध्व॑र्यो वीर॒ प्र म॒हे सु॒ताना॒मिन्द्रा॑य भर॒ स ह्य॑स्य॒ राजा॑।**

**यः पू॒र्व्याभि॑रु॒त नूत॑नाभिर्गी॒र्भिर्वा॑वृ॒धे गृ॒ण॒तामृषी॑णाम्॥१३॥**

**अध्व॑र्यो॒ इति॑। वी॒र॒। प्र। म॒हे। सु॒ताना॑म्। इन्द्रा॑य। भ॒र॒। सः। हि। अ॒स्य॒। राजा॑। यः। पू॒र्व्याभि॑ः। उ॒त। नूत॑नाभिः। गी॒ऽःभिः। व॒वृ॒धे। गृ॒ण॒ताम्। ऋषी॑णाम्॥१३॥**

**पदार्थ:**-**(अध्वर्यो)** अहिंसक **(वीर)** दुष्टानां हिंसक **(प्र)** **(महे)** महते **(सुतानाम्)** निष्पन्नानां पदार्थानाम् **(इन्द्राय)** परमैश्वर्याय **(भर)** धर **(स:)** **(हि)** **(अस्य)** **(राजा)** **(य:)** **(पूर्व्याभि:)** पूर्वैः सेविताभि: **(उत)** अपि **(नूतनाभि:)** नवीनाभिर्वर्तमानाभि: **(गीर्भि:)** **(वावृधे)** वर्धते। अत्र **तुजादीनामित्यभ्यासदैर्घ्यम्।** **(गृणताम्)** प्रशंसकानाम् **(ऋषीणाम्)** मन्त्रार्थविदाम्॥१३॥

**अन्वय:**-हे अध्वर्यो वीर! यो राजा गृणतामृषीणां पूर्व्याभिरुत नूतनाभिर्गीर्भिर्वावृधे स ह्यस्य राष्ट्रस्य राजा भवितुं योग्यस्तथा त्वं सुतानां मह इन्द्रायैतान् प्र भर॥१३॥

**भावार्थ:**-स एव राज्यं पालयितुं वर्धयितुं च शक्नोति य आप्तैस्सहित: सुशिक्षितो न्यायेशो भवत्स एव विद्वन् भवति य: शिष्टेभ्यो नित्यमुपदेशं शृणोति॥१३॥

**पदार्थ:**-हे **(अध्वर्यो)** नहीं हिंसा करने वाले **(वीर)** दुष्टों की हिंसा करने वाले! **(य:)** जो **(राजा)** राजा **(गृणताम्)** प्रशंसा करने वाले **(ऋषीणाम्)** मन्त्रों के अर्थ जानने वालों की **(पूर्व्याभि:)** पूर्व जनों से सेवित **(उत)** भी **(नूतनाभि:)** नवीन वर्त्तमान **(गीर्भि:)** वाणियों से **(वावृधे)** वृद्धि को प्राप्त होता है **(स:, हि)** वही **(अस्य)** इस राज्य का राजा होने को योग्य हो, वैसे आप **(सुतानाम्)** उत्पन्न हुए पदार्थों के **(महे)** बड़े **(इन्द्राय)** अत्यन्त ऐश्वर्य्य के लिये इन को **(प्र, भर)** धारण करिये॥१३॥

**भावार्थ:**-वही राज्य पालन करने और बढ़ाने को समर्थ होता है जो यथार्थवक्ताओं के सहित, उत्तम प्रकार शिक्षित और न्यायेश होवे और वही विद्वान् होता है, जो शिष्ट जनों से नित्य उपदेश सुनता है॥१३॥



www.9009.co.in

**पुनर्मनुष्याः किं कुर्य्युरित्याह॥**

फिर मनुष्य क्या करे, इस विषय को कहते हैं॥

**अ॒स्य मदे॑ पु॒रु वर्पां॑सि वि॒द्वानिन्द्रो॑ वृ॒त्राण्य॑प्र॒ती ज॑घान।**

**तमु॒ प्र हो॑षि॒ मधु॑मन्तमस्मै॒ सोमं॑ वी॒राय॑ शि॒प्रिणे॒ पिब॑ध्यै॥ १४॥**

**अ॒स्य। मदे॑। पु॒रु। वर्पां॑सि। वि॒द्वान्। इन्द्रः॑। वृ॒त्राणि॑। अ॒प्र॒ति। ज॒घा॒न॒। तम्। ऊँ इति॑। प्र। हो॒षि॒। मधु॑ऽमन्तम्। अ॒स्मै॒। सोम॑म्। वी॒राय॑। शि॒प्रिणे॑। पिब॑ध्यै॥ १४॥**

**पदार्थः**-(**अस्य**) ओषधिगणस्य (**महे**) आनन्दकरे रसे (**पुरु**) बहूनि (**वर्पांसि**) सुन्दराणि रूपाणि (**विद्वान्**) (**इन्द्रः**) सूर्य्यः (**वृत्राणि**) मेघान् इव (**अप्रती**) अप्रतीतानि। अत्र **संहितायामि**ति दीर्घः। (**जघान**) हन्ति (**तम्**) (**उ**) (**प्र**) (**होषि**) जुहोषि (**मधुमन्तम्**) मधुरादिगुणयुक्तद्रव्यसहितम् (**अस्मै**) (**सोमम्**) महौषधिरसम् (**वीराय**) निर्भयाय (**शिप्रिणे**) उत्तमहनुनासिकाय (**पिबध्यै**) पातुम्॥ १४॥

**अन्वयः**-यो विद्वान् यथेन्द्रः सूर्यो वृत्राणि जघान तथाऽस्य मदेऽप्रती पुरु वर्पांसि निर्माय स्वीकरोतु तमु मधुमन्तं सोमसस्मै शिप्रिणे वीराय पिबध्यै त्वं प्र होषि तस्मात् सत्कर्तव्योऽसि॥ १४॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। ये सूर्यवन्न्यायविजयप्रकाशका युक्ताहारविहारा महौषधिरसस्य पातारः सन्ति ते विविधरूपान् पदार्थान् प्राप्याऽस्मिञ्जगत्यानन्दन्ति॥ १४॥

**पदार्थः**-जो (**विद्वान्**) विद्यायुक्त, जैसे (**इन्द्रः**) सूर्य्य (**वृत्राणि**) मेघों का (**जघान**) नाश करता है, वैसे (**अस्य**) इस ओषधियों के समूह के (**मदे**) आनन्दकारक रस में (**अप्रती**) नहीं विश्वास किये गये (**पुरु**) बहुत (**वर्पांसि**) सुन्दर रूपों का निर्म्माण करके स्वीकार करे (**तम्**) उसके प्रति (**उ**) भी (**मधुमन्तम्**) मधुर आदि गुणों से युक्त द्रव्य के साथ (**सोमम्**) बड़ी ओषधियों के रस को (**अस्मै**) इस (**शिप्रिणे**) उत्तम ठुड्ढी और नासिका वाले (**वीराय**) भयरहित जन के लिये (**पिबध्यै**) पीने को आप (**प्र, होषि**) देते हो, इससे सत्कार करने योग्य हो॥ १४॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो सूर्य्य के सदृश न्याय और विजय के प्रकाशक, युक्त आहार और विहार वाले और महौषधियों के रस को पीने वाले हैं, वे अनेक प्रकार के पदार्थों को प्राप्त होकर इस जगत् में आनन्द करते हैं॥ १४॥

**पुनर्मनुष्याः किं कुर्य्युरित्याह॥**

फिर मनुष्य क्या करें, इस विषय को कहते हैं॥

**पाता॑ सु॒तमिन्द्रो॑ अस्तु॒ सोमं॒ हन्ता॑ वृ॒त्रं वज्रे॑ण मन्दसा॒नः।**

**गन्ता॑ य॒ज्ञं प॑रा॒वत॑श्चि॒दच्छा॒ वसु॑र्धी॒नाम॑वि॒ता का॒रुधा॑याः॥ १५॥ १८॥**

**पाता॑। सु॒तम्। इन्द्रः॑। अ॒स्तु॒। सोम॑म्। हन्ता॑। वृ॒त्रम्। वज्रे॑ण। म॒न्द॒सा॒नः। गन्ता॑। य॒ज्ञम्। प॒रा॒ऽवतः॑। चि॒त्। अच्छ॑। वसुः॑। धी॒नाम्। अ॒वि॒ता। का॒रुऽधा॑याः॥ १५॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**पाता**) पानकर्त्ता। अत्राविततेति विहाय सर्वत्र तृन् प्रत्ययः। (**सुतम्**) निष्पन्नम् (**इन्द्रः**) परमैश्वर्यप्रदः (**अस्तु**) (**सोमम्**) ओषधिरसम् (**हन्ता**) (**वृत्रम्**) मेघम् (**वज्रेण**) शस्त्राऽस्त्रसमूहेन (**मन्दसानः**) कामयमानः (**गन्ता**) (**यज्ञम्**) सत्क्रियामयं व्यवहारम् (**परावतः**) दूरदेशात् (**चित्**) अपि (**अच्छा**) (**वसुः**) वासयिता (**धीनाम्**) उत्तमानां। **धीरिति कर्मनाम।** (निघं०२.१) (**अविता**) रक्षकः (**कारुधायाः**) कारूणां शिल्पीनां धारकः॥१५॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! य इन्द्रस्सुतं सोमं पाता वज्रेण मन्दसानो वृत्रं सूर्य इव शत्रून् हन्ता यज्ञं गन्ता परावतश्चित्कारुधाया वसुः सन् धीनामच्छाऽविता वर्त्तत इन्द्रोऽस्तु तं यूयं सततं सत्कुरुत॥१५॥

**भावार्थः**-ये राजादयो मनुष्या वैद्यकशास्त्रसम्पादितमोषधिरसं पिबन्ति शस्त्रास्त्रविद्यया दुष्टान्निवार्य न्यायप्रचाराख्यं प्रचार्य्य सत्कर्मानुष्ठातारः शिल्पविद्याविदः सङ्गृह्यालस्यं विहाय सत्कर्मसु प्रवर्त्तन्ते त एवात्र प्रशंसनीया भवन्ति॥१५॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो (**इन्द्रः**) अत्यन्त ऐश्वर्य्य का देने वाला (**सुतम्**) उत्पन्न हुए (**सोमम्**) ओषधिरस को (**पाता**) पान करने वाला (**वज्रेण**) शस्त्र और अस्त्रों के समूह से (**मन्दसानः**) कामना करता हुआ (**वृत्रम्**) मेघ को सूर्य्य जैसे वैसे शत्रुओं को (**हन्ता**) मारने (**यज्ञम्**) श्रेष्ठ क्रियास्वरूप व्यवहार को (**गन्ता**) प्राप्त होने (**परावतः**) दूर देश से (**चित्**) भी (**कारुधायाः**) शिल्पी जनों का धारण करने वाला और (**वसुः**) बसाने वाला होता हुआ (**धीनाम्**) उत्तम कर्म्मों की (**अच्छा**) अच्छे प्रकार (**अविता**) रक्षा करने वाला है वह अत्यन्त ऐश्वर्य्य से युक्त (**अस्तु**) हो, उसका आप लोग निरन्तर सत्कार करो॥१५॥

**भावार्थः**-जो राजा आदि मनुष्य वैद्यकशास्त्र की रीति से उत्पन्न किये ओषधियों के रस को पीते हैं तथा शस्त्र और अस्त्र की विद्या से दुष्टों का निवारण करके न्यायप्रचार नामक कर्म्म का प्रचार करके सत्कर्म्म के करने और शिल्पविद्या के जानने वालों को सङ्ग्रह करके आलस्य का त्याग करके श्रेष्ठ कर्म्मों में प्रवृत्त होते, वे ही यहाँ प्रशंसनीय होते हैं॥१५॥

**पुनर्मनुष्यैः किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**इदं त्यत्पात्रमिन्द्रपानमिन्द्रस्य प्रियममृतमपायि।**

**मत्सद्यथा सौमनसाय देवं व्य१स्मद्द्वेषो युयवद् व्यंहः॥१६॥**

**इदम्। त्यत्। पात्रम्। इन्द्रऽपानम्। इन्द्रस्य। प्रियम्। अमृतम्। अपायि। मत्सत्। यथा। सौमनसाय। देवम्। वि। अस्मत्। द्वेषः। युयवत्। वि। अंहः॥१६॥**

**पदार्थः**-(**इदम्**) (**त्यत्**) तत् (**पात्रम्**) पिबति पाति वा येन (**इन्द्रपानम्**) इन्द्रस्यौषधिरसस्यैश्वर्यस्य वा पानं रक्षणं वा (**इन्द्रस्य**) इन्द्रियस्वामिनो जीवस्य (**प्रियम्**) प्रीतिकरम् (**अमृतम्**) सुस्वादिष्ठम् (**अपायि**)



www.9009.co.in

पिबति **(मत्सत्)** आनन्दति **(यथा)** **(सौमनसाय)** सुमनसो भवाय **(देवम्)** दिव्यगुणकर्म **(वि)** **(अस्मत्)** **(द्वेषः)** द्वेषादियुक्तं कर्म शत्रुं वा **(युयवत्)** वियोजयति **(वि)** **(अंहः)** पापाचरणम्॥१६॥

**अन्वयः**-हे विद्वँस्त्वं सौमनसाय कश्चिद् यथेदं त्यदिन्द्रपानमिन्द्रस्य प्रियममृतं पात्रमपायि येन मत्सद्देवमपाय्यस्मद्द्वेषो वि युयवदस्मदंहो वि युयवत्तथाऽऽचर॥१६॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! येन मनसि प्रमादो द्वेषश्च न स्यात्तदेव पातव्यम्। यथा स्वात्मानं सर्वे रक्षन्ति तथैवाऽन्यान्त्सर्वान् रक्षन्तु॥१६॥

**पदार्थः**-हे विद्वन्! आप **(सौमनसाय)** अच्छे मन के होने के लिये **(यथा)** जैसे **(इदम्)** इस **(त्यत्)** उस **(इन्द्रपानम्)** ओषधियों के रस वा ऐश्वर्य्य के पान वा रक्षण को **(इन्द्रस्य)** इन्द्रियों के स्वामी जीव के **(प्रियम्)** प्रीतिकारक **(अमृतम्)** अच्छे प्रकार स्वादिष्ठ **(पात्रम्)** जिससे पान करता वा रक्षा करता है उसको **(अपायि)** पीता है। और जिससे **(मत्सत्)** आनन्दित होता है तथा **(देवम्)** श्रेष्ठ गुणकर्मयुक्त वस्तु का पान करता है और **(अस्मत्)** हम लोगों से **(द्वेषः)** द्वेष आदि से युक्त कर्म्म वा शत्रु को **(वि, युयवत्)** वियुक्त करता है और हम लोगों से **(अंहः)** पापाचरण को **(वि)** पृथक् करता है, वैसा आचरण करो॥१६॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जिससे मन में प्रमाद और द्वेष न होवे उसी का पान करना चाहिये और जैसे अपने आत्मा की सब रक्षा करते हैं, वैसे अन्य सबों की रक्षा करें॥१६॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**एना मन्दानो जहि शूर शत्रूञ्जामिमजामिं मघवन्नमित्रान्।**

**अभिषेणाँ अभ्याऽऽदेदिशानान् पराच इन्द्र प्र मृणा जही च॥१७॥**

**एना। मन्दानः। जहि। शूर। शत्रून्। जामिम्। अजामिम्। मघऽवन्। अमित्रान्। अभिऽसेनान्। अभि। आऽदेदिशानान्। पराचः। इन्द्र। प्र। मृण। जहि। च॥१७॥**

**पदार्थः**-**(एना)** एनेन **(मन्दानः)** प्रकाशितः **(जहि)** **(शूर)** दुष्टानां हिंसक **(शत्रून्)** धर्मविरोधिनः **(जामिम्)** जामात्रादिकम् **(अजामिम्)** अन्यामसम्बन्धाम् **(मघवन्)** बहुधनयुक्त **(अमित्रान्)** मित्रभावरहितान् **(अभिषेणान्)** आभिमुख्या सेना येषां तान् **(अभि)** **(आदेदिशानान्)** भृशमाज्ञाकर्त्तॄन् **(पराचः)** पराङ्मुखान् **(इन्द्र)** दुष्टविदारक **(प्र)** **(मृणा)** बाधस्व। अत्र **द्व्यचोऽतस्तिङ** इति दीर्घः। **(जही)** अत्रापि पूर्ववद्दीर्घः **(च)**॥१७॥

**अन्वयः**-हे शूर मघवन्निन्द्र! त्वमेना मन्दानः सन् जामिमजामिं शत्रूनमित्रान् जहि। अभिषेणानादेदिशानान् पराचोऽभि प्रमृणा। अविद्यादिदोषाँश्च जही॥१७४॥



www.9009.co.in

**भावार्थ:**-हे राजन्त्सेनापते! त्वं ब्रह्मचर्येण सोमपानादिना च स्वयमानन्दित: सन् वीरानानन्द्य सर्वाञ्छत्रून्विजयस्व॥१७॥

**पदार्थ:**-हे **(शूर)** दुष्टों को मारने वाले **(मघवन्)** बहुत धनों से युक्त **(इन्द्र)** दुष्टों के विदारक! आप **(एना)** इससे **(मन्दान:)** प्रशंसित हुए **(जामिम्)** जवाँई आदि को **(अजामिम्)** दूसरी सम्बन्ध रहित को **(शत्रून्)** धर्म्म के विरोधियों **(अमित्रान्)** मित्रभाव रहित वैरियों का **(जहि)** त्याग करो **(अभिषेणान्)** सन्मुख सेना जिनकी उन **(आदेदिशानान्)** अत्यन्त आज्ञा करने वाले **(पराच:)** पश्चिम की ओर अर्थात् पीछे मुख किये हुओं की **(अभि, प्र, मृणा)** बाधा करो **(च)** और अविद्या आदि दोषों का **(जही)** त्याग करो॥१७॥

**भावार्थ:**-हे राजन् सेना के स्वामिन्! आप ब्रह्मचर्य और सोमलता के रस के पान आदि से स्वयं आनन्दित हुए वीरों को आनन्द देकर सम्पूर्ण शत्रुओं को जीतो॥१७॥

**पुना राजप्रजाजनै: सततं किमनुष्ठेयमित्याह॥**

फिर राजा और प्रजाजनों को निरन्तर क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**आसु ष्मा णो मघवन्निन्द्र पृत्स्व१स्मभ्यं महि वरिव: सुगं क:।**

**अपां तोकस्य तनयस्य जेष इन्द्र सूरीन् कृणुहि स्मा नो अर्धम्॥१८॥**

**आसु। स्म। न:। मघऽवन्। इन्द्र। पृत्ऽसु। अस्मभ्यम्। महि। वरिव:। सुऽगम्। करिति क:। अपाम्। तोकस्य। तनयस्य। जेषे। इन्द्र। सूरीन्। कृणुहि। स्म। न:। अर्धम्॥१८॥**

**पदार्थ:**-**(आसु)** **(स्मा)** एव। अत्र **निपातस्य** दीर्घ:। **(न:)** अस्मान् **(मघवन्)** महाधनयुक्त **(इन्द्र)** दुष्टानां विदारक **(पृत्सु)** वीरमनुष्यसेनासु **(अस्मभ्यम्)** **(महि)** महत् **(वरिव:)** सेवनम् **(सुगम्)** सुष्ठु गच्छन्ति यस्मिँस्तत् **(क:)** कुर्या: **(अपाम्)** प्राणानाम् **(तोकस्य)** सद्यो जातस्याऽपत्यस्य **(तनयस्य)** सुकुमारस्य **(जेषे)** जेतुम् **(इन्द्र)** सकलैश्वर्यप्रद **(सूरीन्)** युद्धविद्याकुशलान् विपश्चित: **(कृणुहि)** **(स्मा)** एव। अत्रापि **निपातस्य चे**ति दीर्घ:। **(न:)** **(अर्धम्)** सुसमृद्धिम्॥१८॥

**अन्वय:**-हे मघवनिन्द्र! त्वमासु पृत्स्वस्मभ्यं महि सुगं वरिव: क:, नोऽस्मान्त्स्मा विजयिन: क:। हे इन्द्र! त्वमपां तोकस्य तनस्य बोधाय शत्रूञ्जेषे नोऽस्मान्त्सूरीनर्धं स्मा कृणुहि॥१८॥

**भावार्थ:**-राजा तथा यत्नमातिष्ठेद् यथा स्वकीया: सेना: सुशिक्षिता विजयिन्यो बलवत्यो भवेयु: सर्वे बालका: कन्याश्च ब्रह्मचर्येण विद्यायुक्ता भूत्वा समृद्धिं प्राप्ता: सत्यं न्यायं धर्मं सततं सेवेरन्॥१८॥

**पदार्थ:**-हे **(मघवन्)** बहुत धन से युक्त **(इन्द्र)** दुष्टों के मारने वाले! आप **(आसु)** इन **(पृत्सु)** वीर मनुष्यों की सेनाओं में **(अस्मभ्यम्)** हम लोगों के लिये **(महि)** बड़े **(सुगम्)** उत्तम प्रकार चलते हैं जिसमें उस **(वरिव:)** सेवन को **(क:)** करें **(न:)** हम लोगों को **(स्मा)** ही विजयी करें ओर हे **(इन्द्र)** सम्पूर्ण ऐश्वर्य्यों के देने वाले! आप **(अपाम्)** प्राणों के **(तोकस्य)** शीघ्र उत्पन्न हुए अपत्य के और



www.9009.co.in

**(तनयस्य)** सुकुमार के बोध के लिये और शत्रुओं को **(जेषे)** जीतने के लिये **(नः)** हम लोगों को **(सूरीन्)** युद्धविद्या में कुशल विद्वान् और **(अर्धम्)** अच्छे प्रकार समृद्धि को **(स्मा)** ही **(कृणुहि)** करिये॥१८॥

**भावार्थः**-राजा वैसा यत्न करे जैसे अपनी सेनायें उत्तम प्रकार शिक्षित, जीतने वाली और बलयुक्त होवें और सम्पूर्ण बालक और कन्यायें ब्रह्मचर्य्य से विद्यायुक्त होकर समृद्धि को प्राप्त हुए सत्य, न्याय और धर्म का निरन्तर सेवन करें॥१८॥

**पुना राजामात्याः कीदृशा भवेयुरित्याह॥**

फिर राजा और मन्त्रीजन कैसे होवें, इस विषय को कहते हैं॥

**आ त्वा हरयो वृषणो युजाना वृषरथासो वृषरश्मयोऽत्याः।**

**अस्मत्राञ्चो वृषणो वज्रवाहो वृष्णे मदाय सुयुजो वहन्तु॥१९॥**

**आ। त्वा। हरयः। वृषणः। युजानाः। वृषऽरथासः। वृषऽरश्मयः। अत्याः। अस्मत्राञ्चः। वृषणः। वज्रऽवाहः। वृष्णे। मदाय। सुऽयुजः। वहन्तु॥१९॥**

**पदार्थः**-**(आ)** **(त्वा)** त्वाम् **(हरयः)** सुशिक्षिता अश्वा इव मनुष्याः **(वृषणः)** बलिष्ठाः **(युजानाः)** समाहितात्मानः **(वृषरथासः)** वृषा बलयुक्ता रथाः सेनाङ्गानि येषां ते **(वृषरश्मयः)** रश्मय इव विजयसुखवर्षकास्तेजस्विनः **(अत्याः)** सकलशुभगुणकर्मव्यापिनः **(अस्मत्राञ्च)** ये शत्रुभ्योऽस्माँस्त्रायन्ते तानञ्चन्ति प्राप्नुवन्ति ते **(वज्रवाहः)** शस्त्रास्त्रविद्यावोढारः **(वृष्णे)** बलकराय **(मदाय)** आनन्दाय **(सुयुजः)** ये सुष्ठु युञ्जते योजयन्ति वा **(वहन्तु)** प्राप्नुवन्तु प्रापयन्तु वा॥१९॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र राजन्! यथा वृषणो युजाना वृषरथासो वृषरश्मयोऽत्या अस्मत्राञ्चो वृषणो वज्रवाहः सुयुजो हरयो वृष्णे मदाय त्वा वहन्तु तथैतांस्त्वं प्रीत्याऽऽवह॥१९॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। राज्ञा सुपरीक्ष्योत्तमगुणकर्मस्वभावा जना राज्यकर्माधिकारेषु नियोजनीयाः स्वयमपि शभगुणकर्मस्वभावः स्यात्॥१९॥

**पदार्थः**-हे अत्यन्त ऐश्वर्य्य से युक्त राजन्! जैसे **(वृषणः)** बलयुक्त **(युजानाः)** जिनके सावधान आत्मा और **(वृषरथासः)** बलयुक्त सेना के अङ्ग जिनके वे **(वृषरश्मयः)** किरणों के सदृश विजय सुख के वर्षाने वाले तेजस्वी **(अत्याः)** सम्पूर्ण श्रेष्ठ गुण और कर्म्मों में व्यापी **(अस्मत्राञ्च)** शत्रुओं से हम लोगों की रक्षा करने वालों को प्राप्त होने और **(वृषणः)** शत्रुशक्ति के रोकने वाले **(वज्रवाहः)** शस्त्र और अस्त्रों की विद्या को धारण करने तथा **(सुयुजः)** उत्तम प्रकार युक्त होने वा युक्त कराने वाले **(हरयः)** उत्तम प्रकार शिक्षित घोड़ों के सदृश मनुष्य **(वृष्णे)** बलकारक **(मदाय)** आनन्द के लिये **(त्वा)** आपको **(वहन्तु)** प्राप्त हों वा प्राप्त करावें, वैसे इनको आप प्रीति से **(आ)** प्राप्त हूजिये॥१९॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। राजा को चाहिये कि उत्तम प्रकार परीक्षा करके उत्तम गुण, कर्म्म और स्वभाव वाले मनुष्यों को राज्य कर्म्म के अधिकारों में नियुक्त करे तथा आप भी श्रेष्ठ गुण, कर्म्म और स्वभाव वाला होवे॥१९॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**आ ते वृषन् वृषणो द्रोणमस्थुर्घृतप्रुषो नोर्मयो मदन्तः।**

**इन्द्र प्र तुभ्यं वृषभिः सुतानां वृष्णे भरन्ति वृषभाय सोमम्॥२०॥१९॥**

**आ। ते। वृषन्। वृषणः। द्रोणम्। अस्थुः। घृतऽप्रुषः। न। ऊर्मयः। मदन्तः। इन्द्र। प्र। तुभ्यम्। वृषऽभिः। सुतानाम्। वृष्णे। भरन्ति। वृषभाय। सोमम्॥२०॥**

**पदार्थः**-(**आ**) समन्तात् (**ते**) तव (**वृषन्**) बलयुक्त (**वृषणः**) बलिष्ठ (**द्रोणम्**) द्रवन्ति येन विमानादियानेन तत् (**अस्थुः**) आतिष्ठन्ति (**घृतप्रुषः**) ये घृतमुदकं प्रोषयन्ति पूरयन्ति ते (**न**) इव (**ऊर्मयः**) समुद्रादिजलतरङ्गाः (**मदन्तः**) आनन्दन्तः (**इन्द्र**) सकलैश्वर्यसम्पन्न (**प्र**) (**तुभ्यम्**) (**वृषभिः**) बलिष्ठैर्वैद्यैः (**सुतानाम्**) निष्पादितानाम् (**वृष्णे**) बलाय (**भरन्ति**) (**वृषभाय**) बलमिच्छुकाय (**सोमम्**) महौषधिरसम्॥२०॥

**अन्वयः**-हे वृषन्निन्द्र! ये ते वृषणो घृतप्रुष ऊर्मयो न त्वां मदन्तो वृषभिः सुतानां सोमं वृष्णे वृषभाय तुभ्यं प्र भरन्ति द्रोणमास्थुस्तांस्त्वं प्रीणीहि॥२०॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। हे राजन्! ये सत्यभावेन तव राज्यस्य हितं चिकीर्षन्ति तांस्त्वं सुखिनो रक्षेर्यथा वायुना जलतरङ्गा उल्लसन्ति तथैव सत्सङ्गेन बुद्धयः समुल्लसन्तीति विद्धि॥२०॥

**पदार्थः**-हे (**वृषन्**) बल से युक्त (**इन्द्र**) सम्पूर्ण ऐश्वर्य्यों से सम्पन्न! जो (**ते**) आपके (**वृषणः**) बलिष्ठ (**घृतप्रुषः**) जल को पूर्ण करने वाले (**ऊर्मयः**) समुद्र आदि के जल के तरंग (**न**) जैसे वैसे आपको (**मदन्तः**) आनन्द देते हुए (**वृषभिः**) बलिष्ठ वैद्यों से (**सुतानाम्**) उत्पन्न किये हुए (**सोमम्**) बड़ी ओषधियों के रस को (**वृष्णे**) बल के और (**वृषभाय**) बल की इच्छा करने वाले (**तुभ्यम्**) आपके लिये (**प्र, भरन्ति**) अच्छे प्रकार धारण करते हैं तथा (**द्रोणम्**) जाते हैं जिस विमान आदि वाहन से उस पर (**आ**) सब प्रकार से (**अस्थुः**) स्थित होते हैं, उनको आप प्रसन्न करिये॥२०॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे राजन्! जो सत्यभाव से आपके राज्य के हित करने की इच्छा करते हैं, उनको आप सुखी रखिये और जैसे वायु से जल के तरङ्ग हैं, वैसे ही सत्संग से बुद्धियाँ बढ़ती हैं, ऐसा जानो॥२०॥

**पुनः स राजा कीदृशः स्यादित्याह॥**

फिर वह राजा कैसा होवे, इस विषय का कहते हैं॥



www.9009.co.in

**वृषा॑सि दि॒वो वृ॑ष॒भः पृ॑थि॒व्या वृषा॒ सिन्धू॑नां वृष॒भः स्तिया॑नाम्।**

**वृष्णे॑ त॒ इन्दु॑र्वृषभ पीपाय स्वा॒दू रसो॑ मधु॒पेयो॒ वरा॑य॥२१॥**

**वृषा॑। अ॒सि॒। दि॒वः। वृ॒ष॒भः। पृ॒थि॒व्याः। वृषा॑। सिन्धू॑नाम्। वृ॒ष॒भः। स्तिया॑नाम्। वृष्णे॑। ते॒। इन्दुः॑। वृ॒ष॒भ॒। पी॒पा॒य॒। स्वा॒दुः। रसः॑। म॒धु॒ऽपेयः॑। वरा॑य॥२१॥**

**पदार्थः**-(**वृषा**) बलिष्ठः (**असि**) (**दिवः**) सूर्य्यस्य (**वृषभः**) बलिष्ठः श्रेष्ठश्च (**पृथिव्याः**) भूमेः (**वृषा**) वर्षकः (**सिन्धूनाम्**) नदीनां समुद्राणां वा (**वृषभः**) अत्यन्तं कर्ता (**स्तियानाम्**) संहतानां स्थावरजङ्गमानां प्राण्यप्राणिनाम् (**वृष्णे**) सुखवर्षकाय (**ते**) तुभ्यम् (**इन्दुः**) सोमः (**वृषभ**) शत्रुशक्तिबन्धक (**पीपाय**) पानाय (**स्वादुः**) स्वादुयुक्तः (**रसः**) (**मधुपेयः**) मधुना सह पातुं योग्यः (**वराय**) उत्तमाय॥२१॥

**अन्वयः**-हे वृषभेन्द्र! यतस्त्वं दिवो वृषभः पृथिव्या वृषा सिन्धूनां वृषा स्तियानां वृषभोऽसि ते वराय वृष्णे पीपाय स्वादुरिन्दू रसो मधुपेयो रसोऽस्तु॥२१॥

**भावार्थः**-हे राजन्! यदि त्वं विद्युद्भूमिनदीसमुद्रान्तरिक्षस्थावरजङ्गमानां पदार्थानां विद्योपयोगौ विजानीयास्तर्हि त्वां महानानन्दः प्राप्नुयात्॥२१॥

**पदार्थः**-हे (**वृषभ**) शत्रुओं के सामर्थ्य के प्रतिबन्धक, ऐश्वर्य्य से युक्त जिससे आप (**दिवः**) सूर्य्य के (**वृषभः**) बलिष्ठ और श्रेष्ठ (**पृथिव्याः**) भूमि से (**वृषा**) वर्षाने वाले और (**सिन्धूनाम्**) नदियों वा समुद्रों के (**वृषा**) वर्षाने वाले और (**स्तियानाम्**) मिले हुए नहीं चलने और चलने वाले प्राणी और अप्राणियों के (**वृषभः**) अत्यन्त करने वाले (**असि**) हैं (**ते**) आप (**वराय**) उत्तम (**वृष्णे**) सुख के वर्षाने वाले के लिये (**पीपाय**) पान को (**स्वादुः**) स्वादु से युक्त (**इन्दुः**) सोमलता का (**रसः**) रस (**मधुपेयः**) सहत के साथ पीने योग्य हो॥२१॥

**भावार्थः**-हे राजन्! जो आप बिजुली, भूमि, नदी, समुद्र, अन्तरिक्ष, स्थावर और जङ्गम पदार्थों की विद्या और उपयोग को जानिये तो आपको बड़ा आनन्द प्राप्त होवे॥२१॥

**पुनः स राजा कस्य सत्कारं कुर्यादित्याह॥**

फिर वह राजा किसका सत्कार करे, इस विषय को कहते हैं॥

**अ॒यं दे॒वः सह॑सा॒ जाय॑मान॒ इन्द्रे॑ण यु॒जा प॒णिम॑स्तभायत्।**

**अ॒यं स्वस्य॑ पि॒तुरायु॑धा॒नीन्दु॑रमुष्णा॒दशि॑वस्य मा॒याः॥२२॥**

**अ॒यम्। दे॒वः। सह॑सा। जाय॑मानः। इन्द्रे॑ण। यु॒जा। प॒णिम्। अ॒स्त॒भा॒य॒त्। अ॒यम्। स्वस्य॑। पि॒तुः। आयु॑धानि। इन्दुः॑। अ॒मु॒ष्णा॒त्। अशि॑वस्य। मा॒याः॥२२॥**

**पदार्थः**-(**अयम्**) (**देवः**) दिव्यगुणः (**सहसा**) बलेन (**जायमानः**) उत्पद्यमानः (**इन्द्रेण**) परमैश्वर्येण (**युजा**) यो युङ्क्ते तेन राज्ञा (**पणिम्**) स्तुत्यं व्यवहारम् (**अस्तभायत्**) स्तभ्नाति स्थिरीकरोति



www.9009.co.in

**(अयम्)** **(स्वस्य)** **(पितुः)** जनकस्य **(आयुधानि)** शस्त्रास्त्राणि **(इन्दुः)** आनन्दकरः **(अमुष्णात्)** मुष्णाति चोरयति **(अशिवस्य)** अमङ्गलस्य **(मायाः)** प्रज्ञाः॥२२॥

**अन्वयः**-हे राजन्! योऽयमिन्द्रेण युजा सहसा जायमानो देवो विद्वान् पणिमस्तभायद् योऽयमिन्दुः स्वस्य पितुरायुधान्यस्तभायदशिवस्य माया अमुष्णात्तं भवान् गुरुवत्सत्करोतु॥२२॥

**भावार्थः**-हे राजन्! ये धर्म्यं व्यवहारं स्वयमाचर्य्य सर्वत्र प्रचारयन्ति युद्धविद्योपदेशकुशला अमङ्गलं सर्वतो विनाश्य भद्रं जनयन्ति ते त्वत्तः सत्कारं प्राप्नुवन्तु॥२२॥

**पदार्थः**-हे राजन्! जो **(अयम्)** यह **(इन्द्रेण)** अत्यन्त ऐश्वर्य से **(युजा)** युक्त होने वाले राजा से **(सहसा)** बल से **(जायमानः)** उत्पन्न हुआ **(देवः)** श्रेष्ठ गुण वाला विद्वान् **(पणिम्)** स्तुति करने योग्य व्यवहार को **(अस्तभायत्)** स्थिर करता है और जो **(अयम्)** यह **(इन्दुः)** आनन्दकारक **(स्वस्य)** अपने **(पितुः)** पिता के **(आयुधानि)** शस्त्र और अस्त्रों को स्थिर करता है और **(अशिवस्य)** अमङ्गल की **(मायाः)** बुद्धियों को **(अमुष्णात्)** चुराता है, उसका आप गुरु के सदृश सत्कार करिये॥२२॥

**भावार्थः**-हे राजन्! जो धर्म्मयुक्त व्यवहार को स्वयं करके सर्वत्र प्रचार करते हैं और युद्धविद्या में और उपदेश में कुशल हुए अमङ्गल का सब प्रकार नाश करके कल्याण को उत्पन्न करते हैं, वे आपसे सत्कार को प्राप्त हों॥२२॥

**पुनर्विद्वांसः कीदृशा भवेयुरित्याह॥**

फिर विद्वान् कैसे होवें, इस विषय को कहते हैं॥

**अ॒यम॑कृणोदु॒षस॑: सु॒पत्नी॑र॒यं सूर्ये॑ अदधा॒ज्ज्योति॑र॒न्तः।**

**अ॒यं त्रि॒धातु॑ दि॒वि रो॑च॒नेषु॑ त्रि॒तेषु॑ विन्दद॒मृतं॒ निगू॑ळ्हम्॥२३॥**

**अ॒यम्। अ॒कृ॒णो॒त्। उ॒षस॑:। सु॒ऽपत्नी॑:। अ॒यम्। सूर्ये॑। अ॒द॒धा॒त्। ज्योति॑:। अ॒न्तरित्य॒न्तः। अ॒यम्। त्रि॒ऽधातु॑। दि॒वि। रो॒च॒नेषु॑। त्रि॒तेषु॑। वि॒न्द॒त्। अ॒मृत॑म्। निऽगू॑ळ्हम्॥२३॥**

**पदार्थः**-**(अयम्)** सूर्य्यः **(अकृणोत्)** करोति **(उषसः)** **(सुपत्नीः)** शोभना भार्या इव **(अयम्)** परमात्मा **(सूर्य्ये)** सवितरि **(अदधात्)** दधाति **(ज्योतिः)** प्रकाशम् **(अन्तः)** मध्ये **(अयम्)** **(त्रिधातु)** सत्वरजस्तमोमयं जगत् **(दिवि)** प्रकाशे **(रोचनेषु)** प्रकाशमानेषु **(त्रितेषु)** प्रसिद्धविद्युत्सूर्येषु **(विन्दत्)** विन्दति **(अमृतम्)** नाशरहितम् **(निगूळहम्)** नितरां गुप्तमतीन्द्रियम्॥२३॥

**अन्वयः**-हे विद्वांसो! यथाऽयं उषसः सुपत्नीरकृणोत्तथैकपत्नीव्रता यूयं भवत यथाऽयमीश्वरः सूर्य्येऽन्तर्ज्योतिरदधात् तथात्मासु विद्याप्रकाशं धत्त यथाऽयं जगदीश्वरो दिवि त्रितेषु रोचनेष्वमृतं निगूळ्हं त्रिधात्वव्यक्तं विन्दत्तथा प्रकृत्यादिकं जगद्विजानीत॥२३॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! येऽत्र जगति विवाहितैकस्त्रीव्रता विद्याऽविद्याप्रकाशकाः कार्य्यकारणात्मगुप्तपदार्थविद्यावेत्तारः स्युस्ते सूर्य्यवदीश्वरवदाप्तवन्मन्तव्याः स्युः॥२३॥

**पदार्थः**-हे विद्वान् जनो! जैसे **(अयम्)** यह सूर्य्य **(उषसः)** प्रातःकाल वेलाओं को **(सुपत्नीः)** सुन्दर भार्याओं के सदृश **(अकृणोत्)** करता है, वैसे एक स्त्री के ग्रहणरूप व्रतधारी आप लोग हों और जैसे **(अयम्)** यह परमात्मा **(सूर्य्ये)** सूर्य्य के **(अन्तः)** मध्य में **(ज्योतिः)** प्रकाश को **(अदधात्)** धारण करता है, वैसे आत्माओं में विद्या के प्रकाश को धारण करिये और जैसे **(अयम्)** यह ईश्वर **(दिवि)** प्रकाश में **(त्रितेषु)** प्रसिद्ध **[=अग्नि)]** बिजुली और सूर्य में **(रोचनेषु)** प्रकाशमानों में **(अमृतम्)** नाश से रहित **(निगूळहम्)** अत्यन्त गुप्त अतीन्द्रिय **(त्रिधातु)** सत्व, रज और तमः स्वरूप जगत् को **(विन्दत्)** प्राप्त होता है, वैसे प्रकृति आदि जगत् को जानिये॥२३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जो इस जगत् में विवाहित एक स्त्री के ग्रहणरूप व्रतधारी, विद्या और अविद्या के प्रकाशक, कार्य्य-कारण स्वरूप गुप्त पदार्थों की विद्या के जानने वाले होवें; वे सूर्य्य, ईश्वर और यथार्थवक्ता जन के सदृश मन्तव्य होवें॥२३॥

**विद्वांस ईश्वरवद्वर्त्तेरन्नित्याह॥**

विद्वान् जन ईश्वर के सदृश वर्त्तमान करे, इस विषय को कहते हैं॥

**अयं द्यावापृथिवी वि ष्कभायदयं रथमयुनक् सप्तरश्मिम्।**
**अयं गोषु शच्या पक्वमन्तः सोमो दाधार दशयन्त्रमुत्सम्॥२४॥२०॥**

**अयम्। द्यावापृथिवी इति। वि। स्कभायत्। अयम्। रथम्। अयुनक। सप्तऽरश्मिम्। अयम्। गोषु। शच्या। पक्वम्। अन्तरित्यन्तः। सोमः। दाधार। दशऽयन्त्रम्। उत्सम्॥२४॥**

**पदार्थः**-**(अयम्)** **(द्यावापृथिवी)** प्रकाशभूमी **(वि)** विशेषेण **(स्कभायत्)** दधाति **(अयम्)** सर्वधर्त्तेश्वरः **(रथम्)** रमणीयसूर्यलोकम् **(अयुनक्)** युनक्ति **(सप्तरश्मिम्)** सप्तविधा विद्यारश्मयो यस्मिँस्तम् **(अयम्)** धराधरः परमात्मा **(गोषु)** पृथीवीषु धेन्वादिषु वा **(शच्या)** सत्येन कर्मणा **(पक्वम्)** **(अन्तः)** मध्ये **(सोमः)** यः सर्वं जगत् सूते सः **(दाधार)** दधाति। अत्र **तुजादीनामि**त्यभ्यासदैर्घ्यम्। **(दशयन्त्रम्)** सूक्ष्मस्थूलानि दशभूतानि यन्त्रितानि यस्मिँस्तत् **(उत्सम्)** कूपमिव जलेन क्लिन्नम्॥२४॥

**अन्वयः**-हे विद्वांसो! यथाऽयमीश्वरो द्यावापृथिवी विष्कभायदयं सप्तरश्मिं रथमयुनगयं सोमः शच्या गोष्वन्तरुत्समिव दशयन्त्रं पक्वं दाधार तथा यूयमपि धरत॥२४॥

**भावार्थः**-हे विद्वांसो! यः सूर्यवन्न्यायं पृथिवीवत् क्षमां सर्वस्य धारणं दुग्धादीन् रसान्त्सर्वं जगद्यथावन्निर्माय धरति तथा यूयमप्येतत् सर्वं धरतेति॥२४॥

अत्रेन्द्रविद्वदीश्वरगुणकर्मवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥



www.9009.co.in

**इति चतुश्चत्वारिंशत्तमं सूक्तं विंशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे विद्वान् जनो! जैसे **(अयम्)** यह ईश्वर **(द्यावापृथिवी)** प्रकाश और भूमि को **(वि)** विशेष करके **(स्कभायत्)** धारण करता है और **(अयम्)** यह सब को धारण करने वाला ईश्वर **(सप्तरश्मिम्)** सात प्रकार की विद्यारूप किरणें जिसमें उस **(रथम्)** सुन्दर सूर्य्यलोक को **(अयुनक्)** युक्त करता है और **(अयम्)** यह धारण और नहीं धारण करने वाला परमात्मा **(सोमः)** सब जगत् को उत्पन्न करने वाला **(शच्या)** सत्य कर्म्म से **(गोषु)** पृथिवियों वा धेनु आदि के **(अन्तः)** मध्य में **(उत्सम्)** कूप के सदृश जल से खेदित को जैसे वैसे **(दशयन्त्रम्)** सूक्ष्म और स्थूल दश प्रकार के भूत प्राणी यन्त्रित जिसमें उस **(पक्वम्)** पके हुए को **(दाधार)** धारण करता है, वैसे आप लोग भी धारण कीजिये॥२४॥

**भावार्थः**-हे विद्वान् जनो! जो सूर्य्य के सदृश न्याय को, पृथिवी के सदृश क्षमा को, सब के धारण और दुग्ध आदि रसों को और सब जगत् को यथावत् निर्माण करके धारण करता है, वैसे आप लोग भी इस सब को धारण करिये॥२४॥

इस सूक्त में इन्द्र, विद्वान् और ईश्वर के गुण कर्मों के वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह चवालीसवाँ सूक्त और बीसवाँ वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

**अथ त्रयस्त्रिंशदृचस्य पञ्चचत्वारिंशत्तमस्य सूक्तस्य शंयुबार्हस्पत्य ऋषिः। १-३० इन्द्रः। ३१-३३ बृबुस्तक्षा। १, २,३, ८, १४, २०-२४, २८, ३०, ३२ गायत्री। ४, ७, ९, १०, ११, १२, १३, १५-१९, २५, २६ निचृद्गायत्री। ५, ६, २७ विराड्गायत्री। २९ स्वराडार्ची गायत्री छन्दः। षड्जः स्वरः। ३१ आर्च्युष्णिक्छन्दः। ऋषभः स्वरः। ३३ अनुष्टुप् छन्दः। गान्धारः स्वरः॥**

***अथ राजा किं कुर्यादित्याह॥***

अब तेंतीस ऋचा वाले पैंतालीसवें सूक्त का प्रारम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में राजा क्या करे इस विषय को कहते हैं॥

**य आनयत्परावतः सुनीती तुर्वशं यदुम्। इन्द्रः स नो युवा सखा॥ १॥**

**यः। आ। अनयत्। पराऽवतः। सुऽनीती। तुर्वशम्। यदुम्। इन्द्रः। सः। नः। युवा। सखा॥ १॥**

**पदार्थः**-(**यः**) (**आ**) समन्तात् (**अनयत्**) (**परावतः**) दूरदेशादपि (**सुनीती**) शोभनेन न्यायेन (**तुर्वशम्**) हिंसकानां वशकरम् (**यदुम्**) प्रयतमानं नरम् (**इन्द्रः**) सर्वैश्वर्यप्रदो राजा (**सः**) (**नः**) अस्माकम् (**युवा**) शरीरात्मबलयुक्तः (**सखा**) मित्रम्॥ १॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यो युवेन्द्रः सुनीती परावतस्तुर्वशं यदुमाऽनयत् स नः सखा भवतु॥ १॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यूयं तेन राज्ञा सह मैत्रीं कुरुत यस्सत्यन्यायेन दूरदेशस्थमपि विद्याविनयपरोपकारकुशलमाप्तं नरं श्रुत्वा स्वसमीपमानयति तेन राज्ञा सह सुहृदः सन्तो वर्त्तध्वम्॥ १॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! (**यः**) जो (**युवा**) शरीर और आत्मा के बल से युक्त (**इन्द्रः**) सम्पूर्ण ऐश्वर्य्यों का देने वाला राजा (**सुनीती**) सुन्दर न्याय से (**परावतः**) दूर देश से भी (**तुर्वशम्**) हिंसकों को वश में करने वाले (**यदुम्**) यत्न करते हुए मनुष्य को (**आ**) सब प्रकार से (**अनयत्**) प्राप्त करावे (**सः**) वह (**नः**) हम लोगों का (**सखा**) मित्र हो॥ १॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! तुम उस राजा के साथ मैत्री करो जो सत्य न्याय से दूर देश में स्थित भी विद्या, विनय और परोपकार में कुशल, श्रेष्ठ मनुष्य को सुनकर अपने समीप लाता है, उस राजा के साथ मित्र हुए वर्त्ताव करो॥ १॥

**पुन राजा किं कुर्य्यादित्याह॥**

फिर राजा क्या करे, इस विषय को कहते हैं॥

**अविप्रे चिद्वयो दधदनाशुना चिदर्वता। इन्द्रो जेता हितं धनम्॥ २॥**

**अविप्रे। चित्। वयः। दधत्। अनाशुना। चित्। अर्वता। इन्द्रः। जेता। हितम्। धनम्॥ २॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**अविप्रे**) अमेधाविनि (**चित्**) अपि (**वयः**) कमनीयं जीवनं विज्ञानं वा (**दधत्**) दधाति (**अनाशुना**) अनश्वेनाचिरेण गन्त्रा (**चित्**) (**अर्वता**) अश्वेन (**इन्द्रः**) शत्रुविदारकः (**जेता**) जयशीलः (**हितम्**) सुखकारि (**धनम्**) द्रव्यम्॥२॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! य इन्द्रोऽविप्रे चिद्वयो दधदनाशुनाऽर्वता चिद्धितं धनं जेता दधत्स कीर्त्तिमान् जायते इति वेद्यम्॥२॥

**भावार्थः**-यो विद्वान् राजा बालकेष्वज्ञेषु चाध्यापनोपदेशप्रचारेण विद्यां दधाति स कीर्तिमान् भूत्वाऽसेनोऽपि राज्यं लभते॥२॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो (**इन्द्रः**) शत्रुओं का नाश करने वाला (**अविप्रे**) बुद्धिरहित में (**चित्**) भी (**वयः**) सुन्दर जीवन वा विज्ञान को (**दधत्**) धारण करता है तथा (**अनाशुना**) घोड़े से रहित शीघ्र जाने वाले वाहन से (**अर्वता**) घोड़े से (**चित्**) भी (**हितम्**) सुखकारक (**धनम्**) द्रव्य को (**जेता**) जीतने वाला धारण करता है, वह यशस्वी होता है, यह जानना चाहिये॥२॥

**भावार्थः**-जो विद्वान् राजा बालकों और अज्ञों में अध्यापन और उपदेश के प्रचार से विद्या को धारण करता है, वह यशस्वी होकर विना सेना के भी राज्य को प्राप्त होता है॥२॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**म॒हीर॑स्य॒ प्रणी॑तयः पू॒र्वीरु॒त प्रश॑स्तयः। नास्य॑ क्षीयन्त ऊ॒तयः॑॥३॥**

**म॒हीः। अ॒स्य॒। प्रऽनी॑तयः। पू॒र्वीः। उ॒त। प्रऽश॑स्तयः। न। अ॒स्य॒। क्षी॒य॒न्ते॒। ऊ॒तयः॑॥३॥**

**पदार्थः**-(**महीः**) महत्यः (**अस्य**) राज्ञः (**प्रणीतयः**) प्रकृष्टा नीतयः (**पूर्वीः**) प्राचीना वेदोदिताः (**उत**) (**प्रशस्तयः**) सत्कीर्त्तयः (**न**) निषेधे (**अस्य**) (**क्षीयन्ते**) (**ऊतयः**) रक्षणाद्याः क्रियाः॥३॥

**अन्वयः**- हे मनुष्या! अस्य राज्ञो महीरुत पूर्वीः प्रणीतय ऊतयः सन्त्यस्य प्रशस्तयो न क्षीयन्ते॥३॥

**भावार्थः**-ये राजानो नित्यं महतीं राजधर्मनीतिं धृत्वा पुत्रवत् प्रजाः पालयन्ति तेषामक्षया कीर्तिर्जायते॥३॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! (**अस्य**) इस राजा की (**महीः**) बड़ी (**उत**) और (**पूर्वीः**) प्राचीन वेदों में कही हुई (**प्रणीतयः**) उत्तम नीति और (**ऊतयः**) रक्षण आदि क्रियायें हैं (**अस्य**) इसकी (**प्रशस्तयः**) श्रेष्ठ कीर्तियाँ (**न**) नहीं (**क्षीयन्ते**) क्षीण होती हैं॥३॥

**भावार्थः**- जो राजाजन नित्य बड़ी राजधर्म्मनीति को धारण करके पुत्र के सदृश प्रजाओं का पालन करते हैं, उनका नाशरहित यश होता है॥३॥

**पुनर्मनुष्यैः कः सत्कर्त्तव्य इत्याह॥**

फिर मनुष्यों को किसका सत्कार करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥



www.9009.co.in

**सखा॑यो॒ ब्रह्म॑वाहसेऽर्च॑त॒ प्र च॑ गायत। स हि नः॒ प्रम॑तिर्म॒ही॥४॥**

**सखा॑यः। ब्रह्म॑ऽवाहसे। अर्च॑त। प्र। च॒। गा॒य॒त॒। सः। हि। नः॒। प्रऽम॑तिः। म॒ही॥४॥**

**पदार्थः**-(**सखायः**) सुहृदः (**ब्रह्मवाहसे**) वेदेश्वरविज्ञानप्रापणाय (**अर्चत**) सत्कुरुत (**प्र**) प्रकर्षे (**च**) (**गायत**) प्रशंसत (**सः**) जगदीश्वरः (**हि**) यतः (**नः**) अस्मभ्यम् (**प्रमतिः**) प्रकृष्टा प्रज्ञा (**मही**) महती वाक्॥४॥

**अन्वयः**- हे सखायो यूयं ब्रह्मवाहसे यं प्रार्चत गायत च येन नः प्रमतिर्मही च दीयते स हि परमात्मा विद्वांश्चाऽस्माभिरुपास्यः सेवनीयश्चास्ति॥४॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यूयं परस्परं सुहृदो भूत्वा परमेश्वरं सर्वस्य कल्याणाय प्रवर्त्तमानमाप्तमुपदेशकं च सदैव सत्कुरुत यतोऽस्मानुत्तमा प्रज्ञा वाक् चाप्नुयात्॥४॥

**पदार्थः**-हे (**सखायः**) मित्रो! आप लोग (**ब्रह्मवाहसे**) वेद और ईश्वर के विज्ञान प्राप्त कराने के लिये जिसका (**प्र, अर्चत**) अत्यन्त सत्कार करो (**गायत, च**) और प्रशंसा करो जिससे (**नः**) हम लोगों के लिये (**प्रमतिः**) अच्छी बुद्धि (**मही**) और बड़ी वाणी दी जाती है (**सः, हि**) वही जगदीश्वर और विद्वान् हम लोगों से उपासना और सेवा करने योग्य है॥४॥

**भावार्थः**- हे मनुष्यो! आप लोग परस्पर मित्र होकर परमेश्वर और सब के कल्याण के लिये प्रवृत्त यथार्थवक्ता तथा उपदेशक का सदा ही सत्कार करो, जिससे हम लोगों को उत्तम बुद्धि और वाणी प्राप्त होवे॥४॥

**पुना राज्ञाऽमात्यैश्च कथं वर्त्तितव्यमित्याह॥**

फिर राजा और मन्त्रियों को कैसा वर्त्ताव करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**त्वमेक॑स्य वृत्रहन्नवि॒ता द्वयो॑रसि। उ॒तेदृशे॒ यथा॑ व॒यम्॥५॥२१॥**

**त्वम्। एक॑स्य। वृ॒त्र॒ह॒ऽन्। अ॒वि॒ता। द्वयोः॑। अ॒सि॒। उ॒त। ई॒दृशे॑। यथा॑। व॒यम्॥५॥**

**पदार्थः**-(**त्वम्**) (**एकस्य**) असहायस्य (**वृत्रहन्**) यः सूर्यो वृत्रं हन्ति तद्वच्छत्रुहन्तः (**अविता**) रक्षकः (**द्वयोः**) राजप्रजाजनयोः (**असि**) (**उत**) (**ईदृशे**) ईदृग्व्यवहारे (**यथा**) (**वयम्**)॥५॥

**अन्वयः**-हे वृत्रहन् राजन्! यथा वयमीदृश एकस्योत द्वयो रक्षका भवामस्तथा यतस्त्वमविताऽसि तस्मात् सत्कर्त्तव्योऽसि॥५॥

**भावार्थः**-हे राजन्! यथा वयं पक्षपातं विहाय स्वकीयपरजनयोर्यथावन्न्यायं कुर्मस्तथैव भवान् करोतु। ईदृशे धर्म्ये वर्त्तमानानामस्माकं सदैवाभ्युदयनिःश्रेयसे भवतः॥५॥

**पदार्थः**-हे (**वृत्रहन्**) मेघ को नाश करने वाले सूर्य के समान शत्रुओं के मारने वाले राजन्! (**यथा**) जैसे (**वयम्**) हम लोग (**ईदृशे**) ऐसे व्यवहार में (**एकस्य**) सहायरहित के (**उत**) और (**द्वयोः**)



www.9009.co.in

राजा और प्रजाजनों के रक्षक होते हैं, वैसे जिससे **(त्वम्)** आप **(अविता)** रक्षक **(असि)** हो, इससे सत्कार करने योग्य हो॥५॥

**भावार्थः-** हे राजन्! जैसे हम लोग पक्षपात का त्याग करके अपने और अन्य जन का यथावत् न्याय करें, वैसे ही आप करिये। ऐसे धर्म्मयुक्त व्यवहार में वर्त्तमान हम लोगों की सदा ही वृद्धि और मोक्ष होते हैं॥५॥

**पुना राजा किं कुर्यादित्याह॥**

फिर राजा क्या करे, इस विषय को कहते हैं॥

**नयसीद्वति द्विषः कृणोष्युक्थशंसिनः। नृभिः सुवीरः उच्यसे॥६॥**

**नयसि। इत्। ऊँ इति। अति। द्विषः। कृणोषि। उक्थऽशंसिनः। नृऽभिः। सुऽवीरः। उच्यसे॥६॥**

**पदार्थः-(नयसि)** प्राप्नोषि प्रापयसि वा **(इत्)** एव **(उ)** **(अति)** **(द्विषः)** ये द्विषन्ति तान् **(कृणोषि)** **(उक्थशंसिनः)** वेदप्रकाशकरणशीलान् **(नृभिः)** नायकैः **(सुवीरः)** शोभना वीरा यस्य सः **(उच्यसे)**॥६॥

**अन्वयः**-हे राजन्! यतस्त्वं द्विष उक्थशंसिनः कृणोष्युपायमुल्लङ्घयित्वा धर्ममति नयस्यु नृभिः सुवीरः सर्वान् प्रत्युच्यसे तस्मादिन्माननीयोऽसि॥६॥

**भावार्थः-**हे राजन्! यदि भवान् विनयवान् विद्वान् भवेत्तर्हि वेदधर्मद्वेष्टॄनपि वेदोक्तधर्मप्रियानुपदेशेन विनयेन वा कर्तुं शक्नोति॥६॥

**पदार्थः-**हे राजन्! जिससे आप **(द्विषः)** द्वेष करने वालों को **(उक्थसंसिनः)** वेद की प्रशंसा करने वाले को **(कृणोषि)** करते हो और उपाय का उल्लङ्घन करके धर्म्म को **(अति, नयसि)** अत्यन्त प्राप्त होते वा प्राप्त करते हो **(उ)** और **(नृभिः)** नायक अग्रणी मनुष्यों से **(सुवीरः)** श्रेष्ठ वीरों से युक्त हुए सब के प्रति **(उच्यते)** उपदेश किये जाते हो इससे **(इत्)** ही आदर करने योग्य हो॥६॥

**भावार्थः-**हे राजन्! जो आप नम्रतायुक्त, विद्वान् होवे तो वेद में कहे हुए धर्म्म से द्वेष करने वालों को भी उपदेश वा विनय से वेदोक्त धर्म्म में प्रीति करने वाले कर सकते हो॥६॥

**पुनर्मनुष्यैः किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**ब्रह्माणं ब्रह्मवाहसं गीर्भिः सखायमृग्मियम्। गां न दोहसे हुवे॥७॥**

**ब्रह्माणम्। ब्रह्मऽवाहसम्। गीःऽभिः। सखायम्। ऋग्मियम्। गाम्। न। दोहसे। हुवे॥७॥**

**पदार्थः-(ब्रह्माणम्)** चतुर्वेदविदम् **(ब्रह्मवाहसम्)** वेदानां शब्दार्थसम्बन्धस्वराणां प्रापकम् **(गीर्भिः)** सुशिक्षिताभिर्मधुराभिः सत्याभिर्वाग्भिः **(सखायम्)** सर्वेषां मित्रम् **(ऋग्मियम्)** स्तुतिभिः स्तवनीयम् **(गाम्)** दुग्धदात्रीं धेनुम् **(न)** इव **(दोहसे)** दोग्धुम् **(हुवे)** आह्वयामि प्रशंसामि च॥७॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे राजन्! यथाहं गीर्भिर्दोहसे गां न सखायमृग्मियं ब्रह्मवाहसं ब्रह्माणं हुवे तथैनं भवानाह्वयतु॥७॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यथा विद्वांसो वेदपारमाप्तं विद्वांसमाश्रित्य सभ्या विपश्चितो जायन्ते तथैतेषां सङ्गेन यूयमपि विद्वांसश्चतुरा वा भवत॥७॥

**पदार्थः**-हे राजन्! जैसे मैं **(गीर्भिः)** सुशिक्षायुक्त, मधुर, सत्यवाणियों से **(दोहसे)** दोहने पूरण करने को **(गाम्)** गौ के **(न)** समान **(सखायम्)** सब के मित्र **(ऋग्मियम्)** स्तुतियों से स्तुति करने योग्य **(ब्रह्मवाहसम्)** वेदों के शब्दार्थ सम्बन्ध और स्वरों के कराने वाले **(ब्रह्माणम्)** चतुर्वेदवेत्ता विद्वान् को **(हुवे)** बुलाता और उसकी प्रशंसा करता हूँ, वैसे इसको आप बुला और उसकी प्रशंसा करो॥७॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जैसे विद्वान् जन वेदपारगन्ता, आप्त, विद्वान् का आश्रय लेकर सभ्य विपश्चित् होते हैं, वैसे इनके सङ्ग से तुम भी विद्वान् वा चतुर होओ॥७॥

**पुनः किं कृत्वा राजैश्वर्यं प्राप्नुयादित्याह॥**

फिर क्या करके राजा ऐश्वर्य्य को प्राप्त होवे, इस विषय को कहते हैं॥

**यस्य॒ विश्वा॑नि॒ हस्त॑योरू॒चुर्वसू॑नि॒ नि द्वि॒ता। वी॒रस्य॑ पृतना॒षहः॑॥८॥**

**यस्य॑। विश्वा॑नि। हस्त॑योः। ऊ॒चुः। वसू॑नि। नि। द्वि॒ता। वी॒रस्य॑। पृ॒तना॒ऽसहः॑॥८॥**

**पदार्थः**-**(यस्य)** राजादेर्विदुषः **(विश्वानि)** सर्वाणि **(हस्तयोः)** **(ऊचुः)** वदन्ति **(वसूनि)** द्रव्याणि **(नि)** निश्चितम् **(द्विता)** द्वयो राजप्रजयोरुपदेशकोपदेश्योर्वा भावः **(वीरस्य)** शत्रुबलमभिव्याप्तुं शीलस्य **(पृतनाषहः)** ये पृतनां शत्रुसेनां सहन्ते ते॥८॥

**अन्वयः**-हे विद्वांसो! यस्य वीरस्य हस्तयोर्विश्वानि वसूनि पृतनाषहो न्यूचुस्तेन सह द्विता रक्षताम्॥८॥

**भावार्थः**-यदि राजा विद्याविनयाभ्यां पुत्रवत्प्रजाः पालयेत्तर्हि सर्वमैश्वर्यमखिलं सुखं च तदधीनमेव भवेद्येनोत्तमानमात्यान् प्रशंसितां सेनां प्राप्य राजा प्रजाजनानां कल्याणं कर्तुं शक्नोति॥८॥

**पदार्थः**-हे विद्वान् जनो! **(यस्य)** जिस राजादि विद्वान् **(वीरस्य)** शत्रु के बल को दबाने वाले के **(हस्तयोः)** हाथों में **(विश्वानि)** सम्पूर्ण **(वसूनि)** द्रव्यों को **(पृतनाषहः)** शत्रुओं की सेना को सहने वाले **(नि)** निश्चित **(उचुः)** कहते हैं उसके साथ **(द्विता)** दोनों-राजा और प्रजा तथा उपदेश देने वाले और उपदेश देने योग्यपने की रक्षा करो॥८॥

**भावार्थः**-जो राजा विद्या और विनय से पुत्र के सदृश प्रजाओं की पालना करे तो सम्पूर्ण ऐश्वर्य्य और सम्पूर्ण सुख उसके आधीन ही होवे, जिससे उत्तम मन्त्री और प्रशंसित सेना को प्राप्त होकर राजा प्रजाजनों के कल्याण को कर सकता है॥८॥

**पुनर्मनुष्याः किं निवार्य किं प्राप्नुयिरित्याह॥**

फिर मनुष्य किसका निवारण करके किसको प्राप्त होवें, इस विषय को कहते हैं॥

**वि दृ॒ळ्हानि॑ चिदद्रिवो॒ जना॑नां शचीपते। वृ॒ह मा॒या अ॑नानत॥९॥**



www.9009.co.in

वि। दृळ्हानि। चित्। अद्रिऽवः। जनानाम्। शचीऽपते। वृह। मायाः। अनानत॥ ९॥

**पदार्थः**-(**वि**) (**दृळ्हानि**) निश्चितानि (**चित्**) अपि (**अद्रिवः**) मेघकरसूर्यवद्वर्त्तमान (**जनानाम्**) मनुष्याणाम् (**शचीपते**) प्रजास्वामिन् (**वृह**) उच्छिन्धि (**मायाः**) कपटानि (**अनानत**) शत्रूणां समीपे नम्रतारहित॥ ९॥

**अन्वयः**-हे अद्रिवोऽनानत शचीपते! त्वं माया वृह चिदपि जनानां दृळ्हानि सैन्यानि सम्पाद्य शत्रून् वि वृह॥ ९॥

**भावार्थः**-स एव राजाऽऽचार्योऽध्यापको वोत्तमः स्याद्यो छलादिदोषान्निवार्य्य मनुष्यान् धर्माचारान्त्सततं कुर्यात्॥ ९॥

**पदार्थः**-हे (**अद्रिवः**) मेघों के करने वाले सूर्य्य के सदृश वर्त्तमान (**अनानत**) शत्रुओं के समीप में नम्रता से रहित (**शचीपते**) प्रजा के स्वामिन्! आप (**मायाः**) कपटों को (**वृह**) काटो और (**चित्**) भी (**जनानाम्**) मनुष्यों की (**दृळ्हानि**) निश्चित सेनाओं को करके शत्रुओं का (**वि**) विशेष करके नाश करिये॥ ९॥

**भावार्थः**-वह राजा, आचार्य्य वा अध्यापक उत्तम होवे, जो छल आदि दोषों का निवारण करके मनुष्यों को धर्म्म के आचरण से युक्त निरन्तर करे॥ ९॥

**पुना राजप्रजाजनाः परस्परं कथं वर्तेयुरित्याह॥**

फिर राजा और प्रजाजन परस्पर कैसा वर्त्ताव करें, इस विषय को कहते हैं॥

**तमु त्वा सत्य सोमपा इन्द्र वाजानां पते। अहूमहि श्रवस्यवः॥ १०॥ २२॥**

**तम्। ऊँ इति। त्वा। सत्य। सोमऽपाः। इन्द्र। वाजानाम्। पते। अहूमहि। श्रवस्यवः॥ १०॥**

**पदार्थः**-(**तम्**) (**उ**) (**त्वा**) त्वाम् (**सत्य**) सत्सु साधो (**सोमपाः**) यः सोममैश्वर्यं पाति तत्सम्बुद्धौ (**इन्द्र**) परमैश्वर्यप्रद (**वाजानाम्**) विज्ञानान्नादीनाम् (**पते**) पालक स्वामिन् (**अहूमहि**) प्रशंसेम (**श्रवस्यवः**) य आत्मनः श्रवोऽन्नादिकमिच्छवः॥ १०॥

**अन्वयः**-हे सत्य सोमपा वाजानां पत इन्द्र! श्रवस्यवो वयं त्वाऽहूमहि तथा तमु सर्व आह्वयन्तु॥ १०॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे राजन् वा विद्वान्! भवाञ्छुभगुणकर्मस्वभावः प्रजापालनतत्परः सुशीलो जितेन्द्रियो यावद् भविष्यति तावद्वयं त्वां मंस्यामहे॥ १०॥

**पदार्थः**-हे (**सत्य**) श्रेष्ठों में श्रेष्ठ (**सोमपाः**) ऐश्वर्य की रक्षा करने तथा (**वाजानाम्**) विज्ञान और अन्न आदिकों के (**पते**) पालने और (**इन्द्र**) अत्यन्त ऐश्वर्य के देने वाले! (**श्रवस्यवः**) अपने अन्न आदि की इच्छा करने वाले हम लोग (**त्वा**) आपकी (**अहूमहि**) प्रशंसा करें, वैसे (**तम्, उ**) उन्हीं को सब लोग पुकारें॥ १०॥



www.9009.co.in

**भावार्थ:-**इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे राजन् वा विद्वन्! आप श्रेष्ठ गुण, कर्म्म और स्वभाव से युक्त होकर प्रजा के पालन में तत्पर सुशील और इन्द्रियों के जीतने वाले जब तक होंगे तबतक हम लोग आपको मानेंगे॥१०॥

**पुना राजप्रजाजना: परस्परं कथं वर्त्तेरन्नित्याह॥**

फिर राजा और प्रजाजन परस्पर कैसा वर्त्ताव करें, इस विषय को कहते हैं॥

**तमु त्वा यः पुरासिथ यो वा नूनं हिते धने। हव्यः स श्रुधी हवम्॥११॥**

**तम्। ऊँ इति। त्वा। यः। पुरा। आसिथ। यः। वा। नूनम्। हिते। धने। हव्यः। सः। श्रुधि। हवम्॥११॥**

**पदार्थ:-(तम्) (उ) (त्वा)** त्वाम् **(यः) (पुरा)** प्रथमतः **(आसिथ) (यः) (वा) (नूनम्)** निश्चितम् **(हिते)** सुखकरे **(धने) (हव्यः)** आह्वयितुं योग्यः **(सः) (श्रुधी)** अत्र **द्व्यचोऽतस्तिङ** इति दीर्घः। **(हवम्)** वार्त्ताम्॥११॥

**अन्वय:-**हे राजन्! यस्त्वं हिते धने पुराऽऽसिथ यो वा नूनं हिते धने हव्योऽसि तमु त्वा वयं श्रावयेम स त्वमस्माकं हवं श्रुधी॥११॥

**भावार्थ:-**हे मनुष्या! यो राजा सर्वेषां हितमिच्छेत् सर्वान् धनैश्वर्य्ययुक्तान् करोति स सबलनिर्बलानां वार्त्ता: प्रीत्या श्रुत्वा यथार्थं न्यायं करोति तमेव सर्वे सततं सत्कुर्वन्तु॥११॥

**पदार्थ:-**हे राजन्! **(यः)** जो आप **(हिते)** सुखकारक **(धने)** धन में **(पुरा)** प्रथम से **(आसिथ)** थे और **(यः)** जो **(वा)** वा **(नूनम्)** निश्चित सुखकारक धन में **(हव्यः)** पुकारने के योग्य हो **(तम्, उ)** उन्हीं **(त्वा)** आपको हम लोग सुनावें **(सः)** वह आप हम लोगों की **(हवम्)** बात को **(श्रुधी)** सुनिये॥११॥

**भावार्थ:-**हे मनुष्यो! जो राजा सब के हित की इच्छा करे और सब को धन और ऐश्वर्य्य से युक्त करता है, वह बलिष्ठ और निर्बलों की बातों की प्रीति से सुन कर यथार्थ न्याय करता है, उसी का सब लोग निरन्तर सत्कार करें॥११॥

**पुना राजादिभि: किं प्राप्य किं प्रापणीयमित्याह॥**

फिर राजा आदिकों को क्या प्राप्त करके क्या प्राप्त करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**धीभिरर्वद्भिरर्वतो वाजाँ इन्द्र श्रवाय्यान्। त्वया जेष्म हितं धनम्॥१२॥**

**धीभिः। अर्वत्ऽभिः। अर्वतः। वाजान्। इन्द्र। श्रवाय्यान्। त्वया। जेष्म। हितम्। धनम्॥१२॥**

**पदार्थ:-(धीभिः)** प्रज्ञाभिः कर्मभिर्वा **(अर्वद्भिः)** अश्वैः **(अर्वतः)** अश्वानिव **(वाजान्)** वेगवतः **(इन्द्र)** शत्रुविदारक **(श्रवाय्यान्)** श्रोतुमिष्टान् **(त्वया)** स्वामिना सह **(जेष्म)** जयेम **(हितम्)** सुखकारकम् **(धनम्)**॥१२॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे इन्द्र! यथा वयं धीभिरर्वद्भिर्वाजाञ्छ्रवाय्यानर्वतः प्राप्य त्वया सह हितं धनं जेष्म तथा भवानस्माभिः सह सुखेन वर्त्तताम्॥१२॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यदा राजादयो जना ऐकमत्यं विधायोत्तमानि सेनाङ्गानि सम्पाद्याऽन्यायकारिणो दुष्टाञ्जित्वा न्यायप्राप्तेन धनेन सर्वहितं कुर्युस्तदैव स्वहितसिद्धा जायेरन्॥१२॥

**पदार्थः**-हे **(इन्द्र)** शत्रुओं के नाश करनेवाले! जैसे हम लोग **(धीभिः)** बुद्धियों वा कर्म्मों से **(अर्वद्भिः)** शब्द करते हुए घोड़ों से **(वाजान्)** वेगयुक्त **(श्रवाय्यान्)** सुनने को इष्ट **(अर्वतः)** घोड़ों के सदृश प्राप्त होकर **(त्वया)** आपके साथ **(हितम्)** सुखकारक **(धनम्)** धन को **(जेष्म)** जीतें, वैसे आप हम लोगों के साथ सुख से वर्त्ताव करो॥१२॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जब राजा आदि जन एक सम्मति कर उत्तम सेना के अङ्गों को सम्पादन कर और अन्यायकारी दुष्टों को जीत कर न्याय से प्राप्त हुए धन से सब का हित करें, तभी अपने हित की सिद्धि से युक्त होवें॥१२॥

**पुनः स राजा किं कुर्य्यादित्याह॥**

फिर वह राजा क्या करे, इस विषय को कहते हैं॥

**अभू॑रु वीर गिर्वणो म॒हाँ इ॑न्द्र॒ धने॑ हि॒ते भरे॑ वितन्त॒साय्यः॑॥१३॥**

**अभूः॑। ऊँ इति॑। वी॒र॒। गि॒र्व॒णः॒। म॒हान्। इ॒न्द्र॒। धने॑। हि॒ते। भरे॑। वि॒त॒न्त॒साय्यः॑॥१३॥**

**पदार्थः**-**(अभूः)** भवेः **(उ)** **(वीर)** शौर्य्यादिगुणोपेत **(गिर्वणः)** यो गीर्भिर्वन्यते याच्यते तत्सम्बुद्धौ **(महान्)** महाशयः **(इन्द्र)** परमैश्वर्य्यप्रद **(धने)** **(हिते)** सुखकारके **(भरे)** सङ्ग्रामे **(वितन्तसाय्यः)** यो वितन्तस्यतिविजयेऽस्ति सः॥१३॥

**अन्वयः**-हे गिर्वणो वीरेन्द्र! त्वा महान् वितन्तसाय्यः सन् हिते धन उ भरे विजेताऽभूः॥१३॥

**भावार्थः**-यदि राजा सर्वहितं प्रेप्सुः पुरुषज्ञानी कृतज्ञो योद्धप्रियो भवेत्तस्य सदैव विजयेन प्रतिष्ठैश्वर्ये वर्धेयाताम्॥१३॥

**पदार्थः**-हे **(गिर्वणः)** वाणियों से याचना किये गये **(वीर)** शूरता आदि गुणों से युक्त **(इन्द्र)** अत्यन्त ऐश्वर्य्य के देने वाले! आप **(महान्)** महाशय **(वितन्तसाय्यः)** अत्यन्त विजय में होने वाले हुए **(हिते)** सुखकारक **(धने)** धन में **(उ)** और **(भरे)** सङ्ग्राम में जीतने वाले **(अभूः)** हूजिये॥१३॥

**भावार्थः**-जो राजा सब के हित के प्राप्त होने की इच्छा करता हुआ पुरुषों में ज्ञानी, किये हुए को जानने वाला और योद्धाओं का प्रिय होवे, उसके सदा ही विजय से प्रतिष्ठा और ऐश्वर्य्य बढ़े॥१३॥

**पुना राजा किं कुर्य्यादित्याह॥**

फिर राजा क्या करे इस विषयको कहते हैं॥

**या त॑ ऊ॒तिर॑मित्रहन् म॒क्षूज॑वस्त॒मास॑ति। तया॑ नो हिनु॒ही रथ॑म्॥१४॥**



www.9009.co.in

या। ते। ऊतिः। अमित्रऽहन्। मक्षुजवःऽतमा। असति। तया। नः। हिनुहि। रथम्॥ १४॥

**पदार्थः**-(**या**) (**ते**) तव (**ऊतिः**) रक्षाद्या क्रिया (**अमित्रहन्**) अरिहन् (**मक्षूजवस्तमा**) सद्योऽतिशयेन वेगयुक्ता (**असति**) भवेत् (**तया**) (**नः**) (**हिनुही**) वर्धय। अत्र **संहितायामि**ति दीर्घः। (**रथम्**) विमानादियानम्॥ १४॥

**अन्वयः**-हे अमित्रहन्! या ते मक्षूजवस्तमोतिरसति तया नो रथं प्रापय्य हिनुही॥ १४॥

**भावार्थः**-यो राजा वेगादिगुणयुक्तया रक्षया प्रजाः प्रसाद्योन्नयेत् स एव सततं वर्धेत॥ १४॥

**पदार्थः**-हे (**अमित्रहन्**) शत्रुओं के मारने वाले (**या**) जो (**ते**) आपकी (**मक्षूजवस्तमा**) शीघ्र अतिशय वेग से युक्त (**ऊतिः**) रक्षा आदि क्रिया (**असति**) होवे (**तया**) उससे (**नः**) हम लोगों की (**रथम्**) विमान आदि वाहन को प्राप्त कराके (**हिनुही**) वृद्धि कीजिये॥ १४॥

**भावार्थः**-जो राजा वेग आदि गुणों से युक्त रक्षा से प्रजाओं को प्रसन्न करके उन्नति करे, वही निरन्तर वृद्धि को प्राप्त होवे॥ १४॥

**पुनः स राजा केन किं जयेदित्याह॥**

फिर वह राजा किससे किसको जीते, इस विषय को कहते हैं॥

**स रथेन रथीतमोऽस्माकेनाभियुग्वना। जेषि जिष्णो हितं धनम्॥ १५॥ २३॥**

सः। रथेन। रथिऽतमः। अस्माकेन। अभिऽयुग्वना। जेषि। जिष्णो इति। हितम्। धनम्॥ १५॥

**पदार्थः**-(**सः**) (**रथेन**) (**रथीतमः**) बहवो रथा विद्यन्ते यस्य सोऽतिशयितः (**अस्माकेन**) अस्मदीयेन (**अभियुग्वना**) योऽभियुज्यते वन्यते विभज्यते तेन (**जेषि**) जयसि। अत्र शपो लुक्। (**जिष्णो**) जयशील (**हितम्**) प्रवृद्धम् (**धनम्**)॥ १५॥

**अन्वयः**-हे जिष्णो! स रथीतमस्त्वमभियुग्वनाऽस्माकेन रथेन हितं धनं जेषि तस्मात् प्रशंसनीयो भवसि॥ १५॥

**भावार्थः**-यो राजा प्रशंसनीयेन वाहनादिना बहु धनं जयति स प्रशंसनीयो भवति॥ १५॥

**पदार्थः**-हे (**जिष्णो**) जीतने वाले (**सः**) वह (**रथीतमः**) अतिशय करके बहुत रथों वाले आप (**अभियुग्वना**) विभक्त होने वाले (**अस्माकेन**) हमारे (**रथेन**) वाहन से (**हितम्**) प्रवृद्ध (**धनम्**) धन को (**जेषि**) जीतते हो, इससे प्रशंसा करने योग्य होते हो॥ १५॥

**भावार्थः**-जो राजा प्रशंसनीय वाहन आदि से बहुत धन को जीतता है, वह प्रशंसनीय होता है॥ १५॥

**पुनः स राजा कीदृशो भवेदित्याह॥**

फिर वह राजा कैसा होवे, इस विषय को कहते हैं॥

**य एक इत्तमु ष्टुहि कृष्टीनां विचर्षणिः। पतिर्जज्ञे वृषक्रतुः॥ १६॥**

यः। एकः। इत्। तम्। ऊँ इति। स्तुहि। कृष्टीनाम्। विऽचर्षणिः। पतिः। जज्ञे। वृषऽक्रतुः॥ १६॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**यः**) (**एकः**) असहायः (**इत्**) एव (**तम्**) वीरपुरुषम् (उ) (**स्तुहि**) प्रशंसय (**कृष्टीनाम्**) मनुष्याणाम् (**विचर्षणिः**) विचक्षणो द्रष्टा (**पतिः**) स्वामी (**जज्ञे**) जायते (**वृषक्रतुः**) वृषा बलवती क्रतुः प्रज्ञा यस्य सः॥१६॥

**अन्वयः**-हे मनुष्य! य एक इत्कृष्टीनां पतिर्विचर्षणिर्वृषक्रतुर्जज्ञे तमु स्तुहि॥१६॥

**भावार्थः**-हे प्रजाजना योऽखिलविद्यः शुभगुणकर्मस्वभावः सततं न्यायेन प्रजापालनतत्परः स्यात्तमेव राजानं मन्यध्वं नेतरं क्षुद्राशयम्॥१६॥

**पदार्थः**-हे मनुष्य! (**यः**) जो (**एकः**) सहायरहित (**इत्**) ही (**कृष्टीनाम्**) मनुष्यों का (**पतिः**) स्वामी (**विचर्षणिः**) देखने वाला (**वृषक्रतुः**) बलयुक्त बुद्धि वाला (**जज्ञे**) होता है (**तम्**) उस वीर पुरुष की (उ) ही (**स्तुहि**) प्रशंसा करिये॥१६॥

**भावार्थः**-हे प्रजाजनो! जो सम्पूर्ण विद्या और श्रेष्ठ गुण, कर्म, स्वभाव वाला निरन्तर न्याय से प्रजाओं के पालन में तत्पर होवे, उसको राजा मानो, दूसरे क्षुद्राशय को नहीं॥१६॥

**पुनः स राजा कीदृग्भवेदित्याह॥**

फिर वह राजा कैसा होवे, इस विषय को कहते हैं॥

**यो गृणतामिदासिथापिरूती शिवः सखा। स त्वं न इन्द्र मृळय॥१७॥**

**यः। गृणताम्। इत्। आसिथ। आपिः। ऊती। शिवः। सखा। सः। त्वम्। नः। इन्द्र। मृळय॥१७॥**

**पदार्थः**-(**यः**) (**गृणताम्**) प्रशंसकानाम् (**इत्**) एव (**आसिथ**) भवसि (**आपिः**) शुभगुणव्यापकः (**ऊती**) ऊत्या रक्षणादिक्रियया (**शिवः**) मङ्गलकारी (**सखा**) सुहृद् (**सः**) (**त्वम्**) (**नः**) अस्मानस्माकं वा (**इन्द्र**) दुःखविदारक (**मृळय**) सुखय ॥१७॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र राजन्! यो गृणतां न आपिश्शिवः सखाऽऽसिथ स इत्त्वमूती नो मृळय॥१७॥

**भावार्थः**-हे राजन्! यदि त्वमजातशत्रुर्विश्वमित्रः सर्वस्य मङ्गलकारी प्रजासु भवेस्तर्हि सद्यो धर्मार्थकाममोक्षान् साध्नुयाः॥१७॥

**पदार्थः**-हे (**इन्द्र**) दुःखों के नाश करने वाले राजन्! (**यः**) जो (**गृणताम्**) प्रशंसा करने वाले (**नः**) हम लोगो के (**आपिः**) श्रेष्ठ गुणों से व्यापक (**शिवः**) मङ्गलकारी (**सखा**) मित्र (**आसिथ**) होते हो (**सः इत्**) वही (**त्वम्**) आप (**ऊती**) रक्षण आदि क्रिया से हम लोगों को (**मृळय**) सुखी करो॥१७॥

**भावार्थः**-हे राजन्! जो आप शत्रुरहित और संसार के मित्र, सब के मङ्गल करने वाले प्रजाओं में हूजिये तो शीघ्र धर्म्म, अर्थ, काम और मोक्ष को सिद्ध करिये॥१७॥

**पुना राजादयः किं ध्यात्वां किं कुर्य्युरित्याह॥**

फिर राजा आदि क्या ध्यान करके क्या करें, इस विषय को कहते हैं॥

**धिष्व वज्रं गभस्त्यो रक्षोहत्याय वज्रिवः। सासहीष्ठा अभि स्पृधः॥१८॥**



www.9009.co.in

**धि॒ष्व। वज्र॑म्। गभ॑स्त्योः। र॒क्षः॒ऽहत्या॑य। व॒ज्रि॒ऽव॒ः। सा॒स॒ही॒ष्ठाः। अ॒भि। स्पृध॑ः॥ १८॥**

**पदार्थः**-(**धिष्व**) धेहि (**वज्रम्**) शस्त्रास्त्रसमूहम् (**गभस्त्योः**) हस्तयोर्मध्ये (**रक्षोहत्याय**) दुष्टानां हननाय (**वज्रिवः**) प्रशस्तशस्त्रास्त्रप्रयोगकुशल (**सासहीष्ठाः**) भृशं सहेथाः (**अभि**) आभिमुख्ये (**स्पृधः**) स्पर्हणीयान्त्सङ्ग्रामान्॥ १८॥

**अन्वयः**-हे वज्रिव इन्द्र राजंस्त्वं रक्षोहत्याय गभस्त्योर्वज्रं धिष्व स्पृधोऽभि सासहीष्ठाः॥ १८॥

**भावार्थः**-हे राजन्त्सेनाजना वा यूयं शस्त्रास्त्रप्रयोगेषु कुशला भूत्वा दस्य्वादीन् शत्रून् हत्वा सहनशीला भवत॥ १८॥

**पदार्थः**-हे (**वज्रिवः**) प्रशंसित शस्त्र और अस्त्रों के चलाने में चतुर और अत्यन्त ऐश्वर्य्य से युक्त राजन्! आप (**रक्षोहत्याय**) दुष्टों के मारने के लिये (**गभस्त्योः**) हाथों के मध्य में (**वज्रम्**) शस्त्र और अस्त्रों के समूह को (**धिष्व**) धारण करिये तथा (**स्पृधः**) स्पृहा करने योग्य सङ्ग्रामों के (**अभि**) सन्मुख (**सासहीष्ठाः**) अत्यन्त सहिये॥ १८॥

**भावार्थः**-हे राजन् वा सेना के जनो! आप लोग शस्त्र और अस्त्रों के चलाने में चतुर होकर डाकू आदि शत्रुओं का नाश करके सहनशील हूजिये॥ १८॥

**मनुष्याः कीदृशं जनं प्रशंसेयुरित्याह॥**

मनुष्य कैसे जन की प्रशंसा करें, इस विषय को कहते हैं॥

**प्र॒त्नं र॑यी॒णां यु॒जं सखा॑यं कीरि॒चोद॑नम्। ब्रह्म॑वाहस्तमं हुवे॥ १९॥**

**प्र॒त्नम्। र॒यी॒णाम्। यु॒जम्। सखा॑यम्। की॒रि॒ऽचोद॑नम्। ब्रह्म॑वाहःऽतमम्। हु॒वे॥ १९॥**

**पदार्थः**-(**प्रत्नम्**) प्राचीनम् (**रयीणाम्**) धनानाम् (**युजम्**) योजकम् (**सखायम्**) सर्वसुहृदम् (**कीरिचोदनम्**) कीरीणां विद्यार्थिनां प्रेरकम् (**ब्रह्मवाहस्तमम्**) अतिशयेन वेदेश्वरविद्याप्रापकम् (**हुवे**) स्तौमि॥ १९॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथाऽहं रयीणां युजं कीरिचोदनं ब्रह्मवाहस्तमं प्रत्नं सखायं हुवे तथैनं यूयमपि प्रशंसत॥ १९॥

**भावार्थः**-ये सार्वजनहितसम्पादकं विद्वत्तमं सत्यग्रहणायाऽसत्यत्यागायऽध्यापनोपदेशाभ्यां प्रेरकं स्थिरमित्रं सत्कृत्य प्रशंसन्ति त एव गुणग्राहका भवन्ति॥ १९॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे मैं (**रयीणाम्**) धनों के (**युजम्**) युक्त कराने वाले (**कीरिचोदनम्**) विद्यार्थियों के प्रेरक (**ब्रह्मवाहस्तमम्**) अतिशय वेद और ईश्वर की जो विद्या उसके प्राप्त कराने वाले (**प्रत्नम्**) प्राचीन (**सखायम्**) सब के मित्र की (**हुवे**) स्तुति करता हूँ, वैसे इसकी आप लोग भी प्रशंसा करो॥ १९॥



www.9009.co.in

**भावार्थ:-**जो सम्पूर्ण जनों के हितकारक, अत्यन्त विद्वान्, सत्य के ग्रहण और असत्य के त्याग के लिये अध्यापन और उपदेश से प्रेरणा करने वाले, स्थिर मित्र का सत्कार करके प्रशंसा करते हैं, वे ही गुणग्राहक होते हैं॥१९॥

**पुनर्मनुष्यै: कीदृशो राजा कर्त्तव्य इत्याह॥**

फिर मनुष्यों को कैसा राजा करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**स हि विश्वा॑नि॒ पार्थि॑वाँ॒ एको॒ वसू॑नि॒ पत्य॑ते। गिर्व॑णस्तमो॒ अध्रि॑गुः॥२०॥२४॥**

**सः। हि। विश्वा॑नि। पार्थि॑वा। एकः॑। वसू॑नि। पत्य॑ते। गिर्व॑णःऽतमः। अध्रि॑ऽगुः॥२०॥**

**पदार्थ:-**(**स:**) (**हि**) यत: (**विश्वानि**) (**पार्थिवा**) पृथिव्यां विदितानि (**एक:**) असहाय: (**वसूनि**) द्रव्याणि (**पत्यते**) पतिरिवाचरति (**गिर्वणस्तम:**) अतिशयेन वाग्भि: प्रशंसनीय: (**अध्रिगु:**) सत्यगति:॥२०॥

**अन्वय:-**हे मनुष्या:! स ह्येको गिर्वणस्तमोऽध्रिगू राजा विश्वानि पार्थिवा वसूनि पत्यतेऽतोऽस्माभि: सत्कर्तव्योऽस्ति॥२०॥

**भावार्थ:-**हे मनुष्या! योऽद्वितीयबुद्धिविद्य: पृथिव्यादिपदार्थविद्यावित्प्रशंसनीयगुणकर्मस्वभाव: सत्याचारी जनो भवेत्तमेव राजानं कुरुत॥२०॥

**पदार्थ:-**हे मनुष्यो! (**स:**) वह (**हि**) जिससे (**एक:**) सहायरहित (**गिर्वणस्तम:**) अतिशयित वाणियों से प्रशंसा करने योग्य (**अध्रिगु:**) सत्यगमन वाला राजा (**विश्वानि**) समस्त (**पार्थिवा**) पृथिवी में जाने हुए (**वसूनि**) द्रव्यों को (**पत्यते**) स्वामी के सदृश आचरण करता है, इससे हम लोगों से सत्कार करने योग्य है॥२०॥

**भावार्थ:-**हे मनुष्यो! जो विलक्षण बुद्धि और विद्या से युक्त, पृथिवी आदि पदार्थों की विद्या का जानने वाला, प्रशंसा करने योग्य गुण, कर्म, और स्वभावयुक्त और सत्य आचरण करने वाला जन होवे, उसी को राजा करो॥२०॥

**पुना राजप्रजाजना परस्परं किमलङ्कुर्य्युरित्याह॥**

फिर राजा और प्रजाजन परस्पर किसकी शोभा करें, इस विषय को कहते हैं॥

**स नो॑ नि॒युद्भि॒रा पृ॑ण॒ कामं॒ वाजे॑भिर॒श्विभिः॑। गोम॑द्भि॒र्गोपते धृ॒षत्॥२१॥**

**सः। नः॒। नि॒युत्ऽभिः॑। आ। पृ॒ण॒। काम॑म्। वाजे॑भिः। अ॒श्विऽभिः॑। गोम॑त्ऽभिः। गो॒ऽप॒ते॒। धृ॒षत्॥२१॥**

**पदार्थ:-**(**स:**) (**न:**) अस्माकम् (**नियुद्भि:**) निश्चितहेतुभि: (**आ**) समन्तात् (**पृण**) पूरय (**कामम्**) (**वाजेभि:**) विज्ञानान्नादिकारिभि: (**अश्विभि:**) सूर्य्याचन्द्रमआदिभि: (**गोमद्भि:**) प्रशस्तभूमिधेनुवाग्युक्तै: (**गोपते**) गवां स्वामिन् (**धृषत्**) प्रगल्भ: सन्॥२१॥

**अन्वय:-**हे गोपते! स धृषत्त्वं वाजेभिर्नियुद्भिर्गोमद्भिरश्विभिर्न: कामम् आ पृण॥२१॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-हे राजन्! यदि त्वमस्माकं कामनां पूरयेस्तर्हि वयमपि तवेच्छां पूरयेम॥१॥

**पदार्थः**-हे **(गोपते)** इन्द्रियों के स्वामिन्! **(सः)** वह **(धृषत्)** ढीठ, धर्षण करने वाले आप **(वाजेभिः)** विज्ञान और अन्न आदि के करने वाले **(नियुद्भिः)** निश्चित कारण तथा **(गोमद्भिः)** प्रशंसित भूमि, गौ और वाणी से युक्त **(अश्वभिः)** सूर्य्य और चन्द्रमा आदिकों से **(नः)** हम लोगों के **(कामम्)** मनोरथ की **(आ)** सब प्रकार से **(पृण)** पूर्त्ति करिये॥२१॥

**भावार्थः**-हे राजन्! जो आप हम लोगों के मनोरथ की पूर्त्ति करिये तो हम लोग भी आपकी इच्छा की पूर्त्ति करें॥२१॥

**पुनर्मनुष्याः कस्मै किं कुर्य्युरित्याह॥**

फिर मनुष्य किसके लिये क्या करें, इस विषय को कहते हैं॥

**तद्वो गाय सुते सचा पुरुहूताय सत्वने। शं यद्गवे न शाकिने॥२२॥**

**तत्। वः। गाय। सुते। सचा। पुरुऽहूताय। सत्वने। शम्। यत्। गवे। न। शाकिने॥२२॥**

**पदार्थः**-**(तत्)** ते **(वः)** युष्मभ्यम् **(गाय)** स्तुहि **(सुते)** उत्पन्नेऽस्मिञ्जगति **(सचा)** समवेतेन सत्येन **(पुरुहूताय)** बहुभिः प्रशंसिताय **(सत्वने)** शुद्धान्तःकरणाय **(शम्)** **(यत्)** ये **(गवे)** स्तावकाय **(न)** इव **(शाकिने)** शक्तिमते॥२२॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यद्वः प्रशंसन्ति तच्छाकिने गवे न सुते सचा पुरुहूताय सत्वने स्युस्तान् हे इन्द्र! त्वं शं गाय॥२॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। यथा सर्वविद्यापारगस्याऽध्यापनोपदेशेन कर्मणा सर्वेषां मङ्गलं वर्धते तथैवोत्तमेन राज्ञा प्रजासुखमुन्नतं भवति॥२२॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(यत्)** जो **(वः)** आप लोगों के लिये प्रशंसा करते हैं **(तत्)** वे **(शाकिने)** सामर्थ्ययुक्त **(गवे)** स्तुति करने वाले के लिये **(न)** जैसे वैसे **(सुते)** उत्पन्न हुए इस संसार में **(सचा)** संयुक्त सत्य से **(पुरुहूताय)** बहुतों से प्रशंसित **(सत्वने)** शुद्ध अन्तःकरण वाले के लिये हों उनकी हे **(इन्द्र)** ऐश्वर्य्य से युक्त! आप **(शम्)** सुखपूर्वक **(गाय)** स्तुति कीजिये॥२२॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जैसे सम्पूर्ण विद्याओं के पार जाने वाले के अध्यापन और उपदेशरूप कर्म्म से सब का मङ्गल बढ़ता है, वैसे ही उत्तम राजा से प्रजा का सुख उन्नत होता है॥२२॥

**पुना राजप्रजाजनाः परस्परं कथं वर्त्तेरन्नित्याह॥**

फिर राजा प्रजाजन परस्पर कैसा वर्त्ताव करें, इस विषय को कहते हैं॥

**न घा वसुर्नि यमते दानं वाजस्य गोमतः। यत्सीमुप श्रवद्गिरः॥२३॥**

**न। घ। वसुः। नि। यमते। दानम्। वाजस्य। गोऽमतः। यत्। सीम्। उप। श्रवत्। गिरः॥२३॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**न**) निषेधे (**घा**) एव। अत्र **ऋचि तुनुघे**ति दीर्घः। (**वसुः**) वासयिता (**नि**) नितराम् (**यमते**) यच्छति ददाति (**दानम्**) (**वाजस्य**) विज्ञानस्य (**गोमतः**) प्रशस्तवाग्युक्तस्य (**यत्**) (**सीम्**) सर्वतः (**उप**) (**श्रवत्**) शृणुयात् (**गिरः**) वाचः॥२३॥

**अन्वयः**-यद्यो जनो गोमतो वाजस्य वसुर्दानं नि यमते गिरः सीमुप श्रवत्स न घा हन्यते॥२३॥

**भावार्थः**-यो मनुष्यो विद्याभयदाने ददाति सर्वेभ्यो विद्वद्भ्यः सत्यं शृणोति सोऽत्र जगति विघ्नैर्नैव हन्यते॥२३॥

**पदार्थः**-(**यत्**) जो जन (**गोमतः**) प्रशंसित वाणी से युक्त (**वाजस्य**) विज्ञान का (**वसुः**) वास दिलाने वाला (**दानम्**) दान को (**नि**) अत्यन्त (**यमते**) देता है (**गिरः**) वाणियों को (**सीम्**) सब प्रकार से (**उप, श्रवत्**) सुने वह (**न, घा**) नहीं मारा जाता है॥२३॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य विद्या और अभयदान देता और सम्पूर्ण विद्वानों से सत्य सुनता है, वह इस संसार में विघ्नों से नहीं मारा जाता है॥२३॥

**पुनः स राजा कीदृग्भवेदित्याह॥**

फिर वह राजा कैसा होवे, इस विषय को कहते हैं॥

**कुवित्सस्य प्र हि व्रजं गोमन्तं दस्युहा गमत्। शचीभिरप नो वरत्॥२४॥**

**कुवित्ऽसस्य। प्र। हि। व्रजम्। गोऽमन्तम्। दस्युऽहा। गमत्। शचीभिः। अप। नः। वरत्॥२४॥**

**पदार्थः**-(**कुवित्सस्य**) यः कुविन्महत्सनति विभजति तस्य (**प्र**) (**हि**) (**व्रजम्**) व्रजन्ति यस्मिंस्तम् (**गोमन्तम्**) प्रशस्ता गावो विद्यन्ते यस्मिँस्तम् (**दस्युहा**) दस्यून् दुष्टाञ्चोरान् हन्ति (**गमत्**) गच्छति (**शचीभिः**) प्रज्ञाभिः कर्म्मभिर्वा (**अप**) दूरीकरणे (**नः**) अस्मान् (**वरत्**) वृणुयात्॥२४॥

**अन्वयः**-यो दस्युहा राजा शचीभिः कुवित्सस्य गोमन्तं व्रजमप गमत्स हि नः प्र वरत्॥२४॥

**भावार्थः**-यो राजा दस्यून् दुष्टाञ्जनान् दूरीकृत्य न्यायव्यवहारप्रचारायोत्तमान् जनान्स्वीकरोति स महतोः सत्यासत्ययोर्विवेचको भवति॥२४॥

**पदार्थः**-जो (**दस्युहा**) दुष्ट चोरों को मारने वाला राजा (**शचीभिः**) बुद्धि वाले कर्मों से (**कुवित्सस्य**) अत्यन्त विभाग करने वाले के (**गोमन्तम्**) प्रशंसित गौवें विद्यमान और (**व्रजम्**) चलते हैं जिसमें उसकी (**अप, गमत्**) प्राप्त होता है वह (**हि**) ही (**नः**) हम लोगों को (**प्र, वरत्**) स्वीकार करे॥२४॥

**भावार्थः**-जो राजा दुष्टजनों को दूर करके न्याय व्यवहार के प्रचार के लिये उत्तम जनों का स्वीकार करता है, वह बड़े सत्य और असत्य का विचार करने वाला होता है॥३४॥

**पुनर्धर्म्मात्मानं सर्वे प्रशंसन्त्वित्याह॥**

फिर धर्म्मात्मा राजा की सब प्रशंसा करें, इस विषय को कहते हैं॥



www.9009.co.in

**इमा उ त्वा शतक्रतोऽभि प्र णोनुवुर्गिरः। इन्द्र वत्सं न मातरः॥ २५॥ २५॥**

**इमाः। ऊँ इति। त्वा। शतक्रतो इति शतऽक्रतो। अभि। प्र। नोनुवुः। गिरः। इन्द्र। वत्सम्। न। मातरः॥ २५॥**

**पदार्थः**-(**इमाः**) प्रजाः (**उ**) वितर्के (**त्वा**) त्वाम् (**शतक्रतो**) अमितप्रज्ञ (**अभि**) (**प्र**) (**नोनुवुः**) भृशं प्रशंसेयुः (**गिरः**) वाचः (**इन्द्र**) प्रजापालनतत्पर (**वत्सम्**) (**न**) इव (**मातरः**) मान्यप्रदाः॥ २५॥

**अन्वयः**-हे शतक्रतो इन्द्र! वत्सं मातरो न य इमा गिरस्त्वा प्र णोनुवुस्ता उ त्वमभि स्तुहि॥ २५॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। हे राजन्! यथा गावो वात्सल्येन स्वान् वत्सान् प्रीणन्ति तथैव सुशिक्षिता वाचः सर्वानान्दयन्तीति विद्धि॥ २५॥

**पदार्थः**-हे (**शतक्रतो**) अथाह बुद्धि वाले (**इन्द्र**) प्रजाओं के पालन में तत्पर! (**वत्सम्**) बछड़े को (**मातरः**) आदर देने वाली माता (**न**) जैसे वैसे जो (**इमाः**) ये प्रजायें और (**गिरः**) वाणियाँ (**त्वा**) आपकी (**प्र, नोनुवुः**) अत्यन्त प्रशंसा करें उनकी (**उ**) वितर्क के साथ आप (**अभि**) सब प्रकार से स्तुति करिये॥ २५॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे राजन्! जैसे गौवें प्रेम से अपने बछड़ों को प्रसन्न करती हैं, वैसे ही उत्तम प्रकार शिक्षित वाणियाँ सब को आनन्द देती हैं, ऐसा जानो॥ २५॥

**केषां सख्यं न जीर्यत इत्याह॥**

किन की मित्रता नहीं जीर्ण होती है, इस विषय को कहते हैं॥

**दूणाशं सख्यं तव गौरसि वीर गव्यते। अश्वो अश्वायते भव॥ २६॥**

**दुःऽनशम्। सख्यम्। तव। गौः। असि। वीर। गव्यते। अश्वः। अश्वऽयते। भव॥ २६॥**

**पदार्थः**-(**दूणाशम्**) दुर्ल्लभो नाशो यस्य तत् (**सख्यम्**) मित्रत्वम् (**तव**) (**गौः**) धेनुरिव (**असि**) (**वीर**) धैर्य्यादिगुणयुक्त (**गव्यते**) गौरिवाचरते (**अश्वः**) तुरङ्गः (**अश्वायते**) अश्वमिवाचरते (**भव**)॥ २६॥

**अन्वयः**-हे वीर राजन् विद्वन् वा! यस्त्वं गव्यते गौरिवाश्वायतेऽश्व इवासि यस्य तव प्रेमास्पदबद्धं दूणाशं सख्यमस्ति स त्वमस्माकं सुहृद्भव॥ २६॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यथा गोषु वृषभो वडवास्वश्वः प्रीतः सदैव वर्त्तते तथैव सज्जनानां मित्रताऽविनाशिनी भवतीति सर्वे विजानन्तु॥ २६॥

**पदार्थः**-हे (**वीर**) धीरता आदि गुणों से युक्त राजन् वा विद्वान्! जो आप (**गव्यते**) गौ के सदृश आचरण करते हुए के लिये (**गौः**) गाय जैसे वैसे (**अश्वायते**) घोड़ों के सदृश आचरण करते हुए के लिये (**अश्वः**) घोड़ा जैसे वैसे (**असि**) हैं और जिन (**तव**) आपका प्रेम के आस्पद में बन्धा हुआ (**दूणाशम्**) दुर्लभ नाश जिसका वह (**सख्यम्**) मित्रपन है वह आप हम लोगों के मित्र (**भव**) हूजिये॥ २६॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे गौओं में बैल और घोड़ियों में घोड़ा प्रसन्न सदा ही होता है, वैसे ही सज्जनों की मित्रता अविनाशिनी होती है, ऐसा सब लोग जानें॥२६॥

**पुनः स राजा कीदृग्भवेदित्याह॥**

फिर वह राजा कैसा होवे, इस विषय को कहते हैं॥

**स मन्दस्वा ह्यन्धसो राधसे तन्वा महे। न स्तोतारं निदे करः॥२७॥**

**सः। मन्दस्व। हि। अन्धसः। राधसे। तन्वा। महे। न। स्तोतारम्। निदे। करः॥२७॥**

**पदार्थः**-(**सः**) (**मन्दस्वा**) आनन्दाऽऽनन्दय वा। अत्र **संहितायामि**ति दीर्घः। (**हि**) यतः (**अन्धसः**) अन्नादेः (**राधसे**) धनाय (**तन्वा**) शरीरेण (**महे**) महते (**न**) निषेधे (**स्तोतारम्**) (**निदे**) निन्दाकर्त्रे (**करः**) कुर्याः॥२७॥

**अन्वयः**-हे विद्वन्! हि त्वं तन्वा महे राधसेऽन्धसो मन्दस्वा निदे स्तोतारं न करस्तस्मात् स भवाञ्जनप्रियोऽस्ति॥२७॥

**भावार्थः**-हे राजप्रजाजना! यूयमन्नादिना सर्वानान्दयत। अनिन्द्यान्मा निन्दत। ऐश्वर्यवृद्धये सततं प्रयतध्वम्॥२७॥

**पदार्थः**-हे विद्वन्! (**हि**) जिससे आप (**तन्वा**) शरीर से (**महे**) बड़े (**राधसे**) धन के लिये (**अन्धसः**) अन्न आदि से (**मन्दस्वा**) आनन्दित हूजिये वा आनन्दित करिये और (**निदे**) निन्दा करने वाले के लिये (**स्तोतारम्**) स्तुति करने वाले को (**न**) नहीं (**करः**) करिये इससे (**सः**) वह आप जनों को प्रिय हैं॥२७॥

**भावार्थः**-हे राजा और प्रजाजनो! आप लोग अन्न आदि से सब को आनन्दित करिये और निन्दा न करने योग्यों की मत निन्दा करिये तथा ऐश्वर्य्य की वृद्धि के लिये निरन्तर प्रयत्न करिये॥२७॥

**अथ कस्मै क्व किं प्राप्नुयादित्याह॥**

अब किसके लिये कहाँ प्राप्त होवे, इस विषय को कहते हैं॥

**इमा उ त्वा सुतेसुते नक्षन्ते गिर्वणो गिरः। वत्सं गावो न धेनवः॥२८॥**

**इमाः। ऊँ इति। त्वा। सुतेऽसुते। नक्षन्ते। गिर्वणः। गिरः। वत्सम्। गावः। न। धेनवः॥२८॥**

**पदार्थः**-(**इमाः**) (**उ**) (**त्वा**) त्वाम् (**सुतेसुते**) उत्पन्न उत्पन्ने जगति (**नक्षन्ते**) व्याप्नुवन्तु प्राप्नुवन्तु। (**गिर्वणः**) गीर्भिः प्रशंसनीय (**गिरः**) सुशिक्षिता वाचः (**वत्सम्**) (**गावः**) (**न**) इव (**धेनवः**) दुग्धदात्र्यः॥२८॥

**अन्वयः**-हे गिर्वण! सुतेसुतेऽस्मिञ्जगतीमा गिरो वत्सं धेनवो गावो न त्वा नक्षन्ते ता उ अस्मानपि प्राप्नुवन्तु॥२८॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। ये शुभाचरणाः सन्ति तान् गौः स्ववत्समिव सर्वा विद्या वाचः प्राप्नुवन्तु॥२८॥

**पदार्थः**-हे **(गिर्वणः)** वाणियों से प्रशंसा करने योग्य! **(सुतेसुते)** उत्पन्न-उत्पन्न हुए इस संसार में **(इमाः)** ये **(गिरः)** उत्तम प्रकार शिक्षित वाणियाँ **(वत्सम्)** बछड़े को **(धेनवः)** दुग्ध की देने वाली **(गावः)** गौवें **(न)** जैसे वैसे **(त्वा)** आपको **(नक्षन्ते)** व्याप्त हों, वे **(उ)** और हम लोगों को भी प्राप्त हों॥२८॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जो श्रेष्ठ आचरण करने वाले हैं, उनको गौ जैसे बछड़े को, वैसे सम्पूर्ण विद्या और वाणियाँ प्राप्त होती हैं॥२८॥

**पुनः क उत्तम इत्याह॥**

फिर कौन उत्तम है, इस विषय को कहते हैं॥

**पुरूतमं पुरूणां स्तोतॄणां विवाचि। वाजेभिर्वाजयताम्॥२९॥**

**पुरूऽतमम्। पुरूणाम्। स्तोतॄणाम्। विऽवाचि। वाजेभिः। वाजऽयताम्॥२९॥**

**पदार्थः**-**(पुरूतमम्)** अतिशयेन बहुविद्यम् **(पुरूणाम्)** बहूनाम् **(स्तोतॄणाम्)** विदुषाम् **(विवाचि)** विविधार्थसत्यार्थप्रकाशिका वाचो यस्मिन् व्यवहारे **(वाजेभिः)** अन्नादिभिः **(वाजयताम्)** प्रापयताम्॥२९॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! या गिरो वाजेभिर्वाजयतां पुरूणां स्तोतॄणां विवाचि पुरूतमं प्राप्नुवन्ति ता अस्मानपि प्राप्नुवन्तु॥२९॥

**भावार्थः**-त एव बहुषूत्तमाः सन्ति ये विद्याविनयधर्म्माचरणं प्राप्ताः सन्ति॥२९॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो वाणियाँ **(वाजेभिः)** अन्न आदिकों से **(वाजयताम्)** प्राप्त कराने वाले **(पुरूणाम्)** बहुत **(स्तोतॄणाम्)** विद्वानों के **(विवाचि)** अनेक प्रकार की सत्य अर्थ को प्रकाश करने वाली वाणियाँ जिसमें उस व्यवहार में **(पुरूतमम्)** अतिशय बहुत विद्यायुक्त व्यवहार को प्राप्त होती हैं, वे हम लोगों को निश्चित प्राप्त हों॥२९॥

**भावार्थः**-वे ही बहुतों में उत्तम हैं जो विद्या, विनय और धर्म्माचरण को प्राप्त हुए हैं॥२९॥

**राजा राजप्रजाजनाश्चैकमत्यं कुर्य्युरित्याह॥**

राजा और प्रजाजन एकमति करें, इस विषय को कहते हैं॥

**अस्माकमिन्द्र भूतु ते स्तोमो वाहिष्ठो अन्तमः। अस्मान् राये महे हिनु॥३०॥**

**अस्माकम्। इन्द्र। भूतु। ते। स्तोमः। वाहिष्ठः। अन्तमः। अस्मान्। राये। महे। हिनु॥३०॥**

**पदार्थः**-**(अस्माकम्)** **(इन्द्र)** धनप्रद **(भूतु)** भवतु **(ते)** तव **(स्तोमः)** प्रशंसामयो व्यवहारः **(वाहिष्ठः)** अतिशयेन वोढा **(अन्तमः)** निकटस्थः **(अस्मान्)** **(राये)** **(महे)** **(हिनु)** वर्धयतु॥३०॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे इन्द्रास्माकं वाहिष्ठोऽन्तमः स्तोमः ते वर्द्धको भूतु। यश्च तेऽन्तमो वाहिष्ठः स्तोमो भूतु सोऽस्मान् महे राये हिनु॥३०॥

**भावार्थः**-हे राजन्! यदैश्वर्यं तव तच्च प्रजाया यत्प्रजायास्तत्तवास्तु नैवं विना राजप्रजाजनानामुन्नतिः सम्भवति॥३०॥

**पदार्थः**-हे **(इन्द्र)** धन के देने वाले! **(अस्माकम्)** हम लोगों का **(वाहिष्ठः)** अतिशय धारण करने वाला **(अन्तमः)** समीप में वर्त्तमान **(स्तोमः)** प्रशंसास्वरूप व्यवहार **(ते)** आपका बढ़ाने वाला **(भूतु)** होवे और जो आपके समीप में वर्त्तमान अतिशय धारण करने वाला प्रशंसारूप व्यवहार हो वह **(अस्मान्)** हम लोगों को **(महे)** बड़े **(राये)** धन के लिये **(हिनु)** बढ़ावे॥३०॥

**भावार्थः**-हे राजन्! जो ऐश्वर्य्य आपका वह प्रजा का, और जो प्रजा का वह आपका हो ऐसा करने के विना राजा और प्रजा की उन्नति का नहीं सम्भव है॥३०॥

**अथ व्यापारविषयमाह॥**

अब व्यापार विषय को कहते हैं॥

**अधि बृबुः पणीनां वर्षिष्ठे मूर्धन्नस्थात्। उरुः कक्षो न गाङ्ग्यः॥३१॥**

**अधि। बृबुः। पणीनाम्। वर्षिष्ठे। मूर्धन्। अस्थात्। उरुः। कक्षः। न। गाङ्ग्यः॥३१॥**

**पदार्थः**-**(अधि)** उपरि **(बृबुः)** छेत्ता **(पणीनाम्)** प्रशंसितानां व्यवहर्तॄणाम् **(वर्षिष्ठे)** अतिशयेन वृद्धे **(मूर्द्धन्)** मूर्धनि **(अस्थात्)** तिष्ठति **(उरुः)** बहुः **(कक्षः)** क्रान्तस्तटादिः **(न)** इव **(गाङ्ग्यः)** यो गां गच्छति तस्या अदूरभवः॥३१॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यः उरुः कक्षो गाङ्ग्यो न पणीनां वर्षिष्ठे मूर्द्धन् बृबुरध्यस्थात् स युष्माभिः कार्य्ये संप्रयोजनीयः॥३१॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। यथा भूमिषु गच्छन्त्याः सरितो मध्यस्थाः कक्षास्तटाश्च निकटे वर्त्तन्ते तथैव व्यापारिणां समीपे शिल्पिनो वर्त्तन्ताम्॥३१॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो **(उरुः)** बहुत **(कक्षः)** जल का उल्लङ्घन करने बाला टापू वा तट आदि **(गाङ्ग्यः)** पृथिवी को प्राप्त होने वाली के समीप में वर्त्तमान **(न)** जैसे वैसे **(पणीनाम्)** प्रशंसा करने योग्य व्यवहार करने वालों के **(वर्षिष्ठे)** अतिशय वृद्ध **(मूर्द्धन्)** मस्तक में **(बृबुः)** काटने वाला **(अधि)** ऊपर **(अस्थात्)** स्थित होता है, वह आप लोगों से कार्य्य में उत्तम प्रकार संयुक्त करने योग्य है॥३१॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जैसे पृथिवियों में जाती हुई नदी के मध्यस्थ टापू और तट समीप में वर्त्तमान हैं, वैसे ही व्यापारियों के समीप में शिल्पीजन वर्त्तमान होवें॥३१॥

**सद्विद्यादिदानेन किं भवतीत्याह॥**

श्रेष्ठ विद्या आदि के दान से क्या होता है, इस विषय को कहते हैं॥



www.9009.co.in

**यस्य॑ वा॒योरि॑व द्र॒वद्भ॒द्रा रा॒तिः स॑ह॒स्रिणी॑। स॒द्यो दा॒नाय॒ मंह॑ते॥ ३२॥**

**यस्य॑। वा॒योः॒ऽइ॑व। द्र॒वत्। भ॒द्रा। रा॒तिः। स॒ह॒स्रिणी॑। स॒द्यः। दा॒नाय॑। मंह॑ते॥ ३२॥**

**पदार्थः**-(**यस्य**) (**वायोरिव**) (**द्रवत्**) द्रवति प्राप्नोति सद्यो गच्छति वा (**भद्रा**) मङ्गलकारिणी (**रातिः**) दानक्रिया (**सहस्रिणी**) असङ्ख्याः पदार्था दीयन्ते यस्यां सा (**सद्यः**) तूर्णम् (**दानाय**) (**मंहते**) वर्धते॥ ३२॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यस्य सहस्रिणी भद्रा रातिर्वायोरिव द्रवत् स सद्यो दानाय मंहत इति वेद्यम्॥ ३२॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। ये विद्यादिदानप्रिया जनाः स्युस्ते वायुरिव पूर्णमभीष्टं सुखं लभन्ते ये च शिल्पविद्यामुन्नयन्ति तेऽसङ्ख्यं धनं प्राप्नुवन्ति॥ ३२॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! (**यस्य**) जिसकी (**सहस्रिणी**) असङ्ख्य पदार्थ दिये जाते हैं जिसमें वह (**भद्रा**) मङ्गल करने वाली (**रातिः**) दान-क्रिया (**वायोरिव**) वायु के सदृश (**द्रवत्**) प्राप्त होती वा शीघ्र जाती है वह (**सद्यः**) शीघ्र (**दानाय**) दान के लिये (**मंहते**) बढ़ता है, ऐसा जानना चाहिये॥ ३२॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जो विद्या आदि के दान में प्रिय जन होवें, वे वायु के सदृश पूर्ण अभीष्ट सुख को प्राप्त होते हैं और जो शिल्पविद्या की वृद्धि करते हैं, वे असङ्ख्य धन को प्राप्त होते हैं॥ ३२॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**तत्सु नो॒ विश्वे॑ अ॒र्य आ सदा॑ गृणन्ति का॒रवः॑।**

**बृबुं॑ स॑हस्र॒दात॑मं सू॒रिं स॑हस्र॒दात॑मं सू॒रिं स॑हस्रसात॑मम्॥ ३३॥ २६॥**

**तत्। सु। न॒ः। विश्वे॑। अ॒र्यः। आ। सदा॑। गृ॒ण॒न्ति॒। का॒रवः॑। बृ॒बुम्। स॒ह॒स्र॒ऽदात॑मम्। सू॒रिम्। स॒ह॒स्र॒ऽसात॑मम्॥ ३३॥**

**पदार्थः**-(**तत्**) (**सु**) (**नः**) अस्माकम् (**विश्वे**) सर्वे (**अर्यः**) स्वामी वैश्यो वा (**आ**) समन्तात् (**सदा**) (**गृणन्ति**) (**कारवः**) शिल्पिनः (**बृबुम्**) मुख्यं शिल्पिनम् (**सहस्रदातमम्**) अतिशयेनासङ्ख्यदातारम् (**सूरिम्**) विद्वांसम् (**सहस्रसातमम्**) असङ्ख्यानां पदार्थानामतिशयेन विभक्तारम्॥ ३३॥

**अन्वयः**-ये नो विश्वे कारवस्सहस्रदातमं बृबुं सहस्रसातमं सूरिं स्वा गृणन्ति ते तदतुल्यमैश्वर्य्यं सदा प्राप्नुवन्ति ये एषामर्यो भवेत्स एतान् सत्कृत्य संरक्षेत्॥ ३३॥

**भावार्थः**-ये क्रियाकुशलान् विदुषः शिल्पिनः प्रशंसन्ति तेऽसङ्ख्यं धनं प्राप्यासङ्ख्यं धनं दातुमर्हन्तीति॥ ३३॥



www.9009.co.in

अत्र राजनीतिधनजेतृमित्रत्ववेदविदिन्द्रदातृशिल्पिकारुस्वामिकृत्यवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति पञ्चचत्वारिंशत्तमं सूक्तं षट्विंशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-जो **(नः)** हम लोगों के **(विश्वे)** सब **(कारवः)** कारीगर जन **(सहस्रदातमम्)** अतिशय असङ्ख्य देने वाले **(बृबुम्)** मुख्य शिल्पी **(सहस्रासातमम्)** अतिशय असङ्ख्य पदार्थ बाँटने वाले **(सूरिम्)** विद्वान् को **(सु)** उत्तमता से **(आ)** सब प्रकार **(गृणन्ति)** स्वीकार करते हैं, वे **(तत्)** उस अतुल ऐश्वर्य्य को **(सदा)** सर्वकाल में प्राप्त होते हैं और जो इन में **(अर्यः)** स्वामी वा वैश्य होवे, वह इन का उत्तम प्रकार सत्कार कर रक्षा करे॥३३॥

**भावार्थः**-जो जन क्रिया में निपुण विद्वानों और कारीगरों की प्रशंसा करते हैं, वे असङ्ख्य धन को प्राप्त होकर असङ्ख्य धन देने योग्य होते हैं॥३३॥

इस सूक्त में राजनीति, धन के जीतने वाले, मित्रपन, वेद के जानने वाले, ऐश्वर्य्य से युक्त, दाता, कारीगर और स्वामी के कृत्य का वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह पैंतालीसवाँ सूक्त और छब्बीसवाँ वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

**अथ चतुर्दशर्चस्य षट्चत्वारिंशत्तमस्य सूक्तस्य शंयुर्बार्हस्पत्य ऋषिः। इन्द्रः प्रगाथं वा देवता। १ निचृदनुष्टुप्। ५, ७ स्वराडनुष्टुप् छन्दः। गान्धारः स्वरः। २ स्वराड्बृहती। ४, ८ भुरिग्बृहती। ९ विराड्बृहती। ११ निचृद्बृहती। ३, १३ बृहती छन्दः। मध्यमः स्वरः। ६ स्वराड् ब्राह्मी गायत्री छन्दः। षड्जः स्वरः। १० पङ्क्तिः। १२, १४ विराट् पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः॥**

***अथ पुनः शिल्पविद्यामाह॥***

अब चौदह ऋचा वाले छयालीसवें सूक्त का प्रारम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में फिर शिल्पविद्या को कहते हैं॥

**त्वामिद्धि हवामहे साता वाजस्य कारवः।**

**त्वां वृत्रेष्विन्द्र सत्पतिं नरस्त्वां काष्ठास्वर्वतः॥ १॥**

**त्वाम्। इत्। हि। हवामहे। साता। वाजस्य। कारवः। त्वाम्। वृत्रेषु। इन्द्र। सत्ऽपतिम्। नरः। त्वाम्। काष्ठासु। अर्वतः॥ १॥**

**पदार्थः**-(**त्वाम्**) (**इत्**) एव (**हि**) (**हवामहे**) (**साता**) विभागे (**वाजस्य**) विज्ञानस्य (**कारवः**) कारकराः (**त्वाम्**) (**वृत्रेषु**) धनेषु (**इन्द्र**) (**सत्पतिम्**) सतां पालकम् (**नरः**) (**त्वाम्**) (**काष्ठासु**) दिक्षु (**अर्वतः**) अश्वानिव॥ १॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! कारवो नरो वयं त्वां हि वाजस्य साता हवामहे वृत्रेषु सत्पतिं त्वां हवामहेऽर्वतः सारथिरिव त्वां काष्ठास्विद्धवामहे॥ १॥

**भावार्थः**-हे धनाढ्य! यदि त्वमस्माकं सहायो भवेस्तर्हि त्वद्धनेन वयं शिल्पविद्ययाऽनेकान् पदार्थान् रचयित्वा त्वामधिकं धनाढ्यं कुर्याम॥ १॥

**पदार्थः**-हे (**इन्द्र**) अत्यन्त ऐश्वर्य से युक्त जन! (**कारवः**) कारीगर (**नरः**) जन हम लोग (**त्वाम्**) आपको (**हि**) ही (**वाजस्य**) विज्ञान के (**साता**) विभाग में (**हवामहे**) ग्रहण करें और (**वृत्रेषु**) धनों में (**सत्पतिम्**) श्रेष्ठों के पालने वाले (**त्वाम्**) आपको पुकारें तथा (**अर्वतः**) घोड़ों को जैसे सारथी, वैसे (**त्वाम्**) आपको (**काष्ठासु**) दिशाओं में (**इत्**) ही पुकारें॥ १॥

**भावार्थः**-हे धन से युक्त! जो आप हम लोगों के सहायक होवें तो आपके धन से हम लोग शिल्पविद्या से अनेक पदार्थों को रचकर आपको बड़ा धनी करें॥ १॥

**पुनर्मनुष्याः शिल्पविद्यया किं लभन्त इत्याह॥**

फिर मनुष्य शिल्पविद्या से क्या पाते हैं, इस विषय को कहते हैं॥

**स त्वं नश्चित्र वज्रहस्त धृष्णुया महः स्तवानो अद्रिवः।**



www.9009.co.in

**गामश्वं॑ र॒थ्य॑मिन्द्र॒ सं कि॑र स॒त्रा वाजं॒ न जि॒ग्युषे॑॥**

**सः। त्वम्। नः॒। चि॒त्र॒। व॒ज्र॒ऽह॒स्त॒। धृ॒ष्णु॒ऽया। म॒हः। स्त॒वा॒नः। अ॒द्रि॒ऽवः॒। गाम्। अश्व॑म्। र॒थ्य॑म्। इ॒न्द्र॒। सम्। कि॒र॒। स॒त्रा। वाज॑म्। न। जि॒ग्युषे॑॥ २॥**

**पदार्थः**-(**सः**) (**त्वम्**) (**नः**) अस्मभ्यम् (**चित्र**) अद्भुतविद्य (**वज्रहस्त**) शस्त्रास्त्रपाणे (**धृष्णुया**) दृढत्वेन प्रागल्भ्येन वा (**महः**) महत् (**स्तवानः**) प्रशंसन् (**अद्रिवः**) मेघयुक्तसूर्यवद्वर्तमान (**गाम्**) धेनुम् (**अश्वम्**) तुरङ्गम् (**रथ्यम्**) रथाय हितम् (**इन्द्र**) (**सम्**) (**किर**) विक्षिप (**सत्रा**) सत्येन विज्ञानेन (**वाजम्**) सङ्ग्रामम् (**न**) इव (**जिग्युषे**) जेतुं शीलाय॥ २॥

**अन्वयः**-हे अद्रिवश्चित्र वज्रहस्तेन्द्र! स त्वं धृष्णुया महः स्तवानः सत्रा वाजं न जिग्युषे नोऽस्मभ्यं गां रथ्यमश्वं सङ्किर॥ २॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। हे राजादयो मनुष्या यथा जयशीला योद्धारः सङ्ग्रामे विजयं प्राप्य धनं प्रतिष्ठां च लभन्ते तथैव शिल्पविद्याकुशला महदैश्वर्यं प्राप्नुवन्ति॥ २॥

**पदार्थः**-हे (**अद्रिवः**) मेघ से युक्त सूर्य्य के समान वर्त्तमान (**चित्र**) अद्भुत विद्या वाले (**वज्रहस्त**) हाथ में शस्त्र और अस्त्र को धारण किये हुए (**इन्द्र**) ऐश्वर्य्य से युक्त! (**सः**) वह (**त्वम्**) आप (**धृष्णुया**) निश्चयपने वा ढिठाई से (**महः**) बड़े की (**स्तवानः**) प्रशंसा करते हुए (**सत्रा**) सत्य विज्ञान से (**वाजम्**) सङ्ग्राम को (**न**) जैसे वैसे (**जिग्युषे**) जीतने वाले (**नः**) हम लोगों के लिये (**गाम्**) गौ को (**रथ्यम्**) और वाहन के लिये हितकारक (**अश्वम्**) घोड़ों को (**सम्, किर**) सङ्कीर्ण करो-इकट्ठा करो॥ २॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे राजा आदि मनुष्यो! जैसे जीतने वाले योद्धा जन सङ्ग्राम में विजय को प्राप्त होकर धन और प्रतिष्ठा को प्राप्त होते हैं, वैसे ही शिल्पविद्या में चतुर जन बड़े ऐश्वर्य्य को प्राप्त होते हैं॥ २॥

**पुनर्मनुष्याः सङ्ग्रामे कथं वर्त्तेरन्नित्याह॥**

फिर मनुष्य सङ्ग्राम में कैसा वर्त्ताव करें, इस विषय को कहते हैं॥

**यः स॑त्रा॒हा विच॑र्षणि॒रिन्द्रं॒ तं हू॑महे व॒यम्।**

**सह॑स्रमुष्क॒ तुवि॑नृम्ण॒ सत्प॑ते॒ भवा॑ स॒मत्सु॑ नो वृ॒धे॥ ३॥**

**यः। स॒त्रा॒ऽहा। वि॒ऽच॑र्षणिः। इन्द्र॑म्। तम्। हू॒म॒हे॒। व॒यम्। सह॑स्र॒ऽमुष्क। तुवि॑ऽनृम्ण। सत्ऽप॑ते। भव॑। स॒मत्ऽसु॑। न॒। वृ॒धे॥ ३॥**

**पदार्थः**-(**यः**) (**सत्राहा**) सत्यदिनानि (**विचर्षणिः**) विद्वान् मनुष्यः (**इन्द्रम्**) ऐश्वर्य्ययुक्तम् (**तम्**) (**हूमहे**) प्रशंसामः (**वयम्**) (**सहस्रमुष्क**) असङ्ख्यवीर्य्य (**तुविनृम्ण**) बहुधन (**सत्पते**) सतां विदुषां पालक (**भवा**) अत्र **द्व्यचोऽतस्तिङ** इति दीर्घः। (**समत्सु**) सङ्ग्रामेषु (**नः**) अस्माकम् (**वृधे**) वर्धनाय॥ ३॥



www.9009.co.in

**अन्वय:**-हे सहस्रमुष्क तुविनृम्ण सत्पत इन्द्र! यो विचर्षणि: सत्राहेन्द्रमाह्वयति तथा तं वयं हूमहे स त्वं समत्सु नो वृधे भवा॥३॥

**भावार्थ:**-तमेव वयं प्रशंसामो य: प्रतिदिनमस्माकं रक्षो विधत्ते तमेव वयं सङ्ग्रामे संरक्षेम॥३॥

**पदार्थ:**-हे **(सहस्रमुष्क)** असङ्ख्य पराक्रम वाले **(तुविनृम्ण)** बहुत धनों से युक्त **(सत्पते)** विद्वानों के पालने वाले अत्यन्त ऐश्वर्य्य से युक्त **(य:)** जो **(विचर्षणि:)** विद्वान् मनुष्य **(सत्राहा)** सत्य दिनों में **(इन्द्रम्)** अत्यन्त ऐश्वर्य्य से युक्त को पुकारता है, वैसे **(तम्)** उसकी **(वयम्)** हम लोग **(हूमहे)** प्रशंसा करते हैं और आप **(समत्सु)** सङ्ग्रामों में **(न:)** हम लोगों की **(वृधे)** वृद्धि के लिये **(भवा)** हूजिये॥३॥

**भावार्थ:**-उसी की हम लोग प्रशंसा करते हैं, जो प्रतिदिन हम लोगों की रक्षा करता है और उसी की हम लोग सङ्ग्राम में रक्षा करें॥३॥

**पुना राजप्रजाजना: किं प्रतिजानीरन्नित्याह॥**

फिर राजा और प्रजाजन किसकी प्रतिज्ञा करें, इस विषय को कहते हैं॥

**बाधसे जनान् वृषभेव मन्युना घृषौ मीळ्ह ऋचीषम।**

**अस्माकं बोध्यविता महाधने तनूष्वप्सु सूर्ये॥४॥**

**बाधसे। जनान्। वृषभाऽइव। मन्युना। घृषौ। मीळ्हे। ऋचीषम। अस्माकम्। बोधि। अविता। महाऽधने। तनूषु। अप्ऽसु। सूर्ये॥४॥**

**पदार्थ:**-**(बाधसे)** **(जनान्)** **(वृषभेव)** बलिष्ठवृषभवत् **(मन्युना)** क्रोधेन **(घृषौ)** दुष्टानां घर्षणे **(मीळ्हे)** सङ्ग्रामे **(ऋचीषम)** ऋचा तुल्यप्रशंसनीय **(अस्माकम्)** **(बोधि)** विज्ञापय **(अविता)** **(महाधने)** सङ्ग्रामे **(तनूषु)** शरीरेषु **(अप्सु)** प्राणेषु **(सूर्ये)** सवितरि॥४॥

**अन्वय:**-हे ऋचीषमेन्द्र राजन्! ये मन्युना वृषभेव घृषौ मीळ्हे जनान् बाधन्ते यतस्त्वं तान् बाधसेऽस्माकं तनूष्वप्सु महाधनेऽविता सन्त्सूर्य्ये प्रकाश इवाऽस्मान् बोधि तस्माद्भवान् माननीयोऽस्ति॥४॥

**भावार्थ:**-अत्रोपमालङ्कार:। हे राजन्! वयं दुष्टानां बाधनाय सङ्ग्रामेऽस्मदीयानां रक्षणाय त्वां स्वीकुर्मस्त्वमस्मान्त्सत्यन्यायकृत्यानि सदैव बोधये:॥४॥

**पदार्थ:**-हे **(ऋचीषम)** ऋचा के सदृश प्रशंसा करने योग्य अत्यन्त ऐश्वर्य से युक्त राजन्! जो **(मन्युना)** क्रोध से **(वृषभेव)** बलयुक्त बैल जैसे वैसे **(घृषौ)** दुष्टों के घर्षण में **(मीळ्हे)** सङ्ग्राम में **(जनान्)** मनुष्यों की बाधा करते हैं, जिससे आप उनकी **(बाधसे)** बाधा करते हो और **(अस्माकम्)** हम लोगों के **(तनूषु)** शरीरों में और **(अप्सु)** प्राणों में **(महाधने)** सङ्ग्राम में **(अविता)** रक्षा करने वाले हुए **(सूर्य्ये)** सूर्य्य में प्रकाश जैसे वैसे हम लोगों को **(बोधि)** जनाइये इससे आप आदर करने योग्य हैं॥४॥



www.9009.co.in

**भावार्थ:**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे राजन्! हम लोग दुष्टों के बाधने के लिये और सङ्ग्राम में अपने लोगों की रक्षा के लिये आपका स्वीकार करें तथा आप हम लोगों को सत्य न्यायकृत्य सदा ही जनाइये॥४॥

**पुनः स राजा किं कुर्यादित्याह॥**

फिर वह राजा क्या करे, इस विषय को कहते हैं॥

**इन्द्र ज्येष्ठं न आ भरँ ओजिष्ठं पपुरि श्रवः।**

**येनेमे चित्र वज्रहस्त रोदसी ओभे सुशिप्र प्राः॥५॥२७॥**

**इन्द्र। ज्येष्ठम्। नः। आ। भर। ओजिष्ठम्। पपुरि। श्रवः। येन। इमे इति। चित्र। वज्रऽहस्त। रोदसी इति। आ। उभे इति। सुऽशिप्र। प्राः॥५॥**

**पदार्थ:**-(**इन्द्र**) शुभगुणानां धर्त्तः (**ज्येष्ठम्**) अतिशयेन प्रशस्तम् (**नः**) अस्मदर्थम् (**आ**) (**भर**) (**ओजिष्ठम्**) अतिशयेन बलप्रदम् (**पपुरि**) पालकं पुष्टिकरम् (**श्रवः**) अन्नं श्रवणं वा (**येन**) (**इमे**) (**चित्र**) अद्भुतगुणकर्मस्वभाव (**वज्रहस्त**) शस्त्रास्त्रपाणे (**रोदसी**) द्यावापृथिव्यौ (**आ**) समन्तात् (**उभे**) (**सुशिप्र**) सुशोभितहनुनासिक (**प्राः**) व्याप्नुयाः॥५॥

**अन्वयः**-हे सुशिप्र चित्र वज्रहस्तेन्द्र! त्वं ज्येष्ठमोजिष्ठं पपुरि श्रवो न आ भर येनोभे इमे रोदसी आ प्राः॥५॥

**भावार्थ:**-हे राजन्! भवानीदृशान् गुणकर्म्मस्वभावान्त्स्वीकुर्याद्येन न्यायं भूमिं राज्यं सेनां विजयं च धर्तुं शक्नुयात्॥५॥

**पदार्थ:**-हे (**सुशिप्र**) सुन्दर ठुड्ढी और नासिका युक्त (**चित्र**) अद्भुत गुण, कर्म्म और स्वभाव वाले (**वज्रहस्त**) शस्त्र और अस्त्र हाथ में जिसके ऐसे और (**इन्द्र**) श्रेष्ठ गुणों के धारण करने वाले! आप (**ज्येष्ठम्**) अतिशय प्रशंसित (**ओजिष्ठम्**) अतिशय बल के देने (**पपुरि**) पालन करने और पुष्टि करने वाले (**श्रवः**) अन्न वा श्रवण को (**नः**) हम लोगों के लिये (**आ, भर**) धारण करो (**येन**) जिससे (**उभे**) दोनों (**इमे**) इन (**रोदसी**) अन्तरिक्ष और पृथिवी को (**आ**) सब प्रकार से (**प्राः**) व्याप्त होओ॥५॥

**भावार्थ:**-हे राजन्! आप ऐसे गुण, कर्म्म और स्वभाव का स्वीकर करें, जिससे न्याय, भूमि, राज्य, सेना और विजय को धारण करने को समर्थ होवें॥५॥

**पुनः स राजा कीदृशो भवेदित्याह॥**

फिर वह राजा कैसा होवे, इस विषय को कहते हैं॥

**त्वामुग्रमवसे चर्षणीसहं राजन् देवेषु हूमहे।**

**विश्वा सु नो विथुरा पिब्दना वसोऽमित्रान्त्सुषहान् कृधि॥६॥**

**त्वाम्। उग्रम्। अवसे। चर्षणिऽसहम्। राजन्। देवेषु। हूमहे। विश्वा। सु। नः। विथुरा। पिब्दना। वसो इति। अमित्रान्। सुऽसहान्। कृधि॥६॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**त्वाम्**) (**उग्रम्**) तेजस्विनम् (**अवसे**) रक्षणाद्याय (**चर्षणीसहम्**) शत्रुसेनायाः सोढारम् (**राजन्**) विद्याविनयाभ्यां प्रकाशमान (**देवेषु**) विद्वत्सु (**हूमहे**) आह्वयामः (**विश्वा**) सर्वाणि (**सु**) (**नः**) अस्माकम् (**विथुरा**) व्यथायुक्तानि (**पिब्दना**) पेष्टुमर्हाणि शत्रुसैन्यानि (**वसो**) सुखे वासयितः (**अमित्रान्**) शत्रून् (**सुसहान्**) सुखेन सोढुं योग्यान् (**कृधि**) कुरु॥६॥

**अन्वयः**-हे वसो राजन्! वयं विश्वा देवेष्ववस उग्रं चर्षणीसहं त्वां सु हूमहे त्वं नोऽमित्रान्त्सुसहान् कृधि पिब्दना विथुरा कृधि॥६॥

**भावार्थः**-यो राजाऽमात्यप्रजाजनानां सुखदुःखे स्वात्मवद् ज्ञात्वा यथा शत्रूणां पराभवः स्यात्तथाऽनुष्ठाता भवेत्तमेव सर्वे जनाः पितृवन्मन्येरन्॥६॥

**पदार्थः**-हे (**वसो**) सुख में वसाने वाले (**राजन्**) विद्या और विनय से प्रकाशमान! हम लोग (**विश्वा**) सम्पूर्ण कार्य्यों के प्रति और (**देवेषु**) विद्वानों में (**अवसे**) रक्षण आदि के लिये (**उग्रम्**) तेजस्वी और (**चर्षणीसहम्**) शत्रुओं की सेना के सहने वाले (**त्वाम्**) आपको (**सु, हूमहे**) [अच्छी प्रकार] पुकारें और आप (**नः**) हम लोगों के (**अमित्रान्**) शत्रुओं को (**सुसहान्**) सुख के सहने योग्य (**कृधि**) करिये और (**पिब्दना**) पीसने योग्य शत्रुसैन्यों को (**विथुरा**) व्यथायुक्त करिये॥६॥

**भावार्थः**-जो राजा मन्त्री और प्रजाजनों के सुख और दुःख को अपने सदृश जान कर जैसे शत्रुओं का पराभव होवे वैसा उपाय करने वाला होवे, उसी को सब लोग पिता के सदृश मानें॥६॥

**पुना राज्ञा कुत्र किं धर्त्तव्यमित्याह॥**

फिर राजा को कहाँ क्या धारण करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**यदि॑न्द्र॒ नाहु॑षी॒ष्वाँ ओजो॑ नृ॒म्णं च॑ कृ॒ष्टिषु॑।**

**यद्वा॒ पञ्च॑ क्षि॒ती॒नां द्यु॒म्नमा भ॑र स॒त्रा विश्वा॑नि पौंस्या॑॥७॥**

**यत्। इ॒न्द्र॒। नाहु॑षीषु। आ। ओजः॑। नृ॒म्णम्। च॒। कृ॒ष्टिषु॑। यत्। वा॒। पञ्च॑। क्षि॒ती॒नाम्। द्यु॒म्नम्। आ। भ॒र। स॒त्रा। विश्वा॑नि। पौंस्या॑॥७॥**

**पदार्थः**-(**यत्**) (**इन्द्र**) प्रजाप्रियधर्त्तः (**नाहुषीषु**) नहुषाणां मनुष्याणामासु प्रजासु (**आ**) (**ओजः**) बलकरमन्नादिकम् (**नृम्णम्**) धनम् (**च**) (**कृष्टिषु**) मनुष्येषु (**यत्**) (**वा**) (**पञ्च**) पञ्चानां तत्त्वाख्यानाम् (**क्षितीनाम्**) राजसम्बन्धिनीनां भूमीनां मध्ये (**द्युम्नम्**) शुद्धं यशः (**आ**) (**भर**) (**सत्रा**) सत्यानि (**विश्वानि**) सर्वाणि (**पौंस्या**) पुरुषार्थजानि बलानि॥७॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! त्वं कृष्टिषु नाहुषीषु यदोजो नृम्णं च भवेत्तदाऽऽभर वा पञ्च क्षितीनां यद् द्युम्नमस्त्यथवा सत्रा विश्वानि पौंस्या वर्त्तन्ते तानि चाऽऽभर॥७॥

**भावार्थः**-हे राजन्! यदि भवान्त्सर्वाः प्रजा धनधान्यविद्यायुक्ताः कुर्यात्तर्हि पञ्चतत्त्वाख्यं राज्यं प्राप्य धवलं यशः प्राप्नुयात्॥७॥

**पदार्थ:**-हे **(इन्द्र)** प्रजा के प्रिय को धारण करने वाले! आप **(कृष्टिषु)** मनुष्यों में और **(नाहुषीषु)** मनुष्यसम्बन्धी प्रजाओं में **(यत्)** जो **(ओज:)** बलकारक अन्न आदि **(नृम्णम्)** धन **(च)** और होवे उसको **(आ, भर)** धारण करिये **(वा)** वा **(पञ्च)** पांच तत्त्वों और **(क्षितीनाम्)** राजसम्बन्धिनी भूमियों के मध्य में **(यत्)** जो **(द्युम्नम्)** शुद्ध यश है अथवा **(सत्रा)** सत्य **(विश्वानि)** सम्पूर्ण **(पौंस्या)** पुरुषार्थ से उत्पन्न हुए बल वर्त्तमान हैं, उनको **(आ)** धारण करिये॥७॥

**भावार्थ:**-हे राजन्! जो आप सम्पूर्ण प्रजाओं को धन-धान्य और विद्या से युक्त करिये तो पञ्चतत्त्वनामक राज्य को प्राप्त होकर धवलित यश को प्राप्त हूजिये॥७॥

**पुन: स राजा किं कुर्यादित्याह॥**

फिर वह राजा क्या करे, इस विषय को कहते हैं॥

**यद्वा॑ तृक्षौ म॑घवन् द्रुह्यावा जने॒ यत्पूरौ कच्च॒ वृष्ण्य॑म्।**

**अ॒स्मभ्यं॒ तद्रि॑रीहि॒ सं नृ॒षाह्ये॒ऽमित्रा॑न् पृत्सु तु॒र्वणे॑॥८॥**

**यत्। वा॒। तृ॒क्षौ। म॒घ॒ऽव॒न्। द्रु॒ह्यौ। आ। जने॑। यत्। पू॒रौ। कत्। च॒। वृष्ण्य॑म्। अ॒स्मभ्य॑म्। तत्। रि॒री॒हि॒। सम्। नृ॒ऽसह्ये॑। अ॒मित्रा॑न्। पृ॒त्ऽसु। तु॒र्वणे॑॥८॥**

**पदार्थ:**-**(यत्)** **(वा)** **(तृक्षौ)** विद्याशुभगुणप्राप्ते **(मघवन्)** न्यायोपार्जितधन **(द्रुह्यौ)** द्रोग्धुं योग्ये **(आ)** **(जने)** मनुष्ये **(यत्)** **(पूरौ)** पूर्णबले **(कत्)** कदा **(च)** **(वृष्ण्यम्)** वृषसु हितं बलम् **(अस्मभ्यम्)** **(तत्)** **(रिरीहि)** प्रापय **(सम्)** **(नृषाह्ये)** नृभिस्सोढुं योग्ये सङ्ग्रामे **(अमित्रान्)** शत्रून् **(पृत्सु)** सेनासु **(तुर्वणे)** हिंसनाय॥८॥

**अन्वय:**-हे मघवँस्त्वं तृक्षौ द्रुह्यौ जने यद्रिरीहि पूरौ जने यद्वृष्ण्यं रिरीहि तदस्मभ्यं च कत्प्रापये: कदा वा चास्माकममित्रान् नृषाह्ये पृत्सु तुर्वणे समा रिरीहि॥८॥

**भावार्थ:**-हे राजन्! यदा त्वमुत्तमेषु मनुष्येषु प्रतिष्ठां दुष्टेषु तिरस्कारं दध्यास्तदैव शत्रुविजयाय योग्यो भवे:॥८॥

**पदार्थ:**-हे **(मघवन्)** न्याय से धन इकट्ठा करने वाले! आप **(तृक्षौ)** विद्या और श्रेष्ठ गुणों से प्राप्त **(द्रुह्यौ)** द्रोह करने योग्य **(जने)** मनुष्य में **(यत्)** जो **(रिरीहि)** प्राप्त कराइये और **(पूरौ)** पूर्ण बल वाले मनुष्य में **(यत्)** जो **(वृष्ण्यम्)** उत्तमों में हितकारक जो बल उसको प्राप्त कराइये **(तत्)** वह **(अस्मभ्यम्)** हम लोगों के लिये **(च)** और **(कत्)** कब प्राप्त कराइये और कब **(वा)** वा हम लोगों के **(अमित्रान्)** शत्रुओं को **(नृषाह्ये)** मनुष्यों से सहने योग्य सङ्ग्राम में **(पृत्सु)** सेनाओं में **(तुर्वणे)** हिंसन के लिये **(सम्)** अच्छे प्रकार **(आ)** सब ओर से प्राप्त कराइये॥८॥

**भावार्थ:**-हे राजन्! जब आप उत्तम मनुष्यों में प्रतिष्ठा और दुष्टों में तिरस्कार धारण करें, तभी शत्रुओं के विजय के लिये योग्य होवें॥८॥



www.9009.co.in

**मनुष्याः कीदृशं गृहं निर्मिमीरन्नित्याह॥**

मनुष्य कैसे गृह को बनावें, इस विषय को कहते हैं॥

**इन्द्र॑ त्रि॒धातु॑ शर॒णं त्रि॒वरू॑थं स्वस्ति॒मत्।**

**छ॒र्दिर्य॑च्छ म॒घव॑द्भ्यश्च॒ मह्यं॑ च या॒वया॑ दि॒द्युमे॑भ्यः॥ ९॥**

**इन्द्र॑। त्रि॒ऽधातु॑। श॒र॒णम्। त्रि॒ऽवरू॑थम्। स्व॒स्ति॒ऽमत्। छ॒र्दिः। य॒च्छ॒। म॒घव॑त्ऽभ्यः। च॒। मह्य॑म्। च॒। य॒व॒य॑। दि॒द्युम्। ए॒भ्यः॥ ९॥**

**पदार्थः**-(**इन्द्र**) (**त्रिधातु**) त्रयः सुवर्णरजतताम्रा धातवो यस्मिंस्तत् (**शरणम्**) आश्रयितुं योग्यम् (**त्रिवरूथम्**) शीतोष्णवर्षासूत्तमम् (**स्वस्तिमत्**) बहुसुखयुक्तम् (**छर्दिः**) गृहम् (**यच्छ**) गृहाण देहि वा (**मघवद्भ्यः**) बहुधनेभ्यः (**च**) (**मह्यम्**) धनाढ्याय (**च**) (**यावया**) संयोजय। अत्र **संहितायामि**ति दीर्घः। (**दिद्युम्**) सुप्रकाशम् (**एभ्यः**) वर्त्तमानेभ्यः॥ ९॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! त्वं त्रिधातु त्रिवरूथं शरणं स्वस्तिमच्छर्दिर्यच्छ येभ्यो मघवद्भ्यो मह्यं च यच्छैभ्यो दिद्युं च यावया॥ ९॥

**भावार्थः**-मनुष्यैर्यत्सर्वर्त्तुषु सुखकरं धनधान्ययुक्तं वृक्षपुष्पफलशुद्धवायूदकधार्मिकधनाढ्यसमन्वितं गृहं तन्निर्माय तत्र निवसनीयं यतः सर्वदाऽऽरोग्येन सुखं वर्धेत॥ ९॥

**पदार्थः**-हे (**इन्द्र**) ऐश्वर्य्यों से युक्त आप (**त्रिधातु**) तीन सुवर्ण, चाँदी और ताँबा ये धातु जिसमें उस (**त्रिवरूथम्**) शीत, उष्ण और वर्षा ऋतु में उत्तम (**शरणम्**) आश्रय करने योग्य (**स्वस्तिमत्**) बहुत सुख से युक्त (**छर्दिः**) गृह को (**यच्छ**) ग्रहण करिये वा दीजिये और जिन (**मघवद्भ्यः**) बहुत धन वालों के और (**मह्यम्**) मुझ धनयुक्त के लिये (**च**) भी ग्रहण करिये वा दीजिये (**एभ्यः**) इन वर्त्तमानों के लिये (**दिद्युम्**) सुप्रकाश को (**च**) भी (**यावया**) संयुक्त कराइये॥ ९॥

**भावार्थः**-मनुष्यों को चाहिये कि जो सब ऋतुओं में सुखकारक, धन धान्य से युक्त, वृक्ष, पुष्प, फल, शुद्ध वायु जल तथा धार्मिक और धनाढ्यों से युक्त गृह उसको बनाकर वहाँ निवास करें जिससे सर्वदा आरोग्य से सुख बढ़े॥ ९॥

**पुनः स राजा केषां किं कुर्यादित्याह॥**

फिर वह राजा किन को क्या करे, इस विषय को कहते हैं॥

**ये ग॑व्य॒ता मन॑सा॒ शत्रु॑मादभु॒र॑भिप्र॒घ्नन्ति॑ धृष्णु॒या।**

**अध॑ स्मा नो मघवन्निन्द्र गिर्वणस्तनूपा अन्त॑मो भव॥ १०॥ २८॥**

**ये। ग॒व्य॒ता। मन॑सा। शत्रु॑म्। आ॒ऽद॒भुः। अ॒भि॒ऽप्र॒घ्नन्ति॑। धृ॒ष्णु॒ऽया। अध॑। स्म॒। नः॒। म॒घ॒ऽव॒न्। इ॒न्द्र॒। गि॒र्व॒णः॒। त॒नू॒ऽपाः। अन्त॑मः। भ॒व॒॥ १०॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**ये**) (**गव्यता**) गवा वाचेवाचरता (**मनसा**) (**शत्रुम्**) (**आदभुः**) समन्ताद्धिंसन्ति (**अभिप्रघ्नन्ति**) आभिमुख्ये प्रकर्षेण घ्नन्ति (**धृष्णुया**) प्रगल्भत्वादिना (**अध**) आनन्तर्ये (**स्मा**) एव। अत्र **निपातस्य चे**ति दीर्घः। (**नः**) अस्माकम् (**मघवन्**) बहुधनयुक्त (**इन्द्र**) शत्रुविदारक (**गिर्वणः**) सुशिक्षिताभिर्वाग्भिः सेवित (**तनूपाः**) स्वस्यान्येषां च शरीराणां रक्षकः (**अन्तमः**) समीपस्थः (**भव**)॥१०॥

**अन्वयः**-हे गिर्वणो मघवन्निन्द्र! ये धृष्णुया गव्यता मनसा शत्रुमादभुरधास्य सेनामभिप्रघ्नन्ति तैस्सह स्मा नस्तनूपा अन्तमो भव॥१०॥

**भावार्थः**-हे राजन्! ये दस्य्वादिदुष्टानां शत्रूणां च निग्रहीतारः प्रजापालनतत्परा धार्मिकजनाः स्युस्तेषां विश्वासेन राज्यकृत्यादीन्यलङ्कुर्याः॥१०॥

**पदार्थः**-हे (**गिर्वणः**) उत्तम प्रकार शिक्षित वाणियों से सेवा किये गये (**मघवन्**) बहुत धन से युक्त (**इन्द्र**) शत्रुओं को नाश करने वाले! (**ये**) जो (**धृष्णुया**) ढीठपन आदि से (**गव्यता**) वाणी के सदृश आचरण करते हुए (**मनसा**) मन से (**शत्रुम्**) शत्रु का (**आदभुः**) सब प्रकार से नाश करते हैं (**अध**) इसके अनन्तर इसकी सेना का (**अभिप्रघ्नन्ति**) सन्मुख अत्यन्त नाश करते हैं, उनके साथ (**स्मा**) ही (**नः**) हम लोगों के (**तनूपाः**) अपने और अन्यों के शरीरों के रक्षक (**अन्तमः**) समीप में स्थित (**भव**) हूजिये॥१०॥

**भावार्थः**-हे राजन्! जो ठग आदि दुष्ट शत्रुओं के बाँधने वाले तथा प्रजाओं के पालन में तत्पर धार्मिक जन हों, उनके विश्वास से राज्य के कृत्यों को शोभित करिये॥१०॥

**पुनः स राजा किं कुर्य्यादित्याह॥**

फिर वह राजा क्या करे, इस विषय को कहते हैं॥

**अध॑ स्मा नो वृ॒धे भ॑वेन्द्र॑ ना॒यम॑वा यु॒धि।**

**यद॒न्तरि॑क्षे प॒तय॑न्ति प॒र्णिनो॑ दि॒द्यव॑स्ति॒ग्ममू॑र्धानः॥ ११॥**

**अध॑। स्मा॒। न॒ः। वृ॒धे। भ॒व॒। इन्द्र॑। ना॒यम्। अ॒व॒। यु॒धि। यत्। अ॒न्तरि॑क्षे। प॒तय॑न्ति। प॒र्णिन॑ः। दि॒द्यव॑ः। ति॒ग्मऽमू॑र्धानः॥ ११॥**

**पदार्थः**-(**अध**) आनन्तर्य्ये (**स्मा**) एव। अत्र **निपातस्य चे**ति दीर्घः। (**नः**) अस्माकम् (**वृधे**) (**भव**) (**इन्द्र**) ऐश्वर्यवर्धक (**नायम्**) नेतुम् (**अवा**) रक्ष। अत्र **द्व्यचोऽतस्तिङ** इति दीर्घः। (**युधि**) सङ्ग्रामे (**यत्**) (**अन्तरिक्षे**) (**पतयन्ति**) गच्छन्ति (**पर्णिनः**) पक्षिणः (**दिद्यवः**) प्रकाशमानाः (**तिग्ममूर्द्धानः**) तिग्म उपरि वर्त्तमानाः॥११॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! यद्येऽन्तरिक्षे पर्णिन इव दिद्यवस्तिग्ममूर्द्धानो योद्धारो युधि पतयन्त्यध विजयं नायं प्रयतन्ते तैः सह नो वृधे भव युध्यस्मान् स्मा सततमवा॥११॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे राजन्! भवान् विमानादीनि यानानि संस्थाप्य पक्षिवदन्तरिक्षमार्गेण गमनागमने कृत्वोत्तमैः पुरुषैः सह विजयं प्राप्य सर्वोत्कृष्टो भव॥११॥

**पदार्थः**-हे **(इन्द्र)** ऐश्वर्य्य के बढ़ाने वाले सेना के स्वामी! **(यत्)** जो **(अन्तरिक्षे)** अन्तरिक्ष में **(पर्णिनः)** पक्षियों के समान **(दिद्यवः)** प्रकाशमान **(तिग्ममूर्द्धानः)** ऊपर वर्त्तमान योद्धा जन **(युधि)** सङ्ग्राम में **(पतयन्ति)** जाते हैं **(अध)** इसके अनन्तर विजय को **(नायम्)** प्राप्त करने का प्रयत्न करते हैं उनके साथ **(नः)** हम लोगों की **(वृधे)** वृद्धि के लिये **(भव)** प्रसिद्ध हूजिये और सङ्ग्राम में हम लोगों की **(स्मा)** ही निरन्तर **(अवा)** रक्षा कीजिये॥११॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे राजन्! आप विमान आदि वाहनों को स्थापित कर पक्षियों के सदृश अन्तरिक्ष मार्ग से गमन और आगमन करके तथा उत्तम पुरुषों के साथ विजय को प्राप्त होकर सब से श्रेष्ठ हूजिये॥११॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**यत्र शूरासस्तन्वो वितन्वते प्रिया शर्म पितृणाम्।**
**अध स्मा यच्छ तन्वे३ तने च छर्दिरचित्तं यावय द्वेषः॥१२॥**

**यत्र। शूरासः। तन्वः। विऽतन्वते। प्रिया। शर्म। पितृणाम्। अध। स्म। यच्छ। तन्वे। तने। च। छर्दिः। अचित्तम्। यवय। द्वेषः॥१२॥**

**पदार्थः**-**(यत्र)** यस्मिन् युद्धे **(शूरासः)** **(तन्वः)** शरीराणि **(वितन्वते)** **(प्रिया)** प्रियाणि **(शर्म)** शर्माणि गृहाणि **(पितृणाम्)** जनकानां स्वामिनां वा **(अध)** **(स्मा)** एव अत्र **निपातस्य चे**ति दीर्घः। **(यच्छ)** गृहाण **(तन्वे)** शरीराय **(तने)** विस्तृते **(च)** **(छर्दिः)** गृहम् **(अचित्तम्)** चेतनरहितम् **(यावय)** वियोजय। अत्र **तुजादीनामि**त्यभ्यासदैर्घ्यम्। **(द्वेषः)** शत्रून्॥१२॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! यत्र शूरासः पितृणां तन्वो वितन्वते प्रिया शर्म वितन्वतेऽध तन्वे तने चाऽचित्तं छर्दिस्त्वं यच्छ तत्र द्वेषः स्म यावय॥१२॥

**भावार्थः**-हे राजन्! शूरवीरान् धार्मिकाञ्जनान्त्सत्कारपुरःसरं संरक्ष्य शत्रून्निवार्य्योत्तमेषु गृहेषु स्वामिभ्यः कमनीयान् भोगान् दत्त्वा स्वयशो विस्तृणीहि॥१२॥

**पदार्थः**-हे ऐश्वर्य्य के बढ़ाने वाले! **(यत्र)** जहाँ **(शूरासः)** युद्ध में चतुर जन **(पितृणाम्)** अपने पिता और स्वामियों के **(तन्वः)** शरीरों को **(वितन्वते)** बढ़ाते हैं और **(प्रिया)** प्रिय **(शर्म)** गृहों को बढ़ाते हैं **(अध)** इसके अनन्तर **(तन्वे)** शरीर के लिये **(तने)** बढ़े हुए व्यवहार में **(च)** भी **(अचित्तम्)** चेतनता से रहित **(छर्दिः)** गृह को आप **(यच्छ)** ग्रहण करिये वहाँ **(द्वेषः)** शत्रुओं को **(स्म)** ही **(यावय)** पृथक् कराइये॥१२॥



www.9009.co.in

**भावार्थ:**-हे राजन्! शूरवीर धार्मिक जनों की सत्कारपूर्वक उत्तम प्रकार रक्षा कर शत्रुओं का निवारण कर उत्तम गृहों में पितरों और स्वामी जनों के लिये सुन्दर भोगों को देकर अपने यश का विस्तार करो॥१२॥

**पुनर्मनुष्यैः कथं गमनादिकं कार्य्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को कैसे गमनादिक करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**यदिन्द्र सर्गे अर्वतश्चोदयासे महाधने।**

**असमने अध्वनि वृजिने पथि श्येनाँइव श्रवस्यतः॥१३॥**

**यत्। इन्द्र। सर्गे। अर्वतः। चोदयासे। महाऽधने। असमने। अध्वनि। वृजिने। पथि। श्येनान्ऽइव। श्रवस्यतः॥१३॥**

**पदार्थः**-(**यत्**) यस्मिन् (**इन्द्र**) वीरशत्रुविदारक (**सर्गे**) संस्त्रष्टुमर्हे (**अर्वतः**) अश्वादीन् (**चोदयासे**) चोदय (**महाधने**) महान्ति धनानि यस्मात् तस्मिन् (**असमने**) अविद्यमानं समनं सङ्ग्रामो यस्मिँस्तस्मिन् (**अध्वनि**) मार्गे (**वृजिने**) बले (**पथि**) (**श्येनानिव**) (**श्रवस्यतः**) आत्मनः श्रव इच्छतः॥१३॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! यद्यत्र सर्गे महाधनेऽसमने वृजिनेऽध्वनि पथि श्येनानिव श्रवस्यतोऽर्वतश्च चोदयासे तत्र ते दूरस्थमपि स्थानं निकटमिव स्यात्॥१३॥

**भावार्थः**-हे राजन्! युद्धमन्तरापि यदा यदा कार्यार्थं गमनं भवान् कुर्य्यात्तदा तदा सद्य एव गन्तव्यं, शैथिल्यं पद्भ्यां यानेन वा गमने नैव कार्यम्॥१३॥

**पदार्थः**-हे (**इन्द्र**) वीर शत्रुओं के नाश करने वाले (**यत्**) जहाँ (**सर्गे**) मिलने योग्य (**महाधने**) बड़े धन जिससे उस और (**असमने**) नहीं विद्यमान सङ्ग्राम जिसमें ऐसे (**वृजिने**) बलकारक (**अध्वनि**) मार्ग में और (**पथि**) आकाशमार्ग में (**श्येनाविव**) बाजों को जैसे वैसे (**श्रवस्यतः**) सुख की इच्छा करते हुए (**अर्वतः**) घोड़े आदि को (**चोदयासे**) प्रेरणा करिये, वहाँ आपका दूर भी स्थित स्थान निकटसा होवे॥१३॥

**भावार्थ:**-हे राजन्! युद्ध के विना भी जब जब कार्य्य के लिये गमन आप करें तब तब शीघ्र ही जाना चाहिये और शिथिलता पैरों से वा वाहन से जाने में नहीं करनी चाहिये॥१३॥

**पुनस्ते राजादयः किं कुर्य्युरित्याह॥**

फिर वे राजा आदि क्या करें, इस विषय को कहते हैं॥

**सिन्धूँरिव प्रवण आशुया यतो यदि क्लोशमनु ष्वणि।**

**आ ये वयो न वर्वृतत्यामिषि गृभीता बाह्वोर्गवि॥१४॥२९॥**

**सिन्धून्ऽइव। प्रवणे। आशुऽया। यतः। यदि। क्लोशम्। अनु। स्वनि। आ। ये। वयः। न। वर्वृतति। आमिषि। गृभीताः। बाह्वोः। गवि॥१४॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**सिन्धूनिव**) नदीरिव (**प्रवणे**) निम्नस्थाने (**आशुया**) आशुगैरश्वैः (**यतः**) यस्मात् (**यदि**) (**क्लोशम्**) क्रोशम् (**अनु**) (**स्वनि**) शब्दे (**आ**) (**ये**) (**वयः**) पक्षिणः (**न**) इव (**वर्वृतति**) भृशं गच्छति (**आमिषि**) मांसे दृष्टे सति (**गृभीताः**) गृहीताः (**बाह्वोः**) (**गवि**) पृथिव्याम्॥१४॥

**अन्वयः**-हे राजन्! भवान् यदि प्रवणे सिन्धूनिवाशुया स्वन्यामिषि वयो न गवि क्लोशमनुवर्वृतति। बाह्वोर्गृभीता रश्मयः कला वा यथावच्चलन्ति तर्हि स्थानान्तरप्राप्तिर्दुर्लभा नास्ति ये यतो गच्छन्त्यागच्छन्ति तेऽप्येवमनुतिष्ठन्तु॥१४॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यूयं यथोदकमुच्चस्थानान् निम्नं देशं सद्यो गच्छति यथा वा श्येनादयः पक्षिणो मांसार्थं तूर्णं धावन्ति तथैव भूम्यन्तरिक्षे जले वा यानैः सद्यो गच्छतेति॥१४॥

अत्र राजवीरसङ्ग्रामगृहशूरवीरयानकृत्यवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति षट्चत्वारिंशत्तमं सूक्तमेकोनत्रिंशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे राजन्! आप (**यदि**) जो (**प्रवणे**) नीचे के स्थान में (**सिन्धूनिव**) नदियों को जैसे वैसे (**आशुया**) शीघ्र चलने वाले घोड़ों से वा (**स्वनि**) शब्द के होने और (**आमिषि**) मांस के देखने पर (**वयः**) पक्षी (**नः**) जैसे वैसे (**गवि**) पृथिवी में (**क्लोशम्**) कोश को (**अनु, वर्वृतति**) अत्यन्त वा बारम्बार प्राप्त होते हैं वा (**बाह्वोः**) बाहुओं में (**गृभीताः**) ग्रहण की गई किरणों वा कलायें यथावत् जाती हैं तो दूसरे स्थान में प्राप्त होना दुर्लभ नहीं है (**ये**) जो (**यतः**) जहाँ से जाते (**आ**) आते हैं, वे भी ऐसा करें॥१४॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! तुम जैसे जल ऊँचे स्थान से नीचे के स्थान को शीघ्र जाता है और जैसे बाज आदि पक्षी माँस के लिये शीघ्र जाते हैं, वैसे भूमि, अन्तरिक्ष वा जल में वाहनों से शीघ्र जाओ॥१४॥

इस सूक्त में राजा, वीर, सङ्ग्राम, गृह, शूरवीर और यान कृत्य के वर्णन से इस सूक्त के अर्थ की पूर्व सूक्तार्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह छयालीसवाँ सूक्त और उनतीसवाँ वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

**अथैकत्रिंशदृचस्य सप्तचत्वारिंशत्तमस्य सूक्तस्य १-३१ गर्ग ऋषिः। १-५ सोमः। ६-१९, २१ इन्द्रः। २० लिङ्गोक्ता देवताः। २२-२५ प्रस्तोकस्य सर्ञ्जयस्य दानस्तुतिः। २६-२८ रथः। २९-३१ दुन्दुभिर्देवता॥ १, ३, ५, २१, २२, २८ निचृत्त्रिष्टुप्। ४, ८, ११ विराट् त्रिष्टुप्। ६, ७, १०, १५, १६, २० त्रिष्टुप्। १८, २९, ३० भुरिक्त्रिष्टुप्। २७ स्वराट् त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः। २, ९, १२, १३, २६, ३१ भुरिक् पङ्क्तिः। १४, १७ स्वराट् पङ्क्तिः। २३ आर्चीपङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः। १९ बृहती छन्दः। मध्यमः स्वरः। २४, २५ विराड्गायत्री छन्दः। षड्जः स्वरः॥**

***अथ किं कृत्वा राजा शत्रुभिरसोढव्यः स्यादित्याह॥***

अब एकतीस ऋचा वाले सैंतालीसवें सूक्त का प्रारम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में क्या करके राजा शत्रुओं से नहीं सहने योग्य होवे, इस विषय को कहते हैं॥

**स्वादुष्किलायं मधुमाँ उतायं तीव्रः किलायं रसवाँ उतायम्।**

**उतो न्व१स्य पपिवांसमिन्द्रं न कश्चन सहत आहवेषु॥ १॥**

**स्वादुः। किल। अयम्। मधुऽमान्। उत। अयम्। तीव्रः। किल। अयम्। रसऽवान्। उत। अयम्। उतो इति। नु। अस्य। पपिऽवांसम्। इन्द्रम्। न। कः। चन। सहते। आऽहवेषु॥ १॥**

**पदार्थः**-(**स्वादुः**) सुस्वादयुक्तः (**किलः**) निश्चये (**अयम्**) (**मधुमान्**) मधुरादिगुणयुक्तः (**उत**) (**अयम्**) (**तीव्रः**) तेजस्वी वेगवान् (**किल**) (**अयम्**) (**रसवान्**) महौषधिप्रशस्तरसप्रचुरः (**उत**) (**अयम्**) (**उतो**) (**नु**) क्षिप्रम् (**अस्य**) (**पपिवांसम्**) पिबन्तम् (**इन्द्रम्**) राजादिकं शूरवीरम् (**न**) निषेधे (**कः**) (**चन**) कश्चिदपि (**सहते**) (**आहवेषु**) सङ्ग्रामेषु॥ १॥

**अन्वयः**-हे शूरवीरा! योऽयं स्वादुः किल उतायं मधुमान् किलाऽयं तीव्र उतायं रसवानोषधिसारोऽस्ति। अस्योतो पपिवांसमिन्द्रमाहवेषु नु कश्चन न सहते॥ १॥

**भावार्थः**-ये ब्रह्मचर्य्यजितेन्द्रियत्वादियुक्ताऽऽहारविहारैः शरीरात्मबलयुक्ता भवन्ति तान् सङ्ग्रामेषु सोढुं शत्रवो न शक्नुवन्ति॥ १॥

**पदार्थः**-हे शूरवीर जनो! जो (**अयम्**) यह (**स्वादुः**) सुन्दर स्वाद से युक्त (**किल**) निश्चय करके (**उत**) और (**अयम्**) यह (**मधुमान्**) मधुरादि गुणों से युक्त (**किल**) निश्चय करके (**अयम्**) यह (**तीव्रः**) तेजस्वी और वेगयुक्त (**उत**) और (**अयम्**) यह (**रसवान्**) बड़ी ओषधि का प्रशंसित रसयुक्त सार है (**अस्य**) इसके (**उतो**) भी (**पपिवांसम्**) पीने वाले (**इन्द्रम्**) राजा आदि शूरवीर को (**आहवेषु**) सङ्ग्रामों में (**नु**) शीघ्र (**कः**) (**चन**) कोई भी (**न**) नहीं (**सहते**) सहता है॥ १॥



www.9009.co.in

**भावार्थ:**-जो ब्रह्मचर्य्य, जितेन्द्रियत्व और युक्त आहार-विहारों से शरीर और आत्मा के बल से युक्त होते हैं, उनको सङ्ग्रामों में सहने को शत्रु समर्थ नहीं हो सकते हैं॥१॥

**पुनर्मनुष्याः कं सेवित्वा किं कुर्य्युरित्याह॥**

फिर मनुष्य किसका सेवन करके क्या करें, इस विषय को कहते हैं॥

**अयं स्वादुरिह मदिष्ठ आस यस्येन्द्रो वृत्रहत्ये ममाद।**

**पुरूणि यश्च्यौत्ना शम्बरस्य वि नवतिं नव च देह्यो३ हन्॥२॥**

**अयम्। स्वादुः। इह। मदिष्ठः। आस। यस्य। इन्द्रः। वृत्रऽहत्ये। ममाद। पुरूणि। यः। च्यौत्ना। शम्बरस्य। वि। नवतिम्। नव। च। देह्यः। हन्॥२॥**

**पदार्थ:**-**(अयम्)** **(स्वादुः)** स्वादयुक्तः **(इह)** **(मदिष्ठः)** अतिशयेनानन्दप्रदः **(आस)** **(यस्य)** सूर्य्य इव प्रतापवान् **(वृत्रहत्ये)** सङ्ग्रामे **(ममाद)** हर्षति **(पुरूणि)** बहूनि **(यः)** **(च्यौत्ना)** बलानि। **च्यौत्नमिति बलनाम।** (निघं०२.९) **(शम्बरस्य)** मेघस्य **(वि)** **(नवतिम्)** **(नव, च)** नवनवतिप्रकारा मेघगतयः **(देह्यः)** उपचेतुं योग्यः **(हन्)** हन्ति॥२॥

**अन्वयः**-य इन्द्रो राजा योऽयमिह स्वादुर्मदिष्ठ आस यस्य पानेन ममाद तत्पीत्वा यथा सूर्य्यः शम्बरस्य नव च नवतिं विहंस्तथा देह्यः सन् वृत्रहत्ये शत्रूणां पुरूणि च्यौत्ना हन्यात् स एव विजयी स्यात्॥२॥

**भावार्थ:**-हे मनुष्या! भवन्तो यस्योत्तमः स्वादुर्यस्माद्बलबुद्धिपराक्रमा वर्धन्ते तत्सेवनेन शत्रूञ्जित्वा निष्कण्टकं राज्यं सेवन्ताम्॥२॥

**पदार्थ:**-**(यः)** जो **(इन्द्रः)** सूर्य्य के सदृश प्रतापी राजा और जो **(अयम्)** यह **(इह)** संसार में **(स्वादुः)** अच्छे स्वाद से युक्त **(मदिष्ठः)** अतिशय आनन्द देने वाले **(आस)** होता और **(यस्य)** जिसके पान करने से **(ममाद)** प्रसन्न होता है, उसका पान करके जैसे सूर्य प्रतापयुक्त **(शम्बरस्य)** मेघ के **(नव, च)** नव **(नवतिम्)** नब्बे प्रकार मेघगतियों का **(वि, हन्)** नाश करता है, उस प्रकार से **(देह्यः)** वृद्धि करने के योग्य हुआ **(वृत्रहत्ये)** सङ्ग्राम में शत्रुओं की **(पुरूणि)** बहुत **(च्यौत्ना)** सेनाओं का नाश करे, वही विजयी होवे॥२॥

**भावार्थ:**-इस मन्त्र में वाचकलुसोपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जिसका उत्तम स्वाद और जिससे बल बुद्धि तथा पराक्रम बढ़ते हैं उसके सेवन से शत्रुओं को जीत कर निष्कण्टक राज्य का सेवन करो॥२॥

**पुनः स सोमः किं करोतीत्याह॥**

फिर वह सोम क्या करते है, इस विषय को कहते हैं॥

**अयं मे पीत उदियर्ति वाचमयं मनीषामुशतीमजीगः।**

**अयं षळुर्वीरमिमीत धीरो न याभ्यो भुवनं कच्चनारे॥३॥**



www.9009.co.in

अयम्। मे। पीतः। उत्। इयर्ति। वाचम्। अयम्। मनीषाम्। उशतीम्। अजीगरिति। अयम्। षट्। उर्वीः। अमिमीत। धीरः। न। याभ्यः। भुवनम्। कत्। चन। आरे॥ ३॥

**पदार्थः**-(**अयम्**) (**मे**) मम (**पीतः**) (**उत्**) (**इयर्त्ति**) उन्नयति (**वाचम्**) (**अयम्**) (**मनीषाम्**) प्रज्ञाम् (**उशतीम्**) कामयमानाम् (**अजीगः**) गच्छति प्राप्नोति (**अयम्**) (**षट्**) (**उर्वीः**) षड्विधा भूमीः (**अमिमीत**) (**धीरः**) ध्यानवान् मेधावी (**न**) (**याभ्यः**) (**भुवनम्**) (**कत्**) कदा (**चन**) अपि (**आरे**) दूरे समीपे वा॥ ३॥

**अन्वयः**- हे मनुष्या! यथायं पीतः सोमो मे वाचमुशतीं मनीषामुदियर्त्ति येनाऽयं जनः काममजीगः। येनायं षडुर्वीर्धीरो नामिमीत याभ्य आरे कच्चन भुवनमिमीत सोऽयं वैद्यकशास्त्ररीत्या निर्मातव्यः॥ ३॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! येन पीतेन वाग्बुद्धितनु वर्धेत येन शास्त्राणि सङ्गृहीतानि स्युस्तस्यैव सेवनं कार्यं न च बुद्ध्यादिनाशकस्य॥ ३॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे (**अयम्**) यह (**पीतः**) पान किया गया सोमलता का रस (**मे**) मेरी (**वाचम्**) वाणी को (**उशतीम्**) कामना करती हुई (**मनीषाम्**) बुद्धि को (**उत्, इयर्त्ति**) बढ़ाता है जिससे (**अयम्**) यह जन कामना को (**अजीगः**) प्राप्त होता है जिससे (**अयम्**) यह (**षट्**) छः प्रकार की (**उर्वीः**) भूमियों को (**धीरः**) ध्यान करने वाला बुद्धिमान् जन (**न**) जैसे (**अमिमीत**) निर्म्माण करता है और (**याभ्यः**) जिन से (**आरे**) दूर वा समीप में (**कत्**) कभी (**चन**) भी (**भुवनम्**) संसार को रचता है, यह वैद्यकशास्त्र की रीति से बनाने योग्य है॥ ३॥

**भावार्थः**- इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जिस पिये हुए से वाणी, बुद्धि, शरीर बढ़े और जिससे श्स्त्र उत्तम प्रकार ग्रहण किये जायें, इसका ही सेवन करना चाहिये न कि बुद्धि आदिकों के नाश करने वाले का॥ ३॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**अयं स यो वरिमाणं पृथिव्या वर्ष्माणं दिवो अकृणोदयं सः।**

**अयं पीयूषं तिसृषु प्रवत्सु सोमो दाधारोर्व१न्तरिक्षम्॥ ४॥**

अयम्। सः। यः। वरिमाणम्। पृथिव्याः। वर्ष्माणम्। दिवः। अकृणोत्। अयम्। सः। अयम्। पीयूषम्। तिसृषु। प्रवत्ऽसु। सोमः। दाधार। उरु। अन्तरिक्षम्॥ ४॥

**पदार्थः**-(**अयम्**) (**सः**) (**यः**) (**वरिमाणम्**) वरस्य भावम् (**पृथिव्याः**) (**वर्ष्माणम्**) वर्षकम् (**दिवः**) सूर्य्यप्रकाशात् (**अकृणोत्**) करोति (**अयम्**) (**सः**) (**अयम्**) (**पीयूषम्**) (**तिसृषु**) भूम्यादिषु (**प्रवत्सु**) निम्नेषु (**सोमः**) (**दाधार**) धरति (**उरु**) बहु (**अन्तरिक्षम्**) अन्तरक्षयं कारणाख्यम्॥ ४॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे मनुष्या! योऽयं सोमस्तिसृषु प्रवत्सु पीयूषं दाधार योऽयं पृथिव्या वरिमाणं दिवो वर्ष्माणमकृणोत् स सर्वैर्मनुष्यैः सङ्ग्राह्यो योऽयमुर्वन्तरिक्षं दाधार सोऽयं सर्वेषां सुखकरोऽस्ति॥४॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यस्सोमो वायुना सह भूमिं किरणैस्सह सूर्य्यं दधाति तं सङ्गृह्य सेवित्वा सर्वेऽरोगा भवत॥४॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(यः)** जो **(अयम्)** यह **(सोमः)** सोमलता का रस **(तिसृषु)** तीन भूमि आदिकों **(प्रवत्सु)** नीचे के स्थलों में **(पीयूषम्)** अमृत को **(दाधार)** धारण करता है और जो **(अयम्)** यह **(पृथिव्याः)** पृथिवी से **(वरिमाणम्)** श्रेष्ठपने को और **(दिवः)** सूर्य्य के प्रकाश से **(वर्ष्माणम्)** वृष्टि करने वाले को **(अकृणोत्)** करता है **(सः)** वह सब मनुष्यों से उत्तम प्रकार ग्रहण करने योग्य और जो **(अयम्)** यह **(उरु)** बहुत **(अन्तरिक्षम्)** मध्य में नहीं नष्ट होने वाले को धारण करता है **(सः)** वह यह सब का सुख करने वाला है॥४॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो सोमलतारूप ओषधि का रस वायु के साथ भूमि को, किरणों के साथ सूर्य्य को धारण करता है, उसको ग्रहण और सेवन करके सब रोगरहित होओ॥४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**अयं विदच्चित्रदृशीकमर्णः शुक्रसद्मनामुषसामनीके।**

**अयं महान् महता स्कम्भनेनोद् द्यामस्तभ्नाद् वृषभो मरुत्वान्॥५॥३०॥**

**अयम्। विदत्। चित्रऽदृशीकम्। अर्णः। शुक्रऽसद्मनाम्। उषसाम्। अनीके। अयम्। महान्। महता। स्कम्भनेन। उत्। द्याम्। अस्तभ्नात्। वृषभः। मरुत्वान्॥५॥**

**पदार्थः**-**(अयम्)** **(विदत्)** प्राप्नोति **(चित्रदृशीकम्)** आश्चर्य्यदर्शनम् **(अर्णः)** जलम् **(शुक्रसद्मनाम्)** शुद्धस्थानानाम् **(उषसाम्)** प्रभातवेलानाम् **(अनीके)** सैन्ये **(अयम्)** **(महान्)** **(महता)** **(स्कम्भनेन)** धारणेन **(उत्)** **(द्याम्)** **(अस्तभ्नात्)** स्तभ्नाति **(वृषभः)** वर्षकः **(मरुत्वान्)** मरुतो बहवो वायवो विद्यन्ते यस्मिन् सः॥५॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथायं वृषभो मरुत्वान्त्सूर्य्यः शुक्रसद्मनामुषसामनीके चित्रदृशीकमर्णो विदत्। योऽयं महान् महता स्कम्भनेन द्यामुदस्तभ्नात्तं कार्य्योपयोगिनं कुरुत॥५॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे विद्वांसो! यूयं सूर्य्यवत्प्रातः समयमारभ्य प्रयत्नेन विद्याः प्रकाश्य सुखं लभध्वम्॥५॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे **(अयम्)** यह **(वृषभः)** वृष्टि करने वाला **(मरुत्वान्)** बहुत वायु विद्यमान जिसमें ऐसा सूर्य्य **(शुक्रसद्मनाम्)** शुद्ध स्थानों और **(उषसाम्)** प्रभात वेलाओं की **(अनीके)** सेना में **(चित्रदृशीकम्)** आश्चर्य्ययुक्त दर्शन जिसका ऐसे **(अर्णः)** जल को **(विदत्)** प्राप्त होता है और जो



www.9009.co.in

**(अयम्)** यह **(महान्)** बड़ा **(महता)** बड़े **(स्कम्भनेन)** धारण से **(द्याम्)** प्रकाश को **(उत्, अस्तभ्नात्)** ऊपर को उठाया है, उसको कार्य्य का उपयोगी करो॥५॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे विद्वान् जनो! आप लोग सूर्य्य के सदृश प्रातःकाल से लेकर प्रयत्न से विद्याओं को प्रकाशित करके सुख को प्राप्त होओ॥५॥

**पुनः स राजा कीदृशो भवेदित्याह॥**

फिर वह राजा कैसा होवे, इस विषय को कहते हैं॥

**धृषत्पिब कलशे सोममिन्द्र वृत्रहा शूर समरे वसूनाम्।**

**माध्यंदिने सवन आ वृषस्व रयिस्थानो रयिमस्मासु धेहि॥६॥**

**धृषत्। पिब। कलशे। सोमम्। इन्द्र। वृत्रऽहा। शूर। समऽअरे। वसूनाम्। माध्यंदिने। सवने। आ। वृषस्व। रयिऽस्थानः। रयिम्। अस्मासु। धेहि॥६॥**

**पदार्थः**-**(धृषत्)** प्रगल्भः सन् **(पिब)** **(कलशे)** पात्रे **(सोमम्)** महौषधिरसम् **(इन्द्र)** सूर्यवद्वर्त्तमान सेनेश **(वृत्रहा)** यो वृत्रं हन्ति **(शूर)** निर्भय **(समरे)** सङ्ग्रामे **(वसूनाम्)** पृथिव्यादीनां मध्यात् **(माध्यन्दिने)** मध्यं दिने भवे **(सवने)** प्रेरणे **(आ)** **(वृषस्व)** बलिष्ठो भव **(रयिस्थानः)** रायस्तिष्ठन्ति यस्मिन्त्सः **(रयिम्)** **(अस्मासु)** **(धेहि)**॥६॥

**अन्वयः**-हे शूरेन्द्र! यथा वृत्रहा माध्यन्दिने सवने वसूनां मध्याज्जलमत्यन्तं पिबति तथा समरे धृषत् सन् कलशे सोमं पिब रयिस्थानस्सन्नावृषस्वाऽस्मासु रयिं धेहि॥६॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे राजन्! यथा मध्याह्नस्थः सूर्यः सर्वं सन्निहितं जगत्प्रकाशयति तथा न्यायस्थस्सन् वादिप्रतिवादिनां जनानां व्यवस्थां कृत्वा राजनीत्या न्यायं प्रकाशय॥६॥

**पदार्थः**-हे **(शूर)** भय से रहित **(इन्द्र)** सूर्य्य के सदृश वर्त्तमान सेना के स्वामिन्! जैसे **(वृत्रहा)** मेघ का नाश करने वाला **(माध्यन्दिने)** मध्य दिन में की गई **(सवने)** प्रेरणा में **(वसूनाम्)** पृथिवी आदिकों के मध्य से जल को अत्यन्त पीता है, वैसे **(समरे)** सङ्ग्राम में **(धृषत्)** ढीठ हुए **(कलशे)** पात्र में **(सोमम्)** बड़ी ओषधियों के रस को **(पिब)** पीजिये और **(रयिस्थानः)** धनों से युक्त हुए **(आ, वृषस्व)** बलिष्ठ हूजिये और **(अस्मासु)** हम लोगों में **(रयिम्)** धन को **(धेहि)** धारण करिये॥६॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे राजन्! जैसे मध्याह्न में वर्त्तमान सूर्य्य सम्पूर्ण समीप में वर्त्तमान जगत् को प्रकाशित करता है, वैसे न्याय में वर्त्तमान हुए आप वादी और प्रतिवादी जनों की व्यवस्था करके राजनीति से न्याय को प्रकाशित कीजिये॥६॥

**पुनः स राजा कीदृशो भवेदित्याह॥**

फिर वह राजा कैसा होवे, इस विषय को कहते हैं॥



www.9009.co.in

**इन्द्र प्र णः पुरएतेव पश्य प्र नो नय प्रतरं वस्यो अच्छ।**

**भवा सुपारो अतिपारयो नो भवा सुनीतिरुत वामनीतिः॥७॥**

**इन्द्र। प्र। नः। पुरएताऽइव। पश्य। प्र। नः। नय। प्रऽतरम्। वस्यः। अच्छ। भव। सुऽपारः। अतिऽपारयः। नः। भव। सुऽनीतिः। उत। वामऽनीतिः॥७॥**

**पदार्थः**-(**इन्द्र**) दुष्टविनाशक राजन् (**प्र**) (**नः**) अस्माकम् (**पुरएतेव**) (**पश्य**) (**प्र**) (**नः**) अस्मान् (**नय**) (**प्रतरम्**) शत्रूणां बलोल्लङ्घनम् (**वस्यः**) वसीयोऽतिशयेन सुष्ठुधनम् (**अच्छ**) (**भवा**) अत्र **द्व्यचोऽतस्तिङ** इति दीर्घः। (**सुपारः**) शोभनः पारो यस्मात्सः (**अतिपारयः**) योऽत्यन्तं पारयति सः (**नः**) अस्माकम् (**भवा**) अत्र **द्व्यचोऽतस्तिङ** इति दीर्घः। (**सुनीतिः**) शोभना नीतिर्न्यायो यस्य सः (**उत**) (**वामनीतिः**) वामा प्रशंसिता नीतिर्यस्य सः॥७॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! त्वं पुरुएतेव नः प्र पश्य नः प्रतरमच्छ प्र णय नः प्रतरं वस्योऽच्छ प्रणय नः सुपारोऽतिपारयो भवा सुनीतिरुत वामनीतिर्भव॥७॥

**भावार्थः**-यो राजा मनुष्यपरीक्षकः सर्वेषां न्यायपथेनैश्वर्य्यप्रापको दुःखात्सङ्ग्रामाच्च पारे गमयिता सदा धर्म्यनीतिर्भवेत्स एवात्र प्रशंसां लभेत॥७॥

**पदार्थः**-हे (**इन्द्र**) दुष्टों के नाश करने वाले राजन्! आप (**पुरएतेव**) आगे चलने वाले के सदृश (**नः**) हम लोगों को (**प्र, पश्य**) अच्छे प्रकार देखिये और (**नः**) हम लोगों के (**प्रतरम्**) शत्रुओं के बल के उल्लङ्घन को (**अच्छ**) अच्छे प्रकार (**प्र, नय**) प्राप्त करिये और (**नः**) हम लोगों के शत्रुओं के बल का उल्लङ्घन और (**वस्यः**) अतिशय धन को अच्छे प्रकार प्राप्त कराइये और हम लोगोंर का (**सुपारः**) सुन्दर पार जिनसे ऐसे (**अतिपारयः**) अत्यन्त पार करने वाले (**भवा**) हूजिये तथा (**सुनीतिः**) अच्छे न्याय वाले और (**उत**) भी (**वामनीतिः**) प्रशंसित नीति वाले (**भवा**) हूजिये॥७॥

**भावार्थः**-जो राजा मनुष्यों की परीक्षा लेने वाला और सब को न्याय मार्ग से ऐश्वर्य्य को प्राप्त कराने और दुःख और सङ्ग्राम से पार पहुँचाने वाला और सदा धर्मपूर्वक नीतियुक्त होवे, वही इस संसार में प्रशंसा को पावे॥७॥

**राजा स्वाश्रयान् प्रति कथं वर्त्तेतेत्याह॥**

राजा अपने आश्रितों के प्रति कैसा वर्त्ताव करे, इस विषय को कहते हैं॥

**उरुं नो लोकमनु नेषि विद्वान्त्स्वर्वज्ज्योतिरभयं स्वस्ति।**

**ऋष्वा त इन्द्र स्थविरस्य बाहू उप स्थेयाम शरणा बृहन्ता॥८॥**

**उरुम्। नः। लोकम्। अनु। नेषि। विद्वान्। स्वःऽवत्। ज्योतिः। अभयम्। स्वस्ति। ऋष्वा। ते। इन्द्र। स्थविरस्य। बाहू इति। उप। स्थेयाम। शरणा। बृहन्ता॥८॥**



www.9009.co.in

**पदार्थ:**-(**उरुम्**) बहुम् (**न:**) अस्मान् (**लोकम्**) दर्शनमभ्युदयं वा (**अनु**) (**नेषि**) प्रापयसि (**विद्वान्**) (**स्वर्वत्**) बहुसुखयुक्तम् (**ज्योति:**) ज्ञानप्रकाशम् (**अभयम्**) भयरहितम् (**स्वस्ति**) सुखम् (**ऋष्वा**) ऋष्वौ महान्तौ (**ते**) तव (**इन्द्र**) न्यायप्रापक (**स्थविरस्य**) विद्याविनयाभ्यां वृद्धस्य (**बाहू**) बलवीर्याभ्यामुपेतौ भुजौ (**उप**) (**स्थेयाम**) तिष्ठेम (**शरणा**) शरणौ शत्रूणां हिंसकौ (**बृहन्ता**) महान्तौ॥८॥

**अन्वय:**-हे इन्द्र राजन्! यस्य स्थविरस्य ते शरणा बृहन्ता ऋष्वा बाहू वयमुपस्थेयाम स विद्वांस्त्वं यतो न उरुं स्वर्वज्ज्योतिरभयं स्वस्ति लोकमनु नेषि तस्मात्सदैवास्माभि: पूज्योऽसि॥८॥

**भावार्थ:**-राज्ञा महता प्रयत्नेन स्वाधीना: प्रजा विद्याऽभयसुखयुक्ता: कार्य्या:। येन सर्वा: प्रजा अनुकूला: स्यु:॥८॥

**पदार्थ:**-हे (**इन्द्र**) न्याय को प्राप्त कराने वाले राजन्! जिस (**स्थविरस्य**) विद्या और विनय से वृद्ध (**ते**) आपके (**शरणा**) शत्रुओं के नाश करने वाले (**बृहन्ता**) बड़े (**ऋष्वौ**) श्रेष्ठ (**बाहू**) बल और वीर्य्य से युक्त भुजाओं को हम लोग (**उप, स्थेयाम**) प्राप्त होवें वह (**विद्वान्**) विद्वान् आप जिससे (**न:**) हम लोगों को (**उरुम्**) बहुत (**स्वर्वत्**) अत्यन्त सुख से युक्त (**ज्योति:**) ज्ञान का प्रकाश और (**अभयम्**) भय से रहित (**स्वस्ति**) सुख (**लोकम्**) दर्शन वा वृद्धि को (**अनु, नेषि**) प्राप्त कराते हो, इससे हम लोगों से आदर करने योग्य हो॥८॥

**भावार्थ:**-राजा बड़े प्रयत्न से अपने आधीन प्रजाओं को विद्या और अभय सुख से युक्त करे, जिससे सब प्रजा अनुकूल होवें॥८॥

**पुन: स राजा कान् प्रति कथं वर्त्तेतेत्याह॥**

फिर वह राजा किन के प्रति कैसा वर्त्ताव करे, इस विषय को कहते हैं॥

**वरिष्ठे न इन्द्र वन्धुरे धा वहिष्ठयो: शतावन्नश्वयोरा।**

**इषमा वक्षीषां वर्षिष्ठां मा नस्तारीन्मघवन् रायो अर्य:॥९॥**

**वरिष्ठे। न:। इन्द्र। वन्धुरे। धा:। वहिष्ठयो:। शतऽवन्। अश्वयो:। आ। इषम्। आ। वक्षि। इषाम्। वर्षिष्ठाम्। मा। न:। तारीत्। मघऽवन्। राय:। अर्य:॥९॥**

**पदार्थ:**-(**वरिष्ठे**) अतिशयेन वरे (**न:**) अस्मान् (**इन्द्र**) (**वन्धुरे**) प्रेमबन्धने (**धा:**) धेहि (**वहिष्ठयो:**) अतिशयेन वोढ्रो: (**शतावन्**) शतानि बलानि विद्यन्ते यस्य तत्सम्बुद्धौ (**अश्वयो:**) क्षिप्रं गमयित्रो: (**आ**) (**इषम्**) (**आ**) (**वक्षि**) आवह (**इषाम्**) अन्नादीनाम् (**वर्षिष्ठाम्**) अतिशयेन वृद्धाम् (**मा**) (**न:**) अस्मान् (**तारीत्**) तारये: (**मघवन्**) बहुधनयुक्त (**राय:**) धनस्य (**अर्य:**) स्वामी॥९॥

**अन्वय:**-हे शतावन्मघवन्निन्द्र! रायोऽर्यस्त्वं वहिष्ठयोरश्वयोर्वरिष्ठे वन्धुरे रथेन न आ धा:। इषमावक्षि नो वर्षिष्ठामिषां मा तारीत्॥९॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-प्रजासेनाजनैरेवं राजा प्रेरणीयो भवानस्मानुत्तमेषु यानेषु संस्थाप्य पुष्कलं धनं नयतु येनास्माकं वञ्चनं कदाचिज्जना मा कुर्य्युः॥९॥

**पदार्थः**-हे **(शतावन्)** सेनाओं से युक्त **(मघवन्)** बहुत धन वाले **(इन्द्र)** ऐश्वर्य्यवान् राजन्! **(रायः)** धन के **(अर्यः)** स्वामी आप **(वहिष्ठयोः)** अतिशय ले चलने वाले **(अश्वयोः)** शीघ्र पहुँचाने वालों के **(वरिष्ठे)** अतिशय श्रेष्ठ **(वन्धुरे)** प्रेम बन्धन में वाहन से **(नः)** हम लोगों को **(आ, धाः)** सब प्रकार से धारण करिये तथा **(इषम्)** अन्न को **(आ, वक्षि)** प्राप्त हूजिये और **(नः)** हम लोगों को **(वर्षिष्ठाम्)** अतिशय वृद्ध **(इषाम्)** अन्न आदिकों को **(मा)** नहीं **(तारीत्)** अलग करिये॥९॥

**भावार्थः**-प्रजा और सेना के जनों को चाहिये कि राजा को ऐसी प्रेरणा करें कि आप हम लोगों को उत्तम वाहनों में उत्तम प्रकार बैठाकर अधिक धन प्राप्त कराइये जिससे हम लोगों के वञ्चन को कभी मनुष्य न करें अर्थात् हम लोगों को कभी न ठगें॥९॥

**पुनः स राजा किं कुर्य्यादित्याह॥**

फिर वह राजा क्या करे, इस विषय को कहते हैं॥

**इन्द्र॑ मृळ मह्यं॑ जी॒वातु॑मिच्छ चो॒दय॒ धिय॒मय॑सो॒ न धारा॑म्।**

**यत्किञ्चा॒हं त्वा॒युरि॒दं वदा॑मि॒ तज्जु॑षस्व कृ॒धि मा॑ दे॒ववन्तम्॥१०॥३१॥**

**इन्द्र॑। मृळ। मह्य॑म्। जी॒वातु॑म्। इ॒च्छ॒। चो॒दय॑। धिय॑म्। अय॑सः। न। धारा॑म्। यत्। किम्। च॒। अ॒हम्। त्वा॒ऽयुः। इ॒दम्। वदा॑मि। तत्। जु॒षस्व॒। कृ॒धि। मा॒। दे॒वऽव॑न्तम्॥१०॥**

**पदार्थः**-**(इन्द्र)** सर्वार्थस्य सुखस्य धर्त्तः **(मृळ)** सुखय **(मह्यम्)** **(जीवातुम्)** जीवनम् **(इच्छ)** **(चोदय)** **(धियम्)** प्रज्ञां धर्म्यं कर्म वा **(अयसः)** हिरण्यस्य। **अय इति हिरण्यनाम।** (निघं०१.२) **(न)** इव **(धाराम्)** प्रगल्भां वाचम् **(यत्)** **(किम्)** **(च)** **(अहम्)** **(त्वायुः)** त्वां कामयमानः **(इदम्)** **(वदामि)** **(तत्)** **(जुषस्व)** सेवस्व **(कृधि)** कुरु **(मा)** माम् **(देववन्तम्)** देवा विद्वांसो विद्यन्ते सम्बन्धे यस्य तम्॥१०॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! त्वं मा मां मृळ मह्यं जीवातुमिच्छाऽयसो न धियं धारां चोदय। त्वायुरहं यत्किञ्च वदामि तदिदं जुषस्व देववन्तं मां कृधि॥१०॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। हे राजन्! यथा सर्वे जना हिरण्यादिधनस्येच्छां कुर्वन्ति तथैव त्वं प्रजापालनेच्छां कुरु सर्वाः प्रजा यथा सुशिक्षितां वाचं प्रमामायुर्विद्वत्सङ्गं प्राप्नुयुस्तथा विधेहि॥१०॥

**पदार्थः**-हे **(इन्द्र)** सब के लिये सुख के धारण करने वाले आप **(मा)** मुझको **(मृळ)** सुखी करिये और **(मह्यम्)** मेरे लिये **(जीवातुम्)** जीवन की **(अच्छ)** इच्छा करिये और **(अयसः)** सुवर्ण के **(न)** समान **(धियम्)** बुद्धि वा धर्म्मयुक्त कर्म्म को और **(धाराम्)** प्रगल्भ वाणी को **(चोदय)** प्रेरणा करिये और **(त्वायुः)** आपकी कामना करता हुआ **(अहम्)** मैं **(यत्)** जो **(किम्)** कुछ **(भी)** **(वदामि)** कहता हूँ



www.9009.co.in

**(तत्)** उस **(इदम्)** इसको **(जुषस्व)** सेवन करिये और **(देववन्तम्)** विद्वान् जिसके सम्बन्ध में ऐसा मुझको **(कृधि)** करिये॥१०॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे राजन्! जैसे सब जन सुवर्ण आदि धन की इच्छा करते हैं, वैसे ही आप अपनी प्रजा के पालन की इच्छा करिये और सम्पूर्ण प्रजायें जैसे उत्तम प्रकार शिक्षित वाणी, यथार्थ ज्ञान, अवस्था और विद्वानों के सङ्ग को प्राप्त होवें, वैसे करिये॥१०॥

**पुनः स राजा किं कुर्यात् प्रजाश्च तं किमर्थमाश्रयेरन्नित्याह॥**

फिर वह राजा क्या करे और प्रजायें उसका किसलिये आश्रयण करें, इस विषय को कहते हैं॥

**त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रं हवेहवे सुहवं शूरमिन्द्रम्।**

**ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्रं स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः॥११॥**

**त्रातारम्। इन्द्रम्। अवितारम्। इन्द्रम्। हवेऽहवे। सुऽहवम्। शूरम्। इन्द्रम्। ह्वयामि। शक्रम्। पुरुऽहूतम्। इन्द्रम्। स्वस्ति। नः। मघऽवा। धातु। इन्द्रः॥११॥**

**पदार्थः**-**(त्रातारम्)** पालकम् **(इन्द्रम्)** परमैश्वर्यवन्तम् **(अवितारम्)** ज्ञानादिप्रदम् **(इन्द्रम्)** अविद्यादुष्टजनविनाशकम् **(हवेहवे)** सङ्ग्रामे सङ्ग्रामे **(सुहवम्)** शोभनो हव आह्वानं सङ्ग्रामो वा यस्य तम् **(शूरम्)** निर्भयत्वादिगुणोपेतम् **(इन्द्रम्)** सेनाधरम् **(ह्वयामि)** आह्वयामि **(शक्रम्)** शक्तिमन्तम् **(पुरुहूतम्)** बहुभिराहूतम् **(इन्द्रम्)** शुभगुणधरम् **(स्वस्ति)** सुखम् **(नः)** अस्मभ्यम् **(मघवा)** परमपूजितधनयुक्तः **(धातु)** दधातु **(इन्द्रः)** परमैश्वर्यः॥११॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यो मघवेन्द्रो नः स्वस्ति धातु तं हवेहवे त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रं सुहवं शूरमिन्द्रं शक्रं पुरुहूतमिन्द्रं ह्वयामि तथैतं यूयमप्याह्वयत॥११॥

**भावार्थः**-ये मनुष्या यथा सर्वत्र सहायं परमेश्वरमाह्वयन्ति ते तथाभूतं राजानमपि सर्वत्राऽऽश्रयन्तु॥११॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो **(मघवा)** अत्यन्त श्रेष्ठ धन से युक्त **(इन्द्रः)** अत्यन्त ऐश्वर्य्य वाला **(नः)** हम लोगों के लिये **(स्वस्ति)** सुख को **(धातु)** धारण करे उसको **(हवेहवे)** सङ्ग्राम सङ्ग्राम में **(त्रातारम्)** पालन करने वाले **(इन्द्रम्)** अत्यन्त ऐश्वर्य्य से युक्त **(अवितारम्)** ज्ञानादि के देने और **(इन्द्रम्)** अविद्या से दुष्ट जन के नाश करने वाले **(सुहवम्)** सुन्दर पुकारना वा सङ्ग्राम जिसका उस **(शूरम्)** निर्भयत्व आदि गुणों से युक्त **(इन्द्रम्)** श्रेष्ठ गुणों के धारण करने वाले **(शक्रम्)** समर्थ **(पुरुहूतम्)** बहुतों से पुकारे गये **(इन्द्रम्)** सेना के धारण करने वाले को **(ह्वयामि)** पुकारता हूँ, वैसे इसको आप लोग भी पुकारो॥११॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य जैसे सर्वत्र सहायक परमेश्वर को पुकारते हैं, वे वैसे ही राजा का भी सर्वत्र आश्रयण करें॥११॥

**पुनः स कीदृशो भवेत्तस्य रक्षा कैः कार्येत्याह॥**



www.9009.co.in

फिर वह कैसा हो और उसकी रक्षा कौन करें, इस विषय को कहते हैं॥

**इन्द्रः सुत्रामा स्ववाँ अवोभिः सुमृळीको भवतु विश्ववेदाः।**

**बाधतां द्वेषो अभयं कृणोतु सुवीर्यस्य पतयः स्याम॥१२॥**

**इन्द्रः। सुऽत्रामा। स्वऽवान्। अवःऽभिः। सुऽमृळीकः। भवतु। विश्वऽवेदाः। बाधताम्। द्वेषः। अभयम्। कृणोतु। सुऽवीर्यस्य। पतयः। स्याम॥१२॥**

**पदार्थः**-(**इन्द्रः**) दुष्टताविदारको राजा (**सुत्रामा**) सुष्ठुरक्षकः (**स्ववान्**) बहवः स्वे विद्यन्ते यस्य सः (**अवोभिः**) रक्षणादिभिः (**सुमृळीकः**) सुष्ठु सुखकरः (**भवतु**) (**विश्ववेदाः**) यो विश्वं विज्ञानं वेत्ति (**बाधताम्**) निवारयतु (**द्वेषः**) द्वेषादिदोषयुक्तान् (**अभयम्**) भयराहित्यम् (**कृणोतु**) करोतु (**सुवीर्यस्य**) शोभनं वीर्यं पराक्रमो ब्रह्मचर्यं यस्य तस्य (**पतयः**) पालकाः स्वामिनः (**स्याम**)॥१२॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यः सुत्रामा स्ववान् विश्ववेदा इन्द्रोऽवोभिरस्माकं सुमृळीको भवतु द्वेषो बाधतामभयं कृणोतु तस्य सुवीर्यस्य वयं पतयः स्याम तस्य रक्षका यूयमपि भवत॥१२॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यो राजाऽखिलविद्यः कृतपूर्णब्रह्मचर्यो बहुमित्रः स्वात्मवच्छ्रेष्ठस्य रक्षको दुष्टस्य दण्डकृत्सर्वतो निर्भयतां करोति तस्य रक्षा सर्वैः सर्वथा कर्त्तव्या॥१२॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो (**सुत्रामा**) उत्तम प्रकार रक्षा करने वाला (**स्ववान्**) बहुत अपने जन विद्यमान जिसके ऐसा (**विश्ववेदाः**) सम्पूर्ण विज्ञान को जानने वाला (**इन्द्रः**) दुष्टता का नाश करने वाला (**अवोभिः**) रक्षण आदि से हम लोगों का (**सुमृळीकः**) उत्तम प्रकार सुख करने वाला (**भवतु**) हो तथा (**द्वेषः**) आदि दोषों से युक्त जनों का (**बाधताम्**) निवारण करे और (**अभयम्**) निर्भयपन (**कृणोतु**) करे उस (**सुवीर्यस्य**) सुन्दर पराक्रम वा ब्रह्मचर्य्य वाले के हम लोग (**पतयः**) पालन करने वाले स्वामी (**स्याम**) होवें, उसके रक्षक आप लोग भी हूजिये॥१२॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो राजा सम्पूर्ण विद्या और किये हुए पूर्ण ब्रह्मचर्य्य से युक्त बहुत मित्रों वाला और अपने सदृश श्रेष्ठ का रक्षक, दुष्टों को दण्ड देने वाला, सब प्रकार से निर्भयता करता है, उसकी रक्षा सब को चाहिये कि सब प्रकार से करें॥१२॥

**पुना राजप्रजाजनाः कथं वर्त्तेरन्नित्याह॥**

फिर राजा और प्रजाजन कैसा वर्त्ताव करें, इस विषय को कहते हैं॥

**तस्य वयं सुमतौ यज्ञियस्यापि भद्रे सौमनसे स्याम।**

**स सुत्रामा स्ववाँ इन्द्रो अस्मे आराच्चिद् द्वेषः सनुतर्युयोतु॥१३॥**

**तस्य। वयम्। सुऽमतौ। यज्ञियस्य। अपि। भद्रे। सौमनसे। स्याम। सः। सुऽत्रामा। स्वऽवान्। इन्द्रः। अस्मे इति। आरात्। चित्। द्वेषः। सनुतः। युयोतु॥१३॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**तस्य**) प्रतिपादितपूर्वस्य विद्याविनययुक्तस्य राज्ञः (**वयम्**) (**सुमतौ**) शोभनायां प्रज्ञायाम् (**यज्ञियस्य**) विद्वत्सेवासङ्गविद्यादानानि कर्तुमर्हस्य (**अपि**) (**भद्रे**) कल्याणकरे (**सौमनसे**) सुष्ठु धर्मयुक्ते मानसे व्यवहारे (**स्याम**) (**सः**) (**सुत्रामा**) सर्वेषां सम्यक्पालकः (**स्ववान्**) स्वकीयसामर्थ्ययुक्तः (**इन्द्रः**) विद्याप्रदः (**अस्मे**) अस्माकम् (**आरात्**) समीपाद् दूराद्वा (**चित्**) अपि (**द्वेषः**) धर्मद्वेष्टॄन् (**सनुतः**) सदैव (**युयोतु**) पृथक्करोतु॥१३॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! वयं तस्य यज्ञियस्य सुमतौ सौमनसे भद्रेऽपि निश्चयेन वर्त्तमानाः स्याम। यः स्ववानिन्द्रोऽस्मे सुत्रामा सन्नस्माकमाराद् दूराच्चिद् द्वेषः सनुतर्युयोतु सोऽस्माभिः सदैव सत्कर्त्तव्यः॥१३॥

**भावार्थः**-हे राजप्रजाजन यस्मिञ्छुद्धे न्याये शुभेषु गुणेषु च राजा वर्त्तेत तथैवात्र वयमपि वर्त्तेमहि, सर्वे मिलित्वा मनुष्येभ्यो दोषान् दूरीकृत्य गुणान् संयोज्य सर्वदा न्यायधर्मपालका भवेम॥१३॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! (**वयम्**) हमलोग (**तस्य**) उस पहिले प्रतिपादन किये विद्या और विनय से युक्त राजा के और (**यज्ञियस्य**) विद्वानों की सेवा, सङ्ग और विद्या के दान करने के योग्य की (**सुमतौ**) सुन्दर बुद्धि में (**सौमनसे**) उत्तम धर्म से युक्त मानस व्यवहार में (**भद्रे**) कल्याण करने वाले में (**अपि**) भी निश्चय से वर्त्तमान (**स्याम**) होवें और जो (**स्ववान्**) अपने सामर्थ्य से युक्त (**इन्द्रः**) विद्या देने वाला (**अस्मे**) हम लोगों की (**सुत्रामा**) उत्तम प्रकार पालना करने वाला होता हुआ हम लोगों के (**आरात्**) समीप वा दूर से (**चित्**) भी (**द्वेषः**) धर्म से द्वेष करने वालों को (**सनुतः**) सदा ही (**युयोतु**) पृथक् करे (**सः**) वह हम लोगों से सदा सत्कार करने योग्य है॥१३॥

**भावार्थः**-हे राजा और प्रजाजनो! जिस शुद्ध, न्याय और श्रेष्ठ गुणों में राजा वर्त्ताव करे, वैसे इस विषय में हम लोग भी वर्त्ताव करें और सब मिलकर मनुष्यों से दोषों को दूर करके गुणों को संयुक्त करके सब काल में न्याय और धर्म्म के पालन करने वाले होवें॥१३॥

**पुनस्तं राजानं के गुणा सेवन्त इत्याह॥**

फिर उस राजा का कौन गुण सेवन करते हैं, इस विषय को कहते हैं॥

**अव त्वे इन्द्र प्रवतो नोर्मिर्गिरो ब्रह्माणि नियुतो धवन्ते।**

**उरू न राधः सवना पुरूण्यपो गा वज्रिन् युवसे समिन्दून्॥१४॥**

**अव। त्वे इति। इन्द्र। प्रऽवतः। न। ऊर्मिः। गिरः। ब्रह्माणि। निऽयुतः। धवन्ते। उरु। न। राधः। सवना। पुरूणि। अपः। गाः। वज्रिन्। युवसे। सम्। इन्दून्॥१४॥**

**पदार्थः**-(**अव**) (**त्वे**) त्वयि (**इन्द्र**) राजन् (**प्रवतः**) नम्रान् (**न**) (**ऊर्मिः**) तरङ्गः (**गिरः**) सुवाचः (**ब्रह्माणि**) धनान्यन्नानि वा (**नियुतः**) निश्चितसत्यवादाः (**धवन्ते**) चालयन्ति (**उरू**) बहु (**न**) इव (**राधः**) धनानि (**सवना**) सवनानि प्रेरणानि (**पुरूणि**) बहूनि (**अपः**) जलानि (**गाः**) भूमीर्वाचो वा (**वज्रिन्**) शस्त्रास्त्रयुक्त (**युवसे**) संयोजयसि (**सम्**) (**इन्दून्**) आह्लादान्॥१४॥



www.9009.co.in

**अन्वय:**-हे वज्रिन्निन्द्र! यस्त्वे नियुतो गिरो ब्रह्माणि प्रवत ऊर्मिर्नाऽव धवन्ते, उरू राधो न पुरूणि सवनाऽव धवन्ते यतोऽपो गा इन्दूँश्च संयुवसे तस्माद्भवाञ्छ्रेष्ठोऽस्ति॥१४॥

**भावार्थ:-**अत्रोपमालङ्कारः। ये ब्रह्मचर्यादीनि शुभानि कर्माण्याचरन्ति तान्निम्नदेशं जलमिव पुरुषार्थिनं श्रीरिव सर्वा विद्याः सकलमैश्वर्य्यमखिलानन्दश्च प्राप्नुवन्ति॥१४॥

**पदार्थ:**-हे **(वज्रिन्)** शस्त्र और अस्त्रों से युक्त **(इन्द्र)** राजन्! जो **(त्वे)** आप में **(नियुतः)** निश्चित सत्यवाद जिनमें ऐसी **(गिरः)** श्रेष्ठ वाणियाँ **(ब्रह्माणि)** धनों वा अन्नों को और **(प्रवतः)** निम्नों को **(ऊर्मिः)** लहर **(न)** जैसे वैसे **(अव, धवन्ते)** चलाती हैं और **(उरू)** बहुत **(राधः)** धनों को **(न)** जैसे वैसे **(पुरूणि)** बहुत **(सवना)** प्रेरणायें प्राप्त होती हैं और जिस कारण **(अपः)** जलों **(गाः)** भूमि वा वाणियों को और **(इन्दून्)** आनन्दों को **(सम्)** **(युवसे)** संयुक्त करते हो, इससे आप श्रेष्ठ हो॥१४॥

**भावार्थ:**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जो ब्रह्मचर्य्य आदि श्रेष्ठ कर्मों को करते हैं, उनको नीचे के स्थान को जल जैसे और पुरुषार्थी को लक्ष्मी जैसे वैसे सम्पूर्ण विद्या, सम्पूर्ण ऐश्वर्य और सम्पूर्ण आनन्द प्राप्त होते हैं॥१४॥

**पुनः के कान् पृच्छेयुः समादध्युश्चेत्याह॥**

फिर कौन किनसे पूछें और समाधान करें, इस विषय को कहते हैं॥

**क ईं स्तवत् कः पृणात्को यजाते यदुग्रमिन्मघवा विश्वहावेत्।**

**पादाविव प्रहरन्नन्यमन्यं कृणोति पूर्वमपरं शचीभिः॥१५॥३२॥**

**कः। ईम्। स्तवत्। कः। पृणात्। कः। यजाते। यत्। उग्रम्। इत्। मघऽवा। विश्वहा। अवेत्। पादौऽइव। प्रऽहरन्। अन्यम्ऽअन्यम्। कृणोति। पूर्वम्। अपरम्। शचीभिः॥१५॥**

**पदार्थ:**-**(कः)** **(ईम्)** प्राप्तव्यं परमात्मानम्। **ईमिति पदनाम।** (निघं०४.२) **(स्तवत्)** स्तूयात् **(कः)** **(पृणात्)** पालयेत् **(कः)** **(यजाते)** **(यत्)** **(उग्रम्)** तेजस्विनम् **(इत्)** एव **(मघवा)** बहुधनः **(विश्वहा)** सर्वाणि दिनानि **(अवेत्)** रक्षेत् **(पादाविव)** चरणाविव **(प्रहरन्)** **(अन्यमन्यम्)** **(कृणोति)** **(पूर्वम्)** प्रथमम् **(अपरम्)** पश्चिमम् **(शचीभिः)** कर्मभिः॥१५॥

**अन्वय:**-हे विद्वांसोऽत्र क ईं स्तवत्कः सर्वं पृणात् कस्सत्यं यजाते यद्यो मघवा शचीभिर्विश्वहोग्रमिदवेत् पादाविवान्यमन्यं प्रहरन् पूर्वमपरं कृणोति॥१५॥

**भावार्थ:**- अत्रोपमालङ्कारः। हे विद्वांसो! वयं युष्मान् पृच्छामोऽस्मिञ्जगति क ईश्वरं प्रशंसति कः सर्वं न्यायेन पृणाति कश्च विदुषः सत्करोतीत्येतेषां क्रमेणोत्तराणि- यो विद्यायोगधनः स सर्वदा परमेश्वरमेव स्तौति, यो न्यायकारी राजा पक्षपातं विहायाऽपराधिनं दण्डयति धार्मिकं सत्करोति स सर्वरक्षको, यश्च स्वयं विद्वान् गुणदोषज्ञो भवति, स एव विदुषः सत्कर्त्तुमर्हतीत्युत्तराणि॥१५॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-हे विद्वान् जनो! इस संसार में **(कः)** कौन **(ईम्)** प्राप्त होने योग्य परमात्मा की **(स्तवत्)** स्तुति करे और **(कः)** कौन सबका **(पृणात्)** पालन करे **(कः)** कौन सत्य का **(यजाते)** यजन करे कि **(यत्)** जो **(मघवा)** बहुत धन वाला **(शचीभिः)** कर्म्मों से **(विश्वहा)** सब दिन **(उग्रम्)** तेजस्वी **(इत्)** ही की **(अवेत्)** रक्षा करे तथा **(पादाविव)** चरणों को जैसे वैसे **(अन्यमन्यम्)** दूसरे-दूसरे को **(प्रहरन्)** मारता हुआ **(पूर्वम्)** पहिले वाले को **(अपरम्)** पीछे **(कृणोति)** करता है॥१५॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे विद्वान् जनो! हम लोग आप लोगों से पूछते हैं कि इस संसार में कौन ईश्वर की प्रशंसा करता, कौन सब का न्याय से पालन करता और कौन विद्वानों का सत्कार करता है, इन प्रश्नों का क्रम से उत्तर- जो विद्या के योग से धन से युक्त है, वह सर्वदा परमेश्वर ही की स्तुति करता है और जो न्यायकारी राजा पक्षपात का त्याग कर अपराधी को दण्ड देता और धार्मिक का सत्कार करता है वह सर्वरक्षक है और जो स्वयं विद्वान् गुण और दोषों का जानने वाला है, वही विद्वानों का सत्कार करने योग्य है, ये उत्तर हैं॥१५॥

**पुनः स राजा कीदृशो भवेदित्याह॥**

फिर वह राजा कैसा होवे, इस विषय को कहते हैं॥

**शृण्वे वीर उग्रमुग्रं दमायन्नन्यमन्यमतिनेनीयमानः।**

**एधमानद्विळुभयस्य राजा चोष्कूयते विश इन्द्रो मनुष्यान्॥१६॥**

**शृण्वे। वीरः। उग्रम्ऽउग्रम्। दमऽयन्। अन्यम्ऽअन्यम्। अतिऽनेनीयमानः। एधमानऽद्विट्। उभयस्य। राजा। चोष्कूयते। विशः। इन्द्रः। मनुष्यान्॥१६॥**

**पदार्थः**-**(शृण्वे)** **(वीरः)** शौर्यादिगुणोपेतः **(उग्रमुग्रम्)** तेजस्विनं तेजस्विनम् **(दमायन्)** दमनं कुर्वन् **(अन्यमन्यम्)** भिन्नं भिन्नम् **(अतिनेनीयमानः)** भृशं न्यायव्यवस्थां प्रापयन् **(एधमानद्विट्)** यो वर्धमानान् वर्धमानान् द्वेष्टि सः **(उभयस्य)** राजप्रजाजनसमुदायस्य **(राजा)** न्यायविनयाभ्यां प्रकाशमानः **(चोष्कूयते)** भृशमाह्वयति **(विशः)** प्रजाः **(इन्द्रः)** विद्याविनयधरः **(मनुष्यान्)**॥१६॥

**अन्वयः**-हे अमात्या! यो वीर उग्रमुग्रं दमायन्नन्यमन्यमतिनेनीयमान एधमानद्विळुभयस्य राजेन्द्रो विशो मनुष्यांश्चोष्कूयते तमहं न्यायेशं शृण्वे॥१६॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यो मनुष्यो दुष्टान्दुष्टाँस्ताडयञ्छ्रेष्ठान् सत्कुर्वन्नन्यस्य वृद्धिं दृष्ट्वा द्वेष्टॄन् दण्डयन् प्रसन्नांश्च सत्कुर्वन् सर्वेषां वादिप्रतिवादिनां वचांसि यथावच्छ्रुत्वा सत्यं न्यायं करोति स एव राजा भवितुमर्हति॥१६॥

**पदार्थः**-हे मन्त्री जनो! जो **(वीरः)** शूरता आदि गुणों से युक्त जन **(उग्रमुग्रम्)** तेजस्वी तेजस्वी जन को **(दमायन्)** इन्द्रियों का निग्रह कराता हुआ और **(अन्यमन्यम्)** दूसरे दूसरे को **(अतिनेनीयमानः)** अत्यन्त न्याय की व्यवस्था को प्राप्त कराता हुआ **(एधमानद्विट्)** वृद्धि को प्राप्त होते हुओं से द्वेष करने



www.9009.co.in

वाला और **(उभयस्य)** राजा तथा प्रजाजन समुदाय का **(राजा)** न्याय और विनय से प्रकाशमान राजा **(इन्द्रः)** विद्या और विनय को धारण करने वाला **(विशः, मनुष्यान्)** प्रजाजनों को **(चोष्कूयते)** निरन्तर पुकारता है, उसको मैं न्यायेश **(शृण्वे)** सुनता हूँ॥१६॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो मनुष्य दुष्टों-दुष्टों को ताड़न करता, श्रेष्ठों-श्रेष्ठों का सत्कार करता, अन्य की वृद्धि देख कर द्वेष करने वालों को दण्ड देता और प्रसन्नों का सत्कार करता हुआ सम्पूर्ण वादी और प्रतिवादी के वचनों को यथावत् सुन के सत्य न्याय को करता है, वही राजा होने के योग्य है॥१६॥

**पुनः स राजा किमकृत्वा किं कुर्य्यादित्याह॥**

फिर वह राजा क्या नहीं करके क्या करे, इस विषय को कहते हैं॥

**परा पूर्वेषां सख्या वृणक्ति वितर्तुराणो अपरेभिरेति।**

**अनानुभूतीरवधून्वानः पूर्वीरिन्द्रः शरदस्तर्तरीति॥१७॥**

**परा। पूर्वेषाम्। सख्या। वृणक्ति। विऽतर्तुराणः। अपरेभिः। एति। अननुऽभूतीः। अवऽधून्वानः। पूर्वीः। इन्द्रः। शरदः। तर्तरीति॥१७॥**

**पदार्थः**-**(परा)** **(पूर्वेषाम्)** **(सख्या)** मित्रेण **(वृणक्ति)** त्यजति **(वितर्त्तुराणः)** विशेषेण भृशं हिंसन् **(अपरेभिः)** अन्यैः **(एति)** गच्छति **(अनानुभूतीः)** अनुभवरहितान्। अत्र**ान्येषामपी**ति दीर्घः। **(अवधून्वानः)** अर्वाक्कम्पयन् **(पूर्वीः)** प्राचीनाः **(इन्द्रः)** सूर्य्य इव राजा **(शरदः)** शरदादृतून् **(तर्तरीति)** भृशं तरति॥१७॥

**अन्वयः**-यः सूर्य्य इवेन्द्रः पूर्वेषां सख्या वितर्तुराणोऽनानुभूतीरवधून्वानः परावृणक्त्यपरेभिस्सहैति सः सूर्य्यः पूर्वीः शरद इव संवत्सराँस्तर्तरीति॥१७॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यो राजा वृद्धानां सखित्वं हित्वा नीचान् सखीनाप्नोति स श्रेयसश्च्युतो भवति यश्चानभिज्ञान् सखीन् विहायाऽभिज्ञान् सुहृदः करोति स एव पूर्णमायुः सुखेन तरति॥१७॥

**पदार्थः**-जो सूर्य्य के सदृश **(इन्द्रः)** राजा **(पूर्वेषाम्)** पूर्वजनों के **(सख्या)** मित्र से **(वितर्त्तुराणः)** विशेष करके अत्यन्त हिंसा करता और **(अनानुभूतीः)** अनुभव से रहित जनों को **(अवधून्वानः)** नीचे को कम्पाता हुआ **(परा, वृणक्ति)** त्यागता है और **(अपरेभिः)** अन्यों के साथ **(एति)** जाता है वह जैसे सूर्य्य **(पूर्वीः)** प्राचीन **(शरदः)** शरद् आदि ऋतुओं को, वैसे वर्षों के **(तर्तरीति)** अत्यन्त पार होता है॥१७॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो राजा वृद्ध जनों के मित्रपन का त्याग करके नीच मित्रों को प्राप्त होता है, वह कल्याण से च्युत होता है और जो अनभिज्ञ मित्रों का त्याग करके अभिज्ञों को मित्र करता है, वही पूर्ण आयु भर सुख से पार होता है॥१७॥



www.9009.co.in

**पुनरयं जीवात्मा कीदृशो भवतीत्याह॥**

फिर यह जीवात्मा कैसा होता है, इस विषय को कहते हैं॥

**रूपंरूपं प्रतिरूपो बभूव तदस्य रूपं प्रतिचक्षणाय।**

**इन्द्रो मायाभिः पुरुरूप ईयते युक्ता ह्यस्य हरयः शता दश॥ १८॥**

**रूपम्ऽरूपम्। प्रतिऽरूपः। बभूव। तत्। अस्य। रूपम्। प्रतिऽचक्षणाय। इन्द्रः। मायाभिः। पुरुऽरूपः। ईयते। युक्ताः। हि। अस्य। हरयः। शता। दश॥ १८॥**

**पदार्थः**-(**रूपंरूपम्**) (**प्रतिरूपः**) तदाकारवर्तमानः (**बभूव**) भवति (**तत्**) (**अस्य**) जीवात्मनः (**रूपम्**) (**प्रतिचक्षणाय**) प्रत्यक्षकथनाय (**इन्द्रः**) जीवः (**मायाभिः**) प्रज्ञाभिः (**पुरुरूपः**) बहुशरीरधारणेन विविधरूपः (**ईयते**) (**युक्ताः**) (**हि**) खलु (**अस्य**) देहिनः (**हरयः**) अश्वा इवेन्द्रियाण्यन्तःकरणप्राणाः (**शता**) शतानि (**दश**)॥ १८॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! य इन्द्रो मायाभिः प्रतिचक्षणाय रूपंरूपं प्रतिरूपो बभूव पुरुरूप ईयते तदस्य रूपमस्ति, यस्याऽस्य हि दश शता हरयो युक्ताः शरीरं वहन्ति तदस्य सामर्थ्यं वर्त्तते॥ १८॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यथा विद्युत्पदार्थं पदार्थं प्रति तद्रूपा भवति तथैव जीवः शरीरं प्रति तत्स्वभावो जायते यदा बाह्यं विषयं द्रष्टुमिच्छति तदा तद्दृष्ट्वा तदाकारं ज्ञानमस्य जायते या अस्य शरीरे विद्युत्सहिता असङ्ख्या नाड्यः सन्ति ताभिरयं सर्वस्य शरीरस्य समाचारं जानाति॥ १८॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो (**इन्द्रः**) जीव (**मायाभिः**) बुद्धियों से (**प्रतिक्षणाय**) प्रत्यक्ष कथन के लिये (**रूपंरूपम्**) रूप-रूप के (**प्रतिरूपः**) प्रतिरूप अर्थात् उसके स्वरूप से वर्त्तमान (**बभूव**) होता है और (**पुरुरूपः**) बहुत शरीर धारण करने से अनेक प्रकार का (**ईयते**) पाया जाता है (**तत्**) वह (**अस्य**) इस शरीर का (**रूपम्**) रूप है और जिस (**अस्य**) इस जीवात्मा के (**हि**) निश्चय करके (**दश**) दश सङ्ख्या से विशिष्ट और (**शता**) सौ सङ्ख्या से विशिष्ट (**हरयः**) घोड़ों के समान इन्द्रिय अन्तःकरण और प्राण (**युक्ताः**) युक्त हुए शरीर को धारण करते हैं, वह इसका सामर्थ्य है॥ १८॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! बिजुली पदार्थ के प्रति तद्रूप होती है, वैसे ही जीव शरीर-शरीर के प्रति तत्स्वभाव वाला होता है और जब बाह्य विषय के देखने की इच्छा करता है, तब उसको देख के तत्स्वरूपज्ञान इस जीव को होता है और जो जीव के शरीर में बिजुली के सहित असङ्ख्य नाड़ी हैं, उन नाड़ियों से यह सब शरीर के समाचार को जानता है॥ १८॥

**पुनः स जीवोऽत्र देहे कथं वर्त्तेतेत्याह॥**

फिर वह जीव इस देह में कैसा वर्त्ताव करे, इस विषय को कहते हैं॥

**युजानो हरिता रथे भूरि त्वष्टेह राजति।**



www.9009.co.in

**को वि॒श्वाहा॑ द्वि॒ष॒तः प॒क्ष आ॑सत उ॒तासी॑नेषु सू॒रिषु॑॥१९॥**

**यु॒जा॒नः। ह॒रि॒ता॑। रथे॑। भूरि॑। त्वष्टा॑। इ॒ह। रा॒ज॒ति॒। कः। वि॒श्वाहा॑। द्वि॒ष॒तः। प॒क्षः। आ॒स॒ते॒। उ॒त। आसी॑नेषु। सू॒रिषु॑॥१९॥**

**पदार्थः**-(**युजानः**) समादधानः (**हरिता**) हरणशीलावश्वौ (**रथे**) रमणीये यान इव शरीरे (**भूरि**) बहु (**त्वष्टा**) तनूकर्त्ता जीवः (**इह**) अस्मिञ्छरीरे (**राजति**) प्रकाशते (**कः**) (**विश्वाहा**) सर्वाण्यहानि (**द्विषतः**) द्वेषयुक्तस्य (**पक्षः**) परिग्रहः (**आसते**) आस्ते। अत्र **बहुलं छन्दसी**त्येकवचनस्य बहुवचनम्। (**उत**) (**आसीनेषु**) स्थितेषु (**सूरिषु**) विद्वत्सु॥१९॥

**अन्वयः**-यथा कश्चिच्छारथी रथे हरिता युजानो भूरि राजति तता त्वष्टेह शरीरे राजति क इह विश्वाहा द्विषतः पक्ष आसते, उताप्यासीनेषु सूरिषु मूर्खाश्रयं कः करोति॥१९॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे मनुष्याः! सदैव मूर्खाणां पक्षं विहाय विद्वत्पक्षे वर्त्तन्ताम्। यथा सुसारथिरश्वान् सन्नियम्य रथे योजयित्वा सुखेन गमनादिकार्य्यं साध्नोति तथा जितेन्द्रियो जीवः सर्वाणि स्वप्रयोजनानि साद्धुं शक्नोति यथा कश्चिद्दुष्टसारथिरश्वयुक्ते रथे स्थित्वा दुःखी भवति तथैवाऽजितेन्द्रियशरीरे स्थित्वा जीवो दुःखी जायते॥१९॥

**पदार्थः**-जैसे ( **कः**) कोई भी सारथी (**रथे**) सुन्दर वाहन के सदृश शरीर में (**हरिता**) ले चलने वाले घोड़ों को (**युजानः**) जोड़ता हुआ (**भूरि**) बहुत (**राजति**) प्रकाशित होता है, वैसे (**त्वष्टा**) सूक्ष्म करने वाला जीव (**इह**) इस शरीर में (**राजति**) प्रकाशित होता है और (**कः**) कौन (**इह**) इस शरीर में (**विश्वाहा**) सब दिन (**द्विषतः**) द्वेष से युक्त का (**पक्षः**) ग्रहण करता (**आसते**) है और (**उत**) भी (**आसीनेषु**) स्थित (**सूरिषु**) विद्वानों में मूर्ख का आश्रय कौन करता है॥१९॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! सदा ही मूर्खों का पक्ष त्याग के विद्वानों के पक्ष में वर्त्ताव करिये और जैसे अच्छा सारथी घोड़ों को अच्छे प्रकार [वश में करके] रथ में जोड़ कर सुख से गमन आदि कार्यों को सिद्ध करता है, वैसे जितेन्द्रिय जीव सम्पूर्ण अपने प्रयोजनों को सिद्ध कर सकता है और जैसे कोई दुष्ट सारथी घोड़ों से युक्त रथ में स्थित होकर दुःखी होता है, वैसे ही अजित इन्द्रियाँ जिसमें ऐसे शरीर में स्थित होकर जीव दुःखी होता है॥१९॥

**पुनर्मनुष्याः कथमारोग्यं प्राप्नुयुरित्याह॥**

फिर मनुष्य कैसे आरोग्य को प्राप्त होवें, इस विषय को कहते हैं॥

**अ॒ग॒व्यू॒ति क्षेत्र॒मार्ग॑न्म देवा उ॒र्वी स॒ती भूमि॑रंहूर॒णाभू॑त्।**

**बृह॑स्पते॒ प्र चि॑कित्सा॒ गवि॑ष्टावि॒त्था स॒ते ज॑रि॒त्र इ॑न्द्र॒ पन्था॑म्॥२०॥३३॥**

**अ॒ग॒व्यू॒ति। क्षेत्र॑म्। आ। अ॒ग॒न्म॒। दे॒वाः॒। उ॒र्वी। स॒ती। भूमिः॑। अं॒हू॒र॒णा। अ॒भू॒त्। बृह॑स्पते। प्र। चि॒कि॒त्स॒। गोऽइ॑ष्टौ। इ॒त्था। स॒ते। ज॒रि॒त्रे। इ॒न्द्र॒। पन्था॑म्॥२०॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**अगव्यूति**) क्रोशद्वयपरिमाणरहितम् (**क्षेत्रम्**) क्षियन्ति निवसन्ति तं देशम् (**आ**) (**अगन्म**) समन्तात् प्राप्नुयाम (**देवाः**) विद्वांसः (**उर्वी**) बहुफलाद्युपेता (**सती**) वर्त्तमाना (**भूमिः**) पृथिवी (**अंहूरणा**) येंऽहयन्ति तेंऽहवो गन्तारस्तेषां रणः सङ्ग्रामो यस्यां सा (**अभूत्**) भवति (**बृहस्पते**) बृहतां पालक (**प्र**) (**चिकित्सा**) यश्चिकित्सति रोगपरीक्षां करोति तत्संबुद्धौ। अत्र **संहितायामि**ति दीर्घः। (**गविष्टौ**) गौः सुशिक्षिताया वाचः सङ्गतौ (**इत्था**) अनेन प्रकोरणऽस्माद्धेतोर्वा (**सते**) (**जरित्रे**) स्तावकाय (**इन्द्र**) रोगदोषनिवारक (**पन्थाम्**) पन्थानम्॥२०॥

**अन्वयः**-हे बृहस्पते चिकित्सेन्द्र वैद्यराजंस्त्वत्सहायेन या उर्वी सत्यूंहरणा भूमिरभूद्यत्राऽगव्यूति क्षेत्रमभूतां देवा वयमागन्मेत्था गविष्टौ सते जरित्रे पन्थां प्रागन्म॥२०॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! ये सद्वैद्याः स्युस्तन्मित्रतयारोगा दीर्घायुषो बलिष्ठा विद्वांसो भूत्वा भूमिराज्यं प्राप्य यत्र कुत्र विमानादियानैर्गत्वाऽऽगत्य विद्वन्मार्गमाश्रयन्तु॥२०॥

**पदार्थः**-हे (**बृहस्पते**) बड़ों के पालन करने (**चिकित्सा**) रोगों की परीक्षा करने और (**इन्द्र**) रोग और दोषों के दूर करने वाले वैद्यराज! आपके सहाय से (**उर्वी**) बहुत फल आदि से युक्त (**सती**) वर्त्तमान (**अंहूरणा**) चलने वालों का सङ्ग्राम जिसमें वह (**भूमिः**) पृथिवी (**अभूत्**) होती है और जहाँ (**अगव्यूति**) दो कोश के परिमाण से रहित (**क्षेत्रम्**) निवास करते हैं जिस स्थान में ऐसा स्थान होता है उसको (**देवाः**) विद्वान् हम लोग (**आ, अगन्म**) सब प्रकार से प्राप्त होवें (**इत्था**) इस प्रकार से वा इस हेतु से (**गविष्टौ**) उत्तम प्रकार शिक्षितवाणी की सङ्गति में (**सते**) वर्त्तमान (**जरित्रे**) स्तुति करने वाले के लिये (**पन्थाम्**) मार्ग को (**प्र**) अच्छे प्रकार प्राप्त होवें॥२०॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो श्रेष्ठ वैद्य होवें उनके साथ मित्रता से रोग रहित, अधिक अवस्था वाले, बलिष्ठ, विद्वान् हो और भूमि के राज्य को प्राप्त होकर जहाँ कहीं विमान आदि वाहनों से जा-आ कर विद्वानों के मार्ग का आश्रयण करो॥२०॥

**पुनस्तौ राजप्रजाजनौ कथं वर्त्तेयातामित्याह॥**

फिर वे राजा और प्रजाजन कैसा वर्त्ताव करें, इस विषय को कहते हैं॥

**दिवेदिवे सदृशीरन्यमर्धं कृष्णा असेधदप सद्मनो जाः।**

**अहन् दासा वृषभो वस्नयन्तोदव्रजे वर्चिनं शंबरं च॥२१॥**

**दिवेऽदिवे। सऽदृशीः। अन्यम्। अर्धम्। कृष्णाः। असेधत्। अप। सद्मनः। जाः। अहन्। दासा। वृषभः। वस्नऽयन्ता। उदऽव्रजे। वर्चिनम्। शंबरम्। च॥२१॥**

**पदार्थः**-(**दिवेदिवे**) प्रतिदिनम् (**सदृशीः**) समानस्वरूपाः (**अन्यम्**) (**अर्द्धम्**) अर्द्धकम् (**कृष्णाः**) निकृष्टवर्णाः कर्षिता वा (**असेधत्**) सेधते (**अप**) (**सद्मनः**) सीदन्ति यस्मिँस्तस्य (**जाः**) जायमानः सूर्यः (**अहन्**) हन्ति (**दासा**) दासावुपक्षयितारौ (**वृषभः**) वृष्टिकरः (**वस्नयन्ता**)



www.9009.co.in

वस्नमिवाचरन्तौ राजप्रजाजनौ **(उदव्रजे)** उदकानि व्रजन्ति यस्मिँस्तस्मिन् **(वर्चिनम्)** देदीप्यमानम् **(शम्बरम्)** मेघम् **(च)**॥२१॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथा जाः सूर्यो दिवेदिवे सदृशीः कृष्णा अन्यमर्धं चाऽसेधत् सद्मनोऽन्धकारमपासेधद् वृषभ उदव्रजे वर्चिनं शम्बरमहँस्तथा वस्नयन्ता दासा वर्त्तेयाताम्॥२१॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यथा सूर्यमेघौ सर्वां पृथिवीमाकृष्य प्रकाशजलयुक्तां कुरुतः। यथा सूर्योऽस्या अर्धं भाग प्रकाशयति वृष्टिं च करोत्यन्धकारं निवार्य्य सर्वान् सुखयति तथैव राजप्रजाजनौ सत्यमाकृष्याऽसत्यं त्यक्त्वाऽन्यायं निवार्य्य न्यायं प्रचार्य्य सद्विद्योपदेशवृष्टिं विधाय सर्वान् मनुष्यान् सुखयेताम्॥२१॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे **(जाः)** प्रकट हुआ सूर्य्य **(दिवेदिवे)** प्रतिदिन **(सदृशीः)** तुल्यस्वरूपयुक्त **(कृष्णाः)** खराब वर्ण वाली वा खोदी गई पृथिवियों और **(अन्यम्)** अन्य **(अर्द्धम्)** आधे को **(च)** भी **(असेधत्)** अलग करता है और **(सद्मनः)** निवास करते हैं जिसमें उस गृह के अन्धकार को **(अप)** अलग करता है तथा **(वृषभः)** वृष्टि करने वाला **(उदव्रजे)** जल जाते हैं जिसमें उसमें **(वर्चिनम्)** प्रकाशमान **(शम्बरम्)** मेघ का **(अहन्)** नाश करता है, वैसे **(वस्नयन्ता)** निवास करते हुए के समान आचरण करते हुए राजा और प्रजाजन **(दासा)** उपेक्षा करने वाले हुए वर्त्ताव करें॥२१॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे सूर्य और मेघ समस्त पृथिवी का आकर्षण कर प्रकाश और जलयुक्त करते हैं वा जैसे सूर्य इस पृथिवी के अर्द्धभाग को प्रकाशित करता और वर्षा को करता है तथा अन्धकार का निवारण कर सबको सुखी करता है, वैसे ही राजा और प्रजाजन सत्य को खैंच असत्य को त्याग कर अन्याय का निवारण कर न्याय का प्रचार कर और उत्तम विद्या के उपदेशों की वृष्टि कर सब मनुष्यों को सुखी करें॥२१॥

**पुनस्तौ राजप्रजाजनौ परस्परं कथं वर्तेयातामित्याह॥**

फिर वे राजा और प्रजाजन परस्पर कैसा वर्त्ताव करें, इस विषय को कहते हैं॥

**प्रस्तोक इन्नु राधसस्त इन्द्र दश कोशयीर्दश वाजिनोऽदात्।**

**दिवोदासादतिथिग्वस्य राधः शांबरं वसु प्रत्यग्रभीष्म॥२२॥**

**प्रऽस्तोकः। इत्। नु। राधसः। ते। इन्द्र। दश। कोशयीः। दश। वाजिनः। अदात्। दिवःऽदासात्। अतिथिऽग्वस्य। राधः। शांबरम्। वसु। प्रति। अग्रभीष्म॥२२॥**

**पदार्थः**-**(प्रस्तोकः)** यः प्रस्तौति **(इत्)** एव **(नु)** सद्यः **(राधसः)** धनस्य **(ते)** तव **(इन्द्र)** सूर्य इव परमैश्वर्ययुक्त **(दश)** **(कोशयीः)** याः कोशान् यान्ति ता भूमीः **(दश)** एतत्संख्याकाः **(वाजिनः)** बह्वन्नयुक्तस्य **(अदात्)** ददाति **(दिवोदासात्)** प्रकाशदातुः **(अतिथिग्वस्य)** योऽतिथीनागच्छति तस्य **(राधः)** **(शाम्बरम्)** शंबरे मेघे भवम् **(वसु)** जलाख्यं द्रव्यम् **(प्रति)** **(अग्रभीष्म)** गृह्णीयाम॥२२॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे इन्द्र! यस्ते वाजिनो राधसो दश कोशयीः प्रस्तोकोऽदात्। दशगुणं सम्पादयति यदतिथिग्वस्य दिवोदासात् प्राप्तं राधः शाम्बरं वसु च वयं प्रत्यग्रभीष्म तदिन्नु भवानस्मभ्यं प्रयच्छतु तदिन्नु वयं तुभ्यं दद्याम॥२२॥

**भावार्थः**-हे राजन्! यस्ते राष्ट्रेऽसङ्ख्यधनप्रदो वृष्टिकरोऽतिथिसङ्गसेवनो जनो भवेत्तस्य रक्षां त्वं विधेहि। यदस्मान् धनं प्राप्नुयात्तत्तुभ्यं वयं दद्याम यत्त्वामीयात्तदस्मभ्यं देहि॥२॥

**पदार्थः**-हे **(इन्द्र)** सूर्य्य के सदृश अत्यन्त ऐश्वर्य्य से युक्त! जो **(ते)** आपके **(वाजिनः)** बहुत अन्नों से युक्त **(राधसः)** धन की **(दश)** दश **(कोशयीः)** कोशों खजानों को प्राप्त होने वाली भूमियों की **(प्रस्तोकः)** स्तुति करने वाला **(अदात्)** देता है और **(दश)** दशगुनी सम्पादित करता और जिस **(अतिथिग्वस्य)** अतिथियों को प्राप्त होने वाले के **(दिवोदासात्)** प्रकाश देने वाले से प्राप्त हुए **(राधः)** धन को **(शाम्बरम्)** और मेघ में हुए **(वसु)** जल नामक द्रव्य को हम लोग **(प्रति, अग्रभीष्म)** ग्रहण करें उसको **(इत्)** ही **(नु)** शीघ्र आप हम लोगों के लिये दीजिये, उसको ही शीघ्र हम लोग आपके लिये देवें॥२२॥

**भावार्थः**-हे राजन्! जो आपके राज्य में असङ्ख्य धनों को देने, वृष्टि करने तथा अतिथियों के सङ्ग का सेवन करने वाला जन होवे, उसकी रक्षा को आप करिये और जो हम लोगों को धन प्राप्त होवे, उसको आपके लिये हम लोग देवें और जो आपको प्राप्त होवे उसको हम लोगों के लिये दीजिये॥२२॥

**पुनरमात्या राज्ञः किं प्राप्नुयुरित्याह॥**

फिर मन्त्रीजन राजा से क्या प्राप्त होवें, इस विषय को कहते हैं॥

**दशाश्वा॒न् दश॒ कोशा॒न् दश॒ वस्त्राधि॑भोजना।**

**दशो॑ हिरण्यपि॒ण्डान् दिवो॑दासादसानिषम्॥२३॥**

**दश॑। अश्वा॑न्। दश॑। कोशा॑न्। दश॑। वस्त्रा॑। अधिऽभोजना। दशो॒ इति॑। हि॒र॒ण्य॒ऽपि॒ण्डान्। दिवः॑ऽदासात्। अ॒सा॒नि॒ष॒म्॥२३॥**

**पदार्थः**-**(दश)** एतत्सङ्ख्याकान् **(अश्वान्)** तुरङ्गादीन् **(दश)** **(कोशान्)** दशगुणधनपूर्णान् **(दश)** दशगुणानि **(वस्त्रा)** वस्त्राणि **(अधिभोजना)** अधिकानि भोजनानि **(दशो)** **(हिरण्यपिण्डान्)** सुवर्णादिसमूहान् **(दिवोदासात्)** कमनीयधनदातुः **(असानिषम्)** सम्भज्य प्राप्नुयाम्॥२३॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र राजन्! दिवोदासात्त्वद्दशाऽश्वान् दश कोशान् दश वस्त्रा दशाऽधिभोजना दशो हिरण्यपिण्डांश्चाऽहमसानिषं प्राप्नुयाम्॥२३॥

**भावार्थः**-ये धार्मिकाः शूरवीराः शत्रूणां विजेतारो राजभक्ताः प्रजापालनतत्परा विद्वांसोऽमात्याः स्युस्तेऽश्वादीन् सर्वान् पदार्थान् दशगुणान् राजसकाशात् प्राप्नुयुरिति॥२३॥

**पदार्थः**-हे ऐश्वर्य्य से युक्त राजन्! **(दिवोदासात्)** सुन्दर धन के देने वाले आप से **(दश)** दश सङ्ख्या से युक्त **(अश्वान्)** घोड़ों और **(दश)** दश सङ्ख्या से युक्त **(कोशान्)** दशगुने धन से पूर्ण



www.9009.co.in

खजानों और **(दश)** दश प्रकार के **(वस्त्रा)** वस्त्रों को और दश प्रकार के **(अधिभोजना)** अधिक भोजनों को और **(दशो)** दश प्रकार के **(हिरण्यपिण्डान्)** सुवर्ण आदि समूहों को मैं **(असानिषम्)** संविभाग करके प्राप्त होऊँ॥२३॥

**भावार्थ:-**जो धार्मिक, शूरवीर और शत्रुओं के जीतने वाले, राजभक्त और प्रजा के पालन में तत्पर विद्वान् मन्त्रीजन होवें, वे घोड़े आदि सम्पूर्ण पदार्थों को दशगुने राजा के समीप से प्राप्त होवें॥२३॥

**पुन: स राजाऽधिकारं कस्मै दद्यादित्याह॥**

फिर वह राजा अधिकार किसके लिये देवे, इस विषय को कहते हैं॥

**दश रथान् प्रष्टिमत: शतं गा अथर्वभ्य:। अश्वथ: पायवेऽदात्॥२४॥**

**दश। रथान्। प्रष्टिऽमत:। शतम्। गा:। अथर्वऽभ्य:। अश्वथ:। पायवे। अदात्॥२४॥**

**पदार्थ:-(दश) (रथान्) (प्रष्टिमत:)** प्रष्टयोऽनीप्सा विद्यन्ते येषु तान् **(शतम्) (गा:)** धेनू: **(अथर्वभ्य:)** अहिंसकेभ्य: **(अश्वथ:)** योऽश्नुते स: **(पायवे)** पालनाय **(अदात्)** दद्यात्॥२४॥

**अन्वय:-**हे राजन् गृहस्थ वा! यथाऽश्वथो मेधावी पायवेऽथर्वभ्य: प्रष्टिमतो दश रथाञ्छतं गा अदात्तथा त्वमपि देहि॥२४॥

**भावार्थ:-**अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कार:। ये राजादयो जना: पालनार्हाय पशुरथादिरक्षणाऽधिकारं ददति ते सुसामग्रीयुक्ता भवन्ति॥२४॥

**पदार्थ:-**हे राजन् वा गृहस्थ लोगो! जैसे **(अश्वथ:)** भोजन करने वाला बुद्धिमान् जन **(पायवे)** पालन के लिये **(अथर्वभ्य:)** नहीं हिंसा करने वालों को **(प्रष्टिमत:)** नहीं इच्छा विद्यमान जिनमें उन **(दश)** सङ्ख्या से विशिष्ट **(रथान्)** वाहनों को और **(शतम्)** सौ **(गा:)** गौओं को **(अदात्)** देवे, वैसे आप भी दीजिये॥२४॥

**भावार्थ:-**इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो राजा आदि जन पालन करने योग्य के लिये पशु रथ आदि के रक्षण के अधिकार को देते हैं, वे अच्छी सामग्री से युक्त होते हैं॥२४॥

**पुन: स राजा किं कुर्यादित्याह॥**

फिर वह राजा क्या करे, इस विषय को कहते हैं॥

**महि राधो विश्वजन्यं दधानान् भरद्वाजान्त्सार्ञ्जयो अभ्ययष्ट॥२५॥३४॥**

**महि। राध:। विश्वऽजन्यम्। दधानान्। भरत्ऽवाजान्। सार्ञ्जय:। अभि। अयष्ट॥२५॥**

**पदार्थ:-(महि)** महत् **(राध:)** धनम् **(विश्वजन्यम्)** विश्वाञ्जनयितुं योग्यं विश्वसुखजनकं वा **(दधानान्)** धारकान् **(भरद्वाजान्)** ये वाजानन्नादीन् भरन्ति तान् **(सार्ञ्जय:)** यो विविधान्न्याययुक्तान् व्यवहारान् सृजति तस्यापत्यम् **(अभि)** आभिमुख्ये **(अयष्ट)** अभिसङ्गच्छेत॥२५॥

**अन्वय:-**य सार्ञ्जयो महि विश्वजन्यं राधो दधानान् भरद्वाजानभ्यष्ट स राजा सम्राट् स्यात्॥२५॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-यो ब्रह्मचर्य्येण शरीरात्मानौ बलिष्ठौ कृत्वा सकलैश्वर्य्यमुन्नीयोत्तमान् पुरुषान् सङ्गृह्णाति स एव राजा राज्यमुन्नेतुमर्हेत्॥ २५॥

**पदार्थः**-जो **(साञ्जयः)** अनेक प्रकार के न्याययुक्त व्यवहारों को बनाने वाले का सन्तान **(महि)** बड़े **(विश्वजन्यम्)** संसार से वा सम्पूर्ण से उत्पन्न होने योग्य वा सम्पूर्ण सुख को उत्पन्न करने वाले **(राधः)** धन को **(दधानान्)** धारण करने वाले **(भरद्वाजान्)** अन्न आदि के धारणकर्त्ताओं के **(अभि, अयष्ट)** सन्मुख जावे, मेघावी वह राजा चक्रवर्ती होवे॥ २५॥

**भावार्थः**-जो ब्रह्मचर्य्य से शरीर और आत्मा को बलिष्ठ कर और सम्पूर्ण ऐश्वर्य्य को बढ़ाय के उत्तम पुरुषों को ग्रहण करता है, वही राजा राज्य के बढ़ाने के योग्य होवे॥ २५॥

**पुनः स राजा कीदृशान् सुहृद इच्छेदित्याह॥**

फिर वह राजा कैसे मित्रों की इच्छा करे, इस विषय को कहते हैं॥

**वन॑स्पते वी॒ड्व॑ङ्गो॒ हि भू॒या अ॒स्मत्स॑खा प्र॒तर॑णः सु॒वीर॑ः।**

**गोभि॒ः संन॑द्धो असि वी॒ळय॑स्वास्था॒ता ते॑ जयतु॒ जेत्वा॑नि॥ २६॥**

**वन॑स्पते। वी॒ळुऽअ॑ङ्गः। हि। भू॒याः। अ॒स्मत्ऽस॑खा। प्र॒ऽत॑रणः। सु॒ऽवीर॑ः। गोभि॑ः। सम्ऽन॑द्धः। अ॒सि। वी॒ळय॑स्व। आ॒ऽस्था॒ता। ते॒। ज॒यतु॒। जेत्वा॑नि॥ २६॥**

**पदार्थः**-**(वनस्पते)** वनानां किरणानां पालकः सूर्य इव **(वीड्वङ्गः)** वीळूनि बलिष्ठान्यङ्गानि यस्य सः **(हि)** यतः **(भूयाः)** **(अस्मत्सखा)** अस्माकं मित्रम् **(प्रतरणः)** प्रतारकः **(सुवीरः)** सुष्ठु वीरयुक्तः **(गोभिः)** सुशिक्षिताभिर्वाग्भिः **(सन्नद्धः)** सम्यक् सज्जः **(असि)** **(वीळयस्व)** दृढान् कारय **(आस्थाता)** आस्थायुक्तः **(ते)** तव **(जयतु)** **(जेत्वानि)** जेतुं योग्यानि शत्रुसैन्यानि॥ २६॥

**अन्वयः**-हे वनस्पते! हि यतो वीड्वङ्गः प्रतरणः सुवीरो गोभिस्सह सन्नद्धस्त्वमसि तस्मादस्मत्सखा भूयाः। आस्थाता सन्नस्मान् वीळयस्व ते सेना जेत्वानि जयतु॥ २६॥

**भावार्थः**-मनुष्यैर्धार्मिकेन बलवता मित्रता कार्या येन सर्वदा विजयः स्यात्॥ २६॥

**पदार्थः**-हे **(वनस्पते)** किरणों के पालन करने वाले सूर्य्य के समान वर्त्तमान **(हि)** जिससे **(वीड्वङ्गः)** बलिष्ठ अङ्ग जिसके वह **(प्रतरणः)** पार करने वाले **(सुवीरः)** अच्छे प्रकार वीरों से युक्त **(गोभिः)** उत्तम प्रकार शिक्षित वाणियों के साथ **(सन्नद्धः)** अच्छे प्रकार तैयार हुए आप **(असि)** हो इससे **(अस्मत्सखा)** हम लोगों के मित्र **(भूयाः)** हूजिये और **(आस्थाता)** स्थिति से युक्त हुए हम लोगों को **(वीळयस्व)** दृढ़ कराइये **(ते)** आपकी सेना **(जेत्वानि)** जीतने योग्य शत्रुओं की सेनाओं को **(जयतु)** जीते॥ २६॥

**भावार्थः**-मनुष्यों को चाहिये कि धार्मिक बलवान् के साथ मित्रता करें, जिससे सर्वदा विजय हो॥ २६॥



www.9009.co.in

**पुनर्मनुष्यैः केभ्य उपकारा ग्राह्या इत्याह॥**

फिर मनुष्यों को किन से उपकार ग्रहण करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**दिवस्पृथिव्याः पर्योज उद्भृतं वनस्पतिभ्यः पर्याभृतं सहः।**

**अपामोज्मानं परि गोभिरावृतमिन्द्रस्य वज्रं हविषा रथं यज॥२७॥**

**दिवः। पृथिव्याः। परि। ओजः। उत्ऽभृतम्। वनस्पतिऽभ्यः। परि। आऽभृतम्। सहः। अपाम्। ओज्मानम्। परि। गोभिः। आऽवृतम्। इन्द्रस्य। वज्रम्। हविषा। रथम्। यज॥२७॥**

**पदार्थः**-(**दिवः**) विद्युतस्सूर्याद्वा (**पृथिव्याः**) भूमेरन्तरिक्षाद्वा (**परि**) (**ओजः**) बलम् (**उद्भृतम्**) उत्कृष्टरीत्या धृतम् (**वनस्पतिभ्यः**) वटादिभ्यः (**परि**) सर्वतः (**आभृतम्**) आभिमुख्येन धृतम् (**सहः**) बलम् (**अपाम्**) जलानाम् (**ओज्मानम्**) बलकारिणम् (**परि**) सर्वतः (**गोभिः**) किरणैः (**आवृतम्**) आच्छादितम् (**इन्द्रस्य**) विद्युतः (**वज्रम्**) प्रहारम् (**हविषा**) सामग्र्या दानेन (**रथम्**) विमानादियानविशेषम् (**यज**) सङ्गच्छस्व॥२७॥

**अन्वयः**-हे विद्वँस्त्वं दिवः पृथिव्या वनस्पतिभ्य ओज उद्भृतं सहः पर्याभृतं गोभिरपामोज्मानं पर्यावृतमिन्द्रस्य वज्रं रथं च हविषा परि यज॥२७॥

**भावार्थः**-ये मनुष्याः सर्वतो बलं गृहीत्वा सूर्य्योऽपामोज्मानं मेघमिव सुखं वर्षयन्ति ते सर्वतः सत्कृता जायन्ते॥२७॥

**पदार्थः**-हे विद्वन्! आप (**दिवः**) बिजुली से वा सूर्य्य से (**पृथिव्याः**) भूमि वा अन्तरिक्ष से (**वनस्पतिभ्यः**) वट आदि वनस्पतियों से (**ओजः**) बल (**उद्भृतम्**) उत्तम रीति से धारण किया गया वा (**सहः**) बल (**परि**) सब प्रकार से (**आभृतम्**) सन्मुख धारण किया गया और (**गोभिः**) किरणों से (**अपाम्**) जलों के (**ओज्मानम्**) बलकारी (**परि**) सब ओर से (**आवृतम्**) ढाँपे गये (**इन्द्रस्य**) बिजुली के (**वज्रम्**) प्रहार को और (**रथम्**) विमान आदि वाहन विशेष को (**हविषा**) सामग्री के दान से (**परि, यज**) उत्तम प्रकार प्राप्त हूजिये॥२७॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य सब ओर से बल को ग्रहण करके जलों के बलकारी मेघ को जैसे वैसे सुख को वर्षाते हैं, वे सब प्रकार से सत्कृत होते हैं॥२७॥

**पुना राज्ञा विद्युता किं साधनीयमित्याह॥**

फिर राजा को बिजुली से क्या सिद्ध करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**इन्द्रस्य वज्रो मरुतामनीकं मित्रस्य गर्भो वरुणस्य नाभिः।**

**सेमां नो हव्यदातिं जुषाणो देव रथ प्रति हव्या गृभाय॥२८॥**

**इन्द्रस्य। वज्रः। मरुताम्। अनीकम्। मित्रस्य। गर्भः। वरुणस्य। नाभिः। सः। इमाम्। नः। हव्यऽदातिम्। जुषाणः। देव। रथ। प्रति। हव्या। गृभाय॥२८॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**इन्द्रस्य**) विद्युतः (**वज्रः**) प्रहारः शब्दो वा (**मरुताम्**) मनुष्याणाम् (**अनीकम्**) सैन्यमिव (**मित्रस्य**) प्राणस्य (**गर्भः**) मध्यस्थः (**वरुणस्य**) श्रेष्ठस्य वायोः (**नाभिः**) बन्धनम् (**सः**) (**इमाम्**) (**नः**) अस्माकम् (**हव्यदातिम्**) दातव्यदानक्रियाम् (**जुषाणः**) सेवमानः (**देव**) विद्वन् (**रथ**) रमणीय (**प्रति**) प्रतीतौ (**हव्या**) आदातुमर्हाणि (**गृभाय**) गृहाण॥२८॥

**अन्वयः**-हे देव रथ विद्वन् राजंस्त्वं यो मरुतामनीकमिवेन्द्रस्य वज्रो मित्रस्य गर्भो वरुणस्य नाभिरस्ति स न इमां हव्यदातिं जुषाणः सन् हव्या प्रति ददाति तं त्वं प्रति गृभाय॥२८॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे विद्वांसो! विद्युदादिपदार्थैः सर्वमूर्त्तद्रव्यान्तःस्थैः कर्मभिर्युक्तां सेनां सम्पाद्य विजयेनालङ्कृता भवन्तु॥२८॥

**पदार्थः**-हे (**देव, रथ**) सुन्दर विद्वन् राजन्! आप जो (**मरुताम्**) मनुष्यों की (**अनीकम्**) सेना के सदृश (**इन्द्रस्य**) बिजुली की (**वज्रः**) धमक वा शब्द (**मित्रस्य**) प्राण के (**गर्भः**) मध्य में स्थित और (**वरुणस्य**) श्रेष्ठ वायु का (**नाभिः**) बन्धन है (**सः**) वह (**नः**) हम लोगों की (**इमाम्**) इस (**हव्यदातिम्**) देने योग्य दान की क्रिया को (**जुषाणः**) सेवन करता हुआ (**हव्या**) ग्रहण करने योग्यों को देता है, उसको आप (**प्रति, गृभाय**) प्रतीति से ग्रहण करिये॥२८॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे विद्वान् जनो! बिजुली आदि पदार्थों और सम्पूर्ण मूर्त्त द्रव्यों के मध्य में वर्त्तमान कर्म्मों से युक्त सेना को करके विजय से शोभित हूजिये॥२८॥

**पुनर्विद्वद्भिः किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

फिर विद्वानों को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**उप॑ श्वासय पृथि॒वीमु॒त द्यां पु॑रु॒त्रा ते॑ मनुतां॒ विष्ठि॑तं॒ जग॑त्।**

**स दु॑न्दुभे स॒जूरिन्द्रे॑ण दे॒वैर्दू॒राद् दवी॑यो॒ अप॑ सेध॒ शत्रू॑न्॥२९॥**

**उप॑। श्वा॒स॒य॒। पृ॒थि॒वीम्। उ॒त। द्याम्। पु॒रु॒ऽत्रा। ते॒। म॒नु॒ता॒म्। विऽस्थि॑तम्। जग॑त्। सः। दु॒न्दु॒भे॒। स॒ऽजूः। इन्द्रे॑ण। दे॒वैः। दू॒रात्। दवी॑यः। अप॑। से॒ध॒। शत्रू॑न्॥२९॥**

**पदार्थः**-(**उप**) (**श्वासय**) प्राणय (**पृथिवीम्**) भूमिमन्तरिक्षं वा (**उत**) (**द्याम्**) सूर्य्यं विद्युतं वा (**पुरुत्रा**) पुरुषु पदार्थेषु भवान् (**ते**) तव (**मनुताम्**) विजानातु (**विष्ठितम्**) विशेषेण स्थितम् (**जगत्**) यद् गच्छति (**सः**) (**दुन्दुभे**) दुन्दुभिरिव गर्ज्जक (**सजूः**) संयुक्तः (**इन्द्रेण**) विद्युदस्त्रेण (**देवैः**) विद्वद्भिर्वीरैः (**दूरात्**) (**दवीयः**) अतिशयेन दूरम् (**अप**) (**सेध**) अप नय (**शत्रून्**)॥२९॥

**अन्वयः**-हे दुन्दुभे! यथा स जगदीश्वरः पृथिवीमुत द्यां विष्ठितं जगन्मनुतां तेन पुरुत्रेन्द्रेण देवैः सजूस्त्वं शत्रून् दूराद्दवीयोऽप सेध यस्ते कल्याणं मनुतां तमुपास्य सर्वानुपश्वासय॥२९॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे विद्वांसो! यथेश्वरेण पृथिवीसूर्यादि सर्वं जगत्स्वसत्तया स्थापितं तथैव विद्युता मूर्तिमद्द्रव्याण्यभिव्याप्य प्रवर्त्यन्त, ईश्वरोपासनेन विद्युदादिप्रयोगेण दूरस्थानपि शत्रून् विजित्य सकलान् प्रजीवयत॥२९॥

**पदार्थः**-हे **(दुन्दुभे)** दुन्दुभि के सदृश गर्जने वाले! जैसे **(सः)** वह जगदीश्वर **(पृथिवी)** भूमि वा अन्तरिक्ष को और **(उत)** भी **(द्याम्)** सूर्य्य वा बिजुली को **(विष्ठितम्)** विशेष करके स्थित **(जगत्)** व्यतीत होने वाले संसार को **(मनुताम्)** जाने उस ज्ञान से **(पुरुत्रा)** सम्पूर्ण पदार्थों से हुए **(इन्द्रेण)** बिजुलीरूप अस्त्र से और **(देवैः)** विद्वान् वीरों से **(सजूः)** संयुक्त आप **(शत्रून्)** शत्रुओं को **(दूरात्)** दूर से **(दवीयः)** अति दूर **(अप, सेध)** हराइये और जो **(ते)** आपके कल्याण को जाने उसकी उपासना करके सब को **(उप, श्वासय)** समझाइये॥२९॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे विद्वानो! जैसे ईश्वर ने पृथिवी और सूर्यादि सम्पूर्ण संसार को अपनी सत्ता से स्थापित किया, वैसे ही बिजुली सम्पूर्ण द्रव्यों में अभिव्याप्त होकर मध्य में प्रविष्ट है, ईश्वर की उपासना और बिजुली आदि के प्रयोगों से दूर पर स्थित भी शत्रुओं को जीत कर सब को जिलाओ॥२९॥

**पुनः स राजा किं कुर्यादित्याह॥**

फिर वह राजा क्या करे, इस विषय को कहते हैं॥

**आ क्रन्दय बलमोजो न आ धा निः ष्टनिहि दुरिता बाधमानः।**
**अप प्रोथ दुन्दुभे दुच्छुना इत इन्द्रस्य मुष्टिरसि वीळयस्व॥३०॥**

**आ। क्रन्दय। बलम्। ओजः। नः। आ। धाः। निः। स्तनिहि। दुःऽइता। बाधमानः। अप। प्रोथ। दुन्दुभे। दुच्छुनाः। इतः। इन्द्रस्य। मुष्टिः। असि। वीळयस्व॥३०॥**

**पदार्थः**-**(आ)** समन्तात् **(क्रन्दय)** रोदयाऽऽह्वय वा **(बलम्)** **(ओजः)** पराक्रमम् **(नः)** अस्मभ्यम् **(आ)** **(धाः)** धेहि **(निः)** नितराम् **(स्तनिहि)** शब्दय **(दुरिता)** दुष्टव्यसनानि **(बाधमानः)** **(अप)** **(प्रोथ)** जेतुं पर्याप्तो भव शत्रूनसमर्थान् कुरु **(दुन्दुभे)** दुन्दुभिरिव वर्त्तमान **(दुच्छुनाः)** दुष्टश्वान इव वर्त्तमानान् **(इतः)** अस्मात् **(इन्द्रस्य)** विद्युतः **(मुष्टिः)** मुष्टिवद्दुष्टानां हन्ता **(असि)** **(वीळयस्व)** बलयस्व॥३०॥

**अन्वयः**-हे दुन्दुभे! त्वं नो बलमोज आ धाः शत्रूनाक्रन्दयास्मान्निः ष्टनिहि दुरिता बाधमानो दुच्छुना इव वर्त्तमानाञ्छत्रूनप प्रोथ। यतस्त्वमिन्द्रस्य मुष्टिरसीतोऽस्मान् वीळयस्व॥३०॥

**भावार्थः**-हे राजंस्त्वमीदृशं बलं धरेर्येन दुर्व्यसनानि दुष्टाः शत्रवो नश्येयुः प्रजाः पोषयितुं शक्नुयाः॥३०॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**दुन्दुभे**) दुन्दुभी के समान वर्त्तमान! आप (**नः**) हम लोगों के लिये (**बलम्**) सामर्थ्य को और (**ओजः**) पराक्रम को (**आ, धाः**,) धरिये और शत्रुओं को (**आ**) सब ओर से (**क्रन्दय**) रुलाइये और बुलाइये तथा हम लोगों को (**निः**) अत्यन्त (**स्तनिहि**) शब्द कराइये और (**दुरिता**) दुष्ट व्यसनों को (**बाधमानः**) नष्ट करते हुए (**दुच्छुनाः**) दुष्ट कुत्तों के समान वर्त्तमान शत्रुओं के (**अप, प्रोथ**) जीतने को पर्याप्त हूजिये अर्थात् शत्रुओं को असमर्थ करिये जिससे आप (**इन्द्रस्य**) बिजुली की (**मुष्टिः**) मुष्टि के समान दुष्टों के मारने वाले (**असि**) हो (**इतः**) इससे हम लोगों को (**वीळयस्व**) बलयुक्त करिये॥३०॥

**भावार्थः**-हे राजन्! आप ऐसे बल को धारण करिये जिससे दुष्ट व्यसन, और दुष्ट शत्रु नष्ट होवें और प्रजाओं के पोषण करने को समर्थ होवें॥३०॥

**पुना राजदयो जनाः किं कुर्य्युरित्याह॥**

फिर राजा आदि जन क्या करें, इस विषय को कहते हैं॥

**आमूरज प्रत्यावर्तयेमाः केतुमद् दुन्दुभिर्वावदीति।**

**समश्वपर्णाश्चरन्ति नो नरोऽस्माकमिन्द्र रथिनो जयन्तु॥३१॥३५॥७॥**

**आ। अमूः। अज। प्रतिऽआवर्तय। इमाः। केतुऽमत्। दुन्दुभिः। वावदीति। सम्। अश्वऽपर्णाः। चरन्ति। नः। नरः। अस्माकम्। इन्द्र। रथिनः। जयन्तु॥३१॥**

**पदार्थः**-(**आ**) (**अमूः**) इमाः शत्रुसेनाः (**अज**) समन्ताद् दूरे प्रक्षिप (**प्रत्यावर्त्तय**) (**इमाः**) स्वकीयाः (**केतुमत्**) प्रशस्तप्रज्ञायुक्तम् (**दुन्दुभिः**) (**वावदीति**) भृशं वदति (**सम्**) (**अश्वपर्णाः**) महान्तः पर्णाः पक्षा येषान्ते (**चरन्ति**) (**नः**) अस्मान् (**नरः**) नायकाः (**अस्माकम्**) (**इन्द्र**) शत्रुविदारक (**रथिनः**) प्रशस्ता रथा विद्यन्ते येषां ते (**जयन्तु**)॥३१॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र राजँस्त्वं यथा दुन्दुभिः केतुमद्वावदीति तथेमा अश्वपर्णाः स्वसेनाः प्रत्यावर्त्तय ताभिरमूः शत्रुसेना दूर आज। येऽस्माकं रथिनो नरोऽस्माकं शत्रूञ्जयन्तु। ये विजयाय संचरन्ति ते नोऽस्मानलंकुर्वन्तु॥३१॥

**भावार्थः**-हे राजादयो जना यूयं दुन्दुभ्यादिवादित्रभूषिता हृष्टाः पुष्टाः सेनाः संरक्ष्याभिर्दूरस्थानपि शत्रून् विजित्य प्रजा धर्म्येण पालयतेति॥३१॥

अत्र सोमप्रश्नोत्तरविद्युद्राजप्रजासेनावादित्रकृत्यवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

अस्मिन्नध्याय

इन्द्रसोमेश्वरराजप्रजामेघसूर्य्यवीरसेनायानयज्ञमित्रैश्वर्य्यप्रज्ञाविद्युन्मेधावीवाक्सत्यबल-पराक्रमराजनीतिसङ्ग्रामशत्रुजयादिगुणवर्णनादेतदध्यायस्य पूर्वाध्यायेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्य्यश्रीमद्विरजानन्दसरस्वतीस्वामिशिष्यश्रीमद्दयानन्दसरस्वतीस्वामिविरचिते**



www.9009.co.in

**सुप्रमाणयुक्त आर्य्यभाषाविभूषित ऋग्वेदभाष्ये चतुर्थाष्टके सप्तमोऽध्याय:, पञ्चविंशो वर्ग:, षष्ठे मण्डले सप्तचत्वारिंशत्तमं सूक्तं च समाप्तम्॥**

**पदार्थ:**–हे **(इन्द्र)** शत्रुओं के विदीर्ण करने वाले राजन्! आप जैसे **(दुन्दुभि:)** नगाड़ा **(केतुमत्)** प्रशंसा योग्य बुद्धियुक्त **(वावदीति)** निरन्तर बजाता, वैसे **(इमा:)** यह **(अश्वपर्णा:)** महान् पक्षों वाली अपनी सेनाएँ **(प्रत्यावर्त्तय)** लौटाइये और उनसे **(अमू:)** यह शत्रुसेनाएँ दूर **(आ, अज)** फेंकिये जो **(अस्माकम्)** हमारे **(रथिन:)** प्रशंसित रथ वाले **(नर:)** नायक वीर हमारे शत्रुओं को **(जयन्तु)** जीतें और जो विजय के लिये **(सम्, चरन्ति)** सम्यक् विचरते हैं, वे **(न:)** हम लोगों को सुशोभित करें॥३१॥

**भावार्थ:**-हे राजा आदि जनो! तुम लोग दुन्दुभि आदि वाजनों से भूषित, हर्ष वा पुष्टि से युक्त सेनाओं को अच्छे प्रकार रख कर इनसे दूरस्थ भी शत्रुओं को अच्छे प्रकार जीतकर प्रजाओं को धर्मयुक्त व्यवहार से पालन करो॥३१॥

इस सूक्त में सोम, प्रश्नोत्तर, बिजुली, राजा, प्रजा, सेना और वाजनों से भूषित कृत्य का वर्णन होने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

इस अध्याय में इन्द्र, सोम, ईश्वर, राजा, प्रजा, मेघ, सूर्य, वीर, सेना, यान, यज्ञ, मित्र, ऐश्वर्य्य, प्रज्ञा, बिजुली, बुद्धिमान्, वाणी, सत्य, बल, पराक्रम, राजनीति, सङ्ग्राम और शत्रुविजय आदि गुणों का वर्णन होने से इस अध्याय की पूर्वाध्याय के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य श्रीमद् विरजानन्द सरस्वती स्वामी के शिष्य श्रीमद्दयानन्द सरस्वती स्वामिविरचित, सुप्रमाणयुक्त, आर्यभाषाविभूषित, ऋग्वेदभाष्य के चौथे अष्टक में सप्तम अध्याय पैंतीसवाँ वर्ग और छठे मण्डल में सैंतालीसवाँ सूक्त भी समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

अथ चतुर्थाष्टकेऽष्टमाध्यायारम्भः॥

ओ३म् विश्वा॑नि देव सवितर्दुरि॒तानि॒ परा॑ सुव। यद्भ॒द्रं तन्न॒ आ सु॑व॥१॥

अथ द्वाविंशत्यृचस्याष्टचत्वारिंशत्तमस्य सूक्तस्य शंयुर्बार्हस्पत्य ऋषिः। तृणपाणिकं पृश्निसूक्तम्॥१-१० अग्निः। ११, १२, २०, २१ मरुतः। १३-१५ मरुतो लिङ्गोक्ता देवता वा। १६-१९ पूषा। २२ पृश्निर्द्यावाभूमी वा॥ १, ४, ५, १४ बृहती। ३, १९ विराड्बृहती। १०, १२, १७ भुरिग्बृहती छन्दः। मध्यमः स्वरः। २ स्वराडार्ची जगती छन्दः। १५ निचृदतिजगती छन्दः। निषादः स्वरः। ६, २१ त्रिष्टुप्। ७ निचृत्त्रिष्टुप्। ८ भुरिक्त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः। ९ भुरिगनुष्टुप्। २० स्वराडनुष्टुप्। २२ अनुष्टुप् छन्दः। गान्धारः स्वरः। ११, १६ उष्णिक्। १३, १८ निचृदुष्णिक्छन्दः। ऋषभः स्वरः॥

*अथ विद्वद्भिः किं कर्त्तव्यमित्याह॥*

अब चतुर्थाष्टक के अष्टमाध्याय का आरम्भ है, इसमें बाईस ऋचा वाले अड़तालीसवें सूक्त के प्रथम मन्त्र में विद्वानों को क्या करना चाहिये, इस विषय का वर्णन करते हैं॥

**य॒ज्ञाय॑ज्ञा वो अ॒ग्नये॑ गि॒राग‍ि॑रा च॒ दक्ष॑से।**

**प्रप्र॑ व॒यम॒मृतं॑ जा॒तवे॑दसं प्रि॒यं मि॒त्रं न शं॑सिषम्॥१॥**

य॒ज्ञाऽय॑ज्ञा। व॒ः। अ॒ग्नये॑। गि॒राऽगि॑रा। च॒। दक्ष॑से। प्रऽप्र॑। व॒यम्। अ॒मृत॑म्। जा॒तऽवे॑दसम्। प्रि॒यम्। मि॒त्रम्। न। शं॒सि॒षम्॥१॥

**पदार्थः**-(**यज्ञायज्ञा**) यज्ञेयज्ञे (**वः**) युष्माकम् (**अग्नये**) पावकाय (**गिरागिरा**) वाचा वाचा (**च**) (**दक्षसे**) (**प्रप्र**) (**वयम्**) (**अमृतम्**) नाशरहितम् (**जातवेदसम्**) जातविद्यम् (**प्रियम्**) कमनीयम् (**मित्रम्**) सखायम् (**न**) इव (**शंसिषम्**)॥१॥

**अन्वयः**-हे विद्वांसो! वो यज्ञायज्ञा गिरागिरा चाऽग्नये दक्षसे वयं प्रयेतम ह्यमृतं जातवेदसं प्रियं मित्रं न युष्मानहं यथा प्रप्र शंसिषं तथा यूयमप्यस्मान् प्रशंसत॥१॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यथा विद्वांसो युष्मासु प्रीतिं जनयेयुस्तथा यूयमप्यस्माकं कार्यसाधनाय प्रीतिं जनयत॥१॥

**पदार्थः**-हे विद्वान् जनो! (**वः**) आपके (**यज्ञायज्ञा**) यज्ञ-यज्ञ में (**गिरागिरा, च**) और वाणी-वाणी से (**अग्नये**) अग्नि (**दक्षसे**) जो कि विलक्षण है उसके लिये (**वयम्**) हम लोग प्रयत्न करें। और (**अमृतम्**) नाश से रहित (**जातवेदसम्**) जातवेदस् अर्थात् जिससे विद्या उत्पन्न हुई ऐसे अग्नि (**प्रियम्**)



www.9009.co.in

मनोहर **(मित्रम्)** मित्र के **(न)** समान तुम लोगों की मैं जैसे **(प्रप्र, शंसिषम्)** वार-वार प्रशंसा करूं, वैसे आप भी हम लोगों की प्रशंसा कीजिये॥१॥

**भावार्थ:**-हे मनुष्यो! जैसे विद्वान् जन आप लोगों की प्रीति उत्पन्न करें, वैसे आप भी हमारे कार्य साधने के लिये प्रीति उत्पन्न कीजिये॥१॥

**पुना राजप्रजाजना: परस्परं कथं वर्तेरन्नित्याह॥**

फिर राजा और प्रजाजन परस्पर कैसे वर्तें, इस विषय को कहते हैं॥

**ऊ॒र्जो नपा॑तं॒ स हि॒नायम॑स्म॒युर्दाशे॑म ह॒व्यदा॑तये।**

**भुव॒द्वाजे॑ष्वावि॒ता भुव॑द् वृ॒ध उ॒त त्राता त॒नूना॑म्॥२॥**

**ऊ॒र्जः। नपा॑तम्। सः। हि॒न। अ॒यम्। अ॒स्म॒ऽयुः। दाशे॑म। ह॒व्यऽदा॑तये। भुव॑त्। वाजे॑षु। अ॒वि॒ता। भुव॑त्। वृ॒धः। उ॒त। त्रा॒ता। त॒नूना॑म्॥२॥**

**पदार्थ:**-**(ऊर्जः)** पराक्रमस्य **(नपातम्)** अपातयितारमनाशकम् **(सः)** **(हिन)** खलु **(अयम्)** **(अस्मयुः)** अस्मान् कामयमानः **(दाशेम)** दद्याम **(हव्यदातये)** दातव्यदानाय **(भुवत्)** भवेत् **(वाजेषु)** सङ्ग्रामेषु **(अविता)** रक्षकः **(भुवत्)** भवेत् **(वृधः)** वृद्धिकरः **(उत)** **(त्राता)** पालकः **(तनूनाम्)** शरीराणाम्॥२॥

**अन्वय:**-हे मनुष्या! योऽयमस्मयुर्हव्यदातयेऽविता भुवद्वाजेष्वविता भुवत् वृधो रक्षको भुवदुत तनूनां त्राता भुवत् तमूर्जो नपातं संरक्ष्य वयं सुखं दाशेम स हिनाऽस्मभ्यं सुखं दद्यात्॥२॥

**भावार्थ:**-हे प्रजासेनाजना! यो राजा सङ्ग्रामेऽसङ्ग्रामे च सर्वेषां रक्षकः सततं भवेत्तदनुकूलं वर्त्तित्वा वयं तस्मै पुष्कलं सुखं दद्याम॥२॥

**पदार्थ:**-हे मनुष्यो! जो **(अयम्)** यह **(अस्मयुः)** हम लोगों की कामना करने वाला तथा **(हव्यदातये)** देने योग्य दान के लिये **(अविता)** रक्षा करने वाला **(भुवत्)** होवे और **(वाजेषु)** सङ्ग्रामों में रक्षा करने वाला **(भुवत्)** हो तथा **(वृधः)** वृद्धि करने वा रक्षा करने वाला हो **(उत)** और **(तनूनाम्)** शरीरों का **(त्राता)** पालन करने वाला हो उसको **(ऊर्जः)** पराक्रम के **(नपातम्)** न पातन कराने अर्थात् न विनाश कराने वाले की अच्छे प्रकार रक्षा कर हम सुख **(दाशेम)** देवें **(सः, हिन)** वही हमारे लिये सुख देवे॥२॥

**भावार्थ:**-हे प्रजासेनाजनो! जो राजा सङ्ग्राम वा असङ्ग्राम में सबकी रक्षा करने वाला निरन्तर हो, तनुकूल वर्ताव कर हम लोग उसके लिये पुष्कल सुख देवें॥२॥

**पुनः स राजा किं कुर्य्यादित्याह॥**

फिर वह राजा क्या करे, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**वृषा॒ ह्य॑ग्ने अ॒जरो॑ म॒हान् वि॒भास्य॒र्चिषा॑।**



www.9009.co.in

**अजस्रेण शोचिषा शोशुचच्छुचे सुदीतिभिः सु दीदिहि॥३॥**

**वृषा। हि। अग्ने। अजरः। महान्। विऽभासि। अर्चिषा। अजस्रेण। शोचिषा। शोशुचत्। शुचे। सुदीतिऽभिः। सु। दीदिहि॥३॥**

**पदार्थः**-(**वृषा**) बलिष्ठः (**हि**) यतः (**अग्ने**) पावक इव वर्त्तमान (**अजरः**) जरारहितः (**महान्**) (**विभासि**) (**अर्चिषा**) सत्कारेण दीप्त्या वा (**अजस्रेण**) निरन्तरेण (**शोचिषा**) प्रकाशेन (**शोशुचत्**) भृशं पवित्रयन् (**शुचे**) विद्याविनयाभ्यां प्रकाशित (**सुदीतिभिः**) सुष्ठु दीप्तिभिः (**सु**) (**दीदिहि**) प्रकाशय॥३॥

**अन्वयः**-हे शुचेऽग्ने! हि यतो वृषाऽजरो महांस्त्वमजस्रेणार्चिषा शोचिषा सुदीतिभिः सर्वान् विभासि तस्मादस्मान् सु दीदिहि॥३॥

**भावार्थः**-हे राजंस्त्वया सततं विद्याविनयप्रकाशेन दुर्व्यसनक्षयेण प्रजाः सततं पालनीयाः॥३॥

**पदार्थः**-हे (**शुचे**) विद्या और विनय से प्रकाशित (**अग्ने**) पावक के समान वर्त्तमान! (**हि**) जिससे (**वृषा**) अत्यन्त बलवान् (**अजरः**) जरा अवस्था से रहित (**महान्**) बड़े आप (**अजस्रेण**) निरन्तर (**अर्चिषा**) सत्कार वा दीप्ति से (**शोचिषा**) वा प्रकाश से (**शोशुचत्**) निरन्तर पवित्र करते हुए (**सुदीतिभिः**) उत्तम दीप्तियों से सबको (**विभासि**) विशेषता से प्रकाशित करते हैं, इससे हम लोगों को (**सु, दीदिहि**) प्रकाशित कीजिये॥३॥

**भावार्थः**-हे राजन्! आपको चाहिये कि निरन्तर विद्या और विनय के प्रकाश से और दुष्ट व्यसनों के नाश से प्रजा की निरन्तर पालना करो॥३॥

**पुनः स राजा किं कुर्य्यादित्याह॥**

फिर वह राजा क्या करे, इस विषय को कहते हैं॥

**महो देवान् यजसि यक्ष्यानुषक्तव क्रत्वोत दंसना।**
**अर्वाचः सीं कृणुह्यग्नेऽवसे रास्व वाजोत वंस्व॥४॥**

**महः। देवान्। यजसि। यक्षि। आनुषक्। तव। क्रत्वा। उत। दंसना। अर्वाचः। सीम्। कृणुहि। अग्ने। अवसे। रास्व। वाजा। उत। वंस्व॥४॥**

**पदार्थः**-(**महः**) महतः (**देवान्**) विदुषः (**यजसि**) सङ्गच्छसे (**यक्षि**) यजसि (**आनुषक्**) आनुकूल्ये (**तव**) (**क्रत्वा**) प्रज्ञया (**उत**) अपि (**दंसना**) कर्माणि (**अर्वाचः**) येऽर्वागञ्चन्ति तान् (**सीम्**) सर्वतः (**कृणुहि**) (**अग्ने**) अग्निरिव वर्त्तमान राजन् (**अवसे**) (**रास्व**) देहि (**वाजा**) अन्नानि (**उत**) (**वंस्व**) सम्भज॥४॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! त्वमर्वाचो महो देवान् यजसि। आनुषग्दंसना यक्षि तस्य तव क्रत्वा वयमेतान् यजेम। उताऽवसेऽस्मभ्यं रास्व सीं सुखं कृणुहि, उत वाजा वंस्व॥४॥

**भावार्थः**-ये मूर्खान् विदुषः सम्पादयन्ति ते महदनुकूलं सुखं प्राप्नुवन्ति॥४॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-हे **(अग्ने)** अग्नि के समान वर्त्तमान राजन्! आप **(अर्वाचः)** जो प्राप्त होते उन **(महः)** महान् अत्युत्तम महात्मा **(देवान्)** विद्वान् जनों से **(यजसि)** सङ्गत होते हैं और **(आनुषक्)** अनुकूलता में **(दंसना)** कर्मों को **(यक्षि)** सङ्गत करते हैं उन **(तव)** आपकी **(क्रत्वा)** प्रज्ञा से हम लोग उनको सङ्गत करें **(उत)** और **(अवसे)** रक्षा के अर्थ हम लोगों के लिये **(रास्व)** दीजिये और **(सीम्)** सब ओर से सुख **(कृणुहि)** कीजिये **(उत)** और **(वाजा)** अन्नों का **(वंस्व)** सेवन कीजिये॥४॥

**भावार्थः**-जो मूर्खों को विद्वान् करते हैं, वे महत् अनुकूल सुख को प्राप्त होते हैं॥४॥

**पुनर्मनुष्याः किं कुर्य्युरित्याह॥**

फिर मनुष्य क्या करें, इस विषय को कहते हैं॥

**यमापो अद्रयो वना गर्भमृतस्य पिप्रति।**

**सहसा यो मथितो जायते नृभिः पृथिव्या अधि सानवि॥५॥१॥**

**यम्। आपः। अद्रयः। वना। गर्भम्। ऋतस्य। पिप्रति। सहसा। यः। मथितः। जायते। नृऽभिः। पृथिव्याः। अधि। सानवि॥५॥**

**पदार्थः**-**(यम्)** **(आपः)** जलानि **(अद्रयः)** मेघाः **(वना)** किरणाः **(गर्भम्)** **(ऋतस्य)** जलस्य **(पिप्रति)** पूरयन्ति **(सहसा)** बलेन **(यः)** **(मथितः)** विलोडितः **(जायते)** **(नृभिः)** नायकैः **(पृथिव्याः)** **(अधि)** उपरि **(सानवि)** पवर्तस्य शिखरे॥५॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यमृतस्य गर्भमापोऽद्रयो वना पिप्रति यो नृभिः सहसा मथितः पृथिव्या अधि सानवि जायते त यूयं सम्प्रयुङ्ध्वम्॥५॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! ये सर्वान्तःस्थमग्निं विद्वांसः प्राप्नुवन्ति मथित्वा प्रदीपयन्ति ते भूमिराज्येऽधिष्ठातारो जायन्ते॥५॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(यम्)** जिस **(ऋतस्य)** जल के **(गर्भम्)** गर्भरूप संसार को **(आपः)** जल **(अद्रयः)** मेघ और **(वना)** किरण **(पिप्रति)** पूरण करते हैं और **(यः)** जो **(नृभिः)** नायक मनुष्यों से **(सहसा)** बल से **(मथितः)** मथा हुआ **(पृथिव्याः)** पृथिवी के **(अधि)** ऊपर **(सानवि)** पर्वत के शिखर पर **(जायते)** प्रसिद्ध होता है, उस अग्नि को तुम अच्छे प्रकार युक्त करो॥५॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो सब में व्याप्त होकर रहने वाले अग्नि को विद्वान् जन प्राप्त होते और मथि के प्रदीप्त करते हैं, वे भूमि के राज्य करने में अधिष्ठाता होते हैं॥५॥

**पुनर्मनुष्यैः किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**आ यः पप्रौ भानुना रोदसी उभे धूमेन धावते दिवि।**

**तिरस्तमो ददृश ऊर्म्यास्वा श्यावास्वरुषो वृषा श्यावा अरुषो वृषा॥६॥**



www.9009.co.in

आ। यः। पप्रौ। भानुना। रोदसी इति। उभे इति। धूमेन। धावते। दिवि। तिरः। तमः। ददृशे। ऊर्म्यासु। आ। श्यावासु। अरुषः। वृषा। आ। श्यावाः। अरुषः। वृषा॥६॥

**पदार्थः**-(**आ**) (**यः**) (**पप्रौ**) व्याप्नोति (**भानुना**) किरणेन (**रोदसी**) द्यावापृथिव्यौ (**उभे**) (**धूमेन**) (**धावते**) (**दिवि**) अन्तरिक्षे (**तिरः**) तिरस्करणे (**तमः**) अन्धकारः (**ददृशे**) दृश्यते (**ऊर्म्यासु**) रात्रिषु। **ऊर्म्येति रात्रिनाम।** (निघं०१.७) (**आ**) (**श्यावासु**) कृष्णासु (**अरुषः**) आरक्तगुणः (**वृषा**) वर्षकः (**आ**) (**श्यावाः**) सवितुर्वेगवन्तः किरणाः। **श्यावा इति सवितुरादिष्टोपयोगिनः।** (निघं०१.१५) (**अरुषः**) (**वृषा**) वर्षकः॥६॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यूयं यो भानुनोभे रोदसी आ पप्रौ धूमेन दिवि धावते श्यावासूर्म्यासु यत्तमस्तत्तिरस्कृत्याऽरुषो वृषा यस्य श्यावा अरुषो वृषा आ ददृशे तमाविजानीत॥६॥

**भावार्थः**-येन विद्युदग्निना भूमिसूर्यौ प्रदृश्येते यस्मादधिको वेगवान् कोऽपि नास्ति योऽन्धकारनिवर्त्तकोऽस्ति तं यूयं सम्प्रयुङ्ध्वम्॥६॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! तुम (**यः**) जो (**भानुना**) किरण से (**उभे**) दोनों (**रोदसी**) द्यावापृथिवी को (**आ, पप्रौ**) व्याप्त होता और (**धूमेन**) धूम से (**दिवि**) अन्तरिक्ष में (**धावते**) दौड़ता है तथा (**श्यावासु**) काली (**ऊर्म्यासु**) रात्रियों में जो (**तमः**) अन्धकार उसको (**तिरः**) तिरस्कार कर (**अरुषः**) लाल रंग वाला (**वृषा**) वर्षा का निमित्त है और जिसकी (**श्यावाः**) वेगवती किरणें विद्यमान हैं जो (**अरुषः**) कुछ लाली लिये हुए है वह (**वृषा**) वर्षा करने वाला सूर्य्य (**आ, ददृशे**) अच्छे प्रकार देखा जाता है उसे (**आ**) अच्छे प्रकार जानो॥६॥

**भावार्थः**-जिस बिजुलीरूप आग से भूमि और सूर्य्य दिखाते हैं, जिससे अधिक वेगवान् कोई नहीं तथा जो अन्धकार की निवृत्ति करने वाला है, उसका अच्छे प्रकार प्रयोग करो॥६॥

**पुनर्मनुष्यैः कथं वर्त्तितव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को कैसा वर्त्तना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**बृहद्भिरग्ने अर्चिभिः शुक्रेण देव शोचिषा।**

**भरद्वाजे समिधानो यविष्ठ्य रेवन्नः शुक्र दीदिहि द्युमत्पावक दीदिहि॥७॥**

बृहत्ऽभिः। अग्ने। अर्चिऽभिः। शुक्रेण। देव। शोचिषा। भरत्ऽवाजे। सम्ऽइधानः। यविष्ठ्य। रेवत्। नः। शुक्र। दीदिहि। द्युऽमत्। पावक। दीदिहि॥७॥

**पदार्थः**-(**बृहद्भिः**) महद्भिः (**अग्ने**) अग्निरिव वर्त्तमान (**अर्चिभिः**) तेजोभिः (**शुक्रेण**) शुद्धेन (**देव**) दातः (**शोचिषा**) न्यायप्रकाशेन (**भरद्वाजे**) विज्ञानादिधारके (**समिधानः**) देदीप्यमानः (**यविष्ठ्य**) अतिशयेन युवन् (**रेवत्**) प्रशस्तैश्वर्ययुक्तं धनम् (**नः**) अस्मभ्यम् (**शुक्र**) आशुकर्त्तः (**दीदिहि**) प्रकाशय (**द्युमत्**) प्रशस्तप्रकाशयुक्तम् (**पावक**) पवित्रकर्त्तः (**दीदिहि**) देहि॥७॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे शुक्र पावक यविष्ठ्य देवाग्ने! यथा वह्निर्बृहद्भिरर्चिभिर्भरद्वाजे समिधानो नो द्युमद्रेवद्ददाति तथा शुक्रेण शोचिषैतद्दीदिहि, विद्याविनये च दीदिहि॥७॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। ये विद्वांसस्सूर्यवच्छुभेषु गुणेषु बलेन सुशीलत्वेन वा श्रियं प्राप्य प्रकाशन्ते ते सत्कर्त्तव्या भवन्ति॥७॥

**पदार्थः**-हे (**शुक्र**) शीघ्र कर्म करने (**पावक**) वा पवित्र करने (**यविष्ठ्य**) वा अतीव युवा अवस्था रखने वा (**देव**) देने वाले (**अग्ने**) अग्नि के समान वर्त्तमान विद्वन्! जैसे अग्नि (**बृहद्भिः**) महान् (**अर्चिभिः**) तेजों से (**भरद्वाजे**) विज्ञानादि के धारण करने वाले व्यवहार में (**समिधानः**) अच्छे प्रकार देदीप्यमान (**नः**) हमारे लिये (**द्युमत्**) प्रशस्त प्रकाश वा (**रेवत्**) प्रशस्त ऐश्वर्य्य से युक्त धन को देता है, वैसे (**शुक्रेण**) शुद्ध (**शोचिषा**) न्याय के प्रकाश से उसे (**दीदिहि**) प्रकाशित कीजिये, तथा विद्या और नम्रता (**दीदिहि**) दीजिये॥७॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो विद्वान् जन सूर्य के समान शुभ गुणों में बल वा सुशीलता से लक्ष्मी को प्राप्त होकर प्रकाशित होते हैं, वे सत्कार करने योग्य हैं॥७॥

**पुनः स राजा किं कुर्यादित्याह॥**

फिर वह राजा क्या करे, इस विषय को कहते हैं॥

**विश्वा॑सां गृ॒हप॑तिर्वि॒शाम॑सि॒ त्वम॑ग्ने॒ मानु॑षीणाम्।**

**श॒तं पू॒र्भिर्य॑विष्ठ पा॒ह्यंह॑सः समे॒द्धारं॑ श॒तं हिमा॑: स्तो॒तृभ्यो॒ ये च॒ दद॑ति॥८॥**

**विश्वा॑साम्। गृ॒हऽप॑तिः। वि॒शाम्। अ॒सि॒। त्वम्। अ॒ग्ने॒। मानु॑षीणाम्। श॒तम्। पू॒ःऽभिः। य॒वि॒ष्ठ॒। पा॒हि॒। अंह॑सः। स॒म्ऽए॒द्धार॑म्। श॒तम्। हिमा॑:। स्तो॒तृऽभ्य॑:। ये। च॒। दद॑ति॥८॥**

**पदार्थः**-(**विश्वासाम्**) सर्वासाम् (**गृहपतिः**) गृहस्य स्वामी (**विशाम्**) प्रजानाम् (**असि**) (**त्वम्**) (**अग्ने**) दुष्टानां दाहक (**मानुषीणाम्**) (**शतम्**) (**पूर्भिः**) नगरैः (**यविष्ठ**) शरीरात्मबलाभ्यां युक्त (**पाहि**) (**अंहसः**) दुष्टाचारात् (**समेद्धारम्**) सम्यक् प्रकाशकम् (**शतम्**) (**हिमाः**) वृद्धीर्हेमन्तानृतून् वा (**स्तोतृभ्यः**) विद्वद्भ्यः (**ये**) (**च**) सद्गुणान् (**ददति**)॥८॥

**अन्वयः**-हे यविष्ठाग्ने! ये स्तोतृभ्यः शतं हिमाः समेद्धारं ददति शुभान् गुणांश्च गृहीत्वा प्रयच्छन्ति तैस्सह युक्तानां विश्वासां मानुषीणां विशां यतस्त्वं गृहपतिरसि पूर्भिस्सहैतेभ्यः शतं ददाति तस्मादस्मानंहसः पाहि॥८॥

**भावार्थः**-हे राजन्! येऽत्र प्रजायां विद्याधर्मादिशुभगुणान् ग्राहयन्ति तांस्त्वं सततं सत्कुर्यास्ते भवन्तं च सत्कुर्युः॥८॥

**पदार्थः**-हे (**यविष्ठ**) शरीर और आत्मा के बल से युक्त (**अग्ने**) दुष्टों के दाह करने वाले! (**ये**) जो (**स्तोतृभ्यः**) स्तुति करने वाले विद्वानों से (**शतम्**) सौ (**हिमाः**) वृद्धि वा हेमन्त आदि ऋतुओं तक (**समेद्धारम्**) अच्छे प्रकार प्रकाश करने वाले को (**ददति**) देते (**च**) और शुभ गुणों को ग्रहण कर दूसरों



www.9009.co.in

को देते हैं, उनके साथ युक्त **(विश्वासाम्)** समस्त **(मानुषीणाम्)** मनुष्य सम्बन्धी **(विशाम्)** प्रजाजनों के बीच जिससे **(त्वम्)** आप **(गृहपतिः)** धन के स्वामी **(असि)** हैं वा **(पूर्भिः)** नगरों के साथ इनके लिये **(शतम्)** सौ पदार्थ देते हैं, इस कारण हम लोगों की **(अंहसः)** दुष्ट आचरण से **(पाहि)** रक्षा करो॥८॥

**भावार्थः**-हे राजन्! जो इस प्रजा में विद्या और धर्म आदि शुभ गुणों को ग्रहण कराते हैं, उनका तुम निरन्तर सत्कार करो और वे आपका भी सत्कार करें॥८॥

**पुनर्विद्वांसोऽपत्यानि कथं शिक्षेरन्नित्याह॥**

फिर विद्वान् जन सन्तानों को कैसे शिक्षा दें, इस विषय को कहते हैं॥

**त्वं नश्चित्र ऊत्या वसो राधांसि चोदय।**

**अस्य रायस्त्वमग्ने रथीरसि विदा गाधं तुचे तु नः॥९॥**

**त्वम्। नः। चित्रः। ऊत्या। वसो इति। राधांसि। चोदय। अस्य। रायः। त्वम्। अग्ने। रथीः। असि। विदाः। गाधम्। तुचे। तु। नः॥९॥**

**पदार्थः**-**(त्वम्)** **(नः)** अस्माकम् **(चित्रः)** अद्भुतपुरुषार्थः **(ऊत्या)** रक्षया **(वसो)** वासयितः **(राधांसि)** समृद्धानि धनानि **(चोदय)** **(अस्य)** **(रायः)** धनस्य **(त्वम्)** **(अग्ने)** विद्युदिव पुरुषार्थिन् **(रथीः)** बहुप्रशंसितरथः **(असि)** **(विदाः)** विज्ञानवान् **(गाधम्)** विलोडनम् **(तुचे)** अपत्याय। **तुगित्यपत्यनाम।** (निघं०२.२) **(तु)** **(नः)** अस्माकम्॥९॥

**अन्वयः**-हे वसोऽग्ने! चित्रस्त्वमूत्या नो राधांसि रक्षाऽस्य रायश्चोदय यतस्त्वं विदा रथीरसि तस्मात्तु नस्तुचे गाधं चोदय॥९॥

**भावार्थः**-हे विद्वन्! भवान् यथैतेषामस्माकमपत्यानां प्रज्ञाविलोडनेन विद्याप्राप्तिः स्यात्तथाऽनुविधेहि। यथा पुरुषार्थी धनैश्वर्यं प्राप्तुं प्रेरयति तथैव भवाननुशिक्षताम्॥९॥

**पदार्थः**-हे **(वसो)** वास कराने वाले **(अग्ने)** बिजुली के समान पुरुषार्थी जन **(चित्रः)** अद्भुत पुरुषार्थ करने वाले **(त्वम्)** आप **(ऊत्या)** रक्षा से **(नः)** हम लोगों के **(राधांसि)** समृद्ध धनों की रक्षा करो तथा **(अस्य)** इसके **(रायः)** धन की **(चोदय)** प्रेरणा करो जिस कारण **(त्वम्)** आप **(विदाः)** विज्ञानवान् और **(रथीः)** बहुत प्रशंसायुक्त रथ वाले **(असि)** हैं इस कारण से **(तु)** फिर **(नः)** हम लोगों के **(तुचे)** सन्तान के लिये **(गाधम्)** बुद्धि विलोडने की प्रेरणा करो॥९॥

**भावार्थः**-हे विद्वन्! आप जैसे इन हमारे सन्तानों की बुद्धि के विलोडने से विद्या प्राप्ति हो, वैसे अनुविधान कीजिये तथा जैसे पुरुषार्थी जन धन और ऐश्वर्य की प्राप्ति के लिये प्रेरणा करता है, वैसे ही आप शिक्षा दीजिये॥९॥

**पुनर्मनुष्यैः के सत्कर्त्तव्या इत्याह॥**

फिर मनुष्यों को कौन सत्कार करने योग्य हैं, इस विषय को कहते हैं॥



www.9009.co.in

**पर्षि तोकं तनयं पर्तृभिष्ट्वमदब्धैरप्रयुत्वभिः।**

**अग्ने हेळांसि दैव्या युयोधि नोऽदेवानि ह्वरांसि च॥१०॥२॥**

**पर्षि। तोकम्। तनयम्। पर्तृऽभिः। त्वम्। अदब्धैः। अप्रयुत्वऽभिः। अग्ने। हेळांसि। दैव्या। युयोधि। नः। अदेवानि। ह्वरांसि। च॥१०॥**

**पदार्थः**-(**पर्षि**) पालयसि (**तोकम्**) सद्योजातमपत्यम् (**तनयम्**) सुकुमारम् (**पर्तृभिः**) पालकैः (**त्वम्**) (**अदब्धैः**) अहिंसनैः (**अप्रयुत्वभिः**) अविभक्तैः (**अग्ने**) अध्यापक (**हेळांसि**) अनादररूपाणि (**दैव्या**) देवेषु प्रयुक्तानि (**युयोधि**) वियोजय (**नः**) अस्माकम् (**अदेवानि**) अशुद्धानि (**ह्वरांसि**) कुटिलानि कर्माणि (**च**)॥१०॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! यतस्त्वमप्रयुत्वभिरदब्धैः पर्तृभिर्नस्तोकं तनयं पर्षि। अदेवानि दैव्या हेळांसि ह्वरांसि च युयोधि तस्मात् सत्कर्तव्योऽसि॥१०॥

**भावार्थः**-येऽध्यापकोपदेशका अध्यापनोपदेशाभ्यां शुभान् गुणान् ग्राहयित्वा सर्वेषां दोषान्निवारयन्ति त एव सर्वदा सत्कर्त्तव्या भवन्ति॥१०॥

**पदार्थः**-हे (**अग्ने**) पढ़ाने वाला! जिस कारण (**त्वम्**) आप (**अप्रयुत्वभिः**) न मिले हुए अर्थात् अलग-अलग विद्यमान (**अदब्धैः**) हिंसारहित (**पर्तृभिः**) पालना करने वाले व्यवहारों से (**नः**) हमारे (**तोकम्**) शीघ्र उत्पन्न हुए सन्तान वा (**तनयम्**) सुन्दर कुमार की (**पर्षि**) पालना करते हो और (**अदेवानि**) अशुद्ध (**दैव्या**) विद्वानों में कहे गये (**हेळांसि**) अनादरों और (**ह्वरांसि**) कुटिल कर्मों को (**च**) भी (**युयोधि**) अलग करते हो, इससे सत्कार करने योग्य हो॥१०॥

**भावार्थः**-जो अध्यापक वा उपदेशक पढ़ाने तथा उपदेश करने से शुभ गुणों को ग्रहण करा कर सब के दोषों का निवारण कराते हैं, वे ही सदा सत्कार करने योग्य होते हैं॥१०॥

**केऽत्र सुहृदः सन्तीत्याह॥**

कौन इस संसार में मित्र हैं, इस विषय को कहते हैं॥

**आ सखायः सबर्दुघां धेनुमजध्वमुप नव्यसा वचः। सृजध्वमनपस्फुराम्॥**

**आ। सखायः। सबःऽदुघाम्। धेनुम्। अजध्वम्। उप। नव्यसा। वचः। सृजध्वम्। अनपऽस्फुराम्॥११॥**

**पदार्थः**-(**आ**) (**सखायः**) सुहृदः (**सबर्दुघाम्**) सर्वकामनाप्रपूरिकाम् (**धेनुम्**) वाचम्। **धेनुरिति वाङ्नाम।** (निघं०१.११) (**अजध्वम्**) प्राप्नुत (**उप**) (**नव्यसा**) अतिशयेन नवीनाध्यापनेनोपदेशेन वा (**वचः**) वचनम् (**सृजध्वम्**) विविधविद्यायुक्तं कुरुत (**अनपस्फुराम्**) निश्चलां दृढाम्॥११॥

**अन्वयः**-हे सखायो! यूयं नव्यसा सबर्दुघामनपस्फुरां धेनुमजध्वम्। वच उपाऽऽसृजध्वम्॥११॥

**भावार्थः**-ये सुहृदो भूत्वा सत्यां सुशिक्षितां वाचं विद्यां च विद्यार्थिनो ग्राहयन्ति ते जगच्छोधका भवन्ति॥११॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-हे **(सखायः)** मित्रवर्गो! तुम **(नव्यसा)** अतीव नवीन पढ़ाने वा उपदेश करने से **(सबर्दुघाम्)** समस्त कामनाओं की पूर्ण करने वाली **(अनपस्फुराम्)** निश्चल दृढ़ **(धेनुम्)** वाणी को **(अजध्वम्)** प्राप्त करिये तथा **(वचः)** अर्थात् वचन को **(उप, आ, सृजध्वम्)** विविध प्रकार की विद्या से युक्त करो॥११॥

**भावार्थः**-जो सुहृद् होकर सत्य, सुन्दर शिक्षायुक्त वाणी और विद्या को विद्यार्थियों को ग्रहण कराते हैं, वे संसार के शुद्ध करने वाले होते हैं॥११॥

**अथ मातरः सन्तानान् सदा शिक्षेरन्नित्याह॥**

अब माता जन सन्तानों को सदा शिक्षा देवें, इस विषय को कहते हैं॥

**या शर्धा॑य॒ मारु॑ताय॒ स्वभा॑नवे॒ श्रवोऽमृ॑त्यु॒ धुक्ष॑त।**

**या मृ॑ळी॒के म॒रुतां॑ तु॒राणां॒ या सु॒म्नैरे॑व॒यावरी॥१२॥**

**या। शर्धा॑य। मारु॑ताय। स्वऽभा॑नवे। श्रवः॑। अमृ॑त्यु। धुक्ष॑त। या। मृ॒ळी॒के। म॒रुता॑म्। तु॒राणा॑म्। या। सु॒म्नैः। ए॒व॒ऽयाव॑री॥१२॥**

**पदार्थः**-**(या)** विद्यासुशिक्षायुक्ता- अध्यापिकोपदेशिका वा **(शर्धाय)** बलाय **(मारुताय)** मरुतां मनुष्याणामस्मै **(स्वभानवे)** स्वकीयप्रज्ञाप्रदीप्तये **(श्रवः)** श्रवणम् **(अमृत्यु)** अविद्यमानं मृत्युभयं यस्मिन् **(धुक्षत)** प्रपूरयेत् **(या)** विदुषी स्त्री **(मृळीके)** सुखकारके व्यवहारे **(मरुताम्)** मनुष्याणाम् **(तुराणाम्)** शीघ्रकारिणाम् **(या)** शिक्षिका **(सुम्नैः)** सुखैः **(एवयावरी)** दुःखनिवारिका॥१२॥

**अन्वयः**-हे विद्वांसो! या मारुताय स्वभानवे शर्धायामृत्यु श्रवो धुक्षत या मृळीके तुराणां मरुताममृत्यु श्रवो धुक्षत सुम्नैर्यैवयावरी सन्तानाञ्छिक्षितान् करोति सैवाऽत्र माननीया भवति॥१२॥

**भावार्थः**-ता एव स्त्रियो धन्याः सन्ति याः स्वापत्यानि विद्यासुशिक्षायुक्तानि कर्तुं कारयितुं च सततं प्रयतन्ते॥१२॥

**पदार्थः**-हे विद्वान् जनो! **(या)** जो विद्या और सुन्दरशिक्षायुक्त विद्या पढ़ाने वा उपदेश करने वाली **(मारुताय)** मनुष्यों के इस **(स्वभानवे)** अपनी विशेष बुद्धि के प्रकाश वा **(शर्धाय)** बल के लिये **(अमृत्यु)** जिसमें मृत्युभय विद्यमान नहीं उस **(श्रवः)** श्रवण को **(धुक्षत)** परिपूर्ण करे वा **(या)** जो विदुषी स्त्री **(मृळीके)** सुख करने वाले व्यवहार में **(तुराणाम्)** शीघ्रकारी **(मरुताम्)** मनुष्यों के बीच मृत्युभय जिसमें नहीं उस श्रवण को परिपूर्ण करे तथा **(सुम्नैः)** सुखों से **(या)** जो शिक्षा करने वा **(एवयावरी)** दुःख निवारण वाली सन्तानों की शिक्षा करती है, वही यहाँ मानने योग्य होती है॥१२॥

**भावार्थः**-वे ही स्त्रियाँ धन्य हैं, जो अपने सन्तानों को विद्या और सुन्दर शिक्षायुक्त करने व कराने को निरन्तर प्रयत्न करती हैं॥१२॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**



www.9009.co.in

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**भ॒रद्वा॑जा॒याव॑ धुक्षत द्वि॒ता। धे॒नुं च॑ वि॒श्वदो॑हस॒मिषं॑ च वि॒श्वभो॑जसम्॥ १३॥**

**भ॒रत्ऽवा॑जाय। अव॑। धु॒क्ष॒त॒। द्वि॒ता। धे॒नुम्। च॒। वि॒श्वऽदो॑हसम्। इष॑म्। च॒। वि॒श्वऽभो॑जसम्॥ १३॥**

**पदार्थः**-(**भरद्वाजाय**) धृतविज्ञानाय (**अव**) (**धुक्षत**) अलङ्कुरुते (**द्विता**) द्वयोर्भावः (**धेनुम्**) विद्यायुक्तां वाचम् (**च**) (**विश्वदोहसम्**) विश्वं सर्वविज्ञानान् दोग्धि यया ताम् (**इषम्**) अन्नं विज्ञानं वा (**च**) (**विश्वभोजसम्**) विश्वस्य समग्रस्य जनस्य पालकम्॥ १३॥

**अन्वयः**-या विदुषी माता भरद्वाजाय विश्वदोहसं धेनुमवधुक्षत विश्वभोजसमिषं चावधुक्षत सा द्विता चानया प्रचारिण्या क्रियया भवति॥ १३॥

**भावार्थः**-याः स्त्रियः सत्यभाषणान्वितां वाचं सर्वोत्तमां सत्यां विद्यां च सन्तानेभ्यः प्रयच्छन्ति ता एव देव्यो बहुमान्या भवन्ति॥ १३॥

**पदार्थः**-जो विदुषी माता (**भरद्वाजाय**) जिसने विज्ञान धारण किया उसके लिये (**विश्वदोहसम्**) जिससे समस्त विज्ञान को पूर्ण करती उस (**धेनुम्**) विद्या युक्त वाणी को (**अव, धुक्षत**) परिपूर्ण करती है और (**विश्वभोजसम्**) समस्त मनुष्यमात्र के पालक (**इषम्**) अन्न वा विज्ञान को (**च**) भी परिपूर्ण करती है वह (**द्विता**) दोनों विज्ञान वा अन्न की चेष्टा वाली (**च**) भी इस प्रचारिणी क्रिया से होती है॥ १३॥

**भावार्थः**-जो स्त्रीजन सत्यभाषणयुक्त वाणी और सर्वोत्तम सत्य विद्या को सन्तानों के लिये देती हैं, वे ही देवी विदुषी स्त्रियाँ बहुत मान करने के योग्य होती हैं॥ १३॥

**पुनर्मनुष्याः कं प्रशंसेयुरित्याह॥**

फिर मनुष्य किसकी प्रशंसा करें, इस विषय को कहते हैं॥

**तं व॒ इन्द्रं॒ न सु॒क्रतुं॒ वरु॑णमिव मा॒यिन॑म्।**

**अ॒र्य॒मणं॒ न म॒न्द्रं सृ॒प्रभो॑जसं॒ विष्णुं॒ न स्तु॑ष आ॒दिशे॑॥ १४॥**

**तम्। वः॒। इन्द्र॑म्। न। सु॒ऽक्रतु॑म्। वरु॑णम्ऽइव। मा॒यिन॑म्। अ॒र्य॒मण॑म्। न। म॒न्द्रम्। सृ॒प्रऽभो॑जसम्। विष्णु॑म्। न। स्तु॒षे॒। आ॒ऽदिशे॑॥ १४॥**

**पदार्थः**-(**तम्**) विद्वांसम् (**वः**) युष्मदर्थम् (**इन्द्रम्**) विद्युद्वत्तीव्रबुद्धिम् (**न**) इव (**सुक्रतुम्**) उत्तमप्रज्ञम् (**वरुणमिव**) पाशैर्बन्धकं व्याधमिव (**मायिनम्**) कुत्सितप्रज्ञम् (**अर्यमणम्**) न्यायेशम् (**न**) इव (**मन्द्रम्**) आनन्दप्रदम् (**सृप्रभोजसम्**) प्राप्तानां पालकं (**विष्णुम्**) व्यापकं जगदीश्वरम् (**न**) इव (**स्तुषे**) प्रशंससि (**आदिशे**) आज्ञापालनाय॥ १४॥

**अन्वयः**-हे विद्वंस्त्वं यमिममिन्द्रं न सुक्रतुं वरुणिव मायिनमर्यमणं न मन्द्रं विष्णुं सृप्रभोजसं स्तुषे तं व आदिशेऽहं प्रशंसामि॥ १४॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। ये मनुष्याः सूर्यवद्विद्याप्रकाशकं व्याधवद् दुष्टहिंसकमाप्तवन्न्यायकारिण- मीश्वरवत्सर्वपालकं सत्योपदेष्टारं धर्मकारिणं नरं प्रशंसन्ति त एवाऽत्र परीक्षकाः सन्ति॥१४॥

**पदार्थः**-हे विद्वन्! आप जिस इस **(इन्द्रम्)** बिजुली के समान तीव्रबुद्धि के **(न)** समान **(सुक्रतुम्)** उत्तम बुद्धि वाले **(वरुणस्य)** वरुण के समान **(मायिनम्)** कुत्सित बुद्धि वाले वा **(अर्यमणम्)** न्यायाधिपति के **(न)** समान **(मन्द्रम्)** आनन्द देने वाले **(विष्णुम्)** व्यापक जगदीश्वर के **(न)** समान **(सृप्रभोजसम्)** प्राप्त हुए पदार्थों के पालने की **(स्तुषे)** प्रशंसा करते हैं **(तम्)** उसको **(वः)** तुम लोगों के लिये **(आदिशे)** आज्ञा पालन के अर्थ मैं उसकी प्रशंसा करता हूँ॥१४॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जो मनुष्य सूर्य्य के समान विद्याप्रकाशक, व्याध के समान दुष्टों के मारने वाले, आप्त विद्वान् के समान न्याय के करने वाले, ईश्वर के समान सर्व के पालने वाले, सत्य के उपदेश करने वाले तथा धर्म करने वाले मनुष्य की प्रशंसा करते हैं, वे ही इस संसार में परीक्षा करने वाले होते हैं॥१४॥

**पुनर्विद्वद्भिः किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

फिर विद्वानोंको क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**त्वे॒षं शर्धो॒ न मारु॑तं तुवि॒ष्वण्य॑न॒र्वाणं॑ पू॒षणं॒ सं यथा॑ श॒ता।**

**सं स॒हस्रा॒ कारि॑षच्चर्ष॒णिभ्य॒ आँ आ॒विर्गू॒ळ्हा वसू॑ करत्सु॒वेदा॑ नो॒ वसू॑ करत्॥१५॥**

**त्वे॒षम्। शर्धः॑। न। मारु॑तम्। तु॒वि॒ऽस्वनि॑। अ॒न॒र्वाण॑म्। पू॒षण॑म्। सम्। यथा॑। श॒ता। सम्। स॒हस्रा॑। कारि॑षत्। च॒र्ष॒णिऽभ्यः॑। आ। आ॒विः। गू॒ळ्हा। वसु॑। क॒र॒त्। सु॒ऽवेदा॑। न॒ः। वसु॑। क॒र॒त्॥१५॥**

**पदार्थः**-**(त्वेषम्)** दीप्तिमत् **(शर्धः)** बलम् **(न)** इव **(मारुतम्)** मनुष्याणामिदम् **(तुविष्वणि)** बहुस्वनम् **(अनर्वाणम्)** अविद्यमानाश्वम् **(पूषणम्)** पुष्टिकरम् **(सम्)** **(यथा)** **(शता)** शतानि **(सम्)** सम्यक् **(सहस्रा)** सहस्राणि **(कारिषत्)** कुर्यात् **(चर्षणिभ्यः)** मनुष्येभ्यः **(आ)** समन्तात् **(आविः)** प्राकट्ये **(गूळ्हा)** गुप्तानि **(वसू)** धनानि। अत्र **संहितायामि**ति दीर्घः। **(करत्)** कुर्यात् **(सुवेदा)** शोभनं विज्ञानं यस्य सः **(नः)** अस्मभ्यम् **(वसू)** विज्ञानानि धनानि वा **(करत्)** कुर्यात्॥१५॥

**अन्वयः**-हे विद्वांसो! यथा सुवेदा नस्त्वेषं तुविष्वणि मारुतं शर्धो नानर्वाणं पूषणं करत् यथा चर्षणिभ्यः शता सहस्रा गूळ्हा वस्वा सं कारिषद् गूळ्हा वस्वा समाविष्करत्तथैतानि यूयं कुरुत॥१५॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यथा विद्वांसो विज्ञानदानेन गुप्ता विद्या युष्मदर्थं प्रकटीकुर्वन्ति युष्माकं शरीरात्मबलं च वर्धयन्ति तथैतान् यूयं वर्धयत॥१५॥

**पदार्थः**-हे विद्वानो! **(यथा)** जैसे **(सुवेदा)** सुशोभित विज्ञान जिसका वह **(नः)** हम लोगों के लिये **(त्वेषम्)** दीप्तिमत् **(तुविष्वणि)** बहुत शब्दों वाले **(मारुतम्)** मनुष्य सम्बन्धी **(शर्धः)** बल के **(न)**



www.9009.co.in

समान (**अनर्वाणम्**) अविद्यमान हैं अश्व जिसमें उस पदार्थ को (**पूषणम्**) पुष्टि करने वाला (**करत्**) करे वा जैसे (**चर्षणिभ्य:**) मनुष्यों के लिये (**शता**) सैकड़ों वा (**सहस्रा**) सहस्रों (**गूळहा**) गुप्त (**वसू**) धनों को (**आ, सम्, कारिषत्**) सब ओर अच्छे प्रकार सिद्ध करे और गुप्त (**वसू**) विज्ञान वा धनों को (**सम्, आविष्करत्**) प्रकट करे, वैसे इनको आप करें॥१५॥

**भावार्थ:**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जैसे विद्वान् जन विज्ञानदान से गुप्त विद्याओं को तुम्हारे लिये प्रकट करते हैं और आपके शारीरिक और आत्मिक बल को बढ़ाते हैं, वैसे इनको तुम बढ़ाओ॥१५॥

**पुनर्मनुष्या: परस्परं कथं वर्त्तेरन्नित्याह॥**

फिर मनुष्य परस्पर कैसे वर्त्ते, इस विषय को कहते हैं॥

**आ मा पूषन्नुप द्रव शंसिषं नु ते अपिकर्ण आघृणे।**

**अघा अर्यो अरातय:॥१६॥३॥**

**आ। मा। पूषन्। उप। द्रव। शंसिषम्। नु। ते। अपिऽकर्णे। आघृणे। अघा:। अर्य:। अरातय:॥१६॥**

**पदार्थ:**-(**आ**) समन्तात् (**मा**) माम् (**पूषन्**) पुष्टिकर्त्त: (**उप**) (**द्रव**) समीपमागच्छ (**शंसिषम्**) प्रशंसेयम् (**नु**) सद्य: (**ते**) तव (**अपिकर्णे**) आच्छादितश्रोत्रे (**आघृणे**) सर्वतो दीप्तिमान् (**अघा:**) हन्या: (**अर्य:**) स्वामी सन् (**अरातय:**) अदातार:॥१६॥

**अन्वय:**-हे पूषन्नाघृणे! यस्य तेऽपिकर्णेऽहं नु सत्यं शंसिषं सोऽर्यस्त्वमा मा मामुप द्रव य अरातय: स्युस्तान्नु अघा:॥१६॥

**भावार्थ:**-हे पालनीय जन! त्वं रक्षार्थं मत्सन्निधिमागच्छाऽहञ्च सत्योपदेशेन विचक्षणं कुर्यां वयं सर्वे मिलित्वा दुष्टान् विनाशयेम॥१६॥

**पदार्थ:**-हे (**पूषन्**) पुष्टि करने वाले (**आघृणे**) सब ओर से प्रकाशमान! जिन (**ते**) आपके (**अपिकर्णे**) ढंपे हुए कर्ण में मैं (**नु**) शीघ्र सत्य की (**शंसिषम्**) प्रशंसा करूं सो (**अर्य:**) स्वामी हुए आप (**आ**) सब ओर से (**मा**) मेरे (**उप, द्रव**) समीप आओ और जो (**अरातय:**) न देने वाले जन हों उन्हें शीघ्र (**अघा:**) हनिये अर्थात् मारिये॥१६॥

**भावार्थ:**-हे पालनीय जन! आप रक्षा के लिये मेरे समीप आओ, मैं सत्योपदेश से तुम्हें विचक्षण करूँ तथा हम सब लोग मिल के दुष्टों का विनाश करें॥१६॥

**मनुष्यै: किं न कर्त्तव्यमित्याह॥**

मनुष्यों को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**मा काकम्बीरमुद् वृहो वनस्पतिमशस्तीर्वि हि नीनश:।**

**मोत सूरो अह एवा चन ग्रीवा आदधते वे:॥१७॥**



www.9009.co.in

मा। का॒कं॒बीर॑म्। उत्। वृ॒हः॒। व॒न॒स्पति॑म्। अश॑स्तीः। वि। हि। नीन॑शः। मा। उ॒त। सूर॑ः। अ॒हरिति॑। ए॒व। च॒न। ग्री॒वाः। आ॒ऽदध॑ते। वेरिति। वेः॥ १७॥

**पदार्थः**-(**मा**) निषेधे (**काकंबीरम्**) काकानां गोपकम् (**उत्**) (**वृहः**) उच्छेदयेः (**वनस्पतिम्**) वटादिकम् (**अशस्तीः**) अप्रशंसिताः (**वि**) (**हि**) खलु (**नीनशः**) भृशं नाशयेः (**मा**) (**उत**) (**सूरः**) सूर्यः (**अहः**) दिनम् (**एवा**) अत्र **निपातस्य चे**ति दीर्घः। (**चन**) अपि (**ग्रीवाः**) कण्ठान् (**आदधते**) समन्ताद् धरन्ति (**वेः**) पक्षिणः॥ १७॥

**अन्वयः**-हे विद्वंस्त्वं काकंबीरं वनस्पतिं मोद्वृहोऽशस्तीर्हि वि नीनशः सूरोऽहरेवा यथा वेर्ग्रीवाश्चनाऽऽदधते तथोतास्मान् मा पीडय॥ १७॥

**भावार्थः**-केनापि मनुष्येण श्रेष्ठा वृक्षा वनस्पतयो वा नो हिंसनीया एतत्स्थान् दोषान्निवार्योत्तमाः सम्पादनीयाः, हे मनुष्य! यथा श्येनेन पक्षिणां ग्रीवा गृह्यन्ते तथा कञ्चिदपि मा दुःखय॥ १७॥

**पदार्थः**-हे विद्वन्! आप (**काकंबीरम्**) कौओं की पुष्टि करने वाले (**वनस्पतिम्**) वट आदि वृक्ष को (**मा, उत, वृहः**) मत उच्छिन्न करो तथा (**अशस्तीः**) और अप्रशंसित (**हि**) ही कर्मों की (**वि, नीनशः**) विशेषता से निरन्तर नाश करो और (**सूरः**) सूर्य (**अहः, एवा**) दिन में ही जैसे (**वेः**) पक्षी के (**ग्रीवाः**) कण्ठों को (**चन**) निश्चय से (**आदधते**) अच्छे प्रकार धारण करते हैं, वैसे (**उत**) तो हम लोगों को (**मा**) मत पीड़ा देओ॥ १७॥

**भावार्थः**-किसी मनुष्य को श्रेष्ठ वृक्ष वा वनस्पति न नष्ट करने चाहियें, किन्तु इनमें जो दोष हों, उनको निवारण करके इन्हें उत्तम सिद्ध करने चाहियें, हे मनुष्य! जैसे श्येन वाज पक्षी और पखेरूओं की गर्दनें पकड़ घोटता है, वैसे किसी को दुःख न देओ॥ १७॥

**केषां मित्रत्वं न नश्यतीत्याह॥**

किन की मित्रता नहीं नष्ट होती है, इस विषय को कहते हैं॥

**दृते॑रिव तेऽवृ॒कम॑स्तु स॒ख्यम्। अच्छि॑द्रस्य दध॒न्वतः॑ सुपू॒र्णस्य॑ दध॒न्वतः॑॥ १८॥**

**दृतेः॑ऽइव। ते॒। अ॒वृ॒कम्। अ॒स्तु॒। स॒ख्यम्। अच्छि॑द्रस्य। द॒ध॒न्ऽवतः॑। सु॒ऽपू॒र्णस्य॑। द॒ध॒न्ऽवतः॑॥ १८॥**

**पदार्थः**-(**दृतेरिव**) मेघस्येव। **दृतिरिति मेघनाम।** (निघं० १.१०) (**ते**) तव (**अवृकम्**) अचौर्यम् (**अस्तु**) (**सख्यम्**) मित्रत्वम् (**अच्छिद्रस्य**) अखण्डितस्य (**दधन्वतः**) दृढत्वेन धर्तुः (**सुपूर्णस्य**) सुष्ठ्वलंजातस्य (**दधन्वतः**) विद्याशुभगुणधर्त्तॄणां धारकस्य॥ १८॥

**अन्वयः**-हे विद्वन्नच्छिद्रस्य दधन्वतो दृतेरिव सुपूर्णस्य दधन्वतस्तेऽवृकं सख्यमस्तु॥ १८॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। यथा मेघभूम्योर्मित्रवद्व्यवहारोऽस्ति तथैव धार्मिकाणां विदुषां मित्रताऽजराऽमरा वर्त्तते॥ १८॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-हे विद्वन्! **(अच्छिद्रस्य)** अखण्डित और **(दधन्वतः)** दृढ़ता से धारण करने वालों को धारण करने वाले **(ते)** तुम्हारी **(अवृकम्)** चोरी से रहित **(सख्यम्)** मित्रता **(अस्तु)** हो॥१८॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जैसे मेघ और भूमि का मित्रवत् व्यवहार है, वैसे ही धार्मिक विद्वानों की मित्रता अजर-अमर वर्त्तमान है॥१८॥

**मनुष्यैः कीदृशैर्भवितव्यमित्याह॥**

मनुष्यों को कैसा होना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**पुरो हि मर्त्यैरसि समो देवैरुत श्रिया।**

**अभि ख्यः पूषन् पृतनासु नस्त्वमवा नूनं यथा पुरा॥१९॥**

**पुरः। हि। मर्त्यैः। असि। समः। देवैः। उत। श्रिया। अभि। ख्यः। पूषन्। पृतनासु। नः। त्वम्। अव। नूनम्। यथा। पुरा॥१९॥**

**पदार्थः**-**(परः)** उत्कृष्टः **(हि)** यतः **(मर्त्यैः)** मनुष्यैः सह **(असि)** **(समः)** तुल्यः **(देवैः)** विद्वद्भिः **(उत)** अपि **(श्रिया)** लक्ष्म्या **(अभि)** **(ख्यः)** प्रकथयसि **(पूषन्)** पुष्टिकर्त्तः **(पृतनासु)** मनुष्यसेनासु **(नः)** अस्माकम् **(त्वम्)** **(अवा)** अत्र **निपातस्य चे**ति दीर्घः। **(नूनम्)** निश्चितम् **(यथा)** **(पुरा)**॥१९॥

**अन्वयः**-हे पूषन्! यथा हि पुरा त्वं नः पृतनास्वभि ख्यस्तथा नूनं मर्त्यैर्देवैरुत श्रिया सह परः समोऽस्यतोऽवा॥१९॥

**भावार्थः**-यो विद्वद्भिस्तुल्यः स विद्वान् यो मनुष्यैः सदृशः स मध्यमो य पशुभिस्सदृशः सोऽधमो मनुष्योऽस्तीति सर्वे जानन्तु॥१९॥

**पदार्थः**-हे **(पूषन्)** पुष्टि करने वाले! **(यथा)** जैसे **(हि)** जिस कारण **(पुरा)** पहिले **(त्वम्)** आप **(नः)** हमारी **(पृतनासु)** मनुष्य सेनाओं में **(अभि, ख्यः)** सब ओर से अच्छे प्रकार कथन करते हैं, वैसे **(नूनम्)** निश्चित **(मर्त्यैः)** साधारण मनुष्य वा **(देवैः)** विद्वान् **(उत)** और **(श्रिया)** लक्ष्मी के साथ **(परः)** उत्कृष्ट अत्युत्तम वा **(समः)** समान **(असि)** हैं इससे **(अवा)** रक्षा कीजिये॥१९॥

**भावार्थः**-जो विद्वानों के तुल्य है वह विद्वान्, जो मनुष्यों के तुल्य है वह मध्यम, और जो पशुओं के तुल्य है वह अधम मनुष्य है, इसको सब जानें॥१९॥

**पुनर्मनुष्यैः कीदृशी नीतिर्धार्येत्याह॥**

फिर मनुष्यों को कैसी नीति धारण करनी चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**वामी वामस्य धूतयः प्रणीतिरस्तु सूनृता।**

**देवस्य वा मरुतो मर्त्यस्य वेजानस्य प्रयज्यवः॥२०॥**



www.9009.co.in

**वा॒मी। वा॒मस्य॑। धू॒त॒यः॒। प्रऽनी॑तिः। अ॒स्तु॒। सू॒नृता॑। दे॒वस्य॑। वा॒। म॒रु॒तः॒। मर्त्य॑स्य। वा॒। ई॒जा॒नस्य॑। प्र॒ऽय॒ज्य॒वः॒॥ २०॥**

**पदार्थः**-(**वामी**) बहुप्रशस्तकर्मा (**वामस्य**) प्रशस्यस्य (**धूतयः**) कंपयितारः (**प्रणीतिः**) प्रकृष्टा नीतिः (**अस्तु**) (**सूनृता**) सत्यभाषणादियुक्ता (**देवस्य**) विदुषः (**वा**) (**मरुतः**) मरणधर्मस्य (**मर्त्यस्य**) साधारणमनुष्यस्य (**वा**) (**ईजानस्य**) यज्ञकर्तुः (**प्रयज्यवः**) प्रकर्षेण यज्ञसम्पादकाः॥ २०॥

**अन्वयः**-हे धूतयः प्रयज्यवो! युष्मासु वामस्य वामी देवस्य वा मरुत ईजानस्य वा मर्त्यस्य सूनृता प्रणीतिरस्तु॥ २०॥

**भावार्थः**-आप्तो राजाऽमात्यानुपदिशेत् भवन्तो न्यायकारिणो धर्मात्मानो भूत्वा पुत्रवत्प्रजाः पालयन्त्विति॥ २०॥

**पदार्थः**-हे (**धूतयः**) कम्पन कराने वाले (**प्रयज्यवः**) उत्तमता से यज्ञसम्पादको! तुम में (**वामस्य**) प्रशंसा करने योग्य का सम्बन्धी (**वामी**) बहुत प्रशंसित कर्मकर्ता और (**देवस्य**) विद्वान् की (**वा**) वा (**मरुतः**) मरणधर्मा तथा (**ईजानस्य**) यज्ञकर्त्ता (**वा**) वा (**मर्त्यस्य**) साधारण मनुष्य की (**सूनृता**) सत्यभाषणादि युक्त (**प्रणीतिः**) उत्तम नीति (**अस्तु**) हो॥ २०॥

**भावार्थः**-आप्त राजा मन्त्रियों को उपदेश देवे कि-आप लोग न्यायकारी तथा धर्मात्मा होकर पुत्र के समान प्रजाजनों को पालें॥ २०॥

**कस्य राज्ञः पुण्यकीर्त्तिर्जायत इत्याह॥**

किस राजा की पुण्यरूप कीर्त्ति होती है, इस विषय को कहते हैं॥

**स॒द्यश्चि॒द्यस्य॑ चर्कृ॒तिः परि॒ द्यां दे॒वो नैति॒ सूर्यः॑।**

**त्वे॒षं शवो॑ दधिरे॒ नाम॑ य॒ज्ञियं॑ म॒रुतो॑ वृत्र॒हं शवो॒ ज्येष्ठं॑ वृत्र॒हं॑ शवः॑॥ २१॥**

**स॒द्यः। चि॒त्। यस्य॑। चर्कृ॒तिः। परि॑। द्याम्। दे॒वः। न। एति॑। सूर्यः॑। त्वे॒षम्। शवः॑। द॒धि॒रे। नाम॑। य॒ज्ञिय॑म्। म॒रुतः॑। वृ॒त्र॒ऽहम्। शवः॑। ज्येष्ठ॑म्। वृ॒त्र॒ऽहम्। शवः॑॥ २१॥**

**पदार्थः**-(**सद्यः**) (**चित्**) अपि (**यस्य**) (**चर्कृतिः**) भृशमुत्तमा क्रिया (**परि**) सर्वतः (**द्याम्**) प्रकाशम् (**देवः**) देदीप्यमानः (**न**) इव (**एति**) प्राप्नोति गच्छति वा (**सूर्यः**) सविता (**त्वेषम्**) देदीप्यमानम् (**शवः**) बलम् (**दधिरे**) दधति (**नाम**) संज्ञाम् (**यज्ञियम्**) यज्ञसम्पादकम् (**मरुतः**) मनुष्याः (**वृत्रहम्**) शत्रुनाशकम् (**शवः**) बलम् (**ज्येष्ठम्**) प्रवृद्धम् (**वृत्रहम्**) धनप्रापकम् (**शवः**) बलम्॥ २१॥

**अन्वयः**-यस्य राज्ञश्चर्कृतिर्देवः सूर्यो द्यां न सद्यो विनयं पर्य्येति यस्य मरुतस्त्वेषं नाम यज्ञियं शवो दधिरे वृत्रहं शवो ज्येष्ठं वृत्रहं शवश्चिद्दधिरे तस्य सर्वत्रैव विजयो सूर्य्यवत् कीर्तिः प्रसरति॥ २१॥

**भावार्थः**-यो राजा विद्याविनययुक्तः पुरुषार्थी दृढप्रतिज्ञो जितेन्द्रियो धार्मिकः सत्यवादी सन् धार्मिकान् विदुषोऽधिकारे संस्थाप्य पुत्रवत्प्रजाः पालयति तस्याऽत्र जगति सूर्य्यवत् कीर्तिः प्रसरति॥ २१॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**यस्य**) जिस राजा की (**चर्कृतिः**) निरन्तर उत्तम क्रिया (**देवः**) देदीप्यमान (**सूर्यः**) सविता और (**द्याम्**) प्रकाश के (**न**) समान (**सद्यः**) शीघ्र विनय को (**परि, एति**) सब ओर से प्राप्त होती वा जिसके (**मरुतः**) प्रजा जन (**त्वेषम्**) देदीप्यमान (**नाम**) संज्ञा (**यज्ञियम्**) यज्ञ सम्पादक और (**शवः**) बल को (**दधिरे**) धारण करते हैं वा (**वृत्रहम्**) शत्रुओं के नाश करने वाले (**शवः**) बल वा (**ज्येष्ठम्**) प्रशंसित (**वृत्रहम्**) धन प्राप्त करने वाले (**शवः, चित्**) बल को भी धारण करते हैं, उसका सर्वत्र विजय होता है॥२१॥

**भावार्थः**-जो राजा विद्या और विनय से युक्त, पुरुषार्थी, दृढप्रतिज्ञा करने वाला, जितेन्द्रिय, धार्मिक, सत्यवादी होकर धार्म्मिक विद्वानों को अधिकार में संस्थापन कर पुत्र के समान प्रजाजनों को पालता है, उसकी इस जगत् में सूर्य्य के समान कीर्ति फैलती है॥२१॥

**अथ प्रजाकृत्यमाह॥**

अब प्रजा के कृत्य को कहते हैं॥

**सकृद्ध द्यौरजायत सकृद्भूमिरजायत।**

**पृश्न्या दुग्धं सकृत्पयस्तदन्यो नानु जायते॥२२॥४॥**

**सकृत्। ह। द्यौः। अजायत। सकृत्। भूमिः। अजायत। पृश्न्याः। दुग्धम्। सकृत्। पयः। तत्। अन्यः। न। अनु। जायते॥२२॥**

**पदार्थः**-(**सकृत्**) एकवारम् (**ह**) खलु (**द्यौः**) सूर्यः (**अजायत**) जायते (**सकृत्**) एकवारम् (**भूमिः**) (**अजायत**) जायते (**पृश्न्याः**) अन्तरिक्षे भवाः सृष्टयः (**दुग्धम्**) (**सकृत्**) (**पयः**) उदकम् (**तत्**) तस्मात् (**अन्यः**) भिन्नः (**न**) (**अनु**) (**जायते**)॥२२॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथा ह द्यौः सकृदजायत भूमिः सकृदजायत पृश्न्याः सकृज्जायन्ते दुग्धं पयश्च सकृज्जायते तदन्यो नानु जायते तथैव यूयं विजानीत॥२२॥

**भावार्थः**-हे विद्वांसो! येनेश्वरेण सूर्यादिकं जगद्युगपदुत्पाद्यते स एतया सृष्ट्या सह न जायतेऽस्या भिन्नः सन् सर्वं सद्यो जनयति तमेव यूयं ध्यायतेति॥२२॥

अत्राग्निमरुत्पूषन्पृश्निसूर्य्यभूमिविद्वद्राजप्रजाकृत्यवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इत्यष्टचत्वारिंशत्तमं सूक्तं चतुर्थो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे (**ह**) निश्चय के साथ (**द्यौः**) सूर्य (**सकृत्**) एक वार (**अजायत**) उत्पन्न होता है तथा (**भूमिः**) भूमि (**सकृत्**) एक वार (**अजायत**) उत्पन्न होती है और (**पृश्न्याः**) अन्तरिक्ष में उत्पन्न होने वाली सृष्टियाँ (**सकृत्**) एक वार उत्पन्न होती हैं तथा (**दुग्धम्**) दूध और (**पयः**) जल एक वार उत्पन्न होता है (**तत्**) उससे (**अन्यः**) और (**न**) नहीं (**अनु, जायते**) अनुकरण करता, वैसे तुम जानो॥२२॥



www.9009.co.in

**भावार्थ:-**हे विद्वानो! जिस ईश्वर ने सूर्य आदि जगत् एक वार उत्पन्न किया वह इस सृष्टि के साथ नहीं उत्पन्न होता, किन्तु इस सृष्टि से भिन्न अर्थात् भेद को प्राप्त होकर सबको शीघ्र उत्पन्न करता है, उसी का ध्यान तुम लोग करो॥२२॥

इस सूक्त में अग्नि, मरुत्, पूषा, पृश्नि, सूर्य, भूमि, विद्वान्, राजा और प्रजा के कृत्य का वर्णन होने से इस सूक्त के अर्थ ही इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ संङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह अड़तालीसवां सूक्त और चतुर्थ वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

**अथ पञ्चदशर्चस्यैकोनपञ्चाशत्तमस्य सूक्तस्य ऋजिष्वा ऋषिः। विश्वेदेवा देवताः। १, ३,४, १०, ११ त्रिष्टुप्। ५, ६,९, १३ निचृत्त्रिष्टुप्। ८, १२ विराट्त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः। २, १४ स्वराट् पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः। ७ ब्राह्म्युष्णिक् छन्दः। ऋषभः स्वरः। १५ अतिजगती छन्दः। निषादः स्वरः॥**

***अथ मनुष्याः किं कुर्य्युरित्याह॥***

अब पन्द्रह ऋचावाले उनचासवें सूक्त का प्रारम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में मनुष्य क्या करें, इस विषय को कहते हैं॥

**स्तुषे जनं सुव्रतं नव्यसीभिर्गीर्भिर्मित्रावरुणा सुम्नयन्ता।**

**त आ गमन्तु त इह श्रुवन्तु सुक्षत्रासो वरुणो मित्रो अग्निः॥ १॥**

**स्तुषे। जनम्। सुऽव्रतम्। नव्यसीभिः। गीःऽभिः। मित्रावरुणा। सुम्नऽयन्ता। ते। आ। गमन्तु। ते। इह। श्रुवन्तु। सुऽक्षत्रासः। वरुणः। मित्रः। अग्निः॥ १॥**

**पदार्थः**-(**स्तुषे**) स्तौमि (**जनम्**) मनुष्यम् (**सुव्रतम्**) शोभनानि व्रतानि कर्माणि यस्य तम् (**नव्यसीभिः**) अतिशयेन नवीनाभिः (**गीर्भिः**) सद्यः सुशिक्षिताभिः वाग्भिः (**मित्रावरुणा**) प्राणोदानाविवाध्यापकोपदेशकौ (**सुम्नयन्ता**) सुखं प्रापयन्तौ (**ते**) (**आ**) (**गमन्तु**) आगच्छन्तु (**ते**) (**इह**) (**श्रुवन्तु**) शृण्वन्तु (**सुक्षत्रासः**) शोभनं क्षत्रं राष्ट्रं धनं वा येषान्ते (**वरुणः**) श्रेष्ठः (**मित्रः**) सखा (**अग्निः**) अग्निरिव तेजस्वी॥ १॥

**अन्वयः**-हे विद्वांसो! नव्यसीभिर्गीर्भिः सुव्रतं जनं सुम्नयन्ता मित्रावरुणा चाऽहं स्तुषे। ये मित्रो वरुणोऽग्निः सुक्षत्रासो वर्त्तन्ते ते इहाऽऽगमन्तु ते श्रुवन्तु॥ १॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! ये युष्मान्नवीनां नवीनां विद्यामुपदिशन्ति तानाहूय सङ्गत्य तेभ्यः श्रुत्वा विद्याः प्राप्नुत॥ १॥

**पदार्थः**-हे विद्वानो! (**नव्यसीभिः**) अतीव नवीन (**गीर्भिः**) शीघ्र सुशिक्षित वाणियों से (**सुव्रतम्**) जिसके शुभ व्रत अर्थात् कर्म हैं उस (**जनम्**) मनुष्य की और (**सुम्नयन्ता**) सुख प्राप्ति कराने वाले (**मित्रावरुणा**) प्राण और उदान के समान पढ़ाने और उपदेश करने वाले की मैं (**स्तुषे**) स्तुति करता हूँ तथा जो (**मित्रः**) मित्र (**वरुणः**) श्रेष्ठ (**अग्निः**) अग्नि के समान तेजस्वी और (**सुक्षत्रासः**) जिनका सुन्दर राज्य वा धन है ऐसे वर्त्तमान हैं (**ते**) वे (**इह**) यहाँ (**आ, गमन्तु**) आवें और (**ते**) वे (**श्रुवन्तु**) श्रवण करें॥ १॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो तुमको नवीन-नवीन विद्या का उपदेश करते हैं, उनको बुलाकर वा उनसे मेलकर उनसे सुनकर विद्याओं को प्राप्त होओ॥१॥

**पुनर्मनुष्याः कं स्तूयुरित्याह॥**

फिर मनुष्य किसकी स्तुति करें, इस विषय को कहते हैं॥

**विशोविश ईड्यमध्वरेष्वदृप्तक्रतुमरतिं युवत्योः।**

**दिवः शिशुं सहसः सूनुमग्निं यज्ञस्य केतुमरुषं यजध्यै॥२॥**

**विशःऽविशः। ईड्यम्। अध्वरेषु। अदृप्तऽक्रतुम्। अरतिम्। युवत्योः। दिवः। शिशुम्। सहसः। सूनुम्। अग्निम्। यज्ञस्य। केतुम्। अरुषम्। यजध्यै॥२॥**

**पदार्थः**-(**विशोविशः**) प्रजायाः प्रजाया मध्ये (**ईड्यम्**) स्तोतुमर्हम् (**अध्वरेषु**) अहिंसनीयेषु व्यवहारेषु (**अदृप्तक्रतुम्**) अमोहितप्रज्ञम् (**अरतिम्**) विषयेष्वरममाणम् (**युवत्योः**) युवावस्थां प्राप्तयोः स्त्रीपुरुषयोः (**दिवः**) कमनीयस्य (**शिशुम्**) बालकम् (**सहसः**) बलवतः (**सूनुम्**) (**अग्निम्**) पावकमिव वर्त्तमानम् (**यज्ञस्य**) (**केतुम्**) प्रज्ञापकम् (**अरुषम्**) आरक्तगुणम् (**यजध्यै**) यष्टुं सङ्गन्तुम्॥२॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! अध्वरेषु विशोविशो मध्येऽरतिमदृप्तक्रतुमीड्यं युवत्योर्दिवः शिशुं सहसस्सूनुमग्निमिव वर्त्तमानमरुषं यज्ञस्य केतुं यजध्यै स्तुवन्तु॥२॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यो ब्रह्मचर्य्येण युवावस्थां प्राप्तयोः स्त्रीपुरुषयोरुत्तमाद् बलाज्जातोऽग्निरिव तेजस्वी भवेत्तमेव राजानमधिकारिणं वा कुरुत॥२॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! (**अध्वरेषु**) अहिंसनीय व्यवहारों में (**विशोविशः**) प्रजा-प्रजा के बीच (**अरतिम्**) विषयों में विना रमते हुए (**अदृप्तक्रतुम्**) जिसकी बुद्धि मोहित नहीं हुई उस (**ईड्यम्**) स्तुति करने योग्य (**युवत्योः**) युवावस्था को प्राप्त हुए स्त्री-पुरुष के (**दिवः**) मनोहर व्यवहारसम्बन्धी (**शिशुम्**) बालक की (**सहसः**) वा बलवान् के (**सूनुम्**) उस पुत्र की जो (**अग्निम्**) अग्नि के समान वर्त्तमान तथा (**अरुषम्**) कुछ लाल रंग युक्त और (**यज्ञस्य**) यज्ञादि कर्म का (**केतुम्**) अच्छे प्रकार समझाने वाला है (**यजध्यै**) सङ्ग करने के लिये स्तुति करो॥२॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो ब्रह्मचर्य्य से युवा अवस्था को प्राप्त स्त्री-पुरुषों के उत्तम बल से उत्पन्न, अग्नि के समान तेजस्वी हो, उसको राजा वा अधिकारी करो॥२॥

**अथ स्त्रीपुरुषौ कीदृशौ भूत्वा कथं वर्त्तेयातामित्याह॥**

अब स्त्री-पुरुष कैसे होकर कैसे वर्त्ताव करें, इस विषय को कहते हैं॥

**अरुषस्य दुहितरा विरूपे स्तृभिरन्या पिपिशे सूरो अन्या।**

**मिथस्तुरा विचरन्ती पावके मन्म श्रुतं नक्षत ऋच्यमाने॥३॥**



www.9009.co.in

अरुषस्य। दुहितरा। विरूपे इति विऽरूपे। स्तृऽभिः। अन्या। पिपिशे। सूरः। अन्या। मिथःऽतुरा। विचरन्ती इति विऽचरन्ती। पावके इति। मन्म। श्रुतम्। नक्षतः। ऋच्यमाने इति॥ ३॥

**पदार्थः**-(**अरुषस्य**) आरक्तगुणस्याग्नेः (**दुहितरा**) कन्ये इव वर्त्तमाने (**विरूपे**) विविधरूपे विरुद्धरूपे वाऽहोरात्रे (**स्तृभिः**) नक्षत्रादिभिः (**अन्या**) द्वयोर्भिन्ना (**पिपिशे**) पिनष्ट्यवयव इव वर्त्तते (**सूरः**) सूर्य्यः (**अन्या**) दिनाख्या (**मिथस्तुरा**) मिथो हिंसके (**विचरन्ती**) विविधगत्या प्राप्नुवन्ती (**पावके**) पवित्रे (**मन्म**) विज्ञानम् (**श्रुतम्**) (**नक्षतः**) व्याप्नुतः (**ऋच्यमाने**) स्तूयमाने॥ ३॥

**अन्वयः**-हे स्त्रीपुरुषौ राजप्रजे वा! यथाऽरुषस्य विरूपे मिथस्तुरा विचरन्ती ऋच्यमाने पावके दुहितरेव वर्त्तते तयोरन्या रात्रिः स्तृभिः पिपिशेऽन्या सूरः किरणैः पिपिशे सर्वं जगन्नक्षतस्तथा संधितौ भूत्वा प्रीत्या श्रुतं मन्म युवां प्राप्नुयाताम्॥ ३॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यथा सूर्य्यरूपस्याग्ने रात्रिदिने पुत्रीवद्वर्त्तेते तथा द्वे विलक्षणे सदा सम्बद्धे च भवतस्तथैव विचित्रवस्त्राभरणौ विविधविद्याढ्यौ प्रशंसितौ सन्तौ विद्याविज्ञानधर्म्मोन्नतिसम्बद्धप्रीती स्त्रीपुरुषौ भवेताम्॥ ३॥

**पदार्थः**-हे स्त्री पुरुषो वा राजा और प्रजाजनो! जैसे (**अरुषस्य**) कुछ लाल रंग वाले अग्नि के (**विरूपे**) विविधरूप वा विरुद्धस्वरूपयुक्त दिन और रात्रि (**मिथस्तुरा**) परस्पर हिंसा करने वाले (**विचरन्ती**) विविध गति से प्राप्त होते हुए (**ऋच्यमाने**) स्तूयमान (**पावके**) पवित्र (**दुहितरा**) कन्याओं के समान वर्तमान हैं उनमें (**अन्या**) और अर्थात् दोनों से अलग रात्रिरूप कन्या (**स्तृभिः**) नक्षत्रादिकों के साथ (**पिपिशे**) पीसती हुई अङ्ग के समान वर्त्तमान है (**अन्या**) और दिनरूप कन्या अर्थात् (**सूरः**) सूर्य्य किरणों से पीसती हुई वर्त्तमान है, वे दोनों समस्त जगत् को (**नक्षतः**) व्याप्त होते हैं, वैसे मिलकर प्रीति से (**श्रुतम्**) श्रवण वा (**मन्म**) विज्ञान को तुम दोनों प्राप्त होओ॥ ३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे सूर्य्यरूप अग्नि के रात्रि-दिन पुत्री के समान वर्त्तमान हैं तथा दोनों विलक्षण सदा सम्बन्ध करने वाले होते हैं, वैसे ही विचित्र वस्त्र और आभूषण वाले, विविध विद्यायुक्त और प्रशंसित होते हुए विद्या विज्ञान और धर्मोन्नति में सम्बन्ध और प्रीति करने वाले स्त्री-पुरुष हों॥ ३॥

**पुनर्मनुष्याः किं कुर्युरित्याह॥**

फिर मनुष्य क्या करें, इस विषय को कहते हैं॥

**प्र वायुमच्छा बृहती मनीषा बृहद्रयिं विश्ववारं रथप्राम्।**

**द्युतद्यामा नियुतः पत्यमानः कविः कविमियक्षसि प्रयज्यो॥ ४॥**

प्र। वायुम्। अच्छ। बृहती। मनीषा। बृहत्ऽरयिम्। विश्वऽवारम्। रथऽप्राम्। द्युतत्ऽयामा। निऽयुतः। पत्यमानः। कविः। कविम्। इयक्षसि। प्रयज्यो इति प्रऽयज्यो॥ ४॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**प्र**) प्रकर्षेण (**वायुम्**) पवनम् (**अच्छा**) अत्र **संहितायामि**ति दीर्घः। (**बृहती**) महती (**मनीषा**) प्रज्ञा (**बृहद्रयिम्**) महान् रयिर्यस्मात्तम् (**विश्ववारम्**) यो विश्वं सर्वमुत्तमं व्यवहारं वृणोति तम् (**रथप्राम्**) यो रथानि यानानि पूर्यते तम् (**द्युतद्यामा**) द्युतन्तो विद्योतमाना पदार्था यया सा (**नियुतः**) निश्चितगतिमतः (**पत्यमानः**) ऐश्वर्यमिच्छन् (**कविः**) विद्वान् (**कविम्**) विद्वांसमिव क्रान्तप्रज्ञम् (**इयक्षसि**) सङ्गच्छसे प्राप्नोषि वा। **इयक्षतीति गतिकर्म्मा।** (निघं०२.१४) (**प्रयज्यो**) यः प्रकर्षेण यजति तत्सम्बुद्धौ॥४॥

**अन्वयः**-हे प्रयज्यो! पत्यमानः कविस्त्वं या द्युतद्यामा बृहती मनीषा तया यदि बृहद्रयिं विश्ववारं रथप्रां कविं वायुमस्य नियुतश्चाच्छा प्रेयक्षसि तर्हि किं किमभीष्टं न प्राप्नोषि॥४॥

**भावार्थः**-ये मनुष्याः शुद्धया बुद्ध्या योगाभ्यासेन च सर्वसुखप्रदं सर्वजगद्धरं वायुं प्राणायामे वशीकुर्वन्ति ते सर्वाणि सुखानि प्राप्नुवन्ति॥४॥

**पदार्थः**-हे (**प्रयज्यो**) उत्तमता से यज्ञ करने वाले! (**पत्यमानः**) ऐश्वर्य की इच्छा करते हुए (**कविः**) विद्वान् आप जो (**द्युतद्यामा**) जिससे विशेषकर पदार्थ प्रकाशित होते हैं ऐसी (**बृहती**) बड़ी (**मनीषा**) बुद्धि है उससे जो (**बृहद्रयिम्**) जिससे बहुत धन सिद्ध होता उस (**विश्ववारम्**) और जो समस्त उत्तम व्यवहार को स्वीकार करता वा (**रथप्राम्**) रथ को परिपूर्ण करता वा (**कविम्**) विद्वान् के समान क्रमपूर्वक बुद्धि प्राप्त होती उस (**वायुम्**) वायु और इसके (**नियुतः**) निश्चित गति वाले वेगरूप घोड़ों को (**अच्छा**) (**प्र, इयक्षसि**) मिलते हैं तो कौन-कौन चाहे हुए पदार्थ को नहीं प्राप्त होते हैं॥४॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य शुद्ध बुद्धि और योगाभ्यास से सर्व सुख देने तथा सर्व जगत् के धारण करने वाले पवन को प्राणायाम में वश करते हैं, वे सर्वसुख को प्राप्त होते हैं॥४॥

**पुनर्मनुष्याः केन किं प्राप्नुयुरित्याह॥**

फिर मनुष्य किससे किसको प्राप्त होवें, इस विषय को कहते हैं॥

**स मे वपुश्छदयदश्विनोर्यो रथो विरुक्मान् मनसा युजानः।**

**येन नरा नासत्येषयध्यै वर्तिर्याथस्तनयाय त्मने च॥५॥५॥**

**सः। मे। वपुः। छदयत्। अश्विनोः। यः। रथः। विरुक्मान्। मनसा। युजानः। येन। नरा। नासत्या। इषयध्यै। वर्तिः। याथः। तनयाय। त्मने। च॥५॥**

**पदार्थः**-(**सः**) (**मे**) मम (**वपुः**) शरीरं रूपं वा (**छदयत्**) बलयति (**अश्विनोः**) प्राणाऽपानयोः (**यः**) (**रथः**) रमणीयो व्यवहारः (**विरुक्मान्**) विविधदीप्तियुक्तः (**मनसा**) अन्तःकरणेन (**युजानः**) (**येन**) (**नरा**) नरौ नायकौ (**नासत्या**) अविद्यमानाऽसत्यौ (**इषयध्यै**) एषयितुम् (**वर्त्तिः**) मार्गः (**याथः**) प्राप्नुतः (**तनयाय**) सन्तानाय (**त्मने**) आत्मने (**च**)॥५॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे विद्वांसो! योऽश्विनोर्विरुक्मान् मनसा युजानो रथो मे वपुश्छदयद्येन तनयाय त्मने च नरा नासत्या अध्यापकोपदेशकौ योगिनाविषयध्यै यो वर्त्तिस्तं याथः स युष्माभिर्विदित्वा मनसात्मनि नियोजनीयः॥५॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! येन वायुना योगिनो विविधं विज्ञानं प्राप्नुवन्ति येन सर्वं जगत्सर्वे प्राणिनश्च जीवन्ति तदभ्यासेन परमात्मानं विदित्वा मुक्तिपथेनानन्दं प्राप्नुत॥५॥

**पदार्थः**-हे विद्वानो! **(यः)** जो **(अश्विनोः)** प्राण और अपान के **(विरुक्मान्)** विविधदीप्तियुक्त **(मनसा)** अन्तःकरण से **(युजानः)** युक्त होता हुआ **(रथः)** रमणीय व्यवहार **(मे)** मेरे **(वपुः)** शरीर वा रूप को **(छदयत्)** बली करता है तथा **(येन)** जिससे **(तनयाय)** सन्तान के लिये **(त्मने, च)** और अपने लिये **(नरा)** नायक अग्रगामी **(नासत्या)** जिनके असत्य विद्यमान नहीं वे अध्यापक और उपदेशक योगीजन **(इषयध्यै)** चलने के लिये जो **(वर्त्तिः)** मार्ग है उसको **(याथः)** प्राप्त होते हैं **(सः)** वह तुम लोगों को चाहिये कि जानकर अन्तःकरण से आत्मा में निरन्तर यत्न **[=युक्त]** करने योग्य हो॥५॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जिस वायु से योगीजन विविध प्रकार के विज्ञान को प्राप्त होते हैं तथा जिससे सब जगत् वा सब प्राणी जीते हैं उसके अभ्यास से परमात्मा को जान कर मुक्ति-पथ से आनन्द को प्राप्त होओ॥५॥

**पुनर्मनुष्याः किं कुर्युरित्याह॥**

फिर मनुष्य क्या करें, इस विषय को कहते हैं॥

**पर्जन्यवाता वृषभा पृथिव्याः पुरीषाणि जिन्वतमप्यानि।**

**सत्यश्रुतः कवयो यस्य गीर्भिर्जगतः स्थातर्जगदा कृणुध्वम्॥६॥**

**पर्जन्यवाता। वृषभा। पृथिव्याः। पुरीषाणि। जिन्वतम्। अप्यानि। सत्यऽश्रुतः। कवयः। यस्य। गीःऽभिः। जगतः। स्थातः। जगत्। आ। कृणुध्वम्॥६॥**

**पदार्थः**-**(पर्जन्यवाता)** पर्जन्यस्थौ वायू **(वृषभा)** वर्षकौ **(पृथिव्याः)** अन्तरिक्षात् **(पुरीषाणि)** उदकानि। **पुरीषमित्युदकनाम।** (निघं०१.१२) **(जिन्वतम्)** गमयतम्प्राप्नुतं वा, **जिन्वतीति गतिकर्मा।** (निघं०२.१४) **(अप्यानि)** अप्सु भवानि **(सत्यश्रुतः)** ये सत्यं शृण्वन्ति **(कवयः)** विद्वांसः **(यस्य)** **(गीर्भिः)** वाग्भिः **(जगतः)** संसारस्य मध्ये **(स्थातः)** यस्तिष्ठति तत्सम्बुद्धौ **(जगत्)** **(आ)** **(कृणुध्वम्)**॥६॥

**अन्वयः**-हे वृषभा यजमानपुरोहितौ! यथा पर्जन्यवाता पृथिव्या अप्यानि पुरीषाणि प्रापयतस्तथा युवां जिन्वतं सत्यश्रुतः कवयः सन्तः पुरीषाण्याकृणुध्वम्। हे स्थातर्विद्वन्! यस्य गीर्भिजगतो जगद्विजानासि तं त्वं सत्कुर्याः॥६॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। ये मनुष्या वायुवज्जगद्धितकराः सत्यस्य श्रोतारः सन्ति त एव जगद्विज्ञायान्यानेतज्ज्ञापयितुं शक्नुवन्ति॥६॥

**पदार्थः**-हे **(वृषभा)** वृष्टि कराने वाले यजमान और पुरोहितो! जैसे **(पर्जन्यवाता)** मेघस्थ पवन **(पृथिव्याः)** अन्तरिक्ष से **(अप्यानि)** जलों में प्रसिद्ध हुए **(पुरीषाणि)** जलों को पहुँचाते है, वैसे तुम



www.9009.co.in

**(जिन्वतम्)** पहुँचो वा पदार्थ को पहुँचाओ और **(सत्यश्रुत:)** जो सत्य को सुनने वाले जन हैं, वे **(कवय:)** विद्वान् होते हुए जलों को **(आ, कृणुध्वम्)** अच्छे प्रकार सिद्ध करें। हे **(स्थात:)** स्थिर होने वाले विद्वान् जन! **(यस्य)** जिसकी **(गीर्भि:)** वाणियों से **(जगत:)** संसार के बीच **(जगत्)** जगत् की विशेषता से जानते हो, उसका आप सत्कार करें॥६॥

**भावार्थ:**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो मनुष्य पवन के समान जगत् के हित करनेवाले तथ सत्य के सुनने वाले हैं, वे ही जगत् को जान कर औरों को इस जगत् का ज्ञान दे सकते हैं॥६॥

**पुन: कीदृशी स्त्री सुखं दद्यादित्याह॥**

फिर कैसी स्त्री सुख देवे इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**पावी॑रवी क॒न्या॑ चि॒त्रायु॒: सर॑स्वती वी॒रप॑त्नी॒ धियं॑ धात्।**

**ग्नाभि॒रच्छि॑द्रं शर॒णं स॒जोषा॑ दु॒रा॒धर्षं॑ गृ॒ण॒ते शर्म॑ यंसत्॥७॥**

**पावी॑रवी। क॒न्या॑। चि॒त्रऽआ॑यु:। सर॑स्वती। वी॒रऽप॑त्नी। धिय॑म्। धा॒त्। ग्नाभि॑:। अच्छि॑द्रम्। श॒र॒णम्। स॒ऽजोषा॑:। दु॒:ऽआ॒धर्ष॑म्। गृ॒ण॒ते। शर्म॑। य॒स॒त्॥७॥**

**पदार्थ:**-**(पावीरवी)** शोधयित्री **(कन्या)** कमनीया **(चित्रायु:)** चित्रामायुर्यस्या: सा **(सरस्वती)** विज्ञानाढ्या **(वीरपत्नी)** वीर: पतिर्यस्या: सा **(धियम्)** शास्त्रोत्थां प्रज्ञामुत्तमं कर्म वा **(धात्)** दधाति **(ग्नाभि:)** सुशिक्षिताभिर्वाग्भि: **(अच्छिद्रम्)** छेदरहितम् **(शरणम्)** आश्रयम् **(सजोषा:)** समानप्रीतिसेविका **(दुराधर्षम्)** दु:खेन धर्षितुं योग्यम् **(गृणते)** स्तावकाय **(शर्म)** गृहं सुखं वा **(यंसत्)** ददाति॥७॥

**अन्वय:**-हे मनुष्या! या पावीरवी चित्रायु: सरस्वती वीरपत्नी कन्या ग्नाभिर्धियं धाद्या गृणते मेऽच्छिद्रं या सजोषा: सती गृणते मे शरणं दुराधर्षं शर्म यंसत्सैव मया सदैव सत्कर्त्तव्या॥७॥

**भावार्थ:**-या विदुषी शुभगुणकर्मस्वभावा कन्या स्यात्तामेव वीरपुरुष उद्वहेत्। यस्या: सङ्गप्रीती कदाचिन्न नश्येतां या सर्वदा सुखं दद्यात्सा पत्नी पत्या यथावत् सत्कर्त्तव्या॥७॥

**पदार्थ:**-हे मनुष्यो! जो **(पावीरवी)** शुद्ध करने वाली **(चित्रायु:)** चित्र विचित्र जिसकी आयु वह **(सरस्वती)** विज्ञानयुक्त **(वीरपत्नी)** वीर पति वाली **(कन्या)** मनोहर **(ग्नाभि:)** सुन्दर शिक्षित वाणियों से **(धियम्)** शास्त्रोत्थ प्रज्ञा उत्तम बुद्धि वा कर्म को **(धात्)** धारण करती है वा जो **(गृणते)** स्तुति करने वाले मेरे लिये **(अच्छिद्रम्)** छेदरहित व्यवहार को तथा जो **(सजोषा:)** समान प्रीति की सेवने वाली होती हुई स्तुति करने वाले मेरे लिये **(शरणम्)** आश्रय को वा जो **(दुराधर्षम्)** दु:ख से धृष्टता के योग्य **(शर्म)** घर वा सुख को **(यंसत्)** देती है, वही मुझसे सदैव सत्कार करने योग्य है॥७॥

**भावार्थ:**-जो विदुषी शुभ गुण, कर्म, स्वभाव वाली कन्या हो, उसी को वीर पुरुष विवाहे, जिसका सङ्ग वा प्रीति कभी नष्ट न हो तथा जो सर्वदा सुख दे, वह पत्नी पति से सर्वदा सत्कार करने योग्य है॥७॥

**पुनर्मनुष्यै: क: सेवनीय इत्याह॥**



www.9009.co.in

फिर मनुष्यों को किसका सेवन करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**पथस्पथः परिपतिं वचस्या कामेन कृतो अभ्यानळर्कम्।**

**स नो रासच्छुरुधश्चन्द्राग्रा धियंधियं सीषधाति प्र पूषा॥८॥**

**पथःऽपथः। परिऽपतिम्। वचस्या। कामेन। कृतः। अभि। आनट्। अर्कम्। सः। नः। रासत्। शुरुधः। चन्द्रऽअग्राः। धियम्ऽधियम्। सीसधाति। प्र। पूषा॥८॥**

**पदार्थः**-(**पथस्पथः**) मार्गान् मार्गान् (**परिपतिम्**) पतिं वर्जयित्वा वा सर्वतः स्वामिनम् (**वचस्या**) वचसि साधूनि (**कामेन**) (**कृतः**) (**अभि**) (**आनट्**) अभिव्याप्नोति (**अर्कम्**) सत्कर्त्तव्यं क्रियामयं व्यवहारम् (**सः**) (**नः**) अस्मभ्यम् (**रासत्**) दद्यात् (**शुरुधः**) सद्यो रोधिकाः (**चन्द्राग्राः**) चन्द्रं सुवर्णमग्रमुत्तमं यासु ताः (**धियंधियम्**) प्रज्ञां प्रज्ञां कर्म कर्म वा (**सीषधाति**) साधयति प्रसाधयति (**प्र**) (**पूषा**)॥८॥

**अन्वयः**-य पूषा कामेन नः पथस्पथः परिपतिं वचस्या कृतोऽर्कमभ्यानट्। नः शुरुधश्चन्द्राग्रा रासद्धियंधियं प्र सीषधाति स उपदेष्टा न्यायशोऽस्माकं भवेत्॥८॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यो युष्मान् सन्मार्गं दर्शयित्वा दुष्टमार्गान्निवार्य्य सत्याचारं स्वामिनं सेवयित्वा दुष्टपतिं निवर्त्य प्रज्ञां वर्धयति स एव युष्माभिः सत्कर्त्तव्यो भवति॥८॥

**पदार्थः**-जो (**पूषा**) पुष्टि करने वाला (**कामेन**) कामना से (**पथस्पथः**) मार्गों मार्गों को (**परिपतिम्**) स्वामी को छोड़ के वा सब ओर से स्वामी को और (**वचस्या**) वचन में उत्तम व्यवहारों को (**कृतः**) किये हुए (**अर्कम्**) सत्कार करने योग्य क्रियामय व्यवहार को (**अभि, आनट्**) सब ओर से व्याप्त होता है तथा (**नः**) हम लोगों के लिये (**शुरुधः**) शीघ्र रोकने वाली (**चन्द्राग्राः**) जिनके तीर सुवर्ण उत्तम विद्यमान उनको (**रासत्**) देवे तथा (**धियंधियम्**) प्रज्ञा प्रज्ञा वा कर्म कर्म को (**प्र, सीषधाति**) अच्छे प्रकार सिद्ध करता है (**सः**) वह उपदेशकर्त्ता तथा न्याय करने वाला हम लोगों का हो॥८॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो तुमको सन्मार्ग दिखाकर दुष्ट मार्गों का निवारण कर सत्याचरण करने वाले स्वामी का सेवन करा और दुष्टपति का निवारण कराके बुद्धि को बढ़ाता है, वही तुम लोगों को सत्कार करने योग्य होता है॥८॥

**पुनर्मनुष्याः कं सेवेरन्नित्याह॥**

फिर मनुष्य किसका सेवन करें, इस विषय को कहते हैं॥

**प्रथमभाजं यशसं वयोधां सुपाणिं देवं सुगभस्तिमृभ्वम्।**

**होतां यक्षद्यजतं पस्त्यानामग्निस्त्वष्टारं सुहवं विभावा॥९॥**

**प्रथमऽभाजम्। यशसम्। वयःऽधाम्। सुऽपाणिम्। देवम्। सुऽगभस्तिम्। ऋभ्वम्। होता। यक्षत्। यजतम्। पस्त्यानाम्। अग्निः। त्वष्टारम्। सुऽहवम्। विभाऽवा॥९॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**प्रथमभाजम्**) यः प्रथमान् भजति सेवते (**यशसम्**) यशः कीर्तिर्विद्यते यस्य तम् (**वयोधाम्**) यो वयो जीवनं दधाति तम् (**सुपणिम्**) शोभनौ धर्मकर्मकरौ पाणी श्रेष्ठो व्यवहारो वा यस्य तम् (**देवम्**) दातारं विद्वांसम् (**सुगभस्तिम्**) सुष्ठुप्रकाशम् (**ऋभ्वम्**) मेधाविनम् (**होता**) दाता (**यक्षत्**) सङ्गच्छेत् (**यजतम्**) सङ्गन्तव्यम् (**पस्त्यानाम्**) गृहाणाम् (**अग्निः**) पावक इव वर्त्तमानः (**त्वष्टारम्**) छेत्तारम् (**सुहवम्**) सुष्ठ्वाह्वयितुं योग्यम् (**विभावा**) यो विशेषेण भाति॥९॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! योऽग्निरिव विभावा होता त्वष्टारं सुहवं पस्त्यानां मध्ये यजतमृभ्वं सुगभस्तिं प्रथमभाजं यशसं वयोधां सुपाणिं देवं यक्षत्स एव युष्माभिः सङ्गन्तव्यः॥९॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। ये मनुष्या विद्यावृद्धान् पावकवदविद्यादुःखदाहकान् विदुषः सेवन्ते ते गृहे दीप इवोपदेश्यानामात्मनः प्रकाशयितुमर्हन्ति॥९॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो (**अग्निः**) पावक के समान वर्त्तमान (**विभावा**) विशेषता से प्रकाशमान (**होता**) दानशील जन (**त्वष्टारम्**) छेदन-भेदन करने वाले (**सुहवम्**) बुलाने योग्य वा (**पस्त्यानाम्**) घरों के बीच (**यजतम्**) सङ्ग करने योग्य वा (**ऋभ्वम्**) बुद्धिमान् (**सुगभस्तिम्**) सुन्दर प्रकाशक (**प्रथमभाजम्**) अगलों को सेवते हुए (**यशसम्**) कीर्त्तिमान् तथा (**वयोधाम्**) जीवन धारण करने वाले तथा (**सुपाणिम्**) सुन्दर व्यवहार वाले वा शोभन धर्म कर्मकारी हस्त जिसके उस (**देवम्**) दान करने वाले विद्वान् जन का (**यक्षत्**) सङ्ग करे, वही तुमको सङ्ग करने योग्य है॥९॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो मनुष्य विद्यावृद्ध, अग्नि के समान अविद्याजन्य दुःख के जलाने वाले विद्वानों की सेवा करते हैं, वे घर में दीपक के समान उपदेश देने योग्यों को आत्माओं के प्रकाश करने की योग्य हैं॥९॥

**पुनर्मनुष्यैः कः प्रशंसनीयोऽस्तीत्याह॥**

फिर मनुष्यों को कौन प्रशंसा करने योग्य है, इस विषय को कहते हैं॥

**भुवनस्य पितरं गीर्भिराभी रुद्रं दिवा वर्धया रुद्रमक्तौ।**

**बृहन्तमृष्वमजरं सुषुम्नमृधग्घुवेम कविनेषितासः॥ १०॥ ६॥**

**भुवनस्य। पितरम्। गीःऽभिः। आभिः। रुद्रम्। दिवा। वर्धय। रुद्रम्। अक्तौ। बृहन्तम्। ऋष्वम्। अजरम्। सुऽसुम्नम्। ऋधक्। हुवेम। कविना। इषितासः॥ १०॥**

**पदार्थः**-(**भुवनस्य**) संसारस्य (**पितरम्**) पालकम् (**गीर्भिः**) वाग्भिः (**आभिः**) वर्त्तमानाभिः (**रुद्रम्**) दुष्टानां रोदयितारम् (**दिवा**) कामनया विद्यादीप्त्या वा (**वर्धया**) अत्र **संहितायामिति** दीर्घः। (**रुद्रम्**) यो रुद्रोगं द्रावयति तम् (**अक्तौ**) रात्रौ (**बृहन्तम्**) वर्धकम् (**ऋष्वम्**) महान्तम् (**अजरम्**) जराव्याधिरहितम् (**सुषुम्नम्**) सुष्ठु सुखयुक्तम् (**ऋधक्**) सत्यम् (**हुवेम**) स्तूयामहि (**कविना**) विदुषा (**इषितासः**) प्रेरिताः सन्तः॥१०॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे विद्वन्! यथा कविनेषितासो वयमाभिर्गीर्भिर्भुवनस्य पितरमक्तौ रुद्रं बृहन्तमृष्वमजरं सुषुम्नं रुद्रमृधग्घुवेम तथैतं रुद्रं त्वं दिवा वर्धया॥१०॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। सर्वे मनुष्या विद्वत्प्रेरिताः सन्तो विद्याविनयव्यवहारे वृद्धा भूत्वा सर्वस्य जगतः पालकं परमात्मानं सत्येन व्यवहारेण प्रशंसन्तु यतोऽविनाशि सुखं प्राप्ताः सर्वे भवेयुः॥१०॥

**पदार्थः**-हे विद्वन्! जैसे **(कविना)** विद्वान् से **(इषितासः)** प्रेरणा किये हुए हम लोग **(आभिः)** इन वर्त्तमान **(गीर्भिः)** वाणियों से **(भुवनस्य)** संसार के **(पितरम्)** पालने वाले **(अक्तौ)** रात्रि में **(रुद्रम्)** दुष्टों को रुलाने और **(बृहन्तम्)** बढ़ाने वाले **(ऋष्वम्)** बड़े **(अजरम्)** जरावस्थारहित **(सुषुम्नम्)** सुन्दर सुखयुक्त **(रुद्रम्)** रोग भगाने वाले जन की **(ऋधक्)** सत्य **(हुवेम)** स्तुति करें, वैसे इस रुद्र को आप **(दिवा)** कामना वा विद्यादीप्ति से **(वर्धया)** बढ़ाओ॥१०॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। सब मनुष्य विद्वान् से प्रेरणा को पाये हुए विद्या और नम्रता के व्यवहार में वृद्ध होकर सब जगत् के पालने वाले परमात्मा की सत्य व्यवहार से प्रशंसा करें, जिससे अविनाशी सुख को सब प्राप्त हों॥१०॥

**पुनर्मनुष्याः किं कुर्य्युरित्याह॥**

फिर मनुष्या क्या करें, इस विषय को कहते हैं॥

**आ युवानः कवयो यज्ञियासो मरुतो गन्त गृणतो वरस्याम्।**

**अचित्रं चिद्धि जिन्वथा वृधन्त इत्था नक्षन्तो नरो अङ्गिरस्वत्॥११॥**

**आ। युवानः। कवयः। यज्ञियासः। मरुतः। गन्त। गृणतः। वरस्याम्। अचित्रम्। चित्। हि। जिन्वथ। वृधन्तः। इत्था। नक्षन्तः। नरः। अङ्गिरस्वत्॥११॥**

**पदार्थः**-**(आ)** **(युवानः)** प्राप्तयौवनाः **(कवयः)** सर्वशास्त्रविदः **(यज्ञियासः)** ये सत्यप्रियं व्यवहारं कर्तुमर्हन्ति **(मरुतः)** मनुष्याः **(गन्त)** प्राप्नुवन्तु **(गृणतः)** सत्यप्रशंसकान् **(वरस्याम्)** स्वीकर्त्तव्यां प्रशंसाम् **(अचित्रम्)** अनद्भुतम् **(चित्)** अपि **(हि)** यतः **(जिन्वथा)** प्राप्नुवन्ति। अत्र **संहितायामिति** दीर्घः। **(वृधन्तः)** वर्धमानाः **(इत्था)** अनेन प्रकारेण **(नक्षन्तः)** प्राप्नुवन्तः **(नरः)** नायकाः **(अङ्गिरस्वत्)** प्रशस्ता अङ्गिरसो वायवस्तद्वत्॥११॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! ये युवानो यज्ञियासः कवयो मरुतोऽङ्गिरस्वद्वरस्यां गृणत आ गन्ताऽचित्रं वृधन्त इत्था नक्षन्तो नरश्चिज्जिन्वथा ते हि जगद्धितैषिणो भवन्ति॥११॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। ये मनुष्या विद्वांसो युवानो भूत्वा सत्क्रियां कृत्वा सर्वान् वर्धयन्ति ते वृद्धियुक्ता भवन्ति॥११॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो (**युवानः**) युवा पुरुष (**यज्ञियासः**) सत्य प्रिय व्यवहार को करने योग्य हैं तथा (**कवयः**) सर्व शास्त्रवेत्ता (**मरुतः**) मनुष्य (**अङ्गिरस्वत्**) प्रशंसित वायुओं के समान (**वरस्याम्**) स्वीकार करने योग्य प्रशंसा को तथा (**गृणतः**) सत्य की प्रशंसा करने वाले विद्वानों को (**आ, गन्त**) प्राप्त हों तथा (**अचित्रम्**) साधारण (**वृधन्तः**) बढ़ाने और (**इत्था**) इस प्रकार से (**नक्षन्तः**) व्याप्त होते हुए (**नरः**) नायक मनुष्य (**चित्**) ही (**जिन्वथा**) प्राप्त हों वे (**हि**) ही जगत्-हितैषी होते हैं॥११॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जो मनुष्य विद्वान् तथा युवावस्था वाले होकर और अच्छी क्रिया कर सब को बढ़ाते हैं, वे वृद्धियुक्त होते हैं॥११॥

**पुनर्मनुष्याः किंवत् किं प्राप्नुयुरित्याह॥**

फिर मनुष्य किसके तुल्य किसको प्राप्त हों इस विषय को कहते हैं॥

**प्र वीराय प्र तवसे तुरायाजा यूथेव पशुरक्षिरस्तम्।**

**स पिस्पृशति तन्वि श्रुतस्य स्तृभिर्न नाकं वचनस्य विपः॥१२॥**

**प्र। वीराय। प्र। तवसे। तुराय। अजा। यूथाऽइव। पशुऽरक्षिः। अस्तम्। सः। पिस्पृशति। तन्वि। श्रुतस्य। स्तृऽभिः। न। नाकम्। वचनस्य। विपः॥१२॥**

**पदार्थः**-(**प्र**) (**वीराय**) शौर्यादिगुणोपेताय (**प्र**) (**तवसे**) वर्धकाय (**तुराय**) दुःखहिंसकाय (**अजा**) छागः (**यूथेव**) समूह इव (**पशुरक्षिः**) पशूनां रक्षकः (**अस्तम्**) गृहम् (**सः**) (**पिस्पृशति**) अत्यन्तं स्पृशति (**तन्वि**) शरीरे (**श्रुतस्य**) (**स्तृभिः**) नक्षत्रैः (**न**) इव (**नाकम्**) अविद्यमानदुःखमन्तरिक्षम् (**वचनस्य**) (**विपः**) मेधावी॥१२॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यो विपः स्तृभिर्नाकं न तन्वि श्रुतस्य वचनस्याऽजा यूथेव पशुरक्षिरस्तमिव वीराय तवसे तुरायास्तं प्र पिस्पृशति स सुखानि प्र पिस्पृशति॥१२॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। मनुष्यो यथाऽजाऽवयो धावित्वा स्वसमुदायं यथा वा सायं समये गोपालो गृहं तथा सकलविद्याश्रवणं प्राप्नोति॥१२॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो (**विपः**) मेधावीजन (**स्तृभिः**) नक्षत्रों से (**नाकम्**) जिसमें दुःख नहीं विद्यमान उस अन्तरिक्ष को (**न**) जैसे (**तन्वि**) शरीर में (**श्रुतस्य**) सुने हुए (**वचनस्य**) वचन का वा (**अजा**) छाग (**यूथेव**) समूहों को जैसे वैसे वा (**पशुरक्षिः**) पशुओं की रक्षा करने वाला (**अस्तम्**) घर को जैसे वैसे (**वीराय**) शूरता आदि गुणों से युक्त (**तवसे**) बढ़ाने वाले (**तुराय**) दुःखनाशक के लिये घर का (**प्र, पिस्पृशति**) अत्यन्त स्पर्श करता (**सः**) वह सुखों का (**प्र**) अच्छे प्रकार अत्यन्त स्पर्श करता है॥१२॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। मनुष्य, जैसे भेड़ बकरी दौड़ के अपने झुण्ड को वा जैसे सायङ्काल में गोपाल घर को, वैसे समस्त विद्या के श्रवण को प्राप्त होता है॥१२॥



www.9009.co.in

**पुनर्मनुष्यैः किं ज्ञातव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को क्या जानने योग्य है, इस विषय को कहते हैं॥

**यो रजांसि विममे पार्थिवानि त्रिश्चिद्विष्णुर्मनवे बाधिताय।**

**तस्य ते शर्मन्नुपदद्यमाने राया मदेम तन्वा३ तना च॥१३॥**

**यः। रजांसि। विऽममे। पार्थिवानि। त्रिः। चित्। विष्णुः। मनवे। बाधिताय। तस्य। ते। शर्मन्। उपऽदद्यमाने। राया। मदेम। तन्वा। तना। च॥१३॥**

**पदार्थः**-(**यः**) (**रजांसि**) लोकान् (**विममे**) रचयति (**पार्थिवानि**) पृथिव्यां भवानि (**त्रिः**) त्रिवारम् (**चित्**) अपि (**विष्णुः**) यो वेवेष्टि स जगदीश्वरः (**मनवे**) मनुष्याय (**बाधिताय**) पीडिताय (**तस्य**) (**ते**) तव (**शर्मन्**) शर्म्मणि गृहे (**उपदद्यमाने**) उपादीयमाने (**राय**) धनेन (**मदेम**) आनन्देम (**तन्वा**) शरीरेण (**तना**) विस्तृतेन (**च**)॥१३॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यो विष्णुर्बाधिताय मनवे पार्थिवानि रजांसि त्रिश्चिद् विममे तस्य सम्बन्धे त उपदद्यमाने शर्मन् शर्मणि तना राया तन्वा च सह वयं मदेम॥१३॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यो जगदीश्वरः सर्वं जगन्निर्माय मनुष्याद्युपकारं करोति तस्याश्रयेणैव वयं धनवन्तश्चिरायुषो भवेम॥१३॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! (**यः**) जो (**विष्णुः**) चराचर में प्रवेश होता वह जगदीश्वर (**बाधिताय**) पीड़ित (**मनवे**) मनुष्य के लिये (**पार्थिवानि**) पृथिवी में सिद्ध हुए (**रजांसि**) लोकों को (**त्रिः**) तीन वार (**चित्**) ही (**विममे**) रचता है (**तस्य**) उसके सम्बन्ध में (**ते**) आपके (**उपदद्यमाने**) समीप ग्रहण किये (**शर्मन्**) घर में (**तना**) विस्तृत (**राया**) धन (**तन्वा, च**) और शरीर के साथ हम लोग (**मदेम**) आनन्दित हों॥१३॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो जगदीश्वर सब जगत् का निर्माण करके मनुष्यादिकों का उपकार करता है, उसके आश्रय से ही हम लोग धनवान् और बहुत आयु वाले हों॥१३॥

**पुनर्मनुष्यैः किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**तन्नोऽहिर्बुध्न्यो अद्भिरर्कैस्तत्पर्वतस्तत्सविता चनो धात्।**

**तदोषधीभिरभि रातिषाचो भगः पुरंधिर्जिन्वतु प्र राये॥१४॥**

**तत्। नः। अहिः। बुध्न्यः। अत्ऽभिः। अर्कैः। तत्। पर्वतः। तत्। सविता। चनः। धात्। तत्। ओषधीभिः। अभि। रातिऽसाचः। भगः। पुरम्ऽधिः। जिन्वतु। प्र। राये॥१४॥**

**पदार्थः**-(**तत्**) गृहम् (**नः**) अस्मभ्यम् (**अहिः**) मेघः (**बुध्न्यः**) अन्तरिक्षे भवः (**अद्भिः**) जलादिभिः (**अर्कैः**) सत्कारसाधनैः (**तत्**) (**पर्वतः**) मेघः (**तत्**) (**सविता**) सूर्य्यः (**चनः**) अन्नादिकम्



www.9009.co.in

**(धात्)** दधाति **(तत्)** **(ओषधीभिः)** सोमलतादिभिः **(अभि)** आभिमुख्ये **(रातिषाचः)** दानकर्त्तारः **(भगः)** भगवान् **(पुरन्धिः)** जगद्धर्त्ता **(जिन्वतु)** प्रापयतु **(प्र)** **(राये)** धनाय॥१४॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथाऽर्कैरद्भिरोषधीभिश्च सह बुध्न्योऽहिर्नो राये यच्चनस्तद्धात् तत्पर्वतो धात् तत्सविता धात् तद्रातिषाचो दधति तत्पुरन्धिर्भगः प्र जिन्वतु तदभि प्र जिन्वतु॥१४॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यथा परमेश्वरेण प्राण्युपकारार्थं जगन्निर्मितं तथाऽस्माद्यूयं पुष्कलानुपकारान् गृह्णीत॥१४॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे **(अर्कैः)** सत्कार साधनों वाले **(अद्भिः)** जलादिकों के **(ओषधीभिः)** सोमलतादि ओषधियों के साथ **(बुध्न्यः)** अन्तरिक्ष में प्रसिद्ध हुआ **(अहिः)** मेघ **(नः)** हम लोगों के लिये **(राये)** धन के लिये **(चनः)** अन्नादिक को वा **(तत्)** उस गृह को **(धात्)** धारण करता वा **(तत्)** उसको **(पर्वतः)** पर्वताकार मेघ धारण करता वा **(तत्)** उसको **(सविता)** सूर्य धारण करता वा **(तत्)** उसको **(रातिषाचः)** दान करने वाले धारण करते उसको **(पुरन्धिः)** जगत् को धारणकर्ता **(भगः)** ऐश्वर्यवान् **(प्र, जिन्वतु)** अच्छे प्रकार प्राप्त करावे उसको **(अभि)** सब ओर से प्राप्त करावे॥१४॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे परमेश्वर ने प्राणियों के उपकार के लिये जगत् बनाया वैसे इससे तुम लोग पुष्कल उपकार ग्रहण करो॥१४॥

**पुनर्दातृभिः किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

फिर दाताओं को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**नू नो॑ र॒यिं र॒थ्यं॑ चर्षणि॒प्रां पु॑रु॒वीरं॑ म॒ह ऋ॒तस्य॑ गो॒पाम्।**

**क्षयं॑ दाता॒जरं॒ येन॒ जना॒न्स्पृधो॒ अदे॑वीर॒भि च॒**

**क्रमा॑म॒ विश॒ आदे॑वीर॒भ्य१॒॑श्नवा॑म॥१५॥७॥४॥**

**नु। नः॒। र॒यिम्। र॒थ्य॑म्। च॒र्ष॒णि॒ऽप्राम्। पु॒रु॒ऽवीर॑म्। म॒हः। ऋ॒तस्य॑। गो॒पाम्। क्षय॑म्। दा॒त॒। अ॒जर॑म्। येन॑। जना॑न्। स्पृधः॑। अदे॑वीः। अ॒भि। च॒। क्रमा॑म। विशः॑। आऽदे॑वीः। अ॒भि। अ॒श्नवा॑म॥१५॥**

**पदार्थः**-**(नू)** सद्यः **(नः)** अस्मभ्यम् **(रयिम्)** श्रियम् **(रथ्यम्)** रथेषु विमानादियानेषु हितम् **(चर्षणिप्राम्)** यश्चर्षणीन् मनुष्यान् प्राति व्याप्नोति तम् **(पुरुवीरम्)** पुरवो बहवो वीरा यस्मात्तम् **(महः)** महतः **(ऋतस्य)** सत्यस्य **(गोपाम्)** रक्षकम् **(क्षयम्)** निवासयितुम् **(दात)** **(अजरम्)** हानिरहितम् **(येन)** **(जनान्)** मनुष्यान् **(स्पृधः)** स्पर्द्धमानान् **(अदेवीः)** विद्यारहिताः **(अभि)** आभिमुख्ये **(च)** **(क्रमाम)** अनुक्रमेण प्राप्नुयाम **(विशः)** प्रजाः **(आदेवीः)** समन्ताद्देदीप्यमाना विदुषीः **(अभि)** **(अश्नवाम)** अभितः प्राप्नुयाम॥१५॥

**अन्वयः**-हे विद्वांसो! येन स्पृधो जनानदेवीर्विशो वयमभि क्रमामादेवीर्विशश्च वयमभ्यश्नवाम तं रथ्यं चर्षणिप्रां पुरुवीरं [क्षयमजरं] मह ऋतस्य गोपां रयिं नो नू दात॥१५॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-त एव दातार उत्तमा ये धर्मेण धनादिकं सञ्चित्य विद्यादिसद्गुणरूपपरोपकाराय प्रददति तदेव धनं येन विदुष्योऽविदुष्यश्च प्रजा अत्यन्तं सुखं प्राप्य मादेरन्निति॥१५॥

अत्र विश्वेदेवगुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इत्यृग्वेदे षष्ठे मण्डले चतुर्थोऽनुवाक एकोनपञ्चाशत्तमं सूक्तं चतुर्थेऽष्टकेऽष्टमेऽध्याये सप्तमो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे विद्वानो! **(येन)** जिससे **(स्पृधः)** स्पर्द्धा करते हुए **(जनान्)** मनुष्यों को तथा **(अदेवीः)** विद्यारहित **(विशः)** प्रजाओं को हम लोग **(अभि, क्रमाम)** अनुक्रम से प्राप्त हों वा **(आदेवीः)** सब ओर से निरन्तर प्रकाशमान विदुषी **(च)** और प्रजाओं को हम लोग **(अभि, अश्नवाम)** सब ओर से प्राप्त हों। तथा **(रथ्यम्)** विमान आदि रथों में हितरूप **(चर्षणिप्राम्)** मनुष्यों को व्याप्त होने तथा **(पुरुवीरम्)** बहुत वीरों के कारण **(क्षयम्)** निवास कराने को **(अजरम्)** हानिरहित अर्थात् पुष्ट **(महः)** और बड़े **(ऋतस्य)** सत्य की **(गोपाम्)** रक्षा करने वाले **(रयिम्)** धन को **(नः)** हम लोगों के लिये **(नू)** शीघ्र **(दात)** दीजिये॥१५॥

**भावार्थः**-वे ही देने वाले उत्तम हैं जो धर्म से धनादिकों को सञ्चित कर विद्यादिसद्गुणरूप परोपकार के लिये देते हैं और वही धन है जिससे विदुषी वा अविदुषी प्रजाएँ अत्यन्त सुख पाय हर्षित हों॥१५॥

इस सूक्त में समस्त विद्वानों के गुणों का वर्णन होने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह ऋग्वेद के छठे मण्डल में चतुर्थ अनुवाक, उनचासवाँ सूक्त तथा चतुर्थ अष्टक के आठवें अध्याय में सातवाँ वर्ग पूरा हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

**अथ पञ्चदशर्चस्य पञ्चाशत्तमस्य सूक्तस्य ऋजिष्वा ऋषिः। विश्वेदेवा देवताः। १, ७ त्रिष्टुप्। ३, ५, ६, १०, ११, १२ निचृत्त्रिष्टुप्। ४, ८, १३ विराट् त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः। २ स्वराट्पङ्क्तिः। ९ पङ्क्तिः। १४ भुरिक्पङ्क्तिः। १५ निचृत्पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः॥**

*अथ विद्वांसः किमर्थं किं कुर्य्युरित्याह॥*

अब पन्द्रह ऋचा वाले पचासवें सूक्त का आरम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में विद्वान् जन किसलिये क्या करें, इस विषय को कहते हैं॥

**हुवे वो देवीमदितिं नमोभिर्मृळीकाय वरुणं मित्रमग्निम्।**
**अभिक्षदामर्यमणं सुशेवं त्रातॄन् देवान्त्सवितारं भगं च॥१॥**

**हुवे। वः। देवीम्। अदितिम्। नमःऽभिः। मृळीकाय। वरुणम्। मित्रम्। अग्निम्। अभिऽक्षदाम्। अर्यमणम्। सुऽशेवम्। त्रातॄन्। देवान्। सवितारम्। भगम्। च॥१॥**

**पदार्थः**-(**हुवे**) आह्वयाम्याददे वा (**वः**) युष्माकम् (**देवीम्**) देदीप्यमानां विदुषीम् (**अदितिम्**) अमातरम् (**नमोभिः**) सत्कारान्नादिभिः (**मृळीकाय**) सुखाय (**वरुणम्**) उदानमिवोत्कृष्टम् (**मित्रम्**) प्राण इव प्रियम् (**अग्निम्**) पावकम् (**अभिक्षदाम्**) ये भिक्षां न ददति तेषाम् (**अर्यमणम्**) न्यायकारिणम् (**सुशेवम्**) सुष्ठुसुखम् (**त्रातॄन्**) रक्षकान् (**देवान्**) विदुषः (**सवितारम्**) सत्कर्मसु प्रेरकं राजानम् (**भगम्**) ऐश्वर्य्यम् (**च**)॥१॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथाऽहं नमोभिर्वोऽभिक्षदां मृळीकायाऽदितिं देवीं वरुणं मित्रमग्निमर्यमणं सुशेवं त्रातॄन् देवान् सवितारं भगं च हुवे तथैतानस्मदर्थं यूयमाह्वयत॥१॥

**भावार्थः**-ये विद्वांसः सुपात्रेभ्यो भिक्षां प्रददति सर्वान् पुरुषार्थिनः कृत्वैतदर्थं विदुषीं मातरं वरुणादींश्चाददति ते जगद्धितैषिणः सन्ति॥१॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे मैं (**नमोभिः**) सत्कार और अन्नादिकों के साथ (**वः**) तुम लोगों के (**अभिक्षदाम्**) जो भिक्षा नहीं देते उनके (**मृळीकाय**) सुख के लिये (**अदितिम्**) जो माता नहीं उस (**देवीम्**) देदीप्यमान विदुषी वा (**वरुणम्**) उदान के समान सर्वोत्कृष्ट वा (**मित्रम्**) प्राण के समान प्यारे वा (**अग्निम्**) अग्नि तथा (**अर्यमणम्**) न्यायकारी और (**सुशेवम्**) सुन्दर सुख वाले जन को वा (**त्रातॄन्**) रक्षा करने वाले व (**देवान्**) विद्वानों व (**सवितारम्**) सत्कर्मों में प्रेरणा देने वाले राजा (**भगम्, च**) और ऐश्वर्य्य को (**हुवे**) बुलाता वा देता हूं, वैसे इनको हमारे लिये तुम बुलाओ वा देओ॥१॥

**भावार्थः**-जो विद्वान् जन सुपात्रों के लिये भिक्षा देते और सब को पुरुषार्थी कर उनके लिये विदुषी माता वा वरुण आदि को लेते हैं, वे जगत् के हितैषी हैं॥१॥



www.9009.co.in

**अथ मनुष्याः सततं किं कुर्य्युरित्याह॥**

अब मनुष्य निरन्तर क्या करें, इस विषय को कहते हैं॥

**सुज्योतिषः सूर्य दक्षपितॄननागास्त्वे सुमहो वीहि देवान्।**

**द्विजन्मानो य ऋतसापः सत्याः स्वर्वन्तो यजता अग्निजिह्वाः॥ २॥**

**सुऽज्योतिषः। सूर्य। दक्षऽपितॄन्। अनागाःऽत्वे। सुऽमहः। वीहि। देवान्। द्विऽजन्मानः। ये। ऋतऽसापः। सत्याः। स्वःऽवन्तः। यजताः। अग्निऽजिह्वाः॥ २॥**

**पदार्थः**-(**सुज्योतिषः**) सुष्ठुविनयप्रकाशकाः (**सूर्य**) सूर्य्य इव वर्त्तमान (**दक्षपितॄन्**) चतुरान् जनकानध्यापकान् वा (**अनागास्त्वे**) अनपराधित्वे (**सुमहः**) सुष्ठु महतो महाशयान् (**वीहि**) प्राप्नुहि कामय वा (**देवान्**) विदुषः (**द्विजन्मानः**) द्वे उत्पत्तिविद्याप्राप्तिरूपे जन्मनी येषान्ते (**ये**) (**ऋतसापः**) य ऋतेन सत्येन सपन्ति सम्बध्नन्ति (**सत्याः**) प्रतिज्ञां कुर्वन्ति (**स्वर्वन्तः**) बहुसुखयुक्ताः (**यजताः**) ये सर्वा विद्याः सङ्गच्छन्ते (**अग्निजिह्वाः**) अग्निरिव सत्यविद्यया सुप्रकाशिता जिह्वा येषान्ते॥ २॥

**अन्वयः**-हे सूर्य इव विद्वन्! येऽनागास्त्वे द्विजन्मान ऋतसापः सत्याः स्वर्वन्तो यजता अग्निजिह्वाः सुज्योतिषो विद्वांसः स्युस्तान् सुमहो दक्षपितॄन् देवांस्त्वं सततं वीहि, एवं सति सर्वदा कल्याणं निवहेत्॥ २॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। ये मनुष्याः सूर्य्यवद्विद्याधर्मप्रकाशकानध्यापकोपदेशकान् विदुषः सुसेवन्ते तेऽपि तादृशा भवन्ति॥ २॥

**पदार्थः**-हे (**सूर्य**) सूर्य के समान वर्त्तमान (**ये**) जो (**अनागास्त्वे**) अनपराधिपन में (**द्विजन्मानः**) उत्पत्ति और विद्याप्राप्तिरूप जन्म वाले (**ऋतसापः**) सत्य से सम्बन्ध करते वा (**सत्याः**) प्रतिज्ञा करते (**स्वर्वन्तः**) वा बहु सुखयुक्त (**यजताः**) समस्त विद्याओं का सङ्ग करते (**अग्निजिह्वाः**) वा अग्नि के समान सत्य विद्या से सुन्दर प्रकाशित जिह्वाएं जिनकी वा (**सुज्योतिषः**) सुन्दर विनय के प्रकाश करने वाले विद्वान् हों उन (**सुमहः**) श्रेष्ठ महान् महाशय (**दक्षपितॄन्**) चतुर पिता और विद्या पढ़ाने वाले (**देवान्**) विद्वानों को आप निरन्तर (**वीहि**) प्राप्त होओ व उनकी कामना करो, ऐसा होने पर सर्वदा कल्याण प्राप्त होवे॥ २॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो मनुष्य सूर्य के समान विद्या और धर्म के प्रकाश करने वाले अध्यापक, उपदेशक वा विद्वानों की सेवा करते हैं, वे भी वैसे ही होते हैं॥ २॥

**पुनर्विद्वांसः किवत्किं कुर्य्युरित्याह॥**

फिर विद्वान् जन किसके तुल्य क्या करें, इस विषय को कहते हैं॥

**उत द्यावापृथिवी क्षत्रमुरु बृहद्रोदसी शरणं सुषुम्ने।**

**महस्करथो वरिवो यथा नोऽस्मे क्षयाय धिषणे अनेहः॥ ३॥**



www.9009.co.in

उत। द्यावापृथिवी इति। क्षत्रम्। उरु। बृहत्। रोदसी इति। शरणम्। सुसुम्ने। महः। करथः। वरिवः। यथा। नः। अस्मे इति। क्षयाय। धिषणे इति। अनेहः॥ ३॥

**पदार्थः**-(**उत**) (**द्यावापृथिवी**) विद्युद्भूमी (**क्षत्रम्**) धनं राज्यं क्षत्रियकुलं वा (**उरु**) बहु (**बृहत्**) महत् (**रोदसी**) बहुकार्य्यकरे (**शरणम्**) आश्रयम् (**सुषुम्ने**) सुष्ठु सुखकरे (**महः**) महत् (**करथः**) (**वरिवः**) परिचरणम् (**यथा**) (**नः**) अस्माकम् (**अस्मे**) अस्मासु (**क्षयाय**) निवासाय (**धिषणे**) धारिके (**अनेहः**) अहन्तव्यं सततं रक्षणीयं व्यवहारम्॥ ३॥

**अन्वयः**-हे अध्यापकोपदेशकौ! युवां यथा रोदसी सुषुम्ने धिषणे द्यावापृथिवी न उरु बृहच्छरणं क्षत्रं कुरुतस्तथा महो वरिव उताऽनेहोऽस्मे क्षयाय करथः कुर्य्यातम्॥ ३॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। येऽध्यापकोपदेशकाः सूर्यभूमिवत्सर्वेभ्यो विद्यादानधारणशरणानि प्रयच्छन्ति तथा ये सत्यस्याप्तानां विदुषां च सततं सेवां कुर्वन्ति ते सर्वथा माननीया भवन्ति॥ ३॥

**पदार्थः**-हे अध्यापक और उपदेशको! तुम (**यथा**) जैसे (**रोदसी**) बहुत कार्य और (**सुषुम्ने**) सुन्दर सुख करने वाली (**धिषणे**) व्यवहारों को धारण करने वाली (**द्यावापृथिवी**) बिजुली और भूमि (**नः**) हमारे (**उरु**) बहुत (**बृहत्**) महान् (**शरणम्**) आश्रय और (**क्षत्रम्**) धन राज्य वा क्षत्रियकुल को सिद्ध करते हैं, वैसे (**महः**) बड़े (**वरिवः**) सेवन (**उत**) और (**अनेहः**) न नष्ट करने योग्य व्यवहार (**अस्मे**) हम लोगों में (**क्षयाय**) निवास करने के लिये (**करथः**) सिद्ध करो॥ ३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जो अध्यापन और उपदेश करने वाले जन सूर्य और भूमि के तुल्य सब को विद्यादान, धारण और शरण देते हैं तथा जो सत्य, यथार्थवक्ता और विद्वानों की सेवा करेत हैं, वे सर्वथा माननीय होते हैं॥ ३॥

**पुनर्विद्वांसः कीदृशा भवेयुरित्याह॥**

फिर विद्वान् कैसे हो इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**आ नो रुद्रस्य सूनवो नमन्तामद्या हूतासो वसवोऽधृष्टाः।**

**यदीमर्भे महति वा हितासो बाधे मरुतो अह्वाम देवान्॥ ४॥**

आ। नः। रुद्रस्य। सूनवः। नमन्ताम्। अद्य। हूतासः। वसवः। अधृष्टाः। यत्। ईम्। अर्भे। महति। वा। हितासः। बाधे। मरुतः। अह्वाम। देवान्॥ ४॥

**पदार्थः**-(**आ**) (**नः**) अस्मान् (**रुद्रस्य**) दुष्टानां रोदयितुः (**सूनवः**) अपत्यानि (**नमन्ताम्**) (**अद्य**) इदानीम्। अत्र **निपातस्य चे**ति दीर्घः। (**हूतासः**) कृताह्वानाः सन्तः (**वसवः**) आदिकोटिस्था विद्वांसः (**अधृष्टाः**) अप्रगल्भाः (**यत्**) ये (**ईम्**) सर्वतः (**अर्भे**) अल्पवयसि जने (**महति**) (**वा**) (**हितासः**) (**बाधे**) (**मरुतः**) मनुष्याः (**अह्वाम**) इच्छेम (**देवान्**) विदुषः॥ ४॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यद्ये हूतासोऽधृष्टा वसवो बाधेऽर्भे महति वा हितासो रुद्रस्य सूनवो [मरुतो] नोऽद्याऽऽनमन्तां तान् देवान् वयमीमह्वाम॥४॥

**भावार्थः**-ये विद्वांसश्चक्रवर्त्तिनि राजनि क्षुद्रे जने वा पक्षपातं विहाय हिताय वर्त्तमाना नम्रा विद्वत्प्रिया मनुष्याः सन्ति तेऽत्र भाग्यशालिनो वर्त्तन्ते॥४॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(यत्)** जो **(हूतासः)** बुलाये हुए **(अधृष्टाः)** अप्रगल्भ **(वसवः)** आदि कोटिवाले विद्वान् जन **(बाधे)** विलोड़न के निमित्त **(अर्भे)** थोड़ी अवस्था वाले **(महति, वा)** वा बहुत अवस्था वाले जन में **(हितासः)** हित करने वाले वा **(रुद्रस्य)** दुष्टों के रुलाने वाले के **(सूनवः)** सन्तान **(मरुतः)** मनुष्य **(नः)** हम लोगों को **(अद्या)** आज **(आ, नमन्ताम्)** अच्छे प्रकार नमें उन **(देवान्)** विद्वानों को हम लोग **(ईम्)** सब ओर से **(अह्वाम)** चाहें॥४॥

**भावार्थः**-जो विद्वान् जन, चक्रवर्ती राजा वा क्षुद्रजन में पक्षपात छोड़ कर हित के लिये वर्त्तमान, नम्र, विद्वानों के प्रिय मनुष्य हैं, वे यहाँ भाग्यशाली होते हैं॥४॥

**पुनर्विद्वद्भिः किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

फिर विद्वान् जनों को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**मिम्यक्ष येषु रोदसी नु देवी सिषक्ति पूषा अभ्यर्धयज्वा।**

**श्रुत्वा हवं मरुतो यद्ध याथ भूमा रेजन्ते अध्वनि प्रविक्ते॥५॥८॥**

**मिम्यक्ष। येषु। रोदसी। नु। देवी। सिसक्ति। पूषा। अभ्यर्धऽयज्वा। श्रुत्वा। हवम्। मरुतः। यत्। ह। याथ। भूम। रेजन्ते। अध्वनि। प्रऽविक्ते॥५॥**

**पदार्थः**-**(मिम्यक्ष)** तूर्णं गच्छ **(येषु)** वाय्वादिषु **(रोदसी)** प्रकाशभूमी **(नु)** **(देवी)** दिव्यगुणे **(सिषक्ति)** सिञ्चति **(पूषा)** पुष्टिकरो मेघः **(अभ्यर्धयज्वा)** आभिमुख्यस्यार्द्धे सङ्गन्ता **(श्रुत्वा)** **(हवम्)** शब्दम् **(मरुतः)** मनुष्याः **(यत्)** ये **(ह)** किल **(याथ)** गच्छथ **(भूमा)** भूमी। अत्र **संहितायामि**ति दीर्घः। **(रेजन्ते)** कम्पन्ते गच्छन्ति वा **(अध्वनि)** मार्गे **(प्रविक्ते)** प्रकर्षेण चलितव्ये॥५॥

**अन्वयः**-हे मरुतो! येषु रोदसी देवी अभ्यर्धयज्वा पूषा सिषक्ति त्वमतो नु मिम्यक्ष यद्ये ह भूमा प्रविक्तेऽध्वनि रेजन्ते तेषां हवं श्रुत्वैतान् यूयं याथ॥५॥

**भावार्थः**-हे विद्वांसो! यूयं सूर्यपृथिवीवत्प्रकाशक्षमाशीला भूत्वा सर्वेषां प्रश्नाञ्छ्रुत्वा समाधत्त, यथा भूम्यादिलोकाः स्वस्वमार्गे नियमेन गच्छन्ति तथा नियमेन धर्ममार्गे गच्छत॥५॥

**पदार्थः**-हे **(मरुतः)** मनुष्यो! **(येषु)** जिन वायु आदि पदार्थों में **(रोदसी)** प्रकाश और भूमि **(देवी)** जो कि दिव्यगुण वाली हैं उनको **(अभ्यर्धयज्वा)** मुख्य के आधे में सङ्गत होने वाला **(पूषा)** पुष्टि करने वाला मेघ **(सिषक्ति)** सींचता है आप इससे **(नु)** शीघ्र **(मिम्यक्ष)** शीघ्र जाइये **(यत्)** जो **(ह)**



www.9009.co.in

निश्चय कर (**भूमा**) भूमि में वा (**प्रविक्ते**) प्रकर्षकर चलने योग्य (**अध्वनि**) मार्ग में (**रेजन्ते**) कांपते वा जाते हैं उनके (**हवम्**) शब्द को (**श्रुत्वा**) सुनकर उनको तुम (**याथ**) प्राप्त होओ॥५॥

**भावार्थः**-हे विद्वानो! तुम सूर्य्य और पृथिवी के तुल्य प्रकाश और क्षमाशील होकर सबके प्रश्नों को सुनकर समाधान देओ, जैसे भूमि आदि लोक अपने-अपने मार्ग में नियम से जाते हैं, वैसे नियम से धर्म मार्ग में जाओ॥५॥

**पुनर्विदुषा किमुपदिश्य किं कारयितव्यमित्याह॥**

फिर विद्वानों को क्या उपदेश कर क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**अभि त्यं वीरं गिर्वणसमर्चेन्द्रं ब्रह्मणा जरितर्नवेन।**

**श्रवदिद्धवमुप च स्तवानो रासद्वाजाँ उप महो गृणानः॥६॥**

**अभि। त्यम्। वीरम्। गिर्वणसम्। अर्च। इन्द्रम्। ब्रह्मणा। जरितः। नवेन। श्रवत्। इत्। हवम्। उप। च। स्तवानः। रासत्। वाजान्। उप। महः। गृणानः॥६॥**

**पदार्थः**-(**अभि**) (**त्यम्**) तम् (**वीरम्**) वीरवन्तम् (**गिर्वणसम्**) गीर्भिः सेव्यमानम् (**अर्च**) सत्कुरु (**इन्द्रम्**) परमैश्वर्यवन्तम् (**ब्रह्मणा**) धनेनान्नादिना वा (**जरितः**) स्तावक (**नवेन**) नूतनेन (**श्रवत्**) शृणुयात् (**इत्**) एव (**हवम्**) सत्यप्रशंसाम् (**उप**) (**च**) (**स्तवानः**) स्तुवन् (**रासत्**) (**वाजान्**) अन्नादीन् (**उप**) (**महः**) महतः (**गृणानः**) प्रशंसन्॥६॥

**अन्वयः**-हे जरितो! भवान् महो वाजान् गृणान उप रासत् स्तवानो हवमुप श्रवदित्। नवेन ब्रह्मणा त्यं गिर्वणसं वीरमिन्द्रं चाभ्यर्च॥६॥

**भावार्थः**-हे विद्वंस्त्वं सर्वेषां प्रश्नाञ्छ्रुत्वा समादधनन्नादीन् प्रापयन् धार्मिकान् वीरान् धनाढ्यांश्च सर्वदा शिक्षेथा येनैतेषामैश्वर्यमन्यायमार्गे विनष्टं न स्यात्॥६॥

**पदार्थः**-हे (**जरितः**) स्तुति करने वाले जन! आप (**महः**) बहुत (**वाजान्**) अन्नादिकों की (**गृणानः**) प्रशंसा करते हुए (**उप, रासत्**) समीप में दें और (**स्तवानः**) स्तुति करते हुए (**हवम्**) सत्य की प्रशंसा को (**उप, श्रवत्**) सुनें (**इत्**) ही तथा (**नवेन**) नवीन (**ब्रह्मणा**) धन वा अन्नादि से (**त्यम्**) उस (**गिर्वणसम्**) वाणियों से सेव्यमान (**वीरम्**) वीरवान् तथा (**इन्द्रम्**) परमैश्वर्यवान् का (**च**) भी (**अभि, अर्च**) सब ओर से सत्कार करो॥६॥

**भावार्थः**-हे विद्वन्! आप सब के प्रश्नों को सुनकर समाधान देते हुए और अन्नादि पदार्थों की प्राप्ति कराते हुए धार्मिक वीरों को और धनाढ्यों को सर्वदा शिक्षा देवें, जिससे इनका ऐश्वर्य अन्याय मार्ग में नष्ट न हो॥६॥

**पुनर्विद्वांसः किं कुर्युरित्याह॥**

फिर विद्वान् जन क्या करें, इस विषय को कहते हैं॥



www.9009.co.in

**ओमानमापो मानुषीरमृक्तं धात तोकाय तनयाय शं योः।**

**यूयं हि ष्ठा भिषजो मातृतमा विश्वस्य स्थातुर्जगतो जनित्रीः॥७॥**

**ओमानम्। आपः। मानुषीः। अमृक्तम्। धात। तोकाय। तनयाय। शम्। योः। यूयम्। हि। स्थ। भिषजः। मातृऽतमाः। विश्वस्य। स्थातुः। जगतः। जनित्रीः॥७॥**

**पदार्थः**-(**ओमानम्**) रक्षादिकर्त्तारम् (**आपः**) जलानीव (**मानुषीः**) मनुष्यसम्बन्धिनीः प्रजाः (**अमृक्तम्**) अशुद्धं जनम् (**धात**) धरत (**तोकाय**) अल्पवयसे (**तनयाय**) सुकुमाराय सन्तानाय (**शम्**) सुखम् (**योः**) प्रापयति (**यूयम्**) (**हि**) यतः (**स्था**) भवत। अत्र **संहितायामि**ति दीर्घः। (**भिषजः**) सद्वैद्याः (**मातृतमाः**) अतिशयेन मातृवत् कृपालवः (**विश्वस्य**) संसारस्य (**स्थातुः**) स्थावरस्य (**जगतः**) जङ्गमस्य (**जनित्रीः**) जनन्यः॥७॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथा मातृतमा जनित्रीस्तोकाय तनयाय शं कुर्वन्ति तथा यूयमाप इवाऽमृक्तमोमानं मानुषीः प्रजा धात स्थातुर्जगतो विश्वस्य हि यूयं भिषजः स्था यथा न्यायेशः सर्वान् सुखं योः प्रापयति तथैवाऽत्र वर्त्तध्वम्॥७॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे अध्यापकोपदेशका यूयमशुद्धं जनं सत्यं ग्राहयित्वा शुद्धं सम्पादयत सर्वस्य जगतो रक्षणेऽविद्यारोगनिवारकः सन्तः सर्वान् मातृवत् पालयत॥७॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे (**मातृतमाः**) अतीव माता के समान कृपालु तथा (**जनित्रीः**) उत्पन्न करने वाली (**तोकाय**) थोड़ी आयु वाले सन्तान वा (**तनयाय**) सुन्दर कुमार सन्तान के लिये (**शम्**) सुख करती हैं, वैसे (**यूयम्**) तुम (**आपः**) जलों के समान (**अमृक्तम्**) अशुद्ध जन को वा (**ओमानम्**) रक्षा आदि करने वाले को और (**मानुषीः**) मनुष्य सम्बन्धी प्रजाओं को (**धात**) धारण करो तथा (**स्थातुः**) स्थावर वा (**जगतः**) जङ्गम (**विश्वस्य**) संसार के (**हि**) जिस कारण तुम (**भिषजः**) वैद्य (**स्था**) हो, वा जैसे न्यायाधीश सबको सुख (**योः**) पहुंचता है, वैसे यहाँ वर्त्तो॥७॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे अध्यापक और उपदेशको! तुम अपवित्र जन को सत्य ग्रहण कराकर शुद्ध करो तथा सब जगत् की रक्षा करने के निमित्त अविद्यारूपी रोग के निवारण करने वाले होते हुए सब को माता के तुल्य पालो॥७॥

**पुनर्विद्वांसः किं कुर्य्युरित्याह॥**

फिर विद्वान् जन क्या करें, इस विषय को कहते हैं॥

**आ नो देवः सविता त्रायमाणो हिरण्यपाणिर्यजतो जगम्यात्।**

**यो दत्रवाँ उषसो न प्रतीकं व्यूर्णुते दाशुषे वार्याणि॥८॥**

**आ। नः। देवः। सविता। त्रायमाणः। हिरण्यऽपाणिः। यजतः। जगम्यात्। यः। दत्रऽवान्। उषसः। न। प्रतीकम्। विऽऊर्णुते। दाशुषे। वार्याणि॥८॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**आ**) (**नः**) अस्मान् (**देवः**) दिव्यगुणकर्मस्वभावः (**सविता**) सूर्य इव (**त्रायमाणः**) रक्षकः (**हिरण्यपाणिः**) हिरण्यं सुवर्णादिकं पाणौ हस्ते यस्य सः (**यजतः**) सङ्गन्ता (**जगम्यात्**) भृशं प्राप्नुयात् (**यः**) (**दत्रवान्**) दानवान् (**उषसः**) प्रभातवेलायाः (**न**) इव (**प्रतीकम्**) प्रतीतिकरम् (**व्यूर्णुते**) आच्छादयति (**दाशुषे**) दात्रे (**वार्याणि**) स्वीकर्त्तुमर्हाणि वस्तूनि॥८॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यो दत्रवान् हिरण्यपाणिर्यजतो देवः सविता त्रायमाण उषसो न समयाद् दाशुषे प्रतीकं वार्याणि च व्यूर्णुते नोऽस्मानाऽऽजगम्यात्तं वयं सदा सुखयेम॥८॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! ये दानशीलाः प्रभातवेलावत्सुप्रकाशकाः सर्वेभ्यो विद्याऽभयदाने प्रयच्छन्ति ते जगति वरा गण्यन्ते॥८॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! (**यः**) जो (**दत्रवान्**) दान देने वाला (**हिरण्यपाणिः**) हाथ में सुवर्णादि लिये हुए और (**यजतः**) सङ्ग करने वाला (**देवः**) दिव्य गुण, कर्म, स्वभावयुक्त (**सविता**) सूर्य के तुल्य (**त्रायमाणः**) रक्षक जन (**उषसः**) प्रभातवेला के (**न**) समान समय से (**दाशुषे**) देने वाले के लिये (**प्रतीकम्**) प्रतीति करने वाले पदार्थ और (**वार्याणि**) स्वीकार करने योग्य पदार्थों को (**व्यूर्णुते**) आच्छादित करता है तथा (**नः**) हम लोगों को (**आ, जगम्यात्**) सब ओर से निरन्तर प्राप्त हो, उसको हम लोग सदा सुखी करें॥८॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो दानशील प्रभातवेला के समान सुन्दर प्रकाश करने वाले जन सब के लिये विद्या और अभयदान देते हैं, वे संसार में श्रेष्ठ गिने जाते हैं॥८॥

**पुनर्मनुष्यैः कस्मात् किं प्रार्थनीयमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को किससे क्या प्रार्थना करनी योग्य है, इस विषय को कहते हैं॥

**उ॒त त्वं सू॑नो सहसो नो अ॒द्या दे॒वाँ अ॒स्मिन्न॑ध्व॒रे व॑वृत्याः।**

**स्याम॒हं ते॒ सद॒मिद्रा॒तौ तव॑ स्याम॒ग्नेऽव॑सा सु॒वीर॑ः॥९॥**

**उ॒त। त्वम्। सू॒नो॒ इति॑। स॒ह॒सः॒। नः॒। अ॒द्य। आ। दे॒वान्। अ॒स्मिन्। अ॒ध्व॒रे। व॒वृ॒त्याः॒। स्याम्। अ॒हम्। ते॒। सद॑म्। इत्। रा॒तौ। तव॑। स्या॒म्। अ॒ग्ने॒। अव॑सा। सु॒ऽवीर॑ः॥९॥**

**पदार्थः**-(**उत**) (**त्वम्**) (**सूनो**) विद्यासन्तान (**सहसः**) शरीरात्मबलवतो विदुषः (**नः**) अस्मान् (**अद्या**) अस्मिन्दिने। अत्र **संहितायामिति** दीर्घः। (**आ**) (**देवान्**) विदुषो दिव्यान् भोगान् वा (**अस्मिन्**) (**अध्वरे**) अहिंसनीये विद्याप्राप्तिव्यवहारे (**ववृत्याः**) प्रवर्त्तयेः (**स्याम्**) भवेयम् (**अहम्**) (**ते**) तव (**सदम्**) प्राप्तव्यम् (**इत्**) एव (**रातौ**) दाने (**तव**) (**स्याम्**) (**अग्ने**) पावकवत्प्रकाशात्मन् (**अवसा**) रक्षणादिना (**सुवीरः**) सुभटः॥९॥

**अन्वयः**-हे सहसः सूनोऽग्ने! त्वमद्याऽस्मिन्नध्वरे नो देवाना ववृत्या येनाहं सदं प्राप्य ते रातौ स्थिरः स्यामुत तवावसा सुवीरोऽहमिदेव स्याम्॥९॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-हे विद्वन्! यदि भवानिदानीमस्मान् सुखं प्रापयेत्तर्हि वयं विद्यादातारो महावीरा भूत्वा तव सेवां सततं कुर्याम॥९॥

**पदार्थः**-हे **(सहसः)** शरीर और आत्मा के बल से युक्त विद्वान् के **(सूनो)** विद्यासम्बन्धी पुत्र **(अग्ने)** अग्नि के तुल्य प्रकाशित आत्मा वाले! **(त्वम्)** आप **(अद्या)** आज **(अस्मिन्)** इस **(अध्वरे)** न नष्ट करने योग्य विद्या प्राप्ति के व्यवहार में **(नः)** हम **(देवान्)** विद्वानों को वा दिव्य भोगों को **(आ, ववृत्याः)** अच्छे प्रकार प्रवृत्त कीजिये जिससे **(अहम्)** मैं **(सदम्)** प्राप्त होने योग्य पदार्थ को पाकर **(ते)** आपके **(रातौ)** दान कर्म में स्थिर **(स्याम्)** होऊं **(उत)** और **(तव)** आपके **(अवसा)** रक्षा आदि कर्म से **(सुवीरः)** सुन्दर योद्धाओं वाला मैं **(इत्)** ही **(स्याम्)** होऊं॥९॥

**भावार्थः**-हे विद्वन्! यदि आप सब हमको सुख पहुंचाइये तो हम विद्या देने वाले महावीर होकर आपकी सेवा को निरन्तर करें॥९॥

**पुनर्मनुष्यैः केषां सङ्गेन कीदृशैर्भवितव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को किनके सङ्ग से कैसा होना योग्य है, इस विषय को कहते हैं॥

**उत त्या मे हवमा जग्म्यातं नासत्या धीभिर्युवमङ्ग विप्रा।**

**अत्रिं न महस्तमसोऽमुमुक्तं तूर्वतं नरा दुरितादभीके॥१०॥९॥**

**उत। त्या। मे। हवम्। आ। जग्म्यातम्। नासत्या। धीभिः। युवम्। अङ्ग। विप्रा। अत्रिम्। न। महः। तमसः। अमुमुक्तम्। तूर्वतम्। नरा। दुःऽइतात्। अभीके॥१०॥**

**पदार्थः**-**(उत)** अपि **(त्या)** तौ **(मे)** मम **(हवम्)** आदातव्यम् **(आ)** **(जग्म्यातम्)** प्राप्नुयातम् **(नासत्या)** सत्याचारिणौ **(धीभिः)** प्रज्ञाभिः कर्मभिर्वा **(युवम्)** युवाम् **(अङ्ग)** मित्र **(विप्रा)** मेधाविनावध्यापकोपदेशकौ **(अत्रिम्)** सूर्य्यम् **(न)** इव **(महः)** महतः **(तमसः)** अन्धकारस्य **(अमुमुक्तम्)** मोचयेतम् **(तूर्वतम्)** हिंस्यातम् **(नरा)** नायकौ **(दुरितात्)** अधर्माचरणात् **(अभीके)** समीपे॥१०॥

**अन्वयः**-हे अङ्ग! नासत्या विप्रा नरा त्या युवं धीभिर्मेऽभीके हवमा जग्म्यातमुत यथा महस्तमसोऽत्रिं न दुरितादमुमुक्तं दुर्गुणांस्तूर्वतम्॥१०॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। यथा सूर्य्योदयं प्राप्य सर्वे पदार्थास्तमसो मुक्ता जायन्ते तथा धार्मिकं विद्वांसं प्राप्याऽविद्याया जना मुक्ता जायन्ते॥१०॥

**पदार्थः**-हे **(अङ्ग)** मित्र! **(नासत्या)** सत्य आचरण करने वाले **(विप्रा)** मेधावी अध्यापक और उपदेशक **(नरा)** नायक सब में श्रेष्ठजन **(त्या)** वे **(युवम्)** तुम दोनों **(धीभिः)** उत्तम बुद्धि वा कर्मों से **(मे)** मेरे **(अभीके)** समीप में **(हवम्)** लेने योग्य पदार्थ को **(आ, जग्म्यातम्)** सब ओर से प्राप्त होओ



www.9009.co.in

(**उत**) और जैसे (**महः**) महान् (**तमसः**) अन्धकार से (**अत्रिम्**) सूर्य को (**न**) वैसे (**दुरितात्**) अधर्माचरण से (**अमुमुक्तम्**) छुड़ाओ और दुर्गुणों को (**तूर्वतम्**) नष्ट करो॥१०॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जैसे सूर्योदय का प्राप्त होकर सब पदार्थ अन्धकार से छूट जाते हैं, वैसे धार्मिक विद्वान् को प्राप्त होकर अविद्या से मनुष्य मुक्त होते हैं॥१०॥

**पुनर्मनुष्याः कीदृशा भवेयुरित्याह॥**

फिर मनुष्य कैसे हों, इस विषय को कहते हैं॥

**ते नो॑ रा॒ये द्यु॒मतो॒ वाज॑वतो दा॒तारो॑ भूत नृ॒वतः॑ पुरु॒क्षोः।**

**द॒श॒स्यन्तो॑ दि॒व्याः पार्थि॑वासो॒ गोजा॑ता॒ अप्या॑ मृ॒ळता॑ च देवाः॥११॥**

ते। नः॒। रा॒यः। द्यु॒ऽमतः॑। वाज॑ऽवतः। दा॒तारः॑। भू॒त। नृ॒ऽवतः॑। पु॒रु॒ऽक्षोः। द॒श॒स्यन्तः॑। दि॒व्याः। पार्थि॑वासः। गोऽजा॑ताः। अप्याः॑। मृ॒ळत॑। च॒। दे॒वाः॒॥११॥

**पदार्थः**-(**ते**) (**नः**) अस्माकम् (**रायः**) (**द्युमतः**) प्रशस्ता द्यौः कामना विद्यते यस्य तस्य (**वाजवतः**) बह्वन्नादियुक्तस्य (**दातारः**) (**भूत**) भवत (**नृवतः**) बहूत्तममनुष्यसहितस्य (**पुरुक्षोः**) बह्वन्नं यस्मिंस्तस्य (**दशस्यन्तः**) प्रयच्छन्तः (**दिव्याः**) (**पार्थिवासः**) पृथिव्यां भवाः (**गोजाताः**) गव्यन्तरिक्षे प्रसिद्धाः (**अप्याः**) अप्सु भवाः (**मृळता**) सुखयत। अत्र **संहितायामिति** दीर्घः। (**च**) (**देवाः**) विद्वांसः॥११॥

**अन्वयः**-हे देवा! ये यूयं नो द्युमतो वाजवतो नृवतः पुरुक्षोर्दशस्यन्तो रायो दातारो भूत ते च ये दिव्याः पार्थिवासो गोजाता अप्याः सन्ति ते च यूयमस्मान् मृळता॥११॥

**भावार्थः**-हे विद्वांसो! भवन्तः सततं विद्याधने प्रापणीये प्राप्य सर्वाञ्जनान् सुखयन्तु॥११॥

**पदार्थः**-हे (**देवाः**) विद्वानो! जो तुम (**नः**) हमारे (**द्युमतः**) जिसकी प्रशंसायुक्त कामना विद्यमान उस (**वाजवतः**) बहुत अन्नादि पदार्थयुक्त (**नृवतः**) बहुत उत्तम मनुष्ययुक्त (**पुरुक्षोः**) बहुत अन्न वाले पदार्थ के (**दशस्यन्तः**) देनेवाले और (**रायः**) धन के (**दातारः**) देनेवाले (**भूत**) होओ (**ते**) वे (**च**) और जो (**दिव्याः**) उत्तम (**पार्थिवासः**) पृथिवी के बीच हुए (**गोजाताः**) अन्तरिक्ष में प्रसिद्ध (**अप्याः**) और जलों में प्रसिद्ध हैं, वे भी आप हम लोगों को (**मृळता**) सुखी करो॥११॥

**भावार्थः**-हे विद्वानो! तुम निरन्तर प्राप्त होने योग्य विद्या और धनों को प्राप्त होकर सब मनुष्यों को सुखी करो॥११॥

**पुनर्विद्वांसः किं कुर्युरित्याह॥**

फिर विद्वान् जन क्या करें, इस विषय को कहते हैं॥

**ते नो॑ रु॒द्रः सर॑स्वती स॒जोषा॑ मी॒ळ्हुष्म॑न्तो॒ विष्णु॑र्मृळन्तु वा॒युः।**

**ऋ॒भु॒क्षा वाजो॒ दैव्यो॑ विधा॒ता प॒र्जन्या॒वाता॑ पिप्यता॒मिषं॑ नः॥१२॥**



www.9009.co.in

**ते। नः। रुद्रः। सरस्वती। सऽजोषाः। मीळहुष्मन्तः। विष्णुः। मृळन्तु। वायुः। ऋभुक्षाः। वाजः। दैव्यः। विऽधाता। पर्जन्यावाता। पिप्यताम्। इषम्। नः॥ १२॥**

**पदार्थः**-(**ते**) (**नः**) अस्मान् (**रुद्रः**) दुष्टानां रोदयिता (**सरस्वती**) बहुविज्ञानयुक्ता (**सजोषाः**) समानप्रीतिसेवी (**मीळहुष्मन्तः**) मीळहुषो बहवो वीर्यसेचकादयो गुणा येषां ते (**विष्णुः**) व्यापको विद्युदग्निः (**मृळन्तु**) (**वायुः**) (**ऋभुक्षाः**) मेधावी (**वाजः**) अन्नम् (**दैव्यः**) देवैः कृतः (**विधाता**) विधानकर्त्ता (**पर्जन्यावाता**) पर्जन्यश्च वातश्च तौ (**पिप्यताम्**) वर्धयेताम् (**इषम्**) अन्नादिकम् (**नः**) अस्मभ्यमस्मान् वा॥ १२॥

**अन्वयः**-हे अध्यापकोपदेशकौ! सरस्वती सजोषाः पजन्यावातेव भवन्तौ यथा ते रुद्रो विष्णुर्वायुर्ऋभुक्षा वाजो दैव्यो विधाता मीळहुष्मन्तो नो मृळन्तु तथा न इषं पिप्यताम्॥ १२॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे विद्वांसो! यथेश्वरेण निर्मिताः पृथिव्यादयः पदार्थाः प्राणिनः सुखयन्ति तथैव यूयं विद्यादिदानेन सर्वान् सुखयत॥ १२॥

**पदार्थः**-हे अध्यापक और उपदेशको! (**सरस्वती**) बहुत विज्ञानयुक्त (**सजोषाः**) समान प्रीति सेवने वाले (**पर्जन्यावाता**) मेघ और वात के समान आप दोनों जैसे (**ते**) वे अर्थात् (**रुद्रः**) दुष्टों को रुलाने वाला (**विष्णुः**) व्यापक अग्नि (**वायुः**) पवन (**ऋभुक्षाः**) मेधावी जन (**वाजः**) अन्न (**दैव्यः**) विद्वानों से किया हुआ व्यवहार और (**विधाता**) विधान करने वाला ये सब (**मीळहुष्मन्तः**) बहुत वीर्य सेचक आदि गुणों वाले होते हुए (**नः**) हम लोगों को (**मृळन्तु**) सुखी करें, वैसे (**नः**) हम लोगों के लिये (**इषम्**) अन्नादि पदार्थों को (**पिप्यताम्**) बढ़ाओ॥ १२॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे विद्वानो! जैसे ईश्वर से निर्मित किये हुए पृथिवी आदि पदार्थ प्राणियों को सुखी करते हैं, वैसे ही तुम विद्यादान से सब को सुखी करो॥ १२॥

**पुनर्विद्वद्भिः किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

फिर विद्वानों को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**उत स्य देवः सविता भगो नोऽपां नपादवतु दानु पप्रिः।**

**त्वष्टा देवेभिर्जनिभिः सजोषा द्यौर्देवेभिः पृथिवी समुद्रैः॥ १३॥**

**उत। स्यः। देवः। सविता। भगः। नः। अपाम्। नपात्। अवतु। दानु। पप्रिः। त्वष्टा। देवेभिः। जनिऽभिः। सऽजोषाः। द्यौः। देवेभिः। पृथिवी। समुद्रैः॥ १३॥**

**पदार्थः**-(**उत**) अपि (**स्यः**) सः (**देवः**) देदीप्यमानः (**सविता**) प्रसवकर्त्ता सूर्य्यः (**भगः**) भजनीयः प्राणः (**नः**) अस्मान् (**अपाम्**) जलानाम् (**नपात्**) यो विद्युद्रूपोऽग्निर्न पतति सः (**अवतु**) (**दानु**) दानम् (**पप्रिः**) पूरयन् (**त्वष्टा**) छेदकः (**देवेभिः**) दिव्यगुणैः (**जनिभिः**) जन्मभिर्जनकैर्वा (**सजोषाः**) समानप्रीतिसेवी (**द्यौः**) सूर्य्यः (**देवेभिः**) सूर्यादिभिर्दिव्यैर्वा (**पृथिवी**) भूमिः (**समुद्रैः**) सागरैस्सह॥ १३॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे विद्वन्! भवान् यथा स्यो देवः सविता भग उताऽपां नपाद्देवेभिर्जनिभिः सह त्वष्टा सजोषा देवेभिस्स द्यौः समुद्रैः सह पृथिवी दानु पप्रिरिव नोऽवतु॥१३॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यथेश्वरेण सृष्टाः सूर्य्यादयः पदार्थाः सर्वमनुष्यादिप्राणिनां कार्य्यसिद्धिनिमित्तानि तथा भवन्तोऽपि सर्वेषां कार्य्यसिद्धिकराः सन्तु॥१३॥

**पदार्थः**-हे विद्वन्! आप जैसे **(स्यः)** वह **(देवः)** देदीप्यमान **(सविता)** उत्पत्ति करने वाला सूर्य **(भगः)** सेवने योग्य प्राण **(उत)** और **(अपाम्)** जलों के बीच **(नपात्)** न गिरने वाला विद्युत् रूप अग्नि तथा **(देवेभिः)** दिव्य गुणों के और **(जनिभिः)** जन्म वा जन्म देने वालों के साथ **(त्वष्टा)** छिन्न-भिन्न कर्त्ता **(सजोषाः)** समान प्रीति का सेवने वाला **(देवेभिः)** सूर्यादि वा दिव्य पदार्थों के साथ **(द्यौः)** सूर्य **(समुद्रैः)** समुद्रों के साथ **(पृथिवी)** भूमि **(दानु)** दान को **(पप्रिः)** पूर्ण करते हुए **(नः)** हम लोगों की **(अवतु)** रक्षा करे॥१३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जैसे ईश्वर से रचे हुए सूर्यादि पदार्थ सब मनुष्य आदि प्राणियों के कार्यसिद्धि के निमित्त हैं, वैसे आप लोग भी सब की कार्यसिद्धि करने वाले हों॥१३॥

**पुनर्मनुष्यैः किमाकाङ्क्षितव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को क्या आकाङ्क्षा करने योग्य है, इस विषय को कहते हैं॥

**उत नोऽहिर्बुध्न्यः शृणोत्वज एकपात् पृथिवी समुद्रः।**

**विश्वेदेवा ऋतावृधो हुवानाः स्तुता मन्त्राः कविशस्ता अवन्तु॥१४॥**

**उत। नः। अहिः। बुध्न्यः। शृणोतु। अजः। एकऽपात्। पृथिवी। समुद्रः। विश्वे। देवाः। ऋतऽवृधः। हुवानाः। स्तुताः। मन्त्राः। कविऽशस्ताः। अवन्तु॥१४॥**

**पदार्थः**-**(उत)** अपि **(नः)** अस्माकम् **(अहिः)** मेघः **(बुध्न्यः)** बुध्नेऽन्तरिक्षे भवः **(शृणोतु)** **(अजः)** यः कदाचिन्न जायते स ईश्वरः **(एकपात्)** एकः पादो जगति यस्य सः **(पृथिवी)** भूमिः **(समुद्रः)** अन्तरिक्षम् **(विश्वे)** सर्वे **(देवाः)** विद्वांसः **(ऋतावृधः)** सत्यस्य वर्धकाः **(हुवानाः)** आह्वातारः **(स्तुताः)** प्रशंसिताः **(मन्त्राः)** वेदस्य श्रुतयो विचारा वा **(कविशस्ताः)** कविभिर्मेधाविभिः शस्ताः प्रशंसिता अध्यापिता वा **(अवन्तु)**॥१४॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! स एकपादजः परमात्मा नस्तां प्रार्थनां शृणोतु यया बुध्न्योऽहिः पृथिवी समुद्र उतर्तावृधो हुवाना विश्वे देवाः कविशस्ताः स्तुता मन्त्रा नोऽवन्तु॥१४॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यूयं यो जन्ममरणादिव्यवहाररहितो जगदीश्वरोऽस्ति तत्कृपया पुरुषार्थेन च सर्वेषां पृथिव्यादिपदार्थानां विज्ञानेन स्वोन्नतीः सततं विदधत॥१४॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! [वह] **(एकपात्)** जिसका जगत् में एक पाद है **(अजः)** जो कभी नहीं उत्पन्न होता वह परमात्मा **(नः)** हमारी उस प्रार्थना को **(शृणोतु)** सुने जिसने **(बुध्न्यः)** अन्तरिक्ष में होने



www.9009.co.in

वाला (**अहिः**) मेघ (**पृथिवी**) भूमि (**समुद्रः**) अन्तरिक्ष (**उत**) और (**ऋतावृधः**) सत्य के बढ़ाने वाला (**हुवानाः**) और आह्वान करने वाले तथा (**विश्वे, देवाः**) समस्त विद्वान् (**कविशस्ताः**) कवि मेधावी जनों से प्रशंसित वा पढ़ाये हुए और (**स्तुताः**) प्रशंसित (**मन्त्राः**) वेद की श्रुति वा वेदविचार हम लोगों की (**अवन्तु**) रक्षा करें॥१४॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! तुम-जो जन्म-मरणादि व्यवहार से रहित जगदीश्वर है, उसकी कृपा और पुरुषार्थ से तथा सम्पूर्ण पृथिवी आदि पदार्थों के विज्ञान से अपनी उन्नति निरन्तर करो॥१४॥

**पुनर्जिज्ञासवः कीदृशा भवेयुरित्याह॥**

फिर जिज्ञासु जन कैसे हों, इस विषय को कहते हैं॥

**एवा नपातो मम तस्य धीभिर्भरद्वाजा अभ्यर्चन्त्यर्कैः।**

**ग्ना हुतासो वसवोऽधृष्टा विश्वे स्तुतासो भूता यजत्राः॥१५॥१०॥**

**एव। नपातः। मम। तस्य। धीभिः। भरत्ऽवाजाः। अभि। अर्चन्ति। अर्कैः। ग्नाः। हुतासः। वसवः। अधृष्टाः। विश्वे। स्तुतासः। भूत। यजत्राः॥१५॥**

**पदार्थः**-(**एवा**) अत्र **निपातस्य चे**ति दीर्घः। (**नपातः**) पातरहिताः (**मम**) (**तस्य**) (**धीभिः**) प्रज्ञाभिः कर्मभिर्वा (**भरद्वाजाः**) धृतविज्ञानाः (**अभि**) (**अर्चन्ति**) सत्कुर्वन्ति (**अर्कैः**) विचारैः (**ग्नाः**) वाचः (**हुतासः**) सत्कारेण हुताः (**वसवः**) ये विद्यादिषु वसन्ति ते (**अधृष्टाः**) धृष्टतारहिता अप्रगल्भाः (**विश्वे**) सर्वे (**स्तुतासः**) प्राप्तप्रशंसाः (**भूता**) भवत। अत्र **द्व्यचोऽतस्तिङ** इति दीर्घः। (**यजत्राः**) सङ्गन्तारः॥१५॥

**अन्वयः**-हे यजत्रा! यथा मम तस्य च धीभिर्भरद्वाजा नपातो हुतासः स्तुतासो विश्वे देवा मम तस्य च धीभिरर्कैश्च ग्ना अभ्यर्चन्ति तथैवाऽधृष्टा वसवो यूयं भूता॥१५॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। ये विद्यार्थिनो विद्यां प्रगल्भतां चेच्छन्ति त आप्तानामीश्वरस्य च गुणकर्मस्वभावान् धृत्वेष्टाम्मतिं विद्यां चाप्नुवन्तीति॥१५॥

अत्र विश्वेदेवगुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति पञ्चाशत्तमं सूक्तं पञ्चदशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे (**यजत्राः**) सङ्ग करने वालो! जैसे (**मम**) मेरी और (**तस्य**) उसकी (**धीभिः**) बुद्धि वा कर्मों से (**भरद्वाजाः**) धारण किया है विज्ञान जिन्होंने वे सज्जन और (**नपातः**) पातरहित (**हुतासः**) सत्कार से ग्रहण किये हुए (**स्तुतासः**) प्रशंसा को प्राप्त (**विश्वे**) सब विद्वान् मेरी और उसकी बुद्धि वा कर्मों से (**अर्कैः**) विचारों से (**ग्नाः**) वाणियों को (**अभि, अर्चन्ति**) सब ओर से सत्कृत करते हैं, वैसे (**एवा**) ही (**अधृष्टाः**) धृष्टतारहित (**वसवः**) विद्यादिकों में बसने वाले तुम (**भूत**) होओ॥१५॥



www.9009.co.in

**भावार्थ:-**इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो विद्यार्थी विद्या और प्रगल्भता की इच्छा करते हैं, वे यथार्थवक्ता तथा ईश्वर के गुण कर्म और स्वभावों को धारण कर इष्ट मति और विद्या को प्राप्त होते हैं॥१५॥

इस सूक्त में विश्वे देवों के गुणों का वर्णन होने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह पचासवां सूक्त और पन्द्रहवां वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

**अथ षोडशर्चस्यैकपञ्चाशत्तमस्य सूक्तस्य ऋजिष्वा ऋषिः। विश्वेदेवा देवताः। १, २,३, ५, ७, १०, ११, १२ निचृत्त्रिष्टुप्। ८, त्रिष्टुप्छन्दः। धैवतः स्वरः। ४, ६,९ स्वराट्पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः। १३, १४, निचृदुष्णिक्। १५ उष्णिक् छन्दः। ऋषभः स्वरः। १६ निचृदनुष्टुप् छन्दः। गान्धारः स्वरः॥**

***पुनर्मनुष्यैः किमेष्टव्यमित्याह॥***

अब सोलह ऋचावाले इक्यावनवें सूक्त का प्रारम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में फिर मनुष्यों को क्या चाहने योग्य है, इस विषय को कहते हैं॥

**उदु त्यच्चक्षुर्महि मित्रयोराँ एति प्रियं वरुणयोरदब्धम्।**

**ऋतस्य शुचि दर्शतमनीकं रुक्मो न दिव उदिता व्यद्यौत्॥ १॥**

**उत्। ऊँ इति। त्यत्। चक्षुः। महि। मित्रयोः। आ। एति। प्रियम्। वरुणयोः। अदब्धम्। ऋतस्य। शुचि। दर्शतम्। अनीकम्। रुक्मः। न। दिवः। उत्ऽइता। वि। अद्यौत्॥ १॥**

**पदार्थः**-(**उत्**) (**उ**) (**त्यत्**) तत् (**चक्षुः**) चष्टेऽनेन तत् (**महि**) महत् (**मित्रयोः**) सुहृदोरध्यापकाऽध्येत्रोर्बाह्याभ्यन्तरस्थयोः प्राणयोर्वा (**आ**) (**एति**) (**प्रियम्**) यत्प्रीणाति तत् (**वरुणयोः**) उदान इव वर्त्तमानयोः (**अदब्धम्**) अहिंसितम् (**ऋतस्य**) सत्यस्य (**शुचि**) पवित्रम् (**दर्शतम्**) द्रष्टव्यम् (**अनीकम्**) सैन्यमिव कार्यसिद्धिप्रापकम् (**रुक्मः**) रोचमानस्सूर्यः (**न**) इव (**दिवः**) विद्युतः सकाशात् (**उदिता**) सूर्य्योदये (**वि**) (**अद्यौत्**) प्रकाशयति॥१॥

**अन्वयः**-हे अध्यापकोपदेशका! यदि युष्मांस्त्यन्महि वरुणयोः प्रियं मित्रयोरदब्धमृतस्य शुचि दर्शतं दिव उदिता रुक्मो नाऽनीकं महि चक्षुर्व्यद्यौदा उदेति तर्हि भवन्ति उ विद्वांसो भवेयुः॥१॥

**भावार्थः**-ये मनुष्याः धर्मेण यानं प्राप्तुमिच्छन्ति ते सूर्यप्रकाशवत्प्राप्तविज्ञाना जायन्ते ये सत्यस्य पदार्थस्य विद्यामुन्नयन्ति ते सर्वत्र सत्कृता भवन्ति॥१॥

**पदार्थः**-हे अध्यापक और उपदेशको! जो तुम लोगों को (**त्यत्**) वह उत्तम (**महि**) बड़ा वस्तु वा (**वरुणयोः**) उदान के समान वर्त्तमान दो सज्जनों का (**प्रियम्**) प्रिय पदार्थ वा (**मित्रयोः**) दो मित्रों का अध्यापक और अध्येताओं का वा शरीर के बाहर और भीतर रहने वाला प्राण वायुओं का (**अदब्धम्**) अविनष्ट व्यवहार वा (**ऋतस्य**) सत्य का (**शुचि**) पवित्र (**दर्शतम्**) देखने योग्य (**दिवः**) बिजुली की उत्तेजना से (**उदिता**) सूर्योदयकाल में (**रुक्मः**) प्रकाशमान सूर्य के (**न**) समान (**अनीकम्**) सेना समूह के समान कार्यसिद्धि का पहुंचाने वाला (**चक्षुः**) जिससे देखते हैं वह (**वि, अद्यौत्**) विशेषता से प्रकाशित



www.9009.co.in

होता है **(आ, उत्, एति)** उत्कृष्टता से प्राप्त होता है तो आप लोग **(उ)** तर्क-वितर्क से विद्वान् होओ॥१॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य धर्म से यान पाने की इच्छा करते हैं, वे सूर्य के प्रकाश के तुल्य विज्ञान को प्राप्त होते हैं, जो सत्य पदार्थ की विद्या की उन्नति करते हैं, वे सर्वत्र सत्कृत होते हैं॥१॥

**पुनर्मेधाविनः किं जानीयुरित्याह॥**

फिर मेधावी जन क्या जानें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**वेद॒ यस्त्रीणि॑ वि॒दथा॑न्येषां दे॒वाना॒ं जन्म॑ सनु॒तरा च॒ विप्र॑ः।**

**ऋ॒जु मर्ते॑षु वृ॒जिना च॒ पश्य॑न्न॒भि च॑ष्टे॒ सूरो॑ अ॒र्य एवा॑न्॥२॥**

**वेद॑। यः। त्रीणि॑। वि॒दथा॑नि। ए॒षाम्। दे॒वाना॑म्। जन्म॑। स॒नु॒तः। आ। च॒। विप्र॑ः। ऋ॒जु। मर्ते॑षु। वृ॒जि॒ना। च॒। पश्य॑न्। अ॒भि। च॒ष्टे॒। सूर॑ः। अ॒र्यः। एवा॑न्॥२॥**

**पदार्थः**-**(वेद)** जानाति **(यः)** **(त्रीणि)** **(विदथानि)** वेदितुं योग्यानि कर्मोपासनाज्ञानानि **(एषाम्)** **(देवानाम्)** विदुषाम् **(जन्म)** प्रादुर्भावम् **(सनुतः)** सदा **(आ)** **(च)** **(विपः)** मेधावी **(ऋजु)** सरलम् **(मर्त्तेषु)** मनुष्येषु **(वृजिना)** बलानि **(च)** **(पश्यन्)** **(अभि)** **(चष्टे)** प्रकाशयति **(सूरः)** सूर्य्य इव **(अर्यः)** स्वामी **(एवान्)** प्राप्तव्यान्॥२॥

**अन्वयः**-योऽर्यो विप्रः सूर एवानिवैषां देवानां सनुतर्जन्म त्रीणि विदथानि मर्त्तेषु वृजिना ऋजु च पश्यन्नभ्याचष्टे स चैतान् वेद॥२॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। ये मनुष्या मनुष्याणां विद्याजन्म जानन्ति ते मनुष्येषु पूर्णं शरीरात्मबलं प्राप्य सर्वान् पदार्थान् वेत्तुमर्हन्ति ये कर्मोपासनाज्ञानानि प्राप्नुवन्ति ते स्वामिनो भवन्ति॥२॥

**पदार्थः**-**(यः)** जो **(अर्यः)** स्वामी **(विप्रः)** बुद्धिमान् **(सूरः)** सूर्य के समान **(एवान्)** प्राप्त होने योग्य पदार्थों के तुल्य **(एषाम्)** इन **(देवानाम्)** विद्वानों के **(सनुतः)** सर्वदा **(जन्म)** उत्पन्न होने वाल **(त्रीणि)** तीन **(विदथानि)** जानने के योग्य कर्म, उपासना और ज्ञानों को **(मर्त्तेषु)** मनुष्यों में **(वृजिना)** बलों और **(ऋजु, च)** सरल व्यवहार को **(पश्यन्)** देखता हुआ **(अभि, आ, चष्टे)** सब ओर से प्रकाशित करता है, वह **(च)** भी इन उक्त पदार्थों को **(वेद)** जानता है॥२॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो मनुष्य मनुष्यों के विद्याजन्म को जानते हैं, वे मनुष्यों में पूर्ण शरीर और आत्मा के बल को पाय सब पदार्थों के जानने योग्य होते हैं, जो कर्म उपासना और ज्ञानों को प्राप्त होते हैं, वे स्वामी होते हैं॥२॥

**पुनर्मनुष्याः केषां प्रशंसां कुर्युरित्याह॥**

फिर मनुष्य किन की प्रशंसा करें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**स्तु॒ष उ॑ वो म॒ह ऋ॒तस्य॒ गो॒पानदि॑तिं मि॒त्रं वरु॑णं सुजा॒तान्।**



www.9009.co.in

**अर्यमणं भगमदब्धधीतिनच्छा वोचे सधन्यः पावकान्॥३॥**

**स्तुषे। ॐ इति। वः। महः। ऋतस्य। गोपान्। अदितिम्। मित्रम्। वरुणम्। सुऽजातान्। अर्यमणम्। भगम्। अदब्धऽधीतीन्। अच्छ। वोचे। सऽधन्यः। पावकान्॥३॥**

**पदार्थः**-(**स्तुषे**) स्तौमि (उ) (**वः**) युष्माकम् (**महः**) महतः (**ऋतस्य**) सत्यस्य (**गोपान्**) पालकान् (**अदितिम्**) अखण्डितां विद्यां प्रकृतिं वा (**मित्रम्**) सुहृदम् (**वरुणम्**) ईप्सितव्यम् (**सुजातान्**) सुष्ठु प्रसिद्धान् (**अर्यमणम्**) न्यायेशम् (**भगम्**) ऐश्वर्यम् (**अदब्धधीतीन्**) अहिंसिताध्ययनान् (**अच्छा**) अत्र **संहितायामिति** दीर्घः (**वोचे**) वदेयम् (**सधन्यः**) धन्यैः सह वर्त्तमानः (**पावकान्**) पवित्रकरान्॥३॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यः सधन्योऽहं वो मह ऋतस्य गोपानदितिं मित्रं वरुणमर्यमणं भगमदब्धधीतीन् सुजातान् पावकान् स्तुष उ युष्मान् प्रत्यच्छा वोचे तं मां यूयं सङ्गच्छध्वम्॥३॥

**भावार्थः**-ये मनुष्या विदुषः प्रशंस्य सङ्गत्य सकलान् प्रकृत्यादिपदार्थविद्यादीन् विदित्वाऽन्यानध्यापयन्ति ते सर्वेषां पवित्रकराः सन्ति॥३॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो (**सधन्यः**) धन्य प्रशंसितों के साथ वर्त्तमान मैं (**वः**) तुम्हारे (**महः**) बड़े (**ऋतस्य**) सत्य के (**गोपान्**) पालने वालों वा (**अदितिम्**) अखण्डित विद्या वा प्रकृति वा (**मित्रम्**) मित्र वा (**वरुणम्**) इच्छा करने योग्य वा (**अर्यमणम्**) न्यायाधीश वा (**भगम्**) ऐश्वर्य वा (**अदब्धधीतीन्**) अविनष्ट अध्ययन व्यवहार वालों वा (**सुजातान्**) सुन्दर प्रसिद्ध वा (**पावकान्**) पवित्र करने वाले पदार्थों की (**स्तुषे**) प्रशंसा करता हूँ (उ) और तुम्हारे प्रति (**अच्छा**) अच्छे प्रकार (**वोचे**) कहूं उस मुझे तुम अच्छे प्रकार प्राप्त होओ॥३॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य विद्वानों की प्रशंसा कर वा विद्वानों का सङ्ग कर सकल प्रकृति आदि पदार्थविद्या आदि पदार्थों को जान कर औरों को पढ़ाते हैं, वे सबके पवित्र करने वाले हैं॥३॥

**पुनर्मनुष्याः कीदृशान् पार्थिवान् मन्येरन्नित्याह॥**

फिर मनुष्य कैसे राजजनों को मानें, इस विषय को कहते हैं॥

**रिशादसः सत्पतीँरदब्धान् महो राज्ञः सुवसनस्य दातॄन्।**

**यूनः सुक्षत्रान् क्षयतो दिवो नॄनादित्यान् याम्यदितिं दुवोयु॥४॥**

**रिशादसः। सत्ऽपतीन्। अदब्धान्। महः। राज्ञः। सुऽवसनस्य। दातॄन्। यूनः। सुऽक्षत्रान्। क्षयतः। दिवः। नॄन्। आदित्यान्। यामि। अदितिम्। दुवःऽयु॥४॥**

**पदार्थः**-(**रिशादसः**) हिंसकान् नाशकान् (**सत्पतीन्**) सत्यस्य पालकान् (**अदब्धान्**) अहिंसितानहिंसकान् (**महः**) महतः (**राज्ञः**) नृपान् (**सुवसनस्य**) सुष्ठुवासस्य (**दातॄन्**) (**यूनः**) प्राप्तयौवनान् (**सुक्षत्रान्**) उत्तमधनाञ्छ्रेष्ठराज्यान् वा (**क्षयतः**) निवसतः (**दिवः**) कमनीयान् कामयमानान्



www.9009.co.in

वा **(नॄन्)** **(आदित्यान्)** कृताष्टचत्वारिंशद्[वर्ष]ब्रह्मचर्येण पूर्णविदुषः **(यामि)** प्राप्नोमि **(अदितिम्)** अखण्डितां नीतिम् **(दुवोयु)** दुवः परिचरणं कामयमानान्॥४॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथाहं रिशादसः सत्पतीनदब्धान् सुवसनस्य दातॄन् सुक्षत्रानदितिं क्षयतो दिवो नॄनादित्यान् यूनो दुवोयु महो राज्ञो यामि तथेदृशान् यूयमपि प्राप्नुत॥४॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! ये चोरादीनां निष्कासका धर्मात्मनां पालका हिंसादिदोषरहिताः सर्वस्मै सुखेन वासं ददन्तः पूर्णविद्याजितेन्दिया न्यायेन पितृवत्प्रजापालकाः पूर्णयौवना दुर्व्यसनविरहा गुणग्राहिणः स्युस्तानेव यूयं स्वामिनो मन्यध्वं नेतरान् क्षुद्राशयान्॥४॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे मैं **(रिशादसः)** हिंसक वा नाश करने वाले वा **(सत्पतीन्)** सत्य के पालने वाले वा **(अदब्धान्)** विनाश को न प्राप्त हुए उनको वा न हिंसनेवाले वा **(सुवसनस्य)** सुन्दर वास के **(दातॄन्)** देने वाले वा **(सुक्षत्रान्)** उत्तम धन और राज्यों को वा **(अदितिम्)** अखण्डित नीति को **(क्षयतः)** स्थिर होते हुए **(दिवः)** कामना करने योग्य और काम करने वा **(नॄन्)** मनुष्यों वा **(आदित्यान्)** किया है अड़तालीस वर्ष ब्रह्मचर्य्य जिन्होंने उन वा **(यूनः)** जवान मनुष्यों वा **(दुवोयु)** सेवन की कामना करने वालों को तथा **(महः)** महान् **(राज्ञः)** राजाओं को मैं **(यामि)** प्राप्त होता हूं, वैसे ऐसों को तुम भी प्राप्त होओ॥४॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जो चोर आदि के निकासने और धर्मात्माओं के पालने वाले, हिंसादि दोषों से रहित, सब के लिये सुख से निवास देनेवाले, पूर्ण विद्यायुक्त, जितेन्द्रिय, न्याय से पिता के समान प्रजा के पालने वाले, पूर्ण यौवनयुक्त, दुष्ट व्यसनों से रहित, गुणग्राही जन हों; उन्हीं को तुम स्वामी मानो और क्षुद्र हृदय वालों को न मानो॥४॥

**पित्रादिभिः सन्तानेभ्यः किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

पित्रादिकों को सन्तानों के लिये क्या करना योग्य है, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**द्यौ३ष्पितः पृथिवि मातरध्रुगग्ने भ्रातर्वसवो मृळता नः।**

**विश्व आदित्या अदिते सजोषा अस्मभ्यं शर्म बहुलं वि यन्त॥५॥११॥**

**द्यौः। पितरिति। पृथिवि। मातः। अध्रुक्। अग्ने। भ्रातः। वसवः। मृळत। नः। विश्वे। आदित्याः। अदिते। सऽजोषाः। अस्मभ्यम्। शर्म। बहुलम्। वि। यन्त॥५॥**

**पदार्थः**-**(द्यौः)** सूर्य्य इव **(पितः)** पालक **(पृथिवि)** भूमिरिव **(मातः)** जननि **(अध्रुक्)** द्रोहरहितः **(अग्ने)** पावकवत् प्रकाशात्मन् **(भ्रातः)** बन्धो **(वसवः)** सुखवासप्रदाः **(मृळता)** सुखयत। अत्र **संहितायामि**ति दीर्घः। **(नः)** अस्मान् **(विश्वे)** सर्वे **(आदित्याः)** पूर्णकृतब्रह्मचर्यविद्याः **(अदिते)** अखण्डितज्ञानैश्वर्य्ये **(सजोषाः)** समानप्रीतिसेविका **(अस्मभ्यम्)** **(शर्म)** सुखकारणं गृहम् **(बहुलम्)** बहुपदार्थान्वितम् **(वि)** **(यन्त)** ददति॥५॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे पितर्द्यौरिव! त्वं हे मातः पृथिवि भूमिरिव! त्वं हे अग्ने! अग्निरिव भ्रातस्त्वमध्रुक्सन् वसवो यूयं नो मृळता। हे अदिते! यथा विश्व आदित्या अस्मभ्यं बहुलं शर्म वि यन्त तथा सजोषास्त्वं बहुसुखं विद्यां च देहि॥५॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। येषां सूर्य्यवत्सुशिक्षया पालकः पिता पृथिवीवत् क्षमादिविद्यागुणान्विता माताऽग्निवद्भ्राता वर्त्तते स एव सुखी जायते यथा पूर्णविद्यावन्तो जना अयनविद्यां प्रयच्छन्ति तथैव विद्याग्रहीतारोऽध्यापकान्त्सततं सत्कुर्वन्ति॥५॥

**पदार्थः**-हे **(पितः)** पालने वाले **(द्यौः)** सूर्य्य के समान! तुम हे **(मातः)** माता **(पृथिवि)** भूमि के समान! तुम हे **(अग्ने)** के समान प्रकाशात्मा **(भ्रातः)** भ्राता! तुम **(अध्रुक्)** द्रोहरहित होते हुए **(वसवः)** सुख वास के देने वाले तुम सब **(नः)** हमको **(मृळता)** सुखी करो हे **(अदिते)** अखण्डिते ज्ञान और ऐश्वर्य्यवती पण्डिता स्त्री! जैसे **(विश्वे)** सब **(आदित्याः)** पूर्ण की है ब्रह्मचर्य्य से विद्या जिन्होंने वे सज्जन **(अस्मभ्यम्)** हम लोगों के लिये **(बहुलम्)** बहुत पदार्थयुक्त **(शर्म)** सुख करने वाले घर को **(वि, यन्त)** देते हैं, वैसे **(सजोषाः)** समान एकसी प्रीति को सेवने वाली तू बहुत सुख और विद्या को दे॥५॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जिनका सूर्य के समान सुन्दर शिक्षा से पालने वाला पिता, पृथिवी के समान सहनशीलता आदि गुण और विद्यायुक्त माता, अग्नि के समान प्रकाशमान भ्राता वर्त्तमान है, वही सुखी होता है तथा जिसे पूर्ण विद्यावान् जन सन्मार्ग को पूंछते [=देते] हैं, वैसे ही विद्या पढ़ने वाले पढ़ाने वालों का निरन्तर सत्कार करते हैं॥५॥

**पुनर्मनुष्यैः किं नैषितव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को किसकी इच्छा नहीं करनी चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**मा नो॒ वृका॑य वृ॒क्ये॑ स॒मस्मा॑ अघाय॒ते री॑रधता यजत्राः।**

**यू॒यं हि ष्ठा र॒थ्यो॑ नस्त॒नूनां॑ यू॒यं दक्ष॑स्य॒ वच॑सो बभू॒व॥६॥**

**मा। नः॒। वृका॑य। वृ॒क्ये॑। स॒मस्मै॑। अ॒घ॒ऽय॒ते। री॒र॒ध॒त॒। य॒ज॒त्राः॒। यू॒यम्। हि। स्थ। र॒थ्यः॑। नः॒। त॒नूना॑म्। यू॒यम्। दक्ष॑स्य। वच॑सः। ब॒भू॒व॥६॥**

**पदार्थः**-**(मा)** निषेधे **(नः)** अस्मान् **(वृकाय)** स्तेनाय **(वृक्ये)** वृकेषु स्तेनेषु भवे व्यवहारे **(समस्मै)** सर्वस्मै **(अघायते)** आत्मनोऽघमिच्छते **(रीरधता)** भृशं हिंसत। अत्र **संहितायामिति** दीर्घः। **(यजत्राः)** सङ्गन्तारः **(यूयम्)** **(हि)** यतः **(स्था)** अत्र **संहितायामिति** दीर्घः। **(रथ्यः)** रथेषु साधुः **(नः)** अस्माकम् **(तनूनाम्)** शरीराणाम् **(यूयम्)** **(दक्षस्य)** बलयुक्तस्य **(वचसः)** वचनस्य **(बभूव)** भवत॥६॥

**अन्वयः**-हे यजत्रा! यूयं वृकाय वृक्ये समस्मा अघायते नोऽस्मान् मा रीरधता नस्तनूनां दक्षस्य वचसो रथ्य इव यूयं स्था हि सुखकारका बभूव॥६॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। सर्वैर्मनुष्यैः स्तेनादीनां दुष्टानां व्यवहारः कदाचिन्न कर्त्तव्यः ये च धर्म्मात्मानोऽजातशत्रवः सर्वेषां रक्षका भवेयुस्तान् यूयं सततं सेवध्वम्॥६॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-हे **(यजत्राः)** सङ्ग करने वालो! **(यूयम्)** तुम **(वृकाय)** चोर के लिये वा **(वृक्ये)** चोरों में उत्पन्न हुए व्यवहार के निमित्त **(अघायते)** अघ की इच्छा करने वाले **(समस्मै)** सर्वजन के लिये **(नः)** हम लोगों को **(मा)** मत **(रीरधता)** नष्ट करो तथा **(नः)** हमारे **(तनूनाम्)** शरीरों के **(दक्षस्य)** बलयुक्त **(वचसः)** वचन का **(रथ्यः)** रथों में साधु उत्तम जो व्यवहार उसके समान **(यूयम्)** तुम **(स्था)** हो **(हि)** जिससे सुख करने वाले **(बभूव)** होओ॥६॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। सब मनुष्यों को चोर आदि दुष्टों का व्यवहार कभी नहीं कर्त्तव्य है और जो धर्मात्मा, अजातशत्रु अर्थात् जिनके शत्रु नहीं हुआ तथा सबकी रक्षा करने वाले हों, उनकी तुम निरन्तर सेवा करो॥६॥

**पुनर्मनुष्यैः किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**मा व एनो अन्यकृतं भुजेम मा तत्कर्म वसवो यच्चयध्वे।**

**विश्वस्य हि क्षयथ विश्वदेवाः स्वयं रिपुस्तन्वं रीरिषीष्ट॥७॥**

**मा। वः। एनः। अन्यऽकृतम्। भुजेम। मा। तत्। कर्म। वसवः। यत्। चयध्वे। विश्वस्य। हि। क्षयथ। विश्वऽदेवाः। स्वयम्। रिपुः। तन्वम्। रिरिषीष्ट॥७॥**

**पदार्थः**-**(मा)** निषेधे **(वः)** युष्माकम् **(एनः)** अपराधम् **(अन्यकृतम्)** अन्येन कृतम् **(भुजेम)** **(मा)** **(तत्)** **(कर्म)** कुर्य्याम **(वसवः)** वासहेतवः **(यत्)** **(चयध्वे)** संचिनुथे **(विश्वस्य)** **(हि)** यतः **(क्षयथ)** निवसथ **(विश्वदेवाः)** सर्वे विद्वांसः **(स्वयम्)** **(रिपुः)** शत्रुः **(तन्वम्)** शरीरम् **(रीरिषीष्ट)** भृशं हिंस्यात्॥७॥

**अन्वयः**-हे वसवो विश्वदेवा! यूयं विश्वस्य मध्ये यच्चयध्वे यद्धि क्षयथ यथा रिपुस्तन्वं स्वशरीरं रीरिषीष्ट तथा तद्वोऽन्यकृतमेनो वयं मा भुजेम तद्दुष्टं कर्म मा कर्म॥७॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे विद्वांसो! यूयं कस्यापि दुष्टस्यानुकरणं मा कुरुत स्वशरीरघातं मा विधत्ताऽन्यकृतस्याऽपराधस्य सङ्गिनो मा भवत॥७॥

**पदार्थः**-हे **(वसवः)** वास के हेतु **(विश्वदेवाः)** सब विद्वानो! तुम **(विश्वस्य)** संसार के बीच **(यत्)** जो **(चयध्वे)** इकट्ठा करो और **(हि)** जिससे जिसको **(क्षयथ)** निवास करो जैसे **(रिपुः)** शत्रु **(तन्वम्)** अपने शरीर को **(स्वयम्)** आप **(रीरिषीष्ट)** निरन्तर मारे, वैसे उस **(वः)** तुम्हारे **(अन्यकृतम्)** और से किये हुए **(एनः)** अपराध को हम लोग **(मा)** मत **(भुजेम)** भोगें **(तत्)** उस दुष्ट कर्म को **(मा)** मत **(कर्म)** करें॥७॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे विद्वानो! तुम किसी दुष्ट का अनुकरण मत करो, अपने शरीर को नष्ट मत करो तथा और के किये हुए अपराध के सङ्ग मत होओ॥७॥



www.9009.co.in

**मनुष्याः सदैव नम्रा भवेयुरित्याह॥**

मनुष्य सदैव नम्र हों, इस विषय को कहते हैं॥

**नम॒ इदु॒ग्रं नम॒ आ वि॑वासे॒ नमो॑ दाधार पृथि॒वीमु॒त द्याम्।**

**नमो॑ दे॒वेभ्यो॒ नम॑ ईश एषां कृ॒तं चि॒देनो॒ नम॒सा वि॑वासे॥८॥**

**नम॑ः। इत्। उ॒ग्रम्। नम॑ः। आ। वि॒वा॒से॒। नम॑ः। दा॒धा॒र॒। पृ॒थि॒वीम्। उ॒त्। द्याम्। नम॑ः। दे॒वेभ्य॑ः। नम॑ः। ई॒शे॒। ए॒षा॒म्। कृ॒तम्। चि॒त्। एन॑ः। नम॑सा। आ। वि॒वा॒से॒॥८॥**

**पदार्थः**-(**नमः**) सत्करणीयम् (**इत्**) (**उग्रम्**) तीव्रम् (**नमः**) अन्नम् (**आ**) (**विवासे**) सेवे (**नमः**) नमस्करणीयम्ब्रह्म (**दाधार**) दधाति (**पृथिवीम्**) भूमिम् (**उत**) अपि (**द्याम्**) सूर्य्यम् (**नमः**) (**देवेभ्यः**) विद्वद्भ्यः (**नमः**) (**ईशे**) ईष्टे इच्छामि (**एषाम्**) (**कृतम्**) (**चित्**) अपि (**एनः**) (**नमसा**) सत्कारेण (**आ**) (**विवासे**)॥८॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यन्नमः पृथिवीमुत द्यां दाधार तदहमुग्रं नम आ विवासे देवेभ्यो नम आ विवासे नमो नम ईशे तेन नमसैषां कृतं चिदेन इदा विवासे॥८॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! सर्वैर्नमस्कणीयस्य परमेश्वरस्य सहायेन वयं सत्क्रियां धृत्वा दुष्टतां निवार्य्य विद्वद्भ्यो हितं सम्पाद्य सर्वोपकारं सदैव कुर्य्याम॥८॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो (**नमः**) नमस्कार करने योग्य ब्रह्म (**पृथिवीम्**) भूमि (**उत**) और (**द्याम्**) सूर्य को (**दाधार**) धारण करते उस (**उग्रम्**) तीव्र (**नमः**) नमस्कार करने योग्य ब्रह्म का मैं (**आ, विवासे**) सेवन करूं (**देवेभ्यः**) विद्वानों के लिये (**नमः**) अन्न की सेवा करूं (**नमः**) सत्कार वा (**नमः**) अन्न की (**ईशे**) इच्छा करूं उस (**नमसा**) सत्कार से (**एषाम्**) इनके (**कृतम्**) किये उत्तम कर्म (**चित्**) और (**एनः**) अनुत्तम कर्म का (**इत्**) ही (**आ, निवासे**) योग्य सेवन करूं॥८॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! सब से नमस्कार करने योग्य परमेश्वर के सहायरूप से हम लोग उत्तम क्रिया को धारण कर और दुष्टता को निवार विद्वानों के लिये हित सिद्ध कर सबका उपकार सदैव करें॥८॥

**पुन सर्वैः के नमस्कणीयाः सन्तीत्याह॥**

फिर सब को कौन नमस्कार करने योग्य हैं, इस विषय को कहते हैं॥

**ऋ॒तस्य॑ वो र॒थ्य॑ः पू॒तद॑क्षानृ॒तस्य॑ पस्त्य॒सदो॒ अद॑ब्धान्।**

**ताँ आ नमो॑भिरु॒रुचक्ष॑सो॒ नॄन् विश्वा॑न् व॒ आ न॑मे म॒हो य॑जत्राः॥९॥**

**ऋ॒तस्य॑। व॒ः। र॒थ्य॑ः। पू॒तऽद॑क्षान्। ऋ॒तस्य॑। प॒स्त्य॒ऽसद॑ः। अद॑ब्धान्। तान्। आ। नम॑ःऽभिः। उ॒रु॒ऽचक्ष॑सः। नॄन्। विश्वा॑न्। व॒ः। आ। न॒मे॒। म॒हः। य॒ज॒त्रा॒ः॥९॥**

**पदार्थः**-(**ऋतस्य**) सत्यस्य (**वः**) युष्मान् (**रथ्यः**) रथेषु साधुः (**पूतदक्षान्**) पवित्रबलान् (**ऋतस्य**) यथार्थस्य धर्म्यस्य व्यवहारस्य (**पस्त्यसदः**) ये पस्त्येषु गृहेषु सीदन्ति तान् (**अदब्धान्**)



www.9009.co.in

अहिंसितानहिंसकान् वा **(तान्)** **(आ)** **(नमोभिः)** बहुभिस्सत्कारैः **(उरुचक्षसः)** बहुदर्शनान् **(नॄन्)** उत्तमान् विदुषः **(विश्वान्)** समग्रान् **(वः)** युष्मान् **(आ)** **(नमे)** समन्तान्नमामि **(महः)** महतो महाशयान् **(यजत्रा)** सद्व्यवहारं सङ्गच्छमानाः॥९॥

**अन्वयः**-हे यजत्रा! रथ्योऽहमृतस्य पूतदक्षानृतस्य पस्त्यसदोऽदब्धानुरुचक्षसो विश्वान् महो नॄन् व आ नमे येऽस्मान् सत्यं बोधयन्ति तान् वो नमोभिर्वयं सततमा सत्कुर्याम॥९॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यूयं सर्वोत्कृष्टविद्यान् धर्मिष्ठान् परोपकारिणो जनानेव सदा नमतैभ्यो विनयमधिगच्छत॥९॥

**पदार्थः**-हे **(यजत्राः)** अच्छे व्यवहार का सङ्ग करते हुए सज्जनो! **(रथ्यः)** रथों में उत्तम व्यवहार वर्त्तने वाला मैं **(ऋतस्य)** सत्य के **(पूतदक्षान्)** पवित्र बलों वा **(ऋतस्य)** यथार्थ धर्मयुक्त व्यवहार के **(पस्त्यसदः)** जो घरों में स्थिर होते उन **(अदब्धान्)** अविनष्ट कार्य्यों वा नष्ट न करने वाले पदार्थों वा **(उरुचक्षसः)** बहुत दर्शनों वा **(विश्वान्)** समग्र **(महः)** महाशय **(नॄन्)** उत्तम विद्वान् **(वः)** आप लोगों को **(आ, नमे)** अच्छे प्रकार नमस्कार करता हूँ जो हम लोगों को सत्य बोध कराते हैं **(तान्)** उन **(वः)** आप लोगों का **(नमोभिः)** बहुत सत्कारों से हम लोग निरन्तर **(आ)** अच्छे प्रकार सत्कार करें॥९॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! तुम सब से उत्कृष्ट विद्या वाले, धर्मिष्ठ, परोपकारी जनों ही को सदा नमो, तथा इन से विनय (नम्रता) को प्राप्त होओ॥९॥

**पुनः के सत्कर्त्तव्या इत्याह॥**

फिर कौन सत्कार करने योग्य हैं, इस विषय को कहते हैं॥

**ते हि श्रेष्ठवर्चसस्त उ नस्तिरो विश्वानि दुरिता नयन्ति।**

**सुक्षत्रासो वरुणो मित्रो अग्निर्ऋतधीतयो वक्मराजसत्याः॥१०॥१२॥**

**ते। हि। श्रेष्ठऽवर्चसः। ते। ऊँ इति। नः। तिरः। विश्वानि। दुःऽइता। नयन्ति। सुऽक्षत्रासः। वरुणः। मित्रः। अग्निः। ऋतऽधीतयः। वक्मराजऽसत्या॥१०॥**

**पदार्थः**-(**ते**) (**हि**) यतः (**श्रेष्ठवर्चसः**) श्रेष्ठं वर्चोऽध्ययनं येषान्ते (**ते**) तव (**उ**) (**नः**) अस्माकम् (**तिरः**) तिरस्करणे (**विश्वानि**) सर्वाणि (**दुरिता**) दुष्टाचरणानि (**नयन्ति**) (**सुक्षत्रासः**) उत्तमराज्यधनाः (**वरुणः**) श्रेष्ठः (**मित्रः**) सुहृत् (**अग्निः**) पावक इव शुद्धान्तःकरणः (**ऋतधीतयः**) सत्यधारकाः (**वक्मराजसत्याः**) वक्मेषु वक्तृषु राजसु सत्यप्रतिपादकाः॥१०॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! हि यतस्ते श्रेष्ठवर्चसः सुक्षत्रासो वरुणो मित्रोऽग्निश्चेव वर्त्तमाना ऋतधीतयो वक्मराजसत्या नो विश्वानि दुरिता तिरो नयन्ति तस्मादु ते माननीयाः सन्ति॥१०॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यस्माद्विद्वांसो धर्मात्मानो निष्कपटत्वेनाऽन्येषां हितसाधका विद्यादानोपदेशद्वारा सर्वान् दुष्टाचारान्निवार्य सत्याचारे प्रवर्त्तकाः सन्ति तस्मादेव सत्कर्त्तव्या वर्त्तन्ते॥१०॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(हि)** जिससे **(ते)** वे **(श्रेष्ठवर्चसः)** श्रेष्ठ पढ़ने वाले **(सुक्षत्रासः)** उत्तम राज्य वा धनयुक्त **(वरुणः)** श्रेष्ठ जन **(मित्रः)** मित्र **(अग्निः)** अग्नि के समान शुद्धान्तःकरण पुरुष, इनके समान वर्त्तमान **(ऋतधीतयः)** सत्य के धारण करने वाले **(वक्मराजसत्याः)** कहने वाले राजाओं में सत्य के प्रतिपादन करने वाले सज्जन **(नः)** हम लोगों के **(विश्वानि)** समस्त **(दुरिता)** दुष्टाचरणों को **(तिरः)** तिरस्कार को **(नयन्ति)** पहुंचाते हैं उस कारण से **(उ)** ही **(ते)** वे मान करने योग्य हैं॥१०॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जिससे विद्वान् धर्मात्मा जन निष्कपटता से औरों के हित साधने वाले, विद्यादान और उपदेश द्वारा सब दुष्ट आचरणों को निवार के सत्य आचरण में प्रवृत्त करने वाले हैं, इसी से सत्कार करने योग्य हैं॥१०॥

**पुनः किंवत् के माननीयाः सन्तीत्याह॥**

फिर किसके तुल्य कौन मानने योग्य हैं, इस विषय को कहते हैं॥

**ते न इन्द्रः पृथिवी क्षाम वर्धन् पूषा भगो अदितिः पञ्च जनाः।**

**सुशर्माणः स्ववसः सुनीथा भवन्तु नः सुत्रात्रासः सुगोपाः॥११॥**

**ते। नः। इन्द्रः। पृथिवी। क्षाम। वर्धन्। पूषा। भगः। अदितिः। पञ्च। जनाः। सुऽशर्माणः। सुऽअवसः। सुऽनीथाः। भवन्तु। नः। सुऽत्रात्रासः। सुऽगोपाः॥११॥**

**पदार्थः**-**(ते)** **(नः)** अस्मान् **(इन्द्रः)** विद्युत् **(पृथिवी)** अन्तरिक्षम् **(क्षाम)** भूमिः **(वर्धन्)** वर्धयन्तु **(पूषा)** वायुः **(भगः)** भगवान् **(अदितिः)** जननी **(पञ्च, जनाः)** पञ्च प्राणा इवोत्तममनुष्याः। **पञ्चजना इति मनुष्यनाम।** (निघं०२.३) **(सुशर्माणः)** प्रशंसितगृहाः **(स्ववसः)** शोभनमवो येषान्ते **(सुनीथाः)** शोभनो नीथो न्यायो येषान्ते **(भवन्तु)** **(नः)** अस्माकम् **(सुत्रात्रासः)** सुष्ठुत्रातारः **(सुगोपाः)** सुष्ठु गवां धेनूनां पृथिव्यादीनां वा रक्षकाः॥११॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यतस्त इन्द्रः पृथिवी क्षाम पूषा भगोऽदितिः सुशर्माणः स्ववसः सुनीथाः पञ्च जनाः सन्ति ततो नो वर्धन्नः सुगोपाः सुत्रात्रासो भवन्तु॥११॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यतो विद्वांसो विद्युद्भूम्यन्तरिक्षप्राणैश्वर्य्यमातृवत् सर्वेषां वर्धकाः पालकाः सन्ति तस्मादेव पूज्या भवन्ति॥११॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जिससे **(ते)** वे **(इन्द्रः)** बिजुली **(पृथिवी)** अन्तरिक्ष **(क्षाम)** भूमि **(पूषा)** वायु **(भगः)** ऐश्वर्यवान् जन और **(अदितिः)** जन्म देने वाली माता के समान **(सुशर्माणः)** प्रशंसित घरों वाले **(स्ववसः)** जिन की सुन्दर रक्षा और **(सुनीथाः)** न्याय विद्यमान वे **(पञ्च, जनाः)** पांच प्राणों के समान उत्तम मनुष्य हैं, उससे **(नः)** हमको **(वर्धन्)** बढ़ावें और **(नः)** हमारे **(सुगोपाः)** सुन्दर गौ वा पृथिव्यादिकों के रक्षा करने वाले तथा **(सुत्रात्रासः)** उत्तमता से पालना करने वाले **(भवन्तु)** हों॥११॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जिससे विद्वान् जन बिजुली, भूमि, अन्तरिक्ष, प्राण, ऐश्वर्य और माता के तुल्य सब के बढ़ाने पालने वाले हैं, इसी से पूज्य होते हैं॥११॥

**पुनः के धन्यवादार्हाः सन्तीत्याह॥**

फिर कौन धन्यवाद के योग्य हैं, इस विषय को कहते हैं॥

**नू सद्मानं दिव्यं नंशि देवा भारद्वाजः सुमतिं याति होता।**

**आसानेभिर्यजमानो मियेधैर्देवानां जन्म वसूयुर्ववन्द॥१२॥**

**नु। सद्मानम्। दिव्यम्। नंशि। देवाः। भारत्ऽवाजः। सुऽमतिम्। याति। होता। आसानेभिः। यजमानः। मियेधैः। देवानाम्। जन्म। वसुऽयुः। ववन्द॥१२॥**

**पदार्थः**-(**नू**) सद्यः। अत्र **ऋचि तुनुघेति** दीर्घः। (**सद्मानम्**) यस्मिन् सीदति तम् (**दिव्यम्**) कमनीयम् (**नंशि**) व्याप्नोति (**देवाः**) विद्वांसः (**भारद्वाजः**) धृतविज्ञानः (**सुमतिम्**) शोभनां प्रज्ञाम् (**याति**) प्राप्नोति (**होता**) दाता (**आसानेभिः**) आसीनैर्ऋत्विग्भिस्सह (**यजमानः**) यज्ञकर्ता (**मियेधैः**) प्रेरकैः (**देवानाम्**) विदुषाम् (**जन्म**) प्रादुर्भावम् (**वसूयुः**) वसूनि द्रव्याणि कामयमानः (**ववन्द**) वन्दति प्रशंसति॥१२॥

**अन्वयः**-हे देवा विद्वांसो! यो भारद्वाजो होता सुमतिं याति स नू दिव्यं सद्मानं नंशि। यो वसूयुर्यजमानो मियेधैरासानेभिस्सह देवानां जन्म ववन्द तं यूयं सत्कुरुत॥१२॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! ये राज्ञो विद्याजन्मे प्रशंसन्ति ते शुद्धं सुखमाप्नुवन्ति यथा बहुभिर्विद्वद्भिस्सह यजमानो यज्ञमलङ्कृत्य सर्वं जगदुपकरोति तथैव विद्वांसोऽध्यापनोपदेशाभ्यां सर्वान् प्रज्ञान् कृत्वा प्रशंसा यान्ति॥१२॥

**पदार्थः**-हे (**देवा**) विद्वानो! जो (**भारद्वाजः**) विज्ञान को धारण किये (**होता**) देने वाला (**सुमतिम्**) शोभन बुद्धि को (**याति**) प्राप्त होता है वह (**नू**) शीघ्र (**दिव्यम्**) मनोहर (**सद्मानम्**) जिसमें स्थिर होता उस घर को (**नंशि**) व्याप्त होता है। जो (**वसूयुः**) द्रव्यों की कामना करने और (**यजमानः**) यज्ञ करने वाला (**मियेधैः**) प्रेरणा देनेवाले (**आसानेभिः**) बैठे हुए ऋत्विजों के साथ (**देवानाम्**) विद्वानों के (**जन्म**) उत्पन्न होने की (**ववन्द**) प्रशंसा करता है, उसका तुम सत्कार करो॥१२॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो राजा के विद्या और जन्म की प्रशंसा करते वे शुद्ध सुख को प्राप्त होते हैं, जैसे बहुत विद्वानों के साथ यज्ञ करने वाला यज्ञ को सुभूषित कर समस्त जगत् का उपकार करता है, वैसे ही विद्वान् जन पढ़ाने और उपदेशों से सब को प्राज्ञ (उत्तम ज्ञाता) कर प्रशंसा को प्राप्त होते हैं॥१२॥

**पुनः के दूरीकरणीया इत्याह॥**

फिर कौन दूर करने योग्य हैं, इस विषय को कहते हैं॥

**अप त्यं वृजिनं रिपुं स्तेनमग्ने दुराध्यम्।**



www.9009.co.in

**दुविष्ठमस्य सत्पते कृधी सुगम्॥ १३॥**

**अप। त्यम्। वृजिनम्। रिपुम्। स्तेनम्। अग्ने। दुःऽआध्यम्। दविष्ठम्। अस्य। सत्ऽपते। कृधि। सुऽगम्॥ १३॥**

**पदार्थः**-(**अप**) दूरीकरणे (**त्यम्**) तम् (**वृजिनम्**) वर्जनीयम् (**रिपुम्**) विद्याशत्रुम् (**स्तेनम्**) चोरम् (**अग्ने**) विद्वन् (**दुराध्यम्**) दुःखेन वशीकर्तुम् योग्यम् (**दविष्ठम्**) अतिशयेन दूरम् (**अस्य**) (**सत्पते**) सत्यस्य पालक (**कृधी**) कुरु। अत्र **द्व्यचोऽतस्तिङ** इति दीर्घः। (**सुगम्**) सुष्ठु गच्छति यस्मिँस्तम्॥ १३॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! त्वं दविष्ठं वृजिनं दुराध्यं रिपुं स्तेनं सुगं कृधी। हे सत्पते! त्वमस्याऽप नयनं कृधी॥ १३॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यूयं विद्यामभ्यस्य शरीरात्मबलयुक्ताः सन्तो दुस्साध्यानपि शत्रून् सुसाध्यान् कुरुत यतस्ते दूरस्था एव भयेन सद्धर्मानुष्ठाना भवेयुः॥ १३॥

**पदार्थः**-हे (**अग्ने**) विद्वन्! (**त्यम्**) उस (**दविष्ठम्**) अतीव दूर (**वृजिनम्**) त्यागने (**दुराध्यम्**) वा दुःख से वश में करने योग्य (**रिपुम्**) विद्याशत्रु (**स्तेनम्**) चोर को (**सुगम्**) सुगम (**कृधी**) करो, हे (**सत्पते**) सत्य के पालने वाले! आप (**अस्य**) इसका (**अप**) दूरीकरण करो॥ १३॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! तुम विद्या का अभ्यास कर शरीर और आत्मा के बल से युक्त होते हुए दुःसाध्य भी शत्रुओं को सुसाध्य अर्थात् उत्तमता से सूधे करो, जिससे वे दूर स्थित ही भय से सद्धर्म के अनुष्ठान करने वाले हों॥ १३॥

**पुनः केन सह मित्रतां कृत्वा के निवारणीया इत्याह॥**

फिर किससे मित्रता कर कौन दूर करने योग्य हैं, इस विषय को कहते हैं॥

**ग्रावाणः सोम नो हि कं सखित्वनाय वावशुः।**

**जही न्यत्रिणं पणिं वृको हि षः॥ १४॥**

**ग्रावाणः। सोम। नः। हि। कम्। सखिऽत्वनाय। वावशुः। जहि। नि। अत्रिणम्। पणिम्। वृकः। हि। सः॥ १४॥**

**पदार्थः**-(**ग्रावाणः**) मेघा इव (**सोम**) प्रेरक (**नः**) अस्मान् (**हि**) यतः (**कम्**) सुखम् (**सखित्वनाय**) सख्युर्भावाय (**वावशुः**) कामयन्ते (**जही**) अत्र **द्व्यचोऽतस्तिङ** इति दीर्घः। (**नि**) (**अत्रिणम्**) परस्वापहारकम् (**पणिम्**) व्यवहर्त्तारम् (**वृकः**) स्तेनः (**हि**) खलु (**सः**)॥ १४॥

**अन्वयः**-हे सोम! ये ग्रावाण इव सखित्वनाय नो हि वावशुस्ते कमाप्नुयुर्योऽत्रिणं पणिं सम्बध्नाति स हि वृकोऽस्तीत्येनं त्वं नि जही॥ १४॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यदि धर्मात्मानो विद्वांसो धर्मिष्ठैर्विद्वद्भिः सह मित्रत्वं रक्षन्ति तर्हि ते सततं सुखं प्राप्य मेघवत् सर्वान् वर्धयित्वा दुष्टाचारान् कितवादीन् सद्यो घ्नन्ति॥ १४॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-हे **(सोम)** प्रेरणा देने वाले! जो **(ग्रावाणः)** मेघों के समान **(सखित्वनाय)** मित्रपन के लिये **(नः)** हम लोगों को **(हि)** ही **(वावशुः)** चाहते हैं, वे **(कम्)** सुख को प्राप्त हों जो **(अत्रिणम्)** दूसरे का सर्वस्व हरने वाला **(पणिम्)** व्यवहारकर्त्ता का संबन्ध करता है **(सः, हि)** वही **(वृकः)** चोर है, इस हेतु से इसे आप **(नि, जही)** निरन्तर मारो॥१४॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। यदि धर्मात्मा विद्वान् जन धर्मिष्ठ विद्वानों के साथ मित्रता रखते हैं तो वे निरन्तर सुख को प्राप्त होकर मेघ के समान सबको बढ़ाके दुष्ट आचरण करने वाले छलियों को शीघ्र मारते हैं॥१४॥

**केऽत्राऽऽनन्ददाः सन्तीत्याह॥**

कौन इस संसार में आनन्द के देनेवाले हैं, इस विषय को कहते हैं॥

**यूयं हि ष्ठा सुदानव इन्द्रज्येष्ठा अभिद्यवः।**

**कर्ता नो अध्वन्ना सुगं गोपा अमा॥१५॥**

**यूयम्। हि। स्थ। सुऽदानवः। इन्द्रऽज्येष्ठाः। अभिऽद्यवः। कर्त। नः। अध्वन्। आ। सुऽगम्। गोपाः। अमा॥१५॥**

**पदार्थः**-**(यूयम्)** **(हि)** **(स्था)** तिष्ठत। अत्र **संहितायामिति** दीर्घः। **(सुदानवः)** उत्तमगुणदानाः **(इन्द्रज्येष्ठाः)** सूर्य्यो ज्येष्ठो महान् येषां लोकानां तद्वद्वर्त्तमानाः **(अभिद्यवः)** आभ्यान्तरे कामयमानाः प्रकाशवन्तः **(कर्त्ता)** कुरुत। अत्र **द्व्यचोऽतस्तिङ** इति दीर्घः। **(नः)** अस्मान् **(अध्वन्)** अध्वनि **(आ)** **(सुगम्)** सुष्ठु गच्छेयुर्यस्मिंस्तत् **(गोपाः)** रक्षकाः **(अमा)** गृहम्। **अमेति गृहनाम** (निघं०३.४)॥१५॥

**अन्वयः**-हे सुदानवो विद्वांस इन्द्रज्येष्ठा इवाऽभिद्यवो गोपा अध्वन्नः सुगममाऽऽकर्त्ता तत्र हि यूयं स्था॥१५॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। ये मनुष्या दुर्गमान् मार्गान् सुगमान् कुर्वन्ति उत्तमानि गृहाणि निर्माय स्वयमन्याँश्च तत्र निवासयन्ति, त एव जगति सुखकरा भवन्ति॥१५॥

**पदार्थः**-हे **(सुदानवः)** उत्तम गुणों के देने वाले विद्वानों! **(इन्द्रज्येष्ठाः)** सूर्यलोक महान् ज्येष्ठ जिन लोकों का उनके समान वर्त्तमान **(अभिद्यवः)** पदार्थज्ञान के भीतर प्रकाशमान **(गोपाः)** रक्षा करने वाले **(अध्वन्)** मार्ग में **(नः)** हम लोगों को तथा **(सुगम्)** सुन्दरता से जिसमें जाते **(अमा)** ऐसे घर को **(आ, कर्त्ता)** प्रकट करो उस **(हि)** ही घर में **(यूयम्)** तम **(स्था)** स्थित होओ॥१५॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो मनुष्य दुर्गम मार्गों को सुगम करते हैं और उत्तम घरों को बनाकर आप तथा औरों को निवास करते कराते हैं, वे ही जगत् में सुख करने वाले होते हैं॥१५॥

**पुनः कीदृशा मार्गा निर्मातव्या इत्याह॥**

फिर कैसे मार्ग सिद्ध करने चाहियें, इस विषय को कहते हैं॥

**अपि पन्थामगन्महि स्वस्तिगामनेहसम्।**



www.9009.co.in

**येन॒ विश्वा॒: परि॑ द्विषो॒ वृ॒णक्ति॒ वि॒न्दते॒ वसु॑॥१६॥१३॥**

**अपि॑। पन्था॑म्। अ॒ग॒न्म॒हि॒। स्व॒स्ति॒ऽगाम्। अ॒नेह॑सम्। येन॑। विश्वा॑:। परि॑। द्विष॑:। वृ॒णक्ति॑। वि॒न्दते॑। वसु॑॥१६॥**

**पदार्थः**-(**अपि**) (**पन्थाम्**) मार्गम् (**अगन्महि**) गच्छेम (**स्वस्तिगाम्**) सुखं गच्छन्ति यस्मिँस्तम् (**अनेहसम्**) अहन्तव्यम् (**येन**) (**विश्वाः**) सर्वाः (**परि**) (**द्विषः**) शत्रून् (**वृणक्ति**) दूरीकरोति (**विन्दते**) प्राप्नोति (**वसु**) द्रव्यम्॥१६॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! येन वीरो विश्वा द्विषः परि वृणक्ति वसु विन्दते तमनेहसं स्वस्तिगां पन्थां वयमप्यगन्महि॥१६॥

**भावार्थः**-राजादिमनुष्या ईदृशान् मार्गान् सृजन्तु येषु गच्छतां चोरभयं न स्याद् द्रव्यलाभश्च भवेदिति॥१६॥

अत्र विश्वेदेवकृत्यवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इत्येकपञ्चाशत्तमं सूक्तं त्रयोदशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! (**येन**) जिसको वीर जन (**विश्वाः**) सब (**द्विषः**) शत्रुओं को (**परि, वृणक्ति**) सब ओर से दूर करता और (**वसु**) धन को (**विन्दते**) प्राप्त होता है उस (**अनेहसम्**) न नष्ट करने योग्य और (**स्वस्तिगाम्**) जिसमें सुख को प्राप्त होते उस (**पन्थाम्**) मार्ग को हम लोग (**अपि**) भी (**अगन्महि**) प्राप्त हों॥१६॥

**भावार्थः**-राजादि मनुष्य ऐसे मार्गों को बनावें जिनमें जाते हुओं को चोरों का भय न हो और द्रव्य का लाभ भी हो॥१६॥

इस सूक्त में विश्वे देवों के कर्मों का वर्णन होने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह इक्यावनवां सूक्त और तेरहवां वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

**अथ सप्तदशर्चस्य द्विपञ्चाशत्तमस्य सूक्तस्य ऋजिष्वा ऋषिः। विश्वेदेवा देवताः। १, ४, १५, १६ निचृत्त्रिष्टुप्। २, ३,६, १३, १७ त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः। ५ भुरिक्पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः। ७, ८, ११ गायत्री। ९, १०, १२ निचृद्गायत्री छन्दः। षड्जः स्वरः। १४ विराड्जगती छन्दः। निषादः स्वरः॥**

***अथ केनाऽधिकं सुखं जायत इत्याह॥***

अब सत्रह ऋचावाले बावनवें सूक्त का प्रारम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में किस से अधिक सुख होता है, इस विषय को कहते हैं॥

**न तद्दिवा न पृथिव्यानु मन्ये न यज्ञेन नोत शमीभिराभिः।**
**उब्जन्तु तं सुभ्व१ः पर्वतासो नि हीयतामतियाजस्य यष्टा॥ १॥**

**न। तत्। दिवा। न। पृथिव्या। अनु। मन्ये। न। यज्ञेन। न। उत। शमीभिः। आभिः। उब्जन्तु। तम्। सुऽभ्वः। पर्वतासः। नि। हीयताम्। अतिऽयाजस्य। यष्टा॥ १॥**

**पदार्थः**-(**न**) (**तत्**) (**दिवा**) दिवसे (**न**) (**पृथिव्या**) भूम्या (**अनु**) (**मन्ये**) (**न**) (**यज्ञेन**) होमादिना (**न**) (**उत**) (**शमीभिः**) कर्मभिः (**आभिः**) क्रियाभिः (**उब्जन्तु**) कुटिलं कुर्वन्तु (**तम्**) (**सुभ्वः**) ये सुष्ठु भवन्ति (**पर्वतासः**) मेघाः (**नि**) (**हीयताम्**) त्यज्यताम् (**अतिवाजस्य**) योऽतिशयेन यष्टुं योग्यस्य यज्ञस्य (**यष्टा**) सङ्गन्ता॥ १॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथा सुभ्वः पर्वतासस्तमुब्जन्तु तथा योऽतियाजस्य यष्टा वर्त्तते स तद्दिवा न नि हीयतां न पृथिव्यां न यज्ञेन नोताऽऽभिर्न शमीभिर्हीयतामहमनु मन्ये॥ १॥

**भावार्थः**-यत्सुखं मेघैर्जायते तत्सुखं न दिवसे न पृथिव्या न सङ्गत्या न कर्मणा भवति तस्माद्यजमानो हि सुखभाग्भवति॥ १॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे (**सुभ्वः**) जो अच्छे होते हैं, वे (**पर्वतासः**) मेघ (**तम्**) उसको (**उब्जन्तु**) कुटिल करें, वैसे (**अतियाजस्य**) जो अतीव यज्ञ करने योग्य है उसका (**यष्टा**) सङ्ग करने वाला वर्त्तमान है वह (**तत्**) उस कारण से (**दिवा**) दिन में (**न**) न (**नि, हीयताम्**) छोड़ने योग्य है (**न**) न (**पृथिव्या**) भूमि से (**न**) न (**यज्ञेन**) होम आदि कर्म से (**न**) न (**उत**) और (**आभिः**) क्रियाओं से वा (**शमीभिः**) कर्मों से छोड़ने योग्य है, उसे मैं (**अनु, मन्ये**) अनुकूलता से मानता हूँ॥ १॥

**भावार्थः**-जो सुख मेघों से उत्पन्न होता है, वह सुख न दिवस में, न पृथिवी, न सङ्गति, न कर्म से होता है, इससे यज्ञ करने वाला ही सुखभागी होता है॥ १॥

**पुनः के मनुष्या निन्द्या वर्ज्जनीयाश्च सन्तीत्याह॥**



www.9009.co.in

फिर कौन मनुष्य निन्दा करने और वर्जने योग्य हैं, इस विषय को कहते हैं॥

**अति॑ वा॒ यो म॑रुतो॒ मन्य॑ते नो॒ ब्रह्म॑ वा॒ यः क्रि॒यमा॑णं॒ निनि॑त्सात्।**

**तपूं॑षि॒ तस्मै॑ वृजि॒नानि॑ सन्तु ब्रह्म॒द्विष॑म॒भि तं शो॑चतु॒ द्यौः॥२॥**

**अति॑। वा॒। य॒ः। म॒रु॒तः॒। मन्य॑ते। न॒ः। ब्रह्म॑। वा॒। यः। क्रि॒यमा॑णम्। निनि॑त्सात्। तपूं॑षि। तस्मै॑। वृ॒जि॒नानि॑। स॒न्तु॒। ब्र॒ह्म॒ऽद्विष॑म्। अ॒भि। तम्। शो॒च॒तु॒। द्यौः॥२॥**

**पदार्थः**-(**अति**) (**वा**) (**यः**) (**मरुतः**) मनुष्याः (**मन्यते**) (**नः**) अस्मान् (**ब्रह्म**) धनम् (**वा**) (**यः**) (**क्रियमाणम्**) (**निनित्सात्**) निन्दितुमिच्छेत् (**तपूंषि**) तेजोमयानि (**तस्मै**) (**वृजिनानि**) बाधकानि (**सन्तु**) (**ब्रह्मद्विषम्**) धनस्य द्वेष्टारम् (**अभि**) (**तम्**) (**शोचतु**) (**द्यौः**) कामयमानो विद्वान्॥२॥

**अन्वयः**-हे मरुतो! यो नोऽस्मानति मन्यते वा यः क्रियमाणं ब्रह्माऽति मन्यते वा निनित्सात् तं ब्रह्मद्विषं द्यौरभि शोचतु तस्मै तपूंषि वृजिनानि सन्तु॥२॥

**भावार्थः**-हे विद्वांसो! ये मनुष्या अतिमानं धनादिद्वेषमाप्तनिन्दाञ्च कुर्वन्ति ते दण्डनीया निन्दनीयाः शोचनीयाश्च सन्ति॥२॥

**पदार्थः**-हे (**मरुतः**) मनुष्यो! (**यः**) जो (**नः**) हम लोगों को (**अति, मन्यते**) अत्यन्त मानता है (**वा**) वा (**यः**) जो (**क्रियमाणम्**) क्रियमाण (**ब्रह्म**) धन को अत्यन्त मानता है (**वा**) वा (**निनित्सात्**) निन्दा करने को चाहे (**तम्**) उस (**ब्रह्मद्विषम्**) धन के द्वेषीजन को (**द्यौः**) कामना करता हुआ विद्वान् (**अभि, शोचतु**) सब ओर से शोचे (**तस्मै**) इसके लिये (**तपूंषि**) तेजोमय व्यवहार (**वृजिनानि**) बाधक (**सन्तु**) हों॥२॥

**भावार्थः**-हे विद्वानो! जो मनुष्य अतिमान, धनादिकों से द्वेष और अच्छे सज्जनों की निन्दा करते हैं, वे दण्ड देने, निन्दा करने और शोक करने योग्य होते हैं॥२॥

**पुनर्मनुष्याः कीदृक् परीक्षकाः स्युरित्याह॥**

फिर मनुष्य कैसे परीक्षक हों, इस विषय को कहते हैं॥

**किम॒ङ्ग त्वा॒ ब्रह्म॑णः सोम गो॒पां किम॒ङ्ग त्वा॑हुरभिशस्ति॒पां न॑ः।**

**किम॒ङ्ग न॑ः पश्यसि नि॒द्यमा॑नान् ब्रह्म॒द्विषे॒ तपु॑षिं हे॒तिम॑स्य॥३॥**

**किम्। अ॒ङ्ग। त्वा॒। ब्रह्म॑णः। सो॒म॒। गो॒पाम्। किम्। अ॒ङ्ग। त्वा॒। आ॒हु॒ः। अ॒भि॒श॒स्ति॒ऽपाम्। न॒ः। किम्। अ॒ङ्ग। न॒ः। प॒श्य॒सि॒। नि॒द्यमा॑नान्। ब्र॒ह्म॒ऽद्विषे॑। तपु॑षिम्। हे॒तिम्। अ॒स्य॒॥३॥**

**पदार्थः**-(**किम्**) (**अङ्ग**) मित्र (**त्वा**) त्वाम् (**ब्रह्मणः**) धनस्य (**सोम**) ऐश्वर्यमिच्छो (**गोपाम्**) रक्षकम् (**किम्**) (**अङ्ग**) सखे (**त्वा**) त्वाम् (**आहुः**) कथयन्तु (**अभिशस्तिपाम्**) अभिमुखप्रशंसारक्षितारम् (**नः**) अस्मान् (**किम्**) (**अङ्ग**) (**नः**) अस्मान् (**पश्यसि**) (**निद्यमानान्**) प्राप्तनिन्दान् (**ब्रह्मद्विषे**) वेदविद्याद्वेष्ट्रे (**तपुषिम्**) प्रतप्तम् (**हेतिम्**) वज्रम् (**अस्य**)॥३॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे अङ्ग सोम! किं त्वा ब्रह्मणो गोपामाहुः। हे अङ्ग! किं त्वाऽभिशस्तिपामाहुः। हे अङ्ग! त्वं नः किं पश्यसि। हे अङ्ग! त्वं निद्यमानान्नः किं पश्यसि। ब्रह्मद्विषे तपुषिं हेतिं किं न पश्यसि। अस्योपरि वज्रप्रहारं कुर्य्याः॥३॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यूयमस्य धनस्य गोप्तारः किमर्थं न भवथ स्तावकानस्मान्निन्दकान् भ्रमेण मा पश्यत, ये हि धनेश्वरवेदविद्यां द्विषन्ति तेषां सङ्गं युद्धमन्तरा मा कुरुत॥३॥

**पदार्थः**-हे **(अङ्ग)** मित्र **(सोम)** ऐश्वर्य की इच्छा करने वाले जन! **(किम्)** क्या **(त्वा)** तुझे **(ब्रह्मणः)** धन का **(गोपाम्)** रक्षा करने वाला **(आहुः)** कहें। हे **(अङ्ग)** मित्र! **(किम्)** क्या **(त्वा)** तुझे **(अभिशस्तिपाम्)** सामने प्रशंसा रखने वाले कहते हैं। हे **(अङ्ग)** सखे मित्र! तू **(नः)** हम लोगों को **(किम्)** क्या **(पश्यसि)** देखता है। हे मित्र तू **(निद्यमानान्)** निन्दा प्राप्त **(नः)** लोगों को क्या देखता है **(ब्रह्मद्विषे)** वेदविद्या द्वेषी जन के लिये **(तपुषिम्)** अति तपे हुए **(हेतिम्)** वज्र को क्या नहीं देखता **(अस्य)** इस पर वज्र प्रहार कर॥३॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! तुम इस धन के रक्षक क्यों नहीं होते हो, स्तुति (प्रशंसा) करने वाले हम लोगों को निन्दा करने वाले भ्रम से मत देखो, निश्चय धनपति तथा वेदविद्या से द्वेष करते हैं, उनका सङ्ग युद्ध विना मत करो॥३॥

**पुनर्मनुष्यैः कथमाचरणीयमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को कैसा आचरण करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**अव॑न्तु मामु॒षसो॒ जाय॑माना अव॑न्तु मा॒ सिन्ध॑वः॒ पिन्व॑मानाः।**
**अव॑न्तु मा॒ पर्व॑तासो ध्रु॒वासोऽव॑न्तु मा पि॒तरो॑ दे॒वहू॑तौ॥४॥**

**अव॑न्तु। माम्। उ॒षसः॑। जाय॑मानाः। अव॑न्तु। मा॒। सिन्ध॑वः। पिन्व॑मानाः। अव॑न्तु। मा॒। पर्व॑तासः। ध्रु॒वासः॑। अव॑न्तु। मा॒। पि॒तरः॑। दे॒वऽहू॑तौ॥४॥**

**पदार्थः**-**(अवन्तु)** रक्षन्तु **(माम्)** **(उषसः)** प्रभातवेलाः **(जायमानाः)** उत्पद्यमानाः **(भवन्तु)** **(मा)** माम् **(सिन्धवः)** नद्यः **(पिन्वमानाः)** सिञ्चन्त्यः **(अवन्तु)** **(मा)** माम् **(पर्वतासः)** शैलाः **(ध्रुवासः)** निश्चलाः **(अवन्तु)** **(मा)** माम् **(पितरः)** जनका अध्यापका ऋतवो वा **(देवहूतौ)** दिव्यगुणानां विदुषां वा सङ्ग्रहणे॥४॥

**अन्वयः**-हे उपदेष्टारो! यूयं देवहूतौ यथा जायमाना उषसो मामवन्तु पिन्वमानाः सिन्धवो माऽवन्तु ध्रुवासः पर्वतासो माऽवन्तु पितरो माऽवन्तु तथा शिक्षत॥४॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यूयमेवं युक्ताहारविहारं कुर्यात येन सर्वे सृष्टिस्थाः पदार्था दुःखप्रदा न स्युः शुभान् गुणांश्च यूयं प्राप्नुत॥४॥

**पदार्थः**-हे उपदेश करने वालो! तुम **(देवहूतौ)** दिव्यगुण वा विद्वानों के सङ्ग्रह में जैसे **(जायमानाः)** उत्पद्यमान **(उषसः)** प्रभातवेलाएं **(माम्)** मेरी **(अवन्तु)** रक्षा करें तथा **(पिन्वमानाः)** सेवन



www.9009.co.in

करती हुई **(सिन्धवः)** नदियां **(मा)** मेरी **(अवन्तु)** रक्षा करें और **(ध्रुवासः)** निश्चल **(पर्वतासः)** शैल पहाड़ **(मा)** मेरी **(अवन्तु)** रक्षा करें और **(पितरः)** पिता वा पढ़ाने वाला वा ऋतु वसन्त आदि **(मा)** मेरी **(अवन्तु)** रक्षा करें, वैसी शिक्षा करो॥४॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! तुम इस प्रकार युक्त आहार-विहार करो, जिससे सब सृष्टिस्थ पदार्थ दुःख देने वाले न हों और शुभ गुणों को तुम लोग प्राप्त होओ॥४॥

**पुनर्मनुष्याः किं कुर्य्युरित्याह॥**

फिर मनुष्य क्या करें, इस विषय को कहते हैं॥

**विश्वऽदानीं सुमनसः स्याम पश्येम नु सूर्यमुच्चरन्तम्।**

**तथा करद्वसुपतिर्वसूनां देवाँ ओहानोऽवसागमिष्ठः॥५॥१४॥**

**विश्वऽदानीम्। सुऽमनसः। स्याम। पश्येम। नु। सूर्यम्। उत्ऽचरन्तम्। तथा। करत्। वसुऽपतिः। वसूनाम्। देवान्। ओहानः। अवसा। आऽगमिष्ठः॥५॥**

**पदार्थः**-**(विश्वदानीम्)** सर्वदा **(सुमनसः)** प्रसन्नचित्ताः **(स्याम)** **(पश्येम)** **(नु)** सद्यः **(सूर्य्यम्)** **(उच्चरन्तम्)** ऊर्ध्वं प्राप्नुवन्तम् **(तथा)** **(करत्)** कुर्यात् **(वसुपतिः)** वसूनां पदार्थानां पालकः **(वसूनाम्)** **(देवान्)** विदुषः **(ओहानः)** रक्षकः **(अवसा)** रक्षणादिना **(आगमिष्ठः)** अतिशयेनाऽऽगन्ता॥५॥

**अन्वयः**-हे विद्वन्नवसाऽऽगमिष्ठो वसूनां वसुपतिरोहानो भवान् यथाऽस्मान् देवान् करत् तथा वयं विश्वदानीं सूर्य्यमुच्चरन्तं पश्येम नु सुमनसः स्याम॥५॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। यथा प्रीत्याऽध्यापकोपदेशका विद्यार्थिनः श्रोतॄंश्च विदुषः कृत्वा सुखिनः कुर्वन्ति तथैवाऽध्येतृभिः श्रोतृभिश्च विद्वांसो भूत्वाप्येते सदा सत्करणीयाः॥५॥

**पदार्थः**-हे विद्वन्! **(अवसा)** रक्षा आदि के साथ **(आगमिष्ठः)** अतीव आने और **(वसूनाम्)** वसुओं के बीच **(वसुपतिः)** पदार्थों की पालना करने वाले और **(ओहानः)** रक्षक आप जैसे हम लोगों को **(देवान्)** विद्वान् **(करत्)** करें **(तथा)** वैसे हम लोग **(विश्वदानीम्)** सर्वदा **(सूर्य्यम्)** सूर्यमण्डल जो **(उच्चरन्तम्)** ऊपर को चढ़ता है उसे **(पश्येम)** देखें और **(नु)** शीघ्र **(सुमनसः)** प्रसन्नचित्त **(स्याम)** होवें॥५॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जैसे प्रीति से अध्यापक और उपदेशक विद्यार्थियों को और उपदेश सुनने वालों को विद्वान् करके सुखी करते हैं, वैसे ही पढ़ने वालों और उपदेश सुनने वालों को चाहिये कि विद्वान् होकर भी इनका सदा सत्कार करें॥५॥

**पुनः स राजा कीदृशो भवेदित्याह॥**

फिर वह राजा कैसा हो, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**इन्द्रो नेदिष्ठमवसागमिष्ठः सरस्वती सिन्धुभिः पिन्वमाना।**



www.9009.co.in

**पुर्जन्यो न ओषधीभिर्मयोभुरग्निः सुशंसः सुहवः पितेव॥६॥**

**इन्द्रः। नेदिष्ठम्। अवसा। आऽगमिष्ठः। सरस्वती। सिन्धुऽभिः। पिन्वमाना। पुर्जन्यः। नः। ओषधीभिः। मुयःऽभुः। अग्निः। सुऽशंसः। सुऽहवः। पिताऽइव॥६॥**

**पदार्थः**-(**इन्द्रः**) परमैश्वर्यवान् (**नेदिष्ठम्**) अतिशयेन समीपम् (**अवसा**) रक्षणादिना (**आगमिष्ठः**) अतिशयेनागन्ता (**सरस्वती**) प्रशस्तं सरो वेगो यस्याः सा नदी (**सिन्धुभिः**) नदीभिः (**पिन्वमाना**) संयुक्ता (**पर्जन्यः**) मेघः (**नः**) अस्मान् (**ओषधीभिः**) (**मयोभुः**) सुखंभावुकः (**अग्निः**) वह्निरिव (**सुशंसः**) शोभनस्तुतिः (**सुहवः**) शोभनो हवस्सत्कारो यस्य (**पितेव**) जनक इव॥६॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! योऽवसा नेदिष्ठमागमिष्ठः सिन्धुभिः पिन्वमाना सरस्वतीव सुशंसः सुहवोऽग्निरिवौषधीभिः पर्जन्यो मयोभुरिव पितेवेन्द्रो नः पालयति स राजाऽस्माभिः सततं सत्कर्त्तव्यः॥६॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। यो राजा न्यायपुरुषार्थाभ्यां प्रजाः सततं रक्षति तं प्रजाः पितरमिव पालयन्ति॥६॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो (**अवसा**) रक्षा आदि से (**नेदिष्ठम्**) अतीव समीप को (**आगमिष्ठः**) अतीव आने वाला वा (**सिन्धुभिः**) नदियों से (**पिन्वमाना**) संयुक्त (**सरस्वती**) प्रशंसित सरस् वेग जिसका उस नदी के समान (**सुशंसः**) शोभन तथा (**सुहवः**) शोभन सत्कार वाले (**अग्निः**) अग्नि के समान (**ओषधिभिः**) ओषधियों से युक्त (**पर्जन्यः**) मेघ (**मयोभुः**) सुख हुवाने तथा (**पितेव**) जन्म देने वाले पिता के समान (**इन्द्रः**) परमैश्वर्यवान् राजा (**नः**) हम लोगों को पालना करता है, वह राजा हम लोगों से निरन्तर सत्कार करने योग्य है॥६॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जो राजा न्याय और पुरुषार्थ से प्रजा की निरन्तर रक्षा करता है, उसकी पिता के समान प्रजाजन पालना करते हैं॥६॥

**पुनरध्येतृभिः किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

फिर पढ़ने वालों को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**विश्वे देवास आ गत शृणुता म इमं हवम्। एदं बर्हिनि षीदत॥७॥**

**विश्वे। देवासः। आ। गत। शृणुत। मे। इमम्। हवम्। आ। इदम्। बर्हिः। नि। सीदत॥७॥**

**पदार्थः**-(**विश्वे**) सर्वे (**देवासः**) विद्वांसः (**आ**) (**गत**) आगच्छत (**शृणुता**) अत्र **संहितायामि**ति दीर्घः। (**मे**) मम विद्यार्थिनः (**इमम्**) वर्त्तमाने पठितम् (**हवम्**) श्रुताधीतविषयम् (**आ**) (**इदम्**) वर्त्तमानम् (**बर्हिः**) उत्तमासनम् (**नि**) नितराम् (**सीदत**) आसीना भवत॥७॥

**अन्वयः**-हे विश्वे देवासो! यूयमस्माकं नेदिष्ठमा गत, इदं बर्हिर्नि षीदत म इमं हवमा शृणुता॥७॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-अत्र नेदिष्ठमितिपदं पूर्वमन्त्रादनुवर्त्तते॥ विद्यार्थिभिः परीक्षकान् विदुषः प्रार्थ्य परीक्षायां नियोज्यः सर्वः श्रुताऽधीतविषयस्तत्समीपे निवेदनीयस्ते च सम्यक् परीक्ष्य गुणदोषानुपदिशेयुरेवं कृते सत्यध्ययनं निर्दोषं स्यात्॥७॥

**पदार्थः**-हे **(विश्वे, देवासः)** सब विद्वानो! तुम हमारे अति समीप **(आ, गत)** आओ तथा **(इदम्)** इस **(बर्हिः)** उत्तम आसन पर **(नि, सीदत)** निरन्तर स्थिर होओ तथा **(मे)** मुझ विद्यार्थी के **(इमम्)** इस **(हवम्)** सुने पढ़े विषय को **(आ, शृणुता)** अच्छे प्रकार सुनो॥७॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में 'नेदिष्ठम्' यह पद पिछले मन्त्र से अनुवृत्ति में आता है॥ विद्यार्थियों को चाहिये कि परीक्षा करने वाले विद्वानों की प्रार्थना कर परीक्षा में सुनाने योग्य समस्त सुना और पढ़ा विषय उनके समीप में निवेदन करें तथा वे परीक्षक भी अच्छे प्रकार परीक्षा कर गुण और दोषों का उपदेश दें, ऐसा करने पर पढ़ना निर्दोष हो॥७॥

**पुनरध्यापकाऽध्येतारः परस्परं कथं वर्तेरन्नित्याह॥**

फिर अध्यापक और अध्ययन करने वाले परस्पर कैसे वर्त्ताव करें, इस विषय को कहते हैं॥

**यो वो देवा घृतस्नुना हव्येन प्रतिभूषति। तं विश्व उप गच्छथ॥८॥**

**यः। वः। देवाः। घृतऽस्नुना। हव्येन। प्रतिऽभूषति। तम्। विश्वे। उप। गच्छथ॥८॥**

**पदार्थः**-**(यः)** **(वः)** युष्मान् **(देवाः)** अध्यापकोपदेष्टारः **(घृतस्नुना)** घृतमिव शुद्धेन **(हव्येन)** आदातुं दातुमर्हेण प्रशंसितेनाऽध्ययनेन श्रवणेन वा **(प्रतिभूषति)** प्रत्यक्षतयाऽलङ्करोति **(तम्)** **(विश्वे)** सर्वे **(उप)** **(गच्छथ)**॥८॥

**अन्वयः**-हे देवा! यो घृतस्नुना हव्येन वः प्रतिभूषति तं विश्वे यूयमुप गच्छथ॥८॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यः सत्येन विद्यादानेन सर्वान् युष्मान् भूषयति तं यूयं प्रतिभूषत॥८॥

**पदार्थः**-हे **(देवाः)** पढ़ाने और उपदेश करने वाले विद्वानो! **(यः)** जो **(घृतस्नुना)** घृत के समान शुद्ध **(हव्येन)** लेने-देने योग्य वा प्रशंसित पढ़ने और सुनने से **(वः)** तुम लोगों को **(प्रतिभूषति)** प्रत्यक्षता से सुभूषित करता है **(तम्)** उसके **(विश्वे)** सब तुम लोग **(उप, गच्छथ)** समीप प्राप्त होओ॥८॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो सत्य विद्यादान से सब तुम लोगों को सुभूषित करता है, उसे तुम सब प्रतिभूषित करो अर्थात् बदले में सुशोभित करो॥८॥

**पुनर्मनुष्यैः कीदृशो नियमः कर्त्तव्य इत्याह॥**

फिर मनुष्यों को कैसा नियम करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**उप नः सूनवो गिरः शृण्वन्त्वमृतस्य ये। सुमृळीका भवन्तु नः॥९॥**

**उप। नः। सूनवः। गिरः। शृण्वन्तु। अमृतस्य। ये। सुऽमृळीकाः। भवन्तु। नः॥९॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**उप**) (**नः**) अस्माकम् (**सूनवः**) अपत्यानि (**गिरः**) विद्यायुक्ता वाचः (**शृण्वन्तु**) (**अमृतस्य**) नाशरहितस्य विज्ञानस्य (**ये**) (**सुमृळीकाः**) सुष्ठु सुखिनः (**भवन्तु**) (**नः**) अस्मान्॥९॥

**अन्वयः**-हे राजन्विद्वांसो वा! ये नः सूनवः स्युस्तेऽमृतस्य गिर उप शृण्वन्तु सुमृळीका भूत्वा नः सेवका भवन्तु॥९॥

**भावार्थः**-पितृभी राजनीतौ स्वकुले वाऽयं दृढो नियमः कर्त्तव्यो यावन्त्यस्माकमपत्यानि स्युस्तावन्ति ब्रह्मचर्येण समस्तविद्याग्रहणाय ब्रह्मचर्यं कुर्य्युर्योऽस्य विच्छेदं कुर्यात्तं राजा कुलीनाश्च भृशं दण्डयेयुः॥९॥

**पदार्थः**-हे राजन् वा विद्वानो! (**ये**) जो (**नः**) हमारे (**सूनवः**) सन्तान हों वे (**अमृतस्य**) नाशरहित विज्ञान की (**गिरः**) विद्यायुक्त वाणियों को (**उप, शृण्वन्तु**) समीप में सुनें तथा (**सुमृळीकाः**) सुन्दर सुख वाले होकर (**नः**) हमारी सेवा करने वाले (**भवन्तु**) हों॥९॥

**भावार्थः**-पितृजनों को राजनीति वा अपने कुल में यह दृढ़ नियम करना चाहिये कि जितने हमारे सन्तान हैं, वे ब्रह्मचर्य्य से विद्याओं के समस्त ग्रहण के लिये ब्रह्मचर्य्य आश्रम को करें, जो इसका विनाश करे उसे राजा वा कुलीन निरन्तर दण्ड देवें॥९॥

**पुनर्मनुष्याः किमुशित्वा विद्याः प्राप्नुयुरित्याह॥**

फिर मनुष्य क्या कामना कर विद्याओं को प्राप्त होवें, इस विषय को कहते हैं॥

**विश्वे॑ दे॒वा ऋ॑ता॒वृध॑ ऋ॒तुभि॑र्हवन॒श्रुत॑:। जु॒षन्तां॒ युज्यं॒ पय॑:॥१०॥१५॥**

**विश्वे॑। दे॒वाः। ऋ॒त॒ऽवृध॑:। ऋ॒तुऽभि॑:। ह॒व॒न॒ऽश्रुत॑:। जु॒षन्ता॑म्। युज्य॑म्। पय॑:॥१०॥**

**पदार्थः**-(**विश्वे**) सर्वे (**देवाः**) विद्वांसः (**ऋतावृधः**) सत्यविद्यावर्धकाः (**ऋतुभिः**) वसन्तादिभिः (**हवनश्रुतः**) ये हवनमध्ययनं शृण्वन्ति ते (**जुषन्ताम्**) (**युज्यम्**) समाधातुमर्हम् (**पयः**) दुग्धमुदकमन्नं वा। **पय इत्युदकनाम॥** (निघं०१.१२) **अन्ननाम च** (निघं०२.७)॥१०॥

**अन्वयः**-हे ऋतावृधो हवनश्रुतो विश्वे देवा! भवन्त ऋतुभिर्युज्यं पयो जुषन्ताम्॥१०॥

**भावार्थः**-येऽध्येतुं परीक्षयितुं चेच्छेयुस्ते मादककुत्सितबुद्धिनाशकानि द्रव्याणि त्यक्त्वा पय आदीनि बुद्धिवर्द्धकानि सेवेरन्॥१०॥

**पदार्थः**-हे (**ऋतावृधः**) सत्य विद्या के बढ़ाने वालो (**हवनश्रुतः**) जो अध्ययन को सुनते हैं, वे (**विश्वे, देवाः**) सब विद्वान्! आप लोग (**ऋतुभिः**) वसन्तादिकों के साथ (**युज्यम्**) समाधान करने योग्य (**पयः**) दूध, जल वा अन्न को (**जुषन्ताम्**) सेवें॥१०॥

**भावार्थः**-जो अध्ययन करने और परीक्षा कराने को चाहें वे मद करने, कुत्सित बुद्धि वा नाश करने वाले पदार्थों को छोड़ के दुग्ध आदि बुद्धि के बढ़ाने वाले उत्तम पदार्थों को सेवें॥१०॥

**पुनर्मनुष्याः केन सह किं कुर्य्युरित्याह॥**



www.9009.co.in

फिर मनुष्य किसके साथ क्या करें, इस विषय को कहते हैं॥

**स्तोत्रमिन्द्रो मरुद्गणस्त्वष्टृमान्मित्रो अर्यमा। इमा हव्या जुषन्त नः॥ ११॥**

**स्तोत्रम्। इन्द्रः। मरुत्ऽगणः। त्वष्टृऽमान्। मित्रः। अर्यमा। इमा। हव्या। जुषन्त। नः॥ ११॥**

**पदार्थः**-(**स्तोत्रम्**) स्तुवन्ति येन तत् (**इन्द्रः**) परमैश्वर्य्यवान् राजा (**मरुद्गणः**) मरुतामुत्तमानां मनुष्याणां गणः समूहो यस्य (**त्वष्टृमान्**) त्वष्टार उत्तमाः शिल्पिनो विद्यन्ते यस्य सः (**मित्रः**) सर्वस्य सुहृत् (**अर्यमा**) न्यायकारी (**इमा**) इमानि (**हव्या**) दातुमादातुमर्हाण्यन्नादीनि (**जुषन्त**) सेवन्ताम् (**नः**) अस्माकम्॥ ११॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! भवन्तो यो मरुद्गणस्त्वष्टृमान् मित्रोऽर्यमेन्द्रो भवेत्तेन सह न स्तोत्रमिमा हव्या च जुषन्त॥ ११॥

**भावार्थः**-त एव मनुष्या इष्टानि प्राप्तुं शक्नुवन्ति ये सर्वेभ्यः श्रेष्ठं पुरुषमधिष्ठातारं कुर्वन्ति॥ ११॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! आप जो (**मरुद्गणः**) जिसके उत्तम मनुष्यों का समूह और (**त्वष्टृमान्**) उत्तम शिल्पीजन विद्यमान हैं तथा (**मित्रः**) जो कि सबका मित्र (**अर्यमा**) न्याय करने वाला और (**इन्द्रः**) परमैश्वर्यवान् राजा हो उसके साथ (**नः**) हमारे (**स्तोत्रम्**) उस स्तोत्र को जिससे स्तुति करते हो और (**इमा**) इन (**हव्या**) लेने-देने योग्य अन्नादि पदार्थों को (**जुषन्त**) सेवो॥ ११॥

**भावार्थः**-वे ही मनुष्य चाहे हुए पदार्थों को पा सकते हैं, जो सब के लिये श्रेष्ठ पुरुष को अधिष्ठाता करते हैं॥ ११॥

**पुनर्मनुष्याः कीदृशं राजानं कुर्य्युरित्याह॥**

फिर मनुष्य कैसे राजा को करें, इस विषय को कहते हैं॥

**इमं नो अग्ने अध्वरं होतर्वयुनशो यज। चिकित्वान् दैव्यं जनम्॥ १२॥**

**इमम्। नः। अग्ने। अध्वरम्। होतः। वयुनऽशः। यज। चिकित्वान्। दैव्यम्। जनम्॥ १२॥**

**पदार्थः**-(**इमम्**) (**नः**) अस्माकम् (**अग्ने**) पावक इव वर्त्तमान (**अध्वरम्**) अहिंसनीयं न्यायव्यवहारम् (**होतः**) दातः (**वयुनशः**) प्रज्ञानेन (**यज**) सङ्गच्छस्व (**चिकित्वान्**) ज्ञानवान् (**दैव्यम्**) विद्वद्भिः सत्कृतम् (**जनम्**) शुभाचरणैः प्रसिद्धम्॥ १२॥

**अन्वयः**-हे होतरग्ने! वयुनशो न इममध्वरं चिकित्वांस्त्वं दैव्यं जनं यज॥ १२॥

**भावार्थः**-हे राजप्रजाजन! त्वं योऽस्माकं मध्ये शुभगुणकर्मस्वभावयुक्तः स्यात्तमेव राज्यकरणे सङ्गतं कुरु॥ १२॥

**पदार्थः**-हे (**होतः**) देने वाले (**अग्ने**) अग्नि के समान वर्त्तमान राजन्! आप (**वयुनशः**) उत्तम ज्ञान से (**नः**) हमारे (**इमम्**) इस (**अध्वरम्**) न नष्ट करने योग्य न्याय व्यवहार को (**चिकित्वान्**) जानने



www.9009.co.in

योग्य वाले आप **(दैव्यम्)** विद्वानों से सत्कार को प्राप्त हुए **(जनम्)** शुभाचरणों से प्रसिद्ध जन को **(यज)** अच्छे प्रकार प्राप्त हों॥१२॥

**भावार्थ:**-हे राजा प्रजाजन! आप जो हमारे बीच शुभ गुणकर्मस्वभावयुक्त हो, उसी को राज्य करने में अच्छे प्रकार युक्त करो॥१२॥

**पुनर्मनुष्यैः क आहूय सत्कर्त्तव्या इत्याह॥**

फिर मनुष्यों को कौन बुला कर सत्कार करने योग्य हैं, इस विषय को कहते हैं॥

**विश्वे॑ देवाः शृणुतेमं हवं॑ मे॒ ये अ॒न्तरि॑क्षे॒ य उप॒ द्यवि॒ ष्ठ।**

**ये अ॑ग्निजि॒ह्वा उ॒त वा॒ यज॑त्रा आ॒सद्या॒स्मिन् ब॒र्हिषि॑ मादयध्वम्॥१३॥**

**विश्वे॑। दे॒वाः॒। शृ॒णु॒त॒। इ॒मम्। हव॑म्। मे॒। ये। अ॒न्तरि॑क्षे। ये। उप॑। द्यवि॑। स्थ। ये। अ॒ग्नि॒ऽजि॒ह्वाः। उ॒त। वा॒। यज॑त्राः। आ॒ऽसद्य॑। अ॒स्मिन्। ब॒र्हिषि॑। मा॒द॒य॒ध्व॒म्॥१३॥**

**पदार्थ:**-**(विश्वे)** सर्वे **(देवाः)** विद्वांसः **(शृणुत)** **(इमम्)** **(हवम्)** श्रुताधीतज्ञातविषयम् **(मे)** मम **(ये)** **(अन्तरिक्षे)** अन्तरक्षय आकाशे **(ये)** **(उप)** **(द्यवि)** प्रकाशे **(स्थ)** **(ये)** **(अग्निजिह्वाः)** अग्निना सत्येन सुप्रकाशिता जिह्वा येषान्ते **(उत)** **(वा)** **(यजत्राः)** सङ्गन्तव्याः **(आसद्य)** स्थित्वा **(अस्मिन्)** **(बर्हिषि)** उत्तम आसने स्थाने वा **(मादयध्वम्)**॥१३॥

**अन्वय:**-हे विश्वे देवा! येऽन्तरिक्षे ये द्यवि येऽग्निजिह्वा उत वा यजत्राः स्युस्तैः सह म इमं हवमुप शृणुत समीपे च स्थ। अस्मिन् बर्हिष्याऽऽसद्याऽस्मान् मादयध्वम्॥१३॥

**भावार्थ:**-मनुष्यैः सदैव ये विमानस्था अन्तरिक्षे, ये विद्युद्विद्यायां कुशला ये चाऽध्यापने परीक्षायां च निपुणा धर्मिष्ठा आप्ता विद्वांसः स्युस्तत्सन्निधौ गत्वा तान् स्वसमीपमाहूय सत्कृत्यैतेभ्यः श्रोतव्यं श्रुतं श्राव्यञ्च यतः श्रवणे विज्ञाने वा श्रमो न स्यात्॥१३॥

**पदार्थ:**-हे **(विश्वे, देवाः)** सब विद्वानो! **(ये)** जो **(अन्तरिक्षे)** भीतर अविनाशी आकाश में **(ये)** जो **(द्यवि)** प्रकाश में **(ये)** जो **(अग्निजिह्वाः)** सत्य से प्रकाशमान जिह्वा जिन की **(उत, वा)** अथवा **(यजत्राः)** सङ्ग करने योग्य हों उन सब के साथ **(मे)** मेरे **(इमम्)** इस **(हवम्)** सुने पढ़े और जाने हुए विषय को **(उप, शृणुत)** समीप में सुनो और समीप में **(स्थ)** स्थिर होओ तथा **(अस्मिन्)** इस **(बर्हिषि)** उत्तम आसन वा स्थान में **(आसद्य)** बैठ के हम लोगों को **(मादयध्वम्)** आनन्दित करो॥१३॥

**भावार्थ:**-मनुष्यों को सदैव जो विमानस्थ, अन्तरिक्ष में, वा जो बिजुली की विद्या में कुशल हैं और जो पढ़ाने वा परीक्षा करने में निपुण, धर्मिष्ठ, आप्त विद्वान् हों; उनके निकट जाकर और उनको अपने समीप बुलाकर सत्कार कर इनसे सुनना चाहिये और सुना हुआ सुनाना चाहिये, जिससे सुनने में वा विज्ञान में श्रम न हो॥१३॥

**पुनः के सङ्गन्तुमर्हा इत्याह॥**

फिर कौन सङ्ग करने योग्य हैं, इस विषय को कहते हैं॥



www.9009.co.in

**विश्वे॑ दे॒वा मम॑ शृण्वन्तु य॒ज्ञिया॑ उ॒भे रोद॑सी अ॒पां नपा॑च्च॒ मन्म॑।**

**मा वो॒ वचां॑सि परि॒चक्ष्या॑णि वोचं सु॒म्नेष्विद्वो॒ अन्त॑मा मदेम॥१४॥**

**विश्वे॑। दे॒वाः। मम॑। शृ॒ण्व॒न्तु॒। य॒ज्ञिया॑ः। उ॒भे॒ इति॑। रोद॑सी॒ इति॑। अ॒पाम्। नपा॑त्। च॒। मन्म॑। मा। व॒ः। वचां॑सि। प॒रि॒ऽचक्ष्या॑णि। वो॒च॒म्। सु॒म्नेषु॑। इत्। व॒ः। अन्त॑माः। म॒दे॒म॒॥१४॥**

**पदार्थः**-(**विश्वे**) सर्वे (**देवाः**) विद्वांसः (**मम**) (**शृण्वन्तु**) (**यज्ञियाः**) ये सत्सङ्गतिं कर्त्तुमर्हाः (**उभे**) (**रोदसी**) द्यावापृथिव्याविव सर्वेषां रक्षकाः (**अपाम्**) प्राणानाम् (**नपात्**) अनाशकम् (**च**) (**मन्म**) विज्ञानम् (**मा**) (**वः**) युष्माकम् (**वचांसि**) वचनानि (**परिचक्ष्याणि**) परितः सर्वतः ख्यातुं योग्यानि (**वोचम्**) (**सुम्नेषु**) सुखेषु (**इत्**) एव (**वः**) युष्माकम् (**अन्तमाः**) समीपस्थाः (**मदेम**) आनन्देम॥१४॥

**अन्वयः**-हे विश्वे देवा! भवन्त उभे रोदसी इव यज्ञियाः सन्तो मम वचांसि शृण्वन्तु वोऽपां नपान्मन्म विरुद्धमहं मा वोचं परिचक्ष्याणि च प्रशंसेयमेवं वर्त्तमाना वयं वोऽन्तमाः सन्तः सुम्नेषु सदेन्मदेम॥१४॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! येषां विदुषां वचनं वितथं न भवति येषां सङ्गः सर्वदा सुखविज्ञानवर्धको ये भूमिसूर्य्यवत्सर्वेषां पालका विवादं श्रुत्वा पक्षपातं विहाय न्यायकर्त्तारस्स्युस्तत्सन्निधौ स्थित्वा सदैवाऽऽनन्दं प्राप्नुवन्तु॥१४॥

**पदार्थः**-हे (**विश्वे, देवाः**) सब विद्वानो! आप (**उभे**) दोनों (**रोदसी**) आकाश और पृथिवी के तुल्य सब की रक्षा करने वाले (**यज्ञियाः**) सज्जनों का सङ्ग करने वाले होते हुए (**मम**) मेरे (**वचांसि**) वचनों को (**शृण्वन्तु**) सुनिये तथा (**वः**) आपके (**अपाम्**) प्राणों के (**नपात्**) न विनाश करने वाले (**मन्म**) विज्ञान को, विरुद्ध मैं (**मा, वोचम्**) मत कहूँ (**परिचक्ष्याणि, च**) और सब ओर से कहने के योग्यों की प्रशंसा करूं, इस प्रकार वर्त्तमान हम लोग (**वः**) आपके (**अन्तमाः**) समीप स्थिर होते हुए (**सुम्नेषु**) सुखों में (**इत्**) सर्वदैव (**मदेम**) आनन्दित हों॥१४॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जिन विद्वानों का वचन असत्य नहीं होता तथा जिनका सङ्ग सर्वदा सुख और विज्ञान का बढ़ाने वाला है और जो भूमि और सूर्य के तुल्य सब के पालने वाले और विवाद सुनकर पक्षपात को छोड़ न्याय करने वाले हों, उनके निकट स्थित होकर सदैव आनन्द को प्राप्त होओ॥१४॥

**पुनर्मनुष्यैः के नित्यं सत्कर्त्तव्या इत्याह॥**

फिर मनुष्यों से कौन नित्य सत्कार करने योग्य हैं, इस विषय को कहते हैं॥

**ये के च॒ ज्मा म॒हिनो॒ अहि॑माया दि॒वो ज॑ज्ञि॒रे अ॒पां स॒धस्थे॑।**

**ते अ॒स्मभ्य॑मि॒षये॒ विश्व॒मायु॒ः क्षप॑ उ॒स्रा व॑रिवस्यन्तु दे॒वाः॥१५॥**

**ये। के। च॒। ज्मा। म॒हिन॑ः। अहि॑ऽमायाः। दि॒वः। ज॒ज्ञि॒रे। अ॒पाम्। स॒धऽस्थे॑। ते। अ॒स्मभ्य॑म्। इ॒षये॑। विश्व॑म्। आयु॑ः। क्षप॑ः। उ॒स्राः। व॒रि॒व॒स्य॒न्तु॒। दे॒वाः॥१५॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**ये**) (**के**) (**च**) केचित् (**ज्मा**) पृथिव्या मध्ये (**महिनः**) महान्तः (**अहिमायाः**) मेघस्य मायाः कुटिलगतयः (**दिवः**) सूर्यप्रकाशात् (**जज्ञिरे**) जायन्ते (**अपाम्**) जलानाम् (**सधस्थे**) समानस्थाने मेघण्डले (**ते**) (**अस्मभ्यम्**) (**इषये**) विज्ञानायाऽन्नाय वा (**विश्वम्**) पूर्णम् (**आयुः**) जीवनम् (**क्षपः**) रात्रीः (**उस्राः**) दिनानि (**वरिवस्यन्तु**) सेवन्ताम् (**देवाः**) दिव्यगुणा विद्वांसः॥१५॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! ये के च महिनो यथा ज्माऽहिमाया दिवोऽपां सधस्थे जज्ञिरे तथा वर्त्तमाना अस्मभ्यमिषये क्षप उस्रा विश्वमायुर्वरिवस्यन्तु ते देवा अस्माभिः सततं सेवनीयाः॥१५॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! येऽत्र वर्त्तमानसमयेऽहर्निशं मनुष्याणामारोग्यायुर्विज्ञानवर्धकाः पर्जन्य इव पोषकाः स्युस्त एव सर्वैः सत्कर्त्तव्या भवन्तु॥१५॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! (**ये**) जो (**के, च**) कोई भी (**महिनः**) महान् जैसे (**ज्मा**) पृथिवी के बीच (**अहिमायाः**) मेघ की कुटिल गतियां (**दिवः**) सूर्य्य के प्रकाश से (**अपाम्**) जलों के (**सधस्थे**) समानस्थान वाले मेघमण्डल में (**जज्ञिरे**) उत्पन्न होती हैं, वैसे वर्त्तमान (**अस्मभ्यम्**) हम लोगों के लिये (**इषये**) अन्न वा विज्ञान के अर्थ (**क्षपः**) रात्रि (**उस्राः**) दिन और (**विश्वम्**) पूर्ण (**आयुः**) जीवन को (**वरिवस्यन्तु**) सेवें (**ते**) वे (**देवाः**) दिव्यगुण वा विद्वान् जन हम लोगों से निरन्तर सेवने योग्य हैं॥१५॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जो इस वर्त्तमान समय में दिन-रात्रि मनुष्यों के आरोग्य, आयु और विज्ञान के बढ़ाने और मेघ के समान पुष्टि करने वाले हों, वे ही सब से सत्कार करने योग्य हैं॥१५॥

**पुनस्ते विद्वांसः कथं किं कुर्य्युरित्याह॥**

फिर वे विद्वान् कैसे क्या करें, इस विषय को कहते हैं॥

**अग्नीपर्जन्याववतं धियं मेऽस्मिन् हवे सुहवा सुष्टुतिं नः।**

**इळामन्यो जनयद्गर्भमन्यः प्रजावतीरिष आ धत्तमस्मे॥१६॥**

**अग्नीपर्जन्यौ। अवतम्। धियम्। मे। अस्मिन्। हवे। सुऽहवा। सुऽस्तुतिम्। नः। इळाम्। अन्यः। जनयत्। गर्भम्। अन्यः। प्रजाऽवतीः। इषः। आ। धत्तम्। अस्मे इति॥१६॥**

**पदार्थः**-(**अग्निपर्जन्यौ**) विद्युन्मेघाविव (**अवतम्**) रक्षतम् (**धियम्**) प्रज्ञाम् (**मे**) मम (**अस्मिन्**) (**हवे**) प्रशंसनीये धर्म्ये व्यवहारे (**सुहवा**) सुष्ठुप्रशंसितावध्यापकोपदेशकौ (**सुष्टुतिम्**) शोभनां प्रशंसाम् (**नः**) अस्माकम् (**इळाम्**) महतीं वाचम् (**अन्यः**) विद्युन्मयोऽग्निः (**जनयत्**) जनयति (**गर्भम्**) (**अन्यः**) मेघः (**प्रजावतीः**) बहुप्रशंसितप्रजायुक्ताः (**इषः**) अन्नादीच्छाः (**आ**) (**धत्तम्**) (**अस्मे**) अस्माकम्॥१६॥

**अन्वयः**-हे सुहवाऽग्नीपर्जन्याविवाऽस्मिन् हवे युवाम्मे धियमवतं नः सुष्टुतिमवतं यथाऽऽग्नीपर्जन्ययोर्मध्येऽन्योऽग्निरिळामन्यो मेघो गर्भं जनयत्तथाऽस्मे प्रजावतीरिष आ धत्तम्॥१६॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! ये वह्निमेघवत्सर्वेषां बुद्धिवर्धका रक्षकाः सर्वाः प्रजाः सुखे धरन्ति ते यथा मेघः पृथिव्यां गर्भं धृत्वौषधीर्जनयति यथा चाऽग्निर्वाचं विदधाति तथा ते सुखविधायका भवन्तीति भवन्तो विजानीयुः॥१६॥

**पदार्थः**-हे **(सुहवा)** सुन्दर प्रशंसित अध्यापक और उपदेशको! तुम **(अग्नीपर्जन्यौ)** बिजुलीरूप अग्नि और मेघ के तुल्य **(अस्मिन्)** इस **(हवे)** प्रशंसनीय धर्मयुक्त व्यवहार में तुम दोनों **(मे)** मेरी **(धियम्)** बुद्धि की **(अवतम्)** रक्षा करो तथा **(नः)** हमारी **(सुष्टुतिम्)** शोभन प्रशंसा की रक्षा करो जैसे अग्नि और मेघ के बीच **(अन्यः)** और बिजुलीमय अग्नि **(इळाम्)** महान् वाणी को **(अन्यः)** और मेघ **(गर्भम्)** गर्भरूप **(जनयत्)** उत्पन्न करता है, वैसे **(अस्मे)** हमारी **(प्रजावतीः)** बहुप्रशंसित प्रजायुक्त **(इषः)** अन्नादि पदार्थों की इच्छाओं को **(आ, धत्तम्)** सब ओर से धारण करो॥१६॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जो वह्नि और मेघ के समान सब की बुद्धि के बढ़ाने वाले वा रक्षा करने वाले, सब प्रजाजनों को सुख में धारण करते हैं, वे जैसे मेघ पृथिवी पर गर्भ को धारण कर ओषधियों को उत्पन्न करता और जैसे अग्नि वाणी का विधान करता अर्थात् बिजुलीरूप होकर तड़कता है, वैसे वे सुखों का विधान करने वाले होते हैं, यह आप जानो॥१६॥

**पुनः केऽत्राऽनन्दप्रदाः सन्तीत्याह॥**

फिर कौन इस संसार में आनन्द देने वाले होते हैं, इस विषय को कहते हैं॥

**स्तीर्णे बर्हिषि समिधाने अग्नौ सूक्तेन महा नमसा विवासे।**

**अस्मिन्नो अद्य विदथे यजत्रा विश्वे देवा हविषि मादयध्वम्॥१७॥१६॥**

**स्तीर्णे। बर्हिषि। सम्ऽइधाने। अग्नौ। सुऽउक्तेन। महा। नमसा। आ। विवासे। अस्मिन्। नः। अद्य। विदथे। यजत्राः। विश्वे। देवाः। हविषि। मादयध्वम्॥१७॥**

**पदार्थः**-**(स्तीर्णे)** इन्धनादिभिराच्छादिते **(बर्हिषे)** यज्ञकुण्डे **(समिधाने)** प्रदीप्ते **(अग्नौ)** पावके **(सूक्तेन)** वेदमन्त्रसमूहेन **(महा)** महता **(नमसा)** अन्नादिना **(आ, विवासे)** सेवेय **(अस्मिन्)** **(नः)** अस्मान् **(अद्य)** अस्मिन् अहनि **(विदथे)** विज्ञानमये यज्ञे **(यजत्राः)** सङ्गमयितारः **(विश्वे)** सर्वे **(देवाः)** विद्वांसः **(हविषि)** दातव्येऽत्तव्ये वाऽन्नादौ **(मादयध्वम्)** सुखयत॥१७॥

**अन्वयः**-हे यजत्रा विश्वे देवा! यूयमद्याऽस्मिन् विदथे यथाऽहं सूक्तेन महा नमसा स्तीर्णे बर्हिषि समिधानेऽग्नावा विवासे तथा नो हविषि मादयध्वम्॥१७॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यथेन्धनैः प्रदीप्तेऽग्नौ वेदमन्त्रैः सुगन्ध्यादियुक्तं हुतं द्रव्यं सर्वं जगत् सुखयति तथा सुपात्रेषु विद्वद्भिरुप्ता विद्या जगदानन्दयतीति॥१७॥

अत्र विश्वेदेवगुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति द्विपञ्चाशत्तमं सूक्तं षोडशो वर्गश्च समाप्तः॥**



www.9009.co.in

**पदार्थ:**-हे **(यजत्राः)** सङ्ग कराने वालो **(विश्वे, देवा)** सब विद्वानो! तुम **(अद्य)** आज के दिन **(अस्मिन्)** इस **(विदथे)** विज्ञानमय यज्ञ में जैसे मैं **(सूक्तेन)** वेद मन्त्र समूह से **(महा, नमसा)** अन्नादि समूह से **(स्तीर्णे)** इन्धनादि से आच्छादित **(बर्हिषि)** यज्ञकुण्ड में **(समिधाने)** प्रदीप्त **(अग्नौ)** अग्नि के बीच **(आ, विवासे)** सब ओर से सेवन करूं, वैसे **(नः)** हम लोगों के **(हविषि)** देने वा भोजन करने योग्य अन्नादि पदार्थों में **(मादयध्वम्)** सुखी करो॥१७॥

**भावार्थ:**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जैसे इन्धनों से प्रदीप्त अग्नि में वेदमन्त्रों से सुगन्ध्यादियुक्त होम किया पदार्थ सब जगत् को सुखी करता है, वैसे सुपात्र में विद्वानों की बोई हुई विद्या सब जगत् को आनन्दित करती है॥१७॥

इस सूक्त में विश्वेदेवों के गुणों का वर्णन होने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह बावनवां सूक्त और सोलहवां वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

अथ दशर्चस्य त्रिपञ्चाशत्तमस्य सूक्तस्य भरद्वाजो बार्हस्पत्य ऋषिः। पूषा देवता। १, ३, ४, ६, ७, १० गायत्री। २, ५, ९ निचृद्गायत्री छन्दः। षड्जः स्वरः। ८ निचृदनुष्टुप् छन्दः। गान्धारः स्वरः॥

*अथ मनुष्याः कस्मै कान् सेवेरन्नित्याह॥*

अब दश ऋचा वाले त्रेपनवें सूक्त का आरम्भ है, इसके प्रथम मन्त्र में मनुष्य किसके लिये किनका सेवन करें, इस विषय को कहते हैं॥

**वयमु त्वा पथस्पते रथं न वाजसातये। धिये पूषन्नयुज्महि॥ १॥**

**वयम्। ऊँ इति। त्वा। पथः। पते। रथम्। न। वाजऽसातये। धिये। पूषन्। अयुज्महि॥ १॥**

**पदार्थः**-(**वयम्**) (उ) (**त्वा**) त्वाम् (**पथः**) मार्गस्य (**पते**) स्वामिन् (**रथम्**) विमानादियानम् (**न**) इव (**वाजसातये**) सङ्ग्रामविभाजिकायै (**धिये**) प्रज्ञायै (**पूषन्**) पुष्टिकर्त्तः (**अयुज्महि**) प्रयुञ्ज्महि॥१॥

**अन्वयः**-हे पूषन् पथस्पते! वयमु वाजसातये धिये त्वा रथं नाऽयुज्महि॥१॥

**भावार्थः**-अत्रोपमावाचकलुप्तोपमालङ्कारौ। ये मनुष्याः प्रज्ञाप्राप्तये विदुषः सेवन्ते ते वेगवता रथेन स्थानान्तरमिव विद्यान्तरं सद्यः प्राप्नुवन्ति॥१॥

**पदार्थः**-हे (**पूषन्**) पुष्टि करने वाले (**पथः**) मार्ग के (**पते**) स्वामिन्! (**वयम्**) हम लोग (उ) ही (**वाजसातये**) संग्राम का विभाग करने वाली (**धिये**) प्रज्ञा के लिये (**त्वा**) आपको (**रथम्**) विमान आदि यान के (**न**) समान (**अयुज्महि**) प्रयुक्त करते हैं॥१॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमा और वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो मनुष्य उत्तम बुद्धि पाने के लिये विद्वानों की सेवा करते हैं, वे वेगवान् रथ से एक स्थान से दूसरे स्थान के समान एक विद्या से दूसरी विद्या को शीघ्र प्राप्त होते हैं॥१॥

**अथ स्त्रीपुरुषैः किमेष्टव्यमित्याह॥**

अब स्त्रीपुरुषों को क्या चाहने योग्य है, इस विषय को कहते हैं॥

**अभि नो नर्यं वसु वीरं प्रयतदक्षिणम्। वामं गृहपतिं नय॥ २॥**

**अभि। नः। नर्यम्। वसु। वीरम्। प्रयतऽदक्षिणम्। वामम्। गृहऽपतिम्। नय॥ २॥**

**पदार्थः**-(**अभि**) आभिमुख्ये (**नः**) अस्मान् (**नर्यम्**) नृषु साधु (**वसु**) धनम् (**वीरम्**) शुभलक्षणान्वितं पुरुषम् (**प्रयतदक्षिणम्**) प्रयताः प्रयत्नेन दत्ता दक्षिणा यस्मात्तत् (**वामम्**) प्रशस्तम् (**गृहपतिम्**) गृहस्वामिनम् (**नय**) प्रापय॥२॥

**अन्वयः**-हे पूषंस्त्वं नः प्रयतदक्षिणं नर्यं वसु वामं वीरं गृहपतिं चाभि नय॥२॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-हे विद्वन् विदुषी वा! त्वामस्मदर्थमुत्तमं पतिमुत्तमां भार्यां प्रशस्तं धनं प्रापय्य सुशिक्षया धर्म्माचारं प्रापय॥२॥

**पदार्थः**-हे पुष्टि करने वाले! आप **(नः)** हम लोगों को **(प्रयतदक्षिणम्)** जिससे प्रयत्नपूर्वक दक्षिणा दी गई उस **(नर्यम्)** मनुष्यों में उत्तम **(वसु)** धन और **(वामम्)** प्रशंसित **(वीरम्)** शुभलक्षणयुक्त पुरुष को **(गृहपतिम्)** गृहस्वामी को भी **(अभि,)** नय सब ओर से पहुंचाओ॥२॥

**भावार्थः**-हे विद्वन् वा विदुषी! आप हम लोगों के लिये उत्तम पति, उत्तम भार्या, प्रशंसित धन की प्राप्ति करा के उत्तम शिक्षा से धर्म्म आचरण की प्राप्ति कराइये॥२॥

**पुनर्विद्वान् कस्मै किं प्रेरयेदित्याह॥**

फिर विद्वान् जन किसके लिये क्या प्रेरणा करे, इस विषय को कहते हैं॥

**अदि॑त्सन्तं चिदाघृणे॒ पूष॒न् दाना॑य चोदय। प॒णेश्चि॒द्वि म्र॑दा॒ मन॑ः॥३॥**

**अदि॑त्सन्तम्। चि॒त्। आ॒घृ॒णे॒। पूष॑न्। दाना॑य। चो॒द॒य॒। प॒णेः। चि॒त्। वि। म्र॒दा॒। मन॑ः॥३॥**

**पदार्थः**-**(अदित्सन्तम्)** दातुमनिच्छन्तम् **(चित्)** अपि **(आघृणे)** समन्तात् प्रकाशात्मन् **(पूषन्)** पुष्टिकर विद्वन् **(दानाय)** **(चोदय)** प्रेरय **(पणेः)** द्यूतकर्त्तुः **(चित्)** अपि **(वि)** विशेषेण **(म्रदा)** दण्डय। अत्र **द्व्यचोऽतस्तिङ** इति दीर्घः। **(मनः)** अन्तःकरणम्॥३॥

**अन्वयः**-हे आघृणे पूषँस्त्वमदित्सन्तं चिदपि दातारं दानाय चोदय चिदपि दातारं स्वस्य मनश्च चोदय पणेश्चिन्मनो वि म्रदा॥३॥

**भावार्थः**-हे अध्यापकोपदेशकौ राजन्वा! विद्यादिशुभगुणस्य प्रवृत्तयेऽदातॄनपि दानकरणाय प्रेरय द्यूतकर्तॄंश्च पाखण्डिनो हिन्धि॥३॥

**पदार्थः**-हे **(आघृणे)** सब ओर से प्रकाशात्मन् **(पूषन्)** पुष्टि करने वाले विद्वन्! आप **(अदित्सन्तम्)** देने की अनिच्छा करते हुए **(चित्)** भी देने वाले को **(दानाय)** देने के लिये **(चोदय)** प्रेरणा देओ **(चित्)** फिर भी देने वालो को और अपने **(मनः)** मन को भी प्रेरणा देओ और **(पणेः)** जुआं खेलने वाले के भी अन्तःकरण को **(वि, म्रदा)** विशेषता से मर्दी अर्थात् दण्ड देओ॥३॥

**भावार्थः**-हे अध्यापक, उपदेशक वा राजन्! विद्यादि शुभगुणों की प्रवृत्ति के लिये न देने वालों को भी दान करने के लिये प्रेरणा देओ और जुआं खेलनेवाले पाखण्डियों को मारो अर्थात् ताड़ना देओ॥३॥

**पुना राजा किं कुर्य्यादित्याह॥**

फिर राजा क्या करे, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**वि प॒थो वाज॑सातये चिनु॒हि वि मृधो॑ जहि। साध॑न्तामुग्र नो॒ धिय॑ः॥४॥**

**वि। प॒थः। वाज॑ऽसातये। चि॒नु॒हि। वि। मृध॑ः। ज॒हि॒। साध॑न्ताम्। उ॒ग्र॒। न॒ः। धिय॑ः॥४॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**वि**) (**पथः**) मार्गात् (**वाजसातये**) विज्ञानस्य धनस्य वा प्राप्तयेऽथवा सङ्ग्रामाय (**चिनुहि**) सञ्चयं कुरु (**वि**) विशेषेण (**मृधः**) सङ्ग्रामेषु प्रवृत्तान् दुष्टान् (**जहि**) (**साधन्ताम्**) साध्नुवन्तु (**उग्र**) तेजस्विन् (**नः**) अस्माकम् (**धियः**) प्रज्ञाः॥४॥

**अन्वयः**-हे उग्र सेनेश! त्वं वाजसातये पथो वि चिनुहि मृधो वि जहि यतो नो धियः कार्याणि साधन्ताम्॥४॥

**भावार्थः**-हे राजँस्त्वमुत्तमान्निर्भयान् मार्गान् विधेहि तत्र परिपन्थिनो हिन्धि, येन सर्वेषां प्रज्ञा उत्तमकर्मोन्नतये प्रवर्त्तेरन्॥४॥

**पदार्थः**-हे (**उग्र**) तेजस्वी सेनापति! आप (**वाजसातये**) विज्ञान वा धन की प्राप्ति वा सङ्ग्राम के लिये (**पथः**) मार्ग से (**वि, चिनुहि**) सञ्चय करो तथा (**मृधः**) सङ्ग्रामों में प्रवृत दुष्टों को (**वि, जहि**) विशेषता से मारो जिससे (**नः**) हमारी (**धियः**) बुद्धियां कार्यों को (**साधन्ताम्**) सिद्ध करें॥४॥

**भावार्थः**-हे राजन्! आप उत्तम निर्भय मार्गों को बनाओ, उन में विपथगामियों को मारो जिससे सब की बुद्धि उत्तम कर्मों की उन्नति करने के लिये प्रवृत्त हों॥४॥

**पुनर्नृपेण के पीडनीया इत्याह॥**

फिर राजा से कौन पीड़ा देने योग्य हैं, इस विषय को कहते हैं॥

**परि॑ तृन्धि प॒णी॒नामार॑या॒ हृद॑या कवे। अथे॑म॒स्मभ्यं॑ रन्धय॥५॥१७॥**

**परि॑। तृ॒न्धि॒। प॒णी॒नाम्। आर॑या। हृद॑या। क॒वे॒। अथ॑। ई॒म्। अ॒स्मभ्य॑म्। र॒न्ध॒य॒॥५॥**

**पदार्थः**-(**परि**) सर्वतः (**तृन्धि**) हिन्धि (**पणीनाम्**) द्यूतादिव्यवहारकर्त्तॄणां (**आरया**) प्रतोदेन (**हृदया**) हृदयानि (**कवे**) विद्वन् राजन् (**अथ**) (**ईम्**) सर्वतः (**अस्मभ्यम्**) (**रन्धय**)॥५॥

**अन्वयः**-हे कवे! त्वमारया पणीनां हृदया परि तृन्धि। अथाऽस्मभ्यमीं दुष्टान् रन्धयाऽस्मभ्यं सुखं देहि॥५॥

**भावार्थः**-हे राजन्! त्वं येऽपूतशासनकर्त्तारः कितवाश्च स्वराज्ये स्युस्तान् सम्यग्दण्डय सतो न्यायमार्गे वर्त्तमाना वयं सुखिनः स्याम॥५॥

**पदार्थः**-हे (**कवे**) विद्वन् राजन्! आप (**आरया**) उत्तम कोड़ा से (**पणीनाम्**) द्यूत आदि व्यवहार करने वाले पुरुषों के (**हृदया**) हृदयों को (**परि, तृन्धि**) सब ओर से मारो (**अथ**) इसके अनन्तर (**अस्मभ्यम्**) हमारे लिये (**ईम्**) सब ओर से दुष्टों को (**रन्धय**) पीड़ित करो और हमारे लिये सुख देओ॥५॥

**भावार्थः**-[ हे राजन्! आप] जो अपवित्र शिक्षा देने वाले और छली पुरुष अपने राज्य में हों, उनको अच्छे प्रकार दण्डो, जिससे न्यायमार्ग के बीच हम लोग सुखी हों॥५॥

**पुना राजा किं कुर्य्यादित्याह॥**

पिर राजा क्या करे, इस विषय को कहते हैं॥

**वि पू॑षन्नार॑या तुद प॒णेरि॑च्छ हृ॒दि प्रि॒यम्। अथे॑म॒स्मभ्यं॑ रन्धय॥६॥**



www.9009.co.in

**वि। पू॒ष॒न्। आर॑या। तु॒द॒। प॒णेः। इ॒च्छ॒। हृ॒दि। प्रि॒यम्। अथ॑। ई॒म्। अ॒स्मभ्य॑म्। र॒न्ध॒य॒॥६॥**

**पदार्थः**-(**वि**) (**पूषन्**) पुष्टिकर्त्तः (**आरया**) (**तुद**) व्यथय (**पणेः**) प्रशंसितव्यवहारकर्त्तुः (**इच्छ**) (**हृदि**) हृदये (**प्रियम्**) (**अथ**) (**ईम्**) सर्वतः (**अस्मभ्यम्**) (**रन्धय**)॥६॥

**अन्वयः**-हे पूषँस्त्व दुष्टानीम्रन्धयाऽस्मभ्यं हृदि प्रियमिच्छाऽथाऽऽरया वृषभानिव पणेरसम्बन्धिनो वि तुद॥६॥

**भावार्थः**-हे राजंस्त्वं दुष्टान् दण्डयित्वा श्रेष्ठान् सत्कृत्य सर्वान् सत्कर्मसु प्रेरय॥६॥

**पदार्थः**-हे (**पूषन्**) पुष्टि करने वाले! आप दुष्टों को (**ईम्**) सब ओर से (**रन्धय**) अति पीड़ित करो तथा (**अस्मभ्यम्**) हमारे लिये (**हृदि**) हृदय में (**प्रियम्**) प्यारे पदार्थ की (**इच्छ**) इच्छा करो (**अथ**) इसके अनन्तर (**आरया**) कोड़ा से बैलों के समान (**पणेः**) प्रशंसित व्यवहार करने वाले के असम्बन्धी जनों को (**वि, तुद**) विशेषता से पीड़ा देओ॥६॥

**भावार्थः**-हे राजन्! आप दुष्टों को दण्ड देकर श्रेष्ठों का सत्कार कर सब को श्रेष्ठ कर्मों में प्रेरणा देओ॥६॥

**पुना राजा किं कुर्य्यादित्याह॥**

फिर राजा क्या करे, इस विषय को कहते हैं॥

### आ रि॑ख किकि॒रा कृ॑णु पणी॒नां हृद॑या कवे। अथे॑म॒स्मभ्यं॑ रन्धय॥७॥

**आ। रि॒ख॒। कि॒कि॒रा। कृ॒णु॒। प॒णी॒नाम्। हृद॑या। क॒वे॒। अथ॑। ई॒म्। अ॒स्मभ्य॑म्। र॒न्ध॒य॒॥७॥**

**पदार्थः**-(**आ**) समन्तात् (**रिख**) लिख (**किकिरा**) व्यवस्थापत्राणि (**कृणु**) (**पणीनाम्**) व्यवहर्तॄणाम् (**हृदया**) हृदयानि (**कवे**) विद्वन् (**अथ**) (**ईम्**) सुखम् (**अस्मभ्यम्**) (**रन्धय**) ताडय॥७॥

**अन्वयः**-हे कवे! त्वं पणीनां किकिराऽऽरिख दुष्टानां हृदया रन्धयाऽथाऽस्मभ्यमीं कृणु॥७॥

**भावार्थः**-राजा वादिप्रतिवादिनां लेखपुरस्सरं न्यायं कुर्यात्॥७॥

**पदार्थः**-हे (**कवे**) विद्वन्! आप (**पणीनाम्**) व्यवहार करने वालों के (**किकिरा**) व्यवस्थापत्रों को (**आ, रिख**) सब ओर से लिखो तथा दुष्टों के (**हृदया**) हृदयों को (**रन्धय**) अति पीड़ा देओ (**अथ**) इसके अनन्तर (**अस्मभ्यम्**) हम लोगों के लिये (**ईम्**) सुख (**कृणु**) करो॥७॥

**भावार्थः**-राजा वादी और प्रतिवादी अर्थात् झगड़ालु प्रतिझगड़ालूओं का लिखापढ़ी पूर्वक न्याय करे॥७॥

**पुनर्विदुषा कथं कस्मै प्रेरणा कार्येत्याह॥**

फिर विद्वान् को कैसे किसके लिये प्रेरणा करनी योग्य है, इस विषय को कहते हैं॥

### यां पू॑षन् ब्रह्म॒चोद॑नी॒मारां॒ बिभ॑र्ष्याघृणे। तया॑ समस्य॒ हृद॑य॒मा रि॑ख किकि॒रा कृ॑णु॥८॥

**याम्। पू॒ष॒न्। ब्र॒ह्म॒ऽचोद॑नीम्। आरा॑म्। बिभ॑र्षि। आ॒घृ॒णे॒। तया॑। स॒म॒स्य॒। हृद॑यम्। आ। रि॒ख॒। कि॒कि॒रा। कृ॒णु॒॥८॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**याम्**) (**पूषन्**) पुष्टिकर्त्तः (**ब्रह्मचोदनीम्**) विद्याधनप्राप्तये प्रेरिकाम् (**आराम्**) काष्ठविभाजिकाम् (**बिभर्षि**) (**आघृणे**) सर्वतो न्यायप्रकाशिन् (**तया**) (**समस्य**) तुल्यस्य (**हृदयम्**) (**आ**) (**रिख**) लिख (**किकिरा**) विकीर्णानि (**कृणु**)॥८॥

**अन्वयः**-हे पूषन्नाघृणे! त्वं यां ब्रह्मचोदनीमारां बिभर्षि तया समस्य हृदयमा रिख किकिरा कृणु॥८॥

**भावार्थः**-हे राजँस्त्वं विद्याधनप्राप्तिप्रेरणामिव राजनीतिं धर येन सर्वेषां न्यायव्यवस्था स्यात्॥८॥

**पदार्थः**-हे (**पूषन्**) पुष्टि करने वाले (**आघृणे**) सब ओर से न्याय के प्रकाश करने वाले! आप (**याम्**) जिस (**ब्रह्मचोदनीम्**) विद्या और धन की प्राप्ति के लिये प्रेरणा करने तथा काष्ठ के विभाग करने वाली आरी को (**बिभर्षि**) धारण करते हो (**तया**) उससे (**समस्य**) तुल्य के समान अर्थात् जो सब में बुद्धि वाला है उसके (**हृदयम्**) हृदय को (**आ, रिख**) अच्छे प्रकार लिखो और (**किकिरा**) उत्तम गुणों को विकीर्ण (**कृणु**) करो फैलाओ॥८॥

**भावार्थः**-हे राजन्! आप विद्या और धन की प्राप्ति की प्रेरणा के समान राजनीति को धारण करो, जिससे सब की न्यायव्यवस्था हो॥८॥

**मनुष्यैः किं वर्धयित्वा किं प्रार्थनीयमित्याह॥**

मनुष्यों को क्या बढ़ा कर किसकी प्रार्थना करनी चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**या ते अष्ट्रा गोओपशाघृणे पशुसाधनी। तस्यास्ते सुम्नमीमहे॥९॥**

**या। ते। अष्ट्रा। गोऽओपशा। आघृणे। पशुऽसाधनी। तस्याः। ते। सुम्नम्। ईमहे॥९॥**

**पदार्थः**-(**या**) (**ते**) तव (**अष्ट्रा**) व्यापिका (**गोओपशा**) गाव आ उप शेरते यस्यां सा (**आघृणे**) समन्तात्पशुविद्याप्रकाशक (**पशुसाधनी**) पशून् साध्नुवन्ति यया सा (**तस्याः**) (**ते**) तव (**सुम्नम्**) सुखम् (**ईमहे**) याचामहे॥९॥

**अन्वयः**-हे आघृणे! या तेऽष्ट्रा गोओपशा पशुसाधनी वर्तते तस्यास्ते सुम्नं वयमीमहे॥९॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यया क्रियया पशवो वर्धेरंस्तां वर्धयित्वा सुखं याचध्वम्॥९॥

**पदार्थः**-हे (**आघृणे**) सब ओर से पशुविद्या के प्रकाश करने वाले (**या**) जो (**ते**) आपकी (**अष्ट्रा**) व्याप्त होने वाली (**गोओपशा**) जिसमें गौएं परस्पर सोती हैं और (**पशुसाधनी**) जिससे पशुओं को सिद्ध करते हैं वह क्रिया वर्त्तमान है (**तस्याः**) उससे (**ते**) आपके (**सुम्नम्**) सुख को हम लोग (**ईमहे**) जांचते अर्थात् मांगते हैं॥९॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जिस क्रिया से पशु बढ़ें, उस क्रिया को बढ़ाकर सुख को मांगो॥९॥

**पुनर्मनुष्यैः किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**उत नो गोषणिं धियमश्वसां वाजसामुत। नृवत् कृणुहि वीतये॥१०॥१८॥**



www.9009.co.in

उ॒त। न॒:। गो॒ऽसनि॑म्। धिय॑म्। अ॒श्व॒ऽसाम्। वा॒ज॒ऽसाम्। उ॒त। नृ॒ऽवत्। कृ॒णु॒हि॒। वी॒तये॑॥ १०॥

**पदार्थ:**-(**उत**) अपि (**न:**) अस्मभ्यम् (**गोषणिम्**) गवां विभाजिकाम् (**धियम्**) प्रज्ञाम् (**अश्वसाम्**) अश्वानां संविभाजिकाम् (**वाजसाम्**) वाजस्याऽन्नादेर्विभाजिकाम् (**उत**) अपि (**नृवत्**) मनुष्यवत् (**कृणुहि**) (**वीतये**) प्राप्तये॥ ९॥

**अन्वय:**-हे पशुपाल विद्वंस्त्वं नो वीतये गोषणिमुताऽश्वसामुत वाजसां धियं नृवत्कृणुहि॥ १०॥

**भावार्थ:**-मनुष्यैर्गवाश्वधनधान्यवृद्धये पुरुषार्थिवन्महान् पुरुषार्थ: कर्त्तव्य:॥ १०॥

अत्र राजमार्गदस्युनिवारणोत्तमदक्षिणादानप्रेरणा दुष्टहिंसनं श्रेष्ठपालनं पशुवर्धनं चोक्तमत एतत्सूक्तार्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति त्रिपञ्चाशत्तमं सूक्तमष्टादशो वर्गश्च समाप्त:॥**

**पदार्थ:**-हे पशु पालने वाले विद्वन्! आप (**न:**) हम लोगों के (**वीतये**) प्राप्ति के अर्थ (**गोषणिम्**) गौओं को अलग-अलग करने वाली (**उत**) और (**अश्वसाम्**) घोड़ों का विभाग करने वाली (**उत**) और (**वाजसाम्**) अन्नादि पदार्थों का विभाग करने वाली (**धियम्**) उत्तम बुद्धि को (**नृवत्**) मनुष्यों के तुल्य (**कृणुहि**) करो॥ १०॥

**भावार्थ:**-मनुष्यों को गौ, अश्व और धन-धान्य की वृद्धि के लिये पुरुषार्थी जनों के समान महान् पुरुषार्थ करना योग्य है॥ १०॥

इस सूक्त में राजमार्ग, डाकुओं का निवारण, उत्तम दक्षिणा देने वालों को प्रेरणा, दुष्टों को मारना, श्रेष्ठों की पालना और पशुओं का बढ़ाना कहा है, इस कारण इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी योग्य है॥

**यह त्रेपनवां सूक्त और अठारहवां वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

**अथ दशर्चस्य चतु:पञ्चाशत्तमस्य सूक्तस्य भरद्वाजो बार्हस्पत्य ऋषि:। पूषा देवता। १, २,४, ६,७, ८, ९ गायत्री। ३, १० निचृद्गायत्री। ५ विराड्गायत्री छन्द:। षड्ज: स्वर:॥**

***अथ मनुष्यै: कस्य सङ्ग एष्टव्य इत्याह॥***

अब दश ऋचा वाले चौवनवें सूक्त का आरम्भ है, इसके प्रथम मन्त्र में मनुष्यों को किसका सङ्ग चाहने योग्य है, इस विषय को कहते हैं॥

**सं पूषन् विदुषा नय यो अञ्जसानुशासति। य एवेदमिति ब्रवत्॥ १॥**

**सम्। पूषन्। विदुषा। नय। य:। अञ्जसा। अनुऽशासति। य:। एव। इदम् इति। ब्रवत्॥ १॥**

**पदार्थ:**-(**सम्**) (**पूषन्**) (**विदुषा**) (**नय**) (**य:**) (**अञ्जसा**) (**अनुशासति**) अनुशासनं करोति। अत्र **बहुलं छन्दसी**ति शपो लुङ् न। (**य:**) (**एव**) (**इदम्**) (**इति**) (**ब्रवत्**) उपदिशेत्॥१॥

**अन्वय:**-हे पूषन् विद्वन्! य इदमित्थमेवेति ब्रवद्य: सत्यमनुशासति तेन विदुषा सहाऽस्मानञ्जसा सन्नय॥१॥

**भावार्थ:**-हे विद्वन्! अस्मान् ये सत्मुपदिशेयुस्तान् सत्कृत्य तेषां सङ्गेन वयं विद्वांसो भूत्वोपदेष्टारो भवेम॥१॥

**पदार्थ:**-हे (**पूषन्**) पुष्टि करनेवाले विद्वन्! (**य:**) जो (**इदम्**) यह (**एव**) इसी प्रकार है (**इति**) ऐसा (**ब्रवत्**) उपदेश करे (**य:**) जो सत्य के (**अनुशासति**) अनुकूल शिक्षा दे उस (**विदुषा**) विद्वान् के साथ हम लोगों को (**अञ्जसा**) साक्षात् (**सम्, नय**) अच्छे प्रकार उन्नति को पहुंचाओ॥१॥

**भावार्थ:**-हे विद्वन्! हम लोगों को जो सत्यविद्या का उपदेश करें, उनका सत्कार कर उनके सङ्ग से हम लोग विद्वान् होकर उपदेशकर्त्ता हों॥१॥

**मनुष्यै: कस्य सङ्ग: सततं विधेय इत्याह॥**

मनुष्यों को किसका सङ्ग निरन्तर विधान करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**समु पूष्णा गमेमहि यो गृहाँ अभिशासति। इम एवेति च ब्रवत्॥ २॥**

**सम्। ऊँ इति। पूष्णा। गमेमहि। य:। गृहान्। अभिऽशासति। इमे। एव इति। च। ब्रवत्॥ २॥**

**पदार्थ:**-(**सम्**) (उ) (**पूष्णा**) पुष्टिकर्त्रा वैद्येन सह (**गमेमहि**) गच्छेम (**य:**) (**गृहान्**) गृहस्थान् (**अभिशासति**) आभिमुख्ये शासनं करोति (**इमे**) (**एव**) (**इति**) (**च**) (**ब्रवत्**) ब्रूयात्॥२॥

**अन्वय:**-य इम इत्थमेवेति ब्रवदु च गृहानभिशासति तेन पूष्णा सह वयं सङ्गमेमहि॥२॥

**भावार्थ:**-यो विद्वान् निश्चयेन पृथिव्यादिविद्याऽध्यापनोपदेशाभ्यां हस्तक्रियया च साक्षात्कर्तुं शक्नुयाद् राजनीत्यादिव्यवहाराननुशिष्यात् तस्यैव विदुष: सङ्गं वयं सदा कुर्य्याम॥२॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**यः**) जो विद्वान् (**इमे**) ये पदार्थ (**एव**) इसी प्रकार हैं (**इति**) ऐसा (**ब्रवत्**) कहे (उ) और (**च**) भी (**गृहान्**) गृहस्थों को (**अभिशासति**) सन्मुख होकर शिक्षा दे उस (**पूष्णा**) पुष्टि करने वाले वैद्य विद्वान् जन के साथ हम लोग (**सम्, गमेमहि**) सङ्ग करें॥२॥

**भावार्थः**-जो विद्वान्‌जन निश्चय से पृथिव्यादि पदार्थों की विद्या को, अध्यापन और उपदेश से तथा हस्तक्रिया से साक्षात् कर सके तथा राजनीति आदि व्यवहारों की अनुकूलता से शिक्षा दे, उसी विद्वान् का सङ्ग हम लोग सदा करें॥२॥

**कस्य कृत्यं न नश्यतीत्याह॥**

किसका कर्त्तव्य नष्ट नहीं होता, इस विषय को कहते हैं॥

**पूष्णश्चक्रं न रिष्यति न कोशोऽव पद्यते। नो अस्य व्यथते पविः॥३॥**

**पूष्णः। चक्रम्। न। रिष्यति। न। कोशः। अव। पद्यते। नो इति। अस्य। व्यथते। पविः॥३॥**

**पदार्थः**-(**पूष्णः**) पुष्टिकर्तुः शिल्पिनो विदुषः (**चक्रम्**) कलायन्त्रादिकम् (**न**) निषेधे (**रिष्यति**) हिनस्ति (**न**) (**कोशः**) धनसमुदायः (**अव**) विरोधे (**पद्यते**) प्राप्नोति (**नो**) निषेधे (**अस्य**) (**व्यथते**) (**पविः**) शस्त्राऽस्त्रविद्या॥३॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यस्याऽस्य पूष्णश्चक्रं न रिष्यति कोशो नाव पद्यते पविर्नो व्यथते तस्यैव सङ्गं वयं कुर्याम॥३॥

**भावार्थः**-यस्य विदुषः पूर्णं बलमस्ति यस्यैकच्छत्रं राज्यमस्ति यस्य कोशोऽभिपूर्य्यते शत्रुषु यस्य शस्त्रं च न विनश्यति तस्य राज्ये सर्वे निर्भया निवसन्तु॥३॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जिस (**अस्य**) इस (**पूष्णः**) पुष्ट करने वाले शिल्पी विद्वान् का (**चक्रम्**) कलायन्त्रादि (**न, रिष्यति**) हिंसन नहीं करता तथा (**कोशः**) धनसमूह (**न, अव, पद्यते**) अप्राप्त नहीं होता अर्थात् प्राप्त ही होता है और (**पविः**) शस्त्रास्त्रविद्या (**नो**) नहीं (**व्यथते**) होती अर्थात् शत्रुजन जिसको नहीं मथते, उसी का सङ्ग हम लोग करें॥३॥

**भावार्थः**-जिस विद्वान् का पूर्ण बल है, जिसका एकछत्र राज्य है, जिसका कोश सब ओर से पूरा होता और शत्रुओं में जिसका शस्त्र नहीं नष्ट होता है, उसके राज्य में सब जन निर्भय होकर बसें॥३॥

**को महाञ्छ्रीमान् भवतीत्याह॥**

कौन महान् श्रीमान् होता है, इस विषय को कहते हैं॥

**यो अस्मै हविषाविधन्न तं पूषापि मृष्यते। प्रथमो विन्दते वसु॥४॥**

**यः। अस्मै। हविषा। अविधत्। न। तम्। पूषा। अपि। मृष्यते। प्रथमः। विन्दते। वसु॥४॥**

**पदार्थः**-(**यः**) (**अस्मै**) (**हविषा**) दानेनादानेन वा (**अविधत्**) विदधाति (**न**) निषेधे (**तम्**) (**पूषा**) (**अपि**) (**मृष्यते**) सहते (**प्रथमः**) आदिमः शिल्पी (**विन्दते**) प्राप्नोति (**वसु**) बहुधनम्॥४॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे विद्वांसो! यो हविषाऽस्मै वस्वविधत् प्रथमो वसु विन्दते तं पूषाऽपि न मृष्यते॥४॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यः प्रथमतः शिल्पविद्यां प्राप्य क्रियया पदार्थान् निर्मिमीते स पुष्कलां श्रियं प्राप्नोति तत्सदृशः पुष्टः कोऽपि न भवति॥४॥

**पदार्थः**-हे विद्वानो! **(यः)** जो **(हविषा)** देने वा लेने से **(अस्मै)** इसके लिये **(वसु)** बहुत धन का **(अविधत्)** विधान करता है वा **(प्रथमः)** पहिला कारुक धन **(विन्दते)** पाता है **(तम्)** उसको **(पूषा)** पुष्टि करने वाला **(अपि)** भी **(न)** नहीं **(मृष्यते)** सहता है॥४॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो पहिले से शिल्पविद्या को पाकर क्रिया से पदार्थों का निर्माण करता है, वह बहुत धन को प्राप्त होता है, उसके सदृश पुष्ट कोई नहीं होता है॥४॥

**को राज्यं प्राप्नोतीत्याह॥**

कौन राज्य को पाता है, इस विषय को कहते हैं॥

**पूषा गा अन्वेतु नः पूषा रक्षत्वर्वतः। पूषा वाजं सनोतु नः॥५॥१९॥**

**पूषा। गाः। अनु। एतु। नः। पूषा। रक्षतु। अर्वतः। पूषा। वाजम्। सनोतु। नः॥५॥**

**पदार्थः**-**(पूषा)** शिल्पिनां पुष्टिकर्त्ता **(गाः)** पृथिवीर्वाचो वा **(अनु)** **(एतु)** **(नः)** अस्मान् **(पूषा)** पोषकः **(रक्षतु)** **(अर्वतः)** अश्वानिवाऽग्न्यादीन् **(पूषा)** **(वाजम्)** धनम् **(सनोतु)** ददातु **(नः)** अस्मभ्यम्॥५॥

**अन्वयः**-यः पूषा नो वाजं सनोतु यः पूषाऽर्वतो रक्षतु स पूषा नोऽनु गा एतु॥५॥

**भावार्थः**-य आदावन्यानुपकरोति पदार्थान् संश्चिनोति स सर्वसहायेन भूमिराज्यादिकं प्राप्नोति॥५॥

**पदार्थः**-जो **(पूषा)** पुष्टि करने वाला विद्वान् **(नः)** हमारे लिये **(वाजम्)** धन को **(सनोतु)** देवे जो **(पूषा)** पुष्टि करने वाला **(अर्वतः)** घोड़ों के समान अग्न्यादि पदार्थों की **(रक्षतु)** रक्षा करे वह **(पूषा)** शिल्पिजनों की पुष्टि करने वाला **(नः)** हम लोगों को तथा **(अनु, गाः)** अनुकूल पृथिवी और वाणियों को **(एतु)** प्राप्त हो॥५॥

**भावार्थः**-जो पहिले औरों का उपकार करता वा पदार्थों को इकट्ठा करता है, वह सब के सहाय से भूमि के राज्य आदि को प्राप्त होता है॥५॥

**केषां सङ्गेन विद्याराज्ये प्राप्नुयादित्याह॥**

किन के सङ्ग से विद्या और राज्य को प्राप्त होवे, इस विषय को कहते हैं॥

**पूषन्ननु प्र गा इहि यजमानस्य सुन्वतः। अस्माकं स्तुवतामुत॥६॥**

**पूषन्। अनु। प्र। गाः। इहि। यजमानस्य। सुन्वतः। अस्माकम्। स्तुवताम्। उत॥६॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**पूषन्**) (**अनु**) (**प्र**) प्रकर्षेण (**गाः**) सुशिक्षिता वाचो भूमीर्वा (**इहि**) प्राप्नुहि (**यजमानस्य**) (**सुन्वतः**) यज्ञं सम्पादयतः (**अस्माकम्**) (**स्तुवताम्**) विद्याप्रशंसकानाम् (**उत**) (**अपि**)॥६॥

**अन्वयः**-हे पूषंस्त्वँ सुन्वतो यजमानस्योत स्तुवतामस्माकं गा अनु प्रेहि॥६॥

**भावार्थः**-हे शिल्पिंस्त्वं राजधनादिसहायेनाऽस्मच्छिक्षकेभ्यश्च विद्याः प्राप्य भूमिराज्यं प्राप्नुहि॥६॥

**पदार्थः**-हे (**पूषन्**) पुष्टि करने वाले! आप (**सुन्वतः**) यज्ञ के सम्पादन करने वाले (**यजमानस्य**) यज्ञकर्त्ता के (**उत**) और (**स्तुवताम्**) विद्या की प्रशंसा करने वाले (**अस्माकम्**) हम लोगों की (**गाः**) सुन्दर शिक्षित वाणी वा भूमियों को (**अनु, प्र, इहि**) अनुकूलता से प्राप्त होओ॥६॥

**भावार्थः**-हे शिल्पी विद्वान् जन! आप राजधनादि के सहाय से हम से वा शिक्षा देने वालों से विद्याओं को पाकर भूमिराज्य को प्राप्त होओ॥६॥

**केनापि हिंसा नैव कार्येत्याह॥**

किसी को हिंसा नहीं करनी चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**माकिर्नेशन्माकीं रिषन्माकीं सं शारि केवटे। अथारिष्टाभिरा गहि॥७॥**

**माकिः। नेशत्। माकीम्। रिषत्। माकीम्। सम्। शारि। केवटे। अथ। अरिष्टाभिः। आ। गहि॥७॥**

**पदार्थः**-(**माकिः**) निषेधे (**नेशत्**) नश्येत् (**माकीम्**) (**रिषत्**) हिंस्यात् (**माकीम्**) (**सम्**) (**शारि**) हिंस्यात् (**केवटे**) कूपे। **केवट इति कूपनाम।** (निघं०३.२३) (**अथ**) (**अरिष्टाभिः**) अहिंसिताभिः क्रियाभिः (**आ**) (**गहि**) आगच्छ॥७॥

**अन्वयः**-हे विद्वन्! यः कदाचिन्माकिर्नेशत्किंचन माकीं रिषदथ केवटे माकीं सं शारि तं प्राप्यारिष्टाभिस्त्वमस्माना गहि॥७॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यो नष्टं कर्म न करोति नापि कञ्चन हिनस्ति कूपोदकेनापि कञ्चिन्न पीडयति स एव सर्वान् सङ्गन्तुमर्होऽहिंस्रो जायते॥७॥

**पदार्थः**-हे विद्वन्! जो कभी (**माकिः**) न (**नेशत्**) नष्ट हो तथा किसी को (**माकीम्**) न (**रिषत्**) नष्ट करे (**अथ**) इसके अनन्तर (**केवटे**) कुँए में (**माकीम्**) न (**सम्, शारि**) नष्ट करे वा कुँए के निमित्त किसी को न नष्ट करे उसको पाकर (**अरिष्टाभिः**) अहिंसित क्रियाओं से आप हम लोगों को (**आ, गहि**) प्राप्त हूजिये॥७॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो नष्ट कर्म नहीं करता न किसी को नष्ट करता है तथा कुँए के जल से भी किसी को नहीं पीड़ा देता, वही सब से सङ्ग करने योग्य और न हिंसा करने वाला होता है॥७॥

**मनुष्यैः कस्माद्धनं प्राप्तव्यमित्याह॥**

मनुष्यों को किससे धन पाने योग्य है, इस विषय को कहते हैं॥



www.9009.co.in

**श्रृण्वन्तं पूषणं वयमिर्यमनष्टवेदसम्। ईशानं राय ईमहे॥८॥**

**श्रृण्वन्तम्। पूषणम्। वयम्। इर्यम्। अनष्टऽवेदसम्। ईशानम्। रायः। ईमहे॥८॥**

**पदार्थः**-(**श्रृण्वन्तम्**) (**पूषणम्**) पुष्टिकर्त्तारम् (**वयम्**) (**इर्यम्**) प्रेरणीयम् (**अनष्टवेदसम्**) अनष्टविज्ञानधनम् (**ईशानम्**) ईशनशीलम् (**रायः**) (**ईमहे**) याचामहे॥८॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथा वयमिर्यमनष्टवेदसमीशानं श्रृण्वन्तं पूषणं प्राप्य राय ईमहे तथैनं प्राप्य यूयं धनं याचध्वम्॥८॥

**भावार्थः**-यः सुपात्रकुपात्रयोर्विद्वदविदुषोर्धार्मिकाऽधार्मिकयोः परीक्षकः स्यात्तस्मादेव पुरुषार्थेन धनं प्राप्तव्यम्॥८॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो जैसे (**वयम्**) हम लोग (**इर्यम्**) प्रेरणा देने योग्य (**अनष्टवेदसम्**) अक्षतविज्ञानधन तथा (**ईशानम्**) ईश्वरता का शील रखने और (**श्रृण्वन्तम्**) सुनने और (**पूषणम्**) पुष्टि करने वाले सज्जन विद्वान् को प्राप्त होकर (**रायः**) धनों को (**ईमहे**) मांगते हैं, वैसे इसको प्राप्त होकर तुम सब धन को मांगो॥८॥

**भावार्थः**-जो सुपात्र और कुपात्र, विद्वान् और अविद्वान् तथा धार्मिक और अधार्मिक की परीक्षा करने वाला हो, उसी के सकाश से पुरुषार्थ से धन पाना चाहिये॥८॥

**के कस्मिन्नहिंस्राः स्युरित्याह॥**

कौन किसमें अहिंसक हों, इस विषय को कहते हैं॥

**पूषन् तव व्रते वयं न रिष्येम कदा चन। स्तोतारस्त इह स्मसि॥९॥**

**पूषन्। तव। व्रते। वयम्। न। रिष्येम। कदा। चन। स्तोतारः। ते। इह। स्मसि॥९॥**

**पदार्थः**-(**पूषन्**) पालक (**तव**) (**व्रते**) कर्मणि (**वयम्**) (**न**) (**रिष्येम**) हिंस्याम (**कदा**) (**चन**) अपि (**स्तोतारः**) विद्यास्तावकाः (**ते**) तव (**इह**) (**स्मसि**)॥९॥

**अन्वयः**-हे पूषन्! यस्य त इह स्तोतारो वयं स्मसि तस्य तव व्रते कदा चन न रिष्येम॥९॥

**भावार्थः**-ये सत्यविद्यानां प्रशंसका मनुष्याः स्युस्ते विद्वत्कर्मणि हिंसका न स्युः॥९॥

**पदार्थः**-हे (**पूषन्**) पालन करने वाले धर्मात्मन्! जिस (**ते**) आपके (**इह**) इस संसार में (**स्तोतारः**) विद्या की स्तुति करने वाले (**वयम्**) हम लोग (**स्मसि**) हैं उस (**तव**) आपके (**व्रते**) कर्म में (**कदा, चन**) कभी भी हम लोग (**न, रिष्येम**) नष्टकर्त्ता न होवें॥९॥

**भावार्थः**-जो सत्यविद्याओं की प्रशंसा करने वाले मनुष्य हों, वे विद्वानों के काम में हिंसा करने वाले न हों॥९॥

**कैर्गुणैः कीदृशा मनुष्या भवन्तीत्याह॥**

किन गुणों से कैसे मनुष्य होते हैं, इस विषय को कहते हैं॥



www.9009.co.in

**परि॑ पू॒षा प॒रस्ता॒द्धस्तं॑ दधातु॒ दक्षि॑णम्। पुन॑र्नो न॒ष्टमाज॑तु॥१०॥२०॥**

**परि॑। पू॒षा। प॒रस्ता॑त्। हस्त॑म्। द॒धा॒तु॒। दक्षि॑णम्। पुन॑:। न॒ः। न॒ष्टम्। आ। अ॒ज॒तु॒॥१०॥**

**पदार्थ:**-(**परि**) सर्वत: (**पूषा**) पोषक: (**परस्तात्**) (**हस्तम्**) (**दधातु**) (**दक्षिणम्**) (**पुन:**) (**न:**) अस्मभ्यमस्मान् वा (**नष्टम्**) अदृष्टम् (**आ, अजतु**) समन्ताद्ददातु प्राप्नोतु वा॥१०॥

**अन्वय:**-हे मनुष्या! य: पूषा दाता दानसमये दक्षिणं हस्तं दधातु स पुनर्नष्टमपि द्रव्यं परस्तात् परि दधातु नोऽस्मान् पुनराजतु॥१०॥

**भावार्थ:**-अस्मिँल्लोके यो दाता स एवोत्तमो यो ग्रहीता सोऽधमो यश्च चौर्य्येण प्रापक: स निकृष्टो वर्त्तत इति वेद्यम्॥१०॥

अत्र विद्वत्सङ्ग: शिल्पिप्रशंसोत्तमगुणयाचनं हिंसात्यागो दानप्रशंसा चोक्ता अत एतस्य सूक्तस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति चतु:पञ्चाशत्तमं सूक्तं विंशो वर्गश्च समाप्त:॥**

**पदार्थ:**-हे मनुष्यो! जो (**पूषा**) पुष्टि करने वाला दानशील (**दक्षिणम्**) दाहिने (**हस्तम्**) हाथ को धारण करे वह (**पुन:**) फिर (**नष्टम्**) नष्ट हुई भी और वस्तु को (**परस्तात्**) पीछे से (**परि, दधातु**) सब ओर से धारण करे (**न:**) हम लोगों को फिर (**आ, अजतु**) अच्छे प्रकार दे वा प्राप्त हो॥१०॥

**भावार्थ:**-इस लोक में जो देने वाला है, वही उत्तम है, जो लेने वाला है, यह अधम है और जो चोरी से प्राप्त करने वाला है, वह निकृष्ट है, यह जानना चाहिये॥१०॥

इस सूक्त में विद्वानों का सङ्ग, शिल्पियों की प्रशंसा, उत्तम गुणों की याचना, हिंसा छोड़ना और दान की प्रशंसा कही है, इससे इस सूक्त के अर्थ कि इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह चौवनवां सूक्त और बीसवां वर्ग पूरा हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

**अथ षडर्चस्य पञ्चपञ्चाशत्तमस्य सूक्तस्य भरद्वाजो बार्हस्पत्य ऋषिः। पूषा देवता। १, २, ५, ६ गायत्री। ३, ४ विराड्गायत्री छन्दः। षड्जः स्वरः॥**

***अथ कः सङ्गन्तव्य इत्याह॥***

अब छः ऋचावाले पचपनवें सूक्त का आरम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में किसका संग करना योग्य है, इस विषय को कहते हैं॥

**एहि वां विमुचो नपादाघृणे सं सचावहै। रथीर्ऋतस्य नो भव॥१॥**

**आ। इहि। वाम्। विऽमुचः। नपात्। आघृणे। सम्। सचावहै। रथीः। ऋतस्य। नः। भव॥१॥**

**पदार्थः**-(**आ**) समन्तात् (**इहि**) प्राप्नुहि (**वाम्**) युवाम् (**विमुचः**) मोचय (**नपात्**) यो न पतति सः (**आघृणे**) समन्ताद्देदीप्यमान (**सम्**) (**सचावहै**) सम्बध्नीयाव (**रथीः**) बहुरथवान् (**ऋतस्य**) सत्यस्य (**नः**) अस्मभ्यम् (**भव**)॥१॥

**अन्वयः**-हे आघृणे नपात्! त्वं न ऋतस्य रथीर्भव न आ इहि, हे अध्यापकोपदेशकौ! वामुक्तविद्वंस्त्वं विमुचस्त्वमहञ्च सं सचावहै॥१॥

**भावार्थः**-यो विद्वान् सत्यपालकः सत्योपदेष्टा भवेत्स श्रोता च सखायौ त्वा सत्यविद्यां प्राप्तौ भूत्वाऽन्यानपि प्रापयेताम्॥१॥

**पदार्थः**-हे (**आघृणे**) सब ओर से देदीप्यमान (**नपात्**) जो नहीं गिरते वह! आप (**नः**) हमारे लिये (**ऋतस्य**) सत्य के सम्बन्धी (**रथीः**) बहुत रथोंवाले (**भव**) हो तथा आप हम लोगों को (**आ, इहि**) प्राप्त होओ। हे अध्यापक और उपदेशको! (**वाम्**) तुम दोनों को हे उक्त विद्वन्! आप (**विमुचः**) छोड़ो तथा आप और मैं (**सम्, सचावहै**) सम्बन्ध करें॥१॥

**भावार्थः**-जो विद्वान् सत्य की पालना करने वाला, सत्य का उपदेशक हो वह और सुनने वाला, मित्र होकर तथा सत्यविद्या को प्राप्त होकर औरों को भी विद्या को प्राप्त करावें॥१॥

**पुनः कीदृशाद्धनं प्रापणीयमित्याह॥**

फिर कैसे पुरुष से धन प्राप्त करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**रथीतमं कपर्दिनमीशानं राधसो महः। रायः सखायमीमहे॥२॥**

**रथिऽतमम्। कपर्दिनम्। ईशानम्। राधसः। महः। रायः। सखायम्। ईमहे॥२॥**

**पदार्थः**-(**रथीतमम्**) बहवो रथा विद्यन्ते यस्य तम् (**कपर्दिनम्**) जटाजूटं सखायं (**ईशानम्**) ऐश्वर्ययुक्तम् (**राधसः**) धनस्य (**महः**) महान् (**रायः**) साधारणधनस्य (**सखायम्**) मित्रम् (**ईमहे**) याचामहे॥२॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे मनुष्या! वयं यन्महो राधसो राय ईशानं रथीतमं कपर्दिनं सखायं विद्वांसमीमहे तं यूयमपि याचध्वम्॥२॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यो ब्रह्मचारी भूत्वाऽधीतविद्यः पुरुषार्थी बहुधनस्य स्वामी वर्त्तते तस्मादेव विद्यामधीत्य श्रियः प्राप्नुत॥२॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! हम लोग जिस **(महः)** महान् **(राधसः)** धन के वा **(रायः)** साधारण धन के **(ईशानम्)** ऐश्वर्य्य से युक्त **(रथीतमम्)** जिसके बहुत रथ विद्यमान **(कपर्दिनम्)** जो जटाजूट ब्रह्मचारी **(सखायम्)** मित्र विद्वान् उसकी **(ईमहे)** याचना करते हैं, उसकी तुम भी याचना करो॥२॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो ब्रह्मचारी होकर विद्या पढ़ा हुआ पुरुषार्थी तथा बहुत धन का स्वामी है, उसी से विद्या पढ़कर धन को प्राप्त होओ॥२॥

**अथ कः सर्वस्य सुखप्रदो भवतीत्याह॥**

अब कौन सब को सुख देने वाला होता है, इस विषय को कहते हैं॥

## रायो धारास्याघृणे वसो राशिरजाश्व। धीवतोधीवतः सखा॥३॥

**रायः। धारा। असि। आघृणे। वसोः। राशिः। अजऽअश्व। धीवतःऽधीवतः। सखा॥३॥**

**पदार्थः**-**(रायः)** धनस्य **(धारा)** प्रापिका वागिव **(असि)** **(आघृणे)** विद्यया प्रकाशमान **(वसोः)** वासयितुः **(राशिः)** समूहः **(अजाश्व)** अजोऽनुत्पन्नो विद्युदश्वो यस्य तत्सम्बुद्धौ **(धीवतोधीवतः)** प्राज्ञस्य प्राज्ञस्य **(सखा)**॥३॥

**अन्वयः**-हे अजाश्वाऽऽघृणे विद्वन्! यतस्त्वं वसो रायो राशिरिव धारेव धीवतोधीवतः सखाऽसि तस्मात् सत्कर्त्तव्योऽसि॥३॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। ये मनुष्याः प्राज्ञानां सखायः पदार्थविद्याविदो धनाढ्याः स्युस्ते सर्वेषां सुखप्रदा भवन्ति॥३॥

**पदार्थः**-हे **(अजाश्व)** अविनाशी बिजुलीरूप घोड़े वाले **(आघृणे)** विद्या से प्रकाशमान विद्वन्! जिससे आप **(वसोः)** वास कराने वाले **(रायः)** धन की **(राशिः)** ढेरी के समान वा **(धारा)** प्राप्ति कराने वाली वाणी के समान **(धीवतोधीवतः)** प्राज्ञ प्राज्ञ के **(सखा)** मित्र **(असि)** हो, इससे सत्कार करने योग्य हो॥१३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो मनुष्य प्राज्ञ पुरुषों के मित्र, पदार्थविद्याओं के जानने वाले तथा धनाढ्य हों, वे सबके सुख देने वाले होते हैं॥३॥

**पुनः कैर्गुणैरुत्कृष्टो भवतीत्याह॥**

फिर किन गुणों से उत्कृष्ट होता है, इस विषय को कहते हैं॥

## पूषणं न्व१जाश्वमुप स्तोषाम वाजिनम्। स्वसुर्यो जार उच्यते॥४॥



www.9009.co.in

**पूषणम्। नु। अजऽअश्वम्। उप। स्तोषाम। वाजिनम्। स्वसुः। यः। जारः। उच्यते॥४॥**

**पदार्थः**-(**पूषणम्**) पोषकम् (**नु**) सद्यः (**अजाश्वम्**) अजाश्चाश्वाश्चास्मिँस्तम् (**उप**) (**स्तोषाम**) प्रशंसेम (**वाजिनम्**) ज्ञानबलप्रदम् (**स्वसुः**) भगिन्या इव वर्त्तमानाया उषसः (**यः**) (**जारः**) जरयिता (**उच्यते**)॥४॥

**अन्वयः**-य स्वसुर्जार उच्यते तं वाजिनमजाश्वं पूषणमादित्यं वयं नूप स्तोषाम॥४॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे राजादयो मनुष्या! यथा सूर्यो रात्रेर्निवारकोऽस्ति तथैव प्रजासु जारकर्मणि वर्त्तमानान् मनुष्यान्निवारयत॥४॥

**पदार्थः**-(**यः**) जो (**स्वसुः**) बहिन के समान वर्त्तमान उषा का (**जारः**) जीर्ण कराने वाला (**उच्यते**) कहा जाता है उस (**वाजिनम्**) ज्ञान और बल का देने वाला (**अजाश्वम्**) जिसमें बकरी और घोड़े विद्यमान (**पूषणम्**) जो पुष्टि करने वाला है, उस आदित्य की हम (**नु**) शीघ्र (**उप, स्तोषाम**) प्रशंसा करें॥४॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे राजा आदि मनुष्यो! जैसे सूर्य्य रात्रि का निवारण करने वाला है, वैसे ही प्रजाजनों में जारकर्म में वर्त्तमान मनुष्यों का निवारण करो॥४॥

**पुनर्मनुष्याः किं जानीयुरित्याह॥**

फिर मनुष्य क्या जानें, इस विषय को कहते हैं॥

**मातुर्दिधिषुमब्रवं स्वसुर्जारः शृणोतु नः। भ्रातेन्द्रस्य सखा मम॥५॥**

**मातुः। दिधिषुम्। अब्रवम्। स्वसुः। जारः। शृणोतु। नः। भ्राता। इन्द्रस्य। सखा। मम॥५॥**

**पदार्थः**-(**मातुः**) जनन्याः (**दिधिषुम्**) धारकम् (**अब्रवम्**) ब्रूयाम् (**स्वसुः**) भगिन्या इवोषसः (**जारः**) निवारयिता (**शृणोतु**) (**नः**) अस्माकम् (**भ्राता**) बन्धुरिव (**इन्द्रस्य**) विद्युतः (**सखा**) (**मम**)॥५॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! य इन्द्रस्य भ्रातेव मम सखा नो दिधिषुं शृणोतु यः स्वसुर्जारो मातुर्धर्त्ताऽस्ति तमहमब्रवं तं सर्वे विजानन्तु॥५॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यथाऽग्ने सखा वायुरस्ति रात्रेर्निवर्त्तकः सूर्य्यश्च तथैव धार्मिका मम सखायोऽहं च तेषां सुहृद्भूत्वा रात्रिमिव वर्त्तमानामविद्यां वयं निवारयेम॥५॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो (**इन्द्रस्य**) बिजुली के (**भ्राता**) भ्राता के समान (**मम**) मेरा (**सखा**) मित्र (**नः**) हम लोगों के (**दिधिषुम्**) धारण करने वाले को (**शृणोतु**) सुने और जो (**स्वसुः**) भगिनी के समान उषा का (**जारः**) निवारण करने वाला (**मातुः**) माता का धारण करने वाला है, उसको मैं (**अब्रवम्**) कहूं और उसको सब जानें॥५॥



www.9009.co.in

**भावार्थ:**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जैसे अग्नि का मित्र वायु है, और रात्रि का निवारण करने वाला सूर्य भी है, वैसे ही धार्मिक मेरे मित्र और मैं भी उनका मित्र होकर रात्रि के समान वर्त्तमान अविद्या का हम सब निवारण करें॥५॥

**पुनर्मनुष्याः किं विदित्वा किं प्राप्नुवन्तीत्याह॥**

फिर मनुष्य क्या जान के किसको प्राप्त होते हैं, इस विषय को कहते हैं॥

**आजासः पूषणं रथे निशृम्भास्ते जनश्रियम्। देवं वहन्तु बिभ्रतः॥६॥२१॥**

**आ। अजासः। पूषणम्। रथे। निऽशृम्भाः। ते। जनऽश्रियम्। देवम्। वहन्तु। बिभ्रतः॥६॥**

**पदार्थः**-(**आ**) (**अजासः**) पुष्टिकर्त्तुरश्वाः (**पूषणम्**) पोषकं सूर्य्यम् (**रथे**) रमणीये जगति (**निशृम्भाः**) नित्यं सम्बद्धारः (**ते**) (**जनश्रियम्**) जनानां शोभा लक्ष्मीर्यस्य तम् (**देवम्**) दिव्यगुणं विद्वांसम् (**वहन्तु**) प्राप्नुवन्तु (**बिभ्रतः**) धारकान् पोषकान्॥६॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! ये निशृम्भा अजासः पूषणं जनश्रियं देवं बिभ्रतो धर्त्तारं रथ आ वहन्तु ते सर्वमिष्टं प्राप्नुवन्ति॥६॥

**भावार्थः**-हे विद्वांसो! यूयं शरीरात्मपुष्टिकरान् पदार्थान् विदित्वोपयुज्यैश्वर्यं प्राप्नुत॥६॥

अत्र पूषादित्यगुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति पञ्चपञ्चाशत्तमं सूक्तमेकविंशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थ:**-हे मनुष्यो! जो (**निशृम्भाः**) नित्य सम्बन्ध करने वाले (**अजासः**) पुष्टिकर्त्ता सूर्य्य के किरणरूप अश्व (**पूषणम्**) पुष्ट करने वाले सूर्य्य वा (**जनश्रियम्**) जिसके मनुष्यों की शोभा विद्यमान उस (**देवम्**) दिव्यगुणवाले विद्वान् के (**बिभ्रतः**) धारक अर्थात् पुष्टि करने वालों और धारण करने वालों को (**रथे**) रमणीय जगत् में (**आ, वहन्तु**) अच्छे प्रकार प्राप्त करें (**ते**) वे सर्व चाही हुई वस्तु को प्राप्त होते हैं॥६॥

**भावार्थ:**-हे विद्वानो! तुम शरीर और आत्मा की पुष्टि करने वाले पदार्थों को जानकर और उनसे उपयोग लेकर ऐश्वर्य्य को प्राप्त होओ॥६॥

इस मन्त्र में पूषा और आदित्य के गुणों का वर्णन होने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह पचपनवां सूक्त और इक्कीसवां वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

**अथ षड्चस्य षट्पञ्चाशत्तमस्य सूक्तस्य भरद्वाजो बार्हस्पत्य ऋषिः। पूषा देवता। १, ४, ५ गायत्री। २, ३ निचृद्गायत्री छन्दः। षड्जः स्वरः। ६ स्वरादुष्णिक्छन्दः। ऋषभः स्वरः॥**

***अथ केन कस्मै किमुपदेष्टव्यमित्याह॥***

अब छः ऋचावाले छप्पनवें सूक्त का प्रारम्भ है, इसके प्रथम मन्त्र में किसको किसके लिये क्या उपदेश करने योग्य है, इस विषय को कहते हैं॥

**य एनमादिदेशति करम्भादिति पूषणम्। न तेन देव आदिशे॥ १॥**

**यः। एनम्। आऽदिदेशति। करम्भऽअत् इति। पूषणम्। न। तेन। देवः। आदिशे॥ १॥**

**पदार्थः**-(**यः**) (**एनम्**) विद्युदादिस्वरूपम् (**आदिदेशति**) समन्तात् सम्यगुपदिशति (**करम्भात्**) यः करम्भमन्नविशेषमत्ति सः (**इति**) अनेन प्रकारेण (**पूषणम्**) पोषकम् (**न**) (**तेन**) (**देवः**) विद्वान् (**आदिशे**) अभिप्रशंसे॥ १॥

**अन्वयः**-यः करम्भाद्देव एनं पूषणमादिदेशति इति तेन सहाऽहमन्यथा नादिशे॥ १॥

**भावार्थः**-ये मनुष्याः सत्यमुपदिशन्ति ते सर्वानन्दं प्राप्नुवन्ति॥ १॥

**पदार्थः**-(**यः**) जो (**करम्भात्**) करम्भ करमन्हां नामक अन्न को खाने वाला (**देवः**) विद्वान् (**एनम्**) बिजुली आदि रूप वाले (**पूषणम्**) पुष्टि करने वाले को (**आदिदेशति**) सब ओर से अच्छे प्रकार उपदेश करता है (**इति**) इस प्रकार (**तेन**) उसके साथ मैं अन्यथा (**न**) नहीं (**आदिशे**) सब ओर से प्रशंसा करता हूँ॥ १॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य सत्य का उपदेश करते हैं, वे सब आनन्द को प्राप्त होते हैं॥ १॥

**पुनः स कीदृशो भवतीत्याह॥**

फिर वह कैसा होता है, इस विषय को कहते हैं॥

**उत घा स रथीतमः सख्या सत्पतिर्युजा। इन्द्रो वृत्राणि जिघ्नते॥ २॥**

**उत। घ। सः। रथिऽतमः। सख्या। सत्ऽपतिः। युजा। इन्द्रः। वृत्राणि। जिघ्नते॥ २॥**

**पदार्थः**-(**उत**) अपि (**घा**) एव। अत्र **ऋचि तुनुघेति** दीर्घः। (**सः**) (**रथीतमः**) अतिशयेन रथयुक्तः (**सख्या**) मित्रेण सह (**सत्पतिः**) सतां पालकः (**युजा**) युक्तेन (**इन्द्रः**) सूर्य्येव राजा (**वृत्राणि**) घनानिव शत्रून् (**जिघ्नते**) हन्ति॥ २॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यो युजा सख्या सत्पतिरुत रथीतम इन्द्रो यथा सूर्यो वृत्राणि हन्ति तथा शत्रूञ्जिघ्नते स घा कृतकृत्यो भवति॥ २॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-हे मनुष्या! ये सत्यसत्पुरुषैः सह मित्रतां दुष्टैः सहोदासीनतां कुर्वन्ति ते दुष्टान्निवार्य्य श्रेष्ठान् स्वीकर्तुं शक्नुवन्ति॥२॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो **(युजा)** युक्त **(सख्या)** मित्र के साथ **(सत्पतिः)** सज्जनों की पालना करने वाला **(उत)** और **(रथीतमः)** अतीव रथयुक्त **(इन्द्रः)** सूर्य के समान राजा जैसे सूर्य **(वृत्राणि)** मेघों को मारता है, वैसे **(जिघ्नते)** शत्रुओं को मारता है **(सः)** वह **(घा)** ही कृतकृत्य होता है॥२॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो सत्य तथा सत्पुरुषों के साथ मित्रता तथा दुष्टों के साथ उदासीनता करते हैं, वे दुष्टों को निवार कर श्रेष्ठों का स्वीकार कर सकते हैं॥२॥

**पुनर्मनुष्यैः कीदृशं भाषणं कर्त्तव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को कैसा भाषण करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**उतादः परुषे गवि सूरश्चक्रं हिरण्ययम्। न्यैरयद्रथीतमः॥३॥**

**उत। अदः। परुषे। गवि। सूरः। चक्रम्। हिरण्ययम्। नि। ऐरयत्। रथिऽतमः॥३॥**

**पदार्थः**-**(उत)** अपि **(अदः)** तत् **(परुषे)** कठोरे व्यवहारे **(गवि)** वाचि **(सूरः)** वीरः **(चक्रम्)** **(हिरण्ययम्)** सुवर्णादियुक्तं तेजोमयं वा **(नि)** **(ऐरयत्)** प्रेरयेत् **(रथीतमः)** अतिशयेन रथादियुक्तः। अत्र **संहितायामि**ति दीर्घः॥३॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यो रथीतमः सूरोऽदो हिरण्ययं चक्रं न्यैरयदुत स परुषे गवि न प्रवर्त्तेत॥३॥

**भावार्थः**-यो मनुष्यः कठोरभाषणं विहाय कोमलभाषणं करोति स सदाऽऽनन्दी भवति॥३॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो **(रथीतमः)** अतीव रथादि पदार्थों से युक्त **(सूरः)** वीर पुरुष **(अदः)** उस **(हिरण्ययम्)** सुवर्णादि युक्त वा तेजोमय **(चक्रम्)** चक्र को **(नि, ऐरयत्)** निरन्तर प्रेरित करे वह **(उत)** निश्चय से **(परुषे)** कठोर व्यवहार में और **(गवि)** वाणी में नहीं प्रवृत्त हो॥३॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य कठोर भाषण को छोड़ कोमल भाषण करता है, वह सदा आनन्दी होता है॥३॥

**पुनर्विद्वान् किं कुर्यादित्याह॥**

फिर विद्वान् क्या करे, इस विषय को कहते हैं॥

**यदद्य त्वा पुरुष्टुत ब्रवाम दस्र मन्तुमः। तत्सु नो मन्म साधय॥४॥**

**यत्। अद्य। त्वा। पुरुऽस्तुत। ब्रवाम। दस्र। मन्तुऽमः। तत्। सु। नः। मन्म। साधय॥४॥**

**पदार्थः**-**(यत्)** यत् ज्ञानम् **(अद्य)** **(त्वा)** त्वाम् **(पुरुष्टुत)** बहुभिः प्रशंसित **(ब्रवाम)** वदेम **(दस्र)** दुःखोपक्षयितः **(मन्तुमः)** प्रशस्तविज्ञानयुक्त **(तत्)** **(सु)** **(नः)** अस्मभ्यम् **(मन्म)** विज्ञानम् **(साधय)**॥४॥

**अन्वयः**-हे पुरुष्टुत दस्र! मन्तुमोऽद्य वयं यत्त्वा ब्रवाम स त्वं नस्तन्मन्म सु साधय॥४॥

**भावार्थः**-मनुष्यैः सर्वदा सम्मुखेऽन्यत्र वा सत्यमेव वाच्यं येन सत्यं ज्ञानं सर्वत्र वर्धेत॥४॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-हे **(पुरुष्टुत)** बहुतों से प्रशंसा को प्राप्त **(दस्र)** दुःख को नष्ट करने वाले! **(मन्तुमः)** प्रशस्तविज्ञानयुक्त **(अद्य)** आज हम **(यत्)** जिस ज्ञान को **(त्वा)** तुझ को **(ब्रवाम)** कहें वह तू **(नः)** हमारे लिये **(तत्)** उस **(मन्म)** विज्ञान को **(सु, साधय)** अच्छे प्रकार सिद्ध कर॥४॥

**भावार्थः**-मनुष्यों को सर्वदा सम्मुख वा अन्यत्र सत्य ही कहना चाहिये, जिससे सत्य ज्ञान सर्वत्र बढ़े॥४॥

**पुनर्विद्वान् किं कुर्यादित्याह॥**

फिर विद्वान् क्या करे, इस विषय को कहते हैं॥

**इमं च नो गवेषणं सातये सीषधो गणम्। आरात् पूषन्नसि श्रुतः॥५॥**

**इमम्। च। नः। गोऽएषणम्। सातये। सीसधः। गणम्। आरात्। पूषन्। असि। श्रुतः॥५॥**

**पदार्थः**-**(इमम्)** **(च)** **(नः)** अस्माकम् **(गवेषणम्)** गवां वाचादीनामीषणं येन तम् **(सातये)** संविभागाय **(सीषधः)** साधय **(गणम्)** समूहम् **(आरात्)** समीपाद्दूराद्वा **(पूषन्)** पुष्टिकर्त्तः **(असि)** **(श्रुतः)** योऽश्रावि सः॥५॥

**अन्वयः**-हे पूषन्! यतस्त्वमाराच्छ्रुतोऽसि तस्मात् सातये न इमं गवेषणं गणं च सीषधः॥५॥

**भावार्थः**-हे विद्वन्! यस्माद्भवानाप्तगुणैर्युक्तोऽस्ति तस्मादस्माकं मनुष्याणां सङ्घान् विदुषः करोतु॥५॥

**पदार्थः**-हे **(पूषन्)** पुष्टि करनेवाले! जिससे आप **(आरात्)** समीप वा दूर से **(श्रुतः)** सुने हुए **(असि)** हो इससे **(सातये)** संविभाग करने के लिये **(नः)** हमारे **(इमम्)** इस **(गवेषणम्)** वाणी आदि पदार्थों की प्रेरणा करने वाले को तथा **(गणम्)** अन्य पदार्थों के समूह को **(च)** भी **(सीषधः)** साधो॥५॥

**भावार्थः**-हे विद्वन्! जिससे आप आप्त विद्वानों के गुणों से युक्त हैं, इससे हम मनुष्यों के सङ्घों को विद्वान् करो॥५॥

**पुनः सर्वैर्विद्वदर्थं किमेष्टव्यमित्याह॥**

फिर सब को विद्वानों के लिये क्या इच्छा करनी चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**आ ते स्वस्तिमीमह आरेअघामुपावसुम्।**

**अद्या च सर्वतातये श्वश्च सर्वतातये॥६॥२२॥**

**आ। ते। स्वस्तिम्। ईमहे। आरेऽअघाम्। उपऽवसुम्। अद्य। च। सर्वऽतातये। श्वः। च। सर्वऽतातये॥६॥**

**पदार्थः**-**(आ)** समन्तात् **(ते)** तुभ्यम् **(स्वस्तिम्)** सुखम् **(ईमहे)** याचामहे **(आरेअघाम्)** आरे दूरेऽघं पापं यस्याम् **(उपावसुम्)** उप समीपे वसूनि यस्यां ताम् **(अद्या)** अत्र **निपातस्य चेति** दीर्घः। **(च)** **(सर्वतातये)** सम्पूर्णसुखसाधकाय यज्ञाय **(श्वः)** आगामिदिने **(च)** तस्मादप्यग्रे **(सर्वतातये)** सर्वसुखकराय॥६॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे विद्वन्! सर्वतातये तेऽद्या च श्वश्च सर्वतातये आरेअघामुपावसुं स्वस्तिं वयमा ईमहे॥६॥

**भावार्थः**-हे विद्वन्! यतो भवान् पापाचरणात् पृथक्सर्वस्य कल्याणकर्त्ताऽस्ति तस्माद्भवदर्थं सदैव सुखं वयमिच्छेमेति॥६॥

अत्रोपदेशकश्रोतृपूषार्थवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति षट्पञ्चाशत्तमं सूक्तं द्वाविंशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे विद्वन्! **(सर्वतातये)** सम्पूर्ण सुख सिद्ध करने वाले यज्ञ के लिये **(ते)** तेरे लिये **(अद्या)** आज **(च)** और **(श्वः)** आगामी दिन **(च)** भी **(सर्वतातये)** सर्वसुख करने वाले और पदार्थ के लिये **(आरेअघाम्)** जिसमें पाप दूर पहुंचे तथा **(उपावसुम्)** वा समीप धन आदि पदार्थ विद्यमान उस **(स्वस्तिम्)** सुख को हम **(आ, ईमहे)** अच्छे प्रकार मांगते हैं॥६॥

**भावार्थः**-हे विद्वन्! जिससे आप पापाचरण से अलग तथा सबके कल्याण करने वाले हैं, इससे आपके लिये सदैव सुख की इच्छा हम लोग करें॥६॥

इस सूक्त में उपदेशक, श्रोता और पूषा शब्द के अर्थ का वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह छप्पनवाँ सूक्त और बाईसवाँ वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

**अथ षड्चस्य सप्तपञ्चाशत्तमस्य सूक्तस्य भरद्वाजो बार्हस्पत्य ऋषिः। इन्द्रापूषणौ देवते। १, ६ विराड्गायत्री। २ निचृद्गायत्री। ३, ४, ५ गायत्री छन्दः। षड्जः स्वरः॥**

***अथ मनुष्यैः केन सह सख्यं कार्य्यमित्याह॥***

अब छः ऋचावाले सत्तावनवें सूक्त का प्रारम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में मनुष्यों को किसके साथ मित्रता करनी चाहिये, इस विषय का वर्णन करते हैं॥

**इन्द्रा नु पूषणा वयं सख्याय स्वस्तये। हुवेम वाजसातये॥१॥**

**इन्द्रा नु। पूषणा। वयम्। सख्याय। स्वस्तये। हुवेम। वाजऽसातये॥१॥**

**पदार्थः**-(**इन्द्रा**) परमैश्वर्य्ययुक्तम् (**नु**) सद्यः (**पूषणा**) सर्वेषां पोषकम् (**वयम्**) (**सख्याय**) मित्रत्वाय (**स्वस्तये**) सुखाय (**हुवेम**) स्वीकुर्याम (**वाजसातये**) अन्नादीनां विभागो यस्मिँस्तस्मै॥१॥

**अन्वयः**-इन्द्रापूषणा वयं सख्याय स्वस्तये वाजसातये नु हुवेम॥१॥

**भावार्थः**-ये विश्वस्मिन् मैत्रीं विधाय सर्वस्य सुखमिच्छन्ति तानेव वयं स्वीकुर्याम॥१॥

**पदार्थः**-(**इन्द्रा, पूषणा**) परम ऐश्वर्य्य युक्त को तथा सबको पुष्टि करने वाले को (**वयम्**) हम लोग (**सख्याय**) मित्रता तथा (**स्वस्तये**) सुख वा (**वाजसातये**) अन्नादिकों का जिसमें विभाग है उसके लिये (**नु**) शीघ्र (**हुवेम**) स्वीकार करें॥१॥

**भावार्थः**-जो सब में मित्रता विधान कर सबके सुख की चाहना करते हैं, उन्हीं को हम लोग स्वीकार करें॥१॥

**पुनर्विद्वांसः किंवत् किं कुर्य्युरित्याह॥**

फिर विद्वान् जन किसके तुल्य क्या करें, इस विषय को कहते हैं॥

**सोममन्य उपासदत् पातवे चम्वोः सुतम्। करम्भमन्य इच्छति॥२॥**

**सोमम्। अन्यः। उप। असदत्। पातवे। चम्वोः। सुतम्। करम्भम्। अन्यः। इच्छति॥२॥**

**पदार्थः**-(**सोमम्**) ऐश्वर्यम् (**अन्यः**) (**उप**) (**असदत्**) उपसीदति (**पातवे**) पातुम् (**चम्वोः**) द्यावापृथिव्योर्मध्ये (**सुतम्**) निष्पन्नम् (**करम्भम्**) भोगं कर्तुं योग्यम् (**अन्यः**) (**इच्छति**)॥२॥

**अन्वयः**-हे इन्द्रापूषणौ! युवयोरन्य एकश्चम्वोर्मध्ये सुतं सोमं पातव उपासददन्यः करम्भमिच्छति तौ वयं सख्याद्याय हुवेम॥२॥

**भावार्थः**-हे विद्वांसो! यथा सूर्याचन्द्रमसौ द्यावापृथिव्योर्मध्ये वर्त्तमानौ सन्तावनयोः सूर्य्यो रसं गृह्णाति चन्द्रो रसदानं च करोति तथैव यूयं वर्त्तध्वम्॥२॥



www.9009.co.in

**पदार्थ:**-हे परमैश्वर्य्ययुक्त और सब की पुष्टि करने वाले! तुम दोनों में से **(अन्य:)** एक जन **(चम्वो:)** आकाश और पृथिवी के बीच **(सुतम्)** उत्पन्न हुए **(सोमम्)** ऐश्वर्य्य के **(पातवे)** पीने को **(उप, असदत्)** दूसरे के समीप बैठता है **(अन्य:)** और दूसरा **(करम्भम्)** भोगने योग्य पदार्थ को **(इच्छति)** चाहता है, उन दोनों को हम लोग मित्रता आदि के लिये स्वीकार करते हैं॥२॥

**भावार्थ:**-हे विद्वान् जनो! जैसे सूर्य और चन्द्रमा द्यावा और पृथिवी के बीच वर्त्तमान होते हुए हैं, इन दोनों में से सूर्य्य रस को लेता है और चन्द्रमा रस को देता है, वैसे ही तुम सब वर्त्तो॥२॥

**पुनराभ्यां मनुष्यै: किं प्राप्यमित्याह॥**

फिर इन दोनों से मनुष्यों को क्या प्राप्त होना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**अजा अन्यस्य वह्नयो हरी अन्यस्य सम्भृता। ताभ्यां वृत्राणि जिघ्नते॥३॥**

**अजा:। अन्यस्य। वह्नय:। हरी इति। अन्यस्य। सम्ऽभृता। ताभ्याम्। वृत्राणि जिघ्नते॥३॥**

**पदार्थ:**-**(अजा:)** नित्या: **(अन्यस्य)** भूमे: **(वह्नय:)** वोढार: **(हरी)** हरणशीलौ धारणाकर्षणौ **(अन्यस्य)** विद्युत: **(सम्भृता)** सम्यग्धृतौ **(ताभ्याम्)** **(वृत्राणि)** धनानि **(जिघ्नते)** प्राप्नोति॥३॥

**अन्वय:**-हे मनुष्यास्तयोर्यस्याऽन्यस्य वह्नयोऽजा यस्याऽन्यस्य हरी सम्भृता वर्त्तेते ताभ्यां यो वृत्राणि जिघ्नते तं यूयं सत्कुरुत॥३॥

**भावार्थ:**-हे मनुष्या! मिलितयोर्भूमिविद्युतो: सकाशाद्यूयं धनानि प्राप्नुत॥३॥

**पदार्थ:**-हे मनुष्यो! उन दोनों के बीच जिस **(अन्यस्य)** भूमि के सम्बन्ध **(वह्नय:)** पदार्थ को एक स्थान से दूसरे स्थान में पहुंचाने वाले **(अजा:)** नित्य अर्थात् जो नष्ट नहीं होते वा जिस **(अन्यस्य)** और दूसरे बिजुलीरूप अग्नि के **(हरी)** हरणशील **(सम्भृता)** अच्छे प्रकार धारण किये हुए धारण और आकर्षण गुण वर्त्तमान हैं **(ताभ्याम्)** उनसे जो **(वृत्राणि)** धनों को **(जिघ्नते)** प्राप्त होता है, उसका तुम सत्कार करो॥३॥

**भावार्थ:**-हे मनुष्यो! मिले हुए भूमि और बिजुली की उत्तेजना से तुम धनों को प्राप्त होओ॥३॥

**पुनर्मनुष्यै: किं वेदितव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को क्या जानना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**यदिन्द्रो अनयद्रितो महीरपो वृषन्तम:। तत्र पूषाभवत् सचा॥४॥**

**यत्। इन्द्र:। अनयत्। रित:। मही:। अप:। वृषन्ऽतम:। तत्र। पूषा। अभवत्। सचा॥४॥**

**पदार्थ:**-**(यत्)** य: **(इन्द्र:)** विद्युत् **(अनयत्)** नयति **(रित:)** गन्त्री: **(मही:)** भूमी: **(अप:)** जलानि **(वृषन्तम:)** अतिशयेन वृष्टिकर्त्ता **(तत्र)** **(पूषा)** भूमि: **(अभवत्)** भवति **(सचा)** समवेता॥४॥

**अन्वय:**-हे मनुष्या! यद्यो वृषन्तम इन्द्रो रितो महीरपोऽनयत्तत्र पूषा सचाऽभवत्तं यूयं विजानीत॥४॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-हे मनुष्या! या विद्युत् पृथिव्युदकस्था सर्वं यथासमयं यथास्थानं नयति यया संयुक्ता पृथिवी वर्त्तते तां विज्ञाय कलायन्त्रैरुद्घाट्य सर्वाणि कार्याणि साध्नुवन्तु॥४॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(यत्)** जो **(वृषन्तमः)** अतीव वर्षा करने वाला **(इन्द्रः)** बिजुली रूप अग्नि **(रितः)** अपनी कक्षाओं में घूमने वाली **(महीः)** भूमि और **(अपः)** जलों को **(अनयत्)** पहुंचाता है **(तत्र)** वहाँ **(पूषा)** भूमि **(सचा)** संयुक्त **(अभवत्)** होती है, उसको तुम लोग जानो॥४॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो बिजुली पृथिवी और जल के बीच स्थिर हुई सबको समय समय पर प्रतिस्थान पहुंचाती है, उसके साथ पृथिवी वर्त्तमान है, उसको जान कलायन्त्रों से उसे उठा सब कामों को सिद्ध करो॥४॥

**पुनर्मनुष्यैः किं विज्ञाय किमारब्धव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को क्या जान कर क्या आरम्भ करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**तां पूष्णः सुमतिं वयं वृक्षस्य प्र वयामिव। इन्द्रस्य चा रभामहे॥५॥**

**ताम्। पूष्णः। सुऽमतिम्। वयम्। वृक्षस्य। प्र। वयाम्ऽइव। इन्द्रस्य। च। आ। रभामहे॥५॥**

**पदार्थः**-**(ताम्)** **(पूष्णः)** पृथिव्याः **(सुमतिम्)** शोभनां प्रज्ञाम् **(वयम्)** **(वृक्षस्य)** छेद्यस्य **(प्र)** **(वयामिव)** यथा वृक्षस्य सुदृढां विस्तीर्णां शाखाम् **(इन्द्रस्य)** विद्युतः **(च)** **(आ)** समन्तात् **(रभामहे)** आरम्भं कुर्याम॥५॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! वयं यां पूष्णः सुमतिं वृक्षस्य वयामिवेन्द्रस्य च प्राऽऽरभाम तथा तां यूयमपि प्रारभध्वम्॥५॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यूयं भूगर्भविद्यां रिद्युद्विद्यां च प्राप्य कार्यसिद्धये क्रियामारभध्वम्॥५॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(वयम्)** हम लोग जिस **(पूष्णः)** पृथिवी सम्बन्धिनी **(सुमतिम्)** उत्तम बुद्धि को **(वृक्षस्य)** काटने योग्य पदार्थ की **(वयामिव)** वृक्ष की दृढ़ विस्तीर्ण शाखा के समान वा **(इन्द्रस्य)** बिजुलीरूप अग्नि सम्बन्धिनी उत्तम मति का **(च)** भी **(प्र, आ, रभामहे)** आरम्भ करें [वैसे] **(ताम्)** उसको तुम भी प्रारम्भ करो॥५॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! तुम भूगर्भविद्या और विद्युद्विद्या को प्राप्त होकर कार्यसिद्धि के लिये क्रिया का आरम्भ करो॥५॥

**पुनर्मनुष्यैः किं प्राप्तव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को क्या प्राप्त होने योग्य है, इस विषय को कहते हैं॥

**उत्पूषणं युवामहेऽभीशूंरिव सारथिः। मह्या इन्द्रं स्वस्तये॥६॥२३॥**

**उत्। पूषणम्। युवामहे। अभीशून्ऽइव। सारथिः। मह्यै। इन्द्रम्। स्वस्तये॥६॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**उत्**) (**पूषणम्**) भूमिम् (**युवामहे**) विभजामहे (**अभीशूनिव**) रश्मीनिव (**सारथिः**) नियन्ता (**मह्यै**) पृथिव्यै (**इन्द्रम्**) विद्युतम् (**स्वस्तये**) सुखाय॥६॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथा वयं मह्यै स्वस्तये सारथिरभीशूनिव पूषणमिन्द्रं चोद्युवामहे तथैव यूयमपि कुरुत॥६॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। यदि मनुष्या भूमिविद्युतोर्विभागं कुर्युस्तर्हि पुष्कलं सुखं प्राप्नुयुरिति॥६॥

अत्र भूमिविद्युद्गुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति सप्तपञ्चाशत्तमं सूक्तं त्रयोविंशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे हम लोग (**मह्यै**) पृथिवी और (**स्वस्तये**) सुख के लिये (**सारथिः**) नियन्ता अर्थात् एक स्थान से दूसरे स्थान को पहुंचाने वाला (**अभीशूनिव**) रश्मियों के समान (**पूषणम्**) भूमि को और (**इन्द्रम्**) विद्युत् रूप अग्नि को (**उत्, युवामहे**) उत्तमता से अगल करते हैं, वैसे ही तुम भी करो॥६॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। यदि मनुष्य भूमि और बिजुली का विभाग करे तो बहुत सुख पावें॥६॥

इस सूक्त में भूमि और बिजुली के गुणों का वर्णन होने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह सत्तावनवां सूक्त और तेईसवां वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

अत्र चतुर्ऋचस्याष्टपञ्चाशत्तमस्य सूक्तस्य भरद्वाजो बार्हस्पत्य ऋषिः। पूषा देवता। १ त्रिष्टुप्। ३, ४ विराट् त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः। २ विराड् जगती छन्दः। निषादः स्वरः॥

*पुनर्मनुष्याः किं कृत्वा किं प्राप्नुवन्तीत्याह॥*

अब चार ऋचावाले अट्ठावनवें सूक्त का प्रारम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में फिर मनुष्य क्या करके क्या पाते हैं, इस विषय को कहते हैं॥

**शुक्रं ते अन्यद्यजतं ते अन्यद्विषुरूपे अहनी द्यौरिवासि।**

**विश्वा हि माया अवसि स्वधावो भद्रा ते पूषन्निह रातिरस्तु॥१॥**

**शुक्रम्। ते। अन्यत्। यजतम्। ते। अन्यत्। विषुरूपे इति विषुऽरूपे। अहनी इति। द्यौःऽइव। असि। विश्वाः। हि। मायाः। अवसि। स्वधाऽवः। भद्रा। ते। पूषन्। इह। रातिः। अस्तु॥१॥**

**पदार्थः**-(**शुक्रम्**) शुद्धम् (**ते**) तव (**अन्यत्**) (**यजतम्**) सङ्गच्छेताम् (**ते**) तव (**अन्यत्**) रूपम् (**विषुरूपे**) व्याप्तस्वरूपे (**अहनी**) रात्रिदिने (**द्यौरिव**) सूर्य्यप्रकाश इव (**असि**) (**विश्वाः**) संपूर्णाः (**हि**) खलु (**मायाः**) प्रज्ञाः (**अवसि**) (**स्वधावः**) बह्वन्नयुक्त (**भद्रा**) कल्याणकारिणी (**ते**) तव (**पूषन्**) पोषणकर्त्तः (**इह**) (**रातिः**) दानक्रिया (**अस्तु**)॥१॥

**अन्वयः**-हे स्वधावः पूषंस्ते तवान्यच्छुक्रं तेऽन्यदस्ति युवां विषुरूपेऽहनी यजतं द्यौरिव विश्वा मायास्त्वमवसि यस्य ते भद्रा रातिरिहास्तु स हि त्वं सत्कर्त्तव्योऽसि॥१॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! ये पुरुषा अहोरात्रवत्क्रमेण कार्य्याणि साध्नुवन्ति तेऽखिलां सामग्रीं प्राप्य सूर्य्यप्रकाश इव सत्कीर्त्तयो जायन्ते॥१॥

**पदार्थः**-हे (**स्वधावः**) बहुत अन्नवाले और (**पूषन्**) पुष्टिकर्त्ता जन (**ते**) आपका (**अन्यत्**) और (**शुक्रम्**) शुद्धरूप तथा (**ते**) आपका (**अन्यत्**) रूप है सो तुम दोनों (**विषुरूपे**) व्याप्तरूप (**अहनी**) रात्रि दिन में (**यजतम्**) मिलो और (**द्यौरिव**) सूर्य्य प्रकाश के समान (**विश्वाः**) सम्पूर्ण (**मायाः**) बुद्धियों को तुम (**अवसि**) रक्खो जिन (**ते**) आपकी (**भद्रा**) कल्याण करने वाली (**रातिः**) दानक्रिया (**इह**) यहाँ (**अस्तु**) हो वह (**हि**) ही आप सत्कार करने योग्य (**असि**) हैं॥१॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो पुरुष दिन-रात्रि के समान क्रम से कामों को सिद्ध करते हैं, वे सब सामग्री को पाकर सूर्य्य के प्रकाश के समान उत्तम कीर्ति वाले होते हैं॥१॥

**पुनर्विद्वान् किं कुर्य्यादित्याह॥**

फिर विद्वान् जन क्या करे, इस विषय को कहते हैं॥

**अजाश्वः पशुपा वाजपस्त्यो धियंजिन्वो भुवने विश्वे अर्पितः।**



www.9009.co.in

**अष्ट्रां पूषा शिथिरामुद्वरीवृजत् सञ्चक्षाणो भुवना देव ईयते॥ २॥**

**अजऽअश्वः। पशुऽपाः। वाजऽपस्त्यः। धियम्ऽजिन्वः। भुवने। विश्वे। अर्पितः। अष्ट्राम्। पूषा। शिथिराम्। उत्ऽवरीवृजत्। सम्ऽचक्षाणः। भुवना। देवः। ईयते॥ २॥**

**पदार्थः**-(**अजाश्वः**) अजा अश्वाश्च यस्य सः। (**पशुपाः**) यः पशून् पाति रक्षति (**वाजपस्त्यः**) वाजान्यन्नानि पस्त्ये गृहे यस्य सः (**धियंजिन्वः**) यो धियं जिन्वति प्रीणाति सः (**भुवने**) संसारे (**विश्वे**) समग्रे (**अर्पितः**) स्थापितः (**अष्ट्राम्**) व्याप्ताम् (**पूषा**) पोषकः (**शिथिराम्**) शिथिलाम् (**उद्वरीवृजत्**) भृशं वर्जयति (**सञ्चक्षाणः**) सम्यक् कामयन्नुपदिशन् वा (**भुवना**) गृहाणि (**देवः**) विद्वान् (**ईयते**) प्राप्नोति गच्छति वा॥ २॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! योऽजाश्वः पशुपा वाजपस्त्यो धियंजिन्वो विश्वे भुवनेऽर्पितः पूषा शिथिरामष्ट्रां भुवना च सञ्चक्षाणो देव ईयत उद्वरीवृजत्त यूयं सेवध्वम्॥ २॥

**भावार्थः**-ये मनुष्या भुवनस्थान् सर्वान् पदार्थान् संयुक्तान् वियुक्तांश्च विज्ञाय कार्य्याणि कुर्वन्ति ते धीमन्तो भवन्ति॥ २॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो (**अजाश्वः**) भेड़ बकरी और घोड़ों को रखने वाला (**पशुपाः**) जो पशुओं की रक्षा करने वाला तथा (**वाजपस्त्यः**) घर में अन्नों को रखने वाला (**धियंजिन्वः**) बुद्धि को तृप्त करता है वह (**विश्वे**) समग्र (**भुवने**) संसार में (**अर्पितः**) स्थापन किया हुआ (**पूषा**) पुष्टि करने वाला (**शिथिराम्**) शिथिल और (**अष्ट्राम्**) पदार्थों में व्याप्त बुद्धि और (**भुवना**) गृहों की (**सञ्चक्षाणः**) अच्छे प्रकार कामना वा उनका उपदेश करता हुआ (**देवः**) विद्वान् (**ईयते**) प्राप्त होता वा जाता है तथा (**उद्वरीवृजत्**) उत्तमता से वर्जता है, उसका तुम लोग सेवन करो॥ २॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य भुवनस्थ सब पदार्थों को मिले वा मिले जान कर कार्य्यों को करते हैं, वे बुद्धिमान् होते हैं॥ २॥

**पुनर्विद्वान् किं निर्माय क्व गत्वा किं प्राप्नुयादित्याह॥**

फिर विद्वान् किसको बना कहाँ जाकर क्या पावे, इस विषय को कहते हैं॥

**यास्ते पूषन्नावो अन्तः समुद्रे हिरण्ययीरन्तरिक्षे चरन्ति।**

**ताभिर्यासि दूत्यां सूर्यस्य कामेन कृत श्रव इच्छमानः॥ ३॥**

**याः। ते। पूषन्। नावः। अन्तरिति। समुद्रे। हिरण्ययीः। अन्तरिक्षे। चरन्ति। ताभिः। यासि। दूत्याम्। सूर्यस्य। कामेन। कृत। श्रवः। इच्छमानः॥ ३॥**

**पदार्थः**-(**याः**) (**ते**) तव (**पूषन्**) भूमिरिव पुष्टियुक्त (**नावः**) प्रशंसनीया नौकाः (**अन्तः**) मध्ये (**समुद्रे**) सागरे (**हिरण्ययीः**) तेजोमय्यः सुवर्णादिसुभूषिताः (**अन्तरिक्षे**) आकाशे (**चरन्ति**) गच्छन्ति



www.9009.co.in

**(ताभिः)** **(यासि)** **(दूत्याम्)** दूतस्य क्रियामिव **(सूर्यस्य)** **(कामेन)** **(कृत)** यो विद्वान् कृतस्तत्सम्बुद्धौ **(श्रवः)** अन्नादिकम् **(इच्छमानः)**॥३॥

**अन्वयः**-हे कृत पूषन्! यास्ते हिरण्ययीर्नावः समुद्रेऽन्तरिक्षेनन्तश्चरन्ति ताभिः कामेन श्रव इच्छमानस्सूर्यस्य दूत्यामिव कामनां यासि तस्माद्धन्योऽसि॥३॥

**भावार्थः**-ये मनुष्या सुदृढा नावो भूविमानानि भुव्यन्तरिक्षविमानान्यन्तरिक्षे च गमनाय रचयन्ति तैश्च देशदेशान्तरं गत्वाऽऽगत्य कामनामलं कुर्वन्ति त एव सूर्य्यवत् प्रकाशितकीर्त्तयो भवन्ति॥३॥

**पदार्थः**–हे **(कृत)** किये हुए विद्वन्! **(पूषन्)** भूमि के समान पुष्टियुक्त! **(याः)** जो **(ते)** आपकी **(हिरण्ययीः)** तेजोमयी सुवर्णादिकों से सुभूषित **(नावः)** प्रशंसनीय नौकायें **(समुद्रे)** समुद्र वा **(अन्तरिक्षे)** अन्तरिक्ष में **(अन्तः)** भीतर **(चरन्ति)** जाती हैं **(ताभिः)** उनसे **(कामेन)** कामना करके **(श्रवः)** अन्नादिक की **(इच्छमानः)** इच्छा करते हुए **(सूर्यस्य)** सूर्य्य के **(दूत्याम्)** दूत की क्रिया के समान कामना को **(यासि)** प्राप्त होते हो, इससे धन्य हो॥३॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य सुदृढ़ नावें और भूविमानों को भूमि और अन्तरिक्ष में चलने वाले यानों को अन्तरिक्ष में चलने को रचते और उनसे देश-देशान्तरों को जाय आकर अपनी इच्छा को पूरी करते हैं, वे ही सूर्य्य के समान प्रकाशित कीर्ति वाले होते हैं॥३॥

**पुनः के विद्यां प्राप्तुमर्हन्तीत्याह॥**

फिर कौन विद्या को प्राप्त होने के योग्य होते हैं, इस विषय को कहते हैं॥

**पूषा सुबन्धुर्दिव आ पृथिव्या इळस्पतिर्मघवा दुस्मवर्चाः।**

**यं देवासो अददुः सूर्यायै कामेन कृतं तवसं स्वञ्चम्॥४॥२४॥**

**पूषा। सुऽबन्धुः। दिवः। आ। पृथिव्याः। इळः। पतिः। मघऽवा। दुस्मऽवर्चाः। यम्। देवासः। अददुः। सूर्यायै। कामेन। कृतम्। तवसम्। सुऽअञ्चम्॥४॥**

**पदार्थः**–**(पूषा)** भूमिवत्पुष्टः पुष्टिकर्त्ता वा **(सुबन्धुः)** शोभना बन्धवो भ्रातरः सखायो वा यस्य **(दिवः)** विद्युतः **(आ)** **(पृथिव्याः)** भूमेः **(इळः)** वाचः **(पतिः)** स्वामी **(मघवा)** बह्वैश्वर्यः **(दस्मवर्चाः)** दस्मेषूपक्षयेषु वर्चः प्रदीपनं यस्य सः **(यम्)** **(देवासः)** विद्वांसः **(अददुः)** ददति **(सूर्यायै)** सूर्यवत् शुभगुणस्वभावप्रकाशितायै कन्यायै **(कामेन)** **(कृतम्)** निष्पन्नम् **(तवसम्)** बलिष्ठम् **(स्वञ्चम्)** सुष्ठ्वञ्चन्तं प्राप्तशरीरात्मबलेन युक्तम्॥४॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यं देवासः कामेन कृतं तवसं स्वञ्चं युवानं नरं सूर्याया अददुः स सुबन्धुर्मघवा दस्मवर्चाः पूषा दिवः पृथिव्या इळस्पतिः सन् सुखमादत्ते॥४॥

**भावार्थः**-ये ब्रह्मचर्येण पूर्णयुवावस्थां प्राप्ताः स्वसदृशीर्वधूः प्राप्यर्त्तुगामिनो भूत्वा सुदृढाङ्गा बुद्धिबलविद्याशिक्षाप्राप्ता भवेयुस्त एव भूगर्भविद्युदादिविद्यां प्राप्तुं शक्नुवन्ति नेतरे क्षुद्राशया इति॥४॥



www.9009.co.in

अत्र विद्वत्कृत्यवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इत्यष्टपञ्चाशत्तमं सूक्तं चतुर्विंशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(यम्)** जिसको **(देवासः)** विद्वान् जन **(कामेन)** कामना से **(कृतम्)** किये हुए **(तवसम्)** बलिष्ठ **(स्वञ्चम्)** सुन्दरता से जाते हुए अर्थात् शरीर और आत्मा के बल से युक्त युवा मनुष्य को **(सूर्यायै)** सूर्य के समान शुभ गुण और स्वभावों से प्रकाशित कन्या के लिये **(अददुः)** देते हैं वह **(सुबन्धुः)** सुन्दर भ्राता वा मित्रों वाला **(मघवा)** बहुत ऐश्वर्य्ययुक्त **(दस्मवर्चाः)** नष्ट होते हुए पदार्थों में प्रकाश रखने वाला **(पूषा)** भूमि के समान पुष्ट वा पुष्टि करने वाला **(दिवः)** बिजुली और **(पृथिव्याः)** भूमि तथा **(इळः)** वाणी का **(पतिः)** स्वामी होता हुआ सुख को **(आ)** ग्रहण करता है॥४॥

**भावार्थः**-जो ब्रह्मचर्य्य से पूर्ण युवावस्था को प्राप्त हुए अपने सदृश बहुओं को प्राप्त होकर ऋतुगामी अर्थात् ऋतुकाल में स्त्रीभोग करने वाले होकर सुन्दर पुष्ट अङ्ग और बुद्धि बल विद्या और शिक्षा को प्राप्त हों, वे ही भूगर्भ वा विद्युदादि विद्या को प्राप्त हो सकते हैं और क्षुद्राशय नहीं॥४॥

इस सूक्त में विद्वानों के कृत्य का वर्णन होने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह अट्ठावनवां सूक्त और चौबीसवां वर्ग पूरा हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

**अथ दशर्चस्यैकोनषष्टितमस्य सूक्तस्य भरद्वाजो बार्हस्पत्य ऋषिः। इन्द्राग्नी देवते। १, ३, ४, ५ निचृद्बृहती। २ विराड्बृहती छन्दः। मध्यमः स्वरः। ६ भुरिगनुष्टुप्। ७, ९ निचृदनुष्टुप्। १० अनुष्टुप् छन्दः। गान्धारः स्वरः। ८ उष्णिक् छन्दः। ऋषभः स्वरः॥**

*अथ मनुष्याः किं कृत्वा बलिष्ठा जायेरन्नित्याह॥*

अब दस ऋचा वाले उनसठवें सूक्त का प्रारम्भ है, इसके प्रथम मन्त्र में मनुष्य क्या करके बलिष्ठ हों, इस विषय को कहते हैं॥

**प्र नु वो॑चा सु॒तेषु॑ वां वी॒र्या॒३॑ यानि॑ च॒क्रथुः॑।**

**ह॒तासो॑ वां पि॒तरो॑ दे॒वश॑त्रव॒ इन्द्रा॑ग्नी॒ जीव॑थो यु॒वम्॥ १॥**

**प्र। नु। वो॒च॒। सु॒तेषु॑। वा॒म्। वी॒र्या॑। यानि॑। च॒क्रथुः॑। ह॒तासः॑। वा॒म्। पि॒तरः॑। दे॒वऽश॑त्रवः। इन्द्रा॑ग्नी इति॑। जीव॑थः। यु॒वम्॥ १॥**

**पदार्थः**-(**प्र**) (**नु**) सद्यः (**वोचा**) उपदिशामि। अत्र **द्व्यचोऽतस्तिङ** इति दीर्घः। (**सुतेषु**) निष्पन्नेषु (**वाम्**) युवाम् (**वीर्या**) वीर्याणि (**यानि**) (**चक्रथुः**) कुरुथः (**हतासः**) नष्टाः (**वाम्**) युवयोः (**पितरः**) पालकाः (**देवशत्रवः**) देवानां विदुषामरयः (**इन्द्राग्नी**) वायुविद्युताविवाध्यापकाध्येतारौ (**जीवथः**) (**युवम्**) युवाम्॥ १॥

**अन्वयः**-हे इन्द्राग्नी! युवं यानि सुतेषु वीर्या चक्रथुस्तैर्वां देवशत्रवो हतास स्युश्चिरञ्जीवथ इति वामहं नु प्र वोचा। येन युवयोः पितरोऽप्येवं वामुपदिशन्तु॥ १॥

**भावार्थः**-ये मनुष्या उत्पन्नेषु मनुष्येषु पराक्रममुन्नयन्ति तेषां शत्रवो विलीयन्ते॥ १॥

**पदार्थः**-हे (**इन्द्राग्नी**) वायु और बिजुली के समान अध्यापक और उपदेशको! (**युवम्**) तुम दोनों (**यानि**) जिन (**सुतेषु**) उत्पन्न हुए पदार्थों में (**वीर्या**) पराक्रमों को (**चक्रथुः**) किया करते हो उनसे (**वाम्**) तुम दोनों के जो (**देवशत्रवः**) विद्वानों से द्वेष करने वाले शत्रु (**हतासः**) नष्ट हों और तुम दोनों बहुत समय तक (**जीवथः**) जीवते हो यह (**वाम्**) तुम दोनों को मैं (**नु**) शीघ्र (**प्र, वोचा**) उपदेश देता हूँ जिससे तुम दोनों के (**पितरः**) पालने वाले भी ऐसा (**वाम्**) तुम दोनों को उपदेश दें॥ १॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य उत्पन्न हुए मनुष्यों में पराक्रम की उन्नति करते हैं, उनके शत्रु विलय (नाश) को प्राप्त होते हैं॥ १॥

**पुनरध्यापकोपदेशकौ कीदृशौ भवेतामित्याह॥**

फिर अध्यापक और उपदेशक कैसे हों, इस विषय को कहते हैं॥

**ब॒ळि॒त्था म॑हि॒मा वा॒मिन्द्रा॑ग्नी॒ पनि॑ष्ठ॒ आ।**



www.9009.co.in

**स॒मा॒नो वां॑ ज॒नि॒ता भ्रात॑रा यु॒वं य॒मावि॒हेह॑मातरा॥ २॥**

**बट्। इ॒त्था। म॒हि॒मा। वा॒म्। इन्द्रा॑ग्नी॒ इति॑। पनि॑ष्ठः। आ। स॒मा॒नः। वा॒म्। ज॒नि॒ता। भ्रात॑रा। यु॒वम्। य॒मौ। इ॒हेह॑ऽमातरा॥ २॥**

**पदार्थः**-(**बट्**) सत्यम् (**इत्था**) अनेन प्रकारेण (**महिमा**) प्रतापः (**वाम्**) युवयोः (**इन्द्राग्नी**) वायुवह्नी इव वर्त्तमानौ राजप्रजाजनौ (**पनिष्ठः**) अतिशयेन प्रशंसितः (**आ**) (**समानः**) तुल्यः (**वाम्**) युवयोः (**जनिता**) उत्पादकः (**भ्रातरा**) बन्धू (**युवम्**) युवाम् (**यमौ**) नियन्तारौ (**इहेहमातरा**) इहेहमाता जननी ययोस्तौ॥ २॥

**अन्वयः**-हे इन्द्राग्नी! यो वां पनिष्ठो बड् महिमा वां समानो जनितेहेहमातरा यमौ भ्रातरा वर्त्तेते तावित्था युवमाजीवथः॥ २॥

**भावार्थः**-येऽध्यापकोपदेशका विद्युत्सूर्य्यवत् व्याप्तविद्याः परोपकारिणः सन्ति ते सत्यमहिमानो भवन्ति॥ २॥

**पदार्थः**-हे (**इन्द्राग्नी**) पवन और अग्नि के तुल्य राजप्रजाजनो! जो (**वाम्**) तुम दोनों का (**पनिष्ठः**) अतीव प्रशंसित (**बट्**) सत्य (**महिमा**) प्रताप वा (**वाम्**) तुम दोनों का (**समानः**) तुल्य (**जनिता**) उत्पादन करने वाला पिता (**इहेहमातरा**) यहाँ-यहाँ जिनकी माता वे (**यमौ**) नियन्ता अर्थात् गृहस्थी के चलाने वाले (**भ्रातरा**) भाई वर्त्तमान हैं उनको (**इत्था**) इस प्रकार से (**युवम्**) तुम (**आ, जीवथः**) जिलाते हो॥ २॥

**भावार्थः**-जो अध्यापक और उपदेशक बिजुली और सूर्य्य के तुल्य विद्याओं में व्याप्त तथा परोपकारी हैं, वे सत्य महिमा वाले होते हैं॥ २॥

**पुनर्विद्वांसः किं विज्ञाय कीदृशा भवेयुरित्याह॥**

फिर विद्वान् जन क्या जानकर कैसे हों, इस विषय को कहते हैं॥

**ओ॒कि॒वांसा॑ सु॒ते सचाँ॒ अश्वा॒ सप्ती॑इ॒वाद॑ने।**

**इन्द्रा॒न्व१॒॑ग्नी अव॑से॒ह व॒ज्रिणा॑ व॒यं दे॒वा ह॑वामहे॥ ३॥**

**ओ॒कि॒ऽवांसा॑। सु॒ते। सचा॑। अश्वा॑। सप्ती॑ इ॒वेति॒ सप्ती॑ऽइव। आद॑ने। इन्द्रा॑ नु। अ॒ग्नी इति॑। अव॑सा। इ॒ह। व॒ज्रिणा॑। व॒यम्। दे॒वा। ह॒वा॒म॒हे॒॥ ३॥**

**पदार्थः**-(**ओकिवांसा**) सङ्गतौ सम्बद्धौ (**सुते**) निष्पन्ने (**सचा**) सचौ समवेतौ (**अश्वा**) व्याप्तौ (**सप्तीइव**) यथा युग्मावश्वौ (**आदने**) अत्तव्ये घासे (**इन्द्रा**) (**नु**) (**अग्नी**) वायुविद्युतौ (**अवसा**) (**इह**) अस्मिन् संसारे (**वज्रिणा**) प्रशस्ताऽस्त्रयुक्तौ (**वयम्**) (**देवा**) विद्वांसः (**हवामहे**) प्रशंसामः॥ ३॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथा देवा वयमवसेह सुते सचाऽश्वा वज्रिणौकिवांसा सप्तीइवादने वर्त्तमानाविन्द्राग्नी नु हवामहे तथेमौ यूयमपि प्रशंसत॥ ३॥



www.9009.co.in

**भावार्थ:**-अत्रोपमावाचकलुप्तोपमालङ्कारौ। ये विद्वांसः सदा मिलितौ वायुविद्युतौ पदार्थौ विजानन्ति तेऽस्मिन् संसारेऽद्भुताः क्रियाः कर्तुं शक्नुवन्ति॥३॥

**पदार्थ:**-हे मनुष्यो! जैसे **(देवा)** विद्वान् **(वयम्)** हम लोग **(अवसा)** रक्षा आदि से **(इह)** इस संसार में **(सुते)** निष्पन्न हुए व्यवहार में **(सचा)** अच्छे प्रकार युक्त **(अश्वाः)** और व्याप्त हुए **(वज्रिणा)** प्रशंसित शस्त्र-अस्त्र वाले **(ओकिवांसा)** सङ्ग और सम्बन्ध को प्राप्त हुए **(सप्तीइव)** जैसे दो घोड़े **(आदने)** भक्षण करने योग्य घास अदन के निमित्त वर्त्तमान, वैसे **(इन्द्राग्नी)** पवन और बिजुली की **(नु)** शीघ्र **(हवामहे)** प्रशंसा करते हैं, वैसे इनकी तुम भी प्रशंसा करो॥३॥

**भावार्थ:**-इस मन्त्र में उपमा और वाचकलुप्तोपमालङ्कार हैं। जो विद्वान् जन सदा मिले हुए वायु और बिजुली इन दोनों पदार्थों को जानते हैं, वे इस संसार में अद्भुत क्रियाओं को कर सकते हैं॥३॥

**पुनर्विद्वांसः कीदृशा भवेयुरित्याह॥**

फिर विद्वान् जन कैसे हों, इस विषय को कहते हैं॥

**य इ॑न्द्राग्नी सु॒तेषु॑ वां॒ स्तव॒त्तेष्वृ॑तावृधा।**

**जो॒ष॒वा॒कं वद॑तः पज्रहोषिणा॒ न दे॑वा भ॒सथ॑श्च॒न॥४॥**

**यः। इ॒न्द्रा॒ग्नी॒ इति॑। सु॒तेषु॑। वा॒म्। स्तव॑त्। तेषु॑। ऋ॒त॒ऽवृ॒धा॒। जो॒ष॒ऽवा॒कम्। वद॑तः। प॒ज्र॒ऽहो॒षि॒णा॒। न। दे॒वा॒। भ॒सथ॑ः। च॒न॥४॥**

**पदार्थ:**-**(यः)** **(इन्द्राग्नी)** वायुविद्युताविवाऽध्यापकोपदेशकौ **(सुतेषु)** उत्पन्नेषु पदार्थेषु **(वाम्)** युवाम् **(स्तवत्)** प्रशंसेत् **(तेषु)** **(ऋतावृधा)** सत्यवर्धकौ **(जोषवाकम्)** प्रीतिकरं वचनम् **(वदतः)** **(पज्रहोषिणा)** पज्रः सङ्गतो होषो घोषो वाग्ययोस्तौ **(न)** निषेधे **(देवा)** देवौ विद्वांसौ **(भसथः)** व्यर्थं वादं वदतः **(चन)** अपि॥४॥

**अन्वय:**-हे पज्रहोषिणार्तावृधेन्द्राग्नी! यस्तेषु सुतेषु वां स्तवद्यौ देवा चन न भसथस्तं प्रति युवां जोषवाकं वदतस्स चन युवां प्रति वदेत्॥४॥

**भावार्थ:**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे मनुष्याः! सर्वेषु पदार्थेषु प्रविष्टौ वायुविद्युतौ विदित्वैश्वर्य्यं प्राप्य रूक्षामसत्यां क्रियां लोकविद्वेष्टॄन् वा मनुष्यान् विदित्वा सर्वेषामुपकाराय सत्यं प्रियं सर्वदा वदत॥४॥

**पदार्थ:**-हे **(पज्रहोषिणा)** प्राप्त हुई वाणी वा घोषयुक्त **(ऋतावृधा)** सत्य बढ़ाने वाले **(इन्द्राग्नी)** वायु और बिजुली के समान अध्यापक और उपदेशको! **(यः)** जो **(तेषु)** उन **(सुतेषु)** उत्पन्न हुए पदार्थों में **(वाम्)** तुम दोनों की **(स्तवत्)** प्रशंसा करे वा जो **(देवा)** विद्वान् जन **(चन)** भी **(न)** नहीं **(भसथः)** व्यर्थ वाद करते हैं, उस सर्वजन के प्रति तुम दोनों **(जोषवाकम्)** प्रीति करने वाले वचन **(वदतः)** कहते हो, वह सर्वजन भी तुम्हारे प्रति कहे॥४॥



www.9009.co.in

**भावार्थ:**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! सर्व पदार्थों में प्रविष्ट वायु और बिजुली को जानकर ऐश्वर्य को प्राप्त होकर रूखी असत्य किया और लोक विद्वेषी जनों को जान सबके उपकार के लिये सत्य प्रिय वाक्य सर्वदा कहो॥४॥

**के मनुष्याः पदार्थविद्यां वेत्तुमर्हन्तीत्याह॥**

कौन मनुष्य पदार्थविद्या को जानने योग्य हैं, इस विषय को कहते हैं॥

**इन्द्रा॑ग्नी॒ को अ॒स्य वां॒ देवौ॒ मर्त॑श्चिकेतति।**

**विषू॑चो॒ अश्वा॑न् युयुजा॒न ईयत॒ एकः॑ समा॒न आ रथे॑॥५॥२५॥**

**इन्द्रा॑ग्नी॒ इति॑। कः॑। अ॒स्य। वा॒म्। दे॒वौ॑। मर्तः॑। चि॒के॒त॒ति॒। विषू॑चः। अश्वा॑न्। यु॒यु॒जा॒नः। ई॒य॒ते॒। एकः॑। स॒मा॒ने। आ। रथे॑॥५॥**

**पदार्थः**-(**इन्द्राग्नी**) वायुविद्युतौ (**कः**) (**अस्य**) (**वाम्**) युवाम् (**देवौ**) दिव्यगुणकर्मस्वभावौ (**मर्त्तः**) (**चिकेतति**) (**विषूचः**) व्याप्तान् (**अश्वान्**) आशुगामिनो विद्युदादीन् (**युयुजानः**) युक्तान् कुर्वन् (**ईयते**) गच्छति (**एकः**) असहायः (**समाने**) (**आ**) (**रथे**) विमानादौ याने॥५॥

**अन्वयः**-हे अध्यापकोपदेशकौ! कोऽस्य जगतो मध्ये वर्त्तमानो मर्त्तो विषूचोऽश्वान् समाने रथे युयुजान एको देवाविन्द्राग्नी चिकेतति स वामेयते॥५॥

**भावार्थः**-हे विद्वांसः! कोऽत्र पदार्थविद्याविद्विमानादियाननिर्माता सद्यो गन्ता स्यादित्यस्योत्तरं परस्ताद्दत्तमिति शृणुत॥५॥

**पदार्थः**-हे अध्यापक और उपदेशको! (**कः**) कौन (**अस्य**) इस जगत् के बीच वर्त्तमान (**मर्त्तः**) मनुष्य (**विषूचः**) व्याप्त (**अश्वान्**) शीघ्रगामी बिजुली आदि पदार्थों को (**समाने**) समान (**रथे**) विमान आदि यान में (**युयुजानः**) युक्त करता हुआ (**एकः**) एक विद्वान् (**देवौ**) दिव्यगुणकर्मस्वभावयुक्त (**इन्द्राग्नी**) वायु और बिजुली को (**चिकेतति**) जानता है वह (**वाम्**) तुम दोनों को (**आ, ईयते**) प्राप्त होता है॥५॥

**भावार्थः**-हे विद्वानो! कौन यहाँ पदार्थविद्या का जानने वाला, विमान आदि यानों का निर्माण करने वाला शीघ्रगामी हो, इसका उत्तर पीछे दिया यह तुम सुनो॥५॥

**विद्युद्वित्किं कर्तुं शक्नोतीत्याह॥**

बिजुली का जानने वाला क्या कर सकता है, इस विषय को कहते हैं॥

**इन्द्रा॑ग्नी अ॒पादि॒यं पूर्वागा॑त्प॒द्वती॑भ्यः।**

**हि॒त्वी शिरो॑ जि॒ह्वया॒ वाव॑द॒च्चर॑त्त्रिं॒शत्प॒दा न्य॑क्रमीत्॥६॥**

**इन्द्रा॑ग्नी॒ इति॑। अ॒पात्। इ॒यम्। पूर्वा॑। आ। अ॒गा॒त्। प॒त्ऽवती॑भ्यः। हि॒त्वी। शिरः॑। जि॒ह्वया॑। वाव॑दत्। चर॑त्। त्रि॒ंशत्। प॒दा। नि। अ॒क्र॒मी॒त्॥६॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**इन्द्राग्नी**) वायुविद्युतौ (**अपात्**) पादरहिता (**इयम्**) विद्युत् (**पूर्वा**) पूर्णाऽग्रस्था वा (**आ**) (**अगात्**) गच्छति (**पद्वतीभ्यः**) पद्वद्भ्यां कृताभ्यो गतिभ्यः (**हित्वी**) त्यक्त्वा (**शिरः**) शिरोवन् मुख्यं वचनम् (**जिह्वया**) (**वाचा**) (**वावदत्**) भृशं वदति (**चरत्**) गच्छति (**त्रिंशत्**) आकाशं द्यां च वर्जयित्वा सर्वान् भूम्यादीन् पदार्थान् (**पदा**) पदानि (**नि**) नितराम् (**अक्रमीत्**) क्रामति॥६॥

**अन्वयः**-यो जिह्वया वावदद्येयमपात्पूर्वा पद्वतीभ्यश्शिरो हित्वी विद्युदागात्त्रिंशत् पदा न्यक्रमीत्सद्यश्चरत्तयेन्द्राग्नी विजानाति स एव मनुष्यो विद्युद्विद्याविद्भवति॥६॥

**भावार्थः**-हे विद्वांसो! भवन्तो यदि विद्युद्विद्यां सङ्गृह्णीयुस्तर्हि सर्वेभ्यो यानेभ्यः सद्यो गन्तुमन्यानि कार्याणि च साद्धुं शक्नुवन्ति॥६॥

**पदार्थः**-जो (**जिह्वया**) वाणी से (**वावदत्**) निरन्तर कहता है और जो (**इयम्**) यह (**अपात्**) पैररहित (**पूर्वा**) पूर्ण वा अग्रस्थ (**पद्वतीभ्यः**) पैरों से की हुई गतियों से (**शिरः**) शिर के तुल्य मुख्य वचन को (**हित्वी**) त्याग कर बिजुली (**आ, अगात्**) प्राप्त होती है तथा (**त्रिंशत्**) आकाश और प्रकाश को छोड़ कर सब भूमि आदि पदार्थरूपी (**पदा**) स्थानों को (**नि, अक्रमीत्**) क्रम-क्रम से पहुंचती और शीघ्र (**चरत्**) चलती है इससे (**इन्द्राग्नी**) वायु और बिजुली को जानता है, वही मनुष्य बिजुली की विद्या को जानने वाला होता है॥६॥

**भावार्थः**-हे विद्वानो! आप यदि बिजुली की विद्या को अच्छे प्रकार ग्रहण करो तो सब यानों से शीघ्र जाने को तथा और काम सिद्ध कर सकते हो॥६॥

**के विजयिनो भवेयुरित्याह॥**

कौन विजयी होते हैं, इस विषय को कहते हैं॥

**इन्द्राग्नी आ हि तन्वते नरो धन्वानि बाह्वोः।**

**मा नो अस्मिन् महाधने परा वर्क्तं गविष्टिषु॥७॥**

**इन्द्राग्नी इति। आ। हि। तन्वते। नरः। धन्वानि। बाह्वोः। मा। नः। अस्मिन्। महाऽधने। परा। वर्क्तम्। गोऽइष्टिषु॥७॥**

**पदार्थः**-(**इन्द्राग्नी**) वायुविद्युतौ (**आ**) (**हि**) खलु (**तन्वते**) विस्तृणन्ति (**नरः**) नायकाः (**धन्वानि**) धनूंषि (**बाह्वोः**) भुजयोर्मध्ये (**मा**) (**नः**) अस्मान् (**अस्मिन्**) (**महाधने**) सङ्ग्रामे (**परा**) (**वर्क्तम्**) त्यजेताम् (**गविष्टिषु**) गवां किरणानामिष्टयः सङ्गतयो यासु क्रियासु तासु॥७॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! ये नर इन्द्राग्नी आ तन्वते बाह्वोर्हि धन्वानि धृत्वाऽस्मिन् महाधनेऽस्माँस्तन्वते गविष्टिषु प्रवीणाः सन्तो यथेन्द्राग्नी नो मा परा वर्क्तं तथा विदधति तान् वयं सङ्गच्छेमहि॥७॥

**भावार्थः**-ये राजप्रजाजना विद्युदादिनाऽऽग्नेयादीन्यस्त्राणि निर्माय सङ्ग्रामस्य विजेतारो जायन्ते तेऽस्मिन् संसारे राज्यैश्वर्येण सुखं विस्तारयितुं शक्नुवन्ति॥७॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो **(नरः)** नायक मनुष्य **(इन्द्राग्नी)** वायु और बिजुली को **(आ, तन्वते)** विस्तारते हैं और **(बाह्वोः)** भुजाओं में **(हि)** हि **(धन्वानि)** धनुषों को धारण कर **(अस्मिन्)** इस **(महाधने)** सङ्ग्राम में हम सब को विस्तारते हैं और **(गविष्टिषु)** किरणों की जिनमें मिलावटें हैं उन क्रियाओं में प्रवीण होते हुए जैसे वायु और बिजुली **(नः)** हम लोगों को **(मा, परा, वर्क्तम्)** मत छोड़ें वैसा करते हैं, उनको हम लोग मिलें॥७॥

**भावार्थः**-जो राजा प्रजाजन बिजुली आदि से आग्नेयादि अस्त्रों को बनाय संग्राम के जीतने वाले होते हैं, वे इस संसार में राज्यैश्वर्य्य से सुख बढ़ा सकते हैं॥७॥

**पुनर्विद्वांसः कस्मात्कस्माद्विद्युतं सङ्गृह्णीयुरित्याह॥**

फिर विद्वान् जन किस-किस से बिजुली का सङ्ग्रह करें, इस विषय को कहते हैं॥

**इन्द्रा॑ग्नी तप॑न्ति मा॒घा अ॒र्यो अरा॑तयः।**

**अप॒ द्वेषां॒स्या कृ॒तं युयु॒तं सूर्या॒दधि॑॥८॥**

**इन्द्रा॑ग्नी॒ इति॑। तप॑न्ति। मा। अ॒घाः। अ॒र्यः। अरा॑तयः। अप॑। द्वेषां॑सि। आ। कृ॒तम्। यु॒यु॒तम्। सूर्या॑त्। अधि॑॥८॥**

**पदार्थः**-**(इन्द्राग्नी)** वायुविद्युतौ **(तपन्ति)** **(मा)** **(अघाः)** हिंस्याः **(अर्यः)** स्वामी सन् **(अरातयः)** शत्रवः **(अप)** **(द्वेषांसि)** द्वेषयुक्तानि कर्माणि **(आ)** **(कृतम्)** कुर्य्यातम् **(युयुतम्)** विभाजयतम् **(सूर्यात्)** सवितृमण्डलात् **(अधि)** उपरिभावे॥८॥

**अन्वयः**-हे सभासेनेशौ! येऽरातय इन्द्राग्नी तपन्ति तेषां द्वेषांस्यपकृतं सूर्यादधि विद्युतमा युयुतम्। हे राजन्नर्यस्त्वमेताञ्छिल्पिनो माऽघाः॥८॥

**भावार्थः**-हे सराजका राजप्रजाजना यदि भवन्तः सूर्य्यादिभ्यो विद्युतं ग्रहीतुं विजानीयुस्तर्हि शत्रून् विजित्य द्वेष्टॄन् दूरीकर्तुं प्रभवेयुः॥८॥

**पदार्थः**-हे सभा सेनाधीशो! जो **(अरातयः)** शत्रुजन **(इन्द्राग्नी)** वायु और बिजुली को **(तपन्ति)** तपाते हैं उनके **(द्वेषांसि)** द्वेषयुक्त कामों को **(अप, कृतम्)** नष्ट करो और **(सूर्यात्)** सवितृमण्डल से **(अधि)** ऊपर जाने वाली बिजुली को **(आ, युयुतम्)** अलग करो। हे राजन्! **(अर्यः)** स्वामी आप इन शिल्पीजनों को **(मा, अघाः)** मत मारो॥८॥

**भावार्थः**-हे राजसहित राजप्रजा जनो! जो आप लोग सूर्यादिकों से बिजुली ग्रहण करना जानो तो शत्रुजनों को जीतकर द्वेषजीनों के दूर करने को समर्थ होओ॥८॥

**क उत्तम धनं प्राप्नोतीत्याह॥**

कौन उत्तम धनको प्राप्त होता है, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**इन्द्रा॑ग्नी यु॒वोरपि॒ वसु॑ दि॒व्यानि॒ पार्थि॑वा।**



www.9009.co.in

**आ नं इह प्र यच्छतं रयिं विश्वायुपोषसम्॥९॥**

**इन्द्राग्नी इति। युवोः। अपि। वसु। दिव्यानि। पार्थिवा। आ। नः। इह। प्र। यच्छतम्। रयिम्। विश्वायुऽपोषसम्॥९॥**

**पदार्थः**-(**इन्द्राग्नी**) वायुविद्युताविव सभासेनेशौ (**युवोः**) युवयोः (**अपि**) (**वसु**) वसूनि (**दिव्यानि**) अतीवोत्तमानि (**पार्थिवा**) पृथिव्यां भवानि (**आ**) (**नः**) (**इह**) (**प्र**) (**यच्छतम्**) (**रयिम्**) श्रियम् (**विश्वायुपोषसम्**) समग्रायुःपुष्टिकराम्॥९॥

**अन्वयः**-हे इन्द्राग्नी! सभासेनेशौ युवां यदीह नो विश्वायुपोषसं रयिं प्राऽयच्छतं तर्हि युवोरपि दिव्यानि पार्थिवा वस्वाधीनानि जायन्ताम्॥९॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! ये सभासेनेशा विद्युद्विद्यां विज्ञाय युष्मभ्यं प्रददति ते पूर्णायुष्करं धर्मेण प्राप्तं समग्रैश्वर्य्यं प्राप्नुवन्ति॥९॥

**पदार्थः**-हे (**इन्द्राग्नी**) वायु और बिजुली के समान सभा सेनाधीशो! तुम यदि (**इह**) यहाँ (**नः**) हमारी (**विश्वायुपोषसम्**) समस्त आयु के पुष्ट करने वाले (**रयिम्**) धन को (**प्र, आ, यच्छतम्**) अच्छे प्रकार देओ तो (**युवोः**) तुम्हारे (**अपि**) भी (**दिव्यानि**) अतीव उत्तम (**पार्थिवा**) पृथिवी में उत्पन्न हुए (**वसु**) धन आधीन हों॥९॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो सभा सेनापति बिजुली की विद्या को जान कर तुम्हारे लिये देते हैं, वे पूर्ण आयु करने वाले धर्म से प्राप्त समग्र ऐश्वर्य को प्राप्त होते हैं॥९॥

**मनुष्याः किं कृत्वा विद्युद्विद्यां जानीयुरित्याह॥**

मनुष्या क्या करके बिजुली की विद्या जानें, इस विषय को कहते हैं॥

**इन्द्राग्नी उक्थवाहसा स्तोमेभिर्हवनश्रुता।**

**विश्वाभिर्गीर्भिरा गतमस्य सोमस्य पीतये॥१०॥२६॥**

**इन्द्राग्नी इति। उक्थऽवाहसा। स्तोमेभिः। हवनऽश्रुता। विश्वाभिः। गीःभिः। आ। गतम्। अस्य। सोमस्य। पीतये॥१०॥**

**पदार्थः**-(**इन्द्राग्नी**) वायुविद्युताविव (**उक्थवाहसा**) प्रशंसितविद्याप्रापकौ (**स्तोमेभिः**) प्रशंसाभिः (**हवनश्रुता**) यौ हवनानि शृण्वतस्तौ (**विश्वाभिः**) समग्राभिः (**गीर्भिः**) विद्याशिक्षायुक्ताभिर्वाग्भिः (**आ**) (**गतम्**) आगच्छतम् (**अस्य**) (**सोमस्य**) महौषधिरसस्य (**पीतये**) पानाय॥१०॥

**अन्वयः**-हे इन्द्राग्नी जानन्तावुक्थवाहसा हवनश्रुता! युवां स्तोमेभिर्विश्वाभिर्गीर्भिः सहास्य सोमस्य पीतय आ गतम्॥१०॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। त एव विद्युद्विद्यां वेत्तुमर्हन्ति ये विद्वद्भ्यो विद्यां प्राप्तुं प्रयतन्त इति॥१०॥



www.9009.co.in

अत्रेन्द्राऽग्निगुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इत्येकोनषष्टितमं सूक्तं षड्विंशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे **(इन्द्राग्नी)** वायु और बिजुली के समान पदार्थों को जानते हुए **(उक्थवाहसा)** प्रशंसित विद्या की प्राप्ति कराने और **(हवनश्रुता)** हवनों को सुनने वालो! तुम **(स्तोमेभिः)** प्रशंसाओं से और **(विश्वाभिः)** समस्त **(गीर्भिः)** विद्या और उत्तम शिक्षा युक्त वाणियों के साथ **(अस्य)** इस **(सोमस्य)** महौषधियों के रस के **(पीतये)** पीने को **(आ, गतम्)** आओ॥१०॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। वे ही बिजुली की विद्या को जानने योग्य होते हैं, जो विद्वानों से विद्या पाने का प्रयत्न करते हैं॥१०॥

इस सूक्त में इन्द्र और अग्नि के गुणों का वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह उनसठवां सूक्त और छब्बीसवाँ वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

**अथ पञ्चदशर्चस्य षष्टितमस्य सूक्तस्य भरद्वाजो बार्हस्पत्य ऋषिः। इन्द्राग्नी देवते। १, ३ निचृत्त्रिष्टुप्। २ विराट् त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः। ४, ६, ७ विराड्गायत्री। ५, ९, ११ निचृद्गायत्री। ८, १०, १२ गायत्री छन्दः। षड्जः स्वरः। १३ स्वराट् पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः। १४ भुरिगनुष्टुप्। १५ विराडनुष्टुप् छन्दः। गान्धारः स्वरः॥**

***अथ क ऐश्वर्यं प्राप्नोतीत्याह॥***

अब पन्द्रह ऋचावाले साठवें सूक्त का प्रारम्भ है, इसके प्रथम मन्त्र में कौन ऐश्वर्य को पाता है, इस विषय को कहते हैं॥

**श्नथ॑द् वृ॒त्रमु॒त स॒नोति॒ वाज॒मिन्द्रा॒ यो अ॒ग्नी सहु॑री सप॒र्यात्।**
**इ॒र॒ज्यन्ता॑ वस॒व्य॑स्य भूरेः॒ सह॑स्तमा॒ सह॑सा वाज॒यन्ता॑॥ १॥**

**श्नथ॑त्। वृ॒त्रम्। उ॒त। स॒नोति॒। वाज॑म्। इन्द्रा॑। यः। अ॒ग्नी इति॑। सहु॑री॒ इति॑। स॒प॒र्यात्। इ॒र॒ज्यन्ता॑। व॒स॒व्य॑स्य। भूरेः॑। सह॑ऽतमा। सह॑सा। वा॒ज॒ऽयन्ता॑॥ १॥**

**पदार्थः**-(**श्नथत्**) हिनस्ति (**वृत्रम्**) धनम् (**उत**) अपि (**सनोति**) प्राप्नोति (**वाजम्**) अन्नम् (**इन्द्रा**) (**यः**) (**अग्नी**) इन्द्राग्नी वायुविद्युतौ (**सहुरी**) सोढारौ (**सपर्यात्**) सेवेत (**इरज्यन्ता**) ऐश्वर्य्यं सम्पादयन्तौ (**वसव्यस्य**) वसुषु द्रव्येषु भवस्य (**भूरेः**) बहोः (**सहस्तमा**) अतिशयेन सोढारौ (**सहसा**) बलेन (**वाजयन्ता**) वाजमन्नादिकमिच्छन्तौ॥ १॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यो विद्वान् सहुरी इरज्यन्ता सहस्तमा सहसा वाजयन्ता इन्द्राग्नी श्नथदुतापि सनोति वसव्यस्य भूरेर्वृत्रं सनोति वाजं सपर्यात् स एवैश्वर्यं प्राप्नुयात्॥ १॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यदि भवन्तो वायुविद्युद्विद्यां विजानीयुस्तर्हि महैश्वर्या भूत्वा महतो राज्यस्य स्वामिनो भवेयुः॥ १॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! (**यः**) जो विद्वान् (**सहुरी**) सहनशील (**इरज्यन्ता**) ऐश्वर्य को सिद्ध करते हुए वा (**सहस्तमा**) अतीव सहन करने वाले (**सहसा**) बल से (**वाजयन्ता**) अन्नादिकों की इच्छा करते हुए (**इन्द्रा, अग्नी**) पवन और बिजुली को (**श्नथत्**) ताड़ता है (**उत**) और (**सनोति**) प्राप्त होता है तथा (**वसव्यस्य**) धनादि पदार्थों में हुए (**भूरेः**) बहुत सुख से (**वृत्रम्**) धन को प्राप्त होता है और (**वाजम्**) अन्न को (**सपर्यात्**) सेवे वही ऐश्वर्य को पावे॥ १॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो आप वायु और बिजुली की विद्या को जानो तो महान् ऐश्वर्य वाले होकर महान् राज्य के स्वामी होओ॥ १॥

**मनुष्याः किं कृत्वा सुखं प्राप्नुवन्तीत्याह॥**



www.9009.co.in

मनुष्य क्या करके सुख पाते हैं, इस विषय को कहते हैं॥

**ता योधिष्टमुभि गा ईन्द्र नूनमुपः स्वरुषसो अग्न ऊळ्हाः।**

**दिशः स्वरुषसं इन्द्र चित्रा अपो गा अग्ने युवसे नियुत्वान्॥ २॥**

**ता। योधिष्टम्। अभि। गाः। इन्द्र। नूनम्। अपः। स्वः। उषसः। अग्ने। ऊळ्हाः। दिशः। स्वः। उषसः। इन्द्र। चित्राः। अपः। गाः। अग्ने। युवसे। नियुत्वान्॥ २॥**

**पदार्थः**-(**ता**) तौ (**योधिष्टम्**) युध्येयाताम् (**अभि**) (**गाः**) पृथिवीः (**इन्द्र**) परमैश्वर्ययुक्त (**नूनम्**) निश्चयेन (**अपः**) कर्म (**स्वः**) आदित्यः (**उषसः**) प्रभातवेलाः (**अग्ने**) विद्वन् (**ऊळ्हाः**) प्राप्ताः (**दिशः**) (**स्वः**) आदित्यः (**उषसः**) (**इन्द्र**) दुःखविदारक (**चित्राः**) (**अपः**) उदकानि (**गाः**) वाचः (**अग्ने**) विद्वन् (**युवसे**) संयोजयसि (**नियुत्वान्**) ईश्वर इव न्यायेशः॥ २॥

**अन्वयः**-हे इन्द्राग्ने वा! त्वं स्वरादित्य उषस इव गा नूनमपो युवसे याभ्यां दिश उळ्हास्ता विदित्वा युवामभि योधिष्टम्। हे इन्द्राग्ने वा नियुत्वाँस्त्वं स्वरादित्य उषस इव चित्रा अपो गा युवसे तस्मान्नियुत्वानसि॥ २॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। ये मनुष्या वायुविद्युद्वत्पराक्रमिणो भूत्वा युद्धमाचरेयुस्त उषसः सूर्य इव प्रजा न्यायेन प्रकाशयित्वा सर्वदिक्कीर्त्तयो भूत्वाऽद्भुता वाचो बलानि भूमिराज्यं च प्राप्नुवन्ति॥ २॥

**पदार्थः**-हे (**इन्द्र**) परमैश्वर्ययुक्त (**अग्ने**) विद्वन् वा! आप (**स्वः**) आदित्य (**उषसः**) प्रभातवेलाओं को जैसे वैसे (**गाः**) पृथिवी और (**नूनम्**) निश्चय से (**अपः**) कर्म को (**युवसे**) संयुक्त करते हो और जिनसे (**दिशः**) दिशायें (**ऊळ्हाः**) प्राप्त हुई (**ता**) उनको जानकर तुम दोनों (**अभि, योधिष्टम्**) सब ओर से युद्ध करो। हे (**इन्द्र**) दुःखविदारक= दुःख के नाश करने वाले वा (**अग्ने**) विद्वान् जन (**नियुत्वान्**) ईश्वर के समान न्यायाधीश! आप (**स्वः**) आदित्य (**उषसः**) प्रभातवेलाओं के समान (**चित्राः**) चित्रविचित्र (**अपः**) उदक (**गाः**) और वाणियों को संयुक्त करते हो, इससे ईश्वर के समान न्यायकर्त्ता हो॥ २॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो मनुष्य वायु और बिजुली के तुल्य पराक्रमी होकर युद्ध का आचरण करें, वे उषाकाल को जैसे सूर्य उसी के समान प्रजाओं को न्याय से प्रकाश को प्राप्त कराय कर और सर्व दिशाओं में कीर्ति वाले हो अद्भुत वाणी, बलों और भूमि के राज्य को प्राप्त होते हैं॥ २॥

**पुना राजाजनाः कीदृशा भवेयुरित्याह॥**

फिर राजा जन कैसे हों, इस विषय को कहते हैं॥

**आ वृत्रहणा वृत्रहभिः शुष्मैरिन्द्र यातं नमोभिरग्ने अर्वाक्।**

**युवं राधोभिरकवेभिरिन्द्राग्ने अस्मे भवतमुत्तमेभिः॥ ३॥**



www.9009.co.in

आ। वृत्रऽहना। वृत्रऽहभिः। शुष्मैः। इन्द्र। यातम्। नमःऽभिः। अग्ने। अर्वाक्। युवम्। राधःऽभिः। अकवेभिः। इन्द्र। अग्ने। अस्मे इति। भवतम्। उत्ऽतमेभिः॥३॥

**पदार्थः**-(**आ**) (**वृत्रहणा**) यौ वृत्रं मेघं हतस्तौ (**वृत्रहभिः**) यैः कर्मभिर्वृत्रं हतस्तैः (**शुष्मैः**) बलैः (**इन्द्र**) विद्युदिव राजन् (**यातम्**) आगच्छतम् (**नमोभिः**) अन्नादिभिः (**अग्ने**) पावक इव सभ्यजन (**अर्वाक्**) पश्चात् (**युवम्**) युवाम् (**राधोभिः**) धनैः (**अकवेभिः**) असङ्ख्यैः (**इन्द्र**) दुष्टविदारक (**अग्ने**) पापिप्रतापक (**अस्मे**) अस्मभ्यम् (**भवतम्**) (**उत्तमेभिः**) श्रेष्ठैः॥३॥

**अन्वयः**-हे इन्द्राग्ने वायुविद्युद्वद्वर्त्तमानौ! यथा वृत्रहणा विद्युतौ वृत्रहभिः शुष्मैर्नमोभिरर्वाग्गच्छतस्तथा युवमकवेभी राधोभिरस्माना यातम्। हे इन्द्राग्ने! उत्तमेभिः कर्मभिरस्मे सुखकरौ भवतम्॥३॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यो राजाऽस्याऽमात्याश्च वायुविद्युद्वदुपकारिणः स्युस्तेऽसङ्ख्यं धनमाप्नुयुः॥३॥

**पदार्थः**-हे (**इन्द्र**) बिजुली के समान राजजन वा (**अग्ने**) अग्नि के समान सभ्यजन वायु और बिजुली के समान वर्त्तमान दोनों पुरुषो! जैसे (**वृत्रहणा**) मेघ को हननेवाले बिजुली के दो भाग (**वृत्रहभिः**) उन कर्म्मों से जिन से मेघ को मारते वा (**शुष्मैः**) बलों से वा (**नमोभिः**) अन्नादि पदार्थों से (**अर्वाक्**) पीछे जाते हैं, वैसे (**युवम्**) तुम दोनों (**अकवेभिः**) असङ्ख्य (**राधोभिः**) धनों से हम लोगों को (**आ, यातम्**) प्राप्त होओ। हे (**इन्द्र**) दुष्टविदारक वा (**अग्ने**) पापियों को सन्तप्त करने वाले! (**उत्तमेभिः**) श्रेष्ठ कर्मों से (**अस्मे**) हम लोगों के लिये सुख करने वाले (**भवतम्**) होओ॥३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो राजा और राजमन्त्री वायु और बिजुली के समान उपकारी हों, वे असङ्ख्य धन को प्राप्त हों॥५॥

**मनुष्यैर्वायुविद्युतौ यथावद्विज्ञातव्यावित्याह॥**

मनुष्यों को चाहिये कि वायु और बिजुली को यथावत् जानें, इस विषय को कहते हैं॥

**ता हुवे ययोरिदं पप्ने विश्वं पुरा कृतम्। इन्द्राग्नी न मर्धतः॥४॥**

**ता। हुवे। ययोः। इदम्। पप्ने। विश्वम्। पुरा। कृतम्। इन्द्राग्नी इति। न। मर्धतः॥४॥**

**पदार्थः**-(**ता**) तौ (**हुवे**) (**ययोः**) (**इदम्**) (**पप्ने**) ययोः सकाशाद्व्यवहारे (**विश्वम्**) सर्वं जगत् (**पुरा**) (**कृतम्**) (**इन्द्राग्नी**) वायुविद्युतौ (**न**) निषेधे (**मर्धतः**) हिंसतः॥४॥

**अन्वयः**-ययोरिदं विश्वं पप्ने याविन्द्राग्नी पुरा कृतमिदं विश्वं न मर्धतस्ताऽहं हुवे॥४॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! याभ्यां वायुविद्युद्भ्यां सर्वं जगत् व्यवहरति यौ जगति स्थित्वा कञ्चन न हिंसतो विकृतौ सन्तौ नाशयतस्तौ मनुष्यैर्विज्ञाय यथावदुपकर्त्तव्यम्॥४॥



www.9009.co.in

**पदार्थ:-(ययो:)** जिनका **(इदम्)** यह **(विश्वम्)** समस्त जगत् वा **(पप्ने)** जिन से प्रवृत्त हुए व्यवहार में **(इन्द्राग्नी)** वायु और बिजुली **(पुरा)** पहिले **(कृतम्)** किये हुए इस विश्व को **(न)** नहीं **(मर्धत:)** नष्ट करते हैं **(ता)** उनको मैं **(हुवे)** ग्रहण करता हूं॥४॥

**भावार्थ:**-हे मनुष्यो! जिन वायु और बिजुली से सब जगत् व्यवहार करता है तथा जो संसार में स्थिर हो किसी को नष्ट नहीं करते हैं और विकार को प्राप्त हुए वे नष्ट करते हैं, मनुष्यों को चाहिये कि उनको जान कर यथावत् उपकार करें॥४॥

**पुनर्वायुविद्युतौ कीदृश्यौ भवत इत्याह॥**

फिर वायु और बिजुली कैसे है, इस विषय को कहते हैं॥

**उ॒ग्रा वि॑घ॒निना॒ मृध॑ इन्द्रा॒ग्नी ह॑वामहे। ता नो॑ मृळात ई॒दृशे॑॥५॥२७॥**

**उ॒ग्रा। वि॒ऽघ॒निना॑। मृध॑:। इ॒न्द्रा॒ग्नी इति॑। ह॒वा॒म॒हे॒। ता। न:। मृ॒ळा॒त॒:। ई॒दृशे॑॥५॥**

**पदार्थ:**-**(उग्रा)** तेजस्विनौ **(विघनिना)** विशेषेण हन्तारौ **(मृध:)** सङ्ग्रामान् **(इन्द्राग्नी)** वायुविद्युतौ **(हवामहे)** आदद्म: **(ता)** तौ **(न:)** अस्मान् **(मृळात:)** सुखयत: **(ईदृशे)** युद्धप्रकारके व्यवहारे॥५॥

**अन्वय:**-हे मनुष्या! वयमुग्रा विघनिनेन्द्राग्नी हवामहे ताभ्यां मृधो विजयामहे यावीदृशे व्यवहारे नो मृळातस्ता यूयमपि विजानीत॥५॥

**भावार्थ:**-मनुष्यैर्वायुविद्युतौ यथावद्विज्ञाय सम्प्रयुज्य सङ्ग्रामान् विजित्य सुखं प्राप्तव्यम्॥५॥

**पदार्थ:**-हे मनुष्यो! हम लोग **(उग्रा)** तेजस्वी **(विघनिना)** विशेष हनने वाले **(इन्द्राग्नी)** वायु और बिजुली को **(हवामहे)** ग्रहण करते हैं उनसे **(मृध:)** सङ्ग्रामों को जीतते हैं जो **(ईदृशे)** ऐसे युद्धप्रकारक व्यवहार में **(न:)** हम लोगों को **(मृळात:)** सुखी करते हैं **(ता)** उन दोनों को तुम भी जानो॥५॥

**भावार्थ:**-मनुष्यों को वायु और बिजुली यथावत् जान और उनका संप्रयोग कर सङ्ग्रामों को जीत सुख पाना चाहिये॥५॥

**पुनस्तौ कीदृशावित्याह॥**

फिर वे कैसे हैं, इस विषय को कहते हैं॥

**ह॒तो वृ॒त्राण्यार्या॑ ह॒तो दासा॑नि॒ सत्प॑ती। ह॒तो विश्वा॒ अप॒ द्विष॑:॥६॥**

**ह॒त:। वृ॒त्राणि॑। आर्या॑। ह॒त:। दासा॑नि। सत्प॑ती॒ इति॒ सत्ऽप॑ती। ह॒त:। विश्वा॑। अप॑। द्विष॑:॥६॥**

**पदार्थ:**-**(हत:)** हिंसक: **(वृत्राणि)** मेघाऽवयवान् **(आर्या)** उत्तमगुणकर्मस्वभावौ **(हत:)** **(दासानि)** दानानि **(सत्पती)** सतां पुरुषाणां व्यवहाराणां वा पालकौ **(हत:)** **(विश्वा)** अखिलान् **(अप)** **(द्विष:)** शत्रून्॥६॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यावार्या सत्पती सूर्य्यविद्युतौ वृत्राणीव विश्वा द्विषोप हतः। दासान्यप हतो दुःखान्यप हतस्तौ सत्कर्त्तव्यौ॥६॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! ये श्रेष्ठगुणकर्मस्वभावा मनुष्याः सत्यधर्मनिष्ठा आप्तानां पालका दुष्टानां प्रहर्त्तारः स्युस्तान् सदा सत्कुरुत॥६॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो **(आर्या)** उत्तम गुणकर्मस्वभावयुक्त **(सत्पती)** सज्जन पुरुषों के व्यवहारों के पालने वाले सूर्य्य और बिजुली **(वृत्राणि)** मेघ के अवयवों को जैसे वैसे **(विश्वा)** समस्त **(द्विषः)** शत्रुजनों को **(अप, हतः)** मारते हैं वा **(दासानि)** दानों को **(हतः)** नष्ट करते हैं वा दुःखों को **(हतः)** दूर करते हैं, वे सत्कार करने योग्य हैं॥६॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो श्रेष्ठ गुणकर्मस्वभाव वाले मनुष्य, सत्य धर्मनिष्ठ, आप्त सज्जनों के पालने और दुष्टों को हरने वाले हों, उनका सदा सत्कार करो॥६॥

**पुनस्तौ कीदृशावित्याह॥**

फिर वे दोनों कैसे है, इस विषय को कहते हैं॥

**इन्द्राग्नी युवामिमे३ऽभि स्तोमा अनूषत। पिबतं शंभुवा सुतम्॥७॥**

**इन्द्राग्नी इति। युवाम्। इमे। अभि। स्तोमाः। अनूषत। पिबतम्। शम्ऽभुवा। सुतम्॥७॥**

**पदार्थः**-**(इन्द्राग्नी)** सूर्य्यविद्युताविव सभासेनेशौ **(युवाम्)** **(इमे)** **(अभि)** **(स्तोमाः)** प्रशंसाः **(अनूषत)** प्रशंसन्ति **(पिबतम्)** **(शम्भुवा)** यौ शं सुखं भावयतस्तौ **(सुतम्)** अभिनिष्पादितं दुग्धादिरसम्॥७॥

**अन्वयः**-हे शम्भुवा इन्द्राग्नी! युवां य इमे स्तोमा अभ्यनूषत तैः सुतं पिबतम्॥७॥

**भावार्थः**-हे सभासेनेशौ! भवन्तौ पथ्याचारेण सदौषधिरसं पीत्वाऽरोगौ भूत्वा प्रशंसितानि कर्माणि कुर्याताम्॥७॥

**पदार्थः**-हे **(शम्भुवा)** सुख की भावना कराने वाले **(इन्द्राग्नी)** सूर्य्य और बिजुली के समान सभासेनाधीशो! **(युवाम्)** आप दोनों जो **(इमे)** ये **(स्तोमाः)** प्रशंसायें **(अभि, अनूषत)** प्रशंसा करती हैं उनसे **(सुतम्)** सब ओर से उत्पन्न किये हुए दूध आदि रस को **(पिबतम्)** पिओ॥७॥

**भावार्थः**-हे सभासेनाधीशो! आप लोग पथ्य आचार से सदा ओषधियों के रस को पीके अरोगी होकर प्रशंसित कर्मों को करो॥७॥

**पुनस्तौ कीदृशावित्याह॥**

फिर वे कैसे हैं, इस विषय को कहते हैं॥

**या वां सन्ति पुरुस्पृहो नियुतो दाशुषे नरा। इन्द्राग्नी ताभिरा गतम्॥८॥**

**या। वाम्। सन्ति। पुरुऽस्पृहः। निऽयुतः। दाशुषे। नरा। इन्द्राग्नी इति। ताभिः। आ। गतम्॥८॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**या**) याः (**वाम्**) युवयोः (**सन्ति**) (**पुरुस्पृहः**) पुरून् बहूनुत्तमान् कामानभिकाङ्क्षयन्ति याभिस्ताः (**नियुतः**) निश्चिताः (**दाशुषे**) दात्रे (**नरा**) नायकौ (**इन्द्राग्नी**) विद्यैश्वर्य्ययुक्तावध्यापकोपदेशकौ (**ताभिः**) स्पृहाभिः (**आ**) (**गतम्**) आगच्छतम्॥८॥

**अन्वयः**-हे नरा इन्द्राग्नी! वा या पुरुस्पृहो नियुतः सन्ति ताभिर्दाशुष आ गतम्॥८॥

**भावार्थः**-ये मनुष्याः परोपकारं चिकीर्षन्ति त एव सत्पुरुषा भवन्ति॥८॥

**पदार्थः**-हे (**नरा**) नायक (**इन्द्राग्नी**) विद्या और ऐश्वर्य्ययुक्त अध्यापक और उपदेशको! (**वाम्**) तुम दोनों की (**या**) जो (**पुरुस्पृहः**) बहुतों की चाहना करते जिनसे वे (**नियुतः**) निश्चित (**सन्ति**) हैं (**ताभिः**) उन इच्छाओं से (**दाशुषे**) दान देने वाले के लिये (**आ, गतम्**) आओ॥८॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य परोपकार करने की इच्छा करते हैं, वे ही सत्पुरुष होते हैं॥८॥

**पुनस्तौ किं कुर्यातमित्याह॥**

फिर वे क्या करें, इस विषय को कहते हैं॥

**ताभिरा गच्छतं नरोपेदं सवनं सुतम्। इन्द्राग्नी सोमपीतये॥९॥**

**ताभिः। आ। गच्छतम्। नरा। उप। इदम्। सवनम्। सुतम्। इन्द्राग्नी इति। सोमऽपीतये॥९॥**

**पदार्थः**-(**ताभिः**) स्पृहाभिः (**आ**) (**गच्छतम्**) समन्तात् प्राप्नुतम् (**नरा**) नायकौ (**उप**) (**इदम्**) (**सवनम्**) येन सूयते तत् (**सुतम्**) सुसंस्कृतम् (**इन्द्राग्नी**) इन्द्रवायू इव सज्जनौ (**सोमपीतये**) सोमस्य पानाय॥९॥

**अन्वयः**-हे नरेन्द्राग्नी! युवां ताभिः सोमपीतय इदं सुतं सवनमुपाऽऽगच्छतम्॥९॥

**भावार्थः**-यजमाना विदुष आहूय सदैव सत्कुर्य्युः सत्कृतास्ते च यजमानान् धर्मपथं नयेयुः॥९॥

**पदार्थः**-हे (**नरा**) नायक (**इन्द्राग्नी**) बिजुली और वायु के समान सज्जनो! तुम दोनों (**ताभिः**) उन इच्छाओं से (**सोमपीतये**) सोमपान के लिये (**इदम्**) इस (**सुतम्**) अच्छे प्रकार संस्कार किये हुए (**सवनम्**) जिससे उत्पन्न करते हैं उसके (**उप, आ, गच्छतम्**) समीप प्राप्त होओ॥९॥

**भावार्थः**-यजमान जन विद्वानों को बुलाकर सदैव सत्कार करें और सत्कार पाये हुए वे लोग भी यजमानों को धर्मपथ को प्राप्त करावें॥९॥

**पुनः स राजा कीदृशो भवेदित्याह॥**

फिर वह राजा कैसा हो, इस विषय को कहते हैं॥

**तमीळिष्व यो अर्चिषा वना विश्वा परिष्वजत्।**

**कृष्णा कृणोति जिह्वया॥१०॥२८॥**

**तम्। ईळिष्व। यः। अर्चिषा। वना। विश्वा। परिऽस्वजत्। कृष्णा। कृणोति। जिह्वया॥१०॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**तम्**) (**ईळिष्व**) प्रशंसाऽध्यन्विच्छ वा (**यः**) (**अर्चिषा**) सत्कारेण (**वना**) वनानि किरणान् (**विश्वा**) सर्वाणि (**परिष्वजत्**) सर्वतः सम्बध्नाति (**कृष्णा**) कर्षणानि (**कृणोति**) (**जिह्वया**)॥१०॥

**अन्वयः**-हे विद्वन्! यथा सूर्य्योऽर्चिषा विश्वा वना परिष्वजत् कृष्णा कृणोति तथा यो जिह्वया सत्याचारं परिष्वजत्तं त्वमीळिष्व॥१०॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यथा सूर्यप्रकाशेन सर्वे पदार्था यथावद् दृश्यन्ते तथैव विद्यया सर्वे पदार्थाः प्रकाश्यन्ते॥१०॥

**पदार्थः**-हे विद्वन् जन! जैसे सूर्य्य (**अर्चिषा**) सत्कार से (**विश्वा**) समस्त (**वना**) किरणों का (**परिष्वजत्**) सब ओर से सम्बन्ध करता है तथा (**कृष्णा**) पदार्थों की खीचों को [=पदार्थों का कर्षण] (**कृणोति**) करता है, वैसे (**यः**) जो (**जिह्वया**) जिह्वा से सत्य आचरण का सम्बन्ध करे (**तम्**) उसकी आप (**ईळिष्व**) प्रशंसा वा याचना करो॥१०॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे सूर्य्य के प्रकाश से सब पदार्थ यथावत् दीखते हैं, वैसे ही विद्या से सब पदार्थ प्रकाशित होते हैं॥१०॥

**पुनर्मनुष्यैः कस्मै किं सेवितव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को किसके लिये क्या सेवन करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**य इ॒द्ध आ॒विवा॑सति सु॒म्नमिन्द्र॑स्य मर्त्यः॑। द्यु॒म्नाय॑ सु॒तरा॑ अ॒पः॥ ११॥**

**यः। इ॒द्धे। आ॒ऽविवा॑सति। सु॒म्नम्। इन्द्र॑स्य। मर्त्यः॑। द्यु॒म्नाय॑। सु॒ऽतरा॑ः। अ॒पः॥ ११॥**

**पदार्थः**-(**यः**) यजमानः (**इद्धे**) प्रदीप्ते (**आविवासति**) समन्तात्सेवते (**सुम्नम्**) सुखम् (**इन्द्रस्य**) ऐश्वर्यस्य (**मर्त्यः**) मनुष्यः (**द्युम्नाय**) यशसे धनाय वा (**सुतराः**) सुष्ठु तरन्ति यासु ताः (**अपः**) जलानि॥११॥

**अन्वयः**-यो मर्त्य इद्ध इन्द्रस्य द्युम्नाय सुतरा अपः सुम्नं चाऽऽविवासति स भाग्यवाञ्जायते॥११॥

**भावार्थः**-मनुष्या यथेद्धे पावके सुगन्ध्यादि हविर्हुत्वा सिद्धकामा भवन्ति तथैव ये यशसा धर्म्मकीर्त्यै स्वर्ग्याय च प्रयतन्ते ते सुतरां श्रीमन्तो जायते॥११॥

**पदार्थः**-(**यः**) जो (**मर्त्यः**) मनुष्य (**इद्धे**) प्रदीप्त व्यवहार में (**इन्द्रस्य**) ऐश्वर्य के (**द्युम्नाय**) यश वा धन के लिये (**सुतराः**) सुन्दरता से जिनमें तैरें उन (**अपः**) जलों को और (**सुम्नम्**) सुख को (**आविवासति**) सब ओर से सेवता है, वह भाग्यवान् होता है॥११॥

**भावार्थः**-मनुष्य जैसे प्रदीप्त अग्नि में सुगन्ध्यादि पदार्थों की हवि होम कर सिद्धकाम होते हैं, वैसे जो यश से धर्मकीर्त्ति वा स्वर्ग के लिये प्रयत्न करते हैं, वे निरन्तर श्रीमान् होते हैं॥११॥

**पुनर्मनुष्यैः केन किं कर्त्तव्यमित्याह॥**



www.9009.co.in

फिर मनुष्यों को किससे क्या करने योग्य है, इस विषय को कहते हैं॥

**ता नो वाजवतीरिष आशून् पिपृतमर्वतः। इन्द्रमग्निं च वोळहवे॥१२॥**

**ता। नः। वाजऽवतीः। इषः। आशून्। पिपृतम्। अर्वतः। इन्द्रम्। अग्निम्। च। वोळहवे॥१२॥**

**पदार्थः**-(**ता**) तौ (**नः**) अस्मभ्यम् (**वाजवतीः**) प्रशस्तविज्ञानयुक्तान् (**इषः**) अन्नादीन् (**आशून्**) आशुगामिनः (**पिपृतम्**) पूरयेताम् (**अर्वतः**) अश्वान् (**इन्द्रम्**) विद्युतम् (**अग्निम्**) प्रसिद्धं पावकम् (**च**) (**वोळहवे**) विमानादियानानां वाहनाय॥१२॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यूयं यौ नो वाजवतीरिष आशूनर्वतः पिपृतं तेन्द्रमग्निं च वोळहवे सङ्गृह्णीत॥१२॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यूयं विद्युदादिपदार्थैर्विमानादीनि यानानि चालयित्वेच्छाः पूरयत॥१२॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! तुम जो (**नः**) हमारे लिये (**वाजवतीः**) प्रशस्त विज्ञानयुक्त (**इषः**) अन्नादि पदार्थों और (**आशून्**) शीघ्रगामी (**अर्वतः**) घोड़ों को (**पिपृतम्**) पूर्ण करते हैं (**ता**) उन (**इन्द्रम्**) बिजुली रूप अग्नि (**अग्निम्, च**) और प्रसिद्ध अग्नि को (**वोळहवे**) विमान आदि यानों को वहाने के लिये सङ्ग्रह करो॥१२॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! तुम बिजुली आदि पदार्थों से विमान आदि यानों को चलाकर इच्छओं को पूर्ण करो॥१२॥

**पुनः शिल्पिनस्ताभ्यां किं कुर्य्युरित्याह॥**

फिर शिल्पीजन उनसे क्या करें, इस विषय को कहते हैं॥

**उभा वामिन्द्राग्नी आहुवध्या उभा राधसः सह मादयध्यै।**

**उभा दातारविषां रयीणामुभा वाजस्य सातये हुवे वाम्॥१३॥**

**उभा। वाम्। इन्द्राग्नी इति। आऽहुवध्यै। उभा। राधसः। सह। मादयध्यै। उभा। दातारौ। इषाम्। रयीणाम्। उभा। वाजस्य। सातये। हुवे। वाम्॥१३॥**

**पदार्थः**-(**उभा**) उभौ (**वाम्**) युवयोः (**इन्द्राग्नी**) सूर्य्यविद्युतौ (**आहुवध्यै**) आह्वयितुम् (**उभा**) (**राधसः**) धनस्य (**सह**) (**मादयध्यै**) आनन्दयितुम् (**उभा**) (**दातारौ**) (**इषाम्**) अन्नादीनाम् (**रयीणाम्**) धनानाम् (**उभा**) (**वाजस्य**) विज्ञानस्य सङ्ग्रामस्य वा (**सातये**) संविभागाय (**हुवे**) आददि (**वाम्**) युवाम्॥१३॥

**अन्वयः**-हे शिल्पविद्याऽध्यापकोपदेशकौ! यथा वां युवयोः समीपे स्थित्वाऽऽहुवध्या उभेन्द्राग्नी राधसो मादयध्या उभा सह उभेषां रयीणां दातारा उभा वाजस्य सातयेऽहं हुवे तथोभा वामेतद्विद्यां बोधयेयम्॥१३॥

**भावार्थः**-ये मनुष्या वायुविद्युतौ यथावद्विदित्वा कार्येषु सम्प्रयुञ्जते ते श्रीपतयो जायन्ते॥१३॥

**पदार्थः**-हे शिल्पविद्या के अध्यापक और उपदेश करने वालो! जैसे (**वाम्**) तुम्हारे समीप स्थिर होकर (**आहुवध्यै**) आह्वान करने को (**उभा**) दोनों (**इन्द्राग्नी**) सूर्य्य और बिजुली को (**राधसः**) धन



www.9009.co.in

सम्बन्धी **(मादयध्यै)** आनन्द देने को **(उभा)** दोनों को **(सह)** एक साथ **(उभा)** और दोनों को **(इषाम्)** अन्नादि पदार्थों के वा **(रयीणाम्)** धनादि पदार्थों के **(दातारौ)** देने वाले तथा **(उभा)** दोनों को **(वाजस्य)** विज्ञान वा सङ्ग्राम के **(सातये)** संविभाग के लिये मैं **(हुवे)** स्वीकार करता हूं, वैसे ही **(वाम्)** तुम दोनों को इस विद्या का बोध कराऊं॥१३॥

**भावार्थ:**-जो मनुष्य वायु और बिजुली को यथावत् जान के कार्य्यों में उनका अच्छे प्रकार प्रयोग करते हैं, वे श्रीपति होते हैं॥१३॥

**पुनर्मनुष्यै: कै: सह मित्रता कार्येत्याह॥**

फिर मनुष्यों को किन के साथ मित्रता करनी चाहिये, इस विषयको कहते हैं॥

**आ नो गव्येभिरश्व्यैर्वसव्यै३रुप गच्छतम्।**

**सखायौ देवौ सख्याय शंभुवेन्द्राग्नी ता हवामहे॥१४॥**

**आ। न:। गव्येभि:। अश्व्यै:। वसव्यै:। उप। गच्छतम्। सखायौ। देवौ। सख्याय। शम्ऽभुवा। इन्द्राग्नी इति। ता। हवामहे॥१४॥**

**पदार्थ:**-**(आ)** समन्तात् **(न:)** अस्मान् **(गव्येभि:)** गोर्विकारैर्घृतादिभि: **(अश्व्यै:)** अश्वेषु भवैर्गुणै: **(वसव्यै:)** वसुषु द्रव्येषु भवै: सुखै: **(उप)** **(गच्छतम्)** **(सखायौ)** सुहृदौ **(देवौ)** विद्वांसौ **(सख्याय)** मित्रत्वाय **(शम्भुवा)** सुखंभावुकौ **(इन्द्राग्नी)** सूर्य्यविद्युताविव वर्त्तमानौ **(ता)** तौ **(हवामहे)** आह्वयामहे॥१४॥

**अन्वय:**-हे अध्यापकोपदेशकविन्द्राग्नी इव वर्त्तमानौ शम्भुवा देवौ सखायौ न: सख्याय गव्येभिरश्व्यैर्वसव्यै: सह वर्त्तमानौ युवां वयं हवामहे ता युवामस्मानुपाऽऽगच्छतम्॥१४॥

**भावार्थ:**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कार:। ये मनुष्या विद्वन्मित्रा भूत्वा पदार्थविद्यां चिकीर्षन्ति तेऽवश्यं विज्ञानं प्राप्नुवन्ति॥१४॥

**पदार्थ:**-हे अध्यापक और उपदेशको **(इन्द्राग्नी)** सूर्य और बिजुली के समान वर्त्तमान वा **(शम्भुवा)** सुख की भावना कराने वाले **(देवौ)** विद्वान् **(सखायौ)** मित्र **(न:)** हम लोगों को **(सख्याय)** मित्रता के लिये **(गव्येभि:)** गो घृत आदि पदार्थ **(अश्व्यै:)** अश्वादिकों में हुए गुणों और **(वसव्यै:)** धनादिकों में हुए सुखों के साथ वर्त्तमान तुम दोनों को हम लागे **(हवामहे)** बुलाते हैं **(ता)** वे तुम दोनों हम लोगों के **(उप, आ, गच्छतम्)** समीप आओ॥१४॥

**भावार्थ:**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो मनुष्य विद्वानों के मित्र होकर पदार्थविद्या सिद्ध करने की इच्छा करते हैं, वे अवश्य विज्ञान को प्राप्त होते हैं॥१४॥

**पुनस्तौ किं कुर्य्यातामित्याह॥**

फिर वे दोनों क्या करें, इस विषय को कहते हैं॥



www.9009.co.in

इन्द्रा॑ग्नी शृणु॒तं हवं॒ यज॑मानस्य सुन्व॒तः।

वी॒तं ह॒व्यान्या ग॑तं॒ पिब॑तं सो॒म्यं मधु॑॥१५॥२९॥

इन्द्रा॑ग्नी॒ इति॑। शृ॒णु॒तम्। हव॑म्। यज॑मानस्य। सु॒न्व॒तः। वी॒तम्। ह॒व्यानि॑। आ। ग॒तम्। पिब॑तम्। सो॒म्यम्। मधु॑॥१५॥

**पदार्थः**-(**इन्द्राग्नी**) वायुविद्युताविव वर्त्तमानावध्यापकोपदेशकौ (**शृणुतम्**) (**हवम्**) ममाऽधीतविषयम् (**यजमानस्य**) शुभगुणादातुः (**सुन्वतः**) पदार्थविद्यया बहून् पदार्थान्निष्पादयतः (**वीतम्**) प्राप्नुतं व्याप्नुतं वा (**हव्यानि**) (**आ**) (**गतम्**) आगच्छतम् (**पिबतम्**) (**सोम्यम्**) सोममर्हम् (**मधु**) मधुरादियुक्तं रसम्॥१५॥

**अन्वयः**-हे इन्द्राग्नी! युवां सुन्वतो यजमानस्य हवं शृणुतं हव्यानि वीतं तत्सान्निध्यमा गतं सोम्यं मधु पिबतम्॥१५॥

**भावार्थः**-सर्वैर्मनुष्यैरामन्त्रणेन विदुषामाह्वानं कृत्वैतान् सत्कृत्यैतेभ्यः स्वविद्यां परीक्षयित्वाऽधिका विद्या ग्रहीतव्येति॥१५॥

अत्रेन्द्राऽग्निगुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति षष्टितमं सूक्तमेकोनत्रिंशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे (**इन्द्राग्नी**) वायु और बिजुली के समान वर्त्तमान अध्यापक और उपदेशको! तुम दोनों (**सुन्वतः**) पदार्थविद्या से बहुत पदार्थों को उत्पन्न करते हुए (**यजमानस्य**) शुभ गुण देने वाले मेरे (**हवम्**) पढ़े विषय को (**शृणुतम्**) सुनो और (**हव्यानि**) पदार्थों को (**वीतम्**) प्राप्त होओ वा व्याप्त होओ उनके समीप (**आ, गतम्**) आओ और (**सोम्यम्**) शान्ति शीतलता के जो योग्य है उस (**मधु**) मधुरादि युक्त रस को (**पिबतम्**) पिओ॥१५॥

**भावार्थः**-सब मनुष्यों को चाहिये कि आमन्त्रण से विद्वानों को बुलाकर इनका सत्कार कर इनसे अपनी विद्या की परीक्षा कराय अधिक विद्या ग्रहण करें॥१५॥

इस सूक्त में इन्द्र और अग्नि के गुणों का वर्णन होने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह साठवां सूक्त और उनतीसवां वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

**अथ चतुर्दशर्चस्यैकषष्टितमस्य सूक्तस्य बार्हस्पत्य ऋषिः। सरस्वती देवता। १, १३ निचृज्जगती। २ जगती। ३ विराड्जगती छन्दः। निषादः स्वरः। ४, ९, ११, १२ निचृद्गायत्री। ५, ६, १० विराड्गायत्री। ७, ८ गायत्री छन्दः। षड्जः स्वरः। १४ पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः॥**

***अथेयं वाक् किं ददातीत्याह॥***

अब चौदह ऋचावाले एकसठवें सूक्त का आरम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में यह वाणी क्या देती है, इस विषय को कहते हैं॥

**इ॒यम॑ददाद् रभ॒सम॑ृण॒च्युतं॒ दिवो॑दासं वध्र्यश्वाय॑ दा॒शुषे॑।**

**या शश्व॑न्तमाच॒खादा॑व॒सं प॒णिं ता ते॑ दा॒त्राणि॑ तवि॒षा स॑रस्वति॥ १॥**

**इ॒यम्। अ॒द॒दा॒त्। र॒भ॒सम्। ऋ॒ण॒ऽच्यु॒त॑म्। दिवः॑ऽदासम्। व॒ध्रि॒ऽअ॒श्वाय॑। दा॒शुषे॑। या। शश्व॑न्तम्। आ॒ऽच॒खाद॑। अ॒व॒सम्। प॒णिम्। ता। ते॒। दा॒त्राणि॑। त॒वि॒षा। स॒र॒स्व॒ति॒॥ १॥**

**पदार्थः**-(**इयम्**) (**अददात्**) ददाति (**रभसम्**) वेगम् (**ऋणच्युतम्**) ऋणादयुक्तम् (**दिवोदासम्**) विद्याप्रकाशस्य दातारम् (**वध्र्यश्वाय**) वध्रयो वर्धका अश्वा यस्य तस्मै (**दाशुषे**) दात्रे (**या**) (**शश्वन्तम्**) अनादिभूतं वेदविद्याविषयम् (**आचखाद**) स्थिरीकरोति (**अवसम्**) रक्षकम् (**पणिम्**) प्रशंसनीयम् (**ता**) तानि (**ते**) तव (**दात्राणि**) दानानि (**तविषा**) बलेन (**सरस्वति**) विदुषि॥१॥

**अन्वयः**-हे सरस्वति! येयं वध्र्यश्वाय दाशुषे रभसमृणच्युतं दिवोदासमददाच्छश्वन्तमवसं पणिमाचखाद सा ते तविषा ता दात्राणि ददातीति विजानीहि॥१॥

**भावार्थः**-या स्त्री विद्याशिक्षायुक्तां वाचं गृह्णाति साऽनादिभूतां वेदविद्यां वेत्तुमर्हति सा येन सह विवाहं कुर्यात्तस्याऽहोभाग्यं भवतीति विज्ञेयम्॥१॥

**पदार्थः**-हे (**सरस्वति**) विदुषी (**या**) जो (**इयम्**) यह (**वध्र्यश्वाय**) बढ़ाने वाले घोड़ों से युक्त (**दाशुषे**) दानशील के लिये (**रभसम्**) वेग (**ऋणच्युतम्**) ऋण से छूटे (**दिवोदासम्**) विद्या प्रकाश के देनेवाले को (**अददात्**) देती है तथा (**शश्वन्तम्**) अनादि वेदविद्याविषय जो कि (**अवसम्**) रक्षक तथा (**पणिम्**) प्रशंसनीय है उसको (**आचखाद**) स्थिर करती है वह (**ते**) आपके (**तविषा**) बल से (**ता**) उन (**दात्राणि**) दानों को देती है, यह जानो॥१॥

**भावार्थः**-जो स्त्री विद्या शिक्षायुक्त वाणी को ग्रहण करती है, वह अनादिभूत वेदविद्या को जानने योग्य होती है, वह जिसके साथ विवाह करे, उसका अहोभाग्य होता है, यह जानने योग्य है॥१॥

**पुनः सा किं करोतीत्याह॥**



www.9009.co.in

फिर वह क्या करती है, इस विषय को कहते हैं॥

**इयं शुष्मेभिर्बिसखाइवारुजत्सानु गिरीणां तविषेभिरूर्मिभिः।**

**पारावतघ्नीमवसे सुवृक्तिभिः सरस्वतीमा विवासेम धीतिभिः॥२॥**

**इयम्। शुष्मेभिः। बिसखाःऽइव। अरुजत्। सानु। गिरीणाम्। तविषेभिः। ऊर्मिऽभिः। पारावतऽघ्नीम्। अवसे। सुवृक्तिऽभिः। सरस्वतीम्। आ। विवासेम। धीतिऽभिः॥२॥**

**पदार्थः-(इयम्) (शुष्मेभिः)** बलैः **(बिसखाइव)** यो बिसं कमलतन्तुं खनति तद्वद्वर्त्तमानाः **(अरुजत्)** भनक्ति **(सानु)** शिखरम् **(गिरीणाम्)** मेघानाम् **(तविषेभिः)** बलैः **(ऊर्मिभिः)** तरङ्गैः **(पारावतघ्नीम्)** पारावारघातिनीम् **(अवसे)** रक्षणाद्याय **(सुवृक्तिभिः)** सुष्ठुच्छेदिकाभिः क्रियाभिः **(सरस्वतीम्) (आ) (विवासेम)** सेवेमहि **(धीतिभिः)**॥२॥

**अन्वयः**-हे विद्वांसो! येयं शुष्मेभिर्बिसखाइव तविषेभिरूर्भिभिर्गिरीणां सान्वरुजत्तां पारावतघ्नीं सरस्वतीं धीतिभिः सुवृक्तिभिरवसे यथा वयमा विवासेम तथा यूयमिमां सदा सेवध्वम्॥२॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। यथा बिसतन्तुखनको बिसानि प्राप्नोति तथैव पुरुषार्थिनो मनुष्या उत्तमां विद्यां प्राप्नुवन्ति यथा विद्युन्मेघावयवाञ्छिनत्ति तथैव सुशिक्षिता वागविद्यावयवान् संशयान्नाशयति॥२॥

**पदार्थः**-हे विद्वानो! जो **(इयम्)** यह **(शुष्मेभिः)** बलों से **(बिसखाइव)** कमल के तन्तु को खोदने वाले के समान **(तविषेभिः)** बलों और **(ऊर्मिभिः)** तरङ्गों से **(गिरीणाम्)** मेघों के **(सानु)** शिखर को **(अरुजत्)** भङ्ग करती है उस **(पारावतघ्नीम्)** आरपार को नष्ट करने वाली **(सरस्वतीम्)** वेगवती नदी को **(धीतिभिः)** धारण और **(सुवृक्तिभिः)** छिन्न-भिन्न करने वाली क्रियाओं से **(अवसे)** रक्षा के लिये जैसे हम लोग **(आ, विवासेम)** सेवें, वैसे तुम भी इसको सदा सेवो॥२॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जैसे कमलनाल तन्तुओं को खोदने वाला कमलनाल तन्तुओं को प्राप्त होता है, वैसे ही पुरुषार्थी मनुष्य उत्तम विद्या को प्राप्त होते हैं और जैसे बिजुली मेघ के अङ्गों को छिन्न-भिन्न करती है, वैसे ही सुन्दर शिक्षित वाणी अविद्या के अङ्गों और संशयों का नाश करती है॥२॥

**पुनः सा किं करोतीत्याह॥**

फिर वह क्या करती है, इस विषय को कहते हैं॥

**सरस्वति देवनिदो नि बर्हय प्रजां विश्वस्य बृसयस्य मायिनः।**

**उत क्षितिभ्योऽवनीरविन्दो विषमेभ्यो अस्रवो वाजिनीवति॥३॥**

**सरस्वति। देवऽनिदः। नि। बर्हय। प्रऽजाम्। विश्वस्य। बृसयस्य। मायिनः। उत। क्षितिऽभ्यः। अवनीः। अविन्दः। विषम्। एभ्यः। अस्रवः। वाजिनीऽवति॥३॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**सरस्वति**) विद्यायुक्ते स्त्रि (**देवनिदः**) ये देवान् विदुषो निन्दन्ति तान् (**नि**) नितराम् (**बर्हय**) निःसारय (**प्रजाम्**) (**विश्वस्य**) समग्रस्य (**बृसयस्य**) अविद्याछेदकस्य (**मायिनः**) प्रशंसितप्रज्ञस्य (**उत**) (**क्षितिभ्यः**) पृथिवीभ्यः (**अवनीः**) रक्षिका भूमीः (**अविन्दः**) प्राप्नुहि (**विषम्**) उदकम्। **विषमित्युदकनाम।** (निघं०१.१२) (**एभ्यः**) भूम्यन्तर्देशेभ्यः (**अस्रवः**) स्रावय (**वाजिनीवति**) विज्ञानक्रियायुक्ते॥३॥

**अन्वयः**-हे वाजिनीवति सरस्वती! त्वं देवनिदो नि बर्हय [उत] विश्वस्य बृसयस्य मायिनः प्रजामविन्दः क्षितिभ्योऽवनीरविन्द एभ्यो विषमस्रवः॥३॥

**भावार्थः**-सैव विदुषी स्त्री वरा या विदुषां विद्यायाश्च निन्दकान् दूरीकृत्य विद्याप्रशंसकान् सत्करोति या च भूगर्भादिविद्यावित्सर्वा प्रजां विद्याभिमुखां करोति॥३॥

**पदार्थः**-हे (**वाजिनीवति**) विज्ञान, क्रिया और (**सरस्वती**) विद्यायुक्त स्त्री! तू (**देवनिदः**) जो विद्वानों की निन्दा करते हैं उनको (**नि, बर्हय**) निकाल (**उत**) और (**विश्वस्य**) समग्र (**बृसयस्य**) अविद्या छेदन करने वाले (**मायिनः**) प्रशंसित बुद्धियुक्त विद्वान् की (**प्रजाम्**) प्रजा को (**अविन्दः**) प्राप्त हो तथा (**क्षितिभ्यः**) पृथिवियों से (**अवनीः**) रक्षा करने वाली भूमियों को प्राप्त हो और (**एभ्यः**) इन भूमि के भीतरी देशों से (**विषम्**) जल को (**अस्रवः**) चुआओ निकालो॥३॥

**भावार्थः**-वही पण्डिता स्त्री श्रेष्ठ है जो विद्वान् और विद्या के निन्दकों को निकाल विद्या के प्रशंसकों (बड़ाई करने वालों) का सत्कार करती है और जो भूगर्भादि विद्या जानने वाली समस्त प्रजा को विद्याऽभिमुख करती है॥३॥

**पुनः सा कीदृशी रक्षिकेत्याह॥**

फिर वह कैसी रक्षा करने वाली है, इस विषय को कहते हैं॥

**प्र णो॑ दे॒वी सर॑स्वती॒ वाजे॑भिर्वा॒जिनी॑वती। धी॒नाम॑वि॒त्र्य॑वतु॥४॥**

**प्र। नः॒। दे॒वी। सर॑स्वती। वाजे॑भिः। वा॒जिनी॑ऽवती। धी॒नाम्। अ॒वि॒त्री। अ॒व॒तु॥४॥**

**पदार्थः**-(**प्र**) (**नः**) अस्माकम् (**देवी**) विदुषी (**सरस्वती**) विज्ञानयुक्तया वाचाऽऽढ्या (**वाजेभिः**) अन्नादिभिः (**वाजिनीवती**) प्रशस्तविज्ञानक्रियासहिता (**धीनाम्**) प्रज्ञानाम् (**अवित्री**) रक्षिका (**अवतु**)॥४॥

**अन्वयः**-हे सन्ताना! या देवी वाजेभिर्वाजिनीवती सरस्वती नो धीनामवित्री प्रावतु तां यूयं स्वीकुरुत॥४॥

**भावार्थः**-मातृभिः स्वसन्तानान् बाल्यावस्थायां सुशिक्ष्य विद्यया विदुषः सम्पाद्य तैः सहातुलं सुखं भोक्तव्यम्॥४॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-हे सन्तानो! जो **(देवी)** विदुषी **(वाजेभिः)** अन्नादिकों के साथ **(वाजिनीवती)** प्रशस्तविज्ञान वा क्रिया से युक्त वा **(सरस्वती)** विज्ञानयुक्त वाणी से युक्त **(नः)** हमारी **(धीनाम्)** बुद्धियों को **(अवित्री)** रक्षा करने वाली **(प्र, अवतु)** अच्छे प्रकार करे, उसको तुम स्वीकार करो॥४॥

**भावार्थः**-माताजनों को चाहिये कि अपने सन्तानों को बाल्यावस्था में अच्छी शिक्षा देकर विद्या से विद्वान् कर उनके साथ अतुल सुख भोगें॥४॥

**पुनः सा किंवत् किं करोतीत्याह॥**

फिर वह किसके तुल्य क्या करती है, इस विषय को कहते हैं॥

**यस्त्वा देवि सरस्वत्युपब्रूते धने हिते। इन्द्रं न वृत्रतूर्ये॥५॥३०॥**

**यः। त्वा। देवि। सरस्वति। उपऽब्रूते। धने। हिते। इन्द्रम्। न। वृत्रऽतूर्ये॥५॥**

**पदार्थः**-**(यः)** **(त्वा)** त्वाम् **(देवि)** विदुषी **(सरस्वति)** विज्ञानयुक्ते **(उपब्रूते)** **(धने)** द्रव्ये **(हिते)** सुखकरे **(इन्द्रम्)** विद्युतम् **(न)** इव **(वृत्रतूर्ये)** मेघस्य हिंसने॥५॥

**अन्वयः**-हे देवि सरस्वती भार्ये! यस्त्वा वृत्रतूर्य इन्द्रं न हिते धन उपब्रूते तं विद्वांसं पतिं त्वं सेवस्व॥५॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। हे पुरुषा! यथा पतिव्रता विदुष्यः स्त्रियो युष्मान् सत्यं ग्राहयित्वा प्रियं वदन्ति तथैताभिस्सह यूयमपि हितं वदत॥५॥

**पदार्थः**-हे **(देवि)** विदुषी **(सरस्वती)** विज्ञानयुक्ता भार्या! **(यः)** जो **(त्वा)** तुझे **(वृत्रतूर्ये)** मेघ के हिंसन में **(इन्द्रम्)** बिजुली के **(न)** समान **(हिते)** सुख करने वाले **(धने)** द्रव्य के निमित्त **(उपब्रूते)** कहता है, उस विद्वान् पति की तू सेवा कर॥५॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे पुरुषो! जैसे पतिव्रता विदुषी स्त्रियाँ तुम लोगों को सत्य ग्रहण कराकर प्रिय वचन कहती हैं, वैसे इनके साथ तुम भी हित करो॥५॥

**पुनः सा किं करोतीत्याह॥**

फिर वह क्या करती है, इस विषय को कहते हैं॥

**त्वं देवि सरस्वत्यवा वाजेषु वाजिनि। रदा पूषेव नः सनिम्॥६॥**

**त्वम्। देवि। सरस्वति। अव। वाजेषु। वाजिनि। रद। पूषाऽइव। नः। सनिम्॥६॥**

**पदार्थः**-**(त्वम्)** **(देवि)** कामयमाने **(सरस्वति)** विदुषी **(अवा)** अत्र **निपातस्य चेति** दीर्घः। **(वाजेषु)** प्राप्तव्येषु पदार्थेषु **(वाजिनि)** प्रशस्तविज्ञानयुक्ते **(रदा)** विलिख **(पूषेव)** भूमिरिव **(नः)** अस्माकम् **(सनिम्)** सत्याऽसत्यविभाजिकां धियम्॥६॥

**अन्वयः**-हे देवि वाजिनि सरस्वति! त्वं नः सनिं वाजेषु पूषेवावा रदा च॥६॥

**भावार्थः**-हे वरानने! त्वं पृथिवीव सर्वेषां धारणं विधेहि प्रज्ञां च देहि॥६॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-हे **(देवि)** कामना करने वाली **(वाजिनि)** प्रशस्तविज्ञानयुक्त **(सरस्वति)** विदुषी स्त्री! **(त्वम्)** तू **(नः)** हमारी **(सनिम्)** सत्य और असत्य के विभाग करने वाली बुद्धि को **(वाजेषु)** प्राप्तव्य पदार्थों में **(पूषेव)** भूमि के समान **(अवा)** पालो और **(रदा)** विशेषता से लिखो॥६॥

**भावार्थः**-हे वरानने=सुन्दर मुख वाली! तुम पृथिवी के समान सबका धारण करो और प्रज्ञा देओ॥६॥

**पुनः सा कीदृशीत्याह॥**

फिर वह कैसी है, इस विषय को कहते हैं॥

**उत स्या नः सरस्वती घोरा हिरण्यवर्तनिः। वृत्रघ्नी वष्टि सुष्टुतिम्॥७॥**

**उत। स्या। नः। सरस्वती। घोरा। हिरण्यऽवर्तनिः। वृत्रऽघ्नी। वष्टि। सुऽस्तुतिम्॥७॥**

**पदार्थः**-**(उत)** **(स्या)** सा **(नः)** अस्माकम् **(सरस्वती)** विज्ञानयुक्ता वाणी **(घोरा)** दुष्टानां दुःखप्रदा **(हिरण्यवर्त्तनिः)** हिरण्यस्य विद्याव्यवहारस्य वर्त्तनिर्मार्गो यस्यां सा **(वृत्रघ्नी)** मेघहन्त्री विद्युदिव **(वष्टि)** कामयते **(सुष्टुतिम्)** शोभनां प्रशंसाम्॥७॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! या हिरण्यवर्त्तनिर्घोरा वृत्रघ्नी सरस्वती नः सुखयति स्योत नोऽस्माकं सुष्टुतिं वष्टि॥७॥

**भावार्थः**-या विद्युल्लतेव सुशोभा विदुषी स्त्री गृहकृत्यप्रकाशिनी सन्तानविद्यां कामयते सैव सौभाग्यवती जायते॥७॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो **(हिरण्यवर्त्तनिः)** जिसमें विद्याव्यवहार का वर्त्ताव है वह **(घोरा)** दुष्टों को दुःख देने वाली **(वृत्रघ्नी)** मेघ को हनने वाली बिजुली के समान **(सरस्वती)** विज्ञान भरी हुई वाणी **(नः)** हम लोगों को सुखी करती **(स्या)** वह **(उत)** भी हमारी **(सुष्टुतिम्)** सुन्दर प्रशंसा की **(वष्टि)** कामना करती है॥७॥

**भावार्थः**-जो बिजुली की चमक दमक के समान सुन्दर शोभा वाली विदुषी स्त्री घर के कार्यों की प्रकाश करने वाली तथा सन्तानों की विद्या की कामना करती है, वही यहाँ सौभाग्यवती होती है॥७॥

**पुनः सा वाक् कीदृशीत्याह॥**

फिर वह वाणी कैसी है, इस विषय को कहते हैं॥

**यस्या अनन्तो अह्रुतस्त्वेषश्चरिष्णुरर्णवः। अमश्चरति रोरुवत्॥८॥**

**यस्याः। अनन्तः। अह्रुतः। त्वेषः। चरिष्णुः। अर्णवः। अमः। चरति। रोरुवत्॥८॥**

**पदार्थः**-**(यस्याः)** सरस्वत्या वाचः **(अनन्तः)** निःसीमः **(अह्रुतः)** अकुटिलः सरलः **(त्वेषः)** प्रकाशः **(चरिष्णुः)** गन्ता **(अर्णवः)** समुद्र इवाऽऽकाशः **(अमः)** यो गच्छति **(चरति)** प्राप्नोति **(रोरुवत्)** भृशं रौति शब्दं करोति॥८॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यस्या वाचोऽह्रुतस्त्वेषश्चरिष्णुरनन्तोऽर्णवो रोरुवदमश्चरति तां यूयं विजानीत॥८॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यावानाकाशस्तावानेव शब्दोऽनन्तो यथा समुद्रे जलं पूर्णमस्ति तथैवाऽऽकाशे शब्दोऽस्तीति विजानीत॥८॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(यस्याः)** जिस वाणी का **(अह्रुतः)** अकुटिल सरल **(त्वेषः)** प्रकाश वा **(चरिष्णुः)** जाने वाले **(अनन्तः)** निःसीम **(अर्णवः)** समुद्र के तुल्य आकाश **(रोरुवत्)** निरन्तर शब्द करता वा **(अमः)** फैलने वाला **(चरति)** प्राप्त होता है, उसको तुम जानो॥८॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जितना आकाश है, उतना ही शब्द अनन्त है, जैसे समुद्र में जल पूरा है, वैसे आकाश में शब्द है, यह जानो॥८॥

**पुनः सा कीदृशीत्याह॥**

फिर वह कैसी है, इस विषय को कहते हैं॥

**स नो विश्वा अति द्विषः स्वसॄरन्या ऋतावरी। अतन्नहेव सूर्यः॥९॥**

**सा। नः। विश्वाः। अति। द्विषः। स्वसॄः। अन्याः। ऋतऽवरी। अतन्। अहाऽइव। सूर्यः॥९॥**

**पदार्थः**-**(सा)** **(नः)** अस्माकम् **(विश्वाः)** सर्वान् **(अति)** **(द्विषः)** द्वेष्टॄन् **(स्वसॄः)** स्वसेव वर्त्तमानाः **(अन्याः)** **(ऋतावरी)** उषाः **(अतन्)** व्याप्नुवन् **(अहेव)** दिनानीव **(सूर्य्यः)**॥९॥

**अन्वयः**-हे मनुष्याः! सा ऋतावरी नोऽस्माकं विश्वा द्विषोऽति क्रामयति सूर्य्योऽहेवाऽतन्नन्याः स्वसॄः स्वसार इव संयनुक्ति॥९॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! या वाक् सम्यक् प्रयुक्ता सती सुखमन्यथोक्ता सती दुःखं च प्रयच्छति, ये सत्यवादिनः सन्ति त एव मिथ्या वक्तुं नेच्छन्ति यथा सूर्य्यः सर्वान् मूर्त्तान् द्रव्यान् प्रकाशयति तथैवेयं वाक् सर्वान् व्यवहारान् द्योतयति॥९॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(सा)** वह **(ऋतावरी)** उषा=प्रभातवेला **(नः)** हमारे **(विश्वाः)** समस्त **(द्विषः)** द्वेषी जनों को **(अति)** अतिक्रमण=उल्लङ्घन कराती है और **(सूर्यः)** सूर्य **(अहेव)** दिनों को जैसे **(अतन्)** व्याप्त होता, वैसे **(अन्याः)** और **(स्वसॄः)** भगिनियों के समान वर्त्तमान गत विगत प्रभातवेलाओं का संयोग करती है॥९॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जो वाणी अच्छे प्रकार प्रयोग की हुई सुख और अन्यथा कही हुई दुःख प्रदान करती है। जो सत्यवादी हैं, वे ही मिथ्या कहना नहीं चाहते, जैसे सूर्य समस्त मूर्त्तिमान् द्रव्यों को प्रकाशित करता है, वैसे ही यह वाणी सब व्यवहारों को प्रकाशित करती है॥९॥

**पुनः सा कीदृशीत्याह॥**

फिर वह कैसी है, इस विषय को कहते हैं॥

**उत नः प्रिया प्रियासु सप्तस्वसा सुजुष्टा। सरस्वती स्तोम्या भूत्॥१०॥३१॥**

**उत। नः। प्रिया। प्रियासु। सप्तऽस्वसा। सुऽजुष्टा। सरस्वती। स्तोम्या। भूत्॥१०॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**उत**) अपि (**नः**) अस्माकम् (**प्रिया**) कमनीया (**प्रियासु**) सुखप्रदासु स्त्रीषु वा (**सप्तस्वसा**) सप्त पञ्च प्राणा मनो बुद्धिश्च स्वसेव यस्याः सा (**सुजुष्टा**) सुष्ठु सेविता (**सरस्वती**) सरो बह्वन्तरिक्षं सम्बद्धं विद्यते यस्याः सा (**स्तोम्या**) स्तोतुमर्हा (**भूत्**) भवतु॥१०॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथा नः सरस्वती प्रियासु प्रिया सप्तस्वसा सुजुष्टोत स्तोम्या भूत्तथा युष्माकमपि भवतु॥१०॥

**भावार्थः**-ये मनुष्याः सर्वतः शुद्धिकरीं सत्यां वाचं जानन्ति त एव प्रशंसनीया भवन्ति॥१०॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे (**नः**) हमारी (**सरस्वती**) वह सरस्वती जिसको बहुत अन्तरिक्ष का सम्बन्ध है तथा (**प्रियासु**) सुख देने वाली क्रिया वा स्त्रियों में (**प्रिया**) मनोहर (**सप्तस्वसा**) जिसके सात अर्थात् पांच प्राण, मन और बुद्धि बहिन के समान वर्त्तमान तथा (**सुजुष्टा**) अच्छे प्रकार सेवित की हुई (**उत**) और (**स्तोम्या**) स्तुति करने योग्य (**भूत्**) हो, वैसे तुम्हारी भी हो॥१०॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य सब ओर से शुद्धि करने वाली सत्य वाणी को जानते हैं, वे ही प्रशंसा करने योग्य होते हैं॥१०॥

**पुनः सा कीदृशी किं करोतीत्याह॥**

फिर वह कैसी और क्या करती है, इस विषय को कहते हैं॥

**आपप्रुषी पार्थिवान्युरु रजो अन्तरिक्षम्। सरस्वती निदस्पातु॥११॥**

**आऽपप्रुषी। पार्थिवानि। उरु। रजः। अन्तरिक्षम्। सरस्वती। निदः। पातु॥११॥**

**पदार्थः**-(**आपप्रुषी**) समन्ताद् व्याप्ता (**पार्थिवानि**) पृथिव्यामन्तरिक्षे भवानि विदितानि वा (**उरु**) बहु (**रजः**) परमाण्वादीन् (**अन्तरिक्षम्**) आकाशम् (**सरस्वती**) विद्यासुशिक्षिता वाक् (**निदः**) निन्दकेभ्यः (**पातु**)॥११॥

**अन्वयः**-हे मनुष्याः! पार्थिवान्युरु रजोऽन्तरिक्षमापप्रुषी सरस्वत्यस्मान् निदः पातु॥११॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! या वाणी सर्वत्राकाशे व्याप्ताऽस्ति तां विदित्वाऽनया कस्यापि निन्दामर्थाद् गुणेषु दोषारोपणं दोषेषु गुणारोपणं च कदाचिन्मा कुर्वन्तु॥११॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! (**पार्थिवानि**) अन्तरिक्ष में प्रसिद्ध हुए वा विदित हुए (**उरु**) बहुत (**रजः**) परमाणु आदि पदार्थों को तथा (**अन्तरिक्षम्**) आकाश को (**आपप्रुषी**) सब ओर से व्याप्त (**सरस्वती**) विद्या और उत्तम शिक्षायुक्त वाणी हम लोगों को (**निदः**) निन्दकों से (**पातु**) बचावे॥११॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो वाणी सर्वत्र आकाश में व्याप्त है, उसको जान के इससे किसी की भी निन्दा अर्थात् गुणों में दोषारोपण और दोषों में गुणोरोपण कभी न करो॥११॥

**पुनः सा किं करोतीत्याह॥**

फिर वह क्या करती है, इस विषय को कहते हैं॥



www.9009.co.in

**त्रिषधस्था सप्तधातुः पञ्च जाता वर्धयन्ती। वाजेवाजे हव्या भूत्॥ १२॥**

**त्रिऽसधस्था। सप्तऽधातुः। पञ्च। जाता। वर्धयन्ती। वाजेऽवाजे। हव्या। भूत्॥ १२॥**

**पदार्थः**-(**त्रिषधस्था**) त्रिषु समानस्थानेषु या तिष्ठति सा (**सप्तधातुः**) सप्त प्राणादयो धारका यस्याः सा (**पञ्च**) पञ्चभ्यः प्राणेभ्यः (**जाता**) प्रसिद्धा (**वर्धयन्ती**) (**वाजेवाजे**) व्यवहारे सङ्ग्रामे सङ्ग्रामे वा (**हव्या**) उच्चारणीया (**भूत्**) भवति॥ १२॥

**अन्वयः**-हे विद्वांसः! त्रिषधस्था सप्तधातुः पञ्च जाता वाजेवाजे हव्या वर्धयन्ती भूत्तां युक्त्या सम्प्रयङ्ध्वम्॥ १२॥

**भावार्थः**-यदि विद्वांसो वाग्योगं जानन्ति तर्हि किं किं वर्धयितुं न शक्नुवन्ति॥ १२॥

**पदार्थः**-हे विद्वानो! (**त्रिषधस्था**) तीन समान स्थानों में स्थित (**सप्तधातुः**) सात प्राण आदि जिसकी धारण करने वाले (**पञ्च**) पांच प्राणों से (**जाता**) प्रसिद्ध (**वाजेवाजे**) प्रत्येक व्यवहार वा प्रत्येक सङ्ग्राम में (**हव्या**) उच्चारण करने योग्य (**वर्धयन्ती**) वृद्धि को प्राप्त कराती (**भूत्**) हो उसका युक्ति के साथ अच्छे प्रकार प्रयोग करो॥ १२॥

**भावार्थः**-जो विद्वान् जन वाणी के योग को जानते हैं तो क्या-क्या बढ़ा नहीं सकते हैं॥ १२॥

**पुनः सा कीदृशीत्याह॥**

फिर वह कैसी है, इस विषय को कहते हैं॥

**प्र या महिम्ना महिनासु चेकिते द्युम्नेभिरन्या अपसामपस्तमा।**
**रथ इव बृहती विभ्वने कृतोपस्तुत्या चिकितुषा सरस्वती॥ १३॥**

**प्र। या। महिम्ना। महिना। आसु। चेकिते। द्युम्नेभिः। अन्याः। अपसाम्। अपःऽतमा। रथःऽइव। बृहती। विऽभ्वने। कृता। उपऽस्तुत्या। चिकितुषा। सरस्वती॥ १३॥**

**पदार्थः**-(**प्र**) (**या**) (**महिम्ना**) महत्त्वेन (**महिना**) महती (**आसु**) (**चेकिते**) विज्ञापयतु (**द्युम्नेभिः**) प्रकाशनैर्यशोभिः (**अन्याः**) प्रतिप्राणिनं भिन्ना वाचः (**अपसाम्**) कर्मकर्तॄणाम् (**अपस्तमा**) अतिशयेन कर्मकर्त्री (**रथइव**) रमणीयाकाश इव (**बृहती**) बृंहती (**विभ्वने**) विभुत्वाय (**कृता**) जगदीश्वरेण निर्मिता (**उपस्तुत्या**) ययोपस्तौति तया (**चिकितुषा**) विज्ञापयित्र्या (**सरस्वती**) सरो विज्ञानं विद्यते यस्यां सा॥ १३॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! या महिम्ना महिनाऽपसामपस्तमा रथइव बृहती विभ्वने चिकितुषोपस्तुत्या कृता निष्पादिता सरस्वती द्युम्नेभिरन्या आसु प्र चेकिते तां यथावद्विज्ञाय सत्यां वाचं सम्प्रयुङ्ध्वम्॥ १३॥

**भावार्थः**-हे मनुष्याः! सुविद्यासुशिक्षासत्सङ्गसत्यभाषणयोगाभ्यासादिभिर्निष्पन्ना वागियं व्याप्ता वा समर्था वर्त्तते तां यूयं विजानीत॥ १३॥

**पदार्थः**-हे मनुष्या! (**या**) जो (**महिम्ना**) बड़प्पन से (**महिना**) बड़ी (**अपसाम्**) कर्म करने वालों में (**अपस्तमा**) अतीव कर्म करने वाली और (**रथइव**) रमणीय आकाश के समान (**बृहती**) बढ़ती हुई



www.9009.co.in

(**विभ्वने**) विभुत्व के लिये (**चिकितुषा**) समझाने वाली (**उपस्तुत्या**) जिससे कि समीप स्तुति करता उससे (**कृता**) जगदीश्वर ने उत्पन्न की हुई (**सरस्वती**) जिसमें विज्ञान वर्त्तमान वह वाणी (**द्युम्नेभिः**) प्रकाश जो यशरूप हैं उनसे (**अन्याः**) प्रत्येक प्राणी के प्रति भिन्न-भिन्न है अर्थात् नाना प्रकार वाणी हैं [=नाना की वाणियाँ हैं] (**आसु**) उनमें जो (**प्र, चेकिते**) विज्ञान कराती उसको यथावत् जान के सत्य वाणी का अच्छे प्रकार प्रयोग करो॥१३॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! विद्या, सुशिक्षा, सत्सङ्ग, सत्यभाषण और योगाभ्यासादिकों से निष्पन्न हुई वाणी यह व्याप्त वा समर्थ है, उसको तुम जानो॥१३॥

**पुनः सा कीदृशीत्याह॥**

फिर वह कैसी है, इस विषय को कहते हैं॥

**सरस्वत्यभि नो नेषि वस्यो माप स्फरीः पयसा मा न आ धक्।**

**जुषस्व नः सख्या वेश्या च मा त्वत्क्षेत्राण्यरणानि गन्म॥१४॥३२॥८॥४॥५॥**

**सरस्वति। अभि। नः। नेषि। वस्यः। मा। अप। स्फरीः। पयसा। मा। नः। आ। धक्। जुषस्व। नः। सख्या। वेश्या। च। मा। त्वत्। क्षेत्राणि। अरणानि। गन्म॥१४॥**

**पदार्थः**-(**सरस्वती**) बहुविद्यायुक्ते (**अभि**) (**नः**) अस्माकम् (**नेषि**) नयसि (**वस्यः**) अतिशयेन वसीयः (**मा**) (**अप**) (**स्फरीः**) अवृद्धं मा कुर्याः (**पयसा**) रसविशेषेण (**मा**) (**नः**) अस्मान् (**आ**) समन्तात् (**धक्**) दहेत् (**जुषस्व**) सेवस्व (**नः**) अस्मान् (**सख्या**) मित्रत्वेन (**वेश्या**) उपवेष्टुं योग्येन (**च**) (**मा**) (**त्वत्**) (**क्षेत्राणि**) क्षियन्ति निवसन्ति येषु तानि (**अरणानि**) अरमणीयानि (**गन्म**) प्राप्नुयाम॥१४॥

**अन्वयः**-हे सरस्वति विदुषि स्त्रि! या त्वं नो वस्योऽभि नेषि सा त्वं सुशिक्षितया वाचा विरहानस्मान् माप स्फरीः पयसा वियोज्य नोऽस्मान् माऽऽधक् वेश्या सख्या च नोऽस्माञ्जुषस्व त्वदरणानि क्षेत्राणि वयं मा गन्म तस्मात्त्वं पूजनीयासि॥१४॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! या विदुष्यः स्त्रियो यथा विद्यासुशिक्षाभ्यां युक्ता वाणी सर्वत्र संरक्ष्य सर्वथा वर्धयति या वा सत्यभाषणादिनाऽकल्याणं न प्रापयति तद्वद्वर्त्तमानाः सन्ति ता अस्माञ्छोकादिभ्यो वियोज्य मित्रत्वेन संसेवन्ते सर्वदैव चाऽऽनन्दयन्ति॥१४॥

अत्र वाग्गुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति श्रीमत् परमहंसपरिव्राजकाचार्याणां परमविदुषां श्रीमद्विरजानन्दसरस्वतीस्वामिनां शिष्येण श्रीमद्दयानन्दसरस्वतीस्वामिना विरचिते सुप्रमाणयुक्ते संस्कृतार्यभाषाविभूषित ऋग्वेदभाष्ये चतुर्थाऽष्टकेऽष्टमोऽध्यायो द्वात्रिंशो वर्गश्चतुर्थोऽष्टकश्च षष्ठे मण्डले पञ्चमोऽनुवाक एकषष्टितमं सूक्तं च समाप्तम्॥**

**पदार्थः**-हे (**सरस्वति**) बहुत विद्या से युक्त विदुषी स्त्री! जो तू (**नः**) हमारे (**वस्यः**) अतीव ओढ़ने योग्य वस्त्र आदि को (**अभि, नेषि**) सन्मुख लाती है सो तू सुशिक्षित वाणी से हीन हम लोगों को



www.9009.co.in

**(मा)** मत **(अप, स्फरीः)** अवृद्ध करे किन्तु वृद्धियुक्त करे और **(पयसा)** विशेष रस से अलग कर **(नः)** हम लोगों को **(मा, आ, धक्)** मत दाह दे और **(वेश्या)** समीप प्रवेश करने योग्य **(सख्या)** मित्रपन से **(च)** भी **(नः)** हम लोगों को **(जुषस्व)** सेवे तथा **(त्वत्)** तेरे **(अरणानि)** अरमणीय **(क्षेत्राणि)** निवासस्थानों को हम लोग **(मा, गन्म)** मत प्राप्त हों, इससे तू सत्कार करने योग्य है॥१४॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो विदुषी स्त्रियाँ जैसे विद्या और उत्तम शिक्षा से युक्त वाणी सर्वत्र अच्छे प्रकार रक्षाकर सर्वथा वृद्धि देती है वा जो सत्यभाषण आदि से दुःख को नहीं प्राप्त कराती उसके तुल्य वर्त्तमान हैं, वे हम लोगों को शोकादिकों से अलग कर मित्रता से अच्छे प्रकार सेवन करती और सर्वदैव आनन्दित करती हैं॥१४॥

इस सूक्त में वाणी के गुणों का वर्णन होने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह श्रीमत्पमहंस परिव्राजकाचार्य परमविद्वान् श्रीमान् विरजानन्द सरस्वती स्वामीजी के शिष्य श्रीमान् दयानन्द सरस्वती स्वामी से विरचित सुप्रमाणयुक्त तथा संस्कृत और आर्यभाषा से विभूषित ऋग्वेदभाष्य में चतुर्थ अष्टक में अष्टम अध्याय और बत्तीसवाँ वर्ग और चतुर्थ अष्टक भी तथा छठे मण्डल में पञ्चम अनुवाक और एकसठवां सूक्त भी समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

**अथर्ग्वेदे पञ्चमाऽष्टकारम्भः॥**

**अब ऋग्वेद में पञ्चमाष्टक का आरम्भ है॥**

**ओ३म् विश्वा॑नि देव सवितर्दुरि॒तानि॒ परा॑ सुव। यद्भ॒द्रं तन्न॒ आ सु॑व॥ ऋ०५.८२.५॥**

**अथैकादशर्चस्य द्विषष्टितमस्य सूक्तस्य भरद्वाजो बार्हस्पत्य ऋषिः। अश्विनौ देवते। १, २ भुरिक्पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः। ३ विराट् त्रिष्टुप्। ४, ६, ७, ८, १० निचृत्त्रिष्टुप्। ५, ९, ११ त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः॥**

***अथ विद्युदन्तरिक्षे कीदृशे स्त इत्याह॥***

अब बिजुली और अन्तरिक्ष कैसे हैं, इस विषय को कहते हैं॥

**स्तु॒षे नरा॑ दि॒वो अ॒स्य प्र॒सन्ता॒श्विना॑ हु॒वे जर॑माणो अ॒र्कैः।**

**या स॒द्य उ॒स्रा व्युषि॒ ज्मो अन्ता॒न् युयू॑षतः पर्यु॒रू वरां॑सि॥ १॥**

**स्तु॒षे। नरा॑। दि॒वः। अ॒स्य। प्र॒ऽसन्ता॑। अ॒श्विना॑। हु॒वे। जर॑माणः। अ॒र्कैः। या। स॒द्यः। उ॒स्रा। वि॒ऽउषि॑। ज्मः। अन्ता॑न्। युयू॑षतः। परि॑। उ॒रु। वरां॑सि॥ १॥**

**पदार्थः**-(**स्तुषे**) स्तौमि (**नरा**) नरौ नायकौ (**दिवः**) प्रकाशस्य (**अस्य**) (**प्रसन्ता**) विभाजकौ (**अश्विना**) व्यापनशीले द्यावान्तरिक्षे (**हुवे**) गृह्णामि (**जरमाणः**) स्तुवन् (**अर्कैः**) मन्त्रैः (**या**) यौ (**सद्यः**) (**उस्रा**) रश्मयो विद्यन्ते ययोस्तौ (**व्युषि**) विशेषेण दाहे (**ज्मः**) पृथिव्याः। **ज्म इति पृथिवीनाम।** (निघं०१.१) (**अन्तान्**) समीपस्थान् (**युयूषतः**) संविभाजयतः (**परि**) सर्वतः (**उरु**) बहु (**वरांसि**) उत्तमानि वस्तूनि॥ १॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! जरमाणोऽहमर्कैर्या व्युष्युस्रा प्रसन्ता नराश्विनाऽस्य दिवो ज्मोऽन्तानुरु वरांसि सद्यः परि युयूषतस्तौ स्तुषे हुवे तथैतौ स्तुत्वा यूयमपि गृह्णीत॥ १॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! येऽन्तरिक्षविद्युतौ सर्वाधिकरणे सर्वपदार्थान्तःस्थे वर्त्तेते तयोर्मध्ये विद्युद्विभाजिकाऽन्तरिक्षं चाधारो वर्त्तते तयोर्गुणान् सर्वे जानन्तु॥ १॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! (**जरमाणः**) स्तुति करता हुआ मैं (**अर्कैः**) मन्त्रों से (**या**) जो (**व्युषि**) विशेष दाह के निमित्त (**उस्रा**) जिनकी किरणें विद्यमान वे (**प्रसन्ता**) विभाग करने वाला (**नरा**) नायक (**अश्विना**) व्यापनशील बिजुली और अन्तरिक्ष (**अस्य**) इस (**दिवः**) प्रकाश के तथा (**ज्मः**) पृथिवी के (**अन्तान्**) समीपस्थ पदार्थों को (**उरु**) बहुत (**वरांसि**) उत्तम वस्तुओं को (**सद्यः**) शीघ्र (**परि, युयूषतः**) अच्छे प्रकार अलग-अलग करते उनकी (**स्तुषे**) स्तुति करता हूँ तथा (**हुवे**) ग्रहण करता हूं, वैसे इनकी स्तुति कर तुम भी ग्रहण करो॥ १॥



www.9009.co.in

**भावार्थ:**-हे मनुष्यो! जो अन्तरिक्ष और विद्युत् सर्वाधिकरण और सब पदार्थों के बीच ठहरे हुए वर्त्तमान हैं, उनके बीच बिजुली विभाग करने वाली और अन्तरिक्ष आधार वर्त्तमान है, उनके गुणों को सब जानो॥१॥

**पुनस्तौ कीदृशावित्याह॥**

फिर वे दोनों कैसे हैं, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**ता यज्ञमा शुचिभिश्चक्रमाणा रथस्य भानुं रुरुचू रजोभिः।**

**पुरू वरांस्यमिता मिमानापो धन्वान्यति याथो अज्रान्॥२॥**

**ता। यज्ञम्। आ। शुचिऽभिः। चक्रमाणा। रथस्य। भानुम्। रुरुचुः। रजःऽभिः। पुरु। वरांसि। अमिता। मिमाना। अपः। धन्वानि। अति। याथः। अज्रान्॥२॥**

**पदार्थ:**-(**ता**) तौ (**यज्ञम्**) सर्वं सङ्गतं व्यवहारम् (**आ**) समन्तात् (**शुचिभिः**) पवित्रैर्गुणैः (**चक्रमाणा**) क्रमयितारौ (**रथस्य**) रमणीयस्य जगतः (**भानुम्**) प्रकाशकम् (**रुरुचुः**) रोचन्ते (**रजोभिः**) परमाणुभिर्लोकैर्वा सह (**पुरु**) पुरूणि बहूनि (**वरांसि**) वरणीयानि वस्तूनि (**अमिता**) अमितान्यपरिमितानि (**मिमाना**) निर्मातारौ (**अपः**) जलानि (**धन्वानि**) अन्तरिक्षस्थानि (**अति**) (**याथः**) प्राप्नुथः (**अज्रान्**) प्रक्षिप्तान्॥२॥

**अन्वयः**-हे अध्यापकोपदेशकौ! युवां यौ शुचिभिर्यज्ञमा चक्रमाणा रथस्य भानुं प्रदीपकौ रजोभिः पुर्वमिता वरांसि मिमानाऽपो धन्वान्यज्रान् याथो याभ्यां सर्वाणि रुरुचुस्ताऽति याथः॥२॥

**भावार्थ:**-हे मनुष्या! यदि यूयं वायुविद्युतौ यथावद्विजानीत तर्ह्यमितमानन्दं प्राप्नुयात॥२॥

**पदार्थ:**-हे अध्यापक और उपदेशको! तुम जो (**शुचिभिः**) पवित्र गुणों से (**यज्ञम्**) सर्वसङ्गत व्यवहार को (**आ, चक्रमाणा**) आक्रमण करते हुए (**रथस्य**) रमणीय जगत् के (**भानुम्**) प्रकाश करने वाले को प्रकाश करने वाले वा (**रजोभिः**) परमाणु वा लोकों के साथ (**पुरु**) बहुत (**अमिता**) अपरिमित (**वरांसि**) स्वीकार करने योग्य पदार्थों को (**मिमाना**) निर्माण करने वाले वा (**अपः**) जल जो (**धन्वानि**) अन्तरिक्षस्थ हैं उनको और (**अज्रान्**) प्रक्षिप्त पदार्थों को (**याथः**) प्राप्त होते और जिनसे सब (**रुरुचुः**) रुचते हैं (**ताः**) उनको (**अति**) अत्यन्त प्राप्त होते हो॥२॥

**भावार्थ:**-हे मनुष्यो! यदि तुम वायु और बिजुली को यथावत् जानो तो अमित आनन्द को प्राप्त होओ॥२॥

**पुनस्तौ कीदृशौ स्त इत्याह॥**

फिर वे कैसे हैं, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**ता ह त्यद्वर्तिर्यदरध्रमुग्रेत्था धियं ऊहथुः शश्वदश्वैः।**

**मनोजवेभिरिषिरैः शयध्यै परि व्यथिर्दाशुषो मर्त्यस्य॥३॥**



www.9009.co.in

**ता। ह। त्यत्। वर्तिः। यत्। अरध्रम्। उग्रा। इत्था। धियः। ऊहथुः। शश्वत्। अश्वैः। मनःऽजवेभिः। इषिरैः। शयध्यै। परि। व्यथिः। दाशुषः। मर्त्यस्य॥३॥**

**पदार्थः**-(**ता**) तौ (**ह**) किल (**त्यत्**) (**वर्त्तिः**) मार्गम् (**यत्**) यौ (**अरध्रम्**) असमृद्धव्यवहारम् (**उग्रा**) तेजस्विनौ (**इत्था**) अनेन हेतुना (**धियः**) प्रज्ञाः कर्माणि वा (**ऊहथुः**) वहथः। अत्र पुरुषव्यत्ययः (**शश्वत्**) निरन्तरम् (**अश्वैः**) महद्भिर्वेगादिगुणैः (**मनोजवेभिः**) मनोवद्वेगवद्भिः (**इषिरैः**) प्राप्तैः (**शयध्यै**) शयितुम् (**परि**) सर्वतः (**व्यथिः**) व्यथाम् (**दाशुषः**) दानशीलस्य (**मर्त्यस्य**) मनुष्यस्य॥३॥

**अन्वयः**-हे विद्वांसो! यदुग्रा वायुविद्युता अश्वैरिषिरैर्मनोजवेभिर्दाशुषो मर्त्यस्य त्यद्वर्त्तिररध्रं धियश्च शश्वदूहथुः शयध्यै व्यथिर्ह पर्य्यूहथुस्तेत्था वर्त्तमानौ विज्ञान यूयं सम्प्रयुङ्ध्वम्॥३॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यदा यूयं वायुविद्युद्गुणान् विज्ञास्यथ तदैव पूर्णमैश्वर्यं प्राप्स्यथ॥३॥

**पदार्थः**-हे विद्वानो! (**यत्**) जो (**उग्रा**) तेजस्वी वायु और बिजुली (**अश्वैः**) महान् वेगादि गुणों से वा (**इषिरैः**) प्राप्त (**मनोजवेभिः**) मनोवद्वेगवानों से (**दाशुषः**) दानशील (**मर्त्यस्य**) मनुष्य के (**त्यत्**) उस (**वर्तिः**) मार्ग को तथा (**अरध्रम्**) असमृद्ध व्यवहार और (**धियः**) बुद्धि वा कर्मों को (**शश्वत्**) निरन्तर (**ऊहथुः**) चलाते हैं वा (**शयध्यै**) सोने को (**व्यथिः**) व्यथा को (**ह**) निश्चय से (**परि**) पहुंचाते हैं (**ता**) उनको (**इत्था**) इस प्रकार के वर्त्तमान जानकर तुम अच्छे प्रकार प्रयुक्त करो अर्थात् कलायन्त्रों में जोड़ो॥३॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जब तुम वायु और बिजुली के गुणों को जानोगे, तभी पूर्ण ऐश्वर्य को पाओगे॥३॥

**पुनस्तौ कीदृशावित्याह॥**

फिर वे कैसे हैं, इस विषय को कहते हैं॥

**ता नव्यसो जरमाणस्य मन्मोप भूषतो युयुजानसप्ती।**

**शुभं पृक्षमिषमूर्जं वहन्ता होता यक्षत्प्रत्नो अध्रुग्युवाना॥४॥**

**ता। नव्यसः। जरमाणस्य। मन्म। उप। भूषतः। युयुजान सप्ती इति युयुजानऽसप्ती। शुभम्। पृक्षम्। इषम्। ऊर्जम्। वहन्ता। होता। यक्षत्। प्रत्नः। अध्रुक्। युवाना॥४॥**

**पदार्थः**-(**ता**) तौ (**नव्यसः**) अतिशयेन नवीनस्य (**जरमाणस्य**) प्रशंसकस्य (**मन्म**) विज्ञानम् (**उप**) (**भूषतः**) अलं कुरुतः (**युयुजानसप्ती**) युयुजानौ सप्ती वेगाकर्षणौ ययोस्तौ (**शुभम्**) उदकम्। **शुभमित्युदकनाम।** (निघं०११.१३) (**पृक्षम्**) अन्नम् (**इषम्**) इच्छाम् (**ऊर्जम्**) पराक्रमम् (**वहन्ता**) प्रापयन्तौ (**होता**) आदाता (**यक्षत्**) सङ्गच्छेत् (**प्रत्नः**) प्रागधीतविद्यः (**अध्रुक्**) यः कञ्चन न द्रोग्धि (**युवाना**) संयोजकौ वायुविद्युतौ॥४॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यौ युयुजानसप्ती युवाना नव्यसो जरमाणस्य मन्मोप भूषतो यौ शुभं पृक्षमिषमूर्जं वहन्ताऽध्रुक् प्रत्नो होता यक्षत् ता यूयमपि सङ्गच्छध्वम्॥४॥



www.9009.co.in

**भावार्थ:**-हे मनुष्या! यौ वायुविद्युतौ विज्ञानविषयावश्व इव सद्यो गन्तारौ सर्वोत्तमपदार्थप्रापकौ वर्त्तेते ताभ्यामिष्टानि कार्य्याणि साध्नुत॥४॥

**पदार्थ:**-हे मनुष्यो! जो **(युयुजानसप्ती)** वेग वा आकर्षणयुक्त होने वाले हैं, वे **(युवाना)** संयुक्त होने वाले वायु बिजुली **(नव्यस:)** अतीव नवीन **(जरमाणस्य)** प्रशंसा करने वाले के **(मन्म)** विज्ञान को **(उप, भूषत:)** पूर्ण करते हैं वा जो **(शुभम्)** उदक **(पृक्षम्)** अन्न **(इषम्)** इच्छा और **(ऊर्जम्)** पराक्रम को **(वहन्ता)** पहुंचाने वालों को **(अध्रुक्)** किसी से न द्रोह करने वाला **(प्रत्न:)** जिसने पहिले विद्या पढ़ी वह **(होता)** ग्रहण करने वाला पुरुष **(यक्षत्)** प्राप्त हो **(ता)** उनको तुम भी प्राप्त होओ॥४॥

**भावार्थ:**-हे मनुष्यो! जो वायु और बिजुली विज्ञान के विषय, घोड़े के समान शीघ्र जाने वाले और सब उत्तम उत्तम पदार्थों की प्राप्ति कराने वाले हैं, उनसे चाहे हुए कार्य्यों को सिद्ध करो॥४॥

**पुनस्तौ कीदृशावित्याह॥**

फिर वे कैसे हैं इस विषय को कहते हैं॥

**ता व॒ल्गू द॒स्रा पु॑रु॒शाक॑तमा प्र॒त्ना नव्य॑सा व॒च॒सा वि॑वासे।**

**या शंस॑ते स्तु॒व॒ते शंभ॑विष्ठा बभू॒वतु॑र्गृ॒ण॒ते चि॒त्ररा॑ती॥५॥१॥**

**ता। व॒ल्गू॒ इति॑। द॒स्रा। पु॒रु॒शाक॑ऽतमा। प्र॒त्ना। नव्य॑सा। वच॑सा। आ। वि॒वा॒से॒। या। शंस॑ते। स्तु॒व॒ते। शम्ऽभ॑विष्ठा। ब॒भू॒वतुः॑। गृ॒ण॒ते। चि॒त्ररा॑ती॒ इति॑ चि॒त्रऽरा॑ती॥५॥**

**पदार्थ:**-**(ता)** तौ **(वल्गू)** अत्युत्तमौ **(दस्रा)** दु:खोपक्षयितारौ **(पुरुशाकतमा)** अतिशयेन बहुशक्तिमन्तौ **(प्रत्ना)** प्राचीनौ **(नव्यसा)** अतिशयेन नवीनौ **(वचसा)** परिभाषणीयौ **(आ)** **(विवासे)** सेवे **(या)** यौ **(शंसते)** प्रशंसकाय **(स्तुवते)** प्रशंसिताय। अत्र **कृद्बहुलमि**ति कर्मणि कृत् **(शम्भविष्ठा)** अतिशयेन सुखंभावुकौ **(बभूवतु:)** भवत: **(गृणते)** सत्योपदेशकाय **(चित्रराती)** चित्राऽद्भुता रातिर्दानं याभ्यां तौ॥५॥

**अन्वय:**-हे मनुष्या! यथाहं या वल्गू दस्रा प्रत्ना नव्यसा वचसा पुरुशाकतमा चित्रराती शंसते स्तुवते गृणते शम्भविष्ठा बभूवतुस्ताऽऽविवासे तथैतो यूयमपि सेवध्वम्॥५॥

**भावार्थ:**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कार:। हे मनुष्या! यौ वायुविद्युतौ कारणरूपेण सनतानौ कार्यरूपेण नूतनौ बहुशक्तिमन्तौ वेगादिगुणयुक्तौ वायुविद्युतौ कल्याणकारिणौ वर्त्तेत तौ यथावद्विजानीत॥५॥

**पदार्थ:**-हे मनुष्यो! जैसे मैं **(या)** जो **(वल्गू)** अत्युत्तम **(दस्रा)** दु:ख को नष्ट करने वाले **(प्रत्ना)** प्राचीन **(नव्यसा)** अत्यन्त नवीन **(वचसा)** परिभाषण करने योग्य **(पुरुशाकतमा)** अतीव सामर्थ्यवाले **(चित्रराती)** जिनसे अद्भुत दान होता वे **(शंसते)** प्रशंसा करने वाले **(स्तुवते)** वा प्रशंसा पाये हुए वा



www.9009.co.in

(**गृणते**) सत्य उपदेश करने वाले के लिये (**शम्भविष्ठा**) अतीव सुख की भावना कराने वाले (**बभूवतुः**) होते हैं (**ता**) उनकी (**आ, विवासे**) सेवा करता हूं, वैसे उनकी तुमभी सेवा करो॥५॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जो वायु और बिजुली कारणरूप से सनातन और कार्यरूप से नूतन, बहुत शक्तिमान्, वेगादि गुणयुक्त, कल्याणकारी वर्त्तमान हैं, उनको यथावत् जानो॥५॥

**पुनस्ताभ्यां किं सिध्यतीत्याह॥**

फिर उनसे क्या सिद्ध होता है, इस विषय को कहते हैं॥

**ता भुज्युं विभि॑र॒द्भ्यः स॑मु॒द्रात्तुग्र॑स्य सू॒नुमू॑हथू॒ रजो॑भिः।**

**अ॒रे॒णुभि॒र्योज॑नेभिर्भु॒जन्ता॑ पत॒त्रिभि॒रर्ण॑सो॒ निरु॒पस्था॑त्॥६॥**

**ता। भु॒ज्युम्। वि॒ऽभिः॑। अ॒त्ऽभ्यः। स॒मु॒द्रात्। तु॒ग्र॑स्य। सू॒नुम्। ऊ॒ह॒थुः॒। रजः॑ऽभिः। अ॒रे॒णु॒ऽभिः॑। योज॑नेभिः। भु॒जन्ता॑। प॒त॒त्रिऽभिः॑। अर्ण॑सः। निः। उ॒प॒ऽस्था॑त्॥६॥**

**पदार्थः**-(**ता**) तौ (**भुज्युम्**) भोक्तुं योग्यमानन्दम् (**विभिः**) पक्षिभिरिव (**अद्भ्यः**) उदकेभ्यः (**समुद्रात्**) सागरादन्तरिक्षाद्वा (**तुग्रस्य**) बलिष्ठस्य (**सूनुम्**) अपत्यमिव वर्त्तमानम् (**ऊहथुः**) प्रापयतः। अत्र पुरुषव्यत्ययः (**रजोभिः**) ऐश्वर्यप्रदैर्मार्गैः (**अरेणुभिः**) अविद्यमाना रेणवो वालुका येषु तैः (**योजनेभिः**) अनेकैर्योजनैर्युक्तैः (**भुजन्ता**) पालकौ (**पतत्रिभिः**) गमनशीलैः (**अर्णसः**) उदकस्य (**निः**) नितराम् (**उपस्थात्**) यः समीपे तिष्ठति तस्मात्॥६॥

**अन्वयः**-हे विद्वांसो! यौ विद्युत्पवनौ विभिरिवाद्भ्यः समुद्रादर्णस उपस्थात् पतत्रिभिरिवारेणुभिर्योजनेभी रजोभिस्तुग्रस्य सूनुं निरूहथुर्भुजन्ता भुज्युं पालयतस्ता यूयं विजानीत॥६॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यौ विद्युत्पवनौ विमानादीनि यानान्यन्तरिक्षे पक्षिवद्गमयितारौ वेगेन वहतस्तावुपस्थाप्याभीष्टानि सुखानि प्राप्नुवन्तु॥६॥

**पदार्थः**-हे विद्वानो! जो बिजुली और वायु (**विभिः**) पक्षियों के समान (**अद्भ्यः**) जलों वा (**समुद्रात्**) सागर वा अन्तरिक्ष वा (**अर्णसः**) जल के (**उपस्थात्**) समीप स्थित होने वाले से (**पतत्रिभिः**) गमनशीलों के समान (**अरेणुभिः**) रज जिनमें नहीं उन (**योजनेभिः**) अनेक योजनों से युक्त (**रजोभिः**) ऐश्वर्यप्रद मार्गों से (**तुग्रस्य**) बलिष्ठ (**सूनुम्**) सन्तान के समान वर्त्तमान को (**नि, ऊहथुः**) निरन्तर पहुंचाते और (**भुजन्ता**) पालना करने वाले (**भुज्युम्**) भागेने योग्य आनन्द की पालना करते हैं (**ता**) उनको तुम जानो॥६॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जो बिजुली और वायु विमान आदि यानों को अन्तरिक्ष में पक्षियों के समान चलाने वाले वेग से पहुंचाते हैं उनको समीपस्थ कर अभीष्ट सुखों को प्राप्त होओ॥६॥

**पुनस्ताभ्यां किं भवतीत्याह॥**



www.9009.co.in

फिर उनसे क्या होता है, इस विषय को

**वि जयुषा रथ्या यातमद्रिं श्रुतं हवं वृषणा वध्रिमत्याः।**

**दशस्यन्ता शयवे पिप्यथुर्गामिति च्यवाना सुमतिं भुरण्यू॥७॥**

**वि। जयुषा। रथ्या। यातम्। अद्रिम्। श्रुतम्। हवम्। वृषणा। वध्रिऽमत्याः। दशस्यन्ता। शयवे। पिप्यथुः। गाम्। इति। च्यवाना। सुऽमतिम्। भुरण्यू इति॥७॥**

**पदार्थः**-(**वि**) (**जयुषा**) जयशीलौ (**रथ्या**) रथाय हितौ (**यातम्**) यातः। अत्र व्यत्ययः (**अद्रिम्**) मेघम् (**श्रुतम्**) अशृणुतम् (**हवम्**) विद्याविषयं शब्दम् (**वृषणा**) वर्षयितारौ (**वध्रिमत्याः**) बहवो वध्रयो वर्धनानि विद्यन्ते यस्यां तस्या भूमेरन्तरिक्षस्य वा (**दशस्यन्ता**) बलयन्तौ (**शयवे**) शयनाय (**पिप्यथुः**) वर्धयतः (**गाम्**) वाचम् (**इति**) अनेन प्रकारेण (**च्यवाना**) सद्यो गन्तारौ (**सुमतिम्**) शोभनां प्रज्ञाम् (**भुरण्यू**) पोषयितारौ धारकौ वा॥७॥

**अन्वयः**-हे अध्यापकोपदेशकौ! वध्रिमत्या भूमेर्मध्ये जयुषा रथ्या वृषणा दशस्यन्ताऽद्रिं वि यातं सुमतिं च्यवाना भुरण्यू गामिति शयवे पिप्यथुस्तयोर्हवं युवां श्रुतम्॥७॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यौ विमानादिगमयितारौ सङ्ग्रामे जयकारिणौ प्रज्ञाबलप्रदौ वृष्टिकरौ शयनजागरणवाग्घेतू वर्त्तेते तौ बुद्ध्वा कार्यसिद्धये सम्प्रयुङ्ध्वम्॥७॥

**पदार्थः**-हे अध्यापक और उपदेशक सज्जनो! (**वध्रिमत्याः**) जिसमें बहुत वर्धन विद्यमान उस भूमि वा अन्तरिक्ष के बीच (**जयुषा**) जयशील (**रथ्या**) रथ के लिये हितकारी (**वृषणा**) वर्षा तथा (**दशस्यन्ता**) बल कराने वाले (**अद्रिम्**) मेघ को (**वि, यातम्**) विशेषता से प्राप्त होते हैं और (**सुमतिम्**) सुन्दर मति को (**च्यवाना**) शीघ्र जाने वाले (**भुरण्यू**) पालना वा धारण कर्त्ता (**गाम्**) वाणी को (**इति**) इस प्रकार से (**शयवे**) सोने के लिये (**पिप्यथुः**) बढ़ाते हैं, उनके (**हवम्**) विद्या विषयक शब्द को तुम (**श्रुतम्**) सुनो॥७॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो विमान आदि को चलाने वा सङ्ग्राम में जय कराने वा प्रज्ञा और बल के देने, वर्षा करने वाले तथा सोने जागने और वाणी के हेतु हैं, उनको जान कार्य्यसिद्धि के लिये अच्छे प्रकार प्रयोग करो॥७॥

**पुनर्मनुष्याः किं धरेयुरित्याह॥**

फिर मनुष्य क्या धारण करें, इस विषय को कहते हैं॥

**यद्रोदसी प्रदिवो अस्ति भूमा हेळो देवानामुत मर्त्यत्रा।**

**तदादित्या वसवो रुद्रियासो रक्षोयुजे तपुरघं दधात॥८॥**

**यत्। रोदसी इति। प्रऽदिवः। अस्ति। भूमा। हेळः। देवानाम्। उत। मर्त्यऽत्रा। तत्। आदित्याः। वसवः। रुद्रियासः। रक्षःऽयुजे। तपुः। अघम्। दधात॥८॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**यत्**) यः (**रोदसी**) द्यावापृथिव्यौ (**प्रदिवः**) प्रकृष्टप्रकाशस्य (**अस्ति**) (**भूमा**) व्यापकः (**हेळः**) अनादरः (**देवानाम्**) विदुषाम् (**उत**) (**मर्त्यत्रा**) मर्त्येषु मनुष्येषु (**तत्**) (**आदित्याः**) कालावयवाः (**वसवः**) पृथिव्यादयः (**रुद्रियासः**) प्राणा जीवाश्च (**रक्षोयुजे**) यो रक्षांसि दुष्टान् मनुष्यान् युनक्ति तस्मै (**तपुः**) सन्तापम् (**अघम्**) अपराधम् (**दधात**) धरन्ति॥८॥

**अन्वयः**-हे वसवो रुद्रियास आदित्याः प्रथममध्यमोत्तमा विद्वांसो! यूयं यत्प्रदिवो देवानामुत मर्त्यत्रा भूमा हेळो रोदसी प्राप्तोऽस्ति यथा वसवो रुद्रियास आदित्यास्तद्दधात तथा रक्षोयुजे तपुरघं दधात॥८॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यद्ब्रह्म सर्वत्र व्याप्तं सर्वधर्तृ सर्वनियन्तृ वर्त्तते तद्धृत्वा सन्ध्याय सुखयत यश्चैवं न करोति तदुपरि कठोरं दण्डं धत्त॥८॥

**पदार्थः**-हे (**वसवः**) पृथिवी आदि (**रुद्रियासः**) प्राण वा जीव वा (**आदित्याः**) काल के अवयवों के समान प्रथम मध्यम और उत्तम विद्वानो! तुम (**यत्**) जो (**प्रदिवः**) उत्तम प्रकाश के वा (**देवानाम्**) विद्वानों के सम्बन्ध में (**उत**) और (**मर्त्यत्रा**) मनुष्यों में (**भूमा**) व्यापक (**हेळः**) अनादर (**रोदसी**) द्यावापृथिवी को प्राप्त (**अस्ति**) है और जैसे उक्त प्रकार के विद्वान् जन (**तत्**) उसको (**दधात**) धारण करते हैं, वैसे (**रक्षोयुजे**) दुष्टों के युक्त करने वाले के लिये (**तपुः**) सन्ताप और (**अघम्**) अपराध को धारण करो॥८॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो ब्रह्म सर्वत्र व्याप्त, सब को धारण करने वा सब का नियम करने वाला है, उसको धारण कर और अच्छे प्रकार ध्यान कर सुखी होओ और जो ऐसा नहीं करता है, उस पर कठोर दण्ड धरो॥८॥

**पुनस्सः किं कुर्य्यादित्याह॥**

फिर वह क्या करे, इस विषय को कहते हैं॥

**य ईं राजा॑नावृतुथा वि॒दध॒द्रज॑सो मि॒त्रो वरु॑ण॒श्चिके॑तत्।**

**ग॒म्भी॒राय॒ रक्ष॑से हे॒तिम॑स्य॒ द्रोघा॑य चि॒द्वच॑स॒ आन॑वाय॥९॥**

**यः। ई॒म्। राजा॑नौ। ऋ॒तु॒ऽथा। वि॒ऽदध॑त्। रज॑सः। मि॒त्रः। वरु॑णः। चिके॑तत्। ग॒म्भी॒राय॑। रक्ष॑से। हे॒तिम्। अ॒स्य॒। द्रोघा॑य। चि॒त्। वच॑से। आन॑वाय॥९॥**

**पदार्थः**-(**यः**) (**ईम्**) सर्वतः (**राजानौ**) प्रकाशमानौ सूर्य्याचन्द्रमसाविव सभासेनेशौ (**ऋतुथा**) ऋतुभ्यः (**विदधत्**) विधानं कुर्वन् (**रजसः**) लोकजातस्य (**मित्रः**) सुहृत् (**वरुणः**) शमादिगुणान्वितः (**चिकेतत्**) चिकेतति विजानाति (**गम्भीराय**) (**रक्षसे**) दुष्टाचरणाय (**हेतिम्**) वज्रम् (**अस्य**) (**द्रोघाय**) द्रोहाय (**चित्**) अपि (**वचसे**) वचनाय (**आनवाय**) समन्तान्नवीनाय॥९॥

**अन्वयः**-हे विद्वांसो! यो मित्रो वरुणो गम्भीरायाऽऽनवाय वचसे चिदपि द्रोघाय रक्षसेऽस्योपरि हेतिं रजस ऋतुथा राजानौ विदधत्सन्नीं चिकेतत्तं यूयमुत्साहयत॥९॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-यथा सूर्याचन्द्रमसावृतून् विभज्यान्धकारं निवार्य्य जगत्सुखयतस्तथैव विद्यादिशुभगुणप्रचारं जगति प्रकल्प्य सत्याऽसत्ये विभज्याऽविद्याऽन्धकारं निवार्य विद्वांसः सर्वानानन्दयन्ति॥९॥

**पदार्थः**-हे विद्वानो! **(यः)** जो **(मित्रः)** मित्र वा **(वरुणः)** शमादिगुण युक्त जन **(गम्भीराय)** गम्भीर **(आनवाय)** सब ओर से नवीन **(वचसे)** वचन के लिये **(चित्)** और **(द्रोघाय)** द्रोह तथा **(रक्षसे)** दुष्ट आचरण वाले के लिये **(अस्य)** इसके ऊपर **(हेतिम्)** वज्र को **(रजसः)** और लोकजात के **(ऋतुथा)** ऋतुओं से **(राजानौ)** प्रकाशमान सूर्य और चन्द्रमा के तुल्य सभासेनापति को **(विदधत्)** विधान करता हुआ **(ईम्)** सब ओर से **(चिकेतत्)** जानता है, उसको तुम उत्साह देओ॥९॥

**भावार्थः**-जैसे सूर्य्य चन्द्रमा ऋतुओं को बांट और अन्धकार निवारण कर जगत् को सुखी करते हैं, वैसे ही विद्यादि शुभगुणों का प्रचार संसार में अच्छे प्रकार समर्थन, सत्य और असत्य का विभाग और अविद्यान्धकार का निवारण कर विद्वान् जन सबको आनन्दित करते हैं॥९॥

**पुनः सभासेनेशौ जगदुपकाराय किं कुर्यातामित्याह॥**

फिर सभा सेनापति जगत् के उपकार के लिये क्या करें, इस विषय को कहते हैं॥

**अन्तरैश्चक्रैस्तनयाय वर्तिर्द्युमता यातं नृवता रथेन।**

**सनुत्येन त्यजसा मर्त्यस्य वनुष्यतामपि शीर्षा ववृक्तम्॥१०॥**

**अन्तरैः। चक्रैः। तनयाय। वर्तिः। द्युऽमता। आ। यातम्। नृऽवता। रथेन। सनुत्येन। त्यजसा। मर्त्यस्य। वनुष्यताम्। अपि। शीर्षा। ववृक्तम्॥१०॥**

**पदार्थः**-**(अन्तरैः)** भिन्नैः **(चक्रैः)** लोकभ्रमणाय परिध्याख्यैः **(तनयाय)** पुत्राय **(वर्त्तिः)** मार्गम् **(द्युमता)** प्रकाशवता **(आ)** **(यातम्)** आगच्छतम् **(नृवता)** उत्तमा नरो विद्यन्ते यस्मिँस्तेन **(रथेन)** रमणीयेन विमानादियानेन **(सनुत्येन)** सप्रेरणीयेन **(त्यजसा)** त्यागेन **(मर्त्यस्य)** मनुष्यस्य **(वनुष्यताम्)** क्रुध्यतां बाधमानानां वा। **वनुष्यतीति क्रुध्यति कर्मा।** (निघं०२.१२) **(अपि)** **(शीर्षा)** शिरांसि **(ववृक्तम्)** छिनत्तम्॥१०॥

**अन्वयः**-यौ राजानावन्तरैश्चक्रैर्वर्त्तमानेन द्युमता नृवता रथेन सनुत्येन त्यजसा मर्त्यस्य तनयाय वर्त्तिरायातं मार्गं विधाय वनुष्यतां शीर्षाऽपि ववृक्तं तौ सर्वैः सत्कर्तव्यौ॥१०॥

**भावार्थः**-यदि सभासेनेशौ मनुष्यसन्तानानां ब्रह्मचर्यविद्याऽभ्यासादिप्रबन्धं कुर्यातां तर्हि सर्वे विद्वांसो भूत्वाऽनेकान्युत्तमानि कार्याणि साद्धुं दुष्टाञ्छत्रून्निवारयितुं च शक्नुवन्ति॥१०॥

**पदार्थः**-जो राजा लोग **(अन्तरैः)** भिन्न-भिन्न **(चक्रैः)** लोकों के घूमने के लिये परिधियों के वर्त्तमान **(द्युमता)** प्रकाशवान् **(नृवता)** जिसमें उत्तम नर विद्यमान उस **(रथेन)** रमणीय विमानादि यान वा **(सनुत्येन)** प्रेरणा करने योग्य के साथ वर्त्तमान **(त्यजसा)** त्याग के साथ **(मर्त्यस्य)** मनुष्य के **(तनयाय)**



www.9009.co.in

पुत्र के लिये **(वर्त्तिः)** मार्ग को **(आ, यातम्)** प्राप्त होवें और मार्ग का विधान कर **(वनुष्यताम्)** क्रोध करने वा बाधा वालों के **(शीर्षा)** शिरों को **(अपि)** भी **(ववृक्तम्)** छिन्न-भिन्न करें, उनका सबको सत्कार करना चाहिये॥१०॥

**भावार्थः**-यदि सभासेनापति, मनुष्य-सन्तानों का ब्रह्मचर्य और विद्याभ्यास आदि का प्रबन्ध करें तो सब विद्वान् होकर अनेक उत्तम कार्य करने और दुष्टों तथा शत्रुओं के निवारने को समर्थ हों॥१०॥

**पुनस्ते किं कुर्य्युरित्याह॥**

फिर वे क्या करें, इस विषय को कहते हैं॥

**आ प॒र॒माभि॑रु॒त म॒ध्य॒माभि॑र्नि॒युद्भि॑र्यातमव॒माभि॑र॒र्वाक्।**

**दृ॒ळ्हस्य॑ चि॒द्गोम॑तो॒ वि व्र॒जस्य॒ दुरो॑ वर्तं गृण॒ते चि॑त्ररा॒ती॥ ११॥ २॥**

**आ। प॒र॒माभिः॑। उ॒त। म॒ध्य॒माभिः॑। नि॒युत्ऽभिः॑। या॒त॒म्। अ॒व॒माभिः॑। अ॒र्वाक्। दृ॒ळ्हस्य॑। चि॒त्। गोऽम॑तः। वि। व्र॒जस्य॑। दुरः॑। व॒र्त॒म्। गृ॒ण॒ते। चि॒त्र॒रा॒ती इति॑ चित्रऽराती॥ ११॥**

**पदार्थः**-(**आ**) समन्तात् (**परमाभिः**) उत्कृष्टाभिः (**उत**) (**मध्यमाभिः**) मध्ये भवाभिः (**नियुद्भिः**) वायोर्गतिभिः (**यातम्**) गच्छतम् (**अवमाभिः**) निकृष्टाभिः (**अर्वाक्**) पश्चात् (**दृळहस्य**) (**चित्**) अपि (**गोमतः**) बह्व्यो गावः किरणा वा विद्यन्ते यस्मिंस्तस्य (**वि**) (**व्रजस्य**) मेघस्य (**दुरः**) द्वाराणि (**वर्त्तम्**) वर्त्तयतम् (**गृणते**) स्तावकाय (**चित्रराती**) चित्राऽद्भुता रातिर्दानं ययोस्तौ॥११॥

**अन्वयः**-हे चित्रराती सभासेनेशौ! युवामवमाभिर्मध्यमाभिरुत परमाभिर्नियुद्भिरा यातमर्वाग् दृळ्हस्य चिद् गोमतो व्रजस्य दुरो गृणते वि वर्त्तम्॥११॥

**भावार्थः**-हे राजप्रजाजना यथा सर्वे भूगोला वायुगतिभिस्सह गच्छन्त्यागच्छन्ति यथा च शिल्पिनो विमानेन मेघमण्डलोपरि व्रजन्ति तथैव यूयमप्यनुतिष्ठतेति॥११॥

अत्राश्विगुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति द्विषष्टितमं सूक्तं द्वितीयो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे **(चित्रराती)** अद्भुत दान वाले सभासेनाधीशो! तुम **(अवमाभिः)** निकृष्ट **(मध्यमाभिः)** मध्यम **(उत)** और **(परमाभिः)** उत्तम **(नियुद्भिः)** वायु की गतियों से **(आ, यातम्)** आओ तथा **(अर्वाक्)** पीछे **(दृळहस्य)** अति पुष्ट के **(चित्)** भी **(गोमतः)** बहुत गौयें वा किरणें जिसमें विद्यमान उस **(वज्रस्य)** मेघ के **(दुरः)** द्वारों को **(गृणते)** स्तुति करने वाले के लिये **(वि, वर्त्तम्)** विशेषता से वर्त्ताओ॥११॥

**भावार्थः**-हे राज प्रजाजनो! जैसे सब भूगोल वायु की गतियों के साथ जाते-आते हैं और जैसे शिल्पीजन विमान से मेघमण्डल पर जाते हैं, वैसे ही तुम भी अनुष्ठान करो॥११॥

इस सूक्त में अश्वियों के गुणों का वर्णन होने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह बासठवां सूक्त और दूसरा वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

**अथैकादशर्चस्य त्रिषष्टितमस्य सूक्तस्य भरद्वाजो बार्हस्पत्य ऋषिः। अश्विनौ देवते। १ स्वराड्बृहती छन्दः। मध्यमः स्वरः। २, ४, ६, ७ पङ्क्तिः। ३, १० भुरिक्पङ्क्तिः। ८ स्वराट् पङ्क्तिः। ११ आसुरीपङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः। ५, ९ निचृत्त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः॥**

***अथ सभासेनेशौ किं प्राप्नुत इत्याह॥***

अब एकादश ऋचावाले तिरसठवें सूक्त का आरम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में सभासेनापति किसको प्राप्त होते हैं, इस विषय को कहते हैं॥

**क्व१॒ त्या व॒ल्गू पु॑रुहू॒ताद्य दू॒तो न स्तोमो॑ऽविद॒न्नम॑स्वान्।**

**आ यो अ॒र्वाङ्नास॑त्या व॒वर्त॒ प्रेष्ठा॒ ह्यस॑थो अस्य॒ मन्म॑न्॥ १॥**

**क्व॑। त्या। व॒ल्गू॒ इति॑। पु॒रु॒ऽहू॒ता। अ॒द्य। दू॒तः। न। स्तोम॑ः। अ॒वि॒द॒त्। नम॑स्वान्। आ। यः। अ॒र्वाक्। नास॑त्या। व॒वर्त॑। प्रेष्ठा॑। हि। अस॑थः। अ॒स्य॒। मन्म॑न्॥ १॥**

**पदार्थः**-(**क्व**) (**त्या**) तौ (**वल्गू**) शोभनवाचौ। **वल्गु इति वाङ्नाम।** (निघं०१.११) (**पुरुहूता**) बहुभिः प्रशंसितौ (**अद्य**) इदानीम् (**दूतः**) समाचारप्रापकः (**न**) इव (**स्तोमः**) श्लाघनीयः (**अविदत्**) प्राप्नोति (**नमस्वान्**) बह्वन्नयुक्तः सत्कृतो वा (**आ**) (**यः**) (**अर्वाक्**) योऽधोञ्चति (**नासत्या**) सत्यस्वभावौ (**ववर्त**) वर्त्तते (**प्रेष्ठा**) अतिशयेन प्रियौ (**हि**) (**असथः**) भवथः (**अस्य**) (**मन्मन्**) मन्मनि विज्ञाने॥ १॥

**अन्वयः**-हे वल्गू पुरुहूता प्रेष्ठा नासत्या! योऽर्वागद्य नमस्वान् स्तोमो दूतो नाविदत् क्वास्य मन्मन्ना ववर्त्त त्या हि युवामसथः॥ १॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। येऽस्य जगतो विज्ञाने प्रयतन्ते ते क्वापि दुःखिता न भवन्ति॥ १॥

**पदार्थः**-हे (**वल्गू**) शोभन वाणी वाले (**पुरुहूता**) बहुतों से प्रशंसा को प्राप्त (**प्रेष्ठा**) अतीव प्रिय (**नासत्या**) सत्यस्वभावयुक्त सभासेनाधीशो! (**यः**) जो (**अर्वाक्**) नीचे जाने वाला (**अद्य**) आज (**नमस्वान्**) बहुत अन्नयुक्त वा सत्कृत (**स्तोमः**) स्तुति करने योग्य (**दूतः**) समाचार पहुंचाने वाले के (**न**) समान जन (**अविदत्**) प्राप्त होता वा (**क्व**) कहाँ (**अस्य**) इसके (**मन्मन्**) विज्ञान में जो (**आ, ववर्त्त**) अच्छे प्रकार वर्त्तमान है (**त्या, हि**) वे ही तुम दोनों (**असथः**) होते हो॥ १॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जो इस जगत् के विज्ञान के निमित्त प्रयत्न करते हैं, वे कही भी दुःखित नहीं होते हैं॥ १॥

**पुनस्तौ किं कुर्य्यातामित्याह॥**

फिर वे क्या करें, इस विषय को कहते हैं॥



www.9009.co.in

**अरं मे गन्तं हवनायास्मै गृणाना यथा पिबाथो अन्धः।**

**परि ह त्यद्वर्तिर्याथो रिषो न यत्परो नान्तरस्तुतुर्यात्॥ २॥**

**अरम्। मे। गन्तम्। हवनाय। अस्मै। गृणना। यथा। पिबाथः। अन्धः। परि। ह। त्यत्। वर्तिः। याथः। रिषः। न। यत्। परः। न। अन्तरः। तुतुर्यात्॥ २॥**

**पदार्थः**-(**अरम्**) अलम् (**मे**) मम (**गन्तम्**) गच्छतम् (**हवनाय**) आदानाय (**अस्मै**) (**गृणाना**) स्तुवन्तौ (**यथा**) (**पिबाथः**) पिबतम् (**अन्धः**) रसम् (**परि**) (**ह**) प्रसिद्धम् (**त्यत्**) तम् (**वर्तिः**) मार्गम् (**याथः**) (**रिषः**) हिंसकाः (**न**) इव (**यत्**) यत्र (**परः**) शत्रुः (**न**) निषेधे (**अन्तरः**) भिन्नः (**तुतुर्यात्**) हिंस्यात्॥ २॥

**अन्वयः**-हे सभासेनेशौ! युवां त्यद्वर्त्तिः परि याथो यद्यत्र ह परोऽन्तरो रिषो न कंचिन्न तुतुर्याद्यथा मेऽस्मै हवनायाऽरं गन्तं तथा गृणाना सन्तावन्धः पिबाथः॥ २॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। राजजनैस्तथा प्रबन्धः क्रियेत यथा मार्गेषु कश्चिदपि चोरः शत्रुश्च कञ्चिदपि न पीडयेत्॥ २॥

**पदार्थः**-हे सभासेनाधीशो! तुम (**त्यत्**) उस (**वर्त्तिः**) मार्ग को (**परि, याथः**) सब ओर से जाते हो (**यत्, ह**) जिसमें (**परः**) शत्रुजन (**अन्तरः**) भिन्न (**रिषः**) हिंसकों के (**न**) समान किसी को (**न**) न (**तुतुर्यात्**) मारे (**यथा**) जैसे (**मे**) मेरे (**अस्मै**) इस (**हवनाय**) ग्रहण के लिये (**अरम्**) पूर्णतया (**गन्तम्**) जाओ, वैसे (**गृणाना**) स्तुति करने वाले होते हुए (**अन्धः**) रस को (**पिबाथः**) पिओ॥ २॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। राजजनों से वैसा प्रबन्ध किया जाये, जैसे मार्गों में कोई भी चोर और शत्रु किसी को पीड़ा न दे॥ २॥

**पुनस्तौ किं कुर्यातामित्याह॥**

फिर वे क्या करें, इस विषय को कहते हैं॥

**अकारि वामन्धसो वरीमन्नस्तारि बर्हिः सुप्रायणतमम्।**

**उत्तानहस्तो युवयुर्ववन्दा वां नक्षन्तो अद्रय आञ्जन्॥ ३॥**

**अकारि। वाम्। अन्धसः। वरीमन्। अस्तारि। बर्हिः। सुप्रऽअयनतमम्। उत्तानऽहस्तः। युवयुः। ववन्द। आ। वाम्। नक्षन्तः। अद्रयः। आञ्जन्॥ ३॥**

**पदार्थः**-(**अकारि**) (**वाम्**) युवाभ्याम् (**अन्धसः**) अन्नादेः (**वरीमन्**) अतिशयेन वरे (**अस्तारि**) तीर्य्यते (**बर्हिः**) अन्तरिक्षम् (**सुप्रायणतमम्**) सुप्रयान्ति यस्मिंस्तदतिशयितम् (**उत्तानहस्तः**) ऊर्ध्वबाहुः (**युवयुः**) युवां कामयमानः (**ववन्द**) वन्दति नमस्करोति (**आ**) (**वाम्**) युवाम् (**नक्षन्तः**) प्राप्नुवन्तः (**अद्रयः**) मेघा इव (**आञ्जन्**) कामयन्ते॥ ३॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे सभासेनेशौ! यो युवयुरुत्तानहस्तो वरीमन् वामन्धसस्सुप्रायणतमं बर्हिरकारि दुःखादस्तारि तं विज्ञाय ववन्द ये विद्यादिषु शुभगुणेषु नक्षन्तोऽद्रय इव वामाञ्जँस्तान् युवां कामयेथाम्॥३॥

**भावार्थः**-ये होमेन वाय्वादीञ्छोधयित्वा विमानादिभिर्यानैरन्तरिक्षे गच्छन्ति सुखमुत्तमान् गुणांश्च व्याप्नुवन्तः सन्तो मेघवत्सर्वेषां सुखोन्नतीरिच्छन्ति ते वरं सुखं लभन्ते॥३॥

**पदार्थः**-हे सभासेनाधीशो! जो **(युवयुः)** तुम दोनों की इच्छा करने वाला **(उत्तानहस्तः)** ऊपर को हाथ उठाये हुए **(वरीमन्)** अतीव उत्तम व्यवहार में **(वाम्)** तुम दोनों से **(अन्धसः)** अन्न आदि के सम्बन्ध में **(सुप्रायणतमम्)** उत्तमता से जाते हैं जिसमें वह **(बर्हिः)** अन्तरिक्ष **(अकारि)** प्रसिद्ध किया जाता वा दुःख से **(अस्तारि)** तारा जाता उसको जानके **(ववन्द)** वन्दना करते हैं, जो विद्यादि शुभगुणों में **(नक्षन्तः)** प्राप्त होते हुए **(अद्रयः)** मेघों के समान **(वाम्)** तुम दोनों की **(आ, आञ्जन्)** अच्छे प्रकार कामना करते हैं, उनकी तुम दोनों कामना करो॥३॥

**भावार्थः**-जो होम से वायु आदि पदार्थों को शुद्ध कर विमान आदि यानों से अन्तरिक्ष में जाते तथा सुख और उत्तम गुणों को व्याप्त होते हुए मेघ के समान सबके सुख और उन्नतियों को चाहते हैं, वे उत्तम सुख पाते हैं॥३॥

**पुनस्तौ किं कुर्य्यातामित्याह॥**

फिर वे क्या करें, इस विषय को कहते हैं॥

**ऊर्ध्वो वामग्निरध्वरेष्वस्थात् प्र रातिरेति जूर्णिनी घृताची।**

**प्र होता गूर्तमना उराणोऽयुक्त यो नासत्या हवीमन्॥४॥**

**ऊर्ध्वः। वाम्। अग्निः। अध्वरेषु। अस्थात्। प्र। रातिः। एति। जूर्णिनी। घृताची। प्र। होता। गूर्तऽमनाः। उराणः। अयुक्त। यः। नासत्या। हवीमन्॥४॥**

**पदार्थः**-**(ऊर्ध्वः)** ऊर्ध्वगामी **(वाम्)** युवयोः **(अग्निः)** पावक इव **(अध्वरेषु)** अहिंसादिधर्म्यव्यवहारेषु **(अस्थात्)** तिष्ठति **(प्र)** **(रातिः)** दानम् **(एति)** प्राप्नोति **(जूर्णिनी)** वेगवती **(घृताची)** रात्रिः। **घृताचीति रात्रिनाम।** (निघं०१.७) **(प्र)** **(होता)** दाता **(गूर्तमनाः)** गूर्त्तमुद्युक्तं मनो यस्य सः **(उराणः)** बहु कुर्वाणः **(अयुक्तः)** युङ्क्ते **(यः)** **(नासत्या)** अविद्यमानासत्यव्यवहारौ **(हवीमन्)** होमे॥४॥

**अन्वयः**-हे नासत्या सभासेनेशौ! वां यदि यो गूर्त्तमना उराणो होताऽध्वरेषूर्ध्वोऽग्निरिवाऽस्थाद् घृताचीव जूर्णिनी रातिः प्रैति हवीमन् प्रायुक्त तं सदा सत्कुर्याताम्॥४॥

**भावार्थः**-हे सभासेनेशौ! ये मनुष्या राजव्यवहारे सत्योत्साहाभ्यां प्रवर्त्तन्ते तान् भवन्तौ सत्कुर्याताम्॥४॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-हे **(नासत्या)** सत्य व्यवहारयुक्त सभासेनाधीशो! **(वाम्)** तुम दोनों का यदि **(यः)** जो **(गूर्त्तमनाः)** उद्यम करने को मन जिसका वह **(उराणः)** बहुत पदार्थ सिद्ध करने वाला **(होता)** दानशीलजन **(अध्वरेषु)** अहिंसादि धर्मयुक्त व्यवहारों में **(ऊर्ध्वः)** ऊपर जाने वाला **(अग्निः)** अग्नि के समान **(अस्थात्)** स्थिर होता है और **(घृताची)** रात्रि के समान **(जूर्णिनी)** वेगवती **(रातिः)** दानक्रिया **(प्र, एति)** प्राप्त होती है वा **(हवीमन्)** होम कर्म में **(प्र, अयुक्त)** अच्छे प्रकार प्रयुक्त होता, उसका सदा सत्कार करो॥४॥

**भावार्थः**-हे सभासेनाधीशो! जो मनुष्य राजव्यवहार में सत्य और उत्साह से प्रवृत्त होते हैं, उनका सत्कार आप लोग करें॥४॥

**पुनस्तौ किंवत्कीदृशौ भवेतामित्याह॥**

फिर वे किसके समान कैसे हों, इस विषय को कहते हैं॥

**अधि श्रिये दुहिता सूर्यस्य रथं तस्थौ पुरुभुजा शतोतिम्।**

**प्र मायाभिर्मायिना भूतमत्र नरा नृतू जनिमन् यज्ञियानाम्॥५॥३॥**

**अधि। श्रिये। दुहिता। सूर्यस्य। रथम्। तस्थौ। पुरुऽभुजा। शतऽऊतिम्। प्र। मायाभिः। मायिना। भूतम्। अत्र। नरा। नृतू इति। जनिमन्। यज्ञियानाम्॥५॥**

**पदार्थः**-**(अधि)** उपरि **(श्रिये)** शोभायै लक्ष्म्यै वा **(दुहिता)** दुहिते वोषा **(सूर्य्यस्य)** **(रथम्)** रमणीयं किरणम् **(तस्थौ)** तिष्ठति। **(पुरुभुजा)** बहूनां पालकौ **(शतोतिम्)** शतान्यूतयो येन तम् **(प्र)** **(मायाभिः)** प्रज्ञाभिः **(मायिना)** प्राज्ञौ **(भूतम्)** भवेतम् **(अत्र)** अस्मिन् **(नरा)** नायकौ **(नृतू)** नेतारौ **(जनिमन्)** जन्मनि **(यज्ञियानाम्)** सत्सङ्गतिमर्हाणाम्॥५॥

**अन्वयः**-हे मायिना पुरुभुजा नृतू नरा राजसभासेनेशौ! युवां मायाभिरत्र यज्ञियानां जनिमन् यथा सूर्य्यस्य दुहिता शतोतिं रथमधि तस्थौ तथा श्रिये प्र भूतम्॥५॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। य उषर्वद् यानादिसाधनै राज्यश्रीप्राप्तये विदुषां विद्याजन्मानि कारयन्ति तेऽसङ्ख्यां रक्षां प्राप्यात्र जगत्यधिष्ठातारो जायन्ते॥५॥

**पदार्थः**-हे **(मायिना)** प्राज्ञ **(पुरुभुजा)** बहुतों की पालना करने वाले **(नृतू)** अग्रगन्ता **(नरा)** नायक राजसभा-सेनाधीशो! तुम **(मायाभिः)** बुद्धियों से **(अत्र)** इस **(यज्ञियानाम्)** सत्सङ्गति के योग्य मनुष्यों के **(जनिमन्)** जन्म में जैसे **(सूर्य्यस्य)** सूर्य की **(दुहिता)** पुत्री के समान उषा **(शतोतिम्)** जिससे सैकड़ो रक्षायें होती उस **(रथम्)** रमणीय किरण के **(अधि, तस्थौ)** ऊपर स्थित होती, वैसे **(श्रिये)** शोभा वा लक्ष्मी के लिये **(प्र, भूतम्)** समर्थ होओ॥५॥



www.9009.co.in

**भावार्थ:**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो उषा के समान यानादि साधनों से राज्यश्री की प्राप्ति के लिये विद्वानों के विद्याजन्म को कराते हैं, वे असङ्ख्य रक्षा को प्राप्त होके इस जगत् में अधिष्ठाता होते हैं॥५॥

**पुना राजादय: कस्मै कां प्राप्य कीदृशा भवेयुरित्याह॥**

फिर राजादि किसके लिये किसको प्राप्त होके कैसे हों इस विषय को कहते हैं॥

**युवं श्रीभिर्दर्शताभिराभिः शुभे पुष्टिमूहथुः सूर्यायाः।**

**प्र वां वयो वपुषेऽनु पप्तन्नक्षद्वाणी सुष्टुता धिष्ण्या वाम्॥६॥**

**युवम्। श्रीभिः। दुर्शताभिः। आभिः। शुभे। पुष्टिम्। ऊहथुः। सूर्यायाः। प्र। वाम्। वयः। वपुषे। अनु। पप्तन्। नक्षत्। वाणी। सुऽस्तुता। धिष्ण्या। वाम्॥६॥**

**पदार्थ:**-(**युवम्**) युवाम् (**श्रीभिः**) राजनीतिशोभाभिः (**दर्शताभिः**) द्रष्टव्याभिः (**आभिः**) वर्त्तमानाभिः (**शुभे**) कल्याणाय (**पुष्टिम्**) पोषणम् (**ऊहथुः**) प्रापयथः (**सूर्यायाः**) उषस इव सम्बन्धिन्याः प्रजायाः (**प्र**) (**वाम्**) युवयोः (**वयः**) पक्षिणः (**वपुषे**) सुरूपाय (**अनु**) (**पप्तन्**) पतन्ति (**नक्षत्**) व्याप्नोतु प्राप्नोतु वा (**वाणी**) वेदवाक् (**सुष्टुता**) सुष्ठु प्रशंसिता (**धिष्ण्या**) दृढौ प्रगल्भौ (**वाम्**) युवाम्॥६॥

**अन्वयः**-हे धिष्ण्या! यदि वां वय इव पप्तन् शुभे वपुषे सुष्टुता वाण्यनु नक्षद् यदि युवं दर्शताभिराभिः श्रीभिः सूर्याया इव वाचः पुष्टिं प्रोहथुस्तर्हि तौ वां सततं पोषयेतम्॥६॥

**भावार्थ:**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यदि भवन्तो राज्यं कर्तुं राज्यश्रियं प्राप्तुं च चिकीर्षन्ति तर्हि प्रयत्नेन सर्वेण धनादिना च विद्यायुक्तां वाचं प्राप्नुवन्तु यथा पक्षिणः स्वाश्रयं गच्छन्ति तथैव भवन्तो धर्म्यां नीतिं प्राप्योषा दिनमिव यशः प्रकाशयन्तु॥६॥

**पदार्थ:**-हे (**धिष्ण्या**) दृढ प्रगल्भो! जो (**वाम्**) तुम दोनों जैसे (**वयः**) पक्षी (**पप्तन्**) गिरते हैं, वैसे (**शुभे**) कल्याणरूपी (**वपुषे**) सुरूप के लिये (**सुष्टुता**) उत्तम प्रशंसा को प्राप्त (**वाणी**) वेदवाणी (**अनु, नक्षत्**) अनुकूलता से व्याप्त वा प्राप्त हो और जो (**युवम्**) तुम दोनों (**दर्शताभिः**) द्रष्टव्य (**आभिः**) इन (**श्रीभिः**) राजनीति की शोभाओं से (**सूर्यायाः**) उषासम्बन्धिनी प्रजा से वाणी की (**पुष्टिम्**) पुष्टि को (**प्र, ऊहथुः**) प्राप्त कराते हो वे (**वाम्**) तुम दोनों निरन्तर पुष्टि करो॥६॥

**भावार्थ:**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! यदि तुम लोग राज्य करने की और राज्यलक्ष्मी को प्राप्त करने की इच्छा करते हो तो प्रयत्न से और समस्त धन आदि से विद्यायुक्त वाणी को प्राप्त होओ और जैसे पक्षी अपने आश्रय को प्राप्त होते हैं, इसी प्रकार तुम धर्मयुक्त नीति को प्राप्त होकर जैसे उषाकाल दिन को, वैसे यश को प्रकाशित करो॥३॥

**पुनर्मनुष्याः केन किं कुर्युरित्याह॥**

फिर मनुष्य किससे क्या करें, इस विषय को कहते हैं॥



www.9009.co.in

**आ वां वयोऽश्वासो वहिष्ठा अभि प्रयो नासत्या वहन्तु।**

**प्र वां रथो मनोजवा असर्जीषः पृक्ष इषिधो अनु पूर्वीः॥७॥**

**आ। वाम्। वयः। अश्वासः। वहिष्ठाः। अभि। प्रयः। नासत्या। वहन्तु। प्र। वाम्। रथः। मनःऽजवाः। असर्जि। इषः। पृक्षः। इषिधः। अनु। पूर्वीः॥७॥**

**पदार्थः**-(**आ**) (**वाम्**) युवयोः (**वयः**) पक्षिण इव (**अश्वासः**) आशुगामिनोऽग्न्यादयः (**वहिष्ठाः**) अतिशयेन यानानां वोढारः (**अभि**) आभिमुख्ये (**प्रयः**) अन्नादिकम् (**नासत्या**) अविद्यमानासत्याचरणौ (**वहन्तु**) प्राप्नुवन्तु (**प्र**) (**वाम्**) (**रथः**) (**मनोजवाः**) मनोवद्गतयः (**असर्जि**) सृज्येत (**इषः**) अन्नाद्याः (**पृक्षः**) सम्प्राप्तव्याः (**इषिधः**) इच्छाप्रकाशिकाः (**अनु**) (**पूर्वीः**) प्राचीनाः॥७॥

**अन्वयः**-हे नासत्या! ये वां वहिष्ठा मनोजवा अश्वासो वयो न प्रय आऽभि वहन्तु येन पृक्ष इषिधः पूर्वीरिषोऽन्वसर्जि स रथो वां प्रवहतु॥७॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यदि भवन्तोऽग्न्यादिप्रयोगाञ्जानीयुस्तर्हि विमानादियानैः पक्षिण इवान्तरिक्षे गन्तुं शक्नुयुर्येनाऽभीष्टानि प्राप्य सर्वदाऽऽनन्दिता भवेयुः॥७॥

**पदार्थः**-हे (**नासत्या**) सत्य आचरण करने वालो! जो (**वाम्**) तुम दोनों के (**वहिष्ठाः**) अतीव यानों के लेजाने वाले (**मनोजवाः**) मन के समान जिनकी गति वे (**अश्वासः**) शीघ्रगामी अग्नि आदि (**वयः**) पक्षियों के समान (**प्रयः**) अन्नादि पदार्थ को (**आ, अभि, वहन्तु**) सन्मुख पहुंचावें जिससे (**पृक्षः**) अच्छे प्रकार प्राप्त होने योग्य (**इषिधः**) इच्छा प्रकाश करने वाली (**पूर्वीः**) प्राचीन (**इषः**) अन्नादि वस्तुओं में से प्रत्येक (**अनु, असर्जि**) रची जाती वह (**रथः**) रथ (**वाम्**) तुम दोनों को (**प्र**) पहुंचावे॥७॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जो आप लोग अग्न्यादि पदार्थों के प्रयोगों को जानो तो विमानादि यानों से पक्षियों के समान अन्तरिक्ष में जा सको, जिससे चाहे हुए पदार्थों को प्राप्त होकर सर्वदा आनन्दित होओ॥७॥

**पुना राजप्रजाजनाः कथं वर्त्तित्वा किं प्राप्नुयुरित्याह॥**

फिर राजा और प्रजाजन कैसे वर्त्ताव कर क्या पावें, इस विषय को कहते हैं॥

**पुरु हि वां पुरुभुजा देष्णं धेनुं न इषं पिन्वतमसक्राम्।**

**स्तुतश्च वां माध्वी सुष्टुतिश्च रसाश्च ये वामनु रातिमग्मन्॥८॥**

**पुरु। हि। वाम्। पुरुऽभुजा। देष्णम्। धेनुम्। नः। इषम्। पिन्वतम्। असक्राम्। स्तुतः। च। वाम्। माध्वी इति। सुऽस्तुतिः। च। रसाः। च। ये। वाम्। अनु। रातिम्। अग्मन्॥८॥**

**पदार्थः**-(**पुरु**) बहु (**हि**) निश्चये (**वाम्**) युवयोः (**पुरुभुजा**) बहुपालकौ (**देष्णम्**) दातव्यम् (**धेनुम्**) वाचम् (**नः**) अस्मभ्यम् (**इषम्**) अन्नं विज्ञानं वा (**पिन्वतम्**) सुखयतम् (**असक्राम्**) या सहनं



www.9009.co.in

क्रामति ताम् **(स्तुतः)** प्रशंसितः **(च)** **(वाम्)** **(माध्वी)** माधुर्य्यादिगुणोपेता **(सुष्टुतिः)** श्रेष्ठा प्रशंसा **(च)** **(रसाः)** मधुरादयः **(च)** **(ये)** **(वाम्)** युवाम् **(अनु)** **(रातिम्)** दानम् **(अग्मन्)** प्राप्नुवन्ति॥८॥

**अन्वयः**-हे पुरुभुजा! वां युवां नः पुरु देष्णं धेनुमसक्रामिषं च पिन्वतम्। यो हि स्तुतः स च वां पिन्वतु ये वां माध्वी सुष्टुती रसाश्च सन्ति तै रातिमन्वग्मँस्तैरस्मान् योजयतम्॥८॥

**भावार्थः**-यदि राजप्रजाजनाः परस्परेषामुपकाराय प्रयतेरँस्तर्ह्येतान् सर्वा प्रशंसा सकलमैश्वर्यं च प्राप्नुयात्॥८॥

**पदार्थः**-हे **(पुरुभुजा)** बहुतों की पालना करने वालो! **(वाम्)** तुम दोनों **(नः)** हमारे लिये **(पुरु)** बहुत **(देष्णम्)** देने योग्य पदार्थ **(धेनुम्)** वाणी और **(असक्राम्)** सहन को उल्लङ्घन करने वाला **(इषम्, च)** अन्न वा विज्ञान को भी **(पिन्वतम्)** सुखयुक्त करो अर्थात् पुष्ट करो। जो **(हि)** निश्चित **(स्तुतः)** प्रशंसा को प्राप्त है **(च)** वह भी **(वाम्)** तुम दोनों को पुष्टि दे **(ये)** जो **(वाम्)** तुम दोनों के **(माध्वी)** माधुर्य्यादिगुणयुक्त **(सुष्टुतिः)** श्रेष्ठ प्रशंसा **(रसाः, च)** और रस हैं उनसे **(रातिम्)** दान को **(अनु, अग्मन्)** प्राप्त होते हैं उनसे हमको युक्त कराइये॥८॥

**भावार्थः**-जो राजा और प्रजाजन परस्पर के उपकार के लिये प्रयत्न करें तो इनको सर्व प्रशंसा और सकल ऐश्वर्य भी प्राप्त होवे॥८॥

**पुनर्मनुष्यैः किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**उत म ऋज्रे पुरयस्य रघ्वी सुमीळ्हे शतं पेरुके च पक्वा।**
**शाण्डो दाद्धिरणिनः स्मद्दिष्टीन् दश वशासो अभिषाच ऋष्वान्॥९॥**

**उत। मे। ऋज्रे इति। पुरयस्य। रघ्वी इति। सुऽमीळ्हे। शतम्। पेरुके। च। पक्वा। शाण्डः। दात्। हिरणिनः। स्मत्ऽदिष्टीन्। दश। वशासः। अभिऽसाचः। ऋष्वान्॥९॥**

**पदार्थः**-**(उत)** **(मे)** मम **(ऋज्रे)** ऋजुप्रिये **(पुरयस्य)** यः पुरोऽयते प्राप्नोति तस्य **(रघ्वी)** पक्वानि **(शाण्डः)** यः श्यति तनूकरोति तथाऽयम्। अत्र शो तनूकरण इत्यस्मादौणादिकोऽडच् प्रत्ययः। **(दात्)** ददाति **(हिरणिनः)** हिरणाः सन्ति येषां तान् **(स्मद्दिष्टीन्)** प्रशंसितदर्शनान् **(दश)** एतत्सङ्ख्याकानश्वान् रथादीन् वा **(वशासः)** ये वशं प्राप्ताः **(अभिषाचः)** ये आभिमुख्येन सचन्ति ते **(ऋष्वान्)** महतः। **ऋष्व इति महन्नाम।** (निघं०३.३)॥९॥

**अन्वयः**-येऽभिषाचो वशासः पुरयस्य म ऋज्रे सुमीळ्ह उत पेरुके रघ्वी पक्वा च शाण्डो दात् तान् हिरणिनः स्मद्दिष्टीनृष्वान् दश शतं चाऽहं प्राप्नुयाम्॥९॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! ये मम वशीभूताः प्रीतियुक्ता महान्तः सहाया भवन्ति तदधीनोऽहमपि भवेयमेवं परस्परे वशत्वे सत्युत्तमान्यसंख्यानि कार्य्याणि कर्तुं शक्नुयाम्॥९॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-जो मनुष्य **(अभिषाचः)** सम्मुख सम्बन्ध करते वा **(वशासः)** वश को प्राप्त होते हैं तथा **(पुरयस्य)** जो पहिले प्राप्त होता उस **(मे)** मेरे **(ऋज्रे)** कोमलता से प्रिय **(सुमीळ्हे)** सुन्दर सेचने योग्य **(उत)** और **(पेरुके)** पालन करने वाले व्यवहार में **(रघ्वी)** छोटी क्रिया **(पक्वा, च)** और पक्के फलों को **(शाण्डः)** सूक्ष्मता करने वाला **(दात्)** देता है उन **(हिरणिनः)** हिरण वाले **(स्मद्दिष्टीन्)** प्रशंसित दर्शन वाले **(ऋष्वान्)** बड़े-बड़े **(दश)** दश घोड़े वा रथों को वा **(शतम्)** और सैकड़ों को मैं प्राप्त होऊं॥९॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो मेरे वशीभूत, प्रीतियुक्त, महान् सहायक होते हैं, उनके आधीन मैं भी होऊं, इस प्रकार परस्पर का वशभाव हुए पीछे उत्तम असङ्ख्य कार्य्य कर सकूं॥९॥

**पुना राजसेनेशौ किं कुर्यातामित्याह॥**

फिर राजा और सेनापति क्या करें, इस विषय को कहते हैं॥

**सं वां शता नासत्या सहस्राश्वानां पुरुपन्था गिरे दात्।**

**भरद्वाजाय वीर नू गिरे दाद्धता रक्षांसि पुरुदंससा स्युः॥१०॥**

**सम्। वाम्। शता। नासत्या। सहस्रा। अश्वानाम्। पुरुऽपन्थाः। गिरे। दात्। भरत्ऽवाजाय। वीर। नु। गिरे। दात्। हता। रक्षांसि। पुरुऽदंससा। स्युरिति स्युः॥१०॥**

**पदार्थः**-**(सम्)** **(वाम्)** युवयोः **(शता)** शतानि **(नासत्या)** अविद्यमानाधर्म्माचरणौ **(सहस्रा)** सहस्राणि **(अश्वानाम्)** तुरङ्गाणामग्न्यादीनां वा **(पुरुपन्थाः)** पुरुर्बहुविधश्चासौ पन्थाश्च **(गिरे)** वाचे **(दात्)** ददाति **(भरद्वाजाय)** धृतविज्ञानाय **(वीर)** शत्रुघातिन् **(नू)** सद्यः **(गिरे)** राजनीतियुक्तायै वाचे **(दात्)** ददाति **(हता)** हताः दुष्टाः **(रक्षांसि)** प्राणिनः **(पुरुदंससा)** पुरूणि दंसांस्युत्तमानि कर्माणि ययोस्तौ **(स्युः)** भवेयुः॥१०॥

**अन्वयः**-हे पुरुदंससा नासत्या! यो वां पुरुपन्था अश्वानां गिरे शता सहस्रा सं दाद्यो भरद्वाजाय गिरे शता सहस्रा दाद्येन रक्षांसि हता स्युः। हे वीर! त्वं तेन दुष्टान् नू हिन्धि॥१०॥

**भावार्थः**-हे राजसेनेशौ! यो धार्मिको न्यायेन राज्यपालनाय शत्रुभ्यः स्वसेनारक्षणाय प्रयतेत तस्यासङ्ख्यं धनं प्रतिष्ठां च सततं कुर्यातम्॥१०॥

**पदार्थः**-हे **(पुरुदंससा)** बहुत उत्तम कर्म्मों वाले **(नासत्या)** अधर्माचरण रहित जो **(वाम्)** तुम दोनों का **(पुरुपन्थाः)** बहुत प्रकार का मार्ग **(अश्वानाम्)** घोड़े वा अग्नि आदि पदार्थों की **(गिरे)** वाणी के लिये **(शता)** सैकड़ों वा **(सहस्रा)** हजारों प्रकारों को **(सम्, दात्)** अच्छे प्रकार देता है जो **(भरद्वाजाय)** धारण किया विज्ञान जिसने उसके लिये वा **(गिरे)** राजनीतियुक्त वाणी के लिये सैकड़ों और हजारों प्रकारों को **(दात्)** देता है जिससे **(रक्षांसि)** राक्षस **(हता)** नष्ट **(स्युः)** हों, हे **(वीर)** वीर! उससे आप दुष्टों को **(नू)** शीघ्र मारो॥१०॥



www.9009.co.in

**भावार्थ:**-हे राजा और सेनापतियो! जो धार्मिक न्याय से राज्य की पालना करने और शत्रुओं से अपनी सेना की रक्षा करने के लिये यत्न करे, उसके लिये असङ्ख्य धन और प्रतिष्ठा निरन्तर करो॥१०॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**आ वां सुम्ने वरिमन्त्सूरिभिः ष्याम्॥ ११॥ ४॥**

**आ। वाम्। सुम्ने। वरिमन्। सुरिऽभिः। स्याम्॥ ११॥**

**पदार्थः**-(**आ**) समन्तात् (**वाम्**) युवाम् (**सुम्ने**) सुखे (**वरिमन्**) अतिशयेन श्रेष्ठे (**सूरिभिः**) विद्वद्भिः सह (**स्याम्**) भवेयम्॥११॥

**अन्वयः**-हे राजसेनेशौ! यथाऽहं सूरिभिः सह वरिमन् सुम्न आ स्यां तथा वां विदध्यातम्॥११॥

**भावार्थः**-राजसेनेशाभ्यां सर्वदा धार्मिका विद्वांसः सत्कर्त्तव्या येनैते सर्वस्य सुखमुन्नयेयुरिति॥११॥

अत्राश्विगुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति त्रिषष्टितमं सूक्तं चतुर्थो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे राजा और सेनापतियो! जिस प्रकार मैं (**सूरिभिः**) अत्यन्त बुद्धिमान् विद्वानों के साथ (**वरिमन्**) अतीव श्रेष्ठ (**सुम्ने**) सुख में (**आ, स्याम्**) सब ओर से होऊं अर्थात् प्रसिद्ध होऊं वैसा (**वाम्**) आप विधान करो॥११॥

**भावार्थ:**-राजा और सेनापतियों को सर्वदा धार्मिक विद्वान् का सत्कार करना चाहिये, जिससे ये सब के सुख की उन्नति दिलावें॥११॥

इस सूक्त में अश्वियों का गुणवर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह त्रेसठवां सूक्त और चौथा वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

**अथ षड्चस्य चतु:षष्टितमस्य सूक्तस्य भरद्वाजो बार्हस्पत्य ऋषि:। उषा देवता। १, २, ६ विराट्त्रिष्टुप्। ३ त्रिष्टुप्। ४ निचृत्त्रिष्टुप् छन्द:। धैवत: स्वर:। ५ पङ्क्तिश्छन्द:। पञ्चम: स्वर:॥**

***अथ स्त्रिय: कीदृश्यो वरा इत्याह॥***

अब स्त्रियाँ कैसी श्रेष्ठ होती हैं, इस विषय को कहते हैं॥

**उदु श्रिय उषसो रोचमाना अस्थुरपां नोर्मयो रुशन्त:।**

**कृणोति विश्वा सुपथा सुगान्यभूदु वस्वी दक्षिणा मघोनी॥१॥**

**उत्। ऊँ इति। श्रिये। उषस:। रोचमाना:। अस्थु:। अपाम्। न। ऊर्मय:। रुशन्त:। कृणोति। विश्वा। सुऽपथा। सुऽगानि। अभूत्। ऊँ इति। वस्वी। दक्षिणा। मघोनी॥१॥**

**पदार्थ:**-(**उत्**) (उ) (**श्रिये**) शोभायै (**उषस:**) प्रभातवेला इव (**रोचमाना:**) रुचिमत्य: (**अस्थु:**) तिष्ठन्ति (**अपाम्**) जलानाम् (**न**) इव (**ऊर्मय:**) तरङ्गा: (**रुशन्त:**) हिंसन्त: (**कृणोति**) (**विश्वा**) सर्वाणि (**सुपथा**) शोभना: पन्था येषु तानि (**सुगानि**) सुष्ठु गच्छन्ति येषु तानि (**अभूत्**) भवति (उ) (**वस्वी**) वसूनामियम् (**दक्षिणा**) दक्षिणेव (**मघोनी**) परमधनयुक्ता॥१॥

**अन्वय:**-हे पुरुषा:! या: स्त्रियो रोचमाना उषस इवाऽपां रुशन्त ऊर्मयो न श्रिय उदस्थुस्ता उ सुखप्रदा: सन्ति। या वस्वी दक्षिणेव मघोन्यभूत् सोषर्वदु विश्वा सुपथा सुगानि कृणोति॥१॥

**भावार्थ:**-अत्रोपमावाचकलुप्तोपमालङ्कारौ। हे पुरुषा! यथोषसो रुचिकरा भवन्ति तथाभूता: स्त्रियो वरा: सन्ति यथा जलतरङ्गास्तटाञ्छिन्दन्ति तथैव या दु:खानि कृन्तन्ति याश्च दिनवत्सर्वाणि गृहकृत्यानि प्रकाशयन्ति ता एव सर्वदा मङ्गलकारिण्यो भवन्ति॥१॥

**पदार्थ:**-हे पुरुषो! जो स्त्रियाँ (**रोचमाना:**) दीप्तिमती (**उषस:**) प्रभातवेलाओं के समान वा (**अपाम्**) जलों की (**रुशन्त:**) हिंसती अर्थात् फूलों को विदारती हुई (**ऊर्मय:**) तरङ्गों के (**न**) समान (**श्रिये**) शोभा के लिये (**उत्, अस्थु:**) उठती हैं, वे (**उ**) ही सुख देने वाली हैं जो (**वस्वी**) वसुओं की यह (**दक्षिणा**) दक्षिणा के समान (**मघोनी**) परमधनयुक्त (**अभूत्**) होती है, वह उषा के समान (उ) ही (**विश्वा**) समस्त (**सुपथा**) शुभमार्ग वाले (**सुगानि**) जिनमें सुन्दरता से चलें, उन कामों को (**कृणोति**) करती है॥१॥

**भावार्थ:**-इस मन्त्र में उपमा और वाचकलुप्तोपमालङ्कार हैं। हे पुरुषो! जैसे प्रभातवेलायें रुचि करने वाली होती हैं, वैसी हुई स्त्रियाँ श्रेष्ठ हैं वा जैसे जलतरंगें तटों को छिन्नभिन्न करती हैं, वैसे ही जो स्त्रियाँ दु:खों को छिन्न-भिन्न करती हैं और जो दिन के तुल्य समस्त गृहकृत्यों को प्रकाशित करती हैं, वे ही सर्वदा मङ्गलकारिणी होती हैं॥१॥



www.9009.co.in

**पुनः सा कीदृशी भवेदित्याह॥**

फिर वह कैसी हो, इस विषय को कहते हैं॥

**भद्रा दंदृक्ष उर्विया वि भास्युत्ते शोचिर्भानवो द्यामपप्तन्।**

**आविर्वक्षः कृणुषे शुम्भमानोषो देवि रोचमाना महोभिः॥ २॥**

**भद्रा। ददृक्षे। उर्विया। वि। भासि। उत्। ते। शोचिः। भानवः। द्याम्। अपप्तन्। आविः। वक्षः। कृणुषे। शुम्भमाना। उषः। देवि। रोचमाना। महःऽभिः॥ २॥**

**पदार्थः**-(**भद्रा**) कल्याणकारिणी (**ददृक्षे**) दृश्यते (**उर्विया**) बहुरूपा (**वि**) (**भासि**) (**उत्**) (**ते**) तव (**शोचिः**) (**भानवः**) किरणाः (**द्याम्**) अन्तरिक्षम् (**अपप्तन्**) पतन्ति गच्छन्ति (**आविः**) प्राकट्ये (**वक्षः**) वक्षःस्थलम् (**कृणुषे**) (**शुम्भमाना**) सुशोभायुक्ता (**उषः**) उषर्वद्वर्त्तमाने (**देवि**) विदुषि (**रोचमाना**) विद्याविनयाभ्यां प्रकाशमाना (**महोभिः**) महद्भिः शुभैर्गुणकर्मस्वभावैः॥ २॥

**अन्वयः**-हे उषर्वद्वर्त्तमाने देवि! यतस्त्वं भद्रा ददृक्ष उर्विया सती गृहकृत्यान्युद्वि भासि यस्यास्ते शोचिर्भानवो द्यामपप्तन्निव वक्ष आविष्कृणुषे महोभिः शुम्भमाना रोचमाना सती सुखं प्रयच्छसि तस्मात् संपूज्यासि॥ २॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे स्त्रियो! यूयं चातुर्येण सर्वान् पत्यादीन् सन्तोष्य गृहकृत्यानि यथावदनुष्ठायातिविषयासक्तिं विहाय सुशोभा भूत्वा सदैव पुरुषार्थेन धर्मकृत्यानि सूर्य्यवत्प्रकाशयत॥ २॥

**पदार्थः**-हे (**उषः**) प्रभातवेला के समान वर्त्तमान (**देवि**) विदुषी! जिससे तू (**भद्रा**) कल्याणकारिणी (**ददृक्षे**) देखी जाती है तथा (**उर्विया**) बहुरूप हुई घर के कामों को (**उत्, वि, भासि**) विशेष कर उत्तम प्रकाश करती है जिस (**ते**) तेरी (**शोचिः**) उत्तम नीति का प्रकाश (**भानवः**) किरणें जैसे (**द्याम्**) अन्तरिक्ष को (**अपप्तन्**) जातीं प्राप्त होतीं, वैसे (**वक्षः**) छाती का (**आविः, कृणुषे**) प्रकाश करती है वा (**महोभिः**) महान् शुभ गुणकर्म स्वभावों से (**शुम्भमाना**) सुन्दर शोभायुक्त और (**रोचमाना**) विद्या और विनय से प्रकाशित होती हुई सुख देती है, इससे अच्छे प्रकार सत्कार करने योग्य है॥ २॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे स्त्रियो! तुम चतुरता से सब पति आदि को सन्तोष देकर, घर के कामों को यथावत् अनुष्ठान कर, अतिविषयासक्ति को छोड़ और सुन्दर शोभायुक्त होकर सदैव पुरुषार्थ से धर्मयुक्त कामों को सूर्य के समान प्रकाशित करो॥ २॥

**पुनस्ताः कीदृश्यो भवेयुरित्याह॥**

फिर वे कैसी हों, इस विषय को कहते हैं॥

**वहन्ति सीमरुणासो रुशन्तो गावः सुभगामुर्विया प्रथानाम्।**

**अपेजते शूरो अस्तेव शत्रून् बाधते तमो अजिरो न वोळ्हा॥ ३॥**



www.9009.co.in

**वहन्ति। सीम्। अरुणासः। रुशन्तः। गावः। सुऽभगाम्। उर्विया। प्रथानाम्। अप। ईजते। शूरः। अस्ताऽइव। शत्रून्। बाधते। तमः। अजिरः। न। वोळ्हा॥ ३॥**

**पदार्थः**-(**वहन्ति**) (**सीम्**) सर्वतः (**अरुणासः**) रक्तारुणादिगुणविशिष्टाः (**रुशन्तः**) हिंसन्तः (**गावः**) किरणाः (**सुभगाम्**) सौभाग्ययुक्ताम् (**उर्विया**) बहुपुरुषार्थयुक्ता (**प्रथानाम्**) विस्तीर्णसौन्दर्यप्रख्याताम् (**अप**) (**ईजते**) दूरीकरोति (**शूरः**) बलपराक्रमादियोगेन निर्भयः (**अस्तेव**) शस्त्राऽस्त्राणां प्रक्षेप्तेव (**शत्रून्**) (**बाधते**) विलोडयति (**तमः**) अन्धकारं रात्रिं वा (**अजिरः**) यः शीघ्रं न गच्छति सः (**न**) इव (**वोळ्हा**) विवाहिता॥ ३॥

**अन्वयः**-हे स्त्रि! त्वमजिरो न वोळ्हा सती शत्रूञ्छूरोऽस्तेवापेजत उषास्तमो बाधते यथाऽरुणासो रुशन्तो गावः सर्वान् पदार्थान् सीं वहन्ति तथोर्विया भव। हे पुरुष! उषसः सूर्य्य इवेमां प्रथानां भार्यां सुभगां कुरु॥ ३॥

**भावार्थः**-अत्रोपमावाचकलुप्तोपमालङ्कारौ। हे नरा! या उषर्वत्सुप्रकाशाः सुस्वरूपाः सूर्यकिरणवद्गृहकृत्यव्यवस्थानिर्वाहिकाः शूरवीरवद्व्यथारहिताः स्त्रियः स्युस्ताः सततं सत्कृत्य सौभाग्ययुक्ताः कुर्वन्तु॥ ३॥

**पदार्थः**-हे स्त्री! तू (**अजिरः**) जो शीघ्र नहीं जाता उस पुरुष के (**न**) समान और (**वोळ्हा**) विवाहित स्त्री (**शत्रून्**) शत्रुओं को (**शूरः**) बल वा पराक्रम आदि योग से निर्भय (**अस्तेव**) शस्त्र और अस्त्रों को अच्छे प्रकार फेंकने वाले के समान (**अप, ईजते**) दूर करती तथा प्रभातवेला जैसे (**तमः**) अन्धकार वा रात्रि को (**बाधते**) नष्ट-भ्रष्ट करे वा जैसे (**अरुणासः**) लाल काली पीली धौली आदि (**रुशन्तः**) पदार्थों को छिन्न-भिन्न करती हुई (**गावः**) किरणें सब पदार्थों को (**सीम्**) सब ओर से (**वहन्ति**) पहुंचाती हैं, वैसे (**उर्विया**) बहुत पुरुषार्थयुक्त हो। हे पुरुष! उषा को जैसे सूर्य, वैसे इस (**प्रथानाम्**) अत्यन्त सुन्दरता से प्रख्यात भार्या को (**सुभगाम्**) सौभाग्य करो॥ ३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमा और वाचकलुप्तोपमालङ्कार हैं। हे मनुष्यो! जो प्रभातवेला के समान सुप्रकाश, सुरूपवती, सूर्य किरणों के तुल्य घर के कामों की व्यवस्था का निर्वाह करने वाली, शूरवीर के समान व्यथा अर्थात् परिश्रम की थकावट न मानने वाली स्त्रियाँ हों, उनका निरन्तर सत्कार कर सौभाग्युक्त करो॥ ३॥

**पुनस्सा स्त्री कीदृशी भवेदित्याह॥**

फिर वह स्त्री कैसी हो, इस विषय को कहते हैं॥

**सुगोत ते सुपथा पर्वतेष्ववाते अपस्तरसि स्वभानो।**

**सा न आ वह पृथुयामन्नृष्वे रयिं दिवो दुहितरिषयध्यै॥ ४॥**

**सुऽगा। उत। ते। सुऽपथा। पर्वतेषु। अवाते। अपः। तरसि। स्वभानो इति स्वऽभानो। सा। नः। आ। वह। पृथुऽयामन्। ऋष्वे। रयिम्। दिवः। दुहितः। इषयध्यै॥ ४॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**सुगा**) सुष्ठु गन्तुं योग्या (**उत**) अपि (**ते**) तव (**सुपथा**) शोभनेन मार्गेण (**पर्वतेषु**) शैलेषु (**अवाते**) निर्वाते (**अपः**) जलानि (**तरसि**) (**स्वभानो**) स्वकीयदीप्ते (**सा**) (**नः**) अस्मान् (**आ**) (**वह**) गमय (**पृथुयामन्**) बहुप्रापक (**ऋष्वे**) महागुणयुक्त (**रयिम्**) श्रियम् (**दिवः**) प्रकाशस्य (**दुहितः**) कन्येव वर्त्तमाने (**इषयध्यै**) गन्तुम्॥४॥

**अन्वयः**-हे स्वभानो पृथुयामन्नृष्वे! त्वमनया भार्यया सह रयिमा वह नोऽवाप इव दुःखानि तरसि, अवाते पर्वतेषु सुपथा गच्छसि या ते सुगा स्त्री वा हे दिवो दुहितरिव वर्त्तमाने स्त्रि! त्वं पतिमिषयध्यै उतापि ते पतिर्हृद्यो भवेत् सा त्वं नः सुपथा सुखमा वह॥४॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यथा सुनीतयो राजानः पर्वतेष्वपि सुमार्गान्निर्माय सर्वान् पथिकान् सुखयन्ति यथोषा मार्गान् प्रकाशयति तथैवोत्तमाः परस्परं प्रसन्नाः स्त्रीपुरुषा धर्ममार्गं संशोध्य परोपकारं प्रकाशयन्ति॥४॥

**पदार्थः**-हे (**स्वभानो**) अपनी दीप्तियुक्त (**पृथुयामन्**) बहुत पदार्थों की प्राप्ति करानेवाले (**ऋष्वे**) महान् गुणयुक्त विद्वन्! आप इस स्त्री के साथ (**रयिम्**) लक्ष्मी को (**आ, वह**) प्राप्त कराइये और (**नः**) हम लोगों की रक्षा करिये तथा (**अपः**) जलों के समान दुःखों को (**तरसि**) तरते अर्थात् उनसे अलग होते हो और (**अवाते**) निर्वात होने से (**पर्वतेषु**) पर्वतों में जैसे सुपथ से जाते हो तथा जो (**ते**) तुम्हारी (**सुगा**) सुन्दरता से जाने योग्य स्त्री वा हे (**दिवः**) प्रकाश की (**दुहितः**) कन्या के समान वर्त्तमान स्त्री! तू पति को (**इषयध्यै**) प्राप्त होने योग्य हो (**उत**) और तेरा पति तेरे मन का प्रिय हो (**सा**) तू हम लोगों को (**सुपथा**) अच्छे मार्ग से सुख प्राप्त करा॥४॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे अच्छी नीति वाले राजजन पर्वतों में भी अच्छे मार्गों को बनाकर सब मार्ग चलने वालों को सुखी करते हैं वा जैसे उषा (प्रभातवेला) मार्गों को प्रकाशित करती है, वैसे ही उत्तम परस्पर प्रसन्न स्त्री पुरुष धर्ममार्ग का संशोधन कर परोपकार का प्रकाश कराते हैं॥४॥

**पुनस्तौ स्त्रीपुरुषौ कथं वर्त्तेयातामित्याह॥**

फिर वे स्त्री-पुरुष कैसे वर्त्ताव वर्त्तें, इस विषय को कहते हैं॥

**सा व॑ह॒ योक्षभि॑रवा॒तोषो॒ वरं॒ वह॑सि॒ जोष॒मनु॑।**

**त्वं दि॑वो दुहित॒र्या ह॑ दे॒वी पू॒र्वहू॑तौ मं॒हना॑ दर्श॒ता भूः॥५॥**

**सा। आ। व॒ह॒। या। उ॒क्षऽभिः॑। अवा॑ता। उषः॑। वर॑म्। वह॑सि। जोष॑म्। अनु॑। त्वम्। दि॒वः॒। दु॒हि॒तः॒। या। ह॒। दे॒वी। पू॒र्वऽहू॑तौ। मं॒हना॑। द॒र्श॒ता। भूः॥५॥**

**पदार्थः**-(**सा**) (**आ**) (**वह**) समन्तात्प्राप्नोतु (**या**) (**उक्षभिः**) वीर्यसेचकैः (**अवाता**) वायुविरहा (**उषः**) उषर्वद्वर्त्तमाने (**वरम्**) श्रेष्ठं पतिम् (**वहसि**) प्राप्नोषि (**जोषम्**) प्रीतम् (**अनु**) (**त्वम्**) (**दिवः**)



www.9009.co.in

सूर्यस्य **(दुहितः)** कन्येव वर्त्तमाना **(या)** **(ह)** किल **(देवी)** विदुषी **(पूर्वहूतौ)** पूर्वेषां सत्कर्त्तव्यानां वृद्धानामाह्वाने **(मंहना)** पूजनीया **(दर्शता)** द्रष्टव्या **(भूः)** भवेः॥५॥

**अन्वयः**-हे दिवो दुहितरुषर्वद्वर्त्तमाने भद्रानने! याऽवातोक्षभिर्युक्तं वरं जोषमनु त्वं वहसि सा मां पतिमा वह या ह पूर्वहूतौ मंहना दर्शता देवी त्वं भूः सा मम प्रिया भव॥५॥

**भावार्थः**-यथोषा रात्रिमनुवर्त्तमाना नियमेन स्वकृत्यं करोति तथैव नियता सती स्त्री स्वगृहकृत्यानि कुर्यात्। ब्रह्मचर्यानन्तरं हृद्यं पतिमूढ्वा प्रसन्ना सती पतिं सततं प्रसादयेत्। एवमेव पतिरपि तामनुव्रतां सदैवानन्दयेत्॥५॥

**पदार्थः**-हे **(दिवः)** सूर्य की **(दुहितः)** कन्या के तुल्य तथा **(उषः)** उषा प्रभातवेला के समान वर्त्तमान श्रेष्ठ मुख वाली! **(या)** जो **(अवाता)** वायुरहित **(उक्षभिः)** वीर्यसेचकों से युक्त **(वरम्)** श्रेष्ठ **(जोषम्)** प्रीति से चाहे हुए पति को **(अनु)** अनुकूलता से **(त्वम्)** तू **(वहसि)** प्राप्त होती **(सा)** वह मुझ पति को **(आ, वह)** सब ओर से प्राप्त हो **(या)** जो **(ह)** ही **(पूर्वहूतौ)** पूर्व सत्कार करने योग्यों के आह्वान के निमित्त **(मंहना)** सत्कार करने और **(दर्शता)** देखने योग्य **(देवी)** विदुषी तू **(भूः)** हो सो मेरी प्रिया स्त्री हो॥५॥

**भावार्थः**-जैसे उषा रात्रि के अनुकूल वर्त्तमान नियम से अपने काम को करती है, वैसे ही नियमयुक्त स्त्री अपने घर के कामों को करे तथा ब्रह्मचर्य के अनन्तर अपने मन के प्यारे पति को विवाह कर प्रसन्न होती हुई पति को निरन्तर प्रसन्न करे, ऐसे ही पति भी उस अनुकूल आचरण करने वाली को सदैव आनन्दित करे॥५॥

**पुनस्ते स्त्रीपुरुषाः परस्परं कथं वर्त्तेरन्नित्याह॥**

फिर वे स्त्री-पुरुष परस्पर कैसे वर्त्तें, इस विषय को कहते हैं॥

**उत्ते वयश्चिद्वसतेरपप्तन्नरश्च ये पितुभाजो व्युष्टौ।**

**अमा सते वहसि भूरि वाममुषो देवि दाशुषे मर्त्याय॥६॥५॥**

उत्। ते। वयः। चित्। वसतेः। अपप्तन्। नरः। च। ये। पितुऽभाजः। विऽउष्टौ। अमा। सते। वहसि। भूरि। वामम्। उषः। देवि। दाशुषे। मर्त्याय॥६॥

**पदार्थः**-**(उत)** **(ते)** तव **(वयः)** पक्षिणः **(चित्)** इव **(वसतेः)** **(अपप्तन्)** उड्डीयन्ते **(नरः)** नेतारः **(च)** **(ये)** **(पितुभाजः)** उत्तमान्नसेविनः **(व्युष्टौ)** विविधैर्गुणैः सेवमानायामुषसि **(अमा)** गृहाणि **(सते)** वर्त्तमानाय पत्ये **(वहसि)** प्राप्नोषि **(भूरि)** बहु **(वामम्)** प्रशस्तम् **(उषः)** उषर्वद्वर्त्तमाने **(देवि)** कमनीये **(दाशुषे)** सुखदात्रे **(मर्त्याय)** मनुष्याय॥६॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे उषर्वद्वर्त्तमाने देवि! या त्वं व्युष्टौ सेवमानाय सते दाशुषे मर्त्याय पत्येऽमा भूरि वामं वहसि तस्यास्ते ये पितुभाजो नरस्ते च वसतेर्वयश्चित्ते सुरूपं दृष्ट्वोदपप्तंस्तेषां मध्यात् स्वयंवरविधानेन सर्वथा प्रसन्नं पतिं त्वं प्राप्नुयाः॥६॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। ये वधूवरा स्वयंवरविवाहेन परस्परप्रसन्ना भूत्वा विवाहं कुर्वन्ति ते सूर्योषर्वद्गृहाश्रममुत्तमेनाचारेण सम्प्रकाश्य सदाऽऽनान्दिता भवन्तीति॥६॥ अत्रोषःसूर्यवत्स्त्रीगुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥६॥

**इति चतुःषष्टितमं सूक्तं पञ्चमो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे **(उषः)** उषा के समान वर्त्तमान **(देवि)** मनोहररूपवती जो तू **(व्युष्टौ)** विविध गुणों से सेवा करने योग्य प्रभातवेला में **(सते)** वर्त्तमान **(दाशुषे)** सुख देने वाले **(मर्त्याय)** मनुष्य पति के लिये **(अमा)** घरों को **(भूरि)** बहुत **(वामम्)** प्रशंसित कर्म जैसे हों, वैसे **(वहसि)** प्राप्त होती उस **(ते)** तेरे **(ये)** जो **(पितुभाजः)** उत्तम अन्न के सेवनेवाले **(नरः)** मनुष्य हैं, वे **(च)** भी **(वसतेः)** निवास के सम्बन्ध में **(वयः)** पक्षियों के **(चित्)** समान तेरे सुरूप को देख **(उत्, अपप्तन्)** उड़ते हैं, उनमें से स्वयंवर विधि से सर्वथा प्रसन्न पति को तू प्राप्त हो॥६॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जो वधू और वर स्वयंवर विवाह से परस्पर प्रसन्न होकर विवाह करे हैं, वे सूर्य्य और उषा के समान गृहाश्रम को उत्तम आचार से अच्छे प्रकार प्रकाशित कर सर्वदा आनन्दित होते हैं॥६॥

इस सूक्त में उषा और सूर्य के तुल्य स्त्रियों के गुणों का वर्णन होने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह चौसठवां सूक्त और पांचवां वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

अथ षड्ऋचस्य पञ्चषष्टितमस्य सूक्तस्य भरद्वाजो बार्हस्पत्य ऋषिः। उषा देवता। १ भुरिक्पङ्क्तिः। ५ स्वराट्पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमस्स्वरः। २, ३ विराट्त्रिष्टुप्। ४, ६ निचृत्त्रिष्टुप्छन्दः। धैवतः स्वरः॥

*पुनस्सा कीदृशी भवेदित्याह॥*

अब छः ऋचावाले पैसठवें सूक्त का आरम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में फिर वह स्त्री कैसी हो, इस विषय को कहते हैं॥

**एषा स्या नो दुहिता दिवोजाः क्षितीरुच्छन्ती मानुषीरजीगः।**

**या भानुना रुशता राम्यास्वज्ञायि तिरस्तमसश्चिदक्तून्॥ १॥**

**एषा। स्या। नः। दुहिता। दिवःऽजाः। क्षितीः। उच्छन्ती। मानुषीः। अजीगरिति। या। भानुना। रुशता। राम्यासु। अज्ञायि। तिरः। तमसः। चित्। अक्तून्॥ १॥**

**पदार्थः**-(**एषा**) (**स्या**) सा (**नः**) अस्माकम् (**दुहिता**) (**दिवोजाः**) सूर्याज्जातेव (**क्षितीः**) पृथिवीः (**उच्छन्ती**) विवासयन्ती (**मानुषीः**) मनुष्याणामिमाः प्रजाः (**अजीगः**) जागरयति (**या**) (**भानुना**) किरणेन (**रुशता**) रूपेण (**राम्यासु**) रात्रिषु। **राम्येति रात्रिनाम।** (निघं०१.७) (**अज्ञायि**) ज्ञायते (**तिरः**) तिरश्चीने (**तमसः**) अन्धकारात् (**चित्**) (**अक्तून्**) रात्रीः॥ १॥

**अन्वयः**-हे वरणीय! या रुशता भानुना सह वर्त्तमाना राम्यास्वज्ञायि तमसश्चिदक्तूँस्तिरस्करोति मानुषीः क्षितीरुच्छन्ती दिवोजा उषा इवाऽजीगो न एषा स्या दुहितास्ति त्वं गृहाण॥ १॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। या कन्या उषर्वद्विद्युद्वत्सुप्रकाशिता विद्याविनयहावभावैः पत्यादीनानन्दयति सूर्यो रात्रिं निवार्य्य सर्वाः प्रजाः प्रकाशयतीव गृहादविद्याऽन्धकारं निवार्य्य विद्यया सर्वान् प्रकाशयति सैव स्त्री वरा भवति॥ १॥

**पदार्थः**-हे स्वीकार करने योग्य! (**या**) जो (**रुशता**) रूप से (**भानुना**) किरण के साथ वर्त्तमान (**राम्यासु**) रात्रियों में (**अज्ञायि**) जानी जाय (**तमसः**) अन्धकार से (**चित्**) भी (**अक्तून्**) रात्रियों को (**तिरः**) तिरस्कार करती तथा (**मानुषीः**) मनुष्यसम्बन्धी प्रजाओं को (**क्षितीः**) और पृथिवियों को (**उच्छन्ती**) विशेष निवास कराती हुई (**दिवोजाः**) सूर्य से उत्पन्न हुई उषा के समान (**अजीगः**) जगाती है (**नः**) हमारी (**एषा**) सो (**स्या**) यह (**दुहिता**) कन्या है, तुम ग्रहण करो॥ १॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो कन्या उषा के तुल्य वा बिजुली के तुल्य अच्छे प्रकाश को प्राप्त, विद्या-विनय और हाव-भाव, कटाक्षों से पति आदि को आनन्दित करती है वा जैसे सूर्य्य रात्रि को दूर कर सब प्रजा को प्रकाशित करता है, वैसे घर से अविद्या और अन्धकार निवार विद्या से सब को प्रकाशित करती है, वही उत्तम स्त्री होती है॥ १॥



www.9009.co.in

**पुनस्ता स्त्रियः कीदृश्यो भवेयुरित्याह॥**

फिर वे स्त्री कैसी हों, इस विषय को कहते हैं॥

**वि तद्ययुररुणयुग्भिरश्वैश्चित्रं भान्त्युषसश्चन्द्ररथाः।**

**अग्रं यज्ञस्य बृहतो नयन्तीर्वि ता बाधन्ते तम ऊर्म्यायाः॥२॥**

**वि। तत्। ययुः। अरुणयुक्ऽभिः। अश्वैः। चित्रम्। भान्ति। उषसः। चन्द्रऽरथाः। अग्रम्। यज्ञस्य। बृहतः। नयन्तीः। वि। ताः। बाधन्ते। तमः। ऊर्म्यायाः॥२॥**

**पदार्थः**-(**वि**) (**तत्**) (**ययुः**) प्राप्नुवन्ति (**अरुणयुग्भिः**) येऽरुणान् किरणान् योजयन्ति तैः (**अश्वैः**) महद्भिः किरणैः (**चित्रम्**) अद्भुतं जगत् (**भान्ति**) (**उषसः**) प्रभातवेलाः (**चन्द्ररथाः**) चन्द्रं सुवर्णमिव रथो रमणीयं स्वरूपं यासां ताः (**अग्रम्**) (**यज्ञस्य**) सङ्गन्तव्यस्य गृहस्थव्यवहारस्य (**बृहतः**) महतः (**नयन्तीः**) प्रापयन्त्यः (**वि**) (**ताः**) (**बाधन्ते**) (**तमः**) अन्धकारम् (**ऊर्म्यायाः**) रात्रेः। **ऊर्म्येति रात्रिनाम।** (निघं०१.७)॥२॥

**अन्वयः**-हे पुरुषा! याः कन्या यथा चन्द्ररथा उषसोऽरुणयुग्भिरश्वैर्ययुस्तच्चित्रं वि भान्ति बृहतो यज्ञस्याऽग्रं नयन्तीरूर्म्यायास्तमो वि बाधन्ते ता इव वर्त्तमाना वधूर्यूयं प्राप्नुत॥२॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे नरा! यूयं स्वसदृशगुणकर्मस्वभावा उषर्वदानन्दप्रदा विद्याविनयादिभिः सुशीला ब्रह्मचारिणीः कन्याः प्राप्य ताः सततमानन्द्य स्वयमानन्दं प्राप्नुत॥२॥

**पदार्थः**-हे पुरुषो! जो कन्यायें जैसे (**चन्द्ररथाः**) जिनका सुवर्ण के समान रमणीयरूप है वे (**उषसः**) प्रभातवेलायें (**अरुणयुग्भिः**) जो अरुण किरणों की योजना करती हैं उन (**अश्वैः**) बड़ी-बड़ी किरणों से (**ययुः**) प्राप्त होती हैं (**तत्, चित्रम्**) उस आश्चर्य्य को (**वि, भान्ति**) विशेषता से प्रकाशित करती हैं तथा (**बृहतः**) महान् (**यज्ञस्य**) सङ्ग करने योग्य गृहस्थों के व्यवहार के (**अग्रम्**) अगले भाग को (**नयन्तीः**) प्राप्त कराती हुई (**ऊर्म्यायाः**) रात्रि के (**तमः**) अन्धकार को (**वि, बाधन्ते**) नष्ट करती हैं (**ताः**) उनके समान दुःखान्धकार को दूर करने वाली वधुओं को तुम प्राप्त होओ॥२॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! तुम अपने सदृश गुण-कर्म-स्वभावयुक्त प्रभातवेलाओं के समान आनन्द देने वाली, विद्या और नम्रता आदि गुणों से सुशील, ब्रह्मचारिणी कन्याओं को प्राप्त होकर उनको निरन्तर आनन्द देकर आप आनन्द को प्राप्त होओ॥२॥

**पुनस्ताः कीदृश्यः स्युरित्याह॥**

फिर वे कैसी हों, इस विषय को कहते हैं॥

**श्रवो वाजमिषमूर्जं वहन्तीर्नि दाशुष उषसो मर्त्याय।**

**मघोनीर्वीरवत्पत्यमाना अवो धात विधते रत्नमद्य॥३॥**



www.9009.co.in

**श्रवः। वाजम्। इषम्। ऊर्जम्। वहन्तीः। नि। दाशुषे। उषसः। मर्त्याय। मघोनीः। वीरऽवत्। पत्यमानाः। अवः। धात। विधते। रत्नम्। अद्य॥ ३॥**

**पदार्थः**-(**श्रवः**) श्रवणम् (**वाजम्**) विज्ञानम् (**इषम्**) अन्नम् (**ऊर्जम्**) पराक्रमम् (**वहन्तीः**) प्रापयन्त्यः (**नि**) नितराम् (**दाशुषे**) विद्यादिशुभगुणदात्रे (**उषसः**) प्रभातवेलाः (**मर्त्याय**) मनुष्याय (**मघोनीः**) बहूत्तमधनाः (**वीरवत्**) शूरवीरतुल्याः (**पत्यमानाः**) प्राप्नुवन्त्यः (**अवः**) रक्षणम् (**धात**) धत्त (**विधते**) सेवमानाय (**रत्नम्**) रमणीयम् (**अद्य**) इदानीम्॥ ३॥

**अन्वयः**-हे पुरुषा! या उषस इव दाशुषे विधते मर्त्याय श्रवो वाजमिषमूर्जं वहन्तीर्मघोनीर्वीरवत्पत्यमानाः स्त्रियोऽद्य रत्नमवः प्राप्नुवन्ति ता यूयं नि धात॥ ३॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! या उषर्वद्वर्त्तमानाः सत्यशास्त्रश्रवणादियुक्ता बलिष्ठा विचक्षणा धनैश्वर्यवर्धिका रक्षणे तत्परा विदुष्यः स्त्रियः स्युस्तासां मध्यात् स्वस्वप्रियां भार्यां सर्वे गृह्णन्तु॥ ३॥

**पदार्थः**-हे पुरुषो! जो (**उषसः**) प्रभातवेलाओं के समान (**दाशुषे**) विद्यादि शुभगुण देने वाले (**विधते**) सेवा करते हुए (**मर्त्याय**) मनुष्य के लिये (**श्रवः**) श्रवण (**वाजम्**) विज्ञान (**इषम्**) अन्न और (**ऊर्जम्**) पराक्रम को (**वहन्तीः**) प्राप्त कराती तथा (**मघोनीः**) बहुत धन वाली (**वीरवत्**) वीर के समान (**पत्यमानाः**) प्राप्त होती हुई स्त्रियाँ (**अद्य**) इस समय (**रत्नम्**) रमणीय (**अवः**) रक्षा को प्राप्त होतीं उनको तुम (**नि, धात**) निरन्तर धारण करो॥ ३॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो उषा के समान वर्त्तमान, सत्यशास्त्र श्रवणादियुक्त, बलिष्ठ, विचक्षण (चित्र-विचित्र बुद्धियुक्त) धन और ऐश्वर्य्य की बढ़ाने वाली, रक्षा में तत्पर, विदुषी स्त्रियाँ हों, उनके बीच से अपनी-अपनी प्रिया भार्या को सब ग्रहण करें॥ ३॥

**पुनस्ताः कीदृश्यो भवेयुरित्याह॥**

फिर वे कैसी हों, इस विषय को कहते हैं॥

**इदा हि वो विधते रत्नमस्तीदा वीराय दाशुष उषासः।**

**इदा विप्राय जरते यदुक्था नि ष्म मावते वहथा पुरा चित्॥ ४॥**

**इदा। हि। वः। विधते। रत्नम्। अस्ति। इदा। वीराय। दाशुषे। उषसः। इदा। विप्राय। जरते। यत्। उक्था। नि। स्म। माऽवते। वहथ। पुरा। चित्॥ ४॥**

**पदार्थः**-(**इदा**) इदानीम् (**हि**) यतः (**वः**) युष्मान् (**विधते**) परिचरते (**रत्नम्**) रमणीयं धनम् (**अस्ति**) (**इदा**) इदानीम् (**वीराय**) बलिष्ठाय जनाय (**दाशुषे**) दात्रे (**उषासः**) उषर्वद्वर्त्तमानाः (**इदा**) इदानीम् (**विप्राय**) मेधाविने (**जरते**) स्तावकाय (**यत्**) यानि (**उक्था**) वचनानि (**नि**) नित्यम् (**स्म**) एव (**मावते**) मत्सदृशाय (**वहथा**) प्राप्नुथ। अत्र **संहितायामिति** दीर्घः। (**पुरा**) पुरस्तात् (**चित्**) अपि॥ ४॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे वीरपुरुषा! यथोषासस्तथैव वर्त्तमाना भार्या यदि प्राप्नुत तदेदा हि वो विधते रत्नमस्तीदा दाशुषे वीरायेदा जरते विप्राय मावते पुरा चिद्यदुक्थाः सन्ति तानि स्म चिन्नि वहथा॥४॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! या उषर्वद्वर्त्तमाना भार्या युष्मान् प्राप्नुयुस्तर्ह्यस्मिन्नेव जन्मनि सर्वाणि सुखानि भवतः प्राप्नुयुरविरोधेन वर्त्तमानान् स्त्रीपुरुषान् सदैव यशांसि प्राप्नुवन्ति॥४॥

**पदार्थः**-हे वीरपुरुषो! जैसे **(उषासः)** उषाकाल, उन्हीं के समान वर्त्तमान भार्याओं को जो प्राप्त होओ तो **(इदा)** अब **(हि)** ही **(वः)** तुमको **(विधते)** सेवन करते हुए के लिये **(रत्नम्)** रमणीय धन **(अस्ति)** विद्यमान है वा **(इदा)** अब **(दाशुषे)** देते हुए **(वीराय)** बलिष्ठ जन के लिये और **(इदा)** अब **(जरते)** स्तुति करने वाले **(विप्राय)** मेधावी पुरुष के लिये **(मावते)** जो मेरे सदृश है, उसके लिये **(पुरा)** पहिले **(चित्)** भी **(यत्)** जो **(उक्था)** कहने के योग्य वचन हैं **(स्म)** उन्हीं को **(नि, वहथा)** निवाहो॥४॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जो उषा के समान वर्त्तमान भार्यायें तुम लोगों को प्राप्त हों तो इसी जन्म में सब सुख तुम लोगों को प्राप्त हों, क्योंकि अविरोध से वर्त्तमान स्त्री-पुरुषों को सदैव यश प्राप्त होते हैं॥४॥

**पुनः सा कीदृशीत्याह॥**

फिर वह कैसी है, इस विषय को कहते हैं॥

**इ॒दा हि त॑ उषो अद्रिसानो गो॒त्रा गवा॒मङ्गि॑रसो गृ॒णन्ति॑।**

**व्य१॒॑र्केण॑ बिभिदु॒र्ब्रह्म॑णा च स॒त्या नृ॒णाम॑भवद्दे॒वहू॑तिः॥५॥**

**इ॒दा। हि। ते॒। उ॒षः॒। अ॒द्रि॒सा॒नो॒ इत्य॑द्रिसानो। गो॒त्रा। गवा॑म्। अङ्गि॑रसः। गृ॒णन्ति॑। वि। अ॒र्केण॑। बि॒भि॒दुः॒। ब्रह्म॑णा। च॒। स॒त्या। नृ॒णाम्। अ॒भ॒व॒त्। दे॒वऽहू॑तिः॥५॥**

**पदार्थः**-**(इदा)** इदानीम् **(हि)** खलु **(ते)** तव **(उषः)** उषर्वद्वर्त्तमाने **(अद्रिसानो)** अद्रौ मेघे सानूनि यस्याः सा **(गोत्रा)** भूमिः। **गोत्रेति पृथिवीनाम।** (निघं०१.१) **(गवाम्)** किरणानाम् **(अङ्गिरसः)** वायव इव **(गृणन्ति)** स्तुवन्ति **(वि)** **(अर्केण)** सूर्येण **(बिभिदुः)** विदृणन्ति **(ब्रह्मणा)** परमेश्वरेण वेदेन वा **(च)** **(सत्या)** सत्सु पदार्थेषु साध्वी **(नृणाम्)** मनुष्याणाम् **(अभवत्)** भवति **(देवहूतिः)** देवा विद्वांस आह्वयन्ति यया सा॥५॥

**अन्वयः**-हे अद्रिसानो उषर्वद्वर्त्तमाने वरे स्त्रि! यथा ते सम्बन्धिनोऽङ्गिरसोऽर्केण ब्रह्मणा च सूर्य्य गोत्रेव गवां सम्बन्धं वि गृणन्ति बिभिदुश्च तथेदा हि देवहूतिर्भवति नृणां मध्ये सत्याऽभवत्॥५॥



www.9009.co.in

**भावार्थ:**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यथा किरणा उषसा सूर्य्यप्रकाशस्य निमित्तमस्ति तथैव सर्वेषां सत्यानां व्यवहाराणां साधिका दुष्टानां व्यवहाराणां निरोधिकोषा वर्त्तते तथा सती स्त्री भवति॥५॥

**पदार्थ:**-(**अद्रिसानो**) मेघ के बीच शिखर=चोटी रखने वाली (**उषः**) प्रभातवेला के समान वर्त्तमान उत्तम स्त्री! जैसे (**ते**) तेरे सम्बन्धी (**अङ्गिरसः**) पवनों के तुल्य (**अर्केण**) सूर्य्य (**ब्रह्मणा**) परमेश्वर वा वेद से (**च**) भी सूर्य्य को (**गोत्रा**) पृथिवी के समान वा (**गवाम्**) किरणों के सम्बन्ध को (**वि, गृणन्ति**) प्रस्तुत करते हैं और (**बिभिदुः**) विदीर्ण करते हैं, वैसे (**इदा**) अब (**हि**) ही (**देवहूतिः**) विद्वान् जन जिससे बुलाते हैं, वैसे तू प्रसिद्ध होती है सो तू (**नृणाम्**) मनुष्यों के बीच (**सत्या**) विद्यमान पदार्थों में उत्तम (**अभवत्**) होती है॥५॥

**भावार्थ:**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जैसे किरणें प्रभातवेला से सूर्य्यप्रकाश की निमित्त हैं, वैसे ही सत्य व्यवहारों को सिद्ध करने और दुष्ट व्यवहारों का निरोध करने वाली उषा है, वैसी श्रेष्ठ स्त्री होती है॥५॥

**पुनः सा किंवत् किं कृत्वा किं प्राप्नोतीत्याह॥**

फिर वह किसके समान क्या करके किसको प्राप्त होती है, इस विषय को कहते हैं॥

**उच्छा दिवो दुहितः प्रत्नवन्नो भरद्वाजवद्विधते मघोनि।**

**सुवीरं रयिं गृणते रिरीह्युरुगायमधि धेहि श्रवो नः॥६॥६॥**

**उच्छ। दिवः। दुहितरिति। प्रत्नऽवत्। नः। भरद्वाजऽवत्। विधते। मघोनी। सुऽवीरम्। रयिम्। गृणते। रिरीहि। उरुऽगायम्। अधि। धेहि। श्रवः। नः॥६॥**

**पदार्थ:**-(**उच्छा**) विवासय। अत्र **द्व्यचोऽतस्तिङ** इति दीर्घः। (**दिवः**) विद्युतः (**दुहितः**) दुहितर्वद्वर्त्तमाने (**प्रत्नवत्**) प्रत्नं प्राचीनं कारणं विद्यते यस्मिंस्तद्वत् (**नः**) अस्मान् (**भरद्वाजवत्**) श्रोत्रवत् (**विधते**) विधानं कुर्वते (**मघोनि**) परमपूजितधनयुक्ते (**सुवीरम्**) शोभना वीरा यस्मात्तम् (**रयिम्**) धनम् (**गृणते**) प्रशंसकाय (**रिरीहि**) याचस्व। **रिरीहीति याच्ञाकर्मा।** (निघं०३.१९) (**उरुगायम्**) उरूणि गया अपत्यानि धनानि गृहाणि वा यस्मात्तम् (**अधि**) उपरि (**धेहि**) (**श्रवः**) अन्नं श्रवणं वा (**नः**) अस्मभ्यम्॥६॥

**अन्वय:**-हे दिवो दुहितर्वद्वर्त्तमाने मघोनि पत्नि! त्वं नो विधते प्रत्नवद्भरद्वाजवदुच्छा विवासय गृणते तव पत्ये नोऽस्मभ्यं सम्बन्धिभ्य उरुगायं श्रवः सुवीरं रयिं चाऽधि धेहि त्वं चास्मदेतद्रिरीहि॥६॥

**भावार्थ:**-हे वीर पुरुष! यथा विद्युदीप्तिः सम्प्रयुक्तं सम्यक्चैश्वर्य्यं जनयति तथैव शुभाचरणा पत्नी गृहसौभाग्यं वर्धयति यथाऽऽचार्याः प्रतिसमयं सुशिक्षां विद्यां च विद्यार्थिनो ग्राहयन्ति तथैव विद्वांसौ स्त्रीपुरुषौ स्वसन्तानानुचितसमये विद्यासुशिक्षे ग्राहयेतामिति॥६॥



www.9009.co.in

अत्रोषर्वत्स्त्रीगुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति पञ्चषष्टितमं सूक्तं षष्ठो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे **(दिवः)** बिजुली की **(दुहितः)** कन्या के समान वर्त्तमान **(मघोनि)** परमपूजित धनयुक्त पत्नी! तू **(नः)** हम लोगों का **(विधते)** विधान करने वाले के लिये **(प्रत्नवत्)** प्राचीन कारण जिसमें विद्यमान उसके वा **(भरद्वाजवत्)** कर्ण के तुल्य **(उच्छा)** विवास कराओं अर्थात् एक देश से दूसरे देश में वास कराओ **(गृणते)** और प्रशंसा करने वाले तेरे पति के लिये वा **(नः)** हम लोग जो सम्बन्धी हैं, उनके लिये **(उरुगायम्)** बहुत अपत्य धन वा गृह जिससे प्राप्त होते हैं उसे और **(श्रवः)** अन्न वा श्रवण तथा **(सुवीरम्)** शोभन वीर जिससे उस **(रयिम्)** धन को **(अधि, धेहि)** अधिकता से धारण कर और तू मुझ से इस उक्त विषय को **(रिरीहि)** मांग॥६॥

**भावार्थः**-हे वीरपुरुष! जैसे बिजुली का प्रकाश संप्रयोग किया हुआ सत्य ऐश्वर्य्य को उत्पन्न करता है, वैसे ही शुभ आचरण करने वाली पत्नी घर का सौभाग्य बढ़ाती है और जैसे आचार्य प्रति समय सुन्दर शिक्षा और विद्या को विद्यार्थियों को ग्रहण कराते हैं, वैसे ही विद्वान् स्त्री पुरुष अपने सन्तानों को विद्या और सुन्दर शिक्षा ग्रहण करावें॥६॥

इस सूक्त में उषा के तुल्य स्त्रीजनों के गुणों का वर्णन होने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह पैसठवां सूक्त और छठा वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

**अथैकादशर्चस्य षट्षष्टितमस्य सूक्तस्य भरद्वाजो बार्हस्पत्य ऋषिः। मरुतो देवताः। १, ९, ११ निचृत्पङ्क्तिः। २, ५ विराट् त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः। ३, ४ निचृत्पङ्क्तिः। ६, ७, १० भुरिक्पङ्क्तिः। ८ स्वराट् पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः॥**

*पुनः सा किंवत्किं करोतीत्याह॥*

अब ग्यारह ऋचावाले छियासठवें सूक्त का आरम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में फिर वह किसके तुल्य क्या करती है, इस विषय को कहते हैं॥

**वपुर्नु तच्चिकितुषे चिदस्तु समानं नाम धेनु पत्यमानम्।**
**मर्तेष्वन्यद्दोहसे पीपाय सकृच्छुक्रं दुदुहे पृश्निरूधः॥१॥**

**वपुः। नु। तत्। चिकितुषे। चित्। अस्तु। समानम्। नाम। धेनु। पत्यमानम्। मर्तेषु। अन्यत्। दोहसे। पीपाय। सकृत्। शुक्रम्। दुदुहे। पृश्निः। ऊधः॥९॥**

**पदार्थः**-(**वपुः**) सुरूपं शरीरम् (**नु**) सद्यः (**तत्**) (**चिकितुषे**) विज्ञानवते (**चित्**) अपि (**अस्तु**) (**समानम्**) (**नाम**) सञ्ज्ञा (**धेनु**) वाक्। अत्र विभक्तिलोपः (**पत्यमानम्**) गम्यमानम् (**मर्तेषु**) मनुष्येषु (**अन्यत्**) (**दोहसे**) दोग्धुम् (**पीपाय**) आप्यायय (**सकृत्**) एकवारम् (**शुक्रम्**) आशुवीर्यकरम् (**दुदुहे**) पूरयति (**पृश्निः**) अन्तरिक्षम् (**ऊधः**) रात्रिः। **ऊध इति रात्रिनाम।** (निघं०१.७)॥१॥

**अन्वयः**-हे पत्नि! यथोधः पृश्निश्च सकृच्छुक्रं दुदुहे तथा धेन्विव त्वं मर्त्तेषु पत्यमानं पतिमन्यद्दोहसे पीपायैवं भूतायास्तव यच्चित्समानं वपुर्नाम च तच्चिकितुषे पत्येन्वस्तु॥१॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे पुरुष! यथा रात्रिरारान्मायाऽन्तरिक्षं वर्षाभ्योऽस्ति तथैव समानगुणकर्मस्वभावा पत्नी पत्युः सुखाय कल्पते यथा धेनुर्वत्सान् पालयति तथा विदुषी माता सन्तानान्यथावद्रक्षितुं शक्नोति॥१॥

**पदार्थः**-हे पत्नि! जैसे (**ऊधः**) रात्रि और (**पृश्निः**) अन्तरिक्ष (**सकृत्**) एक वार (**शुक्रम्**) शीघ्र वीर्य करने वाले को (**दुदुहे**) परिपूर्ण करता है, वैसे (**धेनु**) वाणी के समान तू (**मर्त्तेषु**) मनुष्यों में (**पत्यमानम्**) जाते हुए पति को (**अन्यत्**) और को जैसे वैसे (**दोहसे**) पूर्ण करने को (**पीपाय**) बढ़ाओ ऐसी हुई जो तू उसका जो (**चित्**) निश्चित (**समानम्**) समान (**वपुः**) सुन्दररूप और (**नाम**) नाम है (**तत्**) वह (**चिकितुषे**) विज्ञानवान् पति के लिये (**नु, अस्तु**) शीघ्र हो॥१॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे पुरुष! जैसे रात्रि और समीप में मायारूपी अन्तरिक्ष वर्षा से होता अर्थात् मेघ से ढपा हुआ अन्तरिक्ष अन्धकारयुक्त होता है, वैसे ही समान गुणकर्मस्वभावयुक्त स्त्री पति के सुख के लिये समर्थ होती है, जैसे गौ बछड़ों को पालती है, वैसे विदुषी माता सन्तानों की यथावत् रक्षा कर सकती है॥१॥



www.9009.co.in

**पुनर्विद्वांस कीदृशा भवेयुरित्याह॥**

फिर विद्वान् जन कैसे हों, इस विषय को कहते हैं॥

**ये अ॒ग्नयो॒ न शोशु॑चन्नि॒धाना॒ द्विर्यत्त्रिर्म॒रुतो॑ वावृ॒धन्त॑।**

**अ॒रे॒णवो॑ हिर॒ण्यया॑स एषां सा॒कं नृ॒म्णैः पौंस्ये॑भिश्च भूवन्॥ २॥**

**ये। अ॒ग्नयः॑। न। शोशु॑चन्। इ॒धा॒नाः। द्विः। यत्। त्रिः। म॒रुतः॑। व॒वृ॒धन्त॑। अ॒रे॒णवः॑। हि॒र॒ण्यया॑सः। ए॒षा॒म्। सा॒कम्। नृ॒म्णैः। पौंस्ये॑भिः। च॒। भू॒व॒न्॥ २॥**

**पदार्थः**-(**ये**) (**अग्नयः**) पावकाः (**न**) इव (**शोशुचन्**) शोधयन्ति (**इधानाः**) प्रकाशमानाः (**द्विः**) द्विवारम् (**यत्**) (**त्रिः**) त्रिवारम् (**मरुतः**) वायव इव (**वावृधन्त**) वर्धन्ते। अत्र **तुजादीनामि**त्यभ्यास्सदैर्घ्यम्। (**अरेणवः**) रेणुरहिताः (**हिरण्ययासः**) हिरण्येन विद्युत्तेजसा प्रचुराः (**एषाम्**) (**साकम्**) सह (**नृम्णैः**) धनैः (**पौंस्येभिः**) बलैः (**च**) (**भूवन्**) भवेयुः॥ २॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! ये यतमाना हिरण्ययासोऽरेणवो मरुत इव नृम्णैः पौंस्येभिः साकं भूवन्नेषां सम्बन्धे यद्ये द्विस्त्रिर्वा वावृधन्त चेधाना अग्नयो न शोशुचंस्ते भाग्यशालिनो भूवन्॥ २॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। ये पावकवत्पवित्राः पवित्रकरा वर्धमाना वर्धयितारो वायुवद्बलिष्ठाश्चक्रवर्त्तिनृपवच्छ्रिया सह वर्त्तमाना विद्वांसस्स्युस्तानेव यूयं भजत॥ २॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! (**ये**) जो यत्न करते हुए (**हिरण्ययासः**) बिजुली के तेज से बढ़े हुए (**अरेणवः**) धूलि जिनमें नहीं वे (**मरुतः**) पवनों के समान (**नृम्णैः**) धनों और (**पौंस्येभिः**) पुरुषार्थ बलों के (**साकम्**) साथ (**भूवन्**) हों (**एषाम्**) इनके सम्बन्ध में (**यत्**) जो (**द्विः**) दो वार वा (**त्रिः**) तीन वार (**वावृधन्त**) निरन्तर बढ़ते हैं (**च**) और (**इधानाः**) प्रकाशमान (**अग्नयः**) अग्नियों के (**न**) समान (**शोशुचन्**) निरन्तर शुद्ध करते, वे भाग्यशाली होते हैं॥ २॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जो अग्नि के समान पवित्र हुए पवित्र करने वाले, वृद्धि को प्राप्त हुए, बढ़ाने वाले, पवन के समान बलिष्ठ और चक्रवर्त्ती राजा के समान लक्ष्मी के साथ वर्त्तमान विद्वान् हों, उन्हीं को तुम सेवो॥ २॥

**कयोः पुत्रा वरा जायन्त इत्याह॥**

किन स्त्री-पुरुषों के पुत्र उत्तम होते हैं, इस विषय को कहते हैं॥

**रु॒द्रस्य॒ ये मी॒ळ्हुषः॒ सन्ति॑ पु॒त्रा यांश्चो॒ नु दाधृ॑वि॒र्भर॑ध्यै।**

**वि॒दे हि मा॒ता म॒हो म॒ही षा सेत्पृश्नि॑ः सु॒भ्वे॒३॑ गर्भ॒माधा॑त्॥ ३॥**

**रु॒द्रस्य॑। ये। मी॒ळ्हुषः॑। सन्ति॑। पु॒त्राः। यान्। चो॒ इति॑। नु॒। दाधृ॑विः। भर॑ध्यै। वि॒दे। हि। मा॒ता। म॒हः। म॒ही। सा। सा। इत्। पृश्नि॑ः। सु॒ऽभ्वे॑। गर्भ॑म्। आ। अ॒धा॒त्॥ ३॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**रुद्रस्य**) वायुवद्बलिष्ठस्य (**ये**) (**मीळ्हुषः**) वीर्यसेचकस्य (**सन्ति**) (**पुत्राः**) (**यान्**) (**चो**) (**नु**) (**दाधृविः**) धर्त्री (**भरध्यै**) भर्त्तुम् (**विदे**) यो वेत्ति तस्मै (**हि**) खलु (**माता**) (**महः**) महान्तम् (**मही**) महती पूजनीया (**सा**) (**सा**) (**इत्**) एव (**पृश्निः**) अन्तरिक्षमिव सावकाशा (**सुभ्वे**) यः सुष्ठु भवति तस्मै (**गर्भम्**) (**आ**) (**अधात्**)॥३॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! ये मीळ्हुषो रुद्रस्य पुत्राः सन्ति याँश्चो भरध्यै दाधृविर्मही सा माताऽऽधात् सेत् पृश्निरिव सुभ्वे विदे हि महो गर्भं न्वधात्ताँस्ताञ्च यूयं भाग्युक्तान् विजानीत॥३॥

**भावार्थः**-त एव मनुष्या भद्रा जायन्ते येषां मातापितरौ कृतपूर्णब्रह्मचर्यौ भवेताम्॥३॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! (**ये**) जो (**मीळ्हुषः**) वीर्य सींचने वाले (**रुद्रस्य**) वायु के समान बलिष्ठ के (**पुत्राः**) पुत्र (**सन्ति**) हैं (**यान्, चो**) और जिनको (**भरध्यै**) पोषण वा धारण करने के लिये (**दाधृविः**) धारण करने वाली (**मही**) जो महान् सत्कार करने योग्य है (**सा**) वह (**माता**) मान करने वाली (**आ, अधात्**) अच्छे प्रकार धारण करती है और (**सा, इत्**) वही (**पृश्निः**) अन्तरिक्ष के समान विस्तार वाली (**सुभ्वे**) जो सुन्दर प्रसिद्ध होता है उस (**विदे**) जानने वाले के लिये (**हि**) ही (**महः**) महान् (**गर्भम्**) गर्भ को (**नु**) शीघ्र अच्छे प्रकार धारण करती है उन सबको और उस माता रूप स्त्री को तुम सब भाग्ययुक्त जानो॥३॥

**भावार्थः**-वे ही मनुष्य कल्याणरूप होते हैं जिनके माता पिता ऐसे हैं कि जिन्होंने पूरा ब्रह्मचर्य किया हो॥३॥

**के श्रेष्ठा जायन्त इत्याह॥**

कौन श्रेष्ठ होते हैं, इस विषय को कहते हैं॥

**न य ईषन्ते जनुषोऽया न्व१न्तः सन्तोऽवद्यानि पुनानाः।**

**निर्यद् दुह्रे शुचयोऽनु जोषमनु श्रिया तन्वमुक्षमाणाः॥४॥**

**न। ये। ईषन्ते। जनुषः। अया। नु। अन्तरिति। सन्तः। अवद्यानि। पुनानाः। निः। यत्। दुह्रे। शुचयः। अनु। जोषम्। अनु। श्रिया। तन्वम्। उक्षमाणाः॥४॥**

**पदार्थः**-(**न**) निषेधे (**ये**) (**ईषन्ते**) हिंसन्ति (**जनुषः**) जन्मानि (**अया**) अनया (**नु**) (**अन्तः**) मध्ये (**सन्तः**) सत्पुरुषाः (**अवद्यानि**) निन्द्यानि कर्माणि (**पुनानाः**) पवित्रयन्तः (**निः**) निरन्तरम् (**यत्**) ये (**दुह्रे**) दुहन्ति (**शुचयः**) पवित्राः (**अनु**) (**जोषम्**) सेवनम् (**अनु**) (**श्रिया**) लक्ष्म्या (**तन्वम्**) शरीरम् (**उक्षमाणाः**) सेवमानाः॥४॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! ये जनुषो नेषन्तेऽया नीत्याऽन्तः सन्तोऽवद्यानि नु विहाय पुनाना भवन्ति यद्ये शुचयोऽनु जोषं श्रिया तन्वमुक्षमाणा अनु निर्दुह्रे ते धन्या भवन्ति॥४॥



www.9009.co.in

**भावार्थ:**-ये मनुष्या ब्रह्मचर्यादीनि व्रतानि विहाय मूढा भूत्वा सद्यो विवाहं कृत्वा नपुंसकवद्भूत्वा निर्बला रोगिणो लम्पटा नृशंसा दुर्व्यसनिनो भवन्ति ते शततमाद्वर्षात् पूर्वमेव शरीरं विनाश्य मनुष्यशरीरफलमप्राप्य दुर्भाग्यवशान्निष्फला जायन्ते॥४॥

**पदार्थ:**-हे मनुष्यो! **(ये)** जो **(जनुष:)** जन्मों को **(न)** नहीं **(ईषन्ते)** नष्ट करते किन्तु **(अया)** इस नीति से **(अन्त:)** बीच में **(सन्त:)** सत्पुरुष हुए **(अवद्यानि)** निन्द्य कर्मों को **(नु)** शीघ्र छोड़ के **(पुनाना:)** शरीर को पवित्र करते हुए होते हैं और **(यत्)** जो **(शुचय:)** पवित्र जन **(अनु, जोषम्)** सेवा के अनुकूल **(श्रिया)** लक्ष्मी से **(तन्वम्)** शरीर को **(उक्षमाणा:)** सेवन करते हुए **(अनु, निर्, दुह्रे)** अनुक्रम से जन्म पूरा करते हैं, वे धन्य होते हैं॥४॥

**भावार्थ:**-जो मनुष्य ब्रह्मचर्यादि व्रतों को छोड़ मूढ़ होकर, शीघ्र विवाह कर, नपुंसक के अर्थात् हीजड़ा के समान होकर, निर्बल, रोगी, और लम्पट, मनुष्यों के बीच जिसकी कहावत हो रही हो तथा दुष्टव्यसन जिसको होता है, ऐसे पुरुष सौ वर्ष से पहिले ही शरीर को नष्ट-भ्रष्ट कर मनुष्य शरीर के फल को न पाकर दुर्भाग्यवश से निष्फल होते हैं॥४॥

**इह कतिविधा: पुरुषा भवन्तीत्याह॥**

यहाँ कितने प्रकार के पुरुष होते हैं, इस विषय को कहते हैं॥

**मक्षू न येषु दोहसे चिदया आ नाम धृष्णु मारुतं दधाना:।**

**न ये स्तौना अयासो मह्ना नू चित्सुदानुरव यासदुग्रान्॥५॥७॥**

**मक्षू। न। येषु। दोहसे। चित्। अया:। आ। नाम। धृष्णु। मारुतम्। दधाना:। न। ये। स्तौना:। अयास:। मह्ना। नु। चित्। सुऽदानु:। अव। यासत्। उग्रान्॥५॥**

**पदार्थ:**-**(मक्षू)** क्षिप्रम्। अत्र **ऋचि तुनुघे**ति दीर्घ:। **(न)** निषेधे **(येषु)** मनुष्येषु **(दोहसे)** कामान् दोग्धुं प्रपूरयितुम् **(चित्)** अपि **(अया:)** प्राप्नुवत: **(आ)** **(नाम)** **(धृष्णु)** दृढं प्रगल्भम् **(मारुतम्)** मनुष्याणामिदम् **(दधाना:)** **(न)** **(ये)** **(स्तौना:)** चौरा:। अत्र वर्णव्यत्ययेनैकारस्थान औकार:। **(अयास:)** गच्छन्त: **(मह्ना)** महत्त्वेन **(नू)** सद्य:। अत्रापि **ऋचि तुनुघे**ति दीर्घ:। **(चित्)** **(सुदानु:)** उत्तमदान: **(अव)** **(यासत्)** प्रापयेत् **(उग्रान्)** कठिनस्वभावान्॥५॥

**अन्वय:**-येषु चिद्दोहसे शक्तिर्नास्ति येऽया धृष्णु मारुतं नामाऽऽदधाना: सन्ति येऽयास: स्तौना न सन्ति यस्सुदानुस्तानुग्रान् मक्षू नाऽवयासत्तांश्चिन्मह्ना नू सत्कुर्यात् तान् यथावत्सर्वे विजानन्तु॥५॥

**भावार्थ:**-हे मनुष्या! अत्र द्विविधा मनुष्या एके शक्तिविद्याहीना दुष्टकर्मकारिणोऽपरे शक्तिमन्त: श्रेष्ठकर्मधारिण: सन्ति तत्र ये दुष्कृतान् न सत्कुर्वन्ति श्रेष्ठाँश्चार्चन्ति ते सद्यो महदिष्टं सुखं लभन्ते॥५॥

**पदार्थ:**-**(येषु)** जिन मनुष्यों में **(चित्)** निश्चय से **(दोहसे)** कामों के पूरे करने की शक्ति नहीं है वा जो **(अया:)** प्राप्त होते हुए **(धृष्णु)** दृढ़ प्रगल्भ **(मारुतम्)** मनुष्यों के इस **(नाम)** प्रसिद्ध व्यवहार को



www.9009.co.in

(**आ, दधानाः**) धारण करते हुए हैं वा (**ये**) जो (**अयासः**) चलते हुए (**स्तौनाः**) चोर (**न**) नहीं और जो (**सुदानुः**) उत्तम दान देने वाला (**उग्रान्**) कठिन स्वभाव वालों को (**मक्षू**) शीघ्र (**न**) न (**अव, यासत्**) प्राप्त करे उनका (**चित्**) शीघ्र (**मह्ना**) महत्त्व से (**नू**) शीघ्र सत्कार करे, उनको यथावत् सब जानें॥५॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! इस जगत् में दो प्रकार के मनुष्य हैं- एक शक्ति और विद्या से हीन, दुष्ट कर्म करने वाले हैं, दूसरे शक्तिमान्, श्रेष्ठ कर्म धारण करने वाले हैं, उनमें जो दुष्कर्म करने वालों का सत्कार नहीं करते और श्रेष्ठों का सत्कार करते हैं, वे शीघ्र महान् चाहे हुए सुख को पाते हैं॥५॥

**पुनर्मनुष्याः किं कृत्वा कीदृशा भवेयुरित्याह॥**

फिर मनुष्य क्या करके कैसे हों, इस विषय को कहते हैं॥

**त इदुग्राः शवसा धृष्णुषेणा उभे युजन्त रोदसी सुमेके।**

**अध स्मैषु रोदसी स्वशोचिरामवत्सु तस्थौ न रोकः॥६॥**

**ते। इत्। उग्राः। शवसा। धृष्णुऽसेनाः। उभे इति। युजन्त। रोदसी इति। सुमेके इति सुऽमेके। अध। स्म। एषु। रोदसी। स्वऽशोचिः। आ। अमवत्ऽसु। तस्थौ। न। रोकः॥६॥**

**पदार्थः**-(**ते**) (**इत्**) एव (**उग्राः**) तेजस्विनः (**शवसा**) बलेन (**धृष्णुषेणाः**) धृष्णुर्दृढाः सेना येषां ते (**उभे**) (**युजन्त**) युञ्जते (**रोदसी**) द्यावापृथिव्योः (**सुमेके**) सुखरूपे (**अध**) अथ (**स्म**) एव (**एषु**) (**रोदसी**) द्यावापृथिव्योः (**स्वशोचिः**) स्वं शोचिस्तेजो यस्य (**आ**) (**अमवत्सु**) अमाः प्रशस्तानि गृहाणि विद्यन्ते येषु (**तस्थौ**) तिष्ठति (**न**) निषेधे (**रोकः**) शब्दायमानः॥६॥

**अन्वयः**-ये धृष्णुसेनाः शवसोग्रा उभे सुमेके रोदसी युजन्ताऽध स्मैष्वमवत्सु रोदसी स्वशोचिरा तस्थौ न रोकोऽस्ति ते इत्सुखिनो जायन्ते॥६॥

**भावार्थः**-ये मनुष्या विद्युतः पृथिव्याश्च विद्यां गृहीत्वा दृढसेना जायन्ते तेषां निरोधं कर्तुं शत्रवो न शक्नुवन्ति य उत्तमेषु गृहेषु निवसन्ति ते प्रकाशितप्रज्ञा जायन्ते॥६॥

**पदार्थः**-जो (**धृष्णुषेणाः**) दृढ सेना वाले (**शवसा**) बल से (**उग्राः**) तेजस्वी (**उभे**) दोनों (**सुमेके**) सुन्दर रूपवाले (**रोदसी**) आकाश और पृथिवी को (**युजन्त**) युक्त होते हैं (**अध**) तदनन्तर (**स्म**) ही (**एषु**) इन (**अमवत्सु**) प्रशंसित गृह वालों में (**रोदसी**) आकाश और पृथिवी के बीच (**स्वशोचिः**) अपनी दीप्ति वाला विद्युत् अग्नि (**आ, तस्थौ**) अच्छे प्रकार स्थित है और (**न**) नहीं (**रोकः**) शब्दायमान है (**ते**) वे सब (**इत्**) ही सुखी होते हैं॥६॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य बिजुली और पृथिवी की विद्या को लेकर दृढ़ सेनावाले होते हैं, उनको शत्रुजन रोक नहीं सकते तथा जो उत्तम घरों में निवास करते हैं, वे प्रकाशित बुद्धिवाले होते हैं॥६॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥



www.9009.co.in

**अ॒ने॒नो वो॑ मरुतो॒ यामो॑ अस्त्वन॒श्वश्चि॒द्यमज॒त्यर॑थी:।**

**अ॒न॒व॒सो अन॑भी॒शू र॑ज॒स्तूर्वि रोद॑सी प॒थ्या॑ याति॒ साध॑न्॥७॥**

**अ॒ने॒न:। व॒:। म॒रु॒त॒:। याम॑:। अ॒स्तु॒। अ॒न॒श्व:। चि॒त्। यम्। अज॑ति। अर॑थी:। अ॒न॒व॒स:। अ॒न॒भी॒शु॒:। र॒ज॒:ऽतू:। वि। रोद॑सी॒ इति॑। प॒थ्या॑:। याति॒। साध॑न्॥७॥**

**पदार्थ:**-(**अनेन:**) अविद्यमानमेन: पापं यस्मिँस्तत् (**व:**) युष्माकम् (**मरुत:**) मनुष्या: (**याम:**) यान्ति यस्मिन्त्स याम: प्रहर: (**अस्तु**) (**अनश्व:**) अविद्यमाना अश्वा यस्य स: (**चित्**) अपि (**यम्**) (**अजति**) प्रक्षिपति (**अरथी:**) अविद्यमानरथ: (**अनवस:**) अविद्यमानमवोऽन्नं यस्य स:। **अव इत्यन्ननाम।** (निघं०२.७) (**अनभीशु:**) अविद्यमानावभीशू बलयुक्तौ बाहू यस्य स:। **अभीशू इति बहुनाम।** (निघं०२.४) (**रजस्तू:**) यो रज उदकं तौति वर्धयति स: (**वि**) (**रोदसी**) द्यावापृथिव्यो: (**पथ्या:**) पथिषु साध्वीर्गती: (**याति**) गच्छति (**साधन्**) साध्नुवन्॥७॥

**अन्वय:**-हे मरुतो! वोऽनेनोऽस्तु यो याम इवाऽनश्वोऽरथीरनवसोऽनभीशू रजस्तूश्चिद्यमजति रोदसी साधन् पथ्या वि याति तं यूयं स्वीकुरुत॥७॥

**भावार्थ:**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कार:। हे मनुष्या! यूयं पक्षपाताख्यं पापं विहाय निर्बलान् सततं रक्षित्वा भूगर्भविद्यां विद्युद्विद्यां च संसाध्य भूम्युदकान्तरिक्षस्थान् मार्गानुत्तमैर्यानैर्गत्वाऽऽगच्छत॥७॥

**पदार्थ:**-हे (**मरुत:**) मनुष्यो! (**व:**) तुम्हारा चलन (**अनेन:**) निष्पाप (**अस्तु**) हो और (**याम:**) जिसमें जाते हैं उस प्रहर के समान जो (**अनश्व:**) ऐसा है कि जिसके घोड़े नहीं हैं (**अरथी:**) रथ नहीं हैं (**अनवस:**) अन्न जिसके नहीं है और (**अनभीशु:**) बलयुक्त बाहू नहीं है तथा जो (**रजस्तू:**) जल को बढ़ाता है वह (**चित्**) निश्चय के साथ (**यम्**) जिसको (**अजति**) प्रक्षिप्त करता फेंकता है वा (**रोदसी**) आकाश और पृथिवी के बीच निरन्तर (**साधन्**) साधता हुआ (**पथ्या:**) मार्गों में उत्तम गतियों को (**वि, याति**) विशेषता से जाता है, उसको तुम स्वीकार करो॥७॥

**भावार्थ:**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! तुम पक्षपातरूपी पाप को छोड़ के निर्बलों की निरन्तर रक्षा कर भूगर्भविद्या और विद्युत् विद्या को अच्छे प्रकार सिद्ध कर भूमि और उदक तथा अन्तरिक्ष के मार्गों को उत्तम यानों से जाकर आओ॥७॥

**कै रक्षणे कृते भयं न विद्यत इत्याह॥**

किन से रक्षा किये जाने पर भय नहीं है, इस विषय को कहते हैं॥

**नास्य व॒र्ता न त॑रु॒ता न्व॑स्ति॒ मरु॑तो॒ यमव॑थ॒ वाज॑साता॒।**

**तो॒के वा॒ गोषु॒ तन॑ये॒ यमप्सु स व्र॒जं दर्ता॒ पार्ये॒ अध॒ द्यो:॥८॥**

**न। अ॒स्य॒। व॒र्ता। न। त॒रु॒ता। नु। अ॒स्ति॒। मरु॑त:। यम्। अव॑थ। वाज॑ऽसातौ। तो॒के। वा॒। गोषु॑। तन॑ये। यम्। अ॒प्ऽसु। स:। व्र॒जम्। दर्ता॑। पार्ये॑। अध॑। द्यो:॥८॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**न**) (**अस्य**) (**वर्त्ता**) वर्त्तयिता (**न**) (**तरुता**) उल्लङ्घयिता (**नु**) सद्यः (**अस्ति**) (**मरुतः**) उत्तमा मनुष्याः (**यम्**) (**अवथ**) रक्षथ (**वाजसातौ**) (**तोके**) अपत्ये (**वा**) (**गोषु**) गवादिषु पशुषु पृथिवीविभागेषु वा (**तनये**) सुकुमारे (**यम्**) (**अप्सु**) उदकेषु (**सः**) (**व्रजम्**) मेघम् (**दर्त्ता**) विदारकः (**पार्ये**) पारयितव्ये (**अध**) अथ (**द्योः**) प्रकाशस्य॥८॥

**अन्वयः**-हे मरुतो विद्वांसो! यूयं वाजसातौ यं गोष्वप्सु तोके वा तनये यमवथास्य कोऽपि वर्त्ता नास्ति कोऽपि तरुता नास्ति सोऽध पार्य्ये द्योः व्रजमिव शत्रुसेनाया दर्त्ता न्वस्ति॥८॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! येषां विद्वांसो रक्षकाः स्युस्तेषां कुतश्चिद्भयं नाप्नोति यथा सूर्याद् वृष्टिर्भूत्वा जगन्निर्भयं जायते तथैव धार्मिकविद्वत्सङ्गात् सर्वं राष्ट्रमभयं भवति॥८॥

**पदार्थः**-हे (**मरुतः**) विद्वानो! तुम (**वाजसातौ**) अन्नादि पदार्थों के विभाग में (**यम्**) जिसको (**गोषु**) गौ आदि पशु वा पृथिवी विभागों वा (**अप्सु**) जलों वा (**तोके**) सन्तान (**वा**) वा (**तनये**) सुकुमार इन सब में (**यम्**) जिसकी (**अवथ**) रक्षा करते हो (**अस्य**) इस व्यवहार का कोई (**वर्त्ता**) वर्त्ताव करने और कोई (**न**) नहीं है और कोई (**तरुता**) उक्त व्यवहार का उल्लङ्घन करने वाला (**न**) नहीं (**अस्ति**) है (**सः**) वह (**अध**) इसके अनन्तर (**पार्य्ये**) पार करने योग्य व्यवहार में (**द्योः**) प्रकाश के (**व्रजम्**) मेघ के समान शत्रुसेना को (**दर्त्ता, नु**) शीघ्र विदीर्ण करने वाला है॥८॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जिनके विद्वान् जन रक्षा करने वाले हों, उनको कहीं से भय नहीं प्राप्त होता, जैसे सूर्य से वर्षा होकर जगत् निर्भय होता है, वैसे ही धार्मिक विद्वानों के सङ्ग से समस्त राज्य निर्भय होता है॥८॥

**पुनर्मनुष्याः कस्मै किं धृत्वा किं कुर्य्युरित्याह॥**

फिर मनुष्य किसके लिये क्या धारण करके क्या करें, इस विषय को कहते हैं॥

**प्र चित्रमर्कं गृणते तुराय मारुताय स्वतवसे भरध्वम्।**
**ये सहांसि सहसा सहन्ते रेजते अग्ने पृथिवी मखेभ्यः॥ ९॥**

**प्र। चित्रम्। अर्कम्। गृणते। तुराय। मारुताय। स्वऽतवसे। भरध्वम्। ये। सहांसि। सहन्ते। रेजते। अग्ने। पृथिवी। मखेभ्यः॥ ९॥**

**पदार्थः**-(**प्र**) (**चित्रम्**) अद्भुतम् (**अर्कम्**) अन्नं वज्रं वा। **अर्क इत्यन्ननाम।** (निघं०२.७) **वज्र नाम च।** (निघं०२.२०) (**गृणते**) स्तुवते (**तुराय**) क्षिप्रकारिणे (**मारुताय**) मनुष्याणामस्मै (**स्वतवसे**) स्वं स्वकीयं तवो बलं यस्य तस्मै (**भरध्वम्**) (**ये**) (**सहांसि**) बलानि (**सहसा**) बलेनोत्साहेन वा (**सहन्ते**) (**रेजते**) कम्पते (**अग्ने**) विद्वन् (**पृथिवी**) भूमिः (**मखेभ्यः**) सङ्ग्रामादिभ्यः सङ्गन्तव्येभ्यः। **मख इति यज्ञनाम।** (निघं०३.१७)॥९॥

**अन्वयः**-हे विद्वांसो! ये सहसा सहांसि सहन्ते तेभ्यो यूयं चित्रमर्कं प्र भरध्वम्। हे अग्ने विद्वन्! यथा मखेभ्यः पृथिवी रेजते तथा स्वतवसे तुराय मारुताय गृणते विदुषे चित्रमर्कं भर॥९॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यथा चलन्ती भूमिर्यज्ञसामग्रीं जनयति तथैव महद्भ्यः शूरवीरेभ्यो विद्वद्भ्योऽन्नादिकं शस्त्रास्त्रसमूहं च तद्विद्यां च सततमुन्नयतैवं सत्यसह्यानपि शत्रून् सोढुं पराजेतुं वा सामर्थं जायत इति वित्त॥९॥

**पदार्थः**-हे विद्वानो! **(ये)** जो **(सहसा)** बल वा उत्साह से **(सहांसि)** बलों को **(सहन्ते)** सहते हैं उनके लिये तुम **(चित्रम्)** अद्भुत **(अर्कम्)** अन्न वा वज्र को **(प्र, भरध्वम्)** अच्छे प्रकार धारण करो हे **(अग्ने)** विद्वन्! जैसे **(मखेभ्यः)** सङ्ग्राम आदि जो सङ्ग करने करने योग्य हैं उनके लिये **(पृथिवी)** भूमि **(रेजते)** कम्पित होती है तथा **(स्वतवसे)** अपने बल से युक्त **(तुराय)** शीघ्रता करने और **(मारुताय)** मनुष्यों के सहयोगी **(गृणते)** स्तुति करने वाले विद्वान् के लिये अद्भुत अन्न वा व्रज को धारण करो॥९॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जैसे चलती हुई भूमि यज्ञसामग्री को उत्पन्न करती है, वैसे ही बड़े-बड़े शूरवीर विद्वानों के लिये अन्नादि पदार्थ और अस्त्र-शस्त्र समूह तथा उनकी विद्या की निरन्तर उन्नति करो, ऐसा होने से योग्य शत्रुओं को सहने और पराजय करने का सामर्थ्य उत्पन्न होता है, यह जानो॥९॥

**पुनः किंवत् कीदृशाः शूरवीराः सम्पादनीया इत्याह॥**

फिर किसके तुल्य कैसे शूरवीर सिद्ध करने चाहियें, इस विषय को कहते हैं॥

**त्विषीमन्तो अध्वरस्येव दिद्युत् तृषुच्यवसो जुह्वो३ नाग्नेः।**

**अर्चत्रयो धुनयो न वीरा भ्राजज्जन्मानो मरुतो अधृष्टाः॥१०॥**

**त्विषिऽमन्तः। अध्वरस्यऽइव। दिद्युत्। तृषुऽच्यवसः। जुह्वः। न। अग्नेः। अर्चत्रयः। धुनयः। न। वीराः। भ्राजत्ऽजन्मानः। मरुतः। अधृष्टाः॥१०॥**

**पदार्थः**-**(त्विषीमन्तः)** विद्याविनयादिप्रकाशयुक्ताः **(अध्वरस्येव)** अहिंसामयस्य यज्ञस्येव **(दिद्युत्)** प्रकाशः **(तृषुच्यवसः)** तृषु क्षिप्रं ये च्यवन्ते गच्छन्ति **(जुह्वः)** जुहोति याभिस्ताः **(न)** इव **(अग्नेः)** पावकस्य **(अर्चत्रयः)** अर्चकाः **(धुनयः)** कम्पयन्तः **(न)** इव **(वीराः)** **(भ्राजज्जन्मानः)** भ्राजद्देदीप्यमानं जन्म येषां ते **(मरुतः)** वायुवद्बलिष्ठा मनुष्याः **(अधृष्टाः)** शत्रुभिरधर्षणीयाः॥१०॥

**अन्वयः**-येऽध्वरस्येव जुह्वो न तृषुच्यवसोऽग्नेरर्चत्रयो धुनयो न त्विषीमन्तो भ्राजज्जन्मानोऽधृष्टा मरुतो वीरा दिद्युदिव वर्त्तमानाः स्युस्तैरेव विजयं प्राप्नुवन्तु॥१०॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। हे राजादयो जना! यथाऽध्वरस्य मध्ये वर्त्तमाना ज्वाला सद्योऽन्तरिक्षाय गच्छति तथा शिक्षाया मध्ये वर्त्तमाना जनाः सद्यो विजयाय गन्तुं शक्नुवन्ति यथा जुहूभिरग्निः प्रदीप्यते तथा शिक्षासत्काराभ्यां वीरसेना प्रदीपनीया यथाऽग्नेर्ज्वालाः शब्दाश्च प्रभवन्ति तथैव भवतां सेनायाः प्रकाशाः शब्दाश्च महान्तो भवेयुः॥१०॥



www.9009.co.in

**पदार्थ:**-जो **(अध्वरस्येव)** अहिंसामय यज्ञ के समान वा **(जुह्व:)** जिनसे हवन करते उनके **(न)** समान **(तृषुच्यवस:)** जो शीघ्र जाने वाले **(अग्ने:)** अग्नि के **(अर्चत्रय:)** सत्कारकर्त्ता **(धुनय:)** कंपते हुए पदार्थों के **(न)** समान **(त्विषीमन्त:)** विद्या विनयादि के प्रकाश से युक्त **(भ्राजज्जन्मान:)** देदीप्यमान जन्म है जिनका तथा **(अधृष्टा:)** जो शत्रुओं से धृष्टता को नहीं प्राप्त होते **(मरुत:)** वे पवन के समान बली **(वीरा:)** वीर **(दिद्युत्)** प्रकाश के समान वर्त्तमान हों, उन्हीं से विजय को प्राप्त होओ॥१०॥

**भावार्थ:**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे राजा आदि जनो! जैसे यज्ञ के बीच वर्त्तमान लपट शीघ्र ही अन्तरिक्ष को जाती है, वैसे शिक्षा के बीच वर्त्तमान जन शीघ्र विजय के लिये जा सकते हैं, जैसे जुहूओं से अग्नि प्रदीप्त की जाती है, वैसे शिक्षा और सत्कार से वीरों की सेना को प्रदीप्त करनी चाहिये, जैसे अग्नि की लपटें और शब्द होते हैं, वैसे ही तुम्हारी सेना के प्रकाश और शब्द बहुत हों॥१०॥

**पुनर्मनुष्यै: कै: सह कीदृशो जनो राज्याऽधिकारी कर्त्तव्य इत्याह॥**

फिर मनुष्यों को किनके साथ कैसा जन राज्य का अधिकारी करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**तं वृधन्तं मारुतं भ्राजदृष्टिं रुद्रस्य सूनुं हवसा विवासे।**

**दिव: शर्धाय शुचयो मनीषा गिरयो नाप उग्रा अस्पृध्रन्॥११॥८॥**

**तम्। वृधन्तम्। मारुतम्। भ्राजत्ऽऋष्टिम्। रुद्रस्य। सूनुम्। हवसा। आ। विवासे। दिव:। शर्धाय। शुचय:। मनीषा:। गिरय:। न। आप:। उग्रा:। अस्पृध्रन्॥११॥**

**पदार्थ:**-**(तम्)** **(वृधन्तम्)** वर्धमानं वर्धयन्तं वा **(मारुतम्)** मरुतामिमम् **(भ्राजदृष्टिम्)** भ्राजद् ऋष्टि: सम्प्रेक्षणं यस्य तम् **(रुद्रस्य)** कृतचतुश्चत्वारिंशद्वर्षब्रह्मचर्य्यस्य **(सूनुम्)** पुत्रम् **(हवसा)** आदानेन **(आ)** **(विवासे)** सेवे **(दिव:)** कमनीयस्य **(शर्धाय)** बलाय **(शुचय:)** पवित्रा: **(मनीषा:)** मनस्विन: **(गिरय:)** मेघा: **(न)** इव **(आप:)** जलानि **(उग्रा:)** तेजस्विन: **(अस्पृध्रन्)** स्पर्द्धन्ताम्॥११॥

**अन्वय:**-ये शुचयो मनीषा उग्रा गिरय आपो न दिव: शर्धायास्पृध्रंस्तैस्सह वृधन्तं मारुतं भ्राजदृष्टिं रुद्रस्य तं सूनुं हवसाऽहमा विवासे॥११॥

**भावार्थ:**-अत्रोपमावाचकलुप्तोपमालङ्कारौ। ये मनुष्या मेघवदुन्नता: प्रजापालका जलवत्पोषका: पवित्राशयास्तेजस्विन: कमनीयस्य बलस्य वर्धका: स्युस्तैस्सह यदि राजा राज्यशासनं कुर्यात्तर्हि कुत्रापि पराजयोऽपकीर्त्तिश्च न जायेतेति॥११॥

अत्र मरुद्गुणवद्विद्वद्वीरपुरुषगुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति षट्षष्टितमं सूक्तमष्टमो वर्गश्च समाप्त:॥**

**पदार्थ:**-जो **(शुचय:)** पवित्र **(मनीषा:)** मनस्वी अर्थात् उत्साही मन वाले **(उग्रा:)** तेजस्वी **(गिरय:)** मेघ और **(आप:)** जलों के **(न)** समान **(दिव:)** मनोहर पदार्थ के **(शर्धाय)** बल के लिये



www.9009.co.in

**(अस्पृध्रन्)** स्पर्द्धा करें उनके साथ **(वृधन्तम्)** आप बढ़ते वा दूसरों को बढ़ाते हुए **(मारुतम्)** पवनों की विद्या जानने वाले **(भ्राजदृष्टिम्)** प्रकाशमान दृष्टियुक्त **(रुद्रस्य)** किया है चवालीस वर्ष पर्य्यन्त ब्रह्मचर्य्य जिसने उसके **(तम्)** उस **(सुनूम्)** पुत्र को **(हवसा)** लेने के व्यवहार से मैं **(आ, विवासे)** सेवता हूं॥११॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमा और वाचकलुप्तोपमालङ्कार हैं। जो मनुष्य मेघ के समान उन्नति करने, प्रजा के पालने, जल के समान पुष्टि करने वाले, पवित्र आशययुक्त, तेजस्वी और मनोहर बल के बढ़ाने वाले हों, उनके साथ यदि राजा राज्यशिक्षा करे तो कहीं पराजय और अपकीर्ति न हो॥११॥

इस सूक्त में पवनों के गुणों के समान विद्वानों और वीरों के गुणों का वर्णन होने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह छियासठवां सूक्त और आठवां वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

**अथैकादशर्चस्य सप्तषष्टितमस्य सूक्तस्य भरद्वाजो बार्हस्पत्य ऋषिः। मित्रावरुणौ देवते। १, २,९ स्वराट् पङ्क्तिः। १० भुरिक् पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः। ३, ७, ८, ११ निचृत्त्रिष्टुप्। ४, ५ त्रिष्टुप्। ६ विराट्त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः॥**

***अथ मनुष्यैः केषां सत्कारः कर्त्तव्य इत्याह॥***

अब ग्यारह ऋचावाले सड़सठवें सूक्त का आरम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में मनुष्यों को किनका सत्कार करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**विश्वे॑षां वः स॒तां ज्येष्ठ॑तमा गी॒र्भिर्मि॒त्रावरु॑णा वावृ॒धध्यै॑।**

**सं या र॒श्मेव॑ य॒मतु॒र्यमि॑ष्ठा द्वा जनाँ॒ अस॑मा बा॒हुभि॒ः स्वैः॥ १॥**

**विश्वे॑षाम्। व॒ः। स॒ताम्। ज्येष्ठ॑ऽतमा। गी॒ःऽभिः। मि॒त्रावरु॑णा। व॒वृ॒धध्यै॑। सम्। या। र॒श्माऽइ॑व। य॒मतु॑ः। यमि॑ष्ठा। द्वा। जना॑न्। अस॑मा। बा॒हुऽभि॑ः। स्वैः॥ १॥**

**पदार्थः**-(**विश्वेषाम्**) सर्वेषाम् (**वः**) युष्माकम् (**सताम्**) वर्त्तमानानां सत्पुरुषाणां मध्ये (**ज्येष्ठतमा**) अतिशयेन ज्येष्ठौ (**गीर्भिः**) वाग्भिः (**मित्रावरुणा**) प्राणोदानाविवऽध्यापकोपदेशकौ (**वावृधध्यै**) अतिशयेन वर्धितुम् (**सम्**) (**या**) यौ (**रश्मेव**) किरणवद्रज्जुवद्वा (**यमतुः**) संयच्छतः (**यमिष्ठा**) अतिशयेन यन्तारौ (**द्वा**) द्वौ (**जनान्**) (**असमा**) अतुल्यौ सर्वेभ्योऽधिकौ (**बाहुभिः**) भुजैः (**स्वैः**) स्वकीयैः॥ १॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! विश्वेषां सतां वो या ज्येष्ठतमा यमिष्ठा असमा मित्रावरुणा वावृधध्यै जनान् रश्मेव गीर्भिः संयमतुर्द्वा स्वैर्बाहुभिर्जनान् रश्मेव सं यमतुस्तावध्यापकोपदेशकौ यूयं सदा सत्कुरुत॥ १॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! ये विद्यासुशीलतादिगुणैः श्रेष्ठा अधर्मान्निवर्त्य धर्मे प्रवर्त्तयितारोऽध्यापनोपदेशाभ्यां सूर्यवत्प्रज्ञाप्रकाशका भवेयुस्तेषामेव सत्कारं सदैव कुरुत॥ १॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! (**विश्वेषाम्**) सब (**सताम्**) सज्जन जो (**वः**) आप लोग उनमें (**या**) जो (**ज्येष्ठतमा**) अतीव ज्येष्ठ (**यमिष्ठा**) अतीव नियम को वर्त्तने वाले (**असमा**) अतुल्य अर्थात् सब से अधिक (**मित्रावरुणा**) प्राण और उदान के समान अध्यापक और उपदेशक (**वावृधध्यै**) अत्यन्त बढ़ने के लिये (**जनान्**) मनुष्यों को (**रश्मेव**) किरण वा रज्जु के के समान (**गीर्भिः**) वाणियों से (**सम्, यमतुः**) नियमयुक्त करते हैं और (**द्वा**) दोनों सज्जन (**स्वैः**) अपनी (**बाहुभिः**) भुजाओं से मनुष्यों को किरण वा रस्सी के समान नियम में लाते हैं, उन अध्यापक और उपदेशकों का सदैव सत्कार करो॥ १॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जो विद्या और उत्तम शील आदि गुणों से श्रेष्ठ, अधर्म से निवृत्त कर धर्म के बीच प्रवृत्त कराने वाले, अध्यापन और उपदेश से सूर्य के समान उत्तम बुद्धि के प्रकाश करने वाले हों, उन्हीं का सदा सत्कार करो॥१॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**इयं मद्वां प्र स्तृणीते मनीषोप प्रिया नमसा बर्हिरच्छ।**

**यन्तं नो मित्रावरुणावधृष्टं छर्दिर्यद्वां वरूथ्यं सुदानू॥२॥**

**इयम्। मत्। वाम्। प्र। स्तृणीते। मनीषा। उप। प्रिया। नमसा। बर्हिः। अच्छ। यन्तम्। नः। मित्रावरुणौ। अधृष्टम्। छर्दिः। यत्। वाम्। वरूथ्यम्। सुदानू इति सुऽदानू॥२॥**

**पदार्थः**-(**इयम्**) (**मत्**) मम सकाशात् (**वाम्**) युवयोः (**प्र**) (**स्तृणीते**) आच्छादयति प्राप्नोति वा (**मनीषा**) विद्यासुशिक्षायुक्ता प्रज्ञा (**उप**) (**प्रिया**) प्रियौ कमनीयौ (**नमसा**) सत्कारेणान्नाद्येन सह वा (**बर्हिः**) अतीवविशालम् (**अच्छ**) सम्यक् (**यन्तम्**) प्राप्नुवन्तम् (**नः**) अस्माकम् (**मित्रावरुणौ**) अध्यापकोपदेशकौ (**अधृष्टम्**) शत्रुभिरधर्षितम् (**छर्दिः**) गृहम् (**यत्**) (**वाम्**) युवयोः (**वरूथ्यम्**) वरूथे गृहे भवम् (**सुदानू**) शोभनानि दानानि ययोस्तौ॥२॥

**अन्वयः**-हे सुदानू प्रिया मित्रावरुणौ! वां नमसेयं मनीषा मत्प्र स्तृणीते यद्वां वरूथ्यं बर्हिरच्छ यन्तं नोऽधृष्टं छर्दिरुप स्तृणीते सा सर्वैः सङ्ग्राह्या॥२॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! ययोः सङ्गेनास्मानुत्तमे प्रज्ञागृहे प्राप्नुतस्तौ सदैव यूयं मन्यध्वम्॥२॥

**पदार्थः**-हे (**सुदानू**) सुन्दर दान देने वालो! (**प्रिया**) मनोहर (**मित्रावरुणौ**) अध्यापक और उपदेशको! (**वाम्**) तुम दोनों की (**नमसा**) सत्कार वा अन्नादिकों के साथ (**इयम्**) यह (**मनीषा**) विद्या और उत्तम शिक्षा युक्त बुद्धि (**मत्**) मुझ से (**प्र, स्तृणीते**) अच्छे प्रकार सर्व विषयों को आच्छादित करती है तथा (**यत्**) जो (**वाम्**) तुम दोनों के (**वरूथ्यम्**) घर के बीच उत्पन्न हुए (**बर्हिः**) अतीव विशाल तथा (**अच्छ**) अच्छे प्रकार (**यन्तम्**) प्राप्त होते हुए और (**नः**) हमारे (**अधृष्टम्**) शत्रुओं की न धृष्टता को प्राप्त हुए (**छर्दिः**) घर को (**उप**) समीप से ढांपती है, वह सब को अच्छे प्रकार ग्रहण करने योग्य है॥२॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जिनके सङ्ग से हमको उत्तम बुद्धि और घर प्राप्त होते हैं, उनको सदैव तुम मानो॥२॥

**पुनः कौ सततं सत्करणीयावित्याह॥**

फिर कौन निरन्तर सत्कार करने योग्य हैं, इस विषय को कहते हैं॥

**आ यातं मित्रावरुणा सुशस्त्युप प्रिया नमसा हूयमाना।**



www.9009.co.in

**सं यावप्नःस्थो अपसेव जनाञ्छ्रुधीयतश्चिद्यतथो महित्वा॥ ३॥**

**आ। यातम्। मित्रावरुणा। सुऽशस्ति। उप। प्रिया। नमसा। हूयमाना। सम्। या। अप्नःऽस्थः। अपसाऽइव। जनान्। श्रुधिऽयतः। चित्। यतथः। महिऽत्वा॥ ३॥**

**पदार्थः**-(**आ**) समन्तात् (**यातम्**) आगच्छतम् (**मित्रावरुणा**) प्राणोदानवत्प्रियौ (**सुशस्ति**) सुष्ठु प्रशंसनम् (**उप**) (**प्रिया**) यौ सर्वान् प्रीणीतस्तौ (**नमसा**) सत्कारेण (**हूयमाना**) आहूयमानौ (**सम्**) (**यौ**) (**अप्नःस्थः**) अपत्यस्थः (**अपसेव**) कर्मणेव (**जनान्**) (**श्रुधीयतः**) आत्मनः श्रुधिमन्नमिच्छतः (**चित्**) अपि (**यतथः**) (**महित्वा**) महिम्ना॥ ३॥

**अन्वयः**-हे प्रिया मित्रावरुणा नमसा हूयमाना! युवां जनानुपा यातं सुशस्ति प्राप्नुतं यौ चिन्महित्वा यतथश्श्रुधीयतस्तावप्नःस्थोऽपसेवास्माञ्जनान् समुपायातम्॥ ३॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यूयमध्यापकोपदेशकौ सदा सत्कारेणाहूय सम्पूज्य विद्यासत्योपदेशौ जगति प्रसारयत। हे अध्यापकोपदेशका! यूयं प्रयत्नेन मातापितृवन्मनुष्यान् सुशिक्ष्य विद्यावतः सर्वोपकारकान् सम्पादयत॥ ३॥

**पदार्थः**-हे (**प्रिया**) सब को तृप्त करने वाले (**मित्रावरुणा**) प्राण और उदान के समान प्रिय पुरुषो! (**नमसा**) सत्कार से (**हूयमाना**) बुलाते हुए तुम दोनों (**जनान्**) मनुष्य के (**उप, आ, यातम्**) समीप आओ तथा (**सुशस्ति**) सुन्दर प्रशंसा को प्राप्त होओ (**यौ**) जो (**चित्**) निश्चय से (**महित्वा**) बड़प्पन से (**यतथः**) यत्न करते हैं वा (**श्रुधीयतः**) अपने अन्न की इच्छा करते हैं, वे दोनों (**अप्नःस्थः**) सन्तानों में ठहरने वाला (**अपसेव**) कर्म से जैसे वैसे हम लोगों को (**सम्**) प्राप्त होवें॥ ३॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! तुम अध्यापक और उपदेशकों को सदा सत्कार से बुलाकर उनका सत्कार कर विद्या और सत्योपदेश को संसार के बीच विस्तारो। हे अध्यापक और उपदेशको! तुम प्रयत्न से माता और पिता के समान मनुष्यों को उत्तम शिक्षा देकर विद्यावान् सर्वोपकार करने वालों को सिद्ध करो॥ ३॥

**पुनः सर्वैर्मनुष्यैः कौ पूजनीयावित्याह॥**

फिर सब मनुष्यों को कौन सत्कार करने योग्य हैं, इस विषय को कहते हैं॥

**अश्वा न या वाजिना पूतबन्धू ऋता यद्गर्भमदितिर्भरध्यै।**

**प्र या महि महान्ता जायमाना घोरा मर्ताय रिपवे नि दीधः॥ ४॥**

**अश्वा। न। या। वाजिना। पूतबन्धू इति पूतऽबन्धू। ऋता। यत्। गर्भम्। अदितिः। भरध्यै। प्र। या। महि। महान्ता। जायमाना। घोरा। मर्ताय। रिपवे। नि। दीधरिति दीधः॥ ४॥**

**पदार्थः**-(**अश्वा**) तुरङ्गौ महान्तौ जनौ वा (**न**) इव (**या**) यौ (**वाजिना**) बहुवेगविज्ञानयुक्तौ (**पूतबन्धू**) पूताः पवित्रा बन्धवो ययोस्तौ (**ऋता**) सत्याचारौ (**यत्**) यम् (**गर्भम्**) (**अदितिः**) माता



www.9009.co.in

**(भरध्यै)** भर्तुम् **(प्र)** **(या)** यौ **(महि)** **(महान्ता)** महान्तौ पूजनीयौ **(जायमाना)** उत्पद्यमानौ **(घोरा)** भयङ्करौ **(मर्त्ताय)** मनुष्याय **(रिपवे)** शत्रवे **(नि)** **(दीधः)** नितरां कारागारे निदधाते॥४॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! या अश्वा न वाजिना पूतबन्धू ऋतादितिरिव महि यद्‌गर्भं भरध्यै प्रवर्त्तमानौ या महान्ता जायमाना रिपवे मर्त्ताय घोरा प्र णि दीधस्तौ स्वात्मवत् सत्कुरुत॥४॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! ये कुलीना महापक्षा विद्वद्भ्यां मातापितृभ्यामुत्पन्नाः सुशिक्षिता महाशया मातृवज्जनाननुकम्पमाना अध्यापनोपदेशाभ्यां सर्वानुपकुर्वाणा दुष्टानां निरुन्धाना विद्वांसः स्युस्तेषामेव सेवा सङ्गस्तेभ्य एवोपदेशाऽध्ययनौ च सततं कुरुत॥४॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(या)** जो **(अश्वा)** घोड़े वा महाशय जनों के **(न)** समान **(वाजिना)** बहुत वेग वा विज्ञानयुक्त **(पूतबन्धू)** पवित्र बन्धु वाले **(ऋता)** सत्य आचार के रखने वाले **(अदितिः)** माता के तुल्य **(महि)** महान् जन **(यत्)** जिस **(गर्भम्)** गर्भ को **(भरध्यै)** धारण करने को प्रवर्त्तमान वा **(या)** जो **(महान्ता)** महात्मा **(जायमाना)** उत्पन्न हुए **(रिपवे, मर्त्ताय)** शत्रुजन के लिये **(घोरा)** भयङ्कर **(प्र, णि, दीधः)** और कारागार में निरन्तर शत्रु जनों को डाल देते हैं, उनको अपने आत्मा के तुल्य सत्कार करो॥४॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जो कुलीन, जिनका महान् पक्ष, विद्वान् माता पिता से उत्पन्न हुए, उत्तम शिक्षायुक्त, महाशय, माता के तुल्य मनुष्यों पर कृपा करते, वा पढ़ाने और उपदेश करने से सब पर उपकार करते, तथा दुष्टों को रोकते हुए विद्वान् होते हैं, उन्हीं की सेवा, सङ्ग, उन्हीं से उपदेश और विद्या पढ़ना निरन्तर करो॥४॥

**पुनर्मनुष्यैः के सत्कर्त्तव्या इत्याह॥**

फिर मनुष्यों को कौन सत्कार करने योग्य हैं, इस विषय को कहते हैं॥

**विश्वे यद्वां मंहना मन्दमानाः क्षत्रं देवासो अदधुः सजोषाः।**

**परि यद्भूथो रोदसी चिदुर्वी सन्ति स्पशो अदब्धासो अमूराः॥५॥९॥**

**विश्वे। यत्। वाम्। मंहना। मन्दमानाः। क्षत्रम्। देवासः। अदधुः। सऽजोषाः। परि। यत्। भूथः। रोदसी इति। चित्। उर्वी इति। सन्ति। स्पशः। अदब्धासः। अमूराः॥५॥**

**पदार्थः**-**(विश्वे)** सर्वे **(यत्)** ये **(वाम्)** युवयोः **(मंहना)** सत्कर्त्तारः **(मन्दमानाः)** आनन्दन्तः प्राप्तसत्काराः स्तुवन्तो वा **(क्षत्रम्)** धनं राज्यं वा **(देवासः)** कामयमाना विद्वांसः **(अदधुः)** दधति **(सजोषाः)** समानप्रीतिसेविनः **(परि)** सर्वतः अपि [(³ात्) **(भूथः)** **(रोदसी)** **(चित्)** **(उर्वीः)** बहुपदार्थयुक्ते **(सन्ति)** **(स्पशः)** अविद्यान्धकारं बाधमाना विद्याप्रकाशं स्पर्शन्तः **(अदब्धासः)** अहिंसिता अहिंसका वा **(अमूराः)** मूढतादिदोषरहिताः॥५॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे अध्यापकोपदेशकौ! यद्यौ युवामुर्वी रोदसी इव भूथस्तयोर्वा संगेन यद्ये मंहना मन्दमानाः सजोषाः स्पशोऽदब्धासोऽमूरा विश्वे देवासः सन्ति त एव चित् क्षत्रं पर्यदधुस्तौ तान् युष्मान् सर्वे वयं सततं सत्कुर्याम॥५॥

**भावार्थः**-त एवाप्ता विद्वांसः सन्ति येषामध्यापनोपदेशसङ्गाः सद्यः सफला जायन्ते तेषां सङ्गेन हिंसादिदोषरहिता विद्वांसो भूत्वा पक्षपातं विहाय सर्वान् प्राणिनः स्वात्मवत्सुखयन्ति॥५॥

**पदार्थः**-हे अध्यापक और उपदेशको! **(यत्)** जो तुम दोनों **(उर्वी)** बहुत पदार्थों से युक्त **(रोदसी)** प्रकाश और पृथिवी के समान विद्या और क्षमा से युक्त **(भूथः)** होते हो उन **(वाम्)** तुम्हारे सङ्ग से **(यत्)** जो **(मंहना)** सत्कार करने वाले **(मन्दमानाः)** आनन्द वा सत्कार को प्राप्त वा स्तुति करते **(सजोषाः)** एकसी प्रीति को सेवने वाले **(स्पशः)** अविद्यान्धकार का विनाश करने और विद्याप्रकाश का स्पर्श करने वाले **(अदब्धासः)** हिंसा को न प्राप्त और हिंसा न करने वाले **(अमूराः)** मूढ़तादि दोषरहित **(विश्वे, देवासः)** समस्त कामना करते हुए विद्वान् जन **(सन्ति)** हैं, वे ही **(चित्)** निश्चित **(क्षत्रम्)** धन वा राज्य को **(परि, अदधुः)** सब ओर से धारण करते हैं, उनका वा उन तुम लोगों को सब हम लोग निरन्तर सत्कार करें॥५॥

**भावार्थः**-वे ही आप्त विद्वान् जन हैं जिनका पढ़ाना, उपदेश और सङ्ग शीघ्र सफल होता है, जिनके संग से हिंसा आदि दोषरहित विद्वान् होकर पक्षपात को छोड़ सब प्राणियों को अपने आत्मा के तुल्य सुख देते हैं॥५॥

**पुनः केऽत्र सङ्गन्तव्याः सुखवर्धकाश्च सन्तीत्याह॥**

फिर कौन सङ्ग करने योग्य और सुख के बढ़ाने वाले हैं, इस विषय को कहते हैं॥

**ता हि क्षत्रं धारयेथे अनु द्यून् दृंहेथे सानुमुपमादिव द्योः।**

**दृळ्हो नक्षत्र उत विश्वदेवो भूमिमातान्द्यां धासिनायोः॥६॥**

**ता। हि। क्षत्रम्। धारयेथे इति। अनु। द्यून्। दृंहेथे इति। सानुम्। उपमात्ऽइव। द्योः। दृळ्हः। नक्षत्रः। उत। विश्वदेवः। भूमिम्। आ। अतान्। द्याम्। धासिना। आयोः॥६॥**

**पदार्थः**-**(ता)** तौ **(हि)** यतः **(क्षत्रम्)** राज्यं धनं वा **(धारयेथे)** **(अनु)** **(द्यून्)** दिवसान् **(दृंहेथे)** वर्धयथः **(सानुम्)** शिखरम् **(उपमादिव)** **(द्योः)** सूर्यस्य **(दृळ्हः)** **(नक्षत्रः)** यो न क्षीयते **(उत)** उत **(विश्वदेवः)** विश्वेषां सर्वेषां देवः प्रकाशकः **(भूमिम्)** **(आ)** **(अतान्)** समन्तादतेयुः प्रकाशयेयुः **(द्याम्)** कमनीयां विद्याम् **(धासिना)** अन्नेन **(आयोः)** जीवनस्य॥६॥

**अन्वयः**-हे अध्यापकोपदेशकौ! यौ हि ता अनु द्यून् क्षत्रं धारयेथे द्योरुपमादिव सानुं दृंहेथे ययोः सङ्गेन विश्वदेवो दृळ्ह उत नक्षत्रः सन् भूमिं द्यां प्राप्य धासिनाऽऽयोर्वर्धकोऽस्ति तौ तञ्च य आऽतांस्ते सततं सुखिनो जायन्ते॥६॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-हे मनुष्या! येऽध्यापकोपदेशकाः प्रतिदिनं सूर्यवद्विद्याव्यवहारं सम्प्रकाश्य राज्यं धनमायुश्च वर्धयन्ति सर्वान् सुखे धारयन्ति यान् प्राप्य सर्वे जना विद्वांसो जायन्ते तत्सङ्गं सततं कुरुत॥६॥

**पदार्थः**-हे अध्यापक और उपदेशको! जो **(हि)** जिस कारण से हैं **(ता)** वे तुम दोनों **(अनु, द्यून्)** प्रतिदिन **(क्षत्रम्)** राज्य वा धन को **(धारयेथे)** धारण करते हो तथा **(द्योः)** सूर्य की **(उपमादिव)** उपमा से जैसे वैसे **(सानुम्)** शिखर को **(दृंहेथे)** बढ़ाते हो जिनके सङ्ग से **(विश्वदेवः)** सब का प्रकाश करने वाला **(दूळहः)** दृढ़ **(उत)** और **(नक्षत्रः)** जो नहीं नष्ट होता ऐसा होता हुआ **(भूमिम्)** भूमि और **(द्याम्)** मनोहर विद्या को प्राप्त होकर **(धासिना)** अन्न से **(आयोः)** जीवन को बढ़ाता है, उन पूर्वोक्त दोनों तथा उसको जो **(आ, अतान्)** सब ओर से प्रकाशित करें, वे निरन्तर सुखी होते हैं॥६॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो अध्यापक और उपदेशक प्रतिदिन सूर्य के समान विद्याव्यवहार को सम्यक् प्रकाशित कर राज्य, धन और आयु को बढ़ाते, सब को सुख की धारणा कराते, जिनको प्राप्त होकर सब जन विद्वान् होते हैं, उनका सङ्ग निरन्तर करो॥६॥

**पुनः के का इव मेधाविनौ विद्यार्थिनो धरन्तीत्याह॥**

फिर कौन किसके समान मेधावी विद्यार्थियों को धारण करते हैं, इस विषय को कहते हैं॥

**ता विग्रं धैथे जठरं पृणध्या आ यत्सद्म सभृतयः पृणन्ति।**

**न मृष्यन्ते युवतयोऽवाता वि यत्पयो विश्वजिन्वा भरन्ते॥७॥**

**ता। विग्रम्। धैथे इति। जठरम्। पृणध्यै। आ। यत्। सद्म। सऽभृतयः। पृणन्ति। न। मृष्यन्ते। युवतयः। अवाताः। वि। यत्। पयः। विश्वऽजिन्वा। भरन्ते॥७॥**

**पदार्थः**-**(ता)** तौ **(विग्रम्)** मेधाविनम्। **विग्र इति मेधाविनाम।** (निघं०१३.१५) **(धैथे)** धारयथः **(जठरम्)** उदरस्थमग्निम् **(पृणध्यै)** सुखयितुम् **(आ)** **(यत्)** याः **(सद्म)** **(सभृतयः)** समाना भर्त्तारो यासां ताः **(पृणन्ति)** **(न)** निषेधे **(मृष्यन्ते)** सहन्ते **(युवतयः)** प्राप्तयुवावस्थाः स्त्रियः **(अवाताः)** पतीनप्राप्ताः **(वि)** **(यत्)** याः **(पयः)** उदकम् **(विश्वजिन्वा)** विश्वपोषक। अत्र **संहितायामि**ति दीर्घः। **(भरन्ते)**॥७॥

**अन्वयः**-हे अध्यापकोपदेशकौ! यथाऽवाताः सभृतयो युवतयः समानान् पतीन् भरन्ते ता नापृणन्त्यन्याः सपत्नीर्न मृष्यन्ते यद्याः सद्म पृणन्ति यद्याः पय इव वि पृणन्ति तथा यौ युवां जठरं पृणध्यै विग्रं धैथे। हे विश्वजिन्वा! त्वं ता तौ च सततं सेवस्व॥७॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यथा समानगुणकर्मस्वभावरूपाः स्त्री-पुरुषा अत्यन्तप्रीत्या विवाहं कृत्वा कदाचिन्न विरुध्यन्ति तथैव विद्वांसो विद्यार्थिनश्च न विद्विषन्त्येवं प्रेम्णा सह वर्त्तमानास्सर्वे सदाऽऽनन्दिता जायन्ते॥७॥

**पदार्थः**-हे अध्यापक और उपदेशको! जैसे **(अवाताः)** पतियों को न प्राप्त हुई **(सभृतयः)** समान पतियों वाली **(युवतयः)** युवति स्त्रियाँ समान पतियों को **(भरन्ते)** धारण करतीं अर्थात् प्राप्त होतीं वे **(न)**



www.9009.co.in

नहीं **(आ, पृणन्ति)** पूरे सुख को प्राप्त होती क्योंकि और सौतें नहीं **(मृष्यन्ते)** सहती हैं **(यत्)** जो **(सदम्)** घर को सुखयुक्त करती हैं और **(यत्)** जो **(पयः)** जल के समान **(वि)** विविध प्रकार से सुख देती हैं तथा जो तुम दोनों **(जठरम्)** उदर में ठहरे हुए अग्नि को **(पृणध्यै)** सुखी करने के लिये **(विग्रम्)** बुद्धिमान् पुरुष को **(धैथे)** धारण करते हो। हे **(विश्वजिन्वा)** संसार की पुष्टि करने वाले! आप उन स्त्रियों तथा **(ता)** उन दोनों की निरन्तर सेवो॥७॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे समान गुण, कर्म, स्वभाव रूप स्त्री-पुरुष अत्यन्त प्रीति से विवाह कर कभी विरोध नहीं करते हैं, वैसे ही विद्वान् जन और विद्यार्थीजन विद्वेष नहीं करते हैं, ऐसे प्रेम के साथ वर्त्तमान सब सदैव आनन्दित होते हैं॥७॥

**पुनः केषां सङ्गेन जना विद्वांसो भवेयुरित्याह॥**

फिर किनके सङ्ग से जन विद्वान् हों, इस विषय को कहते हैं॥

**ता जिह्वया सदमेदं सुमेधा आ यद्वां सत्यो अरतिर्ऋते भूत्।**

**तद्वां महित्वं घृतान्नावस्तु युवं दाशुषे वि चयिष्टमंहः॥८॥**

**ता। जिह्वया। सदम्। आ। इदम्। सुऽमेधाः। आ। यत्। वाम्। सत्यः। अरतिः। ऋते। भूत्। तत्। वाम्। महिऽत्वम्। घृतऽअन्नौ। अस्तु। युवम्। दाशुषे। वि। चयिष्टम्। अंहः॥८॥**

**पदार्थः**-**(ता)** तौ **(जिह्वया)** वाचा **(सदम्)** सीदन्ति विद्वांसो यस्मिंस्तत्सत्यं वचः **(आ)** **(इदम्)** **(सुमेधाः)** उत्तमप्रज्ञः **(आ)** **(यत्)** यौ **(वाम्)** युवयोरुपदेशेन **(सत्यः)** सत्सु साधुः **(अरतिः)** सत्यमुपदेशं प्राप्तः सन् **(ऋते)** सत्ये धर्मे **(भूत्)** भवेत् **(तत्)** **(वाम्)** युवयोः **(महित्वम्)** महिमानम् **(घृतान्नौ)** बहुघृतान्नौ **(अस्तु)** **(युवम्)** **(दाशुषे)** दात्रे **(वि)** विगतार्थे **(चयिष्टम्)** चिनुतः **(अंहः)** पापम्॥८॥

**अन्वयः**-हे घृतान्नावध्यापकोपदेशकौ! वामुपदेशेन सुमेधा अरतिः सत्यो जिह्वयेदं सदं प्राप्य ऋत आ भूद्यद्यौ युवं दाशुषेंऽहो वि चयिष्टं तद्वां महित्वमस्तु ता वयं सतत सत्कुर्याम॥८॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! येषां सकाशाद्यूयं विद्या प्राप्नुतोपदेशं वा गृह्णीत तान् धन्यवादादिना सततं सत्कुरुत येषां सङ्गेन मनुष्याः सत्याचाराः सुज्ञा जायन्ते त एव महाशयाः सन्ति॥८॥

**पदार्थः**-हे **(घृतान्नौ)** बहुत घृत और अन्न वाले अध्यापक और उपदेशक जनो! **(वाम्)** तुम दोनों के उपदेश से **(सुमेधाः)** उत्तम जिसकी बुद्धि वह **(अरतिः)** सत्य उपदेश को प्राप्त होता हुआ **(सत्यः)** सज्जनों में उत्तम जन **(जिह्वया)** वाणी से **(आ, इदम्, सदम्)** सब ओर से जिसमें विद्वान् जन स्थिर होते हैं, उस सत्य वचन को पाकर **(ऋते)** सत्य धर्म में **(आ, भूत्)** प्रसिद्ध होवे **(यत्)** जो **(युवम्)** आप दोनों **(दाशुषे)** दानशील पुरुष के लिये **(अंहः)** पाप को **(वि, चयिष्टम्)** विगत चयन करते हैं **(तत्)** वह **(वाम्)** तुम दोनों की **(महित्वम्)** महिमा **(अस्तु)** हो **(ता)** उन तुम दोनों का हम लोग निरन्तर सत्कार करें॥८॥



www.9009.co.in

**भावार्थ:**-हे मनुष्यो! जिनकी उत्तेजना से तुम लोग विद्या को प्राप्त होओ वा उपदेश ग्रहण करो उनका धन्यवाद आदि से निरन्तर सत्कार करो, जिनके सङ्ग से मनुष्य सत्य आचरण वाले उत्तम ज्ञाता होते हैं, वे ही महाशय हैं॥८॥

**के विदुषां प्रिया अप्रिया वा भवन्तीत्याह॥**

कौन विद्वानों के प्रिय वा अप्रिय होते हैं, इस विषय को कहते हैं॥

**प्र यद्वां मित्रावरुणा स्पूर्धन् प्रिया धाम युवधिता मिनन्ति।**

**न ये देवास ओहसा न मर्ता अयज्ञसाचो अप्यो न पुत्राः॥९॥**

**प्र। यत्। वाम्। मित्रावरुणा। स्पूर्धन्। प्रिया। धाम। युवऽधिता। मिनन्ति। न। ये। देवासः। ओहसा। न। मर्ताः। अयज्ञऽसाचः। अप्यः। न। पुत्राः॥९॥**

**पदार्थः**-(**प्र**) (**यत्**) ये (**वाम्**) युवयोः (**मित्रावरुणा**) प्राणोदानवद्वर्त्तमानौ (**स्पूर्धन्**) स्पर्द्धमानाः (**प्रिया**) प्रियाणि (**धाम**) दधति येषु तानि (**युवधिता**) युवयोर्हितानि (**मिनन्ति**) हिंसन्ति (**न**) निषेधे (**ये**) (**देवासः**) विद्वांसः (**ओहसा**) प्राप्तेन बलेन वेगन वा (**न**) निषेधे (**मर्त्ताः**) मनुष्याः (**अयज्ञसाचः**) ये यज्ञेन न सचन्ति सम्बध्नन्ति ते (**अप्यः**) अप्सु सत्कर्मसु भवः (**न**) इव (**पुत्राः**)॥९॥

**अन्वयः**-हे मित्रावरुणा! यद्ये स्पूर्द्धन् वां प्रिया धाम युवधिता न प्रमिणन्ति ये देवास ओहसाऽयज्ञसाचो मर्त्ताश्च न मिनन्ति तेऽप्यो न पुत्रा इव जायन्ते॥९॥

**भावार्थः**-ये मनुष्या अध्यापकोपदेशकानामप्रियं नाचरन्ति ते सत्पुत्रवद्भवन्ति ये चाऽप्रियमाचरन्ति ते शत्रुवज्जायन्ते॥९॥

**पदार्थः**-हे (**मित्रावरुणा**) प्राण और उदान के समान अध्यापक और उपदेशको! (**यत्**) जो (**स्पूर्द्धन्**) स्पर्द्धा करते हुए जन (**वाम्**) तुम दोनों के (**प्रिया**) प्रिय (**धाम**) धाम जिनमें स्थापन करते हैं उन (**युवधिता**) तुम दोनों का हित करने वालों को (**न**) न (**प्र, मिनन्ति**) नष्ट करते हैं वा (**ये**) जो (**देवासः**) विद्वान् जन (**ओहसा**) प्राप्तबल वा वेग से (**अयज्ञसाचः**) जो यज्ञ से सम्बन्ध नहीं करते वे (**मर्त्ताः**) मनुष्य (**न**) नहीं नष्ट करते हैं, वे (**अप्यः**) कर्मों में प्रसिद्ध के (**न**) समान और (**पुत्राः**) पुत्रों के समान होते हैं॥९॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य अध्यापक और उपदेशकों का अप्रिय आचरण नहीं करते हैं, वे सत्पुत्रों के समान होते हैं और जो अप्रिय का आचरण करते हैं, वे शत्रुओं के तुल्य होते हैं॥९॥

**पुनः के तिरस्करणीयाः सत्कर्त्तव्याश्चेत्याह॥**

फिर कौन तिरस्कार करने योग्य और सत्कार करने योग्य हैं, इस विषय को कहते हैं॥

**वि यद्वाचं कीस्तासो भरन्ते शंसन्ति के चिन्निविदो मनानाः।**

**आद्वां ब्रवाम सत्यान्युक्था नकिर्देवेभिर्यतथो महित्वा॥१०॥**



www.9009.co.in

**वि। यत्। वाच॑म्। की॒स्तास॑:। भर॑न्ते। शंस॑न्ति। के। चि॒त्। नि॒ऽविद॑:। म॒ना॒नाः। आत्। वा॒म्। ब्र॒वा॒म॒। स॒त्यानि॑। उ॒क्था। नकि॑:। दे॒वेभि॑:। य॒त॒थ॒:। म॒हि॒ऽत्वा॥ १०॥**

**पदार्थः**-(**वि**) (**यत्**) ये (**वाचम्**) (**कीस्तासः**) मेधाविनः। **कीस्तास इति मेधाविनाम।** (निघं०३.१५) (**भरन्ते**) (**शंसन्ति**) (**के**) (**चित्**) अपि (**निविदः**) उत्तमा वाचः। **निविदिति वाङ्नाम।** (निघं०१.११) (**मनानाः**) मन्यमानाः (**आत्**) आनन्तर्ये (**वाम्**) युवाम् (**ब्रवाम**) अध्यापयेमोपदिशेम वा (**सत्यानि**) सत्सु अर्थेषु साधूनि (**उक्था**) वक्तुं श्रोतुमर्हाणि (**नकिः**) निषेधे (**देवेभिः**) विद्वद्भिः सह (**यतथः**) यथेथे। अत्र व्यत्ययेन परस्मैपदम् (**महित्वा**) महिम्ना॥ १०॥

**अन्वयः**-हे अध्यापकोपदेशकौ! यदि युवां महित्वा देवेभिस्सह विद्यावृद्धये नकिर्यतथस्तर्हि वां सत्यान्युक्था आद् ब्रवाम यद्ये कीस्तासो वाचं वि भरन्ते के चिन्मनाना मननं कुर्वाणा निविदः शंसन्ति तान् सर्वदा युवां पाठयतम्॥ १०॥

**भावार्थः**-राज्ञा राजजनैः प्रजास्थैर्विद्वद्भिश्च के विद्वांसः प्रशासनीया ये निष्कपटत्वेन यथाशक्त्यध्यापनेन विद्याप्रचारं न कुर्य्युः। ये च प्रीत्या विद्याः प्राप्य सर्वत्र प्रचारयन्ति त एव सदैव सत्कर्त्तव्याः॥ १०॥

**पदार्थः**-हे अध्यापक और उपदेशको! यदि तुम दोनों (**महित्वा**) महिमा से (**देवेभिः**) विद्वानों के साथ विद्यावृद्धि के लिये (**नकिः**) न (**यतथः**) यत्न करते हो तो (**वाम्**) तुम दोनों के प्रति हम लोग (**सत्यानि**) उत्तम पदार्थों में भी उत्तम (**उक्था**) कहने वा सुनने के योग्य विषयों को (**आत्, ब्रवाम**) पीछे कहें (**यत्**) जो (**कीस्तासः**) मेधावीजन (**वाचम्**) वाणी को (**वि, भरन्ते**) विशेषता से धारण करते हैं और (**के, चित्**) कोई (**मनानाः**) विचार करते हुए (**निविदः**) उत्तम वाणियों की (**शंसन्ति**) प्रशंसा करते हैं, उनको सर्वदा तुम पढ़ाओ॥ १०॥

**भावार्थः**-राजा और राजजनों और प्रजास्थ विद्वानों के द्वारा कौन विद्वान् अच्छी शिक्षा देने योग्य हैं, जो निष्कपटता से अपनी शक्ति के अनुकूल पढ़ाने से विद्या प्रचार न करें। और जो प्रीति के साथ विद्याओं को पाकर सर्वत्र प्रचार करते हैं, वे ही सदा सत्कार करने योग्य हैं॥ १०॥

**पुनः के विद्वांसो भवन्तीत्याह॥**

फिर कौन विद्वान् होते हैं, इस विषय को कहते हैं॥

**अ॒वोरि॒त्था वां॑ छ॒र्दिषो॑ अ॒भिष्टौ॑ युवोर्मि॑त्रावरुणा॒वस्कृ॑धोयु।**

**अनु॒ यद्गाव॑: स्फु॒राना॑ॠजि॒प्यं धृ॒ष्णुं यद् रणे॒ वृष॑णं युनज॑न्॥ ११॥ १०॥**

**अ॒वोः। इ॒त्था। वा॒म्। छ॒र्दिष॑:। अ॒भिष्टौ॑। यु॒वोः। मि॒त्रा॒व॒रु॒णौ॒। अस्कृ॑धोयु। अनु॑। यत्। गाव॑:। स्फु॒रान्। ऋ॒जि॒प्यम्। धृ॒ष्णुम्। यत्। रणे॑। वृष॑णम्। यु॒नज॑न्॥ ११॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**अवोः**) रक्षकयोः। अत्र **छान्दसो वर्णलोपो वे**ति सलोपः। (**इत्था**) अस्माद्धेतोः (**वाम्**) युवयो (**छर्दिषः**) गृहस्य (**अभिष्टौ**) आभिमुख्येन यजनक्रियायाम् (**युवोः**) युवयोः (**मित्रावरुणौ**) वायुसूर्यवद्वर्त्तमानौ (**अस्कृधोयु**) य आत्मनः कृधु ह्रस्वत्वं नेच्छति। अत्र **सुपां सुलुगि**ति सुलोपः। (**अनु**) (**यत्**) ये (**गावः**) किरणा धेनवो वा (**स्फुरान्**) स्फूर्त्तिमतः (**ऋजिप्यम्**) ऋजूनां पालके भवम् (**धृष्णुम्**) दृढं प्रगल्भं वा (**यत्**) यः (**रणे**) सङ्ग्रामे (**वृषणम्**) बलिष्ठम् (**युनजत्**) युञ्जन्॥११॥

**अन्वयः**-हे अध्यापकोपदेशकौ! यद्ये गावस्तान् स्फुरानृजिप्यं धृष्णुं वृषणं रणे कश्चिद्युनजन् सन् विजयते। हे मित्रावरुणाववोर्वां छर्दिषोऽभिष्टौ यद्यः प्रयतते युवोरस्कृधोय्वित्थाऽनुयतते तं सदा सत्कुर्यातम्॥११॥

**भावार्थः**-हे अध्यापकोपदेशका ये विद्यार्थिनो युष्माकं कार्य्यं स्वकार्य्यवज्जानन्ति त एव दीर्घायुषः प्रशस्तविद्या धार्मिकाः परोपकारिणो जायन्त इति॥११॥

अत्र प्राणोदानवदध्यापकोपदेशकगुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति सप्तषष्टितमं सूक्तं दशमो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे अध्यापक और उपदेशको! (**यत्**) जो (**गावः**) किरणें वा धेनु हैं उनको (**स्फुरान्**) स्फूर्त्ति वाले पदार्थों वा (**ऋजिप्यम्**) कोमल वा सरल पदार्थों के पालने वालों में हुए (**धृष्णुम्**) दृढ़ प्रगल्भ (**वृषणम्**) बलिष्ठ को (**रणे**) सङ्ग्राम में कोई (**युनजन्**) जोड़ता हुआ विजय को प्राप्त होता है, हे (**मित्रावरुणौ**) वायु और सूर्य्य के समान वर्त्तमान! (**अवोः**) रक्षा करने वाले (**वाम्**) तुम दोनों के (**छर्दिषः**) घर के (**अभिष्टौ**) सन्मुख यज्ञक्रिया में (**यत्**) जो प्रयत्न करता है तथा (**युवोः**) तुम दोनों के सम्बन्ध में (**अस्कृधोयु**) जो अपनी लघुता नहीं चाहता (**इत्था**) इस हेतु से (**अनु**) अनुकूलता से यत्न करता है, उसका सदैव सत्कार करो॥११॥

**भावार्थः**-हे अध्यापक और उपदेशको! जो विद्यार्थी जन तुम्हारे काम को अपने काम के समान जानते हैं, वे ही दीर्घ आयु वाले, प्रशंसित विद्यायुक्त, धार्मिक परोपकारी होते हैं॥११॥

इस सूक्त में प्राण और उदान के समान अध्यापक और उपदेशकों के गुणों का वर्णन होने से सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह सड़सठवां सूक्त और दशवां वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

**अथैकादशर्चस्याष्टषष्टितमस्य सूक्तस्य भरद्वाजो बार्हस्पत्य ऋषिः। इन्द्रावरुणौ देवते। १, ११ त्रिष्टुप्। ६ निचृत्त्रिष्टुप्छन्दः। धैवतः स्वरः। २ भुरिक् पङ्क्तिः। ३, ७, ८ स्वराट् पङ्क्तिः। ४ निचृत्पङ्क्तिः। ५ पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः। ९, १० निचृज्जगतीछन्दः। निषादः स्वरः॥**

***अथ विद्वद्भिः के सम्यगध्यापनीया इत्याह॥***

अब ग्यारह ऋचा वाले अड़सठवें सूक्त का प्रारम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में विद्वानों को अच्छे प्रकार कौन पढ़ाने चाहियें, इस विषय को कहते हैं॥

**श्रुष्टी वां यज्ञ उद्यतः सजोषा मनुष्वद् वृक्तबर्हिषो यजध्यै।**

**आ य इन्द्रावरुणाविषे अद्य महे सुम्नाय मह आववर्तत्॥ १॥**

**श्रुष्टी। वाम्। यज्ञः। उत्ऽयतः। सऽजोषाः। मनुष्वत्। वृक्तऽबर्हिषः। यजध्यै। आ। यः। इन्द्रावरुणौ। इषे। अद्य। महे। सुम्नाय। महे। आऽववर्तत्॥ १॥**

**पदार्थः**-(**श्रुष्टी**) सद्यः (**वाम्**) युवयोः (**यज्ञः**) सङ्गमनीयः शिष्यः (**उद्यतः**) उद्योगी (**सजोषाः**) स्वात्मवदन्येषां प्रीत्या सेवकः (**मनुष्वत्**) मनुष्येण तुल्यः (**वृक्तबर्हिषः**) वृक्तं छेदितं बर्हिरुदकं येन तस्य। **बर्हिरित्युदकनाम।** (निघं०१.१३) (**यजध्यै**) यष्टुं सङ्गन्तुम् (**आ**) (**यः**) (**इन्द्रावरुणौ**) वायुविद्युताविवाऽध्यापकोपदेशकौ (**इषे**) विज्ञानायाऽन्नाय वा (**अद्य**) इदानीम् (**महे**) महते (**सुम्नाय**) सुखाय (**महे**) महते (**आववर्त्तत्**) समन्ताद्वर्तते॥ १॥

**अन्वयः**-हे इन्द्रावरुणौ! य उद्यतस्सजोषा मनुष्यवद्वृक्तबर्हिषो वां यज्ञ आ यजध्या अद्य महे सुम्नाय मह इषे श्रुष्ट्याववर्त्तत युवामध्यापयेतम्॥ १॥०

**भावार्थः**-हे अध्यापकोपदेशका! ये भवतां सुखाय प्रयतमानाः पुरुषार्थिनः प्रीतिमन्त आशुकारिणो वर्त्तन्ते तान् पवित्राञ्जितेन्द्रियान् धार्मिकान् विद्यार्थिन सततं सत्यमुपदिशत॥ १॥

**पदार्थः**-हे (**इन्द्रावरुणौ**) वायु और बिजुली के समान अध्यापक और उपदेशको! (**यः**) जो (**उद्यतः**) उद्योगी (**सजोषाः**) अपने आत्मा के तुल्य औरों का प्रीति से सेवन करता (**मनुष्यवत्**) मनुष्य के तुल्य (**वृक्तबर्हिषः**) संक्षोभित किया जल जिसने उसका और (**वाम्**) तुम्हारा (**यज्ञः**) सङ्ग करने योग्य शिष्य (**आ, यजध्यै**) अच्छे प्रकार सङ्ग करने को (**अद्य**) आज (**महे**) महान् (**सुम्नाय**) सुख वा (**महे**) बहुत (**इषे**) विज्ञान वा अन्न के लिये (**श्रुष्टी**) शीघ्र (**आववर्त्तत्**) अच्छे प्रकार वर्त्तमान है, उसको तुम दोनों पढ़ाओ॥ १॥



www.9009.co.in

**भावार्थ:**-हे पढ़ाने और उपदेश करने वालो! जो आप लोगों के सुख के लिये प्रयत्न करते हुए पुरुषार्थी, प्रीतिमान्, शीघ्रकारी वर्त्तमान हैं; उन पवित्र, जितेन्द्रिय, धार्मिक विद्यार्थियों को निरन्तर सत्य का उपदेश करो॥१॥

**पुन: केऽत्र राजजना उत्तमा: पूजनीयाश्चेत्याह॥**

फिर कौन यहाँ राजजन उत्तम और सत्कार करने योग्य हैं, इस विषय को कहते हैं॥

**ता हि श्रेष्ठा॑ दे॒वता॑ता तु॒जा शूरा॑णां॒ शवि॑ष्ठा॒ ता हि भू॒तम्।**

**म॒घोनां॒ मंहि॑ष्ठा तुवि॒शुष्म॑ ऋ॒तेन॑ वृत्र॒तुरा॒ सर्व॑सेना॥२॥**

**ता। हि। श्रेष्ठा॑। दे॒वऽता॑ता। तु॒जा। शूरा॑णाम्। शवि॑ष्ठा। ता। हि। भू॒तम्। म॒घोना॑म्। मंहि॑ष्ठा। तु॒विऽशुष्मा॑। ऋ॒तेन॑। वृ॒त्र॒ऽतुरा॑। सर्व॑ऽसेना॥२॥**

**पदार्थ:**-**(ता)** तौ **(हि)** यत: **(श्रेष्ठा)** उत्तमौ **(देवताता)** देवतातौ सत्ये व्यवहारे यज्ञे **(तुजा)** दुष्टानां हिंसकौ **(शूराणाम्)** निर्भयानाम् **(शविष्ठा)** अतिशयेन बलवन्तौ **(ता)** तौ **(हि)** खलु **(भूतम्)** भवत: **(मघोनाम्)** धनाढ्यानाम् **(मंहिष्ठा)** अतिशयेन पूजनीयौ **(तुविशुष्मा)** बहुबलसेनायुक्तौ **(ऋतेन)** सत्याचरणेन **(वृत्रतुरा)** यौ वृत्राणां मेघवदुन्नतानां शत्रूणां तुरौ हिंसकौ **(सर्वसेना)** समग्रा: सेना ययोस्तौ॥२॥

**अन्वय:**-हे मनुष्या! यौ हि देवताता श्रेष्ठा तुजा शूराणां शविष्ठा भूतं यौ हि मघोनां मध्ये मंहिष्ठा ऋतेन तुविशुष्मा वृत्रतुरा सर्वसेना सभासेनेशौ वर्त्तेते ता सत्कर्त्तव्यौ ता ह्युत्तमाधिकारे स्थापनीयौ॥२॥

**भावार्थ:**-हे मनुष्या! ये सत्येन न्यायेन प्रजापालने प्रयतमाना: सर्वविद्या: सर्वोत्तमसेना दुष्टानां हिंसनेन श्रेष्ठानां धनाढ्यानां वीरपुरुषाणां च रक्षका: स्युस्ते धन्यवादार्हा: सन्ति॥२॥

**पदार्थ:**-हे मनुष्यो! जो **(हि)** ही **(देवताता)** सत्यव्यवहार यज्ञ में **(श्रेष्ठा)** उत्तम **(तुजा)** दुष्टों की हिंसा करने वाले **(शूराणाम्)** निर्भय जनों में **(शविष्ठा)** अतीव बलवान् **(भूतम्)** होते हैं और जो **(हि)** निश्चय के साथ **(मघोनाम्)** धनाढ्यों के बीच **(मंहिष्ठा)** अतीव सत्कार करने योग्य **(ऋतेन)** सत्य आचरण से **(तुविशुष्मा)** बहुत बल और सेना से युक्त **(वृत्रतुरा)** जो मेघ के समान बढ़े हुए शत्रुओं का विनाश करने वाले **(सर्वसेना)** समग्र सेनाओं से युक्त सभा और सेनाधीश वर्त्तमान हैं **(ता)** वे सत्कार करने योग्य हैं और **(ता)** वे ही उत्तम अधिकार में स्थापन करने योग्य हैं॥२॥

**भावार्थ:**-हे मनुष्यो! जो सत्य न्याय से प्रजा की पालना करने में प्रयत्न करते हुए, सब प्रकार कि विद्या और सर्वोत्तम सेनाओं से युक्त, दुष्टों की हिंसा से श्रेष्ठ, धनाढ्य और वीर-पुरुषों की रक्षा करने वाले होवें, वे धन्यवाद के योग्य हैं॥२॥

**पुनस्तौ कीदृशावित्याह॥**

फिर वे कैसे हैं, इस विषय को कहते हैं॥



www.9009.co.in

**ता गृणीहि नमस्येभिः शूषैः सुम्नेभिरिन्द्रावरुणा चकाना।**

**वज्रेणान्यः शवसा हन्ति वृत्रं सिषक्त्यन्यो वृजनेषु विप्रः॥३॥**

**ता। गृणीहि। नमस्येभिः। शूषैः। सुम्नेभिः। इन्द्रावरुणा। चकाना। वज्रेण। अन्यः। शवसा। हन्ति। वृत्रम्। सिसक्ति। अन्यः। वृजनेषु। विप्रः॥३॥**

**पदार्थः**-(**ता**) तौ (**गृणीहि**) प्रशंस (**नमस्येभिः**) नमस्स्वन्नेषु भवैः (**शूषैः**) बलैः (**सुम्नेभिः**) सुखैः (**इन्द्रावरुणा**) वायुविद्युताविव (**चकाना**) कामयमानौ (**वज्रेण**) किरणसमूहेनेव शस्त्राऽस्त्रेण (**अन्यः**) सूर्यो विद्युद्वा (**शवसा**) बलेन (**हन्ति**) (**वृत्रम्**) मेघमिव शत्रुम् (**सिषक्ति**) सिञ्चति (**अन्यः**) वायुरिव (**वृजनेषु**) मार्गेषु बलेषु वा (**विप्रः**) मेधावी॥३॥

**अन्वयः**-हे विद्वन् विप्रस्त्वं ययोरन्यो वज्रेण शवसा वृत्रं हन्ति। अन्यो वृजनेषु सिषक्ति तेन्द्रावरुणेव सुम्नेभिश्चकाना शूषैर्नमस्येभिः सत्कृतौ गृणीहि॥३॥

**भावार्थः**-यौ सभासेनेशौ सूर्यवायुवत् प्रजापालकावुत्तमैः सैन्यैर्दुष्टनिवारकौ मेघवत् प्रजाः कामैः पूरयतस्तौ सर्वैः सत्कर्त्तव्यौ॥३॥

**पदार्थः**-हे विद्वान् जन (**विप्रः**) मेधावी बुद्धिमान्! आप जिनमें से (**अन्यः**) सूर्य वा बिजुली (**वज्रेणः**) किरण समूह के समान शस्त्रास्त्र और (**शवसा**) बल से (**वृत्रम्**) मेघ के समान शत्रु को (**हन्ति**) मारते हैं और जो (**अन्यः**) वायु के समान (**वृजनेषु**) मार्ग वा बलों में (**सिषक्ति**) सींचता है (**ता**) उन दोनों (**इन्द्रावरुणा**) वायु और बिजुली के समान (**सुम्नेभिः**) सुखों से (**चकाना**) कामना करते हुए (**शूषैः**) बलों और (**नमस्येभिः**) अन्नों के बीच सिद्ध हुए पदार्थों से सत्कार को प्राप्त हुओं की (**गृणीहि**) प्रशंसा करो॥३॥

**भावार्थः**-जो सभापति और सेनापति, सूर्य और वायु के समान प्रजा के पालने वाले, उत्तम सेनाजनों से दुष्टों को निवारने वाले, मेघों के समान प्रजाजनों को कामनाओं से पूरित करते हैं, वे सब से सत्कार करने योग्य हैं॥३॥

**पुनस्तौ कैस्सह किं कुर्यातामित्याह॥**

फिर वे किन के साथ क्या करें, इस विषय को कहते हैं॥

**ग्नाश्च यन्नरश्च वावृधन्त विश्वे देवासो नरां स्वगूर्ताः।**

**प्रैभ्य इन्द्रावरुणा महित्वा द्यौश्च पृथिवि भूतमुर्वी॥४॥**

**ग्नाः। च। यत्। नरः। च। ववृधन्त। विश्वे। देवासः। नराम्। स्वऽगूर्ताः। प्र। एभ्यः। इन्द्रावरुणा। महिऽत्वा। द्यौः। च। पृथिवि। भूतम्। उर्वी इति॥४॥**

**पदार्थः**-(**ग्नाः**) वाचः। **ग्नेति वाङ्नाम।** (निघं०१.११) (**च**) (**यत्**) ये (**नरः**) विद्वन्नायकाः (**च**) (**वावृधन्त**) सर्वतो वर्धन्ते (**विश्वे**) सर्वे (**देवासः**) (**नराम्**) मनुष्याणाम् (**स्वगूर्त्ताः**) स्वेन



www.9009.co.in

पराक्रमेणोद्यमिनः **(प्र)** **(एभ्यः)** **(इन्द्रावरुणा)** विद्युत्सूर्याविव **(महित्वा)** महिम्ना **(द्यौः)** **(च)** **(पृथिवि)** भूमिः **(भूतम्)** भवेताम् **(उर्वी)** बहुत्वे॥४॥

**अन्वयः**-यद्ये विश्वे देवासो नरश्च स्वगूर्त्ता नरां ग्नाः स्वकीयाश्च ग्नाः प्राप्य वावृधन्त प्रैभ्य इन्द्रावरुणोर्वी पृथिवि द्यौश्चेव वर्त्तमानौ महित्वा भूतं वर्धेते ते सर्वे मनुष्यैः सत्कर्त्तव्या सन्ति॥४॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे राजन्! ये विद्याधर्मविनयैर्वर्धन्ते तैरुद्यमिभिः सहेमाः प्रजाः पालय॥४॥

**पदार्थः**-**(यत्)** जो **(विश्वे, देवासः)** समस्त विद्वान् जन **(नरः, च)** और विद्वानों के बीच अग्रगामी **(स्वगूर्त्ताः)** अपने पराक्रम से उद्यमी जन **(नराम्)** मनुष्यों की **(ग्नाः)** वाणी तथा अपनी **(च)** भी वाणियों को प्राप्त होकर **(वावृधन्त)** सब ओर से बढ़ते हैं **(प्र, एभ्यः)** उत्कर्षन से इनसे **(इन्द्रावरुणा)** बिजुली और सूर्य्य के समान वा **(उर्वी)** विस्तृत **(पृथिवि)** पृथिवी **(द्यौः, च)** और प्रकाश के समान वर्त्तमान **(महित्वा)** महिमा से **(भूतम्)** प्रसिद्ध होवें। वे सब जन मनुष्यों से सत्कार करने योग्य हैं॥४॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे राजन्! जो विद्या, धर्म और विनय से बढ़ते हैं, उन उद्यमियों के साथ इन प्रजाजनों की पालना करो॥४॥

**पुना राजसेनाजनाः किं कुर्य्युरित्याह॥**

फिर राजसेनाजन क्या करें, इस विषय को कहते हैं॥

**स इत्सुदानुः स्ववाँ ऋतावेन्द्रा यो वां वरुण दाशति त्मन्।**

**इषा स द्विषस्तरेद् दास्वान् वंसद् रयिं रयिवतश्च जनान्॥५॥११॥**

**सः। इत्। सुऽदानुः। स्वऽवान्। ऋतऽवा। इन्द्रा। यः। वाम्। वरुण। दाशति। त्मन्। इषा। सः। द्विषः। तरेत्। दास्वान्। वंसत्। रयिम्। रयिऽवतः। च। जनान्॥५॥**

**पदार्थः**-**(सः)** **(इत्)** एव **(सुदानुः)** सुष्ठुदाता **(स्ववान्)** स्वे आत्मीया बहवो विद्यन्ते यस्य सः **(ऋतावा)** य ऋतं सत्यं वनति भजति सः **(इन्द्रा)** सूर्यः **(यः)** **(वाम्)** युवयोः **(वरुण)** वायुः **(दाशति)** ददाति **(त्मन्)** आत्मनि **(इषा)** अन्नाद्येन **(सः)** **(द्विषः)** शत्रून् **(तरेत्)** **(दास्वान्)** दाता सन् **(वंसत्)** विभजेत् **(रयिम्)** धनम् **(रयिवतः)** बहुधनवतः **(च)** **(जनान्)**॥५॥

**अन्वयः**-हे इन्द्रावरुणेव वर्त्तमानौ सभासेनेशौ! वां यः सुदानुः स्ववानृतावा त्मन्नभयं दाशति यो दास्वानिषा द्विषस्तरेद् रयिवतो जनांश्च रयिं वंसत् स इत्सर्वोत्तमः स राजा भवितुमर्हति॥५॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यथा सूर्य्यो वर्षयित्वा वायुश्च प्राणय्य सर्वान् प्राणिनोऽभयं कुरुतस्तथा ये सङ्ग्रामे समुदितैर्लब्धस्य धनस्य यथावद्विभज्य षोडशांशं भृत्येभ्यो ददति तत्र ये योद्धारो जयेयुस्तेभ्यस्तस्मादपि षोडशांशं प्रयच्छन्ति त एव विजयिनौ भूत्वा परस्परस्मिन् प्रसन्ना भवन्ति॥५॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-हे **(इन्द्रा, वरुण)** सूर्य्य और वायु के समान वर्त्तमान सभासेनाधीशो! **(वाम्)** तुम दोनों का **(यः)** जो **(सुदानुः)** उत्तम देने वाला **(स्ववान्)** जिसके अपने लोग बहुत विद्यमान हैं **(ऋतावा)** जो सत्य को भजता है वह **(त्मन्)** आत्मा में अभयपन **(दाशति)** देता है जो **(दास्वान्)** देने वाला होता हुआ **(इषा)** अन्न आदि से **(द्विषः)** शत्रुजनों को **(तरेत्)** तरे और **(रयिवतः)** बहुधनवान् **(जनान्, च)** जनों को भी **(रयिम्)** धन का **(वंसत्)** विभाग करे **(सः, इत्)** वही सर्वोत्तम और **(सः)** वह राजा होने योग्य है॥५॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जैसे सूर्य्य वर्षा करा कर और वायु प्राण धारणा करा कर ये दोनों सब प्राणियों को निर्भय करते हैं, वैसे जो सङ्ग्राम के बीच अच्छे प्रकार सन्मुख हैं, उनसे पाये हुए धन का यथावत् विभाग कर सोलहवां भाग भृत्यों के लिये देते हैं तथा वहाँ सङ्ग्राम में जो योद्धा जीते उनके लिये उससे सोलहवां भाग देते हैं, वे ही विजयी होकर आपस में प्रसन्न होते हैं॥५॥

**पुनः राजजनाः किं कुर्य्युरित्याह॥**

फिर राजजन क्या करें, इस विषय को कहते हैं॥

**यं युवं दाश्वध्वराय देवा रयिं धत्थो वसुमन्तं पुरुक्षुम्।**
**अस्मे स इन्द्रावरुणावपि ष्यात्प्र यो भनक्ति वनुषामशस्तीः॥६॥**

**यम्। युवम्। दाशुऽअध्वराय। देवा। रयिम्। धत्थः। वसुऽमन्तम्। पुरुऽक्षुम्। अस्मे इति। सः। इन्द्रावरुणौ। अपि। स्यात्। प्र। यः। भनक्ति। वनुषाम्। अशस्तीः॥६॥**

**पदार्थः**-**(यम्)** प्रशस्तम् **(युवम्)** युवाम् **(दाश्वध्वराय)** दाशुर्देयोऽध्वरोऽहिंसामयो यज्ञो येन तस्मै **(देवा)** देवौ दातारौ **(रयिम्)** धनम् **(धत्थः)** धरेतम् **(वसुमन्तम्)** बह्वैश्वर्यम् **(पुरुक्षुम्)** बह्वन्नम् **(अस्मे)** अस्मासु **(सः)** **(इन्द्रावरुणौ)** विद्युद्वायुवद्वर्त्तमानौ सभासेनेशौ **(अपि)** **(स्यात्)** **(प्र)** **(यः)** **(भनक्ति)** शत्रुसेना मर्दयति **(वनुषाम्)** राज्यस्य याचकानां शत्रूणाम् **(अशस्तीः)** अप्रशंसाः॥६॥

**अन्वयः**-हे इन्द्रावरुणाविव वर्त्तमानौ देवा! युवं दाश्वध्वरायास्मे यं रयिं वसुमन्तं पुरुक्षुं च जनं धत्थो यो वनुषामशस्तीः प्र भनक्ति सोऽप्यतिष्ठितः स्यात्॥६॥

**भावार्थः**-हे सभासेनेशौ! यदि भवन्तावुत्तमां प्रज्ञामतुलां श्रियं चास्मासु धरेतां तर्हि वयं सदैव विजयिनो भूत्वा विजयं राज्यमैश्वर्यं च वर्धयेम॥६॥

**पदार्थः**-हे **(इन्द्रावरुणौ)** बिजुली और वायु के समान वर्त्तमान सभासेनाधीशो! **(देवा)** देने वालो **(युवम्)** तुम दोनों **(दाश्वध्वराय)** जिससे अहिंसामय यज्ञ देने योग्य होता है उसके लिये **(अस्मे)** हम लोगों में **(यम्)** जिस प्रशस्त **(रयिम्)** धन **(वसुमन्तम्)** बहुत ऐश्वर्य्ययुक्त और **(पुरुक्षुम्)** बहुत अन्न वाले जन को **(धत्थः)** धारण करो **(यः)** जो **(वनुषाम्)** राज्य को मांगने वाले शत्रुओं की **(अशस्तीः)**



www.9009.co.in

अप्रशंसाओ को **(प्र, भनक्ति)** अच्छे प्रकार मर्दित करता है **(सः)** सो **(अपि)** ही अतीव स्थिर **(स्यात्)** हो॥६॥

**भावार्थः**-हे सभासेनाधीशो! जो तुम लोग उत्तम बुद्धि और अतुल लक्ष्मी को हम लोगों में धरो तो हम लोग सदैव विजयी होकर विजय, राज्य और ऐश्वर्य्य को बढ़ावें॥६॥

**पुनः को राजाऽर्हो भवेदित्याह॥**

फिर कौन राजा योग्य है, इस विषय को कहते हैं॥

**उ॒त नः॑ सु॒त्रा॒त्रो दे॒वगो॑पाः सू॒रिभ्य॑ इन्द्रावरुणा र॒यिः ष्या॑त्।**

**येषां॒ शुष्म॒ः पृत॑नासु सा॒ह्वान् प्र स॒द्यो द्यु॒म्ना ति॒रते॒ ततु॑रिः॥७॥**

**उ॒त। नः॒। सु॒ऽत्रा॒त्रः। दे॒वऽगो॑पाः। सू॒रिऽभ्यः॑। इ॒न्द्रा॒ऽव॒रु॒णा॒। र॒यिः। स्या॒त्। येषा॑म्। शुष्मः॑। पृत॑नासु। सा॒ह्वान्। प्र। स॒द्यः। द्यु॒म्ना। ति॒रते॑। तत॑ुरिः॥७॥**

**पदार्थः**-**(उत)** अपि **(नः)** अस्मभ्यम् **(सुत्रात्रः)** यस्सुष्ठु रक्षकान् रक्षति **(देवगोपाः)** यो देवान् विदुषो गोपायति **(सूरिभ्यः)** विद्वद्भ्यः **(इन्द्रावरुणा)** वायुविद्युद्वद् **(रयिः)** श्रीः **(स्यात्)** **(येषाम्)** **(शुष्मः)** बलयुक्तः सेनेशः **(पृतनासु)** शूरवीरसेनासु **(साह्वान्)** सोढा **(प्र)** **(सद्यः)** **(द्युम्ना)** धनानि यशांसि वा **(तिरते)** प्राप्नोति **(ततुरिः)** तरिता॥७॥

**अन्वयः**-हे इन्द्रावरुणेव वर्त्तमान राजन्! येषां पृतनासु शुष्मः साह्वान् ततुरिः सेनेशो वर्त्तते यः सद्यो द्युम्नाः प्र तिरते यस्य पराक्रमेण रयिः स्यादुत नः सूरिभ्यः सुत्रात्रो देवगोपा भवेत्स एव राजा भवितुमर्हति॥७॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! ये सूर्य्यवत् प्रतापिनो वायुवद्बलिष्ठा विद्याविद्द्विनयशूरवीररक्षकाः स्युस्ते सर्वत्र क्षिप्रं शत्रून् विजित्य यशस्विनो भूत्वा धनवन्तो जायन्ते॥७॥

**पदार्थः**-हे **(इन्द्रावरुणा)** वायु और बिजुली के समान वर्त्तमान प्रशंसित राजा! **(येषाम्)** जिन शूरवीरों की **(पृतनासु)** सेनाओं में **(शुष्मः)** बलवान् **(साह्वान्)** सहनशील **(ततुरिः)** उत्तीर्ण होने वाला सेनापति वर्त्तमान है। तथा जो **(सद्यः)** शीघ्र **(द्युम्ना)** धन और यशों को **(प्र, तिरते)** उत्तमता से प्राप्त होता है वा जिसके पराक्रम से **(रयिः)** लक्ष्मी **(स्यात्)** हो **(उत)** और **(नः)** हम लोग **(सूरिभ्यः)** विद्वान् हैं उनके लिये **(सुत्रात्रः)** जो अच्छों की रक्षा करने वालों की रक्षा करने वाला **(देवगोपाः)** विद्वानों का रक्षक हो, वही राजा होने योग्य है॥७॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जो सूर्य के समान प्रतापी, पवन के समान बलवान्, विद्यावान् के समान नम्रता और शूरवीरों की रक्षा करने वाले हों, वे सर्वत्र शीघ्र शत्रुओं को जीत के यशस्वी होकर धनवान् होते हैं॥७॥

**पुनस्ते राजप्रजाजनाः कथं वर्त्तेरन्नित्याह॥**

फिर वे राजप्रजाजन कैसे वर्त्तें, इस विषय को कहते हैं॥



www.9009.co.in

**नू नं इन्द्रावरुणा गृणाना पृङ्क्तं रयिं सौश्रवसाय देवा।**

**इत्था गृणन्तो महिनस्य शर्धोऽपो न नावा दुरिता तरेम॥८॥**

**नु। नः। इन्द्रावरुणा। गृणाना। पृङ्क्तम्। रयिम्। सौश्रवसाय। देवा। इत्था। गृणन्तः। महिनस्य। शर्धः। अपः। न। नावा। दुःऽइता। तरेम॥८॥**

**पदार्थः-(नू)** क्षिप्रम् **(नः)** अस्मान् **(इन्द्रावरुणा)** सूर्य्यचन्द्रवद्वर्त्तमानौ राजप्रजाजनौ **(गृणाना)** स्तुवन्तौ **(पृङ्क्तम्)** संबध्नीतम् **(रयिम्)** श्रियम् **(सौश्रवसाय)** सुश्रवसो भावाय **(देवा)** दातारौ **(इत्था)** अनेन प्रकारेण **(गृणन्तः)** स्तुवन्तः **(महिनस्य)** महतः **(शर्धः)** बलम् **(अपः)** जलानि **(न)** इव **(नावा)** नौकया **(दुरिता)** दुःखेनोल्लङ्घयितुं योग्यानि **(तरेम)**॥८॥

**अन्वयः-**हे इन्द्रावरुणेव नो गृणाना देवा राजप्रजाजनौ! यथा युवां सौश्रवसाय रयिं पृङ्क्तमित्था महिनस्य शर्धो गृणन्तो वयं नावाऽपो न दुरिता नू तरेम॥८॥

**भावार्थः-**अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! ये राजप्रजाजनाः परस्परस्मिन् प्रीताः सन्तोऽन्नाद्याय श्रियं संचिन्वन्ति ते सूर्य्यचन्द्रवत्प्रतापिनो भूत्वा यथा महत्या नौकया दुर्गानपि समुद्राञ्जनास्तरन्ति तथैव महान्त्यपि दुःखदारिद्र्याणि सद्यस्तरन्ति॥८॥

**पदार्थः-**हे **(इन्द्रावरुणा)** सूर्य और चन्द्रमा के तुल्य वर्त्तमान **(नः)** हम लोगों को **(गृणाना)** प्रशंसा करने और **(देवा)** देने वाले राजप्रजाजनो! जैसे तुम दोनों **(सौश्रवसाय)** उत्तम यश होने के लिये **(रयिम्)** धन का **(पृङ्क्तम्)** सम्बन्ध करो **(इत्था)** ऐसे **(महिनस्य)** बड़े के **(शर्धः)** बल की **(गृणन्तः)** प्रशंसा करते हुए हम लोग **(नावा)** नाव से **(अपः)** जलों को **(न)** जैसे वैसे **(दुरिता)** दुःख से उल्लङ्घन करने योग्य कष्टों को **(नू)** शीघ्र **(तरेम)** तरें॥८॥

**भावार्थः-**इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जो राजप्रजाजन आपस में प्रीति वाले होकर अन्नादि पदार्थों के लिये धन इकट्ठा करते हैं, वे सूर्य और चन्द्रमा के तुल्य प्रतापी होकर जैसे बड़ी नौका से दुःख से तरने योग्य समुद्रों को जन पार होते हैं, वैसे ही बड़े बड़े दुःख और दारिद्र्यों को शीघ्र तरते हैं॥८॥

**पुनः स राजा कीदृशोऽस्मै किमुपदेष्टव्यमित्याह॥**

फिर वह राजा कैसा है और उसके लिये क्या उपदेश देना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**प्र सम्राजे बृहते मन्म नु प्रियमर्च देवाय वरुणाय सप्रथः।**

**अयं य उर्वी महिना महिव्रतः क्रत्वा विभात्यजरो न शोचिषा॥९॥**

**प्र। सम्ऽराजे। बृहते। मन्म। नु। प्रियम्। अर्च। देवाय। वरुणाय। सऽप्रथः। अयम्। यः। उर्वी इति। महिना। महिऽव्रतः। क्रत्वा। विऽभाति। अजरः। न। शोचिषा॥९॥**

**पदार्थः-(प्र) (सम्राजे)** यः सम्यक्सूर्यवद्विद्याविनयाभ्यां राजते तस्मै **(बृहते)** महते **(मन्म)** विज्ञानम् **(नु)** सद्यः **(प्रियम्)** प्रीतिकरम् **(अर्च)** सत्कुर्याः **(देवाय)** अभयदात्रे **(वरुणाय)** सर्वोत्कृष्टाय



www.9009.co.in

(**सप्रथः**) सत्कीर्त्या प्रख्यातः (**अयम्**) (**यः**) (**उर्वी**) द्यावापृथिव्यौ (**महिना**) महिम्ना (**महिव्रतः**) महान्ति व्रतानि धर्म्याणि कर्माणि यस्य सः (**क्रत्वा**) प्रज्ञया कर्मणा वा (**विभाति**) (**अजरः**) जरारोगरहितः सूर्य्यो जीवात्मा परमात्मा वा (**न**) इव (**शोचिषा**) स्वप्रकाशेन॥९॥

**अन्वयः**-हे विद्वन्! योऽयं सप्रथो महिव्रतः क्रत्वा महिना शोचिषाऽजरो नोर्वी विभाति तस्मै वरुणाय देवाय बृहते सम्राजे प्रियं मन्म त्वं नु प्रार्च॥९॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। हे विद्वांसः! सूर्यवज्जीववत्परमात्मवच्छुभगुणकर्मस्वभावैर्देदीप्यमानो यो विद्याविनयावृतः प्रयत्नेन वाङ्मनःशरीरैः पितृवत्प्रजाः पालयितुं प्रयतते तस्मै चक्रवर्त्तिने सर्वोत्कृष्टाय विदुषे सत्कर्त्तव्याय राज्ञे राज्ये प्रतिदिनं सत्यां नीतिं भवन्तो बोधयन्तु येनाऽयं सर्वत्र धर्मयशा भवेत्॥९॥

**पदार्थः**-हे विद्वन्! (**यः**) जो (**अयम्**) यह (**सप्रथः**) सत्कीर्ति से विख्यात और (**महिव्रतः**) बड़े-बड़े धर्मयुक्त कर्म जिसके विद्यमान वह (**क्रत्वा**) प्रज्ञा वा कर्म से (**महिना**) और महिमा वा (**शोचिषा**) अपने प्रकाश से (**अजरः**) वृद्धावस्थारूपी रोग से रहित सूर्य जीवात्मा वा परमात्मा के (**न**) समान (**उर्वी**) सूर्यमण्डल और पृथिवी को (**विभाति**) प्रकाशित करता है उस (**वरुणाय**) सब से उत्तम (**देवाय**) अभय देने वाले (**बृहते**) बड़े (**सम्राजे**) अच्छे सूर्य के समान विद्या और नम्रता से प्रकाशमान के लिये (**प्रियम्**) प्रीति करने वाले (**मन्म**) विज्ञान को आप (**नु**) शीघ्र (**प्र, अर्च**) सत्कार देवें॥९॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे विद्वान्जनो! जो सूर्य के तुल्य, जीव के तुल्य वा परमात्मा के तुल्य शुभ गुण कर्म स्वभावों से देदीप्यमान, विद्या और विनय से युक्त, उत्तम यत्न के साथ वाणी मन और शरीर से पिता के समान प्रजाजनों की पालना करने को प्रयत्न करता है, उस चक्रवर्ती, सर्वोत्कृष्ट, विद्वान् और सत्कार करने योग्य राजा के लिये राज्य में सत्य नीति को आप लोग समझावें, जिससे यह सर्वत्र धर्मयुक्त यश वाला हो॥९॥

**पुनस्ते राजप्रजाजनाः किं कृत्वा कीदृशा भवेयुरित्याह॥**

फिर वे राज प्रजाजन क्या करके कैसे हो, इस विषय को कहते हैं॥

**इन्द्रावरुणा सुतपाविमं सुतं सोमं पिबतं मद्यं धृतव्रता।**

**युवो रथो अध्वरं देववीतये प्रति स्वसरमुप याति पीतये॥१०॥**

**इन्द्रावरुणा। सुतऽपौ। इमम्। सुतम्। सोमम्। पिबतम्। मद्यम्। धृतऽव्रता। युवोः। रथः। अध्वरम्। देवऽवीतये। प्रति। स्वसरम्। उप। याति। पीतये॥१०॥**

**पदार्थः**-(**इन्द्रावरुणा**) विद्युद्वद्वर्त्तमानौ सभासेनेशौ (**सुतपौ**) सुष्ठुब्रह्मचर्याद्यनुष्ठानाख्यं तपो ययोस्तौ। अत्र **छान्दसो वर्णलोपो वे**ति सलोपः। (**इमम्**) प्रत्यक्षम् (**सुतम्**) निष्पादितम् (**सोमम्**) महौषधिरसम् (**पिबतम्**) (**मद्यम्**) येन माद्यति हृष्यत्यानन्दति तम् (**धृतव्रता**) धृतानि कर्माणि याभ्यां तौ



www.9009.co.in

**(युवोः)** युवयोः **(रथः)** विमानादियानम् **(अध्वरम्)** अहिंसामयम् **(देववीतये)** दिव्यगुणप्राप्तये **(प्रति)** वीप्सायाम् **(स्वसरम्)** दिनम् **(उप)** **(याति)** उपगच्छति **(पीतये)** पानाय॥१०॥

**अन्वयः**-हे इन्द्रावरुणेव सुतपौ धृतव्रता सभासेनेशौ! ययोर्युवो रथो देववीतये पीतये प्रति स्वसरमध्वरमुप याति ताविमं सुतं मद्यं सोमं प्रति पिबतम्॥१०॥

**भावार्थः**-हे राजप्रजाजना यूयं प्रतिदिनं सोमलताद्युत्पन्नं सर्वरोगहरं बलबुद्धिपराक्रमवर्धकं हिंसारहित महौषधिरसं पीत्वा धर्मात्मानो भवत॥१०॥

**पदार्थः**-हे **(इन्द्रावरुणा)** बिजुली के समान वर्त्तमान **(सुतपौ)** सुन्दर ब्रह्मचर्य आदि अनुष्ठान तप जिनका और **(धृतव्रता)** जिन्होंने उत्तम कर्म धारण किये हैं, वे सभा और सेनाधीशो! जिन **(युवोः)** तुम लोगों का **(रथः)** विमान आदि यान **(देववीतये)** दिव्यगुणों की प्राप्ति और **(पीतये)** उत्तमोत्तम रस पीने के लिये **(प्रति, स्वसरम्)** प्रतिदिन **(अध्वरम्)** अहिंसामय यज्ञ को **(उप, याति)** प्राप्त होता है वे **(इमम्)** इस **(सुतम्)** उत्पन्न किये हुए **(मद्यम्)** जिससे जीव आनन्द को प्राप्त होता है उस **(सोमम्)** बड़ी-बड़ी ओषधियों के रस को **(पिबतम्)** पिओ॥१०॥

**भावार्थः**-हे राजप्रजाजनो! तुम प्रतिदिन सोमलता आदि से उत्पन्न किये हुए सर्व रोगों के हरने, बल बुद्धि, पराक्रम बढ़ाने वाले, हिंसारहित, महौषधियों के रस को पीकर धर्मात्मा होओ॥१०॥

**पुनस्तौ किं कृत्वा किं कारयेतामित्याह॥**

फिर वे क्या करके क्या करावें, इस विषय को कहते हैं॥

**इन्द्रा॑वरुणा॒ मधु॑मत्तमस्य॒ वृष्णः॒ सोम॑स्य वृष॒णा वृषे॑थाम्।**

**इ॒दं वा॒मन्धः॒ परि॑षिक्तम॒स्मे आ॒सद्या॒स्मिन् ब॒र्हिषि॑ मादयेथाम्॥११॥१२॥**

**इन्द्रा॑वरुणा। मधु॑मत्ऽतमस्य। वृष्णः॑। सोम॑स्य। वृ॒ष॒णा॒। आ। वृ॒षे॒था॒म्। इ॒दम्। वा॒म्। अन्धः॑। परि॑ऽसिक्तम्। अ॒स्मे॒ इति॑। आ॒ऽसद्य॑। अ॒स्मिन्। ब॒र्हिषि॑। मा॒द॒ये॒था॒म्॥११॥**

**पदार्थः**-**(इन्द्रावरुणा)** विद्युद्वायुवद्वर्त्तमानौ राजप्रजाजनौ **(मधुमत्तमस्य)** अतिशयेन मधुरादिगुणयुक्तस्य **(वृष्णः)** बलकरस्य **(सोमस्य)** महौषधिरसस्य **(वृषणा)** बलिष्ठौ **(आ)** **(वृषेथाम्)** बलिष्ठौ भवेथाम् **(इदम्)** **(वाम्)** **(अन्धः)** अन्नम् **(परिषिक्तम्)** सर्वतः सिक्तम् **(अस्मे)** अस्मास्वस्मान् वा **(आसद्य)** उपविश्य **(अस्मिन्)** **(बर्हिषि)** अवकाशे **(मादयेथाम्)** आनन्दयतम्॥११॥

**अन्वयः**-हे इन्द्रावरुणेव वृषणा! युवां मधुमत्तमस्य वृष्णः सोमस्य सेवनेना वृषेथां ययोर्वामिदं परिषिक्तमन्धोऽस्ति तौ युवामस्मे अस्मिन् बर्हिष्यासद्याऽस्मान् मादयेथाम्॥११॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। ये सोमलतादिरसेन युक्तेनान्नेन पानेन वा स्वयमानन्द्याऽस्मानानन्दयन्ति त एव सर्वैः सत्कर्त्तव्या जायन्त इति॥११॥

अस्मिन् सूक्ते इन्द्रावरुणवद्राजप्रजाकृत्यवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥



www.9009.co.in

**इत्यष्टषष्टितमं सूक्तं द्वादशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे **(इन्द्रावरुणा)** बिजुली और वायु के समान वर्त्तमान **(वृषणा)** बलवान् राजा प्रजाजनो! तुम **(मधुमत्तमस्य)** अतीव मधुरादिगुणयुक्त **(वृष्णः)** बल करने वाले **(सोमस्य)** बड़ी बड़ी ओषधियों के रसों के सेवने से **(आ, वृषेथाम्)** बलिष्ठ होओ जिन **(वाम्)** तुम दोनों का **(इदम्)** यह **(परिषिक्तम्)** सब ओर से सींचा हुआ **(अन्धः)** अन्न है वे तुम **(अस्मे)** हम लोगों में वा हम को **(अस्मिन्)** इस **(बर्हिषि)** अवकाश में **(आसद्य)** बैठ के **(मादयेथाम्)** आनन्दित करो॥११॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो सोमलतादि रसयुक्त अन्न वा पान से आप आनन्दित होकर हमको आनन्दित करते हैं, वे ही सब से सत्कार करने योग्य होते हैं॥११॥

इस सूक्त में वरुण के समान राजप्रजा के कृत्य का वर्णन होने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह अड़सठवां सूक्त और बारहवां वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

**अथाष्टर्चस्यैकोनसप्ततितमस्य सूक्तस्य भरद्वाजो बार्हस्पत्य ऋषिः। इन्द्राविष्णू देवते। १, ३, ६, ७ निचृत्त्रिष्टुप्। २, ४,८ त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः। ५ ब्राह्म्युष्णिक्छन्दः। ऋषभः स्वरः॥**

***अथ राजशिल्पिनौ किं कृत्वा किं कुर्यातामित्याह॥***

अब आठ ऋचावाले उनहत्तरवें सूक्त का आरम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में राजा और शिल्पी जन क्या करके क्या करें, इस विषय को कहते हैं॥

**सं वां कर्मणा समिषा हिनोमीन्द्राविष्णू अपसस्पारे अस्य।**
**जुषेथां यज्ञं द्रविणं च धत्तमरिष्टैर्नः पथिभिः पारयन्ता॥ १॥**

**सम्। वाम्। कर्मणा। सम्। इषा। हिनोमि। इन्द्राविष्णू इति। अपसः। पारे। अस्य। जुषेथाम्। यज्ञम्। द्रविणम्। च। धत्तम्। अरिष्टैः। नः। पथिऽभिः। पारयन्ता॥ १॥**

**पदार्थः**-(**सम्**) सम्यक् (**वाम्**) युवाम् (**कर्मणा**) ईप्सिततमेन व्यापारेण (**सम्**) सम्यक् (**इषा**) अन्नादिना (**हिनोमि**) वर्धयामि (**इन्द्राविष्णू**) सूर्यविद्युतौ (**अपसः**) कर्मणः (**पारे**) (**अस्य**) (**जुषेथाम्**) सेवेथाम् (**यज्ञम्**) सङ्गतिकरणम् (**द्रविणम्**) धनं यशो वा (**च**) (**धत्तम्**) (**अरिष्टैः**) अहिंसितैर्हिंसकरहितैः (**नः**) अस्मानस्मभ्यं वा (**पथिभिः**) मार्गैः (**पारयन्ता**) पारं गमयन्तौ॥ १॥

**अन्वयः**-हे इन्द्राविष्णू इव वर्त्तमानौ महाराजशिल्पिनौ! यौ वामहं कर्मणा सं हिनोमि। अस्यापसः पार इषा संहिनोमि तावरिष्टैः पथिभिर्नः पारयन्ता युवां यज्ञं द्रविणं च जुषेथां नोऽस्मभ्यं धत्तम्॥ १॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे अध्यापकोपदेशकौ! यथा वायुविद्युतौ यानेषु सम्प्रयोजितौ गमनरूपस्य कर्मणो विषयं स्थानात्पारे गमयतस्तथा तयोर्विद्यायां युष्मान् संप्रेर्य यथा वर्द्धयेम तथा वृद्धा भूत्वा निर्विघ्नैर्मार्गैरस्मान् पारं गमयित्वा धनं यशश्च सततं प्रापयतं तौ वयं सततं सेवेमहि॥ १॥

**पदार्थः**-हे (**इन्द्राविष्णू**) सूर्य्य और बिजुली के समान वर्त्तमान महाराज और शिल्पीजनो! जिन (**वाम्**) तुम दोनों को मैं (**कर्मणा**) अतीव चाहे हुए काम से (**सम्, हिनोमि**) अच्छे प्रकार बढ़ाता हूँ (**अस्य**) इस (**अपसः**) काम के (**पारे**) पार में (**इषा**) अन्नादि पदार्थों से (**सम्**) अच्छे प्रकार बढ़ाता हूँ वे (**अरिष्टैः**) हिंसकरहित (**पथिभिः**) मार्गों से (**नः**) हम लोगों को (**पारयन्ता**) पार करते हुए हम तुम (**यज्ञम्**) सङ्गतिकरण कार्य (**द्रविणम्, च**) और धन वा यश को (**जुषेथाम्**) सेवो और हम लोगों के लिये (**धत्तम्**) धारण करो॥ १॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे अध्यापक और उपदेशको! जैसे वायु और बिजुली विमानादिकों में अच्छे प्रकार जोड़े हुए गतिरूप कर्म के विषय को स्थान से पार पहुंचाते हैं, वैसे उनकी विद्या में तुमको प्रेरणा देकर जिस प्रकार हम लोग बढ़ावें उस प्रकार बढ़कर निर्विघ्न मार्गों से हम लोगों को ले जाके धन और यश की प्राप्ति निरन्तर कराइये, उन आप लोगों की सेवा हम लोग निरन्तर करें॥ १॥



www.9009.co.in

**पुनस्तौ कीदृशौ किं कुर्यातामित्याह॥**

फिर वे दोनों कैसे हैं और क्या करें, इस विषय को कहते हैं॥

**या विश्वासां जनितारा मतीनामिन्द्राविष्णू कलशा सोमधाना।**

**प्र वां गिरः शस्यमाना अवन्तु प्र स्तोमासो गीयमानासो अर्कैः॥२॥**

**या। विश्वासाम्। जनितारा। मतीनाम्। इन्द्राविष्णू इति। कलशा। सोमऽधाना। प्र। वाम्। गिरः। शस्यमानाः। अवन्तु। प्र। स्तोमासः। गीयमानासः। अर्कैः॥२॥**

**पदार्थः**-(**या**) यौ (**विश्वासाम्**) सर्वासाम् (**जनितारा**) उत्पादकौ (**मतीनाम्**) प्रज्ञानाम् (**इन्द्राविष्णू**) सूर्य्यविद्युतौ (**कलशा**) कुम्भाविव (**सोमधाना**) सोमं दधति ययोस्तौ (**प्र**) (**वाम्**) (**गिरः**) वाचः (**शस्यमानाः**) स्तूयमानाः (**अवन्तु**) रक्षन्तु (**प्र**) (**स्तोमासः**) ये स्तूयन्ते (**गीयमानासः**) सुगीताः (**अर्कैः**) मन्त्रैः सत्कारैर्वा॥२॥

**अन्वयः**-हे राजशिल्पिनौ! या यौ विश्वासां मतीनां जनितारा सोमधाना कलशेव वर्त्तमानाविन्द्राविष्णू ययोर्वामर्कैः शस्यमाना गिरो गीयमानासः स्तोमासः सर्वान् प्रावन्तु तान् भवन्तः प्रावन्तु॥२॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे विद्वांसो! यौ वायुविद्युतौ प्रजाजनकौ सर्वविद्याधारौ वर्त्तेते तयोः सम्प्रयोगेण विद्याशिक्षावाचः संरक्षन्तु॥२॥

**पदार्थः**-हे राजा और शिल्पीजनो (**या**) जो (**विश्वासाम्**) समस्त (**मतीनाम्**) बुद्धियों के (**जनितारा**) उत्पन्न करने वाले (**सोमधाना**) जिनके बीच सोम धरते हैं, वे (**कलशा**) घट के समान वर्त्तमान (**इन्द्राविष्णू**) सूर्य और बिजुली जिन (**वाम्**) तुम दोनों में (**अर्कैः**) मन्त्र वा सत्कारों से (**शस्यमानाः**) प्रशंसा को प्राप्त होती हुई (**गिरः**) वाणी (**गीयमानासः**) सुन्दरता से गाई हुई तथा (**स्तोमासः**) जो स्तुति किये जाते हैं, वे सब की (**प्र, अवन्तु**) अच्छे प्रकार पालें उन सबों की तुम लोग (**प्र**) अच्छे प्रकार रक्षा करो॥२॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे विद्वानो! जो वायु और बिजुली बुद्धि बढ़ाने और सब विद्याओं के धारण करने वाले वर्त्तमान हैं, उनके अच्छे प्रकार प्रयोग से अर्थात् कार्यों में लाने से विद्या, शिक्षा तथा वाणियों की अच्छे प्रकार रक्षा करो॥२॥

**पुनस्तौ कीदृशावित्याह॥**

फिर वे कैसे हैं, इस विषय को कहते हैं॥

**इन्द्राविष्णू मदपती मदानामा सोमं यातं द्रविणो दधाना।**

**सं वामञ्जन्त्वक्तुभिर्मतीनां सं स्तोमासः शस्यमानास उक्थैः॥३॥**

**इन्द्राविष्णू इति। मदपती इति मदऽपती। मदानाम्। आ। सोमम्। यातम्। द्रविणो इति। दधाना। सम्। वाम्। अञ्जन्तु। अक्तुऽभिः। मतीनाम्। सम्। स्तोमासः। शस्यमानासः। उक्थैः॥३॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**इन्द्राविष्णू**) वायुविद्युताविव सभासेनेशौ (**मदपती**) आनन्दस्य पालकौ (**मदानाम्**) आनन्दानाम् (**आ**) (**सोमम्**) ऐश्वर्यम् (**यातम्**) गच्छतम् (**द्रविणो**) धनं यशो वा (**दधाना**) धरन्तौ (**सम्**) (**वाम्**) युवाम् (**अञ्जन्तु**) प्रकटीकुर्वन्तु (**अक्तुभिः**) रात्रिभिः (**मतीनाम्**) मनुष्याणाम् (**सम्**) (**स्तोमासः**) स्तुतयः (**शस्यमानासः**) प्रशंसिताः (**उक्थैः**) वेदस्थैः स्तोत्रैः॥३॥

**अन्वयः**-हे इन्द्राविष्णू मदानां मदपती द्रविणो दधाना! युवां सोममा यातं वां मतीनामक्तुभिरुक्थैश्शस्यमानासः स्तोमासो वां समञ्जन्तु येन प्रीत्या युवामस्मान् समायातम्॥३॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यौ वायुविद्युद्वत्सर्वेषामानन्दस्य वर्धकौ मनुष्यैः स्तूयमानौ विद्यां च प्रयच्छन्तौ प्रयतेते तावेव राजकर्माऽर्हतः॥३॥

**पदार्थः**-हे (**इन्द्राविष्णू**) वायु और बिजुली के समान सभासेनापतियो! (**मदानाम्**) आनन्दों के बीच (**मदपती**) आनन्द के पालने और (**द्रविणो**) धन वा यश के (**दधाना**) धारण करने वालो! तुम दोनों (**सोमम्**) ऐश्वर्य्य को (**आ, यातम्**) प्राप्त होओ (**वाम्**) तुम दोनों को (**मतीनाम्**) मनुष्यों के बीच (**अक्तुभिः**) रात्रियों से और (**उक्थैः**) वेदस्थ स्तोत्रों से (**शस्यमानासः**) प्रशंसायुक्त किई जाती (**स्तोमासः**) स्तुतियां (**सम, अञ्जन्तु**) अच्छे प्रकार प्रकट करें, जिससे प्रीति के साथ तुम दोनों हम लोगों को (**सम्**) अच्छे प्रकार प्राप्त होओ॥३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो वायु और बिजुली के समान सब के आनन्द के बढ़ाने वाले, मनुष्यों से प्रशस्त किये जाते और विद्या वा धन को अच्छे प्रकार देते हुए प्रयत्न करते हैं, वे ही राजकर्म के योग्य होते हैं॥३॥

**पुनस्तं राजानं के प्राप्य किं कुर्वन्तीत्याह॥**

फिर उस राजा को कौन प्राप्त होकर क्या करते हैं, इस विषय को कहते हैं॥

**आ वामश्वासो अभिमातिषाह इन्द्राविष्णू सधमादो वहन्तु।**

**जुषेथां विश्वा हवना मतीनामुप ब्रह्माणि शृणुतं गिरो मे॥४॥**

**आ। वाम्। अश्वासः। अभिमातिऽसहः। इन्द्राविष्णू इति। सधऽमादः। वहन्तु। जुषेथाम्। विश्वा। हवना। मतीनाम्। उप। ब्रह्माणि। शृणुतम्। गिरः। मे॥४॥**

**पदार्थः**-(**आ**) समन्तात् (**वाम्**) युवाम् (**अश्वासः**) महान्तः (**अभिमातिषाहः**) येऽभिमानयुक्ताञ्छत्रून् सोढुं शक्नुवन्ति (**इन्द्राविष्णू**) वायुसूर्य्यौ (**सधमादः**) समानस्थानानि (**वहन्तु**) (**जुषेथाम्**) (**विश्वा**) सर्वाणि (**हवना**) दातुमादातुमर्हाणि (**मतीनाम्**) मनुष्याणाम् (**उप**) सामीप्ये (**ब्रह्माणि**) धनानि (**शृणुतम्**) (**गिरः**) वाणीः (**मे**) मम॥४॥

**अन्वयः**-हे इन्द्राविष्णू इव सभासेनेशौ! वां येऽश्वासोऽभिमातिषाहः सधमाद आ वहन्तु तेषां मतीनां विश्वा हवना ब्रह्माणि जुषेथां मे गिरश्चोप शृणुतम्॥४॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे राजन्! यदि धीमन्तो बलिष्ठाः शत्रुबलसोढारो जनास्त्वां प्राप्नुयुस्तर्हि सर्वमैश्वर्यं विद्यां च जगति प्रसारयन्तु॥४॥

**पदार्थः**-हे **(इन्द्राविष्णु)** वायु और सूर्य के तुल्य वर्त्तमान सभासेनाधीशो! **(वाम्)** तुम दोनों जो **(अश्वासः)** महात्माजन **(अभिमातिषाहः)** अभिमानयुक्त शत्रुओं को सह सकते हैं वे **(सधमादः)** समान स्थान को **(आ, वहन्तु)** प्राप्त करें उन **(मतीनाम्)** मनुष्यों के **(विश्वा)** सब **(हवना)** देने लेने योग्य **(ब्रह्माणि)** धनों को **(जुषेथाम्)** सेवो और **(मे)** मेरी **(गिरः)** वाणियों को भी **(उप, शृणुतम्)** समीप में सुनो॥४॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे राजन्! यदि बुद्धिमान्, अतीव बलवान् और शत्रुओं के बल के सहने वाले मनुष्य आपको प्राप्त होवें तो वे सब ऐश्वर्य्य और विद्या को संसार में विस्तारें॥४॥

**पुनस्तौ किं कुर्य्यातामित्याह॥**

फिर वे क्या करें, इस विषय को कहते हैं॥

**इन्द्राविष्णू तत्पनयाय्यं वां सोमस्य मद उरु चक्रमाथे।**

**अकृणुतमन्तरिक्षं वरीयोऽप्रथतं जीवसे नो रजांसि॥५॥**

**इन्द्राविष्णू इति। तत्। पनयाय्यम्। वाम्। सोमस्य। मदे। उरु। चक्रमाथे इति। अकृणुतम्। अन्तरिक्षम्। वरीयः। अप्रथतम्। जीवसे। नः। रजांसि॥५॥**

**पदार्थः**-**(इन्द्राविष्णू)** वायुसूर्यौ **(तत्)** **(पनयाय्यम्)** प्रशंसनीयम् **(वाम्)** युवाम् **(सोमस्य)** ऐश्वर्य्यस्य **(मदे)** हर्षे जाते सति **(उरु)** बहु **(चक्रमाथे)** कामयथः **(अकृणुतम्)** कुर्यातम् **(अन्तरिक्षम्)** भूमिसूर्ययोर्मध्यस्थमाकाशम् **(वरीयः)** अतिशयेन वरम् **(अप्रथतम्)** प्रख्यापयतम् **(जीवसे)** जीवितुम् **(नः)** अस्माकमस्मान् वा **(रजांसि)** ऐश्वर्याणि॥५॥

**अन्वयः**-हे राजप्रजाजनौ! याविन्द्राविष्णू सोमस्य मदे तदन्तरिक्षं पनयाय्यं कुरुतस्तौ वामुरु चक्रमाथे वरीयोऽप्रथतं तेन नो जीवसे रजांस्यकृणुतम्॥५॥

**भावार्थः**-हे राजप्रजाजना! यथा यज्ञेन शोधिते वायुविद्युतौ सर्वं चराचरं जगत्प्रशंसनीयमरोगं कुरुतस्तथा विधाय तेनास्माकमैश्वर्यं जीवनं चाधिकं कुर्वन्तु॥५॥

**पदार्थः**-हे राजा और प्रजाजनो! जो **(इन्द्राविष्णू)** वायु और सूर्य्य **(सोमस्य)** ऐश्वर्य्य का **(मदे)** आनन्द प्राप्त होने पर **(तत्)** उस **(अन्तरिक्षम्)** भूमि और सूर्य्य के बीच की पोल को **(पनयाय्यम्)** प्रशंसा के योग्य करते हैं उनकी **(वाम्)** तुम **(उरु)** बहुत **(चक्रमाथे)** कामना करो और **(वरीयः)** अत्यन्त श्रेष्ठ को **(अप्रथतम्)** विख्यात करो उससे **(नः)** हम लोगों के **(जीवसे)** जीवन को तथा **(रजांसि)** ऐश्वर्य्यों को **(अकृणुतम्)** सिद्ध करो॥५॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-हे राजप्रजाजनो! जैसे यज्ञ से शोधे हुए वायु और बिजुली समस्त चराचर जगत् को प्रशंसा के योग्य और नीरोग करते हैं, वैसे विधान कर उससे हमारे ऐश्वर्य्य और जीवन को अधिक करो॥५॥

**पुनस्तौ कीदृशौ सम्पाद्य किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

फिर उन्हें कैसे सिद्ध कर क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**इन्द्रा॑विष्णू ह॒विषा॑ वावृधा॒नाग्रा॑द्वाना॒ नम॑सा रातहव्या।**

**घृता॑सुती॒ द्रवि॑णं धत्तम॒स्मे स॑मु॒द्रः स्थः॑ क॒लशः॑ सोम॒धानः॑॥६॥**

**इन्द्रा॑विष्णू इति॑। ह॒विषा॑। व॒वृ॒धा॒ना। अग्र॑ऽअद्वाना। नम॑सा। रा॒त॒ऽह॒व्या॒। घृता॑सुती॒ इति॒ घृत॑ऽआसुती। द्रवि॑णम्। ध॒त्त॒म्। अ॒स्मे॒ इति॑। स॒मु॒द्रः। स्थः॒। क॒लशः॑। सो॒म॒ऽधानः॑॥६॥**

**पदार्थः**-(**इन्द्राविष्णू**) वायुसूर्य्यौ (**हविषा**) हुतेन द्रव्येण (**वावृधाना**) शुद्ध्या वर्द्धमानौ वर्धकौ (**अग्राद्वाना**) येऽग्रमदन्ति तद्विभाजकौ (**नमसा**) अन्नादिना (**रातहव्या**) दातव्यदानौ (**घृतासुती**) घृतेन समन्ताद् सुतिः प्रेरणं ययोस्तौ (**द्रविणम्**) धनं यशश्च (**धत्तम्**) (**अस्मे**) अस्मासु (**समुद्रः**) सम्यगापो द्रवन्ति यस्मिँस्तदन्तरिक्षं मेघो वा (**स्थः**) भवथः (**कलशः**) कलश इव जलेन पूर्णः (**सोमधानः**) सोमाद्योषधिगणा धीयन्ते यस्मिन् सः॥६॥

**अन्वयः**-हे ऋत्विग्यजमानौ! यथा हविषा वावृधानाग्राद्वाना नमसा रातहव्या घृतासुती इन्द्राविष्णू अस्मे द्रविणं धत्तस्तथा युवां धत्तं सोमधानः समुद्रः कलश इव स्थः॥६॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे ऋत्विग्यजमानादयः! सुगन्धिधृतादिहोमेन वायुसूर्य्यौ शुद्धौ कृत्वा सर्वेषां भाग्यं सम्पाद्य सर्वेषां सुखवर्धका भवन्तु॥६॥

**पदार्थः**-हे ऋत्विज् और यजमानो! जैसे (**हविषा**) होमे हुए पदार्थ से (**वावृधाना**) निरन्तर शुद्धि से बढ़े वा बढ़ाने (**अग्राद्वाना**) अग्रभाग के भोगने को विभाग करने वाले और (**नमसा**) अन्नादि पदार्थ से (**रातहव्या**) देने योग्य को देने वाले (**घृतासुती**) सब ओर से जिनकी घी से प्रेरणा होती वे (**इन्द्राविष्णू**) वायु और सूर्य (**अस्मे**) हम लोगों में (**द्रविणम्**) धन और यश को धरते हैं, वैसे तुम (**धत्तम्**) धरो तथा (**सोमधानः**) और सोमादि ओषधि जिसमें स्थापन की जाती हैं और (**सुमद्रः**) अच्छे प्रकार जल तरंगे लेते हैं जिसमें वह अन्तरिक्ष वा मेघ (**कलशः**) घट के समान वर्त्तमान है उसके समान (**स्थः**) होते हो॥६॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे ऋत्विग् और यजमान आदि जनो! सुगन्धि और घृतादि पदार्थों के होम से वायु और सूर्य को शुद्ध कर सब के भाग्य की सिद्धि कर सब के सुख के बढ़ाने वाले होओ॥६॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**इन्द्रा॑विष्णू पिब॑तं॒ मध्वो॑ अ॒स्य सोम॑स्य दस्रा ज॒ठरं॑ पृणेथाम्।**



www.9009.co.in

**आ वामन्धांसि मदिराण्यग्मन्नुप ब्रह्माणि शृणुतं हवं मे॥७॥**

**इन्द्राविष्णू इति। पिबतम्। मध्वः। अस्य। सोमस्य। दस्रा। जठरम्। पृणेथाम्। आ। वाम्। अन्धांसि। मदिराणि। अग्मन्। उप। ब्रह्माणि। शृणुतम्। हवम्। मे॥७॥**

**पदार्थः**-(**इन्द्राविष्णू**) वायुविद्युताविव (**पिबतम्**) (**मध्वः**) मधुरस्य (**अस्य**) (**सोमस्य**) सोमाद्योषधिजन्यस्य रसस्य (**दस्रा**) दुःखक्षयितारौ (**जठरम्**) उदरम् (**पृणेथाम्**) प्रपूरयेतम् (**आ**) (**वाम्**) युवाम् (**अन्धांसि**) अन्नानि (**मदिराणि**) आनन्दकराणि (**अग्मन्**) प्राप्नुवन्तु (**उप**) (**ब्रह्माणि**) पठितानि वेदस्तोत्राणि (**शृणुतम्**) (**हवम्**) स्वाध्यायम् (**मे**) मम॥७॥

**अन्वयः**-हे अध्यापकोपदेशकौ दस्रा! वां यानि मध्वोऽस्य सोमस्य मदिराण्यधांस्यग्मँस्तानीन्द्राविष्णू इव पिबतं तैर्जठरमा पृणेथां पुनर्मे ब्रह्माणि हवं चोप शृणुतम्॥७॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। ये मनुष्या औषधैः शरीरस्य रोगान् विद्यासत्सङ्गधर्मानुष्ठानैरात्मनो रोगांश्च निवार्य वायुविद्युद्वद्बलिष्ठा भूत्वा विद्याभ्यासं कृत्वा विद्यार्थिनां परीक्षां कुर्वन्ति ते सर्वेषां दुःखानि निवार्य्याऽऽनन्दं दातुं शक्नुवन्ति॥७॥

**पदार्थः**-हे अध्यापक और उपदेशको! (**दस्रा**) दुःख के विनाश करने वालो (**वाम्**) तुम दोनों को जो (**मध्वः**) मधुरगुणयुक्त (**अस्य**) [इस] (**सोमस्य**) सोम आदि ओषधियों से उत्पन्न हुए इस रस के (**मदिराणि**) आनन्द करने वाले (**अन्धांसि**) अन्न (**अग्मन्**) प्राप्त होवें उनको (**इन्द्राविष्णू**) वायु और बिजुली के समान (**पिबतम्**) पिओ और उनसे (**जठरम्**) उदर को (**आ, पृणेथाम्**) अच्छे प्रकार भरो फिर (**मे**) मेरे (**ब्रह्माणि**) पढ़े हुए वेदस्तोत्रों को और (**हवम्**) नित्य के वेदपाठ को (**उप, शृणुतम्**) समीप में सुनो॥७॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो मनुष्य औषधों से शरीर के रोगों को तथा विद्या, सत्सङ्ग और धर्म के अनुष्ठान से आत्मा के रोगों को निवार के वायु और बिजुली के समान बलिष्ठ हो विद्याभ्यास करके विद्यार्थियों की परीक्षा करते हैं, वे सब के दुःखों को निवृत्त कर आनन्द दे सकते हैं॥७॥

**पुनस्तौ कीदृशावित्याह॥**

फिर वे कैसे हैं, इस विषय को कहते हैं॥

**उभा जिग्यथुर्न परा जयेथे न परा जिग्ये कतरश्चनैनोः।**

**इन्द्रश्च विष्णो यदपस्पृधेथां त्रेधा सहस्रं वि तदैरयेथाम्॥८॥१३॥**

**उभा। जिग्यथुः। न। परा। जयेथे इति। न। परा। जिग्ये। कतरः। चन। एनोः। इन्द्रः। च। विष्णो इति। यत्। अपस्पृधेथाम्। त्रेधा। सहस्रम्। वि। तत्। ऐरयेथाम्॥८॥**

**पदार्थः**-(**उभा**) सभासेनेशौ (**जिग्यथुः**) विजयेथे (**न**) निषेधे (**परा**) (**जयेथे**) पराजयं प्राप्नुथः (**न**) (**परा**) (**जिग्ये**) पराजितो भवति (**कतरः**) अनयोर्मध्ये एकः (**चन**) अपि (**एनोः**) अनयोर्मध्ये



www.9009.co.in

**(इन्द्रः)** परमैश्वर्यवान् वायुवद्वर्त्तमानः **(च)** **(विष्णो)** विद्युद्वद्व्यापनशील **(यत्)** **(अपस्पृधेथाम्)** स्पर्द्धेथाम् **(त्रेधा)** त्रिविधम् **(सहस्रम्)** असङ्ख्यं सैन्यम् **(वि)** **(तत्)** **(ऐरयेथाम्)** प्रेरयेतम्॥८॥

**अन्वयः**-हे विष्णो इन्द्रश्च! युवां यत्सहस्रं तत्त्रेधापस्पृधेथां व्यैरयेथां तदोभा युवां जिग्यथुर्न परा जयेथे एनोः कतरश्चन न परा जिग्ये॥८॥

**भावार्थः**-हे सेनाबलाध्यक्षा! यदि भवन्तः सर्वदा सेनोन्नतये युद्धविद्यावृद्धये प्रयतेरँस्तर्हि सर्वत्र विजयेरन् कुत्राऽपि न पराजयेरन्निति॥८॥

अत्रेन्द्रविष्णुवत्सभासेनेशादिकर्मवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इत्येकोनसप्ततितमं सूक्तं त्रयोदशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे **(विष्णो)** बिजुली के समान व्याप्त होने वाले **(इन्द्रः, च)** और परमैश्वर्य्यवान् वायु के समान वर्त्तमान! तुम दोनों **(यत्)** जो **(सहस्रम्)** असंख्य सेना समूह हैं **(तत्)** उसे **(त्रेधा)** तीन प्रकार **(अपस्पृधेथाम्)** स्पर्द्धा अर्थात् तर्क-वितर्क से स्थापित करो और उसे **(वि, ऐरयेथाम्)** विविध प्रकार से यथा स्थान स्थित कराओ ऐसा करो तो **(उभा)** तुम दोनों **(जिग्यथुः)** विजय को प्राप्त होते हो **(नः)** नहीं **(परा, जयेथे)** पराजय को प्राप्त होते हो तथा **(एनोः)** इनके बीच **(कतरः)** कोई एक **(चन)** भी **(न)** नहीं **(परा, जिग्ये)** पराजित होता है॥८॥

**भावार्थः**-हे सेनाबल के अधीशो! यदि आप लोग सर्वदा सेना की उन्नति के लिये और युद्धविद्या की वृद्धि के लिये प्रयत्न कीजिये तो सर्वत्र जीतिये कहीं भी न पराजित हूजिये॥८॥

इस सूक्त में इन्द्र और विष्णु के समान सभा और सेनेश आदि के कर्मों का वर्णन होने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह उनहत्तरवां सूक्त और तेरहवां वर्ग पूरा हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

**अथ षड्चस्य सप्ततितमस्य सूक्तस्य भरद्वाजो बार्हस्पत्य ऋषि:। द्यावापृथिव्यौ देवते। १, ५ निचृज्जगती। २, ३, ४, ६ जगतीच्छन्द:। निषाद: स्वर:॥**

***अथ भूमिसूर्यौ कीदृशौ इत्याह॥***

अब छ: ऋचा वाले सत्तरवें सूक्त का प्रारम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में भूमि और सूर्य कैसे वर्त्तमान हैं, इस विषय को कहते हैं॥

**घृतवती भुवनानामभिश्रियोर्वी पृथ्वी मधुदुघे सुपेशसा।**
**द्यावापृथिवी वरुणस्य धर्मणा विष्कभिते अजरे भूरिरेतसा॥ १॥**

**घृतवती इति घृतऽवती। भुवनानाम्। अभिऽश्रिया। उर्वी इति। पृथ्वी इति। मधुदुघे इति मधुऽदुघे। सुऽपेशसा। द्यावापृथिवी इति। वरुणस्य। धर्मणा। विस्कभिते इति विऽस्कभिते। अजरे इति। भूरिऽरेतसा॥ १॥**

**पदार्थ:**-(**घृतवती**) बहु घृतमुदकं दीप्तिर्वा विद्यते ययोस्ते। **घृतमित्युदकनाम।** (निघं०१.१२) (**भुवनानाम्**) सर्वेषां लोकानाम् (**अभिश्रिया**) अभिमुख्या श्रीर्याभ्यां ते (**उर्वी**) बहुपदार्थयुक्ते (**पृथ्वी**) विस्तीर्णे (**मधुदुघे**) मधुरादिरसै: प्रपूरिके (**सुपेशसा**) शोभनं पेश: सुवर्णं रूपं वा ययोस्ते (**द्यावापृथिवी**) भूमिसूर्यौ (**वरुणस्य**) सूर्यस्य वायोर्वा (**धर्मणा**) आकर्षणधारणादिगुणेन (**विष्कभिते**) विशेषेण धृते (**अजरे**) अजीर्णे (**भूरिरेतसा**) भूरि बहु रेतो वीर्य्यमुदकं वा याभ्यां ते। **रेत इत्युदकनाम।** (निघं०१.१२)॥१॥

**अन्वय:**-हे मनुष्या! यूयं भुवनानामभिश्रियोर्वी पृथ्वी घृतवती मधुदुघे सुपेशसा भूरिरेतसाऽजरे वरुणस्य धर्मणा विष्कभिते द्यावापृथिवी यथावद्विजानीत॥१॥

**भावार्थ:**-हे मनुष्या! भवन्तो भूगर्भविद्युद्विद्यां विजानीयुर्ये द्वे सूर्येण वायुना च धृते वर्त्तेते ताभ्यां बलवृद्धिं कामपूर्त्तिं च कुर्वन्तु॥१॥

**पदार्थ:**-हे मनुष्यो! तुम (**भुवनानाम्**) समस्त लोकों सम्बन्धी (**अभिश्रिया**) सब ओर से कान्तियुक्त (**उर्वी**) बहुत पदार्थों से युक्त और (**पृथ्वी**) विस्तार से युक्त (**घृतवती**) जिनमें बहुत उदक वा दीप्ति विद्यमान वे तथा (**मधुदुघे**) जो मधुरादि रसों से परिपूर्ण करने वाले (**सुपेशसा**) जिनका शोभायुक्त रूप वा जिनसे दीप्तिमान् सुवर्ण उत्पन्न होता (**भूरिरेतसा**) जिन से बहुत वीर्य्य वा जल उत्पन्न होता और (**अजरे**) जो अजीर्ण अर्थात् छिन्न-भिन्न नहीं वे (**वरुणस्य**) सूर्य वा वायु के (**धर्मणा**) आकर्षण वा धारण करने आदि गुण से (**विष्कभिते**) विशेषता से धारण किये हुए (**द्यावापृथिवी**) भूमि और सूर्य्य हैं, उन्हें यथावत् जानो॥१॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! आप भूगर्भ और बिजुली की विद्या को जानो और जो दो पदार्थ सूर्य्य तथा वायु से धारण किये हुए हैं, उनसे बल की वृद्धि और कामना की पूर्णता करो॥१॥

**पुनस्ते कथंभूते इत्याह॥**

फिर वे कैसे हैं, इस विषय को कहते हैं॥

**असंश्चन्ती भूरिधारे पयस्वती घृतं दुहाते सुकृते शुचिव्रते।**
**राजन्ती अस्य भुवनस्य रोदसी अस्मे रेतः सिञ्चतं यन्मनुर्हितम्॥२॥**

**असंश्चन्ती इति। भूरिधारे इति भूरिऽधारे। पयस्वती इति। घृतम्। दुहाते इति। सुऽकृते। शुचिव्रते इति शुचिऽव्रते। राजन्ती। अस्य। भुवनस्य। रोदसी इति। अस्मे इति। रेतः। सिञ्चतम्। यत्। मनुःऽहितम्॥२॥**

**पदार्थः**-(**असश्चन्ती**) पृथक् पृथग्वर्त्तमाने (**भूरिधारे**) भूरि बह्व्यो धारा ययोस्ते (**पयस्वती**) बहूदकयुक्ते (**घृतम्**) उदकम् (**दुहाते**) पिपृते (**सुकृते**) ईश्वरेण सुष्ठु निर्मिते सुकृतकर्मनिमित्ते वा (**शुचिव्रते**) पवित्रकर्मयुक्ते (**राजन्ती**) प्रकाशमाने (**अस्य**) (**भुवनस्य**) ब्रह्माण्डस्य (**रोदसी**) द्यावापृथिव्यौ (**अस्मे**) अस्मासु (**रेतः**) उदकं वीर्यं वा (**सिञ्चतम्**) सिञ्चतः। अत्र पुरुषव्यत्ययः (**यत्**) (**मनुर्हितम्**) मनुष्येभ्यो हितम्॥२॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! येऽसश्चन्ती भूरिधारे पयस्वती सुकृते शुचिव्रतेऽस्य भुवनस्य राजन्ती रोदसी अस्मे यन्मनुर्हितं तद् घृतं दुहाते तद्रेतश्च सिञ्चतं ते यथावदुपकारायाऽनयन्तु॥२॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! सूर्यभूमी एव सर्वस्य पालननिमित्ते बहूदाकादिपदार्थयुक्ते सर्वेषां कामं पूरयतस्ते यथावद्विज्ञाय कार्यसिद्धये सम्प्रयुङ्ध्वम्॥२॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो (**असश्चन्ती**) अलग-अलग वर्त्तमान (**भूरिधारे**) जिनकी बहुत धारायें विद्यमान (**पयस्वती**) जो बहुत जल से युक्त (**सुकृते**) जो ईश्वर ने सुन्दर बनाये वा अच्छे कर्म कराने वाले और (**शुचिव्रते**) पवित्र कर्मयुक्त हैं तथा (**अस्य**) इस (**भुवनस्य**) ब्रह्माण्ड के सम्बन्ध में (**राजन्ती**) प्रकाशमान हैं, वे (**रोदसी**) आकाश और पृथिवी (**अस्मे**) हम लोगों में (**यत्**) जो (**मनुर्हितम्**) मनुष्यों का हित करने वाला है उस (**घृतम्**) जल को (**दुहाते**) पूर्ण करते हैं उस (**रेतः**) जल वा वीर्य्य को (**सिञ्चतम्**) सींचते हैं, उन्हें यथावत् उपकार के लिये प्राप्त होओ॥२॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! सूर्य्य और भूमि ही सब जगत् की रक्षा के निमित्त, बहुत उदक आदि पदार्थयुक्त और सब के काम को पूर्ण करते हैं, उनको यथावत् जानकर कार्य्य की सिद्धि के लिये अच्छे प्रकार उनका प्रयोग करो॥२॥

**पुनरेते विज्ञाय कः कीदृशो भवतीत्याह॥**

फिर इन को जान के कौन कैसा होता है, इस विषय को कहते हैं॥

**यो वामृजवे क्रमणाय रोदसी मर्तो ददाश धिषणे स साधति।**



www.9009.co.in

**प्र प्रजाभिर्जायते धर्मणस्परि युवोः सिक्ता विषुरूपाणि सव्रता॥ ३॥**

**यः। वाम्। ऋजवे। क्रमणाय। रोदसी इति। मर्तः। ददाश। धिषणे इति। सः। साधति। प्र। प्रऽजाभिः। जायते। धर्मणः। परि। युवोः। सिक्ता। विषुऽरूपाणि। सऽव्रता॥ ३॥**

**पदार्थः**-(**यः**) (**वाम्**) युवयो राजप्रजाजनयोः (**ऋजवे**) सरलाय (**क्रमणाय**) गमनागमनाय (**रोदसी**) द्यावापृथिव्यौ (**मर्त्तः**) मनुष्यः (**ददाश**) ददाति (**धिषणे**) प्रज्ञाप्रगल्भतयोः कारणे (**सः**) (**साधति**) (**प्र**) (**प्रजाभिः**) प्रजातैस्सह (**जायते**) (**धर्मणः**) धर्मात् (**परि**) सर्वतः (**युवोः**) युवयोः (**सिक्ता**) सिक्तानि वीर्याण्युदकानि वा (**विषुरूपाणि**) व्याप्तरूपाणि (**सव्रता**) समानकर्माणि॥ ३॥

**अन्वयः**-हे राजप्रजे! ये धिषणे रोदसी वामृजवे क्रमणाय भवतस्ते यो मर्त्तो ददाश स कार्याणि प्र साधति प्रजाभिः प्रजायते युवोर्धर्मणो विषुरूपाणि सव्रता सिक्ता कुरुतस्ते परिसाधनीये॥ ३॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! ये भूगर्भविद्युद्विद्यां द्यावापृथिव्योश्च कर्माणि जानन्ति ते प्रजया पशुभिर्विद्यया राज्येन च युक्ता जायन्ते॥ ३॥

**पदार्थः**-हे राजप्रजाजनो! जो (**धिषणे**) प्रजा और प्रगल्भता के कारण (**रोदसी**) आकाश और पृथिवी (**वाम्**) तुम लोगों को (**ऋजवे**) सरलपन के लिये और (**क्रमणाय**) गमन वा आगमन के लिये होते हैं उनको (**यः**) जो (**मर्त्तः**) मनुष्य (**ददाश**) देता है (**सः**) वह कार्यों को (**प्र, साधति**) प्रसिद्ध करता है और (**प्रजाभिः**) उत्पन्न हुए पदार्थों के साथ (**जायते**) प्रसिद्ध होता है और (**युवोः**) तुम्हारे (**धर्मणः**) धर्म से (**विषुरूपाणि**) व्याप्तरूप (**सव्रता**) समान कर्मों को तथा (**सिक्ता**) वीर्य्य वा उदकों को सींचे हुए करते हैं, वे (**परि**) सब ओर से सिद्ध करने योग्य हैं॥ ३॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो भूगर्भविद्या और द्यावापृथिवी के कर्मों को जानते हैं; वे प्रजा, पशु, विद्या और राज्य से युक्त होते हैं॥ ३॥

**पुनस्ते कीदृश्यौ किं प्रापयतश्चेत्याह॥**

फिर वे कैसे हैं और क्या प्राप्त कराते हैं, इस विषय को कहते हैं॥

**घृतेन द्यावापृथिवी अभीवृते घृतश्रिया घृतपृचा घृतावृधा।**
**उर्वी पृथ्वी होतृवूर्ये पुरोहिते ते इद्विप्रा ईळते सुम्नमिष्टये॥ ४॥**

**घृतेन। द्यावापृथिवी इति। अभिऽवृते इति अभिऽवृते। घृतऽश्रिया। घृतऽपृचा। घृतऽवृधा। उर्वी इति। पृथ्वी इति। होतृऽवूर्ये। पुरोहित इति पुरःऽहिते। ते इति। इत्। विप्राः। ईळते। सुम्नम्। इष्टये॥ ४॥**

**पदार्थः**-(**घृतेन**) उदकेन (**द्यावापृथिवी**) विद्युदन्तरिक्षे (**अभीवृते**) येऽभितो वर्त्तेते (**घृतश्रिया**) घृतं प्रदीपनमवकाशनञ्च श्रीर्ययोस्ते (**घृतपृचा**) घृतेन प्रदीपनेनोदकेन वा सम्पृक्ते (**घृतावृधा**) घृतेन तेजसा वर्धेते (**उर्वी**) बहुगुणद्रव्ययुक्ते (**पृथ्वी**) विस्तीर्णे (**होतृवूर्य्ये**) होतारो व्रियन्ते ययोस्ते (**पुरोहिते**)



www.9009.co.in

पुरस्ताद्धितं दधत्यौ **(ते)** **(इत्)** **(विप्राः)** मेधाविनः **(ईळते)** स्तुवन्ति **(सुम्नम्)** सुखम् **(इष्टये)** सङ्गतये॥४॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! ये विप्रा घृतेन युक्ते उर्वी अभीवृते घृतश्रिया घृतपृचा घृतावृधा होतृवूर्ये पुरोहिते इष्टये पृथ्वी द्यावापृथिवी ईळते त इत्सर्वेभ्यः सुम्नं लभन्ते॥४॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यथा प्राज्ञा विद्युतोऽन्तरिक्षस्य च विद्यां विज्ञाय कार्येषु संप्रयुञ्जते तथैते यूयमपि सम्प्रयुङ्ध्वम्॥४॥

**पदार्थः**-हे मनुष्या! जो **(विप्राः)** मेधावी बुद्धिमान् पुरुष **(घृतेन)** जल से तथा **(उर्वी)** बहुत गुण और पदार्थों से युक्त **(अभीवृते)** सब ओर से वर्त्तमान **(घृतश्रिया)** अत्यन्त प्रकाश वा अवकाश धन जिनका **(घृतपृचा)** जो प्रकाश वा जल से अच्छे प्रकार सम्बन्ध किये हुए और **(घृतावृधा)** तेज से बढ़ते हैं तथा **(होतृवूर्ये)** होता जन से स्वीकार होते और **(पुरोहिते)** आगे से हित को धारण करते हुए **(इष्टये)** सङ्ग के लिये **(पृथ्वी)** बहुत विस्तारयुक्त जो **(द्यावापृथिवी)** बिजुली और अन्तरिक्ष हैं उनकी **(ईळते)** प्रशंसा करते हैं **(ते, इत्)** वे ही सब से **(सुम्नम्)** सुख पाते हैं॥४॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे उत्तम बुद्धिमान् जन बिजुली और अन्तरिक्ष की विद्या को जान के कार्यों में लगाते हैं, वैसे तुम भी उनका प्रयोग करो॥४॥

**पुनस्ताभ्यां किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

फिर उनसे क्या करने योग्य है, इस विषय को कहते हैं॥

**मधु॑ नो॒ द्यावा॑पृथि॒वी मि॑मिक्षतां मधु॒श्चुता॑ मधु॒दुघे॒ मधु॑व्रते।**

**दधा॑ने य॒ज्ञं द्रवि॑णं च दे॒वता॒ महि॒ श्रवो॒ वाज॑म॒स्मे सु॒वीर्य॑म्॥५॥**

**मधु॑। नः॒। द्यावा॑पृथि॒वी इति॑। मि॒मि॒क्ष॒ता॒म्। म॒धु॒ऽश्चुता॑। म॒धु॒दुघे॒ इति॑ मधु॒ऽदुघे॒। मधु॑व्रते॒ इति॒ मधु॑ऽव्रते। दधा॑ने इति॑। य॒ज्ञम्। द्रवि॑णम्। च॒। देवता॑। महि॑। श्रव॑ः। वाज॑म्। अ॒स्मे॒ इति॑। सु॒ऽवीर्य॑म्॥५॥**

**पदार्थः**-**(मधु)** मधुरमुदकम्। **मध्वित्युदकनाम।** (निघं०१.१२) **(नः)** अस्मभ्यम् **(द्यावापृथिवी)** सूर्य्यभूमी **(मिमिक्षताम्)** मेढुमिच्छतम् **(मधुश्चुता)** मधूदकस्य वर्षयित्र्यौ **(मधुदुघे)** ये मधुनोदकेन दुग्धः कामान् प्रपूरयतस्ते **(मधुव्रते)** मधूनि व्रतानि कर्माणि ययोस्ते **(दधाने)** **(यज्ञम्)** सङ्गतिमयं व्यवहारम् **(द्रविणम्)** धनम् **(च)** **(देवता)** दिव्यस्वरूपे **(महि)** महत् **(श्रवः)** अन्नम् **(वाजम्)** विज्ञानम् **(अस्मे)** अस्मासु **(सुवीर्यम्)** उत्तमपराक्रमम्॥५॥

**अन्वयः**-हे अध्यापकोपदेशकौ! वे मधुश्चुता मधुदुघे मधुव्रते देवताऽस्मे यज्ञं द्रविणं महि श्रवो वाजं सुवीर्यं च दधाने द्यावापृथिवी वर्त्तेते ताभ्यां युवां नो मधु मिमिक्षताम्॥५॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यथा भूमिसूर्य्यौ सत्यकर्माणाविच्छापूरकौ मधुरादिरसप्रदौ धनान्नबलविज्ञानवर्धकौ स्यातां तथाऽनुतिष्ठन्तु॥५॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-हे अध्यापक और उपदेशको! जो **(मधुश्चुता)** मधुर जल के वर्षाने और **(मधुदुघे)** मधुर जल से काम पूरे करने **(मधुव्रते)** जिनके मधुर काम **(देवता)** जो दिव्यरूप **(अस्मे)** हम लोगों में **(यज्ञम्)** सङ्गतिमय व्यवहार **(द्रविणम्)** धन **(महि)** महान् **(श्रवः)** अन्न **(वाजम्)** विज्ञान **(सुवीर्यम्, च)** और उत्तम पराक्रम को भी **(दधाने)** स्थापन करते हुए **(द्यावापृथिवी)** सूर्य और भूमि यह दोनों पदार्थों वर्त्तमान हैं उनसे तुम **(नः)** हमारे लिये **(मधु)** मधुर जल के **(मिमिक्षतम्)** सीचनें की इच्छा करो॥५॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे भूमि और सूर्य्य सत्य कर्मयुक्त, इच्छा पूरी करने और मधुरादि रस देने, धन, अन्न, बल और विज्ञान के बढ़ाने वाले हों, वैसे अनुष्ठान करो॥५॥

**पुनस्ते कीदृश्यौ किंवत् किं कुरुत इत्याह॥**

फिर वे कैसे किसके तुल्य और क्या करते हैं, इस विषय को कहते हैं॥

**ऊर्जं नो द्यौश्च पृथिवी च पिन्वतां पिता माता विश्वविदा सुदंससा।**

**संरराणे रोदसी विश्वशंभुवा सनिं वाजं रयिमस्मे समिन्वताम्॥६॥१४॥**

**ऊर्जम्। नः। द्यौः। च। पृथिवी। च। पिन्वताम्। पिता। माता। विश्वऽविदा। सुऽदंससा। संरराणे इति सम्ऽरराणे। रोदसी इति। विश्वऽशंभुवा। सनिम्। वाजम्। रयिम्। अस्मे इति। सम्। इन्वताम्॥६॥**

**पदार्थः**-**(ऊर्जम्)** अन्नं पराक्रमं वा। **ऊर्गित्यन्ननाम।** (निघं०२.७) **(नः)** अस्मभ्यम् **(द्यौः)** सूर्यो विद्युद्वा **(च)** **(पृथिवी)** भूमिः **(च)** **(पिन्वताम्)** सुखयेताम् **(पिता)** पितेव **(माता)** मातेव **(विश्वविदा)** विश्वं सर्वं विन्दति याभ्यां ते **(सुदंससा)** शोभनानि दंसांसि कर्माणि ययोस्ते **(संरराणे)** ये सम्यक्सुखं रातो दत्तस्ते **(रोदसी)** बहुपदार्थयुक्ते द्यावापृथिव्यौ **(विश्वशंभुवा)** विश्वस्मै शं सुखं भावुके **(सनिम्)** संविभागम् **(वाजम्)** विज्ञानमन्नं वा **(रयिम्)** श्रियम् **(अस्मे)** अस्मासु **(सम्)** सम्यक् **(इन्वताम्)** व्याप्नुताम्॥६॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! ये विश्वविदा सुदंससा संरराणे विश्वशंभुवा रोदसी अस्मे सनिं वाजं रयिं च समिन्वतां पितेव द्यौश्च मातेव पृथिवी च न ऊर्जं पिन्वतां ते यथावद्विजानन्तु॥६॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! भवन्तो यः सूर्य्यः पितेव या पृथिवी मातेवैते सर्वसुखप्रदे धनैश्वर्यप्रापिके मङ्गलनिमित्ते उत्तमक्रिये बलपराक्रमप्रदे वर्तेते ते प्रयत्नेन कथं न विजानन्तीति॥६॥

अत्र द्यावापृथिव्योस्तद्वदध्यापकोपदेशकयोर्ऋत्विग्यजमानयोश्च कृत्यवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति सप्ततितमं सूक्तं चतुर्दशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो **(विश्वविदा)** जिनसे सर्व सुख को प्राप्त होते हैं **(सुदंससा)** जिनसे सुन्दर काम सिद्ध होते हैं **(संरराणे)** जो अच्छे प्रकार सुख देते हैं और **(विश्वशंभुवा)** जो सब के लिये सुख की



www.9009.co.in

भावना कराते वे **(रोदसी)** बहुपदार्थयुक्त द्यावापृथिवी **(अस्मे)** हम लोगों में **(सनिम्)** अच्छे प्रकार विभाग को और **(वाजम्)** विज्ञान वा अन्न तथा **(रयिम्)** धन को **(सम्, इन्वताम्)** उत्तमता से व्याप्त हों तथा **(पिता)** पिता के समान **(द्यौः)** सूर्य्य वा विद्युत् अग्नि **(च)** और **(माता)** माता के समान **(पृथिवी)** भूमि **(च)** भी **(नः)** हमारे लिये **(ऊर्जम्)** अन्न वा पराक्रम को **(पिन्वताम्)** सुखपूर्वक परिपूर्ण करें, उनको यथावत् जानो॥६॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! आप, जो सूर्य पिता के समान, जो पृथिवी माता के समान ये दोनों सर्व सुख देने वा धन और ऐश्वर्य्य की प्राप्ति कराने वा मङ्गल कराने वाले उत्तम क्रियायुक्त और बल वा पराक्रम देने वाले वर्त्तमान हैं, उनको उत्तम यत्न के साथ कैसे न जानो॥६॥

इस सूक्त में द्यावापृथिवी और उनके समान अध्यापक और उपदेश वा ऋत्विक्, और यजमानों के काम का वर्णन होने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह सत्तरवां सूक्त और चौदहवाँ वर्ग पूरा हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

**अथ षड्चस्यैकसप्ततितमस्य सूक्तस्य भरद्वाजो बार्हस्पत्य ऋषिः। सविता देवता। १ जगती। २, ३ निचृज्जगतीच्छन्दः। निषादः स्वरः। ४ त्रिष्टुप्। ५, ६ निचृत्त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः॥**

***अथ राजा कीदृशो भवेदित्याह॥***

अब छः ऋचावाले एकसत्तरवें सूक्त का आरम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में फिर राजा कैसा हो, इस विषय को कहते हैं॥

**उदु ष्य देवः सविता हिरण्ययां बाहू अयंस्त सवनाय सुक्रतुः।**
**घृतेन पाणी अभि प्रुष्णुते मखो युवा सुदक्षो रजसो विधर्मणि॥ १॥**

**उत्। ऊँ इति। स्यः। देवः। सविता। हिरण्यया। बाहू इति। अयंस्त। सवनाय। सुऽक्रतुः। घृतेन। पाणी इति। अभि। प्रुष्णुते। मखः। युवा। सुऽदक्षः। रजसः। विऽधर्मणि॥ १॥**

**पदार्थः**-(**उत्**) (**उ**) (**स्यः**) सः (**देवः**) (**सविता**) ऐश्वर्य्यवान् सत्कर्मसु प्रेरको राजा (**हिरण्यया**) हिरण्याद्याभूषणयुक्तौ (**बाहू**) भुजौ (**अयंस्त**) यच्छति (**सवनाय**) ऐश्वर्य्याय (**सुक्रतुः**) उत्तमप्रज्ञः (**घृतेन**) उदकेनाज्येन वा (**पाणी**) प्रशंसनीयौ (**अभि**) (**प्रुष्णुते**) अभिदहति (**मखः**) यज्ञ इव सुखकर्त्ता (**युवा**) प्राप्तयौवनः (**सुदक्षः**) शोभनं दक्षं बलं यस्य सः (**रजसः**) लोकस्य (**विधर्मणि**) विशिष्टे धर्मे॥ १॥

**अन्वयः**-यो मख इव सुखकरो विधर्मणि सुदक्षो युवा सुक्रतुः सविता देवः सवनाय घृतेन युक्तौ पाणी हिरण्यया बाहू उदयंस्त स्य उ रजसो विरोधिनोऽभि प्रुष्णुते॥ १॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यो विद्वानतिबलयुक्तभुजो महाप्रज्ञो विशेषेण धार्मिकः सन्नैश्वर्यप्राप्तये सततमुद्यमं करोति स ऐश्वर्यं प्राप्य पुनः सर्वस्याः प्रजाया धर्मे निवेशनं कृत्वा यज्ञ इव सर्वदा सुखयेत्॥ १॥

**पदार्थः**-जो (**मखः**) यज्ञ के समान सुख करने वाला (**विधर्मणि**) विशेष धर्म में (**सुदक्षः**) सुन्दर बल जिसका वह (**युवा**) जवान (**सुक्रतुः**) उत्तम बुद्धियुक्त (**सविता**) ऐश्वर्य्यवान् (**देवः**) विद्वान् (**सवनाय**) ऐश्वर्य के लिये (**घृतेन**) जल वा घी से युक्त (**पाणी**) प्रशंसा करने योग्य (**हिरण्यया**) सुवर्ण आदि आभूषण युक्त (**बाहू**) भुजाओं को (**उत्, अयंस्त**) उठाता है (**स्यः, उ**) वही (**रजसः**) लोक के विरोधियों को (**अभि, प्रुष्णुते**) सब ओर से भस्म करता है॥ १॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो विद्वान् अति बल से युक्त भुजाओं वाला, अत्यन्त बुद्धिमान्, विशेषता से धर्मात्मा होकर ऐश्वर्य की प्राप्ति के लिये निरन्तर उद्यम करता है, वह ऐश्वर्य को प्राप्त होकर फिर से सब प्रजा के धर्म में प्रवेश कर जैसे यज्ञ सुख देता है, वैसे सुखी करता है॥ १॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**



www.9009.co.in

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**दे॒वस्य॑ व॒यं स॑वि॒तुः सवी॑मनि॒ श्रेष्ठे॑ स्याम॒ वसु॑नश्च दा॒वने॑।**

**यो विश्व॑स्य द्वि॒पदो॒ यश्चतु॑ष्पदो नि॒वेश॑ने प्रस॒वे चासि॒ भूम॑नः॥ २॥**

**दे॒वस्य॑। व॒यम्। स॒वि॒तुः। सवी॑मनि। श्रेष्ठे॑। स्या॒म॒। वसु॑नः। च॒। दा॒वने॑। यः। विश्व॑स्य। द्वि॒ऽपदः॑। यः। चतु॑ःऽपदः। नि॒ऽवेश॑ने। प्र॒ऽस॒वे। च। असि॑। भूम॑नः॥ २॥**

**पदार्थः**-(**देवस्य**) स्वप्रकाशस्य परमेश्वरस्य (**वयम्**) (**सवितुः**) सकलजगदुत्पादकस्य (**सवीमनि**) उत्पादिते जगति (**श्रेष्ठे**) व्यवहारे (**स्याम**) भवेम (**वसुनः**) धनस्य (**च**) (**दावने**) दाने (**यः**) (**विश्वस्य**) समग्रस्य (**द्विपदः**) मनुष्यादेः (**यः**) (**चतुष्पदः**) गवादेः (**निवेशने**) सर्वे निविशन्ति यस्मिंस्तस्मिन् (**प्रसवे**) प्रसूते (**च**) (**असि**) (**भूमनः**) बहुरूपस्य॥ २॥

**अन्वयः**-हे विद्वन् राजन्! यो द्विपदो यश्चतुष्पदो भूमनो विश्वस्य प्रसवे निवेशनेऽभिव्याप्य विराजते तस्य सवितुर्देवस्य श्रेष्ठे सवीमनि वसुनश्च दावने यथा वयमुद्युक्ताः स्याम तथा त्वं यतश्चासि तस्मादत्र राजा भव॥ २॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे विद्वानो! यथाऽत्र जगति जगदीश्वरोऽभिव्याप्य सर्वं रक्षति तथैवात्र व्याप्तो भूत्वा विद्याविनयाभ्यां सर्वं राष्ट्रं पुत्रवद्रक्षत॥ २॥

**पदार्थः**-हे विद्वान् राजा! (**यः**) जो (**द्विपदः**) मनुष्यादि दो पग वाले जीव और (**यः**) जो (**चतुष्पदः**) गो आदि चार पग वाले पशु आदि जीवों के (**भूमनः**) बहुरूपी (**विश्वस्य**) समग्र संसार के (**प्रसवे**) उस उत्पन्न हुए स्थान में (**निवेशने**) जिसमें सब निवेश करते हैं अभिव्याप्त होकर विराजमान है उस (**सवितुः**) सकल जगत् के उत्पन्न करने वाले (**देवस्य**) अपने आप प्रकाशमान परमेश्वर के (**श्रेष्ठे**) प्रशंसित व्यवहार में (**सवीमनि**) उत्पन्न हुए जगत् में (**वसुनः, च**) धन के भी (**दावने**) देने में जैसे (**वयम्**) हम लोग उद्यत (**स्याम**) हों, वैसे तुम (**च**) भी जिस कारण (**असि**) हो इससे यहाँ राजा होओ॥ २॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे विद्वानो! जैसे इस जगत् में जगदीश्वर अभिव्याप्त होकर सब की रक्षा करता है, वैसे ही इस जगत् में व्याप्त होकर विद्या और विनय से समस्त राज्य को पुत्र के समान पालो॥ २॥

**पुनः स राजा कीदृशः केन किं कुर्यादित्याह॥**

फिर वह राजा कैसा और किससे क्या करे, इस विषय को कहते हैं॥

**अद॑ब्धेभिः सवितः पा॒युभि॒ष्ट्वं शि॒वेभि॑र॒द्य परि॑ पाहि नो॒ गय॑म्।**

**हिर॑ण्यजिह्वः सुवि॒ताय॒ नव्य॑से रक्षा॒ माकि॑र्नो अ॒घशं॑स ईशत॥ ३॥**

**अद॑ब्धेभिः। स॒वि॒त॒रिति॑। पा॒युऽभिः॑। त्वम्। शि॒वेभिः॑। अ॒द्य। परि॑। पा॒हि॒। नः॒। गय॑म्। हिर॑ण्यऽजिह्वः। सु॒वि॒ताय॑। नव्य॑से। रक्ष॑। माकिः॑। नः॒। अ॒घऽशं॑सः। ई॒श॒त॒॥ ३॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**अदब्धेभिः**) अहिंसिकैरहिंसितैर्वा (**सवितः**) सत्कर्मसु प्रेरक राजन् (**पायुभिः**) रक्षणैः (**त्वम्**) (**शिवेभिः**) सुखकारकैर्मङ्गलविधायकैः (**अद्य**) इदानीम् (**परि**) सर्वतः (**पाहि**) रक्ष (**नः**) अस्माकम् (**गयम्**) गमयपत्यं धनं गृहं वा। **गय इत्यपत्यनाम।** (निघं०२.२) **धननाम** २.१० **गृहनाम च** (निघं०३.४) (**हिरण्यजिह्वः**) हिरण्यमिव सत्येन सुप्रकाशिता वाणी यस्य सः (**सुविताय**) ऐश्वर्याय (**नव्यसे**) अतिशयेन नवीनाय (**रक्षा**) (**माकिः**) निषेधे (**नः**) अस्माकम् (**अघशंसः**) स्तेनः (**ईशत**) विघ्नानां ईश्वरो भवेत्॥३॥

**अन्वयः**-हे सवितस्त्वमद्याऽदब्धेभिः शिवेभिः पायुभिर्नो गयं परि पाहि हिरण्यजिह्वः सन्नव्यसे सुविताय नो गयं रक्षा यथाऽघशंसो नो माकिरीशत तथा विधेहि॥३॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यो राजा प्रयत्नेन प्रजाः संरक्ष्य दस्य्वादीन् हन्यात् स एव नवीनं नवीनमैश्वर्यं जनयित्वा सततं प्रजाप्रियो धार्मिकः स्यात्॥३॥

**पदार्थः**-हे (**सवितः**) अच्छे कामों में प्रेरणा देने वाले राजन्! (**त्वम्**) आप (**अद्य**) अब (**अदब्धेभिः**) न नष्ट करने वा न नष्ट होने और (**शिवेभिः**) सुख करने वा मङ्गल विधान करने वाले (**पायुभिः**) रक्षा के निमित्तों से (**नः**) हमारे (**गयम्**) सन्तान, धन और घर की (**परि, पाहि**) सब ओर से रक्षा करो तथा (**हिरण्यजिह्वः**) सुवर्ण के समान सत्य से जिसकी वाणी प्रकाशित है ऐसे होते हुए (**नव्यसे**) अतीव [नवीन] (**सुविताय**) ऐश्वर्य्य के लिये हमारे पुत्रादिकों की (**रक्षा**) रक्षा करो जैसे (**अघशंसः**) चोर (**नः**) हम लोगों के प्रति (**माकिः**) न (**ईशत**) विघ्नों के करने को समर्थ हो, वैसा करो॥३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो राजा प्रयत्न के साथ प्रजाओं की अच्छे प्रकार रक्षा कर डाकुओं को मारे, वही नवीन-नवीन ऐश्वर्य्य को उत्पन्न कर निरन्तर प्रजाजनों का प्यारा और धार्मिक हो॥३॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**उदु ष्य देवः सविता दमूना हिरण्यपाणिः प्रतिदोषमस्थात्।**

**अयोहनुर्यजतो मन्द्रजिह्व आ दाशुषे सुवति भूरि वामम्॥४॥**

**उत्। ऊँ इति। स्यः। देवः। सविता। दमूना। हिरण्यऽपाणिः। प्रतिऽदोषम्। अस्थात्। अयःऽहनुः। यजतः। मन्द्रऽजिह्वः। आ। दाशुषे। सुवति। भूरि। वामम्॥४॥**

**पदार्थः**-(**उत्**) (**उ**) (**स्यः**) सः (**देवः**) सुखदाता विद्वान् (**सविता**) ऐश्वर्य्यप्रदः (**दमूनाः**) दमनशीलः (**हिरण्यपाणिः**) हिरण्यादिकं सुवर्णं पाणौ यस्य सः (**प्रतिदोषम्**) यथा रात्रिं रात्रिं प्रति सूर्य्यस्तथा (**अस्थात्**) उत्तिष्ठेत् (**अयोहनुः**) अयो लोहमिव दृढा हनुर्यस्य सः (**यजतः**) सङ्गन्ता



www.9009.co.in

**(मन्द्रजिह्वः)** मन्द्रा आनन्दप्रदा कमनीया जिह्वा वाणी यस्य सः **(आ)** **(दाशुषे)** दात्रे प्रजाजनाय **(सुवति)** उद्योगे प्रेरयति **(भूरि)** **(वामम्)** प्रशस्यं कर्म प्रति॥४॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यो दमूना हिरण्यपाणिरयोहनुर्यजतो मन्द्रजिह्वः सविता देवः प्रतिदोषं सूर्य इव प्रजापालनायोदस्थाद्दाशुषे भूरि वाममा सुवति स्य उ राजा भवितुमर्हेत्॥४॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यथेश्वरेण नियुक्तः सूर्य्यलोकः प्रतिक्षणं स्वक्रियां न जहाति तथैव यो राजा न्यायेन राज्यपालनाय प्रतिक्षणमुद्युक्तो भवत्येकक्षणमपि व्यर्थं न नयति सर्वान् मनुष्यानुत्तमेषु कर्मसु स्वयं वर्त्तित्वा प्रेरयति स एव शमदमादिशुभगुणाढ्यो राजा भवितुमर्हतीति सर्वे विजानन्तु॥४॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो **(दमूनाः)** दमनशील **(हिरण्यपाणिः)** सुवर्ण आदि हाथ में लिये हुए **(अयोहनुः)** लोहे के समान दृढ़ ठोढ़ी रखने और **(यजतः)** सङ्ग करने वाला **(मन्द्रजिह्वः)** जिसकी आनन्द देने वाली वाणी विद्यमान वह **(सविता)** ऐश्वर्य्यदाता और **(देवः)** सुख देनेहारा विद्वान् **(प्रतिदोषम्)** जैसे रात्रि-रात्रि के प्रति सूर्य्य उदय होता है, वैसे प्रजा पालन करने के लिये **(उत, अस्थात्)** उठता है तथा **(दाशुषे)** दान करने वाले के लिये **(भूरि)** बहुत **(वामम्)** प्रशंसा योग्य कर्म के प्रति **(आ, सुवति)** उद्योग करने में प्रेरणा देता है **(स्यः, उ)** वही राजा होने को योग्य होता है॥४॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जैसे ईश्वर से नियुक्त किया सूर्यलोक प्रतिक्षण अपनी क्रिया को नही छोड़ता, वैसे ही जो राजा न्याय से राज्य पालने के लिये प्रतिक्षण उद्योग करता है, एक क्षण भी व्यर्थ नहीं खोता तथा सब मनुष्यों को उत्तम कर्मों के बीच आप वर्त्ताव कर उन्हें प्रेरणा देता है, वही शम-दम आदि शुभ गुणों से युक्त राजा होने योग्य है, यह सब जानें॥४॥

**पुनः स राजा किंवत् कीदृशो भवेदित्याह॥**

फिर वह राजा किसके तुल्य कैसा हो, इस विषय को कहते हैं॥

**उदूँ अयाँ उपवक्तेव बाहू हिरण्ययां सविता सुप्रतीका।**

**दिवो रोहांस्यरुहत् पृथिव्या अरीरमत् पतयत् कच्चिदभ्वम्॥५॥**

**उत्। ऊँ इति। अयान्। उपवक्ताऽइव। बाहू इति। हिरण्यया। सविता। सुऽप्रतीका। दिवः। रोहांसि। अरुहत्। पृथिव्याः। अरीरमत्। पतयत्। कत्। चित्। अभ्वम्॥५॥**

**पदार्थः**-**(उत्)** **(उ)** **(अयान्)** इयात् **(उपवक्तेव)** यथोपवक्ता तथा **(बाहू)** **(हिरण्यया)** हिरण्यवत् सुदृढौ सुशोभितौ **(सविता)** सूर्य इव **(सुप्रतीका)** शोभनानि प्रतीकानि प्रतीतिकराणि कर्माणि याभ्यां तौ **(दिवः)** आकाशस्य **(रोहांसि)** आरोहणानि **(अरुहत्)** रोहति **(पृथिव्याः)** अन्तरिक्षस्य मध्य इव भूमेः **(अरीरमत्)** रमयेत् **(पतयत्)** पतिः स्वामी पालक इवाचरेत् **(कत्)** कदा **(चित्)** अपि **(अभ्वम्)** महान्तं न्यायम्॥५॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथा सविता दिवो रोहांस्यरुहत् पृथिव्याः सर्वमभ्वमरीरमच्चिदपि पतयत् तथा अस्य सुप्रतीका हिरण्यया बाहू वर्तते स उ उपवक्तेव कदुदयान्॥४॥

**भावार्थः**-अत्रोपमावाचकलुप्तोपमालङ्कारौ। हे राजँस्त्वं कदा सूर्यवन्न्यायविनयाभ्यां प्रकाशितः सुदृढाङ्ग आप्तवद्वक्ता भवेः यथाऽस्मिञ्जगति सर्वोपकारायेश्वरेण सूर्यो निर्मितस्तथैव सर्वेषां सुखाय राजा विहितः॥५॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे **(सविता)** सूर्यमण्डल **(दिवः)** आकाश की **(रोहांसि)** चढ़ाइयों को **(अरुहत्)** चढ़ता है और **(पृथिव्याः)** अन्तरिक्ष के मध्य में भूमि के समस्त **(अभ्वम्)** महान् न्याय को **(अरीरमत्)** वर्त्तावे **(चित्)** और **(पतयत्)** पति के समान आचरण करे, वैसे जिसकी **(सुप्रतीका)** सुन्दर प्रतीति करने वाले काम जिनसे होते ऐसे **(हिरण्यया)** हिरण्य के समान सुदृढ़ सुशोभित **(बाहू)** भुजा वर्त्तमान है वह **(उ)** हो **(उपवक्तेव)** समीप कहने वाले के समान **(कत्)** कब **(उत्, अयान्)** उदय हो॥५॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमा और वाचकलुप्तोपमालङ्कार हैं। हे राजन्! आप कब सूर्य के समान न्याय और विनय से प्रकाशित सुन्दर दृढ़ अङ्गयुक्त, श्रेष्ठ धर्मज्ञ विद्वानों के समान वक्ता होओ। जैसे इस जगत् में सर्वोपकार के लिये ईश्वर ने सूर्य बनाया है, वैसे ही सब के सुख के लिये राजा बनाया है॥

**पुनः स प्रजाभ्यः किं कुर्यादित्याह॥**

फिर वह प्रजाओं के लिये क्या करे, इस विषय को कहते हैं॥

**वाममद्य सवितर्वाममु श्वो दिवेदिवे वाममस्मभ्यं सावीः।**
**वामस्य हि क्षयस्य देव भूरेरया धिया वामभाजः स्याम॥६॥१५॥**

**वामम्। अद्य। सवितः। वासम्। ऊँ इति। श्वः। दिवेऽदिवे। वामम्। अस्मभ्यम्। सावीः। वामस्य। हि। क्षयस्य। देव। भूरेः। अया। धिया। वामऽभाजः। स्याम॥६॥**

**पदार्थः**-**(वामम्)** प्रशस्यसुखम् **(अद्य)** इदानीम् **(सवितः)** ऐश्वर्यप्रद राजन् **(वामम्)** प्रशंसनीयम् **(उ)** **(श्वः)** आगामिदिने **(दिवेदिवे)** प्रतिदिनम् **(वामम्)** अत्युत्कृष्टम् **(अस्मभ्यम्)** **(सावीः)** जनय **(वामस्य)** प्रशस्यस्य **(हि)** यतः **(क्षयस्य)** गृहस्य **(देव)** दिव्यगुणयुक्त **(भूरेः)** बहुविधस्य **(अया)** अनया **(धिया)** प्रज्ञयाऽनेन कर्मणा वा **(वामभाजः)** ये वामं भजन्ति ते **(स्याम)** भवेम॥६॥

**अन्वयः**-हे सवितर्देव! यथा हि त्वमद्य वामसु श्वो वामं दिवेदिवे वाममस्मभ्यं सावीस्तस्मात् तयाऽया धिया भूरेर्वामस्य क्षयस्य वामभाजो वयं स्याम॥६॥

**भावार्थः**-हे राजन्! यस्माद्भवानस्मभ्यं प्रजाजनेभ्यो नित्यं प्रशंसनीयं सुखं जनयति रक्षां विधत्ते तस्माद्वयं सुखेन धनगृहप्रशस्तकर्मणां सेवका भूत्वा भवदाज्ञायां नित्यं वर्त्तमहीति॥६॥



www.9009.co.in

अत्र सवितृराजप्रजाकृत्यवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥ इत्येकसप्ततितमं सूक्तं पञ्चदशो वर्गश्च समाप्तः॥

**पदार्थः**-हे **(सवितः)** ऐश्वर्य्य के देने वाले **(देव)** दिव्यगुणयुक्त राजन्! जैसे **(हि)** जिस कारण से आप **(अद्य)** अब **(वामम्)** प्रशंसा करने योग्य सुख **(उ)** और **(श्वः)** अगले दिन **(वामम्)** प्रशंसा करने योग्य सुख तथा **(दिवेदिवे)** प्रतिदिन **(वामम्)** अति उत्तम सुख **(अस्मभ्यम्)** हमारे लिये **(सावीः)** उत्पन्न करो उससे **(अया)** इस **(धिया)** प्रज्ञा वा कर्म से **(भूरेः)** बहुत प्रकार के **(वामस्य)** प्रशंसित **(क्षयस्य)** घर के **(वामभाजः)** वामभाज अर्थात् प्रशंसित सुख भोगने वाले हम लोग **(स्याम)** हों॥६॥

**भावार्थः**-हे राजन् जिससे आप हम प्रजाजनों के लिये प्रशंसनीय सुख को उत्पन्न करते और रक्षा का विधान करते हो जैसे हम लोग सुख से धन, घर और प्रशंसित कामों के सेवने वाले होकर आपकी आज्ञा में नित्य वर्तें॥६॥

इस सूक्त में सविता, राजा और प्रजा के कर्मों का वर्णन होने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह इकहतरवां सूक्त और पन्द्रहवां वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

**अथ पञ्चर्चस्य द्विसप्ततितमस्य सूक्तस्य भरद्वाजो बार्हस्पत्य ऋषिः। इन्द्रासौमौ देवते। १ त्रिष्टुप्। २, ४, ५ विराट्त्रिष्टुप्। ३ निचृत्त्रिष्टुप्छन्दः। धैवतः स्वरः॥**

***अथाध्यापकोपदेशकौ किंवत् किं कुर्य्यातामित्याह॥***

अब बहत्तरवें सूक्त का आरम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में अध्यापक और उपदेशक किसके तुल्य क्या करें, इस विषय को कहते हैं॥

**इन्द्रा॑सोमा म॒हि तद्वां॑ महि॒त्वं यु॒वं म॒हानि॑ प्र॒थमानि॑ चक्रथुः।**
**यु॒वं सूर्यं॑ विवि॒दथु॑र्यु॒वं स्व१॒॑र्विश्वा॒ तमां॑स्यहतं नि॒दश्च॑॥ १॥**

**इन्द्रा॑सोमा। म॒हि। तत्। वा॒म्। म॒हि॒ऽत्वम्। यु॒वम्। म॒हानि॑। प्र॒थमानि॑। च॒क्र॒थुः। यु॒वम्। सूर्य॑म्। वि॒वि॒दथुः॑। यु॒वम्। स्व॑रिति॑ स्वः॑। विश्वा॑। तमां॑सि। अ॒ह॒त॒म्। नि॒दः॑। च॒॥ १॥**

**पदार्थः**-(**इन्द्रसोमा**) विद्युच्चन्द्रमसौ (**महि**) महत् (**तत्**) (**वाम्**) युवयोः (**महित्वम्**) (**युवम्**) युवाम् (**महानि**) पूजनीयानि (**प्रथमानि**) ब्रह्मचर्यविद्याग्रहणदानादीनि (**चक्रथुः**) कुर्य्यातम् (**युवम्**) युवाम् (**सूर्यम्**) (**विविदथुः**) विन्दतः। अत्र व्यत्ययः (**युवम्**) युवाम् (**स्वः**) सुखम् (**विश्वा**) सर्वाणि (**तमांसि**) रात्रिरिवाऽविद्यादीनि (**अहतम्**) हन्यातम् (**निदः**) निन्दकान् (**च**) पाखण्डिनः॥ १॥

**अन्वयः**-हे अध्यापकोपदेशकौ! यथेन्द्रासोमा सूर्यं विविदथुस्तथा युवं न्यायार्कं प्राप्नुतं यथैतौ महान्ति कर्माणि कुरुतस्तथा वां तन्महि महित्वमस्ति तथा युवं महानि प्रथमानि चक्रथुः युवं यथैतौ विश्वा तमांसि हतस्तथाऽविद्याऽन्यायजनितानि पापान्यहतं स्वः प्राप्नुतं प्रापयेतं वा निदश्च सततं हन्यातम्॥ १॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे प्रजाजना यथा सूर्यं प्राप्य चन्द्रादयो लोकाः प्रकाशिता भवन्ति तथैवाध्यापकोपदेशकौ सङ्गत्य सर्वे प्रकाशमात्मानो भवन्तु॥ १॥

**पदार्थः**-हे अध्यापक और उपदेशको! जैसे (**इन्द्रासोमा**) बिजुली और चन्द्रमा (**सूर्यम्**) सूर्य्य को (**विविदथुः**) प्राप्त होते हैं, वैसे (**युवम्**) तुम न्यायरूपी सूर्य्य को प्राप्त होओ जैसे ये बड़े कामों को करते हैं, वैसे (**वाम्**) तुम्हारा (**तत्**) वह (**महि**) महान् (**महित्वम्**) बड़प्पन है और वैसे (**युवम्**) तुम (**महानि**) प्रशंसा योग्य (**प्रथमानि**) ब्रह्मचर्य्य और विद्या ग्रहण और दान आदि कामों को (**चक्रथुः**) करो (**युवम्**) तुम जैसे यह दोनों (**विश्वा**) समस्त (**तमांसि**) रात्रि के समान अविद्या आदि अन्धकारों को नष्ट करते हैं, वैसे अविद्या और अन्याय से उत्पन्न हुए पापों को (**अहतम्**) नष्ट करो (**स्वः**) सुख की प्राप्ति करो वा कराओ (**निदः, च**) और निन्दक तथा पाखण्डियों को निरन्तर नष्ट करो॥ १॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे प्रजाजनो! जैसे सूर्य को प्राप्त होकर चन्द्र आदि लोक प्रकाशित होते हैं, वैसे ही अध्यापक और उपदेशकों का सङ्ग कर सब प्रकाशित आत्मा वाले हों॥ १॥



www.9009.co.in

**पुनस्तौ किंवत् किं कुरुत इत्याह॥**

फिर वे किसके तुल्य क्या करते हैं, इस विषय को कहते हैं॥

**इन्द्रासोमा वासयथ उषासमुत्सूर्यं नयथो ज्योतिषा सह।**

**उप द्यां स्कम्भथुः स्कम्भनेनाप्रथतं पृथिवीं मातरं वि॥ २॥**

**इन्द्रासोमा। वासयथः। उषसम्। उत्। सूर्यम्। नयथः। ज्योतिषा। सह। उप। द्याम्। स्कम्भथुः। स्कम्भनेन। अप्रथतम्। पृथिवीम्। मातरम्। वि॥ २॥**

**पदार्थः**-(**इन्द्रासोमा**) वायुविद्युताविव (**वासयथः**) (**उषासम्**) प्रभातम् (**उत्**) अपि (**सूर्यम्**) (**नयथः**) (**ज्योतिषा**) प्रकाशेन (**सह**) (**उप**) (**द्याम्**) प्रकाशम् (**स्कम्भथुः**) स्कम्भेतम् (**स्कम्भनेन**) (**अप्रथतम्**) प्रथेयाथाम् (**पृथिवीम्**) भूमिम् (**मातरम्**) मातृवद्वर्त्तमानाम् (**वि**)॥ २॥

**अन्वयः**-हे अध्यापकोपदेशकौ! यथेन्द्रासोमोषासमुत् सूर्यं वासयतस्तथा विद्यान्यायाभ्यां प्रजा युवां वासयथः। यथेमौ ज्योतिषा सह द्यां स्कम्भतस्तथा सद्व्यवहारमुपस्कम्भथुः। यथेमौ स्कम्भनेन मातरमिव वर्त्तमाना पृथिवीं प्रथेते तथैव राज्यं व्यप्रथतं सुखं नयथः॥ २॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे अध्यापकोपदेशका यथा विद्युत्पवनौ सूर्यादींल्लोकान्निवासयतस्तथैव प्रजाः सूपदेशेन सुखे वासयत॥ २॥

**पदार्थः**-हे अध्यापक और उपदेशको जैसे (**इन्द्रासोमा**) वायु और बिजुली (**उषासम्**) प्रभातकाल को (**उत्**) और (**सूर्यम्**) सूर्य्यमण्डल को वसाते हैं, वैसे विद्या और न्याय से प्रजाजनों को तुम (**वासयथः**) वसाओ जैसे दोनों (**ज्योतिषा**) ज्योति के (**सह**) साथ (**द्याम्**) प्रकाश को रोकें, वैसे अच्छे व्यवहार को (**उप, स्कम्भयुः**) व्यवहार करने वाले के समीप रोको जैसे यह दोनों (**स्कम्भनेन**) रोकने से (**मातरम्**) माता के समान वर्त्तमान (**पृथिवीम्**) पृथिवी को विस्तारते हैं, वैसे ही राज्य को (**वि, अप्रथतम्**) विस्तारो और सुख को (**नयथः**) प्राप्त करो॥ २॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे अध्यापक और उपदेशको! जैसे बिजुली और पवन सूर्य्य आदि लोकों का निवास कराते हैं, वैसे ही प्रजाजनों को अच्छे उपदेश से सुख में बसाओ॥ २॥

**पुनस्ते किंवत् कथं वर्त्तेयातामित्याह॥**

फिर वे किसके तुल्य कैसे वर्त्ताव करावें, इस विषय को कहते हैं॥

**इन्द्रासोमावहिमपः परिष्ठां हथो वृत्रमनु वां द्यौरमन्यत।**

**प्रार्णांस्यैरयतं नदीनामा समुद्राणि पप्रथुः पुरूणि॥ ३॥**

**इन्द्रासोमौ। अहिम्। अपः। परिऽस्थाम्। हथः। वृत्रम्। अनु। वाम्। द्यौः। अमन्यत। प्र। अर्णांसि। ऐरयतम्। नदीनाम्। आ। समुद्राणि। पप्रथुः। पुरूणि॥ ३॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**इन्द्रासोमौ**) विद्युन्मरुतौ (**अहिम्**) मेघम् (**अपः**) जलानि (**परिष्ठाम्**) यः परितस्तिष्ठति तम् (**हथः**) (**वृत्रम्**) सूर्यावरकम् (**अनु**) (**वाम्**) युवयोर्मध्ये (**द्यौः**) प्रकाश इव (**अमन्यत**) मन्यते (**प्र**) (**अर्णांसि**) उदकानि। **अर्ण इत्युदकनाम।** (निघं०१.१२) (**ऐरयतम्**) प्रापयतम् (**नदीनाम्**) (**आ**) (**समुद्राणि**) सम्यग्द्रवन्त्यापो येषु स्थानेषु तानि (**पप्रथुः**) व्याप्नुतः। अत्र सर्वत्र पुरुषव्यत्ययः (**पुरूणि**) बहूनि॥३॥

**अन्वयः**-हे अध्यापकोपदेशकौ! युवां यथेन्द्रासोमौ परिष्ठां वृत्रमहिं हथोऽप आपप्रथुस्तथैवाऽविद्यां हत्वा विद्यां प्रथयतम्। यथेमौ नदीनां पुरूणि समुद्राण्यर्णांसीरयतस्तथा शास्त्राणां मध्ये मनुष्यान्तःकरणानि प्रैरयतमेवं वां युवयोरेको द्यौरिवामन्यत द्वितीयस्तमनुवर्त्तेत॥३॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे अध्यापकोपदेशका! यथा वायुविद्युतौ मेघं हत्वोदकं वर्षयतस्तथा कुशिक्षां विनाश्य सुशिक्षावृष्टिं कुर्वन्तु॥३॥

**पदार्थः**-हे अध्यापक और उपदेशको! तुम दोनों जैसे (**इन्द्रासोमौ**) बिजुली और पवन (**परिष्ठाम्**) सब ओर से स्थित होने वाले (**वृत्रम्**) सूर्यावरक (**अहिम्**) मेघ को (**हथः**) छिन्न-भिन्न करते और (**अपः**) जलों को (**आ, पप्रथुः**) व्याप्त होते हैं, वैसे अविद्या को नष्ट-भ्रष्ट कर विद्या को विस्तारो जैसे ये दोनों (**नदीनाम्**) नदियों के (**पुरूणि**) बहुत (**समुद्राणि**) उन स्थानों को जिनमें अच्छे प्रकार जल तरङ्गें लेते हैं तथा (**अर्णांसि**) जलों को प्रेरणा देते हैं, वैसे शास्त्रों के बीच मनुष्यों के अन्तःकरणों को (**प्र, ऐरयतम्**) प्रेरित करो ऐसे (**वाम्**) तुम दोनों के बीच एक (**द्यौः**) प्रकाश के समान (**अमन्यत**) मानता है, दूसरा (**अनु**) तदनुगामी होता है॥३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे अध्यापक और उपदेशको! जैसे वायु और बिजुली मेघ को नष्ट-भ्रष्ट कर जल को वर्षाते हैं, वैसे कुत्सित शिक्षा को विनष्ट कर अच्छी शिक्षा की वर्षा करो॥३॥

**पुनस्तौ किंवत् किं कुर्यातामित्याह॥**

फिर वे किसके तुल्य क्या करें, इस विषय को कहते हैं॥

**इन्द्रासोमा पुक्वमामास्वन्तर्नि गवामिद् दधथुर्वक्षणासु।**

**जगृभथुरनपिनद्धमासु रुशच्चित्रासु जगतीष्वन्तः॥४॥**

**इन्द्रासोमा। पुक्वम्। आमासु। अन्तः। नि। गवाम्। इत्। दुधथुः। वक्षणासु। जगृभथुः। अनपिऽनद्धम्। आसु। रुशत्। चित्रासु। जगतीषु। अन्तरिति॥४॥**

**पदार्थः**-(**इन्द्रसोमा**) वायुविद्युतौ (**पक्वम्**) (**आमासु**) अपक्वासु ओषधीषु (**अन्तः**) मध्ये (**नि**) (**गवाम्**) किरणानाम् (**इत्**) एव (**दधथुः**) धत्तः (**वक्षणासु**) नदीषु (**जगृभथुः**) गृह्णीतः। अत्र सर्वत्र व्यत्ययः। (**अनपिनद्धम्**) अनाच्छादितम् (**आसु**) (**रुशत्**) सुरूपम्। (**चित्रासु**) अद्भुतासु (**जगतीषु**) सृष्टिषु (**अन्तः**) मध्ये॥४॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे अध्यापकोपदेशकौ! युवां यथेन्द्रसोमा आमास्वन्तः पक्वं नि दधथुर्गवामिदासु वक्षणास्वनपिनद्धं जगृभथुरासु चित्रासु जगतीष्वन्तो रुशद्दधथस्तथा युवां वर्त्तेयाथाम्॥४॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। ये विद्युत्सोमवत्सर्वे दृढं ज्ञानं संस्थाप्य नदीप्रवाहवदग्रे चालयन्ति ते जगति कल्याणकरा भवन्ति॥४॥

**पदार्थः**-हे अध्यापक और उपदेशको! तुम दोनों जैसे **(इन्द्रासोमा)** पवन और बिजुली **(आमासु)** न पकी हुई सामग्रियों के **(अन्तः)** बीच **(पक्वम्)** पाक को **(नि, दधथुः)** स्थापन करते हैं और **(गवाम्)** किरणों के बीच **(इत्)** निश्चित तथा **(आसु)** इन **(वक्षणासु)** नदियों में **(अनपिनद्धम्)** खुला हुआ **(जगृभथुः)** ग्रहण करते हैं तथा इन **(चित्रासु)** अद्भुत **(जगतीषु)** सृष्टियों के **(अन्तः)** बीच **(रुशत्)** सुरूप को धारण करते हैं, वैसे तुम वर्त्तो॥४॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो बिजुली और सोम के समान सब में दृढ़ ज्ञान स्थापन कर नदी के प्रवाह के तुल्य आगे चलाते हैं, वे संसार में कल्याण करने वाले होते हैं॥४॥

**पुनस्तौ किंवत् किं कुर्यातामित्याह॥**

फिर वे किसके तुल्य क्या करें, इस विषय को कहते हैं॥

**इन्द्रासोमा युवमङ्ग तरुत्रमपत्यसाचं श्रुत्यं रराथे।**

**युवं शुष्मं नर्यं चर्षणिभ्यः सं विव्यथुः पृतनाषाहमुग्रा॥५॥१६॥**

**इन्द्रासोमा। युवम्। अङ्ग। तरुत्रम्। अपत्यऽसाचम्। श्रुत्यम्। रराथे इति। युवम्। शुष्मम्। नर्यम्। चर्षणिऽभ्यः। सम्। विव्यथुः। पृतनाऽसहम्। उग्रा॥५॥**

**पदार्थः**-**(इन्द्रासोमा)** वायुविद्युद्वद्वर्त्तमानौ **(युवम्)** युवाम् **(अङ्ग)** मित्र **(तरुत्रम्)** दुःखात्तारकम् **(अपत्यसाचम्)** यदपत्ये सचति व्याप्नोति तत् **(श्रुत्यम्)** श्रुतिषु श्रवणोषु साधुः **(रराथे)** रातम् **(युवम्)** **(शुष्मम्)** बलम् **(नर्यम्)** नृषु साधुः **(चर्षणिभ्यः)** मनुष्येभ्यः **(सम्)** **(विव्यथुः)** सन्तनुतं वेष्टयतम् **(पृतनाषाहम्)** यः पृतनाः सेनाः सहते तम् **(उग्रा)** उग्रौ तेजस्विनौ॥५॥

**अन्वयः**-हे अङ्ग अध्यापकोपदेशकौ! युविमिन्द्रासोमावत्तरुत्रमपत्यसाचं श्रुत्यं रराथे युवं चर्षणिभ्यः उग्रा सन्तौ पृतनाषाहं नर्यं शुष्मं सं विव्यथुः॥५॥

**भावार्थः**-हे अध्यापकोपदेशका! भवन्तो वायुविद्युद्वत्सर्वत्रानुषङ्गिनस्सन्त उत्तमान्यपत्यान्युत्पाद्य मनुष्यहितकरं शरीरात्मबलं जनयन्तु येन शत्रुसेनां सोढुं शक्नुयुरिति॥५॥

अत्रेन्द्रसोमाध्यापकोपदेशककृत्यवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति द्विसप्ततितमं सूक्तं षोडशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे **(अङ्ग)** हे मित्र अध्यापक और उपदेशक! **(युवम्)** तुम दोनों **(इन्द्रासोमा)** वायु और बिजुली के समान वर्त्तमान **(तरुत्रम्)** दुःख से तारने और **(अपत्यसाचम्)** सन्तान के बीच व्याप्त होने



www.9009.co.in

वाले **(श्रुत्यम्)** श्रवणों में उत्तम ज्ञान को **(रराथे)** देओ और **(युवम्)** तुम दोनों **(चर्षणिभ्य:)** मनुष्यों के लिये **(उग्रा)** तेजस्वी होते हुए **(पृतनाषाहम्)** सेनाओं को सहने वाले **(नर्यम्)** मनुष्यों में उत्तम **(शुष्मम्)** बल को **(सम्, विव्यथु:)** अच्छे प्रकार युक्त करो॥५॥

**भावार्थ:**-हे अध्यापक वा उपदेशको! आप लोग पवन और बिजुली के समान सर्वत्र अनुकूलता से सङ्ग वाले होते हुए उत्तम सन्तानों को उत्पन्न कर मनुष्यों के हित करने वाले शरीर और आत्मा के बल को उत्पन्न करें, जिससे शत्रुओं की सेना को सह सकें॥५॥

इस सूक्त में इन्द्र, सोम, अध्यापक और उपदेशकों के काम का वर्णन होने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह बहत्तरवां सूक्त और सोलहवां वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

**अथ त्र्यृचस्य त्रिसप्ततितमस्य सूक्तस्य भरद्वाजो बार्हस्पत्यं ऋषिः। बृहस्पतिर्देवता। १, २ त्रिष्टुप्। ३ विराट्त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः॥**

***अथ राजा किंवत् कीदृशः स्यादित्याह॥***

अब तीन ऋचावाले तिहत्तरवें सूक्त का प्रारम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में राजा किसके तुल्य कैसा हो, इस विषय को कहते हैं॥

**यो अद्रिभित् प्रथमजा ऋतावा बृहस्पतिराङ्गिरसो हविष्मान्।**
**द्विबर्हज्मा प्राधर्मसत्पिता न आ रोदसी वृषभो रोरवीति॥ १॥**

**यः। अद्रिऽभित्। प्रथमऽजाः। ऋतऽवा। बृहस्पतिः। आङ्गिरसः। हविष्मान्। द्विबर्हऽज्मा। प्राघर्मऽसत्। पिता। नः। आ। रोदसी इति। वृषभः। रोरवीति॥ १॥**

**पदार्थः**-(**यः**) (**अद्रिभित्**) मेघच्छेत्ता (**प्रथमजाः**) यः प्रथमं जातः (**ऋतावा**) य ऋतं जलं संवनति भजति सः (**बृहस्पतिः**) बृहतां पृथिव्यादीनां पालकः (**आङ्गिरसः**) योऽङ्गिरसां वायुविद्युतामयमुत्पन्नः (**हविष्मान्**) हवींषि हुतानि द्रव्याणि विद्यन्ते यस्मिन् (**द्विबर्हज्मा**) यो द्वाभ्यां बृंहते स द्विबर्हस्तेन द्विबर्हेण युक्ता ज्मा भूमिर्यस्य (**प्राघर्मसत्**) यः प्रकृष्टं समन्ताद् घर्मं प्रतापं सनति सः (**पिता**) पालकः (**नः**) अस्माकम् (**आ**) (**रोदसी**) द्यावापृथिव्यौ (**वृषभः**) वर्षकः (**रोरवीति**) विद्युदादिना भृशं शब्दं करोति॥ १॥

**अन्वयः**-हे राजन्! यः प्रथमजा अद्रिभिदृतावा बृहस्पतिराङ्गिरसो हविष्मान् द्विबर्हज्मा प्राघर्मसन्नः पितेव वृषभोऽद्रिभिद् रोदसी आ रोरवीति तद्वत्त्वं भव॥ १॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यो राजा मेघस्य सूर्यइव शत्रूणां विदारको ज्येष्ठो महतां धर्मात्मनां पालकः प्रजावान् पृथिव्यां सुखवर्षको भूत्वा प्रजासु न्यायं भृशमुपदिशेत्स एव पृथिवीवत् क्षमाशीलः प्रतापवान् प्रजासु पितृवद्वर्त्तेत॥ १॥

**पदार्थः**-हे राजन्! (**यः**) जो (**प्रथमजाः**) प्रथम उत्पन्न हुआ (**अद्रिभित्**) मेघों का विदीर्ण करने और (**ऋतावा**) जल को अच्छे प्रकार सेवने वाला (**बृहस्पतिः**) पृथिवी आदि का रक्षक और (**आङ्गिरसः**) वायु और बिजुलियों में उत्पन्न हुआ (**हविष्मान्**) जिसमें हवि होमे हुए विद्यमान जो (**द्विबर्हज्मा**) दो से बढ़ता है उससे युक्त भूमि जिसकी वह (**प्राघर्मसत्**) प्रताप का सेवने वाला (**नः**) हमारा (**पिता**) पालने वाले के समान (**वृषभः**) वर्षा कराने वाला मेघों को छिन्न-भिन्न करने वाला (**रोदसी**) आकाश और पृथिवी को प्राप्त हो (**आ, रोरवीति**) बिजुली आदि के योग से सब ओर से शब्द करता है, उसके तुल्य तुम होओ॥ १॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो राजा, मेघ का सूर्य जैसे शत्रुओं का विदीर्ण करने वाला, ज्येष्ठ, महात्मा, धर्मात्मा जनों की पालना करने वाला, प्रजावान्, पृथिवी पर सुख वर्षानेहारा होकर प्रजाओं में न्याय का निरन्तर उपदेश करे, वही पृथिवी के तुल्य क्षमाशील और प्रतापवान् तथा प्रजाजनों में पिता के समान वर्त्ते॥१॥

**पुनस्तेन राज्ञा: कीदृशा: सेनाधिकारिण: कार्या इत्याह॥**

फिर उस राजा को कैसे सेना के अधिकारी करने चाहियें, इस विषय को कहते हैं॥

**जनाय चिद्य ईवत उ लोकं बृहस्पतिर्देवहूतौ चकार।**

**घ्नन् वृत्राणि वि पुरो दर्दरीति जयञ्छत्रूँरमित्रान् पृत्सु साहन्॥२॥**

**जनाय। चित्। य:। ईवते। ऊँ इति। लोकम्। बृहस्पति:। देवऽहूतौ। चकार। घ्नन्। वृत्राणि। वि। पुर:। दर्दरीति। जयन्। शत्रून्। अमित्रान्। पृत्ऽसु। सहन्॥२॥**

**पदार्थः**-**(जनाय)** **(चित्)** अपि **(य:)** **(ईवते)** उपगताय **(उ)** **(लोकम्)** द्रष्टव्यसुखं स्थानं वा **(बृहस्पति:)** बृहतां पालक: सूर्यलोक इव **(देवहूतौ)** देवानामाह्वाने **(चकार)** करोति **(घ्नन्)** नाशयन् **(वृत्राणि)** धनानि **(वि)** विशेषेण **(पुर:)** शत्रूणां नगराणि **(दर्दरीति)** भृशं विदृणाति **(जयन्)** उत्कर्षं प्राप्तुमिच्छन् **(शत्रून्)** **(अमित्रान्)** विरोधिन उदासीनान् **(पृत्सु)** सङ्ग्रामे **(साहन्)**॥२॥

**अन्वय:**-हे मनुष्या! यो देवहूतौ बृहस्पतिरिव ईवते जनाय लोकं प्रकाशितं चकार पृत्सु साहन्नमित्राञ्जयञ्छत्रून् घ्नन् वृत्राणि प्राप्नुवन् पुरो वि दर्दरीति स उ चित्सेनापतिर्भवितुमर्हति॥२॥

**भावार्थः**-हे राजन्! ये न्यायेन प्रजापालनाय प्रसन्ना: पूर्णशरीरात्मबलयुक्ता वीरा विद्वांस: स्युस्ते सेनापतयो भवन्तु यत: शत्रूञ्जेतुं तत्सेनां सोढुं विदर्त्तुं विजयं धनं च प्राप्तुं शक्नुयु:॥२॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(य:)** जो **(देवहूतौ)** विद्वानों के बुलाने में **(बृहस्पति:)** बड़ों की पालना करने वाले सूर्यलोक के समान **(ईवते)** समीप आने वाले **(जनाय)** मनुष्य के लिये **(लोकम्)** देखने योग्य सुख वा स्थान को प्रकाशित **(चकार)** करता है तथा **(पृत्सु)** सङ्ग्रामों में **(साहन्)** सहन करता हुआ **(अमित्रान्)** विरोधी उदासीन जनों को **(जयन्)** जीतता और **(शत्रून्)** शत्रुओं को **(घ्नन्)** मारता हुआ **(वृत्राणि)** धनों को प्राप्त होता हुआ **(पुर:)** शत्रुओं के नगरों को **(वि, दर्दरीति)** निरन्तर विदीर्ण करता है वह **(उ, चित्)** ही सेनापति होने योग्य हैं॥२॥

**भावार्थः**-हे राजन्! जो न्याय से प्रजा पालने के लिये प्रसन्न, पूर्णशरीरात्मबलयुक्त वीर, विद्वान् होवें, वे सेनापति हों; जिससे शत्रुओं के जीतने और उनकी सेना के सहने और उसे छिन्न-भिन्न करने तथा विजय और धन को पाने को समर्थ हों॥२॥

**पुन: स कीदृशो भवेदित्याह॥**

फिर वह कैसा हो इस विषय को कहते हैं॥



www.9009.co.in

**बृहस्पतिः समजयद्वसूनि महो व्रजान् गोमतो देव एषः।**
**अपः सिषासन्त्स्व१रप्रतीतो बृहस्पतिर्हन्त्यमित्रमर्कैः॥३॥१७॥**

**बृहस्पतिः। सम्। अजयत्। वसूनि। महः। व्रजान्। गोऽमतः। देवः। एषः। अपः। सिसासन्। स्वः। अप्रतिऽइतः। बृहस्पतिः। हन्ति। अमित्रम्। अर्कैः॥३॥**

**पदार्थः**-**(बृहस्पतिः)** सूर्य इव बृहत्या वेदवाचः पालकः **(सम्)** सम्यक् **(अजयत्)** जयति **(वसूनि)** धनानि **(महान्)** सन् **(व्रजान्)** मेघान् **(गोमतः)** बहुकिरणयुक्तान् **(देवः)** देदीप्यमानः **(एषः)** प्रत्यक्षः **(अपः)** जलानि **(सिषासन्)** कर्मसमाप्तिं कर्त्तुमिच्छन् **(स्वः)** अन्तरिक्षमिवाक्षयं सुखम् **(अप्रतीतः)** यः शत्रुभिरप्रीयमानः **(बृहस्पतिः)** बृहतो राज्यस्य यथावद्रक्षकः **(हन्ति)** **(अमित्रम्)** शत्रुम् **(अर्कैः)** वज्रादिभिः। **अर्क इति वज्रनाम।** (निघं०२.२०)॥३॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथा महो देव एषो बृहस्पतिर्गोमतो व्रजान् हत्वाऽपो वर्षयित्वा जगत्पालयति तथा शत्रुभिरप्रतीतो बृहस्पती राजाऽर्कैः प्रजाः सिषासन्नमित्रं हन्ति शत्रून् समजयद्वसूनि प्राप्नोति स्वर्जनयति॥३॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यो राजा सूर्यवद्विद्याविनयसुसहायैः प्रकाशमानः प्रजाः पालयन् सर्वेभ्योऽभयं ददन् दुष्टकर्मकारिणो निवारयति स एवाऽत्र राजसु महान् राजा जायत इति॥३॥

अत्र बृहस्पतिगुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति त्रिसप्ततितमं सूक्तं सप्तदशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे **(महः)** महान् **(देवः)** देदीप्यमान **(एषः)** यह **(बृहस्पतिः)** सूर्य के समान वेदवाणी को पालने वाला **(गोमतः)** बहुत किरणों से युक्त **(व्रजान्)** मेघों को छिन्न-भिन्न कर **(अपः)** जलों को वर्षाय जगत् की पालना करता है, वैसे शत्रुओं से **(अप्रतीतः)** न प्रतीत को प्राप्त होता हुआ **(बृहस्पतिः)** बड़े राज्य की यथावत् रक्षा करने वाला राजा **(अर्कैः)** वज्र आदि के साथ प्रजाजनों के **(सिषासन्)** काम पूरे करने की इच्छा कर **(अमित्रम्)** शत्रु को **(हन्ति)** मारता है तथा शत्रुओं को **(सम्, अजयत्)** अच्छे प्रकार जीतता है तथा **(वसूनि)** धनों को प्राप्त होता और **(स्वः)** अन्तरिक्ष के समान अक्षय सुख को उत्पन्न करता है॥३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो राजा सूर्य के समान विद्या, विनय और अच्छे सहाय से प्रकाशमान, प्रजाजनों की पालना करता और सब के लिये अभयदान देता हुआ दुष्टकर्म करने वालों की निवृत्ति करता है, वही यहाँ राजाओं में महान् राजा होता है॥३॥

इस सूक्त में बृहस्पति के गुणों का वर्णन करने होने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह तिहत्तरवाँ सूक्त और सत्रहवाँ वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

**अथ चतुर्ऋचस्य चतु:सप्ततितमस्य सूक्तस्य भरद्वाजो बार्हस्पत्य ऋषि:। सोमारुद्रौ देवते। १, २, ४ त्रिष्टुप्। ३ निचृत्त्रिष्टुप् छन्द:। धैवत: स्वर:॥**

***अथ राजा वैद्यश्च कीदृशौ वरौ स्यातामित्याह॥***

अब चार ऋचा वाले चौहत्तरवें सूक्त का प्रारम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में राजा और वैद्य कैसे श्रेष्ठ हों, इस विषय को कहते हैं॥

**सोमारुद्रा धारयेथामसुर्यं१प्र वामिष्टयोऽरमश्नुवन्तु।**
**दमेदमे सप्त रत्ना दधाना शं नो भूतं द्विपदे शं चतुष्पदे॥ १॥**

**सोमारुद्रा। धारयेथाम्। असुर्यम्। प्र। वाम्। इष्टय:। अरम्। अश्नुवन्तु। दमेऽदमे। सप्त। रत्ना। दधाना। शम्। न:। भूतम्। द्विऽपदे। शम्। चतु:ऽपदे॥ १॥**

**पदार्थ:**-**(सोमारुद्रा)** चन्द्रप्राणाविव राजवैद्यौ **(धारयेथाम्)** **(असुर्यम्)** असुरस्य मेघस्येदम् **(प्र)** **(वाम्)** युवाम् **(इष्टय:)** इष्टप्राप्तय: **(अरम्)** अलम् **(अश्नुवन्तु)** प्राप्नुवन्तु **(दमेदमे)** गृहेगृहे **(सप्त)** एतत्सङ्ख्याकानि **(रत्ना)** रमणीयानि हीरकादीनि **(दधाना)** धरन्तौ **(शम्)** सुखकारिणौ **(न:)** अस्माकम् **(भूतम्)** भवेतम् **(द्विपदे)** मनुष्याद्याय **(शम्)** सुखकर्तारौ **(चतुष्पदे)** गवाद्याय॥ १॥

**अन्वय:**-हे राजवैद्यौ सोमारुद्रेव! युवामसुर्यं धारयेथां यतो वामिष्टयोऽरं प्राश्नुवन्तु दमेदमे सप्त रत्ना दधाना सन्तौ नो द्विपदे शं भूतं चतुष्पदे शं भूतम्॥ १॥

**भावार्थ:**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कार:। हे मनुष्या! यो राजा चन्द्रवद्यश्च वैद्य: प्राणवत्सर्वान्निर्भयान्नी रोगान् कुर्यातां तौ सर्वाणि सुखानि प्राप्नुत: यौ प्रजाया गृहे गृहे धनमारोग्यं च वर्धयतस्तौ द्विपद्भिश्चतुष्पद्भिश्च बहूनि सुखानि प्राप्नुत:॥ १॥

**पदार्थ:**-हे **(सोमारुद्रा)** चन्द्रमा और प्राण के तुल्य राजा और वैद्यजनो! तुम दोनों **(असुर्यम्)** मेघ के इस कर्म को **(धारयेथाम्)** धारण करो जिससे **(वाम्)** तुम को **(इष्टय:)** इच्छाओं की प्राप्तियां **(अरम्)** पूरी **(प्र, अश्नुवन्तु)** मिलें तथा **(दमेदमे)** घर-घर में **(सप्त)** सात **(रत्ना)** रमणीय हीरा आदि को **(दधाना)** धारण किये हुए **(न:)** हमारे **(द्विपदे)** दो पग वाले मनुष्य आदि के लिये **(शम्)** सुख करने वाले **(भूतम्)** होओ और **(चतुष्पदे)** गौ आदि चौपाये जीवों के लिये **(शम्)** सुख करने वाले होओ॥ १॥

**भावार्थ:**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जो राजा चन्द्रमा के तुल्य और जो वैद्य प्राण के तुल्य सब को निर्भय और नीरोग करें, वे सब सुखों को प्राप्त होते हैं, जो प्रजा के घर-घर में धन और आरोग्य को बढ़ावें, वे द्विपग वालों और चार पग वालों से बहुत सुखों को प्राप्त होते हैं॥ १॥

**पुनस्तौ किं निवार्य्य किं जनयेतामित्याह॥**



www.9009.co.in

फिर वे किसकों निवारिके क्या उत्पन्न करें, इस विषय को कहते हैं॥

**सोमा॑रुद्रा॒ वि बृ॒हतं॒ विषू॑ची॒ममी॑वा॒ या नो॒ गय॑मावि॒वेश॑।**

**आ॒रे बा॑धेथां॒ निर्ऋ॑तिं परा॒चैर॒स्मे भ॒द्रा सौ॑श्रव॒सानि॑ सन्तु॥ २॥**

**सोमा॑रुद्रा। वि। बृ॒ह॒तम्। विषू॑चीम्। अमी॑वा। या। नः॒। गय॑म्। आ॒ऽवि॒वेश॑। आ॒रे। बा॒धे॒था॒म्। निःऽऋ॑तिम्। प॒रा॒चैः। अ॒स्मे इति॑। भ॒द्रा। सौ॒श्र॒व॒सानि॑। स॒न्तु॥ २॥**

**पदार्थः**-**(सोमारुद्रा)** ओषधीप्राणवत्सुखसम्पादकौ **(वि)** **(वृहतम्)** छेदयतम् **(विषूचीम्)** विषूच्यादिरोगम् **(अमीवा)** रोगः **(या)** **(नः)** अस्माकम् **(गयम्)** गृहमपत्यं वा **(आविवेश)** आविशति **(आरे)** दूरे **(बाधेथाम्)** **(निर्ऋतिम्)** दुःखप्रदां कुनीतिम् **(पराचैः)** पराङ्मुखैः **(अस्मे)** अस्मासु **(भद्रा)** भजनीयानि **(सौश्रवसानि)** सुश्रवस्सु भवान्यन्नादीनि **(सन्तु)**॥ २॥

**अन्वयः**-हे सोमारुद्रेव राजवैद्यौ! युवां या अमीवा नो गयमाविवेश तां विषूचीं वि वृहतं पराचैर्निर्ऋतिमारे बाधेथां यतोऽस्मे भद्रा सौश्रवसानि सन्तु॥ २॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यो राजा वैद्यवरश्च रोगाच्छरीरप्रवेशात् प्रागेव दूरीकुरुतः कुनीतिं कुपथ्यं च पुरस्तादेव दूरीकुरुतस्तयोः पुरुषार्थेन सर्वे मनुष्या धनधान्याऽऽरोग्यादीनि पुष्कलानि प्राप्नुवन्ति॥ २॥

**पदार्थः**-हे **(सोमरुद्रा)** ओषधी और प्राणों के समान सुख उत्पन्न करने वाला राजा और वैद्य जनो! तुम **(या)** जो **(अमीवा)** रोग **(नः)** हमारे **(गयम्)** घर वा सन्तान को **(आविवेश)** प्रवेश करता है उस **(विषूचीम्)** विषूच्यादि को **(वि, वृहतम्)** छिन्न-भिन्न करो तथा **(पराचैः)** पराजित हुए दुष्टों की **(निर्ऋतिम्)** दुःख देने वाली कुनीति को **(आरे)** दूर **(बाधेथाम्)** हटाओ, जिस कारण **(अस्मे)** हम लोगों में **(भद्रा)** सेवन करने योग्य **(सौश्रवसानि)** उत्तम अन्नादि पदार्थों में सिद्ध अन्न **(सन्तु)** हों॥ २॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो राजा और वैद्यवर रोगों को शरीर के प्रवेश से पहिले ही दूर करते हैं तथा कुनीति और कुपथ्य को भी पहिले दूर करते हैं, उनके पुरुषार्थ से सब मनुष्य बहुत धन-धान्य और आरोग्यपनों को प्राप्त होते हैं॥ २॥

**पुनस्तौ किं कुर्यातामित्याह॥**

फिर वे क्या करें, इस विषय को कहते हैं॥

**सोमा॑रुद्रा यु॒वमे॒तान्य॒स्मे विश्वा॑ त॒नूषु॑ भेष॒जानि॑ धत्तम्।**

**अव॑ स्यतं मु॒ञ्चतं॒ यन्नो॒ अस्ति॑ त॒नूषु॑ ब॒द्धं कृ॒तमेनो॑ अ॒स्मत्॥ ३॥**

**सोमा॑रुद्रा। यु॒वम्। ए॒तानि॑। अ॒स्मे इति॑। विश्वा॑। त॒नूषु॑। भे॒ष॒जानि॑। ध॒त्तम्। अव॑। स्य॒तम्। मु॒ञ्चत॑म्। यत्। नः॒। अस्ति॑। त॒नूषु॑। ब॒द्धम्। कृ॒तम्। एनः॑। अ॒स्मत्॥ ३॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-**(सोमारुद्रा)** यज्ञशोधितौ सोमलतावायू इव राजवैद्यौ **(युवम्)** **(एतानि)** विषूच्यादिनिवारकानि **(अस्मे)** अस्माकम् **(विश्वा)** सर्वाणि **(तनूषु)** शरीरेषु **(भेषजानि)** औषधानि **(धत्तम्)** **(अव)** **(स्यतम्)** तनूकुरुतम् **(मुञ्चतम्)** मुञ्चेताम् **(यत्)** **(नः)** अस्माकम् **(अस्ति)** **(तूनुषु)** शरीरेषु **(बद्धम्)** लग्नम् **(कृतम्)** **(एनः)** कुपथ्यादिकमपराधं वा **(अस्मत्)** अस्माकं सकाशात्॥३॥

**अन्वयः**-हे सोमारुद्रेव राजवैद्यौ! युवं यन्नस्तनूषु कृतं बद्धमेनोऽस्ति तदस्मन्मुञ्च तमस्माकं रोगानव स्यतमस्मे तनूषु विश्वैतानि भेषजानि धत्तम्॥३॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे राजन्! भवान् वैद्यविद्यां प्रचार्य्यास्माकं शरीराण्यरोगानि कृत्वा पुरुषार्थे प्रवेशयित्वा दुःखानि वियोज्य सद्वैद्यान् सत्कुर्यात्॥३॥

**पदार्थः**-हे **(सोमारुद्रा)** यज्ञ से शुद्ध किये हुए सोमलता और वायु के समान राजा और वैद्यो! **(युवम्)** तुम **(यत्)** जो **(नः)** हमारे **(तनूषु)** शरीरों में **(कृतम्)** किया हुआ और **(बद्धम्)** लगा हुआ **(एनः)** कुपथ्यादि या अपराध **(अस्ति)** है उसे **(अस्मत्)** हम से **(मुञ्चतम्)** छुड़ाओ और हमारे रोगों को **(अव स्यतम्)** नष्ट करो तथा **(अस्मे)** हमारे **(तनूषु)** शरीरों में **(विश्वा)** समस्त **(एतानि)** ये **(भेषजानि)** औषधें **(धत्तम्)** स्थापन करो॥३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे राजन्! आप वैद्यविद्या का प्रचार कर हमारे शरीरों को नीरोग कर और पुरुषार्थ में प्रवेश करके दुःखों को अलग कर अच्छे वैद्यों का सत्कार करो॥३॥

**पुनस्तौ किं कुर्य्यातामित्याह॥**

फिर वे क्या करें, इस विषय को कहते हैं॥

**ति॒ग्मायु॑धौ ति॒ग्महे॑ती सु॒शेवौ॒ सोमा॑रुद्रावि॒ह सु मृ॑ळतं नः।**

**प्र नो॑ मुञ्चतं॒ वरु॑णस्य॒ पाशा॑द् गोपा॒यतं॑ नः सुमन॒स्यमा॑ना॥४॥१८॥**

**ति॒ग्मऽआ॑युधौ। ति॒ग्महे॑ती॒ इति॑ ति॒ग्मऽहे॑ती। सु॒ऽशेवौ॑। सोमा॑रुद्रौ। इ॒ह। सु। मृ॒ळ॒त॒म्। न॒ः। प्र। न॒ः। मु॒ञ्च॒त॒म्। वरु॑णस्य। पाशा॑त्। गो॒पा॒यत॑म्। न॒ः। सु॒ऽम॒न॒स्यमा॑ना॥४॥**

**पदार्थः**-**(तिग्मायुधौ)** तिग्मानि तेजस्वीन्यायुधानि ययोस्तौ **(तिग्महेती)** तिग्मस्तीव्रो हेतिर्वज्रो ययोस्तौ **(सुशेवौ)** सुसुखौ **(सोमारुद्रौ)** शुद्धावोषधीप्राणाविव **(इह)** अस्मिन् संसारे **(सु)** सुष्ठु **(मृळतम्)** सुखयतम् **(नः)** अस्मान् **(प्र)** **(नः)** अस्मान् **(मुञ्चतम्)** **(वरुणस्य)** उदानस्येव बलवतो रोगस्य **(पाशात्)** बन्धनात् **(गोपायतम्)** **(नः)** अस्मान् **(सुमनस्यमाना)** सुष्ठु विचारयन्तौ॥४॥

**अन्वयः**-हे सोमारुद्राविव वर्त्तमानौ तिग्मायुधौ तिग्महेती सुशेवौ वैद्यराजानौ! युवामिह नः सु मृळतं नोऽस्मान् वरुणस्य पाशात्प्र मुञ्चतं सुमनस्यमाना सन्तौ नः सततं गोपायतम्॥४॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यथा महौषधिबहिःप्राणौ सर्वान् सदा पालयतस्तथोत्तमौ राजवैद्यौ सर्वेभ्य उपद्रवरोगेभ्यो निरन्तरं रक्षत इति॥४॥



www.9009.co.in

अन्नौषधिप्राणवद्वैद्यराजयोः कृत्यवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति चतुःसप्ततितमं सूक्तमष्टादशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे **(सोमारुद्रौ)** शुद्ध औषधी और प्राणों के समान वर्त्तमान **(तिग्मायुधौ)** तेज आयुधों तथा **(तिग्महेती)** पैने वज्र वालो **(सुशेवौ)** अच्छे सुखयुक्त वैद्य और राजजनो! तुम **(इह)** इस संसार में **(नः)** हम लोगों को **(सु, मृळतम्)** अच्छे प्रकार सुखी करो तथा **(नः)** हम लोगों को **(वरुणस्य)** उदान के समान बलवान् रोग के **(पाशात्)** बन्धन से **(प्र, मुञ्चतम्)** छुड़ाओ और **(सुमनस्यमाना)** सुन्दर विचारवान् होते हुए **(नः)** हम लोगों की निरन्तर **(गोपायतम्)** रक्षा करो॥४॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जैसे महौषाधि और बहिः प्राण वायु सबकी सदा पालना करते हैं, वैसे उत्तम राजा और वैद्यजन समस्त उपद्रव और रोगों से निरन्तर रक्षा करते हैं॥४॥ इस सूक्त में ओषधि और प्राण के समान वैद्य और राजा के कामों का वर्णन होने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह चौहत्तरवां सूक्त और अठारहवां वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

**अथैकोनविंशत्यृचस्य पञ्चसप्ततितमस्य सूक्तस्य पायुर्भारद्वाज ऋषिः। १ वर्म। २ धनुः। ३ ज्या। ४ आर्त्नी। ५ इषुधिः। ६[1] सारथिः। ६[2] रश्मयः। ७ अश्वाः। ८ रथः। ९ रथगोपाः। १० लिङ्गोक्ता देवताः। ११, १२, १५, १६ इषवः। १३ प्रतोदः। १४ हस्तघ्नः। १७-१९ लिङ्गोक्ता देवताः सङ्ग्रामाशिषः (१७ युद्धभूमिर्ब्रह्मणस्पतिरदितिश्च। १८ कवचसोमवरुणाः। १९ देवा ब्रह्म च)॥ १, ३ निचृत्त्रिष्टुप्। २, ४, ५, ७, ८, ९, ११, १४, १८ त्रिष्टुप्छन्दः। धैवतः स्वरः। ६ जगती। १० विराड् जगती छन्दः। निषादः स्वरः। १२, १९, विराडनुष्टुप्। १५ निचृदनुष्टुप्। १६ अनुष्टुप् छन्दः। गान्धारः स्वरः। १३ स्वराडुष्णिक्छन्दः। ऋषभः स्वरः। १७ पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः॥**

***अथ शूरवीराः किं धृत्वा किं किं कुर्युरित्याह॥***

अब उन्नीस ऋचावाले पचहत्तरवें सूक्त का आरम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में शूरवीर किसे धारण कर क्या-क्या करें, इस विषय को कहते हैं॥

**जीमूतस्येव भवति प्रतीकं यद्वर्मी याति समदामुपस्थे।**

**अनाविद्धया तन्वा जय त्वं स त्वा वर्मणो महिमा पिपर्तु॥१॥**

**जीमूतस्यऽइव। भवति। प्रतीकम्। यत्। वर्मी। याति। सऽमदाम्। उपऽस्थे अनाविद्धया। तन्वा। जय। त्वम्। सः। त्वा। वर्मणः। महिमा। पिपर्तु॥१॥**

**पदार्थः-(जीमूतस्येव)** मेघस्येव **(भवति) (प्रतीकम्)** प्रतीतिकरम् **(यत्)** यः **(वर्मी)** कवचधारी **(याति)** गच्छति **(समदाम्)** मदैस्सह वर्त्तन्ते येषु तेषां सङ्ग्रामाणाम् **(उपस्थे)** समीपे **(अनाविद्धया)** शस्त्रास्त्ररहितया **(तन्वा)** शरीरेण **(जयः) (त्वम्) (सः) (त्वा)** त्वाम् **(वर्मणः)** कवचस्य **(महिमा)** महत्त्वम् **(पिपर्तु)** पालयतु॥१॥

**अन्वयः**-हे वीर! यज्जीमतूस्येव प्रतीकं वर्म भवति तेन वर्मी भूत्वा समदामुपस्थे याति अनाविद्धया तन्वा त्वं शत्रूञ्जय स वर्मणो महिमा त्वा पिपर्त्तु॥१॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। ये मेघवत्सुन्दराणि कवचानि धृत्वा युद्धं कुर्वन्ति तेऽक्षतशरीराः शत्रूञ्जेतुं शक्नुवन्ति येन येन प्रकारेण शरीरे शल्यानि न प्राप्नुयुस्तं तमुपायं वीराः सदानुतिष्ठन्तु॥१॥

**पदार्थः**-हे वीर! **(यत्)** जो **(जीमूतस्येव)** मेघ के समान **(प्रतीकम्)** प्रतीति करने वाला वर्म **(भवति)** होता है उससे **(वर्मी)** कवचधारी होकर **(समदाम्)** अहङ्कारों के साथ वर्त्तमान सङ्ग्रामों के **(उपस्थे)** समीप **(याति)** जाता है तथा **(अनाविद्धया)** शस्त्रास्त्ररहित अर्थात् अनविधे **(तन्वा)** शरीर से



www.9009.co.in

(त्वम्) तुम शत्रुओं को (जय) जीतो (सः) सो (वर्मणः) कवच का (महिमा) महत्त्व (त्वा) तुम्हें (पिपर्तु) पाले॥१॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जो मेघ के समान सुन्दर कवचों को धारण कर युद्ध करते हैं, वे घाव से रहित शरीर वाले हुए वैरियों को जीत सकते हैं, जिस-जिस प्रकार से शरीर में घाव करने वाले नोकदार शस्त्र न प्राप्त हों, उन-उन उपायों का वीरजन सदैव आश्रय करें॥१॥

**पुनर्वीराः केन किं कुर्य्युरित्याह॥**

फिर वीर किससे क्या करें, इस विषय को कहते हैं॥

**धन्वना गा धन्वनाजिं जयेम धन्वना तीव्राः समदो जयेम।**

**धनुः शत्रोरपकामं कृणोति धन्वना सर्वाः प्रदिशो जयेम॥२॥**

**धन्वना। गाः। धन्वना। आजिम्। जयेम। धन्वना। तीव्राः। सऽमदः। जयेम। धनुः। शत्रोः। अपऽकामम्। कृणोति। धन्वना। सर्वाः। प्रऽदिशः। जयेम॥२॥**

**पदार्थः**-**(धन्वना)** धनुराद्येन शस्त्रास्त्रेण **(गाः)** भूमीः **(धन्वना)** **(आजिम्)** सङ्ग्रामम्। **आजिरिति सङ्ग्रामनाम।** (निघं०२.१७) **(जयेम)** **(धन्वना)** **(तीव्राः)** कठिनास्तेजस्विनः **(समदः)** सङ्ग्रामान् **(जयेम)** **(धनुः)** शस्त्रास्त्रम् **(शत्रोः)** **(अपकामम्)** कामविनाशनम् **(कृणोति)** करोति **(धन्वना)** **(सर्वाः)** **(प्रदिशः)** दिक्प्रदिक्स्थाञ्छत्रून् **(जयेम)**॥२॥

**अन्वयः**-हे वीरपुरुषा! यद्धनुः शत्रोरपकामं कृणोति येन धन्वना यथा वयं गा धन्वनाजिं जयेम धन्वना तीव्राः समदो जयेम धन्वना सर्वाः प्रदिशो जयेम तथा तेन यूयमप्येताञ्जयत॥२॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। ये मनुष्या धनुर्वेदं पठित्वा पूर्णं शस्त्रास्त्रनिर्माणाभ्यासं कृत्वा प्रयोक्तुं विजानन्ति त एव सर्वत्र विजयिनो भवन्ति॥२॥

**पदार्थः**-हे वीरपुरुषो! जो **(धनुः)** धनुष् **(शत्रोः)** शत्रु के **(अपकामम्)** काम का विनाश **(कृणोति)** करात है जिस **(धन्वना)** धनुष् से जैसे हम **(गाः)** भूमियों को **(धन्वना)** धनुष् से **(आजिम्)** सङ्ग्राम को **(जयेम)** जीतें **(धन्वना)** धनुष् से **(तीव्राः)** कठिन तेज **(समदः)** सङ्ग्रामों को **(जयेम)** जीतें और **(धन्वना)** धनुष् से **(सर्वाः)** सब **(प्रदिशः)** दिशा प्रदिशाओं में स्थित जो शत्रुजन उनको **(जयेम)** जीतें, वैसे उससे तुम भी उनको जीतो॥२॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो मनुष्य धनुर्वेद को पढ़ के पूरा शस्त्र और अस्त्र बनाने का अभ्यास कर प्रयोग करने को जानते हैं, वे ही सर्वत्र विजयी होते हैं॥२॥

**पुनरेते कया कां क्रियां कुर्वन्तीत्याह॥**

फिर ये किससे कौन क्रिया को करते हैं, इस विषय को कहते हैं॥

**वक्ष्यन्तीवेदा गनीगन्ति कर्णं प्रियं सखायं परिषस्वजाना।**



www.9009.co.in

**योषे॑व शि॒ङ्क्ते वित॒ताधि॒ धन्व॒न् ज्या इ॒यं सम॑ने पा॒रय॑न्ती॥३॥**

**व॒क्ष्यन्ती॑ऽइव। इत्। आ। ग॒नीग॑न्ति। कर्णम्। प्रि॒यम्। सखा॑यम्। प॒रि॒ऽस॒स्व॒जा॒ना। योषा॑ऽइव। शि॒ङ्क्ते। वि॒ऽत॒ता। अधि॑। धन्व॑न्। ज्या। इ॒यम्। सम॑ने। पा॒रय॑न्ती॥३॥**

**पदार्थः**-**(वक्ष्यन्तीव)** यथा कथयिष्यन्ती विदुषी स्त्री **(इत्)** एव **(आ)** समन्तात् **(गनीगन्ति)** भृशं गच्छति **(कर्णम्)** श्रोत्रम् **(प्रियम्)** **(सखायम्)** मित्रमिव वर्त्तमानं पतिम् **(परिषस्वजाना)** परितः कृतसङ्गा **(योषेव)** पत्नीव **(शिङ्क्ते)** अव्यक्तं शब्दं करोति **(वितता)** विस्तृता **(अधि)** उपरि **(धन्वन्)** धनुषि **(ज्या)** प्रत्यञ्चा **(इयम्)** **(समने)** सङ्ग्रामे **(पारयन्ती)** पारं प्रापयन्ती॥३॥

**अन्वयः**-हे शूरवीर! येयं ज्या वक्ष्यन्तीव प्रियं सखायं परिषस्वजाना योषेव कर्णमागनीगन्ति, अधि धन्वन् वितता समने पारयन्ती सती शिङ्क्ते तामिद् यूयं यथावद्विज्ञाय सम्प्रयुङ्ध्वम्॥३॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। हे वीरमनुष्या! यथा प्रियेण मित्रेण पत्या सह स्त्री प्रिया सम्बद्धा यथा च विद्यार्थिनीभिः सहाऽध्यापिका विदुषी स्त्री सम्बद्धा वर्त्तते दुःखादविद्यायाश्च पारं गमयति तथैवेयं धनुर्ज्या युद्धात् पारं गमयित्वा सदैव सुखयति॥३॥

**पदार्थः**-हे शूरवीर! जो **(इयम्)** यह **(ज्या)** प्रत्यञ्चा अर्थात् धनुष् की तांति **(वक्ष्यन्तीव)** जैसे विदुषी कहने वाली होती, वैसे **(प्रियम्)** अपने प्यारे **(सखायम्)** मित्र के समान वर्त्तमान पति को **(परिषस्वजाना)** सब ओर से संग किये हुए **(योषेव)** पत्नी स्त्री **(कर्णम्)** कान को **(आ, गनीगन्ति)** निरन्तर प्राप्त होती है, वैसे **(अधि)** **(धन्वन्)** धनुष् के ऊपर **(वितता)** विस्तारी हुई तांति **(समने)** सङ्ग्राम में **(पारयन्ती)** पार को पहुंचाती हुई **(शिङ्क्ते)** गूंजती है उस **(इत्)** ही को तुम यथावत् जानकर उसका प्रयोग करो॥३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे वीरपुरुषो! जैसे प्रिय मित्र पति के साथ स्त्री प्यारी सम्बद्ध अर्थात् प्रेम की डोरी से बंधी हुई है और जैसे विद्यार्थिनें कन्याओं के साथ पढ़ाने वाली विदुषी स्त्री बंधी हुई दुःख से और अविद्या से पार पहुंचती है, वैसे ही यह धनुष् की प्रत्यञ्चा युद्ध से पार पहुंचा कर सदैव सुखी करती है॥३॥

**पुनस्ते वीराः केभ्यः किं कुर्युरित्याह॥**

फिर वे वीर किनसे क्या करें, इस विषय को कहते हैं॥

**ते आ॒चर॑न्ती॒ सम॑नेव॒ योषा॑ मा॒तेव॑ पु॒त्रं बि॑भृतामु॒पस्थे॑।**

**अप॒ शत्रू॑न् विध्यतां संविदा॒ने आर्त्नी॑ इ॒मे वि॑ष्फु॒रन्ती॑ अ॒मित्रा॑न्॥४॥**

**ते इति॑ आ॒चर॑न्ती इत्या॒ऽचर॑न्ती। सम॑नाऽइव। योषा॑। मा॒ता॒ऽइ॑व। पु॒त्रम्। बि॒भृ॒ताम्। उ॒पऽस्थे॑। अप॑। शत्रू॑न्। वि॒ध्य॒ताम्। सं॒वि॒दा॒ने इति॑ स॒म्ऽवि॒दा॒ने। आर्त्नी॒ इति॑। इ॒मे इति॑। वि॒ष्फु॒रन्ती॒ इति॑ वि॒ऽस्फु॒रन्ती॑। अ॒मित्रा॑न्॥४॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-**(ते)** द्वे **(आचरन्ती)** समन्तात् प्रियाचरणं कुर्वन्त्यौ **(समनेव)** समानमना इव। अत्र **छान्दसो वर्णलोपो** वेति सलोपः। **(योषा)** पत्न्यौ **(मातेव)** **(पुत्रम्)** **(बिभृताम्)** धरेताम् **(उपस्थे)** समीपे **(अप)** **(शत्रून्)** **(विध्यताम्)** ताडयतम् **(संविदाने)** प्रतिज्ञापालिके इव **(आर्त्नी)** गच्छन्त्यौ **(इमे)** **(विष्फुरन्ती)** कम्पयन्त्यौ **(अमित्रान्)** शत्रून्॥४॥

**अन्वयः**-हे वीरपुरुषास्ते इमे संविदाने अमित्रान् विष्फुरन्ती आर्त्नी आचरन्ती योषा समनेव पुत्रं मातेवोपस्थे विजयं बिभृतां शत्रून् अप विध्यताम्॥४॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। हे वीरजना! यथा समानप्रीतिसेविनी पत्नी पतिं माता पुत्रं वा सततं सुखयति तथा शस्त्रास्त्राभ्यां शत्रून्निवारयत॥४॥

**पदार्थः**-हे वीरपुरुषो! **(ते)** वे दोनों **(इमे)** ये **(संविदाने)** प्रतिज्ञा पालने वालियों के समान वा **(अमित्रान्)** शत्रुजनों को **(विष्फुरन्ती)** कंपाती **(आर्त्नी)** वेग से जाती और **(आचरन्ती)** सब ओर से प्रिय आचरण करती हुई **(योषा)** पत्नी स्त्री जैसे **(समनेव)** समान मन वाली, वैसे वा **(पुत्रम्)** पुत्र को जैसे **(मातेव)** माता, वैसे **(उपस्थे)** समीप में विजय को **(बिभृताम्)** धारण करें और **(शत्रून्)** शत्रुजनों को **(अप, विध्यताम्)** पीटें॥४॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे वीरजनो! जैसे समान प्रीति की सेवने वाली पत्नी पति को तथा माता पुत्र को निरन्तर सुखी करती है, वैसे शस्त्र और अस्त्रों से शत्रुओं को निवारो॥४॥

**पुनर्वीरैः किं धर्त्तव्यमित्याह॥**

फिर वीरों को क्या धारण करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**बह्वीनां पिता बहुरस्य पुत्रश्चिश्चा कृणोति समनावगत्य।**

**इषुधिः संकाः पृतनाश्च सर्वाः पृष्ठे निनद्धो जयति प्रसूतः॥५॥१९॥**

**बह्वीनाम्। पिता। बहुः। अस्य। पुत्रः। चिश्चा। कृणोति। समना। अवऽगत्य। इषुऽधिः। संकाः। पृतनाः। च। सर्वाः। पृष्ठे। निऽनद्धः। जयति। प्रऽसूतः॥५॥**

**पदार्थः**-**(बह्वीनाम्)** इषूणाम् **(पिता)** पितेव **(बहुः)** **(अस्य)** **(पुत्रः)** पुत्र इवेषवः **(चिश्चा)** चिश्चेति शब्दानुकरणम् **(कृणोति)** करोति **(समना)** सङ्ग्रामान् **(अवगत्य)** प्राप्य **(इषुधिः)** इषवो धीयन्ते यस्मिन् **(संकाः)** सङ्ग्रामान्। **संका इति सङ्ग्रामनाम।** (निघं०२.१७) **(पृतनाः)** शत्रुसेनाः **(च)** **(सर्वाः)** **(पृष्ठे)** **(निनिद्धः)** नित्यं बद्धः **(जयति)** **(प्रसूतः)** उत्पन्नः सन्॥५॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! बह्वीनां पितेवास्य बहुः पुत्रः समनाऽवगत्येषुधिश्चिश्चा कृणोति पृष्ठे निनद्धः प्रसूतस्सन् सर्वाः संकाः पृतनाश्च जयति स युष्माभिर्यथावन्निर्माय धर्त्तव्यः॥५॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे वीरपुरुषा! यदीषुधिं यूयं धरेत तर्हि शत्रून् विदार्य्य पुत्रान् प्रति पितर इव प्रजाः सम्पाल्य सर्वाः शत्रुसेना जेतुं शक्नुयुः॥५॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(बह्वीनाम्)** बहुत बाणों की **(पिता)** पालना करने वाले के समान **(अस्य)** इसके **(बहुः)** बहुत **(पुत्रः)** पुत्र के समान बाण **(समना)** सङ्ग्रामों को **(अवगत्य)** प्राप्त होकर **(इषुधिः)** धनुष् **(चिश्चा)** चीं चीं शब्द **(कृणोति)** करता है तथा **(पृष्ठे)** पीठ पर **(निनद्धः)** नित्य बंधा और **(प्रसूतः)** उत्पन्न होता हुआ **(सर्वाः)** समस्त **(संकाः)** संग्रामस्थ वैरियों की टोली **(पृतनाः, च)** और सेनाओं को **(जयति)** जीतता है, वह तुम लोगों को यथावत् बना कर धारण करना चाहिये॥५॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे वीरपुरुषो! यदि धनुष् को तुम धारण करो तो शत्रुओं को विदीर्ण करके पुत्रों के प्रति पिता जैसे वैसे प्रजा पालन करके समस्त शत्रुसेनाओं को जीत सको॥५॥

**पुनर्वीराः किंवत् किं कुर्य्युरित्याह॥**

फिर वीरजन किसके तुल्य क्या करें, इस विषय को कहते हैं॥

**रथे तिष्ठन्नयति वाजिनः पुरो यत्रयत्र कामयते सुषारथिः।**

**अभीशूनां महिमानं पनायत मनः पश्चादनु यच्छन्ति रश्मयः॥६॥**

**रथे। तिष्ठन्। नयति। वाजिनः। पुरः। यत्रऽयत्र। कामयते। सुऽसारथिः। अभीशूनाम्। महिमानम्। पनायत। मनः। पश्चात्। अनु। यच्छन्ति। रश्मयः॥६॥**

**पदार्थः**-**(रथे)** रमणीये याने **(तिष्ठन्)** **(नयति)** प्रापयति **(वाजिनः)** वेगवतोऽश्वान् **(पुरः)** पुरस्तात् **(यत्रयत्र)** **(कामयते)** **(सुषारथिः)** शोभनश्चासौ सारथिश्च **(अभीशूनाम्)** बाहूनाम् **(महिमानम्)** **(पनायत)** व्यवहरत स्तुत वा **(मनः)** चित्तम् **(पश्चात्)** **(अनु)** **(यच्छन्ति)** निगृह्णन्ति **(रश्मयः)** किरणाः॥६॥

**अन्वयः**-हे विद्वांसो वीरपुरुषा! यथा सुषारथी रथे तिष्ठन् यत्रयत्र पुरः कामयते तत्र तत्र वाजिनो नयति यथा रश्मयः सूर्यस्य पश्चादनु यच्छन्ति तथा तत्रतत्राऽभीशूनां महिमानं मनश्च यूयं पनायत॥६॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे राजादयो वीरपुरुषा! यूयं जितेन्द्रिया भूत्वा स्वकार्य्यपारं रथेन सुषारथिरिव गच्छत प्रधानमनु गच्छन्तं महान्तं व्यवहारं कृत्वा स्वसुशिक्षां भृत्यान् नीत्वा कामसिद्धिं कुरुत॥६॥

**पदार्थः**-हे विद्वान् वीरपुरुषो! जैसे **(सुषारथिः)** अच्छा सारथि **(रथे)** रथ पर **(तिष्ठन्)** स्थित होता हुआ **(यत्रयत्र)** जहाँ-जहाँ **(पुरः)** पहिले **(कामयते)** कामना करता है वहाँ-वहाँ **(वाजिनः)** वेग वाले अश्वों की **(नयति)** प्राप्ति कराता है जैसे **(रश्मयः)** किरणें सूर्य के **(पश्चात्)** पीछे **(अनु, यच्छन्ति)** अनुकूल नियम से जाती हैं, वैसे वहाँ-वहाँ **(अभीशूनाम्)** बाहुओं की **(महिमानम्)** महिमा को **(मनः)** और चित्त को तुम **(पनायत)** व्यवहार में लाओ वा उनकी स्तुति करो॥६॥



www.9009.co.in

**भावार्थ:**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे राजा आदि वीरपुरुषो! तुम जितेन्द्रिय होकर अपने कार्य के पार रथ से अच्छे सारथी के समान जाओ तथा प्रधान के अनुकूल जाने वाले बड़े व्यवहार को करके सुन्दर शिक्षा को भृत्यों को पहुंचा कर कामसिद्धि करो॥६॥

**पुनर्मनुष्याः कैः कान् विजयेरन्नित्याह॥**

फिर मनुष्य किन से किन्हें जीतें, इस विषय को कहते हैं॥

**तीव्रान् घोषान् कृण्वते वृषपाणयोऽश्वा रथेभिः सह वाजयन्तः।**

**अवक्रामन्तः प्रपदैरमित्रान् क्षिणन्ति शत्रूँरनपव्ययन्तः॥७॥**

**तीव्रान्। घोषान्। कृण्वते। वृषऽपाणयः। अश्वाः। रथेभिः। सह। वाजयन्तः। अवऽक्रामन्तः। प्रऽपदैः। अमित्रान्। क्षिणन्ति। शत्रून्। अनपऽव्ययन्तः॥७॥**

**पदार्थः**-**(तीव्रान्)** तीक्ष्णान् **(घोषान्)** शब्दान् **(कृण्वते)** कुर्वन्ति **(वृषपाणयः)** वृषस्येव पाणिर्व्यवहारो येषान्ते **(अश्वाः)** तुरङ्गा वह्न्यादयो वा **(रथेभिः, सह)** रमणीयैर्यानैस्सह **(वाजयन्तः)** गच्छन्तो वा **(अवक्रामन्तः)** इतस्ततो गच्छन्तः **(प्रपदैः)** प्रकृष्टैः पदैर्गमनैः **(अमित्रान्)** वैरं कुर्वतः **(क्षिणन्ति)** हिंसन्ति **(शत्रून्)** **(अनपव्ययन्तः)** अपव्ययमप्राप्नुवन्तः॥७॥

**अन्वयः**-हे मनुष्याः! प्रपदैरवक्रामन्तोऽनपव्ययन्तो रथेभिः सह वाजयन्तो वृषपाणयोऽश्वास्तीव्रान् घोषान् कृण्वतेऽमित्राञ्छत्रून् क्षिणन्ति तान् यूयं क्षिणध्वम्॥७॥

**भावार्थः**-हे राजपुरुषा! यूयमश्वान् सुशिक्ष्याग्न्यादीन् सम्प्रयुज्य शत्रूनाक्रम्य विजयध्वम्॥७॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(प्रपदैः)** अति उत्तम गमनों से **(अवक्रामन्तः)** इधर-उधर जाते और **(अनपव्ययन्तः)** व्यर्थ खर्च को न प्राप्त होते हुए तथा **(रथेभिः)** रमणीय यानों के **(सह)** साथ **(वाजयन्तः)** आप जाते वा दूसरों को ले जाते हुए **(वृषपाणयः)** वृष के समान व्यवहार जिनका वे **(अश्वाः)** घोड़े वा अग्नि आदि पदार्थ **(तीव्रान्)** तीक्ष्ण **(घोषान्)** शब्दों को **(कृण्वते)** करते हैं और **(अमित्रान्)** वैर करते हुए **(शत्रून्)** शत्रुजनों को **(क्षिणन्ति)** क्षीण करते हैं, उनको तुम क्षीण करो॥७॥

**भावार्थः**-हे राजपुरुषो! तुम घोड़ों को अच्छे प्रकार शिक्षा देकर तथा अग्नि आदि का संप्रयोग और शत्रुओं को आक्रमण कर जीतो॥७॥

**पुनर्मनुष्याः कुत्र स्थित्वा किं कुर्य्युरित्याह॥**

फिर मनुष्य कहाँ ठहर कर क्या करें, इस विषय को कहते हैं॥

**रथवाहनं हविरस्य नाम यत्रायुधं निहितमस्य वर्म।**

**तत्रा रथमुप शग्मं सदेम विश्वाहा वयं सुमनस्यमानाः॥८॥**



www.9009.co.in

रथऽवाहनम्। हविः। अस्य। नाम। यत्र। आयुधम्। निऽहितम्। अस्य। वर्म। तत्र। रथम्। उप। शग्मम्। सदेम। विश्वाहा। वयम्। सुऽमनस्यमानाः॥८॥

**पदार्थः**-(**रथवाहनम्**) रथं वहन्ति येन तम् (**हविः**) आदातव्यम् (**अस्य**) (**नाम**) (**यत्र**) (**आयुधम्**) (**निहितम्**) स्थापितम् (**अस्य**) (**वर्म**) (**तत्रा**) अत्र **ऋचि तुनुघेति** दीर्घः। (**रथम्**) रमणीयं यानम् (**उप**) (**शग्मम्**) सुखम् (**सदेम**) प्राप्नुयाम (**विश्वाहा**) सर्वाणि दिनानि (**वयम्**) (**सुमनस्यमानाः**) सुष्ठु विचारं कुर्वन्तः॥८॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथा सुमनस्यमाना वयं यत्राऽऽयुधं निहितं यत्राऽऽस्य वर्म यस्यास्य हविर्नाम तत्रेमं रथवाहनं शग्मं रथं च विश्वाहोप सदेम॥८॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यूयं सुविचारेणाग्न्यादिसम्प्रयुक्तेनाऽऽयुधाद्यधिष्ठितेन रथेन सदा शत्रूँस्ताडयत॥८॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जैसा (**सुमनस्यमानाः**) सुन्दर विचार करते हुए (**वयम्**) हम लोग (**यत्र**) जहाँ (**आयुम्**) शस्त्र (**निहितम्**) स्थापित किया वा जहाँ (**अस्य**) इसका (**वर्म**) कवच और जिस (**अस्य**) इसका (**हविः**) लेने योग्य (**नाम**) नाम है (**तत्रा**) वहाँ इस (**रथवाहनम्**) जिससे रथ चलाया जाता है उसको वा (**शग्मम्**) सुख को और (**रथम्**) रमणीय यान को (**विश्वाहा**) सब दिनों (**उप, सदेम**) प्राप्त होवें॥८॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! तुम लोग अच्छे विचार के साथ अग्नि आदि के सम्प्रयोग से बनाये हुए आयुधों से युक्त उत्तम यान द्वारा सर्वदैव शत्रुओं को ताड़ना देओ॥८॥

**पुना राजपुरुषाः कीदृशा भवेयुरित्याह॥**

फिर राजपुरुष कैसे हों, इस विषय को कहते हैं॥

**स्वादुषंसदः पितरो वयोधाः कृच्छ्रेश्रितः शक्तीवन्तो गभीराः।**
**चित्रसेना इषुबला अमृध्राः सतोवीरा उरवो व्रातसाहाः॥९॥**

**स्वादुऽसंसदः। पितरः। वयःऽधाः। कृच्छ्रेऽश्रितः। शक्तिऽवन्तः। गभीराः। चित्रऽसेनाः। इषुऽबलाः। अमृध्राः। सतःऽवीराः। उरवः। व्रातऽसहाः॥९॥**

**पदार्थः**-(**स्वादुषंसदः**) ये स्वादून्यन्नानि भोक्तुं संसीदन्ति न्यायं कर्तुं सभायां वा (**पितरः**) विज्ञानवयोवृद्धाः (**वयोधाः**) ये वयांसि दधति ते (**कृच्छ्रेश्रितः**) ये कृच्छ्रे दुःखेऽपि धर्मं श्रियन्ति सेवन्ते (**शक्तीवन्तः**) प्रशस्ता बह्वी शक्तिः सामर्थ्यं विद्यते येषान्ते (**गभीराः**) गम्भीराशयाः (**चित्रसेनाः**) चित्राऽद्भुता सेना येषान्ते (**इषुबलाः**) इषुभिः शस्त्रास्त्रैर्बलं सैन्यं वा येषान्ते (**अमृध्राः**) अहिंसकाः (**सतोवीराः**) सत्त्वबलोपेताः (**उरवः**) बहवः (**व्रातसाहाः**) ये व्राताञ्छत्रुसमूहान् सहन्ते ते॥९॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे राजन्! ये स्वादुषंसदो वयोधा कृच्छेश्रितः शक्तीवन्तो गभीराश्चित्रसेना इषुबला अमृध्राः सतोवीरा व्रातसाहा उरवः पुत्रान् पितर इव प्रजाः पालयन्तो धर्मिष्ठा मनुष्याः स्युस्तैस्त्वं प्रजाः सततं पालय॥९॥

**भावार्थः**-हे विद्वांसो! मनुष्या यूयं सभ्यं पितृवत्प्रजापालकं दीर्घवयसं दुःखं प्राप्याकम्पितारं शक्तिमन्तं गम्भीराशयमद्भुतसेनं शस्त्रास्त्रविद्याकुशलं सत्त्वोपेतं शत्रुसमूहसहं बहुशुभगुणकर्मयुक्तमेव राजानमभिषिञ्चत॥९॥

**पदार्थः**-हे राजन्! जो **(स्वादुषंसदः)** स्वादिष्ठ अन्नों के भोगने को स्थिर होते वा न्याय करने को सभा में स्थिर होते हैं वा **(वयोधाः)** जो अवस्थाओं को धारण करते हैं वा **(कृच्छ्रेश्रितः)** जो अति दुःख में भी धर्म का आश्रय करते हैं वा **(शक्तीवन्तः)** प्रशंसित बहुत शक्ति विद्यमान जिनके वा **(गभीराः)** जो गम्भीर आशय वाले हैं वा **(चित्रसेनाः)** जिनकी चित्रविचित्र सेना है तथा **(इषुबलाः)** शस्त्र और अस्त्रों से युक्त जिनकी सेना और **(अमृध्राः)** जो अहिंसन करने वाले **(सतोवीराः)** सत्त्व बल से युक्त **(व्रातसाहाः)** जो शत्रूसमूहों को सहते हैं, वे **(उरवः)** बहुत पुत्रों की **(पितरः)** पिता जैसे धर्मिष्ठ, वैसे विज्ञान और अवस्था से बढ़े हुए पालने वाले जन प्रजा की पालना करते हुए धर्मिष्ठ मनुष्य हों, उनसे तुम प्रजाओं की पालना निरन्तर करो॥९॥

**भावार्थः**-हे विद्वान् मनुष्यो! तुम सभ्य, पिता के समान प्रजाजनों की पालना करने वाले, बहुत अवस्था से युक्त और दुःख को पाकर न कंपने वाले, सामर्थ्यवान्, गम्भीर आशय, अद्भुत सेना तथा शस्त्र और अस्त्रों की विद्या में कुशल, बल से युक्त, शत्रुसमूह के सहने वाले और बहुत गुण कर्मों से युक्त राजा को ही राज्याभिषिञ्चन काम में अभिषिक्त करो॥९॥

**पुनर्मनुष्याः परस्परं कथमनुवर्त्तेरन्नित्याह॥**

फिर मनुष्य परस्पर कैसे वर्त्ते, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**ब्राह्मणासः पितरः सोम्यासः शिवे नो द्यावापृथिवी अनेहसा।**

**पूषा नः पातु दुरितादृतावृधो रक्षा माकिर्नो अघशंस ईशत॥१०॥२०॥**

**ब्राह्मणासः। पितरः। सोम्यासः। शिवे इति। नः। द्यावापृथिवी इति। अनेहसा। पूषा। नः। पातु। दुःऽइतात्। ऋतऽवृधः। रक्ष। माकि। नः। अघऽशंसः। ईशत॥१०॥**

**पदार्थः**-**(ब्राह्मणासः)** वेदेश्वरवेत्तारः **(पितरः)** पितर इव प्रजाानामुपरि कृपालव **(सोम्यासः)** सोमगुणानर्हाः **(शिवे)** मंगलकारिण्यौ **(नः)** अस्मभ्यम् **(द्यावापृथिवी)** सूर्य्यभूमी **(अनेहसा)** अहिंसिके **(पूषा)** विद्याविनयाभ्यां पोषकः **(नः)** अस्मान् **(पातु)** **(दुरितात्)** दुष्टाचरणात् **(ऋतावृधः)** सत्यवर्धकाः **(रक्षा)** पालय। अत्र **द्व्यचोऽतस्तिङ** इति दीर्घः। **(माकिः)** निषेधे **(नः)** अस्मान् **(अघशंसः)** स्तेनः **(ईशत)** हन्तुं समर्थो भवेत्॥१०॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे पितर इव सोम्यासो ब्राह्मणासो विद्वांसो! यूयं नोऽधर्माचरणात्पृथक् रक्षत यथाऽनेहसा शिवे द्यावापृथिवी नोऽस्मदर्थं स्यातां तथोपदिशत यथा पूषा ऋतावृधो नोऽस्मान् दुरितात् पातु यतोऽघशंसोऽस्मान् माकिरीशत। हे राजँस्त्वमेतान् सततं रक्षा॥१०॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! ये विद्वांसो युष्मभ्यं विद्याविनयौ प्रयच्छेरन् विद्युद्भूगर्भादिविद्यया सुखिनः सम्पादयेयुरधर्माचरणात् पृथग्रक्षेयुर्यश्च राजा चोरादिभ्यः सततं रक्षेत् तान् सर्वान् यूयं सततं सेवध्वम्॥१०॥

**पदार्थः**-हे **(पितरः)** पिता के समान प्रजाजनों पर कृपा करने वाले **(सोम्यासः)** शान्तियुक्त गुणों के योग्य **(ब्राह्मणासः)** वेद और ईश्वर के जानने वाले विद्वानो! तुम **(नः)** हम लोगों को अधर्म के आचरण से अलग रक्खो जैसे **(अनेहसा)** न हिंसा करने वाली **(शिवे)** मंगलकारिणी **(द्यावापृथिवी)** सूर्य और पृथिवी **(नः)** हमारे लिये हों, वैसे उपदेश करो जैसे **(पूषा)** विद्या और विनय से पुष्टिकारक **(ऋतावृधः)** सत्य का बढ़ाने वाला **(नः)** हम लोगों की **(दुरितात्)** दुष्ट आचरण से **(पातु)** पालना करे जिससे **(अघशंसः)** चोर हम लोगों को **(माकिः)** न **(ईशत)** मारने के लिये समर्थ हो, हे राजन्! तुम इन की निरन्तर **(रक्ष)** रक्षा करो॥१०॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जो विद्वान् जन तुम लोगों को विद्या और विनय देवें तथा बिजुली और भूगर्भविद्या से सुख से सम्पन्न करें और अधर्माचरण से अलग रक्खें तथा जो राजा चोर आदि दुष्टों से निरन्तर रक्षा करे, उस सब की तुम निरन्तर सेवा करो॥१०॥

**पुनर्भूमिः कीदृग्वेगवती वीराश्च किमर्थं सङ्ग्रामं कुर्वन्तीत्याह॥**

फिर भूमि कैसी वेग वाली है और युद्ध करने वाले युद्ध क्यों करते हैं, इस विषय को कहते हैं॥

**सुपर्णं वस्ते मृगो अस्या दन्तो गोभिः सन्नद्धा पतति प्रसूता।**
**यत्रा नरः सं च वि द्रवन्ति तत्रास्मभ्यमिषवः शर्म यंसन्॥११॥**

**सुऽपर्णम्। वस्ते। मृगः। अस्याः। दन्तः। गोभिः। सम्ऽनद्धा। पतति। प्रऽसूता। यत्र। नरः। सम्। च। वि। च। द्रवन्ति। तत्र। अस्मभ्यम्। इषवः। शर्म। यंसन्॥११॥**

**पदार्थः**-**(सुपर्णम्)** शोभनं पर्णं पालनं यस्य तम् **(वस्ते)** आच्छादयति **(मृगः)** यो मार्ष्टि तद्वत् **(अस्याः)** प्रजायाः **(दन्तः)** येन दंशति सः **(गोभिः)** किरणैर्धेनुभिर्वा **(सन्नद्धा)** सम्यग्बद्धा **(पतति)** गच्छति **(प्रसूता)** उत्पन्ना सती **(यत्रा)** यस्मिन् सङ्ग्रामे। अत्र **ऋचि तुनुघेति** दीर्घः। **(नरः)** मनुष्याः **(सम्)** **(च)** **(वि)** **(च)** **(द्रवन्ति)** गच्छन्ति **(तत्र)** **(इषवः)** बाणाः **(शर्म)** सुखम् **(यंसन्)** यच्छन्तु॥११॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे मनुष्या! या गोभिः सन्नद्धा प्रसूता सती भूमिर्मृग इव पतति, अस्या मध्ये दन्तो वर्त्तते या सुपर्णं वस्ते यत्रा नरश्च सं द्रवन्ति वि द्रवन्ति च तत्रेषवोऽस्मभ्यं शर्म यथा यंसन् तथाऽनुतिष्ठत॥११॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! या भूमिः परमेश्वरेण पालनाय निर्मिता मृगवत्सद्यो धावति यदर्थं भूरि सङ्ग्रामो भवति तस्याः प्राप्तौ वीरतां सङ्गृह्णन्तु॥११॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो **(गोभिः)** किरण वा धेनुओं से **(सन्नद्धा)** अच्छे प्रकार से बंधी और **(प्रसूता)** उत्पन्न हुई भूमि **(मृगः)** मृग के समान **(पतति)** जाती है **(अस्याः)** इसके बीच **(दन्तः)** जिससे डशते हैं वह दाँत वर्त्तमान है जो **(सुपर्णम्)** सुन्दर पालना करने वाले को **(वस्ते)** उढ़ाता है और **(यत्रा)** जिस संग्राम में **(नरः)** योद्धा नर **(च)** भी **(सम्, द्रवन्ति)** अच्छे प्रकार दौड़ते हैं **(च)** और **(वि)** विशेष धावन करते हैं **(तत्र)** वहाँ **(इषवः)** बाण **(अस्मभ्यम्)** हमारे लिये **(शर्म)** सुख जैसे **(यंसन्)** देवें वैसा अनुष्ठान करो॥११॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो भूमि परमेश्वर ने पालना के लिये बनाई है और मृग के समान शीघ्र जाती है तथा जिसके लिये सङ्ग्राम होता है, उसकी प्राप्ति के निमित्त वीरता का सङ्ग्रह करो॥११॥

**पुनर्मनुष्यैः केन कीदृशानि शरीराणि कर्त्तव्यानीत्याह॥**

फिर मनुष्यों को किससे कैसे शरीर करने चाहियें, इस विषय को कहते हैं॥

**ऋजीते परि वृङ्धि नोऽश्मा भवतु नस्तनूः।**

**सोमो अधि ब्रवीतु नोऽदितिः शर्म यच्छतु॥१२॥**

**ऋजीते। परि। वृङ्धि। नः। अश्मा। भवतु। नः। तनूः। सोमः। अधि। ब्रवीतु। नः। अदितिः। शर्म। यच्छतु॥१२॥**

**पदार्थः**-**(ऋजीते)** ऋजु गच्छति **(परि)** सर्वतः **(वृङ्धि)** वर्धय **(नः)** अस्मान् **(अश्मा)** पाषाणवद् दृढम् **(भवतु)** **(नः)** अस्माकम् **(तनूः)** शरीरम् **(सोमः)** यः सुनोति स विद्वान् **(अधि)** उपरि **(ब्रवीतु)** उपदिशतु **(नः)** अस्मानस्मभ्यं वा **(अदितिः)** मातेव भूमिः **(शर्म)** सुखं गृहं वा **(यच्छतु)** ददातु॥१२॥

**अन्वयः**-हे विद्वन् राजन्! यो भवानृजीते स नः परि वृङ्धि सोमो यथा नोऽस्माकं तनूरश्मेव भवतु तथाऽधि ब्रवीतु, अदितिर्नः शर्म यच्छतु॥१२॥

**भावार्थः**-राजैव प्रयतेत यथा दीर्घब्रह्मचर्य्येण विषयासक्तित्यागेन व्यायामेन च क्षत्रियाणां शरीराणि पाषाणवत्कठिनानि स्युरुपदेशकाश्च सर्वानेवमेवोपदिशेयुर्येन सर्वे दृढशरीरात्मानो भवेयुः॥१२॥

**पदार्थः**-हे विद्वन् राजन्! जो आप **(ऋजीते)** सीधे चलते हो वह **(नः)** हम लोगों को **(परि, वृङ्धि)** सर्व प्रकार वृद्धि देओ और **(सोमः)** जो ओषधियों का रस निकालने वाला विद्वान् जैसे **(नः)**



www.9009.co.in

हम लोगों का (**तनू:**) शरीर (**अश्मा**) पत्थर के समान दृढ़ (**भवतु**) हो वैसा (**अधि, ब्रवीतु**) ऊपर ऊपर उपदेश करे और (**अदिति:**) माता के समान भूमि (**न:**) हम लोगों के लिये (**शर्म**) सुख वा घर (**यच्छतु**) देवे॥१२॥

**भावार्थ:**-राजा ऐसा प्रयत्न करे जैसे दीर्घ ब्रह्मचर्य्य से, विषयसक्ति के त्याग से और व्यायाम से क्षत्रियों के शरीर पाषाण के तुल्य कठिन हों और उपदेशक भी सबको ऐसा ही उपदेश करें जिससे सब दृढ़ शरीर आत्मा वाले हों॥१२॥

**पुना राज्ञी सङ्ग्रामे किं कुर्य्यादित्याह॥**

फिर रानी सङ्ग्राम में क्या करे, इस विषय को कहते हैं॥

**आ जंङ्घन्ति सान्वेषां जघनाँ उप जिघ्नते।**

**अश्वाजनि प्रचेतसोऽश्वान्त्समत्सु चोदय॥१३॥**

**आ। जङ्घन्ति। सानु। एषाम्। जघनान्। उप। जिघ्नते। अश्वऽअजनि। प्रऽचेतस:। अश्वान्। समत्ऽसु। चोदय॥१३॥**

**पदार्थ:**-(**आ**) समन्तात् (**जङ्घन्ति**) भृशं घ्नन्ति (**सानु**) अवयवान् (**एषाम्**) (**जघनान्**) नीचकर्मकारिण: (**उप**) (**जिघ्नते**) घ्नन्ति (**अश्वाजनि**) अश्वानां प्रक्षेप्त्रि (**प्रचेतस:**) प्रकृष्टं चेतो विज्ञानं येषां तान् (**अश्वान्**) महतो बलिष्ठान् (**समत्सु**) सङ्ग्रामेषु (**चोदय**) प्रेरय॥१३॥

**अन्वय:**-हे अश्वाजनि राज्ञि! त्वं ये वीरा एषां शत्रूणां सान्वा जङ्घन्ति जघनानुप जिघ्नते तान् प्रचेतसोऽश्वाञ्छूरान् समत्सु चोदय॥१३॥

**भावार्थ:**-सङ्ग्रामे राजाभावे राज्ञी सेनापति: स्याद्यथा राजा योधयितुं वीरान् प्रेरयेद्धर्षयेत्तथैव साऽप्याचरेत्॥१३॥

**पदार्थ:**-हे (**अश्वाजनि**) घोड़ों की पटकी देने वाली रानी! तू जो वीरजन (**एषाम्**) इन शत्रुओं के (**सानु**) अङ्गों को (**आ, जङ्घन्ति**) सब ओर से निरन्तर काटते हैं तथा (**जघनान्**) नीच कर्म करने वालों को (**उप, जिघ्नते**) उपस्थित होकर मारते हैं उन (**प्रचेतस:**) उत्तम विज्ञान वाले (**अश्वान्**) बड़े बड़े बलवान् शूरवीर पुरुषों को (**समत्सु**) सङ्ग्रामों में (**चोदय**) प्रेरो॥१३॥

**भावार्थ:**-सङ्ग्राम में राजा के अभाव में रानी सेनापति हो और जैसे राजा युद्ध कराने को वीरों को प्रेरणा दे, वैसे ही वह भी आचरण करे॥१३॥

**पुना राजा भृत्याश्च परस्परं कथं वर्तेरन्नित्याह॥**

फिर राजा और भृत्य परस्पर कैसे वर्त्तें, इस विषय को कहते हैं॥

**अहिरिव भोगै: पर्येति बाहुं ज्याया हेतिं परिबाधमान:।**

**हस्तघ्नो विश्वा वयुनानि विद्वान् पुमान् पुमांसं परि पातु विश्वत:॥१४॥**



www.9009.co.in

अहिः॑ऽइव। भोगैः॑। परि॑। एति॒। बाहुम्। ज्याया॑ः। हेतिम्। परि॒ऽबाध॑मानः। हस्त॒ऽघ्नः। विश्वा॑। व॒युना॑नि। वि॒द्वान्। पुमा॑न्। पुमां॑सम्। परि॑। पातु। वि॒श्वत॑ः॥ १४॥

**पदार्थः**-**(अहिरिव)** मेघ इव **(भोगैः)** **(परि)** **(एति)** परितः प्राप्नोति **(बाहुम्)** पत्युर्भुजम् **(ज्यायाः)** प्रत्यञ्चायाः **(हेतिम्)** वज्रवद्बाणम् **(परिबाधमानः)** सर्वतो निरुन्धानः **(हस्तघ्नः)** यो हस्ताभ्यां हन्ति **(विश्वा)** सर्वाणि **(वयुनानि)** ज्ञानानि **(विद्वान्)** यो वेदितव्यं वेत्ति **(पुमान्)** पुरुषार्थी **(पुमांसम्)** पुरुषार्थिनम् **(परि)** सर्वतः **(पातु)** रक्षतु **(विश्वतः)** सर्वतः॥ १४॥

**अन्वयः**-हे राजन्! यो हस्तघ्नो ज्याया हेतिं परिबाधमानो विद्वान् पुमान्नहिरिव भोगैः सह बाहुं विश्वा वयुनानि च पर्येति विश्वतः पुमांसं परि पातु तं सर्वदा सत्कुर्याः॥ १४॥

**भावार्थः**-हे वीरा! यो राजा सर्वान् मेघवद्भोगवृष्टिं करोति समग्रविद्यायुक्तः सन् सर्वान् सर्वतः प्रीणाति तं सर्वेऽभितः सततं रक्षन्तु॥ १४॥

**पदार्थः**-हे राजन्! जो **(हस्तघ्नः)** हाथों से मारने वाला **(ज्यायाः)** प्रत्यञ्चा के सम्बन्धी **(हेतिम्)** वज्र के समान बाण को **(परिबाधमानः)** सब ओर से रोकता और **(विद्वान्)** जानने योग्य को जानता हुआ **(पुमान्)** पुरुषार्थीजन **(अहिरिव)** मेघ के समान **(भोगैः)** भोगों के साथ **(बाहुम्)** अपने स्वामी की भुजा को और **(विश्वा)** समस्त **(वयुनानि)** ज्ञानों को **(परि, एति)** सब ओर से प्राप्त होता है वा **(विश्वतः)** सब ओर से **(पुमांसम्)** पुरुषार्थी की **(परि, पातु)** अच्छे प्रकार पालना करे, उसका सर्वदा सत्कार करो॥ १४॥

**भावार्थः**-हे वीरो! जो राजा समस्त मेघ के समान भोगवृष्टि करता है तथा समग्र विद्यायुक्त होता हुआ सब की सब ओर से तृप्ति करता है, उसकी सब जन सब ओर से निरन्तर रक्षा करें॥ १४॥

**पुना राज्ञी कीदृशी भवेदित्याह॥**

फिर रानी कैसी हो, इस विषय को कहते हैं॥

**आला॑क्ता॒ या रुरु॑शी॒र्ष्ण्यथो॒ यस्या॒ अयो॒ मुख॑म्।**

**इ॒दं प॒र्जन्य॑रेतस॒ इष्वै॑ दे॒व्यै बृ॒हन्नम॑ः॥ १५॥ २१॥**

आल॑ऽअक्ता। या। रुरु॑ऽशीर्ष्णी। अथो॒ इति॑। यस्या॑ः। अय॑ः। मुख॑म्। इ॒दम्। प॒र्जन्य॑ऽरेतसे। इष्वै॑। दे॒व्यै। बृ॒हत्। नम॑ः॥ १५॥

**पदार्थः**-**(आलाक्ता)** आलेन विषेण दिग्धा युक्ता **(या)** **(रुरुशीर्ष्णी)** रुरोः शिर इव शिरो यस्याः सा **(अथो)** **(यस्याः)** **(अयः)** लोहयुक्तम् **(मुखम्)** **(इदम्)** **(पर्जन्यरेतसे)** पर्जन्यस्य रेत उदकमिव रेतो वीर्यं यस्यास्तस्यै। **रेत इत्युदकनाम।** (निघं०१२) **(इष्वै)** गन्त्र्यै **(देव्यै)** दिव्यायै **(बृहत्)** महत् **(नमः)** अन्नम्॥ १५॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-याऽऽलाक्ता रुरुशीर्ष्ण्यथो यस्या इदमयो मुखमस्ति तद्धर्त्र्यै पर्जन्यरेतसे देव्या इष्वै शूरवीरायै स्त्रियै बृहन्नमोऽस्तु॥१५॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! या राज्ञी धनुर्वेदविच्छस्त्रास्त्रप्रक्षेप्त्री वर्त्तते तस्या वीरैः सत्कारः सततं कार्य्यः॥१५॥

**पदार्थः**-(**या**) जो (**आलाक्ता**) विष से युक्त (**रुरुशीर्ष्णी**) रुरु जाति के मृग के शिर के समान जिसका शिर और (**अथो**) इसके अनन्तर (**यस्याः**) जिसका (**इदम्**) (**अयः**) लोहेयुक्त (**मुखम्**) मुख है उस धारण करने वाली (**पर्जन्यरेतसे**) मेघ के जल के समान वीर्यवती (**देव्यै**) दिव्य और (**इष्वै**) गमन करती हुई शूरवीर स्त्री के लिये (**बृहत्**) बहुत (**नमः**) अन्न हो॥१५॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो रानी धुनर्वेद जानती हुई शस्त्र-अस्त्र फेंकने वाली है, उसका वीरों को निरन्तर सत्कार करना चाहिये॥१५॥

**पुनः सेनापतिः सेनां किमाज्ञपयेदित्याह॥**

फिर सेनापति सेना को क्या आज्ञा दे, इस विषय को कहते हैं॥

**अवसृष्टा परा पत शरव्ये ब्रह्मसंशिते।**

**गच्छामित्रान् प्र पद्यस्व मामीषां कं चनोच्छिषः॥१६॥**

**अवऽसृष्टा। परा। पत। शरव्ये। ब्रह्मऽसंशिते। गच्छ। अमित्रान्। प्र। पद्यस्व। मा। अमीषाम्। कम्। चन। उत्। शिषः॥१६॥**

**पदार्थः**-(**अवसृष्टा**) शत्रूणामुपरि निपतिता (**परा**) अस्मत्पराङ्मुखा (**पत**) (**शरव्ये**) ये शरान् व्याप्नुवन्ति तत्र साध्वि (**ब्रह्मसंशिते**) ब्रह्मणा वेदविदा सेनापतिना प्रशंसिते (**गच्छ**) (**अमित्रान्**) शत्रून् (**प्र**) (**पद्यस्व**) (**मा**) (**अमीषाम्**) परोक्षस्थानां मध्यात् (**कम्**) (**चन**) अपि (**उत्**) (**शिषः**) शिष्टं मा त्यज॥१६॥

**अन्वयः**-हे शरव्ये ब्रह्मशंसिते सेने! त्वमवसृष्टा परा पताऽमित्रान् गच्छ प्र पद्यस्वाऽमीषां शत्रूणां कं चन मोच्छिषः॥१६॥

**भावार्थः**-सेनापतिः पूर्वं सेनां सुशिक्ष्य यदा सङ्ग्राम उपतिष्ठेत्तदा स्वसेनामाज्ञपयेद्यच्छत्रूणां मध्यादेकमपि शिष्टं मा त्यजेति॥१६॥

**पदार्थः**-हे (**शरव्ये**) बाणों को व्याप्त होने वालों में उत्तम (**ब्रह्मशंसिते**) वेद जानने वाले सेनापति से प्रशंसा पाई हुई सेना! तू (**अवसृष्टा**) शत्रुओं के उपर पड़ी हुई (**परा**) हम लोगों से पराङ्मुख (**पत**) जाओ तथा (**अमित्रान्**) शत्रुओं के समीप (**गच्छ**) पहुंचो (**प्र, पद्यस्व**) प्राप्त होओ अर्थात् शत्रुजनों पर चढ़ाई करो और (**अमीषाम्**) परोक्षस्थ शत्रुओं के बीच (**कम्, चन**) किसी को भी (**मा**) मत (**उत्, शिषः**) शेष छोड़ो॥१६॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-सेनापति पहिले सेना को अच्छी शिक्षा देकर जब सङ्ग्राम में उपस्थित हो, तब अपनी सेना को आज्ञा दे कि शत्रुओं के बीच से एक को भी न छोड़॥१६॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को कहते हैं॥

**यत्र॑ बा॒णाः सं॒पत॑न्ति कु॒मा॒रा वि॑शि॒खाइ॑व।**

**तत्रा॑ नो॒ ब्रह्म॑ण॒स्पति॒रदि॑ति॒ः शर्म॑ यच्छतु वि॒श्वाहा॒ शर्म॑ यच्छतु॥१७॥**

**यत्र॑। बा॒णाः। स॒म्ऽपत॑न्ति। कु॒मा॒राः। वि॒शि॒खाःऽइ॑व। तत्र॑। न॒ः। ब्रह्म॑णः। पति॑ः। अदि॑तिः। शर्म॑। य॒च्छ॒तु। वि॒श्वाहा॑। शर्म॑। य॒च्छ॒तु॥१७॥**

**पदार्थः**-**(यत्र)** यस्मिन् **(बाणाः)** **(सम्पतन्ति)** **(कुमाराः)** कृतचूडाकर्माणः **(विशिखाइव)** शिखारहिता इव **(तत्रा)** तस्मिन् सङ्ग्रामे। अत्र **ऋचि तुनुघेति** दीर्घः। **(नः)** अस्मभ्यम् **(ब्रह्मणः)** धनस्य **(पतिः)** पालको धनकोशेशः **(अदितिः)** भूमिः **(शर्म)** सुखम् **(यच्छतु)** ददातु **(विश्वाहा)** सर्वाणि दिनानि **(शर्म)** सुखम् **(यच्छतु)** ददातु॥१७॥

**अन्वयः**-हे राजन्! यत्र सङ्ग्रामे कुमारा विशिखाइव बाणाः सम्पतन्ति तत्रा नो यथा ब्रह्मणस्पतिर्विश्वाहा शर्म यच्छत्वदितिः शर्म यच्छतु तथा विधेहि॥१७॥

**भावार्थः**-हे राजन्! यदा सङ्ग्रामाय सेना गच्छेत्तदा केनापि पदार्थेन विना कस्याऽपि भृत्यस्य क्लेशो न स्यात्तथाऽनुतिष्ठतु। एवं कृते सति भवतो ध्रुवो विजयः स्यात्॥१७॥

**पदार्थः**-हे राजन् **(यत्र)** जिस सङ्ग्राम में **(कुमाराः)** कुमार अर्थात् जिनका मुण्डन हो गया है उन **(विशिखाइव)** विना चोटी वालों के समान **(बाणाः)** बाण **(सम्पतन्ति)** अच्छे प्रकार गिरते हैं **(तत्रा)** वहाँ **(नः)** हमारे लिये जैसे **(ब्रह्मणः)** धन के **(पतिः)** पालक धनकोश का ईश **(विश्वाहा)** सब दिनों **(शर्म)** सुख **(यच्छतु)** देवे और **(अदितिः)** भूमि **(शर्म)** सुख **(यच्छतु)** देवे, वैसे विधान करो॥१७॥

**भावार्थः**-हे राजन्! जब सङ्ग्राम के लिये सेना जावे, तब किसी पदार्थ के विना किसी भृत्य को क्लेश न हो, वैसा अनुष्ठान कीजिये, ऐसे किये पीछे आपका ध्रुव विजय हो॥१७॥

**पुनर्योद्धॄन् प्रत्यध्यक्षाः कथं वर्त्तेरन्नित्याह॥**

फिर योद्धाओं के प्रति अध्यक्ष कैसे वर्त्ते, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**मर्मा॑णि ते॒ वर्म॑णा छादयामि॒ सोम॑स्त्वा॒ राजा॒मृते॒नानु॑ वस्ताम्।**

**उ॒रोर्वरी॑यो॒ वरु॑णस्ते कृणोतु॒ जय॑न्तं॒ त्वानु॑ दे॒वा मद॑न्तु॥१८॥**

**मर्मा॑णि। ते॒। वर्म॑णा। छा॒द॒या॒मि॒। सोम॑ः। त्वा॒। राजा॑। अ॒मृते॑न। अनु॑। व॒स्ता॒म्। उ॒रोः। वरी॑यः। वरु॑णः। ते॒। कृ॒णो॒तु॒। जय॑न्तम्। त्वा॒। अनु॑। दे॒वाः। म॒द॒न्तु॒॥१८॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-**(मर्माणि)** शरीरस्थाञ्जीवनहेतूनवयवान् **(ते)** तव योद्धुः **(वर्मणा)** कवचेन **(छादयामि)** **(सोमः)** ऐश्वर्य्यसम्पन्नः **(त्वा)** त्वाम् **(राजा)** **(अमृतेन)** जलादिना **(अनु)** **(वस्ताम्)** अनुच्छादयतु **(उरोः)** बहोः **(वरीयः)** अतिशयेन वरमन्नादिकम् **(वरुणः)** सेनापालक उत्तमो विद्वान् **(ते)** तव **(कृणोतु)** **(जयन्तम्)** शत्रून् विजयमानम् **(त्वा)** त्वाम् **(अनु)** **(देवाः)** उपदेशका विद्वांसोऽधिष्ठातारो वा **(मदन्तु)** हर्षन्तु हर्षयन्तु वा॥१८॥

**अन्वयः**-हे योद्धवीराहं ते मर्माणि वर्मणा छादयामि सोमो राजाऽमृतेन त्वाऽनु वस्तां वरुण उरोर्वरीयस्ते कृणोतु जयन्तं त्वा देवा अनु मदन्तु॥१८॥

**भावार्थः**-सेनाध्यक्षैः सर्वेषां वीराणां शरीरपरित्राणानि कवचानि यथावत्कर्त्तव्यानि सर्वाधीशेन राज्ञाऽमृतात्मकभोगाः सर्वेभ्यो देया वस्त्रशस्त्रादीनि च, युध्यतः सर्वान् सर्वेऽध्यक्षा हर्षयन्तूत्साहयन्तु स्वयं च हर्षन्तूत्सहन्तामेवं कृते सति कुतः पराजयः॥१८॥

**पदार्थः**-हे योद्धा वीर! मैं **(ते)** तेरे **(मर्माणि)** शरीरस्थ जीवनहेतु अङ्गों को **(वर्मणा)** कवच से **(छादयामि)** ढांपता हूँ **(सोमः)** ऐश्वर्य्यसम्पन्न **(राजा)** राजा **(अमृतेन)** जल आदि से **(त्वा)** तुझे **(अनु)** अनुकूलता से **(वस्ताम्)** ढांपे तथा **(वरुणः)** सेना की पालना करने वाला उत्तम विद्वान् **(उरोः)** बहुत **(वरीयः)** अत्यन्त श्रेष्ठ अन्न आदि **(ते)** तेरा **(कृणोतु)** करे तथा **(जयन्तम्)** शत्रुओं को जीतते हुए **(त्वा)** तुझे **(देवाः)** उपदेशक विद्वान् वा अधिष्ठाता जन **(अनु, मदन्तु)** अनुकूलता से हर्षित करें वा करावें॥१८॥

**भावार्थः**-सेनाध्यक्षों को चाहिये कि सब वीरों के शरीरों की रक्षा करने वाले कवचों को यथावत् करें और सर्वाधीशराजा अमृतात्मक अर्थात् अमृत के समान भोग सब सबके लिये देवे तथा वस्त्र और शस्त्र आदि पदार्थ भी देवे। और युद्ध करते हुए सब को सब अध्यक्ष हर्ष देवें और उत्साहित करें तथा आप भी हर्ष पावें और उत्साह करें, ऐसा करने पर क्योंकर हार हो॥१८॥

**पुनः सेनाध्यक्षाः संग्रामे किं कुर्य्युरित्याह॥**

फिर सेनाध्यक्ष सङ्ग्राम में क्या करें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**यो नः स्वो अरणो यश्च निष्ट्यो जिघांसति।**

**देवास्तं सर्वे धूर्वन्तु ब्रह्म वर्म ममान्तरम्॥१९॥२२॥६॥६॥**

**यः। नः। स्वः। अरणः। यः। च। निष्ट्यः। जिघांसति। देवाः। तम्। सर्वे। धूर्वन्तु। ब्रह्म। वर्म। मम। अन्तरम्॥१९॥**

**पदार्थः**-**(यः)** **(नः)** अस्माकम् **(स्वः)** स्वकीयः **(अरणः)** सङ्ग्रामरहितो यथावत्सङ्ग्रामं न करोति **(यः)** **(च)** **(निष्ट्यः)** शब्देन धर्षितुं योग्यो दूरस्थः सन् **(जिघांसति)** हन्तुमिच्छति **(देवाः)**



www.9009.co.in

विद्वांसः **(तम्)** **(सर्वे)** **(धूर्वन्तु)** हिंसन्तु **(ब्रह्म)** सर्वव्यापकं चेतनम् **(वर्म)** वर्म्मेव रक्षकम् **(मम)** **(अन्तरम्)** यदन्ते समीपे रमते तत्॥१९॥

**अन्वयः**:-हे सेनापते! यो नः स्वोऽरणो यश्च निष्ट्यः स्वकीयं सैन्यं जिघांसति तं सर्वे देवा धूर्वन्तु ममान्तरं ब्रह्म वर्म्मेव रक्षकं भवतु॥१९॥

**भावार्थः**:-सेनापतेर्ये स्वभृत्या उत्साहेन न युध्येयुर्ये च स्वभृत्यान् जिघांसन्ति तान् सर्वान् विद्वांसोऽध्यक्षाश्च सद्यो घ्नन्तु तथा युद्धसमये सर्वे वीराः परमेश्वरमेव स्वरक्षकं विजानन्त्विति॥१९॥

अत्र वर्मादिगुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्य्याणां परमविदुषां श्रीमद्विरजानन्दसरस्वतीस्वामिनां शिष्येण श्रीमद्दयानन्दसरस्वतीस्वामिना विरचिते संस्कृतार्यभाषाविभूषिते सुप्रमाणयुक्त ऋग्वेदभाष्ये षष्ठे मण्डले षष्ठोऽनुवाकः पञ्चसप्ततितमं सूक्तं षष्ठं मण्डलं च पञ्चमाष्टके प्रथमेऽध्याये द्वाविंशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**–हे सेनापति! **(यः)** जो **(नः)** हमारे **(स्वः)** अपना **(अरणः)** सङ्ग्राम रहित यथावत् सङ्ग्राम नहीं करता **(यः, च)** और जो **(निष्ट्यः)** शब्द से ढिठाई कराने योग्य दूरस्थ होते हुए तथा अपनी सेना को **(जिघांसति)** मारने की इच्छा करता है **(तम्)** उसको **(सर्वे)** सब **(देवाः)** विद्वान् जन **(धूर्वन्तु)** मारें तथा **(मम)** मेरा **(अन्तरम्)** समीप में रमता हुआ **(ब्रह्म)** सर्वव्यापक चेतन **(वर्म)** कवच के समान रक्षा करने वाला हो॥१९॥

**भावार्थः**:-सेनापति के जो अपने भृत्य उत्साह से युद्ध न करें और जो अपने नौकरों के मारने की इच्छा करें, उन सब को विद्वान् और अधीश शीघ्र मारें तथा युद्ध के समय सब वीर परमेश्वर ही को अपना रक्षा करने वाला जानें॥१९॥

इस सूक्त में वर्म अर्थात् कवच बख्तर आदि के गुणों का वर्णन होने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह श्रीमान् परमहंसपरिव्राजकाचार्य्य परमविद्वान् श्रीमद्विरजानन्दसरस्वती स्वामीजी के शिष्य श्रीमान् दयानन्द सरस्वती स्वामी जी के बनाये हुए संस्कृत और आर्यभाषा से सुभूषित अच्छे-अच्छे प्रमाणों से युक्त, ऋग्वेदभाष्य के छठे मण्डल में छठा अनुवाक और पचहत्तरवां सूक्त और छठा मण्डल भी तथा पञ्चमाष्टक के प्रथमाध्याय में बाईसवां वर्ग समाप्त हुआ॥**

**षष्ठं मण्डलं समाप्तम्॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

॥अथ सप्तमं मण्डलम्॥

ओ३म् विश्वा॑नि देव सवितर्दुरि॒तानि॒ परा॑ सुव। यद्भ॒द्रं तन्न॒ आ सु॑व॥ ऋ०५.८२.५॥

अथ पञ्चविंशत्यृचस्य प्रथमस्य सूक्तस्य वसिष्ठ ऋषिः। अग्निर्देवता। १-१८ एकादशाक्षरपादैस्त्रिपदा विराड्गायत्री छन्दः। षड्जः स्वरः। १९-२५ त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः॥

*अथ नरैः कथं विद्युदुत्पादनीयेत्याह॥*

अब सातवें मण्डल के प्रथम सूक्त का आरम्भ है, इसके पहिले मन्त्र में मनुष्यों को विद्युत् अग्नि कैसे उत्पन्न करनी चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

अ॒ग्निं नरो॒ दीधि॑तिभिर॒रण्यो॒र्हस्त॑च्युती जनयन्त प्रश॒स्तम्।
दू॒रे॒दृशं॑ गृ॒हप॑तिमथ॒र्युम्॥ १॥

अ॒ग्निम्। नरः॑। दीधि॑तिऽभिः। अ॒रण्योः॑। हस्त॑ऽच्युती। ज॒न॒य॒न्त॒। प्र॒ऽश॒स्तम्। दू॒रे॒ऽदृश॑म्। गृ॒हऽप॑तिम्। अ॒थ॒र्युम्॥ १॥

**पदार्थः**-(**अग्निम्**) पावकम् (**नरः**) (**दीधितिभिः**) प्रदीपिकाभिः क्रियाभिः (**अरण्योः**) यथा काष्ठविशेषयोः (**हस्तच्युती**) हस्तयोः प्रच्युत्या भ्रामणक्रियया (**जनयन्त**) (**प्रशस्तम्**) उत्तमम् (**दूरदेशम्**) दूरे द्रष्टुं योग्यम् (**गृहपतिम्**) स्वामिनम् (**अथर्युम्**) अहिंसां कामयमानम्॥ १॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे नरो विद्वांसो! यथा भवन्तो दीधितिभिर्हस्तच्युती अरण्योर्दूरे दृशमग्निं जनयन्त तथाऽथर्युं गृहपतिं प्रशस्तं कुर्वन्तु॥१॥

**भावार्थः**-हे विद्वज्जना! यथा घर्षिताभ्यामरणिभ्यामग्निरुत्पद्यते तथा सर्वैः पार्थिवैर्वायव्यैर्वा द्रव्यैर्द्रव्याणां घर्षणेन या विद्युत्सर्वव्याप्ता सत्युत्पद्यते सा दूरदेशस्थसमाचारादिव्यवहारान् साद्धुं शक्नोत्येतद्विद्यया गृहस्थानां महानुपकारो भवतीति॥१॥

**पदार्थः**-हे **(नरः)** विद्वान् मनुष्यो! जैसे आप **(दीधितिभिः)** उत्तेजक क्रियाओं से **(हस्तच्युती)** हाथों से प्रकट होने वाली घुमानारूप क्रिया से **(अरण्योः)** अरणी नामक ऊपर नीचे के दो काष्ठों में **(दूरेदृशम्)** दूर में देखने योग्य **(अग्निम्)** अग्नि को **(जनयन्त)** प्रकट करें, वैसे **(अथर्युम्)** अहिंसाधर्म को चाहते हुए **(गृहपतिम्)** घर के स्वामी को **(प्रशस्तम्)** प्रशंसायुक्त करो॥१॥

**भावार्थः**-हे विद्वान् जनो! जैसे घिसी हुई अरणियों से अग्नि उत्पन्न होता है, वैसे सब पार्थिव द्रव्य वा वायुसम्बन्धी द्रव्यों के घिसने से जो सर्वत्र व्याप्त हुई विद्युत् उत्पन्न होती है, वह दूर देशों में समाचारादि पहुँचने रूप व्यवहारों को सिद्ध कर सकती है। इस विद्युत् विद्या से गृहस्थों का बड़ा उपकार होता है।

**पुनस्तं कथं जनयेदित्याह॥**

फिर उस बिजुली को कैसे प्रकट करे, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**तमग्निमस्ते वसवो न्यृण्वन्त्सुप्रतिचक्षमवसे कुतश्चित्।**

**दक्षाय्यो यो दम आस नित्यः॥२॥**

**तम्। अग्निम्। अस्तै। वसवः। नि। ऋण्वन्। सुऽप्रतिचक्षम्। अवसे। कुतः। चित्। दक्षाय्यः। यः। दमे। आस। नित्यः॥२॥**

**पदार्थः**-**(तम्)** **(अग्निम्)** विद्युदाख्यम् **(अस्ते)** गृहे वा प्रक्षेपणे **(वसवः)** प्राथमकल्पिका विद्वांसः **(नि)** नितराम् **(ऋण्वन्)** प्रसाध्नुवन् **(सुप्रतिचक्षम्)** सुष्ठु प्रतिचष्टे पश्यत्यनेका विद्या येन तम् **(अवसे)** रक्षणाय बह्वन्नाय वा। **अव इत्यन्ननाम।** (निघं०२.७) **(कुतः)** कस्मात् **(चित्)** अपि **(दक्षाय्यः)** दक्षश्चतुरो विद्वानिव **(यः)** **(दमे)** गृहे दमने वा **(आस)** अस्ति **(नित्यः)** सनातनः॥२॥

**अन्वयः**-हे विद्वांसो! यो दक्षाय्य इव दमे नित्य आस यं सुप्रतिचक्षं कुतश्चिदवसे वसवो न्यृण्वँस्तमग्निमस्ते भवन्तो जनयन्तु॥२॥

**भावार्थः**-हे विद्वांसो! योऽयं नित्यस्वरूपो विद्युदग्निर्मूर्त्तद्रव्याणि गृहाणि कृत्वा नित्यस्वरूपेण प्रतिष्ठितोऽस्ति तं विद्याक्रियाभ्यां जनयित्वा कलायन्त्रेषु संप्रयोज्य बह्वन्नधनं रक्षणं च प्राप्नुवन्तु॥२॥

**पदार्थः**-हे विद्वानो! **(यः)** जो **(दक्षाय्यः)** चतुर विद्वान् के तुल्य **(दमे)** घर वा इन्द्रियादि के दमन में **(नित्यः)** सनातन उपयोगी **(आस)** है जिस **(सुप्रतिचक्षम्)** मनुष्य जिसके द्वारा अनेक विद्याओं को अच्छे प्रकार देखता है **(कुतश्चित्)** किसी से **(अवसे)** रक्षा वा अधिक अन्न के लिये



www.9009.co.in

**(वसवः)** प्रथम कक्षा के विद्वान् **(नि, ऋग्वन्)** निरन्तर प्रसिद्ध करें **(तम्)** उस **(अग्निम्)** विद्युत को **(अस्ते)** घर में वा फेंकने में आप लोग उत्पन्न करो॥२॥

**भावार्थः**-हे विद्वानो! जो यह नित्यस्वरूप विद्युत् अग्नि स्थूल द्रव्यों को घर बना के नित्य स्वरूप से स्थित है, उस अग्नि को विद्या और क्रियाओं से प्रकट कर तथा कलायन्त्रों में संयुक्त कर के बहुत अन्न, धन और रक्षा को प्राप्त होओ॥२॥

**पुनस्तं कथं जनयेदित्याह॥**

फिर उसको कैसे प्रकट करे, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**प्रेद्धो॑ अग्ने दीदिहि पु॒रो नोऽज॑स्रया सू॒र्म्या॑ यविष्ठ।**

**त्वां शश्व॑न्त॒ उप॑ यन्ति॒ वाजाः॑॥३॥**

**प्रऽइ॑द्धः। अ॒ग्ने॒। दी॒दि॒हि॒। पु॒रः। नः॒। अज॑स्रया। सू॒र्म्या॑। य॒वि॒ष्ठ॒। त्वाम्। शश्व॑न्तः। उप॑। य॒न्ति॒। वाजाः॑॥३॥**

**पदार्थः**-**(प्रेद्धः)** प्रकर्षेणेद्धः प्रदीप्तः **(अग्ने:)** पावक इव प्रकाशितप्रज्ञ **(दीदिहि)** प्रदीपय **(पुरः)** पुरस्तात् **(नः)** अस्मान् **(अजस्रया)** निरन्तरया क्रियया **(सूर्म्या)** सच्छिद्रया मूर्त्त्या कलया वा **(यविष्ठ)** अतिशयेन युवन् **(त्वाम्)** **(शश्वन्तः)** अनादिभूताः प्रवाहेण नित्याः पृथिव्यादयः **(उप)** **(यन्ति)** **(वाजाः)** प्राप्तव्याः पदार्थाः॥३॥

**अन्वयः**-हे यविष्ठाग्ने यः प्रेद्धोऽग्निरजस्रया सूर्म्या नोऽस्माँस्त्वां च प्राप्तोऽस्ति यं शश्वन्तो वाजा उप यन्ति तं पुरो विद्याक्रियाभ्यां दीदिहि॥३॥

**भावार्थः**-हे विद्वांसो! योऽग्निरनादिभूतेषु प्रकृत्यवयवेषु विद्युद्रूपेण व्याप्तोऽस्ति यस्य विद्यया बहवोः व्यवहाराः सिध्यन्ति तं सततं प्रकाश्य धनधान्यादिकमैश्वर्यं प्राप्नुत॥३॥

**पदार्थः**-हे **(यविष्ठ)** अत्यन्त जवान **(अग्ने)** अग्नि के तुल्य प्रकाशित बुद्धि वाले विद्वान्! जो **(प्रेद्धः)** अच्छे प्रकार जलता हुआ अग्नि **(अजस्रया)** निरन्तर प्रवृत्त क्रिया [से] **(सूर्म्या)** अच्छे छिद्र सहित शरीरादि मूर्त्ति वा कला से **(नः)** हम को और **(त्वाम्)** तुम को प्राप्त है जिस को **(शश्वन्तः)** प्रवाह से नित्य आदि पृथिव्यादि **(वाजाः)** प्राप्त होने योग्य पदार्थ **(उप, यन्ति)** समीप प्राप्त होते हैं उसको **(पुरः)** पहिले वा सामने विद्या और क्रिया से **(दीदिहि)** प्रदीप्त कर॥३॥

**भावार्थः**-हे विद्वानो! जो अग्नि अनादिस्वरूप प्रकृति के अवयवों में विद्युद्रूप से व्याप्त है, जिसकी विद्या से बहुत से व्यवहार सिद्ध होते हैं, उसको निरन्तर प्रकाशित कर धनधान्यादि ऐश्वर्य्य को प्राप्त होओ॥३॥

**पुनरग्निः कस्माज्जनयितव्य इत्याह॥**

फिर अग्नि किससे प्रकट करना चाहिये, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥



www.9009.co.in

**प्र ते अ॒ग्नयो॒ऽग्निभ्यो॒ वर॒ं निः सु॒वीरा॑सः शोशुचन्त द्यु॒मन्तः॑।**

**यत्रा॒ नरः॑ स॒मास॑ते सुजा॒ताः॥४॥**

**प्र। ते। अ॒ग्नयः॑। अ॒ग्निऽभ्यः॑। वर॑म्। निः। सु॒ऽवीरा॑सः। शो॒शु॒च॒न्त॒। द्यु॒ऽमन्तः॑। यत्र॑। नरः॑। स॒म्ऽआस॑ते। सु॒ऽजा॒ताः॥४॥**

**पदार्थः**-(**प्र**) (**ते**) (**अग्नयः**) विद्युदादयः (**अग्निभ्यः**) पावकपरमाणुभ्यः (**वरम्**) उत्तमं व्यवहारम् (**निः**) नितराम् (**सुवीरासः**) शोभनाश्च ते वीराश्च (**शोशुचन्त**) शोधयन्ति (**द्युमन्तः**) द्यौर्बह्वी दीप्तिर्वर्त्तते येषु ते (**यत्र**) यस्मिन् व्यवहारे। अत्र **ऋचि तुनुघे**ति दीर्घः। (**नरः**) पुरुषार्थेनाप्तव्यप्रापकाः (**समासते**) सम्यक् प्राप्नुवन्ति (**सुजाताः**) सुष्ठु प्रसिद्धाः॥४॥

**अन्वयः**-ये सुवीरासो नरस्ते यत्राग्निभ्यः सुजाता द्युमन्तोऽग्नयो जायन्ते तत्र निः शोशुचन्त तेभ्यो वरं प्र समासते तथैतं यूयमपि जनयित्वोत्तमं सुखं प्राप्नुथ॥४॥

**भावार्थः**-ये मनुष्या अग्नेरग्निमुत्पाद्य सिद्धकामा भूत्वाऽनुत्तमं सुखं प्राप्नुवन्ति ते जगति सुप्रसिद्धा भवन्ति॥४॥

**पदार्थः**-जो (**सुवीरासः**) सुन्दर वीर (**नरः**) पुरुषार्थ को प्राप्त करने हारे विद्वान् हैं (**ते**) वे (**यत्र**) जिस व्यवहार में (**अग्निभ्यः**) अग्नि के परमाणुओं से (**सुजाताः**) अच्छे प्रकार प्रकट हुए (**द्युमन्तः**) बहुत दीप्ति वाले (**अग्नयः**) विद्युत् आदि अग्नि उत्पन्न होते हैं उसमें (**निः, शोशुचन्त**) निरन्तर शुद्धि करते और उनसे (**वरम्**) उत्तम व्यवहार को (**प्र, समासते**) सम्यक् प्राप्त होते हैं, वैसे इसको प्रकट करके तुम लोग भी उत्तम सुख को प्राप्त होओ॥४॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य अग्नि से अग्नि को उत्पन्न कर सिद्ध कामना वाले होके सर्वोत्तम सुख पाते हैं, वे जगत् में अच्छे प्रसिद्ध होते हैं॥४॥

**पुनः सोऽग्निः कीदृशोऽस्तीत्याह॥**

फिर वह अग्नि कैसा है, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**दा नो॑ अग्ने धि॒या र॒यिं सु॒वीरं॑ स्वप॒त्यं स॑हस्य प्रश॒स्तम्।**

**न यं यावा॒ तर॑ति यातु॒मावा॑न्॥५॥२३॥**

**दाः। न॒ः। अ॒ग्ने॒। धि॒या। र॒यिम्। सु॒ऽवीर॑म्। सु॒ऽअ॒प॒त्यम्। स॒हस्य॒। प्र॒ऽश॒स्तम्। न। यम्। यावा॑। तर॑ति। या॒तु॒ऽमावा॑न्॥५॥**

**पदार्थः**-(**दाः**) देहि (**नः**) अस्मभ्यम् (**अग्ने**) अग्निरिव विद्वन् (**धिया**) प्रज्ञया कर्मणा वा (**रयिम्**) धनम् (**सुवीरम्**) शोभना वीरा यस्मात्तम् (**स्वपत्यम्**) शोभनान्यपत्यानि सन्ताना यस्मात्तम्



www.9009.co.in

**(सहस्य)** सहसि बले साधो **(प्रशस्तम्)** उत्तमम् **(न)** निषेधे **(यम्)** **(यावा)** यो याति **(तरति)** उल्लङ्घयति **(यातुमावान्)** गच्छन्मत्सदृशः॥५॥

**अन्वयः**-हे सहस्याग्ने! धिया यथाऽग्निर्धिया क्रियया सुवीरं स्वपत्यं प्रशस्तं रयिं नोऽस्मभ्यं ददाति। यं यातुमावान् यावा न तरति तद्विद्याधियाऽस्मभ्यं त्वं दाः॥५॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे विद्वांसो! यथाग्निविद्यया सुसन्ताना उत्तमशूरवीराः श्रेष्ठं धनं महान् यानवेगश्च प्रजायते तां सुविचारेण विविधक्रियया जनयत॥५॥

**पदार्थः**-हे **(सहस्य)** बल में श्रेष्ठ **(अग्नि)** अग्नि के तुल्य तेजस्वी विद्वन्! **(धिया)** बुद्धि वा कर्म से जैसे अग्नि क्रिया से **(सुवीरम्)** सुन्दर वीर जन **(स्वपत्यम्)** सुन्दर सन्तान जिससे हों उस **(प्रशस्तम्)** उत्तम **(रयिम्)** धन को **(नः)** हमारे लिये देता है **(यम्)** जिसकी **(यातुमावान्)** मेरे तुल्य चलता हुआ **(यावा)** गमनशील **(न)** नहीं **(तरति)** उल्लङ्घन करता उस प्रकार की विद्या हमारे लिये बुद्धि से आप **(दाः)** दीजिये॥५॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे विद्वानो! जिसे अग्नि-विद्या से सुन्दर सन्तान, उत्तम शूरवीर जन श्रेष्ठ धन और यानों का बड़ा वेग उत्पन्न हो, उस विद्या को उत्तम विचार और अनेक प्रकार की क्रियाओं से प्रकट करो॥५॥

**पुनरग्निविद्या किंवत्किं जनयतीत्याह॥**

फिर अग्नि-विद्या किसके तुल्य क्या उत्पन्न करती है, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

## उप॒ यमेति॑ युव॒तिः सु॒दक्षं॑ दो॒षावस्तो॑र्ह॒विष्म॑ती घृ॒ताची॑।
## उप॒स्वैन॑म॒रम॑तिर्वसू॒युः॥ ६॥

**उप॑। यम्। एति॑। यु॒व॒तिः। सु॒ऽदक्ष॑म्। दो॒षा। वस्तोः॑। ह॒विष्म॑ती। घृ॒ताची॑। उप॑। स्वा। ए॒न॒म्। अ॒रम॑तिः। व॒सु॒ऽयुः॥ ६॥**

**पदार्थः**-**(उप)** **(यम्)** हृद्यं पतिम् **(एति)** प्राप्नोति **(युवतिः)** प्राप्तयौवना कन्या **(सुदक्षम्)** सुष्ठुबलयुक्तम् **(दोषा)** रात्रिः **(वस्तोः)** दिनम् **(हविष्मती)** बहूनि हवींषि ग्राह्यवस्तूनि विद्यन्ते यस्यां सा **(घृताची)** रात्रिः। **घृताचीतिरात्रिनाम।** (निघं०१.७) **(उप)** **(स्वा)** स्वकीया **(एनम्)** विवाहितम् **(अरमतिः)** न विद्यते पूर्वा रमती रमणे गृहस्थक्रिया यस्याः सा **(वसूयुः)** या वसूनि द्रव्याणि कामयति सा॥६॥

**अन्वयः**-हे विद्वांसो! यथा युवतिर्दोषावस्तोः सुदक्षं यं पतिमुपैति यथा हविष्मती घृताची चन्द्रमुपैति यथाऽरमतिर्वसूयुः [स्वा] स्वभार्य्यैनं युवानं प्रियं पतिं प्राप्य सुखमुपैति तथाऽग्निविद्यां प्राप्य यूयं सततं मोदध्वम्॥६॥



www.9009.co.in

**भावार्थः-**अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। येऽहर्निशमुद्यमेन विद्यया वह्निविद्यां जनयन्ति ते प्रियस्त्रीपुरुषवन्महान्तमानन्दं प्राप्नुवन्ति॥६॥

**पदार्थः**-हे विद्वानो! जैसे **(युवतिः)** युवावस्था को प्राप्त कन्या **(दोषा, वस्तोः)** रात्रि दिन **(सुदक्षम्)** अच्छे बलयुक्त **(यम्)** जिस पति को **(उप, एति)** समीप से प्राप्त होती है जैसे **(हविष्मती)** ग्रहण करने योग्य बहुत वस्तुओं वाली **(घृताची)** रात्री चन्द्रमा को **(उप)** प्राप्त होती है तथा जैसे **(अरमतिः)** जिस के गृहस्थ के तुल्य रमण किया नहीं वह **(वसूयुः)** द्रव्यों की कामना करने वाली **(स्वा)** अपनी स्त्री **(एनम्)** इस विवाहित प्रियपति को प्राप्त होके सुख पाती है, वैसे अग्निविद्या को प्राप्त होके तुम लोग निरन्तर आनन्दित होओ॥६॥

**भावार्थः-**इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो दिन रात उद्यम और विद्या के द्वारा अग्निविद्या को प्रकट करते हैं, वे परस्पर प्रीति रखने वाले की पुरुषों के तुल्य बड़े आनन्द को प्राप्त होते हैं॥६॥

**पुनरग्निना कीदृश उपकारो ग्राह्य इत्याह॥**

फिर अग्नि से [कैसा] उपकार लेना चाहिये, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**विश्वा॑ अ॒ग्नेऽप॑ द॒हारा॑ती॒र्येभि॒स्तपो॑भि॒रद॑हो॒ जरू॑थम्।**

**प्र नि॑स्व॒रं चा॑तय॒स्वामी॑वाम्॥७॥**

**विश्वाः॑। अ॒ग्ने॒। अप॑। द॒ह॒। अरा॑तीः। येभिः॑। तपः॑ऽभिः। अद॑हः। जरू॑थम्। प्र। नि॒ऽस्व॒रम्। चा॒त॒य॒स्व॒। अमी॑वाम्॥७॥**

**पदार्थः**-**(विश्वाः)** समग्राः **(अग्ने)** अग्निवद्विद्वन् **(अप)** **(दह)** **(अरातीः)** शत्रुसेनाः **(येभिः)** यैः **(तपोभिः)** प्रतप्तकरैरग्निगुणैः **(अदहः)** दहति **(जरूथम्)** जरावस्थां प्राप्तं जीर्णं काष्ठम् **(प्र)** **(निस्वरम्)** निर्मूलम् **(चातयस्व)** नाशं प्रापय। **चततिर्गतिकर्मा।** (निघं०२.१४) **(अमीवाम्)** रोगम्॥७॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! येभिस्तपोभिरग्निर्जरूथमदहस्तैर्विश्वा अरातीरप दहाऽमीवां निस्वरं प्र चातयस्व॥७॥

**भावार्थः-**हे विद्वांसो! यदि भवन्तोऽग्निप्रभावं विदित्वाऽऽग्नेयाऽस्त्रादीनि निर्माय सङ्ग्रामे प्रवर्तेरँस्तर्ह्यनेकाः शत्रुसेनाः सद्यो दह्येयुर्यथा सद्वैद्यः स्वकीयं शरीरमरोगं कृत्वाऽन्यानरोगान् करोति तथैव भवन्तोऽग्निविद्याप्रभावेन रोगभूताञ्छत्रून्निवारयन्तु॥७॥

**पदार्थः**-हे **(अग्ने)** अग्नि के तुल्य तेजस्वी विद्वन्! **(येभिः)** जिन **(तपोभिः)** हाथों को तपाने वाले अग्नि के गुणों से अग्नि **(जरूथम्)** जीर्ण अवस्था को प्राप्त हुए पुराने काष्ठ को **(अदहः)** जलाता है उन गुणों से **(विश्वाः)** सब **(अरातीः)** शत्रुओं की सेनाओं को **(अप, दह)** जलाइये तथा **(अमीवाम्)** रोग को **(निस्वरम्)** निर्मूल जैसे हो, वैसे **(प्र, चातयस्व)** नष्ट कीजिये॥७॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-हे विद्वानो! जो आप अग्नि के प्रभाव को जान के आग्नेयास्त्र आदिकों को बना के संग्राम में प्रवृत्त हों तो अनेक शत्रुओं की सेनाएँ शीघ्र भस्म होवें, जैसे उत्तम वैद्य अपने शरीर को रोगरहित करके अन्यों को रोगरहित करता है, वैसे ही आप लोग अग्निविद्या के प्रभाव से रोगरूप शत्रुओं का निवारण करो॥७॥

**पुनर्विद्वद्भिः केन तेजस्विनी सेना कार्येत्याह॥**

फिर विद्वानों को किससे सेना तेजस्विनी करना चाहिये, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**आ यस्ते॑ अग्न इ॒धते॒ अनी॑कं॒ वसि॑ष्ठ॒ शुक्र॒ दीदि॑वः॒ पाव॑क।**

**उ॒तो न॑ ए॒भिः स्त॒वथै॑रि॒ह स्याः॑॥८॥**

**आ। यः। ते॒। अ॒ग्ने॒। इ॒धते॑। अनी॑कम्। वसि॑ष्ठ। शुक्र॑। दीदि॑ऽवः। पाव॑क। उ॒तो इति॑। नः॒। ए॒भिः॒। स्त॒वथैः॑। इ॒ह। स्या॒ः॥८॥**

**पदार्थः**-(**आ**) समन्तात् (**यः**) (**ते**) तव (**अग्ने**) पावक इव (**इधते**) प्रदीपयति (**अनीकम्**) सैन्यम् (**वसिष्ठ**) अतिशयेन वसो (**शुक्र**) आशुकारिन् वीर्यवन् (**दीदिवः**) विजय कामयमान (**पावक**) पवित्र (**उतो**) (**नः**) अस्माकम् (**एभिः**) (**स्तवथैः**) (**इह**) अस्मिन् राज्ये (**स्याः**) भवेः॥८॥

**अन्वयः**-हे अग्ने वह्निरिव वर्त्तमान वसिष्ठ शुक्र दीदिवः पावक राजन् यस्य ते तवाऽनीकं योऽग्निरा इधते तस्यैभिः स्तवथैरिह नो रक्षकः स्या उतो अपि वयं तदग्निबलेनैव ते रक्षकाः स्याम॥८॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। ये राजपुरुषा अग्निविद्ययाऽऽग्नेयास्त्रादीनि निर्माय स्वसैन्यं सुप्रकाशितं कृत्वा न्यायेन प्रजापालकास्स्युस्ते दीर्घसमयं राज्यं महैश्वर्य्या जायन्ते॥८॥

**पदार्थः**-हे (**अग्ने**) अग्नि के तुल्य वर्त्तमान (**वसिष्ठ**) अतिशय कर वसने और (**शुक्र**) शीघ्रता करने वाले पराक्रमी (**दीदिवः**) विजय की कामना करते हुए (**पावक**) पवित्र [राजन्! जिस] (**ते**) आपकी (**अनीकम्**) सेना को (**यः**) जो अग्नि (**आ, इधते**) प्रदीप्त प्रकाशित कराता है उस अग्नि की (**एभिः**) इन (**स्तवथैः**) स्तुतियों से (**इह**) इस राज्य में (**नः**) हमारे रक्षक (**स्याः**) हूजिये (**उतो**) और भी हम लोग उस अग्नि के बल से ही आपके रक्षक होवें॥८॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो राजपुरुष अग्निविद्या से आग्नेयास्त्रादि को बना के अपनी सेना को अच्छे प्रकार प्रकाशित करके न्याय से प्रजा के पालक हों, वे दीर्घ समय तक राज्य को पाके महान् ऐश्वर्य वाले होते हैं॥८॥

**पुनः कीदृशैः सह राजा प्रजाः पालयेदित्याह॥**

फिर कैसे भृत्यों के साथ राजा प्रजा का पालन करे, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**वि ये ते॑ अग्ने भेजि॒रे अनी॑कं॒ मर्ता॒ नरः॒ पित्र्या॑सः पुरु॒त्रा।**



www.9009.co.in

**उतो न एभिः सुमना इह स्याः॥९॥**

**वि। ये। ते। अग्ने। भेजिरे। अनीकम्। मर्ताः। नरः। पित्र्यासः। पुरुऽत्रा। उतो इति। नः। एभिः। सुऽमनाः। इह। स्याः॥९॥**

**पदार्थः**-(**वि**) (**ये**) विद्वांसः (**ते**) (**अग्ने**) तडिदिव प्रकाशमान (**भेजिरे**) सेवन्ते (**अनीकम्**) सैन्यम् (**मर्त्ताः**) मनुष्याः (**नरः**) नायकाः (**पित्र्यासः**) पितृभ्यो हिताः (**पुरुत्रा**) पुरुषु बहुषु राजसु (**उतो**) अपि (**नः**) अस्माकमुपरि (**एभिः**) प्रत्यक्षैर्विद्वद्भिः सह (**सुमनाः**) सुष्ठु शुद्धमनाः (**इह**) अस्मिन् राज्ये (**स्याः**)॥९॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! ये पित्र्यासो मर्ता नरस्ते [पुरुत्रा] अनीकं वि भेजिरे उतो एभिस्सह त्वमिह नः सुमनाः स्याः॥९॥

**भावार्थः**-हे राजन्! येऽग्निविद्यायां कुशला भवत्सेनाप्रकाशका वीरपुरुषा धर्मिष्ठा विद्वांसोऽधिकारिणः स्युस्तैस्सह भवान् न्यायेनाऽस्माकं पालको भूयाः॥९॥

**पदार्थः**-हे (**अग्ने**) विद्युत् के तुल्य प्रकाशमान! (**ये**) जो विद्वान् (**पित्र्यासः**) पितरों के लिये हितकारी (**मर्त्ताः**) मनुष्य (**नरः**) नायक हैं (**ते**) वे (**पुरुत्रा**) बहुत राजाओं में (**अनीकम्**) सेना को (**वि, भेजिरे**) सेवन करते हैं (**उतो**) और (**एभिः**) इन प्रत्यक्ष विद्वानों के साथ आप (**इह**) इस राज्य में (**नः**) हम पर (**सुमनाः**) शुद्ध चित्त वाले प्रसन्न (**स्याः**) हूजिये॥९॥

**भावार्थः**-हे राजन्! जो अग्निविद्या में कुशल, आपकी सेना के प्रकाशक, वीर पुरुष, धार्मिक, विद्वान् अधिकारी हों, उनके साथ आप न्याय से हमारे पालक हूजिये॥९॥

**राज्ञा कीदृशा अमात्याः कर्त्तव्या इत्याह॥**

राजा को कैसे मन्त्री करने चाहिये, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**इमे नरो वृत्रहत्येषु शूरा विश्वा अदेवीरभि सन्तु मायाः।**

**ये मे धियं पनयन्त प्रशस्ताम्॥१०॥२४॥**

**इमे। नरः। वृत्रऽहत्येषु। शूराः। विश्वाः। अदेवीः। अभि। सन्तु। मायाः। ये। मे। धियम्। पनयन्त। प्रऽशस्ताम्॥१०॥**

**पदार्थः**-(**इमे**) वर्त्तमानाः (**नरः**) न्याययुक्ताः (**वृत्रहत्येषु**) सङ्ग्रामेषु (**शूराः**) (**विश्वाः**) समग्राः (**अदेवीः**) अदिव्या अशुद्धाः (**अभि**) आभिमुख्ये (**सन्तु**) भवन्तु (**मायाः**) कपटछलयुक्ताः प्रज्ञाः (**ये**) (**मे**) मम (**धियम्**) प्रज्ञाम् (**पनयन्त**) स्तुवन्ति व्यवहरन्ति वा (**प्रशस्ताम्**) उत्तमाम्॥१०॥

**अन्वयः**-हे राजन्! य इमे शूरा नरो वृत्रहत्येषु विश्वा अदेवीर्माया निवार्य्य मे प्रशस्तां धियमभि पनयन्त ते तव कार्य्यकराः सन्तु॥१०॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-हे राजन्! ये शत्रूणां छलैर्वञ्चिता न स्युस्सङ्ग्रामेषूत्साहिताः शौर्योपेता युध्येयुः सर्वतो गुणान् गृहीत्वा दोषाँस्त्यजेयुस्त एव तवाऽमात्याः सन्तु॥१०॥

**पदार्थः**-हे राजन्! **(ये)** जो **(इमे)** वर्त्तमान **(शूराः)** शूरवीर **(नरः)** न्याययुक्त पुरुष **(वृत्रहत्येषु)** संग्रामों में **(विश्वाः)** समस्त **(अदेवीः)** अशुद्ध **(मायाः)** कपट छलयुक्त बुद्धियों को निवृत्त करके **(मे)** मेरी **(प्रशस्ताम्)** प्रशंसित **(धियम्)** उत्तम बुद्धि का **(अभि, पनयन्त)** सम्मुख स्तुति वा व्यवहार करते हैं, वे आपके कार्य्य करने वाले **(सन्तु)** हों॥१०॥

**भावार्थः**-हे राजन्! जो शत्रुओं के छलों से ठगे हुए न हों, संग्रामों में उत्साह को प्राप्त, शूरतायुक्त युद्ध करें, सब ओर से गुणों को ग्रहण कर दोषों को त्यागें, वे ही आपके मन्त्री हों॥१०॥

**पुनरेते राजादयः किं न कुर्य्युरित्याह॥**

फिर ये राजादि क्या न करें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**मा शूने॑ अग्ने॒ नि ष॑दाम नृ॒णां माशेष॑सो॒ऽवीर॑ता॒ परि॑ त्वा।**

**प्र॒जाव॑तीषु॒ दुर्या॑सु दुर्य॥११॥**

**मा। शूने॑। अ॒ग्ने॒। नि। स॒दा॒म॒। नृ॒णाम्। मा। अ॒शेष॑सः। अ॒वीर॑ता। परि॑। त्वा॒। प्र॒जाऽव॑तीषु। दुर्या॑सु। दु॒र्य॒॥११॥**

**पदार्थः**-**(मा)** निषेधे **(शूने)** शूः सद्यः करणं विद्यते यस्मिँस्तस्मिन् सैन्ये। अत्र **शू इति क्षिप्रनाम।** (निघं०२.१५) तस्मात्पामादित्वान्मत्वर्थीयो नः प्रत्ययः। **(अग्ने)** पावक इव तेजस्विन् **(नि)** नितराम् **(सदाम)** सीदेम **(नृणाम्)** नायकानाम् **(मा)** **(अशेषसः)** निःशेषाः **(अवीरता)** वीरभावरहितता **(परि)** **(त्वा)** त्वाम् **(प्रजावतीषु)** प्रशस्तप्रजायुक्तासु **(दुर्यासु)** गृहेषु भवासु रीतिषु **(दुर्य्य)** गृहेषु वर्त्तमान॥११॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! याऽवीरता तथा नृणां मध्ये मा निषदाम शूने सैन्येऽशेषसः त्वा मा परि नि षदाम। हे दुर्य! यतः प्रजावतीषु दुर्यासु सुखेन नि षदाम तथा विधेहि॥११॥

**भावार्थः**-हे क्षत्रियकुलोद्भवा राजपुरुषा यूयं कातरा मा भवत विरोधेन परस्परेण सहयुध्वा निःशेषा मा सन्तु सनातन्या राजनीत्या प्रजाः पालयित्वा यशस्विनो भवत॥११॥

**पदार्थः**-हे **(अग्ने)** अग्नि के तुल्य तेजस्विन्! जो **(अवीरता)** वीरों का अभाव है उससे **(नृणाम्)** नायकों में **(मा, निषदाम)** निरन्तर स्थित न हों **(शूने)** शीघ्रकारिणी सेना में **(अशेषसः)** सम्पूर्ण हम **(त्वा)** तेरे **(मा)** न **(परि)** सब ओर से निरन्तर स्थित हों। हे **(दुर्य्य)** घरों में वर्त्तमान! जिस कारण **(प्रजावतीषु)** प्रशस्त सन्तानों से युक्त **(दुर्यासु)** घरों में हुई रीतियों में सुखपूर्वक निरन्तर स्थित हों वैसा कीजिये॥११॥



www.9009.co.in

**भावार्थ:**-हे क्षत्रिय-कुल में हुए राजपुरुषो! तुम कातर मत होओ। विरोध से परस्पर युद्ध करके नि:शेष मत होओ। सनातन राजनीति से प्रजाओं का पालन कर कीर्त्ति वाले होओ॥११॥

**पुनस्सोऽग्निः किं साध्नोतीत्याह॥**

फिर वह अग्नि क्या सिद्ध करता है, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**यमश्वी नित्यमुपयाति यज्ञं प्रजावन्तं स्वपत्यं क्षयं नः।**

**स्वजन्मना शेषसा वावृधानम्॥१२॥**

**यम्। अश्वी। नित्यम्। उपऽयाति। यज्ञम्। प्रजाऽवन्तम्। सुऽअपत्यम्। क्षयम्। नः। स्वऽजन्मना। शेषसा। ववृधानम्॥१२॥**

**पदार्थ:**-**(यम्)** **(अश्वी)** बहवो महान्तोऽश्वा वेगादयो गुणा विद्यन्ते यस्मिन् सोऽग्निः **(नित्यम्)** **(उपयाति)** समीपं गच्छति **(यज्ञम्)** सङ्गन्तव्यम् **(प्रजावन्तम्)** बह्व्यः प्रजा विद्यन्ते यस्मिँस्तम् **(स्वपत्यम्)** उत्तमैरपत्यैर्युक्तम् **(क्षयम्)** गृहम् **(नः)** अस्माकम् **(स्वजन्मना)** स्वस्य जन्मना **(शेषसा)** शेषीभूतेन **(वावृधानम्)** वर्धमानं वर्धयन्तम्॥१२॥

**अन्वय:**-हे विद्वांसो! योऽश्वी नो यं प्रजावन्तं स्वपत्यं यज्ञं क्षयं स्वजन्मना शेषसा वावृधानं नित्यमुपयाति तं यूयं विजानीत॥१२॥

**भावार्थ:**-हे मनुष्या! योऽग्निः प्रादुर्भूतेन द्वितीयेन जन्मना प्रजाः सुसन्तानान् गृहञ्च प्रापयति तमग्निं प्रसाध्नुत॥१२॥

**पदार्थ:**-हे विद्वानो! जो **(अश्वी)** बहुत वेगादि गुणों वाला अग्नि **(नः)** हमारे **(यम्)** जिस **(प्रजावन्तम्)** बहुत प्रजावाले **(स्वपत्यम्)** सुन्दर बालकों से युक्त **(यज्ञम्)** संग करने ठहरने योग्य **(क्षयम्)** घर को वा **(स्वजन्मना)** अपने [जन्म से] **(शेषसा)** शेष रहे भाग से **(वावृधानम्)** बढ़ते या बढ़ाते हुए के **(नित्यम्)** नित्य **(उपयाति)** निकट प्राप्त होता है, उसको तुम लोग जानो॥१२॥

**भावार्थ:**-हे मनुष्यो! जो अग्नि प्रकट हुए द्वितीय जन्म से प्रजा, सुन्दर सन्तानों और घर को प्राप्त कराता है, उसको प्रसिद्ध करो॥१२॥

**केन कस्मात् के रक्षणीया इत्याह॥**

किस करके किससे किसकी रक्षा करनी चाहिये, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**पाहि नो अग्ने रक्षसो अजुष्टात्पाहि धूर्तेररुषो अघायोः।**

**त्वा युजा पृतनायूँरभि ष्याम्॥१३॥**

**पाहि। नः। अग्ने। रक्षसः। अजुष्टात्। पाहि। धूर्तेः। अररुषः। अघऽयोः। त्वा। युजा। पृतनाऽयून्। अभि। स्याम्॥१३॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**पाहि**) (**नः**) अस्मान् (**अग्ने**) विद्युदिव वर्त्तमान राजन्नुपदेशक वा (**रक्षसः**) दुष्टाचाराज्जनात् (**अजुष्टात्**) धर्म्ममसेवमानात् (**पाहि**) (**धूर्तेः**) धूर्त्तात् (**अररुषः**) भृशं हिंसकात् (**अघायोः**) आत्मनोऽघमिच्छतः (**त्वा**) त्वया। विभक्तिव्यत्ययः (**युजा**) युक्तेन (**पृतनायून्**) सेनां कामयमानान् (**अभि**) आभिमुख्ये (**स्याम्**) भवेयम्॥१३॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! त्वं नो रक्षसः पाहि नोऽजुष्टाद्धूर्तेररुषोऽघायोः पाहि त्वा युजा वर्त्तमानोऽहं पृतनायूनभि ष्याम्॥१३॥

**भावार्थः**-स एव राजाऽध्यापक उपदेशकः कर्मकर्ता वा श्रेष्ठो भवति यः स्वयं धार्मिको भूत्वाऽन्यानपि धार्मिकान् कुर्यात्॥१३॥

**पदार्थः**-हे (**अग्ने**) विद्युत् अग्नि के तुल्य वर्त्तमान राजन् या उपदेशक! आप (**नः**) हमको (**रक्षसः**) दुष्टाचारी मनुष्यों से (**पाहि**) बचाइये। हमारी (**अजुष्टात्**) धर्म का सेवन न करते हुए अधर्मी (**धूर्तेः**) धूर्त (**अररुषः**) शीघ्र मारने वाले (**अघायोः**) आत्मा को पाप की इच्छा करते हुए से (**पाहि**) रक्षा कीजिये (**युजा**) युक्त हुए (**त्वा**) तुम्हारे साथ वर्त्तमान मैं (**पृतनायून्**) सेनाओं को चाहते हुओं के (**अभि, ष्याम्**) सम्मुख होऊँ॥१३॥

**भावार्थः**-वही राजा अध्यापक उपदेशक वा कर्म करनेहारा श्रेष्ठ होता है, जो आप धर्मात्मा होकर अन्यों को भी धार्मिक करे॥१३॥

**पुनः सोऽग्निः कीदृशोऽस्तीत्याह॥**

फिर वह अग्नि कैसा है, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**सेदुग्निरग्नीँरत्यस्त्वन्यान् यत्र वाजी तनयो वीळुपाणिः।**

**सहस्रपाथा अक्षरा समेति॥१४॥**

**सः। इत्। अग्निः। अग्नीन्। अति। अस्तु। अन्यान्। यत्र। वाजी। तनयः। वीळुऽपाणिः। सहस्रऽपाथाः। अक्षरा। सम्ऽएति॥१४॥**

**पदार्थः**-(**सः**) (**इत्**) एव (**अग्निः**) पावकः (**अग्नीन्**) (**अति**) (**अस्तु**) (**अन्यान्**) भिन्नान् (**यत्र**) (**वाजी**) वेगबलादियुक्तः (**तनयः**) पुत्रः (**वीळुपाणिः**) वीळु बलं पाणयो यस्य सः (**सहस्रपाथाः**) सहस्राण्यमितानि पाथांस्यन्नादीनि यस्य सः (**अक्षरा**) उदकानि। अत्राकारादेशः। **अक्षरा इत्युदकनाम।** (निघं०१.१२) (**समेति**) सम्यगेति॥१४॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यो वाजी वीळुपाणिस्तनय इवाग्निर्यत्राऽन्यानग्नीन् प्राप्तोऽत्यस्तु स इत् सहस्रपाथा अक्षरा समेति तं यूयं साध्नुत॥१४॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यथा सुपुत्रः पितॄन् प्राप्नोति तथाऽग्निरग्नीन् प्राप्नोति प्रसिद्धो भूत्वा स्वस्वरूपं कारणं प्राप्य स्थिरो भवति येऽभिव्याप्तां विद्युतं प्रकटयितुं विजानन्ति तेऽसंख्यमैश्वर्यमाप्नुवन्ति॥१४॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो **(वाजी)** वेगबलादियुक्त **(वीळुपाणिः)** बलरूप जिस के हाथ हैं **(तनयः)** पुत्र के तुल्य **(अग्निः)** अग्नि **(यत्र)** जहाँ **(अन्यान्)** अन्य **(अग्नीन्)** अग्नियों को प्राप्त **(अत्यस्तु)** अत्यन्त हो **(सः, इत्)** वही **(सहस्रपाथाः)** अतोल [=अतुलनीय] अन्नादि पदार्थों वाला **(अक्षरा)** जलों को **(समेति)** सम्यक् प्राप्त होता है, वहाँ उसको तुम लोग सिद्ध करो॥१४॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जैसे सुपुत्र पितरों को प्राप्त होता है, वैसे अग्नि अग्नियों को प्राप्त होता है तथा प्रसिद्ध होकर अपने स्वरूप कारण को प्राप्त होकर स्थिर होता है, जो लोग अभिव्याप्त बिजुली के प्रकट करने को जानते हैं, वे असंख्य ऐश्वर्य्य को प्राप्त होते हैं॥१४॥

**पुनः सोऽग्निः कीदृशोऽस्तीत्याह॥**

फिर वह अग्नि कैसा है, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**सेदुग्निर्यो वनुष्यतो निपाति समेद्धारमंहस उरुष्यात्।**

**सुजातासः परि चरन्ति वीराः॥१५॥२५॥**

**सः। इत्। अग्निः। यः। वनुष्यतः। निपाति। सम्ऽएद्धारम्। अंहसः। उरुष्यात्। सुऽजातासः। परि। चरन्ति। वीराः॥१५॥**

**पदार्थः**-**(सः)** **(इत्)** एव **(अग्निः)** पावकः **(यः)** **(वनुष्यतः)** याचमानान् **(निपाति)** नितरां रक्षति **(समेद्धारम्)** यः सम्यगिन्धयति प्रदीपयति तम् **(अंहसः)** दुःखदारिद्र्याख्यात् पापात् **(उरुष्यात्)** रक्षेत् **(सुजातासः)** सुष्ठु विद्यासु प्रसिद्धाः **(परि)** सर्वतः **(चरन्ति)** जानन्ति गच्छन्ति वा **(वीराः)** प्राप्तविज्ञानाः॥१५॥

**अन्वयः**-हे मनुष्य! योऽग्निर्वनुष्यतो निपाति समेद्धारमंहसः उरुष्याद्यं सुजातासो वीराः परिचरन्ति स इदेव युष्माभिः सम्प्रयोक्तव्यः॥१५॥

**भावार्थः**-ये मनुष्याः सुविद्ययाऽग्निं संसेव्य कार्य्यसिद्धये सम्प्रयुञ्जते ते दुःखदारिद्र्यविरहा यशस्विनः सन्तो विजयसुखं सततं प्राप्नुवन्ति॥१५॥

**पदार्थः**-हे मनुष्य! **(यः)** जो **(अग्निः)** अग्नि **(वनुष्यतः)** याचना करते हुओं की **(निपाति)** निरन्तर रक्षा करता है तथा **(समेद्धारम्)** सम्यक् प्रकाशित कराने वाले को **(अंहसः)** दुःख वा दरिद्रता से **(उरुष्यात्)** रक्षा करे जिसको **(सुजातासः)** विद्याओं में अच्छे प्रकार प्रसिद्ध और **(वीराः)** विज्ञान को प्राप्त हुए वीरपुरुष **(परि, चरन्ति)** सब ओर से जानते वा प्राप्त होते हैं **(सः, इत्)** वही अग्नि तुम लोगों को अच्छे प्रकार उपयोग में लाना चाहिये॥१५॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-जो मनुष्य अच्छी विद्या से अग्नि का सेवन कर कार्यसिद्ध के लिये संयुक्त करते हैं, वे दुःख और दरिद्रता से रहित, कीर्त्ति वाले हुए विजय के सुख को निरन्तर प्राप्त होते हैं॥१५॥

**पुनः सोऽग्निः कीदृशोऽस्तीत्याह॥**

फिर वह अग्नि कैसा है, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अयं सो अग्निराहुतः पुरुत्रा यमीशानः समिदिन्धे हविष्मान्।**

**परि यमेत्यध्वरेषु होता॥१६॥**

**अयम्। सः। अग्निः। आऽहुतः। पुरुऽत्रा। यम्। ईशानः। सम्। इत्। इन्धे। हविष्मान्। परि। यम्। एति। अध्वरेषु। होता॥१६॥**

**पदार्थः**-(**अयम्**) (**सः**) (**अग्निः**) विद्युत् (**आहुतः**) सम्यक् स्वीकृतः (**पुरुत्रा**) बहूनि कार्याणि (**यम्**) (**ईशानः**) जगदीश्वरः (**सम्**) (**इत्**) एव (**इन्धे**) प्रकाशयते (**हविष्मान्**) बहूनि हवींषि दातव्यानि वस्तूनि विद्यन्ते यस्य सः (**परि**) सर्वतः (**यम्**) (**एति**) (**अध्वरेषु**) अहिंसायुक्तेषु सङ्ग्रामादिव्यवहारेषु (**होता**) हवनकर्त्ता॥१६॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यमीशानः समिन्धे यं हविष्मान् होता अध्वरेषु पर्येति सोऽयमिदग्निराहुतः सन् पुरुत्रा कार्याणि साध्नोति॥१६॥

**भावार्थः**-हे विद्वांस! ईश्वरेण यदर्थो निर्मितो यदर्थमृत्विग्यजमानाः सेवन्ते तदर्थः सोऽग्निर्युष्माभिर्बहुषु व्यवहारेषु सम्प्रयुक्तः सन्ननेकेषां कार्याणां साधको भवति॥१६॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! (**यम्**) जिसको (**ईशान**) जगदीश्वर (**सम्, इन्धे**) सम्यक् प्रकाशित करता है और (**यम्**) जिसको (**हविष्मान्**) देने योग्य बहुत वस्तुओं सहित (**होता**) होम करने वाला (**अध्वरेषु**) हिंसारहित संग्रामादि व्यवहारों में (**परि, एति**) सब ओर से प्राप्त होता है (**सः, अयम् इत्**) सो वही (**अग्निः**) विद्युत् अग्नि (**आहुतः**) सम्यक् स्वीकार किया हुआ (**पुरुत्रा**) बहुत कार्य्यों को सिद्ध करता है॥१६॥

**भावार्थः**-हे विद्वानो! ईश्वर ने जिसलिये बनाया है, जिसलिये ऋत्विज् और यजमान सेवन करते हैं, तदर्थ वह अग्नि तुम लोगों से बहुत व्यवहारों में प्रयुक्त किया हुआ अनेक कार्य्यों का सिद्ध करने वाला होता है॥१६॥

**पुनर्मनुष्याः किंवत्किं कुर्युरित्याह॥**

फिर मनुष्य लोग किसके तुल्य क्या करें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**त्वे अग्न आहवनानि भूरीशानास आ जुहुयाम नित्या।**

**उभा कृण्वन्तो वहतू मियेधे॥१७॥**



www.9009.co.in

त्वे इति। अग्ने। आऽहवनानि। भूरि। ईशानासः। आ। जुहुयाम। नित्या। उभा। कृण्वन्तः। वहतू इति। मियेधे॥ १७॥

**पदार्थः**-(**त्वे**) अग्नाविव त्वयि (**अग्ने**) आप्तविद्वन् (**आहवनानि**) समन्ताद् दानानि (**भूरि**) बहूनि (**ईशानासः**) समर्थाः (**आ**) समन्तात् (**जुहुयाम**) दद्याम (**नित्या**) नित्यानि (**उभा**) उभौ यजमानपुरोहितौ (**कृण्वन्तः**) कुर्वन्तः (**वहतू**) प्रापकौ (**मियेधे**) परिमाणयुक्ते यज्ञे॥ १७॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! यथोभा वहतू यजमानपुरोहितौ मियेधे नित्या [भूरि] आहवनानि जुहुतस्तथा ईशानासो वयं तौ द्वौ समर्थौ कृण्वन्तस्त्वे स्वामिनि सति तान्याजुहुयाम॥ १७॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। ये यजमानर्त्विग्वत्सर्वान् मनुष्यान् सुशिक्षयोपकुर्वन्ति तच्छिक्षां सर्वेऽनुतिष्ठन्तु॥ १७॥

**पदार्थः**-हे (**अग्ने**) सत्यवादी आप्तविद्वान्! जैसे (**उभा**) दोनों (**वहतू**) प्राप्ति कराने वाले यजमान और पुरोहित (**मियेधे**) परिमाण युक्त यज्ञ में (**नित्या**) नित्य (**भूरि**) बहुत (**आहवनानि**) अच्छे दानों को देते हैं, वैसे (**ईशानासः**) समर्थ हम लोग उन दोनों यजमान पुरोहितों को समर्थ (**कृण्वन्तः**) करते हुए (**त्वे**) अग्नि के तुल्य तेजस्वि आप स्वामी के होते हुए उन दोनों को (**आ, जुहुयाम**) अच्छे प्रकार देवें॥ १७॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो यजमान और ऋत्विजों के तुल्य सब मनुष्यों का अच्छी शिक्षा से उपकार करते हैं, उनकी शिक्षा का सब लोग अनुष्ठान करें॥ १७॥

**पुनर्मनुष्यैः किं प्राप्तव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को क्या प्राप्त करना चाहिये, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**इमो अग्ने वीततमानि हव्याऽजस्रो वक्षि देवतातिमच्छ।**

**प्रति न ईं सुरभीणि व्यन्तु॥ १८॥**

**इमो इति। अग्ने। वीतऽतमानि। हव्या। अजस्रः। वक्षि। देवऽतातिम्। अच्छ। प्रति। नः। ईम्। सुरभीणि। व्यन्तु॥ १८॥**

**पदार्थः**-(**इमो**) इमानि। अत्र विभक्तेरोकारादेशः। (**अग्ने**) (**वीततमानि**) अतिशयेन व्याप्तुं समर्थानि (**हव्या**) दातुं योग्यानि (**अजस्रः**) निरन्तरः (**वक्षि**) वहसि (**देवतातिम्**) दिव्यसुखप्रापकं यज्ञम् (**अच्छ**) सम्यक् (**प्रति**) (**नः**) (**ईम्**) (**सुरभीणि**) सुगन्ध्यादिगुणसहितानि (**व्यन्तु**) प्राप्नुवन्तु॥ १८॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! येनाऽजस्नो देवतातिमच्छ वक्ष्यनेन न इमो सुरभीणि वीततमानि हव्या च नः प्रति ईं व्यन्तु॥ १८॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-मनुष्या यथाग्ना उत्तमानि हवींषि हत्वा जलादीनि संशोध्य सर्वोपकारं साध्नुवन्ति तथैव वर्त्तताम्॥१८॥

**पदार्थः**-हे **(अग्ने)** तेजस्विन् विद्वन्! जिससे **(अजस्रः)** निरन्तर **(देवतातिम्)** उत्तम सुख देने वाले यज्ञ को **(अच्छ)** अच्छे प्रकार **(वक्षि)** प्राप्त करते हैं इससे **(इमो)** इन **(सुरभीणि)** सुगन्धि आदि गुणों के सहित **(वीततमानि)** अतिशयकर व्याप्त होने को समर्थ **(हव्या)** देने योग्य वस्तुओं को **(नः)** हमारे **(प्रति)** प्रति **(ईम्)** सब ओर से **(व्यन्तु)** प्राप्त करें॥१८॥

**भावार्थः**-मनुष्य जैसे अग्नि में उत्तम हविष्यों का होम, कर जल आदि को शुद्ध करके सब के उपकार को सिद्ध करते हैं, वैसे वर्त्ताव करना चाहिये॥१८॥

**पुनर्विद्वांसः किं कुर्युरित्याह॥**

फिर विद्वान् लोग क्या करें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**मा नो॑ अग्ने॒ऽवीर॑ते॒ परा॑ दा दु॒र्वास॒सेऽम॑तये॒ मा नो॑ अ॒स्यै।**

**मा नः॑ क्षु॒धे मा र॒क्षस॑ ऋतावो॒ मा नो॒ दमे॒ मा वन॒ आ जु॑हूर्थाः॥१९॥**

**मा। न॒ः। अ॒ग्ने॒। अ॒वीर॑ते। परा॑। दा॒ः। दु॒ःऽवास॑से। अम॑तये। मा। न॒ः। अ॒स्यै। मा। न॒ः। क्षु॒धे। मा। र॒क्षसे। ऋ॒त॒ऽव॒ः। मा। न॒ः। दमे॑। मा। वने॑। आ। जु॒हू॒र्थाः॥१९॥**

**पदार्थः**-**(मा)** निषेधे **(नः)** अस्मान् **(अग्ने)** पावक इव विद्वन् **(अवीरते)** न विद्यन्ते वीरा यस्मिन् सैन्ये तस्मिन् **(परा)** **(दाः)** पराङ्मुखान् कुर्याः **(दुर्वाससे)** दुष्टवस्त्रधारणाय **(अमतये)** मूढत्वाय **(मा)** **(नः)** अस्मान् **(अस्यै)** पिपासायै **(मा)** **(नः)** अस्मान् **(क्षुधे)** बुभुक्षायै **(मा)** **(रक्षसे)** दुष्टाय जनाय **(ऋतावः)** सत्यप्रकाशक **(मा)** **(नः)** अस्मान् **(दमे)** गृहे **(मा)** **(वने)** अरण्ये **(आ)** **(जुहूर्थाः)** प्रदद्याः॥१९॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! त्वमवीरते नो मा परा दाः। दुर्वाससेऽमतये नो मा परा दाः नोऽस्यै मा क्षुधे मा नियुङ्क्ष्व। हे ऋतावो! रक्षसे दमे नो मा पीड वने नो मा आ जुहूर्थाः॥१९॥

**भावार्थः**-हे विद्वांसो! यूयमस्माकं कातरतां दारिद्र्यं मूढतां क्षुधं तृषां दुष्टसङ्गं गृहे जङ्गले वा पीडां निवार्य सुखिनः सम्पादयत॥१९॥

**पदार्थः**-हे **(अग्ने)** अग्नि के तुल्य तेजस्वी! आप **(अवीरते)** वीरतारहित सेना में **(नः)** हमको **(मा, परा, दाः)** पराङ्मुख मत कीजिये **(दुर्वाससे)** बुरे वस्त्र धारण [करने] के लिये तथा **(अमतये)** मूर्खपन के लिये **(नः)** हमको **(मा)** मत नियुक्त कीजिये। **(नः)** हमको **(अस्यै)** इस प्यास के लिये **(मा)** मत वा **(क्षुधे)** भूख के लिये **(मा)** मत नियुक्त कीजिये। हे **(ऋतावः)** सत्य के प्रकाशक! **(रक्षसे)** दुष्ट जन के लिये **(दमे)** घर में **(नः)** हमको **(मा)** मत पीड़ा दीजिये **(वने)** वन में हम को **(मा)** मत **(आ, जुहूर्थाः)** पीड़ा दीजिये॥१९॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-हे विद्वानो! तुम लोग हमारी कातरता, दरिद्रता, मूढ़ता, क्षुधा, तृषा, दुष्टों के सङ्ग और घर वा जङ्गल में पीड़ा का निवारण कर सुखी करो॥१९॥

**पुनर्विद्वान् किं कुर्यादित्याह॥**

फिर विद्वान् क्या करे, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**नू मे ब्रह्माण्यग्न उच्छंशाधि त्वं देव मघवद्भ्यः सुषूदः।**

**रातौ स्यामोभयास आ ते यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥२०॥२६॥**

**नु। मे। ब्रह्माणि। अग्ने। उत्। शशाधि। त्वम्। देव। मघवत्ऽभ्यः सुसूदः। रातौ। स्याम। उभयासः। आ। ते। यूयम्। पात। स्वस्तिऽभिः। सदा। नः॥२०॥**

**पदार्थः**-(**नू**) सद्यः (**मे**) मम (**ब्रह्माणि**) बृहन्ति धनानि (**अग्ने**) दातः (**उत्**) (**शशाधि**) शिक्षय (**त्वम्**) (**देव**) विद्वन् (**मघवद्भ्यः**) बहुधनयुक्तेभ्यो धनाढ्येभ्यः (**सुषूदः**) नाशय (**रातौ**) दाने (**स्याम**) भवेम (**उभयासः**) विद्वांसोऽविद्वांसश्च (**आ**) (**ते**) तव (**यूयम्**) (**पात**) रक्षत (**स्वस्तिभिः**) सुखैः (**सदा**) (**नः**) अस्मान्॥२०॥

**अन्वयः**-हे देवाग्ने! त्वं मे मघवद्भ्यो ब्रह्माण्युच्छशाधि दुःखानि सुषूदः। येनोभयासो वयं रातौ स्याम तथा ते रक्षां वयं कुर्याम तथा यूयं नः स्वस्तिभिः सदा नु पात॥२०॥

**भावार्थः**-राजादिपुरुषैर्धनाढ्येभ्यो दरिद्रा अपि सुशिक्षा धनाढ्याः कार्याः विद्वांसोऽविद्वांसश्च मेलयित्वोन्नताः कार्या अन्योऽन्येषान्दुःखनिवारणेन सुखैः संयोजनीयाः॥२०॥

**पदार्थः**-हे (**देव**) विद्वन् (**अग्ने**) दाताजन! (**त्वम्**) आप (**मे**) मेरे (**मघवद्भ्यः**) बहुत धनयुक्त धनाढ्यों से (**ब्रह्माणि**) बड़े-बड़े धनों की (**उत्, शशाधि**) शिक्षा कीजिये तथा दुःखों को (**सुषूदः**) नष्ट कीजिये जिससे (**उभयासः**) दोनों विद्वान् अविद्वान् हम लोग (**रातौ**) दान देने में प्रकट (**स्याम**) हों जैसे (**ते**) आपकी रक्षा हम करें, वैसे (**यूयम्**) तुम लोग (**नः**) हमारी (**स्वस्तिभिः**) सुखों से (**सदा**) सब काल में (**नु**) शीघ्र (**आ, पात**) अच्छे प्रकार रक्षा करो॥२०॥

**भावार्थः**-राजादि पुरुषों को चाहिये कि धनाढ्यों से दरिद्रों को भी अच्छी शिक्षा देके धनाढ्य करें तथा विद्वान् और अविद्वानों का मेल करा के परस्पर उन्नति करावें और परस्पर दुःख का निवारण कर सुखों से संयुक्त करें॥२०॥

**पुनर्विद्वानत्र कथं वर्तेतेत्याह॥**

फिर विद्वान् इस जगत् में कैसे वर्ते, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**त्वमग्ने सुहवो रण्वसंदृक्सुदीती सूनो सहसो दिदीहि।**

**मा त्वे सचा तनये नित्य आ धङ्मा वीरो अस्मन्नर्यो वि दासीत्॥२१॥**



www.9009.co.in

**त्वम्। अग्ने। सुऽहवः। रण्वसंदृक्। सुऽदीती। सूनो इति। सहसः। दिदीहि। मा। त्वे इति। सचा। तनये। नित्ये। आ। धक्। मा। वीरः। अस्मत्। नर्यः। वि। दासीत्॥२१॥**

**पदार्थः**-(**त्वम्**) (**अग्ने**) पावक इव विद्यया प्रकाशमान् विद्वन् (**सुहवः**) सुस्तुतिः (**रण्वसंदृक्**) रमणीयं यः सम्यक् पश्यति सः (**सुदीती**) उत्तमया दीप्त्या (**सूनो**) तनय (**सहसः**) बलवतः (**दिदीहि**) प्रकाशय (**मा**) (**त्वे**) त्वयि (**सचा**) सम्बन्धेन (**तनये**) सन्ताने (**नित्ये**) सदा कर्त्तव्ये कर्मणि (**आ**) (**धक्**) दहेः (**मा**) (**वीरः**) (**अस्मत्**) अस्माकं सकाशात् (**नर्यः**) नृषु साधुः (**वि**) (**दासीत्**) विगतदानो भवेत्॥२१॥

**अन्वयः**-हे सहसः सूनोऽग्ने! सुहवः रण्वसंदृग्यथा नर्यो वीरोऽस्मन्मा विदासीन्नित्ये त्वे तनये सचा मा धक् तथा त्वं सुदीती अस्मान् दिदीहि॥२१॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे विद्वान्! यथाऽस्माकं बन्धवोऽस्मद्विरोधिनो न भवन्ति यथा मातरि तनयस्तनये माता प्रेम्णा सह वर्त्तते तथैव भवानस्माभिः सह वर्त्तताम्॥२१॥

**पदार्थः**-हे (**सहसः**) बलवान् के (**सूनो**) पुत्र (**अग्ने**) अग्नि के तुल्य विद्या से प्रकाशमान विद्वन्! (**सुहवः**) सुन्दर स्तुतियुक्त (**रण्वसंदृक्**) रमणीय सम्यक् देखने वाला जैसे (**नर्यः**) मनुष्यों में उत्तम (**वीरः**) वीर (**अस्मत्**) हम से (**मा**) मत (**वि, दासीत्**) दान से रहित हो वा (**नित्ये**) सब काल में करने योग्य कर्म में (**त्वे**) आप (**तनये**) सन्तान में (**सचा**) सम्बन्ध से (**मा, आ, धक्**) अच्छे प्रकार मत जलाइये, वैसे (**त्वम्**) आप (**सुदीती**) उत्तम दीप्ति से हमको (**दिदीहि**) प्रकाशित कीजिये॥२१॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे विद्वानो! जैसे हमारे बन्धु लोग हमारे विरोधी नहीं होते, जैसे माता में पुत्र, पुत्र के विषय में माता, प्रेम के साथ वर्त्तती है, वैसे ही आप भी हमारे साथ वर्तिये॥२१॥

**पुनर्मनुष्याः सर्वेभ्यः किं गृह्णीयुरित्याह॥**

फिर मनुष्य सब से किसको ग्रहण करें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**मा नो अग्ने दुर्भृतये सचैषु देवेद्धेष्वग्निषु प्र वोचः।**

**मा ते अस्मान् दुर्मतयो भृमाच्चिद्देवस्य सूनो सहसो नशन्त॥२२॥**

**मा। नः। अग्ने। दुःऽभृतये। सचा। एषु। देवऽइद्धेषु। अग्निषु। प्र। वोचः। मा। ते। अस्मान्। दुःऽमतयः। भृमात्। चित्। देवस्य। सूनो इति। सहसः। नशन्त॥२२॥**

**पदार्थः**-(**मा**) (**निषेधे**) (**नः**) अस्मान् (**अग्ने**) विद्वन् (**दुर्भृतये**) दुष्टा भृतिर्धारणं पोषणं वा यस्य तस्मै (**सचा**) सम्बन्धेन (**एषु**) (**देवेद्धेषु**) देवैरिद्धेषु प्रज्वालितेषु (**अग्निषु**) (**प्र**) (**वोचः**) (**मा**) (**ते**) तव (**अस्मान्**) (**दुर्मतयः**) (**भृमात्**) भ्रान्तेः। अत्र वर्णव्यत्ययेन रस्य स्थान **ऋकारो वा**



www.9009.co.in

**च्छन्दसीति सम्प्रसारणं वा।** **(चित्)** अपि **(देवस्य)** विदुषः **(सूनो)** तनय **(सहसः)** बलिष्ठस्य **(नशन्त)** व्याप्नुवन्तु। **नशदिति व्याप्तिकर्मा।** (निघं०२.१८)॥२२॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! त्वं सचैषु देवेद्धेष्वग्निषु दुर्भृतये नो मा प्र वोचः। हे सहसो देवस्य सूनो! भृमाच्चित्ते दुर्मतयोऽस्मान् मा नशन्त॥२२॥

**भावार्थः**-सर्वैर्मनुष्यैः सर्वेभ्यः शुभगुणाः सुमतिः सुविद्या च गृहीतव्या नैव दोषाः॥२२॥

**पदार्थः**-हे **(अग्ने)** विद्वन्! आप **(सचा)** सम्बन्ध से **(एषु)** इन **(देवेद्धेषु)** वायु आदि में प्रज्वलित किये हुए **(अग्निषु)** अग्नियों में **(दुर्भृतये)** दुष्ट दुःखयुक्त कठिन धारण वा पोषण जिसका उसके लिये **(नः)** हमको **(मा, प्र, वोच)** मत कठोर कहो। हे **(सहसः)** बलवान् **(देवस्य)** विद्वान् के **(सूनो)** पुत्र! **(भृमात्)** भ्रान्ति से **(चित्)** भी **(ते)** आपके **(दुर्मतयः)** दुष्टबुद्धि लोग **(अस्मान्)** हमको **(मा)** मत **(नशन्त)** प्राप्त होवें॥२२॥

**भावार्थः**-सब मनुष्यों को योग्य है कि सब से शुभ गुण सुन्दर बुद्धि और उत्तम विद्या का ग्रहण करें, दोषों को कदापि ग्रहण न करें॥२२॥

**पुनर्मनुष्यैः कः सेवनीय इत्याह॥**

फिर मनुष्यो को किसका सेवन करना चाहिये, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**स मर्तो॑ अग्ने स्वनीक रे॒वानम॑र्त्ये॒ य आ॑जु॒होति॑ ह॒व्यम्।**

**स दे॒वता॑ वसु॒वनिं॑ दधाति॒ यं सू॒रिर॒र्थी पृ॒च्छमा॑न॒ एति॑॥२३॥**

**सः। मर्तः॑। अ॒ग्ने॒। सु॒ऽअ॒नी॒क॒। रे॒वान्। अम॑र्त्ये। यः। आ॒ऽजु॒होति॑। ह॒व्यम्। सः। दे॒वता॑। व॒सु॒ऽवनि॑म्। द॒धा॒ति॒। यम्। सू॒रिः॑। अ॒र्थी। पृ॒च्छमा॑नः। एति॑॥२३॥**

**पदार्थः**-**(सः)** **(मर्त्तः)** मनुष्यः **(अग्नेः)** विद्याविनयादिभिः प्रकाशमान **(स्वनीक)** शोभनमनीकं सैन्यं यस्य तत्सम्बुद्धौ **(रेवान्)** बहुधनवान् **(अमर्त्ये)** मरणधर्मरहिते वह्नौ परमात्मनि वा **(यः)** **(आजुहोति)** समन्तात्प्रक्षिपति स्थिरीकरोति **(हव्यम्)** होतुं दातुमर्हं घृतादिद्रव्यं चित्तं वा **(सः)** **(देवता)** दिव्यगुणा **(वसुवनिम्)** धनानां सम्भाजनम् **(दधाति)** **(यम्)** **(सूरिः)** विद्वान् **(अर्थी)** प्रशस्तोऽर्थोऽस्याऽस्तीति **(पृच्छमानः)** **(एति)** प्राप्नोति॥२३॥

**अन्वयः**-हे स्वनीकाग्ने! यो रेवान् सन्नमर्त्ये हव्यमाजुहोति स देवता वसुवनिं दधाति यमर्थी पृच्छमानः सूरिरेति स मर्तः सुखयति॥२३॥

**भावार्थः**-ये मनुष्या अग्निविद्यां विदित्वाऽस्मिन् सुगन्ध्यादिकं जुह्वत्यनेन कार्य्याणि साध्नुवन्ति ये च पृष्ट्वा ध्यात्वा परमात्मानं जानन्ति तानग्निर्धनाढ्यान् परमात्माविज्ञानवतश्च करोति॥२३॥

**पदार्थः**-हे **(स्वनीक)** सुन्दर सेना वाले **(अग्ने)** विद्या और विनयादि से प्रकाशमान जन! **(यः)** जो **(रेवान्)** बहुत धनवाला होता हुआ **(अमर्त्ये)** मरणधर्मरहित अग्नि वा परमात्मा में **(हव्यम्)**



www.9009.co.in

देने योग्य घृतादि द्रव्य वा चित्त को **(आजुहोति)** अच्छे प्रकार छोड़ता वा स्थिर करता है **(सः, देवता)** दिव्यगुणयुक्त वह **(वसुवनिम्)** धनों के सेवन को **(दधाति)** धारण करता है **(यम्)** जिसको **(अर्थी)** प्रशस्त प्रयोजन वाला **(पृच्छमानः)** पूछता हुआ **(सूरिः)** विद्वान् **(एति)** प्राप्त होता है **(सः)** वह **(मर्तः)** मनुष्य सुखी करता है॥२३॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य अग्निविद्या को जान के इस अग्नि में सुगन्ध्यादि का होम करते और इससे कार्यों को सिद्ध करते हैं और जो पूछ अच्छे प्रकार विचार और ध्यान कर के परमात्मा को जानते हैं, उनको अग्नि, धनाढ्य और परमात्मा विज्ञानवान् करता है॥२३॥

**पुनर्मनुष्या विद्वद्भ्यः किं गृह्णीयुरित्याह॥**

फिर मनुष्य विद्वानों से क्या ग्रहण करें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**म॒हो नो॑ अग्ने सुवि॒तस्य॑ वि॒द्वान् र॒यिं सू॒रिभ्य॒ आ व॑हा बृ॒हन्त॑म्।**

**येन॑ व॒यं स॑हसाव॒न् मदे॒मावि॑क्षितास॒ आयु॑षा सु॒वीरा॑ः॥ २४॥**

**म॒हः। न॒ः। अ॒ग्ने। सु॒वि॒तस्य॑। वि॒द्वान्। र॒यिम्। सू॒रिऽभ्य॑ः। आ। व॒ह॒। बृ॒हन्त॑म्। येन॑। व॒यम्। स॒ह॒सा॒ऽव॒न्। म॒दे॒म॒। अवि॑ऽक्षितासः। आ॒यु॑षा। सु॒ऽवीरा॑ः॥२४॥**

**पदार्थः**-**(महः) (नः)** अस्मभ्यम् **(अग्ने)** दातः **(सुवितस्य)** प्रेरितस्य **(विद्वान्) (रयिम्) (सूरिभ्यः)** विद्वद्भ्यः **(आ) (वह)** समन्तात्प्रापय। अत्र **द्व्यचोऽतस्तिङ** इति दीर्घः। **(बृहन्तम्)** महान्तम् **(येन) (वयम्) (सहसावन्)** बलेनयुक्त **(मदेम)** आनन्देम **(अविक्षितासः)** अविक्षीणः क्षयरहिताः **(आयुषा)** जीवनेन **(सुवीराः)** शोभनैर्वीरैरुपेताः॥२४॥

**अन्वयः**-हे सहसावन्नग्ने विद्वाँस्त्वं महः सुवितस्य कर्ता सन् सूरिभ्यो बृहन्तं रयिं न आ वह येनाविक्षितासः सुवीराः सन्तो वयमायुषा मदेम॥२४॥

**भावार्थः**-ये मनुष्या विद्वद्भ्यो महतीं विद्यां गृह्णन्ति ते सर्वदा वर्धमानाः सन्तः पुष्कलां श्रियं दीर्घमायुश्च प्राप्नुवन्ति॥२४॥

**पदार्थः**-हे **(सहसावन्)** बल से युक्त **(अग्ने)** दानशीलपुरुष **(विद्वान्)** विद्वान्! आप **(महः)** महान् **(सुवितस्य)** प्रेरणा किये कर्म के कर्ता होते हुए **(सूरिभ्यः)** विद्वानों से **(बृहन्तम्)** बड़े **(रयिम्)** धन को **(नः)** हमारे लिये **(आ, वह)** अच्छे प्रकार प्राप्त कीजिये **(येन)** जिस से **(अविक्षितासः)** क्षीणतारहित **(सुवीराः)** सुन्दर वीरों से युक्त हुए **(वयम्)** हम लोग **(आयुषा)** जीवन के साथ **(मदेम)** आनन्दित रहें॥२४॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य विद्वानों से बड़ी विद्या को ग्रहण करते हैं, वे सब काल में वृद्धि को प्राप्त होते हुए पूर्ण लक्ष्मी और दीर्घ अवस्था को पाते हैं॥२४॥

**पुनर्विद्वान् कीदृशः स्यादित्युच्यते।**



www.9009.co.in

फिर विद्वान् कैसा हो, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**नू मे ब्रह्मांण्यग्न उच्छंशाधि त्वं देव मघवद्भ्यः सुषूदः।**

**रातौ स्यामोभयास आ ते यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥२५॥२७॥१॥**

**नु। मे। ब्रह्माणि। अग्ने। उत्। शशाधि। त्वम्। देव। मघवत्ऽभ्यः। सुसूदः। रातौ। स्याम। उभयासः। आ। ते। यूयम्। पात। स्वस्तिऽभिः। सदा। नः॥२५॥**

**पदार्थः**-(**नू**) सद्यः। अत्र **ऋचि तुनुघे**ति दीर्घः। (**मे**) मह्यम् (**ब्रह्माणि**) अन्नानि (**अग्ने**) विद्वन् (**उत्**) उत्कृष्टम् (**शशाधि**) शिक्षय (**त्वम्**) (**देव**) धनं कामयमान (**मघवद्भ्यः**) बहुधनयुक्तेभ्यः (**सुषूदः**) देहि (**रातौ**) सुपात्रेभ्यो दाने (**स्याम**) भवेम (**उभयासः**) दातृग्रहीतारः (**आ**) (**ते**) तुभ्यम् (**यूयम्**) (**पात**) रक्षत (**स्वस्तिभिः**) सुखैः (**सदा**) (**नः**) अस्मान्॥२५॥

**अन्वयः**-हे देवाऽग्ने! त्वं मघवद्भ्यो ब्रह्माणि म उच्छशाधि सुषूदो वयं ते तुभ्यमेव दद्याम येनोभयासो वयं रातौ स्याम यूयं स्वस्तिभिर्नो नु सदाऽऽपात॥२५॥

**भावार्थः**-हे राजन्! भवान्न्यायेन सर्वानस्मान् शिक्षस्वास्मत्तो यथाविधि करं गृहाण पक्षपातं विहाय सर्वैस्सह वर्त्तस्व येन राजपुरुषाः प्रजाजनाश्च वयं सदा सुखिनः स्यामेति॥२५॥

अत्राग्निविद्वच्छ्रोत्र्युपदेशकेश्वरराजप्रजाकृत्यवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या।

अस्मिन्नध्यायेऽश्विद्यावापृथिव्यग्निविद्युदुषःसेनायुद्धमित्रावरुणेन्द्रावरुणेन्द्रावैष्णवद्यावापृथिवी-सवित्रिन्द्रासोमयज्ञसोमारुद्रधनुराद्यग्न्यादिगुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वाध्यायेन सह सङ्गतिरस्तीति वेद्यम्।

**इति श्रीमत् परमविदुषां परमहंसपरिव्राजकाचार्याणां विरजानन्दसरस्वतीस्वामिनां शिष्येण परमहंसपरिव्राजकाचार्येण श्रीमद्दयानन्दसरस्वतीस्वामिना विरचिते संस्कृताऽऽर्यभाषाभ्यां समन्विते सुप्रमाणयुक्त ऋग्वेदभाष्ये पञ्चमाष्टके प्रथमोऽध्यायः सप्तविंशो वर्गः सप्तमे मण्डले प्रथमं सूक्तं च समाप्तम्॥**

**पदार्थः**-हे (**देव**) धन की कामना करने वाले (**अग्ने**) विद्वन्! (**त्वम्**) आप (**मघवद्भ्यः**) बहुत धनयुक्त पुरुषों से (**ब्रह्माणि**) अन्नों की (**मे**) मेरे लिये (**उत्, शशाधि**) उत्कृष्टतापूर्वक शिक्षा कीजिये और (**सुषूदः**) दीजिये हम लोग (**ते**) तुम्हारे लिये ही देवें जिससे (**उभयासः**) देने लेने वाले दोनों हम लोग (**रातौ**) सुपात्रों को दान देने के लिये प्रवृत्त (**स्याम**) हों (**यूयम्**) तुम लोग (**स्वस्तिभिः**) सुखों से (**नः**) हमारी (**नु**) शीघ्र (**सदा**) सब काल में, (**आ, पात**) अच्छे प्रकार रक्षा करो॥२५॥

**भावार्थः**-हे राजपुरुष! आप न्यायपूर्वक हम सब लोगों को शिक्षा कीजिये, हम से यथायोग्य कर लिया कीजिये, पक्षपात छोड़ के सब के साथ वर्तिये, जिससे राजपुरुष और हम प्रजाजन सदा सुखी हों॥२५॥



www.9009.co.in

इस सूक्त में अग्नि, विद्वान्, श्रोता, उपदेशक, ईश्वर और राजप्रजा के कृत्य का वर्णन होने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

इस अध्याय में अश्वि, द्यावापृथिवी, अग्नि, विद्युत्, उषःकाल, सेनायुद्ध, मित्रावरुण, इन्द्रावरुण, इन्द्रावैष्णव, द्यावापृथिवी, सविता, इन्द्रासोम, यज्ञ, सोमारुद्र, धनुष् आदि और अग्नि आदि के गुणों का वर्णन होने से इस अध्याय के अर्थ की पूर्व अध्याय के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये।

**यह श्रीमत् परमविद्वान् परमहंस परिव्राजकाचार्य्य विरजानन्द सरस्वती स्वामी जी के शिष्य परमहंस परिव्राजाकाचार्य श्रीमद्दयानन्द सरस्वती स्वामि से विरचित संस्कृतार्यभाषा से समन्वित सुप्रमाणयुक्त ऋग्वेदभाष्य में पञ्चमाष्टक में प्रथम अध्याय और सत्ताईसवां वर्ग तथा सप्तम मण्डल में प्रथम सूक्त भी समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

॥अथ पञ्चमाष्टके द्वितीयोऽध्यायः॥

**ओ३म् विश्वा॑नि देव सवितर्दुरि॒तानि॒ परा॑ सुव। यद्भ॒द्रं तन्न॒ आ सु॑व॥ ऋ०५.८२.५॥**

**अथैकादशर्चस्य द्वितीयस्य सूक्तस्य वसिष्ठ ऋषिः। आप्री देवता। १-९ विराट्त्रिष्टुप् २, ४ त्रिष्टुप्। ३, ६-८, १०, ११ निचृत्त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः। ५ पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः॥**

***अथ विद्वांसः किंवद्वर्त्तेरन्नित्याह॥***

अब पञ्चमाष्टक के द्वितीयाऽध्याय का आरम्भ है। इसके प्रथम मन्त्र में विद्वान् लोग किसके तुल्य वर्तें, इस विषय का उपदेश करते हैं।

**जु॒षस्व॑ नः स॒मिध॑मग्ने अ॒द्य शोचा॑ बृ॒हद्य॑ज॒तं धू॒ममृ॒ण्वन्।**

**उप॑ स्पृश दि॒व्यं सान॒ु स्तूपैः॑ सं र॒श्मिभि॑स्ततन॒ः सूर्य॑स्य॥ १॥**

**जु॒षस्व॑। न॒ः। स॒म्ऽइध॑म्। अ॒ग्ने॒। अ॒द्य। शोच॑। बृ॒हत्। य॒ज॒तम्। धू॒मम्। ऋ॒ण्वन्। उप॑। स्पृ॒श॒। दि॒व्यम्। सानु॑। स्तूपैः॑। सम्। र॒श्मिऽभिः॑। त॒त॒न॒ः। सूर्य॑स्य॥ १॥**

**पदार्थः**-(**जुषस्व**) सेवस्व (**नः**) अस्माकम् (**समिधम्**) काष्ठविशेषम् (**अग्ने**) अग्निरिव विद्वन् (**अद्य**) इदानीम् (**शोचा**) पवित्रीकुरु। अत्र **द्व्यचोऽतस्तिङ** इति दीर्घः। (**बृहत्**) महत् (**यजतम्**) सङ्गन्तव्यम् (**धूमम्**) (**ऋण्वन्**) प्रसाध्नुवन् (**उप**) (**स्पृश**) (**दिव्यम्**) कमनीयं शुद्धं वा (**सानु**) सम्भजनीयं धनम् (**स्तूपैः**) सन्तप्तैः (**सम्**) (**रश्मिभिः**) किरणैः (**ततनः**) व्याप्नुहि (**सूर्यस्य**) सवितुः॥ १॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! त्वमग्निः समिधमिव नः प्रजा जुषस्व पावकइवाद्य बृहद्यजतं शोचा धूममृण्वन्नाग्निरिव सत्यानि कार्य्याण्युपस्पृश सूर्यस्य स्तूपै रश्मिभिर्वायुवद् दिव्यं सानु सं ततनः॥ १॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे विद्वांसो! यथाग्निः समिद्भिः प्रदीप्यते तथाऽस्मान् विद्यया प्रदीपयन्तु यथा सूर्यस्य रश्मयस्सर्वानुपस्पृशन्ति तथा भवतामुपदेशा अस्मानुपस्पृशन्तु॥ १॥

**पदार्थः**-हे (**अग्ने**) अग्नि के तुल्य तेजस्वि विद्वन्! आप [अग्नि] जैसे (**समिधम्**) समिधा को, वैसे (**नः**) हमारी प्रजा का (**जुषस्व**) सेवन कीजिये तथा अग्नि के तुल्य (**अद्य**) आज (**बृहत्**) बड़े (**यजतम्**) सङ्ग करने योग्य व्यवहार को (**शोचा**) पवित्र कीजिये और (**धूमम्**) धूम को (**ऋण्वन्**) प्रसिद्ध करते हुए अग्नि के तुल्य सत्य कामों का (**उप, स्पृश**) समीप से स्पर्श कीजिये तथा (**सूर्यस्य**)



www.9009.co.in

सूर्य के **(स्तृपैः)** सम्यक् तपे हुए **(रश्मिभिः)** किरणों से वायु के तुल्य **(दिव्यम्)** कामना के योग्य वा शुद्ध **(सानु)** सेवने योग्य धन को **(सम्, ततनः)** सम्यक् प्राप्त कीजिये॥१॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे विद्वानो! जैसे अग्नि समिधाओं से प्रदीप्त होता, वैसे हमको विद्या से प्रदीप्त कीजिये। जैसे सूर्य कि किरणें सब का स्पर्श करती हैं, वैसे आप लोगों के उपदेश हम को प्राप्त होवें॥१॥

**पुनर्मनुष्यैः किं सेवनीयमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को किसका सेवन करना चाहिये, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**नराशंसस्य महिमानमेषामुप स्तोषाम यजतस्य यज्ञैः।**

**ये सुक्रतवः शुचयो धियं धाः स्वदन्ति देवा उभयानि हव्या॥२॥**

**नराशंसस्य। महिमानम्। एषाम्। उप। स्तोषाम। यजतस्य। यज्ञैः। ये। सुऽक्रतव। शुचयः। धियम्ऽधाः। स्वदन्ति। देवाः। उभयानि। हव्या॥२॥**

पदार्थः-**(नराशंसस्य)** नरैराशंसितस्य **(महिमानम्)** **(एषाम्)** **(उप)** **(स्तोषाम)** प्रशंसेम **(यजतस्य)** सङ्गन्तव्यस्य **(यज्ञैः)** सङ्गन्तव्यैस्साधनैः **(ये)** **(सुक्रतवः)** उत्तमप्रज्ञाः **(शुचयः)** पवित्राः **(धियन्धाः)** उत्तमकर्मधराः **(स्वदन्ति)** सुस्वादमदन्ति **(देवाः)** विद्वांसः **(उभयानि)** शरीरात्मपुष्टिकराणि **(हव्या)** हव्यान्यत्तुमर्हाणि॥२॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! ये सुक्रतवः शुचयो धियन्धा देवा उभयानि हव्या स्वदन्ति यज्ञैर्यजतस्य नराशंसस्य भोगान्भुञ्जत एषां महिमानं वयमुप स्तोषाम॥२॥

**भावार्थः**-हे मनुष्याः! सदैव विद्वदनुकरणेन शरीरात्मबलवर्धकान्यन्नपानानि सेवनीयानि येन युष्माकं महिमा वर्धेत॥२॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(ये)** जो **(सुक्रतवः)** उत्तम प्रज्ञा वाले **(शुचयः)** पवित्र **(धियन्धाः)** उत्तम कर्मों के धारण करने वाले **(देवाः)** विद्वान् लोग **(उभयानि)** शरीर और आत्मा के पुष्टिकारक **(हव्या)** भोजन के योग्य पदार्थों को **(स्वदन्ति)** अच्छे स्वादपूर्वक खाते और **(यज्ञैः)** सङ्गति के योग्य साधनों से **(यजतस्य)** सङ्ग करने योग्य **(नराशंसस्य)** मनुष्यों से प्रशंसा किये हुए तथा अन्न का भोग करने वाले के **(एषाम्)** इनकी **(महिमानम्)** महिमा की हम लोग **(उप, स्तोषाम)** समीप प्रशंसा करें॥२॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! तुम को चाहिये कि सदैव विद्वानों के अनुकरण से शरीर और आत्मा के बल को बढ़ाने वाले खानपानों का सेवन किया करो, जिससे तुम्हारी महिमा बड़े॥२॥

**पुनर्मनुष्याः कं सत्कुर्य्युरित्याह॥**

फिर मनुष्य किसका सत्कार करें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**ईळेन्यं वो असुरं सुदक्षमन्तर्दूतं रोदसी सत्यवाचम्।**



www.9009.co.in

**मनुष्वदग्निं मनुना समिद्धं समध्वराय सदमिन्महेम॥३॥**

**ईळेन्यम्। वः। असुरम्। सुऽदक्षम्। अन्तः। दूतम्। रोदसी इति। सत्यऽवाचम्। मनुष्वत्। अग्निम्। मनुना। सम्ऽइद्धम्। सम्। अध्वराय। सदम्। इत्। महेम॥३॥**

**पदार्थः**-(**ईळेन्यम्**) प्रशंसनीयम् (**वः**) युष्माकम् (**असुरम्**) मेघमिव वर्त्तमानम् (**सुदक्षम्**) सुष्ठुबलचातुर्यम् (**अन्तः**) मध्ये (**दूतम्**) यो दुनोति तम् (**रोदसी**) द्यावापृथिव्यौ (**सत्यवाचम्**) सत्या वाग्यस्य तम् (**मनुष्वत्**) मनुष्येण तुल्यम् (**अग्निम्**) कार्यसाधकं पावकम् (**मनुना**) मननशीलेन विदुषा (**समिद्धम्**) प्रदीपनीकृतम् (**सम्**) सम्यक् (**अध्वराय**) अहिंसिताय व्यवहाराय (**सदम्**) सीदन्ति यस्मिँस्तम् (**इत्**) इव (**महेम**) सत्कुर्याम॥३॥

**अन्वयः**-हे विद्वांसो! यथा वयं वोऽन्तरसुरमिव सुदक्षं रोदसी दूतमग्निमिव सत्यवाचमीळेऽन्यं मनुष्वन्मनुनाऽध्वराय समिद्धं सदमग्निमिव विद्वांसमिन्महेम तथा यूयमप्येनं सत्कुरुत॥३॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! ये मघवदुपकारकानग्निवत्प्रकाशितविद्यान् धर्मिष्ठान् विदुषः सत्कुर्वन्ति ते सर्वत्र सत्कृता भवन्ति॥३॥

**पदार्थः**-हे विद्वानो! जैसे हम लोग (**वः**) आपके (**अन्तः**) बीच में (**असुरम्**) मेघ के तुल्य वर्त्तमान (**सुदक्षम्**) सुन्दर बल और चतुराई से युक्त (**रोदसी**) सूर्य-भूमि और (**दूतम्**) उपताप देनेवाले (**अग्निम्**) कार्य को सिद्ध करने वाले अग्नि को जैसे, वैसे (**सत्यवाचम्**) सत्य बोलने वाले (**ईळेन्यम्**) प्रशंसा योग्य (**मनुष्वत्**) मनुष्य के तुल्य (**मनुना**) मननशील विद्वान् के साथ (**अध्वराय**) हिंसारहित व्यवहार के लिये (**समिद्धम्**) प्रदीप्त किये (**सदम्**) जिसके निकट बैठें उस अग्नि के तुल्य विद्वान् को (**सम्, इत्, महेम**) सम्यक् ही सत्कार करें, वैसे तुम लोग भी इस का सत्कार करो॥३॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो मेघ के तुल्य उपकारक, अग्नि के तुल्य प्रकाशित विद्यावाले, धर्मात्मा, विद्वानों का सत्कार करते हैं, वे सर्वत्र सत्कार पाते हैं॥३॥

**पुनर्मनुष्याः कीदृशा भवेयुरित्याह॥**

फिर मनुष्य कैसे हों, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**सपर्यवो भरमाणा अभिज्ञु प्र वृञ्जते नमसा बर्हिरग्नौ।**

**आजुह्वाना घृतपृष्ठं पृषद्वदध्वर्यवो हविषा मर्जयध्वम्॥४॥**

**सपर्यवः। भरमाणाः। अभिऽज्ञु। प्र। वृञ्जते। नमसा। बर्हिः। अग्नौ। आऽजुह्वानाः। घृतऽपृष्ठम्। पृषत्ऽवत्। अध्वर्यवः। हविषा। मर्जयध्वम्॥४॥**

**पदार्थः**-(**सपर्यवः**) सत्यं सेवमानाः (**भरमाणाः**) विद्यां धरन्तः (**अभिज्ञु**) विदुषां सन्निधौ कृते अभिमुखे जानुनी यैस्ते (**प्र**) (**वृञ्जते**) त्यजन्ति (**नमसा**) अन्नेन सह (**बर्हिः**) उत्तमं घृताऽऽदिकम्



www.9009.co.in

**(अग्नौ)** पावके **(आजुह्वानाः)** समन्ताद्धोमस्य कर्त्तारः **(घृतपृष्ठम्)** घृतं पृष्ठमिव यस्य तम् **(पृषद्वत्)** सेचकवत् **(अध्वर्यवः)** अध्वरमहिंसां कामयमानाः **(हविषा)** होमसामग्र्या **(मर्जयध्वम्)** शोधयत॥४॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथाऽभिज्ञु विद्यार्थिनो विद्वांसो भूत्वा सपर्यवो भरमाणा नमसा सह बर्हिरग्नौ प्र वृञ्जते तथा घृतपृष्ठमाजुह्वानाः पृषद्वदध्वर्यवो हविषा जनाऽन्तःकरणानि यूयं मर्जयध्वम्॥४॥

**भावार्थः**-अत्रोपमावाचकलुप्तोपमालङ्कारः। ये विद्वांसो यजमानवन्मनुष्याणामन्तःकरणान्यात्मन- श्चाऽध्यापनोपदेशाभ्यां शोधयन्ति ते स्वयं शुद्धा भूत्वा सर्वोपकारका भवन्ति॥४॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे **(अभिज्ञु)** विद्वानों के समीप पग पीछे करके सन्मुख घोटूं जिन के हों वे विद्यार्थी विद्वान् होकर **(सपर्यवः)** सत्य का सेवन करते और **(भरमाणाः)** विद्या को धारण करते हुए **(नमसा)** अन्न के साथ **(बर्हिः)** उत्तम घृत आदि को **(अग्नौ)** अग्नि में **(प्र, वृञ्जते)** छोड़ते हैं, वैसे **(घृतपृष्ठम्)** घृत जिसके पीठ के तुल्य है उस अग्नि को **(आजुह्वानाः)** अच्छे प्रकार होमयुक्त करते हुए **(पृषद्वत्)** सेवनकर्त्ता के तुल्य **(अध्वर्यवः)** अहिंसाधर्म चाहते हुए **(हविषा)** होम सामग्री से मनुष्यों के अन्तःकरणों को तुम लोग **(मर्जयध्वम्)** शुद्ध करो॥४॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में **[**उपमा**]** वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो विद्वान् लोग यजमानों के तुल्य मनुष्यों के अन्तःकरण और आत्माओं को अध्यापन और उपदेश से शुद्ध करते हैं, वे आप शुद्ध होकर सब के उपकारक होते हैं॥४॥

**पुनर्विद्वांसः कीदृशा भवेयुरित्याह॥**

फिर विद्वान् लोग कैसे हों, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**स्वाध्यो३वि दुरो देवयन्तोऽशिश्रयू रथयुर्देवताता।**

**पूर्वी शिशुं न मातरा रिहाणे समग्रुवो न समनेष्वञ्जन्॥५॥१॥**

**सुऽआध्यः। वि। दुरः। देवऽयन्तः। अशिश्रयुः। रथऽयुः। देवऽताता। पूर्वी इति। शिशुम्। न। मातरा। रिहाणे इति। सम्। अग्रुवः। न। समनेषु। अञ्जन्॥५॥**

**पदार्थः**-**(स्वाध्यः)** सुष्ठु चिन्तयन्तः **(वि)** **(दुरः)** द्वाराणि **(देवयन्तः)** देवान् विदुषः कामयन्तः **(अशिश्रयुः)** श्रयन्ति **(रथयुः)** रथं कामयमानः **(देवताता)** देवैरनुष्ठातव्ये सङ्गन्तव्ये व्यवहारे **(पूर्वी)** पूर्व्यौ **(शिशुम्)** बालकम् **(न)** इव **(मातरा)** मातापितरौ **(रिहाणे)** स्वादयन्त्यौ **(सम्)** **(अग्रुवः)** अग्रं गच्छन्त्यः सेनाः **(न)** इव **(समनेषु)** सङ्ग्रामेषु **(अञ्जन्)** गच्छन्ति॥५॥

**अन्वयः**-ये स्वाध्यो देवयन्तो जना देवताता रथयुरिव रिहाणे पूर्वी मातरा शिशुं न समनेष्वग्रुवो न दुरो व्यशिश्रयुः समञ्जँस्ते सुखकारकाः स्युः॥५॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-अत्रोपमावाचकलुप्तोपमालङ्कारः। ये मनुष्याः सम्यग्विचारयन्तो विद्वत्सङ्गप्रियाः यज्ञवत्परोपकारका मातापितृवन्सर्वानुन्नयन्तः संग्रामाञ्जयन्तो न्यायेन प्रजाः पालयन्ति ते सदा सुखिनो जायन्ते॥५॥

**पदार्थः**-जो **(स्वाध्यः)** सुन्दर विचार करते **(देवयन्तः)** विद्वानों को चाहते हुए जन **(देवताता)** विद्वानों के अनुष्ठान या सङ्ग करने योग्य व्यवहार में **(रथयुः)** रथ को चाहने वाले के तुल्य **(रिहाणे)** स्वाद लेते हुए **(पूर्वी)** अपने से पूर्व हुए **(मातरा)** माता-पिता **(शिशुम्, न)** बालक के तुल्य **(समनेषु)** संग्रामों में **(अग्रुवः)** आगे चलती हुई सेना**[एँ]** **(न)** जैसे, वैसे **(दुरः)** द्वारों का **(वि, अशिश्रयुः)** विशेष आश्रय करते हैं और **(सम्, अञ्जन्)** चलते हैं, वे सुखकरने वाले होवें॥५॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमावाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो मनुष्य सम्यक् विचार करते हुए, विद्वानों के सङ्ग में प्रीति रखने वाले यज्ञ के तुल्य परोपकारी, माता-पिता के तुल्य सब की उन्नति करते और संग्रामों को जीतते हुए, न्याय से प्रजाओं का पालन करते हैं, वे सदा सुखी होते हैं॥५॥

**पुनर्विदुष्यः स्त्रियः कीदृश्यो भवेयुरित्याह॥**

फिर विदुषी स्त्रियाँ कैसी हों, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**उत योषणे दिव्ये मही न उषासानक्ता सुदुघेव धेनुः।**

**बर्हिषदा पुरुहूते मघोनी आ यज्ञिये सुविताय श्रयेताम्॥६॥**

**उत। योषणे इति। दिव्ये इति। मही इति। नः। उषासानक्ता। सुदुघाऽइव। धेनुः। बर्हिऽसदा। पुरुहूते इति पुरुऽहूते। मघोनी इति। आ। यज्ञिये इति। सुविताय। श्रयेताम्॥६॥**

**पदार्थः**-**(उत)** अपि **(योषणे)** विदुष्यौ स्त्रियाविव **(दिव्ये)** शुद्धस्वरूपे **(मही)** महत्यौ **(नः)** अस्मभ्यम् **(उषासानक्ता)** रात्रिप्रातर्वेले **(सुदुघेव)** सुष्ठुकामप्रपूरिकेव **(धेनुः)** गौर्विद्यायुक्ता वाग्वा **(बर्हिषदा)** ये बर्हिष्यन्तरिक्षे सीदन्ति **(पुरुहूते)** बहुभिर्व्याख्याते **(मघोनी)** बहुधननिमित्ते **(आ)** **(यज्ञिये)** यज्ञसम्बन्धिनि कर्मणि **(सुविताय)** ऐश्वर्याय **(श्रयेताम्)** सेवेयाताम्॥६॥

**अन्वयः**-हे विद्वांसो! ये नो यज्ञिये मघोनी योषणे इव दिव्ये मही धेनुः सुदुघेवोत बर्हिषदा पुरुहूते उषासानक्ता न आश्रयेतां ते सुविताय यथावत्सेवनीये॥६॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! याः स्त्रियो दिव्यविद्यागुणऽन्विता रात्र्युषर्वत्सुखप्रदाः सत्या वागिव प्रियवचनाः स्युस्ता एव यूयमाश्रयत॥६॥

**पदार्थः**-हे विद्वानो! जो **(नः)** हमारे लिये **(यज्ञिये)** सम्बन्धी कर्म में **(मघोनी)** बहुत धन मिलने के निमित्त **(योषणे)** उत्तम स्त्रियों के तुल्य **(दिव्ये)** शुद्धस्वरूप **(मही)** बड़ी **(धेनुः)** विद्यायुक्त वाणी वा गौ **(सुदुघेव)** सुन्दर प्रकार कामनाओं को पूर्ण करने वाली के तुल्य **(उत)** और **(बर्हिषदा)**



www.9009.co.in

अन्तरिक्ष में रहने वाली **(पुरुहूते)** बहुतों से व्याख्यान की गई **(उषासानक्ता)** दिन रात रूप वेला हम को **(आ, श्रयेताम्)** आश्रय करें वे दिन रात **(सुविताय)** ऐश्वर्य के लिये यथावत् सेवने योग्य हैं॥६॥

**भावार्थ:**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जो स्त्रियाँ उत्तम विद्या और गुणों से युक्त, रात्रि दिन के तुल्य सुख देने वाली सत्य वाणी के तुल्य प्रिय बोलने वाली हों उन्हीं का तुम लोग आश्रय करो॥६॥

**पुनस्तौ दम्पती कीदृशौ भवेतामित्याह॥**

फिर वे स्त्री-पुरुष कैसे हों, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**विप्रा॑ य॒ज्ञेषु॒ मानु॑षेषु का॒रू मन्ये॑ वां जा॒तवे॑दसा॒ यज॑ध्यै।**

**ऊ॒र्ध्वं नो॑ अध्व॒रं कृ॒तं॑ हवे॒षु ता दे॒वेषु॑ वनथो॒ वार्या॑णि॥७॥**

**विप्रा॑। य॒ज्ञेषु॑। मानु॑षेषु। का॒रू इति॑। मन्ये॑। वा॒म्। जा॒तऽवे॑दसा। यज॑ध्यै। ऊ॒र्ध्वम्। न॒ः। अ॒ध्व॒रम्। कृ॒त॒म्। हवे॑षु। ता। दे॒वेषु॑। व॒न॒थ॒ः। वार्या॑णि॥७॥**

**पदार्थ:**-**(विप्रा)** विप्रौ मेधाविनौ स्त्रीपुरुषौ **(यज्ञेषु)** सत्सु कर्मसु **(मानुषेषु)** मनुष्यसम्बन्धिषु **(कारू)** शिल्पविद्याकुशलौ पुरुषार्थिनौ **(मन्ये)** **(वाम्)** युवाम् **(जातवेदसा)** प्राप्तप्रकटविद्यौ **(यजध्यै)** सङ्गन्तुम् **(ऊर्ध्वम्)** उत्कृष्टम् **(नः)** अस्माकम् **(अध्वरम्)** अहिंसनीयं गृहाश्रमादिव्यवहारम् **(कृतम्)** कुरुतम् **(हवेषु)** गृह्णन्ति येषु पदार्थेषु **(ता)** तौ **(देवेषु)** दिव्यगुणेषु विद्वत्सु वा **(वनथः)** संविभजथः **(वार्याणि)** वर्त्तुमर्हाणि॥७॥

**अन्वय:**-हे स्त्रीपुरुषौ! यौ मानुषेषु यज्ञेषु कारू जातवेदसा विप्रा युवां नो हवेष्वध्वरमूर्ध्वं कृतं देवेषु वार्याणि वनथस्ता वां यजध्या अहं मन्ये तथा युवां मां मन्येथाम्॥७॥

**भावार्थ:**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यथा कृतब्रह्मचर्यविद्यौ क्रियाकुशलौ विद्वांसौ स्त्रीपुरुषौ सर्वाणि गृहकृत्यान्यलङ्कर्तुं शक्नुतस्तौ सङ्गन्तुं योग्यौ भवतस्तथा यूयमपि भवत॥७॥

**पदार्थ:**-हे स्त्रीपुरुषो! जो **(मानुषेषु)** मनुष्यसम्बन्धी **(यज्ञेषु)** सत्कर्मों में **(कारू)** वा शिल्पविद्या में कुशल वा पुरुषार्थी **(जातवेदसा)** विद्या को प्रसिद्ध प्राप्त हुए **(विप्रा)** बुद्धिमान् तुम दोनों **(नः)** हमारे **(हवेषु)** जिन में ग्रहण करते उन घरों में **(अध्वरम्)** रक्षा करने योग्य गृहाश्रमादि के व्यवहार को **(ऊर्ध्वम्)** उन्नत **(कृतम्)** करो **(देवेषु)** दिव्य गुणों वा विद्वानों में **(वार्याणि)** ग्रहण करने योग्य पदार्थों को **(वनथः)** सम्यक् सेवन करो **(ता)** वे **(वाम्)** तुम दोनों **(यजध्यै)** सङ्ग करने के अर्थ मैं **(मन्ये)** मानता, वैसे तुम दोनों मुझ को मानो॥७॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जैसे ब्रह्मचर्यसेवन से विद्या को प्राप्त हुए क्रिया में कुशल विद्वान् स्त्रीपुरुष सब घर के कामों को शोभित करने को समर्थ होते हैं और वे संग करने योग्य होते हैं, वैसे तुम लोग भी होओ॥७॥

**पुनः स्त्रीपुरुषाः कीदृशा भवेयुरित्याह॥**

फिर स्त्री-पुरुष कैसे हो, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**आ भार॑ती॒ भार॑तीभिः स॒जोषा॒ इळा॒ दे॒वैर्म॑नु॒ष्ये॑भिर॒ग्निः।**

**सर॑स्वती सारस्व॒तेभि॑र॒र्वाक् ति॒स्रो दे॒वीर्ब॒र्हिरे॒दं स॑दन्तु॥८॥**

**आ। भार॑ती। भार॑तीभिः। स॒ऽजोषाः॑। इळा॑। दे॒वैः। म॒नु॒ष्ये॑भिः। अ॒ग्निः। सर॑स्वती। सा॒र॒स्व॒तेभिः॑। अ॒र्वाक्। ति॒स्रः। दे॒वीः। ब॒र्हिः। आ। इ॒दम्। स॒द॒न्तु॥८॥**

**पदार्थः**-**(आ)** समन्तात् **(भारती)** सद्यः शास्त्राणि धृत्वा सर्वस्य पालिका वागिव विदुषी **(भारतीभिः)** तादृशीभिर्विदुषीभिः **(सजोषाः)** समानप्रीतिसेविका **(इळा)** स्तोतुमर्हा **(देवैः)** सत्यवादिभिर्विद्वद्भिः **(मनुष्येभिः)** अनृतवादिभिर्जनैः। **सत्यमेव देवा अनृतं मनुष्याः** (शत०ब्रा०१.१.१.४) **(अग्निः)** पावक इव **(सरस्वती)** विज्ञानयुक्ता वाक् **(सारस्वतेभिः)** सरस्वत्यां कुशलैः **(अर्वाक्)** पुनः **(तिस्रः)** त्रिविधाः **(देवीः)** दिव्याः **(बर्हिः)** उत्तमं गृहं शरीरं वा **(इदम्)** प्रत्यक्षम् **(सदन्तु)** प्राप्नुवन्तु॥८॥

**अन्वयः**-हे विद्वांसो! यथा भारतीभिर्भारती सजोषा देवैर्मनुष्येभिरिळा सारस्वतेभिस्सरस्वत्यर्वागग्निरिव शुद्धास्तिस्रो देवीरिदं बर्हिरा सदन्तु तथैव यूयं विद्वद्भिः सहाऽऽगच्छध्वम्॥८॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यदि यूयं प्रशस्तां वाणी प्रज्ञां च प्राप्नुयुस्तर्हि सूर्य्यवत् सुप्रकाशिता भूत्वाऽस्मिञ्जगति कल्याणकरा भवथ॥८॥

**पदार्थः**-हे विद्वानो! जैसे **(भारतीभिः)** तुल्य विदुषी स्त्रियों के साथ **(भारती)** शीघ्र शास्त्रों को धारण कर, वाणी के तुल्य सब की रक्षक विदुषी **(सजोषाः)** तुल्य प्रीति को सेवने वाली **(देवैः)** सत्यवादी विद्वानों **(मनुष्येभिः)** और मिथ्यावादी मनुष्यों से **(इळा)** स्तुति के योग्य **(सारस्वतेभिः)** वाणी विद्या में कुशलों से **(सरस्वती)** विज्ञानयुक्त वाणी **(अर्वाक्)** पुनः **(अग्निः)** अग्नि के तुल्य शुद्ध **(तिस्रः)** तीन प्रकार की **(देवीः)** उत्तम स्त्रियाँ **(इदम्)** इस **(बर्हिः)** उत्तम घर वा शरीर को **(आ, सदन्तु)** अच्छे प्रकार प्राप्त हों, वैसे ही तुम लोग विद्वानों के साथ **(आ)** आओ॥८॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे मनुष्यो। यदि तुम लोग प्रशंसित वाणी और बुद्धि को प्राप्त हो तो सूर्य के तुल्य प्रकाशित होकर इस जगत् में कल्याण करने वाले होओ॥८॥

**पुनर्मनुष्यैः किं प्राप्तव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को क्या प्राप्त करना चाहिये, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥



www.9009.co.in

**तन्न॑स्तुरीप॒मध॑ पोषयि॒त्नु देव॑ त्वष्ट॒र्वि र॑रा॒णः स्य॑स्व।**

**यतो॑ वी॒रः क॑र्म॒ण्य॑ः सु॒दक्षो॑ यु॒क्तग्रा॑वा॒ जाय॑ते दे॒वका॑मः॥९॥**

**तत्। न॒ः। तु॒रीप॑म्। अध॑। पो॒ष॒यि॒त्नु। देव॑। त्व॒ष्ट॒ः। वि। र॒रा॒णः। स्य॒स्वेति॑ स्यस्व। यत॑ः। वी॒रः। क॒र्म॒ण्य॑ः। सु॒ऽदक्ष॑ः। यु॒क्तग्रा॑वा। जाय॑ते। दे॒वऽका॑मः॥९॥**

**पदार्थः**-(**तत्**) अध्यापनासनम् (**नः**) अस्माकम् (**तुरीपम्**) क्षिप्रम् (**अध**) अथ (**पोषयित्नु**) पोषकम् (**देव**) विद्वन् (**त्वष्टः**) विद्याप्रापक (**वि**) (**रराणः**) विद्या ददत् सन् (**स्यस्व**) विद्यां पारं गमय (**यतः**) (**वीरः**) (**कर्मण्यः**) कर्मसु कुशलः (**सुदक्षः**) सुष्ठु बलोपेतः (**युक्तग्रावा**) युक्तो योजितो ग्रावा मेघो येन सः (**जायते**) (**देवकामः**) देवानां विदुषां काम इच्छा यस्य सः॥९॥

**अन्वयः**-हे त्वष्टर्देव! वि रराणस्त्वं नस्तत्पोषयित्नु तुरीपं स्यस्वाऽध यतः कर्मण्यः सुदक्षो युक्तग्रावा देवकामो वीरो जायते॥९॥

**भावार्थः**-सर्वैर्मनुष्यैः सर्वेभ्यो लाभेभ्यो विद्यालाभमुत्तमं मत्वा तत्प्राप्तव्यं सदैव विद्वत्सङ्गमनं कृत्वा सदैव कर्मानुष्ठानी जायते सः श्रेष्ठात्मबलो भवति॥९॥

**पदार्थः**-हे (**त्वष्टः**) विद्या को प्राप्त कराने वाले (**देव**) विद्वान्! (**वि, रराणः**) विशेष विद्या देते हुए (**नः**) हमारे (**तत्**) पढ़ाने के आसन को (**पोषयित्नु**) पुष्ट करने वाले (**तुरीपम्**) शीघ्र (**स्यस्व**) विद्या को पार कीजिये (**अध**) अब (**यतः**) जिससे (**कर्मण्यः**) कर्मों में कुशल (**सुदक्षः**) सुन्दर बल से युक्त (**युक्तग्रावा**) मेघ को युक्त करने और (**देवकामः**) विद्वानों की कामना करने वाला (**वीरः**) वीर पुरुष (**जायते**) प्रकट होता है॥९॥

**भावार्थः**-सब मनुष्यों को उचित है कि सब लाभों से विद्या लाभ को उत्तम मान के उसको प्राप्त हों, सदैव जो विद्वानों का सङ्ग करके सदा कर्मों का अनुष्ठान करने वाला होता है, वह श्रेष्ठ आत्मा के बल वाला होता है॥९॥

**पुनर्विद्वांसः किं कुर्य्युरित्याह॥**

फिर विद्वान् लोग क्या करें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**वन॑स्प॒तेऽव॑ सृ॒जोप॑ दे॒वान॒ग्निर्ह॒विः श॑मि॒ता सू॑दयाति।**

**सेदु॒ होता॑ स॒त्यत॑रो यजाति॒ यथा॑ दे॒वानां॒ जनि॑मानि॒ वेद॑॥१०॥**

**वन॑स्पते। अव॑। सृ॒ज। उप॑। दे॒वान्। अ॒ग्निः। ह॒विः। श॒मि॒ता। सू॒द॒या॒ति॒। सः। इत्। ऊँ॒ इति॑। होता॑। स॒त्यऽत॑रः। य॒जा॒ति॒। यथा॑। दे॒वाना॑म्। जनि॑मानि। वेद॑॥१०॥**

**पदार्थः**-(**वनस्पते**) वनानां किरणानां पालक सूर्य इव विद्वन् (**अव**) (**सृज**) (**उप**) (**देवान्**) (**अग्निः**) पावकः (**हविः**) हुतं द्रव्यम् (**शमिता**) शान्तियुक्तः (**सूदयाति**) सूदयेत् क्षरयेत् (**सः**) (**इत्**)



www.9009.co.in

एव (उ) **(होता)** दाता **(सत्यतर:)** य: सत्येन दु:खं तरति **(यजाति)** यजेत् **(यथा)** **(देवानाम्)** दिव्यानां पृथिव्यादिपदार्थानां विदुषां वा **(जनिमानि)** जन्मानि **(वेद)** जानाति॥१०॥

**अन्वय:**-हे वनस्पते! शमिता त्वं यथाग्निर्हवि: सूदयाति तथा देवानुपाऽव सृज यथा होता यजाति तथेदु सत्यतरो भव यो देवानां जनिमानि वेद स पदार्थविद्यां प्राप्तुमर्हति॥१०॥

**भावार्थ:**-अत्रोपमावाचकलुप्तोपमालङ्कार:। हे विद्वांसो! यदि भवन्त: सूर्य्यो वर्षा इव होता यज्ञमिव विद्वान् विद्या इवाऽध्यापनोपदेशाभ्यां सर्वोपकारं साध्नुयुस्तर्हि भवादृशा: केऽपि न सन्तीति वयं विजानीयाम:॥१०॥

**पदार्थ:**-हे **(वनस्पते)** किरणों के पालक सूर्य के तुल्य तेजस्वि विद्वन्! **(शमिता)** शान्तियुक्त आप **(यथा)** जैसे **(अग्नि:)** अग्नि **(हवि:)** हवन किये द्रव्य को **(सूदयाति)** छिन्न-भिन्न करे, वैसे **(देवान्)** दिव्यगुणों को **(उप, अव, सृज)** फैलाइये जैसे **(होता)** दाता **(यजाति)** यज्ञ करे, वैसे **(इत्)** ही (उ) तो **(सत्यतर:)** सत्य से दु:ख के पार होने वाले हूजिये। जो **(देवानाम्)** पृथिव्यादि दिव्य पदार्थों वा विद्वानों के **(जनिमानि)** जन्मों को **(वेद)** जानता है **(स:)** वह पदार्थविद्या को प्राप्त होने योग्य है॥१०॥

**भावार्थ:**-इस मन्त्र में उपमा और वाचकलुप्तोपमालङ्कार हैं। हे विद्वानो! यदि आप लोग सूर्य जैसे वर्षा को, होता जैसे यज्ञ को और विद्वान् जैसे विद्या को, वैसे पढ़ाने और उपदेश से सर्वोपकार को सिद्ध करें तो आप के तुल्य कोई लोग नहीं हो, यह हम जानते हैं॥१०॥

**पुनर्विद्वांस: किं कुर्य्युरित्याह॥**

फिर विद्वान् लोग क्या करें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**आ याह्यग्ने समिधानो अर्वाङिन्द्रेण देवै: सरथं तुरेभि:।**

**बर्हिर्न आस्तामदिति: सुपुत्रा स्वाहा देवा अमृता मादयन्ताम्॥११॥२॥**

**आ। याहि। अग्ने। सम्ऽइधान:। अर्वाङ्। इन्द्रेण। देवै:। सऽरथम्। तुरेभि:। बर्हि:। न:। आस्ताम्। अदिति:। सुऽपुत्रा। स्वाहा। देवा:। अमृता। मादयन्ताम्॥११॥**

**पदार्थ:**-**(आ)** **(याहि)** आगच्छ **(अग्ने)** पावक इव **(समिधान:)** शुभगुणैर्देदीप्यमान: **(अर्वाङ्)** योऽर्वाङधोऽञ्चति **(इन्द्रेण)** विद्युता सह सूर्य्येण वा **(देवै:)** विद्वद्भिर्दिव्यगुणैर्वा **(सरथम्)** रथेन सह वर्त्तमानम् **(तुरेभि:)** आशुकारिभि: **(बर्हि:)** अन्तरिक्षम् **(न:)** **(अस्मभ्यम्)** **(अदिति:)** माता **(सुपुत्रा)** शोभना: पुत्रा यस्या: सा **(स्वाहा)** सत्यक्रियया **(देवा:)** विद्वांस: **(अमृता:)** प्राप्तमोक्षा: **(मादयन्ताम्)** आनन्दयन्तु॥११॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे अग्ने! यथा समिधानोऽग्निस्सूर्यप्रकाश इन्द्रेण सहाऽर्वाङागच्छति तथाभूतस्त्वं तुरेभिर्देवैस्सह नस्सरथं बर्हिरा याहि यथा स्वाहा सुपुत्राऽदितिरस्ति तथा भवानत्राऽऽस्ताम् यथाऽमृता देवाः सर्वानानन्दयन्ति तथा भवन्तोऽपि सर्वान् मादयन्ताम्॥११॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे विद्वांसो! यथा सूर्यप्रकाशो दिव्यैर्गुणैः सहाऽधःस्थानस्मान् प्राप्नोति यथा च सत्यविद्यया युक्तोत्तमसन्ताना सुखमास्ते तथैवाऽविदुषोऽस्मान् भवन्तः प्राप्य सुशिक्षन्तां सुखयन्त्विति॥११॥

अत्राग्निमनुष्यविद्युद्विद्वध्यापकोपदेशकोत्तमवाक् पुरुषार्थ विद्वदुपदेशस्त्र्यादिकृत्यवर्णानादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति द्वितीय सूक्तं द्वितीयो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे **(अग्ने)** अग्नि के समान विद्वन्! जैसे **(समिधानः)** शुभ गुणों से देदीप्यमान अग्नि अर्थात् सूर्य्य का प्रकाश **(इन्द्रेण)** बिजुली वा सूर्य्य के साथ **(अर्वाङ्)** नीचे जाने वाला प्राप्त होता है, वैसे होकर आप भी **(तुरेभिः)** शीघ्र करने वाले **(देवैः)** विद्वानों वा दिव्य गुणों के साथ **(नः)** हमारे लिये **(सरथम्)** रथ के साथ वर्त्तमान **(बर्हिः)** अन्तरिक्ष को **(आ, याहि)** आइये और जैसे **(स्वाहा)** सत्यक्रिया से **(सुपुत्रा)** सुन्दर पुत्रों से युक्त **(अदितिः)** माता है, वैसे आप भी **(आस्ताम्)** स्थित होवें और जैसे **(अमृता)** मोक्ष को प्राप्त हुए **(देवाः)** विद्वान् जन सब की आनन्दित करते हैं, वैसे आप भी सब को **(मादयन्ताम्)** आनन्दित कीजिये॥११॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे विद्वानो! जैसे सूर्य्य का प्रकाश दिव्य गुण के साथ नीचे भी स्थित हम सबों को प्राप्त होता है और जैसे सत्यविद्या से युक्त और उत्तम सन्तान वाली माता सुखपूर्वक स्थित होती है, वैसे ही अविद्वान् हम सबों को आप प्राप्त होकर अच्छी शिक्षा दीजिये तथा सुखी कीजिये॥११॥

इस सूक्त में **[**अग्नि**]**, मनुष्य, बिजुली, विद्वान्, अध्यापक, उपदेशक, उत्तम वाणी, पुरुषार्थ, विद्वानों का उपदेश तथा स्त्री आदि के कृत्य का वर्णन होने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये।

**यह दूसरा सूक्त और दूसरा वर्ग भी समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

**अथ दशर्चस्य तृतीयस्य सूक्तस्य वसिष्ठ ऋषिः। अग्निर्देवता। १, ९, १० विराट्त्रिष्टुप्। ४, ६, ७, ८ निचृत्त्रिष्टुप्। ५ त्रिष्टुप्छन्दः। धैवतः स्वरः। २ स्वराट् पङ्क्तिः। ३ भुरिक् पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः॥**

***अथ कीदृशी विद्युदस्तीत्याह॥***

अब सातवें मण्डल के तृतीय सूक्त का आरम्भ है। इसके प्रथम मन्त्र में विद्युत् कैसी है, इस विषय को कहते हैं।

**अ॒ग्निं वो॑ दे॒वम॒ग्निभिः॑ स॒जोषा॒ यजि॑ष्ठं दू॒तम॑ध्व॒रे कृ॑णुध्वम्।**

**यो मर्त्ये॑षु॒ निध्रु॑विर्ऋ॒तावा॒ तपु॑र्मूर्धा घृ॒तान्नः॑ पाव॒कः॥१॥**

**अ॒ग्निम्। व॒ः। दे॒वम्। अ॒ग्निऽभिः॑। स॒ऽजोषाः॑। यजि॑ष्ठम्। दू॒तम्। अ॒ध्व॒रे। कृ॒णु॒ध्व॒म्। यः। मर्त्ये॑षु। निऽध्रु॑विः। ऋ॒तऽवा॑। तपुः॑ऽमूर्धा। घृ॒तऽअ॑न्नः। पा॒व॒कः॥१॥**

**पदार्थः**- (**अग्निम्**) पावकम् (**वः**) युष्माकम् (**देवम्**) दिव्यगुणकर्मस्वभावम् (**अग्निभिः**) सूर्य्यादिभिः (**सजोषाः**) समानसेवी (**यजिष्ठम्**) अतिशयेन सङ्गन्तारम् (**दूतम्**) दूतवत्सद्यः समाचारप्रापकम् (**अध्वरे**) अहिंसनीये शिल्पव्यवहारे (**कृणुध्वम्**) (**यः**) (**मर्त्येषु**) मरणधर्मेषु मनुष्यादिषु (**निध्रुविः**) नितरां ध्रुवः (**ऋतावा**) सत्यस्य जलस्य वा विभाजकः (**तपुर्मूर्धा**) तपुस्तापो मूर्द्धेवोत्कृष्टो यस्य (**घृतान्नः**) घृतमाज्यं प्रदीपनमन्नमिव प्रदीपकं यस्य (**पावकः**) पवित्रकरः॥१॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यो वस्सजोषा मर्त्येषु निध्रुविर्ऋतावा तपुर्मूर्धा घृतान्नः पावकोऽस्ति तमध्वरेऽग्निभिस्सह यजिष्ठं दूतमग्निं देवं यूयं कृणुध्वम्॥१॥

**भावार्थः**-हे विद्वांसो! या विद्युत्सर्वत्र स्थिता विभाजिका प्रदीप्तगुणा साधनजन्या वर्त्तते तामेव यूयं दूतमिव कृत्वा सङ्ग्रामादीनि कार्याणि साध्नुत॥१॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! (**यः**) जो (**वः**) तुम्हारा (**सजोषाः**) एक सी प्रीति को सेवनेवाला (**मर्त्येषु**) मरणधर्म सहित मनुष्यादिकों में (**निध्रुविः**) निरन्तर स्थित (**ऋतावा**) सत्य वा जल का विभाग करने वाला (**तपुर्मूर्धा**) शिर के तुल्य उत्कृष्ट वा उत्तम जिसका ताप है (**घृतान्नः**) अन्न के तुल्य प्रकाशित जिसका घृत है (**पावकः**) जो पवित्र करने वाला है उस (**अध्वरे**) सूर्य आदि के साथ (**यजिष्ठम्**) अत्यन्त संगति करने वाले (**दूतम्**) दूत के तुल्य तार द्वारा शीघ्र समाचार पहुँचाने वाले (**अग्निम्, देवम्**) उत्तम गुण, कर्म और स्वभाव युक्त अग्नि को तुम लोग (**कृणुध्वम्**) प्रकट करो॥१॥

**भावार्थः**-हे विद्वानो! जो विद्युत् सर्वत्र स्थित, विभाग करने वाली प्रकाशित गुणों से युक्त साधनों से प्रकट हुई वर्त्तमान है, उसी को तुम लोग दूत के तुल्य बना कर युद्धादि कार्य्यों को सिद्ध करो॥१॥

**पुनः सा विद्युत्कीदृशी वर्त्तत इत्याह॥**



www.9009.co.in

फिर वह विद्युत् कैसी है, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**प्रोथदश्वो न यवसेऽविष्यन् यदा महः संवरणाद् व्यस्थात्।**

**आदस्य वातो अनुवाति शोचिरध स्म ते व्रजनं कृष्णमस्ति॥ २॥**

**प्रोथत्। अश्वः। न। यवसे। अविष्यन्। यदा। महः। सम्ऽवरणात्। वि। अस्थात्। आत्। अस्य। वातः। अनु। वाति। शोचिः। अध। स्म। ते। व्रजनम्। कृष्णम्। अस्ति॥ २॥**

**पदार्थः**- **(प्रोथत्)** शब्दं कुर्वन् **(अश्वः)** आशुगामी तुरङ्गः **(न)** इव **(यवसे)** घासे **(अविष्यन्)** रक्षणं करिष्यन् **(यदा)** **(महः)** महतः **(संवरणात्)** सम्यक् स्वीकरणात् **(वि)** विशेषेण **(अस्थात्)** तिष्ठति **(आत्)** आनन्तर्ये **(अस्य)** **(वातः)** वायुः **(अनु)** **(वाति)** गच्छति **(शोचिः)** प्रदीपनम् **(अध)** अथ **(स्म)** एव **(ते)** तव **(व्रजनम्)** गमनम् **(कृष्णम्)** कर्षणीयम् **(अस्ति)**॥ २॥

**अन्वयः**-हे विद्वन्! यत्ते कृष्णं व्रजनमस्ति तन्महः संवरणाच्छोचिरध स्मास्य वातो [यदा]ऽनु वाति। आत्तदा यवसेऽविष्यन् प्रोथदश्वो न सद्योऽयमग्निरध्वानं व्यस्थात्॥ २॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। यदा मनुष्या अग्नियानेन गमनं तडिता समाचारांश्च गृह्णीयुतस्तदेते सद्यः कार्याणि साद्धुं शक्नुवन्ति॥ २॥

**पदार्थः**-हे विद्वन्! जो **(ते)** आपका **(कृष्णम्)** आकर्षण करने योग्य **(व्रजनम्)** गमन **(अस्ति)** है उसके सम्बन्ध में **(महः)** महान् **(संवरणात्)** सम्यक् स्वीकार से **(शोचिः)** प्रदीपन **(अध, स्म)** और इसके अनन्तर ही **(अस्य)** इसके सम्बन्ध में **(वातः)** वायु **(यदा)** जब **(अनु, वाति)** अनुकूल चलता है **(आत्)** अनन्तर तब **(यवसे)** भक्षण के अर्थ **(अविष्यन्)** रक्षा करता **(प्रोथत्)** और शब्द करता हुआ **(अश्वः)** घोड़े के **(न)** समान शीघ्र यह अग्निमार्ग को **(वि, अस्थात्)** व्याप्त होता है॥ २॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जब मनुष्य लोग अग्नियान से गमन और विद्युत् से समाचारों को ग्रहण करें तब ये शीघ्र कार्य्यों को सिद्ध कर सकते हैं॥ २॥

**पुनर्विद्वान् विद्युता किं कुर्यादित्याह॥**

फिर विद्वान् बिजुली से क्या सिद्ध करें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**उद्यस्य ते नवजातस्य वृष्णोऽग्ने चरन्त्यजरा इधानाः।**

**अच्छा द्यामरुषो धूम एति सं दूतो अग्न ईयसे हि देवान्॥ ३॥**

**उत्। यस्य। ते। नवऽजातस्य। वृष्णः। अग्ने। चरन्ति। अजराः। इधानाः। अच्छ। द्याम्। अरुषः। धूमः। एति। सम्। दूतः। अग्ने। ईयसे। हि। देवान्॥ ३॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**- **(उत्)** **(यस्य)** **(ते)** तव **(नवजातस्य)** नवीनविदुषः **(वृष्णः)** विद्यया बलिष्ठस्य **(अग्ने)** विद्युदिव गुप्तप्रतापिन् **(चरन्ति)** गच्छन्ति **(अजराः)** व्ययरहिताः **(इधानाः)** देदीप्यमानाः **(अच्छा)** अत्र **संहितायामि**ति दीर्घः। **(द्याम्)** प्रकाशम् **(अरुषः)** गर्भस्थः **(धूमः)** **(एति)** गच्छति **(सम्)** सम्यक् **(दूतः)** दूत इव समाचारप्रदः **(अग्ने)** प्रसिद्धाग्निवत्कार्यसाधक **(ईयसे)** गच्छसि **(हि)** यतः **(देवान्)** विदुषः॥३॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! यस्य नवजातस्य वृष्णस्ते यथाऽग्न इधाना अजरा अग्नय उच्चरन्त्यरुषो द्यां प्राप्य यस्य धूम अच्छैति यो दूत इव देवानीयते यदा तं हि त्वं समीयसे तदा कार्यं कर्त्तुं शक्नोषि॥३॥

**भावार्थः**-हे विद्वन्! यदि भवान् विद्युद्विद्यां विजानीयात्तर्हि किं किं कार्यं साद्धुं न शक्नुयात्॥३॥

**पदार्थः**-हे **(अग्ने)** विद्युत् अग्नि के तुल्य गुप्त प्रताप वाले! **(यस्य)** जिस **(नवजातस्य)** नवीन प्रकट हुए **(वृष्णः)** विद्या से बलवान् **(ते)** आप विद्वान् के निकटवर्ती जैसे **(अग्ने)** प्रसिद्ध अग्नि के तुल्य कार्यसाधक **(इधानाः)** प्रकाशमान जलते हुए **(अजराः)** खर्चरहित अग्नि **(उत्, चरन्ति)** ऊपर को उठते वा चलते हैं **(अरुषः)** गर्भस्थ पुरुष **(द्याम्)** प्रकाश को प्राप्त होकर जिसका **(धूमः)** धुआँ **(अच्छा, एति)** अच्छा जाता है जो **(दूतः)** दूत के तुल्य **(देवान्)** विद्वानों को प्राप्त होता जब उसको **(हि)** ही आप **(सम्, ईयसे)** प्राप्त होते हो, तब कार्य करने को समर्थ होते हो॥३॥

**भावार्थः**-हे विद्वन्! यदि आप विद्युत् की विद्या को जानें तो आप किस-किस कार्य को सिद्ध न कर सकें॥३॥

**पुनः सा विद्युत्कीदृशी कथं प्रकटनीयेत्याह॥**

फिर वह विद्युत् कैसी है और कैसे प्रकट करनी चाहिये, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**वि यस्य॑ ते पृथि॒व्यां पाजो॒ अश्रे॑त्तृषु यदन्ना॑ स॒मवृ॑क्त॒ जम्भैः॑।**

**सेने॑व सृ॒ष्टा प्रसि॑तिष्ट ए॒ति यव॒ं न द॑स्म जु॒ह्वा॑ विवेक्षि॥४॥**

**वि। यस्य॑। ते॒। पृ॒थि॒व्याम्। पाजः॑। अश्रे॑त्। तृ॒षु। यत्। अन्ना॑। स॒म्ऽअवृ॑क्त। जम्भैः॑। सेना॑ऽइव। सृ॒ष्टा। प्रऽसि॑तिः। ते॒। ए॒ति। यव॑म्। न। द॒स्म॒। जु॒ह्वा॑। वि॒वे॒क्षि॒॥४॥**

**पदार्थः**- **(वि)** **(यस्य)** **(ते)** तस्या विद्युतः। अत्र पुरुषव्यत्ययः। **(पृथिव्याम्)** **(पाजः)** बलम्। **पाज इति बलनाम।** (निघं०२.९) **(अश्रेत्)** श्रयति **(तृषु)** क्षिप्रम् **(यत्)** **(अन्ना)** अन्नानि **(समवृक्त)** सम्यग्वृङ्क्ते **(जम्भैः)** गात्रविक्षेपैः **(सेनेव)** **(सृष्टा)** सम्प्रयुक्ता **(प्रसितिः)** प्रकर्षं बन्धनम् **(ते)** तव **(एति)** **(यवम्)** अन्नविशेषम् **(न)** इव **(दस्म)** दुःखोपक्षयितः **(जुह्वा)** होमसाधनेन **(विवेक्षि)** व्याप्नोषि॥४॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे दस्म विद्वन्! यां जुह्वा यवं न विद्युद्विद्यां विवेक्षि सा ते सृष्टा प्रसितिः सती सेनेवैति यद्या जम्भैरन्ना समवृक्त यस्य ते विद्युद्रूपस्याग्नेः पाजः पृथिव्यां तृषु व्यश्रेत्तां त्वं विजानीहि॥४॥

**भावार्थः**-ये विद्वांसो विद्युद्विद्यां जानन्ति त उत्तमा सेनेव शत्रून् सद्यो जेतुं शक्नुवन्ति यथा घृतादिनाऽग्निः प्रदीप्यते तथा घर्षणादिना विद्युत्प्रदीपनीया॥४॥

**पदार्थः**-हे **(दस्म)** दुःखों के नाश करनेहारे विद्वन्! जिस **(जुह्वा)** होमसाधन से **(यवम्)** यवों को **(न)** जैसे, वैसे विद्युद्विद्या को **(विवेक्षि)** व्याप्त होते हो वह **(ते)** तुम्हारी **(सृष्टा)** प्रयुक्त क्रिया **(प्रसितिः)** प्रबल बन्धन होती हुई **(सेनेव)** सेना के तुल्य **(एति)** प्राप्त होती है और **(यत्)** जो **(जम्भैः)** गात्रविक्षेपों से **(अन्ना)** अन्नों को **(समवृक्त)** अच्छे प्रकार वर्जित करता अर्थात् शरीर से छुड़ाता है **(यस्य)** जिस **(ते)** उस विद्युत् के **(पाजः)** बल को **(पृथिव्याम्)** पृथिवी में **(तृषु)** शीघ्र **(वि, अश्रेत्)** आश्रय करता है, उसको तुम जानो॥४॥

**भावार्थः**-जो विद्वान् लोग विद्युद्विद्या को जानते हैं, वे उत्तम सेना के तुल्य शत्रुओं को शीघ्र जीत सकते हैं, जैसे घी आदि से अग्नि प्रज्वलित होता, वैसे घर्षण आदि से विद्युत् अग्नि प्रकट करना चाहिये॥४॥

**पुनस्सा विद्युत्कथमुत्पादनीया सा च किं करोतीत्याह॥**

फिर वह विद्युत् कैसे उत्पन्न करनी चाहिये और वह क्या करती है, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**तमिद्दोषा तमुषसि यविष्ठमग्निमत्यं न मर्जयन्त नरः।**

**निशिशाना अतिथिमस्य योनौ दीदाय शोचिराहुतस्य वृष्णः॥५॥३॥**

**तम्। इत्। दोषा। तम्। उषसि। यविष्ठम्। अग्निम्। अत्यम्। न। मर्जयन्त। नरः। निऽशिशानाः। अतिथिम्। अस्य। योनौ। दीदाय। शोचिः। आऽहुतस्य। वृष्णः॥५॥**

**पदार्थः**- **(तम्)** विद्युदग्निम् **(इत्)** एव **(दोषा)** रात्रौ **(तम्)** **(उषसि)** प्रभाते **(यविष्ठम्)** अतिशयेन युवानमिव **(अग्निम्)** विद्युतम् **(अत्यम्)** वेगवन्तं वाजिनम् **(न)** इव **(मर्जयन्त)** घर्षणादिना शोधयन्तु **(नरः)** **(निशिशानाः)** तीक्ष्णीकर्त्तारः **(अतिथिम्)** अतिथिमिव सेवनीयम् **(अस्य)** अग्नेः **(योनौ)** **(दीदाय)** प्रकाशय **(शोचिः)** दीप्तिमन्तम् **(आहुतस्य)** सर्वतः कृतप्रियस्य **(वृष्णः)** वर्षकस्य॥५॥

**अन्वयः**-हे नरो! ये निशिशानास्सन्तो भवन्तस्तं दोषा तमुषस्यत्यन्न यविष्ठमग्निं मर्जयन्तोऽस्याहुतस्य वृष्णोऽग्नेर्योनावतिथिमिव शोचिर्दीदायेत्॥५॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। ये तीव्रैर्घर्षणादिभिरहर्निशं विद्युतमग्निं प्रकटयन्ति तेऽश्वेनेव सद्यः स्थानान्तरं गन्तुं शक्नुवन्ति॥५॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-हे **(नरः)** नायक मनुष्यो! जो **(निशिशानाः)** निरन्तर तीक्ष्णता पूर्वक कार्य करते हुए आप **(तम्)** उस विद्युत् अग्नि को **(दोषा)** रात्रि में **(तम्)** उसको **(उषसि)** दिन में **(अत्यम्)** घोड़े को **(न)** जैसे, वैसे **(यविष्ठम्)** अत्यन्त जवान के तुल्य **(अग्निम्)** विद्युत् अग्नि को **(मर्जयन्त)** घर्षण आदि से शुद्ध करो **(अस्य)** इस **(आहुतस्य)** अभीष्ट सिद्धि के लिये संग्रह किये **(वृष्णः)** वर्षा के हेतु अग्नि के **(योनौ)** कारण में **(अतिथिम्)** अतिथि के तुल्य सेवने योग्य **(शोचिः)** दीप्तियुक्त विद्युत् को **(दीदाय)** प्रकाशित **(इत्)** ही कीजिये॥५॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जो तीव्र घर्षणादिकों से दिन-रात विद्युत् अग्नि को प्रकट करते हैं, वे जैसे घोड़े से, वैसे शीघ्र स्थानान्तर के जाने को समर्थ होते हैं॥५॥

**पुनः सा विद्युत्कीदृशीत्याह॥**

फिर वह विद्युत् अग्नि कैसा है, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**सुसंदृक्ते स्वनीक प्रतीकं वियद्रुक्मो न रोचस उपाके।**

**दिवो न ते तन्यतुरेति शुष्मश्चित्रो न सूरः प्रतिचक्षि भानुम्॥६॥**

**सुऽसंदृक्। ते। सुऽअनीक। प्रतीकम्। वि। यत्। रुक्मः। न। रोचसे। उपाके। दिवः। न। ते। तन्यतुः। एति। शुष्मः। चित्रः। न। सूरः। प्रति। चक्षि। भानुम्॥६॥**

**पदार्थः**- **(सुसन्दृक्)** सुष्ठु पश्यति यया सा **(ते)** तव **(स्वनीक)** शोभनमनीकं सैन्यं यस्य तत्सम्बुद्धौ **(प्रतीकम्)** विजयप्रतीतिकरम् **(वि)** **(यत्)** **(रुक्मः)** रोचमानः सूर्य्यः **(न)** इव **(रोचसे)** **(उपाके)** समीपे **(दिवः)** सूर्य्यस्य **(न)** इव **(ते)** तव **(तन्यतुः)** विद्युत् **(एति)** गच्छति **(शुष्मः)** बलयुक्तः **(चित्रः)** अद्भुतः **(नः)** **(सूरः)** सूर्य्यः **(प्रति)** **(चक्षि)** वदेयम् **(भानुम्)** प्रकाशयुक्तम्॥६॥

**अन्वयः**-हे स्वनीक! यस्य ते यत्प्रतीकं रुक्मो नेवास्ति ये उपाके वि रोचसे यस्य ते दिवो न सुसन्दृक् तन्यतुः प्रतीकमेति तस्य शुष्मश्चित्रः सूरो नेवाहं भानुं त्वा प्रति चक्षि॥६॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। हे राजन्! यदि भवान् विद्युद्विद्यां प्राप्नुयात्तर्हि सूर्य्यवत्सुसेनादिभिः प्रकाशितः सन् सर्वत्र विजयकीर्त्ती राजसु राजेत॥६॥

**पदार्थः**-हे **(स्वनीक)** सुन्दर सेना वाले सेनापते! जिस **(ते)** आपका **(यत्)** जो **(प्रतीकम्)** विजय का निश्चय कराने वाले **(रुक्मः)** प्रकाशमान सूर्य्य के **(न)** तुल्य है जो **(उपाके)** समीप में **(वि, रोचसे)** विशेष कर रुचिकारक होते हो। जिस **(ते)** तुम्हारा **(दिवः, न)** सूर्य्य के तुल्य **(सुसन्दृक्)** अच्छे प्रकार देखने का साधन **(तन्यतुः)** विद्युत् विजय प्रतितिकारक नियम को **(एति)** प्राप्त होता है उसका **(शुष्मः)** बलयुक्त **(चित्रः)** आश्चर्यस्वरूप **(सूरः)** सूर्य **(न)** जैसे, वैसे मैं **(भानुम्)** प्रकाशयुक्त आपके **(प्रति)** **(चक्षि)** कहूं॥६॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे राजन्! यदि आप विद्युद् विद्या को जानें तो सूर्य्य के तुल्य सुन्दर सेनादिकों से प्रकाशित हुए सर्वत्र विजय, कीर्ति और राजाओं में सुशोभित होवें॥६॥

**पुनर्मनुष्याः परस्परं कथं वर्तेरन्नित्याह॥**

फिर मनुष्य परस्पर कैसे वर्तें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**यथा॑ व॒ः स्वाहा॒ऽग्नये॒ दाशे॑म॒ परीळा॑भिर्घृ॒तव॑द्भिश्च ह॒व्यैः।**

**तेभि॑र्नो अग्ने॒ अमि॑तै॒र्महो॑भिः श॒तं पूर्भि॒राय॑सीभि॒र्नि पा॑हि॥७॥**

**यथा॑। व॒ः। स्वाहा॑। अ॒ग्नये॑। दाशे॑म। परि॑। इळा॑भिः। घृ॒तव॑त्ऽभिः। च॒। ह॒व्यैः। तेभि॑ः। न॒ः। अ॒ग्ने॒। अमि॑तैः। मह॑ःऽभिः। श॒तम्। पू॒ःऽभिः। आय॑सीभिः। नि। पा॒हि॒॥७॥**

**पदार्थः**- **(यथा)** **(वः)** युष्मभ्यम् **(स्वाहा)** सत्यया क्रियया **(अग्नये)** पावकाय **(दाशेम)** दद्याम **(परि)** सर्वतः **(इळाभिः)** अन्नैः **(घृतवद्भिः)** घृतादियुक्तैः **(च)** **(हव्यैः)** होतुमर्हैः **(तेभिः)** **(नः)** अस्मान् **(अग्ने)** अग्निरिव प्रकाशमान राजन् **(अमितैः)** असंख्यैः **(महोभिः)** महद्भिः कर्मभिः पुरुषैर्वा **(शतम्)** **(पूर्भिः)** नगरीभिः **(आयसीभिः)** अयसा निर्मिताभिः **(नि)** नितराम् **(पाहि)** रक्ष॥७॥

**अन्वयः**-हे विद्वांसो! यथा वयं वः स्वाहा घृतवद्भिर्हव्यैरिळाभिश्चाग्नये शतं परि दाशेम तथाऽमितैर्महोभिस्तेभिरायसीभिः पूर्भिश्च सह वर्त्तमानान्नोऽस्मान् हे अग्ने! नि पाहि॥७॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यथर्त्विग्यजमाना घृतादिनाऽग्निं वर्धयन्ति तथैव राजा प्रजाः प्रजा राजानं च न्यायविनयादिभिर्वर्धयित्वाऽमितानि सुखानि प्राप्नुवन्ति॥७॥

**पदार्थः**-हे विद्वान् लोगो! **(यथा)** जैसे हम लोग **(वः)** तुम्हारे अर्थ **(स्वाहा)** सत्यक्रिया से **(घृतवद्भिः)** घृतादि से युक्त **(हव्यैः)** होम के योग्य पदार्थों **(च)** और **(इळाभिः)** अन्नों के साथ **(अग्नये)** अग्नि के लिये **(शतम्)** सैकड़ों प्रकार के हविष्यों को **(परि, दाशेम)** सब ओर से देवें, वैसे **(अमितैः)** असंख्य **(महोभिः)** बड़े-बड़े कर्मों वा पुरुषों और **(तेभिः)** उन **(आयसीभिः)** लोहे से बनी **(पूर्भिः)** नगरियों के साथ वर्त्तमान **(नः)** हम लोगों को हे **(अग्ने)** अग्नि के तुल्य तेजस्वी प्रकाशमान् राजन्! **(नि, पाहि)** निरन्तर रक्षा कीजिये॥७॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जैसे ऋत्विक् और यजमान लोग घृतादि से अग्नि को बढ़ाते हैं, वैसे ही राजा प्रजाओं को और प्रजाएँ राजा को न्याय विनयादि से बड़ा के अपरिमित सुखों को प्राप्त होते हैं॥७॥

**पुनः कैः काभिः काः पालनीया इत्याह॥**

फिर किन-किन से किनकी रक्षा करनी चाहिये॥

**या वा॑ ते॒ सन्ति॑ दाशु॒षे अधृ॑ष्टा॒ गिरो॑ वा॒ याभि॑र्नृ॒वती॑रुरु॒ष्याः।**



www.9009.co.in

**ताभिर्नः सूनो सहसो नि पाहि स्मत्सूरीञ्जरितॄञ्जातवेदः॥८॥**

**याः। वा। ते। सन्ति। दाशुषे। अधृष्टाः। गिरः। वा। याभिः। नृऽवतीः। उरुष्याः। ताभिः। नः। सूनो इति। सहसः। नि। पाहि। स्मत्। सूरीन्। जरितॄन्। जातऽवेदः॥८॥**

**पदार्थः**- **(याः)** **(वा)** **(ते)** तव **(सन्ति)** **(दाशुषे)** दात्रे **(अधृष्टाः)** अधर्षणीयाः **(गिरः)** सुशिक्षिता वाचः **(वा)** **(याभिः)** **(नृवतीः)** नरो विद्यन्ते यासु प्रजासु ताः **(उरुष्याः)** **(रक्षेः)** **(ताभिः)** **(नः)** अस्मान् **(सूनो)** अपत्य **(सहसः)** बलिष्ठस्य **(नि)** नितराम् **(पाहि)** रक्ष **(स्मत्)** एव **(सूरीन्)** विदुषः **(जरितॄन्)** सकलविद्यास्तावकान् **(जातवेदः)** ज्ञातप्रज्ञः॥८॥

**अन्वयः**-हे सहसस्सूनो! जातवेदो यास्तेऽधृष्टा गिरः सन्ति वा दाशुषे हितकर्यः सन्ति याभिर्वा त्वं नृवतीरुरुष्यास्ताभिर्नोऽस्मान् सूरीञ्जरितॄन् स्मन्नि पाहि॥८॥

**भावार्थः**-मनुष्या यावद्विद्याशिक्षाविनयान् गृहीत्वा**[ऽन्यान्]** न ग्राहयन्ति तावत् प्रजाः पालयितुं न शक्नुवन्ति यावद्धार्मिकाणां विदुषां राज्येऽधिकारा न स्युस्तावद्यथावत्प्रजापालनं दुर्घटम्॥८॥

**पदार्थः**-हे **(सहसः)** बलवान् के **(सूनो)** पुत्र! **(जातवेदः)** प्रकट बुद्धिमानी को प्राप्त हुए **(याः)** जो **(ते)** आपकी **(अधृष्टाः)** न धमकाने योग्य **(गिरः)** सुशिक्षित वाणी **(सन्ति)** हैं **(वा)** अथवा **(दाशुषे)** दाता पुरुष के लिये हितकारिणी हैं **(वा)** अथवा **(याभिः)** जिन वाणियों से आप **(नृवतीः)** उत्तम मनुष्यों वाली प्रजाओं की **(उरुष्याः)** रक्षा कीजिये **(ताभिः)** उनसे **(नः)** हम **(जरितॄन्)** समस्त विद्याओं की स्तुति प्रशंसा करने वाले **(सूरीन्)** विद्वानों की **(स्मत्)** ही **(नि, पाहि)** निरन्तर रक्षा कीजिये॥८॥

**भावार्थः**-मनुष्य लोग जब तक विद्या, शिक्षा, विनयों को ग्रहण कर अन्यों को नहीं ग्रहण कराते, तब तक प्रजों का पालन करने को नहीं समर्थ होते हैं, जब तक धर्मात्मा विद्वानों के राज्य में अधिकार न हों, तब तक यथावत् प्रजा का पालन होना दुर्घट है॥८॥

**पुनर्मनुष्यैः कीदृशो राजा मन्तव्य इत्याह॥**

फिर मनुष्यों को कैसा राजा मानना चाहिये, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**निर्यत्पूतेव स्वधितिः शुचिर्गात्स्वया कृपा तन्वा३ रोचमानः।**

**आ यो मात्रोरुशेन्यो जनिष्ट देवयज्याय सुक्रतुः पावकः॥९॥**

**निः। यत्। पूताऽइव। स्वऽधितिः। शुचिः। गात्। स्वया। कृपा। तन्वा। रोचमानः। आ। यः। मात्रोः। उशेन्यः। जनिष्ट। देवऽयज्याय। सुक्रतुः। पावकः॥९॥**

**पदार्थः**- **(निः)** **(नितराम्)** **(यत्)** यः **(पूतेव)** पवित्रेव **(स्वधितिः)** वज्रः **(शुचिः)** पवित्रः **(गात्)** प्राप्नोति **(स्वया)** स्वकीयया **(कृपा)** कृपया **(तन्वा)** शरीरेण **(रोचमानः)** प्रकाशमानः **(आ)**



www.9009.co.in

**(यः)** **(मात्रोः)** जननिपालिकयोः **(उशेन्यः)** कमनीयः **(जनिष्ट)** जायते **(देवयज्याय)** देवानां समागमाय **(सुक्रतुः)** उत्तमप्रज्ञः **(पावकः)** पावक इव प्रकाशितयशाः॥९॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यद्यः पूतेव स्वधितिः शुचिर्नि गाद्यः स्वया कृपा तन्वा रोचमानो मात्रोरुशेन्यः पावक इव सुक्रतुर्देवयज्यायऽऽजनिष्ट स एवाऽत्र प्रशंसनीयो भवेत्॥९॥

**भावार्थः**-अत्रोपमावाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! य वज्रवद्दृढं वह्निवत्पवित्रं कृपालुं दर्शनीयशरीरं विद्वांसं धर्मात्मानं विजानीयुस्तमेवेषां राजानं मन्यन्ताम्॥९॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(यत्)** जो **(पूतेव)** पवित्रता के तुल्य **(स्वधितिः)** वज्र **(शुचिः)** पवित्र पुरुष **(नि, गात्)** निरन्तर प्राप्त होता है **(यः)** जो **(स्वया)** अपनी **(कृपा)** कृपा से **(तन्वा)** शरीर करके **(रोचमानः)** प्रकाशमान **(मात्रोः)** जननी और धात्री में **(उशेन्यः)** कामना के योग्य **(पावकः)** अग्नि के तुल्य प्रकाशित यश वाले **(सुक्रतुः)** उत्तम प्रज्ञा वाले **(देवयज्याय)** बुद्धिमानों के समागम के लिये **(आ, जनिष्ट)** प्रकट होता है, वही इस जगत् में प्रशंसा के योग्य होवे॥९॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमावाचकलुप्तोपमालङ्कार हैं। हे मनुष्यो! जिसको वज्र के समान दृढ़ अग्नि के समान पवित्र, कृपालु, दर्शनीय शरीर, विद्वान् धर्मात्मा जानो उसी को इनमें से राजा मानो॥९॥

**राजा च कीदृशो भवेदित्याह॥**

राजा भी कैसा हो, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**एता नो अग्ने सौभगा दिदीह्यपि क्रतुं सुचेतसं वतेम।**

**विश्वा स्तोतृभ्यो गृणते च सन्तु यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥१०॥४॥**

**एता। नः। अग्ने। सौभगा। दिदीहि। अपि। क्रतुम्। सुऽचेतसम्। वतेम। विश्वा। स्तोतृऽभ्यः। गृणते। च। सन्तु। यूयम्। पात। स्वस्तिऽभिः। सदा। नः॥१०॥**

**पदार्थः**- **(एता)** एतानि **(नः)** अस्माकम् **(अग्ने)** पावकवद्विद्वन् राजन् **(सौभगा)** उत्तमैश्वर्याणां भावान् **(दिदीहि)** प्रकाशय **(अपि)** **(क्रतुम्)** प्रज्ञाम् **(प्रचेतसम्)** प्रकृष्टविद्यायुक्ताम् **(वतेम)** सम्भजेम। अत्र वर्णव्यत्ययेन नस्य स्थाने तः। **(विश्वा)** सर्वाणि **(स्तोतृभ्यः)** ऋत्विग्भ्यः **(गृणते)** स्तावकाय **(च)** **(सन्तु)** **(यूयम्)** **(पात)** रक्षत **(स्वस्तिभिः)** स्वास्थ्यकारिभिः सुखैः कर्मभिर्वा **(सदा)** **(नः)** अस्मान्॥१०॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! त्वं न एता सौभगा दिदीहि येनाऽपि वयं सुचेतसं क्रतुं वतेम स्तोतृभ्यो विश्वा गृणते चैतानि सन्तु यूयं स्वस्तिभिर्नः सदा पात॥१०॥

**भावार्थः**-हे राजन्! भवान् सर्वेषां मनुष्याणां सौभाग्यानि वर्धयित्वा प्रज्ञां प्रापयतु, हे प्रजाजना! भवन्तो राजानं राज्यं च सदैव रक्षन्त्विति॥१०॥

अत्राऽग्निविद्वद्राजप्रजाकृत्यवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥



www.9009.co.in

**इति तृतीयं सूक्तं चतुर्थो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे **(अग्ने)** अग्नि के तुल्य तेजस्वी विद्वन् राजन्! आप **(नः)** हमारे **(एता)** इन **(सौभगा)** उत्तम ऐश्वर्य्यों के भावों को **(दिदीहि)** प्रकाशित कीजिये जिससे **(अपि)** भी हम लोग **(सुचेतसम्)** प्रबल विद्यायुक्त **(क्रतुम्)** बुद्धि का **(वतेम)** सेवन करें **(स्तोतृभ्यः)** ऋत्विजों और **(विश्वा)** सब की **(गृणते)** स्तुति करने वाले के लिये ये **(च)** भी सब प्राप्त **(सन्तु)** हों **(यूयम्)** हम लोग **(स्वस्तिभिः)** स्वस्थता करने वाले सुखों वा कर्मों से **(नः)** हमारी **(सदा)** सदा **(पात)** रक्षा करो॥१०॥

**भावार्थः**-हे राजन्! आप सब मनुष्यों के सौभाग्यों को बढ़ा के बुद्धि को प्राप्त करो। हे प्रजापुरुषो! आप लोग राजा और राज्य की सदैव रक्षा करो॥१०॥

इस सूक्त में अग्नि, विद्वान्, राजा और प्रजा के कृत्य का वर्णन होने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥१०॥

**यह तृतीय सूक्त और चौथा वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

**अथ दशर्चस्य चतुर्थस्य सूक्तस्य वसिष्ठ ऋषिः। अग्निर्देवता। १, ३, ४, ७ भुरिक् पङ्क्तिः। ६ स्वराट् पङ्क्तिः। ८, ९ पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः। २, ५ निचृत्त्रिष्टुप्। १० विराट्त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः॥**

***अथ मनुष्यैः कीदृशैर्भवितव्यमित्याह॥***

अब दश ऋचा वाले चतुर्थ सूक्त का प्रारम्भ है। इसके प्रथम मन्त्र में मनुष्यों को कैसा होना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**प्र वः शुक्राय भानवे भरध्वं हव्यं मतिं चाग्नये सुपूतम्।**
**यो दैव्यानि मानुषा जनूंष्यन्तर्विश्वानि विद्मना जिगाति॥१॥**

**प्र। वः। शुक्राय। भानवे। भरध्वम्। हव्यम्। मतिम्। च। अग्नये। सुऽपूतम्। यः। दैव्यानि। मानुषा। जनूंषि। अन्तः। विश्वानि। विद्मना। जिगाति॥१॥**

**पदार्थः**-(**प्र**) (**वः**) युष्माकम् (**शुक्राय**) शुद्धाय (**भानवे**) विद्याप्रकाशाय (**भरध्वम्**) धरत पालयत वा (**हव्यम्**) दातुमर्हम् (**मतिम्**) मननशीलां प्रज्ञाम् (**च**) (**अग्नये**) पावके होमाय (**सुपूतम्**) सुष्ठु पवित्रम् (**यः**) (**दैव्यानि**) दैवैः कृतानि कर्माणि (**मानुषा**) मनुष्यैर्निर्मितानि (**जनूंषि**) जन्मानि (**अन्तः**) मध्ये (**विश्वानि**) सर्वाणि (**विद्मना**) विज्ञातव्यानि (**जिगाति**) प्रशंसति॥१॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यो वः शुक्राय भानवेऽग्नये सुपूतं हव्यमिव मतिं दैव्यानि मानुषा जनूंषि चाऽन्तर्विश्वानि विद्मना जिगाति तस्मा उत्तमानि सुखानि यूयं प्र भरध्वम्॥१॥

**भावार्थः**-हे विद्वांसो! यो युष्मदर्थमुत्तमानि द्रव्याणि सर्वेषां हितानि जन्मानि विज्ञानानि चोपदेष्टुं प्रवर्त्तते तं यूयं सततं रक्षत॥१॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! (**यः**) जो (**वः**) तुम्हारे (**शुक्राय**) शुद्ध (**भानवे**) विद्याप्रकाश के लिये तथा (**अग्नये**) अग्नि में होम करने के लिये (**सुपूतम्**) सुन्दर पवित्र (**हव्यम्**) होमने योग्य पदार्थ के तुल्य (**मतिम्**) विचारशील बुद्धि को वा (**दैव्यानि**) विद्वानों के किये (**मानुषानि**) मनुष्यों से सम्पादित (**जनूंषि**) जन्मों वा कर्मों को (**च**) और (**विश्वानि**) सब (**अन्तः**) अन्तर्गत (**विद्मना**) जानने योग्य वस्तुओं को (**जिगाति**) प्रशंसा करता है, उसके लिये तुम लोग उत्तम सुखों का (**प्र भरध्वम्**) पालन वा धारण करो॥१॥

**भावार्थः**-हे विद्वानो! जो तुम्हारे लिये उत्तम द्रव्यों तथा सब के हितकारी जन्मों और विज्ञानों का उपदेश करने को प्रवृत्त होता है, उसकी तुम लोग निरन्तर रक्षा करो॥१॥

**मनुष्यैर्युवावस्थायामेव विवाहः कार्य्य इत्याह॥**

मनुष्यों को युवावस्था में ही विवाह करना चाहिये, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**स गृत्सो अग्निस्तरुणश्चिदस्तु यतो यविष्ठो अजनिष्ट मातुः।**



www.9009.co.in

**सं यो वना॑ यु॒वते॒ शुचि॑द॒न् भूरि॑ चिद॒न्ना॒ समिद॑त्ति स॒द्यः॥ २॥**

**सः। गृत्सः॑। अ॒ग्निः। तरु॑णः। चि॒त्। अ॒स्तु॒। यतः॑। यवि॑ष्ठः। अज॑निष्ट। मा॒तुः। सम्। यः। वना॑। यु॒वते॑। शुचि॑ऽदन्। भूरि॑। चि॒त्। अन्ना॑। सम्। इत्। अ॒त्ति॒। स॒द्यः॥ २॥**

**पदार्थः**-(**सः**) (**गृत्सः**) मेधावी (**अग्निः**) पावक इव तीव्रबुद्धिः (**तरुणः**) युवा (**चित्**) अपि (**अस्तु**) (**यतः**) (**यविष्ठः**) अतिशयेन युवा (**अजनिष्ट**) जायते (**मातुः**) जनन्याः सकाशात् (**सम्**) (**यः**) (**वना**) वनानि किरणान् सूर्य इव (**युवते**) युनक्ति (**शुचिदन्**) पवित्रदन्तः (**भूरि**) बहु (**चित्**) अपि (**अन्ना**) अन्नानि (**सम्**) (**इत्**) (**अत्ति**) भक्षयति (**सद्यः**)॥ २॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यो मातुरजनिष्ट सोऽग्निरिव कुमारः संस्तरुणश्चिदस्तु यतः स गृत्सो यविष्ठः स्यात् सद्यश्चिदन्नेत् समत्ति शुचिदन् भूरि वना सूर्य इव तेजांसि सं युवते॥ २॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यथा स्वपुत्राः पूर्णयुवावस्था ब्रह्मचर्ये संस्थाप्य विद्यायुक्ता बलिष्ठा अभिरूपा भोक्तारो धार्मिका दीर्घायुषो धीमन्तो भवेयुस्तथाऽनुतिष्ठत॥ २॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! (**यः**) जो (**मातुः**) अपनी माता से (**अजनिष्ट**) उत्पन्न होता (**सः**) वह (**अग्नि**) पावक के तुल्य तेज बुद्धि वाला बालक (**तरुणः**) जवान (**चित्**) ही (**अस्तु**) हो (**यतः**) जिससे वह (**गृत्सः**) बुद्धिमान् (**यविष्ठः**) अत्यन्त जवान हो (**सद्यश्चित्**) शीघ्र ही (**अन्ना**) अन्नों का (**इत्**) ही (**सम्, अत्ति**) सम्यक् भोजन करता है (**शुचिदन्**) पवित्र दाँतों वाला (**भूरि**) बहुत (**वना**) जैसे सूर्य किरणों को संयुक्त करता, वैसे वनों [=तेजों] को (**सम्, युवते**) संयुक्त करे॥ २॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जैसे अपने पुत्र पूर्ण युवावस्थावाले ब्रह्मचर्य्य में सम्यक् स्थापन कर विद्यायुक्त, अति बलवान्, सुरूपवान् सुख भोगने वाले, धार्मिक दीर्घ अवस्था वाले, बुद्धिमान् होवें, वैसा अनुष्ठान करो॥ २॥

**पुनर्विद्वांसं कीदृशं सभ्यमध्यक्षं च कुर्य्युरित्याह॥**

फिर कैसे विद्वान् को सभासद् और अध्यक्ष को, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अ॒स्य दे॒वस्य॑ सं॒सद्यनी॑के॒ यं मर्ता॑सः श्ये॒तं ज॑गृ॒भ्रे।**

**नि यो गृभं॒ पौरु॑षेयीमु॒वोच॑ दु॒रोक॑मग्निरा॒यवे॑ शुशोच॥ ३॥**

**अ॒स्य। दे॒वस्य॑। स॒म्ऽसदि॑। अनी॑के। यम्। मर्ता॑सः। श्ये॒तम्। ज॒गृ॒भ्रे। नि। यः। गृभ॑म्। पौरु॑षेयीम्। उ॒वोच॑। दुः॒ऽओक॑म्। अ॒ग्निः। आ॒यवे॑। शु॒शो॒च॒॥ ३॥**

**पदार्थः**-(**अस्य**) (**देवस्य**) विदुषः (**संसदि**) सभायाम् (**अनीके**) सैन्ये (**यम्**) (**मर्त्तासः**) मनुष्याः (**श्येतम्**) श्वेतं शुभ्रम् (**जगृभ्रे**) गृह्णन्ति (**नि**) (**यः**) (**गृभम्**) गृहीतुम् (**पौरुषेयीम्**) पौरुषेयस्य



www.9009.co.in

रीतिम् **(उवोच)** वदति **(दुरोकम्)** शत्रुभिर्दु:सेवम् **(अग्निः)** पावक इव **(आयवे)** जीवनाय **(शुशोच)** शोचति॥३॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यः पौरुषेयीं नि गृभमुवोचाग्निरिवाऽऽयवे शुशोच यं श्येतं दुरोकमस्य देवस्य संसद्यनीके च मर्त्तासो जगृभ्रे तमेव सभ्यं सेनापतिं च कुरुत॥३॥

**भावार्थः**-विद्वद्भिः सुपरीक्ष्य विद्वांस एव सभ्या अध्यक्षाश्च कर्त्तव्याः ये वीर्य्यवन्तो दीर्घायुषो भवन्ति त एव राज्यं सुभूषयितुमर्हन्ति॥३॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(यः)** जो **(पौरुषेयीम्)** पुरुषसम्बन्धी कार्य्यों की रीति का **(नि गृभम्)** निरन्तर ग्रहण करने को **(उवोच)** कहता है **(अग्निः)** अग्नि के तुल्य तेजस्वी **(आयवे)** जीवन के लिये **(शुशोच)** शोच करता है **(यम्)** जिस **(श्येतम्)** श्वेत **(दुरोकम्)** शत्रुओं से दुःख के साथ सेवने योग्य को **(अस्य)** इस **(देवस्य)** विद्वान् की **(संसदि)** सभा वा **(अनीके)** सेना में **(मर्त्तासः)** मनुष्य **(जगृभ्रे)** ग्रहण करते हैं, उसी को सभापति सेनापति करो॥३॥

**भावार्थः**-विद्वानों को चाहिये कि अच्छे प्रकार परीक्षा कर सभासदों और अध्यक्षों को नियत करें। जो बलवान् और अधिक अवस्था वाले हों, वे ही राज्य को अच्छे प्रकार भूषित कर सकते हैं॥३॥

**को महान् विश्वसनीयो विद्वान् भवेदित्याह॥**

कौन विद्वान् अधिक कर विश्वास के योग्य हो, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अयं कविरकविषु प्रचेता मर्तेष्वग्निरमृतो नि धायि।**

**स मा नो अत्र जुहुरः सहस्वः सदा त्वे सुमनसः स्याम॥४॥**

**अयम्। कविः। अकविषु। प्रऽचेताः। मर्तेषु। अग्निः। अमृतः। नि। धायि। सः। मा। नः। अत्र। जुहुरः। सहस्वः। सदा। त्वे इति। सुऽमनसः। स्याम॥४॥**

**पदार्थः**-**(अयम्)** **(कविः)** क्रान्तप्रज्ञो विद्वान् **(अकविषु)** अक्रान्तप्रज्ञेष्वविद्वत्सु **(प्रचेताः)** प्रज्ञापयिता **(मर्त्तेषु)** मनुष्येषु **(अग्निः)** विद्युदिव **(अमृतः)** स्वस्वरूपेण नाशरहितः **(नि)** **(धायि)** निधीयते **(सः)** **(मा)** निषेधे **(नः)** अस्मान् **(अत्र)** अस्मिन् व्यवहारे **(जुहुरः)** हिंस्यात् **(सहस्वः)** प्रशस्तबलयुक्त **(सदा)** **(त्वे)** त्वयि **(सुमनसः)** **(स्याम)**॥४॥

**अन्वयः**-हे सहस्वो! योऽयं भवताऽकविषु कविर्मर्त्तेषु प्रचेता अग्निरिवाऽमृतो नि धायि स त्वमत्र नो मा जुहुरो यतो वयं त्वे सुमनसः सदा स्याम॥४॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! योऽयं दीर्घब्रह्मचर्येण विद्वद्भ्यो विद्या गृह्णाति स एव विद्वान् प्रशस्तधीर्मनुष्येषु महान् कल्याणकारकः स्यात्तं प्रति सर्वे मनुष्याः सुहृद्भावेन यदि वर्त्तेरंस्तर्ह्यविद्वांसोऽपि धीमन्तो भवेयुः॥४॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-हे **(सहस्वः)** प्रशस्त बलवाले! जो **(अयम्)** प्रत्यक्ष आप **(अकविषु)** न्यून बुद्धि वाले अविद्वानों में **(कविः)** तीव्र बुद्धियुक्त विद्वान् **(मर्त्तेषु)** मनुष्यों में **(प्रचेताः)** चेत कराने वाले **(अग्निः)** विद्युत् अग्नि के तुल्य **(अमृतः)** अपने स्वरूप से नाशरहित पुरुष को **(नि, धायि)** धारण करते हैं **(सः)** सो आप **(अत्र)** इस व्यवहार में **(नः)** हमको **(मा)** मत **(जुहुरः)** मारिये जिससे हम लोग **(त्वे)** आप में **(सुमनसः)** सुन्दर प्रसन्न चित्त वाले **(सदा)** सदा **(स्याम)** होवें॥४॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जो यह दीर्घ ब्रह्मचर्य के साथ विद्वानों से विद्या को ग्रहण करता है, वही विद्वान् प्रशंसित बुद्धि वाला, मनुष्यों में महान् कल्याणकारी हो उसके प्रति सब मनुष्य यदि मित्रता से वर्तें तो अविद्वान् भी बुद्धिमान् होवें॥४॥

**को विद्वान् किंवत्करोतीत्याह॥**

कौन विद्वान् किसके तुल्य करता है, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**आ यो योनिं॑ दे॒वकृ॑तं स॒साद॒ क्रत्वा॒ ह्य१॒॑ग्निर॒मृताँ॒ अता॑रीत्।**

**तमोष॑धीश्च व॒निन॑श्च॒ गर्भं॒ भूमि॑श्च वि॒श्वधा॑यसं बिभर्ति॥५॥५॥**

**आ। यः। योनि॑म्। दे॒वऽकृ॑तम्। स॒साद॑। क्रत्वा॑। हि। अ॒ग्निः। अ॒मृता॑न्। अता॑रीत्। तम्। ओष॑धीः। च॒। व॒निनः॑। च॒। गर्भ॑म्। भूमिः॑। च॒। वि॒श्वऽधा॑यसम्। बि॒भ॒र्ति॒॥५॥**

**पदार्थः**-**(आ)** **(यः)** **(योनिम्)** गृहम् देवकृतम् विद्वद्भिर्विद्याध्ययनाय निर्मितम् **(ससाद)** निवसेत् **(क्रत्वा)** प्रज्ञया **(हि)** यतः **(अग्निः)** पावक इव **(अमृतान्)** नाशरहिताञ्जीवान् पदार्थान् वा **(अतारीत्)** तारयति **(तम्)** **(ओषधीः)** सोमाद्याः **(च)** **(वनिनः)** वनानि बहवो किरणा विद्यन्ते येषु तान् **(च)** **(गर्भम्)** **(भूमिः)** पृथिवी च **(विश्वधायसम्)** यो विश्वाः समग्रा विद्या दधाति ताम् **(बिभर्ति)**॥५॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! योऽग्निरिव देवकृतं योनिमा ससाद स हि क्रत्वाऽमृतानतारीद्यश्च भूमिरिव तं विश्वधायसं गर्भमोषधीश्च वनिनश्च बिभर्ति स एव पूज्यतमो भवति॥५॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यथाऽग्निः समिद्भिर्हविर्भिश्च वर्धते तथैव ये विद्यालयं गत्वाऽऽचार्य्यं प्रसाद्य ब्रह्मचर्येण विद्यामभ्यस्यन्ति त ओषधीवदविद्यारोगनिवारकाः सूर्यवद्धर्मप्रकाशका भूमिवद्विश्वम्भरा भवन्ति॥५॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(यः)** जो **(अग्निः)** अग्नि के तुल्य तेजस्वी **(देवकृतम्)** विद्वानों ने विद्या पढ़ने के अर्थ बनाये **(योनिम्)** घर में **(आ, ससाद)** अच्छे प्रकार निवास करे वह **(हि)** ही **(क्रत्वा)** बुद्धि से **(अमृतान्)** नाशरहित जीवों वा पदार्थों को **(अतारीत्)** तारता है **(च)** और जो **(भूमिः)** पृथिवी के तुल्य सहनशील पुरुष **(तम्)** उस **(विश्वधायसम्)** समस्त विद्याओं के धारण करने वाले



www.9009.co.in

**(गर्भम्)** उपदेशक **(च)** और **(ओषधिः)** सोमादि ओषधियों **(च)** और **(वनिनः)** बहुत किरणों वाले अग्नियों को **(च)** भी **(बिभर्ति)** धारण करता है, वही अतिपूज्य होता है॥५॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे अग्नि समिधा और होमने योग्य पदार्थों से बढ़ता है, वैसे ही जो पाठशाला में जा आचार्य को प्रसन्न कर ब्रह्मचर्य से विद्या का अभ्यास करते हैं, वे ओषधियों के तुल्य अविद्यारूप रोग के निवारक, सूर्य के तुल्य धर्म के प्रकाशक और पृथिवी के समान सब के धारण वा पोषणकर्त्ता होते हैं॥५॥

**मनुष्यैः कदाचित्कृतघ्नैर्न भवितव्यमित्याह॥**

मनुष्यों को कभी कृतघ्न नहीं होना चाहिये, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**ईशे ह्य१ग्निरमृतस्य भूरेरीशे रायः सुवीर्यस्य दातोः।**

**मा त्वा वयं सहसावन्नवीरा माप्सवः परि षदाम मादुवः॥६॥**

**ईशे। हि। अग्निः। अमृतस्य। भूरेः। ईशे। रायः। सुऽवीर्यस्य। दातोः। मा। त्वा। वयम्। सहसाऽवन्। अवीराः। मा। अप्सवः। परि। सदाम्। मा। अदुवः॥६॥**

**पदार्थः**-**(ईशे)** ईष्टे ज्ञातुमिच्छति **(हि)** खलु **(अग्निः)** पावक इव **(अमृतस्य)** परमात्मनः। **अधीगर्थदयेशां कर्मणी**ति कर्मणि षष्ठी। (अष्टा०२.३.५२) **(भूरेः)** बहुविधस्य **(ईशे)** **(रायः)** धनस्य **(सुवीर्यस्य)** सुष्ठु वीर्यं पराक्रमो यस्मात्तस्य **(दातोः)** दातुम् **(मा)** **(त्वा)** त्वाम् **(वयम्)** **(सहसावन्)** बहुबलयुक्त **(अवीराः)** वीरतारहिताः **(मा)** **(अप्सवः)** कुरूपाः **(परि)** **(सदाम)** प्राप्नुयाम **(मा)** **(अदुवः)** अपरिचारकाः॥६॥

**अन्वयः**-हे सहसावन् विद्वन्! योऽग्निरिव भवानमृतस्येशे भूरेः सुवीर्यस्य रायो दातोरीशे तं हि त्वाऽवीराः सन्तो वयं मा परि षदामाऽप्सवो भूत्वा त्वां मा परि षदामाऽदुवो भूत्वा मा परि षदाम॥६॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! योऽमृतविज्ञानं पुष्कलां विविधसुखप्रियां श्रियं युष्मभ्यं प्रयच्छति तत्सन्निधौ वीरतां सुरूपतां सेवां च त्यक्त्वा निष्ठुराः कृतघ्ना मा भवत॥६॥

**पदार्थः**-हे **(सहसावन्)** बहुत बलयुक्त विद्वान् पुरुष! जो **(अग्निः)** अग्नि के समान तेजस्वी आप **(अमृतस्य)** नाशरहित नित्य परमात्मा को जानने को **(ईशे)** समर्थ वा इच्छा करते हो **(भूरेः)** बहुत प्रकार के **(सुवीर्यस्य)** सुन्दर पराक्रम के निमित्त **(रायः)** धन के **(दातोः)** देने को **(ईशे)** समर्थ हो **(तम्)** उन **(हि)** ही **(त्वा)** आपको **(अवीराः)** वीरता रहित हुए **(वयम्)** हम लोग **[(मा)]** **(परि, सदाम)** सब ओर से प्राप्त **[न]** हों **(अप्सवः)** कुरूप होकर आपको **(मा)** मत प्राप्त हों **(अदुवः)** न सेवक होकर **(मा)** नहीं प्राप्त हों॥६॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो अमृतरूप ईश्वर का विज्ञान, विविध सुखों से तृप्त करने वाली परिपूर्ण लक्ष्मी को तुम्हारे लिये देता है, उसके समीप वीरता, सुन्दरपन और सेवा को छोड़ के निठुर, कृतघ्नी मत होओ॥६॥

**किं धनं स्वकीयं परकीयञ्चास्तीत्याह॥**

अपना कौन और पराया धन कौन है, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**परिषद्यं ह्यरणस्य रेक्णो नित्यस्य रायः पतयः स्याम।**

**न शेषो अग्ने अन्यजातमस्त्यचेतानस्य मा पथो वि दुक्षः॥७॥**

**परिऽसद्यम्। हि। अरणस्य। रेक्णः। नित्यस्य। रायः। पतयः। स्याम। न। शेषः। अग्ने। अन्यऽजातम्। अस्ति। अचेतानस्य। मा। पथः। वि। दुक्षः॥७॥**

**पदार्थः**-(**परिषद्यम्**) परिषदि सभायां भवम् (**हि**) (**अरणस्य**) अविद्यमानो रणः सङ्ग्रामो यस्मिंस्तस्य (**रेक्णः**) धनम्। **रेक्ण इति धननाम।** (निघं०२.१०) (**नित्यस्य**) स्थिरस्य (**रायः**) धनस्य (**पतयः**) स्वामिनः (**स्याम**) (**न**) (**शेषः**) (**अग्ने**) विद्वन् (**अन्यजातम्**) अन्येनाऽन्यस्माद्वा समुत्पन्नम् (**अस्ति**) (**अचेतानस्य**) चेतनतारहितस्य मूर्खस्य (**मा**) (**पथः**) मार्गान् (**वि**) (**दुक्षः**) दूषयेः॥७॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! त्वमचेतानस्य पथो मा विदुक्षः परिषद्यमन्यजातं हि रेक्णोऽस्य शेषो वा स्वकीयो नास्तीति विजानीहि त्वत्सङ्गेन सहायेन वयमरणस्य नित्यस्य रायः पतयः स्याम॥७॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यद्धर्मयुक्तेन पुरुषार्थेन धनं प्राप्नुयात्तदेव स्वकीयं मन्यध्वं नाऽन्यायेनोपार्जितं ज्ञानिनां मार्गं पाखण्डोपदेशेन मा विदूषयत यथा धर्म्येण पुरुषार्थेन धनं लभ्येत तथैव प्रयतध्वम्॥७॥

**पदार्थः**-हे (**अग्ने**) विद्वन्! आप (**अचेतानस्य**) चेतनतारहित मूर्ख के (**पथः**) मार्गों को (**मा**) मत (**विदुक्षः**) दूषित कर (**परिषद्यम्**) सभा में होने वाले (**अन्यजातम्**) अन्य से उत्पन्न (**हि**) ही (**रेक्णः**) धन को इस प्रकार जाने कि इस की (**शेषः**) विशेषता वा अपने आत्मा की ओर से शुद्ध विचार कुछ (**न, अस्ति**) नहीं है, [ऐसा जानो], आपके सङ्ग वा सहाय से हम लोग (**अरणस्य**) संग्रामरहित (**नित्यस्य**) स्थिर (**रायः**) धन के (**पतयः**) स्वामी (**स्याम**) होवें॥७॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! धर्मयुक्त पुरुषार्थ से जिस धन को प्राप्त हो उसी को अपना धन मानो, किन्तु अन्याय से उपार्जित धन को अपना मत मानो। ज्ञानियों के मार्ग को पाखण्ड के उपदेश से मत दूषित करो, जैसे धर्मयुक्त पुरुषार्थ से धन प्राप्त हो, वैसे ही प्रयत्न करो॥७॥

**कः पुत्रो मन्तुं योग्योऽस्तीत्याह॥**

कौन पुत्र मानने के योग्य है, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**नहि ग्रभायारणः सुशेवोऽन्योदर्यो मनसा मन्तवा उ।**



www.9009.co.in

**अधा चिदोकः पुनरित्स एत्या नो वाज्यभीषाळेतु नव्यः॥८॥**

**नहि। ग्रभाय। अरणः। सुऽशेवः। अन्यऽउदर्यः। मनसा। मन्तवै। ऊँ इति। अध। चित्। ओकः। पुनः। इत्। सः। एति। आ। नः। वाजी। अभीषाट्। एतु। नव्यः॥८॥**

**पदार्थः**-(**नहि**) निषेधे (**ग्रभाय**) ग्रहणाय (**अरणः**) अरममाणः (**सुशेवः**) सुसुखः (**अन्योदर्य्यः**) अन्योदराज्जातः (**मनसा**) अन्तःकरणेन (**मन्तवै**) मन्तुं योग्यः (**उ**) (**अध**) अथ। अत्र **निपातस्य चे**ति दीर्घः। (अष्टा० ६.३.१३४) (**चित्**) अपि (**ओकः**) गृहम् (**पुनः**) (**इत्**) एव (**सः**) (**एति**) (**आ**) (**नः**) अस्मान् (**वाजी**) विज्ञानवान् (**अभीषाट्**) योऽभिसहते सः (**एतु**) प्राप्नोतु (**नव्यः**) नवेषु भवः॥८॥

**अन्वयः**-हे मनुष्य! योऽरणः सुशेवोऽन्योदर्य्यो भवेत्स मनसा ग्रभाय नहि मन्तवै चिदु पुनरित् स ओको न ह्येत्यध यो नव्योऽभिषाड् वाजी नोऽस्माना एतु॥८॥

**भावार्थः**-हे मनुष्याः! पुत्रत्वायाऽन्यगोत्रजोऽन्यस्माज्जातो न गृहीतव्यः स च गृहादिदायभागी न भवेत्किन्तु य औरसो स्वगोत्राद् गृहीतो वा भवेत्स एव पुत्रः पुत्रप्रतिनिधिर्वा भवेत्॥८॥

**पदार्थः**-हे मनुष्य! जो (**अरुणः**) रमण न करता हुआ (**सुशेवः**) सुन्दर सुख से युक्त (**अन्योदर्य्यः**) दूसरे के उदर से उत्पन्न हुआ हो (**सः**) वह (**मनसा**) अन्तःकरण से (**ग्रभाय**) ग्रहण के लिये (**नहि**) नहीं (**मन्तवै**) मानने योग्य है (**चित्, उ, पुनः, इत्**) और भी फिर ही वह (**ओकः**) घर को नहीं (**एति**) प्राप्त होता (**अध**) इस के अनन्तर जो (**नव्यः**) नवीन (**अभीषाट्**) अच्छा सहनशील (**वाजी**) विज्ञानवाला (**नः**) हमको (**आ, एतु**) प्राप्त हो॥८॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! अन्य गोत्र में अन्य पुरुष से उत्पन्न हुए बालक को पुत्र करने के लिये नहीं ग्रहण करना चाहिये क्योंकि वह घर आदि का दायभागी नहीं हो सकता, किन्तु जो अपने शरीर से उत्पन्न वा अपने गोत्र से लिया हुआ हो, वही पुत्र वा पुत्र का प्रतिनिधि होवे॥८॥

**पुना राजा किं कुर्य्यादित्याह॥**

फिर राजा क्या करे, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**त्वमग्ने वनुष्यतो नि पाहि त्वमु नः सहसावन्नवद्यात्।**

**सन्त्वाध्वस्मन्वदभ्येतु पाथः सं रयिः स्पृहयाय्यः सहस्री॥९॥**

**त्वम्। अग्ने। वनुष्यतः। नि। पाहि। त्वम्। ऊं इति। नः। सहसाऽवन्। अवद्यात्। सम्। त्वा। ध्वस्मन्ऽवत्। अभि। एतु। पाथः। सम्। रयिः। स्पृहयाय्यः। सहस्री॥९॥**

**पदार्थः**-(**त्वम्**) (**अग्ने**) अग्निरिव विद्वन् राजन् सज्जन (**वनुष्यतः**) याचमानान् (**नि**) नित्यम् (**पाहि**) (**त्वम्**) (**त्वम्**) (**उ**) (**नः**) अस्मान् (**सहसावन्**) बहुबलेन युक्त (**अवद्यात्**)



www.9009.co.in

अधर्माचरणान्निन्द्यात् **(सम्)** **(त्वा)** त्वाम् **(ध्वस्मन्वत्)** ध्वस्तदोषविकारम् **(अभि)** **(एतु)** सर्वतः प्राप्नोतु **(पाथः)** अन्नम् **[सम्]** **(रयिः)** धनम् **(स्पृहयाय्यः)** स्पृहणीयः **(सहस्री)** असंख्यः॥९॥

**अन्वयः**-हे सहसावन्नग्ने! त्वं वनुष्यतो नि पाहि त्वमु अवद्यान्नो नि पाहि यतस्त्वा ध्वस्मन्वत् पाथः समभ्येतु सहस्री स्पृहयाय्यो रयिश्च समभ्येतु॥९॥

**भावार्थः**-हे राजन्! यदि त्वं त्वत्तो रक्षणमिच्छतः प्रजाजनान् सततं रक्षेस्त्वं च निन्द्यादधर्माचरणात् पृथग्वर्त्तेत तर्ह्यतुले धनधान्ये त्वां प्राप्नुयाताम्॥९॥

**पदार्थः**-हे **(सहसावन्)** बहुत बल से युक्त **(अग्ने)** के तुल्य तेजस्वि विद्वन्! **(त्वम्)** आप **(वनुष्यतः)** मांगने वालों की **(नि, पाहि)** निरन्तर रक्षा कीजिये (उ) और **(त्वम्)** आप **(अवद्यात्)** निन्दित अधर्माचरण से **(नः)** हमारी निरन्तर रक्षा कीजिये जिससे **(त्वा)** आपको **(ध्वस्मन्वत्)** दोष और विकार जिसके नष्ट हो गये उस **(पाथः)** अन्न को **(सम्, अभि, एतु)** सब ओर से प्राप्त हूजिये **(सहस्री)** असंख्य **(स्पृहयाय्यः)** चाहने योग्य **(रयिः)** धन भी **(सम्)** सम्यक् प्राप्त होवे॥९॥

**भावार्थः**-हे राजन्! यदि आप से रक्षा चाहते हुए प्रजाजनों की निरन्तर रक्षा करें और आप स्वयं अधर्माचरण से पृथक् वर्त्तें तो आप को अतुल धनधान्य प्राप्त होवें॥९॥

**पुना राज्ञा किं कर्त्तव्यमित्युच्यते।**

फिर राजा को क्या करना चाहिये, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**एता नो अग्ने सौभगा दिदीह्यपि क्रतुं सुचेतसं वतेम।**

**विश्वा स्तोतृभ्यो गृणते च सन्तु यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥१०॥६॥**

**एता। नः। अग्ने। सौभगा। दिदीहि। अपि। क्रतुम्। सुऽचेतसम्। वतेम। विश्वा। स्तोतृऽभ्यः। गृणते। च। सन्तु। यूयम्। पात। स्वस्तिऽभिः सदा। नः॥१०॥**

**पदार्थः**-**(एता)** एतानि **(नः)** अस्मभ्यम् **(अग्ने)** पावक इव विद्याविनयाभ्यां प्रकाशमान **(सौभगा)** सुभगस्योत्तमैश्वर्यस्य भावो येषु तानि **(दिदीहि)** सर्वतः प्रकाशय **(अपि)** **(क्रतुम्)** प्रज्ञाम् **(सुचेतसम्)** सुष्ठु विज्ञानयुक्ताम् **(वतेम)** सम्भजेम **(विश्वा)** सर्वाणि **(स्तोतृभ्यः)** ऋत्विग्भ्यः **(गृणते)** यजमानाय **(च)** **(सन्तु)** **(यूयम्)** राजभृत्याः **(पात)** **(स्वस्तिभिः)** स्वास्थ्यकरणाभिः क्रियाभिः **(सदा)** **(नः)** अस्मान्॥१०॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! त्वमेता सौभगा न दिदीह्यपि तु सुचेतसं क्रतुं दिदीहि स्तोतृभ्यो गृणते च सौभगा सन्तु यतो यूयं स्वस्तिभिर्नः सदा पात तस्माद्वयं पूर्वोक्तां प्रज्ञां विश्वा धनानि च वतेम॥१०॥

**भावार्थः**-हे राजन्! यदि भवान् सर्वेभ्यो ब्रह्मचर्येण विद्यादानं दापयेद् ऋत्विजो यजमानं च सर्वदा रक्षेस्तर्हि स्वास्थ्येन पूर्णं राज्यैश्वर्यं प्राप्नुयादिति॥१०॥

अत्राऽग्निविद्वद्राजवीरप्रजारक्षणादिकृत्यवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥



www.9009.co.in

**इति चतुर्थं सूक्तं षष्ठो वर्गश्च समाप्तः।।**

**पदार्थः**-हे **(अग्ने)** अग्नि के तुल्य तेजस्वि राजन्! आप **(एता)** इन **(सौभगा)** उत्तम ऐश्वर्य्य वाले पदार्थों को **(नः)** हमारे लिये **(दिदीहि)** प्रकाशित कीजिये **(अपि)** और तो **(सुचेतसम्)** सुन्दर ज्ञानयुक्त **(क्रतुम्)** बुद्धि को प्रकाशित कीजिये **(अपि)** और तो **(सुचेतसम्)** सुन्दर ज्ञानयुक्त **(क्रतुम्)** बुद्धि को प्रकाशित कीजिये **(स्तोतृभ्यः)** ऋत्विजों के लिये **(च)** तथा **(गृणते)** यजमान के लिये उत्तम ऐश्वर्य्य वाले **(सन्तु)** हों जिससे **(यूयम्)** तुम लोग **(स्वस्तिभिः)** स्वस्थता करने वाली क्रियाओं से **(नः)** हमारी **(सदा)** सदा **(पात)** रक्षा करो इसलिये हम लोग पूर्वोक्त बुद्धि और **(विश्वा)** धनों का **(वतेम)** सेवन करें।।१०।।

**भावार्थः**-हे राजन्! यदि आप सब मनुष्यों को ब्रह्मचर्य्य के साथ विद्यादान दिलावें, ऋत्विजों और यजमानों को सर्वदा रक्षा करें तो स्वस्थता से पूर्ण राज्य के ऐश्वर्य्य को प्राप्त हों।।१०।।

इस सूक्त में अग्नि, विद्वान्, राजा, वीर और प्रजा की रक्षा आदि कृत्य का वर्णन होने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ संगति जाननी चाहिये।

**यह चौथा सूक्त और छठा वर्ग समाप्त हुआ।।**



www.9009.co.in

**अथ नवर्चस्य पञ्चमस्य सूक्तस्य वसिष्ठ ऋषिः। वैश्वानरो देवता। १, ४ विराट्त्रिष्टुप् २, ३, ८, ९ निचृत्त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः। ५, ७ स्वराट् पङ्क्तिः। ६ पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः॥**

***अथ कस्य प्रशंसोपासने कर्त्तव्ये इत्याह॥***

अब नौ ऋचावाले पांचवें सूक्त का आरम्भ है। इसके प्रथम मन्त्र में किसकी प्रशंसा और उपासना करनी चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**प्राग्नये॑ त॒वसे॑ भरध्वं॒ गिरं॑ दि॒वो अ॑र॒तये॑ पृथि॒व्याः।**

**यो विश्वे॑षाम॒मृता॑नामु॒पस्थे॑ वैश्वान॒रो वा॑वृ॒धे जा॑गृ॒वद्भिः॑॥ १॥**

**प्र। अ॒ग्नये॑। त॒वसे॑। भ॒र॒ध्व॒म्। गिर॑म्। दि॒वः। अ॒र॒तये॑। पृ॒थि॒व्याः। यः। विश्वे॑षाम्। अ॒मृता॑नाम्। उ॒पऽस्थे॑। वैश्वा॒न॒रः। व॒वृ॒धे। जा॒गृ॒वत्ऽभिः॑॥ १॥**

**पदार्थः**-(**प्र**) (**अग्नये**) परमात्मने (**तवसे**) बलिष्ठाय (**भरध्वम्**) (**गिरम्**) योगसंस्कारयुक्तां वाचम् (**दिवः**) सूर्यस्य (**अरतये**) प्राप्ताय (**पृथिव्याः**) भूमेर्मध्ये (**यः**) (**विश्वेषाम्**) सर्वेषाम् (**अमृतानाम्**) नाशरहितानां जीवानां प्रकृत्यादीनां वा (**उपस्थे**) समीपे (**वैश्वानरः**) विश्वेषु नरेषु राजमानः (**वावृधे**) वर्धयति (**जागृवद्भिः**) अविद्यानिद्रात उत्थातृभिः॥ १॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यो वैश्वानरो जगदीश्वरे दिवः पृथिव्या विश्वेषाममृतानामुपस्थे वावृधे जागृवद्भिरेव गम्यते तस्मै तवसेऽरतयेऽग्नये गिरं प्र भरध्वम्॥ १॥

**भावार्थः**-यदि सर्वे मनुष्याः सर्वेषां धर्त्तारं योगिभिर्गम्यं परमात्मानमुपासीरंस्तर्हि ते सर्वतो वर्धन्ते॥ १॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो (**यः**) जो (**वैश्वानरः**) सम्पूर्ण मनुष्यों में प्रकाशमान जगदीश्वर (**दिवः**) सूर्य वा (**पृथिव्याः**) पृथिवी के बीच (**विश्वेषाम्**) सब (**अमृतानाम्**) नाशरहित जीवात्माओं वा प्रकृति आदि के (**उपस्थे**) समीप में (**वावृधे**) बढ़ाता है (**जागृवद्भिः**) अविद्या निद्रा से उठने वाले ही उसको प्राप्त होते उस (**तवसे**) बलिष्ठ (**अरतये**) व्याप्त (**अग्नये**) परमात्मा के लिये (**गिरम्**) योगसंस्कार से युक्त वाणी को (**प्र, भरध्वम्**) धारण करो अर्थात् स्तुति प्रार्थना करो॥ १॥

**भावार्थः**-यदि सब मनुष्य सब के धर्त्ता योगियों को प्राप्त होने योग्य परमेश्वर की उपासना करें तो वे सब ओर से वृद्धि को प्राप्त हों॥ १॥

**पुनः स कीदृश इत्याह॥**

फिर वह कैसा है, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**पृ॒ष्टो दि॒वि धाय्य॒ग्निः पृ॑थि॒व्यां ने॒ता सिन्धू॑नां वृष॒भः स्तिया॑नाम्।**

**स मानु॑षीर॒भि विशो॒ वि भा॑ति वैश्वान॒रो वा॑वृधा॒नो वरे॑ण॥ २॥**



www.9009.co.in

**पृष्ठः। दिवि। धायि। अग्निः। पृथिव्याम्। नेता। सिन्धूनाम्। वृषभः। स्तियानाम्। सः। मानुषीः। अभि। विशः। वि। भाति। वैश्वानरः। वावृधानः। वरेण॥ २॥**

**पदार्थः**-(**पृष्ठः**) प्रष्टव्यः (**दिवि**) सूर्ये (**धायि**) ध्रियते (**अग्निः**) पावक इव स्वप्रकाश ईश्वरः (**पृथिव्याम्**) अन्तरिक्षे भूमौ वा (**नेता**) मर्यादायाः स्थापकः (**सिन्धूनाम्**) नदीनां समुद्राणां वा (**वृषभः**) अनन्तबलः (**स्तियानाम्**) अपां जलानाम्। **स्तिया आपो भवन्ति स्त्यायनादिति।** (निरु० ६.१७) (**सः**) (**मानुषीः**) मनुष्यसम्बन्धिनीरिमाः (**अभि**) (**विशः**) प्रजाः (**वि**) (**भाति**) प्रकाशते (**वैश्वानरः**) सर्वेषां नायकः (**वावृधानः**) सदा वर्धयिता (**वरेण**) उत्तमस्वभावेन॥ २॥

**अन्वयः**-हे विद्वांसो! योगिभिर्योऽग्निर्दिवि पृथिव्यां धायि सिन्धूनां स्तियानां वृषभः सन्नेता वरेण वावृधानो यो वैश्वानरो मानुषीर्विशोऽभि वि भाति स पृष्टोऽस्ति॥ २॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यः सर्वस्याः प्रजाया नियमव्यवस्थायां स्थापकस्सूर्यादिप्रजाप्रकाशकः सर्वेषामुपास्यदेवो स पृष्टव्यः श्रोतव्यो मन्तव्यो निदिध्यासितव्यो ज्ञातव्योऽस्ति॥ २॥

**पदार्थः**-हे विद्वानो! योगियों से जो (**अग्निः**) अग्नि के तुल्य स्वयं प्रकाशस्वरूप ईश्वर (**दिवि**) सूर्य (**पृथिव्याम्**) भूमि वा अन्तरिक्ष में (**धायि**) धारण किया जाता (**सिन्धूनाम्**) नदी वा समुद्रों और (**स्तियानाम्**) जलों के बीच (**वृषभः**) अनन्तबलयुक्त हुआ (**नेता**) मर्यादा का स्थापक (**वरेण**) उत्तम स्वभाव के साथ (**वावृधानः**) सदा बढ़ाने वाला (**वैश्वानरः**) सब को अपने-अपने कामों में नियोजक (**मानुषीः**) मनुष्यसम्बन्धी (**विशः**) प्रजाओं को (**अभि, वि, भाति**) प्रकाशित करता है (**सः**) वह (**पृष्टः**) पूछने योग्य है॥ २॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो सब प्रजा का नियम व्यवस्था में स्थापक, सूर्यादि प्रजा का प्रकाशक, सब का उपास्य देव, वह पूछने, सुनने, जानने, विचारने और मानने योग्य है॥ २॥

**पुनः स परमेश्वरः कीदृशोऽस्तीत्याह॥**

फिर वह परमेश्वर कैसा है, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**त्वद्भिया विश आयन्नसिक्नीरसमना जहतीर्भोजनानि।**

**वैश्वानर पूरवे शोशुचानः पुरो यदग्ने दरयन्नदीदेः॥ ३॥**

**त्वत्। भिया। विशः। आयन्। असिक्नीः। असमनाः। जहती। भोजनानि। वैश्वानर। पूरवे। शोशुचानः। पुरः। यत्। अग्ने। दरयन्। अदीदेः॥ ३॥**

**पदार्थः**-(**त्वत्**) तव सकाशात् (**भिया**) भयेन (**विशः**) प्रजाः (**आयन्**) मर्यादामायान्तु (**असिक्नीः**) रात्रीः। **असिक्नीति रात्रिनाम।** (निघं०१.७) (**असमनाः**) पृथक् पृथग्वर्त्तमानाः (**जहतीः**) पूर्वामवस्थां त्यजन्तीः (**भोजनानि**) भोक्तव्यानि पालनानि वा (**वैश्वानर**) सर्वत्र विराजमान



www.9009.co.in

**(पूरवे)** मनुष्याय **(शोशुचानः)** पवित्रं विज्ञानम् **[**दद**न्]** **(पुरः)** पुरस्तात् **(यत्)** यः **(अग्ने)** सूर्य इव स्वप्रकाश **(दरयन्)** दुःखानि विदारयन् **(अदीदेः)** प्रकाशयेः॥३॥

**अन्वयः**-हे वैश्वानराग्ने! यद्यस्त्वं दुःखानि दरयन् पूरवे शोशुचानः पुरोऽदीदेस्तस्मात् त्वद्भियाऽसिक्नीरसमना भोजनानि जहतीर्विश आयन्॥३॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! **(भीषास्माद् वातः पवते भीषोदेति सूर्यः। भीषास्मादिन्द्रश्च वायुश्च मृत्युर्धावति पञ्चम इति** कठवल्ल्युपनिषदि (तुलना–कठोप०२.६.३, तैत्तिरोयोप० ब्र० वल्ली, अनुवाक ८.१) परमेश्वरस्य सत्यन्यायभयात् सर्वे जीवा अधर्माद्भीत्वा धर्मे रुचिं कुर्वन्ति यस्य प्रभावात्पृथिवी सूर्यादयो लोकाः स्वस्वपरिधौ नियमेन भ्रमन्ति स्वस्वरूपं धृत्वा जगदुपकुर्वन्ति स एव परमात्मा सर्वैर्मनुष्यैर्ध्येयः॥३॥

**पदार्थः**–हे **(वैश्वानर)** सर्वत्र विराजमान **(अग्ने)** सूर्य के तुल्य प्रकाशस्वरूप **(यत्)** जो आप दुःखों को **(दरयन्)** विदीर्ण करते हुए **(पूरवे)** मनुष्य के लिये **(शोशुचानः)** पवित्र विज्ञान को **(पुरः)** पहिले **(अदीदेः)** प्रकाशित करें इससे **(त्वत्)** आपके **(भिया)** भय से **(असिक्नीः)** रात्रियों के प्रति **(असमनाः)** पृथक्–पृथक् वर्त्तमान **(भोजनानि)** भोगने योग्य वा पालन और **(जहतीः)** अपनी पूर्वावस्था को त्यागती हुई **(विशः)** प्रजा **(आयन्)** मर्यादा को प्राप्त हों॥३॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जिस परमेश्वर के भय से वायु आदि पदार्थ अपने–अपने काम में नियुक्त होते हैं, उसके सत्य–न्याय के भय से सब जीव अधर्म से भय कर धर्म में रुचि करते हैं। जिसके प्रभाव से पृथिवी सूर्य्य आदि लोक अपनी अपनी परिधि में नियम से भ्रमते हैं, अपने स्वरूप का धारण कर जगत् का उपकार करते हैं, वही परमात्मा सब को ध्यान करने योग्य है॥३॥

**पुनः स जगदीश्वरः कीदृशोऽस्तीत्याह॥**

फिर वह जगदीश्वर कैसा है, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**तव त्रिधातु पृथिवी उत द्यौर्वैश्वानर व्रतमग्ने सचन्त।**

**त्वं भासा रोदसी आततन्थाऽजस्रेण शोचिषा शोशुचानः॥४॥**

**तव। त्रिऽधातु। पृथिवी। उत। द्यौः। वैश्वानर। व्रतम्। अग्ने। सचन्त। त्वम्। भासा। रोदसी इति। आ। ततन्थ। अजस्रेण। शोचिषा। शोशुचानः॥४॥**

**पदार्थः**–**(तव)** जगदीश्वरस्य **(त्रिधातु)** त्रयस्सत्त्वादयो गुणा धातवो धारका यस्मिंस्तदव्यक्तं प्रकृत्यात्मकं जगत्कारणम् **(पृथिवी)** भूमिः **(उत)** **(द्यौः)** सूर्यः **(वैश्वानर)** विश्वस्य नायक **(व्रतम्)** कर्म **(अग्ने)** सर्वप्रकाशक **(सचन्तः)** सम्बध्नन्ति **(त्वम्)** **(भासा)** स्वकीयप्रकाशेन **(रोदसी)** सूर्यादिप्रकाशकं पृथिव्याद्यप्रकाशं द्विविधं जगत् **(आ ततन्थ)** सर्वतस्तनोषि **(अजस्रेण)** निरन्तरेणान्नादिना **(शोचिषा)** स्वप्रकाशेन **(शोशुचानः)** प्रकाशमानः॥४॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे वैश्वानराग्ने! तव व्रतं त्रिधातु पृथिवी उत द्यौश्च सचन्त यस्त्वमजस्रेण शोचिषा शोशुचानः सन् स्वभासा रोदसी आततन्थ तमेव त्वं वयं सततं ध्याये॥४॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यस्याधारे पृथिवी भूमिः सूर्यश्च स्थित्वा स्वकार्य्यं कुरुतः न तत्र सूर्यो भाति न चन्द्रतारकं नेमा विद्युतो भान्ति कुतोऽयमग्निः। तमेव भान्तमनुभाति सर्वं तस्य भासा सर्वमिदं विभातीति कठवल्यामिति वेदितव्यम्। (कठो०२.५.१५)॥५॥

**पदार्थः**-हे **(वैश्वानर)** सबके नायक **(अग्ने)** सबके प्रकाशक ईश्वर! **(तव)** आपके **(व्रतम्)** कर्म और **(त्रिधातु)** धारण करने वाले तीन सत्त्वादि गुणों वाले प्रकृत्यादिरूप अव्यक्त जगत् के कारण को **(पृथिवी)** भूमि **(उत)** और **(द्यौः)** सूर्य **(सचन्त)** सम्बद्ध करते हैं जो **(त्वम्)** आप **(अजस्रेण)** निरन्तर अन्नादि **(शोचिषा)** अपने प्रकाश से **(शोशुचानः)** प्रकाशमान हुए **(भासा)** अपने प्रकाश से **(रोदसी)** सूर्य्यादि प्रकाशवाले और पृथिव्यादि प्रकाशरहित दो प्रकार के जगत् को **(आ, ततन्थ)** सब ओर से विस्तृत करते हैं, उन्हीं आपका हम लोग निरन्तर ध्यान करें॥४॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जिसके आधार में पृथिवी सूर्य स्थित होके अपना कार्य करते हैं, कठोपनिषद् में लिखा है कि उस परमात्मा को जानने के लिये सूर्य, चन्द्रमा, बिजुली वा अग्नि आदि कुछ प्रकाश नहीं कर सकते, किन्तु उसी प्रकाशित परमेश्वर के प्रकाश से सब प्रकाशित होते हैं॥४॥

**पुनः स कीदृशोऽस्तीत्याह॥**

फिर वह कैसा है, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**त्वाम॑ग्ने हरि॑तो वावशा॒ना गिर॑: सचन्ते॒ धुन॑यो घृ॒ताची॑:।**

**पति॑ कृ॒ष्टी॒नां र॒थ्यं॑ रयी॒णां वै॑श्वा॒न॒रमु॒षसां॑ के॒तुमह्ना॑म्॥५॥७॥**

**त्वाम्। अ॒ग्ने॒। ह॒रित॑:। वा॒व॒शा॒ना॑:। गिर॑:। स॒च॒न्ते॒। धुन॑य:। घृ॒ताची॑:। पति॑म्। कृ॒ष्टी॒नाम्। र॒थ्य॑म्। र॒यी॒णाम्। वै॒श्वा॒न॒रम्। उ॒षसा॑म्। के॒तुम्। अह्ना॑म् ॥५॥**

**पदार्थः**-**(त्वाम्)** परमात्मानम् **(अग्ने)** ज्ञानस्वरूप **(हरितः)** दिशः। **हरित इति दिङ्नाम**। (निघं०१.६) **(वावशानाः)** कमनीयाः **(गिरः)** वाचः **(सचन्ते)** **(धुनयः)** वायवः **(घृताचीः)** रात्रयः। **घृताचीति रात्रिनाम**। (निघं०१.७) **(पतिम्)** स्वामिनं पालकम् **(कृष्टीनाम्)** मनुष्याणाम्। **कृष्टय इति मनुष्यनाम।** (निघं०२.३) **(रथ्यम्)** रथेभ्यो हितमश्वमिव प्रापकं **(रयीणाम्)** धनानाम् **(वैश्वानरम्)** अग्निमिव **(उषसाम्)** प्रभातवेलानाम् **(केतुम्)** सूर्यमिव **(अह्नाम्)** दिनानाम्॥५॥

**अन्वयः**-हे अग्ने जगदीश्वर! यं त्वां हरितो वावशाना गिरो धुनयो घृताचीश्च सचन्ते तं रयीणां रथ्यमिवोषसां वैश्वानरमह्नां केतुमिव कृष्टीनां पतिं त्वां वयं सततं भजेम॥५॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यस्मिन् सर्वा दिशो वेदवाचः पवना रात्र्यादयः कालावयवाः सम्बद्धाः सन्ति तमेव समग्रैश्वर्यप्रदं सूर्य इव स्वप्रकाशं परमात्मानं नित्यं ध्यायत॥५॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-हे **(अग्ने)** ज्ञानस्वरूप जगदीश्वर! जिस **(त्वाम्)** आपको **(हरितः)** दिशा **(वावशानाः)** कामना के योग्य **(गिरः)** वाणी **(धुनयः)** वायु और **(घृताचीः)** रात्री **(सचन्ते)** सम्बन्ध करते हैं उस **(रयीणाम्)** धनों के **(रथ्यम्)** पहुँचाने वाले घोड़े के तुल्य रथों के हितकारी **(उषसाम्)** प्रभात वेलाओं के बीच **(वैश्वानरम्)** अग्नि के तुल्य प्रकाशित **(अह्नाम्)** दिनों के बीच **(केतुम्)** सूर्य के तुल्य **(कृष्टीनाम्)** मनुष्यों के **(पतिम्)** रक्षक स्वामी आपका हम लोग निरन्तर सेवन करें॥५॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जिस में सब दिशा, वेदवाणी, पवन और रात्री आदि काल के अवयव सम्बद्ध हैं, उसी समग्र ऐश्वर्य के देने वाले सूर्य के तुल्य स्वयं प्रकाशित परमात्मा का नित्य ध्यान करो॥५॥

**पुनः स कीदृशोऽस्तीत्याह॥**

फिर वह कैसा है, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**त्वे अ॑सु॒र्यं१॒॑ वस॑वो॒ न्यृ॑ण्व॒न् क्रतुं॒ हि ते॑ मित्रमहो जु॒षन्त॑।**

**त्वं दस्यूँ॒रोक॑सो अग्न आज उ॒रु ज्योति॑र्ज॒नय॑न्नार्या॑य॥६॥**

**त्वे॒ इति॑। अ॒सु॒र्य॑म्। वस॑वः। नि। ऋ॒ण्व॒न्। क्रतु॑म्। हि। ते॒। मि॒त्र॒ऽम॒हः॒। जु॒षन्त॑। त्वम्। दस्यू॑न्। ओक॑सः। अ॒ग्ने॒। आ॒जः॒। उ॒रु। ज्योतिः॑। ज॒नय॑न्। आर्या॑य॥६॥**

**पदार्थः**-**(त्वे)** त्वयि परमात्मनि **(असुर्यम्)** असुरस्य मेघस्येदं स्वकीयं स्वरूपम् **(वसवः)** पृथिव्यादयः **(नि)** नित्यम् **(ऋण्वन्)** प्रसाध्नुवन्ति **(क्रतुम्)** क्रियाम् **(हि)** खलु **(ते)** तव **(मित्रमहः)** यो मित्रेषु महाँस्तत्सम्बुद्धौ **(जुषन्त)** सेवन्ते **(त्वम्)** **(दस्यून्)** दुष्टकर्मकारकान् **(ओकसः)** गृहात् **(अग्ने)** वह्निवत्सर्वदोषप्रणाशकः **(आजः)** प्रापयसि **(उरु)** बहु **(ज्योतिः)** प्रकाशम् **(जनयन्)** प्रकटयन् **(आर्याय)** सज्जनाय मनुष्याय॥६॥

**अन्वयः**-हे मित्रमहोऽग्ने! यस्मिँस्त्वे वसवोऽसुर्यं क्रतुं न्यृण्वञ्जुषन्तो यस्त्वमार्यायोरु ज्योतिर्जनयन्नोकसो दस्यूनाज तस्य ते हि वयं ध्यायेम॥६॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! योगिनः यस्मिन् परमेश्वरे स्थिरा भूत्वेष्टं कामं साध्नुवन्ति तस्यैव ध्यानेन सर्वान् कामान् यूयमपि प्राप्नुत॥६॥

**पदार्थः**-हे **(मित्रमहः)** मित्रों में बड़े **(अग्ने)** अग्नि के तुल्य सब दोषों के नाशक! जिस **(त्वे)** आप परमात्मा में **(वसवः)** पृथिवी आदि आठ वसु **(असुर्यम्)** मेघ के सम्बन्धी **(क्रतुम्)** कर्म को **(नि, ऋण्वन्)** निरन्तर प्रसिद्ध करते हैं तथा **(जुषन्त)** सेवते हैं जो **(त्वम्)** आप **(आर्याय)** सज्जन मनुष्य के लिये **(उरु)** अधिक **(ज्योतिः)** प्रकाश को **(जनयन्)** प्रकट करते हुए **(ओकसः)** घर से **(दस्यून्)** दुष्ट कर्म करने वालों को **(आजः)** प्राप्त करते हैं उन **(ते)** आपका **(हि)** ही निरन्तर हम लोग ध्यान करें॥६॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! योगीजन जिस परमेश्वर में स्थिर होकर इष्ट काम को सिद्ध करते हैं, उसी परमात्मा के ध्यान से सब कामनाओं को तुम लोग भी प्राप्त होओ॥६॥

**पुनः स जगदीश्वरः किं करोतीत्याह॥**

फिर वह जगदीश्वर क्या करता है, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**स जाय॑मानः पर॒मे व्यो॑मन् वा॒युर्न पाथ॒ः परि॑ पासि स॒द्यः।**

**त्वं भुव॑ना ज॒नय॑न्न॒भिक्र॒न्नप॑त्याय जातवेदो दश॒स्यन्॥७॥**

**सः। जाय॑मानः। प॒र॒मे। वि॒ऽओ॑मन्। वा॒युः। न। पाथ॑ः। परि॑। पा॒सि॒। स॒द्यः। त्वम्। भुव॑ना। ज॒नय॑न्। अ॒भि। क्र॒न्। अप॑त्याय। जा॒त॒ऽवे॒द॒ः। द॒श॒स्यन्॥७॥**

**पदार्थः**-**(सः)** योगी **(जायमानः)** उत्पद्यमानः **(परमे)** उत्कृष्टे **(व्योमन्)** व्योमवद्व्यापके **(वायुः)** पवनः **(न)** इव **(पाथः)** पृथिव्यादिकम् **(परि) (सर्वतः) (पासि) (सद्यः) (त्वम्) (भुवना)** सर्वांल्लोकान् **(जनयन्)** उत्पादयन् **(अभि क्रन्)** पूर्णं कुर्वन्। अत्र **वाच्छन्दसीति** विकरणभावः। **(अपत्याय)** सन्तानाय मातेव **(जातवेदः)** यो जातं सर्वं वेत्ति तत्सम्बुद्धौ **(दशस्यन्)** कामान् प्रयच्छन्॥७॥

**अन्वयः**-हे परमेश्वर! यः परमो व्योमँस्त्वयि जायमानो योगी वायुर्न पाथः सद्य एति स भवतोन्नीयते। हे जातवेदो! यस्त्वं भुवना जनयन्नपत्याय मातेव कामान् दशस्यन् सर्वमभि क्रन् सर्वं परि पासि तस्मादुपासनीयोऽसि॥७॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! योऽपत्याय मातेव कृपालुरक्षको योगीव सर्वकामप्रदः सकलविश्वकर्त्ता सर्वरक्षक ईश्वरोऽस्ति तमेव नित्यमुपाध्वम्॥७॥

**पदार्थः**-हे परमेश्वर जो **(परमे)** उत्तम **(व्योमन्)** आकाश के तुल्य व्यापक आप में **(जायमानः)** उत्पन्न होता हुआ योगीजन **(वायुः, न)** वायु के तुल्य **(पाथः)** पृथिव्यादि को **(सद्यः)** शीघ्र **(एति)** प्राप्त होता है **(सः)** वह आप से उन्नति को प्राप्त होता है। हे **(जातवेदः)** उत्पन्न हुए सब को जानने वाले! जो **(त्वम्)** आप **(भुवना)** सब लोकों को **(जनयन्)** उत्पन्न करते हुए **(अपत्याय)** माता जैसे सन्तान के लिये, वैसे कामनाओं को **(दशस्यन्)** पूर्ण करते हुए सब को **(अभि, क्रन्)** पूर्ण करते हुए **(परि, पासि)** सब ओर से रक्षा करते हो, इससे उपासना के योग्य हैं॥७॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जो अपत्य के लिये माता के तुल्य कृपालु, रक्षक, योगी के तुल्य सब काम देने वाला, सब विश्व का कर्त्ता, सब का रक्षक ईश्वर है, उसी की नित्य उपासना करो॥७॥

**पुनस्स ईश्वरः कस्मै किं ददातीत्याह॥**

फिर वह ईश्वरो किसको क्या देता है, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं।



www.9009.co.in

**तामग्ने अस्मे इषमेरयस्व वैश्वानर द्युमतीं जातवेदः।**

**यया राधः पिन्वसि विश्ववार पृथु श्रवो दाशुषे मर्त्याय॥८॥**

**ताम्। अग्ने। अस्मे इति। इषम्। आ। ईरयस्व। वैश्वानर। द्युऽमतीम्। जातऽवेदः। यया। राधः। पिन्वसि। विश्वऽवार। पृथु। श्रवः। दाशुषे। मर्त्याय॥८॥**

**पदार्थः**-(**ताम्**) (**अग्ने**) विज्ञनस्वरूप (**अस्मे**) अस्मभ्यम् (**इषम्**) अन्नादिकम् (**आ**) समन्तात् (**ईरयस्व**) प्रापय (**वैश्वानर**) विश्वस्मिन् राजमान (**द्युमतीम्**) प्रशस्ता द्यौः कामाना विद्यते यस्यास्ताम् (**जातवेदः**) जातेषु सर्वेषु विद्यमान (**यया**) रीत्या (**राधः**) धनम् (**पिन्वसि**) ददासि (**विश्ववार**) विश्वैस्सर्वैर्वरणीयः (**पृथु**) विस्तीर्णम् (**श्रवः**) श्रवणम् (**दाशुषे**) विद्यादात्रे (**मर्त्याय**) मनुष्याय॥८॥

**अन्वयः**-हे वैश्वानर जातवेदो विश्ववाराग्ने! त्वं दाशुषे मर्त्याय यया पृथु राधः श्रवश्च पिन्वसि तां द्युमतीमिषमस्मे एरयस्व॥८॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यस्योपासनेन विद्वांसः पुष्कलमैश्वर्यं पूर्णां विद्यां चाप्नुवन्ति यश्चोपासितः सन् समग्रमैश्वर्यं प्रयच्छति तमेव नित्यं सेवध्वम्॥८॥

**पदार्थः**-हे (**वैश्वानर**) सब में प्रकाशमान (**जातवेदः**) उत्पन्न हुए पदार्थों में विद्यमान (**विश्ववार**) सब से स्वीकार करने योग्य (**अग्ने**) विज्ञानस्वरूप ईश्वर! आप (**दाशुषे**) विद्या देने वाले (**मर्त्याय**) मनुष्य के लिये (**यया**) जिससे (**पृथु**) विस्तारयुक्त (**राधः**) धन और (**श्रवः**) श्रवण को (**पिन्वसि**) देते हो (**ताम्**) उस (**द्युमतीम्**) प्रशस्त कामना वाले (**इषम्**) अन्नादि को (**अस्मे**) हमारे लिये (**आ, ईरयस्व**) प्राप्त कीजिये॥८॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जिसकी उपासना से विद्वान् लोग पूर्ण विद्या को प्राप्त होते हैं, जो उपासना किया हुआ समस्त ऐश्वर्य को देता है, उसी की नित्य सेवा करो॥८॥

**पुनः स ईश्वर किं किं ददातीत्याह॥**

फिर वह ईश्वर क्या क्या देता है, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**तं नो अग्ने मघवद्भ्यः पुरुक्षुं रयिं नि वाजं श्रुत्यं युवस्व।**

**वैश्वानर महि नः शर्म यच्छ रुद्रेभिरग्ने वसुभिः सजोषाः॥९॥८॥**

**तम्। नः। अग्ने। मघवत्ऽभ्यः। पुरुऽक्षुम्। रयिम्। नि। वाजम्। श्रुत्यम्। युवस्व। वैश्वानर। महि। नः। शर्म। यच्छ। रुद्रेभिः। अग्ने। वसुऽभिः। सऽजोषाः॥९॥**

**पदार्थः**- (**तम्**) (**नः**) अस्मभ्यम् (**अग्ने**) विद्युदिव वर्त्तमान जगदीश्वर (**मघवद्भ्यः**) बहुधनयुक्तेभ्यो धनेशेभ्यः (**पुरुक्षुम्**) बह्वन्नादिकम् (**रयिम्**) धनम् (**नि**) नित्यम् (**वाजम्**) विज्ञानम् (**श्रुत्यम्**) श्रोतुमर्हम् (**युवस्व**) संयोजय (**वैश्वानर**) (**महि**) महत् (**नः**) अस्मभ्यम् (**शर्म**) सुखं गृहं वा



www.9009.co.in

**(यच्छ)** देहि **(रुद्रेभिः)** प्राणैः **(अग्ने)** प्राणस्य प्राण **(वसुभिः)** पृथिव्यादिभिस्सह **(सजोषाः)** व्याप्तः सन् प्रीतः प्रसन्नः॥९॥

**अन्वयः**-हे वैश्वानराग्ने त्वं मघवद्भ्यो नोऽस्मभ्यं पुरुक्षुं तं श्रुत्यं रयिं वाजं नि युवस्व। हे अग्ने! रुद्रेभिर्वसुभिः सजोषास्त्वं नो महि शर्म यच्छ॥९॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यो धनैश्वर्यप्रशंसनीयविज्ञानं राज्यं च पुरुषार्थिभ्यः प्रयच्छति तमेव प्रीत्या सततमुपाध्वमिति॥९॥

अत्रेश्वरकृत्यवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति पञ्चमं सूक्तमष्टमो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे **(वैश्वानर)** सब को अपने-अपने कार्य में लगाने वाले **(अग्ने)** अग्नि के तुल्य प्रकाशित जगदीश्वर आप **(मघवद्भ्यः)** बहुत धनयुक्त हमारे लिये **(पुरुक्षुम्)** बहुत अन्नादि **(तम्)** उस **(श्रुत्यम्)** सुनने योग्य **(रयिम्)** धन को और **(वाजम्)** विज्ञान को **(नि, युवस्व)** नित्य संयुक्त करो। हे **(अग्ने)** प्राण के प्राण! **(वसुभिः)** पृथिवी आदि तथा **(रुद्रेभिः)** प्राणों के साथ **(सजोषाः)** व्याप्त और प्रसन्न हुए आप **(नः)** हमारे लिये **(महि)** बड़े **(शर्म)** सुख वा घर को **(यच्छ)** दीजिये॥९॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो परमात्मा धन ऐश्वर्य्य और प्रशंसा के योग्य विज्ञान और राज्य को पुरुषार्थियों के लिये देता है, उसी की प्रीतिपूर्वक निरन्तर उपासना किया करो॥९॥

इस सूक्त में ईश्वर के कृत्य का वर्णन होने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ संगति जाननी चाहिये।

**यह पांचवां सूक्त और आठवां वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

**अथ सप्तर्चस्य षष्ठस्य सूक्तस्य वसिष्ठ ऋषिः। वैश्वानरो देवता। १, ४, ५ निचृत्त्रिष्टुप्। ६ विराट् त्रिष्टुप्छन्दः। धैवतः स्वरः। २ निचृत्पङ्क्तिः। ३, ७ भुरिक् पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः॥**

***अथ को राजा वरः स्यादित्याह।***

अब सात ऋचा वाले छठे सूक्त का आरम्भ है। इसके पहिले मन्त्र में कौन राजा श्रेष्ठ हो, इस विषय को कहते हैं॥

**प्र स॒म्राजो॒ असु॑रस्य॒ प्रश॑स्तिं पुं॒सः कृ॒ष्टी॒नाम॑नु॒माद्य॑स्य।**

**इन्द्र॑स्येव॒ प्र त॒वस॑स्कृ॒तानि॒ वन्दे॑ दा॒रुं वन्द॑मानो विवक्मि॥ १॥**

**प्र। स॒म्ऽराज॑ः। असु॑रस्य। प्रऽश॑स्तिम्। पुं॒सः। कृ॒ष्टी॒नाम्। अ॒नु॒ऽमाद्य॑स्य। इन्द्र॑स्यऽइव। प्र। त॒वस॑ः। कृ॒तानि॑। वन्दे॑। दा॒रुम्। वन्द॑मानः। वि॒व॒क्मि॒॥ १॥**

**पदार्थः**-(**प्र**) (**सम्राजः**) चक्रवर्तिनः (**असुरस्य**) मेघस्येव वर्त्तमानस्य (**प्रशस्तिम्**) प्रशंसाम् (**पुंसः**) पुरुषस्य (**कृष्टीनाम्**) मनुष्याणाम् (**अनुमाद्यस्य**) अनुहर्षितुं योग्यस्य (**इन्द्रस्येव**) सूर्यस्येव (**प्र**) (**तवसः**) बलात् (**कृतानि**) (**वन्दे**) नमस्करोमि (**दारुम्**) दुःखविदारकम् (**वन्दमानः**) स्तुवन् सन् (**विवक्मि**) विशेषेण वदामि॥ १॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथा दारुं वन्दमानोऽहं कृष्टीनां मध्येऽसुरस्येवेन्द्रस्येवानुमाद्यस्य सम्राजः पुंसः प्रशस्तिं प्र विवक्मि तवसः कृतानि प्र वन्दे तथैतस्य प्रशंसां कृत्वैतं सदा वन्दध्वम्॥ १॥

**भावार्थः**-अत्रोपमावाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यः शुभगुणकर्मस्वभावैर्युक्तो वन्दनीयः प्रशंसनीयः स्यात् तस्य चक्रवर्तिनः शुभकर्मजनितां प्रशंसां कुरुत॥ १॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे (**दारुम्**) दुःख के दूर करने वाले ईश्वर की (**वन्दमानः**) स्तुति करता हुआ मैं (**कृष्टीनाम्**) मनुष्यों के बीच (**असुरस्य**) मेघ के तुल्य वर्त्तमान (**इन्द्रस्य**) सूर्य के समान (**अनुमाद्यस्य**) अनुकूल हर्ष करने योग्य (**सम्राजः**) चक्रवर्ती (**पुंसः**) पुरुष की (**प्रशस्तिम्**) प्रशंसा (**प्र, विवक्मि**) विशेष कहता हूँ (**तवसः**) बल से (**कृतानि**) किये हुओं को (**प्र, वन्दे**) नमस्कार करता हूँ, वैसे इस की प्रशंसा कर के इस की सदा वन्दना करो॥ १॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमा और वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जो शुभ गुण, कर्म और स्वभावों से युक्त वन्दनीय और प्रशंसा के योग्य हो, उस चक्रवर्ती राजा की शुभकर्मों से हुई प्रशंसा करो॥ १॥

**पुनः स राजा कीदृशो भवेदित्याह॥**

फिर वह राजा कैसा हो इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**क॒विं के॒तुं धा॒सिं भा॒नुमद्रे॑र्हि॒न्वन्ति॒ शं रा॒ज्यं रोद॑स्योः।**



www.9009.co.in

**पु॒रं॒द॒रस्य॑ गी॒र्भिरा वि॑वासे॒ऽग्नेर्व्र॒तानि॑ पू॒र्व्या म॒हानि॑॥ २॥**

**क॒विम्। के॒तुम्। धा॒सिम्। भा॒नुम्। अद्रेः॑। हि॒न्वन्ति॑। शम्। रा॒ज्यम्। रोद॑स्योः। पु॒र॒म्ऽद॒रस्य॑। गी॒ःऽभिः। आ। वि॒वा॒से॒। अ॒ग्नेः। व्र॒तानि॑। पू॒र्व्या। म॒हानि॑॥ २॥**

**पदार्थः**-(**कविम्**) क्रान्तप्रज्ञं विद्वांसम् (**केतुम्**) महाप्राज्ञम् (**धासिम्**) अन्नमिव पोषकम् (**भानुम्**) विद्याविनयदीप्तिमन्तम् (**अद्रेः**) मेघस्य (**हिन्वन्ति**) प्राप्नुवन्ति वर्धयन्ति वा (**शम्**) सुखरूपम् (**राज्यम्**) (**रोदस्योः**) प्रकाशपृथिव्योः सम्बन्धि (**पुरंदरस्य**) शत्रूणां पुरां विदारकस्य (**गीर्भिः**) वाग्भिः (**आ**) समन्तात् (**विवासे**) सेवे (**अग्नेः**) पावकस्येव वर्त्तमानस्य (**व्रतानि**) कर्माणि (**पूर्व्या**) पूर्वैः राजभिः कृतानि (**महानि**) महान्ति॥ २॥

**अन्वयः**-हे राजन्नग्नेरिव! यस्य ते गीर्भिरद्रेरिव वर्त्तमानस्य पुरंदरस्य राज्ञो महानि पूर्व्या व्रतानि कविं केतुं धासिं भानुं रोदस्योः शं राज्यं हिन्वन्ति तमहं विवासे॥ २॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यस्योत्तमानि कर्माणि राज्यं विदुषो वर्धयन्ति राज्यं सुखयुक्तं कुर्वन्ति तस्यैव सत्कारः सर्वैः कर्त्तव्यः॥ २॥

**पदार्थः**-हे राजन् (**अग्नेः**) अग्नि के समान! जिन आपकी (**गीर्भिः**) वाणियों से (**अद्रेः**) मेघ के तुल्य वर्तमान (**पुरंदरस्य**) शत्रुओं के नगरों को विदीर्ण करने वाले राजा के (**महानि**) बड़े (**पूर्व्या**) पूर्वज राजाओं ने किये (**व्रतानि**) कर्मों को तथा (**कविम्**) तीव्र बुद्धि वाले (**केतुम्**) अतीव बुद्धिमान् विद्वान् को (**धासिम्**) अन्न के तुल्य पोषक (**भानुम्**) विद्या, विनय और दीप्ति से युक्त (**रोदस्योः**) प्रकाश और पृथिवी के सम्बन्धी (**शम्**) सुखस्वरूप (**राज्यम्**) राज्य को (**हिन्वन्ति**) प्राप्त करवाते बढ़ाते हैं, उनका मैं (**आ, विवासे**) अच्छे प्रकार सेवन करता हूँ॥ २॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जिसके उत्तम कर्म राज्य और विद्वानों को बढ़ाते हैं और राज्य को सुखयुक्त करते हैं, उसी प्रकार सबको करना चाहिये॥ २॥

**पुनर्विद्वद्भिः के निरोद्धव्या इत्याह॥**

फिर विद्वानों को कौन रोकने योग्य है, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**न्य॑क्र॒तून्ग्र॒थिनो॑ मृ॒ध्रवा॑चः प॒णीँरश्र॒द्धाँ अ॑वृ॒धाँ अ॑य॒ज्ञान्।**

**प्रप्र॒ तान् दस्यूँ॑र॒ग्निर्वि॑वा॒य॒ पूर्व॑श्चका॒राप॑राँ॒ अय॑ज्यून्॥ ३॥**

**नि। अ॒क्र॒तून्। ग्र॒थिनः॑। मृ॒ध्रऽवा॑चः। प॒णीन्। अ॒श्र॒द्धान्। अ॒वृ॒धान्। अ॒य॒ज्ञान्। प्रऽप्र॒। तान्। दस्यू॑न्। अ॒ग्निः। वि॒वा॒य॒। पूर्वः॑। च॒का॒र॒। अप॑रान्। अय॑ज्यून्॥ ३॥**

**पदार्थः**-(**नि**) (**अक्रतून्**) निर्बुद्धीन् (**ग्रथिनः**) अज्ञानेन बद्धान् (**मृध्रवाचः**) मृध्रा हिंस्रा अनृता वाग्येषान्ते (**पणीन्**) व्यवहारिणः (**अश्रद्धान्**) श्रद्धारहितान् (**अवृधान्**) अवर्धकान् हानिकरान् (**अयज्ञान्**) सङ्गाद्यग्निहोत्राद्यनुष्ठानरहितान् (**प्रप्र**) (**तान्**) (**दस्यून्**) दुष्टान् साहसिकाँश्चोरान् (**अग्निः**)



www.9009.co.in

अग्निरिव राजा **(विवाय)** दूरं गमयति **(पूर्वः)** आदिमः **(चकार)** करोति **(अपरान्)** अन्यान् **(अयज्यून्)** विद्वत्सत्कारविरोधिनः॥३॥

**अन्वयः**-हे राजन्नग्निरिव! भवानक्रतूनग्रथिनो मृध्रवाचोऽयज्ञानश्रद्धानवृधाँस्तान् दस्यून् प्रप्र विवाय पूर्वः सन्नपरानयज्यून् पणीन्नि चकार॥३॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे विद्वांसो! यूयं सत्योपदेशशिक्षाभ्यां सर्वानविदुषो बोधयन्तु यत एतेऽपरानपि विदुषः कुर्य्युः॥३॥

**पदार्थः**-हे राजन् **(अग्निः)** अग्नि के तुल्य तेजोमय! आप **(अक्रतून्)** निर्बुद्धि **(ग्रथिनः)** अज्ञान से बंधने **(मृध्रवाचः)** हिंसक वाणी वाले **(अयज्ञान्)** सङ्गादि वा अग्निहोत्रादि के अनुष्ठान से रहित **(अश्रद्धान्)** श्रद्धारहित **(अवृधान्)** हानि करनेहारे **(तान्)** उन **(दस्यून्)** दुष्ट साहसी चोरों को **(प्रप्र, विवाय)** अच्छे प्रकार दूर पहुँचाइये **(पूर्वः)** प्रथम से प्रवृत्त हुए आप **(अपरान्)** अन्य **(अयज्यून्)** विद्वानों के सत्कार के विरोधियों को **(पणीन्)** व्यवहार वाले **(नि, चकार)** निरन्तर करते हैं॥३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे विद्वानो! तुम लोग सत्य के उपदेश और शिक्षा से सब अविद्वानों को बोधित करो, जिससे ये अन्यों को भी विद्वान् करें॥३॥

**पुनः स राजा कीदृशो भवेदित्याह॥**

फिर वह राजा कैसा हो, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**यो अपाचीने तमसि मदन्तीः प्राचीश्चकार नृतमः शचीभिः।**

**तमीशानं वस्वो अग्निं गृणीषेऽनानतं दुमयन्तं पृतन्यून्॥४॥**

**यः। अपाचीने। तमसि। मदन्तीः। प्राचीः। चकार। नृऽतमः। शचीभिः। तम्। ईशानम्। वस्वः। अग्निम्। गृणीषे। अनानतम्। दुमयन्तम्। पृतन्यून्॥४॥**

**पदार्थः**-**(यः)** **(अपाचीने)** योऽधोऽञ्चति **(तमसि)** अन्धकारे **(मदन्तीः)** आनन्दन्तीः **(प्राचीः)** या प्रागञ्चति **(चकार)** करोति **(नृतमः)** अतिशयेन नृणां मध्य उत्तमः ( **शचीभिः)** उत्तमाभिर्वाग्भिः। **शचीति वाङ्नाम**। (निघं०१.११) **(तम्)** **(ईशानम्)** समर्थम् **(वस्वः)** वसुनो धनस्य **(अग्निम्)** **(गृणीषे)** स्तौषि **(अनानतम्)** नम्रीभूतम् **(दमयन्तम्)** निवारयन्तम् **(पृतन्यून्)** आत्मनः पृतनां सेनामिच्छून्॥४॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यो नृतमः शचीभिरपाचीने तमसि मदन्तीः प्राचीश्चकार। हे विद्वन्! यो वस्वः ईशानमनानतं पृतन्यून् दमयन्तमग्निं गृणीषे तं वयं सत्कुर्याम॥४॥



www.9009.co.in

**भावार्थः-**यो नरोत्तमो राजा प्रजाभिस्सह पितृवद्वर्त्तते यथा निद्रायां सुखी भवति तथा सर्वाः प्रजा आनन्दयञ्छत्रून्निवारयति यो युद्धे भयाच्छत्रुभ्यो नम्रो न भवति धनस्य वर्धको वर्त्तते तमेव राजानं वयं सदा सत्कुर्याम॥४॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(यः)** जो **(नृतमः)** मनुष्यों में उत्तम **(शचीभिः)** उत्तम वाणियों से **(अपाचीने)** बुरा चलना जिसमें हो उस **(तमसि)** अन्धकार में **(मदन्तीः)** आनन्द करती हुई **(प्राचीः)** पूर्व को चलने वाली सेनाओं को **(चकार)** करता है। हे विद्वन्! जिस **(वस्वः)** धन के **(ईशानम्)** स्वामी **(अनानतम्)** नम्रस्वरूप **(पृतन्यून्)** अपने को सेना की इच्छा करने वालों को **(दमयन्तम्)** निवृत्त करते हुए **(अग्निम्)** अग्नि के तुल्य प्रकाशस्वरूप ईश्वर की **(गृणीषे)** स्तुति करता है **(तम्)** उसका हम लोग सत्कार करें॥४॥

**भावार्थः-**जो मनुष्यों में उत्तम राजा प्रजाओं के साथ पिता के तुल्य वर्त्तता है, जैसे निद्रा में सुखी होता है, वैसे सब प्रजाओं को आनन्द देता हुआ शत्रुओं को निवृत्त करता है। जो युद्ध में भय से शत्रुओं के साथ नम्र नहीं होता और धन का बढ़ाने वाला है, उसी राजा का हम लोग सदा सत्कार करें॥४॥

**पुनः कीदृशो राजोत्तमतमो भवतीत्याह॥**

फिर कैसा राजा अत्यन्त उत्तम होता है, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**यो देह्यो३ अनमयद्वधस्नैर्यो अर्यपत्नीरुषसश्चकार।**

**स निरुध्या नहुषो यह्वो अग्निर्विशश्चक्रे बलिहृतः सहोभिः॥५॥**

**यः। देह्यः। अनमयत्। वधऽस्नैः। यः। अर्यऽपत्नीः। उषसः। चकार। सः। निरुध्य। नहुषः। यह्वः। अग्निः। विशः। चक्रे। बलिऽहृतः। सहःऽभिः॥५॥**

**पदार्थः**-**(यः)** **(देह्यः)** उपचेतुं वर्धयितुं योग्यः **(अनमयत्)** दुष्टान्नम्रान् कारयेत् **(वधस्नैः)** वधेन शोधकैर्भृत्यैर्न्यायाधीशैः **(यः)** **(अर्यपत्नीः)** स्वामिनां भार्या **(उषसः)** प्रातर्वेला इव सुशोभिताः **(चकार)** करोति **(सः)** **(निरुध्या)** अत्र **संहितायामि**ति दीर्घः। **(नहुषः)** सत्ये बद्धः **(यह्वः)** महान् **(अग्निः)** अग्निरिव तेजस्वी **(विशः)** प्रजाः **(चक्रे)** कुर्यात् **(बलिहृतः)** या बलिं हरन्ति ताः **(सहोभिः)** सहनशीलैर्बलिष्ठैः॥५॥

**अन्वयः**-हे मनुष्यो! यो देह्यो वधस्नैर्दुष्टाननमयद्यः सूर्य उषस इवाऽर्यपत्नीश्चकार यो नहुषो यह्वोऽग्निरिव सहोभिश्शत्रून् निरुध्या विशो बलिहृतश्चक्रे स सर्वैः पितृवत्पूज्यः॥

**भावार्थः-**अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे प्रजाजना! यो विद्वत्तमो दुष्टाचारानन्यायवृत्तिं च निरुध्य जितेन्द्रियो भूत्वा न्यायेन प्रजाभ्यो बलिं हरति स सर्वैर्वर्धनीयो भवति॥५॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो **(यः)** जो **(देह्यः)** बढ़ाने योग्य **(वधस्नैः)** मारने से शुद्ध करने वाले न्यायाधीशों से दुष्टों को **(अनमयत्)** नम्र करावे **(यः)** जो सूर्य जैसे **(उषसः)** प्रातःकाल की वेलाओं



www.9009.co.in

को सुशोभित करता है, वैसे **(अर्यपत्नीः)** स्वामी की स्त्रियों को शोभित **(चकार)** करता है और जो **(नहुषः)** सत्य में बद्ध **(यह्वः)** महान् **(अग्निः)** अग्नि के तुल्य तेजस्वी **(सहोभिः)** सहनशील बलिष्ठों के साथ शत्रुओं को **(निरुध्या)** रोक के **(विशः)** प्रजाओं को **(बलिहृतः)** कर पहुँचाने वाला **(चक्रे)** करे **(सः)** वह सब को पिता के तुल्य पूज्य है॥५॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे प्रजाजनो! जो अत्यन्त विद्वान् दुष्टाचारियों और अन्याय के वर्त्ताव को रोक जितेन्द्रिय होके न्यायपूर्वक प्रजा से कर लेता है, वह सब को बढ़ाने योग्य होता है॥५॥

**पुनः को राजा नित्यं वर्धत इत्याह॥**

फिर कौन राजा नित्य बढ़ता है, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**यस्य शर्मन्नुप विश्वे जनास एवैस्तस्थुः सुमतिं भिक्षमाणाः।**

**वैश्वानरो वरमा रोदस्योराग्निः ससाद पित्रोरुपस्थम्॥६॥**

**यस्य। शर्मन्। उप। विश्वे। जनासः। एवैः। तस्थुः। सुऽमतिम्। भिक्षमाणाः। वैश्वानरः। वरम्। आ। रोदस्योः। आ। अग्निः। ससाद। पित्रोः। उपऽस्थम्॥६॥**

**पदार्थः**-**(यस्य) (शर्मन्)** गृहे **(उप) (विश्वे)** सर्वे **(जनासः)** उत्तमा धार्मिका विद्वांसः **(एवैः)** विज्ञानादिप्राप्तैः सद्गुणैस्सह **(तस्थुः)** तिष्ठन्ति **(सुमतिम्)** शोभनां प्रज्ञाम् **(भिक्षमाणः)** नित्यं याचमाना उन्नतिशीलाः **(वैश्वानरः)** विश्वेषां नराणां मध्ये राजमानः **(वरम्)** उत्तमं जनम् **(आ) (रोदस्योः)** द्यावापृथिव्योर्मध्ये **(आ) (अग्निः)** सूर्य इव **(ससाद)** सीदति **(पित्रोः)** सुशिक्षाकर्त्रोरध्यापकोपदेशकयोः **(उपस्थम्)** समीपम्॥६॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यस्य शर्मन् सुमतिं भिक्षमाणा एवैः सह वर्त्तमाना विश्वे जनास उप तस्थुर्यो वैश्वानरो रोदस्योरग्निरास्थित इव पित्रोरुपस्थं वरमा ससाद स एव साम्राज्यं कर्त्तुमर्हति॥६॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। स एव राजा नित्यं वर्धते यस्य समीपे नित्यं विद्यावर्धका विद्वांसो मन्त्रिणस्स्युर्यो ह्याप्तोपदेशं नित्यं गृह्णाति स सूर्य इव भूगोले प्रकाशमानो भूत्वा प्रशस्तं राज्यं प्राप्नोति॥६॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो **(यस्य)** जिसके **(शर्मन्)** घर में **(सुमतिम्)** उत्तम बुद्धि की **(भिक्षमाणाः)** नित्य याचना करते हुए उन्नतिशील **(एवैः)** विज्ञानादि से प्राप्त हुए श्रेष्ठ गुणों के साथ वर्त्तमान **(विश्वे)** सब **(जनासः)** धर्मात्मा, उत्तम विद्वान् जन **(उप, तस्थुः)** उपस्थित होते हैं जो **(वैश्वानरः)** समस्त मनुष्यों के बीच राजमान **(रोदस्योः)** सूर्य-पृथिवी के बीच **(अग्निः)** सूर्य के तुल्य स्थित हुए के समान **(पित्रोः)** उत्तम शिक्षा करने वाले अध्यापक-उपदेशक के **(उपस्थम्)** समीप **(वरम्)** उत्तम जन को **(आ, ससाद)** अच्छे प्रकार स्थित करो, वही चक्रवर्ती राज्य कर सकता है॥६॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। वही राजा नित्य बढ़ता है, जिसके समीप विद्यावर्धक, विद्वान् मन्त्री सदा रहें। जो सत्यवक्ता के उपदेश को नित्य स्वीकार करता है, वह सूर्य के तुल्य भूगोल में प्रकाशमान होकर प्रशस्त राज्य को प्राप्त होता है॥६॥

**को राजा प्रशस्तयशा भवतीत्याह॥**

कौन राजा प्रशंसित यश वाला होता है, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**आ देवो ददे बुध्न्या३ वसूनि वैश्वानर उदिता सूर्यस्य।**

**आ समुद्रादवरादा परस्मादाग्निर्ददे दिव आ पृथिव्याः॥७॥९॥**

**आ। देवः। दुदे। बुध्न्या। वसूनि। वैश्वानरः। उत्ऽइता। सूर्यस्य। आ। समुद्रात्। अवरात्। आ। परस्मात्। आ। अग्निः। दुदे। दिवः। आ। पृथिव्याः॥७॥**

**पदार्थः**-**(आ)** समन्तात् **(देवः)** पूर्णविद्यः सुखप्रदः **(ददे)** ददाति **(बुध्न्या)** बुध्न्यान्यन्तरिक्षस्थानि **(वसूनि)** द्रव्याणि **(वैश्वानरः)** विश्वेषां नराणामयं नायकः **(उदिता)** उदितावुदये **(सूर्यस्य)** **(आ)** **(समुद्रात्)** अन्तरिक्षात् **(अवरात्)** अर्वाचीनात् **(आ)** **(परस्मात्)** **(आ)** **(अग्निः)** पावक इव वर्त्तमानः **(ददे)** ददाति **(दिवः)** प्रकाशस्य **(आ)** **(पृथिव्याः)** भूमेर्मध्ये॥७॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यो वैश्वानरोऽग्निरिव देवो राजा यथा सूर्यस्योदिता बुध्न्या वसून्यासमन्तात् प्रकाशितानि जायन्ते तथा यो न्यायविद्याप्रकाशं सर्वेभ्य आददे यथा परस्मादादवरादासमुद्राद् दिवः पृथिव्याश्च मध्ये सूर्यः प्रकाशं प्रयच्छति तथा सद्गुणानादाय प्रजाभ्यो हितमाददे स आ समन्तात्सुखेन वर्धते॥७॥

**भावार्थः**-यदि विद्वांसः सत्यभावेन न्यायं संगृह्य प्रजाः पुत्रवत्पालयेयुस्तर्हि ते प्रजामध्ये सूर्य इव प्रशस्तयशसो भूत्वा इति सर्वेभ्यः सुखं दातुं शक्नुवन्तीति॥७॥

अत्र वैश्वानरदृष्टान्तेन राजकर्मवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति षष्ठं सूक्तं नवमो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! [जो] **(वैश्वानरः)** सब मनुष्यों का नायक **(अग्निः)** अग्नि के तुल्य तेजस्वी **(देवः)** पूर्ण विद्वान् सुखदाता राजा जैसे **(सूर्यस्य)** सूर्य के **(उदिता)** उदय में **(बुध्न्या)** अन्तरिक्षस्थ **(वसूनि)** द्रव्य **(आ)** अच्छे प्रकार प्रकाशित होते हैं, वैसे जो न्याय और विद्या के प्रकाश को सब से **(आ ददे)** लेता है वा जैसे **(परस्मात्)** पर **(अवरात्)** तथा इधर हुए **(आ, समुद्रात्)** अन्तरिक्ष के जल पर्य्यन्त **(दिवः)** प्रकाश और **(पृथिव्याः)** पृथिवी के बीच सूर्य्य प्रकाश को देता है, वैसे श्रेष्ठ गुणों का ग्रहण कर प्रजा के लिये हित **(आ ददे)** ग्रहण करता है वह **(आ)** अच्छे सुख से बढ़ता है॥७॥

**भावार्थः**-यदि विद्वान् लोग सत्य भाव से न्याय का संग्रह कर प्रजाओं का पुत्र के तुल्य पालन करें तो वे प्रजा में सूर्य के तुल्य प्रकाशित कीर्ति वाले होकर सब के लिये सुख देने को समर्थ होते हैं॥७॥



www.9009.co.in

इस सूक्त मे के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ संगति जाननी चाहिये।।

**यह छठा सूक्त और नववां वर्ग समाप्त हुआ।।**



www.9009.co.in

अथ सप्तर्चस्य सप्तमस्य सूक्तस्य वसिष्ठ ऋषिः। अग्निर्देवता। १, ३ त्रिष्टुप्। ४, ५, ६ निचृत्त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः। २ भुरिक् पङ्क्तिः। ७ स्वराट् पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः॥

*अथ कीदृशं राजानं कुर्युरित्याह॥*

अब सात ऋचा वाले सातवें सूक्त का आरम्भ है। उसके प्रथम मन्त्र में कैसे पुरुष को राजा करें, इस विषय को कहते हैं।

**प्र वो॑ दे॒वं चि॑त्सहसा॒नम॒ग्निमश्वं॒ न वा॒जिनं॑ हिषे॒ नमो॑भिः।**
**भवा॑ नो दू॒तो अ॑ध्व॒रस्य॑ वि॒द्वान्त्मना॑ दे॒वेषु॑ विविदे मि॒तद्रुः॥१॥**

**प्र। व॒ः। दे॒वम्। चि॒त्। स॒ह॒सा॒नम्। अ॒ग्निम्। अश्व॑म्। न। वा॒जिन॑म्। हि॒षे। नम॑ःऽभि। भव॑। न॒ः। दू॒तः। अ॒ध्व॒रस्य॑। वि॒द्वान्। त्मना॑। दे॒वेषु॑। वि॒वि॒दे। मि॒तऽद्रुः॥१॥**

**पदार्थः**-(**प्र**) (**वः**) युष्मान् (**देवम्**) दातारम् (**चित्**) अपि (**सहसानम्**) (**अग्निम्**) विद्यया प्रकाशमानम् (**अश्वम्**) आशुगामिनम् (**न**) इव (**वाजिनम्**) प्रशस्तवेगवन्तम् (**हिषे**) प्रहिणोमि (**नमोभिः**) अन्नादिभिः (**भवा**) अत्र **द्व्यचोऽतस्तिङ** इति दीर्घः। (**नः**) अस्माकम् (**दूतः**) सुशिक्षितो दूत इव (**अध्वरस्य**) अहिंसामयस्य न्याय्यव्यवहारस्य (**विद्वान्**) (**त्मना**) आत्मना (**देवेषु**) विद्वत्सु (**विविदे**) विद्वत्सु (**विविदे**) विज्ञायते (**मितद्रुः**) यो मितं शास्त्रसंमितं द्रवति प्राप्नोति सः॥१॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथाऽहं वः सहसानं देवमग्निमश्वं न वाजिनं नमोभिः प्र हिषे तथैतं यूयमपि वर्धयत। हे राजँस्त्मना यो देवेषु मितद्रुर्विद्वान् विविदे तं प्राप्य नोऽध्वरस्य दूतो भव॥१॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। यो हि प्रजाक्षेपं सहतेऽश्व इव सर्वकार्याणि सद्यो व्याप्नोति विद्वत्सु विद्वान् दूत इव प्राप्तसमाचारो भवेत्तमेव राजानं कुरुत॥१॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे मैं (**वः**) तुमको (**सहसानम्**) यज्ञ के साधक (**देवम्**) दानशील (**अग्निम्**) विद्या से प्रकाशमान (**अश्वम्, न**) शीघ्र चलने वाले घोड़े के तुल्य (**वाजिनम्**) उत्तम वेग वाले (**नमोभिः**) अन्नादि करके (**प्र, हिषे**) अच्छी वृद्धि करता हूँ, वैसे इसको तुम लोग भी बढ़ाओ। हे राजन्! (**त्मना**) आत्मा से जो (**देवेषु**) विद्वानों में (**मितद्रुः**) शास्त्रानुकूल पदार्थों को प्राप्त होने वाला (**विद्वान्**) विद्वान् (**विविदे**) जाना जाता है उसको प्राप्त होके (**नः**) हमारे (**अध्वरस्य**) अहिंसा और न्याययुक्त व्यवहार के (**दूतः**) सुशिक्षित दूत के तुल्य (**भव**) हूजिये॥१॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जो प्रजा के किये आक्षेपों को सहता, घोड़े के तुल्य सब कार्य्यों को शीघ्र व्याप्त होता, विद्वानों में विद्वान्, दूत के तुल्य समाचार पहुँचाने वाला हो, उसी को राजा करो॥१॥

**पुनः कीदृशो राजा श्रेयान् भवतीत्याह॥**



www.9009.co.in

फिर कैसा राजा श्रेष्ठ होता है, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं।

**आ या॑ह्यग्ने प॒थ्या॒३॑ अनु॒ स्वा म॒न्द्रो दे॒वानां॑ स॒ख्यं जु॒षा॒णः।**

**आ सानु॒ शुष्मै॑र्न॒दय॑न् पृथि॒व्या जम्भे॑भि॒र्विश्व॑मु॒शध॒ग्वना॑नि॥ २॥**

**आ। या॒हि॒। अ॒ग्ने॒। प॒थ्याः॑। अनु॑। स्वाः। म॒न्द्रः। दे॒वाना॑म्। स॒ख्यम्। जु॒षाणः। आ। सानु॑। शुष्मैः॑। न॒दय॑न्। पृ॒थि॒व्याः। जम्भे॑भिः। विश्व॑म्। उ॒शध॑क्। वना॑नि॥ २॥**

**पदार्थः**-(**आ याहि**) आगच्छ (**अग्ने**) विद्युदिव राजविद्याव्याप्त (**पथ्याः**) या धर्मपन्थानमर्हन्ति (**अनु**) अनुकूलाः (**स्वाः**) स्वकीयाः प्रजाः (**मन्द्रः**) आनन्दप्रदः (**देवानाम्**) विदुषाम् (**सख्यम्**) मित्रभावम् (**जुषाणः**) सेवमानः (**आ**) (**सानु**) शिखरमिव विज्ञानम् (**शुष्मैः**) बलैः (**नदयन्**) नादं कुर्वन् (**पृथिव्याः**) भूमेः (**जम्भेभिः**) गात्रविनामैः (**विश्वम्**) सर्वं जगत् (**उशधक्**) कामयमानः (**वनानि**) सूर्यकिरणानिव धनानि॥ २॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! देवानां सख्यं जुषाणो मन्द्रः शुष्मैः पृथिव्याः सान्वा नदयन्विद्युदिव जम्भेभिर्विश्वं वनान्युशधक्सन् पथ्याः स्वा अन्वा याहि॥ २॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यो विद्युदिव पराक्रमी सूर्य इव प्रतापी स्वानुकूलाः प्रजा न्यायेनानन्दिताः करोति स एवोत्तमो राजा भवति॥ २॥

**पदार्थः**-हे (**अग्ने**) बिजुली के तुल्य राजविद्या में व्याप्त! (**देवानाम्**) विद्वानों के (**सख्यम्**) मित्रपन को (**जुषाणः**) सेवते हुए (**मन्द्रः**) आनन्ददाता (**शुष्मैः**) बलों के साथ (**पृथिव्याः**) पृथिवी के (**सानु**) शिखर के तुल्य विज्ञान को (**आ, नदयन्**) अच्छे प्रकार नाद करते हुए विद्युत् के तुल्य (**जम्भेभिः**) गात्र नमाने से (**विश्वम्**) [सम्पूर्ण जगत्] (**वनानि**) सूर्य की किरणों के तुल्य धनों की (**उशधक्**) कामना करते हुए (**पथ्याः**) धर्ममार्ग को प्राप्त होने वाली (**स्वाः**) अपनी प्रजाओं को (**अनु, आ, याहि**) अनुकूल आइये॥ २॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो बिजुली के तुल्य पराक्रमी, सूर्य के तुल्य प्रतापी, अपनी अनुकूल प्रजाओं को न्याय से आनन्दित करता है, वही उत्तम राजा होता है॥ २॥

**अत्र के मनुष्या उत्तमाः सन्तीत्याह॥**

इस जगत् में कौन मनुष्य उत्तम हैं, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**प्रा॒चीनो॑ य॒ज्ञः सुधि॑तं॒ हि ब॒र्हिः प्री॑णी॒ते अ॒ग्निरी॑ळि॒तो न होता॑।**

**आ मा॒तरा॑ वि॒श्ववा॑रे हुवा॒नो यतो॑ यविष्ठ जज्ञि॒षे सु॒शेव॑ः॥ ३॥**

**प्रा॒चीन॑ः। य॒ज्ञः। सु॒ऽधि॑तम्। हि। ब॒र्हिः। प्री॒णी॒ते। अ॒ग्निः। ई॒ळि॒तः। न। होता॑। आ। मा॒तरा॑। वि॒श्ववा॑रे॒ इति॑ वि॒श्वऽवा॑रे। हु॒वा॒नः। यत॑ः। य॒वि॒ष्ठ। ज॒ज्ञि॒षे। सु॒ऽशेव॑ः॥ ३॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**प्राचीनः**) यः प्रागञ्चति (**यज्ञः**) सङ्गन्तव्यः (**सुधितम्**) सुष्ठु हितम् (**हि**) निश्चये (**बर्हिः**) उत्तमं प्रवृद्धं हविः (**प्रीणीते**) कामयते (**अग्निः**) पावक इव (**ईळितः**) प्रशंसितगुणः (**न**) इव (**होता**) हवनकर्त्ता (**आ**) (**मातरा**) जनकौ (**विश्ववारे**) सर्वसुखवरितारौ (**हुवानः**) स्तुवन् (**यतः**) याभ्याम् (**यविष्ठ**) अतिशयेन यौवनं प्राप्तः (**जज्ञिषे**) जायसे (**सुशेवः**) सुसुखः॥३॥

**अन्वयः**-हे यविष्ठ! यतस्त्वं सुशेवो जज्ञिषे तौ विश्ववारे मातरा हुवान ईळितो होता नाग्निरिव प्राचीनो यज्ञः सुधितं बर्हिः प्राप्तुं बर्हिः प्राप्तुं य आ प्रीणीते स हि योग्यो जायते॥३॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यथा होता वेदविहितं यज्ञं हवींषि च कामयते तथैव ये पितॄन् प्रशंसमानाः सेवन्ते त एवाऽत्र कृतज्ञा जायन्ते॥३॥

**पदार्थः**-हे (**यविष्ठ**) अतिशय कर युवावस्था को प्राप्त (**यतः**) जिनसे आप (**सुशेवः**) सुन्दर सुखयुक्त (**जज्ञिषे**) होते हो उन (**विश्ववारे**) सब सुखों के स्वीकार करने वाले दोनों (**मातरा**) माता-पिता की (**हुवानः**) स्तुति करता हुआ (**ईळितः**) प्रशंसित गुणोंवाला (**होता**) होमकर्ता (**न**) जैसे, वैसे (**अग्निः**) अग्नि के तुल्य (**प्राचीनः**) पूर्वकाल सम्बन्धी (**यज्ञः**) संग करने योग्य पुरुष (**सुधितम्**) सुन्दर हितकारी (**बर्हिः**) उत्तम अधिक हविष्य को प्राप्त करने के अर्थ जो (**आ, प्रीणीते**) अच्छे प्रकार कामना करता है (**हि**) वही योग्य होता है॥३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जैसे होमकर्त्ता वेदविहित यज्ञ और उसकी सामग्री की कामना करता है, वैसे ही जो पितृजनों की प्रशंसा करते हुए सेवन करते हैं, वे इस जगत् में कृतज्ञ होते हैं॥३॥

**पुनः को मनुष्यो योग्यो राजा भवतीत्याह॥**

फिर कौन मनुष्य योग्य राजा होता है, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**स॒द्यो अ॑ध्व॒रे र॑थि॒रं ज॑नन्त॒ मानु॑षासो॒ विचे॑तसो॒ य ए॑षाम्।**

**वि॒शाम॑धायि विश्पति॑र्दुरो॒णे३॒॑ग्निर्म॒न्द्रो मधु॑वचा ऋ॒तावा॑॥४॥**

**स॒द्यः। अ॒ध्व॒रे। र॒थि॒रम्। ज॒न॒न्त॒। मानु॑षासः। वि॒ऽचे॑तसः। यः। ए॒षा॒म्। वि॒शाम्। अ॒धा॒यि॒। वि॒श्पति॑ः। दु॒रो॒णे। अ॒ग्निः। म॒न्द्रः। मधु॑ऽवचाः। ऋ॒तऽवा॑॥४॥**

**पदार्थः**-(**सद्यः**) (**अध्वरे**) अहिंसामये व्यवहारे (**रथिरम्**) यो रथिषु रमते तम् (**जनन्त**) जनयन्ति (**मानुषासः**) मनुष्याः (**विचेतसः**) विविधप्रज्ञायुक्ताः (**यः**) (**एषाम्**) विदुषाम् (**विशाम्**) प्रजानाम् (**अधायि**) धीयते (**विश्पतिः**) प्रजापालकः (**दुरोणे**) गृहे (**अग्निः**) पावक इव (**मन्द्रः**) आनन्दप्रदः (**मधुवचाः**) मधूनि मधुराणि वचांसि यस्य सः (**ऋतावा**) य ऋतं सत्यमेव वनति सम्भजति सः॥४॥

**अन्वयः**-विचेतसो मानुषासोऽध्वरे यं रथिरं सद्यो जनन्त य एषां मध्ये दुरोणेऽग्निरिव मन्द्रो मधुवचा ऋतावा विशां विश्पतिर्विद्वद्भिरधायि स एव राजा भवितुमर्हति॥४॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यं सुशिक्षया विद्यां ग्राहयित्वा विपश्चितं विद्वांसो जनयन्ति स योग्यो भूत्वा गृहे दीप इव प्रजासु न्यायप्रकाशको जायते॥४॥

**पदार्थः**- **(विचेतसः)** विविधप्रकार की बुद्धि से युक्त **(मानुषासः)** मनुष्य **(अध्वरे)** अहिंसारूप व्यवहार में जिस **(रथिरम्)** रथवालों में रमण करने वाले को **(सद्यः)** शीघ्र **(जनन्त)** प्रकट करते हैं **(यः)** जो **(एषाम्)** विद्वानों के बीच **(दुरोणे)** घर में **(अग्निः)** अग्नि के तुल्य **(मन्द्रः)** आनन्ददाता **(मधुवचाः)** कोमल वचनों **(ऋतावा)** और सत्य का सेवन करने वाला **(विशाम्)** प्रजाओं का **(विश्पतिः)** रक्षक विद्वानों से **(अधायि)** धारण किया जाता, वही राजा होने को योग्य होता है॥४॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जिसको उत्तम शिक्षा से विद्या ग्रहण कराके विद्वान् लोग पण्डित करते हैं, वह योग्य होकर घर में दीप के तुल्य प्रजाओं में न्याय का प्रकाशक होता है॥४॥

**पुनरग्निः कीदृशोऽस्तीत्याह॥**

फिर अग्नि कैसा है, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**असा॑दि वृ॒तो वह्नि॑राजग॒न्वान॒ग्निर्ब्र॒ह्मा नृ॒षद॑ने विध॒र्ता।**

**द्यौश्च॒ यं पृ॑थि॒वी वा॑वृ॒धाते॒ आ यं होता॒ यज॑ति वि॒श्ववा॑रम्॥५॥**

**असा॑दि। वृ॒तः। वह्निः॑। आ॒ऽज॒ग॒न्वान्। अ॒ग्निः। ब्र॒ह्मा। नृ॒ऽसद॑ने। वि॒ऽध॒र्ता। द्यौः। च॒। यम्। पृ॒थि॒वी। व॒वृ॒धाते॒ इति॑। आ। यम्। होता॑। यज॑ति। वि॒श्वऽवा॑रम्॥५॥**

**पदार्थः**-**(असादि)** आसद्यते **(वृतः)** स्वीकृतः **(वह्निः)** वोढा **(आजगन्वान्)** समन्ताद्गन्ता **(अग्निः)** पावक इव **(ब्रह्मा)** चतुर्वेदवित् **(नृषदने)** नृणां स्थाने **(विधर्ता)** विशेषेण धारकः **(द्यौः)** सूर्यः **(च)** यम् **(पृथिवी)** भूमी **(वावृधाते)** वर्धयतः **(आ)** **(यम्)** **(होता)** **(यजति)** सङ्गच्छते **(विश्ववारम्)** विश्वः सर्वैर्वरणीयम्॥५॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथा नृषदने ब्रह्मा भवति तथा यो वृत आजगन्वान् वह्निरग्निर्विधर्ताऽसादि यं द्यौः पृथिवी च वावृधाते यं विश्ववारं होता आ यजति तं सर्वे विजानन्तु॥५॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यथाग्निर्यथावत्सम्प्रयुक्तः सन् सर्वाणि कार्य्याणि साध्नोति तथैव सत्कृत्य स्वीकृतवेदविद्वांसो धर्मार्थकाममोक्षान् पदार्थान् सर्वान् प्रापयन्ति॥५॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे **(नृषदने)** मनुष्यों के स्थान में **(ब्रह्मा)** चार वेद का जानने वाला होता है, वैसे जो **(वृतः)** स्वीकार किया **(आजगन्वान्)** अच्छे प्रकार प्राप्त होने वाला **(वह्निः)** पहुँचाने वाले **(अग्निः)** अग्नि के तुल्य **(विधर्ता)** विशेष कर धारणकर्ता **(असादि)** अच्छे प्रकार स्थित



www.9009.co.in

होता है **(यम्)** जिसको **(द्यौः)** सूर्य **(च)** और **(पृथिवी)** भूमि **(वावृधाते)** बढ़ाते हैं **(यम्)** जिस **(विश्ववारम्)** सबको स्वीकार करने योग्य को **(होता)** होमकर्ता **(आ, यजति)** अच्छे प्रकार सङ्ग करता है, उस को सब लोग जानें॥५॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे अग्नि यथावत् सम्प्रयोग किया हुआ सब कार्य्यों को सिद्ध करता है, वैसे ही सत्कार कर स्वीकार किये वेद के विद्वान् लोग धर्मार्थ-काम-मोक्ष पदार्थों को सबको प्राप्त कराते हैं॥५॥

**पुनः के वरा विद्वांसो भवन्तीत्याह॥**

फिर कौन श्रेष्ठ विद्वान् होते हैं, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**एते द्युम्नेभिर्विश्वमातिरन्त मन्त्रं ये वारं नर्या अतक्षन्।**

**प्र ये विशस्तिरन्त श्रोषमाणा आ ये मे अस्य दीधयन्नृतस्य॥६॥**

**एते। द्युम्नेभिः। विश्वम्। आ। अतिरन्त। मन्त्रम्। ये। वा। अरम्। नर्याः। अतक्षन्। प्र। ये। विशः। तिरन्त। श्रोषमाणाः। आ। ये। मे। अस्य। दीधयन्। ऋतस्य॥६॥**

**पदार्थः**-**(एते)** **(द्युम्नेभिः)** धनैर्यशोभिर्वा **(विश्वम्)** समग्रम् **(आ अतिरन्त)** तरन्ति **(मन्त्रम्)** विचारम् **(ये)** **(वा)** **(अरम्)** अलम् **(नर्याः)** नृषु साधवः **(अतक्षन्)** कुर्वन्ति **(प्र)** **(ये)** **(विशः)** प्रजाः **(तिरन्त)** प्रतरन्ति **(श्रोषमाणाः)** शृण्वन्तः **(आ)** **(ये)** **(मे)** मम **(अस्य)** **(दीधयन्)** प्रदीपयन्ति **(ऋतस्य)** सत्यस्य विज्ञानस्य॥६॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! य एते नर्या द्युम्नेभिर्विश्वं मन्त्रमातिरन्त वारमतक्षन् ये श्रोषमाणा विशः प्र तिरन्त ये मेऽस्यर्त्तस्याऽऽदीधयँस्तेऽभीष्टं प्राप्नुवन्ति॥६॥

**भावार्थः**-ये मनुष्याः सुविचारेण स्वीकर्त्तव्यान् पदार्थान् प्राप्नुवन्ति नित्यं विद्वद्वचसां श्रोतारो भूत्वा सत्याऽनृते विविच्य सत्यं धृत्वाऽऽसत्यं विहाय यशस्विनो धनाढ्या जायन्ते त एवाऽत्र सत्कर्तव्या भवन्ति॥६॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो **(ये)** जो **(एते)** ये **(नर्याः)** मनुष्यों में श्रेष्ठ **(द्युम्नेभिः)** धन वा कीर्त्ति से **(विश्वम्)** समस्त **(मन्त्रम्)** विचार को **(आ, अतिरन्त)** अच्छे प्रकार पार होते **(वा, अरम्)** अथवा पूर्ण कार्य्य को **(अतक्षन्)** तीक्ष्णता से करते **(ये)** जो **(श्रोषमाणाः)** सुनते हुए **(विशः)** प्रजाजनों को **(प्र, तिरन्त)** अच्छे तरते और **(ये)** जो **(मे)** मेरे **(अस्य)** इस **(ऋतस्य)** सत्य विज्ञान को **(आ, दीधयन्)** अच्छे प्रकार प्रकाशित करते हैं, वे अभीष्ट को प्राप्त होते हैं॥६॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य सुन्दर विचार के साथ स्वीकार करने योग्य पदार्थों को प्राप्त होते और नित्य विद्वानों के वचनों के श्रोता होकर सत्य झूठ का विवेक कर असत्य छोड़ सत्य का ग्रहण कर यशस्वी धनाढ्य होते हैं, वही इस जगत् में सत्कार के योग्य होते हैं॥६॥



www.9009.co.in

**पुनः कः सुरक्षो बलिष्ठः प्रशंसितो जायत इत्याह॥**

फिर कौन अच्छा, चतुर, अतिबलवान् तथा प्रशंसित होता है, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**नू त्वाम॑ग्न ईमहे वसि॑ष्ठा ईशा॒नं सू॑नो सहसो॒ वसू॑नाम्।**

**इषं॑ स्तो॒तृभ्यो॑ म॒घव॑द्भ्य आनड् यू॒यं पा॑त स्व॒स्तिभि॑ः सदा॑ नः॥७॥१०॥**

**नु। त्वाम्। अ॒ग्ने॒। ई॒म॒हे॒। वसि॑ष्ठाः। ई॒शा॒नम्। सू॒नो॒ इति॑। स॒ह॒सः॒। वसू॑नाम्। इष॑म्। स्तो॒तृऽभ्यः॑। म॒घव॑त्ऽभ्यः। आ॒न॒ट्। यू॒यम्। पा॒त॒। स्वस्तिऽभिः॑। सदा॑। नः॒॥७॥**

**पदार्थः**-(**नु**) क्षिप्रम्। अत्र **ऋचि तुनुघे**ति दीर्घः। (**त्वाम्**) (**अग्ने**) विज्ञानस्वरूप (**ईमहे**) याचामहे (**वसिष्ठाः**) अतिशयेन वसवः (**ईशानम्**) ईषणशीलम् (**सूनो**) सत्पुत्र (**सहसः**) बलिष्ठस्य (**वसूनाम्**) पृथिव्यादितत्त्वानां धनानां वा (**इषम्**) अन्नादिकम् (**स्तोतृभ्यः**) सर्वविद्याप्रशंसकेभ्यः (**मघवद्भ्यः**) बहुधनयुक्तेभ्यः (**आनट्**) व्याप्नोति (**यूयम्**) (**पात**) रक्षत (**स्वस्तिभिः**) स्वास्थ्यकारिणीभिः क्रियाभिः (**सदा**) (**नः**) अस्मान्॥७॥

**अन्वयः**-हे सहसः सूनोऽग्ने! वसूनां मध्ये ईशानं त्वां वयं वसिष्ठा ईमहे यूयं स्तोतृभ्यो मघवद्भ्यो नोऽस्मान् सदा पात यो युष्मान्विषं चानट् तं यूयं स्वस्तिभिः सदा पात॥७॥

**भावार्थः**-यो विद्वद्भ्यो धनं प्रयच्छति विद्यां च याचते यस्य रक्षामाप्ता विदधति सर्वदा रक्षितो वर्धमानः सन् सर्वैश्वर्यो जायत इति॥७॥

अत्राग्निदृष्टान्तेन राजादिगुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति सप्तमं सूक्तं दशमो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे (**सहसः**) अतिबलवान् के (**सूनो**) सत्पुत्र (**अग्ने**) विज्ञानस्वरूप! (**वसूनाम्**) पृथिव्यादि तत्त्व साधनों के बीच (**ईशानम्**) समर्थ बलवान् (**त्वाम्**) आप को (**वसिष्ठाः**) अत्यन्त वसने वाले हम लोग (**ईमहे**) याचना करते हैं (**यूयम्**) तुम लोग (**स्तोतृभ्यः**) सब विद्याओं की प्रशंसा करने वाले (**मघवद्भ्यः**) बहुत धनयुक्त होने के लिये (**नः**) हमारी (**सदा**) सदा (**पात**) रक्षा करो। जो तुमको और (**इषम्**) अन्नादि को (**नु**) शीघ्र (**आनट्**) व्याप्त हो, उसकी तुम (**स्वस्तिभिः**) स्वस्थता कराने वाली क्रियाओं से सदा रक्षा करो॥७॥

**भावार्थः**-जो विद्वानों के लिये धन देता है और विद्या की याचना करता है, जिसकी रक्षा आप्त करते हैं, वह सदा रक्षा को प्राप्त, बढ़ता हुआ सब ऐश्वर्य्य से युक्त होता है॥७॥

इस सूक्त में अग्नि के दृष्टान्त से राजादि के गुणों का वर्णन होने से सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ संगति जाननी चाहिये॥

**यहाँ सातवां सूक्त और दशवां वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

**अथ सप्तर्चस्याष्टमस्य सूक्तस्य वसिष्ठ ऋषिः। अग्निर्देवता। १, ७ स्वराट् पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः। ५ निचृत्त्रिष्टुप्छन्दः। २, ३, ४, ६ त्रिष्टुप्छन्दः। धैवतः स्वरः॥**

***अथ स राजा कीदृशः स्यादित्याह॥***

अब वह राजा कैसा हो, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**इ॒न्धे राजा॒ सम॒र्यो॒ नमो॑भि॒र्यस्य॒ प्रती॑क॒माहु॑तं घृ॒तेन॑।**

**नरो॑ ह॒व्येभि॑रीळते स॒बाध॒ आग्निरग्र॑ उ॒षसा॑मशोचि॥ १॥**

**इ॒न्धे। राजा॑। सम्। अ॒र्यः। नम॑ःऽभिः। यस्य॑। प्रती॑कम्। आऽहु॑तम्। घृ॒तेन॑। नर॑ः। ह॒व्येभि॑ः। ई॒ळ॒ते॒। स॒ऽबाध॑ः। आ। अ॒ग्निः। अग्रे॑। उ॒षसा॑म्। अ॒शो॒चि॒॥ १॥**

**पदार्थः**-(**इन्धे**) प्रदीपयामि (**राजा**) प्रकाशमानः (**समर्यः**) युद्धकुशलः (**नमोभिः**) अन्नादिभिस्सत्कारैर्वा (**यस्य**) (**प्रतीकम्**) प्रत्येति येन तत्सैन्यम् (**आहुतम्**) स्पर्द्धितम् (**घृतेन**) प्रदीपनेनोदकेनाज्येन वा (**नरः**) नेतारो मनुष्याः (**हव्येभिः**) होतुं दातुमर्हैः (**ईळते**) स्तुवन्ति (**सबाधः**) बाधेन सह वर्त्तमानः (**आ**) (**अग्निः**) पावक इव (**अग्रे**) पुरस्तात् (**उषसाम्**) प्रभातानाम् (**अशोचि**) प्रकाश्यते॥ १॥

**अन्वयः**-ये नरो हव्येभिर्नमोभिस्सह घृतेन यस्याहुतं प्रतीकमीळते स समर्यो राजाऽहं तानिन्धे। यथोषसामग्रे सबाधोऽग्निराशोचि तथाऽहं शत्रूणां सम्मुखे स्वसेनाप्रकाशक उत्साहकश्च भवेयम्॥ १॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! ये यस्य भृत्या उपकारकाः स्युस्त उपकृतेन सदा सत्करणीयाः॥ १॥

**पदार्थः**-जो (**नरः**) नायक मनुष्य (**हव्येभि**) देने योग्य जनों वा (**नमोभिः**) अन्नादि से होने वाले सत्कारों के साथ (**घृतेन**) प्रदीप्तकारक जल वा घी से (**यस्य**) जिसकी (**आहुतम्**) स्पर्द्धा ईर्षा को प्राप्त (**प्रतीकम्**) सेना की निश्चय कराने वाली (**ईळते**) स्तुति करते हैं वह (**समर्यः**) युद्ध में कुशल (**राजा**) प्रकाशमान तेजस्वी मैं उनको (**इन्धे**) प्रदीप्त करता हूँ जैसे (**उषसाम्**) प्रभात समय होने से (**अग्रे**) पहिले (**सबाधः**) बाध अर्थात् संयोग से बने सब संसार के साथ वर्त्तमान (**अग्निः**) अग्नि के तुल्य तेजस्वी जन (**आ, अशोचि**) प्रकाशित किया जाता है, वैसे मैं शत्रुओं के सम्मुख अपनी सेना का प्रकाशक और उत्साह देने वाला होऊँ॥ १॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जो जिस के भृत्य उपकार करने वाले हों, वे उपकार को प्राप्त हुए से सदा सत्कार पाने योग्य हैं॥ १॥

**पुनः स राजा कीदृशः स्यादित्याह॥**

फिर वह राजा कैसा हो, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अ॒यमु॒ ष्य सुम॑हाँ अवेदि॒ होता॑ म॒न्द्रो मनु॑षो य॒ह्वो अ॒ग्निः।**



www.9009.co.in

**वि भा अंकः ससृजानः पृथिव्यां कृष्णपविरोषधीभिर्ववक्षे॥ २॥**

**अयम्। ऊँ इति। स्यः। सुऽमहान्। अवेदि। होता। मन्द्रः। मनुषः। यह्वः। अग्निः। वि। भाः। अकरित्यंकः। ससृजानः। पृथिव्याम्। कृष्णऽपविः। ओषधीभिः। ववक्षे॥ २॥**

**पदार्थः**-(**अयम्**) (उ) (**स्यः**) सः (**सुमहान्**) शुभैर्गुणकर्मभिः पूजनीयः (**अवेदि**) विद्यते (**होता**) दाता (**मन्द्रः**) आनन्दयिता (**मनुषः**) मनुष्यः (**यह्वः**) महान् (**अग्निः**) पावक इव (**वि**) (**भाः**) यो भाति (**अकः**) करोति (**ससृजानः**) स्रष्टा सन् (**पृथिव्याम्**) भूमौ (**कृष्णपविः**) कृष्णो विलेखः पविः शस्त्रासमूहो यस्य (**ओषधीभिः**) सोमलतादिभिः (**ववक्षे**) वहति॥ २॥

**अन्वयः**-हे विद्वांसो! यथा विभा यह्वोऽग्निरोषधीभिर्ववक्षे तथा कृष्णपविर्होता मन्द्रः सुमहान् मनुषो विद्वद्भिरवेदि स्योऽयमु पृथिव्यां सर्वान् सुखेन ससृजानः सन् सर्वेषामुन्नतिमकः॥ २॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। ये सूर्यवदुपकारका भवन्ति त एव सुष्ठु पूज्या जायन्ते॥ २॥

**पदार्थः**-हे विद्वानो! जैसे (**विभाः**) प्रकाश करने वाला (**यह्वः**) बड़ा (**अग्निः**) अग्नि के तुल्य तेजस्वी (**ओषधीभिः**) सोमलतादि ओषधियों से (**ववक्षे**) प्राप्त करता है, वैसे (**कृष्णपविः**) तीक्ष्ण काट करने वाले शस्त्र अस्त्रों से युक्त (**होता**) दानशील (**मन्द्रः**) आनन्द कराने वाला (**सुमहान्**) शुभ गुणकर्मों से सत्कार करने योग्य (**मनुषः**) मनुष्य विद्वानों से (**अवेदि**) जाना जाता है (**स्यः**) वह (**अयम्**) यह (उ) ही (**पृथिव्याम्**) पृथिवी पर सब को सुख से (**ससृजानः**) संयुक्त करता हुआ सबकी उन्नति (**अकः**) करता है॥ २॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो सूर्य के तुल्य उपकारक होते हैं वे ही अच्छे प्रकार सत्कार पाने योग्य होते हैं॥ २॥

**पुनस्ते राजप्रजाजनाः कथं वर्तेरन्नित्याह॥**

फिर वे राजा और प्रजा के जन कैसे वर्त्तें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**कया नो अग्ने वि वसः सुवृक्तिं कामु स्वधामृणवः शस्यमानः।**

**कदा भवेम पतयः सुदत्र रायो वन्तारो दुष्टरस्य साधोः॥ ३॥**

**कया। नः। अग्ने। वि। वसः। सुऽवृक्तिम्। काम्। ऊँ इति। स्वधाम्। ऋणवः। शस्यमानः। कदा। भवेम। पतयः। सुऽदत्र। रायः। वन्तारः। दुस्तरस्य। साधोः॥ ३॥**

**पदार्थः**-(**कया**) रीत्या (**नः**) अस्मान् (**अग्ने**) विद्युद्वद्दैश्वर्यप्रद (**वि**) (**वसः**) निवासय (**सुवृक्तिम्**) सुष्ठु व्रजन्ति यस्यां नीतौ ताम् (**काम्**) (उ) (**स्वधाम्**) अन्नम् (**ऋणवः**) प्रसाध्नुयाः (**शस्यमानः**) स्तूयमानः (**कदा**) (**भवेम**) (**पतयः**) (**सुदत्र**) सुष्ठु दातः (**रायः**) धनस्य (**वन्तारः**) सम्भाजकाः (**दुष्टरस्य**) दुःखेन तरितुं योग्यस्य (**साधोः**) सत्पुरुषस्य॥ ३॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे सुदत्राऽग्ने! शस्यमानस्त्वं कया नो वि वसः कामु [सुवृक्तिं] स्वधामृणवः कदा दुष्टरस्य साधोर्वन्तारो रायः पतयो वयं भवेम॥३॥

**भावार्थः**-हे राजन्! यदि भवानस्मान् यथावत्पालयित्वा धनाढ्यान् कुर्यास्तर्हि वयमपि तव सज्जनस्य सततमुन्नतिं कुर्य्याम॥३॥

**पदार्थः**-हे **(सुदत्र)** सुन्दर दाता **(अग्ने)** विद्युत् के समान ऐश्वर्य देने वाले राजपुरुष! **(शस्यमानः)** प्रशंसा को प्राप्त हुए आप **(कया)** किस रीति से **(नः)** हमको **(वि, वसः)** प्रवास कराते हैं **(काम्, उ)** किसी **(सुवृक्तिम्)** सुन्दर प्रकार जिस में प्राप्त हों उस नीति और **(स्वधाम्)** अन्न को **(ऋणवः)** प्रसिद्ध करो **(कदा)** कब **(दुष्टरस्य)** दुःख से तरने योग्य **(साधोः)** सत्पुरुष के **(वन्तारः)** सेवक **(रायः)** धन के **(पतयः)** स्वामी हम लोग **(भवेम)** होवें॥३॥

**भावार्थः**-हे राजन्! यदि आप हमारा यथावत् पालन कर धनाढ्य करें तो हम भी आप सज्जन की निरन्तर उन्नति करें॥३॥

**पुनः कीदृशो राजा सत्कर्त्तव्योऽयं कीदृशान् सत्कुर्यादित्याह॥**

फिर कैसा राजा सत्कार के योग्य होता और यह राजा कैसों का सत्कार करे, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**प्रप्रायमग्निर्भरतस्य शृण्वे वि यत्सूर्यो न रोचते बृहद्भाः।**

**अभि यः पूरुं पृतनासु तस्थौ द्युतानो दैव्यो अतिथिः शुशोच॥४॥**

**प्रऽप्र। अयम्। अग्निः। भरतस्य। शृण्वे। वि। यत्। सूर्यः। न। रोचते। बृहत्। भाः। अभि। यः। पूरम्। पृतनासु। तस्थौ। द्युतानः। दैव्यः। अतिथिः। शुशोच॥४॥**

**पदार्थः**-**(प्रप्र)** अतिप्रकर्षः **(अयम्)** **(अग्निः)** पावक इव **(भरतस्य)** धारकस्य पोषकस्य **(शृण्वे)** **(वि)** **(यत्)** यः **(सूर्यः)** **(न)** इव **(रोचते)** प्रकाशते **(बृहत्)** महज्जगद्राज्यं वा **(भाः)** प्रकाशयति **(अभि)** **(यः)** **(पूरुम्)** पालकं सेनापतिम् **(पृतनासु)** सेनासु **(तस्थौ)** तिष्ठेत् **(द्युतानः)** देदीप्यमानः **(दैव्यः)** देवैः कृतो विद्वान् **(अतिथिः)** अविद्यमाना तिथिर्गमनागमनयोर्यस्य **(शुशोच)** शोचते प्रकाशते॥४॥

**अन्वयः**-हे राजन्! यद्योऽयं भरतस्याऽग्निरिव सूर्यो न वि रोचते यमहम्प्रप्र शृण्वे यो बृहत्पूरुमभि भा अतिथिरिव दैव्यो द्युतानः पृतनासु तस्थौ स शुशोच तं त्वं सदैव सत्कुर्याः॥४॥

**भावार्थः**-अत्रोपमावाचकलुप्तोपमालङ्कारौ। ये राजानः सत्कर्मकर्त्तॄनेव सत्कुर्य्युर्दुष्टाचारान् दण्डयेयुस्त एवसूर्यवत्प्रकाशमाना अतिथिवत्सत्कर्तव्याः सन्तः सर्वदा विजयिनो भूत्वा प्रसिद्धकीर्त्तयो भवन्ति॥४॥

**पदार्थः**-हे राजपुरुष **(यत्)** जो **(अयम्)** यह **(भरतस्य)** धारण वा पोषण करने वाले के **(अग्निः)** अग्नि के समान वा **(सूर्य, नः)** सूर्य के समान **(वि, रोचते)** विशेष प्रकाशित होता है वा जिसको मैं **(प्रप्र, शृण्वे)** अच्छे प्रकार सुनता हूँ **(यः)** जो **(बृहत्)** बड़े जगत् वा राज्य को तथा **(पूरुम्)** पालक सेनापति को **(अभि, भाः)** सब ओर से प्रकाशित करता है तथा **(अतिथिः)** जाने आने की तिथि जिसकी नियत न हो उसके तुल्य **(दैव्यः)** विद्वानों ने किया विद्वान् **(द्युतानः)** प्रकाशमान **(पृतनासु)** सेनाओं में **(तस्थौ)** स्थित हो वह **(शुशोच)** प्रकाशित होता है, उसका आप सदा सत्कार कीजिये॥४॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमा और वाचकलुप्तोपमालङ्कार हैं। जो राजा लोग सत्कर्म करने वालों का ही सत्कार करें और दुष्टाचारियों को दण्ड देवें वे ही सूर्य के तुल्य प्रकाशमान अतिथियों के समान सत्कार करने योग्य होते हुए सर्वदा विजयी होकर प्रसिद्ध कीर्त्ति वाले होते हैं॥४॥

**पुनः सः राजा किं कुर्य्यादित्याह॥**

फिर वह राजा क्या करे, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**असन्नित्त्वे आहवनानि भूरि भुवो विश्वेभिः सुमना अनीकैः।**

**स्तुतश्चिदग्ने शृण्विषे गृणानः स्वयं वर्धस्व तन्वं सुजात॥५॥**

**असन्। इत्। त्वे इति। आऽहवनानि। भूरि। भुवः। विश्वेभिः। सुऽमनाः। अनीकैः। स्तुतः। चित्। अग्ने। शृण्विषे। गृणानः। स्वयम्। वर्धस्व। तन्वम्। सुऽजात॥५॥**

**पदार्थः**-**(असन्)** भवन्ति **(इत्)** एव **(त्वे)** त्वयि **(आहवनानि)** सत्कारपूर्वकनिमन्त्रणानि **(भूरि)** **(भुवः)** पृथिव्याः **(विश्वेभिः)** समग्रैः **(सुमनाः)** शोभनमनाः **(अनीकैः)** सुशिक्षितैस्सैन्यैः **(स्तुतः)** **(चित्)** अपि **(अग्ने)** विद्वन्राजन् **(शृण्विषे)** **(गृणानः)** स्तुवन् **(स्वयम्)** **(वर्धस्व)** **(तन्वम्)** शरीरम् **(सुजात)** सुष्ठु प्रसिद्ध॥५॥

**अन्वयः**-हे सुजाताग्ने! त्वे भुवो भूर्याहवनान्यसन् विश्वेभिरनीकैः सुमनाः स्तुतो गृणानः सर्वेषां वाक्यानि [चित्] शृण्विषे स त्वं स्वयमित्तन्वं वर्धस्व॥५॥

**भावार्थः**-हे राजन्! यदि भवान् प्रशंसितानि धर्म्याणि कार्याण्यकरिष्यत्तर्हि सर्वत्र विजयमानः सन् स्वयं वर्द्धित्वा सर्वाः प्रजा अवर्धयिष्यत्॥५॥

**पदार्थः**-हे **(सुजात)** सुन्दर प्रकार प्रसिद्ध **(अग्ने)** विद्वन् राजन्! **(त्वे)** आप के निमित्त **(भुवः)** पृथिवी के सम्बन्ध में **(भूरि)** बहुत **(आहवनानि)** सत्कारपूर्वक निमन्त्रण **(असन्)** होते हैं **(विश्वेभिः)** सब **(अनीकैः)** अच्छी शिक्षित सेनाओं के साथ **(सुमनाः)** प्रसन्न चित्त **(स्तुतः)** स्तुति को प्राप्त **(गृणानः)** स्तुति करने वालों के वाक्यों को **(चित्)** भी **(शृण्विषे)** सुनते हैं सो आप **(स्वयमित्)** स्वयमेव **(तन्वम्)** शरीर को **(वर्धस्व)** बढ़ाइये॥५॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-हे राजन्! यदि आप प्रशंसित धर्मयुक्त कर्मों को करें तो सर्वत्र विजय को प्राप्त होते हुए आप वृद्धि को प्राप्त होके सब प्रजाओं को बढ़ावें॥५॥

**पुनः स राजा किं कुर्यादित्याह॥**

फिर वह राजा क्या करे, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**इदं वचः शतसाः संसहस्रमुदग्नये जनिषीष्ट द्विबर्हाः।**

**शं यत्स्तोतृभ्य आपये भवाति द्युमदमीवचातनं रक्षोहा॥६॥**

**इदम्। वचः। शतऽसाः। सम्ऽसहस्रम्। उत्। अग्नये। जनिषीष्ट। द्विऽबर्हाः। शम्। यत्। स्तोऽतृभ्यः। आपये। भवाति। द्युऽमत्। अमीवऽचातनम्। रक्षःऽहा॥६॥**

**पदार्थः**-(**इदम्**) (**वचः**) वचनम् (**शतसाः**) यः शतानि सनति विभजति (**सम्, सहस्रम्**) सम्यक्सहस्रम् (**उत्**) (**अग्नये**) पावकायेव (**जनिषीष्ट**) जनयतु (**द्विबर्हाः**) द्वाभ्यां विद्याविनयाभ्यां बर्हः वर्धनं यस्य सः (**शम्**) सुखम् (**यत्**) (**स्तोतृभ्यः**) स्तावकेभ्यो विद्वद्भ्यः (**आपये**) प्रापकायाऽऽप्ताय (**भवाति**) भवेत् (**द्युमत्**) द्यौः कामना विद्यते यस्य (**अमीवचातनम्**) रोगनाशनम् (**रक्षोहा**) रक्षसां दुष्टानां हन्ता॥६॥

**अन्वयः**-हे राजञ्छतसा द्विबर्हा रक्षोहा भवानग्नय इदं सं सहस्रं वचो जनिषीष्ट यद् द्युमदमीवचातनं शं स्तोतृभ्य आपय उद्भवाति तदेव सततं साधयतु॥६॥

**भावार्थः**-हे प्रजाजना! यथा राजा सभेशः सर्वेभ्योः मधुरं वचः उत्तमं सुखं दत्वा दुःखं दूरीकरोति तथैव यूयमपि राज्ञेऽसंख्यान् पदार्थान् दत्वा प्रमादरोगरहितं सम्पादयत॥६॥

**पदार्थः**-हे राजन्! (**शतसाः**) सौ का विभाग करने (**द्विबर्हाः**) विद्या और विनय से बढ़ने और (**रक्षोहा**) दुष्ट राक्षसों के हिंसा करने वाले आप (**अग्नये**) अग्नि के लिये जैसे, वैसे (**इदम्**) इस (**सम्, सहस्रम्**) सम्यक् सहस्र (**वचः**) वचन को (**जनिषीष्ट**) प्रकट कीजिये (**यत्**) जिस (**द्युमत्**) कामना वाले (**अमीवचातनम्**) रोगनाशरूप (**शम्**) सुख को (**स्तोतृभ्यः**) स्तुतिकर्ता विद्वानों के लिये वा (**आपये**) प्राप्त कराने वाले के लिये (**उद्भवाति**) प्रसिद्ध करते हैं, उसी को निरन्तर सिद्ध करें॥६॥

**भावार्थः**-हे प्रजाजनो! जैसे सभापति राजा सब के लिये मधुर कोमल वचन और उत्तम सुख देकर दुःख दूर करता है, वैसे ही तुम लोग भी राजा के लिये असंख्य पदार्थों को देकर प्रमाद और रोग रहित करके अधिकरतर धन देओ॥६॥

**कीदृशं राजानं प्रजा मन्येरन्नित्याह॥**

कैसे पुरुष को प्रजा लोग राजा मानें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**नू त्वामग्न ईमहे वसिष्ठा ईशानं सूनो सहसो वसूनाम्।**

**इषं स्तोतृभ्यो मघवद्भ्य आनड्यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥७॥११॥**



www.9009.co.in

**नु। त्वाम्। अ॒ग्ने॒। ई॒म॒हे॒। वसि॑ष्ठाः। ई॒शा॒नम्। सू॒नो॒ इति॑। स॒ह॒सः॒। वसू॑नाम्। इष॑म्। स्तो॒तृऽभ्यः॑। म॒घव॑त्ऽभ्यः। आ॒न॒ट्। यू॒यम्। पा॒त॒। स्व॒स्तिऽभिः॑। सदा॑। नः॒॥७॥**

**पदार्थः**-(**नु**) सद्यः (**त्वाम्**) (**अग्ने**) सन्मार्गप्रकाशक (**ईमहे**) याचामहे (**वसिष्ठाः**) अतिशयेन वसुमन्तः (**ईशानम्**) समर्थम् (**सूनो**) अपत्य (**सहसः**) बलवतः (**वसूनाम्**) वासयितॄणाम् (**इषम्**) विज्ञानं धनं वा (**स्तोतृभ्यः**) ऋत्विग्भ्यः (**मघवद्भ्यः**) बहुधनयुक्तेभ्यः (**आनट्**) व्याप्नोषि (**यूयम्**) (**पात**) (**स्वस्तिभिः**) (**सदा**) (**नः**) अस्मान्॥७॥

**अन्वयः**-हे सहसस्सूनोऽग्ने! यतस्त्वं स्तोतृभ्य इषं मघवद्भ्य इषमानट् तस्माद्वसिष्ठा वयं वसूनामीशानं त्वां न्वीमहे वयं याँश्च युष्मान् रक्षेम ते यूयं स्वस्तिभिर्नः सदा पात॥७॥

**भावार्थः**-हे राजन्! भवान् विद्वद्भ्यो वरं वस्तु मघवद्भ्यः प्रतिष्ठां ददाति त्वं भृत्याश्चास्मान् सततं रक्षन्ति तस्माद्भवतां वयं सेवकाः स्म इति॥७॥

अत्राग्निदृष्टान्तेन राजकृत्यवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इत्यष्टमं सूक्तमेकादशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे (**सहसः**) बलवान् के (**सूनो**) पुत्र (**अग्ने**) सत्य मार्ग के प्रकाशक राजन् पुरुष! जिससे आप (**स्तोतृभ्यः**) ऋत्विजों के लिये (**इषम्**) विज्ञान वा धन को (**मघवद्भ्यः**) बहुत धन वाले के लिये धन वा विज्ञान को (**आनट्**) व्याप्त होते हो इस कारण (**वसिष्ठाः**) अत्यन्त धन वाले हम लोग (**वसूनाम्**) वास के हेतु पृथिव्यादि के (**ईशानम्**) अध्यक्ष (**त्वाम्**) आपको (**नु, ईमहे**) शीघ्र चाहते हैं और हम जिन तुम लोगों की रक्षा करें वे (**यूयम्**) तुम (**स्वस्तिभिः**) कल्याणों से (**नः**) हमारी सदा (**पात**) रक्षा करो॥७॥

**भावार्थः**-हे राजन्! आप विद्वानों के लिये श्रेष्ठ वस्तु, धनवानों के लिये प्रतिष्ठा देते हो आप और राजपुरुष हमारी निरन्तर रक्षा करते हैं, इसलिये आपके हम सेवक होवें॥७॥

इस सूक्त में अग्नि के दृष्टान्त से राजा के कर्त्तव्य का वर्णन होने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ संगति जाननी चाहिये॥

**यह आठवां सूक्त और ग्यारहवां वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

**अथ षड्चस्य नवमस्य सूक्तस्य वसिष्ठ ऋषिः। अग्निर्देवता। १ त्रिष्टुप्। ४, ५ निचृत्त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः। २, ३ भुरिक् पङ्क्तिः। ६ स्वराट् पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः॥**

***पुनः के विद्वांसः सेवनीया इत्याह॥***

अब छः ऋचा वाले नवमे सूक्त का आरम्भ है। इसके प्रथम मन्त्र में फिर कौन विद्वान् सेवने योग्य हैं, इस विषय को कहते हैं॥

**अबो॑धि जा॒र उ॒षसा॑मु॒पस्था॒द्धोता॑ म॒न्द्रः क॒वित॑मः पाव॒कः।**

**दधा॑ति के॒तुमु॒भय॑स्य ज॒न्तोर्ह॒व्या दे॒वेषु॒ द्रवि॑णं सु॒कृत्सु॑॥ १॥**

**अबो॑धि। जा॒रः। उ॒षसा॑म्। उ॒पऽस्था॑त्। होता॑। म॒न्द्रः। क॒विऽत॑मः। पा॒व॒कः। दधा॑ति। के॒तु॒म्। उ॒भय॑स्य। ज॒न्तोः। ह॒व्या। दे॒वेषु॑। द्रवि॑णम्। सु॒कृत्ऽसु॑॥ १॥**

**पदार्थः**- **(अबोधि)** बोधयति **(जारः)** रात्रेर्जरयिता सूर्यः **(उषसाम्)** प्रातर्वेलानाम् **(उपस्थात्)** समीपात् **(होता)** दाता **(मन्द्रः)** आनन्दयिता **(कवितमः)** विद्वत्तमः **(पावकः)** पवित्रीकरः **(दधाति)** **(केतुम्)** प्रज्ञाम् **(उभयस्य)** इहाऽमुत्र भवस्य **(जन्तोः)** जीवस्य **(हव्या)** होतुमर्हाणि वस्तूनि **(देवेषु)** पृथिव्यादिषु विद्वत्सु वा **(द्रविणम्)** धनं बलं वा **(सुकृत्सु)** पुण्याऽऽत्मसु॥ १॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथा रात्रेर्जारः सूर्य उषसामुपस्थादुभयस्य जन्तोर्हव्या केतुं द्रविणञ्च देवेषु दधाति तथा होता मन्द्रः कवितमः पावको विद्वान् जन्तोर्हव्या सुकृत्सु देवेषु द्रविणं केतुञ्च दधाति स्वयमबोध्यज्ञान् बोधयति तमेवाध्यापकं विद्वांसं सततं सेवध्वम्॥ १॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। ये विद्वांसो यथा सूर्यो रात्रिं निवार्य्य प्रकाशं जनयति तथाऽविद्यां निवार्य्य विद्यां जनयन्ति ते यथा धार्मिको न्यायाधीशो राजा पुण्यात्मसु प्रेम दधाति तथा शमदमादियुक्तेषु श्रोतृषु प्रीतिं विदध्युः॥ १॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे **(जारः)** रात्रि का नाश करने वाला सूर्य **(उषसाम्)** प्रातःकाल की वेलाओं के **(उपस्थात्)** समीप से **(उभयस्य)** इस लोक परलोक में जाने आने वाले **(जन्तोः)** जीवात्मा के **(हव्या)** होमने योग्य वस्तुओं को **(केतुम्)** बुद्धि को और **(द्रविणम्)** धन वा बल को **(देवेषु)** पृथिव्यादि वा विद्वानों में **(दधाति)** धारण करता है तथा **(होता)** दानशील **(मन्द्रः)** आनन्दाता **(कवितमः)** अति प्रवीण **(पावकः)** पवित्रकर्ता विद्वान् जीव के ग्राह्य वस्तुओं को **(सुकृत्सु)** पुण्यात्मा विद्वानों में धन और बुद्धि का धारण करता स्वयं अज्ञानियों को **(अबोधि)** बोध कराता उसी अध्यापक विद्वान् की निरन्तर सेवा करो॥ १॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो विद्वान् जैसे रात्रि को सूर्य निवारण कर प्रकाश को उत्पन्न करता, वैसे अविद्या का निवारण करके विद्या को प्रकट करते हैं, वे जैसे धर्मात्मा न्यायाधीश राजा पुण्यात्माओं में प्रेम धारण करता है, वैसे शमदमादि युक्त श्रोताओं में प्रीति को विधान करें॥ १॥



www.9009.co.in

**पुनः क राजकर्मसु वरा भवन्तीत्याह॥**

फिर राज कार्य्यों में कौन लोग श्रेष्ठ होते हैं, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं।

**स सुक्रतुर्यो वि दुरः पणीनां पुनानो अर्कं पुरुभोजसं नः।**

**होता मन्द्रो विशां दमूनास्तिरस्तमो ददृशे राम्याणाम्॥ २॥**

**सः। सुऽक्रतुः। यः। वि। दुरः। पणीनाम्। पुनानः। अर्कम्। पुरुऽभोजसम्। नः। होता। मन्द्रः। विशाम्। दमूनाः। तिरः। तमः। ददृशे। राम्याणाम्॥ २॥**

**पदार्थः**-(**सः**) (**सुक्रतुः**) सुष्ठुप्रज्ञः (**यः**) (**वि**) (**दुरः**) द्वाराणि (**पणीनाम्**) स्तुत्यव्यवहारकर्तॄणाम् (**पुनानः**) पवित्रयन् (**अर्कम्**) अन्नं सत्कर्तव्यं जनं वा (**पुरुभोजसम्**) बहूनां रक्षितारम् (**नः**) अस्माकम् (**होता**) दाता (**मन्द्रः**) आनन्दयिता (**विशाम्**) प्रजानां मध्ये (**दमूनाः**) दमनशीलः (**तिरः**) तिरस्करणे (**तमः**) अन्धकारम् (**ददृशे**) दृश्यते (**राम्याणाम्**) रात्रीणाम्। **राम्येति रात्रिनाम।** (निघं०१.७.२)॥२॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यः पणीनां दुरः पुनानो राम्याणां तमस्तिरस्कृत्य सूर्यो ददृशे तथा सुक्रतुरर्कं पुरुभोजसं वि पुनानो नो विशां मन्द्रो होता दमूना अविद्यां तिरस्करोति सोऽस्माकं राजा भवतु॥२॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। ये सभ्या राजानः सूर्यवन्न्यायप्रकाशका अविद्यान्धकारनिवारका दुष्टानां दमनशीला धार्मिकाणां सत्कर्त्तारः सन्तो धर्ममार्गं पुनन्ति त एव सर्वैस्सत्कर्त्तव्या भवन्ति॥२॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! (**यः**) जो (**पणीनाम्**) प्रशस्त व्यवहार करनेहारों के (**दुरः**) द्वारों को (**पुनानः**) पवित्र करता हुआ (**राम्याणाम्**) रात्रियों के (**तमः**) अन्धकार का (**तिरः**) तिरस्कार करके सूर्य (**ददृशे**) दीखता है तथा (**सुक्रतुः**) सुन्दर बुद्धि वाला (**अर्कम्**) अन्न वा सत्कार योग्य (**पुरुभोजसम्**) बहुतों के रक्षक मनुष्य को (**वि**) विशेष कर पवित्रकर्ता (**नः**) हमारी (**विशाम्**) प्रजाओं में (**मन्द्रः**) आनन्ददाता (**होता**) दानशील (**दमूनाः**) दमनशील अविद्या का तिरस्कार करता है (**सः**) वह हमारा राजा हो॥२॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोमालङ्कार है। जो सभ्य राजा लोग सूर्य के तुल्य न्याय के प्रकाशक, अविद्यारूप अन्धकार के निवारक, दुष्टों का दमन और श्रेष्ठ धार्मिकों का सत्कार करने वाले होते हुए धर्मसम्बन्धी मार्ग को पवित्र करते हैं, वे ही सब को सत्कार करने योग्य होते हैं॥२॥

**पुनः कीदृशो विद्वान् पूजनीयोऽस्तीत्याह॥**

फिर कैसा विद्वान् पूजनीय होता है, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अमूरः कविरदितिर्विवस्वान्त्सुसंसन्मित्रो अतिथिः शिवो नः।**

**चित्रभानुरुषसां भात्यग्रेऽपां गर्भः प्रस्व१आ विवेश॥ ३॥**



www.9009.co.in

**अमूर:। कुवि:। अदिति:। विवस्वान्। सुऽसंसत्। मित्र:। अतिथि:। शिव:। न:। चित्रऽभानु:। उषसाम्। भाति। अग्रे। अपाम्। गर्भ:। प्रऽस्व:। आ। विवेश॥ ३॥**

**पदार्थ:**-(**अमूर:**) अमूढ:। अत्र वर्णव्यत्ययेन ढस्य स्थाने र:। (**कवि:**) क्रान्तदर्शन: प्राज्ञ: (**अदिति:**) पितेव वर्त्तमान: (**विवस्वान्**) सूर्य इव (**सुसंसत्**) शोभना संसत्सभा यस्य स: (**मित्र:**) सुहृत् (**अतिथि:**) आप्तो विद्वानिव (**शिव:**) मङ्गलकारी (**न:**) अस्माकम् (**चित्रभानु:**) अद्भुतप्रकाश: (**उषसाम्**) प्रभातवेलानाम् (**भाति**) प्रकाशते (**अग्रे**) पुरस्तात् (**अपाम्**) अन्तरिक्षस्य मध्ये (**गर्भ:**) गर्भ इव वर्त्तते (**प्रस्व:**) प्रकृष्टा: स्वे स्वकीयजना यस्य स: (**आ विवेश**) आविशेत्॥ ३॥

**अन्वय:**-हे मनुष्या! य उषसामग्रे चित्रभानुर्विवस्वानिवापांगर्भ इव प्रस्व: सन् भाति सुसंसन्मित्रोऽमूर: कविरदितिरतिथिरिव न: शिव: सन्नस्मा आ विवेश स एव विद्वान् सर्वै: सत्कर्त्तव्योऽस्ति॥ ३॥

**भावार्थ:**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कार:। हे मनुष्या! यो विदुषामग्रगण्य: सूर्य इव सत्यन्यायप्रकाशकोऽविद्यादिदोषरहितो धर्मात्मा विद्वान् पुत्रवत्प्रजा: पालयति स एवाऽतिथिवत्सत्कर्तव्यो भवति॥ ३॥

**पदार्थ:**-हे मनुष्यो! जो (**उषसाम्**) प्रभात वेलाओं के (**अग्रे**) पहिले (**चित्रभानु:**) अद्भुत प्रकाशयुक्त (**विवस्वान्**) सूर्य के समान (**अपाम्**) अन्तरिक्ष के बीच (**गर्भ:**) गर्भ के तुल्य वर्त्तमान (**प्रस्व:**) अपने सम्बन्धी उत्तम जनों वाला हुआ (**भाति**) प्रकाशित होता है (**सु, संसत्**) सुन्दर सभा वाला (**मित्र:**) मित्र (**अमूर:**) मूढ़ता रहित (**कवि:**) प्रवृत्त बुद्धि वाला पण्डित (**अदिति:**) पिता के तुल्य वर्त्तमान (**अतिथि:**) प्राप्त हुए विद्वान् के तुल्य (**न:**) हमारा (**शिव**) मङ्गलकारी हुआ (**आ, विवेश**) प्रवेश करता है, वही विद्वान् सब को सत्कार करने योग्य होता है॥ ३॥

**भावार्थ:**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जो विद्वानों में मुखिया, सूर्य के तुल्य सत्य-न्याय का प्रकाशक, अविद्यादि दोषों से रहित, धर्मात्मा, विद्वान्, पुत्र के तुल्य प्रजाओं का पालन करता है, वही अतिथि के तुल्य सत्कार करने योग्य होता है॥ ३॥

**पुन: क: प्रशंसनीयो भवतीत्याह॥**

फिर कौन प्रशंसा योग्य होता है, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**ईळेन्यो वो मनुषो युगेषु समनगा अशुचज्जातवेदा:।**

**सुसंदृशा भानुना यो विभाति प्रति गाव: समिधानं बुधन्त॥ ४॥**

**ईळेन्य:। व:। मनुष:। युगेषु। समनऽगा:। अशुचत्। जातऽवेदा:। सुऽसंदृशा। भानुना। य:। विऽभाति। प्रति। गाव:। सम्ऽइधानम् बुधन्त॥ ४॥**

**पदार्थ:**-(**ईळेन्य:**) स्तोतुमर्ह: (**व:**) युष्मान् (**मनुष:**) मननशीलान् (**युगेषु**) बहुषु वर्षेषु (**समनगा:**) य: समनं सङ्ग्रामं गच्छति स: (**अशुचत्**) शोधयति (**जातवेदा:**) जातविद्य: (**सुसंदृशा**)

सुष्ठु सम्यग् दर्शकेन **(भानुना)** किरणेन **(यः)** **(विभाति)** **(प्रति)** **(गावः)** किरणाः **(समिधानम्)** देदीप्यमानम् **(बुधन्त)** बोधयन्ति॥४॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! य ईळेन्यस्समनगा जातवेदा युगेषु वो मनुषः सुसंदृशा भानुना सूर्य इव विभाति यथा समिधानं प्रति गावो बुधन्त तथाऽशुचत् स एव नरोत्तमो भवति॥४॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। ये मनुष्याः सूर्यवच्छुभान् गुणान् ग्राहयित्वा मनुष्यान् प्रकाशयन्ति ते प्रशंसितुं योग्या जायन्ते॥४॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(यः)** जो **(ईळेन्यः)** स्तुति के योग्य **(समनगाः)** संग्राम को प्राप्त होने वाला **(जातवेदाः)** विद्या को प्राप्त हुआ **(युगेषु)** बहुत वर्षों में **(वः)** तुम **(मनुषः)** मनुष्यों को **(सुसन्दृशा)** अच्छे प्रकार दिखाने वाले **(भानुना)** किरण से सूर्य के समान **(विभाति)** प्रकाशित करता है और जैसे **(समिधानम्)** देदीप्यमान के **(प्रति)** प्रति **(गावः)** किरण **(बुधन्त)** बोध के हेतु होते हैं, वैसे **(अशुचत्)** शुद्ध प्रतीति कराता है, वही मनुष्यों में उत्तम होता है॥४॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो मनुष्य सूर्य्य के सदृश शुभ गुणों का ग्रहण कराके मनुष्यों को प्रकाशित करते हैं, वे प्रशंसा करने योग्य होते हैं॥४॥

**पुनः के विद्वांसः सङ्गन्तव्याः सन्तीत्याह॥**

फिर कौन विद्वान् संगति करने योग्य होते हैं, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अग्ने याहि दूत्यं१ मा रिषण्यो देवाँ अच्छा ब्रह्मकृता गणेन।**

**सरस्वतीं मरुतो अश्विनापो यक्षि देवान् रत्नधेयाय विश्वान्॥५॥**

**अग्ने। याहि। दूत्यम्। मा। रिषण्यः। देवान्। अच्छ। ब्रह्मऽकृता। गणेन। सरस्वतीम्। मरुतः। अश्विना। अपः। यक्षि। देवान्। रत्नऽधेयाय। विश्वान्॥५॥**

**पदार्थः**-**(अग्ने)** वह्निरिव कार्य्यसाधक **(याहि)** **(दूत्यम्)** दूतस्य कर्म **(मा)** निषेधे **(रिषण्यः)** हिंस्याः **(देवान्)** विदुषश्शुभान् गुणान् वा **(अच्छ)** सम्यक्। अत्र **संहितायामि**ति दीर्घः। **(ब्रह्मकृता)** येन ब्रह्म धनमन्नं वा करोति तेन **(गणेन)** समूहेन **(सरस्वतीम्)** विद्यासुशिक्षायुक्तां वाचम् **(मरुतः)** मनुष्यान् **(अश्विना)** अध्यापकोपदेशकौ **(अपः)** कर्माणि **(यक्षि)** सङ्गच्छसे **(देवान्)** विदुषः **(रत्नधेयाय)** रत्नानि धीयन्ते यस्मिँस्तस्मै **(विश्वान्)** समग्रान्॥५॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! त्वं दूत्यं याहि देवान् मा रिषण्यो ब्रह्मकृता गणेन रत्नधेयाय सरस्वतीं मरुतोऽश्विनाऽपो विश्वान् देवान् यतोऽच्छा यक्षि तस्मात् सत्कर्त्तव्योऽसि॥५॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यथाऽग्निना दूतेन विद्वांसो बहूनि कार्याणि साध्नुवन्ति तथा कार्यसिद्धिं कृत्वा कञ्चन मा हिंसत पदार्थविद्यया धनेन धान्येन वा कोशान् प्रपूर्य्य सर्वान् सुखयत॥५॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-हे **(अग्ने)** वह्नि के तुल्य कार्य सिद्ध करनेहारे विद्वन्! आप **(दूत्यम्)** दूत के कर्म को **(याहि)** प्राप्त हूजिये **(देवान्)** विद्वानों वा शुभ गुणों को **(मा)** मत **(रिषण्यः)** नष्ट कीजिये **(ब्रह्मकृता)** जिससे धन वा अन्न को उत्पन्न करते **(गणेन)** उस सामग्री के समुदाय से **(रत्नधेयाय)** रत्नों का जिसमें धारण हो उसके लिये **(सरस्वतीम्)** विद्याशिक्षायुक्त वाणी का **(मरुतः)** मनुष्यों का **(अश्विना)** अध्यापक और उपदेशकों के **(अपः)** कर्मों का और **(विश्वान्)** सब **(देवान्)** विद्वानों का जिस कारण **(अच्छा)** अच्छे प्रकार **(यक्षि)** संग करते हैं, इससे सत्कार करने योग्य है॥५॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे विद्वान् लोग अग्निरूप दूत से बहुत कार्य्यों को सिद्ध करते हैं, वैसे कार्य को सिद्धि करके किसी को मत मारो, पदार्थविद्या, धन वा धान्य से कोश को पूर्ण कर सब को सुखी करो॥५॥

**पुनस्ते विद्वांसः किं कुर्य्युरित्याह॥**

फिर वे विद्वान् क्या करें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**त्वाम॑ग्ने समिधा॒नो वसि॑ष्ठो॒ जरू॑थं ह॒न् यक्षि॑ रा॒ये पुर॑न्धिम्॥**

**पु॒रु॒णी॒था जा॑तवेदो जरस्व यू॒यं पा॑त स्व॒स्तिभि॒: सदा॑ नः॥६॥१२॥**

**त्वाम्। अ॒ग्ने। स॒म्ऽइ॒धा॒नः। वसि॑ष्ठः। जरू॑थम्। ह॒न्। यक्षि॑। रा॒ये। पुर॑म्ऽधिम्। पु॒रु॒ऽनी॒था। जा॒त॒ऽवे॒द॒:। ज॒र॒स्व॒। यू॒यम्। पा॒त॒। स्व॒स्तिऽभि॑:। सदा॑। न॒:॥६॥**

**पदार्थः**-**(त्वाम्)** विद्वांसम् **(अग्ने)** वह्निवद्विद्यादिगुणप्रकाशित **(समिधानः)** सम्यक् प्रकाशमानः **(वसिष्ठः)** अतिशयेन धनाढ्यः **(जरूथम्)** जरावस्थया युक्तम् **(हन्)** हन्ति **(यक्षि)** सङ्गच्छे **(राये)** धनाय **(पुरन्धिम्)** यो बहून् दधाति तम् **(पुरुणीथा)** पुरुन्नयन्ति येषु तानि धर्म्यकर्माणि **(जातवेदः)** जातविज्ञान **(जरस्व)** प्रशंस **(यूयम्)** उपदेशकाः **(पात)** रक्षत **(स्वस्तिभिः)** सुखैः **(सदा)** सर्वस्मिन् काले **(नः)** अस्मान्॥६॥

**अन्वयः**-हे जातवेदोऽग्ने! यथा समिधानो वसिष्ठो जरूथं जीर्णे मेघं हँस्तथा सुसभ्यं पुरन्धिं त्वां रायेऽहं यक्षि यूयं स्वस्तिभिर्नः सदा पात पुरुणीथा जरस्व॥६॥

**भावार्थः**-ये सराजकाः सभ्याः सूर्यो मेघमिवाऽविद्यां दुष्टाचारांश्च घ्नन्ति सर्वान् धर्म्यमार्गं नयन्ति ते सर्वेषां यथावद्रक्षका भवन्ति॥६॥

अत्राग्निदृष्टान्तेन विद्वद्गुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति नवमं सूक्तं द्वादशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे **(जातवेदः)** विज्ञान को प्राप्त **(अग्ने)** अग्नि के तुल्य विद्यादि गुणों से प्रकाशित विद्वन्! जैसे **(समिधानः)** सम्यक् प्रकाशमान **(वसिष्ठः)** अत्यन्त धनी **(जरूथम्)** शिथिलावस्था से युक्त जीर्ण मेघ को **(हन्)** हनन करता है, वैसे सुन्दर सभा के योग्य **(पुरन्धिम्)** बहुतों को धारण



www.9009.co.in

करने वाले **(त्वाम्)** आप विद्वान् का **(राये)** धन प्राप्ति के लिये मैं **(यक्षि)** सङ्ग करता हूँ **(यूयम्)** तुम लोग **(स्वस्तिभिः)** सुख साधनों से **(नः)** हमारी **(सदा)** सदा **(पात)** रक्षा करो और **(पुरुनीथा)** बहुतों को प्राप्त होने वाले धर्मयुक्त कर्मों की **(जरस्व)** प्रशंसा करो॥६॥

**भावार्थः**-जो राजा के सहित सभ्य लोग, सूर्य मेघ को जैसे, वैसे अविद्या और दुष्टाचारों का नाश करते हैं, सब को धर्मयुक्त मार्ग को प्राप्त कराते, वे सब के यथावत् रक्षक होते हैं॥६॥

इस सूक्त में अग्नि के दृष्टान्त से विद्वानों के गुणों का वर्णन होने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ संगति जाननी चाहिये।

**यह नववां सूक्त और बारहवां वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

**अथ पञ्चर्चस्य दशमस्य सूक्तस्य वसिष्ठ ऋषिः। अग्निर्देवता। १, २, ३ निचृत्त्रिष्टुप्। ४, ५ त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः।**

***अथ विद्वान् किंवत्किं कुर्यादित्याह॥***

अब पांच ऋचा वाले दशवें सूक्त का प्रारम्भ है। उसके प्रथम मन्त्र में अब विद्वान् किसके तुल्य क्या करे, इस विषय को कहते हैं॥

**उषो न जारः पृथु पाजो अश्रेद्दविद्युतद्दीद्यच्छोशुचानः।**

**वृषा हरिः शुचिरा भाति भासा धियो हिन्वान उशतीरजीगः॥ १॥**

**उषः। न। जारः। पृथु। पाजः। अश्रेत्। दविद्युतत्। दीद्यत्। शोशुचानः। वृषा। हरिः। शुचिः। आ। भाति। भासा। धियः। हिन्वानः। उशतीः। अजीगरिति॥ १॥**

**पदार्थः**- **(उषः)** प्रभातवेला **(न)** इव **(जारः)** जरयिता **(पृथु)** विस्तीर्णम् **(पाजः)** अन्नादिकम् **(अश्रेत्)** श्रयति **(दविद्युतत्)** विद्योतयति **(दीद्यत्)** दीप्यते **(शोशुचानः)** शुद्धः संशोधकः **(वृषा)** वृष्टिकर्त्ता **(हरिः)** हरणशीलः **(शुचिः)** पवित्रः **(आ भाति)** प्रकाशयते **(भासा)** दीप्त्या **(धियः)** कर्माणि प्रज्ञाश्च **(हिन्वानः)** वर्धयन् **(उशतीः)** काम्यमानाः **(अजीगः)** जागारयति॥ १॥

**अन्वयः**-हे विद्वन्! यथा जारो न शोशुचानो वृषा हरिरुशतीर्धियोहिन्वानोऽग्निरजीगो भासा सर्वमा भाति पृथु पाजोऽश्रेत् सर्वं दविद्युतदुषइव शुचिः स्वयं दीद्यत्तथा त्वं विधेहि॥ १॥

**भावार्थः**-अत्रोपमावाचकलुप्तोपमालङ्कारौ। यथा सुशिक्षिता विद्वांसः कार्याणि यथावत्साध्नुवन्ति तथैव विद्युदादयः पदार्थाः सम्प्रयुक्ताः सन्तः सर्वान् व्यवहारान् सम्पादयन्ति॥ १॥

**पदार्थः**-हे विद्वन् जैसे **(जारः)** जीर्ण करनेहारे के **(न)** तुल्य **(शोशुचानः)** शुद्ध संशोधक **(वृषा)** वृष्टिकर्त्ता **(हरिः)** हरणशील **(उशतीः)** कामना किये जाते **(धियः)** कर्मों वा बुद्धियों को **(हिन्वानः)** बढ़ाता हुआ अग्नि **(अजीगः)** जगाता है **(भासा)** दीप्ति से सब को **(आ, भाति)** प्रकाशित करता है **(पृथु)** विस्तृत **(पाजः)** अन्नादि का **(अश्रेत्)** आश्रय करता है, सब को **(दविद्युतत्)** प्रकट करता है **(उषः)** प्रभातवेला के तुल्य **(शुचिः)** पवित्र स्वयं **(दीद्यत्)** प्रकाशित होता है, वैसे आप कीजिये॥ १॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमा और वाचकलुप्तोपमालङ्कार हैं। जैसे उत्तम शिक्षा को प्राप्त विद्वान् यथावत् कार्य्यों को सिद्ध करते, वैसे ही विद्युत् आदि पदार्थ सम्प्रयोग में लाये हुए सब व्यवहारों को सिद्ध करते हैं॥ १॥

**पुनः स विद्वान् कीदृशः कि कुर्यादित्याह॥**

फिर वह विद्वान् कैसा हो क्या करे, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**स्वर्ण वस्तोरुषसामरोचि यज्ञं तन्वाना उशिजो न मन्म।**



www.9009.co.in

अ॒ग्निर्जन्मा॑नि दे॒व आ वि वि॒द्वान् द्र॒वद्दू॒तो दे॑व॒यावा॒ वनि॑ष्ठः॥ २॥

स्व॑ः। न। वस्तो॑ः। उ॒षसा॑म्। अ॒रो॒चि॒। य॒ज्ञम्। त॒न्वा॒नाः। उ॒शिजः॑। नः। मन्म॑। अ॒ग्निः। जन्मा॑नि। देवः। आ। वि। वि॒द्वान्। द्र॒वत्। दू॒तः। दे॒व॒ऽयावा॑। वनि॑ष्ठः॥ २॥

**पदार्थः**-(**स्वः**) आदित्यः (**न**) इव (**वस्तोः**) दिनस्य (**उषसाम्**) प्रभातवेलानाम् (**अरोचि**) प्रकाशते (**यज्ञम्**) सङ्गन्तव्यं व्यवहारम् (**तन्वानाः**) विस्तृणन्तः (**उशिजः**) कामयमाना ऋत्विजः (**न**) इव (**मन्म**) मन्तव्यं विज्ञानम् (**अग्निः**) पावक इव (**जन्मानि**) (**देवः**) देदीप्यमानः कामयमानो वा (**आ**) (**वि**) (**विद्वान्**) (**द्रवत्**) धावन् (**दूतः**) समाचारदाता (**देवयावा**) यो देवान् दिव्यगुणान् याति प्राप्नोति (**वनिष्ठः**) अतिशयेन संविभाजकः॥ २॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यो विद्युदग्निः स्वर्णवस्तोरुषसां सम्बन्धेऽरोचि यज्ञं तन्वाना उशिजो न देवो विद्वान्मन्म जन्मानि व्याद्रवद्दूतो वनिष्ठो देवयावाग्निरिव सद्व्यवहारानरोचि तं विपश्चितं सततं सेवध्वम्॥ २॥

**भावार्थः**-अत्रोपमावाचकलुप्तोपमालङ्कारौ। ये जिज्ञासवो विद्वद्भ्यः शिक्षां प्राप्य विधिक्रियाभ्यां वह्न्यादिभ्यः पदार्थेभ्योऽविशिष्टान् व्यवहारान् साध्नुवन्ति ते सिद्धश्रियो जायन्ते॥ २॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो (**अग्निः**) विद्युत् अग्नि (**स्वः, न**) आदित्य के समान (**वस्तोः**) दिवस और (**उषसाम्**) प्रभातवेलाओं के सम्बन्ध में (**अरोचि**) रुचि करता है वा प्रकाशित होता (**यज्ञम्**) संगति योग्य व्यवहार को (**तन्वानाः**) विस्तृत करते और (**उशिजः**) कामना करते हुए के (**नः**) तुल्य (**देवः**) प्रकाशयुक्त कामना करता हुआ (**विद्वान्**) विद्वान् (**मन्म**) मानने योग्य विज्ञान और (**जन्मानि**) जन्मों को (**वि, आ, द्रवत्**) विशेष कर अच्छा शुद्ध करता हुआ (**दूतः**) समाचार पहुँचाने वाला (**वनिष्ठः**) अत्यन्त विभागकर्ता (**देवयावा**) दिव्य उत्तम गुणों को प्राप्त होने वाला अग्नि के तुल्य श्रेष्ठ व्यवहारों को प्रकाशित करता उस विद्वान् पुरुष की निरन्तर सेवा करो॥ २॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमा और वाचकलुप्तोपमालङ्कार हैं। जो जिज्ञासु विद्वानों से शिक्षा को प्राप्त होके विधि और क्रिया से अग्नि आदि पदार्थों से समस्त व्यवहारों को सिद्ध करते हैं, वे प्रसिद्ध धनवान् होते हैं॥ २॥

**पुनः स्त्रीपुरुषाः किंवद्भूत्वा कथं स्वीकुर्य्युरित्याह॥**

फिर स्त्रीपुरुष किसके तुल्य होकर कैसे स्वीकार करें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

अच्छा॒ गिरो॑ म॒तयो॑ देव॒यन्ती॑र॒ग्निं॑ य॑न्ति॒ द्रवि॑णं॒ भिक्ष॑माणाः।
सु॒सं॒दृशं॑ सु॒प्रती॑कं॒ स्वञ्चं॑ हव्य॒वाह॑मर॒तिं मानु॑षाणाम्॥ ३॥

अच्छ॑। गिरः॑। म॒तयः॑। दे॒व॒ऽयन्तीः॑। अ॒ग्निम्। य॒न्ति॒। द्रवि॑णम्। भिक्ष॑माणाः। सु॒ऽसं॒दृश॑म्। सु॒ऽप्रती॑कम्। सु॒ऽअञ्च॑म्। ह॒व्य॒ऽवाह॑म्। अ॒र॒तिम्। मानु॑षाणाम्॥ ३॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**अच्छा**) सम्यक्। अत्र **संहितायामि**ति दीर्घः। (**गिरः**) विद्यायुक्ता वाचः (**मतयः**) प्रज्ञा इव वर्त्तमानाः कन्याः (**देवयन्तीः**) देवान्विदुषः पतीन् कामयमानाः (**अग्निम्**) विद्युद्विद्याम् (**यन्ति**) प्राप्नुवन्ति (**द्रविणम्**) धनं यशो वा (**भिक्षमाणाः**) याचमानाः (**सुसन्दृशम्**) सुष्ठु संद्रष्टव्यम् (**सुप्रतीकम्**) सुष्ठु प्रत्येति येन तम् (**स्वञ्चम्**) यः, सुष्ठ्वञ्चति तम् (**हव्यवाहम्**) यो हव्यानि वहति तम् (**अरतिम्**) सर्वत्र प्राप्तम् (**मानुषाणाम्**) मनुष्याणां सकाशात्॥३॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! याः कन्या मतय इव गिरोऽच्छ देवयन्तीः सुसन्दृशं सुप्रतीकं स्वञ्चं मानुषाणां हव्यवाहमरतिं द्रविणं भिक्षमाणा अग्निं यन्ति ता एव वरणीया भवन्ति॥३॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यथा कन्या दीर्घब्रह्मचर्येण विदुष्यः सत्योऽग्न्यादिविद्यां प्राप्य पुरुषाणां मध्यादुत्तममुत्तमं पतिं याचमानाः स्वाभीष्टं स्वाभीष्टं स्वामिनं प्राप्नुवन्ति तथैव पुरुषैरपि स्वेष्टा भार्याः प्राप्तव्याः॥३॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो कन्या (**मतयः**) बुद्धि के तुल्य वर्त्तमान (**गिरः**) विद्यायुक्त वाणियों और (**अच्छा**) अच्छे प्रकार (**देवयन्तीः**) पतियों की कामना करती हुई (**सुसन्दृशम्**) अच्छे प्रकार देखने योग्य (**सुप्रतीकम्**) सुन्दर प्रतीति के साधन (**स्वञ्चम्**) सुन्दर प्रकार पूजने योग्य (**मानुषाणाम्**) मनुष्यों के सम्बन्ध से (**हव्यवाहम्**) होमने योग्य पदार्थों को देशान्तर पहुँचाने वाले (**अरतिम्**) सर्वत्र प्राप्त होने वाले (**द्रविणम्**) धन वा यश को (**भिक्षमाणाः**) चाहती हुई (**अग्निम्**) विद्युत् की विद्या को (**यन्ति**) प्राप्त होती हैं, वे ही विवाहने योग्य होती हैं॥३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे कन्या दीर्घ ब्रह्मचर्य के साथ विदुषी हो और अग्नि आदि की विद्या को प्राप्त हो के पुरुषों में से उत्तम उत्तम पतियों को चाहती हुई अपने-अपने अभीष्ट स्वामी को प्राप्त होती हैं, वैसे पुरुषों को भी अपने अनुकूल स्त्रियों को प्राप्त होना चाहिये॥३॥

**को विद्वान् सततं सेवनीय इत्याह॥**

कौन विद्वान् निरन्तर सेवने योग्य है, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**इन्द्रं॑ नो अग्ने॒ वसु॑भिः स॒जोषा॑ रु॒द्रं रु॒द्रेभि॒रा व॑हा बृ॒हन्त॑म्।**

**आ॒दि॒त्येभि॒रदि॑तिं वि॒श्वज॑न्यां बृह॒स्पति॒मृक्व॑भिर्वि॒श्ववा॑रम्॥४॥**

**इन्द्र॑म्। न॒ः। अ॒ग्ने॒। वसु॑ऽभिः। स॒ऽजोषा॑ः। रु॒द्रम्। रु॒द्रेभि॑ः। आ। व॒ह॒। बृ॒हन्त॑म्। आ॒दि॒त्येभि॑ः। अदि॑तिम्। वि॒श्वऽज॑न्याम्। बृह॒स्पति॑म्। ऋक्व॑ऽभिः। वि॒श्वऽवा॑रम्॥४॥**

**पदार्थः**-(**इन्द्रम्**) विद्युतम् (**नः**) अस्माकम् (**अग्ने**) पावक इव विद्वन् (**वसुभिः**) पृथिव्यादिभिः (**सजोषाः**) समानसेवी (**रुद्रम्**) जीवात्मानम् (**रुद्रेभिः**) प्राणैस्सह (**आ वहा**) समन्तात्प्रापय। अत्र **द्व्यचोऽतस्तिङ** इति दीर्घः। (**बृहन्तम्**) महान्तम् (**आदित्येभिः**) संवत्सरस्य मासैः



www.9009.co.in

**(अदितिम्)** अखण्डितां कालविद्याम् **(विश्वजन्याम्)** विश्वं जन्यं यया ताम् **(बृहस्पतिम्)** बृहत्या ऋग्वेदादिवेवाचः पालकं परमात्मानम् **(ऋक्वभिः)** ऋग्वेदादिभिः **(विश्ववारम्)** सर्वैर्वरणीयम्॥४॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! सजोषास्त्वं नो वसुभिः रुद्रेभिर्बृहन्तं रुद्रमादित्येभिर्विश्वजन्यामदितिमृक्वभि- र्विश्ववारं बृहस्पतिमा वहा॥४॥

**भावार्थः**-यो हि पृथिव्यादिविद्यया सह विद्युद्विद्यां प्राणविद्यया सह जीवविद्यां कालविद्यया सह प्रकृतिविज्ञानं वेदविद्यया परमात्मान ज्ञापयितुं शक्नोति तमेव सर्वे विद्यार्थमाश्रयन्तु॥४॥

**पदार्थः**-हे **(अग्ने)** अग्नि के तुल्य तेजस्वी विद्वन् **(सजोषाः)** तुल्य सेवनकर्त्ता आप **(नः)** हमारे लिये **(वसुभिः)** पृथिव्यादि के साथ **(इन्द्रम्)** विद्युत् अग्नि को **(रुद्रेभिः)** प्राणों के साथ **(बृहन्तम्)** बड़े **(रुद्रम्)** जीवात्मा को **(आदित्येभिः)** बारह महीनों से **(विश्वजन्याम्)** संसारोत्पत्ति की हेतु **(अदितिम्)** अखण्डित कालविद्या को और **(ऋक्वभिः)** ऋग्वेदादि से **(विश्ववारम्)** सब के स्वीकार करने योग्य **(बृहस्पतिम्)** बड़ी ऋग्वेदादि वाणी के रक्षक परमात्मा को **(आ, वहा)** अच्छे प्रकार प्राप्त कीजिये॥४॥

**भावार्थः**-जो ही पृथिव्यादि विद्या के साथ बिजुली की विद्या को, प्राणविद्या के साथ जीवविद्या को, कालविद्या के साथ प्रकृति के विज्ञान को और वेदविद्या से परमात्मा के विज्ञान कराने को समर्थ होता है, उसी का सब लोग विद्या प्राप्ति के लिये आश्रय करें॥४॥

**मनुष्याः कस्यान्वेषणं प्रत्यहं कुर्युरित्याह॥**

मनुष्य प्रतिदिन किस का खोज करें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**मन्द्रं होतारमुशिजो यविष्ठमग्निं विश ईळते अध्वरेषु।**

**स हि क्षपावाँ अभवद्रयीणामतन्द्रो दूतो यजथाय देवान्॥५॥१३॥**

**मन्द्रम्। होतारम्। उशिजः। यविष्ठम्। अग्निम्। विशः। ईळते। अध्वरेषु। सः। हि। क्षपाऽवान्। अभवत्। रयीणाम्। अतन्द्रः। दूतः। यजथाय। देवान्॥५॥**

**पदार्थः**-**(मन्द्रम्)** आनन्दकरम् **(होतारम्)** दातारम् **(उशिजः)** कामयमानाः **(यविष्ठम्)** अतिशयेन युवानमिव **(अग्निम्)** पावकम् **(विशः)** प्रजाः **(ईळते)** स्तुवन्त्यन्विच्छन्ति वा **(अध्वरेषु)** अग्निहोत्रादिक्रियामयव्यवहारेषु **(सः)** **(हि)** एव **(क्षपावान्)** बह्व्यः क्षपा रात्रयो विद्यन्ते यस्मिन् सः **(अभवत्)** भवति **(रयीणाम्)** द्रव्याणाम् **(अतन्द्रः)** अनलसः **(दूतः)** दूत इव **(यजथाय)** सङ्गमनाय **(देवान्)** दिव्यगुणान्॥५॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यमध्वरेषु मन्द्रं होतारं यविष्ठमिवाग्निमुशिजो विश ईळते स हि क्षपावानतन्द्रो दूत इव रयीणां यजथाय देवान् प्रापयितुं समर्थोऽभवत्॥५॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-योऽग्निर्दूतवत्सर्वासां विद्यानां सङ्गमयिता वर्त्तते तं सर्वे मनुष्या अन्विच्छन्तु यतस्सर्वशुभगुणलाभः स्यादिति॥५॥

अत्राऽग्निविद्वद्विदुषीकृत्यवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति दशमं सूक्तं त्रयोदशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे मनुष्यो जिसको **(अध्वरेषु)** अग्निहोत्रादिक्रियारूप व्यवहारों में **(मन्द्रम्)** आनन्दकारी **(होतारम्)** दाता **(यविष्ठम्)** अतिजवान के तुल्य **(अग्निम्)** अग्नि की **(उशिजः)** कामना करते हुए **(विशः)** प्रजाजन **(ईळते)** स्तुति वा खोज करते हैं **(सः, हि)** वही **(क्षपावान्)** बहुत रात्रियों वाला **(अतन्द्रः)** आलस्यरहित **(दूतः)** दूत के समान **(रयीणाम्)** द्रव्यों की **(यजथाय)** प्राप्ति के लिये **(देवान्)** दिव्यगुणों के प्राप्त करने को समर्थ **(अभवत्)** होता है॥५॥

**भावार्थः**-जो अग्नि, दूत के तुल्य सब विद्याओं का संग करने वाला होता है उसका सब मनुष्य खोज करें, जिससे सब गुणों की प्राप्ति हो॥५॥

इस सूक्त में अग्नि, विद्वान् और विदुषी के कर्त्तव्य का वर्णन होने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये।

**यह दशवां सूक्त और तेरहवां वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

**अथ पञ्चर्चस्यैकादशस्य सूक्तस्य वसिष्ठ ऋषिः। अग्निर्देवता। १ स्वराट् पङ्क्तिः। २, ४ भुरिक् पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः। ३ विराट् त्रिष्टुप्। ५ निचृत्त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः॥**

*पुनर्मनुष्याः किं कुर्य्युरित्याह॥*

फिर मनुष्या क्या करें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**म॒हाँ अ॑स्यध्व॒रस्य॑ प्रके॒तो न ऋ॒ते त्वद॒मृता॑ मादयन्ते।**

**आ विश्वे॑भिः स॒रथं॑ याहि दे॒वैर्न्य॑ग्ने॒ होता॑ प्रथ॒मः स॑दे॒ह॥१॥**

**म॒हान्। अ॒सि॒। अ॒ध्व॒रस्य॑। प्र॒ऽके॒तः। न। ऋ॒ते। त्वत्। अ॒मृता॑ः। मा॒द॒य॒न्ते॒। आ। विश्वे॑भिः। स॒ऽरथ॑म्। या॒हि॒। दे॒वैः। नि। अ॒ग्ने॒। होता॑। प्र॒थ॒मः। स॒दः। इ॒ह॥१॥**

**पदार्थः**-(**महान्**) (**असि**) (**अध्वरस्य**) सर्वव्यवहारस्य (**प्रकेतः**) प्रकृष्टप्रज्ञावान् प्रज्ञापकः (**न**) निषेधे (**ऋते**) (**त्वत्**) (**अमृताः**) नाशरहिता जीवाः (**मादयन्ते**) आनन्दयन्ति (**आ**) (**विश्वेभिः**) सर्वैः (**सरथम्**) रमणीयेन स्वरूपेण सह वर्त्तमानम् (**याहि**) समन्तात्प्राप्नुहि (**देवैः**) विद्वद्भिः सह (**नि**) (**अग्ने**) स्वप्रकाशस्वरूप जगदीश्वर (**होता**) विद्यादिशुभगुणदाता (**प्रथमः**) आदिमः (**सद**) सीद (**इह**)॥१॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! त्वमिह विश्वेभिर्देवैः सह प्रथमो होताऽस्मान् सरथं न्यायाहि यतस्त्वदृतेऽमृता न मादयन्ते तस्मात्त्वं सद त्वमध्वरस्य महान् प्रकेतोऽसि॥१॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! येन विना न विद्या न सुखं लभ्यते यो विद्वत्सङ्गयोगाभ्यासधर्माचरणैः प्राप्योऽस्ति तमेव जगदीश्वरं सदोपाध्वम्॥१॥

**पदार्थः**-हे (**अग्ने**) स्वप्रकाशस्वरूप जगदीश्वर आप (**इह**) इस जगत् में (**विश्वेभिः**) सब (**देवैः**) विद्वानों के साथ (**प्रथमः**) पहिले (**होता**) विद्यादि शुभगुणों के दाता हमको (**सरथम्**) रथ सहित (**नि, आ, याहि**) निरन्तर प्राप्त हूजिये जिस कारण (**त्वत्**) आप से (**ऋते**) भिन्न (**अमृताः**) नाशरहित जीव (**न**) नहीं (**मादयन्ते**) आनन्द करते हैं इससे आप (**सद**) स्थिर हूजिये आप (**अध्वरस्य**) सब व्यवहार के (**महान्**) बड़े (**प्रकेतः**) उत्तमबुद्धि के प्रकाशक (**असि**) हैं॥१॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जिसके विना न विद्या, न सुख प्राप्त होता है, जो विद्वानों का सङ्ग, योगाभ्यास और धर्माचरण से प्राप्त होने योग्य है, उसी जगदीश्वर की सदा उपासना करो॥१॥

**पुनर्मनुष्यैः किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को क्या करना चाहिये, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**त्वामी॑ळते अजि॒रं दू॒त्या॑य ह॒विष्म॑न्तः सद॒मिन्मानु॑षासः।**

**यस्य॑ दे॒वैरास॑दो ब॒र्हिर॒ग्नेऽहा॑न्यस्मै सु॒दिना॑ भवन्ति॥२॥**



www.9009.co.in

**त्वाम्। ईळते। अजिरम्। दूत्याय। हविष्मन्तः। सदम्। इत्। मानुषासः। यस्य। देवैः। आ। असदः। बर्हिः। अग्ने। अहानि। अस्मै। सुऽदिना। भवन्ति॥२॥**

**पदार्थः**-(**त्वाम्**) (**ईळते**) स्तुवन्ति (**अजिरम्**) प्रक्षेप्तारम् (**दूत्याय**) दूतकर्मणे (**हविष्मन्तः**) प्रशस्तसामग्रीयुक्ताः (**सदम्**) यः सीदति तम् (**इत्**) एव (**मानुषासः**) मनुष्याः (**यस्य**) (**देवैः**) विद्वद्भिः (**आ**) (**असदः**) प्राप्तव्यम् (**बर्हिः**) उत्तमं वर्धकं विज्ञानम् (**अग्ने**) पावक इव स्वप्रकाशेश्वर (**अहानि**) दिनानि (**अस्मै**) विदुषे (**सुदिना**) शोभनानि दिनानि येषु तानि (**भवन्ति**)॥२॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! यस्य ते देवैरासदो बर्हिः प्राप्यते अस्मै तेऽहानि सुदिना भवन्ति यथा हविष्मन्तो मानुषासो दूत्याय सदमिदजिरमग्निमीळते तथैते त्वामित्सततं स्तुवन्तु॥२॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यथा सामग्रीमन्तोऽग्निविद्यां प्राप्य सततमानन्दिता भवन्ति तथैवेश्वरं प्राप्य सततं श्रीमन्तो जायन्ते॥२॥

**पदार्थः**-हे (**अग्ने**) अग्नि के तुल्य स्वयंप्रकाशस्वरूप ईश्वर (**यस्य**) जिस आप के (**देवैः**) विद्वानों से (**आ, असदः**) प्राप्त होने योग्य (**बर्हिः**) सुखवर्द्धक विज्ञान प्राप्त होता है (**अस्मै**) इस विद्वान् के लिये आप के (**अहानि**) दिन (**सुदिना**) सुदिन (**भवन्ति**) होते हैं जैसे (**हविष्मन्तः**) प्रशस्त सामग्री वाले (**मानुषासः**) मनुष्य (**दूत्याय**) दूतकर्म के लिये (**सदम्, इत्**) स्थिर होने वाले (**अजिरम्**) फैंकने हारे अग्नि की (**ईळते**) स्तुति करते हैं, वैसे ये लोग (**त्वाम्**) आपकी निरन्तर स्तुति करें॥२॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जैसे सामग्री वाले अग्निविद्या को प्राप्त होके निरन्तर आनन्दित होते हैं, वैसे ईश्वर को प्राप्त होके निरन्तर श्रीमान् होते हैं॥२॥

**कस्मिन् सति मनुष्या दिव्यान् गुणान् प्राप्नुवन्तीत्याह॥**

किसके होने पर मनुष्य उत्तम गुण को प्राप्त होते हैं, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**त्रिश्चिदक्तोः प्र चिकितुर्वसूनि त्वे अन्तर्दाशुषे मर्त्याय।**

**मनुष्वदग्न इह यक्षि देवान्भवा नो दूतो अभिशस्तिपावा॥३॥**

**त्रिः। चित्। अक्तोः। प्र। चिकितुः। वसूनि। त्वे इति। अन्तः। दाशुषे। मर्त्याय। मनुष्वत्। अग्ने। इह। यक्षि। देवान्। भव। नः। दूतः। अभिशस्तिपावा॥३॥**

**पदार्थः**-(**त्रिः**) त्रिवारम् (**चित्**) अपि (**अक्तोः**) रात्रेः (**प्र**) (**चिकितुः**) विजानन्ति (**वसूनि**) द्रव्याणि (**त्वे**) त्वयि (**अन्तः**) मध्ये (**दाशुषे**) दात्रे (**मर्त्याय**) मनुष्याय (**मनुष्वत्**) मनुष्यैस्तुल्यम् (**अग्ने**) विद्वन् (**इह**) (**यक्षि**) यजसि (**देवान्**) विदुषः (**भव**) (**नः**) अस्माकम् (**दूतः**) दूत इव (**अभिशस्तिपावा**) प्रशंसितानां पालकः पवित्रकरः॥३॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! त्वेऽन्तर्दाशुषे मर्त्याय वसून्यक्तोश्चित् त्रिः विद्वांसः प्रचिकितुस्त्वमिह मनुष्वद् देवान् यक्षि त्वं नो दूतइवाभिशस्तिपावा भव॥३॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-यस्य सङ्गेन मनुष्यान् दिव्या गुणाः पुष्कलानि धनानि च प्राप्नुवन्ति तमेवेह स्तुत्वा यो दूतवत्परोपकारी भवति स सर्वानिह सत्यं प्रज्ञापयितुं शक्नोति॥३॥

**पदार्थः**-हे **(अग्ने)** विद्वन्! **(त्वे)** आपके **(अन्तः)** बीच **(दाशुषे)** दानशील **(मर्त्याय)** मनुष्य के लिये **(वसूनि)** द्रव्यों को **(अक्तोः)** रात्रि के सम्बन्ध में **(चित्)** भी **(त्रिः)** तीन वार विद्वान् **(प्र, चिकितुः)** जानते हैं आप **(इह)** इस जगत् में **(मनुष्वत्)** मनुष्यों के तुल्य **(देवान्)** विद्वानों का **(यक्षि)** सत्कार कीजिये [आप] **(नः)** हमारे **(दूतः)** दूत के समान **(अभिशस्तिपावा)** प्रशंसितों के रक्षक पवित्रकारी **(भव)** हूजिये॥३॥

**भावार्थः**-जिसके संग से मनुष्यों को दिव्य गुण और पुष्कल धन प्राप्त होते हैं, इस जगत् में उसी की स्तुति कर जो दूत के तुल्य परोपकारी होता है, वह सब को सत्य जताने को समर्थ होता है॥३॥

**कस्य विद्ययाऽभीष्टं प्राप्तव्यमित्याह॥**

किसकी विद्या से अभीष्ट प्राप्त करना चाहिये, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अ॒ग्निरी॑शे बृह॒तो अ॑ध्व॒रस्या॒ग्निर्विश्व॑स्य ह॒विषः॑ कृ॒तस्य॑।**

**क्रतुं॒ ह्य॑स्य॒ वस॑वो जुषन्ताथा॑ दे॒वा द॑धिरे हव्य॒वाह॑म्॥४॥**

**अ॒ग्निः। ई॒शे। बृ॒ह॒तः। अ॒ध्व॒रस्य॑। अ॒ग्निः। विश्व॑स्य। ह॒विषः॑। कृ॒तस्य॑। क्रतु॑म्। हि। अ॒स्य॒। वस॑वः। जु॒षन्त॑। अथ॑। दे॒वाः। द॒धि॒रे॒। ह॒व्य॒ऽवाह॑म्॥४॥**

**पदार्थः**-**(अग्निः)** विद्युत् **(ईशे)** ईष्टे **(बृहतः)** महतः **(अध्वरस्य)** अहिंसनीयस्य व्यवहारस्य **(अग्निः)** **(विश्वस्य)** समग्रस्य **(हविषः)** सङ्गन्तुमर्हस्य **(कृतस्य)** शुद्धस्य **(क्रतुम्)** प्रज्ञाम् **(हि)** खलु **(अस्य)** **(वसवः)** **(जुषन्त)** सेवन्ते **(अथा)** अनन्तरम्। अत्र **निपातस्य चे**ति दीर्घः। **(देवाः)** विद्वांसः **(दधिरे)** दधति। **(हव्यवाहम्)** यो हव्यान्यादातुमर्हाणि वहति प्राप्नोति॥४॥

**अन्वयः**-अग्निर्बृहतोऽध्वरस्येशे योऽग्निः कृतस्य विश्वस्य हविष ईशेऽस्य हि सङ्गेन ये वसवो देवाः क्रतुं हि जुषन्ताऽथा हव्यवाहं दधिरे ते हि जगत्पूज्या जायन्ते॥४॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! या विद्युन्महान्ति कार्याणि साध्नोति यस्य सकाशाद्योगाभ्यासेन प्रज्ञां प्राप्नोति तमेवाग्निं सर्वे युक्त्या परिचरन्तु॥४॥

**पदार्थः**-**(अग्निः)** विद्युत् अग्नि **(बृहतः)** बड़े **(अध्वरस्य)** रक्षा योग्य व्यवहार के करने को **(ईशे)** समर्थ है **(अग्निः)** अग्नि **(कृतस्य)** शुद्ध **(विश्वस्य)** सब **(हविषः)** संग करने योग्य व्यवहार के लिये समर्थ है **(अस्य)** इस अग्नि के संग से जो **(वसवः)** चौबीस वर्ष ब्रह्मचर्य्य करने वाले प्रथम कक्षा **(देवाः)** विद्वान् जन **(क्रतुम्)** बुद्धि का **(हि)** ही **(जुषन्त)** सेवन करते हैं **(अथा)** इसके अनन्तर **(हव्यवाहम्)** ग्रहण करने योग्य वस्तुओं को प्राप्त करने वाले अग्नि को **(दधिरे)** धारण करते हैं, वे ही जगत् में पूज्य होते हैं॥४॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो विद्युत् बड़े-बड़े कार्य्यों को सिद्ध करती, जिसके सम्बन्ध से योगाभ्यास कर के मनुष्य बुद्धि को प्राप्त होता, उसी अग्नि का सब लोग युक्ति से सेवन करें॥४॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**आग्ने वह हविरद्याय देवानिन्द्रज्येष्ठास इह मादयन्ताम्।**

**इमं यज्ञं दिवि देवेषु धेहि यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥५॥१४॥**

**आ। अग्ने। वह। हविःऽअद्याय। देवान्। इन्द्रऽज्येष्ठासः। इह। मादयन्ताम्। इमम्। यज्ञम्। दिवि। देवेषु। धेहि। यूयम्। पात। स्वस्तिऽभिः। सदा। नः॥५॥**

**पदार्थः**-**(आ)** समन्तात् **(अग्ने)** वह्निरिव विद्वन् **(वह)** सर्वतः प्रापय **(हविः)** अत्तुमर्हम् **(अद्याय)** अत्तुं योग्याय **(देवान्)** विदुषः **(इन्द्रज्येष्ठासः)** इन्द्रो राजा ज्येष्ठो येषान्ते **(इह)** अस्मिन्समये **(मादयन्ताम्)** आनन्दयन्तु **(इमम्)** वर्त्तमानम् **(यज्ञम्)** धर्म्यं व्यवहारम् **(दिवि)** द्योतनात्मके परमात्मनि **(देवेषु)** विद्वत्सु **(धेहि)** यूयम् **(पात)** **(स्वस्तिभिः)** सुखैः **(सदा)** **(नः)** अस्मान्॥५॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! त्वमद्याय देवान् हविरावह तेनेहेन्द्रज्येष्ठासो जना मादयन्तां त्वमिमं यज्ञं दिवि देवेषु धेहि हे विद्वांसो! यूयं स्वस्तिभिर्नः सदा पात॥५॥

**भावार्थः**-हे विद्वांसो! यथाग्निः सूर्यादिरूपेण सर्वानानन्दयति तथाऽत्र यूयं सर्वान् संरक्ष्य कर्त्तव्यं कारयित्वेष्टान् भोगान् प्रापयतेति॥५॥

अत्राग्निविद्वत्कृत्यवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इत्येकादशं सूक्तं चतुर्दशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे **(अग्ने)** अग्नि के तुल्य तेजस्वि विद्वन्! आप **(अद्याय)** भोगने योग्य वस्तु के लिये **(देवान्)** विद्वानों **(हविः)** भोजन योग्य अन्न को **(आ, वह)** अच्छे प्रकार प्राप्त कीजिये उससे **(इह)** इस समय **(इन्द्रज्येष्ठासः)** जिन में राजा श्रेष्ठ है वे मनुष्य **(मादयन्ताम्)** आनन्दित करें आप **(इमम्)** इस यज्ञम् धर्मयुक्त व्यवहार को **(दिवि)** द्योतनस्वरूप परमात्मा और **(देवेषु)** विद्वानों में **(धेहि)** धारण करो, हे विद्वानो! **(यूयम्)** तुम लोग **(स्वस्तिभिः)** सुखों से **(नः)** हमारी **(सदाः)** सदा **(पात)** रक्षा करो॥५॥

**भावार्थः**-हे विद्वानो! जैसे अग्नि सूर्यादिरूप से सब को आनन्दित करता है, वैसे इस जगत् में तुम सब लोगों की रक्षा कर और कर्त्तव्य को कराके अभीष्ट लोगों को प्राप्त कराओ॥५॥

इस सूक्त में अग्नि और विद्वानों का कृत्य वर्णन होने से इस सूक्त के अर्थ की पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ संगति जाननी चाहिये॥

**यह ग्यारहवां सूक्त और चौदहवां वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

अथ त्र्यर्चस्य द्वादशस्य सूक्तस्य वसिष्ठ ऋषिः। अग्निर्देवता। १ विराट्त्रिष्टुप्। २ त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः। ३ पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः॥

*अथ पुनरग्निः कीदृशोऽस्तीत्याह॥*

अब बारहवें सूक्त का आरम्भ है। इसके प्रथम मन्त्र में अग्नि कैसा है, इस विषय को कहते हैं॥

**अगन्म महा नमसा यविष्ठं यो दीदाय समिद्धः स्वे दुरोणे।**

**चित्रभानुं रोदसी अन्तरुर्वी स्वाहुतं विश्वतः प्रत्यञ्चम्॥१॥**

**अगन्म। महा। नमसा। यविष्ठम्। यः। दीदाय। सम्ऽइद्धः। स्वे। दुरोणे। चित्रऽभानुम्। रोदसी इति। अन्तः। उर्वी इति। सुऽआहुतम्। विश्वतः। प्रत्यञ्चम्॥१॥**

**पदार्थः**- **(अगन्म)** प्राप्नुयाम **(महा)** महान्तम् **(नमसा)** सत्कारेणान्नादिना वा **(यविष्ठम्)** अतिशयेन विभाजकम् **(यः)** **(दीदाय)** दीपयति **(समिद्धः)** प्रदीप्तः **(स्वे)** स्वकीये **(दुरोणे)** गृहे **(चित्रभानुम्)** अद्भुतकिरणम् **(रोदसी)** द्यावापृथिव्योः **(अन्तः)** मध्ये **(उर्वी)** महत्योः **(स्वाहुतम्)** सुष्ठ्वाहुतम् **(विश्वतः)** सर्वतः **(प्रत्यञ्चम्)** यः प्रत्यञ्चति तम्॥१॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यस्स्वे दुरोणे समिद्धः स दीदाय तमुर्वी रोदसी अन्तर्वर्त्तमानं चित्रभानुं स्वाहुतं विश्वतः प्रत्यञ्चं यविष्ठं महाऽग्निं नमसा यथा वयमगन्म तथैतं यूयमपि प्राप्नुत॥१॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। विद्वद्भिः सर्व एवमुपदेष्टव्यो यथा वयं सर्वान्तःस्थां विद्युतं विजानीयाम तथा यूयमपि विजानीत॥१॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो **(यः)** जो **(स्वे)** अपने **(दुरोणे)** घर में **(समिद्धः)** प्रकाशित है वह **(दीदाय)** सबको प्रकाशित करता है उसको **(उर्वी)** बड़ी **(रोदसी)** सूर्य-पृथिवी के **(अन्तः)** भीतर वर्त्तमान **(चित्रभानुम्)** अद्भुत किरणों वाले **(स्वाहुतम्)** सुन्दर प्रकार ग्रहण किये **(विश्वतः)** सब ओर से **(प्रत्यञ्चम्)** पीछे चलने और **(यविष्ठम्)** अतिशय विभाग करने वाले **(महा)** बड़े अग्नि को **(नमसा)** सत्कार वा अन्नादि से जैसे हम लोग **(अगन्म)** प्राप्त हों, वैसे इसको तुम लोग भी प्राप्त होओ॥१॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। विद्वानों को उचित है कि सब को ऐसा उपदेश करें कि जैसे हम लोग सब के अन्तःस्थित विद्युत् अग्नि को जानें, वैसे तुम लोग भी जानो॥१॥

**पुनः प्रेम्णोपासित ईश्वरः किं करोतीत्याह॥**

फिर प्रेम से उपासना किया ईश्वर क्या करता है, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**स मह्ना विश्वा दुरितानि साह्वानग्निः ष्टवे दम आ जातवेदाः।**

**स नो रक्षिषद् दुरितादवद्यादस्मान् गृणत उत नो मघोनः॥२॥**



www.9009.co.in

**सः। म॒ह्ना। विश्वा॑। दुः॒ऽइ॒तानि॑। सा॒ह्वान्। अ॒ग्निः॑। स्त॒वे। दमे॑। आ। जा॒तऽवे॑दाः। सः। न॒ः। र॒क्षि॒ष॒त्। दु॒ःऽइ॒तात्। अ॒व॒द्यात्। अ॒स्मान्। गृ॒ण॒तः। उ॒त। न॒ः। म॒घोनः॑॥ २॥**

**पदार्थः**-(**सः**) (**मह्ना**) महत्त्वेन (**विश्वा**) सर्वाणि (**दुरितानि**) दुराचरणानि (**साह्वान्**) सोढा (**अग्निः**) पावक इव जगदीश्वरः (**स्तवे**) स्तवने (**दमे**) गृहे (**आ**) (**जातवेदाः**) यो जातेषु पदार्थेष्वभिव्याप्य विद्यते सः (**सः**) (**नः**) अस्मान् (**रक्षिषत्**) रक्षेत् (**दुरितात्**) दुष्टाचारात् (**अवद्यात्**) निन्दनीयात् (**अस्मान्**) (**गृणतः**) शुचिं कुर्वतः (**उत**) अपि (**नः**) अस्मान् (**मघोनः**) बहुधनयुक्तान्॥ २॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! जगदीश्वरो दमेऽग्निरिव जातवेदाः स्तवे मह्ना साह्वान् विश्वा दुरितानि दूरीकरोति सोऽवद्याद् दुरितान्न आ रक्षिषत्। गृणतोऽस्मान् न्यायाचरणाद्रक्षतु उतोऽपि मघोनो नोऽस्मान् स रक्षिषत्॥ २॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यथा गृहे प्रज्वालितोऽग्निरन्धकारं शीतं च निवर्त्तयति तथैवोपासितः परमेश्वरोऽज्ञानमधर्माचरणं च दूरीकृत्य धर्मे विद्याग्रहणे च प्रवर्त्तयित्वा सम्यग्रक्षति॥ २॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जगदीश्वर (**दमे**) घर में (**अग्निः**) अग्नि के तुल्य (**जातवेदाः**) उत्पन्न हुए पदार्थों में व्याप्त होकर विद्यमान (**स्तवे**) स्तुति में (**मह्ना**) महत्त्व से (**साह्वान्**) सहनशील (**विश्वा**) सब (**दुरितानि**) दुराचरणों को दूर करता है (**सः**) वह (**अवद्यात्**) निन्दनीय (**दुरितात्**) दुष्टाचार से (**नः**) हमारी (**आ, रक्षिषत्**) रक्षा करे (**गृणतः**) शुद्धि करते हुए हम लोगों की रक्षा करे (**उत**) और (**मघोनः**) बहुत धन वाले (**नः**) हमारी (**सः**) वह रक्षा करे॥ २॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जैसे घर में प्रज्वलित किया अग्नि अन्धकार और शीत की निवृत्ति करता है, वैसे ही उपासना किया परमेश्वर अज्ञान और अधर्म्माचरण को दूर कर धर्म और विद्या ग्रहण में प्रवृत्ति कराके सम्यक् रक्षा करता है॥ २॥

**पुनः स उपासितः किं करोतीत्याह॥**

फिर वह उपासना किया ईश्वर क्या करता है, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**त्वं वरु॑ण उ॒त मि॒त्रो अ॑ग्ने॒ त्वां व॑र्धन्ति म॒तिभि॒र्वसि॑ष्ठाः।**

**त्वे वसु॑ सुषण॒नानि॑ सन्तु यू॒यं पा॑त स्व॒स्तिभि॑ः सदा॑ नः॥ ३॥ १५॥**

**त्वम्। वरु॑णः। उ॒त। मि॒त्रः। अ॒ग्ने। त्वाम्। व॒र्धन्ति॒। म॒तिऽभिः॑। वसि॑ष्ठाः। त्वे॒ इति॑। वसु। सु॒ऽस॒न॒नानि॑। स॒न्तु। यू॒यम्। पा॒त। स्व॒स्तिऽभिः॑। सदा॑। नः॥ ३॥**

**पदार्थः**-(**त्वम्**) (**वरुणः**) वरः श्रेष्ठः (**उत**) अपि (**मित्रः**) सुहृत् (**अग्ने**) अग्निरिव स्वप्रकाशेश्वर (**त्वाम्**) (**वर्धन्ति**) वर्धयन्ति (**मतिभिः**) प्रज्ञाभिः (**वसिष्ठाः**) सकलविद्यास्वतिशयेन



www.9009.co.in

वासकर्त्तार: **(त्वे)** त्वयि **(वसु)** द्रव्यम् **(सुषणनानि)** सुष्ठु विभाजितानि **(सन्तु)** **(यूयम्)** **(पात)** **(स्वस्तिभिः)** स्वास्थक्रियाभि: **(सदा)** **(नः)** अस्मान्॥३॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! ये वसिष्ठा मतिभिस्त्वां वर्धन्ति तेषां त्वे प्रीतिमतां वसु सुषणनानि सन्तु। यस्त्वं वरुण उत मित्रोऽसि सोऽस्मान् सदा पातु हे विद्वांसो! यूयं जगदीश्वरवन्नोऽस्मान् स्वस्तिभिस्सदा पात॥३॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कार:। हे मनुष्या! यथा विद्वद्भि: संवर्धितोऽग्निर्दारिद्र्यं विनाशयति तथैवोपासित: परमेश्वरोऽज्ञानं निवर्तयति यथाऽऽप्ता: सर्वान् सदा रक्षन्ति तथैव परमात्मा सकलं विश्वं पातीति॥३॥

अत्राऽग्नीश्वरविद्वद्गुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति द्वादशं सूक्तं पञ्चदशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**–हे **(अग्ने)** अग्नि के तुल्य स्वयं प्रकाशस्वरूप ईश्वर! जो **(वसिष्ठाः)** सब विद्याओं में अतिशय कर निवास करने वाले **(मतिभिः)** बुद्धियों से **(त्वाम्)** तुमको **(वर्धन्ति)** बढ़ाते हैं उन **(त्वे)** आप में प्रीति वालों के **(वसु)** द्रव्य **(सुषणनानि)** सुन्दर विभाग किये **(सन्तु)** हों जो **(त्वम्)** आप **(वरुणः)** श्रेष्ठ **(उत)** और **(मित्रः)** मित्र है सो आप हमारी **(सदा)** सदा रक्षा करो और हे विद्वानो! **(यूयम्)** तुम लोग ईश्वर के तुल्य **(नः)** हमारी **(स्वस्तिभिः)** स्वस्थता सम्पादक क्रियाओं से **(सदा)** सदा **(पात)** रक्षा करो॥३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जैसे विद्वानों से सम्यक् बढ़ाया हुआ अग्नि दरिद्रता का विनाश करता है, वैसे ही उपासना किया परमेश्वर अज्ञान को निवृत्त करता है। जैसे आप्त लोग सब की सदा रक्षा करते हैं, वैसे परमात्मा सब संसार की रक्षा करता है॥३॥

इस सूक्त में अग्नि, ईश्वर और विद्वानों के गुणों का वर्णन होने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ संगति जाननी चाहिये॥

**यह बारहवां सूक्त और पन्द्रहवां वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

**अथ त्र्यर्चस्य त्रयोदशस्य सूक्तस्य वसिष्ठ ऋषिः। वैश्वानरो देवता। १, २ स्वराट्पङ्क्तिः। ३ भुरिक्पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः॥**

***अथ संन्यासिनः कीदृशो भवन्तीत्याह॥***

अब तीन ऋचावाले तेरहवें सूक्त का आरम्भ है। उसके प्रथम मन्त्र में संन्यासी कैसे होते हैं, इस विषय को कहते हैं॥

**प्राग्नये॑ विश्व॒शुचे॑ धियं॒धे॑ऽसुर॒घ्ने मन्म॑ धी॒तिं भ॑रध्वम्।**

**भरे॑ ह॒विर्न ब॒र्हिषि॑ प्रीणा॒नो वै॑श्वान॒राय॒ यत॑ये मती॒नाम्॥ १॥**

**प्र। अ॒ग्नये॑। वि॒श्व॒ऽशुचे॑। धि॒य॒म्ऽधे। अ॒सु॒र॒ऽघ्ने। मन्म॑। धी॒तिम्। भ॒र॒ध्व॒म्। भरे॑। ह॒विः। न। ब॒र्हि॒षि॑। प्री॒णा॒नः। वै॒श्वा॒न॒राय॑। यत॑ये। मती॒नाम्॥ १॥**

**पदार्थः**- (**प्र**) (**अग्नये**) अग्निरिव विद्यादिशुभगुणैः प्रकाशमानाय (**विश्वशुचे**) यो विश्वं सर्वं जगच्छोधयति तस्मै (**धियन्धे**) यो धियं दधाति तस्मै (**असुरघ्ने**) योऽसुरान् दुष्टकर्मकारिणो हन्ति तिरस्करोति तस्मै (**मन्म**) विज्ञानम् (**धीतिम्**) धर्मस्य धारणाम् (**भरध्वम्**) धरध्वं पोषयत वा (**भरे**) सङ्ग्रामे (**हविः**) दातव्यमत्तव्यमन्नादिकम् (**न**) इव (**बर्हिषि**) सभायाम् (**प्रीणानः**) प्रसन्नः (**वैश्वानराय**) विश्वेषां नराणां नायकाय (**यतये**) यतमानाय संन्यासिने (**मतीनाम्**) मनुष्याणां मध्ये॥ १॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! मतीनां मध्ये वैश्वानराय विश्वशुचे धियन्धेऽसुरघ्नेऽग्नये यतये बर्हिषि प्रीणानो राजा भरे हविर्न मन्म धीतिञ्च यूयं प्र भरध्वम्॥ १॥

**भावार्थः**-अत्रोपमावाचकलुप्तोपमालङ्कारौ। हे गृहस्था! येऽग्निवद्विद्यासत्यधर्मप्रकाशका अधर्मखण्डनेन धर्ममण्डनेन सर्वेषां शुद्धिकराः प्रज्ञाः प्रमाप्रदा अविद्वत्ताविनाशका मनुष्याणां विज्ञानं धर्मधारणं च कारयन्तो यतयः संन्यासिनो भवेयुस्तत्सङ्गेन सर्वे यूयं प्रज्ञां धृत्वा निःसंशया भवत यथा राजा युद्धस्य सामग्रीमलङ्करोति तथैव यतिवराः सुखस्य सामग्रीमलंकुर्वन्ति॥ १॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो (**मतीनाम्**) मनुष्यों के बीच (**वैश्वानराय**) सब मनुष्यों के नायक (**विश्वशुचे**) सब को शुद्ध करने वाले (**धियन्धे**) बुद्धि को धारण करनेहारे (**असुरघ्ने**) दुष्ट कर्मकारियों को मारने वा तिरस्कार करने वाले (**अग्नये**) अग्नि के तुल्य विद्यादि शुभ गुणों से प्रकाशमान (**यतये**) यत्न करने वाले संन्यासी के लिये (**बर्हिषि**) सभा में (**प्रीणानः**) प्रसन्न हुआ राजा (**भरे**) संग्राम में (**हविः**) भोगने वा देने योग्य अन्न को जैसे (**न**) वैसे (**मन्म**) विज्ञान (**धीतिम्**) धर्म की धारणा को तुम लोग (**प्र, भरध्वम्**) धारण वा पोषण करो॥ १॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में **[**उपमा**]**वाचकलुप्तोपमालङ्कार हैं। हे गृहस्थो! जो अग्नि के तुल्य विद्या और सत्य धर्म के प्रकाशक, अधर्म के खण्डन और धर्म के मण्डन से सब के शुद्धिकर्त्ता, बुद्धिमान्, निश्चित ज्ञान देने वाले, अविद्वत्ता के विनाशक, मनुष्यों को विज्ञान और धर्म का धारण कराते हुए संन्यासी हों, उनके सङ्ग



www.9009.co.in

से सब तुम लोग बुद्धि को धारण कर निस्सन्देह होओ। जैसे राजा युद्ध की सामग्री को शोभित करता है, वैसे उत्तम संन्यासी जन सुख की सामग्री को शोभित करते हैं॥१॥

**पुनस्ते सन्यासिनः किंवत् किं कुर्वन्तीत्याह॥**

फिर वे सन्यासी किसके तुल्य क्या करते हैं, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**त्वमग्ने शोचिषा शोशुचान आ रोदसी अपृणा जायमानः।**

**त्वं देवाँ अभिशस्तेरमुञ्चो वैश्वानर जातवेदो महित्वा॥२॥**

**त्वम्। अग्ने। शोचिषा। शोशुचानः। आ। रोदसी इति। अपृणाः। जायमानः। त्वम्। देवान्। अभिऽशस्तेः। अमुञ्चः। वैश्वानर। जातऽवेदः। महिऽत्वा॥२॥**

**पदार्थः**-(**त्वम्**) (**अग्ने**) अग्निरिव वर्त्तमान सन्यासिन् (**शोचिषा**) प्रकाशेन (**शोशुचानः**) शोधयन् (**आ**) (**रोदसी**) द्यावापृथिव्यौ (**अपृणाः**) पूरय (**जायमानः**) उत्पद्यमानः (**त्वम्**) (**देवान्**) विदुषः (**अभिशस्तेः**) आभिमुख्येन स्वप्रशंसां कुर्वतो दम्भिनः (**अमुञ्च**) मोचय (**वैश्वानर**) विश्वेषु नरेषु राजमान (**जातवेदः**) जातविद्य (**महित्वा**) महिम्ना॥२॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! त्वं यथाग्निः शोशुचानो जायमान शोचिषा रोदसी आपृणाति तथाऽस्माँस्त्वमापृणाः। हे वैश्वानर जातवेदस्त्वं महित्वाऽस्मान् देवानभिशस्तेरमुञ्चः॥२॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यथाग्निः स्वयं शुद्धः सर्वांच्छोधयति तथैव सन्यासिनः स्वयं पवित्राचरणाः सन्तः सर्वान् पवित्रयन्ति॥२॥

**पदार्थः**-हे (**अग्ने**) अग्नि के तुल्य वर्त्तमान तेजस्विन् सन्यासिन्! आप जैसे अग्नि (**शोशुचानः**) शुद्ध करता और (**जायमानः**) उत्पन्न होता हुआ (**शोचिषा**) प्रकाश से (**रोदसी**) सूर्य भूमि को अच्छे प्रकार पूरित करता, वैसे हम लोगों को (**त्वम्**) आप (**आ, अपृणाः**) अच्छे प्रकार पूर्ण कीजिये हे (**वैश्वानर**) सब मनुष्यों के नायक (**जातवेदः**) विद्या को प्राप्त विद्वन्! (**त्वम्**) आप (**महित्वा**) अपनी महिमा से (**देवान्**) हम विद्वानों को (**अभिशस्तेः**) सम्मुख प्रशंसा करने वाले दम्भी से (**अमुञ्चः**) छुड़ाइये॥२॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जैसे अग्नि आप शुद्ध हुआ सब को शुद्ध करता है, वैसे संन्यासी लोग स्वयं पवित्र हुए सब को पवित्र करते हैं॥२॥

**पुनस्ते यतयः कीदृशा भवेयुरित्याह॥**

फिर वे संन्यासी कैसे हों, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**जातो यदग्ने भुवना व्यख्यः पशून्न गोपा इर्यः परिज्मा।**

**वैश्वानर ब्रह्मणे विन्द गातुं यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥३॥१६॥**



www.9009.co.in

**जा॒तः। यत्। अ॒ग्ने॒। भुव॑ना। वि। अख्यः॑। प॒शून्। न। गो॒पाः। इर्यः॑। परि॑ऽज्मा। वैश्वा॑नर। ब्रह्म॑णे। वि॒न्द॒। गा॒तुम्। यू॒यम्। पा॒त। स्व॒स्तिऽभिः॑। सदा॑। नः॒॥३॥**

**पदार्थः**-(**जातः**) उत्पन्नः (**यत्**) यः (**अग्ने**) अग्निरिव विद्वन् (**भुवना**) लोकलोकान्तरान् (**वि**) विशेषेण (**अख्यः**) प्रकाशयति (**पशून्**) गवादीन् (**न**) इव (**गोपाः**) गोपालाः पशुरक्षकाः (**इर्यः**) सत्यमार्गे प्रेरकः (**परिज्मा**) परितः सर्वतोऽजति गच्छति (**वैश्वानर**) विश्वेषु नरेषु प्रकाशक (**ब्रह्मणे**) परमेश्वराय वेदाय वाऽथवा चतुर्वेदविदे (**विन्द**) प्राप्नुहि (**गातुम्**) प्रशंसितां भूमिम् (**यूयम्**) (**पात**) (**स्वस्तिभिः**) स्वास्थ्यकारिणीभिः क्रियाभिः (**सदा**) सर्वदा (**नः**) अस्मान्॥३॥

**अन्वयः**-हे वैश्वानराग्ने! यते यथा जातोऽग्निर्भुवना व्यख्यस्तथा यद्यस्त्वं विद्यासु प्रसिद्धजनानामात्मनः प्रकाशय पशून् गोपा नेर्यः परिज्मा भव स त्वं ब्रह्मणे गातुं विन्द यूयं संन्यासिनः सर्वे स्वस्तिभिः सत्योपदेशनैर्नः सदा पात॥३॥

**भावार्थः**-अत्रोपमावाचकलुप्तोपमालङ्कारौ। ये सूर्यवत्प्रख्यातपरोपकार विद्योपदेशा वत्सान् गाव इव विद्यादानेन सर्वेषां रक्षकाः सर्वदा भ्रमन्तो वेदेश्वरविज्ञानाय राज्यरक्षणाय नृप इव न्यायशीला भूत्वा सर्वानज्ञान् बोधयन्ति ते सदैव सर्वैः सत्कर्त्तव्या भवन्तीति॥३॥

अत्राग्निदृष्टान्तेन संन्यासिगुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति त्रयोदशं सूक्तं षोडशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे (**वैश्वानर**) सब मनुष्यों में प्रकाश करने वाले (**अग्ने**) अग्नि के तुल्य तेजस्वि विद्वन् संन्यासिन्! जैसे (**जातः**) उत्पन्न हुआ अग्नि (**भुवना**) लोक-लोकान्तरों को (**वि, अख्यः**) विशेष कर प्रकाशित करता है, वैसे (**यत्**) जो आप विद्याओं में प्रसिद्ध मनुष्यों के आत्माओं को प्रकाशित कीजिये तथा (**पशून्**) गौ आदि को (**गोपाः**) पशुरक्षकों के (**न**) तुल्य (**इर्यः**) सत्य मार्ग में प्रेरक और (**परिज्मा**) सब ओर से प्राप्त होने वाले हूजिये वह आप (**ब्रह्मणे**) परमेश्वर, वेद वा चार वेदों के ज्ञाता के लिये (**गातुम्**) प्रशस्त भूमि को (**विन्द**) प्राप्त हूजिये (**यूयम्**) तुम संन्यासी लोग सब (**स्वस्तिभिः**) स्वस्थता के हेतु क्रियाओं और सत्य उपदेशों से (**नः**) हमारी (**सदा**) (**पात**) रक्षा करो॥३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में **[**उपमा**]**वाचकलुप्तोपमालङ्कार हैं। जो सूर्य के तुल्य, परोपकार, विद्या और उपदेश जिनके प्रसिद्ध हैं, वे जैसे गौएँ बछड़ों की रक्षा करती, वैसे विद्यादान से सब की रक्षा करने वाले सर्वदा घूमते हुए वेद, ईश्वर को जानने के लिये राज्यरक्षणार्थ राजा के तुल्य न्यायशील होकर सब सुखों को बोध कराते वे सदा सब को सत्कार करने योग्य होते हैं॥३॥

इस सूक्त में अग्नि के दृष्टान्त से संन्यासियों के गुणों का वर्णन होने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ संगति जाननी चाहिये।

**यह तेरहवां सूक्त और सोलहवां वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

**अथ त्र्यर्चस्य चतुर्दशस्य सूक्तस्य वसिष्ठ ऋषिः। अग्निर्देवता। १ निचृद्बृहती छन्दः। मध्यमः स्वरः। २ निचृत्त्रिष्टुप्। ३ विराट् त्रिष्टुप्छन्दः। धैवतः स्वरः॥**

***अथ यतिः किंवत्सेवनीय इत्याह॥***

अब तीन ऋचा वाले चौदहवें सूक्त का आरम्भ है। उसके प्रथम मन्त्र में संन्यासी की सेवा कैसे करनी चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**स॒मिधा॑ जा॒तवे॑दसे दे॒वाय॑ दे॒वहू॑तिभिः।**

**ह॒विर्भिः॑ शु॒क्रशो॑चिषे नम॒स्विनो॑ व॒यं दा॑शेमा॒ग्नये॑॥१॥**

**स॒म्ऽइधा॑। जा॒तऽवे॑दसे। दे॒वाय॑। दे॒वहू॑तिऽभिः। ह॒विःऽभिः॑। शु॒क्रऽशोचिषे। न॒म॒स्विनः॑। व॒यम्। दा॒शे॒म॒। अ॒ग्नये॑॥१॥**

**पदार्थः**- **(समिधा)** प्रदीपनसाधनेन **(जातवेदसे)** जातेषु विद्यमानाय **(देवाय)** विदुषे **(देवहूतिभिः)** देवैः प्रशंसिताभिर्वाग्भिः **(हविर्भिः)** होमसाधनैः **(शुक्रशोचिषे)** शुक्रेण वीर्येण शोचिर्दीप्तिर्यस्य तस्मै **(मनस्विनः)** नमोऽन्नं सत्कारो वा विद्यते येषां ते **(वयम्)** **(दाशेम)** **(अग्नये)** पावकाय॥१॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथर्त्विग्यजमानाः समिधा हविर्भिरग्नये प्रयतन्ते तथा नमस्विनो वयं जातवेदसे शुक्रशोचिषे देवाय यतयेऽन्नादिकं दाशेम॥१॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यथा दीक्षिता अग्निहोत्रादौ यज्ञे घृताहुतिभिर्हुतेनाग्निना जगद्धितं कुर्वन्ति तथैव वयमतिथीनां संन्यासिनां सेवनेन मनुष्यकल्याणं कुर्याम॥१॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे ऋत्विज् पुरुष और यजमान लोग **(समिधा)** दीप्ति के हेतु काष्ठ और **(हविर्भिः)** होम के साधनों और **(देवहूतिभिः)** विद्वानों ने प्रशंसित की हुई वाणियों के साथ **(अग्नये)** अग्नि के लिये प्रयत्न करते हैं, वैसे **(नमस्विनः)** अन्न और सत्कार वाले **(वयम्)** हम लोग **(जातवेदसे)** उत्पन्न पदार्थों में विद्यमान **(शुक्रशोचिषे)** वीर्य्य और पराक्रम से दीप्तिमान् तेजस्वी **(देवाय)** विद्वान् संन्यासी के लिये अन्नादि पदार्थ **(दाशेम)** देवें॥१॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे दीक्षित लोग अग्निहोत्रादि यज्ञ में घृत की आहुतियों से होम किये अग्नि से जगत् का हित करते हैं, वैसे ही हम अनियत तिथि वाले संन्यासियों की सेवा से मनुष्यों का कल्याण करें॥१॥

**पुनस्ते यतयः किं कुर्युरित्याह॥**

फिर वे संन्यासी क्या करें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**व॒यं ते॑ अग्ने स॒मिधा॑ विधेम व॒यं दा॑शेम सुष्टु॒ती य॑जत्र।**

**व॒यं घृ॒तेना॑ध्वरस्य होतर्व॒यं दे॑व ह॒विषा॑ भद्रशोचे॥२॥**



www.9009.co.in

**वयम्। ते। अग्ने। सम्ऽइधा॑। विधेम। वयम्। दाशेम। सुऽस्तुती। यजत्र। वयम्। घृतेन॑। अध्वरस्य। होतः। वयम्। देव। हविषा॑। भद्रऽशोचे॥२॥**

**पदार्थः**-(**वयम्**) (**ते**) तुभ्यमतिथये (**अग्ने**) वह्निरिव विद्वन् (**समिधा**) इन्धनेन (**विधेम**) कुर्याम (**वयम्**) (**दाशेम**) (**दद्याम**) (**सुष्टुती**) श्रेष्ठया प्रशंसया (**यजत्र**) सङ्गन्तव्यं (**वयम्**) (**घृतेन**) आज्येन (**अध्वरस्य**) यज्ञस्य मध्ये (**होतः**) हवनकर्त्तः (**वयम्**) (**देव**) दिव्यगुण (**हविषा**) होतव्येन द्रव्येण (**भद्रशोचे**) कल्याणदीपक॥२॥

**अन्वयः**-हे यजत्र होतर्भद्रशोचे देवाग्ने! यथा वयं समिधाग्नौ होमं विधेम तथा सुष्टुती ते तुभ्यमन्नादिकं वयं दाशेम। यथर्त्विग्यजमाना अध्वरस्य मध्ये घृतेन हविषा जगद्धितं कुर्वन्ति तथा वयं तव हितं कुर्याम यथा वयं त्वां सेवेमहि तथा त्वमस्मान् सत्यमुपदिश॥२॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यथा गृहस्थाः प्रीत्या यतीनां सेवां कुर्य्युस्तथैव प्रेम्णा यतय एषां कल्याणाय सत्यमुपदिशेयुः॥२॥

**पदार्थः**-हे (**यजत्र**) सङ्ग करने योग्य (**होतः**) होम करने वाले (**भद्रशोचे**) कल्याण के प्रकाशक (**देव**) दिव्य गुणयुक्त (**अग्ने**) अग्नि के तुल्य तेजस्विन्! जैसे (**वयम्**) हम लोग (**समिधा**) ईंधन से अग्नि में होम (**विधेम**) करें, वैसे (**सुष्टुती**) श्रेष्ठ प्रशंसा से (**ते**) तुम अतिथि के लिये (**वयम्**) हम अन्नादिक (**दाशेम**) देवें जैसे ऋत्विज् और यजमान लोग (**अध्वरस्य**) यज्ञ के बीच (**घृतेन**) घी तथा (**हविषा**) होमने योग्य द्रव्य से जगत् का हित करते हैं, वैसे (**वयम्**) हम लोग आप का हित करें। जैसे (**वयम्**) हम आप की सेवा करें, वैसे आप हमको सत्य उपदेश करें॥२॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे गृहस्थ लोग प्रीति से संन्यासियों की सेवा करें, वैसे ही प्रीति से संन्यासी भी इनके कल्याण के अर्थ सत्य का उपदेश करें॥२॥

**पुनर्गृहस्थयतयः परस्परस्मिन् कथं वर्तेरन्नित्याह॥**

फिर गृहस्थ और यति लोग परस्पर कैसे वर्तें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**आ नो॑ देवेभि॒रुप॑ देवहू॑तिमग्ने॑ याहि वष॑ट्कृतिं जुषाणः।**

**तुभ्यं॑ देवाय दाश॑तः स्याम यूयं पा॑त स्वस्तिभिः सदा॑ नः॥३॥१७॥**

**आ। नः। देवेभिः॑। उप॑। देवऽहू॑तिम्। अग्ने॑। याहि। वषट्ऽकृतिम्। जुषाणः। तुभ्य॑म्। देवाय॑। दाश॑तः। स्याम। यूयम्। पात। स्वस्तिऽभिः॑। सदा॑। नः॥३॥**

**पदार्थः**-(**आ**) समन्तात् (**नः**) अस्मानस्माकं वा (**देवेभिः**) विद्वद्भिस्सह (**उप**) समीपे (**देवहूतिम्**) देवैराहूताम् (**अग्ने**) पावक इव दोषदाहक (**याहि**) प्राप्नुहि (**वषट्कृतिम्**) सत्यक्रियाम् (**जुषाणः**) सेवमानः (**तुभ्यम्**) (**देवाय**) विदुषे (**दाशतः**) सेवमानाः (**स्याम**) भवेम (**यूयम्**) यतयः (**पात**) (**स्वस्तिभिः**) सुखक्रियाभिः (**सदा**) (**नः**) अस्मान्॥३॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे अग्ने! त्वं देवेभिः सह नो देवहूतिं वषट्कृतिं जुषाणोऽस्मानुपा याहि वयं देवाय तुभ्यं दाशतः स्याम यूयं स्वस्तिभिर्नः सदा पात॥३॥

**भावार्थः**-गृहस्थैस्सदैव पूर्णविद्यानां यतीनां निमन्त्रणैरभ्यर्थना कार्य्या यतस्ते समीपमागताः सन्तस्तेषां रक्षां सत्योपदेशं च सततं कुर्य्युरिति॥३॥

अत्राग्निदृष्टान्तेन यतिगृहस्थयोः कृत्यवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति चतुर्दशं सूक्तं सप्तदशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे **(अग्ने)** अग्नि के तुल्य दोषों के जलाने वाले! आप **(देवेभिः)** विद्वानों के साथ **(नः)** हमारे **(देवहूतिम्)** विद्वानों से स्वीकार की हुई **(वषट्कृतिम्)** सत्य क्रिया को **(जुषाणः)** सेवन करते हुए हमको **(उप, आ, याहि)** समीप प्राप्त हूजिये हम लोग **(तुभ्यम्)** तुम **(देवाय)** विद्वान् के लिये **(दाशतः)** सेवन करने वाले **(स्याम)** होवें **(यूयम्)** तुम **(स्वस्तिभिः)** सुख क्रियाओं से **(नः)** हमारी **(सदा)** सदा **(पात)** रक्षा करो॥३॥

**भावार्थः**-गृहस्थों को चाहिये कि सदैव पूर्ण विद्या वाले संन्यासियों का निमन्त्रण द्वारा प्रार्थना वा सत्कार करें जिससे वे समीप आये हुए उनकी रक्षा और निरन्तर उपदेश करें॥३॥

इस सूक्त में अग्नि दृष्टान्त से यति और गृहस्थ के कृत्य का वर्णन होने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ संगति जाननी चाहिये।

**यह चौदहवां सूक्त और सत्रहवां वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

**अथ पञ्चदशर्चस्य पञ्चदशतमस्य सूक्तस्य वसिष्ठ ऋषिः। अग्निर्देवता। १, ३, ७, १०, १२, १४ विराड्गायत्री। २, ४, ५, ६, ९, १३ गायत्री। ८ निचृद्गायत्री छन्दः। षड्जः स्वरः। ११, १५ आर्च्युष्णिक् छन्दः। ऋषभः स्वरः॥**

***अथाऽतिथिः कीदृशो भवतीत्याह॥***

अब पन्द्रहवें सूक्त का आरम्भ है। इसके प्रथम मन्त्र में अतिथि कैसा हो, इस विषय को कहते हैं॥

**उपसद्याय मीळ्हुषे आस्ये जुहुता हविः। यो नो नेदिष्ठमाप्यम्॥ १॥**

**उपऽसद्याय। मीळ्हुषे। आस्ये। जुहुत। हविः। यः। नः। नेदिष्ठम् आप्यम्॥ १॥**

**पदार्थः**-(**उपसद्याय**) समीपे स्थापयितुं योग्याय (**मीहळुषे**) वारिणेव सत्योपदेशैस्सेचकाय (**आस्ये**) मुखे (**जुहुता**) दत्त। अत्र **संहितायामि**ति दीर्घः। (**हविः**) होतुं दातुमर्हमन्नादिकम् (**यः**) (**नः**) अस्माकम् (**नेदिष्ठम्**) अति निकटम् (**आप्यम्**) प्राप्तुं योग्यम्॥ १॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यो नो नेदिष्ठमाप्यं प्राप्नोति तस्मै मीळ्हुष उपसद्यायाऽऽस्ये हविर्जुहुत॥ १॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यो यतिरन्तिकं प्राप्नुयात्तं सर्वे सत्कुरुताऽन्नादिकञ्च भोजयत॥ १॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो (**यः**) जो (**नः**) हमारे (**नेदिष्ठम्**) अति निकट (**आप्यम्**) प्राप्त होने योग्य को प्राप्त होता है उस (**उपसद्याय**) समीप में स्थापन करने योग्य (**मीळ्हुषे**) जल से जैसे, वैसे सत्य उपदेशों से सींचने वाले के लिये (**आस्ये**) मुख में (**हविः**) देने योग्य वस्तु को (**जुहुत**) देओ॥ १॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो यति समीप प्राप्त हो उसका तुम सब लोग सत्कार करो और अन्नादि का भोजन कराओ॥ १॥

**पुनस्तौ यतिगृहस्थौ परस्परं कथं वर्तेयातामित्याह॥**

फिर वे संन्यासी और गृहस्थ परस्पर कैसे वर्त्तें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**यः पञ्च चर्षणीरभि निषसाद दमेदमे। कविर्गृहपतिर्युवा॥ २॥**

**यः। पञ्च। चर्षणीः। अभि। निऽससाद। दमेऽदमे। कविः। गृहऽपतिः। युवा॥ २॥**

**पदार्थः**-(**यः**) (**पञ्च**) (**चर्षणीः**) मनुष्यान् (**अभि**) आभिमुख्ये (**निषसाद**) निषीदेत् (**दमेदमे**) गृहेगृहे (**कविः**) जातप्रज्ञः (**गृहपतिः**) गृहस्य पालकः (**युवा**) पूर्णेन ब्रह्मचर्येण युवावस्थां प्राप्य कृतविवाहः॥ २॥

**अन्वयः**-यः कविरतिथिर्दमेदमे पञ्च चर्षणीरभिनिषसाद तं युवा गृहपतिः सततं सत्कुर्यात्॥ २॥

**भावार्थः**-यतिः सदा सर्वत्र भ्रमणं कुर्याद् गृहस्थश्चैतं सदैव सत्कुर्यादत उपदेशाञ्छृणुयात्॥ २॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-**(यः)** जो **(कविः)** उत्तम ज्ञान को प्राप्त हुआ संन्यासी **(दमेदमे)** घर-घर में **(पञ्च)** पांच **(चर्षणीः)** मनुष्यों वा प्राणों को **(अभि, निषसाद)** स्थिर करे उसका **(युवा)** पूर्ण ब्रह्मचर्य्य के साथ वर्त्तमान **(गृहपतिः)** घर का रक्षक युवा पुरुष निरन्तर सत्कार करे॥२॥

**भावार्थः**-संन्यासी जन सदा सब जगह भ्रमण करे और गृहस्थ इस विरक्त का सत्कार करे और इससे उपदेश सुनें॥२॥

**पुनस्तौ परस्परं किं कुर्यातामित्याह॥**

फिर वे दोनों परस्पर क्या करें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**स नो वेदो अमात्यमग्नी रक्षतु विश्वतः। उतास्मान् पात्वंहसः॥३॥**

**सः। नः। वेदः। अमात्यम्। अग्निः। रक्षतु। विश्वतः। उत। अस्मान्। पातु। अंहसः॥३॥**

**पदार्थः**-**(सः)** यतिः **(नः)** अस्मान् गृहस्थान् **(वेदः)** धनम्। **वेद इति धननाम।** (निघं०२.१०) **(अमात्यम्)** अमात्येषु साधुम् **(अग्निः)** पावक इव **(रक्षतु)** **(विश्वतः)** सर्वतः **(उत)** अस्मान् **(पातु)** **(अंहसः)** दुष्टाचरणादपराधाद्वा॥३॥

**अन्वयः**-सोऽग्निरिव नोऽमात्यं वेदो विश्वतो रक्षतूताप्यस्मानंहसः पातु॥३॥

**भावार्थः**-गृहस्था एवमिच्छेयुर्यतिरस्मानेवमुपदिशेद्यतो वयं धनरक्षकाः सन्तोऽधर्माचरणात् पृथग्वसेम॥३॥

**पदार्थः**-**(सः)** वह संन्यासी **(अग्निः)** के तुल्य **(नः)** हम गृहस्थों की वा **(अमात्यम्)** उत्तम मन्त्री की और **(वेदः)** धन की **(विश्वतः)** सब ओर से **(रक्षतु)** रक्षा करे **(उत)** और **(अस्मान्)** हमारी **(अंहसः)** दुष्टाचरण वा अपराध से **(पातु)** रक्षा करे॥३॥

**भावार्थः**-गृहस्थ लोग ऐसी इच्छा करें कि संन्यासी जन हमको ऐसा उपदेश करे कि जिससे हम लोग धन के रक्षक हुए अधर्म के आचरण से पृथक् रहें॥३॥

**पुनस्तेऽतिथयः कीदृशाः स्युरित्याह॥**

फिर वे संन्यासी लोग कैसे हो, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**नवं नु स्तोममग्नये दिव श्येनाय जीजनम्। वस्वः कुविद्वनाति नः॥४॥**

**नवम्। नु। स्तोमम्। अग्नये। दिवः। श्येनाय। जीजनम्। वस्वः। कुवित्। वनाति। नः॥४॥**

**पदार्थः**-**(नवम्)** नवीनम् **(नु)** क्षिप्रम् **(स्तोमम्)** प्रशंसाम् **(अग्नये)** पावकवत्पवित्राय **(दिवः)** कामनायाः **(श्येनाय)** श्येन इव पाखण्डिहिंसकाय **(जीजनम्)** जनयेयम् **(वस्वः)** धनस्य **(कुवित्)** महत् **(वनाति)** सम्भजेत् **(नः)** अस्माकम्॥४॥

**अन्वयः**-यो नो वस्वः कुविद्वनाति तस्मै श्येनायेवाग्नये दिवो नवं स्तोममहं नु जीजनम्॥४॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। येऽतिथयः श्येनवच्छीघ्रगन्तारः पाखण्डहिंसका द्रव्यविद्योपदेशका यतयः स्युस्तान् गृहस्थाः सत्कुर्युः॥४॥

**पदार्थः**-जो **(नः)** हमारे **(वस्वः)** धन के **(कुवित्)** बड़े भाग को **(वनाति)** सेवन करे उस **(श्येनाय)** श्येन के तुल्य पाखण्डियों के विनाश करने वाले **(अग्नये)** अग्नि के समान पवित्र के लिये **(दिवः)** कामना की **(नवम्)** नवीन **(स्तोमम्)** प्रशंसा को मैं **(नु)** शीघ्र **(जीजनम्)** प्रकट करूं॥४॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो अतिथि लोग श्येन पक्षी के तुल्य शीघ्र चलने वाले, पाखण्ड के नाशक, द्रव्य और विद्या के उपदेशक संन्यासधर्म युक्त हों, उनका गृहस्थ सत्कार करें॥४॥

**कस्य धनं प्रशंसनीयं भवेदित्याह॥**

किसका धन प्रशंसनीय होता है, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

## स्पार्हा यस्य श्रियो दृशे रयिर्वीरवतो यथा। अग्रे यज्ञस्य शोचतः॥५॥१८॥

**स्पार्हाः। यस्य। श्रियः। दृशे। रयिः। वीरऽवतः। यथा। अग्रे। यज्ञस्य। शोचतः॥५॥**

**पदार्थः**-**(स्पार्हाः)** स्पृहणीयाः **(यस्य)** **(श्रियः)** **(दृशे)** द्रष्टुम् **(रयिः)** धनम् **(वीरवतः)** वीरा विद्यन्ते यस्य तस्य **(यथा)** **(अग्रे)** **(यज्ञस्य)** सङ्गन्तव्यस्य व्यवहारस्य **(शोचतः)** पवित्रस्य॥५॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यस्य वीरवतस्स्पार्हाः श्रियो दृशे योग्याः स यथाऽग्रे शोचतो यज्ञस्य साधको रयिरस्ति तथा सत्क्रियासिद्धिकरः स्यात्॥५॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। तस्यैव धनं सफलं येन न्यायेनोपार्जितं धर्म्ये व्यवहारे व्ययितं स्यात्॥५॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो **(यस्य)** जिस **(वीरवतः)** वीरों वाले के **(स्पार्हाः)** चाहना करने योग्य **(श्रियः)** लक्ष्मी शोभाएं **(दृशे)** देखने को योग्य हों वह **(यथा)** जैसे **(अग्रे)** पहिले **(शोचतः)** पवित्र **(यज्ञस्य)** सङ्ग के योग्य व्यवहार का साधक **(रयिः)** धन है, वैसे सत्क्रिया का सिद्ध करने वाला हो॥५॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। उसी का धन सफल है, जिसने न्याय से उपार्जन किया धन धर्मयुक्त व्यवहार में व्यय किया होवे॥५॥

**पुनः सोऽग्निः कीदृशोऽस्तीत्याह॥**

फिर वह अग्नि कैसा है, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

## सेमां वेतु वषट्कृतिमग्निर्जुषत नो गिरः। यजिष्ठो हव्यवाहनः॥६॥

**सः। इमाम्। वेतु। वषट्ऽकृतिम्। अग्निः। जुषत। नः। गिरः। यजिष्ठः। हव्यऽवाहनः॥६॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**सः**) (**इमाम्**) (**वेतु**) प्राप्नोतु (**वषट्कृतिम्**) सत्क्रियाम् (**अग्निः**) पावकः (**जुषत**) सेवध्वम् (**नः**) अस्माकम् (**गिरः**) वाचः (**यजिष्ठः**) अतिशयेन यष्टा (**हव्यवाहनः**) यो हव्यानि दातुमर्हाणि वहति प्राप्नोति सः॥६॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! स यजिष्ठो हव्यवाहनोऽग्निर्न इमां वषट्कृतिं गिरश्च वेतु तं यूयं जुषत॥६॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! योऽग्निः सम्प्रयोजितः सन्नस्माकं क्रियाः सेवते स युष्माभिस्सेवनीयः॥६॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! (**सः**) वह (**यजिष्ठः**) अत्यन्त यज्ञकर्त्ता (**हव्यवाहनः**) देने योग्य पदार्थों को प्राप्त होने वाला (**अग्निः**) पावक अग्नि (**नः**) हमारी (**इमाम्**) इस (**वषट्कृतिम्**) शुद्ध क्रिया को और (**गिरः**) वाणियों को (**वेतु**) प्राप्त हो उसको तुम लोग (**जुषत**) सेवन करो॥६॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो अग्नि सम्यक् प्रयुक्त किया हुआ हमारी क्रियाओं का सेवन करता वह तुम लोगों को सेवने योग्य है॥६॥

**पुनः स राजा प्रजाजनाश्च परस्परं कथं वर्त्तेरन्नित्याह॥**

फिर राजा और प्रजाजन परस्पर कैसे वर्त्तें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**नि त्वा॑ नक्ष्य विश्पते द्युमन्तं॑ देव धीमहि। सुवीर॑मग्न आहुत॥७॥**

**नि। त्वा॒। न॒क्ष्य॒। वि॒श्प॒ते॒। द्यु॒ऽमन्त॑म्। दे॒व॒। धी॒म॒हि॒। सु॒ऽवीर॑म्। अ॒ग्ने॒। आ॒ऽहु॒त॒॥७॥**

**पदार्थः**-(**नि**) नितराम् (**त्वा**) त्वाम् (**नक्ष्य**) नक्ष्येषु व्याप्तेषु साधो (**विश्पते**) प्रजापालक (**द्युमन्तम्**) दीप्तिमन्तम् (**देव**) विद्वन् (**धीमहि**) दधीमहि (**सुवीरम्**) शोभना वीरा यस्मात्तम् (**अग्ने**) पावक इव विद्वन् (**आहुत**) बहुभिः सत्कृत॥७॥

**अन्वयः**-हे नक्ष्याहुत विश्पते देवाऽग्ने! यं द्युमन्तं सुवीरमग्निं त्वा यथा निधीमहि तथा त्वमस्मानानन्दे नि धेहि॥७॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यथा वयं भवन्तं न्यायेन राज्यपालनाख्ये व्यवहारे सदा प्रतिष्ठापयेम तथा त्वमस्मान् सदा धर्म्ये व्यवहारे प्रतिष्ठापय॥७॥

**पदार्थः**-हे (**नक्ष्य**) व्याप्त वस्तुओं को उत्तम प्रकार जानने वाले (**आहुत**) बहुतों से सत्कार को प्राप्त (**विश्पते**) प्रजारक्षक (**अग्ने**) अग्नि के तुल्य तेजस्वि (**देव**) विद्वन्! जिस (**द्युमन्तम्**) प्रकाश वाले (**सुवीरम्**) उत्तम वीर हों जिससे उस अग्नि के तुल्य शुद्ध (**त्वा**) आपको जैसे (**नि, धीमहि**) निरन्तर ध्यान करें, वैसे आप हमको निरन्तर आनन्द में स्थिर कीजिये॥७॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे हम लोग आपको न्याय से राज्य पालनरूप व्यवहार में सदा स्थित करें, वैसे आप हमको धर्मयुक्त व्यवहार में प्रतिष्ठित कीजिये॥७॥

**पुना राजप्रजाजनाः कथं वर्त्तेरन्नित्याह॥**



www.9009.co.in

फिर राजा और प्रजाजन परस्पर कैसे वर्त्तें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**क्षप॑ उ॒स्रश्च॑ दीदिहि स्व॒ग्नय॒स्त्वया॑ व॒यम्। सु॒वीर॒स्त्वम॑स्म॒युः॥८॥**

**क्षप॑ः। उ॒स्रः। च॒। दी॒दि॒हि॒। सु॒ऽअ॒ग्नय॑ः। त्वया॑। व॒यम्। सु॒वीर॑ः। त्वम्। अ॒स्म॒ऽयुः॥८॥**

**पदार्थः**-(**क्षपः**) रात्रीः (**उस्रः**) किरणयुक्तानि दिनानि। **उस्रा इति रश्मिनाम।** (निघं०१.५) (**च**) (**दीदिहि**) प्रकाशय (**स्वग्नयः**) शोभना अग्नयो येषान्ते (**त्वया**) रक्षकेण राज्ञा (**वयम्**) (**सुवीरः**) शोभना वीरा यस्य सः (**त्वम्**) (**अस्मयुः**) अस्मान् कामयमानः॥८॥

**अन्वयः**-हे राजन्नस्मयुः सुवीरस्त्वं क्षप उस्रश्चास्मान् दीदिहि त्वया सह स्वग्नयो वयं त्वामहर्निशं प्रकाशेम॥८॥

**भावार्थः**-हे राजराजजना! यथाऽहर्निशं सूर्यः प्रकाशते तथा यूयं प्रकाशिता भवत॥८॥

**पदार्थः**-हे राजन्! (**अस्मयुः**) हमको चाहने वाले (**सुवीरः**) सुन्दर वीर पुरुषों से युक्त (**त्वम्**) आप (**क्षपः**) रात्रियों (**च**) और (**उस्रः**) किरणयुक्त दिनों में (**अस्मान्**) हम को (**दीदिहि**) प्रकाशित कीजिये (**त्वया**) आप के साथ (**स्वग्नयः**) सुन्दर अग्नियों वाले (**वयम्**) हम लोग प्रतिदिन प्रकाशित हों॥८॥

**भावार्थः**-हे राजा और राजपुरुषो! जैसे प्रतिदिन सूर्य प्रकाशित होता है, वैसे तुम लोग सदा प्रकाशित होओ॥८॥

**पुनर्विद्वांसः किं कुर्वन्तीत्याह॥**

फिर विद्वान् क्या करते हैं, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**उप॑ त्वा सा॒तये॒ नरो॒ विप्रा॑सो यन्ति धी॒तिभि॑ः। उपाक्ष॑रा सह॒स्रिणी॑॥९॥**

**उप॑। त्वा॒। सा॒तये॑। नर॑ः। विप्रा॑सः। य॒न्ति॒। धी॒तिऽभि॑ः। उप॑। अक्ष॑रा। स॒ह॒स्रिणी॑॥९॥**

**पदार्थः**-(**उप**) (**त्वा**) त्वाम् (**सातये**) संविभागाय (**नरः**) मनुष्याः (**विप्रासः**) मेधाविनः (**यन्ति**) प्राप्नुवन्ति (**धीतिभिः**) अङ्गुलिभिः (**उप**) (**अक्षरा**) अक्षराण्यकारादीनि (**सहस्रिणी**) सहस्राण्यसंख्याता विद्याविषया विद्यन्ते यस्यां सा॥९॥

**अन्वयः**-हे विद्यार्थिनि! यथा विप्रासो नरो धीतिभिरक्षराण्युप यन्ति ते या सहस्रिणी वर्त्तते ताञ्ज्ञानन्तु तथा त्वा सातये विप्रासो नर उप यन्ति॥९॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यथाऽङ्गुष्ठाऽङ्गुलीभिरक्षराणि विज्ञाय विद्वान् भवति तथैव विद्वांस शोधनेन विद्यारहस्यानि प्राप्नुवन्ति॥९॥

**पदार्थः**-हे विद्यार्थिनि! जैसे (**विप्रासः**) बुद्धिमान् (**नरः**) मनुष्य (**धीतिभिः**) अंगुलियों से (**अक्षरा**) अकारादि अक्षरों को (**उप, यन्ति**) उपाय से प्राप्त करते वे जो कन्या (**सहस्रिणी**) असंख्य



www.9009.co.in

विद्याविषयों को जानने वाली हैं उसको जानें, वैसे **(त्वा)** आप के **(सातये)** सम्यक् विभाग के लिये बुद्धिमान् मनुष्य **(उप)** समीप प्राप्त हों॥९॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे अंगूठा और अंगुलियों से अक्षरों को जान कर विद्वान् होता है, वैसे ही विद्वान् लोग शोधन कर विद्या के रहस्यों को प्राप्त हों॥९॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

## अ॒ग्नी रक्षां॑सि सेधति शु॒क्रशो॑चि॒रम॑र्त्यः। शुचि॑ः पाव॒क ईड्य॑ः॥१०॥१९॥

**अ॒ग्निः। रक्षां॑सि। से॒ध॒ति॒। शु॒क्रऽशो॑चिः। अम॑र्त्यः। शुचि॑ः। पा॒व॒कः। ईड्य॑ः॥१०॥**

**पदार्थः**-**(अग्निः)** अग्निरिव राजा सेनेशो वा **(रक्षांसि)** रक्षयितव्यानि **(सेधति)** साधयति **(शुक्रशोचिः)** शुद्धतेजस्कः **(अमर्त्यः)** मर्त्यधर्मरहितः **(शुचिः)** पवित्रः **(पावकः)** शोधकः पवित्रकर्त्ता **(ईड्यः)** स्तोतुमन्वेष्टुं वा योग्यः॥१०॥

**अन्वयः**-यः शुक्रशोचिरमर्त्यः शुचिः पावक ईड्योऽग्निरिव रक्षांसि सेधति स कीर्त्तिमान् भवति॥१०॥

**भावार्थः**-यथा राजाऽन्यायं निवार्य्य न्यायं प्रकाशयति तथैव विद्युद्दारिद्र्यं विनाशय लक्ष्मीं जनयति॥१०॥

**पदार्थः**-जो **(शुक्रशोचिः)** शुद्ध तेजस्वी **(अमर्त्यः)** साधारण मनुष्यपन से रहित **(शुचिः)** पवित्र **(पावकः)** शुद्ध पवित्र करने वाला **(ईड्यः)** स्तुति करने वा खोजने चाहने योग्य **(अग्निः)** अग्नि के तुल्य राजा वा सेनाधीश **(रक्षांसि)** रक्षा करने योग्य कार्यों को **(सेधति)** सिद्ध करे वह कीर्ति वाला होता है॥१०॥

**भावार्थः**-जैसे राजा अन्याय का निवारण कर न्याय का प्रकाश करता है, वैसे विद्युत् दरिद्रता का विनाश कर लक्ष्मी को प्रकट करता है॥१०॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

## स नो॒ राधा॒ंस्या भ॒रेशा॑नः सहसो यहो। भग॑श्च दातु वार्य॑म्॥११॥

**सः। नः॒। राधां॑सि। आ। भ॒र॒। ईशा॑नः। स॒ह॒स॒ः। य॒हो॒ इति॑। भग॑ः। च॒। दा॒तु॒। वार्य॑म्॥११॥**

**पदार्थः**-**(सः)** **(नः)** अस्मभ्यम् **(राधांसि)** समृद्धिकराणि धनानि **(आ)** **(भर)** **(ईशानः)** ईषणशीलः समर्थः **(सहसः)** बलिष्ठस्य **(यहो)** अपत्य **(भगः)** ऐश्वर्यवानैश्वर्यं वा **(च)** **(दातु)** ददातु **(वार्यम्)** वरणीयम्॥११॥

**अन्वयः**-हे सहसो यहो राजन्नग्निरिवेशानो भगो यस्त्वं नो राधांस्याभर। वार्य्यं भगश्च स भवान् दातु॥११॥



www.9009.co.in

**भावार्थः-**अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यथाऽग्निविद्यया धनधान्यैश्वर्यं मनुष्याः प्राप्नुवन्ति तथैवोत्तमराजप्रबन्धेन जना धनाढ्याः सुखिनश्च जायन्ते॥११॥

**पदार्थः**-हे **(सहसः)** अति बलवान् के **(यहो)** पुत्र राजन्! अग्नि के तुल्य तेजस्वी **(ईशानः)** समर्थ **(भगः)** ऐश्वर्यवान् जो आप **(नः)** हमारे लिये **(राधांसि)** सुख बढ़ाने वाले धनों को **(आ, भर)** अच्छे प्रकार धारण वा पोषण करें तथा **(वार्यम्)** स्वीकार करने योग्य ऐश्वर्य को **(च)** भी **(सः)** सो आप **(दातु)** दीजिये॥११॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे अग्निविद्या से धनधान्य सम्बन्धी ऐश्वर्य को मनुष्य प्राप्त होते हैं, वैसे ही उत्तम राज्य प्रबन्ध से मनुष्य धनाढ्य और सुखी होते हैं॥११॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**त्वमग्ने वीरवद्यशो देवश्च सविता भगः। दितिश्च दाति वार्यम्॥१२॥**

**त्वम्। अग्ने। वीरऽवत्। यशः। देवः। च। सविता। भगः। दितिः। च। दाति। वार्यम्॥१२॥**

**पदार्थः**-**(त्वम्)** **(अग्ने)** अग्निरिव राजन् **(वीरवत्)** प्रशस्ता वीरा विद्यन्ते यस्मिंस्तत् **(यशः)** धनं कीर्तिं च **(देवः)** दाता देदीप्यमानः **(च)** **(सविता)** प्रेरकः सूर्यो वा **(भगः)** धनैश्वर्यम् **(दितिः)** दुःखनाशिका नीतिः **(च)** **(दाति)** ददाति **(वार्यम्)** वरणीयम्॥१२॥

**अन्वयः**-हे अग्ने राजन्! यथा देवः सविता दितिश्च वार्यं वीरवद्यशो भगश्च दाति तदेतत्त्वं देहि॥१२॥

**भावार्थः-**अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यो राजा सुसम्प्रयुक्ताऽग्न्यादिवत्प्रजास्वैश्वर्यमुद्योगेन सुनीत्या च कारयित्वा दुःखं खण्डयति स एव यशस्वी भवति॥१२॥

**पदार्थः**-हे **(अग्ने)** अग्नि के तुल्य तेजस्वि राजन्! जैसे **(देवः)** दानशील वा प्रकाशमान **(सविता)** प्रेरणा करने वाला वा सूर्य और **(दितिः)** दुःखनाशक नीति **(च)** भी **(वार्यम्)** स्वीकार के योग्य **(वीरवत्)** जिससे उत्तम वीर पुरुष हों **(यशः)** उस धन वा कीर्ति **(च)** और **(भगः)** ऐश्वर्य को **(दाति)** देती है, इसको **(त्वम्)** आप दीजिये॥१२॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो राजा अच्छे प्रकार सम्प्रयुक्त अग्नि आदि के तुल्य प्रजाओं में उद्योग से और अच्छी नीति से ऐश्वर्य कराके दुःख को खण्डित करता है, वही यशस्वी होता है॥१२॥

**पुनः स राजा किंवत्किं कुर्यादित्याह॥**

फिर वह राजा किसके समान क्या करे, इस विषय को अगले मन्त्र में कहतेहैं॥

**अग्ने रक्षा णो अंहसः प्रति ष्म देव रीषतः। तपिष्ठैरजरो दह॥१३॥**

**अग्ने। रक्ष। नः। अंहसः। प्रति। स्म। देव। रिषतः। तपिष्ठैः। अजरः। दह॥१३॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**अग्ने**) पावक इव (**रक्षा**) अत्र **द्व्यचोऽतस्तिङ** इति दीर्घः। (**नः**) अस्मान् (**अंहसः**) पापाचरणात् (**प्रति**) (**स्म**) एव (**देव**) दिव्यगुणकर्मस्वभावयुक्त (**रीषतः**) हिंसकात् (**तपिष्ठैः**) अतिशयेन प्रतापकैः (**अजरः**) जरारहितः (**दह**) भस्मसात्कुरु॥१३॥

**अन्वयः**-हे देवाऽग्ने राजन्! यथाऽग्निस्तपिष्ठैः काष्ठादिकं दहति तथैवाऽजरः सँस्त्वं रीषतो नो रक्ष। अंहसः स्म प्रति रक्ष दुष्टाचाराँस्तपिष्ठैर्दह॥१३॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यथाग्निः शीतादन्धकाराच्च रक्षति तथा राजादयो विद्वांसो हिंसादिपापाचरणात् सर्वान् पृथग्रक्षन्ति॥१३॥

**पदार्थः**-हे (**देव**) उत्तम गुण-कर्म-स्वभावयुक्त (**अग्ने**) अग्निवत् तेजस्वी राजन्! जैसे अग्नि (**तपिष्ठैः**) अत्यन्त तपाने वाले तेजों से काष्ठादि को जलाता है, वैसे (**अजरः**) वृद्धपन वा शिथिलता रहित हुए आप (**रीषतः**) हिंसक से (**नः**) हमारी (**रक्ष**) रक्षा कीजिये और (**अंहसः**) पापाचरण से (**स्म**) ही (**प्रति**) प्रतीति के साथ रक्षा कीजिये और दुष्टचारियों को तेजों से (**दह**) जलाइये॥१३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे अग्नि शीत और अन्धकार से रक्षा करता है, वैसे राजा आदि विद्वान् हिंसादि पापरूप आचरण से सब को पृथक् रखते हैं॥१३॥

**पुना राजानौ प्रजाः प्रति किं कुर्यातामित्याह॥**

फिर राजा और राणी प्रजा के प्रति क्या करें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अधा मही न आयस्यनाधृष्टो नृपीतये। पूर्भवा शतभुजिः॥१४॥**

**अध। मही। नः। आयसी। अनाधृष्टः। नृऽपीतये। पूः। भव। शतऽभुजिः॥१४॥**

**पदार्थः**-(**अधा**) अध अत्र **निपातस्य चे**ति दीर्घः। (**मही**) महती वागेव राज्ञी (**नः**) अस्मान् स्त्रीजनान् (**आयसी**) अयोमयी दृढा (**अनाधृष्टः**) केनाऽप्याधर्षयितुमयोग्या (**नृपीतये**) नृणां पालनाय (**पूः**) नगरीव रक्षिका (**भवा**) अत्र **द्व्यचोऽतस्तिङ** इति दीर्घः। (**शतभुजिः**) शतमसंख्याता भुजयः पालनानि यस्याः सा॥१४॥

**अन्वयः**-हे राज्ञि! यथा तवाऽनाधृष्टः पती राजा न्यायेन नॄन्पालयति तथाऽधाऽऽयसी पूरिव मही शतभुजिस्त्वं नृपीतये नो रक्षिका भव॥१४॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यत्र शुभगुणकर्मस्वभावो राजा नॄणां तादृशी राज्ञी च स्त्रीणां न्यायपालने कुर्यातां तत्र सर्वदा विद्यानन्दायुरैश्वर्याणि वर्धेरन्॥१४॥

**पदार्थः**-हे राणी! जैसे तुम्हारा (**अनाधृष्टः**) किसी से न धमकाने योग्य पति राजा न्याय से मनुष्यों का पालन करता है, वैसे (**अध**) अब (**आयसी**) लोहे से बनी दृढ़ (**पूः**) नगरी के समान



www.9009.co.in

रक्षक **(मही)** महती वाणी के तुल्य **(शतभुजिः)** असंख्यात जीवों का पालन करने वाली आप **(नृपीतये)** मनुष्यों के पालन के लिये **(नः)** हम स्त्री जनों की रक्षा करने वाली **(भव)** हूजिये॥१४॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जहाँ शुभ गुणकर्मस्वभावयुक्त राजा पुरुषों और वैसे गुणों वाली राणी स्त्रियों का न्याय और पालन करें, वहाँ सब काल में विद्या, आनन्द, अवस्था और ऐश्वर्य बढ़ें॥१४॥

**पुना राजानौ प्रजाः प्रति कथं वर्त्तेयातामित्याह॥**

फिर राणी राजा, प्रजा-जनों के प्रति कैसे वर्त्तें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**त्वं नः पाह्यंहसो दोषावस्तरघायतः। दिवा नक्तमदाभ्य॥१५॥२०॥**

**त्वम्। नः। पाहि। अंहसः। दोषाऽवस्तः। अघऽयतः। दिवा। नक्तम्। अदाभ्य॥१५॥**

**पदार्थः**-**(त्वम्)** **(नः)** अस्मान् **(पाहि)** **(अंहसः)** अपराधात् **(दोषावस्तः)** अहर्निशम् **(अघायतः)** आत्मनोऽघमिच्छतः सङ्गात् **(दिवा)** दिनम् **(नक्तम्)** रात्रिम् **(अदाभ्य)** अहिंसनीय॥१५॥

**अन्वयः**-हे अदाभ्य राजन्! त्वं दोषावस्तरघायतो दिवानक्तमंहसश्च नः पाहि॥१५॥

**भावार्थः**-यथा राजा पुरुषान् सततं रक्षेत्तथा राज्ञी प्रजास्थानारीर्नित्यं पालयेदिति॥१५॥

अत्राऽग्निदृष्टान्तेन राजराज्ञिकृत्यवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति पञ्चदशं सूक्तं विंशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे **(अदाभ्य)** रक्षा करने योग्य राजन्! **(त्वम्)** आप **(दोषावस्तः)** दिन-रात **(अधायतः)** अपने को पाप चाहते हुए दुष्ट के सङ्ग से और **(दिवानक्तम्)** रात्रि दिन सब समय में **(अंहसः)** अपराध से **(नः)** हमको आप **(पाहि)** रक्षित कीजिये, बचाइये॥१५॥

**भावार्थः**-जैसे राजा पुरुषों की निरन्तर रक्षा करे, वैसे राणी प्रजा की स्त्रियों की नित्य रक्षा करे॥१५॥

इस सूक्त में अग्नि के दृष्टान्त से राजा और रानी के कृत्यों का वर्णन करने से इस सूक्त की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ संगति जाननी चाहिये॥

**यह पन्द्रहवां सूक्त और बीसवां वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

**अथ द्वादशर्चस्य षोडशस्य सूक्तस्य वसिष्ठ ऋषिः। अग्निर्देवता। १ स्वराडनुष्टुप्। ५ निचृदनुष्टुप्। ७ अनुष्टुप्। ११ भुरिगनुष्टुष्छन्दः। गान्धारः स्वरः। २ भुरिग्बृहती। ३ निचृद्बृहती। ४, ९, १० बृहतीछन्दः। मध्यमः स्वरः। ६, ८, १२ निचृत्पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः॥**

***अथ राजा प्रजासुखाय किं किं कुर्य्यादित्याह॥***

अब राजा प्रजा के सुख के लिये क्या क्या करे, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**एना वो अग्निं नमसोर्जो नपातमा हुवे।**

**प्रियं चेतिष्ठमरतिं स्वध्वरं विश्वस्य दूतममृतम्॥१॥**

**एना। वः। अग्निम्। नमसा। ऊर्जः। नपातम्। आ। हुवे। प्रियम्। चेतिष्ठम्। अरतिम्। सुऽअध्वरम्। विश्वस्य। दूतम्। अमृतम्॥१॥**

**पदार्थः**-(**एना**) एनेन (**वः**) युष्मान् (**अग्निम्**) (**नमसा**) अन्नेन सत्कारादिना वा (**ऊर्जः**) पराक्रमस्य (**नपातम्**) अविनाशम् (**आ**) (**हुवे**) आदद्मि (**प्रियम्**) कमनीयं प्रीतम् (**चेतिष्ठम्**) अतिशयेन संज्ञापकम् (**अरतिम्**) सुखप्रापकम् (**स्वध्वरम्**) शोभना अध्वरा अहिंसादयो व्यवहारा यस्य तम् (**विश्वस्य**) संसारस्य (**दूतम्**) बहुकार्यसाधकम् (**अमृतम्**) स्वस्वरूपेण नाशरहितम्॥१॥

**अन्वयः**-हे प्रजाजना! यथाऽहं राजा व एना नमसोर्जो नपातं प्रियं चेतिष्ठमरतिं स्वध्वरममृतं विश्वस्य दूतमग्निमिवोपदेशकमाहुवे तथा यूयमप्येतमाह्वयत॥१॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यथा राजा सत्योपदेशकान् प्रचारयेत्तथोपदेष्टारः स्वकृत्यं प्रीत्या यथावत्कुर्य्युः॥१॥

**पदार्थः**-हे प्रजाजनो! जैसे मैं राजा (**एना**) इस (**नमसा**) अन्न वा सत्कारादि से (**ऊर्जः**) पराक्रम के (**नपातम्**) विनाश को प्राप्त न होने वाले (**प्रियम्**) चाहने योग्य (**चेतिष्ठम्**) अतिशय कर सम्यक् ज्ञापक (**अरतिम्**) सुख प्रापक (**स्वध्वरम्**) सुन्दर अहिंसादि व्यवहार वाले (**अमृतम्**) अपने स्वरूप से नाशरहित (**विश्वस्य**) संसार के (**दूतम्**) बहुत कार्य्यों के साधक (**अग्निम्**) अग्नि के तुल्य तेजस्वी उपदेशक को (**आहुवे**) स्वीकार करता, वैसे तुम भी उसको स्वीकार करो॥१॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे राजा सत्योपदेशकों का प्रचार करे, वैसे उपदेशक अपने कर्त्तव्य को प्रीति से यथावत् पूरा करें॥१॥

**पुनः स राजा किं कुर्यादित्याह॥**

फिर वह राजा क्या करे, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**स योजते अरुषा विश्वभोजसा स दुद्रवत् स्वाहुतः।**

**सुब्रह्मा यज्ञः सुशमी वसूनां देवं राधो जनानाम्॥२॥**



www.9009.co.in

**सः। योजते। अरुषा। विश्वऽभोजसा। सः। दुद्रवत्। सुऽआहुतः। सुऽब्रह्मा। यज्ञः। सुऽशमी। वसूनाम्। देवम्। राधः। जनानाम्॥ २॥**

**पदार्थः**-(**सः**) (**योजते**) (**अरुषा**) अश्वाविव जलाऽग्नी (**विश्वभोजसा**) विश्वस्य पालकौ (**सः**) (**दुद्रवत्**) भृशं गच्छेत् (**स्वाहुतः**) सुष्ठुकृताह्वानः (**सुब्रह्मा**) शोभनानि ब्रह्माणि धनाऽन्नानि यस्य यद्वा सुष्ठु चतुर्वेदवित् (**यज्ञः**) पूजनीयः (**सुशमी**) शोभनकर्मा (**वसूनाम्**) धनानाम् (**देवम्**) दिव्यस्वरूपम् (**राधः**) धनम् (**जनानाम्**) मनुष्याणाम्॥ २॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यदि स्वाहुतः स सुब्रह्मा यज्ञः सुशमी वसूनां राधो जनानां देवं विश्वभोजसा अरुषा योजयन् दुद्रवत् सन् योजते स सिद्धेच्छो जायते॥ २॥

**भावार्थः**-यो राजा प्रजापालनाय सदा सुस्थिरस्तं ये दुःखनिवारणायाह्वयेयुस्तान् सद्यः प्राप्य सुखिनः करोत्युत्तमाचरणो विद्वान् सन्प्रजाहितं प्रतिक्षणं चिकीर्षति स एव सर्वैः पूजनीयो भवति॥ २॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो यदि (**सः**) वह (**स्वाहुतः**) सुन्दर प्रकार आह्वान किया हुआ (**सः**) वह (**सुब्रह्मा**) सुन्दर अन्न वा धनों से युक्त वा अच्छे प्रकार चारों वेद का ज्ञाता (**यज्ञः**) सत्कार के योग्य (**सुशमी**) सुन्दर कर्मों वाला (**वसूनाम्**) धनों का (**राधः**) धन (**जनानाम्**) मनुष्यों के बीच (**देवम्**) उत्तम (**विश्वभोजसा**) विश्व के रक्षक (**अरुषा**) घोड़ों के तुल्य जल-अग्नि को युक्त करता और (**दुद्रवत्**) शीघ्र प्राप्त होता हुआ (**योजते**) युक्त करता है, वह इच्छा सिद्धि वाला होता है॥ २॥

**भावार्थः**-जो राजा प्रजापालन के अर्थ सदा सुस्थिर है उसको जो दुःख निवारण के लिये बुलावें उनको शीघ्र प्राप्त होकर सुखी करता है, उत्तम आचरणों वाला विद्वान् होता हुआ प्रतिक्षण प्रजा के हित की इच्छा करता है, वही सब को पूजनीय होता है॥ २॥

**पुनः सोऽग्निः कीदृशोऽस्तोत्याह॥**

फिर वह अग्नि कैसा है, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**उदस्य शोचिरस्थादाजुह्वानस्य मीळ्हुषः।**

**उद्धूमासो अरुषासो दिविस्पृशः समग्निमिन्धते नरः॥ ३॥**

**उत्। अस्य। शोचिः। अस्थात्। आऽजुह्वानस्य। मीळ्हुषः। उत्। धूमासः। अरुषासः। दिविऽस्पृशः। सम्। अग्निम्। इन्धते। नरः॥ ३॥**

**पदार्थः**-(**उत्**) (**अस्य**) अग्नेः (**शोचिः**) दीप्तिः (**अस्थात्**) उत्तिष्ठते (**आजुह्वानस्य**) समन्तात् प्राप्तहुतद्रव्यस्य (**मीळ्हुषः**) सेचकस्य (**उत्**) (**धूमासः**) (**उरुषासः**) ज्वालाः (**दिविस्पृशः**) ये दिवि स्पृशन्ति (**सम्**) (**अग्निम्**) (**इन्धते**) (**नरः**) मनुष्याः॥ ३॥

**अन्वयः**-ये नरो यस्याऽऽजुह्वानस्य मीळ्हुषोऽस्याग्नेः शोचिरुदस्थाद्दिविस्पृशो धूमासोऽरुषास उत्तिष्ठन्ते तमग्निं समन्धिते त उन्नतिं प्राप्नुवन्ति॥ ३॥



www.9009.co.in

**भावार्थः-**हे मनुष्या! यूयमूर्ध्वगामिनं धूमध्वजं तेजोमयं वृष्ट्यादिना प्रजापालकमग्निं सम्प्रयुङ्ध्वं येन युष्माकं कामसिद्धिः स्यात्॥३॥

**पदार्थः**-जो **(नरः)** मनुष्य जिस **(आजुह्वानस्य)** अच्छे प्रकार होम किये द्रव्य को प्राप्त **(मीळ्हुषः)** सेचक **(अस्य)** इस अग्नि का **(शोचिः)** दीप्ति **(उदस्थात्)** उठती है **(दिविस्पृशः)** प्रकाश में स्पर्श करने वाले **(धूमासः)** धूम और **(अरुषासः)** अरुणवर्ण लपटें **(उत्)** उठती हैं उस **(अग्निम्)** अग्नि को **(समिन्धते)** सम्यक् प्रकाशित करते हैं, वे उन्नति को प्राप्त होते हैं॥३॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! तुम लोग ऊर्ध्वगामी धूमध्वजा वाले तेजोमय वृष्टि आदि से प्रजा के रक्षक अग्नि को सम्यक् प्रयुक्त करो, जिस से तुम्हारे कार्यों की सिद्धि होवे॥३॥

**पुना राजादयो मनुष्याः किं कुर्य्युरित्याह॥**

फिर राजादि मनुष्य क्या करें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**तं त्वा दूतं कृण्महे यशस्तमं देवाँ आ वीतये वह।**

**विश्वा सूनो सहसो मर्तभोजना रास्व तद्यत्त्वेमहे॥४॥**

**तम्। त्वा। दूतम्। कृण्महे। यशःऽतमम्। देवान्। आ। वीतये। वह। विश्वा। सूनो इति। सहसः। मर्तऽभोजना। रास्व। तत्। यत्। त्वा। ईमहे॥४॥**

**पदार्थः**-**(तम्)** **(त्वा)** त्वाम् **(दूतम्)** **(कृण्महे)** **(यशस्तमम्)** अतिशयेन कीर्तिकारकम् **(देवान्)** दिव्यगुणान् पदार्थान् वा **(आ)** **(वीतये)** विज्ञानादिप्राप्तये **(वह)** प्राप्नुहि प्रापय वा **(विश्वा)** सर्वाणि **(सूनो)** अपत्य **(सहसः)** बलवतः **(मर्त्तभोजना)** मर्त्तानां मनुष्याणां भोजनानि पालनानि **(रास्व)** देहि **(तत्)** तम् **(यत्)** यम् **(त्वा)** त्वाम् **(ईमहे)** याचामहे॥४॥

**अन्वयः**-हे सहसस्सूनो विद्वन्! यथा वयं यशस्तमं तमग्निं दूतं कृण्महे तथा त्वा मुख्यं कृण्महे त्वं वीतये देवाना वह विश्वा मर्त्तभोजना रास्व यथा यद्यमग्निं कार्यसिद्धये प्रयुञ्ज्महे तथा तत्तं त्वेमहे॥४॥

**भावार्थः-**अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। ये सर्वकार्य्यसाधकं विद्युदग्निं दूतं राजकार्य्यसाधकं विद्याविनयान्वितं पुरुषं राजानं च कुर्वन्ति ते समग्रमैश्वर्यं पालनं च लभन्ते॥४॥

**पदार्थः**-हे **(सहसः)** बलवान् के **(सूनो)** पुत्र विद्वन्! जैसे हम लोग **(यशस्तमम्)** अतिशय कीर्ति करने वाले **(तम्)** उस अग्नि को **(दूतम्)** दूत **(कृण्महे)** करते, वैसे **(त्वा)** आपको मुख्य करते हैं आप **(वीतये)** विज्ञानादि को प्राप्त करने के लिये **(देवान्)** दिव्य गुणों वा पदार्थों को **(आ, वह)** अच्छे प्रकार प्राप्त हूजिये वा कीजिये **(विश्वा)** सब **(मर्त्तभोजना)** मनुष्यों के भोजनों वा पालनों को **(रास्व)** दीजिये जैसे **(यत्)** जिस अग्नि को कार्यसिद्धि के लिये प्रयुक्त करते, वैसे **(तत्)** उसको और **(त्वा)** आपको **(ईमहे)** याचना करते हैं॥४॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो सब कार्यों के साधक विद्युत् अग्नि के दूत और राजकार्यों के साधक विद्या वा विनय से युक्त पुरुष को राजा करते हैं, वे सब ऐश्वर्य और पालन को प्राप्त होते हैं॥४॥

**पुनर्मनुष्यः कीदृशः स्यादित्याह॥**

फिर मनुष्य कैसा हो, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**त्वम॑ग्ने गृ॒हप॑ति॒स्त्वं होता॑ नो अध्व॒रे।**

**त्वं पोता॑ विश्ववार॒ प्रचे॑ता॒ यक्षि॒ वेषि॑ च॒ वार्य॑म्॥५॥**

**त्वम्। अ॒ग्ने॒। गृ॒हऽप॑तिः। त्वम्। होता॑। नः॒। अ॒ध्व॒रे। त्वम्। पोता॑। वि॒श्व॒ऽवा॒र॒। प्रऽचे॑ताः। यक्षि॑। वेषि॑। च॒। वार्य॑म्॥५॥**

**पदार्थः**-(**त्वम्**) (**अग्ने**) वह्निरिव प्रकाशमान (**गृहपतिः**) गृहस्य पालकः (**त्वम्**) (**होता**) दाता (**नः**) अस्माकम् (**अध्वरे**) अहिंसादिलक्षणे धर्माचरणे (**त्वम्**) (**पोता**) पवित्रकर्त्ता (**विश्ववार**) सर्वैर्वरणीय (**प्रचेताः**) प्रकर्षेण प्रज्ञापकः (**यक्षि**) यजसि सङ्गच्छसे (**वेषि**) व्याप्नोषि (**च**) (**वार्यम्**) वरणीयं धर्म्यं व्यवहारम्॥५॥

**अन्वयः**-हे विश्ववाराग्ने यो वह्निरिव गृहपतिस्त्वं नोऽध्वरे होता त्वं प्रचेता वार्य्यं यक्षि वेषि च तं त्वां वयमीमहे॥५॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। पूर्वस्मान् मन्त्रात् (ईमहे) इति पदमनुवर्त्तते। यथाऽग्निर्गृहपालकः सुखदाताऽध्वरे पवित्रकर्त्ता शरीरे चेतयिता सर्वं विश्वं सङ्गच्छते व्याप्नोति च तथैव मनुष्या भवन्तु॥५॥

**पदार्थः**-हे (**विश्ववार**) सब को स्वीकार करने योग्य (**अग्ने**) अग्नि के तुल्य प्रकाशमान (**गृहपतिः**) घर के रक्षक! (**त्वम्**) आप (**नः**) हमारे (**अध्वरे**) अहिंसादि लक्षणयुक्त धर्म के आचरण में (**होता**) दाता (**त्वम्**) (**पोता**) पवित्रकर्त्ता (**त्वम्**) आप (**प्रचेताः**) अच्छे प्रकार जताने वाले आप (**वार्य्यम्**) स्वीकार योग्य धर्मयुक्त व्यवहार को (**यक्षि**) सङ्गत करते (**च**) और (**वेषि**) व्याप्त होते हैं, उन आपकी हम लोग याचना करते हैं॥५॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। पूर्व मन्त्र से यहाँ (ईमहे) पद की अनुवृत्ति आती है। जैसे अग्नि घर का पालक, सुखदाता, यज्ञ में पवित्रकर्त्ता, शरीर में चेतनता कराने वाला, सब विश्व का संग करता और व्याप्त होता है, वैसे ही मनुष्य होवें॥५॥

**पुनः स राजा किं कुर्यादित्याह॥**

फिर वह राजा क्या करे इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**कृ॒धि रत्नं॒ यज॑मानाय सुक्रतो॒ त्वं हि र॑त्न॒धा असि॑।**



www.9009.co.in

**आ नं ऋते शिशीहि विश्वमृत्विजं सुशंसो यश्च दक्षते॥६॥२१॥**

**कृधि। रत्नम्। यजमानाय। सुक्रतो इति सुऽक्रतो। त्वम्। हि। रत्नऽधाः। असि। आ। नः। ऋते। शिशीहि। विश्वम्। ऋत्विजम्। सुऽशंसः। यः। च। दक्षते॥६॥**

**पदार्थः**-(**कृधि**) कुरु (**रत्नम्**) रमणीयं धनम् (**यजमानाय**) परोपकारार्थं यज्ञं कुर्वते (**सुक्रतो**) उत्तमप्रज्ञ धर्म्यकर्मकर्त्तः (**त्वम्**) (**हि**) यतः (**रत्नधाः**) यो रत्नानि धनानि दधाति सः (**असि**) (**आ**) (**नः**) अस्मान् (**ऋते**) सत्यभाषणादिरूपे सङ्गन्तव्ये व्यवहारे (**शिशीहि**) तीव्रोद्योगिनः कुरु (**विश्वम्**) समग्रम् (**ऋत्विजम्**) य ऋतूनर्हति तम् (**सुशंसः**) सुष्ठुप्रशंसः (**यः**) (**च**) (**दक्षते**) वर्धते॥६॥

**अन्वयः**-हे सुक्रतो! यः सुशंसो दक्षते तं विश्वमृत्विजं नोऽस्मांश्चर्ते त्वमा शिशीहि। हि यतस्त्वं रत्नधा असि तस्माद्यजमानाय रत्नं कृधि॥६॥

**भावार्थः**-अस्मिन् संसारे यो धनाढ्यः स्यात्स प्रीत्या निर्धनानुद्योगं कारयित्वा सततं पालयेत्। ये सत्क्रियायां वर्धन्ते तान् धन्यवादेन धनादिदानेन च प्रोत्साहयेत्॥६॥

**पदार्थः**-हे (**सुक्रतो**) उत्तम बुद्धि वा धर्मयुक्त कर्म करने वाले पुरुष! (**यः**) जो (**सुशंसः**) सुन्दर प्रशंसायुक्त जन (**दक्षते**) वृद्धि को प्राप्त होता उस (**विश्वम्**) सब (**ऋत्विजम्**) ऋतुओं के योग्य काम करने वाले को (**च**) और (**नः**) हमको (**ऋते**) सत्यभाषणादि रूप संगत करने योग्य व्यवहार में (**त्वम्**) आप (**आ, शिशीहि**) तीव्र उद्योगी कीजिये (**हि**) जिस कारण आप (**रत्नधाः**) उत्तम धनों के धारणकर्त्ता (**असि**) हैं इस कारण (**यजमानाय**) परोपकरार्थ यज्ञ करते हुए के लिये (**रत्नम्**) रमणीय धन को प्रकट (**कृधि**) कीजिये॥६॥

**भावार्थः**-इस संसार में जो पुरुष धनाढ्य हो वह निर्धनों को उद्योग कराके निरन्तर पालन करे। जो सत् श्रेष्ठ कर्मों में बढ़ते उन्नत होते हैं उन को धन्यवाद और धनादि पदार्थों के दान से उत्साहयुक्त करे॥६॥

**पुनः स राजा कान् सत्कुर्यादित्याह॥**

फिर वह राजा किन का सत्कार करे, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**त्वे अंग्ने स्वाहुत प्रियासः सन्तु सूरयः।**

**यन्तारो ये मघवानो जनानामूर्वान् दयन्त गोनाम्॥७॥**

**त्वे इति। अग्ने। सुऽआहुत। प्रियासः। सन्तु। सूरयः। यन्तारः। ये। मघऽवानः। जनानाम्। ऊर्वान्। दयन्त। गोनाम्॥७॥**

**पदार्थः**-(**त्वे**) त्वयि (**अग्ने**) विद्याविनयप्रकाशक (**स्वाहुत**) सुष्ठु सत्कृत (**प्रियासः**) प्रीतिमन्तः (**सन्तु**) (**सूरयः**) धार्मिका विद्वांसः (**यन्तारः**) ये यान्ति प्राप्नुवन्ति ते (**ये**) (**मघवानः**) बहुधनयुक्ताः (**जनानाम्**) मनुष्याणां मध्ये (**ऊर्वान्**) आच्छादकान् पावकान् (**दयन्त**) दयन्ते (**गोनाम्**) गवादिपशूनाम्॥७॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे स्वाहुताग्ने अग्निवद्वर्त्तमान् राजन्! ये जनानां मध्ये गोनामूर्वान् दयन्त यन्तारो मघवानः सूरयस्त्वे प्रियासः सन्तु ताँस्त्वं नित्यं सत्कुर्याः॥७॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यथा राजा सर्वेषु दयां विधाय विदुषः सत्कृत्य धनाढ्यान् स्वराज्ये वासयेत्तथा प्रजाजना राजहितैषिणः स्युः॥७॥

**पदार्थः**-हे **(स्वाहुत)** सुन्दर प्रकार सत्कार को प्राप्त **(अग्ने)** विद्या विनय के प्रकाशक अग्नि के तुल्य तेजस्वि राजन्! **(ये)** जो **(जनानाम्)** मनुष्यों के बीच **(गोनाम्)** गौ आदि पशुओं के **(ऊर्वान्)** रक्षकों को **(दयन्त)** दया करते वा सुरक्षित रखते और **(यन्तारः)** शुभ कर्मों को प्राप्त होने वाले **(मघवानः)** बहुत प्रकार के धनों से युक्त **(सूरयः)** धर्मात्मा विद्वान् **(त्वे)** आप में **(प्रियासः)** प्रीति करने वाले **(सन्तु)** हों उनका आप नित्य सत्कार कीजिये॥७॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जैसे राजा सब में दया का विधान कर और विद्वानों का सत्कार करके अपने राज्य में धनाढ्यों को बसावे, वैसे प्रजाजन भी राजा के हितैषी होवें॥७॥

**राज्ञा के पालनीया दण्डनीयाश्च सन्तीत्याह॥**

राजा को किनका पालन वा किनको दण्ड देना चाहिये, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**येषामिळा घृतहस्ता दुरोण आँ अपि प्राता निषीदति।**

**ताँस्त्रायस्व सहस्य द्रुहो निदो यच्छा नः शर्म दीर्घश्रुत्॥८॥**

**येषाम्। इळा। घृतऽहस्ता। दुरोणे। आ। अपि। प्राता। निऽसीदति। तान्। त्रायस्व। सहस्य। द्रुहः। निदः। यच्छ। नः। शर्म। दीर्घऽश्रुत्॥८॥**

**पदार्थः**-**(येषाम्)** **(इळा)** प्रशंसनीया वाक् **(घृतहस्ता)** घृतं हस्ते गृह्यते यया सा **(दुरोणे)** गृहे **(आ)** **(अपि)** **(प्राता)** व्यापिका **(निषीदति)** **(तान्)** **(त्रायस्व)** **(सहस्य)** सहसा बलेन युक्त **(द्रुहः)** द्रोग्धीन् **(निदः)** निन्दकान् **(यच्छा)** निगृह्णीहि। अत्र **द्व्यचोऽतस्तिङ** इति दीर्घः। **(नः)** अस्माकम् **(शर्म)** गृहम् **(दीर्घश्रुत्)** यो दीर्घं कालं शृणोति॥८॥

**अन्वयः**-हे सहस्य! येषां दुरोणे घृतहस्ता प्रातेळा आ निषीदति ताँस्त्वं त्रायस्व दीर्घश्रुत्त्वं नः शर्म यच्छ ये द्रुहो निदः सन्ति तानप्यायच्छ॥८॥

**भावार्थः**-हे राजन्! ये सत्यवाचो वेदविदः स्युस्तेभ्यो नित्यं सुखं प्रयच्छ ये च द्रोहादिदोषयुक्ता आप्तनिन्दकाः स्युस्तान् भृशं दण्डय॥८॥

**पदार्थः**-हे **(सहस्य)** बल से युक्त राजन्! **(येषाम्)** जिन के **(दुरोणे)** घर में **(घृतहस्ता)** हाथ में घी लेने वाली के तुल्य **(प्राता)** व्यापक **(इळा)** प्रशंसा योग्य वाणी **(आ, निषीदति)** अच्छे प्रकार



www.9009.co.in

निरन्तर स्थिर होती **(तान्)** उनकी आप **(त्रायस्व)** रक्षा कीजिये **(दीर्घश्रुत्)** दीर्घ काल तक सुनने वाले आप **(नः)** हमारे **(शर्म)** घर को **(यच्छ)** ग्रहण कीजिये जो **(द्रुहः)** द्रोही **(निदः)** निन्दक हैं उनको **(अपि)** भी अच्छे प्रकार ग्रहण कीजिये॥८॥

**भावार्थः**-हे राजन्! जो सत्यवाणी वाले, वेद ज्ञाता हों उनको नित्य सुख दीजिये और जो द्रोहादि दोषयुक्त आप्तों के निन्दक हैं, उनको शीघ्र दण्ड दीजिये॥८॥

**पुनः स राजा किं कुर्यादित्याह॥**

फिर वह राजा क्या करे, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**स मन्द्रया च जिह्वया वह्निरासा विदुष्टरः।**

**अग्ने रयिं मघवद्भ्यो न आ वह हव्यदातिं च सूदय॥९॥**

**सः। मन्द्रया। च। जिह्वया। वह्निः। आसा। विदुःऽतरः। अग्ने। रयिम्। मघवत्ऽभ्यः। नः। आ। वह। हव्यऽदातिम्। च। सूदय॥९॥**

**पदार्थः**-**(सः)** **(मन्द्रया)** प्रशंसितयाऽऽनन्दप्रदया **(च)** **(जिह्वया)** सत्यभाषणयुक्तया वाचा **(वह्निः)** वोढा विद्यासुखप्रापकः **(आसा)** मुखेन **(विदुष्टरः)** अतिशयेन विद्वान् **(अग्ने)** अग्निरिव न्यायेन प्रकाशित राजन् **(रयिम्)** धनम् **(मघवद्भ्यः)** प्रशंसितधनेभ्यः **(नः)** अस्मभ्यम् **(आ)** **(वह)** समन्तात् प्रापय **(हव्यदातिम्)** होतुं दातुं गृहीतुं वा योग्यानां खण्डनम् **(च)** **(सूदय)** विनाशय॥९॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! यो वह्निरिव वर्त्तमानो विदुष्टरस्स एवं मन्द्रया जिह्वयाऽऽसा च मघवद्भ्यो नो रयिमा वह हव्यदातिं च सूदय॥९॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यथाऽग्नि सर्वेभ्यः पृथिव्यादिभ्यस्तत्त्वेभ्यो हीरकादीनि परिपाच्य प्रयच्छति तथा राजा धनाढ्यानां सकाशान्निर्धनं श्रीमन्तं कारयित्वा सुखं प्रापयेत् सत्यया मधुरया वाचा सर्वाञ्छिक्षेत यत एतेऽयुक्ते व्यवहारे धनहानि न कुर्य्युः॥९॥

**पदार्थः**-हे **(अग्ने)** अग्नि के तुल्य न्याय से प्रकाशित राजन्! [जो] **(वह्निः)** अग्नि के तुल्य वर्त्तमान विद्या और सुख प्राप्त करने वाले **(विदुष्टरः)** अत्यन्त विद्वान् हैं **(सः)** सो आप **(मन्द्रया)** प्रशंसित आनन्द देने वाली **(जिह्वया)** सत्य भाषणयुक्त वाणी से **(च)** और **(आसा)** मुख से **(मघवद्भ्यः)** प्रशंसित धन वाले **(नः)** हम लोगों के लिये **(रयिम्)** धन को **(आ, वह)** प्राप्त कीजिये **(च)** और **(हव्यदातिम्)** होम के वा ग्रहण करने के योग्य वस्तुओं के खण्डन को **(सूदय)** नष्ट कीजिये॥९॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे अग्नि सब पृथिव्यादि तत्त्वों से हीरा आदि रत्नों को सब ओर से पका के देता है, वैसे राजा, धनाढ्यों के सम्बन्ध से निर्धन को धनवान् कराके सुख प्राप्त करे, सत्य मधुर वाणी से प्रजाजनों को शिक्षा करे, जिससे ये अयुक्त व्यवहार में धनहानि न करें॥९॥



www.9009.co.in

**पुनः स राजा प्रजाजनान् प्रति कथं वर्तेत इत्याह॥**

फिर वह राजा प्रजाजनों के प्रति कैसे वर्त्ते, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**ये राधांसि ददत्यश्व्या मघा कामेन श्रवसो महः।**

**ताँ अंहसः पिपृहि पर्तृभिष्ट्वं शतं पूर्भिर्यविष्ठ्य॥१०॥**

**ये। राधांसि। ददति। अश्व्या। मघा। कामेन। श्रवसः। महः। तान्। अंहसः। पिपृहि। पर्तृऽभिः। त्वम्। शतम्। पूःऽभिः। यविष्ठ्य॥१०॥**

**पदार्थः**-(**ये**) (**राधांसि**) धनानि (**ददति**) (**अश्व्या**) महत्सु भवानि (**मघा**) पूजनीयानि (**कामेन**) इच्छया (**श्रवसः**) अन्नस्य (**महः**) महतः (**तान्**) (**अंहसः**) दुष्टाचारात् (**पिपृहि**) पालय (**पर्तृभिः**) पालकैः (**त्वम्**) (**शतम्**) असंख्यम् (**पूर्भिः**) नगरीभिः (**यविष्ठ्य**) येऽतिशयेन युवानस्तेषु साधो॥१०॥

**अन्वयः**-हे यविष्ठ्य राजन्! ये महः श्रवसः कामेन शतं मघाऽश्व्या राधांसि सर्वेभ्यो ददति तान्पर्तृभिः पूर्भिस्त्वमंहसः पिपृहि॥१०॥

**भावार्थः**-हे राजन्! ये धर्मात्मभ्य उद्योगिभ्यः श्रमं कारयित्वा धनाऽन्नानि प्रयच्छन्ति तान्नगरीभिः पालकैस्सह वर्त्तमानानधर्माचरणात्पृथग् रक्षयत एते धर्मेणोद्योगेन पुष्कलं धनाऽन्नं प्राप्य जगद्धिताय सततं दानं कुर्य्युः॥१०॥

**पदार्थः**-हे (**यविष्ठ्य**) अतिशय कर जवानों में श्रेष्ठ राजन्! (**ये**) जो (**महः**) बड़े (**श्रवसः**) अन्न की (**कामेन**) कामना से (**शतम्**) सैकड़ों (**मघा**) स्वीकार करने योग्य (**अश्व्या**) महत् लोगों में प्रकट होने वाले (**राधांसि**) धनों को सब को (**ददति**) देते हैं (**तान्**) उनको (**पर्त्तृभिः**) रक्षक (**पूर्भिः**) नगरियों के साथ (**त्वम्**) आप (**अंहसः**) दुष्टाचरण से (**पिपृहि**) रक्षा कीजिये॥१०॥

**भावार्थः**-हे राजन्! जो धर्मात्मा उद्योगी जनों को उनसे श्रम करा के धन और अन्न देते हैं, उन नगरी और पालकों के साथ वर्त्तमानों को अधर्माचरण से पृथक् रक्खो जिससे धर्मपूर्वक उद्योग से पुष्कल धन और अन्न पाकर जगत् के हितार्थ निरन्तर दान करें॥१०॥

**पुनर्मनुष्याः किं कुर्य्युरित्याह॥**

फिर मनुष्य क्या करें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते है॥

**देवो वो द्रविणोदाः पूर्णां विवष्ट्यासिचम्।**

**उद्वा सिञ्चध्वमुप वा पृणध्वमादिद्वो देव ओहते॥११॥**

**देवः। वः। द्रविणःऽदाः। पूर्णाम्। विवष्टि। आऽसिचम्। उत्। वा। सिञ्चध्वम्। उप। वा। पृणध्वम्। आत्। इत्। वः। देवः। ओहते॥११॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**देव**) विद्वान् (**वः**) युष्मान् (**द्रविणोदाः**) धनप्रदः (**पूर्णम्**) (**विवष्टि**) विशेषेण कामयते (**आसिचम्**) समन्तात्सिक्ताम् (**उत्**) (**वा**) (**सिञ्चध्वम्**) (**उप**) (**वा**) (**पृणध्वम्**) पूरयत (**आत्**) अनन्तरम् (**इत्**) एव (**वः**) युष्मान् (**देवः**) दिव्यगुणः (**ओहते**) वितर्कयति॥११॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यो द्रविणोदा देवो वः पूर्णामासिचं विवष्टि वा यो देवो वो युष्मानोहतं तमुत्सिञ्चध्वं वाऽऽदिदुपपृणध्वम्॥११॥

**भावार्थः**-ये विद्वांसो मनुष्याणां पूर्णां कामनां कुर्वन्ति तान् सर्वे सुखयन्तु॥११॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो (**द्रविणोदाः**) धनदाता (**देवः**) विद्वान् (**वः**) तुमको (**पूर्णाम्**) पूरी (**आसिचम्**) अच्छे प्रकार सेचन की कान्ति को (**विवष्टि**) विशेष कर कामना करता है (**वा**) अथवा जो (**देवः**) दिव्यगुणधारी विद्वान् (**वः**) तुमको (**ओहते**) वितर्कित करता उसको (**उत्, सिञ्चध्वम्**) ही सींचो (**वा**) अथवा (**आत्, इत्**) इसके अनन्तर ही (**उप, पृणध्वम्**) समीप में तृप्त करो॥११॥

**भावार्थः**-जो विद्वान् लोग मनुष्यों की कामना पूर्ण करते हैं, उनको सब सुखी करें॥११॥

**पुनरध्यापकाः अध्येतारः किं कुर्य्युरित्याह॥**

फिर अध्यापक और अध्येता क्या करें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**तं होतारमध्वरस्य प्रचेतसं वह्निं देवा अकृण्वत।**

**दधाति रत्नं विधते सुवीर्यमग्निर्जनाय दाशुषे॥१२॥२२॥**

**तम्। होतारम्। अध्वरस्य। प्रऽचेतसम्। वह्निम्। देवाः। अकृण्वत। दधाति। रत्नम्। विधते। सुऽवीर्यम्। अग्निः। जनाय। दाशुषे॥१२॥**

**पदार्थः**-(**तम्**) (**होतारम्**) विद्याया आदातारम् (**अध्वरस्य**) अहिंसामयस्य यज्ञस्य (**प्रचेतसम्**) प्रकर्षेण ज्ञापयितारम् (**वह्निम्**) वोढारम् (**देवाः**) विद्वासः (**अकृण्वत**) कुर्वन्तु (**दधाति**) (**रत्नम्**) रमणीयं धनम् (**विधते**) विधानं कुर्वते (**सुवीर्यम्**) सुष्ठु पराक्रमम् (**अग्निः**) वह्निरिव वर्त्तमानः (**जनाय**) परोपकारे प्रसिद्धाय (**दाशुषे**) दात्रे॥१२॥

**अन्वयः**-योऽग्निरिव विधते दाशुषे जनाय सुवीर्यं रत्नं दधाति यं देवा अध्वरस्य होतारं वह्निं प्रचेतसमकृण्वत तं सर्वे सुशिक्षयन्तु॥१२॥

**भावार्थः**-हे विद्वांसो! ये जितेन्द्रियास्तीव्रप्रज्ञा विद्याग्रहणाय प्रवृत्ता विद्यार्थिनस्स्युस्तानहिंस्रान् प्राज्ञान् विद्याधर्मधरान्कुरुतेति॥१२॥

अत्राग्निविद्वद्राजयजमानपुरोहितोपदेशकविद्यार्थिकृत्यवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति षोडशं सूक्तं द्वाविंशो वर्गश्च समाप्तः॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-जो **(अग्निः)** अग्नि के तुल्य वर्त्तमान विद्वान् **(विधते)** विधान करते हुए **(दाशुषे)** दाता **(जनाय)** जन के लिये **(सुवीर्यम्)** सुन्दर पराक्रम युक्त **(रत्नम्)** रमणीय धन को **(दधाति)** धारण करता जिसको **(देवाः)** विद्वान् लोग **(अध्वरस्य)** अहिंसारूप यज्ञ के कर्त्ता वा **(होतारम्)** विद्या के ग्रहीता **(वह्निम्)** कार्य्यों के चलाने और **(प्रचेतसम्)** अच्छे प्रकार जताने वाले जन को **(अकृण्वत)** करें **(तम्)** उसको सब सुशिक्षित करावें॥१२॥

**भावार्थः**-हे विद्वानो! जो जितेन्द्रिय, तीव्रबुद्धि वाले, विद्या ग्रहण के अर्थ प्रवृत्त विद्यार्थी हों उनको अहिंसाशील, बुद्धिमान्, विद्या और धर्म के धारक करो॥१२॥

इस सूक्त में अग्नि, विद्वान्, राजा, यजमान, पुरोहित, उपदेशक और विद्यार्थी के कृत्य का वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ संगति जाननी चाहिये।

**यह सोलहवां सूक्त और बाईसवां वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

**अथ सप्तर्चस्य सप्तदशस्य सूक्तस्य वसिष्ठ ऋषिः। अग्निर्देवता। १, ३, ४, ६, ७ आर्च्युष्णिक् छन्दः। ऋषभः स्वरः। २ साम्नी त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः। ५ साम्नी पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः।**

***अथ विद्यार्थिनः किंवत्कीदृशा भवेयुरित्याह॥***

अब विद्यार्थी किसके तुल्य कैसे हों, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अग्ने भव सुषमिधा समिद्ध उत बर्हिरुर्विया वि स्तृणीताम्॥१॥**

**अग्ने। भव। सुऽसमिधा। सम्ऽइद्धः। उत। बर्हिः। उर्विया। वि। स्तृणीताम्॥१॥**

**पदार्थः**-(**अग्ने**) अग्निरिव विद्वन्! (**भव**) (**सुषमिधा**) शोभनया समिधेव धर्म्यक्रियया (**समिद्धः**) प्रदीप्तः (**उत**) अपि (**बर्हिः**) प्रवृद्धमुदकम्। **बर्हिरित्युदकनाम।** (निघं०१.१२ (**उर्विया**) पृथिव्या सह (**वि**) (**स्तृणीताम्**) तनोतु॥१॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! यथा सुषमिधा समिद्धोऽग्निर्भवति तथा भव उत यथा वह्निरुर्विया बर्हिषि स्तृणाति तथाविधो भवान् वि स्तृणीताम्॥१॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यथेन्धनैरग्निः प्रदीप्यते वर्षोदकेन भूमिमाच्छदयति तथैव ब्रह्मचर्यसुशीलतापुरुषार्थैर्विद्यार्थिनः सुप्रकाशिता भूत्वा जिज्ञासुहृदयेषु विद्यां विस्तारयन्ति॥१॥

**पदार्थः**-हे (**अग्ने**) अग्नि के तुल्य तेजस्वी विद्वन्! जैसे (**सुषमिधा**) समिधा के तुल्य शोभायुक्त धर्मानुकूल क्रिया से (**समिद्धः**) प्रदीप्त अग्नि होता है, वैसे (**भव**) हूजिये (**उत**) और जैसे अग्नि (**उर्विया**) पृथिवी के साथ (**बर्हिः**) बढ़े हुए जल का विस्तार करता है, वैसे प्रकार होकर आप (**वि, स्तृणीताम्**) विस्तार कीजिये॥१॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे इन्धनों से अग्नि प्रदीप्त होता, वर्षा जल से पृथिवी को आच्छादित करता है, वैसे ही ब्रह्मचर्य्य, सुशीलता और पुरुषार्थ से विद्यार्थी जन सुप्रकाशित होकर जिज्ञासुओं के हृदयों में विद्या का विस्तार करते हैं॥१॥

**पुनरध्यापकविद्यार्थिनः परस्परं कथं वर्त्तेरन्नित्याह॥**

फिर अध्यापक और विद्यार्थी परस्पर कैसे वर्तें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते है॥

**उत द्वार उशतीर्वि श्रयन्तामुत देवाँ उशत आ वहेह॥२॥**

**उत। द्वारः। उशतीः। वि। श्रयन्ताम्। उत। देवान्। उशतः। आ। वह। इह॥२॥**

**पदार्थः**-(**उत**) अपि (**द्वारः**) द्वाराणि (**उशतीः**) कामयमानाः (**वि**) (**श्रयन्ताम्**) सेवन्ताम् (**उत**) (**देवान्**) दिव्यगुणकर्मस्वभावान् (**उशतः**) कामयमानान् पतीन् (**आ**) (**वह**) (**इह**) अस्मिन्॥२॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे विद्यार्थिन्! यथा द्वार उशतीर्हृद्याः पत्नीर्विद्वांस उत वोशतो देवान् स्त्रियो वि श्रयन्तां यथाऽग्निरिह सर्वं वहत्युत वा दिव्यान् गुणान् प्रापयति तथैव त्वमावह॥२॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। ये विद्यार्थिनो विद्याकामनाय आप्तानध्यापकान् सेवन्ते यानुत्तमान् विद्यार्थिनोऽध्यापका इच्छन्ति ते परस्परं कामयमाना विद्यामुन्नेतुं शक्नुवन्ति॥२॥

**पदार्थः**-हे विद्यार्थी! जैसे **(द्वारः)** द्वार **(उशतीः)** कामना वाली हृदय को प्यारी पत्नियों को विद्वान् **(उत)** और **(उशतः)** कामना करते हुए **(देवान्)** उत्तम गुण-कर्म-स्वभावयुक्त विद्वान् पतियों को स्त्रियाँ **(वि, श्रयन्ताम्)** विशेष कर सेवन करें वा जैसे अग्नि **(इह)** इस जगत् में सब को प्राप्त होता **(उत)** और दिव्य गुणों को प्राप्त कराता है, वैसे ही आप **(आ, वह)** प्राप्त करिये॥२॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो विद्यार्थी विद्या की कामना से आप्त अध्यापकों का सेवन करते, जिन उत्तम विद्यार्थियों को अध्यापक चाहते, वे परस्पर कामना करते हुए विद्या की उन्नति कर सकते हैं॥२॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अग्ने॑ वी॒हि ह॒विषा॒ यक्षि॑ दे॒वान्त्स्व॑ध्व॒रा कृ॑णु॒हि॒ जातवे॑दः॥३॥**

**अग्ने॑। वी॒हि। ह॒विषा॑। यक्षि॑। दे॒वान्। सु॒ऽअ॒ध्व॒रा। कृ॒णु॒हि॒। जा॒त॒ऽवे॒दः॒॥३॥**

**पदार्थः**-**(अग्ने)** वह्निरिव तीव्रप्रज्ञ **(वीहि)** व्याप्नुहि **(हविषा)** आदत्तेन पुरुषार्थेन **(यक्षि)** यज सङ्गच्छस्व **(देवान्)** विदुषोऽध्यापकान् **(स्वध्वरा)** शोभनोऽध्वरोऽहिंसामयो व्यवहारो येषां तान् **(कृणुहि)** **(जातवेदः)** जातविद्य॥३॥

**अन्वयः**-हे जातवेदोऽग्ने विद्यार्थिँस्त्वं विद्युदिव हविषा विद्या वीहि देवान् यक्षि स्वध्वरा कृणुहि॥३॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। विद्यार्थिनो यथा विद्युदध्वानं सद्यो व्याप्नोति तथा पुरुषार्थेन शीघ्रं विद्याः प्राप्नुवन्त्वध्यापकाश्च ताँस्तूर्णं विदुषः कुर्वन्तु॥३॥

**पदार्थः**-हे **(जातवेदः)** विद्या को प्राप्त **(अग्ने)** अग्नि के तुल्य तीव्रबुद्धि वाले विद्यार्थिन्! तू विद्युत् के तुल्य **(हविषा)** ग्रहण किये पुरुषार्थ से विद्याओं को **(वीहि)** प्राप्त हो **(देवान्)** विद्वान् अध्यापकों का **(यक्षि)** सङ्ग कर और **(स्वध्वरा)** सुन्दर अहिंसारूप व्यवहार वाले कामों को **(कृणुहि)** कर॥३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। विद्यार्थिजन जैसे विद्युत् मार्ग को शीघ्र व्याप्त होते, वैसे पुरुषार्थ से शीघ्र विद्याओं को प्राप्त हों और अध्यापक पुरुष उनको शीघ्र विद्वान् करें॥३॥

**केऽध्यापकाः वराः सन्तीत्याह॥**

कौन अध्यापक श्रेष्ठ हैं, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥



www.9009.co.in

**स्व॒ध्व॒रा क॑रति जा॒तवे॑दा॒ यक्ष॑द् दे॒वाँ अ॒मृता॑न् पि॒प्रय॑च्च॥४॥**

**सु॒ऽअ॒ध्व॒रा। क॒र॒ति॒। जा॒तऽवे॑दाः। यक्ष॑त्। दे॒वान्। अ॒मृता॑न्। पि॒प्र॒य॑त्। च॒॥४॥**

**पदार्थः**-(**स्वध्वरा**) सुष्ठ्वहिंस्रस्वभावयुक्तान् (**करति**) कुर्यात् (**जातवेदाः**) प्रसिद्धविद्यः (**यक्षत्**) सङ्गच्छेत् (**देवान्**) विदुषः (**अमृतान्**) स्वस्वरूपेण मृत्युरहितान् (**पिप्रयत्**) प्रीणीयात् (**च**)॥४॥

**अन्वयः**-यो जातवेदाः अध्यापको विद्यार्थिनो देवान् स्वध्वरा करत्यमृतान् यक्षदेतान् पिप्रयच्च स विद्यार्थिभिः सेवनीयोऽस्ति॥४॥

**भावार्थः**-येषामध्यापकानां विद्यार्थिनः सद्यो विद्वांसः सुशीला धार्मिका जायन्ते त एवाऽध्यापकाः प्रशंसनीयाः सन्ति॥४॥

**पदार्थः**-जो (**जातवेदाः**) विद्या में प्रसिद्ध अध्यापक विद्यार्थियों को (**देवान्**) विद्वान् और (**स्वध्वरा**) अच्छे प्रकार अहिंसा स्वभाव वाले (**करति**) करे (**अमृतान्**) अपने स्वरूप से मृत्यु रहितों को (**यक्षत्**) संगत करे (**च**) और इनको (**पिप्रयत्**) तृप्त करे, वह विद्यार्थियों को सेवने योग्य है॥४॥

**भावार्थः**-जिन अध्यापकों के विद्यार्थी शीघ्र विद्वन्, सुशील, धार्मिक होते हैं, वे ही अध्यापक प्रशंसनीय होते हैं॥४॥

**पुनरध्यापकं प्रति विद्यार्थिनः किं पृच्छेयुरित्याह॥**

फिर अध्यापक से विद्यार्थी जन क्या पूछें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**वंस्व॒ विश्वा॒ वार्या॑णि प्रचेतः स॒त्या भ॑वन्त्वा॒शिषो॑ नो अ॒द्य॥५॥**

**वंस्व॑। विश्वा॑। वार्या॑णि। प्र॒चे॒त॒ इति॑। प्रऽचतः। स॒त्याः। भ॒व॒न्तु॒। आ॒ऽशिषः॑। नः॒। अ॒द्य॥५॥**

**पदार्थः**-(**वंस्व**) संभज (**विश्वा**) सर्वाणि (**वार्याणि**) वरणीयानि प्रज्ञानानि (**प्रचेतः**) प्रकर्षेण प्रज्ञया युक्त (**सत्याः**) सत्सु साध्व्यः (**भवन्तु**) (**आशिषः**) इच्छा (**नः**) अस्माकम् (**अद्य**) अस्मिन् अहनि॥५॥

**अन्वयः**-हे प्रचेतस्त्वं विश्वा वार्याणि वंस्व यतो नोऽद्याऽऽशिषः सत्या भवन्तु॥५॥

**भावार्थः**-हे अध्यापक! त्वं विवेकेन सत्यानि शास्त्राण्यध्यापय सुशिक्षां कुरु येन वयं सत्यकामा भवेम॥५॥

**पदार्थः**-हे (**प्रचेतः**) उत्तम बुद्धि से युक्त पुरुष! आप (**विश्वा**) सब (**वार्याणि**) ग्रहण करने योग्य विद्वानों का (**वंस्व**) सेवन कीजिये जिससे (**अद्य**) आज (**नः**) हमारी (**आशिषः**) इच्छा (**सत्याः**) सत्य (**भवन्तु**) होवें॥५॥

**भावार्थः**-हे अध्यापक! आप विवेक से सत्य शास्त्रों को पढ़ाइये और सुशिक्षा करिये जिससे हम लोग सत्य कामना वाले हों॥५॥



www.9009.co.in

**पुनर्विद्यार्थिनः कमिव कं सेवेरन्नित्याह॥**

फिर विद्यार्थी किसके तुल्य किसका सेवन करें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**त्वामु ते दधिरे हव्यवाहं देवासो अग्न ऊर्ज आ नपातम्॥६॥**

**त्वाम्। ऊँ इति। ते। दधिरे। हव्यऽवाहम्। देवासः। अग्ने। ऊर्जः। आ। नपातम्॥६॥**

**पदार्थः**-(**त्वाम्**) (उ) (ते) (**दधिरे**) दधतु (**हव्यवाहम्**) यो हव्यानि हुतानि द्रव्याणि वहति तद्वद्वर्त्तमानम् (**देवासः**) दिव्यस्वभावा विद्यार्थिनः (**अग्ने**) सकलविद्यया प्रकाशित (**ऊर्जः**) पराक्रमयुक्ताः (**आ**) (**नपातम्**) न विद्यते पातो यस्य तम्॥६॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! त ऊर्जो देवासो नपातं हव्यवाहमिव त्वामु आ दधिरे॥६॥

**भावार्थः**-यथाऽग्निविद्या जना ऋत्विजोऽग्निं परिचरन्ति तथैव विद्यार्थिनोऽध्यापकं सेवेरन्॥६॥

**पदार्थः**-हे (**अग्ने**) समस्त विद्या से प्रकाशित (**ते**) आपके (**ऊर्जः**) पराक्रम युक्त (**देवासः**) उत्तम स्वभाव वाले विद्यार्थी जन (**नपातम्**) जिसका गिरना नहीं विद्यमान उस (**हव्यवाहम्**) होते हुए पदार्थों को पहुँचाने वाले अग्नि के समान (**त्वाम्**) (**उ**) तुझे ही (**आ, दधिरे**) अच्छे प्रकार धारण करें॥६॥

**भावार्थः**-जैसे अग्निविद्या जानने वाले ऋत्विज् अग्नि की सेवा करते हैं, वैसे ही विद्यार्थी जन अध्यापक की सेवा करें॥६॥

**पुनस्ते परस्परं किं किं प्रदद्युरित्याह॥**

फिर वे परस्पर क्या क्या देवें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**ते ते देवाय दाशतः स्याम महो नो रत्ना वि दध इयानः॥७॥२३॥१॥**

**ते। ते। देवाय। दाशतः। स्याम। महः। नः। रत्ना। वि। दधः। इयानः॥७॥**

**पदार्थः**-(**ते**) (**ते**) तुभ्यम् (**देवाय**) विदुषेऽध्यापकाय (**दाशतः**) दातारः (**स्याम**) (**महः**) महान्ति (**नः**) अस्मभ्यम् (**रत्ना**) विद्यादिरमणीयप्रज्ञाधनानि (**वि**) (**दधः**) विदधाति (**इयानः**) प्राप्नुवन्॥७॥

**अन्वयः**-हे अध्यापक! यो भवान् न इयानो महो रत्ना वि दधस्तस्मै ते देवाय ते यं दाशतः स्याम॥७॥

**भावार्थः**-यथाऽध्यापकाः प्रीत्या विद्याः प्रदद्युस्तथा विद्यार्थिनो वाङ्मनःशरीरधनैरध्यापकान् प्रीणीयुरिति॥७॥

अत्राध्यापकविद्यार्थिकृत्यवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इत्यृग्वेदे सप्तममण्डले प्रथमोऽनुवाकः सप्तदशं सूक्त पञ्चमेऽष्टके द्वितीयाध्याये त्रयोविंशो वर्गश्च समाप्तः॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-हे अध्यापक! जो आप **(नः)** हमारे लिये **(इयानः)** प्राप्त होते हुए **(महः)** बड़े-बड़े **(रत्ना)** रत्नों को **(वि, दधः)** विधान करते हो **(ते)** उन **(देवाय)** विद्वान् अध्यापक आप के लिये **(ते)** वे हम लोग **(दाशतः)** देने वाले **(स्याम)** हों॥७॥

**भावार्थः**-जैसे अध्यापक जन प्रीति के साथ विद्यायें देवें, वैसे विद्यार्थी जन वाणी, मन शरीर और धनों से अध्यापकों को तृप्त करें॥७॥

इस सूक्त में अध्यापक और विद्यार्थियों के कृत्य का वर्णन होने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ संगति जाननी चाहिये।

**यह ऋग्वेद के सप्तममण्डल में पहिला अनुवाक और सत्रहवां सूक्त तथा पांचवें अष्टक के द्वितीयाध्याय में तेईसवां वर्ग पूरा हुआ॥**



www.9009.co.in

**अथ पञ्चविंशत्यृचस्याऽष्टादशतमस्य सूक्तस्य वसिष्ठ ऋषिः। १-२१ इन्द्रः। २२-२५ सुदासः पैजवनस्य दानस्तुतिर्देवता। १, १७, २१ पङ्क्तिः। २, ४, १२, २२ भुरिक् पङ्क्तिः। ८, १३, १४ स्वराट्पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः। ३, ७ विराट् त्रिष्टुप्। ५, ९, ११, १६, १९, २० निचृत्त्रिष्टुप्। ६, १०, १५, १८, २३, २४, २५ त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः॥**

***अथ राजा कीदृशो वरो भवतीत्याह॥***

अब पच्चीस ऋचा वाले अठारहवें सूक्त का प्रारम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में राजा कैसा श्रेष्ठ होता है, इस विषय को कहते हैं॥

**त्वे ह यत्पितरश्चिन्न इन्द्र विश्वा वामा जरितारो असन्वन्।**

**त्वे गावः सुदुघास्त्वे ह्यश्वास्त्वं वसु देवयते वनिष्ठः॥ १॥**

**त्वे इति। ह। यत्। पितरः। चित्। नः। इन्द्र। विश्वा। वामा। जरितारः। असन्वन्। त्वे इति। गावः। सुऽदुघाः। त्वे इति। हि। अश्वाः। त्वम्। वसु। देवऽयते। वनिष्ठः॥ १॥**

**पदार्थः**-(**त्वे**) त्वयि (**ह**) खलु (**यत्**) ये (**पितरः**) ऋतवः इव पालयितारः (**चित्**) अपि (**नः**) अस्माकम् (**इन्द्र**) (**विश्वा**) सर्वाणि (**वामा**) प्रशस्यानि (**जरितारः**) स्तावकः (**असन्वन्**) याचन्ते (**त्वे**) त्वयि (**गावः**) धेनवः (**सुदुघाः**) सुष्ठु कामप्रपूरिकाः (**त्वे**) त्वयि (**हि**) (**अश्वाः**) महान्तस्तुरङ्गाः (**त्वम्**) (**वसु**) द्रव्यम् (**देवयते**) कामयमानाय (**वनिष्ठः**) अतिशयेन वनिता सम्भाजकः॥१॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र राजँस्त्वे सति सद्ये नः पितरश्चिज्जरितारो विश्वा वामा असन्वँस्त्वे ह सुदुघा गावोऽसन्वँस्त्वे ह्यश्वा असन्वन् यस्त्वं देवयते वनिष्ठः सन् वसु ददासि स त्वं सर्वैः सेवनीयः॥१॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यदि राजा सूर्यवद्विद्यान्यायप्रकाशकौ भवेत्तर्हि सर्वं राष्ट्रं कामेनालंकृतं भूत्वा राजानमलंकामं कुर्याद्धार्मिका धर्ममाचरेयुरधार्मिकाश्च पापाचारं त्यक्त्वा धर्मिष्ठा भवेयुः॥१॥

**पदार्थः**-हे (**इन्द्र**) राजन्! (**त्वे**) आपके होते (**यत्**) जो (**नः**) हमारे (**पितरः**) ऋतुओं के समान पालना करने वाले (**चित्**) और (**जरितारः**) स्तुतिकर्ता जन (**विश्वा**) समस्त (**वामा**) प्रशंसा करने योग्य पदार्थों की (**असन्वन्**) याचना करते हैं (**त्वे, ह**) आपके होते (**सुदुघाः**) सुन्दर काम पूरने वाली (**गावः**) गौएँ हैं उनको मांगते हैं (**त्वे, हि**) आप ही के होते (**अश्वाः**) जो बड़े-बड़े घोड़े हैं उनको मांगते हैं जो आप (**देवयते**) कामना करने वाले के लिये (**वनिष्ठः**) अतीव पदार्थों को अलग करने वाले होते हुए (**वसु**) धन देते हैं सो (**त्वम्**) आप सब को सेवा करने योग्य हैं॥१॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। यदि राजा सूर्य के समान विद्या और न्याय का प्रकाशक हो तो सम्पूर्ण राज्य कामना से अलङ्कृत होकर राजा को पूर्ण कामना वाला करे तथा धार्मिक जन धर्म का आचरण करें और अधार्मिक जन भी पापाचरण को छोड़ धर्मात्मा होवें॥१॥

**पुनः स राजा कीदृशः स्यादित्याह॥**

फिर वह राजा कैसा हो, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**राजेव हि जनिभिः क्षेष्येवाव द्युभिरभि विदुष्कविः सन्।**

**पिशा गिरो मघवन् गोभिरश्वैस्त्वायतः शिशीहि राये अस्मान्॥२॥**

**राजाऽइव। हि। जनिऽभिः। क्षेषि। एव। अव। द्युऽभिः। अभि। विदुः। कविः। सन्। पिशा। गिरः। मघऽवन्। गोभिः। अश्वैः। त्वाऽयतः। शिशीहि। राये। अस्मान्॥२॥**

**पदार्थः**-**(राजेव)** यथा राजा तथा **(हि)** **(जनिभिः)** प्रादुर्भूताभिः प्रजाभिः **(क्षेषि)** निवससि **(एव)** **(अव)** **(द्युभिः)** दिनैः **(अभि)** **(विदुः)** विद्वान् **(कविः)** काव्यादिनिर्माणे चतुरः **(सन्)** **(पिशा)** रूपेण **(गिरः)** वाचः **(मघवन्)** **(गोभिः)** धेनुभिः **(अश्वैः)** तुरङ्गैः **(त्वायतः)** त्वां कामयमानान् **(शिशीहि)** तीक्ष्णप्रज्ञान् **(कुरु)** **(राये)** धनाय **(अस्मान्)**॥२॥

**अन्वयः**-हे मघवन् विद्वन्! यस्त्वं जनिभी राजेव गोभिरश्वै राये त्वायतोऽस्मांञ्छिशीहि विदुः कविः सन् पिशा गिरः शिशीहि द्युभिर्ह्यभ्यव क्षेषि तमेव वयं सततं प्रोत्साहयेम॥२॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। यथा सूर्यः सर्वैः पदार्थैस्सह प्रकाशते तथा राजा प्रकाशमानो भवेद्यो नृपः सत्यं कामयमानानस्मान् प्रीणाति सोऽपि सदा प्रसन्नः स्यात्॥२॥

**पदार्थः**-हे **(मघवन्)** ऐश्वर्य्यवान् विद्वान्! जो आप **(जनिभिः)** उत्पन्न हुई प्रजाओं से **(राजेव)** जैसे राजा जैसे **(गोभिः)** धेनु और **(अश्वैः)** घोड़ों से **(राये)** धन के लिये **(त्वायतः)** तुम्हारी कामना करते हुए **(अस्मान्)** हम लोगों को **(शिशीहि)** तेजबुद्धि वाले करो। जो **(विदुः)** विद्वान् **(कविः)** कविताई करने में चतुर **(सन्)** होते हुए **(पिशा)** रूप से **(गिरः)** वाणियों को तीक्ष्ण करो **(द्युभिः)** दिनों से **(हि)** ही **(अभि, अव, क्षेषि)** सब ओर से निरन्तर निवास करते हो **(एव)** उन्हीं आपको हम लोग निरन्तर उत्साहित करें॥२॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जैसे सूर्य सब पदार्थों के साथ प्रकाशित होता है, वैसे जो राजा प्रकाशमान हो और जो हम लोगों को सत्य के चाहने वालों को प्रसन्न करता है, वह भी सदा प्रसन्न हो॥२॥

**पुनः स राजा कीदृशो भवेदित्याह॥**

फिर वह राजा कैसा हो, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**इमा उ त्वा पस्पृधानासो अत्र मन्द्रा गिरो देवयन्तीरुप स्थुः।**



www.9009.co.in

**अर्वाची ते पथ्या राय एतु स्याम ते सुमताविन्द्र शर्मन्॥ ३॥**

**इमाः। ॐ इति। त्वा। पस्पृधानासः। अत्र। मन्द्राः। गिरः। देवऽयन्तीः। उप। स्थुः। अर्वाची। ते। पथ्या। रायः। एतु। स्याम। ते। सुऽमतौ। इन्द्र। शर्मन्॥ ३॥**

**पदार्थः**-(**इमाः**) प्रजाः (**उ**) (**त्वा**) त्वाम् (**पस्पृधानासः**) स्पर्धमानाः (**अत्र**) (**मन्द्राः**) आनन्दप्रदाः (**गिरः**) वाचः (**देवयन्तीः**) देवान् विदुषः कामयमानाः (**उप**) (**स्थुः**) उपतिष्ठन्तु (**अर्वाची**) नवीना (**ते**) तव (**पथ्या**) पथिषु साध्या (**रायः**) धनानि (**एतु**) प्राप्नोतु (**स्याम**) (**ते**) तव (**सुमतौ**) (**इन्द्र**) परमैश्वर्ययुक्त राजन् (**शर्मन्**) गृहे॥ ३॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! यं त्वा पस्पृधानस इमा देवयन्तीः मन्द्रा गिर उप स्थुस्तेऽर्वाची पथ्या राय एतु तस्य तेऽत्र सुमतौ शर्मन्नु वयं सम्मताः स्याम॥ ३॥

**भावार्थः**-हे राजन्! यदि भवान् सर्वविद्यायुक्तसुशिक्षिता मधुरा श्लक्ष्णाः सत्याः वाचो दध्यात्तर्हि तव नीतिः सर्वेषां पथ्या स्यात् सर्वाः प्रजा अनुरक्ता भवेयुः॥ ३॥

**पदार्थः**-हे (**इन्द्र**) परमैश्वर्ययुक्त राजन्! जिस (**त्वा**) आपको (**पस्पृधानासः**) स्पर्धा करते अर्थात् अति चाहना से चाहते हुए (**इमाः**) यह प्रजाजन और (**देवयन्तीः**) विद्वानों की कामना करती हुई (**मन्द्राः**) आनन्द देने वाली (**गिरः**) वाणियां (**उप, स्थुः**) उपस्थित हों और (**ते**) आपकी (**अर्वाची**) नवीन (**पथ्या**) मार्ग में उत्तम नीति (**रायः**) धनों को (**एतु**) प्राप्त हो उन (**ते**) आपके (**अत्र**) इस (**सुमतौ**) श्रेष्ठमति और (**शर्मन्**) घर में (**उ**) भी हम लोग सम्मत (**स्याम**) हों॥ ३॥

**भावार्थः**-हे राजन्! यदि आप सर्वविद्या युक्त, सुशिक्षित, मधुर, श्लक्ष्ण, सत्यवाणियों को धारण करो तो तुम्हारी नीति सब को पथ्य हो, सब प्रजाजन अनुरागयुक्त होवें॥ ३॥

**राजा सर्वसम्मत्या राजशासनं कुर्यादित्याह॥**

राजा सर्वसम्मति से राजशासन करे, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते है॥

**धेनुं न त्वा सूयवसे दुदुक्षन्नुप ब्रह्माणि ससृजे वसिष्ठः।**

**त्वामिन्मे गोपतिं विश्व आहा न इन्द्रः सुमतिं गन्त्वच्छ॥ ४॥**

**धेनुम्। न। त्वा। सूयवसे। दुधुक्षन्। उप। ब्रह्माणि। ससृजे। वसिष्ठः। त्वाम्। इत्। मे। गोऽपतिम्। विश्वः। आह। आ। नः। इन्द्रः। सुऽमतिम्। गन्तु। अच्छ॥ ४॥**

**पदार्थः**-(**धेनुम्**) दुग्धदात्री गौः (**न**) इव (**त्वा**) त्वाम् (**सूयवसे**) शोभने भक्षणीये घासे। अत्र**अन्येषामपी**त्याद्यचो दीर्घः। (**दुदुक्षन्**) कामान् प्रपूरयन् (**उप**) (**ब्रह्माणि**) महान्त्यन्नानि धनानि वा (**ससृजे**) सृजति (**वसिष्ठः**) अतिशयेन वसुः (**त्वाम्**) (**इत्**) (**मे**) मम (**गोपतिम्**) गवां पालकम् (**विश्वः**) सर्वो जनः (**आह**) ब्रूयात् (**आ**) (**नः**) अस्माकम् (**इन्द्रः**) परमैश्वर्ययुक्तो राजा (**सुमतिम्**) शोभनां प्रज्ञाम् (**गन्तु**) गच्छतु प्राप्नोतु (**अच्छ**) सम्यक्॥ ४॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे राजन्! यो वसिष्ठः सूयवसे धेनुं न त्वा दुदुक्षन् ब्रह्माण्युप ससृजे मे गोपतिं त्वां विश्वो जनो यदाह तामित्रः सुमतिमिन्द्रो भवानच्छा गन्तु॥४॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। हे राजन्! यदि भवानस्माकं विदुषां सम्मतौ वर्तित्वा राज्यशासनं कुर्याद्यः कश्चित्प्रजाजनः स्वकीयं सुखदुःखप्रकाशकं वचः श्रावयेत्तत्सर्वं श्रुत्वा यथावत्समादध्यात्तर्हि भवन्तं सर्वे वयं गौर्दुग्धेनेव राज्यैश्वर्येणोन्नतं कुर्याम॥४॥

**पदार्थः**-हे राजन्! जो **(वसिष्ठः)** अतीव धन **(सूयवसे)** सुन्दर भक्षण करने योग्य घास के निमित्त **(धेनुम्)** गौ की **(न)** जैसे वैसे **(त्वा)** तुम्हें **(दुदुक्षन्)** कामों से परिपूर्ण करता हुआ **(ब्रह्माणि)** बहुत अन्न वा धनों को **(उप, ससृजे)** सिद्ध करता है **(मे)** मेरी **(गोपतिम्)** इन्द्रियों की पालना करने वाले **(त्वाम्)** तुम्हें **(विश्वः)** सब जन जो **(आह)** कहे **(इत्)** उसी **(नः)** हमारी **(सुमतिम्)** सुन्दर मति को **(इन्द्रः)** परमैश्वर्ययुक्त राजा आप **(अच्छ, आ, गन्तु)** अच्छे प्रकार प्राप्त हूजिये॥४॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। यदि आप हम लोगों को विद्वानों की सम्मति में वर्त्तकर राज्यशासन करें वा जो कोई प्रजा जन स्वकीय सुख दुःख प्रकाश करने वाले वचन को सुनावे उस सब को सुन कर यथावत् समाधान दें तो आप को सब हम लोग गौ दूध से जैसे, वैसे राज्यैश्वर्य से उन्नत करें॥४॥

**पुना राजा किंवत् किं कुर्यादित्याह॥**

फिर राजा किसके तुल्य क्या करें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अर्णांसि चित्पप्रथाना सुदास इन्द्रो गाधान्यकृणोत् सुपारा।**

**शर्धन्तं शिम्युमुचथस्य नव्यः शापं सिन्धूनामकृणोदशस्तीः॥५॥२४॥**

**अर्णांसि। चित्। पप्रथाना। सुऽदासे। इन्द्रः। गाधानि। अकृणोत्। सुऽपारा। शर्धन्तम्। शिम्युम्। उचथस्य। नव्यः। शापम्। सिन्धूनाम्। अकृणोत्। अशस्तीः॥५॥**

**पदार्थः**-**(अर्णांसि)** उदकानि **(चित्)** इव **(पप्रथाना)** विस्तीर्णानि **(सुदासे)** सुष्ठु दातव्ये व्यवहारे **(इन्द्रः)** सूर्यो विद्युद्वा **(गाधानि)** परिमितानि **(अकृणोत्)** करोति **(सुपारा)** सुखेन पारं गन्तुं योग्यानि **(शर्धन्तम्)** बलं कुर्वन्तम् **(शिम्युम्)** आत्मनः शिमि कर्म कामयमानम्। **शिमीति कर्मनाम।** (निघं०२.१) **(उचथस्य)** वक्तुं योग्यस्य **(नव्यः)** नवेषु भवः **(शापम्)** शपन्त्याक्रुश्यन्ति येन तम् **(सिन्धूनाम्)** नदीनाम् **(अकृणोत्)** करोति **(अशस्तीः)** अप्रशंसिता निरुदकाः॥५॥

**अन्वयः**-हे राजन्! नव्यस्त्वमिन्द्रश्चित् सुदासे पप्रथाना अर्णांसि गाधानि सुपाराऽकृणोत् सिन्धूनामशस्तीरकृणोत् तथोचथस्य शर्धन्तं शिम्युं प्रति शापं कुर्याः॥५॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। हे राजन् यथा सूर्यो विद्युद्वा समुद्रस्थान्यपि जलानि सुखेन पारं गन्तुं योग्यानि करोति तथैव व्यवहारान् परिमितान् सुगमान् कृत्वा दुष्टनाशनं श्रेष्ठसम्मानं विधाय दुष्टानामधर्म्याः क्रिया निन्दितास्त्वं सदा कुर्याः॥५॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-हे राजन्! **(नव्यः)** नवीनों में प्रसिद्ध आप **(इन्द्रः)** सूर्य वा बिजुली **(चित्)** के समान **(सुदासे)** सुन्दर देने योग्य व्यवहार में **(पप्रथाना)** विस्तीर्ण **(अर्णांसि)** जल जो **(गाधानि)** परिमित हैं उनको **(सुपारा)** सुन्दरता से पार जाने योग्य **(अकृणोत्)** करते हैं **(सिन्धूनाम्)** नदियों को **(अशस्तीः)** अप्रशंसित जलरहित **(अकृणोत्)** करते हैं, वैसे **(उचथस्य)** कहने योग्य **(शर्धन्तम्)** बल करते हुए **(शिम्युम्)** अपने को कर्म की कामना करने वाले [के] प्रति **(शापम्)** शाप अर्थात् जिससे दण्ड देते हैं, ऐसे काम को करें॥५॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है।[88] हे राजा! जैसे सूर्य वा बिजुली समुद्रस्थ जलों को सुख से पार जाने योग्य करता है, वैसे ही व्यवहारों को भी परिमाण युक्त और सुगम कर दुष्टों का नाश और श्रेष्ठों का सम्मान कर दुष्टों की अधर्म क्रियाओं को निन्दित आप सदा करें॥५॥

**पुना राजा कान् सत्कुर्यादित्याह॥**

फिर राजा किनका सत्कार करे, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**पुरोळा इत्तुर्वशो यक्षुरासीद्राये मत्स्यासो निशिता अपीव।**

**श्रुष्टिं चक्रुर्भृगवो द्रुह्यवश्च सखा सखायमतरद् विषूचोः॥६॥**

**पुरोळाः। इत्। तुर्वशः। यक्षुः। आसीत्। राये। मत्स्यासः। निऽशिताः। अपिऽइव। श्रुष्टिम्। चक्रुः। भृगवः। द्रुह्यवः। च। सखा। सखायम्। अतरत्। विषूचोः॥६॥**

**पदार्थः**-**(पुरोळाः)** पुरःसरः **(इत्)** एव **(तुर्वशः)** सद्यो वशङ्करः **(यक्षुः)** सङ्गन्ता **(आसीत्)** अस्ति **(राये)** धनाय **(मत्स्यासः)** समुद्रस्था मत्स्या इव **(निशिताः)** नितरां तीक्ष्णगतिस्वभावाः **(अपीव)** **(श्रुष्टिम्)** शीघ्रम् **(चक्रुः)** कुर्वन्ति **(भृगवः)** परिपक्वज्ञानाः **(द्रुह्यवः)** दुष्टानां निन्दकाः **(च)** **(सखा)** **(सखायम्)** सखायम् **(अतरत्)** तरति **(विषूचोः)** व्याप्तविद्याधर्मसुशीलयोर्द्वयोः॥६॥

**अन्वयः**-हे राजन्! राये यस्तुर्वशः पुरोळा यक्षुरिदासीद् ये मत्स्यासश्चाऽपीव निशिता भृगवो द्रुह्यवश्च श्रुष्टिं चक्रुर्यः सखा विषूचोः सखायमतरत् तानित्त्वं सदा सत्कुर्याः॥६॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। हे राजन्! सर्वेषु शुभकर्मस्वग्रसंराधनोन्नतिकारका महामत्स्या इव गम्भीराशय स्थाः शीघ्रं कर्त्तारः परस्परस्मिन् सुहृदः स्युस्तानतीवप्रज्ञान् सत्कृत्य राज्यकार्येषु नियोजय॥६॥

**पदार्थः**-हे राजन्! **(राये)** धन के लिये **(तुर्वशः)** शीघ्र वश करने और **(पुरोळाः)** आगे जाने **(यक्षुः)** दूसरों से मिलने वाला **(इत्)** ही **(आसीत्)** है वा **(च)** और जो **(मत्स्यासः)** समुद्रों में स्थिर मछलियों के समान **(अपीव)** अतीव **(निशिताः)** निरन्तर तीक्ष्णस्वभायुक्त **(भृगवः)** परिपक्व ज्ञान

८८. संस्कृतभावार्थ में उपमा दिया हुआ है।



www.9009.co.in

वाले **(दुह्वव:)** दुष्टों की निन्दा करने वाले **(च)** भी **(श्रुष्टिम्)** शीघ्रता **(चक्रुः)** करते हैं जो **(सखा)** मित्र **(विषूचोः)** विद्या और धर्म का सुन्दर शील जिनमें विद्यमान उन के **(सखायम्)** मित्र को **(अतरत्)** तरता है, उन सबों का आप सदा सत्कार करो॥६॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे राजन्! जो सब शुभ कर्म्मों में आगे, अच्छे प्रकार सिद्धि की उन्नति करने वाले, बड़े मगरमच्छों के समान गम्भीर आशयवाले, शीघ्रकारी एक दूसरे में मित्रता रखने वाले हों उन अतीव बुद्धिमानों का सत्कार कर राज्यकार्य्यों में नियुक्त करो॥६॥

**पुना राजजनाः कीदृशा वराः स्युरित्याह॥**

फिर राजजन कैसे श्रेष्ठ हों, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**आ पक्थासो भलानसो भनन्तालिनासो विषाणिनः शिवासः।**

**आ योऽनयत्सधमा आर्यस्य गव्या तृत्सुभ्यो अजगन्युधा नॄन्॥७॥**

**आ। पक्थासः। भलानसः। भनन्त। आ। अलिनासः। विषाणिनः। शिवासः। आ। यः। अनयत्। सधऽमाः। आर्यस्य। गव्या। तृत्सुऽभ्यः। अजगन्। युधा। नॄन्॥७॥**

**पदार्थः**-**(आ)** समन्तात् **(पक्थासः)** पाकविद्याकुशलाः परिपक्वज्ञाना वा **(भलानसः)** भलाः परिभाषणीया नासिका येषान्ते **(भनन्त)** भनन्तूपदिशन्तु **(आ)** **(अलिनासः)** अलिनाः सुभूषिता नासिका येषान्ते **(विषाणिनः)** विषाणमिव तीक्ष्णा हस्ते नखा येषान्ते **(शिवासः)** मङ्गलकारिणः **(आ)** **(यः)** **(अनयत्)** नयति **(सधमाः)** समानस्थाने मन्यमानः **(आर्यस्य)** उत्तमजनस्य **(गव्या)** गव्यानि सुवाचि भवानि **(तृत्सुभ्यः)** हिंसकेभ्यः **(अजगन्)** गच्छन्तु **(युधा)** युद्धेन **(नॄन्)** मनुष्यान्॥७॥

**अन्वयः**-हे राजन्! ये पक्थासो भलानसोऽलिनासो विषाणिनः शिवासो भवन्तं प्रत्याभनन्त तृत्सुभ्यो युधा नॄनाजगन् यः सधमा आर्यस्य गव्याऽऽनयत्तान् सर्वान् सुरक्ष॥७॥

**भावार्थः**-हे राजन्! ये तपस्विनः पुरुषार्थिनो वक्तारः सुरूपा मङ्गलाचारा युद्धविद्याकुशला आर्या जना भवन्तं यद्यदुपदिशेयुस्तत्तदप्रमत्तः सन् सदाऽनुतिष्ठ॥७॥

**पदार्थः**-हे राजन्! जो **(पक्थासः)** पाकविद्या में कुशल **(भलानसः)** सब ओर से कहने योग्य **(अलिनासः)** जिनकी सूभूषित नासिका **(विषाणिनः)** जिनके सींग के समान तीक्ष्ण नख विद्यमान **(शिवासः)** और जो मङ्गलकारी आपको **(आ, भनन्त)** अच्छे प्रकार उपदेश करें **(तृत्सुभ्यः)** हिंसकों से **(युधा)** युद्ध से **(नॄन्)** मनुष्यों को **(आ, अजगन्)** प्राप्त हों **(यः)** जो **(सधमाः)** समान स्थान में मानते हुए **(आर्यस्य)** उत्तम जन के **(गव्या)** उत्तम वाणी में प्रसिद्ध हुओं को **(आ, अनयत्)** अच्छे प्रकार पहुँचाता है, उन सब की आप उत्तमता से रक्षा करो॥७॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-हे राजन्! जो तपस्वी पुरुषार्थी वक्ता जन उत्तम रूप वाले मङ्गल जिनके आचरण युद्ध विद्या में कुशल आर्यजन आपको जिस-जिस का उपदेश दें, उस-उस को अप्रमत्त होते हुए सदा ठानो अर्थात् सर्वदैव उसका आचरण करो॥७॥

**केऽत्र भाग्यहीना सन्तीत्याह॥**

कौन इस लोग में भाग्यहीन होते हैं, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**दुराध्यो३ अदितिं स्रेवयन्तोऽचेतसो वि जगृभ्रे परुष्णीम्।**

**मह्नाविव्यक् पृथिवीं पत्यमानः पशुष्कविरशयच्चायमानः॥८॥**

**दुःऽआध्यः। अदितिम्। स्रेवयन्तः। अचेतसः। वि। जगृभ्रे। परुष्णीम्। मह्ना। अविव्यक्। पृथिवीम्। पत्यमानः। पशुः। कविः। अशयत्। चायमानः॥८॥**

**पदार्थः**-(**दुराध्यः**) दुष्टाचारा दुष्टधियः (**अदितिम्**) जनित्वं कामम् (**स्रेवयन्तः**) (**अचेतसः**) निर्बुद्धयः (**वि**) (**जगृभ्रे**) गृह्णन्ति (**परुष्णीम्**) पालिकाम् (**मह्ना**) महत्वेन (**अविव्यक्**) व्याजीकरोति (**पृथिवीम्**) भूमिम् (**पत्यमानः**) पतिरिवाचरन् (**पशुः**) गवादिः (**कविः**) क्रान्तप्रज्ञः (**अशयत्**) शेते (**चायमानः**) वर्धमानः॥८॥

**अन्वयः**-यथा मह्ना पत्यमानश्चायमानः कविः पशुरशयत् परुष्णीं पृथिवीमविव्यक् तथा येऽचेतसो दुराध्योऽदितिं स्रेवयन्ती वि जगृभ्रे ते वर्त्तन्त इति वेद्यम्॥८॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! त एवाऽत्र पशुवत्पामराः सन्ति ये स्त्र्यासक्ता भवन्ति॥८॥

**पदार्थः**-जैसे (**मह्ना**) बड़प्पन से (**पत्यमानः**) पति के समान आचरण करता (**चायमानः**) वृद्धि को प्राप्त होता हुआ (**कविः**) प्रत्येक काम में आक्रमण करने वाली बुद्धि जिसकी वह (**पशुः**) गो आदि पशु (**अशयत्**) सोता है (**परुष्णीम्**) पालने वाली (**पृथिवीम्**) भूमि को (**अविव्यक्**) विविध प्रकार से आक्रमण करता है, वैसे जो (**अचेतसः**) निर्बुद्धि (**दुराध्यः**) दुष्टबुद्धिपुरुष (**अदितिम्**) उत्पत्ति काम को (**स्रेवयन्तः**) सेवते हुए (**वि, जगृभ्रे**) विशेषता से लेते हैं, वे वर्त्तमान हैं, ऐसा जानो॥८॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! वे ही इस संसार में पशु के तुल्य पामरजन हैं, जो स्त्री में आसक्त हैं॥८॥

**पुनः स राजा किं कुर्यादित्याह॥**

फिर वह राजा क्या करे, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**ईयुरर्थं न न्यर्थं परुष्णीमाशुश्चनेदभिपित्वं जगाम।**

**सुदास इन्द्रः सुतुकाँ अमित्रानरन्धयन्मानुषेह वध्रिवाचः॥९॥**



www.9009.co.in

**ई॒युः। अर्थ॑म्। न। नि॒ऽअ॒र्थम्। परु॑ष्णीम्। आ॒शुः। च॒न। इत्। अ॒भि॒ऽपि॒त्वम्। ज॒गा॒म॒। सु॒ऽदासे॑। इन्द्रः॑। सु॒ऽतुका॑न्। अ॒मित्रा॑न्। अर॑न्धयत्। मानु॑षे। वध्रि॑ऽवाचः॥ ९॥**

**पदार्थः**-(**ईयुः**) प्राप्नुयुः (**अर्थम्**) द्रव्यम् (**न**) इव (**न्यर्थम्**) निश्चितोऽर्थो यस्मिँस्तम् (**परुष्णीम्**) पालिकां नीतिम् (**आशुः**) सद्यः (**चन**) अपि (**इत्**) एव (**अभिपित्वम्**) प्राप्यम् (**जगाम**) (**सुदासः**) शोभनानि दानानि यस्य सः (**इन्द्रः**) परमैश्वर्यवान् (**सुतुकान्**) शोभनानि तुकान्यपत्यानि येषां तान् (**अमित्रान्**) मित्रतारहितान् (**अरन्धयत्**) हिंस्यात् (**मानुषे**) मनुष्याणामस्मिन् सङ्ग्रामे (**वध्रिवाचः**) वध्रयो वर्धिका वाचो येषां ते॥ ९॥

**अन्वयः**-यथा सुदास इन्द्रोऽर्थं न न्यर्थमाशुः सन् परुष्णीं चनाऽभिपित्वं जगामाऽमित्रानरन्धयन्मानुषे वध्रिवाचः सुतुकान् रक्षन्ति तथेतरेऽपि मनुष्यास्तदिदीयुः॥ ९॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे राजजना! यथा न्यायाधीशो राजा न्यायेन प्राप्तं गृह्णात्यन्यायजन्यं त्यजति श्रेष्ठान् संरक्ष्य दुष्टान् दण्डयति स एवोत्तमो भवति॥ ९॥

**पदार्थः**-जैसे (**सुदासः**) सुन्दर दान जिसके विद्यमान वह (**इन्द्रः**) परमैश्वर्यवान् (**अर्थम्**) द्रव्य के (**न**) समान (**न्यर्थम्**) निश्चित अर्थ वाले को (**आशुः**) शीघ्रकारी होता हुआ (**परुष्णीम्**) पालना करने वाली नीति को (**चन**) भी (**अभिपित्वम्**) और प्राप्त होने योग्य पदार्थ को (**जगाम**) प्राप्त होता है (**अमित्रान्**) मित्रता रहित अर्थात् शत्रुओं को (**अरन्धयत्**) नष्ट करे और (**मानुषे**) मनुष्यों के इस संग्राम में (**वध्रिवाचः**) जिनकी वृद्धि देने वाली वाणी वे (**सुतुकान्**) सुन्दर जिनके सन्तान है उनकी रक्षा करते हैं और भी मनुष्य (**इत्**) उसको (**ईयुः**) प्राप्त हों॥ ९॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे राजजनो! जैसे न्यायाधीश राजा न्याय से प्राप्त पदार्थ को लेता और अन्याय से उत्पन्न हुए पदार्थ को छोड़ता तथा श्रेष्ठों की सम्यक् रक्षा कर दुष्टों को दण्ड देता है, वही उत्तम होता है॥ ९॥

**पुनर्जीवा स्वस्वकृतकर्मफलं प्राप्नुवन्त्येवेत्याह॥**

फिर जीव अपने-अपने किये हुए कर्म के फल को प्राप्त होते ***[ही]*** हैं, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**ई॒युर्गावो॒ न यव॑सा॒दगो॑पा यथाकृ॒तम॒भि मि॒त्रं चि॒तासः॑।**

**पृश्नि॑गाव॒: पृश्नि॑निप्रेषितासः श्रु॒ष्टिं च॑क्रु॒र्नि॒युतो॒ रन्त॑यश्च॥ १०॥ २५॥**

**ई॒युः। गावः॑। न। यव॑सात्। अगो॑पाः। य॒था॒ऽकृ॒तम्। अ॒भि। मि॒त्रम्। चि॒तासः॑। पृश्नि॑ऽगावः। पृश्नि॑ऽनिप्रेषितासः। श्रु॒ष्टिम्। च॒क्रुः॒। नि॒ऽयुतः॑। रन्त॑यः। च॒॥ १०॥**

**पदार्थः**-(**ईयुः**) प्राप्नुयुर्गच्छेयुर्वा (**गावः**) धेनवः (**न**) इव (**यवसात्**) भक्षणीयाद् घासाद्यात् (**अगोपाः**) अविद्यमानो गोपो यासां ताः (**यथाकृतम्**) येन प्रकारेणाऽनुष्ठितम् (**अभि मित्रम्**) अभिमुखं



www.9009.co.in

सखायमिव **(चितासः)** सञ्चययुक्ताः **(पृश्निगावः)** पृश्निवदन्तरिक्षवद्गावो येषान्ते **(पृश्निनिप्रेषितासः)** पृश्नावन्तरिक्षे नितरां प्रेषिता यैस्ते **(श्रुष्टिम्)** क्षिप्रम् **(चक्रुः)** कुर्वन्ति **(नियुतः)** निश्चितगतयो वायवः **(रन्तयः)** येषु रमन्ते **(च)**॥१०॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यवसादगोपा गावो नाऽभिमित्रमिव चितासो जीवा यथाकृतं कर्मफलमीयुर्यथा पृश्निगावोऽन्तरिक्षकिरणयुक्ताः पृश्निनिप्रेषितासो नियुतो रन्तयश्च वायवः श्रुष्टिं चक्रुस्तथैव ये कर्माणि कुर्वन्ति ते तादृशमेव लभन्ते॥१०॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यथा गोपालरहिता गावः स्ववत्सान् वायवोऽन्तरिक्षस्थान् किरणान् सखा सखायं च प्राप्नोति तथैव स्वकृतानि शुभाऽशुभानि कर्माणि जीवा ईश्वरव्यवस्थया प्राप्नुवन्ति॥१०॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(यवसात्)** भक्षण करने योग्य घास आदि से **(अगोपाः)** जिनकी रक्षा विद्यमान नहीं वे **(गावः)** गौयें **(न)** जैसे वा जैसे **(अभिमित्रम्)** सम्मुख मित्र, वैसे **(चितासः)** संचय अर्थात् संचित पदार्थों से युक्त जीव **(यथाकृतम्)** जैसे किया कर्म, वैसे उसके फल को **(ईयुः)** प्राप्त हों वा पहुँचें वा जैसे **(पृश्निगावः)** अन्तरिक्ष के तुल्य किरणों से युक्त **(पृश्निनिप्रेषितासः)** अन्तरिक्ष में निरन्तर प्रेषित किये हुए **(नियुतः)** निश्चित गति वाले वायु और **(रन्तयः)** जिनमें रमते हैं वे वायु **(च)** **(श्रुष्टिम्)** शीघ्रता **(चक्रुः)** करते हैं, [उसी प्रकार जो कर्म करते हैं,] वे वैसा ही फल पाते हैं॥१०॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जैसे चरवाहों से रहित गौयें अपने बछड़ों को और वायु अन्तरिक्षस्थ किरणों को और मित्र मित्र को प्राप्त होता है, वैसे ही अपने किये हुए शुभ अशुभ कर्मों को जीव ईश्वरव्यवस्था से प्राप्त होते हैं॥१०॥

**पुनः स राजा किं कुर्य्यादित्याह॥**

फिर वह राजा क्या करे, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**एकं च यो विंशतिं च श्रवस्या वैकर्णयोर्जनान् राजा न्यस्तः।**

**दस्मो न सद्मन् नि शिशाति बर्हिः शूरः सर्गमकृणोदिन्द्र एषाम्॥११॥**

**एकम्। च। यः। विंशतिम्। च। श्रवस्या। वैकर्णयोः। जनान्। राजा। नि। अस्तरित्यस्तः। दस्मः। न। सद्मन्। नि। शिशाति। बर्हिः। शूरः। सर्गम्। अकृणोत्। इन्द्रः। एषाम्॥११॥**

**पदार्थः**-**(एकम्)** **(च)** **(यः)** **(विंशतिम्)** एतत्संख्याताम् **(च)** **(श्रवस्या)** श्रवस्यन्ने साधूनि **(वैकर्णयोः)** विविधेषु कर्णेषु श्रोत्रेषु भवयोर्व्यवहारयोः **(जनान्)** मनुष्यान् **(राजा)** राजमानः **(नि)** **(अस्तः)** योऽस्यति सः **(दस्मः)** दुःखोपक्षयिता **(न)** इव **(सद्मन्)** सीदन्ति यस्मिन् तस्मिन् गृहे **(नि)** नितराम् **(शिशाति)** तीक्ष्णीकरोति **(बर्हिः)** प्रवृद्धम् **(शूरः)** निर्भयः **(सर्गम्)** उदकम्। **सर्ग**



www.9009.co.in

**इत्युदकनाम।** (निघं०१.१२) **(अकृणोत्)** करोति **(इन्द्रः)** सूर्यः **(एषाम्)** वीराणां मनुष्याणां मध्ये॥११॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यो दस्मो न वैकर्णयोर्न्यस्तो राजा जनान् सद्मन् नि शिशाति विंशतिं चैकं च श्रवस्याकृणोत् स एषामिन्द्रो बर्हिः सर्गमिव शूरश्शत्रून् विजयते॥११॥

**भावार्थः**-अत्रोपमावाचकलुप्तोपमालङ्कारौ। यो राजा मनुष्यान् पुत्रवत्पालयत्यहिंसक इव सर्वानानन्दयते सूर्यवत् न्यायविद्याबलानि प्रकाश्य शत्रून् विजयते स एव सर्वं सुखमाप्नोति॥११॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो **(यः)** जो **(दस्मः)** दुःख के विनाश करने वाले के **(न)** समान **(वैकर्णयोः)** विविध प्रकार के कानों में उत्पन्न हुए व्यवहारों का **(नि, अस्तः)** निरन्तर प्रक्षेपण करने अर्थात् औरों के कानों में डालने वाला **(राजा)** विराजमान **(जनान्)** मनुष्यों को **(सद्मन्)** जिसमें बैठते हैं उस घर में **(नि, शिशाति)** निरन्तर तीक्ष्ण करता है और **(विंशतिम्, च, एकम्, च)** बीस और एक भी अर्थात् इक्कीस **(श्रवस्या)** अन्न में उत्तम गुण देने वालों को **(अकृणोत्)** सिद्ध करता है वह **(एषाम्)** इन वीर मनुष्यों के बीच **(इन्द्रः)** सूर्य **(बर्हिः)** अच्छे प्रकार बड़े हुए **(सर्गम्)** जल को जैसे वैसे **(शूरः)** निर्भय शत्रुओं को जीतता है॥११॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमा और वाचकलुप्तोपमालङ्कार हैं। जो राजा मनुष्यों के पुत्र के समान पालता, अहिंसक के समान सब को आनन्दित कराता और सूर्य के समान न्यायविद्या और बलों को प्रकाशित कर शत्रुओं को जीतता है, वही सब सुखों को प्राप्त होता है॥११॥

**पुना राजामात्याः प्रजापुरुषाश्च परस्परं कथं वर्त्तेरन्नित्याह॥**

फिर राजा अमात्य और प्रजा पुरुष परस्पर कैसे वर्तें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अध श्रुत कवषं वृद्धमप्स्वनु द्रुह्युं नि वृणग्वज्रबाहुः।**

**वृणाना अत्र सख्याय सख्यं त्वायन्तो ये अमदन्ननु त्वा॥१२॥**

**अध। श्रुतम्। कवषम्। वृद्धम्। अप्ऽसु। अनु। द्रुह्युम्। नि। वृणक्। वज्रऽबाहुः। वृणानाः। अत्र। सख्याय। सख्यम्। त्वाऽयन्तः। ये। अमदन्। अनु। त्वा॥१२॥**

**पदार्थः**-**(अध)** अथ **(श्रुतम्)** **(कवषम्)** उपदेशकम् **(वृद्धम्)** वयोविद्याभ्यामधिकम् **(अप्सु)** जलेषु **(अनु)** **(द्रुह्युम्)** यो द्रोग्धि तम् **(नि)** **(वृणक्)** वृणक्ति **(वज्रबाहुः)** शस्त्रपाणिः **(वृणानाः)** स्वीकुर्वाणाः **(अत्र)** **(सख्याय)** मित्रत्वाय **(सख्यम्)** मित्रभावम् **(त्वायन्तः)** त्वां कामयमानाः **(ये)** **(अमदन्)** मदन्ति हर्षन्ति **(अनु)** **(त्वा)** त्वाम्॥१२॥

**अन्वयः**-हे राजन्! येऽत्र सख्याय सख्यं वृणानास्त्वायन्तो धार्मिका विद्वांसस्त्वान्वमदनध तैः यच्छ्रुतं तेषां मध्ये कवषं वृद्धं द्रुह्युं यो वज्रबाहुः नि वृणक् अप्स्वनुवृणक् तांस्तं च सर्वे सत्कुर्वन्तु॥१२॥



www.9009.co.in

**भावार्थ:**-हे राजन्! ये तयानुकूला वर्तन्ते येषां चानुकूलो भवान् वर्तते ते सर्वे सखायो भूत्वा न्यायेन पुत्रवत् प्रजास्सम्पाल्यानन्दं भुञ्जीरन्॥१२॥

**पदार्थ:**-हे राजन्! **(ये)** जो **(अत्र)** यहाँ **(सख्याय)** मित्रता के लिये **(सख्यम्)** मित्रपन को **(वृणाना:)** स्वीकार करते और **(त्वायन्त:)** तुम्हारी चाह करते हुए धार्मिक विद्वान् पुरुष **(त्वा)** तुमको **(अनु, अमदन्)** आनन्दित करते हैं **(अध)** इसके अनन्तर उनसे जिस कारण **(श्रुतम्)** सुना इस कारण उनमें से **(कवषम्)** उपदेश करने वाले **(वृद्धम्)** अवस्था और विद्या से अधिक को और **(द्रुह्युम्)** दुष्टों से द्रोह करने वाले को जो **(वज्रबाहु:)** शास्त्रों को हाथों में रखने वाला **(निवृणक्)** निरन्तर विवेक से स्वीकार करता और **(अप्सु)** जलों में **(अनु)** अनुकूलता से स्वीकार करता है, उन सबको वा उसको सब सत्कार करें॥१२॥

**भावार्थ:**-हे राजा! जो आपके अनुकूल वर्त्तमान हैं, जिनके अनुकूल आप हैं, वे सब मित्र मित्र होकर न्याय से पुत्र के समान पालन कर आनन्द भोगें॥१२॥

**पुनस्ते राजादय: कीदृशं बलं कुर्युरित्याह॥**

फिर वे राजा आदि कैसा बल करें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**वि सद्यो विश्वा दृंहितान्येषामिन्द्र: पुर: सहसा सप्त दर्द:।**

**व्यानवस्य तृत्सवे गयं भाग्जेष्म पूरुं विदथे मृध्रवाचम्॥१३॥**

**वि। सद्य:। विश्वा। दृंहितानि। एषाम्। इन्द्र:। पुर:। सहसा। सप्त। दुर्दुरिति दर्द:। वि। आनवस्य। तृत्सवे। गयम्। भाक्। जेष्म। पूरुम्। विदथे। मृध्रऽवाचम्॥१३॥**

**पदार्थ:**-**(वि)** विशेषेण **(सद्य:)** शीघ्रम् **(विश्वा)** सर्वाणि **(दृंहितानि)** वृद्धानि सैन्यानि **(एषाम्)** शत्रूणाम् **(इन्द्र:)** परमैश्वर्यवान् **(पुर:)** शत्रूणां पुराणि **(सहसा)** बलेन **(सप्त)** एतत्संख्याकान् **(दर्द:)** विदृणाति **(वि)** **(आनवस्य)** समन्तान्नवीनस्य **(तृत्सवे)** हिंसकाय **(गयम्)** प्रजाम् गृहं वा **(भाक्)** भजति **(जेष्म)** जयेम **(पूरुम्)** पूरणप्रज्ञं [=पूर्णप्रज्ञं] मनुष्यम् **(विदथे)** सङ्ग्रामे **(मृध्रवाचम्)** मृध्रा हिंसिका वाक् यस्य तम्॥१३॥

**अन्वय:**-यथेन्द्रो राजा सहसैषां सप्त पुरो वि दर्द आनवस्य गयं वि भाक् पूरुं विदथे मृध्रवाचं च तृत्सवे वर्तमानं वयं जेष्म यतोऽस्माकं सद्यो विश्वा दृंहितानि स्यु:॥१३॥

**भावार्थ:**-ये धार्मिकास्सप्रधाना वा राजकार्यशूरवीरा: स्वेभ्य: सप्तगुणानधिकानपि दुष्टान् शत्रूञ्जेतुं शक्नुवन्ति ते प्रजा: पालयितुमर्हन्ति॥१३॥

**पदार्थ:**-जैसे **(इन्द्र:)** परमैश्वर्य्यवान् राजा **(सहसा)** बल से **(एषाम्)** इन शत्रुओं के **(सप्त)** सातों **(पुर:)** पुरों को **(वि, दर्द:)** विशेषता से छिन्न-भिन्न करता वा **(आनवस्य)** सब ओर से नवीन के **(गयम्)** प्रजा वा घर को **(वि, भाक्)** विशेषता से सेवता है तथा **(पूरुम्)** पूरण बुद्धि वाले मनुष्य



www.9009.co.in

को और **(विदथे)** संग्राम में **(मृध्रवाचम्)** हिंसा करने वाली जिसकी वाणी और **(तृत्सवे)** दूसरे हिंसक के लिये सम्मुख विद्यमान है उसको हम लोग **(जेष्म)** जीतें जिससे हमारी **(सद्यः, विश्वा, दृंहितानि)** समस्त सेना के जन शीघ्र वृद्धि उन्नति को प्राप्त हों॥१३॥

**भावार्थः**-जो धार्मिक अपने प्रधानों से सहित वा राज्यकार्य्यों में शूरवीर पुरुष अपने से सतगुने अधिक भी दुष्ट शत्रुओं को जीत सकते हैं, वे प्रजा पालने को योग्य होते हैं॥१३॥

**राजादिमनुष्यैः कियद्बलं वर्धयितव्यमित्याह॥**

राजादि मनुष्यों से कितना बल बढ़वाना चाहिये, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**नि गव्यवोऽनवो द्रुह्यवश्च षष्टिः शता सुषुपुः षट् सहस्रा।**

**षष्टिर्वीरासो अधि षट् दुवोयु विश्वेदिन्द्रस्य वीर्या कृतानि॥१४॥**

**नि। गव्यवः। अनवः। द्रुह्यवः। च। षष्टिः। शता। सुसुपुः। षट्। सहस्रा। षष्टिः। वीरासः। अधि। षट्। दुवोयु। विश्वा। इत्। इन्द्रस्य। वीर्या। कृतानि॥१४॥**

**पदार्थः**-**(नि)** नितराम् **(गव्यवः)** आत्मनो गां भूमिमिच्छवः **(अनवः)** मनुष्याः। **अनव इति मनुष्यनाम।** (निघं०२.३) **(द्रुह्यवः)** ये दुष्टानधार्मिकान् द्रुह्यन्ति जिघांसन्ति **(षष्टिः)** **(शता)** शतानि **(सुषुपुः)** स्वपेयुः **(षट्)** **(सहस्रा)** सहस्राणि **(षष्टिः)** एतत्संख्याकाः **(वीरासः)** शरीरात्मबलशौर्योपेताः **(अधि)** **(षट्)** **(दुवोयु)** यो दुवः परिचरणं कामयते तस्मै **(विश्वा)** सर्वाणि **(इत्)** एव **(इन्द्रस्य)** परमैश्वर्ययुक्तस्य राज्ञः **(वीर्या)** वीर्याणि **(कृतानि)** निष्पादितानि॥१४॥

**अन्वयः**-यैरिन्द्रस्य विश्वेद् वीर्या कृतानि ते गव्यवो द्रुह्यवोऽनवो षष्टिर्वीरासः षट्सहस्रा शत्रूनधि विजयन्ते ते च षट्षष्टिः शता शत्रवः दुवोयु नि सुषुपुः॥१४॥

**भावार्थः**-यत्र राजा प्रजासेनयोः प्रजासेने च विद्युदिव पूरणबलां पराक्रमयुक्तां सेनां वर्द्धयन्ति तत्र षष्टिरपि योद्धारो षट् सहस्राण्यपि शत्रून् विजेतुं शक्नुवन्ति॥१४॥

**पदार्थः**-जिन्होंने **(इन्द्रस्य)** परमैश्वर्ययुक्त राजा के **(विश्वा)** समस्त **(इत्)** ही **(वीर्या)** पराक्रम **(कृतानि)** उत्पन्न किये वे **(गव्यवः)** अपने को भूमि चाहते **(द्रुह्यवः)** और दुष्ट अधर्मी जनों को मारने की इच्छा करते हुए **(अनवः, षष्टिः, वीरासः)** साठ वीर अर्थात् शरीर और आत्मा के बल और शूरता से युक्त मनुष्य **(षट् सहस्रा)** छः सहस्र शत्रुओं को **(अधि)** अधिकता से जीतते हैं वे **(च)** भी **(षट्, षष्टिः, शता)** छासठ सैंकड़े शत्रु **(दुवोयु)** जो सेवन की कामना करता है, उसके लिये **(नि, सुषुपुः)** निरन्तर सोते हैं॥१४॥

**भावार्थः**-जहाँ राजा और प्रजा सेनाओं में प्रजा और सेना बिजुली के समान पूरण बल और पराक्रम युक्त सेना को बढ़वाते हैं वहाँ साठ योद्धा छः हजार शत्रुओं को भी जीत सकते हैं॥१४॥

**केन सह के किं कुर्युरित्याह॥**



www.9009.co.in

किस के साथ कौन क्या करें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**इन्द्रे॑णै॒ते तृत्स॑वो॒ वेवि॑षाणा॒ आपो॒ न सृ॒ष्टा अ॑धवन्त॒ नीचीः॑।**

**दु॒र्मि॒त्रासः॑ प्रकल॒विन्मिमा॑ना ज॒हुर्विश्वा॑नि॒ भोज॑ना सु॒दासे॑॥ १५॥ २६॥**

**इन्द्रे॑ण। ए॒ते। तृत्स॑वः। वेवि॑षाणाः। आपः॑। न। सृ॒ष्टाः। अ॒ध॒व॒न्त॒। नीचीः॑। दुः॒ऽमि॒त्रासः॑। प्र॒क॒ल॒ऽवित्। मिमा॑नाः। ज॒हुः। विश्वा॑नि। भोज॑ना। सु॒ऽदासे॑॥ १५॥**

**पदार्थः**-(**इन्द्रेण**) परमैश्वर्येण युक्तेन राज्ञा सह (**एते**) पूर्वोक्ता वीराः (**तृत्सवः**) शत्रूणां हिंसकाः (**वेविषाणाः**) शत्रुबलानि व्याप्नुवन्तः (**आपः**) जलानि (**न**) इव (**सृष्टाः**) शत्रूणामुपरि नियताः कृताः (**अधवन्त**) धुन्वन्ति (**नीचीः**) अधोगताः (**दुर्मित्रासः**) दुष्टा मित्राः सखायो येषां ते (**प्रकलवित्**) यः प्रकृष्टं कलनं संख्यां वेत्ति सः (**मिमानाः**) उत्पादयन्तः (**जहुः**) जहति (**विश्वानि**) सर्वाणि (**भोजना**) भोजनानि पालनानि भोक्तव्यानि वा (**सुदासे**) सुष्ठु दातरि॥ १५॥

**अन्वयः**-य एत इन्द्रेण सहितास्तृत्सवो वेविषाणा आपो न सृष्टा विश्वानि भोजना मिमानास्सन्तो ये दुर्मित्रासः स्युस्तेषां याः सेनाः ता नीचीरधवन्त तेषामुपरि शस्त्रास्त्राणि जहुर्यश्चेन्द्रः सुदासे प्रकलविदस्ति ते सर्वे विजयभाजो भवन्ति॥ १५॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालुप्तोपमालङ्कारः। येषां समुद्रतरङ्गा इव उत्सहिता बलिष्ठाः सेनाः स्युस्ते शत्रुसेनास्सद्योऽधो निपात्य जेतुं शक्नुवन्ति॥ १५॥

**पदार्थः**-जो (**एते**) ये (**इन्द्रेण**) परमैश्वर्ययुक्त राजा के साथ (**तृत्सवः**) शत्रुओं को मारने वाले (**वेविषाणाः**) शत्रुओं के बलों को व्याप्त होते हुए (**आपः**) जलों के (**न**) समान (**सृष्टाः**) शत्रुओं पर नियम से रक्खे और (**विश्वानि**) समस्त (**भोजना**) भोजनों को (**मिमानाः**) उत्पन्न करते हुए जो (**दुर्मित्रासः**) दुष्ट मित्रों वाले हों उनकी जो सेना हैं वे (**नीचीः**) नीचे जाती और (**अधवन्त**) कम्पती हैं उन पर जो शस्त्र अस्त्रों को (**जहुः**) छोड़ते हैं और जो परमैश्वर्ययुक्त राजा (**सुदासे**) श्रेष्ठ देने वाले के निमित्त (**प्रकलवित्**) अच्छे प्रकार संख्या का जानने वाला है, वे सब विजयभागी होते हैं॥ १५॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जिनकी समुद्र की तरङ्गों के समान, उत्साहयुक्त, बलिष्ठ सेना हों, वे शत्रुओं की सेनाओं को नीचे गिरा शीघ्र उन्हें जीत सकते हैं॥ १५॥

**पुनस्स राजा किं कुर्यादित्याह॥**

फिर वह राजा क्या करे, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अ॒र्धं वी॒रस्य॑ शृत॒पाम॑नि॒न्द्रं परा॒ शर्ध॑न्तं नुनुदे अ॒भि क्षा॒म्।**

**इन्द्रो॑ म॒न्युं म॑न्यु॒म्यो॑ मिमाय भे॒जे प॒थो व॒र्त॒निं पत्य॑मानः॥ १६॥**

**अ॒र्धम्। वी॒रस्य॑। शृ॒त॒ऽपाम्। अ॒नि॒न्द्रम्। परा॑। शर्ध॑न्तम्। नु॒नु॒दे॒। अ॒भि। क्षाम्। इन्द्रः॑। म॒न्युम्। म॒न्यु॒ऽम्यः॑। मि॒मा॒य॒। भे॒जे। प॒थः। व॒र्त॒निम्। पत्य॑मानः॥ १६॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**अर्द्धम्**) वर्द्धकम् (**वीरस्य**) व्याप्तशुभगुणस्य (**शृतपाम्**) यः शृते परिपक्वं पयसं पिबति तम् (**अनिन्द्रम्**) अनैश्वर्यम् (**परा**) दूरे (**शर्धन्तम्**) बलयन्तम् (**नुनुदे**) नुदति (**अभि**) आभिमुख्ये (**क्षाम्**) भूमिम्। **क्षेति भूमिनाम।** (निघं०१.१) (**इन्द्रः**) ऐश्वर्ययुक्तः शत्रूणां विदारकः (**मन्युम्**) क्रोधम् (**मन्युम्यः**) यो मन्युं मिनोति सः (**मिमाय**) मिमीते (**भेजे**) भजति (**पथः**) मार्गान् (**वर्तनिम्**) वर्तन्ते यस्मिंस्तं न्यायमार्गम् (**पत्यमानः**) पतिरिवाचरन्॥१६॥

**अन्वयः**-यः क्षां पत्यमान इन्द्रो वीरस्य शृतपामर्धं शर्धन्तं सेनेशं प्राप्यानिन्द्रम्परा णुनुदे यो मन्युम्यः शत्रूणामुपरि मन्युमभिमिमाय पथो वर्तनिं च भेजे स एव राजवरो राजराजेश्वरो भवति॥१६॥

**भावार्थः**-यो राजा वीराणां बलवृद्धिं कृत्वा दुष्टानामुपरि क्रोधकृद् धार्मिकाणामुपर्यानन्ददृष्टिः न्याय्यं पन्थानमनु वर्त्तमानः सन्नैश्वर्यं जनयति स एव सर्वदा वर्धते॥१६॥

**पदार्थः**-जो (**क्षाम्**) भूमि को (**पत्यमानः**) पति के समान आचरण करता हुआ (**इन्द्रः**) ऐश्वर्ययुक्त शत्रुओं को विदीर्ण करने वाला (**वीरस्य**) शुभ गुणों में व्याप्त राजा (**शृतपाम्**) पके हुए दूध को पीने वा (**अर्द्धम्**) वर्धने वा (**शर्धन्तम्**) बल करने वाले सेनापति को पाकर (**अनिन्द्रम्**) अनैश्वर्य को (**परा णुनुदे**) दूर करता है वा जो (**मन्युम्यः**) क्रोध को नष्ट करने वाला शत्रुओं पर (**मन्युम्**) क्रोध को (**अभि**) सम्मुख से (**मिमाय**) मानता (**पथः**) वा मार्गों को और (**वर्त्तनिम्**) जिसमें वर्त्तमान होते हैं उस न्याय-मार्ग को (**भेजे**) सेवता है, वही राजजनों में श्रेष्ठ और राजराजेश्वर होता है॥१६॥

**भावार्थः**-जो राजा वीर जनों की बल वृद्धि करके दुष्टों पर क्रोध करता और धार्मिकों पर आनन्ददृष्टि हो तथा न्याययुक्त मार्ग का अनुगामी होता हुआ ऐश्वर्य को पैदा करता है, वही सर्वदा वृद्धि को प्राप्त होता है॥१६॥

**के शत्रून् विजेतुमर्हन्तीत्याह॥**

कौन शत्रुओं के जीतने में योग्य होते हैं, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**आध्रेण चित्तद्वेकं चकार सिंह्यं चित्पेत्वेना जघान।**

**अव स्रक्तीर्वेश्यावृश्चदिन्द्रः प्रायच्छद्विश्वा भोजना सुदासे॥१७॥**

**आध्रेण। चित्। तत्। ऊँ इति। एकम्। चकार। सिंह्यम्। चित्। पेत्वेन। जघान। अव। स्रक्तीः। वेश्या। अवृश्चत्। इन्द्रः। प्र। अयच्छत्। विश्वा। भोजना। सुऽदासे॥१७॥**

**पदार्थः**-(**आध्रेण**) समन्तात् घृतेन (**चित्**) अपि (**तत्**) (**उ**) वितर्के (**एकम्**) (**चकार**) करोति (**सिंह्यम्**) सिंहेषु भवं बलमिव (**चित्**) इव [एव] (**पेत्वेन**) प्रापणेन। अत्र **संहितायामिति** दीर्घः। (**जघान**) हन्ति (**अव**) (**स्रक्तीः**) सृज्यमानाः सेनाः (**वेश्या**) वेशी प्रवेशयित्री सूची तथा (**अवृश्चत्**) वृश्चति छिनत्ति (**इन्द्रः**) दुष्टदलविदारकः (**प्र**) (**अयच्छत्**) प्रयच्छति ददाति (**विश्वा**) सर्वाणि (**भोजना**) भोजनानि अन्नादीनि (**सुदासे**) सुष्ठु दातरि सति॥१७॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-य इन्द्रो स्रक्तीर्वेश्यावृश्चत् आध्रेण चित्तदेकमु चकार सिह्यं चित्पेत्वेनाव जघान विश्वा भोजना प्रायच्छत्तस्मिन् सुदासे सति वीरा कथं न शत्रून् विजयेरन्॥१७॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। ये वीराः सिंहवत् पराक्रम्य शत्रून् घ्नन्त्यखण्डितमेकं राज्यं भूगोले कर्तुं प्रयतन्ते ते समग्रं बलं विधाय वीरान् सत्कृत्य धीमद्भिः राज्यं शासितुं प्रवर्तेरन्॥१७॥

**पदार्थः**-जो **(इन्द्रः)** दुष्टों के समूह को विदारने वाला **(स्रक्तीः)** रची हुई सेनाओं को **(वेश्या)** सूचना से **(अवृश्चत्)** छिन्न-भिन्न करता **(आध्रेण)** सब ओर से धारण किये विषय से **(चित्)** ही **(तत्)** उस **(एकम्, उ)** एक को **(चकार)** सिद्ध करता **(सिंह्यम्)** सिंहों में उत्पन्न हुए बल के समान **(चित्)** ही **(पेत्वेन)** पहुँचाने से **(अव, जघान)** शत्रुओं को मारता और **(विश्वा)** समस्त **(भोजना)** अन्नादि पदार्थों को **(प्र, अयच्छत्)** देता है उस **(सुदासे)** अच्छे देने वाले के होते वीरजन कैसे नहीं शत्रुओं को जीतें॥१७॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जो वीर सिंह के समान पराक्रम पर शत्रुओं को मारते हैं और भूगोल में एक अखण्डित राज्य करने को अच्छा यत्न करते हैं, वे समग्र बल को विधान कर और वीरों को सत्कार कर बुद्धिमानों से राज्य की शिक्षा दिलाने को प्रवृत्त हों॥१७॥

**मनुष्यैस्सदा शत्रुभावप्रयुक्ता वारणीया इत्याह॥**

मनुष्यों को सदा शत्रुपन से युक्त निवारने योग्य हैं, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**शश्वन्तो हि शत्रवो रारधुष्टे भेदस्य चिच्छर्धतो विन्द रन्धिम्।**

**मर्ताँ एनः स्तुवतो यः कृणोति तिग्मं तस्मिन्नि जहि वज्रमिन्द्र॥१८॥**

**शश्वन्तः। हि। शत्रवः। ररधुः। ते। भेदस्य। चित्। शर्धतः। विन्द। रन्धिम्। मर्तान्। एनः। स्तुवतः। यः। कृणोति। तिग्मम्। तस्मिन्। नि। जहि। वज्रम्। इन्द्र॥१८॥**

**पदार्थः**-**(शश्वन्तः)** निरन्तरः **(हि)** यतः **(शत्रवः)** **(रारधुः)** हिंसन्ति **(ते)** **(भेदस्य)** विदारणस्य द्वैधीभावस्य **(चित्)** अपि **(शर्धतः)** बलवतः **(विन्द)** लभेरन् **(रन्धिम्)** वशीकरम् **(मर्त्तान्)** मनुष्यान् **(एनः)** प्रापकः **(स्तुवतः)** स्तावकान् **(यः)** **(कृणोति)** **(तिग्मम्)** तीव्रगुणकर्मस्वभावम् **(तस्मिन्)** सङ्ग्रामे **(नि)** **(जहि)** त्यज **(वज्रम्)** शस्त्रास्त्रम् **(इन्द्र)** शत्रुविदारक॥१८॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! ये हि शश्वन्तः शत्रवस्ते स्तुवतो मर्त्तान् रारधुः ये भेदस्य शर्धतो रन्धिञ्चिद्विन्द य एनः हिंसां कृणोति तस्मिन् तेषु च तिग्मं वज्रं नि जहि निपातय॥१८॥

**भावार्थः**-हे राजादयो धार्मिका जना! ये सर्वदा शत्रुभावयुक्ता धार्मिकान् हिंसन्तस्सन्ति तान् सद्यो घ्नत येन सर्वत्र सर्वेषामभयसुखे वर्द्धेयाताम्॥१८॥

**पदार्थः**-हे **(इन्द्र)** शत्रुओं को विदीर्ण करने वाले! जो **(हि)** निश्चय से **(शश्वन्तः)** निरन्तर **(शत्रवः)** शत्रुजन हैं **(ते)** वे **(स्तुवतः)** स्तुति करते हुए **(मर्तान्)** मनुष्यों को **(रारधुः)** मारते हैं जो



www.9009.co.in

**(भेदस्य, शर्धतः)** बलवान् भेद के **(रन्धिम्)** वश करने को **(चित्)** हीं **(विन्द)** प्राप्त हों **(यः)** जो **(एनः)** पहुँचाने वाला हिंसा **(कृणोति)** करता है **(तस्मिन्)** उसके और उन पिछलों के निमित्त भी **(तिग्मम्)** तीव्र गुण-कर्म-स्वभाव वाले **(वज्रम्)** शस्त्र और अस्त्र को **(नि, जहि)** निरन्तर छोड़ो॥१८॥

**भावार्थः**-हे राजन् आदि धार्मिक जनो! जो सर्वदा शत्रुभावयुक्त और धार्मिक जनों को नष्ट करते हुए विद्यमान हैं, उनको शीघ्र मारो, जिससे सब जगह सबके अभय और सुख बढ़ें॥१८॥

**ये मनुष्याः परस्परेषां रक्षणं विधाय न्यायेन राज्यं पालयन्ति त एव शिरोवदुत्तमा भवन्ति।**

जो मनुष्य परस्पर की रक्षा कर न्याय से राज्य को पालते हैं, वे ही शिर के समान उत्तम होते हैं॥

**आवदिन्द्रं यमुना तृत्सवश्च प्रात्र भेदं सर्वताता मुषायत्।**

**अजासश्च शिग्रवो यक्षवश्च बलिं शीर्षाणि जभ्रुरश्व्यानि॥१९॥**

**आवत्। इन्द्रम्। यमुना। तृत्सवः। च। प्र। अत्र। भेदम्। सर्वऽताता। मुषायत्। अजासः। च। शिग्रवः। यक्षवः। च। बलिम्। शीर्षाणि। जभ्रुः। अश्व्यानि॥१९॥**

**पदार्थः**-**(आवत्)** रक्षेत् **(इन्द्रम्)** परमैश्वर्यवन्तम् **(यमुना)** नियन्तारः **(तृत्सवः)** हिंस्राः **(च)** **(प्र)** **(अत्र)** अस्मिन् **(भेदम्)** विदारणं भेदभावं वा **(सर्वताता)** राजपालनाख्ये यज्ञे **(मुषायत्)** मुष्णाति **(अजासः)** शस्त्रास्त्रप्रक्षेपकाः **(च)** **(शिग्रवः)** अव्यक्तशब्दकर्तारः। अत्र शिजिधातोरौणादिको रुक् प्रत्ययः। **(यक्षवः)** सङ्गन्तारः **(च)** **(बलिम्)** भोग्यं पदार्थम् **(शीर्षाणि)** शिरांसि **(जभ्रुः)** बिभ्रति **(अश्व्यानि)** अश्वानां महतामिमानि॥१९॥

**अन्वयः**-ये अजासः शिग्रवः यक्षवश्च यमुना तृत्सवश्चात्र सर्वताता बलिमश्व्यानि शीर्षाणि जभ्रुः यश्च भेदं प्रमुषायदिन्द्रमावत् ते सर्वे वारस्सन्ति॥१९॥

**भावार्थः**-ये राजादयः सार्वजनिकाभयदक्षिणे राज्यपालनाख्ये यज्ञे भेदबुद्धिं विहाय महतां धार्मिकाणामुत्तमान्यैकमत्यादीनि कर्माणि स्वीकृत्य शत्रूणां विजयाय प्रवर्त्तन्ते त एव परमैश्वर्यं प्राप्नुवन्ति॥१९॥

**पदार्थः**-जो **(अजासः)** शस्त्र और अस्त्रों के छोड़ने **(शिग्रवः)** सांकेतिक बोली बोलने **(यक्षवश्च)** और संग करने वा **(यमुना)** नियम करने **(तृत्सवश्च)** और मारने वाले जन **(अत्र)** इस **(सर्वताता)** राज्यपालनरूपी यज्ञ में **(बलिम्)** भोगने योग्य पदार्थ को और **(अश्व्यानि)** बड़ों के इन **(शीर्षाणि)** शिरों को **(जभ्रुः)** धारण करते हैं **(च)** और जो **(भेदम्)** विदीर्ण करने वा एक एक से तोड़-फोड़ करने को **(प्र, मुषायत्)** चुराता छिपाता है वा जो **(इन्द्रम्)** परमैश्वर्य्यवान् की **(आवत्)** रक्षा करे, वे सब श्रेष्ठ हैं॥१९॥

**भावार्थः**-जो राजा आदि जन, सब मनुष्यों को अभयरूपी दक्षिणा जिस के बीच विद्यमान है ऐसे राज्यपालनरूपी यज्ञ में भेद बुदि को छोड़, महान् धार्मिक उत्तम जनों के एकमति आदि उत्तम कामों को स्वीकार कर शत्रुओं के जीतने को प्रवृत्त होते हैं, वे ही परमैश्वर्य को प्राप्त होते हैं॥१९॥

**पुनः स राजा किं कुर्य्यादित्याह॥**

फिर वह राजा क्या करे, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**न त इन्द्र सुमतयो न रायः संचक्षे पूर्वा उषसो न नूत्नाः।**

**देवकं चिन्मान्यमानं जघन्थाव त्मना बृहतः शम्बरं भेत्॥२०॥२७॥**

**न। ते। इन्द्र। सुऽमतयः। न। रायः। सम्ऽचक्षे। पूर्वाः। उषसः। न। नूत्नाः। देवकम्। चित्। मान्यमानम्। जघन्थ। अव। त्मना। बृहतः। शम्बरम्। भेत्॥२०॥**

**पदार्थः**-(**न**) निषेधे (**ते**) तव (**इन्द्र**) सुखप्रद राजन् (**सुमतयः**) शोभनाः प्रज्ञा येषु ते (**न**) इव (**रायः**) धनानि (**संचक्षे**) सम्यक् प्रख्यातुम् (**पूर्वाः**) (**उषसः**) (**न**) इव (**नूत्नाः**) नवीनाः (**देवकम्**) देवमिव वर्त्तमानम् (**चित्**) इव (**मान्यमानम्**) मान्यानां मानं सत्कारो यस्मात् तम् (**जघन्थ**) हंसि (**अव**) विरोधे (**त्मना**) आत्मना (**बृहतः**) (**शम्बरम्**) मेघम् (**भेत्**) बिभेत्ति॥२०॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! ते पूर्वा नूत्ना उषसो न सुमतयो न रायः संचक्षे कोऽपि न जघन्थ कोऽपि न हन्ति यथा सूर्यो बृहतः शम्बरं भेत्तथा यं त्मना त्वमव जघन्थ चिदिव मान्यमानं देवकं सत्कुर्यास्तदा प्रजाः सर्वतो वर्धेरन्॥२०॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। हे राजन्! यथा पूर्वा नूतना भविष्यन्त्यश्च प्रभातवेलाः सर्वथा मङ्गलकारिण्यः सन्ति तथा यदि न्यायोपार्जितेन धार्मिकान् प्राज्ञान् सत्कृत्यैते राजकार्याणि साधयेस्तत्र मेघं सूर्य इव दुष्टान् हत्वा श्रेष्ठान् प्रसन्नान् रक्षेस्तर्हि तव सर्वतो वृद्धिः स्यात्॥२०॥

**पदार्थः**-हे (**इन्द्र**) सुख देने वाले (**ते**) आपके (**पूर्वाः**) पहिली और (**नूत्नाः**) नवीन (**उषसः**) उषा वेलाओं के (**न**) समान वा (**सुमतयः**) उत्तम बुद्धिमानों के (**न**) समान (**रायः**) धनों को (**संचक्षे**) अच्छे प्रकार कहने को कोई भी (**न**) नहीं (**जघन्थ**) मारता है वा जैसे सूर्य (**बृहतः**) बड़े से बड़े (**शम्बरम्**) मेघदल को (**भेत्**) विदीर्ण करता, वैसे जिसे (**त्मना**) अपने से आप (**अव**) नष्ट करते हैं (**चित्**) उसके समान (**मान्यमानम्**) मान्यों का सत्कार जिसमें है उस (**देवकम्**) देव समान वर्त्तमान का सत्कार करें तो प्रजा सब ओर से बढ़े॥२०॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे राजन्! जैसे पिछली और नई होने वाली प्रभात वेला सर्वथा मंगल करने वाली हैं, वैसे यदि न्याय से इकट्ठे किये हुए धन से धार्मिक और उत्तम बुद्धि वाले जनों का सत्कार कर उन उक्त मनुष्यों की रक्षा कर इनसे राज्य के कार्य्यों को साधिये और वहाँ मेघ को सूर्य के समान दुष्टों को मार श्रेष्ठों को प्रसन्न रखिये तो आपकी सब ओर से वृद्धि हो॥२०॥

**पुना राजसहायेन प्रजाः कि कुर्य्युरित्याह॥**



www.9009.co.in

फि राजा के सहाय से प्रजाजन क्या करें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**प्र ये गृहादममदुस्त्वाया पराशरः शतयातुर्वसिष्ठः।**

**न ते भोजस्य सख्यं मृषन्ताधा सूरिभ्यः सुदिना व्युच्छान्॥२१॥**

**प्र। ये। गृहात्। अममदुः। त्वाऽया। पराऽशरः। शतऽयातुः। वसिष्ठः। न। ते। भोजस्य। सख्यम्। मृषन्त। अध। सूरिऽभ्यः। सुऽदिना। वि। उच्छान्॥२१॥**

**पदार्थः**-(**प्र**) (**ये**) (**गृहात्**) (**अममदुः**) हर्षन्ति (**त्वाया**) तव नीत्या (**पराशरः**) दुष्टानां हिंसकः (**शतयातुः**) यः शतैः सह याति (**वसिष्ठः**) अतिशयेन वसुः (**न**) निषेधे (**ते**) (**भोजस्य**) पालनस्य भोजनस्य वा (**सख्यम्**) मित्रत्वम् (**मृषन्त**) सहन्ते (**अध**) आनन्तर्ये। अत्र **निपातस्य चे**ति दीर्घः। (**सूरिभ्यः**) विद्वद्भ्यः (**सुदिना**) सुखयुक्तानि दिनानि (**वि**) (**उच्छान्**) निवसेयुः॥२१॥

**अन्वयः**-हे राजन्! ये त्वाया गृहादममदुः शतयातुर्वसिष्ठः पराशर आनन्देत्ते भोजस्य सख्यं न प्र मृषन्ताऽध ये सूरिभ्यः सुदिना व्युच्छाँस्ते त्वया सत्कर्त्तव्याः सन्ति॥२१॥

**भावार्थः**-यस्य विद्याविनयसुशीलताभिः सर्वे गृहस्थादयो मनुष्या आनन्देयुर्ये चान्योत्कर्षं दृष्ट्वा परितपन्ति ये हि विद्वद्भ्यः सदा सुशिक्षां गृह्णन्ति ते सर्वाणि सुखानि प्राप्नुवन्ति॥२१॥

**पदार्थः**-हे राजन् (**ये**) जो (**त्वाया**) तुम्हारी नीति के साथ (**गृहात्**) घर से (**अममदुः**) आनन्दित होते हैं वा (**शतयातुः**) जो सैकड़ों के साथ जाता है जो (**वसिष्ठः**) अतीव वसने वाला और जो (**पराशरः**) दुष्टों का हिंसक आनन्दित होता है (**ते**) वे (**भोजस्य**) भोगने और पालन करने की (**सख्यम्**) मित्रता को (**न**) नहीं (**प्र, मृषन्त**) सहते हैं (**अध**) इसके अनन्तर जो (**सूरिभ्यः**) विद्वानों से (**सुदिना**) सुखयुक्त दिनों में (**व्युच्छान्**) निरन्तर वसें, वे तुमको सदा सत्कार करने योग्य हैं॥२१॥

**भावार्थः**-जिसकी विद्या, विनय और सुशीलता से सब गृहस्थ आदि मनुष्य आनन्दित हों और जो औरों का उत्कर्ष देखकर पीड़ित होते हैं और जो विद्वानों से सर्वदैव सुन्दर शिक्षा लेते हैं, वे सब सुख पाते हैं॥२१॥

**पुनस्स राजा किंवत्किं कुर्य्यादित्याह॥**

फिर वह राजा किसके तुल्य क्या करे, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**द्वे नप्तुर्देववतः शते गोर्द्वा रथा वधूमन्ता सुदासः।**

**अर्हन्नग्ने पैजवनस्य दानं होतेव सद्म पर्येमि रेभन्॥२२॥**

**द्वे इति। नप्तुः। देवऽवतः। शते इति। गोः। द्वा। रथा। वधूऽमन्ता। सुऽदासः। अर्हन्। अग्ने। पैजऽवनस्य। दानम्। होताऽइव। सद्म। परि। एमि। रेभन्॥२२॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**द्वे**) (**नप्तुः**) पौत्रस्य (**देववतः**) प्रशस्तगुणविद्वद्युक्तस्य (**शते**) (**गोः**) धेनोर्भूमेर्वा (**द्वा**) द्वौ (**रथा**) जलस्थलान्तरिक्षेषु गमयितारौ (**वधूमन्ता**) प्रशस्ते वध्वौ विद्येते ययोस्तौ (**सुदासः**) उत्तमदानः (**अर्हन्**) सत्कुर्वन् (**अग्ने**) विद्वन् (**पैजवनस्य**) वेगयुक्तस्य (**दानम्**) यद्दीयते तत् (**होतेव**) दातेव (**सद्म**) स्थानम् (**परि**) सर्वतः (**एमि**) प्राप्नोमि (**रेभन्**) स्तुवन्ति॥२२॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! यथार्हन् सुदासोऽहं दानं होतेव सद्म पैजवनस्य नप्तुः सद्म पर्येमि देववतोगोर्द्वे शते वधूमन्ता द्वा रथा पर्येमि यथा विद्वांसो रेभँस्तान् पर्य्येमि तथा त्वं भव॥२२॥

**भावार्थः**-अत्रोपमावाचकलुप्तोपमालङ्कारौ। हे मनुष्या! यथा दातार उत्तमानि दानानि ददति पौत्रपर्यन्तं धनदान्यपश्वादीन् समर्धयन्ति तथा सर्वैर्वर्तितव्यम्॥२२॥

**पदार्थः**-हे (**अग्ने**) विद्वन्! जैसे (**अर्हन्**) सत्कार करता हुआ (**सुदासः**) उत्तम दानशील मैं (**दानम्**) दान (**होतेव**) देने वाले के समान (**सद्म**) घर को वा (**पैजनवस्य**) वेगवान् (**नप्तुः**) पौत्र के स्थान को (**पर्येमि**) सब ओर से जाता हूँ और (**देववतः**) प्रशंसित गुण वाले विद्वानों से युक्त की (**गोः**) धेनु वा भूमिसम्बन्धी (**द्वे**) दो (**शते**) सौ (**वधूमन्ता**) प्रशंसायुक्त वधू वाले (**द्वा**) दो (**रथा**) जल-स्थल में जाने वाले रथों को सब ओर से प्राप्त होता हूँ वा जैसे विद्वान् जन (**रेभन्**) स्तुति करते हैं, उनको सब ओर से जाता हूँ, वैसे आप हूजिये॥२२॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमा और वाचकलुप्तोपमालङ्कार हैं। हे मनुष्यो जैसे देने वाले उत्तम दान देते और पौत्रपर्य्यन्त धनधान्य और पशु आदि की समृद्धि करते हैं, वैसे सब को वर्त्तना चाहिये॥२२॥

**पुनस्ते राजादयः किमनुतिष्ठेयुरित्याह॥**

फिर वे राजा आदि क्या अनुष्ठान करें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**चत्वारो॑ मा पैजव॒नस्य॒ दाना॒: स्मद्दि॑ष्टयः कृश॒निनो॑ निरे॒के।**

**ऋ॒ज्रासो॑ मा पृथिवि॒ष्ठाः सु॒दास॑स्तो॒कं तो॒काय॒ श्रव॑से वहन्ति॥२३॥**

**च॒त्वार॑ः। मा॒। पै॒ज॒ऽव॒नस्य॑। दाना॑ः। स्मत्ऽदि॑ष्टयः। कृ॒श॒निन॑ः। नि॒रे॒के। ऋ॒ज्रास॑ः। मा॒। पृ॒थि॒वि॒ऽस्थाः। सु॒ऽदास॑ः। तो॒कम्। तो॒काय। श्रव॑से। व॒ह॒न्ति॒॥२३॥**

**पदार्थः**-(**चत्वारः**) ऋत्विजः (**मा**) माम् (**पैजवनस्य**) क्षमाशीलस्य पुत्रस्य (**दानाः**) दातारः (**स्मद्दिष्टयः**) निश्चिता दिष्टयो दर्शनानि येषान्ते (**कृशनिनः**) कृशनं बहुहिरण्यं विद्यते येषान्ते। **कृशनमिति हिरण्यनाम।** (निघं०१.२) (**निरेके**) निःशङ्के राजव्यवहारे (**ऋज्रासः**) सरलस्वभावाः (**मा**) माम् (**पृथिविष्ठाः**) ये पृथिव्यां तिष्ठन्ति (**सुदासः**) शोभनदानः (**तोकम्**) अपत्यम् (**तोकाय**) अपत्याय (**श्रवसे**) विद्याश्रवणाय (**वहन्ति**) प्राप्नुवन्ति॥२३॥

**अन्वयः**-हे राजन्! पैजवनस्य ते यथा चत्वारो दानाः स्मद्दिष्टयः कृशनिन ऋज्रासः पृथिविष्ठा विद्वांसो निरेके मा नि दधति श्रवसे तोकाय च [मा] तोकं वहन्ति तथा तान् प्रति भवान् सुदासो भवेत्॥२३॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यथा वेदविद ऋत्विजो राजसहायेन यज्ञानुष्ठानात्सर्वेषां निश्चितं सुखं वर्धयन्ति यथा च ब्रह्मचारिणः सन्तानाय ब्रह्मचर्येण पूर्वं विद्याध्ययनाय च विवाहं विधायाऽपत्यमुत्पादयन्ति तथैव राजा राजपुरुषाश्च सर्वेषां हिताय सर्वान् सन्तानान् ब्रह्मचर्येण विद्या ग्राहयित्वा सर्वेषां सुखमुन्नेयुः॥२३॥

**पदार्थः**-हे राजन्! **(पैजवनस्य)** क्षमाशील रखने वाले के पुत्र आपके जैसे **(चत्वारः)** चार ऋत्विज् **(दानाः)** देनेवाले **(स्मद्दिष्टयः)** जिनके निश्चित दर्शन **(कृशनिनः)** वा बहुत हिरण्य विद्यमान **(ऋज्रासः)** जो सरल स्वभाव **(पृथिविष्ठाः)** पृथिवी पर स्थित रहते हैं वे विद्वान् जन **(निरेके)** निःशङ्क राज्यव्यवहार में **(मा)** मुझे विधान करते हैं, स्थिर करते हैं **(श्रवसे)** विद्या सुनने के लिये **(तोकाय)** सन्तान के अर्थ **(मा)** मुझ **(तोकम्)** सन्तान को **(वहन्ति)** पहुँचाते हैं, वैसे उनके प्रति आप **(सुदासः)** सुन्दर दानशील हूजिये॥२३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! वेदवेत्ता ऋत्विज् ब्राह्मण राजसहाय से यज्ञानुष्ठान से सब का निश्चित सुख बढ़ाते हैं और जैसे ब्रह्मचारी सन्तान के लिये ब्रह्मचर्य्य से पहिले विद्या पढ़ने के लिये विवाह कर सन्तान उत्पन्न करते हैं, वैसे राजजन और राजपुरुष सब के हित के लिये ब्रह्मचर्य्य से विद्या ग्रहण कराकर सब के सुख की उन्नति करें॥२३॥

**पुनस्ते राजादयः किंवत् किं कुर्य्युरित्याह॥**

फिर वे राजा आदि किसके तुल्य क्या करें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**यस्य श्रवो रोदसी अन्तरुर्वी शीर्ष्णेशीर्ष्णे विबभाजा विभक्ता।**

**सप्तेदिन्द्रं न स्रवतो गृणन्ति नि युध्यामधिमशिशादभीके॥२४॥**

**यस्य। श्रवः। रोदसी इति। अन्तः। उर्वी इति। शीर्ष्णेऽशीर्ष्णे। विऽबभाज। विऽभक्ता। सप्त। इत्। इन्द्रम्। न। स्रवतः। गृणन्ति। नि। युध्यामधिम्। अशिशात्। अभीके॥२४॥**

**पदार्थः**-**(यस्य)** मनुष्यस्य **(श्रवः)** अन्नं श्रवणं वा **(रोदसी)** द्यावापृथिव्यौ **(अन्तः)** मध्ये **(उर्वी)** बहुकलादियुक्ते **(शीर्ष्णेशीर्ष्णे)** शिरोवदुत्तमायोत्तमाय सुखाय **(विबभाज)** विशेषेण भजेत सेवेत **(विभक्ता)** विभक्ते भिन्ने **(सप्त)** सप्तविधे **(इत्)** एव **(इन्द्रम्)** विद्युतम् **(न)** इव **(स्रवतः)** प्रापयतः **(गृणन्ति)** स्तुवन्ति **(नि)** **(युध्यामधिम्)** यो युधि सङ्ग्राम आमं रोगं दधाति तं शत्रुम् **(अशिशात्)** छेदयेत् **(अभीके)** समीपे॥२३॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यस्य श्रव उर्वी रोदसी शीर्ष्णेशीर्ष्णेऽन्तर्विबभाज ये इन्द्रं न सप्त विभक्ता सत्यौ सुखानीत् स्रवतो येषां सर्वे विद्वांसो गृणन्ति तयोर्विद्यया यो राजाऽभीके युध्यामधि न्यशिशात्स एव राज्यं शासितुमर्हेत्॥२४॥



www.9009.co.in

**भावार्थः-**अत्रोपमावाचकलुप्तोपमालङ्कारौ। यदि राजादयो धर्म्ये न्याये वर्त्तित्वा राज्यं प्रशासयेयुस्तर्हि सूर्यवत्प्रजासूत्तमानि सुखान्युन्नेतुं शक्नुवन्ति शत्रून्निवार्य्य भद्रान् समीपस्थाञ्जनान् सत्कर्तुं जानन्ति॥२४॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(यस्य)** जिसका **(श्रवः)** अन्न वा श्रवण **(उर्वी)** बहुफलादि पदार्थों से युक्त **(रोदसी)** आकाश और पृथिवी को **(शीर्ष्णेशीर्ष्णे)** शिर के तुल्य उत्तम सुख के लिये **(अन्तः)** बीच में **(विबभाज)** विशेषता से भेजता है जिन **(इन्द्रम्)** इन्द्र के **(न)** समान **(सप्त)** सप्त प्रकार से **(विभक्ता)** विभाग को प्राप्त हुई [=हुए] आकाश और पृथिवी, सुखों को **(इत्)** ही **(स्रवतः)** पहुँचाते हैं जिनकी सब विद्वान् जन **(गृणन्ति)** प्रशंसा करते हैं उनकी विद्या से जो राजा **(अभीके)** समीप में **(युध्यामधिम्)** युद्धरूपी रोग को धारण करते शत्रु को **(नि, अशिशात्)** निरन्तर छेदे, वही राज्य-शिक्षा देने के योग्य हो॥२४॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमा और वाचकलुप्तोपमालङ्कार हैं। यदि राजादि पुरुष धर्मयुक्त न्याय में वर्त कर राज्य को उत्तम शिक्षा दिलावें तो सूर्य के समान प्रजाओं में उत्तम सुखों की उन्नति कर सकते हैं और शत्रुओं को निवार **[**=निवारण कर**]** सुख देने वाले समीपस्थ जनों को सत्कार करना जानते हैं॥२४॥

**पुनर्मनुष्याः कीदृशं राजानं समाश्रयेयुरित्याह॥**

फिर मनुष्य कैसे राजा को अच्छे प्रकार आश्रय करें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**इमं नरो मरुतः सश्चतानु दिवोदासं न पितरं सुदासः।**

**अविष्टना पैजवनस्य केतं दूणाशं क्षत्रमजरं दुवोयु॥२५॥२८॥**

**इमम्। नरः। मरुतः। सश्चत। अनु। दिवःऽदासम्। न। पितरम्। सुऽदासः। अविष्टन। पैजऽवनस्य। केतम्। दुःनशम्। क्षत्रम्। अजरम्। दुवःऽयु॥२५॥**

**पदार्थः**-**(इमम्)** **(नरः)** नायकाः **(मरुतः)** मनुष्याः **(सश्चत)** समवयन्तु **(अनु)** **(दिवोदासम्)** विद्याप्रकाशदातारम् **(न)** इव **(पितरम्)** पालकम् **(सुदासः)** उत्तमविद्यादानः **(अविष्टन)** व्याप्नुत। अत्र **संहितायामि**ति दीर्घः। **(पैजवनस्य)** क्षमाशीलाज्ज्ञातस्य पुत्रस्य **(केतम्)** प्रज्ञाम् **(दूणाशम्)** दुःखेन नाशयितुं योग्यं दुर्लभविनाशं वा **(क्षत्रम्)** राज्यं धनं वा **(अजरम्)** नाशरहितम् **(दुवोयु)** परिचरणाय कमनीयम्॥२५॥

**अन्वयः**-हे नरो मरुतो यः सुदासो भवेत्तमिमं दिवोदासं पितरं न यूयं सश्चत पैजवनस्य दूणाशं केतमजरं दुवोयु क्षत्रं चान्वविष्टन॥२५॥

**भावार्थः-**अत्रोपमालङ्कारः। यदि मनुष्या विद्यादिशुभगुणदातारं पितरमिव पालकं राजानमाश्रयेयुस्तर्हि पूर्णां प्रज्ञामविनाशि सेवनीयमैश्वर्यं राज्यं च स्थिरं कर्तुं शक्नुयुरिति॥२५॥



www.9009.co.in

अत्रेन्द्रराजप्रजामित्रधार्मिकाऽमात्यशत्रुनिवारणधार्मिकसत्करणार्थप्रतिपादनादस्य सूक्तस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इत्यष्टादशं सूक्तमष्टाविंशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे **(नरः)** नायक **(मरुतः)** मनुष्यो! जो **(सुदासः)** उत्तम दान देने वाला हो **(इमम्)** उस **(दिवोदासम्)** विद्याप्रकाश देने वाले को **(पितरम्)** पालने वाले पिता के **(न)** समान तुम लोग **(सश्चत)** मिलो, सम्बन्ध करो और **(पैजवनस्य)** क्षमाशील है जिसका उससे उत्पन्न हुए पुत्र के **(दूणाशम्)** दुःख से नाश करने योग्य पदार्थ वा दुर्लभ विनाश **(केतम्)** उत्तम बुद्धि और **(अजरम्)** विनाशरहित **(दुवोयु)** सेवन करने के लिये मनोहर **(क्षत्रम्)** राज्य वा धन को **(अनु, अविष्टन)** व्याप्त होओ॥ २५॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। यदि मनुष्य विद्यादि शुभ गुणों के देने वाले, पिता के समान **[**=पालक**]** राजा का आश्रय करें तो पूर्ण प्रज्ञा अविनाशि सेवने योग्य ऐश्वर्य और राज्य को स्थिर कर सकें॥ २५॥

इस सूक्त में इन्द्र, राजा, प्रजा, मित्र धार्मिक, अमात्य, शत्रुनिवारण तथा धार्मिक सत्कार के अर्थ का प्रतिपादन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ संगति जाननी चाहिये॥

**यह अठारहवां सूक्त और अट्ठाईसवां वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

**अथैकादशर्चस्यैकोनविंशतितमस्य सूक्तस्य वसिष्ठ ऋषिः। इन्द्रो देवता। १, ५ त्रिष्टुप्। ३, ६ निचृत्त्रिष्टुप्। ७, ९, १० विराट् त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः। २ निचृत्पङ्क्तिः। ४ पङ्क्तिः। ८, ११ भुरिक् पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः॥**

***अथ कीदृशो राजा राजोत्तमो भवतीत्याह॥***

अब ग्यारह ऋचा वाले उन्नीसवें सूक्त का प्रारम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में कैसा राजा उत्तम राजा होता है, इस विषय को कहते हैं॥

**यस्तिग्मशृङ्गो वृषभो न भीम एकः कृष्टीश्च्यावयति प्र विश्वाः।**
**यः शश्वतो अदाशुषो गयस्य प्रयन्तासि सुष्वितराय वेदः॥१॥**

**यः। तिग्मऽशृङ्गः। वृषभः। न। भीमः। एकः। कृष्टीः। च्यवयति। प्र। विश्वाः। यः। शश्वतः। अदाशुषः। गयस्य। प्रऽयन्ता। असि। सुस्विऽतराय। वेदः॥१॥**

**पदार्थः**-(**यः**) (**तिग्मशृङ्गः**) तिग्मानि तेजस्वीनि शृङ्गानि किरणा यस्य सूर्यस्य सः (**वृषभः**) वृष्टिकरः (**न**) इव (**भीमः**) भयङ्करः (**एकः**) असहायः (**कृष्टीः**) मनुष्याः (**च्यावयति**) चालयति (**प्र**) (**विश्वाः**) समग्राः प्रजाः (**यः**) (**शश्वतः**) अनादिभूतस्य (**अदाशुषः**) अदातुः (**गयस्य**) अपत्यस्य (**प्रयन्ता**) प्रकर्षेण नियन्ता (**असि**) (**सुष्वितराय**) सुष्ठ्वतिशयितमैश्वर्यं यः सुनोति तस्मै (**वेदः**) विज्ञानं धनं वा। **वेद इति धननाम।** (निघं०२.१०)॥१०॥

**अन्वयः**-हे राजन्! यो भद्रो जनस्तिग्मशृङ्गो वृषभो भीमो नैको विश्वा कृष्टीः प्र च्यावयति यः शश्वतोऽदाशुषो गयस्य सुष्वितराय वेदः करोति तस्य यतस्त्वं प्रयन्तासि तस्मादधिकमाननीयोऽसि॥१॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यथा सूर्यो विद्युद्वा वृष्टिकरणेन सुखप्रदा तीव्रतापेन निपातेन वा भयङ्करा वर्त्तते तथा यो राजा विद्याध्ययनायाऽपत्यानि ये न समर्पयन्ति तेभ्यो दण्डदाता वा ब्रह्मचर्येण सर्वेषां विद्यावर्धको यो राजा भवेत्तमेव सर्वे स्वीकुर्वन्तु॥१॥

**पदार्थः**-हे राजन्! (**यः**) जो कल्याण जन (**तिग्मश्ङ्गः**) तीक्ष्ण किरणों से युक्त (**वृषभः**) वर्षा (**भीमः**) भय करने वाले सूर्य के (**न**) समान (**एकः**) अकेला (**विश्वाः**) समग्र प्रजा (**कृष्टीः**) मनुष्यों को (**प्र, च्यावयति**) अच्छे प्रकार चलाता है और (**यः**) जो (**शश्वतः**) निरन्तर (**अदाशुषः**) न देने वाले के (**गयस्य**) सन्तान के (**सुष्वितराय**) सुन्दर अतीव ऐश्वर्य को निकालने वाले के लिये (**वेदः**) विज्ञान वा धन को करता है, उसके जिससे तुम (**प्रयन्ता**) उत्तमता से नियम करने वाले (**असि**) हो, इससे अधिक मानने योग्य हो॥१॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जैसे सूर्य वा बिजुली वर्षा करने से सुख देने वाली और तीव्र ताप से वा पड़ जाने से भयंकर है, वैसे जो राजा विद्याध्ययन के लिये सन्तानों को नहीं देते



www.9009.co.in

उनके लिये दण्ड देने वाला वा ब्रह्मचर्य्य से सब की विद्या बढ़ाने वाला राजा हो, उसी को सब स्वीकार करें॥१॥

**पुना राजविषयमाह॥**

फिर राजविषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**त्वं ह॒ त्यदि॑न्द्र॒ कुत्स॑माव॒ः शुश्रू॑षमाणस्त॒न्वा॑ सम॒र्ये।**

**दास॒ं यच्छुष्ण॒ं कुय॑व॒ं न्य॑स्मा॒ अर॑न्धय आर्जु॒ने॒याय॒ शिक्ष॑न्॥२॥**

**त्वम्। ह॒। त्यत्। इ॒न्द्र॒। कु॒त्स॑म्। आ॒व॒ः। शुश्रू॑षमाणः। त॒न्वा॑। स॒ऽम॒र्ये। दास॑म्। यत्। शुष्ण॑म्। कुय॑वम्। नि। अ॒स्मै॒। अर॑न्धयः। आ॒र्जु॒ने॒याय। शिक्ष॑न्॥२॥**

**पदार्थः**-(**त्यम्**) (**ह**) खलु (**त्यत्**) (**इन्द्र**) सूर्य इव प्रतापयुक्त (**कुत्सम्**) विद्युतमिव वज्रम् (**आवः**) रक्षेः (**शुश्रूषमाणः**) श्रोतुमिच्छमानो विद्याश्रवणाय सेवां कुर्वाणः (**तन्वा**) शरीरेण (**समर्ये**) (**दासम्**) दातारं सेवकं वा (**यत्**) यम् (**शुष्णम्**) शोषकं बलवन्तम् (**कुयवम्**) कुत्सिता यवा अन्नादि यस्य तम् (**नि**) (**अस्मै**) (**अरन्धयः**) हिंसयेः (**आर्जुनेयाय**) अर्जुन्याः सुरूपवत्या विदुष्याः पुत्राय (**शिक्षन्**) विद्योपार्जनं कारयन्॥२॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र राजँस्त्वं सूर्य इव त्यत्कुत्सं दुष्टानामुपरि प्रहृत्य भद्रिकाः प्रजा आवः शुश्रूषमाणस्त्वं तन्वा समर्ये होत्तमा सेना आवो यद्यं शुष्णं कुयवं दासं न्यरन्धयोऽस्मा आर्जुनेयायाशिक्षन्नविद्यां हिंस्याः॥२॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। ये मनुष्या विद्याप्राप्तय आप्तानध्यापकान् शुश्रूषन्ते शरीरात्मबलं विधाय संग्रामे दुष्टान् विजयन्ते विद्याध्ययनविरहाँस्तिरस्कृत्य विद्याभ्यासकान् सत्कुर्वन्ति ते स्थिरं राज्यैश्वर्यं प्राप्नुवन्ति॥२॥

**पदार्थः**-हे (**इन्द्र**) सूर्य के समान प्रतापयुक्त राजा (**त्वम्**) आप सूर्य के समान (**त्यत्**) उस (**कुत्सम्**) बिजुली के तुल्य वज्र को दुष्टों पर प्रहार कल्याण करने वाली प्रजा की (**आवः**) पालना कीजिये (**शुश्रूषमाणः**) सुनने की इच्छा करने वाले आप (**तन्वा**) शरीर से (**समर्ये**) संग्राम में (**ह**) ही उत्तम सेना की रक्षा कीजिये (**यत्**) और जिस (**शुष्णम्**) शुष्क करने वा (**कुवयम्**) कुत्सित यव आदि अन्न रखने वाले (**दासम्**) दाता वा सेवक को (**नि, अरन्धयः**) नहीं मारते (**अस्मै**) इस (**आर्जुनेयाय**) सुन्दर रूपवती विदुषी के पुत्र के निमित्त (**शिक्षन्**) विद्या इकट्ठी कराते हुए अविद्या को हनो॥२॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो मनुष्य विद्याप्राप्ति के लिये आप्त, श्रेष्ठ, विद्वान् अध्यापकों की शुश्रूषा करते शरीर और आत्मा के बल का विधान कर संग्राम में दुष्टों को जीतते और विद्याध्ययन से **[**रहित**]** जनों का तिरस्कार करते, विद्याभ्यास करने वालों का सत्कार करते हैं, वे स्थिर राज्यैश्वर्य्य को प्राप्त होते हैं॥२॥

**पुनः स किं कुर्यादित्याह॥**



www.9009.co.in

फिर वह राजा क्या करे, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**त्वं धृष्णो धृषता वीतहव्यं प्रावो विश्वाभिरूतिभिः सुदासम्।**

**प्र पौरुकुत्सिं त्रसदस्युमावः क्षेत्रसाता वृत्रहत्येषु पूरुम्॥ ३॥**

**त्वम्। धृष्णो इति। धृषता। वीतऽहव्यम्। प्र। आवः। विश्वाभिः। ऊतिऽभिः। सुऽदासम्। प्र। पौरुऽकुत्सिम्। त्रसदस्युम्। आवः। क्षेत्रऽसाता। वृत्रऽहत्येषु। पूरुम्॥ ३॥**

**पदार्थः**-(**त्वम्**) (**धृष्णो**) दृढ (**धृषता**) प्रगल्भेन पुरुषेण सह (**वीतहव्यम्**) प्राप्तप्राप्तव्यम् (**प्र आवः**) प्रकर्षेण रक्ष (**विश्वाभिः**) समग्राभिः (**ऊतिभिः**) रक्षाभिः (**सुदासम्**) शोभना दासा दातारः सेवका वा यस्य तम् (**प्र**) (**पौरुकुत्सिम्**) पुरवो बहवः कुत्साः शस्त्राऽस्त्रविद्यायोगा यस्य तस्यापत्यम् (**त्रसदस्युम्**) त्रसा भयभीता दस्यवो भवन्ति यस्मात्तम् (**आवः**) कामयस्व (**क्षेत्रसाता**) क्षेत्राणां विभागे (**वृत्रहत्येषु**) शत्रुहननेषु सङ्ग्रामेषु (**पूरुम्**) पालकं धारकं वा॥ ३॥

**अन्वयः**-हे धृष्णो! त्वं धृषता विश्वभिरूतिभिर्वीतहव्यं सुदासं पौरुकुत्सिं त्रसदस्युं सततं प्रावः। क्षेत्रसाता वृत्रहत्येषु पूरुं प्रावः॥ ३॥

**भावार्थः**-ये राजानो धार्मिकान् दस्युप्रहारकाञ्छस्त्रास्त्रप्रक्षेपकुशलान् विद्यादिशुभगुणदातॄन् सत्कुर्वन्ति ते सदा सुखिनो जायन्ते॥ ३॥

**पदार्थः**-हे (**धृष्णो**) दृढ पुरुष! (**त्वम्**) आप (**धृषता**) प्रगल्भ पुरुष के साथ (**विश्वाभिः**) समग्र (**ऊतिभिः**) रक्षाओं के साथ (**वीतहव्यम्**) पाये हुए और पाने योग्य पदार्थ वा (**सुदासम्**) अच्छे जिसके दास जो (**पौरुकुत्सिम्**) बहुत शस्त्रास्त्रविद्याओं के योग रखने वाले पुत्र (**त्रसदस्युम्**) जिससे भयभीत दस्यु होते हैं उस जन की निरन्तर (**प्रावः**) कामना करो और (**क्षेत्रसाता**) क्षेत्रों के विभाग में (**वृत्रहत्येषु**) शत्रुओं के मारने रूप सङ्ग्रामों में (**पूरुम्**) पालना वा धारणा करने वाले की (**प्रावः**) कामना करो॥ ३॥

**भावार्थः**-जो राजजन धार्मिक, दस्युओं को मारने, शस्त्र अस्त्रों के फेंकने में कुशल और विद्यादि शुभगुणों के देने वाले सज्जनों का सत्कार करते हैं, वे सदा सुखी होते हैं॥ ३॥

**पुनः स राजा किं कुर्यादित्याह॥**

फिर वह राजा क्या करें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**त्वं नृभिर्नृमणो देववीतौ भूरीणि वृत्रा हर्यश्व हंसि।**

**त्वं नि दस्युं चुमुरिं धुनिं चास्वापयो दभीतये सुहन्तु॥ ४॥**

**त्वम्। नृऽभिः। नृऽमनः। देवऽवीतौ। भूरीणि। वृत्रा। हरिऽअश्व। हंसि। त्वम्। नि। दस्युम्। चुमुरिम्। धुनिम्। च। अस्वापयः। दभीतये। सुऽहन्तु॥ ४॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**त्वम्**) (**नृभिः**) न्यायनेतृभिः सज्जनैः सह (**नृमणः**) नृषु न्यायाधीशेषु मनो यस्य तत्सम्बुद्धौ (**देववीतौ**) देवानां वीतिः प्राप्तिर्यस्मिन् व्यवहारे तस्मिन् (**भूरीणि**) बहूनि (**वृत्रा**) वृत्राणि शत्रुसैन्यानि धनानि वा (**हर्यश्व**) कमनीयाश्व (**हंसि**) नाशयसि प्राप्नोषि वा (**त्वम्**) (**नि**) (**दस्युम्**) दुष्टाचारं साहसिकम् (**चुमुरिम्**) चोरम् (**धुनिम्**) श्रेष्ठानां कम्पयितारम् (**च**) (**अस्वापयः**) हत्वा शापय (**दभीतये**) हिंसनाय (**सुहन्तु**) शोभनेन प्रकारेण नाशयतु॥४॥

**अन्वयः**-हे हर्यश्व नृमणो राजँस्त्वं नृभिः सह देववीतौ भूरीणि वृत्रा हंसि त्वं धुनिं चुमुरिं दस्युं न्यस्वापयो दभीतये च दुष्टान् भवान् सुहन्तु॥४॥

**भावार्थः**-हे राजन्! भवान् सदैव सत्पुरुषसङ्गं न्यायेन राज्यं पालयित्वा धनेच्छां दुष्टान् दस्यून्निवार्य्य प्रजापालनं सततं कुरु॥४॥

**पदार्थः**-हे (**हर्यश्व**) मनोहर घोड़ा से युक्त (**नृमणः**) और न्यायधीशों में मन रखने वाले राजन्! (**त्वम्**) आप (**नृभिः**) न्याय प्राप्ति कराने वाले विद्वानों के साथ (**देववीतौ**) विद्वानों की प्राप्ति जिस व्यवहार में होती उसमें (**भूरीणि**) बहुत (**वृत्रा**) शत्रुसैन्यजन वा धनों को (**हंसि**) नाशते वा प्राप्त होते हैं (**त्वम्**) आप (**धुनिम्**) श्रेष्ठों को कंपाने वाले (**चुमुरिम्**) चोर और (**दस्युम्**) दुष्ट आचरण करने वाले साहसी जन को (**नि, अस्वापयः**) मार कर सुलाओ तथा (**दभीतये**) हिंसा के लिये (**च**) भी दुष्टों को आप (**सुहन्तु**) अच्छे प्रकार नाशो॥४॥

**भावार्थः**-हे राजा! आप सदैव सत्पुरुषों का संग न्याय से राज्य को पाल के धन की इच्छा और दुष्ट डाकुओं को निवार के प्रजापालना निरन्तर करो॥४॥

**पुना राज्ञः सैन्यानि कीदृशानि भवेयुरित्याह॥**

फिर राजा के सेनाजन कैसे हों, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**तव॑ च्यौ॒त्नानि॑ वज्रहस्त॒ तानि॒ नव॒ यत्पुरो॑ नव॒तिं च॑ स॒द्यः।**

**नि॒वेश॑ने शतत॒माऽवि॑वेषी॒रह॑न् च वृ॒त्रं नमु॑चिमु॒ताह॑न्॥५॥२९॥**

**तव॑। च्यौ॒त्नानि॑। व॒ज्र॒ऽह॒स्त॒। तानि॑। नव॑। यत्। पुर॑ः। न॒व॒तिम्। च॒। स॒द्यः। निऽवेश॑ने। श॒त॒ऽत॒मा। अ॒वि॒वे॒षीः॒। अह॑न्। च॒। वृ॒त्रम्। नमु॑चिम्। उ॒त। अ॒ह॒न्॥५॥**

**पदार्थः**-(**तव**) (**च्यौत्नानि**) च्यवन्ति शत्रवो येभ्यस्तानि बलानि। **च्यौत्नमिति बलनाम।** (निघं०२.९) (**वज्रहस्त**) (**तानि**) (**नव**) (**यत्**) याः (**पुरः**) शत्रूणां नगर्यः (**नवतिम्**) एतत्संख्याताः (**च**) (**सद्यः**) (**निवेशने**) निविशन्ति यस्मिंस्तस्मिन् (**शततमा**) अतिशयेन शतानि (**अविवेषीः**) व्याप्नुयाः (**अहन्**) हन्ति (**च**) (**वृत्रम्**) आवरकं मेघम् (**नमुचिम्**) यः स्वस्वरूपं न मुञ्चति तम् (**उत**) अपि (**अहन्**) हन्ति॥५॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे वज्रहस्त! यथा तव तानि च्यौत्नानि सूर्यो यन्नवनवतिं पुरः सद्योऽहँश्च निवेशने शततमा असंख्यान्युतापि नमुचिं वृत्रं चाऽहंस्तथा त्वमविवेषीः सैन्यानि प्राप्य शत्रुबलान्यविवेषीः॥५॥

**भावार्थः**-हे राजन्! यथा सूर्योऽसंख्यानि मेघस्य नगराणीवाब्दलानि घनाकाराणि हन्ति तथा तवोत्तमानि सैन्यानि भूत्वा सर्वान् दुष्टाञ्छत्रून् घ्नन्तु॥५॥

**पदार्थः**-हे **(वज्रहस्त)** हाथ में वज्र रखने वाले! जैसे **(तव)** आपके **(तानि)** वे **(च्यौत्नानि)** बल हैं अर्थात् सूर्य **(यत्)** जो **(नवनवतिम्)** निन्यानवे **(पुरः)** मेघरूपी शत्रुओं की नगरी उनको **(सद्यः)** शीघ्र **(अहन्)** हनता **(च)** और **(निवेशने)** जिसमें निवास करते हैं उस स्थान में **(शततमा)** अतीव सैकड़ों को **(उत)** और **(नमुचिम्)** जो अपने रूप को नहीं छोड़ता उस **(वृत्रम्)** आच्छादन करने वाले मेघ को **(च)** भी **(अहन्)** मारता, वैसे आप **(अविवेषीः)** व्याप्त हूजिये अर्थात् सेना जनों को प्राप्त होकर शत्रुबलों को प्राप्त हूजिये॥५॥

**भावार्थः**-हे राजन्! जैसे सूर्य असंख्य मेघ की नगरियों के समान सघन घन घटाघूम बादलों को हनता है, वैसे तुम्हारे सेना जन उत्तम होकर समस्त शत्रुओं को मारें॥५॥

**पुनः स राजा किं कुर्यादित्याह॥**

फिर वह राजा क्या करे, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**सना ता त इन्द्र भोजनानि रातहव्याय दाशुषे सुदासे।**

**वृष्णे ते हरी वृषणा युनज्मि व्यन्तु ब्रह्माणि पुरुशाक वाजम्॥६॥**

**सना। ता। ते। इन्द्र। भोजनानि। रातऽहव्याय। दाशुषे। सुऽदासे। वृष्णे। ते। हरी इति। वृषणा। युनज्मि। व्यन्तु। ब्रह्माणि। पुरुऽशाक। वाजम्॥६॥**

**पदार्थः**-**(सना)** सनातनानि विभजनीयानि वा **(ता)** तानि **(ते)** तव **(इन्द्र)** परमैश्वर्यप्रद राजन् **(भोजनानि)** भोक्तव्यानि पालनानि वा **(रातहव्याय)** दत्तदातव्याय **(दाशुषे)** दात्रे **(सुदासे)** सुदानाय **(वृष्णे)** सुखवर्षकाय **(ते)** तव **(हरी)** अश्वौ **(वृषणा)** बलयुक्तौ **(युनज्मि)** संयोजयामि **(व्यन्तु)** प्राप्नुवन्तु **(ब्रह्माणि)** धनानि **(पुरुशाक)** बहुशक्तिमन् **(वाजम्)** वेगम्॥६॥

**अन्वयः**-हे पुरुशाकेन्द्र! यानि ते तव रातहव्याय सुदासे वृष्णे दाशुषे सना भोजनानि सन्ति तान्यहं युनज्मि यौ ते वृषणा हरी तावहं युनज्मि यतः प्रजाजना वाजं ब्रह्माणि च व्यन्तु॥६॥

**भावार्थः**-हे राजजना! यदि भवन्तः करदातॄणां पालनं न्यायेन कुर्युः शरीरेण धनेन मनसा प्रजा उन्नयेयुस्तर्हि किमप्यैश्वर्यमलभ्यं न स्यात्॥६॥

**पदार्थः**-हे **(पुरुशाक)** बहुत शक्तियुक्त **(इन्द्र)** परम ऐश्वर्य के देने वाले राजा! जो **(ते)** आपके **(रातहव्याय)** दी है देने योग्य वस्तु जिसने उस **(सुदासे)** सुन्दर दानशील **(वृष्णे)** सुखवृष्टि करने **(दाशुषे)** देने वाले के लिये **(सना)** सनातन वा विभाग करने योग्य **(भोजनानि)** भोजन है **(ता)**



www.9009.co.in

उनको मैं **(युनज्मि)** संयुक्त करता हूँ तथा जो **(ते)** आपके **(वृषणा)** बलयुक्त अश्व **(हरी)** हरणशील हैं उनको संयुक्त करता हूँ जिससे प्रजाजन **(वाजम्)** वेग और **(ब्रह्माणि)** धनों को **(व्यन्तु)** प्राप्त हों॥६॥

**भावार्थः**-हे राजजनो! यदि आप लोग कर देने वालों की पालना न्याय से करें और शरीर से धन से और मन से प्रजाजनों की उन्नति करें तो कुछ भी ऐश्वर्य अलभ्य न हो॥६॥

**पुना राजप्रजाजना अन्योऽन्यं कथं वर्त्तेरन्नित्याह॥**

फिर राजा और प्रजाजन परस्पर कैसे वर्त्तें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**मा ते अस्यां सहसावन् परिष्टावघाय भूम हरिवः परादै।**

**त्रायस्व नोऽवृकेभिर्वरूथैस्तव प्रियासः सूरिषु स्याम॥७॥**

**मा। ते। अस्याम्। सहसाऽवन्। परिष्टौ। अघाय। भूम। हरिऽवः। पराऽदै। त्रायस्व। नः। अवृकेभिः। वरूथैः। तव। प्रियासः। सूरिषु। स्याम॥७॥**

**पदार्थः**-**(मा)** निषेधे **(ते)** तव **(अस्याम्)** प्रजायाम् **(सहसावन्)** बहुबलयुक्त **(परिष्टौ)** परितः सङ्गन्तव्यायाम् **(अघाय)** पापाय **(भूम)** भवेम **(हरिवः)** प्रशस्तमनुष्ययुक्त **(परादै)** परादानाय त्यागाय त्यक्तव्याय **(त्रायस्व)** **(नः)** अस्मान् **(अवृकेभिः)** अचोरैः **(वरूथैः)** वरैः **(तव)** **(प्रियासः)** प्रीताः **(सूरिषु)** विद्वत्सु **(स्याम)** भवेम॥७॥

**अन्वयः**-हे हरिवः सहसावन् राजन्नस्यां परिष्टौ ते परादा अघाय वयं मा भूमाऽवृकेभिर्वरूथैर्नस्त्रायस्व यतो वयं तव सूरिषु प्रियासः स्याम॥७॥

**भावार्थः**-हे राजन्! यथा वयं तवोन्नतौ प्रयतेमहि तथा त्वमपि प्रयतस्व विद्याप्रचारेण सर्वान् विदुषः कारय येन विरोधो न स्यात्॥७॥

**पदार्थः**-हे **(हरिवः)** प्रशंसित मनुष्य और **(सहसावन्)** बहुत बल से युक्त राजा! **(अस्याम्)** इस **(परिष्टौ)** सब ओर से संग करने योग्य वेला में **(ते)** आपके **(परादै)** त्याग करने योग्य **(अघाय)** पाप के लिये हम लोग **(मा, भूम)** मत होवें **(अवृकेभिः)** और जो चोर नहीं उन **(वरूथैः)** श्रेष्ठों के साथ **(नः)** हम लोगों की **(त्रायस्व)** रक्षा कीजिये जिससे हम लोग **(तव)** तुम्हारे **(सूरिषु)** विद्वानों में **(प्रियासः)** प्रसन्न **(स्याम)** हों॥७॥

**भावार्थः**-हे राजा! जैसे हम लोग तुम्हारी उन्नति के निमित्त प्रयत्न करें, वैसे आप भी प्रयत्न कीजिये, विद्या के प्रचार से सबको विद्वान् कराइये जिससे विरोध नहो॥७॥

**पुनर्मनुष्याः परस्पर कथं वर्तेरन्नित्याह॥**

फिर मनुष्य परस्पर कैसे वर्त्तें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**प्रियास इत्ते मघवन्नभिष्टौ नरो मदेम शरणे सखायः।**



www.9009.co.in

**नि तुर्वशं नि याद्वं शिशीह्यतिथिग्वाय शंस्यं करिष्यन्॥८॥**

**प्रियासः। इत्। ते। मघऽवन्। अभिष्टौ। नरः। मदेम। शरणे। सखायः। नि। तुर्वशम्। नि। याद्वम्। शिशीहि। अतिथिऽग्वाय। शंस्यम्। करिष्यन्॥८॥**

**पदार्थः**-(**प्रियासः**) प्रीतिमन्तः प्रीता वा (**इत्**) एव (**ते**) तव (**मघवन्**) बहुधनप्रद (**अभिष्टौ**) अभिप्रियायां सङ्गतौ (**नरः**) नायकाः (**मदेम**) आनन्देम (**शरणे**) शरणागतपालने कर्मणि (**सखायः**) मित्राः सन्तः (**नि**) (**तुर्वशम्**) निकटस्थं जनम्। **तुर्वश इति अन्तिकनाम।** (निघं०२.१६) (**नि**) (**याद्वम्**) ये यान्ति तान् यो याति तम् (**शिशीहि**) तीक्ष्णीकुरु (**अतिथिग्वाय**) अतिथीनां गमनाय (**शंस्यम्**) प्रशंसनीयम् (**करिष्यन्**)॥८॥

**अन्वयः**-हे मघवन्! सखायः प्रियासो नरो वयं तेऽभिष्टौ शरणे मदेम त्वं तुर्वशं नि शिशीहि याद्वं नि शिशीह्यतिथिग्वाय शंस्यमित्करिष्यञ्छिशीहि॥८॥

**भावार्थः**-हे राजन्! ये शुभगुणकर्मस्वभावाचरणेन युक्तास्त्वयि प्रीतिमन्तः स्युस्तान् धार्मिकान् प्रशंसितान् कुरु यथाऽतिथीनामागमनं स्यात्तथा विधेहि॥८॥

**पदार्थः**- (**मघवन्**) बहुत धन देने वाले! (**सखायः**) मित्र होते हुए (**प्रियासः**) प्रीतिमान् वा प्रसन्न हुए (**नरः**) नायक मनुष्य हम लोग (**ते**) आपके (**अभिष्टौ**) सब ओर से प्रिय संगति अर्थात् मेल मिलाप में (**शरणे**) शरणागत की पालना करने कर्म में (**मदेम**) आनन्दित हों। आप (**तुर्वशम्**) निकटस्थ मनुष्य को (**नि, शिशीहि**) निरन्तर तीक्ष्ण कीजिये और (**याद्वम्**) जो जाते हैं उन पर जो जाता है उसको (**नि**) निरन्तर तीक्ष्ण कीजिये और (**अतिथिग्वाय**) अतिथियों के गमन के लिये (**शंस्यम्**) प्रशंसनीय को (**इत्**) ही (**करिष्यन्**) करते हुए तीक्ष्ण कीजिये॥८॥

**भावार्थः**-हे राजन्! जो शुभ गुणों के आचरण से युक्त तुम में प्रीतिमान् हों उन धार्मिक जनों को प्रशंसित कीजिये, जैसे अतिथियों का आगमन हो वैसा विधान कीजिये॥८॥

**पुनः पठकपाठकाः [=पाठकादयः] परस्परं कथं वर्त्तेरन्नित्याह॥**

फिर पढ़ने और पढ़ाने वाले परस्पर कैसे वर्ताव वर्तें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**सद्यश्चिन्नु ते मघवन्नभिष्टौ नरः शंसन्त्युक्थशास उक्था।**

**ये ते हवेभिर्वि पणींरदाशन्नस्मान् वृणीष्व युज्याय तस्मै॥९॥**

**सद्यः। चित्। नु। ते। मघऽवन्। अभिष्टौ। नरः। शंसन्ति। उक्थऽशासः। उक्था। ये। ते। हवेभिः। वि। पणीन्। अदाशन्। अस्मान्। वृणीष्व। युज्याय। तस्मै॥९॥**

**पदार्थः**-(**सद्यः**) (**चित्**) अपि (**नु**) इव (**ते**) तव (**मघवन्**) पूजनीयविद्याऽध्यापक (**अभिष्टौ**) अभिप्रियायाम् नीतौ (**नरः**) (**शंसन्ति**) (**उक्थशासः**) य उक्थानां प्रशंसनीयानां मन्त्राणामर्थञ्छासन्ति ते



www.9009.co.in

**(उक्था)** उक्थानि प्रशंसनीयानि वचनानि **(ये)** **(ते)** **(हवेभिः)** हवनैः **(वि)** **(पणीन्)** व्यवहर्तॄन् **(अदाशन्)** ददति **(अस्मान्)** **(वृणीष्व)** स्वीकुर्याः **(युज्याय)** योक्तुं योग्याय व्यवहाराय **(तस्मै)**॥९॥

**अन्वयः**-हे मघवन्! य उक्थशासो नरस्तेऽभिष्टौ सद्यश्चिदुक्था शंसन्ति ये च हवेभिस्ते विपणीन्वादाशँस्तानस्माँश्च तस्मै युज्याय वृणीष्व॥९॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। हे विद्वन्नध्यापक! यूयमस्मान् वेदार्थं सद्यो ग्राहयत येन वयमप्यध्यापनं कुर्याम॥९॥

**पदार्थः**-हे **(मघवन्)** प्रशंसनीय विद्या के अध्यापक! जो **(उक्थशासः)** प्रशंसा करने योग्य मन्त्रों के अर्थों की शिक्षा देने वाले **(नरः)** विद्वान् जन **(ते)** तुम्हारी **(अभिष्टौ)** सब ओर से प्रिय वेला में **(सद्यः)** शीघ्र **(चित्)** ही **(उक्था)** प्रशंसित वचनों को **(शंसन्ति)** प्रबन्ध से कहते हैं और **(ये)** जो **(हवेभिः)** हवनों के साथ **(ते)** आपके **(विपणीन्)** व्यवहारों को **(नु, अदाशन्)** ही देते है उन्हें और **(अस्मान्)** हम लोगों को **(तस्मै)** उस **(युज्याय)** युक्त करने योग्य व्यवहार के लिये **(वृणीष्व)** स्वीकार कीजिये॥९॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे विद्वान् अध्यापक! तुम हम लोगों को वेदार्थ शीघ्र ग्रहण कराओ, जिससे हम लोग भी अध्यापन करावें॥९॥

**पुना राजा किं कुर्यादित्याह॥**

फिर राजा क्या करे, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**एते स्तोमा॑ न॒रां नृ॑तम॒ तुभ्य॑मस्म॒द्र्य॑ञ्चो॒ दद॑तो म॒घानि॑।**

**तेषा॑मिन्द्र वृत्र॒हत्ये॑ शि॒वो भू॒: सखा॑ च॒ शूरो॑ऽवि॒ता च॑ नृ॒णाम्॥१०॥**

**ए॒ते। स्तोमा॑ः। न॒राम्। नृ॒ऽत॒म॒। तुभ्य॑म्। अ॒स्म॒द्र्य॑ञ्चः। दद॑तः। म॒घानि॑। तेषा॑म्। इ॒न्द्र॒। वृ॒त्र॒ऽहत्ये॑। शि॒वः। भूः॒। सखा॑। च॒। शूर॑ः। अ॒वि॒ता। च॒। नृ॒णाम्॥१०॥**

**पदार्थः**-**(एते)** **(स्तोमाः)** प्रशंसनीया विद्वांसोऽध्येतारश्च **(नराम्)** नायकानाम् नृणां मध्ये **(नृतम)** अतिशयेन नायक **(तुभ्यम्)** **(अस्मद्र्यञ्चः)** येऽस्मानञ्चन्ति प्राप्नुवन्ति ते **(ददतः)** **(मघानि)** विद्याधनादीनि **(तेषाम्)** **(इन्द्र)** परमैश्वर्य्ययुक्त राजन् **(वृत्रहत्ये)** मेघहनन इव सङ्ग्रामे **(शिवः)** मङ्गलकारी **(भूः)** भव। अत्राडभावः। **(सखा)** सुहृत् **(च)** **(शूरः)** शत्रूणां हन्ता **(अविता)** रक्षकः **(च)** **(नृणाम्)** मनुष्याणाम्॥१०॥

**अन्वयः**- हे नरां नृतमेन्द्र! य एत अस्मद्र्यञ्चः स्तोमास्तुभ्यं मघानि ददतस्तेषां नृणां वृत्रहत्ये सूर्य इवाऽविता शिवः सखा च शूरश्च त्वं भूः॥१०॥

**भावार्थः**- हे राजन्! यदि भवान् विदुषां रक्षां कृत्वा तेभ्य उपकारं गृह्णीयात्तर्हि का कोन्नतिर्न स्यात्॥१०॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-हे **(नराम्)** नायक मनुष्यों के बीच **(नृतम)** अतीव नायक **(इन्द्र)** परमैश्वर्ययुक्त राजा! जो **(एते)** ये **(अस्मद्र्यञ्चः)** हम लोगों को प्राप्त होते हुए **(स्तोमाः)** प्रशंसनीय विद्वान् और पढ़ने वाले **(तुभ्यम्)** तुम्हारे लिये **(मघानि)** विद्याधनों को **(ददतः)** देते हैं **(तेषाम्)** उन **(नृणाम्)** मनुष्यों के **(वृत्रहत्ये)** मेघों के हनन करने के समान संग्राम में सूर्य के समान **(अविता)** रक्षा करने वाले **(शिवः)** मंगलकारी **(सखा, च)** और मित्र **(शूरः)** शत्रुओं के मारने वाले **(च)** भी आप **(भूः)** हूजिये॥१०॥

**भावार्थः**-हे राजन्! जो आप विद्वानों की रक्षा करके उनसे उपकार लें तो कौन-कौन उन्नति न हो॥१०॥

**पुना राजविषयमाह॥**

फिर राज विषय को अगले मन्त्र में कहते है॥

**नू इ॒न्द्र शूर॒ स्तव॑मान ऊ॒ती ब्रह्म॑जूतस्त॒न्वा॑ वावृधस्व।**

**उप॑ नो॒ वाजा॑न् मिमी॒ह्युप॒ स्तीन् यू॒यं पा॑त स्व॒स्तिभिः॒ सदा॑ नः॥११॥३०॥२॥**

**नु। इ॒न्द्र॒। शू॒र॒। स्तव॑मानः। ऊ॒ती। ब्रह्म॑ऽजू॒तः। त॒न्वा॑। व॒वृ॒ध॒स्व॒। उप॑। न॒ः। वाजा॑न्। मि॒मी॒हि॒। उप॑। स्तीन्। यू॒यम्। पा॒त॒। स्व॒स्तिऽभिः॑। सदा॑। न॒ः॥११॥**

**पदार्थः**-**(नू)** सद्यः। अत्र **ऋचि तुनुघे**ति दीर्घः। **(इन्द्रः)** शत्रूणां विदारक **(शूर)** निर्भय सेनेश **(स्तवमानः)** सर्वान् योद्धॄन् वीररसयुक्तव्याख्यानेनोत्साहयन् **(ऊती)** सम्यग्रक्षया **(ब्रह्मजूतः)** ब्रह्मणा धनेनान्नेन युक्तः **(तन्वा)** शरीरेण **(वावृधस्व)** भृशं वर्धस्व **(उप)** **(नः)** अस्मान् **(वाजान्)** बलवेगादियुक्तान् **(मिमीहि)** मान्यं कुरु **(उप)** **(स्तीन्)** संहतान् मिलितान् **(यूयम्)** **(पात)** **(स्वस्तिभिः)** सुखैः **(सदा)** **(नः)** अस्मान्॥११॥

**अन्वयः**-हे शूरेन्द्र! त्वं स्तवमानो ब्रह्मजूत ऊती तन्वा वावृधस्व स्तीन् वाजान्न उपमिमीहि नु सद्यः शत्रुबलमुपमिमीहि। हे भृत्या! यूयं स्वस्तिभिर्नः सदा पात॥११॥

**भावार्थः**-हे सेनेश! त्वं यथा स्वशरीरबलं वर्धयसि तथैव सर्वेषां योद्धॄणां शरीरबलं वर्धय यथा भृत्यास्त्वां रक्षेयुस्तथा त्वमप्येतान् सततं रक्षेति॥११॥

अत्रेन्द्रदृष्टान्तेन राजसभासेनेशाऽध्यापकाऽध्येतृराजप्रजाभृत्यकृत्यवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

अस्मिन्नध्यायेऽग्निवाग्विद्वद्राजप्रजाऽध्यापकाऽध्येतृपृथिव्यादिमेधाविविद्युत्सूर्य्यमेधयज्ञहोतृयजमान-सेनासेनापतिगुणकृत्यवर्णनादेतदध्यायार्थस्य पूर्वाऽध्यायार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इत्यृग्वेदे पञ्चमाष्टके द्वितीयोऽध्यायस्त्रिंशो वर्गः सप्तमे मण्डल एकोनविंशं सूक्तं च समाप्तम्॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-हे **(शूर)** निर्भय सेनापति **(इन्द्र)** शत्रुओं के विदीर्ण करने वाले! आप **(स्तवमानः)** सब युद्ध करने वालों को वीररस व्याख्यान से उत्साहित करते हुए और **(ब्रह्मजूतः)** धन वा अन्न से संयुक्त **(ऊती)** सम्यक् रक्षा से **(तन्वा)** शरीर से **(वावृधस्व)** निरन्तर बढ़ो **(स्तीन्)** और मिले हुए **(वाजान्)** बल वेगादियुक्त **(नः)** हम लोगों का **(उपमिमीहि)** समीप में मान करो तथा **(नु)** शीघ्र शत्रुबल को **(उप)** उपमान करो, हे भृत्य जनो! **(यूयम्)** तुम लोग **(स्वस्तिभिः)** सुखों से **(नः)** हम लोगों की **(सदा)** सर्वदा **(पात)** रक्षा करो॥११॥

**भावार्थः**-हे सेनापति! तुम जैसे अपने शरीर और बल को बढ़ाओ, वैसे ही समस्त योद्धाओं के शरीर-बल को बढ़ाओ। जैसे भृत्यजन तुम्हारी रक्षा करें, वैसे तुम भी इनकी निरन्तर रक्षा करो॥११॥

इस सूक्त में इन्द्र के दृष्टान्त से राजसभा, सेनापति, अध्यापक, अध्येता, राजा, प्रजा और भृत्यजनों के काम का वर्णन होने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ संगति जाननी चाहिये॥

इस अध्याय में अग्नि, वाणी, विद्वान्, राजा, प्रजा, अध्यापक, अध्येता, पृथिवी आदि, मेधावी, बिजुली, सूर्य, मेघ, यज्ञ, होता, यजमान, सेना और सेनापति के गुण कर्मों का वर्णन होने से इस अध्याय के अर्थ की इससे पूर्व अध्याय के अर्थ के साथ संगति जाननी चाहिये॥

**यह ऋग्वेद के पञ्चम अष्टक में दूसरा अध्याय और तीसवां वर्ग, सातवां मण्डल और उन्नीसवां सूक्त पूरा हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

अथ पञ्चमाष्टके तृतीयोऽध्यायः॥

**ओ३म् विश्वा॑नि देव सवितर्दुरि॒तानि॒ परा॑ सुव। यद्भ॒द्रं तन्न॒ आ सु॑व॥ ऋ०५.८२.५॥**

**अथ दशर्चस्य विंशतितमस्य सूक्तस्य वसिष्ठ ऋषिः। इन्द्रो देवता। १ स्वराट् पङ्क्तिः। ७ भुरिक् पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः। २, ४, १० निचृत्त्रिष्टुप्। ३, ५ विराट्त्रिष्टुप्। ६, ८, ९ त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः॥**

***अथ कीदृशो राजा श्रेष्ठः स्यादित्याह॥***

अब पञ्चमाष्टक के तीसरे अध्याय तथा दश ऋचा वाले बीसवें सूक्त का आरम्भ है, जिसके पहले मन्त्र में कैसा राजा श्रेष्ठ हो, इस विषय को कहते हैं॥

**उ॒ग्रो ज॑ज्ञे वी॒र्या॑य स्व॒धावा॒न् चक्रि॒रपो॒ नर्यो॒ यत्क॑रि॒ष्यन्।**
**जग्मि॒र्युवा॑ नृषद॑न॒मवो॑भिस्त्रा॒ता न॒ इन्द्र॒ एन॑सो म॒हश्चि॑त्॥ १॥**

**उ॒ग्रः। ज॒ज्ञे। वी॒र्या॑य। स्व॒धाऽवा॑न्। चक्रिः॑। अपः॑। नर्यः॑। यत्। क॒रि॒ष्यन्। जग्मिः॑। युवा॑। नृ॒ऽसद॑नम्। अवः॑ऽभिः। त्रा॒ता। न॒ः। इन्द्रः॑। एन॑सः। म॒हः। चि॒त्॥ १॥**

**पदार्थः**-(**उग्रः**) तेजस्वी (**जज्ञे**) जायते (**वीर्याय**) पराक्रमाय (**स्वधावान्**) बहुधनधान्ययुक्तः (**चक्रिः**) कर्ता (**अपः**) जलानि (**नर्यः**) नृषु साधुः (**यत्**) यः (**करिष्यन्**) (**जग्मिः**) गन्ता (**युवा**) प्राप्तयौवनः (**नृषदनम्**) नृणां स्थानम् (**अवोभिः**) रक्षादिभिः (**त्राता**) रक्षकः (**नः**) अस्मानस्माकं वा (**इन्द्रः**) सूर्य इव राजा (**एनसः**) पापाचरणात् (**महः**) महतः (**चित्**) इव॥ १॥

**अन्वयः**-यद्यो नर्यः स्वधावाञ्चक्रिरुग्रो युवा नृषदनं जग्मिरवोभिः पालनं करिष्यँस्त्राता सूर्योऽपश्चिदिवेन्द्रो वीर्याय जज्ञे मह एनसो नोऽस्मान् पृथग्रक्षति स एव राजा भवितुं योग्यः॥ १॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यो मनुष्याणां हितकारी पितृवत्पालक उपदेशकवत्पापाचरणात् पृथक्कर्त्ता सभायां स्थित्वा न्यायकर्त्ता धनैश्वर्यपराक्रमांश्च सततं वर्धयति तमेव सर्वे मनुष्या राजानं मन्यन्ताम्॥ १॥

**पदार्थः**-(**यत्**) जो (**नर्यः**) मनुष्यों में साधु उत्तम जन (**स्वधावान्**) बहुत धनधान्य से युक्त (**चक्रिः**) करने वाला (**उग्रः**) तेजस्वी (**युवा**) जवान मनुष्य (**नृषदनम्**) मनुष्यों के स्थान को (**जग्मिः**) जाने वाला (**अवोभिः**) रक्षा आदि से पालना (**करिष्यन्**) करता हुआ (**त्राता**) रक्षा करने वाला सूर्य जैसे (**अपः**) जलों को (**चित्**) वैसे (**इन्द्रः**) राजा (**वीर्याय**) पराक्रम के लिये (**जज्ञे**) उत्पन्न हो और



www.9009.co.in

**(महः)** महान् **(एनसः)** पापाचरण से **(नः)** हम लोगों को अलग रखता है, वही राजा होने के योग्य हैं॥१॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो मनुष्यों का हितकारी पिता के समान पालने और उपदेश करने वाले के समान पापाचरण से अलग रखने वाला, सभा में स्थित होकर न्यायकर्ता तथा धन, ऐश्वर्य और पराक्रम को निरन्तर बढ़ाता है, उसी को सब मनुष्य राजा मानें॥१॥

**पुनः स कीदृशो भवेदित्याह॥**

फिर वह कैसा हो, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**हन्ता॑ वृ॒त्रमिन्द्र॒: शूशु॑वान॒: प्रावी॒न्नु वी॒रो ज॑रि॒तार॑मू॒ती।**

**कर्ता॑ सु॒दासे॒ अह॒ वा उ॑ लो॒कं दाता॒ वसु॒ मुहु॒रा दा॒शुषे॑ भूत्॥२॥**

**हन्ता॑। वृ॒त्रम्। इन्द्र॑:। शूशु॑वानः। प्र। आ॒वी॒त्। नु। वी॒रः। ज॒रि॒तार॑म्। ऊ॒ती। कर्ता॑। सु॒ऽदासे॑। अह॑। वै। ऊँ॒ इति॑। लो॒कम्। दाता॑। वसु॑। मुहु॑:। आ। दा॒शुषे॑। भूत्॥२॥**

**पदार्थः**-**(हन्ता)** शत्रूणां घातकः **(वृत्रम्)** मेघमिव **(इन्द्रः)** सूर्य इव राजा **(शूशुवानः)** भृशं वर्धमानः **(प्र)** **(आवीत्)** प्रकर्षेण रक्षेत् **(नु)** शीघ्रम् **(वीरः)** शुभगुणकर्मस्वभावव्यापकः **(जरितारम्)** गुणानां प्रशंसकम् **(ऊती)** रक्षया **(कर्त्ता)** **(सुदासे)** सुष्ठु दात्रे **(अह)** विनिग्रहे **(वै)** निश्चये **(उ)** अद्भुते **(लोकम्)** दर्शनं द्रष्टव्यं जन्मान्तरे लोकान्तरं वा **(दाता)** **(वसु)** द्रव्यम् **(मुहुः)** वारंवारम् **(आ)** **(दाशुषे)** दानशीलाय **(भूत्)** भवेत्॥२॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! इन्द्रो वृत्रमिव यः शत्रूणमह नु हन्ता शूशुवानो वीरः कर्त्ता वसु दाता सुदासेऽहोती जरितारमु लोकं मुहुः प्रावीद्दाशुषे मुहुरा भूत् स वै राज्यकरणाय श्रेष्ठः स्यात्॥२॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। य आशुकारी सूर्यवद्विद्याविनयप्रकाशेन दुष्टनिवारकः शूरवीरः सन् सुपात्रेभ्यो यथायोग्यं ददद् बहुसुखं प्राप्नुयात्॥२॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(इन्द्रः)** सूर्य जैसे **(वृत्रम्)** मेघ को, वैसे जो शत्रुओं का **(अह)** निग्रह कर अर्थात् पकड़-पकड़ **(नु)** शीघ्र **(हन्ता)** घात करने वाला राजा **(शूशुवानः)** निरन्तर बढ़ते हुए **(वीरः)** शुभ गुण-कर्म-स्वभावों में व्याप्त **(कर्त्ता)** दृढ़ कार्य करने वाले और **(वसु, दाता)** धन के देने वाले **(सुदासे)** सुन्दर दानशील के लिये ही **(ऊती)** रक्षा से **(जरितारम्)** गुणों की प्रशंसा करने वाले **(उ)** अद्भुत **(लोकम्)** अन्य जन्म में देखने योग्य वा अन्य लोक को **(मुहुः)** वार-वार **(प्र, आवीत्)** उत्तम रक्षा करे **(दाशुषे)** दानशील के लिये वार-वार **(आ, भूत्)** प्रसिद्ध हो **(वै)** वही राज्य करने के लिये श्रेष्ठ हो॥२॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो शीघ्रकारी, सूर्य के समान विद्या और विनय के प्रकाश से दुष्टों का निवारण करने वाला शूरवीर होता हुआ अच्छे सुपात्रों के लिये यथायोग्य पदार्थ देता हुआ बहुत सुख को प्राप्त हो॥२॥

**पुनः स कीदृशो भूत्वा किं कुर्यादित्याह॥**

फिर वह कैसा होकर क्या करे, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**युध्मो अनर्वा खजकृत्समद्वा शूरः सत्राषाड् जनुषेमषाळहः।**

**व्यास इन्द्रः पृतनाः स्वोजा अधा विश्वं शत्रूयन्तं जघान॥३॥**

**युध्मः। अनर्वा। खजऽकृत्। समत्ऽवा। शूरः। सत्राषाट्। जनुषा। ईम्। अषाळहः। वि। आसे। इन्द्रः। पृतनाः। सुऽओजाः। अध। विश्वम्। शत्रुऽयन्तम्। जघान॥३॥**

**पदार्थः**-(**युध्मः**) योद्धा (**अनर्वा**) अविद्यमाना अश्वा यस्य सः (**खजकृत्**) यः स्वजं सङ्ग्रामं करोति सः। **खज इति सङ्ग्रामनाम।** (निघं०२.१७) (**समद्वा**) यो मदेन सह वर्त्तमानान् वनति सम्भजति सः (**शूरः**) शत्रूणां हिंसकः (**सत्राषाट्**) यः सत्राणि बहून् यज्ञान् कर्त्तुं सहते (**जनुषा**) जन्मना (**ईम्**) सर्वतः (**अषाळहः**) यः शत्रुभिः सोढुमशक्यः (**वि**) (**आसे**) मुखे (**इन्द्रः**) विद्युदिव (**पृतनाः**) सेना मनुष्यान् वा (**स्वोजाः**) शोभनमोजः पराक्रमोऽन्नं वा यस्य सः (**अध**) अथ (**विश्वम्**) सर्वम् (**शत्रूयन्तम्**) शत्रून् कामयमानम् (**जघान**) हन्यात्॥३॥

**अन्वयः**-यो राजेन्द्रो जनुषा स्वोजा युध्मोऽनर्वाऽषाळहः खजकृत्समद्वा शूरः सत्राषाडषाळहः पृतनाः स्वसेनाः पालयेदध व्यासे विश्वं शत्रूयन्तमीं जघान स एव शत्रून् विजेतुं शक्नुयात्॥३॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यो वरराजगुणसहितो दीर्घेण ब्रह्मचर्येण द्वितीयजन्मनः कर्ता पूर्णबलपराक्रमो धार्मिकः स्यात् स सूर्य्यवद्दुष्टाञ्छत्रूनन्यायान्धकारं निवारयेत्स एव सर्वेषामानन्दप्रदो भवेत्॥३॥

**पदार्थः**-जो राजा (**इन्द्रः**) बिजुली के समान (**जनुषा**) जन्म से (**स्वोजाः**) शुभ अन्न वा पराक्रम जिसके विद्यमान (**युध्मः**) जो युद्ध करने वाला (**अनर्वा**) जिसके घोड़े विद्यमान नहीं जो (**अषाळहः**) शत्रुओं से न सहने योग्य (**खजकृत्**) सङ्ग्राम करने वाला (**समद्वा**) जो मत्त प्रमत्त मनुष्यों को सेवता (**शूरः**) शत्रुओं को मारता (**सत्राषाट्**) जो यज्ञों के करने को सहता और (**पृतनाः**) अपनी सेनाओं को पाले (**अध**) इसके अनन्तर (**वि, आसे**) विशेषता से मुख के सम्मुख (**विश्वम्**) सब (**शत्रूयन्तम्**) शत्रुओं की कामना करने वाले को (**ईम्**) सब ओर से (**जघान**) मारे वही शत्रुओं को जीत सके॥३॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! श्रेष्ठ राजगुणों सहित, दीर्घ ब्रह्मचर्य्य से द्वितीय जन्म अर्थात् विद्या जन्म का कर्त्ता, पूर्ण बल पराक्रमयुक्त, धार्मिक हो वह सूर्य के समान दुष्ट शत्रुओं को अन्यायरूपी अन्धकार को निवारे, वही सब का आनन्द देने वाला हो॥३॥

**पुनः स राजा किं कुर्य्यादित्याह॥**

फिर वह राजा क्या करे, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**उभे चिदिन्द्र रोदसी महित्वा पप्राथ तविषीभिस्तुविष्मः।**

**नि वज्रमिन्द्रो हरिवान् मिमिक्षन्त्समन्धसा मदेषु वा उवोच॥४॥**

**उभे इति। चित्। इन्द्र। रोदसी इति। महिऽत्वा। आ। पप्राथ। तविषीभिः। तुविष्मः। नि। वज्रम्। इन्द्रः। हरिऽवान्। मिमिक्षन्। सम्। अन्धसा। मदेषु। वै। उवोच॥४॥**

**पदार्थः**-(**उभे**) द्वे (**चित्**) इव (**इन्द्र**) सूर्यवद्राजन् (**रोदसी**) द्यावापृथिव्यौ (**महित्वा**) सत्कारं प्राप्य (**आ**) समन्तात् (**पप्राथ**) प्रति व्याप्नोति (**तविषीभिः**) बलिष्ठाभिः सेनाभिः (**तुविष्मः**) बहुबलयुक्तः (**नि**) (**वज्रम्**) शस्त्रास्त्रम् (**इन्द्रः**) वीरपुरुषराजा (**हरिवान्**) बहुमनुष्ययुक्तः (**मिमिक्षन्**) सुखैः सेक्तुमिच्छन् (**सम्**) (**अन्धसा**) अन्नादिना (**मदेषु**) आनन्देषु (**वै**) निश्चयेन (**उवोच**) उच्यात्॥४॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! त्वमुभे रोदसी चिदिव महित्वा तविषीभिरा पप्राथ तुविष्मः सन् हरिवानन्धसा सं नि मिमिक्षन् वज्रं धृत्वा य इन्द्रो मदेषूवोच स वै राज्यं कर्त्तुमर्हेत्॥४॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। यथा भूमिसूर्यौ महत्त्वेन सर्वानभि व्याप्य जलान्नाभ्यां सर्वानार्द्रीकृतं जगत्सुखयतस्तथैव राजा विद्याविनयाभ्यां सत्यमुपदिश्य सर्वाः प्रजाः सततमुन्नयेत्॥४॥

**पदार्थः**-हे (**इन्द्र**) सूर्य के समान वर्त्तमान राजा! आप (**उभे**) दो (**रोदसी**) आकाश और पृथिवी (**चित्**) के समान (**महित्वा**) सत्कार पाके (**तविषीभिः**) बलिष्ठ सेनाओं से (**आ, पप्राथ**) निरन्तर व्याप्त होता और (**तुविष्मः**) बहुत बलयुक्त होता हुआ (**हरिवान्**) बहुत मनुष्यों से युक्त (**अन्धसा**) अन्नादि पदार्थ से (**सम्, नि, मिमिक्षन्**) प्रसिद्ध सुखों से निरन्तर सीचने की इच्छा करता हुआ (**वज्रम्**) शस्त्र अस्त्रों को धारण कर जो (**इन्द्रः**) वीर पुरुष राजा (**मदेषु**) आनन्दों के निमित्त (**उवाच**) कहे (**वै**) वही राज्य करने को योग्य हो॥४॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जैसे भूमि और सूर्य बड़प्पन से सब को व्याप्त होकर जल और अन्न से सब को और गीले किये हुए जगत् को सुखी करते हैं, वैसे ही राजा विद्या और विनय से सत्य का उपदेश कर सब प्रजाजनों की निरन्तर उन्नति करे॥४॥

**उत्पन्नो मनुष्यः कीदृशो भूत्वा शक्तिमाञ्जायत इत्याह॥**

उत्पन्न हुआ मनुष्य कैसा होकर सामर्थ्यवान् होता है, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥



www.9009.co.in

**वृषा॑ जजान॒ वृष॑णं॒ रणा॑य॒ तमु॑ चि॒न्नारी॒ नर्यं॑ सुसूव।**

**प्र यः सेना॒नीरध॒ नृभ्यो॒ अस्ती॒नः सत्वा॑ ग॒वेष॑णः स धृष्णुः॥५॥१॥**

**वृषा॑। ज॒जान॑। वृष॑णम्। रणा॑य। तम्। ऊँ इति॑। चि॒त्। नारी॑। नर्य॑म्। सु॒सू॒व॒। प्र। यः। से॒ना॒ऽनीः। अध॑। नृऽभ्यः॑। अस्ति॑। इ॒नः। सत्वा॑। गो॒ऽएष॑णः। सः। धृ॒ष्णुः॥५॥**

**पदार्थः**-(**वृषा**) वर्षकः (**जजान**) जनयेत् (**वृषणम्**) बलिष्ठं योद्धारम् (**रणाय**) सङ्ग्रामाय (**तम्**) (**उ**) (**चित्**) (**नारी**) नरस्य स्त्री (**नर्यम्**) नृषु बलिष्ठम् (**सुसूव**) जनयति (**प्र**) (**यः**) (**सेनानीः**) यः सेनां नयति सः (**अध**) अनन्तरम् (**नृभ्यः**) सेनानायकेभ्यः (**अस्ति**) (**इनः**) ईश्वर इव (**सत्वा**) बलवान् (**गवेषणः**) उत्तमवाग्विद्यान्वेषी (**सः**) (**धृष्णुः**) धृष्टः प्रगल्भः॥५॥

**अन्वयः**-यो वृषा सेनानीः सत्वा गवेषणो नृभ्यो धृष्णुर्जजान स इन इव रणाय प्रताप्यस्ति अध यमु नर्यं वृषणं वृषा नारी च प्र सुसूव तं चिज्जना न्यायकारिणं मन्यन्ते॥५॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यं स्त्रीपुरुषौ दीर्घं ब्रह्मचर्यं संसेव्य जनयतः स पुरुषो जगदीश्वरवत्सर्वान् न्यायेन पालयितुं शक्तो भूत्वा सेनाऽधिपः शत्रून्विजेतुं सदा प्रभुर्भवति॥५॥

**पदार्थः**-(**यः**) जो (**वृषा**) वर्षा करने (**सेनानीः**) सेना को पहुँचाने (**सत्वा**) बलवान् (**गवेषणः**) और उत्तम वाणी विद्या का ढूंढने वाला (**नृभ्यः**) सेना नायकों से (**धृष्णुः**) धृष्ट प्रगल्भ (**जजान**) उत्पन्न हो (**सः**) वह (**इनः**) ईश्वर के समान (**रणाय**) संग्राम के लिये प्रतापी (**अस्ति**) है (**अध**) इसके अनन्तर जिस (**उ**) ही (**नर्यम्**) मनुष्यों में (**वृषणम्**) बलिष्ठ योद्धा पुत्र को वर्षा करने वाला पुरुष और (**नारी**) स्त्री (**प्र, सुसूव**) उत्पन्न करते हैं (**तम्, चित्**) उसी को जन न्यायकारी मानते हैं॥५॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जिसको स्त्रीपुरुष दीर्घ ब्रह्मचर्य्य का सेवन कर उत्पन्न करते हैं, वह पुरुष जगदीश्वरवत् सब को न्याय से पालने को समर्थ होकर सेनाधिप हुआ शत्रुओं के जीतने को सदा समर्थ होता है॥५॥

**पुनर्मनुष्याः किं कृत्वा कीदृशा भवेयुरित्याह॥**

फिर मनुष्य क्या करके कैसे हों, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**नू चि॒त्स भ्रे॑षते॒ जनो॒ न रे॑ष॒न्मनो॒ यो अ॑स्य घो॒रमा॒विवा॑सात्।**

**य॒ज्ञैर्य इन्द्रे॒ दध॑ते॒ दुवां॑सि॒ क्षय॒त्स रा॒य ऋ॑त॒पा ऋ॑ते॒जाः॥६॥**

**नु। चि॒त्। सः। भ्रे॒ष॒ते॒। जन॑ः। न। रे॒ष॒त्। मन॑ः। यः। अ॒स्य। घो॒रम्। आ॒ऽविवा॑सात्। य॒ज्ञैः। यः। इन्द्रे॑। दध॑ते। दुवां॑सि। क्षय॑त्। सः। रा॒ये। ऋ॒तऽपाः। ऋ॒ते॒ऽजाः॥६॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**नू**) सद्यः। अत्र **ऋचि तुनुघे**ति दीर्घः। (**चित्**) अपि (**सः**) (**भ्रेषते**) प्राप्नोति (**जनः**) मनुष्यः (**न**) निषेधे (**रेषत्**) हिनस्ति (**मनः**) अन्तःकरणम् (**यः**) (**अस्य**) (**घोरम्**) (**आविवासात्**) समन्तात्सेवेत (**यज्ञैः**) सङ्गतैः कर्मभिः (**यः**) (**इन्द्रे**) परमैश्वर्ययुक्ते परमेश्वरे (**दधते**) धरति (**दुवांसि**) परिचरणानि सेवनानि (**क्षयत्**) निवसेत् (**सः**) (**राये**) धनाय (**ऋतपाः**) सः सत्यं पाति सः (**ऋतेजाः**) यः सत्ये जायते सः॥६॥

**अन्वयः**-यो जनोऽस्य घोरं मनो नाऽऽविवासात् स चिन्नु विजयं भ्रेषते स न रेषत्। य ऋतपा ऋतेजा यज्ञैरिन्द्रे दुवांसि दधते स राये सततं क्षयत्॥६॥

**भावार्थः**-ये रागद्वेषरहितमनसो घोरकर्मविरहाः परमेश्वरसेवका धर्मात्मानो जनाः स्युस्ते कदाचिद्धिंसिता न स्युः॥६॥

**पदार्थः**- (**यः**) जो (**जनः**) मनुष्य (**अस्य**) इसके (**घोरम्**) घोर (**मनः**) अन्तःकरण को (**न**) [नहीं] (**आविवासात्**) सेवे (**सः, चित्**) वही (**नु**) शीघ्र विजय को (**भ्रेषते**) पाता और वह नहीं (**रेषत्**) हिंसा करता है (**यः**) जो (**ऋतपाः**) जो सत्य की पालना करने और (**ऋतेजाः**) सत्य में उत्पन्न अर्थात् प्रसिद्ध होने वाला (**यज्ञैः**) मिले हुए कर्मों से (**इन्द्रे**) परमैश्वर्ययुक्त परमेश्वर में (**दुवांसि**) सेवनों को (**दधते**) धारण करता (**सः**) वह (**राये**) धन के लिये निरन्तर (**क्षयत्**) वसे॥५॥

**भावार्थः**-जो रागद्वेषरहित मन वाले, घोरकर्मरहित, परमेश्वर के सेवक, धर्मात्मा जन हों वे कभी नष्ट न हों॥६॥

**पुनर्विद्वांसोऽन्यान् प्रति कथमुपकारिणो भवेयुरित्याह॥**

फिर विद्वान् अन्य जनों के प्रति कैसे उपकारी हों, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**यदि॑न्द्र पू॒र्वो अप॑राय॒ शिक्ष॒न्नय॒ज्ज्याया॒न् कनी॑यसो दे॒ष्णम्।**

**अ॒मृ॒त इत्पर्या॑सीत दू॒रमा चि॑त्र॒ चित्र्यं॒ भरा र॒यिं नः॑॥७॥**

**यत्। इ॒न्द्र॒। पू॒र्वः॑। अप॑राय। शिक्ष॑न्। अय॑त्। ज्याया॑न्। कनी॑यसः। दे॒ष्णम्। अ॒मृत॑ः। इत्। परि॑। आ॒सी॒त्। दू॒रम्। आ। चि॒त्र॒। चित्र्य॑म्। भ॒र॒। र॒यिम्। न॒ः॥७॥**

**पदार्थः**-(**यत्**) यः (**इन्द्र**) परमैश्वर्यप्रद (**पूर्वः**) (**अपराय**) अन्यस्मै (**शिक्षन्**) विद्याग्रहणं कारयन् (**अयत्**) प्राप्नोति (**ज्यायान्**) अतिशयेन ज्येष्ठः (**कनीयसः**) अतिशयेन कनिष्ठात् (**देष्णम्**) दातुं योग्यम् (**अमृतः**) नाशरहितः (**इत्**) एव (**परि**) सर्वतः (**आसीत**) (**दूरम्**) (**आ**) (**चित्र**) अद्भुतकर्मकारिन् (**चित्र्यम्**) चित्रेष्वद्भुतेषु भवम् (**भर**) धर। अत्र **द्व्यचोऽतस्तिङ** इति दीर्घः। (**रयिम्**) धनम् (**नः**) अस्मभ्यम्॥७॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! यद्यः पूर्वोऽपराय ज्यायान् कनीयसो देष्णं शिक्षन्नयत्। हे चित्र! योऽमृत इत् आत्मना नित्यो योगी दूरं पर्यासीत तेन सहितस्त्वं नश्चित्र्यं रयिमा भर॥७॥



www.9009.co.in

**भावार्थः-**हे राजन्! ये पूर्वं विद्वांसो भूत्वा विद्यार्थिनः शिक्षयन्ति ये ज्येष्ठा कनिष्ठान्प्रति पितृवद्वर्त्तन्ते ये च योगिनः परमात्मानं समाधिनाऽऽत्मनि संस्थाप्य साक्षात्कृत्याऽन्यानुपदिशन्ति तदर्थं त्वं शरीरं मनो धनं च धर॥७॥

**पदार्थः**-हे **(इन्द्र)** परमैश्वर्य के देने वाले **(यत्)** जो **(पूर्वः)** प्रथम **(अपराय)** और के लिये **(ज्यायान्)** अतीव वृद्ध वा श्रेष्ठ जन **(कनीयसः)** अत्यन्त कनिष्ठ से **(देष्णम्)** देने योग्य की **(शिक्षन्)** शिक्षा अर्थात् विद्या ग्रहण कराता हुआ **(अयत्)** प्राप्त होता वा हे **(चित्र)** अद्भुत कर्म करने वाले! जो **(अमृतः, इत्)** नाशरहित ही आत्मा से नित्य योगी **(दूरम्)** दूर **(पर्यासीत)** सब ओर से स्थित हो उसके साथ आप **(नः)** हम लोगों के लिये **(चित्र्यम्)** अद्भुत-अद्भुत कर्मों में हुए **(रयिम्)** धन को **(आ, भर)** अच्छे प्रकार धारण कीजिये॥७॥

**भावार्थः**-हे राजा! जो पहिले विद्वान् होकर विद्यार्थियों को शिक्षा देते हैं वा जो ज्येष्ठ कनिष्ठों के प्रति पिता के समान वर्त्ताव रखते हैं वा जो योगी जन परमात्मा को समाधि से अपने आत्मा में अच्छे प्रकार आरोप के औरों को उपदेश देते हैं, उनके लिये तुम शरीर, मन और धन को धारण करो॥७॥

**पुना राजभृत्यप्रजाजनाः परस्परं कथं वर्तेरन्नित्याह॥**

फिर राजा, भृत्य और प्रजाजन परस्पर कैसे वर्त्ताव करें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**यस्त॑ इन्द्र प्रि॒यो जनो॒ ददा॑शदस॑न्नि॒रे॒के अ॑द्रि॒वः सखा॑ ते।**

**व॒यं ते॑ अ॒स्यां सु॒म॒तौ चनि॑ष्ठाः स्याम॒ वरू॑थेह अघ्न॑तो॒ नृपी॑तौ॥८॥**

**यः। ते॒। इन्द्र॒। प्रि॒यः। जन॑ः। ददा॑शत्। अस॑त्। नि॒रे॒के। अ॒द्रि॒ऽव॒ः। सखा॑। ते॒। व॒यम्। ते॒। अ॒स्याम्। सु॒ऽम॒तौ। चनि॑ष्ठाः। स्याम॑। वरू॑थे। अघ्न॑तः। नृऽपी॑तौ॥८॥**

**पदार्थः**-**(यः)** **(ते)** तव **(इन्द्र)** विद्वन् **(प्रियः)** यः पृणाति सः **(जनः)** मनुष्यः **(ददाशत्)** दाशेत् **(असत्)** भवेत् **(निरेके)** निःशङ्के व्यवहारे **(अद्रिवः)** अद्रयो मेघा विद्यन्ते यस्य सूर्यस्य तद्वद्वर्त्तमान **(सखा)** मित्रः **(ते)** तव **(वयम्)** **(ते)** तव **(अस्याम्)** **(सुमतौ)** शोभनायां सम्मतौ **(चनिष्ठाः)** नृभिर्या पीयते रक्ष्यते तस्याम् **(स्याम)** **(वरूथे)** गृहे **(अघ्नतः)** अहिंसकस्य **(नृपीतौ)** नृभिर्या पीयते रक्ष्यते तस्याम्॥८॥

**अन्वयः**-हे अद्रिव इन्द्र! यः प्रियो जनः सखा निरेकेऽसत्सुखं ददाशद्यस्य तेऽस्यां नृपीतौ सुमतौ वयं चनिष्ठाः स्यामाऽघ्नतस्ते तव वरूथे चनिष्ठाः स्याम तौ द्वौ माननीयौ वयं सत्कुर्याम॥८॥

**भावार्थः-**हे राजन्! यस्य नीतिज्ञस्य ते ये नीतिमन्तस्त एव प्रिया सन्तु भवाँश्च तेषामेव प्रियो भवेदेवं परस्परं सुहृदो भूत्वैकमत्यं विधाय सततमुन्नतिं त्वं विधेहि॥८॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-हे **(अद्रिवः)** मेघों वाले सूर्य के समान वर्त्तमान **(इन्द्र)** विद्वान्! **(यः)** जो **(प्रियः)** प्रसन्न करने वाला **(जनः)** मनुष्य **(सखा)** मित्र **(निरेके)** निःशंक व्यवहार में **(असत्)** हो और सुख **(ददाशत्)** दे जिन **(ते)** आपके **(अस्याम्)** इस **(नृपीतौ)** मनुष्यों से जो रक्षा की जाती उसमें और **(सुमतौ)** अच्छी सम्मति में **(वयम्)** हम लोग **(चनिष्ठाः)** अत्यन्त अन्नादि ऐश्वर्ययुक्त **(स्याम)** हों और **(अघ्नतः)** अहिंसक जो **(ते)** तुम उनके **(वरूथे)** घर में प्रसिद्ध हों उन मान करने योग्य दो को हम सत्कार युक्त करें॥८॥

**भावार्थः**-हे राजन्! जिस नीतिज्ञ आपके जो नीतिमान् जन हैं वे ही प्रिय हों और आप भी उन्हीं के प्रिय हूजिये, ऐसे परस्पर सुहृद् होकर एक सम्मति कर निरन्तर आप उन्नति कीजिये॥८॥

**पुनर्मनुष्याः किं कृत्वा किं प्राप्नुयुरित्याह॥**

फिर मनुष्य क्या करके किसको प्राप्त हों, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**ए॒ष स्तोमो॑ अचिक्रद॒द् वृषा॑ त उ॒त स्ता॒मुर्म॑घवन्नक्रपिष्ट।**

**रा॒यस्कामो॑ जरि॒तारं॑ त॒ आग॒न् त्वम॒ङ्ग श॑क्र॒ वस्व॒ आ श॑को नः॥९॥**

**एषः। स्तोम॑ः। अ॒चि॒क्र॒द॒त्। वृषा॑। ते॒। उ॒त। स्ता॒मुः। म॒घ॒ऽव॒न्। अ॒क्र॒ऽपि॒ष्ट॒। रा॒यः। काम॑ः। ज॒रि॒तार॑म्। ते॒। आ। अ॒ग॒न्। त्वम्। अ॒ङ्ग। श॒क्र॒। वस्व॑ः। आ। श॒क॒ः। न॒ः॥९॥**

**पदार्थः**-**(एषः)** **(स्तोमः)** प्रशंसनीयः **(अचिक्रदत्)** आह्वयेत् **(वृषा)** बलिष्ठः **(ते)** तव **(उत)** **(स्तामुः)** स्तावकः **(मघवन्)** बहुधनयुक्त **(अक्रपिष्ट)** कल्पते **(रायः)** श्रियः **(कामः)** कामनामभिलाषां कुर्व्वाणः **(जरितारम्)** स्तोतारम् **(ते)** तुभ्यम् **(आ)** **(अगन्)** समन्तात्प्राप्नोतु **(त्वम्)** **(अङ्ग)** सखे **(शक्र)** शक्तिमन् **(वस्वः)** धनानि **(आ)** **(शकः)** समन्ताच्छक्नुहि **(नः)** अस्मान्॥९॥

**अन्वयः**-हे शक्राऽङ्ग पुरुषार्थि राजन्! य एष ते स्तोम उत वृषाऽचिक्रदत्। हे मघवँस्तामुरक्रपिष्ट ते यो रायस्कामो जरितारं त्वामागन् स त्वं नो वस्व आ शकः॥९॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यूयं यदि शक्तिं वर्धयित्वा धर्म्येण कर्मेणैश्वर्यादिप्राप्तेरभिलाषां वर्धयेयुस्तर्हि युष्मान् पुष्कलमैश्वर्यं प्राप्नुयात्॥९॥

**पदार्थः**-हे **(शक्र)** शक्तिमान् **(अङ्ग)** मित्र पुरुषार्थी राजन्! जो **(एषः)** यह **(ते)** आपका **(स्तोमः)** प्रशंसा करने योग्य **(उत)** और **(वृषा)** बलिष्ठ जन **(अचिक्रदत्)** बुलावे वा हे **(मघवन्)** बहुत धनयुक्त! **(स्तामुः)** स्तुति करने वाला जन **(अक्रपिष्ट)** समर्थ होता है वा **(ते)** तुम्हारे लिये जो **(रायः)** धन की **(कामः)** कामना करने वाला **(जरितारम्)** स्तुति करने वाले आपको **(आ, अगन्)** सब ओर से प्राप्त हो वह **(त्वम्)** आप **(नः)** हमारे **(वस्वः)** धनों को **(आ, शकः)** सब ओर से सह सको॥९॥



www.9009.co.in

**भावार्थ:**-हे मनुष्यो! तुम जो शक्ति को बढ़ा कर धर्म कर्म से ऐश्वर्य आदि की प्राप्ति की अभिलाषा बढ़ाओ तो तुमको पुष्कल ऐश्वर्य प्राप्त हो॥९॥

**पुनर्मनुष्याः कथं प्रयतेरन्नित्याह॥**

फिर मनुष्य कैसे प्रयत्न करें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते है॥

**स न इन्द्र त्वयताया इषे धास्त्मना च ये मघवानो जुनन्ति।**

**वस्वी षु ते जरित्रे अस्तु शक्तिर्यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥१०॥२॥**

**सः। नः। इन्द्रः। त्वऽयताये। इषे। धाः। त्मना। च। ये। मघऽवानः। जुनन्ति। वस्वी। सु। ते। जरित्रे। अस्तु। शक्तिः। यूयम्। पात। स्वस्तिऽभिः। सदा। नः॥१०॥**

**पदार्थः**-(**सः**) (**नः**) अस्मान् (**इन्द्र**) परमैश्वर्ययुक्त राजन् (**त्वयतायै**) यया स्वस्मिन् यतते तस्यै (**इषे**) अन्नाद्यायै (**धाः**) धेहि (**त्मना**) आत्मना (**च**) (**ये**) (**मघवानः**) प्रशंसित धनाः (**जुनन्ति**) गच्छन्ति (**वस्वी**) धनसम्बन्धिनी (**सु**) (**ते**) तुभ्यम् (**जरित्रे**) सत्यप्रशंसकाय (**अस्तु**) (**शक्तिः**) सामर्थ्यम् (**यूयम्**) (**पात**) (**स्वस्तिभिः**) सुखैः (**सदा**) (**नः**) अस्मान्॥१०॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! यसत्वं त्मना त्वयताया इषे नो धा ये च मघवान एतस्यै त्वां जुनन्ति स त्वमुद्योगी भव यतो जरित्रे ते वस्वी शक्तिरस्तु। हे अस्माकं सम्बन्धिनौ! यूयं स्वस्तिभिर्नः सदा सु पात॥१०॥

**भावार्थः**-त एव श्रीकरा जना भवन्ति य आलस्यं त्याजयित्वा पुरुषार्थेन सह योजयन्ति। ये ब्रह्मचर्यमाचरन्ति तेषामैश्वर्यप्रापकं सामर्थ्यं जायते येऽन्योऽन्यस्य रक्षं विदधति ते सदा सुखिनो भवन्तीति॥१०॥

अत्र राजसूर्य्ययोधृबलिष्ठसेनापतिसेवकाऽध्यापकाऽध्येतृमित्रदातृरचककृत्यगुणवर्णनादेतदर्थस्य सूक्तस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति विंशतितमं सूक्तं द्वितीयो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे (**इन्द्र**) परमैश्वर्ययुक्त राजा जो आप (**त्मना**) आत्मा से (**त्वयतायै**) जिससे अपने में यत्न होता है उस (**इषे**) अन्न आदि सामग्री के लिये (**नः**) हम लोगों को (**धाः**) धारण कीजिये (**ये, च**) और जो (**मघवानः**) प्रशंसित धन वाले इस अन्नादि सामग्री के लिये आपको (**जुनन्ति**) प्राप्त होते हैं (**सः**) सो आप उद्योगी हूजिये जिससे (**जरित्रे**) सत्य की प्रशंसा करने वाले (**ते**) तेरे लिये (**वस्वी**) धनसम्बन्धिनी (**शक्तिः**) शक्ति (**अस्तु**) हो। हे हमारे सम्बन्धिजनो! (**यूयम्**) तुम (**स्वस्तिभिः**) सुखों से (**नः**) हम लोगों को (**सदा**) (**सु, पात**) अच्छे प्रकार रक्षा करो॥१०॥

**भावार्थ:**-वे ही लक्ष्मी करने वाले जन हैं जो आलस्य का त्याग कराके पुरुषार्थ के साथ युक्त करते हैं वा जो ब्रह्मचर्य का आचरण करते हैं, उनको ऐश्वर्य की प्राप्ति कराने वाली सामर्थ्य होती है वा जो परस्पर की रक्षा करते हैं, वे सदा सुखी होते हैं॥१०॥



www.9009.co.in

इस सूक्त में राजा, सूर्य, बलिष्ठ, सेनापति, सेवक, अध्यापक, अध्येता, मित्र, दाता और रचने वालों के कृत्य और गुणों का वर्णन होने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ संगति जाननी चाहिये।

**यह बीसवां सूक्त और दूसरा वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

**अथ दशर्चस्यैकविंशतितमस्य सूक्तस्य वसिष्ठ ऋषिः। इन्द्रो देवता। १, ६, ८, ९ विराट् त्रिष्टुप्। २, १० निचृत्त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः। ३, ७ भुरिक्पंक्तिः। ४, ५ स्वराट् पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः॥**

***अथ विद्वान् किं कुर्य्यादित्याह॥***

अब दश ऋचावाले इक्कीसवें सूक्त का आरम्भ है उसके प्रथम मन्त्र में विद्वान् क्या करे, इस विषय को कहते हैं॥

**असा॑वि दे॒वं गोऋ॑जीक॒मन्धो॒ न्य॑स्मि॒न्निन्द्रो॑ ज॒नुषे॑मुवोच।**

**बोधा॑मसि त्वा हर्यश्व य॒ज्ञैर्बोधा॑ नः॒ स्तोम॒मन्ध॑सो॒ मदे॑षु॥ १॥**

**असा॑वि। दे॒वम्। गोऽऋ॑जीकम्। अन्धः॑। नि। अ॒स्मि॒न्। इन्द्रः॑। ज॒नुषा॑। ई॒म्। उ॒वो॒च॒। बोधा॑मसि। त्वा॒। ह॒रि॒ऽअ॒श्व॒ः। य॒ज्ञैः। बोध॑। न॒ः। स्तोम॑म्। अन्ध॑सः। मदे॑षु॥ १॥**

**पदार्थः**-(**असावि**) सूयते (**देवम्**) दातारम् (**गोऋजीकम्**) गोर्भूमेर्ऋजुत्वेन प्रापकम् (**अन्धः**) अन्नम् (**नि**) (**अस्मिन्**) व्यवहारे (**इन्द्रः**) विद्यैश्वर्यः (**जनुषा**) जन्मना (**ईम्**) (**उवोच**) उच्यात् (**बोधामसि**) बोधयेम (**त्वा**) त्वाम् (**हर्यश्व**) कमनीयाश्व (**यज्ञैः**) विद्वत्सङ्गादिभिः (**बोध**) बोधय। अत्र **द्व्यचोऽतस्तिङ** इति दीर्घः। (**नः**) अस्मान् (**स्तोमम्**) प्रशंसाम् (**अन्धसः**) अन्नादेः (**मदेषु**) आनन्देषु॥ १॥

**अन्वयः**-हे हर्यश्व! यदन्धोऽसावि तज्जनुषे गोऋजीकं देवमिन्द्र उवोच यस्मिँस्त्वा नि बोधामस्यस्मिँस्त्वमन्धसो मदेषु यज्ञैर्नो बोध स्तोमं प्रापय॥ १॥

**भावार्थः**-हे मनुष्याः! पृथिव्यादिभ्यो धान्यादिं प्राप्य विद्यां प्राप्नुयन्ति ये च विद्वत्सङ्गेन सकलविद्यारहस्यानि गृह्णन्ति ते कदाचिद् दुःखिनो न जायन्ते॥ १॥

**पदार्थः**-हे (**हर्यश्व**) मनोहर घोड़ों वाले! जो (**अन्धः**) अन्न (**असावि**) उत्पन्न होता उसकी तथा (**जनुषा**) जन्म से अर्थात् उत्पन्न होते समय से (**ईम्**) ही (**गोऋजीकम्**) भूमि के कोमलता से प्राप्त कराने और (**देवम्**) देने वाले को (**इन्द्रः**) विद्या और ऐश्वर्ययुक्त जन (**उवोच**) कहे वा जिसके निमित्त (**त्वा**) आप को (**नि, बोधामसि**) निरन्तर बोधित करें (**अस्मिन्**) इस व्यवहार में आप (**अन्धसः**) अन्न आदि पदार्थ के (**मदेषु**) आनन्दों में (**यज्ञैः**) विद्वानों के संग आदि से (**नः**) हम लोगों को (**बोध**) बोध देओ और (**स्तोमम्**) प्रशंसा की प्राप्ति कराओ॥ १॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य पृथिवी आदि से धान्य आदि को प्राप्त होकर विद्या को प्राप्त होते हैं और जो विद्वानों के संग से समस्त विद्या के रहस्यों को ग्रहण करते हैं, वे कभी दुःखी नहीं होते हैं॥ १॥

**पुनर्मनुष्याः किं कुर्य्युरित्याह॥**

फिर मनुष्य क्या करें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥



www.9009.co.in

**प्र यन्ति यज्ञं विपयन्ति बर्हिः सोममादो विदथे दुध्रवाचः।**

**न्यु भ्रियन्ते यशसो गृभादा दूरउपब्दो वृषणो नृषाचः॥२॥**

**प्र। यन्ति। यज्ञम्। विपयन्ति। बर्हिः। सोमऽमादः। विदथे। दुध्रऽवाचः। नि। ऊँ इति। भ्रियन्ते। यशसः। गृभात्। आ। दूरेऽउपब्दः। वृषणः। नृऽसाचः॥२॥**

**पदार्थः**-(**प्र**) (**यन्ति**) प्राप्नुवन्ति (**यज्ञम्**) विद्वत्सङ्गादिकम् (**विपयन्ति**) विशेषेण गच्छन्ति (**बर्हिः**) अन्तरिक्षे (**सोममादः**) ये सोमेन मदन्ति हर्षन्ति ते (**विदथे**) सङ्ग्रामे (**दुध्रवाचः**) दुर्धरा वाग्येषान्ते (**नि**) (**उ**) (**भ्रियन्ते**) ध्रियन्ते (**यशसः**) कीर्तेः (**गृभात्**) गृहात् (**आ**) (**दूरउपब्दः**) दूर उपब्दिर्वाग्येषान्ते। **उपब्दिरिति वाङ्नाम।** (निघं०१.११) (**वृषणः**) बलिष्ठाः (**नृषाचः**) ये नृभिर्नायकैस्सह। सम्बध्नन्ति ते॥२॥

**अन्वयः**-ये सोममादो दुध्रवाचो वृषणो नृषचो यज्ञं प्र यन्ति विदथे बर्हिर्विपयन्त्यु ये यशसो गृभादा भ्रियन्ते दूरउपब्दो नि भ्रियन्ते ते विजयमाप्नुवन्ति॥२॥

**भावार्थः**-यथा यज्ञानुष्ठातार आनन्दमाप्नुवन्ति तथा युद्धकुशला विजयं लभन्ते यथा दूरकीर्तिर्विद्वान् भवति तथा यशोचितानि कर्माणि कृत्वा परोपकारिणो जना भवन्तु॥२॥

**पदार्थः**-जो (**सोममादः**) सोम से हर्षित होते (**दुध्रवाचः**) वा जिनकी दुःख से धारण करने योग्य वाणी (**वृषणः**) वे बलिष्ठ (**नृषाचः**) नायक मनुष्यों से सम्बन्ध करने वाले जन (**यज्ञम्**) विद्वानों के संग आदि को (**प्र, यन्ति**) प्राप्त होते हैं (**विदथे**) संग्राम में (**बर्हिः**) अन्तरिक्ष में (**विपयन्ति**) विशेषता से जाते हैं (**उ**) और जो (**यशसः**) कीर्ति से वा (**गृभात्**) घर से (**आ, भ्रियन्ते**) अच्छे प्रकार उत्तमता को धारण करते हैं तथा (**दूरउपब्दः**) जिनकी दूर वाणी पहुँचती वे सज्जन (**नि**) निरन्तर उत्तमता को धारण करते हैं और वे विजय को प्राप्त होते हैं॥२॥

**भावार्थः**-जैसे यज्ञ का अनुष्ठान करने वाले आनन्द को प्राप्त होते हैं, वैसे युद्ध में निपुण पुरुष विजय को प्राप्त होते हैं जैसे दूरदेशों में कीर्ति रखने वाले विद्वान् जन होता है, वैसे यश से संचय किये कर्मों को कर परोपकारी जन हों॥२॥

**पुनः स राजा किंवत्किं कुर्य्यादित्याह॥**

फिर वह राजा किसके तुल्य क्या करे, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**त्वमिन्द्र स्रवितवा अपस्कः परिष्ठिता अहिना शूर पूर्वीः।**

**त्वद्वावक्रे रथ्यो३ न धेना रेजन्ते विश्वा कृत्रिमाणि भीषा॥३॥**

**त्वम्। इन्द्र। स्रवितवै। अपः। करिति कः। परिऽस्थिताः। अहिना। शूर। पूर्वीः। त्वत्। वावक्रे। रथ्यः। न। धेनाः। रेजन्ते। विश्वा। कृत्रिमाणि। भीषा॥३॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-**(त्वम्)** **(इन्द्र)** सूर्य इव विद्वन् **(स्रवितवै)** स्रवितुम् **(अपः)** जलानि **(कः)** करोषि **(परिष्ठिताः)** परितः सर्वतः स्थिताः **(अहिना)** मेघेन **(शूर)** **(पूर्वीः)** पूर्वे स्थिताः **(त्वत्)** **(वावक्रे)** वक्रा गच्छन्ति **(रथ्यः)** रथाय हितोऽश्वः **(न)** इव **(धेनाः)** प्रयुक्ता वाच इव **(रेजन्ते)** कम्पन्ते **(विश्वा)** सर्वाणि **(कृत्रिमाणि)** कृत्रिमाणि **(भीषा)** भयेन॥३॥

**अन्वयः**-हे शूरेन्द्र राजन्! यथा सूर्य्यः स्रवितवा अहिना सह पूर्वीः परिष्ठिता अपः करोति तथा त्वं प्रजाः सन्मार्गे को यथा सूर्यादयो रथ्यो वावक्रे कृत्रिमाणि रेजन्ते तथा त्वद्भीषा प्रजा धेना न प्रवर्त्तन्ताम्॥३॥

**भावार्थः**-अत्रोपमावाचकलुप्तोपमालङ्कारौ। यो राजा सूर्यवत्प्रजाः पालयति दुष्टान्भीषयति स एव व्याप्तसुखो भवति॥३॥

**पदार्थः**-हे **(शूर)** शूरवीर **(इन्द्रः)** सूर्य के समान विद्वान् राजा! जैसे सूर्य्य **(स्रवितवै)** वर्षा को **(अहिना)** मेघ के साथ **(पूर्वीः)** पहिले स्थिर हुए **(परिष्ठिताः)** वा सब ओर से स्थिर होने वाले **(अपः)** जलों को उत्पन्न करता है, वैसे **(त्वम्)** आप प्रजा जनों को सन्मार्ग में **(कः)** स्थिर करो जैसे सूर्य आदि और **(रथ्यः)** रथ के लिये हितकारी घोड़ा यह सब पदार्थ **(वावक्रे)** टेढ़े चलते हैं और **(विश्वा)** समस्त **(वि, कृत्रिमणि)** विशेषता से कृत्रिम किये कामों को **(रेजन्ते)** कंपित करते हैं, वैसे **(त्वत्)** तुम से **(भीषा)** उत्पन्न हुए भय से प्रजाजन **(धेनाः)** बोली हुई वाणियों के **(न)** समान प्रवृत्त हों॥३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमा और वाचकलुप्तोपमालङ्कार हैं। जो राजा सूर्य्य के समान प्रजाजनों की पालना करता है, दुष्टों को भय देता है, वही सुख से व्याप्त होता है॥३॥

**पुनस्स सेनेशः किं कुर्यादित्याह॥**

फिर वह सेनापति क्या करे, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**भीमो विवेषायुधेभिरेषामपांसि विश्वा नर्याणि विद्वान्।**

**इन्द्रः पुरो जर्हृषाणो वि दूधोद्वि वज्रहस्तो महिना जघान॥४॥**

**भीमः। विवेष। आयुधेभिः। एषाम्। अपांसि। विश्वा। नर्याणि। विद्वान्। इन्द्रः। पुरः। जर्हृषाणः। वि। दूधोत्। वि। वज्रऽहस्तः। महिना। जघान॥४॥**

**पदार्थः**-**(भीमः)** भयङ्करः **(विवेष)** व्याप्नुयात् **(आयुधेभिः)** युद्धसाधनैः **(एषाम्)** **(अपांसि)** कर्माणि **(विश्वा)** सर्वाणि **(नर्याणि)** नृभ्यो हितानि **(विद्वान्)** **(इन्द्रः)** परमैश्वर्यवान् **(पुरः)** शत्रुपुराणि **(जर्हृषाणः)** भृशं हृषितः **(वि)** **(दूधोत्)** अकम्पयत् **(वि)** **(वज्रहस्तः)** शस्त्रास्त्रपाणिः **(महिना)** महिम्ना **(जघान)** हन्यात्॥४॥

**अन्वयः**-यो भीमो वज्रहस्तो जर्हषाणो विद्वानिन्द्र आयुधेभिर्महिनैषां शत्रूणां विश्वा नर्याण्यपांसि विवेष पुरो विदूधोच्छत्रून्विजघान स एव सेनापतित्वमर्हति॥४॥



www.9009.co.in

**भावार्थः-**हे मनुष्या! ये युद्धकृत्यानि समग्राणि विज्ञाय स्वसैन्यानि युद्धकुशलानि कृत्वा शत्रूनभिकम्प्य शत्रूसेनाः कम्पयन्ति ते विजयेन भूषिता भवन्ति॥४॥

**पदार्थः**-जो **(भीमः)** भय करने वा **(वज्रहस्तः)** शस्त्र और अस्त्र हाथों में रखने वाला **(जर्हषाणः)** निरन्तर आनन्दित **(विद्वान्)** विद्वान् **(इन्द्रः)** परमैश्वर्यवान् राजा **(आयुधेभिः)** युद्ध सिद्धि कराने वाले शस्त्रों से **(महिना)** बड़प्पन के साथ **(एषाम्)** इन शत्रुओं के **(विश्वा)** समस्त **(नर्याणि)** मनुष्यों के हित करने वाले **(अपांसि)** कर्मों को **(विवेष)** व्याप्त हो **(पुरः)** शत्रुओं की नगरियों को **(वि, दूधोत्)** कंपावे शत्रुओं को **(वि, जघान)** मारे, वही सेनापति होने योग्य होता है॥४॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो युद्ध कार्यों को समग्र जान अपनी सेना को युद्ध में निपुण कर शत्रुओं को कंपा और शत्रुसेनाओं को कंपाते हैं, वे विजय से शोभित होते हैं॥४॥

**अथ के तिरस्करणीयः सन्तीत्याह॥**

अब कौन तिरस्कार करने योग्य हैं, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**न यातव इन्द्र जूजुवुर्नो न वन्दना शविष्ठ वेद्याभिः।**

**स शर्धदुर्यो विषुणस्य जन्तोर्मा शिश्नदेवा अपि गुर्ऋतं नः॥५॥३॥**

**न। यातवः। इन्द्र। जूजुवुः। नः। न। वन्दना। शविष्ठ। वेद्याभिः। सः। शर्धत्। अर्यः। विषुणस्य। जन्तोः। मा। शिश्नऽदेवाः। अपि। गुः। ऋतम्। नः॥५॥**

**पदार्थः**-**(न) (यातवः)** सङ्ग्रामं ये यान्ति ते **(इन्द्र)** दुष्टशत्रुविदारक **(जूजुवुः)** सद्यो गच्छन्ति **(नः)** अस्मान् **(न)** निषेधे **(वन्दना)** वन्दनानि स्तुत्यानि कर्माणि **(शविष्ठ)** अतिशयेन बलयुक्त **(वेद्याभिः)** ज्ञातव्याभिर्नीतिभिः **(सः) (शर्धत्)** उत्सहेत् **(अर्यः)** स्वामी **(विषुणस्य)** शरीरे व्याप्तस्य **(जन्तोः)** जीवस्य **(मा) (शिश्नदेवाः)** अब्रह्मचर्या कामिनो ये शिश्नेन दीव्यन्ति क्रीडन्ति ते **(अपि) (गुः)** प्राप्नुयुः **(ऋतम्)** सत्यं धर्मम् **(नः)** अस्मान्॥५॥

**अन्वयः**-हे शविष्ठेन्द्र! यथा यातवो नो न जूजुवुर्ये शिश्नदेवास्त ऋतं मा गुरपि च नोऽस्मान्न प्राप्नुवन्तु ते च विषुणस्य जन्तोर्वेद्याभिर्वन्दना मा गुर्योऽर्यो विषुणस्य जन्तोः शर्धन्त्सोऽस्मान्प्राप्नोतु॥५॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! ये कामिनो लम्पटा स्युस्ते युष्माभिः कदापि न वन्दनीयास्तेऽस्मान् कदाचिन्माप्नुवन्त्विति मन्यध्वम्। ये च धर्मात्मानस्ते वन्दनीयाः सेवनीयाः सन्ति कामातुराणां धर्मज्ञानं सत्यविद्या च कदाचिन्न जायते॥५॥

**पदार्थः**-हे **(शविष्ठ)** अत्यन्त बलयुक्त **(इन्द्र)** दुष्ट शत्रुजनों के विदीर्ण करने वाले जन! जैसे **(यातवः)** संग्राम को जाने वाले **(नः)** हम लोगों को **(न)** न **(जूजुवुः)** प्राप्त होते हैं और जो **(शिश्नदेवाः)** शिश्न अर्थात् उपस्थ इन्द्रिय से विहार करने वाले ब्रह्मचर्य्यरहित कामी जन हैं वे **(ऋतम्)** सत्यधर्म को **(मा, गुः)** मत पहुँचे **(अपि)** और **(नः)** हम लोगों को **(न)** न प्राप्त हों वे ही



www.9009.co.in

**(विषुणस्य)** शरीर में व्याप्त **(जन्तोः)** जीव को **(वेद्याभिः)** जानने योग्य नीतियों से **(वन्दना)** स्तुति करने योग्य कर्मों को न पहुँचे और **(यः)** जो **(अर्यः)** स्वामी जन शरीर में व्याप्त जीव को **(शर्धत्)** उत्साहित करे **(सः)** वह हम को प्राप्त हो॥५॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो कामी लंपट जन हों, वे तुम लोगों को कदापि वन्दना करने योग्य नहीं, वे हम लोगों को कमी न प्राप्त हों, इसको तुम लोग जानो और जो धर्मात्मा जन हैं, वे वन्दना करने तथा सेवा करने योग्य हैं, कामातुरों को धर्मज्ञान और सत्यविद्या कभी नहीं होती है॥५॥

**अथ कीदृशाज्जनाच्छत्रवो जेतुं न शक्नुयुरित्याह॥**

अब कैसे जन से शत्रुजन नहीं जीत सकते, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अ॒भि क्रत्वे॑न्द्र भू॒रध॒ ज्मन्न ते॑ विव्यङ् महि॒मानं॒ रजां॑सि।**

**स्वेना॒ हि वृ॒त्रं शव॑सा ज॒घन्थ॒ न शत्रु॒रन्तं॑ विविदद्यु॒धा ते॑॥ ६॥**

**अ॒भि। क्रत्वा॑। इ॒न्द्र॒। भूः॒। अध॑। ज्मन्। न। ते॒। वि॒व्य॒क्। म॒हि॒मान॑म्। रजां॑सि। स्वेन॑। हि। वृ॒त्रम्। शव॑सा। ज॒घन्थ॑। न। शत्रुः॒। अन्त॑म्। वि॒वि॒द॒त्। यु॒धा। ते॒॥ ६॥**

**पदार्थः**-**(अभि)** आभिमुख्ये **(क्रत्वा)** प्रज्ञया सह **(इन्द्र)** परमैश्वर्ययुक्त **(भूः)** भव **(अध)** अथ **(ज्मन्)** पृथिव्याम्। **ज्मेति पृथिवीनाम।** (निघं०१.१) **(न)** निषेधे **(ते)** तव **(विव्यक्)** व्याप्नुयात् **(महिमानम्)** **(रजांसि)** ऐश्वर्याणि **(स्वेन)** स्वकीयेन। अत्र **संहितायामि**ति दीर्घः। **(हि)** खलु **(वृत्रम्)** मेघमिव शत्रुम् **(शवसा)** बलेन **(जघन्थ)** हन्यात् **(न)** निषेधे **(शत्रुः)** **(अन्तम्)** **(विविदत्)** प्राप्नोति **(युधा)** सङ्ग्रामेण **(ते)** तव॥६॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! त्वं क्रत्वा ज्मञ्छत्रूनभि भूरध ते महिमानं रजांसि शत्रुर्मा न विव्यक् स्वेन शवसा हि सूर्यो वृत्रमिव शत्रुं त्वं जघन्थैवं युधा शत्रुस्तेऽन्तं न विविदत्॥६॥

**भावार्थः**-ये मनुष्या शरीरात्मबलं प्रत्यहं वर्धयन्ति तेषां शत्रवो दूरतः पलायन्ते शत्रून्विजेतुं स्वयं शक्नुयुः॥६॥

**पदार्थः**-हे **(इन्द्र)** परमैश्वर्ययुक्त जन! आप **(क्रत्वा)** बुद्धि के साथ **(ज्मन्)** पृथिवी पर शत्रुओं के **(अभि, भूः)** सम्मुख हूजिये **(अध)** इसके अनन्तर **(ते)** आपके **(महिमानम्)** बड़प्पन को और **(रजांसि)** ऐश्वर्य्यों को **(शत्रुः)** शत्रुजन मुझे **(न)** न **(विव्यक्)** व्याप्त हों **(स्वेन)** अपने **(शवसा)** बल से **(हि)** ही सूर्य जैसे **(वृत्रम्)** मेघ को, वैसे शत्रु को आप **(जघन्थ)** मारो इस प्रकार से **(युधा)** संग्राम से शत्रुजन **(ते)** आपके **(अन्तम्)** अन्त अर्थात् नाश वा सिद्धान्त को **(न)** न **(विविदत्)** प्राप्त हो॥६॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य शरीर और आत्मा के बल को प्रतिदिन बढ़ाते हैं, उन के शत्रुजन दूर से भागते हैं, किन्तु वह आप शत्रुओं को जीत सकें॥६॥



www.9009.co.in

**पुनः स राजा किं कुर्यादित्याह॥**

फिर वह राजा क्या करे, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**दे॒वाश्चि॑त्ते असु॒र्या॑य॒ पूर्वेऽनु॑ क्ष॒त्राय॑ ममि॒रे॒ सहां॑सि।**

**इन्द्रो॑ म॒घानि॑ दयते वि॒षह्येन्द्रं॒ वाज॑स्य जोहुवन्त सा॒तौ॥७॥**

**दे॒वाः। चि॒त्। ते॒। अ॒सु॒र्या॑य॒। पूर्वे॑। अनु॑। क्ष॒त्राय॑। म॒मि॒रे॒। सहां॑सि। इन्द्रः॑। म॒घानि॑। द॒य॒ते॒। वि॒ऽसह्य॑। इन्द्र॑म्। वाज॑स्य। जो॒हु॒व॒न्त॒। सा॒तौ॥७॥**

**पदार्थः**-(**देवाः**) विद्वांसः (**चित्**) अपि (**ते**) तव (**असुर्याय**) असुरे मेघे भवाय (**पूर्वे**) प्रथमतो विद्यां गृहीतवन्तः (**अनु**) (**क्षत्राय**) राज्याय धनाय वा (**ममिरे**) निर्मिमते (**सहांसि**) बलानि (**इन्द्रः**) सूर्य इव राजा (**मघानि**) पूजनीयानि धनानि (**दयते**) दयां करोति (**विषह्य**) विशेषेण सोढ्वा (**इन्द्रम्**) परमैश्वर्यम् (**वाजस्य**) प्राप्तस्य (**जोहुवन्त**) भृशमाददति (**सातौ**) संविभागे॥७॥

**अन्वयः**-हे विद्वन्! ये पूर्वे देवास्तेऽसुर्याय क्षत्राय सहांस्यनु ममिरे यश्चिदपीन्द्रो मघानि दयते ये वाजस्य साताविन्द्रं जोहुवन्त ताँस्त्वं सत्कुरु॥७॥

**भावार्थः**-ते एव विद्वांसो वरा भवन्ति ये सर्वेषु दयां विधाय सत्यशास्त्राण्युपदिश्य बलानि वर्धयन्ति त एव पितेव पूजनीया भवन्ति॥७॥

**पदार्थः**-हे विद्वान् जो (**पूर्वे**) पहिले विद्या ग्रहण किये हुए (**देवाः**) विद्वान् जन (**ते**) आप के (**असुर्याय**) मेघ में उत्पन्न हुए के लिये और (**क्षत्राय**) राज्य वा धन के लिये (**सहांसि**) बलों का (**अनु, ममिरे**) निरन्तर अनुमान करते जो (**चित्**) भी (**इन्द्रः**) सूर्य के समान राजा (**मघानि**) प्रशंसा करने योग्य धनों को (**दयते**) ग्रहण करता वा जो (**वाजस्य**) प्राप्त हुए व्यवहार के (**सातौ**) संविभाग में (**इन्द्रम्**) परमैश्वर्य्य को (**विषह्य**) विशेष सह करके परमैश्वर्य को (**जोहुवन्त**) निरन्तर ग्रहण करते हैं, उनका आप सत्कार करो॥७॥

**भावार्थः**-वे ही विद्वान् जन श्रेष्ठ होते हैं जो सबों में दया का विधान और सत्य शास्त्रों का उपदेश कर बलों को बढ़ाते हैं, वे ही पिता के समान सत्कार करने योग्य होते हैं॥७॥

**पुनः स राजा किं कुर्यादित्याह॥**

फिर वह राजा क्या करे, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**की॒रिश्चि॒द्धि त्वामव॑से जु॒हावेशा॑नमिन्द्र सौभ॑गस्य॒ भूरेः॑।**

**अवो॑ बभूथ शतमूते अ॒स्मे अ॑भिक्ष॒त्तुस्त्वाव॑तो वरू॒ता॥८॥**

**की॒रिः। चि॒त्। हि। त्वाम्। अव॑से। जु॒हाव॑। ईशा॑नम्। इ॒न्द्र॒। सौभ॑गस्य। भूरेः॑। अव॑ः। ब॒भू॒थ॒। श॒त॒म्ऽऊ॒ते॒। अ॒स्मे इति॑। अ॒भि॒ऽक्ष॒त्तुः। त्वाऽव॑तः। व॒रू॒ता॥८॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-**(कीरिः)** सद्यः स्तोता। **कीरिरिति स्तोतृनाम**। (निघं०३.१६) **(चित्)** इव **(हि)** निश्चये **(त्वाम्)** **(अवसे)** **(जुहाव)** आह्वयेत् **(ईशानाम्)** समर्थम् **(इन्द्र)** परमैश्वर्यप्रद **(सौभगस्य)** सुभगस्यैश्वर्यस्य भावस्य **(भूरेः)** **(अवः)** रक्षणम् **(बभूथ)** भवति **(शतमूते)** असंख्यरक्षाकर्त्तः **(अस्मे)** अस्मान् **(अभिक्षत्तुः)** अभितः क्षयकर्त्तुर्हिंस्रस्य **(त्वावतः)** त्वया सदृशस्य **(वरूता)** स्वीकर्त्ता॥८॥

**अन्वयः**-हे शतमूत इन्द्र! यो हि कीरिश्चिदवसे [ईशानं त्वाम्] जुहाव तस्य भूरेः सौभगस्याऽवः कर्त्ता त्वं बभूथ। योऽस्मे त्वावतोऽभिक्षत्तुर्वरूता भवेत्तस्यापि रक्षको भव॥८॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। हे राजञ्छूरवीर! ये पीडिता प्रजाजनास्त्वामाह्वयेयुस्तद्वचस्त्वं सद्यः शृणु सर्वेषां रक्षको भूत्वा दुष्टानां हिंस्रो भव॥८॥

**पदार्थः**-हे **(शतमूते)** सैकड़ों प्रकार की रक्षा करने वा **(इन्द्र)** परम ऐश्वर्य के देने वाले! जो **(हि)** ही **(कीरिः)** स्तुति करने वाले **(चित्)** के समान **(अवसे)** रक्षा के लिये **(ईशानम्)** समर्थे **(त्वाम्)** आपको **(जुहाव)** बुलावे उसके **(भूरेः)** बहुत **(सौभगस्य)** उत्तम भाग्य के होने की **(अवः)** रक्षा करने वाले आप **(बभूथ)** हूजिये। जो **(अस्मे)** हम लोगों को **(त्वावतः)** आपके सदृश **(अभिक्षत्तुः)** सब ओर से नाशकर्त्ता हिंसक के **(वरूता)** स्वीकार करने वाला हो, उसके भी रक्षक हूजिये॥८॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे राजन् शूरवीर! जो पीड़ित प्रजाजन तुमको आह्वान दें उनके वचन को आप शीघ्र सुनें और सब की रक्षा करने वाले होकर दुष्टों की हिंसा करने वाले हूजिये॥८॥

**पुनः कस्य मित्रता कार्येत्याह॥**

फिर किसकी मित्रता करनी चाहिये, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते है॥

**सखायस्त इन्द्र विश्वह स्याम नमोवृधासो महिना तरुत्र।**
**वन्वन्तु स्मा तेऽवसा समीके३भीतिमर्यो वनुषां शवांसि॥९॥**

**सखायः। ते। इन्द्र। विश्वह। स्याम। नमःऽवृधासः। महिना। तरुत्र। वन्वन्तु। स्म। ते। अवसा। सम्ऽईके। अभिऽइतिम्। अर्यः। वनुषाम्। शवांसि॥९॥**

**पदार्थः**-**(सखायः)** सुहृदः सन्तः **(ते)** तव **(इन्द्र)** राजन् **(विश्वह)** सर्वाणि दिनानि **(स्याम)** **(नमोवृधासः)** अन्नस्य वर्धका अन्नेन वृद्धा वा **(महिना)** महिम्ना **(तरुत्र)** दुःखात्तारक **(वन्वन्तु)** याचन्ताम् **(स्मा)** एव। अत्र **निपातस्य चे**ति दीर्घः। **(ते)** तव **(अवसा)** रक्षणादिना **(समीके)** समीपे **(अभीतिम्)** अभयम् **(अर्यः)** स्वामी वैश्यः **(वनुषाम्)** याचकानाम् **(शवांसि)** बलानि॥९॥

**अन्वयः**-हे तरुतेन्द्र! नमोवृधासो वयं महिना विश्वह ते सखायः स्याम ये ते समीकेऽवसाऽभीतिं वनुषां शवांसि च वन्वन्तु स्मार्यस्त्वमेतदेषां दध्याः॥९॥



www.9009.co.in

**भावार्थः-**ये धार्मिकस्य राज्ञो नित्यं सख्यमिच्छन्ति ते महिम्ना सत्क्रियन्ते ये प्रजाऽभ्योऽभयं ददति ते प्रत्यहं बलिष्ठा जायन्ते॥९॥

**पदार्थः**-हे **(तरुत्र)** दुःख से तारने वाले **(इन्द्र)** राजा! **(नमोवृधासः)** अन्न के बढ़ाने वा अन्न से बढ़े हुए हम लोग **(महिना)** बड़प्पन से **(विश्वह)** सब दिनों **(ते)** आपके **(सखायः)** मित्र **(स्याम)** हों जो **(ते)** आपके **(समीके)** समीप में **(अवसा)** रक्षा आदि से **(अभीतिम्)** अभय और **(वनुषाम्)** मंगता जनों के **(शवांसि)** बलों को **(वन्वन्तु, स्म)** हीं मांगे **(अर्यः)** वैश्यजन आप इनके इस पदार्थ को धारण करो॥३॥

**भावार्थः**-जो धार्मिक राजा से नित्य मित्रता करने की इच्छा करते हैं वे बड़प्पन से सत्कार पाते हैं, जो प्रजा को अभय देते हैं, वे प्रतिदिन बलिष्ठ होते हैं॥९॥

**पुनः राजप्रजाजनाः परस्परं कथं वर्त्तेरन्नित्याह॥**

फिर राजा-प्रजाजन परस्पर कैसे वर्त्तें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**स नं इन्द्र त्वयंताया इषे धास्त्मनां च ये मघवांनो जुनन्तिं।**

**वस्वी षु ते जरित्रे अंस्तु शक्तिर्यूयं पांत स्वस्तिभिः सदां नः॥१०॥४॥**

**सः। नः। इन्द्र। त्वऽयंतायै। इषे। धाः। त्मनां। च। ये। मघऽवांनः। जुनन्तिं। वस्वीं। सु। ते। जरित्रे। अस्तु। शक्तिः। यूयम्। पात। स्वस्तिऽभिः। सदां। नः॥१०॥**

**पदार्थः**-**(सः)** **(नः)** अस्मान् **(इन्द्र)** दुःखविदारक **(त्वयतायै)** त्वया प्रयत्नेन साधितायै **(इषे)** इच्छासिद्धयेऽन्नप्राप्तये वा **(धाः)** धेहि **(त्मना)** आत्मना **(च)** **(ये)** **(मघवानः)** नित्यं धनाढ्याः **(जुनन्ति)** प्रेरयन्ति **(वस्वी)** धनकारिणी **(सु)** **(ते)** तव **(जरित्रे)** स्तावकाय **(अस्तु)** **(शक्तिः)** सामर्थ्यम् **(यूयम्)** **(पात)** **(स्वस्तिभिः)** **(सदा)** **(नः)**॥१०॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! स त्वं त्मना त्वयताया इषे नो धाः। ये च मघवानो जुनन्ति ताँश्चास्यै धाः। येन ते जरित्रे वस्वी शक्तिरस्तु। हे अमात्या! यूयं स्वस्तिभिर्नः सदा सु पात॥१०॥

**भावार्थः-**हे राजँस्त्वं प्रयत्नेन सर्वान् पुरुषार्थयित्वा धनाढ्यान् सततं कुर्याः धनाढ्याँश्च सत्कर्मसु प्रेरय यतो भवतस्त्व भृत्यानां चाऽलौकिकी शक्तिः स्यादेते च भवन्तं सदा रक्षेयुरिति॥१०॥

अत्र राजप्रजाविद्वदिन्द्रमित्रसत्यगुणयाच्आदिगुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इत्येकविंशतितमं सूक्तं चतुर्थो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे **(इन्द्र)** दुःख के विदीर्ण करने वाले! **(सः)** सो आप **(त्वयतायै)** आपने जो बड़े यत्न से सिद्ध की उस **(इषे)** इच्छा सिद्धि वा अन्न की प्राप्ति के लिये **(नः)** हम लोगों को **(धाः)** धारण कीजिये **(ये, च)** और जो **(मघवानः)** नित्य धनाढ्य जन **(जुनन्ति)** प्रेरणा देते हैं उनको भी उक्त



www.9009.co.in

इच्छासिद्धि वा अन्न की प्राप्ति के लिये धारण कीजिये जिससे **(ते)** आपकी **(जरित्रे)** स्तुति करने वाले के लिये **(वस्वी)** धन करने वाली **(शक्तिः)** सामर्थ्य **(अस्तु)** हो। हे मन्त्री जनो! **(यूयम्)** तुम लोग **(स्वस्तिभिः)** सुखों से **(नः)** हम लोगों को **(सदा)** सब कभी [=सदा] **(सु, पात)** अच्छे प्रकार रक्षा करो॥१०॥

**भावार्थः**-हे राजा! आप प्रयत्न से सबको पुरुषार्थी कर निरन्तर धनाढ्य कीजिये और अच्छे कामों में प्रेरणा दीजिये जिससे आपकी भृत्यों की अलौकिक शक्ति हो और ये आपकी सर्वदा रक्षा करें॥१०॥

इस सूक्त में राजा, प्रजा, विद्वान्, इन्द्र, मित्र, सत्य, गुण और याच्ञा आदि के गुणों का वर्णन होने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ संगति जाननी चाहिये॥

**यह इक्कीसवां सूक्त और चौथा वर्ग पूरा हुआ॥**



www.9009.co.in

अथ नवर्चस्य द्वाविंशतितमस्य सूक्तस्य वसिष्ठ ऋषिः। इन्द्रो देवता। १ भुरिगुष्णिक्छन्दः। ऋषभः स्वरः। २, ७ निचृदनुष्टुप्। ३ भुरिगनुष्टुप्। ५ अनुष्टुप्। ६, ८ विराडनुष्टुप् छन्दः। गान्धारः स्वरः। ४ आर्ची पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः। ९ विराट् त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः॥

*अथ मनुष्यः किं कृत्वा कीदृशो भवेदित्याह॥*

अब नव ऋचा वाले बाईसवें सूक्त का प्रारम्भ है, इसके प्रथम मन्त्र में मनुष्य क्या करके कैसा हो, इस विषय को उपदेश करते हैं॥

**पिबा सोममिन्द्र मन्दतु त्वा यं ते सुषाव हर्यश्वाद्रिः।**

**सोतुर्बाहुभ्यां सुयतो नार्वा॥ १॥**

**पिब। सोमम्। इन्द्र। मन्दतु। त्वा। यम्। ते। सुसाव। हरिऽअश्व। अद्रिः। सोतुः। बाहुऽभ्याम्। सुऽयतः। न। अर्वा॥ १॥**

**पदार्थः**-(**पिबा**) अत्र **द्व्यचोऽतस्तिङ** इति दीर्घः। (**सोमम्**) महौषधिरसम् (**इन्द्र**) रोगविदारक वैद्य (**मन्दतु**) आनन्दयतु (**त्वा**) त्वाम् (**यम्**) (**ते**) तव (**सुषाव**) (**हर्यश्व**) कमनीयाश्व (**अद्रिः**) मेघः (**सोतुः**) अभिषवकर्त्तुः (**बाहुभ्याम्**) (**सुयतः**) सुन्वतो निष्पादयतः (**न**) (**अर्वा**) वाजी॥ १॥

**अन्वयः**-हे हर्यश्वेन्द्र! त्वमर्वा न सोमं पिब यमद्रिः सुषाव यः सोतुः सुयतस्ते बाहुभ्यां सुषाव स त्वा मन्दतु॥ १॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। हे भिषजो! यूयं यथा वाजिनो तृणान्नजलादिकं संसेव्य पुष्टा भवन्ति तथैव सोमं पीत्वा बलवन्तो भवत॥ १॥

**पदार्थः**-हे (**हर्यश्व**) मनोहर घोड़े वाले (**इन्द्र**) रोग नष्टकर्त्ता वैद्यजन! आप (**अर्वा**) घोड़े के (**न**) समान (**सोमम्**) बड़ी ओषधियों के रस को (**पिब**) पीओ (**यम्**) जिसको (**अद्रिः**) मेघ (**सुषाव**) उत्पन्न करता है और जो (**सोतुः**) सार निकालने वा (**सुयतः**) सार निकालने की और सिद्धि करने वाले (**ते**) आपकी (**बाहुभ्याम्**) बाहुओं से कार्य सिद्धि करता है वह (**त्वा**) आपको (**मन्दतु**) आनन्दित करे॥ १॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे वैद्यो! तुम जैसे घोड़े तृण, अन्न और जलादिकों का अच्छे प्रकार सेवन कर पुष्ट होते हैं, वैसे ही बड़ी ओषधियों के रसों को पीकर बलवान् होओ॥ १॥

**पुनः स राजा किंवत्किं कुर्यादित्याह॥**

फिर वह राजा किसके तुल्य क्या करे, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**यस्ते मदो युज्यश्चारुरस्ति येन वृत्राणि हर्यश्व हंसि।**

**स त्वामिन्द्र प्रभूवसो ममत्तु॥ २॥**



www.9009.co.in

यः। ते। मदः। युज्यः। चारुः। अस्ति। येन। वृत्राणि। हरिऽअश्व। हंसि। सः। त्वाम्। इन्द्र। प्रभुऽवसो इति प्रभुऽवसो। ममत्तु॥ २॥

**पदार्थः**-(**यः**) (**ते**) तव (**मद्रः**) आनन्दः (**युज्यः**) योक्तुमर्हः (**चारुः**) सुन्दरः (**अस्ति**) (**येन**) (**वृत्राणि**) मेघाङ्गानीव शत्रुसेनाङ्गानि (**हर्यश्व**) हरयो हरणशीलो अश्वा यस्य तत्सम्बुद्धौ (**हंसि**) विनाशयसि (**सः**) (**त्वाम्**) (**इन्द्र**) (**प्रभूवसो**) यः समर्थश्चासौ वासिता च तत्सम्बुद्धौ (**ममत्तु**) आनन्दयतु॥ २॥

**अन्वयः**-हे प्रभूवसो हर्यश्वेन्द्र! यस्ते युज्यश्चारुर्मदोऽस्ति येन सूर्यो वृत्राणि शत्रुसेनाङ्गानि हंसि स त्वां ममत्तु॥ २॥

**भावार्थः**-येन येनोपायेन दुष्टा बलहीना भवेयुस्तं तमुपायं राजाऽनुतिष्ठेत्॥ २॥

**पदार्थः**-हे (**प्रभूवसो**) समर्थ और वसाने वाले (**हर्यश्व**) हरणशील घोड़ों से युक्त (**इन्द्र**) परमैश्वर्यवान् राजा! (**यः**) जो (**ते**) आप का (**युज्यः**) योग करने योग्य (**चारुः**) सुन्दर (**मदः**) आनन्द (**अस्ति**) है वा (**येन**) जिससे सूर्य (**वृत्राणि**) मेघ के अङ्गों को, वैसे शत्रुओं की सेना के अङ्गों का (**हंसि**) विनाश करते हो (**सः**) वह (**त्वाम्**) तुम्हें (**ममत्तु**) आनन्दित करे॥ २॥

**भावार्थः**-जिस-जिस उपाय से दुष्ट बलहीन हों उस-उस उपाय का राजा अनुष्ठान करे अर्थात् आरम्भ करे॥ २॥

**पुनर्मनुष्येषु कथं वर्त्तेतेत्याह॥**

फिर मनुष्यों में कैसे वर्तें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**बोधा सु मे मघवन् वाचमेमां यां ते वसिष्ठो अर्चति प्रशस्तिम्।**

**इमा ब्रह्म सधमादे जुषस्व॥ ३॥**

**बोध। सु। मे। मघऽवन्। वाचम्। आ। इमाम्। याम्। ते। वसिष्ठः। अर्चति। प्रऽशस्तिम्। इमा। ब्रह्म। सधऽमादे। जुषस्व॥ ३॥**

**पदार्थः**-(**बोध**) जानीहि (**सु**) (**मे**) मम (**मघवन्**) प्रशंसितधनयुक्त (**वाचम्**) (**आ**) (**इमाम्**) (**याम्**) (**ते**) तव (**वसिष्ठः**) (**अर्चति**) (**प्रशस्तिम्**) प्रशंसितारम् (**इमा**) इमानि (**ब्रह्म**) धनान्यन्नानि वा (**सधमादे**) समानस्थाने (**जुषस्व**)॥ ३॥

**अन्वयः**-हे मघवन्विद्वँस्त्वं यान्ते प्रशस्तिं वसिष्ठ आर्चति तामिमां मे वाचं त्वं सु बोध सधमाद इमा ब्रह्म जुषस्व॥ ३॥

**भावार्थः**-स एव विद्वानुत्तमोऽस्ति यो यादृशीं प्रज्ञां शास्त्रविषयेषु प्रवीणां स्वार्थमिच्छेत्तामेवाऽन्यार्थामिच्छेत् यद्यदुत्तमं वस्तु स्वार्थं तत्परार्थे च जानीयात्॥ ३॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-हे **(मघवन्)** प्रशंसित धन वाले विद्वान्! आप **(याम्)** जिस **(ते)** आपके विषय की **(प्रशस्तिम्)** प्रशंसित वाणी को **(वसिष्ठः)** अतीव वसनेवाला **(आ, अर्चति)** अच्छे प्रकार सत्कृत करता है **(इमाम्)** इस **(मे)** मेरी **(वाचम्)** वाणी को आप **(सु, बोध)** अच्छे प्रकार जानो उससे **(सधमादे)** एक से स्थान में **(इमा)** इन **(ब्रह्म)** धन वा अन्नों का **(जुषस्व)** सेवन करो॥३॥

**भावार्थः**-वही विद्वान् उत्तम है जो जिस प्रकार की उत्तम शास्त्र विषय में बुद्धि अपने लिये चाहे उसी को औरों के लिये चाहे और जो-जो उत्तम अपने लिये पदार्थ हो, उसे पराये के लिये भी जाने॥३॥

**पुनरध्यापकाऽध्येतारः परस्परं कथं वर्तेरन्नित्याह॥**

फिर पढ़ने-पढ़ाने वाले परस्पर कैसे वर्तें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**श्रुधी हवं विपिपानस्याद्रेर्बोधा विप्रस्यार्चतो मनीषाम्।**

**कृष्वा दुवांस्यन्तमा सचेमा॥४॥**

**श्रुधि। हवम्। विऽपिपानस्य। अद्रेः। बोध। विप्रस्य। अर्चतः। मनीषाम्। कृष्व। दुवांसि। अन्तमा। सचा। इमा॥४॥**

**पदार्थः**-**(श्रुधि)** अत्र **द्व्यचोऽतस्तिङ** इति दीर्घः। **(हवम्)** शब्दसमूहम् **(विपिपानस्य)** विविधानि पानानि यस्मात् तस्य **(अद्रेः)** मेघस्येव **(बोध)** विजानीहि। अत्र **द्व्यचोऽतस्तिङ** इति दीर्घः। **(विप्रस्य)** मेधाविनः। **(अर्चतः)** सत्क्रियां कुर्वतः **(मनीषाम्)** प्रज्ञाम् **(कृष्व)** कुरुष्व। अत्र **द्व्यचोऽतस्तिङ** इति दीर्घः। **(दुवांसि)** परिचरणानि **(अन्तमा)** समीपस्थानि **(सचा)** सम्बन्धेन **(इमा)** इमानि॥४॥

**अन्वयः**-हे परमविद्वँस्त्वं विपिपानस्याद्रेरिवार्चतो विप्रस्य हवं श्रुधि मनीषां बोधेमान्तमा दुवांसि सचा कृष्व॥४॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे जिज्ञासवो! यूयं स्वकीयं पठितं परीक्षकाय विदुषे श्रावयन्तु तत्र ते यदुपदिशेयुस्तानि सततं सेवध्वम्॥४॥

**पदार्थः**-हे परम विद्वान्! आप **(विपिपानस्य)** विविध प्रकार के पीने जिस से बनें उस **(अद्रेः)** मेघ के समान **(अर्चतः)** सत्कार करते हुए **(विप्रस्य)** उत्तम बुद्धि वाले जन के **(हवम्)** शब्दसमूह को **(श्रुधि)** सुनो **(मनीषाम्)** उत्तम बुद्धि को **(बोध)** जानो और **(इमा)** इन **(अन्तमा)** समीपस्थ **(दुवांसि)** सेवनों को **(सचा)** सम्बन्ध करो॥४॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे जिज्ञासु विद्यार्थी जनो! तुम अपना पढ़ा हुआ परीक्षा लेने वाले विद्वान् को सुनाओ, वहाँ वे जो उपदेश करें, उनका निरन्तर सेवन करो॥४॥

**पुनः परीक्षकाः किं कुर्य्युरित्याह॥**

फिर परीक्षक जन क्या करें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥



www.9009.co.in

**न ते गिरो अपि मृष्ये तुरस्य न सुष्टुतिमसुर्यस्य विद्वान्।**

**सदा ते नाम स्वयशो विवक्मि॥५॥५॥**

**न। ते। गिरः। अपि। मृष्ये। तुरस्य। न। सुऽस्तुतिम्। असुर्यस्य। विद्वान्। सदा। ते। नाम। स्वऽयशः। विवक्मि॥५॥**

**पदार्थः**-(**न**) (**ते**) तव (**गिरः**) वाचः (**अपि**) (**मृष्ये**) विचारये (**तुरस्य**) क्षिप्रं कुर्वतः (**न**) (**सुष्टुतिम्**) शोभनां प्रशंसाम् (**असुर्यस्य**) असुरेषु मूर्खेषु भवस्य (**विद्वान्**) (**सदा**) (**ते**) (**नाम**) संज्ञाम् (**स्वयशः**) स्वकीयकीर्तिम् (**विवक्मि**) विवेकेन परीक्षयामि॥५॥

**अन्वयः**-हे विद्यार्थिन! अनभ्यस्तविद्यस्य ते तुरस्य गिरो विद्वानहं न मृष्येऽपि त्वसुर्यस्य सुष्टुतिं न मृष्ये ते तव नाम स्वयशश्च सदा विवक्मि॥५॥

**भावार्थः**-विद्वान् परीक्षायां यानलसान् प्रमादिनो निर्बुद्धीन् पश्येत्तान्न परीक्षयेन्नाप्यध्यापयेत्। ये चोद्यमिनः सुबुद्धयो विद्याभ्यासे तत्परा बोधयुक्ताः स्युस्तान् सु परीक्ष्य प्रोत्साहयेत्॥५॥

**पदार्थः**-हे विद्यार्थी! नहीं है विद्या में अभ्यास जिसको ऐसे (**ते**) तेरे (**तुरस्य**) शीघ्रता करने वाले की (**गिरः**) वाणियों को (**विद्वान्**) विद्वान् मैं (**न, मृष्ये**) नहीं विचारता (**अपि**) अपितु (**असुर्यस्य**) मूर्खों में प्रसिद्ध हुए जन की (**सुष्टुतिम्**) उत्तम प्रशंसा को (**न**) नहीं विचारता (**ते**) तेरे (**नाम**) नाम और (**स्वयशः**) अपनी कीर्त्ति की (**सदा**) सदा (**विवक्मि**) विवेक से परीक्षा करता हूँ॥५॥

**भावार्थः**-विद्वान् जन परीक्षा में जिनको आलसी, प्रमादी और निर्बुद्धि देखे, उनकी न परीक्षा करे और न पढ़ावे। और जो उद्यमी अर्थात् परिश्रमी उत्तम बुद्धि, विद्याभ्यास में तत्पर बोधयुक्त हों, उनकी उत्तम परीक्षा कर उन्हें अच्छा उत्साह दे॥५॥

**पुनर्मनुष्यैः किमेष्टव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को क्या इच्छा करनी चाहिये, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**भूरि हि ते सवना मानुषेषु भूरि मनीषी हवते त्वामित्।**

**मारे अस्मन् मघवन् ज्योक् कः॥६॥**

**भूरि। हि। ते। सवना। मानुषेषु। भूरि। मनीषी। हवते। त्वाम्। इत्। मा। आरे। अस्मत्। मघऽवन्। ज्योक्। करिति कः॥६॥**

**पदार्थः**-(**भूरि**) बहूनि (**हि**) खलु (**ते**) तव (**सवना**) सवनानि यज्ञसाधककर्माण्यैश्वर्याणि कर्माणि प्रेरणानि वा (**मानुषेषु**) मनुष्येषु (**भूरि**) बहु (**मनीषी**) मेधावी (**हवते**) गृह्णाति स्तौति वा



www.9009.co.in

**(त्वाम्)** **(इत्)** एव **(मा)** **(आरे)** दूरे समीपे वा **(अस्मत्)** **(मघवन्)** बह्वैश्वर्ययुक्त **(ज्योक्)** निरन्तरम् **(क:)** कुर्या:॥६॥

**अन्वय:**-हे मघवन् बहुविद्यैश्वर्ययुक्त! यो मानुषेषु भूरि मनीषी ते सवना भूरि हवते ये हि त्वामित् स्तौति तं ह्यस्मदारे ज्योग्मा क: किन्तु सदाऽस्मत्समीपे रक्षे:॥६॥

**भावार्थ:**-यो हि मनुष्याणां मध्य उत्तमो विद्वानाप्त: परीक्षको भवेत्तमन्यानध्यापकांश्च सततं प्रार्थयेयुर्भवद्भिरस्माकं निकटे यो धामिको विद्वान् भवेत् स एव निरन्तरं रक्षणीयो यश्च मिथ्या प्रियवादी न स्यात्॥६॥

**पदार्थ:**-हे **(मघवन्)** बहुत विद्यारूपी ऐश्वर्य्ययुक्त! जो **(मानुषेषु)** मनुष्यों में **(भूरि)** बहुत **(मनीषी)** बुद्धिवाला जन **(ते)** आपके **(सवना)** यज्ञसिद्धि कराने वाले कर्मों वा प्रेरणाओं को **(भूरि)** बहुत **(हवते)** ग्रहण करता तथा जो **(त्वाम्)** आप की **(इत्)** ही स्तुति प्रशंसा करता **(हि)** उसी को **(अस्मत्)** हम लोगों से **(आरे)** दूर **(ज्योक्)** निरन्तर **(मा, क:)** मत करो, किन्तु सदा हमारे समीप रक्खो॥६॥

**भावार्थ:**-जो निश्चय से मनुष्यों के बीच उत्तम विद्वान् आप्त परीक्षा करने वाला हो उसको तथा अन्य अध्यापकों की निरन्तर प्रार्थना करो आप लोगों को हमारे निकट जो धार्मिक, विद्वान् हो, यही निरन्तर रखने योग्य है, जो मिथ्या प्यारी वाणी बोलने वाला न हो॥६॥

**पुनस्सेनाऽधिष्ठातृभि: किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

फिर सेनापतियों को क्या करना चाहिये, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**तुभ्येदिमा सवना शूर विश्वा तुभ्यं ब्रह्माणि वर्धना कृणोमि।**

**त्वं नृभिर्हव्यो विश्वधासि॥७॥**

**तुभ्य। इत्। इमा। सवना। शूर। विश्वा। तुभ्यम्। ब्रह्माणि। वर्धना। कृणोमि। त्वम्। नृऽभि:। हव्य:। विश्वधा। असि॥७॥**

**पदार्थ:**-**(तुभ्य)** तुभ्यम् **(इत्)** एव **(इमा)** इमानि **(सवना)** ओषधिनिर्माणानि प्रेरणानि वा **(शूर)** निर्भयतया शत्रूणां हिंसक **(विश्वा)** सर्वाणि **(तुभ्यम्)** **(ब्रह्माणि)** धनान्यन्नानि वा **(वर्धना)** उन्नतिकराणि कर्माणि **(कृणोमि)** करोमि **(त्वम्)** **(नृभि:)** नायकैर्मनुष्यै: **(हव्य:)** स्तोतुमादातुमर्ह: **(विश्वधा)** यो विश्वं दधाति स:। अत्र **छान्दसो वर्णलोप:** इति सलोप:। **(असि)**॥७॥

**अन्वय:**-हे शूर राजन् सेनेश वा! यो विश्वधास्त्वं नृभिर्हव्योऽसि तस्मात्तुभ्येदिमा सवना कृणोमि तुभ्यं विश्वा ब्रह्माणि वर्धना च कृणोमि॥७॥

**भावार्थ:**-सेनाधिष्ठातार: सेनास्थान् योद्धॄन् भृत्यान् सुपरीक्ष्याऽधिकारेषु कार्येषु च नियोजयेयुस्तेषां यथावत्पालनं विधाय सुशिक्षया वर्धयेयु:॥७॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-हे **(शूर)** निर्भयता से शत्रुजनों की हिंसा करने वाले राजा वा सेनापति! जो **(विश्वधा)** विश्व को धारण करने वाले **(त्वम्)** आप **(नृभिः)** नायक मनुष्यों से **(हव्यः)** स्तुति वा ग्रहण करने योग्य **(असि)** हैं इससे **(तुभ्य)** तुम्हारे लिये **(इत्)** ही **(इमा)** यह **(सवना)** ओषधियों के बनाने वा प्रेरणाओं को **(कृणोमि)** करता हूँ और **(तुभ्यम्)** तुम्हारे लिये **(विश्वा)** समस्त **(ब्रह्माणि)** धन वा अन्नों और **(वर्धना)** उन्नति करने वाले कर्मों को करता हूँ॥७॥

**भावार्थः**-सेनाधिष्ठाता जन सेनास्थ योद्धा भृत्यजनों की अच्छे प्रकार परीक्षा कर अधिकार और कार्य्यों में नियुक्त करें यथावत् उनकी पालना करके उत्तम शिक्षा से बढ़ावें॥७॥

**पुनः स राजा कीदृशान् पुरुषान् रक्षेदित्याह॥**

फिर वह राजा कैसे पुरुषों को रक्खे, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**नू चिन्नु ते मन्यमानस्य दुस्मोदश्नुवन्ति महिमानमुग्र।**

**न वीर्यमिन्द्र ते न राधः॥८॥**

**नु। चित्। नु। ते। मन्यमानस्य। दुस्म। उत्। अश्नुवन्ति। महिमानम्। उग्र। न। वीर्यम्। इन्द्र। ते। न। राधः॥८॥**

**पदार्थः**-**(नु)** सद्यः। अत्र **ऋचि तुनुघेति** दीर्घः। **(चित्)** अपि **(नु)** **(ते)** तव **(मन्यमानस्य)** **(दस्म)** दुःखोपक्षयितः **(उत्)** **(अश्नुवन्ति)** प्राप्नुवन्ति **(महिमानम्)** **(उग्र)** तेजस्विन् **(न)** निषेधे **(वीर्यम्)** पराक्रमम् **(इन्द्र)** परमैश्वर्ययुक्त राजन् **(ते)** तव **(न)** निषेधे **(राधः)** धनम्॥८॥

**अन्वयः**-हे दस्मोग्रेन्द्र! मन्यमानस्य ते महिमानं नु सज्जना उदश्नुवन्ति तेषु विद्यमानेषु सत्सु ते तव वीर्यं शत्रवो हिंसितुं न शक्नुवन्ति न चित् तत्र नु राधो ग्रहीतुं शक्नुवन्ति॥८॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। हे राजन्! यदि भवान् सुपरीक्षितान् धार्मिकाञ्छूरान् विदुषस्सत्कृत्य सन्निकटे रक्षेत्तर्हि कोऽपि शत्रुर्भवन्तं पीडयितुं न शक्नुयात् सदा वीयैश्वर्येण वर्धेत॥८॥

**पदार्थः**-हे **(दस्म)** दुःख के विनाशने वाले **(उग्र)** तेजस्वी **(इन्द्र)** परमैश्वर्ययुक्त राजा! **(मन्यमानस्य)** माननीय के मानने वाले **(ते)** आपके **(महिमानम्)** बड़प्पन को **(नु)** शीघ्र सज्जन **(उत्, अश्नुवन्ति)** उन्नति पहुँचाते हैं उनके विद्यमान होते **(ते)** आपके **(वीर्यम्)** पराक्रम को शत्रुजन नष्ट **(न)** न कर सकते हैं **(चित्)** और **(न)** न वहाँ **(नु)** शीघ्र **(राधः)** धन ले सकते हैं॥८॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे राजन्! आप अच्छी परीक्षा कर सुपरीक्षित, धार्मिक, शूर, विद्वान् जनों को अपने निकट रक्खें तो कोई भी शत्रुजन आपको पीड़ा न दे सके सदा वीर्य और ऐश्वर्य से बढ़ो॥८॥

**राजादिभिः कैस्सह मैत्री विधेयेत्याह॥**

राजादिकों को किनके साथ मैत्री विधान करना चाहिये, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते



www.9009.co.in

हैं॥

**ये च॒ पूर्व॒ ऋष॑यो॒ ये च॒ नूत्ना॒ इन्द्र॒ ब्रह्मा॑णि ज॒नय॑न्त॒ विप्रा॑:।**

**अ॒स्मे ते॑ स॒न्तु स॒ख्या शि॒वानि॑ यू॒यं पा॑त स्व॒स्तिभि॒: सदा॑ नः॥९॥६॥**

**ये। च॒। पूर्वे॑। ऋष॑यः। ये। च॒। नूत्ना॑:। इन्द्र॑। ब्रह्मा॑णि। ज॒नय॑न्त। विप्रा॑:। अ॒स्मे इति॑। ते॒। स॒न्तु॒। स॒ख्या। शि॒वानि॑। यू॒यम्। पा॒त॒। स्व॒स्तिऽभि॑:। सदा॑। न॒:॥९॥**

**पदार्थः**-(**ये**) (**च**) (**पूर्वे**) अधीतवन्तः (**ऋषयः**) वेदार्थविदः (**ये**) (**च**) (**नूत्नाः**) अधीयते (**इन्द्र**) राजन् (**ब्रह्माणि**) धनान्यन्नानि वा (**जनयन्त**) जनयन्ति (**विप्राः**) मेधाविनः (**अस्मे**) अस्मभ्यमस्माकं वा (**ते**) तव (**सन्तु**) (**सख्या**) सख्युः कर्माणि (**शिवानि**) मङ्गलप्रदानि (**यूयम्**) (**पात**) (**स्वस्तिभिः**) सदा (**नः**)॥९॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! ये पूर्व ऋषयो धार्मिकाश्च ये नूत्ना धीमन्तश्च विप्रास्ते अस्मे च ब्रह्माणि जनयन्त तैस्सहाऽस्माकं तव च शिवानि सख्या सन्तु यथा यूयमस्मत्सखाय सन्तः स्वस्तिभिर्नः सदा पात तथा वयमपि युष्मान् स्वस्तिभिः सदा रक्षेम॥९॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे राजन् ये वेदार्थविदर्थविदो योगिन आप्ता उपदेशका अध्यापकाश्च ये धर्म्येण विद्याध्ययने रताः प्राज्ञाश्चास्मत्कल्याणेच्छुका भवेयुस्तैस्सहैव मैत्रीं कृत्वा धनधान्यानि वर्धयित्वैतैरेतान् सततं रक्ष रक्षिताश्च ते भवन्तं सदा रक्षयिष्यन्तीति॥९॥

अत्रेन्द्रराजशूरसेनेशाध्यापकाऽध्येतृपरीक्षकोपदेशककृत्यगुणवर्णनादेतदर्थस्य सूक्तस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति द्वाविंशतितमं सूक्तं षष्ठो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**- हे (**इन्द्र**) राजन् (**ये**) जो (**पूर्वे**) विद्या पढ़े हुए (**ऋषयः**) वेदार्थवेत्ता जन (**च**) और धार्मिक अन्य जन (**ये**) जो (**नूत्नाः**) नवीन पढ़ने वाले जन (**च**) और बुद्धिमान् अन्य जन (**विप्राः**) उत्तम बुद्धि वाले जन (**ते**) तुम्हारे और (**अस्मे**) हम लोगों के लिये (**ब्रह्माणि**) धन वा अन्नों को (**जनयन्त**) उत्पन्न करते हैं उनके साथ हमारे और आपके (**शिवानि**) मङ्गल देने वाले (**सख्या**) मित्र के कर्म (**सन्तु**) हों जैसे (**यूयम्**) तुम हमारे मित्र हुए (**स्वस्तिभिः**) सुखों से (**नः**) हम लोगों की (**सदा**) सदा (**पात**) रक्षा करो, वैसे हम लोग भी तुम को सुखों से सदा पालें॥९॥

**भावार्थः**- इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे राजा! जो वेदार्थवेत्ता और अर्थ पदार्थों को जानने वाले योगी जन विद्याध्ययन में निरत बुद्धिमान् हमारे कल्याण की इच्छा करने वाले हों उनके साथ ऐसी मित्रता कर धनधान्यों को बढ़ा इनसे इनकी सदा रक्षा कर और रक्षा किये हुए वह जन आप की सदा रक्षा करेंगे॥९॥



www.9009.co.in

इस सूक्त में इन्द्र, राजा, शूर, सेनापति, पढ़ाने, पढ़ने, परीक्षा करने और उपदेश देने वालों के गुणों का वर्णन होने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ संगति जाननी चाहिये।।

**यह बाईसवां सूक्त और छठा वर्ग पूरा हुआ।।**



www.9009.co.in

**अथ षड्चस्य त्रयोविंशतितमस्य सूक्तस्य वसिष्ठ ऋषिः। इन्द्रो देवता। १, ६, भुरिक् पङ्क्तिः। ४ स्वराट्पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः। २, ३ विराट् त्रिष्टुप्। ५ निचृत्त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः॥**

***अथ उपस्थित सङ्ग्रामे प्रबन्धकर्तारः किं किं कुर्य्युरित्याह॥***

अब छः ऋचावालें तेईसवें सूक्त का आरम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में प्रबन्धकर्ता जन क्या क्या करें, इस विषय को कहते हैं॥

**उदु ब्रह्माण्यैरत श्रवस्येन्द्रं समर्ये महया वसिष्ठ।**

**आ यो विश्वानि शवसा ततानोपश्रोता म ईवतो वचांसि॥१॥**

**उत्। ऊँ इति। ब्रह्माणि। ऐरत। श्रवस्या। इन्द्रम्। सऽमर्ये। महय। वसिष्ठ। आ। यः। विश्वानि। शवसा। ततान। उपऽश्रोता। मे। ईवतः। वचांसि॥१॥**

**पदार्थः**-(**उत्**) (उ) (**ब्रह्माणि**) धनधान्यानि (**ऐरत**) प्रेरयन्ति (**श्रवस्या**) श्रवःस्वन्नेषु श्रवणेषु भवानि (**इन्द्रम्**) शूरवीरम् (**समर्ये**) सङ्ग्रामे (**महया**) पूजय। अत्र **संहितायामि**ति दीर्घः। (**वसिष्ठ**) अतिशयेन वसो (**आ**) समन्तात् (**यः**) (**विश्वानि**) सर्वाणि (**शवसा**) बलेन (**ततान**) तनोति (**उपश्रोता**) य उपद्रष्टा सञ्छृणोति (**मे**) मम (**ईवतः**) सामीप्यं गच्छतः (**वचांसि**) वचनानि॥१॥

**अन्वयः**-हे वसिष्ठ विद्वन् राजन्! यथा विद्वांसः श्रवस्या ब्रह्माण्युदैरत तथेन्द्रमु समर्ये महय। य उपश्रोता शवसेवतो मे विश्वानि वचांस्या ततान तमप्युपदेष्टारं समर्ये महय॥१॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे राजन्! यदा सङ्ग्राम उपतिष्ठेत्तदा पुष्कलं धनं धान्यं शस्त्रादिकं सेनाङ्गानि चैतेषां रक्षकान् सुप्रबन्धकर्त्तॄन् भवान् प्रेरयतु तत्राप्तानुपदेष्टॄँश्च रक्षयत योद्धार उत्साहिताः सुरक्षिताः सन्तः क्षिप्रं विजयं कुर्य्युः॥१॥

**पदार्थः**-हे (**वसिष्ठ**) अतीव बसने वाले विद्वान् राजा! जैसे विद्वान् जन (**श्रवस्या**) अन्न वा श्रवणों के बीच उत्पन्न हुए (**ब्रह्माणि**) धन-धान्यों को (**उत्, ऐरत**) प्रेरणा देते हैं, वैसे (**इन्द्रम्**) शूरवीरजन का (**उ**) तर्क वितर्क से (**समर्ये**) समर में (**महय**) सत्कार करो (**यः**) जो (**उपश्रोता**) ऊपर से देखने वाला अच्छे सुनता है वह (**शवसा**) बल से (**ईवतः**) समीप जाते हुए (**मे**) मेरे (**विश्वानि**) सब (**वचांसि**) वचनों को (**आ, ततान**) अच्छे प्रकार विस्तारता है, उस उपदेशक का भी समर में सत्कार करो॥१॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे राजन्! जब संग्राम उपस्थित हो तब बहुत धन अन्न शस्त्र अस्त्र सेनाओं के अङ्ग और इनकी रक्षा करने तथा अच्छे प्रबन्ध करने वालों को आप प्रेरणा देओ, आप्त और उपदेष्टा जनों को रक्खो, योद्धा जन उत्साहित और सुरक्षित हुए शीघ्र विजय करें॥१॥

**पुनः स राजाऽमात्याश्चाऽन्योऽन्यं कथं वर्त्तेरन्नित्याह॥**



www.9009.co.in

फिर वह राजा और मन्त्री जन परस्पर कैसे वर्तें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अया॑मि॒ घोष॑ इन्द्र दे॒वजा॑मिरिर॒ज्यन्त॑ य॒च्छु॒रुधो॒ विवा॑चि।**

**न॒हि स्वमायु॑श्चिकि॒ते जने॑षु॒ तानीदंहां॒स्यति॑ पर्ष्य॒स्मान्॥ २॥**

**अया॑मि। घोषः॑। इ॒न्द्र॒। दे॒वऽजा॑मिः। इ॒र॒ज्यन्त॑। यत्। शु॒रुधः॑। विऽवा॑चि। न॒हि। स्वम्। आयुः॑। चि॒कि॒ते। जने॑षु। तानि॑। इत्। अंहां॑सि। अति॑। पर्षि॑। अ॒स्मान्॥ २॥**

**पदार्थः**-(**अयामि**) प्राप्नोति (**घोषः**) सुवक्तृत्वयुक्ता वाक्। **घोष इति वाङ्नाम।** (निघं०१.११) (**इन्द्र**) परमैश्वर्यप्रद (**देवजामिः**) यो देवैस्सह जमति सः (**इरज्यन्त**) प्राप्नुवन्तु (**यत्**) ये (**शुरुधः**) ये सद्यो रुन्धन्ति ते (**विवाचि**) विविधासु विद्यासु प्रवृत्ता वाक् तस्याम् (**नहि**) निषेधे (**स्वम्**) स्वकीयम् (**आयुः**) जीवनम् (**चिकिते**) जानाति (**जनेषु**) मनुष्येषु (**तानि**) (**इत्**) एव (**अंहांसि**) अधर्मयुक्तानि कर्माणि (**अति**) (**पर्षि**) पूरयसि (**अस्मान्**)॥ २॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र यद्ये शुरुधो विवाचीरज्यन्त यैः सह देवजामिर्घोषः प्रवर्तेत यो जनेषु स्वमायुश्चिकिते तान्यंहांसि दूरेऽति पर्ष्यस्माँश्च सुरक्षति तमहमयामि एते सर्वे वयं पुरुषार्थेन कदाचित् पराजिता इन्नहि भवेम॥ २॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यथा विद्वांसो धर्म्ये वर्त्तेरँस्तथा यूयमपि वर्त्तध्वम् ब्रह्मचर्यादिना स्वकीयमायुर्वर्धयत॥ २॥

**पदार्थः**-हे (**इन्द्र**) परम ऐश्वर्य के देने वाले! (**यत्**) जो (**शुरुधः**) शीघ्र रूंधने वाले (**विवाचि**) नाना प्रकार की विद्याओं में जो प्रवृत्त वाणी उसमें (**इरज्यन्त**) प्राप्त होते हैं वा जिनके साथ (**देवजामिः**) विद्वानों के संग रहने वाली (**घोषः**) अच्छी वक्तृता से युक्त वाणी प्रवृत्त हो वा जो (**जनेषु**) मनुष्यों में (**स्वम्**) अपनी (**आयुः**) उमर को (**चिकिते**) जानता है वा (**तानि**) उन (**अंहांसि**) अधर्मयुक्त कामों को दूर (**अति, पर्षि**) आप अति पार पहुँचाते वा (**अस्मान्**) हम लोगों की अच्छे प्रकार रक्षा करता है उसकी मैं (**अयामि**) रक्षा करता हूँ ये समस्त हम लोग पुरुषार्थ से पराजित (**इत्, नहि**) कभी न हों॥ २॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे विद्वान् जन धर्मयुक्त व्यवहार में वर्तें, वैसे तुम भी वर्तो, ब्रह्मचर्य्य आदि से अपनी आयु को बढ़ाओ॥ २॥

**पुनः किं कृत्वा वीराः सङ्ग्रामे गच्छेयुरित्याह॥**

फिर क्या करके वीर संग्राम में जावें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**यु॒जे रथं॑ ग॒वेष॑णं॒ हरि॑भ्या॒मुप॒ ब्रह्मा॑णि जुजुषा॒णम॑स्थुः।**

**वि बा॑धिष्ट॒ स्य रोद॑सी महि॒त्वेन्द्रो॑ वृ॒त्राण्य॑प्र॒ती ज॑घ॒न्वान्॥ ३॥**



www.9009.co.in

**युजे। रथम्। गोऽएषणम्। हरिऽभ्याम्। उप। ब्रह्माणि। जुजुषाणम्। अस्थुः। वि। बाधिष्ट। स्यः। रोदसी इति। महिऽत्वा। इन्द्रः। वृत्राणि। अप्रति। जघन्वान्॥ ३॥**

**पदार्थः**-(**युजे**) युनज्मि (**रथम्**) प्रशस्तं यानम् (**गवेषणम्**) गां भूमिं प्रापकम् (**हरिभ्याम्**) अश्वाभ्याम् (**उप**) धनधान्यानि (**जुजुषाणम्**) सेवमानम् (**अस्थुः**) तिष्ठन्तु (**वि**) (**बाधिष्ट**) बाधयन्तु (**स्यः**) सः (**रोदसी**) द्यावापृथिव्यौ (**महित्वा**) महिम्ना (**इन्द्रः**) सूर्यः (**वृत्राणि**) धनानि (**अप्रति**) अप्रत्यक्षेऽपि (**जघन्वान्**) हन्ता॥ ३॥

**अन्वयः**-हे सेनेश! यथेन्द्रो महित्वा रोदसी प्रकाशयति तथायं ब्रह्माणि जुजुषाणं रथं वीरा उपास्थुर्येन शूरवीराः शत्रून् विबाधिष्ट तमप्रति जघन्वान् स्योऽहं गवेषणं रथं हरिभ्यां युजे वृत्राणि प्राप्नुयाम्॥ ३॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे शूरवीरा! यदा भवन्तो युद्धाय गच्छेयुस्तदा सर्वा सामग्रीमलंकृत्य यान्तु येन शत्रूणां बाधा सद्यः स्याद्विजयैश्वर्यं च प्राप्नुयात्॥ ३॥

**पदार्थः**-हे सेनेश! जैसे (**इन्द्रः**) सूर्य (**महित्वा**) अपने महान् परिमाण से (**रोदसी**) आकाश और पृथिवी को प्रकाशित करता है, वैसे जिस (**ब्रह्माणि**) धन धान्य पदार्थों को (**जुजुषाणाम्**) सेवते हुए (**रथम्**) प्रशंसनीय रथ को वीरजन (**उपास्थुः**) उपस्थित होते हैं जिससे शूरवीर जन शत्रुओं को (**वि, बाधिष्ट**) विविध प्रकार से विलोवें पीड़ा दें उसको (**अप्रति**) अप्रत्यक्ष अर्थात् पीछे भी (**जघन्वान्**) मारने वाला (**स्यः**) वह मैं (**गवेषणम्**) भूमि पर पहुँचाने वाले रथ को (**हरिभ्याम्**) हरणशील घोड़ों से (**युजे**) जोड़ता हूँ जिससे (**वृत्राणि**) धनों को प्राप्त होऊँ॥ ३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे शूरवीरो! जब आप लोग युद्ध के लिये जावें तब सामग्री को पूरी करके जावें, जिससे शत्रुओं को शीघ्र बाधा पीड़ा हो और विजय को भी प्राप्त हो॥ ३॥

**पुनः सेनापतीशः कीदृशान् योद्धॄन् रक्षेदित्याह॥**

फिर सेनापति का ईश वीर कैसे युद्ध करने वालों को रक्खे, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**आपश्चित्पिप्युः स्तर्यो३ न गावो नक्षन्नृतं जरितारस्त इन्द्र।**

**याहि वायुर्न नियुतो नो अच्छा त्वं हि धीभिर्दयसे वि वाजान्॥ ४॥**

**आपः। चित्। पिप्युः। स्तर्यः। न। गावः। नक्षन्। ऋतम्। जरितारः। ते। इन्द्र। याहि। वायुः। न। निऽयुतः। नः। अच्छ। त्वम्। हि। धीभिः। दयसे। वि। वाजान्॥ ४॥**

**पदार्थः**-(**आपः**) जलानि (**चित्**) इव (**पिप्युः**) वर्धयेयुः (**स्तर्यः**) आच्छादिताः (**न**) इव (**गावः**) किरणाः (**नक्षन्**) व्याप्नुवन्ति (**ऋतम्**) सत्यम् (**जरितारः**) स्तावकाः (**ते**) तव (**इन्द्र**) सर्वसेनेश (**याहि**) (**वायुः**) पवनः (**न**) इव (**नियुतः**) निश्चितान् (**नः**) अस्मान् (**अच्छ**) अत्र



www.9009.co.in

**संहितायामि**ति दीर्घः। **(त्वम्) (हि)** यतः **(धीभिः)** प्रज्ञाभिः **(दयसे)** कृपां करोषि **(वि) (वाजान्)** वेगवतः॥४॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! ये वीरा आपश्चिद्गमयन्तस्तर्यो गावो न पिप्युस्ते जरितार ऋतं नक्षंस्तैस्सह वायुर्न त्वं याहि हि त्वं धीभिर्नियुतो वाजान्नोऽच्छ विदयसे तस्माद्वयं तवाज्ञां नोल्लङ्घयामः॥४॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। हे सेनाध्यक्षेश! यदि भवान्सुपरीक्षिताञ्छूरवीरान् संरक्ष्य सुशिक्षाय कृपयोन्नीय शत्रुभिस्सह योधयेत्तर्ह्येत सूर्यकिरणवत्तेजस्विनो भूत्वा वायुवत्सद्यो गत्वा शत्रूँस्तूर्णं विनाशयेयुः॥४॥

**पदार्थः**-हे **(इन्द्र)** सर्व सेनापति! जो वीरजन **(आपः)** जलों के **(चित्)** समान सेनाजनों को चलाते हुए **(स्तर्यः)** ढँपी हुई **(गावः)** किरणों के **(न)** समान **(पिप्युः)** बढ़ावें और **(ते)** आप की **(जरितारः)** स्तुति करने वाले जन **(ऋतम्)** सत्य को **(नक्षन्)** व्याप्त होते हैं उनके साथ **(वायुः)** पवन के **(न)** समान **(त्वम्)** आप **(याहि)** जाइये **(हि)** जिससे **(धीभिः)** उत्तम क्रियाओं से **(नियुतः)** निश्चित किये हुए **(वाजान्)** वेगवान् **(नः)** हम लोगों की **(अच्छ)** अच्छे प्रकार **(वि, दयसे)** विशेषता से दया करते हो, इससे हम लोग तुम्हारी आज्ञा को न उल्लंघन करें॥४॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे सेनाध्यक्ष पति! यदि आप सुरक्षित शूरवीर जनों की अच्छे प्रकार रक्षा कर अच्छी शिक्षा देकर और कृपा से उन्नति कर शत्रुओं के साथ युद्ध करावें तो ये सूर्य की किरणों के समान तेजस्वी होकर पवन के समान शीघ्र जा शत्रुओं को शीघ्र विनाशें॥४॥

**पुनस्ते सर्वसेनेशाः सर्वे सेनाजनाः परस्परं कथं वर्तेरन्नित्याह॥**

फिर वे सब सेनापति और सब सेनाजन परस्पर कैसे वर्तें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**ते त्वा मदा इन्द्र मादयन्तु शुष्मिणं तुविराधसं जरित्रे।**

**एको देवत्रा दयसे हि मर्तानस्मिञ्छूर सवने मादयस्व॥५॥**

**ते। त्वा। मदाः। इन्द्र। मादयन्तु। शुष्मिणम्। तुविऽराधसम्। जरित्रे। एकः। देवऽत्रा। दयसे। हि। मर्तान्। अस्मिन्। शूर। सवने। मादयस्व॥५॥**

**पदार्थः**-**(ते) (त्वा)** त्वाम् **(मदाः)** आनन्दयुक्ताः सुभटाः **(इन्द्र)** सर्वसेनास्वामिन् **(मादयन्तु)** हर्षयन्तु **(शुष्मिणम्)** बहुबलयुक्तम् **(तुविराधसम्)** बहुधनधान्यम् **(जरित्रे)** सत्यस्तावकाय **(एकः)** असहायः **(देवत्रा)** देवेषु विद्वत्सु **(दयसे) (हि)** यतः **(मर्त्तान्)** मनुष्यान् **(अस्मिन्)** वर्त्तमाने **(शूर)** निर्भय **(सवने)** युद्धाय प्रेरणे **(मादयस्व)** आनन्दयस्व॥५॥

**अन्वयः**-हे शूरेन्द्र! हि यतस्त्वमेको देवत्रा यस्मै जरित्रे येभ्यो भृत्येभ्यश्च दयसे ते मदाः सन्तः शुष्मिणं तुविराधसं त्वा मादयन्तु त्वमस्मिन् सवने तान् मर्तान् मादयस्व॥५॥



www.9009.co.in

**भावार्थः-**हे सर्वसेनाऽधिकारिपते! त्वं सदा सर्वेषामुपरि पक्षपातं विहाय कृपां विदध्याः सर्वांश्च समभावेनानन्दय यतस्ते सुरक्षिताः सत्कृताः सन्तो दुष्टान्निवार्य श्रेष्ठान् रक्षित्वा राज्यं सततं वर्धयेयुः॥५॥

**पदार्थः**-हे **(शूर)** निर्भय **(इन्द्र)** सर्व सेना स्वामी! **(हि)** जिस कारण आप **(एकः)** अकेले **(देवत्रा)** विद्वानों में जिस **(जरित्रे)** सत्य की स्तुति करने वाले के लिये जिन भृत्य जनों से **(दयसे)** दया करते हो **(ते)** वे **(मदाः)** आनन्दयुक्त होते हुए अच्छे भट योद्धाजन **(शुष्मिणम्)** बलयुक्त **(तुविराधसम्)** बहुत धन-धान्य वाले **(त्वा)** आप को **(मादयन्तु)** हर्षित करें आप **(अस्मिन्)** इस वर्त्तमान **(सवने)** युद्ध के लिये प्रेरणा में उन **(मर्त्तान्)** मनुष्यों को **(मादयस्व)** आनन्दित करो॥५॥

**भावार्थः**-हे सर्व सेनाधिकारियों के पति! आप सर्वदैव सब पक्षपात को छोड़ कृपा करो और सब को समान भाव से आनन्दित करो जिससे वे अच्छी रक्षा और सत्कार पाये हुए दुष्टों का निवारण और श्रेष्ठों की रक्षा करके निरन्तर राज्य बढ़ावें॥५॥

**पुनः सर्वसेनेशं सेनाजनाः परस्परं कथं वर्तेरन्नित्याह॥**

फिर सर्व सेनापति को सेनाजन परस्पर कैसे वर्तें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**एवेदिन्द्रं वृषणं वज्रबाहुं वसिष्ठासो अभ्यर्चन्त्यर्कैः।**

**स नः स्तुतो वीरवत्पातु गोमद्यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥६॥७॥**

**एव। इत्। इन्द्रम्। वृषणम्। वज्रऽबाहुम्। वसिष्ठासः। अभि। अर्चन्ति। अर्कैः। सः। नः। स्तुतः। वीरऽवत्। पातु। गोऽमत्। यूयम्। पात। स्वस्तिऽभिः। सदा। नः॥६॥**

**पदार्थः-(एव) (इत्)** अपि **(इन्द्रम्)** सर्वसेनाधिपतिम् **(वृषणम्)** सुखानां वर्षयितारम् **(वज्रबाहुम्)** शस्त्रास्त्रपाणिम् **(वसिष्ठासः)** अतिशयेन वासयितारः **(अभि) (अर्चन्ति)** सत्कुर्वन्ति **(अर्कैः)** सुविचारैः **(सः) (नः)** अस्मान् **(स्तुतः)** प्रशंसितः **(वीरवत्)** वीरा विद्यन्ते यस्मिँस्तत्सैन्यम् **(पातु) (गोमत्)** प्रशस्ता गौर्वाग् विद्यते यस्मिँस्तत् **(यूयम्) (पात) (स्वस्तिभिः) (सदा) (नः)** अस्माकम्॥६॥

**अन्वयः**-ये वसिष्ठासोऽर्कैर्वृषणं वज्रबाहुमिन्द्रमभ्यर्चन्ति स एव स्तुतः सन्नः पातु। सर्वे यूयं स्वस्तिभिर्नो गोमद्वीरवदित्सैन्यं सदा पात॥६॥

**भावार्थः-**येषां योऽधिष्ठाता भवेत्तदाज्ञायां सर्वैर्यथावद्वर्तितव्यमधिष्ठाता च पक्षपातं विहाय सुविचार्याज्ञां प्रदद्यादेवं परस्परस्मिन् प्रीताः सन्तोऽन्योऽन्येषां रक्षणं विधाय राज्यधनयशांसि वर्धयित्वा सदा वर्धमाना भवन्त्विति॥६॥



www.9009.co.in

अत्रेन्द्रसेनायोद्धसर्वसेनेशकृत्यगुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति त्रयोविंशतितमं सूक्तं सप्तमो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-जो **(वसिष्ठासः)** अतीव बसाने वाले जन **(अर्कैः)** उत्तम विचारों से **(वृषणम्)** सुखों की वर्षा करने और **(वज्रबाहुम्)** शस्त्र अस्त्रों को हाथों में रखने वाले **(इन्द्रम्)** सर्व सेनाधिपति का **(अभि, अर्चन्ति)** सत्कार करते हैं **(सः, एवः)** वही **(स्तुतः)** स्तुति को प्राप्त हुआ **(नः)** हम लोगों की **(पातु)** रक्षा करे। सब **(यूयम्)** तुम लोग **(स्वस्तिभिः)** सुखों से **(नः)** हम लोगों की तथा **(गोमत्)** प्रशंसित गौएं जिसमें विद्यमान वा **(वीरवत्)** वीरजन जिसमें विद्यमान वा **(इत्)** उस सेना समूह की भी **(सदा)** [सदा] **(पात)** रक्षा करो॥६॥

**भावार्थः**-जिनका जो अधिष्ठाता हो उसकी आज्ञा में सब को यथावत् वर्तना चाहिये। अधिष्ठाता भी पक्षपात को छोड़ अच्छे प्रकार विचार कर आज्ञा दे, ऐसे परस्पर की रक्षा कर राज्य, धन और यशों को बढ़ा सदा बढ़ते हुए होओ॥६॥

इस सूक्त में इन्द्र, सेना, योद्धा और सर्व सेनापतियों के कार्य्यों का वर्णन होने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ संगति जाननी चाहिये।

**यह तेईसवां सूक्त और सातवां वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

**अथ षड्चस्य चतुर्विंशतितमस्य सूक्तस्य वसिष्ठ ऋषिः। इन्द्रो देवता। १, ३ निचृत्त्रिष्टुप्। २, ५ त्रिष्टुप्। ४ विराट् त्रिष्टुप्छन्दः। धैवतः स्वरः। ६ विराट् पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः॥**

***अथ मनुष्यैः किं कर्त्तव्यमित्याह॥***

अब छः ऋचीवाले चौबसीवें सूक्त का आरम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में मनुष्यों को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**योनिष्ट इन्द्र सदने अकारि तमा नृभिः पुरुहूत प्र याहि।**

**असो यथा नोऽविता वृधे च ददो वसूनि ममदश्च सोमैः॥ १॥**

**योनिः। ते। इन्द्र। सदने। अकारि। तम्। आ। नृऽभिः। पुरुऽहूत। प्र। याहि। असः। यथा। नः। अविता। वृधे। च। ददः। वसूनि। ममदः। च। सोमैः॥ १॥**

**पदार्थः**-(**योनिः**) गृहम् (**ते**) तव (**इन्द्र**) नरेश (**सदने**) उत्तमे स्थले (**अकारि**) क्रियते (**तम्**) (**आ**) (**नृभिः**) नायकैर्मनुष्यैः (**पुरुहूत**) बहुभिः स्तुत (**प्र**) (**याहि**) (**असः**) भवेः (**यथा**) (**नः**) अस्माकम् (**अविता**) रक्षकः (**वृधे**) वर्धनाय (**च**) (**ददः**) ददासि (**वसूनि**) द्रव्याणि (**ममदः**) आनन्द (**च**) आनन्दमय (**सोमैः**) ऐश्वर्योत्तमौषधिरसैः॥ १॥

**अन्वयः**-हे पुरुहूत इन्द्र राजंस्ते सदने यो योनिस्त्वयाऽकारि तं नृभिस्सह प्र याहि यथा नोऽविताऽसो नो वृधे च वसून्या ददः सोमैश्च ममदस्तथा सर्वेषां सुखाय भव॥ १॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। मनुष्यैर्निवासस्थानमुत्तमजलस्थलवायुके देशे गृहं निर्माय तत्र निवसितव्यम्। सर्वैः सर्वेषां सुखवर्धनाय धनादिभिः संरक्षणं कृत्वाऽखिलैरानन्दितव्यम्॥ १॥

**पदार्थः**-(**पुरुहूत**) बहुतों से स्तुति पाये हुए (**इन्द्र**) मनुष्यों के स्वामी राजा! (**ते**) आपके (**सदने**) उत्तम स्थान में जो (**योनिः**) घर तुम से (**अकारि**) किया जाता है (**तम्**) उसको (**नृभिः**) नायक मनुष्यों के साथ (**प्र, याहि**) उत्तमता से जाओ (**यथा**) जैसे (**नः**) हमारी (**अविता**) रक्षा करने वाला (**असः**) होओ और हमारी (**वृधे**) वृद्धि के लिये (**च**) भी (**वसूनि**) द्रव्य वा उत्तम पदार्थों को (**आ, ददः**) ग्रहण करो (**सोमैः, च**) और ऐश्वर्य वा उत्तमोत्तम ओषधियों के रसों से (**ममदः**) हर्ष को प्राप्त होओ, वैसे सब के सुख के लिये होओ॥ १॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। मनुष्यों को चाहिये कि निवासस्थान उत्तम जल, स्थल और पवन जहाँ हो उस देश में घर बना कर वहाँ बसें, सब के सुखों के बढ़ाने के लिये धनादि पदार्थों से अच्छी रक्षा कर सबों को आनन्दित करें॥ १॥

**पुनः स्त्रीपुरुषौ किं कृत्वा विवाहं कुर्यातामित्याह॥**

फिर वे स्त्री-पुरुष क्या करके विवाह करें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥



www.9009.co.in

**गृभीतं ते मन इन्द्र द्विबर्हाः सुतः सोमः परिषिक्ता मधूनि।**

**विसृष्टधेना भरते सुवृक्तिरियमिन्द्रं जोहुवती मनीषा॥ २॥**

**गृभीतम्। ते। मनः। इन्द्र। द्विऽबर्हाः। सुतः। सोमः। परिऽसिक्ता। मधूनि। विसृष्टऽधेना। भरते। सुऽवृक्तिः। इयम्। इन्द्रम्। जोहुवती। मनीषा॥ २॥**

**पदार्थः**-(**गृभीतम्**) गृहीतम् (**ते**) तव (**मनः**) अन्तःकरणम् (**इन्द्र**) परमैश्वर्यप्रद (**द्विबर्हाः**) द्वाभ्यां विद्यापुरुषार्थाभ्यां यो वर्धते सः (**सुतः**) निष्पादितः ( **सोमः**) ओषधिरसः (**परिषिक्ता**) सर्वतः सिक्तानि (**मधूनि**) क्षौद्रादीनि (**विसृष्टधेना**) विविधविद्यायुक्ता धेना वाग्यस्याः सा (**भरते**) धरति (**सुवृक्तिः**) शोभना वृक्तिः वर्त्तनं यस्याः सा (**इयम्**) (**इन्द्रम्**) परमैश्वर्यप्रदं पुरुषम् (**जोहुवती**) या भृशमाह्वयति (**मनीषा**) प्रिया॥ २॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! या विसृष्टधेना सुवृक्तिरियं मनीषेन्द्रं जोहुवती भरते यया ते मनो गृभीतं यो द्विबर्हाः सुतः सोमोऽस्ति यत्र परिषिक्तानि मधूनि सन्ति तं सेवस्व॥ २॥

**भावार्थः**-या स्त्री सुविचारेण स्वप्रियं पतिं प्राप्य गर्भं बिभर्ति सा पत्युश्चित्ताकार्षिका वशकारिणी भूत्वा वीरसुतं जनयित्वा सर्वदाऽऽनन्दति॥ २॥

**पदार्थः**-हे (**इन्द्र**) परमैश्वर्य के देने वाले जो (**विसृष्टधेना**) नाना प्रकार की विद्यायुक्त वाणी और (**सुवृक्तिः**) सुन्दर चाल ढाल जिसकी ऐसी (**इयम्**) यह (**मनीषा**) प्रिया स्त्री (**इन्द्रम्**) परमैश्वर्य देने वाले पुरुष को (**जोहुवति**) निरन्तर बुलाती है उसको (**भरते**) धारण करती है जिसने (**ते**) तेरा (**मनः**) मन (**गृभीतम्**) ग्रहण किया तथा जो (**द्विबर्हाः**) दो से अर्थात् विद्या और पुरुषार्थ से बढ़ता वह (**सुतः**) उत्पन्न किया हुआ (**सोमः**) ओषधियों का रस है और जहाँ (**परिषिक्ता**) सब ओर से सींचे हुए (**मधूनि**) दाख वा सहत आदि पदार्थ हैं, उन्हें सेवो॥ २॥

**भावार्थः**-जो स्त्री सुविचार से अपने प्रिय पति को प्राप्त होके गर्भ को धारण करती है वह पति के चित्त को खींचने और वश **[में]** करने वाली होकर वीर सुत को उत्पन्न कर सर्वदा आनन्दित होती है॥ २॥

**पुनर्मनुष्यैः किं वर्त्तयित्वा किं पेयमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को क्या वर्त्त कर क्या पीना चाहिये, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते है॥

**आ नो दिव आ पृथिव्या ऋजीषिन्निदं बर्हिः सोमपेयाय याहि।**

**वहन्तु त्वा हरयो मद्र्यञ्चमाङ्गूषमच्छा तवसं मदाय॥ ३॥**

**आ। नः। दिवः। आ। पृथिव्याः। ऋजीषिन्। इदम्। बर्हिः। सोमऽपेयाय। याहि। वहन्तु। त्वा। हरयः। मद्र्यञ्चम्। आङ्गूषम्। अच्छ। तवसम्। मदाय॥ ३॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**आ**) समन्तात् (**नः**) अस्माकम् (**दिवः**) प्रकाशम् (**आ**) (**पृथिव्याः**) भूमेः (**ऋजीषिन्**) सरलस्वभाव (**इदम्**) वर्त्तमानम् (**बर्हिः**) उत्तमं स्थानमवकाशं वा (**सोमपेयाय**) उत्तमौषधिरसपानाय (**याहि**) आगच्छ (**वहन्तु**) प्रापयन्तु (**त्वा**) त्वाम् (**हरयः**) (**मद्र्यञ्चम्**) मामञ्चतम् (**आङ्गूषम्**) प्राप्नुवन्तम् (**अच्छा**) सम्यक्। अत्र **संहितायामि**ति दीर्घः। (**तवसम्**) बलम् (**मदाय**) आनन्दाय॥ ३॥

**अन्वयः**-हे ऋजीषिंस्त्वं सोमपेयाय दिवः पृथिव्याः न इदं बर्हिरायाहि मदाय मद्र्यञ्चमाङ्गूषं तवसं त्वा सोमपेयाय हरयोऽच्छा वहन्तु॥ ३॥

**भावार्थः**-त एवारोगाः शिष्टा धार्मिका चिरायुषः परोपकारिणो भवेयुर्ये मद्यबुद्ध्यादिप्रलम्पकं विहाय बलबुद्ध्यादिवर्धकं सोमादिमहौषधिरसं पातुं सज्जनैः सह स्वाप्तस्थानं [वा] गच्छेयुः॥ ३॥

**पदार्थः**-हे (**ऋजीषिन्**) सरल स्वभाव वाले आप (**सोमपेयाय**) उत्तम ओषधियों के रस के पीने के लिये (**दिवः**) प्रकाश और (**पृथिव्याः**) भूमि से (**नः**) हमारे (**इदम्**) इस वर्त्तमान (**बर्हिः**) उत्तम स्थान वा अवकाश को (**आ, याहि**) आओ (**मदाय**) आनन्द के लिये (**मद्र्यञ्चम्**) मेरा सत्कार करते (**आङ्गूषम्**) और प्राप्त होते हुए (**तवसम्**) बलवान् (**त्वाम्**) आपको उत्तम ओषधियों के रस पीने के लिये (**हरयः**) हरणशील (**अच्छ**) अच्छे (**आ, वहन्तु**) पहुँचावें॥ ३॥

**भावार्थः**-वे ही नीरोग, शिष्ट, धार्मिक, चिरायु और परोपकारी हों जो मद्यरूप और अच्छे प्रकार बुद्धि के नष्ट करने वाले पदार्थ को छोड़ बल, बुद्धि आदि को बढ़ाने वाले सोम आदि बड़ी ओषधियों के रस के पीने को अपने वा आप्त के स्थान को जावें॥ ३॥

**पुनः क आप्ता भवन्तीत्याह॥**

फिर कौन आप्त विद्वान् होते हैं, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**आ नो॒ विश्वा॑भिरू॒तिभि॑ः स॒जोषा॒ ब्रह्म॑ जुषा॒णो ह॑र्यश्व याहि।**

**वरी॑वृज॒त्स्थवि॑रेभिः सुशिप्रा॒स्मे दध॑द् वृष॑णं॒ शुष्म॑मिन्द्र॥ ४॥**

**आ। न॒ः। विश्वा॑भिः। ऊ॒तिऽभि॑ः। स॒ऽजोषा॑ः। ब्रह्म॑। जु॒षा॒णः। ह॒रि॒ऽअ॒श्व॒। या॒हि॒। वरी॑ऽवृजत्। स्थवि॑रेभिः। सु॒ऽशि॒प्र॒। अ॒स्मे॒ इति॑। दध॑त्। वृष॑णम्। शुष्म॑म्। इ॒न्द्र॒॥ ४॥**

**पदार्थः**-(**आ**) समन्तात् (**नः**) अस्मान् (**विश्वाभिः**) सर्वाभिः (**ऊतिभिः**) रक्षणादिक्रियाभिः (**सजोषाः**) समानप्रीतिसेवी (**ब्रह्म**) धनमन्नं वा (**जुषाणः**) सेवमानः (**हर्यश्वः**) हरयो मनुष्या अश्वा महान्त आसन् यस्य तत् सम्बुद्धौ (**याहि**) प्राप्नुहि (**वरीवृजत्**) भृशं वर्जय (**स्थविरेभिः**) विद्यावयोवृद्धैः सह (**सुशिप्र**) सुशोभितमुखावयव (**अस्मे**) अस्मासु (**दधत्**) धेहि (**वृषणम्**) सुखवर्षकम् (**शुष्मम्**) बलम् (**इन्द्र**) परमैश्वर्यप्रद॥ ४॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे सुशिप्र हर्यश्वेन्द्र! विश्वाभिरूतिभिः सजोषा ब्रह्म जुषाणः स्थविरेभिरस्मे वृषणं शुष्मं दधत् त्वं दुःखानि वरीवृजन्नोऽस्मानायाहि॥४॥

**भावार्थः**-त एव मनुष्या महाशया भवन्ति ये पापानि परोपघातान् वर्जयित्वा स्वात्मवत्सर्वेषु मनुष्येषु वर्त्तमानाः सर्वेषां सुखाय स्वकीयं शरीरं वाग्धनुमात्मानं च वर्त्तयन्ति॥४॥

**पदार्थः**-हे **(सुशिप्र)** उत्तम शोभायुक्त ठोढ़ी वाले **(हर्यश्व)** हरणशील मनुष्य वा घोड़े बड़े-बड़े जिसके हुए वह **(इन्द्र)** परम ऐश्वर्य देने वाले! **(विश्वाभिः)** समस्त **(ऊतिभिः)** रक्षा आदि क्रियाओं से **(सजोषाः)** समानप्रीति सेवने वाले **(ब्रह्म)** धन वा अन्न को **(जुषाणः)** सेवने वा **(स्थविरेभिः)** विद्या और अवस्था में वृद्धों के साथ **(अस्मे)** हम लोगों में **(वृषणम्)** सुख वर्षाने वाले **(शुष्मम्)** बल को **(दधत्)** धारण करते हुए आप दुःखों को **(वरीवृजत्)** निरन्तर छोड़ो और **(नः)** हम लोगों को **(आ, याहि)** आओ, प्राप्त होओ॥४॥

**भावार्थः**-वे ही मनुष्य महाशय होते हैं जो पाप और परोपघात अर्थात् दूसरों को पीड़ा देने के कामों को छोड़ के अपने आत्मा के तुल्य सब मनुष्यों में वर्त्तमान सब के सुख के लिये अपना शरीर, वाणी और ठोढ़ी को वर्तातें हैं॥४॥

**पुनर्विद्वान् किंवत् किं कुर्यादित्याह॥**

फिर विद्वान् किसके तुल्य क्या करे, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**एष स्तोमो मह उग्राय वाहे धुरी३वात्यो न वाजयन्नधायि।**

**इन्द्र त्वाऽयमर्क ईट्टे वसूनां दिवीव द्यामधि नः श्रोमतं धाः॥५॥**

**एषः। स्तोमः। महे। उग्राय। वाहे। धुरिऽइव। अत्यः। न। वाजयन्। अधायि। इन्द्र। त्वा। अयम्। अर्कः। ईट्टे। वसूनाम्। दिविऽइव। द्याम्। अधि। नः। श्रोमतम्। धाः॥५॥**

**पदार्थः**-**(एषः)** **(स्तोमः)** श्लाघ्यो व्यवहारः **(महे)** महते **(उग्राय)** तेजस्विने **(वाहे)** सर्वान्सुखं प्रापयित्रे **(धुरीव)** सर्वे यानावयवा लग्नाः सन्तो गच्छन्ति **(अत्यः)** अश्वः **(न)** इव **(वाजयन्)** वेगं कारयन् **(अधायि)** ध्रियते **(इन्द्र)** परमैश्वर्यप्रद **(त्वा)** त्वाम् **(अयम्)** विद्वान् **(अर्कः)** सत्कर्त्तव्यः **(ईट्टे)** ऐश्वर्यं प्रयच्छति **(वसूनाम्)** पृथिव्यादीनां मध्ये **(दिवीव)** सूर्यज्योतिषीव **(द्याम्)** प्रकाशम् **(अधि)** **(नः)** अस्माकम् **(श्रोमतम्)** श्रोतव्यं विज्ञानमन्नादिकं वा **(धाः)** धेहि॥५॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! येन त्वया वाहे मह उग्राय धुरीवात्यो न वाजयन्नेष स्तोमोऽधायि योऽयमर्को वसूनां दिवीव त्वेट्टे स त्वं नो द्यां श्रोमतं चाधि धाः॥५॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यो विद्वान् तेजस्विभ्यः प्रशंसां धरति स धूर्वत्सर्वसुखाधारो वाजिवद्वेगवान् भूत्वा पुष्कलां श्रियं प्राप्य सूर्य इवात्र भ्राजते॥५॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-हे **(इन्द्र)** परमैश्वर्य के देने वाले! जिन आपने **(वाहे)** सब को सुख की प्राप्ति कराने वाले **(महे)** महान् **(उग्राय)** तेजस्वी के लिये **(धुरीव)** धुरी में जैसे रथ आदि के अवयव लगे हुए जाते हैं, वैसे **(अत्यः)** शीघ्र चलने वाले घोड़े के **(न)** समान **(वाजयन्)** वेग कराते हुए **(एषः)** यह **(स्तोमः)** श्लाघनीय स्तुति करने योग्य व्यवहार **(अधायि)** धारण किया जो **(अयम्)** यह **(अर्कः)** सत्कार करने योग्य **(वसूनाम्)** पृथिवी आदि के बीच **(दिवीव)** वा सूर्य ज्योति के बीच **(त्वा)** आपको **(ईट्टे)** ऐश्वर्य देता है वह आप **(नः)** हम लोगों को **(द्याम्)** प्रकाश और **(श्रोमतम्)** सुनने योग्य को **(अधि, धाः)** अधिकता से धारण करो॥५॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जो विद्वान् तेजस्वियों के लिये प्रशंसा धारण करता वह धुरी के समान सुख का आधार और घोड़े के समान वेगवान् हो बहुत लक्ष्मी पाकर सूर्य के समान इस संसार में प्रकाशित होता है॥५॥

**पुनर्मनुष्यैः परस्पर कथं वर्तितव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को परस्पर कैसे वर्तना चाहिये, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**एवा न इन्द्र वार्यस्य पूर्धि प्र ते महीं सुमतिं वेविदाम।**

**इषं पिन्व मघवद्भ्यः सुवीरां यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥६॥८॥**

**एव। नः। इन्द्र। वार्यस्य। पूर्धि। प्र। ते। महीम्। सुऽमतिम्। वेविदाम। इषम्। पिन्व। मघवत्ऽभ्यः। सुऽवीराम्। यूयम्। पात। स्वस्तिऽभिः। सदा। नः॥६॥**

**पदार्थः**-**(एवा)** अत्र **निपातस्य चे**ति दीर्घः। **(नः)** अस्मान् **(इन्द्र)** शत्रुदुःखविदारक **(वार्यस्य)** वरितुं योग्यस्य **(पूर्धि)** पूरय **(प्र)** **(ते)** तव **(महीम्)** महतीम् **(सुमतिम्)** शोभनां प्रज्ञाम् **(वेविदाम)** यथावल्लभेमहि **(इषम्)** अन्नम् **(पिन्व)** सेवस्व **(मघवद्भ्यः)** बहुधनयुक्तेभ्यः **(सुवीराम्)** शोभना वीरा यस्यास्ताम् **(यूयम्)** **(पात)** **(स्वस्तिभिः)** **(सदा)** **(नः)** अस्मान्॥६॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! त्वं वार्यस्य ते यां महीं सुमतिं वयं वेविदाम तामेव नः प्र पूर्धि यां मघवद्भ्यः सुवीरामिषं वयं वेविदाम तां त्वं पिन्व तया सुमत्येषेण च स्वस्तिभिर्यूयं नः सदा पात॥६॥

**भावार्थः**-हे विद्वँस्त्वमस्मभ्यं धर्म्यां प्रज्ञां देहि यया वयं शुभान् गुणकर्मस्वभावान् प्राप्य सर्वाञ्जनान् सदा सुरक्षेम॥६॥

अत्रेन्द्रराजस्त्रीपुरुषविद्वद्गुणकृत्यवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति चतुर्विंशतितमं सूक्तमष्टमो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे **(इन्द्र)** शत्रुओं के विदीर्ण करने वाले! आप **(वार्यस्य)** ग्रहण करने योग्य **(ते)** आप की जिस **(महीम्)** बड़ी **(सुमतिम्)** उत्तम बुद्धि को हम लोग **(वेविदाम)** यथावत् पावें **(एव)** उसी को और **(नः)** हमको **(प्र, पूर्धि)** अच्छे प्रकार पूर्ण करो जिसको **(मघवद्भ्यः)** बहुत धनयुक्त



www.9009.co.in

पदार्थों से **(सुवीराम्)** उत्तम वीर हैं जिससे उस **(इषम्)** अन्न को हम लोग यथावत् प्राप्त हों। और उसको आप **(पिन्व)** सेवो उस सुमति और अन्न तथा **(स्वस्तिभिः)** सुखों से **(यूयम्)** तुम लोग **(नः)** हम लोगों की **(सदा)** सर्वदा **(पात)** रक्षा करो॥६॥

**भावार्थः**-हे विद्वान्! आप हम लोगों के लिये धर्मयुक्त उत्तम बुद्धि को देओ जिससे हम लोग अच्छे गुण-कर्म-स्वभावों को प्राप्त होकर सब मनुष्यों की अच्छे प्रकार रक्षा करें॥६॥

इस सूक्त में इन्द्र, राजा, स्त्री-पुरुष और विद्वानों के गुणों का वर्णन होने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ संगति जाननी चाहिये॥

**यह चौबीसवां सूक्त और आठवां वर्ग पूरा हुआ॥**



www.9009.co.in

**अथ षड्चस्य पञ्चविंशतितमस्य सूक्तस्य वसिष्ठ ऋषिः। इन्द्रो देवता। १ निचृत्पङ्क्तिः। २ विराट्पङ्क्तिः। ४ पङ्क्तिः। ६ स्वराट्पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः। ३ विराट्त्रिष्टुप्। ५ निचृत्त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः॥**

***अथ कीदृशी सेना वरा स्यादित्याह॥***

अब छः ऋचावाले पच्चीसवें सूक्त का आरम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में कैसी सेना उत्तम होती है, इस विषय को कहते हैं॥

**आ ते॑ म॒ह इ॑न्द्रो॒त्यु॑ग्र॒ सम॑न्यवो॒ यत्स॒मर॑न्त॒ सेनाः॑।**

**पता॑ति दि॒द्युन्नर्य॑स्य बा॒ह्वोर्मा ते॒ मनो॑ विष्व॒द्र्य१॒ग्वि चा॑रीत्॥ १॥**

**आ। ते॒। म॒हः। इ॒न्द्र॒। ऊ॒ती। उ॒ग्र॒। सऽम॑न्यवः। यत्। स॒म्ऽअर॑न्त। सेनाः॑। पता॑ति। दि॒द्युत्। नर्य॑स्य। बा॒ह्वोः। मा। ते॒। मनः॑। वि॒ष्व॒द्र्यक्। वि। चा॒री॒त्॥ १॥**

**पदार्थः**-(**आ**) समन्तात् (**ते**) तव (**महः**) महतः (**इन्द्र**) सेनापते (**ऊती**) ऊत्या रक्षणाद्यया क्रियया (**उग्र**) शत्रूणां हनने कठिनस्वभाव (**समन्यवः**) मन्युना क्रोधेन सह वर्त्तमानाः (**यत्**) यस्य (**समरन्त**) सम्यग् गच्छन्ति (**सेनाः**) (**पताति**) पतेत् (**दिद्युत्**) देदीप्यमानाः (**नर्यस्य**) नृषु साधोः (**बाह्वोः**) भुजयोः (**मा**) (**ते**) तव (**मनः**) चित्तम् (**विष्वद्र्यक्**) यद्विष्वगञ्चति व्याप्नोति तत् (**वि**) (**चारीत्**) विशेषेण चरति॥१॥

**अन्वयः**-हे उग्रेन्द्र! यद्यस्य नर्यस्य महस्ते समन्यवः सेना ऊती आ समरन्त तस्य ते बाह्वोर्दिद्युन्मा पताति ते मनो विष्वद्र्यग्विचारीत्॥१॥

**भावार्थः**-हे सेनाधिपते! यदा सङ्ग्रामसमय आगच्छेत्तदा या क्रोधेन प्रज्वलिताः सेनाः शत्रूणामुपरि पतेयुस्तदा ता विजयं लभेरन् यावत्तव बाहुबलं न ह्रष्येत मनश्चान्याये न प्रवर्तेत तावत्तवोन्नतिर्जायत इति विजानीहि॥१॥

**पदार्थः**-हे (**उग्र**) शत्रुओं के मारने में कठिन स्वभाव वाले (**इन्द्र**) सेनापति! (**यत्**) जिस (**नर्यस्य**) मनुष्यों में साधु (**महः**) महान् (**ते**) आप के (**समन्यवः**) क्रोध के साथ वर्त्तमान (**सेनाः**) सेना (**ऊती**) रक्षण आदि क्रिया से (**आ, समरन्त**) सब ओर से अच्छी जाती हैं उन (**ते**) आप की (**बाह्वोः**) भुजाओं में (**दिद्युत्**) निरन्तर प्रकाशमान युद्धक्रिया (**मा**) मत (**पताति**) गिरे, मत नष्ट हो और तुम्हारा (**मनः**) चित्त (**विष्वद्र्यक्**) सब ओर से प्राप्त होता हुआ (**वि, चारीत्**) विचरता है॥१॥

**भावार्थः**-हे सेनाधिपति! जब संग्राम समय में आओ तब जो क्रोध प्रज्वलित क्रोधाग्नि से जलती हुई सेना शत्रुओं के ऊपर गिरें, उस समय वे विजय को प्राप्त हों, जब तक तुम्हारा बाहुबल न फैले मन भी अन्याय में न प्रवृत्त हो, तब तक तुम्हारी उन्नति होती है, यह जानो॥१॥

**पुना राज्ञा के दण्डनीया निवारणीयाश्चेत्याह॥**



www.9009.co.in

फिर राजा को कौन दण्ड देने योग्य और निवारने योग्य हैं, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**नि दुर्ग इन्द्र श्नथिह्यमित्राँ॑अभि ये नो॒ मर्ता॑सो अ॒मन्ति॑।**

**आ॒रे तं शंसं॑ कृणुहि निनि॒त्सोरा नो॑ भर संभर॑णं वसू॑नाम्॥२॥**

**नि। दुः॒गे। इ॒न्द्र॒। श्न॒थि॒हि॒। अ॒मित्रा॑न्। अ॒भि। ये। नः॒। मर्ता॑सः। अ॒मन्ति॑। आ॒रे। तम्। शंस॑म्। कृ॒णु॒हि॒। नि॒नि॒त्सोः। आ। नः॒। भ॒र॒। स॒म्ऽभर॑णम्। वसू॑नाम्॥२॥**

**पदार्थः**-(**नि**) नितराम् (**दुर्गे**) शत्रुभिर्दुःखेन गन्तव्ये प्रकोटे (**इन्द्र**) दुष्टशत्रुविदारक (**श्नथिहि**) हिंसय (**अमित्रान्**) सर्वैः सह द्रोहयुक्तान् (**अभि**) (**ये**) (**नः**) अस्मान् (**मर्त्तासः**) मनुष्याः (**अमन्ति**) प्रापयन्ति रोगान् (**आरे**) दूरे (**तम्**) (**शंसम्**) प्रशंसनीयं विजयम् (**कृणुहि**) (**निनित्सोः**) निन्दितुमिच्छोः (**आ**) (**नः**) अस्मान् (**भर**) (**सम्भरणम्**) सम्यग् धारणं पोषणं वा (**वसूनाम्**) द्रव्याणाम्॥२॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! ये मर्त्तासो नो दुर्गेऽमन्ति तानमित्राँस्त्वं न्यभि श्नथिह्यस्मदारे प्रक्षिप निनित्सोरस्मानारे कृत्वा नस्तं शंसं कृणुहि वसूनां संभरणमाभर॥२॥

**भावार्थः**-हे राजन्! ये धूर्त्ता मनुष्या ब्रह्मचर्यादिनिवारेण मनुष्यान् रुग्णान् कुर्वन्ति तान् कारागृहे बध्नीहि ये च स्वप्रशंसायै सर्वान्निन्दन्ति तान् सुशिक्ष्य भद्रिकायाः प्रजाया दूरे रक्षैव कृते भवतो महती प्रशंसा भविष्यति॥२॥

**पदार्थः**-हे (**इन्द्र**) दुष्ट शत्रुओं के निवारने वाला राजा! (**ये**) जो (**मर्त्तासः**) मनुष्य (**नः**) हम लोगों को (**दुर्गे**) शत्रुओं को दुःख से पहुँचने योग्य परकोटा में (**अमन्ति**) रोगों को पहुँचाते हैं उन (**अमित्रान्**) सब के साथ द्रोहयुक्त रहने वालों को [आप] (**नि, अभि, श्नथिहि**) निरन्तर सब ओर से मारो हम लोगों से (**आरे**) दूर उनको फेंको (**निनित्सोः**) और निन्दा की इच्छा करने वाले से हम लोगों को दूर कर (**नः**) हम लोगों के (**तम्**) उस (**शंसम्**) प्रशंसनीय विजय को (**कृणुहि**) कीजिये तथा (**वसूनाम्**) द्रव्यादि पदार्थों के (**संभरणम्**) अच्छे प्रकार पोषण को (**आ, भर**) सब ओर से स्थापित कीजिये॥२॥

**भावार्थः**-हे राजा! जो धूर्त मनुष्य ब्रह्मचर्य आदि के निवारण से मनुष्यों को रोगी करते हैं, उनको काराघर में बांधो और जो अपनी प्रशंसा के लिये सब की निन्दा करते हैं, उनको समझा कर उत्तम प्रजाजनों से अलग रक्खो, ऐसे करने से आपकी बड़ी प्रशंसा होगी॥२॥

**पुनः स राजा किं कुर्यादित्याह॥**

फिर वह राजा क्या करे, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**श॒तं ते॑ शिप्रिन्नू॒तयः॑ सु॒दासे॑ स॒हस्रं॒ शंसा॑ उ॒त रा॒तिर॑स्तु।**

**ज॒हि व॒धर्व॒नुषो॒ मर्त्य॑स्या॒स्मे द्यु॒म्नमधि॒ रत्नं॑ च धेहि॥३॥**



www.9009.co.in

**श॒तम्। ते॒। शि॒प्रि॒न्। ऊ॒तयः॑। सु॒ऽदासे॑। स॒हस्र॑म्। शंसाः॑। उ॒त। रा॒तिः। अ॒स्तु॒। ज॒हि। वधः॑। व॒नुषः॑। मर्त्य॑स्य। अ॒स्मे इति॑। द्यु॒म्नम्। अधि॑। रत्न॑म्। च॒। धे॒हि॒॥ ३॥**

**पदार्थः**-(**शतम्**) (**ते**) तव (**शिप्रिन्**) सुमुख (**ऊतयः**) रक्षाद्याः क्रियाः (**सुदासे**) यः सुष्ठु ददाति तस्मै (**सहस्रम्**) असंख्याः (**शंसाः**) प्रशंसाः (**उत**) (**रातिः**) दानम् (**अस्तु**) (**जहि**) (**वधः**) ताडनम् (**वनुषः**) याचमानस्य (**मर्त्यस्य**) मनुष्यस्य पीडितस्य मर्तस्य (**अस्मे**) अस्मासु (**द्युम्नम्**) धर्म्यं यशः (**अधि**) उपरि (**रत्नम्**) रमणीयं धनम् (**च**) धेहि॥ ३॥

**अन्वयः**-हे शिप्रिन् राजँस्ते तव वनुषो मर्त्तस्य शतमूतयः सहस्रं शंसाः सन्तूत सुदासे रातिरस्तु त्वमधर्म्येण वनुषः पाखण्डिनो मर्त्यस्य वधो जह्यस्मे द्युम्नं रत्नं चाधि धेहि॥ ३॥

**भावार्थः**-हे राजन्! भवाञ्छतशः सहस्रशः प्रकारैः प्रजापालनं सुपात्रदानं दुष्टवधं प्रजासु कीर्त्तिवर्धनं धनं च सततं त्वं विधेहि यतः सर्वे सुखिनः स्युः॥ ३॥

**पदार्थः**-हे (**शिप्रिन्**) अच्छे मुख वाले राजा (**ते**) आपके (**वनुषः**) याचना करते हुए पीड़ित मनुष्य की (**शतम्**) सैकड़ों (**ऊतयः**) रक्षा आदि क्रिया और (**सहस्रम्**) असंख्य (**शंसाः**) प्रशंसा हों (**उत**) और (**सुदासे**) जो उत्तमता से देता है उसके लिये (**रातिः**) दान (**अस्तु**) हो आप (**वनुषः**) अधर्म से मांगने वाले पाखण्डी (**मर्त्यस्य**) मनुष्य की (**वधः**) ताड़ना को (**जहि**) हनो, नष्ट करो तथा (**अस्मे**) हम लोगों में (**द्युम्नम्**) धर्मयुक्त यश और (**रत्नं च**) रमणीय धन भी (**अधि, धेहि**) अधिकता से धारण करो॥ ३॥

**भावार्थः**-हे राजा! आप सैकड़ों वा सहस्रों प्रकारों से प्रजा की पालना और सुपात्रों को देना, दुष्टों का बंधन, प्रजाजनों में कीर्ति बढ़ाना और धन को निरन्तर विधान करो जिससे सब सुखी हों॥ ३॥

**पुनस्ते राजप्रजाजनाः परस्परस्मिन् कथं वर्तेरन्नित्याह॥**

फिर वे राजा और प्रजाजन परस्पर में कैसे वर्तें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**त्वाव॑तो॒ हीन्द्र॒ क्रत्वे॒ अस्मि॒ त्वाव॑तोऽवि॒तुः शू॑र रा॒तौ।**

**विश्वेदहा॑नि तविषीव उग्रँ ओकः॑ कृणुष्व हरिवो॒ न म॑र्धीः॥ ४॥**

**त्वाऽव॑तः। हि। इ॒न्द्र॒। अस्मि॑। त्वाऽव॑तः। अ॒वि॒तुः। शू॒र॒। रा॒तौ। विश्वा॑। इ॒त्। अहा॑नि। त॒वि॒षी॒ऽव॒ः। उ॒ग्र॒ः। ओकः॑। कृ॒णु॒ष्व॒। ह॒रि॒ऽव॒ः। न। म॒र्धीः॒॥ ४॥**

**पदार्थः**-(**त्वावतः**) त्वया सदृशस्य (**हि**) खलु (**इन्द्र**) (**क्रत्वे**) प्रज्ञायै कर्मणे वा (**अस्मि**) (**त्वावतः**) त्वत्तुल्यस्य (**अवितुः**) रक्षकस्य (**शूर**) निर्भय (**रातौ**) दाने (**विश्वा**) सर्वाणि (**इत्**) एव (**अहानि**) दिनानि (**तविषीवः**) प्रशंसिता तविषी सेना विद्यते तस्य तत्सम्बुद्धौ (**उग्रः**) तेजस्वी (**ओकः**) गृहम् (**कृणुष्व**) (**हरिवः**) प्रशस्ता हरयो मनुष्या विद्यन्ते यस्य तत्सम्बुद्धौ (**न**) निषेधे (**मर्धीः**) अभिकाङ्क्षे॥ ४॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे तविषीवो हरिवः शूरेन्द्र सेनेश! हि यतोऽहं विश्वेदहानि त्वावतः क्रत्वे प्रवृत्तोऽस्मि त्वावतोऽवितू रातावुद्यतोऽस्मि तस्मै मह्यमुग्रस्त्वमोकः कृणुष्याधार्मिकमित्कंचन न मर्धीः॥४॥

**भावार्थः**-हे धार्मिक नृप! यतस्त्वं सर्वेषां रक्षणाय सदा प्रवृत्तो भवति तस्मात्तव रक्षणे वयं सर्वदा प्रवृत्ताः स्म॥४॥

**पदार्थः**-हे **(तविषीवः)** प्रशंसित सेना वा **(हरिवः)** प्रशंसित हरणशील मनुष्यों वाले **(शूर)** निर्भय **(इन्द्र)** सेनापति! **(हि)** जिस कारण मैं **(विश्वा, इत्)** सभी **(अहानि)** दिनों **(त्वावतः)** तुम्हारे समान के **(क्रत्वे)** बुद्धि वा कर्म के लिये प्रवृत्त हूँ **(त्वावतः)** और आपके सदृश **(अवितुः)** रक्षा करने वाले के **(रातौ)** दान के निमित्त उद्यत **(अस्मि)** हूँ उस मेरे लिये **(उग्रः)** तेजस्वी आप **(ओकः)** घर **(कृणुष्व)** सिद्ध करो, बनाओ और अधार्मिक किसी जन को **(न)** न **(मर्धीः)** चाहो॥४॥

**भावार्थः**-हे धार्मिक राजा! जिससे आप सबकी रक्षा के लिये सदा प्रवृत्त होते हो, इससे तुम्हारी रक्षा में हम लोग सर्वदा प्रवृत्त हैं॥४॥

**पुनस्तेन राज्ञा किमवश्यं कर्त्तव्यमित्याह॥**

फिर उस राजा को क्या अवश्य करना चाहिये, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**कुत्सा॑ ए॒ते हर्य॑श्वाय शू॒षमिन्द्रे॒ सहो॑ दे॒वजू॑तमिया॒नाः।**

**स॒त्रा कृ॑धि सु॒हना॑ शूर वृ॒त्रा॑ व॒यं तरु॑त्राः सनुयाम॒ वाज॑म्॥५॥**

**कुत्सा॑ः। ए॒ते। हरि॑ऽअश्वाय। शू॒षम्। इन्द्रे॑। सह॑ः। दे॒वऽजू॑तम्। इ॒या॒नः। स॒त्रा। कृ॒धि॒। सु॒ऽहना॑। शू॒र॒। वृ॒त्रा। व॒यम्। तरु॑त्राः। स॒नु॒या॒म॒। वाज॑म्॥५॥**

**पदार्थः**-**(कुत्साः)** वज्राऽस्त्राद्या शस्त्राऽस्त्रसमूहाः **(एते)** **(हर्यश्वाय)** प्रशंसितनराश्वाय **(शूषम्)** बलम् **(इन्द्रे)** परमैश्वर्ययुक्ते **(सहः)** सहनम् **(देवजूतम्)** देवैः प्राप्तम् **(इयानाः)** प्राप्नुवन्तः **(सत्रा)** सत्येन **(कृधि)** **(सुहना)** सुहनानि हन्तुं सुगमानि **(शूर)** निर्भय **(वृत्रा)** वृत्राणि **(वयम्)** **(तरुत्राः)** दुःखात्सर्वेषां सन्तारकाः **(सनुयाम)** याचेम **(वाजम्)** विज्ञानम्॥५॥

**अन्वयः**-हे शूर! यस्मिँस्त्वयीन्द्रे हर्यश्वायैते कुत्साः सन्तु तान्देवजूतं शूषं सह इयानास्तरुत्रा वयं वाजं सनुयाम त्वं सत्रा [वृत्रा] सुहना कृधि॥५॥

**भावार्थः**-हे राजन्! यदि राज्यं पालयितुं वर्धयितुं भवानिच्छेत्तर्हि शस्त्राऽस्त्रसेनाः सततं गृहाण पुनः सत्याऽऽचारं विज्ञानवृद्धिं याचमानः सन् सततं वर्धस्वास्मान्वर्धय॥५॥

**पदार्थः**-हे **(शूर)** निर्भय जिन **(इन्द्रे)** परमैश्वर्य्ययुक्त आप में **(हर्यश्वाय)** प्रशंसित जिसके मनुष्य वा घोड़े उसके लिये **(एते)** ये **(कुत्साः)** वज्र अस्त्र और शस्त्र आदि समूह हों उनको और **(देवजूतम्)** देवों से पाये हुए **(शूषम्)** बल तथा **(सहः)** क्षमा **(इयानाः)** प्राप्त होते हुए **(तरुत्राः)**

दु:ख से सबको अच्छे प्रकार तारने वाले **(वयम्)** हम लोग **(वाजम्)** विज्ञान को **(सनुयाम)** याचें आप **(सत्रा)** सत्य से **(वृत्रा)** दु:खों को **(सुहना)** नष्ट करने के लिये सुगम **(कृधि)** करो॥५॥

**भावार्थ:**-हे राजा! यदि राज्य पालने वा बढ़ाने को आप चाहें तो शस्त्र अस्त्र और सेना जनों को निरन्तर ग्रहण करो फिर सत्य आचार को मांगते हुए निरन्तर बढ़ो और हम लोगों को बढ़ाओ॥५॥

**पुनरुपदेष्ट्र्युपदेश्यगुणानाह॥**

फिर उपदेशक और उपदेश करने योग्यों के गुणों को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**एवा न इन्द्र वार्यस्य पूर्धि प्र ते महीं सुमतिं वेविदाम।**

**इषं पिन्व मघवद्भ्यः सुवीरां यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥६॥९॥**

**एव। नः। इन्द्र। वार्यस्य। पूर्धि। प्र। ते। महीम्। सुऽमतिम्। वेविदाम। इषम्। पिन्व। मघवत्ऽभ्यः। सुऽवीराम्। यूयम्। पात। स्वस्तिऽभिः। सदा। नः॥६॥**

**पदार्थ:**-**(एवा)** अवधारणे। अत्र **निपातस्य चे**ति दीर्घः। **(नः)** अस्मान् **(इन्द्र)** परमैश्वर्यप्रद **(वार्यस्य)** वरणीयस्य **(पूर्धि)** **(प्र)** **(ते)** तव **(महीम्)** महतीं वाचम् **(सुमतिम्)** शोभना मतिः प्रज्ञा यया ताम् **(वेविदाम)** प्राप्नुयाम **(इषम्)** विद्याम् **(पिन्व)** **(मघवद्भ्यः)** बहुधनयुक्तेभ्यः **(सुवीराम्)** शोभना वीरा विज्ञानवन्तो यस्यां ताम् **(यूयम्)** विज्ञानवन्तः **(पात)** **(स्वस्तिभिः)** सुखादिभिः **(सदा)** **(नः)** अस्मान्॥६॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! त्वं नो विद्यया सुशिक्षया प्र पूर्धि यतो वयं वार्यस्य ते सुमतिं महीं वेविदाम मघवद्भ्यः सुवीरामिषं प्राप्नुयामाऽत्र त्वमस्मान्पिन्व यूयं स्वस्तिभिर्नः सदैव पात॥६॥

**भावार्थ:**-त एवाऽध्यापका धन्यवादार्हा भवन्ति ये विद्यार्थिनः सद्यो विदुषो धार्मिकान्कुर्वन्ति सदैव रक्षायां वर्त्तमानाः सन्तः सर्वानुन्नयन्तीति॥६॥

अत्रेन्द्रसेनेशराजशस्त्राऽस्त्रग्रहणार्थवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति पञ्चविंशतितमं सूक्तं नवमो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थ:**-हे **(इन्द्र)** परमैश्वर्य्य के देने वाले! आप **(नः)** हम लोगों को विद्या और उत्तम शिक्षा से **(प्र, पूर्धि)** अच्छे प्रकार पूरा करो जिससे हम लोग **(वार्यस्य)** स्वीकार करने योग्य **(ते)** आपकी **(सुमतिम्)** उत्तम मति और **(महीम्)** अत्यन्त वाणी को **(वेविदाम)** प्राप्त हों तथा **(मघवद्भ्यः)** बहुत धन से युक्त सज्जनों से **(सुवीराम्)** उत्तम विज्ञानवान् वीर जिसमें होते उस **(इषम्)** विद्या को प्राप्त होवें यहाँ आप हम लोगों की **(पिन्व)** रक्षा करो और **(यूयम्)** तुम **(स्वस्तिभिः)** सुखों से **(नः)** हम लोगों की **(सदा, एव)** सर्वदैव **(पात)** रक्षा करो॥६॥

**भावार्थ:**-वे ही पढ़ाने वाले धन्यावद के योग्य होते हैं जो विद्यार्थियों को शीघ्र विद्वान् और धार्मिक करते हैं और सर्वदैव रक्षा में वर्त्तमान होते हुए सब की उन्नति करते हैं॥६॥



www.9009.co.in

इस सूक्त में सेनापति, राजा और शस्त्र अस्त्रों को ग्रहण करना इन अर्थों का वर्णन होने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ संगति जाननी चाहिये।।

**यह पच्चीसवां सूक्त और नवां वर्ग समाप्त हुआ।।**



www.9009.co.in

**अथ पञ्चर्चस्य षड्विंशतितमस्य सूक्तस्य वसिष्ठ ऋषिः। इन्द्रो देवता। १, २, ३, ४ त्रिष्टुप्। ५ निचृत्त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः॥**

***अथ जीवमुपकर्तुं किं न शक्नोतीत्याह॥***

अब पांच ऋचा वाले छब्बीसवें सूक्त का प्रारम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में जीव का उपकार कौन नहीं कर सकता, इस विषय को कहते हैं॥

**न सोम॒ इन्द्र॒मसु॑तो ममाद॒ नाब्र॑ह्माणो म॒घवा॑नं सु॒तासः॑।**

**तस्मा॑ उ॒क्थं ज॑नये॒ यज्जुजो॑षन्नृ॒वन्नवी॑यः शृ॒णव॒द्यथा॑ नः॥ १॥**

**न। सोमः॑। इन्द्र॑म्। असु॑तः। म॒मा॒द॒। न। अब्र॑ह्माणः। म॒घऽवा॑नम्। सु॒तासः॑। तस्मै॑। उ॒क्थम्। ज॒न॒ये॒। यत्। जु॒जो॑षत्। नृ॒ऽवत्। नवी॑यः। शृ॒णव॑त्। यथा॑। न॒ः॥ १॥**

**पदार्थः**-(**न**) निषेधे (**सोमः**) महौषधिरसः (**इन्द्रम्**) इन्द्रियस्वामिनं जीवम् (**असुतः**) अनुत्पन्नः (**ममाद**) हर्षयति (**न**) (**अब्रह्माणः**) अचतुर्वेदविदः (**मघवानम्**) परमपूजितधनवन्तम् (**सुतासः**) उत्पन्नाः (**तस्मै**) (**उक्थम्**) प्रशंसनीयमुपदेशम् (**जनये**) उत्पादये (**यत्**) (**जुजोषत्**) सेवते (**नृवत्**) बहवो नायका विद्यन्ते यस्मिँस्तत् (**नवीयः**) अतिशयेन नवीनम् (**शृणवत्**) शृणोति (**यथा**) (**नः**) अस्मान्॥ १॥

**अन्वयः**-हे विद्वांसो! यथाऽसुतः सोमो यमिन्द्रं न ममाद यथाऽब्रह्माणं सुतासो मघवानं नानन्दयन्ति स इन्द्रो यन्नृवन्नवीय उक्थं जुजोषन्नोऽस्माञ्छृणवत्तस्मै सर्वं विधानमहं जनये॥ १॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। हे विपश्चितो! यथोत्पन्नः पदार्थो जीवमानन्दयति यथा यथा वेदविद्या आप्ता जना धार्मिकं धनाढ्यं विपश्चितं कुर्वन्ति तथोत्पन्ना विद्याऽऽत्मानं सुखयति शुभा गुणा धनाढ्यं वर्धयन्ति सत्सङ्गेनैव मनुष्यत्वं प्राप्नोति॥ १॥

**पदार्थः**-हे विद्वानो! (**यथा**) जैसे (**असुतः**) न उत्पन्न हुआ (**सोमः**) महौषधियों का रस यह (**इन्द्रम्**) इन्द्रियों के स्वामी जीव को (**न**) नहीं (**ममाद**) हर्षित करता वा जैसे (**अब्रह्माणः**) चार वेदों का वेत्ता जो नहीं वे (**सुतासः**) उत्पन्न हुए (**मघवानम्**) परमपूजित धनवान् को (**न**) नहीं आनन्दित करते हैं वह इन्द्रियस्वामी जीव (**यत्**) जिस (**नृवत्**) नृवत् अर्थात् जिसमें बहुत नायक मनुष्य विद्यमान और (**नवीयः**) अत्यन्त नवीन (**उक्थम्**) उपदेश को (**जुजोषत्**) सेवता है (**नः**) हम लोगों को (**शृणवत्**) सुनता है (**तस्मै**) उसके लिये सब प्रकार के विधानों को मैं (**जनये**) उत्पन्न करता हूँ॥ १॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे बुद्धिमान् मनुष्यो! जैसे उत्पन्न हुआ पदार्थ जीव को आनन्द देता है जैसे यथावत् वेदविद्या और आप्तजन धार्मिक धनाढ्य को विद्वान् करते हैं, वैसे उत्पन्न हुई



www.9009.co.in

विद्या आत्मा को सुख देती है और शुभगुण धनाढ्य को बढ़ाते हैं और सत्संग से ही मनुष्यत्व को जीव प्राप्त होता है॥१॥

**पुनः किंवत्कः किं करोतीत्याह॥**

फिर किसके तुल्य कौन क्या करता है, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**उक्थउक्थे सोम इन्द्रं ममाद नीथेनीथे मघवानं सुतासः।**

**यदीं सबाधः पितरं न पुत्रा समानदक्षा अवसे हवन्ते॥२॥**

**उक्थेऽउक्थे। सोमः। इन्द्रम्। ममाद। नीथेऽनीथे। मघऽवानम्। सुतासः। यत्। ईम्। सऽबाधः। पितरम्। न। पुत्राः। समानऽदक्षाः। अवसे। हवन्ते॥२॥**

**पदार्थः**-(**उक्थेउक्थे**) धर्म्य उपदेष्टव्ये व्यवहारे व्यवहारे (**सोमः**) महौषधिरस ऐश्वर्यं वा (**इन्द्रम्**) जीवात्मानम् (**ममाद**) हर्षयति (**नीथेनीथे**) प्रापणीये प्रापणीये सत्ये व्यवहारे (**मघवानम्**) धर्म्येण बहुजातधनम् (**सुतासः**) विद्यैश्वर्ये प्रादुर्भूताः (**यत्**) ये (**ईम्**) सर्वतः (**सबाधः**) बाधसा सह वर्त्तमानम् (**पितरम्**) जनकम् (**न**) इव (**पुत्राः**) (**समानदक्षाः**) स्पर्धन्त आददति वा॥२॥

**अन्वयः**-हे विद्वांसो! यद्य ईं सबाधः पितरं समानदक्षाः पुत्रा नावसे सुतासो मघवानं हवन्ते यथा सोम उक्थउक्थे नीथेनीथ इन्द्रं ममाद तैस्तथा चरत॥२॥

**भावार्थः**-अत्रोपमावाचकलुप्तोपमालङ्कारौ। ये विद्यार्थिनो यथा सत्पुत्राः क्लेशयुक्तौ मातापितरौ प्रीत्या सेवन्ते तथा गुरुं सेवन्ते यथा विद्याविनयपुरुषार्थजातमैश्वर्यं कर्त्तारमानन्दयति तथा यूयं वर्त्तध्वम्॥२॥

**पदार्थः**-हे विद्वानो! (**यत्**) जो (**ईम्**) सब ओर से (**सबाधः**) पीड़ा के साथ वर्त्तमान (**पितरम्**) पिता को (**समानदक्षाः**) समान बल, विद्या और चतुरता जिनके विद्यमान वे (**पुत्राः**) पुत्र जन (**न**) जैसे (**अवसे**) रक्षा आदि के लिये (**सुतासः**) विद्या और ऐश्वर्य में प्रकट हुए (**मघवानम्**) धर्म कर्म बहुत धन जिसके उसको (**हवन्ते**) स्पर्द्धा करते वा ग्रहण करते हैं और जैसे (**सोमः**) बड़ी-बड़ी ओषधियों का रस वा ऐश्वर्य्य (**उक्थे-उक्थे**) धर्मयुक्त उपदेश करने योग्य व्यवहार तथा (**नीथे-नीथे**) पहुँचाने-पहुँचाने योग्य सत्य व्यवहार में (**इन्द्रम्**) जीवात्मा को (**ममाद**) हर्षित करता है, उनके साथ वैसा ही आचरण करो॥२॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमा और वाचकलुप्तोपमालङ्कार हैं। जो विद्यार्थी जन जैसे अच्छे पुत्र क्लेशयुक्त माता पिता को प्रीति से सेवते हैं, वैसे गुरु की सेवा करते हैं वा जैसे विद्या, विनय और पुरुषार्थों से उत्पन्न हुआ, उत्पन्न करने वाले को आनन्दित करता है, वैसे तुम लोग वर्तो॥२॥

**पुनर्मनुष्याः किंवत्किं कुर्य्युरित्याह॥**

फिर मनुष्य किसके तुल्य क्या करें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥



www.9009.co.in

**च॒कार॒ ता कृ॒णव॑न्नू॒नम॒न्या यानि॑ ब्रु॒वन्ति॑ वे॒धस॑: सु॒तेषु॑।**

**जनी॑रिव॒ पति॒रेक॑: समा॒नो नि मा॑मृजे॒ पुर॒ इन्द्र॒: सुसर्वा॑:॥ ३॥**

**च॒कार॑। ता। कृ॒णव॑त्। नू॒नम्। अ॒न्या। यानि॑। ब्रु॒वन्ति॑। वे॒धस॑:। सु॒तेषु॑। जनी॑:ऽइव। पति॑:। एक॑:। स॒मा॒न:। नि। म॒मृ॒जे॒। पुर॑:। इन्द्र॑:। सु। सर्वा॑:॥ ३॥**

**पदार्थ:**-(**चकार**) करोतु (**ता**) तानि (**कृणवत्**) कुर्यात् (**नूनम्**) निश्चितम् (**अन्या**) अन्यानि (**यानि**) उपदेशवचनानि (**ब्रुवन्ति**) उपदिशन्ति (**वेधस:**) मेधाविन: (**सुतेषु**) उत्पन्नेषु जातेषु विज्ञानबलेषु (**जनीरिव**) जायमाना: प्रजा इव (**पति:**) स्वामी राजा (**एक:**) असहाय: (**समान:**) पक्षपातरहित: (**नि**) नितराम् (**मामृजे**) मृजति शोधयति। अत्र **तुजीदीनामि**त्यभ्यासदीर्घ:। (**पुर:**) पुरस्तात् (**इन्द्र:**) परमैश्वर्यवान् (**सु सर्वा:**) सम्यगखिला:॥ ३॥

**अन्वय:**-हे विद्वन्! यथा वेधस: सुतेषूपदेश्यान् यान्यन्या ब्रुवन्ति ता भवान्नूनं कृणवद्यथा समान: पतिरेक इन्द्रो जनीरिव सुसर्वा: प्रजा: पुरो नि मामृजे तथैतद्भवाञ्चकार॥ ३॥

**भावार्थ:**-अत्रोपमावाचकलुप्तोपमालङ्कारौ। हे मनुष्या! यूयं विद्वदुपदिष्टानुकूलमेवाचरत यथा धार्मिको जितेन्द्रियो विद्वान् राजा पक्षपातं विहाय स्वा: प्रजा न्यायेन रक्षति तथा प्रजा अप्येनं सततं रक्षन्त्वेवं कृते सर्वेषां ध्रुव: सुखलाभो जायते॥ ३॥

**पदार्थ:**-हे विद्वान्! जैसे (**वेधस:**) मेधावी जन (**सुतेषु**) उत्पन्न हुए विज्ञान और बलों में उपदेश करने योग्यों को (**यानि**) जिन उपदेश-वचनों को तथा (**अन्या**) और वचनों को (**ब्रुवन्ति**) कहते हैं (**ता**) उनको आप (**नूनम्**) निश्चित (**कृणवत्**) करें वा जैसे (**समान:**) पक्षपात रहित (**पति:**) स्वामी राजा (**एक:**) अकेला (**इन्द्र:**) परमैश्वर्य्यवान् (**जनीरिव**) उत्पन्न हुई प्रजा के समान (**सु, सर्वा:**) सम्यक् समस्त प्रजा को (**पुर:**) पहिले (**नि, मामृजे**) निरन्तर पवित्र करता है, वैसे इसको आप (**चकार**) करो॥ ३॥

**भावार्थ:**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है।[89] हे मनुष्यो! तुम विद्वानों के उपदेश के अनुकूल ही आचरण करो जैसे धार्मिक, जितेन्द्रिय, विद्वान् राजा पक्षपात छोड़ के अपनी प्रजा न्याय से रखता है, वैसे प्रजाजन इस राजा की निरन्तर रक्षा करें, ऐसे करने से निरन्तर सब को निश्चल सुखलाभ होता है॥ ३॥

**पुन: कोऽत्र राजा भवितुं योग्यो भवतीत्याह॥**

फिर कौन इस जगत् में राजा होने योग्य होता है, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते है॥

**ए॒वा तमा॑हुरु॒त शृ॑ण्व॒ इन्द्र॒ एको॑ विभ॒क्ता त॒रणि॑र्म॒घाना॑म्।**

८९. संस्कृतभावार्थ में उपमा भी दिया हुआ है।



www.9009.co.in

**मि॒थस्तु॑र ऊ॒तयो॒ यस्य॒ पू॒र्वीर॒स्मे भ॒द्राणि॑ सश्चत प्रि॒याणि॑॥४॥**

**ए॒व। तम्। आ॒हुः। उ॒त। शृ॒ण्वे॒। इन्द्रः॑। एकः॑। वि॒ऽभ॒क्ता। त॒रणिः॑। म॒घाना॑म्। मि॒थः॒ऽतु॒रः॑। ऊ॒तयः॑। यस्य॑। पू॒र्वीः। अ॒स्मे॒ इति॑। भ॒द्राणि॑। स॒श्च॒त॒। प्रि॒याणि॑॥४॥**

**पदार्थः**-(**एवा**) अत्र **निपातस्य चे**ति दीर्घः। (**तम्**) (**आहुः**) कथयन्ति (**उत**) अपि (**शृण्वे**) (**इन्द्रः**) परमैश्वर्ययुक्तः (**एकः**) असहायः (**विभक्ता**) सत्याऽसत्ययोः विभाजकः (**तरणिः**) तारयिता (**मघानाम्**) धनानाम् (**मिथस्तुरः**) या मिथस्त्वरयन्ति ताः (**ऊतयः**) रक्षाः (**यस्य**) (**पूर्वीः**) पुरातन्यः (**अस्मे**) अस्मासु (**भद्राणि**) कल्याणकराणि कर्माणि (**सश्चत**) सेवन्तां सम्बध्नन्तु (**प्रियाणि**) कमनीयानि॥४॥

**अन्वयः**-यस्य पूर्वीर्मिथस्तुर ऊतयोऽस्मे प्रियाणि भद्राणि सश्चत य एको मघानां विभक्ता तरणिरिन्द्रो जीवो धर्मं सेवते तमेवाऽऽप्ता धार्मिकमाहुरुत तस्यैवोपदेशमहं शृण्वे॥४॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यस्य प्रशंसामाप्ता विद्वांसः कुर्य्युर्यस्य धर्म्याणि कर्माणि सर्वाः प्रजा इच्छेयुर्यो हि सत्यानृतयोर्यथावद्विभागं कृत्वा न्यायं कुर्य्यात् स एवाऽस्माकं राजा भवतु॥४॥

**पदार्थः**-(**यस्य**) जिसकी (**पूर्वीः**) पुरातन (**मिथस्तुरः**) परस्पर शीघ्रता करती हुई (**ऊतयः**) रक्षायें (**अस्मे**) हम लोगों में (**प्रियाणि**) मनोहर (**भद्राणि**) कल्याण करने वाले काम (**सश्चत**) सम्बन्ध करें जो (**एकः**) एक (**मघानाम्**) धनों के (**विभक्ता**) सत्य असत्य का विभाग करने वा (**तरणिः**) तारने वाला (**इन्द्रः**) परमैश्वर्य्य युक्त जीव धर्म की सेवा करता है (**तम्, एव**) उसी को आप्त शिष्ट धर्मशील सज्जन धर्मात्मा (**आहुः**) कहते हैं (**उत**) निश्चय उसी का उपदेश मैं (**शृण्वे**) सुनता हूँ॥४॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जिसकी प्रशंसा आप्त विद्वान् जन करें वा जिसके धर्मयुक्त कर्मों को समस्त प्रजा प्रीति से चाहे, जो सत्य झूठ को यथावत् अलग कर न्याय करे, वही हमारा राजा हो॥४॥

**पुनर्विद्वान् राजादीन् मनुष्यान् धर्म्ये पथि नित्यं संरक्षेदित्याह॥**

फिर विद्वान् जन राजा आदि मनुष्यों को धर्म-मार्ग में नित्य अच्छे प्रकार रक्खे, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**ए॒वा वसि॑ष्ठ॒ इन्द्र॑मू॒तये॒ नॄन् कृ॑ष्टी॒नां वृ॑ष॒भं सु॒ते गृ॑णाति।**

**स॒ह॒स्रिण॒ उप॑ नो माहि॒ वाजा॑न् यू॒यं पा॑त स्व॒स्तिभिः॒ सदा॑ नः॥५॥१०॥**

**ए॒व। वसि॑ष्ठः। इन्द्र॑म्। ऊ॒तये॑। नॄन्। कृ॒ष्टी॒नाम्। वृ॒ष॒भम्। सु॒ते। गृ॒ण॒ा॒ति॒। स॒ह॒स्रिणः॑। उप॑। नः॒। मा॒हि॒। वाजा॑न्। यू॒यम्। पा॒त॒। स्व॒स्तिऽभिः॑। सदा॑। नः॒॥५॥**

**पदार्थः**-(**एवा**) अत्र **निपातस्य चे**ति दीर्घः। (**वसिष्ठः**) अतिशयेन विद्यासु कृतवासः (**इन्द्रम्**) परमैश्वर्यवन्तम् (**ऊतये**) रक्षाद्याय (**नॄन्**) नायकान् (**कृष्टीनाम्**) मनुष्यादिप्रजानां मध्ये (**वृषभम्**) अत्युत्तमम् (**सुते**) उत्पन्नेऽस्मिञ्जगति (**गृणाति**) सत्यमुपदिशति (**सहस्रिणः**) सहस्राण्यसङ्ख्याताः



www.9009.co.in

पदार्था विद्यन्ते येषां तान् **(उप)** **(नः)** अस्मान् **(माहि)** सत्कुरु **(वाजान्)** विज्ञानाऽन्नादियुक्तान् **(यूयम्)** **(पात)** **(स्वस्तिभिः)** सदा **(नः)**॥५॥

**अन्वयः**-हे विद्वन् वसिष्ठस्त्वं कृष्टीनां वृषभमिन्द्रं नॄँश्चोतय एव माहि सुते सहस्रिणो वाजान्नोऽस्मान् यो भवानुपगृणाति सततं माहि। हे विद्वांसो! जना यूयं स्वस्तिभिर्नः सदैव पात॥५॥

**भावार्थः**-हे विद्वांसो! यूयमेवं प्रयतध्वं येन राजादयो जना धार्मिका भूत्वाऽसंख्यं धनमतुलमानन्दं प्राप्नुयुर्यथा भवन्तस्तेषां रक्षां कुर्वन्ति तथैते भवतः सततं रक्षन्त्विति॥५॥

अत्रेन्द्रशब्देन जीवराजकृत्यगुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति षड्विंशतितमं सूक्तं दशमो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे विद्वान् **(वसिष्ठः)** अत्यन्त विद्या में वास जिन्होंने किया ऐसे! आप **(कृष्टीनाम्)** मनुष्यादि प्रजाजनों के बीच **(वृषभम्)** अत्युत्तम **(इन्द्रम्)** परमैश्वर्यवान् जीव और **(नॄन्)** नायक मनुष्यों की **(ऊतये)** रक्षा आदि के लिये **(एव)** ही **(माहि)** सत्कार कीजिये **(सुते)** उत्पन्न हुए इस जगत् में **(सहस्रिणः)** सहस्रों पदार्थ जिनके विद्यमान उन **(वाजान्)** विज्ञान वा अन्नादियुक्त **(नः)** हम लोगों को जो आप **(उप, गृणाति)** सत्य उपदेश देते हैं सो निरन्तर मान कीजिये। हे विद्वानो! **(यूयम्)** तुम **(स्वस्तिभिः)** कल्याणों से **(नः)** हम लोगों की **(सदा)** सर्वदा **(पात)** रक्षा करो॥५॥

**भावार्थः**-विद्वान् जनो! तुम ऐसा प्रयत्न करो जिससे राजा आदि जन धार्मिक होकर असंख्य धन वा अतुल आनन्द को प्राप्त हों, जैसे आप उनकी रक्षा करते हैं, वैसे ये आपकी निरन्तर रक्षा करें॥५॥

इस सूक्त में इन्द्र शब्द शब्द से जीव, राजा के कर्म और गुणों का वर्णन होने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ संगति जाननी चाहिये।

**यह छब्बीसवां सूक्त और दशवां वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

**अथ पञ्चर्चस्य सप्तविंशतितमस्य सूक्तस्य वसिष्ठ ऋषिः। इन्द्रो देवता। १, ५ विराट् त्रिष्टुप्। २ निचृत्त्रिष्टुप्। ३, ४ त्रिष्टुप्छन्दः। धैवतः स्वरः॥**

***अथ सर्वैः कीदृशो विद्वान् राजा कमनीयोऽस्तीत्याह॥***

अब पांच ऋचा वाले सत्ताईसवें सूक्त का प्रारम्भ है, इसके प्रथम मन्त्र में सबको कैसा विद्वान् राजा इच्छा करने योग्य है, इस विषय को कहते है॥

**इन्द्रं नरो नेमधिता हवन्ते यत्पार्या युनजते धियस्ताः।**

**शूरो नृषाता शवसश्चकान आ गोमति व्रजे भजा त्वं नः॥ १॥**

**इन्द्रम्। नरः। नेमऽधिता। हवन्ते। यत्। पार्याः। युनजते। धियः। ताः। शूरः। नृऽसाता। शवसः। चकान। आ। गोऽमति। व्रजे। भज। त्वम्। नः॥ १॥**

**पदार्थः**-(**इन्द्रम्**) परमैश्वर्यप्रदं राजानम् (**नरः**) विद्यासु नेतारः (**नेमधिता**) नेमधितौ सङ्ग्रामे (**हवन्ते**) आह्वयन्ति (**यत्**) या (**पार्याः**) पालनीयाः (**युनजते**) युञ्जते। अत्र **बहुलं छन्दसी**त्यलोपो न। (**धियः**) प्रज्ञाः (**ताः**) (**शूरः**) शत्रूणां हिंसकः (**नृषाता**) नरः सीदन्ति यस्मिंस्तस्मिन् नृसातौ (**शवसः**) बलात् (**चकानः**) कामयमानः (**आ**) (**गोमति**) गावो विद्यन्ते यस्मिँस्तस्मिन् (**व्रजे**) व्रजन्ति यं तस्मिन् (**भजा**)। सेवस्व अत्र **द्व्यचोऽतस्तिङ** इति दीर्घः। (**त्वम्**) (**नः**)॥ १॥

**अन्वयः**-हे राजन्! यः शूरो शवसश्चकानस्त्वं नृषाता गोमति व्रजे न आ भज [हे राजन्!] यमिन्द्रं त्वा यद्या पार्या धियो युनजते तास्त्वमाभज ये नरो नेमधिता त्वां हवन्ते ताँस्त्वमा भज॥ १॥

**भावार्थः**-यो ह्यत्र प्रशस्तप्रज्ञा सर्वदा बलवृद्धिमिच्छञ्छिष्टसम्मतो विद्वानुद्योगी धार्मिकः प्रजापालनतत्परो नरः स्यात्तमेव सर्वे कामयन्ताम्॥ १॥

**पदार्थः**-हे राजन्! जो (**शूरः**) शत्रुओं की हिंसा करने वाले (**शवसः**) बल से (**चकानः**) कामना करते हुए (**त्वम्**) आप (**नृसाता**) मनुष्य जिसमें बैठते वा (**गोमति**) गौयें जिसमें विद्यमान ऐसे (**व्रजे**) जाने के स्थान में (**नः**) हम लोगों को (**आ, भज**) अच्छे प्रकार सेविये, हे राजन्! जिन (**इन्द्रम्**) परमैश्वर्य देने वाले आप को (**यत्**) जो (**पार्याः**) पालना करने योग्य (**धियः**) उत्तम बुद्धि (**युनजते**) युक्त होती हैं (**ताः**) उनको आप अच्छे प्रकार सेवो। जो (**नरः**) विद्याओं में उत्तम नीति देने वाले (**नेमधिता**) संग्राम में आप को (**हवन्ते**) बुलाते हैं, उनको आप अच्छे प्रकार सेवो॥ १॥

**भावार्थः**-जो निश्चय से इस संसार में प्रशंसित बुद्धिवाला, सर्वदा बल वृद्धि की इच्छा करता हुआ, शिष्ट जनों की सम्मति वर्तने वाला, विद्वान्, उद्योगी, धार्मिक और प्रजा पालन में तत्पर जन हो, उसी की सब कामना करो॥ १॥

**पुनः स राजा कीदृशः स्यादित्याह॥**

फिर वह राजा कैसा हो, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥



www.9009.co.in

**य इन्द्र शुष्मो मघवन् ते अस्ति शिक्षा सखिभ्यः पुरुहूत नृभ्यः।**

**त्वं हि दृळ्हा मघवन् विचेता अपा वृधि परिवृतं न राधः॥ २॥**

**यः। इन्द्र। शुष्मः। मघऽवन्। ते। अस्ति। शिक्षा। सखिऽभ्यः। पुरुऽहूत। नृऽभ्यः। त्वम्। हि। दृळ्हा। मघऽवन्। विऽचेताः। अप। वृधि। परिऽवृतम्। न। राधः॥ २॥**

**पदार्थः**-(**यः**) (**इन्द्र**) परमैश्वर्यप्रद (**शुष्मः**) पुष्कलबलयुक्तः (**मघवन्**) परमपूजितधनवत् (**ते**) तव (**अस्ति**) (**शिक्षा**) शासनम् (**सखिभ्यः**) मित्रेभ्यः (**पुरुहूत**) बहुभिः प्रशंसित (**नृभ्यः**) स्वराज्ये नायकेभ्यः (**त्वम्**) (**हि**) (**दृळ्हा**) दृढानि शत्रुसैन्यानि (**मघवन्**) बलधनयुक्त (**विचेताः**) विविधा विशिष्टा वा चेतः प्रज्ञा यस्य सः (**अपा**) अत्र **निपातस्य चे**ति दीर्घः। (**वृधि**) दूरीकुरु (**परिवृतम्**) सर्वतः स्वीकृतम् (**न**) इव (**राधः**) धनम्॥ २॥

**अन्वयः**-हे मघवन्निन्द्र! यस्ते शुष्मोऽस्ति। हे पुरुहूत! या ते सखिभ्यो नृभ्यः शिक्षाऽस्ति। हे मघवन्! यानि ते दृळ्हा सैन्यानि सन्ति तैर्विचेतास्त्वं हि परिवृतं राधो न दृळ्हा शत्रुसैन्यान्यपा वृधि॥ २॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। स एव राजा सदा वर्धते यो प्राप्ताऽपराधमित्राण्यपि दण्डदानेन विना न त्यजति यो हि सदैवं प्रयतते येन स्वस्य मित्रोदासीनशत्रवोऽधिका न भवेयुर्यः सदैव विद्याशिक्षावृद्धये प्रयतते स एव सर्वान् दुष्टाँल्लोककण्टकान् दस्य्यादीन्निवार्य्य राज्यं कर्त्तुमर्हति॥ २॥

**पदार्थः**-हे (**मघवन्**) परम पूजित धनवान् (**इन्द्र**) परमैश्वर्य देने वाले! (**यः**) जो (**ते**) आपका (**शुष्मः**) पुष्कल बलयुक्त व्यवहार (**अस्ति**) है। हे (**पुरुहूत**) बहुतों से प्रशंसा को प्राप्त! जो आपकी (**सखिभ्यः**) मित्रों के लिये वा (**नृभ्यः**) अपने राज्य में नायक मनुष्यों के लिये (**शिक्षा**) सिखावट है। हे (**मघवन्**) बहुधनयुक्त! जो आपके (**दृळ्हा**) दृढ़ शत्रु सैन्यजन हैं उनसे (**विचेताः**) विविध प्रकार वा विशिष्ट बुद्धि जिनकी वह (**त्वम्**) आप (**हि**) (**परिवृतम्**) सब ओर से स्वीकार किये (**राधः**) धन को (**न**) जैसे वैसे दृढ़ शत्रुसेनाजनों को (**अपा, वृधि**) दूर कीजिये॥ २॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। वही राजा सदा बढ़ता है जो अपराधी मित्रों को भी दण्ड देने के बिना नहीं छोड़ता, जो ऐसा सदैव उत्तम यत्न करता है जिससे कि अपने मित्र उदासीन वा शत्रु अधिक न हों और जो सदैव विद्या और शिक्षा की वृद्धि के लिये प्रयत्न करता है, वही सब दुष्ट और लोककण्टक डाकुओं को निवार के राज्य करने के योग्य होता है॥ २॥

**पुनः स राजा कीदृशो भवेदित्याह॥**

फिर वह राजा कैसा हो, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**इन्द्रो राजा जगतश्चर्षणीनामधि क्षमि विषुरूपं यदस्ति।**

**ततो ददाति दाशुषे वसूनि चोदद्राध उपस्तुतश्चिदर्वाक्॥ ३॥**



www.9009.co.in

**इन्द्रः। राजा। जगतः। चर्षणीनाम्। अधि। क्षमि। विषुऽरूपम्। यत्। अस्ति। ततः। ददाति। दाशुषे। वसूनि। चोदत्। राधः। उपऽस्तुतः। चित्। अर्वाक्॥ ३॥**

**पदार्थः**-(**इन्द्रः**) शत्रूणां विदारकः (**राजा**) विद्याविनयाभ्यां प्रकाशमानः (**जगतः**) संसारस्य मध्ये (**चर्षणीनाम्**) मनुष्याणाम् (**अधि**) उपरि (**क्षमि**) पृथिव्याम् (**विषुरूपम्**) व्याप्तस्वरूपम् (**यत्**) (**अस्ति**) (**ततः**) तस्मात् (**ददाति**) (**दाशुषे**) दात्रे (**वसूनि**) धनानि (**चोदत्**) प्रेरयेत् (**राधः**) धनम् (**उपस्तुतः**) समीपे प्रशंसितः (**चित्**) इव (**अर्वाक्**) योऽधोऽञ्चति सः॥ ३॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथा सूर्यो जगतोऽधि क्षमि प्रकाशते तथेन्द्रो राजा चर्षणीनां मध्ये प्रकाशते यदत्र विषुरूपं व्याप्तस्वरूपं धनमस्ति ततो दाशुषे वसूनि ददाति उपस्तुतश्चिदिवार्वाक्सर्वान् राधः प्रति चोदत् स एव राज्यं कर्त्तुमर्हेत्॥ ६॥

**भावार्थः**-अत्रोपमावाचकलुप्तोपमालङ्कारौ। ये हि राजादयः सूर्यवद्राष्ट्रे प्रकाशितदण्डाः सुखप्रदातारः सन्ति ते हि सर्वं सुखं प्राप्नुवन्ति॥ ३॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे सूर्य (**जगतः**) संसार के बीच (**अधि, क्षमि**) पृथिवी पर प्रकाशित होता है, वैसे (**इन्द्रः**) शत्रुओं का विदीर्ण करने वाला (**राजा**) विद्या और नम्रता से प्रकाशमान राजा (**चर्षणीनाम्**) मनुष्यों के बीच प्रकाशित होता (**यत्**) जो [जो] (**विषुरूपम्**) व्याप्तरूप धन (**अस्ति**) है (**ततः**) उससे (**दाशुषे**) देने वाले के लिये (**वसूनि**) धनों को (**ददाति**) देता और (**उपस्तुतः**) समीप में प्रशंसा को प्राप्त हुए (**चित्**) के समान (**अर्वाक्**) नीचे प्राप्त होने वाला सबको (**राधः**) धन के प्रति (**चोदत्**) प्रेरणा देवे वही राज्य करने के योग्य होता है॥ ३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है।[90] जो राजा आदि जन सूर्य के सम्मान राज्य में दण्ड प्रकाश किये और सुख के देने वाले होते हैं, वे ही सब सुख पाते हैं॥ ३॥

**पुनः स राजा कीदृशः स्यादित्याह॥**

फिर वह राजा कैसा हो, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**नू चिन्न इन्द्रो मघवा सहूती दानो वाजं नि यमते न ऊती।**
**अनूना यस्य दक्षिणा पीपाय वामं नृभ्यो अभिवीता सखिभ्यः॥ ४॥**

**नु। चित्। नः। इन्द्रः। मघऽवा। सऽहूती। दानः। वाजम्। नि। यमते। नः। ऊती। अनूना। यस्य। दक्षिणा। पीपाय। वामम्। नृऽभ्यः। अभिऽवीता। सखिऽभ्यः॥ ४॥**

**पदार्थः**-(**नु**) क्षिप्रम्। अत्र **ऋचि तनुघेति** दीर्घः। (**चित्**) अपि (**नः**) अस्मभ्यम् (**इन्द्रः**) विद्युदिव (**मघवा**) बहुधनः (**सहूती**) समानप्रशंसया (**दानः**) यो ददाति (**वाजम्**) धनमन्नं वा (**नि**)

९०. संस्कृतभावार्थ में उपमा भी दिया हुआ है।



www.9009.co.in

नितराम् **(यमते)** यच्छति **(नः)** अस्मान् **(ऊती)** ऊत्या रक्षणाद्यया क्रियया **(अनूना)** पूर्णा यस्य **(दक्षिणा)** **(पीपाय)** वर्धते **(वामम्)** प्रशस्यं कर्म **(नृभ्यः)** मनुष्येभ्यः **(अभिवीता)** अभितस्सर्वतो व्याप्ता अभयाख्या **(सखिभ्यः)** सुहृद्भ्यः॥४॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यो मघवा दान इन्द्रो नस्सहूत्यूत्या नो वाजं नि यमते यस्य चित्सखिभ्यो नृभ्योऽनूनाऽभिवीता दक्षिणा वामं पीपाय स सर्वेभ्यो नु क्षिप्रं सुखदो भवति॥४॥

**भावार्थः**-ये राजादयो जना यथावत्पुरुषार्थेन सर्वान्मनुष्यानधर्मान्निरोध्य धर्मे प्रवर्त्तयित्वाऽभयं जनयन्ति ते प्रशंसनीया जायन्ते॥४॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो **(मघवा)** बहुत धन युक्त **(दानः)** देने वाला **(इन्द्रः)** बिजुली के समान विद्या में व्याप्तः **(नः)** हम लोगों को **(सहूती)** एकसी प्रशंसा **(ऊत्या)** तथा रक्षा आदि क्रिया से **(नः)** हम लोगों के लिये **(वाजम्)** धन वा अन्न को **(नि, यमते)** निरन्तर देता है **(यस्य)** जिसकी **(चित्)** निश्चित **(सखिभ्यः)** मित्र **(नृभ्यः)** मनुष्यों के लिये **(अनूना)** पूरी **(अभिवीता)** सब ओर से व्याप्त समय **(दक्षिणा)** दक्षिणा और **(वामम्)** प्रशंसा करने योग्य कर्म **(पीपाय)** बढ़ता है वह सब के लिये **(नु)** शीघ्र सुख देने वाला होता है॥४॥

**भावार्थः**-जो राजा आदि जन यथावत् पुरुषार्थ से सब मनुष्यों को अधर्म से धर्म में प्रवृत्त करा अभय उत्पन्न कराते हैं, वे प्रशंसनीय होते हैं॥४॥

**पुना राजप्रजाजनाः परस्परं किं कुर्य्युरित्याह॥**

फिर राजा प्रजाजन परस्पर क्या करें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**नू इ॑न्द्र रा॒ये वरि॑वस्कृधी न॒ आ ते॒ मनो॑ ववृत्याम म॒घाय॑।**

**गोम॒दश्वा॑व॒द् रथ॑व॒द् व्यन्तो॑ यू॒यं पा॑त स्व॒स्तिभि॒: सदा॑ नः॥५॥११॥**

**नु। इ॒न्द्र॒। रा॒ये। वरि॑वः। कृ॒धि॒। न॒ः। आ। ते॒। मन॑ः। व॒वृ॒त्या॒म॒। म॒घाय॑। गोऽम॑त्। अश्व॑ऽवत्। रथ॑ऽवत्। व्यन्त॑ः। यू॒यम्। पा॒त॒। स्व॒स्तिऽभि॑ः। सदा॑। न॒ः॥५॥**

**पदार्थः**-**(नु)** सद्यः। अत्र **ऋचि तुनुघे**ति दीर्घः। **(इन्द्र)** धनोन्नतये प्रेरक **(राये)** धनाय **(वरिवः)** परिचरणम् **(कृधि)** कुरु। अत्र **द्व्यचोऽतस्तिङ** इति दीर्घः। **(नः)** अस्माकमस्मभ्यं वा **(आ)** **(ते)** तव **(मनः)** चित्तम् **(ववृत्याम)** वर्त्तयेम **(मघाय)** धनाय **(गोमत्)** बहुगवादियुक्तम् **(अश्वावत्)** बह्वश्वसहितम् **(रथवत्)** प्रशस्तरथादियुक्तम् **(व्यन्तः)** प्राप्नुवन्तः **(यूयम्)** **(पात)** **(स्वस्तिभिः)** **(सदा)** **(नः)**॥५॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! त्वं राये नो वरिवस्कृधि यत्ते मनोऽस्ति तन्मघाय वयं न्वाववृत्याम। गोमदश्वावद् रथवद् व्यन्तो यूयं स्वस्तिभिर्नः सदा पात॥१५॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-हे राजन्! यथा वयं भवन्तं राज्योन्नतये प्रवर्त्तयेम तथा त्वमस्मान् धनप्राप्त्ये प्रवर्त्तय। सर्वे भवन्तः परमैश्वर्यं प्राप्यास्माकं रक्षणे सततं प्रयतन्तामिति॥५॥

अत्रेन्द्रसेनेशराजोपदेशकदातृरक्षकप्रवर्त्तकगुणकृत्यवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति सप्तविंशतितमं सूक्तमेकादशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे **(इन्द्र)** धन की उन्नति के लिये प्रेरणा देने वाले! आप **(राये)** धन के लिये **(नः)** हमारी **(वरिवः)** सेवा **(कृधि)** करो जो **(ते)** आप का **(मनः)** चित् है उसको **(मघाय)** धन के लिये हम लोग **(नु)** शीघ्र **(आ, ववृत्याम)** सब ओर से वर्तें **(गोमत्)** बहुत गो आदि वा **(अश्वावत्)** बहुत घोड़ों से युक्त वा **(रथवत्)** प्रशंसित रथ आदि युक्त धन को **(व्यन्तः)** प्राप्त होते हुए **(यूयम्)** तुम लोग **(स्वस्तिभिः)** उत्तम सुखों से **(नः)** हम लोगों की **(सदा)** सर्वदा **(पात)** रक्षा करो॥५॥

**भावार्थः**-हे राजा! जैसे हम लोग आपको राज्य की उन्नति के लिये प्रवृत्त करावें, वैसे हम लोगों को धन प्राप्ति के लिये प्रवृत्त कराओ। सब आप लोग परमैश्वर्य्य को प्राप्त होकर हमारी रक्षा में निरन्तर प्रयत्न करो॥५॥

इस सूक्त में इन्द्र, सेनापति, राजा, दाता, रक्षा करने वाले और प्रवृत्ति कराने वाले के गुणों का और कर्मों का वर्णन होने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ संगति जाननी चाहिये।

**यह सत्ताईसवां सूक्त और ग्यारहवां वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

**अथ पञ्चर्चस्याष्टविंशतितमस्य सूक्तस्य वसिष्ठ ऋषिः। इन्द्रो देवता। १, २, ५ निचृत्त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतस्स्वरः। ३ भुरिक्पङ्क्तिः। ४ स्वराट्पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः॥**

***अथ स राजा किं कुर्यादित्याह॥***

अब पांच ऋचा वाले अट्ठाईसवें सूक्त का आरम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में वह राजा क्या करे, इस विषय को कहते हैं॥

**ब्रह्मा॑ ण इन्द्रोप॑ याहि वि॒द्वान॒र्वाञ्च॑स्ते॒ हर॑यः सन्तु यु॒क्ताः।**

**विश्वे॑ चि॒द्धि त्वा॑ वि॒हव॑न्त॒ मर्ता॑ अ॒स्माक॒मिच्छृ॑णुहि विश्वमिन्व॥ १॥**

**ब्रह्म॑। नः॒। इ॒न्द्र॒। उप॑। या॒हि॒। वि॒द्वान्। अ॒र्वाञ्चः॑। ते॒। हर॑यः। स॒न्तु॒। यु॒क्ताः। विश्वे॑। चि॒त्। हि। त्वा॒। वि॒ऽहव॑न्त। मर्ताः॑। अ॒स्माक॑म्। इत्। शृ॒णु॒हि॒। वि॒श्व॒म्ऽइ॒न्व॥ १॥**

**पदार्थः**-(**ब्रह्म**) धनमन्नं वा। अत्र च **संहितायामि**ति दीर्घः। (**नः**) अस्मान् (**इन्द्र**) परमैश्वर्यविद्याप्रापक (**उप**) (**याहि**) (**विद्वान्**) (**अर्वाञ्चः**) येऽर्वागधोऽञ्चन्ति (**ते**) तव (**हरयः**) मनुष्याः। अत्र **वाच्छन्दसी**ति रोः स्थान उकारादेशः। (**सन्तु**) (**युक्ताः**) कृतयोगाः (**विश्वे**) सर्वे (**चित्**) (**हि**) (**त्वा**) त्वाम् (**विहवन्त**) विशेषेणाऽऽहूयन्ति (**मर्ताः**) मनुष्याः (**अस्माकम्**) (**इत्**) एव (**शृणुहि**) शृणु (**विश्वमिन्व**) यो विश्वं मिनोति तत्सम्बुद्धौ॥ १॥

**अन्वयः**-हे विश्वमिन्वेन्द्र विद्वांस्त्वं नो ब्रह्मोप याहि यस्य तेऽर्वाञ्चो हरयो युक्ताः सन्तु ये चिद्धि विश्वे मर्त्तास्त्वा वि हवन्त तैस्सहाऽस्माकं वाक्यमिच्छृणुहि॥ १॥

**भावार्थः**-ये मनुष्याः सत्यं न्यायवृत्त्या राज्यभक्ताः स्युस्ते राज्ये सत्कृताः सन्तो निवसन्तु॥ १॥

**पदार्थः**-हे (**विश्वमिन्व**) सब को फेंकने वा (**इन्द्र**) परमैश्वर्य्य और विद्या की प्राप्ति कराने वाले (**विद्वान्**) विद्यावान्! आप (**नः**) हम लोगों को (**ब्रह्म**) धन वा अन्न (**उप, याहि**) प्राप्त कराओ जिन (**ते**) आपके (**अर्वाञ्चः**) नीचे को जाने वाले (**हरयः**) मनुष्य (**युक्ताः**) किये योग (**सन्तु**) हों (**चित्**) और जो (**हि**) ही (**विश्वे**) सब (**मर्त्ताः**) मनुष्य (**त्वा**) आपको (**वि, हवन्त**) विशेषता से बुलाते हैं, उनके साथ (**अस्माकम्**) हमारे वाक्य को (**इत्**) ही (**शृणुहि**) सुनिये॥ १॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य सत्य न्यायवृत्ति से राज्य भक्त हों, वे राज्य में सत्कार किये हुए निरन्तर बसें॥ १॥

**पुनः स राजा कीदृशो भवेदित्याह॥**

फिर वह राजा कैसा हो, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**हवं॑ त इन्द्र महि॒मा व्या॑न॒ड् ब्रह्म॒ यत्पासि॑ शवसि॒न्नृषी॑णाम्।**

**आ यद्वज्रं॑ दधि॒षे हस्त॑ उग्र घो॒रः सन् क्रत्वा॑ जनिष्ठा॒ अषा॑ळ्हाः॥ २॥**



www.9009.co.in

**हवम्। ते। इन्द्र। महिमा। वि। आनट्। ब्रह्म। यत्। पासि। शवसिन्। ऋषीणाम्। आ। यत्। वज्रम्। दधिषे। हस्ते। उग्र। घोरः। सन्। क्रत्वा। जनिष्ठाः। अषाळहाः॥ २॥**

**पदार्थः**-(**हवम्**) प्रशंसनीयं वाग्व्यवहारम् (**ते**) तव (**इन्द्र**) दुष्ट विदारक (**महिमा**) प्रशंसा समूहः (**वि**) विशेषेण (**आनट्**) अश्नोति व्याप्नोति (**ब्रह्म**) धनम् (**यत्**) यः (**पासि**) (**शवसिन्**) बहुविधं शवो बलं विद्यते यस्य तत्सम्बुद्धौ (**ऋषीणाम्**) वेदार्थविदाम् (**आ**) (**यत्**) यम् (**वज्रम्**) (**दधिषे**) दधसि (**हस्ते**) करे (**उग्र**) तेजस्विस्वभाव (**घोरः**) यो हन्ति सः (**सन्**) (**क्रत्वा**) प्रज्ञया कर्मणा वा (**जनिष्ठाः**) जनय (**अषाळहाः**) असोढव्याः शत्रुसेनाः॥ २॥

**अन्वयः**-हे शवसिन्नुग्रेन्द्र! यद्यन्ते महिमा हवं ब्रह्म व्यानड् येन त्वमृषीणां हवं पासि यद्यं वज्रं हस्ते आ दधिषे घोरः सन् क्रत्वाऽषाळ्हो जनिष्ठाः स त्वमस्माभिः सत्कर्त्तव्योऽसि॥ २॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यः शस्त्राऽस्त्रप्रयोगकर्त्ता धनुर्वेदादिशास्त्रवित्प्रशस्तसनो भवेद्यस्य पुण्या कीर्तिर्वर्त्तेत स एव शत्रुहनने प्रजापालने समर्थो भवति॥ २॥

**पदार्थः**-हे (**शवसिन्**) बहुत प्रकार के बल और (**उग्र**) तेजस्वी स्वभाव युक्त (**इन्द्र**) दुष्टों के विदारने वाला राजा! (**यत्**) जो (**ते**) आप का (**महिमा**) प्रशंसा समूह (**हवम्**) प्रशंसनीय वाणियों के व्यवहार को और (**ब्रह्म**) धन को (**व्यानट्**) व्याप्त होता है तथा आप (**ऋषीणाम्**) वेदार्थवेत्ताओं के **[(हवम्)]** प्रशंसनीय वाणी व्यवहार की (**पासि**) रक्षा करते हो और (**यत्**) जिस (**वज्रम्**) शस्त्रसमूह को (**हस्ते**) हाथ में (**आ, दधिषे**) अच्छे प्रकार धारण करते हो और (**घोरः**) मारने वाले (**सन्**) होकर (**क्रत्वा**) प्रज्ञा वा कर्म से (**अषाळहाः**) न सहने योग्य शत्रु सेनाओं को (**जनिष्ठाः**) प्रगट करो अर्थात् ढिठाई उन की दूर करो सो तुम हम लोगों से सत्कार पाने योग्य हो॥ २॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो शस्त्र और अस्त्रों के प्रयोगों का करने धनुर्वेदादिशाओं का जानने और प्रशंसायुक्त सेना वाला हो और जिस की पुण्यरूपी कीर्त्ति वर्त्तमान है, वही शत्रुओं के मारने और प्रजाजनों के पालने में समर्थ होता है॥ २॥

**पुनः स राजा किं कुर्यादित्याह॥**

फिर वह राजा क्या करे, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**तव प्रणीतीन्द्र जोहुवानान्त्सं यन्नॄन्न रोदसी निनेथ।**

**महे क्षत्राय शवसे हि जज्ञेऽतूतुजिं चित्तूतुजिरशिश्नत्॥ ३॥**

**तव। प्रऽनीती। इन्द्र। जोहुवानान्। सम्। यत्। नॄन्। न। रोदसी इति। निनेथ। महे। क्षत्राय। शवसे। हि। जज्ञे। अतूतुजिम्। चित्। तूतुजिः। अशिश्नत्॥ ३॥**

**पदार्थः**-(**तव**) (**प्रणीती**) प्रकृष्टनीत्या (**इन्द्र**) परमैश्वर्ययुक्त (**जोहुवानान्**) भृशमाहूयमानान् (**सम्**) (**यत्**) (**नॄन्**) नायकान् (**न**) इव (**रोदसी**) द्यावापृथिव्यौ (**निनेथ**) नयसि (**महे**) (**क्षत्राय**)

राज्याय धनाय वा **(शवसे)** बलाय **(हि)** यतः **(जज्ञे)** जायते **(अतूतुजिम्)** भृशमहिंस्रम् **(चित्)** अपि **(तूतुजिः)** बलवान् **(अशिश्नत्)** हिनस्ति॥३॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! हि त्वं महे क्षत्राय शवसे जज्ञे तूतुजिः सन् हिंस्राँश्चिद्धवानशिश्नद्यज्ञोहुवानान् नृनतूतुजिं रोदसी न त्वं सन्निनेथ तस्य तव प्रणीती सह वयं राज्य पालयेम॥३॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। ये राजपुरुषाः सूर्यपृथिवीवत् सर्वाः प्रजा धृत्वा धर्मं नयेयुस्ते नीतिज्ञा वेदितव्याः॥३॥

**पदार्थः**-हे **(इन्द्र)** परमैश्वर्ययुक्त! **(हि)** जिस कारण आप **(महे)** महान् **(क्षत्राय)** राज्य धन और **(शवसे)** बल के लिये **(जज्ञे)** उत्पन्न होते **(तूतुजिः)** बलवान् होते हुए हिंसक लोगों को **(चित्)** भी आप **(अशिश्नत्)** मारते और **(यत्)** जो **(जोहुवानान्)** निरन्तर बुलाये हुए **(नॄन्)** जन और **(अतूतुजिम्)** निरन्तर न हिंसा करने वाले को **(रोदसी)** आकाश और पृथिवी के **(न)** समान आप **(सम्, निनेथ)** अच्छे प्रकार पहुँचाते हो उन **(तव)** आप की **(प्रणीती)** उत्तम नीति के साथ हम लोग राज्य पालें॥३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जो राजपुरुष सूर्य और पृथिवी के समान समस्त प्रजाजनों को धारण कर धर्म को पहुँचावें, वे नीति जानने वाले समझने चाहियें॥३॥

**पुनर्मनुष्यैः कथं वर्तितव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को कैसे वर्त्तना चाहिये, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**एभिर्न इन्द्राहभिर्दशस्य दुर्मित्रासो हि क्षितयः पवन्ते।**

**प्रति यच्चष्टे अनृतमनेना अव द्विता वरुणो मायी नः सात्॥४॥**

**एभिः। नः। इन्द्र। अहऽभिः। दशस्य। दुःऽमित्रासः। हि। क्षितयः। पवन्ते। प्रति। यत्। चष्टे। अनृतम्। अनेनाः। अव। द्विता। वरुणः। मायी। नः। सात्॥४॥**

**पदार्थः**-**(एभिः)** वर्त्तमानैः **(नः)** अस्मान् **(इन्द्र)** दोषविदारक **(अहभिः)** दिवसैस्सह **(दशस्य)** देहि **(दुर्मित्रासः)** दुष्टानि तानि मित्राणि **(हि)** **(क्षितयः)** मनुष्याः **(पवन्ते)** पवित्रा भवन्ति **(प्रति)** **(यत्)** **(चष्टे)** वदति **(अनृतम्)** मिथ्याभाषणम् **(अनेनाः)** निष्पापः **(अव)** **(द्विता)** द्वयोर्भावः **(वरुणः)** वरणीयः **(मायी)** उत्तमा प्रज्ञा विद्यते यस्य सः **(नः)** अस्मान् **(सात्)** निश्चिनुयात्॥४॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! येऽनृतं वदन्ति ते दुर्मित्रासः सन्ति यो हि क्षितयः सत्यं वदन्ति त एभिरहभिः पवन्त एतैः स त्वं नो दशस्यानेना भवान् यत्प्रति चष्टे द्विता वरुणो मायी सन् नः सत्यमव सात्॥४॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! येऽत्राऽसत्यं वदन्ति तेऽधर्मात्मानो ये सत्यं ब्रुवन्ति ते धार्मिका इति निश्चिन्वन्तु॥४॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-हे **(इन्द्र)** दोषों के विदीर्ण करने वाले! जो **(अनृतम्)** झूंठ कहते हैं वे **(दुर्मित्रासः)** दुष्ट मित्र हैं और जो **(हि)** निश्चित **(क्षितयः)** मनुष्य सत्य कहते हैं वे **(एभिः)** इन वर्त्तमान **(अहभिः)** दिवसों के साथ **(पवन्ते)** पवित्र होते हैं इनके साथ आप **(नः)** हम लोगों को **(दशस्य)** दीजिये और **(अनेनाः)** निष्पाप आप **(यत्)** जिसके **(प्रति)** प्रति **(चष्टे)** कहते हैं **(द्विता)** तथा दो का होना **(वरुणः)** जो स्वीकार करने योग्य वह और **(मायी)** उत्तम बुद्धिमान् होता हुआ जन **(नः)** हम लोगों को सत्य का **(अव, सात्)** निश्चय कर देवे॥४॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो यहाँ झूंठ कहते हैं, वे अधर्मात्मा पुरुष हैं और जो सत्य कहते हैं वे धर्मात्मा हैं, ऐसा निश्चय करो॥५॥

**पुनर्विद्वांसः किमुपदिशेयुरित्याह॥**

फिर विद्वान् जन क्या उपदेश करें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**वोचेमेदिन्द्रं मघवानमेनं महो रायो राधसो यद्ददन्नः।**

**यो अर्चतो ब्रह्मकृतिमविष्ठो यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥५॥१२॥**

**वोचेम। इत्। इन्द्रम्। मघऽवानम्। एनम्। महः। रायः। राधसः। यत्। ददत्। नः। यः। अर्चतः। ब्रह्मऽकृतिम्। अविष्ठः। यूयम्। पात। स्वस्तिऽभिः। सदा। नः॥५॥**

**पदार्थः**-**(वोचेम)** उपदिशेम **(इत्)** **(इन्द्रम्)** दुष्टशत्रुविदारकम् **(मघवानम्)** परमैश्वर्यवन्तम् **(एनम्)** **(महः)** महतः **(रायः)** धनस्य **(राधसः)** समृद्धस्य **(यत्)** **(ददत्)** दद्यात् **(नः)** अस्मान् **(यः)** **(अर्चतः)** सत्कुर्वतः **(ब्रह्मकृतिम्)** ब्रह्मणो धनस्य कृतिः क्रिया यस्य तम् **(अविष्ठः)** अतिशयेन यविता **(यूयम्)** **(पात)** **(स्वस्तिभिः)** **(सदा)** **(नः)**॥५॥

**अन्वयः**-हे विद्वांसो! योऽर्चतो नो महो राधसो रायोऽविष्ठो ब्रह्मकृतिमेनं मघवानमिन्द्रं यद्ददत्तमिद्वयं वोचेम यूयं स्वस्तिभिर्नः सदा पात॥५॥

**भावार्थः**-हे विद्वांसो! यथा वयं राजादीन् मनुष्यान् प्रति सत्यं सर्वदोपदिशेम तथा यूयमप्युपदिशतैवं परस्परेषां रक्षां विधायोन्नतिर्विधेयेति॥५॥

अत्रेन्द्रविद्वद्राजगुणकृत्यवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इत्यष्टाविंशतितमं सूक्तं द्वादशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे विद्वानो! **(यः)** जो **(अर्चतः)** सत्कार करते हुए **(नः)** हम लोगों के **(महः)** महान् **(राधसः)** समृद्ध **(रायः)** धन सम्बन्ध के **(अविष्ठः)** प्राप्त होने वाला **(ब्रह्मकृतिम्)** जिसके धन की क्रिया हैं **(एनम्)** इस **(मघवानम्)** परमैश्वर्यवान् **(इन्द्रम्)** दुष्ट शत्रुओं के विदीर्ण करने वाले को **(यत्)** जो **(ददत्)** देवें **(इत्)** उसी को हम लोग **(वोचेम)** कहें **(यूयम्)** तुम लोग **(स्वस्तिभिः)** सुखों से **(नः)** हमारी **(सदा)** सर्वदैव **(पात)** रक्षा करो॥५॥



www.9009.co.in

**भावार्थ:**-हे विद्वानो! जैसे हम लोग राजा आदि मनुष्यों के प्रति सत्य का सर्वदा उपदेश करें, वैसे तुम भी उपदेश करो, ऐसे परस्पर की रक्षा कर उन्नति विधान करनी चाहिये॥५॥

इस सूक्त में इन्द्र, विद्वान्, राजगुणों और कर्मों का वर्णन होने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ संगति जाननी चाहिये॥

**यह अट्ठाईसवां सूक्त और बारहवां वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

**अथ पञ्चर्चस्यैकोनत्रिंशत्तमस्य सूक्तस्य वसिष्ठ ऋषिः। इन्द्रो देवता। १ स्वराट्पङ्क्तिः। ३ पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः। २ विराट् त्रिष्टुप्। ४, ५ निचृत्त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः॥**

***अथ कस्मै को निर्मातव्य इत्याह॥***

अब पांच ऋचा वाले उनतीसवें सूक्त का आरम्भ है, इसके प्रथम मन्त्र में किसको कौन बनाना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**अयं सोम॑ इन्द्र तुभ्यं॑ सुन्व आ तु प्र या॑हि हरिवस्तदो॑का:।**

**पिबा त्व१॒॑स्य सुषु॑तस्य चारोर्ददो॑ मघानि मघवन्नियान:॥१॥**

**अयम्। सोम॑:। इन्द्र। तुभ्य॑म्। सुन्वे। आ। तु। प्र। याहि। हरिऽव:। तत्ऽओ॑का:। पिब॑। तु। अस्य। सुऽसु॑तस्य। चारो॑:। दद॑:। मघानि॑। मघऽवन्। इयान:॥१॥**

**पदार्थः**-(**अयम्**) (**सोमः**) ओषधिरसः (**इन्द्र**) दारिद्र्यविदारक (**तुभ्यम्**) (**सुन्वे**) (**आ**) (**तु**) (**प्र**) (**याहि**) गच्छ (**हरिवः**) प्रशस्तैर्मनुष्यैर्युक्त (**तदोकाः**) तच्छ्रेष्ठमोको गृहं यस्य सः (**पिब**) अत्र **द्व्यचोऽतस्तिङ** इति दीर्घः। (**तु**) (**अस्य**) (**सुषुतस्य**) सुष्ठु निमित्तस्य (**चारोः**) सुन्दरस्य (**ददः**) देहि (**मघानि**) धनानि (**मघवन्**) बहुधनयुक्त (**इयानः**) प्राप्नुवन्॥१॥

**अन्वयः**-हे मघवन् हरिव इन्द्र! योऽयं सोमोऽस्ति यमहं तु तुभ्यं प्र सुन्वे तं त्वं पिब तदोकाः सन्नायाहि अस्य सुषुतस्य चारोस्तु मघवनीयान अस्मभ्यं ददः॥१॥

**भावार्थः**-ये मनुष्या वैद्यकशास्त्ररीत्या निष्पादितं सर्वरोगहरं बुद्धिबलप्रदं महौषधिरसं पिबन्ति ते सुखैश्वर्यमाप्नुवन्ति॥१॥

**पदार्थः**-हे (**मघवन्**) बहुधन और (**हरिवः**) प्रशस्त मनुष्ययुक्त (**इन्द्र**) दारिद्र्य विनाशने वाले! जो (**अयम्**) यह (**सोमः**) ओषधियों का रस है जिसको मैं (**तु**) तो (**तुभ्यम्**) तुम्हारे लिये (**प्र, सुन्वे**) खींचता हूँ उसको तुम (**पिब**) पीओ (**तदोकाः**) वह श्रेष्ठ गृह जिसका है ऐसे होते हुए (**आ, याहि**) आओ (**अस्य**) इस (**सुषुतस्य**) सुन्दर निर्माण किये और (**चारोः**) सुन्दर जन के (**मघानि**) धनों को (**इयानः**) प्राप्त होते हुए हमारे लिये (**ददः**) देओ॥१॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य वैद्यकशास्त्र की रीति से उत्पन्न किये हुए सर्वरोग हरने और बुद्धि बल के देने वाले, बड़ी-बड़ी ओषधियों के रस को पीते हैं, वे सुख और ऐश्वर्य पाते हैं॥१॥

**पुनर्विद्वांसः किं कुर्य्युरित्याह॥**

फिर विद्वान् जन क्या करें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**ब्रह्म॑न् वीर ब्रह्म॑कृतिं जुषाणो॑ऽर्वाचीनो हरि॑भिर्याहि तूय॑म्।**

**अस्मिन्नू षु सव॑ने मादयस्वोप ब्रह्मा॑णि शृणव इमा न॑:॥२॥**



www.9009.co.in

**ब्रह्म॑न्। वी॒र॒। ब्रह्म॑ऽकृतिम्। जु॒षा॒णः। अ॒र्वा॒ची॒नः। हरि॑ऽभिः। या॒हि॒। तू॒य॑म्। अ॒स्मिन्। ऊँ॒ इति॑। सु। सव॑ने। मा॒द॒य॒स्व॒। उप॑। ब्रह्मा॑णि। शृ॒ण॒वः॒। इ॒मा। नः॒॥ २॥**

**पदार्थः**-(**ब्रह्मन्**) चतुर्वेदवित् (**वीर**) सकलशुभगुणव्यापिन् (**ब्रह्मकृतिम्**) ब्रह्मणः परमेश्वरस्य कृतिं संसारम् (**जुषाणः**) सेवमानः (**अर्वाचीनः**) इदानीन्तनः (**हरिभिः**) सद्गुणकर्षकैर्मनुष्यैस्सह (**याहि**) (**तूयम्**) शीघ्रम्। **तूयमिति क्षिप्रनाम।** (निघं०२.१५) (**अस्मिन्**) (**उ**) (**सु**) (**सवने**) सुन्वन्ति निष्पादयन्ति येन कर्मणा तस्मिन् (**मादयस्व**) आनन्दयस्व (**उप**) (**ब्रह्माणि**) अधीतानि वेदवचांसि (**शृणवः**) शृणु (**इमा**) इमानि (**नः**) अस्माकम्॥ २॥

**अन्वयः**-हे ब्रह्मन् वीर! ब्रह्मकृतिं जुषाणोऽर्वाचीनस्त्वं हरिभिस्सह तूयं याहि अस्मिन् सवनेऽस्मान् नु मादयस्व न इमा ब्रह्माणि सूप शृणवः॥ २॥

**भावार्थः**-हे विद्वन्! त्वं सृष्टिक्रमं विज्ञायास्मान् प्रबोधयास्मिन्नध्यापनाऽध्ययने कर्मण्यस्माकमधीतं परीक्ष्य विद्याप्रदानेन सर्वान् सद्यः प्रमोदय॥ २॥

**पदार्थः**-हे (**ब्रह्मन्**) चार वेदों के जानने वाले (**वीर**) समस्त शुभगुणों में व्याप्त! (**ब्रह्मकृतिम्**) परमेश्वर की कृति जो संसार इसको (**जुषाणः**) सेवते हुए (**अर्वाचीनः**) वर्त्तमान समय में प्रसिद्ध हुए आप (**हरिभिः**) अच्छे गुणों के आकर्षण करने वाले मनुष्यों के साथ (**तूयम्**) शीघ्र (**याहि**) जाओ (**अस्मिन्**) इस (**सवने**) सवन में अर्थात् जिस कर्म से पदार्थों को सिद्ध करते हैं उसमें हम लोगों को (**मादयस्व**) आनन्दित कीजिये (**नः**) हमारे (**इमा**) इन (**ब्रह्माणि**) पढ़े हुए वेदवचनों को (**सु, उ, उप, शृणवः**) उत्तम प्रकार तर्क-वितर्क से समीप में सुनिये॥ २॥

**भावार्थः**-हे विद्वन्! आप सृष्टि के क्रम को जान कर हमको जतलाओ, इसमें पढ़ाना पढ़ना काम और पढ़े हुए की परीक्षा करो और विद्यादान से शीघ्र प्रमोद देओ॥ २॥

**केऽध्यापकाऽध्येतारः परीक्षकाः प्रशंसनीया इत्याह॥**

कौन पढ़ाने और पढ़ने वाले प्रशंसा करने योग्य हैं, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**का ते॑ अ॒स्त्यरं॑कृतिः सू॒क्तैः क॒दा नू॒नं ते॑ मघवन् दाशेम।**

**विश्वा॑ म॒तीरा त॑तने त्वा॒याधा॑ म इन्द्र शृणवो॒ हवे॒मा॥ ३॥**

**का। ते॒। अ॒स्ति॒। अर॑म्ऽकृतिः। सु॒ऽउ॒क्तैः। क॒दा। नू॒नम्। ते॒। म॒घ॒ऽव॒न्। दा॒शे॒म॒। विश्वा॑ः। म॒तीः। आ। त॒त॒ने॒। त्वा॒ऽया। अध॑। मे॒। इ॒न्द्र॒। शृ॒ण॒वः॒। हवा॑। इ॒मा॥ ३॥**

**पदार्थः**-(**का**) (**ते**) तव (**अस्ति**) (**अरङ्कृतिः**) अलङ्कारः (**सूक्तैः**) सुष्ठूक्तार्थैर्वेदवचोभिः (**कदा**) (**नूनम्**) निश्चितम् (**ते**) तुभ्यम् (**मघवन्**) (**दाशेम**) दद्याम (**विश्वाः**) अखिलाः (**मतीः**) प्रज्ञाः (**आ**) (**ततने**) विस्तृणीयाम् (**त्वाया**) त्वदीयया (**अध**) अथ। अत्र **निपातस्य चे**ति दीर्घः। (**मे**) मम (**इन्द्र**) विद्यैश्वर्यसम्पन्न (**शृणवः**) शृणु (**हवा**) हवानि श्रुतानि (**इमा**) इमानि॥ ३॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे मघवन्निन्द्र! का तेऽरङ्कृतिरस्ति सूक्तैस्ते नूनं विश्वा मतीर्वयं कदा दाशेम त्वायाऽहमा ततनेऽध त्वं मे ममेमा हवा शृणवः॥३॥

**भावार्थः**-तेऽध्यापकाः श्रेष्ठा भवन्ति य इमान् स्वकीयान् विद्यार्थिनः कदा विद्वांसः करिष्यामेतीच्छन्ति सर्वेभ्यः सत्यानि प्रज्ञानानि प्रयच्छन्ति त एव विद्यार्थिनः श्रेष्ठाः सन्ति य उत्साहेन स्वाधीतस्योत्तमास्परीक्षां प्रददति त एव परीक्षकाः श्रेष्ठाः सन्ति ये परीक्षायां कस्यापि पक्षपातं न कुर्वन्ति॥३॥

**पदार्थः**-हे **(मघवन्)** बहुधनयुक्त **(इन्द्र)** विद्या और ऐश्वर्य्य सम्पन्न! **(का)** कौन **(ते)** आपका **(अरङ्कृतिः)** अलङ्कार **(अस्ति)** है **(सूक्तैः)** और अच्छे प्रकार कहा है अर्थ जिनका उन वेद-वचनों से **(ते)** आपको **(नूनम्)** निश्चित **(विश्वाः)** सब **(मतीः)** बुद्धियों को हम लोग **(कदा)** कब **(दाशेम)** देवें **(त्वाया)** आपकी बुद्धि से मैं **(आ, ततने)** विस्तार करूं **(अध)** इसके अनन्तर आप **(मे)** मेरे **(इमा)** इन **(हवा)** सुने वाक्यों को **(शृणवः)** सुनो॥९॥

**भावार्थः**-वे अध्यापक श्रेष्ठ होते हैं जो इन अपने विद्यार्थियों को कब विद्वान् करें ऐसी इच्छा करते हैं और सब के लिये सत्य उत्तम ज्ञानों को देते हैं और वे ही विद्यार्थी श्रेष्ठ हैं जो उत्साह से अपने पढ़े हुए की उत्तम परीक्षा देते हैं तथा वे ही परीक्षा करने वाले श्रेष्ठ हैं जो परीक्षा में किसी का पक्षपात नहीं करते हैं॥३॥

**केऽध्यापका वरतमाः सन्तीत्याह॥**

कौन पढ़ाने वाले अतिश्रेष्ठ हैं, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं

**उतो घा ते पुरुष्या३ इदासन् येषां पूर्वेषामशृणोर्ऋषीणाम्।**

**अधाहं त्वा मघवञ्जोहवीमि त्वं न इन्द्रासि प्रमतिः पितेव॥४॥**

**उतो इति। घ। ते। पुरुष्याः। इत्। आसन्। येषाम्। पूर्वेषाम्। अशृणोः। ऋषीणाम्। अध। अहम्। त्वा। मघऽवन्। जोहवीमि। त्वम्। नः। इन्द्र। असि। प्रऽमतिः पिताऽइव॥४॥**

**पदार्थः**-**(उतो)** अपि **(घ)** एव। अत्र **ऋचि तुनुघे**ति दीर्घः। **(ते)** **(पुरुष्याः)** पुरुषेषु साधवः **(इत्)** एव **(आसन्)** भवन्ति **(येषाम्)** **(पूर्वेषाम्)** पूर्वमधीतविद्यानाम् **(अशृणोः)** शृणुयाः **(ऋषीणाम्)** वेदार्थशब्दसम्बन्धविदाम् **(अध)** अथ **(अहम्)** **(त्वा)** त्वाम् **(मघवन्)** विद्यैश्वर्यसम्पन्न **(जोहवीमि)** भृशं प्रशंसामि **(त्वम्)** **(नः)** अस्माकम् **(इन्द्र)** विद्यैश्वर्यप्रद **(असि)** **(प्रमतिः)** प्रकृष्टप्रज्ञः **(पितेव)** जनकवत्॥४॥

**अन्वयः**-हे मघवन्निन्द्र! यस्त्वं येषां पूर्वेषामृषीणां सकाशाद्वेदानशृणोरुतो ये पुरुष्या घासँस्ते नोऽस्माकमध्यापकाः सन्तु यतस्त्वं नोऽस्माकं पितेव प्रमतिरसि तस्मादधाहं त्वेज्जोहवीमि॥४॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। ये विद्वांसः पितरः पुत्रानिव विद्यार्थिनः पालयन्ति त एव सत्कर्तव्याः प्रशंसनीया भवन्ति॥४॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-हे **(मघवन्)** विद्या ऐश्वर्य से सम्पन्न **(इन्द्र)** विद्या ऐश्वर्य देने वाले विद्वान्! जो आप **(येषाम्)** जिन **(पूर्वेषाम्)** पहिले जिन्होंने विद्या पढ़ी उन **(ऋषीणाम्)** ऋषिजनों से वेदों को **(अश्रृणोः)** सुनो **(उतो)** और जो **(पुरुष्वाः)** पुरुषों में सत्पुरुष **(घा)** ही **(आसन्)** होते हैं **(ते)** वे **(नः)** हमारे अध्यापक हों जिससे **(त्वम्)** आप हमारे **(पितेव)** पिता के समान **(प्रमतिः)** उत्तम बुद्धि वाले **(असि)** हैं इससे **(अध)** इसके अनन्तर **(अहम्)** मैं **(त्वा)** आपकी **(इत्)** ही **(जोहवीमि)** निरन्तर प्रशंसा करूं॥४॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जो विद्वान् पितृजन पुत्रों के समान विद्यार्थियों की पालना करते हैं, वे ही सत्कार करने और प्रशंसा करने योग्य होते हैं॥४॥

**पुनः केऽत्र सर्वेषां रक्षकाः सन्तीत्याह॥**

फिर कौन यहाँ संसार में सब की रक्षा करने वाले होते हैं, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**वोचेमेदिन्द्रं मघवानमेनं महो रायो राधसो यद्ददन्नः।**

**यो अर्चतो ब्रह्मकृतिमविष्ठो यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥५॥१३॥**

**वोचेम। इत्। इन्द्रम्। मघऽवानम्। एनम्। महः। रायः। राधसः। यत्। ददत्। नः। यः। अर्चतः। ब्रह्मऽकृतिम्। अविष्ठः। यूयम्। पात। स्वस्तिऽभिः। सदा। नः॥५॥**

**पदार्थः**-**(वोचेम)** वदेम **(इत्)** इव **(इन्द्रम्)** अविद्यान्धकारविदारकमध्यापकम् **(मघवानम्)** प्रशस्तविद्याधनवन्तम् **(एनम्)** **(महः)** महतः **(रायः)** विद्याधनस्य **(राधसः)** शरीरात्मबलवर्धकस्य **(यत्)** यम् **(ददत्)** दद्यात् **(नः)** अस्मभ्यम् **(यः)** **(अर्चतः)** सत्कृतस्य **(ब्रह्मकृतिम्)** वेदोक्तां सत्यक्रियाम् **(अविष्ठः)** अतिशयेन रक्षकः **(यूयम्)** विद्यावृद्धाः **(पात)** **(स्वस्तिभिः)** सुशिक्षाभिः **(सदा)** **(नः)** **(अस्मान्)**॥५॥

**अन्वयः**-हे विद्वांसो! यूयं स्वस्तिभिर्नः सदा पात हे परीक्षक! योऽविष्ठो ब्रह्मकृतिं नो ददद्यद्यमर्चतो महो राधसो रायः प्रदातारमेनं मघवानमिन्द्रम् [इत्] वयं वोचेम तं यूयमपि प्रशंसत॥५॥

**भावार्थः**-येऽक्षयस्य सर्वत्र सत्कारहेतोर्विद्याधनस्य दातारः सन्ति त एव सर्वेषां यथावत्पालका वर्त्तन्त इति॥५॥

अत्रेन्द्रसोमपानाध्यापकाऽध्येतृपरीक्षकविद्यादातृगुणकृत्यवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इत्येकोनत्रिंशत्तमं सूक्तं त्रयोदशो वर्गश्च समाप्तः॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-हे विद्वान् जनो **(यूयम्)** विद्यावृद्ध तुम **(स्वस्तिभिः)** उत्तम शिक्षओं से **(नः)** हम लोगों की **(सदा)** सदा **(पात)** रक्षा करो। हे परीक्षा करने वाले! **(यः)** जो **(अविष्ठः)** अतीव रक्षा करने वाला **(ब्रह्मकृतिम्)** वेदोक्त सत्य क्रिया को **(नः)** हम लोगों के लिये **(ददत्)** देवे वा **(यत्)** जिसको **(अर्चतः)** सत्कार किये हुए जन का **(महः)** महान् **(राधसः)** शरीर और आत्मा के बल का बढ़ाने वाला **(रायः)** विद्यारूपी धन का उत्तम प्रकार से देने वाले **(एनम्)** इस **(मघवानम्)** प्रशस्त विद्या धनयुक्त **(इन्द्रम्, इत्)** अविद्यान्धकार विदीर्ण करने वाले अध्यापक की हम लोग **(वोचेम)** प्रशंसा कहें, उसकी तुम भी प्रशंसा करो॥५॥

**भावार्थः**-जो जन नाश न होने वाले सर्वत्र सत्कार के हेतु विद्याधन के देने वाले हैं, वे ही सबके यथावत् पालने वाले हैं॥५॥

इस सूक्त में इन्द्र, सोमपान, अध्यापक, अध्येता, परीक्षक और विद्या देने वालों के गुण और कर्मों का वर्णन होने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ संगति जाननी चाहिये॥५॥

**यह उनतीसवां सूक्त और तेरहवां वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

**अथ पञ्चर्चस्य त्रिंशत्तमस्य सूक्तस्य वसिष्ठ ऋषिः। इन्द्रो देवता। १ विराट् त्रिष्टुप्। २ निचृत्त्रिष्टुप्छन्दः। धैवतः स्वरः। ३ निचृत्पङ्क्तिः। ४, ५ स्वराट् पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः॥**

***अथ को राजा प्रशंसनीयो भवतीत्याह॥***

अब पांच ऋचा वाले तीसवें सूक्त का प्रारम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में कौन राजा प्रशंसा करने योग्य होता है, इस विषय को कहते हैं॥

**आ नो देव शवसा याहि शुष्मिन् भवा वृध इन्द्र रायो अस्य।**

**महे नृम्णाय नृपते सुवज्र महि क्षत्राय पौंस्याय शूर॥१॥**

**आ। नः। देव। शवसा। याहि। शुष्मिन्। भव। वृधः। इन्द्र। रायः। अस्य। महे। नृम्णाय। नृऽपते। महि। क्षत्राय। पौंस्याय। शूर॥१॥**

**पदार्थः**-(**आ**) समन्तात् (**नः**) अस्मान् (**देव**) दिव्यगुणसम्पन्न (**शवसा**) उत्तमेन बलेन (**याहि**) प्राप्नुहि (**शुष्मिन्**) प्रशंसितबलयुक्त (**भव**) अत्र **द्व्यचोऽतस्तिङ** इति दीर्घः। (**वृधः**) वर्धनस्य (**इन्द्र**) परमैश्वर्ययुक्त (**रायः**) धनस्य राज्यस्य वा (**अस्य**) (**महे**) महते (**नृम्णाय**) धनाय (**नृपते**) नृणां पालक (**सुवज्र**) शोभनशस्त्रास्त्रप्रयोगकुशल (**महि**) महते (**क्षत्राय**) राष्ट्राय (**पौंस्याय**) पुंसु भवाय बलाय (**शूर**) निर्भय॥१॥

**अन्वयः**-हे शूर सुवज्र नृपते शुष्मिन् देवेन्द्र! त्वं शवसा नोऽस्मानायाह्यस्य रायो वृधो भव महे नृम्णाय महि क्षत्राय पौंस्याय च प्रयतस्व॥१॥

**भावार्थः**-स एव राजा श्रेष्ठो भवति यो राष्ट्ररक्षणे सततं प्रयतेत धनविद्यावृद्ध्या प्रजाः सम्पोष्य सुखयेत्॥१॥

**पदार्थः**-हे (**शूर**) निर्भय (**सुवज्र**) उत्तम शस्त्र और अस्त्रों के चलाने में कुशल (**नृपते**) मनुष्यों की पालना करने वाले (**शुष्मिन्**) प्रशंसित बलयुक्त (**देव**) विद्या गुण सम्पन्न (**इन्द्र**) परम ऐश्वर्यवान् राजन्! आप (**शवसा**) उत्तम बल से (**नः**) हम लोगों को (**आ, याहि**) प्राप्त होओ (**अस्य**) इस (**रायः**) धन वा राज्य की (**वृधः**) वृद्धि सम्बन्धी (**भव**) हूजिये और (**महे**) महान् (**नृम्णाय**) धन के तथा (**महि**) महान् (**क्षत्राय**) राज्य के और (**पौंस्याय**) पुरुष विषयक बल के लिये प्रयत्न करो॥१॥

**भावार्थः**-वही राजा श्रेष्ठ होता है जो राज्य की रक्षा में निरन्तर उत्तम यत्न करे और धनविद्या की वृद्धि से प्रजा को अच्छे प्रकार पुष्टि देकर सुखी करे॥१॥

**पुनः स राजा कीदृशो भवेदित्याह॥**

फिर वह राजा कैसा हो, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥



www.9009.co.in

**हवन्त उ त्वा हव्यं विवाचि तनूषु शूराः सूर्यस्य सातौ।**

**त्वं विश्वेषु सेन्यो जनेषु त्वं वृत्राणि रन्धया सुहन्तु॥२॥**

**हवन्ते। ॐ इति। त्वा। हव्यम्। विऽवाचि। तनूषु। शूराः। सूर्यस्य। सातौ। त्वम्। विश्वेषु। सेन्यः। जनेषु। त्वम्। वृत्राणि। रन्धय। सुऽहन्तु॥२॥**

**पदार्थः**-(**हवन्ते**) आह्वयन्तु (**उ**) (**त्वा**) त्वाम् (**हव्यम्**) आह्वानयोग्यम् (**विवाचि**) विरुद्धा वाचो यस्मिन् संग्रामे भवन्ति तस्मिन् (**तनूषु**) विस्तृतबलेषु शरीरेषु (**शूराः**) शत्रूणां हिंसकाः (**सूर्यस्य**) सवितृमण्डलस्येव राज्यस्य मध्ये (**सातौ**) संविभागे (**त्वम्**) (**विश्वेषु**) (**सेन्यः**) सेनासु साधुः (**जनेषु**) मनुष्येषु (**त्वम्**) (**वृत्राणि**) शत्रुसैन्यानि (**रन्धय**) हिंसय (**सुहन्तु**)॥२॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! यस्त्वं विश्वेषु जनेषु सेन्यः सन् वृत्राणि रन्धय त्वं यथा वीरः सन् शत्रून् सुहन्तु तथैतान् हिन्धि सूर्यस्य किरणा इव तनूषु प्रकाशमानाः शूराः यं हव्यं त्वा सातौ विवाच्यु हवन्ते ताँस्त्वमाह्वय॥२॥

**भावार्थः**-स एव राजा सर्वप्रियो भवति यो न्यायेन प्रजाः सम्पाल्य संग्रामान्विजयते॥२॥

**पदार्थः**-हे परमैश्वर्ययुक्त! जो (**त्वम्**) आप (**विश्वेषु**) सब (**जनेषु**) मनुष्यों में (**सेन्यः**) सेना में उत्तम होते हुए (**वृत्राणि**) शत्रु सैन्य जन आदि को (**रन्धय**) मारो (**त्वम्**) आप जैसे वीर होता हुआ जन शत्रुओं को अच्छे प्रकार हने, वैसे उनको आप (**सुहन्तु**) मारो (**सूर्यस्य**) सवितृमण्डल की किरणों के समान राज्य के बीच और (**तनूषु**) फैला है बल जिनमें उन शरीरों में प्रकाशमान (**शूराः**) शत्रुओं के मारने वाले जन जिन (**हव्यम्**) बुलाने योग्य (**त्वा**) आपको (**सातौ**) संविभाग में अर्थात् बांट चूंट में वा (**विवाचि, उ**) विरुद्ध वाणी जिसमें होती है उस संग्राम में (**हवन्ते**) बुलावें उनको आप बुलावें॥२॥

**भावार्थः**-वही राजा सर्वप्रिय होता है जो न्याय से प्रजा की अच्छी पालना कर संग्राम जीतता है॥२॥

**पुनः स राजा कीदृशः सन् किं कुर्यादित्याह॥**

फिर वह राजा कैसा होता हुआ क्या करे, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अहा यदिन्द्र सुदिना व्युच्छान् दधो यत्केतुमुपमं समत्सु।**

**न्यशग्निः सीददसुरो न होता हुवानो अत्र सुभगाय देवान्॥३॥**

**अहा। यत्। इन्द्र। सुऽदिना। विऽउच्छान्। दधः। यत्। केतुम्। उपऽमम्। समत्ऽसु। नि। अग्निः। सीदत्। असुरः। न। होता। हुवानः। अत्र। सुऽभगाय। देवान्॥३॥**

**पदार्थः**-(**अहा**) अहानि दिनानि (**यत्**) यान् (**इन्द्र**) सूर्य इव वर्त्तमान (**सुदिना**) सुखकराणि दिनानि (**व्युच्छान्**) विवासितान् (**दधः**) देहि (**यत्**) यम् (**केतुम्**) प्रज्ञाम् (**उपमम्**) येन उपमिमीते तम्



www.9009.co.in

**(समत्सु)** संग्रामेषु **(नि)** नितराम् **(अग्निः)** पावक इव तेजस्वी **(सीदत्)** निषीदति **(असुरः)** योऽसुषु रमते सः **(न)** इव **(होता)** हवनकर्त्ता **(हुवानः)** स्पर्धमानः **(अत्र)** **(सुभगाय)** सुष्ठ्वैश्वर्याय **(देवान्)** विदुषः॥३॥

**अन्वयः**-हे इन्द्रात्र समत्सु यद्यान् देवान् सुभगायाऽसुरो होता न शत्रून् युद्धाग्नौ हुवानः सन्नग्निरिव भवान्नि सीदद्यदुपमं केतुं महा सुदिना व्युच्छाँश्च देवान् समत्सु दधः स त्वं विजेतुं शक्नोषि॥३॥

**भावार्थः**-अत्रोपमावाचकलुप्तोपमालङ्कारौ। स एव राजा विजयते य उत्तमाञ्छूरवीरान्विदुषः स्वसेनायां सत्कृत्य रक्षेद्यथा होताऽग्नौ साकल्यं जुहोति तथा शस्त्राऽस्त्राग्नौ शत्रूञ्जुहुयात्॥३॥

**पदार्थः**-हे **(इन्द्र)** सूर्य के समान वर्त्तमान! **(अत्र)** इन **(समत्सु)** संग्रामों में **(यत्)** जिन **(देवान्)** विद्वानों को **(सुभगाय)** सुन्दर ऐश्वर्य्य के लिये **(असुरः)** जो प्राणों में रमता है उस **(होता)** होम करने वाले के **(न)** समान शत्रुओं को युद्ध की आग में **(हुवानः)** होमते अर्थात् उनको स्पर्द्धा से चाहते हुए **(अग्निः)** अग्नि के समान आप **(नि, सीदत्)** निरन्तर स्थिर होते हो और **(यत्)** जिस **(उपमम्)** उपमा दिलाने वाली **(केतुम्)** बुद्धि के विषय को **(अहा)** साधारण दिन वा **(सुदिना)** सुख करने वाले दिनों दिन **(व्युच्छान्)** विविध प्रकार से वसाये हुए विद्वानों को संग्रामों में **(दधः)** धारण करो सो आप जीत सकते हो॥३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमा और वाचकलुप्तोपमालंङ्कार हैं। वही राजा जीतता है जो उत्तम शूरवीर विद्वानों को अपनी सेना में सत्कार का रक्खे जैसे होम करने वाली अग्नि में साकल्य होमता है, वैसे शस्त्र और अस्त्रों की अग्नि में शत्रुओं को होमें॥३॥

**पुनः कस्योत्तमे विजयप्रशंसे भवेतामित्याह॥**

फिर किसकी उत्तम जीत और प्रशंसा होती है, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

## वयं ते त इन्द्र ये च देव स्तवन्त शूर ददतो मघानि।
## यच्छा सूरिभ्य उपमं वरूथं स्वाभुवो जरणामश्नवन्त॥४॥

**वयम्। ते। ते। इन्द्र। ये। च। देव। स्तवन्त। शूर। ददतः। मघानि। यच्छ। सूरिऽभ्यः। उपऽमम्। वरूथम्। सुऽआभुवः। जरणाम्। अश्नवन्त॥४॥**

**पदार्थः**-**(वयम्)** **(ते)** **(ते)** तव **(इन्द्र)** परमैश्वर्यप्रद **(ये)** **(च)** **(देव)** विद्वन् **(स्तवन्त)** प्रशंसन्ति **(शूर)** शत्रूणां हिंसक **(ददतः)** दानं कुर्वतः **(मघानि)** धनानि **(यच्छा)** देहि। अत्र **द्व्यचोऽतस्तिङ** इति दीर्घः। **(सूरिभ्यः)** विद्वद्भ्यः **(उपमम्)** उपमिमीते येन तम् **(वरूथम्)** गृहम् **(स्वाभुवः)** ये सुष्ठु समन्तादुत्तमा भवन्ति ते **(जरणाम्)** जरावस्थाम् **(अश्नवन्त)** अश्नुवते॥४॥

**अन्वयः**-हे शूरेन्द्र देव! ये सूरिभ्यो मघानि ददतस्त उपमं स्तवन्त ये च स्वाभुवो वरूथं जरणामश्नवन्त ते वयं त्वां प्रशंसेम त्वं नो मघानि यच्छा॥४॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-यो राजा सुपरीक्ष्य विद्वद्भ्यो धनादिकं दत्वा सत्कृत्यैतान् विद्यावयोवृद्धान् धार्मिकान् सेनाद्यधिकारेषु नियोजयति तस्य सर्वदा विजयप्रशंसे जायेते॥४॥

**पदार्थः**-हे **(शूर)** शत्रुओं के मारने और **(इन्द्र)** परम ऐश्वर्य देने वाले **(देव)** विद्वान् जन! **(ये)** जो **(सूरिभ्यः)** विद्वानों के लिये **(मघानि)** धनों को **(ददतः)** देते हुए **(ते)** आपके **(उपमम्)** जिससे उपमा दी जाती है उस कर्म की **(स्तवन्त)** प्रशंसा करते हैं **(च)** और जो **(स्वाभुवः)** अच्छे प्रकार सब ओर से उत्तम होते हैं वे जन **(वरूथम्)** घर और **(जरणाम्)** जरावस्था को **(अश्नवन्त)** प्राप्त होते हैं **(ते)** वे **(वयम्)** हम लोग आपकी प्रशंसा करें आप हम लोगों के लिये धनों को **(यच्छा)** देओ॥४॥

**भावार्थः**-जो राजा अच्छी परीक्षा कर विद्वानों के लिये धन आदि दे और सत्कार कर इन विद्या अवस्था वृद्ध धार्मिक जनों को सेना आदि के अधिकारों में नियुक्त करता है, उसकी सर्वदा जीत और प्रशंसा होती है॥४॥

**पुना राजप्रजाजनाः परस्परं कथं वर्त्तेरन्नित्याह॥**

फिर राजा और प्रजाजन परस्पर कैसे वर्तें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**वोचेमेदिन्द्रं मघवानमेनं महो रायो राधसो यद्ददन्नः।**

**यो अर्चतो ब्रह्मकृतिमविष्ठो यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥५॥१४॥**

**वोचेम। इत्। इन्द्रम्। मघऽवानम्। एनम्। महः। रायः। राधसः। यत्। ददत्। नः। यः। अर्चतः। ब्रह्मऽकृतिम्। अविष्ठः। यूयम्। पात। स्वस्तिऽभिः। सदा। नः॥५॥**

**पदार्थः**-**(वोचेम)** सत्यं प्रशंसेम **(इत्)** एव **(इन्द्रम्)** भयविदारकम् **(मघवानम्)** बहुधनैश्वर्योपपन्नम् **(एनम्)** **(महः)** महतः **(रायः)** धनस्य **(राधसः)** सुसमृद्धिकरस्य **(यत्)** यम् **(ददत्)** ददाति **(नः)** अस्मभ्यम् **(यः)** **(अर्चतः)** सत्कुर्वतः **(ब्रह्मकृतिम्)** परमेश्वरोपदिष्टां प्रियां गाम् **(अविष्ठः)** अतिशयेन रक्षकः **(यूयम्)** राजाद्याः **(पात)** **(स्वस्तिभिः)** **(सदा)** **(नः)**॥५॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! योऽविष्ठोऽर्चतो नो ब्रह्मकृतिं ददद्यद्यमेनं मघवानं महो राधसो रायो वर्धकमिन्द्रं वोचेम तमिद्यूयमपि सत्यमुपदिशत हे राजादयो जना! यूयं स्वस्तिभिर्नः सदा पात॥५॥

**भावार्थः**-यदि सर्वे सत्योपदेशकाः स्युस्तर्हि राजा कदाचिदपि प्रमाहीनो न स्याद्यदा राजा धर्मिष्ठो भवेत्तदा सर्वे मनुष्याः धर्मात्मानो भवेयुरेवं परस्परेषां रक्षणेन सदैव सुखं यूयं प्राप्नुतेति॥५॥

अत्रेन्द्रराजप्रजाभृत्योपदेशककृत्यगुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति त्रिंशत्तमं सूक्तं चतुर्दशो वर्गश्च समाप्तः॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-हे मनुष्यो **(यः)** जो **(अविष्ठः)** अतीव रक्षा करने वाला **(अर्चतः)** सत्कार करते हुए **(नः)** हम लोगों को प्राप्त होकर **(ब्रह्मकृतिम्)** परमेश्वर ने उपदेश की हुई प्रिय वाणी **(ददत्)** देता है **(यत्)** जिस **(एनम्)** इस **(मघवानम्)** बहुत धन और ऐश्वर्य से युक्त तथा **(महः)** महान् **(राधसः)** उत्तम समृद्धि करने वाले **(रायः)** धन की वृद्धि करने और **(इन्द्रम्)** भय विदीर्ण करने वाले विषय को **(वोचेम)** सत्य कहें **(इत्)** उसी को तुम भी सत्य उपदेश करो। हे राजन्! आदि जनो **(यूयम्)** तुम **(स्वस्तिभिः)** सर्वसुखों से **(नः)** हम लोगों की **(सदा)** सर्वदा **(पात)** रक्षा करो॥५॥

**भावार्थः**-यदि सब मनुष्य सत्य के उपदेश करने वाले हों तो राजा कभी ज्ञानहीन न हो, जब राजा धर्मिष्ठ हो तब सब मनुष्य धर्मात्मा हों, ऐसे परस्पर की रक्षा से सदैव सुख तुम लोग पाओ॥५॥

इस सूक्त में इन्द्र, राजा, प्रजा, भृत्य और उपदेशक के काम का वर्णन होने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ संगति जाननी चाहिये॥

**यह तीसवां सूक्त और चौदहवां वर्ग पूरा हुआ॥**



www.9009.co.in

**अथ द्वादशर्चस्यैकत्रिंशत्तमस्य सूक्तस्य वसिष्ठ ऋषिः इन्द्रो देवता। १ विराड्गायत्री। २, ८ गायत्री। ६, ७, ९ निचृद्गायत्री छन्दः। षड्जः स्वरः। ३, ४, ५ आर्च्युष्णिक् छन्दः। ऋषभः स्वरः। १०, ११ भुरिगनुष्टुप्। १२ अनुष्टुप् छन्दः। गान्धारः स्वरः॥**

***अथ सखिभिर्मित्राय किं कर्त्तव्यमित्याह॥***

अब बारह ऋचा वाले इकतीसवें सूक्त का प्रारम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में मित्रों को मित्र के लिये क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**प्र व इन्द्राय मादनं हर्यश्वाय गायत। सखायः सोमपाव्ने॥ १॥**

**प्र। वः। इन्द्राय। मादनम्। हरिऽअश्वाय। गायत। सखायः। सोमऽपाव्ने॥ १॥**

**पदार्थः**-(**प्र**) (**वः**) युष्माकम् (**इन्द्राय**) परमैश्वर्याय (**मादनम्**) आनन्दनम् (**हर्यश्वाय**) हरयो मनुष्या हरणशीला वा अश्वा यस्य सः (**गायत**) प्रशंसत (**सखायः**) सुहृदः (**सोमपाव्ने**) यः सोमं पिबति तस्मै॥ १॥

**अन्वयः**-हे सखायो! वो युष्माकं हर्यश्वाय सोमपाव्न इन्द्राय मादनं यूयं प्र गायत॥ १॥

**भावार्थः**-ये सखायः स्वसखीनामानन्दं जनयन्ति ते सखायो भवन्ति॥ १॥

**पदार्थः**-हे (**सखायः**) मित्रो! (**वः**) तुम्हारे (**हर्यश्वाय**) मनुष्य वा हरणशील घोड़े जिसके विद्यमान हैं उस (**सोमपाव्ने**) सोम पीने वाले (**इन्द्राय**) परमैश्वर्यवान् के लिये (**मादनम्**) आनन्द तुम (**प्र, गायत**) अच्छे प्रकार गाओ॥ १॥

**भावार्थः**-जो मित्रजन अपने मित्रजनों को आनन्द उत्पन्न करते हैं, वे मित्र होते हैं॥ १॥

**पुनर्विद्वांसः किं कुर्युरित्याह॥**

फिर विद्वान् जन क्या करें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**शंसेदुक्थं सुदानव उत द्युक्षं यथा नरः। चकृमा सत्यराधसे॥ २॥**

**शंस। इत्। उक्थम्। सुऽदानवे। उत। द्युक्षम्। यथा। नरः। चकृम। सत्यऽराधसे॥ २॥**

**पदार्थः**-(**शंसे**) प्रशंस (**इत्**) एव (**उक्थम्**) प्रशंसनीयम् (**सुदानवे**) उत्तमदानाय (**उत**) अपि (**द्युक्षम्**) कमनीयम् (**यथा**) (**नरः**) मनुष्याः (**चकृम**) कुर्याम। अत्र **संहितायामि**ति दीर्घः। (**सत्यराधसे**) सत्यं राधो धनं यस्य तस्मै॥ २॥

**अन्वयः**-हे विद्वन्! यथा नरो वयं सुदानवे सत्यराधसे द्युक्षमुक्थं चकृम तथा त्वमिच्छंस उत॥ २॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। हे विद्वांसो! यस्य धर्मजं धनं सुपात्रेभ्यो दानं च वर्त्तते तमेवोत्तमं विजानीत॥ २॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-हे विद्वान्! **(यथा)** जैसे **(नरः)** मनुष्य हम लोग **(सुदानवे)** उत्तम दान के लिये वा **(सत्यराधसे)** सत्य जिसका धन है उसके लिये **(द्युक्षम्)** मनोहर **(उक्थम्)** प्रशंसनीय काम **(चकृम)** करें, वैसे आप **(इत्)** ही **(शंसे)** प्रशंसा करें **(उत)** ही॥२॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे विद्वानो! जिसका धर्म से उत्पन्न हुआ धन है और सुपात्रों के लिये दान वर्त्तमान है, उसी को उत्तम जानो॥२॥

**पुनः स विद्वान् कीदृशो भवेदित्याह॥**

फिर वह विद्वान् कैसा हो, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

## त्वं न इन्द्र वाजयुस्त्वं गव्युः शतक्रतो। त्वं हिरण्ययुर्वसो॥३॥

**त्वम्। नः। इन्द्र। वाजऽयुः। त्वम्। गव्युः। शतक्रतो इति शतऽक्रतो। त्वम्। हिरण्यऽयुः। वसो इति॥३॥**

**पदार्थः**-**(त्वम्)** **(नः)** अस्माकम् **(इन्द्र)** परमैश्वर्ययुक्त **(वाजयुः)** वाजं प्रशस्तमन्नं धनं वाऽऽत्मन इच्छति **(त्वम्)** **(गव्युः)** गां पृथिवीमुत्तमां वाचं वा कामयमानः **(शतक्रतो)** असंख्यप्रज्ञ **(त्वम्)** **(हिरण्ययुः)** हिरण्यं सुवर्णं कामयमानः **(वसो)** वासयितः॥३॥

**अन्वयः**-हे शतक्रतो वसविन्द्र वाजयुस्त्वं गव्युस्त्वं हिरण्ययुस्त्वं नोऽस्माकं रक्षकोऽध्यापको वा भव॥३॥

**भावार्थः**-सर्वैर्मनुष्यैरिदमेष्टव्यं यो धर्मात्माऽऽप्तो विद्वान् राजाऽध्यापकः परीक्षको वा स सततमुन्नेता स्यात्॥३॥

**पदार्थः**-हे **(शतक्रतो)** असंख्यप्रज्ञावान् **(वसो)** वसाने वाले **(इन्द्र)** परम ऐश्वर्ययुक्त **(वाजयुः)** प्रशंसित अन्न वा धन अपने को चाहने वाले! **(त्वम्)** आप **(गव्युः)** पृथिवी वा उत्तम वाणी की कामना करने वाले **(त्वम्)** आप **(हिरण्ययुः)** सुवर्ण की कामना करने वाले **(त्वम्)** आप **(नः)** हमारी रक्षा करने और पढ़ाने वाले हूजिये॥३॥

**भावार्थः**-सब मनुष्यों को यही इच्छा करनी चाहिये जो धर्मात्मा आप्त विद्वान् राजा अध्यापक वा परीक्षा करने वाला है सो निरन्तर उन्नति करनेहारा हो॥३॥

**पुना राजप्रजाजनाः परस्परं कथं वर्तेरन्नित्याह॥**

फिर राजा और प्रजाजन परस्पर कैसे वर्तें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

## वयमिन्द्र त्वायवोऽभि प्र णोनुमो वृषन्। विद्धि त्व१स्य नो वसो॥४॥

**वयम्। इन्द्र। त्वाऽयवः। अभि। प्र। नोनुमः। वृषन्। विद्धि। तु। अस्य। नः। वसो इति॥४॥**

**पदार्थः**-**(वयम्)** **(इन्द्र)** विद्यैश्वर्ययुक्त राजन्नध्यापक वा **(त्वायवः)** त्वां कामयमानः **(अभि)** **(प्र)** **(नोनुमः)** भृशन्नमेम **(वृषन्)** बलवन् बलप्रद **(विद्धि)** विजानीहि **(तु)** **(अस्य)** **(नः)** अस्मान् **(वसो)** वासयितः॥४॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे वसो वृषन्निन्द्र! त्वायवो वयं त्वामभि प्र णोनुमस्त्वं नस्त्वस्य राज्यस्य रक्षितॄन् विद्धि॥४॥

**भावार्थः**-यथा धार्मिक्यः प्रजा धार्मिकं राजानं कामयन्ते नमस्यन्ति तथैव राजैता धार्मिकीः प्रजाः कामयेत सततं नमस्येत्॥४॥

**पदार्थः**-हे **(वसो)** वसाने **(वृषन्)** बल रखने और बल के देने वाले **(इन्द्र)** विद्या और ऐश्वर्ययुक्त राजा वा अध्यापक! **(त्वायवः)** आपकी कामना करने वाले **(वयम्)** हम लोग आपको **(अभि, प्र, णोनुमः)** सब ओर से अच्छे प्रकार निरन्तर प्रणाम करें आप **(नः)** हमको **(तु)** तो **(अस्य)** इस राज्य के रक्षा करने वाले **(विद्धि)** जानो॥४॥

**भावार्थः**-जैसे धार्मिक प्रजाजन धार्मिक राजा की कामना करते और उस को नमते हैं, वैसे ही राजा इस धार्मिकी प्रजा की कामना करे और निरन्तर नमें॥४॥

**पुना राजा किं कुर्यादित्याह॥**

फिर राजा क्या करे, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**मा नो निदे च वक्तवेऽर्यो रन्धीरराव्णे। त्वे अपि क्रतुर्मम॥५॥**

**मा। नः। निदे। च। वक्तवे। अर्यः। रन्धीः। अराव्णे। त्वे इति। अपि। क्रतुः। मम॥५॥**

**पदार्थः**-**(मा)** निषेधे **(नः)** अस्माकम् **(निदे)** निन्दकाय **(च)** **(वक्तवे)** वक्तव्याय **(अर्यः)** स्वामी सन् **(रन्धीः)** हिंस्याः **(अराव्णे)** अदात्रे **(त्वे)** त्वयि **(अपि)** **(क्रतुः)** प्रज्ञा **(मम)**॥५॥

**अन्वयः**-हे राजन्नर्यस्त्वं यो मम त्वे क्रतुरस्ति तं मा रन्धीरपि तु नो वक्तवे अराव्णे निदे च भृशं दण्डं दद्याः॥५॥

**भावार्थः**-राजा सदैव विद्याधर्मसुशीलतां वर्धयित्वा निन्दकारीन् दुष्टान् मनुष्यान्निवार्य्य प्रजाः सततं रञ्जयेत्॥५॥

**पदार्थः**-हे राजन्! **(अर्यः)** स्वामी होते हुए जो **(मम, त्वे)** मेरी तुम्हारे बीच **(क्रतुः)** उत्तम बुद्धि है उसको **(मा)** मत **(रन्धीः)** नष्ट करो **(अपि)** किन्तु **(नः)** हमारे **(वक्तवे)** कहने योग्य **(अराव्णे)** न देने वाले के लिये और **(निदे)** निन्दक के लिये **(च)** भी निरन्तर दण्ड देओ॥५॥

**भावार्थः**-राजा सदैव विद्या, धर्म और सुशीलता बढ़वाने के लिये निन्दक, दुष्ट मनुष्यों को निवार के प्रजा को निरन्तर प्रसन्न करे॥५॥

**पुनः स कीदृशो भवेदित्याह॥**

फिर वह कैसा हो, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**त्वं वर्मासि सप्रथः पुरोयोधश्च वृत्रहन्। त्वया प्रति ब्रुवे युजा॥६॥१५॥**

**त्वम्। वर्म। असि। सऽप्रथः। पुरःऽयोधः। च। वृत्रऽहन्। त्वया। प्रति। ब्रुवे। युजा॥६॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**त्वम्**) (**वर्म**) कवचमिव (**असि**) (**सप्रथः**) सप्रख्यातिः (**पुरः**) पुरस्तात् (**योधः**) योद्धा (**च**) (**वृत्रहन्**) दुष्टानां हन्तः (**त्वया**) (**प्रति**) (**ब्रुवे**) उपदिशामि (**युजा**) यो न्यायेन युनक्ति तेन॥६॥

**अन्वयः**-हे वृत्रहन् राजन्! यस्त्वं योधः सप्रथो वर्मेव चासि येन युजा त्वयाऽहं प्रति ब्रुवे स त्वं पुरो रक्षको भव॥६॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यदि राजा सत्कीर्त्तिः सुशीलो निरभिमानो विद्वान् स्यात्तर्हि तं प्रति सर्वे सत्यं ब्रूयुः स च श्रुत्वा प्रसन्नः स्यात्॥६॥

**पदार्थः**-हे (**वृत्रहन्**) दुष्टों के हनने वाला राजा! जो (**त्वम्**) आप (**योधः**) युद्ध करने वाले (**सप्रथः**) प्रख्याति प्रशंसा के सहित (**वर्म, च**) और कवच के समान (**असि**) हैं जिस (**युजो**) न्याय से युक्त होने वाले (**त्वया**) आपके साथ मैं (**प्रति, ब्रुवे**) प्रत्यक्ष उपदेश करता हूँ सो आप (**पुरः**) आगे रक्षा करने वाले हूजिये॥६॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो राजा सत्कीर्ति, सुशील, निरभिमान, विद्वान् हो तो उसके प्रति सब सत्य बोलें और वह सुनकर प्रसन्न हो॥६॥

**पुनस्तस्य विद्याविनये किं कुर्यातामित्याह॥**

फिर उसकी विद्या और विनय क्या करें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**म॒हाँ उ॒तासि॒ यस्य॒ तेऽनु॑ स्व॒धाव॑री॒ सहः॑। म॒म्नाते॑ इन्द्र॒ रोद॑सी॥७॥**

**म॒हान्। उ॒त। अ॒सि॒। यस्य॑। ते॒। अनु॑। स्व॒धाव॑री॒ इति॑ स्व॒धाऽव॑री। सहः॑। म॒म्ना॒ते॒ इति॑। इ॒न्द्र॒। रोद॑सी॒ इति॑॥७॥**

**पदार्थः**-(**महान्**) (**उत**) अपि (**असि**) (**यस्य**) (**ते**) तव (**अनु**) (**स्वधावरी**) बह्वन्नादिप्रदे (**सहः**) बलम् (**मम्नाते**) अभ्यासाते (**इन्द्र**) राजन् (**रोदसी**) द्यावापृथिव्यौ॥७॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! यथा महान् सूर्योऽस्ति तथा यस्य सकाशात् स्वधावरी रोदसी अनु मम्नाते तस्य ते तथैव सेनाराष्ट्रे स्यातामुताऽपि यतस्त्वं महानसि तस्मात् सहो गृहीत्वा निर्बलान् पालय॥७॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यस्य राज्ञः प्रजासेने धार्मिके सुरक्षिते स्तस्तस्य सूर्यवत्प्रतापो भवति॥७॥

**पदार्थः**-हे (**इन्द्र**) राजा! जैसे (**महान्**) बड़ा सूर्य है, वैसे (**यस्य**) जिनके सकाश से (**स्वधावरी**) बहुत अन्न की देने वाली (**रोदसी**) आकाश और पृथिवी (**अनु, मम्नाते**) अनुकूलता से अभ्यास करते हैं उन (**ते**) आपके, वैसे ही सेना और राज्य हों (**उत**) और जिससे आप महान् (**असि**) हैं इससे (**सहः**) बल को ग्रहण कर निर्बलों को पालो॥७॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जिस राजा की प्रजा और सेना धार्मिक और सुरक्षित हों, उसका सूर्य के समान प्रताप होता है॥७॥

**कः प्रशंसनीयाः स्यादित्याह॥**

कौन प्रशंसा करने योग्य हो, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**तं त्वा मरुत्वती परि भुवद्वाणी सयावरी। नक्षमाणा सह द्युभिः॥८॥**

**तम्। त्वा। मरुत्वती। परि। भुवत्। वाणी। सऽयावरी। नक्षमाणा। सह। द्युभिः॥८॥**

**पदार्थः**-(**तम्**) (**त्वा**) त्वाम् (**मरुत्वती**) प्रशस्ता मरुतो मनुष्या विद्यन्ते यस्यां सा (**परि**) (**भुवत्**) भवेत् (**वाणी**) वाक् (**सयावरी**) या सहैव याति (**नक्षमाणा**) सर्वासु विद्यासु व्याप्नुवती (**सह**) (**द्युभिः**) विज्ञानादिप्रकाशैः॥८॥

**अन्वयः**-हे विद्वन्! यं त्वा मरुत्वती सयावरी नक्षमाणा वाणी द्युभिः सह परि भुवत्तं त्वा वयं सर्वतो भूषयेम॥८॥

**भावार्थः**-यस्य विदुषो राज्ञ उपदेशकस्य वा सकलविद्यायुक्ता वाणी उत्तमा कार्यकरा उपदेश्या वा स्यात् स एव सर्वां प्रशंसामर्हति॥८॥

**पदार्थः**-हे विद्वान्! जिन (**त्वा**) आपको (**मरुत्वती**) जिसमें प्रशंसायुक्त मनुष्य विद्यमान (**सयावरी**) जो साथ जाती (**नक्षमाणा**) और सब विद्याओं में व्याप्त होती हुई (**वाणी**) वाणी (**द्युभिः**) विज्ञानादि प्रकाशों के (**सह**) साथ (**परि, भुवत्**) सब ओर से प्रसिद्ध हो (**तम्**) उन आपको हम लोग सब ओर से भूषित करें॥८॥

**भावार्थः**-जिस विद्वान् राजा वा उपदेशक विद्वान् की सकलविद्यायुक्त वाणी उत्तम और कार्य करने वाले उपदेश के योग्य हो, वही सब प्रशंसा को योग्य होता है॥८॥

**पुनः कं नरं सर्वे नमन्तीत्याह॥**

फिर किस मनुष्य को सब नमते हैं, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**ऊर्ध्वासस्त्वान्विन्दवो भुवन् दस्ममुप द्यवि। सन्ते नमन्त कृष्टयः॥९॥**

**ऊर्ध्वासः। त्वा। अनु। इन्दवः। भुवन्। दस्मम्। उप। द्यवि। सम्। ते। नमन्त। कृष्टयः॥९॥**

**पदार्थः**-(**ऊर्ध्वासः**) उत्कृष्टाः (**त्वा**) त्वाम् (**अनु**) (**इन्दवः**) ऐश्वर्ययुक्ता आनन्दिताः (**भुवन्**) भवन्ति (**दस्मम्**) (**उप**) (**द्यवि**) समीपस्थे प्रकाशितेऽप्रकाशिते वा (**सम्**) (**ते**) तव (**नमन्त**) नमन्ति (**कृष्टयः**) मनुष्याः॥९॥

**अन्वयः**-हे विद्वन्! य ऊर्ध्वास इन्दवोऽनु भुवँस्ते कृष्टयः उपद्यवि दस्मं त्वा सन्नमन्त॥९॥

**भावार्थः**-यस्य राज्ञः समीपे भद्रा धार्मिका जनाः सन्ति तस्य विनयेन सर्वाः प्रजाः नम्रा भवन्ति॥९॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-हे विद्वान्! जो **(ऊर्ध्वासः)** उत्कृष्ट **(इन्दवः)** ऐश्वर्ययुक्त आनन्दित **(अनु, भुवन्)** अनुकूल होते हैं **(ते)** वे **(कृष्टयः)** मनुष्य **(उपद्यवि)** समीपस्थ प्रकाशित वा अप्रकाशित विषय में **(दस्मम्)** शत्रुओं का उपक्षय विनाश करने **(त्वा)** आपको **(सम्, नमन्त)** अच्छे प्रकार नमते हैं॥९॥

**भावार्थः**-जिस राजा के समीप में भद्र, धार्मिक जन हैं, उसकी नम्रता से सब प्रजा नम्र होती है॥९॥

**पुना राजप्रजाजनाः परस्परं किं कुर्य्युरित्याह॥**

फिर राजप्रजाजन परस्पर क्या करें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

### प्र वो॑ म॒हे म॑हि॒वृधे॑ भरध्वं॒ प्रचे॑तसे॒ प्र सु॑म॒तिं कृ॑णुध्वम्।
### विशः॑ पू॒र्वीः प्र च॑रा चर्षणि॒प्राः॥ १०॥

**प्र। व॒ः। म॒हे। म॒हि॒ऽवृधे॑। भ॒र॒ध्व॒म्। प्रऽचे॑तसे। प्र। सु॒ऽम॒तिम्। कृ॒णु॒ध्व॒म्। विशः॑। पू॒र्वीः। प्र। च॒र॒। च॒र्ष॒णि॒ऽप्राः॥ १०॥**

**पदार्थः**-**(प्र)** **(वः)** युष्मभ्यम् **(महे)** महते **(महिवृधे)** महतां वर्धकाय **(भरध्वम्)** **(प्रचेतसे)** प्रकृष्टं चेतः प्रज्ञा यस्य तस्मै **(प्र)** **(सुमतिम्)** शोभनां प्रज्ञाम् **(कृणुध्वम्)** **(विशः)** प्रजाः **(पूर्वीः)** प्राचीनाः पितापितामहादिभ्यः प्राप्ताः **(प्र)** **(चर)** अत्र **द्व्यचोऽतस्तिङ** इति दीर्घः। **(चर्षणिप्राः)** यश्चर्षणीन् मनुष्यान् प्राति व्याप्नोति सः॥१०॥

**अन्वयः**-हे विद्वांसो! यथा वयं वो युष्मभ्यमुत्तमान् पदार्थान् प्रयच्छेम तथा यूयं नो महे महिवृधे प्रचेतसे सुमतिं प्र भरध्वमस्मान् पूर्वीर्विशो विदुषीः प्र कृणुध्वम्। चर्षणिप्रास्त्वं राजँस्त्वं न्याये प्र चर॥१०॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यथा विद्वांसो युष्मदर्थं शुभान् गुणान् पुष्कलमैश्वर्यं विदधति तथा यूयमेतदर्थं श्रेष्ठां नीतिं धत्त॥१०॥

**पदार्थः**-हे विद्वानो! जैसे हम लोग **(वः)** तम्हारे लिये उत्तम पदार्थों को दें, वैसे तुम हम लोगों के **(महे)** महान् व्यवहार के लिये **(महिवृधे)** तथा बड़ों के बढ़ने और **(प्रचेतसे)** उत्तम प्रज्ञा रखने वाले के लिये **(सुमतिम्)** सुन्दर मति को **(प्र, भरध्वम्)** उत्तमता से धारण करो हम लोगों को **(पूर्वीः)** प्राचीन पिता पितामहादिकों से प्राप्त **(विशः)** प्रजाजनों को **(प्र, कृणुध्वम्)** विद्वान् अच्छे प्रकार करो **(चर्षणिप्राः)** जो मनुष्यों को व्याप्त होता वह राजा आप न्याय में **(प्र, चर)** प्रचार करो॥१०॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जैसे विद्वान् जन तुम लोगों के लिये शुभगुण और पुष्कल ऐश्वर्य विधान करते हैं, वैसे तुम इनके लिये श्रेष्ठ नीति धारण करो॥१०॥

**पुनस्ते विद्वांसः किमुत्पादयेयुरित्याह॥**

फिर वे विद्वान् जन क्या उत्पन्न करें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥



www.9009.co.in

**उरुव्यचसे महिने सुवृक्तिमिन्द्राय ब्रह्म जनयन्त विप्राः।**

**तस्य व्रतानि न मिनन्ति धीराः॥११॥**

**उरुऽव्यचसे। महिने। सुऽवृक्तिम्। इन्द्राय। ब्रह्म। जनयन्त। विप्राः। तस्य। व्रतानि। न। मिनन्ति। धीराः॥११॥**

**पदार्थः**-(**उरुव्यचसे**) बहुषु विद्यासु व्यापकाय (**महिने**) सत्कर्त्तव्याय (**सुवृक्तिम्**) सुष्ठु वर्जन्त्यन्यायं यया ताम् (**इन्द्राय**) परमैश्वर्याय (**ब्रह्म**) धनमन्नं वा (**जनयन्त**) जनयन्ति (**विप्राः**) मेधाविनः (**तस्य**) (**व्रतानि**) सत्यभाषणादीनि कर्माणि (**न**) निषेधे (**मिनन्ति**) हिंसन्ति (**धीराः**) ध्यानवन्तः॥११॥

**अन्वयः**-हे धीरा विप्रा! भवन्त उरुव्यचसे महिन इन्द्राय सुवृक्तिं ब्रह्म च जनयन्त तस्य व्रतानि केऽपि न मिनन्ति॥११॥

**भावार्थः**-ये राज्ञे महद्धनं जनयन्त्यसत्याचारं वर्जयित्वा सत्याचारं प्रसेधयन्ति ते पूज्या जायन्ते॥११॥

**पदार्थः**-हे (**धीराः**) ध्यानवान् (**विप्राः**) विद्वानो! आप लोग (**उरुव्यचसे**) बहुत विद्याओं में व्यापक (**महिने**) सत्कार करने योग्य (**इन्द्राय**) परमैश्वर्यवान् के लिये (**सुवृक्तिम्**) उत्तमता से अन्याय को वर्जते हैं जिससे उसको और (**ब्रह्म**) धन वा अन्न को (**जनयन्त**) उत्पन्न करते हैं (**तस्य**) उनके (**व्रतानि**) सत्य भाषण आदि कर्म कोई (**न**) नहीं (**मिनन्ति**) नष्ट करते हैं॥११॥

**भावार्थः**-जो राजा के लिये बहुत धन उत्पन्न करते और असत्य आचरण को निवृत्त कर सत्य आचरण प्रसिद्ध करते हैं, वे पूज्य होते हैं॥११॥

**पुनः कीदृशं नरं सत्या वाक्सेवत इत्याह॥**

फिर कैसे मनुष्य को सत्य वाणी सेवती है, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**इन्द्रं वाणीरनुत्तमन्युमेव सत्रा राजानं दधिरे सहध्यै।**

**हर्यश्वाय बर्हया समापीन्॥१२॥१६॥**

**इन्द्रम्। वाणीः। अनुत्तऽमन्युम्। एव। सत्रा। राजानम्। दधिरे। सहध्यै। हरिऽअश्वाय। बर्हय। सम्। आपीन्॥१२॥**

**पदार्थः**-(**इन्द्रम्**) अविद्याविदारकमाप्तविद्वांसम् (**वाणीः**) सकलविद्यायुक्ता वाचः (**अनुत्तमन्युम्**) न उत्तो न प्रेरितो मन्युः क्रोधो यस्य तम् (**एव**) (**सत्रा**) सत्येन (**राजानम्**) (**दधिरे**) दधति (**सहध्यै**) सोढुम् (**हर्यश्वाय**) प्रशंसितमनुष्याश्वादियुक्ताय (**बर्हय**) वर्धय। अत्र **संहितायामिति** दीर्घः। (**सम्**) (**आपीन्**) य आप्नुवन्ति तान्॥१२॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे विद्वन्! या वाणीः सत्राऽनुत्तमन्युं राजानमिन्द्रं सहध्यै दधिरे आपीन् सन् दधिरे तस्मा एव हर्यश्वाय सर्वा विद्या बर्हय॥१२॥

**भावार्थः**-यमजातक्रोधं जितेन्द्रियं राजानं सकलशास्त्रयुक्ता वागाप्नोति स एव सत्येन न्यायेन प्रजाः पालयितुमर्हतीति॥१२॥

अत्रेन्द्रविद्वद्राजकृत्यवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इत्येकत्रिंशत्तमं सूक्तं षोडशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे विद्वान्! जो **(वाणीः)** सकल विद्यायुक्त वाणी **(सत्रा)** सत्य से **(अनुत्तमन्युम्)** जिसका प्रेरणा नहीं किया गया क्रोध उस **(राजानम्)** प्रकाशमान **(इन्द्रम्)** अविद्या विदीर्ण करने वाले विद्वान् को **(सहध्यै)** सहने को **(दधिरे)** धारण करते तथा **(आपीन्)** जो व्याप्त होते हैं उनको **(सम्)** अच्छे प्रकार धारण करते हैं **(एव)** उसी **(हर्यश्वाय)** प्रशंसित मनुष्य और घोड़ों वाले के लिये सब विद्याओं को **(बर्हय)** बढ़ाओ॥१२॥

**भावार्थः**-जिस न उत्पन्न हुए क्रोध वाले, जितेन्द्रिय राजा को सकल शास्त्रयुक्त वाणी व्याप्त होती है, वही सत्य न्याय से प्रजा पालने योग्य होते हैं॥१२॥

इस सूक्त में इन्द्र, विद्वान् और राजा के काम का वर्णन होने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ संगति जाननी चाहिये॥

**यह इकतीसवां सूक्त और सोलहवां वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

**अथ सप्तविंशत्यृचस्य द्वात्रिंशत्तमस्य सूक्तस्य। १-२५, २६ २७ वसिष्ठः। २६ वसिष्ठः शक्तिर्वा ऋषिः। इन्द्रो देवता। १, ४, २४ विराड् बृहती। ६, ८, १२,१६, १८, २६, निचृद् बृहती। ११, २७ बृहती। १७,२५ भुरिग्बृहती। २१ स्वराड्बृहती छन्दः। मध्यमः स्वरः। २, ९ पङ्क्तिः। ५.१३.१५, १९, २३ निचृत्पंक्तिः। ३ साम्नी पङ्क्तिः। ७ विराट्पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः। १०, १४ भुरिगनुष्टुप्। २०, २२ स्वराडनुष्टुप् छन्दः। गान्धारः स्वरः॥**

***अथ के दूरे समीपे च रक्षणीया इत्याह॥***

अब सत्ताईस ऋचावाले बत्तीसवें सूक्त का प्रारम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में कौन दूर और समीप में रक्षा करने योग्य होते हैं, इस विषय को कहते हैं॥

**मो षु त्वा वाघतश्चनारे अस्मन्नि रीरमन्।**

**आरात्ताच्चित्सधमादं न आ गहीह वा सन्नुप श्रुधि॥ १॥**

**मो इति। सु। त्वा। वाघतः। चन। आरे। अस्मत्। नि। रीरमन्। आरात्तात्। चित्। सधऽमादम्। नः। आ। गहि। इह। वा। सन्। उप। श्रुधि॥ १॥**

**पदार्थः**-(**मो**) निषेधे (**सु**) (**त्वा**) त्वाम् (**वाघतः**) मेधाविनः। **वाघत इति मेधाविनाम**। (निघं०३.१५) (**चन**) अपि (**आरे**) समीपे दूरे वा (**अस्मत्**) (**नि**) (**रीरमन्**) रमन्ताम् (**आरात्तात्**) दूरे (**चित्**) अपि (**सधमादम्**) यत्र सह माद्यन्त्यानन्दन्ति तम् (**नः**) अस्माकम् (**आ**) (**गहि**) आगच्छ प्राप्नुहि वा (**इह**) (**वा**) (**सन्**) (**उप**) (**श्रुधि**)॥ १॥

**अन्वयः**-हे विद्वन् राजन्! वाघतस्तवारे चनाप्यस्मदारे मो सुरीरमन्। सततं तवारे सन्तस्त्वा रमयन्तु। आरात्ताच्चित्वं नः सधमादमा गहीह वा प्रसन्नः सन्नस्माकं वचांसि न्युप श्रुधि॥ १॥

**भावार्थः**-येषां मनुष्याणां समीपे मेधाविनो धार्मिका विद्वांसो वसन्ति दुष्टांश्च दूरे तिष्ठन्ति ते सदैव सुखं लभन्ते॥ १॥

**पदार्थः**-हे विद्वान् राजा! (**वाधतः**) मेधावी जन आपके (**आरे**) दूर (**चन**) और (**अस्मत्**) हम से दूर (**मो, सु, रीरमन्**) मत रमें। निरन्तर आपके समीप होते हुए (**त्वा**) आपको रमावें। (**आरात्तात्**) दूर में (**चित्**) भी आप (**नः**) हमारे (**सधमादम्**) उस स्थान को कि जिसमें एक साथ आनन्द करते हैं (**आ, गहि**) आओ (**इह, वा**) यहाँ प्रसन्न (**सन्**) होते हुए हमारे वचनों को (**नि, उप, श्रुधि**) समीप में सुनो॥ १॥

**भावार्थः**-जिन मनुष्यों के समीप बुद्धिमान् धार्मिक, विद्वान्जन और दूर में दुष्ट जन हैं, वे सदैव सुख पाते हैं॥ १॥

**पुनः कस्य समीपे के वसेयुरित्याह॥**



www.9009.co.in

फिर किसके समीप कौन बसें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**इमे हि ते ब्रह्मकृतः सुते सचा मधौ न मक्ष आसते।**

**इन्द्रे कामं जरितारो वसूयवो रथे न पादमा दधुः॥२॥**

**इमे। हि। ते। ब्रह्मऽकृतः। सुते। सचा। मधौ। न। मक्षः। आसते। इन्द्रे। कामम्। जरितारः। वसुऽयवः। रथे। न। पादम्। आ। दधुः॥२॥**

**पदार्थः**-(**इमे**) (**हि**) खलु (**ते**) तत्र (**ब्रह्मकृतः**) ये ब्रह्म धनमन्नं वा कुर्वन्ति ते (**सुते**) निष्पादिते (**सचा**) समवायेन (**मधौ**) मधुरादिगुणयुक्ते (**न**) इव (**मक्षः**) मक्षिकाः (**आसते**) उपतिष्ठन्ति (**इन्द्रे**) परमैश्वर्यवति विदुषि राजनि (**कामम्**) (**जरितारः**) सत्यस्तावकाः (**वसूयवः**) वसूनि धनानि कामयमानाः (**रथे**) रमणीये याने (**न**) इव (**पादम्**) चरणम् (**आ**) समन्तात् (**दधुः**) धरन्ति॥२॥

**अन्वयः**-हे राजंस्ते य इमे ब्रह्मकृतो वसूयवो जरितारः सुते मधौ मक्षो न सचासते। इन्द्रे त्वयि रथे पादं न काममा दधुस्ते हि सुखिनो जायन्ते॥२॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। यो विद्वान्राजा धर्मात्मा न्यायकारी स्यात्तर्ह्यस्य समीपे बहवो धार्मिका विद्वांसो भवेयुः॥२॥

**पदार्थः**-हे राजन्! (**ते**) आपके जो (**इमे**) यह (**ब्रह्मकृतः**) धन वा अन्न को सिद्ध करने (**वसूयवः**) धनों की कामना करने (**जरितारः**) और सत्य की स्तुति करने वाले जन (**सुते**) उत्पन्न किये हुए (**मधौ**) मधुरादिगुणयुक्त स्थान में (**मक्षः**) मक्खियों के (**न**) समान (**सचा**) सम्बन्ध से (**आसते**) उपस्थित होते हैं (**इन्द्रे**) परमैश्वर्यवान् आप में (**रथे**) रमणीय यान में (**पादम्**) पैर जैसे धरें (**न**) वैसे (**कामम्**) कामना को (**आ, दधुः**) सब ओर से धारण करते हैं, वे (**हि**) ही सुखी होते हैं॥२॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जो विद्वान् राजा धर्मात्मा न्यायकारी हो तो इसके समीप में बहुत धार्मिक विद्वान् हों॥२॥

**पुनः केनः कः किंवदुपासनीय इत्याह॥**

फिर किसको कौन किसके तुल्य उपासना करने योग्य हैं, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**रायस्कामो वज्रहस्तं सुदक्षिणं पुत्रो न पितरं हुवे॥३॥**

**रायऽकामः। वज्रऽहस्तम्। सुऽदक्षिणम्। पुत्रः। न। पितरम्। हुवे॥३॥**

**पदार्थः**-(**रायस्कामः**) यो धनानि कामयते सः (**वज्रहस्तम्**) शस्त्रास्त्रपाणिम् (**सुदक्षिणम्**) शोभना दक्षिणा यस्य तम् (**पुत्रः**) (**न**) इव (**पितरम्**) जनकम् (**हुवे**)॥३॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथा रायस्कामोऽहं पुत्रः पितरं न वज्रहस्तं सदक्षिणं राजानं हुवे तथैनं यूयमप्याह्वयत॥३॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। ये मनुष्या यथा पुत्राः पितरमुपासते तथा राजानं ये परिचरन्ति ते सकलैश्वर्यमश्नुवते॥३॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(रायस्कामः)** धनों की कामना करने वाला मैं **(पुत्रः)** पुत्र **(पितरम्)** पिता को जैसे **(न)** वैसे **(वज्रहस्तम्)** शस्त्र और अस्त्रों के पार जाने और **(सुदक्षिणम्)** शुभ दक्षिणा रखने वाला राजा को **(हुवे)** बुलाता हूँ, वैसे तुम भी बुलाओ॥३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जो मनुष्य जैसे पुत्र पिता की उपासना करते हैं, वैसे राजा की जो सेवा करते हैं, वे समस्त ऐश्वर्य पाते हैं॥३॥

**पुना राजादयः किमाचरेयुरित्याह॥**

फिर राजा आदि क्या आचरण करें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**इम इन्द्राय सुन्विरे सोमासो दध्याशिरः।**

**ताँ आ मदाय वज्रहस्त पीतये हरिभ्यां याह्योक आ॥४॥**

**इमे। इन्द्राय। सुन्विरे सोमासः। दधिऽआशिरः। तान्। आ। मदाय। वज्रऽहस्त। पीतये। हरिऽभ्याम्। याहि। ओकः। आ॥४॥**

**पदार्थः**-**(इमे)** **(इन्द्राय)** परमैश्वर्याय **(सुन्विरे)** सुन्वन्त्युत्पादयन्ति **(सोमासः)** प्रेरकाः **(दध्याशिरः)** ये दधत्यश्नन्ति ते **(तान्)** **(आ)** **(मदाय)** आनन्दाय **(वज्रहस्त)** शस्त्रास्त्रपाणे **(पीतये)** पानाय **(हरिभ्याम्)** सुशिक्षिताभ्यामश्वाभ्यां युक्ते रथेन **(याहि)** प्राप्नुहि **(ओकः)** गृहम् **(आ)** समन्तात्॥४॥

**अन्वयः**-हे वज्रहस्त! य इमे दध्याशिरः सोमासो जना मदायेन्द्राय पीतये सुन्विरे महौषधिरसान् सुन्विरे तान् हरिभ्यां युक्तेन रथेनाऽऽयाहि शुभमोक आयाहि॥४॥

**भावार्थः**-ये पुरुषार्थेन विद्याः प्राप्योद्यमं कुर्वन्ति ते राज्यश्रियं लभन्ते॥४॥

**पदार्थः**-हे **(वज्रहस्त)** शस्त्र और अस्त्रों को हाथ में रखने वाले! जो **(इमे)** यह **(दध्याशिरः)** धारण करने और व्याप्त होने वाले **(सोमासः)** प्रेरक जन **(मदाय)** आनन्द और **(इन्द्राय)** परमैश्वर्य के लिये तथा **(पीतये)** पीने को **(सुन्विरे)** अच्छे रसों को उत्पन्न करते हैं **(तान्)** उनको **(हरिभ्याम्)** अच्छी सीख पाये हुए घोड़ों से युक्त रथ से **(आ, याहि)** आओ शुभ **(ओकः)** स्थान को **(आ)** प्राप्त होओ॥४॥

**भावार्थः**-जो पुरुषार्थ से विद्याओं को प्राप्त होकर उद्यम करते हैं, वे राज्यश्री को प्राप्त होते हैं॥४॥

**पुनर्मनुष्याः किं कुर्य्युरित्याह॥**



www.9009.co.in

फिर मनुष्य क्या करें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**श्रवच्छुत्कर्ण ईयते वसूनां नू चिन्नो मर्धिषद्गिरः।**

**सद्यश्चिद्यः सहस्राणि शता ददन्नकिर्दित्सन्तमा मिनत्॥५॥१७॥**

**श्रवत्। श्रुत्ऽकर्णः। ईयते। वसूनाम्। नु। चित्। नः। मर्धिषत्। गिरः। सद्यः। चित्। यः। सहस्राणि। शता। ददत्। नकिः। दित्सन्तम्। आ। मिनत्॥५॥**

**पदार्थः**-(**श्रवत्**) शृणुयात् (**श्रुत्कर्णः**) श्रुतौ कर्णे यस्य सः (**ईयते**) गच्छति (**वसूनाम्**) धनानाम् (**नु**) सद्यः। अत्र **ऋचि तुनुघे**ति दीर्घः। (**चित्**) अपि (**नः**) अस्माकम् (**मर्धिषत्**) अभिकाङ्क्षेत् (**गिरः**) सुशिक्षिता वाचः (**सद्यः**) (**चित्**) अपि (**यः**) (**सहस्राणि**) (**शता**) असंख्यानि (**ददत्**) ददाति (**नकिः**) निषेधे (**दित्सन्तम्**) दातुमिच्छन्तम् (**आ**) (**मिनत्**) हिंस्यात्॥५॥

**अन्वयः**-यः श्रुत्कर्णः सद्यः श्रवन्नो वसूनां गिरश्चिन्नु मर्धिषत्सहस्राणि शतां ददन्नीयते दित्सन्तं नकिरामिनत् स चित्सर्वदा सुखी भवति॥५॥

**भावार्थः**-ये दीर्घेण ब्रह्मचर्येण सर्वा विद्या शृण्वन्ति विद्यासुशिक्षिता वाच इच्छन्त्यन्येभ्योऽतुलं विज्ञानं ददति ते दुःखं नाप्नुवन्ति॥५॥

**पदार्थः**-(**यः**) जो (**श्रुत्कर्णः**) श्रुति में कान रखने वाला (**सद्यः**) शीघ्र (**श्रवत्**) सुने (**नः**) हमारे (**वसूनाम्**) धनों के सम्बन्ध में (**गिरः**) अच्छी शिक्षा की भरी हुई वाणियों को (**चित्**) भी (**नु**) शीघ्र (**मर्धिषत्**) चाहे (**सहस्राणि**) हजारों (**शता**) सैकड़ों पदार्थों को (**ददत्**) देता और (**ईयते**) पहुँचाता है (**दित्सन्तम्**) देना चाहते हुए को (**नकिः**) नहीं (**आ, मिनत्**) विनाशे (**चित्**) वही सर्वदा सुखी होता है॥५॥

**भावार्थः**-जो दीर्घ ब्रह्मचर्य्य से सब विद्याओं को सुनते, अच्छी शिक्षायुक्त वाणियों को चाहते और औरों को अतुल विज्ञान देते हैं, वे दुःख नहीं पाते हैं॥५॥

**पुनर्मनुष्यः कैः सह किं कुर्यादित्याह॥**

फिर मनुष्य किनके साथ क्या करे, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**स वीरो अप्रतिष्कुत इन्द्रेण शूशुवे नृभिः।**

**यस्ते गभीरा सवनानि वृत्रहन्त्सुनोत्या च धावति॥६॥**

**सः। वीरः। अप्रतिऽस्कुतः। इन्द्रेण। शूशुवे। नृऽभिः। यः। ते। गभीरा। सवनानि। वृत्रऽहन्। सुनोति। आ। च। धावति॥६॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**सः**) (**वीरः**) निर्भयः (**अप्रतिष्कुतः**) इतस्ततः कम्परहितः (**इन्द्रेण**) परमैश्वर्येण (**शूशुवे**) उपगच्छति (**नृभिः**) नायकैर्मनुष्यैः (**यः**) (**ते**) तव (**गभीरा**) गभीराणि (**सवनानि**) प्रेरणानि (**वृत्रहन्**) शत्रुहन्तः (**सुनोति**) (**आ**) (**च**) (**धावति**)॥६॥

**अन्वयः**-हे वृत्रहन्! यस्तेऽप्रतिष्कुतो वीरो इन्द्रेण नृभिः सह शूशुवे गभीरा सवनानि सुनोति सद्य आधावति च स एव शत्रून् विजेतुं शक्नोति॥६॥

**भावार्थः**-य उत्तमैः पुरुषैः सहाऽभिसन्धिं दुष्टैः सह वैमनस्यं रक्षन्ति तेऽसंख्यमैश्वर्यमाप्नुवन्ति॥६॥

**पदार्थः**-हे (**वृत्रहन्**) शत्रुओं को मारने वाले (**यः**) जो (**ते**) आपका (**अप्रतिष्कुतः**) इधर उधर से निष्कंप (**वीरः**) निर्भय पुरुष (**इन्द्रेण**) परमैश्वर्य और (**नृभिः**) नायक मनुष्यों के साथ (**शूशुवे**) समीप आता है (**गभीरा**) गम्भीर (**सवनानि**) प्रेरणाओं को (**सुनोति**) उत्पन्न करता है शीघ्र (**आ, धावति, च**) दौड़ता है (**सः**) वही शत्रुओं को जीत सकता है॥६॥

**भावार्थः**-जो उत्तम पुरुषों के साथ सब ओर से मित्रता और दुष्टों के साथ वैमनस्य रखते हैं, वे असंख्य ऐश्वर्य पाते हैं॥६॥

**पुनः स राजा किं कुर्यादित्याह॥**

फिर वह राजा क्या करे, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**भवा वरूथं मघवन् मघोनां यत्समजासि शर्धतः।**

**वि त्वाहतस्य वेदनं भजेमह्या दूणाशो भरा गयम्॥७॥**

**भव। वरूथम्। मघऽवन्। मघोनाम्। यत्। सम्ऽअजासि। शर्धतः। वि। त्वाऽहतस्य। वेदनम्। भजेमहि। आ। दुःऽनशः। भर। गयम्॥७॥**

**पदार्थः**-(**भव**) अत्र **द्व्यचोऽतस्तिङ** इति दीर्घः। (**वरूथम्**) प्रशस्तं गृहम् (**मघवन्**) बहुधनयुक्त (**मघोनाम्**) धनाढ्यानाम् (**यत्**) (**समजासि**) सम्यक्प्राप्नुयाः (**शर्धतः**) बलवतः (**वि**) (**त्वाहतस्य**) त्वया हतस्य (**वेदनम्**) प्रापणम् (**भजेमहि**) सेवेमहि (**आ**) (**दूणाशः**) दुर्लभो नाशो यस्य सः (**भर**) धर। अत्र **द्व्यचोऽतस्तिङ** इति दीर्घः। (**गयम्**) प्रजाम्॥७॥

**अन्वयः**-हे मघवन्निन्द्र राजँस्त्वं यन्मघोनां वरूथमस्ति तत्समजासि त्वाहतस्य शर्धतो वरूथं प्राप्तो भव शर्धतो गयं भर दूणाशः सन् वि भव येन वेदनं वयमा भजेमहि॥७॥

**भावार्थः**-हे राजन्! दुष्टहन्तुस्ते प्रजायां या नीतिस्तदनुकूलानि कर्माणि वयं कुर्याम यतस्त्वमस्मदनुकूलो भवेः॥७॥

**पदार्थः**-हे (**मघवन्**) बहुधनयुक्त राजा! आप (**यत्**) जो (**मघोनाम्**) धनवानों का (**वरूथम्**) प्रशंसित घर है उसे (**समजासि**) अच्छे प्राप्त होओ (**त्वाहतस्य**) तुम्हारे नष्ट किये हुए (**शर्धतः**)



www.9009.co.in

बलवान् के घर को प्राप्त **(भव)** होओ बलवान् के **(गयम्)** प्रजाजनों को **(भर)** धारण पोषण करो और **(दूणाशः)** दुर्लभ है नाश जिसका ऐसे होते हुए **(वि)** विशेषता से प्रसिद्ध हूजिये जिससे **(वेदनम्)** पदार्थों की प्राप्ति को हम लोग **(आ, भजेमहि)** अच्छे सेवें॥७॥

**भावार्थः**-हे राजा! दुष्टों के मारने वाले आपकी प्रजा में जो नीति उसी के अनुकूल कर्म हम लोग करें, जिससे हमारे अनुकूल आप होओ॥७॥

**पुना राज्ञा वैद्यैः किं कारयितव्यमित्याह॥**

फिर राजा को वैद्यों से क्या कराना चाहिये, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**सुनोता सोमपाव्ने सोममिन्द्राय वज्रिणे।**

**पचता पक्तीरवसे कृणुध्वमित्पृणन्नित्पृणते मयः॥८॥**

**सुनोत। सोमऽपाव्ने। सोमम्। इन्द्राय। वज्रिणे। पचत। पक्तीः। अवसे। कृणुध्वम्। इत्। पृणन्। इत्। पृणते। मयः॥८॥**

**पदार्थः**-**(सुनोत)** निष्पादयत। अत्र **संहितायामि**ति दीर्घः। **(सोमापाव्ने)** महौषधिरसम् पात्रे **(सोमम्)** ऐश्वर्यम् **(इन्द्राय)** दुष्टशत्रुविदारकाय **(वज्रिणे)** **(पचत)** अत्र **संहितायामि**ति दीर्घः। **(पक्तीः)** पाकान् **(अवसे)** रक्षणाद्याय **(कृणुध्वम्)** **(इत्)** एव **(पृणन्)** पालयन् **(इत्)** एव **(पृणते)** पालयति **(मयः)** सुखम्॥८॥

**अन्वयः**-हे वैद्यशास्त्रविदो विद्वांसो! यूयं सोमपाव्ने सोमं सुनोता वज्रिण इन्द्राय सोमं सुनोत सर्वेषामवसे पक्तीः पचत कृणुध्वमिद् यथा पृणन् विद्वान् मयः पृणते तथेत्प्रजाभ्यो मयः पृणत॥८॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। ये वैद्याः स्युस्त उत्तमान्यौषधानि प्रशस्तान् रोगनाशकान् रसानुत्तमानन्नपाकाँश्च सर्वान् मनुष्यान् प्रतिशिक्षेरन् येन पूर्णं सुखं स्यात्॥८॥

**पदार्थः**-हे वैद्यशास्त्रवेत्ता विद्वानो! तुम **(सोमपाव्ने)** बड़ी-बड़ी ओषधियों के रस को पीने वाले के लिये **(सोमम्)** ऐश्वर्य्य को **(सुनोता)** उत्पन्न करो **(वज्रिणे)** शस्त्र और अस्त्रों को धारण करने और **(इन्द्राय)** दुष्ट शत्रुओं को विदीर्ण करने वाले के लिये ऐश्वर्य्य को उत्पन्न करो सब की **(अवसे)** रक्षा के लिये **(पक्तीः)** पाकों को **(पचत)** पकाओ **(कृणुध्वम्, इत्)** करो ही जैसे **(पृणन्)** पालना करता हुआ विद्वान् **(मयः)** सुख को **(पृणते)** पालता है, वैसे **(इत्)** ही प्रजाजनों के लिये सुख पालो॥८॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो वैद्य हों वे उत्तम ओषधि, प्रशंसायुक्त रोगनाशक रस और उत्तम अन्न पाकों की सब मनुष्यों के प्रति शिक्षा दें, जिससे पूर्ण सुख हो॥८॥

**पुनमनुष्याः किंवद्वर्तेरन्नित्याह॥**

फिर मनुष्य किसके तुल्य वर्तें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥



www.9009.co.in

**मा स्रेधत सोमिनो दक्षता महे कृणुध्वं राय आतुजे।**

**तरणिरिज्जयति क्षेति पुष्यति न देवासः कवत्नवे॥९॥**

**मा। स्रेधत। सोमिनः। दक्षत। महे। कृणुध्वम्। राये। आऽतुजे। तरणिः। इत्। जयति। क्षेति। पुष्यति। न। देवासः। कवत्नवे॥९॥**

**पदार्थः**-(**मा**) निषेधे (**स्रेधत**) हिंसत (**सोमिनः**) ओषध्यादियुक्तस्यैश्वर्यवतो वा (**दक्षत**) बलं प्राप्नुत। अत्र **संहितायामि**ति दीर्घः। (**महे**) महते (**कृणुध्वम्**) (**राये**) धनाय (**आतुजे**) बलकारकाय (**तरणिः**) पुरुषार्थी (**इत्**) इव (**जयति**) (**क्षेति**) निवसति (**पुष्यति**) (**न**) निषेधे (**देवासः**) विद्वांसः (**कवत्नवे**) कुत्सितकर्मव्यापनाय॥९॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथा देवासः कवत्नवे न प्रवर्तन्ते तथा सोमिन आतुजे महे राय मा स्रेधत दक्षत सुकर्माणि कृणुध्वं यस्तरणिरिदिव जयति क्षेति पुष्यति ते दक्षत॥९॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। येऽन्यायेन कञ्चिन्न हिंसन्ति धर्मात्मानां वृद्धिं सततं कुर्वन्ति ते विद्वांसः सदा विजयन्ते धर्म्ये निवसन्ति पुष्टाश्च जायन्ते॥९॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे (**देवासः**) विद्वान् जन (**कवत्नवे**) कुत्सित कर्म में व्याप्ति के लिये (**न**) नहीं प्रवृत्त होते हैं, वैसे (**सोमिनः**) ओषधी आदि युक्त वा ऐश्वर्यवान् के (**आतुजे**) करने वाले (**महे**) महान् (**राये**) धन के लिये (**मा**) मत (**स्रेधत**) विनाशो (**दक्षत**) बल पाओ सुकर्म (**कृणुध्वम्**) करो जो (**तरणिः**) पुरुषार्थी जन (**इत्**) ही (**जयति**) जीतता (**क्षेति**) जो निरन्तर वसता वा (**पुष्यति**) जो पुष्ट होता, वे सब बल पावें॥९॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जो अन्याय से किसी की हिंसा नहीं करते और धर्मात्माओं की वृद्धि करते हैं, वे विद्वान् जन सर्वदा जीतते, धर्म में निवास करते और पुष्ट होते हैं॥९॥

**पुनः कस्य केन किं स्यादित्याह॥**

फिर किसका किससे क्या हो, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**नकिः सुदासो रथं पर्यास न रीरमत्।**

**इन्द्रो यस्याविता यस्य मरुतो गमत्स गोमति व्रजे॥१०॥१८॥**

**नकिः। सुऽदासः। रथम्। परि। आस। न। रीरमत्। इन्द्रः। यस्य। अविता। यस्य। मरुतः। गमत्। सः। गोऽमति। व्रजे॥१०॥**

**पदार्थः**-(**नकिः**) (**सुदासः**) श्रेष्ठा दासाः सेवका दानानि वा यस्य सः (**रथम्**) (**परि**) सर्वतः (**आस**) अस्यति (**न**) निषेधे (**रीरमत्**) रमयति (**इन्द्रः**) दुष्टानां विदारकः (**यस्य**) (**अविता**) रक्षकः



www.9009.co.in

**(यस्य)** **(मरुतः)** प्राणा इव मनुष्याः **(गमत्)** गच्छति **(सः)** **(गोमति)** गावो बहवो धेनवो विद्यन्ते यस्मिँस्तस्मिन् **(व्रजे)** व्रजन्ति यस्मिँस्तस्मिन् स्थाने॥१०॥

**अन्वयः**-यस्येन्द्रोऽविता गमद्यस्य मरुतो रक्षकाः सन्ति गोमति व्रजे गमत् यस्येन्द्रो रक्षिता नास्ति स सुदासो रथं नकिः पर्यास स न रीरमत्॥१०॥

**भावार्थः**-यदि राजा प्रजाया रक्षको न स्यात्तर्हि कस्यापि सुखं न भवेत्॥१०॥

**पदार्थः**-**(यस्य)** जिसका **(इन्द्रः)** दुष्टों को विदीर्ण करने वाला **(अविता)** रक्षक **(गमत्)** जाता है वा **(यस्य)** जिसके **(मरुतः)** प्राण के मनुष्य रक्षा करने वाले हैं जो **(गोमति)** जिसमें बहुत सी गौयें विद्यमान और **(व्रजे)** जिसमें जाते हैं उस स्थान में जाता है, जिसका दुष्टों का विदीर्ण करने वाला रक्षक नहीं वह **(सुदासः)** श्रेष्ठ सेवक वा दोनों वाला जन **(रथम्)** रथ को **(नकिः)** नहीं **(परि, आस)** सब ओर से अलग करता और **(सः)** वह **(न)** नहीं **(रीरमत्)** दूसरों को रमाता है॥१०॥

**भावार्थः**-यदि राजा प्रजा का रक्षक न हो तो किसी को सुख न हो॥१०॥

**पुना राजप्रजाजनाः परस्परं किं कुर्य्युरित्याह॥**

फिर राजा और प्रजाजन परस्पर क्या करें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**गमद्वाजं वाजयन्निन्द्र मर्त्यो यस्य त्वमविता भुवः।**

**अस्माकं बोध्यविता रथानामस्माकं शूर नृणाम्॥११॥**

**गमत्। वाजम्। वाजयन्। इन्द्र। मर्त्यः। यस्य। त्वम्। अविता। भुवः। अस्माकम्। बोधि। अविता। रथानाम्। अस्माकम्। शूर। नृणाम्॥११॥**

**पदार्थः**-**(गमत्)** प्राप्नोति **(वाजम्)** विज्ञानमन्नादिकं वा **(वाजयन्)** प्राप्तुमिच्छन् **(इन्द्र)** परमैश्वर्ययुक्त राजन् **(मर्त्यः)** मनुष्यः **(यस्य)** **(त्वम्)** **(अविता)** रक्षकः **(भुवः)** भवेः **(अस्माकम्)** **(बोधि)** बुध्यस्व **(अविता)** रक्षकः **(रथानाम्)** यानादीनाम् **(अस्माकम्)** **(शूर)** निर्भयः **(नृणाम्)** मनुष्याणाम्॥११॥

**अन्वयः**-हे शूरेन्द्र! यस्य त्वमविता भुवः स मर्त्यो वाजयन् सन् वाजं गमद्येषामस्माकं रथानामेषामस्माकं नृणां चाऽविता संस्त्वं बोधि ते वयं वाजं प्राप्नुयाम॥११॥

**भावार्थः**-यदा राजा प्रजाः प्रजा राजानञ्च रक्षेत्तदा सर्वेषां यथावद्रक्षा संभवेत्॥११॥

**पदार्थः**-हे **(शूर)** निर्भय **(इन्द्र)** परमैश्वर्ययुक्त राजा! **(यस्य)** जिसके आप **(अविता)** रक्षक **(भुवः)** हों वह **(मर्त्यः)** मनुष्य **(वाजयन्)** पाने की इच्छा करता हुआ **(वाजम्)** विज्ञान वा अन्नादि को **(गमत्)** प्राप्त होता है जिन **(अस्माकम्)** हम लोगों के **(रथानाम्)** रथ आदि के तथा जिन **(अस्माकम्)** हम लोगों के **(नृणाम्)** मनुष्यों के भी **(अविता)** रक्षा करने वाले **(त्वम्)** आप **(बोधि)** समझें वे हम लोग विज्ञान वा अन्न आदि को प्राप्त हों॥११॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-जब राजा प्रजाओं की और प्रजाजन राजाओं की रक्षा करें, तब सब की यथावत् रक्षा का संभव हो॥११॥

**पुनः स राजा किं कुर्य्यादित्याह॥**

फिर वह राजा क्या करे, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**उदिन्नवस्य रिच्यतेंऽशो धनं न जिग्युषः।**

**य इन्द्रो हरिवान्न दभन्ति तं रिपो दक्षं दधाति सोमिनि॥१२॥**

**उत्। इत्। नु। अस्य। रिच्यते। अंशः। धनम्। न। जिग्युषः। यः। इन्द्रः। हरिऽवान्। न। दभन्ति। तम्। रिपः। दक्षम्। दधाति। सोमिनि॥१२॥**

**पदार्थः**-(**उत्**) (**इत्**) (**नु**) (**अस्य**) (**रिच्यते**) अधिको भवति (**अंशः**) भागः (**धनम्**) (**न**) इव (**जिग्युषः**) जयशीलस्य (**यः**) (**इन्द्रः**) समर्थो राजा (**हरिवान्**) बहुप्रशस्तमनुष्ययुक्तः (**न**) निषेधे (**दभन्ति**) हिंसन्ति (**तम्**) (**रिपः**) शत्रवः (**दक्षम्**) बलम् (**दधाति**) (**सोमिनि**) ऐश्वर्यवति॥१२॥

**अन्वयः**-यो हरिवानिन्द्रः सोमिनि दक्षं दधाति तं रिपो न दभन्ति यस्याऽस्य जिग्युषस्तमिदंश उद्रिच्यते तमंशो धनं नेव नु दधाति॥१२॥

**भावार्थः**-यो राजा धनिष्वैश्वर्यं दरिद्रेषु च वर्धयति तं हिंसितुं कोऽपि न शक्नोति यस्याऽधिकः पुरुषार्थो भवति तमेव धनप्रतिष्ठे प्राप्नुतः॥१२॥

**पदार्थः**-(**यः**) जो (**हरिवान्**) बहुत प्रशंसित मनुष्य युक्त (**इन्द्रः**) समर्थ राजा (**सोमिनि**) ऐश्वर्यवान् में (**दक्षम्**) बल (**दधाति**) धारण करता है (**तम्**) उसको (**रिपः**) शत्रुजन (**न**) नहीं (**दभन्ति**) नष्ट करते हैं जिस (**अस्य**) इस (**जिग्युषः**) जयशील के (**इत्**) उस के प्रति (**अंशः**) भाग (**उत् रिच्यते**) अधिक होता है उसको वह भाग (**धनम्**) धन के (**न**) समान (**नु**) शीघ्र धारण करता है॥१२॥

**भावार्थः**-जो राजा धनियों में जो ऐश्वर्य हैं उसे दरिद्रियों में भी बढ़ाता है उसको कोई नष्ट नहीं कर सकता है, जिसका अधिक पुरुषार्थ होता है उसी को धन और प्रतिष्ठा प्राप्त होती है॥१२॥

**पुनः प्रजाः कीदृशं राजानमनुकूला भवन्तीत्याह॥**

फिर प्रजा कैसे राजा के अनुकूल होती है, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**मन्त्रमखर्वं सुधितं सुपेशसं दधात यज्ञियेष्वा।**

**पूर्वीश्चन प्रसितयस्तरन्ति तं य इन्द्रे कर्मणा भुवत्॥१३॥**

**मन्त्रम्। अखर्वम्। सुऽधितम्। सुऽपेशसम्। दधात। यज्ञियेषु। आ। पूर्वीः। चन। प्रऽसितयः। तरन्ति। तम्। यः। इन्द्रे। कर्मणा। भुवत्॥१३॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**मन्त्रम्**) विचारम् (**अखर्वम्**) अनल्पं पूर्णम् (**सुधितम्**) सुष्ठुहितम् (**सुपेशसम्**) सुरूपम् (**दधात**) (**यज्ञियेषु**) राजपालनादिसङ्गतेषु व्यवहारेषु (**आ**) (**पूर्वीः**) प्राचीनाः (**चन**) अपि (**प्रसितयः**) प्रकृष्टानि प्रेमबन्धनानि (**तरन्ति**) प्राप्नुवन्ति (**तम्**) (**यः**) (**इन्द्रे**) राजनि (**सति**) (**कर्मणा**) सत्क्रियया (**भुवत्**) भवेत्॥१३॥

**अन्वयः**-ये यज्ञियेष्वखर्वं सुधितं सुपेशसं मन्त्रं दधात यः कर्मणेन्द्रे भुवत्तं पूर्वीः प्रसितयश्चना तरन्ति॥१३॥

**भावार्थः**-येषां राज्ञां गूढो विचारः सर्वहितकरणं श्रेष्ठप्रयत्नश्च भवति ते सत्क्रियया सर्वाः प्रजाः प्रेमास्पदेन रञ्जयितुं शक्नुवन्ति॥१३॥

**पदार्थः**-जो (**यज्ञियेषु**) राजपालनादि कामों से संग रखते हुए व्यवहारों में (**अखर्वम्**) पूर्ण (**सुधितम्**) सुन्दरता से स्थापित (**सुपेशसम्**) सुरूपम् (**मन्त्रम्**) विचार को (**दधात**) धारण करें। (**यः**) जो (**कर्मणा**) उत्तम क्रिया से (**इन्द्रे**) राजा के निमित्त (**भुवत्**) प्रसिद्ध हो (**तम्**) उसको (**पूर्वीः**) प्राचीन (**प्रसितयः**) प्रकृष्ट प्रेमबन्धन (**चन**) भी (**आ, तरन्ति**) प्राप्त होते हैं॥१३॥

**भावार्थः**-जिन राजाओं का गूढ़ विचार सर्वहित करना और श्रेष्ठ यत्न होता है, वे अच्छी क्रिया से सब प्रजाजनों को प्रेमास्मपद से प्रसन्न कर सकते हैं॥१३॥

**पुनर्मनुष्यः केन रक्षितः कीदृशो भवतीत्याह॥**

फिर मनुष्य किससे रक्षा पाया हुआ कैसा होता है, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**कस्तमि॑न्द्र त्वाव॑सु॒मा मर्त्यो॑ दधर्षति।**

**श्र॒द्धा इत्ते॑ मघव॒न् पार्ये॑ दि॒वि वा॒जी वाजं॑ सिषासति॥१४॥**

**कः। तम्। इ॒न्द्र॒। त्वाऽव॑सुम्। आ। मर्त्यः॑। द॒ध॒र्ष॒ति॒। श्र॒द्धा। इत्। ते॒। म॒घ॒ऽव॒न्। पार्ये॑। दि॒वि। वा॒जी। वाज॑म्। सि॒सा॒स॒ति॒॥१४॥**

**पदार्थः**-(**कः**) (**तम्**) (**इन्द्र**) धार्मिक राजन् (**त्वावसुम्**) त्वया प्राप्तधनम् (**आ**) (**मर्त्यः**) (**दधर्षति**) तिरस्करोति (**श्रद्धा**) सत्ये प्रीतिः (**इत्**) एव (**ते**) तव (**मघवन्**) बह्वैश्वर्य (**पार्ये**) पालनीये पूर्णे वा (**दिवि**) प्रकाशे (**वाजी**) विज्ञानवान् (**वाजम्**) विज्ञानम् (**सिषासति**) विभक्तुमिच्छति॥१४॥

**अन्वयः**-हे मघवन्निन्द्र को मर्त्यो तं त्वावसुं दधर्षति ते पार्ये दिवि को वाजी वाजं श्रद्धा श्रदामिदासिषासति॥१४॥

**भावार्थः**-यस्य रक्षां धार्मिको राजा करोति तं तिरस्कर्तुं कः शक्नोति॥१४॥

**पदार्थः**-हे (**मघवन्**) बहुत ऐश्वर्य वाले (**इन्द्र**) धार्मिक राजा! (**कः**) कौन (**मर्त्यः**) मनुष्य (**तम्**) उस (**त्वावसुम्**) तुम से पाये हुए धन वाले का (**दधर्षति**) तिरस्कार करता है (**ते**) आपके (**पार्ये**) पालना करने योग्य वा पूर्ण (**दिवि**) प्रकाश में कौन (**वाजी**) विज्ञानवान् (**वाजम्**) विज्ञान को तथा (**श्रद्धा**) सत्य में प्रीति श्रद्धा (**इत्**) ही को (**आ, सिषासति**) अलग करना चाहता है॥१४॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-जिसकी रक्षा धार्मिक राजा करता है, उसका तिरस्कार कौन कर सकता है॥१४॥

**पुनः स राजा किं कुर्य्यादित्याह॥**

फिर वह राजा क्या करे, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**म॒घोन॑ः स्म वृत्र॒हत्ये॑षु चोदय॒ ये दद॑ति प्रि॒या वसु॑।**

**तव॒ प्रणी॑ती हर्यश्व सू॒रिभि॒र्विश्वा॑ तरेम दुरि॒ता॥१५॥१९॥**

**म॒घोन॑ः। स्म॒। वृ॒त्र॒ऽहत्ये॑षु। चो॒द॒य॒। ये। दद॑ति। प्रि॒या। वसु॑। तव॑। प्रऽनी॑ती। ह॒रि॒ऽअ॒श्व॒। सू॒रिऽभि॑ः। विश्वा॑। त॒रे॒म॒। दु॒ःऽइ॒ता॥१५॥**

**पदार्थः**-(**मघोनः**) धनाढ्यान् (**स्म**) एव (**वृत्रहत्येषु**) वृत्राणां शत्रूणां हत्या येषु सङ्ग्रामेषु तेषु (**चोदय**) प्रेरय (**ये**) (**ददति**) (**प्रिया**) प्रियाणि कमनीयानि (**वसु**) धनानि (**तव**) (**प्रणीति**) प्रकृष्टया नीत्या रक्षिताः सन्तः (**हर्यश्व**) हरयोऽश्वा महान्तो मनुष्या यस्य तत्सम्बुद्धौ (**सूरिभिः**) विद्वद्भिः सह (**विश्वा**) सर्वाणि (**तरेम**) (**दुरिता**) दुःखानि॥१५॥

**अन्वयः**-हे हर्यश्व! सूरिभिस्सह ये तव प्रणीती प्रिया वसु ददति तान् ये च तव प्रणीती सूरिभिः सह वयं विश्वा दुरिता तरेम ताँश्च त्वं वृत्रहत्येषु मघोनः स्म चोदय॥१५॥

**भावार्थः**-हे राजन्! भवान् यदि पक्षपातं विहाय सर्वान् रक्षेदुदारान् धनाढ्यान् सङ्ग्रामेषु प्रेरयेत्तर्हि सर्वे वयं सर्वाणि दुःखानि तरेम॥१५॥

**पदार्थः**-हे (**हर्यश्व**) हरणशील महान् घोड़ों वाले मनुष्य! (**सूरिभिः**) विद्वानों के साथ (**ये**) जो (**तव**) आपकी (**प्रणीती**) उत्तम नीति से (**प्रिया**) प्रिय मनोहर (**वसु**) धनों को (**ददति**) देते हैं उनको और जो आपकी उत्तम नीति और विद्वानों के साथ हम लोग (**विश्वा**) सब (**दुरिता**) दुःखों को (**तरेम**) तरें उन्हें भी आप (**वृत्रहत्येषु**) शत्रुओं की हिंसा जिनमें होती है उनमें (**मघोनः**) धनाढ्य करने (**स्म**) ही को (**चोदय**) प्रेरणा देओ॥१५॥

**भावार्थः**-हे राजा! आप यदि पक्षपात को छोड़ के सबकी रक्षा करें और उदार धनाढ्यों को संग्राम में प्रेरणा दें तो सब हम लोग सब दुःखों को तरें॥१५॥

**पुनः स राजा कीदृशः स्यादित्याह॥**

फिर वह राजा कैसा हो, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**तवेदि॑न्द्राव॒मं वसु॒ त्वं पु॑ष्यसि मध्य॒मम्।**

**स॒त्रा विश्व॑स्य पर॒मस्य॑ राजसि॒ नकि॑ष्ट्वा॒ गोषु॑ वृण्वते॥१६॥**

**तव॑। इत्। इ॒न्द्र॒। अ॒व॒मम्। वसु॑। त्वम्। पु॒ष्य॒सि॒। म॒ध्य॒मम्। स॒त्रा। विश्व॑स्य। प॒र॒मस्य॑। रा॒ज॒सि॒। नकि॑ः। त्वा॒ गोषु॑। वृ॒ण्व॒ते॒॥१६॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**तव**) (**इत्**) (**इन्द्र**) (**अवमम्**) निकृष्टं रक्षकं वा (**वसु**) द्रव्यम् (**त्वम्**) (**पुष्यसि**) (**मध्यमम्**) मध्ये भवम् (**सत्रा**) सत्यम् (**विश्वस्य**) समग्रस्य (**परमस्य**) उत्कृष्टस्य (**राजसि**) (**नकिः**) निषेधे (**त्वा**) त्वाम् (**गोषु**) पृथिवीषु (**वृण्वते**) स्वीकुर्वन्ति॥१६॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! यत्तवाऽवमं मध्यमं वस्वस्ति येन त्वं पुष्यसि यस्य विश्वस्य परमस्य धनस्य मध्ये सत्रा त्वं राजसि तत्र गोषु च त्वा केऽपि शत्रवो नकिरिद् वृण्वते॥१६॥

**भावार्थः**-हे राजँस्त्वं सदैव निकृष्टमध्यमोत्तमानां धनानां न्यायेनैव सञ्चयं कुर्य्याः यस्य धर्मजत्वात् सत्यं धनं वर्तते तं किमपि दुःख नाप्नोति॥१६॥

**पदार्थः**-हे (**इन्द्र**) परमैश्वर्यवान्! जो (**तव**) आपका (**अवमम्**) निकृष्ट वा रक्षा करने वाला और (**मध्यमम्**) मध्यम (**वसु**) धन है जिससे (**त्वम्**) आप (**पुष्यसि**) पुष्ट होते जिस (**विश्वस्य**) समग्र (**परमस्य**) उत्तम धन के बीच (**सत्रा**) सत्य आप (**राजसि**) प्रकाशित होते हैं उसमें और (**गोषु**) पृथिवियों में (**त्वा**) आपको कोई भी शत्रु जन (**नकिः**) न (**इत्**) ही (**वृण्वते**) स्वीकार करते हैं॥१६॥

**भावार्थः**-हे राजा! आप सदैव निकृष्ट, मध्यम और उत्तम धनों का न्याय से ही संचय करो, जिसका धर्म्म से उत्पन्न होने से सत्य धन वर्त्तमान है, उसको कोई दुःख नहीं प्राप्त होता है॥१६॥

**पुनः स राजा कीदृशो भवेदित्याह॥**

फिर वह राजा कैसा हो, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**त्वं विश्वस्य धनदा असि श्रुतो य ईं भवन्त्याजयः।**

**तवायं विश्वः पुरुहूत पार्थिवोऽवस्युर्नाम भिक्षते॥१७॥**

**त्वम्। विश्वस्य। धनऽदाः। असि। श्रुतः। ये। ईम्। भवन्ति। आजयः। तव। अयम्। विश्वः। पुरुऽहूत। पार्थिवः। अवस्युः। नाम। भिक्षते॥१७॥**

**पदार्थः**-(**त्वम्**) (**विश्वस्य**) समग्रस्य राष्ट्रस्य (**धनदाः**) यो धनं ददाति सः (**असि**) (**श्रुतः**) प्रसिद्धकीर्त्तिः (**ये**) (**ईम्**) सर्वतः (**भवन्ति**) (**आजयः**) सङ्ग्रामाः (**तव**) (**अयम्**) (**विश्वः**) सर्वो जनः (**पुरुहूत**) बहुभिः प्रशंसित स्वीकृत (**पार्थिवः**) पृथिव्यां विदितः (**अवस्युः**) आत्मनोऽवो रक्षामिच्छुः (**नाम**) प्रसिद्धं रक्षणम् (**भिक्षते**) याचते॥१७॥

**अन्वयः**-हे पुरुहूत! यः श्रुतः पार्थिवस्त्वं विश्वस्य धनदा असि यस्य तवायं विश्वोऽवस्युर्जनो नाम त्वद्रक्षणं भिक्षते य ईमाजयो भवन्ति तत्र सर्वे त्वत्सहायमिच्छन्ति ताँस्त्वं सततं रक्ष॥१७॥

**भावार्थः**-यो राजा सङ्ग्रामे विजयकर्तृभ्यः पुष्कलं धनं ददाति तस्य पराजयः कदापि न भवति यः प्रजाजनो रक्षणमिच्छेत्तस्य रक्षां यः सततं करोति स एव पुण्यकीर्तिर्भवति॥१७॥

**पदार्थः**-हे (**पुरुहूत**) बहुतों से प्रशंसा को प्राप्त स्वीकार किये हुए राजन्! जो (**श्रुतः**) प्रसिद्ध कीर्तियुक्त (**पार्थिवः**) पृथिवी पर विदित (**त्वम्**) आप (**विश्वस्य**) समग्र राज्य के (**धनदाः**) धन देने



www.9009.co.in

वाले **(असि)** हैं जिन **(तव)** आपका **(अयम्)** यह **(विश्वः)** सर्व **(अवस्युः)** अपने को रक्षा चाहने वाला जन **(नाम)** प्रसिद्ध तुम से रक्षा को **(भिक्षते)** मांगता है **(ये)** जो **(ईम्)** सब ओर से **(आजयः)** संग्राम **(भवन्ति)** होते हैं, उनमें सब तुम्हारे सहाय को चाहते हैं, उनकी आप निरन्तर रक्षा करें॥१७॥

**भावार्थः**-जो राजा संग्राम में विजय करने वालों को बहुत धन देता है, उसका पराजय कभी नहीं होता है, जो प्रजाजन रक्षा चाहें उसकी रक्षा जो निरन्तर करता है, वही पुण्यकीर्ति होता है॥१७॥

**पुना राजपुरुषैः किमेष्टव्यमित्याह॥**

फिर राजपुरुषों को क्या चाहना योग्य है, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**यदिन्द्र यावतस्त्वमेतावदहमीशीय।**

**स्तोतारमिद्दिधिषेय रदावसो न पापत्वाय रासीय॥१८॥**

**यत्। इन्द्र। यावतः। त्वम्। एतावत्। अहम्। ईशीय। स्तोतारम्। इत्। दिधिषेय। रदवसो इति रदऽवसो। न। पापऽत्वाय। रासीय॥१८॥**

**पदार्थः**-**(यत्)** यः **(इन्द्र)** परमैश्वर्यप्रदातः **(यावतः)** **(त्वम्)** **(एतावत्)** **(अहम्)** **(ईशीय)** ईश्वरः समर्थो भवेयम् **(स्तोतारम्)** **(इत्)** एव **(दिधिषेय)** धरेयम् **(रदावसो)** यो रदेषु विलेखनेषु वसति तत्सम्बुद्धौ **(न)** निषेधे **(पापत्वाय)** पापस्य भावाय **(रासीय)** दद्याम्॥१८॥

**अन्वयः**-हे रदावस इन्द्र! यद्यस्त्वं यावत ईशिषे एतावदहमपीशीय स्तोतारमिद्दिधिषेय पापत्वाय नाहं रासीय॥१८॥

**भावार्थः**-हे राजन्! यदि भवानस्मान्सततं रक्षेत् तर्हि वयं भवतो राष्ट्रस्य च रक्षां विधाय पापाचारं त्यक्त्वाऽन्यानप्यधर्माचारात् पृथग्रक्ष्य सततमानन्देम॥१८॥

**पदार्थः**-हे **(रदावसो)** करोदनों में वसने वाले **(इन्द्र)** परम ऐश्वर्य्य के देने वाले! **(यत्)** जो **(त्वम्)** आप **(यावतः)** जितने के ईश्वर हों **(एतावत्)** इतने का मैं **(ईशीय)** ईश्वर हूँ समर्थ होऊँ **(स्तोतारम्)** प्रशंसा करने वाले को **(इत्)** ही **(दिधिषेय)** धारण करूं और **(पापत्वाय)** पाप होने के लिए पदार्थ **(न)** न **(अहम्)** मैं **(रासीय)** देऊं॥१८॥

**भावार्थः**-हे राजा! यदि आप हम लोगों की निरन्तर रक्षा करें तो हम आपके राज्य को रक्षा कर पापाचरण त्याग औरों को भी अधर्माचरण से अलग रख कर निरन्तर आनन्द करें॥१८॥

**पुनः प्रजाजनैः किमेष्टव्यमित्याह॥**

फिर प्रजाजनों को क्या चाहने योग्य है, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**शिक्षेयमिन्महयते दिवेदिवे राय आ कुहचिद्विदे।**

**नहि त्वदन्यन्मघवन्न आप्यं वस्यो अस्ति पिता चन॥१९॥**



www.9009.co.in

**शिक्षेयम्। इत्। महऽयते। दिवेऽदिवे। रायः। आ। कुहचित्ऽविदे। नहि। त्वत्। अन्यत्। मघऽवन्। नः। आप्यम्। वस्यः। अस्ति। पिता। चन॥१९॥**

**पदार्थः**-(**शिक्षेयम्**) सुशिक्षां कुर्याम् (**इत्**) एव (**महयते**) महते (**दिवेदिवे**) (**राये**) धनाय (**आ**) समन्तात् (**कुहचिद्विदे**) यः कुह क्वचिदपि विन्दति तस्मै (**नहि**) (**त्वत्**) (**अन्यत्**) (**मघवन्**) पूजितधनयुक्त (**नः**) अस्माकम् (**आप्यम्**) आप्तुं योग्यम् (**वस्यः**) वशीयः (**अस्ति**) (**पिता**) (**चन**) अपि॥१९॥

**अन्वयः**-हे मघवन्निन्द्र! योऽहं दिवेदिव आ कुहचिद्विदे महयते राये शिक्षेयं त्वदन्यद्रक्षकं न जानीयां यस्त्वं पिता चनासि स त्वमिन्नो वस्य आप्यमन्यन्नह्यस्ति॥१९॥

**भावार्थः**-त एव भृत्या उत्तमाः सन्ति ये राजानं स्वस्वामिनं विहायाऽन्यं न याचन्ते नादत्तं गृह्णन्ति प्रतिदिनं पुरुषार्थेन प्रजारक्षणं धनवृद्धिं च चिकीर्षन्ति॥१९॥

**पदार्थः**-हे (**मघवन्**) पूजित धनयुक्त परमैश्वर्य्यवान्! जो मैं (**दिवेदिवे**) प्रकाश प्रकाश के लिये (**आ, कुहचिद्विदे**) जो कहीं भी प्राप्त होता उस (**महयते**) महान् (**राये**) धन के लिये (**शिक्षेयम्**) अच्छी शिक्षा करूं (**त्वत्**) तुम से (**अन्यत्**) और रक्षक को न जानूं जो आप (**पिता**) पिता रक्षा करने वाले (**चन**) भी हैं इस कारण सो आप (**इत्**) ही (**नः**) हमारे (**वस्यः**) अत्यन्त वश (**आप्यम्**) प्राप्त होने के योग्य हैं और (**नहि**) नहीं (**अस्ति**) है॥१९॥

**भावार्थः**-वे ही भृत्य उत्तम हैं जो राजा वा स्वामी को छोड़ के दूसरे को **[**=से**]** नहीं जांचते **[**=मांगते**]** न विना दिये लेते, प्रतिदिन पुरुषार्थ से प्रजा की रक्षा कर और धनवृद्धि करना चाहते हैं॥१९॥

**पुना राजप्रजाजनाः परस्परं कथं वर्तेरन्नित्याह॥**

फिर राजा और प्रजाजन परस्पर कैसे वर्तें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**तरणिरित्सिषासति वाजं पुरंध्या युजा।**
**आ व इन्द्रं पुरुहूतं नमे गिरा नेमिं तष्टेव सुद्र्वम्॥२०॥२०॥**

**तरणिः। इत्। सिसासति। वाजम्। पुरम्ऽध्या। युजा। आ। वः। इन्द्रम्। पुरुऽहूतम्। नमे। गिरा। नेमिम्। तष्टाऽइव। सुऽद्र्वम्॥२०॥**

**पदार्थः**-(**तरणिः**) तारकः (**इत्**) एव (**सिषासति**) सम्भक्तुमिच्छति (**वाजम्**) धनं विज्ञानं वा (**पुरन्ध्या**) या पुरूनर्थान् दधाति तया प्रज्ञया (**युजा**) योगयुक्तया (**आ**) (**वः**) युष्माकम् (**इन्द्रम्**) परमैश्वर्यम् (**पुरुहूतम्**) बहुभिः स्तुतम् (**नमे**) नमामि (**गिरा**) वाण्या (**नेमिम्**) चक्रम् (**तष्टेव**) तक्षेव (**सुद्रवम्**) यः सुष्ठु द्रवति गच्छति धावति तम्॥२०॥

**अन्वयः**-यस्तरणिरिद्राजा युजा पुरन्ध्या वाजं सिषासति तं वः पुरहूतमिन्द्रं सुद्रवं नेमिं तष्टेव गिरा आ नमे॥२०॥



www.9009.co.in

**भावार्थः-**यो राजा पूर्णाभ्यां विद्याविनयाभ्यां धर्म्येण च सत्यासत्ये विभज्य न्यायं करोति तं वयं सर्वे नमेम यथा तक्षा रथादिकं रचयति तथैव वयं सर्वाणि कार्याणि रचयेम॥२०॥

**पदार्थः**-जो **(तरणिः)** तारने वाला **(इत्)** ही राजा **(युजा)** योगयुक्त **(पुरन्ध्या)** बहुत अर्थों को धारण करने वाली बुद्धि से **(वाजम्)** धन वा विज्ञान को **(सिषासति)** अच्छे प्रकार बांटने की इच्छा करता है उस **(वः)** तुम्हारे **(पुरुहूतम्)** बहुतों से स्तुति को पाये हुए **(इन्द्रम्)** परमैश्वर्य्यवान् को **(सुद्रवम्)** अच्छे प्रकार दौड़ने वाले **(नेमिम्)** पहिये को **(तष्टेव)** बढ़ई जैसे, वैसे **(गिरा)** वाणी से **(आ, नमे)** अच्छे प्रकार नमता हूँ॥२०॥

**भावार्थः**-जो राजा पूर्ण विद्या और विनय तथा धर्मयुक्त व्यवहार से सत्य और असत्य को अलग कर न्याय करता है, उसको हम सब लोग नमते हैं जैसे बढ़ई रथादि को बनाता है, वैसे हम लोग सब कामों को रचें॥२०॥

**पुनर्मनुष्या धनप्राप्तये किं किं कर्म कुर्य्युरित्याह॥**

फिर मनुष्य धन की प्राप्ति के लिये क्या-क्या कर्म करें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**न दुष्टुती मर्त्यो विन्दते वसु न स्रेधन्तं रयिर्नशत्।**
**सुशक्तिरिन्मघवन्तुभ्यं मावते देष्णं यत्पार्ये दिवि॥२१॥**

**न। दुःऽस्तुती। मर्त्यः। विन्दते। वसु। न। स्रेधन्तम्। रयिः। नशत्। सुऽशक्तिः। इत्। मघऽवन्। तुभ्यम्। माऽवते। देष्णम्। यत्। पार्ये। दिवि॥२१॥**

**पदार्थः**-**(न)** निषेधे **(दुष्टुती)** दुष्टया प्रशंसया **(मर्त्यः)** मनुष्यः **(विन्दते)** प्राप्नोति **(वसु)** धनम् **(न)** निषेधे **(स्रेधन्तम्)** हिंसन्तम् **(रयिः)** श्रीः **(नशत्)** प्राप्नोति **(सुशक्तिः)** शोभना चासौ शक्तिश्च सुशक्तिः **(इत्)** एव **(मघवन्)** परमपूजितधनयुक्त **(तुभ्यम्)** **(मावते)** मत्सदृशाय **(देष्णम्)** दातुं योग्यम् **(यत्)** **(पार्ये)** पालयितुं पूरयितुं योग्ये **(दिवि)** कामे॥२१॥

**अन्वयः**-हे मघवन्! यथा मर्त्यो दुष्टुती वसु न विन्दते स्रेधन्तं नरं रयिः सुशक्तिरिन्न नशदेवं मावते तुभ्यं पार्ये दिवि यद्देष्णं न नशत् तदन्यमपि न प्राप्नोति॥२१॥

**भावार्थः-**येऽधर्माचारा दुष्टा हिंस्रा मनुष्याः सन्ति तान् धनं राज्यं श्रीरुत्तमं सामर्थ्यं च न प्राप्नोति तस्मात् सर्वैर्न्यायाचारेणैव धनमन्वेषणीयम्॥२१॥

**पदार्थः**-हे **(मघवन्)** परमपूजित धनयुक्त! जैसे **(मर्त्यः)** मनुष्य **(दुष्टुती)** दुष्ट प्रशंसा से **(वसु)** धन को **(न)** न **(विन्दते)** प्राप्त होता है **(स्रेधन्तम्)** और हिंसा करने वाले मनुष्य को **(रयिः)** लक्ष्मी और **(सुशक्तिः)** सुन्दर शक्ति **(इत्)** ही **(न)** नहीं **(नशत्)** प्राप्त होती है इस प्रकार **(मावते)**



www.9009.co.in

मेरे समान **(तुभ्यम्)** तुम्हारे लिये **(पार्ये)** पालना वा पूर्णता करने के योग्य **(दिवि)** काम में **(यत्)** जो **(देष्णम्)** देने योग्य को न प्राप्त होता वह और को भी नहीं प्राप्त होता है॥११॥

**भावार्थः**-जो अधर्माचरण से युक्त दुष्ट, हिंसक मनुष्य हैं उनको धन, राज्य, और उत्तम सामर्थ्यं नहीं प्राप्त होता है, इससे सबको न्याय के आचरण से ही धन खोजना चाहिये॥२१॥

**पुनरस्य जगतः कः स्वामीत्याह॥**

फिर इस जगत् का स्वामी कौन है, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अभि त्वा शूर नोनुमोऽदुग्धा इव धेनवः।**

**ईशानमस्य जगतः स्वर्दृशमीशानमिन्द्र तस्थुषः॥२२॥**

**अभि। त्वा। शूर। नोनुमः। अदुग्धाःऽइव। धेनवः। ईशानम्। अस्य। जगतः। स्वःऽदृशम्। ईशानम्। इन्द्र। तस्थुषः॥२२॥**

**पदार्थः**-**(न) (अभि) (त्वा)** त्वाम् **(शूर)** पापाचाराणां हिंसकः **(नोनुमः)** भृशं नमामः **(अदुग्धाइव)** दुग्धरहिता इव **(धेनवः)** गावः **(ईशानम्)** ईषणशीलम् **(अस्य) (जगतः)** संसारस्य **(स्वर्दृशम्)** सुखं द्रष्टुम् **(ईशानम्)** निर्मातारम् **(इन्द्र)** परमैश्वर्ययुक्त **(तस्थुषः)** स्थावरस्य॥२२॥

**अन्वयः**-हे शूरेन्द्र परमात्मन्नस्य जगत ईशानमस्य तस्थुष ईशानं त्वा त्वां स्वर्दृशं धेनवोऽदुग्धा इव वयमभि नोनुमः॥२२॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यदि सततं सुखेच्छा स्यात्तर्हि परमात्मानमेव भवन्त उपासीरन्॥२२॥

**पदार्थः**-हे **(शूर)** पापाचरणों के हिंसक **(इन्द्र)** परमैश्वर्ययुक्त परमात्मा! **(अस्य)** इस **(जगतः)** जङ्गम के **(ईशानम्)** चेष्टा कराने और **(तस्थुषः)** स्थावर संसार के **(ईशानम्)** निर्माण करने वाले **(त्वा)** आपको **(स्वर्दृशम्)** सुखपूर्वक देखने को **(धेनवः)** गौवें **(अदुग्धाइव)** दूधरहित हों जैसे, वैसे हम लोग **(अभि, नोनुमः)** सब ओर से निरन्तर नमते प्रणाम करते हैं॥२२॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे मनुष्य! यदि निरन्तर सुखेच्छा हो तो परमात्मा ही की आप लोग उपासना करें॥२२॥

**परमेश्वरेण तुल्योऽधिको वा कोऽपि नास्तीत्याह॥**

परमेश्वर के तुल्य वा अधिक कोई नहीं है, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**न त्वावाँ अन्यो दिव्यो न पार्थिवो न जातो न जनिष्यते।**

**अश्वायन्तो मघवन्निन्द्र वाजिनो गव्यन्तस्त्वा हवामहे॥२३॥**



www.9009.co.in

**न। त्वाऽवा॑न्। अ॒न्यः। दि॒व्यः। न। पार्थि॑वः। न। जा॒तः। न। ज॒नि॒ष्य॒ते॒। अ॒श्व॒ऽयन्तः॑। म॒घ॒ऽव॒न्। इ॒न्द्र॒। वा॒जिनः॑। ग॒व्यन्तः॑। त्वा॒। ह॒वा॒म॒हे॒॥२३॥**

**पदार्थः**-(**न**) निषेधे (**त्वावान्**) त्वया सदृशः (**अन्यः**) (**दिव्यः**) शुद्धस्वरूपः (**नः**) (**पार्थिवः**) पृथिव्यां विदितः (**न**) (**जातः**) उत्पन्नः (**न**) (**जनिष्यते**) उत्पत्स्यते (**अश्वायन्तः**) महतो विदुषः कामयमानाः (**मघवन्**) बहुधनयुक्त (**इन्द्र**) परमैश्वर्यप्रद जगदीश्वर (**वाजिनः**) विज्ञानाऽन्नवन्तः (**गव्यन्तः**) आत्मनो गां सुशिक्षितां वाचमुत्तमां भूमिं वेच्छन्तः (**त्वा**) त्वाम् (**हवामहे**) प्रशंसामहे॥२३॥

**अन्वयः**-हे मघवन्निन्द्र! यतः कोऽपि पदार्थो न त्वावानन्यो दिव्यः पदार्थोऽस्ति न पार्थिवोऽस्ति न जातोऽस्ति न जनिष्यते तस्मात्त्वाऽश्वायन्तो वाजिनो गव्यन्तो वयं हवामहे॥२३॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यस्मात्परमेश्वरेण तुल्योऽधिकोऽन्यः पदार्थः कोऽपि नास्ति नोत्पन्न आसीन्न चैव कदाचिदुत्पत्स्यते तस्मादेव तस्योपासनं प्रशंसां च वयं नित्यं कुर्याम॥२३॥

**पदार्थः**-हे (**मघवन्**) बहुधनयुक्त (**इन्द्र**) परम ऐश्वर्य देने वाले जगदीश्वर! जिससे कोई पदार्थ (**न**) न (**त्वावान्**) आपके सदृश (**अन्यः**) और (**दिव्यः**) शुद्धस्वरूप पदार्थ है (**न**) न (**पार्थिवः**) पृथिवी पर जाना हुआ है (**न**) न (**जातः**) उत्पन्न हुआ है (**न**) न (**जनिष्यते**) उत्पन्न होगा इससे (**त्वा**) आपकी (**अश्वायन्तः**) महान् विद्वानों की कामना करने वाले (**वाजिनः**) विज्ञान और अन्न वाले और (**गव्यन्तः**) अपने को उत्तम वाणी वा उत्तम भूमि की इच्छा करने वाले हम लोग (**हवामहे**) प्रशंसा करते हैं॥२३॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जिस कारण परमेश्वर से तुल्य अधिक अन्य पदार्थ कोई नहीं न उत्पन्न हुआ न कभी भी उत्पन्न होगा, इससे ही उसकी उपासना और प्रशंसा हम लोग नित्य करें॥२३॥

**पुनः स परमेश्वरः कीदृशोऽस्तीत्याह॥**

फिर वह परमेश्वर कैसा है, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अ॒भी ष॒तस्तदा भ॒रेन्द्र॒ ज्याय॒ः कनीयसः।**

**पु॒रु॒वसु॒र्हि म॑घवन्त्स॒नादसि॒ भरे॑भरे च॒ हव्यः॑॥२४॥**

**अ॒भि। स॒तः। तत्। आ। भ॒र॒। इन्द्र॑। ज्याय॑ः। कनी॑यसः। पु॒रु॒ऽवसुः॑। हि। म॒घ॒ऽव॒न्। स॒नात्। असि॑। भरे॑ऽभरे। च॒। हव्यः॑॥२४॥**

**पदार्थः**-(**अभि**) अत्र **निपातस्य चे**ति दीर्घः। (**सतः**) विद्यमानस्य (**तत्**) चेतनं ब्रह्म (**आ**) (**भर**) (**इन्द्र**) ऐश्वर्ययुक्तजीव (**ज्यायः**) अतिशयेन ज्येष्ठम् (**कनीयसः**) अतिशयेन कनिष्ठात् (**पुरुवसुः**) पुरूणां बहूनां वासयिता (**हि**) यतः (**मघवन्**) सकलैश्वर्यधनयुक्त (**सनात्**) सनातन (**असि**) (**भरेभरे**) पालनीये व्यवहारे (**च**) (**हव्यः**) स्तोतुमर्हः॥२४॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे मघवन्निन्द्र! हि यतस्त्वं भरेभरे सनाद्धव्यः पुरुवसुरसि तस्मात्सतस्तत्कनीयसो ज्यायो ब्रह्म भरेभरे चाऽभि भर॥२४॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यः परमात्मा अणोरणीयान् महतो महीयान् सनातनः सर्वाधारः सर्वव्यापकस्सर्वैरुपासनीयोऽस्ति तदाऽऽश्रयमेव सर्वे कुर्वन्तु॥२४॥

**पदार्थः**-हे **(मघवन्)** सकलैश्वर्य और धनयुक्त **(इन्द्र)** साधारणतया ऐश्वर्ययुक्त **(हि)** जिससे आप **(भरेभरे)** पालना करने योग्य व्यवहार में **(सनात्)** सनातन **(हव्यः)** स्तुति करने योग्य **(पुरुवसुः)** बहुतों के वसाने वाले **(असि)** हैं इससे **(सतः)** विद्यमान **(तत्)** उस चेतन ब्रह्म **(कनीयसः)** अतीव कनिष्ठ के **(ज्यायः)** अत्यन्त ज्येष्ठ प्रशंसनीय ब्रह्म को **[(भरे)]** पालनीय व्यवहार में **(च)** भी **(आ, अभि, भर)** सब ओर से धारण करो॥२४॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो परमात्मा अणु से अणु, सूक्ष्म से सूक्ष्म, बड़े से बड़ा सनातन सर्वाधार सर्वव्यापक सब की उपासना करने योग्य है, उसी का आश्रय सब करें॥२४॥

**पुनः स राजा कीदृशो भवेदित्याह॥**

फिर वह राजा कैसा हो, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**परा णुदस्व मघवन्नमित्रान्त्सुवेदा नो वसू कृधि।**

**अस्माकं बोध्यविता महाधने भवा वृधः सखीनाम्॥२५॥**

**परा। नुदस्व। मघऽवन्। अमित्रान्। सुऽवेदाः। नः। वसु। कृधि। अस्माकम्। बोधि। अविता। महाऽधने। भव। वृधः। सखीनाम्॥२५॥**

**पदार्थः**-**(परा) (णुदस्व)** प्रेरय **(मघवन्)** बहुधनयुक्त राजन् **(अमित्रान्)** शत्रून् **(सुवेदाः)** धर्मोपार्जितैश्वर्यः **(नः)** अस्माकमस्मभ्यं वा **(वसु)** अत्र **संहितायामिति** दीर्घः। **(कृधि)** कुरु **(अस्माकम्) (बोधि)** बुध्यस्व **(अविता)** रक्षकः **(महाधने)** महान्ति धनानि प्राप्नुवन्ति यस्मिँस्तस्मिन् सङ्ग्रामे **(भव)** अत्र **द्व्यचोऽतस्तिङ** इति दीर्घः। **(वृधः)** वर्धकः **(सखीनाम्)** सर्वसुहृदाम्॥२५॥

**अन्वयः**-हे मघवन् राजन् सुवेदास्त्वं नोऽस्माकमित्रान् परा णुदस्व नो वसु कृधि महाधनेऽस्माकं सखीनामविता बोधि वृधो भव॥२५॥

**भावार्थः**-हे राजंस्त्वं धार्मिकाञ्छूरान्सत्कृत्य शिक्षयित्वा युद्धविद्यायां कुशलान्कृत्वा दस्व्यादीन्दुष्टान्निवार्य्य सर्वोपकारकाणां मनुष्याणां रक्षको भव॥२५॥

**पदार्थः**-हे **(मघवन्)** बहुधनयुक्त राजा **(सुवेदाः)** धर्म से उत्पन्न किये हुए ऐश्वर्ययुक्त आप **(नः)** हमारे **(अमित्रान्)** शत्रुओं को **(परा, णुदस्व)** प्रेरो हमारे लिये **(वसु)** धन को **(कृधि)** सिद्ध करो **(महाधने)** बड़े वा बहुत धन जिसमें प्राप्त होते हैं उस संग्राम में **(अस्माकम्)** हमारे **(सखीनाम्)**



www.9009.co.in

सर्व मित्रों के **(अविता)** रक्षा करने वाले **(बोधि)** जानिये और **(वृधः)** बढ़ने वाले **(भव)** हूजिये॥२५॥

**भावार्थः**-हे राजा! आप धार्मिक, शूरजनों का सत्कार कर उनको शिक्षा देकर युद्धविद्या में कुशल कर डाकू आदि दुष्टों को निवृत्त कर सर्वोपकारी मनुष्यों के रक्षा करने वाले हूजिये॥२५॥

**परमेश्वरो मनुष्यैः किंवत्प्रार्थनीय इत्याह॥**

परमेश्वर मनुष्यों को किसके तुल्य प्रार्थना करने योग्य है, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**इन्द्र क्रतुं न आ भर पिता पुत्रेभ्यो यथा।**

**शिक्षा णो अस्मिन् पुरुहूत यामनि जीवा ज्योतिरशीमहि॥२६॥**

**इन्द्र। क्रतुम्। नः। आ। भर। पिता। पुत्रेभ्यः। यथा। शिक्ष। नः। अस्मिन्। पुरुऽहूत। यामनि। जीवाः। ज्योतिः। अशीमहि॥२६॥**

**पदार्थः**-**(इन्द्र)** परमैश्वर्यप्रद जगदीश्वर **(क्रतुम्)** धर्म्यां प्रज्ञाम् **(नः)** अस्मभ्यम् **(आ)** **(भर)** **(पिता)** **(पुत्रेभ्यः)** **(यथा)** **(शिक्षा)** अत्र **द्व्यचोऽतस्तिङ** इति दीर्घः। **(नः)** अस्मान् **(अस्मिन्)** **(पुरुहूत)** बहुभिः प्रशंसित **(यामनि)** यान्ति यस्मिँस्तस्मिन् वर्त्तमाने समये **(जीवाः)** **(ज्योतिः)** प्रकाशस्वरूपं परमात्मानं त्वाम् **(अशीमहि)** प्राप्नुयाम॥२६॥

**अन्वयः**-हे पुरुहूतेन्द्र भगवन्! यथा पुत्रेभ्यः पिता तथा नः क्रतुमाभराऽस्मिन् यामनि नोऽस्माञ्छिक्ष यतो जीवा वयं ज्योतिर्विज्ञानं त्वां चाशीमहि॥२६॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। हे जगदीश्वर! यथा जनकोऽस्मान् पोषयति तथा त्वं पालय यथाऽऽप्तो विद्वानध्यापको विद्यार्थिभ्यः शिक्षां दत्वा सत्यां प्रज्ञां ग्राहयति तथैवास्मान् सत्यं विज्ञानं ग्राहय यतो वयं सृष्टिविद्यां भवन्तं च प्राप्य सदैवानन्देम॥२६॥

**पदार्थः**-हे **(पुरुहूत)** बहुतों से प्रशंसा को प्राप्त **(इन्द्र)** परमैश्वर्य के देने वाले जगदीश्वर भगवन्! **(यथा)** जैसे **(पुत्रेभ्यः)** पुत्रों के लिये **(पिता)** पिता, वैसे **(नः)** हम लोगों के लिये **(क्रतुम्)** धर्मयुक्त बुद्धि को **(आ, भर)** अच्छे प्रकार धारण कीजिये **(अस्मिन्)** इस **(यामनि)** वर्त्तमान समय में **(नः)** हम लोगों को **(शिक्ष)** सिखलाओ जिससे **(जीवाः)** जीव हम लोग **(ज्योतिः)** विज्ञान को और आपको **(अशीमहि)** प्राप्त होवें॥२६॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे जगदीश्वर! जैसे पिता हम लोगों को पुष्ट करता है, वैसे आप पालना कीजिये जैसे आप्त विद्वान् जन विद्यार्थियों के लिये शिक्षा देकर सत्य बुद्धि का ग्रहण कराता है, वैसे ही हमको सत्य विज्ञान ग्रहण कराओ जिससे हम लोग सृष्टिविद्या और आपको पाकर सर्वदैव आनन्दित हों॥२६॥



www.9009.co.in

**मनुष्याः समुद्रादिकं केन तरेयुरित्याह॥**

मनुष्य समुद्रादिकों को किससे तरें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**मा नो॒ अज्ञा॑ता वृ॒जना॑ दुरा॒ध्यो॒३॑ माशि॑वासो॒ अव॑ क्रमुः।**

**त्वया॑ व॒यं प्र॒वत॒ः शश्व॑तीर॒पोऽति॑ शूर तरामसि॥ २७॥ २१॥**

**मा। न॒ः। अज्ञा॑ताः। वृ॒जना॑ः। दु॒ःआ॒ध्य॑ः। मा। अशि॑वासः। अव॑। क्र॒मु॒ः। त्वया॑। व॒यम्। प्र॒ऽवत॑ः। शश्व॑तीः। अ॒पः। अति॑। शू॒र॒। त॒रा॒म॒सि॒॥ २७॥**

**पदार्थः**-(**मा**) निषेधे (**नः**) अस्मान् (**अज्ञाताः**) (**वृजनाः**) वृजन्ति येषु यैस्सह वा ते (**दुराध्यः**) दुःखेनाऽऽध्यातुं योग्यः (**मा**) (**अशिवासः**) असुखप्रदाः (**अव**) (**क्रमुः**) अवक्राम्यन्तु (**त्वया**) [त्वया] सह (**वयम्**) (**प्रवतः**) निम्नान् (**शश्वतीः**) अनादिभूताः (**अपः**) जलानि (**अति**) (**शूर**) निर्भय (**तरामसि**) उल्लङ्घेमहि॥ २७॥

**अन्वयः**-हे शूर! नाऽज्ञाता वृजना दुराध्यो नोऽस्मान्माव क्रमुरशिवासोऽस्मान्माऽव क्रमुर्यतस्त्वया सह वयं प्रवतो देशाञ्शश्वतीरपोऽति तरामसि॥७॥

**भावार्थः**-राजा राजजनाः सेनाः सभाध्यक्षाश्चेदृशीर्नावो रचयेयुर्याभिस्समुद्रान् सुखेन सर्वे तरेयुस्तत्र समुद्रेषु नौचालकानां मार्गविज्ञानं यथार्थं स्यादिति॥ २७॥

अत्रेन्द्रमेधाविधनविद्याकामिरक्षकराजेश्वरजीवधनसंचयेश्वरनौयायिगुणकृत्यवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति द्वात्रिंशत्तमं सूक्तमेकविंशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे (**शूर**) निर्भय! (**नः**) हम लोगों को (**अज्ञाताः**) छिपे हुये (**वृजनाः**) जिनमें जाते हैं वा जिनसे जाते हैं वे (**दुराध्यः**) और दुःख से चिंतने योग्य (**नः**) हम लोगों को (**मा**) मत (**अव, क्रमुः**) उल्लंघन करें (**अशिवासः**) दुःख देने वाले हम लोगों को (**मा**) मत उल्लंघन करें जिससे (**त्वया**) तुम्हारे साथ (**वयम्**) हम लोग (**प्रवतः**) नीचे देशों को तथा (**शश्वतीः**) अनादिभूत (**अपः**) जलों को (**अति, तरामसि**) अतीव उतरें॥ २७॥

**भावार्थः**-राजा और राजजन, सेना और सभाध्यक्ष ऐसी नावें रचें जिनसे समुद्रों को सुख से सब तरें उन समुद्रों में नौकाओं के चलाने वालों को मार्गविज्ञान यथार्थ हों॥ २७॥

इस सूक्त में इन्द्र, मेधावी, धन, विद्या की कामना करने वाले, रक्षक, राजा, ईश्वर, जीव, धनसंचय फिर ईश्वर और नौकाओं के जाने वालों के गुण और कर्म का वर्णन होने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ संगति जाननी चाहिये॥

**वह बत्तीसवां सूक्त और इक्कीसवां वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

**अथ चतुर्दशर्चस्य त्रयस्त्रिंशत्तमस्य सूक्तस्य १-१४ संस्तवो वसिष्ठस्य सपुत्रस्येन्द्रेण वा संवादः। १-९ वसिष्ठपुत्राः। १०-१४ वसिष्ठ ऋषिः त एव देवताः। १, २, ६, १२, १३ त्रिष्टुप्। ३, ४, ५, ७, ९, १४ निचृत्त्रिष्टुप्। ८, ११ विराट् त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः। १० भुरिक्पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः॥**

***अथाऽध्यापकाऽध्येतारः किं किं कुर्य्युरित्याह॥***

अब चौदह ऋचा वाले तेतीसवें सूक्त का आरम्भ है, इसके प्रथम मन्त्र में पढ़ाने और पढ़ने वाले क्या करें, इस विषय का वर्णन करते हैं।

**श्वि॒त्यञ्चो॑ मा दक्षिण॒तस्क॑पर्दा धियंजि॒न्वासो॑ अ॒भि हि प्र॑म॒न्दुः।**
**उ॒त्तिष्ठ॑न् वोचे॒ परि॑ ब॒र्हिषो॒ नॄन्न मे॑ दू॒रादवि॑तवे॒ वसि॑ष्ठाः॥ १॥**

**श्वि॒त्यञ्चः॑। मा॒। द॒क्षि॒ण॒तःऽक॑पर्दाः। धि॒य॒म्ऽजि॒न्वासः॑। अ॒भि। हि। प्र॒ऽम॒न्दुः। उ॒त्ऽतिष्ठ॑न्। वो॒चे॒। परि॑। ब॒र्हिषः॑। नॄन्। न। मे॒। दू॒रात्। अवि॑तवे। वसि॑ष्ठाः॥ १॥**

**पदार्थः**-(**श्वित्यञ्चः**) ये श्वितिं वृद्धिमञ्चन्ति प्राप्नुवन्ति ते (**मा**) माम् (**दक्षिणतस्कपर्दाः**) दक्षिणतः कपर्दा जटाजूटा येषां ब्रह्मचारिणां ते (**धियम्**) प्रज्ञाम् (**जिन्वासः**) प्राप्नुवन्तः (**अभि**) (**हि**) (**प्रमन्दुः**) प्रकुष्टमानन्दमाप्नुवन्ति (**उत्तिष्ठन्**) उद्यमाय प्रवर्त्तमानः (**वोचे**) वदामि (**परि**) सर्वतः (**बर्हिषः**) विद्यावर्धकान् (**नॄन्**) नायकान् (**न**) इव (**मे**) मम (**दूरात्**) (**अवितवे**) अवितुम् (**वसिष्ठाः**) अतिशयेन विद्यासु वसन्तः॥ १॥

**अन्वयः**-ये श्वित्यञ्चो दक्षिणतस्कपर्दा धियं जिन्वासो वसिष्ठा हि मा अभि प्र मन्दुर्मे ममाऽवितवे दूरादागच्छेयुस्तान् बर्हिषो नॄन्नुत्तिष्ठन् परि वोचे॥ १॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! ये विद्यासु प्रवीणा मनुष्याणां सत्याचारे बुद्धिवर्धका अध्यापकाः अध्येतार उपदेशकाश्च स्युस्तान् प्रविद्याधर्मप्रचाराय सततं शिक्षोत्साहसत्कारान् कुर्य्युः॥ १॥

**पदार्थः**-जो (**श्वित्यञ्चः**) बुद्धि को प्राप्त होते (**दक्षिणतस्कपर्दाः**) दाहिनी ओर को जटाजूट रखने वाले (**धियम्**) बुद्धि को (**जिन्वासः**) प्राप्त हुए (**वसिष्ठाः**) अतीव विद्याओं में वसने वाले (**हि**) ही (**मा**) मुझे (**प्र, मन्दुः**) आनन्दित करते हैं (**मे**) मेरे (**अवितवे**) पालने का (**दूरात्**) दूर से आवें उन (**बर्हिषः**) विद्या धर्म बढ़ाने वाले (**नॄन्**) नायक मनुष्यों को (**उत्तिष्ठन्**) उठता हुआ अर्थात् उद्यम के लिये प्रवृत्त हुआ (**परि, वोचे**) सब ओर से कहता हूँ॥ १॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जो विद्याओं में प्रवीण, मनुष्यों की सत्य आचार में बुद्धि बढ़ाने वाले, पढ़ाने-पढ़ने और उपदेश करने वाले हों उनको विद्या और धर्म के प्रचार के लिये निरन्तर शिक्षा, उत्साह और सत्कारयुक्त करें॥ १॥



www.9009.co.in

**पुनः स राजा कीदृशान् विदुषः स्वीकुर्यादित्याह॥**

फिर वह राजा कैसे विद्वानों को स्वीकार करे, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**दूरादिन्द्रमनयन्ना सुतेन तिरो वैशन्तमति पान्तमुग्रम्।**

**पाशद्युम्नस्य वायतस्य सोमात् सुतादिन्द्रो अवृणीता वसिष्ठान्॥ २॥**

**दूरात्। इन्द्रम्। अनयन्। आ। सुतेन। तिरः। वैशन्तम्। अति। पान्तम्। उग्रम्। पाशऽद्युम्नस्य। वायतस्य। सोमात्। सुतात्। इन्द्रः। अवृणीत। वसिष्ठान्॥ २॥**

**पदार्थः**-(**दूरात्**) (**इन्द्रम्**) परमैश्वर्यम् (**अनयन्**) नयन्ति (**आ**) (**सुतेन**) निष्पन्नेन पुत्रेण वा (**तिरः**) तिरस्कारे (**वैशन्तम्**) वेशन्तस्य विशतो जनस्येमम् (**अति**) (**पान्तम्**) रक्षन्तम् (**उग्रम्**) तेजस्विनम् (**पाशद्युम्नस्य**) पाशात्प्राप्तं द्युम्नं यशो धनं येन तस्य (**वायतस्य**) विज्ञानवतः (**सोमात्**) ऐश्वर्यात् (**सुतात्**) धर्म्येण निष्पादितात् (**इन्द्रः**) परमैश्वर्यो राजा (**अवृणीत**) वृणुयात्। अत्र **संहितायामि**ति दीर्घः। (**वसिष्ठान्**) अतिशयेन विद्यासु कृतवासान्॥ २॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! ये सुतेन वैशन्तं पान्तमुग्रमिन्द्रं दूरादनयन् दारिद्र्यं तिरो नयन्ति तैः पाशद्युम्नस्य वायतस्य सुतात्सोमादिन्द्रो वसिष्ठानत्यावृणीत॥ २॥

**भावार्थः**-राजादयो जनाः। ये दूरादैश्वर्यं स्वदेशं प्रापयन्ति द्रारिद्र्यं विनाश्य श्रियं जनयन्ति तानुत्तमाञ्जनान्सर्वन्तो सततं रक्षेयुः॥ २॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो (**सुतेन**) उत्पन्न हुए पदार्थ वा पुत्र से (**वैशन्तम्**) प्रवेश होते हुए जन के सम्बन्धी (**पान्तम्**) पालना करते हुए (**उग्रम्**) तेजस्वी (**इन्द्रम्**) परमैश्वर्यवान् को (**दूरात्**) दूर से (**अनयन्**) पहुँचाते और दारिद्र्य को (**तिरः**) तिरस्कार करते हैं उनसे (**पाशद्युम्नस्य**) जिसने धन यश पाया है उस (**वायतस्य**) विज्ञानवान् के (**सुतात्**) धर्म से उत्पन्न किये (**सोमात्**) ऐश्वर्य से (**इन्द्रः**) परमैश्वर्य राजा (**वसिष्ठान्**) अतीव विद्याओं में किया निवास जिन्होंने उन को (**अति, आ, अवृणीत**) अत्यन्त स्वीकार करे॥ २॥

**भावार्थः**-हे राजन् आदि जनो! जो दूर से अपने देश को ऐश्वर्य पहुँचाते और दारिद्र्य का विनाश कर लक्ष्मी को उत्पन्न करते हैं, उन उत्तम जनों की निरन्तर रक्षा कीजिये॥ २॥

**पुनर्मनुष्याः किं किं कुर्य्युरित्याह॥**

फिर मनुष्या क्या-क्या करें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**एवेन्नु कं सिन्धुमेभिस्ततारेवेन्नु कं भेदमेभिर्जघान।**

**एवेन्नु कं दाशराज्ञे सुदासं प्रावदिन्द्रो ब्रह्मणा वो वसिष्ठाः॥ ३॥**



www.9009.co.in

**एव। इत्। नु। कम्। सिन्धुम्। एभिः। ततार। एव। इत्। नु। कम्। भेदम्। एभिः। जघान। एव। इत्। नु। कम्। दाशऽराज्ञे। सुऽदासम्। प्र। आवत्। इन्द्रः। ब्रह्मणा। वः। वसिष्ठाः॥३॥**

**पदार्थः**-(**एव**) (**इत्**) अपि (**नु**) क्षिप्रम् (**कम्**) (**सिन्धुम्**) नदीम् (**एभिः**) उत्तमैर्विद्वद्भिः (**ततार**) तरेत् (**एव**) (**इत्**) (**नु**) (**कम्**) (**भेदम्**) भेदनीयं विदारणीयम् (**एभिः**) (**जघान**) हन्यात् (**एव**) (**इत्**) (**नु**) (**कम्**) (**दाशराज्ञे**) यो दाशति सुखं ददाति राजा तस्मै (**सुदासम्**) सुष्ठु दातारं सेवकं वा (**प्र**) (**आवत्**) प्रकर्षेण रक्षेत् (**इन्द्रः**) परमैश्वर्यो जनः (**ब्रह्मणा**) धनेन (**वः**) युष्मान् (**वसिष्ठाः**) अतिशयेन ब्रह्मचर्ये कृतवासाः॥३॥

**अन्वयः**-हे वसिष्ठा! इन्द्रोऽयमेभिः कमेवेत्सिन्धुं नु ततार एभिः कमेवेन्नु जघान दाशराज्ञे कमेवेद् भेदं ब्रह्मणा नु प्रावत् सुदासं वो युष्माँश्च नु प्रावत्॥३॥

**भावार्थः**-ये मनुष्या नौकाभिः समुद्रादिकं सद्यस्तरेयुर्वीरैः शत्रून् क्षिप्रं विनाशयेयू राज्ञो राष्ट्रस्य च रक्षाः सर्वदा कुर्य्युस्ते माननीया भवेयुः॥३॥

**पदार्थः**- (**वसिष्ठाः**) अत्यन्त ब्रह्मचर्य के बीच जिन्होंने वास किया वह हे विद्वानो! (**इन्द्रः**) परमैश्वर्यवान् यह जन (**एभिः**) उत्तम विद्वानों के साथ (**कम्, एव, इत्**) किसी (**सिन्धुम्**) नदी को भी (**नु**) शीघ्र (**ततार**) तरे (**एभिः**) इन उत्तम विद्वानों के साथ (**कम्, एव, इत्**) किसी को भी (**नु**) शीघ्र (**जघान**) मारे (**दाशराज्ञे**) जो सुख देता है उस के लिये (**कम्, एव, इत्**) किसी (**भेदम्**) विदीर्ण करने योग्य को भी (**ब्रह्मणा**) धन से (**नु**) शीघ्र (**प्र, आवत्**) अच्छे प्रकार रक्खे और (**सुदासम्**) अच्छे देने वाले वा सेवक को तथा (**वः**) तुम लोगों को भी (**नु**) शीघ्र रक्खे॥३॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य नौकादिकों से समुद्रादिकों को अच्छे प्रकार शीघ्र तरें, वीरों से शत्रुओं को शीघ्र विनाशें, राजा और राज्य की रक्षा करें, वे मान करने योग्य हों॥३॥

**पुनर्मनुष्याः किं कृत्वा किन्न कुर्वन्तीत्याह॥**

फिर मनुष्य क्या करके क्या नहीं करते हैं, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**जुष्टी नरो ब्रह्मणा वः पितॄणामक्षमव्ययं न किला रिषाथ।**

**यच्छक्वरीषु बृहता रवेणेन्द्रे शुष्ममदधाता वसिष्ठाः॥४॥**

**जुष्टी। नरः। ब्रह्मणा। वः। पितॄणाम्। अक्षम्। अव्ययम्। न। किल। रिषाथ। यत्। शक्वरीषु। बृहता। रवेण। इन्द्रे। शुष्मम्। अदधात। वसिष्ठाः॥४॥**

**पदार्थः**-(**जुष्टी**) जुष्ट्या प्रीत्या सेवया वा (**नरः**) नेतारः (**ब्रह्मणा**) धनेन (**वः**) युष्माकम् (**पितॄणाम्**) जनकादीनाम् (**अक्षम्**) व्याप्तम् (**अव्ययम्**) नाशरहितम् (**न**) निषेधे (**किल**) अत्र **निपातस्य चे**ति दीर्घः। (**रिषाथ**) हिंसथ (**यत्**) येन (**शक्वरीषु**) शक्तिमतीषु सेनासु (**बृहता**) महता (**रवेण**)



www.9009.co.in

शब्देन **(इन्द्रे)** परमैश्वर्ये **(शुष्मम्)** बलम् **(अदधात)** धर्त। अत्र **संहितायामि**ति दीर्घः। **(वसिष्ठाः)** धनेऽत्यन्तं वासं कुर्वन्तः॥४॥

**अन्वयः**-हे वसिष्ठा नरो! यूयं यद् बृहता रवेण शक्वरीष्विन्द्रे शुष्ममदधात जुष्टी ब्रह्मणा वः पितॄणामव्ययमक्षं किल यूयं न रिषाथ तेन सर्वस्य रक्षणं विधत्त॥४॥

**भावार्थः**-ये मनुष्याः स्वशक्तिं वर्धयित्वा दुष्टान् हिंसित्वा धनवृद्ध्या सर्वार्थमक्षीणं सुखं प्रीत्या वर्धयन्ति ते बृहतीं कीर्तिमाप्नुवन्ति॥४॥

**पदार्थः**-हे **(वसिष्ठाः)** धन में अत्यन्त वास करते हुए **(नरः)** नायक मनुष्यो! तुम **(यत्)** जिस **(बृहता)** महान् **(रवेण)** शब्द से **(शक्वरीषु)** शक्तियुक्त सेनाओं में और **(इन्द्रे)** परमैश्वर्य में **(शुष्मम्)** बल को **(अदधात)** धारण करते हो **(जुष्टी)** प्रीति वा सेवा से तथा **(ब्रह्मणा)** धन से **(वः)** आप के **(पितॄणाम्)** जनक अर्थात् पिता आदि का जो **(अव्ययम्)** नाशरहित **(अक्षम्)** व्याप्त बल उसे **(किल)** निश्चय कर तुम **(न, रिषाथ)** नहीं नष्ट करते हो, उससे सब की रक्षा करो॥४॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य अपनी शक्ति को बढ़ा के दुष्टों को मार धन की वृद्धि से सब के अर्थ जो नष्ट नहीं उस सुख को प्रीति से बढ़ाते, वे बढ़ी कीर्ति को पाते हैं॥४॥

**पुनः के मनुष्याः सूर्य्यवद्भवन्तीत्याह॥**

फिर कौन मनुष्य सूर्य के तुल्य होते हैं, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**उद्यामि॒वेत्तृ॒ष्णजो॑ नाथि॒तासोऽदी॑धयुर्दाशरा॒ज्ञे वृ॒तास॑ः॥**

**वसि॑ष्ठस्य स्तुव॒त इन्द्रो॑ अश्रोदु॒रुं तृत्सु॑भ्यो अकृणोदु लो॒कम्॥५॥२२॥**

**उत्। द्याम्ऽइ॑व। इत्। तृ॒ष्ण॒ऽजः॑। ना॒थि॒तास॑ः। अदी॑धयुः। दा॒श॒ऽरा॒ज्ञे। वृ॒तास॑ः। वसि॑ष्ठस्य। स्तु॒व॒तः। इन्द्रः॑। अ॒श्रो॒त्। उ॒रुम्। तृत्सु॑ऽभ्यः। अ॒कृ॒णो॒त्। ऊँ॒ इति॑। लो॒कम्॥५॥**

**पदार्थः**-**(उत)** **(द्यामिव)** सूर्यमिव **(इत्)** एव **(तृष्णजः)** प्राप्ततृष्णः **(नाथितासः)** याचमानाः **(अदीधयुः)** दीपयेयुः **(दाशराज्ञे)** दाशानां दातॄणां राज्ञे **(वृतासः)** स्वीकृताः **(वसिष्ठस्य)** अतिशयेन विदुषः **(स्तुवते)** स्तुवतः **(इन्द्रः)** परमैश्वर्यवान्राजा **(अश्रोत्)** शृणुयात् **(उरुम्)** बहुसुखकारकम् **(तृत्सुभ्यः)** शत्रूणां हिंसकेभ्यः **(अकृणोत्)** करोति **(उ)** **(लोकम्)**॥५॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! ये द्यामिव नाथितासस्तृष्णजो वृतास इत् दाशराज्ञे उददीधयुर्य इन्द्रो वसिष्ठस्य स्तुवत उरुं वाक्यमश्रोत् तृत्सुभ्य उ लोकमकृणोत्तान् सर्वे सत्कुर्वन्तु॥५॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। ये मनुष्याः सूर्य्य इव विद्याविनयप्रकाशिता तृषिता जलमिवैश्वर्य्यमन्वेषमाणाः सकलविद्यायुक्तेभ्य आनन्दं दधति शूरवीरेभ्यो धनं च प्रयच्छन्ति ते बहुसुखं लभन्ते॥५॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो **(द्यामिव)** सूर्य के समान **(नाथितासः)** मांगते हुए और **(तृष्णजः)** तृष्णा को प्राप्त **(वृतासः)** स्वीकार किये हुए **(इत्)** ही **(दाशराज्ञे)** देने वालों के राजा के लिये **(उत्, अदीधयुः)** ऊपर को प्रकाशित करें जो **(इन्द्रः)** परमैश्वर्यवान् राजा **(वसिष्ठस्य)** अतीव विद्वान् की **(स्तुवतः)** स्तुति करने वाले के लिये [=वाले] की **(उरुम्)** बहुत सुख करने वाले वाक्य को **(अश्रोत्)** सुने **(तृत्सुभ्यः)** और शत्रुओं के मारने वाले के लिये **(उ)** ही **(लोकम्)** लोक को **(अकृणोत्)** प्रसिद्ध करता है, उनको सब सत्कार करें॥५॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जो मनुष्य सूर्य के समान विद्या और नम्रता से प्रकाशित और तृषित जल के समान ऐश्वर्य के ढूढ़ने वाले सकल विद्यायुक्त विद्वानों के लिये आनन्द को धारण करते और शूरवीरों के लिये धन भी देते हैं, वे बहुत सुख पाते हैं॥५॥

**पुनः केऽध्याप्या अनध्याप्याश्च भवन्तीत्याह॥**

फिर कौन पढ़ाने और कौन न पढ़ाने योग्य हैं, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**दण्डाइवेद् गोअजनास आसन् परिच्छिन्ना भरता अर्भकासः।**

**अभवच्च पुरएता वसिष्ठ आदित्तृत्सूनां विशो अप्रथन्त॥६॥**

**दण्डाःऽइव। इत्। गोऽअजनासः। आसन्। परिऽछिन्नाः। भरताः। अर्भकासः। अभवत्। च। पुरःऽएता। वसिष्ठः। आत्। इत्। तृत्सूनाम्। विशः। अप्रथन्त॥६॥**

**पदार्थः**-**(दण्डाइव)** यष्टिका इव शुष्कहृदयाऽभिमानिनः **(इत्)** **(गोअजनासः)** गवि सुशिक्षितायां वाच्यप्रादुर्भूताः **(आसन्)** सन्ति **(परिच्छिन्नाः)** छिन्नभिन्नविज्ञानाः **(भरताः)** देहधारकपोषकाः **(अर्भकासः)** अल्पवयसो बालका इव क्षुद्राशयाः **(अभवत्)** भवति **(च)** **(पुरएता)** यः पुर एति **(वसिष्ठः)** अतिशयेन वसुमान् धनाढ्यः **(आत्)** आनन्तर्ये **(इत्)** **(तृत्सूनाम्)** अनादृतानाम् **(विशः)** प्रजा मनुष्यान् **(अप्रथन्त)** प्रथयन्ति॥६॥

**अन्वयः**-हे विद्वांसो! ये गोअजनासः परिच्छिन्ना भरता अर्भकासो दण्डा इवेदासँस्तेषां तृत्सूनां विशोऽप्रथन्त। आदिदेषां यः पुरएता वसिष्ठोऽभवत् स चैतान् सुशिक्षयेत्॥६॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। ये मनुष्या दण्डयञ्जडबुद्धयः स्युस्ते सुपरीक्ष्याऽनध्यापनीया भवन्ति ये च धीमन्तः स्युस्ते पाठनीया यो विद्याव्यवहारे प्रधानः स्यात्स एव विद्याविभागस्य सुष्ठु प्रबन्धेन शिक्षां प्रापयेत्॥६॥

**पदार्थः**-हे विद्वानो! जो **(गोअजनासः)** सुशिक्षित वाणी में [अ]प्रसिद्ध हुए **(परिच्छिन्नाः)** छिन्न-भिन्न विज्ञान वाले **(भरताः)** देह धारण ओर पुष्टि करने से युक्त **(अर्भकासः)** थोड़ी-थोड़ी आयु के बालक **(दण्डाइव)** लट्ठ से सूखे हृदय में अभिमान करने वाले **(इत्)** ही **(आसन्)** हैं उन **(तृत्सूनाम्)** अनादर किये हुओं के बीच **(विशः)** प्रजा मनुष्यों को **(अप्रथन्त)** प्रख्यात करते हैं **(आत्,**



www.9009.co.in

**इत्)** और ही इनके जो **(पुरएता)** आगे जाने वाला **(वसिष्ठः)** अतीव धनाढ्य **(अभवत्)** हो **(च)** वही इन को अच्छी प्रकार शिक्षा दे॥६॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जो मनुष्य दण्ड के समान जड़बुद्धि हों, वे अच्छी परीक्षा कर न पढ़ाने योग्य और जो बुद्धिमान् हों वे पढ़ाने योग्य होते हैं, जो विद्या व्यवहार में प्रधान हो, वही विद्याविभाग की उत्तम प्रबन्ध से शिक्षा पहुँचावे॥६॥

**पुनर्मनुष्याः कि कुर्य्युरित्याह॥**

फिर मनुष्य क्या करें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**त्रयः कृण्वन्ति भुवनेषु रेतस्तिस्रः प्रजा आर्या ज्योतिरग्राः।**

**त्रयो घर्मास उषसं सचन्ते सर्वा इत्ताँ अनु विदुर्वसिष्ठाः॥७॥**

**त्रयः। कृण्वन्ति। भुवनेषु। रेतः। तिस्रः। प्रऽजाः। आर्याः। ज्योतिःऽअग्राः। त्रयः। घर्मासः। उषसम्। सचन्ते। सर्वान्। इत्। तान्। अनु। विदुः। वसिष्ठाः॥७॥**

**पदार्थः**-**(त्रयः)** विद्युद्भौमसूर्याख्याऽग्नयो भूम्यप्तेजांसि वा **(कृण्वन्ति)** **(भुवनेषु)** लोकेषु **(रेतः)** वीर्यम् **(तिस्रः)** विद्याराजधर्मसभास्थाः **(प्रजाः)** **(आर्याः)** उत्तमगुणकर्मस्वभावाः **(ज्योतिः)** विद्याप्रकाशादिकम् **(अग्राः)** अग्रगण्याः **(त्रयः)** **(घर्मासः)** पापानि **(उषसम्)** प्रभातवेलाम् **(सचन्ते)** सम्बध्नन्ति **(सर्वान्)** **(इत्)** एव **(तान्)** **(अनु)** **(विदुः)** जानन्ति **(वसिष्ठाः)**॥७॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथा त्रयो भुवनेषु रेतः कृण्वन्ति यथा त्रयो घर्मास उषसं ज्योतिः सचन्ते तथा तिस्रो वसिष्ठा आर्या अग्रा प्रजास्तान् सर्वान्निदनु विदुर्ज्योतिः सचन्ते॥७॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यथा कार्यकारणकार्यस्था विद्युतः सूर्यादिकं ज्योतिः प्रकाशयन्त्युषसं दिनं च जनयन्ति तथा तिस्रः सभा धर्मार्थकाममोक्षसाधनप्रकाशान् कुर्वन्ति॥७॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे **(त्रयः)** तीन **(भुवनेषु)** लोकों में **(रेतः)** वीर्य **(कृण्वन्ति)** करते हैं जैसे **(त्रयः)** तीन **(घर्मासः)** पाप **(उषसम्)** प्रभातवेला और **(ज्योतिः)** विद्याप्रकाश आदि का **(सचन्ते)** सम्बन्ध करते हैं, वैसे **(तिस्रः)** तीन अर्थात् विद्या, राजा और धर्मसभास्थ **(वसिष्ठाः)** अतीव धन में स्थिर **(आर्याः)** उत्तम गुण, कर्म, स्वभाव वाले पुरुष **(अग्राः)** अग्रगण्य **(प्रजाः)** प्रजा जन **(तान्)** उन **(सर्वान्)** सब को **(इत्, अनु, विदुः)** ही अनुकूल जानते हैं और विद्या प्रकाश आदि को सम्बन्ध करते हैं॥७॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे कार्य्य और कारण को कार्य में स्थिर बिजुलियां सूर्य आदि ज्योति को प्रकाशित करती हैं, प्रभातवेला और दिन को उत्पन्न करती हैं, वैसे तीन सभा धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष साधन देने वाले प्रकाशों को करती हैं॥७॥

**पुनर्विद्वांसः कीदृशा भवेयुरित्याह॥**



www.9009.co.in

फिर विद्वान् कैसे हों, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**सूर्यस्येव वक्षथो ज्योतिरेषां समुद्रस्येव महिमा गभीरः।**

**वातस्येव प्रजवो नान्येन स्तोमो वसिष्ठा अन्वेतवे वः॥८॥**

**सूर्यस्यऽइव। वक्षथः। ज्योतिः। एषाम्। समुद्रस्यऽइव। महिमा। गभीरः। वातस्यऽइव। प्रऽजवः। न। अन्येन। स्तोमः। वसिष्ठाः। अनुऽएतवे। वः॥८॥**

**पदार्थः**-(**सूर्यस्येव**) (**वक्षथः**) रोषः (**ज्योतिः**) प्रकाशः (**एषाम्**) विद्युदादीनाम् (**समुद्रस्येव**) (**महिमा**) महतो भावः (**गभीरः**) अगाधः (**वातस्येव**) (**प्रजवः**) प्रकृष्टो वेगः (**न**) (**अन्येन**) तुल्यः (**स्तोमः**) प्रशंसा (**वसिष्ठाः**) अतिशयेन विद्यावासाः (**अन्वेतवे**) अन्वेतुं विज्ञातुं प्राप्तुं गन्तुं वा (**वः**) युष्माकम्॥८॥

**अन्वयः**-हे वसिष्ठा! योऽन्वेतवे आप्ता विद्वांस एषां वोऽन्वेतवे सूर्यस्येव वक्षथो ज्योतिः समुद्रस्येव महिमा गभीरो वातस्येव प्रजवः स्तोमोऽस्ति सोऽन्येन तुल्यो नास्ति॥८॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! येषां धार्मिकाणां विदुषां सूर्यवद्विद्याधर्मप्रकाशो दुष्टाचारे क्रोधः समुद्रवद्गाम्भीर्यं वायुवत्सत्कर्मसु वेगो भवेत्त एव सङ्गन्तुमर्हाः सन्तीति वेद्यम्॥८॥

**पदार्थः**-हे (**वसिष्ठाः**) अतीव विद्या में वास करने वालो! जो (**अन्वेतवे**) विशेष जानने को, प्राप्त होने को वा गमन को आप्त अत्यन्त धर्मशील विद्वान् हैं (**एषाम्**) इन बिजुली आदि पदार्थों के और (**वः**) तुम्हारे विशेष जानने को प्राप्त होने को वा गमन के (**सूर्यस्येव**) सूर्य के समान (**वक्षथः**) रोष वा (**ज्योतिः**) प्रकाश (**समुद्रस्येव**) समुद्र के समान (**महिमा**) महिमा (**गभीरः**) गम्भीर (**वातस्येव**) पवन के समान (**प्रजवः**) उत्तम वेग और (**स्तोमः**) प्रशंसा है वह (**अन्येन**) और के समान (**न**) नहीं है॥८॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जिन धार्मिक विद्वानों का सूर्य के समान विद्या और धर्म का प्रकाश, दुष्टाचार पर क्रोध, समुद्र के समान गम्भीरता, पवन के समान अच्छे कर्मों में वेग हो वे मिलने योग्य हैं, यह जानना चाहिये॥८॥

**के सत्यं निश्चयं कर्त्तुमर्हन्तीत्याह॥**

कौन सत्य का निश्चय करने योग्य हैं, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**त इन्निण्यं हृदयस्य प्रकेतैः सहस्रवल्शमभि संचरन्ति।**

**यमेन ततं परिधिं वयन्तोऽप्सरस उप सेदुर्वसिष्ठाः॥९॥**

**ते। इत्। निण्यम्। हृदयस्य। प्रऽकेतैः। सहस्रऽवल्शम्। अभि। सम्। चरन्ति। यमेन। ततम्। परिऽधिम्। वयन्तः। अप्सरसः। उप। सेदुः। वसिष्ठाः॥९॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**ते**) विद्वांसः (**इत्**) एव (**निण्यम्**) निर्णीतान्तर्गतम् (**हृदयस्य**) आत्मनो मध्ये (**प्रकेतैः**) प्रकृष्टाभिः प्रज्ञाभिः (**सहस्रवल्शम्**) सहस्राण्यसंख्या वल्शा अङ्कुरा इव शास्त्रबोधा यस्मिंस्तं विज्ञानमयं व्यवहारम् (**अभि**) आभिमुख्ये (**सम्**) (**चरन्ति**) सम्यगाचरन्ति (**यमेन**) नियन्त्रा जगदीश्वरेण (**ततम्**) व्याप्तम् (**परिधिम्**) सर्वलोकावरणम् (**वयन्तः**) व्याप्नुवन्तः (**अप्सरसः**) या अप्स्वन्तरिक्षे सरन्ति गच्छन्ति ताः (**उप**) (**सेदुः**) सीदन्ति (**वसिष्ठाः**) अतिशयेन विद्यावन्तः॥९॥

**अन्वयः**-ये अप्सरसो यमेन सह ततं परिधिं वयन्तो वसिष्ठाः प्रकेतैर्हृदयस्य निण्यं सहस्रवल्शमुपसेदुस्त इत्पूर्णविद्या अभि सं चरन्ति॥९॥

**भावार्थः**-त एव विद्वांसो जगदुपकारिणो भवन्ति ये दीर्घेण ब्रह्मचर्येणाप्तानां विदुषां सकाशाच्छिक्षां प्राप्याऽखिलां विद्याम् अधीत्य परमात्मना व्याप्तं सर्वं सृष्टिक्रमं विशन्ति॥९॥

**पदार्थः**- (**अप्सरसः**) जो अन्तरिक्ष में जाते हैं वे और (**यमेन**) नियन्ता जगदीश्वर से (**ततम्**) व्याप्त (**परिधिम्**) सर्व लोकों के परकोटे को (**वयन्तः**) व्याप्त होते हुए (**वसिष्ठाः**) अतीव विद्यावान् जन (**प्रकेतैः**) उत्तम बुद्धियों से (**हृदयस्य**) आत्मा के बीच (**निण्यम्**) निर्णीत अन्तर्गत (**सहस्रवल्शम्**) हजारों असंख्य अंकुरों के समान शास्त्रबोध जिसमें उस विद्या व्यवहार को (**उप, सेदुः**) उपस्थित होते अर्थात् स्थिर होते हैं (**ते, इत्**) वे ही पूर्ण विद्याओं का (**अभि,सम्, चरन्ति**) सब ओर से संचार करते हैं॥९॥

**भावार्थः**-वे ही विद्वान् जन संसार के उपकारी होते हैं जो दीर्घ ब्रह्मचर्य्य से और आप्त विद्वानों की उत्तेजना से शिक्षा पाय समस्त विद्या पढ़ परमात्मा से व्याप्त सर्व सृष्टिक्रम को प्रवेश करते हैं॥९॥

**पुनर्विद्वांसः कीदृशा भवेयुरित्याह॥**

फिर विद्वान् जन कैसे हों, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**विद्युतो ज्योतिः परि संजिहानं मित्रावरुणा यदपश्यतां त्वा।**

**तत्ते जन्मोतैकं वसिष्ठागस्त्यो यत्त्वा विश आजभार॥१०॥२३॥**

**विऽद्युतः। ज्योतिः। परि। सम्ऽजिहानम्। मित्रावरुणा। यत्। अपश्यताम्। त्वा। तत्। ते। जन्म। उत। एकम्। वसिष्ठ। अगस्त्यः। यत्। त्वा। विशः। आऽजभार॥१०॥**

**पदार्थः**-(**विद्युतः**) (**ज्योतिः**) प्रकाशम् (**परि**) सर्वतः (**संजिहानम्**) अधिकरणं त्यजन् (**मित्रावरुणा**) अध्यापकोपदेशकौ (**यत्**) यः (**अपश्यताम्**) पश्यतः (**त्वा**) त्वाम् (**तत्**) (**ते**) तव (**जन्म**) (**उत**) अपि (**एकम्**) (**वसिष्ठ**) प्रशस्त विद्वन् (**अगस्त्यः**) अस्तदोषः (**यत्**) यम् (**त्वा**) त्वाम् (**विशः**) प्रजाः (**आ, जभार**) समन्ताद्बिभर्ति॥१०॥

**अन्वयः**-हे वसिष्ठ! योऽगस्त्यस्ते विश आ जभार उताप्येकं जन्मा जभार उताऽपि त्वाऽऽजभार यद्विद्युतस्संजिहानं ज्योतिर्मित्रावरुणा पर्यपश्यतां त्वैतद्विद्यां प्रापयतस्तदेतत्सर्वं त्वं गृहाण॥१०॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-यस्य मनुष्यस्य विद्यायां जन्मप्रादुर्भावो भवति तत्प्रज्ञा विद्युज्ज्योतिरिव सकलाविद्या बिभर्ति॥१०॥

**पदार्थः**-हे **(वसिष्ठ)** प्रशंसायुक्त विद्वान्! जो **(अगस्त्यः)** निर्दोष जन **(ते)** आपकी **(विशः)** प्रजाओं को **(आ, जभार)** सब ओर से धारण करता **(उत)** और **(एकम्)** एक **(जन्म)** जन्म को सब ओर से धारण करता और **(त्वा)** आप को सब ओर से धारण करता तथा **(यत्)** जिस **(विद्युतः)** बिजुली को **(संजिहानम्)** अधिकार त्याग करते हुए **(ज्योतिः)** प्रकाश को **(मित्रावरुणा)** अध्यापक और उपदेशक **(परि, अपश्यताम्)** [सब ओर] देखते हैं **(त्वा)** आपको इस विद्या की प्राप्ति कराते हैं, उस समस्त विषय को आप ग्रहण करें॥१०॥

**भावार्थः**-जिस मनुष्य का विद्या में जन्म प्रादुर्भाव होता है, उसकी बुद्धि बिजुली की ज्योति के समान सकल विद्याओं को धारण करती है॥१०॥

**पुनर्मनुष्याः किं कुर्य्युरित्याह॥**

फिर मनुष्य क्या करें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**उतासि मैत्रावरुणो वसिष्ठोर्वश्या ब्रह्मन् मनसोऽधि जातः।**

**द्रप्सं स्कन्नं ब्रह्मणा दैव्येन विश्वे देवाः पुष्करे त्वाऽददन्त॥११॥**

**उत। असि। मैत्रावरुणः। वसिष्ठ। उर्वश्याः। ब्रह्मन्। मनसः। अधि। जातः। द्रप्सम्। स्कन्नम्। ब्रह्मणा। दैव्येन। विश्वे। देवाः। पुष्करे। त्वा। अददन्त॥११॥**

**पदार्थः**-**(उत)** अपि **(असि)** **(मैत्रावरुणः)** मित्रावरुणयोः प्राणोदानयोरयं वेत्ता **(वसिष्ठ)** पूर्णविद्वन् **(उर्वश्याः)** विशेषविद्यायाः। **उर्वशीति पदनाम।** (निघं०४.२) **(ब्रह्मन्)** सकलवेदवित् **(मनसः)** अन्तःकरणपुरुषार्थात् **(अधि)** **(जातः)** प्रादुर्भूतः **(द्रप्सम्)** कमनीयम् **(स्कन्नम्)** प्राप्तम् **(ब्रह्मणा)** बृहता धनेन **(दैव्येन)** देवैर्विद्वद्भिः कृतेन **(विश्वे)** सर्वे **(देवाः)** विद्वांसः **(पुष्करे)** अन्तरिक्षे। **पुष्करमित्यन्तरिक्षनाम।** (निघं०१.३) **(त्वा)** त्वाम् **(अददन्त)** दद्युः॥११॥

**अन्वयः**-हे ब्रह्मन् वसिष्ठ! यो मैत्रावरुणस्त्वमुर्वश्या उत मनसोऽधिजातोऽसि तं त्वा विश्वे देवा ब्रह्मणा दैव्येन पुष्करे स्कन्नं द्रप्समददन्त॥११॥

**भावार्थः**-ये मनुष्याः शुद्धान्तःकरणेन प्राणोदानवत्सततं पुरुषार्थेन कमनीयां विद्यां गृह्णन्ति ते विद्वद्वदानन्दिता भवन्ति॥११॥

**पदार्थः**-हे **(ब्रह्मन्)** समस्त वेदों को जानने वाले **(वसिष्ठ)** पूर्ण विद्वान्! जो **(मैत्रावरुणः)** प्राण और उदान के वेत्ता आप **(उर्वश्याः)** विशेष विद्या से **(उत)** और **(मनसः)** मन से **(अधि, जातः)** अधिकतर उत्पन्न **(असि)** हुए हो उन **(त्वा)** आपको **(विश्वे)** समस्त **(देवाः)** विद्वान् जन



www.9009.co.in

**(ब्रह्मणा)** बहुत धन से और **(दैव्येन)** विद्वानों ने किये हुए व्यवहार से **(पुष्करे)** अन्तरिक्ष में **(स्कन्नम्)** प्राप्त **(द्रप्सम्)** मनोहर पदार्थ को **(अददन्त)** देवें॥११॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य शुद्धान्तःकरण से प्राण और उदान के तुल्य और निरन्तर मनोहर विद्या को ग्रहण करते हैं, वे विद्वानों के समान आनन्दित होते हैं॥११॥

**पुनः स विद्वान् कीदृशो भवेदित्याह॥**

फिर वह विद्वान् कैसा हो, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**स प्रकेत उभयस्य प्रविद्वान्त्सहस्रदान उत वा सदानः।**

**यमेन ततं परिधिं वयिष्यन्नप्सरसः परि जज्ञे वसिष्ठः॥१२॥**

**सः। प्रऽकेतः। उभयस्य। प्रऽविद्वान्। सहस्रऽदानः। उत। वा। सऽदानः। यमेन। ततम्। परिऽधिम्। वयिष्यन्। अप्सरसः। परि। जज्ञे। वसिष्ठः॥१२॥**

**पदार्थः**-**(सः)** **(प्रकेतः)** प्रकृष्टप्रज्ञः **(उभयस्य)** जन्मद्वयस्य **(प्रविद्वान्)** प्रकृष्टो विद्वान् **(सहस्रदानः)** असंख्यप्रदः **(उत)** **(वा)** **(सदानः)** दानेन सह वर्त्तमानः **(यमेन)** वायुना विद्युता वा सह **(ततम्)** व्याप्तम् **(परिधिम्)** **(वयिष्यन्)** व्ययं करिष्यन् **(अप्सरसः)** अन्तरिक्षचराद्वायोः **(परि)** सर्वतः **(जज्ञे)** जायते **(वसिष्ठः)** अतिशयेन वसुमान्॥१२॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! य उभयस्य प्रविद्वान् प्रकेतः सहस्रदान उत वा सदानो यमेन सह ततं परिधिं वयिष्यन् वसिष्ठोऽप्सरसः परि जज्ञे स सर्वैस्सेवनीयोऽस्ति॥१२॥

**भावार्थः**-यस्य मनुष्यस्य मातुः पितुरादिमं जन्म द्वितीयमार्चार्याद्विद्यायाः सकाशज्जन्म भवति स एवाऽऽकाशस्थपदार्थानां वेत्ता प्रादुर्भूतः पूर्णो विद्वानतुलसुखप्रदो भवति॥१२॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो **(उभयस्य)** जन्म और विद्या-जन्म दोनों का **(प्रविद्वान्)** उत्तम विद्वान् **(प्रकेतः)** उत्तम बुद्धियुक्त **(सहस्रदानः)** हजारों पदार्थ देने वाला **(उत, वा)** अथवा **(सदानः)** दानयुक्त **(यमेन)** वायु वा बिजुली के साथ वर्त्तमान **(ततम्)** विस्तृत **(परिधिम्)** परिधि को **(वयिष्यन्)** खर्च करता हुआ **(वसिष्ठः)** अतीव धनवान् **(अप्सरसः)** अन्तरिक्ष में चलने वाले वायु से **(परि, जज्ञे)** सर्वतः प्रसिद्ध होता है **(सः)** वह सब को सेवा करने योग्य है॥१२॥

**भावार्थः**-जिस मनुष्य का माता पिता से प्रथम जन्म, दूसरा आचार्य से विद्या द्वारा होता है, वही आकाश के पदार्थों को जानने वाला उत्पन्न हुआ पूर्ण विद्वान् अतुल सुख का देने वाला है॥१२॥

**पुनः कथं विद्वांसो जायन्त इत्याह॥**

फिर कैसे विद्वान् होते हैं, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**सत्रे ह जाताविषिता नमोभिः कुम्भे रेतः सिषिचतुः समानम्।**

**ततो ह मान उदियाय मध्यात्ततो जातमृषिमाहुर्वसिष्ठम्॥१३॥**



www.9009.co.in

स॒त्रे। ह॒। जा॒तौ। इ॒षि॒ता। नम॑ःऽभिः। रेत॑ः। सि॒सि॒च॒तु॒ः। स॒मा॒नम्। तत॑ः। ह॒। मान॑ः। उत्। इ॒या॒य॒। मध्या॑त्। तत॑ः। जा॒तम्। ऋषि॑म्। आ॒हु॒ः। वसि॑ष्ठम्॥१३॥

**पदार्थः**-(**सत्रे**) दीर्घे यज्ञे (**ह**) खलु (**जातौ**) (**इषिता**) इषितावध्यापकोपदेशकौ (**नमोभिः**) (**कुम्भे**) कलशे (**रेतः**) उदकमिव विज्ञानम् (**सिषिचतुः**) सिञ्चेताम् (**समानम्**) तुल्यम् (**ततः**) (**ह**) प्रसिद्धम् (**मानः**) यो मन्यते सः (**उत्**) (**इयाय**) एति (**मध्यात्**) (**ततः**) तस्मात् (**जातम्**) प्रादुर्भूतम् (**ऋषिम्**) वेदार्थवेत्तारम् (**आहुः**) (**वसिष्ठम्**) उत्तमं विद्वांसम्॥१३॥

**अन्वयः**-यदि जाताविषिता नमोभिः सत्रे हाऽध्यापनाध्ययनाख्ये यज्ञे कुम्भे रेत इव समानं विज्ञानं सिषिचतुस्ततो ह यो मान उदियाय ततो मध्याज्जातं वसिष्ठमृषिमाहुः॥१३॥

**भावार्थः**-अत्रवाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यथा स्त्रीपुरुषाभ्यामपत्यं जायते तथाऽध्यापकोपदेशकाऽध्ययनोपदेशैर्विद्वांसो जायन्ते॥१३॥

**पदार्थः**-यदि (**जातौ**) प्रसिद्ध हुए (**इषिताः**) अध्यापक और उपदेशक (**नमोभिः**) अन्नादिकों से (**सत्रे**) दीर्घ (**ह**) ही पढ़ाने पढ़नेरूप यज्ञ में (**कुम्भे**) कलश में (**रेतः**) जल के (**समानम्**) समान विज्ञान को (**सिषिचतुः**) सीचें छोड़ें (**ततः, ह**) उसी से जो (**मानः**) मानने वाला (**उत्, इयाय**) उदय को प्राप्त होता है (**ततः**) उस (**मध्यात्**) मध्य से (**जातम्**) उत्पन्न हुए (**वसिष्ठम्**) उत्तम (**ऋषिम्**) वेदार्थवेत्ता विद्वान् को (**आहुः**) कहते हैं॥१३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे स्त्री और पुरुषों से सन्तान उत्पन्न होता है, वैसे अध्यापक और उपदेशकों के पढ़ाने और उपदेश करने से विद्वान् होते हैं॥१३॥

**पुनरध्यापकाऽध्येतारः किं कुर्य्युरित्याह॥**

फिर पढ़ाने और पढ़ने वाले जन क्या करें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**उ॒क्थ॒भृत॑ं साम॒भृत॑ं बिभर्ति॒ ग्रावा॑णं॒ बिभ्र॒त् प्र व॑दा॒त्यग्रे॑।**

**उपै॑नमाध्वं सुमन॒स्यमा॑ना॒ आ वो॑ गच्छाति प्रतृदो॒ वसि॑ष्ठः॥१४॥२४॥२॥**

उ॒क्थ॒ऽभृत॑म्। सा॒म॒ऽभृत॑म्। बि॒भ॒र्ति॒। ग्रावा॑णम्। बिभ्र॑त्। प्र। व॒दा॒ति॒। अग्रे॑। उप॑। ए॒न॒म्। आ॒ध्व॒म्। सु॒ऽम॒न॒स्यमा॑नाः। आ। व॒ः। ग॒च्छा॒ति॒। प्र॒ऽतृ॒द॒ः। वसि॑ष्ठः॥१४॥

**पदार्थः**-(**उक्थभृतम्**) य ऋग्वेदं बिभर्ति (**सामभृतम्**) यो सामवेदं दधाति (**बिभर्ति**) (**ग्रावाणम्**) सूर्यो मेघमिव (**बिभ्रत्**) विद्यां धरन् (**प्र**) (**वदाति**) वदेत् (**अग्रे**) पूर्वम् (**उप**) (**एनम्**) (**आध्वम्**) (**सुमनस्यमानाः**) सुष्ठु विचारयन्तः (**आ**) (**वः**) युष्मान् (**गच्छाति**) गच्छेत् प्राप्नुयात् (**प्रतृदः**) प्रकर्षेणाविद्यादिदोषहिंसकः (**वसिष्ठः**) अतिशयेन विद्यादिधनयुक्तः॥१४॥

**अन्वयः**-हे सुमनस्यमाना मनुष्या! यः प्रतृदो ग्रावाणं सूर्य इव विद्यां बिभ्रद्वसिष्ठोऽग्र उक्थभृतं सामभृतं बिभर्ति सोऽन्यान् प्र वदाति यो व आगच्छाति तमेनं यूयमुपाध्वम्॥१४॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यो विद्यार्थी सकलवेदविदं कुशिक्षाऽविद्याहिंसकमाप्तं विद्वांसं पुरः संसेव्य विद्याः पुनरध्यापयति तं सर्वे जिज्ञासवो विद्याप्राप्तये उपासत इति॥१४॥

अत्राऽऽध्यापकाऽध्येत्रुपदेशकोपदेश्यगुणकृत्यवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इत्यृग्वेदे सप्तमे मण्डले द्वितीयोऽनुवाकस्त्रयस्त्रिंशं सूक्तं पञ्चमेऽष्टके तृतीयाध्याये चतुर्विंशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे **(सुमनस्यमानाः)** सुन्दर विचार वाले मनुष्यो! जो **(प्रतृदः)** अतीव अविद्यादि दोष के नष्ट करने वाले **(ग्रावाणम्)** मेघ को सूर्य जैसे वैसे विद्या को **(बिभ्रत्)** धारता हुआ **(वसिष्ठः)** अत्यन्त विद्या आदि धन से युक्त **(अग्रे)** पूर्व **(उक्थभृतम्)** ऋग्वेद को और **(सामभृतम्)** सामवेद को धारण करने वाले को **(बिभर्ति)** धारण करता वह औरों को **(प्र, वदाति)** कहे जो **(वः)** तुम लोगों को **(आ, गच्छाति)** प्राप्त हो **(एनम्)** उस की तुम **(उप, आध्वम्)** उपासना करो॥१४॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो विद्यार्थी सकल वेदवेत्ता कुशिक्षा और अविद्या को नष्ट करने वाले आप्त विद्वान् की पूर्व अच्छे प्रकार सेवा कर विद्या पाय फिर पढ़ाता है, उसकी सब ज्ञान चाहने वाले जन विद्या पाने के लिये उपासना करते हैं॥१४॥

इस सूक्त में पढ़ाने-पढ़ने और उपदेश सुनाने और सुनने वालों के गुण और कार्य का वर्णन होने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ संगति जाननी चाहिये।

**यह ऋग्वेद के सातवें मण्डल में दूसरा अनुवाक, तेतीसवां सूक्त और पञ्चम अष्टक के तीसरे अध्याय में चौबीसवां वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

**अथ पञ्चविंशत्यृचस्य चतुस्त्रिंशत्तमस्य सूक्तस्य वसिष्ठ ऋषिः। १-१५, १८-२५ विश्वेदेवाः। १६ अहिः। १७ अहिर्बुध्न्यो देवता। १, २, ५, १२, १३, १४, १६, १९, २० भुरिगार्ची गायत्री। ३, ४, १७ आर्ची गायत्री। ६, ७, ८, ९, १०, ११, १५, १८, २१ निचृत्त्रिपादगायत्री। २२, २४ निचृदार्षी त्रिष्टुप् छन्दः। षड्जः स्वरः। २३ आर्षी त्रिष्टुप्। २५ विराडार्षी त्रिष्टुप् च छन्दः। धैवतः स्वरः॥**

***अथ कन्याः काभ्यो विद्याः प्राप्नुयुरित्याह॥***

अब कन्याजन किनसे विद्या को पावें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**प्र शुक्रैतु देवी मनीषा अस्मत्सुतष्टो रथो न वाजी॥ १॥**

**प्र। शुक्रा। एतु। देवी। मनीषा। अस्मत्। सुऽतष्टः। रथः। न। वाजी॥ १॥**

**पदार्थः**-**(प्र)** **(शुक्रा)** शुद्धान्तःकरणा आशुकारिणी **(एतु)** प्राप्नोतु **(देवी)** विदुषी **(मनीषाः)** प्रज्ञाः **(अस्मत्)** अस्माकं सकाशात् **(सुतष्टः)** उत्तमेन शिल्पिना निर्मितः **(रथः)** **(न)** इव **(वाजी)**॥१॥

**अन्वयः**-शुक्रा देवी कन्याऽस्मत्सुतष्टो वाजी रथो न मनीषाः प्रैतु॥१॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। सर्वाः कन्या विदुषीभ्यः स्त्रीभ्यो ब्रह्मचर्येण सर्वा विद्या अधीयीरन्॥१॥

**पदार्थः**- **(शुक्रा)** शुद्ध अन्तःकरणयुक्त शीघ्रकारिणी **(देवी)** विदुषी कन्या **(अस्मत्)** हमारे से **(सुतष्टः)** उत्तम कारू अर्थात् कारीगर के बनाये हुए **(वाजी)** वेगवान् **(रथः)** रथ के **(न)** समान **(मनीषाः)** उत्तम बुद्धियों को **(प्र, एतु)** प्राप्त होवे॥१॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। सब कन्या विदुषियों से ब्रह्मचर्य्य नियम से सब विद्या पढ़ें॥१॥

**पुनस्ताः कन्याः कां कां विद्यां जानीयुरित्याह॥**

फिर वे कन्या किस-किस विद्या को जानें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**विदुः पृथिव्या दिवो जनित्रं शृण्वन्त्यापो अधः क्षरन्तीः॥ २॥**

**विदुः। पृथिव्याः। दिवः। जनित्रम्। शृण्वन्ति। आपः। अधः। क्षरन्तीः॥ २॥**

**पदार्थः**-**(विदुः)** जानीयुः **(पृथिव्याः)** भूमेः **(दिवः)** सूर्यस्य **(जनित्रम्)** जनकं कारणम् **(शृण्वन्ति)** **(आपः)** जलानीव **(अधः)** **(क्षरन्तीः)** वर्षन्त्यः॥२॥

**अन्वयः**-याः कन्या अधः क्षरन्तीराप इव विद्याः शृण्वन्ति ताः पृथिव्या दिवो जनित्रं विदुः॥२॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यथा मेघमण्डलादापो वेगेन पृथिवीं प्राप्य प्रजा आनन्दन्ति तथैव याः कन्या अध्यापिकाभ्यो भूगर्भादिविद्याः प्राप्य पत्यादीन् सततं सुखयन्ति ताः श्रेष्ठतरा भवन्ति॥२॥

**पदार्थः**-जो कन्या **(अधः, क्षरन्तीः)** नीचे को गिरते वर्षते हुए जलों के समान विद्या **(शृण्वन्ति)** सुनती हैं वे **(पृथिव्याः)** पृथिवी और **(दिवः)** सूर्य के **(जनित्रम्)** कारण को **(विदुः)** जानें॥२॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे मेघमण्डल से जल वेग से पृथिवी को पाकर प्रजा आनन्दित होते हैं, वैसे जो कन्या पढ़ाने वाली से भूगर्भादि विद्या को पाकर पति आदि को निरन्तर सुख देती हैं, वे अत्यन्त श्रेष्ठ होती हैं॥२॥

**पुनस्ताः कीदृशो भवेयुरित्याह॥**

फिर वे कैसी हों, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**आपश्चिदस्मै पिन्वन्त पृथ्वीर्वृत्रेषु शूरा मसन्त उग्राः॥३॥**

**आपः। चित्। अस्मै। पिन्वन्त। पृथ्वीः। वृत्रेषु। शूराः। मंसन्ते। उग्राः॥३॥**

**पदार्थः**-**(आपः)** जलानि **(चित्)** इव **(अस्मै)** विद्याव्यवहाराय **(पिन्वन्त)** सिञ्चन्ति **(पृथ्वीः)** भूमीः **(वृत्रेषु)** धनेषु **(शूराः)** **(मंसन्ते)** परिणमन्ते **(उग्राः)** तेजस्विनः॥३॥

**अन्वयः**-याः कन्याः पृथ्वीरापश्चिदस्मै पिन्वन्त वृत्रेषु उग्राः शूरा इव मंसन्ते ता विदुष्यो जायन्ते॥३॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। याः कन्या जलवत्कोमलत्वादिगुणाः पृथिवीवत्क्षमाशीलाः शूरवदुत्साहिन्यो विद्या गृह्णन्ति ताः सौभाग्यवत्यो जायन्ते॥३॥

**पदार्थः**-जो कन्या **(पृथ्वीः)** भूमि और **(आपः)** जल **(चित्)** ही के समान **(अस्मै)** इस विद्याव्यवहार के लिये **(पिन्वन्त)** सिंचन करती और **(वृत्रेषु)** धनों के निमित्त **(उग्राः)** तेजस्वी **(शूराः)** शूरवीरों के समान **(मंसन्ते)** मान करती है, वे विदुषी होती हैं॥३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जो कन्या जल के समान कोमलत्वादि गुणयुक्त हैं, पृथिवी के समान सहनशील और शूरों के समान उत्साहिनी विद्याओं को ग्रहण करती हैं, वे सौभाग्यवती होती हैं॥३॥

**पुनस्ताः कन्या विद्यायै कं यत्नं कुर्य्युरित्याह॥**

फिर वे कन्या विद्या के लिये क्या यत्न करें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**आ धूर्ष्वस्मै दधाताश्वानिन्द्रो न वज्री हिरण्यबाहुः॥४॥**

**आ। धूःऽसु। अस्मै। दधात। अश्वान्। इन्द्रः। न। वज्री। हिरण्यऽबाहुः॥४॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**आ**) (**धूर्षु**) रथाधारेषु (**अस्मै**) विद्याग्रहणाय (**दधात**) (**अश्वान्**) शीघ्रगामितुरङ्गान् (**इन्द्रः**) सूर्य इव राजा (**न**) इव (**वज्री**) शस्त्रास्त्रयुक्तः (**हिरण्यबाहुः**) हिरण्यं बाह्वोर्दानाय यस्य सः॥४॥

**अन्वयः**-हे कन्या! यूयमस्मै धूर्ष्वश्वान् हिरण्यबाहुर्वज्रीन्द्रो न ब्रह्मचर्यमा दधात॥४॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। यथा सारथिरश्वान् रथे संयोज्य नियमेन चालयति तथा कन्या आत्मान्तःकरणेन्द्रियाणि विद्याप्रापणे व्यवहारे नियोज्य नियमेन चालयन्तु॥४॥

**पदार्थः**-हे कन्याओ! तुम (**अस्मै**) इस विद्याग्रहण करने के लिये (**धूर्षु**) रथों के आधार धुरियों में (**अश्वान्**) घोड़े और (**हिरण्यबाहुः**) जिसकी भुजाओं में दान के लिये हिरण्य विद्यमान उस (**वज्री**) शस्त्र अस्त्रों से युक्त (**इन्द्रः**) सूर्यतुल्य राजा के (**न**) समान ब्रह्मचर्य को (**आ, दधात**) अच्छे प्रकार धारण करो॥४॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जैसे सारथी घोड़ों को रथ में जोड़ कर नियम से चलाता है, वैसे कन्या आत्मा अन्तःकरण और इन्द्रियों को विद्या की प्राप्ति से व्यवहार में निरन्तर जोड़ कर नियम से चलावें॥४॥

**पुनः कन्याः कथं विद्यां वर्धयेयुरित्याह॥**

फिर कन्याजन कैसे विद्या को बढ़ावें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अभि प्र स्थाताहेव यज्ञं यातेव पत्मन्त्मना हिनोत॥५॥**

**अभि। प्र। स्थात। अहःऽइव। यज्ञम्। याताऽइव। पत्मन्। त्मना। हिनोत॥५॥**

**पदार्थः**-(**अभि**) (**प्र**) (**स्थात**) (**अहेव**) अहानीव (**यज्ञम्**) अध्ययनाध्यापनाख्यम् (**यातेव**) गच्छन्निव (**पत्मन्**) मार्गे (**त्मना**) आत्मना (**हिनोत**) वर्धयत॥५॥

**अन्वयः**-हे कन्या! यूयं विद्याप्राप्तयेऽहेव यज्ञमभि प्र स्थात त्मना पत्मन् यातेव हिनोत॥५॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। हे कन्या! यथा दिनान्यनुक्रमेण गच्छन्त्याऽऽगच्छन्ति यथा च पथिका नित्यं चलन्ति तथैवानुक्रमेण विद्याप्राप्तिमार्गेण विद्याप्राप्तिरूपं यज्ञं वर्धयत॥५॥

**पदार्थः**-हे कन्याओ! तुम विद्याप्राप्ति के लिये (**अहेव**) दिनों के समान (**यज्ञम्**) पढ़ने पढ़ाने रूप यज्ञ के (**अभि, प्र, स्थात**) सब ओर से जाओ (**त्मना**) अपने से (**पत्मन्**) मार्ग में (**यातेव**) जाते हुए के समान (**हिनोत**) बढ़ाओ॥५॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे कन्याओ! जैसे दिन अनुकूल क्रम से जाते और आते हैं और जैसे बटोही जन नित्य चलते हैं, वैसे ही अनुकूल क्रम से विद्याप्राप्ति मार्ग से विद्याप्राप्तिरूप यज्ञ को बढ़ाओ॥५॥

**पुनः कन्या विद्याप्राप्तिव्यवहारं वर्धयन्त्वित्याह॥**



www.9009.co.in

फिर कन्या विद्याप्राप्ति व्यवहार को बढ़ावें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**त्मना॑ स॒मत्सु॑ हि॒नोत॑ य॒ज्ञं दधा॑त के॒तुं जना॑य वी॒रम्॥६॥**

**त्मना॑। स॒मत्ऽसु॑। हि॒नोत॑। य॒ज्ञम्। दधा॑त। के॒तुम्। जना॑य। वी॒रम्॥६॥**

**पदार्थः**-(**त्मना**) आत्मना (**समत्सु**) सङ्ग्रामेषु (**हिनोत**) वर्धयत (**यज्ञम्**) सङ्गन्तव्यं विद्याबोधम् (**दधात**) (**केतुम्**) प्रज्ञाम् (**जनाय**) राज्ञे (**वीरम्**) दोग्धारम्॥६॥

**अन्वयः**-हे कन्या! यथा जनाय समत्सु वीरं प्रेरयन्ति तथा त्मना केतुं दधात यज्ञं हिनोत॥६॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यथा शूरवीरा धीमन्तो राजपुरुषाः प्रयत्नेन संग्रामान् विजयन्ते तथा कन्याभिरिन्द्रियाणि जित्वा विद्याः प्राप्य विजयो विभावनीयः॥६॥

**पदार्थः**-हे कन्याओ! जैसे (**जनाय**) राजा के लिये (**समत्सु**) संग्रामों में (**वीरम्**) पूरा करने वाले जन को प्रेरणा देते हैं, वैसे (**त्मना**) अपने से (**केतुम्**) बुद्धि को (**दधात**) धारण करो और (**यज्ञम्**) संग करने योग्य विद्याबोध को (**हिनोत**) बढ़ाओ॥६॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे शूरवीर धीमान् बुद्धिमान् राजा पुरुष उत्तम यत्न से संग्रामों को विशेषता से जीतते हैं, वैसे कन्याओं को इन्द्रियाँ जीत और विद्याओं को पाकर विजय की विशेष भावना करनी चाहिये॥६॥

**पुनस्ताः कन्या विद्याः कथं प्राप्नुयुरित्याह॥**

फिर वे कन्या विद्या कैसे पावें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**उद॑स्य॒ शुष्मा॑द्भा॒नुर्नार्त॒ बिभ॑र्ति भा॒रं पृ॑थि॒वी न भूम॑॥७॥**

**उत्। अ॒स्य॒। शुष्मा॑त्। भा॒नुः। न। आर्त॒। बिभ॑र्ति। भा॒रम्। पृ॒थि॒वी। न। भूम॑॥७॥**

**पदार्थः**-(**उत्**) (**अस्य**) (**शुष्मात्**) बलात् (**भानुः**) किरणयुक्तः सूर्यः (**न**) इव (**आर्त**) प्राप्नोति (**बिभर्ति**) (**भारम्**) (**पृथिवी**) भूमिः (**न**) इव (**भूम**) भवेम॥७॥

**अन्वयः**-हे कन्या! यथा वयं भारं पृथिवी न भानुर्नास्य शुष्माद्विदुष्यो भूम यथाऽयं भानुः पृथिव्यादिभारमुद्बिभर्ति सकलं तदार्त्त तथा यूयं भवत॥७॥

**भावार्थः**-यथा विद्वांसोऽस्य विद्याबोधस्य बलात् सर्वं सुखं बिभ्रति तथैव कन्या विद्याबलात् समग्रमानन्दं प्राप्नुवन्ति॥७॥

**पदार्थः**-हे कन्याजनो! जैसे हम (**भारम्**) भार को (**पृथिवी**) भूमि (**न**) जैसे और (**भानुः**) किरणयुक्त सूर्य जैसे (**न**) वैसे (**अस्य**) इस विद्याव्यवहार के (**शुष्मात्**) बल से विदुषी (**भूम**) हों वा जैसे यह भानु पृथिवी आदि के भार को (**उद्, बिभर्ति**) उत्कृष्टता से धारण करता है, समस्त उस व्यवहार को (**आर्त्त**) प्राप्त होता है, वैसे तुम होओ॥७॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-जैसे विद्वान् जन इस विद्याबोध के बल से सब सुख को धारण करते हैं, वैसे ही कन्याजन विद्याबल से सब आनन्द को पाती हैं॥७॥

**पुनरध्यापका अध्येतॄन् किमुपदिशेयुरित्याह॥**

फिर अध्यापक, अध्येताओं को क्या उपदेश करें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**ह्वया॑मि दे॒वाँ अया॑तुरग्ने॒ साध॑न्नृतेन॒ धियं॑ दधामि॥८॥**

**ह्वया॑मि। दे॒वान्। अया॑तुः। अ॒ग्ने॒। साध॑न्। ऋ॒तेन॑। धिय॑म्। द॒धा॒मि॒॥८॥**

**पदार्थः**-(**ह्वयामि**) (**देवान्**) विदुषः (**अयातुः**) यो न याति तस्मात् (**अग्ने**) विद्वन् (**साधन्**) (**ऋतेन**) सत्येन व्यवहारेण (**धियम्**) प्रज्ञां शुभं कर्म वा (**दधामि**)॥८॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! यथाऽहं देवान् ह्वयाम्यृतेन साधन्धियं दधाम्ययातुः स्थिराद्विद्यां गृह्णामि तथा त्वं कन्यापाठनस्य निबन्धं कुरु॥८॥

**भावार्थः**-ये विदुष आहूय सत्कृत्य सत्याचारेण विद्यां धरन्ति ते विद्वांसो भवन्ति॥८॥

**पदार्थः**-हे (**अग्ने**) विद्वान्! जैसे मैं (**देवान्**) विद्वानों को (**ह्वयामि**) बुलाता हूँ (**ऋतेन**) सत्य व्यवहार से (**साधन्**) सिद्ध करता हुआ (**धियम्**) उत्तम बुद्धि वा शुभ कर्म को (**दधामि**) धारण करता हूँ और (**अयातुः**) जो नहीं जाता उस स्थिर से विद्या ग्रहण करता हूँ, वैसे आप कन्या पढ़ाने का निबन्ध करो॥८॥

**भावार्थः**-जो विद्वानों को बुला के और उनका सत्कार कर सत्य आचार से विद्या को धारण करते हैं, वे विद्वान् होते हैं॥८॥

**सर्वैर्मनुष्यैः किमेष्टव्यमित्याह॥**

सब मनुष्यों को क्या इच्छा करनी चाहिये, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अ॒भि वो॑ दे॒वीं धियं॑ दधिध्वं॒ प्र वो॑ देव॒त्रा वाचं॑ कृणुध्वम्॥९॥**

**अ॒भि। वः॒। दे॒वीम्। धिय॑म्। द॒धि॒ध्व॒म्। प्र। वः॒। दे॒व॒ऽत्रा। वाच॑म्। कृ॒णु॒ध्व॒म्॥९॥**

**पदार्थः**-(**अभि**) आभिमुख्ये (**वः**) युष्माकम् (**देवीम्**) दिव्याम् (**धियम्**) प्रज्ञाम् (**दधिध्वम्**) (**प्र**) (**वः**) युष्माकम् (**देवत्रा**) विद्वत्सु (**वाचम्**) (**कृणुध्वम्**)॥९॥

**अन्वयः**-हे विद्वांसो! यान् देवत्रा वर्त्तमानां देवीं धियं यूयमभि दधिध्वं तां वो वयमपि दधीमहि। यान् देवत्रा वाचं यूयं प्र कृणुध्वं तां वो वयमपि प्र कुर्याम॥९॥

**भावार्थः**-मनुष्यैर्विद्वदनुकरणेन प्रज्ञा विद्या वाक् च धर्त्तव्या॥९॥

**पदार्थः**-हे विद्वानो! जैसे (**देवत्रा**) विद्वानों में वर्त्तमान (**देवीम्**) दिव्य (**धियम्**) बुद्धि को तुम (**अभि, दधिध्वम्**) सब ओर से धारण करो उस (**वः**) आपकी बुद्धि को हम लोग भी धारण करें,



www.9009.co.in

विद्वानों में जिस **(वाचम्)** वाणी को तुम **(प्र, कृणुध्वम्)** प्रसिद्ध करो उस **(वः)** आपकी वाणी को हम लागे भी **(प्र)** प्रसिद्ध करें॥६॥

**भावार्थः**-मनुष्यों को चाहिये कि विद्वानों का अनुकरण कर बुद्धि, विद्या और वाणी को धारण करें॥९॥

**पुनस्स विद्वान् कीदृशो भवेदित्याह॥**

फिर वह विद्वान् कैसा हो, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**आ च॑ष्ट आसा॒ं पाथो॑ न॒दीना॒ं वरु॑ण उ॒ग्रः स॒हस्र॑चक्षाः॥१०॥२५॥**

**आ। च॒ष्टे॒। आ॒सा॒म्। पाथ॑ः। न॒दीना॑म्। वरु॑णः। उ॒ग्रः। स॒ह॑स्र॒ऽचक्षाः॥१०॥**

**पदार्थः**-**(आ) (चष्टे)** समन्तात्कथयति **(आसाम्) (पाथः)** उदकम् **(नदीनाम्) (वरुणः)** सूर्य इव **(उग्रः)** तेजस्वी **(सहस्रचक्षाः)** सहस्रं चक्षांसि दर्शनानि यस्माद्यस्य वा॥१०॥

**अन्वयः**-हे विद्वन्! यथा वरुण उग्रः सहस्रचक्षास्सूर्य आसां नदीनां पाथ आकर्षति पूरयति च तथाभूतो भवान् मनुष्यचित्तान्याकृष्य यतो विद्यामाचष्टे तस्मात्सत्कर्तव्योऽस्ति॥१०॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यो विद्वान् सूर्यवदविद्यां निवार्य विद्याप्रकाशं जनयति स एवात्र माननीयो भवति॥१०॥

**पदार्थः**-हे विद्वान्! जैसे **(वरुणः)** सूर्य के समान **(उग्रः)** तेजस्वी जन **(सहस्रचक्षाः)** जिसके वा जिससे हजार दर्शन होते हैं वह सूर्य **(आसाम्)** इन **(नदीनाम्)** नदियों के **(पाथः)** जल को खींचता और पूरा करता है, वैसे हुए आप मनुष्यों के चित्तों को खींच के जिस कारण विद्या को **(आ, चष्टे)** कहते हैं, इससे सत्कार करने योग्य हैं॥१०॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो विद्वान् सूर्य के तुल्य अविद्या को निवार के विद्या के प्रकाश को उत्पन्न करता है, वही यहाँ माननीय होता है॥१०॥

**पुनस्स राजा किंवत् किं कुर्यादित्याह॥**

फिर वह राजा किसके तुल्य क्या करे, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**राजा॑ रा॒ष्ट्राना॒ं पेशो॑ न॒दीना॒मनु॑त्तमस्मै क्ष॒त्रं वि॒श्वायु॑॥११॥**

**राजा॑। रा॒ष्ट्राना॑म्। पेश॑ः। न॒दीना॑म्। अनु॑त्तम्। अ॒स्मै॒। क्ष॒त्रम्। वि॒श्वऽआ॑यु॥११॥**

**पदार्थः**-**(राजा)** प्रकाशमानः **(राष्ट्रानाम्)** राज्यानाम्। अत्र **वा छन्दसी**ति णत्वाभावः। **(पेशः)** रूपम् **(नदीनाम्) (अनुत्तम्)** अनुकूलं शत्रुभिरबाधितम् **(अस्मै) (क्षत्रम्)** धनं राज्यं वा **(विश्वायु)** विश्वं सम्पूर्णमायु यस्मात्तत्॥११॥

**अन्वयः**-यो राजा नदीनां पेश इव राष्ट्रानां रक्षां विधत्तेऽस्मा अनुत्तं विश्वायु क्षत्रं भवति॥११॥



www.9009.co.in

**भावार्थः-**अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यो राजा न्यायकारी विद्वान् भवति तम्प्रति समुद्रं नद्य इव प्रजा अनुकूला भूत्वैश्वर्यं जनयन्ति पूर्णमायुश्चास्य भवति॥११॥

**पदार्थः**-जो **(राजा)** प्रकाशमान **(नदीनाम्)** नदियों के **(पेशः)** रूप के समान **(राष्ट्रानाम्)** राज्यों की रक्षा का विधान करता है **(अस्मै)** इसके लिये **(अनुत्तम्)** शत्रुओं से अपीड़ित **(विश्वायु)** जिससे समस्त आयु होती है वह **(क्षत्रम्)** धन वा राज्य होता है॥११॥

**भावार्थः-**इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो राजा न्यायकारी विद्वान् होता है, उसके प्रति समुद्र को नदी जैसे, वैसे प्रजा अनुकूल होकर ऐश्वर्य्य को उत्पन्न कराती हैं और इस राजा को पूरी आयु भी होती है॥११॥

**पुना राजजनाः किं कुर्युरित्याह॥**

फिर राजजन क्या करें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अविष्टो अस्मान् विश्वासु विक्ष्वद्युं कृणोत शंसं निनित्सोः॥१२॥**

**अविष्टो इति। अस्मान्। विश्वासु। विक्षु। अद्युम्। कृणोत। शंसम्। निनित्सोः॥१२॥**

**पदार्थः**-**(अविष्टो)** दोषेष्वप्रविष्टाः सन्तो रक्षतः **(अस्मान्)** तदनुकूलान् राज्यादिकारिणः **(विश्वासु)** अखिलासु **(विक्षु)** प्रजासु **(अद्युम्)** प्रकाशरहितं व्यवहारम् **(कृणोत)** **(शंसम्)** प्रशंसनम् **(निनित्सोः)** निन्दितुमिच्छतः॥१२॥

**अन्वयः-**हे राजजना! यूयं विश्वासु विक्ष्वस्मान्नविष्टो सततं रक्षत अस्माकं शसं कृणोत अस्मान्निनित्सोर्व्यवहारमद्युं कृणोत॥१२॥

**भावार्थः-**राजजनाः प्रजासु वर्त्तमानान् निन्दकान् जनान् निवार्य प्रशंसकान् संरक्ष्य प्रजासु पितृवद्वर्तित्वा अविद्यान्धकारं निवारयन्तु॥१२॥

**पदार्थः**-हे राजजनो! तुम **(विश्वासु)** समस्त **(विक्षु)** प्रजाओं में **(अस्मान्)** उनके अनुकूल राज्याधिकारी हम जनों को **(अविष्टो)** दोषों में न प्रवेश किये हुए निरन्तर रक्षा करो हमारी **(शंसम्)** प्रशंसा **(कृणोत)** करो हम लोगों की **(निनित्सोः)** निन्दा करना चाहते हुए के **(अद्युम्)** प्रकाशरहित व्यवहार को प्रकाश करो॥१२॥

**भावार्थः-**राजजन प्रजाओं में वर्त्तमान निन्दक जनों का निवारण कर प्रशंसा करने वालों की रक्षा कर और प्रजाजनों में पिता के समान वर्त्त कर अविद्यान्धकार को निवारण करें॥१२॥

**पुनस्ते राजजनाः किं कुर्युरित्याह॥**

फिर वे राजजन क्या करें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**व्येतु दिद्युद् द्विषामशेवा युयोत विष्वग्रपस्तनूनाम्॥१३॥**

**वि। एतु। दिद्युत्। द्विषाम्। अशेवा। युयोत। विष्वक्। रपः। तनूनाम्॥१३॥**



www.9009.co.in

**पदार्थ:**-(**वि**) विशेषेण (**एतु**) प्राप्नोतु (**दिद्युत्**) भृशं द्योतमानम् (**द्विषाम्**) द्वेष्टॄणाम् (**अशेवा**) असुखानि (**युयोत**) (**विष्वक्**) व्याप्तम् (**रप:**) अपराधम् (**तनूनाम्**) शरीराणाम्॥१३॥

**अन्वय:**-हे राजजना विद्वांसो! यूयं द्विषामशेवा कुरु तनूनां दिद्युद्विष्वग्रपो युयोत पृथक्कुरुत यत: भद्रान् सर्वान् सुखं व्येतु॥१३॥

**भावार्थ:**-हे राजजना! यूयं ये धार्मिकान् पीडयेयुस्तान् दण्डेन पवित्रान् कुरुत यतो सर्वतस्सर्वान् सुखं प्राप्नुयात्॥१३॥

**पदार्थ:**-हे राजजन विद्वानो! तुम (**द्विषाम्**) द्वेष करने वालों को (**अशेवा**) असुख अर्थात् दु:ख को करो (**तनूनाम्**) शरीरों के (**दिद्युत्**) निरन्तर प्रकाशमान (**विष्वक्**) और व्याप्त (**रप:**) अपराध को (**युयोत**) अलग करो जिसमें भद्र उत्तम सब मनुष्यों को सुख (**वि, एतु**) व्याप्त हो॥१३॥

**भावार्थ:**-हे राजजनो! तुम, जो धार्मिक सज्जनों को पीड़ा देवें उनको दण्ड से पवित्र करो, जिससे सब ओर से सबको सुख प्राप्त हो॥१३॥

**पुन: स राजा किं कुर्यादित्याह॥**

फिर वह राजा क्या करे, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अवी॑न्नो अ॒ग्निर्ह॒व्यान्नमो॑भिः प्रेष्ठो॑ अ॒स्मा अधायि॒ स्तोम॑:॥१४॥**

**अवी॑त्। न॒:। अ॒ग्निः। ह॒व्य॒ऽअत्। नम॑:ऽभिः। प्रेष्ठ॑:। अ॒स्मै॒। अ॒धा॒यि॒। स्तोम॑:॥१४॥**

**पदार्थ:**-(**अवीत्**) रक्षेत् (**न:**) अस्मान् (**अग्नि:**) पावक इव (**हव्यात्**) यो हव्यान्यत्ति स: (**नमोभि:**) अन्नादिभि: (**प्रेष्ठ:**) अतिशयेन प्रिय: (**अस्मै**) (**अधायि**) ध्रियते (**स्तोम:**) प्रशंसाव्यवहार:॥१४॥

**अन्वय:**-येन राज्ञाऽस्मै राष्ट्राय प्रेष्ठ: स्तोमोऽधायि यो हव्यादाग्निरिव राजा नमोभिर्नोऽस्मान् अवीत् स एवास्माभि: सत्कर्तव्योऽस्ति॥१४॥

**भावार्थ:**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कार:। यथा सूर्यस्स्वप्रकाशेन सर्वान्रक्षति तथा राजा न्यायप्रकाशेन सर्वा: प्रजा रक्षेत्॥१४॥

**पदार्थ:**-जिस राजा ने (**अस्मै**) इस राज्य के लिये (**प्रेष्ठ:**) अतीव प्रिय (**स्तोम:**) प्रशंसा व्यवहार (**अधायि**) धारण किया गया जो (**हव्यात्**) होम करने योग्य अन्न भोजन करने वाले (**अग्नि:**) अग्नि के समान वर्त्तमान [राजा] (**नमोभि:**) अन्नादि पदार्थों से (**न:**) हम लोगों की (**अवीत्**) रक्षा करे, वही हम लोगों को सत्कार करने योग्य है॥१४॥

**भावार्थ:**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे सूर्य स्वप्रकाश से सब की रक्षा करता है, वैसे राजा न्याय के प्रकाश से सब प्रजा की रक्षा करे॥१४॥

**पुनस्ते राजजना: किं कुर्युरित्याह॥**



www.9009.co.in

फिर वे राजजन क्या करें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**सजूर्देवेभिरपां नपातं सखायं कृध्वं शिवो नो अस्तु॥ १५॥**

**सऽजूः। देवेभिः। अपाम्। नपातम्। सखायम्। कृध्वम्। शिवः। नः। अस्तु॥ १५॥**

**पदार्थः**-(**सजूः**) सह वर्त्तमानः (**देवेभिः**) विद्वद्भिर्दिव्यैः पृथिव्यादिभिर्वा (**अपाम्**) जलानाम् (**नपातम्**) यो न पतति न नश्यति तं मेघमिव (**सखायम्**) सुहृदम् (**कृध्वम्**) कुरुध्वम् (**शिवः**) मङ्गलकारी (**नः**) अस्मभ्यमस्माकं वा (**अस्तु**)॥ १५॥

**अन्वयः**-हे राजन्! यथा देवेभिस्सजूस्सूर्योऽपां नपातं करोति तथा भवान् नः शिवोऽस्तु हे विद्वांस! ईदृशं राजानं नस्सखायं यूयं कृध्वम्॥ १५॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यथा सूर्यादयः पदार्थाः जगति मित्रवद्वर्तित्वा सुखकारिणो भवन्ति तथैव राजजनाः सर्वेषां सखायो भूत्वा मङ्गलकारिणो भवन्ति॥ १५॥

**पदार्थः**-हे राजन्! जैसे (**देवेभिः**) विद्वानों से वा पृथिवी आदि दिव्य पदार्थों के (**सजूः**) साथ वर्त्तमान सूर्यमण्डल (**अपां नपातम्**) जलों के उस व्यवहार को जो नहीं नष्ट होता मेघ के समान करता है, वैसे आप (**नः**) हमारे वा हमारे लिये (**शिवः**) मंगलकारी (**अस्तु**) हों हे विद्वानो! ऐसे राजा को हमारा (**सखायम्**) मित्र (**कृध्वम्**) कीजिये॥ १५॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जैसे सूर्य आदि पदार्थ जगत् में मित्र के समान वर्त कर सुखकारी होते हैं, वैसे ही राजजन सब के मित्र होकर मंगलकारी होते हैं॥ १५॥

**पुनस्ते राजजना किंवत् किं कुर्युरित्याह॥**

फिर वे राजजन किसके तुल्य क्या करें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अब्जामुक्थैरहिं गृणीषे बुध्ने नदीनां रजःसु षीदन्॥ १६॥**

**अप्ऽजाम्। उक्थैः। अहिम्। गृणीषे। बुध्ने। नदीनाम्। रजःऽसु। सीदन्॥ १६॥**

**पदार्थः**-(**अब्जाम्**) अप्सु जातम् (**उक्थैः**) ये तद्गुणप्रशंसकैर्वचोभिः (**अहिम्**) मेघमिव (**गृणीषे**) (**बुध्ने**) अन्तरिक्षे (**नदीनाम्**) सरिताम् (**रजःसु**) लोकेष्वैश्वर्येषु वा (**सीदन्**) तिष्ठन्॥ १६॥

**अन्वयः**-हे राजन्! यथा सूर्यो बुध्ने वर्त्तमानो नदीनां रजःसु सीदन् अब्जामहिं जनयति तथोक्थै राष्ट्रे रजःसु सीदन् नदीनां प्रवाहमिव यतो विद्या गृणीषे तस्मात् सत्कर्तव्योऽसि॥ १६॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे राजपुरुषा! यथा सूर्यो वर्षाभिर्नदीः पूरयति तथा धनधान्यैः प्रजा यूयं पूरयत॥ १६॥

**पदार्थः**-हे राजन्! जैसे सूर्य (**बुध्ने**) अन्तरिक्ष में वर्त्तमान (**नदीनाम्**) नदियों के सम्बन्धी (**रजःसु**) लोकों में (**सीदन्**) स्थिर होता हुआ (**अब्जाम्**) जलों में उत्पन्न हुए (**अहिम्**) मेघ को उत्पन्न



www.9009.co.in

करता है, वैसे **(उक्थैः)** उसके गुणों के प्रशंसक वचनों से राज्य में जो ऐश्वर्य उनमें स्थिर होते हुए आप नदियों के प्रवाह के समान जिससे विद्या को **(गृणीषे)** कहते हो, इससे सत्कार करने योग्य हो॥१६॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे राजपुरुषो! जैसे सूर्य वर्षा से नदियों को पूर्ण करता है, वैसे धन-धान्यों से तुम प्रजाओं को पूर्ण करो॥१६॥

**पुनस्ते राजजनाः किं कुर्युरित्याह॥**

फिर वे राजजन क्या करें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**मा नोऽहिर्बुध्न्यो रिषे धान्मा यज्ञो अस्य स्रिधदृतायोः॥१७॥**

**मा। नः। अहिः। बुध्न्यः। रिषे। धात्। मा। यज्ञः। अस्य। स्रिधत्। ऋतऽयोः॥१७॥**

**पदार्थः**-**(मा)** निषेधे **(नः)** अस्मान् **(अहिः)** मेघः **(बुध्न्यः)** बुध्नेऽन्तरिक्षे भवः **(रिषे)** हिंसनाय **(धात्)** दध्यात् **(मा)** निषेधे **(यज्ञः)** राजपालनीयो व्यवहारः **(अस्य)** राज्ञः **(स्रिधत्)** हिंसितः स्यात् **(ऋतायोः)** ऋतं सत्यं न्यायधर्मं कामयमानस्य॥१७॥

**अन्वयः**-हे विद्वांसो! यथा बुध्न्योऽहिर्नो रिषे मा धात् यथाऽस्यर्तायो राज्ञो यज्ञो मा स्रिधत् तथाऽनुतिष्ठत॥१७॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे राजादयो मनुष्या! यथाऽवृष्टिर्न स्यात् न्यायव्यवहारो न नश्येत्तथा तथा यूयं विधत्त॥१७॥

**पदार्थः**-हे विद्वानो! जैसे **(बुध्न्यः)** अन्तरिक्ष में उत्पन्न हुआ **(अहिः)** मेघ **(नः)** हम लोगों को **(रिषे)** हिंसा के लिये **(मा)** मत **(धात्)** धारण करे वा जैसे **(अस्य)** इस **(ऋतायोः)** सत्य न्याय धर्म की कामना करने वाला राजा का **(यज्ञः)** प्रजा पालन करने योग्य व्यवहार **(मा)** मत **(स्रिधत्)** नष्ट हो वैसा अनुष्ठान करो॥१७॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे राजन् आदि मनुष्यो! जैसे अवर्षण न हो, न्यायव्यवहार न नष्ट हो, वैसा तुम विधान करो॥१७॥

**पुनस्ते राजजनाः किं कुर्युरित्याह॥**

फिर वे राजजन क्या करें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**उत न एषु नृषु श्रवो धुः प्र राये यन्तु शर्धन्तो अर्यः॥१८॥**

**उत। नः। एषु। नृषु। श्रवः। धुः। प्र। राये। यन्तु। शर्धन्तः। अर्यः॥१८॥**

**पदार्थः**-**(उत)** अपि **(नः)** अस्माकम्। अत्र **वा छन्दसी**त्यवसानम्। **(एषु)** **(नृषु)** नायकेषु मनुष्येषु **(श्रवः)** अन्नं श्रवणं वा **(धुः)** दध्युः **(प्र)** **(राये)** धनाय **(यन्तु)** गच्छन्तु **(शर्धन्तः)** बलवन्तः **(अर्यः)** अरयश्शत्रवः॥१८॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे राजन्! ये न एषु राये श्रवो धुस्तेऽस्मान् प्राप्नुवन्तूत ये नः शर्धन्तो नृष्वर्योऽस्माकं राज्यादिकमिच्छेयुस्ते दूरं प्र यन्तु॥१८॥

**भावार्थः**-मनुष्यैः सज्जनानां निकटे दुष्टानां दूरे स्थित्वा श्रीरुन्नेया॥१८॥

**पदार्थः**-हे राजन्! जो **(नः)** हमारे **(एषु)** इन व्यवहारों में **(राये)** धन के लिये **(अवः)** अन्न वा श्रवण को **(धुः)** धारण करें वे हम लोगों को प्राप्त होवें **(उत)** और जो **(नः)** हम लोगों को **(शर्धन्तः)** बली करते हुए **(नृषु)** नायक मनुष्यों में **(अर्यः)** शत्रुजन हमारे राज्य आदि ऐश्वर्य को चाहें वे दूर **(प्र, यन्तु)** पहुँचें॥१८॥

**भावार्थः**-मनुष्यों को चाहिये कि सज्जनों के निकट और दुष्टों के दूर रह कर लक्ष्मी की उन्नति करें॥१८॥

**के शत्रुनिवारणे समर्था भवन्तीत्याह॥**

कौन शत्रुओं के निवारण में समर्थ होते हैं, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**तपन्ति शत्रुं स्वर्ण भूमा महासेनासो अमेभिरेषाम्॥१९॥**

**तपन्ति। शत्रुम्। स्वः। न। भूम। महाऽसेनासः। अमेभिः। एषाम्॥१९॥**

**पदार्थः**-**(तपन्ति)** **(शत्रुम्)** **(स्वः)** सुखम् **(न)** इव **(भूम)** भवेम। अत्र **द्व्यचोऽतस्तिङ** इति दीर्घः। **(महासेनासः)** महती सेना येषान्ते **(अमेभिः)** बलादिभिः **(एषाम्)** वीराणाम्॥१९॥

**अन्वयः**-ये महासेनास एषाममेभिः शत्रुं तपन्ति तैस्सह राजादयो वयं स्वर्न भूम॥१९॥

**भावार्थः**-हे राजन्! यदि भवता योद्धॄणां शूरवीराणां सेना सत्कृत्य रक्ष्येत तर्हि ते शत्रवो निलीयेरन् सुखं च सततं वर्धेत॥१९॥

**पदार्थः**- **(महासेनासः)** जिनकी बड़ी सेना है वे जन **(एषाम्)** इन वीरों के **(अमेभिः)** बलादिकों से **(शत्रुम्)** शत्रु को **(तपन्ति)** तपाते हैं उनसे साथ राजा आदि हम लोग **(स्वः)** सुख **(न)** जैसे हो वैसे **(भूम)** प्रसिद्ध हों॥१९॥

**भावार्थः**-हे राजन्! यदि आपसे योद्धा शूरवीर जनों की सेना सत्कार कर रक्खी जाय तो आप के शत्रुजन बिला जायें और सुख निरन्तर बढ़े॥१९॥

**पुना राजामात्यभृत्याः परस्परं कथं वर्त्तेरन्नित्याह॥**

फिर राजा और अन्य भृत्य परस्पर कैसे वर्तें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**आ यन्नः पत्नीर्गमन्त्यच्छा त्वष्टा सुपाणिर्दधातु वीरान्॥२०॥२६॥**

**आ। यत्। नः। पत्नीः। गमन्ति। अच्छ। त्वष्टा। सुऽपाणिः। दधातु। वीरान्॥२०॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-**(आ)** **(यत्)** याः **(नः)** अस्मानस्माकं वा **(पत्नीः)** भार्याः **(गमन्ति)** प्राप्नुवन्ति **(अच्छा)** सम्यक्। अत्र **संहितायामि**ति दीर्घः। **(त्वष्टा)** दुःखच्छेदकः **(सुपाणिः)** शोभनहस्तो राजा **(दधातु)** **(वीरान्)** शौर्यादिगुणोपेतान्नमात्यादिभृत्यान्॥२०॥

**अन्वयः**-हे राजन्! यथा यद्याः पत्नीर्नोऽच्छाऽऽगमन्ति रक्षन्ति यथा च वयं ता रक्षेम तथा त्वष्टा सुपाणिर्भवान् वीरान् दधातु॥२०॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यथा पतिव्रताः स्त्रियः स्त्रीव्रताः पतयश्च परस्परेषां प्रीत्या रक्षां विदधति तथा राजा धार्मिकानमात्यभृत्याश्च धार्मिकं राजानं सततं रक्षन्तु॥२०॥

**पदार्थः**-हे राजन्! जैसे **(यत्)** जो **(पत्नीः)** भार्या **(नः)** हम लोगों को **(अच्छा)** अच्छे प्रकार **(आ, गमन्ति)** प्राप्त होती और रक्षा करती हैं और जैसे हम लोग उनकी रक्षा करें, वैसे **(त्वष्टा)** दुःख विच्छेद करने वाला **(सुपाणिः)** सुन्दर हाथों से युक्त राजा आप **(वीरान्)** शूरता आदि गुणों से युक्त मन्त्री और भृत्यों को **(दधातु)** धारण करो॥२०॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे पतिव्रता स्त्री स्त्रीव्रत पति जन परस्पर की प्रीति से रक्षा करते हैं, वैसे राजा धार्मिकों की, अमात्य और भृत्यजन धार्मिक राजा की निरन्तर रक्षा करें॥२०॥

**पुनस्ते राजामात्यादयः परस्परं कथं वर्त्तेरन्नित्याह॥**

फिर वे राजा और मन्त्री आदि परस्पर कैसे वर्तें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**प्रति॑ नः॒ स्तोमं॒ त्वष्टा॑ जुषेत॒ स्याद॒स्मे अ॒रम॑तिर्वसू॒युः॥२१॥**

**प्रति॑। नः॒। स्तोम॑म्। त्वष्टा॑। जु॒षे॒त॒। स्यात्। अ॒स्मे इति॑। अ॒रम॑तिः। वसु॒ऽयुः॥२१॥**

**पदार्थः**-**(प्रति)** **(नः)** अस्मान्नस्माकं वा **(स्तोमम्)** प्रशंसाम् **(त्वष्टा)** दुःखविच्छेदको राजा **(जुषेत)** प्रीत्या सेवेत **(स्यात्)** भवेत् **(अस्मे)** अस्मासु **(अरमतिः)** अरं अलं मतिः प्रज्ञा यस्य सः **(वसूयुः)** वसूनि धनानि कामयमानः॥२१॥

**अन्वयः**-हे विद्वांसो! यथा वयं राजानं प्रीत्या सेवेमहि तथाऽरमतिर्वसूयुस्त्वष्टा राजा नोऽस्मान् प्रति जुषेत यथाऽयं राजा नः स्तोमं जुषेत तथा वयमस्य कीर्तिं सेवेमहि यथाऽयमस्मे प्रीतः स्यात् तथा वयमप्यस्मिन् प्रीताः स्याम॥२१॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यत्र राजामात्यभृत्यप्रजाजना अन्योऽन्येषामुन्नतिं चिकीर्षन्ति तत्र सर्वमैश्वर्यं सुखं वर्धनं च प्रजायते॥२१॥

**पदार्थः**-हे विद्वानो! जैसे हम लोग राजा की प्रीति से सेवा करें, वैसे **(अरमतिः)** पूर्ण मति है जिस की **(वसूयुः)** धनों की कामना करता हुआ **(त्वष्टा)** दुःखविच्छेद करने वाला राजा **(नः)** हम लोगों को **(प्रति, जुषेत)** प्रीति से सेवे जैसे यह राजा हमारी **(स्तोमम्)** प्रशंसा को सेवे, वैसे हम लोग



www.9009.co.in

इसकी कीर्ति को सेवें जैसे यह **(अस्मे)** हम लोगों में प्रसन्न **(स्यात्)** हो, वैसे हम लोग भी इस में प्रसन्न हों॥२१॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जहाँ राजा अमात्यभृत्य और प्रजाजन एक-दूसरे की उन्नति को करना चाहते हैं, वहाँ समस्त ऐश्वर्य, सुख और वृद्धि होती है॥२१॥

**पुनस्ते राजादयः प्रजासु कथं वर्त्तेरन्नित्याह॥**

फिर वे राजादि प्रजाजनों में कैसे वर्तें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**ता नो रासन्नातिषाचो वसून्या रोदसी वरुणानी शृणोतु।**

**वरूत्रीभिः सुशरणो नो अस्तु त्वष्टा सुदत्रो वि दधातु रायः॥२२॥**

**ता। नः। रासन्। रातिऽसाचः। वसूनि। आ। रोदसी इति। वरुणानी। शृणोतु। वरूत्रीभिः। सुऽशरणः। नः। अस्तु। त्वष्टा। सुऽदत्रः। वि। दधातु। रायः॥२२॥**

**पदार्थः**-**(ता)** तानि **(नः)** अस्मभ्यम् **(रासन्)** प्रदद्युः **(रातिषाचः)** ये रातिं सचन्ते सम्बध्नन्ति ते **(वसूनि)** धनानि **(आ)** **(रोदसी)** द्यावापृथिव्यौ **(वरुणानी)** जलादिपदार्थयुक्ते **(शृणोतु)** **(वरूत्रीभिः)** वरणीयाभिर्विद्याभिः **(सुशरणः)** शोभनं शरणमाश्रयो यस्य सः **(नः)** अस्मभ्यम् **(अस्तु)** **(त्वष्टा)** दुःखविच्छेदकः **(सुदत्रः)** सुष्ठुदानः **(वि, दधातु)** **(रायः)** धनानि॥२२॥

**अन्वयः**-हे विद्वांसो! भवन्तो वरूत्रीभिर्वरुणानी रोदसी इव रातिषाचः सन्तो नस्ता वसून्या रासन् हे राजन्! सुदत्रस्त्वष्टा सुशरणो भवान् नो रक्षकोऽस्तु नो रायो वि दधातु अस्माकं वार्ताः शृणोतु॥२२॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। ये राजपुरुषाः सूर्यभूमिवत् प्रजाः धनयन्ति तासां न्यायकरणाय वार्ताः शृण्वन्ति यथावत्पुरुषार्थेन श्रीमतीः प्रकुर्वन्ति त एवात्रालंसुखा भवन्ति॥२२॥

**पदार्थः**-हे विद्वानो! आप **(वरूत्रीभिः)** वरुणसम्बन्धो विद्याओं से **(वरुणानी)** जलादि पदार्थयुक्त **(रोदसी)** प्रकाश और पृथिवी के समान **(रातिषाचः)** दान सम्बन्ध करते हुए **(नः)** हम लोगों के लिये **(ता)** उन **(वसूनि)** धनों को **(आ, रासन्)** अच्छे प्रकार देवें। हे राजन्! **(सुदत्रः)** अच्छे दानयुक्त **(त्वष्टा)** दुःखविच्छेदक **(सुशरणः)** सुन्दर आश्रम जिनका वह आप **(नः)** हमारे रक्षक **(अस्तु)** हों हमारे लिये **(रायः)** धनों को **(वि, दधातु)** विधान कीजिये। हमारी वार्ता **(शृणोतु)** सुनिये॥२२॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो राजपुरुष सूर्य और भूमि के तुल्य प्रजाजनों को धनी करते, उनके न्याय करने को बातें सुनते और यथावत् पुरुषार्थ से लक्ष्मीवान् करते हैं, वे ही पूर्ण सुख वाले होते हैं॥२२॥

**पुनर्विद्वांसोऽन्यान् प्रति किं किं बोधयेयुरित्याह॥**

फिर विद्वान् जन अन्यों को क्या-क्या ज्ञान देवें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥



www.9009.co.in

**तन्नो रायः पर्वतास्तन्न आपस्तद्रातिषाच ओषधीरुत द्यौः।**

**वनस्पतिभिः पृथिवी सजोषा उभे रोदसी परि पासतो नः॥२३॥**

**तत्। नः। रायः। पर्वताः। तत्। नः। आपः। तत्। रातिऽसाचः। ओषधीः। उत। द्यौः। वनस्पतिऽभिः। पृथिवी। सऽजोषाः। उभे इति। रोदसी इति। परि। पासतः। नः॥२३॥**

**पदार्थः**-(**तत्**) तान् (**नः**) अस्मभ्यम् (**रायः**) धनानि (**पर्वताः**) मेघाः शैला वा (**तत्**) तान् (**नः**) अस्मभ्यम् (**आपः**) जलानि (**तत्**) तान् (**रातिषाचः**) या रातिं दानं सचन्ते ताः (**ओषधीः**) यवाद्याः (**उत**) अपि (**द्यौः**) सूर्यः (**वनस्पतिभिः**) वटादिभिस्सह (**पृथिवी**) भूमिः (**सजोषाः**) समानसेवी (**उभे**) (**रोदसी**) द्यावापृथिव्यौ (**परि**) सर्वतः (**पासतः**) रक्षेताम् (**नः**) अस्मान्॥२३॥

**अन्वयः**-हे विद्वांसो! यथा पर्वता नस्तद्राया रातिषाच आपो नस्तदोषधीस्तदुत सजोषा द्यौर्वनस्पतिभिः पृथिवी उभे रोदसी च नः परि पासतस्तथाऽस्मान् भवन्तो शिक्षयन्तु॥२३॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। अध्येतारः श्रोतरश्च चाध्यापकानुपदेशकान् प्रत्येवं प्रार्थयेयुरस्मान् भवन्त एवं बोधयन्तु येन वयं सर्वस्याः सृष्टेः सकाशात् सुखोन्नतिं कर्तुं सततं शक्नुयामेति॥२३॥

**पदार्थः**-हे विद्वानो! जैसे (**पर्वताः**) मेघ वा शैल (**नः**) हमारे लिये (**तत्**) उन (**रायः**) धनों को (**रातिषाचः**) जो दान का सम्बन्ध करते हैं वा (**आपः**) जलों को वा [हमारे] (**तत्**) उन (**ओषधीः**) यवादि ओषधियों को वा (**तत्**) उन अन्य पदार्थों को (**उत**) निश्चय करके (**सजोषाः**) समान सेवनेवाला जन वा (**द्यौः**) सूर्य (**वनस्पतिभिः**) वटादिकों के साथ (**पृथिवी**) पृथिवी वा (**उभे**) दोनों (**रोदसी**) प्रकाश और पृथिवी भी (**नः**) हम लोगों की (**परि, पासतः**) रक्षा करें, वैसे हम लोगों की आप लोग रक्षा करें॥२३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। पढ़ने और सुनने वाले जन पढ़ाने और उपदेश कराने वालों के प्रति ऐसी प्रार्थना करें हम लोगों को आप ऐसा बोध करावें कि जिससे हम लोग सब सृष्टि के सकाश से सुख की उन्नति कर सकें॥२३॥

**पुनर्विद्वांसः किंवत्किं कुर्युरित्याह॥**

फिर विद्वान् जन किसके तुल्य क्या करें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अनु तदुर्वी रोदसी जिहातामनु द्युक्षो वरुण इन्द्रसखा।**

**अनु विश्वे मरुतो ये सहासो रायः स्याम धरुणं धियध्यै॥२४॥**

**अनु। तत्। उर्वी इति। रोदसी इति। जिहाताम्। अनु। द्युक्षः। वरुणः। इन्द्रऽसखा। अनु। विश्वे। मरुतः। ये। सहासः। रायः। स्याम। धरुणम्। धियध्यै॥२४॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**अनु**) (**तत्**) तानि (**उर्वीः**) बहुपदार्थयुक्ते (**रोदसी**) द्यावापृथिव्यौ (**जिहाताम्**) प्राप्नुतः (**अनु**) (**द्युक्षः**) यो दिवः प्रकाशान् वासयति (**वरुणः**) श्रेष्ठः (**इन्द्रसखा**) इन्द्रः परमैश्वर्यो राजा सखा यस्य सः (**अनु**) (**विश्वे**) सर्वे (**मरुतः**) मनुष्याः (**ये**) (**सहासः**) सहनशीलाः बलवन्तः (**रायः**) धनस्य (**स्याम**) (**धरुणम्**) (**धियध्यै**) धर्तुं समर्थाः॥ २४॥

**अन्वयः**-हे विद्वांसो! यथोर्वी रोदसी तदनु जिहातामिन्द्रसखा द्युक्षो वरुणोऽनुजिहातां ये विश्वे सहासो मरुतोऽनुजिहातान्तथा वयं रायो धरुणं धियध्यै शक्तिमन्तः स्याम॥ २४॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यथा सृष्टिस्था भूम्यादयः पदार्थास्सर्वान् धृत्वा सुखं प्रयच्छन्ति तथैव यूयं भवत॥ २४॥

**पदार्थः**-हे विद्वान् जनो! जैसे (**उर्वीः**) बहुपदार्थयुक्त (**रोदसी**) आकाश और पृथिवी (**तत्**) उन पदार्थों को (**अनु, जिहाताम्**) अनुकूल प्राप्त हों वा (**इन्द्रसखा**) परमैश्वर्य राजा सखा मित्र जिस का (**द्युक्षः**) प्रकाशों को वसाता (**वरुणः**) और श्रेष्ठ जन (**अनु**) पीछे जावे वा (**ये**) जो (**विश्वे**) सब (**सहासः**) सहनशील और बलवान् (**मरुतः**) मनुष्य अनुकूलता से प्राप्त हों, वैसे हम लोग (**रायः**) धन के (**धरुणम्**) धारण करने वाले को (**धियध्यै**) धारण करने को समर्थ (**स्याम**) हों॥ २४॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे सृष्टिस्थ भूमि आदि पदार्थ सब को धारण कर सुख देते हैं, वैसे ही आप हों॥ २४॥

**पुनः सेव्यसेवकाध्यापकाध्येतारः परस्परं कथं वर्तेरन्नित्याह॥**

फिर सेव्य-सेवक और अध्यापक-अध्येता जन परस्पर कैसे वर्तें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**तन्न इन्द्रो वरुणो मित्रो अग्निराप ओषधीर्वनिनो जुषन्त।**
**शर्मन्त्स्याम मरुतामुपस्थे यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥ २५॥ २७॥**

**तत्। नः। इन्द्रः। वरुणः। मित्रः। अग्निः। आपः। ओषधीः। वनिनः। जुषन्त। शर्मन्। स्याम। मरुताम्। उपऽस्थे। यूयम्। पात। स्वस्तिभिः। सदा। नः॥ २५॥**

**पदार्थः**-(**तत्**) सुखम् (**नः**) अस्मभ्यम् (**इन्द्रः**) विद्युदिव राजा (**वरुणः**) श्रेष्ठः (**मित्रः**) सखा (**अग्निः**) पावकः (**आपः**) जलानि (**ओषधीः**) यवाद्याः (**वनिनः**) किरणवन्तः (**जुषन्त**) सेवन्ते (**शर्मन्**) शर्मणि सुखे गृहे वा (**स्याम**) भवेम (**मरुताम्**) मनुष्याणाम् (**उपस्थे**) समीपे (**यूयम्**) (**पात**) (**स्वस्तिभिः**) सुखादिभिः (**सदा**) (**नः**) अस्मान्॥ २५॥

**अन्वयः**-हे विद्वांसो! ये वनिन इन्द्रो वरुणो मित्रोऽग्निराप ओषधीश्च नस्तज्जुषन्त येन यूयं स्वस्तिभिर्न सदा पात तेषां युष्माकं मरुतामुपस्थे शर्मन् वयं स्थिराः स्याम॥ २५॥



www.9009.co.in

**भावार्थः-**मनुष्यैरिदमेष्टव्यं विदुषां सङ्गेन यथा विद्युदादयः पदार्थास्स्वकार्याणि सेवेरन् तथा वयमनु तिष्ठेमेति॥२५॥

अत्राध्येत्रध्यापकस्त्रीपुरुषराजप्रजासेनाभृत्यविश्वेदेवगुणकृत्यवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति चतुस्त्रिंशत्तमं सूक्तं सप्तविंशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे विद्वानो! जो **(वनिनः)** किरणवान् **(इन्द्रः)** बिजुली के समान राजा **(वरुणः)** श्रेष्ठ **(मित्रः)** मित्रजन **(अग्निः)** पावक **(आपः)** जल और **(ओषधीः)** यवादि ओषधी **(नः)** हमारे लिये **(तत्)** उस सुख को **(जुषन्त)** सेवते हैं जिससे **(यूयम्)** तुम **(स्वस्तिभिः)** सुखों से **(नः)** हम लोगों की **(सदा)** सर्वदैव **(पात)** रक्षा करो उन तुम **(मरुताम्)** लोगों के **(उपस्थे)** समीप **(शर्मन्)** सुख में हम लोग स्थिर **(स्याम)** हों॥२५॥

**भावार्थः-**मनुष्यों को ऐसी इच्छा करनी चाहिये कि विद्वानों के संग से जैसे बिजुली आदि पदार्थ अपने कामों को सेवें, वैसे हम लोग अनुष्ठान करें॥२५॥

इस सूक्त में अध्येता, अध्यापक, स्त्री, पुरुष, राजा, प्रजा, सेना, भृत्य और विश्वेदेवों के गुण और कर्मों का वर्णन होने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ संगति जाननी चाहिये॥

**यह चौतीसवां सूक्त और सत्ताईसवां वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

अथ पञ्चत्रिंशत्तमस्य पञ्चदशर्चस्य सूक्तस्य वसिष्ठर्षिः। विश्वेदेवा देवताः। १, २, ३, ४, ५, ११, १२ त्रिष्टुप्। ६, ८, १०, १५ निचृत्त्रिष्टुप्। ७, ९ विराट्त्रिष्टुप्छन्दः। धैवतः स्वरः। १३, १४ भुरिक्पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः।

***मनुष्यैः सृष्टिपदार्थेभ्यः किं किं गृहीतव्यमित्याह॥***

अब पन्द्रह ऋचा वाले पैंतीसवें सूक्त का आरम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में मनुष्यों को सृष्टिपदार्थों से क्या-क्या ग्रहण करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**शं न॑ इन्द्रा॒ग्नी भ॑वता॒मवो॑भि॒: शं न॒ इन्द्रा॒वरु॑णा रा॒तह॑व्या।**

**शमिन्द्रा॒सोमा॑ सुवि॒ताय॒ शं योः शं न॒ इन्द्रा॑पू॒षणा॒ वाज॑सातौ॥ १॥**

**शम्। न॒ः। इ॒न्द्रा॒ग्नी॒ इति॑। भ॒व॒ता॒म्। अव॑:ऽभिः। शम्। न॒ः। इन्द्रा॒वरु॑णा। रा॒तऽह॑व्या। शम्। इन्द्रा॒सोमा॑। सु॒वि॒ताय॑। शम्। योः। शम्। न॒ः। इन्द्रा॑पू॒षणा॑। वाज॑ऽसातौ॥ १॥**

**पदार्थः**-(**शम्**) सुखकारकौ (**नः**) अस्मभ्यम् (**इन्द्राग्नी**) विद्युत्पावकौ (**भवताम्**) (**अवोभिः**) रक्षणादिभिः (**शम्**) मङ्गलकारकौ (**नः**) (**अस्मभ्यम्**) (**इन्द्रावरुणा**) विद्युज्जले (**रातहव्या**) रातं दत्तं हव्यं गृहीतुं योग्यं वस्तु याभ्यां तौ (**शम्**) सुखवर्धकौ (**इन्द्रासोमा**) विद्युदोषधिगणौ (**सुविताय**) ऐश्वर्याय (**शम्**) (**योः**) सुखनिमित्तौ (**शम्**) आनन्दप्रदौ (**नः**) अस्मभ्यम् (**इन्द्रापूषणा**) विद्युद्वायू (**वाजसातौ**) सङ्ग्रामे॥ १॥

**अन्वयः**-हे जगदीश्वर! वाजसातौ सुविताय नोऽवोभिस्सहेन्द्राग्नी शं शं रातहव्येन्द्रावरुणा नश्शमिन्द्रासोमा शं योरिन्द्रापूषणा नः शं च भवतां तथा वयं प्रयतेमहि॥ १॥

**भावार्थः**-हे जगदीश्वर! भवत्कृपया विद्वत्संगेन स्वपुरुषार्थेन भवद्रचितायां सृष्टौ वर्त्तमानेभ्यो विद्युदादिपदार्थेभ्यो वयमुपकारं ग्रहीतुं ग्राहयितुमिच्छामस्सोऽयमस्माकं प्रयत्नः सफलः स्यात्॥ १॥

**पदार्थः**-हे जगदीश्वर! (**वाजसातौ**) संग्राम में (**सुविताय**) ऐश्वर्य होने के लिये (**नः**) हम लोगों को (**अवोभिः**) रक्षा आदि के साथ (**इन्द्राग्नी**) बिजुली और साधरण अग्नि (**शम्**) सुख करने वाले (**शम्**) मंगल करने वाले (**रातहव्या**) दीनी है ग्रहण करने को वस्तु जिन्होंने ऐसे (**इन्द्रावरुणा**) बिजुली और जल (**नः**) हम लोगों के लिये (**शम्**) सुख करने वाले (**इन्द्रासोमा**) बिजुली ओषधिगण (**शम्**) सुखकारक (**योः**) सुख के निमित्त और (**इन्द्रापूषणा**) बिजुली और वायु (**नः**) हमारे लिये (**शम्**) आनन्द देने वाले (**भवताम्**) हों वैसा हम लोग प्रयत्न करें॥ १॥

**भावार्थः**-हे जगदीश्वर! आप की कृपा से, विद्वानों के संग से और अपने पुरुषार्थ से आप की रची हुई सृष्टि में वर्त्तमान बिजुली आदि पदार्थों से हम लोग उपकार करना कराना चाहते हैं, सो यह हम लोगों का प्रयत्न सफल हो॥ १॥

**मनुष्यैर्यथैश्वर्यादीनि सुखकराणि स्युस्तथा विधेयमित्याह॥**



www.9009.co.in

मनुष्यों को जैसे ऐश्वर्य आदि सुख करने वाले हों, वैसे विधान करना चाहिये, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**शं नो॒ भग॒: शमु॒ न॒: शंसो॑ अस्तु॒ शं न॒: पुरं॑धि॒: शमु॑ सन्तु॒ राय॑:।**

**शं न॒: स॒त्यस्य॑ सु॒यम॑स्य॒ शंस॒: शं नो॑ अर्य॒मा पु॑रुजा॒तो अ॑स्तु॥ २॥**

**शम्। न॒:। भग॑:। शम्। ऊँ॒ इति॑। न॒:। शंस॑:। अ॒स्तु॒। शम्। न॒:। पुर॑म्ऽधिः। शम्। ऊँ इति॑। स॒न्तु॒। राय॑:। शम्। न॒:। स॒त्यस्य॑। सु॒ऽयम॑स्य। शंस॑:। शम्। न॒:। अ॒र्य॒मा। पु॒रु॒ऽजा॒त:। अ॒स्तु॒॥ २॥**

**पदार्थः**-(**शम्**) सुखकरः (**नः**) अस्मभ्यम् (**भगः**) ऐश्वर्यम् (**शम्**) सुखकरः (**उ**) वितर्के (**नः**) अस्मभ्यम् (**शंसः**) अनुशासनं प्रशंसा वा (**अस्तु**) भवतु (**शम्**) सुखकरः (**नः**) अस्मभ्यम् (**पुरन्धिः**) पुरवः बहवः पदार्था ध्रियन्ते यस्मिन् स आकाशः (**शम्**) सुखकराः (**उ**) (**सन्तु**) (**रायः**) धनानि (**शम्**) सुखप्रदः (**नः**) अस्मभ्यम् (**सत्यस्य**) यथार्थस्य धर्मस्य परमेश्वरस्य (**सुयमस्य**) सुष्ठु नियमेन प्रापणीयस्य (**शंसः**) प्रशंसा (**शम्**) आनन्दकरः (**नः**) अस्मभ्यम् (**अर्यमा**) न्यायकारी (**पुरुजातः**) पुरुषु बहुषु नरेषु प्रसिद्धः (**अस्तु**) भवतु॥ २॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथा नो भगः शं नः शंसः शमु पुरन्धिः शमस्तु नः रायः शमु सन्तु नः सत्यस्य सुयमस्य शंसः शं पुरुजातोऽर्यमा नः शमस्तु तथा वयं प्रयतेमहि॥ २॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यूयं यथैश्वर्यं पुण्या कीर्तिरवकाशो धनानि धर्मो योगः न्यायाधीशश्च सुखकराः स्युस्तथाऽनुतिष्ठत॥ २॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे (**नः**) हम लोगों के लिये (**भगः**) ऐश्वर्य (**शम्**) सुख करने वाला (**नः**) हम लोगों के लिये (**शंसः**) शिक्षा वा प्रशंसा (**शम्**) सुख करने वाली (**उ**) और (**पुरन्धिः**) बहुत पदार्थ जिस में रक्खे जाते हैं वह आकाश (**शम्**) सुख करने वाला (**अस्तु**) हो (**नः**) हम लोगों के लिये (**रायः**) धन (**शम्**) सुख करने वाले (**उ**) ही (**सन्तु**) हों (**नः**) हम लोगों के लिये (**सत्यस्य**) यथार्थ धर्म वा परमेश्वर की (**सुयमस्य**) सुन्दर नियम से प्राप्त करने योग्य व्यवहार की (**शंसः**) प्रशंसा (**शम्**) सुख देनेवाली और (**पुरुजातः**) बहुत मनुष्यों में प्रसिद्ध (**अर्यमा**) न्यायकारी (**नः**) हमारे लिये (**शम्**) आनन्द देने वाला (**अस्तु**) होवे वैसा हम लोग प्रयत्न करें॥ २॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! तुम जैसे ऐश्वर्य, पुण्यकीर्त्ति, अवकाश, धन, धर्म, योग और न्यायाधीश सुख करने वाले हों, वैसा अनुष्ठान करो॥ ३॥

**पुनर्मनुष्यैः सृष्ट्या कीदृगुपकारो गृहीतव्य इत्याह॥**

फिर मनुष्यों को सृष्टि से कैसा उपकार लेना चाहिये, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**शं नो॑ धा॒ता शमु॑ ध॒र्ता नो॑ अस्तु॒ शं न॑ उरू॒ची भ॑वतु स्व॒धाभि॑:।**

**शं रोद॑सी बृ॒ह॒ती शं नो॑ अद्रि॒: शं नो॑ दे॒वानां॑ सु॒हवा॑नि सन्तु॒॥ ३॥**



www.9009.co.in

**शम्। नः। धाता। शम्। ऊँ इति। धर्ता। नः। अस्तु। शम्। नः। उरूची। भवतु। स्वधाभिः। शम्। रोदसी इति। बृहती इति। शम्। नः। अद्रिः। शम्। नः। देवानाम्। सुऽहवानि। सन्तु॥ ३॥**

**पदार्थः**-(**शम्**) शमित्यस्य सर्वत्रैव पूर्वोक्तरीत्यार्थो वेदितव्यः (**नः**) अस्मभ्यम् (**धाता**) धर्ता (**शम्**) (उ) (**धर्ता**) पोषकः (**नः**) अस्याप्येवमेव चतुर्थीबहुवचनान्तस्यार्थो वेदितव्यः (**अस्तु**) (**शम्**) (**नः**) (**उरूची**) या बहूनञ्चति प्राप्नोति सा पृथिवी (**भवतु**) (**स्वधाभिः**) अन्नादिभिः (**शम्**) (**रोदसी**) द्यावान्तरिक्षे (**बृहती**) महत्यौ (**शम्**) (**नः**) (**अद्रिः**) मेघः (**शम्**) (**नः**) (**देवानाम्**) विदुषाम् (**सुहवानि**) सुष्ठु आह्वानानि प्रशंसनानि वा (**सन्तु**)॥ ३॥

**अन्वयः**-हे जगदीश्वर विद्वन् वा! भवत्कृपया सङ्गेन च नो धाता शमु धर्ता नः शमस्तु स्वधाभिः सहोरूची नः शं भवतु बृहती रोदसी नः शं भवतां अद्रिर्नः शं भवतु नो देवानां सुहवानि शं सन्तु॥ ३॥

**भावार्थः**-ये मनुष्याः पोषकादिभ्य उपकारान् ग्रहीतुं विजानन्ति ते सर्वाणि सुखानि लभन्ते॥ ३॥

**पदार्थः**-हे जगदीश्वर वा विद्वान्! आप की कृपा और संग से (**नः**) हम लोगों के लिये (**धाता**) धारण करने वाला (**शम्**) सुखरूप (उ) और (**धर्ता**) पुष्टि करने वाला (**नः**) हम लोगों के लिये (**शम्**) सुखरूप (**अस्तु**) हो (**स्वधाभिः**) अन्नादिकों के साथ (**उरूची**) जो बहुत पदार्थों को प्राप्त होती वह पृथिवी (**नः**) हम लोगों के लिये (**शम्**) सुख देने वाली (**भवतु**) हो (**बृहती**) महान् (**रोदसी**) प्रकाश और अन्तरिक्ष (**नः**) हम लोगों के लिये (**शम्**) सुखरूप होवें (**अद्रिः**) मेघ (**नः**) हमारे लिये (**शम्**) सुखकारक हो (**नः**) हम लोगों के लिये (**देवानाम्**) विद्वानों के (**सुहवानि**) सुन्दर आवाहन प्रशंसा से बुलावे (**शम्**) सुखरूप (**सन्तु**) हों॥ ३॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य पुष्टि करने वालों से उपकार लेना जानते हैं, वे सब सुखों को पाते हैं॥ ३॥

**पुनर्मनुष्यैः किं कर्तव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को क्या करना चाहिये, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते है॥

**शं नो अग्निर्ज्योतिरनीको अस्तु शं नो मित्रावरुणावश्विना शम्।**
**शं नः सुकृतां सुकृतानि सन्तु शं न इषिरो अभि वातु वातः॥ ४॥**

**शम्। नः। अग्निः। ज्योतिःऽअनीकः। अस्तु। शम्। नः। मित्रावरुणौ। अश्विना। शम्। शम्। नः। सुऽकृताम्। सुऽकृतानि। सन्तु। शम्। नः। इषिरः। अभि। वातु। वातः॥ ४॥**

**पदार्थः**-(**शम्**) (**नः**) (**अग्निः**) पावकः (**ज्योतिरनीकः**) ज्योतिरेवानीकं सैन्यमिव यस्य सः (**अस्तु**) (**शम्**) (**नः**) (**मित्रावरुणौ**) प्राणोदानौ (**अश्विना**) व्यापिनौ (**शम्**) (**शम्**) (**नः**) (**सुकृताम्**) ये सुष्ठु धर्ममेव कुर्वन्ति तेषाम् (**सुकृतानि**) धर्माचरणानि (**सन्तु**) (**शम्**) (**नः**) (**इषिरः**) सद्यो गन्ता (**अभि**) (**वातु**) (**वातः**) वायुः॥ ४॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे जगदीश्वर विद्वन् वा! भवत्कृपया ज्योतिरनीकोऽग्निर्नः शमस्त्वश्विना शं मित्रावरुणौ नः शं भवतां न सुकृतां सुकृतानि शम् [सन्तु] इषिरो वातो नः शमभि वातु॥४॥

**भावार्थः**-ये अग्निवाय्वादिभ्यः कार्याणि साध्नुवन्ति ते समग्रैश्वर्यमश्नुवन्ति॥४॥

**पदार्थः**-हे जगदीश्वर वा विद्वान्! आप की कृपा से **(ज्योतिरनीकः)** ज्योति ही सेना के समान जिस की **(अग्निः)** वह अग्नि **(नः)** हम लोगों के लिये **(शम्)** सुखरूप **(अस्तु)** हो **(अश्विना)** व्यापक पदार्थ **(शम्)** सुखरूप और **(मित्रावरुणौ)** प्राण और उदान **(नः)** हमारे लिये **(शम्)** सुखरूप होवें **(नः)** हम **(सुकृताम्)** सुन्दर धर्म करने वालों के **(सुकृतानि)** धर्माचरण **(शम्)** सुखरूप **(सन्तु)** हों और **(इषिरः)** शीघ्र जाने वाला **(वातः)** वायु **(नः)** हम लोगों के लिये **(शम्)** सुखरूप **(अभि, वातु)** सब ओर से बहे॥४॥

**भावार्थः**-जो अग्नि और वायु आदि पदार्थों से कार्य्यों को सिद्ध करते हैं, वे समग्र ऐश्वर्य को प्राप्त होते हैं॥४॥

**पुनर्विद्वद्भिः किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

फिर विद्वानों को क्या करना चाहिये, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**शं नो द्यावापृथिवी पूर्वहूतौ शमन्तरिक्षं दृशये नो अस्तु।**
**शं न ओषधीर्वनिनो भवन्तु शं नो रजसस्पतिरस्तु जिष्णुः॥५॥२८॥**

**शम्। नः। द्यावापृथिवी इति। पूर्वऽहूतौ। शम्। अन्तरिक्षम्। दृशये। नः। अस्तु। शम्। नः। ओषधीः। वनिनः। भवन्तु। शम्। नः। रजसः। पतिः। अस्तु। जिष्णुः॥५॥**

**पदार्थः**-**(शम्) (नः) (द्यावापृथिवी)** विद्युद्भूमी **(पूर्वहूतौ)** पूर्वेषां हूतिः प्रशंसा यस्मिन् येन वा तस्याम् **(शम्) (अन्तरिक्षम्)** भूमिसूर्ययोर्मध्यमाकाशम् **(दृशये)** दर्शनाय **(नः) (अस्तु) (शम्) (नः) (ओषधीः)** यवसोमलताद्याः **(वनिनः)** वनानि सन्ति येषु ते वृक्षाः **(भवन्तु) (शम्) (नः) (रजसः)** लोकजातस्य **(पतिः)** स्वामी **(अस्तु) (जिष्णुः)** जयशीलः॥५॥

**अन्वयः**-हे जगदीश्वरशिक्षकौ! भवत्कृपोपदेशाभ्यां पूर्वहूतौ द्यावापृथिवी नश्शं दृशयेऽन्तरिक्षं नश्शमस्त्वोषधीर्वनिनो नश्शं भवन्तु रजसस्पतिर्जिष्णुर्नश्शमस्तु॥५॥

**भावार्थः**-ये सर्वान् सृष्टिस्थान् पदार्थान् सुखाय संयोक्तुमर्हन्ति त एवोत्तमा विद्वांसस्सन्ति॥५॥

**पदार्थः**-हे जगदीश्वर और शिक्षा देने वाले! आप की कृपा और उपदेश से **(पूर्वहूतौ)** जिसमें पिछलों की प्रशंसा विद्यमान वा जिससे पिछलों की प्रशंसा होती है उस में **(द्यावापृथिवी)** बिजुली और भूमि **(नः)** हम लोगों के लिये **(शम्)** सुख **(दृशये)** देखने को **(अन्तरिक्षम्)** भूमि और सूर्य्य के बीच का आकाश **(नः)** हम लोगों के लिये **(शम्)** सुखरूप **(अस्तु)** हो और **(ओषधीः)** ओषधि तथा



www.9009.co.in

**(वनिनः)** वन जिसमें विद्यमान वे वृक्ष **(नः)** हमारे लिये **(शम्)** सुखरूप **(भवन्तु)** होवें **(रजसः)** लोकों में उत्पन्न हुओं का **(पतिः)** स्वामी **(जिष्णुः)** जयशील **(नः)** हमारे लिये **(शम्)** सुखरूप **(अस्तु)** हो॥५॥

**भावार्थः**-जो सब सृष्टिस्थ पदार्थों को सुख के **[लिये]** संयुक्त करने को योग्य होते हैं, वे ही उत्तम विद्वान् होते हैं॥५॥

**पुनर्विद्वद्भिः किं विज्ञाय सम्प्रयुज्य किं प्राप्तव्यमित्याह॥**

फिर विद्वानों को क्या जान के और संयुक्त कर क्या पाने योग्य है, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**शं न इन्द्रो वसुभिर्देवो अस्तु शमादित्येभिर्वरुणः सुशंसः।**
**शं नो रुद्रो रुद्रेभिर्जलाषः शं नस्त्वष्टाग्नाभिरिह शृणोतु॥६॥**

**शम्। नः। इन्द्रः। वसुऽभिः। देवः। अस्तु। शम्। आदित्येभिः। वरुणः। सुऽशंसः। शम्। नः। रुद्रः। रुद्रेभिः। जलाषः। शम्। नः। त्वष्टा। ग्नाभिः। इह। शृणोतु॥६॥**

**पदार्थः**-**(शम्)** **(नः)** **(इन्द्रः)** विद्युत्सूर्यो वा **(वसुभिः)** पृथिव्यादिभिस्सह **(देवः)** दिव्यगुणकर्मस्वभावयुक्तः **(अस्तु)** **(शम्)** **(आदित्येभिः)** संवत्सरस्य मासैः **(वरुणः)** जलसमुदायः **(सुशंसः)** प्रशस्तप्रशंसनीयः **(शम्)** **(नः)** **(रुद्रः)** परमात्मा जीवो वा **(रुद्रेभिः)** जीवैः प्राणैर्वा **(जलाषः)** दुःखनिवारकः **(शम्)** **(नः)** **(त्वष्टा)** सर्ववस्तुविच्छेदकोऽग्निरिव परीक्षको विद्वान् **(ग्नाभिः)** वाग्भिः। **ग्नेति वाङ्नाम।** (निघं०१.११) **(इह)** अस्मिन् संसारे **(शृणोतु)**॥६॥

**अन्वयः**-हे जगदीश्वर विद्वन् वा! भवत्सहायपरीक्षाभ्यामिह वसुभिस्सह देव इन्द्रो नः शमादित्येभिस्सह सुशंसो वरुणो नः शमस्तु रुद्रेभिस्सह जलाषो रुद्रो नश्शमस्तु ग्नाभिस्सह त्वष्टा नश्शं शृणोतु॥६॥

**भावार्थः**-ये पृथिव्यादित्यवायुविद्ययेश्वरजीवप्राणान् विज्ञायेहैतद्विद्यामध्याप्य परीक्षां कृत्वा सर्वान् विदुष उद्योगिनः कुर्वन्ति तेऽत्र किं किमैश्वर्यं नाप्नुवन्ति॥६॥

**पदार्थः**-हे जगदीश्वर वा विद्वान् आपके सहाय से और परीक्षा से **(इह)** यहाँ **(वसुभिः)** पृथिव्यादिकों के साथ **(देवः)** दिव्य गुणकर्मस्वभावयुक्त **(इन्द्रः)** बिजुली या सूर्य **(नः)** हम लोगों के लिये **(शम्)** सुखरूप और **(आदित्येभिः)** संवत्सर के महीनों के साथ **(सुशंसः)** प्रशंसित प्रशंसा करने योग्य **(वरुणः)** जल समुदाय **(नः)** हम लोगों के लिये **(शम्)** सुखरूप **(अस्तु)** हो **(रुद्रेभिः)** जीव प्राणों के साथ **(जलाषः)** दुःख निवारण करने वाला **(रुद्रः)** परमात्मा वा जीव **(नः)** हम लोगों के लिये **(शम्)** सुखरूप हो **(ग्नाभिः)** वाणियों के साथ **(त्वष्टा)** सर्व वस्तुविच्छेद करने वाला अग्नि के समान परीक्षक विद्वान् **(नः)** हम लोगों के लिये **(शम्)** सुख **(शृणोतु)** सुने॥६॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-जो पृथिवी, आदित्य और वायु की विद्या से ईश्वर, जीव और प्राणों को जान यहाँ इनकी विद्या को पढ़ा परीक्षा कर सब को विद्वान् और उद्योगी करते हैं, वे इस संसार में किस-किस ऐश्वर्य को नहीं प्राप्त होते हैं॥६॥

**पुनर्विद्वद्भिः कैरुपायैर्जगदुपकारः कर्तव्य इत्याह॥**

फिर विद्वानों को किन उपायों से जगत् का उपकार करना योग्य है, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**शं नः सोमो भवतु ब्रह्म शं नः शं नो ग्रावाणः शमु सन्तु यज्ञाः।**

**शं नः स्वरूणां मितयो भवन्तु शं नः प्रस्व१ः शम्वस्तु वेदिः॥७॥**

**शम्। नः। सोमः। भवतु। ब्रह्म। शम्। नः। शम्। नः। ग्रावाणः। शम्। ऊँ इति। सन्तु। यज्ञाः। शम्। नः। स्वरूणाम्। मितयः। भवन्तु। शम्। नः। प्रऽस्वः। शम्। ऊँ इति। अस्तु। वेदिः॥७॥**

**पदार्थः**-(**शम्**) (**नः**) (**सोमः**) चन्द्रः (**भवतु**) (**ब्रह्म**) धनमन्नं वा (**शम्**) (**नः**) (**शम्**) (**नः**) (**ग्रावाणः**) मेघाः (**शम्**) (**उ**) (**सन्तु**) (**यज्ञाः**) अग्निहोत्रादयः शिल्पान्ताः (**शम्**) (**नः**) (**स्वरूणाम्**) यज्ञशालास्तम्भशब्दानाम् (**मितयः**) (**भवन्तु**) (**शम्**) (**नः**) (**प्रस्वः**) याः प्रसूयन्ते ता ओषधयः (**शम्**) (**उ**) (**अस्तु**) (**वेदिः**) कुण्डादिकम्॥७॥

**अन्वयः**-हे जगदीश्वर वा विद्वन्! भवत्कृपाध्यापनाभ्यां सोमो नश्शं भवतु ब्रह्म नः शं भवतु ग्रावाणो नः शं सन्तु यज्ञा नः शमु सन्तु स्वरूणां मितयो नः शं भवन्तु प्रस्वो नश्शं भवन्तु वेदिः नः शम्वस्तु॥७॥

**भावार्थः**-ये मनुष्या विद्यौषधीधनयज्ञादिभ्यः जगत्सुखेनोपकुर्वन्ति तेप्यतुलं सुखं लभन्ते॥७॥

**पदार्थः**-हे जगदीश्वर वा विद्वान्! आपकी कृपा और पढ़ाने से (**सोमः**) चन्द्रमा (**नः**) हम लोगों के लिये (**शम्**) सुखरूप (**भवतु**) हो (**ब्रह्म**) धन वा अन्न (**नः**) हमारे लिये (**शम्**) सुखरूप हो (**ग्रावाणः**) मेघ (**नः**) हम लोगों के लिये (**शम्**) सुखरूप (**सन्तु**) हों (**यज्ञाः**) अग्निहोत्र को आदि ले [=अग्निहोत्र से लेकर] शिल्प यज्ञ पर्य्यन्त (**नः**) हम लोगों के लिये (**शम्, च**) सुखरूप ही हों (**स्वरूणाम्**) यज्ञशाला के स्तम्भ शब्दों के (**मितयः**) प्रमाण हमारे लिये (**शम्**) सुखरूप (**भवन्तु**) हों (**प्रस्वः**) जो उत्पन्न होती है वह ओषधि (**नः**) हमारे लिये (**शम्**) सुखरूप हों और (**वेदिः**) कुण्ड आदि हमारे लिये (**शम्, उ**) सुख ही (**अस्तु**) हो॥७॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य विद्या, ओषधी, धन और यज्ञादि से जगत् का सुख के साथ उपकार करते हैं, वे अतुल सुख पाते हैं॥७॥

**पुनर्विद्वद्भिः किमेष्टव्यमित्याह॥**

फिर विद्वान् जनों को क्या इच्छा करनी चाहिये, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**शं नः सूर्य उरुचक्षा उदेतु शं नश्चतस्रः प्रदिशो भवन्तु।**



www.9009.co.in

शं नः पर्वता ध्रुवयो भवन्तु शं नः सिन्धवः शमु सन्त्वापः॥८॥

शम्। नः। सूर्यः। उरुऽचक्षाः। उत्। एतु। शम्। नः। चतस्रः। प्रऽदिशः। भवन्तु। शम्। नः। पर्वताः। ध्रुवयः। भवन्तु। शम्। नः। सिन्धवः। शम्। ऊँ इति। सन्तु। आपः॥८॥

**पदार्थः**-(**शम्**) (**नः**) (**सूर्यः**) सविता (**उरुचक्षाः**) उरूणि बहूनि चक्षांसि दर्शनानि यस्मात् सः (**उत्**) (**एतु**) (**शम्**) (**नः**) (**चतस्रः**) (**प्रदिशः**) पूर्वाद्या ऐशान्याद्या वा (**भवन्तु**) (**शम्**) (**नः**) (**पर्वताः**) शैलाः (**ध्रुवयः**) स्वस्वस्थाने स्थिराः (**भवन्तु**) (**शम्**) (**नः**) (**सिन्धवः**) नद्यः समुद्रा वा (**शम्**) (**उ**) (**सन्तु**) (**आपः**) जलानि प्राणा वा॥८॥

**अन्वयः**-हे परेश विद्वन् वा! भवच्छिक्षया उरुचक्षास्सूर्यः नः शमुदेतु चतस्रः प्रदिशः नः शं भवन्तु ध्रुवयः पर्वताः नः शं भवन्तु सिन्धवो नः शमापः शमु सन्तु॥८॥

**भावार्थः**-ये जगदीश्वरनिर्मितेभ्यः सूर्यादिभ्यः उपकारानादातुं शक्नुवन्ति तेऽत्र श्री राज्यसत्कीर्तिमन्तो जायन्ते॥८॥

**पदार्थः**-हे परमेश्वर वा विद्वान्! आपकी शिक्षा से (**उरुचक्षाः**) जिससे बहुत दर्शन होते हैं वह (**सूर्यः**) सूर्य (**नः**) हम लोगों के लिये (**शम्**) सुख रूप (**उत्, एतु**) उदय हो (**चतस्रः**) चार (**प्रदिशः**) पूर्वादि वा रोशनी आदि दिशा वा विदिशा (**नः**) हम लोगों के लिये (**शम्**) सुखरूप (**भवन्तु**) हों (**ध्रुवयः**) अपने-अपने स्थान में स्थिर (**पर्वताः**) पर्वत (**नः**) हम लोगों के लिये (**शम्**) सुखरूप (**भवन्तु**) होवें (**सिन्धवः**) नदी वा समुद्र (**नः**) हम लोगों के लिये (**शम्**) सुखरूप और (**आपः**) जल वा प्राण (**शम्**) सुखरूप (**उ**) ही (**सन्तु**) हों॥८॥

**भावार्थः**-जो जगदीश्वर ने बनाये हुए सूर्यादिकों से उपकार ले सकते हैं, वे इस जगत् में श्री, राज्य और कीर्ति वाले होते हैं॥८॥

**पुनः शिक्षकैः शिष्यान् संशिक्ष्य कीदृशाः सम्पादनीया इत्याह॥**

फिर शिक्षकजनों को शिष्यजन अच्छी शिक्षा दे कैसे सिद्ध करने चाहियें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

शं नो अदितिर्भवतु व्रतेभिः शं नो भवन्तु मरुतः स्वर्काः।
शं नो विष्णुः शमु पूषा नो अस्तु शं नो भवित्रं शम्वस्तु वायुः॥९॥

शम्। नः। अदितिः। भवतु। व्रतेभिः। शम्। नः। भवन्तु। मरुतः। सुऽअर्काः। शम्। नः। विष्णुः। शम्। ऊँ इति। पूषा। नः। अस्तु। शम्। नः। भवित्रम्। शम्। ऊँ इति। अस्तु। वायुः॥९॥

**पदार्थः**-(**शम्**) (**नः**) (**अदितिः**) विदुषी माता (**भवतु**) (**व्रतेभिः**) सत्कर्मभिः (**शम्**) (**नः**) (**भवन्तु**) (**मरुतः**) प्राणा इव प्रिया मनुष्याः (**स्वर्काः**) शोभना अर्का मन्त्रा विचारा येषान्ते (**शम्**)



www.9009.co.in

**(नः)** **(विष्णुः)** व्यापको जगदीश्वरः **(शम्)** **(उ)** **(पूषा)** पुष्टिकरब्रह्मचर्यादिव्यवहारः **(नः)** **(अस्तु)** **(शम्)** **(नः)** **(भवित्रम्)** भवितव्यम् **(शम्)** **(उ)** **(अस्तु)** **(वायुः)** पवनः॥९॥

**अन्वयः**-हे अध्यापकोपदेशका विद्वांसो! यूयं यथाऽदितिर्व्रतेभिस्सह नश्शं भवतु स्वर्का मरुतो व्रतेभिस्सह नः शं भवन्तु विष्णुर्नः शं भवतु पूषा नः शम्वस्तु भवित्रं नः शं भवतु वायुर्नः शमु अस्तु तथा शिक्षध्वम्॥९॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। मात्रादिभिर्विदुषीभिः कन्या पित्रादिभिर्विद्वद्भिः पुत्रास्सम्यक् शिक्षणीया यदेते भूमिमारभ्येश्वरपर्यन्तपदार्थानां विद्याः प्राप्य धर्मिष्ठा भूत्वा सर्वान् मनुष्यादीन् सततमानन्दयेयुः॥९॥

**पदार्थः**-हे अध्यापक और उपदेशक विद्वानो! तुम जैसे **(अदितिः)** विदुषी माता **(व्रतेभिः)** अच्छे कामों के साथ **(नः)** हम लोगों को **(शम्)** सुखरूप **(भवतु)** हो और **(स्वर्काः)** सुन्दर मन्त्र विचार हैं जिनके वे **(मरुतः)** प्राणों के समान प्रियजन अच्छे कामों के साथ **(शम्)** सुखरूप **(भवन्तु)** होवें **(विष्णुः)** व्यापक जगदीश्वर **(नः)** हम लोगों के [=को] **(शम्)** सुखरूप हो **(पूषा)** पुष्टि करने वाला ब्रह्मचर्य्यादि व्यवहार **(नः)** हमारे लिये **(शम्)** सुखरूप **(उ)** ही **(अस्तु)** हो **(भवित्रम्)** होनहार काम **(नः)** हमारे लिये **(शम्)** सुखरूप होवे और **(वायुः)** पवन **(नः)** हमारे लिये **(शम्)** सुखरूप **(उ)** ही **(अस्तु)** हो वैसी शिक्षा देओ॥६॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। माता आदि विदुषियों को कन्या और विद्वान् पिता आदि को पुत्र अच्छे प्रकार शिक्षा देने योग्य हैं जिससे यह भूमि से ले के ईश्वर पर्यन्त पदार्थों की विद्याओं को पाके धार्मिक होकर सब मनुष्यों को निरन्तर आनन्दित करें॥९॥

**पुनर्विद्वद्भिः कीदृशी शिक्षा कार्येत्याह॥**

फिर विद्वानों को कैसी शिक्षा करनी चाहिये, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**शं नो॑ दे॒वः स॑वि॒ता त्राय॑माणः॒ शं नो॑ भवन्तू॒षसो॑ विभा॒तीः।**

**शं नः॑ प॒र्जन्यो॑ भवतु प्र॒जाभ्यः॒ शं न॒: क्षेत्र॑स्य॒ पति॑रस्तु श॒म्भुः॥१०॥२९॥**

**शम्। न॒ः। दे॒वः। स॒वि॒ता। त्राय॑माणः। शम्। न॒ः। भ॒व॒न्तु। उ॒षस॑ः। वि॒ऽभा॒तीः। शम्। न॒ः। प॒र्जन्य॑ः। भ॒व॒तु। प्र॒जाऽभ्य॑ः। शम्। न॒ः। क्षेत्र॑स्य। पति॑ः। अ॒स्तु। श॒म्ऽभुः॥१०॥**

**पदार्थः**-**(शम्)** **(नः)** **(देवः)** सर्वसुखप्रदाता स्वप्रकाशः **(सविता)** सकलजगदुत्पादक ईश्वरः **(त्रायमाणः)** रक्षन् **(शम्)** **(नः)** **(भवन्तु)** **(उषसः)** प्रभातवेलाः **(विभातीः)** विशेषेण दीप्तिमत्यः **(शम्)** **(नः)** **(पर्जन्यः)** मेघः **(भवतु)** **(प्रजाभ्यः)** **(शम्)** **(नः)** **(क्षेत्रस्य)** क्षयन्ति निवसन्ति यस्मिन् जगति तस्य **(पतिः)** स्वामीश्वरो राजा वा **(अस्तु)** **(शम्भुः)** यः शं सुखं भावयति सः॥१०॥

**अन्वयः**-हे विद्वांसो! यूयन्तथास्मान् शिक्षध्वं यथा त्रायमाणः सविता देवो नः शं भवतु विभातीरुषसो नश्शं भवन्तु पर्जन्यः प्रजाभ्यो नश्शं भवतु क्षेत्रस्य पतिश्शम्भुर्नश्शमस्तु॥१०॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। विद्वद्भिर्वेदादिविद्याभिः परमेश्वरादिपदार्थगुणकर्मस्वभावाः विद्यार्थिनः प्रति यथावत् प्रकाशनीया येन सर्वेभ्य उपकारं ग्रहीतुं शक्नुयुः॥१०॥

**पदार्थः**-हे विद्वानो! तुम वैसे हम लोगों को शिक्षा देओ जैसे **(त्रायमाणः)** रक्षा करता हुआ **(सविता)** सकल जगत् की उत्पत्ति करने वाला ईश्वर **(देवः)** जो कि सब सुखों का देने वाला आप ही प्रकाशमान वह **(नः)** हम लोगों के लिये **(शम्)** सुखरूप **(भवतु)** हो **(विभातीः)** विशेषता से दीप्तिवाली **(उषसः)** प्रभात वेला **(नः)** हम लोगों के लिये **(शम्)** सुखरूप **(भवन्तु)** हों **(पर्जन्यः)** मेघ **(नः)** हम **(प्रजाभ्यः)** प्रजाजनों के लिये **(शम्)** सुखरूप **(भवतु)** हो और **(क्षेत्रस्य, पतिः)** जिसके बीच में निवास करते हैं उस जगत् का स्वामी ईश्वर वा राजा **(शम्भुः)** सुख की भावना कराने वाला **(नः)** हमारे लिये **(शम्)** सुखरूप **(अस्तु)** हो॥१०॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। विद्वानों को वेदादि विद्याओं से परमेश्वर आदि पदार्थों के गुण-कर्म-स्वभाव विद्यार्थियों के प्रति यथावत् प्रकाश करने चाहियें, जिससे सबों से उपकार ले सकें॥१०॥

**पुनर्मनुष्याः कान् प्राप्नुयुरित्याह॥**

फिर मनुष्य किनको प्राप्त हों, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**शं नो॑ दे॒वा वि॒श्वदे॑वा भवन्तु॒ शं सर॑स्वती स॒ह धी॒भिर॑स्तु।**

**शम॑भि॒षाच॒ः शमु॑ रातिषाच॒ः शं नो॑ दि॒व्याः पार्थि॑वा॒ः शं नो॒ अप्या॑ः॥ ११॥**

**शम्। न॒ः। दे॒वाः। वि॒श्वऽदे॑वाः। भ॒व॒न्तु॒। शम्। सर॑स्वती। स॒ह। धी॒भिः। अ॒स्तु॒। शम्। अ॒भि॒ऽसाच॑ः। शम्। ऊँ॒ इति॑। रा॒ति॒ऽसाच॑ः। शम्। न॒ः। दि॒व्याः। पार्थि॑वाः। शम्। न॒ः। अप्या॑ः॥ ११॥**

**पदार्थः**-**(शम्) (नः) (देवाः)** विद्यादिशुभगुणानां दातारः **(विश्वदेवाः)** सर्वे विद्वांसः **(भवन्तु) (शम्) (सरस्वती)** विद्यासुशिक्षायुक्ता वाक् **(सह) (धीभिः)** प्रज्ञाभिः सह **(अस्तु) (शम्) (अभिषाचः)** य आभ्यन्तर आत्मनि सचन्ते सम्बध्नन्ति ते **(शम्) (उ) (रातिषाचः)** ये रातिं विद्यादिदानं सचन्ते ते **(शम्) (नः) (दिव्याः)** शुद्धगुणकर्मस्वभावाः **(पार्थिवाः)** पृथिव्यां विदिता राजानः बहुमूल्याः पदार्था वा **(शम्) (नः) (अप्याः)** अप्सु भवा नौयायिनो मुक्ताद्याः पदार्था वा॥११॥

**अन्वयः**-अस्मच्छुभाचारेण देवा विश्वदेवा नः शं भवन्तु सरस्वती धीभिः सह नः शमस्त्वभिषाचः नः शं भवन्तु रातिषाचो नः शमु भवन्तु दिव्याः पार्थिवाः शमप्याश्च नः शं भवन्तु॥११॥

**भावार्थः**-मनुष्यैरीदृशः श्रेष्ठाऽऽचारः कर्त्तव्यो येन सर्वान् सर्वे विद्वांसः शोभना प्रज्ञा वाक् च योगिनो विद्यादातारः राजानः शिल्पिनश्च तथा दिव्याः पदार्थाः प्राप्नुयुः॥११॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-हमारे शुभ गुणों के आचार से **(देवाः)** विद्यादि शुभ गुणों के देने वाले **(विश्वदेवाः)** सब विद्वान् जन **(नः)** हम लोगों के लिये **(शम्)** सुखरूप **(भवन्तु)** होवें **(सरस्वती)** विद्या सुशिक्षायुक्त वाणी **(धीभिः)** उत्तम बुद्धियों के **(सह)** साथ **(नः)** हम लोगों के लिये **(शम्)** सुखरूप **(अस्तु)** हो **(अभिषाचः)** जो आभ्यन्तर आत्मा में सम्बन्ध करते हैं वे **(नः)** हम लोगों के लिये **(शम्)** सुखरूप हों और **(रातिषाचाः)** विद्यादि दान का सम्बन्ध करने वाले हम लोगों के लिये **(शम्)** सुखरूप **(उ)** ही होवें तथा **(दिव्याः)** शुभ गुण-कर्म-स्वभावयुक्त **(पार्थिवाः)** पृथिवी में विदित राजजन वा बहुमूल्य पदार्थ **(शम्)** सुखरूप और **(अप्याः)** जलों में उत्पन्न हुए नौकाओं से जाने वाले वा मोती आदि पदार्थ हम लोगों के लिये **(शम्)** सुखरूप हों॥११॥

**भावार्थः**-मनुष्यों को ऐसा आचार करना चाहिये जिससे सब को सब विद्वान् जन, सुन्दर बुद्धि और वाणी, विद्या देने वाले योगीजन राजा और शिल्पी जन तथा दिव्य पदार्थ प्राप्त हों॥११॥

**पुनर्मनुष्याः किमिच्छेयुरित्याह॥**

फिर मनुष्य किसकी इच्छा करें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**शं नः सत्यस्य पतयो भवन्तु शं नो अर्वन्तः शमु सन्तु गावः।**

**शं न ऋभवः सुकृतः सुहस्ताः शं नो भवन्तु पितरो हवेषु॥१२॥**

**शम्। नः। सत्यस्य। पतयः। भवन्तु। शम्। नः। अर्वन्तः। शम्। ऊँ इति। सन्तु। गावः। शम्। नः। ऋभवः। सुऽकृतः। सुऽहस्ताः। शम्। नः। भवन्तु। पितरः। हवेषु॥१२॥**

**पदार्थः**-**(शम्)** **(नः)** **(सत्यस्य)** सत्यभाषणादिव्यवहारस्य **(पतयः)** पालकाः **(भवन्तु)** **(शम्)** **(नः)** **(अर्वन्तः)** उत्तमा अश्वाः **(शम्)** **(उ)** **(सन्तु)** **(गावः)** धेनवः **(शम्)** **(नः)** **(ऋभवः)** मेधाविनः **(सुकृतः)** धर्मात्मानः **(सुहस्ताः)** शोभनेषु कर्मसु हस्ता येषां ते **(शम्)** **(नः)** **(भवन्तु)** **(पितरः)** **(हवेषु)** हवनादिसत्कर्मसु॥१२॥

**अन्वयः**-हे जगदीश्वर विद्वन् वा! यथा हवेषु सत्यस्य पतयो नः शं भवन्त्वर्वन्तो नः शं भवन्तु गावो नः शमु सन्तु सुकृतस्सुहस्ता ऋभवो नः शं सन्तु पितरो नः शं भवन्तु तथा विधेहि॥१२॥

**भावार्थः**-मनुष्यैरेवं शीलं वर्तव्यं येन आप्ताः प्रीताः स्युः येषां प्रीत्या सर्वे पशवो विद्वांसः पितरश्च प्रसन्नाः सुखकरा भवेयुः॥१२॥

**पदार्थः**-हे जगदीश्वर वा विद्वान्! जैसे **(हवेषु)** हवन आदि अच्छे कामों में **(सत्यस्य)** सत्यभाषण आदि व्यवहार के **(पतयः)** पति **(नः)** हम लोगों के लिये **(शम्)** सुखरूप **(भवन्तु)** होवें **(अर्वन्तः)** उत्तम घोड़े **(नः)** हमारे लिये **(शम्)** सुखरूप होवें **(गावः)** दूध देती हुई गौवें **(नः)** हम लोगों को **(शम्)** सुखरूप **(उ)** ही **(सन्तु)** हों **(सुकृतः)** धर्मात्मा **(सुहस्ताः)** सुन्दर अच्छे कामों में



www.9009.co.in

हाथ डालने वाले **(ऋभवः)** बुद्धिमान् जन **(नः)** हम लोगों के लिये **(शम्)** सुखरूप हों **(पितरः)** पितृजन **(नः)** हम लोगों के लिये **(शम्)** सुखरूप **(भवन्तु)** होवें वैसा विधान करो॥१२॥

**भावार्थः**-मनुष्यों को ऐसे शील की धारणा करनी चाहिये जिससे आप्त सज्जन प्रसन्न हों, जिनकी प्रीति से सब पशु और विद्वान् पितृजन प्रसन्न और सुख करने वाले होंवें॥१२॥

**पुनर्विद्वद्भिः का शिक्षा कार्येत्याह॥**

फिर विद्वान् जनों को क्या शिक्षा करनी चाहिये, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**शं नो॑ अ॒ज एक॑पाद्दे॒वो अ॑स्तु॒ शं नोऽहि॑र्बु॒ध्न्यः॑१ शं स॑मु॒द्रः।**

**शं नो॑ अ॒पां नपा॑त् पे॒रुर॑स्तु॒ शं नः॒ पृश्नि॑र्भवतु दे॒वगो॑पाः॥१३॥**

**शम्। नः॒। अ॒जः। एक॑ऽपात्। दे॒वः। अ॒स्तु॒। शम्। नः॒। अहिः॑। बु॒ध्न्यः॑। शम्। स॒मु॒द्रः। शम्। नः॒। अ॒पाम्। नपा॑त्। पे॒रुः। अ॒स्तु॒। शम्। नः॒। पृश्निः॑। भ॒व॒तु॒। दे॒वऽगो॑पाः॥१३॥**

**पदार्थः**-**(शम्)** **(नः)** **(अजः)** यः कदाचिन्न जायते जगदीश्वरः **(एकपात्)** सर्वे जगदेकस्मिन् पादे यस्य सः **(देवः)** सर्वसुखप्रदाता **(अस्तु)** **(शम्)** **(नः)** **(अहिः)** मेघः **(बुध्न्यः)** बुध्नेऽन्तरिक्षे भवः **(शम्)** **(समुद्रः)** समुद्रवन्त्यापो यस्मिन् स सागरः **(शम्)** **(नः)** **(अपाम्)** **(नपात्)** न विद्यन्ते पादा यस्यां सा नौ **(पेरुः)** पारयिता **(अस्तु)** **(शम्)** **(नः)** **(पृश्निः)** अन्तरिक्षमवकाशः **(भवतु)** **(देवगोपाः)** सर्वेषां रक्षकः॥१३॥

**अन्वयः**-हे विद्वांसो! यूयं तथा शिक्षध्वं यथा न अज एकपादेवश्शमस्तु बुध्न्योऽहिर्नश्शमस्तु समुद्रो नश्शमस्त्वपां पेरुर्नपान्नः शमस्तु देवगोपाः पृश्निर्नः शं भवतु॥१३॥

**भावार्थः**-हे अध्यापकोपदेशकाः! यूयमस्माञ्जन्ममरणादिदोषरहितेश्वरमेघसमुद्रनौविद्या ग्राहयन्तु यतो वयं सर्वेषां रक्षका भवेम॥१३॥

**पदार्थः**- हे विद्वानो! तुम वैसी शिक्षा देओ जैसे **(नः)** हम लोगों को **(अजः)** जो कभी नहीं उत्पन्न होता वह जगदीश्वर **(एकपात्)** जिसके पैर में सब जगत् विद्यमान है **(देवः)** सब सुख देने वाला विद्वान् **(शम्)** सुखरूप **(अस्तु)** हो **(बुध्न्यः)** अन्तरिक्ष में प्रसिद्ध होने वाला **(अहिः)** मेघ **(नः)** हम लोगों के लिये **(शम्)** सुखरूप हो **(समुद्रः)** जिसमें अच्छे प्रकार जल उछलते हैं वह सागर **(नः)** हम लोगों के लिये **(शम्)** सुखरूप हो **(अपाम्)** जलों का **(पेरुः)** पार करने वाला और **(नपात्)** पैर जिसके नहीं है वह नौका **(नः)** हम लोगों के लिये **(शम्)** सुखरूप **(अस्तु)** हो **(देवगोपाः)** और सब की रक्षा करने वाला **(पृश्निः)** अन्तरिक्ष अवकाश हम लोगों के लिये **(शम्)** सुखरूप **(भवतु)** हो॥१३॥

**भावार्थः**-हे अध्यापक और उपदेशको! तुम हम लोगों को जन्ममरणादि दोषरहित ईश्वर, मेघ, समुद्र और नौका की विद्या का ग्रहण कराइये जिससे हम लोग सब के रक्षक हों॥१३॥



www.9009.co.in

**पुनर्मनुष्याः किमवश्यं कुर्युरित्याह॥**

फिर मनुष्य क्या अवश्य करें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**आदित्या रुद्रा वसवो जुषन्तेदं ब्रह्म क्रियमाणं नवीयः।**

**शृण्वन्तु नो दिव्याः पार्थिवासो गोजाता उत ये यज्ञियासः॥ १४॥**

**आदित्याः। रुद्राः। वसवः। जुषन्त। इदम्। ब्रह्म। क्रियमाणम्। नवीयः। शृण्वन्तु। नः। दिव्याः। पार्थिवासः। गोऽजाताः। उत। ये। यज्ञियासः॥ १४॥**

**पदार्थः**-(**आदित्याः**) अष्टाचत्वारिंशद्वर्षकृतेन ब्रह्मचर्येण पूर्णविद्याः (**रुद्राः**) चतुश्चत्वारिंशद्वर्षप्रमितेन ब्रह्मचर्येणाधीतविद्याः (**वसवः**) चत्वारिंशद्वर्षपरिमाणेन ब्रह्मचर्येण पठितवेदशास्त्राः (**जुषन्त**) सेवन्ताम् (**इदम्**) प्रत्यक्षम् (**ब्रह्म**) बृहद्धनमन्नं वा (**क्रियमाणम्**) वर्त्तमाने सम्पाद्यमानम् (**नवीयः**) अतिशयेन नूतनम् (**शृण्वन्तु**) (**नः**) अस्माकं विद्याः (**दिव्याः**) दिवि शुद्धे कमनीये गुणादौ भवाः (**पार्थिवासः**) पृथिव्यां विदिताः (**गोजाताः**) गवा सुशिक्षितया वाचा प्रादुर्भूताः (**उत**) (**ये**) (**यज्ञियासः**) यज्ञसम्पादकाः॥ १४॥

**अन्वयः**-हे विद्वांसो! ये भवन्त आदित्या रुद्रा वसवो दिव्याः पार्थिवासो गोजाता उत ये यज्ञियासः सन्ति ते न इदं नवीयः क्रियमाणं ब्रह्म जुषन्तास्माभिरधीतं शृण्वन्तु॥ १४॥

**भावार्थः**-मनुष्यैः धार्मिकान् विदुष आहूय सत्कृत्यान्नादिना सन्तर्प्य स्वश्रुतं संश्राव्य शेषमेभ्यः शृण्वन्तु यतो निर्भ्रमाः सर्वे स्युः॥ १४॥

**पदार्थः**-हे विद्वानो! जो आप लोग (**आदित्याः**) अड़तालीस वर्ष प्रमाण से ब्रह्मचर्य सेवन से विद्या पढ़े हुए हों वा (**रुद्राः**) चवालीस वर्ष प्रमाण ब्रह्मचर्य से विद्या पढ़े हुए हों वा (**वसवः**) चालीस वर्ष परिमाण जिसका है ऐसे ब्रह्मचर्य्य से विद्या पढ़े हुए हैं वा (**दिव्याः**) शुद्ध मनोहर गुण आदि में प्रसिद्ध वा (**पार्थिवासः**) पृथिवी में विदित वा (**गोजाताः**) सुशिक्षित वाणी से उत्पन्न हुए (**उत**) और (**ये**) जो (**यज्ञियासः**) यज्ञ सम्पादन करने वाले हैं वे (**नः**) हम लोगों के लिये (**इदम्**) इस प्रत्यक्ष (**नवीयः**) अत्यन्त नवीन (**क्रियमाणम्**) वर्त्तमान में सिद्ध होते हुए (**ब्रह्म**) बहुत धन वा अन्न को (**जुषन्त**) सेवें और हम लोगों का पढ़ा हुआ (**शृण्वन्तु**) सुनें॥ १४॥

**भावार्थः**-मनुष्यों को चाहिये कि धार्मिक विद्वानों को बुलाय सत्कार कर अन्नादिकों से अच्छे प्रकार तृप्त कर अपना पढ़ा अच्छे प्रकार सुना, शेष इन से सुनें, जिससे भ्रम रहित सब हों॥ १४॥

**मनुष्यैः केषां सकाशादध्ययनमुपदेशश्च श्रोतव्य इत्याह॥**

मनुष्यों को किसकी ओर से ***[**=को किनसे***]*** विद्याध्ययन और उपदेश सुनने योग्य हैं, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**ये देवानां यज्ञिया यज्ञियानां मनोर्यजत्रा अमृता ऋतज्ञाः।**



www.9009.co.in

**ते नो रासन्तामुरुगायमद्य यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥१५॥३०॥३॥**

**ये। देवानाम्। यज्ञियाः। यज्ञियानाम्। मनोः। यजत्राः। अमृताः। ऋतऽज्ञाः। ते। नः। रासन्ताम्। उरुऽगायम्। अद्य। यूयम्। पात। स्वस्तिऽभिः। सदा। नः॥१५॥**

**पदार्थः**-(**ये**) (**देवानाम्**) विदुषां मध्ये विद्वांसः (**यज्ञियाः**) ये यज्ञं कर्तुमर्हन्ति ते (**यज्ञियानाम्**) (**मनोः**) मननशीलस्य (**यजत्राः**) संगन्तारः (**अमृताः**) स्वस्वरूपेण नित्या जीवन्मुक्ता वा (**ऋतज्ञाः**) य ऋतं सत्यं जानन्ति (**ते**) (**नः**) अस्मभ्यम् (**रासन्ताम्**) ददतु (**उरुगायम्**) बहुभिर्गीयमानं विद्याबोधम् (**अद्य**) इदानीम् (**यूयम्**) (**पात**) (**स्वस्तिभिः**) विद्यादिदानैः (**सदा**) (**नः**) अस्मान्॥१५॥

**अन्वयः**-ये देवानां देवा यज्ञियानां यज्ञियाः मनोर्यजत्रा अमृता ऋतज्ञास्सन्ति तेऽद्य न उरुगायं रासन्तां हे विद्वांसो! यूयं स्वस्तिभिर्नः सदा पात॥१५॥

**भावार्थः**-हे मनुष्याः ये विद्वत्तमाश्शिल्पितमास्सत्याचारा जीवनमुक्ता ब्रह्मविदो जना अस्मान् विद्यासुशिक्षाभ्यां सततमुन्नयन्ति तान् वयं संरक्ष्य सदा सेवेमहीति॥१५॥

अत्र सर्वसुखप्राप्तये सृष्टिविद्याविद्वत्संगमाहात्म्यं चोक्तमत एतत्सूक्तस्यार्थेन सह पूर्वसूक्तार्थस्य सङ्गतिर्वेद्या॥

**इत्यृग्वेदे पञ्चमाष्टके तृतीयोऽध्यायस्त्रिंशो वर्गः सप्तमे मण्डले पञ्चत्रिंशत्तमं सूक्तं च समाप्तम्॥**

**पदार्थः**- (**ये**) जो (**देवानाम्**) विद्वानों के बीच विद्वान् (**यज्ञियानाम्**) यज्ञ करने के योग्यों में (**यज्ञियाः**) यज्ञ करने योग्य (**मनोः**) विचारशील के (**यजत्राः**) संग करने (**अमृताः**) अपने स्वरूप से नित्य वा जीवन्मुक्त रहने (**ऋतज्ञाः**) और सत्य के जानने वाले हैं (**ते**) वे (**अद्य**) आज (**नः**) हम लोगों के लिये (**उरुगायम्**) बहुतों ने गाये हुए विद्याबोध को (**रासन्ताम्**) देवें, हे विद्वानो! (**यूयम्**) तुम (**स्वस्तिभिः**) विद्यादि दानों से (**नः**) हम लोगों की (**सदा**) सर्वदा (**पात**) रक्षा करो॥१५॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो अत्यन्त विद्वान् अत्यन्त शिल्पी सत्य आचरण करने वाले जीवन्मुक्त ब्रह्मवेत्ता जन हम लोगों को विद्या और सुन्दर शिक्षा से निरन्तर उन्नति देते हैं, उनको हम लोग रखकर सदा सेवें॥१५॥

इस सूक्त में सर्व सुखों की प्राप्ति के लिये सृष्टिविद्या और विद्वानों के संग का उपदेश किया, इससे इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ संगति जाननी चाहिये॥



www.9009.co.in

यह ऋग्वेद के पंचमाष्टक में तीसरा अध्याय ओर तीसवां वर्ग, सप्तम मण्डल में पैतीसवां सूक्त समाप्त हुआ॥

**अथ नवर्चस्य षट्त्रिंशत्तमस्य सूक्तस्य वसिष्ठर्षिः। विश्वेदेवा देवताः। २ त्रिष्टुप्। ३, ४, ६ निचृत्त्रिष्टुप्। ८, ९ विराट्त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः। ५ पङ्क्तिः। १, ७ भुरिक्पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः॥**

***अथ मनुष्यः किं कुर्यादित्याह॥***

अब नव ऋचावाले छत्तीसवें सूक्त का आरम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में मनुष्य क्या करे इस विषय को कहते हैं॥

**प्र ब्रह्मैतु सदनादृतस्य वि रश्मिभिः ससृजे सूर्यो गाः।**

**वि सानुना पृथिवी सस्र उर्वी पृथु प्रतीकमध्येधे अग्निः॥१॥**

**प्र। ब्रह्म। एतु। सदनात्। ऋतस्य। वि। रश्मिऽभिः। ससृजे। सूर्यः। गाः। वि। सानुना। पृथिवी। सस्रे। उर्वी। पृथु। प्रतीकम्। अधि। आ। ईधे। अग्निः॥१॥**

**पदार्थः**-(**प्र**) (**ब्रह्म**) धनम् (**एतु**) प्राप्नोतु (**सदनात्**) स्थानात् (**ऋतस्य**) सत्यस्य (**वि**) (**रश्मिभिः**) किरणैः (**ससृजे**) सृजति (**सूर्यः**) सविता (**गाः**) रश्मीन् (**वि**) (**सानुना**) शिखरेण सह (**पृथिवी**) (**सस्रे**) सरति गच्छति (**उर्वी**) बहुपदार्थयुक्ता (**पृथु**) विस्तीर्णम् (**प्रतीकम्**) प्रतीतिकरम् (**अधि**) (**आ**) (**ईधे**) प्रकाशयति (**अग्निः**) अग्निरिव विद्वान्॥१॥

**अन्वयः**-अग्निरिव विद्वान् यथा सूर्यो रश्मिभिः पृथु प्रतीकं गाश्च वि ससृजे अध्येधे यथोर्वी पृथिवी सानुना वि सस्रे तथा भवान् ऋतस्य सदनात् ब्रह्म प्रैतु॥१॥

**भावार्थः**-यो जगदीश्वरः स्वप्रकाशः सूर्यादीनां प्रकाशको निर्माता जगत्प्रकाशनार्थमग्निं सूर्यलोकञ्च रचयति तमुपास्य सत्याचारेण मनुष्या ऐश्वर्यं प्राप्नुवन्तु॥१॥

**पदार्थः**- (**अग्निः**) अग्नि के समान विद्वान् जन जैसे (**सूर्यः**) सूर्य (**रश्मिभिः**) किरणों से (**पृथु**) विस्तृत (**प्रतीकम्**) प्रतीति करने वाले पदार्थ (**गाः**) किरणों को (**वि, सृसजे**) विविध प्रकार रचता वा छोड़ता वा (**अधि, आ, ईधे**) अधिकता से प्रकाशित होता है और जैसे (**उर्वी**) बहुपदार्थयुक्त (**पृथिवी**) पृथिवी (**सानुना**) शिखर के साथ (**वि, सस्रे**) विशेषता से चलती है, वैसे आप (**ऋतस्य**) सत्य के (**सदनात्**) स्थान से (**ब्रह्म**) धन को (**प्र, एतु**) अच्छे प्रकार प्राप्त हो॥१॥

**भावार्थः**-जो जगदीश्वर आप ही प्रकाशमान और सूर्यादिकों का प्रकाश करने वा बनाने वाला जगत् के प्रकाश के लिये अग्नि और सूर्यलोक को रचता है, उसाकी उपासना कर सत्य आचरण से मनुष्य ऐश्वर्य को प्राप्त होवें॥१॥

**पुनर्मनुष्याः कं भजेयुरित्याह॥**

फिर मनुष्य किसको सेवें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते है॥

**इमां वां मित्रावरुणा सुवृक्तिमिषं न कृण्वे असुरा नवीयः।**



www.9009.co.in

**इनो वामन्यः पदवीरदब्धो जनं च मित्रो यतति ब्रुवाणः॥२॥**

**इमाम्। वाम्। मित्रावरुणा। सुऽवृक्तिम्। इषम्। न। कृण्वे। असुरा। नवीयः। इनः। वाम्। अन्यः। पदऽवीः। अदब्धः। जनम्। च। मित्रः। यतति। ब्रुवाणः॥२॥**

**पदार्थः**-(**इमाम्**) (**वाम्**) युवयोः (**मित्रावरुणा**) प्राणोदानाविवाध्यापकोपदेशकौ (**सुवृक्तिम्**) सुष्ठु वर्जन्ति दुःखानि यया ताम् वाचं (**इषम्**) इच्छामन्नं वा (**न**) इव (**कृण्वे**) करोमि (**असुरा**) यावसुषु रमेते तौ (**नवीयः**) अतिशयेन नवीनम् (**इनः**) ईश्वरः (**वाम्**) युवयोः (**अन्यः**) (**पदवीः**) यः पदं व्येति सः (**अदब्धः**) अहिंसितः (**जनम्**) (**च**) (**मित्रः**) सखा (**यतति**) यतते। अत्र व्यत्ययेन परस्मैपदम् (**ब्रुवाणः**) उपदिशन्॥२॥

**अन्वयः**-हे असुरा मित्रावरुणा! योऽन्यः पदवीरदब्धो मित्र इनो ब्रुवाणः सन् वां जनञ्च नवीयः प्रापयितुं यतति वामिमां सुवृक्तिं सत्यां वाचमिषन्न प्र यच्छति यामहं परोपकाराय कृण्वे तां युवामहं च नित्यं भजेम॥२॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! भवन्तो यस्सर्वेभ्यः पृथक् सर्वव्यापी सर्वसुहृज्जगदीश्वरः सर्वेषां हिताय सदा वर्तते तमेवोपास्य मोक्षपदवीं प्राप्नुवन्तु॥२॥

**पदार्थः**-हे (**असुरा**) प्राणों में रमते हुए (**मित्रावरुणा**) प्राण और उदान के समान अध्यापक और उपदेशको! जो (**अन्यः**) और जन (**पदवी**) पद को प्राप्त होता और (**अदब्धः**) अहिंसित (**मित्रः**) सखा (**इनः**) ईश्वर (**ब्रुवाणः**) उपदेश करता हुआ (**वाम्**) तुम दोनों को (**जनम्, च**) और जन को भी (**नवीयः**) अत्यन्त नवीन व्यवहार की प्राप्ति कराने का (**यतति**) यत्न कराता तथा (**वाम्**) तुम दोनों की (**इमाम्**) इस प्रत्यक्ष (**सुवृक्तिम्**) जिससे सुन्दरता से दुःखों की निवृत्ति करते हैं उस सत्य वाणी को (**इषम्**) इच्छा वा अन्न के (**न**) समान देता है, जिसको कि मैं परोपकार के लिये (**कृण्वे**) सिद्ध करता हूँ, उस को मैं [और] तुम नित्य सेवें॥२॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! आप जो सब के लिये अलग सर्वव्यापी सब का मित्र जगदीश्वर सब के हित के लिये सदैव प्रवृत्त है, उसी की उपासना कर मोक्ष पद को प्राप्त होवें॥२॥

**पुनर्मनुष्यैः किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को क्या करना चाहिये, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**आ वातस्य ध्रजतो रन्त इत्या अपीपयन्त धेनवो न सूदाः।**
**महो दिवः सदने जायमानोऽचिक्रदद् वृषभः सस्मिन्नूधन्॥३॥**

**आ। वातस्य। ध्रजतः। रन्ते। इत्याः। अपीपयन्त। धेनवः। न। सूदाः। महः। दिवः। सदने। जायमानः। अचिक्रदत्। वृषभः। सस्मिन्। ऊधन्॥३॥**

**पदार्थः**-(**आ**) समन्तात् (**वातस्य**) वायोः (**ध्रजतः**) गच्छतः (**रन्ते**) रमते (**इत्याः**) एतुं प्राप्तुं योग्याः (**अपीपयन्त**) प्याययन्ति (**धेनवः**) गावः (**न**) इव (**सूदाः**) पाककर्त्तारः (**महः**) महतः (**दिवः**)



www.9009.co.in

प्रकाशस्य **(सदने)** सीदन्ति यस्मिंस्तस्मिन् **(जायमानः)** उत्पद्यमानः **(अचिक्रदत्)** आह्वयति **(वृषभः)** बलिष्ठः **(सस्मिन्)** अन्तरिक्षे **(ऊधन्)** ऊधन्युषसि॥३॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यो महो दिवस्सदने जायमानो वृषभः सस्मिन्नूधन्नचिक्रदत् यस्मिन् ध्रजतो वातस्य सूदा न धेनव इत्या रन्ते सर्वानापीपयन्त तं सूर्यं संयुक्त्या सम्प्रयाजयन्तु॥३॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यथा प्रकाशवता जायमानो रविरन्तरिक्षे प्रकाशते यस्मिन्नन्तरिक्षे सर्वे प्राणिनो रमन्ते तस्मिन्नेव सर्वे सुखमश्नुवते॥३॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो **(महः)** महान् **(दिवः)** प्रकाश के **(सदने)** घर में **(जायमानः)** उत्पन्न होता हुआ **(वृषभः)** बलिष्ठ **(सस्मिन्)** अन्तरिक्ष में और **(ऊधन्)** उषाकाल में **(अचिक्रदत्)** आह्वान करता जिस में **(ध्रजतः)** जाते हुए **(वातस्य)** पवन के सम्बन्धी **(सूदाः)** पाप करने वालों के **(न)** समान **(धेनवः)** गायें **(इत्याः)** जो कि पाने योग्य हैं उन को **(रन्ते)** रमता और सब को **(आ, अपीपयन्त)** सब ओर से बढ़ाता है, उस सूर्य को युक्ति के साथ उत्तम प्रयोग में लाओ॥३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जैसे प्रकाशमान पदार्थों में उत्पन्न हुआ रवि अन्तरिक्ष में प्रकाशित होता है वा जिस अन्तरिक्ष में सब प्राणी रमते हैं, उसी में सब सुख को प्राप्त होते हैं॥३॥

**पुनस्स राजा कं सत्कृत्य रक्षेदित्याह॥**

फिर वह राजा किस का सत्कार करके और उसकी रक्षा करे, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**गिरा य एता युनजद्धरी त इन्द्र प्रिया सुरथा शूर धायू।**

**प्र यो मन्युं रिरिक्षतो मिनात्या सुक्रतुमर्यमणं ववृत्याम्॥४॥**

**गिरा। यः। एता। युनजत्। हरी इति। ते। इन्द्र। प्रिया। सुऽरथा। शूर। धायू इति। प्र। यः। मन्युम्। रिरिक्षतः। मिनाति। आ। सुऽक्रतुम्। अर्यमणम्। ववृत्याम्॥४॥**

**पदार्थः**-**(गिरा)** वाण्या **(यः)** **(एता)** एतौ **(युनजत्)** युनक्ति **(हरी)** अश्वौ **(ते)** तव **(इन्द्र)** राजन् **(प्रिया)** कमनीयौ **(सुरथा)** सुष्ठु रथो ययोस्तौ **(शूर)** शत्रूणां हिंसक **(धायू)** धारकौ **(प्र)** **(यः)** **(मन्युम्)** क्रोधम् **(रिरिक्षतः)** हन्तुमिच्छतो दुष्टाच्छत्रोः **(मिनाति)** हिनस्ति **(आ)** **(सुक्रतुम्)** प्रशस्तप्रज्ञम् **(अर्यमणम्)** न्यायकारिणम् **(ववृत्याम्)** वर्तयेयम्॥४॥

**अन्वयः**-हे शूरेन्द्र! यस्त एता सुरथा धायू प्रिया हरी गिरा युनजत् यो रिरिक्षतो मन्युं प्रमिणाति तं सुक्रतुमर्यमणमहमा ववृत्याम्॥४॥

**भावार्थः**-हे राजन्! ये यानचालने कुशला राजप्रियाः विद्वांसः स्युस्ताँस्त्वं न्यायकारिणः कुर्याः॥४॥



www.9009.co.in

**पदार्थ:**-हे **(शूर)** शत्रुओं की हिंसा करने वाले **(इन्द्र)** राजा! **(य:)** जो **(ते)** आपके **(एता)** यह दोनों **(सुरथा)** सुन्दर रथ वाले **(धायू)** धारणकर्त्ता **(प्रिया)** मनोहर **(हरी)** घोड़ों को **(गिरा)** वाणी से **(युनजत्)** युक्त करता है वा **(य:)** जो **(रिरिक्षत:)** हिंसा करने की इच्छा किये हुए दुष्ट शत्रु से **(मन्युम्)** क्रोध को **(प्र, मिनाति)** नष्ट करता है उस **(सुक्रतुम्)** प्रशंसित बुद्धियुक्त **(अर्यमणम्)** न्यायकारी सज्जन को मैं **(आ, ववृत्याम्)** अच्छे प्रकार वर्त्तूँ॥४॥

**भावार्थ:**-हे राजन्! जो रथ आदि के चलाने में कुशल, राजप्रिय, विद्वान् हों, उनको आप न्यायकारी करो॥४॥

**के संगन्तुमर्हा भवन्तीत्याह॥**

कौन संग करने योग्य होते हैं, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**यजन्ते अस्य सख्यं वयश्च नमस्विनः स्व ऋतस्य धामन्।**

**वि पृक्षो बाबधे नृभिः स्तवान इदं नमो रुद्राय प्रेष्ठम्॥५॥१॥**

**यजन्ते। अस्य। सख्यम्। वय:। च। नमस्विन:। स्वे। ऋतस्य। धामन्। वि। पृक्ष:। बाबधे। नृऽभि:। स्तवान:। इदम्। नम:। रुद्राय। प्रेष्ठम्॥५॥**

**पदार्थ:**-**(यजन्ते)** संगच्छन्ते **(अस्य)** **(सख्यम्)** मित्रत्वम् **(वय:)** जीवनम् **(च)** **(नमस्विन:)** बह्वन्नादियुक्त: **(स्वे)** स्वकीया: **(ऋतस्य)** सत्यस्य **(धामन्)** धामनि **(वि)** **(पृक्ष:)** सम्पर्चनीयमन्नम् **(बाबधे)** बध्नाति **(नृभि:)** नायकैर्मनुष्यै: **(स्तवान:)** स्तूयमान: **(इदम्)** सुसंस्कृतम् **(नम:)** अन्नादिकम् **(रुद्राय)** **(प्रेष्ठम्)** अतिशयेन प्रियम्॥५॥

**अन्वय:**-ये स्वे नमस्विन ऋतस्य धामन् वर्तमानस्यास्य सख्यं वय: पृक्षश्च यजन्ते यो हि नृभिस्सह स्तवानो रुद्राय इदं प्रेष्ठं नमो वि बाबधे तं ताँश्च वयं संगमयेम॥५॥

**भावार्थ:**-ये सत्पुरुषा अभिसंधिन: सर्वस्य सुहृदस्सर्वेषां दीर्घं जीवनं अन्नाद्यैश्वर्यं चिकीर्षन्ति त एव लोके प्रियतमा जायन्ते॥५॥

**पदार्थ:**-जो **(स्वे)** अपने **(नमस्विन:)** बहुत अन्नयुक्त जन **(ऋतस्य)** सत्य के **(धामन्)** धाम में वर्त्तमान **(अस्य)** इस की **(सख्यम्)** मित्रता को **(वय:)** जीवन को तथा **(पृक्ष:)** अच्छे प्रकार संग करने योग्य अन्न को **(यजन्ते)** सग करते हैं जो निश्चय से **(नृभि:)** नायक मनुष्यों के साथ **(स्तवान:)** स्तुति किया हुआ **(रुद्राय)** रुलाने वाले के लिये **(इदम्)** इस **(प्रेष्ठम्)** अत्यन्त प्रिय और **(नम:)** अन्न आदि पदार्थ को **(वि, बाबधे)** विशेषता से बांधता है उस **(च)** और उन को हम लोग संग करावें॥५॥

**भावार्थ:**-जो अच्छे पुरुष संग करने वाले, सब के मित्र और सब का दीर्घ जीवन अन्नादि ऐश्वर्य्य को करना चाहते हैं, वे ही लोक में अत्यन्त प्यारे होते हैं॥५॥



www.9009.co.in

**पुनः कीदृश्यः स्त्रियो वरा भवन्तीत्याह॥**

फिर कैसी स्त्रियाँ श्रेष्ठ होती हैं, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**आ यत्साकं यशसो वावशानाः सरस्वती सप्तथी सिन्धुमाता।**

**याः सुष्वयन्त सुदुघाः सुधारा अभि स्वेन पयसा पीप्यानाः॥६॥**

**आ। यत्। साकम्। यशसः। वावशानाः। सरस्वती। सप्तथी। सिन्धुऽमाता। याः। सुष्वयन्त। सुऽदुघाः। सुऽधाराः। अभि। स्वेन। पयसा। पीप्यानाः॥६॥**

**पदार्थः**-(**आ**) (**यत्**) याः (**साकम्**) सह (**यशसः**) कीर्तेः (**वावशानाः**) कामयमानाः (**सरस्वती**) उत्तमा वाणी (**सप्तथी**) सप्तमी। अत्र **वा छन्दसी**ति मस्य स्थाने थः। (**सिन्धुमाता**) सिन्धूनां नदीनां परिमाणकर्त्री (**याः**) (**सुष्वयन्त**) गच्छन्ति (**सुदुघाः**) सुष्ठु कामान् पूरयित्र्यः (**सुधाराः**) शोभना धारा यासां ताः (**अभि**) (**स्वेन**) स्वकीयेन (**पयसा**) उदकेन। **पय इत्युदकनाम।** (निघं०१.१२) (**पीप्यानाः**) वर्धमानाः॥६॥

**अन्वयः**-हे विद्वांसो! यासां सिन्धुमातेव यद्या सप्तथी सरस्वती वर्तते याः स्वेन पयसा साकं पीप्याना नद्य इव सुदुघाः सुधाराः यशसो वावशाना विदुष्यः स्त्रियोऽभ्या सुष्वयन्त ताः सततं माननीया भवन्ति॥६॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे पुरुषाः! यथा षण्णां ज्ञानेन्द्रियमनसां मध्ये कर्मेन्द्रियं वाक् सुशोभिता वर्तते यथा जलेन पूर्णा नद्यः शोभन्ते तथा विद्यासत्ये कामयमाना अलंकामाः सत्यवाचः स्त्रियः श्रेष्ठा माननीयाश्च भवन्तीति विजानीत॥६॥

**पदार्थः**-हे विद्वानो! जिन की (**सिन्धुमाता**) नदियों का परिमाण करने वाली सी (**यत्**) जो (**सप्तथी**) सातवीं (**सरस्वती**) उत्तम वाणी वर्त्तमान (**याः**) जो (**स्वेन**) अपने (**पयसा**) जल के (**साकम्**) साथ (**पीप्यानाः**) बढ़ती हुई नदियों के समान (**सुदुघाः**) सुन्दर कामों को पूरी करने वाली (**सुधाराः**) सुन्दर धाराओं से युक्त (**यशसः**) कीर्त्ति की (**वावशानाः**) कामना करती हुई विदुषी स्त्री (**अभि, आ, सुष्वयन्त**) सब ओर से जाती हैं, वे निरन्तर मान करने योग्य होती हैं॥६॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जैसे छः अर्थात् पांच ज्ञानेन्द्रिय और मन के बीच कर्मेन्द्रिय वाणी सुन्दर शोभायुक्त है और जैसे जल से पूर्ण नदी शोभा पाती है, वैसे विद्या और सत्य की कामना करती हुई पूर्ण कामना वाली स्त्री श्रेष्ठ और मान करने योग्य हीती है॥६॥

**के विद्वांसो वरा भवन्तीत्याह॥**

कौन विद्वान् जन श्रेष्ठ होते हैं, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**उत त्ये नो मरुतो मन्दसाना धियं तोकं च वाजिनोऽवन्तु।**

**मा नः परि ख्यदक्षरा चरन्त्यवीवृधन् युज्यं ते रयिं नः॥७॥**



www.9009.co.in

**उत। त्ये। नः। मरुतः। मन्दसानाः। धियम्। तोकम्। च। वाजिनः। अवन्तु। मा। नः। परि। ख्यत्। अक्षरा। चरन्ती। अवीवृधन्। युज्यम। ते। रयिम्। नः॥७॥**

**पदार्थः**-(**उत**) (**त्ये**) (**नः**) अस्माकम् (**मरुतः**) विद्वांसो मनुष्याः (**मन्दसानाः**) कामयमाना आनन्दितास्सन्तः (**धियम्**) प्रज्ञाम् (**तोकम्**) अपत्यम् (**च**) (**वाजिनः**) प्रशस्तविज्ञानवन्तः (**अवन्तु**) वर्धयन्तु (**मा**) (**नः**) अस्मान् (**परि**) सर्वतः (**ख्यत्**) वर्जयेत् (**अक्षरा**) अविनाशिनी सकलविद्याव्यापिनी (**चरन्ती**) प्राप्नुवन्ती (**अवीवृधन्**) वर्धयन्तु (**युज्यम्**) योक्तुमर्हम् (**ते**) तव (**रयिम्**) धनम् (**नः**) अस्माकम्॥७॥

**अन्वयः**-त्ये वाजिनो मन्दसाना मरुतो नो धियमुत तोकं चावन्तु यथा चरन्त्यक्षरा वाक् नो मा परि ख्यत् तथा नस्ते तव च युज्यं रयिमवीवृधन्॥७॥

**भावार्थः**-त एव विद्वांसोऽत्युत्तमास्सन्ति ये सर्वेषां पुत्रान् पुत्रीश्च ब्रह्मचर्येण संरक्ष्य वर्धयित्वा प्राज्ञाः कुर्वन्ति॥७॥

**पदार्थः**- (**त्ये**) वे (**वाजिनः**) प्रशंसित विज्ञान वाले (**मन्दसानाः**) कामना करते हुए (**मरुतः**) विद्वान् जन (**नः**) हमारी (**धियम्**) बुद्धि को (**उत**) और (**तोकम्**) सन्तान को (**च**) भी (**अवन्तु**) बढ़ावें जैसे (**चरन्ती**) प्राप्त होती हुई (**अक्षरा**) अविनाशिनी वाणी (**नः**) हम लोगों को (**मा**) मत (**परि, ख्यत्**) सब ओर से वर्जे, वैसे (**नः**) हम लोगों के सम्बन्ध में (**ते**) आप के (**युज्यम्**) योग्य (**रयिम्**) धन को (**अवीवृधन्**) बढ़ावें॥७॥

**भावार्थः**-वे ही विद्वान् जन अति उत्तम हैं, जो सब के पुत्र और कन्याओं को ब्रह्मचर्य्य से रक्षा कर और बढ़ा कर उत्तम ज्ञाता करते हैं॥७॥

**पुनर्विद्वद्विद्यार्थिनः परस्परं कथं वर्तेरन्नित्याह॥**

फिर विद्वान् जन और विद्यार्थी परस्पर कैसे वर्तें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**प्र वो महीमरमतिं कृणुध्वं प्र पूषणं विदथ्यं१ न वीरम्।**

**भगं धियोऽवितारं नो अस्याः सातौ वाजं रातिषाचं पुरंधिम्॥८॥**

**प्र। वः। महीम्। अरमतिम्। कृणुध्वम्। प्र। पूषणम्। विदथ्यम्। न। वीरम्। भगम्। धियः। अवितारम्। नः। अस्याः। सातौ। वाजम्। रातिऽसाचम्। पुरम्ऽधिम्॥८॥**

**पदार्थः**-(**प्र**) (**वः**) युष्माकम् (**महीम्**) महतीं वाचम् (**अरमतिम्**) अलं प्रज्ञाम् (**कृणुध्वम्**) (**प्र**) (**पूषणम्**) (**विदथ्यम्**) विदथेषु संग्रामेषु साधुम् (**न**) इव (**वीरम्**) शौर्यादिगुणोपेतम् (**भगम्**) ऐश्वर्यम् (**धियः**) प्रज्ञाः (**अवितारम्**) वर्धयितारम् (**नः**) अस्माकम् (**अस्याः**) (**सातौ**) संभक्तौ (**वाजम्**) विज्ञानम् (**रातिषाचम्**) दानसम्बन्धिनम् (**पुरन्धिम्**) बहुसुखधरम्॥८॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे विद्वांसो! यथा यूयं नः पूषणं विदथ्यं वीरं न वोऽरमतिं महीं भगं धियोऽवितारमस्याः सातौ पुरन्धिं रातिषाचं वाजं च प्र कृणुध्वं तथा चैतान् वयमपि प्रकुर्याम॥८॥

**भावार्थः**-अत्रोपमावाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यथा विद्वांसोऽध्यापका उपदेशकाश्च सर्वेषां बुद्ध्यायुर्विद्यावृद्धिं शूरवीरवत् सर्वदा रक्षणं च कुर्वन्ति तथा तेषां सेवासत्कारौ सर्वैस्सदा कार्यौ॥८॥

**पदार्थः**-हे विद्वानो! जैसे तुम **(नः)** हमारी **(पूषणम्)** पुष्टि करने वाले **(विदथ्यम्)** संग्रामों में उत्तम **(वीरम्)** शूरता आदि गुणों से युक्त जन के **(न)** समान **(वः)** तुम्हारी **(अरमतिम्)** पूर्णमति **(महीम्)** बड़ी वाणी **(भगम्)** ऐश्वर्य्य **(धियः)** बुद्धियों और **(अवितारम्)** बढ़ाने वाले **(अस्याः)** इस बुद्धिमात्र के तथा **(सातौ)** अच्छे भाग में **(पुरन्धिम्)** बहुत सुख धारण करने वाले **(रातिषाचम्)** दानसम्बन्धि **(वाजम्)** विज्ञान को **(प्र, कृणुध्वम्)** अच्छे प्रकार सिद्ध करो, वैसे इन को हम लोग भी **(प्र)** सिद्ध करें॥८॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है।[91] जैसे विद्वान् जन अध्यापक और उपदेशक सब की बुद्धि आयु विद्या की वृद्धि और शूरवीरों के समान सर्वदा रक्षा करते हैं, वैसे उन की सेवा और सत्कार सब को सदा करने योग्य हैं॥८॥

**के विद्वांसस्सेवनीया इत्याह॥**

कौन विद्वान् सेवा करने योग्य हैं, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अच्छायं वो मरुतः श्लोक एत्वच्छा विष्णुं निषिक्तपामवोभिः।**

**उत प्रजायै गृणते वयो धुर्यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥९॥२॥**

**अच्छ। अयम्। वः। मरुतः। श्लोकः। एतु। अच्छ। विष्णुम्। निसिक्तऽपाम्। अवःऽभिः। उत। प्रऽजायै। गृणते। वयः। धुः। यूयम्। पात। स्वस्तिऽभिः। सदा। नः॥९॥**

**पदार्थः**-**(अच्छ)** **(अयम्)** **(वः)** युष्माकम् **(मरुतः)** विद्वांसो मनुष्याः **(श्लोकः)** शिक्षिता वाक्। **श्लोक इति वाङ्नाम।** (निघं०१.११) **(एतु)** प्राप्नोतु **(अच्छा)** सम्यक्। अत्र **संहितायामि**ति दीर्घः। **(विष्णुम्)** व्यापकं परमेश्वरम् **(निषिक्तपाम्)** यो धर्मे निषिक्तानभिषेकप्राप्तान् पाति रक्षति तम् **(अवोभिः)** रक्षादिभिः **(उत)** **(प्रजायै)** **(गृणते)** स्तावकाय **(वयः)** जीवनम् **(धुः)** दधति **(यूयम्)** **(पात)** **(स्वस्तिभिः)** **(सदा)** **(नः)**॥९॥

**अन्वयः**-हे मरुतः! यथाऽयं वश्श्लोकोऽवोभिस्सह निषिक्तपां विष्णुमच्छैतूत ये गृणते प्रजायै महाँ च वयोऽच्छ धुः यथा यूयं स्वस्तिभिर्नस्सदा पात तथा युष्मान् वयं सततं रक्षेम॥९॥

९१. संस्कृतभावार्थ में उपमावाचकलुप्तोपमा अलङ्कार दिया हुआ है।



www.9009.co.in

**भावार्थः**-जिज्ञासुभिः श्रोत्रियान् ब्रह्मविदोऽध्यापकानुपदेशकांश्च प्राप्य परमेश्वरादिविद्याः सङ्गृह्य सर्वदा सर्वेषां रक्षणोन्नतिर्वर्धयितव्येति॥९॥

अत्र विश्वेदेवकृत्यगुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह संगतिर्वेद्या॥

**इति षट्त्रिंशत्तमं सूक्तं द्वितीयो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे **(मरुतः)** विद्वान् मनुष्यो! जैसे **(अयम्)** यह **(वः)** तुम्हारी **(श्लोकः)** शिक्षायुक्त वाणी **(अवोभिः)** रक्षाओं के साथ **(निषिक्तपाम्)** जो धर्म के बीच अभिषेक पाये हुए [हैं उन के रक्षक] **(विष्णुम्)** व्यापक परमेश्वर को **(अच्छ, एतु)** अच्छे प्रकार प्राप्त हो **(उत)** और जो **(गृणते)** स्तुति करने वाली **(प्रजायै)** प्रजा के लिये **(वयः)** जीवन को **(अच्छा)** अच्छे प्रकार **(धुः)** धारण करते हैं जैसे **(यूयम्)** तुम **(स्वस्तिभिः)** सुखों के साथ **(नः)** हम लोगों की **(सदा)** सर्वदैव **(पात)** रक्षा करो, [वैसे हम तुम्हारी रक्षा करें]॥९॥

**भावार्थः**-जानने की इच्छा वालों को वेदवेत्ता ब्रह्म के जानने वाले अध्यापक और उपदेशकों को प्राप्त होकर परमेश्वर आदि की विद्याओं का संग्रह कर सर्वदैव सब प्रकार से सब की रक्षा और उन्नति बढ़ानी चाहिये॥९॥

इस सूक्त मे विश्वेदेवों के कर्म और गुणों का गुणों का वर्णन होने से इस सूक्त के अर्थ की संगति इस से पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ जाननी चाहिये।

**यह छत्तीसवां सूक्त और दूसरा वर्ग पूरा हुआ॥**



www.9009.co.in

**अथाष्टर्चस्य [सप्तत्रिंशत्तमस्य] सूक्तस्य वसिष्ठर्षिः विश्वेदेवा देवताः। १ त्रिष्टुप् २, ३, ७ निचृत्त्रिष्टुप्। ५, ८ विराट् त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः। ४ निचृत्पङ्क्तिः। ६ स्वराट्पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः॥**

***अथ विद्वांसः किं प्रापयन्त्वित्याह॥***

अब सैंतीसवें सूक्त का प्रारम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में विद्वान् जन क्या प्राप्त करें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**आ वो वाहिंष्ठो वहतु स्तवध्यै रथो वाजा ऋभुक्षणो अमृंक्तः।**

**अभि त्रिपृष्ठैः सवंनेषु सोमैर्मदें सुशिप्रा महभिः पृणध्वम्॥ १॥**

**आ। वः। वाहिंष्ठः। वहतु। स्तवध्यै। रथः। वाजाः। ऋभुक्षणः। अमृंक्तः। अभि। त्रिऽपृष्ठैः। सवंनेषु। सोमैः। मदें। सुऽशिप्राः। महऽभिः। पृणध्वम्॥ १॥**

**पदार्थः**-(**आ**) (**वः**) युष्माकम् (**वाहिष्ठः**) अतिशयेन वोढा (**वहतु**) (**स्तवध्यै**) स्तोतुम् (**रथः**) रमणीयं यानम् (**वाजाः**) विज्ञानवन्तः (**ऋभुक्षणः**) मेधाविनः (**अमृक्तः**) अहिंसितः (**अभि**) आभिमुख्ये (**त्रिपृष्ठैः**) त्रीणि पृष्ठानि ज्ञीप्सितव्यानि येषां तैः (**सवनेषु**) उत्तमकर्मसु (**सोमैः**) ऐश्वर्यौषध्यादिभिः पदार्थैः (**मदे**) आनन्दाय (**सुशिप्राः**) शोभनहनुनासिकाः (**महभिः**) सत्कारैः (**पृणध्वम्**) पूरयत॥ १॥

**अन्वयः**-हे सुशिप्रा वाजा ऋभुक्षणो यो वोऽमृतो वाहिष्ठो रथो मदे त्रिपृष्ठैर्महभिस्सोमैः सवनेषु स्तवध्या अस्मानभ्यावहति स एव युष्मानप्यभ्या वहतु यूयं तं पृणध्वम्॥ १॥

**भावार्थः**-हे विद्वांसो! यूयमस्मान् रथेनाभीष्टं स्थानमिवाध्यापनेन विद्याः प्रापयन्तु॥ १॥

**पदार्थः**-हे (**सुशिप्राः**) सुन्दर ठोढ़ी और नासिका वाले (**वाजाः**) विज्ञानवान् (**ऋभुक्षणः**) मेधावी बुद्धिमान्! जो (**वः**) तुम्हारा (**अमृक्तः**) न नष्ट हुआ (**वाहिष्ठः**) अत्यन्त पहुँचाने वाला (**रथः**) रमण करने योग्य यान (**मदे**) आनन्द के लिये (**त्रिपृष्ठैः**) तीन जानने योग्य रूप जिन के विद्यमान उन (**महभिः**) सत्कार और (**सोमैः**) ऐश्वर्य्य वा ओषधि आदि पदार्थों से (**सवनेषु**) उत्तम कामों में (**स्तवध्यै**) स्तुति करने को हम को सब ओर से पहुँचाता है वही तुम को (**अभि, आ, वहतु**) सब ओर पहुँचावे उस को तुम (**पृणध्वम्**) पूरो, सिद्ध करो॥ १॥

**भावार्थः**-हे विद्वानो! तुम हम लोगों को रथ से चाहे हुए स्थान को पहुँचने के समान पढ़ाने से विद्या को पहुँचाओ॥ १॥

**पुनर्विद्वद्भिः किं कर्तव्यमित्याह॥**

फिर विद्वानों को क्या करना चाहिये, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**यूयं ह रत्नं॑ मघवंत्सु धत्थ स्वर्दृशं ऋभुक्षणो अमृंक्तम्।**



www.9009.co.in

**सं य॒ज्ञेषु॑ स्वधावन्तः पिबध्वं॒ वि नो॒ राधां॑सि म॒तिभि॑र्दयध्वम्॥ २॥**

**यू॒यम्। ह॒। रत्न॑म्। म॒घव॑त्ऽसु। ध॒त्थ॒। स्व॒ऽदृश॑ः। ऋ॒भु॒क्ष॒ण॒ः। अमृ॑क्तम्। सम्। य॒ज्ञेषु॑। स्व॒धा॒ऽव॒न्त॒ः। पि॒ब॒ध्व॒म्। वि। न॒ः। राधां॑सि। म॒तिऽभि॑ः। द॒य॒ध्वम्॥ २॥**

**पदार्थः**-(**यूयम्**) (**ह**) खलु (**रत्नम्**) रमणीयधनम् (**मघवत्सु**) बहुधनयुक्तेषु (**धत्थ**) धरत (**स्वर्दृशः**) ये स्वः सुखं यन्ति (**ऋभुक्षणः**) मेधाविनः (**अमृक्तम्**) अहिंसितम् (**सम्**) (**यज्ञेषु**) संगन्तव्येषु व्यवहारेषु (**स्वधावन्तः**) बह्वन्नादिपदार्थयुक्ताः (**पिबध्वम्**) (**वि**) (**नः**) अस्माकम् (**राधांसि**) धनानि (**मतिभिः**) प्रज्ञाभिः (**दयध्वम्**) दयां कुरुत॥ २॥

**अन्वयः**-हे स्वधावन्तः स्वर्दृश ऋभुक्षणो विद्वांसो! यूयं मतिभिः मघवत्सु रत्नं सं धत्थ यज्ञेष्वमृक्तं रत्नमहौषधिरसं पिबध्वं नो राधांसि वि दयध्वम्॥ २॥

**भावार्थः**-ये विद्वांसस्ते प्रजासु ब्रह्मचर्य्यविद्यासत्क्रियामहौषधधनानि च वर्धयित्वा सुखिनः सन्तु॥ २॥

**पदार्थः**-हे (**स्वधावन्तः**) बहुत अन्नादि पदार्थयुक्त (**स्वर्दृशः**) सुख देखते हुए (**ऋभुक्षणः**) मेधावी विद्वान् जनो! (**यूयम्, ह**) तुम्हीं (**मतिभिः**) बुद्धियों से (**मघवत्सु**) बहुत धनयुक्त व्यवहारों में (**रत्नम्**) रमणीय धन को (**सम्, धत्थ**) अच्छे प्रकार धारण करो (**यज्ञेषु**) संग करने योग्य व्यवहार में (**अमृक्तम्**) विनाश को नहीं प्राप्त ऐसे बड़ी ओषधियों के रस को (**पिबध्वम्**) पीओ और (**नः**) हमारे (**राधांसि**) धनों को (**वि, दयध्वम्**) विशेष दया से चाहो॥ २०॥

**भावार्थः**-जो विद्वान् जन हैं वे प्रजाओं में ब्रह्मचर्य्य विद्या उत्तम क्रिया बड़ी-बड़ी ओषधियों और धनों को बढ़वाकर सुखी हों॥ २॥

**पुनर्धनाढ्याः कस्मै दानं दद्युरित्याह॥**

फिर धनाढ्य किस को दान देवें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**उ॒वोचि॑थ॒ हि म॑घवन् दे॒ष्णं म॒हो अर्भ॑स्य॒ वसु॑नो विभा॒गे।**

**उ॒भा ते॒ पू॒र्णा वसु॑ना॒ गभ॑स्ती॒ न सू॒नृता॒ नि य॑मते वस॒व्या॑॥ ३॥**

**उ॒वोचि॑थ। हि। म॒घ॒ऽव॒न्। दे॒ष्णम्। म॒हः। अर्भ॑स्य। वसु॑नः। वि॒ऽभा॒गे। उ॒भा। ते॒। पू॒र्णा। वसु॑ना। गभ॑स्ती॒ इति॑। न। सू॒नृता॑। नि। य॒म॒ते॒। व॒स॒व्या॑॥ ३॥**

**पदार्थः**-(**उवोचिथ**) उपदिश (**हि**) (**मघवन्**) बहुधनयुक्त (**देष्णम्**) दातुं योग्यम् (**महः**) (**अर्भस्य**) अल्पस्य (**वसुनः**) धनस्य (**विभागे**) विभजन्ति यस्मिँस्तस्मिन् (**उभा**) उभौ (**ते**) तव (**पूर्णा**) पूर्णौ (**वसुना**) धनेन (**गभस्ती**) हस्तौ (**न**) निषेधे (**सूनृता**) सत्यप्रियवाणी (**नि**) (**यमते**) (**वसव्या**) वसुषु धनेषु साध्वी॥ ३॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे मघवन्! हि यतस्त्वं महोऽर्भस्य वसुनो विभागे देष्णमुवोचिथ यस्य त उभा गभस्ती वसुना पूर्णा वर्त्तेते तस्य तव वसव्या सूनृता वाक् केनापि न नि यमते॥३॥

**भावार्थः**-ये धनाढ्याः महतोऽल्पस्य धनस्य सुपात्रकुपात्रयोर्धर्माधर्मयोर्विभागेन सुपात्रधर्मवृद्धये च धनदानं कुर्वन्ति तेषा कीर्तिश्चिरन्तनी भवति॥३॥

**पदार्थः**-हे **(मघवन्)** बहुधनयुक्त! **(हि)** जिस से आप **(महः)** बहुत वा **(अर्भस्य)** थोड़े **(वसुनः)** धन के **(विभागे)** विभाग में **(देष्णम्)** देने योग्य को **(उवोचिथ)** कहो जिन **(ते)** आप के **(उभा)** दोनों **(गभस्ती)** हाथ **(वसुना)** धन से **(पूर्णा)** पूर्ण वर्त्तमान हैं उन आपकी **(वसव्या)** धनों में उत्तम **(सूनृता)** सत्य और प्रिय वाणी किसी से भी **(न)** नहीं **(नि, यमते)** नियम को प्राप्त होती अर्थात् रुकती है॥३॥

**भावार्थः**-जो धनाढ्य जन बहुत वा थोड़े धन वा सुपात्र और कुपात्र वा धर्म और अधर्म के विभाग में सुपात्र और धर्म की वृद्धि के लिये धन दान करते हैं, उन की कीर्ति चिरकाल तक ठहरने वाली होती है॥३॥

**पुनर्मनुष्याः कीदृशा भवेयुरित्याह॥**

फिर मनुष्य कैसे हों, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**त्वमि॑न्द्र स्वय॑शा ऋभु॒क्षा वाजो॒ न सा॒धुरस्त॑मे॒ष्यृक्वा॑।**

**व॒यं नु ते॑ दा॒श्वांस॑ः स्याम॒ ब्रह्म॑ कृ॒ण्वन्तो॑ हरिवो॒ वसि॑ष्ठाः॥४॥३॥**

**त्वम्। इ॒न्द्र॒। स्व॒ऽयशाः॑। ऋ॒भु॒क्षाः। वाजः॑। न। सा॒धुः। अस्त॑म्। ए॒षि॒। ऋक्वा॑। व॒यम्। नु। ते॒। दा॒श्वांसः॑। स्या॒म॒। ब्रह्म॑। कृ॒ण्वन्तः॑। ह॒रि॒ऽवः॒। वसि॑ष्ठाः॥४॥**

**पदार्थः**-**(त्वम्)** **(इन्द्र)** योगैश्वर्ययुक्त **(स्वयशाः)** स्वकीयं यशः कीर्तिर्यस्य सः **(ऋभुक्षाः)** मेधावी **(वाजः)** ज्ञानवान् **(न)** इव **(साधुः)** सत्कर्मसेवी **(अस्तम्)** गृहम् **(एषि)** प्राप्नोषि **(ऋक्वा)** सत्कर्त्ता **(वयम्)** **(नु)** क्षिप्रम् **(ते)** तव **(दाश्वांसः)** दातारः **(स्याम)** भवेम **(ब्रह्म)** धनमन्नं वा **(कृण्वन्तः)** कुर्वन्तः **(हरिवः)** प्रशस्तमनुष्ययुक्त **(वसिष्ठाः)** अतिशयेन सद्गुणकर्मसु निवासिनः॥४॥

**अन्वयः**-हे हरिव इन्द्र! य ऋभुक्षाः स्वयशा ऋक्वा वाजो न साधुस्त्वमस्तमेषि तस्य ते ब्रह्म न कृण्वन्तो वसिष्ठा वयं दाश्वांसः स्याम॥४॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। ये सन्मार्गस्थाः साधव इव धर्मानाचरन्ति ते सहैश्वर्या भूत्वा दातारो भवन्ति॥४॥

**पदार्थः**-हे **(हरिवः)** प्रशंसित मनुष्यों **(इन्द्र)** और योगैश्वर्यों से युक्त जन! जो **(ऋभुक्षाः)** मेधावी **(स्वयशाः)** अपनी कीर्ति से युक्त **(ऋक्वाः)** सत्कार करने वाले **(वाजः)** ज्ञानवान् के **(न)** समान **(साधुः)** सत्कर्म सेवने हारे **(त्वम्)** आप **(अस्तम्)** घर को **(एषि)** प्राप्त होते हैं उन **(ते)** आप



www.9009.co.in

के **(ब्रह्म)** धन वा अन्न को **(नु)** शीघ्र **(कृण्वन्त:)** सिद्ध करते हुए **(वसिष्ठा:)** अतीव अच्छे गुण कर्मों के बीच निवास करने वाले **(वयम्)** हम लोग **(दाश्वांस:)** दानशील **(स्याम)** हों॥४॥

**भावार्थ:**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जो अच्छे मार्ग में स्थिर, साधु जनों के समान धर्मों का आचरण करते हैं, वे ऐश्वर्य के साथ हो अर्थात् ऐश्वर्य्यवान् होकर दानशील होते हैं॥४॥

**पुनर्विद्वांस: किं कुर्युरित्याह॥**

फिर विद्वान् जन क्या करें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**सनि॑तासि प्र॒वतो॑ दा॒शुषे॑ चि॒द्याभि॒र्विवे॑षो हर्यश्व धी॒भि:।**

**व॒व॒न्मा नु ते॒ युज्या॑भिरू॒ती क॒दा न॑ इन्द्र रा॒य आ द॑शस्ये:॥५॥३॥**

**सनि॑ता। अ॒सि॒। प्र॒ऽवत॑:। दा॒शुषे॑। चि॒त्। याभि॑:। विवे॑ष:। ह॒रि॒ऽअ॒श्व॒। धी॒भि:। व॒व॒न्म। नु। ते॒। युज्या॑भि:। ऊ॒ती। क॒दा। न॒:। इ॒न्द्र॒। रा॒य:। आ। द॒श॒स्ये:॥५॥**

**पदार्थ:**-**(सनिता)** विभाजक: **(असि)** **(प्रवत:)** नम्रत्वादिगुणप्रदानाम् **(दाशुषे)** दात्रे **(चित्)** अपि **(याभि:)** **(विवेष:)** व्याप्नोति **(हर्यश्व)** सद्गुणहरणशीला हरयोऽश्वा महान्तो यस्य तत्सम्बुद्धौ **(धीभि:)** प्रज्ञाभि: **(ववन्मा)** याचामहे। अत्र **संहितायामि**ति दीर्घ:। **(नु)** चित्रम् **(ते)** तव **(युज्याभि:)** योजनीयाभि: **(ऊती)** ऊत्या रक्षणाद्यया **(कदा)** **(न:)** अस्मभ्यम् **(इन्द्र)** परमसुखप्रद **(राय:)** धनानि **(आ)** **(दशस्ये:)** आदद्या:॥५॥

**अन्वय:**-हे हर्यश्वेन्द्र! यतस्त्वं याभिर्युज्याभिर्विद्याभिश्चिद्धीभिरूती दाशुषे सनिताऽसि प्रवतो रायो विवेष: यान् वयं ते ववन्मा तान्नु त्वं न: कदा आ दशस्ये:॥५॥

**भावार्थ:**-मनुष्यै: विद्वद्भ्यस्सदा उत्तमा विद्या याचनीया: विद्वांसश्च यथावत् प्रदद्यु:॥५॥

**पदार्थ:**-हे **(हर्यश्व)** सद्गुण और हरणशील घोड़ों वाले **(इन्द्र)** परम सुखप्रद विद्वान्! जिस से आप **(याभि:)** जिन **(युज्याभि:)** युक्त करने योग्य विद्याओं **(चित्)** और **(धीभि:)** बुद्धियों से **(ऊती)** तथा रक्षा आदि क्रिया से **(दाशुषे)** देने वाले के लिये **(सनिता)** विभाग करने वाले **(असि)** हैं **(प्रवत:)** नम्रत्व आदि गुणों के देने वालों के **(राय:)** धनों को **(विवेष:)** प्राप्त होते हैं हम लोग **(ते)** आप के जिन पदार्थों को **(ववन्म)** मांगते हैं उन को **(नु)** आश्चर्य्य है आप **(न:)** हम लोगों के लिये **(कदा)** कब **(आ, दशस्ये)** देओगे॥५॥

**भावार्थ:**-मनुष्यों को विद्वानों से सदा उत्तम विद्या लेनी चाहिये और विद्वान् भी यथावत् अच्छे प्रकार देवें॥५॥

**पुनर्विद्वद्भि: किं कर्तव्यमित्याह॥**

फिर विद्वानों को क्या करना चाहिये, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**वा॒सय॑सीव वे॒धस॒त्वं न॑: क॒दा न॑ इन्द्र॒ वच॑सो बुबोध:।**



www.9009.co.in

**अस्तं ताल्या धिया रयिं सुवीरं पृक्षो नो अर्वा न्युहीत वाजी॥६॥**

**वासयसीऽइव। वेधसः। त्वम्। नः। कदा। नः। इन्द्र। वचसः। बुबोधः। अस्तम्। तात्या। धिया। रयिम्। सुऽवीरम्। पृक्षः। नः। अर्वा। नि। उहीत। वाजी॥६॥**

**पदार्थः**-(**वासयसीव**) (**वेधसः**) मेधाविनः (**त्वम्**) (**नः**) अस्मान् (**कदा**) (**नः**) अस्माकम् (**इन्द्र**) सुखप्रद (**वचसः**) वचनस्य (**बुबोधः**) बुद्ध्याः (**अस्तम्**) गृहम् (**तात्या**) या तते परमेश्वरे साध्वी तया (**धिया**) प्रज्ञया (**रयिम्**) धनम् (**सुवीरम्**) शोभना वीरा यस्मात्तम् (**पृक्षः**) सम्पर्चनीयमन्नम् (**नः**) अस्मान् (**अर्वा**) अश्व इव (**नि**) (**उहीत**) वहेत् (**वाजी**) विज्ञानवान्॥६॥

**अन्वयः**-हे इन्द्र! त्वं तात्या धिया नोऽस्मान् वेधसो वासयसीव नोऽस्माकं वचसः कदा बुबोधः वाज्यर्वा स नु नोऽस्मान् सुवीरं रयिं कदा न्युहीतास्माकमस्तं प्राप्य पृक्षः कदा सेवयेः॥६॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। सर्वे मनुष्या विदुषः प्रत्येवं प्रार्थयेयुर्भवन्तोऽस्मान् कदा विदुषः कृत्वा धनधान्यस्थानाद्यैश्वर्यं प्रापयिष्यन्तीति॥६॥

**पदार्थः**-हे (**इन्द्र**) सुख देने वाले! (**त्वम्**) आप (**तात्या**) व्याप्त परमेश्वर में उत्तमता से स्थिर होने वाली (**धिया**) बुद्धि से (**नः**) हम (**वेधसः**) बुद्धिमान् जनों को (**वासयसीव**) वसाते हुए से (**नः**) हमारे (**वचसः**) वचन को (**कदा**) कब (**बुबोधः**) जानोगे (**वाजी**) विज्ञानवान् आप (**अर्वा**) घोड़े के समान (**नः**) हम लोगों को (**सुवीरम्**) जिससे अच्छे-अच्छे वीर जन होते हैं उस (**रयिम्**) धन को कब (**नि, उहीत**) प्राप्त करियेगा और हमारे (**अस्तम्**) घर को प्राप्त होकर (**पृक्षः**) सम्पर्क करने योग्य अन्न कब सेवोगे॥६॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। सब मनुष्य विद्वानों के प्रति ऐसी प्रार्थना करें आप लोग हमें कब विद्वान् करके धन-धान्य, स्थान आदि पदार्थ और ऐश्वर्य्य को प्राप्त करावेंगे॥६॥

**पुनर्मनुष्याः कथं वर्त्तेरन्नित्याह॥**

फिर मनुष्य कैसे वर्तें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अभि यं देवी निर्ऋतिश्चिदीशे नक्षन्त इन्द्रं शरदः सुपृक्षः।**
**उप त्रिबन्धुर्जरदष्टिमेत्यस्ववेशं यं कृणवन्त मर्ताः॥७॥**

**अभि। यम्। देवी। निःऽऋतिः। चित्। ईशे। नक्षन्ते। इन्द्रम्। शरदः। सुऽपृक्षः। उप। त्रिऽबन्धुः। जरत्ऽअष्टिम्। एति। अस्वऽवेशम्। यम्। कृणवन्त। मर्ताः॥७॥**

**पदार्थः**-(**अभि**) (**यम्**) (**देवी**) विदुषी (**निर्ऋतिः**) भूमिः। **निर्ऋतीति पृथिवीनाम**। (निघं०१.१) (**चित्**) इव (**ईशे**) ईष्टे। अत्र **तलोप आत्मनेपदेष्विति** तकारलोपः। (**नक्षन्ते**) व्याप्नुवन्ति (**इन्द्रम्**) सूर्यम् (**शरदः**) शरदाद्या ऋतवः (**सुपृक्षः**) शोभनं पृक्षोऽन्तं यस्य सः (**उप**) (**त्रिबन्धुः**)



www.9009.co.in

त्रयाणां बन्धुः **(जरदष्टिम्)** वृद्धावस्थाम् **(एति)** प्राप्नोति **(अस्ववेशम्)** न स्वकीयो वेशो यस्य तम् **(यम्)** **(कृणवन्त)** कुर्वन्ति **(मर्ताः)** मनुष्याः॥७॥

**अन्वयः**-हे मनुष्याः! [यथा] यं निर्ऋतिश्चिदिव देव्यभ्येति यस्सुपृक्षस्त्रिबन्धुर्यां जरदष्टिमीशे यमिन्द्रं शरदो नक्षन्ते यमस्ववेशं मर्ता उप कृणवन्त तान् सर्वान् वयमुप कुर्याम॥७॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यूयं यथा शरीरवाङ्मनोजं त्रिविधं सुखं प्राप्तो विद्वान् हृद्यां भार्यां प्राप्नोति स्त्री च प्रियं पतिं प्राप्य मोदते यथर्तवः स्वं स्वं समयं प्राप्य सर्वानानन्दयन्ति यथा स्वभावेनैव कौमाराद्या अवस्था आगच्छन्ति तथैव परस्परस्मिन् प्रीतिं कृत्वा प्रयतेत॥७॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे **(यम्)** जिस पदार्थ को **(निर्ऋतिः)** भूमि **(चित्)** वैसे **(देवी)** विदुषी स्त्री उसको **(अभि, एति)** सब ओर से प्राप्त होती वा **(सुपृक्षः)** जो सुन्दर अन्न वाला **(त्रिबन्धुः)** तीन जनों का बन्धु जिस **(जरदिष्टम्)** वृद्धावस्था को **(ईशे)** ऐश्वर्ययुक्त करता है जिस **(इन्द्रम्)** सूर्य को **(शरदः)** शरद् आदि ऋतु **(नक्षन्ते)** व्याप्त होती हैं जिस **(अस्ववेशम्)** अपने रूप को न धारण किये हुए का **(मर्ताः)** मनुष्य **(उप, कृणवन्त)** उपकार करते हैं, उन सब का हम भी उपकार करें॥७॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! तुम जैसे शरीर वाणी और मन से उत्पन्न हुए तीन प्रकार के सुख को प्राप्त विद्वान् जन हृदय से चाही हुई भार्या को प्राप्त होता है, स्त्री भी प्रिय पति को प्राप्त होकर आनन्दित होती वा जैसे ऋतु अपने-अपने समय को प्राप्त होकर सबको आनन्दित करती वा जैसे स्वभाव से ही कौमार आदि अवस्था आती हैं, वैसे ही परस्पर में प्रीति कर प्रयत्न करो॥७॥

**मनुष्याः परमेश्वराज्ञापालनस्वपुरुषार्थाभ्यां श्रियमुन्नयेयुरित्याह॥**

मनुष्य परमेश्वर की आज्ञा पालने से और पुरुषार्थ से लक्ष्मी की उन्नति करें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**आ नो राधांसि सवितः स्तवध्या आ रायो यन्तु पर्वतस्य रातौ।**
**सदा नो दिव्यः पायुः सिषक्तु यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥८॥४॥**

**आ। नः। राधांसि। सवितरिति। स्तवध्यै। आ। रायः। यन्तु। पर्वतस्य। रातौ। सदा। नः। दिव्यः। पायुः। सिसक्तु। यूयम्। पात। स्वस्तिऽभिः। सदा। नः॥८॥**

**पदार्थः**-**(आ)** **(नः)** अस्मान् **(राधांसि)** धनानि **(सवितः)** सकलजगदुत्पादकेश्वर **(स्तवध्यै)** स्तोतुम् **(आ)** **(रायः)** धनानि **(यन्तु)** प्राप्नुवन्तु **(पर्वतस्य)** मेघस्य **(रातौ)** दाने **(सदा)** **(नः)** अस्मान् **(दिव्यः)** शुद्धगुणकर्मस्वभावेषु भवः **(पायुः)** रक्षकः **(सिषक्तु)** सुखैः संयोजयतु **(यूयम्)** **(पात)** **(स्वस्तिभिः)** **(सदा)** **(नः)** अस्मान्॥८॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे सवितर्जगदीश्वर! त्वां स्तवध्यै नोऽस्मान् राधांस्यायन्तु पर्वतस्य रातौ राय आ यान्तु दिव्यः पायुर्भवान् नः सदा आ सिषक्तु हे विद्वांस! एतद्विज्ञानेन सहिता यूयं स्वस्तिभिर्नस्सदा पात॥८॥

**भावार्थः**-ये सत्यभावेन परमेश्वरमुपास्य न्याय्येन व्यवहारेण धनं प्राप्तुमिच्छन्ति ये च सदाप्तसङ्गं सेवन्ते ते कदाचिद्दारिद्र्यं न सेवन्त इति॥८॥

अत्र विश्वेदेवगुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह संगतिर्वेद्या॥

**इति सप्तत्रिंशत्तमं सूक्तं चतुर्थो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**–हे **(सवितः)** सकल जगत् के उत्पन्न करने वाले जगदीश्वर! आप की **(स्तवध्यै)** स्तुति करने को **(नः)** हम लोगों को **(राधांसि)** धन **(आ, यन्तु)** मिलें **(पर्वतस्य)** मेघ के **(रातौ)** देने में **(रायः)** धन आवें **(दिव्यः)** शुद्ध गुण–कर्म–स्वभाव में प्रसिद्ध हुए **(पायुः)** रक्षा करने वाले आप **(नः)** हम लोगों को सदा **(आ, सिषक्तु)** सुखों से संयुक्त करें हे विद्वानो! इस विज्ञान से सहित **(यूयम्)** तुम लोग **(स्वस्तिभिः)** सुखों से **(नः)** हम लोगों की **(सदा)** सर्वदैव **(पात)** रक्षा करो॥८॥

**भावार्थः**-जो सत्य भाव से परमेश्वर की उपासना कर न्याययुक्त व्यवहार से धन पाने को चाहते हैं और जो सदा आप्त अति सज्जन विद्वान् का संग सेवते हैं, वे दारिद्र्य कभी नहीं सेवते हैं॥८॥

इस सूक्त में विश्वेदेवों के गुणों का वर्णन होने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ संगति जाननी चाहिये॥

**यह सैंतीसवां सूक्त और चौथा वर्ग पूरा हुआ॥**



www.9009.co.in

अथाष्टर्चस्य [अष्टात्रिंशत्तमस्य] सूक्तस्य वसिष्ठर्षिः। १-६ सविता देवता। ६ सविता भगो वा। ७, ८ वाजिनः। १, ३, ८ निचृत्त्रिष्टुप्। ५ विराट्त्रिष्टुप्छन्दः। धैवतः स्वरः। २, ४, ६ स्वराट्पङ्क्तिः। ७ भुरिक्पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः॥

*अथ मनुष्यैः क उपासनीय इत्याह॥*

अब अड़तीसवें सूक्त का आरम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में मनुष्यों को किसकी उपासना करनी चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**उदु ष्य देवः सविता ययाम हिरण्ययीममतिं यामशिश्रेत्।**

**नूनं भगो हव्यो मानुषेभिर्वि यो रत्ना पुरूवसुर्दधाति॥ १॥**

**उत्। ऊँ इति। स्यः। देवः। सविता। ययाम। हिरण्ययीम्। अमतिम्। याम्। अशिश्रेत्। नूनम्। भगः। हव्यः। मानुषेभिः। वि। यः। रत्ना। पुरुऽवसुः। दधाति॥ १॥**

**पदार्थः**-(**उत्**) (उ) (**स्यः**) स पूर्वोक्तः जगदीश्वरः (**देवः**) दाता (**सविता**) सकलैश्वर्यप्रदः (**ययाम**) प्राप्नुयाम (**हिरण्ययीम्**) हिरण्यादिप्रचुराम् (**अमतिम्**) सुरूपां श्रियम् (**याम्**) (**अशिश्रेत्**) आश्रयेत् (**नूनम्**) निश्चितम् (**भगः**) भजनीयः सकलैश्वर्ययुक्तः (**हव्यः**) स्तोतुमर्हः (**मानुषेभिः**) मनुष्यैः (**वि**) विशेषेण (**यः**) (**रत्ना**) रमणीयानि धनानि (**पुरूवसुः**) पुरूणि बहूनि वसूनि धनानि यस्य स। अत्र **संहितायामि**त्याद्यपदस्य दैर्घ्यम्। (**दधाति**) निष्पादयति॥ १॥

**अन्वयः**-यो भगो पुरूवसुः सविता देव ईश्वरो मानुषेभिर्नूनं हव्योऽस्ति योऽस्माकं कामान् विदधाति स्य उ यां हिरण्ययीममतिं रत्ना चास्मदर्थमशिश्रेत् तं वयमुद्ययाम॥ १॥

**भावार्थः**-ये मनुष्याः परमेश्वरमुपासते श्रेष्ठां श्रियं लभन्ते॥ १॥

**पदार्थः**- (**यः**) जो (**भगः**) सेवन करने योग्य सकलैश्वर्ययुक्त (**पुरूवसुः**) बहुत धनों वाला (**सविता**) सकलैश्वर्य देने हारा (**देवः**) दाता ईश्वर (**मानुषेभिः**) मनुष्यों से (**नूनम्**) निश्चय से (**हव्यः**) स्तुति करने योग्य है जो हम लोगों के कामों को (**वि, दधाति**) सिद्ध करता है (**स्यः**) वह जगदीश्वर (उ) ही (**याम्**) जिस (**हिरण्ययीम्**) हिरण्यादि रत्नों वाली (**अमतिम्**) सुन्दर रूपवती लक्ष्मी को तथा (**रत्ना**) रमण करने योग्य धनों को [हमारे लिये] (**अशिश्रेत्**) आश्रय करता है, उसका हम लोग (**उत्, ययाम**) उत्तम नियम पालें॥ १॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य परमेश्वर की उपासना करते हैं वे श्रेष्ठ लक्ष्मी को प्राप्त होते हैं॥ १॥

**पुनस्स जगदीश्वरः कीदृशोऽस्तीत्याह॥**

फिर वह जगदीश्वर कैसा है, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**उदु तिष्ठ सवितः श्रुध्य१स्य हिरण्यपाणे प्रभृतावृतस्य।**



www.9009.co.in

**व्यु१॒र्वीं पृथ्वीम॒मतिं सृजा॒न आ नृभ्यो मर्त॒भोज॑नं सुवा॒नः॥२॥**

**उत्। ऊँ॒ इति॑। ति॒ष्ठ। स॒वि॒त॒रिति॑। श्रु॒धि। अ॒स्य। हिर॑ण्यऽपाणे। प्रऽभृ॑तौ। ऋ॒तस्य॑। वि। उ॒र्वीम्। पृ॒थ्वीम्। अ॒मति॑म्। सृ॒जा॒नः। आ। नृऽभ्य॑ः। म॒र्त॒ऽभोज॑नम्। सु॒वा॒नः॥२॥**

**पदार्थः**-(**उत्**) (उ) (**तिष्ठ**) प्रकाशितो भव (**सवितः**) अन्तर्यामिन् (**श्रुधि**) शृणु (**अस्य**) जीवस्य हृदये (**हिरण्यपाणे**) हिरण्यं हितरमणं पाणिर्व्यवहारो यस्य तत्सम्बुद्धौ (**प्रभृतौ**) प्रकृष्टतया धारणे (**ऋतस्य**) सत्यस्य कारणस्य (**वि**) (**उर्वीम्**) बहुपदार्थयुक्ताम् (**पृथ्वीम्**) भूमिम् (**अमतिम्**) सुखरूपाम् (**सृजानः**) उत्पादयन् (**आ**) समन्तात् (**नृभ्यः**) मनुष्येभ्यः (**मर्तभोजनम्**) मर्तेभ्य इदं भोजनं मर्तभोजनम् (**सुवानः**) प्रेरयन्॥२॥

**अन्वयः**-हे हिरण्यपाणे सवितर्जगदीश्वर! त्वमस्य स्तुतिं श्रुधि उ अस्य हृदय उत्तिष्ठ उत्कृष्टतया प्राप्नुहि ऋतस्य प्रभृतावमतिमुर्वीं पृथ्वीं वि सृजानः मा नृभ्यो मर्तभोजनमा सुवानः सन् कृपस्व॥२॥

**भावार्थः**-ये सत्यभावेन धर्ममनुष्ठाय योगमभ्यस्यन्ति तेषामात्मनि परमात्मा प्रकाशितो बवति येनेश्वरेण सकलं जगदुत्पाद्य मनुष्यादीनामन्नादिना हितं सम्पादितं तं विहाय कस्याप्यन्यस्योपासनां मनुष्याः कदापि मा कुर्युः॥२॥

**पदार्थः**- (**हिरण्यपाणे**) हित से रमणरूप व्यवहार जिसका (**सवितः**) वह अन्तर्यामी है जगदीश्वर! आप (**अस्य**) इस जीव की किई स्तुति (**श्रुधि**) सुनिये (**उ**) और इसके हृदय में (**उत्, तिष्ठ**) उठिये अर्थात् उत्कर्ष से प्राप्त हूजिये और (**ऋतस्य**) सत्य कारण की (**प्रभृतौ**) अत्यन्त धारणा में (**अमतिम्**) अच्छे अपने रूप वाली (**उर्वीम्**) बहुत पदार्थयुक्त (**पृथ्वीम्**) पृथिवी को (**वि, सृजानः**) उत्पन्न करते हुए (**नृभ्यः**) मनुष्यों के लिये (**मर्त्तभोजनम्**) मनुष्यों को जो भोजन है उसे (**आ, सुवानः**) प्रेरणा देते हुए कृपा कीजिये॥२॥

**भावार्थः**-जो सत्यभाव से धर्म का अनुष्ठान कर योग का अभ्यास करते हैं, उनके आत्मा में परमात्मा प्रकाशित होता है, जिस ईश्वर ने समस्त जगत् उत्पन्न कर मनुष्यादिकों का अन्नादि से हित सिद्ध किया उसको छोड़ किसी और की उपासना मनुष्य कभी न करें॥२॥

**पुनः कस्सर्वैः प्रशंसनीय इत्याह॥**

फिर कौन सब को प्रशंसा करने योग्य है, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अपि॑ ष्टु॒तः स॑वि॒ता दे॒वो अ॑स्तु॒ यमा चि॒द्विश्वे॒ वस॑वो गृ॒णन्ति॑।**

**स न॒ः स्तोमा॑न्नम॒स्य१॒॑श्चनो॑ धा॒द्विश्वे॑भिः पातु पा॒युभि॒र्नि सू॒रीन्॥३॥**

**अपि॑। स्तु॒तः। स॒वि॒ता। दे॒वः। अ॒स्तु॒। यम्। आ। चि॒त्। विश्वे॑। वस॑वः। गृ॒णन्ति॑। सः। न॒ः। स्तोमा॑न्। न॒म॒स्य॑ः। चन॑ः। धा॒त्। विश्वे॑भिः। पा॒तु॒। पा॒युऽभि॑ः। नि। सू॒रीन्॥३॥**

**पदार्थः**-(**अपि**) पदार्थसंभावनायाम् (**स्तुतः**) प्रशंसितः (**सविता**) सर्वोत्पादकः (**देवः**) सूर्यादीनामपि प्रकाशकः (**अस्तु**) (**यम्**) (**आ**) समन्तात् (**चित्**) अपि (**विश्वे**) सर्वे (**वसवः**) वसन्ति विद्या येषु तेषु ते विद्वांसः (**गृणन्ति**) स्तुवन्ति (**सः**) (**नः**) अस्माकम् (**स्तोमान्**) प्रशंसाः (**नमस्यः**) नमस्करणीयः (**चनः**) अन्नादिकमैश्वर्यम् (**धात्**) दधातु (**विश्वेभिः**) सर्वैस्सह (**पातु**) रक्षतु (**पायुभिः**) रक्षाभिः (**नि**) नितराम् (**सूरीन्**) विदुषः॥३॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यं चिद्विश्वे वसवो गृणन्ति स सविता देवोऽस्माभिरा स्तुतोऽस्तु सोऽपि नमस्योऽस्तु नोऽस्माकं स्तोमान् चनश्च धात् स विश्वेभिः पायुभिस्सूरीन्नि पातु॥३॥

**भावार्थः**-हे मनुष्याः! यस्येश्वरस्य सर्व आप्ताः प्रशंसां कुर्वन्ति योऽस्मान् सततं रक्षत्यस्मदर्थं सर्वं विश्वं विधत्ते तमेव वयं सर्वे सदा प्रशंस्येम॥३॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! (**यम्, चित्**) जिस परमेश्वर की (**विश्वे**) सब (**वसवः**) वे विद्वान् जन जिन में विद्या वसती है (**गृणन्ति**) स्तुति कराते हैं वह (**सविता**) सब को उत्पन्न करने वाला (**देवः**) सूर्यादिकों का भी प्रकाशक ईश्वर हम लोगों से (**आ, स्तुतः**) अच्छे प्रकार स्तुति को प्राप्त (**अस्तु**) हो और वह (**अपि**) भी (**नमस्यः**) नमस्कार करने योग्य हो (**नः**) हमारी (**स्तोमान्**) प्रशंसाओं को और (**चनः**) अन्नादि ऐश्वर्य को भी (**धात्**) धारण करे तथा (**सः**) वह (**विश्वेभिः**) सब के साथ (**पायुभिः**) रक्षाओं से (**सूरीन्**) विद्वानों की (**नि, पातु**) निरन्तर रक्षा करे॥३॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जिस ईश्वर की सब धर्मात्मा सज्जन प्रशंसा करते हैं, जो हम लोगों की निरन्तर रक्षा करता, हम लोगों के लिये समस्त विश्व का विधान करता है, उसी की हम लोग सदा प्रशंसा करें॥३॥

**पुनर्मनुष्यैः कस्य प्रशंसा कार्येत्याह॥**

फिर मनुष्यों को किसकी प्रशंसा करनी चाहिये, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अ॒भि यं दे॒व्यदि॑तिर्गृ॒णाति॑ स॒वं दे॒वस्य॑ सवि॒तुर्जु॑षा॒णा।**

**अ॒भि स॒म्राजो॒ वरु॑णो गृणन्त्य॒भि मि॒त्रासो॑ अर्य॒मा स॒जोषाः॑॥४॥**

**अ॒भि। यम्। दे॒वी। अदि॑तिः। गृ॒णाति॑। स॒वम्। दे॒वस्य॑। स॒वि॒तुः। जु॒षा॒णा। अ॒भि। स॒म्ऽराजः॑। वरु॑णः। गृ॒ण॒न्ति॒। अ॒भि। मि॒त्रासः॑। अ॒र्य॒मा। स॒ऽजोषाः॑॥४॥**

**पदार्थः**-(**यम्**) (**देवी**) विदुषी (**अदितिः**) माता (**गृणाति**) (**सवम्**) प्रसूतं जगत् (**देवस्य**) सर्वसुखप्रदातुः (**सवितुः**) प्रेरकस्यान्तर्यामिणः (**जुषाणा**) सेवमाना (**अभि**) (**सम्राजः**) सम्यग्राजमानश्चक्रवर्तिनो राजानः (**वरुणः**) वरो विद्वान् (**गृणन्ति**) स्तुवन्ति (**अभि**) (**मित्रासः**) सर्वस्य सुहृदः (**अर्यमा**) न्यायधीशः (**सजोषाः**) समानप्रीतिसेवी॥४॥

**अन्वयः**-हे मनुष्याः सवितुर्देवस्य सवं जुषाणा देव्यदितिर्यमभि गृणाति वरुणस्सजोषा अर्यमा यमभिगृणाति यं मित्रासस्सम्राजोऽभिगृणन्ति तमेव सर्वे सततं स्तुवन्तु॥४॥



www.9009.co.in

**भावार्थः-**हे मनुष्या! यूयं तस्यैव प्रशंसनीयस्य परमेश्वरस्यैव स्तुतिं कुरुत यं स्तुत्वा विदुष्यः स्त्रियः राजानो विद्वांसश्चाऽभीष्टं प्राप्नुवन्ति॥४॥

**पदार्थः**–हे मनुष्यो! **(सवितुः)** प्रेरणा देने वाला अन्तर्यामी **(देवस्य)** सर्व सुखदाता जगदीश्वर के **(सवम्)** उत्पन्न किये जगत् की **(जुषाणा)** सेवा करती हुई **(देवी)** विदुषी **(अदितिः)** माता जिस को **(अभि, गृणाति)** सम्मुख कहती है वा **(वरुणः)** श्रेष्ठ विद्वान् जन **(सजोषाः)** समान प्रीति सेवने वाला **(अर्यमा)** न्यायाधीश और **(मित्रासः)** सब के सुहृद **(सम्राजः)** अच्छे प्रकार प्रकाशमान चक्रवर्ती राजजन **(यम्)** जिसकी **(अभि, गृणन्ति)** सब ओर से स्तुति करते हैं, उसी की सब निरन्तर स्तुति करें॥४॥

**भावार्थः-**हे मनुष्यो! तुम उसी प्रशंसा करने योग्य परमेश्वर की स्तुति करो, जिस की स्तुति करके विदुषी स्त्री राजा और विद्वान् जन चाहा हुआ फल पाते हैं॥४॥

**पुनर्मनुष्याः परस्परं किं कुर्युरित्याह॥**

फिर मनुष्य परस्पर क्या करें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अ॒भि ये मि॒थो व॒नुषः॒ सप॑न्ते रा॒तिं दि॒वो रा॑ति॒षाचः॑ पृथि॒व्याः।**
**अहि॑र्बु॒ध्न्य॑ उ॒त नः॑ शृणोतु॒ वरू॒त्र्येक॑धेनुभि॒र्नि पा॑तु॥५॥**

**अ॒भि। ये। मि॒थः। व॒नुषः॑। सप॑न्ते। रा॒तिम्। दि॒वः। रा॒ति॒ऽसाचः॑। पृ॒थि॒व्याः। अहिः॑। बु॒ध्न्यः॑। उ॒त। न॒ः। शृ॒णो॒तु॒। वरू॑त्री। एक॑धेनु॒ऽभिः। नि। पा॒तु॥५॥**

**पदार्थः**–**(अभि) (ये) (मिथः)** परस्परम् **(वनुषः)** याचमानान् **(सपन्ते)** आक्रुष्यन्ति **(रातिम्) (दिवः)** कमनीयस्य **(रातिषाचः)** दानस्य दातुः **(पृथिव्याः)** भूमेरन्तरिक्षस्य वा मध्ये **(अहिः)** मेघः **(बुध्न्यः)** बुध्न्येऽन्तरिक्षे भवः **(उत)** अपि **(नः)** अस्मान् **(शृणोतु) (वरूत्री)** वरणीया नीतियुक्ता माता **(एकधेनुभिः)** एकैव धेनुर्वाक् सहायभूता येषां तैः सह **(नि)** पातु॥५॥

**अन्वयः-**ये दिवो रातिषाच एकधेनुभिस्सह मिथो वनुषो नो रातिमाभि सपन्ते उतापि वरूत्री बुध्न्योऽहिरिवास्मान् पृथिव्या नि पातु स सर्वोजनोऽस्माकमधीतं शृणोतु॥५॥

**भावार्थः-**येऽस्मान् विद्याहीनान् दृष्ट्वा निन्दन्ति विदुषो दृष्ट्वा प्रशंसन्त्यैकमत्याय प्रेरयन्ति त एवास्माकं कल्याणकरा भवन्ति॥५॥

**पदार्थः**– **(ये)** जो **(दिवः)** मनोहर **(रातिषाचः)** दान देने वाले के **(एकधेनुभिः)** एक वाणी ही है सहायक जिनकी उनके साथ **(मिथः)** परस्पर **(वनुषः)** मांगते हुए **(नः)** हम लोगों की **(रातिम्)** देने को **(अभि, सपन्ते)** अच्छे प्रकार सब ओर से नियम करते हैं **(उत)** और **(वरूत्री)** स्वीकार करने योग्य माता **(बुध्न्यः)** अन्तरिक्ष में प्रसिद्ध हुए **(अहिः)** मेघ के समान हम लोगों को **(पृथिव्याः)** भूमि



www.9009.co.in

और अन्तरिक्ष के बीच **(नि, पातु)** निरन्तर रक्षा करे, वह समस्त जनमात्र हमारा पढ़ा हुआ **(शृणोतु)** सुने॥५॥

**भावार्थः**-जो हम लोगों को विद्याहीन देख निन्दा करते और विद्वान् देख प्रशंसा करते और एकता के लिये प्रेरणा देते हैं, वे ही हमारे कल्याण करने वाले होते हैं॥५॥

**पुना राजादिमनुष्यैः किं कृत्वा किं प्रापणीयमित्याह॥**

फिर राजा आदि मनुष्यों को क्या करके क्या प्राप्त करने योग्य है, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अनु तन्नो जास्पतिर्मंसीष्ट रत्नं देवस्य सवितुरियानः।**
**भगमुग्रोऽवसे जोहवीति भगमनुग्रो अध यति रत्नम्॥६॥**

**अनु। तत्। नः। जाःपतिः। मंसीष्ट। रत्नम्। देवस्य। सवितुः। इयानः। भगम्। उग्रः। अवसे। जोहवीति। भगम्। अनुग्रः। अध। याति। रत्नम्॥६॥**

**पदार्थः**-**(अनु)** **(तत्)** **(नः)** अस्मभ्यम् **(जास्पतिः)** प्रजापालकः **(मंसीष्ट)** मन्यताम् **(रत्नम्)** रमणीयं धनम् **(देवस्य)** सर्वप्रकाशकस्य **(सवितुः)** सर्वान्तर्यामिणः **(इयानः)** प्राप्नुवन् **(भगम्)** ऐश्वर्यम् **(उग्रः)** तेजस्वी **(अवसे)** रक्षणाद्याय **(जोहवीति)** भृशमाददाति **(भगम्)** ऐश्वर्यम् **(अनुग्रः)** अतेजस्वी **(अधः)** हीनताम् **(याति)** प्राप्नोति **(रत्नम्)** रमणीयं धनम्॥६॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथोग्रो जास्पतिस्सवितुर्देवस्य भगमियानः यद्रत्नं स्वार्थं मंसीष्ट तन्नोऽनु मंसीष्ट यं भगमवसेऽनुग्रो जनो जोहवीति तद्रत्नमध याति॥६॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यो राजा परमेश्वरस्य सृष्टौ सर्वेषां रक्षणाय प्रवर्तते स एव सर्वमैश्वर्यं लब्ध्वा सर्वानानन्दयति॥६॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे **(उग्रः)** तेजस्वी **(जास्पतिः)** प्रजा पालने वाला **(सवितुः)** सर्वान्तर्यामी **(देवस्य)** सब प्रकाश करने वाले के **(भगम्)** ऐश्वर्य्य को **(इयानः)** प्राप्त होता हुआ जिस **(रत्नम्)** रमणीय धन को स्वार्थ **(मंसीष्ट)** मानता है **(तत्)** उस को **(नः)** हम लोगों के लिये **(अनु)** अनुकूल माने जिस **(भगम्)** ऐश्वर्य्य को **(अवसे)** रक्षा आदि के **(अनुग्रः)** तेजरहित जन **(जोहवीति)** निरन्तर ग्रहण करता है वह **(रत्नम्)** रमणीय धन **(अधः)** हीन दशा को **(याति)** प्राप्त होता है॥६॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो राजा परमेश्वर की सृष्टि में सब की रक्षा के लिये प्रवृत्त होता है, वही सब ऐश्वर्य को पाकर सब को आनन्दित कराता है॥६॥

**पुनः केऽत्र कल्याणकरा भवन्तीत्याह॥**

फिर कौन इस संसार में कल्याण करने वाले होते हैं, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**शं नो भवन्तु वाजिनो हवेषु देवताता मितद्रवः स्वर्काः।**



www.9009.co.in

**जृम्भयन्तोऽहिं वृकं रक्षांसि सनेम्यस्मद्युयवन्नमीवाः॥७॥**

**शम्। नः। भवन्तु। वाजिनः। हवेषु। देवऽताता। मितऽद्रवः। सुऽअर्काः। जृम्भयन्तः। अहिम्। वृकम्। रक्षांसि। सनेमि। अस्मत्। युयवन्। अमीवाः॥७॥**

**पदार्थः**-(**शम्**) सुखाय (**नः**) अस्माकम् (**भवन्तु**) (**वाजिनः**) वेगवन्तोऽश्वाः ज्ञानवन्तो योद्धारो वा (**हवेषु**) संग्रामेषु (**देवताता**) विद्वद्भिरनुष्ठातव्ये यज्ञे (**मितद्रवः**) ये मितं द्रवन्ति गच्छन्ति ते (**स्वर्काः**) शोभनोऽर्कोऽन्नादिकमैश्वर्यं येषान्ते (**जम्भयन्तः**) विनामयन्तः (**अहिम्**) सर्पमिव वर्तमानम् (**वृकम्**) स्तेनम् (**रक्षांसि**) दुष्टान् प्राणिनः (**सनेमि**) पुरातने। **सनेमीति पुराणनाम।** (निघं०३.२७) (**अस्मत्**) अस्माकं सकाशात् (**युयवन्**) वियुज्यन्ताम् (**अमीवाः**) रोगाः॥७॥

**अन्वयः**-हे विद्वांसो! वाजिनो मितद्रवः स्वर्का हवेषु देवतातायहिमिव वृकं रक्षांसि च जम्भयन्तो नोऽस्माकं शं भवन्तु यतोऽस्मत् सनेम्यमीवा युयवन्॥७॥

**भावार्थः**-ये दुष्टाचारान् प्राणिनो रोगान् शत्रूँश्च निवर्त्य सर्वेषां कल्याणकरा भवन्ति त एव जगत्पूज्यास्सन्ति॥७॥

**पदार्थः**-हे विद्वानो! (**वाजिनः**) वेगवान् घोड़ा वा ज्ञानवान् योद्धा पुरुष (**मितद्रवः**) जो प्रमाण भर जाते हैं (**स्वर्काः**) जिन का शुभ अन्नादि है (**हवेषु**) वे संग्रामों में (**देवताता**) वा विद्वानों के अनुष्ठान करने योग्य यज्ञ में (**अहिम्**) सर्प के समान वर्तमान (**वृकम्**) चोर को और (**रक्षांसि**) दुष्ट प्राणियों को (**जम्भयन्तः**) जम्भाई दिलाते हुए (**नः**) हम लोगों को (**शम्**) सुख के लिये (**भवन्तु**) होवें जिस से (**अस्मत्**) हम लोगों से (**सनेमि**) पुराने व्यवहार में (**अमीवाः**) रोग (**युयवन्**) अलग हों॥७॥

**भावार्थः**-जो दुष्ट आचार वाले प्राणी, रोग और शत्रुओं को निवार के सब के सुख करने वाले होते हैं, वे ही जगत् पूज्य होते हैं॥७॥

**पुनर्विद्वद्भिः किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

फिर विद्वानों को क्या करना चाहिये, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**वाजेवाजेऽवत वाजिनो नो धनेषु विप्रा अमृता ऋतज्ञाः।**

**अस्य मध्वः पिबत मादयध्वं तृप्ता यात पथिभिर्देवयानैः॥८॥५॥**

**वाजेऽवाजे। अवत। वाजिनः। नः। धनेषु। विप्राः। अमृताः। ऋतऽज्ञाः। अस्य। मध्वः। पिबत। मादयध्वम्। तृप्ताः। यात। पथिऽभिः। देवऽयानैः॥८॥**

**पदार्थः**-(**वाजेवाजे**) संग्रामे संग्रामे (**अवत**) रक्षत (**वाजिनः**) बहुविज्ञानान्नबलवेगयुक्ताः (**नः**) अस्मान् (**धनेषु**) (**विप्राः**) मेधाविनः (**अमृताः**) मृत्युरहिताः (**ऋतज्ञाः**) य ऋतं सत्यं जानन्ति ते



www.9009.co.in

सत्यं व्यवहारं ब्रह्म वा जानन्ति ते **(अस्य)** **(मध्वः)** मधुरादिगुणयुक्तस्य **(पिबत)** **(मादयध्वम्)** आनन्दयत **(तृप्ताः)** प्रीणिताः **(यात)** **(पथिभिः)** **(देवयानैः)** विद्वन्मार्गैः॥८॥

**अन्वयः**-हे अमृता ऋतज्ञा वाजिनो विप्रा! यूयं धनेषु वाजेवाजे च नोऽस्मानवत अस्य मध्वः पिबत अस्मान् मादयध्वम् तृप्ताः सन्तो देवयानैः पथिभिर्यात॥८॥

**भावार्थः**-विदुषः प्रतीश्वरस्येयमाज्ञाऽस्ति यूयं विद्वांसो धार्मिका भूत्वा सर्वेषां रक्षां सततं विधत्त स्वयमानन्दिता महौषधरसेनारोगास्सन्तस्सर्वानानन्द्य तर्पयित्वाऽऽप्तमार्गैः स्वयं गच्छन्तोऽन्यान् सततं गमयत॥८॥

अत्र सवित्रैश्वर्यविद्वद्विदुषीगुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह संगतिर्वेद्या।

**इत्यष्टात्रिंशत्तमं सूक्तं पञ्चमो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे **(अमृताः)** मृत्युरहित **(ऋतज्ञाः)** सत्य व्यवहार वा ब्रह्म के जानने वाले **(वाजिनः)** बहु विज्ञान अन्न बल और वेगयुक्त **(विप्राः)** मेधावी सज्जनो! तुम **(धनेषु)** धनों में **(वाजेवाजे)** और संग्राम संग्राम में **(नः)** हम लोगों की **(अवत)** रक्षा करो **(अस्य)** इस **(मध्वः)** मधुरादि गुणयुक्त रस को **(पिबत)** पीओ, हम लोगों को **(मादयध्वम्)** आनन्दित करो और **(तृप्ताः)** तृप्त होते हुए **(देवयानैः)** विद्वानों के मार्ग जिन से जाना होता उन **(पथिभिः)** मार्गों से **(यात)** जाओ॥८॥

**भावार्थः**-विद्वानों के प्रति ईश्वर की यह आज्ञा है कि तुम धार्मिक विद्वान् होकर सब की रक्षा निरन्तर करो और आनन्दित तथा बड़ी ओषधियों के रस से नीरोग हुए सब को आनन्दित और तृप्त कर धर्मात्माओं के मार्गों से आप चलते हुए औरों को निरन्तर उन्हीं मार्गों से चलावें॥८॥

इस सूक्त मे सविता, ऐश्वर्य, विद्वान् और विदुषियों के गुणों का वर्णन होने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ संगति जाननी चाहिये॥

**यह अड़तीसवां सूक्त और पांचवां वर्ग पूरा हुआ॥**



www.9009.co.in

**अथ सप्तर्चस्य [एकोनचत्वारिंशत्तमस्य] सूक्तस्य वसिष्ठर्षिः। विश्वेदेवा देवताः। १, २, ५, ७ निचृत्त्रिष्टुप्। ३ स्वराट् त्रिष्टुप्। ४, ६ विराट् त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः॥**

***अथ विद्वांसौ स्त्रीपुरुषौ किं कुर्यातामित्याह॥***

अब सात ऋचा वाले उनतालीसवें सूक्त का आरम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में विद्वान् स्त्री-पुरुष क्या करें, इस विषय को कहते हैं॥

**ऊर्ध्वो अग्निः सुमतिं वस्वो अश्रेत् प्रतीची जूर्णिर्देवतातिमेति।**

**भेजाते अद्री रथ्येव पन्थामृतं होता न इषितो यजाति॥१॥**

**ऊर्ध्वः। अग्निः। सुऽमतिम्। वस्वः। अश्रेत्। प्रतीची। जूर्णिः। देवऽतातिम्। एति। भेजाते इति। अद्री इति। रथ्याऽइव। पन्थाम्। ऋतम्। होता। नः। इषितः। यजाति॥१॥**

**पदार्थः**-(**ऊर्ध्वः**) ऊर्ध्वगामी (**अग्निः**) पावक इव (**सुमतिम्**) श्रेष्ठां प्रज्ञाम् (**वस्वः**) धनस्य (**अश्रेत्**) आश्रयेत् (**प्रतीची**) या प्रत्यगञ्चती (**जूर्णिः**) जीर्णा (**देवतातिम्**) देवैरनुष्ठितं यज्ञम् (**एति**) प्राप्नोति (**भेजाते**) भजतः (**अद्री**) अनिन्दितौ पत्नीयजमानौ (**रथ्येव**) यथा रथेषु साधू अश्वौ (**पन्थाम्**) मार्गम् (**ऋतम्**) सत्यम् (**होता**) दाता (**नः**) अस्मान् (**इषितः**) इष्टः (**यजाति**) यजेत् संगच्छेत्॥१॥

**अन्वयः**-या जूर्णिः प्रतीची विदुषी पत्नी ऊर्ध्वोऽग्निरिव देवतातिं सुमतिमश्रेत् रथ्येवर्तं पन्थामेति यथाऽद्री वस्वो भेजाते यथेषितो होता नो यजाति तान् तं च सर्वे सत्कुर्वन्तु॥१॥

**भावार्थः**-अत्रोपमावाचकलुप्तोपमालङ्कारौ। यत्र स्त्रीपुरुषौ कृतबुद्धी पुरुषार्थिनौ सत्कर्मण्याचरतस्तत्र सर्वा श्रीर्विराजते॥१॥

**पदार्थः**-जो (**जूर्णिः**) जीर्ण (**प्रतीची**) वा कार्य के प्रति सत्कार करने वाली विदुषी पत्नी (**ऊर्ध्वः**) ऊपर जाने वाले (**अग्निः**) अग्नि के समान (**देवतातिम्**) विद्वानों ने अनुष्ठान किये हुए यज्ञ को और (**सुमतिम्**) श्रेष्ठमति को (**अश्रेत्**) आश्रय करे वा (**रथ्येव**) जैसे रथों में उत्तम घोड़े, वैसे (**ऋतम्**) सत्य (**पन्थाम्**) मार्ग को (**एति**) प्राप्त होती वा जैसे (**अद्री**) निन्दारहित पत्नी यजमान (**वस्वः**) धन को (**भेजाते**) भजते हैं वा जैसे (**इषितः**) इच्छा को प्राप्त (**होता**) देने वाला (**नः**) हम लोगों को (**यजाति**) संग करे उन सब को और उस का, वैसे ही सब सत्कार करें॥१॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमा और वाचकलुप्तोपमालङ्कार हैं। जहाँ स्त्री-पुरुष ऐसे हैं कि जिन्होंने बुद्धि उत्पन्न की है, अच्छे काम में आचरण करते हैं, वहाँ सब लक्ष्मी विराजमान है॥१॥

**पुनस्तौ स्त्रीपुरुषौ किं कुर्यातामित्याह॥**

फिर वे स्त्री-पुरुष क्या करें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**प्र वावृजे सुप्रया बर्हिरेषामा विश्पतीव बीरिट इयाते।**

**विशामक्तोरुषसः पूर्वहूतौ वायुः पूषा स्वस्तये नियुत्वान्॥२॥**



www.9009.co.in

**प्र। वा॒वृ॒जे॒। सु॒ऽप्र॒याः। ब॒र्हिः। ए॒षा॒म्। आ। वि॒श्प॒ती॑ इ॒वेति॑ वि॒श्प॒ती॑ऽइव। बीरि॑टे। इ॒या॒ते॒ इति॑। वि॒शाम्। अ॒क्तोः। उ॒षसः॑। पू॒र्वऽहू॑तौ। वा॒यु॒ः। पू॒षा। स्व॒स्तये॑। नि॒युत्वा॑न्॥ २॥**

**पदार्थः**-(**प्र**) (**वावृजे**) व्रजति (**सुप्रयाः**) यस्सर्वान् सुष्ठु प्रीणाति (**बर्हिः**) उत्तमं सर्वेषां वर्धकं कर्म (**एषाम्**) मनुष्याणां मध्ये (**आ**) समन्तात् (**विश्पतीव**) विशां प्रजानां पालको राजेव (**बीरिटे**) अन्तरिक्षे (**इयाते**) गच्छतः (**विशाम्**) प्रजानाम् (**अक्तोः**) रात्रेः (**उषसः**) दिवसस्य (**पूर्वहूतौ**) पूर्वैर्विद्वद्भिः कृतायां स्तुतौ (**वायुः**) प्राण इव (**पूषा**) पुष्टिकर्त्ता (**स्वस्तये**) सुखाय (**नियुत्वान्**) नियन्तेश्वरः॥ २॥

**अन्वयः**-यौ स्त्रीपुरुषौ बीरिटे सूर्याचन्द्रमसाविवेयाते विश्पतीवाक्तोरुषसः पूर्वहूताविवयाते पूषा वायुरिव नियुत्वानीश्वरो विशां स्वस्तयेऽस्तु एषां मध्यात् यः कश्चित्सुप्रया बर्हिरा प्र वावृजे तान् सर्वान् सर्वे सत्कुर्वन्तु॥ २॥

**भावार्थः**-अत्रोपमावाचकलुप्तोपमालङ्कारौ। सदैव यौ स्त्रीपुरुषौ न्यायकारिराजवत् प्रजापालनमीश्वरवन्न्यायाचरणं वायुवत् प्रियप्रापणं संन्यासिवत्पक्षपातमोहादिदोषरहितौ स्यातां तौ सर्वार्थसिद्धौ भवेताम्॥ २॥

**पदार्थः**-जो स्त्री-पुरुष (**बीरिटे**) अन्तरिक्ष में सूर्य और चन्द्रमा के समान (**इयाते**) जाते है (**विश्पतीव**) वा प्रजा पालने वाले राजा के समान (**अक्तोः**) रात्रि की (**उषसः**) और दिन की (**पूर्वहूतौ**) अगले विद्वानों ने की स्तुति के निमित्त जाते हैं वा (**पूषा**) पुष्टि करने वाले (**वायुः**) प्राण के समान (**नियुत्वान्**) नियमकर्ता ईश्वर (**विशाम्**) प्रजाजनों के (**स्वस्तये**) सुख के लिये हो (**एषाम्**) इन में से जो कोई (**सुप्रयाः**) सब को अच्छे प्रकार तृप्त करता है वा (**बर्हिः**) उत्तम सब का बढ़ाने वाला कर्म (**आ, प्र, वावृजे**) सब ओर से अच्छे प्रकार प्राप्त होता है, उन सब का सब सत्कार करें॥ २॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमा और वाचकलुप्तोपमालङ्कार हैं। सदैव जो स्त्री-पुरुष न्यायकारी राजा के समान प्रजा पालना, ईश्वर के समान न्यायचरण, पवन के समान प्रिय पदार्थ पहुँचाता और संन्यासी के तुल्य पक्षपात और मोहादिदोष त्याग करने वाले होते हैं, वे सर्वार्थ सिद्ध हों॥ २॥

**पुनर्विद्वांसः किं कुर्युरित्याह॥**

फिर विद्वान् जन क्या करें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**ज्म॒या अत्र॒ वस॑वो रन्त दे॒वा उ॒राव॒न्तरि॑क्षे मर्जयन्त शु॒भ्राः।**

**अ॒र्वाक्प॒थ उ॑रुज्रयः कृणुध्वं॒ श्रोता॑ दू॒तस्य॑ ज॒ग्मुषो॑ नो अ॒स्य॥ ३॥**

**ज्म॒याः। अत्र॑। वस॑वः। र॒न्त॒। दे॒वाः। उ॒रौ। अ॒न्तरि॑क्षे। म॒र्ज॒य॒न्त॒। शु॒भ्राः। अ॒र्वाक्। प॒थः। उ॒रु॒ऽज्र॒यः। कृ॒णु॒ध्व॒म्। श्रोत॑। दू॒तस्य॑। ज॒ग्मुषः॑। नः॒। अ॒स्य॥ ३॥**

**पदार्थः**-(**ज्मयाः**) भूमेर्मध्ये (**अत्र**) अस्मिन् संसारे (**वसवः**) विद्यायां कृतवासाः (**रन्त**) रमन्ताम् (**देवाः**) विद्वांसः (**उरौ**) बहुव्यापके (**अन्तरिक्षे**) आकाशे (**मर्जयन्त**) शोधयन्तु (**शुभ्राः**)



www.9009.co.in

शुद्धाचाराः **(अर्वाक्)** **(पथः)** मार्गान् **(उरुज्रयः)** बहुगन्तारः **(कृणुध्वम्)** **(श्रोता)** शृणुत। अत्र **द्व्यचोऽतस्तिङ** इति दीर्घः। **(दूतस्य)** **(जग्मुषः)** गन्तॄन् प्राप्तान् वेदितॄन् **(नः)** अस्माकं अस्मान् वा **(अस्य)**॥३॥

**अन्वयः**-हे उरुज्रयः शुभ्रा वसवो देवा! यूयमुरावन्तरिक्षेऽत्र ज्मया रन्तार्वाक् पथो मर्जयन्तास्य दूतस्य नो जग्मुषः कृणुध्वमस्माकं विद्याः श्रोता॥३॥

**भावार्थः**-हे विद्वांसो! यूयं धर्ममार्गान् शुद्धान् प्रचार्य्य दूतवत् सर्वत्र भ्रमणं कृत्वा धर्मं विस्तार्य सर्वान् मनुष्यान् प्राप्तविद्यासुखान् कुरुत॥३॥

**पदार्थः**-हे **(उरुज्रयः)** बहुत जाने और **(शुभ्राः)** शुद्ध आचरण करने वाले **(वसवः)** विद्या में वास किये हुए **(देवाः)** विद्वान् जनो! तुम **(उरौ)** बहुव्यापक **(अन्तरिक्षे)** आकाश में **(अत्र)** इस संसार में **(ज्मयाः)** भूमि के बीच **(रन्त)** रमें **(अर्वाक्)** पीछे **(पथः)** मार्गों को **(मर्जयन्त)** शुद्ध करो **(अस्य)** इस **(दूतस्य)** दूत को **(नः)** हम लोगों को **(जग्मुषः)** जाने, प्राप्त होने वा जानने वाले **(कृणुध्वम्)** करो और हमारी विद्याओं को **(श्रोता)** सुनो॥३॥

**भावार्थः**-हे विद्वानो! तुम धर्ममार्गों को शुद्ध प्रकाशित कर दूत के समान सब जगह घूम, धर्म का विस्तार कर सब मनुष्यों को विद्या सुखयुक्त करो॥३॥

**पुनर्विद्वांसः कीदृशाः किं कुर्युरित्याह॥**

फिर विद्वान् कैसे हों और क्या करें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**ते हि य॒ज्ञेषु॑ य॒ज्ञिया॑स॒ ऊमा॑: स॒धस्थं॒ विश्वे॑ अ॒भि सन्ति॑ दे॒वाः।**

**ताँ अ॑ध्व॒र उ॑श॒तो य॑क्ष्यग्ने श्रु॒ष्टी भगं॒ नास॑त्या॒ पुर॑न्धिम्॥४॥**

**ते। हि। य॒ज्ञेषु॑। य॒ज्ञिया॑सः। ऊमा॑:। स॒धऽस्थ॑म्। विश्वे॑। अ॒भि। सन्ति॑। दे॒वाः। तान्। अ॒ध्व॒रे। उ॒श॒तः। य॒क्षि॒। अ॒ग्ने॒। श्रु॒ष्टी। भग॑म्। नास॑त्या। पुर॑म्ऽधिम्॥४॥**

**पदार्थः**-**(ते)** **(हि)** यतः **(यज्ञेषु)** विद्यादानाऽदानादिव्यवहारेषु **(यज्ञियासः)** यज्ञसिद्धिकराः **(ऊमाः)** रक्षादिकर्तारः **(सधस्थम्)** समानस्थानम् **(विश्वे)** सर्वे **(अभि)** आभिमुख्ये **(सन्ति)** **(देवाः)** विद्वांसः **(तान्)** **(अध्वरे)** अहिंसनीये व्यवहारे **(उशतः)** कामयमानान् **(यक्षि)** संगमयेयम् **(अग्ने)** विद्वन् **(श्रुष्टी)** क्षिप्रम् **(भगम्)** ऐश्वर्यम् **(नासत्या)** अविद्यमानासत्यव्यवहारावध्यापकोपदेशकौ **(पुरन्धिम्)** बहूनां सुखानां धर्तारम्॥४॥

**अन्वयः**-ते हि यज्ञियास ऊमा विश्वे देवा यज्ञेष्वभि सन्ति तानध्वरे सधस्थमुशतो विदुषोऽहं यक्षि यौ नासत्या पुरन्धिं भगं श्रुष्टी दद्यातां तौ यथाऽहं यक्षि तथा हे अग्ने! त्वमप्येतान् यज॥४॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! ये सत्यविद्याधर्मप्रकाशका वेदविदः अध्यापकोपदेशका विद्वांसो जगति सर्वान् मनुष्यादीन्नुन्नयन्ति ते हि सर्वदा सर्वथा सर्वैस्सत्कर्तव्या भवन्ति॥४॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**- **(ते)** वे **(हि)** ही **(यज्ञियासः)** यज्ञ सिद्ध करने **(ऊमाः)** और रक्षा करने वाले **(विश्वे)** सब **(देवाः)** विद्वान् **(यज्ञेषु)** विद्या देने न देने के व्यवहारों में **(अभि, सन्ति)** सम्मुख वर्त्तमान हैं **(तान्)** उन **(अध्वरे)** अहिंसनीय व्यवहार में **(सधस्थम्)** एक स्थान को **(उशतः)** चाहने वाले विद्वानों को मैं **(यक्षि)** मिलूं जो **(नासत्या)** असत्यव्यवहाररहित अध्यापक और उपदेशक **(पुरन्धिम्)** बहुत सुखों के धारण करने वाले **(भगम्)** ऐश्वर्य को **(श्रुष्टी)** शीघ्र देवें, जैसे मैं मिलूं, वैसे ही हे **(अग्ने)** विद्वान्! आप भी इन को मिलो॥४॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो सत्यविद्या और धर्म के प्रकाश करने वाले वेदवेत्ता अध्यापक, उपदेशक, विद्वान् सब मनुष्य आदि की उन्नति करते हैं, वे ही सर्वदा सर्वथा सब को साकार करने योग्य होते हैं॥४॥

**पुनर्विद्वांसः किं विज्ञाय किं ज्ञापयेयुरित्याह॥**

फिर विद्वान् जन क्या जान कर क्या दूसरों को जतलावें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**आग्ने गिरो दिव आ पृथिव्याः मित्रं वह वरुणमिन्द्रमग्निम्।**
**आर्यमणमदितिं विष्णुमेषां सरस्वती मरुतो मादयन्ताम्॥५॥**

**आ। अग्ने। गिरः। दिवः। आ। पृथिव्याः। मित्रम्। वह। वरुणम्। इन्द्रम्। अग्निम्। आ। अर्यमणम्। अदितिम्। विष्णुम्। एषाम्। सरस्वती। मरुतः। मादयन्ताम्॥५॥**

**पदार्थः**-**(आ)** **(अग्ने)** विद्वन् **(गिरः)** सुशिक्षिता वाचः **(दिवः)** विद्युत् सूर्यादेर्विद्याप्रकाशिकाः **(आ)** **(पृथिव्याः)** भूम्यादेः **(मित्रम्)** सखायम् **(वह)** **(वरुणम्)** अतिश्रेष्ठम् **(इन्द्रम्)** परमैश्वर्यवन्तं राजानम् **(अग्निम्)** पावकम् **(आ)** **(अर्यमणम्)** न्यायाधीशम् **(अदितिम्)** अन्तरिक्षम् **(विष्णुम्)** व्यापकं वायुम् **(एषाम्)** **(सरस्वती)** विद्यायुक्ता वाणी **(मरुतः)** मनुष्याः **(मादयन्ताम्)** आनन्दयन्तु॥५॥

**अन्वयः**-हे अग्ने त्वं दिवः पृथिव्या गिर आ वह मित्रं वरुणमिन्द्रमग्निमर्यमणमदितिं विष्णुमावहैषां सरस्वती तां च विदित्वाऽस्मदर्थमा वह, हे विद्वांसो! मरुत एतद्विद्यां दत्वाऽस्मान् भवन्तो मादयन्ताम्॥५॥

**भावार्थः**-ये मनुष्या विद्युदादिविद्यां प्राप्यान्यान् प्रापयन्ति ते सर्वेषामानन्दकरा भवन्ति॥५॥

**पदार्थः**-हे **(अग्ने)** विद्वन्! आप **(दिवः)** बिजुली और सूर्यादि प्रकाशवान् पदार्थों की विद्या का प्रकाश करने वाली वा **(पृथिव्याः)** भूमि आदि पदार्थों का प्रकाश करने वाली **(गिरः)** सुन्दर शिक्षित वाणियों को **(आ, वह)** प्राप्त कीजिये **(मित्रम्)** मित्र **(वरुणम्)** अतिश्रेष्ठ **(इन्द्रम्)** परमैश्वर्यवान् राजा **(अग्निम्)** अग्नि **(अर्यमणम्)** न्यायाधीश **(अदितिम्)** अन्तरिक्ष **(विष्णुम्)** व्यापक वायु को **(आ)** प्राप्त कीजिये और जो **(एषाम्)** इनकी **(सरस्वती)** विद्यायुक्त वाणी उस को जान कर हमारे



www.9009.co.in

अर्थ **(आ)** प्राप्त कीजिये, हे **(मरुतः)** विद्वान् मनुष्यो! उक्त विद्या को देकर हम लोगों को आप **(मादयन्ताम्)** आनन्दित कीजिये॥५॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य बिजुली आदि की विद्या को प्राप्त होकर औरों को प्राप्त कराते हैं, वे सब का आनन्द करने वाले होते हैं॥५॥

**पुनर्विद्वांसः किं कुर्युरित्याह॥**

फिर विद्वान् जन क्या करें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**ररे हव्यं मतिभिर्यज्ञियानां नक्षत्कामं मर्त्यानामसिन्वन्।**

**धाता रयिमविदस्यं सदासां सक्षीमहि युज्येभिर्नु देवैः॥६॥**

**ररे। हव्यम्। मतिऽभिः। यज्ञियानाम्। नक्षत्। कामम्। मर्त्यानाम्। असिन्वन्। धात। रयिम्। अविऽदस्यम्। सदाऽसाम्। सक्षीमहि। युज्येभिः। नु। देवैः॥६॥**

**पदार्थः**-**(ररे)** दद्याम् **(हव्यम्)** गृहीतुमर्हम् **(मतिभिः)** प्राज्ञैर्मनुष्यैः सह **(यज्ञियानाम्)** यज्ञसम्पादकानाम् **(नक्षत्)** प्राप्नोति **(कामम्)** **(मर्त्यानाम्)** मनुष्याणाम् **(असिन्वन्)** बध्नन्ति **(धाता)** दधाति। अत्र **द्व्यच०** इति दीर्घः। **(रयिम्)** धनम् **(अविदस्यम्)** अक्षीणम् **(सदासाम्)** सदा संसेवनीयम् **(सक्षीमहि)** प्राप्नुयाम **(युज्येभिः)** योक्तुमर्हैः **(नु)** क्षिप्रम् **(देवैः)** विद्वद्भिः सह॥६॥

**अन्वयः**-ये मतिभिर्युज्येभिर्देवैस्सह यज्ञियानां मर्त्यानां हव्यं काममसिन्वन् यमविदस्यं सदासां रयिं धात य एतैस्सहैतं नक्षत् तमहं ररे वयमेतैस्सहैतं नु सक्षीमहि॥६॥

**भावार्थः**-ये विद्वांसोऽन्येषां मनुष्याणां काममलं कुर्वन्ति ते पूर्णकामा भवन्ति॥६॥

**पदार्थः**-जो **(मतिभिः)** प्राज्ञ मनुष्यों के साथ वा **(युज्येभिः)** योग करने योग्य **(देवैः)** विद्वानों के साथ **(यज्ञियानाम्)** यज्ञ सम्पादन करने वाले **(मर्त्यानाम्)** मनुष्यों के **(हव्यम्)** ग्रहण करने योग्य **(कामम्)** काम को **(असिन्वन्)** निबन्ध करते हैं जिस **(अविदस्यम्)** अक्षीण विनाशरहित **(सदासाम्)** सदैव अच्छे प्रकार सेवने योग्य **(रयिम्)** धन को **(धात)** धारण करते हैं वा जो इन के साथ उस को **(नक्षत्)** व्याप्त होता है उस को मैं **(ररे)** देऊं हम सब लोग इन के साथ उस को **(नु)** शीघ्र **(सक्षीमहि)** व्याप्त होवें॥६॥

**भावार्थः**-जो विद्वान् जिन मनुष्यों का काम पूरा करते हैं, वे पूर्णकाम होते हैं॥६॥

**पुनर्विद्वांसोऽन्येभ्यः किं प्रदद्युरित्याह॥**

फिर विद्वान् जन औरों के लिये क्या देवें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**नू रोदसी अभिष्टुते वसिष्ठैर्ऋतावानो वरुणो मित्रो अग्निः।**

**यच्छन्तु चन्द्रा उपमं नो अर्कं यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥७॥६॥**



www.9009.co.in

**नु। रोद॑सी इति॑। अ॒भिस्तु॑ते॒ इत्य॒भिऽस्तु॑ते। वसि॑ष्ठैः। ऋ॒तऽवा॑नः। वरु॑णः। मि॒त्रः। अ॒ग्निः। यच्छ॑न्तु। च॒न्द्राः। उ॒प॒ऽमम्। नः॒। अ॒र्कम्। यू॒यम्। पा॒त। स्व॒स्तिऽभि॑ः। सदा॑। नः॒॥७॥**

**पदार्थः**-(**नु**) सद्यः। अत्र **ऋचि तुनुघे**ति दीर्घः। (**रोदसी**) द्यावापृथिव्यौ (**अभिष्टुते**) अभितः प्रशंसनीये (**वसिष्ठैः**) अतिशयेन वायसितृभिः (**ऋतावानः**) सत्यं याचमानाः (**वरुणः**) वरः (**मित्रः**) सुहृत् (**अग्निः**) पावक इव विद्यादिशुभगुणप्रकाशितः (**यच्छन्तु**) ददतु (**चन्द्राः**) आह्लादकराः (**उपमम्**) येनोपमीयते तम् (**नः**) अस्मभ्यम् (**अर्कम्**) सत्कर्तव्यमन्नं विचारं वा (**यूयम्**) (**पात**) (**स्वस्तिभिः**) (**सदा**) (**नः**)॥७॥

**अन्वयः**-यथा वरुणो मित्रोऽग्निश्चर्तावानश्चन्द्रा वसिष्ठैस्सहाभिष्टुते रोदसी उपममर्कं नो नु यच्छन्तु तथा हे विद्वांसो! यूयं स्वस्तिभिर्नस्सदा पात॥७॥

**भावार्थः**-ये विद्वांस आप्तैस्सहानुपमं विज्ञानं प्रयच्छन्ति तेऽस्मान् सदा रक्षितुं शक्नुवन्तीति॥७॥

अत्र विश्वेदेवगुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इत्येकोनचत्वारिंशत्तमं सूक्तं षष्ठो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-जैसे (**वरुणः**) श्रेष्ठ (**मित्रः**) मित्र (**अग्निः**) अग्नि के समान विद्यादि शुभ गुणों से प्रकाशित और (**ऋतावानः**) सत्य को याचने वा (**चन्द्राः**) हर्ष करने वाले जन (**वसिष्ठैः**) वसाने वाले के साथ (**अभिष्टुते**) सब ओर से प्रशंसित (**रोदसी**) प्रकाश और पृथिवी (**उपमम्**) जिस से उपमा दी जावे उस (**अर्कम्**) सत्कार करने योग्य अन्न वा विचार को (**नः**) हम लोगों के लिये (**नु**) शीघ्र (**यच्छन्तु**) देवें, वैसे हे विद्वानो! (**यूयम्**) तुम (**स्वस्तिभिः**) सुखों से (**नः**) हमारी (**सदा**) सदैव (**पात**) रक्षा कीजिये॥७॥

**भावार्थः**-जो विद्वान् जन धर्मात्मा, विद्वानों के साथ जिसकी उपमा नहीं उस विज्ञान को देते हैं, वे हम लोगों की रक्षा कर सकते हैं॥७॥

इस सूक्त में विश्वेदेवों के गुणों का वर्णन होने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ संगति जाननी चाहिये॥

**यह उनतालीसवां सूक्त और छठा वर्ग पूरा हुआ॥**



www.9009.co.in

**अथ सप्तर्चस्य [चत्वारिंशत्तमस्य] सूक्तस्य वसिष्ठर्षिः। विश्वेदेवा देवताः। १ पङ्क्तिः। ३ भुरिक्पङ्क्तिः। ६ विराट्पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः। २, ४ विराट्त्रिष्टुप्। ५, ७ निचृत्त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः॥**

*पुनर्मनुष्याः किं कुर्युरित्याह॥*

अब सात ऋचा वाले चालीसवें सूक्त का प्रारम्भ किया जाता है, उसके प्रथम मन्त्र में फिर मनुष्य क्या करें, इस विषय को कहते हैं॥

**ओ श्रुष्टिर्विदथ्या३ समेतु प्रति स्तोमं दधीमहि तुराणाम्।**

**यदद्य देवः सविता सुवाति स्यामास्य रत्निनो विभागे॥ १॥**

**ओ इति। श्रुष्टिः। विदथ्या। सम्। एतु। प्रति। स्तोमम्। दधीमहि। तुराणाम्। यत्। अद्य। देवः। सविता। सुवाति। स्याम। अस्य। रत्निनः। विऽभागे॥ १॥**

**पदार्थः**- **(ओ)** सम्बोधने **(श्रुष्टिः)** आशुकारी **(विदथ्या)** विदथेषु संग्रामादिषु व्यवहारेषु भवा **(सम्)** **(एतु)** सम्यक् प्राप्नोतु **(प्रति)** **(स्तोमम्)** **(दधीमहि)** **(तुराणाम्)** सद्यः कारिणाम् **(यत्)** यः **(अद्य)** इदानीम् **(देवः)** विद्वान् **(सविता)** सत्कर्मसु प्रेरकः **(सुवाति)** जनयति **(स्याम)** भवेम **(अस्य)** विदुषः **(रत्निनः)** बहूनि रत्नानि धनानि विद्यन्ते येषु तान् **(विभागे)** विशेषेण भजनीये व्यवहारे॥ १॥

**अन्वयः**-ओ विद्वन्! यथा श्रुष्टिर्विदथ्या तुराणां प्रतिस्तोमं समेतु तथैतं स्तोमं वयं दधीमहि यदद्य देवस्सविता विभागेऽस्य रत्निनः स्तोमं सुवाति तथा वयं स्याम॥ १॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यथा विदुषी माताऽपत्यानि संरक्ष्य सुशिक्ष्य वर्द्धयति तथा विद्वांसोऽस्मान् वर्द्धयन्तु॥ १॥

**पदार्थः**- **(ओ)** ओ विद्वान्! जैसे **(श्रुष्टिः)** शीघ्र करने वाला **(विदथ्या)** संग्रामादि व्यवहारों में हुई **(तुराणाम्)** शीघ्रकारियों के **(प्रति, स्तोमम्)** समूह-समूह के प्रति **(सम्, एतु)** अच्छे प्रकार प्राप्त होवे, वैसे इस समूह को हम लोग **(दधीमहि)** धारण करे **(यत्)** जो **(अद्य)** अब **(देवः)** विद्वान् **(सविता)** अच्छे कामों में प्रेरणा देने वाला **(विभागे)** विशेष कर सेवने योग्य व्यवहार में **(अस्य)** इस विद्वान् के **(रत्निनः)** उन व्यवहारों को जिन में बहुत रत्न विद्यमान और स्तुति समूह को **(सुवाति)** उत्पन्न करता है, वैसे हम लोग उत्पन्न करने वाले **(स्याम)** हों॥ १॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे विदुषी माता सन्तानों की रक्षा कर और अच्छी शिक्षा देकर बढ़ाती है, वैसे विद्वान् जन हम को बढ़ावें॥ १॥

**पुनर्मनुष्याः किं कुर्युरित्याह॥**

फिर मनुष्य क्या करें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**मित्रस्तन्नो वरुणो रोदसी च द्युभक्तमिन्द्रो अर्यमा ददातु।**



www.9009.co.in

**दिदेष्टु देव्यदिती रेक्णो वायुश्च यन्नियुवैते भगश्च॥२॥**

**मित्रः। तत्। नः। वरुणः। रोदसी इति। च। द्युऽभक्तम्। इन्द्रः। अर्यमा। ददातु। दिदेष्टु। देवी। अदितिः। रेक्णः। वायुः। च। यत्। नियुवैते इति निऽयुवैते। भगः। च॥२॥**

**पदार्थः**-(**मित्रः**) सखा (**तत्**) तम् (**नः**) अस्मभ्यम् (**वरुणः**) जलसमुदायः (**रोदसी**) द्यावापृथिवी (**च**) (**द्युभक्तम्**) यो दिवं भजति तम् (**इन्द्रः**) परमैश्वर्यो राजा (**अर्यमा**) न्यायकारी (**ददातु**) (**दिदेष्टु**) उपदिशतु (**देवी**) विदुषी (**अदितिः**) स्वरूपेणखण्डिता (**रेक्णः**) अधिकं धनम् (**वायुः**) पवनः (**च**) (**यत्**) यत् (**नियुवैते**) योजयेताम् (**भगः**) (**च**)॥२॥

**अन्वयः**-ये रोदसीव मित्रोऽर्यमेन्द्रो वरुणो वायुश्च द्युभक्तं तन्नो ददातु देव्यदितिर्भगश्च यद्रेक्णो नियुवैते तत् विद्वानस्माँश्च दिदेष्टु॥२॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। मनुष्यास्सर्वदा पुरुषार्थेन सर्वानैश्वर्ययुक्तान् कारयन्तु॥२॥

**पदार्थः**-जो (**रोदसी**) आकाश और पृथिवी के समान (**मित्रः**) मित्र (**अर्यमा**) न्यायकारी (**इन्द्रः**) परम ऐश्वर्यवान् राजा (**वरुणः**) जलसमूह (**वायुः**) और पवन (**च**) भी (**द्युभक्तम्**) जो प्रकाश को सेवता है (**तत्**) उस को (**नः**) हम लोगों के लिये (**ददातु**) देओ और (**देवी**) विदुषी (**अदितिः**) स्वरूप से अखण्डित (**भगः**) और ऐश्वर्यवान् (**च**) भी (**यत्**) जिस (**रेक्णः**) अधिक धन को (**नियुवैते**) निरन्तर जोड़े उस का विद्वान् जन हमें (**च**) भी (**दिदेष्टु**) उपदेश करें॥२॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। मनुष्य सर्वदा पुरुषार्थ से सब को ऐश्वर्ययुक्त करावें॥२॥

**कः सुरक्षितो विद्वान् भवतीत्याह॥**

कौन सुरक्षित विद्वान् होता है, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**सेदुग्रो अस्तु मरुतः स शुष्मी यं मर्त्यं पृषदश्वा अवाथ।**
**उतेमग्निः सरस्वती जुनन्ति न तस्य रायः पर्येतास्ति॥३॥**

**सः। इत्। उग्रः। अस्तु। मरुतः। सः। शुष्मी। यम्। मर्त्यम्। पृषत्ऽअश्वाः। अवाथ। उत। ईम्। अग्निः। सरस्वती। जुनन्ति। न। तस्य। रायः। परिऽएता। अस्ति॥३॥**

**पदार्थः**-(**सः**) (**इत्**) एव (**उग्रः**) तेजस्वी (**अस्तु**) (**मरुतः**) विद्वांसो मनुष्याः (**सः**) (**शुष्मी**) बहुबली (**यम्**) (**मर्त्यम्**) मनुष्यम् (**पृषदश्वाः**) सिक्तजलाग्निनाऽऽशुगामिनो महान्तः (**अवाथ**) रक्षेत (**उत**) (**ईम्**) सर्वतः (**अग्निः**) पावक इव (**सरस्वती**) शुद्धा वाणी (**जुनन्ति**) प्रेरयन्ति (**न**) (**तस्य**) (**रायः**) धनानि (**पर्येता**) वर्जिता (**अस्ति**)॥३॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे मरुतः! पृषदश्वा यं मर्त्यमवाथ स इदेव उग्रः स शुष्म्यस्तु यं विद्वांसो जुनन्ति तस्य रायः पर्येता न जायत उतेमग्निरिव सरस्वती तस्योत्तमाऽस्ति॥३॥

**भावार्थः**-यान् मनुष्यान् विद्वांसो रक्षन्ति ते विद्वांसो भूत्वा धनैश्वर्यं प्राप्याऽन्यानपि रक्षितुं शक्नुवन्ति॥३॥

**पदार्थः**-हे **(मरुतः)** विद्वान् मनुष्यो! **(पृषदश्वाः)** सींचे हुए जल और अग्नि से जल्दी चलने वाले बढ़े **(यम्)** जिस **(मर्त्यम्)** मनुष्य को **(अवाथ)** रक्खें **(स, इत्)** वही **(उग्रः)** तेजस्वी **(सः)** वह **(शुष्मी)** बहुत बलवान् **(अस्तु)** हो जिस को विद्वान् **(जुनन्ति)** प्रेरणा देते हैं **(तस्य)** उस के **(रायः)** धनों को **(पर्येता)** वर्जन करने वाला **(न)** नहीं होता है **(उत, ईम्)** और सब ओर से **(अग्निः)** अग्नि के समान **(सरस्वती)** शुद्ध वाणी उस की उत्तम **(अस्ति)** है॥३॥

**भावार्थः**-जिन मनुष्यों की विद्वान् जन रक्षा करते हैं, वे विद्वान् हो धन और ऐश्वर्य को पाकर औरों की भी रक्षा कर सकते हैं॥३॥

**के राजानो भवितुमर्हन्तीत्याह॥**

कौन राजा होने योग्य होते हैं, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

## अयं हि नेता वरुण ऋतस्य मित्रो राजानो अर्यमापो धुः।
## सुहवा देव्यदितिरनर्वा ते नो अंहो अति पर्षन्नरिष्टान्॥४॥

**अयम्। हि। नेता। वरुणः। ऋतस्य। मित्रः। राजानः। अर्यमा। अपः। धुरिति धुः। सुऽहवा। देवी। अदितिः। अनर्वा। ते। नः। अंहः। अति। पर्षन्। अरिष्टान्॥४॥**

**पदार्थः**-**(अयम्)** **(हि)** **(नेता)** नयनकर्ता **(वरुणः)** श्रेष्ठः **(ऋतस्य)** सत्यस्य **(मित्रः)** सखा **(राजानः)** **(अर्यमा)** न्यायेशः **(अपः)** सुकर्म **(धुः)** दध्युः **(सुहवा)** सुष्ठुदानादाना: **(देवी)** देदीप्यमाना **(अदितिः)** अखण्डिता **(अनर्वा)** अविद्यमानाश्वगमनेव **(ते)** **(नः)** अस्मान् **(अंहः)** अपराधात् **(अति)** **(पर्षन्)** उल्लङ्घयेयुः **(अरिष्टान्)** अहिंसितान्॥४॥

**अन्वयः**-येऽयं नेता वरुणो मित्रोऽर्यमा च सुहवा राजानो ह्यृतस्यापो धुस्तेऽनर्वा देव्यदितिरिव नोऽरिष्टानंहोऽति पर्षन्॥४॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। त एव राजानो भवन्ति ये न्यायं शुभान् गुणान् सर्वेषु मैत्रीं च भावयन्ति त एवापराधाचरणाज्जनान् पृथग्रक्षितुमर्हन्ति त एव राजानो भवितुमर्हन्ति॥४॥

**पदार्थः**-जो **(अयम्)** यह **(नेता)** न्यायकर्त्ता **(वरुणः)** श्रेष्ठ **(मित्रः)** मित्र **(अर्यमा)** और न्यायाधीश **(सुहवा)** सुन्दर देने लेने वाले **(राजानः)** राजजन **(हि)** ही **(ऋतस्य)** सत्य के **(अपः)** कर्म को **(धुः)** धारण करें **(ते)** वे **(अनर्वा)** नहीं है घोड़े की चाल जिस की उस **(देवी)** देदीप्यमान



www.9009.co.in

**(अदितिः)** अखण्डित नीति के समान **(नः)** हम लोगों को **(अंहः)** अपराध से **(अरिष्टान्)** न विनाश किये हुए **(अति, पर्षन्)** उल्लंघे अर्थात् छोड़े॥४॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। वे ही राजा होते हैं, जो न्याय, श्रेष्ठ गुण और सबों में मित्रता की भावना कराते हैं, वे ही अपराध के आचरण से लोगों को दूर रखने योग्य होते हैं और राजा होने योग्य होते हैं॥४॥

**पुनर्मनुष्यैः किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को क्या करना चाहिये, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अस्य देवस्य मीळ्हुषो वया विष्णोरेषस्य प्रभृथे हविर्भिः।**

**विदे हि रुद्रो रुद्रियं महित्वं यासिष्टं वर्तिरश्विनाविरावत्॥५॥**

**अस्य। देवस्य। मीळ्हुषः। वयाः। विष्णोः। एषस्य। प्रऽभृथे। हविःऽभिः। विदे। हि। रुद्रः। रुद्रियम्। महिऽत्वम्। यासिष्टम्। वर्तिः। अश्विनौ। इराऽवत्॥५॥**

**पदार्थः**-**(अस्य)** **(देवस्य)** देदीप्यमानस्य सकलसुखदातुः **(मीळ्हुषः)** जलेनेव सुखसेचकस्य **(वयाः)** प्रापकः **(विष्णोः)** विद्युदिव व्यापकस्येश्वरस्य **(एषस्य)** सर्वत्र प्राप्तव्यस्य **(प्रभृथे)** प्रकर्षेण धारिते जगति **(हविर्भिः)** होतव्यैः पदार्थैरिवादत्तैः शान्तैश्चित्तादिभिः **(विदे)** प्राप्नोमि **(हि)** **(रुद्रः)** दुष्टानां रोदयिता **(रुद्रियम्)** प्राणसम्बन्धि **(महित्वम्)** महत्त्वम् **(यासिष्टम्)** प्राप्नुतः **(वर्तिः)** मार्गम् **(अश्विनौ)** सूर्याचन्द्रमसौ **(इरावत्)** अन्नाद्यैश्वर्ययुक्तम्॥५॥

**अन्वयः**-यथाश्विना अस्य मीळ्हुषो विष्णोरेषस्य देवस्य हविर्भिः प्रभृथे जगतीरावद्वर्तिर्महित्वं यासिष्टं तस्य रुद्रियं वया रुद्रोऽहं हि विदे॥५॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे मनुष्याः! यस्येश्वरस्य महिमानं प्राप्य सूर्यादयो लोकाः प्रकाशयन्ति तस्यैवोपासनं सर्वस्वेन कर्तव्यम्॥५॥

**पदार्थः**-जैसे **(अश्विना)** सूर्य और चन्द्रमा **(अस्य)** इस **(मीळ्हुषः)** जल के समान सुख सींचने वाला **(विष्णोः)** बिजुली के समान व्यापक ईश्वर **(एषस्य)** जो कि सर्वत्र प्राप्त होने **(देवस्य)** और निरन्तर प्रकाशमान सकल सुख देनेवाला उसके **(हविर्भिः)** होमने योग्य पदार्थों के समान ग्रहण किये शान्त चितादिकों से **(प्रभृथे)** उत्तमता से धारण किये हुए जगत् में **(इरावत्)** अन्नादि ऐश्वर्य्य युक्त **(वर्तिः)** मार्ग को और **(महित्वम्)** महत्व को **(यासिष्टम्)** प्राप्त होते हैं, उस ईश्वर की **(रुद्रियम्)** प्राणसम्बन्धी महिमा को **(वयाः)** प्राप्त करने **(रुद्रः)** दुष्टों को रुलाने वाला मैं **(हि)** ही **(विदे)** प्राप्त होता हूँ॥५॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जिस ईश्वर की महिमा को पाकर सूर्य आदि प्रकाश करते हैं, उसी को उपासना सर्वस्व से करनी चाहिये॥५॥



www.9009.co.in

**पुनर्विद्वांसः किं कुर्वन्तीत्याह॥**

फिर विद्वान् जन क्या करते हैं, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**मात्र पूषन्नाघृण इरस्यो वरूत्री यद्रातिषाचश्च रासन्।**

**मयोभुवो नो अर्वन्तो नि पान्तु वृष्टिं परिज्मा वातो ददातु॥६॥**

**मा। अत्र। पूषन्। आऽघृणे। इरस्यः। वरूत्री। यत्। रातिऽसाचः। च। रासन्। मयःऽभुवः। नः। अर्वन्तः। नि। पान्तु। वृष्टिम्। परिऽज्मा। वातः। ददातु॥६॥**

**पदार्थः**-(**मा**) (**अत्र**) अस्मिन् (**जगति**) (**पूषन्**) पुष्टिकर्तः (**आघृणे**) सर्वतो दीप्ते (**इरस्यः**) प्राप्तुं योग्यः (**वरूत्री**) वर्तुमर्हा (**यत्**) याः (**रातिषाचः**) दानकर्तारः (**च**) (**रासन्**) प्रयच्छन्ति (**मयोभुवः**) शुभं भावुकाः (**नः**) अस्मान् (**अर्वन्तः**) प्राप्नुवन्तः (**नि**) नितराम् (**पान्तु**) रक्षन्तु (**वृष्टिम्**) (**परिज्मा**) यः परितस्सर्वतो गच्छति सः (**वातः**) वायुः (**ददातु**)॥६॥

**अन्वयः**-हे आघृणे पूषन्! यथा परिज्मा वातो वृष्टिं ददातु तथा मयोभुवोऽर्वन्तो रातिषाच आप्ता नो नि पान्तु यद्या वरूत्री वरणीया विद्यास्ति तां च रासन् तथेरस्यस्त्वं कुर्याः माऽत्र विद्वेषी भवेः॥६॥

**भावार्थः**-ये विद्वांस आप्तवद्वर्तित्वा सर्वेभ्यः सुखं विद्यां च प्रयच्छन्ति ते सर्वाभिरक्षकास्सन्ति॥६॥

**पदार्थः**-हे (**आघृणे**) सब ओर से प्रकाशित (**पूषन्**) पुष्टि करने वाले! जैसे (**परिज्मा**) सब ओर से जो जाता है वह (**वातः**) वायु (**वृष्टिम्**) वर्षा को (**ददातु**) देवे वैसे (**मयोभुवः**) श्रेष्ठता हुवाने वाले (**अर्वन्तः**) प्राप्त होते हुए (**रातिषाचः**) दानकर्ता जन (**नः**) हम लोगों की (**नि, पान्तु**) निरन्तर रक्षा करें और (**यत्**) जो (**वरूत्री**) स्वीकार करने योग्य विद्या है (**च**) उसी को भी (**रासन्**) देते हैं, वैसे (**इरस्यः**) प्राप्त होने योग्य आप करें (**मा**) और मत (**अत्र**) इस जगत् में विद्वेषी होओ॥६॥

**भावार्थः**-जो विद्वान् जन श्रेष्ठ जनों के तुल्य वर्त कर सब के लिये सुख वा विद्या देते हैं, वे सब के सब ओर से रक्षक हैं॥६॥

**पुनरध्यापकोपदेशिका स्त्रियः किं कुर्युरित्याह॥**

फिर पढ़ाने और उपदेश करने वाली स्त्रियाँ क्या करें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**नू रोदसी अभिष्टुते वसिष्ठैर्ऋतावानो वरुणो मित्रो अग्निः।**

**यच्छन्तु चन्द्रा उपमं नो अर्कं यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥७॥७॥**

**नु। रोदसी इति। अभिस्तुते इत्यभिऽस्तुते। वसिष्ठैः। ऋतऽवानः। वरुणः। मित्रः। अग्निः। यच्छन्तु। चन्द्राः। उपऽमम्। नः। अर्कम्। यूयम्। पात। स्वस्तिऽभिः। सदा। नः॥७॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**नु**) क्षिप्रम्। अत्र **ऋचि तुनुघे**ति दीर्घः। (**रोदसी**) द्यावापृथिव्या इव (**अभिष्टुते**) आभिमुख्येनाध्यापयन्त्यावुपदिशन्त्यावध्यापकोपदेशिके (**वसिष्ठैः**) अतिशयेन धनाढ्यैः सह (**ऋतावानः**) सत्यस्य प्रकाशिकाः (**वरुणः**) जलमिव शान्तिप्रदः (**मित्रः**) सखेव प्रियाचारः (**अग्निः**) पावक इव प्रकाशितयशाः (**यच्छन्तु**) ददतु (**चन्द्राः**) आनन्ददाः (**उपमम्**) उपमेयसाधकतमम् (**नः**) अस्मभ्यम् (**अर्कम्**) सत्कर्तव्यं धनधान्यम् (**यूयम्**) (**पात**) (**स्वस्तिभिः**) (**सदा**) (**नः**)॥७॥

**अन्वयः**-ये अध्यापकोपदेशिके रोदसी इवाभिष्टुते वसिष्ठैस्सह यथा मित्रो वरुण अग्निश्च चन्द्रा न उपममर्कं न यच्छन्तु तथाऽस्मानृतावानः कन्या सततं विद्याः प्रयच्छन्तु हे विदुष्यः स्त्रियो! यूयं स्वस्तिभिर्नः सदा पात॥७॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। या भूमिवत् क्षमाशीलाः श्रीवच्छोभमाना जलवच्छान्ताः सखीवदुपकारिण्यः विदुष्योऽध्यापिका स्युस्ताः सकलाः कन्या अध्यापनेन सर्वास्त्रियश्चोपदेशेनान्दयन्त्विति॥७॥

अत्र विश्वेदेवगुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह संगतिर्वेद्या॥

**इति चत्वारिंशत्तमं सूक्तं सप्तमो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-जो पढ़ाने और उपदेश करने वाली (**रोदसी**) आकाश और पृथिवी के समान (**अभिष्टुते**) सामने पढ़ाती वा उपदेश करती वे (**वसिष्ठैः**) अतीव धनाढ्यों के साथ जैसे (**मित्रः**) मित्र के समान प्यारे आचरण करने वाला (**वरुणः**) जल के समान शान्ति देने वाली और (**अग्निः**) अग्नि के समान प्रकाशित यश जन तथा (**चन्द्राः**) आनन्द देने वाले (**नः**) हमारे लिये (**उपमम्**) उपमा जिस को दी जाती उस को अतीव सिद्ध कराने वाले (**अर्कम्**) सत्कार करने योग्य धन धान्य को (**नु**) शीघ्र (**यच्छन्तु**) देवें, वैसे हम लोगों को (**ऋतावानः**) सत्य की प्रकाश करने वाली कन्या जन निरन्तर विद्या देवें, हे विदुषी स्त्रियो! (**यूयम्**) तुम (**स्वस्तिभिः**) सुखों से (**नः**) हम लोगों की (**सदा**) सर्वदैव (**पात**) रक्षा करो॥७॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो भूमि के तुल्य क्षमाशील, लक्ष्मी के तुल्य शोभती हुई, जल के तुल्य शान्त, सहेली के तुल्य उपकार करने वाली विदुषी पढ़ाने वाली हों वे सब कन्याओं को पढ़ा के और सब स्त्रियों को उपदेश से आनन्दित करें॥७॥

इस सूक्त में विश्वेदेवों के गुण और कृत्य का वर्णन होने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह चालसीवाँ सूक्त और सातवाँ वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

**अथ सप्तर्चस्य [एकचत्वारिंशत्तमस्य] सूक्तस्य १-७ वसिष्ठर्षिः। १ लिङ्गोक्तदेवताः। २-६ भगः। ७ उषाः। १ निचृज्जगती छन्दः। निषादः स्वरः। २, ३, ५, ७ निचृत्त्रिष्टुप्। ६ त्रिष्टुप्छन्दः। धैवतः स्वरः। ४ पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः॥**

***अथ प्रातरुत्थाय यावच्छयनं तावन्मनुष्यैः किं किं कर्तव्यमित्याह॥***

अब सात ऋचा वाले इक्तालीसवें सूक्त का आरम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में प्रातःकाल उठ के जब तक सोवें तब तक मनुष्यों को क्या-क्या करना चाहिये इसविषय को कहते हैं॥

**प्रातर॒ग्निं प्रा॒तरिन्द्रं॑ हवामहे प्रा॒तर्मि॒त्रावरु॑णा प्रा॒तर॒श्विना॑।**

**प्रा॒तर्भगं॑ पू॒षणं॒ ब्रह्म॑ण॒स्पतिं॑ प्रा॒तः सोम॑मु॒त रु॒द्रं हु॑वेम॥ १॥**

**प्रा॒तः। अ॒ग्निम्। प्रा॒तः। इन्द्र॑म्। ह॒वा॒म॒हे॒। प्रा॒तः। मि॒त्रावरु॑णा। प्रा॒तः। अ॒श्विना॑। प्रा॒तः। भग॑म्। पू॒षण॑म्। ब्रह्म॑णः। पति॑म्। प्रा॒तरिति॑। सोम॑म्। उ॒त। रु॒द्रम्। हु॒वे॒म॒॥ १॥**

**पदार्थः**-(**प्रातः**) प्रभाते (**अग्निम्**) पावकम् (**प्रातः**) (**इन्द्रम्**) विद्युतं सूर्यं वा (**हवामहे**) होमेन विचारेण प्रशंसेम (**प्रातः**) (**मित्रावरुणा**) प्राणोदानाविव सखिराजानौ (**प्रातः**) (**अश्विना**) सूर्याचन्द्रमसौ वैद्यावध्यापकौ वा (**प्रातः**) (**भगम्**) ऐश्वर्यम् (**पूषणम्**) पुष्टिकरं वायुम् (**ब्रह्मणस्पतिम्**) ब्रह्मणो वेदस्य ब्रह्माण्डस्य सकलैश्वर्यस्य वा स्वामिनं जगदीश्वरम् (**प्रातः**) (**सोमम्**) सर्वौषधिगणम् (**उत**) (**रुद्रम्**) पापफलदानेन पापिनां रोदयितारं पापफलभोगेन रोदकं जीवं वा (**हुवेम**) प्रशंसेम॥ १॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथा वयं प्रातरग्निं प्रातरिन्द्रं प्रातर्मित्रावरुणा प्रातरश्विना हवामहे प्रातर्भगं पूषणं ब्रह्मणस्पतिं सोममुत प्राता रुद्रं हुवेम तथा यूयमप्याह्वयत॥ १॥

**भावार्थः**-मनुष्यैः रात्रेः पश्चिमे याम उत्थायावश्यकं कृत्वा ध्यानेन शरीरस्थं ब्रह्माण्डस्य वाऽग्निं विद्युतं प्राणोदानौ मित्राणि सूर्याचन्द्रमसावैश्वर्यं पुष्टिः परमेश्वर ओषधिगणः जीवश्च विचारेण वेदितः यः पुनरग्निहोत्रादिभिः कर्मभिः सर्वं जगदुपकृत्य कृतकृत्यैर्भवितव्यम्॥ १॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे हम लोग (**प्रातः**) प्रभात काल में (**अग्निम्**) अग्नि को (**प्रातः**) प्रभात समय में (**इन्द्रम्**) बिजुली वा सूर्य को (**प्रातः**) प्रातः समय (**मित्रावरुणाः**) प्राण और उदान के समान मित्र और राजा को तथा (**प्रातः**) प्रभात काल (**अश्विना**) सूर्य चन्द्रमा वैश्व वा पढ़ाने वालों की (**हवामहे**) विचार से प्रशंसा करें (**प्रातः**) प्रभात समय (**भगम्**) ऐश्वर्य्य को (**पूषणम्**) पुष्टि करने वाले वायु को (**ब्रह्मणस्पतिम्**) वेद ब्रह्माण्ड वा सकलैश्वर्य के स्वामी जगदीश्वर को (**सोमम्**) समस्त ओषधियों को (**उत**) और (**प्रातः**) प्रभात समय (**रुद्रम्**) फल देने से पापियों को रुलाने वाले ईश्वर वा पाप फल भोगने से रोने वाले जीव की (**हुवेम**) प्रशंसा करें, वैसे तुम भी प्रशंसा करो॥ १॥

**भावार्थः**-मनुष्यों को रात्रि के पिछले पहर में उठ कर आवश्यक कार्य्य कर ध्यान से शरीरस्थ वा ब्रह्माण्डस्थ वा बिजुली, प्राण, उदान, मित्र, सूर्य, चन्द्रमा, ऐश्वर्य, पुष्टि, परमेश्वर, ओषधिगण और जीव



www.9009.co.in

विचार से जानने योग्य हैं, फिर अग्निहोत्रादि कामों से सब जगत् का उपकार कर कृतकृत्य होना चाहिये॥१॥

**पुनर्मनुष्यैः किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को क्या करना चाहिये, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**प्रातर्जितं भगमुग्रं हुवेम वयं पुत्रमदितेर्यो विधर्ता।**

**आध्रश्चिद्यं मन्यमानस्तुरश्चिद्राजा चिद्यं भगं भक्षीत्याह॥२॥**

**प्रातःऽजितम्। भगम्। उग्रम्। हुवेम। वयम्। पुत्रम्। अदितेः। यः। विऽधर्ता। आध्रः। चित्। यम्। मन्यमानः। तुरः। चित्। राजा। चित्। यम्। भगम्। भक्षि इति। आह॥२॥**

**पदार्थः**-(**प्रातर्जितम्**) प्रातरेव जेतुमुत्कर्षयितुं योग्यम् (**भगम्**) ऐश्वर्यम् (**उग्रम्**) तेजोमयम् (**हुवेम**) शब्दयेम (**वयम्**) (**पुत्रम्**) पुत्रमिव वर्तमानम् (**अदितेः**) अन्तरिक्षस्थाया भूमेः प्रकाशस्य वा (**यः**) (**विधर्ता**) विविधानां लोकानां धर्ता (**आध्रः**) यः सर्वैस्समन्ताद् ध्रियते (**चित्**) अपि (**यम्**) (**मन्यमानः**) विजानन् (**तुरः**) शीघ्रकारी (**चित्**) इव (**राजा**) प्रकाशमानः (**चित्**) अपि (**यम्**) (**भगम्**) ऐश्वर्यम् (**भक्षि**) भजेयं सेवेय (**इति**) अनेन प्रकारेण (**आह**) उपदिशतीश्वरः॥२॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! योऽदितेर्विधर्ताऽऽध्रश्चिन्मन्यमानस्तुरो राजा चिदिव परमात्मा यं भगं प्राप्तुमाह यत्प्रेरिता वयं पुत्रमिव प्रातर्जितमुग्रं भगं हुवेमेति यं चिदहं भक्षि तं सर्व उपासीरन्॥२॥

**भावार्थः**-अत्रोपमावाचकलुप्तोपमालङ्कारौ। मनुष्यैः प्रातरुत्थाय सर्वाधारं परमेश्वरं ध्यात्वा सर्वाणि कर्तव्यानि कार्याणि विचिन्त्य धर्मेण पुरुषार्थेन प्राप्तमैश्वर्यं भोक्तव्यं भोजयितव्यमितीश्वर उपदिशति॥२॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! (**यः**) जो (**अदितेः**) अन्तरिक्षस्थ भूमि वा प्रकाश का (**विधर्ता**) वा विविध लोकों का धारण करने वाला (**आध्रः, चित्**) जो सब ओर से धारण सा किया जाता (**मन्यमानः**) जानता हुआ (**तुरः**) शीघ्रकारी (**राजा**) प्रकाशमान (**चित्**) निश्चय से परमात्मा (**यम्**) जिस (**भगम्**) ऐश्वर्य्य की प्राप्ति होने को (**आह**) उपदेश देता है, जिसकी प्रेरणा पाये हुए (**वयम्**) हम लोग (**पुत्रम्**) पुत्र के समान (**प्रातर्जितम्**) प्रातःकाल ही उत्तमता से प्राप्त होने को योग्य (**उग्रम्**) तेजोमय तेज भरे हुए (**भगम्**) ऐश्वर्य्य को (**हुवेम**) कहें (**इति**) इस प्रकार (**यम्, चित्**) जिस को निश्चय से मैं (**भक्षि**) सेवूं, उसकी [सब] उपासना करें॥२॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमा और वाचकलुप्तोपमालङ्कार हैं। मनुष्यों को चाहिये कि प्रातः समय उठकर सब के आधार परमेश्वर का ध्यान कर सब करने योग्य कामों को नाना प्रकार से चिंतवन कर धर्म और पुरुषार्थ से पाये हुए ऐश्वर्य को भोगें वा भुगावें, यह ईश्वर उपदेश देता है॥२॥

**पुनर्मनुष्यैरीश्वरः किमर्थं प्रार्थनीय इत्याह॥**



www.9009.co.in

फिर मनुष्यों को ईश्वर की प्रार्थना क्यों करनी चाहिये, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**भग॒ प्रणे॑त॒र्भग॒ सत्य॑राधो॒ भग॒ेमां धिय॒मुद॑वा॒ दद॑न्नः।**

**भग॒ प्र णो॑ जनय॒ गोभि॒रश्वै॒र्भग॒ प्र नृभि॑र्नृ॒वन्तः॑ स्याम॥३॥**

**भग॑। प्रणे॑त॒रिति॒ प्रऽने॑तः। भग॑। सत्य॑ऽराधः। भग॑। इ॒माम्। धिय॑म्। उ॒त्। अ॒व। दद॑त्। न॒ः। भग॑। प्र। नः॑। ज॒न॒य॒। गोभिः॑। अश्वैः॑। भग॑। प्र। नृऽभिः॑। नृ॒ऽवन्तः॑। स्या॒म॒॥३॥**

**पदार्थः**-(**भग**) सकलैश्वर्ययुक्त (**प्रणेतः**) प्रकर्षेण प्रापक (**भग**) सेवनीयतम (**सत्यराधः**) सत्यं राधः प्रकृत्याख्यं धनं यस्य तत्सम्बुद्धौ (**भग**) सकलैश्वर्यप्रद (**इमाम्**) वर्तमानां प्रशस्ताम् (**धियम्**) प्रज्ञाम् (**उत्**) (**अव**) रक्ष वर्धय वा। अत्र **द्व्यचो०** इति दीर्घः। (**ददत्**) प्रयच्छन् (**नः**) अस्मभ्यम् (**भग**) सर्वसामग्रीप्रद (**प्र**) (**नः**) अस्मभ्यम् (**जनय**) (**गोभिः**) धेनुभिः पृथिव्यादिभिर्वा (**अश्वैः**) तुरङ्गैर्महद्भिर्विद्युदादिभिर्वा (**भग**) सकलैश्वर्ययुक्त (**प्र**) (**नृभिः**) नायकैः श्रेष्ठैर्मनुष्यैः (**नृवन्तः**) बहूत्तममनुष्ययुक्ताः (**स्याम**) भवेम॥३॥

**अन्वयः**-हे भग प्रणेतर्भग सत्यराधो भगेश्वर! त्वं कृपया न इमां धियं दददस्मानुदव हे भग! नो गोभिरश्वैः प्र जनय, हे भग! त्वमस्मान्नृभिः प्र जनय यतो वयं नृवन्तस्स्याम॥३॥

**भावार्थः**-ये मनुष्या ईश्वराज्ञाप्रार्थनाध्यानोपासनानुष्ठानपुरःसरं पुरुषार्थं कुर्वन्ति ते धर्मात्मानो भूत्वा सुसहायास्सन्तः सकलैश्वर्यं लभन्ते॥३॥

**पदार्थः**-हे (**भग**) सकलैश्वर्य्ययुक्त (**प्रणेतः**) उत्तमता से प्राप्ति कराने वाले (**भग, सत्यराधः**) अत्यन्त सेवा करने योग्य प्रकृतिरूप धनयुक्त (**भग**) सकल ऐश्वर्य देने वाले ईश्वर! आप कृपा कर (**नः**) हम लोगों के लिये (**इमाम्**) इस प्रशंसायुक्त (**धियम्**) उत्तम बुद्धि को (**ददत्**) देते हुए हम लोगों की (**उत्, अव**) उत्तमता से रक्षा कीजिये, हे (**भग**) सर्वसामग्री युक्त! (**नः**) हम लोगों के लिये (**गोभिः**) गौवें वा पृथिवी आदि से (**अश्वैः**) वा शीघ्रगामी घोड़ा वा पवन वा बिजुली आदि से (**प्र, जनय**) उत्तमता से उत्पत्ति दीजिये, हे (**भग**) सकलैश्वर्य्य युक्त! आप हम लोगों को (**नृभिः**) नायक श्रेष्ठ मनुष्यों से (**प्र**) उत्तम उत्पत्ति दीजिये जिस से हम लोग (**नृवन्तः**) बहुत उत्तम मनुष्य युक्त (**स्याम**) हों॥३॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य ईश्वर की आज्ञा, प्रार्थना, ध्यान और उपासना का आचरण पहिले करके पुरुषार्थ करते हैं, वे धर्मात्मा होकर अच्छे सहायवान् हुए सकल ऐश्वर्य को प्राप्त होते हैं॥३॥

**पुनर्मनुष्यैः केन कीदृशैर्भवितव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को किससे कैसा होना चाहिये, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**उ॒तेदानीं॒ भग॑वन्तः स्यामो॒त प्र॑पि॒त्व उ॒त मध्ये॒ अह्ना॑म्।**



www.9009.co.in

**उतोदिता मघवन्त्सूर्यस्य वयं देवानां सुमतौ स्याम॥४॥**

**उत। इदानीम्। भगऽवन्तः। स्याम। उत। प्रऽपित्वे। उत। मध्ये। अह्नाम्। उत। उत्ऽइता। मघऽवन्। सूर्यस्य। वयम्। देवानाम्। सुऽमतौ। स्याम॥४॥**

**पदार्थः**-(**उत**) (**इदानीम्**) वर्तमानसमये (**भगवन्तः**) बहूत्तमैश्वर्ययुक्ताः (**स्याम**) (**उत**) (**प्रपित्वे**) प्रकर्षेणैश्वर्यस्य प्राप्तौ (**उत**) (**मध्ये**) (**अह्नाम्**) दिनानाम् (**उत**) (**उदिता**) उदये (**मघवन्**) परमपूजितैश्वर्येश्वर (**सूर्यस्य**) सवितृलोकस्य (**वयम्**) (**देवानाम्**) आप्तानां विदुषाम् (**सुमतौ**) (**स्याम**) भवेम॥४॥

**अन्वयः**-हे मघवन् जगदीश्वरेदानीमुत प्रपित्व उताह्नां मध्य उत सूर्यस्योदितोतापि सायं भगवन्तो वयं स्याम देवानां सुमतौ स्याम॥४॥

**भावार्थः**-ये मनुष्या जगदीश्वराश्रयाज्ञापालनेन विद्वत्सङ्गादतिपुरुषार्थिनो भूत्वा धर्मार्थकाममोक्षसिद्धये प्रततन्ते त सकलैश्वर्ययुक्ताः सन्तस्त्रिषु कालेषु सुखिनो भवन्ति॥४॥

**पदार्थः**-हे (**मघवन्**) परमपूजित ऐश्वर्य्य युक्त जगदीश्वर! (**इदानीम्**) इस समय (**उत**) और (**प्रपित्वे**) उत्तमता से ऐश्वर्य्य की प्राप्ति समय में (**उत**) और (**अह्नाम्**) दिनों में (**मध्ये**) बीच (**उत**) और (**सूर्यस्य**) सूर्य लोक के (**उदिता**) उदय में (**उत**) और सायंकाल में (**भगवन्तः**) बहुत उत्तम ऐश्वर्ययुक्त (**वयम्**) हम लोग (**स्याम**) हों (**देवानाम्**) तथा आप्तविद्वानों की (**सुमतौ**) श्रेष्ठ मति में स्थिर हों॥४॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य जगदीश्वर का आश्रय और आज्ञा पालन से विद्वानों के संग से अति पुरुषार्थी होकर धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की सिद्धि के लिये प्रयत्न करते हैं, वे सकलैश्वर्य युक्त होते हुए भूत, भविष्यत् और वर्त्तमान इन तीनों कालों में सुखी होते हैं॥४॥

**पुनर्मनुष्याः किं कृत्वा कीदृशा भवेयुरित्याह॥**

फिर मनुष्य क्या करके कैसे हों, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**भग एव भगवाँ अस्तु देवास्तेन वयं भगवन्तः स्याम।**

**तं त्वा भग सर्व इज्जोहवीति स नो भग पुरएता भवेह॥५॥**

**भगः। एव। भगऽवान्। अस्तु। देवाः। तेन। वयम्। भगऽवन्तः। स्याम। तम्। त्वा। भग। सर्वः। इत्। जोहवीति। सः। नः। भग। पुरःऽएता। भव। इह॥५॥**

**पदार्थः**-(**भगः**) भजनीयः (**एव**) (**भगवान्**) सकलैश्वर्यसम्पन्नः (**अस्तु**) (**देवाः**) विद्वांसः (**तेन**) (**वयम्**) (**भगवन्तः**) सकलैश्वर्ययुक्ताः (**स्याम**) (**तम्**) (**त्वा**) त्वाम् (**भग**) सर्वैश्वर्यप्रद (**सर्वः**) सम्पूर्णः (**इत्**) एव (**जोहवीति**) भृशं प्रशंसति (**सः**) (**नः**) अस्माकम् (**भग**) भजनीय वस्तुप्रद (**पुरएता**) यः पुर एति अग्रगामी भवति सः (**भव**) (**इह**) अस्मिन् वर्तमाने समये॥५॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे भग! यो भवान् भगो भगवानस्तु तेनैव भगवता सह वयं देवा भगवन्तस्स्याम, हे भग! यस्सर्वो जनस्तं त्वा जोहवीति स इह नोऽस्माकं पुरएताऽस्तु हे भग! त्वमिदस्मर्थं पुरएता भव॥५॥

**भावार्थः**-हे जगदीश्वर! यो भगवान् भवान् सर्वान् सर्वमैश्वर्यं ददाति तत्सहायेन सर्वे मनुष्याः धनाढ्या भवन्तु॥५॥

**पदार्थः**-हे **(भगः)** सकल ऐश्वर्य्य के देने वाले! जो आप **(भगः)** अत्यन्त सेवा करने योग्य **(भगवान्)** सकलैश्वर्य्यसम्पन्न **(अस्तु)** होओ **(तेनैव)** उन्हीं भगवान् के साथ **(वयम्)** हम **(देवाः)** विद्वान् लोग **(भगवन्तः)** सकलैश्वर्य्य युक्त **(स्याम)** हों, हे सकलैश्वर्य्य देने वाले! जो **(सर्वः)** सर्व मनुष्य **(तम्)** उन **(त्वा)** आपको **(जोहवीति)** निरन्तर प्रशंसा करता है **(सः)** वह **(इह)** इस समय में **(नः)** हमारे **(पुरएता)** आगे जाने वाला हो और हे **(भग)** सेवा करने योग्य वस्तु देने वाले! आप ही हमारे अर्थ आगे जाने वाले **(भव)** हूजिये॥५॥

**भावार्थः**-हे जगदीश्वर जो सकलैश्वर्य्यवान् आप सब को सब ऐश्वर्य्य देते हैं, उन के सहाय से सब मनुष्य धनाढ्य होवें॥५॥

**पुनर्मनुष्याः कीदृशा भूत्वा किं प्राप्य किं कुर्युरित्याह॥**

फिर मनुष्यो को कैसे होकर क्या पाकर क्या करना चाहिये, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**सम॑ध्व॒रायो॒षसो॑ नमन्त दधि॒क्रावे॑व॒ शुच॑ये प॒दाय॑।**

**अ॒र्वा॒ची॒नं व॑सुवि॒दं भगं॑ नो॒ रथ॑मि॒वाश्वा॑ वा॒जिन॒ आ व॑हन्तु॥६॥**

**सम्। अ॒ध्व॒राय॑। उ॒षसः॑। न॒म॒न्त॒। द॒धि॒क्रावा॑ऽइव। शुच॑ये। प॒दाय॑। अ॒र्वा॒ची॒नम्। व॒सु॒ऽवि॒द॑म्। भग॑म्। नः॒। रथ॑म्ऽइव। अश्वाः॑। वा॒जिनः॑। आ। व॒ह॒न्तु॒॥६॥**

**पदार्थः**-**(सम्) (अध्वराय)** हिंसारहिताय धर्म्याय व्यवहाराय **(उषसः)** प्रभातवेलायाः **(नमन्त)** नमन्ति **(दधिक्रावेव)** धारकान् क्रमत इव **(शुचये)** पवित्राय **(पदाय)** प्राप्तव्याय **(अर्वाचीनम्)** इदानीन्तनं नूतनम् **(वसुविदम्)** यो वसूनि विन्दति प्राप्नोति तम् **(भगम्)** सर्वैश्वर्ययुक्तम् **(नः)** अस्मान् **(रथमिव)** रमणीयं यानमिव **(अश्वाः)** महान्तो वेगवन्तस्तुरङ्गा आशुगामिनो विद्युदादयो वा **(वाजिनः)** **(आ) (वहन्तु)**॥६॥

**अन्वयः**-रथमिवाश्वा ये वाजिनो जनाः शुचयेऽध्वराय पदायोषसो दधिक्रावेव सन्नमन्त तेऽर्वाचीनं वसुविदं भगं न आ वहन्तु॥६॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। ये मनुष्याः प्रातरुत्थाय वेगयुक्ताश्ववत्सद्यो गत्वाऽऽगत्वाऽऽलस्यं विहायैश्वर्यं प्राप्य नम्रा जायन्ते त एव पवित्रं परमात्मानं प्राप्तुं शक्नुवन्ति॥६॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**- **(रथमिव, अश्वाः)** रमणीय यान को महान् वेग वाले घोड़े वा शीघ्र जाने वाले बिजुली आदि पदार्थ जैसे वैसे जो **(वाजिनः)** विशेष ज्ञानी जन **(शुचये)** पवित्र **(अध्वराय)** हिंसारहित धर्मयुक्त व्यवहार **(पदाय)** और पाने योग्य पदार्थ के लिये **(उषसः)** प्रभात वेला की **(दधिक्रावेव)** धारणा करने वालों को प्राप्त होते के समान **(सम्, नमन्त)** अच्छे प्रकार नमते हैं वे **(अर्वाचीनम्)** तत्काल प्रसिद्ध हुए नवीन **(वसुविदम्)** धनों को प्राप्त होते हुए **(भगम्)** सर्व ऐश्वर्य्य युक्त जन को और **(नः)** हम लोगों को **(आ, वहन्तु)** सब ओर से उन्नति को पहुँचावें॥६॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जो मनुष्य प्रातःकाल उठ के वेगयुक्त घोड़ों के समान शीघ्र जाकर आकर आलस्य छोड़ ऐश्वर्य को पाय नम्र होते हैं, वे ही पवित्र परमात्मा को पा सकते हैं॥६॥

**पुनर्विदुष्यः स्त्रियः किं कुर्युरित्याह॥**

फिर विदुषी स्त्री क्या करें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अश्वावतीर्गोमतीर्न उषासो वीरवतीः सदमुच्छन्तु भद्राः।**

**घृतं दुहाना विश्वतः प्रपीता यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥७॥८॥**

**अश्वऽवतीः। गोऽमतीः। नः। उषसः। वीरऽवतीः। सदम्। उच्छन्तु। भद्राः। घृतम्। दुहानाः। विश्वतः। प्रऽपीताः। यूयम्। पात। स्वस्तिऽभिः। सदा। नः॥७॥**

**पदार्थः**-**(अश्वावतीः)** अश्वा महान्तः पदार्था विद्यन्ते यासु ताः **(गोमतीः)** गावो धेनवः किरणा विद्यन्ते यासु ताः **(नः)** अस्माकम् **(उषसः)** प्रभातवेला इव शोभमाना। अत्र **वा छन्दसी**त्युपधा दीर्घः। **(वीरवतीः)** वीरा विद्यन्ते यासु ताः **(सदम्)** सीदन्ति यस्मिन् तम् **(उच्छन्तु)** सेवन्ताम् **(भद्राः)** कल्याणकर्यः **(घृतम्)** उदकम् **(दुहानाः)** प्रपूरयन्त्यः **(विश्वतः)** **(प्रपीताः)** प्रकर्षेण पीता वर्धयित्र्यः **(यूयम्)** **(पात)** **(स्वस्तिभिः)** **(सदा)** **(नः)**॥७॥

**अन्वयः**-हे अध्यापकोपदेशिका विदुष्यस्त्रिय! उषास इवाश्वावतीर्गोमतीर्वीरवतीर्भद्राः प्रपीता विश्वतो घृतं दुहानाः भवत्यो नः सदमुच्छन्तु यूयं स्वस्तिभिर्नस्सदा पात॥७॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यथोषसस्सर्वान् निद्रास्थान् मृतककल्पान् चेतयित्वा कर्मसु प्रवर्तयन्ति तथैव सत्यो विदुष्यस्त्रियस्सर्वा स्त्रियोऽविद्यानिद्रास्था अध्यापनोपदेशाभ्यां चेतयित्वा सत्कर्मसु प्रेरयन्त्विति॥७॥

अत्र मनुष्याणां दिनचर्याप्रतिपादनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह संगतिर्वेद्या॥

**इत्येकचत्वारिंशत्तमं सूक्तमष्टमो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे पढ़ाने और उपदेश करने वाली पण्डिता स्त्रियो! तुम **(उषसः)** प्रभात वेला सी शोभती हुई **(अश्वावतीः)** जिन के समीप बड़े-बड़े पदार्थ विद्यमान **(गोमतीः)** वा किरणें विद्यमान **(वीरवतीः)** वा वीर विद्यमान **(भद्राः)** जो कल्याण करने **(प्रपीताः)** उत्तमता से बढ़ाने और **(विश्वतः)**



www.9009.co.in

सब ओर से **(घृतम्)** जल को **(दुहानाः)** पूरा करती हुईं आप **(नः)** हमारे **(सदम्)** स्थान को **(उच्छन्तु)** सेवो वह **(यूयम्)** तुम **(स्वस्तिभिः)** सुखों से **(नः)** हम लोगों की **(सदा)** सर्वदैव **(पात)** रक्षा कीजिये॥७॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे प्रभात वेला सब निद्रा में ठहरे हुए मरे हुए जैसों को चैतन्य करा कर्मों में युक्त कराती हैं, वैसे ही होती हुईं विदुषी स्त्रियाँ सब अविद्या निद्रास्थ स्त्रियों को पढ़ाने और उपदेश करने से अच्छे काम में प्रवृत्त करावें॥७॥

इस सूक्त में मनुष्यों की दिनचर्य्या का प्रतिपादन होने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह इकतालीसवां सूक्त और आठवां वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

**अथ षड्चस्य [द्विचत्वारिंशत्तमस्य] सूक्तस्य १-६ वसिष्ठर्षिः। विश्वेदेवा देवताः। १, ३ निचृत्त्रिष्टुप्। ४, ५ विराट् त्रिष्टुप्। २ त्रिष्टुप्छन्दः। धैवतः स्वरः। ६ निचृत्पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः॥**

***अथ पूर्णविद्या जनाः किं कुर्युरित्याह॥***

अब छः ऋचा वाले बयालीसवें सूक्त का प्रारम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में पूरी विद्या वाले जन क्या करें, इस विषय को कहते हैं॥

**प्र ब्रह्माणो अङ्गिरसो नक्षन्त प्र क्रन्दनुर्नभन्यस्य वेतु।**

**प्र धेनव उदप्रुतो नवन्त युज्यातामद्री अध्वरस्य पेशः॥ १॥**

**प्र। ब्रह्माणः। अङ्गिरसः। नक्षन्त। प्र। क्रन्दनुः। नभन्यस्य। वेतु। प्र। धेनवः। उदऽप्रुतः। नवन्त। युज्याताम्। अद्री इति। अध्वरस्य। पेशः॥ १॥**

**पदार्थः**-(**प्र**) (**ब्रह्माणः**) चतुर्वेदविदः (**अङ्गिरसः**) प्राणा इव सद्विद्यासु व्याप्ताः (**नक्षन्त**) व्याप्नुवन्तु (**प्र**) (**क्रन्दनुः**) आह्वाता (**नभन्यस्य**) नभस्यन्तरिक्षे पृथिव्यां सुखे वा भवस्य। **नभ इति साधारण नाम।** (निघं०१.४)। (**वेतु**) व्याप्नोतु प्राप्नोतु (**प्र**) (**धेनवः**) दुग्धदात्र्यो गाव इव वाचः (**उदप्रुतः**) उदकं प्राप्ता नद्य इव (**नवन्त**) स्तुवन्ति (**युज्याताम्**) युक्तौ भवतः (**अद्री**) मेघविद्युतौ (**अध्वरस्य**) अहिंसनीयस्य व्यवहारस्य (**पेशः**) सुरूपम्॥ १॥

**अन्वयः**-हे ब्रह्माणोऽङ्गिरसो विद्वांसः यथा क्रन्दनुर्नभन्यस्याध्वरस्य पेशः प्र वेत्वुदप्रुत इव धेनवोऽध्वरस्य पेशो नवन्त यथाऽद्री अध्वरस्य पेशो प्र युज्यातां तथा विद्यासु भवन्तः प्र नक्षन्त॥ १॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। ये चतुर्वेदविदो विद्वांसोऽहिंसादिलक्षणस्य धर्मस्य स्वरूपं बोधयन्ति ते स्तुत्या भवन्ति॥ १॥

**पदार्थः**-हे (**ब्रह्माणः**) चारों वेदों के जानने वाले जनो! (**अङ्गिरसः**) प्राणों के समान विद्वान् जन जैसे (**क्रन्दनुः**) बुलाने वाला (**नभन्यस्य**) अन्तरिक्ष पृथिवी वा सुख में उत्पन्न हुए (**अध्वरस्य**) न नष्ट करने योग्य व्यवहार के (**पेशः**) सुन्दर रूप को (**प्र, वेतु**) अच्छे प्रकार प्राप्त हो वा (**उदप्रुतः**) उदक जल को प्राप्त हुईं नदियों के समान (**धेनवः**) और दूध देने वाली गौओं के समान वाणी अहिंसनीय व्यवहार के रूप की (**नवन्त**) स्तुति करती हैं और जैसे (**अद्री**) मेघ और बिजुली अहिंसनीय व्यवहार के रूप को (**प्र, युज्याताम्**) प्रयुक्त हों आप लोग वैसी विद्याओं में (**प्र, नक्षन्त**) व्याप्त होओ॥ १॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो चारों वेद के जानने वाले विद्वान् जन, अहिंसादिलक्षण हैं जिसके ऐसे धर्म के स्वरूप का बोध कराते हैं, वे स्तुति करने योग्य होते हैं॥ १॥

**के विद्वांसः श्रेष्ठास्सन्तीत्याह॥**



www.9009.co.in

कौन विद्वान् जन श्रेष्ठ होते हैं, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**सुगस्ते अग्ने सनवित्तो अध्वा युक्ष्वा सुते हरितो रोहितश्च।**

**ये वा सद्मन्नरुषा वीरवाहो हुवे देवानां जनिमानि सत्तः॥ २॥**

**सुऽगः। ते। अग्ने। सनऽवित्तः। अध्वा। युक्ष्व। सुते। हरितः। रोहितः। च। ये। वा। सद्मन्। अरुषाः। वीरऽवाहः। हुवे। देवानाम्। जनिमानि। सत्तः॥ २॥**

**पदार्थः**-(**सुगः**) सुष्ठु गच्छन्ति यस्मिन्सः (**ते**) तव (**अग्ने**) पावक इव विद्याप्रकाशित (**सनवित्तः**) यः सनातनेन वेगेन वित्तः लब्धः (**अध्वा**) मार्गः (**युङ्क्ष्वा**) युक्तो भव (**सुते**) उत्पन्नेऽस्मिन् जगति (**हरितः**) दिश इव। **हरित इति दिङ्नाम।** (निघं०१.६) (**रोहितः**) नद्य इव। **रोहित इति नदीनाम।** (निघं०१.१३) (**च**) (**ये**) (**वा**) (**सद्मन्**) सद्मनि स्थाने (**अरुषाः**) रक्तादिगुणविशिष्टाः (**वीरवाहः**) ये वीरान् वहन्ति प्रापयन्ति ते (**हुवे**) प्रशंसेयम् (**देवानाम्**) विदुषाम् (**जनिमानि**) जन्मानि (**सत्तः**) निषण्णः॥ २॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! सुतेऽस्मिन् जगति ये हरितो रोहितश्चेव सद्मन्नरुषा वीरवाहो वा सन्ति तेषां देवानां जनिमानि सत्तोऽहं हुवे तथा यस्ते सुगः सनवित्तोऽध्वास्ति यमहं हुवे तं त्वं युङ्क्ष्व॥ २॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। त एव विद्वांसः श्रेष्ठास्सन्ति ये सनातनं वेदप्रतिपाद्यं धर्मनुष्ठायानुष्ठापयन्ति तेषामेव विदुषां जन्म सफलं भवति ये पूर्णा विद्याः प्राप्य धर्मात्मानो भूत्वा प्रीत्या सर्वान् सुशिक्षयन्ति॥ २॥

**पदार्थः**-हे (**अग्ने**) अग्नि के समान विद्याप्रकाशित! (**सुते**) उत्पन्न हुए इस जगत् में (**ये**) जो (**हरितः**) दिशाओं के समान (**च**) और (**रोहितः**) नदियों के समान (**सद्मन्**) स्थान में (**अरुषाः**) लालगुणयुक्त (**वीरवाहः**) वीरों को पहुँचाने वाले हैं उन (**देवानाम्**) विद्वानों के (**जनिमानि**) जन्मों को (**सत्तः**) आसत्त हुआ मैं (**हुवे**) प्रशंसा करता हूँ, वैसे जो आप का (**सुगः**) अच्छे जाते हैं जिस में वह (**सनवित्तः**) सनातन वेग से प्राप्त (**अध्वा**) मार्ग है जिसकी कि मैं प्रशंसा करूं उसको आप (**युङ्क्ष्व**) युक्त करो॥ २॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। वे ही विद्वान् जन श्रेष्ठ हैं जो सनातन वेदप्रतिपादित धर्म का अनुष्ठान करके कराते हैं, उन्हीं विद्वानों का जन्म सफल होता है, जो पूर्ण विद्या को पाकर धर्मात्मा होकर प्रीति के साथ सब को अच्छी शिक्षा दिलाते हैं॥ २॥

**पुनर्विद्वांसः किं कुर्युरित्याह॥**

फिर विद्वान् क्या करें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**समु वो यज्ञं महयन्नमोभिः प्र होता मन्द्रो रिरिच उपाके।**

**यजस्व सु पुर्वणीक देवाना यज्ञियामरमतिं ववृत्याः॥ ३॥**



www.9009.co.in

**सम्। ऊँ इति। वः। यज्ञम्। महयन्। नमःऽभिः। प्र। होता। मन्द्रः। रिरिचे। उपाके। यजस्व। सु। पुरुऽअनीक। देवान्। आ। यज्ञियाम्। अरमतिम्। ववृत्याः॥३॥**

**पदार्थः**-(**सम्**) (उ) (**वः**) युष्माकम् (**यज्ञम्**) विद्याप्रचारमयम् (**महयन्**) सत्कुर्वन्ति (**नमोभिः**) अन्नादिभिः (**प्र**) (**होता**) दाता (**मन्द्रः**) आनन्दप्रदः (**रिरिचे**) अन्यायात् पृथग्भव (**उपाके**) समीपे (**यजस्व**) सङ्गच्छस्व (**सु**) (**पुर्वणीक**) पुरूण्यनीकानि सैन्यानि यस्य तत्सम्बुद्धौ (**देवान्**) विदुषः (**आ**) (**यज्ञियाम्**) या यज्ञमर्हति ताम् (**अरमतिम्**) पूर्णां प्रज्ञाम् (**ववृत्याः**) प्रवर्त्तय॥३॥

**अन्वयः**-हे पुर्वणीक राजन्! त्वं देवान् सुयजस्व यज्ञियामरमतिमा ववृत्याः मन्द्रो होता सन्नुपाके प्र रिरिचे, हे विद्वांसो! ये नमोभिर्वो यज्ञं सम्महयन् तानु यूयं सत्कुरुत॥३॥

**भावार्थः**-ये विद्वांसः सत्कर्मानुष्ठानाख्यं यज्ञमनुतिष्ठन्ति ते पुष्कलवीरसेनास्सन्तः सर्वेषामानन्दप्रदा भवन्ति॥३॥

**पदार्थः**-हे (**पुर्वणीक**) बहुत सेनाओं वाले राजा! आप (**देवान्**) विद्वानों को (**सु, यजस्व**) अच्छे प्रकार प्राप्त होओ (**यज्ञियाम्**) जो यज्ञ के योग्य होती उस (**अरमतिम्**) पूरी मति को (**आ, ववृत्याः**) प्रवृत्त कराओ (**मन्द्रः**) आनन्द देने वा (**होता**) दान करने वाले होते हुए (**उपाके**) समीप में (**प्र, रिरिचे**) अन्याय से अलग रहिये, हे विद्वानो! जो (**नमोभिः**) अन्नादिकों से (**वः**) तुम लोगों के (**यज्ञम्**) विद्याप्रचारमय यज्ञ का (**सम्, महयन्**) सम्मान करते हैं (**उ**) उन्हीं का तुम सत्कार करो॥३॥

**भावार्थः**-जो विद्वन् जन सत्कर्मानुष्ठानयज्ञ का अनुष्ठान करते हैं, वे पुष्कल वीर सेना वाले होते हुए सबको आनन्द देने वाले होते हैं॥३॥

**पुनरतिथिगृहस्थाः परस्परं किं कुर्युरित्याह॥**

फिर अतिथि और गृहस्थ परस्पर क्या करें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**यदा वीरस्य रेवतो दुरोणे स्योनशीरतिथिराचिकेतत्।**

**सुप्रीतो अग्निः सुधितो दम आ स विशे दाति वार्यमियत्यै॥४॥**

**यदा। वीरस्य। रेवतः। दुरोणे। स्योनऽशीः। अतिथिः। आऽचिकेतत्। सुऽप्रीतः। अग्निः। सुऽधितः। दमे। आ। सः। विशे। दाति। वार्यम्। इयत्यै॥४॥**

**पदार्थः**-(**यदा**) (**वीरस्य**) (**रेवतः**) बहुधनयुक्तस्य (**दुरोणे**) गृहे (**स्योनशीः**) यः सुखेन शेते सः (**अतिथिः**) सत्योपदेशकः (**आचिकेतत्**) समन्ताद्विजानाति (**सुप्रीतः**) सुष्ठु प्रसन्नः (**अग्निः**) पावक इव पवित्रतेजस्वी (**सुधितः**) सुष्ठु हितकारी (**दमे**) गृहे (**आ**) (**सः**) (**विशे**) प्रजायै (**दाति**) ददाति (**वार्यम्**) वरणीयं विज्ञानं (**इयत्यै**) सुखप्राप्तीच्छायै॥४॥



www.9009.co.in

।अन्वयः-यदा स्योनशीरतिथी रेवतो वीरस्य दुरोण आ चिकेतत्तदा सोऽग्निरिव सुधितः सुप्रीतो गृहस्थस्य दमे इयत्यै विशे वार्यमा दाति॥४॥

**भावार्थः-**अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे मनुष्याः! यदा विद्वान् धार्मिक उपदेशकोऽतिथिर्युष्माकं गृहाण्यागच्छेत्तदा सम्यगेनं सत्कुरुत। हे अतिथे! यदा यत्र यत्र भवान् रमणं कुर्यात्तत्र सर्वेभ्यः सत्यमुपदिशेत्॥४॥

**पदार्थः-** **(यदा)** जब **(स्योनशीः)** सुख से सोने वाला **(अतिथिः)** सत्य उपदेशक **(रेवतः)** बहुत धन वाले **(वीरस्य)** वीर के **(दुरोणे)** घर में **(आ, चिकेतत्)** सब ओर से जानता है तब **(सः)** वह **(अग्निः)** अग्नि के समान पवित्र **(सुधितः)** अच्छा हित करने वाला **(सुप्रीतः)** सुन्दर प्रसन्न गृहस्थ के **(दमे)** घर में **(इयत्यै)** सुखप्राप्ति की इच्छा के लिये **(विशे)** और प्रजा सन्तान के लिये **(वार्यम्)** स्वीकार करने योग्य विज्ञान को **(आ, दाति)** सब ओर से देता है॥४॥

**भावार्थः-**इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जब विद्वान् धार्मिक उपदेश करने वाला अतिथि जन तुम्हारे घरों को आवे तब अच्छे प्रकार उसका सत्कार करो, हे अतिथि! जब जहाँ-जहाँ आप रमण भ्रमण करें, वहाँ-वहाँ सब के लिये सत्य उपदेश करें॥४॥

**पुनस्ते गृहस्थातिथयः परस्परस्मै किं किं कुर्युरित्याह॥**

फिर वे गृहस्थ अतिथि परस्पर के लिये क्या करें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**इ॒मं नो॑ अग्ने अध्व॒रं जु॑षस्व म॒रुत्स्विन्द्रे॑ य॒शसं॑ कृधी नः।**

**आ नक्ता॑ ब॒र्हिः स॑दतामु॒षासो॒शन्ता॑ मि॒त्रावरु॑णा यजे॒ह॥५॥**

**इ॒मम्। न॒ः। अ॒ग्ने॒। अ॒ध्व॒रम्। जु॒ष॒स्व॒। म॒रुत्ऽसु॑। इन्द्रे॑। य॒शस॑म्। कृ॒धि॒। न॒ः। आ। नक्ता॑। ब॒र्हिः। स॒द॒ता॒म्। उ॒षसा॑। उ॒शन्ता॑। मि॒त्रावरु॑णा। य॒ज॒। इ॒ह॥५॥**

**पदार्थः-(इमम्)** **(नः)** अस्माकम् **(अग्ने)** पावक इव विद्याप्रकाशितातिथे **(अध्वरम्)** उपदेशाख्यं यज्ञम् **(जुषस्व)** **(मरुत्सु)** मनुष्येषु **(इन्द्रे)** राजनि **(यशसम्)** कीर्तिम् **(कृधि)** अत्र **द्व्यच०** इति दीर्घः। **(नः)** अस्माकम् **(आ)** **(नक्ता)** रात्रिम् **(बर्हिः)** उत्तमासनम् **(सदताम्)** आसीदेत् **(उषसा)** दिनेन **(उशन्ता)** कामयमानौ **(मित्रावरुणा)** प्राणोदानाविव स्त्रीपुरुषौ **(यज)** **(इह)** अस्मिन् जगति॥५॥

**अन्वयः-**हे अग्ने! त्वं मरुत्स्विन्द्रे न इममध्वरं सततं जुषस्व नोऽस्माकं यशसं कृधि नक्तोषासा बर्हिरासदतामिहोशन्ता मित्रावरुणा त्वं यज॥५॥

**भावार्थः-**यदाऽतिथिरागच्छेत्तदा गृहस्था अर्घ्यपाद्यासनमधुपर्कप्रियवचनान्नादिभिः सत्कृत्य पृष्ट्वा सत्यासत्यनिर्णयं कुर्वन्त्वतिथिश्च प्रश्नान् समादधातु॥५॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-हे **(अग्ने)** अग्नि के समान विद्या से प्रकाशित अतिथि! आप **(मरुत्सु)** मनुष्यों के **(इन्द्रे)** और राजा के निमित्त **(नः)** हम लोगों के **(इमम्)** इस **(अध्वरम्)** उपदेशरूपी यज्ञ को निरन्तर **(जुषस्व)** सेवो **(नः)** हमारी **(यशसम्)** कीर्ति की वृद्धि **(कृधि)** करो **(नक्तोषासा)** रात्रि को दिन के साथ **(बर्हिः)** तथा उत्तम आसन को **(आ, सदताम्)** स्वीकार करो स्थिर होओ और **(इह)** इस जगत् में **(उशन्ता)** कामना करते हुए **(मित्रावरुणा)** प्राण और उदान के समान स्त्री-पुरुषों को आप **(यज)** मिलो॥५॥

**भावार्थः**-जब अतिथि आवें तब गृहस्थ अर्घ्य, पाद्य, आसन, मधुपर्क, वचन और अन्नादिकों से उसका सत्कार कर और पूछ कर सत्य और असत्य का निर्णय करें और अतिथि भी प्रश्नों के समाधान देवें॥५॥

**धनकामाः पुरुषाः किं कुर्युरित्याह॥**

धन की कामना करने वाले क्या करें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**एवाग्निं सहस्यं१ वसिष्ठो रायस्कामो विश्वप्स्न्यस्य स्तौत्।**

**इषं रयिं पप्रथद्वाजमस्मे यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥६॥९॥**

**एव। अग्निम्। सहस्यम्। वसिष्ठः। रायःऽकामः। विश्वप्स्न्यस्य। स्तौत्। इषम्। रयिम्। पप्रथत्। वाजम्। अस्मे इति। यूयम्। पात। स्वस्तिऽभिः। सदा। नः॥६॥**

**पदार्थः**-**(एव)** **(अग्निम्)** पावकम् **(सहस्यम्)** सहसि भवम् **(वसिष्ठः)** अतिशयेन वसुः **(रायस्कामः)** रायो धनस्य काम इच्छा यस्य सः **(विश्वप्स्न्यस्य)** विश्वेषु समग्रेषु स्नुषु स्वरूपेषु भवस्य **(स्तौत्)** स्तौति **(इषम्)** अन्नादिकम् **(रयिम्)** श्रियम् **(पप्रथत्)** प्रथयति **(वाजम्)** विज्ञानमन्नं वा **(अस्मे)** अस्माकम् **(यूयम्)** **(पात)** **(स्वस्तिभिः)** **(सदा)** **(नः)**॥६॥

**अन्वयः**-यो रायस्कामो वसिष्ठो विश्वप्स्न्यस्य सहस्यमग्निं स्तौत् स एवास्मे इषं रयिं वाजं पप्रथत्, हे अतिथयः! यूयं स्वस्तिभिर्नोऽस्मान् सदा पात॥६॥

**भावार्थः**-यस्य धनस्य कामना स्यात् स मनुष्योऽग्न्यादि विद्यां गृह्णीयात् येऽतिथिसेवां कुर्वन्ति तानतिथयोऽधर्माचरणात् पृथक्सदा रक्षन्तीति॥६॥

अत्र विश्वेदेवगुणकृत्यवर्णानादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह संगतिर्वेद्या॥

**इति द्विचत्वारिंशत्तमं सूक्तं नवमो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-जो **(रायस्कामः)** धन की कामना वाला **(वसिष्ठः)** अतीव निवासकर्ता जन **(विश्वप्स्न्यस्य)** समग्र रूपों में और **(सहस्यम्)** बल में हुए **(अग्निम्)** अग्नि की **(स्तौत्)** स्तुति करता है **(एव)** वही **(अस्मे)** हमारी **(इषम्)** अन्नादि सामग्री **(रयिम्)** लक्ष्मी **(वाजम्)** विज्ञान वा अन्न को



www.9009.co.in

**(पप्रथत्)** प्रसिद्ध करता है, हे अतिथि जनो! **(यूयम्)** तुम **(स्वस्तिभिः)** सुखों से **(नः)** हम लोगों की **(सदा)** सदैव **(पात)** रक्षा करो॥६॥

**भावार्थः**-जिसको धन की कामना हो, वह मनुष्य अग्न्यादि विद्या को ग्रहण करे, जो अतिथियों की सेवा करते हैं, उनको अतिथि लोग अधर्म के आचरण से सदा अलग रखते हैं॥६॥

इस सूक्त में विश्वेदेवों के गुणों का वर्णन होने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ संगति जाननी चाहिये॥

**यह बयालीसवां सूक्त और नवम वर्ग पूरा हुआ॥**



www.9009.co.in

**अथ पञ्चर्चस्य [त्रिचत्वारिंशत्तमस्य] सूक्तस्य वसिष्ठर्षिः। विश्वेदेवा देवताः। १ निचृत्त्रिष्टुप्। ४ त्रिष्टुप्। ३ विराट् त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः। २, ५ भुरिक्पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः॥**

***पुनरतिथिगृहस्थाः परस्परस्मै किं किं प्रदद्युरित्याह॥***

अब पांच ऋचा वाले तेतालीसवें सूक्त का आरम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में फिर अतिथि और गृहस्थ एक दूसरे के लिये क्या क्या देवें, इस विषय को कहते हैं॥

**प्र वो॑ य॒ज्ञेषु॑ देव॒यन्तो॑ अर्च॒न् द्यावा॒ नमो॑भिः पृथि॒वी इ॒षध्यै॑।**

**येषा॒ं ब्रह्मा॒ण्यस॑मानि॒ विप्रा॒ विष्व॑ग्वि॒यन्ति॑ व॒निनो॒ न शाखाः॑॥ १॥**

**प्र। व॒ः। य॒ज्ञेषु॑। दे॒व॒ऽयन्तः॑। अ॒र्च॒न्। द्यावा॑। नम॑ःऽभिः। पृ॒थि॒वी इति॑। इ॒षध्यै॑। येषा॑म्। ब्रह्मा॑णि। अस॑मानि। विप्रा॑ः। विष्व॑क्। वि॒ऽयन्ति॑। व॒निन॑ः। न। शाखा॑ः॥ १॥**

**पदार्थः**-(**प्र**) (**वः**) युष्मान् (**यज्ञेषु**) विद्याप्रचारादिव्यवहारेषु (**देवयन्तः**) कामयमानाः (**अर्चन्**) अर्चन्ति सत्कुर्वन्ति (**द्यावा**) सूर्यम् (**नमोभिः**) अन्नादिभिः (**पृथिवी**) भूमिम् (**इषध्यै**) एष्टुं ज्ञातुम् (**येषाम्**) (**ब्रह्माणि**) धनान्यन्नानि वा (**असमानि**) अन्येषां धनैरतुल्यान्यधिकानीति यावत् (**विप्राः**) मेधाविनः (**विष्वक्**) विषु व्याप्तं अञ्चतीति (**वि, यन्ति**) व्याप्नुवन्ति (**वनिनः**) वनसम्बन्धो विद्यते येषां ते (**न**) इव (**शाखाः**) याः खेऽन्तरिक्षे शेरते ताः॥ १॥

**अन्वयः**-हे विप्राः! येषामसमानि ब्रह्माणि वनिनः शाखा न विष्वग्वि यन्ति ये नमोभिरिषध्यै द्यावापृथिवी यज्ञेषु देवयन्तो वो युष्मान् प्रार्चंस्तान् भवन्तोऽपि सत्कुर्वन्तु॥ १॥

**भावार्थः**-हे अतिथयो विद्वांसो! यथा गृहस्था अन्नादिभिर्युष्मान् सत्कुर्युस्तथा यूयं विज्ञानदानेन गृहस्थान् सततं प्रीणन्तु॥ १॥

**पदार्थः**-हे (**विप्राः**) बुद्धिमानो! (**येषाम्**) जिनको (**असमानि**) औरों के धनों से न समान किन्तु अधिक (**ब्रह्माणि**) धन वा अन्न (**वनिनः**) वन सम्बन्ध रखने और (**शाखाः**) अन्तरिक्ष में सोनेवाली शाखाओं के (**न**) समान (**विष्यक्**) अनुकूल व्याप्ति जैसे हो, वैसे (**वि, यन्ति**) व्याप्त होते हैं वा जो (**नमोभिः**) अन्नादिकों से (**इषध्यै**) इच्छा करने वा जानने को (**द्यावापृथिवी**) सूर्य और भूमि की (**यज्ञेषु**) विद्याप्रचारदि व्यवहारों में (**देवयन्तः**) कामना करते हुए (**वः**) तुम लोगों का (**प्रार्चन्**) अच्छा सत्कार करते हैं, उनका तुम भी सत्कार करो॥ १॥

**भावार्थः**-हे अतिथि विद्वानो! जैसे गृहस्थ जन अन्नादि पदार्थों के साथ आपका सत्कार करें, वैसे तुम विज्ञानदान से गृहस्थों को निरन्तर प्रसन्न करो॥ १॥

**पुनर्मनुष्याः कीदृशा भवेयुरित्याह॥**

फिर मनुष्य कैसे हों, इस विषय को अगले मन्त्र में कहेत हैं॥



www.9009.co.in

**प्र यज्ञ एतु हेत्वो न सप्तिरुद्यच्छध्वं समनसो घृताचीः।**

**स्तृणीत बर्हिरध्वराय साधूर्ध्वा शोचींषि देवयून्यस्थुः॥ २॥**

**प्र। यज्ञः। एतु। हेत्वः। न। सप्तिः। उत्। यच्छध्वम्। सऽमनसः। घृताचीः। स्तृणीत। बर्हिः। अध्वराय। साधु। ऊर्ध्वा। शोचींषि। देवऽयूनि। अस्थुः॥ २॥**

**पदार्थः**-**(प्र)** प्रकर्षे **(यज्ञः)** विज्ञानमयः संगन्तुमर्हः **(एतु)** प्राप्नोतु **(हेत्वः)** प्रवृद्धो वेगवान् **(न)** इव **(सप्तिः)** अश्वः **(उत्)** **(यच्छध्वम्)** उद्यमिनः कुरुत **(समनसः)** सज्ञानाः समानमनसः **(घृताचीः)** या घृतमुदकमञ्चन्ति ता रात्रीः। **घृताचीति रात्रिनाम।** (निघं १.७) **(स्तृणीत)** आच्छादयत **(बर्हिः)** अन्तरिक्षम् **(अध्वराय)** अहिंसामयाय यज्ञाय **(साधु)** समीचीनतया **(ऊर्ध्वा)** ऊर्ध्वं गन्तॄणि **(शोचींषि)** तेजांसि **(देवयूनि)** देवान् दिव्यान् गुणान् कुर्वन्ति **(अस्थुः)** तिष्ठन्ति॥ २॥

**अन्वयः**-हे समनसो विद्वांसो! यान् युष्मान् यज्ञ एतु ते यूयं हेत्वस्सप्तिर्न सर्वान् प्रोद्यच्छध्वं यस्योर्ध्वा देवयूनि शोचींष्यस्थुस्तस्मादध्वराय यूयं घृताचीर्बर्हिश्च साधु स्तृणीत॥ २॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। हे गृहस्था! येन वायूदकौषधयः पवित्रा जायन्ते तं यज्ञं सततमनुतिष्ठन्तु यज्ञधूमेनान्तरिक्षमाच्छादयत, हे अतिथयो! यूयं सर्वान् मनुष्यान् सारथिरश्वानिव धर्मकृत्येषूद्यमिनः कृत्वैषामालस्यं दूरीकुरुत यदेतान् सकला श्रीः प्राप्नुयात्॥ २॥

**पदार्थः**-हे **(समनसः)** समान ज्ञान वा समान मन वाले विद्वानो! जिन आप लोगों को **(यज्ञः)** विज्ञानमय संग करने योग्य व्यवहार **(एतु)** प्राप्त हो वे आप लोग **(हेत्वः)** अच्छे बड़े हुए वेगवान् **(सप्तिः)** घोड़ा के **(न)** समान सब को **(प्र, उत्, यच्छध्वम्)** अतीव उद्यमी करो जिसके **(ऊर्ध्वा)** ऊपर जाने वाले **(देवयूनि)** दिव्य उत्तम गुणों को करते हुए **(शोचींषि)** तेज **(अस्थुः)** स्थिर होते हैं उससे **(अध्वराय)** अहिंसामय यज्ञ के लिये आप **(घृताचीः)** रात्रियों और **(बर्हिः)** अन्तरिक्ष को **(साधु)** समीचीनता से **(स्तृणीत)** आच्छादित करो॥ २॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे गृहस्थो! जिससे वायु, जल और ओषधि पवित्र होती हैं, उस यज्ञ का निरन्तर अनुष्ठान करो, यज्ञ धूम से अन्तरिक्ष को ढांपो। हे अतिथियो! तुम सब मनुष्यों को सारथि, घोड़ों को जैसे, वैसे धर्म कामों में उद्यमी कर इनका आलस्य दूर करो, जिससे इनको समस्त लक्ष्मी प्राप्त हो॥ २॥

**पुनर्विद्वांसः किं कुर्युरित्याह॥**

फिर विद्वान् जन क्या करें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**आ पुत्रासो न मातरं विभृत्राः सानौ देवासो बर्हिषः सदन्तु।**

**आ विश्वाची विदथ्यामनक्त्वग्ने मा नो देवताता मृधस्कः॥ ३॥**



www.9009.co.in

आ। पुत्रासः। न। मातरम्। विऽभृत्राः। सानौ। देवासः। बर्हिषः। सदन्तु। आ। विश्वाची। विदथ्याम्। अनक्तु। अग्ने। मा। नः। देवऽताता। मृधः। कुरिति कः॥३॥

**पदार्थः**-(आ) (पुत्रासः) पुत्राः (न) इव (मातरम्) (विभृत्राः) विशेषेण पोषकाः (सानौ) ऊर्ध्वे देशे (देवासः) विद्वांसः (बर्हिषः) प्रवृद्धाः (सदन्तु) आसीदन्तु (आ) (विश्वाची) या विश्वमञ्चति (विदथ्याम्) विदथेषु गृहेषु साध्वीं नीतिम् (अनक्तु) कामयताम् (अग्ने) विद्वन् (मा) (नः) अस्माकम् (देवताता) दिव्यगुणप्रापके यज्ञे (मृध्रः) हिंस्रान् (कः) कुर्याः॥३॥

**अन्वयः**-हे अग्ने! यथा विश्वाची विदथ्यामानक्तु तदुपदेशेन त्वं नो देवताता मृधो मा कः ये देवासो सानौ विभृत्राः पुत्रासो मातरन्न बर्हिषः आ सदन्तु ताँस्त्वं कामयस्व॥३॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। सैव मातोत्तमा या ब्रह्मचर्येण विदुषी भूत्वा सन्तानान् सुशिक्ष्य विद्ययैषामुन्नतिं कुर्यात् स एव पिता श्रेष्ठोऽस्ति यो हिंसादिदोषरहितान् सन्तानान् कुर्यात् त एव विद्वांसः प्रशस्ताः सन्ति येऽन्यान् मनुष्यान् मातृवत् पालयन्ति॥३॥

**पदार्थ**:-हे (अग्ने) विद्वान्! जैसे (विश्वाची) विश्व को प्राप्त होने वाली (विदथ्याम्) घरों में नीति को (आ, अनक्तु) सब ओर से चाहे उसके उपदेश से आप (नः) हमारे (देवताता) दिव्य गुणों की प्राप्ति कराने वाले यज्ञ में (मृधः) हिंसकों को (मा) मत (कः) करें जो (देवासः) विद्वान् जन (सानौ) ऊपर ले देश स्थान में (विभृत्राः) विशेष कर पुष्टि करने वाले (पुत्रासः) पुत्र जैसे (मातरम्) माता को (न) वैसे (बर्हिषः) उत्तम वृद्ध जन (आ, सदन्तु) स्थिर हों, उनकी आप कामना करें॥२॥

**भावार्थ**:-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। वही माता उत्तम है जो ब्रह्मचर्य से विदुषी होकर सन्तानों को अच्छी शिक्षा देकर विद्या से इनकी उन्नति करे, वही पिता श्रेष्ठ हैं जो हिंसादि दोषरहित सन्तान करे, वे ही विद्वान् प्रशंसा पाये हैं जो और मनुष्यों को माँ के समान पालते हैं॥३॥

**पुनर्मनुष्याः किं कुर्युरित्याह॥**

फिर मनुष्य क्या करें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**ते सीषपन्त जोषमा यजत्रा ऋतस्य धाराः सुदुघा दुहानाः।**
**ज्येष्ठं वो अद्य मह आ वसूनामा गन्तन समनसो यति ष्ठ॥४॥**

ते। सीषपन्त। जोषम्। आ। यजत्राः। ऋतस्य। धाराः। सुऽदुघाः। दुहानाः। ज्येष्ठम्। वः। अद्य। महः। आ। वसूनाम्। आ। गन्तन। सऽमनसः। यति। स्थ॥४॥

**पदार्थः**-(ते) (सीषपन्त) शपथान् कुरुत (जोषम्) पूर्णम् (आ) (यजत्रा) संगन्तारः (ऋतस्य) सत्यस्य (धाराः) वाचः (सुदुघाः) कामानां पूरयित्रीः (दुहानाः) पूर्णशिक्षाविद्याः (ज्येष्ठम्) (वः) युष्मान् (अद्य) (महः) महत् (आ) (वसूनाम्) धनानाम् (आ) (गन्तन) प्राप्नुत (समनसः) समानविज्ञानाः (यति) प्रयतन्ते यस्मिन् तस्मिन् (स्थ) भवत॥४॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-ये यजत्रा जोषमासीषपन्त ते समनस ऋतस्य सुदुघा दुहाना धारा आ गन्तन यत्यास्थ हे धार्मिका! वो युष्मान् वसूनां महो ज्येष्ठमद्य प्राप्नोतु॥४॥

**भावार्थः**-ये सत्यवादिनः सत्यकर्तारः सत्यमन्तारो भवन्ति ते पूर्णकामा भूत्वा सर्वान् मनुष्यान् विदुषः कर्तुं शक्नुवन्ति॥४॥

**पदार्थः**-जो **(यजत्राः)** संग करने वाले **(जोषम्)** पूरी **(आ, सीषपन्त)** शौ [=शपथों को] करें **(ते)** वे **(समनसः)** एक से विज्ञान वाले जन **(ऋतस्य)** सत्य की **(सुदुघाः)** कामनाओं की पूरी करने वाली **(दुहानाः)** पूर्ण शिक्षा शिक्षायुक्त **(धाराः)** वाणियों को **(आ, गन्तन)** प्राप्त हों और **(यति)** जिनमें यत्न करते हैं उस व्यवहार में **(आ, स्थ)** स्थिर हों, हे धार्मिक सज्जनो! **(वः)** तुम लोगों को **(वसूनाम्)** धनों का **(महः)** महान् **(ज्येष्ठम्)** प्रशंसित भाग **(अद्य)** आज प्राप्त हो॥४॥

**भावार्थः**-जो सत्य कहने, सत्य करने और सत्य मानने वाले होते हैं वे पूर्णकाम होकर सब मनुष्यों को विद्वान् कर सकते हैं॥४॥

**पुनर्मनुष्याः किं कुर्युरित्याह॥**

फिर मनुष्य क्या करें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**एवा नो अग्ने विक्ष्वा दशस्य त्वया वयं सहसावन्नास्क्राः।**

**राया युजा सधमादो अरिष्टा यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥५॥१०॥**

**एव। नः। अग्ने। विक्षु। आ। दशस्य। त्वया। वयम्। सहसाऽवन्। आस्क्राः। राया। युजा। सधऽमादः। अरिष्टाः। यूयम्। पात। स्वस्तिऽभिः। सदा। नः॥५॥**

**पदार्थः**-**(एवा)** अत्र **निपातस्य चे**ति दीर्घः। **(नः)** अस्मान् **(अग्ने)** विद्वन् **(विक्षु)** प्रजासु **(आ)** **(दशस्य)** देहि **(त्वया)** [त्वया] सह **(वयम्)** **(सहसावन्)** बहुबलयुक्त **(आस्क्राः)** समन्तादाहूताः **(राया)** धनेन **(युजा)** युक्तेन **(सधमादः)** समानस्थानाः **(अरिष्टाः)** अहिंसिताः **(यूयम्)** **(पात)** **(स्वस्तिभिः)** **(सदा)** **(नः)** अस्मान्॥५॥

**अन्वयः**-हे सहसावन्नग्ने! त्वं विक्षु नो धनं दशस्य यतस्त्वया सह युजा वयं राया सधमाद आस्क्रा अरिष्टास्स्याम यूयं स्वस्तिभिर्नः सदा पात तानेव वयमपि रक्षेमहि॥५॥

**भावार्थः**-हे विद्वांसो! यूयमस्मान् विद्याः प्रदत्त येन वयं प्रजासूत्तमानि धनादीनि प्राप्य युष्मान् सततं रक्षेम॥५॥

अत्र विश्वेदेवगुणकृत्यवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह संगातिर्वेद्या॥

**इति त्रिचत्वारिंशत्तमं सूक्तं दशमो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे **(सहसावन्)** बहुबलयुक्त **(अग्ने)** विद्वान्! आप **(विक्षु)** प्रजाजनों में **(नः)** हम लोगों को धन **(दशस्य)** देओ जिससे **(त्वया)** तुम्हारे साथ **(युजा)** युक्त **(वयम्)** हम लोग **(राया)**



www.9009.co.in

धन से **(सधमादः)** तुल्य स्थान वाले **(आस्क्राः)** सब ओर से बुलावें और **(अरिष्टाः)** अविनष्ट हों **(यूयम्)** तुम **(स्वस्तिभिः)** सुखों से **(नः)** हम लोगों की **(सदा)** सर्वदा **(पात)** रक्षा करो **(एव)** उन्हीं की हम लोग भी रक्षा करें॥५॥

**भावार्थः**-हे विद्वानो! तुम हम को विद्या देओ, जिससे हम लोग प्रजाजनों में उत्तम धन आदि पाकर तुम्हारी सदैव रक्षा करें॥५॥

इस सूक्त में विश्वेदेवों के गुण और कामों का वर्णन होने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ संगति जाननी चाहिये॥

**यह तयालीसवां सूक्त और दशवां वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

अथ पञ्चर्चस्य [चतुश्चत्वारिंशत्तमस्य] सूक्तस्य वसिष्ठर्षिः। लिङ्गोक्ता देवताः। १ निचृज्जगती छन्दः। निषादः स्वरः। २, ३ निचृत्त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः। ४, ५ पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः॥

*मनुष्यैः सृष्टिविद्यया सुखं वर्धनीयमित्याह॥*

अब चवालीसवें सूक्त का प्रारम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में मनुष्यों को सृष्टिविद्या से सुख बढ़ाना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**द॒धि॒क्रां वः॑ प्रथ॒मम॒श्विनो॒षस॑म॒ग्निं समि॑द्धं॒ भग॑मू॒तये॑ हुवे।**
**इन्द्रं॒ विष्णुं॑ पू॒षणं॒ ब्रह्म॑ण॒स्पति॑मादि॒त्यान् द्यावा॑पृथि॒वी अ॒पः स्वः॑॥ १॥**

**द॒धि॒ऽक्राम्। व॒ः। प्र॒थ॒मम्। अ॒श्विना॑। उ॒षस॑म्। अ॒ग्निम्। सम्ऽइ॑द्धम्। भग॑म्। ऊ॒तये॑। हु॒वे॒। इन्द्र॑म्। विष्णु॑म्। पू॒षण॑म्। ब्रह्म॑णः। पति॑म्। आ॒दि॒त्यान्। द्यावा॑पृथि॒वी इति॑। अ॒पः। स्व॒१॒॑रिति॑ स्वः॑॥ १॥**

**पदार्थः**-(**दधिक्राम्**) यो धारकान् क्रामति (**वः**) युष्मान् (**प्रथमम्**) आदिमम् (**अश्विना**) सूर्याचन्द्रमसौ (**उषसम्**) प्रभातवेलाम् (**अग्निम्**) पावकम् (**समिद्धम्**) प्रदीप्तम् (**भगम्**) ऐश्वर्यम् (**ऊतये**) धनाढ्याय (**हुवे**) आददे (**इन्द्रम्**) विद्युतम् (**विष्णुम्**) व्यापकं वायुम् (**पूषणम्**) पुष्टिकरमोषधिगणम् (**ब्रह्मणस्पतिम्**) ब्रह्माण्डस्य स्वामिनं परमात्मानम् (**आदित्यान्**) सर्वान् मासान् (**द्यावापृथिवी**) सूर्यभूमी (**अपः**) जलम् (**स्वः**) सुखम्॥ १॥

**अन्वयः**-हे विद्वांसो! यथोतयेऽहं वः प्रथमं दधिक्रामश्विनोषसं समिद्धमग्निं भगमिन्द्रं विष्णुं पूषणं ब्रह्मणस्पतिमादित्यान् द्यावापृथिवी अपः स्वश्च हुवे तथा मदर्थं यूयमप्येतद्विद्यामादत्त॥ १॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे मनुष्याः! यथा विद्वांस आदितः भूम्यादिविद्यां संगृह्य कार्यसिद्धिं कुर्वन्ति तथा यूयमपि कुरुत॥ १॥

**पदार्थः**-हे विद्वानो! जैसे (**ऊतये**) धनादि के लिए मैं (**वः**) तुम लोगों को और (**प्रथमम्**) पहिले (**दधिक्राम्**) जो धारण करने वालों को क्रम से प्राप्त होता उसे (**अश्विना**) सूर्य और चन्द्रमा (**उषसम्**) प्रभातवेला (**समिद्धम्**) प्रदीप्त (**अग्निम्**) अग्नि (**भगम्**) ऐश्वर्य्य (**इन्द्रम्**) बिजुली (**विष्णुम्**) व्यापक वायु (**पूषणम्**) पुष्टि करने वाले ओषधिगण (**ब्रह्मणस्पतिम्**) ब्रह्माण्ड के स्वामी (**आदित्यान्**) सब महीने (**द्यावापृथिवी**) सूर्य और भूमि (**अपः**) जल और (**स्वः**) सुख को (**हुवे**) ग्रहण करता हूँ, वैसे ही मेरे लिये इस विद्या को आप भी ग्रहण करें॥ १॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जैसे विद्वान् जन प्रथम से भूमि आदि की विद्या का संग्रह करके कार्यसिद्धि करते हैं, वैसे तुम भी करो॥ १॥

**पुनर्विद्वांसः कुर्य्युरित्याह॥**

फिर विद्वान् जन क्या करें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥



www.9009.co.in

**द॒धि॒क्रामु नम॑सा बो॒धय॑न्त उ॒दीरा॑णा य॒ज्ञमु॑पप्र॒यन्त॑ः।**

**इळां॑ दे॒वीं ब॒र्हिषि॑ सा॒दय॑न्तो॒ऽश्विना॒ विप्रा॑ सु॒हवा॑ हुवेम॥ २॥**

**द॒धि॒ऽक्राम्। ॐ इति॑। नम॑सा। बो॒धय॑न्तः। उ॒त्ऽईरा॑णाः। य॒ज्ञम्। उ॒प॒ऽप्र॒यन्त॑ः। इळा॑म्। दे॒वीम्। ब॒र्हिषि॑। सा॒दय॑न्तः। अ॒श्विना॑। विप्रा॑। सु॒ऽहवा॑। हु॒वे॒म॥ २॥**

**पदार्थः**-(**दधिक्राम्**) पृथिव्यादिधारकाणां क्रमितारम् (उ) (**नमसा**) अन्नाद्येन सत्कारेण वा (**बोधयन्तः**) (**उदीराणाः**) उत्कृष्टं ज्ञानं प्राप्ताः (**यज्ञम्**) संगतिकरणाख्यम् (**यज्ञम्**) (**उपप्रयन्तः**) प्रयत्नेनोपायं कुर्वन्तः (**इळाम्**) प्रशंसनीयां वाचम् (**देवीम्**) दिव्यगुणकर्मस्वभावाम् (**बर्हिषि**) वृद्धिकरे व्यवहारे (**सादयन्तः**) (**अश्विना**) अध्यापकोपदेशकौ (**विप्रा**) मेधाविनौ विपश्चितौ (**सुहवा**) शोभनानि हवान्याह्वानानि ययोस्तौ (**हुवेम**) प्रशंसेम॥ २॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथा नमसा दधिक्रां बोधयन्त उदीराणा यज्ञमुप प्रयन्त उ देवीमिळां बर्हिषि सादयन्तो वयं सुहवाऽश्विना विप्रा हुवेम तथैतौ यूयमप्याह्वयत॥ २॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमलाङ्कारः। त एव विद्वांसो जगद्धितैषिणस्सन्ति ये सर्वत्र विद्याः प्रसारयन्ति॥ २॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे (**नमसा**) अन्नादि से वा सत्कार से (**दधिक्राम्**) पृथिवी आदि के धारण करने वालों को (**बोधयन्तः**) बोध दिलाते हुए (**उदीराणाः**) उत्कृष्ट ज्ञान को प्राप्त (**यज्ञम्**) यज्ञ का (**उपप्रयन्तः**) प्रयत्न करते (उ) और (**देवीम्**) दिव्य गुण-कर्म-स्वभाव वाली (**इळाम्**) प्रशंसनीय वाणी को (**बर्हिषि**) वृद्धि करने वाले व्यवहार में (**सादयन्तः**) स्थिर कराते हुए हम लोग (**सुहवा**) शुभ बुलाने जिनके उन (**अश्विना**) पढ़ाने और उपदेश करने वाले (**विप्रा**) बुद्धिमान् पण्डितों की (**हुवेम**) प्रशंसा करें, वैसे उनकी तुम भी प्रशंसा करो॥ २॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। वे ही विद्वान् जन जगत् के हितैषी होते हैं, जो सब जगह विद्या फैलाते हैं॥ २॥

**पुनर्विद्वांसः किं कुर्युरित्याह॥**

फिर विद्वान् जन क्या करें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**द॒धि॒क्रावा॑णं बुबुधा॒नो अ॒ग्निमुप॑ ब्रुव उ॒षसं॒ सूर्यं॒ गाम्।**

**ब्र॒ध्नं मं॑श्च॒तोर्वरु॑णस्य ब॒भ्रुं ते विश्वा॒स्माद्दु॑रि॒ता या॑वयन्तु॥ ३॥**

**द॒धि॒ऽक्रावा॑णम्। बु॒बु॒धा॒नः। अ॒ग्निम्। उप॑। ब्रु॒वे॒। उ॒षस॑म्। सूर्य॑म्। गाम्। ब्र॒ध्नम्। म॒ंश्च॒तोः। वरु॑णस्य। ब॒भ्रुम्। ते। विश्वा॑। अ॒स्मत्। दुः॒ऽइ॒ता। य॒व॒य॒न्तु॒॥ ३॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**दधिक्रावाणम्**) धारकाणां यानानां क्रामयितारं गमयितारम् (**बुबुधानः**) विजानन् (**अग्निम्**) वह्निम् (**उप**) (**ब्रुवे**) उपदिशामि (**उषसम्**) प्रभातवेलाम् (**सूर्यम्**) सूर्यलोकम् (**गाम्**) भूमिम् (**ब्रध्नम्**) महान्तम् (**मंश्चतोः**) मन्यमानान् विदुषो याचमानस्य (**वरुणस्य**) प्रेष्ठस्य (**बभ्रुम्**) धारकं पोषकं वा (**ते**) (**विश्वा**) विश्वानि सर्वाणि (**अस्मत्**) अस्माकं सकाशात् (**दुरिता**) दुरितानि दुष्टाचरणानि (**यावयन्तु**) दूरीकुर्वन्तु। अत्र **संहितायामि**त्याद्यचो दीर्घत्वम्॥३॥

**अन्वयः**-हे विद्वांसो! दधिक्रावाणमग्निमुषसं ब्रध्नं सूर्यं गां मंश्चतोर्वरुणस्य बभ्रुं च यान् युष्मान् प्रत्युप ब्रुवे ते भवन्तोऽस्मत्तद्विश्वा दुरिता यावयन्तु॥३॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यथाऽऽप्ता विद्वांसस्सर्वेभ्यो विद्याऽभयदाने कृत्वा पापाचरणात् पृथक् कुर्वन्ति तथा सर्वे विद्वांसः कुर्युः॥३॥

**पदार्थः**-हे विद्वानो! (**दधिक्रावाणाम्**) धारण करने वाले यानों को चलाने वाले (**अग्निम्**) आग (**उषसम्**) प्रभातवेला (**ब्रध्नम्**) महान् (**सूर्यम्**) सूर्यलोक (**गाम्**) भूमि को (**मंश्चतोः**) मानते हुए विद्वानों को मांगने वाले (**वरुणस्य**) श्रेष्ठ जन के (**बभ्रुम्**) धारण वा पोषण करने वाले को तथा जिनको आपके प्रति (**उप, ब्रुवे**) उपदेश करता हूँ (**ते**) वे आप लोग (**अस्मत्**) हम से (**विश्वा**) सब (**दुरिता**) दुष्ट आचरणों को (**यावयन्तु**) दूर करें॥३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे आप्त विद्वान् सब के लिए विद्या और अभयदान देकर पाप के आचरण से उन्हें अलग करते हैं, वैसे सब विद्वान् करें॥३॥

**पुनर्विद्वान् किं विज्ञाय किं कुर्यादित्याह॥**

फिर विद्वान् जन क्या जान कर क्या करें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**दधिक्रावा प्रथमो वाज्यर्वाग्रे रथानां भवति प्रजानन्।**

**संविदान उषसा सूर्येणादित्येभिर्वसुभिरङ्गिरोभिः॥४॥**

**दधिऽक्रावा। प्रथमः। वाजी। अर्वा। अग्रे। रथानाम्। भवति। प्रऽजानन्। सम्ऽविदानः। उषसा। सूर्येण। आदित्येभिः। वसुऽभिः। अङ्गिरःऽभिः॥४॥**

**पदार्थः**-(**दधिक्रावा**) धारकाणां गमयिता (**प्रथमः**) आदिमः साधकः (**वाजी**) वेगवान् (**अर्वा**) प्राप्तप्रेरणः (**अग्रे**) पुरस्सरम् (**रथानाम्**) रमणीयानां यानानाम् (**भवति**) (**प्रजानन्**) प्रकर्षेण जानन् (**संविदानः**) सम्यग्विज्ञानं कुर्वन् (**उषसा**) प्रातर्वेलया (**सूर्येण**) सवित्रा (**आदित्येभिः**) संवत्सरस्य मासैः (**वसुभिः**) पृथिव्यादिभिः (**अङ्गिरोभिः**) वायुभिः॥४॥

**अन्वयः**-यो दधिक्रावा प्रथमो वाज्यर्वाग्निरुषसा सूर्येणादित्येभिर्वसुभिरङ्गिरोभिस्सहितस्सन् रथानामग्रे वोढा भवति तं प्रजानन् संविदानस्सन् विद्वान् सम्प्रयुञ्जीत॥४॥

**भावार्थः**-येऽग्निविद्यां जानन्ति ते यानानां सद्यो गमयितारो भवन्ति॥४॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-जो **(दधिक्रावा)** धारण करने वालों को पहुँचाने और **(प्रथमः)** प्रथम सिद्ध करने वाला **(वाजी)** वेगवान् **(अर्वा)** प्रेरणा को प्राप्त अग्नि **(उषसा)** प्रातःकाल की बेला **(सूर्येण)** सूर्यलोक **(आदित्येभिः)** संवत्सर के महीनों **(वसुभिः)** पृथिवी आदि लोकों और **(अङ्गिरोभिः)** पवनों के सहित होता हुआ **(रथनाम्)** रमणीय यानों के **(अग्रे)** आगे बहाने वाला **(भवति)** होता है उसको **(प्रजानन्)** उत्तमता से जानता और **(संविदानः)** अच्छे प्रकार उसका विज्ञान करता हुआ विद्वान् जन अच्छा प्रयोग करे॥४॥

**भावार्थः**-जो अग्निविद्या को जानते हैं, वे रथों के शीघ्र चलाने वाले होते हैं॥४॥

**पुनर्विद्वांसः किं कुर्युरित्याह॥**

फिर विद्वान् जन क्या करें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**आ नो दधिक्राः पथ्यामनक्त्वृतस्य पन्थामन्वेतवा उ।**

**शृणोतु नो दैव्यं शर्धो अग्निः शृण्वन्तु विश्वे महिषा अमूराः॥५॥११॥**

**आ। नः। दधिऽक्राः। पथ्याम्। अनक्तु। ऋतस्य। पन्थाम्। अनुऽएतवै। ऊँ इति। शृणोतु। नः। दैव्यम्। शर्धः। अग्निः। शृण्वन्तु। विश्वे। महिषाः। अमूराः॥५॥**

**पदार्थः**-**(आ) (नः) (दधिक्राः)** अश्व इव धारकान् क्रामयिता गमयिता **(पथ्याम्)** पथि साध्वीं गतिम् **(अनक्तु)** कामयताम् **(ऋतस्य)** सत्यस्योदकस्य वा **(पन्थाम्)** पन्थानम् **(अन्वेतवै)** अन्वेतुमनुगन्तुम् **(उ) (शृणोतु) (नः)** अस्माकम् **(दैव्यम्)** देवैर्विद्वद्भिर्निष्पादितम् **(शर्धः)** शरीरात्मबलम् **(अग्निः)** विद्युदिव **(शृण्वन्तु) (विश्वे)** सर्वे **(महिषाः)** महान्तः **(अमूराः)** अमूढा विद्वांसः॥५॥

**अन्वयः**-हे विद्वान्! भवान् दधिक्राः पथ्यामिव नोऽस्मानृतस्य पन्थामन्वेतवा आ अनक्तू अग्निरिव सद्यो गच्छतु नो दैव्यं शर्धः शृणोतु महिषा विश्वेऽमूराः विद्वांसो नो दैव्यं वचः शृण्वन्तु॥५॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे मनुष्याः! यथा परीक्षको न्यायेशो राजा वा सर्वेषां वचांसि श्रुत्वा सत्याऽसत्ये निश्चिनोति अग्न्यादिप्रयोगेण पन्थानं सद्यो गच्छन्ति तथैव यूयं विद्वद्भ्यः श्रुत्वा धर्म्येण मार्गेण व्यवहृत्य मौढ्यं त्यजत त्याजयत॥५॥

अत्राग्न्यश्वादिगुणकृत्यवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह संगतिर्वेद्या॥

**इति चतुश्चत्वारिंशत्तमं सूक्तमेकादशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे विद्वान्! आप **(दधिक्राः)** घोड़े के समान धारण करने वालों को चलाने वाले **(पथ्याम्)** मार्ग में सिद्धि करने वाली गति के समान **(नः)** हम लोगों के **(ऋतस्य)** सत्य वा जल **(पन्थाम्)** मार्ग के **(अन्वेतवै)** पीछे जाने को **(आ, अनक्तु)** कामना करें **(उ)** और **(अग्निः)** बिजुली के समान शीघ्र जावे और **(नः)** हमारे **(दैव्यम्)** विद्वानों ने उत्पन्न किये **(शर्धः)** शरीर और आत्मा के



www.9009.co.in

बल को **(शृणोतु)** सुने **(महिषाः)** महान् **(विश्वे)** सब **(अमूराः)** अमूढ़ अर्थात् विज्ञानवान् जन हमारे विद्वानों ने [=के] सिद्ध किये हुए वचन को **(शृण्वन्तु)** सुनें॥५॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे परीक्षक न्यायधीश वा राजा सब के वचनों को सुन के सत्य और असत्य का निश्चय करता और अग्नि आदि का प्रयोग कर शीघ्र मार्ग को जाता है, वैसे ही तुम लोग विद्वानों से सुन कर धर्मयुक्त मार्ग से अपना व्यवहार कर मूढ़ता छोड़ने और छुड़ाओ॥५॥

इस सूक्त में अग्निरूपी घोड़ों के गुण और कामों का वर्णन होने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ संगति जाननी चाहिये॥

**यह चवालीसवां सूक्त और ग्यारहवां वर्ग पूरा हुआ॥**



www.9009.co.in

**अथ चतुर्ऋचस्य पञ्चचत्वारिंशत्तमस्य सूक्तस्य वसिष्ठर्षिः। सविता देवता। २ त्रिष्टुप्। ३, ४ निचृत्त्रिष्टुप्। १ विराट् त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः॥**

***पुनर्विद्वांसः किंवत् किं कुर्युरित्याह॥***

अब पैंतालीसवें सूक्त का प्रारम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में फिर विद्वान् जन किसके तुल्य क्या करें, इस विषय को कहते हैं॥

**आ देवो यातु सविता सुरत्नोऽन्तरिक्षप्रा वहमानो अश्वैः।**

**हस्ते दधानो नर्या पुरूणि निवेशयञ्च प्रसुवञ्च भूम॥१॥**

**आ। देवः। यातु। सविता। सुऽरत्नः। अन्तरिक्षऽप्राः। वहमानः। अश्वैः। हस्ते। दधानः। नर्या। पुरूणि। निऽवेशयन्। च। प्रऽसुवन्। च। भूम॥१॥**

**पदार्थः**-(**आ**) समन्तात् (**देवः**) दाता दिव्यगुणः (**यातु**) आगच्छतु (**सविता**) सकलैश्वर्यप्रदः (**सुरत्नः**) शोभनं रत्नं रमणीयं धनं यस्मादस्य वा (**अन्तरिक्षप्राः**) योऽन्तरिक्षं प्राति व्याप्नोति (**वहमानः**) प्राप्नुवन् प्रापयन् (**अश्वैः**) किरणैरिव महद्भिरग्निजलादिभिः (**हस्ते**) करे (**दधानः**) धरन् (**नर्या**) नृभ्यो हितानि (**पुरूणि**) बहूनि (**निवेशयन्**) प्रवेशयन् (**च**) (**प्रसुवन्**) प्रसुवन्ति यस्मिन् तदैश्वर्यम् (**च**) (**भूम**) भवेम॥१॥

**अन्वयः**-हे मनुष्याः! सुरत्नस्सविता देवोऽन्तरिक्षप्रा अश्वैर्भूगोलान् वहमानः पुरूणि नर्या दधानो निवेशयन् प्रसुवं याति तथा सर्वमेतत्प्रापयंश्चैश्वर्यं हस्ते दधानो विद्वानायातु तेन सह वयञ्चेदृशा भूम॥१॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। ये मनुष्याः सूर्यवच्छुभगुणकर्मप्रकाशिता मनुष्यादिहितं कुर्वन्ति ते बहैश्वर्यं प्राप्नुवन्ति॥१॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! (**सुरत्नः**) जिसके वा जिससे सुन्दर रमणीय धन होता (**सविता**) जो सकलैश्वर्य्य देने वाला (**देवः**) दाता दिव्य गुणवान् (**अन्तरिक्षप्राः**) अन्तरिक्ष को व्याप्त होता (**अश्वैः**) किरणों के समान महान् अग्नि जल आदिकों से भूगोलों को (**वहमानः**) पहुँचता वा पहुँचता (**पुरूणि**) बहुत (**नर्या**) मनुष्यों के लिये हितों को (**दधानः**) धारण करता और (**निवेशयन्**) प्रवेश करता हुआ (**प्रसुवम्**) जिसमें नाना रूप उत्पन्न होते हैं उस ऐश्वर्य को प्राप्त होता है, वैसे इससे प्राप्त कराता हुआ (**च**) और ऐश्वर्य को (**हस्ते**) हाथ में धारण करता हुआ विद्वान् (**आ, यातु**) आवे, उसके साथ हम लोग (**च**) भी वैसे ही (**भूम**) होवें॥१॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो मनुष्य सूर्य के तुल्य शुभ गुण और कर्म से प्रकाशित, मनुष्यादि प्राणियों का हित करते हैं, वे बहुत ऐश्वर्य पाते हैं॥१॥

**पुना राजादिजनः कीदृशः स्यादित्याह॥**

फिर राजादि जन कैसा हो, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते है॥



www.9009.co.in

**उदस्य बाहू शिथिरा बृहन्ता हिरण्यया दिवो अन्ताँ अनष्टाम्।**

**नूनं सो अस्य महिमा पनिष्ट सूरश्चिदस्मा अनु दादपस्याम्॥ २॥**

**उत्। अस्य। बाहू इति। शिथिरा। बृहन्ता। हिरण्यया। दिवः। अन्तान्। अनष्टाम्। नूनम्। सः। अस्य। महिमा। पनिष्ट। सूरः। चित्। अस्मै। अनु। दात्। अपस्याम्॥ २॥**

**पदार्थः**-(**उत्**) (**अस्य**) पूर्णविद्यस्य (**बाहू**) भुजौ (**शिथिरा**) शिथिलौ दृढौ (**बृहन्ता**) महान्तौ (**हिरण्यया**) हिरण्यया भूषणयुक्तौ (**दिवः**) प्रकाशस्य (**अन्तान्**) समीपस्थान् (**अनष्टाम्**) प्रसिद्धाम् (**नूनम्**) निश्चयः (**सः**) (**अस्य**) (**महिमा**) महती प्रशंसा (**पनिष्ट**) पन्यते स्तूयते (**सूरः**) सूर्यः (**चित्**) इव (**अस्मै**) (**अनु**) (**दात्**) (**अपस्याम्**) आत्मनः कर्मेच्छाम्॥ २॥

**अन्वयः**-हे मनुष्याः! यः सूरश्चिदिवास्मा अपस्यामनु दात् यस्यास्य स महिमाऽस्माभिर्नूनं पनिष्ट यस्यास्य दिवोऽन्तान् हिरण्यया बृहन्ता शिथिरा बाहू उदनष्टां स एवाऽस्माभिः प्रशंसनीयोऽस्ति॥ २॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। हे मनुष्याः! यस्य सूर्यवन्महिमा प्रतापः सर्वबलयुक्तौ बाहू वर्तेते स एवास्य राष्ट्रस्य मध्ये महीयते॥ २॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो (**सूरः**) सूर्य के (**चित्**) समान (**अस्मै**) इस विद्वान् के लिये (**अपस्याम्**) अपने को कर्म की इच्छा (**अनु, दात्**) अनुकूल दे जिस (**अस्य**) इसकी (**सः**) वह (**महिमा**) अत्यन्त प्रशंसा हम लोगों से (**नूनम्**) निश्चय (**पनिष्ट**) स्तुति की जाती है जिस (**अस्य**) इस (**दिवः**) प्रकाश के (**अन्तान्**) समीपस्थ पदार्थ वा (**हिरण्यया**) हिरण्य आदि आभूषणयुक्त (**बृहन्ता**) महान् (**शिथिरा**) शिथिल दृढ़ (**बाहू**) भुजा (**उत्, अनष्टाम्**) उत्तमता से प्रसिद्ध होती, वही हम लोगों से प्रशंसा करने योग्य है॥ २॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जिसका सूर्य के समान महिमा, प्रताप, सर्व बलयुक्त बाहू वर्तमान हैं, वही इस राज्य के बीच पूजित होता है॥ २॥

**पुनर्मनुष्यैः किं कर्तव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को क्या करना चाहिये, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**स घा नो देवः सविता सहावा साविषद्वसुपतिर्वसूनि।**

**विश्रयमाणो अमतिमुरूचीं मर्तभोजनमध रासते नः॥ ३॥**

**सः। घ। नः। देवः। सविता। सहऽवा। आ। साविषत्। वसुऽपतिः। वसूनि। विऽश्रयमाणः। अमतिम्। उरूचीम्। मर्तऽभोजनम्। अध। रासते। नः॥ ३॥**

**पदार्थः**-(**सः**) (**घा**) एव। अत्र **ऋचि तुनुघे**ति दीर्घः। (**नः**) अस्मान् (**देवः**) कमनीयः (**सविता**) ऐश्वर्यवान् सूर्यवत्प्रकाशमानः (**सहावा**) यः सहैव वनति संभजति (**आ**) समन्तात्



www.9009.co.in

**(साविषत्)** सुवेत् **(वसुपति:)** धनपालक: **(वसूनि)** धनानि **(विश्रयमाण:)** **(अमतिम्)** सुन्दरं रूपम्। **अमतिरिति रूपनाम।** (निघं०३.७) **(उरूचीम्)** उरूणि बहूनि वस्तून्यञ्चन्तीम् **(मर्तभोजनम्)** मर्त्येभ्यो भोजनं मर्तभोजनम् मनुष्याणां पालनं वा **(अध)** अथ **(रासते)** ददाति **(न:)** अस्मभ्यम्॥३॥

**अन्वय:**-यो वसुपतिरुरूचीममतिं विश्रयमाणो नो मर्तभोजनं रासते स घाश्च सविता सहावा देवो नो वसून्या साविषत्॥३॥

**भावार्थ:**-ये मनुष्या: सूर्यवत्सर्वेषां धनानि वर्धयित्वा सुपात्रेभ्य: प्रयच्छन्ति ते धनपतयो भवन्ति॥३॥

**पदार्थ:**-जो **(वसुपति:)** धनों की पालना करने वाला **(उरूचीम्)** बहुतों वस्तुओं को प्राप्त होता और **(अमतिम्)** सुन्दररूप को **(विश्रयमाण:)** विशेष सेवन करता हुआ **(न:)** हम लोगों को **(मर्तभोजनम्)** मनुष्यों का हितकारक भोजन व मनुष्यों का पालन **(रासते)** देता है **(स, घा, अध)** वही पीछे **(सविता)** ऐश्वर्य्यवान् सूर्य के समान प्रकाशमान **(सहावा)** साथ सेवने वाला **(देव:)** मनोहर विद्वान् **(न:)** हमको **(वसूनि)** धन **(आ, साविषत्)** प्राप्त करे॥३॥

**भावार्थ:**-जो मनुष्य सूर्य के समान सब के धनों को बढ़ा कर सुपात्रों के लिये देते हैं, वे धनपति होते हैं॥३॥

**पुनर्धार्मिका: विद्वांस: काभि: स्तूयन्त इत्याह॥**

फिर धार्मिक विद्वान् जन किनसे स्तुति किये जावें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**इमा गिर॑: सवि॒तार॑ सुजि॒ह्वं पू॒र्णग॑भस्तिमीळते सुपा॒णिम्।**

**चि॒त्रं वयो॑ बृहद॒स्मे द॑धातु यू॒यं पा॑त स्व॒स्तिभि॒: सदा॑ न:॥४॥१२॥**

**इ॒मा:। गिर॑:। स॒वि॒तार॑म्। सु॒ऽजि॒ह्वम्। पू॒र्णऽग॑भस्तिम्। ई॒ळ॒ते। सु॒ऽपा॒णिम्। चि॒त्रम्। वय॑:। बृ॒हत्। अ॒स्मे इति॑। द॒धा॒तु। यू॒यम्। पा॒त। स्व॒स्तिऽभि॑:। सदा॑। न॒:॥४॥**

**पदार्थ:**-**(इमा:)** **(गिर:)** विद्याशिक्षायुक्ता धर्म्या वाच: **(सवितारम्)** ऐश्वर्यवन्तम् **(सुजिह्वम्)** शोभना जिह्वा यस्य तम् **(पूर्णगभस्तिम्)** पूर्णा गभस्तयो रश्मयो यस्य सूर्यस्य तद्वद्वर्तमानम् **(ईळते)** प्रशंसन्ति **(सुपाणिम्)** शोभनौ पाणी हस्तौ यस्य तम् **(चित्रम्)** अद्भुतम् **(वय:)** जीवनम् **(बृहत्)** महत् **(अस्मे)** अस्मासु **(दधातु)** **(यूयम्)** **(पात)** **(स्वस्तिभि:)** **(सदा)** **(न:)**॥४॥

**अन्वय:**-योऽस्मे बृहच्चित्रं वयो दधातु तं सुपाणिं पूर्णगभस्तिमिव सवितारं सुजिह्वं धार्मिकं नरमिमा गिर ईळते, हे विद्वांसो! यूयं विद्यायुक्तवाणीवत्स्वस्तिभिर्नस्सदा पात॥४॥

**भावार्थ:**-सद्विद्यया धार्मिका: पुरुषा जायन्ते धर्मात्मानमेव विद्या सर्वसुखानि चाप्नुवन्ति॥४॥



www.9009.co.in

अत्र सवितृवद्विद्वद्गुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह संगतिर्वेद्या॥

**इति पञ्चचत्वारिंशत्तमं सूक्तं द्वादशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-जो **(अस्मे)** हम लोगों में **(बृहत्)** बहुत **(चित्रम्)** अद्भुत **(वयः)** आयु को **(दधातु)** धारण करे उस **(सुपाणिम्)** सुन्दर हाथों वाले **(पूर्णगभस्तिम्)** पूर्ण रश्मि जिसकी उस सूर्यमण्डल के समान वर्त्तमान **(सवितारम्)** ऐश्वर्ययुक्त **(सुजिह्वम्)** सुन्दर जीभ रखते हुए धार्मिक मनुष्य की **(इमाः)** यह **(गिरः)** विद्या शिक्षा और धर्मयुक्त वाणी **(ईळते)** प्रशंसा करती हैं, हे विद्वानो! **(यूयम्)** तुम विद्यायुक्त वाणी के समान **(स्वस्तिभिः)** सुखों से **(नः)** हम लोगों की **(सदा)** सर्वदैव **(पात)** रक्षा करो॥४॥

**भावार्थः**-अच्छी विद्या से धार्मिक पुरुष होते हैं, धर्मात्मा पुरुष ही को विद्या और सर्व सुख प्राप्त होते हैं॥४॥

इस सूक्त में सविता के तुल्य विद्वानों के गुणों का वर्णन होने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ संगति जाननी चाहिये॥

**यह पैंतालीसवां सूक्त और बारहवां वर्ग पूरा हुआ॥**



www.9009.co.in

**अथ चतुर्ऋचस्य [षट्चत्वारिंशत्तमस्य] सूक्तस्य वसिष्ठर्षिः। रुद्रो देवता। २ निचृत्त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः। १ विराड् जगती। ३ निचृज्जगती छन्दः। निषादः स्वरः। ४ स्वराट् पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः॥**

***पुनर्योद्धारः कीदृशा भवेयुरित्याह॥***

अब छयालीसवें सूक्त का प्रारम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में योद्धाजन कैसे हों, इस विषय को कहते हैं॥

**इमा रुद्राय स्थिरधन्वने गिरः क्षिप्रेषवे देवाय स्वधाव्ने।**

**अषाळहाय सहमानाय वेधसे तिग्मायुधाय भरता शृणोतु नः॥ १॥**

**इमाः। रुद्राय। स्थिरऽधन्वने। गिरः। क्षिप्रऽइषवे। देवाय। स्वधाऽव्ने। अषाळहाय। सहमानाय। वेधसे। तिग्मऽआयुधाय। भरत। शृणोतु। नः॥ १॥**

**पदार्थः**-(**इमाः**) (**रुद्राय**) शत्रूणां रोदकाय शूरवीराय (**स्थिरधन्वने**) स्थिरं दृढं धनुर्यस्य तस्मै (**गिरः**) वाचः (**क्षिप्रेषवे**) क्षिप्राः शीघ्रगामिन इषवः शस्त्रास्त्राणि यस्य तस्मै (**देवाय**) विदुषे न्यायं कामयमानाय (**स्वधाव्ने**) यः स्वं वस्त्वेव दधाति यः स्वां धार्मिकां क्रियां दधाति तस्मै (**अषाळहाय**) शत्रुभिरसहमानाय (**सहमानाय**) शत्रून् सोढुं समर्थाय (**वेधसे**) मेधाविने (**तिग्मायुधाय**) तिग्मानि तीव्राण्यायुधानि यस्य तस्मै (**भरता**) धरत। अत्र **संहितायामि**ति दीर्घः। (**शृणोतु**) (**नः**) अस्माकम्॥ १॥

**अन्वयः**-हे विद्वांसो! यस्मै स्थिरधन्वने क्षिप्रेषवे स्वधाव्नेऽषाळहाय सहमानाय तिग्मायुधाय वेधसे रुद्राय देवायेमा गिरो यूयं भरता स नोऽस्माकमिमा गिरः शृणोतु॥ १॥

**भावार्थः**-ये दुष्टानां शासितारः शस्त्रास्त्रविदः सोढारो युद्धकुशला विद्वांसः सन्ति तान् सदा धनुर्वेदाध्यापनेन तदर्थगर्भितवक्तृत्वेन विद्वांसः प्रोत्साहयन्तु यश्च सेनेशः स प्रजास्थानां वाचः शृणोतु॥ १॥

**पदार्थः**-हे विद्वानो! जिस (**स्थिरधन्वने**) स्थिरधनुष् वाले (**क्षिप्रेषवे**) शीघ्र जाने वाले शस्त्र अस्त्रों वाले (**स्वधाव्ने**) तथा अपनी ही वस्तु और अपनी धार्मिक क्रिया को धारण करने वाले (**अषाळहाय**) शत्रुओं से न सहे जाते हुए (**सहमानाय**) शत्रुओं के सहने को समर्थ (**तिग्मायुधाय**) तीव्र आयुध शस्त्रयुक्त (**वेधसे**) मेधावी (**रुद्राय**) शत्रुओं को रुलाने वाले शूरवीर (**देवाय**) न्याय की कामना करते हुए विद्वान् के लिये (**इमाः**) इन (**गिरः**) वाणियों को (**भरत**) धारण करो वह (**नः**) हम लोगों की इन वाणियों को (**शृणोतु**) सुने॥ १॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-जो दुष्टों के शिक्षा देने वाले, शस्त्र और अस्त्रवेत्ता, सहनशील, युद्धकुशल विद्वान् हैं, उनको सर्वदैव धनुर्वेद पढ़ाने से और उसके अर्थ से भरी हुई वक्तृता से विद्वान् जन अत्यन्त उत्साह दें और जो सेनापति है, वह प्रजास्थ पुरुषों की वाणी सुने॥१॥

**पुनस्ते राजादयः कीदृशास्सन्तः किं कुर्युरित्याह॥**

फिर वे राजा आदि जन कैसे हुए क्या करें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**स हि क्षयेण क्षम्यस्य जन्मनः साम्राज्येन दिव्यस्य चेतति।**

**अवन्नवन्तीरुप नो दुरश्चरानमीवो रुद्र जासु नो भव॥२॥**

**सः। हि। क्षयेण। क्षम्यस्य। जन्मनः। साम्ऽराज्येन। दिव्यस्य। चेतति। अवन्। अवन्तीः। उप। नः। दुरः। चर। अनमीवः। रुद्र। जासु। नः। भव॥२॥**

**पदार्थः**-(**सः**) (**हि**) यतः (**क्षयेण**) निवासेन (**क्षम्यस्य**) क्षन्तुमर्हस्य (**जन्मनः**) प्रादुर्भावस्य (**साम्राज्येन**) सम्यग्राजमानस्य प्रकाशितेन राष्ट्रेण (**दिव्यस्य**) दिवि शुद्धगुणकर्मस्वभावे भवस्य (**चेतति**) संजानीते (**अवन्**) रक्षन् (**अवन्तीः**) रक्षन्तीः सेनाः प्रजा वा (**उप**) (**नः**) अस्माकम् (**दुरः**) द्वाराणि (**चर**) (**अनमीवः**) अविद्यमानरोगः (**रुद्र**) दुष्टानां रोदक (**जासु**) यासु प्रजासु। अत्र वर्णव्यत्ययेन यस्य स्थाने जः। (**नः**) अस्माकम् (**भव**)॥२॥

**अन्वयः**-हे रुद्र! यो भवान्नोऽवन्तीरवन् दुर उप चरानमीवस्सन् हि क्षयेण क्षम्यस्य दिव्यस्य जन्मनः साम्राज्येनास्मांश्चेतति स त्वं नो जासु रक्षको भव॥२॥

**भावार्थः**-यो विद्वान् रक्षिकाः सेनाः प्रजाः रक्षन् प्रतिगृहस्थस्य व्यवहारं विजानन् दुःखानि क्षयन् दिव्यं सुखं जनयन् साम्राज्यं कर्तुं शक्नोति स एव प्रजापालको भवत्विति सर्वे निश्चिन्वन्तु॥२॥

**पदार्थः**-हे (**रुद्र**) दुष्टों को रुलाने वाले! जो आप (**नः**) हमारी (**अवन्तीः**) रक्षा करती हुई सेना वा प्रजाओं की (**अवन्**) पालना करते हुए (**दुरः**) द्वारों के (**उप, चर**) समीप जाओ और (**अनमीवः**) नीरोग होते हुए (**हि**) जिस कारण (**क्षयेण**) निवास से (**क्षम्यस्य**) क्षमा करने योग्य (**दिव्यस्य**) शुद्ध गुण-कर्म-स्वभाव में प्रसिद्ध हुए (**जन्मनः**) जन्म के (**साम्राज्येन**) सुन्दर प्रकाशमान के प्रकाशित राज्य से हम लोगों को (**चेतति**) अच्छे प्रकार चेताते हैं (**सः**) वह आप (**नः**) हम लोगों की (**जासु**) प्रजाओं में रक्षा करने वाला (**भव**) हूजिये॥२॥

**भावार्थः**-जो विद्वान् रक्षा करने वाली सेना वा प्रजाओं की रक्षा करता हुआ प्रत्येक गृहस्थ के व्यवहार को विशेष जानता, दुःखों को नाश करता और सुखों को उत्पन्न करता हुआ अच्छे प्रकार राज्य कर सकता है, वही प्रजाजनों की पालना करने वाला है, यह सब निश्चय करें॥२॥

**पुनः स राजा कीदृशो भवेदित्याह॥**

फिर वह राजा कैसा हो, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥



www.9009.co.in

**या ते॑ दि॒द्युदव॑सृष्टा दि॒वस्परि॑ क्ष्म॒या चर॑ति॒ परि॒ सा वृ॑णक्तु नः।**

**स॒हस्रं॑ ते स्वपिवात भेष॒जा मा न॑स्तो॒केषु॒ तन॑येषु॒ रीरिषः॥ ३॥**

**या। ते॒। दि॒द्युत्। अव॑ऽसृष्टा। दि॒वः। परि॑। क्ष्म॒या। चर॑ति। परि॑। सा। वृ॒ण॒क्तु॒। न॒ः। स॒ह॒स्रम्। ते॒। सु॒ऽअ॒पि॒वा॒त॒। भे॒ष॒जा। मा। न॒ः। तो॒केषु॑। तन॑येषु। रि॒रि॒षः॥ ३॥**

**पदार्थः**-(**या**) (**ते**) तव (**दिद्युत्**) न्यायदीप्तिः (**अवसृष्टाः**) शत्रुप्रेरिता (**दिवः**) कमनीयस्य (**परि**) सर्वतः (**क्ष्मया**) भूम्या सह। **क्ष्मेति पृथिवीनाम।** (निघं०१.१ (**चरति**) गच्छति (**परि**) (**सा**) (**वृणक्तु**) वर्जयतु (**नः**) अस्मान् (**सहस्रम्**) असंख्यम् (**ते**) तव (**स्वपिवात**) वायुरिव वर्तमान (**भेषजा**) ओषधानि (**नः**) अस्मानस्माकं वा (**तोकेषु**) सद्यो जातेष्वपत्येषु (**तनयेषु**) सुकुमारेषु (**रीरिषः**) हिंस्याः॥ ३॥

**अन्वयः**-हे स्वपिवात! ते तव या दिवः पर्यवसृष्टा दिद्युत् क्ष्मया चरति सा नोऽधर्माचरणात् परि वृणक्तु यस्य ते सहस्रं भेषजा सन्ति स त्वं तोकेषु तनयेषु वर्तमानो नोऽस्मानस्माकमपत्यान्यपि मा सु रीरिषः॥ ३॥

**भावार्थः**-यस्य राज्ञो न्यायप्रकाशः सर्वत्र प्रदीप्यति स एव सर्वानधर्माचरणान्निरोद्धुं शक्नोति यस्य राष्ट्रे सहस्राणि दूताश्चारा वैद्याश्च विचरन्ति तस्य स्वल्पाऽपि राज्यस्य हानिर्न जायेत॥ ३॥

**पदार्थः**-हे (**स्वपिवात**) पवन के समान वर्त्तमान! (**ते**) आपकी (**या**) जो (**दिवः**) मनोहर कार्य के सम्बन्ध में (**परि**) सब ओर से (**अवसृष्टा**) शत्रुओं में प्रेरणा देने वाली (**दिद्युत्**) न्यायदीप्ति (**क्ष्मया**) भूमि के साथ (**चरति**) जाती है (**सा**) वह (**नः**) हम लोगों को अधर्माचरण से (**परि, वृणक्तु**) सब ओर से अलग रक्खे जिस (**ते**) आपके (**सहस्रम्**) असंख्य हजारों (**भेषजा**) ओषधियाँ हैं, वह आप (**तोकेषु**) शीघ्र उत्पन्न हुए और (**तनयेषु**) कुमार अवस्था को प्राप्त हुए बालकों में वर्तमान (**नः**) हम लोगों को वा हमारे सन्तानों को (**मा**) मत (**रीरिषः**) नष्ट करो॥ ३॥

**भावार्थः**-जिस राजा का न्यायप्रकाश सर्वत्र प्रदीपता है, वही सबको अधर्माचरण से रोक सकता है, जिसके राज्य में हजारों दूत और चार गुप्तचर मुखवर वैद्यजन विचरते हैं, उसकी थोड़ी भी राज्य की हानि नहीं होती है॥ ३॥

**पुनः स राजा कीदृशः स्यादित्याह॥**

फिर वह राजा कैसा हो, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**मा नो॑ वधी रुद्र॒ मा परा॑ दा॒ मा ते॑ भूम॒ प्रसि॑तौ हीळि॒तस्य॑।**

**आ नो॑ भज ब॒र्हिषि॑ जीवशंसे यू॒यं पा॑त स्व॒स्तिभि॒ः सदा॑ नः॥ ४॥ १३॥**

**मा। न॒ः। व॒धी॒ः। रु॒द्र॒। मा। परा॑। दा॒ः। मा। ते॒। भू॒म॒। प्र॒ऽसि॑तौ। ही॒ळि॒तस्य॑। आ। न॒ः। भ॒ज॒। ब॒र्हिषि॑। जी॒व॒ऽशं॒से। यू॒यम्। पा॒त॒। स्व॒स्तिऽभि॑ः। सदा॑। न॒ः॥ ४॥**



www.9009.co.in

**पदार्थ:**-**(मा)** **(नः)** अस्मान् **(वधीः)** हन्याः **(रुद्र)** **(मा)** **(परा)** **(दाः)** दूरे भवेः **(मा)** **(ते)** तव **(भूम)** भवेम **(प्रसितौ)** प्रकर्षेण बन्धने **(हीळितस्य)** अनादृतस्य **(आ)** **(नः)** अस्मान् **(भज)** सेवस्व **(बर्हिषि)** अन्तरिक्षे **(जीवशंसे)** जीवैः प्रशंसनीये **(यूयम्)** **(पात)** **(स्वस्तिभिः)** **(सदा)** **(नः)**॥४॥

**अन्वयः**-हे रुद्र! त्वं नो मा वधीः मा परा दा हीळितस्य ते प्रसितौ वयं मा भूम त्वं जीवशंसे बर्हिषि नोऽस्माना भज, हे विद्वांसो! यूयं स्वस्तिभिर्नः सदा पात॥४॥

**भावार्थः**-स एव राजा वीरो वोत्तमः स्यात् यो धार्मिकानदण्ड्यान् कृत्वा दुष्टान् दण्डयेदिति॥४॥

अत्र रुद्रराजपुरुषगुणकृत्यवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह संगतिर्वेद्या॥

**इति षट्चत्वारिंशत्तमं सूक्तं त्रयोदशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थ:**-हे **(रुद्र)** दुष्टों को रुलाने वाले! आप **(नः)** हम लोगों को **(मा)** मत **(वधीः)** मारो **(मा)** मत **(परा, दाः)** दूर हो और **(हीळितस्य)** अनादर किये हुए **(ते)** आपके **(प्रसितौ)** बन्धन में हम लोग **(मा)** मत **(भूम)** हों आप **(जीवशंसे)** जीवों से प्रशंसा करने योग्य **(बर्हिषि)** अन्तरिक्ष में **(नः)** हम लोगों को **(आ, भज)** अच्छे प्रकार सेवो, हे विद्वानो! **(यूयम्)** तुम **(स्वस्तिभिः)** सुखों से **(नः)** हम लोगों की **(सदा)** सदा **(पात)** रक्षा करो॥४॥

**भावार्थ:**-वही राजा वीर वा उत्तम हो जो धार्मिक जनों को अदण्ड [=अदण्ड्य] कर दुष्टों को दण्ड दे॥४॥

इस सूक्त में रुद्र, राजा और पुरुषों के गुण और कामों का वर्णन होने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ संगति जाननी चाहिये॥

**यह छयालीसवां सूक्त और तेरहवां वर्ग पूरा हुआ॥**



www.9009.co.in

**अथ चतुर्ऋचस्य [सप्तचत्वारिंशत्तमस्य] सूक्तस्य वसिष्ठिर्षिः। आपो देवताः। १, ३ त्रिष्टुप्।**
**२ विराट्त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः। ४ स्वराट्पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः॥**

***पुनर्मनुष्याः प्रथमे वयसि विद्यां गृह्णीयुरित्याह॥***

अब सैंतालीसवां सूक्त का आरम्भ है, इसके प्रथम मन्त्र में फिर मनुष्य प्रथम अवस्था में विद्या ग्रहण करें, इस विषय को कहते हैं॥

**आपो॒ यं व॑: प्रथ॒मं दे॑व॒यन्त॑ इन्द्र॒पान॑मू॒र्मिमकृ॑ण्वते॒ळः।**
**तं वो॑ व॒यं शुचि॑मरि॒प्रम॒द्य घृ॑त॒प्रुषं॒ मधु॑मन्तं वनेम॥ १॥**

**आप॑:। यम्। व॒:। प्र॒थ॒मम्। दे॒व॒ऽयन्त॑:। इ॒न्द्र॒ऽपान॑म्। ऊ॒र्मिम्। अकृ॑ण्वत। इ॒ळः। तम्। व॒:। व॒यम्। शुचि॑म्। अ॒रि॒प्रम्। अ॒द्य। घृ॒त॒ऽप्रु॒षम्। मधु॑ऽमन्तम्। व॒ने॒म॥ १॥**

**पदार्थः**-(**आपः**) जलानीव विद्वांसः (**यम्**) (**वः**) युष्माकम् (**प्रथमम्**) (**देवयन्तः**) कामयमानाः (**इन्द्रपानम्**) इन्द्रस्य जीवस्य पातुमर्हम् (**ऊर्मिम्**) तरङ्गमिवोच्छतम् (**अकृण्वत**) कुर्वन्तु (**इळः**) वाचः। **इळेति वाङ्नाम।** (निघं०१.११) (**तम्**) (**वः**) युष्मभ्यम् (**वयम्**) (**शुचिम्**) पवित्रम् (**अरिप्रम्**) निष्पापं निर्दोषम् (**अद्य**) इदानीम् (**घृतप्रुषम्**) घृतेनोदकेनाज्येन वा सिक्तम् (**मधुमन्तम्**) बहुमधुरादिगुणयुक्तम् (**वनेम**) विभजेम॥१॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! देवयन्तो व इळः प्रथममिन्द्रपानमाप ऊर्मिमिव च यमकृण्वत तं शुचिमरिप्रं घृतप्रुषं मधुमन्तं वो वयमद्य वनेम॥१॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। ये विद्वांसः प्रथमे वयसि विद्यां गृह्णन्ति युक्ताहारविहारेण शरीरमरोगं कुर्वन्ति तानेव सर्वे सेवन्ताम्॥१॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! (**देवयन्तः**) कामना करते हुए जन (**वः**) तुम्हारी (**इळः**) वाणी को (**प्रथमम्**) और प्रथम भाग जो कि (**इन्द्रपानम्**) जीव को प्राप्त होने योग्य उसको (**आपः**) तथा बहुत जलों के समान वा (**ऊर्मिम्**) तरंग के समान (**यम्**) जिसको (**अकृण्वत**) सिद्ध करें (**तम्**) उस (**शुचिम्**) पवित्र (**अरिप्रम्**) निष्पाप निर्दोष (**घृतप्रुषम्**) उदक वा घी से सिंचे (**मधुमन्तम्**) बहुत मधुरादिगुणयुक्त पदार्थ को (**वः**) तुम्हारे लिए (**वयम्**) हम लोग (**अद्य**) आज (**वनेम**) विशेषता से भजें॥१॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो विद्वान् जन पहिली अवस्था में विद्या ग्रहण करते और युक्त आहार-विहार से शरीर को नीरोग करते हैं, उन्हीं की सब सेवा करें॥१॥

**पुनर्मनुष्याः किं कुर्युरित्याह॥**

फिर मनुष्य क्या करें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**तमू॒र्मिमा॑पो॒ मधु॑मत्तमं वो॒ऽपां नपा॑दवत्वाशुहेमा॑।**



www.9009.co.in

**यस्मिन्निन्द्रो वसुभिर्मादयाते तमश्याम देवयन्तो वो अद्य॥२॥**

**तम्। ऊर्मिम्। आपः। मधुमत्ऽतमम्। वः। अपाम्। नपात्। अवतु। आशुऽहेमा। यस्मिन्। इन्द्रः। वसुऽभिः। मादयाते। तम्। अश्याम। देवऽयन्तः। वः। अद्य॥२॥**

**पदार्थः**-(**तम्**) (**ऊर्मिम्**) तरङ्गम् (**आपः**) जलानीव (**मधुमत्तमम्**) अतिशयेन मधुरादिगुणयुक्तम् (**वः**) युष्मान् (**अपाम्**) जलानाम् (**नपात्**) यो न पतति (**अवतु**) रक्षतु (**आशुहेमा**) शीघ्रं वर्धको गन्ता वा (**यस्मिन्**) (**इन्द्रः**) विद्युदिव राजा (**वसुभिः**) धनैः (**मादयाते**) मादयेः हर्षयेत् (**तम्**) (**अश्याम**) प्राप्नुयाम (**देवयन्तः**) कामयमानाः (**वः**) युष्माकम् (**अद्य**) इदानीम्॥२॥

**अन्वयः**-हे विद्वांसो! यस्मिन्नाशुहेमेन्द्रो वसुभिस्सह वो युष्मान् मादयाते तमाप ऊर्मिमिव मधुमत्तममपां नपादिन्द्रो यथाऽवतु तथा वयं तं रक्षेम वो देवयन्तो वयमद्याश्याम॥२॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यथा वायुरपान्तरङ्गानुच्छयति तथा यो राजा धनादिभिः प्रजाजनान् रक्षेत् तस्यैव वयं राजत्वाय सम्मतिं दद्याम॥२॥

**पदार्थः**-हे विद्वानो! (**यस्मिन्**) जिसमें (**आशुहेमा**) शीघ्र बढ़ने वा जाने वाला (**इन्द्रः**) बिजुली के समान राजा (**वसुभिः**) धनों के साथ (**वः**) तुमको (**मादयाते**) हर्षित करे (**तम्**) उसको (**आपः**) जल (**उर्मिम्**) तरङ्गों को जैसे वैसे (**मधुमत्तमम्**) अतीव मधुरादिगुणयुक्त पदार्थ को (**अपांनपात्**) जो जलों के बीच नहीं गिरता है वह बिजुली के समान राजा जैसे (**अवतु**) रक्खे, वैसे हम लोग (**तम्**) उसको रक्खें और (**वः**) तुम लोगों की (**देवयन्तः**) कामना करते हुए हम लोग (**अद्य**) आज (**अश्याम**) प्राप्त होवें॥२॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे वायु जल को तरङ्गों को उछालता है, वैसे जो राजा धनादिकों से प्रजाजनों की रक्षा करे, उसी को हम लोग राजा होने की सम्मति देवें॥२॥

**पुनः स्त्रीपुरुषाः कीदृशा भूत्वा विवाहं कुर्युरित्याह॥**

फिर स्त्री-पुरुष कैसे होकर विवाह करें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**शतपवित्राः स्वधया मदन्तीर्देवीर्देवानामपि यन्ति पाथः।**

**ता इन्द्रस्य न मिनन्ति व्रतानि सिन्धुभ्यो हव्यं घृतवज्जुहोत॥३॥**

**शतऽपवित्राः। स्वधया। मदन्तीः। देवीः। देवानाम्। अपि। यन्ति। पाथः। ताः। इन्द्रस्य। न। मिनन्ति। व्रतानि। सिन्धुऽभ्यः। हव्यम्। घृतऽवत्। जुहोत॥३॥**

**पदार्थः**-(**शतपवित्राः**) शतैरुपायैर्ये शुद्धाः (**स्वधया**) अन्नाद्येन (**मदन्तीः**) आनन्दतीः (**देवीः**) विदुष्यो ब्रह्मचारिण्यः (**देवानाम्**) विदुषाम् (**अपि**) (**यन्ति**) प्राप्नुवन्ति (**पाथः**) अन्नाद्यैश्वर्यम् (**ताः**) (**इन्द्रस्य**) समग्रैश्वर्यस्य परमात्मनः (**न**) निषेधे (**मिनन्ति**) हिंसन्ति (**व्रतानि**) सत्यभाषणादीनि कर्माणि (**सिन्धुभ्यः**) नदीभ्य इव (**हव्यम्**) होतुं दातुमर्हम् (**घृतवत्**) बहुघृतयुक्तम् (**जुहोत**) आदद्यात॥३॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे विद्वांसो नरा! याः शतपवित्रा मदन्तीर्देवीर्विदुष्यो देवानां स्वधया पाथोऽपि यन्ति ता इन्द्रस्य व्रतानि न मिनन्ति यथा सिन्धुभ्यो घृतवद्धव्यं निर्माय ता जुह्वति तथैता यूयं जुहोत आदद्यात॥३॥

**भावार्थः**-या युवतयः कन्याः सिन्धवः समुद्रानिव हृद्यान् पतीन् प्राप्य न व्यभिचरन्ति तथैव यूयं सर्वे मनुष्याः परस्परेषां संयोगेन सर्वदाऽऽनन्दत॥३॥

**पदार्थः**-हे विद्वान् मनुष्यो! जो **(शतपवित्राः)** सौ उपायों से शुद्ध **(मदन्तीः)** आनन्द करती हुईं **(देवीः)** विदुषी पण्डित ब्रह्मचारिणी कन्या **(देवानाम्)** विद्वानों के **(स्वधया)** अन्नादि पदार्थ से **(पाथः)** अन्नादि ऐश्वर्य को **(अपि, यन्ति)** प्राप्त होती हैं **(ताः)** वे **(इन्द्रस्य)** समग्र ऐश्वर्यवान् परमात्मा के **(व्रतानि)** व्रतों को **(न)** नहीं **(मिनन्ति)** नष्ट करती हैं जैसे **(सिन्धुभ्यः)** नदियों के समान **(घृतवत्)** बहुत घी से युक्त **(हव्यम्)** देने योग्य वस्तु बनाकर वे होमती हैं, वैसे इनको तुम **(जुहोत)** ग्रहण करो॥३॥

**भावार्थः**-जो युवति कन्या, नदियाँ समुद्रों को जैसे, वैसे हृदय के प्यारे पतियों को पाकर छोड़ती नहीं हैं, वैसे ही तुम सब मनुष्य एक-दूसरे के संयोग से सर्वदा आनन्द करो॥३॥

**पुनः स्त्रीपुरुषाः किं कुर्युरित्याह॥**

फिर स्त्री-पुरुष क्या करें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**याः सूर्यो॑ र॒श्मिभि॑रात॒तान॒ याभ्य॒ इन्द्रो॒ अर॑दद् गा॒तुमू॒र्मिम्।**

**ते सि॑न्धवो॒ वरि॑वो धातना नो यू॒यं पा॑त स्व॒स्तिभि॒: सदा॑ न॒:॥४॥१४॥**

**याः। सूर्य॑ः। र॒श्मिऽभि॑ः। आ॒ऽत॒तान॑। याभ्य॑ः। इन्द्र॑ः। अर॑दत्। गा॒तुम्। ऊ॒र्मिम्। ते। सि॒न्धुव॒ः। वरि॑वः। धा॒त॒न। न॒ः। यू॒यम्। पा॒त। स्व॒स्तिऽभि॑ः। सदा॑। न॒ः॥४॥**

**पदार्थः**-**(याः)** अपः **(सूर्यः)** सविता **(रश्मिभिः)** किरणैः **(आततान)** आतनोति विस्तृणाति **(याभ्यः)** अद्भ्यः **(इन्द्रः)** विद्युत् **(अरदत्)** विलिखति **(गातुम्)** भूमिम्। **गातुरिति पृथिवीनाम।** (निघं०१.१) **(ऊर्मिम्)** तरङ्गम् **(ते)** **(सिन्धवः)** नद्यः **(वरिवः)** परिचरणम् **(धातन)** धर्त **(नः)** अस्माकम् **(यूयम्)** **(पात)** **(स्वस्तिभिः)** सुखादिभिः **(सदा)** **(नः)**॥४॥

**अन्वयः**-हे पुरुषाः! सूर्यो रश्मिभिर्या आ ततान इन्द्रो याभ्यो गातुमूर्मिमरदत् ता अनुकृत्य स्त्रीपुरुषाः प्रवर्तन्ताम् यथा ते सिन्धवः समुद्रं पूरयन्ति तथा या स्त्रियः सुखैरस्मान् धातन नोऽस्माकं वरिवः कुर्युस्ता वयमपि सेवेमहि, हे पतिव्रता स्त्रियो! यूयं स्वस्तिभिर्नोऽस्मान् पतीन् सदा पात॥४॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे विद्वांसो! यथा सूर्यः स्वतेजोभिः भूमेर्जलान्याकृष्य विस्तृणाति तथा सत्कर्मभिः प्रजाः यूयं विस्तृणीतेति॥४॥

अत्र विद्वत्स्त्रीपुरुषगुणवर्णनादेतदर्थस्य सूक्तस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति सप्तचत्वारिंशत्तमं सूक्तं चतुर्दशो वर्गश्च समाप्तः॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-हे पुरुषो! **(सूर्यः)** सूर्यमण्डल **(रश्मिभिः)** अपनी किरणों से **(याः)** जिन जलों को **(आ, ततान)** विस्तारता है **(इन्द्रः)** बिजुली **(याभ्यः)** जिन जलों से **(गातुम्)** भूमि को और **(ऊर्मिम्)** तरङ्ग को **(अरदत्)** छिन्न-भिन्न करती है, उनको अनुहारि स्त्री-पुरुष वर्तें जैसे **(ते)** वे **(सिन्धवः)** नदियाँ समुद्र को पूरा करती हैं, वैसे जो स्त्रियाँ सुखों से हम लोगों को **(धातन)** धारण करें **(नः)** हमारी **(वरिवः)** सेवा करें, उनकी हम भी सेवा करें, हे पतिव्रता स्त्रियो! **(यूयम्)** तुम **(स्वस्तिभिः)** सुखों से **(नः)** हम पति लोगों की **(सदा)** सदा **(पात)** रक्षा करो॥४॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे विद्वानो! जैसे सूर्य अपने तेजों से भूमि के जलों को खींच कर विस्तार करता है, वैसे अच्छे कामों से प्रजा को तुम विस्तारो॥४॥

इस सूक्त में विद्वान्, स्त्री-पुरुष के गुणों का वर्णन होने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ संगति जाननी चाहिये॥

**यह सैंतालीसवां सूक्त और चौदहवां वर्ग पूरा हुआ॥**



www.9009.co.in

**अथ चतुर्ऋचस्य [अष्टचत्वारिंशत्तमस्य] सूक्तस्य वसिष्ठर्षिः। १-३ ऋभवः। ४ ऋभवो विश्वेदेवाः। १ भुरिक्पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः। २ निचृत्त्रिष्टुप्। ३ त्रिष्टुप्। ४ विराट्त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः॥**

***अथ विद्वद्भिः किं कर्तव्यमित्याह॥***

अब चार ऋचा वाले अड़तालीसवें सूक्त का प्रारम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में विद्वानों को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**ऋभुक्षणो वाजा मादयध्वमस्मे नरो मघवानः सुतस्य।**
**आ वोऽर्वाचः क्रतवो न यातां विभ्वो रथं नर्यं वर्तयन्तु॥१॥**

**ऋभुक्षणः। वाजाः। मादयध्वम्। अस्मे इति। नरः। मघऽवानः। सुतस्य। आ। वः। अर्वाचः। क्रतवः। न। याताम्। विऽभ्वः। रथम्। नर्यम्। वर्तयन्तु॥१॥**

**पदार्थः**-(**ऋभुक्षणः**) महान्तः। **ऋभुक्षा इति महन्नाम।** (निघं०३.३ (**वाजाः**) विज्ञानवन्तः (**मादयध्वम्**) आनन्दयत (**अस्मे**) अस्मान् (**नरः**) नायकाः (**मघवानः**) बहूत्तमधनयुक्ताः (**सुतस्य**) निष्पन्नस्य (**आ**) (**वः**) युष्माकम् (**अर्वाचः**) येऽर्वाग्गच्छन्ति ते (**क्रतवः**) प्रजाः (**न**) इव (**याताम्**) गच्छताम् (**विभ्वः**) सकलविद्यासु व्यापिनः (**रथम्**) रमणीयम् यानम् (**नर्यम्**) नृषु साधुम् (**वर्त्तयन्तु**)॥१॥

**अन्वयः**-हे ऋभुक्षणो मघवानो विभ्वोऽर्वाचो वाजा नरो! यूयं क्रतवो न सुतस्य सेवनेनास्मे मादयध्वमा यातां वो युष्माकं अस्माकं च नर्यं रथमन्ये वर्तयन्तु॥१॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! ये विद्वांसो युष्मानस्मांश्च विद्याबुद्धिप्रदानेन शिल्पविद्यया चानन्दयन्ति ते सर्वदा प्रशंसनीयाः सन्ति॥१॥

**पदार्थः**-हे (**ऋभुक्षणः**) महात्मा (**मघवानः**) बहुत उत्तम धनयुक्त (**विभ्वः**) सकल विद्याओं में व्याप्त (**अर्वाचः**) जो पीछे जाने वाले (**वाजाः**) विज्ञानवान् (**नरः**) मनुष्यो! तुम (**क्रतवः**) अतीव बुद्धियों के (**न**) समान (**सुतस्य**) उत्पन्न हुए के सेवने से (**अस्मे**) हम लोगों को (**मादयध्वम्**) आनन्दित करो (**आ, याताम्**) आते हुए (**वः**) तुम लोगों के और हमारे (**नर्यम्**) मनुष्यों में उत्तम (**रथम्**) रमणीय यान को और नर (**वर्तयन्तु**) वर्तें॥१॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जो विद्वान् जन तुम्हें और हमें विद्या और बुद्धि के दान से वा शिल्पविद्या से आनन्दित करते हैं, वे सर्वदा प्रशंसा करने योग्य हैं॥१॥

**मनुष्याः कथं विद्वांसो भवन्तीत्याह॥**

मनुष्य कैसे विद्वान् होते हैं, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**ऋभुर्ऋभुभिरभि वः स्याम विभ्वो विभुभिः शवसा शवांसि।**



www.9009.co.in

**वाजो॑ अ॒स्माँ अ॑वतु॒ वाज॑साता॒विन्द्रे॑ण यु॒जा त॑रुषेम वृ॒त्रम्॥२॥**

**ऋ॒भुः। ऋ॒भुऽभिः॑। अ॒भि। व॒ः। स्या॒म॒। विऽभ्व॑ः। वि॒भुऽभिः॑। शव॑सा। शवां॑सि। वाज॑ः। अ॒स्मान्। अ॒व॒तु॒। वाज॑ऽसातौ। इन्द्रे॑ण। यु॒जा। त॒रु॒षे॒म॒। वृ॒त्रम्॥२॥**

**पदार्थः**-(**ऋभुः**) मेधावी विद्वान् (**ऋभुभिः**) मेधाविभिराप्तैर्विद्वद्भिस्सह। **ऋभुरिति मेधाविनाम।** (निघं०३.१५) (**अभि**) आभिमुख्ये (**वः**) युष्मान् (**स्याम**) (**विभ्वः**) सकलशुभगुणकर्मस्वभाव-व्यापिनः (**विभुभिः**) सद्गुणादिषु व्याप्तैः (**शवसा**) बलेन (**शवांसि**) सङ्ग्रामे (**इन्द्रेण**) विद्युदाद्यस्त्रेण (**युजा**) युक्तेन (**तरुषेम**) प्राप्नुयाम। **तरुष्यतीति पदनाम।** (निघं०४.२) (**वृत्रम्**) धनम्। **वृत्रमिति धननाम।** (निघं०२.१०)॥२॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथा वाज ऋभुभिस्सह वाजसातावृभुर्वो युष्मानस्माँश्चावतु युजेन्द्रेण वृत्रं प्राप्नुयात् तथा विभ्वो वयं विभुभिः शवसा च सह शवांस्यभि तरुषेम यतो वयं सुखिनः स्याम॥२॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। त एव विद्वांसो व्याप्तविद्याशुभगुणस्वभावा भवन्ति ये संग्रामेऽपि सर्वान्रक्षयित्वा धनं बलं च दातु शक्नुवन्ति॥२॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे (**वाजः**) विज्ञानवान् वा ऐश्वर्य्ययुक्त जन (**ऋभुभिः**) बुद्धिमान् उत्तम विद्वानों के साथ (**वाजसातौ**) संग्राम में (**ऋभुः**) बुद्धिमान् (**वः**) तुम्हें और (**अस्मान्**) हमें (**अवतु**) पाले रक्खे वा (**युजा**) योग किये हुए (**इन्द्रेण**) बिजुली आदि शस्त्र से (**वृत्रम्**) धन को प्राप्त हो, वैसे (**विभ्वः**) सकल शुभ गुण, कर्म और स्वभावों में व्याप्त हम लोग (**विभुभिः**) अच्छे गुणादिकों में व्याप्त जन और (**शवसा**) बल के साथ (**शवांसि**) बलों को (**अभि, तरुषेम**) प्राप्त हों जिससे हम लोग सुखी (**स्याम**) हों॥२॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। वे ही विद्वान् जन विद्याओं में व्याप्त शुभ गुण-कर्म-स्वभाव युक्त हैं, जो संग्राम में भी सब की रक्षा करके धन और बल दे सकते हैं॥२॥

**पुनः को राजा विजयी राज्यवर्धको भवतीत्याह॥**

फिर कौन राजा विजयशील राज्य का बढ़ाने वाला होता है, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**ते चि॒द्धि पू॒र्वीर॒भि सन्ति॑ शा॒सा विश्वाँ॑ अ॒र्य उ॑प॒रता॑ति वन्वन्।**

**इन्द्रो॒ विभ्वाँ॑ ऋभु॒क्षा वाजो॑ अ॒र्यः शत्रो॑र्मि॒थ॒त्या कृ॑ण॒वन् वि नृ॒म्णम्॥३॥**

**ते। चि॒त्। हि। पू॒र्वीः। अ॒भि। सन्ति॑। शा॒सा। विश्वा॑न्। अ॒र्यः। उ॒प॒र॒ऽता॑ति। व॒न्व॒न्। इन्द्र॑ः। विऽभ्वा॑न्। ऋ॒भु॒क्षाः। वाज॑ः। अ॒र्यः। शत्रो॑ः। मि॒थ॒त्या। कृ॒ण॒व॒न्। वि। नृ॒म्णम्॥३॥**

**पदार्थः**-(**ते**) विद्वांसः (**चित्**) अपि (**हि**) यतः (**पूर्वीः**) सनातन्यः प्रजाः (**अभि**) (**सन्ति**) (**शासा**) शासनेन (**विश्वान्**) सर्वान् (**अर्यः**) स्वामी (**उपरताति**) उपरतातौ पलैः मेघास्त्रादिभिः संग्रामे



www.9009.co.in

**(वन्वन्)** याचन्ते **(इन्द्रः)** परमैश्वर्ययुक्तः **(विभ्वान्)** विभून् विद्याव्याप्तानमात्यान् **(ऋभुक्षाः)** य ऋभून् मेधाविनः क्षियति निवासयति स महान् **(वाजः)** बलविज्ञानान्नयुक्तः **(अर्यः)** स्वामी **(शत्रोः)** **(मिथत्या)** हिंसया **(कृणवन्)** कुर्वन्ति **(वि)** **(नृम्णम्)** नृणां रमणीयं धनम्॥३॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यो वाजोऽर्य ऋभुक्षाः स इन्द्रः शत्रोर्मिथत्या नृम्णमिच्छन् यान् विश्वान् विभ्वान् स्वकीयान् करोति त उपरताति विजयं कृणवन् ते चिद्धि शासा पूर्वीरभि सन्ति सोऽर्यो सुखी विजयी जायते॥३॥

**भावार्थः**-स एव राजा महान् विजयी भवति यो धार्मिकानुत्तमान् विदुषः संगृह्णाति॥३॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो जो **(वाजः)** बल विज्ञान और अन्नयुक्त **(अर्यः)** स्वामी **(ऋभुक्षाः)** उत्तम बुद्धिमानों को निरन्तर बसावे वह **(इन्द्रः)** परमैश्वर्ययुक्त महान् राजा **(शत्रोः)** शत्रु की **(मिथत्या)** हिंसा से **(नृम्णम्)** जो मनुष्यों में रमणीय ऐसे धन की इच्छा करता हुआ जिन **(विश्वान्)** समस्त **(विभ्वान्)** विद्या में व्याप्त अमात्य जनों को अपना करता है **(ते)** वे विद्वान् जन **(उपरताति)** मेघास्त्रादिकों से संग्राम में विजय **(कृणवन्)** करते हैं वे **(चित्)** ही **(हि)** निश्चय कर **(शासा)** शासन से **(पूर्वीः)** सनातन प्रजाजन **(अभि, सन्ति)** सब ओर से विद्यमान हैं तथा वह स्वामी **(वि)** विजयी होता है॥३॥

**भावार्थः**-वही राजा महान् विजयी होता है, जो धार्मिक उत्तम विद्वानों का संग्रह करता है॥३॥

**पुना राजादिभिर्विद्वद्भिः किं कर्त्तव्यमित्याह॥**

फिर राजादिकों से विद्वानों को क्या करना चाहिये, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

### नू दे॑वासो॒ वरि॑वः कर्तना नो भू॒त नो॒ विश्वेऽव॑से स॒जोषा॑ः।

### सम॒स्मे इष॒ं वस॑वो ददीरन् यू॒यं पा॑त स्व॒स्तिभि॒ः सदा॑ नः॥४॥१५॥

**नु। दे॒वा॒स॒ः। वरि॑वः। क॒र्त॒न॒। न॒ः। भू॒त। न॒ः। विश्वे॑। अव॑से। स॒ऽजोषा॑ः। सम्। अ॒स्मे॒ इति॑। इष॑म्। वस॑वः। द॒दी॒र॒न्। यू॒यम्। पा॒त॒। स्व॒स्तिऽभि॑ः। सदा॑। नः॥४॥**

**पदार्थः**-**(नु)** क्षिप्रम्। अत्र **ऋचि तुनुघे**ति दीर्घः। **(देवासः)** विद्वांसः **(वरिवः)** **(कर्तना)** कुर्यात्। अत्र **संहितायामि**ति दीर्घः। **(नः)** अस्माकम् **(भूत)** भवत **(नः)** अस्माकम् **(विश्वे)** सर्वे **(अवसे)** रक्षणाद्याय **(सजोषाः)** समानप्रीतिसेविनः। अत्र वचनव्यत्ययेन जसः स्थाने सुः। **(सम्)** **(अस्मे)** अस्मभ्यम् **(इषम्)** अन्नं विज्ञानं वा **(वसवः)** ये विद्यायां वसन्ति ते **(ददीरन्)** प्रयच्छेयुः **(यूयम्)** **(पात)** **(स्वस्तिभिः)** **(सदा)** **(नः)**॥४॥

**अन्वयः**-हे सजोषा वसवो विश्वे देवासो! यूयं नो वरिवः कर्त्तन नोऽवसे नु भूताऽस्मे इषं संददीरन् यूयं स्वस्तिभिर्नस्सदा पात॥४॥

**भावार्थः**-हे विद्वांसो! राजजना यूयमस्मान् प्रजाः सततं रक्षत सर्वदा विज्ञानमन्नाद्यैश्वर्यं च प्रयच्छत एवं कृते सति युष्मान् वयं सततं रक्षेमेति॥४॥



www.9009.co.in

अत्र विद्वद्गुणकृत्यवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह संगतिर्वेद्या॥

**इत्यष्टचत्वारिंशत्तमं सूक्तं पञ्चदशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे **(सजोषाः)** समान प्रीति के सेवने वाले **(वसवः)** विद्या में निवासकर्त्ता **(विश्वे)** समस्त **(देवासः)** विद्वान् जनो! तुम **(नः)** हमारा **(वरिवः)** सेवन **(कर्त्तन)** करो **(नः)** हमारी **(अवसे)** रक्षा आदि के लिये **(नु)** शीघ्र **(भूत)** संनद्ध होओ **(अस्मे)** हमारे लिये **(इषम्)** अन्न वा विज्ञान को **(सम्, ददरीन्)** अच्छे प्रकार देओ **(यूयम्)** तुम **(स्वस्तिभिः)** सुखों से **(नः)** हमारी **(सदा)** सर्वदा **(पात)** रक्षा करो॥४॥

**भावार्थः**-हे विद्वान् राजजनो! तुम हम लोगों की ओर प्रजाजनों की निरन्तर रक्षा करो, सर्वदा विज्ञान और अन्न आदि ऐश्वर्य को देओ, ऐसा करो तो तुम लोगों की हम निरन्तर रक्षा करें॥४॥

इस मन्त्र में विद्वानों के गुण और कर्मों का वर्णन होने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ संगति जाननी चाहिये॥

**यह अड़तालीसवां सूक्त और पन्द्रहवां वर्ग पूरा हुआ॥**



www.9009.co.in

**अत चतुर्ऋचस्य [एकोनपञ्चाशत्तमस्य] सूक्तस्य वसिष्ठर्षिः। आपो देवताः। १ निचृत्त्रिष्टुप्।
२, ३ त्रिष्टुप्। ४ विराट् त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः॥**

***पुनस्ता आपः कीदृश्यः सन्तीत्याह॥***

अब चार ऋचा वाले उनंचासवें सूक्त का प्रारम्भ है। उसके प्रथम मन्त्र में फिर वे जल कैसे हैं, इस विषय को कहते हैं॥

**स॒मु॒द्रज्ये॑ष्ठाः सलि॒लस्य॒ मध्या॑त् पुना॒ना य॒न्त्यनि॑विशमानाः।**
**इन्द्रो॒ या व॒ज्री वृ॑ष॒भो र॒राद॒ ता आपो॑ दे॒वीरि॒ह माम॑वन्तु॥ १॥**

**स॒मु॒द्रऽज्ये॑ष्ठाः। स॒लि॒लस्य॑। मध्या॑त्। पु॒ना॒नाः। य॒न्ति॒। अनि॑ऽविशमानाः। इन्द्रः॑। याः। व॒ज्री। वृ॒ष॒भः। र॒राद॑। ताः। आपः॑। दे॒वीः। इ॒ह। माम्। अ॒व॒न्तु॒॥ १॥**

**पदार्थः**-(**समुद्रज्येष्ठाः**) समुद्रः ज्येष्ठो यासां ताः (**सलिलस्य**) अन्तरिक्षस्य (**मध्यात्**) (**पुनानाः**) पवित्रयन्त्यः (**यन्ति**) (**अनिविशमानाः**) याः कुत्रचिन्न निविशन्ते (**इन्द्रः**) सूर्यो विद्युद्वा (**याः**) (**वज्री**) वज्रतुल्यछेदकबहुकिरणयुक्तः (**वृषभः**) वर्षकः (**रराद**) विलिखति वर्षयति (**ताः**) (**आपः**) जलानि (**देवीः**) प्रमोदिकाः (**इह**) अस्मिन् संसारे (**माम्**) (**अवन्तु**) रक्षन्तु॥ १॥

**अन्वयः**-हे विद्वांसो! यास्समुद्रज्येष्ठाः पुनाना अनिविशमाना आपस्सलिलस्य मध्याद्यन्ति मामिहावन्तु ताः देवीः वृषभो वज्रीन्द्रो रराद तथा यूयं भवत॥ १॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे मनुष्याः! या आप अन्तरिक्षाद्वर्षित्वा सर्वान् पालयन्ति ता यूयं पानादिकार्येषु संप्रयुङ्ग्ध्वम्॥ १॥

**पदार्थः**-हे विद्वानो! (**याः**) जो ऐसी हैं कि (**समुद्रज्येष्ठाः**) जिन में समुद्र ज्येष्ठ है वे (**पुनानाः**) पवित्र करती हुईं (**अनिविशमानाः**) कहीं निवास न करने वाली (**आपः**) जल तरङ्गें (**सलिलस्य**) अन्तरिक्ष के (**मध्यात्**) बीच से (**यन्ति**) जाती हैं वह (**माम्**) मेरी (**इह**) इस संसार में (**अवन्तु**) रक्षा करें और (**ताः**) उन (**देवीः**) प्रमोद कराने वाली जल तरंगों को (**वृषभः**) वर्षा करने वा (**वज्री**) वज्र के तुल्य छिन्न-भिन्न करने वाला बहुत किरणों से युक्त (**इन्द्रः**) सूर्य वा बिजुली (**रराद**) वर्षाता है, वैसे तुम होओ॥ १॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जो जल अन्तरिक्ष से बरस के सब की पालना करते हैं, उन का तुम पान आदि कामों में अच्छे प्रकार योग करो॥ १॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**या आपो॑ दि॒व्या उ॒त वा॒ स्रव॑न्ति ख॒नित्रि॑मा उ॒त वा॒ याः स्व॑यं॒जाः।**
**स॒मु॒द्रार्था॒ याः शुच॑यः पाव॒कास्ता आपो॑ दे॒वीरि॒ह माम॑वन्तु॥ २॥**



www.9009.co.in

**याः। आपः। दिव्याः। उत। वा। स्रवन्ति। खनित्रिमाः। उत। वा। याः। स्वयम्ऽजाः। समुद्रऽअर्थाः। याः। शुचयः। पावकाः। ताः। आपः। देवीः। इह। माम्। अवन्तु॥२॥**

**पदार्थः**-(**याः**) (**आपः**) जलानि (**दिव्याः**) शुद्धाः (**उत**) अपि (**वा**) (**स्रवन्ति**) चलन्ति उत वा (**खनित्रिमाः**) याः खनित्रेण संजाताः (**उत**) (**वा**) (**याः**) (**स्वयंजाः**) स्वयंजाताः (**समुद्रार्थाः**) समुद्रायेमाः (**याः**) (**शुचयः**) पवित्राः (**पावकाः**) पवित्रकर्त्र्यः (**ताः**) (**आपः**) (**देवीः**) देदीप्यमानाः (**इह**) (**माम्**) (**अवन्तु**)॥२॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! या दिव्या आपस्स्रवन्ति उत वा खनित्रिमा जायन्ते याः स्वयंजा उत वा समुद्रार्थाः याः शुचयः पावकाः सन्ति ता देवीराप इह मामवन्तु॥२॥

**भावार्थः**-हे विद्वांसो! यथा जलानि प्राणाश्चाऽस्मान् संरक्ष्य वर्धयेयुस्तथा यूयमस्मान् बोधयत॥२॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो (**याः**) जो (**दिव्याः**) शुद्ध (**आपः**) जल (**स्रवन्ति**) चूते हैं (**उत, वा**) अथवा (**खनित्रिमाः**) खोदने से उत्पन्न होते हैं वा (**याः**) जो (**स्वयंजाः**) आप उत्पन्न हुए हैं (**उत, वा**) अथवा (**समुद्रार्थाः**) समुद्र के लिये हैं वा (**याः**) जो (**शुचयः**) पवित्र (**पावकाः**) पवित्र करने वाले हैं (**ताः**) वह (**देवीः**) देदीप्यमान (**आपः**) जल (**इह**) इस संसार में (**माम्**) मेरी (**अवन्तु**) रक्षा करें॥२॥

**भावार्थः**-हे विद्वानो! जैसे जल और प्राण हमारी अच्छे प्रकार रक्षा कर बढ़ावें, वैसे तुम लोग हम को बोध कराओ॥२॥

**पुनः स जगदीश्वरः कीदृशोऽस्तीत्याह॥**

फिर वह जगदीश्वर कैसा है, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**यासां राजा वरुणो याति मध्ये सत्यानृते अवपश्यञ्जनानाम्।**

**मधुश्चुतः शुचयो याः पावकास्ता आपो देवीरिह मामवन्तु॥३॥**

**यासाम्। राजा। वरुणः। याति। मध्ये। सत्यानृते इति। अवऽपश्यन्। जनानाम्। मधुश्चुतः। शुचयः। याः। पावकाः। ताः। आपः। देवीः। इह। माम्। अवन्तु॥३॥**

**पदार्थः**-(**यासाम्**) अपाम् (**राजा**) प्रकाशमानः (**वरुणः**) सर्वोत्कृष्ट ईश्वरः (**याति**) प्राप्नोति (**मध्ये**) (**सत्यानृते**) सत्यं चानृतं च ते (**अवपश्यन्**) यथार्थं विजानन् (**जनानाम्**) जीवानाम् (**मधुश्चुतः**) मधुरादिगुणैर्निष्पन्नाः (**शुचयः**) पवित्राः (**याः**) (**पावकाः**) पवित्रकराः (**ताः**) (**आपः**) (**देवीः**) देदीप्यमानाः (**इह**) अस्मिन् संसारे (**माम्**) (**अवन्तु**)॥३॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यासां मध्ये वरुणो राजा जनानां सत्यानृत आचरणे अवपश्यन् याति या मधुश्चुतः शुचयः पावकास्सन्ति ता देवीराप इह मामवन्तु॥३॥



www.9009.co.in

**भावार्थः-**हे मनुष्या! यो जगदीश्वरः प्राणदिष्वभिव्याप्तस्सर्वेषां जीवानां धर्माधर्मौ पश्यन् फलेन योजयन् सर्वं रक्षति स एव सर्वैः सततं ध्येयोऽस्ति॥३॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(यासाम्)** जिन जलों के **(मध्ये)** बीच **(वरुणः)** सब से उत्तम **(राजा)** प्रकाशमान ईश्वर **(जनानाम्)** मनुष्यों के **(सत्यानृते)** सत्य और झूंठ आचरणों को **(अव, पश्यन्)** यथार्थ जानता हुआ **(याति)** प्राप्त होता है वा **(याः)** जो **(मधुश्चुतः)** मधुरादि गुणों से उत्पन्न हुए **(शुचयः)** पवित्र **(पावकाः)** और पवित्र करने वाले हैं **(ताः)** वे **(देवीः)** देदीप्यमान **(आपः)** जल **(इह)** इस संसार में **(माम्)** मेरी **(अवन्तु)** रक्षा करें॥३॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो जगदीश्वर प्राणादिकों में अभिव्याप्त सब जीवों के धर्म-अधर्म को देखता और फल से युक्त करता हुआ सब की रक्षा करता है, वही सब को निरन्तर ध्यान करने योग्य है॥३॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**यासु राजा वरुणो यासु सोमो विश्वे देवा यासूर्जं मदन्ति।**

**वैश्वानरो यास्वग्निः प्रविष्टस्ता आपो देवीरिह मामवन्तु॥४॥१६॥**

**यासु। राजा। वरुणः। यासु। सोमः। विश्वे। देवाः। यासु। ऊर्जम्। मदन्ति। वैश्वानरः। यासु। अग्निः। प्रऽविष्टः। ताः। आपः। देवीः। इह। माम्। अवन्तु॥४॥**

**पदार्थः**-**(यासु)** अन्तरिक्षे जलेषु प्राणेषु वा **(राजा)** न्यायविनयाभ्यां प्रकाशमानः **(वरुणः)** श्रेष्ठगुणकर्मस्वभावः **(यासु)** **(सोमः)** ओषधिगणः **(विश्वे)** सर्वे **(देवाः)** विद्वांसः पृथिव्यादयो वा **(यासु)** **(ऊर्जम्)** बलं पराक्रमम् **(मदन्ति)** प्राप्नुवन्ति **(वैश्वानरः)** विश्वेषु नरेषु वा राजमानः परमात्मा **(यासु)** **(अग्निः)** विद्युत् **(प्रविष्टः)** **(ताः)** **(आपः)** **(देवीः)** कमनीयाः **(इह)** अस्मिन् संसारे **(माम्)** **(अवन्तु)**॥४॥

**अन्वयः**- हे विद्वांसो! यास्वप्सु वरुणो राजा यासु सोमो यासु विश्वे देवाश्चोर्जं मदन्ति यासु वैश्वानरोऽग्निः प्रविष्टस्ता देवीराप इह मामवन्तु तथा बोधयत॥४॥

**भावार्थः-** हे मनुष्या! यस्मिन्नाकाशे प्राणेषु जले वा सर्वं जगज्जीवति येषु प्राणेषु स्थितो योगी परमात्मानं लभते यत्र विद्युत्प्रविष्टाऽस्ति ता अपो यूयं विज्ञाय रक्षिता भवतेति॥४॥

अत्राबादिगुणकृत्यवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह संगतिर्वेद्या॥

**इत्येकोनपञ्चाशत्तमं सूक्तं षोडशो वर्गश्च समाप्तः॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-हे विद्वानो! **(यासु)** जिन अन्तरिक्ष जल वा प्राणों में **(वरुणः)** श्रेष्ठ गुण-कर्म-स्वभावयुक्त **(राजा)** न्याय और विनय नम्रता से प्रकाशमान **(यासु)** वा जिन में **(सोमः)** ओषधिगण और **(यासु)** जिन में **(विश्वे)** समस्त **(देवाः)** विद्वान् जन अथवा पृथिवी आदि लोक **(ऊर्जम्)** बल पराक्रम को **(मदन्ति)** प्राप्त होते हैं या **(यासु)** जिन में **(वैश्वानरः)** सब में वा मनुष्यों में प्रकाशमान परमात्मा वा **(अग्निः)** बिजुलीरूप अग्नि **(प्रविष्टः)** प्रविष्ट है **(ताः)** वे **(देवीः)** मनोहर **(आपः)** जल **(इह)** इस संसार में **(माम्)** मेरी **(अवन्तु)** रक्षा करें॥४॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जिस आकाश में, प्राणों में वा जल में सब जगत् जीवन धारण करता है वा जिन प्राणों में स्थित योगी जन परमात्मा को प्राप्त होता है वा जहाँ बिजुली प्रविष्ट है, उन जलों को तुम जान कर रक्षायुक्त होओ॥४॥

इस सूक्त में जलादिकों के गुण और कृत्यों का वर्णन होने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ संगति जाननी चाहिये॥

**यह उनंचासवां सूक्त और सोलहवां वर्ग पूरा हुआ॥**



www.9009.co.in

**अथ चतुर्ऋर्चस्य [पञ्चाशत्तमस्य] सूक्तस्य १-४ वसिष्ठः। १ मित्रावरुणौ। २ अग्निः। ३ विश्वेदेवाः। ४ नद्यः। १, ३ स्वराट् त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः। २ निचृज्जगती। ४ भुरिगतिजगतीच्छन्दः। निषादः स्वरः॥**

***अथ मनुष्यैः किमत्रानुष्ठेयमित्याह॥***

अब चार ऋचा वाले पचासवें सूक्त का प्रारम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में मनुष्यों को इस संसार में क्या आचरण करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**आ मां मित्रावरुणेह रक्षतं कुलाययद्विश्वयन्मा न आ गन्।**
**अजकावं दुर्दृशीकं तिरो दधे मा मां पद्येन रपसा विदत्सरुः॥१॥**

**आ। माम्। मित्रावरुणा। इह। रक्षतम्। कुलाययत्। विऽश्वयत्। मा। नः। आ। गन्। अजकाऽवम्। दुःऽदृशीकम्। तिरः। दधे। मा। माम्। पद्येन। रपसा। विदत्। त्सरुः॥१॥**

**पदार्थः**-(**आ**) (**माम्**) (**मित्रावरुणा**) प्राणोदानाविवाध्यापकोपदेशकौ (**इह**) अस्मिन् संसारे (**रक्षतम्**) (**कुलाययत्**) कुलायं कुलोन्नतिं कामयमानः (**विश्वयत्**) यो विश्वं करोति सः (**मा**) निषेधे (**नः**) अस्मान् (**आ**) (**गन्**) आगच्छेत् प्राप्नुयात् (**अजकावम्**) योऽजान् जीवान् कावयति पीडयति तम् (**दुर्दृशीकम्**) दुःखेन द्रष्टुं योग्यम् (**तिरः**) (**दधे**) निवारयामि (**मा**) निषेधे (**माम्**) (**पद्येन**) प्राप्तुं योग्येन (**रपसा**) पापेन (**विदत्**) प्राप्नुयात् (**त्सरुः**) कुटिलगतिः॥१॥

**अन्वयः**-हे मित्रावरुणा! युवामिह योऽहं कुलाययद्विश्वयद् दुर्दृशीकमजकावं तिरोदधे त्सरू रोगः पद्येन रपसा मां मा विदत् कापि पीडा नोऽस्मान् मा आगन् तस्मान्मा मां रक्षतम्॥१॥

**भावार्थः**-मनुष्यैः कदापि पापाचरणं कुपथ्यं च न कार्यं येन कदाचिद् रोगप्राप्तिर्न स्यात् येऽत्र संसारे अध्यापकोपदेशकास्सन्ति तेऽध्यापनोपदेशाभ्यां सर्वानरोगान् कृत्वा सरलानुद्योगिनः कुर्वन्तु॥१॥

**पदार्थः**-हे (**मित्रावरुणा**) प्राण और उदान के समान अध्यापक और उपदेशक! तुम (**इह**) इस संसार में जो मैं (**कुलाययत्**) कुल की उन्नति चाहता हुआ (**विश्वयत्**) सब काम करने वाला (**दुर्दृशीकम्**) दुःख से देखने योग्य (**अजकावम्**) जीवों को पीड़ा देता उसको (**तिरोदधे**) निवारणे करता हूँ वह (**त्सरूः**) कुटिल गति रोग (**पद्येन**) प्राप्त होने योग्य (**रपसा**) पाप से (**माम्**) मुझे (**मा**) मत (**विदत्**) प्राप्त हो कोई पीड़ा (**नः**) हम लोगों को (**मा**) मत (**आ, गन्**) प्राप्त हो इससे (**माम्**) मेरी (**आ, रक्षतम्**) सब ओर से रक्षा करो॥१॥

**भावार्थः**-मनुष्यों को पापाचरण वा कुपथ्य कभी न करना चाहिये जिससे कभी रोगप्राप्ति न हो जो, इस संसार में अध्यापक और उपदेशक हैं, वे पढ़ाने और उपदेश करने से सब को अरोगी कर सीधे और उद्योगी करें॥१॥

**पुनर्मनुष्यैः रोगनिवारणार्थं किं कर्तव्यमित्याह॥**



www.9009.co.in

फिर मनुष्यों को रोगनिवारणार्थ क्या करना चाहिये, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**यद्विजामन् परुषि वन्दनं भुवदष्ठीवन्तौ परि कुल्फौ च देहत्।**

**अग्निष्टच्छोचन्नप बाधतामितो मा मां पद्येन रपसा विदुत्त्सरुः॥ २॥**

**यत्। विऽजामन्। परुषि। वन्दनम्। भुवत्। अष्ठीवन्तौ। परि। कुल्फौ। च। देहत्। अग्निः। तत्। शोचन्। अप। बाधताम्। इतः। मा। माम्। पद्येन। रपसा। विदत्। त्सरुः॥ २॥**

**पदार्थः**-(**यत्**) यस्मिन् (**विजामन्**) विजानन् (**परुषि**) कठोरे व्यवहारे (**वन्दनम्**) (**भुवत्**) भवति (**अष्ठीवन्तौ**) ष्ठीवनं कफादिकमत्यजन्तौ (**परि**) सर्वतः (**कुल्फौ**) गुल्फौ (**च**) (**देहत्**) वर्धये (**अग्निः**) (**तत्**) (**शोचन्**) पवित्रीकुर्वन् (**अप**) (**बाधताम्**) निवारयतु (**इतः**) अस्मात्सः (**मा**) निषेधे (**माम्**) (**पद्येन**) (**रपसा**) अपराधेन (**विदत्**) (**त्सरुः**) कठिनो रोगः॥ २॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यद्यस्मिन् परुषि वन्दनं विजामन् भुवत् यत्सरू रोगोऽष्ठीवन्तौ कुल्फौ च परिदेहत् तत्तमग्निः शोचन्नितोऽप बाधतां यः पद्येन रपसा मां रोगः प्राप्नोति स मां मा विदत्॥ २॥

**भावार्थः**-ये मनुष्या ब्रह्मचर्यं विहाय बाल्यविवाहं कुपथ्यं च कुर्वन्ति तेषां शरीरेषु शोथादयो रोगाः प्रभवन्ति तेषां निवारणं वैद्यकरीत्या कार्यम्॥ २॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो इस (**परुषि**) कठोर व्यवहार में (**वन्दनम्**) वन्दना को (**विजामन्**) विशेषता से जानता हुआ (**भुवत्**) प्रसिद्ध होता है (**यत्**) जिस व्यवहार में (**त्सरुः**) कठिन रोग (**अष्ठीवन्तौ**) कफादि न थूकने वाली (**कुल्फौ**) जङ्घाओं को (**च**) भी (**परि, देहत्**) सब ओर से बढ़ावे पीड़ा दे (**तत्**) उसको (**अग्निः**) अग्नि (**शोचन्**) पवित्र करता हुआ अग्नि (**इत्ः**) इस स्थान से (**अप, बाधताम्**) दूर करें (**पद्येन**) प्राप्त होने योग्य (**रपसा**) अपराध से (**माम्**) मुझको रोग प्राप्त होता है, वह मुझ को (**मा**) मत (**विदत्**) प्राप्त हो॥ २॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य ब्रह्मचर्य्य को छोड़ के बालकपन में विवाह वा कुपथ्य करते हैं, उनके शरीर में शोध आदि रोग होते हैं, उनका निवारण वैद्यक-रीति से करना चाहिये॥ २॥

**मनुष्यै रोगनिवारणं कृत्वैव पदार्थसेवनं कर्तव्यमित्याह॥**

मनुष्यों को रोगनिवृत्त करके ही पदार्थ सेवन करना चाहिये, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**यच्छल्मलौ भवति यन्नदीषु यदोषधीभ्यः परि जायते विषम्।**

**विश्वे देवा निरितस्तत्सुवन्तु मा मां पद्येन रपसा विदुत्त्सरुः॥ ३॥**

**यत्। शल्मलौ। भवति। यत्। नदीषु। यत्। ओषधीभ्यः। परि। जायते। विषम्। विश्वे। देवाः। निः। इतः। तत्। सुवन्तु। मा। माम्। पद्येन। रपसा। विदत्। त्सरुः॥ ३॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-**(यत्)** **(शल्मलौ)** शल्मलीवृक्षादौ **(भवति)** **(यत्)** **(नदीषु)** नदीनां प्रवाहेषु **(यत्)** **(ओषधीभ्यः)** यवादिभ्यः **(परि)** सर्वतः **(जायते)** उत्पद्यते **(विषम्)** प्राणहरम् **(विश्वे)** सर्वे **(देवाः)** विद्वांसः **(निः)** निस्तारणे **(इतः)** अस्माच्छरीरात् **(तत्)** **(सुवन्तु)** दूरे प्रेरयन्तु **(मा)** माम् **(पद्येन)** प्राप्तव्येन **(रपसा)** पापचरणेन **(विदत्)** लभेत **(त्सरुः)** कुटिलो रोगः॥३॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यद्विषं शल्मलौ यन्नदीषु भवति यदोषधीभ्यो विषं परिजायते तदितो विश्वे देवा निस्सुवन्तु यतः पद्येन रपसा जातस्त्सरू रोगो मां मा विदत्॥३॥

**भावार्थः**-हे वैद्यादयो मनुष्याः! सर्वेभ्यः पदार्थेभ्यः पदार्थेषु वा यावद्विषं प्रजायते तावत्सर्वं निवार्यान्नपानादिकं सेवनीयं यतो युष्मान् कश्चिदपि रोगो न प्राप्नुयात्॥३॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(यत्)** जो **(विषम्)** प्राण हरने वाला पदार्थ विष **(शल्मलौ)** सेमर आदि वृक्ष में और **(यत्)** जो **(नदीषु)** नदियों के प्रवाहों में **(भवति)** होता है **(यत्)** जो **(ओषधीभ्यः)** यव आदि ओषधियों से विष **(परि, जायते)** उत्पन्न होता है **(तत्)** उसको **(इतः)** इस शरीर से **(विश्वे)** सब **(देवाः)** विद्वान् जन **(निः, सुवन्तु)** निरन्तर दूर करें जिस कारण **(पद्येन)** प्राप्त होने योग्य **(रपसा)** पापाचरण से उत्पन्न हुआ **(त्सरूः)** कुटिल रोग **(माम्)** मुझको **(मा)** मत **(विदत्)** प्राप्त हो॥३॥

**भावार्थः**-हे वैद्य आदि मनुष्यो! सब पदार्थों से वा पदार्थों में जितना विष उत्पन्न होता है, उतना सब निवार के अन्न पानी आदि सेवन करना चाहिये, जिससे तुम को कोई भी रोग न प्राप्त हो॥३॥

**पुनर्मनुष्यैः किं निवार्य किं सेवनीयमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को किसका निवारण कर क्या सेवन करना चाहिये, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**याः प्रवतो निवत उद्वत उदन्वतीरनुदकाश्च याः।**
**ता अस्मभ्यं पयसा पिन्वमानाः शिवा देवीरशिपदा भवन्तु**
**सर्वा नद्यो अशिमिदा भवन्तु॥४॥१७॥**

**याः। प्रऽवतः। निऽवतः। उत्ऽवतः। उदन्ऽवतीः। अनुदकाः। च। याः। ताः। अस्मभ्यम्। पयसा। पिन्वमानाः। शिवाः। देवीः। अशिपदाः। भवन्तु। सर्वाः। नद्यः। अशिमिदाः। भवन्तु॥४॥**

**पदार्थः**-**(याः)** **(प्रवतः)** गमनार्हान् **(निवतः)** निम्नान् **(उद्वतः)** ऊर्ध्वान् देशान् **(उदन्वतीः)** उदकयुक्ताः **(अनुदकाः)** जलरहिताः **(च)** **(याः)** **(ताः)** **(अस्मभ्यम्)** **(पयसा)** उदकेन। **पय इत्युदकनाम।** (निघं०१.१२ **(पिन्वमानाः)** सिञ्चमानाः प्रीणन्त्यः **(शिवाः)** सुखकर्यः **(देवीः)** आनन्दप्रदाः **(अशिपदाः)** भोजनादिव्यवहाराय प्राप्ताः **(भवन्तु)** **(सर्वाः)** **(नद्यः)** **(अशिमिदाः)** भोजनादिस्नेहकारिकाः **(भवन्तु)**॥४॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-याः प्रवतो निवत उद्वतो देशान् गच्छन्ति याश्चोदन्वतीरनुदकास्सन्ति ताः सर्वा नद्योऽस्मभ्यं पयसा पिन्वमाना अशिपदा देवीः शिवा भवन्तु अशिमिदा भवन्तु॥४॥

**भावार्थः**-हे मनुष्याः! यावज्जलं नद्यादिषु गच्छति यावच्च मेघमण्डलं प्राप्नोति तावत्सर्वं होमेन शोधयित्वा सेवन्ताम्, यतः सर्वदा मङ्गलं वर्धित्वा दुःखप्रणाशो भवेदिति॥४॥

अत्राबौषधीविषनिवारणेन शुद्धसेवनमुक्तमत एतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह संगतिर्वेद्या॥

**इति पञ्चाशत्तमं सूक्तं सप्तदशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**- **(याः)** जो **(प्रवतः)** जाने योग्य **(निवतः)** नीचे **(उद्वतः)** वा ऊपरले देशों को जाती हैं **(याश्च)** और जो **(उदन्वतीः)** जल से भरी वा **(अनुदकाः)** जलरहित हैं **(ताः)** वे **(सर्वाः)** सब **(नद्यः)** नदियाँ **(अस्मभ्यम्)** हमारे लिये **(पयसा)** जल से **(पिन्वमानाः)** सींचती हुईं वा तृप्त करती हुईं **(अशिपदाः)** भोजनादि व्यवहारों के लिये प्राप्त होती हुईं **(देवीः)** आनन्द देने और **(शिवः)** सुख करने वाली **(भवन्तु)** हों और **(अशिमिदाः)** भोजन आदि स्नेह करने वाली **(भवन्तु)** हों॥४॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जितना जल नदी आदि में जाता है और जितना मेघमण्डल में प्राप्त होता है, उतना सब होम से शुद्ध कर सेवो जिससे सर्वदा मंगल बढ़ कर दुःख का अच्छे प्रकार नाश हो॥४॥

इस सूक्त में जल और ओषधी विष के निवारण से शुद्ध सेवन कहा, इससे इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ संगति जाननी चाहिये॥

**यह पचासवां सूक्त और सत्रहवां वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

**अथ त्र्यृचस्य [एकपञ्चाशत्तमस्य] सूक्तस्य वसिष्ठर्षिः। आदित्या देवताः। १, २ त्रिष्टुप्। ३ निचृत्त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः॥**

***अत्र केषां संगेन किं भवतीत्याह॥***

अब तीन ऋचा वाले इक्यावनवें सूक्त का प्रारम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में किनके संग से क्या होता है, इस विषय को कहते हैं॥

**आ॒दि॒त्याना॒मव॑सा॒ नूत॑नेन सक्षी॒महि॒ शर्म॑णा॒ शन्त॑मेन।**

**अ॒ना॒गा॒स्त्वे अ॑दिति॒त्वे तु॒रास॑ इ॒मं य॒ज्ञं द॑धतु॒ श्रोष॑माणाः॥ १॥**

**आ॒दि॒त्याना॑म्। अव॑सा। नूत॑नेन। स॒क्षी॒महि॑। शर्म॑णा। शम्ऽत॑मेन। अ॒ना॒गाः॒ऽत्वे। अ॒दि॒ति॒ऽत्वे। तु॒रास॑ः। इ॒मम्। य॒ज्ञम्। द॒ध॒तु॒। श्रोष॑माणाः॥ १॥**

**पदार्थः**-(**आदित्यानाम्**) पूर्णविद्यानां विदुषाम् (**अवसा**) रक्षणादिना (**नूतनेन**) नवीनेन (**सक्षीमहि**) सम्बध्नीयाम (**शर्मणा**) विग्रहेण (**शन्तमेन**) अतिशयेन सुखकर्त्रा (**अनागास्त्वे**) अनपराधित्वे (**अदितित्वे**) अखण्डितत्वे (**तुरासः**) शीघ्रकारिणः (**इमम्**) (**यज्ञम्**) (**दधतु**) (**श्रोषमाणाः**) श्रवणं कुर्वन्तः॥ १॥

**अन्वयः**-ये तुरासः श्रोषमाणा अनागास्त्वे अदितित्व इमं यज्ञं दधतु तेषामादित्यानामवसा शन्तमेन नूतनेन शर्मणा सह वयं सक्षीमहि॥ १॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यथा वयं विद्वत्संगेनात्यन्तं सुखं प्राप्नुमस्तथैव यूयमपीदं प्राप्नुत॥ १॥

**पदार्थः**-जो (**तुरासः**) शीघ्रकारी (**श्रोषमाणाः**) सुनते हुए (**अनागास्त्वे**) अनपराधनपन में (**अदितित्वे**) अखण्डित काम में (**इमम्**) इस (**यज्ञम्**) यज्ञ को (**दधतु**) धारण करें, उन (**आदित्यानाम्**) पूर्ण विद्यायुक्त विद्वानों की (**अवसा**) रक्षा आदि से (**शन्तमेन**) अतीव सुख करने वाले (**नूतनेन**) नवीन (**शर्मणा**) विग्रह के साथ हम लोग (**सक्षीमहि**) बंधें॥ १॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे हम लोग विद्वानों के संग से अत्यन्त सुख पावें, वैसे ही तुम भी इसको पाओ॥ १॥

**पुनर्विद्वांसः किं कुर्युरित्याह॥**

फिर विद्वान् जन क्या करें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**आ॒दि॒त्यासो॒ अदि॑तिर्मादयन्तां मि॒त्रो अ॑र्य॒मा वरु॑णो॒ रजि॑ष्ठाः।**

**अ॒स्माकं॑ सन्तु॒ भुव॑नस्य गो॒पाः पिब॑न्तु॒ सोम॒मव॑से नो अ॒द्य॥ २॥**

**आ॒दि॒त्यास॑ः। अदि॑तिः। मा॒द॒य॒न्ता॒म्। मि॒त्रः। अ॒र्य॒मा। वरु॑णः। रजि॑ष्ठाः। अ॒स्माक॑म्। स॒न्तु॒। भुव॑नस्य। गो॒पाः। पिब॑न्तु। सोम॑म्। अव॑से। न॒ः। अ॒द्य॥ २॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**आदित्यासः**) पूर्णा विद्वांसः संवत्सरस्य मासा वा (**अदितिः**) अखण्डिता नीतिः (**मादयन्ताम्**) आनन्दयन्ताम् (**मित्रः**) सखा (**अर्यमा**) व्यवस्थापकः (**वरुणः**) श्रेष्ठः (**रजिष्ठाः**) अतिशयेन रजितारः (**अस्माकम्**) (**सन्तु**) (**भुवनस्य**) जलादेर्लोकसमूहस्य। **भुवनमित्युदकनाम।** (निघं०१.१२ (**गोपाः**) रक्षकाः (**पिबन्तु**) (**सोमम्**) महौषधिरसम् (**अवसे**) रक्षणाद्याय (**नः**) अस्माकम् (**अद्य**) इदानीम्॥२॥

**अन्वयः**-हे मनुष्याः! यथा रजिष्ठा अदितिर्मित्रोऽर्यमा वरुणोऽस्माकं भुवनस्य गोपाः सन्ति नोऽवसे मादयन्तामद्य सोमं संपिबन्तु तथा ते आदित्यासोऽस्माकं भुवनस्य गोपास्सन्तु॥२॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे विद्वांसो! यूयमादित्यवत् विद्याप्रकाशेन वैद्यवदौषधसेवनेन नीरोगा भूत्वाऽस्माकमप्यारोग्यं कुर्वन्तु॥२॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे (**रजिष्ठाः**) अतीव प्रीति करते हुए (**अदितिः**) अखण्डित नीति (**मित्रः**) मित्र (**अर्यमा**) व्यवस्था देने वाला (**वरुणः**) श्रेष्ठ (**अस्माकम्**) हमारे (**भुवनस्य**) जल आदि लोकसमूह की (**गोपाः**) रक्षा करने वाले हैं (**नः**) हमारी (**अवसे**) रक्षा आदि के लिये (**मादयन्ताम्**) आनन्द देते हैं (**अद्य**) आज (**सोमम्**) बड़ी-बड़ी ओषधियों के रस को (**पिबन्तु**) पीवें, वैसे वे (**आदित्यासः**) पूर्ण विद्वान् वा संवत्सर के महीने हमारे जलादि वा लोक-समूह की रक्षा करने वाले (**सन्तु**) हों॥२॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे विद्वानो! तुम आदित्य के समान विद्या प्रकाश से, वैद्य के समान ओषधियों के सेवने से नीरोग होकर हमारा भी आरोग्य करो॥२॥

**पुनः केषां रक्षणेन सर्वं सुखं संभवतीत्याह॥**

फिर किसकी रक्षा से सब सुख होता है, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**आ॒दि॒त्या विश्वे॑ म॒रुत॑श्च॒ विश्वे॑ दे॒वाश्च॒ विश्व॑ ऋ॒भव॑श्च॒ विश्वे॑।**

**इन्द्रो॑ अ॒ग्निर॒श्विना॑ तुष्टुवा॒ना यू॒यं पा॑त स्व॒स्तिभि॒: सदा॑ नः॥३॥१८॥**

**आ॒दि॒त्याः। विश्वे॑। म॒रुत॑ः। च॒। विश्वे॑। दे॒वाः। च॒। विश्वे॑। ऋ॒भव॑ः। च॒। विश्वे॑। इन्द्र॑ः। अ॒ग्निः। अ॒श्विना॑। तु॒स्तु॒वा॒नाः। यू॒यम्। पा॒त। स्व॒स्तिऽभि॑ः। सदा॑। न॒ः॥३॥**

**पदार्थः**-(**आदित्याः**) संवत्सरस्य मासा इव विद्यावृद्धाः (**विश्वे**) सर्वे (**मरुतः**) मनुष्याः (**च**) (**विश्वे**) (**देवाः**) विद्वांसः (**च**) (**विश्वे**) अखिलाः (**ऋभवः**) मेधाविनः (**च**) (**विश्वे**) (**इन्द्रः**) विद्युत् (**अग्निः**) (**अश्विना**) सूर्याचन्द्रमसौ (**तुष्टुवानाः**) प्रशंसन्तः (**यूयम्**) (**पात**) (**स्वस्तिभिः**) समग्रैस्सुखैः (**सदा**) (**नः**) अस्माकम्॥३॥

**अन्वयः**-हे विश्व आदित्या विश्वे मरुतश्च विश्वे देवाश्च विश्वे ऋभवश्च इन्द्रोऽग्निरश्विना तुष्टुवाना विद्वांसो यूय स्वस्तिभिर्नस्सदा पात॥३॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-यस्मिन्देशे सर्वे विद्वांसो धीमन्तः चतुरा धार्मिकाश्च रक्षका विद्याप्रदा उपदेशकास्सन्ति तत्र सर्वतो रक्षिता भूत्वा सर्वे सुखिनो भवन्तीति॥३॥

अत्रादित्यवद् विद्वद्गुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह संगतिर्वेद्या॥

**इत्येकपञ्चाशत्तमं सूक्तमष्टादशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे **(विश्वे)** सब **(आदित्याः)** संवत्सर के महीनों के समान विद्यावृद्ध **(विश्वे, मरुतः च)** और समस्त **(विश्वे, देवाः, च)** और समस्त विद्वान् **(विश्वे, ऋभवः, च)** और बुद्धिमान् जन **(इन्द्रः)** बिजुली **(अग्निः)** साधारण अग्नि **(अश्विना)** सूर्य चन्द्रमा **(तुष्टुवानाः)** प्रशंसा करते हुए विद्वान् जन तथा **(यूयम्)** तुम **(स्वस्तिभिः)** सुखों से **(नः)** हम लोगों की **(सदा)** सर्वदा **(पात)** रक्षा करो॥३॥

**भावार्थः**-जिस देश में सब विद्वान् जन बुद्धिमान् चतुर धार्मिक और रक्षा करने और विद्या देने वाले उपदेशक हैं, वहाँ सब से रक्षायुक्त होकर सब सुखी होते हैं॥३॥

इस सूक्त में सूर्य के समान विद्वानों के गुणों का वर्णन होने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ संगति जाननी चाहिये॥

**यह इक्यावनवां सूक्त और अठारहवां वर्ग पूरा हुआ॥**



www.9009.co.in

**अथ त्र्यृचस्य [द्विपञ्चाशत्तमस्य] सूक्तस्य वसिष्ठर्षिः। आदित्या देवताः। १, ३ स्वराट् पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः। २ निचृत्त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः॥**

***पुनर्मनुष्याः कीदृशा भवेयुरित्याह॥***

अब बावनवें सूक्त का प्रारम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में फिर मनुष्य कैसे हों, इस विषय को कहते हैं॥

**आ॒दि॒त्यासो॒ अदि॑तयः स्याम॒ पूर्दे॑व॒त्रा व॑सवो मर्त्य॒त्रा।**

**सने॑म मित्रावरुणा॒ सन॑न्तो॒ भवे॑म द्यावापृथिवी॒ भव॑न्तः॥ १॥**

**आ॒दि॒त्यास॑ः। अदि॑तयः। स्या॒म॒। पूः। दे॒व॒ऽत्रा। व॒स॒वः। म॒र्त्य॒ऽत्रा। सने॑म। मि॒त्रा॒व॒रु॒णा॒। सन॑न्तः। भवे॑म। द्या॒वा॒पृ॒थि॒वी॒ इति॑। भव॑न्तः॥ १॥**

**पदार्थः**-(**आदित्यासः**) मासा इव (**अदितयः**) अखण्डिताः (**स्याम**) भवेम (**पूः**) नगरीव (**देवत्रा**) देवेषु वर्तमानाः (**वसवः**) निवसन्तः (**मर्त्यत्रा**) मर्त्येषूपदेशकाः (**सनेम**) विभजेम (**मित्रावरुणा**) प्राणोदानौ (**सनन्तः**) सेवमानाः (**भवेम**) (**द्यावापृथिवी**) सूर्यभूमी इव (**भवन्तः**)॥ १॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथा वयं देवत्राऽऽदित्यासोऽदितयः स्याम यथा मर्त्यत्रा वसवस्सन्तस्सनेम पूरिव मित्रावरुणा सनन्तो द्यावापृथिवी इव भवन्तो भवेम तथा यूयमपि भवत॥ १॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यूयं आप्तविद्वद्वद्वर्तित्वा धार्मिकेषु विद्वत्सु न्युष्य सत्यासत्ये विभज्य सूर्यभूमीवत् परोपकारं कृत्वा विश्वसुखाय प्राणोदानवत् सर्वेषामुन्नतये भवतः॥ १॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे हम लोग (**देवत्रा**) देवों में वर्त्तमान (**आदित्यासः**) महीने के समान (**अदितयः**) अखण्डित (**स्याम**) हों जैसे (**मर्त्यत्रा**) मनुष्यों में उपदेशक (**वसवः**) निवास करते हुए (**सनेम**) विभाग करें (**पूः**) नगरी के समान (**मित्रावरुणा**) प्राण और उदान दोनों (**सनन्तः**) सेवन करते हुए (**द्यावापृथिवी**) सूर्य और भूमि के समान (**भवन्तः**) आप (**भवेम**) हों, वैसे आप भी हों॥ १॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! तुम आप्त विद्वान् के समान वर्त कर धार्मिक विद्वानों में निरन्तर बस कर सत्य और असत्य का विभाग कर सूर्य और भूमि के समान परोपकार कर विश्व के सुख के लिये प्राण और उदान के सदृश सब की उन्नति के लिये होओ॥ १॥

**पुनर्मनुष्यैः किं कर्तव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को क्या करना चाहिये, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**मि॒त्रस्तन्नो॒ वरु॑णो मामहन्त॒ शर्म॑ तो॒काय॒ तन॑याय गो॒पाः।**

**मा वो॑ भुजेमा॒न्यजा॑त॒मेनो॒ मा तत्क॑र्म वसवो॒ यच्चय॑ध्वे॥ २॥**



www.9009.co.in

**मित्रः। तत्। नः। वरुणः। मामहन्त। शर्म। तोकाय। तनयाय। गोपाः। मा। वः। भुजेम। अन्यऽजातम्। एनः। मा। तत्। कर्म। वसवः। यत्। चयध्वे॥ २॥**

**पदार्थः**-(**मित्रः**) प्राण इव सखा (**तत्**) सुखम् (**नः**) अस्माकम् (**वरुणः**) जलमिव पालकः (**मामहन्त**) सत्कुर्वन्तु। अत्र **तुजादीनामि**त्यभ्यासदैर्घ्यम्। (**शर्म**) सुखं गृहं वा (**तोकाय**) सद्यो जातायापत्याय (**तनयाय**) सुकुमाराय (**गोपाः**) रक्षकाः (**मा**) (**वः**) युष्मान् (**भुजेम**) अभ्यवहरेम (**अन्यजातम्**) अन्यास्मादुत्पन्नम् (**एनः**) पापम् (**मा**) (**तत्**) (**कर्म**) (**वसवः**) निवसन्तः (**यत्**) (**चयध्वे**) संचिनुत॥ २॥

**अन्वयः**-हे वसवो! यदन्यजातमेनोऽस्ति तत्कर्म यूयं मा चयध्वे यथा गोपाः शर्म मामहन्त तथा नस्तोकाय तनयाय तत् मित्रो वरुणश्च प्रदद्यताम् येन वयं व एनो मा भुजेम॥ २॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! भवन्तस्सदैव ब्रह्मचर्यविद्यादानाभ्यां स्वापत्यानि रक्षयित्वा सत्कृत्य वर्धयन्तु स्वयं पापमकृत्वाऽन्येन कृतमपि मा भजन्तु॥ २॥

**पदार्थः**-हे (**वसवः**) निवास करने वालो! (**यत्**) जो (**अन्यजातम्**) और से उत्पन्न (**एनः**) पाप कर्म है (**तत्**) वह (**कर्म**) कर्म तुम (**मा**) मत (**चयध्वे**) इकट्ठा करो जैसे (**गोपाः**) रक्षा करने वाले (**शर्म**) सुख वा घर को (**मामहन्त**) सत्कार से वर्तें, वैसे (**नः**) हमारे (**तोकाय**) शीघ्र उत्पन्न हुए बालक के लिये और (**तनयाय**) सुन्दर कुमार के लिये उसको (**मित्रः**) प्राण के समान मित्र (**वरुणः**) जल के समान पालने वाला देवें, जिससे हम लोग (**वः**) तुम लोगों को और पाप (**मा**) मत (**भुजेम**) भोगें॥ २॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! आप सदैव ब्रह्मचर्य्य और विद्यादान से अपने लड़कों की रक्षा और सत्कार कर बढ़ावें और आप पाप न करके और से किये हुए को भी न सेवें॥ २॥

**पुनर्मनुष्याः किंवद्भूत्वा किं कुर्युरित्याह॥**

फिर मनुष्य किसके तुल्य होकर क्या करें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

## तुरण्यवोऽङ्गिरसो नक्षन्त रत्नं देवस्य सवितुरियानाः।
## पिता च तन्नो महान् यजत्रो विश्वे देवाः समनसो जुषन्त॥ ३॥ १९॥

**तुरण्यवः। अङ्गिरसो। नक्षन्त। रत्नम्। देवस्य। सवितुः। इयानाः। पिता। च। तत्। नः। महान्। यजत्रः। विश्वे। देवाः। सऽमनसः। जुषन्त॥ ३॥**

**पदार्थः**-(**तुरण्यवः**) क्षिप्रं कर्तारः (**अङ्गिरसः**) प्राणा इव (**नक्षन्त**) व्याप्नुवन्तु (**रत्नम्**) रमणीयं धनम् (**देवस्य**) प्रकाशमानस्य (**सवितुः**) सकलजगदुत्पादकस्य परमेश्वरस्य (**इयानाः**) अधीयमानाः (**पिता**) जनक इव (**च**) (**तत्**) (**नः**) अस्मभ्यम् (**महान्**) पूजनीयः सर्वेभ्यो महान्

**(यजत्रः)** संगन्तव्यो ध्येयः **(विश्वे)** सर्वे **(देवाः)** विद्वांसः **(समनसः)** समानं मनोऽन्तःकरणं येषां ते **(जुषन्त)** सेवन्ताम्॥३॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! ये तुरण्यवोऽङ्गिरसस्समनस इयाना जनाः सवितुर्देवस्य सृष्टौ यद्रत्नं नक्षन्त तत्पितेव वर्तमानो महान् यजत्र ईश्वरो विश्वे देवाश्च नोऽस्मभ्यं जुषन्त॥३॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यथा विद्वांसोऽस्यामीश्वरकृतसृष्टौ विद्यापुरुषार्थविद्वत्सेवाद्यैः सर्वाणि सुखानि लभन्ते तथा भवन्तो लभन्तां सर्वे मिलित्वा पितृवत्पालकं परमात्मानं सततमुपासीरन्निति॥३॥

अत्र विश्वेदेवगुणकृत्यवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह संगतिर्वेद्या॥

**इति द्विपञ्चाशत्तमं सूक्तमेकोनविंशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! [जो] **(तुरण्यवः)** शीघ्र करने वाले **(अङ्गिरसः)** प्राणों के समान **(समनसः)** समान अन्तःकरण युक्त **(इयानाः)** पढ़ते हुए [जन] **(सवितुः)** सकल जगत् उत्पन्न करने वाले **(देवस्य)** प्रकाशमान परमेश्वर की सृष्टि में जिस **(रत्नम्)** रमणीय धन को **(नक्षन्त)** व्याप्त हो **(तत्)** वह **(पिता)** उत्पन्न करने वाले के समान वर्त्तमान **(महान्)** सब से सत्कार **(यजत्रः)** संग और ध्यान करने योग्य ईश्वर **(विश्वे, देवाः, च)** और सब विद्वान् जन **(नः)** हम लोगों के लिये **(जुषन्त)** सेवें॥३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जैसे विद्वान् जन इस ईश्वरकृत सृष्टि में विद्या पुरुषार्थ और विद्वानों की सेवा आदि से सब सुखों को पाते हैं, वैसे आप प्राप्त हों सब मिल कर पिता के समान पालना करने वाला परमात्मा की निरन्तर उपासना करें॥३॥

इस सूक्त में विश्वेदेवों के गुणों का वर्णन होने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ संगति जाननी चाहिये॥

**यह बावनवां सूक्त और उन्नीसवां वर्ग पूरा हुआ॥**



www.9009.co.in

**अथ त्र्यृचस्य [त्रिपञ्चाशत्तमस्य] सूक्तस्य वसिष्ठर्षिः। द्यावापृथिवी देवते। १ त्रिष्टुप्। २, ३ निचृत्त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः॥**

***अथ विद्वांसः किं कुर्युरित्याह॥***

अब तीन ऋचा वाले त्रेपनवें सूक्त का प्रारम्भ है, इसके प्रथम मन्त्र में अब विद्वान् जन क्या करें, इस विषय को कहते हैं॥

**प्र द्यावा॑ य॒ज्ञैः पृ॑थि॒वी नमो॑भिः स॒बाध॑ ईळे बृ॒ह॒ती यज॑त्रे।**

**ते चि॒द्धि पूर्वे॑ क॒वयो॑ गृ॒णन्तः॑ पु॒रो म॒ही द॑धि॒रे दे॒वपु॑त्रे॥१॥**

**प्र। द्यावा॑। य॒ज्ञैः। पृ॒थि॑वी॒ इति॑। नम॑ःऽभिः। स॒ऽबाध॑ः। ई॒ळे॒। बृ॒ह॑ती॒ इति॑। यज॑त्रे॒ इति॑। ते इति॑। चि॒त्। हि। पूर्वे॑। क॒वय॑ः। गृ॒णन्त॑ः। पु॒रः। म॒ही इति॑। द॒धि॒रे। दे॒वपु॑त्रे॒ इति॑ दे॒वऽपु॑त्रे॥१॥**

**पदार्थः**-(**प्र**) (**द्यावा**) (**यज्ञैः**) संगतिकरणैः कर्मभिः (**पृथिवी**) सूर्यभूमी (**नमोभिः**) अन्नादिभिः (**सबाधः**) बाधेन सह वर्त्तमानः (**ईळे**) गुणैः प्रशंसामि (**बृहती**) महत्यौ (**यजत्रे**) संगन्तव्ये (**ते**) (**चित्**) अपि (**हि**) (**पूर्वे**) (**कवयः**) विद्वांसः (**गृणन्तः**) स्तुवन्तः (**पुरः**) पुराणि (**मही**) महत्यौ (**दधिरे**) धरन्ति (**देवपुत्रे**) देवा विद्वांसः पुत्राः पुत्रवत्पालकाः ययोस्ते॥१॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथा सबाधोऽहं नमोभिर्यज्ञैः ये मही बृहती यजत्रे पुरो धरन्त्यौ देवपुत्रे द्यावापृथिवी पूर्वे कवयो गृणन्तो दधिरे ते चिद्धि प्रेळे॥१॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यथा सर्वधारकौ भूमिसूर्यौ विद्वांसो विज्ञायोपकुर्वन्ति तथा यूयमपि कुरुत॥१॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो जैसे (**सबाधः**) पीड़ा के सहित वर्त्तमान मैं (**नमोभिः**) अन्नादिकों से और (**यज्ञैः**) संगति करने-कराने वालों से जो (**मही**) बड़े (**बृहती**) बड़े (**यजत्रे**) संग करने योग्य (**पुरः**) नगरों को धारण करने वाली (**देवपुत्रे**) देवपुत्र अर्थात् विद्वान् जन जिनकी पुत्र के समान पालना करते वाले हैं उन (**द्यावापृथिवी**) सूर्य और भूमि की (**पूर्वे**) अगले (**कवयः**) विद्वान् जन (**गृणन्तः**) स्तुति करते हुए (**दधिरे**) धारण करते हैं (**ते, चित्**) (**हि**) उन्हीं की (**प्र, ईळे**) अच्छे प्रकार गुणों से प्रशंसा करता हूँ॥१॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जैसे सबको धारण करने वाले भूमि और सूर्य को विद्वान् जन जान कर उपकार करते हैं, वैसे तुम भी करो॥१॥

**पुनस्ते भूमिविद्युतौ कीदृश्यौ स्त इत्याह॥**

फिर वे भूमि और बिजुली कैसी हैं, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**प्र पू॑र्व॒जे पि॒तरा॒ नव्य॑सीभिर्गी॒र्भिः कृ॑णु॒ध्वं॒ सद॑ने ऋ॒तस्य॑।**

**आ नो॑ द्यावापृथिवी॒ दैव्ये॑न जने॑न यातं॒ महि॑ वां॒ वरू॑थम्॥२॥**



www.9009.co.in

प्र। पूर्वजे इति पूर्वऽजे। पितरा। नव्यसीभिः। गीःऽभिः। कृणुध्वम्। सदने इति। ऋतस्य। आ। नः। द्यावापृथिवी इति। दैव्येन। जनेन। यातम्। महि। वाम्। वरूथम्॥२॥

**पदार्थः**-(**प्र**) (**पूर्वजे**) पूर्वस्माज्जाते (**पितरा**) मातापितृवद्वर्तमाने (**नव्यसीभिः**) अतिशयेन नवीनाभिः (**गीर्भिः**) सुशिक्षिताभिर्वाग्भिः (**कृणुध्वम्**) कुरुत (**सदने**) सीदन्ति ययोस्ते (**ऋतस्य**) सत्यस्योदकस्य वा (**आ**) (**नः**) अस्माकम् (**द्यावापृथिवी**) भूमिविद्युतौ (**दैव्येन**) देवैर्विद्वद्भिः कृतेन विदुषा (**जनेन**) प्रसिद्धेन मनुष्येण (**यातम्**) प्राप्नुयातम् (**महि**) महत् (**वाम्**) युवयोः स्त्रीपुरुषयोः (**वरूथम्**) वरं गृहम्॥२॥

**अन्वयः**-हे शिल्पिनो विद्वांसो! यूयं नव्यसीभिर्गीर्भिर्ऋतस्य सम्बन्धे सदने पूर्वजे पितरेव वर्त्तमाने द्यावापृथिवी दैव्येन जनेन वां महि वरूथमा यातं तथेमे नः कृणुध्वम्॥२॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे स्त्रीपुरुषा! यूयं पदार्थविद्यया पृथिव्यादिविज्ञानं कृत्वा सुन्दराणि गृहाणि निर्माय तत्र मनुष्यसुखोन्नतिं कुरुत॥२॥

**पदार्थः**-हे शिल्पि विद्वानो! तुम (**नव्यसीभिः**) अतीव नवीन (**गीर्भिः**) सुशिक्षित वाणियों से (**ऋतस्य**) सत्य वा जल के सम्बन्ध में (**सदने**) स्थानरूप जिन में स्थिर होते हैं वे (**पूर्वजे**) आगे से उत्पन्न हुए (**पितरा**) माता-पिता के समान वर्त्तमान (**द्यावापृथिवी**) भूमि और बिजुली (**दैव्येन**) विद्वानों ने बनाये हुए विद्वान् (**जनेन**) प्रसिद्ध जन से (**वाम्**) तुम दोनों के (**महि**) बड़े (**वरूथम्**) श्रेष्ठ घर को (**आ, यातम्**) प्राप्त हों, वैसे इनको (**नः**) हमको (**कृणुध्वम्**) सिद्ध करो॥२॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे स्त्री-पुरुषो! तुम पदार्थविद्या से पृथिवी आदि का विज्ञान करके सुन्दर घर बना वहाँ मनुष्यों के सुखों की उन्नति करो॥२॥

**पुनर्मनुष्यैर्भूम्यादिगुणा वेदितव्या इत्याह॥**

फिर मनुष्यों को भूमि आदि के गुण जानने योग्य हैं, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**उतो हि वां रत्नधेयानि सन्ति पुरूणि द्यावापृथिवी सुदासे।**

**अस्मे धत्तं यदसदस्कृधोयु यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥३॥२०॥**

**उतो इति। हि। वाम्। रत्नऽधेयानि। सन्ति। पुरूणि। द्यावापृथिवी इति। सुऽदासे। अस्मे इति। धत्तम्। यत्। असत्। अस्कृधोयु। यूयम्। पात। स्वस्तिऽभिः। सदा। नः॥३॥**

**पदार्थः**-(**उतो**) अपि (**हि**) (**वाम्**) युवयोः (**रत्नधेयानि**) रत्नानि धीयन्ते येषु तानि (**सन्ति**) (**पुरूणि**) बहूनि (**द्यावापृथिवी**) भूमिविद्युतौ (**सुदासे**) शोभना दासाः दातारो ययोस्ते (**अस्मे**) अस्मासु (**धत्तम्**) धरेतम् (**यत्**) (**असत्**) भवेत् (**अस्कृधोयु**) अस्थूलम् (**यूयम्**) (**पात**) (**स्वस्तिभिः**) (**सदा**) (**नः**)॥३॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे अध्यापकोपदेशकौ! ये सुदासे द्यावापृथिवी वर्त्तेते यत्र वां हि पुरूणि रत्नधेयानि धनाधिकरणानि सन्ति ते अस्मे धत्तं यदुतो अस्कृधोयु असत् येन सहिता यूयं स्वस्तिभिर्नस्सदा पात॥ ३॥

**भावार्थः**-ये मनुष्या विद्युद्भूमिगुणान् विज्ञाय तत्रस्थानि रत्नानि प्राप्य सर्वार्थं सुखं विदधति ते सर्वतस्सदा सुरक्षिता भवन्तीति॥ ३॥

अत्र द्यावापृथिवीगुणकृत्यवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह संगतिर्वेद्या॥

**इति त्रिपञ्चाशत्तमं सूक्तं विंशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे अध्यापक और उपदेशको! जो **(सुदासे)** सुन्दर दानशीलों वाले **(द्यावापृथिवी)** भूमि और बिजुली वर्त्तमान हैं अथवा जिनमें **(वाम्)** तुम दोनों के **(हि)** ही **(पुरूणि)** बहुत **(रत्नधेयानि)** रत्न जिनमें भरे जाते **(सन्ति)** हैं वे धन धरने के पदार्थ हैं **(ते)** वे भूमि और बिजुली **(अस्मे)** हम लोगों में **(धत्तम्)** धारण करें **(यत्)** जो **(उतो)** कुछ [भी] **(अस्कृधोयु)** कृश हो अर्थात् मोटा न **(असत्)** हो उसके साथ **(युवम्)** तुम लोग **(स्वस्तिभिः)** सुखों से **(वः)** हम लोगों की **(सदा)** सदा **(पात)** रक्षा करो॥ ३॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य बिजुली और भूमि के गुणों को जान कर वहाँ स्थित जो रत्न उनको पाकर सब के लिये सुख का विधान करते हैं, वे सब ओर से सदा सुरक्षित होते हैं॥ ३॥

इस सूक्त में द्यावापृथिवी के गुणों और कृत्यों का वर्णन होने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ संगति जाननी चाहिये॥

**यह त्रेपनवां सूक्त और बीसवां वर्ग पूरा हुआ॥**



www.9009.co.in

**अथ त्र्यृचस्य [चतुष्पञ्चाशत्तमस्य] सूक्तस्य वसिष्ठिर्षिः। वास्तोष्पतिर्देवता। १, ३ निचृत्त्रिष्टुप्। २ विराट् त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः॥**

***मनुष्याः गृहं निर्माय तत्र किं कुर्वन्तीत्याह॥***

अब तीन ऋचा वाले चौवनवें सूक्त का आरम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में मनुष्य घर बना कर उस में क्या करते हैं, इस विषय को कहते हैं॥

**वास्तो॑ष्पते॒ प्रति॑ जानीह्य॒स्मान् स्वा॑वे॒शो अ॑नमी॒वो भ॑वा नः।**

**यत्त्वेम॑हे॒ प्रति॒ तन्नो॑ जुष॒स्व॒ शं नो॑ भव द्वि॒पदे॒ शं चतु॑ष्पदे॥१॥**

**वास्तोः॑। प॒ते। प्रति॑। जा॒नी॒हि॒। अ॒स्मान्। सु॒ऽआ॒वे॒शः। अ॒न॒मी॒वः। भ॒व॒। नः। यत्। त्वा॒। ईम॑हे। प्रति॑। तत्। न॒ः। जु॒ष॒स्व॒। शम्। न॒ः। भ॒व॒। द्वि॒ऽपदे॑। शम्। चतु॑ःऽपदे॥१॥**

**पदार्थः**-(**वास्तोः**) वासहेतोर्गृहस्य (**पते**) स्वामिन् (**प्रति**) (**जानीहि**) (**अस्मान्**) (**स्वावेशः**) स्वः आवेशो यस्य सः (**अनमीवः**) रोगरहितः (**भव**) अत्र **द्व्यचो०** इति दीर्घः। (**नः**) अस्माकम् (**यत्**) यत्र (**त्वा**) त्वाम् (**ईमहे**) प्राप्नुयाम (**प्रति**) (**तत्**) सह (**नः**) अस्मान् (**जुषस्व**) सेवस्व (**शम्**) सुखकारी (**नः**) अस्माकम् (**भव**) (**द्विपदे**) मनुष्याद्याय (**शम्**) (**चतुष्पदे**) गवाद्याय॥१॥

**अन्वयः**-हे वास्तोष्पते गृहस्थ! त्वमस्मान् प्रति जानीहि त्वमत्र नो गृहे स्वावेशोऽनमीवो भव यद्यत्र वयं त्वेमहे तन्नः प्रति जुषस्व त्वन्नो द्विपदे शं चतुष्पदे शं भव॥१॥

**भावार्थः**-ये मनुष्यास्सर्वतोद्वारं पुष्कलावकाशं गृहं निर्माय तत्र वसन्ति रोगरहिता भूत्वा स्वेभ्यश्चान्येभ्यश्च सुखं प्रयच्छन्ति ते सर्वेषां मङ्गलप्रदा भवन्ति॥१॥

**पदार्थः**-हे (**वास्तोः**) निवास कराने वाले घर के (**पते**) स्वामी गृहस्थ जन! आप (**अस्मान्**) हम लोगों के (**प्रति, जानीहि**) प्रतिज्ञा से जानो आप (**नः**) हमारे घर में (**स्वावेशः**) सुख में हैं सब ओर से प्रवेश जिनको ऐसे और (**अनमीवः**) नीरोग (**भव**) हूजिये (**यत्**) जहाँ हम लोग (**त्वा**) आपको (**ईमहे**) प्राप्त हों (**तत्**) उसको (**नः**) हमारे (**प्रति, जुषस्व**) प्रति सेवो आप (**नः**) हम लोगों के (**द्विपदे**) मनुष्य आदि जीव (**शम्**) सुख करने वाले और (**चतुष्पदे**) गौ आदि पशु के लिये (**शम्**) सुख करने वाले (**भव**) हूजिये॥१॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य सब ओर द्वार और बहुत अवकाश वाले घर को बना कर उस में वसते और रोगरहित होकर अपने तथा औरों के लिये सुख देते हैं, वे सबको मङ्गल देने वाले होते हैं॥१॥

**पुनर्गृहस्थः किं कृत्वा कान् के इव रक्षेदित्याह॥**

फिर गृहस्थ क्या करके किनको किसके समान रक्खे, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**वास्तो॑ष्पते प्र॒तर॑णो न एधि गय॒स्फानो॒ गोभि॒रश्वे॑भिरिन्दो।**



www.9009.co.in

**अजरासस्ते सख्ये स्याम पितेव पुत्रान् प्रति नो जुषस्व॥२॥**

**वास्तोः। पते। प्रऽतरणः। नः। एधि। गयऽस्फानः। गोभिः। अश्वेभिः। इन्दो इति। अजरासः। ते। सख्ये। स्याम। पिताऽइव। पुत्रान्। प्रति। नः। जुषस्व॥२॥**

**पदार्थः**-(**वास्तोः**) गृहस्य (**पते**) पालक (**प्रतरणः**) प्रकर्षेण दुःखात्तारकः (**नः**) अस्माकम् (**एधि**) भव (**गयस्फानः**) गृहस्य वर्धकः (**गोभिः**) गवादिभिः (**अश्वेभिः**) तुरङ्गादिभिः (**इन्दो**) आनन्दप्रद (**अजरासः**) जरारोगरहिताः (**ते**) तव (**सख्ये**) मित्रत्वे (**स्याम**) (**पितेव**) (**पुत्रान्**) (**प्रति**) (**नः**) अस्मान् (**जुषस्व**)॥२॥

**अन्वयः**-हे इन्दो वास्तोष्पते! त्वं गोभिरश्वेभिर्गयस्फानः प्रतरणो नोऽस्माकं सुखकार्य्येधि यस्य ते सख्ये अजरासः वयं स्याम स त्वं नोऽस्मान् पुत्रान् पितेव प्रति जुषस्व॥२॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। मनुष्या उत्तमं गृहं निर्माय गवादिभिः पशुभिरलंकृत्य शोधयित्वा प्रजाया वर्धका भूत्वाऽक्षयं मित्रत्वं सर्वेषु संभाव्य यथा पिता पुत्रान् रक्षति तथैव सर्वान् रक्षन्तु॥२॥

**पदार्थः**-हे (**इन्दो**) आनन्द के देने वाले (**वास्तोष्पते**) घर के रक्षक! आप (**गोभिः**) गौ आदि से (**अश्वेभिः**) घोड़े आदि से (**गयस्फानः**) घर की वृद्धि करने (**प्रतरणः**) उत्तमता से दुःख से तारने और (**नः**) हमारे सुख करने वाले (**एधि**) हूजिये जिन (**ते**) आप के (**सख्ये**) मित्रपन में हम लोग (**अजरासः**) शरीर जीर्ण करने वाली वृद्धावस्था से रहित (**स्याम**) हों सो आप (**नः**) हम लोगों को (**पुत्रान्**) पुत्रों को जैसे (**पितेव**) पिता वैसे (**प्रति, जुषस्व**) प्रतीति से सेवो॥२॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। मनुष्य उत्तम घर बना कर गो आदि पशुओं से शोभित कर शुद्ध कर प्रजा के बढ़ाने वाले होकर अक्षय मित्रपन सब में अच्छे प्रकार प्रसिद्ध कराय जैसे पिता पुत्रों की रक्षा करता है, वैसे ही सब की रक्षा करें॥२॥

**पुनस्ते गृहस्थः किं कुर्युरित्याह॥**

फिर वे घर में रहने वाले क्या करें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**वास्तोष्पते शग्मया संसदा ते सक्षीमहि रण्वया गातुमत्या।**

**पाहि क्षेम उत योगे वरं नो यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥३॥२१॥**

**वास्तोः। पते। शग्मया। सम्ऽसदा। ते। सक्षीमहि। रण्वया। गातुऽमत्या। पाहि। क्षेमे। उत। योगे। वरम्। नः। यूयम्। पात। स्वस्तिऽभिः। सदा। नः॥३॥**

**पदार्थः**-(**वास्तोः**) गृहस्य (**पते**) पालक (**शग्मया**) सुखरूपया (**संसदा**) सम्यक् सीदन्ति यस्यां तया (**ते**) तव (**सक्षीमहि**) सम्बध्नीयाम (**रण्वया**) रमणीयया (**गातुमत्या**) प्रशस्तवाग्भूमियुक्तया (**पाहि**) (**क्षेमे**) रक्षणे (**उत**) (**योगे**) अनुपात्तस्योपात्तलक्षणे (**वरम्**) (**नः**) अस्मान् (**यूयम्**) (**पात**) (**स्वस्तिभिः**) सुखादिभिः (**सदा**) (**नः**)॥३॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-हे वास्तोष्पते! यस्य ते तव शग्मया संसदा रण्वया गातुमत्या सह सक्षीमहि स त्वं योग उत क्षेमे नोऽस्मान् वरं पाहि यूयं स्वस्तिभिर्नस्सदा पात॥३॥

**भावार्थः**-ये गृहस्थाः सज्जनान् सत्कृत्य रक्षन्ति ते तेषां योगक्षेमावुन्नीय सततं तान् पालयन्तीति॥३॥

अत्र वास्तोष्पतिगुणकृत्यवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह संगतिर्वेद्या॥

**इति चतुष्पञ्चाशत्तमं सूक्तमेकविंशतितमो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे **(वास्तोष्पते)** घर की रक्षा करने वाले जिन **(ते)** आप के **(शग्मया)** सुख रूप **(संसदा)** जिस में अच्छे प्रकार स्थिर हों उस **(रण्वया)** रमणीय **(गातुमत्या)** प्रशंसित वाणी वा भूमि से युक्त सभा के साथ **(सक्षीमहि)** सम्बन्ध करें वह आप **(योगे)** न ग्रहण किये हुए पदार्थ के ग्रहण लक्षण विषय में **(उत)** और **(क्षेमे)** रक्षा में **(नः)** हम लोगों की **(वरम्)** उत्तमता जैसे हो, वैसे **(पाहि)** रक्षा करो **(यूयम्)** तुम **(स्वस्तिभिः)** सुखादिकों से **(नः)** हम लोगों की **(सदा)** सदैव **(पातः)** रक्षा करो॥३॥

**भावार्थः**-जो गृहस्थ सज्जनों का सत्कार कर उनकी रक्षा करते हैं, वे उन के योग-क्षेम की उन्नति कर निरन्तर उनकी पालना करते हैं॥३॥

इस सूक्त में वास्तोष्पति के गुण और कृत्यों का वर्णन होने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ संगति जाननी चाहिये॥

**यह चौपनवां सूक्त और इक्कीसवां वर्ग पूरा हुआ॥**



www.9009.co.in

**अथाष्टर्चस्य [पञ्चपञ्चाशत्तमस्य] सूक्तस्य वसिष्ठर्षिः। [१] वास्तोष्पतिर्देवता। २-८ इन्द्रः। १ निचृद्गायत्रीछन्दः। षड्जः स्वरः। २, ३, ४ बृहतीछन्दः। मध्यमः स्वरः। ५, ७ अनुष्टुप्। ६, ८ निचृदनुष्टुप् छन्दः। गान्धारः स्वरः॥**

***अथ गृहपतिः किं कुर्यादित्याह॥***

अब आठ ऋचा वाले पचपनवें सूक्त का प्रारम्भ है, इसके प्रथम मन्त्र में घर का स्वामी क्या करे, इस विषय को कहते हैं॥

**अ॒मी॒व॒हा वा॑स्तोष्पते॒ विश्वा॑ रू॒पाण्या॑वि॒शन्। सखा॑ सु॒शेव॑ एधि नः॥ १॥**

**अ॒मी॒व॒ऽहा। वा॒स्तोः॒। प॒ते॒। विश्वा॑। रू॒पाणि॑। आ॒ऽवि॒शन्। सखा॑। सु॒ऽशेवः॑। ए॒धि॒। नः॒॥ १॥**

**पदार्थः**-(**अमीवहा**) योऽमीवान् रोगान् हन्ति (**वास्तोः**) गृहस्य (**पते**) स्वामिन् (**विश्वा**) सर्वाणि (**रूपाणि**) (**आविशन्**) आविशन्ति (**सखा**) सुहृत् (**सुशेवः**) सुष्ठुसुखः (**एधि**) भव (**नः**) अस्मभ्यम्॥ १॥

**अन्वयः**-हे वास्तोष्पते! यत्र गृहे विश्वा रूपाण्याविशन् तत्र नोऽमीवहा सखा सुशेवः सन्नेधि॥ १॥

**भावार्थः**-हे गृहस्था! यूयं सर्वप्रकाराण्युत्तमानि गृहाणि निर्माय सुखिनो भवत॥ १॥

**पदार्थः**-हे (**वास्तोष्पते**) घर के स्वामी! जिस घर में (**विश्वा**) सब (**रूपाणि**) रूप (**आविशन्**) प्रवेश करते हैं वहाँ (**नः**) हम लोगों के लिये (**अमीवहा**) रोग हरने वाले (**सखा**) मित्र (**सुशेवः**) सुन्दर सुख वाले होते हुए (**एधि**) प्रसिद्ध हूजिये॥ १॥

**भावार्थः**-हे गृहस्थो! तुम सर्व प्रकार उत्तम घरों को बना कर सुखी होओ॥ १॥

**पुनर्गृहस्थाः कुत्र वासं कुर्युरित्याह॥**

फिर गृहस्थ कहाँ वास करें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**यद॑र्जुन सारमेय द॒तः पि॑शङ्ग॒ यच्छ॑से।**

**वी॑व भ्राजन्त ऋ॒ष्टय॒ उप॒ स्रक्वे॑षु॒ बप्स॑तो॒ नि षु स्व॑प॥ २॥**

**यत्। अ॒र्जु॒न॒। सा॒र॒मे॒य॒। द॒तः। पि॒श॒ङ्ग॒। यच्छ॑से। वि॒ऽइ॑व। भ्रा॒ज॒न्ते॒। ऋ॒ष्टयः॑। उप॑। स्रक्वे॑षु। बप्स॑तः। नि। सु। स्व॒प॒॥ २॥**

**पदार्थः**-(**यत्**) (**अर्जुन**) सुखरूप (**सारमेय**) साराणां निर्मातः (**दतः**) दन्तान् (**पिशङ्ग**) पिशङ्गादिवर्णयुक्त (**यच्छसे**) (**वीव**) पक्षीव (**भ्राजन्ते**) प्रकाशन्ते (**ऋष्टयः**) प्रापकः (**उप**) (**स्रक्वेषु**) प्राप्तेषूत्तमेषु गृहेषु (**बप्सतः**) भक्षयतः (**नि**) (**सु**) (**स्वप**) शयस्व॥ २॥

**अन्वयः**-हे अर्जुन सारमेय! पिशङ्ग यद्यस्त्वं वीव दतो यच्छसे स्रक्वेषु बप्सत ऋष्टय उप भ्राजन्ते स तेषु नि सु स्वप॥ २॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यत्रारोग्येन युष्माकं दन्तादयोऽवयवास्सुशोभन्ते तत्रैव निवासं शयनादिव्यवहारं च कुरुत॥२॥

**पदार्थः**-हे **(अर्जुन)** अच्छे रूपयुक्त **(सारमेय)** सारवस्तुओं की उत्पत्ति करने वाले **(पिशङ्ग)** पीछे-पीछे **(यत्)** जो आप **(वीव)** पक्षी के समान **(दतः)** दाँतों को **(यच्छसे)** नियम से रखते हो वह जो **(स्रक्वेषु)** प्राप्त उत्तम घरों में **(बप्सतः)** भक्षण करते हुए **(ऋष्टयः)** पहुँचाने वाले **(उप, भ्राजन्ते)** समीप प्रकाशित होते हैं उन में आप **(नि, सु, स्वप)** निरन्तर अच्छे प्रकार सोओ॥२॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जहाँ आरोग्यपन से तुम्हारे दन्त आदि अवयव अच्छे प्रकार शोभते हैं, वहाँ ही निवास और शयन आदि व्यवहार को करो॥१॥

**पुनर्गृहस्थैः किं कर्तव्यमित्याह॥**

फिर गृहस्थों को क्या करना चाहिये, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**स्तेनं राय सारमेय तस्करं वा पुनःसर।**

**स्तोतॄनिन्द्रस्य रायसि किमस्मान् दुच्छुनायसे नि षु स्वप॥३॥**

**स्तेनम्। राय। सारमेय। तस्करम्। वा। पुनःऽसर। स्तोतॄन्। इन्द्रस्य। रायसि। किम्। अस्मान्। दुच्छुनऽयसे। नि। सु। स्वप॥३॥**

**पदार्थः**-**(स्तेनम्)** चोरम् **(राय)** रासु धनेषु साधो **(सारमेय) (तस्करम्)** दस्य्वादिकम् **(वा) (पुनःसर)** पुनःपुनः दण्डदानाय प्राप्नुहि **(स्तोतॄन्)** स्तावकान् **(इन्द्रस्य)** परमैश्वर्यस्य **(रायसि)** शब्दयसि **(किम्) (अस्मान्) (दुच्छुनायसे)** दुष्टेष्वेवाचरसि **(नि)** नितराम् **(सु) (स्वप)**॥३॥

**अन्वयः**-हे राय सारमेय! त्वमिन्द्रस्य स्तेनं वा तस्करं वा पुनस्सर यस्त्वं स्तोतॄन् रायसि सोऽस्मान् किं दुच्छुनायसे स त्वमुत्तमे स्थाने नि सु स्वप॥३॥

**भावार्थः**-गृहस्थैः स्तेनानां निग्रहं श्रेष्ठानां सत्करणं कृत्वा कदाचिद् श्ववन्नाचरणीयम् सदैव शुद्धवायूदकावकाशे शयितव्यम्॥३॥

**पदार्थः**-हे **(राय)** धनियों में सज्जन **(सारमेय)** सार वस्तुओं से मान करने योग्य आप **(इन्द्रस्य)** परम ऐश्वर्य्य के **(स्तेनम्)** चोर **(वा) (तस्करम्)** डांकू आदि चोर को **(पुनःसर)** फिर फिर दण्ड देने के लिये प्राप्त होओ जो आप **(स्तोतॄन्)** स्तुति करने वालों को **(रायसि)** कहलाते हो **(अस्मान्)** हम लोगों को **(किम्)** क्या **(दुच्छुनायसे)** दुष्टों में, वैसे वैसे आचरण से प्राप्त होंगे सो आप उत्तम स्थान में **(नि, सु, स्वप)** निरन्तर अच्छे प्रकार सोओ॥३॥

**भावार्थः**-गृहस्थों को चाहिये कि चोरों की रुकावट और श्रेष्ठों का सत्कार कर के कभी कुत्ते के समान न आचरण करें और सदैव शुद्ध वायु, जल और अवकाश में सोवें॥३॥

**पुनस्तमेव विषयमाह॥**



www.9009.co.in

फिर उसी विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**त्वं सूकरस्य दर्दृहि तव दर्दर्तु सूकरः।**

**स्तोतृनिन्द्रस्य रायसि किमस्मान् दुच्छुनायसे नि षु स्वप॥४॥**

**त्वम्। सूकरस्य। दर्दृहि। तव। दर्दर्तु। सूकरः। स्तोतृन्। इन्द्रस्य। रायसि। किम्। अस्मान्। दुच्छुनऽयसे। नि। सु। स्वप॥४॥**

**पदार्थः**-(**त्वम्**) (**सूकरस्य**) यः सुष्ठु करोति (**दर्दृहि**) भृशं वर्धय (**तव**) (**दर्दर्तु**) भृशं वर्द्धताम् (**सूकरः**) यः सम्यक् करोति (**स्तोतृन्**) विदुषः (**इन्द्रस्य**) परमैश्वर्यस्य (**रायसि**) रा इवाचरसि (**किम्**) (**अस्मान्**) (**दुच्छुनायसे**) (**नि**) (**सु**) (**स्वप**)॥४॥

**अन्वयः**-हे गृहस्थ! यस्य सूकरस्येन्द्रस्य तव सूकरो दर्दर्तु त्वं रायसि यत् सर्वान् दर्दृहि स्तोतृनस्मान् किं दुच्छुनायसे तत्र गृहे सुखेन नि सु स्वप॥४॥

**भावार्थः**-हे गृहस्थ! त्वमैश्वर्यं संचित्य धर्मे व्यवहारे संवीय विदुषः सत्कृस्य श्रीमानिवाचरास्मान् प्रति किमर्थं श्वेवाचरति नीरोगस्सन् प्रतिसमयं सुखेन शयस्व॥४॥

**पदार्थः**-हे गृहस्थ! जिस (**सूकरस्य**) सुन्दरता से कार्य करने वाले (**इन्द्रस्य**) परमैश्वर्य्यवान् (**तव**) तुम्हारे (**सूकरः**) कार्य को अच्छे प्रकार करने वाला (**दर्दर्तु**) निरन्तर बढ़े (**त्वम्**) आप (**रायसि**) लक्ष्मी के समान आचरण करते हो और जो सब को (**दर्दृहि**) निरन्तर उन्नति दें अर्थात् सब की वृद्धि करें (**स्तोतृन्**) स्तुति करने वाले विद्वान् (**अस्मान्**) हम लोगों को (**किम्**) क्या (**दुच्छुनायसे**) दुष्ट कुत्तों में जैसे वैसे आचरण से प्राप्त होते हो, उस घर में सुख से (**नि, सु, स्वप**) निरन्तर सोओ॥४॥

**भावार्थः**-हे गृहस्थ! आप ऐश्वर्य का संचय कर, धर्म व्यवहार में अच्छे प्रकार विस्तार कर और विद्वानों का सत्कार कर श्रीमानों के समान आचरण करो, हम लोगों के प्रति किसलिये कुत्ते के समान आचरण करते हैं, नीरोग होते हुए प्रति समय सुख से सोओ॥४॥

**पुनर्गृहस्थाः गृहे किं किं कुर्युरित्याह॥**

फिर गृहस्थ घर में क्या करें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**सस्तु माता सस्तु पिता सस्तु श्वा सस्तु विश्पतिः।**

**ससन्तु सर्वे ज्ञातयः सस्त्वयमभितो जनः॥५॥**

**सस्तु। माता। सस्तु। पिता। सस्तु। श्वा। सस्तु। विश्पतिः। ससन्तु। सर्वे। ज्ञातयः। सस्तु। अयम्। अभितः। जनः॥५॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**सस्तु**) शयताम् (**माता**) (**सस्तु**) (**पिता**) (**सस्तु**) (**श्वा**) कुक्कुरः (**सस्तु**) (**विश्पतिः**) प्रजापतिः (**ससन्तु**) शयीरन् (**सर्वे**) (**ज्ञातयः**) सम्बन्धिनः (**सस्तु**) (**अयम्**) (**अभितः**) सर्वतः (**जनः**) उत्तमो विद्वान्॥५॥

**अन्वयः**-ये मनुष्या यथा मद्गृहे मम माताऽभितः सस्तु पिता सस्तु श्वा सस्तु विश्पतिस्सस्तु सर्वे ज्ञातयोऽभितः ससन्त्वयं जनः सस्तु तथा युष्माकं गृहेऽपि ससन्तु॥५॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। मनुष्यैरीदृशानि गृहाणि निर्मातव्यानि यत्र सर्वेषां सर्वव्यवहारकरणाय पृथक् पृथक् शालागृहाणि च भवेयुः॥५॥

**पदार्थः**-जो मनुष्य जैसे मेरे घर में मेरी (**माता**) माता (**अभितः**) सब ओर से (**सस्तु**) सोवे (**पिता**) पिता (**सस्तु**) सोवे (**श्वा**) कुत्ता (**सस्तु**) सोवे (**विश्पतिः**) प्रजापति (**सस्तु**) सोवे (**सर्वे**) सब (**ज्ञातयः**) सम्बन्धी सब ओर से (**ससन्तु**) सोवें (**अयम्**) यह (**जनः**) उत्तम विद्वान् सोवे, वैसे तुम्हारे घर में भी सोवें॥५॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। मनुष्यों को ऐसे घर रचने चाहियें, जिनमें सब के सर्व व्यवहारों के करने को अलग-अलग शाला और घर होवें॥५॥

**पुनर्मनुष्यैः कीदृशानि गृहाणि निर्मातव्यानीत्याह॥**

फिर मनुष्यों को कैसे घर बनाने चाहियें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**य आस्ते यश्च चरति यश्च पश्यति नो जनः।**

**तेषां स हन्मो अक्षाणि यथेदं हर्म्यं तथा॥६॥**

**यः। आस्ते। यः। च। चरति। यः। च। पश्यति। नः। जनः। तेषाम्। सम्। हुन्मः। अक्षाणि। यथा। इदम्। हर्म्यम्। तथा॥६॥**

**पदार्थः**-(**यः**) (**आस्ते**) उपविशति (**यः**) (**च**) (**चरति**) गच्छति (**यः**) (**च**) (**पश्यति**) (**नः**) अस्मानस्माकं गृहे वा (**जनः**) मनुष्यः (**तेषाम्**) (**सम्**) (**हन्मः**) संहितानि निमीलितान्यादर्शकानि कुर्मः (**अक्षाणि**) इन्द्रियाणि (**यथा**) (**इदम्**) (**हर्म्यम्**) कमनीयं गृहम् (**तथा**)॥६॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यथेदं हर्म्यमस्ति तथा यो जनो नो गृह आस्ते यश्च चरति यश्च नोऽस्मान् पश्यति तेषामक्षाणि वयं संहन्मस्तथा यूयमप्याचरत॥६॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। मनुष्यैरीदृशानि गृहाणि निर्मातव्यानि यत्र सर्वेष्वृतुषु निर्वाहस्स्यात् सर्वं सुखं वर्धेत बहिः स्थाः जना गृहस्थान् सहसा न पश्येयुर्न च गृहस्था बाह्यान् पश्येयुरिति॥६॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! (**यथा**) जैसे (**इदम्**) यह (**हर्म्यम्**) मनोहर घर है (**तथा**) वैसे (**यः**) जो (**जनः**) मनुष्य (**नः**) हमारे घर में (**आस्ते**) बैठता है (**यः, चः**) और जो (**चरति**) जाता है (**यः, च**)



www.9009.co.in

और जो हम लोगों को **(पश्यति)** देखता है **(तेषाम्)** उन सभों की **(अक्षाणि)** इन्द्रियों को हम लोग **(सम्, हन्मः)** सहित न देखने वाले करें, वैसे तुम भी आचरण करो॥६॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। मनुष्यों को ऐसे घर बनाने चाहियें, जिन में सब ऋतुओं में निर्वाह हो, सब सुख, बड़े और बाहर वाले जन गृहस्थों को सहसा न देखें और न घर वाले बाहर वालों को देखें॥६॥

**पुनः कीदृशे गृहे गृहस्थैः शयनादिव्यवहाराः कर्तव्य इत्याह॥**

फिर कैसे घर में सोना आदि करना चाहिये, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**सहस्रशृङ्गो वृषभो यः समुद्रादुदाचरत्।**

**तेना सहस्येना वयं नि जनान्त्स्वापयामसि॥७॥**

**सहस्रऽशृङ्गः। वृषभः। यः। समुद्रात्। उत्ऽआचरत्। तेन। सहस्येन। वयम्। नि। जनान्। स्वापयामसि॥७॥**

**पदार्थः**-**(सहस्रशृङ्गः)** सहस्राणि शृङ्गाणि तेजांसि किरणा यस्य सूर्यस्य सः **(वृषभः)** वृष्टिकरः **(यः)** **(समुद्रात्)** अन्तरिक्षात्। **समुद्र इत्यन्तरिक्षनाम।** (निघं०१.३) **(उदाचरत्)** ऊर्ध्वं गच्छति **(तेना)** अत्र **संहितायामिति** दीर्घः। **(सहस्येना)** सहसि बले साधुना। अत्रापि **संहितायामिति** दीर्घः। **(वयम्)** **(नि)** नित्यम् **(जनान्)** **(स्वापयामसि)**॥७॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यस्सहस्रशृङ्गो वृषभः सूर्यः समुद्राद्यथोदाचरत् तथा तेन सहस्येन गृहेण सह वयं जनान् तत्र नि स्वापयामसि॥७॥

**भावार्थः**-हे मनुष्याः! यत्र सूर्यस्य किरणानां स्पर्शस्सर्वतः स्यात् यच्च बलाधिवर्धकं गृहं भवेत् तत्र शुद्धे सर्वान् स्वापयेम वयं च शयीमहि॥७॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! **(यः)** जो **(सहस्रशृङ्गः)** हजारों किरण वाला **(वृषभः)** वृष्टि कारण सूर्य **(समुद्रात्)** अन्तरिक्ष से जैसे **(उदाचरत्)** ऊपर जाता है, वैसे **(तेन)** उस के साथ **(सहस्येन)** बल में उत्तम घर से **(वयम्)** हम लोग **(जनान्)** मनुष्यों को **(नि, स्वापयामसि)** निरन्तर सुलावें॥७॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जहाँ सूर्य की किरणों का स्पर्श सब ओर से हो और जो बल का अधिक बढ़ाने वाला घर हो, उसके शुद्ध होने में सब को सुलावें और हम लोग भी सोवें॥७॥

**पुनः स्त्रीणां गृहाणि उत्तमानि कार्याणीत्याह॥**

फिर स्त्री जनों के घर उत्तम बनावें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**प्रोष्ठेशया वह्येशया नारीर्यास्तल्पशीवरीः।**

**स्त्रियो याः पुण्यगन्धास्ताः सर्वाः स्वापयामसि॥८॥२२॥३॥**



www.9009.co.in

**प्रो॒ष्ठे॒ऽश॒याः। व॒ह्येऽश॒यः। नारीः। याः। त॒ल्प॒ऽशीव॑रीः। स्त्रिय॑ः। याः। पुण्य॑ऽगन्धाः। ताः। सर्वाः। स्वा॒प॒या॒मा॒सि॒॥८॥**

**पदार्थः**-(**प्रोष्ठेशयाः**) या प्रोष्ठे अतिशयेन प्रौढे गृहे शेरते ताः (**वह्येशयाः**) या वह्ये प्रापणीये शेरते ताः (**नारीः**) नरस्य स्त्रियः (**याः**) (**तल्पशीवरीः**) यास्तल्पेषु शेरते ताः (**स्त्रियः**) (**याः**) (**पुण्यगन्धाः**) पुण्यः शुद्धो गन्धो यासां ताः (**ताः**) (**सर्वाः**) (**स्वापयामसि**)॥८॥

**अन्वयः**-हे गृहस्था! यथा वयं याः प्रोष्ठेशया वह्येशया तल्पशीवरीर्नारीः स्त्रियः याः पुण्यगन्धाः स्युस्ताः सर्वा वयं उत्तमे गृहे स्वापयामसि यूयमप्येता उत्तमे गृहे स्वापयत॥८॥

**भावार्थः**-हे गृहस्था! यत्र गृहे स्त्रियो वसेयुस्तद्गृहमतीवोत्तमं रक्षणीयं यतः स्वसन्ताना उत्तमा भवेयुः॥८॥

अत्र गृहस्थकृत्यगुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह संगतिर्वेद्या॥

**इत्यृग्वेदे सप्तमे मण्डले तृतीयोनुवाकः पञ्चपञ्चाशत्तमं सूक्तं पञ्चमेऽष्टके चतुर्थेऽध्याये द्वाविंशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे हम लोग (**याः**) जो (**प्रोष्ठेशयाः**) अतीव सब प्रकार उत्तम सुखों की प्राप्ति कराने वाले घर में सोती हैं (**वह्येशयाः**) वा जो प्राप्ति कराने वाले घर में सोतीं वा जो (**तल्पशीवरीः**) पलंग पर सोने वाली उत्तम (**नारीः**) स्त्री (**स्त्रियः**) विवाहित तथा (**पुण्यगन्धाः**) जिन का शुद्धगन्ध हो (**ताः**) उन (**सर्वाः**) सभों को हम लोग उत्तम घर में (**स्वापयामसि**) सुलावें, वैसे तुम भी उत्तम घर में सुखाओ॥८॥

**भावार्थः**-हे गृहस्थो! जिस घर में स्त्री बसें वह घर अतीव उत्तम रखना चाहिये जिससे निज सन्तान उत्तम हों॥८॥

इस सूक्त में गृहस्थों के काम का और गुणों का वर्णन होने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ संगति जाननी चाहिये॥

**यह ऋग्वेद के सातवें मण्डल में तीसरा अनुवाक, पचपनवां सूक्त और पञ्चम अष्टक के चौथे अध्याय में बाईसवां वर्ग पूरा हुआ॥**



www.9009.co.in

**अथ पञ्चविंशतितमर्चस्य [षट्पञ्चाशत्तमस्य] सूक्तस्य वसिष्ठर्षिः। मरुतो देवताः। १ आर्ची गायत्री। २, ६, ७, ९ भुरिगार्चीगायत्री छन्दः। षड्जः स्वरः। ३, ४, ५ प्राजापत्या बृहतीछन्दः। मध्यमः स्वरः। ८, १० आर्च्युष्णिक्। ११ निचृदार्च्युष्णिक् छन्दः। ऋषभः स्वरः। १२, १३, १५, १८, १९, २१ निचृत्त्रिष्टुप्। १७, २०, त्रिष्टुप्। २२, २३, २५ विराट् त्रिष्टुप्छन्दः। धैवतः स्वरः। २४ पङ्क्तिः। १४, १६ स्वराट्पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः॥**

***अथ के मनुष्याः श्रेष्ठा भवन्तीत्याह॥***

अब पच्चीस ऋचा वाले छप्पनवें सूक्त का आरम्भ हैं, उसके प्रथम मन्त्र में अब कौन मनुष्य श्रेष्ठ होते हैं, इस विषय को कहते हैं॥

**क ईं व्यक्ता नरः सनीळा रुद्रस्य मर्या अधा स्वश्वाः॥ १॥**

**के। ईम्। विऽअक्ताः। नरः। सऽनीळाः। रुद्रस्य। मर्याः। अध। सुऽअश्वाः॥ १॥**

**पदार्थः**-(**के**) (**ईम्**) सर्वतः (**व्यक्ताः**) विशेषेण प्रसिद्धाः कमनीयाः (**नरः**) नेतारो मनुष्याः (**सनीळाः**) समानं नीळं प्रशंसनीयं गृहं येषां ते (**रुद्रस्य**) रोगाणां द्रावकस्य निस्सारकस्य (**मर्याः**) मनुष्याः (**अधा**) अथ। अत्र **निपातस्य चे**ति दीर्घः। (**स्वश्वाः**) शोभना अश्वाः तुरङ्गा महान्तो जना वा येषां ते॥ १॥

**अन्वयः**-हे विद्वन्नध क ईं रुद्रस्य स्वश्वा व्यक्ताः सनीळा मर्या नरस्सन्तीति ब्रूहि॥ १॥

**भावार्थः**-अत्र संसारे क उत्तमाः प्रसिद्धाः प्रशंसनीयाः मनुष्यास्सन्तीत्यस्याग्रस्थे मन्त्रे समाधानं वेद्यमिति॥ १॥

**पदार्थः**-हे विद्वान्! (**अध**) अनन्तर इस के (**के**) कौन (**ईम्**) सब ओर से (**रुद्रस्य**) रोगों के निकालने वाले के (**स्वश्वाः**) सुन्दर घोड़े का महान् जल जिस में विद्यमान हैं (**व्यक्ताः**) विशेषता से प्रसिद्ध (**सनीळाः**) समान घर वाले (**मर्याः**) मरणधर्मा (**नरः**) नायक मनुष्य हैं, इस को कहो॥ १॥

**भावार्थः**-इस संसार में कौन उत्तम प्रशंसा करने योग्य मनुष्य हैं, इस का अगले मन्त्र में समाधान जानना चाहिये॥ १॥

**पुनर्विद्वांस एव प्रकटकीर्तयो जायन्त इत्याह॥**

फिर विद्वान् जन ही प्रकट कीर्ति वाले होते हैं, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**नकिर्ह्येषां जनूंषि वेद ते अङ्ग विद्रे मिथो जनित्रम्॥ २॥**

**नकिः। हि। एषाम्। जनूंषि। वेद। ते। अङ्ग। विद्रे। मिथः। जनित्रम्॥ २॥**

**पदार्थः**-(**नकिः**) निषेधे (**हि**) यतः (**एषाम्**) (**जनूंषि**) जन्मानि (**वेद**) विदन्ति (**ते**) (**अङ्ग**) सुहृत् (**विद्रे**) लभन्ते (**मिथः**) परस्परम् (**जनित्रम्**) जन्मसाधनं कर्म॥ २॥



www.9009.co.in

**अन्वयः**-अङ्ग जिज्ञासो! ये ह्येषां जनूंषि नकिर्वेद ते मिथो जनित्रं विद्रे॥२॥

**भावार्थः**-ये विदुषां जन्मानि विद्याप्रापकाणि जन्मानि न विदुस्ते प्रसिद्धा न भवन्ति ये च विद्याजन्म प्राप्नुवन्ति ते हि कृत्यकृत्याः प्रसिद्धा जायन्त इत्युत्तरम्॥२॥

**पदार्थः**-हे **(अङ्ग)** मित्र जिज्ञासु! जो **(हि)** जिस कारण **(एषाम्)** इन के **(जनूंषि)** जन्मों को **(नकिः)** नहीं **(वेद)** जानते हैं **(ते)** वे उसी कारण **(मिथः)** परस्पर **(जनित्रम्)** जन्म सिद्ध कराने वाले कर्म को **(विद्रे)** पाते हैं॥२॥

**भावार्थः**-जिन विद्वानों के जन्मों को विद्या प्राप्ति कराने वाले न जानते हैं, वे प्रसिद्ध नहीं होते हैं और जो विद्या जन्म पाते हैं, वे ही कृतकृत्य और प्रसिद्ध होते हैं, यह उत्तर है॥२॥

**पुनर्मनुष्याः किं कुर्युरित्याह॥**

फिर मनुष्य क्या करें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अभि स्वपूभिर्मिथो वपन्त वातस्वनसः श्येना अस्पृध्रन्॥३॥**

**अभि। स्वऽपूभिः। मिथः। वपन्त। वातऽस्वनसः। श्येनाः। अस्पृध्रन्॥३॥**

**पदार्थः**-**(अभि)** आभिमुख्ये **(स्वपूभिः)** शयानैस्स्वकीयैः पवित्राचरणैः सह **(मिथः)** अन्योन्यम् **(वपन्त)** वपन्ति **(वातस्वनसः)** वातस्य स्वनः शब्द इव शब्दो येषान्ते **(श्येनाः)** श्येन इव पराक्रमिणः **(अस्पृध्रन्)** स्पर्धन्ते॥३॥

**अन्वयः**-ये गृहस्था वातस्वनसः श्येना इव वर्त्तमानाः स्वपूभिर्मिथो वपन्ताभ्यस्पृध्रन् ते श्रेष्ठैश्वर्या जायन्ते॥३॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। ये गृहस्थाः परस्परं सत्याचरणानुष्ठानेन गम्भीराशयाः पराक्रमिणो भूत्वा सर्वस्योन्नतिं चिकीर्षन्ति तेऽभिपूजिता भवन्ति॥३॥

**पदार्थः**-जो गृहस्थ पुरुष **(वातस्वनसः)** पवन के शब्द के समान जिनका शब्द है वे **(श्येनाः)** वाज के समान पराक्रमी **(स्वपूभिः)** सोते हुए अर्थात् अप्रसिद्ध अपने पवित्र आचरणों के साथ **(मिथः)** परस्पर **(वपन्त)** धोते **(अभि, अस्पृध्रन्)** और सम्मुख स्पर्द्धा करते हैं, वे श्रेष्ठ ऐश्वर्य वाले होते हैं॥३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो गृहस्थ परस्पर सत्याचरणानुष्ठान से गम्भीर आशय वाले पराक्रमी होकर सब की उन्नति करना चाहते हैं, वे पूजित होते हैं॥३॥

**पुनर्विद्वान् किं कुर्यादित्याह॥**

फिर विद्वान् जन क्या करें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**एतानि धीरो निण्या चिकेत पृश्निर्यदूधो मही जभार॥४॥**

**एतानि। धीरः। निण्या। चिकेत। पृश्निः। यत्। ऊधः। मही। जभार॥४॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**एतानि**) (**धीरः**) मेधावी विद्वान् (**निण्या**) निश्चितानि (**चिकेत**) (**पृश्निः**) अन्तरिक्षमिव गम्भीराशयोऽक्षोभः (**यत्**) (**ऊधः**) दुग्धाधारम् (**मही**) पृथिवी (**जभार**) बिभर्ति॥४॥

**अन्वयः**-यो धीरः यदूधः पृश्निर्महो जभार तद्वदेतानि निण्या चिकेत जानीयात्स गृहभारं धर्तुं शक्नुयात्॥४॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। यथा पृथिवी सूर्यश्च सर्वान् गृहान् बिभर्ति तथैव ये विद्वांसो निर्णीतान् सिद्धान्ताञ्जानन्ति ते सर्वत्र सत्कर्तव्या भवन्ति॥४॥

**पदार्थः**-जो (**धीरः**) बुद्धिमान् विद्वान् (**यत्**) जैसे (**ऊधः**) दुग्धधारायुक्त और (**पृश्निः**) अन्तरिक्ष के (**मही**) तथा पृथिवी (**जभार**) धारण करती है, वैसे क्षोभ रहित निष्कम्प गम्भीर (**एतानि**) इन (**निण्या**) पदार्थों को जो (**चिकेत**) जाने, वह घर के भार को धर सके॥७॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे पृथिवी और सूर्य्य सब गृहों को धारण करते हैं, वैसे जो विद्वान् जन निर्णीत सिद्धान्तों को जानते हैं, वे सर्वत्र सत्कार करने योग्य होते हैं॥४॥

**का प्रजा उत्तमेत्याह॥**

कौन प्रजा उत्तम है, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**सा विट् सुवीरा मरुद्भिरस्तु सनात्सहन्ती पुष्यन्ती नृम्णम्॥५॥**

**सा। विट्। सुऽवीरा। मरुत्ऽभिः। अस्तु। सनात्। सहन्ती। पुष्यन्ती। नृम्णम्॥५॥**

**पदार्थः**-(**सा**) (**विट्**) प्रजा (**सुवीरा**) शोभना वीरा यस्यां सा (**मरुद्भिः**) मनुष्यैः (**अस्तु**) (**सनात्**) सनातने (**सहन्ती**) सहनं कुर्वती (**पुष्यन्ती**) पुष्टं कारयित्री (**नृम्णम्**) धनम्॥५॥

**अन्वयः**-या सुवीरा विट् मरुद्भिः सनात् नृम्णं पुष्यन्ती पीडां सहन्ती वर्त्तते साऽस्माकमस्तु॥५॥

**भावार्थः**-सैव स्त्री वरा या ब्रह्मचर्येण समग्रा विद्या अधीत्य शूरवीराँस्तनयान् प्रसूते सहनशीला कोशिका भवति॥५॥

**पदार्थः**-जो (**सुवीरा**) सुन्दर वीरों वाली (**विट्**) प्रजा (**मरुद्भिः**) मनुष्यों के साथ (**सनात्**) सनातन व्यवहार में (**नृम्णम्**) धन को (**पुष्यन्ती**) पुष्ट करवाती और पीड़ा को (**सहन्ती**) सहने वाली वर्त्तमान है (**सा**) वह हमारे लिये (**अस्तु**) होवे॥५॥

**भावार्थः**-वही स्त्री श्रेष्ठ है जो ब्रह्मचर्य्य से समग्र विद्याओं को पढ़ के शूरवीर पुत्रों को उत्पन्न करती है और वही सहनशील तथा कोश वाली होती है॥५॥

**पुनस्ता नार्यः कीदृश्यो भवेयुरित्याह॥**

फिर वे स्त्री कैसी हों, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**यामं येष्ठाः शुभा शोभिष्ठाः श्रिया संमिश्ला ओजोभिरुग्राः॥६॥**

**यामम्। येष्ठाः। शुभा। शोभिष्ठाः। श्रिया। सम्ऽमिश्लाः। ओजःऽभिः। उग्राः॥६॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**यामम्**) प्रहरं प्राप्तव्यं वा (**येष्ठाः**) अतिशयेन यातारः (**शुभा**) शोभनेन (**शोभिष्ठाः**) अतिशयेन शोभायुक्ताः (**श्रिया**) धनेन (**संमिश्लाः**) सम्यक् मित्रत्वेन मिश्रिताः (**ओजोभिः**) पराक्रमादिभिः (**उग्राः**) कठिनगुणकर्मस्वभावाः॥६॥

**अन्वयः**-हे गृहस्था! याः शुभा शोभिष्ठाः श्रिया संमिश्ला येष्ठा ओजोभिरुग्राः सत्यो यामं प्रापणीयं यान्ति ताः गृहस्थैस्सम्माननीयाः॥६॥

**भावार्थः**-हे गृहस्था! याः शाला श्रियान्नादिभिर्युक्ताः शोभमानाः प्रापणीयं सुखं प्रयच्छन्ति ताः पतिव्रता स्त्रिय इव सुशोभनीयाः सततं कुरुत॥६॥

**पदार्थः**-हे गृहस्थो! जो (**शुभा**) शोभन (**शोभिष्ठाः**) अतीव शोभायुक्त (**श्रिया**) धन से (**संमिश्लाः**) अच्छे प्रकार मित्रता के साथ मिली हुई (**येष्ठाः**) अतीव प्राप्त होने और (**ओजेभिः**) पराक्रम आदि से (**उग्राः**) कठिन गुण-कर्म-स्वभाव वाली होती हुई (**यामम्**) प्राप्त होने वाले व्यवहार को पहुँचती हैं, वे गृहस्थों को मान करने योग्य हैं॥६॥

**भावार्थः**-हे गृहस्थो! जो शालाधर धन और अन्नादि पदार्थों से युक्त शोभायमान प्राप्त होने योग्य सुख को देते हैं, उनको पतिव्रता स्त्रियों के समान सुन्दर शोभायुक्त निरन्तर करो॥६॥

**पुनः स्त्रियः कथं वर्तेरन्नित्याह॥**

फिर स्त्री कैसे वर्तें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**उग्रं व ओजः स्थिरा शवांस्यधा मरुद्भिर्गणस्तुविष्मान्॥७॥**

**उग्रम्। वः। ओजः। स्थिरा। शवांसि। अध। मरुत्ऽभिः। गणः। तुविष्मान्॥७॥**

**पदार्थः**-(**उग्रम्**) तेजस्वी (**वः**) युष्माकम् (**ओजः**) पराक्रमः (**स्थिरा**) स्थिराणि दृढानि (**शवांसि**) बलानि (**अधा**) अथ। अत्र **निपातस्य चे**ति दीर्घः। (**मरुद्भिः**) उत्तमैर्मनुष्यैः (**गणः**) समूहः (**तुविष्मान्**) बलवान्॥७॥

**अन्वयः**-हे स्त्रियो! वो मरुद्भिस्सहोग्रम् ओजः स्थिरा शवांस्यध गणस्तुविष्मान् भवतु॥७॥

**भावार्थः**-या स्त्रियः स्वेषां पतीनां च बलं न ह्रासयन्ति तासां पुत्रपौत्रादिगणो बलवान् जायते॥७॥

**पदार्थः**-हे स्त्रियो! (**वः**) तुम्हारा (**मरुद्भिः**) उत्तम मनुष्यों के साथ (**उग्रम्**) तेजस्वी (**ओजः**) पराक्रम और (**स्थिरा**) स्थिर दृढ़ (**शवांसि**) बल (**अध**) इस के अनन्तर (**गणः**) समूह (**तुविष्मान्**) बलवान् हो॥७॥

**भावार्थः**-जो स्त्रियाँ अपने पतियों के बल को न क्षीण करातीं उनका पुत्र-पौत्रादि समूह बलवान् होता है॥७॥

**पुनर्गृहस्थः किं कर्म कुर्यादित्याह॥**



www.9009.co.in

फिर गृहस्थ कौन काम करे, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**शुभ्रो वः शुष्मः क्रुध्मी मनांसि धुनिर्मुनिरिव शर्धस्य धृष्णोः॥८॥**

**शुभ्रः। वः। शुष्मः। क्रुध्मी। मनांसि। धुनिः। मुनिःऽइव। शर्धस्य। धृष्णोः॥८॥**

**पदार्थः**-(**शुभ्रः**) शुद्धः प्रशंसनीयः (**वः**) युष्माकम् (**शुष्मः**) बलयुक्तो देहः (**क्रुध्मी**) क्रोधशीलानि (**मनांसि**) अन्तःकरणानि (**धुनिः**) कम्पनं चेष्टाकरणम् (**मुनिरिव**) यथा मननशीलो विद्वांस्तथा (**शर्धस्य**) बलयुक्तस्य (**धृष्णोः**) दृढस्य॥८॥

**अन्वयः**-हे गृहस्था! वो युष्माकं धार्मिकेषु शुभ्रः शुष्मोऽस्तु दुष्टेषु क्रुध्मी मनांसि सन्तु मुनिरिव शर्धस्य धृष्णोर्धुनिरिव वागस्तु॥८॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। ये गृहस्थाः श्रेष्ठैस्सह सन्धिं दुष्टैस्सह पृथग्भावं रक्षन्ति ते बहुबलं लभन्ते॥८॥

**पदार्थः**-हे गृहस्थो! (**वः**) तुम्हारा धार्मिक जनों में (**शुभ्रः**) प्रशंसनीय (**शुष्मः**) बलयुक्त देह हो, दुष्टों में (**क्रुध्मी**) क्रोधशील (**मनांसि**) मन हों (**मुनिरिव**) मननशील विद्वान् के समान (**शर्धस्य**) बलयुक्त बली (**धृष्णोः**) दृढ़ के (**धुनिः**) चेष्टा करने के समान वाणी हो॥८॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जो गृहस्थ जन श्रेष्ठों के साथ मिलाप और दुष्टों के साथ अलग होना रखते हैं, वे बहुत बल पाते हैं॥

**पुनर्मनुष्याः किं कुर्युरित्याह॥**

फिर मनुष्य क्या करें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**सनेम्यस्मद्युयोत दिद्युं मा वो दुर्मतिरिह प्रणङ्नः॥९॥**

**सनेमि। अस्मत्। युयोत। दिद्युम्। मा। वः। दुःऽमतिः। इह। प्रणक्। नः॥९॥**

**पदार्थः**-(**सनेमि**) पुरातनम् (**अस्मत्**) अस्माकं सकाशात् (**युयोत**) पृथक् कुरुत (**दिद्युम्**) प्रज्वलितं शस्त्रास्त्रम् (**मा**) (**वः**) युष्मान् (**दुर्मतिः**) दुष्टधीः (**इह**) अस्मिन् गृहाश्रमे (**प्रणक्**) प्रणाशयेत् (**नः**) अस्मान्॥९॥

**अन्वयः**-हे विद्वांसः! अस्मत्सनेमि दिद्युं युयोत यत इह वो युष्मान् नोऽस्माँश्च दुर्मतिर्मा प्रणक्॥९॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यूयं सदा दुष्टचारेभ्यो मनुष्येभ्यः पृथक् स्थित्वा शत्रुबलं निवार्य वर्धमाना भवत॥९॥

**पदार्थः**-हे विद्वानो! (**अस्मत्**) हम से (**सनेमि**) पुराने (**दिद्युम्**) प्रज्वलित शस्त्र और अस्त्र समूह को (**युयोत**) अलग करो जिससे (**इह**) इस गृहाश्रम व्यवहार में (**वः**) तुम लोगों को और (**नः**) हम लोगों को (**दुर्मतिः**) दुष्टबुद्धि (**मा**) मत (**प्रणक्**) नष्ट करावे॥९॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! तुम सदा दुष्टाचारी मनुष्यों से अलग रह कर और शत्रु बल को निवार के बढ़ते हुए होओ॥९॥

**पुनर्मनुष्याः किं कुर्युरित्याह॥**

फिर मनुष्य क्या करें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**प्रिया वो नाम हुवे तुराणामा यत्तृपन्मरुतो वावशानाः॥१०॥२३॥**

**प्रिया। वः। नाम। हुवे। तुराणाम्। आ। यत्। तृपत्। मरुतः। वावशानाः॥१०॥**

**पदार्थः**-(**प्रिया**) प्रियाणि कमनीयानि (**वः**) युष्माकम् (**नाम**) नामानि (**हुवे**) प्रशंसामि (**तुराणाम्**) सद्यःकारिणाम् (**आ**) (**यत्**) यः (**तृपत्**) तृप्यति (**मरुतः**) प्राण इव प्रिया विद्वांसः (**वावशानाः**) कामयमानाः॥१०॥

**अन्वयः**-हे वावशाना मरुतस्तुराणां वः प्रिया नामाहं हुवे यद्यः आ तृपत् तं मा च यूयं सत्कुरुत॥१०॥

**भावार्थः**-ये सर्वेषां प्रियाचरणाः सुखं कामयमाना मनुष्या वर्तन्ते त एव प्रियाणि सुखानि लभन्ते॥१०१॥

**पदार्थः**-हे (**वावशानाः**) कामना करते हुए (**मरुतः**) प्राण के समान प्यारे विद्वानो! (**तुराणाम्**) शीघ्र करने वालों (**वः**) आप लोगों के (**प्रिया**) मनोहर (**नाम**) नामों को मैं (**हुवे**) प्रशंसता हूँ अर्थात् मैं उनकी प्रशंसा करता हूँ (**यत्**) जो (**आ, तृपत्**) अच्छे प्रकार तृप्त होता है उस का और मेरा सत्कार करो॥१०॥

**भावार्थः**-जो सब के प्रियाचरण करने और सुख की कामना करने वाले मनुष्य वर्त्तमान हैं, वे ही प्रिय सुखों को पाते हैं॥१०॥

**पुनर्मनुष्याः किं कुर्युरित्याह॥**

फिर मनुष्य क्या करें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**स्वायुधास इष्मिणः सुनिष्का उत स्वयं तन्व१ः शुम्भमानाः॥११॥**

**सुऽआयुधासः। इष्मिणः। सुऽनिष्काः। उत। स्वयम्। तन्वः। शुम्भमानाः॥११॥**

**पदार्थः**-(**स्वायुधासः**) शोभनान्यायुधानि येषान्ते (**इष्मिणः**) इच्छान्नादियुक्ताः (**सुनिष्काः**) शोभनानि निष्काणि सौवर्णानि येषां ते (**उत**) (**स्वयम्**) (**तन्वः**) शरीराणि (**शुम्भमानाः**) शोभमानाः॥११॥

**अन्वयः**-हे मनुष्याः! ये स्वायुधास इष्मिणः सुनिष्का उत स्वयं तन्वः शुम्भमानास्सन्ति त एव विजयप्रशंसे प्राप्नुवन्ति॥११॥

**भावार्थः**-ये धनुर्वेदमधीत्यारोगशरीरा युद्धविद्याकुशलास्सन्ति त एव धनधान्ययुक्ता भवन्ति॥११॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो **(स्वायुधासः)** अच्छे हथियारों वाले **(इष्मिणः)** इच्छा और जलादि पदार्थों से युक्त **(सुनिष्काः)** जिन के सुन्दर सुवर्ण के गहने विद्यमान **(उत)** और **(स्वयम्)** आप **(तन्वः)** शरीरों की **(शुम्भमानाः)** शोभा करते हुए वर्त्तमान हैं, वे ही विजय और प्रशंसा को पाते हैं॥

**भावार्थः**-जो धुनर्वेद को पढ़ के आरोग्ययुक्त शरीर और युद्ध विद्या में कुशल हैं, वे ही धनधान्य युक्त होते हैं॥११॥

**केऽत्र संसारे पवित्रा जायन्त इत्याह॥**

कौन इस संसार में पवित्र होते हैं, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**शुची वो हव्या मरुतः शुचीनां शुचिं हिनोम्यध्वरं शुचिभ्यः।**

**ऋतेन सत्यमृतसाप आयञ्छुचिजन्मानः शुचयः पावकाः॥१२॥**

**शुची। वः। हव्या। मरुतः। शुचीनाम्। शुचिम्। हिनोमि। अध्वरम्। शुचिऽभ्यः। ऋतेन। सत्यम्। ऋतऽसापः। आयन्। शुचिऽजन्मानः। शुचयः। पावकाः॥१२॥**

**पदार्थः**-**(शुची)** शुचीनि पवित्राणि **(वः)** युष्माकम् **(हव्या)** दातुमादातुमर्हाणि **(मरुतः)** मरणधर्माणो मनुष्याः **(शुचीनाम्)** पवित्राचाराणाम् **(शुचिम्)** पवित्रम् **(हिनोमि)** वर्धयामि **(अध्वरम्)** अहिंसनीयं यज्ञम् **(शुचिभ्यः)** पवित्रेभ्यो विद्वद्भ्यः पदार्थेभ्यो वा **(ऋतेन)** यथार्थेन **(सत्यम्)** अव्यभिचारि नित्यम् **(ऋतसापः)** ये ऋतेन सपन्ति प्रतिज्ञां कुर्वन्ति ते **(आयन्)** आगच्छन्ति प्राप्नुवन्ति **(शुचिजन्मानः)** पवित्रजन्मवन्तः **(शुचयः)** पवित्राः **(पावकाः)** वह्नय इव वर्त्तमानाः॥१२॥

**अन्वयः**-हे पावका इव शुचयः शुचिजन्मान ऋतसापो मरुतः शुचीनां वो यानि शुची हव्यास्सन्ति तेभ्यः शुचिभ्यः शुचिमृतेन सत्यमध्वरं य आयँस्तानहं हिनोमि तं मां सर्वे वर्धयत॥१२॥

**भावार्थः**-येषां प्राक्कर्माणि पुण्यात्मकानि सन्ति त एव पवित्रजन्मानोऽथवा येषां वर्तमाने धर्माचरणानि सन्ति ते पवित्रजन्मानो भवन्ति॥१२॥

**पदार्थः**-हे **(पावकाः)** अग्नि के समान प्रताप सहित वर्त्तमान **(शुचयः)** पवित्र **(शुचिजन्मानः)** पवित्र जन्म वाले **(ऋतसापः)** जो सत्य से प्रतिज्ञा करते हैं वे **(मरुतः)** मरणधर्मा मनुष्यो **(शुचीनाम्)** पवित्र आचरण करने वाले **(वः)** तुम लोगों के जो **(शुची)** पवित्र **(हव्या)** देने लेने योग्य वस्तु वर्त्तमान हैं उन **(शुचिभ्यः)** पवित्र वस्तुओं से वा पवित्र विद्वानों से **(शुचिम्)** पवित्र को और **(ऋतेन)** यथार्थ भाव से **(सत्यम्)** अव्यभिचारी नित्य **(अध्वरम्)** न नष्ट करने योग्य व्यवहार को **(आयन्)** जो प्राप्त होते हैं उन्हें **(हिनोमि)** बढ़ाता हूँ, उस मुझे सब बढ़ावें॥१२॥

**भावार्थः**-जिनके पिछले काम पुण्यरूप हैं वे ही पवित्र जन्म वाले हैं अथवा जिनके वर्त्तमान में धर्मयुक्त आचरण हैं, वे पवित्रजन्मा होते हैं॥१२॥

**पुनर्योद्धारः कीदृशा भवेयुरित्याह॥**



www.9009.co.in

फिर योद्धा कैसे हों, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अंसेष्वा मरुतः खादयो वो वक्षःसु रुक्मा उपशिश्रियाणाः।**

**वि विद्युतो न वृष्टिभी रुचाना अनु स्वधामायुधैर्यच्छमानाः॥ १३॥**

**अंसेषु। आ। मरुतः। खादयः। वः। वक्षःऽसु। रुक्माः। उपऽशिश्रियाणाः। वि। विऽद्युतः। न। वृष्टिऽभिः। रुचानाः। अनु। स्वधाम्। आयुधैः। यच्छमानाः॥ १३॥**

**पदार्थः**-(**अंसेषु**) भुजमूलेषु (**आ**) (**मरुतः**) वायव इव बलिष्ठा मनुष्याः (**खादयः**) ये खादन्ति ते (**वः**) युष्माकम् (**वक्षःसु**) हृदयदेशेषु (**रुक्माः**) देदीप्यमानाः (**उपशिश्रियाणाः**) ये उपश्रयन्ति ते (**वि**) (**विद्युतः**) स्तनयित्नवः (**न**) इव (**वृष्टिभिः**) (**रुचानाः**) रोचमानाः (**अनु**) (**स्वधाम्**) अन्नम् (**आयुधैः**) शस्त्रास्त्रैः युद्धसाधनैः (**यच्छमानाः**) निग्रहीतारः॥१३॥

**अन्वयः**-हे मरुतो! ये उपशिश्रियाणा वक्षःसु रुक्माः खादयो वृष्टिभिर्विद्युतो नानु स्वधां वि रुचाना आयुधैश्शत्रून् यच्छमानाः तेषां वोंऽसेषु बलमा वर्तते ते भवन्तो विजयिनो भवन्ति॥१३॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। हे शूरवीरा! मनुष्या यथा विद्युतो वृष्टिभिस्सहैव प्रकाशन्ते तथैव यूयं शस्त्रास्त्रैः प्रकाशध्वं स्वशरीरबलं वर्धयित्वोत्तमसेनामुपश्रित्य शत्रुन् निगृह्णीत॥१३॥

**पदार्थः**-हे (**मरुतः**) पवनों के समान बलिष्ठ मनुष्यो! जो (**उपशिश्रियाणाः**) समीप सेवने वाले (**वक्षःसु**) हृदयों में (**रुक्माः**) देदीप्यमान (**खादयः**) भक्षण करते हैं (**वृष्टिभिः**) वर्षाओं से जैसे (**विद्युतः**) बिजुली (**न**) वैसे (**अनु, स्वधाम्**) अनुकूल अन्न को (**वि, रुचानाः**) प्रदीप्त करते हुए (**आयुधैः**) शस्त्र और अस्त्र युद्ध के साधनों से शत्रुओं को (**यच्छमानाः**) पराजय देने वाले उन (**वः**) आप की (**अंसेषु**) भुजाओं की मूलों में बल (**आ**) सब ओर से वर्तमान है, वे आप लोग विजय प्राप्त होने वाले होते हैं॥१३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे शूरवीर पुरुषो! जैसे बिजुली वर्षाओं के साथ ही प्रकाशित होती है, वैसे ही आप लोग शस्त्र और अस्त्रों से प्रकाशित होओ और अपने शरीर बल को बढ़ाके और उत्तम सेना का आश्रय लेकर शत्रुओं को पराजय देओ॥१३॥

**पुनर्मनुष्यैः किं कर्तव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को क्या करना चाहिये, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**प्र बुध्न्या व ईरते महांसि प्र नामानि प्रयज्यवस्तिरध्वम्।**

**सहस्त्रियं दम्यं भागमेतं गृहमेधीयं मरुतो जुषध्वम्॥ १४॥**

**प्र। बुध्न्याः। वः। ईरते। महांसि। प्र। नामानि। प्रऽयज्यवः। तिरध्वम्। सहस्त्रियम्। दम्यम्। भागम्। एतम्। गृहऽमेधीयम्। मरुतः। जुषध्वम्॥ १४॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**प्र**) (**बुध्न्याः**) बुध्न्येऽन्तरिक्षे मेघाः (**वः**) युष्माकम् (**ईरते**) प्राप्नुवन्ति (**महांसि**) (**प्र**) (**नामानि**) (**प्रयज्यवः**) प्रकर्षेण संगन्तारः (**तिरध्वम्**) शत्रुबलमुल्लङ्घध्वम् (**सहस्रियम्**) सहस्रेषु भवं (**दम्यम्**) दमनीयम् (**भागम्**) भजनीयम् (**एतम्**) (**गृहमेधीयम्**) गृहमेधे गृहस्थे शुद्धे व्यवहारे भवम् (**मरुतः**) वायव इव (**जुषध्वम्**) सेवध्वम्॥१४॥

**अन्वयः**-हे मरुतः प्रयज्यवो! यूयं ये वो महांसि नामानि बुध्न्याः प्रेरते तैः शत्रून् प्र तिरध्वमेतं सहस्रियं दम्यं गृहमेधीयं भागं जुषध्वम्॥१४॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे गृहस्था! यथा मेघाः पृथिवीं सेवन्ते तथैव भवन्तः प्रजाः सेवध्वम् शत्रून्निवार्यातुलसुखं प्राप्नुत॥१४॥

**पदार्थः**-हे (**मरुतः**) पवनों के समान (**प्रयज्यवः**) उत्तम संग करने वालो! तुम जो (**वः**) तुम लोगों के (**महांसि**) बड़े-बड़े (**नामानि**) नामों को (**बुध्न्याः**) अन्तरिक्ष में उत्पन्न हुए मेघ (**प्र, ईरते**) प्राप्त होते हैं उससे शत्रुओं के (**प्र, तिरध्वम्**) बल को उल्लङ्घन करो (**एतम्**) इस (**सहस्रियम्**) हजारों में हुए और (**दम्यम्**) शान्त करने योग्य (**गृहमेधीयम्**) घर के शुद्ध व्यवहार में हुए (**भागम्**) सेवने करने योग्य विषय को (**जुषध्वम्**) सेवो॥१४॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे गृहस्थो! जैसे मेघ पृथिवी को सेवते हैं, वैसे ही आप लोग प्रजाजनों को सेओ और शत्रुओं की निवृत्ति कर अतुल सुख पाओ॥१४॥

**पुनस्ते मनुष्याः कीदृशा जायेरन्नित्याह॥**

फिर वे मनुष्य कैसे प्रसिद्ध हों, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**यदि स्तुतस्य मरुतो अधीथेत्था विप्रस्य वाजिनो हवीमन्।**

**मक्षू रायः सुवीर्यस्य दात नू चिद्यमन्य आदभदरावा॥१५॥२४॥**

**यदि। स्तुतस्य। मरुतः। अधिऽइथ। इत्था। विप्रस्य। वाजिनः। हवीमन्। मक्षु। रायः। सुऽवीर्यस्य। दात। नु। चित्। यम्। अन्यः। आऽदभत्। अरावा॥१५॥**

**पदार्थः**-(**यदि**) (**स्तुतस्य**) (**मरुतः**) वायव इव (**अधीथ**) (**इत्था**) अनेन प्रकारेण (**विप्रस्य**) मेधाविनः (**वाजिनः**) वेगयुक्तस्य (**हवीमन्**) हवींषि दातव्यानि वसूनि विद्यन्ते यस्मिन् (**मक्षू**) सद्यः। अत्र **ऋचि तुनुघेति** दीर्घः। (**रायः**) धनस्य (**सुवीर्यस्य**) शोभनं वीर्यं यस्मात्तस्य (**दात**) दत्त (**नु**) शीघ्रम्। अत्र **ऋचि तुनुघेति** दीर्घः। (**चित्**) अपि (**यम्**) (**अन्यः**) (**आदभत्**) हिंस्यात् (**अरावा**) अदाता अवचनो वा॥१५॥

**अन्वयः**-हे मरुतो! यदि स्तुतस्य वाजिनो विप्रस्य हवीमन्नित्था मक्ष्वधीथ सुवीर्यस्य रायो दात चिदपि यमन्योऽरावा न्वादभत् तर्हि किं किं विमर्शनं न जायेत॥१५॥

**भावार्थः**-ये विदुषः सकाशादधीयते ते समर्था भूत्वा धनस्वामिनो जायन्ते॥१५॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-हे (**मरुतः**) पवनों के समान वर्त्तमान मनुष्यो! (**यदि**) यदि (**स्तुतस्य**) प्रशंसित (**वाजिनः**) वेगयुक्त (**विप्रस्य**) मेधावी जन के (**हवीमन्**) जिस में देने योग्य वस्तु विद्यमान उस व्यवहार में (**इत्था**) इस प्रकार से (**मक्षू**) शीघ्र (**अधीथ**) स्मरण करो (**सुवीर्यस्य**) और जिन के सम्बन्ध में शुभ वीर्य होता उस (**रायः**) धन को (**दात**) देओ (**चित्**) और (**यम्**) जिसको (**अन्यः**) अन्य (**अरावा**) न देने वाला जन (**नु**) शीघ्र (**आदभत्**) नष्ट करें तो क्या-क्या विचार न हो॥१५॥

**भावार्थः**-जो विद्वान् के समीप से पढ़ते हैं, वे समर्थ अर्थात् विद्यासम्पन्न हो धनपति होते हैं॥१५॥

**पुनस्ते राजजनाः कीदृशाः भवेयुरित्याह॥**

फिर वे राजजन कैसे हों इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अत्या॑सो॒ न ये म॒रुत॒: स्वञ्चो॑ यक्ष॒दृशो॒ न शु॒भय॑न्त॒ मर्या॑:।**

**ते ह॑र्म्ये॒ष्ठाः शिश॑वो॒ न शु॒भ्रा व॒त्सासो॒ न प्र॑क्री॒ळिन॑: पयो॒धाः॥ १६॥**

**अत्या॑सः। न। ये। म॒रुत॑ः। सु॒ऽअञ्च॑ः। य॒क्ष॒ऽदृश॑ः। न। शु॒भय॑न्त। मर्या॑ः। ते। ह॒र्म्ये॒ऽस्थाः। शिश॑वः। न। शु॒भ्राः। व॒त्सास॑ः। न। प्र॒ऽक्री॒ळिन॑ः। प॒य॒ःऽधाः॥ १६॥**

**पदार्थः**-(**अत्यासः**) येऽतन्त्यध्वानं व्याप्नुवन्ति ते (**न**) इव (**ये**) (**मरुतः**) वायव इव बलिष्ठा मनुष्याः (**स्वञ्चः**) ये सुष्ठ्वञ्चन्ति गच्छन्ति ते (**यक्षदृशः**) ये यक्षान् पूजनीयान् पश्यन्ति ते (**न**) इव (**शुभयन्त**) शुभ इवाचरन्ति (**मर्याः**) मनुष्याः (**ते**) (**हर्म्येष्ठाः**) ये हर्म्ये तिष्ठन्ति ते (**शिशवः**) बालकाः (**न**) इव (**शुभ्राः**) शुद्धाः (**वत्सासः**) सद्योजाता वत्साः (**न**) इव (**प्रक्रीळिनः**) प्रकृष्टा क्रीळा विद्यते येषां ते (**पयोधाः**) ये पयांसि स्वगतानि दधति ते॥१६॥

**अन्वयः**-हे मनुष्याः! ये मर्या अत्यासो न स्वञ्चः पयोधा मरुत इव गतिमन्तो बलिष्ठा यक्षदृशो न हर्म्येष्ठाः शिशवो न शुभ्रा वत्सासो न प्रक्रीळिनः सन्तः शुभयन्त ते कृतकार्या भवन्ति॥१६॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। ये शूरवीरा अश्ववद्वेगवन्तः कल्याणदृष्टिवत्समीक्षकाः शिशुवत्सरलस्वभावा वत्सवत्क्रीडाकर्तारः वायुवत्सामग्रीधरा राजादयो वीरास्सन्ति त एव विजयप्रतिष्ठे सततं लभन्ते॥१६॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! (**ये**) जो (**मर्याः**) मरणधर्मा मनुष्य (**अत्यासः**) मार्ग को व्याप्त होते हुओं के (**न**) समान (**स्वञ्चः**) सुन्दरता से जाने (**पयोधाः**) वा जलों को धारण करने वाले (**मरुतः**) पवनों के समान निरन्तर चाल वाले बलिष्ठ (**यक्षदृशः**) जो पूजन करने योग्यों को देखते हैं उनके (**न**) समान (**हर्म्येष्ठाः**) अटारियों पर स्थिर होने वाले (**शिशवः**) बालकों के (**न**) समान (**शुभ्राः**) शुद्ध सुन्दर (**वत्सासः**) शीघ्र उत्पन्न हुए बछड़ों के (**न**) समान (**प्रक्रीळिनः**) अच्छे प्रकार खेल वाले होते हुए (**शुभयन्त**) उत्तम के समान आचरण करते हैं (**ते**) वे कृतकार्य होते हैं॥१६॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जो शूरवीर घोड़े के समान वेग वाले, अच्छी दृष्टि वाले के समान देखने वाले, बालकों के समान सीधे स्वभाव वाले, बछड़ों के समान खेल करने वाले, पवनों के समान पदार्थों के धारण करने वाले राजा आदि वीर जन हैं, वे ही विजय और प्रतिष्ठा को निरन्तर पाते हैं॥१६॥

**पुनः के राजजनाः श्रेष्ठाः सन्तीत्याह॥**

फिर कौन राजजन श्रेष्ठ हैं, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**द॒श॒स्यन्तो॑ नो म॒रुतो॑ मृळन्तु वरि॒व॒स्यन्तो॒ रोद॑सी सु॒मेके॑।**

**आ॒रे गो॒हा नृ॒हा व॒धो वो॑ अस्तु सु॒म्नेभि॑र॒स्मे॒ व॑सवो॑ नमध्वम्॥१७॥**

**द॒श॒स्यन्त॑ः। न॒ः। मरुत॑ः। मृ॒ळ॒न्तु॒। व॒रि॒व॒स्यन्त॑ः। रोद॑सी॒ इति॑। सु॒मेके॒ इति॑ सु॒ऽमेके॑। आ॒रे। गो॒ऽहा। नृ॒ऽहा। व॒धः। व॒ः। अ॒स्तु॒। सु॒म्नेभि॑ः। अ॒स्मे इति॑। व॒स॒व॒ः। न॒म॒ध्व॒म्॥१७॥**

**पदार्थः**-(**दशस्यन्तः**) बलयन्तः (**नः**) अस्मान् (**मरुतः**) प्राणा इव (**मृळन्तु**) सुखयन्तु (**वरिवस्यन्तः**) परिचरन्तः (**रोदसी**) द्यावापृथिव्यौ (**सुमेके**) सुस्वरूपे (**आरे**) दूरे (**गोहा**) यो गां हन्ति (**नृहा**) यो नॄन् हन्ति (**वधः**) हन्ति येन सः (**वः**) युष्माकम् (**अस्तु**) (**सुम्नेभिः**) सुखैः (**अस्मे**) अस्मान् (**वसवः**) वासयितारः (**नमध्वम्**)॥१७॥

**अन्वयः**-हे वीरा मरुत इव! दशस्यन्तस्सुमेके रोदसी वरिवस्यन्तो नो मृळन्तु वो युष्माकमारे गोहा नृहा वधोऽस्तु वसवो यूयं सुम्नेभिरस्मे नमध्वम्॥१७॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। त एव राजजना उत्तमास्सन्ति ये श्रेष्ठान् सुखयित्वा दुष्टान् घ्नन्त्याप्तान्नत्वा दुष्टेषूग्रा भवन्तीति॥१७॥

**पदार्थः**-हे वीरो (**मरुतः**) प्राणों के समान! (**दशस्यन्तः**) बल करते और (**सुमेके**) एक से रूप वाले (**रोदसी**) आकाश और पृथिवी को (**वरिवस्यन्तः**) सेवते हुए जन (**नः**) हम लोगों को (**मृळन्तु**) सुख देवें और (**वः**) तुम्हारे (**आरे**) दूर देश में (**गोहा**) गो हत्यारा (**नृहा**) और मनुष्य हत्यारा (**वधः**) वह दोनों जिससे मारते हैं वह (**अस्तु**) दूर हो जाये (**वसवः**) निवास दिखाने वाले तुम लोग (**सुम्नेभिः**) सुखों के साथ (**अस्मे**) हम लोगों को (**नमध्वम्**) नमो॥१०॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। वे ही राजजन उत्तम हैं, जो श्रेष्ठों को सुख देकर दुष्टों को मारते हैं और आप्त जनों को नम के दुष्टों में उग्र होते हैं॥१७॥

**पुनस्ते कीदृशा भवेयुरित्याह॥**

फिर वे राजजन कैसे हों, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**आ वो॒ होता॑ जोहवीति स॒त्तः स॒त्राचीं॑ रा॒तिं म॑रुतो गृणा॒नः।**

**य ईव॑तो वृषणो॒ अस्ति॑ गो॒पाः सो अद्व॑यावी हवते व उ॒क्थैः॥१८॥**



www.9009.co.in

**आ। वः। होता। जोहवीति। सत्तः। सत्राचीम्। रातिम्। मरुतः। गृणानः। यः। ईवतः। वृषणः। अस्ति। गोपाः। सः। अद्वयावी। हवते। वः। उक्थैः॥१८॥**

**पदार्थः**-(**आ**) समन्तात् (**वः**) युष्मान् (**होता**) दाता (**जोहवीति**) भृशमाह्वयति (**सत्तः**) निषण्णः (**सत्राचीम्**) या सत्रा सत्यमञ्चति प्रापयति ताम् (**रातिम्**) दानम् (**मरुतः**) वायव इव मनुष्याः (**गृणानः**) स्तुवन् (**यः**) (**ईवतः**) गच्छतः (**वृषणः**) वृष्टिकरस्य (**अस्ति**) (**गोपाः**) रक्षकः (**सः**) (**अद्वयावी**) छलकपटादिरहितः (**हवते**) आह्वयति (**वः**) युष्मान् (**उक्थैः**) वक्तुमर्हैः वचनैः॥१८॥

**अन्वयः**-हे मरुतो! यो गृणानः सत्तोऽद्वयावी होता ईवतो वृषणो वो युष्माना जोहवीति सत्राची रातिं ददाति गोपा अस्ति उक्थैर्वे हवते स उत्तमोऽस्तीति विजानीत॥१८॥

**भावार्थः**-यो राजादिर्जनो भवदाता सर्वस्य रक्षकः मायादिदोषरहितः सत्यविद्याप्रदाता सत्यग्राहकोऽस्ति स एवात्र प्रशंसितो वर्त्तते तमेवोत्तमं मनुष्या विजानन्तु॥१८॥

**पदार्थः**-हे (**मरुतः**) पवनों के तुल्य मनुष्यो! (**यः**) जो (**गृणानः**) स्तुति करता (**सत्तः**) बैठा हुआ (**अद्वयावी**) छल-कपट आदि से रहित (**होता**) देने वाला (**ईवतः**) जाते हुए (**वृषणः**) वर्षा करने वाले के सम्बन्ध में (**वः**) तुम लोगों को (**आ, जोहवीति**) निरन्तर बुलाता (**सत्राचीम्**) जो सत्य को देती है उस (**रातिम्**) दान को देता और (**गोपाः**) रक्षा करने वाला (**अस्ति**) है तथा (**उक्थैः**) कहने योग्य वचनों से (**वः**) तुम लोगों को (**हवते**) बुलाता है, वह उत्तम है, इस को जानो॥१८॥

**भावार्थः**-जो राजा आदि जन अभय देने और सब की रक्षा करने वाला, छलकपट आदि दोषरहित, सत्यविद्या दाता और सत्यग्राहक है, वही यहाँ प्रशंसित वर्त्तमान है, उसी को मनुष्य उत्तम जानें॥१८॥

**पुनस्ते कीदृशा भवेयुरित्याह॥**

फिर वे कैसे हों, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**इमे तुरं मरुतो रामयन्तीमे सहः सहस आ नमन्ति।**

**इमे शंसं वनुष्यतो नि पान्ति गुरु द्वेषो अररुषे दधन्ति॥१९॥**

**इमे। तुरम्। मरुतः। रमयन्ति। इमे। सहः। सहसः। आ। नमन्ति। इमे। शंसम्। वनुष्यतः। नि। पान्ति। गुरु। द्वेषः। अररुषे। दधन्ति॥१९॥**

**पदार्थः**-(**इमे**) (**तुरम्**) शीघ्रम् (**मरुतः**) वायव इव (**रमयन्ति**) (**इमे**) (**सहः**) बलम् (**सहसः**) बलात् (**आ**) (**नमन्ति**) (**इमे**) (**शंसम्**) प्रशंसकम् (**वनुष्यतः**) क्रुध्यतः। **वनुष्यतीति क्रुध्यतिकर्मा।** (निघं०२.१२) (**नि**) (**पान्ति**) रक्षन्ति (**गुरु**) भारवत् (**द्वेषः**) अप्रीतिम् (**अररुषे**) अलंरोषकाय (**दधन्ति**)॥१९॥

**अन्वयः**-हे राजन्! य इमे मरुतस्तुरं रमयन्तीमे सहसस्सह आ नमन्तीमे वनुष्यतः शंसं नि पान्त्यररुषे द्वेषो गुरु दधन्ति स्तांस्त्वं सततं सत्कृद्रक्ष॥१९॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-हे राजन्ये! सेनां सुशिक्ष्य सद्यो व्यूह्य बलिष्ठानपि शत्रून् विजित्योत्तमान् संरक्ष्य दुष्टे द्वेषं विदधति ते त्वया सत्कर्तव्याः सन्ति॥१९॥

**पदार्थः**-हे राजन्! जो **(इमे)** ये **(मरुतः)** पवनों के समान **(तुरम्)** शीघ्र **(रमयन्ति)** रमण कराते **(इमे)** यह **(सहसः)** बल से **(सहः)** बल को **(आ, नमन्ति)** सब ओर से नमते **(इमे)** यह **(वनुष्यतः)** क्रोध करने वाले की **(शंसम्)** प्रशंसा करने वाले को **(नि, पान्ति)** निरन्तर रखते और **(अररुषे)** पूरा रोष करने वाले के लिए **(द्वेषः)** वैर **(गुरु)** बहुत **(दधन्ति)** धारण करते हैं, उन का आप निरन्तर सत्कार करो॥१९॥

**भावार्थः**-हे राजा! जो सेना को अच्छी शिक्षा देकर शीघ्र विशेष रचना कर बड़ी शत्रुओं को भी जीत उत्तमों की रक्षा कर दुष्टों में द्वेष फैलाते हैं, वे तुम को सत्कार करने चाहियें॥१९॥

**पुनस्ते राजजनाः कीदृशा भवन्तीत्याह॥**

फिर वे राजजन कैसे होते हैं, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**इमे रध्रं चिन्मरुतो जुनन्ति भृमिं चिद्यथा वसवो जुषन्त।**

**अप बाधध्वं वृषणस्तमांसि धत्त विश्वं तनयं तोकमस्मे॥२०॥२५॥**

**इमे। रध्रम्। चित्। मरुतः। जुनन्ति। भृमिम्। चित्। यथा। वसवः। जुषन्त। अप। बाधध्वम्। वृषणः। तमांसि। धत्त। विश्वम्। तनयम्। तोकम्। अस्मे इति॥२०॥**

**पदार्थः**-**(इमे)** **(रध्रम्)** समृद्धिमन्तम् **(चित्)** अपि **(मरुतः)** वायव इव मनुष्याः **(जुनन्ति)** प्रेरयन्ति **(भृमिम्)** भ्रमणशीलम् **(चित्)** अपि **(यथा)** **(वसवः)** वासयितारः **(जुषन्त)** सेवन्ते **(अप)** **(बाधध्वम्)** **(वृषणः)** बलिष्ठाः **(तमांसि)** रात्रिरिव वर्तमानान् दुष्टान् जनान् **(धत्त)** **(विश्वम्)** सर्वम् **(तनयम्)** विस्तीर्णशुभगुणकर्मस्वभावम् **(तोकम्)** अपत्यम् **(अस्मे)** अस्मासु॥२०॥

**अन्वयः**-हे वृषणो वसवो! यूयं यथेमे मरुतो रध्रं चित् जुनन्ति भृमिं चित् जुषन्त तथा यूयं सूर्यस्तमांसीव शत्रूनप बाधध्वमस्मे विश्वं तनयं तोकं धत्त॥२०॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। यथा प्राणायामादिभिः सुसाधिता वायवस्समृद्धिं कुपथ्येन सेविता दारिद्र्यं च जनयन्ति तथैव सेविता विद्वांसो राज्यर्द्धिमपमानिता राज्यभङ्गं जनयन्ति सुशिक्ष्य सत्कृत्य रक्षिताः शूरवीराः यथा शत्रूनपबाधन्ते तथा वर्तित्वा प्रजासूत्तमान्यपत्यानि राजजना नयन्तु॥२०॥

**पदार्थः**-हे **(वृषणः)** बलिष्ठो **(वसवः)** निवास कराने वालो! तुम **(यथा)** जैसे **(इमे)** यह **(मरुतः)** पवनों के समान वर्त्तमान **(रध्रम्)** समृद्धिमान् **(चित्)** ही को **(जुनन्ति)** प्रेरणा करते हैं और **(भृमिम्)** घूमने वाले को **(चित्)** ही **(जुषन्त)** सेवते हैं, वैसे और जैसे सूर्य अन्धकारों को वैसे **(तमांसि)** रात्रि के समान वर्त्तमान दुष्ट शत्रुओं को **(अप, बाधध्वम्)** अत्यन्त बाधा देओ और **(अस्मे)**



www.9009.co.in

हम लोगों में **(विश्वम्)** समस्त **(तनयम्)** विस्तारयुक्त शुभ गुण-कर्म-स्वभाव वाले **(तोकम्)** सन्तान को **(धत्त)** धारण करो॥१०॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जैसे प्राणायामादिकों से अच्छे सिद्ध किये हुए पवन समृद्धि और कुपथ्य से सेवन किये दरिद्र**[**ता**]** को उत्पन्न करते हैं, वैसे ही सेवन किये हुए विद्वान् राज्य की वृद्धि और अपमान किये हुए राज्य का भङ्ग उत्पन्न करते हैं, अच्छी शिक्षा दिये और सत्कार कर रक्षा किये हुए शूरवीर जैसे शत्रुओं को नष्ट करते हैं, वैसे वर्त्तकर प्रजाजनों में उत्तम सन्तान राजजन उत्पन्न करावें॥२०॥

**पुनर्मनुष्याः कीदृशा भवन्तीत्याह॥**

फिर मनुष्य कैसे होते हैं, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**मा वो दात्रान्मरुतो निरराम मा पश्चाद्दघ्म रथ्यो विभागे।**

**आ नः स्पार्हे भजतना वसव्ये३ यदीं सुजातं वृषणो वो अस्ति॥२१॥**

**मा। वः। दात्रात्। मरुतः। निः। अराम। मा। पश्चात्। दघ्म। रथ्यः। विऽभागे। आ। नः। स्पार्हे। भजतन। वसव्ये। यत्। ईम्। सुऽजातम्। वृषणः। वः। अस्ति॥२१॥**

**पदार्थः**-**(मा) (वः)** युष्मान् **(दात्रात्)** दानात् **(मरुतः)** वायव इव मनुष्याः **(निः)** नितराम् **(अराम) (मा) (पश्चात्) (दघ्म)** गच्छेम। **दघ्यतीति गतिकर्मा।** (निघं०२.१४) **(रथ्यः)** बहवो रथा विद्यन्ते येषां ते **(विभागे)** विभजन्ति यस्मिन् तस्मिन् व्यवहारे **(आ) (नः)** अस्मान् **(स्पार्हे)** स्पृहणीये **(भजतना)** सेवध्वम्। अत्र **संहितायामि**ति दीर्घः। **(वसव्ये)** वसुषु द्रव्येषु भवे **(यत्) (ईम्)** सर्वतः **(सुजातम्)** सुष्ठु प्रसिद्धं सुखम् **(वृषणः) (वः)** युष्माकम् **(अस्ति)**॥२१॥

**अन्वयः**-हे मरुतो! यथा वयं वो दात्रान्मा निरराम, हे रथ्यो! वयं पश्चान्मा दघ्म, हे वृषभो! वो यत्सुजातमस्ति तस्मिन् वसव्ये स्पार्हे विभागे यूयं नोऽस्मानीमा भजतन॥२१॥

**भावार्थः**-मनुष्याः सदैव विद्वद्भ्यो देयात्सत्यासत्ययोर्विभागात्पृथङ्मां भवन्तु यत्किञ्चिदपि श्रेष्ठं सुखं भवेत्तत्सर्वस्मै निवेदयन्तु॥२१॥

**पदार्थः**-हे **(मरुतः)** पवनों के समान मनुष्यो! जैसे हम लोग **(वः)** तुम को **(दात्रात्)** दान से **(मा)** मत **(निः, अराम)** अलग करें, हे **(रथ्यः)** बहुत रथों वालो! हम लोग **(पश्चात्)** पीछे से **(मा, दघ्म)** मत जावें, हे **(वृषणः)** वर्षा कराने वालो! **(वः)** तुम्हारा **(यत्)** जो **(सुजातम्)** सुन्दर प्रसिद्ध सुख **(अस्ति)** है उस **(वसव्ये)** द्रव्यों में हुए **(स्पार्हे)** इच्छा करने योग्य **(विभागे)** विभाग जिसमें कि बांटते हैं उस में तुम **(नः)** हम लोगों को **(ईम्)** सब ओर से **(आ, भजतन)** अच्छे प्रकार सेवो॥२१॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-मनुष्य सदैव विद्वानों के लिये देने योग्य सत्यासत्य व्यवहार से अलग न होवें, जो कुछ भी उत्तम सुख हो, उसको सब के लिये निवेदन करें॥२१॥

**पुनस्ते वीराः कीदृशा भवेयुरित्याह॥**

फिर वे वीर कैसे हों, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**सं यद्धनन्त मन्युभिर्जनासः शूरा यह्वीष्वोषधीषु विक्षु।**

**अध स्मा नो मरुतो रुद्रियासस्त्रातारो भूत पृतनास्वर्यः॥२२॥**

**सम्ऽयत्। हनन्त। मन्युऽभिः। जनासः। शूराः। यह्वीषु। ओषधीषु। विक्षु। अध। स्म। नः। मरुतः। रुद्रियासः। त्रातारः। भूत। पृतनासु। अर्यः॥२२॥**

**पदार्थः**-(**संयत्**) (**हनन्त**) घ्नन्ति (**मन्युभिः**) क्रोधादिभिः (**जनासः**) जनाः प्रसिद्धाः (**शूराः**) निर्भयाः (**यह्वीषु**) महतीषु (**ओषधीषु**) (**विक्षु**) प्रजासु च (**अध**) अथ (**स्मा**) एव। अत्र **निपातस्य चे**ति दीर्घः। (**नः**) युष्माकम् (**मरुतः**) वायव इव मनुष्याः (**रुद्रियासः**) रुद्र इवाचरन्तः (**त्रातारः**) रक्षकाः (**भूत**) भवत (**पृतनासु**) शूरवीरमनुष्यसेनासु (**अर्यः**) स्वामी॥२२॥

**अन्वयः**-हे मरुतो यद्ये रुद्रियासो जनासः शूरा मनुष्या! मन्युभिश्शत्रून् संयत् हनन्ताध यह्वीष्वोषधीषु विक्षु पृतनासु स्म नस्त्रातारो भूत यो युष्माकमर्यः स्वामी तस्यापि त्रातारो भवत॥२२॥

**भावार्थः**-ये वीराः शत्रूणां हन्तारः प्रजानां रक्षकाः महौषधीषु चतुरास्सन्ति तान् स्वामी राजा प्रीत्या रक्षेत्॥२२॥

**पदार्थः**-हे (**मरुतः**) पवनों के समान! (**यत्**) जो (**रुद्रियासः**) रुद्र के समान आचरण करने वाले (**जनासः**) प्रसिद्ध (**शूराः**) निर्भय मनुष्यो! (**मन्युभिः**) क्रोधादिकों से शत्रुओं को (**संयत्**) संग्राम में (**हनन्त**) मारिये (**अध**) इसके अनन्तर (**यह्वीषु**) बहुत बड़ी (**ओषधीषु**) ओषधियों में और (**विक्षु**) प्रजाओं में (**पृतनासु**) शूरवीरों की सेनाओं में (**स्म**) निश्चित (**नः**) हमारे (**त्रातारः**) रक्षा करने वाले (**भूत**) हूजिये जो (**वः**) तुम्हारा (**अर्यः**) स्वामी है, उसकी भी रक्षा करने वाले हूजिये॥२२॥

**भावार्थः**-जो वीरजन शत्रुओं को मारने वाले, प्रजाओं के रक्षक और बड़ी-बड़ी ओषधियों में चतुर हैं, उनको स्वामी राजा प्रीति से रक्खें॥२२॥

**पुनस्ते मनुष्याः किं किं कुर्युरित्याह॥**

फिर वे मनुष्य क्या करें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**भूरि चक्र मरुतः पित्र्याण्युक्थानि या वः शस्यन्ते पुरा चित्।**

**मरुद्भिरुग्रः पृतनासु साळ्हा मरुद्भिरित्सनिता वाजमर्वा॥२३॥**

**भूरि। चक्र। मरुतः। पित्र्याणि। उक्थानि। या। वः। शस्यन्ते। पुरा। चित्। मरुत्ऽभिः। उग्रः। पृतनासु। साळ्हा। मरुत्ऽभिः। इत्। सनिता। वाजम्। अर्वा॥२३॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**भूरि**) बहु (**चक्र**) कुर्वन्ति (**मरुतः**) वायुवद्वर्तमाना मनुष्याः (**पित्र्याणि**) पितृणां सेवनादीनि (**उक्थानि**) प्रशंसनीयानि कर्माणि (**या**) यानि (**वः**) युष्माकम् (**शस्यन्ते**) स्तूयन्ते (**पुरा**) वाक् (**चित्**) अपि (**मरुद्भिः**) उत्तमैर्मनुष्यैस्सह (**उग्रः**) तेजस्वी (**पृतनासु**) सेनासु (**साळ्हा**) सहनकर्ता (**मरुद्भिः**) मनुष्यैः (**इत्**) एव (**सनिता**) विभाजकः (**वाजम्**) विज्ञानं वेगं वा (**अर्वा**) वेगवानश्व इव॥२३॥

**अन्वयः**-हे मरुतो! वो योक्थानि पित्र्याणि शस्यन्ते पुरा तानि मरुद्भिस्सह पृतनासूग्रः साळ्हा मरुद्भिस्सह सनिताऽर्वेव वाजं प्राप्तश्चिदेव विजयते तानि यूयं भूरि चक्र॥२३॥

**भावार्थः**-ये मनुष्याः प्रशस्तानि कर्माणि कुर्वन्ति तेषां सदैव विजयो जायते॥२३॥

**पदार्थः**-हे (**मरुतः**) पवन के सदृश वर्त्तमान मनुष्यो! (**वः**) आप लोगों के (**या**) जो (**उक्थानि**) प्रशंसा करने योग्य कर्म्म और (**पित्र्याणि**) पितरों के सेवन आदि (**शस्यन्ते**) स्तुति किये जाते हैं (**पुरा**) पहिले उनको (**मरुद्भिः**) उत्तम मनुष्यों के साथ (**पृतनासु**) सेनाओं में (**उग्रः**) तेजस्वी (**साळ्हा**) सहने वाला पुरुष और (**मरुद्भिः**) मनुष्यों के साथ (**सनिता**) विभाग करने वाला (**अर्वा**) वेग युक्त घोड़ा जैसे वैसे (**वाजम्**) विज्ञान वा वेग को प्राप्त हुआ (**चित्**) भी जीतता है, उनको आप लोग (**भूरि**) बहुत (**चक्र**) करते हैं॥२३॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य प्रशंसनीय कर्मों को करते हैं, उनका सदा ही विजय होता है॥२३॥

**पुनस्ते मनुष्याः कीदृशा भवेयुरित्याह॥**

फिर वे मनुष्य कैसे होवें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**अ॒स्मे वी॒रो म॑रुतः शु॒ष्म्य॑स्तु॒ जना॑नां॒ यो असु॑रो विध॒र्ता।**

**अ॒पो येन॑ सुक्षि॒तये॒ तरे॒माध॒ स्वमोको॑ अ॒भि वः॑ स्याम॥२४॥**

**अ॒स्मे इति॑। वी॒रः। म॒रु॒तः॒। शु॒ष्मी। अ॒स्तु॒। जना॑नाम्। यः। असु॑रः। वि॒ऽध॒र्ता। अ॒पः। येन॑। सु॒ऽक्षि॒तये॑। तरे॑म। अध॑। स्वम्। ओकः॑। अ॒भि। व॒ः। स्या॒म॒॥२४॥**

**पदार्थः**-(**अस्मे**) अस्माकम् (**वीरः**) प्राप्तबलबुद्धिशौर्यादिः (**मरुतः**) प्राणवद् बलकारकाः (**शुष्मी**) बहुबलयुक्तः (**अस्तु**) (**जनानाम्**) (**यः**) (**असुरः**) असुषु प्राणेषु विद्युदग्निरिव (**विधर्ता**) विशेषेण धर्ता (**अपः**) जलानि (**येन**) (**सुक्षितये**) शोभनायै पृथिव्याः प्राप्त्यै (**तरेम**) (**अध**) अथ (**स्वम्**) स्वकीयम् (**ओकः**) गृहम् (**अभि**) (**वः**) युष्माकम् (**स्याम**) भवेम॥२४॥

**अन्वयः**-हे मरुतो! यो वीरोऽसुरो जनानां विधर्ता सोऽस्मे शुष्म्यस्तु येन सुक्षितये वयमपस्तरेमाऽध स्वमोकोऽभि तरेम वो युष्माकं रक्षकाः स्याम॥२४॥

**भावार्थः**-ये मनुष्या मनुष्यान् बलयुक्तान् कुर्वन्ति नौकादिभिः समुद्रं तीर्त्वा द्वितीयं देशं गत्वा धनमार्जयन्ति ते युष्माकमस्माकं च रक्षकास्सन्तु॥२४॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-हे **(मरुतः)** प्राणों के सदृश बल करने वाले जनो! **(यः)** जो **(वीरः)** वीर अर्थात् प्राप्त हुई बल, बुद्धि और शूरता आदि जिसको **(असुरः)** प्राणों में रमता हुआ बिजुली अग्नि के सदृश **(जनानाम्)** मनुष्यों का **(विधर्ता)** विशेष करके धारण करने वाला है वह **(अस्मे)** हमारा **(शुष्मी)** बहुत बल से युक्त **(अस्तु)** हो **(येन)** जिससे **(सुक्षितये)** सुन्दर पृथिवी की प्राप्ति के लिये हम लोग **(अपः)** जलों को **(तरेम)** तरें **(अध)** इसके अनन्तर **(स्वम्)** अपने **(ओकः)** गृह के पार होवें और **(वः)** आप लोगों के रक्षक **(स्याम)** होवें॥२४॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य, मनुष्यों को बलयुक्त करते और नौका आदिकों से समुद्र के पार होकर दूसरे देश में जाकर धन बटोरते हैं, वे आप लोगों और हम लोगों के रक्षक हों॥२४॥

**पुनर्मनुष्याः किंवत् किं कुर्युरित्याह॥**

फिर मनुष्य किसके सदृश क्या करें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**तन्न इन्द्रो वरुणो मित्रो अग्निराप ओषधीर्वनिनो जुषन्त।**

**शर्मन्त्स्याम मरुतामुपस्थे यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥२५॥२६॥**

**तत्। नः। इन्द्रः। वरुणः। मित्रः। अग्निः। आपः। ओषधीः। वनिनः। जुषन्त। शर्मन्। स्याम। मरुताम्। उपऽस्थे। यूयम्। पात। स्वस्तिऽभिः। सदा। नः॥२५॥**

**पदार्थः**-**(तत्)** पूर्वोक्तं सर्वं कर्म वस्तु वा **(नः)** अस्माकम् **(इन्द्रः)** विद्युत् **(वरुणः)** जलाधिपतिः **(मित्रः)** सखा **(अग्निः)** पावकः **(आपः)** जलानि **(ओषधीः)** सोमलताद्याः **(वनिनः)** बहुकिरणयुक्ता वनस्था वृक्षादयः **(जुषन्त)** सेवन्ताम् **(शर्मन्)** शर्मणि सुखकारके गृहे **(स्याम)** भवेम **(मरुताम्)** वायूनां विदुषां वा **(उपस्थे)** समीपे **(यूयम्)** **(पात)** **(स्वस्तिभिः)** **(सदा)** **(नः)** अस्मान्॥२५॥

**अन्वयः**-हे विद्वांसो! यथेन्द्रो वरुणो मित्रोऽग्निराप ओषधीर्वनिनो नस्तज्जुषन्त यस्मिन् शर्मन् मरुतामुपस्थे वयं सुखिनः स्याम तत्र यूयं स्वस्तभिर्नस्सदा पात॥२५॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यथा विद्युदादयः पदार्थाः सर्वान्नुन्नयन्ति क्षयन्ति च तथैव दोषान् विनाश्य गुणानुन्नीय सर्वेषां रक्षणं सर्वे सदा कुर्वन्त्विति॥२५॥

अत्र मरुद्विद्वद्राजशूरवीराध्यापकोपदेशकरक्षकगुणकृत्यवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति षट्पञ्चाशत्तमं सूक्तं षड्विंशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे विद्वानो! जैसे **(इन्द्रः)** बिजुली **(वरुणः)** जल [=जलाधिपति] **(मित्रः)** मित्र **(अग्निः)** अग्नि **(आपः)** जल **(ओषधीः)** सोमलता आदि ओषधियों को **(वनिनः)** बहुत किरणें जिनमें पड़तीं ऐसे वन में वर्त्तमान वृक्ष आदि **(नः)** हम लोगों के **(तत्)** पूर्वोक्त सम्पूर्ण कर्म वा वस्तु



www.9009.co.in

की **(जुषन्त)** सेवा करें और जिस **(शर्मन्)** सुखकारक गृह में **(मरुताम्)** पवनों वा विद्वानों के **(उपस्थे)** समीप में हम लोग सुखी **(स्याम)** होवें उसमें **(यूयम्)** आप लोग **(स्वस्तिभिः)** कल्याणों से **(नः)** हम लोगों की **(सदा)** सदा **(पात)** रक्षा कीजिये॥ २५॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जैसे बिजुली आदि पदार्थ सब की उन्नति और नाश करते हैं, वैसे ही दोषों का नाश कर और गुणों की वृद्धि करके सब की रक्षा को सब सदा करें॥ २५॥

इस सूक्त में वायु, विद्वान्, राजा, शूरवीर, अध्यापक, उपदेशक और रक्षक के गुण वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ संगति जाननी चाहिये॥

**यह छप्पनवां सूक्त और छब्बीसवां वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

**अथ सप्तर्चस्य [सप्तपञ्चाशत्तमस्य] सूक्तस्य वसिष्ठर्षिः। मरुतो देवताः। २, ४ त्रिष्टुप्। १ विराट् त्रिष्टुप्। ३, ५, ६, ७ निचृत्त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः॥**

***पुनर्मनुष्याः किंवत् किं कुर्युरित्याह॥***

फिर मनुष्य किसके सदृश क्या करें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**मध्वो॑ वो॒ नाम॒ मारु॑तं यजत्रा॒: प्र य॒ज्ञेषु॒ शव॑सा मदन्ति।**

**ये रे॒जय॑न्ति॒ रोद॑सी चिदु॒र्वी पिन्व॒न्त्युत्सं॒ यदया॑सुरु॒ग्राः॥ १॥**

**मध्व॑ः। व॒ः। नाम॑। मारु॑तम्। य॒ज॒त्रा॒ः। प्र। य॒ज्ञेषु॑। शव॑सा। म॒द॒न्ति॒। ये। रे॒जय॑न्ति। रोद॑सी॒ इति॑। चि॒त्। उ॒र्वी॒ इति॑। पिन्व॑न्ति। उत्स॑म्। यत्। अया॑सुः। उ॒ग्राः॥ १॥**

**पदार्थः**-(**मध्वः**) मन्यमानाः (**वः**) युष्माकम् (**नाम**) (**मारुताम्**) मरुतां मनुष्याणामिदं कर्म (**यजत्राः**) संगन्तारः (**प्र**) (**यज्ञेषु**) विद्वत्सत्कारादिषु (**शवसा**) बलेन (**मदन्ति**) कामयन्ते (**ये**) (**रेजयन्ति**) कम्पयन्ति (**रोदसी**) द्यावापृथिव्यौ (**चित्**) अपि (**उर्वी**) बहुपदार्थयुक्ते (**पिन्वन्ति**) सिञ्चन्ति (**उत्सम्**) कूपमिव (**यत्**) ये (**अयासुः**) प्राप्नुयुः (**उग्राः**) तेजस्विनः॥ १॥

**अन्वयः**-हे यजत्रा! य उग्रा विद्युत्सहिता वायवो यद्ये उर्वी रोदसी उत्समिव सर्वं जगत् पिन्वन्ति चिदपि रेजयन्त्ययासुस्तद्वद्ये वो मध्वो नाम यज्ञेषु शवसा मारुतं प्रमदन्ति तान् यूयं विजानीत॥ १॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। ये वायवो भूगोलान् भ्रामयन्ति धरन्ति वृष्टिभिस्सिञ्चन्ति तान् विदित्वा विद्वांसः कार्याणि निष्पाद्यानन्दन्तु॥ १॥

**पदार्थः**-हे (**यजत्राः**) मिलने वाले! (**ये**) जो (**उग्राः**) तेजस्वी बिजुली के सहित पवन (**यत्**) जो (**उर्वी**) बहुत पदार्थों से युक्त (**रोदसी**) अन्तरिक्ष पृथिवी और (**उत्सम्**) कूप को जैसे वैसे सम्पूर्ण संसार को (**पिन्वन्ति**) सींचते हैं और (**चित्**) भी (**रेजयन्ति**) कम्पाते हैं (**अयासुः**) प्राप्त होवें उसको (**ये**) जो (**वः**) आप लोगों को (**मध्वः**) मानते हुए (**नाम**) प्रसिद्ध (**यज्ञेषु**) विद्वानों के सत्कार आदिकों में (**शवसा**) बल से (**मारुतम्**) मनुष्यों के कर्म की (**प्र, मदन्ति**) कामना करते हैं, उनको आप लोग जानिये॥ १॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो पवन, भूगोलों को घुमाते और धारण करते हैं और दृष्टियों से सीचते हैं, उनको जान कर विद्वान् जन कार्यों को कर के आनन्द करें॥ १॥

**पुनस्ते विद्वांसः कीदृशा भवेयुरित्याह॥**

फिर वे विद्वान् कैसे होवें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**नि॒चे॒तारो॒ हि म॒रुतो॑ गृ॒णन्तं॑ प्रणे॒तारो॒ यज॑मानस्य॒ मन्म॑।**

**अ॒स्माक॑म॒द्य वि॒दथे॑षु ब॒र्हिरा वी॒तये॑ सदत पिप्रियाणाः॥ २॥**



www.9009.co.in

**नि॒ऽचे॒तारः॑। हि। म॒रुतः॑। गृ॒णन्त॑म्। प्र॒ऽने॒तारः॑। यज॑मानस्य। मन्म॑। अ॒स्माक॑म्। अ॒द्य। वि॒दथे॑षु। ब॒र्हिः। आ। वी॒तये॑। स॒द॒त॒। पि॒प्रि॒या॒णाः॥ २॥**

**पदार्थः**-(**निचेतारः**) ये निचयं समूहं कुर्वन्ति ते (**हि**) यतः (**मरुतः**) वायवः (**गृणन्तम्**) स्तुवन्तम् (**प्रणेतारः**) प्रकृष्टं न्यायं कुर्वन्तः (**यजमानस्य**) सर्वेषां सुखाय यज्ञकर्तुः (**मन्मः**) विज्ञानम् (**अस्माकम्**) (**अद्य**) अस्मिन् (**विदथेषु**) यज्ञेषु (**बर्हिः**) अन्तरिक्षस्थमुत्तममासनम् (**आ**) (**वीतये**) विज्ञानाय प्राप्तये वा (**सदत**) आसीदत (**पिप्रियाणाः**) प्रियमाणाः॥ २॥

**अन्वयः**-हे विद्वांसो! हि निचेतारो मारुतः सर्वान् प्रेरयन्ति ततः प्रणेतारस्सन्तो यजमानस्य मन्मास्माकं विदथेषु गृणन्तं पिप्रियाणाः अद्य वीतये बर्हिरासदत॥ २॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यूयं सर्वेषां पदार्थानां संधातारं मरुद्गणं विज्ञाय सर्वेषां प्रियं साध्नुवन्तु॥ २॥

**पदार्थः**-हे विद्वान् जनो! (**हि**) जिस कारण (**निचेतारः**) समूह करने वाले (**मरुतः**) पवन सब को प्रेरित करते हैं, उस कारण (**प्रणेतारः**) अच्छे न्याय को करते हुए जन (**यमजानस्य**) सब के सुख के लिये यज्ञ करने वाले के (**मन्म**) विज्ञान को (**अस्माकम्**) हम लोगों के (**विदथेषु**) यज्ञों में (**गृणन्तम्**) स्तुति करते हुए को (**पिप्रियाणाः**) प्रसन्न करते हुए (**अद्य**) आज (**वीतये**) विज्ञान वा प्राप्ति के लिये (**बर्हिः**) अन्तरिक्ष में स्थित उत्तम आसन पर (**आ, सदत**) बैठिये॥ २॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! आप लोग सम्पूर्ण पदार्थों के रचने वाले पवनों के समूह को जान कर सब के प्रिय को सिद्ध करो॥ २॥

**पुनस्ते विद्वांसः कीदृशा भवन्तीत्याह॥**

फिर वे विद्वान् जन कैसे होते हैं, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**नैताव॑द॒न्ये म॒रुतो॒ यथे॒मे भ्राज॑न्ते रु॒क्मैरायु॑धैस्त॒नूभिः॑।**

**आ रोद॑सी विश्व॒पिशः॑ पिशा॒नाः स॑मा॒नम॒ञ्ज्य॑ञ्जते शु॒भे कम्॥ ३॥**

**न। ए॒ताव॑त्। अ॒न्ये। म॒रुतः॑। यथा॑। इ॒मे। भ्राज॑न्ते। रु॒क्मैः। आयु॑धैः। त॒नूभिः॑। आ। रोद॑सी॒ इति॑। वि॒श्व॒ऽपिशः॑। पि॒शा॒नाः। स॒मा॒नम्। अ॒ञ्जि। अ॒ञ्ज॒ते॒। शु॒भे। कम्॥ ३॥**

**पदार्थः**-(**न**) निषेधे (**एतावत्**) (**अन्ये**) (**मरुतः**) वायुवन्मनुष्याः (**यथा**) (**इमे**) (**भ्राजन्ते**) प्रकाशन्ते (**रुक्मैः**) देदीप्यमानैः (**आयुधैः**) (**तनूभिः**) शरीरैः (**आ**) (**रोदसी**) द्यावापृथिव्यौ (**विश्वपिशः**) विश्वस्यावयवभूताः (**पिशानाः**) संचूर्णयन्तः (**समानम्**) तुल्यम् (**अञ्जि**) गमनम् (**अञ्जते**) गच्छन्ति व्यक्तिं कुर्वन्ति (**शुभे**) शोभनाय (**कम्**) सुखम्॥ ३॥

**अन्वयः**-हे विद्वांसो! यथेमे मरुतो रुक्मैरायुधैस्तनूभिस्सह भ्राजन्ते विश्वपिशः पिशानाः शुभे समानमञ्जि कमञ्जते रोदसी आ भ्राजन्ते नैतावदन्ये कर्तुं शक्नुवन्ति॥ ३॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। हे मनुष्याः! यथा विद्वांसः शूरवीरा शरीरात्मबलयुक्ताः स्वायुधाः संग्रामेषु प्रकाशन्ते तथा भीरवो मनुष्या न प्रकाशन्ते यथा प्राणस्सर्वं जगदानन्दयन्ति तथा विद्वांस्सर्वान् मनुष्यान् सुखयन्ति॥३॥

**पदार्थः**-हे विद्वान् जनो! **(यथा)** जैसे **(इमे)** ये **(मरुतः)** वायु के सदृश मनुष्य **(रुक्मैः)** प्रकाशमान **(आयुधैः)** आयुधों और **(तनूभिः)** शरीरों के साथ **(भ्राजन्ते)** प्रकाशित होते हैं और **(विश्वपिशः)** संसार के अवयवभूत **(पिशानाः)** उत्तम प्रकार चूर्ण करते हुए **(शुभे)** सुन्दरता के लिये **(समानम्)** तुल्य **(अञ्जि)** गमन को और **(कम्)** सुख को **(अञ्जते)** व्यतीत करते हैं तथा **(रोदसी)** अन्तरिक्ष और पृथिवी को **(आ)** सब ओर से प्रकाशित करते हैं **(न)** न **(एतावत्)** इतना ही **(अन्ये)** अन्य करने को समर्थ होते हैं॥३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जैसे विद्वान् शूरवीर जन शरीर और आत्मा के बल से युक्त और श्रेष्ठ आयुधों से युक्त हुए सङ्ग्रामों में प्रकाशित होते हैं, वैसे भीरु मनुष्य नहीं प्रकाशित होते हैं, जैसे प्राण सब जगत् को आनन्दित करते हैं, वैसे विद्वान् सब को सुखी करते हैं॥३॥

**पुनर्मनुष्यैः कथं वर्तितव्यमित्याह॥**

फिर मनुष्यों को कैसा वर्ताव करना चाहिये, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**ऋधक्सा वो मरुतो दिद्युदस्तु यद्व आगः पुरुषता कराम।**

**मा वस्तस्यामपि भूमा यजत्रा अस्मे वो अस्तु सुमतिश्चनिष्ठा॥४॥**

**ऋधक्। सा। वः। मरुतः। दिद्युत्। अस्तु। यत्। वः। आगः। पुरुषता। कराम। मा। वः। तस्याम्। अपि। भूम। यजत्राः। अस्मे इति। वः। अस्तु। सुऽमतिः। चनिष्ठाः॥४॥**

**पदार्थः**-**(ऋधक्)** सत्ये **(सा)** **(वः)** युष्माकम् **(मरुतः)** मनुष्याः **(दिद्युत्)** देदीप्यमाना नीतिः **(अस्तु)** **(यत्)** यथा **(वः)** युष्माकम् **(आगः)** अपराधम् **(पुरुषता)** पुरुषाणां भावेन पुरुषार्थतया **(कराम)** कुर्याम **(मा)** **(वः)** युष्मान् **(तस्याम्)** **(अपि)** **(भूम)** भवेम। अत्र **द्व्यचो०** इति दीर्घः। **(यजत्राः)** संगन्तारः **(अस्मे)** अस्मासु **(वः)** युष्माकम् **(अस्तु)** **(सुमतिः)** शोभना प्रज्ञा **(चनिष्ठा)** अतिशयेनान्नाद्यैश्वर्ययुक्ता॥४॥

**अन्वयः**-हे यजत्रा मरुतः! यद्यया व आगः यद्यया पुरुषता कराम तस्यामपि च आगो मा कराम यया वयं पुरुषार्थिनो भूम सा व ऋधक् चनिष्ठा सुमतिरस्मे अस्तु सा विद्युद्वो युष्माकमस्तु॥४॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! अन्यायापराधं विहाय सत्यां प्रज्ञां गृहीत्वा पुरुषार्थेन सह सुखिनो भवत॥४॥

**पदार्थः**-हे **(यजत्राः)** मेल करने वाले **(मरुतः)** मनुष्यो! **(यत्)** जिससे **(वः)** आप लोगों के **(आगः)** अपराध को और जिस **(पुरुषता)** पुरुषपने से **(कराम)** करें **(तस्याम्)** उसमें **(अपि)** भी



www.9009.co.in

**(नः)** आप लोगों के अपराध को **(मा)** नहीं करें और जिससे हम लोग पुरुषार्थी **(भूम)** होवें **(सा)** वह **(वः)** आप लोगों के **(ऋधक्)** सत्य में **(चनिष्ठा)** अतिशय अन्न आदि ऐश्वर्य्य से युक्त **(सुमतिः)** अच्छी बुद्धि **(अस्मे)** हम लोगों में **(अस्तु)** हो और वह **(दिद्युत्)** प्रकाशमान नीति **(नः)** आप लोगों की **(अस्तु)** हो॥४॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! अन्याय से अपराध का परित्याग कर और सत्य बुद्धि को ग्रहण कर वे पुरुषार्थ से सुखी होओ॥४॥

**पुनर्विद्वांसः कीदृशा भूत्वा किं कुर्युरित्याह॥**

फिर विद्वान् जन कैसे होकर क्या करें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**कृते चिदत्र मरुतो रणन्तानवद्यासः शुचयः पावकाः।**

**प्र णोऽवत सुमतिभिर्यजत्राः प्र वाजेभिस्तिरत पुष्यसे नः॥५॥**

**कृते। चित्। अत्र। मरुतः। रणन्त। अनवद्यासः। शुचयः। पावकाः। प्र। नः। अवत। सुमतिऽभिः। यजत्राः। प्र। वाजेभिः। तिरत। पुष्यसे। नः॥५॥**

**पदार्थः**-**(कृते)** **(चित्)** अपि **(अत्र)** अस्मिन् संसारे **(मरुतः)** मनुष्याः **(रणन्त)** रमध्वम् **(अनवद्यासः)** अनिन्द्याः धर्माचराः **(शुचयः)** पवित्राः **(पावकाः)** पवित्रकराः **(प्र)** **(नः)** अस्मान् **(अवत)** रक्षत **(सुमतिभिः)** उत्तमप्रज्ञैर्मनुष्यैः **(यजत्राः)** सङ्गन्तारः **(प्र)** **(वाजेभिः)** अन्नादिभिः **(तिरत)** निष्पादयत **(पुष्यसे)** पुष्टये **(नः)** अस्मान्॥५॥

**अन्वयः**-हे विद्वांसो! यथाऽनवद्यासः शुचयः पावकाः मरुतश्चित्कृतेऽत्र रणन्त तथा यजत्रास्सन्तो यूं सुमतिभिर्वाजेभिस्सह नः प्रावत नः पुष्यसे प्र तिरत॥५॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। य आप्तवद्धार्मिकाः पवित्राः विद्वांसो भूत्वा सर्वे सर्वान् रक्षन्ति ते सर्वान् पुष्टान् सुखिनः कर्तुं शक्नुवन्ति॥५॥

**पदार्थः**-हे विद्वान् जनो! जैसे **(अनवद्यासः)** नहीं निन्दा करने योग्य और धर्म्माचरण से युक्त **(शुचयः)** पवित्र और **(पावकाः)** पवित्र करने वाले **(मरुतः)** मनुष्य **(चित्)** भी **(कृते)** उत्तम कर्म्म में **(अत्र)** इस संसार में **(रणन्त)** रमें, वैसे **(यजत्राः)** मिलने वाले हुए आप लोग **(सुमतिभिः)** उत्तम बुद्धिवाले मनुष्यों और **(वाजेभिः)** अन्न आदिकों के साथ **(नः)** हम लोगों की **(प्र, अवत)** रक्षा कीजिये और **(नः)** हम लोगों को **(पुष्यसे)** पुष्टि के लिये **(प्र, तिरत)** निष्पन्न कीजिये॥५॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो यथार्थवक्ता, धार्मिक, पवित्र, विद्वान् होके सब सबकी रक्षा करते हैं, वे सब को पुष्ट और सुखी कर सकते हैं॥५॥

**पुनर्मनुष्याः किं कुर्युरित्याह॥**

फिर मनुष्या क्या करें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥



www.9009.co.in

**उत स्तुतासो मरुतो व्यन्तु विश्वेभिर्नामभिर्नरो हवींषि।**

**ददात नो अमृतस्य प्रजायै जिगृत रायः सूनृता मघानि॥६॥**

**उत। स्तुतासः। मरुतः। व्यन्तु। विश्वेभिः। नामऽभिः। नरः। हवींषि। ददात। नः। अमृतस्य। प्रऽजायै। जिगृत। रायः। सूनृता। मघानि॥६॥**

**पदार्थः**-(**उत**) अपि (**स्तुतासः**) प्राप्तप्रशंसाः (**मरुतः**) वायव इव मनुष्याः (**व्यन्तु**) व्याप्नुवन्तु प्राप्नुवन्तु (**विश्वेभिः**) समग्रैः (**नामभिः**) संज्ञाभिः (**नरः**) नायकाः (**हवींषि**) दातुमर्हाणि (**ददात**) (**नः**) अस्माकम् (**अमृतस्य**) नाशरहितस्य (**प्रजायै**) प्रजासुखाय (**जिगृत**) उद्गिरत (**रायः**) श्रियः (**सूनृता**) सूनृतानि धर्मेण सम्पादितानि (**मघानि**) धनानि॥६॥

**अन्वयः**-हे मरुतो नरो! यूयं विश्वेभिर्नामभिर्नो हवींषि ददात उत स्तुतासो हवींषि व्यन्तु नोऽस्माकममृतस्य प्रजायै रायस्सूनृता मघानि च जिगृत॥६॥

**भावार्थः**-हे मनुष्याः! ये प्रशंसका मनुष्याः समग्रैश्शब्दार्थसम्बन्धैः सर्वा विद्याः प्राप्य शुम्भमाना भूत्वा प्रजाजनेभ्यस्सत्यां वाचं प्रयच्छन्ति ते सर्वे सुखं प्राप्नुवन्ति॥६॥

**पदार्थः**-हे (**मरुतः**) पवनों के सदृश मनुष्यो (**नरः**) अग्रणी! आप लोगो (**विश्वेभिः**) सम्पूर्ण (**नामभिः**) संज्ञाओं से (**नः**) हम लोगों के लिये हम लोगों के (**हवींषि**) देने योग्य पदार्थों को (**ददात**) दीजिये (**उत**) और (**स्तुतासः**) प्रशंसा को प्राप्त हुए जन देने योग्य द्रव्यों को (**व्यन्तु**) प्राप्त होवें, हम लोगों और (**अमृतस्य**) अविनाशी की (**प्रजायै**) प्रजा के सुख के लिये (**रायः**) शोभाओं वा लक्ष्मियों को और (**सूनृता**) धर्म्म से इकट्ठे किये गये (**मघानि**) धनों को (**जिगृत**) उगलिये॥६॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो प्रशंसा करने वाले मनुष्य सम्पूर्ण शब्द और अर्थ के सम्बन्धों से सम्पूर्ण विद्याओं को प्राप्त कर और शोभित होकर प्रजाजनों के लिये सत्य वचन को देते हैं, वे सम्पूर्ण सुख को प्राप्त होते हैं॥६॥

**पुनः के प्रशंसनीया माननीया भवन्तीत्याह॥**

फिर कौन प्रशंसा करने और आदर करने योग्य होते हैं, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**आ स्तुतासो मरुतो विश्व ऊती अच्छा सूरीन्त्सर्वताता जिगात।**

**ये नस्त्मना शतिनो वर्धयन्ति यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥७॥२७॥**

**आ। स्तुतासः। मरुतः। विश्वे। ऊती। अच्छ। सूरीन्। सर्वऽताता। जिगात। ये। नः। त्मना। शतिनः। वर्धयन्ति। यूयम्। पात। स्वस्तिऽभिः। सदा। नः॥७॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**आ**) (**स्तुतासः**) प्राप्तप्रशंसाः (**मरुतः**) वायव इव व्याप्तविद्या मनुष्याः (**विश्वे**) सर्वे (**ऊती**) (**अच्छा**) सम्यक्। अत्र **संहितायामि**ति दीर्घः। (**सूरीन्**) धार्मिकान् विदुषः (**सर्वताता**) सर्वेषां सुखकरे यज्ञे (**जिगात**) प्रशंसत (**ये**) (**नः**) अस्मान् (**त्मना**) आत्मना (**शतिनः**) शतमसंख्यातं बलं येषामस्ति ते (**वर्धयन्ति**) (**यूयम्**) (**पात**) (**स्वस्तिभिः**) (**सदा**) (**नः**)॥७॥

**अन्वयः**-हे विद्वांसो! ये विश्वे स्तुतासः शतिनो मरुतो त्मनोती नोऽस्मान् वर्धयन्ति तान् सूरीन् सर्वताता यूयमच्छा जिगात स्वस्तिभिर्नस्सदा पात॥७॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! ये विद्वांसो धर्म्यकर्माणो असंख्यविद्या दयालवो न्यायकारिण आप्ता अस्मान् सर्वान् सततं वर्धयेयुर्वर्धयित्वा सदा रक्षन्ति वयं तानेव प्रशंसितान् कृत्वा सेवेमहीति॥७॥

अत्र मरुद्वद्विद्वद्गुणकृत्यवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति सप्तपञ्चाशत्तमं सूक्तं सप्तविंशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे विद्वान् मनुष्यो! (**ये**) जो (**विश्वे**) सम्पूर्ण (**स्तुतासः**) प्रशंसा को प्राप्त हुए (**शतिनः**) असंख्य बलवाले (**मरुतः**) पवनों के समान विद्या से व्याप्त मनुष्य (**त्मना**) आत्मा से (**ऊती**) रक्षण आदि क्रिया से (**नः**) हम लोगों को (**वर्धयन्ति**) बढ़ाते हैं उन (**सूरीन्**) धार्मिक विद्वानों को (**सर्वताता**) सब के सुख करने वाले यज्ञ में (**यूयम्**) आप लोग (**अच्छ**) अच्छे प्रकार (**आ, जिगात**) प्रशंसा कीजिये और (**स्वस्तिभिः**) कल्याणों से (**नः**) हम लोगों की (**सदा**) सब काल में (**पात**) रक्षा कीजिये॥७॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो विद्वान् धर्म्मयुक्त कर्म्म करने वाले असंख्य विद्या से युक्त, दयालु, न्यायकारी, यथार्थवक्ता जन हम सबों की निरन्तर वृद्धि करें, वृद्धि करके सदा रक्षा करते हैं, उनको ही हम लोग प्रशंसित करके सेवा करें॥७॥

इस सूक्त में पवन के सदृश विद्वान् के गुणों और कृत्य का वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की संगति इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ जाननी चाहिये॥

**यह सत्तावनवां सूक्त और सत्ताईसवां वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

**अथ षड्चस्याष्टापञ्चाशत्तमस्य सूक्तस्य वसिष्ठर्षिः। मरुतो देवताः। ३, ४ निचृत्त्रिष्टुप्। ५ त्रिष्टुप्। १ विराट् त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः। २, ६ भुरिक्पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः॥**

***अथ विद्वांसः किं कुर्युरित्याह॥***

अब छःऋचा वाले अट्ठावनवें सूक्त का प्रारम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में विद्वान् जन क्या करें, इस विषय को कहते हैं॥

**प्र साकमुक्षे अर्चता गणाय यो दैव्यस्य धाम्नस्तुविष्मान्।**

**उत क्षोदन्ति रोदसी महित्वा नक्षन्ते नाकं निर्ऋतेरवंशात्॥ १॥**

**प्र। साकम्ऽउक्षे। अर्चत। गणाय। यः। दैव्यस्य। धाम्नः। तुविष्मान्। उत। क्षोदन्ति। रोदसी इति। महिऽत्वा। नक्षन्ते। नाकम्। निःऽऋतेः। अवंशात्॥ १॥**

**पदार्थः**-(**प्र**) (**साकमुक्षे**) यः साकं सहोक्षति सुखेन सचति सम्बध्नाति तस्मै (**अर्चता**) सत्कुरुत। अत्र **संहितायामि**ति दीर्घः। (**गणाय**) गणनीयाय (**यः**) (**दैव्यस्य**) देवैः कृतस्य (**धाम्नः**) नामस्थानजन्मनः (**तुविष्मान्**) बहुबलयुक्तः (**उत**) अपि (**क्षोदन्ति**) संपिंशन्ति (**रोदसी**) द्यावापृथिव्यौ (**महित्वा**) महत्त्वेन (**नक्षन्ते**) प्राप्नुवन्ति (**नाकम्**) अविद्यमानदुःखम् (**निर्ऋतेः**) भूमेः (**अवंशात्**) असन्तानात्॥ १॥

**अन्वयः**-यस्तुविष्मान् दैव्यस्य धाम्नो ज्ञातास्ति तस्मै साकमुक्षे गणाय विदुषे यूयं प्रार्चत अपि ये वायवो महित्वा रोदसी नक्षन्ते सावयवानुत क्षोदन्ति निर्ऋतेरवंशान्नाकं व्याप्नुवन्ति तद्विदो विदुषो यूयमुत प्रार्चत॥ १॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! ये वायुविद्यां जानन्ति तान् नित्यं सत्कृत्यैतेभ्यो वायुविद्यां प्राप्य भवन्तो महान्तो भवत॥ १॥

**पदार्थः**- (**यः**) जो (**तुविष्मान्**) बहुत बल से युक्त (**दैव्यस्य**) देवताओं से किये गये (**धाम्नः**) नाम, स्थान और जन्म का जानने वाला है उस (**साकमुक्षे**) साथ ही सुख से सम्बन्ध करने वाले (**गणाय**) गणनीय विद्वान् के लिये आप लोग (**प्र, अर्चत**) सत्कार करिये और (**अपि**) भी जो पवन (**महित्वा**) महत्त्व से (**रोदसी**) अन्तरिक्ष और पृथिवी को (**नक्षन्ते**) व्याप्त होते हैं, अवयवों के सहितों को (**उत**) भी (**क्षोदन्ति**) पीसते हैं (**निर्ऋतेः**) भूमि से (**अवंशात्**) सन्तान भिन्न से (**नाकम्**) दुःख से रहित स्थान को व्याप्त होते हैं, उनको जानने वाले विद्वानों को आप लोग भी सत्कार कीजिये॥ १॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो वायु आदि की विद्या को जानते हैं, उनका नित्य सत्कार करके इनसे वायु की विद्या को प्राप्त होकर आप लोग श्रेष्ठ हूजिये॥ १॥

**पुनः के अविश्वसनीया इत्याह॥**

फिर कौन नहीं विश्वास करने योग्य हैं, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥



www.9009.co.in

**जनूश्चिद्वो मरुतस्त्वेष्येण भीमासस्तुविमन्यवोऽयासः।**

**प्र ये महोभिरोजसोत सन्ति विश्वो वो यामन् भयते स्वर्दृक्॥२॥**

**जनूः। चित्। वः। मरुतः। त्वेष्येण। भीमासः। तुविऽमन्यवः। अयासः। प्र। ये। महःऽभिः। ओजसा। उत। सन्ति। विश्वः। वः। यामन्। भयते। स्वःऽदृक्॥२॥**

**पदार्थः**-(**जनूः**) जनन्यः प्रकृतयः (**चित्**) अपि (**वः**) युष्माकम् (**मरुतः**) वायव इव मनुष्याः (**त्वेष्येण**) त्विषि प्रदीपने भवेन (**भीमासः**) बिभ्यति येभ्यस्ते (**तुविमन्यवः**) बहुक्रोधाः (**अयासः**) ज्ञातारो गन्तारो वा (**प्र**) प्रकाशयन्तः (**ये**) (**महोभिः**) महद्भिः पराक्रमैर्गुणैर्वा (**ओजसा**) बलेन सह (**उत**) अपि (**सन्ति**) (**विश्वः**) सर्वः (**वः**) युष्मान् (**यामन्**) यान्ति येन यस्मिन् वा तस्मिन् (**भयते**) भयं करोति (**स्वर्दृक्**) यः स्वः सुखं पश्यति सः॥२॥

**अन्वयः**-हे मरुतो! ये महोभिरोजसा त्वेष्येण सह वर्त्तमानाः भीमासस्तुविमन्यवोऽयासो वो युष्माकं जनूः प्रसन्त्युत यो विश्वः स्वर्दृग्जनो यामन् वो भयते ताँस्तं चिद्यूयं विज्ञाय युक्त्या सेवध्वम्॥२॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे विद्वांसो मनुष्याः! ये भयङ्करा मनुष्यादयः प्राणिनः सन्ति तेषां विश्वासमकृत्वा तान् महता बलेन पराक्रमेण च वशं नयत॥२॥

**पदार्थः**-हे (**मरुतः**) पवनों के समान मनुष्यो! (**ये**) जो (**महोभिः**) बड़े पराक्रमों वा गुणों के और (**ओजसा**) बल (**त्वेष्येण**) प्रकाश में हुए के साथ वर्त्तमान (**भीमासः**) डरते हैं जिन से वे (**तुविमन्यवः**) बहुत क्रोधयुक्त (**अयासः**) जानने वा जाने वाले जन (**वः**) आप लोगों को (**जनूः**) स्वभाव (**प्रसन्ति**) प्रकाश करते हुए हैं और (**उत**) भी जो (**विश्वः**) सम्पूर्ण (**स्वर्दृक्**) सुख को देखने वाला मनुष्य (**यामन्**) लाते हैं जिससे वा जिस में उस में (**वः**) आप लोगों को (**भयते**) भय देता है उनको और उस को (**चित्**) भी आप लोग जान कर युक्ति से सेवा करिये॥२॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे विद्वान् मनुष्यो! जो भयङ्कर मनुष्य आदि प्राणी है, उनका विश्वास नहीं करके उन को बड़े बल और पराक्रम से वश में करिये॥२॥

**पुनः के जगत्पूज्या भवन्तीत्याह॥**

फिर कौन जगत् से आदर पाने योग्य होते हैं, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**बृहद्वयो मघवद्भ्यो दधात जुजोषन्निन्मरुतः सुष्टुतिं नः।**

**गतो नाध्वा वि तिराति जन्तुं प्र णः स्पार्हाभिरूतिभिस्तिरेत॥३॥**

**बृहत्। वयः। मघवत्ऽभ्यः। दधात। जुजोषन्। इत्। मरुतः। सुऽस्तुतिम्। नः। गतः। न। अध्वा। वि। तिराति। जन्तुम्। प्र। नः। स्पार्हाभिः। ऊतिऽभिः। तिरेत॥३॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**बृहत्**) महत् (**वयः**) जीवनम् (**मघवद्भ्यः**) (**दधात**) दधति (**जुजोषन्**) सेवन्ते (**इत्**) एव (**मरुतः**) (**सुष्टुतिम्**) शोभनां प्रशंसाम् (**नः**) अस्माकमस्मान् वा (**गतः**) प्राप्तः (**न**) निषेधे (**अध्वा**) मार्गः (**वि**) (**तिराति**) विहन्ति (**जन्तुम्**) प्राणिनम् (**प्र**) (**नः**) अस्मान् (**स्पार्हाभिः**) स्पृहणीयाभिः (**ऊतिभिः**) रक्षादिभिः क्रियाभिः (**तिरेत**) वर्धयेः॥३॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! ये मरुतो मघवद्भ्यो नोऽस्मभ्यं बृहद्वयो जुजोषन्निन्नोऽस्माकं सुष्टुतिं दधात यो गतोऽध्वास्ति तस्मिन् जन्तुं न वि तराति यश्च स्पार्हाभिरूतिभिर्नोऽस्मान् प्र तिरेत तान् वयं नित्यं सेवेमहि॥३॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! ये विद्वांसः सर्वेषामायुर्वर्धयन्ति प्रशंसितानि कर्माणि कारयन्ति त एव सवैस्सत्कर्तव्या भवन्ति॥३॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो (**मरुतः**) मनुष्य (**मघवद्भ्यः**) अन्न से युक्त (**नः**) हम लोगों के लिये (**बृहत्**) बहुत (**वयः**) जीवन का (**जुजोषन्**) सेवन करते (**इत्**) ही हैं (**नः**) हम लोगों की (**सुष्टुतिम्**) उत्तम प्रशंसा को (**दधात**) धारण करते हैं और जो (**गतः**) प्राप्त हुआ (**अध्वा**) मार्ग है उस में (**जन्तुम्**) प्राणी को (**न**) नहीं (**वि, तिराति**) मारता है और जो (**स्पार्हाभिः**) स्पृहा करने योग्य (**ऊतिभिः**) रक्षा आदि क्रियाओं से हम लोगों को (**प्र, तिरेत**) बढ़ावें, उनका हम लोग नित्य सेवन करें॥३॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो विद्वान् जन सब की अवस्था को बढ़ाते हैं, प्रशंसित कर्मों को कराते है, वे ही सबों से सत्कार करने योग्य होते हैं॥३॥

**केन रक्षिताः मनुष्याः कीदृशा भवन्तीत्याह॥**

किससे रक्षित मनुष्य कैसे होते हैं, इस विषय को कहते हैं॥

**युष्मोतो विप्रो मरुतः शतस्वी युष्मोतो अर्वा सहुरिः सहस्त्री।**

**युष्मोतः सम्राळुत हन्ति वृत्रं प्र तद्वो अस्तु धूतयो देष्णम्॥४॥**

**युष्माऽऊतः। विप्रः। मरुतः। शतस्वी। युष्माऽऊतः। अर्वा। सहुरिः। सहस्त्री। युष्माऽऊतः। सम्ऽराट्। उत। हन्ति। वृत्रम्। प्र। तत्। वः। अस्तु। धूतयः। देष्णम्॥४॥**

**पदार्थः**-(**युष्मोतः**) युष्माभी रक्षितः (**विप्रः**) मेधावी (**मरुतः**) प्राणा इव प्रियकरा विद्वांसः (**शतस्वी**) शतमसंख्यं स्वं धनं विद्यते यस्य सः (**युष्मोतः**) युष्माभिः पालितः (**अर्वा**) अर्वेव अश्व इव (**सहुरिः**) सहनशीलः (**सहस्त्री**) सहस्त्राण्यसंख्याता उत्तममनुष्याः पदार्था वा विद्यन्ते यस्य सः (**युष्मोतः**) युष्माभिः संरक्षितः (**सम्राट्**) सः सूर्यः सम्यग्राजते तद्वद्वर्तमानश्चक्रवर्ती राजा (**उत**) (**हन्ति**) (**वृत्रम्**) मेघम् (**प्र**) (**तत्**) (**वः**) युष्मभ्यम् (**अस्तु**) (**धूतयः**) कम्पयितारः (**देष्णम्**) दातुं योग्यं धनम्॥४॥

**अन्वयः**-हे धूतयो मरुतो! यं युष्मोतो विप्रः शतस्वी युष्मोतोऽर्वेव सहुरिः सहस्त्र्युत युष्मोतः सम्राड् वृत्रमिव शत्रून् हन्ति तद्देष्णं वः प्रास्तु॥४॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यथा प्राणः शरीरादिकं सर्वं रक्षयित्वा सुखं प्रापयन्ति तथैव विद्वांसः शरीरात्मबलायूंषि रक्षयित्वा सर्वानानन्दयन्ति नैतेषां रक्षया विना कोपि सम्राड् भवितुमर्हति तस्मादेते सर्वदा सत्कर्त्तव्यास्सन्ति॥४॥

**पदार्थः**-हे **(धूतयः)** कम्पाने वाले **(मरुतः)** प्राणों के सदृश प्रिय करने वाले विद्वान् जनो! **[जो]** **(युष्मोतः)** आप लोगों से रक्षा किया **(विप्रः)** बुद्धिमान् जन **(शतस्वी)** असंख्य धन वाला **(युष्मोतः)** आप लोगों से पालन किया गया **(अर्वा)** घोड़े के सामन **(सहुरिः)** सहनशील **(सहस्री)** असंख्यात उत्तम मनुष्य वा पदार्थ जिसके वह **(उत)** और **(युष्मोतः)** आप लोगों से उत्तम प्रकार रक्षा किया गया **(सम्राट्)** उत्तम प्रकाशित सूर्य्य के समान वर्त्तमान चक्रवर्ती राजा **(वृत्रम्)** मेघ को जैसे सूर्य वैसे शत्रुओं का **(हन्ति)** नाश करता है **(तत्)** वह **(देष्णम्)** देने योग्य दान **(वः)** आप लोगों के लिये **(प्र, अस्तु)** हो अर्थात् आप का दिया हुआ समस्त है सो आपका विख्यात हो॥४॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जैसे प्राण, शरीर आदि सब की रक्षा करके सुख को प्राप्त कराते हैं, वैसे ही विद्वान् जन शरीर, आत्मा, बल और अवस्था की रक्षा कर के सब को आनन्द देते हैं, उनकी रक्षा के बिना कोई भी चक्रवर्ती राजा होने को योग्य नहीं होता, तिस से ये सब काल में सत्कार करने योग्य होते हैं॥४॥

**पुनः के मनुष्याः सत्करणीयास्तिरस्करणीयाश्च भवन्तीत्याह॥**

फिर कौन मनुष्य सत्कार करने योग्य और तिरस्कार करने योग्य होते हैं, इस विषय को कहते हैं॥

**ताँ आ रुद्रस्य मीळ्हुषो विवासे कुविन्नंसन्ते मरुतः पुनर्नः।**

**यत्सस्वर्ता जिहीळिरे यदाविरव तदेन ईमहे तुराणाम्॥५॥**

**तान्। आ। रुद्रस्य। मीळ्हुषः। विवासे। कुवित्। नंसन्ते। मरुतः। पुनः। नः। यत्। सस्वर्ता। जिहीळिरे। यत्। आविः। अव। तत्। एनः। ईमहे। तुराणाम्॥५॥**

**पदार्थः**-**(तान्)** **(आ)** समन्तात् **(रुद्रस्य)** प्राणस्येव विदुषः **(मीळ्हुषः)** सेचकस्य **(विवासे)** वासयामि **(कुवित्)** महत् **(नंसन्ते)** नमन्ति **(मरुतः)** मनुष्याः **(पुनः)** **(नः)** अस्मान् **(यत्)** येन **(सस्वर्ता)** उपतापकेन शब्देन **(जिहीळिरे)** क्रोधयेयुः **(यत्)** **(आविः)** प्राकट्ये **(अव)** विरोधे **(तत्)** **(एनः)** पापमपराधम् **(ईमहे)** दूरीकुर्महे **(तुराणाम्)** क्षिप्रं कारिणाम्॥५॥

**अन्वयः**-ये मनुष्याः यत्सस्वर्ता नो जिहीळिरे तेषां तुराणां यदेनस्तदवेमहे तान् रुद्रस्य मीळ्हुषो नंसन्ते पुनस्तान् रुद्रस्य कुवित् कुर्वतोऽहमाविराविवासे॥५॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! ये पापिनो धार्मिकाणामनादरकर्तारः स्युस्ते दूरे निवासनीयाः ये च नम्रत्वादिगुणयुक्ता धार्मिकाः स्युस्तान्निकटे निवासयेयुर्यतः सर्वेषां सत्कीर्तिः प्रकटा स्यात्॥५॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-जो मनुष्य **(यत्)** जिस **(सस्वर्ता)** तपाने वाले शब्द से **(नः)** हम लोगों को **(जिहीळिरे)** क्रुद्धित करावें उन **(तुराणाम्)** शीघ्र कार्य्य करने वालों का **(यत्)** जो **(एनः)** पाप अपराध **(तत्)** उस को **(अव)** विरोध में **(ईमहे)** दूर करें उनको **(रुद्रस्य)** प्राण के सदृश विद्वान् **(मीळ्हुषः)** सींचने वाले विद्वान् के सम्बन्ध में **(नंसन्ते)** नम्र होते हैं **(पुनः)** फिर **(तान्)** उनको **(रुद्रस्य)** प्राण के सदृश विद्वान् के **(कुवित्)** बड़ा करते हुए को मैं **(आविः)** प्रकटता में **(आ)** सब प्रकार से **(विवासे)** बसाता हूँ॥५॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो पापी जन धार्मिक जनों के अनादर करने वाले होवें, उनको दूर वसाना चाहिये और जो नम्रता आदि से युक्त धार्म्मिक होवें, उन को समीप बसावें, जिससे सब का श्रेष्ठ यश प्रकट होवे॥५॥

**पुनर्विद्वांसः किं कुर्युरित्याह॥**

फिर विद्वान् जन क्या करें, इस विषय को कहते हैं॥

**प्र सा वाचि सुष्टुतिर्मघोनामिदं सूक्तं मरुतो जुषन्त।**

**आराच्चिद्द्वेषो वृषणो युयोत यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥६॥२८॥**

**प्र। सा। वाचि। सुऽस्तुतिः। मघोनाम्। इदम्। सुऽउक्तम्। मरुतः। जुषन्त। आरात्। चित्। द्वेषः। वृषणः। युयोत। पात। स्वस्तिऽभिः। सदा। नः॥६॥**

**पदार्थः**-**(प्र)** **(सा)** **(वाचि)** वाण्याम् **(सुष्टुतिः)** शोभना प्रशंसा **(मघोनाम्)** बहुपूजितधनानाम् **(इदम्)** **(सूक्तम्)** शोभनं वचनम् **(मरुतः)** विद्वांसो मनुष्याः **(जुषन्त)** सेवन्ताम् **(आरात्)** दूरात् समीपाद् वा **(चित्)** अपि **(द्वेषः)** द्वेष्टॄन् दुष्टान् शत्रून् मनुष्यान् **(वृषणः)** बलिष्ठाः **(युयोत)** पृथक्कुरुत **(यूयम्)** **(पात)** **(स्वस्तिभिः)** **(सदा)** **(नः)**॥६॥

**अन्वयः**-हे वृषणो! मघोनां वाचि सा सुष्टुतिस्तदिदं सूक्तं मरुतः प्र जुषन्त साऽस्मान् जुषतां यूयं द्वेष आरात् दूरान्निकटाच्चिद्युयोत स्वस्तिभिर्नस्सदा पात॥६॥

**भावार्थः**-ये मनुष्यास्सदैव सत्यस्य वक्तारस्ते स्तावकाः स्युस्तैस्सह बलं वर्धयित्वा सर्वशत्रून् निवार्य श्रेष्ठान् सदा रक्षन्तु॥६॥

अत्र मरुद्विद्वद्गुणवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह संगतिर्वेद्या॥

**इत्यष्टपञ्चाशत्तमं सूक्तमष्टाविंशो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे **(वृषणः)** बलयुक्त जनो! **(मघोनाम्)** बहुत श्रेष्ठ धन वालों की **(वाचि)** वाणी में **(सा)** वह **(सुष्टुतिः)** सुन्दर प्रशंसा है **(इदम्)** इस **(सूक्तम्)** उत्तम वचन को **(मरुतः)** विद्वान् मनुष्य **(प्र, जुषन्त)** सेवन करें **(सा)** वह हम लोगों को सेवन करे **(यूयम्)** आप लोग **(द्वेषः)** करने वालों



www.9009.co.in

को **(आरात्)** समीप से वा दूर से **(चित्)** भी **(युयोत)** पृथक् करिये और **(स्वस्तिभिः)** कल्याणों से **(नः)** हम लोगों की **(सदा)** सब काल में **(पात)** रक्षा कीजिये॥१॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य सदा ही सत्य के कहने वाले हों, वे ही स्तुति करने वाले होवें, उन के साथ बल को बढ़ाय के सब शत्रुओं को दूर करके श्रेष्ठों की सदा रक्षा करो॥६॥

इस सूक्त में वायु और विद्वान् के गुणवर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इस से पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ संगति जाननी चाहिये॥

**यह अट्ठावनवां सूक्त और अट्ठाईसवां वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

**अथ द्वादशर्चस्यैकोनषष्टितमस्य सूक्तस्य वसिष्ठ ऋषिः। १-११ मरुतः। १२ रुद्रो देवता। १ निचृद्बृहती। ३ बृहती। ६ स्वराड्बृहती छन्दः। मध्यमस्स्वरः। २ पङ्क्तिः। ४ निचृत्पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः। ५, १२ अनुष्टप् छन्दः। गान्धारः स्वरः। ७ निचृत्त्रिष्टुप्। ८ त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः। ९, १० गायत्री। ११ निचृद्गायत्री छन्दः। षड्जः स्वरः॥**

*पुनर्विद्वद्भिः किं कर्तव्यमित्याह॥*

अब बारह ऋचा वाले उनसठवें सूक्त का प्रारम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में फिर विद्वानों को क्या करना चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**यं त्रायध्व इदमिदं देवासो यं च नयथ।**
**तस्मा अग्ने वरुण मित्रार्यमन्मरुतः शर्म यच्छत॥ १॥**

**यम्। त्रायध्वे। इदम्ऽइदम्। देवासः। यम्। च। नयथ। तस्मै। अग्ने। वरुण। मित्र। अर्यमन्। मरुतः। शर्म। यच्छत॥ १॥**

**पदार्थः**-(**यम्**) (**त्रायध्वे**) रक्षथ (**इदमिदम्**) वचनं श्रावयिता कर्म कृत्वा वा (**देवासः**) प्राणा इव विद्वांसः (**यम्**) नरम् (**च**) (**नयथ**) प्रापयथ (**तस्मै**) (**अग्ने**) (**वरुण**) श्रेष्ठ (**मित्र**) सखे (**अर्यमन्**) न्यायकारिन् (**मरुतः**) प्राण इव नेतारः (**शर्म**) सुखं गृहं वा (**यच्छत**) दत्त॥ १॥

**अन्वयः**-हे मरुतो देवासो! यूयमिदमिदं यन्नयथ यं च त्रायध्ये तस्मै शर्म यच्छत, हे अग्ने वरुण मित्रार्यमँस्त्वमेतानेव सदा सेवस्य॥ १॥

**भावार्थः**-हे विद्वांसो! भवन्तस्सत्योपदेशसुशिक्षाविद्यादानेन सर्वान् मनुष्यान् सम्यग्रक्षित्वा वर्धन्तु येन सर्वे सुखिनः स्युः॥ १॥

**पदार्थः**-हे (**मरुतः**) प्राणों के सदृश अग्रणी (**देवासः**) विद्वान्! आप लोग (**इदमिदम्**) इस-इस वचन को सुनाय के वा कर्म करके (**यम्**) जिसको (**नयथ**) प्राप्त कराइये (**यम्, च**) और जिस मनुष्य की (**त्रायध्वे**) रक्षा करें (**तस्मै**) उसके लिये (**शर्म**) सुख वा गृह (**यच्छत**) दीजिये और हे (**अग्ने**) अग्नि के समान तेजस्वी (**वरुण**) श्रेष्ठ (**मित्र**) मित्र (**अर्यमन्**) न्यायकारी! आप इन्हीं की सदा सेवा करिये॥ १॥

**भावार्थः**-हे विद्वान् जनो! आप लोग सत्य उपदेश, उत्तम शिक्षा और विद्या दान से सब मनुष्यों की उत्तम प्रकार रक्षा करके वृद्धि करिये, जिससे सब सुखी होवें॥ १॥

**पुनर्विद्वांसः किं कुर्य्युरित्याह॥**

फिर विद्वान् मनुष्य क्या करें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**युष्माकं देवा अवसाहनि प्रिय ईजानस्तरति द्विषः।**
**प्र स क्षयं तिरते वि महीरिषो यो वो वराय दाशति॥ २॥**



www.9009.co.in

**युष्माकम्। देवाः। अवसा। अहनि। प्रिये। ईजानः। तरति। द्विषः। प्र। सः। क्षयम्। तिरते। वि। महीः। इषः। यः। वः। वराय। दाशति॥२॥**

**पदार्थः**-(**युष्माकम्**) (**देवाः**) विद्वांसः (**अवसा**) रक्षणादिना (**अहनि**) दिने (**प्रिये**) कमनीये प्रीतिकरे (**ईजानः**) (**तरति**) उल्लङ्घते (**द्विषः**) द्वेष्टॄन् (**प्र**) (**सः**) (**क्षयम्**) निवासम् (**तिरते**) वर्धयति (**वि**) (**महीः**) भूमीः सुशिक्षिता वाचो वा (**इषः**) अन्नाद्याः (**यः**) (**वः**) युष्मान् (**वराय**) श्रेष्ठत्वाय (**दाशति**)॥२॥

**अन्वयः**-हे देवा! य ईजानोऽवसा द्विषस्तरति प्रियेऽहनि युष्माकं प्रियं साध्नोति यो महीरिषो वो वराय प्र दाशति स क्षयं प्र वि तिरते॥२॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! ये दुष्टतानिवारकास्सर्वेषां रक्षका विद्याद्यैश्वर्यप्रदाः सुखेन सर्वदा वासयितारो विद्वांसः स्युस्तानेव सेवयित्वा संगत्य प्राप्नुत॥२॥

**पदार्थः**-हे (**देवाः**) विद्वान् जनो! (**यः**) जो (**ईजानः**) यजमान (**अवसा**) रक्षण आदि से (**द्विषः**) द्वेष करने वालों का (**तरति**) उल्लङ्घन करता है और (**प्रिये**) प्रीति करने वाले (**अहनि**) दिन में (**युष्माकम्**) आप लोगों के प्रिय को सिद्ध करता है और जो (**महीः**) भूमियों का उत्तम प्रकार शिक्षित वाणियों वा (**इषः**) अन्नादिकों (**वः**) आप लोगों के अर्थ (**वराय**) श्रेष्ठत्व के लिये (**प्र, दाशति**) देता है (**सः**) वह (**क्षयम्**) निवास को (**प्र, वि, तिरते**) बढ़ाता है॥२॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो दुष्टता के दूर करने वाले, सब की रक्षा करने वाले, विद्या आदि ऐश्वर्य्य के देने वाले और सुख से सर्वदा वसाने वाले विद्वान् हों, उन्हीं की सेवा और मेल कर के विद्याओं को प्राप्त हूजिये॥२॥

**पुनर्मनुष्याः किं कुर्युरित्याह॥**

फिर मनुष्य क्या करें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**नहि वश्चरमं चन वसिष्ठः परिमंसते।**

**अस्माकमद्य मरुतः सुते सचा विश्वे पिबत कामिनः॥३॥**

**नहि। वः। चरमम्। चन। वसिष्ठः। परिऽमंसते। अस्माकम्। अद्य। मरुतः। सुते। सचा। विश्वे। पिबत। कामिनः॥३॥**

**पदार्थः**-(**नहि**) निषेधे (**वः**) युष्माकम् (**चरमम्**) अन्तिमम् (**चन**) अपि (**वसिष्ठः**) अतिशयेन वासयिता (**परिमंसते**) वर्जनीयं विरुद्धं वा परिणमति (**अस्माकम्**) (**अद्य**) (**मरुतः**) मनुष्याः (**सुते**) निष्पन्ने महौषधिरसे (**सचा**) सम्बन्धेन (**विश्वे**) सर्वे (**पिबत**) (**कामिनः**) कामयितारः॥३॥

**अन्वयः**-हे विद्वांसः कामिनो विश्वे मरुतो! यूयं सचाद्यास्माकं सुते रसं पिबत यतो वश्चरमं चन वसिष्ठो नहि परिमंसते॥३॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यदि यूयमिच्छासिद्धिं चिकीर्षेयुस्तर्हि युक्ताहारविहारं ब्रह्मचर्यं कुरुत॥३॥

**पदार्थः**-हे विद्वानो **(कामिनः)** कामना करने वाले **(विश्वे)** सम्पूर्ण **(मरुतः)** मनुष्य! आप लोग **(सचा)** सम्बन्ध से **(अद्य)** इस समय **(अस्माकम्)** हम लोगों के **(सुते)** उत्पन्न हुए बड़ी ओषिधियों के रस में रस को **(पिबत)** पीवें जिससे **(वः)** आप लोगों के **(चरमम्)** अन्त वाले को **(चन)** भी **(वसिष्ठः)** अतिशय वसाने वाला **(नहि)** नहीं **(परिमंसते)** त्यागने योग्य वा विरुद्ध परिणाम को प्राप्त होता है॥३॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जो आप लोग इच्छा की सिद्धि करने की इच्छा करें तो योग्य आहार और विहार जिसमें उस ब्रह्मचर्य्य को करिये॥३॥

**पुनर्मनुष्याः किं कुर्युरित्याह॥**

फिर मनुष्य क्या करें, इस विषय को कहते हैं॥

**नहि व ऊतिः पृतनासु मर्धति यस्मा अराध्वं नरः।**

**अभि व आवर्त्सुमतिर्नवीयसी तूयं यात पिपीषवः॥४॥**

**नहि। वः। ऊतिः। पृतनासु। मर्धति। यस्मै। अराध्वम्। नरः। अभि। वः। आ। अवर्त्। सुऽमतिः। नवीयसी। तूयम्। यात। पिपीषवः॥४॥**

**पदार्थः**-**(नहि)** निषेधे **(वः)** युष्माकम् **(ऊतिः)** रक्षाद्या क्रिया **(पृतनासु)** मनुष्यसेनासु **(मर्धति)** हिंसति **(यस्मै)** **(अराध्वम्)** स्मर्धयन्ति **(नरः)** नायकाः **(अभि)** **(वः)** युष्माकम् **(आ)** **(अवर्त्)** आवर्त्तते **(सुमतिः)** शोभना प्रज्ञा **(नवीयसी)** अतिशयेन नवीना **(तूयम्)** तूर्णम्। **तूयमिति क्षिप्रनाम।** (निघं०२.१५) **(यात)** प्राप्नुत **(पिपीषवः)** पातुमिच्छवः॥४॥

**अन्वयः**-हे पिपीषवो नरो! येषां व ऊतिः पूतनासु नहि मर्धति यस्मै यूयमराध्वं स वोऽभ्यावर्त् येषां नवीयसी सुमतिरस्ति ते यूयं विद्यां तूयं यात॥४॥

**भावार्थः**-हे मनुष्याः! भवन्त एवं प्रयतन्तां येन युष्माकं न्यायेन रक्षा सेनाः समृद्धिरुत्तमा प्रज्ञा कदाचिन्न ह्रस्येत॥४॥

**पदार्थः**-हे **(पिपीषवः)** पान करने की इच्छा करने वाले **(नरः)** अग्रणी जनो! जिन **(वः)** आप लोगों की **(ऊतिः)** रक्षा आदि क्रिया **(पृतनासु)** मनुष्यों की सेनाओं में **(नहि)** नहीं **(मर्धति)** हिंसा करती है और **(यस्मै)** जिस के लिये आप लोग **(अराध्वम्)** आराधना करते हैं वह **(वः)** आप लोगों के **(अभि, आ, अवर्त्)** समीप सब प्रकार से वर्त्तमान होता है और जिनकी **(नवीयसी)** अतिशय नवीन **(सुमतिः)** उत्तम बुद्धि है वे आप लोग विद्या को **(तूयम्)** शीघ्र **(यात)** प्राप्त हूजिये॥४॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! आप लोग इस प्रकार से प्रयत्न करिये, जिससे आप लोगों की न्याय से रक्षा सेना की बढ़ती और उत्तम बुद्धि कभी न न्यून हो॥४॥

**पुनः स्वामिनः भृत्यान् प्रति कथमाचरेयुरित्याह॥**

फिर स्वामी जन नौकरों के प्रति कैसा आचरण करें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**ओ षु घृष्विराधसो यातनान्धांसि पीतये।**

**इमा वो हव्या मरुतो ररे हि कं मो ष्व१न्यत्र गन्तन॥५॥**

**ओ इति। सु। घृष्विऽराधसः। यातन। अन्धांसि। पीतये। इमा। वः। हव्या। मरुतः। ररे। हि। कम्। मो इति। सु। अन्यत्र। गन्तन॥५॥**

**पदार्थः**-(**ओ**) सम्बोधने (**सु**) (**घृष्विराधसः**) घृष्वीनि सम्बद्धानि रारांसि येषां ते (**यातन**) प्राप्नुत (**अन्धांसि**) अन्नपानादीनि (**पीतये**) पानाय (**इमा**) इमानि (**वः**) युष्मभ्यम् (**हव्या**) दातुमादातुमर्हाणि (**मरुतः**) मनुष्याः (**ररे**) ददामि (**हि**) (**कम्**) सुखम् (**मो**) निषेधे (**सु**) (**अन्यत्र**) (**गन्तन**) गच्छत॥५॥

**अन्वयः**-ओ घृष्विराधसो मरुतो! यानीमा हव्यान्धांसि वः पीतयेऽहं ररे तैर्हि यूयं कं सु यातनान्यत्र मो सु गन्तन॥५॥

**भावार्थः**-हे धार्मिका विद्वांसोऽहं युष्माकं पूर्णं सत्कारं करोमि यूयमन्यत्रेच्छां मा कुरुतात्रैव कर्तव्यानि कर्माणि यथावत् कृत्वा पूर्णमभीष्टं सुखमत्रैव प्राप्नुत॥५॥

**पदार्थः**- (**आ**) हे (**घृष्विराधसः**) इकट्ठे लिये हुए धनों वाले (**मरुतः**) मनुष्यो! जिन (**इमा**) इन (**हव्या**) देने और ग्रहण करने योग्य (**अन्धांसि**) अन्नपान आदिकों को (**वः**) आप लोगों के अर्थ (**पीतये**) पान करने के लिये मैं (**ररे**) देता हूँ उनसे (**हि**) ही आप लोग (**कम्**) सुख को (**सु, यातन**) अच्छे प्रकार प्राप्त हूजिये (**अन्यत्र**) अन्य स्थान में (**मो**) नहीं (**सु**) अच्छे प्रकार (**गन्तन**) जाइये॥५॥

**भावार्थः**-हे धार्मिक विद्वानो! मैं आप लोगों का पूर्ण सत्कार करता हूँ, आप लोग अन्यत्र की इच्छा को न करिये, यहाँ ही करने योग्य कर्मों को यथावत् करके पूर्ण अभीष्ट सुख को यहाँ ही प्राप्त हूजिये॥५॥

**पुनर्विद्वद्भिः किं कर्तव्यमित्याह॥**

फिर विद्वानों को क्या करना चाहिये, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**आ च नो बर्हिः सदताविता च नः स्पार्हाणि दातवे वसु।**

**अस्रेधन्तो मरुतः सोम्ये मधौ स्वाहेह मादयाध्वै॥६॥२९॥**

**आ। च। नः। बर्हिः। सदत। अवित। च। नः। स्पार्हाणि। दातवे। वसु। अस्रेधन्तः। मरुतः। सोम्ये। मधौ। स्वाहा। इह। मादयाध्वै॥६॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**आ**) (**च**) अथार्थे (**नः**) अस्माकम् (**बर्हिः**) उत्तमं बृहद्गृहम् (**सदत**) उपविशत (**अविता**) प्रविशत रक्षत। अत्र **संहितायामि**ति दीर्घः। (**च**) (**नः**) अस्मभ्यम् (**स्पार्हाणि**) स्पृहणीयानि कमनीयानि (**दातवे**) दातुं (**वसु**) द्रव्यम् (**अस्रेधन्तः**) अहिंसन्तः (**मरुतः**) मनुष्याः (**सोम्ये**) सोम इवानन्दकरे (**मधौ**) मधुरे (**स्वाहा**) सत्यया क्रियया (**इह**) अस्मिन् लोके (**मादयाध्वै**)॥६॥

**अन्वयः**-हे वस्वस्रेधन्तो मरुतो! यूयं नो स्पार्हाणि च दातवेऽस्माकं बर्हिरा सदत नोऽस्माँश्चावितेह स्वाहा सोम्ये मधौ मादयाध्वै॥६॥

**भावार्थः**-हे विद्वांसो! यूयं सर्वेभ्यो मनुष्येभ्यो विद्यां दातुं प्रवर्त्तध्वं विद्ययैवैषां रक्षां विधत्तैश्वर्यं सर्वार्थं वर्धयत॥६॥

**पदार्थः**-हे (**वसु**) द्रव्य का (**अस्रेधन्तः**) नहीं नाश करते हुए (**मरुतः**) मनुष्यो! आप लोग (**नः**) हम लोगों के (**स्पार्हाणि**) कामना करने योग्य पदार्थों को (**च**) निश्चित (**दातवे**) देने के लिये हम लोगों के (**बर्हिः**) उत्तम बड़े गृह में (**आ, सदत**) बैठिये (**नः, च**) और हम लोगों की (**अवित**) रक्षा कीजिये (**इह**) इस लोक में (**स्वाहा**) सत्य क्रिया से (**सोम्ये**) सोमलता के सदृश आनन्द करने वाले (**मधौ**) मधुर रस में (**मादयाध्वै**) आनन्द कीजिये॥६॥

**भावार्थः**-हे विद्वानो! आप लोग सब मनुष्यों के लिये विद्या देने को प्रवृत्त हूजिये, विद्या ही से इनकी रक्षा कीजिये और ऐश्वर्य्य सब के लिये बढ़ाइये॥६॥

**पुनर्मनुष्याः किंवत् किं जानीयुरित्याह॥**

फिर मनुष्य किसके सदृश किसको जानें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**सस्वश्चिद्धि तन्व१ः शुम्भमाना आ हंसासो नीलपृष्ठा अपप्तन्।**
**विश्वं शर्धो अभितो मा नि षेद नरो न रण्वाः सवने मदन्तः॥७॥**

**सस्वरिति। चित्। हि। तन्वः। शुम्भमानाः। आ। हंसासः। नीलऽपृष्ठाः। अपप्तन्। विश्वम्। शर्धः। अभितः। मा। नि। सेद। नरः। न। रण्वाः। सवने। मदन्तः॥७॥**

**पदार्थः**-(**सस्वः**) अन्तर्हिताः (**चित्**) अपि (**हि**) यतः (**तन्वः**) विस्तीर्णाः (**शुम्भमानाः**) शोभायुक्ताः (**आ**) (**हंसासः**) हंसा इव गमनकर्तारः (**नीलपृष्ठाः**) नीलं शुद्धं पृष्ठमन्तावयवं कारणं येषां ते (**अपप्तन्**) पतन्ति (**विश्वम्**) अखिलम् (**शर्धः**) बलम् (**अभितः**) सर्वतः (**मा**) माम् (**नि, सेद**) निषादयत (**नरः**) नायकाः (**न**) इव (**रण्वाः**) रमणीयाः (**सवने**) ऐश्वर्ये (**मदन्तः**) आनन्दन्तः॥७॥

**अन्वयः**-हे विद्वांसो! यथा शुम्भमानाः हि हंसासो नीलपृष्ठाः सस्वश्चित्तन्वः प्राणाः देहादिष्वापप्तन् तथा सवने मदन्तः रण्वा नरो न मामभितो यूयं नि षेद विश्वं शर्धः प्रापयत॥७॥

**भावार्थः**-हे मनुष्याः! यथा हंसा पक्षिणस्सद्यो गच्छन्ति तथा देहात्प्राणा निर्गच्छन्ति यथा रमणीया नरा सर्वेषां हृद्या भवन्ति तथैव विद्वांसः सर्वेषां प्रिया जायन्ते॥७॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-हे विद्वान् जनो! जैसे **(शुम्भमानाः)** शोभते हुए **(हि)** ही **(हंसासः)** हंसों के समान गमन करने वाले **(नीलपृष्ठाः)** शुद्ध कारण जिनके वे **(सस्वः)** छिपे हुए **(चित्)** निश्चित **(तन्वः)** विस्तारयुक्त प्राण देह आदि में **(आ)** सब ओर से **(अपप्तन्)** गिरते हैं, वैसे **(सवने)** ऐश्वर्य्य में **(मदन्तः)** आनन्द करते हुए **(रण्वाः)** सुन्दर **(नरः)** अग्रणी जनों के **(न)** समान **(मा)** मुझ को **(अमितः)** सब ओर से आप लोग **(नि, सेद)** बैठाइये और **(विश्वम्)** सम्पूर्ण **(शर्धः)** बल को प्राप्त कराइये॥७॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! वैसे हंस पक्षी शीघ्र चलते हैं, वैसे देह से प्राण निकलते हैं और जैसे उत्तम मनुष्य सब के प्रिय होते हैं, वैसे ही विद्वान् जन सब के प्रिय होते हैं॥७॥

**पुनर्धार्मिका विद्वांसः किं कुर्युरित्याह॥**

फिर धार्मिक विद्वान् क्या करें, इस विषय को कहते हैं॥

**यो नो मरुतो अभि दुर्हृणायुस्तिरश्चित्तानि वसवो जिघांसति।**

**द्रुहः पाशान् प्रति स मुचीष्ट तपिष्ठेन हन्मना हन्तना तम्॥८॥**

**यः। नः। मरुतः। अभि। दुःऽहृणायुः। तिरः। चित्तानि। वसवः। जिघांसति। द्रुहः। पाशान्। प्रति। सः। मुचीष्ट। तपिष्ठेन। हन्मना। हन्तन। तम्॥८॥**

**पदार्थः**-**(यः)** **(नः)** अस्मान् **(मरुतः)** मनुष्याः **(अभि)** आभिमुख्ये **(दुर्हृणायुः)** दुष्टहृदयः **(तिरः)** तिरस्करणे **(चित्तानि)** अन्तःकरणानि **(वसवः)** वासयितारः **(जिघांसति)** हन्तुमिच्छति **(द्रुहः)** द्रोग्धीन् **(पाशान्)** बन्धकान् **(प्रति)** **(सः)** **(मुचीष्ट)** मुञ्चत **(तपिष्ठेन)** अतिशयेन तप्तेन **(हन्मना)** हननेन **(हन्तना)** अत्र **संहितायामि**ति दीर्घः **(तम्)**॥८॥

**अन्वयः**-हे वसवो मरुतो! यो दुर्हृणायुर्नश्चित्तान्यभि जिघांसति स द्रुहः पाशान् प्रापयति तमस्मान् प्रति मुचीष्ट तपिष्ठेन हन्मना तं तिरो हन्तन॥८॥

**भावार्थः**-हे धार्मिका विद्वांसो! यूयं दुष्टान् मनुष्यान् श्रेष्ठेभ्यो दूरीकृत्य मोहादि बन्धनानि निवार्य तेषां देवान् हत्वैतान् शुद्धान् सम्पादयत॥८॥

**पदार्थः**-हे **(वसवः)** वास कराने वाले **(मरुतः)** मनुष्यो! **(यः)** जो **(दुर्हृणायुः)** दुष्ट विचार वाला **(नः)** हम लोगों के **(चित्तानि)** अन्तःकरणों को **(अभि)** सम्मुख **(जिघांसति)** मारने की इच्छा करता है **(सः)** वह **(द्रुहः)** द्रोह करने वाले **(पाशान्)** बन्धनों को प्राप्त कराता है **(तम्)** उसको हम लोगों के **(प्रति)** प्रति **(मुचीष्ट)** छोड़िये **(तपिष्ठेन)** और अत्यन्त तप्त **(हन्मना)** हनन से उसको **(तिरः, हन्तन)** तिरछा मारिये॥८॥

**भावार्थः**-हे धार्मिक विद्वानो! आप लोग दुष्ट मनुष्यों को श्रेष्ठों से दूर करके मोह आदि बन्धनों को निवृत्त कर के उनके दोषों का नाश करके उन को शुद्ध करिये॥८॥



www.9009.co.in

**पुनर्मनुष्याः किं कुर्युरित्याह॥**

फिर मनुष्य क्या करें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**सांतपना इदं हविर्मरुतस्तज्जुजुष्टन। युष्माकोती रिशादसः॥९॥**

**साम्ऽतपनाः। इदम्। हविः। मरुतः। तत्। जुजुष्टन। युष्माक। ऊती। रिशादसः॥९॥**

**पदार्थः**-(**सान्तपनाः**) सन्तपने भवाः शत्रूणां सन्तापकराः (**इदम्**) (**हविः**) दातुमर्हमन्नादिकम् (**मरुतः**) मानवाः (**तत्**) (**जुजुष्टन**) सेवध्वम् (**युष्माक**) अत्र **वा छन्दसी**ति मलोपः। (**ऊती**) ऊत्या रक्षणाद्यया क्रियया (**रिशादसः**) हिंसकानां हिंसकाः॥९॥

**अन्वयः**-हे विद्वांसस्सान्तपना मरुतो! यूयं तदिदं हविर्जुजुष्टन, हे रिशादसः! युष्माकोती जुजुष्टन॥९॥

**भावार्थः**-हे विद्वांसो! भवन्तः सर्वेषां रक्षणं विधाय ग्रहीतव्यं ग्राहयन्तु॥९॥

**पदार्थः**-हे विद्वानो (**सान्तपनाः**) उत्तम प्रकार तपन में हुए (**मरुतः**) मनुष्यो! आप (**तत्**) उस (**इदम्**) इस (**हविः**) देने योग्य अन्न आदि पदार्थ की (**जुजुष्टन**) सेवा करिये, हे (**रिशादसः**) हिंसा करने वालों के हिंसक! (**युष्माक**) आप लोगों की (**ऊती**) जो रक्षण आदि क्रिया उससे आप सेवन करें अर्थात् परोपकार करें॥९॥

**भावार्थः**-हे विद्वानो! आप लोग सबका रक्षण करके ग्रहण करने योग्य को ग्रहण कराइये॥९॥

**पुनर्गृहस्थाः कीदृशा भवेयुरित्याह॥**

फिर गृहस्थ कैसे होवें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**गृहमेधास आ गत मरुतो माप भूतन। युष्माकोती सुदानवः॥१०॥**

**गृहऽमेधासः। आ। गत। मरुतः। मा। अप। भूतन। युष्माक। ऊती। सुऽदानवः॥१०॥**

**पदार्थः**-(**गृहमेधासः**) गृहे मेधा प्रज्ञा येषां ते (**आ**) (**गत**) आगच्छत (**मरुतः**) उत्तमा मनुष्याः (**मा**) निषेधे (**अप**) (**भूतन**) विरुद्धा भवत (**युष्माक**) युष्माकम् (**ऊती**) ऊत्या रक्षणाद्यया क्रियया (**सुदानवः**) सुष्ठु दानाः॥१०॥

**अन्वयः**-हे गृहमेधासो मरुतो! यूयमत्रागत सुदानवो भूतन युष्माकोती सहिता यूयं माप भूतन॥१०॥

**भावार्थः**-हे गृहस्था! यूयं विद्यादिशुभगुणदातारो भूत्वा धर्मपुरुषार्थविरुद्धा मा भवत॥१०॥

**पदार्थः**-हे (**गृहमेधासः**) गृह में बुद्धि जिन की ऐसे (**मरुतः**) उत्तम मनुष्यो! आप लोग यहाँ (**आ, गत**) आइये और (**सुदानवः**) अच्छे दान वाले (**भूतन**) हूजिये और (**युष्माक**) आप लोगों की (**ऊती**) रक्षण आदि क्रिया के सहित आप लोग (**मा**) नहीं (**अप**) विरुद्ध हूजिये॥१०॥

**भावार्थः**-हे गृहस्थ जनो! आप लोग विद्या आदि श्रेष्ठ गुणों के देने वाले होकर धर्म्म और पुरुषार्थ के विरुद्ध मत होओ॥१०॥



www.9009.co.in

**पुनर्विद्वांसः किं कुर्युरित्याह॥**

फिर विद्वान् क्या करें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**इहेह वः स्वतवसः कवयः सूर्यत्वचः। यज्ञं मरुत आ वृणे॥११॥**

**इहऽइह। वः। स्वऽतवसः। कवयः। सूर्यऽत्वचः। यज्ञम्। मरुतः। आ। वृणे॥११॥**

**पदार्थः**-(**इहेह**) अस्मिन् संसारे (**वः**) युष्माकम् (**स्वतवसः**) स्वकीयबलाः (**कवयः**) विद्वांसः (**सूर्यत्वचः**) सूर्य इव प्रकाशमाना त्वग्येषां ते (**यज्ञम्**) संगतिमयम् (**मरुतः**) मनुष्याः (**आ**) समन्तात् (**वृणे**) स्वीकरोमि॥११॥

**अन्वयः**-हे सूर्यत्वचस्स्वतवसः कवयो मरुत! इहेह वो यज्ञमहमा वृणे॥११॥

**भावार्थः**-हे विद्वांसो! भवन्तो विद्यादिप्रचाराख्यं कर्म सदोन्नयत॥११॥

**पदार्थः**- (**सूर्यत्वचः**) सूर्य्य के समान प्रकाशमान त्वचा जिन की ऐसे (**स्वतवसः**) अपने बल वाले हे (**कवयः**) विद्वान् (**मरुतः**) मनुष्यो! (**इहेह**) इसी संसार में (**वः**) आप लोगों के (**यज्ञम्**) सङ्गतिस्वरूप यज्ञ को मैं (**आ, वृणे**) स्वीकार करता हूँ॥११॥

**भावार्थः**-हे विद्वानो! आप लोग विद्या आदि के प्रचार नामक कर्म्म की सदा उन्नति करिये॥११॥

**पुनर्मनुष्यैः क उपासनीय इत्याह॥**

फिर मनुष्यों को किसकी उपासना करनी चाहिये, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।**

**उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्॥१२॥३०॥४॥**

**त्र्यम्बकम्। यजामहे। सुगन्धिम्। पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव। बन्धनात्। मृत्योः। मुक्षीय। मा। आ। अमृतात्॥१२॥**

**पदार्थः**-(**त्र्यम्बकम्**) त्रिष्वम्बकं रक्षणं यस्य रुद्रस्य परमेश्वरस्य यद्वा त्रयाणां जीवकारणकार्याणां रक्षकस्तं परमेश्वरम् (**यजामहे**) संगच्छेमहि (**सुगन्धिम्**) सुविस्तृतपुण्यकीर्तिम् (**पुष्टिवर्धनम्**) यः पुष्टिं वर्धयति तम् (**उर्वारुकमिव**) यथोर्वारुकफलम् (**बन्धनात्**) (**मृत्योः**) मरणात् (**मुक्षीय**) मुक्तो भवेयम् (**मा**) निषेधे (**आ**) मर्यादाम् (**अमृतात्**) मोक्षप्राप्तेः॥१२॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यं सुगन्धिं पुष्टिवर्धनं त्र्यम्बकं वयं यजामहे तं यूयमपि यजध्वं यथाऽहं बन्धनादुर्वारुकमिव मृत्योर्मुक्षीय तथा यूयं मुच्यध्वं यथाऽहममृतादा मा मुक्षीय तथा यूयमपि मुक्तिप्राप्तेर्विरक्ता मा भवत॥१२॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! अस्माकं सर्वेषां जगदीश्वर एवोपास्योऽस्ति यस्योपासनात् पुष्टिर्वृद्धिः शुद्धकीर्तिर्मोक्षश्च प्राप्नोति मृत्युभयं नश्यति तं विहायान्यस्योपासनां वयं कदापि न कुर्यामेति॥१२॥

अत्र वायुदृष्टान्तेन विद्वदीश्वरगुणकृत्यवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इत्यृग्वेदे पञ्चमाष्टके चतुर्थोऽध्यायस्त्रिंशो वर्गः सप्तमे मण्डले एकोनषष्टितमं सूक्तं च समाप्तम्॥**

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जिस **(सुगन्धिम्)** अच्छे प्रकार पुण्यरूपय यशयुक्त **(पुष्टिवर्धनम्)** पुष्टि बढ़ाने वाले **(त्र्यम्बकम्)** तीनों कालों में रक्षण करने वा तीन अर्तात् जीव, कारण और कार्य्यों की रक्षा करने वाले परमेश्वर को हम लोग **(यजामहे)** उत्तम प्रकार प्राप्त होवें उसकी आप लोग भी उपासना करिये और जैसे मैं **(बन्धनात्)** बन्धन से **(उर्वारुकमिव)** ककड़ी के फल के सदृश **(मृत्योः)** मरण से **(मुक्षीय)** छूटूं, वैसे आप लोग भी छूटिये जैसे मैं मुक्ति से न छूटूं, वैसे आप भी **(अमृतात्)** मुक्ति की प्राप्ति से विरक्त **(मा, आ)** मत हूजिये॥१२॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! हम सब लोगों का उपास्य जगदीश्वर ही है जिसकी उपासना से पुष्टि, वृद्धि, उत्तम यश और मोक्ष प्राप्त होता है, मृत्यु सम्बन्धि भय नष्ट होता है, उस का त्याग कर के अन्य की उपासना हम लोग कभी न करें॥१२॥

इस सूक्त में वायु के दृष्टान्त से विद्वान् और ईश्वर के गुण और कृत्य के वर्णन करने से इस सूक्त के अर्थ की इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ सङ्गति जाननी चाहिये॥

**यह ऋग्वेद में पांचवे अष्टक में चौथा अध्याय तीसवां वर्ग तथा सप्तम मण्डल में उनसठवां सूक्त समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

॥ओ३म्॥

अथ पञ्चमाष्टके पञ्चमाऽध्यायारम्भः॥

ओ३म् विश्वा॑नि देव सवितर्दुरि॒तानि॒ परा॑ सुव। यद्भ॒द्रं तन्न॒ आ सु॑व॥ ऋ०५.८२.५॥

अथ द्वादशर्चस्य षष्टितमस्य सूक्तस्य वसिष्ठ ऋषिः। १ सूर्यः। २-१२ मित्रावरुणौ देवते। १ पङ्क्तिः। ९ विराट् पङ्क्तिः। १० स्वराट् पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः। २, ३, ४, ६, ७, १२ निचृत्त्रिष्टुप्। ५, ८, ११ त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः॥

*अथ मनुष्यैः कः प्रार्थनीय इत्याह॥*

अब मनुष्यों को किसकी प्रार्थना करनी चाहिये, इस विषय को कहते हैं॥

**यद॒द्य सू॑र्य॒ ब्रवोऽना॑गा उ॒द्यन्मि॒त्राय॒ वरु॑णाय स॒त्यम्।**

**व॒यं दे॑व॒त्रादि॑ते स्याम॒ तव॑ प्रि॒यासो॑ अर्यमन् गृ॒णन्त॑ः॥ १॥**

यत्। अ॒द्य। सू॒र्य॒। ब्रव॑ः। अना॑गाः। उ॒त्ऽयन्। मि॒त्राय॑। वरु॑णाय। स॒त्यम्। व॒यम्। दे॒वऽत्रा। अ॒दि॒ते॒। स्या॒म॒। तव॑। प्रि॒यास॑ः। अ॒र्य॒म॒न्। गृ॒णन्त॑ः॥ १॥

**पदार्थः**-(**यत्**) यः (**अद्य**) (**सूर्य**) सूर्य इव वर्त्तमान (**ब्रवः**) वद (**अनागाः**) अनपराधः (**उद्यन्**) उदयन् (**मित्राय**) सख्ये (**वरुणाय**) श्रेष्ठाय (**सत्यम्**) यथार्थम् (**वयम्**) (**देवत्रा**) देवेषु विद्वत्सु (**अदिते**) अविनाशिन् (**स्याम**) (**तव**) (**प्रियासः**) प्रियाः (**अर्यमन्**) न्यायकारिन् (**गृणन्तः**) स्तुवन्तः॥ १॥

**अन्वयः**-हे सूर्यादितेऽर्यमन् जगदीश्वर! यद्योऽनागास्त्वमस्मानुद्यन् सूर्य इव यथा मित्राय वरुणाय सत्यं ब्रवस्तथाऽस्मभ्यं ब्रूहि यतस्त्वां देवत्रा गृणन्तो वयं तवाद्य प्रियासस्स्याम॥ १॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! भवन्तं सूर्यवत्प्रकाशकं परमात्मानमेवं प्रार्थयन्तु, हे परब्रह्मन्! भवान्नस्माकमात्मस्वन्तर्यामिरूपेण सत्यं सत्यमुपदिशतु येन तवाज्ञायां वर्तित्वा वयं भवत्प्रिया भवेमेति॥ १॥

**पदार्थः**-हे (**सूर्य**) सूर्य्य के समान वर्त्तमान (**अदिते**) अविनाशी और (**अर्यमन्**) न्यायकारी जगदीश्वर! (**यत्**) जो (**अनागाः**) अपराध से रहित आप हम लोगों को (**उद्यन्**) उद्यत कराते हुए सूर्य्य जैसे वैसे (**मित्राय**) मित्र और (**वरुणाय**) श्रेष्ठ जन के लिये (**सत्यम्**) यथार्थ बात को (**ब्रवः**) कहिये, वैसे हम लोगों के लिये कहिये जिससे आप की (**देवत्रा**) विद्वानों में (**गृणन्तः**) स्तुति करते हुए हम लोग (**तव**) आपके (**अद्य**) इस समय (**प्रियासः**) प्रिय (**स्याम**) होवें॥ १॥



www.9009.co.in

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! आप लोग सूर्य्य के सदृश प्रकाशक परमात्मा ही की प्रार्थना करो, हे परब्रह्मन्! आप हम लोगों के आत्माओं में अन्तर्य्यामी के स्वरूप से सत्य-सत्य उपदेश करिये, जिससे आपकी आज्ञा में वर्त्ताव कर के हम लोग आप के प्रिय होवें॥१॥

**पुनः स जगदीश्वरः कीदृशः किंवत्किं करोतीत्याह॥**

फिर वह कैसा जगदीश्वर किसके सदृश क्या करता है, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**एष स्य मि॒त्रावरु॑णा नृ॒चक्षा॑ उ॒भे उदे॑ति॒ सूर्यो॑ अ॒भि ज्मन्।**

**विश्व॑स्य स्था॒तुर्जग॑तश्च गो॒पा ऋ॒जु मर्ते॑षु वृ॒जि॒ना च॒ पश्य॑न्॥२॥**

**ए॒षः। स्यः। मि॒त्रावरु॑णा। नृ॒ऽचक्षाः॑। उ॒भे इति॑। उत्। ए॒ति॒। सूर्यः॑। अ॒भि। ज्मन्। विश्व॑स्य। स्था॒तुः। जग॑तः। च॒। गो॒पाः। ऋ॒जु। मर्ते॑षु। वृ॒जि॒ना। च॒। पश्य॑न्॥२॥**

**पदार्थः**-(**एषः**) (**स्यः**) सः (**मित्रावरुणा**) सर्वेषां प्राणोदानौ (**नृचक्षाः**) नृणां कर्मणां द्रष्टा (**उभे**) द्वे (**उत्**) (**एति**) उदयं करोति (**सूर्यः**) सवितृलोकः (**अभि**) अभितः (**ज्मन्**) भूमौ। **ज्मेति पृथिवीनाम।** (निघं०१.१) (**विश्वस्य**) सर्वस्य (**स्थातुः**) स्थावरस्य (**जगतः**) जङ्गमस्य (**च**) (**गोपाः**) रक्षकः (**ऋजु**) सरलम् (**मर्तेषु**) मनुष्येषु (**वृजिना**) वृजिनानि बलानि (**च**) (**पश्यन्**) विजानन्॥२॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! एषः स्यो नृचक्षाः परमात्मोभे स्थूलसूक्ष्मे जगति यथा ज्मन् सूर्योऽभ्युदेति तथा विश्वस्य स्थातुर्जगतश्च गोपाः मर्तेष्वृजु वृजिना च पश्यन् मित्रावरुणा प्रकाशयति॥२॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे मनुष्या! यथोदितः सूर्यः सन्निहितं स्थूलं जगत् प्रकाशयति तथान्तर्यामीश्वरस्स्थूलं सूक्ष्मं जगज्जीवांश्च सर्वतः प्रकाशयति सर्वान् संरक्ष्य सर्वेषां कर्माणि पश्यन् यथायोग्यं फलं प्रयच्छति॥२॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो (**एषः**) (**स्यः**) सो यह (**नृचक्षाः**) मनुष्यों के कर्मों को देखने वाला परमात्मा (**उभे**) दोनों प्रकार के स्थूल और सूक्ष्म संसार में जैसे (**ज्मन्**) भूमि में (**सूर्यः**) सूर्य्य लोक (**अभि, उत्, एति**) सब ओर से उदय करता है, वैसे (**विश्वस्य**) सम्पूर्ण (**स्थातुः**) नहीं चलने वाले और (**जगतः**) चलने वाले संसार का भी (**गोपाः**) रक्षक वह (**मर्तेषु**) मनुष्यों में (**ऋजु**) सरलतापूर्वक (**वृजिना**) सेनाओं को (**च**) और (**पश्यन्**) विशेष कर के जानता हुआ (**मित्रावरुणा**) सब के प्राण और उदान वायु को प्रकाशित करता है॥२॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जैसे उदय को प्राप्त हुआ सूर्य्य समीप में वर्त्तमान स्थूल जगत् को प्रकाशित करता है, वैसे अन्तर्य्यामी ईश्वर स्थूल और सूक्ष्म जगत् और जीवों को सब प्रकार से प्रकाशित करता है और सब की उत्तम प्रकार रक्षा कर के सब के कर्मों को देखता हुआ यथायोग्य फल देता है॥२॥



www.9009.co.in

**पुनर्विद्वांसः किं कुर्युरित्याह॥**

फिर विद्वान् क्या करें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहतेहैं॥

**अयुक्त सप्त हरितः सधस्थाद्या ईं वहन्ति सूर्यं घृताचीः।**

**धामानि मित्रावरुणा युवाकुः सं यो यूथेव जनिमानि चष्टे॥ ३॥**

**अयुक्त। सप्त। हरितः। सधऽस्थात्। याः। ईम्। वहन्ति। सूर्यम्। घृताचीः। धामानि। मित्रावरुणा। युवाकुः। सम्। यः। यूथाऽइव। जनिमानि। चष्टे॥ ३॥**

**पदार्थः**-(**अयुक्त**) युञ्जते (**सप्त**) एतत्संख्याकाः (**हरितः**) दिशः। **हरित इति दिङ्नाम।** (निघं०१.६) (**सधस्थात्**) समानस्थानात् (**याः**) (**ईम्**) उदकम् (**वहन्ति**) (**सूर्यम्**) (**घृताचीः**) रात्रयः (**धामनि**) जन्मस्थाननामानि (**मित्रावरुणा**) प्राणोदानौ (**युवाकुः**) सुसंयोजकः (**सम्**) (**यः**) (**यूथेव**) यूथानि समूहा इव (**जनिमानि**) जन्मानि (**चष्टे**) प्रकाशयति॥ ३॥

**अन्वयः**-हे विद्वांसो! यथा सप्त हरितो या घृताची रात्रयस्सधस्थात् सूर्यमीं वहन्ति तथा योऽयुक्त धामानि मित्रावरुणा युवाकुस्सन् यूथेव जनिमानि सं चष्टे तं यूयं बोधयत॥ ३॥

**भावार्थः**-अत्रोपमालङ्कारः। यथा वायवस्सूर्यान् लोकान् सर्वतो वहन्ति तथा विद्वांसस्सूर्यप्राणपृथिव्यादिविद्या जानीयुः॥ ३॥

**पदार्थः**-हे विद्वानो! जैसे (**सप्त**) सात (**हरितः**) दिशा और (**याः**) जो (**घृताचीः**) रात्रियाँ (**सधस्थात्**) तुल्य स्थान से (**सूर्यम्**) सूर्य्य को और (**ईम्**) जल को (**वहन्ति**) धारण करती हैं, वैसे (**यः**) जो (**अयुक्त**) युक्त होता है (**धामानि**) जन्म, स्थान और नाम को (**मित्रावरुणा**) प्राण और उदान वायु को (**युवाकुः**) उत्तम प्रकार संयुक्त करने वाला हुआ (**यूथेव**) समूहों के सदृश (**जनिमानि**) जन्मों को (**सम्, चष्टे**) प्रकाशित करता है, उसको आप लोग जनाइये॥ ३॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। जैसे पवन सूर्य्य लोकों को सब ओर से धारण करते हैं, वैसे विद्वान् जन सूर्य्य, प्राण और पृथिवी आदि की विद्या को जानें॥ ३॥

**पुनर्विद्वद्भिः किं कर्तव्यमित्याह॥**

फिर विद्वानों को क्या करना चाहिये, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**उद्वां पृक्षासो मधुमन्तो अस्थुरा सूर्यो अरुहच्छुक्रमर्णः।**

**यस्मा आदित्या अध्वनो रदन्ति मित्रो अर्यमा वरुणः सजोषाः॥ ४॥**

**उत्। वाम्। पृक्षासः। मधुऽमन्तः। अस्थुः। आ। सूर्यः। अरुहत्। शुक्रम्। अर्णः। यस्मै। आदित्याः। अध्वनः। रदन्ति। मित्रः। अर्यमा। वरुणः। सऽजोषाः॥ ४॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**उत्**) (**वाम्**) (**युवयोः**) (**पृक्षासः**) सेचकाः (**मधुमन्तः**) मधुरादयो गुणा विद्यन्ते येषु ते (**अस्थुः**) उत्तिष्ठन्तु (**आ**) (**सूर्यः**) सूर्यलोकः (**अरुहत्**) रोहति (**शुक्रम्**) शुद्धम् (**अर्णः**) उदकम् (**यस्मै**) (**आदित्याः**) संवत्सरस्य मासाः (**अध्वनः**) मार्गस्य मध्ये (**रदन्ति**) विलिखन्ति (**मित्रः**) प्राणः (**अर्यमा**) विद्युत् (**वरुणः**) जलादिकम् (**सजोषाः**) समानप्रीत्या सेवनीयः॥४॥

**अन्वयः**-हे अध्यापकोपदेशकौ! वां ये पृक्षासो मधुमन्त उत्तस्थुः यः सूर्यः शुक्रमर्णः आरुहद्यस्मा आदित्या अध्वनो रदन्ति सजोषा मित्रो वरुणोऽर्यमा चाध्वनो रदन्ति तान् सर्वान् यूयं यथावद्विजानीत॥४॥

**भावार्थः**-हे विद्वांसः! अध्यापकोपदेशाभ्यां प्राप्तविद्या यूयं पृथिव्यादिपदार्थविद्यां विज्ञाय श्रीमन्तो भवत॥४॥

**पदार्थः**-हे अध्यापक और उपदेशक जनो! (**वाम्**) आप दोनों के जो (**पृक्षासः**) सींचने वाले (**मधुमन्तः**) मधुर आदि गुण विद्यमान जन में वे (**उत्, अस्थुः**) उठें और जो (**सूर्यः**) सूर्य्य लोक (**शुक्रम्**) शुद्ध (**अर्णः**) जल को (**आ, अरुहत्**) सब ओर से चढ़ाता और (**यस्मै**) जिसके लिये (**आदित्याः**) वर्ष के महीने (**अध्वनः**) मार्ग के मध्य में (**रदन्ति**) आक्रमण करते हैं (**सजोषाः**) तुल्य प्रीति से सेवा करने योग्य (**मित्रः**) प्राण (**वरुणः**) जल आदि (**अर्यमा**) बिजुली और मार्ग के मध्य में आक्रमण करते हैं, उन सब को आप लोग यथावत् जानो॥४॥

**भावार्थः**-हे विद्वानो! अध्यापक और उपदेशक से विद्या को प्राप्त हुए आप लोग पृथिवी आदि की विद्या को जान कर धनवान् हूजिये॥४॥

**पुनर्विद्वांसः किं कुर्युरित्याह॥**

फिर विद्वान् क्या करें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**इ॒मे चे॒तारो॒ अनृ॑तस्य॒ भूरे॑र्मि॒त्रो अ॑र्य॒मा वरु॑णो॒ हि सन्ति॑।**

**इ॒म ऋ॒तस्य॑ वावृधुर्दुरोणे श॒ग्मास॑: पु॒त्रा अदि॑ते॒रद॑ब्धाः॥५॥**

**इ॒मे। चे॒तार॑ः। अनृ॑तस्य। भूरे॑ः। मि॒त्रः। अ॒र्य॒मा। वरु॑णः। हि। सन्ति॑। इ॒मे। ऋ॒तस्य॑। व॒वृ॒धुः। दु॒रो॒णे। श॒ग्मास॑ः। पु॒त्राः। अदि॑तेः। अद॑ब्धाः॥५॥**

**पदार्थः**-(**इमे**) (**चेतारः**) सम्यग्ज्ञानयुक्ताः विज्ञापकाः (**अनृतस्य**) मिथ्यावस्तुनः (**भूरेः**) बहुविधस्य (**मित्रः**) सर्वसुहृत् (**अर्यमा**) न्यायकारी (**वरुणः**) जलमिव पालकः (**हि**) (**सन्ति**) (**इमे**) (**ऋतस्य**) सत्यस्य वस्तुनो व्यवहारस्य वा (**ववृधुः**) वर्धयन्ति। अत्राभ्यासदैर्घ्यम्। (**दुरोणे**) गृहे (**शग्मासः**) बहुसुखयुक्ताः (**पुत्राः**) (**अदितेः**) अखण्डितस्य (**अदब्धाः**) अहिंसकाः॥५॥

**अन्वयः**-हे विद्वांसो! यथेमे मित्रोऽर्यमा वरुणश्च भूरेरनृतस्य चेतारस्सन्तीमे हि शग्मास अदितेः पुत्रा अदब्धाः दुरोणे भूरेर्ऋतस्य विज्ञानं वावृधुस्तस्मात्ते सत्कर्तव्यास्सन्ति॥५॥

**भावार्थः**-ये पूर्णविद्या भवन्ति त एव सत्यासत्यप्रज्ञापका जायन्ते॥५॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-हे विद्वानो! जैसे **(इमे)** ये **(मित्रः)** सर्व मित्र **(अर्यमा)** न्यायकारी और **(वरुणः)** जल के सदृश पालक **(भूरेः)** बहुत प्रकार के **(अनृतस्य)** मिथ्या वस्तु के **(चेतारः)** उत्तम प्रकार ज्ञानयुक्त वा जनाने वाले **(सन्ति)** हैं और **(इमे)** जो **(हि)** निश्चित **(शग्मासः)** बहुत सुख से युक्त **(अदितेः)** अखण्डित न नष्ट होने वाली के **(पुत्राः)** पुत्र **(अदब्धाः)** नहीं हिंसा करने वाले **(दुरोणे)** गृह में बहुत प्रकार के **(ऋतस्य)** सत्य वस्तु के विज्ञान को **(वावृधुः)** बढ़ाते हैं, इससे वे सत्कार करने योग्य हैं॥५॥

**भावार्थः**-जो पूर्ण विद्यायुक्त होते हैं, वे ही सत्य और असत्य के जानने वाले होते हैं॥५॥

**पुनर्विद्वांसः कीदृशा वरा भवन्तीत्याह॥**

फिर विद्वान् कैसे श्रेष्ठ होते हैं, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**इ॒मे मि॒त्रो वरु॑णो दू॒ळभा॑सोऽचे॒तसं॑ चि॒च्चि॒तयन्ति॒ दक्षैः॑।**

**अपि॒ क्रतुं॑ सु॒चेत॑सं॒ वत॑न्तस्ति॒रश्चि॒दंहः॑ सु॒पथा॑ नयन्ति॥६॥१॥**

**इ॒मे। मि॒त्रः। वरु॑णः। दुः॒ऽदभा॑सः। अ॒चे॒तस॑म्। चि॒त्। चि॒त॒य॒न्ति॒। दक्षैः॑। अपि॑। क्रतु॑म्। सु॒ऽचेत॑सम्। वत॑न्तः। ति॒रः। चि॒त्। अंहः॑। सु॒ऽपथा॑। न॒य॒न्ति॒॥६॥**

**पदार्थः**-**(इमे)** **(मित्रः)** सखा **(वरुणः)** श्रेष्ठः **(दूळभासः)** दुःखेन लब्धुं योग्या विद्वांसः **(अचेतसम्)** अज्ञानिनम् **(चित्)** अपि **(चितयन्ति)** ज्ञापयन्ति **(दक्षैः)** बलैश्चतुरैर्जनैर्वा **(अपि)** **(क्रतुम्)** प्रज्ञाम् **(सुचेतसम्)** शुद्धान्तःकरणम् **(वतन्तः)** वनन्तः संभजन्तः। अत्र वर्णव्यत्ययेन नस्यः तः। **(तिरः)** तिरस्करणे निवारणे **(चित्)** अपि **(अंहः)** अपराधं पापम् **(सुपथा)** शोभनेन धर्मेण मार्गेण **(नयन्ति)** प्रापयन्ति॥६॥

**अन्वयः**-य इमे दूळभासो मित्रो वरुणश्च दक्षैरप्यचेतसं चिच्चितयन्ति सुचेतसं क्रतुं वतन्तस्सुपथांऽहश्चित् तिरो नयन्ति त एव जगत्कल्याणकारका भवन्ति॥६॥

**भावार्थः**-ये अज्ञान् ज्ञाानिनस्सज्ज्ञानान् सद्यो विदुषः कृत्वा सत्यधर्ममार्गेण गमयित्वा पापाद्वियोजयन्ति त एवात्र संसारे दुर्लभास्सन्ति॥६॥

**पदार्थः**-जो **(इमे)** ये **(दूळभासः)** दुःख से प्राप्त होने योग्य विद्वान् **(मित्रः)** मित्र और **(वरुणः)** श्रेष्ठ पुरुष **(दक्षैः)** सेनाओं वा चतुर जनों से **(अपि)** भी **(अचेतसम्)** अज्ञानी को **(चित्)** भी **(चितयन्ति)** जनाते हैं और **(सुचेतसम्)** शुद्ध अन्तःकरण और **(क्रतुम्)** बुद्धि का **(वतन्तः)** सेवन करते हुए जन **(सुपथा)** सुन्दर धर्म्मयुक्त मार्ग से **(अंहः)** अपराध को **(चित्)** भी **(तिरः)** निवारण में **(नयन्ति)** पहुँचाते हैं, वे ही संसार में कल्याणकारक होते हैं॥६॥

**भावार्थः**-जो अज्ञानियों को ज्ञानी और ज्ञानियों को शीघ्र विद्वान् करके सत्य धर्म्म के मार्ग से चलाकर पाप से पृथक् करते हैं, वे ही इस संसार में दुर्लभ हैं॥६॥



www.9009.co.in

**पुनः के विद्वांसः श्रेष्ठा भवन्तीत्याह॥**

फिर कौन विद्वान् श्रेष्ठ होते हैं, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते है॥

**इ॒मे दि॒वो अनि॑मिषा पृथि॒व्याश्चि॑कि॒त्वांसो॑ अचे॒तसं॑ नयन्ति।**

**प्र॒व्रा॒जे चि॑न्न॒द्यो॑ गा॒धम॑स्ति पा॒रं नो॑ अ॒स्य वि॑ष्पि॒तस्य॑ पर्षन्॥७॥**

**इ॒मे। दि॒वः। अनि॑ऽमिषा। पृ॒थि॒व्याः। चि॒कि॒त्वांसः॑। अ॒चे॒तस॑म्। न॒य॒न्ति॒। प्र॒व्रा॒ऽजे। चि॒त्। न॒द्यः॑। गा॒धम्। अ॒स्ति॒। पा॒रम्। न॒ः। अ॒स्य। वि॒ष्पि॒तस्य॑। प॒र्ष॒न्॥७॥**

**पदार्थः**-(**इमे**) (**दिवः**) सूर्यादेः (**अनिमिषा**) नैरन्तर्येण (**पृथिव्याः**) भूम्यादेः पदार्थमात्रस्य (**चिकित्वांसः**) विज्ञापयन्तः (**अचेतसम्**) जडबुद्धिम् (**नयन्ति**) (**प्रव्राजे**) प्रव्रजन्ति यस्मिन् देशे (**चित्**) यथा (**नद्यः**) सरितः (**गाधम्**) अपरिमितमुदकम् (**अस्ति**) (**पारम्**) परभागम् (**नः**) अस्मान् (**अस्य**) (**विष्पितस्य**) व्याप्तस्य कर्मणः (**पर्षन्**) पारयन्ति॥७॥

**अन्वयः**-हे मनुष्याः! य इमे चिकित्वांसोऽनिमिषा पृथिव्याः दिवश्च विद्यामचेतसं नयन्ति चित् प्रव्राजे नद्यो गच्छन्ति यदासां गाधमुदकमस्ति तस्मात्पारं नयन्ति तथाऽस्य विष्पितस्य कर्मणः पारं नोऽस्मान् पर्षन् एत एव विदुषः कर्तुमर्हन्ति॥७॥

**भावार्थः**-ये विद्वांसो विद्युद्भूम्यादेस्सर्वस्याः सृष्टैर्विद्यां बोधयन्ति ते सर्वान् मनुष्यान् दुःखात् पारं नेतुं शक्नुवन्ति॥७॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो! जो (**इमे**) ये (**चिकित्वांसः**) विज्ञान देते हुए (**अनिमिषा**) निरन्तरता से (**पृथिव्याः**) भूमि आदि पदार्थ मात्र की ओर (**दिवः**) सूर्य्य आदि की विद्या को (**अचेतसम्**) जड़ बुद्धि को (**नयन्ति**) प्राप्त कराते हैं और (**चित्**) जैसे (**प्रव्राजे**) जिसमें चलते हैं उस देश में (**नद्यः**) नदियाँ जाती हैं जो इन नदियों का (**गाधम्**) अथाह जल (**अस्ति**) है इससे (**पारम्**) परभाग को पहुँचाते हैं, वैसे (**अस्य**) इस (**विष्पितस्य**) व्याप्त कर्म के पार में (**नः**) हम लोगों को (**पर्षन्**) पहुँचाते हैं, वे ही विद्वान् करने को योग्य होते हैं॥७॥

**भावार्थः**-जो विद्वान् जन बिजुली और भूमि आदि सम्पूर्ण सृष्टि की विद्या को जानते हैं वे सब मनुष्यों को दुःख से पार ले जाने को समर्थ होते हैं॥७॥

**पुनः के विद्वांस उत्तमा भवन्तीत्याह॥**

फिर कौन विद्वान् उत्तम होते हैं, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**यद् गो॒पाव॒दिदि॑तिः॒ शर्म॑ भ॒द्रं मि॒त्रो यच्छ॑न्ति॒ वरु॑णः सु॒दासे॑।**

**तस्मि॑न्ना तो॒कं तन॑यं॒ दधा॑ना॒ मा क॑र्म देव॒हेळ॑नं तुरासः॥८॥**

**यत्। गो॒पाव॑त्। अदि॑तिः। शर्म॑। भ॒द्रम्। मि॒त्रः। यच्छ॑न्ति। वरु॑णः। सु॒ऽदासे॑। तस्मि॑न्। आ। तो॒कम्। तन॑यम्। दधा॑नाः। मा। क॒र्म॒। दे॒व॒ऽहे॒ळ॑नम्। तु॒रा॒सः॒॥८॥**



www.9009.co.in

**पदार्थः**-(**यत्**) ये (**गोपावत्**) पृथिवीपालवत् (**अदितिः**) विदुषी माता (**शर्म**) गृहम् (**भद्रम्**) भजनीयं कल्याणकरम् (**मित्रः**) सखा (**यच्छन्ति**) प्रददति (**वरुणः**) श्रेष्ठः (**सुदासे**) शोभना दासा दातारो यस्मिन् व्यवहारे (**तस्मिन्**) (**आ**) समन्तात् (**तोकम्**) अपत्यम् (**तनयम्**) विशालम् (**दधानाः**) धरन्तः (**मा**) निषेधे (**कर्म**) (**देवहेळनम्**) देवानां विदुषामनादराख्यम् (**तुरासः**) त्वरिता आशुकारिणः॥८॥

**अन्वयः**-यथादितिर्मित्रो वरुणश्च गोपावद्भद्रं शर्म ददाति तथा सुदासे तस्मिन् तनयं तोकं च दधाना यद्ये सर्वेभ्यः सुखं यच्छन्ति ते भवन्तः तुरासस्सन्तोः देवहेळनं कर्म मा कुर्वन्॥८॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। ये मातृवन्मित्रवन्न्यायाधीशराजवत्सर्वान् सत्या विद्याः प्रदाय सुखं प्रयच्छन्ति धार्मिकाणां विदुषामनादरं कदाचिन्न कुर्वन्ति सर्वान् सन्तानान् ब्रह्मचर्ये विद्यायां च रक्षन्ति त एव सर्वजगद्धितैषिणो भवन्ति॥८॥

**पदार्थः**-जैसे (**अदितिः**) विद्यायुक्त माता (**मित्रः**) मित्र (**वरुणः**) श्रेष्ठ (**गोपावत्**) पृथिवी के पालन करने वाले राजा के सदृश (**भद्रम्**) सेवन करने योग्य सुखकारक (**शर्म**) गृह को देते हैं, वैसे (**सुदासे**) सुन्दर दाता जन जिस व्यवहार में (**तस्मिन्**) उसमें (**तनयम्**) विशाल उत्तम (**तोकम्**) सन्तान को (**दधानाः**) धारण करते हुए (**यत्**) जो जन सबके लिये सुख (**यच्छन्ति**) देते हैं वे आप लोग (**तुरासः**) शीघ्र करने वाले हुए (**देवहेळनम्**) विद्वानों का जिसमें अनादर हो ऐसे (**कर्म**) कर्म्म को (**मा**) मत करें॥८॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। जो माता के, मित्र के और न्यायाधीश के सदृश सब को सत्य विद्या देकर सुख देते हैं और धार्मिक विद्वानों के अनादर को कभी भी नहीं करते हैं और सब सन्तानों की ब्रह्मचर्य्य और विद्या में रक्षा करते हैं, वे ही सम्पूर्ण जगत् के हित चाहने वाले होते हैं॥८॥

**पुनर्मनुष्याः किं कुर्युः किं च न कुर्युरित्याह॥**

फिर मनुष्य क्या करें और क्या न करें, इस विषय को कहते हैं॥

**अव॒ वेदिं॒ होत्रा॑भिर्यजेत॒ रिपः॒ काश्चि॑द्वरुण॒ध्रुतः॒ सः।**

**परि॒ द्वेषो॑भिरर्य॒मा वृ॑णक्तू॒रुं सु॒दासे॒ वृषणा उ लो॒कम्॥९॥**

**अव॑। वेदि॑म्। होत्रा॑भिः। य॒जे॒त॒। रिपः॑। काः। चि॒त्। व॒रु॒ण॒ऽध्रु॒तः॑। सः। परि॑। द्वेषः॑ऽभिः। अ॒र्य॒मा। वृ॒ण॒क्तु॒। उ॒रुम्। सु॒ऽदासे॑। वृ॒ष॒णौ॒। ऊँ॒ इति॑। लो॒कम्॥९॥**

**पदार्थः**-(**अव**) विरोधे (**वेदिम्**) हवनार्थं कुण्डम् (**होत्राभिः**) हवनक्रियाभिर्वाग्भिर्वा। **होत्रेति वाङ्नाम।** (निघं०१.११) (**यजेत**) संगच्छेत् (**रिपः**) पापात्मिकाः क्रियाः (**काः**) (**चित्**) अपि (**वरुणध्रुतः**) वरुणेन ध्रुतः स्थिरीकृतः (**सः**) (**परि**) सर्वतः (**द्वेषोभिः**) द्वेषयुक्तैः सह (**अर्यमा**)



www.9009.co.in

न्यायाधीशः **(वृणक्तु)** पृथग्भवतु **(उरुम्)** बहुसुखकरं विस्तीर्णम् **(सुदासे)** सुष्ठु दानाख्ये व्यवहारे **(वृषणौ)** बलिष्ठौ राजामात्यौ **(उ)** **(लोकम्)**॥९॥

**अन्वयः**-यो होत्राभिर्वेदिं यजेत यः कश्चित् काश्चिद्रिपः क्रिया अवयजेत स वरुणध्रुतोऽर्यमा द्वेषोभिः परि वृणक्तूरुं लोकमु वृषणौ च सुदासे प्राप्नोतु॥९॥

**भावार्थः**-ये विद्वांसो वेदयुक्ताभिर्वाग्भिस्सर्वान् व्यवहारान् संसाध्य दुष्टक्रिया दुष्टांश्च त्यजन्ति त एवोत्तमं सुखं लभन्ते॥९॥

**पदार्थः**-जो **(होत्राभिः)** हवन की क्रियाओं वा वाणियों से **(वेदिम्)** हवन के निमित्त कुण्ड का **(यजेत)** समागम करे और जो कोई **(चित्)** भी **(काः)** किन्हीं **(रिपः)** पापस्वरूप क्रियाओं का **(अव)** नहीं समागम करे **(सः)** वह **(वरुणध्रुतः)** श्रेष्ठ से स्थिर किया गया **(अर्यमा)** न्यायाधीश **(द्वेषोभिः)** द्वेष से युक्त जनों के साथ **(परि)** सब ओर से **(वृणक्तु)** पृथक् होवे तथा **(उरुम्)** बहुत सुखकारक और विस्तीर्ण **(लोकम्)** लोक को (उ) और **(वृषणौ)** दो बलिष्ठों को **(सुदासे)** उत्तम प्रकार दान जिसमें दिया जाये, ऐसे कर्म्म में प्राप्त होवे॥९॥

**भावार्थः**-जो विद्वान् जन वेद से युक्त वाणियों से सम्पूर्ण व्यवहारों को सिद्ध करके और दुष्ट क्रियाओं और दुष्टों का त्याग करते हैं, वे ही उत्तम सुख को प्राप्त होते हैं॥९॥

**पुनस्ते विद्वांसः किं कुर्युरित्याह॥**

फिर वे विद्वान् जन क्या करें, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**स॒स्वश्चि॒द्धि सम॑ृतिस्त्वे॒ष्ये॑षामपी॒च्ये॑न॒ सह॑सा॒ सह॑न्ते।**

**यु॒ष्मद्भि॒या वृ॑षणो॒ रेज॑माना॒ दक्ष॑स्य चिन्महि॒ना मृ॒ळता॑ नः॥१०॥**

**स॒स्वरिति॑। चि॒त्। हि। सम्ऽऋ॑तिः। त्वे॒षी। ए॒षा॒म्। अ॒पी॒च्ये॑न। सह॑सा। सह॑न्ते। यु॒ष्मत्। भि॒या। वृ॒ष॒णः। रेज॑मानाः। दक्ष॑स्य। चि॒त्। म॒हि॒ना। मृ॒ळत॑। न॒ः॥१०॥**

**पदार्थः**-**(सस्वः)** अन्तश्चरन्तः **(चित्)** अपि **(हि)** **(समृतिः)** सम्यक् सत्यक्रियावान् **(त्वेषी)** प्रकाशमाना **(एषाम्)** **(अपीच्येन)** येनायमञ्चति तत्र भवेन **(सहसा)** बलेन **(सहन्ते)** **(युष्मत्)** युष्माकं सकाशात् **(भिया)** भयेन **(वृषणः)** बलिष्ठाः **(रेजमानाः)** कम्पमाना गच्छन्तः **(दक्षस्य)** बलस्य **(चित्)** अपि **(महिना)** महत्त्वेन **(मृळत)** सुखयत। अत्र **संहितायामि**ति दीर्घः **(नः)** अस्मान्॥१०॥

**अन्वयः**-ये हि सस्वश्चिदेषां त्वेषी समृतिरस्त्यपीच्येन सहसा सहन्ते तेभ्यो युष्मद्भिया रेजमाना वृषणो रेजमाना भवन्ति ते यूयं दक्षस्य महिना चिन्नो मृळत॥१०॥

**भावार्थः**-हे मनुष्या! यस्य सत्या प्रज्ञा विद्या नीतिः सेना प्रजाश्च वर्तते स एव शत्रून् सहमानः सर्वान् सुखयति स महिम्नानन्दितो भवति॥१०॥



www.9009.co.in

**पदार्थः**-जो **(हि)** निश्चित **(सस्वः)** मध्य में चलते हुए हैं **(चित्)** और **(एषाम्)** इनकी **(त्वेषी)** प्रकाशमान **(समृतिः)** उत्तम प्रकार सत्यक्रिया है **(अपीच्येन)** जिससे चलता है उस में हुए **(सहसा)** बल से **(सहन्ते)** सहते हैं उनके लिये और **(युष्मत्)** आप लोगों के समीप से **(भिया)** भय से **(रेजमानाः)** कांपते और चलते हुए **(वृषणः)** बलिष्ठ कांपते हुए जाने वाले होते हैं, वे आप लोग **(दक्षस्य)** बल के **(महिना)** महत्व से **(चित्)** भी **(नः)** हम लोगों को **(मृळत)** सुखयुक्त करें॥१०॥

**भावार्थः**-हे मनुष्यो! जिसकी सत्य बुद्धि, विद्या, नीति, सेना और प्रजा वर्त्तमान है, वही शत्रुओं को सहता हुआ सब को सुखयुक् करता है, वह महिमा से आनन्दित होता है॥१०॥

**पुनर्विद्वांसः किं कुर्युरित्याह॥**

फिर विद्वान् क्या करे, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**यो ब्रह्मणे सुमतिमायजाते वाजस्य सातौ परमस्य रायः।**

**सीक्षन्त मन्युं मघवानो अर्य उरु क्षयाय चक्रिरे सुधातु॥११॥**

**यः। ब्रह्मणे। सुऽमतिम्। आऽयजाते। वाजस्य। सातौ। परमस्य। रायः। सीक्षन्त। मन्युम्। मघऽवानः। अर्यः। उरु। क्षयाय। चक्रिरे। सुऽधातु॥११॥**

**पदार्थः**-**(यः)** **(ब्रह्मणे)** धनाय परमेश्वराय वा **(सुमतिम्)** शोभनां प्रज्ञाम् **(आयजते)** समन्ताद्यजेत सङ्गच्छेत **(वाजस्य)** विज्ञानस्य **(सातौ)** संविभागे **(परमस्य)** श्रेष्ठस्य **(रायः)** धनस्य **(सीक्षन्त)** सम्बध्नन्ति **(मन्युम्)** क्रोधम् **(मघवानः)** परमधनयुक्ताः **(अर्यः)** यथावज्ज्ञातारः **(उरु)** बहु **(क्षयाय)** निवासाय **(चक्रिरे)** कुर्वन्ति **(सुधातु)** शोभना धातवो यस्मिन् गृहे॥११॥

**अन्वयः**-हे मनुष्या! यः परमस्य वाजस्य रायः सातौ ब्रह्मणे सुमतिमा यजाते ये मघवानोऽर्यः मन्युं सीक्षन्त क्षयायोरु सुधातु चक्रिरे त एव श्रीमन्तो जायन्ते॥११॥

**भावार्थः**-ये मनुष्या ईश्वरविज्ञानायोत्तमधनलाभाय श्रेष्ठाय गृहाय क्रोधादिदोषान् विहाय प्रयतन्ते ते सर्वसुखा जायन्ते॥१॥

**पदार्थः**-हे मनुष्यो **(यः)** जो **(परमस्य)** श्रेष्ठ **(वाजस्य)** विज्ञान और **(रायः)** धन के **(सातौ)** उत्तम प्रकार बांटने में **(ब्रह्मणे)** धन के वा परमेश्वर के लिये **(सुमतिम्)** उत्तम बुद्धि को **(आयजाते)** सब प्रकार से प्राप्त होवें और जो **(मघवानः)** अत्यन्त धन से युक्त **(अर्यः)** यथावत् जानने वाले **(मन्युम्)** क्रोध को **(सीक्षन्त)** सम्बन्धित करते हैं और **(क्षयाय)** निवास के लिये **(उरु)** बड़े **(सुधातु)** सुन्दर धातु सुवर्ण आदि जिसमें उस गृह को **(चक्रिरे)** सिद्ध करते हैं, वे ही लक्ष्मीवान् होते हैं॥११॥

**भावार्थः**-जो मनुष्य ईश्वर के विज्ञान के, उत्तम धन के लाभ के और श्रेष्ठ गृह के लिये क्रोध आदि दोषों का परित्याग कर के प्रयत्न करते हैं, वे सम्पूर्ण सुखों से युक्त होते हैं॥११॥

**पुनर्विद्वद्भिः किं क्रियत इत्याह॥**



www.9009.co.in

फिर विद्वानों से क्या किया जाता है, इस विषय को अगले मन्त्र में कहते हैं॥

**इयं देव पुरोहितिर्युवभ्यां यज्ञेषु मित्रावरुणावकारि।**

**विश्वानि दुर्गा पिपृतं तिरो नो यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥ १२॥ २॥**

**इयम्। देवा। पुरःऽहितिः। युवऽभ्याम्। यज्ञेषु। मित्रावरुणौ। अकारि। विश्वानि। दुःऽगा। पिपृतम्। तिरः। नः। यूयम्। पात। स्वस्तिऽभिः। सदा। नः॥ १२॥**

**पदार्थः**-(**इयम्**) (**देवा**) दातारौ (**पुरोहितिः**) पुरस्ताद्धिता क्रिया (**युवभ्याम्**) (**यज्ञेषु**) विद्वत्सत्कारादिषु (**मित्रावरुणौ**) प्राणोदानवदध्यापकोपदेशकौ (**अकारि**) क्रियते (**विश्वानि**) सर्वाणि (**दुर्गा**) दुःखेन गन्तुं योग्यानि (**पिपृतम्**) पूरयतम् (**तिरः**) तिरस्क्रियायाम् (**नः**) अस्मान् (**यूयम्**) (**पात**) (**स्वस्तिभिः**) (**सदा**) (**नः**)॥ १२॥

**अन्वयः**-हे मित्रावरुणौ देवा! युवभ्यां यज्ञेष्वियं पुरोहितिरकारि युवां नो विश्वानि तिरस्कृत्य पिपृतम्, हे विद्वांसो! यूयं स्वस्तिभिर्नस्सर्वान् मनुष्यान् सदा पात॥ १२॥

**भावार्थः**-हे अध्यापकोपदेशकौ यथा भवन्तौ सर्वेषां हितं कुर्यातां तथाऽस्मत् दुर्व्यसनानि दूरीकृत्य सर्वदाऽस्मान् वर्धयतमिति॥ १२॥

अत्र सूर्यादिदृष्टान्तैर्विद्वद्गुणकृत्यवर्णनादेतदर्थस्य पूर्वसूक्तार्थेन सह सङ्गतिर्वेद्या॥

**इति षष्टितमं सूक्तं द्वितीयो वर्गश्च समाप्तः॥**

**पदार्थः**-हे (**मित्रावरुणौ**) प्राण और उदान वायु के सदृश वर्त्तमान अध्यापक और उपदेशक जनो (**देवा**) दाता दोनों! (**युवभ्याम्**) आप दोनों से (**यज्ञेषु**) विद्वानों के सत्काररूपी यज्ञ कर्मों में (**इयम्**) यह (**पुरोहितिः**) पहले हित की क्रिया (**अकारि**) की जाती है, वे दोनों आप (**नः**) हम लोगों के लिये (**विश्वानि**) सम्पूर्ण (**दुर्गा**) दुःख से जाने योग्य कामों का (**तिरः**) तिरस्कार कर के आप दोनों (**पिपृतम्**) पूर्ण करिये और हे विद्वान् जनो! (**यूयम्**) आप लोग (**स्वस्तिभिः**) कल्याणों से (**नः**) हम सब मनुष्यों की (**सदा**) सब काल में (**पात**) रक्षा कीजिये॥ १२॥

**भावार्थः**-हे अध्यापक और उपदेशक जनो! जैसे आप दोनों सब के हित को करें, वैसे हम लोगों के दुष्ट व्यसनों को दूर कर के सब काल में हम लोगों की वृद्धि करें॥ १२॥

इस सूक्त में सूर्य्य आदि के दृष्टान्तों से विद्वानों के गुण और कृत्य के वर्णन होने से इस सूक्त के अर्थ की संगति इससे पूर्व सूक्त के अर्थ के साथ जाननी चाहिये।

**यह साठवां सूक्त और द्वितीय वर्ग समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

**अथैकषष्टितमस्य सप्तर्चस्य सूक्तस्य वसिष्ठर्षिः। मित्रावरुणौ देवते। २, ४ त्रिष्टुप् । ३ ५, ६, ७ निचृत्त्रिष्टुप् छन्दः। धैवतः स्वरः। १ भुरिक्पङ्क्तिश्छन्दः। पञ्चमः स्वरः॥**

***अथाध्यापकोपदेशकौ कीदृशौ भवेतामित्याह॥***

अब सात ऋचा वाले इकसठवें सूक्त का प्रारम्भ है, उसके प्रथम मन्त्र में अब अध्यापक और उपदेशक कैसे होवें, इस विषय को कहते हैं॥

**उद्वां चक्षुर्वरुण सुप्रतीकं देवयोरेति सूर्यस्ततन्वान्।**

**अभि यो विश्वा भुवनानि चष्टे स मन्युं मर्त्येष्वा चिकेत॥१॥**

**उत्। वाम्। चक्षुः। वरुणा। सुऽप्रतीकम्। देवयोः। एति। सूर्यः। ततन्वान्। अभि। यः। विश्वा। भुवनानि। चष्टे। सः। मन्युम्। मर्त्येषु। आ। चिकेत॥१॥**

**पदार्थः**-(**उत्**) (**वाम्**) युवयोः (**चक्षुः**) चष्टेऽनेन तत् (**वरुणा**) वरौ (**सुप्रतीकम्**) सुष्ठु रूपादिप्रतीतिकरम् (**देवयोः**) विदुषोः (**एति**) (**सूर्यः**) सवितृमण्डलम् (**ततन्वान्**) विस्तीर्णः (**अभि**) (**यः**) (**विश्वा**) सर्वाणि (**भुवनानि**) (**चष्टे**) जानाति (**सः**) (**मन्युम्**) क्रोधम् (**मर्त्येषु**) मनुष्येषु (**आ**) समन्तात् (**चिकेत**) विजानीयात्॥१॥

**अन्वयः**-हे वरुणा देवयोर्वां यत्सुप्रतीकं चक्षुस्ततन्वान् सूर्यइवोदेति यो मनुष्यो विश्वा भुवनान्यभि चष्टे स मर्त्येषु मन्युमा चिकेत तथा युवां कुरुतम्॥१॥

**भावार्थः**-अत्र वाचकलुप्तोपमालङ्कारः। हे मनुष्याः! यथा सूर्यस्सर्वान् लोकान् प्रकाशयति तथाऽध्यापकोपदेशकौ सर्वेषामात्मनः प्रकाशयतः॥१॥

**पदार्थः**-हे (**वरुणा**) श्रेष्ठो (**देवयोः**) विद्वान्! जो (**वाम्**) आप उन दोनों के जिस (**सुप्रतीकम्**) उत्तम प्रकार रूप आदि के ज्ञान कराने वाले (**चक्षुः**) चक्षु इन्द्रिय को कि जिससे देखता है (**ततन्वान्**) विस्तृत करता हुआ (**सूर्यः**) सूर्य्यमण्डल जैसे (**उत्, एति**) उदय को प्राप्त होता है और (**यः**) जो मनुष्य (**विश्वा**) सम्पूर्ण (**भुवनानि**) भुवनों को (**अभि, चष्टे**) जानता है (**सः**) वह (**मर्त्येषु**) मनुष्यों में (**मन्युम्**) क्रोध को (**आ**) सब प्रकार से (**चिकेत**) जाने वैसे आप दोनों करिये॥१॥

**भावार्थः**-इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमालङ्कार है। हे मनुष्यो! जैसे सूर्य्य सम्पूर्ण लोकों को प्रकाशित करता है, वैसे अध्यापक और उपदेशक जन सब के आत्माओं को प्रकाशित करते हैं॥११॥

**पुनस्तौ कीदृशौ भवेतामित्याह॥**

फिर वे दोनों कैसे हों, इस विषय को कहते हैं॥

**प्र वां स मित्रावरुणावृतावा विप्रो मन्मानि दीर्घश्रुदियर्ति।**

**यस्य ब्रह्माणि सुक्रतू अवाथ आ यत्क्रत्वा न शरदः पृणैथे॥२॥**



www.9009.co.in

**प्र। वाम्। सः। मित्रावरुणौ। ऋतऽवा। विप्रः। मन्मानि। दीर्घऽश्रुत्। इयर्ति। यस्य। ब्रह्माणि। सुक्रतू इति सुऽक्रतू। अवाथः। आ। यत्। क्रत्वा। न। शरदः। पृणैथे इति॥ २॥**

**पदार्थः**-(**प्र**) (**वाम्**) युवाम् (**सः**) (**मित्रावरुणौ**) प्राणोदानाविवाध्यापकोपदेशकौ (**ऋतावा**) सत्यसेवी (**विप्रः**) मेधावी (**मन्मानि**) मन्तव्यानि विज्ञानानि (**दीर्घश्रुत्**) यो दीर्घं विस्तीर्णानि बहुकालं वा शास्त्राणि शृणोति (**इयर्ति**) प्राप्नोति (**यस्य**) (**ब्रह्माणि**) धनानि (**सुक्रतू**) शोभनप्रज्ञायुक्तौ (**अवाथः**) रक्षेताम् (**आ**) (**यत्**) (**क्रत्वा**) प्रज्ञया (**न**) इव (**शरदः**) शरदाद्यृतून् (**पृणैथे**) पूरयतम्॥ २॥

**अन्वयः**-हे मित्रावरुणा! स ऋतावा दीर्घश्रुद्विप्रो वां मन्मानीयर्ति यस्य ब्रह्माणि सुक्रतू सन्तौ युवां प्रावाथः यत् क्रत्वा न शरद आ पृणैथे तौ युवां वयं सततं सत्कुर्याम॥ २॥

**भावार्थः**-हे विद्वांसः! यो दीर्घकालं ब्रह्मचर्येण शास्त्राण्यधीते स एव मेधावी भूत्वा सर्वान् मनुष्यान् रक्षितुं शक्नोति॥ २॥

**पदार्थः**-हे (**मित्रावरुणौ**) प्राण और उदान वायु के सदृश वर्त्तमान अध्यापक और उपदेशक जनो! (**सः**) वह (**ऋतावा**) सत्य का सेवन करने और (**दीर्घश्रुत्**) बहुत शास्त्रों को वा बहुत काल पर्य्यन्त शास्त्रों को सुनने वाला (**विप्रः**) बुद्धिमान् जन (**वाम्**) आप दोनों के (**मन्मानि**) विज्ञानों को (**इयर्त्ति**) प्राप्त होता है (**यस्य**) जिसके (**ब्रह्माणि**) धनों को (**सुक्रतू**) सून्दर बुद्धि से युक्त होते हुए आप (**प्र, अवाथः**) रक्षा करें और (**यत्**) जिसकी (**क्रत्वा**) बुद्धि से (**न**) जैसे पदार्थों को वैसे (**शरदः**) शरद् आदि ऋतुओं को (**आ, पृणैथे**) अच्छे प्रकार पूरो, उन आप दोनों का हम लोग निरन्तर सत्कार करें॥ २॥

**भावार्थः**-हे विद्वानो! जो बहुत काल पर्य्यन्त ब्रह्मचर्य्य से शास्त्रों को पढ़ता है, वही बुद्धिमान् होकर सब मनुष्यों की रक्षा करने को समर्थ होता है॥ २॥

**इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्याणां श्रीपरमविदुषां विरजानन्दसरस्वतीस्वामिनां शिष्येण श्रीमद्दयानन्दसरस्वतीस्वामिना निर्मिते संस्कृतार्यभाषाभ्यां समन्विते सुप्रमाणयुक्ते ऋग्वेदभाष्ये सप्तमे मण्डले चतुर्थानुवाक एकषष्टितमे सूक्ते पञ्चमाष्टके पञ्चमाध्याये तृतीयवर्गे द्वितीयमन्त्रस्य भाष्यं समाप्तम्॥**

**उक्तस्वामिकृतं भाष्यं चैतावदेवेति।**

**सं० १९५६ वि० आषाढ कृष्णा ५ को छपके समाप्त हुआ॥**



www.9009.co.in

www.9009.co.in